# संक्षिप्त महाभारत आदिपर्व

नागको नमस्करण वरं केन नरोक्तमर्। देवी सरवारी व्यासं ततो अवसूदीरकेत्॥ अक्षमंत्री नरायकातस्य भगवान् श्रीकृत्यः, उनके सका पर-सा अर्जुन, उनकी लीला प्रश्नट करनेवाली धनवती सरकती और उसके क्या मनवान् व्यक्तको ननवार करके आसूरी क्रम्यविकोच्या नाव करके अन्य:धनकार कियम प्राप्त

करानेकारे महाभारत प्रमाका पाठ करना साहिये। 🗱 नये थावते वस्त्रेवय।

र्क नमः विस्तानसम्। के नमः स्थापतिन्यः । al काः कृष्णदेशकायः। 🕹 साः सर्ववित्रविकारकेथः।

होपहर्वको कु सामा कुलाके के पैटनिय है। एक बार जब नैरियारमा क्राने कुरमार्थ क्रीनक करा कर्मका प्रसंग-सत्र कर खे थे, तब सामारा नहीं किरनके साम सुक्तरे बैठे हुए कान्यि ब्यार्थियोके बात आहे। व विवारणकारी समार्थ करियोंने देखा कि जातमा इन्हें आकर्तों जा नते हैं, का उसरे बिल-विचित कवा सुननेके रिजे इन होगोंने उन्हें वेर लिखा। उत्तावारे हाम जेड़कर कानो प्रमान किया और सम्बार पायर उनकी तस्त्राने प्रकारमें कुछत-तम विलेश सब अधि-पूर्ण सपने-सपने आसंस्वर विराजमान हो उसे और उनके अञ्चानुसान से सी श्रपने आसम्पर बैठ रवे । का वे मुक्तपूर्वक बैठकर विकास का सुके, तब किसी अपिने कवाका प्रसङ्ग अनुस करनेके हिये इस्ते व्ह ऋ किया—'सुरस्क ! अन व्हासि आ के हैं ? आयो अवस्थाना समय नहीं नगीत किया है ?" काशमाने कहा, 'वै परिविधान-करून राजनि वान्येयको सर्थ-सम्बे एक हुआ था। नहीं श्रीवैक्टवायनसीके मुक्तो मेरे थगवान् श्रीकृषा-द्वेरायनके द्वारा निर्मित महामास्त प्रमासी अनेको परित्र और विकित कवाई सुनी । इसके बाद बहुर-से तीवों और आक्षमेंने कुमकर समन्त्रपञ्चक क्षेत्रमें काण, वहाँ । विसन्ता सम्बार किया है, विसने विचित्र पड़ेसे परिपूर्ण पर्व

क्ले बील और ।



मैं अल्लेपोक्ट रहीन करनेके लिये वहाँ जाना है। जार सची विराष्ट्र और महन्त्रि हैं। जानका महतेन सूर्व और क्रक्रिके सन्धन है। जायलोग कान, जप, हक्त आदिसे निवृत्त होकर पवित्रता और स्वाटकाके साथ अपने-अपने आसनगर बैठे हुए हैं। अब कृपा करके बाल्याओं कि मैं आपलेगीको कोन-से कम सुनई।'

क्रिकेंने कहा—सुरुक्त । परमणि श्रीकृष्णहेमाधनने विस अञ्चल निर्माण किया है और उद्यापियों तथा देवताओंने है, यो सूल वर्ण और न्यांको परा हुआ है, यो का-व्यास वेहांकोरे विश्वांका और आक्रमारोने श्रेष्ठ है, निरामें परामंत्रका लपूर्ण हरिक्का है, यो सर्वका प्राव्यक्तमा है और विशे ओक्नमहैराकाको आहातो वैशानककरोरे राजा परामंत्रकारो सुनार्य है, कार्यान् व्यासको को पुन्तकको परामाहिनो और वेहांको सेव्या इसकोग सुन्ता कार्यो है।

उरसम्बद्धने वस्त—धनकार् औक्षम्य ही समके जारी हैं। में अन्तर्वाची, राजेंबर, जनता पहाँके भोजा, तनके प्रण प्रशेषिता, परम पाल अन्यारकारण जात है। वे के सम्बाद मना हुने अन्यसम्बद्धाः है। ये अस्त्यू की है और सह की है, वे सार-असल केनो है और केनोसे परे हैं। वे क्री निराद किया औ हैं। उन्होंने ही उन्हार और सहन सेनोकी नृष्टि की है। वे ही सम्बंध पीपपंत्रता, समित्र और अधिवादी है। वे ही भागनारी, महरामका, सर्वन्यका, सन्ते कामनेत, निवास और परम चौक है। उन्हें करकरनुर नकरननेकरी प्रतिकारो प्रकार कार्य स्तिकेश्योग अनुस्थान करवान् अञ्चली परित्र रचन व्याप्तकारः करिन करण है। पूर्वाचे अपेको प्रतिपादात्ती विश्ववेदै इस झीवारका पहेर कर्नन किया है, उस बातों हैं और आने भी करेंने ! जा प्राथक्षामकाम सम्ब होनों सोबोनें अतिहित है। बोर्ड संबोको, क्षेत्र कोई विकास हो बादा करते हैं। इसकी क्रमानकी सुन है। इसमें अनेको इन्य है और देखता एका प्रमुखीको कार्यप्रकार इसमें स्वतः कर्णन है।

विस प्रसंध का अन्तर् श्रेण और ज्यानको सूच क्या अध्यक्षाको परिपूर्ण सा, जर समय एक खूव व्या अध्य अपन हुआ और वही समय प्रसंधी उनतिको कारण क्या । यह बढ़ा है दिल और कोतियेव या। सूनि कार्ने सथ, समातन, कोतियंव व्यावका कर्नन करती है। या तथ्य अस्तिवेक, समित्रक, सर्वकाल, अध्यक्ष, कारण्यकाल क्या स्त्यू और सस्त्यू होनो है। वही अच्छेने लोकनिकाचा प्रमानि अग्रावी प्रसंद हुए। त्यानकर एक अच्छेन, तथ्र, अच्छे स्वत पुर, साल करि और खेळा सनु अस्त्य हुए। विशेषण, अस्तिय, सन्दुः स्वित्तिकुत्यर, यहा, कारण, विस्ता, पुरुष्ण, व्याव, अस्त्यक, हिसाई, संबतार, बहु, पास, पड़ा, विद, यहा अध्य क्याई और विसनी भी बस्तुई है, स्वा असे अस्त्येने करता हुई। यह सन्दुर्श वारावर क्षेत्रर प्रस्ताके समय विसनी करता होता है, जहीं सरस्तराने त्यान है बस्ता है। त्राक वैसे ही, मैसे बहु

आनेतर जाके अनेको सक्य प्रकार हे जाते और कारानेतर पूर्व हो जाते हैं। इस जातर का कारानात, किससे सभी पहलींको पूर्व और संहार होता है, अनाहे और उत्पान करने करेत जाता पूर्वा है। एंडोपने देखाओंको संक्या देखील हमार देखेल को देखेल (क्रांस हमार तीन को देखेल) है। विकासको पाना हुए है—सिंगाहुर, काराना, प्रकार, की और पूर्व (क्रांस के पूर्व हूट—सेवाल, और सुकार, एहाएके तीन पूर्व हुए—स्वानोति, असलोति और स्वानानोति । ये दीनों ही असलार और विद्यान से । पहल्कोतिक वह स्वार, सारानोतिक एक साम और सामानोतिक का सामा पूर्व करना हुए। इसीके हुन, कह जात, बनाति और ह्यानाह आने क्रांसिकें क्रांस को। स्वान-से बंदों और प्राणिकोको स्वीको क्रांसिकेंं क्रांस को। स्वान-से बंदों और प्राणिकोको स्वीको

क्ता, कर्म-क्रवास-क्रमात वेट, अभारायुक्त चेप, वर्ग, अर्थ और कान, पारे प्रत्य तथा लोकामकारको पूर्णभाके काले हैं। इन्होंने इस प्राचने स्वाइकाने प्रतम सन्दर्भ इतिहास और सारी स्रोत्योका सारार्थ कर दिया है । कालान लागने इस चार प्रश्वा की विवासे और की संकेश नर्ग किया है, क्वोरित विक्रम् स्टेम झामको निया-पिता समारको अधारित करो है। उन्होंने तराव और इक्टबर्नबी प्रतिने नेवेचा विकास करके इस सम्बद्ध रियोग बिना और सेमा बि की क्रिमोको विका प्रकार पहालै ? पंत्रवान कारावा यह विकार कामार कर्म काली काली प्रस्तात और सोमाजित्से सिंगे जाके पार आये। जनवान् नेत्रामार जर्ने देशका महा ही विशेशा हुए और जुनियोधे साथ सरकार जाई हाथ जोड़कर प्रतास विकार तथा आसन्तर बैदाया । स्थापत-सरकारके कांद्र महासीकी अञ्चली के भी उनके पास ही बैठ नवें : सब ब्दासमीने बड़ी प्रसन्तासे धुरकारते हुए बहुर, 'धनकर् ! मैंने इस केन करणावी रचना की है। इसमें वैदिक और लेकिक सभी विका है। इसमें केटबुसर्वत अनिका, केवेका किया-बिकार, इतिहास, पुराम, पूरा, परिचया, और वर्तमानके कृतान, कुल्ल, कृतु, अब, व्यापि आहिके प्राय-अधारका नियंत, आस्य और वर्षोक्त वर्ष, पुरायोक्त सार, उपसा, क्रायमं, एवदे, कर, तुर्व, यह, नहत, साठ और तुर्वेका कर्तन, उनका परिचार, अप्रेट, समुदेद, सामवेद, अवर्यन, सम्बद्धार, न्याच, विश्वा, निर्मित्सा, तुन, पाकुरतवर्ग, देखा



भारत, विशेष कारि, श्रीकालकार और सबसे लाह परमानाका भी वर्णन किया है। गरंदु पृथ्वीचे झान्छे । रेनेक्स केंद्र गाँ विस्ता, गई कियाब डिक्ट है।'

महार्थने बदा—'स्तुर्वे? जाव सरवहारगरन्त्र है । इस्तीको मैं सरकी और क्षेत्र जुल्लिसे भी आवनों सेंद्र सम्बन्ध है। अपन अन्यते हो अपनी सामीके हारा काम और नेवार्यका कक्ष कर्ता है। इसरिये जानका राज्ये क्रमको काम बहुन राज होगा । सामारे प्रसिद्ध कारणके जानले ही होगी । आरके कारको हेष्ट्र कारकका निर्माण कराएंदें कोई नहीं कर समेरक । अस्य अध्या प्रथम विकासिक विको पर्नेतानीया करण व्येक्टि ।' यह बद्धावर ह्यारची तो अपने लोकको कर्छ पर्व और जासबीने एनेक्सीका सरण किया : सरण करो ही पंता बाकाबारपात गरोहाची उपरिचा हुए। सामाबीने पूजा करके जो विजय और जर्मन की, 'बगामा। मैंने मन-ही-ना महाभागाओं रकत की है। मैं केरका है, जल को रिक्सो कहते।' पर्नेक्सीने कहा, 'बदि पेरी कारण एक क्षणके रिजी भी न एके तो में रिजानेका बाग कर सकता (।' जास्त्रीने कहा, 'ठीव है, किन्तु आप किन समझे न रिक्रिकेमा (" पर्वतानीने 'तबाकु' कहनर विकास स्वीकार चंद रिमा। भगवान् न्याने क्षीतुलका कुक ऐते शकेक बना दिने को इस सक्तारी चीत है। इनके सक्तारणे उन्होंरे

और परुषोको सर्वति, परित्र सेर्च, परित्र देश, परि, परित्र पूर्वेक बहा है कि 'आठ हमार आठ सी स्रवेकोंका अर्थ का, सनुर, पूर्व काप, दिश नगर, पुरुषोक्ता, तिरिया में बारता है, पुरुषेय कारते हैं। स्थाप कारते हैं या नहीं,



हरका पुरुष निश्चाम नहीं है।' में परनेका अन्य भी पूरा अन्यने हैं। क्त विकार विक्री जनवर अर्थ नहीं चुल संख्या । और से क्या, अर्थात परेलाची कर एक इन्यास्त वर परोक्षीके अर्थका विकार करते के अलेग्रीयें महर्षि व्यक्त दूसरे बहुत-के प्रचेक्तीको रक्ता कर अस्ते हैं।

यह महत्त्वार प्रान्तार अक्षणते प्रस्तुति अस्तिके सम्बद्धार ने नवको हुए सोमोबी अभि सोसनेवास 🛊 । इस धकानी पूर्वी कां, अनं, कान और मोड़--नार्धे पुरावर्तीका प्रेक्षेप और विस्तारने करीन करके लोगोका अक्रान्त्रकार यह कर दिन है। इस भारतपुरवानी पुर्वकारे कुर्वकर चनिकाचे क्रिकाकर महानेकी चुदिहारा कुणुरेको विकासित कर दिया है, पूर इतिहासस्य दीनकरे संस्थरके तक्कानेको ज्यालेको पर दिया है। मनवान् ऑक्रम्बोक्स्परने इस जनमें कुरबंक्स विकार, गान्तरीयी कांत्रीतरा, विक्रमी अहा, कुलीके की, पुर्नेसनादिकी कुल और वामध्येषी प्रश्लाक वर्गन मिला है। इतकी प्रकेट कवारे परमार् अंकृत्यकी अनिर्वयनीय महिना जबर होती है। यह महामानामान बारमपुद्ध रागता कथियोंके लिये जाजनस्थान हैं। इंटीके आसारवर दान अपने-अपने साम्बद्धा निर्माण करेंगे ।

ने बद्धार्थक नामालका जनाम करत है, सके

सारे पाप यह है जाते हैं। क्योंक्र इसमें वेगर्न, जार्मन, वेगरा आदिक्ष पाम परित्र कार्मक्र कांगर है; इसमें समाज पुरुष परवान, श्रीकृत्वाका स्वान-कांग्यर कीर्मन है। वे ही पान, बहुत, श्रीक सीरा महत्त्वाक है के स्वीववानी, अधिकार, सराव्य हान्यत्वाम परवाह है। वृद्धिकन् तोग अधिकां श्रीताक्ष्म गावन करते हैं, वे पाद और अध्याद केंग्री हैं। परवाही साथे वेहा अधिकां प्रतिक्षा मुख्यूत विशिष्ट प्रतिक्षा, साव्याधिक अध्या अधिकां केंग्री हैं। वो पुष्प परवा परित्रक, साव्याधिक अध्या अधिकां क्योंक्र मुख्यूत विशिष्ट प्रतिक्षा है। वा प्रत अधिकां प्रवाद है। केंग्री है। प्रतिक्षा होता विश्वान करते पुष्प होते हैं और वर्षकर्ते प्रतिक्ष्मके साराय सामूर्ण अध्याक्षके अधिके विका देखते है।

वार वारोटे हुट कहा है। इस म्यापास प्रमास करेर है क्या और अपूर्ण। इतिहासोंने की समीत है। इतिहास और पुरालोंक क्षण है नेदार्थका निक्षण करना वाहिये। जैर अस्पारों कार्याद द्यों है कि कही का इक्षण संस्थानक ने कर करें। ऐक्सोनोंने म्यापायकों स्थापुर मेलेंक साम स्थापर कीता है। अर कार्य करों केरोने इसकी न्यापा असित विद्यु हुई है। का्सा और कार्यापने कारण है इसे ब्यापास कहा है। का्सा और कार्यापने कार्यापन है इसे ब्यापास कहा है। का्सा क्रिक्ट का्सापन है है का से पास-कुट्योंट का्स किये कार्य। इस प्रमास क्रिक्ट करों प्रमा की कार है, इसकिये ब्यापास स्थाप्त अस्पापन करते प्रमा की कार हुद्ध स्थाप कार्यों।

#### जनमेजवके चाइयोंको शाप और गुरुसेवाकी महिमा

(1980) सहस्य क्षेत्रको । परिवृत्त् कर्मका । जनस्य प्रकार का व्या सेन्स्रमा । जनस्यको आ स्वित्त्रको अस्त्र स्वय अस्त्री अनुस्वेद सत्य कुरुक्षेत्रको एक संस्था वह कर यो थे । । ही पुरोग्नित कर्मका निक्रम किया । उन्होंने कुलाया स्वरित्त

स्तार प्रमुक्त साथ पुरस्ताय एक स्था पर कर प्र स्तार सीन पाई थे—सुरसेय, सम्मेग और भीन्सेय । साथ पाने सम्मारण पाई एक पुरा आणा। साथेयाको पाइनीन सी पात प्रमा । ऐके-स्थितको पुरसे पार है ?' साले बाद, 'माँ । युवे पानेकाको पाइनीन पीटा है !' माँ कोली, 'मेरा । युवे पानेकाको पाइनीन पीटा है !' माँ कोली, 'मेरा । युवे कामा पाइनीन पीटा है !' माँ कोली, 'मेरा । युवे कामा पाइनी पाटा है ! मेरे सो पोई साराय नहीं किया !' पाइ पुरसर पालाको पाइ दुःसा हुआ और पाइनामें पाइना मेरे पुलने इत्तारको पाइने हुआ और पाइना भी पाइना मेरे पुलने इत्तारको देशालक नहीं, पुल्क पाना भी पाई; और भी इतने कोई साराय नहीं, पुल्क पाना भी पाई; और भी इतने कोई साराय नहीं सिका। किए इसे

हातवा कोई जार नहीं विशा । बुर्तिकाने बढा, 'हुकने विशा अवराज मेरे पुत्रको भाग है, इस्तिको दुक्तर अकानक है कोई महान् क्षा आलेगा ।' केस्ताओको कुरिया सरकार का कार पुत्रकर कर्मका को दुःवी हुद और काराने थी। का करता होनेवर वे इधित्रमुद आने और क्षा कोना पुरेशित हैंको उन्हे, जो इस अन्तिको कारा कर सके। क्षा हिए वे विशास केसने गये। कुनो-कुनो अवने प्रत्यने ही उन्हें क्षा आका किसा। तर सामनमें सुरक्षा जानो इस साथ को थे। उनके



व्यवस्तर करके कहा, 'गामक् | आगके दुव मेरे पुरेशित को (' करिने कहा, 'मेच पुत्र कहा उपनये और स्वाकास्त्रक हैं। का आगके सारे अनिहोंको हाता कर सकता है। केवा गामकेके हातको विद्योगे हरकी गति को है। कोट्ट इसका एक दुहा तह है। यह का कि गति कोई अक्षान हरते कोई बीच गतिया से का को अवस्य है देश। कीट्ट हुए हैसा कर सकते से हते है काओ।' जनकेक्टरे स्वतिकी अद्या सोकार कर सी। में होस्सावनको लेकट्

इकिन्सूर आने और अपने प्रकृषेत्रे केले—'सैंने इन्हें| अवस्था प्रसन किया है। इसलिये हुन्दरर और यो करणान अस्या पुरेशित वस्तव है। दूसरोप मिना विचारके ही इसकी | होगा। को नेंद्र और वर्गताना तुन्हें इस हो पार्वेगे।' आंक्रांक पातन करता।' सक्तोंने अन्त्री अद्भा स्टेंबार | अपने आवार्षका कावन कवार व्या आयो आवीष्ट स्टानगर





को । उन्होंने सक्षवित्तराय जाता की और उसे जीन रिल्म । जहीं देनों जा रेक्से आनेवर्तन राजके एक सारे का

करते थे। अने तीर प्रधान दिव्य के--अवस्थि, जनगर् और केंद्र । इसमें आसीन पर्यक्रमोद्रामा स्ट्रोमाल वा । जो अनुरेते कुछ दिए पोताबी येड व्यक्तिके तिलो पोता । गुजबी आदारों जागरिंग गोलगर गया और प्रचल चाले-कानी हार एका हो औ उनसे बॉध न बैना ! जब नह रंग ना एका हो भी एक ज्यान पुरा । यह नेहमी नाव कर्न के राज गय। इससे पार्नाका बहुत बंद हो तथा। कुछ समय बीक्नेका आयोग्यीचने अपने विष्योगे पुत्र कि 'आयोग कहाँ पक्षा ?' हिल्मीने अक्षा, 'आपने ही तो उसे मोताबी नेड़ प्राथनोड रिक्टे पेजा बाउ' जावाची दिव्योगे बाहा कि 'बाले, इमलोग भी जहाँ का भवा है जहाँ करें।' वहाँ करना आकर्ष पुधाले तने, 'आवनि ! हम कहाँ हो ? जानो मेटा ।" आचार्यमारे आमान पहचानकर जारानि का कड़ा पूजा और उनके पास जावार घोरण, 'धरमान् ! में था है। मोतरी पत बढ़ा वा दा था। तन को में बिसी प्रचार नहीं रिक सबा से सर्व ही मेड़के स्थानस्त तेट नगर। जन वकावक आपनी आवाज पुर चेड् तोड्कर आपकी लेखने आंचा है। आंचके करलोंने मेरे तत्त्वम है। अद्भा करियने, में आपको क्या केवा कर्ज ?' आकानी कर्ज़, 'नेटा । तुन मेहके बॉयको जारून (तोद-ताद) करके राउ रुद्धे हुए हो. इसलिये तुन्हारा राम 'बालक' क्रेंगा।' विश कृषादृष्टिके देकते हुए आकारी और भी बजा, 'बंदा । तुनने बेरी

अलंक्षेत्रके हारे क्रियमा गान वा ज्यान्त्। अप्रवार्णने को यह महाकर लेका कि 'मेरट ! तुम गीओंसी रका करे।' आकर्षको आहलो व्यागान करने लगा। हित्यार गाम करावेके बाद सार्ववाल जामाचीर जामाचार काना और उन्हें ननाबार किया। ताकानी बड़ा, 'बेटा ह हुप मेरे और मरन्यान् रीक स्त्रे हो । क्लो-पीते क्या हो ?' उन्हों कहा, 'अक्कर्य । मैं भिक्षा मोगमर का-ये लेता है।' अव्यापी कहा, 'केट ! युक्ने निकेद किये किया विका वहीं कारी काहिने (' उसने जाकार्यको कर भाग हो । अथ पह रिवार जीवकर उन्हें निवेतिक बार देश और अध्यार्थ सारी निक्का लेकर राहे हेले। का फिर दिनका गांव कराकर क्याके समय पुरमुको सीट ताता और नामार्थको असमार करता । एक दिन आकार्यने कहा, 'सेटा । में तुन्हारी करी निवा के लेका है। जब तुम बचा चाले-पीते के 7' इस्पण्युरे कहा, 'बग्लान् । में बहुती पित्रह आपको निरोदित करोड़ फिर कुररी चाँगकर सान्यों लेता है।' आवारी कक्, 'हेल करन अनेक्सी (पुरुषे सनीय घनेवाले अधूकारी) के रियो अनुविध है। तुम कुले निकार्विशेकी जीविकार्ये बहुबन इसले हे और इससे तुन्हरा लोग नी निन्दू होता है।' जन्मभूने शतकार्वकी शतका स्तीवतर कर स्त्री और स्व बिर क्षत्र करने काम करा। सम्बद्ध-सम्बद्ध कुर: नुस्त्रीके पास आवा और उसके करनोने नगतार किया । सम्बन्धि कक्, 'बेटा कारम्यू । मैं तुन्हरी सारी निवह से लेख हूँ, हुतरी बार तुम माँगते नहीं, भिन्न भी तुम जून हो नहीं है; सम क्या सारो-पीते हो ?' जन्मनुने कहा, 'कावन् । मैं इन गीओके हमर्थ अपना जीवन निर्वाद कर लेता है।" जावाजी बहा, 'बेस ! मेरी अञ्चल्ड किया जैजीका दूस में रेजा जीका न्हीं है। काले जल्बी बढ़ अहार की स्वीकार की और दिए भीएँ बराकर प्रापको उनको सेकारे उनक्षित होकर नगरकार बिरमा। आबार्यने कुल—'बेटा | तुबने नेरी अध्यक्ते निवासी तो क्षा है स्टिन, यून पीना भी होड़ दिया; सिन क्या सतो-पीते हो ?' उपचन्तुने बहा, 'सनकर् ! वे बहाई अपनी पाँक बनते कुल पीटे समय जो केन उनका की है, बढ़ी में ची रेता है।" आवाजी कहा, "राज-राज ! वे त्यानु कांद्रे हुन्यर कृत करके बहुत-स केन जनते की होंगे; इस जनता से हुन इनकी वीविकाने अकृतन कालों हो ! तुन्हें नद भी नहीं भेगा पाहिते।' अस्ते आभार्यको अस्ता विरोधनं को। सम सार्थ-पंत्रिके सभी समाजे के हैं जानेके कारण पुसारे काकुरा होबर जाने एवं हिए आक्रोब पर्ने का निर्मे । स्न पारे, डीते, बड़ते, इन्हें और मक्नेयर सीव्य सा के करनेवाले असेको कामार यह जनरी अविनोधी न्योति को



वैद्या। अंध्य होबार बनमें प्राचका का और एक कुदिने तिर प्रमु । सुर्वास हो गया, परंतु अपनयु आवानीक सामाना पूर्व अपना । आवानी दिल्लीने पुरस—"कामपु जी आवा?"

हिल्लीने कहा—'क्लबर् ! यह तो जान करने करते हैं।' अवस्ति कहा—'रीने अवस्तुके साने-संनेचे सभी इसकते केर कर दिने हैं। इसने को स्रोप का गण होगा: राधी हो अवस्ता नहीं तौरा ! चलो, तरे हैंहें।' आवार्ष दिन्नोंके सम्ब करते जो और सोशो पुकरत, 'करनतु ! हम कर्म है ? अवसे केर !' आवार्षकी आवार्ष व्यवस्तार का जेसी बोला, 'में इस पुर्देने शिर पहा है।' आवार्षने पुन्न कि 'तुम पुन्ने केरो शिरे ?' काने कहा, 'आवार्ष परे सामान में अंख हो गण और इस पुर्देने शिर पहा !' आवार्षने नका, 'हम हेक्सओंट विकित्सक अविनीकुन्यरकी सुन्ति करें। में पुन्नारी अधि टीक कर होंगे।' एन क्लान्यूने नेवारी पुन्नारी अधि टीक कर होंगे।' एन क्लान्यूने नेवारी



अपन्युक्ती स्कृतिने जाता होनार असिनीयुम्पर उसके पात अपने और जोरो, 'तुम पढ़ पुत्रा चा लो !' अपन्युने नका, 'कामर ! आपना पाइना होना है। परंतु आधार्यको निषेत्र सूच्ये किया में आपनी जाताचा पाइन नहीं पर प्रमाण !' असिनीयुम्परीये कहा, 'याने हुमारे आधार्यन में इसरीं सूचि की जो होए हमने उन्ने पुत्रा दिला था। उन्नेने के को अपने पुत्रको निष्टा, कैसा ही हम भी करो !' अपन्युने सहा—'में आधार्यकोरे हाथ चोद्रकर मिनती करता है। आधार्यको निष्टा, किसे बिना में पुत्रा नहीं पर प्रमाण है। अधार्यकोरे निष्टा किसे बिना में पुत्रा नहीं पर प्रमाण !' अधार्यकोरे । हमारे कीर सोनेक हो कारेन, तुमारी जीते अवित्रीकुमारोकी अञ्चाके अनुसार करकपु आकार्यक करा क्षान्य और एक पठना पुनानी । आचानी प्रस्ता हेन्सर बहा, 'अदिनोकुमारके कवणानुसार तुवारा कावाण होगा और प्रते के और पारे वर्गवाच तुवारी वृद्धिरे जनने-जान है स्कृतित हो कावेंगे।'

अन्तेर्व्यंत्रका तेवत दिन्य व बेद । अन्तरी कार्वे बाह, 'बेंटा ! हुन कुछ दिनोतन मेरे पर खो । केय-कुर्स करे, हुन्तर करवान होता।' जाने बहुत दिलेक्य वहाँ राक्षर गुरुरोगा की। आवार्ग प्रतिवित कारण कैराकी गंध भार तथा के और वह करिकर्त, भूक-वालक कुक स्कूबर करकी सेवा करता । कची करवी अञ्चले जिनमेत न क्लेक्स-स्वाह दिनोंने अलार्ग प्रसार हुए और ज्योगे सक्के बारपाण् और प्रार्थकात्रक वर दिया । ब्रह्मणर्गकामे लीवकर म्ब गुरुवासपर्ने आया । वेदके की तीन दिव्या से, परंदु वे अर्थ क्रमी किसी काम भा गुल-तेमाच्या आदेश नहीं करते है । में पुरुष्ट्राके हुआंको करते से और विश्लोको हुन्छ देख नहीं बाह्रों से। एक बार प्रण जानेकर और चेंचने आवार्त बेक्को पुरोहितके रूपमें परण किया। वेद सामी पुरोहितके कामचे बहुद बाते तो काब्री देखरेखके देखें अपने किया जोबाबों रियुक्त कर करें थे। एक बार अवकर्त केले महारों सीवार अने हिल अंबंदे सहचर-परान्ती को जांसा हुने । ज्योने कह—पेक र हुने करेता हुन रहमार मेरी नहीं सेना की है। मैं हुएतर असत है। हुनाएँ हारी कालकरें पूर्व होंगी। अब काओ।' जांकने प्रार्थन की, 'आवार्ग । मैं आरको कीएनी डिप मह मेंटरें हैं?' अल्बानी पहले से अलीबार बिन्य, पैके बढ़ा कि जिएकी गुरुआनीसे पुरू तो ।' यन जांचाने गुरुआनीसे पुरू से ज्यूनि महर, 'हम प्रया चैकके पात वाओ और उनकी पातिक मानोके कुम्बल गाँग सबसे । मैं आयके और्थ दिन उन्हें पहनकर प्राह्मणीको भोजन भरतना बजाती है। ऐसा बारनेसे रुक्ता करवाय होता, अनवा जी ()

अंगाने मानि मानार देशा कि एक मान लेका मोना मोना पुरुष को नहीं बैतन्यर चढ़ हुता है। उसने जांकको सम्बोधन करके बहा कि 'तुन इस बैतका नोवर का हो है कांक्से 'सा' कर दिया। यह पुरस्त फिर बोरात, 'जर्मक ! हको अध्यक्ति जाते हुए कृत्या है। तीन-विचल पर करे। एवं काले ।' अंबने बैहाना चेवर और पूर का रिन्य और रोक्सके कारण बिना उके कुरूप करता हुआ है जाति |

तीय है। कोपी और हुएए। तम अवार करवान होता 🚉 बार वह । जांचने एक पैक्के बार वार्यर को जासीवॉह दिया और कहा कि 'मैं आयके पार कुछ परिश्लेड दियो कवा है।" पैचने जनका जीवाद शतकर को सन्तःपुरने राजिके पान केन दिया। पांतु जांकको रनिकारने बर्धी भी रागे हिसामी नहीं है। महीते लीवकर जाने वैकारो जावान दिया कि 'अन्त:पूर्ण रागी नहीं है।' बीमाने कहा—'पानक् । नेर्रे छन्ने परिवास है। को संबद्ध मा बार्वीक मनुष्य नहीं देश सम्बद्धा (" उसंबन्धे प्रश्रम अस्ते अद् कि 'हाँ, की वालो-वालो जाकान बार रिम्स था।' पीयाने क्क्-'रॉब है, करो-करो असमन करना निर्मेत् है। इसोले आव को है।" अब क्लेको पूर्वीपनुत्त बैठकर, क्रम-वेर-के बोबर क्रम, केर और उन्ताले रहित एवं इत्याद्य क्षेत्रेनेच जानी हीन कर जावान विश्व और के बार है। बोधा। इस बार अना:पुरतें नानेनर रानी ग्रीक को और उसने अंध्याने प्रत्यात सम्बन्धार अपने संज्ञात है



कि। राज्य ही भा बहाबर प्राप्तकार भी बार दिया है। नापान जानंद ये पुत्रकार बाहता है। नहीं तुमारी जनसम्बद्धानीसे लंदन उठाकर बढ़ ले न जाय ।"

मार्गने बाले समय जांकने देशा कि उसके पीर्व-पीर्व एक ना कुरलक चल पुत्र है, कभी प्रकट क्षेत्र है और कसी। हिम साम है। एक बार करेवले मुख्यत रतकार जर तेनेकी केंद्र की । इस्तिकें यह क्षारणक कुम्बल सेवार अनुस्थ हो। नवा। नागराम सहक ही उस देवने आपा दा। उत्तंतने इसके नतनी प्रहायतारे नामलेकाक बाधा पेक्षा किया।

मंत्रमें प्रमर्थत होमा कामने को कुम्बल है हिने। आंध । बोर्रेंग्वे। बताका मार्थ्य विताबी रहा बारेंग्वे हिने आ है कुम्बल देखर अस्तीर्माह प्रश्न विकास । अस्य सरकारी अस्य

र्वोक सरकार अपनी पुरव्यानीके पास पहिला और उन्हें | वे प्रांत उन्हें उसने और विकार अब आप एवं-सब परिवर्त





जार करके जांचा प्रतिनामुद्र आगा । यह अध्यान आगा क्षोपित या और अंगले काल केना काल मा। यह । और अरबो प्रन्यांका आंत्रों का पारीको कालार कान्यांक सम्बन्धि प्रतिमानुष्ये महार् कर्मका व्यक्तिसम्ब विका । आहेती । आ हुरावने वेटा भी पान अधिह वहीं सिवा है । प्राप्त करके लीट चुके के। जांकने कहा, 'रावन् !' प्रकार । अस्य वर्त-कक करेंने के अन्तरेक निवासी प्रवास आरक्त

आरबें। जिलाबों देशा है। अन्य अरबें बाहरा सेनेके रिन्में पह । युक्तेचा और मुझे भी अरबात होगी।'

#### संपत्ति जनाकी कथा

जीवारी स्व विक-कुरुक्त काल्य । अब कु आर्थीय यूनियों क्या पुताले, विद्वीने कानेककी सर्व-राज्ये सामस्य प्रश्नाच्यां स्ता वर्ध वर्ध । त्यूको नेत्राची कांचा निरुत्तारी परी और सुन्तर होती है। तुन 🗪 🚾 अनुस्था पुत्र हो। उन्होंके सरान हमें कथा सुरुआते।

टरराक्योंने का-आकुम्बर् । की अन्त्रे विश्ववेद ग्रैक्टे जानीकारी कथा सुनी है। बढ़ी जानकेनोको सुनात है। प्रत्युवर्गे शहरकारतिको से कन्याई श्री-न्या और निन्ता। जनार निनाह करमण खर्मिसे हुन्छ ना । करमण रायनी वर्गपरिकोंसे उसक क्षेत्रर बोले, 'सुदारी को इक्त हो, मरं माँग रहे हैं महते महतू 'एक हंगल सम्बन्ध केलती पान केंद्र हो है जिससे बोली, 'रेप, सरीर और बार विकर्ण है

बाहुके पुरोसे केंद्र केवल से में पुत्र पुत्रे पाह हो।" करकानी 'स्वनह' कहा। हेने जाता हे तर्नी। भारकारीले नर्थ-रहा करनेकी अंतुत देकर करकरनी बनमें

PLATE SALVE STORY to real replace to the Property

समय आनेपर कहते एक इसार और विनताने से और किं। व्हीरवीने अस्त्र होकर परम वर्तनीने उने रस दिया। चीव सी वर्ण को होनेपर काहके से हजार पुत्र निकार जाते, परंदु विनासके के को नहीं निकारे । विनासने अपने हानी एक अंक चोड़ करन । उस अंक्रेस हिन्दू जाने करेंगरे से पुर के नमा का, जरंतु काला जैकेका आधा प्रार्टेर अभी बाहर का। नकात दिखने क्षेत्रित होका अपनी मातको प्राप विका-"र्ज ! हुने को नवाह केने अन्हों करिएको ही निवास रिव्य है । इस्तरिने यू अपनी उसे सीतनों चौच सी वर्णाण दानी चोची,



विकासे आहं करती है। जोई मेरी करत पूरे कुले अंक्रेसे भी प्रोड़कार आसे कालकारों अपूर्वात या विष्यात्म स किया से की दुने इस कारके पुत्र करेगा। जोई देरी ऐसी इका है कि केर पुत्रात कारक कारकार हो को कैसी साथ की की कीता और अरीक्ष कर है। इस अरकत कार केशर का कारकार आकारकों का पत्र और कुलेका सार्थों करा। आरक्तात्मीत सर्वोत्त्व अरीकी इस्ताही। यह कारकार का अरक हुआ।

एक बार बातू और विनात केनें बानें एक साथ है पूर्व को भी कि को बात है को अब जनका केन दिशानी दिल। बा अब-सा अनुस-नजनके साम सामा हुआ का और समझ अबोनें केन, मान्यान, निमान, सुनार, अबार, दिल एने तम बुग त्यानोंने पुरू था। को देखका ने केने सामानें कामा कर्नन करने सनी।

क्षेत्रकारी पूर्ण — 'सुरानपूर | क्षेत्रकारी अपूर्ण प्रमान क्षित्र समापार और को विकास स् ? अपूर्ण नामाने प्रमान क्षेत्रकार चेत्र किस समार स्मान पूर्ण ?' समापारी पूर्ण क्षेत्रकार पह का पूर्णात सनो अपूर्ण-समापारी प्रमान काले असे ।

#### सपुद्र-मन्बन और अपृत आदिकी प्राप्ति

पर्वत है। यह प्राप्त कन्यतिल है कमें नेजबी पर्वत से 1 अरबो कुन्तरी चोरियोची चनको साम्रो सुर्वेसी प्रधा परिवर्त पढ़ पाती है। वे नगरपूर्ण क्षेत्रिय क्रोते परिवर है। क्यूनियें एकक क्रेक्सकेन इसाईड क्रेकर अनुसार्गाहरू दिन्हे प्रत्यक्ष करने रूपे। इनमें प्रत्यान् वरण्य और प्रक्रामें भी थे। मारावाने वेज्ञानीसे बढ़ा, 'विका और अनुर निरमार रामुक्त्यन करें। इस प्रथाने करासका अनुस्त्री अहि होती।' वेबताओंने भगवान् चरानस्के मरान्त्रीते प्रमुख्यानको प्रमुक्तकोची चेतुन चर्च । यह पर्यन नैपोधे प्रमुख रीवी चौरियोरें मुख, न्यादा इच्छर चेन्यर केश और काफ है पीने सेता हुआ था। जब उस देखा पूर्व प्रति लगावर भी को नहीं बताह तथे, तम बढ़ोरे विश्वपनकर और म्बानीके पास कावर प्रार्थन की-'नगबर ! साथ केने इमलेगोके बारवालके हैंग्ये पन्तरकारको उत्पादनेका उत्पाद क्षेत्रियो और हमें कायानकरी ज्ञान होतियों हें वेक्सकोची प्राचीन सुरकार धीराराज्य और प्रधानि केन प्रकार स्वापनेके रिजे हेरित किया। बहुवारी हेन [ 039 ] सं० व० ( खण्ड-एक ) २

त्वति काः—क्षेत्रकाति व्यक्ति ! वेद सम्बद्ध १६६ । सम्बद्ध कर और कम्बद्धिमोद्धे साथ सम्बद्धानाओं असाह का प्राप्त सम्बद्धील है काने केवारी प्राप्त हो । तिस्य । तथ सम्बद्धानाओं, तथ केवगण संयुक्ताना प्रदेशे



और समुत्ते कहा कि 'इम्प्लेप अनुवने हैंगी हुन्।य कर गर्मेंगे।' समुत्ते कहा, नींद कारतीय अनुवने देश भी हैंगा, एसे दो में सम्प्रकारको कुमोनो को कहा होगा, यह सब हैंगा।' देशता और असुरोंने समुद्धी कहा स्वेच्छा कर्मा कार्यकारको पहल, 'आप इस पर्यक्षे कारतार माँग्ले।' कार्यकारको 'दीन है' सहका पर्यक्षिको करनी पीतनर है रिन्छ। अस देशान हम्म कर्मके हारा मन्द्रकारको हमाने रागे।

इस प्रकार देखार और अधुरोंने चन्द्रात्माली नवानी और बासुन्दि नारकी होटे बनावर समुद्र-कवन प्रदान विका। बासुन्दि नारके मुख्यों और अधुर और पुल्यों और देखा। सर्ग है। बार-बार साँचे कार्यक बारण बासुन्दि कार्यक



मुक्तरे बूदे और आरित्यालको साथ स्वीत विकालने साथी।
या प्रांत बोदी है देखें नेय बन जाती और ब्यू के बके-बीद देवसओंगर जान बरासने समाता। व्यक्ति विकासने पूर्णकी इस्है लग नवी। महानेकके समान गम्बीर बाद होने साथ। परावृत्तरके वृद्ध आपसमें स्वातावार मिल्ने लगे। उनकी रावृत्तर क्षेत्र साथी। इसने नेवोके हुए जार बरासवाबार को अन्त्र वित्याः वृद्धोंके तृत्व और खेळांग्योके स्वात् पू-पूकर समुद्धों आने साथे बोचकियोके अपूर्णके समान अभाववासी सार और दूध तथा सुदर्णको स्वत्यालको अनेको दिव्य प्रायवासी प्रतिकोत्ते पूनेवाले अनको स्वत्ये ही देवता अवस्त्यको प्रतिकोत्ते पूनेवाले अनको स्वत्ये हान्यामारे प्रमुख्य कर दश का गया और दक्कों की बन्धे तमा । वेपाराओंने मार्थ-नार्थ बार्यन अक्रमीने पहा. 'बरबर् बरकाके अधिक सभी देवता और असूर कर को है। समूह प्रको-करते हतना समय बीत क्या. परन जनाम जन्द नहीं निकास ।' जहानीने परावाद विष्युसे बक्त, 'भगवन् । आर इन्हें बता सैनिये । आर ही इनके क्षामा आक्षा है। विम्युक्तवान्ते वहा, कि लेन इस बार्की राने कुर है, मैं उन्हें बार दे का है। कुर ओर पूछे प्रति राजकर जन्दाकराची कुमले और समुद्राती हुवा कर है। मानाएके हरूर बढ़ों है देवन और अपूर्वेक मार का पन्छ । में महे मेनले पनने उन्ने । जारा समुद्र सुन्य हे उठा । का रूपन समुद्रों अपनिया किरपोपाल, चीवल प्रकासके पुर्व, केवरर्वका कार्यक प्रधार पुरत ( कार्यकोर कार् पर कर्त सक्षी और पूर्व देवी निवारों । उसी साम वेटावर्णका क्षेत्रका चेत्र में केंद्र हुन्त । कारान् प्रशासकेंद्र बक् करनर पुरोतिक हेनेकारी दिल किरमोंचे उन्हार बीक्सपनि तथा वर्गका पत्र शेवके परस्क और कारतेषु भी उसी काम निकारे । स्थानी, जुरा, कामना, को:अपा—पे एक अवस्त्रात्मानीते हेक्साओवे सीको को न्ते । इसके कर विकासीरमार्थे कवनारे के उत्तर हुए । से करों करते अनुस्ते पर केत्याच्यात दिने हुए में। यह अब्दुत करवार देशकर दल्कोंने 'यह गेरा है, यह नेरा है' हेता बोलवार क्य क्या। तहरूत बार के व्यंतिर एक विकास देखका क्रमी निकास । को इसमें से रिन्ध । क्रम समुद्रात बहुत कथन किया कथा, तथ अरोपेरे काराबुद्ध विश िकान । करावी गामने ही लोगोंकी बेराना बाती बड़ी । कार्या अर्थको परवार संकर्त को अपने कारमें पारण का निष्य । तथीले ने 'सैन्स्कार्ट' नामसे प्रसिद्ध हुए । यह का देखका कुमानेकी आहा हुए भग्ने । अनुस और स्व्यूनीके विस्थे उनमें बहुद बैर-विरोध और पुट हो नवी। जुले सुसह करकर किए मोदिनी चीचा केर बारव करके दानोके कार आहे । पुरानि अस्ती पाका व कारका पोर्श्वनीकारकारी कार्यको अनुस्था पत्र है दिया। स्ट एतम है सभी में कि लेंके कारण लड्ड हो रहे हैं।

इस जनार निम्मुक्तनान्ते मोदिनीसा बारण करके हैन और कम्मोरो जन्त औन निमा और देसताओंने उनके पास कारत को पी निमा। जारी समय प्रमुक्तना भी देसताओंका इस करण करके अनुस्त पीने सम्बा। आपी जन्त उसके कम्पाक ही पहुँचा वा कि कन्नत और सूची जना भेड़ तिर बाट काम। राष्ट्रका पर्वत-विकासे काम तिर बाजक मारत किया। और जो प्रमय सुर्वित स्थान रेजाती

कारण दिया। प्रगामान् विन्युने तुर्थत है अपने पालते जानक | वैत्यानों प्रमे । अस्तर विन्य चनुन देशकार वनायकने अपने नामकाने समार नामने तथा और सरका पद कृत्योगर चेत्रस्था यह आवास्यानी महीतरीया दूसा। प्रणान्



रिकार सम्बो कैनाव हुआ सम्बद्धने सन्द । वर्णने ध्यूने साम क्षेत्रक और कुर्वका कैपना कामी है गांध । कियु-परमान्ते अपूर विकरिते यस् सरमा धेवनिया साम विक और वे बच्च-तराहों अध्ययने उत्तर-तत्त्वोरी असुरोकी हरते स्मी। क्या, कारे क्रमुक्ते सामा केवा और समुख्या कांश्वर संदान किंदु करा। व्यक्ति-वर्तिके अव्य-तक वरहने क्रमे । परावान्त्रे पारसे कर-पुरावत कोई-कोई अपूर पूर क्रमाने एने से पोई-पोई क्रेमानेनेट पहल, सांक और महारी पायान होयार परतीयर लोगो समे । क्यों ओस्बे की अत्यान सुनवी चार्च कि 'चर्च, कार्च, बैक्रे, निय से, केल करें ।" इस प्रकार करेंबर कुछ से है का मा के विकास मान्ये से उस 'सर' और 'सक्कर' युद्ध-सुनिते हैं कमा है।

क्रामाने प्राचीतः का स्थानाने कृत-कृतातः क्साबीको समान स्थान-स्थान असुरोक्त संदार करने सन्ध । अपूर भी आवश्यको स्थ-स्थापर पर्वतीको स्थति हेन्सस्योको कुरू करों के । इस कुरू देवकियेगरित उत्ते नागोंके हुना कांक्रेक्ट क्षेत्रिको पाल-सम्बद्धार वर्षे आसारको निवा दिवा और कुर्रालको काल-पुरस्की बन्द केलेको काले जना । कृतने प्रतानेत क्षेत्रर अञ्चलन कृतने और समुद्रने क्षित गर्ने । वैकारकोची चीत हुई । जन्दरासम्बद्धे प्रमानकृति क्कान्यर पहुँच दिन गय। सभै अस्ते-तस्ते स्वत्सा न्दे। हेन्सा और इसरे वहे आन्यते सुरक्षित रक्षेके तिले अनकर् नरको अनुस ने दिया। यहे समुक्त-प्रयासी

# कड् और विनताकी कथा तथा गरुइकी उत्पत्ति

का भी है, आवनो सुन हो। इसे उद्देशक केंद्रेयो देशकर | देखकंक है। तुन इसे विका रंगकर सम्पूर्णी है ?' काहे

रमध्यमं कार्त <del>हैं कें</del>क्सरें। क्रिके ! अपूर- | कहाँ मिनाओं कहा—'क्रीन ! कार्तरें काओं तो पह क्षणांकी का करा, जिसमें और तक केंद्रेके करक हैंनेकी | केंद्रा किस रंजना है ?" विनातों कहा 'वदिन । यह सकतन नेता—'समस्य ही इस खेड़ेका रंग समेव है, परंतु हुँहा बातरी है। आओ, इस बेनों इस नियमों बादी समाने। बारे कुछारी बात टीबा हो से मैं कुछारी कभी भी और पेरी बात टीबा है से तुम पेरी सभी खान।' इस अध्यर सेनों बाते



जारतार्थे कर्या तरावार और दूसरे दिन चेड्न देशलेका विद्वार करते कर करने गर्थी। कर्ड़ने विश्वताको चेड्ना देशके विधारते अको इस्तर पुरोको का नाता है कि पुत्रे । तुम्तरेग जीत है बाले बाल करवार क्री-सकाको क्रिक क्या त्ये, विश्वते पुत्रे वार्ती कार दिया कि 'पाओ, तुम्तरोगोको अधि करनेवाको सर्व-यहर्गे कारकार कार कर देश।' का किरांगोनकी कार है कि बाहरे अपने पुरोको है देशा कार है क्या। का कार सुनकर क्यानी और साम्बा केवाओं कार्य क्या कार है वार्त थे। के बुल्तांको कर्य क्या पहिल्लो के। प्रकार है गर्थ थे। वे बुल्तांको कर्य क्या पहिल्लो के। प्रकार क्या हिल्लो हरित कर क्या है हुला। 'को संग्र कुल्ते क्यांका अधि। करते है, उन्हें विश्वताकी और से क्यानी प्रकार क्या किस कार है।' ऐसा क्याकर स्वारतीने की क्यानी प्रकार क्या किस करन

कर्, और किन्दाने जायसमें दानी करनेकी करने करनकर को रोप और आनेक्सें का एत किदानी। दूसरें किन आक-कास केते ही निकाल केदोको देकानेके किने होनों का वहीं। इस्पेट परावर कियार करने। यह निकास किसा कि 'इने प्रशासी जाइसका परावा करना काहिने। वहि उसका बनोरण नुस न होता तो यह प्रेमचान क्षेत्रधर रोजपूर्वक हुने काल हेनो । यदि इक्का बूरी हो कालमी तो उद्धात होतार हुने अपने कालो जुक कर देनो । इस्तरियो काले, इस्त्रिय क्षेत्रधरी बुक्तो काल कावल विकट गये, विस्तृत व्यावक से उद्योगकार द्वाने साथे । इसर काबू और विश्वत काली स्थानकर शास्त्रद्वानार्गित अनुसार्थ देशके-देशके बूली भार काले सार्थी । योगी हो कोलेक काल व्यूक्तिय सीचे काल गहीं । अहीने देखा कि कोलेक साछ वारित से कावलारी विज्ञानकी सामन कावला है, परंतु देखा



कर्मा है। यह देशकार किसार उद्धार हो गयी, कही उसे अपने कृती क्या रिच्या।

क्रमण पूरा होनेका महानेकार्ग गरम् माराधी स्थापनाके क्रिया है अन्या करेड़कार उसने क्रमूर निकरण साथे। इनके नेकसे विकार्ग जमानंकर हो गर्नो। उनकी पाणि, गरि, हीहि और मृद्धि निरम्बण थी। नेव विकारको प्रधान गरि और प्राप्त आफ्रिके सम्बन्ध के ऐसे कान पहले थे, पानी पुरास क्षमानन है है। वेक्सानोंने सम्बन्ध अस्तिक ही पूर्व सम्बन्ध क्षम के हैं। उन्होंने निष्याच्य अस्तिकी प्रश्ममें पाश्वर अस्त्राची। वस्त अस्त्र हमें मनंब कर आपना पासो है? देशियो, क्षित्र माराधी कहा, क्षित्र माराधी स्थार क्षम्या आहे हैं? देशियो, क्षित्र माराधी कहा, क्षित्र माराधी स्थार क्षम्या स्थार है। है। अस्तिने कहा, क्षित्रमा प्रश्न है। इन्होंको देशकार कारकोरोच्ये प्रम कृता है। ये अपनेके नामक, वेपाउनोके | हितेची और आसुरोके छन् हैं । आय इनसे समयीय न ही : मेरे प्राप परस्कर प्रको दिल है ।" अधिके प्रका स्वाप्त वेकन



और व्यक्तिमें नव्यक्ती श्रुति की।

देशक और व्यक्तिको सुनि सुरक्ता नगर्गीने सक-'हेरे सर्वकर करीतको हेराकार को होना करना को थे. में उसक प्रकारीत मुद्रों । मैं अपने क्रमेंच्यों क्षेत्र और नेवन्ते क्या कर फेला है।" एक कोग अस्ताताकृतिक सीट नवे :

इस दिन विजीत विज्ञा अपने पुत्रके पान केंद्री क्रू भी, बद्दी को कुरकर का—'कुरे सकुछ बीत वर्गका एक हर्तनीय स्थान देखना है। यहाँ वू नुहों से बात (\* अन निरमार्थ प्रमुखे और परवर्गने भवाची जवाचे कर्मको अपने कार्योश केंद्र दिल्य और उनके अभीद्र स्थानको पहे। गरको बहुत क्षार पूर्वक निकारने बार में है। जीवन पार्विक कारण सर्व बेलेक हो गये। बाह्ये इनाडी वर्णक क्षेत्रके रही काव्यत्सको येक-वन्त्रको आवादित कर दिया.

कर्त हुई, तक इस्तें सुनी हो नवे। उन्होंने अपीद स्थानपर पहुँचकर क्रम्भावनर, क्रमेहर का आहि देखा, प्रवेक विदेश किया और सूच सेल-मुख्यर नव्यारे बडा-'तुमने से अवस्थि को कार कूल्पी सुदा-तुद्धा **ई**प दे<del>से</del> होंगे। क्षा औ और दियाँ केनों में करें।



कक्ष कुछ विकासे यह गर्छ। उन्होंने सोच-विकासक क्रवर्ग कराने पूज कि 'जी। युक्ते संबंधि आक्रावर परन्त क्यों करना पार्विये ?' विकास पाया—'वेश । इन सर्वित क्षाचे में कमी हर नहीं और दुर्वाच्यव राज्यों तीय बहुवी करी हो नहीं।' अपने साहके दुःशंते प्रवद भी कई दुःशी हर । इन्हेंने प्रतीते बहु-- 'सर्वगण । डीव-डीव बराओ । में हुई क्षेत्र-में बहु का है, जिस बतका का लगा है क्रमा भूगरोगीका कीन-एत प्रमान कर है, जिससे में और नेरी साम अस्तारी पुरू हो जर्म ।' प्रचीर सहा—'नाम 1 महि कुर करने परक्रमणे इसरे मैंन्से अपूर ता से से इम हुने और हुन्तरी जकको क्राल्यों पुत्र कर हैंगे।'

# अपृतके लिये गरुइकी यात्रा और गण-कख्यका वृत्तान

अपनवर्ग कारे हैं—क्षेत्रकार, क्रांप्ये ! सर्वोची कर | है कि कई क्रार्टिय कर / किस्सने थड़ा, 'बेट | समुहरे भूतकार प्रथमी अपनी पाला किन्तानों बहा, 'बाता ! वें | निकारोची एक बार्ता है। उन्हें सावार हुए अपृत है आओ । हापुरको कियो को को है। उसके पहले में का जानन कहा। एक कारण सरस्य रक्षण । प्रकृतका कर कारी र करना । में राज्ये हैर्स अवस्थ है।' मानुनी मानुनीमी असाने अनुस्तर का प्रेपके निकारिको प्रताक अस्ते कहे। प्राथिते क्ष्म प्रदास करते पेल्पे का पता, जिससे क्ष्मा करा मारने सन्ता। जो श्रीकार में पारनाओं कर भरे। कारकारि का-'वेदा ! बन्योन शहरत से से 7 शासक्त्रमानुसार कोचन के जिस बात है न ?' कावुकी कहा, 'मेरी मान क्रम्बार है। इस भी सम्बद है। अवेक मोचन व निर्माणे हुए दुना यहा है। वे अन्ते कारणे क्रुक्तिकारी क्रुक्तिके रिको प्रतिक्षित क्रक्तिक अनुव स्थानेक क्रिके क पुर है। प्राप्तने पुत्रे निकारिक योगन करनेके हैंनी कह का, क्रांत अलो केत के नहीं कर । तक कर कोई ऐसी मानेकी बहु कार्युर, बिले सामार में अपूर सर सहे। कार्यकारी करा, 'केन ! वहाँ मोदी एउट एक विश्वविकास प्रदेश है। अने एक सभी और एक व्यान मात है। से होने कृतिकार कई क्या एक कुलेंद्र पड़ है। में अब भी एक-पूर्णने कानी जो है। अबार, कार्फ पूर्वकार्य क्या पूर्व —

प्राचीन प्रशासी विभागत् सारक एक को प्रोची स्त्रीन थे। क्ष्मा क्षेत्र पर्य या पक्ष करते सुरक्षेत्र । कुर्वाच्य अस्टे क्षाती को काकि प्राप्त को स्थल कावा का का मिल describe find unit erent : fereneuer und ubb regis पाए, 'शुक्रीच ! जनंद सेव्हें कारत है सेन सन्तर मैत्याच पात्रवे हैं और मैत्याच क्रेरिक्ट एक-पूजरेंड सिरोची के बाते हैं। तब कह भी करते अलग-सामद दिया कर बाते हैं और पाई-पाईने के कुछ है। है। कुछा का कार्य है कि को हुए यह के विका-विकास कैर-कर का के है। अवन-अर्थन होनेसे सम्बद्धा जन्मद अन्तरभाग है जाता है। क्ष्मेंकि किन में एक-सुरोक्ट भर्मक और सौक्रीका स्थान मही रक्तो । इसेने क्लान भारतीर अस्मानी कालो अवसे नहीं बन्धे। के लेप कुर और क्रमके अनेक्स साम म केवर परावर क्या-कारोको सन्वेतको स्टिसे देशको है, काको प्रसुपे रहान करिन है। तु चेद-वानके सारान ही का असम करना पहला है। इस्तीओ या, छो इसीओ चेरे प्राप्त होती।' इस्तोबने बहा, 'मैं इस्ती हेर्डन से कुर मार्थका क्षेत्रे ।' गर्छ । उस प्रकार केवी नाई करके स्थानकी क्य-सरोको पार देवर सबी और ब्यून्स हो गये हैं। यह प्रास्परिक हेरका परिकाम है। में क्षेत्रों क्रिक्सकान करा जब भी जरपाने सको रहते हैं। इसी कः चेनन केना और बाह्य बोक्स सम्बद्ध है। बहुब्द सेन बोक्स केन और सा मीजन नोता है। से मात्राको एक सुरोक्त कल होनेके हैं।से

क्रमाने है में है। हुए मानर का ऐसे भनंबर क्यूओंको क्रा बाओ और क्रमूत है काओ ('

व्यवकार्यको काहर आहा काले नव्यवधी का क्रियेशवर को । अनुसे एक नवाले क्रियेको और क्रुपेश व्यवकार नव्यव



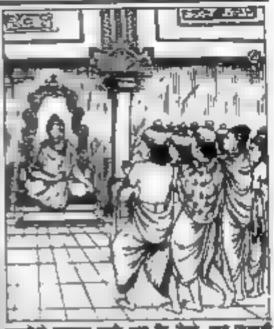
Bres कर्ता आवश्यको स्थान केले स्कृतित असरक शोकी क पूर्व । वहाँ सुकारियोच्य बहुत-में केन्स्य स्थानक में से । से respect don't if you work refer only for out price कोड़ों का का व कार्र । उसको भवनीय वेहरकर गरदानी कुली और निकास करे। जार एक बढ़-ता करवा था। बारायाने प्रशासीको प्रशास केरते उससे वेसावार बाह्य कि 'कर केरे के केवन राजी कावानर बैठकर हानी और कारको का स्ते ।' को है काइनी सामी ज्ञासायर बैठे स्ते ही का प्राथमका है, नहीं और निर्म सनी। प्राथमीने विको-विको उस प्राप्तको काम विका और गई आहर्पने तेला कि कार्रे केलेको और मिर कार्ये पार्टिसरण गामक प्राचित्रक स्थान को हैं। भवक्षणीने सोच्या कि की प्राची। कि क्यों हो से करवरी क्यांनें पर अपनेने । कर क्योंने प्रधटनार जनमें बोमरे कुल्दी प्राप्त पंच्य से और इसी समा क्ष्मकारे पंजीने काले जनसङ्घे जाने रहते। वर्षी पी बैहनेका एकन न सकत से सम्बन्धन में सहे हैं हो । उस समय अनेत पंजीबर्ध प्राप्तरे प्राप्ता भी बर्डिंग उठते में । मार्ग्डिकन ज्यपिनोंके जनर क्यापास होनेके कारण ने कहीं बैठ न समे

और व्यक्ते-व्यक्ते प्रकारम्य पर्यक्षारः पर्यः। कायरप्रीते अहे का अध्यक्तने देशका वक्त, 'मेळ । व्यक्ति व्यक्त व्यक्तन्त्रः



साम न मर केंद्रमा । सुर्वको विकास परिवार करका संस्थेनको सामित्रमा आणि हुन्यु होकार काई तुन्दे कार म कर है।" पुसरे इस अकार सामान काईने अगन्द्रां, सामित्रमा अपित्रों है आर्थना की, 'सरोकारों । राज्यु आर्थने वैनके विको एक प्रकृत् सामि सरफ माहता है। आर्थनी को अवस हैरिको ।" साराविकार स्थितारे कार्यों आर्थना स्थितार सामित्र संस्थुकारी सामान स्थेत है और सामान सामित्र से और सामित्रमार सामे गये। राज्युकीने यह सामान विकास से और सामित्री सोटोक्स केंद्रसर हानी हमा सामुक्ती सामान ।

पहलां। प्रश्निका पर्वतको सा पोरोसे ही उपस्थी और हो। इस समय केलाओं देवा कि उसके पाई पर्वका समाप हो भी है। वेलावन हमारे ब्रह्मकरियोके पान पर्वका पूछा—'प्रमान । पर्वत्वका प्रकृत्यो समाप वर्षो होने समे है। पोर्ड ऐसा प्रमु से नहीं विकाली पहला, के मुझे प्रकृति जीत सके।' क्लासियोचे पान, 'हना! हुएसे सम्बद्धा और प्रमासी तथा प्रकृत पर्वकाय प्राथिके सम्बद्धा केरा प्रमासी तथा प्रकृत पर्वकाय प्राथिके सामेक्स कि प्रमान पर्वा अपने सम्बद्धा समाप प्राप्त कर पी साम प्रकृत है। अध्यक्ष है असमें प्रमुख हर के प्रयोगी प्रति है।' क्लाक्सियोकी यह सुनगर हरते अपने



क्षानीको सामग्राम करके बाह्न कि पैस्ते, गरंग परासकी व्यक्तिया परम् पाति उत्तर के सामग्रे किये का पह है। उत्तर को। यह सामग्रेक अनुक र के पाने पाने।' सभी देखा और पाने हुए की अनुसक्ते केनार समग्रे प्रश्नेत क्षा कर गरे।



नरक्षरे कहाँ क्षेत्रके ही पंचीनकी हमाने हमाने कुछ कारणी विश्वेतका कारो-से हो गये १वै सुराते क्षात्रका पृतु-से का गये। साथी रक्षक काही कारण होनेसे कर गये। ये एक क्षात्रका गरकारे देश भी भी क्षेत्र । साथ सर्व श्रम हे नगः । चीच और ईनोच्ये चोटले देवकाओंके प्रशेष करीता है गर्ने । इन्हों शहरते अद्या है कि 'हर वह सुरक्त रखा करा है। मा पुलाश कर्मक है।' बाबूने बैका है किया। बारों ओर कारत हो गया, देखा करत कार करने रागे। प्रस्के अधे-असे ही नरकार उनके प्रार सा दिने और आकराने कारे भी की पहेंच गरे। देवनाओंचे प्रकारोंने अपनी मठब वरिष्य भी नियरिका मही हुए। उनके अञ्चलकाने | ब्रोटा-सा सर्वत भारते में और साने मने।

विकास कर विकार परकोर नेकों और बोकोकी कोटने वेनाहमोदी कर्या गर्थ, प्रशेर क्रूपरे समस्य हे नवा । ने काराबार कर्ष ही किएर-विवेद हो गये । इसके बाद नक्ष आने कहे । अहाँ ने देशक निव अध्यक्ति चारों और आनकी प्रमान-प्रमान प्राप्ते का रही है। अब भारतने अपने पारिएमें आठ हमार एक की बैंद्र संभवें करा स्थाननी नांग्रोक पान पीका को बक्कारी हो आलार जोता दिया। अति पाना होनेकर

#### गरुइका अमृत लेकर आना और विनताको ससीमावसे हुआना

इसरकार्य कार्त है—पूर्वची किरलेंक समान हम्मान और पुत्रकार प्रशेष वारण करके नकारे को बेनके अनुबक्ते कारों होता किया। उन्होंने कई देखा कि अनुकोर कर क्या मोहेका पक्त निरमार पून का है। जनकी का कीची है, कारों सहसों करने हुए हैं। यह अनेवर यह दूर्व और शामिके समाप पान पाना है। समार बाग है का अनुसार रहा । गुरुवनी पहले भीता पुरलेका भागे देशने थे । एक क्षानों ही क्योंने कान्ये क्षरिएको संस्थानक विकार और पार्काट आरोंद्र बीच होबार भीवर बुक्त वर्षे । अन क्यूंनि देखा कि अपूर्वको पहाले दिनों के अनंबर हार्ग निवृत्त है। जनके राज्याचारी चीचे, चमकती आंत्रो और आधिकी-ची चरीर-कारित को। करवी पृष्टियों ही निरम्बा सहार होता का। मध्यानि का प्रोक्तार असी अभि मंद्र कर है। और पंजीदे पर-मायद को काल दिया, पान्यों केंद्र कार और बढ़े बेन्से अपूर्णक रेकर व्यक्ति का प्लेड क्योंने प्रसं अपूर नहीं किया। यह, साम्बरको स्थाप सर्वेक पास पात छिये।

कार्याको को किन्तुन्तरकात्रो वर्धन हुए । अवको अन्ते शमृत प्रेनेका सोच नहीं है, यह प्रात्कर अधिकारी कार्याद क्रमार बहुत प्रसान हुए और क्षेत्रे, 'नाव्ह । में हुन्हें कर देख कारता है। परवाही कहा भीग को ।' नावारे कहा, 'कनवर, ! इस हो जान पूर्व जपनी पंजाने हरिएने, इसरे में अवृत कीर किया ही अवर-अगर हो बार्ड (" जगकारों कहा, 'अवन्त्र !" भरवने कहा, 'मैं भी जानको कर देश कहात है। चुंडले कुछ मींग लेकिने ।' यगकान्ते कहा, 'तुम मेरे सक्तर कर करते ।' परको 'देस्य ही होना' प्रकृतन करवी अनुसरीसे अनुस सेकर माधा भद्रे ।

क्ष्मान इसमें अपि सुत कृषी थे। उन्हेंने नाहके क्या के बार्व देख कोओं पाका यह पालगा। गार्की कार्य केवर के हैंगों हुए बोक्स कारोंने बहा—'हुय है Saved gooded my was wer & well streetle first & अवन्य एक वंश क्षेत्र केन हैं। हम जाना भी जन नहीं प क्योंने। क्यानाओं को मन्ति को नीव की है। गळाने अन्यत्र एक पंत्र नितः क्षितः। को देशकार लोगीको बहुत क्षारम्य पुरुष । सम्मे बहुत, 'जिसमार बहु पंजा है, सम पक्षीचा जान 'कुरन' हो ।' इससे परिता होबार पर-हो-सन क्या, 'क्या है का कामानी पत्नी है' अहींने कहा,



'पहिल्ला । मैं कारण पहला है कि हुम्में किल्प का है। | कारण समेरे से साने : स्मूक-कृत्वेंने स्कैत्वर क्रमेंने देसा साथ से दूजरी निवास की बाहत है। बाहरे बहर, 'क्रियास 1 आयके प्रधानसम्बद्धाः समाची निवास को। व्यक्तिः सम्बद्धे एक नहाँ ? असे देशे असे प्रयोग ध्राप्ति. कारके उद्येश संस्कृतीको दृष्ट्रिने सन्त्री नहीं है। जान पुत्री दिया परस्कार पार को है से में निकास सामान की समानवार है कि वर्तन, कर, संबंध और बालाईस आहे पृथ्वीको उना क्रके अर क्षेत्रके अवलेकेके सक्षे एक पंतर काबर में किया परिवार का सबका है।" इसने पहल 'आरबी बार बोसरी असे साम है। आप राम मेरी परिद्र विकास प्रविकार क्योंकिये। यदि आपको अपूर्वाची आक्तुमध्या न हो हो मुझे है हैनियों। आर यह से माना कियों देते, में क्षेत्र बहुत कुछ होते। प्रवासीने पाता. 'देवराज | अपूर्वको से पानेका एक फारण है। वे इसे विकासिको निरातक भारी भारता है। में हारे मार्ग रहे, नाहिर मान कर राज्ये हे प्राप्ते क्षत्रा क्षेत्रर बाह, "गाह । सुराते रीहर्माना पर से स्ते ।" स्थानको सर्वीको सहस्र और उसके क्लों कारन हेनेको नामध ह-सक मान्य हे अन्य । क्योंने का गाँगा — 'वे काळान् तर्ग है मेरे चोकतारे कायते हों (" देवराव्य प्रचले करत, "त्रकारत ("

क्रको विक्र केवर नक करीड अरुवर अने। वर्ड क्राबरी पहल भी भी। उन्होंने प्रत्यका प्रकार करते हुए सर्वेके क्ष्म, 'स्क्र सो, में अपूर से शासा । परण मीने वाली ना क्षते । मैं इसे क्षत्रीयर एस केत हैं। कान मान्ये परित्न के क्षे दिए को भीगा। अस कुलनेगोंके कामकुरतर नेत पता क्षतीकाने हर गयी, क्योंकि की तुम्हरी कर पूर्व कर हैं है।' करोंने जीवार कर रिन्य । क्य सर्वनम करकारो मरकर कान करनेके रिन्ने गर्ने, तब इन्द्र अनुस्थानक के अन्य का स्थानक जो या। उन्होंने संबक्ष दिन्य कि हमने



प्रियक्तो क्यो प्रयोगे हिन्दे के क्या दिया हा, जीका का बात है। किर को सन्तानार कि कई अन्ता रसा गया था, प्रवर्तिको सम्बन्ध है प्रतर्ने करनार प्राप्त अस्त सन्त्र हो, क्षांचे क्षांचे कारत कर किया। देश करते हैं अन्तर्भ क्षेत्रके केन्द्रे इसमें हो गये। अनुस्तर पर्या होते क्षेत्र कींक कर याते सार । तम पाद कामान क्रेकर अवस्था असरी माताके साम रहते हतो। ये परिवर्तन हर, रूपकी क्रीति करते और कैल गर्म और बता सकी हे नहीं।

#### शेवनागकी वर-प्राप्ति और मध्ताके शापसे कवनेके लिये सर्पीकी बातचीत

हीकानी पुरा-स्तारका । यह समेनो के भार अस्तिक के गर्थ कि यात करते को जार दे दिया है, जन उन्होंने उत्तरे नियानको नियो क्या विका ?

उत्तरकारी कर-का सर्वेषे एक क्षेत्रका भी थे। क्टोरे का और अन्य सर्वीका एकर क्रोड़कर कठिन कराया प्रताम की। वे केवल क्या केवर को और अपने सामा पूर्व प्रत्य करों थे। ये अपने इन्दियों कार्य करों प्रमाणक, व्यक्तिकार, पेयाने और विकास आदियों तरहरि एक्क्क करते और परित क्षेत्रे तथा करोकी

बाह्य भी क्षती है। इक्काबोने देखा कि सेवनानके प्रारीतक गांक, जन्म और माहिनाँ जुन्हा करों हैं । उसका रहवा मैने और करका देखार में उनके पन अने और फीर, 'बेच ! दूर अपने के राज्याने अवस्थे सच्छा को का ये हे ? इस चेन राजनावर महेरन करा है ? बहेर्ड अवर्थ देशका करन क्यों क्यों क्यों ? कारकारे, क्ष्मारी क्या क्या है ?" हेकारे बहु, 'लगवन् ! मेरे सब पाई गुर्व है। हार्यको में उनके साथ नहीं क्रम कारण। जार मेरी अंग इकान्य अनुष्रेपन क्रीकिने। वे प्रमुख एक-क्रानेचे प्रमुखे क्राव्यन सन् करते हैं, विकास और कालों कुछ पान क्या अवनाते हैं। सभी हैं। पुरारियों में उसने उत्तरार सराया कर पह है। विकास पान परंद निकारोह हमारे पाई हैं। अस में स्वाय समों पाइ परंप औद हैंगा। पूछे किया है से पूछ पानकी कार, पेटर | पूछारे हमारे अवनीती कराह सैनी पाई है। सामार्थी अवस्था अवस्था करवेंगे सामार्थ में कार पाई विवासी का पूर्व हैं। असह, मैंने सामार्थ अवस्था के कार पाई है। उसने हम पाई है। असह, मैंने सामार्थ अवस्था के पाई पाई मूर्त करते । मैं हमार अस्था है, क्योंक औन्तरायक हमार्थ मूर्त करते कारत है। हमार्थ मुद्द साथ ऐसी हो करते थे। मूर्त करते कारत है। हमार्थ मुद्द साथ हमार्थ है कि नेते मुद्द सर्ग, हमारा और कार्यन्ते संस्था थे।' अस्थानी पाइ,



भूगे । में पुन्ति प्रतिन्ते और मन्ते केनाने बहु प्रश्न है। वेचे सहस्रो पुन्न प्रकार देनार तिने एक कार करे। का करो पुन्ती करे, कर, कार, कर, तिहर और नरकि क्रम देनारे-केनार करे है। पुन्न के क्रम कार करन करे, दिस्से का सकत है कार ! केनारे काल करन करेता। में पृत्तिको हा प्रकार करन करना, तिनने का क्रिक्टि की क्रिंट कर करना करना करना करने हैं। वीकर कुछ कारते । हुए पृष्णिको कारण कारके नेता बाहा दिया कार्य कारोते ।' अञ्चानीके अवस्तानुकार क्षेत्रकार पू-विकारने अतेक कारके कीरो कार्य को और अनुसारे किसे पृष्णीको कारी ओराने मानकार जिल्हा कार्य है की और क्षातिको अर्थाल किसा है। अक्षाति अर्थाद कर्य, केर्य और क्षातिको अर्थाल कार्या कार्य कार्यनार और गर्थ।

कारता प्राप्त क्यांका कार्युक्त कारावे कई विनार हुई। वे कोको जाने कि पूर्व प्राप्तका प्रतिकार क्या है। उन्हेंने सानो प्राप्तकों के कार्युक्त किया और प्राप्त कार्या कार्य रागे।



व्यक्तियों कहा, 'प्यक्ति | व्यक्तिन कार्य है है कि मार्य हों हार है दिया है। कार इस्कोगीओ पाहिन कि सेंग्-कियारका उसके नियारकार उसन करें। उस क्रमेश प्रकार प्रकार है, पान् प्रकार कार्य की नियार कार्यने पर प्रकार हो जा कार्य करों की नियार कार्यने कियार क्रमेश हो जा कार्य कार्य की नियार करें। क्रमेश है, कीच है प्यक्ति क्रम, 'प्रकार हाला है। क्रमें क्रम, 'हम क्यों का्यर हैने कार्य है, नियार क्रमें क्रमार क्रमेशको निवार की क्रमें कार्य है, नियार क्रम है न होने करें।' क्रियोर क्रमें कि क्रमें क्रमें क्रमें-कार क्रमें क्रमार क्रम क्रमें क्रमें। क्रियोर क्रमें क्रमें क्रमें-कार क्रमें क्रमार क्रम क्रमें क्रमें। क्रियोर क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें-कार क्रमें क्रमार क्रम क्रमें क्रमें। क्रियोर क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें।' क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें

शास्त्र हेनेते से सारे कारण से सामग्रह से कारण है कुछ, जागेने कहा, 'हर कहार करकर च्याची कर सुक देते (" कुछ केसे, "इन चलकी सामग्री है पूरा सम्बेने (" कुछने बार, 'इन लालो आर्यान्योच्यो वेस सेने (' अपने सर्वेन कहा, 'सामुके । इस इस से बड़े क्षेत्र सकते हैं। सब भारतको को अच्छा रागे, बढ़ उत्पर प्रोत बोर्डिंग्से (\* कस्ट्रिंडिंग कहा, 'करें हो हुम्मनेनोंके क्रियार होना नहीं केंब हो है। इस विकारीमें अञ्चलकार्यक्त बहुद अधिक है। कार्य, इन्तर्वेश श्राप्ते विद्या ब्यारमा सम्बन्धको जाता करे और उनके अक्षानसर पान परे। जिल्हा प्रकार प्रमानेनोका केन हो, पहे काम करना है। में सबसे बढ़ा है। परस्तुं-बुरसांबी किन्नेकरो मेरे ही जिस होती, इस्तीको में बहुत विशेषक हो रहा है।

इन्हें दूस कुलका राजका रहा था। जाने का करों और बार्क्सको राज्ये सुन्दर कह है। 'कान्ते । जा प्राप्त प्रकार समाप्त प्रयोगका कर क्रम समाप्त औ है। असे भागके सपराचनो पानकर हो होत केन कविने। सानेके शाक्षणके काम नहीं कलता । इस विचरित्रों क्यानेके विन्ते में को बद्धता है, उसे आयानेन कारक्वेड सुनिये । जिस अपन माताने चंड शाय दिया था, जा। शचम डान्यर में करियर मेक्से है। पान था। यह बुर पान सुरक्तर हेन्सकोंने सहस्रकी प्रेस प्राप्त पदा, 'पानक | करोरक्षक पहले क्षेत्रक ऐसी कीन की होगी, को अपने पैहले अपनी सन्तानको क्रम है क्रमें दिवास्त ! क्रमें आर्थों की क्रमेंद्र वारम्बर समुखेतन ही बिह्ना, निर्मेश को बिह्ना; प्रत्यात क्या करता है ?" प्रकारोंने कहा, 'केवारओं । इस समय जन्मलें पूर्व कहा यह गरें हैं। में बढ़े बड़ेनी, इसको और निर्मले हैं। प्रजाने दिनके

रिक्रो की बहुद्धों देखा नहीं। इस चापसे शहर, पानी और कारित क्योंका है जा होगा। क्योंका वर्ष सर्राहर खेंगे। और पह को भी है कि समान नेहमें नरावार पान्के एक करि होते। अने क्रमा यम हेना आसीय। महै क्रमेक्का सर्व-यह क्षेत्र क्षेत्र स्टेने । इस सम्बर गार्थिक सर्वेक्ट क्राव्यस्य क्षेत्रस् ।' केन्द्राकोके पुत्रनेवर क्ष्यानीने और के बारताय कि बरावारको प्रतीका पर भी बरावार ही हेना । यह सर्वतन बाह्यकार्थ बहेर होगी । उसके गर्पसे क्षानिका क्या हेना और यह सर्वेको पुरू कोगर ।' इस प्रकार कार्योद काहे प्रकारी और देखा अपने-अपने क्षेत्रको करे को। हो, हर्गम्य शहरे । मेरे निकासी सारको क्षेत्र कार्याकार विकास कर पराचार अभिने हो क्षेत्र माहिते । में किस समय विद्याने समान भारियों नासना को, उसी प्रस्त कई ताल करनी महत है है। बढी प्रा States were fire

क्षान्त्रको कर पुरुष्ट सभी प्रमेरे प्रसंप निर्मा कार-'क्रीक है, क्रीक है।' बजीने असुविद जान कई रेन्से अपने व्यक्तिमार्थ एका वारने एने । अनके क्षेत्रे मिनो बाद क्षे राज्य-कावन हुआ, विकारे बास्तुवित मानवी नेवी (अंकरेवासी रक्ती) क्याची क्यों ( इस्स्टिये देवताओंने बाह्यीत नामधी auchtic पार से पायर निरम्ने की का पहला थे, मे क्रमच्या करणे बाह्री की। बाह्यमिले संबंधिये सरकारत चुनिक्की प्रकेशने निकुक कर दिया और उससे प्रदूर दिया है। पिता समय करवान साथि किया करन करें, इसी संबंध वीता-वी-वीता जावार पूढो वृत्तित करवा । इनलोगीके कार्यालयः को स्टेनिका स्थान है।'

#### जरकार ऋदिकी कथा और आसीकका जन्म

श्रीक क्षमें एक - सुरस्का ! आयो जिन करकार प्रतिका नाम तिला है, उनका नक्कार नाम बनो पड़ सा ? कार्य कार्यक अर्थ कर है और उस्ते आसीवना कर geig fine 5

इस्तान्त्रकोरे अञ्चल क्या जनका अर्थ है क्या, 'क्या' क्ष्मका अर्थ है करना । करनां का कि अपना करें। पाने बद्धा करून सर्वात् इस्त-बस्ता व्य । योके क्रांने कारण महर्के उसे जीर्ज-सीर्ज और श्रीम बना रिच्या ( इसीसे उपका नाय 'नामार' पा: कसुनि रागको स्त्रीत को पाने वैसी है है। जाने है अपने हरीरको बरकाके हुए होण कर तिन्या, इस्तरिको पञ्च भी पालकार बाह्यसम्बर्ध । अस आपर्देशको क्याची क्षम स्थिते ।

नरामक पानि बहुत है जेतत. इसकर्ग धरण धरके हरनाम्ये संस्था को। से विकास कारण नहीं काहते से। से कर, त्य और साम्बन्ध लगे को तब निर्मन होकर सम्बन्ध कारो कुमोने निकास करो। उन दिने परिविक्ता रमानकार था। याँका सरकारका निवय का कि नहीं भाषनात है, बारा, नहीं में उत्तर नाते। में परिवा रीमॉर्नि साबार साथ करते और ऐसे कांग्रेर निवानीका पारान करते, । विकासि का अर्थने । आप को कुछ हैवा रहे 🗓 वह सब विनको पालना विकासोस्य कुछोके हिंदी प्राप्त अवस्था है। वे केवल बाद नेकर निरक्तर रहते। इस उच्चर अख्य करीर एक-सा गया । एक विन कता करते समय उन्होंने देखा कि कुछ निरार मेंकेची और कुँद्र किने इस कोने एका से हैं। ये एक सामका विज्ञान प्रवाने हुए थे और नहीं केवल क्य भी यह था। उस रिल्केमधे स्थाने भी वरि-वरि एक स्था पुरुद प्रारं का । निवृत्त्व निपक्षद थे, कुम्ले और प्रश्नों थे । मस्त्रापने उनके पात कावर पूछा, 'आवस्त्रेण विक कार्यक विनोध्या राजपु तेवार राज्य से हैं, को तब पढ़ कारण मा पा है। आयरोज मौन है ? तम इस कारावी का पा: चारानी, उस अवस्तोग नीवेची और मैंद्र विक्री कोर्ने निर वानेने । आरलेगोको इस अवस्थाने देखावर महो बद्धा १:क हो रहा है। में आपनी क्या तंत्र जर्म ? आयनेन नेटे परमाने कीने, सीको अक्टा आने काले का विकास बाबारे का सब्दे से बारशायें । और से बाब, में बावनी हाती क्रमान्य कर केरर भी अल्लोगीको क्यान्य प्रकृत है। भाग आल महिन्दे हें

मिन्द्री नहा-'लांप को प्रदासरी है, इसरी पहा करक बाको है। परम् इससे नियति सरकाने काले नहीं दल सकती। तरकावा कर से इस्ते कर में है। परम् बंबायरायराके नाक्ष्ये कारण क्रम क्रम और नरकारें जिस हो है। अपन कर क्षेत्रर कम्मानक उत्तरे विन्ते विशेषा हो हो है. इसरियो इतारी राज सुनिये । इसलोध सामाना पानके शही है। वंशवरणक श्रीम से सामेर्स का क्रमानेकोर्स कीचे पिर गर्ने हैं। इन्तरे मंक्रमें अब केवल एक ही साहित का नक है. का भी नहींके बरवार है। उनारे अक्टबरके का उनकी हो गया है, जाका नाम मनामान है। यह बेद-बेद्यूनेका निवार के है ही; संबर्ध, बहुर और इस्त्रील भी है। उसने उन्ह्राके क्षेत्रको को संस्थाने करू दिल है। सन्दे बोई सई-बाद शक्य क्री-क्र नहीं है। इसीने क्रायेन नेक्रेस क्रेकर अन्तानकी तरह गाँधें सरका ये हैं। यदि यह अवनको वर्जी मिने से जाने का ज्यार कहार- 'कंक्सरे ! तुन्हरे दिल मीचे मूँह करके गर्नेनें स्थान के हैं। तुन विश्वक करके सम्बन करता करो : तक इसरे चंत्रके इसी एक अवस्य है है कार्याची । यह के अन्य प्रतानी यह देश के हैं जो प्रभारे मेंत्रका एक्टर है। इसारी संक्रमान्यरके के हकेन जा है को है, को प्राची को में को है। का अनको का है मातार है। यह कुतानेवात यह यहकार कार है। यह कुछ दिन कराव्यक्तो भी रहा कर रेगा, तक इसलेन और भी

नपामको प्रक्रियेण। कृत्य गरके यह बारसको कि आर कोन है और हमारे करानी तरह हमारे हिन्ने कई फोड़ा कर 量量で

निवरोकी बात सुनकर नतकातको का क्रोक प्रशा क्रमा क्रम के क्रम, अ्वेन क्रम बालीने करने जिल्लीने पह, 'कामलेन की है फिल और विशास है। मैं अरह-लेक्क अवस्था का अवस्था है। सामानेत सुर काराबीको एक देखिने और मेरे बारोबोन्स कार कारकारे ।" विश्ववेदे कहा, 'केट ! यह भई सीधानकी बात है कि इन संबोधकां नहीं का गये । परण, बारायको से सुपरे अवस्था किया को की दिया?" पास्काने करा. 'विक्षणत । मेरे अपने यह भारत विरायत बनाडी साही भी कि में अवस्था सामार्थका पाना करते जाते पात करते। देने अपने करने का का बंधाना का रिन्म का कि में बाची विकार को कर्मना। जन्म आयरोगोको उनने सरकते देशका की अवन अवन्यता विद्या पादा दिया है। अब मैं अन्यकोगोर्के विको निर्मानेत विकास समीत्य । यहि पक्के मेरे ही कारको कामा विता करूनी और यह भी विकासी इन्छ, तो में को पालिक कपने कीवार कर हैगा, मरणू असके काम-केपालक पान गाँ प्रकारिया । हैती सुनिधा विस्तरिया है में किया करेगा, राजक नहीं। राजकेन विका का क्षीनिये। अस्त्रेड कान्यानोड सिन्धे मुख्ये का होता और कार परस्थेकने सुराते होंगे'।

mener and Anthi per sont espec quilet विकार रूपे। वर्षपु कुछ हो उन्हें कुछ सम्बन्धार कोई उससे सकी कथा व्यक्त की प्रमुख से और दूसरे करें। सनुस्क क्रम्ब निलाई भी नहीं थी। वे निराम क्रेमन कार्ये नमें उसेर मिनारेके क्षेत्रके रिजो तीन चल बीरे-बीरे बोले, 'बी कार्यको प्रकार कार्या है। धर्म को भी वर-अंतर अवस्थ न्त्र क प्रकट जानी है, वे मेरी बाद सूने । वे वितरीका दृश्य निहर्नेह किने प्रस्की हेरनको सम्बन्धी बीच परि रहा है। विक कम्बन्स कर नेय है है, में निकादी तद पूर्व है तान और विवासे करण-सेववाड पार कुछन र चे, हेती क्या को अपन करें।' बादकि नतके इस निकृत सर्व कारणार्थ का समार समारको यह गई और उन्हेरे कान्य अपने कीन ज्यार विकासको बराहार परिचा समर्थित की। जनकार स्थापने उसके जम और परण-चेनमधी पत सने दिन अपने प्रतिकारे दिवति को स्वेचार जो मित्रा और चसमित्रे पता कि 'तरका रक

जान है ?' और प्राय ही गई भी बढ़ा कि 'मैं इसका गरक चेका नहीं करेंगा !'



सार्तिः नानि स्वाः—'हा व्यक्तिये सम्बद्धः यन के सरावात है और यह नेते सहित है। मैं इक्ता जन्म-नेकल और रक्षण सर्वता। जानोः स्ति हो की हो अक्ता रक सेत्र है।' सरावाय स्विते सहा, 'मैं इत्ता जन्म-नेकल की स्वीता, यह क्षां से हो है चूकी। इतके स्वितिक क्षा सर्व कह है कि वह क्षां का स्वीत सार्व न को। करेती से मैं इते अक्ता कोड़ हैता।' कर कारवार कार्तिको स्वाधे सर्व सीवार कर भी, तम में अक्ता का को। वह विक्रित्वंक विवाद-नेकार समार हुआ। अस्ताक स्वीत अपनी को। सरावालो साथ कार्तिक सम्बद्ध के क्षां कारवी को। स्वीत स्वाधे सिक्त न से कुछ करवा और म बावत । वैत्र सीवार विवाद और यह सामकार स्वाधे अपनी कोना करने स्वीत । संस्थाय और यह सामकार स्वाधे अपनी केना करने सार्ती। संस्थाय और यह सामकार स्वाधे अपनी केना करने सार्ती। संस्थाय स्वीर का सामकार स्वाधे सीवे नाने करने

एक दिनकी नात है। सरावार साथ पुत्र निकारों होकर सामरी करियों रोज़ों दिन पहलार सोने हुए है। वे हो ही है है कि पुर्वाताक समय है आया। साथ-मानि होना कि 'वरियों जगान करित अनुकृत होना का नहीं ? वे हहे कह उदाबार वर्गमा पाना करते हैं। कही क्याने का न नकते हैं है अपराधियों हो नहीं हो करियों ? क्यानेवर इनके कोनका पत्र है और न क्यानेवर कर्म-सोक्का। असाने नह इस निश्चापर क्याने कि वे काई क्यान करें, परन्तु इसे क्यानेका हम स्वक्रिये (\* अपि-मार्थिन वाह्य स्वयं स्वयं स्वयं) कहा, (कर ! इंडिके। कुर्वात हो या है। अकरन कावे क्षमा बोलिये। या अधिकेत्या भ्रमन है। प्रक्रिम दिया एक्ट हो रही है।' व्यक्ति करवार वर्गे । हो करे पारे क्यान होतं करियो सन्ता। करिये कहा, 'स्वरिको ! सुरे केस अपयान विका है। अस में हैरे का भी केंग। भारते आया है, महि का महिला। के इसमें या का निक्रम है कि में। सेते स्टॉनर सुर्व अस्य नहीं है अबड़े थे। अच्छन्डे स्थानन छून अका की रूपता। अस में कार्कन हैं अपने परिवर्त क्षाची केल-केनी केंद्र कारोकाली बात सुरकार करि-नि पहा, 'परावर् । की अववान करनेके रिले अपने भी रूपन है। आर्थ्य पर्वता सेप पे हे, नेरी को दक्षि थी।' जंगकार समिते कहा, 'एक कर को पेक्से निकास शब्दा, व्या भूता नहीं हो समाता । मेरे-हिंदाको जीव इस अवस्था अर्थ से प्याने ही हे सुन्ती है। क्षा मेरे करेके कह अपने महीते महत्त्व कि वे करे को । यह भी बद्धना कि मैं नहीं महे सुवाने रहा । मेरे

क्षांके कर हुए किसी जकराकी किया गर करना।' व्यक्तिनकी क्षेत्रसम्बद्ध हो जनी : उसका बुंद सुक्त नया, कनी महाना हो जनी । अस्तिने अन्ति पर अस्ते। अस्ते



कीको प्रकार मीरण मरमन सम चौड़ कहा—'कनीह । शुक्त मिलनाकको यह प्रोडीने । मैं मर्नार नगर प्रकार मानके मिन और विन्ने संसम् याती है। मेरे मान्ति वृक्ष प्रधेवन रेक्टर नायके सभा मेरा विवाद विक्रम था। अभी का पूछ नहीं हुआ। इसरे जाति-माई काट्-कारके कारते कार है। अगमे एक समान जाना होनेकी जानावाला है। जाति? इसरी जातिका वारावाल होना। अन्यक्षा और नेस संस्थान भी निवास नहीं होना जातिके। अभी मेरे मान्ति काराना भी तो नहीं हुई। बिट अन्य पूछ निरमाण जानावाल होएकर वर्ती नाम पाइने हैं?' जातिकी यात सुमान कार्यका प्रकृत दुस्तरे केने जातिके समान तेकारी वर्ता है। यह पहास प्रकृति वर्ता माने माने सामन संस्था पर्य है। यह प्रकृत कार्यका प्रकृत

मिने मने हैं स्ट्रिंग्स अपने मई महर्गिके मह गर्नी और उनके पानेका स्थानकर सुराया। यह अधिन महन्न सुरावन कर्मुकियों यह यह हुआ। उन्होंने सहन, 'महिन! इन्ने किस अंत्रपत्ते उनके साथ दुखरा निवाद किया था, था में तुनों कर्मुक ही है। यह उनके हाए दुखरे राजेते पुत्र हो कथा से नागोका काल हैआ। यह पुत्र स्थानकोंट कथा से नागोका काल हैआ। यह पुत्र स्थानकोंट कथा प्रवित्त ! तुन उनके हाए गर्नकों हुई है २ ? हार वाको है कि दुखरा निवाद विकास कही। उनकों व्यक्ति पर्याक कर भूतना अभिन नहीं है, जिल को अनेकालोंट परिवादों देशने हुए की यह उस विकाद है। में सामा है कि क्या उन्होंने एक बार वालेक्ट बार सह है। में सामा है कि क्या उन्होंने एक बार वालेक्ट बार सह है। में सामा है के

पुने कल न दे हैं। कील ? बुन सम कर पुनने कहे और मेरे इसमें का संगठका कीए निकार हो।' कहि-पतिने करने कहे कराकि जनको कहा बैकते हर कहा, 'नहीं। की की बनो का कह कही थी। उन्होंने कहा है कि गर्थ है। उन्होंने कभी किनेत्रों भी कोई हुए का भी कही है। दिए इस संकटों जनकारकर से उनका कहार हुए। हो है कैने करात है। उन्होंने की उनका पुनने कहा कि 'नामकने ! अपनी उन्होंने की उनका पुनने कहा कि 'नामकने ! इसमें करी जात और पुनी अध्यान नेक्से पुन होता।' इसमें करी जात और पुनी अध्यान नेक्से पुन होता।' इसमें की कुनार कर्युक्त को तेन और उसके हैटों पुन करों का कुनार करात करने तथा और उसके हैटों पुन कार्य कारक नाकार करने तथा और उसके हैटों पुन

प्रमाण क्षाने क्षा क्षाने क्ष

### परीक्षित्की मृत्युका कारण

श्रीनेकानीने कहा—सुरक्षण | क्या क्योकानी क्रांसकी बात सुरक्षण अपने पिता परिक्रियानी मृत्यूनी सम्बद्धनी को पुर-ताल की जी, कारका आप क्रियानों कर्मन क्रीडियों |

अस्त्रामधीने कहा—राजा कार्यक्षणो साम्ये व्यक्तिको पूजा कि 'मेरे निकाल जीवनमें क्रीन-स्त्रे कहार क्रीड क्रूड की ? वे अवही पूजार क्रूड की ? वे अवही पूजार क्रूड कार्य क्रूड कार्य के ? वे अवही पूजार क्रूड कार्य के ? वे

मिनको नवा--व्यासक ! आरके दिया को क्यांक, स्ट्रार और अन्यक्तक थे। इन बहुत संक्षेपके उनका करिय स्वापको सुनाते हैं। आरके वर्षक दिया पुरिवाद वर्ष थे। उन्होंने काकि अनुसार अपने कर्यक्तकारों शहा वारों

कार्यको अव्यक्ती एवा की थी। उनका परस्था संपूर्णनीय का। वे सारी एकांकी ही रहा वालो थे। व उनका परेष्ट्र हैची का और न में ही किरमेंने हैंग करते थे। वे सबके प्रति समान होंगे रकते थे। उनके कार्यने अव्यक्त, असिथ, वैश्व, ब्राह—कथी अरामाने साथ अपने-अपने कार्यने कर्म को। थे। विश्वका, अन्तव, संग्ये, कुले और नरीकांके साम-कान्या कर उन्हेंने अपने साथ से रखा था। अस्थी प्रवा कान्या कर उन्हेंने अपने साथ से रखा था। अस्थी प्रवा कान्या कर उन्हेंने अपने साथ से रखा था। अस्थी प्रव कान्या कार्यके थी। वे को ही सीवाद और साथकादी थे। उन्होंने कृत्वकार्यने कन्न्येक्टी सिका अस की परेशी थे। विशेष क्या, वे साथके क्रियान थे। कृत्यकार्यके परिश्रीय होनेश्व क्ष्मा क्या हुआ का, इसीको क्ष्मा क्या वर्गकीया हुन्छ । में प्रस्का और अनेपालने को कुमार है। है को बुद्धिका, कांग्रेचे, विशेषिक और रेविनियुक्त है। उन्होंने राट वर्षत्व प्रजान पत्रन किया। इतके बाद सारी प्रकारों के सी करके ने पराचेक शिवार गये । कब बहु साम अवस्थारे प्रदा हुआ है।



कार्यकर्ग का - वर्षिको । आवर्षकोति हेरै प्रकार अंतर से दिया ही नहीं। हमारे संस्थेंद सभी राजा अपने पूर्वजोके संबाधारका कार रक्तकर प्रकार क्रिके कीर क्षेत्र होते आने है। में से अपने निजनी मृत्यूका प्राप्त करना प्याका है।

श्रीवर्णे क्या-प्यासम् । सामके प्रमाणका विका महाराभ मान्युकी लाइ ही फिकामके डेमी के। उन्होंने सारा राजकार्यं हम्भवेगोयर क्षेत्र रक्षा था। एक कर वे फिकार सोरपंके दिन्ने बनमें उने पूर् थे। उन्होंने बाजसे एक इरिन्को भाग और क्यांट प्रामीवर जानक पीका निरम । में अवंतर ही पैरान बहुत कुरावट जनमें इतिकाले ब्रैसने हुए बारे करे, करण को पर नहीं सके। में साठ करीर हो क्षेत्र हो, हस्तीको सह गरे और रूदें पूरा भी तम नहीं। उसी सबस उन्हें पूरा मुनिका सर्वेत हुन्या । ये मीनी थे । उन्होंने उन्होंसे उन्ह वित्या । परम् में मुक्त नहीं जेले। जा उनक राजा मुक्ते और क्यो-परि थे, इसरियों कृतिकों कुछ म कोलो देशकर क्रोंकित हो गये। उन्होंने यह नहीं बहुत कि ने अंबी है। इस्तिले अन्तर विरुव्धर करनेत विने बहुक्यों खेळते का । असी जीव्यक्ते वहाँ जा हो है और वस करना सक्ते हैं है

लॉर ब्हाबन उनके केनेनर करू दिया। मीनो पुनिने एकाके हर प्राच्या प्राप्त-पूरा पुरू नहीं बद्धा। ये प्राप्तार कारकारों के हैं। एक जो-दे-जो करें। उन्हें की प्रकारको और असे ।

केंग्रे करि क्योकके प्रकार कर का सूरी। यह यह तेवाची और प्रतिकारण वर । यह पहलेकारी सुर्दिने अपने बकारे केले जा का सुने कि एना परिवर्त मेर और निकार सकावाचे की निवास शिरमार सिका है से बा क्रोक्से आप-व्यक्तम हो पता। साने हत्यमें बात रोकार अवनों निकासी पान दियां—'निकारी मेरे निरपत्तव चिताने: केलेक कर हुआ और दल विस्त, उस दुस्को स्थाप जार कोन करके अपने विकास ताल वित्रके पीतार ही काल हेगा। रचेन नेथे करणाच्या कर देशे ।' इस प्रकार साथ देखा नहीं अपने विकाद का का और सारी बार बाद पुराची। प्रानीक मुनिने का एक पुरस्का अन्तर भी समाह एवं। आगोर विकाद कर अपने प्रतिकान हुने तुनी दिन्य गौरपुराको केल । मीरपुरूने अस्पार आरमेंद्र निरुक्ते कहा, 'हजारे मुख्येकी आर्थ्य मैंको यह समोश केवा है कि राज्य ! मेंहे पुरुषे आपको प्राप है दिया है, जान सामकार हो वार्ष। कामा अपने निवारे साथ दिनके बीतर ही आरको जात रेक हैं आको जिस सरकार से की ।



कारने हिन क्या दक्षण आ रहा था, क्या उसने कारकर रूपक स्थापको देखा । जाने पूछर, 'ब्राइटन केवल | आग

कारकरने कहा, 'क्यों काम क्रमा करियुक्ती व्यक्त होता है किया है। एक्सने अपने विद्यानी देश है और लांच अधिको मरानेश, नहीं का रहा है। मैं उन्हें हुई। वीतिक कर हैन। भेरे चौंद्र वानेगर से इसे उसे कार भी भी स्रोहत ( कारते मता, 'में हो रक्षण है। अन्य की क्रिकेट बाद का राजनी क्यों जीवित करना चालों है ? केरी शक्ति हेरीकों, केरे डेसकेंड बाद बार को वीर्वित को बर सबेने ।' वह बहुबर १६४वने एक पुत्रको हैत जिल्हा । जहाँ क्षण का प्रश्न करका प्रश्ना में गया। प्रतान प्राप्तानी अपनी विकास पानी जा कारको उसी समय जा-पद कर किया। अन कहा हा हा स केरताची अलेका के राजा। साथे कहा, 'के कहे, कुले के हो ।' लहानने बहुद, 'में हो बनके दिनों बहु का एह है हैं क्यांको बहु, 'इस का राजाने जिल्हा का केना बाह्रों है. प्राची के भी और पहिले की पानी' । पहाली ऐसा अक्रोपर करवार प्राप्ताय देवराँचा यन केवार और गरे। अर्थेद बार एक्क्स प्रस्तो अस्य और अली अस्पीद प्राप्ती की क्षे सम्बद्ध वार्षिक विकासे कियारे जानते कर का हिन्दा । त्यारका आवधा राज्याधिकेत सम्बद्ध क्रम । यह क्रम बड़ी दृश्या है। जिर भी अपन्ती जाताने उन्ने का प्रमा

ची बाद परेक्स किया है। अस बैसा अंबर सम्बंध, करें। कारेक्को सह—गरियो | इसको डैसोसे प्रकार

रकारी हेरी है काम और निर आका हत है जान की स्वार्यको स्था है। या स्था अध्यानेत्रीके विवाने पाने ? अवस्य है। कांग्रेने कहा अपने किया । यहि यह प्रकारको वन देवत न लीव देत से कारका मेरे वितासों भी बीचित कर के । अच्छा, में जरूके इशका एक हैए । फले जाए-क्षेत्र इस क्षमक कर से कारको।

क्षेत्रोरे का-महरूप । स्थापने किस पृथ्वते देस या, सामा व्यक्ति है एक प्रमुख कुली सम्बद्धियोके रिप्ते पक्त हमा मा। यह यह रहता और करावर केरीयेरे विकारिको पाल्या न सी । पश्चामानि वैकारिका पुरानी साथ पश्च करूप भी भारत है कहा थे। बाह्यको प्रथ-प्रधानो पुरुषे क्रम का में मेरिक हो गया। सहस्र और सहस्वकी कारबंध करेंने पूरी की और बढ़ीने सामार इनलेगोंकी कृष्ण को को। सन साथ इसलेपीया देखा-कर पराचा ---

#### सर्प-यज्ञका निश्चय और आरम्भ

2000को कर्ण ई-'प्रोक्सके अभिने । अस्ते | निवासी प्राप्ता प्रतिकार प्रत्यार कार्यकार्य का १८०० इथा। है बाद ब्रेक्ट क्य-वै-क्रम मूल्ये रूपे। खेळके कारण जनकी सम्बंधि और गरण स्वीत कारणे सम्बंधि आश्री महिले पर नवीं : वे कृता, कोक तथा क्रोकते करकर अस्टि महावे कृत क्राच्येक निरियो हावमें तार रेक्टर क्रेटे—'वेरे fen für wert gefeielt ge, de mit 46 french: पाला भूग की है। जिसमों कारण मेंने विदासी पान को है, जा क्राच्या क्यूबरो बहुल हेरोबर की पाल निश्चय कर लिया है। जाने लगे के विशास पढ़ा किया है, जाने प्रतिका प्राप को प्रका स्थापनाथ है। अने स्थापना अस्ता अस्ता का है कि अंतरे कारका अञ्चलको, यो जिन क्रास्त्रेके दिनों का यो वे और विनवेड आनेसे मेरे दिया सम्बन्ध ही जैकित हो जाते, यन देवर सीटा देवा। यह इसरे क्यो प्रभूका उन्हालक अनुगर-मिना करों और वे अनुवाद्धिक की जिल्लो धीनिय कर के स्टे इससे यह सुरक्षी क्या अभि होती।

मेरे निकासी कुरुने साथ सरकार मध्यक्रका हो है, इसरियों में कारो अन्ते निवासी पूर्वात सहस्र हेनेका होकार प्रता 🛊 ।' भविन्द्रोने बहुत्त्वन सम्बोधनाही हुए अधिहासह सम्बोधन Green I

अब राजा करनेवाकी पुरेशित और ख्राविकोच्छे बुलाबर बार, 'प्रतास कामाने मेरे विकासी किया की है। अल्बानेत हैना ज्यान बाराइने, बिमाने में बाहरा से सके। बचा साम-रवेग हेल्ट कर्न कानो है, जिससे में जा कर उर्वको क्यकर्ती अपने क्षेप सके ?' व्यक्तिमेंने बळ-'चनन । केलाओंने अपनेद रिक्ते पहरेलो हो एक सहस्रकार निर्धान पार रकत है। पद क्या प्रकारि जीव्ये हैं। वर प्रकार अस्तर अस्तर अधिरिक और कोई की कोगा, देख पीराधिकारि करा है और हमें उस पराची चिक्र पराच है।" इस्तियोगी परा सुमार करोकाओं विकास हो एक कि विकास हो अब तक्षक कर कार्य । एक ने इस्तानोंसे बता, 'में का बत कर्मना । जनस्थेन इसके रिके सामग्री संग्रह परिवेशे।" मानिका पान कर हे जारा और मेरे किए जैकित के जारे। | नेका महान्तिने आसानिकी अनुसार का-नका बनानेड

कंतना तथा क्यां करनेसम् बहाके रिक्ते सैंदित हुए।

इसी समय एक विकित करण परित हो। विस्ते काल-बीताओं काइत विद्यार, अनुकर्त एवं इत्यापन, सुनी क्या--- विस प्रकृत और प्रकृति व्या-व्याप नार्यकी विस्त जारन हों है, को देशकर का नातून होता है कि किसी सहराके कारण वह का कूर्व वह है क्लेजा। एक कामेकारे का सुरका हारकाले का वैक कि जुड़े कुनक बार्ड किंग कोई पहुन व्य-नवाओं न आने को ।

अन क्रांब्यको विकिते कार्न करण हुन। व्यक्तिन सको-अपने साध्ये एक को। स्त्रीवनोधी असि पूर्वे कारण प्राप्त-स्थार हो रही भी : वे काले-काले स्था स्कृतका मनोबारमपूर्वक प्रकर कर के थे। का करण सभी कर मान्द्री-पार करिये राते । अस केवले पार्व व्यक्ते, पुरस्कते, कारते, सब्दी स्टेंड रेते, के और कारेडे एक सुर्वाओं करोबते जानमें शिरमें क्रमें। स्टेब्ट, ब्यारे, बेटे, क्रीरे, को, को सभी प्रधानों को विश्वको हुए स्थान अपने देवरें शिले करें । कोई कर कोसाम सेने और कीर्-ओई गामके बार सरका संबे को अपर-धी-कार कुमाने कार्य कर से थे।

प्रत-दाने क्यानंती क्याकांत होता है। जीता क्यारता, पेलिने क्या प्रया एक्ट्रीया और निकृत जन्मई थे । क्षां का और विक्रीके साथ बाराओ, बहुतक, उन्तर, केकोत्, अतिन, देवन अपी क्रमा में। पून हे-नेका अपूर्ति के हे के को कारण हाँ आकर अति-कुकार्न रिय करते से 1 अर्थीकी कर्मी और नेकारी करती करते करते हती,

हिंको क्षेत्रीय राज सी, व्यावसकते देको बेहारकार हैकर | बढ़ी हिंकी कुर्वेच करो ओर किए सबी सवा सर्वीकी विकासको सामान है। उठा । यह प्रमानार व्यक्तने भी क्षता का कार्यात क्षेत्रम क्षेत्रम क्षत्रको कार्याने गया b काने बहा, 'बेस्तव ! मैं अपराधी है। क्यमेंत होमर आवारी प्रत्याने सामा है। आप मेरी दशा मोलिने।' इसले



प्रकार केवर पात कि 'मैंने कुए। है पहले मेंने पहले हैं म्हानोहे अपन-पान से तिना है। <u>त</u>ने सर्व-सार्व कीई कर नहीं । तम द्वापी यह हैओं ।' इन्हर्क बात सुरुवर स्थाप क्षानको अध्यक्षको है को लगा।

### आस्तीकके वर माँगनेपर सर्प-शक्षका बंद होना और सपौसे बचनेका उपाध

रहनेसे बहुत-से सर्व था है गये । केवल बोवेर्ट ही क्या हो । इससे बसाबि गुणको यह बाद हुआ। कारणको गरे रुगा इस माहत है गय। वहीं असी सीत वरत्वारको कहा, 'ब्राह्मित । येत सङ्ग-सङ्ग कर का है। दिवारे नहीं सुपती। यहर आनेते कारण नेहेक या हे की है। दुनिया पूर्व को है। करेना करा का का है। को देख कीया जार है कि अब में की विकास क्षेत्रण पर कामधी अवनी

हरकार की को है—सामेकार कार्ने समेक हात होते । किर महीना । इस बहाता की मोदन है । की इसी प्रापको रिले हुन्तर नियह नसमाद चरिते किया था। तम हुन कारनेकोची शत करे । अक्रमीके कवन्युतार तुकार पुर अवर्थाक इस सर्व-कामी के कर स्केश । यह महत्व होनेक भी हेत्र चेतनेक और कहींचा मानतीय है। उस दूप करते हमार्थणोब्दी रक्तके रिजे कह से 1' अपने पाईकी नार कुरकर व्यक्तिनको सरकारको सब बात बतलकर जलोको पाके कि ज्ञानिको देखि क्रिया असीको सवाको आहा हर्नेकार कर काहुकिसे कहा—'सरका ! आह कार्ने कान्ति रिक्रमे । मैं आको सम्बन्धान कहा है कि उस बावने सामलेगोको पुक्त कर हैस । मैंने इस-मिकासमे की कभी असाम-कावन नहीं किया है। इसकिने नेते कर बहुत म सब्दों । मैं अपनी बुध कार्यों सम कार्यकार ! उसम प्रसार कर हैना और के क्या के कर हैना । सामजी ! उसम प्रमार विश्वास की जिमें ।'



इस ज्यार वासुधि वास्त्रो आवासर वेवर अवस्थि सर्गोंको पुरू करनेके सिनो संप्रकारतमें अनेके अंत्रको कर पड़े। क्यूंने वहां पहुँककर देखा कि पूर्व और अधिके स्टब्स देखाडी प्रभासकोते बहारात्रक वर्ध है। हारवसके उन्हें बीतर प्रानेते केस दिया। सब के मीकर ज्येत करेके दिने बहारत पहिंदी करने सने। उनके हरा बहारी देखी सुरक्कर करनेकको उन्हें बीतर आनेकी अस्त्रा है है। सरात्रीक बहा-न्यकने बातार बनायन, अस्तिक, स्टब्स्स्ट्र तथा अस्तिकी और की पाति करने सने।

आसीयके ह्रस की हुई सुधि स्त्यार एका, सथान्य, अहिंग्य और शर्ति, राची प्रस्ता है को । सको स्वेत्रकारी सन्द्रामार कालेक्स्मी बद्धा, 'नावीं का कालक है, किर की बात अनुसारी पृद्धीके समान कर का है। मैं इसे कालक की, वृद्ध मनता है। मैं इस मानवाको कर केन कालक है, इस दिक्सरें आयानेगोंकी कवा समाति है?' स्वासकोने कहा—'असूना बादि कालक हो की भी सकाओके निर्म

सम्मान है। यदि यह निक्कत् हो, जब हो सहन हो कथा। उत्तर सार इस सारकारणे मुंगोली कथा है स्वारं है।' उत्तरं करों सार, 'अवस्तान सरकारिक स्वारं करी को तर जान। यदि सम्मान हो जान और सहक नाम करने वहाँ तर जान। यदि हो कि सहक सम्मान होन्या हालाना हो नाम है। इसमें सारकारी अवस्थान भी है दिया है।' सम्मेनकारे कुछ हुन्हों होन्यर साह—'आसरोग ऐसा प्रमा स्वारंग हाला सीरियो कि इसके साथ साहक नाम आकर अधिये प्रमा हो साथ।' सम्मेनकारी काम सुनकर होताने आहुति इसके। उसी साथ श्री सामान हों साथ स्वारंग की सही हमा हो साथ सामान आकरावार हमा हो। सामान सियानी परे। इस सी मा सामान की सामान हमा-साथ अधिनातार सामान सामान सीरा हो पह है। इस साहकारणे पर है सीरियो।'

कार्वकर्त सहस्र अञ्चलकार । जुनारे-वैसे सरकार्या में जीवा कर देख काइस है। अतः प्रकृति को इका है, (Richald) मॉन रहे । मैं साहित-से-पाहित पर भी तुन्हें हैंगा ।" annimit of boot fit are now affe-growt निश्नेत्रीत्वाला है, अवकारके तत्त्व प्रक्राचा । अनूनि सन्त, 'राज्य, ) कार पुत्रे बड़ी का हैनियों कि आपका का का केर हे बाब और इसमें निसे हुए वर्ष क्या कार्य ! इसका क्षानेकाचे कुछ अञ्चल क्षेत्रर कहा, 'समर्थ अञ्चल ! तुन लोक, ब्रोके, के और कृतरे क्यूई इक्क्युलर से के हैं बाह्यत है कि का का के ४ हो है आसीमने कहा कि होता, क्षेत्रे, नी अवका और मोर्स की बक्त रही पानिये: अन्ते महापूर्वको सम्बाजने निने में आरका यह है के कुरुन कहत है।' करनेकाने कर-बार अपनी कर कुरानी, वरणु अवस्थितने कृतरा वर मीनन जीवतर नहीं किया । रेश क्रमा राजी नेद्धा काला एक जरहे कहने राने, 'बढ़ ताहान के कुछ जीवता है, कहें इसके जिल्ला पाहिले (

जीनकोने पूक-स्थानका ! आ वाले से बई विद्यान् अक्रम थे। मिन्यु अवसीकारे कार कारो कार्य थे तक्षण अरीको वहीं निया, प्रत्यक्ष कक्ष कारण हुआ ? क्या उन्हें वैसे यान की नहीं रहते ?

उत्तरपानी का इसके हानोते पूर्ण ही तहक पृष्टित है क्या : आसीमने तीर कर कहा, 'उहर मा । तहर मा । शहर सा । इसीसे का आधार और पृष्टिक मीमने सरका यह और अधिकुक्तने की दिता।' श्री-कार्य । स्थानकोत्रे सर-कर कहोना जन्मेकाने कहा, 'असा, सारक्रिकारी इन्हा पूर्ण हो। या पह समझ करे। अस्तीय अस्त हो। इसारे सूतने को कहा था, यह भी सात हो। अन्येकको बुँहरे यह बात निकलते हो सब होगा आनव्य अंगर सदस्योको स्था समीको असारता हुएं। एकाने प्रत्यिक् और सदस्योको स्था यो अन्य हाहाय वहाँ अस्ते थे, उन्हें ब्यून सन्य हिमा। विका सूतने यह संब होनेको पविष्णायको यो थी, सामा को ब्यूह सरकार किया। यहायका स्थापन-सान करके आसीकात सूत्र सामात-सम्बद्ध किया और उन्हें स्था प्रकारते आसी



करके किया किया। वाले समय सब्येकको कहा, 'आर मेरे अध्यमेक बहार्ने सम्पासन् होनेके रिक्षे क्यारिकेटा।' आस्त्रीकटे अस्पनारी 'तवास्तु' कहा। अस्पन्नात् अपने संस्थाके वर सक्तर अपनी माता अस्पनाक आदिने कहा स्थानकर कहा सुनकतः।

सार सारव नासुन्ति नागको साम नामो को हुए सार्वीसे भरी हुई थी। सार्वाचिको मुस्ते का काराव्या सुरकार कर्र बहुत ज्ञात हुए। अन्तेने अस्तर प्रेम ज्वादे नासे हुए कहा, 'तेया। तुन्तरी में हुन्छा हो, जर गाँग स्ते।' से वार-नाम सहने जाने, 'मेंडा! तुनने इसे मुस्तुको मुस्ते क्या तिस्था। हुन तुनका प्रसाह है। सब्दे हुन्हारा कीन-सा जिल कार्य करें?' अवस्थित वास — 'वै आवाने प्रेसे वह वर नामता है कि वो कोई कार्यकार और आराध्यार जारतात्त्रपूर्वक इस कर्मवा अवस्थानक का कर को सपेसि कोई पन न हो।' वह नाम कुम्बर सभी वर्ग कहा जाता हुए। जा सोगीने कहा, 'किया । हुम्हरी वह इका पूर्व हो। इस को देन और सामके हुम्हर पनीरम पूर्व करते प्रेमे। यो कोई शरिता, आर्थियन् और पूर्वीय मनोनेसे किसी एकका दिन मा राजमें कह कर लेगा, और समेदि कोई धन नहीं होगा। वे प्रमा कम्बर में है---

> के जातकरूप वाले करवारी पश्चपक्षः। ज्ञानकः सर्वत्यो कः प्राप्तत् केश्वरकतः। व सर्वतं पश्चपत् व भौ विविद्यर्गणः॥

> > (44134)

'कराबार शहरियो चाराबाय पानवा पानवामार्थे आसीता जनक कारवी वार्षि करता हुए। उन्होंने सर्ववहाँ तुम सर्वोची एक बी. थी। व्याप्यत्ववान् सर्वे । वे स्वका उत्तरम का था है। तुम्मोन भूते का देते।)'

> क्यंपरार्थे पहे हैं गच्छ सर्व स्थापित। वानेकाल व्यक्ति श्राद्यीकाल साह । (५८) १५)

है न्यूर्वन्यका सर्वे ! तुम को काओ । तुम्बरा करणाग हो । जमा तुम काओ । कानोजनके कान्यी समाहित्ये जावीको जो कुछ कहा का, जसका सरमा करो ।'

> भारतीयका वाचः शुरूष यः इत्ये न निवातीः इत्या निवारे पूर्णि जिल्लाकान्तं यस्त्र॥ (५८) २६)

ंचे तर्व आसीकके वयस्की तथब सुनकर की नहीं लेटेगा, उसका कर जीतमके करके समाग संकड़ी इकड़े हे जनगर।'

वार्थिकविष्यंत्र आसीक व्यक्ति इस प्रकार सर्थ-काले सर्वोत्त्व उद्धार किया। सरीएका प्रशास पूरा होनेकर पुत्र-वीवारिको जोड्कर आसीक वर्ग करे एवं। जो उत्तरकेक-विश्वका पाठ वा अपन करता है, उसे सर्वोक्त पत्र नहीं होता।

#### ब्रीवेदव्यास्त्रीकी अञ्चासे वैद्यम्पायनजीका कथा प्रारम्भ करना

हीनावी वह—स्तरका | महामानावी क्या को है भीत है। इसने मामानाका यह एका गया है। तर्न-तर्क अन्तर्थे मामेनावी प्राप्तको मामान् सीकृत्यक्षेत्रकाने वैद्यानावर्गको मह शहन सै में कि हुए मह कमा हुई सुवालो। तम में नहीं क्या सुनन्त मामा है। मह कमा भगवान् नाराके माशानाको काला हैनेके काला सर्वक्रमकी है। जार मही सुनन्तरे।

डाशकारी स्ट:—श्रीकारी । क्वार वेक्साके हुए निर्मित महाच्यात आस्थान में आवतो प्रत्यको है सम्बर्धना । क्राका वर्तन करनेने को भी का जानद होता है। का मानात् अक्रम्युं स्वयंको यह वात स्वयुक्त हाँ कि वर्णनेका सर्व-सामे देशिया हो एने हैं, उस से मार्ट आने। परवास् म्यासकः कम प्रक्रिन्त्र कालाने इस सामग्रीके गर्वके कारान्यों रेतीयें पूश्य का। ये ही परवानोंके निवास्त्र से । ये क्या ही क्षेत्रकों यह हो गये और प्राह्मेशक के क्या इतिहासीका हान प्राप्त कर विकट । को के हान प्राप्त कर कर को चोई नवल, नेहम्बन, का, कारक, कानाविक वर्षि और विकासी नहीं जात कर सकता । उन्होंने ही एक वेवको कर भागोंने विकास कर दिया। ये पाल आर्थि, विकासकारि, रस्वात, वर्ष परित्र हमें समूल-निर्मृत करवाने प्रवाह थे। क्षेत्रि क्या-मरामारे पाया, कारण और मिहनार क्या हुन्य क्षा : अवीरे अपने कियोंके ताथ कारोजको पर-कारणे अचेल विका । उन्हें देवारे की क्वारि कारोबार कारण न



नवीत करकर एवं हो गये और विद्याचारपूर्वक व्हानकार है। अर्थे । अर्थे कुक्तिक्षित्रकार केंद्रकार विकित्वेक पूजा औ। अपने पंक-त्रवर्वकार्क पत्क, आकार, अर्थ और गाँधे देवत कार्यकार्क वर्षी जाताला हों। दोनों ओरसे कुक्त-अपूर्णके कव्यक्षी अर्थेक्ष हुए। अर्थी समास्त्रोंने प्रनवान म्यास्त्री कुक्त की और अपूर्णि कार्यक्ष्म कार्यक प्रवाह दिल्या :

वारामा कारोकाने संपादक्षे साथ स्व चेड्या वारामीरे पर सा विका, 'पानवर ! अपने वीरमों और वारामीये अपने अविते देवा था। मैं पानव है कि अपने मुंदो असा परित हुई। ने से पढ़े वर्णाम में, विर अ लोगों असा की मा नवी ? असी पारम से मानियोगा का से विकार हुआ है। असाम है। विकास करके हुई असाम पूर्वित और हुआ गया होया। अस कुमा करके हुई असाम पूर्वित और हुआ गया होया। अस कुमा करके हुई असाम पूर्वित और हुआ गया होया। अस कुमा करके हुई असाम पूर्वित कीर हुआ गया होया। अस कुमा करके हुई असाम का, मेक्सामा ! कीरम और सामानोंने विकास सामा हुआ कई थी, यह सम हुव मुक्तो हुन मुक्ते हो। अस महि पान हुन काने की, यह सम हुव मुक्तो पूर्व मुक्ते हो। असाम हिन्सा की समाने कैस्सामानकी पान्य सामा किया।

र्वक्रमानकार्थने सक्त-में संस्थान, विकार और समाधिके इन्द्र पुरुषेत्रको प्रवासार करता है तक कार्य इत्यूक और विक्रमेक राज्य करेंद्र पान अने पानान जानक जा सुनका है। जनकार स्वातके हात निर्मित का हरियान कहा ही परित और विस्तृत है। उन्होंने पुरुषकर पान्यजोकी का कथा एक त्याच प्रत्येकोने कही है, हरने बता और होता ब्रालेको करा देखाओस एका है को है। य पर्वेक और रूपन पूरान वेद-कुम है, इस्तेयोग्य कमाओं है सर्वेत्रक है और को-को जाण्योंने इसकी प्रशंता की है। इस क्षेत्रका-प्रकार कर्ष और कारको ऋषिके वर्गानुकुर ज्ञान बारायरे को है तथा हमाई बोधारकको पहचाननेकारी हुन्दि भी बार हो सभी है। इसके बारत, धीर्टनो जान सारे क्योंने कर कता है। इस इतिस्ताल क्य 'क्य' है। रंगातक का विकास अर्थात् कालाम प्राप्त कालेके इक्ष्मांको हत्त्वा अस्य काम काम वाहिने। यह वर्गहत्त्व, वर्णकार और चेक्कान—स्त्र हुए है। यो इस्ता क्रमा-कार्य करते हैं, रूपके पुत्र रोक्स और रोक्स कानिकक हो जाते हैं। को इसका शक्क करते हैं उनके व्यक्तिक, व्यवस्थिक और सार्विषक पाप नक्ष हो मारी है। इसमें महाप्राती करते हैं। से इस करना स्मृतीत्कृत अर्थ जन्म है, का सारे प्रत्येते कर सकता है। जनसन् सेक्ट्यकेटकर प्रतिकृत सराव्यास सरका कान-सम्बद्ध समिते निकृत हो इसकी साना करते थे, इस अवार सेव कांने वह पूरा हरत मा । इस्तिने प्रकुर्णको भी निकाने निका क्रेकर के इक

मरावंतियोके महत् अपना परितंत है, असीरचे इसको | काममा काम-वर्णन करव पाहिने। जैसे सपुर और सुनेव कोबी कार है, केरे है का प्रत्य कवाओक पुर बर्गण है। इसके इसके साथै प्राथमेंह स्थापन पास निरात है। वर्ग, अर्थ, काम और पेड़के सम्माने के बार इस समाने हैं, बड़े कर्क है। के इसमें महे हैं, मह और मही महि है। इस्तीको सामानेश व्या कथा प्री-वृत्ते स्त्री ।

# मुचार-हरणके लिये देवताओंके अवतारप्रहणके निश्चय



परसूरको पूर्णल कर पुर्वाले इस्विकेन संसर विश्व कः। श्रंद्र करण करके से महेन्द्र पर्यतन्त्र वाले गये और वहाँ हनस्य करने रूने । व्रतिकोध्य संक्ष्म हो कार्यन इतिकोधी नंत्राहा क्लारी, जानी, बंबनी प्रकारोंके क्रूप क्री। क्रूप के दिनों साह फिर इतिय-राज्याते पुर: उत्तरक हो वर्ण । इतियोक्त क्षांक्रीक प्रकारतार कारेने प्रकार नहीं वर्णानवर्गी सुब्री से गर्ने। एकावेन कान, प्रतेक और उन्हें कारण हेनेकरे हेरीको होहकर कर्यकार अध्य और कारन क्रमी हरने । क्रमकार कर्ष होती । सक्तमने कोई भी न नहरू और पुरानकों को लेगेको सी-नेतर्गक क्रम के न हेता। स्त्रीय को-बहे का करते स्थानोको कुन एकिना क्षेत्रे और प्रकार साहोत्स्य कियाना केला अध्यक्त करते । का प्रथम कोई बन रेक्टर प्राथमिक सम्मान्य नहीं करना वा

और न क्ष्मेंच्ये सरिविये केहेचा स्थारण ही करता था। वेदन कुरुपेने कैस्पेप्रया केरीका काम करते हैं। सर्वे उनके क्षेत्र कार की रकते में एक कम्बोर है मानेगर भी बाद, बारा आदिले प्रमात पालन करते पाते थे। मार्च कारक और कुछ नहीं जाने राजने थे, कारक मेर्ड की धी कार्य थी। कारवरी होतने-बोकनेने बेर्डनानी नहीं करते थे। सची रहेन्द्र अपने कर्ण और अवस्थ अस्ट्रिके अधिकारानुसार अक्ट-अवट कार करते थे । वर्ग-प्रानिका से परेड़ी प्रसंग ही को काम का । पीओं और विश्वेष्ये प्रतित स्वयंपर से पर्व केंद्रे में। पर्यापक कि तथा और एक भी महामारानें ही करते-करते थे। जा सका जानकृत के।

किस समय इस प्रचार आरम्द का रहा था, उसी समय इतियोधे एक्स क्रमा क्षेत्रे पर्ण । यह समय वैस्ताओंने मुख्ये क्रिकेको कार-कार प्रतया और नेप्राचीने चंद्रत कर दिया। में न केवल क्यूनोर्ने वरिष्य केले, केड्रो, पर्यो, डेटो, मैरने और कुर्वेद भी देश हुए। कुर्वी अन्ते भारते तथा हे गयी। देश और करन को पन रहा उन्हारत एकाओंके स्थापे भी सबस हुए। क्यूरेने राष्ट्र-राष्ट्रांट कर सार्थर सरके पृथ्वीची नंत क्रिक्र और वार्ष प्रमान्त्रे सतार संगे। इनकी क्रमुक्ताओं पीवित और प्रतित क्षेत्रर पूर्णी बहानीयी करको नहीं : इस समय बहु हुन्ये अरक्षपण है हों थें कि हेंग, कक्षण और दिनान भी उसे उठानेने जातनां हो भये थे। उक्तवी कारत् कारी इत्याना प्रकारे कहा, हेकि । यु जिल्ल कार्योक दिन्से की पान आर्थी है, जाके दिन्से में तक केवलाओंको निवृक्त कर्ममा (" पूर्णी स्वेद कार्यी (

भक्तानीने हेमाजनोच्ये आहार ही कि 'हमाचेन पृथ्वीचा कर कारनेके हैंको अपने-अपने अंतरिसे अलग-जरूर कुर्व्यक्त स्वयत्तर हो।' इसके बाद क्यार्च और अञ्चलक्षीको वी कृतकर बड़ा, 'तुक्तिन भी क्रेकानुसर अपने-अपने क्षेत्रको सन्य त्ये ।' सन्य देवताओंने प्रकारणिक सत्य, विश्वनारी और प्रचेककपुरस्य काराची सीवार किया। प्राप्त कर मैनुस्थर्की चारा की। वे प्रयु अपने वारकारकोने चार और | परापर्क जिला, कलुलान वेक्सओको अद्युध ही और पित राह्य रहतो है। इनके क्या पोले हैं। कुटेरको कार्रिय नैतरी है। है बैकुम्करो मारे आये। तान वेजारानेय प्रयाने कार्यान और करवार बाह्य:श्वार क्रिया और नेता बढ़े जोड़ाव है। कार्य विश्वक्षिक विश्वक्रकों सिनों क्रान्य: पूर्णांकर कार्यार्थ होने कतः कारमः श्रीवताका कि है, वे प्रवेशकिकान् क्या कर्यः । एवं । वे अंकान्त्रका आर्थियो अवका स्थार्थियोक वेदार्थे कार्यों हैं। सभी देखत क्यारे पूछ कार्यों हैं। इसमें अन्ते | क्या संकार बनुष्य-फोमी असुरोबर संक्रार करने समें। ये आर्थन की कि साथ पृथ्वीका जार सारकोड़ रिप्ते ओक्स्वार । स्वयनमें ही इसने सरकान् में कि असुरस्य उनका बाल जी पहण बड़ेनिये । परावान्ते 'तमाबु' बहुबार क्रीकर क्रिया : <sup>†</sup> क्रीक नहीं कर सम्बर्ध थे ।

इसने इनुसहरू बगवर् कावनके कर कोके रिग्रे | इसने शरकर निमाने अकार अन करोके सम्बन्धे

#### देवता, क्षनव, पञ्च, पञ्ची आदि सम्पूर्ण प्राणियोंकी उत्पत्ति

कार्रकारे वक्--कावन् ! वे केवल, कावल, कावली, [ शब्दक, बहुन्त, पश्च, प्रश्नुत और सम्बद्ध प्रानिकोधी जनके पुरर्ग कहत है। जन कुछ करके अल्बा प्रतन्त्रों है प्रकारम् वर्णन स्थितिने ।

वैद्यापनार्थने का—सम्बद्धा में सम्बद्धानात अन्तरमूठी प्रयाग करके देशार आदियों जनते और नावची कक महात है। ह्यानीके माना-पुर परिष, अर्थ, अहिए, पुरस्का, पुरुष्क अर्थर व्यक्तिये को पुन परनके के हो । पर्देशिकी पुत्र बारवर में और जारकारों हो बढ़ 200 जब जनत हुई है। इत-ल्यापनियो तेरह कम्बाजीका अन क—अविति, विति, क्षु, काल, क्रमु, शिक्षिक, क्रोमा, क्रमा, क्रिक, क्रिमा, माजिल, चुनि और बाहू। इससे मत्या पुत्र-वैजेकी प्रेरण अन्तर है। अदिनिधे बाद्य शामित हुए। उनके पान है— बाक, दिल, अन्तेय, प्रका, काम्य, अंदा, प्रमा, विकासन्, पूर्वा, सकिया, जाहा और किया । इनमें इसके होटे किया पुलोने सकते को थे। विशेषात एक पुत्र का दिवनकारियु । क्रमोर प्रीय पुरा ये—आहर, संद्रहर, अञ्चाहर, विकी और मानात। ज्ञानके सैर पुत्र वे--विकेचर, कुछ और निकृत्य । विकेतन्त्रस्य गरिर और जीवना सम्बद्धाः । सम्बद्धाः मनवान् क्रेक्स्का म्हण् रोकद स । म्हण्यानके काले प्रसिद्ध है। स्ट्रोर कालीर पुढोरों निर्माणी करते वक् यक्तको और क्रमा था। क्रममेकी प्रेरमा अध्यक्त है। शिविकारो यह हुन्छ, यो सूर्व और वक्काब्यो जाता है। कुरा (क्षेत्र) से सुचन, चन्नुच्या और चन्द्रस्थान साहि पुत्र-चैत्र हुए। क्रोक्स जनमा एक एक में हुआ वा। शरपुर्व कर पुर पूर्-विकार, कार, और और पुरुश्वर। स्कारको विभासन, स्रोप, सोव्युत्ता, स्रोव्युत्यु और कारलेक कन्तो प्रसिद्ध असुर हुए।

इनके करों पूर, किनमें अञ्चल और अपि जवान थे, अकृतेका पह-पान करावा करते । यह अनुरे और सुरवेशकी अवनि पुरानोने अपुसार है। प्राने पुर-पीतीकी गानवा क्रमा महि है। सक्षां, आँख्रेपेप, पान्यू, अपण, जारतीय और प्राथमिर—में पैन्सेय ब्यायतो है। हेम, अनग, प्राप्तिय, कार, पुत्रकृत, कृतं, कृतिका आहे पर्य बर्का दुर है। प्रोक्तेंप, क्रकेंप, कुर्का, नाव; आदि लोग्य हेगायर्थ प्रत्यवन्त्राते मुनिके कुत्र हैं। ये सभी बढ़े बढेरीयान, प्रतन्त्रन् और विकेशिय है। प्राचा चलको सहयत्वाने भी अनवसा, व्यक्ता आहे कवाएँ और सिद्ध, पूर्ण, वर्षि आहे देवनकर्य जनमं कृत् । अध्याने ही जारणकृत्य, निश्तकेशी, विद्वारणाँ, रिक्केक्स, सकत, रहिला, राम्ब, मधोरमा, केरिली, सुवाहु, कुरत, कुरता, चुक्कि साथ, सन्तराई और अधिवाद, हेका, **ब्रू** और <del>हुन्दुर</del>—ने बार गमर्च में हुए। करितारे गे, (ager, पाधर्व और अध्यति अध्यति हो । पुरः प्रधार मेरे तुन्हें सभीको जनारे कुछ हो। इसमें सर्ग, सुरर्ग, छ, करत् और में, उन्हरू जाते हमें है।

इक्को सम्बद्धा हः समित्रोके सम महते हैं कारत पूजा 🐉 उनके साराजें पुत्र के स्वात्त्र । स्वात्त्रके परम रोजसी न्याया पुर **प्र**—पुरुवात, कर्त, निर्वात, सर्वेकारत, स्वितुंच्य, Beeskage, इंधर, कमाने, जानु और गर । हुने हे व्याचा सा अवते हैं । अधीराके सिर पुत्र हुन्—मुक्ताति, जाव्य जोर संबर्ध । जानिके ब्यून-से पुत्र हुए । पुरस्कके राज्ञा, कार, किसर और का हुए। मुख्यके सराग्न, सिंह, किम्पुस्त्र, क्या, का और हिएक (मेरिक) अधिके पुत्र हुए। सनुवे कराविकाय हुए। प्राप्तानीके कार्व सैग्युटेसे वहा और कार्यसे जनमे प्रतिका रूप हुआ। जा प्रतिने दहनों पॉप सी सन्पार्ट् 🚮 । कुर्वेषा एवं हे प्रानेश क्षक्रमधीने मन्त्रशोधा कृत व्यक्ति असुरोके पुरोदित **पुराकार्यका** कमा हूमा । । विकाद हार प्रयोग किया कि अनके प्रया पुरा उन्हें नितः नायै ।

उन्होंने तुस करकारोका विवाह करेंसे, सर्व्यांतका अञ्चलके और रेस्तुका कंश्वयंत्रे विज्ञा था। वर्णको का चीत्रवेते जन के है—कोरी, सक्ती, वृत्ति, नेका, पृष्टि, ध्यात, किया, सुदि, स्त्रवा और पति। वर्षके क्षर क्षेत्रेके कारण क्रूने अन्ति पति कहा गता है। कार्यात स्थात क्षेत्र क्षेत्र कारण क्रूने अन्ति पति सम्बन्धी कुक्ता केरी है।

अक्राओंके पुर पर्य, पर्योक्त सक्षयी। और प्रयासीयेंड माड मत् हर्—बर, हर, सोन, शह, ऑगर, अन्तर, सन्तर, सन्तर और प्रभास । वर और क्रमी चीका नाम कुछ, जेनकी चीका मनीवर्गे, अवस्थे मोदा पर, सर्वेशन्त्री चीचा वस्त. क्षान्त्रको गोवा प्रार्थकार्य राज अनुस और प्रचलनारे प्रतासक राज प्रस्ता था। बस्के से कुर कुरू जीना और प्राप्तकात् । कुर्क कारः, स्टेक्ट कर्ग, क्लीन विशेष, अन और रायम संशोध तीन कुछ हुए। असूके बार कुछ हुए-ब्लेसि, कृत, कृत्य और गुरे । असमें कृत्या कूर कृतिकार्जन हरका पाएक जीवार किया था, इस्तरिये हुई कार्निकेट की मानुते हैं । इनके प्रतिन पुत्र हुन्-पालक, निरम्पक और वैपलेस । सरिवाली पाने विकास कोच्या और अधिकारणी पानोंद से पुर हुए। अनुबंध पुर से देवल पाति। अन्तर भी से पुर हुए 4-gener, sitt wird : quedfelt aller mentich अर्थेर कोरियों थी। वही प्रत्यालकी पार्टी पूर्व । स्थाने केवलाओंक क्षातीगर विकासकोटा साथ हुआ । उन्होंने है हेक्साओटी भूगम pfer fameiber fertie fiere fie togen ich unftell क्रियोगरीके आकारण सकते योगिका करते हैं । कावल कर्न Marchin कृति सारते प्रमुख्याओं अवस कुर थे । उनके बीन कृत पूर्व-यान, काल और हो। जनके परिलोक्त धानकः मूल का-माहि, की और गया। पूर्वको क्यो स्थाप (योग्री) से अधिनीकुमारोका जन कुछ । अविनिके कन्द प्रतिही प्रमुख की का कुळी है। इस अक्टर करा सार्थक, आर वस्, चारा सा, प्रधानी और क्यापार-ने पुरु केंद्रिय कें प्राचनका, कार्यका, क्यूनका, वार्वकाव्य और विश्वेषकात । महरू, अक्ट और सुरातियों काम अधियोंने हैं भी साथे है। जरिन्नेकुमर, ओपॉट और यह कार्रश्री निर्मा पुरुक्तभावों है। इन केम्पनीया कीर्यन करनेते सारे पाप कर वाले हैं।

कार्ष पुत्र कालो समारे प्रकार पूर् थे। पूर्ण क्षात्रकारी जीतीय कार नाम का हा। वे अपने कार्या रक्षके रियो पर्याने विकास आये थे । उसकी पार्टका का वा अवस्थी । इसकी बीचने और्यक कम इस्त । सीर्यके क्रांबर और क्रांबेक्के धनदी। पूर् । क्यांकि चार कृति काबुरावारी अवसे होटे थे, काबू जुलोने समझे गई। वे क्रम्बद्रमा से ने हैं, सम्बद्धार में ने। उन्हेंने हैं क्षरिक्त्रकार पान विका था। स्थापे से पर और भी थे—पाल और विश्वास । ये पहुले पाल पहुले हैं । स्वयनोधे निकार करनेकारी राज्ये प्रयुक्ति स्थित है। सुकारी पुत्ते केते क्यानकी पार्ट हुई। साली पुरस्क नाम दूसर बार और पुरस्का कृत । यह अस्य अध्योत क्षेत्रको कृत-कृतरेका कृत बार्थ स्वर्त का का पूर्व है अधनेती करते हों. यो समस अभियोग ung fate fin fin annebalt unber met im fefefe i mehr क्षेत्र को परंपर कुर वे—या, म्हाधन और पृत्र । पुरुषे को-स को से है।

काले क्षेत्र कराई श्री-सार्थ, भोरी, वार्थ, कुराई और कुती। कार्याने अपूर, इनेनेने बाय, बार्याने क्रमें और केश, बुक्क्योंने हेल-कर्नात को प्रधानक और कुर्वाले केंग्रेस्क क्या हुआ। क्षेत्रको से सन्तर्ग हुई—मुनी, कुरमञ्जू, इसे, प्रक्रमञ्जू, बालूने, प्राकृते, केल, बुर्राय और कुरता। मुर्गको पुर, पुरस्काको रीक और पुरस (क्रोबी वार्तिके पृत्र), व्यावनाते ऐरुवा इत्त्री, इतिते वंचार कोई, कार क्षे केंग्र काल कुलाई बूतरे यह तथा बार्कु वसे दिया का और की जाता हुए। कालुक्ति तक असके इची और वेक्सो केस विकास हुए। सुरुप्तिने देविन्दी, राजार्थी, विकास और समाय भाषती चार कमाई हो । सेवेजीसे माम-मेल, प्रकारिके कोई, अन्याको प्रस्तुर, साल, दिलाल, साली, भूगोला, पूजने और भरिका-ने उत्त विकासकरे पुर करत हुए। अन्तराब्धे पुन्ने सुन्दी हो सेलोकी चननी हुई। क्षाको केन पढ़ी और क्योंका जब हुन। असमधी नार्य प्रोचीको प्राच्याति और करानु शुरू । ब्याहो सम्बेकी समित से बाई है या चुन्ने हैं। इस स्थान मुक्त-नुक्त प्रतिनोक्ते क्रमीत्रक कर्णन विकार गया । इस मुख्याच्या अनन करनेले व्यक्तिके कर से कुछ है है, सर्वत्रकारी प्राप्ति की होती है और अपने कहा पछि दिल्ली है।

# देवता, दानव आदिका मनुष्योके रूपमें अंशावतार और कर्णकी उत्पत्ति

रीज्ञात्रसार्थं कार्य है—कारोजक ! जार में का कर्मन | क्युकोंके कार्ये क्या दिवस था। इत्यादन विश्वविति वरसाया करता है कि सिल-फिन देखा और क्यांनेर किल-फिन | और देखानकारियु विश्ववत्त हुआ था। सेहम क्या और राष्ट्राज्य पृष्ठकेतु पृथ्य था। विक्री देन प्रूप प्रकारे कार्य और प्राच्यार प्रणास पृथ्य था। कार्यकेंट देक्ट ही बंधका कर माराज किया था।

प्रसाद पुनिके वहाँ कुल्योगोधे अंतरो होपावार्ग अवसीर्व हुए थे । ये जेंद्र कंतुर्वर, जलन प्रत्यानेता और परन रेमाने थे। उनके वह भागेत, का, बाह्य और हरेगांत विभिन्न अंपने कांधर अवकारक का पूरा का मन्ति मान्ति पान और इसकी आहारो आहे कह स्वार्थ क्रान्त्रे प्रत न्यूनवीके भनी क्रमा पूर् । असे सक्ये केट चीन थे। ये कारवीने प्राप्त, वेक्तेक अनी और वेट क्या सें। अनुरेते भारतान् परस्तात्त्रको पुत्र विकास सा। सानेद एक क्याने कृतवासीत करने अवतार केव्य का क्रांत कुन्ने अंश्रमें क्ष्मिनिया क्षम हात या। मानुस्ताने अंश्रमे बीतक क्रमादी सरवीर, एकोर्ने प्रस्त, सुरवार्य और विद्यालक करन इभा गा। मोद्याका पुत्र इंड कान्क क्यांका कृष्यके करने के दूना था और जाका क्षेत्र गर्व कन्त्रके करने । कृषिक अंच वर्ग हो जिल्लो कालो औरह हुए। कुछकुत-क्षांच्य पुराना कृतिक करिकुको संस्थे स्था प्रश्न का अले जायसमें वैराधी आल सुरस्थाकर पृथ्वीओ अल किया । कुरुपार्थको स्वापी स्वीपको से प्राथित सभी पन रिन्स था। क्रायुक्त का पुत्र, निराद्य का कुन्नु का, मैरवाने गर्नरे अस्य एवं इस्ते अस्य वा वृतिहर वर्नीह, भीनतेन बायुके, अर्थन प्रचार तथा प्रकार-स्कोप अधि-वे-कुमारोके अंतरो जनत हुए थे। प्रमुख्या कु क्यां अध्यक्त पूरत था। यसकि सन्तर्थ समय प्रमुखने हेरावारोंने प्रकृत था, 'मैं अपने अलब्बरे कुरको नहीं बेचक प्रकृत । तैयर भी हत कामके पोक्रे कृता प्रवेश की कार कार । असरोक क्रम करना भी हो अनना है अपने है। इस्तिनो कर्या करना करना से पढ़ी, जानू वर्ष अधिक दिनोतक वहीं खेला। इन्होंड श्रीकरो नरकार अर्थन क्रेम, ची भारतकारण बीकारले विकास करेगा। नेया कुत अर्थुनका की पुत्र क्रेगा। गर-नाराज्याको प्रयोशको च रहनेका मेरा कु ब्यान्स्यका केरन करेगा और क्यातम चुट करके को को प्यार्थिकोची चरित कर देना : विनयर यह कानेके बाद सर्वकालों का प्राणी आ मिलेला। इसकी प्राणी को का होता, जह कुरुकुरुका बेहाधर होना । सभी केरदाओंने पन्छवकी उस र्वतिका अनुवेदन किया। वस्त्रेयन ! वही अन्तरे सा अधिकम् हो। जनिके अंत्रसे बहुद्धा और एक राधसके श्रीको विकामीका यात्र हुन्छ या। विवेदेक्यम क्रीयदेके पोची पुर अतिकास, सुराकेम, सुरावीर्ति, प्रधानेक और शतकोषके समर्थे पैक पर से ।

क्युदेवनीके विकास सन्न सुरहेर या। स्थानी एक अनुसन क्यांकी करण थी, विकास का का पूजा। शुरसेको असिके राजने प्रतिका को भी कि मैं अंतरी पहली समान समाचे कार्यक सम्पन्धीन का कृतिर में करते हैं हैगा। उनके नहीं कहते क्षाता है कर हार, इस्तिने उन्हेंने को कुरिस्केनको है क्षित । विश्व अन्य पूजा कोटी जी, अपने विश्व कृष्टियोगके का जाते और अधिकिकेम हेन्द्र-सम्बद्ध करते । एक बार क्याने क्यांसा शामिकी बार्ड सेवा की । कार्यी होवारी जिलेशिक अने को अन्य हुए। उन्होंने पुन्तको एक क्या बारतका और का कि 'कार्यांक । ये हम्पर जाता है। हम इस मनासे विक केवली अन्यान करेगी, जांके क्या-अरावरे हमें क अवस क्षेत्रा (" कुर्वाल अभिन्यी बात पुरुवत कृता (सुन्यी) क्षे का प्रकार हम। सने एकाओं कार कार्क्य कृष्ट आवान विकास । सुनीवाने जनवार सम्बद्धान गर्था प्रधानन विकास विभागे अनुषिक प्राचन केनाची पालब और प्राच्यान पाले एक क्रमी-क्षार वालक करना हुआ। क्रमेको प्रकार क्षेत्रर क्रमीने जा सरम्बाको क्रिमकर गर्छने यह दिया। अधिरको को निकार और अपनी पत्नी छवाने क्या है बाबार को पत क्या निरम् । उन क्षेत्रीने कर मारकाक कर क्यूनेन एका का । न्त्री वेके कार्गर जाको प्रतिद्ध पूरत । यह अक-विकारे बहा जरीन और पेक्क्रोकर हत्या हुआ। यह बढ़ा पहर, एक, पराकारी और प्रदिक्तार का । जिला समय बहु साथ करनेक्ट्रे हैंको बैठना, उस समय प्रधान उससे को बीधते कही है हैता का ।

एक किराबी कर है। कर्न का कर रहा था। देवराज हुन करी प्रकार और अपने पुर अर्थुनोड दिलोड दिनो प्राह्मणका पेट कारण काले जाके कार असे और अनूनि इसके प्रतीके त्रक जन्म करूप और कुन्कर मीरे । कुपनि अपने सरीको निरम्के सारकार्ध क्षेत्रकर और कुम्बार कारका है हिने। जनकी हम जाहरताचे अलग क्रोकर असरे एक साँछ है और कार, 'हे अभिना !' सन बंद प्रतित देखका, असर, बनका, कवारी, कर्ने, प्रक्षांत कावयां किस विस्तवित्त प्रत्यकोगे, कावस तावका का है कारण ।' तर्गोंसे का वैकर्तनसे नामसे प्रतिश्च १३६ । व्य केंद्र केंद्र), कृषेकामा पनी, समा और हेद्र व्यापुरू स और कुर्निक जोहरने जाया हुआ का । देशानिकेंग सनातन पुरूत कारणकारकाको जेवले पालीय बीकाम अवसीर्व हुए। न्याननी जन्मेकनी क्षेत्रके अंक वे ( प्रत्यकुतारनी अपूत हुए । क्ष्मंतर्थे और भी बहुत-से देवता बनुवर्ध्व सबसे अवदीर्थ हर वे र जनके जन्मनस्थर अध्यस्थानोधे अंतर्क केला क्राहर निर्मा करत हाँ वी । राजा पीनावादी पुरी प्रविधनीके पृत्रपे रक्षकेनी और प्रकृते को कानुस्कर्त ईपाईके कार्य इसकी करन हां भी : कुरते और महाके कामें सिद्धि और श्रीकार

एका सुमलको पूर्वी पान्याधिक कार्ये हुआ छ । इस प्रधार । अंक्से समुख्यके कार्ये कर्या हुए से ।

क्रम हुना का। ये ही संस्कृतीकी करता हुई : परिचा क्रम | केवल, असुर, प्रवर्ण, असरा और प्रवर्ण अस्ते-अस्ते

# द्धान और शकुललाका गान्धवं-विवाह

कारोजको क्या-सरकार् । जैने कारके कीनुकारे केरण, । कुरू आहेते अंग्रोहर अवसीत हेलेकी कर्मा पूर गर्नः सब अन्यको पूर्व श्रूपनाचे अनुसार कुर्वाकृता सम्बद्ध करना भारत है।

रेशन्त्रकानो सह--कारोका । पूर्वकार अर्थक क क्ष अन्यकारी राज कृषण । समुद्धां कि हुए सहन्ते प्रकेश और मोन्होंके देश भी आने अनीन में। यह सरमी प्रमाणा परान-प्रतास कहे यो नामके साथ कथा का असे एक्को क्लंबक जा है। येती और क्लोके किने उच्छ जी करक पहला का। पान के कोई करता है औं 🐠। कर्फ बार्विक प्रेची थे, इस्तीको वर्ग और सर्व केन्द्रे ही बादः प्राप्त है।

अपने-अवर्थ कर्पने सन्दर्भ से और कारतानमें निर्मात प्रकार निकास करोडा धारान करते के । समयगर कर्त क्षेत्री की। अस सरक होने के और कुश्री कर प्रधानक क्ष और प्रदूषको परिवर्ग थी। प्रकृत करिया वे और क्रम-क्रम-क्रमकार्थ करता भी उने नहीं हुनी हो । इत्यान क्रमे एक क्लाम्, पुरुष, धा । अस्मी प्रसिद्ध प्राप्ती अस्तुमा भी कि यह सन-अपनार्योग क्यान्त्रको स्वाक्ता काव का सकत था। क प्राप्तको प्रकृत, विक्षेत्र, वरिक्षेत्र और अधिके---भारों प्रधारोंने और क्रम-निवाने नदा है नियुक्त बा। बोडे और इसीब्ट शयांको बोडे अल्ब सनी मही था। ध्वः किन्तुके राजान कारणान्, सुर्वेक राजान रेक्सी, सन्तरे स्टान क्योच और प्रशिव समान समाजीत व्य । जगरिक और देशकारी डेनरे जाका समान करते और का वर्ग-बुद्धिने सकता शासन करता (

इस देवली बात है। यहनाम् रामा कृतना अपने च्यापिको रोगाने साथ किसी ग्यून करने ना पहिला । उसे का मारवेपर उसे एक पर्वतुर जावायपुरा अन्यन विश्वत । या करकर बढ़ा ही सुन्दर को। क्षाणि वृक्त विरोत हुए पुन्धोंसे तह स्ते वे । तृब्बंक्रकेंसे एकी इंटी-करी हो रही की । सुका-सुका कही पहरवरोरे काक छ वे । कही कोकित्सेकी 'कुट्-कुट्' से बड़ी भीरोकी गुंजर । राजा कुलन उनकाकी कोच्य देश है। का मा कि उसकी रहि जा पनोरम आक्रमर पही। आ

उक्तानो प्रकारकारका अधिकेशकी मारावर्ष प्रजातिक क्रे को भी । सामग्रिकार असी स्थाप, स्थापनात, पुरा और वारक्षांचेंद्र कारण कारकी अञ्चल कोचा है की थी; स्तर्फ है भारतों नहें का भी के, जिसका यह बंध शरीद सा इनेको वर्ष-पुन असर स्थाने जानमा है। प्रकृत हेक्सकोधी पूर्व कर है थे। क्यान्त्रे ऐसा पहलून हुना, नाने ने प्रकारकार्त कहा है। कुम्मको के और यह मनगी कहा देखका दूस नहीं होते थे। इस प्रकार राज्य दूकको सम हेकार-कुन्ते व्यक्तननेतीय काम व्यक्ति एकाम और क्षेत्रह आक्रमी प्रची और पुरेष्टिक्ति स्था प्रवेद विषय । क्रमाने क्यों और परेसियोंको मार्कानो प्राप्तर से रोग भोर, शुक्त अक्रम रोजना पन केल्लुक नहीं था। सभी लोग <sup>है</sup> हिना और कर्ण जीवर नवा। नहीं उस समय केल्प करि



ज्योज्य जी है। एकने सलमको सुनः देखका देने स्वरते कुळाए — 'वर्ज कीन है ?' हम्मानकी अवनान सुनवार एक त्वकृतिके सम्यान सुम्बरी बान्या स्थानिकारिक सेवये अक्षापसे निकारी । उसने राजा कृषणको देखकर सम्परमार्थक कहा, 'कारत है।' किर उसमें कारत, पाठ और अर्थके छए राजाना अधीरण बनके उससे सामान और कुमलके सम्बन्धने 34 किया। जानक-सम्बाधि कहा का कार्यक्री कन्याने क्षिक कुल्क्शकर यहा कि 'मैं अपन्यों क्या रोगा करें ?' रावः कुम्पाने सर्वाकुलुन्दरी एवं मनुरावरिको बन्याकी ओर -

देशका कहा—'में एक कश्यासी श्रामि कश्यास सर्वत | कारेके रिन्ने आना है। वे इस समय बढ़ों है, क्रमा करके मारायुक्ते।' ककुरास्था कहा, 'सेरे पुरुषेत निवासी फल-कुल लानेके जिले बाक्यनो बहुद तमे है। अपन क्यो-यो-व्यो क्लारे ज्योका परिके, एक क्यो निक समेले।' काइनारकारे गरी जातमे और अनुस्य का देशकर कुम्परने पुरु, 'पुन्दरें । कुन स्टीन क्रे ? कुन्तरे निक्त स्टीन 🛊 ? और फिरमीओ नहीं आभी हो ? सुनने नेस पर मोहित मर रिया है। मैं हुने करना कहत है।' सहकारने नही निवासो पान कहा, 'में कहीं कनको पूर्व है।' करने का, 'सामानि । निवास महर्ति कमा से अवस्थ प्रकारती है। को अपने सकते विकास है प्रकार है, परपू ने नहीं। ऐसी एसमें पुन करवी कुट बैंकों हो करवड़े हैं ?" प्रकृताको पहर, 'रावर् । एक स्थानिक प्रकृति हैं एक्पीन रितंत करूने पी जन्मही कहती कुलते की। जाने में कर शर्को है कि किए समय परन जारनी विकारिकारी जनके कर में थे, जा साम हको उनके कार्ने निम्न क्रानेके रीले नेनका राज्यों अच्या नेनी थी। अस्ति संखेलते नेत कन इन्हर नाम पूर्व करने होत्रका धर्म नहीं, पर प्रमुखें (परेंडवी) ने सिंह, ज्यात आहि प्रवानक बन्दानोंने नेरी एक को को प्रतरियों केन कम प्रकृतका यह । यहाँ कमाने soft for most in mon-down floors when परमा, मानोपा रहक और असहया—ने की है है जिस महे बाते हैं। इस प्रकार में बहर्ने सरकार्य हुते हैं।"

ुक्ताने वक्-'कावाति । वैद्या तुम क्या की है, तुम तिहान-कथा भूटि राजकाश हो। इस्तीनो तुम मेटे क्या है बाजो : तुन्ती । तुम कव्यां-विकास कुछो विवस कर ले। राजाओंके तिथे मान्यां-विवस कर्यक्ष कम क्या है।' सञ्जयको कहा, 'मेरे निवासी इस समय क्यां की है। अस

क्षेत्री वेरकक प्रविद्धा परिवित्ते । ये अरधार पुत्री आवच्ये शेवाने क्यांकि कर हैंने ।' कुम्पाने महा—'वै तुन्ने महाना है, पह में बहुत है कि इस पूर्व कर्न कर कर से । पहल कर्न है अक्ट दिन्दी और विजेखा है। हुन वर्गीद अनुसार कर्प है को जन्म का करे।' एकुमाने कहा, 'एकर् ! महि कर हते हैं को का सकते हैं और मुझे कर अवनेको कर करनेका अधिकार है से उसन नेवें कई तुन सीविये। में क्रम-क्रम स्थाने है कि अपन यह प्रतिहा यह स्थिति-''मेंहे बार पुरस्ता है कुछ सराहर है या और मेरे बोवनवारकों है यह वकरण कर सामग्र । से मैं आरखे जीवर कर समारी हैं :" कुम्माने किया सुक्र कोचे-विकारे हो प्रतिवृद्ध कर सी और qual-field payment telemen us for t हुमानो जाने पान प्रमानन करने महेका में निकार विकास कि 'में हुनों सानेके रिक्ने बहुरदिकों केना केन्द्रिक और प्रोक्त-के-प्रोक्त हुनों सबसे महतने से महिता।" इस क्वार का-पूजार कृषक अपने राजवारीके देखे रवान हरत : अस्ते करने नहीं दिन्हा भी कि पहर्ति स्थल का सब इंक्स म क्रमें क्या कीने।

केही हो हेर कर स्थापि काम असरकार आ पहुँचे। परमू कहारकार असरकार असी काम अही पर्या। विकासकारी कामो किया हुईको सारी कामें कामकर करामानके साथ अनुस्कारको कहा, 'केटी। हुउने कुछले निन्त पुढे एकामाने में काम किया है, का असी किया की है। इस्तिनोट निर्म कामो-किया काम-कामा है। हुउना एक मनीना, उदार हो केह कुछ है। उसके संयोगने कुछ मारवान् पुत होगा और कह उसने पुत्रकेका राजा होगा। यह वह सहस्रोत्तर कहारे कोगा, उसका एक कहीं भी म कोगा। में कहानारको कामेरर महारी कामो कुछनाको का किश कि सरकी मुन्दि कामी का हो और राजा अभिनात हो।

## भरतका जन्म, दुष्यन्तके हारा उसकी खीकृति और राज्याभिकेक

वैद्यानकार्य कहते हि—सन्तेषण । समयस प्रकृतासके गर्माने पुत्र हुन्छ । यह जानका सुद्धर और व्यवस्थे ही यह मलिए या । महर्षि कार्यने विशिष्ट्रवंका उत्तरे काल-कर्म आहे. संस्कार किये । उस दिश्युके श्रीत स्टबेन-स्टेब्ट और यह मुन्दिले थे, क्रम्ये सिंहके-ने थे, रोजें इस्कीरें कार्या किए वह सवा सिर यह और स्टब्ट केंगा या । यह ऐसा यान प्याप्त, यानो कोई देखकुरात है । यह वह क्रमीन अवस्थाने हैं सिंह, कवा, पूक्त और हानियोको जालको पृक्षेते गाँव देश था। इत्यो जनस कार्यः, असी होट्या स्था कथी उनके हास केरणा और केंद्र रूपाल था। जालकासियोपे उनके हास कपा विश्व प्रमुक्तिका स्था होते देख उसका नाम सर्वप्रमा रहा किया। यह जान विकास, अरेतस्थी और कार्यान् था। कारकारे अस्तिकात कर्ष देखाला स्थापि कथाने क्राइन्सालो कहा, 'जान यह पुस्तक होनेके सोना हो गया।' निर क्यूंपे अपने क्रियोको अन्य है कि 'क्रकुकारको पुत्रके साथ | है ? खुठे से कुछ ही सरक नहीं है । हरे साथ वर्ग, अर्थ अस्ते परिने पर पहुँचा अस्ते । अन्यक यून दिनेका और कावल कोई के नेव सम्बन नहीं है। हु का, का



मानकेने सारा परिते, परित्र और वर्णका करना है। दिल्लोंने आहारपार कंप्युपाल और एलंबनको लेका प्रिक्रमपुरको नाम को।

शुक्रम् और सीकृतिके कर सकुनात प्रशंतको गर्छ । श्रम अभिने दिन्य और गरे। अञ्चलको सन्दरमुक्त रिवेदन प्रिया के 'राजर्, । यह अल्प्स पुत्र है। अस पूर्व श्राप पुरस्ता करावे । इस देव-क्रूब कुमाने स्थापने शास अन्तरे प्रतिक्ष पूर्व गर्वनिये।' प्रकुत्समध्ये स्था मुख्यार कुमारने कहा, 'जरी ह्या समाने । वृ विकासी मार्गे

अवस्थ के तेरी कैकों आने कर।' इक्कार कर शुरुकर कार्रिको ककुमारम नेहरेक-मी होकर कार्यकी हक्ष विकार पान्नी कही क्ष गर्ने । अन्ती गर्नेसे ताल के पर्यों, केंग्र प्रकार लगे और का रहि देवी वालों हम्बन्धभी और देखने सभी । केही देर उदस्कर ुक और क्रोको परी क्रमुक्ता हुक्ताई बोली, 'महर्त्य । अस्य मान-महत्त्वर हेल करे कह से हैं कि में नहीं करात ? ऐसी बात के रीम पर्या सबसे है। अक्टब्स हार इस पालका सामी है कि पूर्व करा है और प्राप्त करा है। अपर अपने जानाका नियमार का स्वीतिको । सामान सम्ब १९०५त प्रानी-स्वी करिने । कारक प्राप्त कुछ और यह यह है और राज हुए और ( यह के पहल पहल कर है । आप देश करना से है कि का समय में समेनम या, कोई पनाई भी है।

करपु अलको एक वह कि परकार सकी हुकी । यह सबके बाव-पूज्य पानता है और आप होना अर्थेक कर बैठकर धन कर से हैं? यह साथे यह क्रमान्य कि पुत्रे मोर्च नहीं हैन पह है, और अवन्य है । ऐसा और अपानंदी कार्यका भी हम मारोप्ती देवता और कारत है। इसे, क्यान, कर्यु, अधि, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, कर, इसर, करतम, दिन, धर, सम्बद, कर्न—ये सभी भट्टकोर इक-शहर करोंके करते हैं। निस्ता होड़रिया करें रवाति केव्ह परभाव रूप्या को है, प्रमान साथे पायेची क्षवं ना कर के हैं। परचू विकास अन्तर्भवी समूह नहीं,

कराव प्रश्ने आहे. क्योंका क्या की है। को कर्य अवने अल्बाह्य विश्ववार करके कुछ-का-कुछ कर बैठमा है, केवल भी करणी श्वापना गाँ करते; क्वेंद्रि का सर्व के अवने सहस्ता की करता। में कर्म अरुके पास अस्ति है, देख सन्तरमार अस्त पुस परिवारको क्रिएकार व करे। दिसने,जार जस्ती आक्रमोचा पर्वेच्या तिराव्यर कर से है। आप वर्षे सन्तर्मे क्राध्यम्य पुरुषके क्षणान केरा तिरस्थार कर प्रो है । क्या में बेनलमें से की है ? सुमाने जॉ पहल ? में कई देती हैं कि नहें। जान मेरी जीवा चावचना बहर जी हैं। हो अपने सिन्दे र्रव्यने दूसरे हे कार्यने । पार्टिके क्रारा पुरुषे प्रमाने कार्य परिचय ही बान्य हेता है, इस्तीले अधीर विद्वारीने परीको 'जापा' क्षा है। सहस्रात-सम्बद्ध पुरुषेको सन्तान पूर्वनोको



और विसामी भी तार देती हैं, इसीसे सन्तानक कन 'हुत' है। (जुनसे इनर्ग और चैत्रसे उसकी अनकता जार होनी है। अजैक्से बहुत-सी जैकियाँ हर कभी है।)

'पार्व को कार्य है, जो कार्य कारकारणे पहुर हो, पुरस्ती हे, परियो प्राप्ते समय मन्त्री हे और स्वी परिवार हो । को कीना अर्था है, सन्तर हम नेहरू सरका है। प्यतिक सुरह अर्था, बार्ग, बारवारी विश्वीत होती है और मोक्रके प्रकार जासर क्षेत्रेये आहे बढी ब्रह्मण्या निल्मी है। पर्योग्ये स्थापनाने ही क्षेत्र कर्ण होते हैं, स्थापी बस्ती है, um bereit ft afte englieb mit fielt bie und ib क्षान्त्री प्रश्तवर्थ प्रथा, कांबरकी क्षेत्र और क्षेत्र प्रक्रिक महाबाद कान करती है। बर्डिक्किके रिके होर-से-बोर बंगलमें को पत्नी विकासकार है। सम्बद्धनमें होता स्वयोग्यमा विशेष विद्याल क्यो है। बीर विश्वविधे सुप्रदे और बर्लपा भी पत्नी है अपने चीनक अनुस्तन कारती है। प्रतिके प्रकृति दिन्ने विकार करों है जाते है और इत्तर्वे पहले हे पहुँचकर बरियार स्थापत करती है। विश्वकृतर क्ष्मी ओश्रम है। इस लोक और पारतेकार्य क्री-क्रीश स्कृष्ण और क्षेत्र है। प्रतीह गाउँहे अरक का स्थाने क्षेत्र पहले मुलके सम्बद्ध है , महा, को देखकर किस्ता आरम्ब होता है। रोगर्क और पानीसक जानको बहुबार पूछा अपने धर्माच्ये देशका आधारित के नाते हैं , प्रतिने क्रोण मानेनर भी पार्तेका अधिन भी किया कारा। क्लेकि हैन. प्रसाला और वर्षे उसके अवीन है। अवनी प्राची के कियोंके पर से होते हैं। व्यक्तियोंने की ऐसी प्रतिक ज्यों कि किया करिये असान क्रम्यूट कर सके। सबसे पहले समय प्राची भी हरको समर्थे से तुम निरात है, असी बहुबर और क्या है। अवस्था पुत्र कर्ण अवसे सामने कार है और जेमपरी होंको देवना हुआ सामग्री नेको बैहरेके रिक्ने क्लाब है। इसका निरस्कार क्यों का ये है ? वीटियाँ को अपने अवस्थान करना करती है, उन्हें बरेशी भारे हैं। आप इसका पालन-पोक्त क्यों नहीं करते ? धुक्को प्राथमें लगानेका केंद्र शक्त केंद्रा है, बैसा सब्दोक्त करा, को अका काने स्टांचे भी होता। या पा आका कर्मा को ।'

'तावर् ! मैंने इस पुत्रको तीन कर्ताक सपने गार्थने करण किया है। यह आपको सुनी श्रेरेण : इसके क्यके समय आकासकानीये कहा कि 'यह स्थापक स्वै अवस्थित यह करेगा।' आकारके सपन के के-यक पहें बता है है है इस आपको मानुद है। मिता पुत्रको आंगारिका करण हुआ

व्यक्त है, 'पून पेरे सर्वाकृते जरता हुए हैं। पून मेरे इतकारी विक्री हैं। मेरा अवस्थ हैं जान है पुर । मेटा ! पून से कर्मका जोताते । मेरा जीवन और आगेकी कंछ-नाम्यता तुमारे अधीन हैं। इतकिये हुन पुनते कंच्यर से क्यांच्य जीको ।' यह जानक अगोर अहुने हैं, अवस्थे इतकारे ही जाना हुआ है। जान कर्म नहीं अस्तेनके इतके कार्य पूर्तियान् देवतो ? मैं नेनकानी क्या है। अस्त्यत्व ही पैने पूर्व-क्याने कोई पान विक्य होगा, किसमें कंच्यनमें केरी पनि पूर्व कोड़ दिया और अब असर कोड़ के हैं। आगानी देवी ही हमान है से पूर्व माने हैं होड़ केरिको । मैं असरे असरपार करने वार्यनी । मान्यु यह आपका पुत्र है । इस मानेन्से मार क्रीड़िको ।'

१व्यक्ते कर-'ककुमते । को मानुर की कि की कुरते कुर राज्य किया है : कियाँ से प्राय: पुठ केरती है है इन्हरी कावर करन और विकास कोया। हनारी एक को कर विकास करने केना नहीं है। मेरे सामने इसनी फेटर ? कार्र आणि फिलाबित, मार्ग नेपका और कार्र शेर-केवी कावारण करी ? पानी वर व्यक्ति । प्राने केवे क्रिकेट बारा, पर प्राप्त सारके पुत्र-केस केरे हे सपता है ! शा-स, बती या !' अकुमारको कहा, 'राधर । करक र करे । कार मध्यों अध्योगमें भी सेंद्र हैं । सारे बेरोको पह हे और को मेजेंने कर कर है. दिए भी क्या उनने महत्तर है। कालो सम्बद्ध करों को नहीं है। फारतो बहत्यर एक है है जो । काले अवका निकारिय भी कुछ नहीं है। साम नार्य पराक्षा पराक्रमा है। साथ है सर्वतेषु अतिहा है। हम सपनी प्रतिक का नेत्रों । साथ सर्वेश तुक्तों 'लश 'से । वर्षि सुरुपे ही क्ष्मार हैन है और नेरी पातपर विकास नहीं करने हो से वे कर्प कर्प अर्थनी। वे क्रोके अप नहीं राज नाती। राजन् । मैं बड़े केरी है कि बड़े तुम इस लाकेओं अपनाओं क भी, नेत क पूर्व है सभी पृत्तीका सामन करेगा। क्रम क्रमा प्रकृतना क्रमेरे का पहे।

इसी साम्य करिया, पुरेशित, आसार्थ और प्रसिपीके स्था की हुए कुम्बाको सम्बोधित करते अध्यक्षकार्यके स्था-"श्राम से केवल मार्थ (योकनी) के समान है। पुत्र विकास है होता है, क्योंकि दिशा है पुत्रके क्यों उरणा होता है। तुम कुम्बा प्रस्त-चेवल करों। स्वकृत्यकार अपपान का करों: अक्य औरत पुत्र करराजके पंजीते हुक तेवा है। सम्बन्ध पुत्रीने हम कारकार नपांचान किया था। समुख्यकारी बात सर्वाध सन्त है। तुम्हे हमारी आहा मानकार हेल करना है सार्थित। तुम्होरे परण-चेकलके कारण है हमारी क्या पत्र होगा। आकासमानी सुनकर हुन्यन

अस्मदर्श घर गर्ने । क्यूंने पुरोईल और अधिकोर्ने महा, 'आपलोग अपने कानोसे देववाओंकी काची सुर से। मैं भी हीक-तीब भी करता और सम्बादा है कि का नेच पुत्र है। शहर में केवार प्रस्तानातांत्र बाहरेते हो हरो जीवार कर रेजा से सारी प्रका प्रस्तर सन्देह करती और प्रस्ता करोक नहीं कृद परात । इसी कोहरूने प्रेरीत क्षेत्रम की देख कुर्वव्यात From \$10

अव्यक्तिक्त्रं ]

अब अपूर्ण प्रकेशो प्रवेचार विका और साथे संस्थार कार्य । ज्योंने अध्ये कुळा जिन कुळार उसे वार्ताचे तत्त्व हिला । पार्रे और आकार्य नहीं उन्हें अपने, जन-नवका क्षेत्रे सना । कुण्याने वर्गके अनुसार अंतरी पार्टका सम्बद्ध किया और जानकर होते हुए कहा, 'देखि । की कुछने तत्त्व में राज्य किया था, का विश्वीको करून जी था। उस इस कोग तुन्हें चनके कामें स्थापत कर के, क्रावेशके के यह सरका और थी। सोन सन्ताने सन्तो कि की केवित हेकार पुष्परी बात जीवार कर सी है। और मेरे पुरुष कुराय क्षेत्रेरे को आयरि क्यों । की तुन्हें आवन क्षेत्रिक कर दिवा क, इसीनो एको जनकारेकात सुरूते को अधिन कार्गी कई है जाना नुते कुछ भी निवार नहीं है। इस बेनी क्य-क्रांके देन हैं है इस अध्या बहुबर इक्को सपती प्राप-तिकाले क्या, बोक्न आदिने समूह किया।

स्वकार कारका कुमाकावार अधिकेद हुआ। सुर-कुरान्य परस्था कारान-पता अभिन्यु है पना। जाने रुक्तानेको जीवका प्रकारों क्या रिका और संत-समार क्षांक करन करने अनुसर यह साम किया। यह साथै पूर्णिका प्रकर्णी साम्द्र था। जाने इसके प्रमान अनेको का किये। मार्थि कामने सारको मोजिस्स अपन्य अध्योग-का करका। अन्ये को को सभी साहन्येको व्हिन्स दी गरी थे, परम् क्यें कन्यके स्थल का मुद्दे से गरी थें। नको है हा देखा कर पास पर और ने है नक्सेको प्रकार पूर्व । उन्होंके नामने साथे ब्यूटेके और बीवेके एका कार कारो प्रसिद्ध हुए। उनके बेक्टरे अनेको सक्कानी रतार्वि हा, विन्तेः जन निन्तरे भी करिन है । मैं पुरुष-पुरुष सामित और पीरामान् शाकातेका है वर्णन मारत है।

#### दक्ष प्रजापतिसे वयातितक वंश-वर्णन

रीतम्बरकार्थं कारो है—कारोबार ! अब में बार, पुन, पूरा जानिके पेरतेका कर्पन करता है। यह कहा ही परिवा और नारकारकारों है। अक्टानेट करिने सैन्युंडेसे अरश का जनानी ही उन्होता। १४ व्हा अधीरे साथै तथा जनम हो। अधीरे व्यक्ति अवनी नहीं नीरजीके नार्पने कुछ स्कूल पुर उत्तर किने वे । नास पाँच्ने उन्हें पोक्रक जनका उनके करके विश्व क्या दिया । उस उन्होंने क्याल क्यापी अस्त की । उन्होंने उनके प्रथम पुरस्के अस्य कार्नमी प्रशंत रूपना निर्मा निर्मा पद क्षत कर्ज पा पुन्नी है कि अभी क्षत्रकों तेना कानाओंका विकास किया का । वास्त्रकारी और नहीं अधिकी इन्द्र और विकासन् आदि पुत्र हुए थे। विकासन्ते जेव पुत्र क्यू के और व्यक्ति प्रवराय । यह को वर्णान के । उन्होंने मानव-मानिकी काली हाँ और सूचेवंड अनुवेको कालो करायक । जन्मक, इतिक जाति क्रमी नाम्य बहुत्यो 🖫 अक्टानोंने साह बेदोको बारव किया। महके का पुत्र में \$—केन, कुन्तु, नरिकार, जन्मन, अध्यक्ष, स्टाल्स, भूगति, इस कन्य, एका और अध्ययनित । महके प्रकार पुत्र और भी थे, परमू वे अन्यसम्बद्ध पुत्रके कारण रक्त मरे। इत्यते पुरस्का राजका पुर हता । इता पुरस्काकी पाना और है

क् प्रमुख हेनेका की अक्ट्रॉन्स केन केन्स का। अपने व्यान्त्रीकाके नात्री क्षणा क्षेत्रार प्रकाराने प्राधानीका बहुत-सा पर कृते का क्षेत्र दिखे । समझुनाएने अञ्चलकेकी कारण और पहल प्रत्याच्या औ, परंतु इसका कोई समार औ चक्र । व्यक्तिनीने क्षेत्रिया होत्यार प्राप्त दिया और उसका पास है। क्या । यह बढ़ी पुरस्का है, यो स्थ्येंहे तीन स्थारको आहि और वर्तनी क्रायराज्ये से काफ मा। स्तरेत क्रांतीके नधीरे कः ध्रा क्ट्—आन्, क्रीकार, अन्यत्वस्, कृतन्, सरामु और सरामु र अपने प्रकृति पत्र प्रत्येकी सा। अने पीट पुत्र हर्—ज्यून, इन्ह्यूनर्च, रहि, यस और अनेता।

कामुके पुत्र नकुत कई मुद्रियान् और सबे और से । उन्होंने कांके अनुस्ता अपने महान् राज्यका हातान विश्व । उनके कारने राजी सुनी थे, चोर और सुटेटोबर बिलकुरा पर नहीं कः। उन्होंने अधिकारमञ्जू व्यक्तियेने प्रत्यकी प्रतानी । यही उनके जाएका भी कारण हुआ। यो से उन्होंने देख, तपना और कर-विकासने हेवलाओं भी पहारित बार्क अपनेक्षे इस करा दिला था। न्यूको ४० पुत्र हुए—परि, भगति, इंग्लिन, जरवाति, अपनि और हुए। पति पोश-लावना कर्ने प्रक्रमध्य हे यो । इसरिये म्ह्रके दूसरे पुत्र बवारि बिता दोनों है भी : पुरस्का सनुबंध तेरह हैंपोका कातक था। । तथा हुए। उन्होंने बहुतसे बहु बित्ये और बहुई बहिता देवता और वितर आदिकी जनशन करते हुए केन्द्री जनका काल | केन्द्रपति है पुत्र हुए—बहु और दुर्वसू तथा हार्यहासे तीन वितरा । जनके के प्रतिकों की—केन्द्रपति और कर्षिका । पुत्र हुए—बहु, अनु और पूत्र ।

### कच और देववानीकी कथा

कार्यकरी कृत-सङ्गर् । इससे पूर्वन काम कार्यक्ष स्थानी दानों पुरुष थे। " कार्यने सुकारकर्वनी कार्या वैत्रपानीसे, को सङ्घानी की, कैसे विकास विकास कार्यक्रियों साहय कैसे स्थित हुई ? आप कृत्य कार्यक्र का कुलांक सुन्तक्षे।

वैशानकारी सह—'कानेका | अस्को पूर्वक राज्य कार्तिने सुक्रमार्थ और कुमर्गाची पूरियोगे किए प्रवाद विश्वद किया था, को सुनिये | वर दियो विश्वेपीयर अधिकार कारोजे किये केवा और असुर सामार्थ प्रकृतिक से थे । केवाओंने अपनी विश्वपंत क्षित्रे आदित्या प्राथ्विको और असुनि कार्या सुक्रमो अथवा पूरोदेश कथवा । ये हेवो



प्राप्तान भी जायसमें बढ़ी होड़ रकते थे। जब कुट्टों देखाओंने असुरेको कर हता, इब कुटाब्योने उन् अवके विद्याचे करते चीचित कर दिया। चरचू असुरेने दिन देखाओंको पारा था, उन्हें कुटबर्टी केंग्निय न कर सके। कुटाबार्ग रहाँकने विद्या करते थे, परंतु कुटब्टी बड़ी।

कारों केवाव केवी कहा कुना हुआ। वे कारावार कुरवालि को पुत्र कार्यक प्रकृत गरं और करने का अर्थना की, 'जनकर् ! इस काराकी करकारे हैं। जान कराते स्वास्ता कीवने । अर्थना केवाने विश्वार सुक्रावाली काल के कार्यकों निका है, को जान कीत है जान कर संविधे; इसकेन अरावों कार्य कार्यकों का का की। पुत्रावाली कार्यकर पुत्रावाली कार को है।' केवावलीकी जार्यन कीवार कर कार्य कुरवालीकी कार्य कार्यक पुत्राविका पुत्र है। केता जान कार्य है। आप पुत्रे किनकों कार्यों कीवार करियते, में एक इसका कर्यका जार्यक कार्यक कार्यक्त का्राव्यक कार्यक कर्यका। स्वीकृति कीविथे।' शुक्रावाली कार्य, 'केट! कार्यक है। में सुनारी कार्य कीवार करता है। का कीर पुत्रावेश हो। में सुनारी कार्य कीवार करता है।

कार्य कुरावाची अवस्थात प्रकारीत स्था विका । व्या अपने पूर्णकारी के प्रथम रक्ता ही, पुरुष्ठारी केन्द्रानिको भी प्रमुद्ध एक्टा । प्रीक प्री वर्ग बीत प्रार्थना कुनमें के यह पहल हां कि मानक पना अधिराम है। polit Repair of west your appealedly) he givile कारण और सहीतनी निकासी पहाने दिनो बामको पार इक्क और अन्ते पुरदो-पुरदो करते नेतियोको विकास विचा। गेर्ड किस प्राचके ही सपने जानवा और आवी। केक्क्सि देशन कि भीई से का नहीं, पर बात नहीं काया। का करने अपने विवासी प्रधा— विवासी । आपने अधिकोत का दिला, कुर्बाम के गया, भीई किया रहमध्ये ही और अपी: बिन्दु क्या महाँ स गया ? निवास हो उसे बिसीने कर कुरू का का इसे का एका। विकास । में आको र्शनक सम्बद्ध सक-राज कहती हैं कि मैं जिस्स कराके नहीं वी सम्बद्धी ।" कुळाकांनी कहा, "जरे, सु हुतका क्यारती कहीं है ? मैं अभी को जिला देश है।" सुक्रमानी सहीकरी विकास ज्ञानेन करके समझे पुरुष्ता, 'काओ केत ।'

<sup>&</sup>quot; जाको दय, दक्तने अस्ति, अस्तिको पूर्व, सूर्यचे कनु, कनुने इस्त्रको कन्य, इसको पुरस्य, युक्तको कनु, असुने तहुन और नकुनो कन्नी—इस अकर ने प्रकारिको दक्षने थे।

मानवा एक-एक शंग मेडियोका प्रशिर केर-केरकर निकार भाषा और वह सीवित होकर मुख्यकार्यकी होताने उद्योखन हुआ। नेक्यनीके पूज्येतर उत्तरे करा कृताय वह मुख्या। हुती जनतर असुरोके मारनेयर कृती कर की मुख्यकार्थन सम्बंधी निवस दिया।

वीवरी कर असरोंने नके कुछ की। अनेने ककार्य मारकर आगरे जायत और असे वर्धको तथ कार्यने विकास सामानार्थको विका हो। केरफारीने विकास प्राप्त पिताओं । कुछ सेनेके किने कर एक क, क्रीद नहीं । कहीं बाद विरा को नहीं पर गर्या। मैं अपने किया को भई समझी। मैं पर का संगय सामा करते हैं।' इस्तानके बहु, 'मेरी । मैं क्या करे ? अवह को बंध-बंद कर करते हैं।' हेक्सनीके हुठ करकेल उन्होंने दिन सहीकती विद्याला उन्हेंन किया और कारचे कुलका। कुछने स्थापेत होका उनके मेक्से भीतरचे से बीरे-बीरे अवनी विक्री सम्मानी। स्कारकारी कहा, 'मेहा | इस किया है । केरकारी स्वार्थ हैनाने बहुत प्रसार है। यह हुन हुन कों हो से हो, में तुन्हें सहोवनी विद्या सामाना है। हुए हुए नहीं सहक हो, बची ती भेरे मेहने अन्यत्वा की को हो ? को, का विकार और केव के प्रकार रिवल आओं। इस की वेटों का चूंचे है, प्रमाणि सुर्वाण कुने अन्तर को कि गाँकि कर हैन।' कारने बेचा हो किया और प्रस्तार करते कहा, जिससे मेरे कारोंने स्वतिवरी विकासन अनुस्त्री वास कारी है, वही केंद्र माता-विद्या है। मैं जानका कृतक है। मैं आको एका पानी क्ताता को का सकता। यो केवलका सका प्रको सक भागा गार जो करत, यह करंकित क्रेका परकारते then that

मुक्तवार्वजीको यह बातका बड़ा प्रोप हुना कि वोशोरी प्रशास पीनेत कारण केंद्र विलेखका कहा हो ज्या और मैं प्रमान-पुन्पत कारण हो थे गया। उन्होंने का कारण वह पोकार की कि 'कारणों की बातका और जो स्मान रूपन कींगा में या कर्न-पह हो बातका और जो स्मानक रूपन कींगा में या कर्न-पह हो बातका और जो स्मानक रूपने थेंगा में कारणा। असानों ! नेवारओं ! और

---

चनुकी बन्ताने ! शासकानीके साथ पून हो । आजने मैंने अक्षानोके दिन्ने का वर्षपर्यात सुनिश्चित कर है है।' क्षम स्क्रीनके निवा प्रमु करके स्वास वर्ष पूरे क्षेत्रेस्य अपूर्वित क्षम का । समय पूरा क्षेत्रेयर क्षमास्त्रवित को कर्य अपेकी अपन है है।

का का अली जाने तथा एवं क्रिकानि कहा. 'बन्दियात । इन प्रकार, इस्पेन्स, विद्या, तरस्य और निर्देशिकाले जन्मल अन्दर्ध हो। मैं हुन्हरे विराक्षे अपने विकास क्यान ही सामारे हैं। मैंने मुख-पूर्ण रहते समय हमारे सार के व्यवहर किया है, को बढ़नेकी आवरकार। की । अन का धारक हो को हो; में कुनो हेल फरती है, इस्हरी रंगिका है। अस विविद्येक हुए वेट शक्तिका करे।' काने कहा—'बहिन । जनकर सुकाराओं वैसे तुन्होरे निरा 2. की ही की की। पूर की किसे प्रकारण हो। विका नुस्तेतके प्रतिने हुए निकास का सूच्ये हे, अति में भी स्व कुछ है। हुन काफ अनुसर मेरी बढ़ेन हो। मैं हुन्हरे केर्प कार्यको स्थानको को बेको छ। यह ४१ र्मात व्यवेग्यो अञ्चली और अस्तीयोह से । व्यवी-व्यवी प्रतिस कारणे निर्दे कारण कारण और जानकारिक प्राप्त की गर्मानकी सेना करती चारा ("केन्यागीने बद्धा, "मेंने तुनसे नेकारी विकास परिते हैं। सहि हम वर्ग और फानकी हिर्दिकोर तिने चुने अलोकार कर वेगे के गुकारे स्क्रीवरी विका निव्द की होते।' करने कह—'वर्डन | की पुत्रकृती क्रमाना है अलीवार किया है, बोर्ड क्षेत्र हेकबर नहीं। प्रक्रेको भी नहीं प्रस्के देखे कोई अञ्चल नहीं से की। त्यारची जे हका है, क्रम दे हैं। मैंने कुमो ऋषिवर्मकी बात कड़ी वी : वे प्रापके कोण वहीं था। तूमने पूर्व वर्गके अनुसार नहीं, कामके कह होनार प्राप दिया है, बाको सुनारी कामना कर्म हो भी क्षेत्री। कोई में स्वयूक-कुमा दुसार करियान नहीं कोया। मेरी किया किया नहीं होगी, इससे क्षाः, मैं जिसे मिस्तारेना, कानरे किया सफल होनी।' ऐसा बहुबर कब क्रमेंने करा। हेवताओंने अपने कुठ कुहुस्सीर और करका अधिकार किया, कामझे यहका चारीदार करण और सकती होनेका पर दिया।

### देवयानी और शर्मिष्टाका करूढ़ एवं उसका परिणाम

क्षीम आन्त, इतने देवलाओंको बढ़ी जलता र्यु । उन्हेंने कारों जा किया और हो, कारट कार पर पड़ा। देश्याभागि एका क्षेत्रन प्रकार और क्षण कि उस दिखेश अक्षरण पर देश पार्टिने । इसने अक्षरण दिया । उन्होंने एक कर पहर, अंश करने सहत-तो सिक्त क्षेत्र पहिंच सही क्रम कर्मा कर्मान का भी भी। उसी पन कर्मा विकारिक रसे इस कार्रोको सरकार्थ मिला हिना। कार्यार्थ पेश क्षान निवाली, प्रम असुरसम्ब क्ष्यकांकी कृति क्षरिक्रने पूर्ण अंश्री पुरुष्ठी विकासीके कहा पहल विकेश करे मानुर को या कि क्या किए को है। काम पुर हाता। वेक्साओर पद्धा, 'जरे, एक हो हु अनुस्की सककी और कुले मेरी मेली। सिर दूरों भी सब्बो केले पहल प्रेली 7 ह अन्यारका है। प्रत्या कर यह का सेना है सर्वेक बेली, 'ताब दी बाद, हेरे बाज के गेरे निरालों कोने-बेक्के की जाह क्षेत्रके; गीर्थ करे होकर मानको क्या स्तुति करते हैं और देख कृति करेंद्र 1' देववारी हुन्यू है क्यों : वह प्रतिद्वादे कह प्रीक्षे सर्गा । प्रत्यर काँदि सर्गिकरे को काँचे क्रीतर विक

और उसे बरी बानका किया उत्तर हेकी बनरमें श्रीद गर्बी । ं असी समय क्या क्यांस प्रिकार जोको-सोलो अंग्रेके

वैद्यानकारों कारों है—कारोजन | काम सहोकारों निवा : कामों और बांक समावेदों कियान होवार सारीके रिव्ये कुईएर पूर्व । कुर्व कर की था। उन्होंने ऐसा कि साने एक कुष्णे कम्ब है। कमने पुत्र, 'सुन्ते । कुर कीन हो ? हुन करेंगे केनो निर्ध हो ?' वेलकरीने बहा, 'में प्रमुख कुम्बन्दर्भकी पुनी है। जब देवता असुरोक्त संद्वा करते 🐍 का ने उन्होंकर्य विकास को चौचित कर दिया बारों है। में इस क्रिक्टिमें बढ़ करते हैं, बढ़ बात करने पालून नहीं है। हुए केंद्र कृष्टिय हुन्य क्षात्रका पुत्रो निकास हो । वै प्रश्नाती है कि इस कुर्मान, करण, बान्याओं और बहाओं है । बहुते कृषेके कहर निव्यानक शृक्षक प्रतिक वर्तान है।' वयातिके को क्रकारको सम्बद्ध प्राथकार कुन्दिर पहल निवास दिया और प्राप्ते अनुसरि रेक्स अस्मे स्वकारीको और गर्छ।

> हमर देवकारी कोकाने व्यापुरत होकर बगरके परह आही और क्राफेट मोरचे, 'जारी क्राची । वेरे निकास पान पानक क्यों का है कि में का इक्कांक करते की का प्रवाही।" कार्यने कावार पुराञ्चलको स्थितिको कावारका कार्यर किया । क्रेक्सिकी यह पूर्वता सुरुवा स्थापनीकी सहा द्वारा हुआ, में अपनी स्थानीके पात गर्न और अपनी भारी पुर्वको प्रकार राजाल स्थाने रहते, 'सेटी । सर्वको अर्थ कर्नेके प्रत्यक्तम कुछ-१:या चोचन पहला है। यान पहल है कि पूर्ण कुछ अनुविध कर्ण किया है, क्रिकार क अवद्याप कृत्य (" नेपायनीय स्वाह, "निकारी | यह प्राव्यक्ति हे मा न है, पुढ़े एक बार काराकृते। पुरस्तांकी केहीरे कोनको जानो समान-समान बार्लाह करने सारते करते है कि 'सेरे बान के इसमें बाद है। में इसके बाति बाते, इससे भीक नीको और जीवाह रेसे हैं। क्या जावा प्रकृत ग्रेस्ट है ? भी देख है से में अभी बाबार क्रान्ट्रासे क्रमा कींगू और को हरा बारे ।' श्रामकारी वक्षा, 'बेरी । तु चार, निसरी वा का रंजेकरेची पूरी भी है। हु का पाँच ताहानकी क्या है, जो बाधी विशवेषी सुधि वहीं बराज और विश्वती सुदि राजी सोन करते हैं। इस बारको कुरवर्ध, इस और संबंध क्ली क्लो है। अधिक प्रकृतक और निर्देश हेकर्प ही नेए कर है। सहाने जाता होका मुझे अधिकार केश है। भूत्रोक और कार्नि मो मुख थी है, ये जा सबका क्कामी है। मैं ही असमीर दिल्ली मिनने पाल बरसागर है और मैं है जेपनियोग्य पेपन करता है। या मैं जिल्लुक टीव approximation (A)

्रास्तिः नात् सुकारानी वेजन्यते स्थानो हुए सहा—'स्ते क्षूण अपने निन्ध वस्त् तेसा है, उसने सरे स्थानूनर विकास जात् कर शि—नेता स्थाने। यो अपने स्रोपको सेनेते प्रमान काने कर तेसा है, वही तक सम्बन्धि है, स्थानोर एक्स्ट्रोन्सान कहि। यो स्थानको इसको एक तेसा

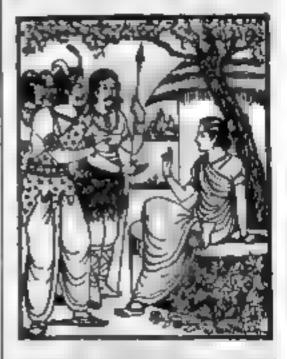


है, बही होए पुन्त है । वो बहेनको देक नेना है, निक का तेना है और सुन्दोंने सालंकर की हु जो नहीं होना, कह का पुन्तकोंकर काला होता है । इन्ह सहुन की कांकर निकार का बारे और सुन्दा बरेग न करे से साले कोन व कार्यकार ही केस है । पूर्व को से आवालों के निकार काने है हैं । प्रमुख्याओं हैता नहीं कारण कांकि । हेन्सकों कारण और निकार सामग्री हैं । कुना और विकासी कारण और निकार को मुझे जा है । कुना की विकास कार्यकों हम का विकार सोट कुनो का है । कुना कार्य है । इस्तोंकों हम कुन विकार और कुनो कार्य की कार्य कार्य है । उसे सीकों को सहावार और कुनो कार्य की कार्य कार्य है, उसे सीकों की सहावार और कुनो कार्य कार्य कार्य है, उसे सीकों की सुन्य-कार्य है । सुन्य कार्य कार्य, क्यां कार्यकर और सुन्य-कार्य में स्वां कार्य की श्री

वेक्सनीयो स्था सुन्यतः निय सुक्र मोने-नियारे सुप्तानार्थ कृत्यांको स्थाने गर्न और स्रोजकृतंक स्थेते, 'गुक्तत् । यो शास्त्रं सत्तो है, उन्हें यह स्वस्ता सम्बद्ध स्थान मुक्तिः, रेसिन सीर-मीर यह उन्हों स्था स्था स्थान है।

एक से पुनर्शनोंने सुक्रमांकों पुर सेनान्यायन सम्माने हान भी और मुनरे नेती पुरिष्ठ भी सम्माने मेहा भी पनी। अस में सुन्तने नेताने नहीं पा सम्मान: में पूर्ण क्रेड्सर माता है। क्राहर होता है, हुन पुने माने सम्मान सम्मान सम्माने हो, इसीते साले सम्मानको ए नेमाना सम्मान को साम परे हो। ' सुन्तनी माता—' पन्तन् । अपने सार सोद साम हो सी !' सुन्तनि महि साम हो सोहमार को मानों सार और मर्थ अधिता है। यह साम हो सोहमार को मानों से एव समूत्रों हुन मरेने। सम्माने स्वीतिक हम्मान और मोई स्वाप क्षी है।' सुन्नामानी साम—'ईस्से, क्ष्मां। और माने पुन समूत्रों हुन सो अध्यात समूत्रों हुन सम्मान। मेरे साम स्वीते मानो है। हुन सम्मान क्षमा माहों है से सो साम साने।'

क्रमानी केन्द्राचेके यस सामर महा, 'हेनि ! में हुई कुलोरी कहा हैया, जस्ता हो परको !' केन्द्रानी कहा,



'अभिक्ष एवं इक्षर स्वतिकांके साथ मेरी सेवा करे। यहाँ में कार्य, यह नेता अनुस्थान करें।' क्षण्याने व्यतिके इस्स अभिक्षके पास समीत भेक विधा। उसने समिक्षणे कारणात्, 'आसारित है जा, अन्ति कारित्य द्वित कर। सुक्रामार्थ अपने विश्वांको संस्थान कार्य कार्य है। सु मारावार क्षणानेकी कृष्ण पूर्व कर।' समिक्षणे कहा, 'सुने जीकार है। आपार्थ और क्षेत्रकारी कार्यरे म कार्य, में उनकी सम

इकारी पूरी करियों (' करिया करीके करने केनकारेके करा ) क्यों करकर केने कोगी ?' करियाने करा, 'बेरे को बेरे अभिना क्षेत्र मेर मार्गन को कि 'में क्ष्म और कुकरी जिल्हाक व्यक्तियों का कानी पातिने, क्ष्मी सोकार में संस्थानों भी हुमारी रोज करेंनी ("केक्कमेंने कहा, "क्वी | हुमारी वाली हो गर्नी हैं। में सिवा होनेके कहा भी हुमारे भी, भी को पुराने निवासे निवासेने, भार और क्रम साम मरस्यत सेक करीनो । का केवानी प्रसाद के राजी केनेपारेच्ये समुद्रो है और तुल को पालके देवी हो; जब बेरी | और पादकार्येक प्राप्त अपने अध्यापन और असी ।

# ययातिका देवयानीके साथ विवाह, सुकावार्यका ज्ञाप और पुरुका योवनदान

केन्याची जारची स्तित्वों और प्रतिकृति प्रान्त इसी कुले स्रोकः कारोके रिम्बे गयी। अच्छे का विकास कर ही रही की कि जुननका राजा कराति भी अन्तर है सा निवाले । वे जुन कोर हुए थे, बार पीना जातों से । केम्पाने, स्टिव्ह और affental town with well figures it and afer महोते पुरत, 'इन करिनारेके बोचने बेटी हुई कार केने जीन वेक्सानेने कार दिया—'में देखपुर नहीं द्वारामानेके



पुरी है और यह मेरी सबसे हाती है। यह क्रियतम क्रमानंती पुत्र है और मेरी रोजनेंद्र रिंग्ने वर्णक मेरे एक्ट स्वारी है। इतका कर प्रतिष्ठ है। मैं अपनी क्या प्रतियों और कृतिहाले साथ सामने समीत है। सामनो में समने सुन्त

र्वजन्मकारों करते हैं—करनेकर ! एक दिनकी नात है, | श्रीविक्षे | अग्रवाद कारकर हो |' करादिने कहा, कुल्लीवरी । कुक्ता कल्कन हो । मैं तुम्हरे केल आहे हैं। हुम्मी निवा क्रांतिको साथ हुम्मारा निवाह नहीं कर प्रायमे । क्षेत्रकारीने पाह, 'राजन् । आवशे पहले फिर्सने भी हेता हाव ची प्रकार का करेंगे विकासी स्था आर्थ देश हुन पाद रिम्प । इस्तियों में आवनों अपने कार्नोंद्र कार्ने करण करती है। अन बाल, कुछा कीई कुछ मेरे कुछक क्यों केने कर काल है।' क्योंने बाद, 'बावारित | कारण पुन्नरे दिया उसने हुनों की प्रत्यो और वहीं की, अक्षांक में जुनों केले करियार कर सम्बन्ध है।

ur bruth and unit finit un min für : अर्थ पूर्ण पर को मी-की-ओ शुन्दार शुक्रावार्ग एक प्रमाणिक पास आये। प्रथातिये इत्यान क्ष्में प्रमाण किया और इस्य बोइका काले सामने पाने हो गते। केरपानीरे मार्क-'निवासी ! वे स्कृतन्त्रत राजा प्रकारि है। सब मे कुर्देने लिया है नहीं थीं, एक इन्होंने नेत हाथ प्रवाहकर पूछे निकार का । मैं जानके चारनोर्ने सहकार कही नावको साथ अर्थन कर्या है कि तान इस्ते एक येए विकास कर वेरिको । में इनके असिरिका और किसीको परण नहीं क्रांची :' केव्यानीकी बात सुरक्तर सुक्रामानी पंचारिकी महा—'राजन् ! मेरी राजानी स्थापीने कृते परिवासी पराव विका है। में बारवान करता है, तुम इसे पटतारोक्ते कार्य भीवार को है पंचारिते पहर, 'सहस्र । में कुरिय हैं। व्यापन भाषाने ज्ञान निराह करनेते पूर्व सर्वकाराज्या केंग समेना। साल हेती कुछ परिचित्रे और वह केंदिनों हैंड क महान केन नेता पर्या न करें हैं कुआवारी संदर, 'हुए कह सन्तर्य प्रवेकार कर लो । किसी अवस्त्री जिला का करे। में कुष्मत कर का किने देश है। इस नेरी कुरिको पार्टिक कार्य स्टेक्टर करके करका प्रस्ता को और एक भेगो। केट । एकार्यको पूर्व प्रतिकृतक को इस जीवा सामार और जारोंके करने स्वेक्टर करती हैं। जार के चुने स्वेक्टर है करना, परंचु को ककी अपनी होनकर पर कुलाता।"

राजनार प्राचीक विभिन्ने केन्यनीचा परिचान संस्थान प्राचन पुत्रद और स्ट्राटें, प्राचित्र तथा केन्यनीची लेका प्रसारिते अपनी संस्थानीची पान सी।



प्रधानिको राजधानी अवस्थानीके समाप की। वहाँ शीरकार अनोरे केवनारीओं से जन्मन्त्रमें एक क्रिक्न और क्रापिक तथा क्रारियोधे क्रिये क्रेक्टरियो सम्बक्ति अन्तेकमधिकके पास एक स्थान करता दिया एक साथ-रक्षमाँ समृत्या मनस्या कर है। एनोस्का चेन चेन्से कहा वर्ष बीत गर्ने । सम्बन्ध केन्द्रानीको नर्न ध्रुट और ध्रुट क्रिया हुआ। एक कार प्रेमोनका राज्य कवारि मकोककरियाचे पार का निवाले और की करियाको देशका कुछ कर गरे। समाध्ये एकामाँ कका स्थित करके पास गर्ना और क्रम स्वेश्वर बोली—'क्रेर प्रमुख, Mr. निष्यु, ४४ और क्लान्डे प्यानने कोई की सुरक्षित क प्रकरी है, बैसे ही में जायके कहाँ सुरक्षित है। कहाँ नेरी और भीन हों। क्रार समाता है। जाप मेरा क्या, कुछ और बॉल तो जानते ही है। यह वेरे बहुत्वा स्तवन है। मैं आपके जान्यी सम्बद्धाने हैंने प्रथम करते हैं, अब जुते प्रमुख द्वितिये।' एक क्यारिने इर्विहाके खळका जीतिक भीकार विका : उद्दोने जाकी आर्थन पूर्ण की ।

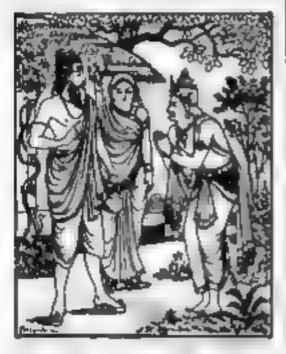
एका च्यातिके केव्यातीले से पुत्र हुर्—ब्यु और दर्वसु । सर्विद्याले सैन पुत्र हुर्—ब्रुट्ट, अनु और पुत्र । इस अव्यात

व्याप व्याप वीर नवा । एक दिन देशवानी एका प्रवासित । साथ अवोक्तवारिकारों नवी । जाई देशवानीने देशा कि देशाओं स्वापन कुमार दीन कुमार दीन कुमार दीन पुत्र, 'अर्थपुत ! में कुमा कुमार विश्व हैं । अर्थन पुत्र, 'अर्थपुत ! में कुमा कुमार विश्व हैं ? इस्ता कैन्द्र के अर्थ-मैद्रा ही सामून प्रवास हैं !' किर देशवानीने का अर्थने पुत्र, 'कुमारे मी-नार बॉन हैं ? रीवा-दीका प्रवास की !' क्योने मैत्राहित्यों हैं । सामून की एक्त की हैं ? रीवा-दीका प्रवास की !' क्योने मैत्राहित्यों हैं । सामून की एक्त की हैं किया की किया है । सामून की । सामून की एक्त की नहीं दिल्ला ! के अर्थन होगार की नहीं हों किया ! के अर्थन होगार की नहीं हों हों कुमारे का प्रवास का नहीं । सामून की । साम



वर्षेष्ठके यस जवर बड़ा, 'वृष्टि ! तू मेरी हासी है। तूने नेत करिन कर्षे किया ? तेत करतूर सम्मान मिटा नहीं। यू मूक्तरे करते नहीं ?' वर्षेष्ठने बड़ा, 'वयुक्तास्थि । वि रामस्थि दक्ष्य थी प्रमाणम किया है, यह धर्म और म्हानके अनुसार है। किर में इसे कर्षे ? मैंने से सुमारे साथ है। उन्हें अपना परि पान सिमा था। तूम सहस्मानमा होनेके कारम मूक्तरे लेख है। करमू ने रामस्थि हो तुमारी अपना पी मेरी अस्मित दिस है।' देवकानी क्षोमित होकर रामासे कहने रामी, 'आपने मेरा अदिन्य मिटाया। अस्म मैं यहाँ नहीं रहिता।' यह ऑक्टोरें और परकर करने निराध करके देखें का पड़ी। । वेहका होता।" मकति द:सी हर और साथ है जनवंत भी : वे अस्ते की-पीके परम्पार को बहुत सम्बन्धते युक्तते रहे, करणु वाले एक न सुनी। होनी सुकायार्थके पास पहिले।

प्रमाणके प्रकार केवलांके बात, 'किलबी ! वर्णके अध्योते गोत विरक्ष, गोवा केया हो गया। कर्निहा गुक्ते आने श्रद करी । अल्बे सीन कुत कुर है मेरे इन बहुरायने ही है इन्होंने क्षर्य-कर्वदाका अलंकन विका है कर्दन होकर ! जान इसम्बद्ध विकास क्रीतियो (" सुकारकार्यने काह, "समान् ! सुमाने मान-ब्रह्मकर वर्ग-नार्वदाव्य जलकर विकार है, प्रतरिकों में



हर्न्द्र कार केल हैं कि हुन को हो नाओं है कुल्याकी करन की है राजा जनारी को हो गर्ने । जब उन्होंने कुळकार्नकी प्राचीन की और कहा, 'मैं जानी सामग्री पुनी केन्या के संगरी दूस नहीं हुना है। उत्तर हम केन्डेयर कुछ बोर्टिको, है कुर न हेंद्रेश अकारी बढ़ा, 'बेरी कर हुई नहीं हे सम्बर्ती । हर्ने, तुन्हें इसनी बुट बेटा है कि तुन अवन्य गढ़ मुहन्त किसी इसरेको दे सकते हो।' क्यांतिने कहा, 'म्बान् । अस ऐसी आज़ा दीनिये कि यो पुत्र मुझे अपनी कवानी देवत मुक्त से से की कन, दूज और पत्रका करी है।" क्षापानी पाहा, 'ठीक है। अञ्चलके पेरा विकास करनेता हरारा पुरुष कारेपर पास जावना और से पुर हमें समाने हेना नहीं राजा, अध्यक्त, बकाने और इन्हरें कुराबा

क्या क्यारि अपनी सम्बद्धनीये आहे, पहले उन्होंने बहुन्हें क्रमान कहा, 'में कहा है गया। मेरे क्रमेरमे हार्रियों यह कर्ती । काल क्रमेश हो नमें । मरणु मैं अभी सम्बनीने भीगोंसे का नहीं है - तुल नेता चुनाया होबार अपनी सम्बन्धी है के । एक इकार कर्ष कुछ होनेकर में सुन्हारी अमानी किए तुन्हें स्पैटा हैचा।' जाने बहा--'जुक्तंने अनेकों क्षेत्र है। का अवस्थाने कान-मेन के से टीक नहीं होता। करीर बीता, बात समेद और करे प्रशिव्य हार्रियों। प्रतिक नहीं, आरख नहीं। क्कीओं जिस्तार करते हैं। मैं आक्का बुद्धारा नहीं से सम्बद्धाः ।' कराविते व्यक्त, 'अन्त्री, तुन केने क्रूपको करण कृत् हो। फिर भी पही अपनी चकारी नहीं देते ? जानते, सुनहरी क्यानको सुन्यका हुक नहीं स्तेता है जिस अपूर्ण अपने दूसरे कुत हुनंतुको कुरकार भी बढ़ी बात कही, शस्तु असरे भी बाराय नेनेके इनका बार दिया। चनाविने को भी बाय के हर् बाह, 'तेर बंध बढ़ी करेना । तु मांसकीकी, हरावारी और वार्थकंत्रर मेंग्वांका राजा क्षेत्रा ( क्रा क्राया वेक्क्सके केरी पुरोको सार देशर मधारित सर्थिको पुर क्षाची कृत्यक और अभी अंध्ये कृतिये कार्यने कार्यने हेरेची बाव क्यी : ह्याने कहा, 'ब्हेंबने हाबी, बोबे, राव और क्रमीरवेक कुछ भी से हम नहीं निरमतः। कारत रागने राज्यों है। में कुराया नहीं कहारा है जनतीने कहा, 'आहे, स् कारी कारते हेता कह का है ? हुई ऐसे स्थानने राज्य प्रदेश वर्ष रूप, इस्से, कोई और घरनकीकी हो पान ही क्य-क्रि, क्यारे और एवं भी नहीं का समेन्द्रे। फेक्स बन्धे क्या क्षेत्र। राज हो भी औ विसंग। लोग हो क्षेत्र कहेरे । केवल तु ही बहुँ, देरे बंहरकी कहे गति होगी । विक अनुबंध को अवक्रीच्या यह देनियर समाने अनुबंध प्राप्त, 'तू नेरी बाद की परमा 🗓 इस्तीओं देरी सरहण करना होकर न्द्र पाननी । सुधे अधिकोड कारनेका अधिकार नहीं योगा ।'

इन कोने नियम केवर कार्यंत्रेने अकर्ष एक्को बरसकर कहा, 'बेटा । हम मेरे महे पाने हो । हम मेरे अपने बेटे हो । देखें, में प्राचीत कारण सुरू हो पता है और समाजिते हुए नहीं है, इस मेरा मुक्तक रोकर अवसे करानी है है। विकासीन करनेके बाद एक इक्तर कर्व पूरा होनेपर में अपने पानके साथ बुक्रमा से लेना।' पुरुषे नहीं असकतारे कनकी सर्वा स्रोपार कर हो । क्यापिने आसीयांव दिया---'वे कुरसर अस्तरण प्रसात है। कुणाये प्रधा सर्वक सुबक्षे घोटी।" हेसा ब्यापन उन्होंने स्वापनांच्या करन विश्व और अकत कुल कुल्पे देवा जानी कारी है हो।

### वदातिका भोग और वैराग्य, पूरका राज्याधिवेक है—स्वोध्य । स्वरूप तया। सने स्वयं बैक्ट से क्या और स्वाहिते स्वयं सूच्य ।

रीप्राप्तकार्था सहये है—स्वयंभाग । सूचनमान तथा क्यांति पुरुष्टा चैकर रेकर केंग, जानद और चैनते इक्कानुसर सम्बन्धक भेष धेको लो। परमु वे सर्वक क्रांबन कृषी नहीं करते हैं। उन्होंने क्रांजे देखाओंको, सम्बोधे विश्ववेद्यो, सन-भाग और प्रस्तानको कैन्यन्तेत्र्ये. बुक्कोरी बस्तुओंसे सम्बन्धेको, सार-पान्ने अधिकांको, प्राथमको प्रत्योको और स्वयुक्तकारके स्क्रीनो समुख कर हिला। अब्बु और तुरेरोको करेड रूप देखा। साथै प्रका प्रशास को गयो । में इसके प्रमान प्रमानकार करने रहते । अवंति प्रमुख-स्थेवके से सारे चेन क्षेत्रे हैं; स्वयूक्ता, असम्बद्धारे और सुनेक वर्णतको ज्यारे कोटीयर सुमार व्यक्ति भी प्रोप कोने। अपोध्य क्यानिने देखा कि अस ज्यान करें पूरे के के हैं। तक अभूनि अपने कुछ पूजाते कुछाना और संक्षेत्र 'केट ! के समाचे क्यानेने क्यानुसार काराये साथ अवने द्वीप विषयीका चीच किया है, बरण अन चुने निर्दाय हो एक कि विकास योगको सामय तने योगके सन्त वर्धी होती। आएमें निरम्य की जनने व्यक्ते, व्या नामी की कारों है। पृथ्वीने विराम्य की जात, स्टेस्स, अबू और विरामी है, में एक मायुक्ता वाका पूर्व करके के जानमें है। इसरियों सुंक कामी साहिये नहीं, अनोर भारतों ही होता है। पुर्विद्ध लोग हम्मध्या जान नहीं कर सम्बंध । यूर्व होनेल भी मह मुझे नहीं होती। यह एक उस्तानक देन है। की क्षेत्रांगर क्रे सुन्त विश्वता है।" देखों, क्रिक्टीका रोजर कारो-कारों एक इसार वर्ष पूर्व हो गता, मिर की वेरी कुछत हिनोहिन कहती है का की है। तक मैं इसे क्रोक्सन तकने प्रस्के कार्य सम्बद्धित और मुक-बास असी इस्तेने निक्रिय एक करीर आदिये किये क्रेक्ट क्रिकेंक साम यसमें कियारिया । मैं हमारे प्रशा है । कुन अनमी जनाने से तो और बहु गुल्म बहुन करो । हुन के बारे पुर हो ।' कर,

प्रसारे देशां कि काराम प्रचारि अपने को पुत्रोंकी एउसमें श्रीवा करके होटे पुत्र कृष्ण सिम्बेस करने ना से हैं। यह क्ष्मानेनी अने करके तथा सोग उनके पार आने और केंग्रे—'एउन् । अप अपने जोड़ पुत्र कृष्णे केंग्रकर मुख्यों कर्ष एक दे हैं हैं? इस अपनो संबंध करते हैं, अपने कर्षणी एक कीरियों।' एक क्यांतिने वहां, 'एम सोग सब्बानोंसे केंग्रे कार हुने। एक देश कारण है कि मैं कृष्णे वाले एउस नहीं दे सकता। मेरे क्या पुत्र कृष्णे मेरी आहा नहीं साथ हो। को अपने विकास अपने पान क्यों स्थान करें, साथ हो। को अपने विकास अपने क्यांत्र क्यांत्र करते, साथ हो। को अपने प्रकार क्यांत्र करते आहा करें, साथ हो। की भी केंग्र क्यांत्र क्यांत्र क्यांत्र करते हा पूर्णे

स्वयम्बर्के है। यह आहित कम सुरस्माकी कर्ष है सुने

क्क का किया है कि को एकारी अवस्था नामन करे, की

कार हो । इस्तीओं में कार्ड कराते अनुरोग करता है कि उस

क्षेत्र पूर्वतो हो क्या करने । क्याने संपूर्व क्षेत्रा पूर्वता

एक्स्पृतिकेस विकास । इसके काई शास समाहित सारास्थानान

की कैंक्ष रेकर उन्होंन और सर्वक्रिकेंट तथा प्रगरते पते

न्त्रे । व्यूने राज्यविकार्यात् व्यूनीराजेकी, तुर्वश्वरे

करोबी, जुटुने फेनोबी और अनुने नोब्होबी अपीत हुई।

क्रमेक्ट । कुले हे जीवह पीरकांत करा, जिसमें तुषाय

श्रम हुआ है!

एका वनती जरने कन्द्र, मूल, करनका गोयन करते हो।
इन्होंने अपने करको कहने किया, सरोधना किया करते हो।
वे अतिहार केवार और निराहिका तर्गन करते, अधिक्रीत करते। केवोबेले अवक्री करा वीच-वीचकर अतिक्रियोको क्षेत्रस करनेके अवक्री क्राक्रेयके अवनी मूल कुंगते। इस क्ष्मार क्ष्म हुवार कर्ग कियाने। तीन क्षेत्रक उन्होंने कारी

मंत्र असु असः व्यवस्थानुस्तिनेत स्वयति। इतिया कृत्यानोत्त पूर्ण स्वयत्तिकति। प्रस्ताति न पर्यो सम्बद्धाने परित्यते॥ स दुस्तात दुर्वेशिकते न सीवीर जीवेश। मेठले प्राथानिको केनला पूर्ण सम्बद्धान्ति। (मान-अवीर्यो ८५। १२—१०)

और बनाई अपने अधीन करके केवल करके अध्यात्वर हैं | बैठकर बिदाय । इः महिन्द्रक एक पैरते कई सुकर केवल बीवन-निर्मा किया। एक क्षेत्रक मिन्ट क्षेत्रे केवल कर् मीकर हो से । इसके कर एक को और प्रकारिकोंके बीकों | करी । इसी शुरुनेवर उन्हें करांकी आहि हाँ ।

बायु-राम ही विन्या। कासी परिता सीविं विलोकीये देवन

### यवातिका स्वर्गवास, इन्द्रसे बाराचीत, पतन, सरसंग और पुनः स्वर्गगयन

वैज्ञानकार्यं कार्ते हैं--कार्यका ! राज्य क्वारि अभिक्षे । सारको को लो। को हुन, सक, बक, बहु शरी उनक बद्धा क्रम्बार करते । इस प्रकार क्रमते को बीच नवे । एक दिन वे क्यो-कामे इन्हें यह अने। स्य-स्थाने क्यानेत होनेके बाद हुन्दरे पूछा, 'राजन् ! जिस सर्का अपने अपने पूछ पुरुषी पहारी होता है और जाने अध्य पुरुष से रिस्प इस को ग्रम दे दिया, का समय अपने को नम उन्हेंब हैवा ?' क्यारिने कहा—दिस्तात । की अपने पूर्वते कहा कि एते । में तुन्हें राज और पहुलके जैनके देशका राज क्याता है। सीमानाके देवनेका चोन क्यारे नहीं करेंगे। देवके भार्त, जोरोक्नोचे अवस्थात के है और अस्मीत्मारे समित्र । मनुष्येतर व्यक्तियोधे प्रमुख और मुख्येंने विद्यान् सर्वता सेत है। विक्रीके बहुत एउनकेनर भी जानों सक्तानिक प्रयत्न भी सरक कार्निये, वर्गोनिव प्रत्यो प्राणीका क्रोक ही सम्बन्धिनीय जन्म कर देता है। करियो और कक्षी कर पूँको नहीं निकारणी काहिने; अनुनित्त प्रसारको प्रमुखी गर्ने अन्तर्ने जाने गर्ने अन्तर्भ माहिते। निरान्ते विक्रोपने पान प्रतिपत्त हो, ऐसी पान से फर्वसोश बोस्ते है। यो अपनी कहारे, वीची और पर्नशर्वी कारोके करिये सेपीको स्थात है, सम्बंधे देखना भी एए है, क्लेकि व्यू अवनी क्लीके प्रवर्ष क्या विकासितीको से व्य है। हेला आवरण प्राप्त वाहिये कि राज्यूवन कारणे से संस्थार करें हैं, वीठ-वीड़े भी हुएती पह को । सुरुवेग कोई कहती कर को से सर्वत को उसन ही करना पार्थिने उस सहायासका जानान सेवार सर्वता सामुक्तानेक सम्बद्धानको ही प्रक्रम करमा साहिये । याणीसे भी साम-वृक्ति होती है । विस्तरन इसकी बीकरें पहले हैं, जा सत-दिन संच्यें पर पूर्व है। क्रारियो हेलो वालीका प्रयोग क्याँ नहीं करण व्यक्ति। हिर्म्बेक्टिने स्वाने कही सन्तरित का है कि सभी अनिनोधे और क्ष्मा अहेर मेडीका कर्ताव हो, प्रवासन्ति समयो कुछ विकासन और पंचर वायोंका उन्हेंन हो। स्वरंज नह कि करोर कनी ४ बोले. बीडी काली बोले: सम्बाद बारे, बार दे और काणी विज्ञाने कुछ पनि नहीं। बढ़ी प्रजीब्द्र सम्बद्धारक नार्न है।'

क्यांतिको बात सुरकार (सूने पुत्र), 'नक्षमञ्ज ! आपरे मुक्तवासान-वर्णका प्रा-पूरा पारान करके कार्यकार स्थीयका किया था। मैं शास्त्रों यह पुंतरत है कि जान तनकरें विस्ते सम्बद्ध है ?' बनादिने बहर, 'बेक्स, म्लून, शकर्ड और व्यक्तियोंने अपने समान समझी मुझे मोर्स नहीं हिसाबी पहला (' इसमें कहा, 'क्षक-राम, सूचने अपने समान, बाई और कोर्ट कोचोक्त प्रचल र पानका समस्त विकास विकास किया है। अपने के अपने कारीका क्यांत कारोबी एकार क्या कीन हे कहा । वहाँके सुरू-कोनोकी सीव्य से है है, साओ यहाँसे पुर्वापन दिन पहें (" प्राथिने पहा, "डीम्ड है । महि सम्बद अक्रमा करने नेय कुल हीन हो भार से में स्टॉर प्रतेने बीको निर्म (" इन्हों कहा, "अवही करें।"

कार्क स्टार एक क्यारि क्षेत्र लेकोर्न का हेका रूप



स्कानवर मिरने समें वर्जा अहन्द्र, अस्तेन, बस्तवान और सिनि क्यांड कारणे क्यांच करते थे। उन्हें गिरते रेकथर अहमारे क्या, 'मुख्य ! इन्हरा का इनके स्थान है। धुन्दे निर्दात देखकर कर प्रसिद्ध हो से हैं। तम ब्योजक का गये हे नहीं ट्यूर माओं और विकास तक मोड क्रोक्सन अपनी पान कारकार्थ । इन सामूक्त्रोके सामने इन्ह को सुनामा बाह्य क्रीका नहीं कर प्रकार । इन्हों और हीन पुरलोंके दिनों सेंस ही पहन अवस्य है : सोपसम्बद्धा रूप अनुनिध बीचमें आ गये हो । हुन अपने कारक टॉक-टॉक सराके।'

क्यांनि बहु—में इत्या अधियोग दिल्कर करने कारण असी जुत है या है। पुत्रमें अधियान या, अधियान मामका पुत्र कारण है। सार्क्षणेया दुर्हेगा अपूर्ण भी कारत कार्कि। यो कर-धान्यको किया कंत्रकर अपने शारतका किर-सामन कारत है, जो सम्बाद्धर है। वन कारत पुत्रमा नहीं कार्कि। विद्युत् होकर अवंकार नहीं कारक कार्कार है, ऐसा स्वयाकर समाय नहीं कारक कार्कि। हुत्सने करने नहीं, सुकते पुत्रे नहीं। केर्कि कार्कि कार्कि क्यां महि है। में विवासके विवासके विश्वति को का नहीं कारक की महि है। में विवासके विवासके विश्वति को का नहीं कारक, है। सम्बाद में क्यां कारक है। वहर कुने हुत्य के के किने। एक कार्क, क्या कारक सुनी चू—एन इंकानेट में कपूक्त होता है। सार्किन हुत्य केर कार कारको नहीं।

अर्थने पूजा—आर को अनेवा लोकोने क कुछ है और आक्रमानी जाकाविक समान प्राचन कर को है। तो व्यापने, आप प्रधानत: विक-विक लोकोने को ?

वक्तीनं उपर विक—में क्यों कुमीने सर्वालेंग एक वा।

पै एक स्वान वर्णता कार संवोधि हा और किर की नेकर क्षेत्री-मोड़ी व्यवस्थारपुर्व इक्युटिने एक स्वान कर्णता हा। स्वान्तर स्वानीने संवोधी कारण कई की एक ब्यान कर्ष हा। की क्यानाथी कारण क्षेत्रीय के एक व्यवस्था मर्गता विवास क्षिता। वहाँ में कुमीने आत्मक हो क्या और कुम होत्रर होत्रेयर कुमीनर आ कह है। की कम्मा क्षेत्र होत्रियर वस्त्यूटि सरी-सम्बन्धी कोई हो है, की ही कुम होत्य हो मानेवर इसकी क्षेत्रर की परिवास कर की है।

अपनाने पूजा—राजन् ! विकास महिता अनुहारको कनुमानो विकासनेको आहित होती है ? ये ततको आहा होते हैं का सामग्री ?

मनावितं उत्तर दिया—काणि सात हुए है--यान, तम, जल, इस, पंचा, जरावत और समापर हमा। अधिवानमें कारण हीय है जाती है। यो अपनी विद्यालों अधिवानमें कृते-पूर्ण वित्तों और दूसरोंके काणों विद्यान काले हैं, उने उत्तर संस्थिती जाहि नहीं होती। जनाते विश्वा भी मोश्राद्धानों अस्त्रपूर्ण कृति है। अन्यकों कार समाप है—अधिहोत, मीन, बैद्धानकर और यह। यह अनुवात वित्तरे आंखानमें समय हम्मा अनुहान होता है तो ये प्रयक्त वारण वन कारे हैं। हस्तानित होनेयर सुन्त नहीं प्राप्त वाहिये और अन्यक्तित होनेसर हुएए। जगाही सन्युक्त ऐसे स्वेगीकी पूजा काले हैं। हुद्देशी किह्नुद्धिकी कह निर्माण हैं। "मैं हुन्त, मैं वह कालेन्ड, मैं जान हुंगा, मेरी वह प्रविद्या हैं—इस क्याप्ती कारे वही

कांका है। इसका स्थल हो सेवरकर है।

अरुकने पूर्ण—स्थानकी, पूर्वण, पाण्यस्य और संभावी किन्द्र क्षत्रिका पालन करनेके पृत्युक्त बाद सुनी होते हैं 7

कारें का के प्राची समाधि सामानुसर अन्यवन करता है, जिसे मुस्लेक्ट्रोड विने अरहा नहीं हेनी कहा, के आकर्षने पहले जाएत और पीछे होता है, जिसका सम्बद्ध करूर होता है, जो इन्हियनमी, वैपेदारमी, सामगान क्या जन्मदरीक क्षेत्र है, उसे क्षेत्र ही सिर्देश बाप क्षेत्री है। जे पूजा कर्णमुक्ता कर प्रदा करोड़ गढ़ सरात है, अतिकियोको Person & Partiel was sorts fire the rall that, will क्या गुरुष है। यो कर्ष ज्योग करके परन-मुख्ये अंकी वेरेक्ट करना है, कर नहीं करना, कुरतेको कुछ-स-कुछ के जान है कर किसीको बहु नहीं चुँचला, बोक् करत और निकारक केंद्र करता है, का बारकस्थाभागी जीव है सिद्धि प्राप्त करणा है। यो विस्ती करण-बर्देशस-नावस, विक्रिया, कारोन्से आहेले जीविका की करवता, समझ सहयाने एक, विदेशिय और सराज है, विस्तिय कर नहीं tien, uber umm f. wien failet auten aft marrie पान निवास क्या है, यह तथा संस्थाते है।

हार प्रकार और बहुत-ही समयोग परनेके कर प्रवाहिते वहा, 'हेक्कारिय प्रोडका करनेके किये बहु के हैं। मैं अब रिमेन्स (इसके प्रकारके पूर्व आप-वैसे समुक्तीका संपान्त प्राह कुमा है।'

आंपने वक्त-कारी पूर्व कियो सेवा द्वाप्त होनेवारे हैं. अपन्तिको सम्बद्ध सुनेद प्रतेशी विकासिय —वर्ड भी पूर्व पुरुषकारित प्राप्तकाल पान्य है, कई में आपको हेता है, आप विने नहीं।

क्यानि का—में स्थापन के हूं नहीं । में दान मैको सुं ? इस सकत्में कर से मैंने भी महरे बहुत मिले हैं

अवर्तनी वक्क-पूत्रों अच्छारित अच्छा स्वर्गरतेशस्ये विश्व-विश्व सोच्योको आहि होनेव्यस्ति है, वे आपको देश हैं। अबर वर्ता व निर्दे, अर्थने अर्थ ।

क्यारेने कहा—कोई भी राजा अन्ते सभ्याह अस्तिहे सन नहीं है समझा। समित्र हेन्सर हम हेन्स, जा से नहा काम कर्त्त है। असलक किसी केंद्र स्थिपने देशा काम नहीं वित्या है, जिस में है बेस्से करों।

वकुष्यक्ते व्यक्त-स्थान् । ये अपने अपने क्रोक जानको देश हैं । अपने बाँटे इसे दान समझायान लेनेने हिण्याने हैं तो एक विन्यकोत प्राहेणे साथ सारीह सोवित्ये ;

क्यांत्रेने कार--का प्राप्त-निवास को सर्वका विकास है। मैंने क्यांक देख निवासकार कभी नहीं किया है। बोर्ड की समुख्य देख नहीं करते, मैं हेसा कैसे करी। हिन्देने कहा--पहराज | मै औद्योगर निर्मेष है। जान महि करीद-वित्तरी वहीं करना पहले से मेंने पूर्ण्येक्ट पत्र स्रोकार कर लेकिने। मैं इन्हें स्वयंत्री मेंह कथा है। अस य की से को की मैं इन्हें स्वीकार नहीं करता।

स्थातिने कहा—सूच कहे जन्मकाशती हो । परसू में हुम्लेके पुरुष-कारकार जनकेग नहीं कर समस्य ।

न्युपने नमं अस्य प्राचन । तथा एक-एक्के पुण्य-सोच नहीं हेवे से इत्योध स्वीतात कर स्थिति । इस अवस्थी सरस्य साथ पुण्यास देवर नक्क करेको पी विका है।

रकारेने अंतर शिक—काई । कुमानेन मेरे सामानेक अनुभार प्रकार करो । सामुक्त भी समाने ही पहाचारी होते हैं। विरं जो अनी नहीं विराय, जब अन बेलो करो ।

स्त्रापने श्वा—न्यून्त्य ! ये आवत्याने सेनेसे पीच रच विकास रोग से हैं ? जब प्रतिके क्षय पुरुषकोणीयी कार्य केरी है ?

क्यांति क्या—ही, ये सुरक्षी का पुजर्यकोची पुरस्कतेकोचे से कार्यति।

अपूर्ण कार-जार का स्थित कर वर्गनी गाउँ प्रतिके, क्रानेत की सम्बद्ध का अमेरे।

क्यारे ओरो--का प्राचीने प्रानीत विकास प्राप्त का सी ।

इस्टीको कार्य, इस सब्द स्थ्य हो गाउँ। देशके गाउँ, गाउ इस्टीका प्रकृत का क्षेत्र का है।

स्त्राच, अवर्षेत, क्यूनरान् और विकिशा प्रतिका अस्त्रीकार बारोबोर बारका कराति को सर्गाद स्थिकारी है गये थे। ME में राजी राजेंसर बैक्सर सर्गांद्र तिले सक को। सर क्रमा करेंद्र सार्थिक हेक्से कर्ण और अवकार जनारित के का का । जीवोन्स विशेषका एक उनने बनाद वेदायन उदायने क्यांको पहर, 'राजन् । एक नेरा दिन दिन है। मैं सम्बन्धा का प्रेड में हो सबसे बहुते आने बार पहिंचून । यह विश्वित हर आने वनों पढ़ पढ़ है ?' चलतिने पढ़, 'दिनिने अपन पानंतर प्रत्यक्रीको है हिया का र पूर्ण, १९४४०, पान, वर्ष, हो, क्षे, क्ष्म, सीमार्थ, सेमार्थ ऑक्स्प्रस—ने प्राणे पूरा क्रिकेट केवरवार है। अपनेश भी जो जाँचनामधी जलसम भारी कु नवी है। इसीसे बार सबके आगे बार नवा है।' जब मानको पहर, 'राजर् । सम-सम कराईके, आप सीप और प्रिकार का है ? अस्य-वेदा प्राप्त के विज्ञी प्राप्तान अध्या जीको अवस्थ को इस पर। ' क्योंने कर देश-' में सम्बद्ध स्कूपमा कुर प्रथमि है। मेरा दुर कु है। में सार्वजेय प्राण्यों का देशो, कुन्ते पुत्र कर भी करानों केन हैं। क्वेंद्रिक हुन जरने हैं। मैं कुल्लेचेक चना है।' इस स्थार कार्यात करते हुए तम प्राप्ति करे गर्न ।

## पुरुवंशका वर्णन

क्लोबको कह—सम्बद् ! मैं तम कुलेको पहली एक्सोबी बंबाकते कुला सक्य है। मैं क्लांब है कि हर बंदाने होता, हरित सक्या सम्बद्धों हैन कोई भी एक नहैं करा है।

र्रज्ञाशकारी वदा—रोख है। व्यर्थ हैवानने हुते आपके मंत्रका वर्धर सुवान है। वें को सुनात है। वाले अभित, अस्तिये विकासन, निकारत्यों कर, मनुने हान, हाको पुस्तक, वृत्रकारों असु, सामुने जुन और वृत्रके वयसिका कम हुना का। व्यवस्थि से वृत्र के—व्यु और वृत्रकारी और हार्थिश। नेक्कानेक से वृत्र के—व्यु और सुनंतु : व्यरिक्षके दीन पुर हुन्—बुद्ध, अनु और वृत्र । व्यूने सहस हुन् और पूज्ये कीना। पुरुषी प्रतिका नाम कोकाना भा। उससे नामेकाका कम हुन्स। उसने कीन माहनेस और

एक विश्वविद् यह विका था। वक्तेक्करों को थै— तनका। उसने अवकान् दूका। प्रविद्यान्त्री को वी अवकारे, उसने संवाधि पूजा। प्रविद्यान्त्री काई स्थान वाले सर्वाचेन काय पुरसा जन पूजा। सर्वाधिका को वृक्ताचे वक्तेक्की कार्य हुई। कार्यक्का विका पूजा वृक्ताचे। उसके वर्षले अवकार्यका क्या पूजा। सम्बद्धिकों। उसके वर्षले अवकार्यका क्या पूजा। सम्बद्धिकों को वर्षकों असि पूजा। अधिकार कार्यान्त्री कार्यको को वर्षकों असि पूजा। अधिकार कार्यकों, समुख्यांकी कार्यले स्वाधिकार स्थानकों असि और अधिकार स्थेक व्यक्तिकार व्यक्तिकार वर्षकों असि और अधिकार स्थेक वर्षले व्यक्त वर्षका पुरस्ता कार्यकों असि और अधिकार स्थेक

व्यक्ती स्वका काव काँडे फीनावर **पन** हुआ।

इसने सरकारिके कार बाद कांक्य सर्वनुकरान्य क प्रिया। यह समझ हेनेक स्तानतीने उससे विच्या पर हिना : अस्के गर्मसे इंस् इन्त । इंस्केट पार्ट कारिपुरेशे हिंसन हजा। इतिनवदे की स्वन्तरीसे कुमन कर्दर की पूर पूर् । कुललकी मार्चा समुग्तस्तरले चला हुआ । वस्तकी चली मुखाने पुरुषु, पुरुषुकी जाते विकासने सुद्रोप और सुद्रोहकी सुनर्गा नामक पार्टने इस्तीका जन्म हुन्छ । उन्हेंने ही हरितनापुर कराया। इस्तीकी करी करोकराके गर्वके विक्रास्त्र और विक्रम्पनको सुरेवाले अवर्गात, अवस्थिको विधित प्रतियोगे एक हो चीचीत पुत्र हुए। सभी विधित वंशोके प्रणांक हुए। उनमें परतवंशके प्रणांकका नाम था श्रीवरण । संस्ररणकी पारी प्राथमिक गर्ममे श्रूपका जन्म हुआ । कुरब्दी वही कुमहोसे बिहरश, बिहरवादी संतिवासे अन्ता, क्षत्रवाची अपूर्णाने परीक्षिण, परीक्षिण्यी सुवदानो भीयसेन, चीपसेनको क्रवारीसे प्रतिकाय और प्रतिकायके प्रतीय हुए। अर्थिको पत्नी सुरुवके गर्मने दीन पुत्र हर्-केटरि, प्राप्तर और बाधीयां । हेमापि वयदनमें ही प्रयास करने जारे गये। हारानु राजा हुए। वे जिल सूनेको अपने हार्योसे हु के है, का बिर जनान और सुन्ती हो काल या । इसीने उनका नाम हालानु पहर वा १ ज्ञाचनुका विश्वय जानीरवी न्यूनते इस्त था। जिससे देशसम्बा कम इत्य । वे सन्तर्ने बीनके नामो प्रसिद्ध है। चीचने अपने निवासी जरणको निर्म सरकारोंके साथ उनका दिवस करा दिवा था। जाके नपीरी विकासीय और विसादार—से का हुए। विकाद कार्याओ ही गुनाबंके हाथसे बुद्धमें करा नवा। विकासीय स्था हुआ। सम्बद्धे के सिक्तें थें!—अधिकार और सम्बद्धिकाः। का सम्बद्ध होनेके पहले ही वर गया । उसकी पाता सरकारीने सोबा कि जब से हुवानके नेएका उन्हेद हुन। उसने कासका सरम किया और उनके आनेवर कहा कि 'बुक्ता पार्ट विकासीर्थ किंग सन्तानके ही पर गया। हुए सामी बेक्समा करे।' जासबीने गतांची अद्या क्रीक्स करके

अध्यक्तमे वृतरहः, अन्यक्तिकासे पान्तु और जनके रासेसे विद्वरको अस्य किना। न्यस्तिके वस्त्रस्ये वृत्रप्रके स्तै पूर्व हृद् । असे वार प्रवास के—दुवीकर, दु-सारान, विकर्त और विकरेत । प्रभूको प्रती कुलीसे पीन पूर हृद्—पुविद्वित, पोस्कोन और कर्तुन । अनको दूसरी प्रवी वर्षासे से पूर्व हृद्—नकुल और स्वदेव । इस्त्रप्रवक्ते पुले वैक्टिसे प्रविचेक विकास हुआ । विद्विके प्रवस्ते पीनो प्रवासीके अपका प्रतिक्रिक, सुत्रसोध, सुत्रकीर्त, प्रतानीक और साम्बर्गामा कन्य हुआ ।

कुरिहिरको एक और पती थी, अस्त्रा भग वा देविका। क्रके नमेंते मेंकेव हुआ। श्रीमरेनने कावित्रकारी कना क्षकारचे सर्वेद नामका कु। अवस् वित्य । अर्जुनने नामकर् बीकुमानी पहित्र सुप्तारी विवाह करके अधिवन्तु नावक पर अस्त किया। यह देश गुजवान् और पंगवान् श्रीकम्बक्तुमा प्रीतियम या। नकुरुवी पत्नी करेकुमरीसे निर्दाक्त और व्यक्तिकती क्यों कितनाके गर्पने ह्योंक्का कम san । चीनकेको इन्हे पहले दिविक्यके गर्परे प्रदेशका अवस्था का केंद्र हो सबस का। इस अकर पान्यवर्गके न्याय कु हुए। पत्नु नेहका निकार अधिकनुते ही हुआ। इसके असिरेश अर्थुनके से पुत्र और थे—स्त्यूरीने प्रधानम् और विकासको सम्बद्धाः । वे क्षेत्री अपनी-अपनी प्रताने साथ क्तकं पर यो और उन्होंके जाराधिकारी हुए। अधियनपुर्वत किया किराश्चनको उत्तरके साथ इस। या। इसके नधीरे हर का कारकार उन्हें पूर्ध जिसे चारतम् श्रीकृष्णने जीवित किया। जाकी पृत् जनजायके अवले हाँ वी। कुम्बोदाके परिश्रीय होनेपर सरका बना हुआ वा, इसलिये कं वर्रीक्षित्के जायरे प्रसिद्ध पृथ्य । परिकारकी प्राप्त न्याकरीके पुत्र आध है। आपको बहुएम नामकी प्रशासे हे क्ष हर है—इसलेक और इंकुकर्ण । इसलेकके भी एक कु हो कुका है—अक्षमेशका । इस प्रकार मेरे आपके उसके अनुसार पुरुवेत्तका वर्णन विस्त्य )

## राजर्वि शान्तनुका गङ्गासे विवाह और उनके पुत्र भीव्यका युवराज होना

वैद्रान्त्रकार्यं काले हि—समयेका ! इक्क्युक्तेवर्वे स्वाधिक नामके एक राज्य थे। वे को स्वाधित एवं सके गौर थे। उन्होंने को-वहे अध्यवेष और कार्युक का कार्ये कार्य इस्ति किया। एक हिन क्यूक-से देवता और राज्यों, विनये स्वाधित की थे, स्वाधिकी सेवार्थे अधिकार थे। उसी अध्यव हरिएएस्से कुछ विस्ताव दिया। तम व्याधिक केर व्याध्यव सरीएएस्से कुछ विस्ताव दिया। तम व्याधिक स्वाधिक स्वीपित अपनी अधि नेवा कर ली, वरम् राज्यों स्वाधिक ! अस त्या प्रस्ताविक करेती और तम स्वाधिक देवता केर्या कराये तम तुक्तरा अधिक करेती और तम स्वाधिक स्वाधिक कराये कराये

नहानिको प्रदानां हा आहा निर्माण कर नह निर्माण किया कि मैं पूर्णाली हाता ब्रांगिका कुछ नहें। नहारते का ब्राहित नहीं, तक राजोर्थ प्रमुख्यें अस्त्राते केंद्र कुष्ट में की ब्रिटिश हरायों जीवीन हो रहे के अने कह जान हो कुछा का कि तुस्तिया पर्याप-योगिये जान त्वे। नहारतीय उनले बातवीत वारोके काद पह कांकार कर निर्माण कि मैं तुस्तियों असमें नार्यों वाद्य वारोगी और नावाल पर्याप्तियों असमें नार्यों वाद्य वारोगी और नावाल पर्याप्तियों असमें नार्यों वाद्य वारोगी और नावाल पर्याप्तियों क्या हम वारोगी की असमें-असमें उद्यापालों एक पुत्र वारोगीकां केंद्र देनेकी करिया की और वह भी वाह सिमा कि यह असमें कीम क्या हमें

हुभर प्रश्नेत्रके राजा अर्थन अवसी करोके साथ म्यून-हुभर तराजा कर हो थे : एक दिर धनवार ग्र्यून अर्थका वृति धारण करके अर्थ पास अर्थी : बाराबीय होनेके बाद व्य निह्नय हुआ कि थे राजा प्रश्नेत्रके साथ पुरावी पास करे : पहुल्योंने प्रश्नेत्रकी बात क्षेत्रका कर की और एक प्रश्नेत्रके अपनी पासक सहित पुरावादिक विके वही तराजा की : इसाव एका प्रतीप पाल हो हो थे अवसा क्रम्य बंद प्रश्नेत्र हो सह या : हेसी अवस्थाने स्वस्तर होनेके बादल कारक नाथ 'बारावन्' पहा । जब बारावन् कारत हुए, तब विकान करते कहा कि 'तुन्हारे पाल एक विका की पुरावी अधिकावको आवेगी । हुम अस्त्री कीई अधि-पहाला पर करना । वह की कुछ करे, असरी कुछ कहान नाथ ।' ऐस्स कहान करने वह नाथे ।

एक बार राजविं कानान् तिकार खेलते-केलवे शहरतद्यार जा पहुँचे : उन्होंने वहाँ एक परच सुन्दरी को देखी : व्या दूशरी राक्ष्मीके संपान जान पहली की : जानकी जन-कारणि देखकार

क्षान्तम् विभिन्न हो नवं । ससे वर्गायं रेन्सह हो सायः । इस प्रकार देशवं रूपे अन्ये नेतारं से नायंत्रे । यह दिन्स वाकि कारों से उनके प्रकार की कि 'तुम मुझे परिवासों स्वीतार परिवास पूर्ण हुए कारा की कि 'तुम मुझे परिवासों स्वीतार का तो ।' इसे बहु —रावन् ह सुझे सायकी राजी होता स्वीतार है। इसे बहु है कि मैं अवक-मूद को कुछ कारे, आप पूर्ण होत्यांका नहीं । पूछ कड़िक्स भी जा। अवस्था आप पेट बहु वर्ष पूर्ण करेंचे स्वातार मैं आपके पांच पूर्ण । तिस हिन आप पूर्ण होतेने का नहीं बाद नावेंगे, उसी हिन मैं आपको कोइकार कार्य नावेंगे। 'रावाने करकी बाद स्वीतार पर सी । स्वातंत्रीको कहाँ असावर हुई। स्वाने भी कुछ पुर-वाल नहीं की।

रावर्ति प्राप्तम् नहारतीके स्रोतः, सराचार, स्थः, धीन्तर्गं, क्याना आदि सद्युक्त और संन्यासे बहुत ही आर्जीयत हुए । वै पक्ष्मिके साथ हार प्रयास आसरक हो गये कि उन्हें बहुत-से को बोध प्रापेक काराव्य गाँ कार । अभावः महाजीके नर्पने सार पर प्रयम हो सके में । परंह को ही रह होता की क्री राज्यको 🖈 तेनी अस्त्रकारक करने काली 🛊 देशा सक्रकर को नक्ष्मको नाएवे कल देते थीं । राजा सलानुको न्य बात बहुर आदिय मानुक होती, कांतु वे हुए भागते गुरू फंसले गृहि कि बढ़ी पर मुझे होहका करी र जार । सत्ती हतेयी मही मी। और अध्यक्ती कुछ होनेपर भी में हैंस रही भी। एउन क्राप्तपुर्वे हारते यक २ म हम और उनके करने या हाक र्ह्मा कि का कुर पूर्व विशेष साथ र अधीर सहार, आहे. जुन्होंक, किराब्दी पूर्व है ? इन बचोबरे क्यें यह डाल्वी है ? अप्रै क्षाति । यह से सहस्य पाप है ("महत्त्वेगीने कहा, औ एसोड इक्का ! ले, में तुक्ती इस लाइलेको नहीं माती। अब क्रमेंक अनुस्तार मेरा कहाँ करन भारी हो प्रकाश ( हेश्रो), मै बहुती क्या पहुर है। बहे-बहे पहुरी नेस सेवर करते हैं। केन्द्राजीकी कार्व-रिव्यक्ति विक्षे हो में सुनारे पास हमने विकास हो। में ने आठी कुर अह बस् है। विसहने सामसे इनें बनुष्य-बोनिये क्या तेना प्रकृत्या वर्ष प्रमुखस्त्रीक्यों क्ष्माने-केने क्रिया और येथे-केसी जो नहीं चित्र प्रमानी सी । क्युओके दिना होनेके कारण वृष्ट्रे अकृत लोक किनेने । मैंने ज्ये तुरण पुरू कर देनेकी प्रविता कर ही थी, उसीसे ऐसा किया : अब के क्रमने कुछ हो को, में का रही है। यह पूर वसुओका अञ्चलक है। इसकी सूच गां। वाचे ।

अन्तर्भे शक्त — 'स्ट्रिस्ट अपि स्ट्रीन से ? अस्ट्रिन सम्असितं ज्ञाप कर्यो विका ? इस जिल्लाने ऐसा स्ट्रीन-स्ता कर्म क्रिक है, जिसमें का महत्त्व-मोदाने क्रेक ? सहस्रोपे पनुष्य-पोरियों क्या ही क्यों हैन्सा? ये क्या बारे कुटे महारहे।' स्थानेकी यहा, 'विक्रिक्ट कील की बारतांक्र पत्र है। येठ प्रवेशके पत्र हो समझ पत्र परित. सुन्त और सुरुवार कार्यन है। ये वहीं रूपका करते है। कारकेन्द्री पुढ़े जीएने उन्हें सहस्य हमिन्द हेन्द्रे निर्ण पहि पूर्वी है। एक बार पूर्व अभी बहु अपने बोलोंके बान उस कारे आहे। एक पर्-कांच्ये हो। काल कालसओको एवं करनेकारी वर्षितीयर प्यापनी । उसने को अपने पति सी गामक बहुको विकासा । बहुने कहा, 'तिये ! यह सम्बेजन मी बरिद्ध मुनिको है। बाँद कोई कहन इसका कुन की है से कुर प्रभार करंतक मीरिया और कारण हो है क्युटकीने कहा, भी जपनी सर्वाके रिको च्छा पान च्याकी है, हुए होने हा से कर्ते ।' अपनी प्रतिकी बाद जनका सूँचे अपने प्रदुत्तेको कुरवार और बढ़ मी हर से गये। बहुको 🗃 समय हर कार्यार कार्य ही न कह कि सामें को सामी है और से हमें un ber beifel un ur mit be

का महीं करिए का-कर देखा अपने आवाप सीहे. तम हारे काने केनेक भी उने अवनी प्रकास में कीनने न निर्मा । उन्होंने दिवन इंद्रियो देशाचर पर्द्रओवो साथ दिया, 'बसुओंने मेरी नाम हा तो है। प्राचीको प्रमुख-कोनिने क्रमता क्या होता है जब कार करती और प्रकारकारी हार्टी परिवाने कराओको पान वे दिया और उन्हें या बात सामृत हाँ, तथ से वर्ष अलग अरकेंद्र किये जीवरीवर्धीत उनके अम्मानवर शाचे । प्रतिसूचे प्रदान, 'और प्रधा से एक-एक क्ष्मि हो प्रमुख-धोनिने हरकार स कारेंगे, नरम मह ही मामक यह अरथ को फेलके देले क्या देखेला मार्थलेकमें स्ट्रेगा । मेरे जैससे निकारी कार कची सूती जो है इकारे । यह यह भी वर्तनोक्ष्में अन्तर करत जी कोना । pen if and freed were alle medle fieb ab-सन्तरमञ्जू भी स्थान कर हेगा।" वरित्तानीची क्षेत्र सुरकार राज-के-राज मेरे पार आये और या प्रार्थन की कि को कन हेरों ही दूस अपने जरूने पेक्ट देता। बैंने स्वीब्धार का रिक्ट और नेता हो मिन्छ । यह अधिन तिरक्ष बढी ही नामक पत है। यह विश्वास्त्राच्य पहुच्यानेकमें होना।' व्या व्याचन मकानी का कुमारके साथ ही अन्यानीय हे नहीं :

कारोजय ! राजा बारानु को नेकारी, वर्णाना और क्रमन्ति थे। बडे-बडे देवर्गि और तुजर्गि उनका सामार करते थे। इतिस्थित, इस, अम, अस, संबंध, केर्र और केर अभें सामाजिक करते विक्रमान के। वे वर्णनीके क्रक अर्थनेक्षिये नियुक्त थे। वे केवल परत्तवंत्रके हो नहीं सार्थ असके एक बार बाह्य है। उनका परित्र देखकर राज खेगाँने को निक्षण किया कि बाग और अभी सक्तर वर्ष हो है। क देनो क्रांपेक्कने प्रको का-कावत ने हो है। प्रकार क्रेंब, क्य और क्रक निर पनी की राज संस्की मेंद सोवे और व्यन्ते । उनके रेक्सी काइनके प्रनामित क्रेकर पूर्ती करण एक भी बनका अधिने सार को थे। क्यांगान-वर्णनी अस्टेसर पृद्धि होने सानी। व्यक्ति प्रकारोको केम करते, केम क्रांटिको अनुसामी रही और क्षा, प्रकार, प्रकेश क्षा कैलोबी केलो क्षेत्र करते। क्रमा स्थापनी भी प्रमित्रपुर। स्थिते हे सारी पृथ्येका क्रांतन करते थे। अन्ते राजन्यकाने यह, बुकर, हरिन और परिवर्णकारों क्षेत्र जो पर समाप्त था। उनके सम्बद्ध तालकोची अध्यक्त की और में सार्व बड़ी विरुपके ताक राग और हुंको सील हेकर प्रकार पारक-समान करते थे। हेका, वहीं और विश्वतिक व्यक्ति विश्वे क्योग होता द्वारा वा । एक प्राप्ता कृषों, अवव और वस्-पक्षी—संघी अभिनोधी पता करते हैं। इस समय समयों पतनी सरकेंद्र अभीक को और सबका का दानदे किये सामानित था। क्रमीय करंगच पूर्व अक्रमानेका निर्माह करते हुए समाने ment the time even ber-



रूप जिर एक करन कान्द्रोके काल निका से है। उन्होंने देखा कि पहानोंने सहत बोड़ा सक दा पना है। से बड़े विरित्त और विचित्त हुए कि अपन देवनी नहर कर क्यों की

र्ही है । जाने पहला अहोने क्षेत्र स्टे. सर पत पता कि एक बढ़ बनती, सुरह और विश्वतन्त्रम कुमार दिन अब्देख अव्यक्त कर का है और जाने जाने कानोंके प्रधानको पहलाई नाग केना से है। यह अलेकिक सर्व हेशकर ने अवका विक्रित से गये । उन्होंने अपने पुरस्के के होनेके सकत ही देशा था, इसलिये पहचान नहीं समेत । यह सुमाले राजर्वि सांक्ष्युको मानको केवित कर विका और उनके क्रमानंत्र हो गया। अस ५३विं प्राप्तको महानीसे बहा कि 'का सुरारको दिवाओ ।' नक्षणी सुन्दर ३४ करण करके अपने पुरस्ता हाहिया हाम नवाई इनके सामने अपनी : उनका शत्यक सीवार्ग, दिव्य अस्त्यूचन और निर्मात करा देशका शंक्षर्थि कारानु कर्षे व्यापान न सके। न्यान्त्रीने व्याप्त कि 'सहराज | मह आवका आदार्थ कु है, मो मुहले के हमा

मा। अस्य हुई क्षेत्रका क्षेत्रिके और अस्ती राजधानीने के जाने । प्राने वरिष्टु अधिने सामेग्यह नेहीका सम्मन्त कर रिका है, असोबा अञ्चल धूर है पूजा है। या नेड बर्ज़र्यर बुद्धारे देवराज प्राप्ते शब्दन है। देवता और असुर सची क्षात्र सम्बद्ध बाले है। क्षेत्रपुर प्रकारत और केन्युर बारवी से कुछ करते हैं, का तक हो भारत है। उसने प्रकार स्टब्रुवर्गा किर सम्बद्धीया हार है, जो से स्व करण है। कर क्षा क्षांसीनपुर बनुवंद नीरको जानी राजकारोंने से जराने । मैं इसे सीध रही हैं।" समर्थि जापानु करने पुत्रको राजकारीने राजार बहुद सुन्ते हुए और पंति ही क्षी कुल्यक-प्रकृत अस्तिकिक बार विका । राष्ट्राण्यक वेदालाने अन्ये बील और सहमारने जरे देशको प्रसम कर दिन्हा। इस अवस्त को आरम्पाने कर वर्ग और मेंच गर्ने ।

### भीव्यक्ती दुक्तर प्रतिज्ञा और शान्तनुको सत्यक्तीकी प्राप्ति

प्राप्तन बचना नहींके नहरूर अपने जिन्नत्व कर को थे। उन्हें महों बहुत है जान सुराम परतुत हो, परन्तु का प्रमूत औ होता था कि का कहते जा हो है। उन्होंने जनका कर सामुक्तिको चेत्रा वर्षः। व्यक्तिः विनानोत्रे वर्षे एक देवस्थानके प्रयास करना बीचा पहीं । एकाने अपने पूछा, 'बारायांच ! तुम किराबरी कम्बा के 7 बर्वन के 7 और बिक्ट ब्लेटको कई क्ष रहे हे ?' कमाने बहर, 'में निवार-कमा है। बिनाओ अक्राओ वर्णने क्या कारती है।' अल्के स्टेन्टर्स, कपूर्व और होगन्धले मोहित होनार राजनि सत्त्वपूर्व को अपनी पार्ट बनाग बाह्य और जाने निरादे पार बाहर आहे हैंनो पाचना की। निवादतानने कहा, 'राजन् ! सकते का दिवा माना पुढ़े निरमें है, तमीसे मैं इसके निमाक पेको किरिक 🕯 । बरम्बु इसके सम्बन्धने मेरे नाजरे एक इच्छा है। बर्वें, जान इसे बर्ववर्ती सराज काही है से अस्य क्राव्यकृतिक एक प्रतिज्ञा बर्रेशिये, क्योंकि जाय सरकारी है। आकंड सकर वर मुझे और कहाँ मिलेगा । इसलिये में आयो प्रतिक्र पार हेन्द्रेयर इसका जिनक कर हैन्द्र हैं क्रम्प्यूने कहा, 'कारे तून ररपनी कर्त बताओं । कोई देनेकेन्य बचन क्रेम्ब के हैना, नहीं से कोई बन्धन बोड़े हैं है।' निकारणको बहुत, 'हरके वर्षारे में का है, नहें आपके मार कमाबा अविवासे है, और महेर्द नहीं ।'

वीहरमाध्यानी काले हैं—कालेकर । एक देन राजर्ति । वित्र को ब्यूंपि काली वर्त कीवार नहीं की । वे कालवाह lein-से के के के और जारे काराव्य विकास करते हुए



इतिराज्यार आने । एक हिन देखारने अपने पिताको विनित्त हेन्द्र को उनके चाम अन्तर कहने तमे, 'विताबी । मुजीबेर व्यापि राजा प्राप्तनु जा क्ष्मण कामने आगन पीर्दिय है, । अभी राजा जानके बक्तमाँ हैं। जार राज प्राप्त स्वयुक्तक 🛊 । दिल जान कुन्नी होका निरसार क्या रहेको स्तुते हैं ? 🛘 यो प्रतिक्रा को 🗓 यह कारके अनुसार हो है । इसके सम्बन्धने अपर अपने विश्वित है कि न प्यासी निर्माद है और न मेरेकेन क्यार क्षेत्रन स्वार के निकाल है। जनका क्षेत्र कीना और पीला पढ़ गया है। आप कुल्ले के नने हैं। कृष्य करके अपना हेग बदाहरे, में अस्ता अतिकार करिया :' करवन्ते कहा, 'बेटा ! समयुक्त में विशेषक हैं। इसने इस महत्त् कुल्पो एकाम् पूर्णी बंदरवर है । से सर्वेद समय क्रमा बेरकारे माराजि तरका रहते हो । सन्तर्के जिल्ला ही स्तेल करने-विकास रहते हैं, यह नेकार में बहुत ही निर्माण रहता है। यनकार म करें देख हो: परना नहीं तुनवर विश्वति आनी को क्रको चंत्रका है नक है बारता । अवस्य है अवेके कुर केयके पुरोंके हेता है और मैं व्यवनि व्यक्त-से विवास की भी करन triger, far ift stauererent rente fint it ftem ? है। यानका देवाराने अपने असीविक केवले बार प्रा प्रोक्ष-विकार किया और यह क्योंसे मुख्या रीय-प्रोक कारत तथा निवासकार्यों को पन (वै)

का देवारों को को शरीकोची रेका वाराको निवासायांको और पाम को और वह श्राव्य अवने रिलावेट रिक्ते कार्य ही कार्या गरियों । विकास्ताको वेश्वतिना क्षा कामा-सरकार किया और परी संसाध बाह, 'कार्यक-विकेश । एवर्ड कार्यकी केर्यकी विके अपन अनेतरे ही कर्मात है। किर भी देशा सामानिक सम्बन्ध क्षा व्यक्तित कर्व इसको भी प्रकृतक अन्य प्रदेश । पर मान्य दिन होतु राजान्यी मुखे हैं, ये उनल्लेपोली पराण्यीके है। क्यूरेने मेरे पान बार-बार सम्बंध मेरत है कि हुए मेरी पूरी स्वयक्तीका विकास कार्ती क्रांताको सरका। वैते इसके क्ष्मुक देवर्षि अधिकाते सूच्य काता है हिना है। परमू से पुरस्य-केवल करवेकला होतेले कारण कुछ प्रधानके इस सम्बाद्धा रिता हो है, इस्तीको छह चा है कि इस रियान-सम्बन्धे इंदर ही क्षेत्र है। यह यह कि सामानिक पुरुष्य हुन् बहु असर होता । पुरुष्य । जैसलें शाम सह हो श्चारेंगे, का बादे गानते हो या अहर, जीविक नहीं या राज्या । यह संस्थार की आयंद्र रियाओं यह करण जी दे।' पहुनका केवलने निकादकार का सकत श्रीरवेशि प्रवासने अर्थ विकास स्पेटन पूर्व होनेहे क्रिके इतिशा की—'निकरतम ! में कावकांक का राज प्रविद्या करता है कि इसके गर्नते से पुर क्षेत्रा, नई इक्ट द्या होगा : मेरी यह काठोर प्रतिक्रा अध्यक्ता है और आगे औ बाक्द है कोई ऐसी प्रक्रिय करें (' निकारण अभी और कुछ महता था। उसने कहा, 'कुरएक ! अवने सम्बन्धिके दिनो



को कोई सीह भी भी है। मेरे काले एक रानेह अधार है कि प्रत्या आवत पुर प्रत्यानीके दुस्ते राज और है। केवार ने निवादास्था आवर्ष धनामार वर्तिभोगी परी प्राथमें कहा, 'हरीओ । की अपने विकास किने प्राथका वरिकाल के पहले ही कर दिया है। अब संसारके दियों अवस निक्रम कर का है। निकारक र अलते मेर स्थापने समान्य होता। प्रत्यान न होनेपर भी नही अहांच सोच्योची salta distinct

केव्यालको प्रमु पहलेर स्त्रीयस सुरक्षात निकारतकोर क्षरीरनी केराहा हो उसका। उसने कहा, 'मैं करना देता है। उसी उसके ताकाको देवता, पानि और कामानी देवतालय पुर्योकी गर्मा करने तथीं और तकने बढ़ा-नद भीन है इसका कर 'नोवा' होना पादिने । प्रान्ते यह देशात भीना सरनातिको रकार बहाबर इतिन्यपुर से कथे और अपने विशासी और हिमा । हेम्बलको इस प्रीतन अधिकारी बर्धना एक स्टेप हमारहे होकर और अलग-अलग भी करने रागे । शबने कहा, सम्बद्धाः व्या भीन्य है । भीन्यकाः व्या कृतकः कार्य सुनकः वर्धाः कारानु स्कूत कारक हुए। क्यूंटि अपने पुलको पर विका, 'मेरे निकार कुर । काराव्य हुन कीय साहोत्रो, काराव्य कृतु हुन्हात् कार को कोका नहीं कर सकेशी। पूजरे अनुपति प्रश्न करते े का सुरुपर कारण प्रश्नात क्षेत्र (स्टेर्टिं) है

## चित्राङ्गद और विचित्रवीर्यका चरित्र, भीष्मका पराक्रम और द्रुद्धप्रतिज्ञा तथा धृतराष्ट्रादिका जन्म

वैद्यायको स्तर्न है—सम्बेदन ! सर्वा सारापुर्व ! स्तर्कर सहस् है।' इस अवत्र समय स्थानो और पार्टी सारकारिक गर्नते के पुत्र हुए—विकाहर और पार्चनरेकको सारकारका के क-स्थानिक नेवार पार पहे। विविद्यार्थिय । दोनों ही को होनहार और करवानी से : असी विकास कुल्यामा अंग थे जी किए से कि एकी प्राप्तन वर्गनाती से गरे। पीराधीरे कार्यकीयी सम्पति क्रिक्रमुको राजगारीयर बैटान्स । उसने अपने कार्यन्त्रो सन्त्री प्रवाओको पंपन्ति विका। यह विको यो प्रमुख्यो अपने समान नहीं सन्द्राता था। क्यानिया विवादको यह देखका कि प्रान्तपुरस्क विकास अपने महत्त्वपुरस्क केन्द्र, यनुष्य और असुरोको नीवा दिखा था है, अल्ल साह्य कर है रूप क्षेत्रे समन्तर्भागेने कुल्केनके मैदारने प्रतासन पुत्र हुआ। इराज्यों नहींके स्टार तीन वर्गक रहाई परवर्ते हो। एक्कोर विवाहर बहुत को संस्था छ। प्रत्ये हुओं राज विश्वकृत्यी पृत्रु हे गर्न । हैकल पीयने unfah greift-fteur terbit unte fefterbeite राजासीयर अधिनेक विरात । विकासीयों की आपी कारण पहें हुए थे, करावर के थे। ये जीवलेड असल्युक्त अपने वैद्यार राज्यका साराम करने रागे । विशेषकोर्य से असुव्यवकी और कीम राज्य ।

क्ष्म भीवारे देशा कि केंद्र भाई विशिक्तकों क्रीकारों क्र का कुछ है, जब उन्हेंने उतने निवालक निवार विस्था। अभी दिनों को यह सम्पापन निवार कि सामान्तिकारी कीर कामानोका प्रमंतर हो रहा है। उन्होंने मानवी सम्बंधि सेवार अकेले ही स्थाप प्रवाद है बारतीयों पदम की। पार्थकर्ता प्रमान पान राजाओंका परिचन किया करने क्रान राज राजार-मान चीनको अनेतर और युक्त क्रम्बावर क्रूटरी कमारी क्यापार जाने का नवीं। क्योंने जनका कि का बुध है। ब्यू मेरे हर राज्यकोन भी सारकारों हैती करते हर बढ़ने राजे हित भीनाने से उद्यावसंबंधी अधिका के हों थी, बाब बंधन करेंबर होने और हार्रिय पहलेस यह बढ़ा लगा होनकर वहाँ वर्षे अरुत है ? यह पार देश-सुरुद्धा भीनको केर आ गाउ । उन्होंने उसने चाहित किने बाल्यूर्वित हायत बन्याओंको रक्षा बैठाना और कहा कि 'व्यक्ति सर्वना-निकालकी प्रशंसा करते हैं और को-को करेंग्र की भी। किया राभारते । मैं तुमाने मेरिक प्रत्यने कान्यक्रीयाः वारम्बंक प्रत्य कर रहा है। तुमलोग अपनी पूरी प्रतित सम्बद्धन मुझे बीत स्थे या प्रस्कार पाग करते । मैं कुमलेगोंके सामने बुद्धके हैंग्ले



चीनवर्ती हुए कारहे विकास एउंचे चर्चा सार होताहे और और काले हुए उत्तम दुः यहे । यहा रोपाइकारी पुत्र हुता । क्रमी चीनका एक स्था है का प्रकार करन चरनने, परस् ज्योंने ज्येको 🛊 सम्बद्धी बाद्य सर्वतः ज्योंने बार्लोकी बीहरते बीजको रेक्टम प्राप्त, परमु भीवती सामने विश्वविक्ती एक न पानी। यह प्रमंदन पुत्र हेवासुर-शंकाप-केल का भीवने का पुरुष्याने कालों पहुन, पान, क्रक, क्रमक और मिल क्रम्ट क्रमे । भीन्यक अलीकिक और अनुर्व इस्टिल्क्स क्या प्रति देखका प्रश्नुपक्षके क्षेत्रेयर की सब उनकी जांगत करने लगे । गीवर विकास होकर धन्यकोषेः स्था प्रसिन्तपा और आये। वहाँ उन्होंने द्वीती कुन्याई विविध्यानीयो समर्थित यह ही और विव्यवस्था अन्तेत्रक किया। स्था व्यक्तीन्तेद्वाची बाहे वान्या आसाने भीवारे कहा, 'चीवा ! मैं यहते पन-हो-यन राजा शासकते चीर कन कुम्हें हैं। इसमें मेरे विसादहें की सम्मति भी। मै क्रपंतरने भी उन्हें ही चुनती। जान से केंद्रे करीर हैं। मेरी क्यू कर काकर साथ वर्षमुख्य अवस्था करें।' चौकरी प्राप्तां भी साथ विचार करके अन्यको अनके इकानुसार कानेकी अनुसार दे ही और होन ने कनाएँ अध्यक्त और अध्यक्तिकाको विचानके अध्यक्त उपन होका कान्यसक हो गया। उसकी दोनों प्रतिकों भी प्रेमसे सेवा करने लगी। साथ कांत्रक विका-सेवन करते दानेके कारण कर्त अवस्थित विविधानीयंको हम हो गया और बहुत किकास करनेक की मह कर करा। इससे अर्थाता कीनके कारण कर्त करनेक की हाती। परण अहीने कीरण करकर उद्यानोंकी अस्त्रकों विविधानीयंकी जार-किया सम्बन्ध करें।

कुछ दिलोके बाद बंकाआके विचारहे संस्थानि कीवनके क्षुप्रसर कहा-'केश थीय ! जब करियाचन विकरे विश्वकृत, सुवात और वंशव्याच्या का तुवक 🛊 है। वै कुरवर प्रान्यूग विकास करके एक कार्य निवृत्त करती है। हुए को पूरा करें। देखें, तुपास वर्ष विशेषकी हुए होकारों कोई सन्तान होते किया है परलोकमध्यो हो गवा है। तुम काशीनरेकसी कुम्बामिनी कन्याओंकि हुए सन्तर इतक करने बंसकी एक सरो। मेरी जाता करना हुई क काय करना वाशिये। हुन सम्बं समस्त्रिकारमध्य केले और प्रवाद्य पालन करो । केवल मात्र सरकारीने है की, उसी प्रते-राजनियोंने भी ऐसी क्रेस्स की। उस समय क्रेसस वीक्ष्में बहुत कि 'कता । आवन्द्रे बात क्षेत्र हैं। सन्यु तक जानती है कि पैने जानके विवाहके समय क्या प्रतिक्र कर रशी है। मैं कुर: प्रतिका करता है कि 'में क्रिकेटीका सन्त, इक्षाका का और हर होतीसे अधिक केंद्रका भी परितान कर हैया। परन्तु सार नहीं क्रोड़ेया। चूचि नवा क्रोड़ है, नार सरसता क्रोड़ दे, तेन क्रम क्रोड़ दे, वानु रखां क्रोड़ दे, सूर्व प्रकाश सीह है, अपि क्यारा केंद्र है, जल्दान केंद्र केंद्र है, क्षत्रमा प्रतितालक कोड दे और इन्द्र पी जपन वल-विकास लाग दे और से करा, सर्व प्रमंत्रद पक्ते ही अवन्त वर्ग होड़ 🖟 हुए थे।

है परसू में अपनी सत्त प्रतिक्ष होक्तेका संकरण भी नहीं कर सकता।' भीकाको भीका प्रतिक्षको पुनरावृति सुरकत सत्त्वकोने किन उनसे सत्त्व को और निक्रमानुसार व्यासका उनस्त्व किया। व्यासने उनस्थित होका कहा, 'माना ! में अववदी क्या सेवा कही ?' सत्त्वकतिने कहा, 'केटा। तुन्हात



व्या विकासीय निकासान है या प्रवा है। तुन उससे क्षेत्रमें पुत्र अस्त करो।' जासभीय जीकार करके अधिकाने कुटाबु और अव्यास्थितने प्राचुको अस्त विचा। व्या अपनी-अस्ती प्रवाचे दोको बारण प्रदाह अंग्रे और प्राच्य कीरे हो प्रवे, तब अधिकाको अस्ताने जन्मी दासीय कासनीके इस्त ही विद्याने करना विचा। व्यापना प्राच्यानके प्रापने वर्षात्व ही विद्याने कामे जन्मीय

#### माण्ड्य ऋषिकी कवा

करनेक्स पुरा-स्थान । वर्षनाको हेला कीन-सा कर्न किया या, निरामी कारण उन्हें इक्किन काम दिन्द और है कुर-वोसिमें मैदा हुए ?

र्वतन्त्रकार्यने बहा—सन्तेषक ! स्कृत दिलेकी कार है, पाणान रामके एक पछली सहाय थे। वे को वेर्नवन, करेंद्र, राजनी एवं एकानिष्ट से । ये अपने अवस्थित शासकेवर मध्ये नीचे दाय उत्पर स्टाबर तपका वाले है। उन्हेंने मीनका निका के रहत का र वहुत दिलेंके कार एक दिए पूछ सुरेरे सूरका माल लेकर नहीं आने। ब्यून-में प्रिरक्षी करना पीड़ा कर यो थे, इसरिये अहेंने अन्यानके अवस्थी गुरुक सारा वन रक्त दिला और नहीं किय गये । सिराधीओरे अवसर माञ्चलको पूछा कि 'स्ट्रेरे कियातो अने ? प्रीप्त कारताले, इस इनका पीका करें हैं काव्यक्तों उनका कुछ की उत्तर नहीं दिया । राजकर्मकरियोंने इनके शासनकी सरवादी रहे, उसने कर और चोर होनी जिल गये : कियादियोंने क्याप्रमा पूरि और हिटेरीको प्रकारकार शतान्ते संस्थे अस्तित विस्तः। एकाने विश्वार कार्यः सम्बद्धे सुर्तेषर कहान्या हन्द्र दिखः। यान्त्रम मुनि जुलांचर बदा दिने को । बहुत दिए बीव करोवर की किया कुछ भागे-दिने से स्वतिन्ह की हो, जनके पुन् नहीं हो। क्योंने करने जन क्षेत्रं नहीं, नहीं सहरूने श्रान्तिको विभागित किया। स्थितीये गतिनेह स्थान प्रतिकोहे स्थाने शासन कुना जनाट सिमा और पूजा कि आरमे का अन्याय विकार का जानाको सहा- 'में किसे केने करते ? पह में ही अपरामका करा है।"

व्यक्ति होता कि ब्रांकि पुर्णान करने कहा है। है। गर्ने, परमू ने मरे नहीं। उन्होंने सामन आपने कमाने नियंत्र किया। एनाने पान्यान पुणिके मान अवस्ता प्रार्थण की कि 'मैंने अज्ञानका अस्तान केंग्रेसे।' व्यक्तियों एनामर कृत की, अमें हामा कर दिया। ने पुर्णानसों जारे नने। जब बहुत अस्ता करनेशा भी सून करने स्राप्ताने की नियंत्र समान, जब बहु कार दिया गया। गारे हुए पुरुषे काथ है। उन्होंने काया की और कृति स्पेक प्राप्त किये। कारो उनका जन अन्येन्यका पह गया। प्राप्ति पान्यकाने करिसकी सम्बन्धे कायर कृत कि 'मैंने अन्यानमें ऐसा चौन-सा पाप किया था, विश्वका मा पहर मिता ? कारो कामाओ, नहीं से मेरी सम्बन्धक का देशों।' वर्गायने कहा, 'जानो एक कोटेनो प्रतिनेती पूर्णा



तीक गहा में भी। उत्तीवता यह सारत है। मैसे मोहेसे इंत्यक्तं अनेक गुण कर विशास है, मैसे ही मोहेसे अवर्गका भी वहाँ पूज करा विशास है। उत्तरी-प्रणासको पुत्र कि ऐसा मैंने क्रम क्रिक्स भी हैं। क्रमें स्थान, 'क्रम्यको । इस्तर उत्तरी-प्रणास मोहेस, 'कारक बाव्ह वर्गको उत्तरानाक भी पूछ क्रमा है, असी जो असर्ग गहीं होता; क्रमेंनित को वर्ग-अवर्गका हार नहीं क्या। हुक्ते क्रेटे अवराजका क्रम क्षम क्रिमा है। हुन्दें नामून होना कारिये कि स्थान क्रिक्टिके क्रमेंनित क्षम क्षित्र समुख करना प्रदेश उत्तर में संसारमें क्षमेंक्रम्यो क्षमेंन क्ष्मोंका करता है। इस्तरेन हुन्दें क्षमेंक्रम्यो क्षमेंने क्ष्मोंक्र पाय नहीं स्थान, उत्तरेन कर क्षिते क्षमेंक्रम क्षम अवराग क्षिता।'

इसी जनराजके बतरण पायामाने इतय दिया और वर्षराज इसमेरिये किट्रांक उपमें अपना हुए। वे अर्थशामा और जर्मकामाने यहे नियुक्त थे। क्रोय और लोग से उसे कुसता वहीं कहा था। वे यहे दूबदार्ट, अस्तिके महायानी और समझ मुक्तकेक्षके हिरीयों थे।

# वृतराष्ट्र आदिका विवाह और पाण्डुका दिम्बिबर

वैक्षणकार्यं करते हैं—सम्बेक्ष ! कृतक्, राष्ट्र और विद्वारे क्यारे कुरुवंत, कुरुतकुल देश और कुरुक्तेत हिनोको ही कही उसके हुई। अञ्चल उनके कह नवी। समक्यर अवने-आव वर्ग होने सम्बं। वृक्षेने क्यूसरे पाल-पूजा लगने लगे : पहु-कही आदि भी सुनी हो को : मन्त्रीमें भागती, कार्रायर और विद्यानीकी संस्था कर कर्ता । रीत सूची हो गरे, कोई इन्ह भी था, चरिनोक्त सच्चय हैं। क्या । य केवर राजवानीनें, को देखनें हैं। सावकुर्यन-सा समय हो पया। न कोई केवल या और न विकास विक्री। इक्टबोके दाये तह इसम होते हार्छ । चीम नहीं तनको मर्शनी पता करते थे। इर दिन्दें सर्वत कांकुसरका बोरभारक वा : ब्रह्मबु, याच्यु और विकृत्ये कार्य देवनार पुरवाहियोंको कही जरफता होती थी। योग कही मानवानीले राजकृष्यरोकी रक्षा करते है । सबके क्लेनिक प्रेंग्सर हुए। सम्बं अपने-अपने अधिकारतनुसार अध्ययिक सवा शास्त्राम अध्यक्त किया। साथे गर्नाक्ष्म और नीरिक्तकाक अञ्चयन विरुद्ध । इतिहास, पुरान क्रिक अन्य अमेक विकाओं के क्या अवही के बी। सबी विकास है अधना निश्चित यस रकते हैं। सनुवाने सबसे केंद्र बनुईए है पान्तुः और समसे अधिक जल्लान् के कारकः। जिल्लो क्षाना भर्तत और धर्मपराधन सीने लोकोचे कोई नहीं का। का हैमें क्य स्तेत वही कहते से कि बीरवनकियी कताओं में बाक्षीनरेक्टी कर्ना, देहरेंने कृतनाहरू, वर्नक्रेने नील और नेपरोमें हमिनापुर सकते बेड्र है। कृतरह जन्कन वे और विदा क्रमीके का इसकेन्द्रे के केनी राज्यके अधिकारी जो माने नवे । पायको हो सन्य किना ।

नकृति प्रातेनके एक नकके गर्म सुराँ। कन्त को। क्युनेककी प्रतिक वर्ज के। इस कन्यको प्राप्तेनके जनमें कुळके सन्तरपूर्ण स्कृते सुन्तिकेकको गर्द है दिना



वा। या कृतिकां कार्य मान्या पूजा अवना कृति नहीं सानिका, सुवारे और पुजारती की। यह राजाओं की बॉल का, इस्तिको कृतिकां को सर्वका विका। सर्वकारी कृतिके बीतका पांचुकों कार्यका कृता। राजा पांचु व्यक्ति व्यक्ति क्षेत्रकों स्वतानी जाह कर्तक अपनी राज्यकों वृत्ति की क्षेत्रकों स्वतानी जाह कर्तक अपनी राज्यकों विकास कर्तकों विकार विकार और वे पत्ती, साहान, व्यक्ति, वृति और क्ष्मासिकी केराके साथ नहरावकी राज्यक्तिनों कृति और क्ष्मासिकी केराके साथ नहरावकी राज्यक्तिनों कृति अपने व्यक्तिय क्ष्माने प्रसार विवार अपनी व्यक्तिनों कृति स्वतान व्यक्ति क्ष्माने व्यक्ति क्ष्माने स्वतान विवार क्ष्माने क्ष्मा

किर एक प्राथमि पृथ्विक विकासकी दानी। उन्होंने भीना अन्दे पुरस्कों, यहे यहे पृताह और वेह कुरमेशिकोची उपास करके अद्भार प्राप्त की और सहस्रिकों कैस लेकर कहा आरम्भ की। प्राप्तकोंने स्थानक विको और अन्दर्शकोंट विने। स्थानी सामुने समसे पहले अपने अपराधी एत तरार्थ नरेजनर संबद्ध की और नरे पुत्रने नीव क्रिका अस्ति कर अस्ति विकास और वरवासको श्वनक्षात्रे राज्यन गार काल । व्यक्ति व्यक्त-स्य पंचाना और महान आहे सेकर एवंटी क्रियुवर कहाई की और महस्ति एकाको परका किया। इसके बाद कारो, सुन्त, पुन्तु अहीहर विजयस्य होता पहारक । अनेको एका प्रयुक्ते निर्दे और नष्ट के गये। सबसे मराविक क्षेत्रर को पृथ्वीक कारण, कीवार किया । साथ ही जीव-मानिका, कुका, प्रकार, धोगा, चांदी, नाम, घोड़े, रच आहे भी मेटने दिने । नक्रयम

। प्राच्छने क्रमाने मेंट श्रीकार की और इंक्रियपुर स्वेट आये । क्यांको समुद्रात लीट देलकर चीचने उन्हें इरवधे लग हिला, उनकी श्रीसोपे सरक्तके बहिद् इसक आवे। पाणुने सार वन चीन्य और शरी कम्पनीयों मेरे किया। माताके अभ्यानी क्षेत्र न रहे।

क्रमानि एवं कि एवं देवको को १६ एकी स्र कुरती करतेवृति है। अहोंने को मांत्रका परम सबी विकृत्योक्षेत्र साथ अस्त्रत विकास कर दिया। अस्त्रे गर्नदे भित्रके क्रांत्र है कुम्बर बर्द कुर स्था हो।

# शृतराष्ट्रके पुत्रोंका जन्म और नाम

राजारोके करा असे। नाजारेने सेक-कुकूब करके उने महा है समूह किया ( श्रेष क्योंने उससे वर वर्णनेको बहा ( गुरुवारीये अपने परिषेक्ष सम्बान क्षेत्र बलावान् क्षेत्र क्ष्मेचेका का



मांगा। इससे सम्बन्ध अस्त्रे गर्न का और व्या से वर्गकर पेटमें ही बच्च रहा। इस क्षेत्रमें कुरतीके गर्नले कुविद्यालय क्य हो कुना वा । जी-स्थानकर मानारी कारा भने और अपने परि बृतराहरी क्रियाबर इसने पर्च गिरा विवा । इसके पैटरो त्येकेंक ग्रेलेके समान एक मास-शिव्य निवत्य । से वर्ग पेट्रमें स्वमेके बाद भी जाना भी सदायन देखाना नामानीने

क्रिक्करमधी क्या--क्य का महीं माल इक्टिकर्ती | जो केया देनेका विकार किया। भारतार कास अपनी केन्द्रहिते का का सनकर झटाट आके पता पहेंचे और केते, असे सुकारकों केटी ! तु यह क्या करने भा रही है ?" पुन्यति पार्ति पाराको सारी बात सफ-तम बाद है। उसने क्या, 'मनवर् । आयोक अवसीमांदर्भ गर्प को मुझे पहले का, बरुव प्रस्तान क्रमीको है यहरे हाँ के वर्ग वेटमें सुनेके कह भी हो पुत्रोके कहते का भारत-विकार की हुआ है। मा क्या कर है? ज्यासमीने कहा, 'नामारी ! मेप बर त्रक क्षेत्रा । येथे बान कामी हाडी नहीं हो सकती, क्योंकि मेरे कभी हैरीमें भी कुछ नहीं कहा है। अब शुभ करपर भी सुन्य क्रमान्य को बीधे भर से और सुरक्षित स्वापने काली रक्षाका विशेष प्रकार कर में तथा हुए पांत-विश्वयर केंग्र जल किवारों ।" जल किवार्यनेयर जल शिव्यक्ते सी दूसके हो को । अनेक शुक्रम अनुकेक चेक्स्के नगरा का। उनने एक क्रमा सीमें अधिक भी या। ब्यासमीके अञ्चलका कर एक कुछने कुछनेने एक दिने करे, तम अनुनेने कहा कि 'हर्ने के वर्गीद कर क्षेत्रका है इतना महम्बर में तपका करनेके तिले दिवाराच्यर क्रमे यथे। समय जानेशर अर्थी श्रीस-विकारिको पहले हुवीका और रीक्ने पाधारीके अन्य पुत्र जला हरू। यह यक यही या पुत्रहें है कि कुर्वेकरका जन्म होनेते व्यक्ते हैं। मुक्तिप्रका जन्म हे जुन्ना या र किस दिन पूर्वेश्वरका क्या हुआ, उसी दिन गरंग महातानी भीगतीनका भी गण gan en s

> कृतिका जन्मते ही गर्भकी नहींते हैं जमे लगा । अस्था अस्य कुमार को, मेरह, रिज् और मीए में जिस्सरे हने, अर्थित करने तनी, को इकरोंने जान तथा गयी। इन उन्हारोसे पराचीत होकर क्तरहरे प्रदान, भीना, निहर

कारि सगे-सम्बन्धिये तथा कुम्बुसन्ते के पुरुषेको स्तानाथ और कहा, 'हमारे वंदले सामुख्या पुनिर्देश लोह एककृत्यर है। उन्हें से अबंध मुनोचे कारण है कथ विशेष्य, इस सम्बन्धने पुट्टे कुछ नहीं बहुन है। जुनिहिस्के बाद मेरे इस पुत्रको कंग निर्मात का नहीं, यह यह अवस्थेत बताहरे।' अभी अस्की कत पूरें भी नहीं हो सामें की कि मांसकोशी वस्तु निहत असि विकासी समे। इस अमकुरस्था अपस्कृतीको देशका प्रकृतीके अस विद्यानी कहा, 'राजन् ! आयोह इस क्षेत्र पूर्ण अवके सुधव जैसे अञ्चय त्याल जबर है में है, इसरे से मनून होता है कि आपना यह कुत शुरुवार पान करनेवार होता। इस्रोंको हुने स्थान देनेने ही स्थानित है। इस्ताह सारक सारकेतर क्ष म उदाना प्रकेश । यदि जान अपने मुख्यका माल्यान व्यक्ती है तो और एक कम है सहै, ऐसा सम्बन्धन हमें उसन हितिये और अधने कुछ समा सारे मानाहरू बहुन्य बरियने । प्राप्त प्राप्त पार्कोंने कहते हैं कि कुल्के मेल्ने एक प्रमुख्या, आगोद हिंग्से एक कुरुबार, बेक्सोर विन्ते एक अन्तवार और कारकाल्याकोः हेन्छे सार्वे पूर्णाच्या भी वर्षानाम कर है।" प्रकृति प्राच्याने-बहुबनेका की कुलोक्स एक कृत्या पूर्वोदनको भूष्टि जान सके। उन एक-व्ये-कृष कुक्त्रोते औ भूत और एक कथा उत्पा हो। फिर दिले क्यारी मनेकी वो और पुसरक्षको सेवा करनेचे असमर्थ की, उन दिनों एक देश्य-सम्बा इतकी जेवाने कही को और इतके श्लीर जारे शास कृतसूची मुद्दा करना कुत हमा छ। यह सह

। यहानी और निवास्तील 🕮 ।

क्रमोकर ! क्रांस्के पुर्वेक जम क्रमकः वे ‡—कुर्वेक्त कारो कह वा और कारो केटा क पुतुर्। कारपर कुमारान, कुमान, कुमान, जानकान, सन, सन्, क्रिया, अनुवेद्या, इन्हेर्व, स्टब्स, प्रशासनंत्र, कृतिया, तृतुंत्रा, क्षारं, करं, विविद्यारं, क्षित्ररं, क्षारं, सार, सुलेका, that, nation, Spring, wealth, womer, grie, giffred, विशेष्ट, विकासकार, कार्यक्रम, सुकार, कर, जानक, विकासनं, विकासनं, सुनर्धा, शुनिशेषार, आयोजाह, महत्त्वा, विवास, विवाहनका, मीमवेग, पीनका, कारको, पारकोर, अवपूर, सुरेत, कुळारा, म्हेरर, किरापुर, निर्मा, पारी, कुसरसं, कुसर्थ, सुस्तर, केम्बरेनि, अपूर्ण, पृथ्येष, 'साराज्य, सामस्यं, श्रद्धकार, अवन्ति, असंति, केलबी, कुल्याका, क्रवर्तीक, कुल्कानी, विवासमञ्ज, दुरावरे, कुक्रम, सुद्रमा, करनेत, कुर्मा, जांकनोतु, बहुवी, कार्या, सम्मारी, कार्या, सम्बंद, कुन्ही, उस, जीवरण, जीवरण, अल्लेक्ट, अवय, रीक्टर्ड, क्रायातम, अवाक्ष्य, क्रुव्यभेदी, विरामी, 200, 2010), क्षेत्रेय, क्षेत्रेश, महत्त्वपु, स्कूतेरक, क्रम्बक्रम, कुम्बक्री और विश्वा । क्रमाना मान द्वासी का। वे सभी को चुरगीर, मुस्कुकल तथा प्रतासिक विद्वार थे । कृतराहरे समस्यर चेन्य कृत्याओंके अश्व समझा विवाह किया। द्वारायका कियाद क्षण आनेवर राजा जवासकी germ fjager i

## ऋषिकुमार किन्दमके शापसे पाणुको वैराम्य

कारोजकरं पूजा—सम्बन्धः जानमे कृत्यकृते पूर्णेका अन्य और नाम सुक्रमा । अन्य में भाषामंत्री अन्य-सम्बन्ध सन्दर्भ सम्बन्धः है ।

वैशानकारों का -- का मेन । यह देश का को पूर्ण और वहां तसमें निवार के थे। यह दिश कहानोंने पूर्ण और वहां अपने कार मुगीके तक मैनून कर का है। कानूने सनकार पांच कार मारे, से दोनों सनका है जो। तक जूनने कहा,-'राजन्। अलग कारों, संस्थे, वृद्धिन और कार्य कहा-ही ऐसा कुर कर्म नहीं करते। अनको दिश्में से सीवा का है कि पानी और कुरकार्य क्रमोंको सका है। मुझ निरमराकारों

नामार आयो वया ज्यान कराया ? में कियान गामाय तमारी पूरि है। यूचा प्रमान यह कान कानेसे यूके तमा कार्य हो, इसलिने पून करकर अपनी पूर्णके साम में विकार कर यह था। में प्रमा: इसी केन्से पूनवा प्रमा है। यूचे अन्तेने आयमो ज्यादाय से नहीं रागोदे, व्यक्ति ज्यान यह कान कानो नहीं से। परणू आपने पूर्ण मेंसी अवस्थाने कार है, यह सर्वक मार्गोंने अनुम्यूक मी। इस्तीयो वहि कार्य ज्यान प्रमान कारोंने स्वाप प्रमान करेंने से वही ज्यानको अवस्था पून् होनी और यह प्रमान करेंने से वही ज्यानको अवस्था पून् होनी और यह प्रमान करेंने सेवा करी हो ज्यानकी।' यह माह्यक विकारने अपने ज्यान सेवा दिने।



मुगरमधारी किन्द्रंत वृत्तिकी वृत्त्वतं सम्बन्धि चलक्का बैसा ही इ.का हुआ, बेले किसी लगे-सम्बन्धीकी पुरस्ते हेन है पाया असूर होका का-ही-का करने तरो—'को-को कुलीन भी जनमें अन्तःकाराया क्या र होनेके करान मानके फेरेपे फेर जाते है और अपने ही सबी अपनी दार्शित कतो है। की हुए है कि पर्याना प्रान्तको कु की कैत विभिन्नवीर्वं भी कामकासमाके कारण क्ष्यपन्ते 🛍 पर गर्व थे। में अहीवर कुछ है। इक्य-द्राम | में कुलीव और विचाएरील है, जिर भी मेरी बृद्धि गीव हो नहीं। जब मैं इस क्यानका जान करके घोडाका है विश्वय कर्मना और अपने विता पहलि स्थानके एकार अध्या बीवन-विश्वेष व्यक्तिक अब में निपालों। बोर तपका कार्यना, एक-एक वृक्षके सेवे एक-एक दिन अनेतल ही स्ट्रेग और केनी संन्याती होकार हर, अलापोपे थिया जॉर्गन । येग स्तरित विद्वीते स्वयन्त होता और जेव्हर के पेरा पर होता । दिन और अफ्रिकरी भावतः क्षेत्रकर में क्षेत्र और इस्त्रे कार का कारेज, रिन्ह और 🖟 क्ति मेरे निने समान क्षे व्यक्ति । आवृत्तिक्त, नामकाः। स्क-द:क और परिवासे रहेत होकर व के विक्रीकी हैती है करीना और व किसीके प्रति क्रीय करीना। मुँह सर्वक प्रस्ता । संन्यास के लिया । कुन्से और पार्शने अधने परिवरी पार् होगा, सरीरते सम्बद्ध करन होना और बर-अक्षर किसी भी। सुनकर और उनके बनकारका निक्रम जानकर कहा, प्राणीको नहीं शतकोता । सुनी प्राणिकोको कानने सरकानको । 'सार्वहुत ! संस्थान-आसमके अभिनेता उदेर भी हो ऐसे तक मार्नुना। कभी का सुना, तो कभी कमास कोन्या। अवस्थ है, निन्में आप इससेनोधे साथ म्हान् स्वर्ध कर रसम्ब और अल्हाबने भेरी दृष्टि समान क्षेत्रों । बोई वेरी एक | एक्टो हैं। कार्यने एक भी अल्हो राज्य करेगी और वहाँ थी

ब्योग्यो ब्यूलेसे स्वर क्रांग्य और एकरे प्रकृत तथा है।। हो क देनेके और में कुए-कल कुछ की नहीं सेर्बंगर। मैं र कोंग्यों केल करोगा और न मरोग्यों। न जोवनसे केर कारण और व मुख्ये हुँए। श्रीनित अवस्थार्थे अपने परेखे रिको विकाने कार्ग विको वाले हैं, उन्हें में ब्रोड़ हैंगा; क्योंकि में सम प्रसारो संविद्य है। मै पाल, प्रार्थने प्रश्न होनेकारे अभिन करकेको क्याँ साईच । सारे पानोसे कुट आउँचा, अधिकानें कारणो पाइ अर्थुया अर्थात और असूत महर्मोची अर्थन्याचे हुए महीना और आयुक्ते हर्। साथे विकारिया । को रूपुर्व्य स्थापन का निराह्मारों। प्रसावित होका कारणाई करने रामता है और उन्होंके अनुसार बेहा करता है. म्ब्रु से कुलेके मार्गक कर रहा 🕯 🛭

क्रा प्रकार क्रेक-क्रिकाकर प्राप्तारे तंत्री प्राप्त तेते हुए कृषी और वर्ताने बहा, 'तुमलेग तबधानीचे वाओ। को इसके मार्च, विदर, पुनराष्ट्र, दावी सरवक्ती, मीमा, गम्बदरेकिन, काक्ष्य बक्रमा, सने-सम्बद्धे, पानासी और आर्थित-अवको प्रत्य सन्देश प्रदेश कि पान्तुने



आप है हमते पति होंगे । हम देखें अपनी इत्तिकेको काले क्रमों कार्यक्ष सुक्रमों निवस्त्रीत देका कार्मि भी सामग्रे प्राप्त करनेके विशे अलके काथ महान् करना करेगी। पहलान ! वहें अब हमें होड कारेंगे से इस नवरण हैं। अपने प्राप्त त्याय देखे, इसमें मोई समेव नहीं है।"

अपनी पहिल्लोकः का निवास देशका चन्को कहा, 'सर्व तम दोनोंने वर्षके अनुस्तर ऐस्त ही करनेका निक्रण किथा है से अच्छी बात है। मैं संन्यात न लेकर बारासकारकों के र्ष्णाः विकासमुख्य और कामेनेका भोकना परिचान कार्क पास-शुर एक्केन, जल्का पान्ति और चेर कार्क करता हजा इस पहल् करने निक्तना। देनो समय सान, प्रथम और अधिकोत्र करोना, मुख्यमें और कर करन कर्मेग्रं । गर्थी, रेड्का और अधि सहैत, चूक-कारका म्हाप नहीं रहेता और दुक्त तनकाने प्रतीतकी हुना इत्तेता । एक्पनार्थे सुम्बर परवात्त्वका निकार कर्नेत्र । कुक भी कहा-कहा का हैगा। यक-दूत, यह और पानेके विवारी तथा केम्प्राजीको स्टब्स कर हैना प्रकृतकारीके वर्तन वर्तामाः। विक्रमी कामानीका अधिक वही वर्तन्यः। काथ-बारियोरे से पेत सम्बद्ध है क्या है। इस प्रवार में वारप्रस्थातामधी कटोर-हे-कटोर विविधीका प्रस्कृतीत पालन करंगा । अपने परिचोर्त का प्रवार काकर पन्छने मुहायित, हार, संस्कृतेत, कुम्बान और स्वयूक्त क्या एवं है ज़बल राज्यूकी संरक्त करने शरी ।

। विकासिक अपने-सम्बंद माने सारायात साहायोगिके से दिये और क्षेत्रे, इक्क्नो । अपनोप इकिनपुरने जन्मर कह दें कि पान्य अर्थ, काम और प्रैन्थर-सुन्ध होतावर अपनी परिचोंके क्षक कार्याचे के एवं है।' उनके करावेत्रक कार्य कुमका समी होक्क 'कुम-कुम' करने रहने। इनके नेवीधे नाव-नाव अर्थम् व्यवे तने । वे शास धन तेनार वह नावने इमेरकप्र अर्थ और पायाची अनुपरिवर्तिने एकावन कर्मकारे कृत्यको रूप है दिना तथा सारा समस्ता शुक्रका । अपने व्यक्ति सम्बद्धार सुरक्त कृतसङ्ख्ये **४**४३ ुक्त हुआ; जो क्षेत्रे, बैडरे और क्षाने-वेनेचे-व्यक्ती औ वृद्धि पूर्वी रहे । से अपने पहले किसाये ही यह रहने रहरे ।

इवन राज्य अपनी प्रतिकांके साथ एक-के-वृत्ती प्रवीतक हेरी हर जनकारकार पहिले । ये केवल कार-मूल-कार कृतका स्था साथ । अंबो-नोबो जारीका हो तेते । यहे-बहे पहिन और विदेश अन्तर काल रकते । प्रश्नाहर प्रतिकरके आर्थ क्षेत्रकृष्ट जिल्लाका प्रालंकन करके से एसलूक वर्तकार पहेंसे और स्थात करने रूपे। वहाँ सिद्ध, कारण आदि सभी उनसे क्षक हैया करते । अक्रमा पान्यु अंश्रेन्द्री सेन्द्र करते, मन और प्रतिकोच्ये क्याने एकते और करणे करना नहीं कारे। नहीं कोर्ल चान प्रत्यको अध्यक्ष भाई मानो, तो कोई समा और कोई इन्हें कुछ नामका उनकी गहा-वीकाल्य नाम रहते। इसे

### पाण्यक्षीकी उत्पत्ति और पाण्डका परलेक-गमन

र्वज्ञानस्त्रो राजे हैं-जनमेजर १ जनवन्त्र निकि थी। क्षेत्रको स्थित्वहर्ति अक्षात्रको स्थानके प्रेणे अक्षात्रकेवारी याजा कर रहे थे। पान्को का लोगोरी सूक, 'आप नहीं क क्षे हैं 7' और बनका स्थानकि दर्शनोंक रिले स्थानके कारेक्ट विकार जनकर अपनी परिवर्गित तथा प्रमोद वैके क्षार बडे । व्यक्तियोंने कात, 'राजर ! कार्यने व्यक्त-से हर्गन इंबाद है। विधानीकी चीवते रूपाठम करी अपलगाउदेकी बरेक्टपुरि है। देवे-नेबे ज्यान है। परिवर्षि कथा है। सहे क्षांतर प्रति और एकार्र हैं। वहाँ क्षां-हें-को है। एक नहें है। इतिक और पड़ी नहीं होना पड़ते। दशी भी नहीं उठ नहीं सकते । केवल पाय कार है और विद्यु क्रिके-व्यक्ति जाने हैं । ऐसे वर्गम मार्गते उनकमार्ग कको और बढ़ी कैसे कर सकेती ? अब अपनी प्रतिकोचे साम का कहा स्वतिक कर

। द्वीत्रे । पाणुने बद्धा-में समझना है कि समानहींनके निर्म सर्गका हुए बंद है। यह बात संस्थाकर मेरा हरूप करा गई े र पर्पंत कर कहा लेकर राज केल है—पिन-कार्य, देव-कुल, कुल-कुल और पनुष्य-कुल । यहभे देवता, साध्याय और नवास्त्रसे ऋति, एव तथा क्राह्मसं किन्त एवं पर्गपकारीहे व्यवस्थात स्थान असाना है । मैं और सम्ब स्थानोंसे सी मुक्त हो गया है, बरण् किसीका अक वी सिमया है। मुझे बड़ी अधिकाया है कि मेरी प्रतिके पेटले प्रतिका अन्य हो।' ऋषियोने कता. भारतियम् । इस दिव्य दुर्वृत्यं देशा रहे हैं कि आपके नेवताओंके सम्बद्ध एवं होंगे। अंतर अधने इस देवदव अधिकासका अपनेत सम्बंध लिये आहेत क्रीनिये। अस्पता सनीरम (बारक क्रेक्स (<sup>\*</sup> कार**द स**्थियोको बान एनको बिन्तिन क्षे गये । न जानने से कि किन्द्रम पहिन्द्र सामने बतान में भी-स्कास

गृही कर संस्थात । अस व्यक्तिक स्वासी कर्ण गर्न से । एक दिन पाणुने अपनी प्रातिको वर्णको कुलीचे सहा, 'क्रिके । तुम पुनेत्रविके सिने अन्या करो ।' कुलीचे पहा,



'आर्थपुत । यान में क्षेटी भी, तम मिलाने पुत्ते आर्थियकोके सामान-सरकारका मध्य एति उत्तर का । मैंने उत्तर उपन पूर्णाता परमके स्विकते प्रेमाने प्रमान विकास । क्ष्मेंने मुक्ते एक मध्य स्वतरकार कर दिया कि 'तुम इस मामाने किस वेक्कावा आयात ।' जानकी अवता होनेका में किस वेक्कावा आयातन सर्विति, जारिते मुक्ते सम्बान होग्ये । काहिने, विका वेकावाव आयातन करी ?' परमुचे कहा, 'अवत तुम विविद्यांक सर्वश्यक्त अववादन करो । से विस्तेयको सेह पूम्पालक हैं। समसे जो सम्बान होगी, यह निस्तानंह कार्यिक होगी । उनके हमा जाह पुत्रका यह सम्बन्धी और कार्यो गढ़ी सम्बन्ध ।'

तम कुर्याने वर्गएकका आवादन किया और उसके पूज करके का पण अपने लगी : उसके प्रथानमें वर्गएक शुर्वक समान व्यवसीने विभागवर बैठकर कुर्याके बात आवे और मुस्तकराकर केले, 'कुर्यि । वात, में कुछे कवा कर है?' कुर्याने भी मुस्तकराकर बाहा, 'मुझे कुछ हैंसिये।' हानकर वेन्युरिवारं वर्गतको संगेतसं कुनोको नमं हा और सन्द बानेस पुत सन्द हुन। स्तो वन्नो सन्द पुत् १३, १४१६ सिन, प्रेष्ट नहम और समिन्द पुर्व था। पूर्व वा पुन्वपत्तिकः। " वन्न होते ही संग्यस्थानिर क्ष्म—"क्ष व्यक्त नर्वाच। युव्योगे श्रेष्ट होना; व्य स्वक्तानी हो सब्द और तो होन्द ही, इसी पृत्योग्य स्वस्थ भी कोना। प्रायुक्त हर अन्य पुन्वा नन्द होना 'पुनिहिर' और व्या सेने होकोने वह कस्ती होना।'

कृति विशेष कर राज राजूने कुरतिने विश् का, 'किये | कृतिकारि सरकार है । इस्तियं ऐका पुत प्रश्न करो, से करकार् हो ।' एक परिचले असूत प्रश्नर कुरतिने सामुखा अक्तान किया । पहलारी कार्युत इतिकार समार होतार कर्म । कुरतिकी कर्मनारी अस्ति हारा पर्यवर परकारी दुर्व अस्तित्व कर्मानी परिप्तेनका क्या हुना । कर कुरत से अस्तित्व कर्मानी परिप्तेनका क्या हुना । कर कुरत से अस्तित्व क्या । परिप्तेनका क्या हुना । कर कुरते क्या ।' क्यांका । परिप्तेन अपनी कार्यकी होता हो हो हो हो हो । इसनेने क्या कृत क्या अस्ता अस्ति क्यांका कुरती प्राप्त कियां । इसनेने क्यां क्या क्या अस्ता अस्ति हमार कुरती प्राप्त क्यांका एक क्यांका क्या क्या क्या क्या हमा क्यांका क्यांका क्यांका हमा क्यांका क्या हुआ, उसी हिन क्यांका क्यांका की अस्य हुआ कर।

अन कन्युको या किना हुँ कि 'मुने एक ऐस पुत्र हैं कन्त, को संकारने अनंत्री कन्य वासा । देवारकोने सन्तर्थ क्षेत्र इस है है। वसे वे किरने क्ष्यार संसुद्ध हो बार्ड से मुने क्ष्योंके पुत्रका एक कर सकते हैं। ऐसा क्षितार करके उन्होंने हुन्योंको एक कर्यका प्रस् करनेको जाता से और वे कर्य हुन्योंको एक क्ष्यंत्रक प्रस् क्ष्यं होका वही एकाध्याको साथ अत क्ष्यंत्र साथने एक वैसारे क्ष्यु होका वही एकाध्याको साथ अत क्ष्यंत्र करें। उनकी क्ष्यकरो क्ष्या होका हम उत्तर हुए और केर्य, 'मुन्ते में कुक विकरित्तकार, जातान, नौ और हुन्यं क्ष्यंत्र क्ष्यं क्ष्युकोचो क्ष्या करनेकार केस पुत्र हुन्य ' इसके क्ष्य क्ष्युकोचो क्ष्या करनेकार क्षेत्र हुन्य क्ष्यक्ष करें। ' हुन्योंने क्षेत्र ही क्षित्रा। तम देवारण हम्ब क्ष्यक्ष करें। ' हुन्योंने केर्युक्तो क्ष्या क्षित्र। अर्जुको क्ष्यक्ष एका क्ष्यकारकार्योंने अर्थ क्ष्यों ! क्ष्य क्षारक क्ष्यक्ष एका क्ष्यकारकार्योंने अर्थ क्ष्यों ! क्ष्य क्षारक



वितः एक दिन व्यक्ति अनुरोध करनेवर प्राथ्वने कृत्यीको एकम्पने कृत्यका कहा, 'हुन अस और नेरी ज्ञानाको दिने एक कठिन काम कते। उससे हुन्दारा क्या हो। व्यक्ति स्थेपनि भी काके दिनो को प्रक्रित-व्यक्ति काम वित्ते हैं। वह काम वही है कि महाकि जनेते सन्तान अस्ता हो।' सुन्तीने उनकी आहा हिरोजार्थ करके प्रक्रिते कहा, 'बहिन ! हुन केंगल एक बार दिन्ही देवलका निकान करे। जसने कुने अनुस्तर कृत्यी आहे। होती।' साहिने अस्तिनीकृतारीका विकास विकास जही कृत्या अस्तिनीकृतारीने अस्ति नकृत्य और व्यक्तियों कृत्या करण विकास होती नास्त्य अनुस्तर कृत्यान् से। का कृत्या अस्तिकाराज्योंने कहा, 'से केनी कारका कर, कृत और पूजने अधि-वेकुआरोहे की कृत्या होते। से अन्यों कर, कृत्या अधि-वेकुआरोहे की कृत्या होते। से अन्यों कर, कृत्या अस्ति और क्षातिको कार्याने कृत्या करेते।'

कान्यक्क वर्णकार व्यतेष्यके आविष्यते पाण्यको वर्णके और कार्यकोको आविष्यं, वेदान सम्बद्धः नाम्यका विस्तः— कृतिकोर, जीन, अर्जुन और महातः, व्यक्ति । वे एक-एक वर्षके अन्यको आवा हुए थे। वर्णकारे प्रति और व्यक्तिनकीला प्रत्ये और व्यक्ति सीति स्थाने थे। राजा पाण्यु भी अस्पे कुछ और परित्योक साथ नहीं सरकारको नहीं निकास वर्णने एक और परित्योक साथ नहीं सरकारको नहीं निकास

काल बाद थी, एको कर्मात पुरुषेने भर रहे थे। उनकी क्षेत्र केल-वेजकर सच्चे सन्ते मुख हो के ने। सना पायु अबे करने निका हो थे और उनके साथ असेतने पाड़ी पी कुर रही भी । यह प्रकृत कहा भारत विशे बहुत है भारते तल को बी : पुजाबरक, बरोरपर औरने सब्दी और मुकारर क्योहर कुराव्य हेलावर राज्योह करने धालभावका प्रेथार हो एक, माने करने आप तम गर्व हो। उन्होंने बारपूर्वक पार्टको प्रकार शिमा, असके ब्यूट पुत्र रोकने और क्यातीक कुल्पेकी चेल करवेगर भी जो नहीं क्षेत्र। वे कारको नहीं में इस अधार पुर हो रहे थे कि उन्हें सारका कहा ब्बान 🖟 न रहा। दिव्यक्त में नैजुनवर्गने प्रकृत हुए और उसी सम्बद्ध कराई केरना रह हो पत्नी। बाई उनके शक्ते केन्द्रकर कार्नकरके किन्तव कार्य समी। क्रमी प्रीक्षी क्ष्मकोको लेकर वहाँ पश्चित वुक्त हर रहनेपर हो मार्गेने कहा, 'बहिन ! इन क्योंको वहीं श्रीकृष्ट अकेली वहीं अवन्ते ।' व्यक्तिके एका देखकार कृत्यी फ्रोक्कामा हो गयी । सह क्षिप्रकृत बहुनोह को हो। "मैंने हो सर्वात अपने पति-देवकी रक्ष की की। आज उन्होंने सामको बाम जान-बाह्यकर भी हैता करूम क्यों भी कार ?' नाहिने संद्धां 'वहिन । मैंने से बड़ी नक्ता और विकासकों स्वयं इन्हें रोकनेकी चेहा की। परस् क्षेत्रका है देख था। ये अपने बनको बक्कों नहीं एक करें। ' कुर्याने सक्त, 'अच्छी करा, अब तुम वसे। परिदेशको क्षेत्रकर इसर काओ । क्रम इन क्लॉका पालन-प्रेषक करो । **े पुरुको कहे को है : इस्तिओ इनके साथ सती हेनेका पुहो** अधिकार है। में अब इनका अनुसार करियो । पार्टिने कहा, 'बहिन ! अपने क्यांन्स परिनेत स्थल में ही एती केडीनी : मैं

है सहित, प्रतिके लिये मुझे अग्रह है हो। कुन मेरे चुनेके | हो पुनके लाग रहती होतेजी।" पाती ऐसर सक्कार अपने साथ भी अपने हैं एती-वैसा व्यवहर करना। पुस्तरे निजेश । पत्थिकोड क्रम निजान का गयी और पत्रिकेश निर्धारी।

अभी पुराती हैं। भुद्रो ही इनके साथ कान कहिए। तुम बड़ी । असर्वकरे बताय ही परिदेशकी मृत्यु क्रां है, इस्तियों भी मैं

## इस्तिनापुरमें कुन्ती और पाण्डवोंका अग्गमन तथा पाण्डकी अन्त्येष्ट्रि-क्रिया

विकासन्तरस्याः न्यूनिनीने आन्यानी सम्बद्धा वर्षे । अनुनि सोन्या है। 'पान बज़ली महत्त्व चान्द्र अस्था राज्य और देश होहकर हम स्थानमें समाना करनेके निर्म हम नगरियकोची करण आये थै । क्रवोंने अधने तथे-क्ये वर्षो और व्यक्ति वरेतृती सामे शीयका वर्णको पास भी है। अन इनलेकोर किने क्रिक है कि उनके पुर, अस्य और मानेको ने करकार का जीवा है। पहीं हुनार वार्व है (\* ऐसा विकार करके स्वक्रिकोंने धीना और कृतराहके हानो पारक्कोको जीवनेके विश्वे इतितनपुरकी परश वर्षे । ओड ही दिनोधे के लोग ध्रीमनायरके बर्डमान प्रस्पर अर पश्चि अनेवा पारण आहे हेक्काओंके प्रथा परियोक्त आनम्ब प्रवार लोगोको बद्ध आक्रुवं हुआ। वे अपने काल-अवस्थित भाग करके दर्जनके विन्ते आने लगे । का कमन सवारोंके और किया आनेवाले करों क्योंकि लोगीकी बढ़ी भीड़ हो गयी । इस समय किसीके मनमे बेह-कर्य नहीं सा चीक, स्टेक्स, स्ट्रीक, पुनरापू, विकृत, सामक्री, काशिएनकी कन्त्र, गान्त्राचे और दुर्गोक्त आहे. मुत्तापुर्व्याप-मधी वर्ष अस्ये । सम् उन व्यक्तियोको प्रकार कार्येत सेंद्र गर्थे । चीवृत्यत कोल्याहरू प्राप्त हो जानेका स्टीवाने प्राविक्तिक सरकार किया और अपने राज्य क्या देवना कुरूर-सम्बद्धार निवेदन वित्या । सम्बद्धी सम्बन्धिने एक प्रतिने एके होकर बहुन कुछ किया— कुछांत्रविधेयाँन एका ग्राम्ह विवयोका त्यान करके प्रक्रमान्यर रहते ततो थे। थे हो इक्कार्व-इरकर पासन करते हैं, परन्तु दिव्य करावे उपायते सर्वराजके अंतरने कृषितिए, वायुके अंतरने चीपनंत, इनके अंग्रामे अर्थन और अहिनीकुमारोके अंग्रामे नकुल-साहेकका

र्वतम्बनको कारे हैं—अरमेका । जानुको पृत्यु देशका । जन्म पृत्रा है । जाने तीनो कुनीके पुत्र हैं और विवर्त केनो प्रकृति । प्रकृति करा, पृति, वेद्युन्तकाची हेलकर समा कालों को भारत होते; कानू जान स्तरह दिन्ही का है कि ने विकासेकामाती हो गने । यही भी स्वर्धिक लाग सरी हो गर्वी । अब अवस्थित यो प्रतिक सम्बो, यह करें । वे हैं उन रोजेंद्रे प्रशासी अस्तियों और दे हैं इनके या , अध्यक्षिण हुने क्यों और इनकी करावर क्या रहें । साथ ही प्रेस्कार्य सन्ताप्त हे करेवर एक चल्को किये विद्ववेद वह करे। हाता कारको से करि और इस्ते सभी सभी अनामाँन से गये। सभी लोग प्रा विद्ध नवस्थितिक नवर्षनगरके समान दर्शन wais uit fefen en i

> अब राज बुनरकुर्व अला है कि 'किए' पूर्व पहाराज क्या और पहलानी प्रतिको अन्त्रेष्ठि-क्रिया प्रतिक्रि राज्योंके कराओं और असे किए एक बच्च, अब तथा अक्टूबर्च क्रम्बं श्रम करें।' क्ट्रिके असी असा सीकर भी और भीभवी सम्मानित ग्राह्मे परंप गाँका तरपर क्षेत्रविक्रिक किया सबक करानी । का सबस पास्क्री वियोग्से १:वर्ष क्रेकर सभी है है है। पश्चिमेंने सबको सम्बद्धा-ब्रह्मका प्राप्त किया । पायकोरी, सरी-सम्बद्धियोते तक प्रकारती प्रवासिकोने बाह्यके प्रमानवर्षे बाह्य दिनाती वृत्ति-स्वान क्रिका । नगरमे कहीं भी हर्गका विकास नहीं दिवाची विचा। कुली, बुतरकु और भीवर्ग अपने क्य-क्रमानोंके राज्य जिल्लार राजा पंत्युकी बाह्य किया, अक्षणेको भीतन कराना, रहिन्याने बहुत-हे रह और अच्छे-अच्छे गाँव दिने । सुरुष्ट समाप्त हो सानेपर तथ होग इक्टिक्ट्रो संट असे ।

### सत्यवती आदिका देव-त्याग और दुर्योधनका भीमसेनको विष देना

बुदुर्जी बहुत है क्यों हो। क्यों सहकती से दुःस और बिन्न सुकार सम्बन्धित गया। यह दूरे दिन क्या हो है।

केल्पानको नहते हैं—अक्टोबर ! इंड्राइंड कर पालुके । अलग जानुक देशका जातानीर उस्ते पहा, 'कतानी । प्रांतको अवश्यामे क्याल-सी क्षेत्र हो। अपनी कारको | हिल-हिल कारको क्ष्मी क्षेत्री। पृथ्वीको कारकी वार्ती रही, इस-कारट और ऐसीका बेस्पारण हो जा है। वर्ग, कर्म और सरावार तृहा हो से हैं। और मेरे अस्पार सेम करे और मानि संसर होगा। हुए अस सोधिन कामर सेम करे और मानि निवास जाओ। समग्री अस्पि बंसका अस्प देशना अस्प मही।' जारा सरवारीने कामी जार संस्थार करके महिन्छ और अव्यक्तिकारों हम बातवी सूचना है और केरोड़े साम सीमाने अनुमी। हेकर कार्ने जारे नहीं। कार्ने केर अस्पा सरके का सीनोंने सरीरका कार्न किया और अस्पेश गरि आह की।

अब पान्कोके वैदिक संस्थार हुए। ये आरम्पूरे अनी भितानें: पर पहलर महे होने जाते । बच्चाननें से सुती-सुती ह्वीकर आदिने प्राप फेलो और इस्से का-कामर है श्रुते। वैद्यानी, विशास्त्र समानेत्री, सार्वेले, सूत्र सहनेत्रे पीनलेप मृत्याको क्यो सक्कोची इस की थे। पोनलेप पुर्वाने क्रिकार कावा किर काब की और एक-कृतिको क्रार मार्ग । अनेओ प्रीयमेन तथी पहालेको पान पंत्रकार परिवर्त और प्रचीरमें पर्तारने रागते । इससे उनके सुरीर किल करें। ये दल-दल पालकोंको अवकारने परकार वार्याने क्रमको राज्यो और कार्यो क्षेत्रा बर्डक क्रेक्ट । क्रम ह्योंका आहि कशक किसी वृक्षक कहका कर बेड़ी से दे पैरकी खेकरमें के क्षेत्र की और इससे करनेके सक क्रिके हरका प्रक्रो । पीक्सेक्को क्रक्तीचे, ब्रेड्सेचे क विक्री प्रभारके बहुने कोई की पास था। बीमले हेर्के कारन ही ऐसर करते थे। इसके जाने कोई देर-विरोध नहीं था। परक क्योंकरके पत्नी पीन्योनके त्रति क्योंकर्न कर कर किया । यह अपने अन्यः कारणके दोवके चीवकेच्ये राज-दिन धेव-धै-सेव देवताः यो। और लोक्से सरक सेक्स कियान करनेसे का साथे होगी कर गया। उसने का निक्रण किया कि नगरके जानमें जोते प्रथम भीवरोचको नहाचे क्राल हैं और बुधिहिर तथा अर्थुनको केन करके लाहै पुर्वाका राज्य करें। पेसा निश्चन करके वह जैका रेक्ट्रे ल्या।

वृत्तींकाने एक कर करा-विद्यारके दिने स्कृति आता प्रमाणकोटि कारमें बहे-नहे तेतु और सैमें स्थानको । उसी साथै सामित्री समाधी नहीं और असरा-असरी कारो करवाने नेते । इस स्थानका कर एक एक अवक्रीहर । कहा रातेहनीने साने-पोनंकी कहा-भी कराई तैकार की । दुर्वीधनके कहानेपर कृतिहरूने कहानी करा सीकार कर सी और देश किस-स्थानक स्थानको स्थानको से एकस्मित्र हो ।

स्तीय दिन्ता और स्वयं सम्बद्धी क्षोपा देशसे-देशसे वालमें का पहुँचे। वहाँ कावर क्षणी काबुक्तार सरस्य इन्हर्नको विस्ताने-निर्मालेने पुर पर्ने। दुव्यको दुर्गोकने भीवसेनको का क्रान्तेको पुरं नीवासे सम्बद्ध पोक्तासे सामग्रीने पहुँचेन ही विच निर्मा दिना का। उसने बढ़ी निर्मासने निर्मा और पर्वाकी पाद काला काले भीवनेनको स्वा परेश दिना और वे अन्यानमें उस-का-का का पर्ने। हुर्गेकने काला दिना और है, जब पैरा काम का पत्ता। इसके बढ़ करवादित हुई।



क्षण्यीकृ काले-काले चीमसेव कक गये और संबंध सात्र इंदेने अवस्त्र को नये । ये गय-गमरे विव पैस्त वालेने निश्चंत्र हो गये । कुनेंकररे साथ स्वास्त्री गीमसोसे चीमसेनके पुरिक कालन क्षणायों साँचा और गहाके केले करने जावने कोला दिखा । जीनसेन इस्ते अकालामें नामलेकाने का पहुँचे । वहाँ विवेश क्षणियें पीक्सेनको सूध केला । स्वासि क्षणायें काल्याक्षण भी वैद्यांकी खेशा की, परंतु अस्ता काम इस्था करोर का कि से कुछ गरी कर काले । किए काराने पीमसेन सकेत हो गये और स्वीपोक्ते पक्य-पक्तकर परावने लगे । कुछ-में मीम का गये और स्वयंक्त साम कालर एक क्षणाय हुए स्वीपोने कानराम कालुकिको पास कालर एक क्षणाय विवेश किया ।

कासुनिक ताल जाने भीभारेतमोह साम आस्त्रे । उनके आसी आर्थक सामने भीमार्थनको सहसाम निया । आर्थक आमे

भीमसेनके नातका राज का। का चीमरोनके को डेक्के सक्त विस्ता । जाशुरीको आर्थकको पुत्रा, 'कुमसेन पुराबो कक भीट है ?' 'इसको महरू-सा बनका देखर बंधा है' कार्यक्रो कहा, "रामेन्द्र ! यह पर-यह सेवल एक कोन्य । साथ प्रताह है तो इसे का कुन्योक्त रहा प्रोनेकी साथा क्रीकरें, बिनके स्थानों प्राणियोगा यह प्रमु क्षेत्र है।' क्योंने धीनकेन्द्रे करित्याचन करावा और वे परित्र हो पूर्वीलपुत्र वेट रह पीने राजे । सामान्दरी चौज्योन एक पूँछो एक पुरुष की कहे । प्रभावता माठ कृष्य पोका से समोके विदेशमूला एक क्षिय सम्बद्धाः सम्बद्धाः स्टे वर्षे ।

इक्त नींद् दुरनेपर कोला और प्रत्यान कुर केल-कुरकर बिना चीमकेन्द्रे ही इकिस्तानुको सिने सामा है को। वे अध्यानी पह बाद रहे थे जिह प्रीकारेंट अपने ही कोर को होंथे। कुरोंका अपनी बात का कारे कुछ र प्रवास सा। मनोवा पुरिक्षिको परित्र पुरुषे चीवनेवको विक्रीको बारशा में जी हां ने ह्वोकाओं में अके है सक्त हुए क्याने है। क्योंने क्या स्वानेंद्र कर क्या क्या 'मतायाँ ! भीभरेन वहाँ का नवे कहा ? हमने हो वहाँ भी अन्तरे बहुत हैवा, परंतु न विकारिकर स्रोपक विक्र अब पार्ट पर्व होंगे। आरमे क्ये कही केल के नहीं है ? इन कई स्कारत हे से हैं। क सम्बद क्रमी करू नहीं। हाईने कहा, 'बीमलेव वहाँ नहीं अन्या । यहे प्रतिक पुँक्तिक प्रयक्त करे (' कृती नगाने तुरंत विदुश्तीन्त्रे कृत्याचा और केसी, 'किट्राजी ! क्षीमहोत्तका करा नहीं है। सब आ पर्वे, कोट्र का नहीं लीता। कुर्वेजनकी कृतिये का सर्वत करका करका है। कुर्वोधन कहा सुर , सुर, सोधी और निर्माण है। बाह्री साले क्रोपनक मेरे और पुल्को कार न काल हो । मेरे हनूको बढ़ी मतन हो की है । क्युरनीने बहा, 'करवारित है ऐसी कर चुँहरे यह निकारो । क्षेत्र कुठेकी रहा करो । कुरका कुर्विकारे मुक्तेपर का और किए जायना । कारे क्रांकर भी अलांत जा मानगी । सामि कामाने कामगनुसार कुन्तरे पुत्र कैर्जनु है। भीमसेन बाढ़े कहीं भी है, स्केटना अवस्था।' विकृत्ती

क्या-मुख्यार को गये। कृती यात विशेता हो गरी।

अन्य कारकेक्ष्में कारकान् कीम्सोन आठवें दिन रहा कह करेल करे। उन्होंने बीकोओं कहा आधर औं बहुत कराती है और बहर, 'आको को पर दिख है, का बहर कन्मक्रीक है। सार का इकार क्रमिकीड समान कामान् हो मानेने । पुत्रने अन्तर्यो पोर्ट वर्डी बीत क्रोला । जब अन्य हिमा कारते हमा करते परित्न केत गता बारण करें और अभी वर कार्ते । जानके विश्लेको सन्त्रे वर्षा असना कुन्ही के के है।' जिस बीकोर क्या का-रीकर, क्रिक क्षानुकारे पुत्रका है क्वेडी अनुवर्तते अस आये। क्वेंचे को का वर्गकेतर चौक दिया। किर् अन्तर्भात है गर्ने । चौनकेको अवस्थै चलके चल सहस्रत करे हता बहे न्यांको प्रमान विकास, क्रोकोके मिर होते । प्रान्ती क्रेको असनम् कार्य (ले । चीन्लेको पुर्वेत्तरको स्वर्ध कार्या कर कुल्बी और पह के बातक कि अल्लोकों एक कुछ-कुछ मिल । एक प्रतिवृक्ति भीकांग्यो गई महत्त्वही वात सही. 'वर्षा । यक, रूप कुर हो कारते । यह यह सभी निर्दाणे प काम । प्राचीन आवाने क्षेत्री आवानीके साथ प्राच क्षानेको दक्षा करे।'

कृतका कृतिकाने जीवनेको अली सारविको गुरस क्रेडका कर करत । वर्षान्य विद्वारे क्रम्यूक्रोको पूर्व साराह हो है: 'तुमारीम कुर को ।' भीमरोजंड फोजनमें कुछ बार और दिव क्रमा पना : पुस्तकृते इसका समाजार पाळानेको है हिन्छ । वर्षेष्ट्र कीमरोक्ते वह तैया प्रमान्त्र किया विकर्त विकासोह प्रमा विकार कृतिका, आर्थ और समुद्रिये भीज्योतको विकार न मनो देशका ज्ये अक-सदाने मार्गको बेहा की : परंतु मानक तथा कुछ बार-स्कारत भी विद्रार्थी सारक्षां अनुसार कुर हो यो । याना कारापूरी देशा कि समान्ये-सार एक्क्वर केल-कुको है को को है, जब क्क्को गुरू कुरमानानंत्रारे कुल्याकर किया देनेके निर्म अने सीच दिया। क्रीम और प्रकारि कृतकर्त्ते विक्रिकंड वस्तेवर्ध नियम प्रधा की।

# कृपाचार्य,ब्रेणाचार्य और अञ्चलामाका जन्म तथा उनका कौरवोंसे सम्बन्ध

कामेकारे पूक्त—'परावन् । अन्य कृत्य करके कुते । क्युकेंट्रो किएन समझ ख, काम केट्रामाससे नहीं । क्युके कृतकार्यके जनको कवा सुनदुने।'

व्यवस्थित समें अध-क्रम जार किये। अरकतारी चेर वैदान्यकरको का<u>र - मार्गका ! मार्गि मौताको पुत्र के</u> जनका और अनुकेंद्रों विद्याला देखका क्षत्र कहा प्राथकीत त्ररहन्। वे व्यवस्थि साथ ही पैक हुए के। समझ सन हुए। अहेंने त्ररहारूकी काशाने किए हालांके लिये शानवाहे

मानको देवकाना नेजी। यह महर्गर कराइन्के आगानी मानर राष्ट्र-कराके हान-कराते जो सुवाने करी। उन मुद्दी और एक साई वाले पुर्वाको नेकार उनके करेगरे बीववीरी आने साई। उनके हान्यों कपुर-कार्य निर यहे। ये माहे विशेकी और एक्कामें पहासारी में र प्रतिको उन्होंने वैश्ती अपनेको रोक रिका। उनके करने विकार के पुरव मा, प्रतिको उनके अन्यादनों के पुरवक्ता के क्या। वन्होंने माहुर, कारा, पुरवकों, आधान और यह क्यानको कोहान्य होत बहारी कारा कर थे। जनका कीर्य सरकारोक निर्मा का ह माहिरों यह हो करोने विकास हो पुन्य। जानी एक करना सीर एक पुन्ती करीं। हो।

चीनको विकास विकास कि व्यानको और कौरानेको हार्यने की अधिक अक्ष-हार प्रश्न होना कविने। अस हमें कोई साधारण पूर्वन को विकास के नहीं समझा र हमिनो हक विकास कोई विरोध्य क्षेत्रक व्यक्ति। यह सोचकर उन्होंने साधारों और कौरानेको होन्याककी हार्यो और दिखा। वे चीनको समझायों असम होन्या साधानकों अनुसंस्था विकास होरे स्था। कोई ही दिनोंने सक्ष-के-सम सम्बद्धार स्था साधाने प्रशास हो गये।

अनेकारे पूल-कार्यम् । क्षेत्रावार्यका कार्य केरो पूर्णा सान्त्र कर्षे असा केरो किले के और औरलोके स्थय कार्या प्रभाव किस प्रकार पूजा ? साथ है यह की कुलाने कि केइ सरकोता अक्षास्त्रकार कार्य केरो कुला ?

र्वजन्मकारोते का—कार्यक्य । व्यक्ते कृत्ये स्कृतहर सम्बद्ध सहन्यत स्वर्ति सरहात क्षात्रकाले वे । वे को कार्यका

और सकतो थे। एक बार वे यह यह से थे। अन दिन समसे दक्षां है वे यहिंगोंको स्था सेवर नमुखान करने नमें। यहाँ उन्होंने देखा कि युवानी अनुसा कान करने जानने विवाद रही है। उसे देखान उनके परने व्याप-कानने जान और। यह उनका कीने उन्होंना होने स्था, उन उन्होंने उसे केल व्याप्क स्थान केंग्न किया। जाने हैंगाना जन हुना। केलने जाने केंग्न और वेद्युलेकर स्थानक निन्दा। अभि अस्तुकने दक्षों है असो-व्यापकी दिशा असिनेस्थने है से की। अन्नो पुरु पाद्यासकी साहसी अधिनेस्थने है स्थानी

वृत्या वार्याः एक एका वर्यान धुनिके कि में । प्रेपके अन्यके एका है साले के हुन भारक पुत्र के दुशा का । वह के वर्यान-अवकार शाकर प्रेपके एक है तिया और वर या का । प्रेपके साली पाने पैती है नवी थे । प्रमास्त्र प्रानंका है अर्थकर हुन्द सार-काइक देखके रामा हूर् । वर्यान व्यक्ति स्वार्यित हैंनेका होन अन्यो अन्यक्ती क्रमा विका । या वहीं वर्वशिक्त और निर्मिका भी । प्रतिके गांके अवस्थानका क्रमा हुआ । अन्यक 'अन्यकार्या' याम हैनेका व्यक्ति वहां हुआ । अन्यक्ति प्रतिका अन्यक्ति सामा सामा आर्थ हुआ । या वहां क्रमा क्रमा क्रमा सामा अर्थक हुआ । या वहां क्रमा क्रमा क्रमा क्रमा अर्थक हुआ । या वहां क्रमा क्रमा

कर्ती देशो क्राच्यां केलके चल्ला हुआ कि चल्लीत-क्या प्रमाण प्राप्तका प्रमाणीयो क्या सर्वत दूध प्रा हो है। हेमानार्थ क्रमो क्रमुखेशायाची हान और विश्व अव्योची कामानी जात करनेके निन्दे कर गई। अपने विकारे प्राप्त कोन्यकार प्रतिकार स्थानि परवास्त्रकार्यको प्रकार किया और साराज्यां कि 'में ब्यूमि अदिग्रामें नोमने नरक्रम अधिके पूरा विन्य चीनि नंतरकी ही पेक् हमा है। मैं अपने पास कर जा बारेनेर रिने जाया है। बराहरकर्वाने कहा, 'मेंरे कहा को कहा धन-रह जा, यह बै महाकांको है कुछ । सारी पुरुषे भी मैंने सरकर स्वतिको है है। जब मेरे पार का करेर और अवस्थि दिया और का वहीं है। इसके इस जो जाने गाँग को ।' नेपालाकी करता. पुनुकान है जान पूरी अधीत, पहल और उपसंक्रत-विकित साम सारे असा-पाना है है।" मरञ्जातभागि सम्बाद 'तमाना' बहुबर उन्हें समग्री किया है है। अस-सब अस परावे हेन्स्वर्णको कहे जनका हाँ। फिर वे उत्परे दिन हुन्हों पास को।



होजानाकी हुन्यके पता अच्या सक्ष, 'एकर् ! में आपना हैय सन्ता हेण हैं। आपने पुते बातान से रिच्य ?' पतास्तात हुन्य होजानाक्षेत्री बनाते रिच्य गर्ने। अपेटी बीते हैती और अपि सम्त पताके सहा, 'असाम ! तृष्टिये पृदि अभी परिच्या नहीं हुई। बन्य, गुड़े अन्य नित्र बातानके समय तृत्वे पुत्र वैजनिक्ताह नहीं जन्म होती ? एकाओकी



नरेकोके क्या ऐसी ? यह कदावित् है भी बाब से सन्त्र बैदर्नेतर का भी कि:निक्ष करी है।' दूसरकी कर दूसकर हैमा होन्यों कीन रहे। उन्हेंने नर-ही-यन कुछ विश्वन किया और कुक्तवादी राजकारी होतानपुरने आवे। को सामार उन्हेंने कुछ विशेषक युवकारों कुक्तवार्थिक कर निकास किया।

क्ष कि वृत्तिक स्वति सभी सम्बद्धार नगरके बाहर कारत बैठनमें मेर चीन के थे। मेर असानक सुरीने जिल वर्ष । राजपुर्व्याने को निवासनेका प्रथम से विका, परंतू विक्रो प्रवार क्ये सकत्वा न फिर्म । वे क्या सक्रमानर एक-पूर्वाच्या 🏂 कवाने उत्तरे इसी सारण उत्तरी होते चलके है एक प्रकारण गाँउ, निर्मान अभी-अभी निरमार्थ कारण किया यह । सम्बद्ध करीर कुर्वल और रंग क्रीवरण यह ।" तनी राजकृत्या उन्हें केचल कई के गरे। प्राप्तनारे प्रमुख्यांको अन्त वेशवार भूतकार्थ हुए साह, 'राज-पर । विकास है पुराने क्षतिकार और अस-परिवासने । पुरुषेत्र पुर्वतेते एक नेव वही विकास सकते ? देखें औ कुल्लेकोची नेत्र और अवनी यह अनुती अन्ये प्रार्थिके निवासन देश हैं। कुमलेन मेरे चीवनमा प्रतन्त भार से ।' यह बाह्या उन्होंने अननी जीनूही कुर्देने बात हो। चुनिद्दिर्गरे बाह्न, "माराज्य ? साथ कृत्यावार्वकी अधुनति वितर पार्वपर् प्रमेको हैने केमर या सबसे हैं हैं उस हैपरवारी पहले. देको, ये एक पद्धति संकि है। इसे बैने प्रश्तेने अधियानिक बार रहा है। में कुछ परिवाले मेंद्र वेच देता है और मिर ब्यूपरी सीयोंने एक-कुररीयों केवार इक्तरी मेर कीय रेस्स है।" हेन्यवर्गने वंशा है फिन्म । एक्कूबारेंड आक्र्मकी सीमा र भी । उन्होंने कहा—'भनवन् ! अबर अवनी अंगुड़ी हो निकारिको ।" क्षेत्राकार्यने कार्यका प्राचेन कार्यक मानवादीत अवनी क्षेत्रको को निकास स्त्री । क्षेत्रको निकास क्षेत्रकार क्रम्बुक्यमेंने बहा, सम्बन्धे हैं, आदार्थ है। इस्ते हो हेसी अवस्थित और कही जो देखी। जान कुछ काने, अवस वरिका क्षेत्रिके और पास्कृते कि इनकेन अन्तर्की पन्न होता को ?' क्रेक्ककी कहा कि 'हमलेप का सब बार केवनोते पहर, वे के एक और मुख्ये को पहरार

राज्युक्तरोंने नगरने स्थेतवर चीक्तिकायां हारी गाउँ वहाँ । वे वह तक सुन्ते हो स्थान गये कि हो-त-हे ध्वारवी होण्याचाँ ३६ गये हैं। उन्होंने विश्वय विश्वय कि अब इंग राज्युक्तरोंको होण्याचाँको है विद्या विश्वयों चाहिये। वे दुन्य तको कावर होणायांको तिवा तको और उनका सूच

क्राप्त-सरकार करके उनके कुचनसम्बद्ध करना जुड़े। हेपायाची कहा, 'पीवारी ! जिस साम में इहाराचेक प्रतम करत हुआ लिका जात कर को छ, उसे सकर



माजालराजके पुत्र हुन भी क्रांत राज अर्थिक सीम के में। इस केनेंने कही मिलत की। यह रूपमा ने पूछे उत्तर कुरनेके हिंग्ये प्रकृत करते से कि 'तक मै शरा है जारिया, तक हुम मेरे आह जुना । वै साम चनम करता है कि मेरा राज्य, सम्बद्धि और सुस—स्था सुमाने अधीन होता है उसकी पह प्रतिक्रा कारण करके में बहुत प्रत्ये और अनुमीरका यह करक का का दिलेंद्र यह की क्यान्त्री को करेंद्रे विका विकार और असोर पानेने पूर्वीद प्राप्ता नेपानी अनुसारणाय क्ष (२०)

एक दिल्की बात है, मोकाके कर्य व्यक्तिकार हुए से से

में । अवस्थान जो देखकर कुम पेलेने रिक्टे प्रकार नात और हेर्ने सम्बन्ध आ सम्बन्ध मेरी श्रीकृष्टि सामने श्रीकेन का नया। की है दियाँ का पायकांको अब है लेख से उसके वर्ग-हर्मने अञ्चल पहले । यहा क्लेवर पी पुत्रे क्य हेरेनाले बाब न बिहर सम्बंध । कर में लिएकर आजा का नेपाना है कि कोरे-कोरे को आहेक करीने अध्यक्तकार सरका से है और का अक्रम कराव को है पैकर का बहुता हुआ नाव पा है कि मैंने कुछ की पिना । अपने **क्योज**ने **पद है**ती और कृतिक केरावार की किसमें बढ़ा क्षेत्र हुआ। की सोचा-विकार है की इस हरेंस जीवनको । की बैचेका सांच दु: गमा ।

'बोलाबी है यह की सूच कि येग क्षेत्र स्थान हुन्द राजा के पूर्व है, कर में करनी मार्च और बचेने साम अन्तरमूर्वेक कार्यर स्वयंत्रपेके देखे कर यह । मुहे क्रुकारी प्रतिकारण विश्वास का । परंतु क्या में पुनाते निरस, तम काले अवधिकाने काला बहुत, 'अञ्चल केला ! अली तुमारी पुरिक्त कार्य और लोक-सम्बद्धारमें अस्तीया है। तुम्मे क्या ही केवाबा क्या दिया कि मैं हक्या नवा। है। और पहुर्त । को निकारी हैं, से निकारी हैं । का समय हम-तूम दोनों क्रमार के, प्रामीओ निकास की र अंग में बनी है, तुल निर्मात हो । विकासका सुरहा विश्वपुरूत कार्य है । तुन बहते हो कि मैरे राम्य देशेवरे प्रतिका की थी । समका मुझे तो कुछ भी स्थरन भी है। हुए सहो से एक दिन अपने तथा एकानुमार चोकर कर हुने (" पहाँसे चारते सभय की एक प्रतिक्रा की है। हुन्छीर विराज्याको केन करेका करू का है : मै अपनी सरिता कीत है को ब्रांग्य : वे गुलकर कियोको किहा देखे धेरणते व्यक्ति अन्य है। जान कुल्ले क्या करते हैं ? में आवकी क्या केल करों । जीवारिकान्यने कहा, 'अब कार अपने बनुसरे होते क्षात शिवने और वह स्वयन राजकुमारोधी प्रपृष्टि और अवस्थे किया वीचिने। चौरवीका कर, बैयन और राज्य अक्टब्स्ट की है । इस पास असमीत भारतानारी सेमान हैं। अन्तर्भा प्रथमित हमी हिने अहेपान है।"

### राजकुमारोंकी दिवसा और परीक्षा तथा एकलव्यकी गुरुभक्ति

वैशायकार्य करते हिन्यकोदम । क्षेत्रकार्य क्षेत्र- । एक दिन अपने साथै क्षित्रोको एकाराध्ये शुक्तावर वदा कि विकासको संस्थानित होत्यार हरियमपुरते पाने करो : चौनको 🖟 भैने भगने एक इन्छा है। अस्य-दिवस सम्बाह होनेके बाद सम क्षें क्ष-अवसे पार एक सुन्त पान सुनेके क्षेत्र क्षित्र । जुल्लेन मेरी व्य कृष्ण पृत करोगे ?' सबी राजकृषार कृप से क्रांतक और पारकृति कुलेको जिल्लाकाने स्थानकर जा को । अर्जुक्ते बढ़े उत्तक्तो जानार्वकी हवार पूर्ण करनेकी करके प्रमुदेशको विधिपूर्णक दिवस देने सने । ब्रेन्सकारी 🕽 प्रतिक की । ब्रेन्सकार्य बहुत असम हुए । उन्हेंने अर्जुनको

हानमें स्थान, उनमी अधिकों कार-वर्ष अधि हरण शार्ष । ब्रेणनार्थ अपने ब्रिक्टेको एक्-स्युके विका और असीविक अधीकी विद्या हो हर्ग । जर क्या उनके विकास मुख्यी एका पूर्ण देशको एक्क्यूबार थी थे। पूर्णनार्थ नामों प्रसिद्ध कर्ण थी वहीं विद्या था थी थे। सार्युको माने पूर्व विकासी और क्या प्रकार करा थे। से होगासकीयी रोधा थी बहुद बाले । पूर्णाको विद्या, व्यक्ति और ज्योगमी बृहिसे सारका प्रकार प्रकार, पूर्णी और स्थानीं सर्वुत ही कार्या का-समुक्त निक्ता।

बेपामार्व अस्मे का अध्यक्तकार विकेष अनुसन रहते में 6 अपूर्ण कियांच्या दक्षी प्रकारित क्षेत्रों को वर्तन हिंगे हैं, रुपों औं के वे वेरते चले, लेकिन सक्तभाष्यक करते पक्षी है पर पान । इसमें अखनाय क्रमी पूर्व अधी विवासे पात पहिल्ला हुए कहा होना देखा। अर्थुओं बह पाल तरह लो । अस्य से स्वत्यालको अस्त्य वर्गन प्रदेश मध्यर प्रवास आसार्थित कहा जा पहुंच्छे । इसेसे उसकी विका-सेवा भूगकुर अवस्थातारे विको स्त्रे अधारे का आहे 🌃 र एक दिए प्येत्रन वाले समय तेत श्रालेत कारण क्षेत्रक कुर परा । अध्यक्षाणे भी इंच्यों केन पहले कुंछे पर und bemer angleb som from fir fingen nemble. रियो अध्यानकी सामान्यका गाँउ केवार अञ्चलको है। के शब क्रेमेरने माना कार्यका अध्यक्त करने हुने । एक हिए रातमें अर्थुनको अन्त्राच्यो केवल कुरवार क्षेत्रावर्ण अन्तेः यस अले और अर्जुनको इसको सन्तकर बक्क, 'केस । वै देश राज्य करिय कि वंसाओं क्ष्मों असर और कोई भनुनंत न है। यह कम में हम्मे साम-साम बहुता है।" आवामी का एकपुमार्थको प्राची, केही, यह और पृथ्वीतरमा पुर, गहरूद, तत्वार क्रमान, सेवर-अय-धनिः मानिकं प्रयोग एवं संयोगं-पुरुष्धी वैद्या है । या प्रय रिकारेने अर्थुनको और अन्यत्र विश्लेष बहुत सहा छ । हेनामानी विकानकीयराकी मात्र देख-देखनाने केन वनी । ब्रा-ब्राफे सन्ता और सम्बद्धनार अले हुने । कुट दिन निवारको देशकानुद्धा पुत्र स्थानक भी अक्र-विद्या हता करनेके रीले उनके पार कामा। पांतु क्रेकावानी, बह संस्थार कि वह निवाद करिया है, विकार देश स्थेतार जो मिला । व्या स्केट ज्ञा । बनमें बायर अपने हेम्सवार्यको एक रिक्रीको यूर्व करको और अक्षेत्रे सामानं-नाम स्वापा रामार सद्धा और डेमरो नियम्बिकारो व्यक्तपद्धा युद्धे सम्ब और अलग्त निमुख हो गया।

एक अर सची राजकुमार आवार्यको अनुवरितरे दिवसर

मेलनेके सिने कारों गये। राजपुत्तरशिक्षा आधान और एक कुछ राज सिने एक अनुकर भी कारों चार रहा छा। यह कुछ पूजा-किरा वहाँ पहुँच गया, बाई एकराना कारोजा अञ्चल कार छा छ। एकस्थानक प्रारंत नेत्व-सुर्वेशन छ। कुछ करे देखका कुछने छा और अन्तर निराम कारों भी। कुछ करे देखका कुछने हान।। एकस्थाने क्रीवास छा। कहा करे, जिससे का कुलेका कुछ या क्या। परंतु को बोह कही की कारों। कुछा क्षानाने दुस्ते पानानोंके महा आहा।



वह अध्ययंत्रक कृष देशकर क्रमा आहे लगे कि जनक प्रमानिक और पूर्ण से विकास है। यह स्थानिक क्रमें अध्ययं कर रहा था। क्रमा क्रमें एकस्था क्रम क्रमें क्रमा की क्रमा न सके। क्रमेंसर एकस्थाने क्रमायों, केर ना एकस्था है। में बार कर्मिंग्रम अध्यय क्रमेंस क्रमायं किया है। में बार कर्मिंग्रम अध्यय क्रमा है। अस क्रमेंने को अधी क्रम क्रमा विचा। महीते स्थान क्रमेंने को अधी क्रम क्रमा क्रमा क्रम क्रमा । अर्थने क्रम क्रमा क्रमा है आपने क्रमें क्रमें क्रमा क्रमें क्रमें क्रम क्रम क्रमें के क्रिक्ट क्रमें क्रमा क्रमें क्रमें क्रम क्रमें क्रम क्रम है। अर्थन्ति क्रमा क्रमा क्रमा क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें क्रम क्रम है। क्रम क्रमा क्रमें क्रम सेक्ट क्रमें क्रमें क्रमें। विज्ञासकी अर्थुनके साम यहाँ प्रमुख्य देखा कि
प्राप्त-संस्था अर्थुन किये एकारक काम-सर-साम साम यहा
है। इसीरपर मिन जम नाम है, मांह उसे इस कामका साम नहीं है। अर्थापर्थकों देखायर इसराव्या कामे जान काम और बार्योमें इन्याक-अध्या किया। किर यह कामी विशित्यका पूजा करके द्वारा जोड़कर कामे कामने पान है जान और के बोरस, आपसा दिया सेमानें स्थितका है। जाना औरियो।' हेशायाओं बाह्य, 'पार्ट हा समझा केस दिला है से पुते पुत्रद्वित्या है।' इस्याक्तकों बाह्य अर्थाक है। अर्थ्य की व्यक्त, 'आहा स्थितिये। मेरे पास ऐसी कोई बाह्य और, से में अपनो सहिते हासका विद्यासकी बाह्य, 'एकाव्या है हम

अपनी प्रतिकार का एक और नाने सात्व एक जानाको सुद्दिने क्रमान जैन्द्रांत काटकर गुर्केकको सीन दिया ( इसके बाद सान्द्री बाज पासनेको का सन्दर्भ और पूर्वी भी जी ।

क्य का जेनावारी जाने विकास नर्मक तेनी कही। इस्ति क्योगरचे इक कारण गांव करवाना और जो कुमारोसे कियावर इक कृत्या सीम विका: तहनकर राज्युआरोसे कहा, 'क्युक्स कार क्युक्स किया है कार्य । तुन्हें नित्तान समावार का गोंक्स सिर क्यूक् हेना।' उन्हेंने क्युने पुरिस्तिको जाता है; पूज कि 'मुन्दिर । क्या कृत इस क्यूकर की गोंक्सो देश को है?' कुमिक्टिन क्या, 'की । मैं देश दहा है।' बेजने पूजा, 'जबा पूथ इस पृथाकी
पूजो और अपने ध्यानीको भी देश यो है ?' पुनिर्देश मेरे,
'की हो, मैं इस बुकाने, अपनो और अपने सहयोको भी
देश दहा है।' हेण्याकनी पूज स्तीतकर हिम्माने हुए पड़ा,
'इस बालो, हुए जा निहास नहीं पर सबसे।' इसके बाद कहोंने हुनोबन साही प्रवाहनकोंनी एक-एक बारोर कहें साह बारावा और पड़ी प्रारं दिन्हा। से संबंध मही साह हिमा, को बुजिद्दीरने दिन्हा का। अर्थाकने सबसो हिम्मानेश बाहीं हम दिन्हा।

अपने अर्थुनको पुरस्कार अर्थेने कहा, पैरने निहानेकी ओर, पुरस्का का। सनुर पहाचर नेरी आहारकी यह जोहो।' इस्पार अवस्कर अस्तापनि पूछा, 'क्या हुन इस बुक्को, फेक्को और पुढ़े देख को हो? अर्थुनने कहा 'शरकान्, वें पीको अर्थितक और पुछ नहीं देश दक्ष हैं। जेनावानी



वृत्ता, 'अर्जून ! पान व्यास्त्रों तो, पीककी अंत्रुपीत वैश्ती ३ र' अर्जून कोले, 'पानकर् । में को नेजार उसका निर देश द्वा है। आकृतिकर पान नहीं ।' हो शासकोका रोज-रोज अर्ज्यको प्रकृतिकर पान । के बोले, 'केस ! काल व्यासको ।' अर्जुनके सरकाल बारान गोजकर दिस अरट विराम : अर्जुनकी क्राक्टका देशकर अर्थापनि निश्चन कर दिस्म कि कुमके विवासकालय व्यास अर्जुन हो से क्रोटन। । वृद्ध दिन व्यासकान करते समय प्रशान हो बारकार्यको जीव

किमोंने मह कि 'प्रकार पहे बनावों है अपने अस क्रांप और संस्के दास प्रतासत है। यह असेन है। बात पूरी होनेने पहले ही अर्थनने पाँच पैने बाजोंसे करीते | हारे बाची विक्री सामारण पहुनका न कराना । यह आरे क्षे मनस्यो केन विकार और साथ कामुख्यर क्षे<mark>ट को</mark> | कामुओ काम क्रान्तेओ क्रांत स्थान है।' अर्थुननेत्राच होत्यर अपने-अपने स्थाननर हो पाई रहे । तथा पर गया और । योह्यान जाना जीवान विराध । होनावानी पहार, 'अस आवार्यको प्रति कर नहीं : काले नात्व क्षेत्रर क्षेत्रावर्त | कृत्येक पुत्रहे कालर कोई बहुर्वर न होगा (

महार भी। होन क्यों असी बुद समझे से, बिर भी अनुमें । बोले, 'बेटा अर्थन ! में सून्दे अवस्तित समावा दिखा

### रहुमण्डपमें राजकुमारोंके असकौक्तरुका प्रदर्शन और कर्णको अङ्गदेशका राजा बनाना

वेत्राज्यकारो सर्वा है—कालेक्स् | क्रेस्टावर्तने एकक्रमनेको सक्तिकारे नियम देशका क्रमान्त्री, मोनवत, बहुविद, बीच, जाल और बिहर आहेथे. राज्ये काराहरे कहा, 'राज्य । सभी स्टब्स्ट्यर स्था अवस्था विकासे निवृत्त हो चुने हैं। अन्यकी हुन्ता हो, अनुसार हैं हो एको अवस्थितका पौराम एक हिए सम्बे प्राप्ते हिरामा मान ।' कारावने करता क्षेत्रर बाह, 'अल्बर्ज ( अल्बे कृतना कहा कहा करवार विरुद्ध है। अहन विर्ह्म करका, विर्क Will, fint year are-strongs under after small हों, करें । उसके रिक्ने निरम हजारको रेजारी आवश्चक हो करायी अवता वारे।' अवस्थार अवूरिर सेंब्रुट्योले पान्न 'निवार | अत्यानवेदे आकान्त्रवर निवारी बारायते । यह बारव भूते बहुत दिन है।' होनामानी स्कृतकुर्क दिने एव क्राय-कंपायसे रहित समानः यदि कांद्र वर्धे । कन्यक्रवेदेः मारण वह धृषि और भी सुक्रमण थी। प्रथ पुरुष्ते पुरु सरके स्थानकार्य नीव हात्ये गती। सामका नेवार होनेकर इसमें अनेको प्रकारके अन्य-क्रम दनि भने और एक्सराकेके बी-पुरुषेके लिये जीता जान करवाने नवे। कियों और साधारण कर्वकोटे काम करण-काण थे । रिका हिन आनेपर राजा वृत्तरहा जीना हुने कुरायानीके ताक कर्त अपने जारों और मेरिजोकी इक्लो लड़के बड़ी भी। लाज है गानारी, कुनी ६६ व्यान्ती सम्परिकाकी बर्वेडको वी अवनी-अवनी कृतिरचेतेः साम अवनी । प्राप्तमा, अक्रीप, वैक्रम आदि जाकर प्रवासकर हैठ गरे। सहीती चीह उपक्रे समुद्री स्थान कर भूते । क्षत्रे काने क्षत्रे । अन्तर्भ क्षेत्र हेर सब, हेर न्योक्तात और हेर फरोबी माल फरे अबने पुर अवस्थानको साथ वर्ष आने। उनके विश्वेद और फ़ैक करीने कर के का है थे।

क्षेत्राकारी अन्यस्तात केव्यानेकी पूरा कर वेदा विकामी प्रकारक करवातः। सम्बद्धारोते क्यूरे

क्य-क्षमा क्षेत्रस दिस्त्यम् । महत्यर मा. हामी और केन्द्रेया कहता अवने-अपने यून्-मात्रे ऋदः यो । उन्हेने अन्यानी सुकती भी एवंद्रित प्रथमे कहा काल-सारकार तेयार क्या-बच्चके केरो कारणे तथा क्रमानक हिसामने मने। का लोग कावी कृती, समार्थ, क्षेत्रव, विवस्ता और क्ट्रांची क्यूको असे बेक्सर अस्य हुन्। योगरेन और क्वॉकर केने इन्को गाउ केकर सक्त्रीयो असे। वे वर्णन-विकारके करान प्रदर्ध-करहे और संबंध प्रदेश और संबंध कारके कारण को है को मायकार हुए। वे महारत हावियोंके राजांत विकास निवासकार केंग्रे बाहर होर बहुए बहुई। तने : किर्देशी क्रमाहको और कुनी माध्यमीको सब कारे कारको करी थी। जा संघप दर्शकोंमें दो कर हो गये। एक भीन बीकोज्यी जर बोको हो कुछ लोग एका इटॉधनहीं। ल्युको लगान रूपको हो पोन्ना धोलका पुरस्ता क्षेत्रकारी अध्यक्षमाने सक्, 'केस ! इन्हें तम रोक से । कर का राजनी से सर्वक गावक कर वैदेंगे (' अवस्थाकरें क्रमार्थे अस्त्रास्य पासन विकास

क्षेत्रावाली करें क्षेत्रर काने कह करवाचे और नागीर करने बहुत, 'जब जरक्योग अर्थुन्यत अञ्चलीहरू हेस्रें। वे को सकते अधिक प्यारे हैं। असून पुर-पृथिये आये। उन्होंने कारे अलेकको अन के बी, किर बारकको का करत करके को सूत्र दिया। मानवासको अधि करा है, पर्वकारो बाल देव दिने, प्रीकारो पूर्वी और वर्षात्रकारे वर्षत्र प्रस्ट कर दिने । जनार्क्यकारे हारा के सार्थ हैन भने । वे कुलवायें बहुत संबे हो जाने, जो पहला जाक्षे बहुत होते । त्येगॉर्ने व्यक्तित होकर देशा कि से दुरुपार्थे रक्तके मुरेकर, तो असे क्षण राजके बीचमें और परावद पारते पंजीवर अवस्थितक दिका यो है। उन्होंने बड़ी पुतरि, स्टबर्ड और चुक्सकोंके प्राप्त सक्तपार, सक्षद और भारी निजाने उद्यक्तर जनमें नियुक्ता दिसायी। उन्होंने लोहेके धने सुरासके प्रत्ये

कुर्तिते श्रीत जान गारे कि स्तेन एक से काम देक करे। बहार निकारेको थी केम १ सम्बंध कर कहानुद्ध, नरापुद्ध समा ज्युईको अनेच कैसे तथा सम समामाने।

इसी सरक कारी कुशुनिक चीवर प्रतेष विकास जान पह को होई केल-समा कहा दाला हुए श का है। मानी सर्वाच्यो सन्त्रोधित संग्रेष कहा—'अर्थुन । सम्बान मरण : मैं तुमारे शिकाने हुए करन और भी विशेषकांच कार हिएसोटा ।' इस समय दर्शकोंने बहुत्यक कर गया और वे हम प्रकार को है को, नाने नवीनने को एक होना कहा बार दिया गया हो । कार्यको यात सुरकार असून एक बार हो सर्वतान्ये हे गर्ने, पर दिन जो क्रोब का गया। कसी प्रेणायांकी शहाने ने सभी कीवल निकाले. किने अर्जुको दिक्तराम या । इससे दुर्वे करको नही प्रकारत हो । अपने बार्यको पाने स्थान्तर बाहा, 'मेरे स्रोप्यत्यको से अस्पनार अंतराहर दूधर है। इस और कृतना राज्य आकार से है। इक्कानुसार इसका उपयोग करियों ।' कार्नी बाह, 'मैं हो क्षा कारके साथ विकास करनेको सञ्चा है। इस समय के अर्थुनो प्रसद्ध सरमा पांचा है।' क्षरेयाने सह, 'अस इसरे साथ कवर सम इकाले और चौरिते, विलेख डिम महिन्दे और सहस्रोदे विराय के रहिन्दे ।

अपूर्वको देख कर यह, क्यो कर्म गरी प्रयाने केर रिरामार कर का है। अपूर्ण असंको पुक्रकार कहा, 'कर्म ! रिया कुराने आसंकारों और किया कुराने मोरानेकारोंकों जो गरी निकार है, वही हुनों की इसके मारावेक निकेशी !' कर्मने कहा, 'असी, का कुरावान के सामेश निकेशी !' कर्मने कहा, 'असी, का कुरावान के सामेश निकेशी !' कर्मने कहा, 'असी, का कुरावान के सामेश निकेशी है। क्या इसका केरान हुनाव है अस्मितार है ? बारावोगा कहा आसोग कर्मा की हुनार पुरुष्ट प्रमाण असामे सुनार निरा कहाने असना किये केरा है।' पुरु सेमार्थ असामो असूर प्राप्तान केरार पहला हो गया।

हारोने वीतिनियुत्त कृत्यावानि होनोची हासुन्नके विशे रैकार देशकर कहा, 'कार्न है पान्कृत्या अर्थुन कृत्यीका सामने कोश पुत्र है। इस कृत्यांकिकेनियक हुक्तरे क्राय पुत्र होने जा का है, इस्तीको पुत्र की अपने में-कार और वेशका गरिवय कारपाले। का कार केनेतर है पुत्र करने-र-करनेवा निक्रम होता। क्लेकि कारपुत्रात अरुवा कुल-होता अनका रीच बेसको पुत्रको साम हुन्दुन्न क्ले करते।'कर्माण सामे से बहु कार्नी कृत्या। अरुवा करेर सीहिन है तथा, है। सन्तानो कृत्य करा। कृत्यांनाने कहा,

'सामार्थको ! प्राथको अनुसार सब कुराके पुरुष, सुर्थार और सेमार्थक—कीचे है रामा है समार्थ है ! यदि सर्पृत स्वर्गके साम इस्तीरचे नहीं समाय प्राप्ती कि यह समार नहीं है से में कार्यको समुद्रेशका राज्य केता है। यह प्राप्तार हमोजनो स्वर्गको सुर्थान विद्यालयन केतान और प्राप्तार अधिकेता प्राप्त हैना । उस समय सामेंस कार्यका अधिका अधिकानो सही



अवश्यक हुई। कावण कृष्यक विशेष कारण अस्तर प्रश्नीके स्थापक का और कृष्य होनेक कारण अस्तर अंगर-पंतर सेवा का का। का करिया-वर्णिय कारण अस्तर और 'सेट-नेट'! स्थापक हुएए करने एगा। मार्गने समुद्र सेवा । अपी सम्बन्धे अस्ते क्रमांपर निर रक्ष्यर अस्ता सिम्पा। अपी सम्बन्धे कोरसे अस्ता पर वैद्य विष्य का सम्बन्धे स्थापक सम्याक कोरसे अस्ता किर विश्व किया। अधिरक्षा हैसा सम्बन्ध सेक्सर प्राथकों निक्रम कर स्था कि यह सुरुष्ठ है। सीम्पोर्ट केस्से पूर्व कर्म, 'अरे समुक्त ! ह अर्थु-के सभी प्रश्नीकों कोर महिला है। सेरे केसके अनुक्त से व्या है कि स्ट्यूट बोहोको क्रमूब सेम्पार से। और वीच । ह अब्द देशका स्था क्रम्यकेम क्रमूब है। धरा, असी कुला पाने स्थित्वक स्था क्रमुक्त स्था।

स सम प्रकार रूपेंक महत्त इपीट भाग

भारतीय होहमेरे जालकर विकास आया और भीगरेन्से । समर्थ है। बार्य अपने महासर तथा नेरी सहस्ताने केयल बोल, 'बीमरेन । त्याँ ऐसी बार पुत्रके नहीं निवासके प्राहिते । स्वतियोगे सरस्यो बेह्मा के सर्वधान है । इस्तिने रीय कुरुके कुरवीरके साथ भी दुई करना ही साहिते। शासीर और परियोक्ती क्रमरिकार प्राप्त बढ़ा करिय है। क्रमी क्रमानमें के कार्य-कुम्बरमारी और क्रमेन्क्रमान्य है। बहुत जिसम गया। क्रेम्बर्म, कुम्बर्ग क्रम गोमानीके हत सुर्वक समान हेकारी सुनारको नाम, कोई सुरायो कर । स्था प्राचक भी अनमे-अरमे निकास-स्थानमा पाते नने १

अक्र देखका ही नहीं, जारी पृष्टीका सारान कर सकता है । वेश का भाग जिससे न रहा कहा हो, जा रकस बैठकर करवरर हैरी पहले ।' हमें प्राथकार्थ सहस्ता पन पना। नामाक कुर्वक है क्या का। कुर्वेशन कर्मका कुछ क्याकर नहीरे

#### हुपद्का पराभव

रिज्ञानको पहले हैं—कार्यका | यह होनाकारी हैना कि सभी राजकुमार शक्तिकाचे अञ्चलचे पूर्णतः निकृत हो कुछ है, तब कहारे निक्रम किया कि उस गुर-प्रीहरत हैनेका समय ३६ गया है। उन्होंने सम एमकुमारेको अन्हे कार बसाबार कहा, 'समानेन बाह्यानरा'न हानको पडाने प्रशासन से अपने । बार्ट मेरे सियो सबसे बार्ट प्रसादित्य होती। अपने बड़ी जनस्वाचे कुलेक्सी स्थान स्वेत्यत सी और अने साथ क्रम वारण कर रक्त समार से इस-मनामी बाता कर है । क्वेंकर, कर्ज, क्कूब, कुलाल और हाते एकहभार 'याने आक्रमण करके में कार्कम' — हेना रिकार करते अध्यापे स्थाने करते राते । अनेने स्थान हैताने और फिर एक्स्पानीने अनेता जिल्ला । पाद्यासरम्ब हुस्सी कते जीवताने विलेको बाहर निवासकार अंकी पंतानीनि स्वरंत अग्रह्मपण्डवरियोगर सामान्यां सूत्र्यं कर है।

अर्थने द्वीवर आदि स्टेरकोची कहा क्या करे रेनकर पहले हे होनावालीने बाह्य का, 'आवालीकाम ! हन सोगोको पाने अपन परायम विका सेने बेरियो । ये लोग पालालगरको नहीं प्रकट लोजे। इसके बाद इसकोगोबी मारी आवेगी।' अर्थन अपने प्रत्यामिक स्वय नगरते उसका कोस इतर है ठहर नवे थे। कर इन्हरे अपने करनेकी बीजारने कौरवोकी सेनाको चनित्र कर दिवा । वे इकनी कुर्ती और स्थानीने बाज करन को वे कि औरव स्थान उसे कानेक क्योंने देवने रहते। जिस सक्य कुछ प्रकारका बाय-वर्ग कर परे वे जा समय पहर, वेरी, पुटक और विकासी साथै स्थाननी पूंच वही। बनुस्की देखा शाकाराका राज्यं करने राज्ये । इसर दल्वेंबन, विकर्ण, सुमद और दुशासन आहे. भी राज चलानेनें खोर्ड बोर-कमर खी रकते थे। इन्ह असराध्या (मनेदी) की तथ पम-वकार अभेजों में प्रकार सामना कर से थे। उस भागा

प्राप्तराज्यों राज्यानोंके सभी सामारण और असामारण मार्चीया-किन्दे कहे, कहे और किन्दें की वी-साठी, पुरान करी हैका विकार को और कराते हुए माहरोके क्रमा मीमोपर क्र पहे : मीरपोधी क्रमार ऐसी बार पहे कि से का पर्यक्त करके साथने एक क्षम भी नहीं छार कोर, केवे-विकासने धान्यकोरेंद्र धान भाग आये।

क्षेत्रकेस कारणावा कुराव अञ्चली क्षेत्रसारीह क्रानोंने प्रकार विका और रक्षार सवार हुए। अर्जुनी पुरिवर्द्धराओं केन्द्र विचा। स्वपूर्ण और स्वप्नेत्रकों अपने स्वपंद कार्यक काळ कावा। योगांन हार्यो सीवन गर्छ केळा केलके अपे-आने कर्व काले हुने । अभी हुन्हें आदि और कोरवंको इरका इन्स्य पर हो ये थे कि सर्वका क दिकारोधी मुक्तपान करता हुआ वर्ष का पहिला। पीरतीन क्ष्मातिः कालोः समान प्राप्ते गरा नेवार प्राप्तां सेनाने। बीतर एक गर्न और एक बार-वारवार प्रतिनंतिः विर सेंबरे करे । अनुर्वेदे करती, चीत्रों, रख और बैक्टर-सरका रोजाकी क्या-न्यार कर देखा। अर्थनो अर्थ महारू और विस्ताप क्को कर्तानी हेते हती राज्यों के पहल्लाकारे वार्ध हेन्द्र क्या गर्ने । यहाँ सम्बन्धित्ते अर्थुन्तर ब्रह्म स्थितर अवस्था किया, परमू अर्थुको क्षेत्री ही देशों को पुरस्ते क्रिक कर क्रिक । इसके कर अर्थको हत्सक क्रिक और कार प्रस्कार क्योंन्स निय हिंदे और पाँच क्रांगोरे चार केरों तक कारिको कर। जभी इकारन सार परव कान है जाते ने कि अर्थन हक्तों सक्। तेवार असी रक्ते कुर को और हुनके रकत जकर उने कात रिन्ध । का अर्थन प्रस्कारे केवल प्रेपायाचीर पास पाने, तब सारे क्रम्पान क्रम्पानै स्थापनीने स्टब्स्ट क्याने रूपे। सर्वुको कहा, 'बेका भीवरोन । राजा कुछ प्रतिस्थेते सम्बन्धे हैं। कार्यी केरणा संक्षर का ब्रॉनिये, बेक्स गरविश्वसकारो हुम्बको हो गुलो। अधीन कर देखिले ।' कामि भीकोन सभी स्थानेके द्वार जोरे हुए थे, मिर भी उन्होंने अर्जुक्की कर बान सी और सौर आहे ।

हा। जातर प्राचार हुन्हारे काश्वार सेन्यानाकी कर है । जाते | अंध अन्या मनक पूर-पूर से सुध्य का, जन की किन इसा था | ये सर्वमा सेन्यानकी अभीन से से में । उनकी वस दिवति देशकार शरकार्ग सेना कोने, 'सुन्द ! हैंने साम्पूर्वक सुन्दारे देश और स्थानको गीर साम है । अन सुन्दार कीवन तुन्दारे प्राची सम्बंद है । क्या हुन पुराने निकानको पान्तु रकाना पास्तो से ?' सन्दोने स्थित सेनाकर और भी सत्ता, 'सुन्द | पून सामोने दिशक का सेन्से । इन से सामानको से श्रमानीक सामान है । क्यानको समानेन पुन्द सामानको से श्रमानीक सामान है । क्यानको समानेन पुन्द सामानको है कि समानेन किन की से किन कम काले । में सुन्दे सर देश है कि सुन्द आने प्राचार कारी सो । सुन्दे कार का

कि को शंका नहीं है, वह राज्यात सका नहीं हो सकता।
इसलिये में में दुक्ता सामा राज्य लेकर अवा हो जवा है।
इस ज्वान्तीके स्विकालके साम को और में उसर सम्मा।
अब इस पुत्रे ज्वान कि सम्मा। ' हुन्दरे बढ़ा 'बढ़ान्, हे
कार-वैसे परावत्त्वे सामावार परावत्त्वीके लिये वह कोई
सहावंत्री वास नहीं है। में जानो असा है और शरमावा
कार्य को आवारत है। अब होगने उन्हें पुत्र कर दिया।
इस प्रावत्त्वी-संस्कृति केह समाव कार्य श्रीता क्या है दिया।
इस प्रावत्त्वी-संस्कृति केह समाव कार्यका स्वतंत्र को है। इस
प्रावत्त्व कार्यक होने हुन्दर्क जानो कार्यक मी हमा।
इस प्रावत्त्व कार्यक कार्यक मानिका करके भी अस्ती
स्वतं हो की, परम् हुन्दर्क जानो क्यांना मही हुन्स।
इस अविकाल-अरोहको अरोहका नगी को को पह एक अस्ति
हमें सकी। अर्थुको करकारते ही को पह एक अस्ति
हमा वा

# युधिष्ठिरका युवराजपर, उनके गुणप्रभावकी वृद्धिसे मृतराष्ट्रको चिन्ता, कणिककी कूटनीति

विश्वास्ताने कार्य हि—सार्वास्ता । सुनाको स्रीय रेनेके एक क्ष्मं कार्य कार्य क्षाराहाने वास्तुरूपण मुनिक्षितको सुनात्मसङ्गर अधिविक क्षार दिला। एक को सुनिक्षितको केर्न, विकास, स्वीत्मान, काराह्मा, स्वास्ता और स्वीत्मान केन्न श्वादि क्ष्मुल-से कोन्नोक्तर गुरू केः स्वादे अन्य कार्य की क्षी कि सुनिक्षित के सुनारत क्षेत्र ( सुनारत क्षेत्रोक अन्यत्म क्षोदे के दिनोने कार्यका मुनिक्षित सन्त्रों क्षार कार्यन स्वाद्यांको केर्ने क्षार केरा के कि कोन् सन्त्रों स्वादन्यति। विकारको की सुनाने सन्ते।

हुमार पीरमोको कारकारकोरी एउटा, यह और एकके पुनार पिराह विका जाह की। पुनारी विका पूर्ट है सानेपर वे अपने प्रमानिक अनुसूर्ण वाने साने। कई विकास अख-एकोद समान कोई सेवा नहीं का। होन्याकार्यका ऐसा है दिश्वम वा : उन्होंने एक दिन कोस्सोको परी सपाने अनुसरे कहा, 'अनुन ! देखे, मैं नहीं अन्यक्रके विका अधिनेत्रकार दिला है। उन्होंने मेंने स्वादित करक अस जाह दिला वा, यो तुन्दे हे दिला। उन्होंने मेंने क्यांन करक है, ने हुनों बनान कुछ है। अन पुत्रो हुन अपने पत्ने-कन्दुओंके हुनारे कह पुत्राविकार हो कि नदि सुन्नों मेन और सुन्नार

पुरस्तीतात है से इस पुरस्ते स्वापेने भी यह दिस्ताना।' अर्जुनने गुल्लेकार आहा कीकार की और उनके करशोका इसके काले काली औरसे निकाल मने पुल्लीने सर्वत केंद्र बात केंद्र गानी कि अर्जुनके क्षापान क्षेत्र कर्नुने और क्षेत्रें वार्ट है।

वीतसंत्र और अर्जुनी सवान है साईको यी वृहस्पतिसे सम्पूर्ण वीतिहरकार दिया प्रकार पर थी। अतिरकी न्यूना वी को मिनीय और सरक-सर्वाक पुर्धोंने कुमान थे। अर्जुनी दो सीवीर ऐसकी एना इस्तिकारों भी, को बढ़ा नजी और सम्प्रे का, जिसमें नजारीका अरहार पाने हुए भी तीन वर्षस्क सम्प्रात्त का विकार का और विनो स्था एना पान्यु भी नहीं बीव सके थे, बुद्धों यस निरादा। इंसको अतिरिक्त वीत्रतेकारी सक्तानताते पूर्ण दिया और विनय विन्तिकी स्वात्त्रकों स्थानकारों पूर्ण दिया प्रमुख्य अर्ज तो। इसके सम्प्रात्ति कर-बीवन करियोंक संस्थान अपने तमें। उनके सम्प्रात्ति कर बच्ची और अपनित्ति होने तमें।

व्या स्था देश-सुनकर वकायक शृहराहके व्यापने वरिवरंग हो गया। दुवित प्रापके ओसके कारण ये अत्यन विकित रहने समे। यह उनकी अञ्चलक अस्यत वह गयी, इस उन्होंने अपने केंद्र वनेती समर्गतिविकास क्रिकेटको मुलबाय । बृतदाहुने बहा, 'क्रांनिक ! वितेषित क्यान्तेकी बहारी है होती या रही है। मेरे विकार कही जान हो जो है। हुए निक्रितकारों कारावाले कि उनके साथ पूर्व संग्रित करके बार्किय के विकार ? मैं सुवारी कार कर्नुना !'

समितने वक्त--राजन् । आम नेरी पात सुनिने, नुस्तान स्था न होत्रमेना । राजाओं सर्वाह एक देनेके डिपने अला स्थान



पालिके और वैक्के मरोसे न सकत कैन उसके करना चारिये। अवन्ते कोई कम्मोरी र जाने ने और हो भी के विस्तिको मास्य न होने है। इसरोको करकोरी करका खे। पति कहना सनिष्ट प्राप्त कर दे हो को बीचने न देखे । करियों नेपा भी गाँद मीतर या जान हो जात देन्नेकर कार हेरी पानी है। एक्सरे काम्बोर प्राथमार प्राप्त नहीं है। रेन्से भाषिने। यदि समय अनुस्तान व हो से जान्यी ओस्ते ऑक-कान केंद्र कर है। यरन्तु सक्यान को सर्वक्र । वरनात्ता इन्दर भी बना पार्ट दिसानी बादिने । प्राप्ते तीन (मान, पार और स्टाप्ट), चीच (१६३०, १६३००, सरका, सरका, स्टाप्ट, स्टाप्ट, और परस्कार विश्वार) तथा स्तत (स्वय, द्वार, चेट, राष्ट्र, माना, ऐनुजारिका प्रचेत और समुक्ते गुरु कार्य) राज्यपूर्विको गृह करात हो । क्यानक समय अनने अनुबात में हो, क्यानक ध्यको कंकेस प्रकार भी हेना न सम्बद्ध है। शन्त सन्त आनेपर महनेकी तथा परणकर करे कोड़ इंग्लंब काड़िये : साम, राम, राम, येह असी किसी भी जरायते अध्ये प्रदासी न्य कर देना है एउन्हेरिका कर करे है।

्रात्म् वह—क्षणिकः । स्वयः करः, चेत् स्वयक्ष दश्क के क्षण वित्रः प्रकार क्षत्रुवे जाते विश्व कातः है—व्य वात तुम तीक-तीक कात्रको ।

क्षांको का-'पहराच । ये कारको इस विकासे इस कता कृतक है। किसे बाने एक बड़ा मुद्दिवार और कार्यक्रेटिया भीवह स्थाप सार उसके भार समा—साथ, का, मेरिक और नेवल भी की रहते हैं । एक दिन उन्होंने १६ का कामान् और प्रार-महा इरिजीका सरवार देखा । क्को को अबूटिर अने कार्यक्रिकी बेहा की; परना असरकार स्ते । क्रमपुर इर रहेगाँहै आकरमें विकार किया। गीवाने बहा, 'क्य हरेल चेहनेने यह कुर्वोत्त्व, क्यान और यहर है। जाई का ! कुले इसे मारोकी कई बार कोशिय की, पर प्रकारका न निर्मे । अब हैसा असंब किया बाय कि का रह क्षीय को रहा हो से पहल पर्स बाबार बीरे-बीर हासका पैर कुरत हैं। ह विर शाम कहाड़ स्वेतिको तथा कुर प्रमा विस्तावर हुने बैक्के का करें।' करने निक-सरका केल ही किया। हरिया पर पाता । कार्निके प्रतान पीत्रको बाह्य, "राज्या, राज कुरुकेन पूजन कर अवस्ते । मैं इसकी देख-भारत करता हैं।" कार्य को कार्यन नीवह करनी-का कुछ विकास साथे हरू । क्रक्क कार्यन् कार कार कार्यः गाउँने सौद जाना ।

नीव्यको निर्माण देखका सामने पुत्रत, 'मेरे पहुर निर्मा । कुल विकार कोया-कुरूमें ग्यो के 7 जारतों, काल इस इंग्लिको र कुल्लेप चैक करें।' ग्रीकृते कहा, 'सामान् मार पार्ट | पहेंचे पहले कहा है कि कार्यद्र करको निकार है ! क्षेत्रको से की पाद है। साथ ग्रह गर्म नेरी फर्का १८वेच । हो पर्द । इत्यों का प्रमानकी कर कुल्का में हो तम हरियको काम जन्म की सन्दर्भार है आपने बाह—'अबार, ऐसी बात है ? काने से नेपे जीवें कोश है। जब मैं जनने चुनेनर प्रयुक्तिको मतका स्वर्धना ।' सह बाह्यर कर करा गया। उसे समय का सामा। मीकाने बार, 'श्रुप कई । पेरान कुले बहु रह स कि बार्क कारनेसे प्रशितके जीवने जात दिल गया है। से मैं सी प्रहे इक्टिया नहीं, चाँदे हुए कहाँ से मैं स्होकों का करी। सब हुए केर होक समझे, करों।' यह इस्कर अपने मिलने यह नका : तक नेहिनेकी भरी आपी । गीवहने कहा, 'नेहिना वर्ष । अपन कर कुरूर कहा नतान हे रना है। युक्ते हो हुका कर भी देशता। भ्रह अभी मानिको साथ भई आलेखा। जो डीक प्रम्को, करो।' भेदिया रूप एककर परन निकास । तकाक नेजार आखा । गीवहरे कहा, 'देश दे ेकरे । वैरे सरकर क्या, पेरिके और कोको क्या दिया है।

की, जुले कुछ करनाई है को आ, मुहारो तक के और दिन हरिकास गांस का !' नेक्टेने कहा, 'का तकी दूनने कर गने हो मैं दूपने त्यानेकी हिन्दत कैसे करों !' जा भी धाव गणा ! साथ मीदा, कोटल ही मांस हाने राजा !

'सन्त्') जहर राजाके किले की ऐसी है जात है।
सारोकको कथानी जार है, इस्केरको हान जोड़ हो।
सोरोको हुए दे दे और करावर तथा करावनेको करावन
हिसाबर कहाने कर हो। जह जाहे कोई भी हो, जो कर कराव काहिये। संग्या काकर और क्याकी स्वराध केवर करा वा बोलेसे भी स्टूब्को है बीतान काहिये। करावे हेव सुनेदर भी मुस्कराकर समावीत करावे काहिये। करावे हेव सुनेदर भी मुस्कराकर समावीत करावे काहिये। करावती हुआ राजा और गराव हुआ वी मीटा हो कोचे। करावती सुना करे, अवस्तोत करे और रोवे। क्याको क्याक वहीं हैती, अहींदर अधिया संग्रह करानी काहिये। की स्वेश अधिया बोला की हैं। जो विश्वकरणा नहीं है, करार से विश्वास नहीं कराव काहिये। स्वांत काहब्दी, करावी कावित

केलो परिविद्य पुरस्क रहते स्वर्तिन स्टिके, द्वारतेने सान, परिट, सहक, दीर्थ, चीराहे, करे, पाय, बंगल और एको बीक्षपाने सम्बोधे प्राथतेको अनुसर-महत्ते स्वय वाहिने । वालीका किन्यु और कुलको कठोला, पर्यक्त कार करते हुए भी पुरस्कराकर बोरम्य-म्ब जीति-नियुक्ताका विद्व है। इस बोइन, सैनक सान, सामासन केल, केर प्राया और काफा केलावा—ने ही राज प्रेशकीयोंहरे क्राब हैं। को अपने क्रमुक्ते सांभ करके निक्रिया हो जाता है. अल्या क्षेत्र का दिवाने अला है का अल्या सर्वनात हो कार है। अपने कहें केवल सबूते हैं नहीं दिलारे भी क्षेत्रपन्ने पर्वत्वे । किलोको अस्त्राः हे परे से पहल दिनोकी । बीक्यों अञ्चल करा है। कारण-पर-कारण प्रका करा। कार्य । अल्पनी पान्तुपुरोसे अपनी प्रक्रा कार्य वाहिने । वे क्वीकर आहिते कारकार है। आर देख उपाय कीकिये कि करते कोई कर व से और पैक्षे प्रक्रासम्ब भी न करना पहे। प्राप्ते अभिन्तं और में क्या करें'। यह महमार करियां अधने वर करन राज । करायु और भी किसाहर क्रेकर स्टेकfirme urch (th)

\* 3

#### पाण्डवोंको वारणावत जानेकी आज्ञा

वैज्ञानकर्त करते है—अन्येक्ट । क्लेक्ट देक कि भी**यकेरको सांस्य असीय है और अर्जुनकर रूपा-उ**पर रूपा अकारत विरुद्धान है। अन्यतं प्रतिक जानो राजा। जाने कर्ण और प्रकृतिसे विसमार पत्त्वाचीको चारनेके बहुत उपाय बिहरे, परम् सम्बद्ध संबंधे कारी गर्न । विकृतको सम्बद्धारे क्रमूंनि पह पाल विक्रीयर जनक भी नहीं भी। अन्तरिक और कुमारी प्राथमिक पुन देवतार को सकते उनके मुख्या बकार करने सने। ये व्यक्तियाँ व्यक्तिया प्रवादे हेते. हाना करते, कही इस बसायर और दालते कि 'पानको जोड कुर बुविद्वितको एउन निरम्पा काहिते । बुधवकुको को बहारे 🛊 क्षेत्रे क्रेनेके प्रारम राज्य नहीं मिला, ताल में राज्य मैले हो कारे है। सामकुनम्बर भीना भी को समस्य और प्रविद्वायक्षण है; वे पहले भी एक असीवार कर को है. हो अब बैसे सहर बरेंगे । इस्तिओं हमें जीवा है कि स्टब्स और करुवाके बहारती, प्रायुक्त जोड का श्रीविशको है। भाषा बनावें । इसमें मोर्ड सन्तेत नहीं कि उनके एका होनेसे चीका और कुरराह कार्किको ची कोई असुनिका र होती। वे कड़े डेम्बो अनकी क्षेत्राल रखेंगे हैं

प्रचानकी बहु बाल सुनवार दुस्तेवन जाने समा। यह

पाल-पून और पुरस्कार पुरसाहके पास गया और उनसे सहने सन्त: 'विकासी । मोगोंके बेहने बड़ी बुरी बकाइक सुननेकी विक्र रही है। से फीनको और आपको इसकर पायानीको क्ष्मा क्याना करते हैं। धीनको सी इसमें कोई आयति है नहीं, पांतु हमाने गेंके सिमे बढ़ बढ़ा बढ़ा बनाय है। जाते 🐞 बार हे नहीं, बाहरे पान सीवार कर दिया और कारने अंबरी अन्यताने कारण विल्ला हुना एन पी अवविकार कर दिया। वहि व्यविद्याची एउन मिल गया से किर यह अधीर्य पंत-परम्याने कोन्छ और हरें कोई आँ कोन्य । क्रो और इच्की करकानों सुरहेंके आतित स्वाह श्राकों स्थान कह न योगन यहे, इसके देले आर कोर्न-क-कोई चुनि स्वेतिके । बाँद पहले ही जायने राज्य हो दिला होता हो बारोबारे बोर्ड कर हो नहीं होती। अस क्या किया जान ?' कुराब अपने पुत्र कुर्वेकनकी बाद और क्रिक्टमी नेति स्त्यार स्विकाने एक नवे । त्वीकाने सर्ज, अवस्थि और दशकानके साथ नियम करके काग्रहसे बद्धा-'विकासी ! आर्थ कोई सुन्दर-सी मुक्ति स्तेताकर क्ष्मकोधी मुस्से कालाका पेत्र वेकिने।' प्रताप संख-विकारने का भने।



कृत्याने स्वर—केटा ! वेरे आई कान्यु महे वर्णाय है। इसमें साथ और विशेषकारों मेरे काम है जह उसम कान्युर करते हैं। में अपने काने-पीनेकी भी पर्धा नहीं रहते हैं, एस कुछ पुस्तों कहते और मेरा ही एस्स कान्युने। उनका पूर पुरिसंहर भी हैंसा है कर्णाया, कुल्वान, कान्यों और केनके अनुक्य हैं। इससोग कल्युनेक को बंधनरावसाय एसमों हैसी पूरा कर है, विशेष करते तह उसके स्वरूपका भी जून को-बड़े हैं। पायुने करते, सेन्द्र और उसके बंधनरावसाय पूर्ण पराय-योका हिता है। उसरे दागरिक पुरिसीटने प्रमुख एसे हैं। में विगयकार अध्योगोंको अस काले हो ?

पुर्वेक्तने कार—निराजी | इस कारी आवरिको विकास मैंने महारे हैं। सोकार अर्थ और सन्तरको हारा अवत्यो अस्ता कर दिन्य है। यह अवान्यवा हकरी ह्यानक वारेगी। स्वाना और कवी मेरे अर्थन है हो। इस सम्ब धीर आर्थ पाताबो साथ पांचानोंको चारणाव्या केन दे सो राज्यवर में मूर्ग तरह करना कर सून्य। अस्तो नव्य ने अर्थ कार्य से बोई हानि नहीं। प्रस्तुनं का केट । मैं में से बहे बहता है। जायु वा करपूर्व का उससे कई देते ? बीम, होय, कुरावार्थ और विद्वारी कार्य सम्बद्ध नहीं है। इसका जीता और कब्बनेपर सम्बद देव है। या कियता उन्हें सबही जी कब्बन होती। यह इस ऐसा करेंगे, से इस्पर उन बर्नेरब बहुन्द्रका और कस्तकार सोच करें न होता ?

दुर्जेकरने कहा—निवासी | श्रीण तो प्रधास हैं। अग्रामाण की पक्षणे हैं, इसस्ति हैंश असे विश्व आहें वा असते। कुमाणार्थ अस्ति जीहन, महनेहं और मोनेको कैसे केहेंगे : या गर्थी वाल विद्याबी, में किये-किये परक्रवोंसे विसे हैं। यर के अनेति कोंगे क्या ? इस्तिये आप विना कंया-सिक्रके कुमी और परक्षणोंको नारगायत केन दीनियें, वधी नेती महान निवेगी।

पह बहुबार शुर्वीचन से प्रमानके उसक करनेमें सन नवा और कुराहरे हुए ऐसे बहुर व्यक्तिको निवृत्त किया, को रत्यकाची उद्यंत करहे प्रकारोको वर्ष अनेदे क्रिके ) सकताने । कोई सा कृषा और सन्या देसकी उर्धता करत के कोई कारकी। कोई काफि येलेका बकार करते शह अकार । पुरा प्रवास कारणावक नगरकी बहुत प्रदेश शुनकर कक्कोबर का कुछ-कुछ कई जानेके रिप्ने उत्तरक हो गया । अकार देशका कार्याने कहा, 'जाने पुत्ते ! लोग सुक्ते वारणस्थाने बढ़ी प्रसंख करते हैं। बढ़ी हुमध्येण बढ़ी जाना व्यक्ते हो हो हो आको । स्वान्यास्त वहाँ पेरेन्सी बही पूर है । हेको, वर्षा उपलोग प्राप्तानो और क्वीवीको स्तव द्वान देव एक नेजारी केव्याओधी तथा विदार करके किर पार्ट स्वेट अस्य (' पुणिक्कि स्वराह्यां कार हांत राष्ट्रा वर्षे । इस्टेरे अवनेको अस्ताम हेकार बहा, 'अस्ताही केही उद्यार, हुने क्य अवस्ति है।' क्यूने कुरमंत्रके बद्धीयः, चीवर, सोवहत जारे को-मूर्ते, होनाकार्य अबदे स्वयती हाक्क्षणे उका क्रमणे आहे कामओरे क्षेत्रात्वेद बहा, 'हर सम कृतरक्ष्मी अञ्चलके अच्छे स्वधिकोचे स्तित वारणायत का खे हैं। अपन्तीन प्रस्ता यनसे हुने आहीर्यंत दे कि वहीं पाप इन्टर हरई र कर सके।' सकते कहा, 'क्रके सुनास कार्यका है। किसीसे कोई अन्ति न है। यहरा है।

## वारणावतमे साक्षाभवन, पाण्डवीकी यात्रा, विदरका गुप्त उपदेश

पांच्यांको करनाका कानेको अञ्च दे ही, तम कुल्ल कृतींकाको वही प्रस्तात हुई। असने अपने क्यी पुरेकाको एकानार्ने मुख्यक और इसका शक्तिन सब वन्यक्रम बहा, 'बाई पुरोकर ! इस पृथ्वीको योगनेका बैधा केरा अधिकार



🕽, बीका ही शुकार की 🖟 । तुकारे दिला बेरा ऐस्त और कोई विकासका और स्थापन नहीं है, विकास समय में क्रानी नुहर राज्य पर पर्छ। वे तुन्ते व्या वान प्रीव्या है कि सेरे पाइमोची पह उसाइ देखो । ईतियारीचे भाग करत, विस्तिको पासून व हो : निरामीने अवक्रमुक्तर पासून पुरु हिन्तकः बारजाकत रहेने । तुम जाते ही बहाँ और महाने । महाँ नगरके विज्ञारिक सन, सर्वास्त्र (राल) और सकती आदिशे ऐसा शक्य कम्बाओं को जानसे पढ़क के । अलकी कैसेयर थी, तेल, कर्वी और तकक विली क्रा निष्ट्रीका लेख करा हैना । पाण्डवीको परिक्रा करनेका भी इस करावा कर र क्ते : इसीमें कुनी, परक्क और उनके निस्तेको रहन्थ । कई दिश्य अत्यान, महान और प्राच्या समा केल । फिर से विद्यापत-पूर्वक निश्चिम्स होकर सो जाने यो एस्कानेकर जान रूपा केन र इस अवश्य क्रम में अध्यो स्वतंत्रे वर्ग है जन करेंग से

वैक्रप्रभावी कहते हैं—अन्येशय | जब कृतरहरे | इकते निका भी व होती ।' पुरोक्पने बैसा करनेकी प्रतिक्र की और एक सबार जुले हाँ तेन पाढ़ीसे व्यक्ति कर दिया। बहुँ क्रमा इसने दुर्वोचनके अञ्चलनुसार बहुत दैयार कराया ।

हायन आनेका पायकोने पायको रिको श्रीवाणयी और बेह बोहोको रकने मुख्यक । उन कोगोने बड़े सैन-भावने बड़े-क्ट्रोके चरजीका स्वर्त विकार, बोटोका मारिकान किया और किर काम को। इस समय कुम्पोनके बहुत-से को-सूरे, कृतिकार किन्द्र और साथै प्रमा पुनिश्चिके पेहे-पेहे काले क्षती । पाणकोको उत्तरा देशाका निर्मन क्षत्रान्तेने अस्पार्तने कहा, 'समा क्लाहकी लुद्धि कर हो गयी है। सभी से से अपने राक्षकोच्या प्रकृतका करते हैं। उसकी कर्र-पूर्व सुरु हो रहे हैं। प्राच्याकेने के विक्रिकेट पूजा विकास नहीं है । अपने विकास ही राज्य अने प्राप्त है। यह है, दिल कुनराह इसे भी क्यों नहीं सकते । कर करें, क्यांत्र केया का अन्यान केले स्त से हैं : हमरोप का का नहीं कहाँ। इह भी नहीं सकते। इन एक अद हरिकानपुरको क्रोक्का नहीं करेंगे। नहीं राजा पुनिर्देश रहेंगे।' पुरवर्गारचीको क्षत्र सुरुवा स्था उनका कृष्ण जानकर कृषिक्षित्रे कहा, 'युक्तिराये 1 राजा युक्ताह बुक्तो किता चरव कार और गुरु है। वे को कुछ कोरों, यह इस निर्शालनकोर करेंगे । यह इसारी प्रतिका है । यदि ज्यापस्तेग इसारे वितेशी और भिन्न है तो इकारा अधिकत्त्वन बोलिये और आसीर्वाक्यूबंब हुये तकिर करके और जन्मे । यह इसमें कारणे कोई अञ्चल कोगी, का अध्यक्षेत्र प्रकार क्षेत्र और हिस परिवर्षण ।" विश्वीत्वी वर्णस्था का सुनवर सभी पुरवारी आवीर्षाह के हर रूपार्थ सरक्रिया सरके नगरमें लीव भने ।

सकते रहेर करेकर अनेक प्रत्यकारोंके ज्ञाना विद्रातीने कुरिवीहर हो इसके निवाद पाला में कहा, 'मोतिहा पुरस्का प्राप्तक क्षेत्रम सम्बद्धाः अस्ते अपने यह कृत्वे वादिये । इस हेरा अस है, में खेड़ेका से नहीं है, परंदु करीरको नह बार सकता है। चरि प्रकृते इस दानको कोई समझ से नो बद पुन्ते का सकत है। " आग जस-कुस और सारे स्वरूपको करण करानी है। पनन्तु विरामी गुलेकाने जीन उससे अपनी श्राह कर रेजे है। यह अभिन सुनेका काम्य है। रेजकेकी कुछ और दिसमोबा ३३२ भई होता । विना वैक्टि क्ष्मकारी नहीं आती। येरी बातको प्रत्येपाति समाव

<sup>&</sup>quot; अर्थात् अनुअंने तुन्हरं दियं एक देश करन केवा किया है, जो आको बहुव उठनेकरं पदार्थेसे अना है।

ने अर्थात् उससे क्यांनेक निम्ने तुम एक म्हेन रीमा कर नेना

शीकार करता है, यह इसकेंद्र मिताने पुरस्कर कामधे कर | निवृत्ता संनेता पुरस्कर पुनिश्चिरने पदा, 'वेने कारकी पात पाला है। 🕆 कुन्ने-विश्वेस क्रमेका क्रम 🕏 काल है। | क्रमेक्टि सक्ता से / बिहुर क्रमेस्पहुर स्तेर आहे। क्र महार्थिते दिलामा प्रता तथ माला है। विभागी पाँची हमिलाँ । याचा प्रतपुर पुरू आहर्षा, वेदीको पश्चापते हैं।

सो । " कहारोंके हिने कुर किया जोड़ीर इतिवासकों की | कार्य है, कह कारणे हुक भी इति नहीं कर सकते (" ‡

## पाण्डवीका लाक्षागृहवें रहना, सुरक्षका खोदा जाना और आग लगाकर निकल भागना

शुक्रमानमञ्ज्ञ समावाद क्षत्रका कार्यकाले कार्यक प्राच-विकित अनुसार बहुत्यनची चनुआंची चेंद्र लेखर असाता और असाबे तान स्वापियोग पहला उन्हों ज्ञानातीके किये जाने । अनोह का-सम्बद्धार और स्कृत-व्यक्ति हिलाई ग्रेम कर्त । पुरस्कतिनोके बीचने पुरिस्तिर हेने बार पत्ने के उन्हें कई केवल इस हैं। स्टब्स भारतेवालीका अधिनका काली पाता प्राचीने राज क्षकाने कारावा नगरे क्षेत्र किया। जाँने क्षेत्र बेहरती, क्रमंकच्ये कहनोते किन्यत किन करकः नगर्क अधिकारी नोडा, केवा और सुद्देशे नेह सी । पुरेकारी असी



रीतापारको । सारो विकास विकास । पालावेदि । विको विकास प्राप्तकारका आहावेद साथ वर्षे प्राप्तक अर्थेर चेवन, कांग, असन साथ सामियोंने को सन्त कानेकी केंद्र को। सरकार्यन प्रस्तृतिक वही धूने अने। कुरवारिकोधी और प्रकार राजी है साति। इस दिए मीद करेरर पूर्वकृत्ये काव्यक्रेसे का पूजा कावको विक् क्रम्पुर पर्यक्षी पूर्व भी । अस्ती प्रेरमधे प्रकार क्षानीके प्रत्य कारा वर्ष पने हुने।

कर्मात्म कृषिक्षीरने का काको नाएँ ओरसे देशकार क्षेत्रकेको पहर, 'बाई प्रीय ! देखते के म ? इस प्रकार एक-वृक्त कोण अपन अवस्थितानी सामीरवेंने क्या है। थी, राजक और कारीको निर्माण प्रकारी बढ़ी प्रधानिक केला है। सबुद्ध महरीकांने बढ़ी बहुएईसे सन, सर्वका (शल) हैय, पाय, बॉल आदियों बीते का वाओ क्रमा निर्माण form \$1. Pages 40 spirerens forme \$ For one granter हरते केवलके को उने का यह जान समावद हो। मूल है । जिल्लाने पहले हो पह पान पाद और भी । धनी से उन्होंने हतें केशका प्राच्या पुरुष है है।" भीवरोधने कहा, 'पाईकी। की, देखें भार है से इसलेन अपने पहले हैं स्थानवर क्यों व रोट करे ?' पुल्लिसे कहा, 'मैक चीन । हमें बड़ी राज्यानिक राज्य अपनी वानकारी क्रियांकर वहीं रहते। unificial proof signification on two-plant fundical इंका-सन्धे न हो। इसलेन निकरनेकी यह हैं। यह इसरे पान-पहुँको पुरेकनको परा पान राज हो जा क्ल्बंब के हो कर सबता है। को लेकनिय अक्य अवर्गको परका नहीं है। नहीं हम यह ही भने से फिर निवासह प्रेम एक सुने होन कोलोग विज्ञाति स्तु होने क अह

अर्थात् विता अविका जान पहलेचे ही ठीक कर लेखा, विराधे करने बटकान न पढे

<sup>†</sup> अर्थन् इस सुरासे बाँद हुन बहुद निकल कामेने से इस प्रकारों अपने बलनेसे बाद कामेंगे।

<sup>🛊</sup> अर्थत् और तुम पाँचे धर्म एकमा होने से दल् दल्का कुछ नहीं मिगाइ स्टेंगा।

बदि हम इस्कर बहुँसे प्लोने हो कुर्रेचन अपने नुस्काने पात स्थापना क्ष्में नरना करेगा। पुरा समय 🕸 अस्मिक्ट है। इसके पास प्रक्रावक और समाना है। इसने पास कीने ही बड़ों रहीं है। आओ इसलेन वहीं सुबर करने सुख सूर्य-दित्री, एक्क्रीका यदा क्या रहे । सुरक्षित सुरेन कर बानेपर इम पहाँचे पान जिस्ती और बिल्लेको कालेका **इस बातनी क्रमर न हो कि प्रमाण कीने क्या गर्न है।** सीमसेपने कहे पाईकी कर कर की।

क्ष्म होत् कोदनेवाल विद्वास का निकारका थ। इसने पान्कोंके पान आकर कहा, 'ने सुस्कृति कामने कह



नियुज्ञ 📳 विद्वाराधि अञ्चाको आसम्बेद चास आस्ता 👰 जान पुरुषा विकास क्रीनिये। विद्वार्थ संबेतको जैन्यर पुर्छ महरूपक है कि 'अलो स्थाप मेंने चुनिक्कियो मोन्स-कार्यो कुछ बाह्य या और उन्होंने भीने अल्पनी कर पार्टिमारि प्रथम ती या बाद वा ("पुरोचन व्यक्त ही अन समानेवाल है। मैं आस्मरे चंच सेव्ह करे ?' चुनिहरो सक्षा 'मैदा । में तुमार पूरा निकास करता है। इसरे सेंसे हितकित्यम निक्त हैं, की ही कुन भी हो : हमें जनम है सन्दर्भ और जैसे वे इन्तरी था। कर्ता है, जैसे ही कुर भी करे । इस आवके काले दूस हमें क्या हो । इस करने करी

सह करिंगे ? का समस्या प्रदेश भी से कर्ज ही कारण : } कोर जीती कीतरे हैं. एक ही सरकता है' एक सूर्ण क्षेत्रेकाल कारीया पृथितिको आकारम वेका सामित्री क्यार्ग करनेके स्थान कामे कामान का गया। साले की इस्ते बोक्केकेक एक बड़ी पार्टी सूरंग करायी और मनीनके क्षाका 🛊 विकास सम्य दिवे । पूर्वका का महत्त्वेत दशकांकेवर है सर्वेद्ध स्थान का। यहीं यह अवदर देश न से, इसल्पि सुरंगकः गुँह विसम्बन्धः सन्द रका गया।

> पानक अपने साथ प्राप्त रक्तकर वही सावधानीसे इस महत्त्वरें का विकास में र विराम्य कियार केलनेके महत्त्व अपूरवंधे कुल करते । विश्वास न होनंबर की वे ऐसी ही बेहर कर्या क्रमे के जिस्की है। का चौक्नेवाले कारीगर्क अमिरिक प्राथकोची इस विश्वतिका यहा किसीओ नहीं था ।

> क्रेकरने देखा एक कर्क एनधन हो गया, पायाब इसमें को विकास विश्वास का को है। उसे की जातान हो। काको प्रमानक देशकार चुनिर्देशने प्राह्मनेके प्रदा, 'वापी पुरेका समझ का है कि मै हम हिल्ले गये । व्या मुस्तानेमें जा पना 🕯 ( आ:: अस पहुँके निवास परन्ता प्रामिने । सम्बागार और वृदेशको से परवक्त अलीक्षणको जल निवसमा

एक हिन क्रांकी क्रम देशेके रिन्ने प्राकृत-परिचन पराचा । ago-sù रिक्ट को अपनी और क्षेत्र एक प्रा-नीवार करे को, तथ संबोधका एक बीवकी की अपने पीच पुत्रीके ताब वर्षा केवन स्रोपनेके तिले आवी । वे एक प्राप्त पीकर क्या है, इस्तिओं बेहेच होकर रवकायकरमें ही सो रहे। सब लोग हो पूर्वे में, असी चल गुरे थी, वर्गवार अंगवार या । भीवतेन का साम्बर पहुँचे, नहाँ पुरोचन से पा था। क्षेपरोपने पहले इस संबद्धको बरवानेयर आन तन्त्राची और किर करो रस्त आन चमका है। बात-की-नाराये जिकरात सब्दे उठने कृती। क्षेत्रे भाई अवदी यातके साथ सुरंगने का को । का अनुबंध अस्ता कर्यी और अबट अस्ति कार्री और पैक्स पास और प्रशासके कटनटने तथा गिरनेसे बोद-बोद ब्यॉर हेने रुगी, तब पुरवसी अपका वहाँ होई अपने । का परकी भवनक दुरेशा देखकर एक कहने रहने कि 'नुराह्य तुर्वेदरावी प्रेरकारे पुरोबको व्य बास रक होगा। क्षे-क-हो, बढ़ वर्तीको करत्त है। क्रायहकी हस लार्जनसम्बद्धे विकास है ! हाय-हाय ! क्होंने सीवें और सहे बन्द्रकेची जानावर पर शता ! पुरेक्को थी अवस पार विशा ! यह निर्देशी भी हार्वने जानकर प्रकृतको हैर है। गया !' इस इन्द्र कारकालके कार्यक देते कारको राजका इस महत्त्वको केरे थो ।

प्रमान करा। कुन्योंको साम रिन्ने सुरंग्यो कहर एक करने विकारे । सम प्राप्ते के कि श्राप्ति नागी कार मारे, परणू पीद और इसके चारे सम सम्मार थे । कार कुन्योंक संस्था पुरासि कारण अहम्मार है जह सर । सम कीरपोन सम्माने पंजेपर और समुख-सहोताको चेत्रने बैठानार पुनिव्हित और अर्थुनको केनो हम्बोच्या स्वारत की कारो-नाग्नी के बारे । सस हायम ग्रीमरोन नहीं हेना परिन्ने कारामा पहुन्योंके कारा पहित्र गर्मे ।



#### पाण्यवीका गङ्गापार होना, कौरवाँके हारा उनकी अन्योत्रिक्तिया और सनमें योगसेनका विवास

वैशासकार्य करते है—स्वयंत्रस्य | उसी सक्य निवृत्या वेसा हुआ एक विश्वास्त्रास स्वृत्य स्वयंत्रकों कर्म अन्य । इसमें शासकोंको विश्वास सामान्य हुआ स्वेता कृत्य और सही, 'में विश्वासंख्या विश्वासम्बाध है। में अन्य सहीत्रकों क्षेत्र-क्षेत्र कृत्यका है। अन्य विश्वासोंके सम्बद्धान्त्रकार सहात्रोधर अन्यत्र विश्वास सहा सरों। या नैया विश्वास स्वयंत्री सामाने साथ स्वयंत्र की गर्ने का सम्बे व्यव् मित्रासीरे को सेन्से क्षाप स्वयंत्र की गर्ने का सम्बे क्या, 'निवृत्तीरे को सेन्से क्षाप है कि अन्यत्येत्र निविध स्वयंत्र सामान क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त है कि अन्यत्येत्र निविध स्वयंत्र प्रतिव्यास व्यवस्थान स्वयंत्रकार विश्वास स्वयंत्रकार क्षाप्त अर्थ क्षाप्त स्वयंत्रकार महास्वास संवयंत्रकार विश्वास स्वयंत्रकार क्षाप्त अर्थ क्षाप्त स्वयंत्रकार भी स्वयंत्रकार सेवार स्वयंत्रकों क्षाप्त क्षाप्त अर्थ क्षाप्त अर्थ क्षाप्त स्वयंत्रकार सेवार स्वयंत्रकार क्षाप्त स्वयंत्रकार स्वयंत्रकार सेवार स्वयंत्रकार स्वयंत्

इतर वारककारों पूरी शत बीत जानेका तारे पुरवाली पायकोंको देखनेके तिले आने। आग कुतले-कुतले का तोगोंको परमूम हुला कि का ४४ ताकका करा है और कारी पुरेशन भी इसीने जार पाय है। उन्होंने विश्वन किया कि 'सारी वृत्तीभावत ही वह सहस्त्र है। जाकर ही नह बात स्वराह्मकी जानकारोंने हुई है। बीक, निश्न और दूसरे बीता की कार्यका पश्च नहीं के रहे हैं। अस्त्रों, इन्होंन कुराव्यके सार सरोहा केन है कि 'तुकार क्योरन कुरा हो पत्ना।' अन



हुन्हारी करमूरको शालाक वरणात पर गरे। क्या स्था स्थान ज्ञान हरणात हेराने समें से अपने पर्वा पुर्वाचे साथ मही चीताओं मिली। इन स्टेन्ट्रेन कई पर्वा प्रमाण और कुन्ती सन्दा। पूरंग कोट्टेकाने अनुसार्ग कर साथ पराने करने राजाने हुन्न पाट थे; इस्तिन्ते विश्लोचने भी उसका प्या न बाद समार। पुरावादिकाने भाद सर्वाच कुतराहुको पास इतिस्थान केल दिया।

व्या अनुस स्थाना सुरक्त वृत्ताकृते अल-अवस्ते स्थून कृत उत्तर किया। वे विकास करने को कि 'इल-इल ! स्थान और उनकी कराके नरनेने को पायुक्त वृत्ति में स्थान कृत के का है!' उन्होंने औरवोको अद्धा है कि पुल्लेम प्रीय-से-बील करनाकारों काकर धानानों उत्तर अपने क्यान कियान करनाका कियाना करें। पुल्लेमको कर्म क्यान कृत करने करके किया कान, निक्त नहीं स्थान करा है। यह व्यक्ति-सहनो और कृतपहो कियान करके क्यानेको कैस्टाइकी है। पुल्लानियोंने कराकी कृतिकार कह केन अस्त क्यान किया। विद्वार स्थान सम्बन्ध होनेसर की कोनी-कान स्थान्त्वी प्रकार की।

इसर कन्यून कको उठानेके जब सहित्य दिवासी कोर अपने को 1 जा समय निवंध को समयों असी बंद हो गई

र्मी। सभी वसे और कारे थे। का बहुत क, हिलाओंका कर नहीं करता था। बहारे परोचन कर नवा था, बिट भी को दिनका है कहा था। प्रतिने प्रविदेशको अञ्चले चीपरेजने पिर राजको पूर्वमा साथ विका और वेबीचे राज क्रमने समे । चीनतेन इतने चीचम बेठाई क्रम दो से कि सहय क्षेत्र हम-स कर पहल व । इस अबर कावालेर मारा, क्यापर और रीतरें को केंद्रेन के के थे। उन्हें उन्हें क्या करिन हो पता था। में ऐसे बोर करने का सूचे, बहु भागीका कही कहा न का। हुए समय कुनोले आहम कुनाए हैकर जरको हका उत्पट की । इस चीकोको इर कालो क्य पर-पक्षेत्र गीने स्वापार करा, 'कुरानेन केही के वहीं मैक्सन माने। में कर कारेंद्र हैंकों का का है। निकार के महीते मोडी इस्तर कोई बढ़ा मानवान है। इसी से बहारे क्षोपारं सारा प्रतियोगी पहुर आहे सुरावी का की है है Efeffent aufn fereier were ubried untek माधारो भीजोन मानको पार पा पहुँचे । श्राह्म ज्यूनि मान विक, कार किया और वर बोगोर्क रिक्ष अपने इस्तोजे पानी करवार से आवे।

भार-पृथ्वेत नीचे च्यूंनवार भीकांचने देखा कि प्राप्त और साम मार्ट को गये हैं। में दुःश और क्षेत्रको बरवार उन्हें किया भागते ही बार-ही-का क्याने करो--- भी देखें हुआते वहाता महाबंधे काम और काम होती की में काम अपने अन् महाबंधि, विश्वे च्यूंनुमा सुकोचन सेवास भी की जून आती की, मुझी क्योंनान होते देश च्या है। वेशे नाम महाबेकों जीन और पुर्वाचकारी दुनी है। के

विकार्यार्थ-वेटे सुनी पुराबो पुराबप्, महस्य प्रवृत्ती क्षी और इस्ते-की कुछेबी करा है। विर भी सूची क्योंका सक्य सी है। मेरे रिके इससे सक्यर और प्रश्नानी बार क्या होगी कि निन्दें अपने धर्म-तरकोड प्रमुखका रीची रवेकोका कारण क्षेत्र करिये, वे मुविधिर क्षाकर राजाक पुजारों चीरे अर्थनम सेटे कुर है। प्राय-क्रम । अरब में अपनी आंगोधे वर्षांकातीय वेगके स्थान स्थानसूच्या नामा अर्थन और केलाओंने अधिनीकुमार्थिक समान का-कार्याने राज्ये को-को स्कूत और स्थानिको अध्यक्षित्रको जना पहले जैने जैद होते देश रहा है। दुरासा इनीयनी क्रमधेनीको पसी निकास दिया और क्रमनेका नका किया। किया कार्यका इसकेंग वर्ष भने । अस्य इस काले मेंचे है। वार्ड कारोंने, क्या कोरोंने, इसका क्या की । लक् । क्यों क्योंक, कुली हो से । मुक्तिहर चुड़े मेरे काले। रिन्ने अक्का नहीं हो। नहीं से में अपन स्क्रो दिनों और क्टिक्केंट कार वनशब्दे इसले कर देता। जरे याती हैं का कुरियोग कुम्पर अर्थेय औं करते से मैं क्या करते।" भीवारेन क्रोपारे कामारे के तो थे। और संसी पान भी सी और के साथ-से-साथ दीए को से। अपने बहुबोब्दे निर्देशक केंग्रे केवल्यर में फिर स्टेक्ट रही कि 'हाय-हास ! स्वर्डित केंग्रे है क्ला महत्त्वामा नगर है। भई से भई समयानीसे अन्य प्राप्ति था, निर भी थे थे पूर्व है। अन्या, में है क्योंक। हो, के करका का होता ? अभी को नहीं है। का कोने का ये होते।' 🗪 लेकबर कर्य ग्रीमधेन बागबार पाला हैने सके ।

### हिकिमासुरका यथ

वैशायकार्य करते हैं—जनसेवन ! विश्व करते चुनिहेर आहि से ये थे, असरे कोड़ी है दूरकर एक इस्त-वृक्त था। आपर विविधासुर केटा हुआ था। यह थाए हुए, पराहती एवं पांसपाही था। उसके इसेंस्का पेप एकार आहत, अहिं पीरचे और आकृति यही अवस्था थी। इस्ति-वृक्त और सिरके बार साइन्टरास से तथा कही-वही उसके कारण सामा मुख अस्ता पीचल था। उस समय को पूक तथी थी। प्रमुखकी गया चावर असरे पांचकार्यों और देशा और किए अपनी विश्व हिरिकारों कहा, 'बहिन ! अन्य कुछ दिलेंसे कहा मुझे असरा दिव प्रमुख-बांद विस्थान हुनेन देसता है। जीमपर बार-बार बारी आ का है। आह मैं सपनी कोई इंग्लें इसीरमें हुआ हुंगा और सामा-सामा माम् बुल पीडीमा। हुम इन मुख्योंको धारकार मेंने पास है। आहती । का का केने क्रों कारोने और ताली क्राय-क्रमावार नावेले ।

अपने वर्षायी आता वनकर वह राज्यों वह कार्य-अपने वर्षायी आता वनकर वह राज्यों वह कार्य-अपने वर्षायों कर पहुँची। उसने आवा हैया कि कुसी और वृत्वित्त आहे से सो सो है. सेवित प्रश्नात प्रीयति कार्यों है। वीवयंनके विकास प्रति और परंग पुन्त आवों विकास वर्षा प्रवार है, वह संबंधि हैं, सिक्के समान कंते हैं, व्यापी तक गाँन और व्यापन से सुक्तार नेता है। रोप-रोपने वर्षा विकास की है। अवस्था है से मेरे वर्ता होने योग्य हैं। में अपने वर्षायी कृत्वापूर्ण जात नहीं वर्त्तगी। वर्षाधि प्रमु-क्रियों वर्षायी कृत्वापूर्ण जात नहीं वर्त्तगी। वर्षाधि प्रमु-क्रियों वर्षायी वर्ति-केर है। वहि इन्हें व्यापकर कार्या जात से कोई स्थान अन्य होनों तुस स्व स्वार्ट है, परन्तु इसको व्यक्ति स्थानर से में



यह श्रोक्तार हिकिनाने नातुनी सीमा तन वारण विका और बॉर्र-बॉर जीवलेको कहा गुजी। हिला गुड़ी और क्योंने पूर्वत सुन्दी देविकार कुछ संबोधके प्राप मुख्याओं हुए पूछा, 'पूज्यक्रियेक्से । अस्य करेन, सक्षेत्रे आने हैं ? वे सोनेवाले पूजा बर्जन हैं ? वे बाहे-बहुई की बर्जन 🛊 ? में स्थेन इस चीर महाराजे बारबी तरह विश्वांक होकर स्हे रों है। इन्हें पता नहीं कि इसमें को-को प्रकृत नाने हैं और विक्रिय प्राथम के पाल की है। मैं अवेन्द्री बहुन है। आयरनेपोका मांश शारेकी इकाले ही जाने नुहे कई केन 🛊 । मैं आपके देवोपन सीन्त्रांको देवन्यर बोहित हो नकी है। में आपने सपकर्षक सार कहारे है कि आओ अतिरिक्त और मिलीको अस असम नहीं को क्या एकती। अस कार्रह है। को बर्जिन सम्बद्धे, करें। में अपनो केर करती है। कार भी मुक्ते के प्रतिको । मैं इस मामको प्रकृता आपको रहा करीनी और इस क्षेत्रों स्वापों करेंग्रेकी कुछने मिला करेंचे। में लेकस्तार अस्ताहरू निवर शबारी है। आय मेरे ताथ अस्तानीय अस्तावका अध्येश व्यक्तिके।" भीन्सोनने जाता, 'असी राक्षसी । येथी थाँ, बडो बर्जा और होते भर्व सुक्रमें से ये हैं। मैं इन्हें से क्षेत्रकर सक्तरका फोजन मक है और सेरे शाब पारर-प्रतिक करनेके तिये करन पारे, क्य करा केले हो सकता है।' हिरिस्ताने बता, 'आप केले प्रस्ता होते, मैं बढ़ी कर्मनी ! साथ इस लोगोब्डो साथ देखिये. में राज़सरो क्या हैगी।' शीमरोप बोसे, 'बाद क्या ! बाद क्षा गाँ। में अपने सुकते सोधे ह्यू ध्वकृषे और प्रांतो

हुमान प्रश्नरके कको क्या है ? अवस्था कोई भी स्ट्राव, काम अवस्था कर्का मेरे समने तहर की सकता। सुन्हरे ! हुए करने का को, जुड़े हुमानी कोई गांवा जो है !

अन्य राज्यसम्ब वृद्धिकरे सोचा कि येग्रे महिनको स्थ नकृत के से नवीर इस्तीओं का मुक्ती अवस्था क कार्यकोची और पास । यह पर्वतार स्थानको अस्ते हेपायर विकास केवरेनो बाह, विकार, विकार, वह गरमही रावार क्रोमिक क्षेत्रम इसर भा का है। जान मेरी बात व्यक्ति । में संस्थानुसार कर समाते हूं । युक्ती प्रकृतकार की है। में अन्यको और इंप राजको केवर आवाक्यानांको सह कर्मुंची हैं को कोन केरी, 'सुन्तरि है कु का बात है मेरे सुद्धे कोई बक्ता हरना बार बीना गाँ कर सकत । मैं हो काओ औ कर करोगा । देशा मेरी यह बोह और मेरी यह बोह । यह क्या, कोई के प्रकार इसके दिए प्रत्येगत गुरी पहल क्यान्यतः मु केरा विश्वन्यतः म धन् । जन स्वयन्त्री कारो के के को भी के उने कुरू हुआ दिवित्य को का पहेला। सहये वेका कि मेरी ब्लीन से पहुल्केका-क सुन्त कर बारत संस्थे जुल कर-पर और सम-मनावर भीवतेलाई परि क्यान प्राहमी है। यह क्षेत्रके निर्माणक यह और मही-बहे अस्ति प्रमुख्यः व्यक्ति स्टम्, 'अरे हिक्क्या । में प्रमुख जोत कारण प्राप्तक है और हु पूर्वने विकासक पूर्व है। विकास है। हमें इस्तरे कुरनों कर्मक उन्ता दिया । निपक्ते स्कृते हमें देखें दिल्ला को है, देश में भेरे सहित हुने अभी कर दशका है।" यह व्यक्तर देवित्य की पीतल हुआ अपनी स्ट्रीन और प्राथमीयो और प्रयास

क्षेत्रसंत्री को अवस्थान करो देखका होतो हुए कहा, "कहा वा | कहा वा | कूर्स | यू इन सोटे हुए प्रकृतिको वर्षो काम कहात है ? सेने की सामी का | हो दिने में अवेदान है कामी है, ह कीका हात न कहा।' भीकोको कामूर्यक है कमी है, ह कीका हात न कहा।' भीकोको कामूर्यक है समी है, ह कीका हात न कहा।' भीकोको कामूर्यक है समी हो स्थान हात कहा एक-कृत्येको काम्यान-सम्प्रको हुए स्थान स्था | इस्ती काम्यान कुन्दी और पान्यकोको नीत हुए स्थान स्था | इस्ती कर्मयको कुन्दी और पान्यकोको नीत हुए स्थान स्था | इस्ती कर्मयको कुन्दी और पान्यकोको नीत हुए स्थान स्था | इस्ती कर्मयको क्षान की-क्षेत्र कि स्थान पहा हुन्दी विकास कार्य है | इस्ती क्षान की-की कार्य हो ? हिस्सिनो कहा, 'का के कारक-स्थान कीर कहान है, सही नेट और भीर कई हिस्सिनक कारकका कीर कहान है। इससे हुन्दी हमसोगोको हार पुरुक्ते देखा और पोर्डल हो नवी। मैंने मलकी-कर उनकी



के विकासिक नहीं हुए। जुले हेर सबसे केल नेक नहीं कार बड़ी । भी उनके नीके नाम रही थी।

इसमें हैं जे नेवर का। यहाँ सरकर की दुन्हरे करन सुनक | जान आका और उसे हुन्हरे हुए करिस्टे हुए बहुत हु। है गये है। देखों, इस सर्थन से देनों गरकते इस एक-सुरतेको स्वय ( क्षेत्र के हैं।' विक्रियाओं यह बात शुक्ते हैं बारो पायक सम्बर क्यों हो जबे और देशक कि वे क्षेत्रों एक-सुलोको परस्य करेको अध्यानको छिद्रे हुए हैं। भीओरको कुछ करो देशकर अर्थनरे प्रकृत 'व्यक्ति, कोई वर नहीं। बकुस और हेन फीबी रहा बजे हैं। मैं जबी इस एक्सको मारे कारण है।' बीमरेन मेले, 'मैचा अर्जून र पूरवार सहे कुर्वा देखे, कम्पाओं यतः येरी महिके पीनर अस्वर स्व क्य को स्थान ।' अस चीनतेन्त्रे स्रोक्ते का-पुरस्त आंक्षेत्री पद् क्षण्याद को जा दिन्द और अन्तरिक्षणे से बार पूजाबा । चीनलेको ध्या, 'रे राहास ! सू कार्योक महेलसे क्षुठ-कृत कुल्प क्षुत-ब्राहर क्षेत्र कर वा । ऐसा कहना व्याची और हेल विकास कार्य । एक हेल कीवन के व्यर्थ है, तब पृत्यु भी अर्थ होते कहिते। इस प्रधान बहुकत बीकोरने को क्रमेन्सर हे जारा । अस्त्रे अल-पश्चेत्र व्या गर्ने । अर्जुनरे क्षेत्रकेला प्राच्या करके बाह्य, 'ब्ल्ड्रेडी | व्यक्ति प्रार्क्यकी नवर कुछ बहुत वूर वहीं है। जरिनो, व्हरिते करही निवास कार का । काई कुरोकरको कुमान करा म का काम । ( हातक साम मान रिच्या और अने व्यक्ति के व्यक्ति बंदा की, वर्ष्टु विकास तथा तथा तथे व्यक्ति व्यक्ते तथे। विकास सकती

## हिक्कियाके साथ भीमसेनका विवाह, घटोत्कवकी उत्पत्ति और पाष्ट्रबोका एकचका नगरीमें प्रवेश

देखाल चीवनेतने पहा, 'विकेले | में कामा है कि रहात केंद्रियों मानाके स्थाने व्याने संस्था कारण होते हैं। प्रस्तीको का. त भी अपने पर्तका कात का ।' कुनिरीयो कहा. 'राध-राथ । कोमाना होनार भी भीगर हमा नहीं कोहण काहिते। इंगरे प्रशेलाी स्कारे की कावन अनेती का है। हुन बर्मकी रहा करे। का हान्य पर्यको हुन्ने कर करन, ता का प्राप्तिकीया करा क्रिका सकती है। इसके कर विकास कुन्ही और मुनिव्हितको प्रकार करके इन्य सोकार ब्राम्बीको चोर्टी, 'कार्चे ! ज्ञान कार्चारे है कि विक्वोंको कार्यक्षा पीत्र सिल्मी कुछ होती है। मैं अल्पे कुछे करण बहुत देखी जावित हो हो है। अब पूर्व हुन निवन प्राहिते। मैंने अपने सने-सम्बन्धी, ब्रह्मणी और वर्णको

वैहान्यकरम् काले है—सन्त्रेकक । कक्ष्मांको कीहे उससे । वै आस और आपके कुछ क्षेत्रोको क्रीकृति आह क्ष्मिकेक 🛊 वर्षः आयस्त्रेण युक्ते स्थितात न करेंगे तो मैं अपने आग तान हैते। या बात में साम-तान सम्बद्धीय स्वती है। तान मुक्ता कृषा क्षीतियो । मैं पूर्व, मता वा सेवल मो कुछ है, आपनी है। मैं अपने कुनों लेवन नार्वनी और केंद्रे ही हिनोमें स्टेट कार्यनी । जान केंद्र विश्वास क्रीनियों । क्रा अक्रकेर कर करेरे, में वर कारेगी। जान नहीं करेंगे, चौचा हैनी । चडी-में-बड़ी बर्डिनाई और आयरिके समय मैं अपनेनेको कार्यनी। अपनेन को नार्य प्रीयन करोंने के मैं बीटकर क्रेकर सीज-से-बीज म्हेब्स हैंसे। यो जनसङ्ख्यों भी जन्मे बर्वनी रहा करता है, व्या बेह क्षानेका है।"

कृष्णिको कहा—विदिन्ते ! सुदाय सक्ता और है। विकासकी केंद्रर असमेद पुरुषो परिचेद करने भरण विकार है। | सामान कभी अस्पन्न मात करना । प्रतिविद सूर्वासके पूर्णाक तुम प्रवित्त होकन चीमसेनको सेमाने दः समाते हे । चीमसेन दिनका तुम्हारे साथ दोंगे, सर्वकाल होते ही दूस हमें



भी पास पहुंचा हेगा।" राज्यतीके स्थीकार का सैनेकर भीतरोत्तरे बहुत: 'मेरी एक प्रतिकृत है। अवस्था कु वहीं होगा, राजीसक में सुनारे जाना करण कर्मणा । का हो जानेका महीं (" दिक्रिमाने का की जीकार कर रिका ( क्राके कर का भीयरोजको साथ हेका आकारकामानी का गर्ना । अस विकिता असना सुन्त कर बारन करते हैंना आनुवनोते आयुवित हो पीठी-पीठी वाले करती हा पहरहेकी धोटियोवर, ब्यूक्सेचे, सामग्रेचे, मुख्यओंने, कारोने और हिक्क भूषियोपे मीमसेनके साथ विकार करने लगी। समाव आनेपर असके वर्षके एक युव हुआ। विकार केर, निशास मुक्त, मुक्तीहरे करण, भीवक प्रथा, सारत होठ, तीपते हाते, बड़ी-बड़ी बड़ी, बिहाल घटेर, अवस्थित वर्गक और मामाओका समाना नह समानत्ये ही बड़े-बड़े राहरतेले भी बद गया और समास हो जानर, सर्वाक्रिक् और धीर हो एका । जनमंद्राय - एक्टोरमाँ तूरंत नर्ज बारण कर रोजीं, कवा मैक कर देती और बच्चे जैसा कम कर लेकी है।

हिरिज्याके प्रात्काके सिरसर प्रका करें थे। आने अनुव प्रारता किये पाल-विशाके पाल आकार प्रकार दिखा। व्यान-विशाने उसके 'पर' अर्थात् सिरको 'उसका' कर्यः केसाहित देसकार उसका 'क्टोलका' क्या रक्ष दिखा। सहित्वान प्राच्यांकों अभि वहीं ही बहुत और केर एकता और में भी अस्ते अठि बहुत कोई रकते। द्वित्याने सोका कि रूप चीनसेकारी अठिताका करना पूर्व है रूपा। इसलिये बहु बहुते करते जाते। बहुतकाने सत्ता हुन्ती और प्राच्यांकों जनसाम संस्के बहुत, 'आयांकेन हुन्तरे पूजनीय हैं। आप दि-संकोण करताहरी कि मैं आयांके क्या है और तर्वर कीनसेकों करान है। इन प्रीचीके पूजीये हु सबसे बहु है।



इस्सीको स्थापनर इन्सी स्थापना स्थाप। ' कुप्तीन इस इस्ता स्थापन प्रदेशसम्भ सदा, 'में राज्य और इन्हींन्स्के स्थाद प्रशासनी सम्य विशंतराज्यात् हैं। क्या आपर्यगोनो सोट्र आपर्यगाता है से वेश स्थाप परें। में सा स्थाप। ' स्थापनाय इन्हों अस्पत्ती सीवार अस्पत्त स्थाप सरवेश तिथे प्रशासनाथ स्थाप विशास सा

वैद्रम्णकार्यं व्याने हिन्दान्तेश्वयः । आगे व्यानकारं व्यानकोर मिराया जटाई रक्षा भी और वृक्षोकी करण संवा मृत्यानं व्यान सिर्णाः । इस अवद्रार अवद्रियोगां केव वारणं करके के अपनी मृत्याकं प्राण विकान स्त्रो। व्यक्ति-वाही व्यानको केठान व्यान सिर्णा कार्या वहिन्दार्थं स्त्री कारणे। व्यानकार के कार्याकं स्वावकार्य स्त्री है, उसी स्त्रीय व्यानकार कीर्यक्रमार उसके प्रसामानि कहा, 'युविद्वित हो युवि वृत्याकेरोकी व्यानिकार अपने ही कार्युत हो नवी वी।'में व्यानका व्याक्ति क्योंकन कार्यिक अन्यान करके हुन्हें प्रवासनीके निर्मालिक कर दिया है। वै तुमकेनीका कि करमें किये हैं आया है। हुए इस विकासने परिस्थिती र:सी यह होता। यह सम हन्द्रारे सुरक्ते किये है है **या** है। इसमें सब्देश नहीं कि मेरे दिन्दे सुमन्त्रेण और वृत्तरहरूके सक्रोंड समान ही है, फिर की कुमारेगोंकी केंगा और क्षमान देशमार अधिक केंद्र होता है। पुरस्कि में 🕬 क्रिको का काता है। यहंचे यह है एक वह राजांव नगर है। बहाँ तुमलंग किनवार रहे और फिर केंद्रे आरंबर्ड बाद कोई (

पान्ययोको इत प्रकार भागासन वेकर और वर्षे साथ रेक्ट में प्रकार जनगारी और परं । वहीं जीनकर उन्होंने कुर्वासे ज्ञा, 'क्रम्यानि ! तुन्तरे कु मुनिक्ति की वर्णान

है। वे वर्षोड अनुसार सारी कृष्टी जीतकार संपन्न राजाओंकर ज्ञापन करेंगे। उत्पारं और मधीके सभी पुत्र पहारणी होंगे कोर क्षाने एकारे बाहे प्रशासके साथ बीधा-निर्वाह बहेंने। वे खेल राजपुर, अवशंत आदि वर्ष-वर्षे यह वरंगे, अपने समे-सम्बन्धी और विकोधी सुबते करेंचे और बरमाहरूत राज्यात विश्वसम्बद्ध अवस्थि करेंगे ( काराबीने इस प्रकार कहाना कुन्ये और पानकोची दृष्ट प्राप्तकोड वाले उक्का क्रिया और जाले-जाले करा, 'एक व्यक्तिका नेते का बोह्य। में कार आर्टना। देश और कालो अनुसार सोच-स्थानक कार कारा। तुन्हें वह प्रका विकेश । सामने प्राप जोड़कर अनकी आहार सर्वेचार को । दिला के को उसे उसे ।

# आर्स ब्राह्मणपरिवारपर कुन्तीकी दया

भाग क्षेत्रीके प्राप्त एकमात नगरीचे स्थान तत्त्व-तत्त्री दाय देखते हा जिलाने तमें। वे विद्यान्तिके अन्यव जीवन-विकास करते हैं। नगरीनारी उनके मुन्तेने जुन्म क्रेमर कार्य प्रदा हेन कार्य रहते। ये सार्यकार 🚟 द्वितभावति निक्षा स्थापन व्यवको सामने एक हेरे । व्यवको श्रामुप्ततिको आसा चीप्परेन प्रति और अपनेने सम् लोग । प्रत प्रकार शहर दिन गीत गरे।

पुरत हिन और तथ सोन से नियाओं देखी बने को थे. परण किसी बंधरकांच चीमलेन सराके पता है के की बे। क्यों कि उन्हानकों करने काल-करका होने सना । वे सोग वीच-बीचने विशवन कर्ता और केरे करे । बाह तक सुरकार सुनीका स्वैदर्भकृते इस्त काली स्रीत हो गवा । अनुरेते भीवरोज्यो कहा, 'बेहर ! प्रमानेन साहानाहे बार्व यहते हैं और ने हमारा स्कृत प्रस्तान करते हैं। में अन्य मह सोना करते हैं कि इस स्थानक कुछ-र-कुछ स्थात करना पादिने । कृत्याता है प्रमुख्या जीवन है । जिल्हा कोई अपना कामार करे, जाने कामार कामा माना वाहिने। समान है इस प्रमाणकार कोई कियति आ नहीं है। नहीं इस इसमी कुछ स्थानत कर सभे से व्यान है जर्म। भौगरेनने बाह, 'जी । तुन सहस्रके कुन्न और कुन्नके बद्धरणका पता समा स्थाने । मैं उनके हिन्ने कठिन-से-कठिन कार भी करोगा।' कुनी नार्यंसे सहारावे करने 📼 पत्ने क्या अपने वैचे ब्युकेट बाद होती नहीं हो। अन्तिन देला कि प्राह्मण अपनी पती और पुत्रके स्थव पेंड सरकारकर

र्वेजन्यकार्थ केले—पृथिदिर आहे कोले कर्ज अपने ( वैद्य है और वह को है—'विद्यार है मेरे इस प्रीधारको । क्योंक क्षु क्रक्रीय, बर्चा, क्षुत्री और प्रकार है। बीच क्षोद्धव है चर्च, अर्थ और प्रदेशको भीग बाला प्रदेश है। क्षाता विकास क्षेत्र के अगोर रिकी प्रकार क्षात है। समस्य d nig genera be ung ift firt mint nit सम्बद्धान भी है। इस आसीओ कुट्रेमा न से ओई स्थय केला है और यू में अलगे अर्थ और मुख्ये जान भाग है कारण है। हुए केरी फिलेनिक इस सर्वाच्य सहयारी हो। क्रिकारोंने तुन्हें मेरी सरबी और स्वान्त बना विमा है। मैंने क्षम प्रकृति कुरुते विकास किया है। तुथ कुरवेन, सीलकरी और क्कोबर्ट मां हो । इस क्ली-कामी और नेरी वैलेकिनी है। एक्सरो जनने जीवनको प्रताने मेंनो में तुन्हें जाने। पाल करें केंद्र समस्य (

परिवर्ध कार सुरकार क्राइंग्लीने कहा, 'स्कॉनर, ! आप सम्बद्ध क्युक्क स्तर क्रोक क्यें का से है? क्य-व-क्य दिन सभी करणोको परना है पहला है। स्तिर कृत अवस्थानमध्ये बळके रिक्ने चोचा को विस्ता वान । पत्री, कुर आकार कुछै कर अरमे ही तिले होते हैं। आप विशेषके कारो विका कंदिने । मैं क्यों अलो पास जारीने ) कारिके रिनो स्थानी महाकर मही सम्बद्धन वर्तामा है कि मह अपने प्रकारको विकास करके परिचा परवर्ष करे। मेरे इस कामते अप समी होने और पूछे को कालेकर्ने सुक तक इस लेक्ट्रों एक जिलेसा। मैं आयोह कर्य और लायादी बार बहुत है। जिस जोरफो निवास विस्ता जाता है, यह अब पूर हे चुक्क । आएके मेरे गर्चने एक पुत्र और एक पुत्री है। जार इर क्योंका बेस्स प्राप्त-चेकल कर सकते हैं, केल में जी कर सकती। यदि अपन नहीं खेने के मेरे डानेकर ! मेरे पीवनसर्वात ! में केसे चीनी और इस अधीवी कर दक्त होगी ? बाँद में अन्तव और विकास होकर चौरिया भी भी से इर क्योंको केसे एकेसे। यह कांग्री और सकेना परन इस श्याकीको प्रतिने स्त्रोते, तक में क्राम्पी एक मैजी पर पाठेगी। वैसे पाने गांगके कानेनर समाने हैं, की है दा पुरूष विकास सीपर । में भागा, बेला क्रीकर केले किया क्रवीची : कर प्रत्याची क्योदाने स्वान और क्वेच्डे स्वाननी कराना पहाले फैसे के कोतना । अवनेद विकास में र होनी और आयोद तथा मेरे किया हुए क्योंकर नाम हो कार्यक । अल्बोर कानेचे का कारोबर कियाब के सावना, कारीन्चे साव मुद्रों नेज हैमिले : विकास रिल्मे बढ़ गई मोध्यानकी जात है हिंद अपने परियो पाले के परलेकावारिकों के साथै। की पान कुछ क्षेत्र दिना है, कुछ और कुछ भी। मेरा मीनर सामके find Propert & while their up, wome, From silv क्षानारे औं बहुबार है जनने चरित्रक दिन और हिंत । मैं की बहु का पूर्व है, का आरके और इस बेसके दिने भी दिल्यानी है। इस हो को की, इस, जिस और वर साहित्य पंचा merfieit umit fieb fant um fie ausfeit fieb बारको रक्षा विरे, वन कोकर की कार्रको रक्षा को एक की और धर क्षेत्रेको कोचर यो अस्तरकारण प्रत्यक गरे : पह भी सामान है कि चीनते असना सम्बन्धार गा। एत्या पूर्व न पारे। पुरुषक जब निर्मिक्ट है और बीच्य क्रिकेटक इतिको पुर्व हो असी पार वेदिनो । अस पुर्व पारम हो सम है। अब्दे प्रदर्श योग दिने, कॉन्कों का दिने, का की है सके, मेरे वार्कने पाला हु:या ही कवा है। मेरे कर वार्कनर आप से जारा विकास की कर सकते हैं। क्योंकि कुछको रिक्टे arthus firster aread will to safe white their tils repre-अवर्त है। यह राज सेक-विकासक अन्य केंद्रे यह स्वतिके और पर महोदी रहते हैंने उत्तर कर क क बहुते और की का दक्षाने पन भेरिने।' बोने कि बानेन सामाने को अपनी कारीये सन्त किया । सन्ती अन्तिने असि गिस्ने लगे।

मी-कारवरी पु:कामी कार पुनवन कन्य चेरने, 'आव होनों दु:कार्म क्रेकर कमें अक्कांब क्रमान से को है ? देशियों, बार्वक अनुसार आव कोनों चुने एक-न-एक दिन कोंक हैंगे। इस्तरियों आज ही चुने क्रीक्यर अपनी रहा कमें जी कर केरों ? शोग सन्तान इस्तिरियों कहते हैं कि का हमें दु-करों कहाते : इस अवस्तरपर अस्तावेग बेस स्कूरवर्णन कमें जी

वार नेवे ? आरको प्रश्तिकताली है अनेवा देश वह वार-वार होट चई महैं बचेना | मी-वान और अलंबी कृतुरे आरको मंत्रकारणात है उचेन है जानना | कर मोदं नहीं चुने से मैं भी से नहीं यह स्तृत्ती ( आरकोनीक स्वान हम संख्यी रहा कर्नगी | इससे मेरा स्वेक-वर्गकेंक होने क्लेन | क्लाब्दी यह क्ला सुनका मी-वान केने देने हाने ( कल्का भी किना हेने न वह सबसे | सबसो रोडे देनाकर क्ला-का सब्दान-तिरह निद्यालनी सोश्त कार्मों क्लाने क्ला-का सब्दान-तिरह निद्यालनी सोश्त कार्मों क्लाने क्ला-का सब्दान-तिरह निद्यालनी सोश्त कार्मों क्लाने क्ला-कार क्लाको ! क्लानो | बद्दीन | यह केनी | अलेको क्लाकर हैको हुए क्ला- में इससे एक्टानको वार अल्का अल्का कार्मा अल्का अल्का के करें।

क्रमी क्य का क्रम हैल-दूर की वी। ये अन्तेको प्रस्त करनेका अवसर देखका पन बस्ते गर्थी और मुहेंकर पाने अनुवर्धा वात क्षेत्रके पूर् केली, 'त्रसाव्योचना । आक्री क्ष्मार क्षम कारण है ? को प्राप्ता परि हो स्थाप से Postalt that match's papert was, 'restort to शक्ता का सम्बन्धि सहस्य है। परंचु पेरा कृष्य प्रत्य को निक्ष सकता। इस नगरके नाम है एक नक नामक कार कार है। यह करवाद श्रवणके दिने एक नाही साह कार के केने अविदेश दिने असे हैं । को प्रमुख हैका करता है, को भी पर पत बाल है। प्रतेष गुरुवको यह बान करना वक्त है। परम् हत्त्वी बार्ड कहा मधेक कर आही है। से अपने प्रक्रोंकर पात करते हैं पद अपने सार्ग प्रक्रमानी का कार है। व्यक्ति एक व्यक्ति क्षेत्री हर केवलीयान जनक कारणे कार है। यह अन्यत्मी हो पना है और इस नियमित्री हरायों एक नहीं करता । जान हमारी करी सा नवी है । यूने जनके चोजनके हिन्दे जार और एक प्रमुख देख पहेल । मेरे चल प्रत्या कर वहीं कि विज्ञानिक प्राप्तिकर है है और अपने समे राज्यनिकारिको केरेकी साहित नहीं है। अस अपने बरमानेका कोई उक्का न देखकर में अपने सारे कुरुक्के क्रम क्रम क्रम हैं। क्रम क्रम स्थानों का क्रमेन हैं क्रमीने कहा, 'अञ्चलकेता | अस्य न हों और न क्रोक करें, कारी इटकांक्स उक्क में सम्बाध करी। जानके के एक ही का और हेंब है बाक है। अब देनोंको बिसीबर जान की मुझे रोक भी समातः मेरे चीच सकते हैं, उनमेरे एक पानी राज्याच्या चीवार हेवार पान वाचना ।"

क्ष्मानमं कहा 'हरे-हरे ! ये अपने जीवनके किये

अधिकिको प्राप्त गर्छ का सकता। अवस्य है अन्य नहीं। मुक्तिन और वर्गाला है, बार्ने से स्वकृष्णेंड सैंग्वे अपने पुरस्क र्था ज्ञान करना प्रकृति हैं। सुते साथ ज्ञाने कारकारकी बात सोवनी पाहिले । अस्तरका और सहाराजको विकासने जुड़े हो आसम्बर्ध है सेवस्तर कर पहल है। अध्यक्ति की प्रविद्या गृहै। अनगरने भी स्थापन करनेकी सनेका क्षणेको न्यू कर देव कान है। मैं अपने जान से मरव कार्या रही। कृतरा कोई सुते बार क्रमात है से इसका बार मुद्रों की लगेना : बादे कोई भी हो, को अपने का जाना, क्रांकों आध्य, विसने प्रक्रांको सामन की, जो साम हमान मही पुर्वकार है। अवस्थिताराओं की विकेश और सुर कर्न नहीं करना व्यक्ति : में जर्म अपनी पारिक तक पर पार्ट, ना नेत हैं। यांतु प्रक्रमानको का के में होन के जी स्थात ।' क्रुपोर्न कक्, 'क्रक्ट् र मेरा के का कु निवस है कि प्रकारको एक काली वाहिते। में भी अपने कुला शर्मित पत्री बाहरी है। अंदु तर पत्र है कि उहन मेरे कानारं, प्रशासिक और तेवाले पुरस्त अधिक की का स्थात । यह रक्षमध्ये केवल व्यूतावार की अवस्था सुक हेला, ऐसा नेप कु निवास है। असलक म कर्न किसी बलवान् और विकालकाम राक्षण कुलो क्रमी को गर्ने हैं। एक बात है, इसकी सूचना आप विस्तीको न है; क्लॉन्ड जोन यां किया पालनेके सेली की पुलेको तेन करेंने।"

कृतीको पान्ते अकृत-परिकारके कई उसका हाँ. कुन्दिने अञ्चलके प्रत्य आवार पीन्योजने ब्यूब कि 'तुन वह काल कर के।' श्रीमकेनने कही सरकालके स्थान कालकी साथ कीकर कर हो। जिस समय धीमरोनो का कम करनेकी अतिका की, जारी प्रथम चुनिर्देश आहे. निवार रोक्टर और । कृतिहित्ने जीवनेको सम्बन्धने ही तथ पुरू सन्दर्भ दिन्छ । क्योंने कुरान्त्रमें बैठकर अपने बनाने चून, 'जॉ । चीननेन क्या करना पानो है ? यह अगरी समय क्या है या आपनी आहा ?' कुनी चोररे, 'नेरी अहार।' मुनिविदरे सहा,



'भी । अवको प्रातिके रिक्ने अको पुत्रको प्रोकानी प्रातकार को सम्बद्धाः कान मिन्स है।' कुनोने कहा, 'बेस 1 जीनसेनसी बिका मां सारे। की विकासी करीने देश की किया है। कालोग को का प्रकारको बसमें आयमके रहते हैं। उससे काल क्षेत्रक पढ़ी करण है। जनुष्य-जोकाली सरस्ता इतीने है कि यह साथी कामारीके अवसारको न यूने । इसके इक्कारके भी बक्कार करका उपकार कर है। बीमसेनपर पेरा विकास है। पैक होते ही यह मेरी गोली गिरा का। अल्बे क्ररीको अक्टकन स्कूल सूर-पूर हो सभी। नेत विश्वास क्रिकुट कर्मिक है। इससे अनुस्थार से सेन्द्र ही, वर्ग भी हेना (' पुनिर्दित कोरो, पाता ) जारने को हुन सन्हा-खुम्बल जिल्ला है, यह राज जीवा है। जनरूप ही पीओर प्रकृतको कर इसेने। क्वेंकि आयोः इसने प्रकृतकी रक्षके हैंको निस्तुद्ध वर्ण-कार्य है। मिशु प्रायानको व्या अध्यक्ष को देश करिने कि कारनिवासिकोची का नात मानुस म केने पार्थ ।'

#### बकासरका वंश

क्रमेश भीवतेन राजसम्बद्ध कोचन लेकर क्यासुरके करने मने और पहाँ आका राम हे-सेकर कुमारने समे । यह सकत विकासकार, केम्बार् और वस्तकार्य व्या अस्त्री आँसे ताल, सूबी-ब्रेड साल, कार गुर्कीले, ब्रेड कारतक बाट का।

वैरान्यकार्थं कार्य हैं—'कार्यकव ! कुछ यह कीत | क्लाव्य उठा । व्य व्यक्ति देवी करवे वीत कैराता हुआ इस अबार चीनलेक्द्री और चैंक, काबे बसी काह इस्तेगा। जाने वहाँ आवार देखा हो चीनसेन इसके पानका जाव की तो है। यह क्रोको अल-क्कूल हे जॉसे काइकर बोता, 'जरे, का कृष्टि करेंग है, जो मेरे सामने हैं पेरा सह देशकर हर स्थात था। भौगोरेश्वी सामान सुमार मा | नियस्ता मा सा है ? बना मा मानुरी पाना पहला है ?'

चीमतेन हैं। यह । उत्तवी कुछ भी भारत व करते के केर रिषय और सार्व थे। यह दोनों इस उदाबार प्रयोगर नार करता हमा करें गर आयोधे रिमे रह पहा। हिन् बी भीनमेर काका विरस्तार करते हुए शत्ते ही हो। असे चीयोसकी चेठपर केनी प्रकोधे के ऐसे कलकर कवाने ह बिर भी में कारों ही गंगे : अब बबाउदर और भी कोर्कात हो एक वृद्ध प्रशासकार जनना प्राच्छा । चौनकोर की-और चा-पीकर, इस्य-पुत्र केवल हैको इस इटकर एको हो को । एक्सने असर को एक ध्यापना, जो अवस्थि कर्ने असरो प्रकार रिना। अब बेनों ओरसे बढ़ोकों चर होने रुखे। बच्छाहर समार्थ को । जनके प्रश्लेषक विकास-एक के सन्तर अवके बीक्यर प्राथितको काक्ष्म । वे उने क्ष्मीने कान्यर कार्यको रूने । यन यह बचा गया, तम योगलेन को समीनों पायकर कारोरी राजने लगे। कामडी गावन प्रकारक कुछ है और र्मनोद परित्र को गोक्कर कुमर केंद्र कुर्म । अले पैक्के कुन निर्म तथा तथा हुई-प्रमान दुइ क्रोने प्रमानकोड इंद्र गरी।

क्यास्त्वी विकासको अने परिवादि राज्य क अने और अधने फेबकोचे प्रत्य बंदार विद्याल अभी। वीत्रकेनरे क्षे इस्ते अकेन देशका इक्त वैकाश और उस्ते का पार्ट करावी कि अन तुमलेन वाची बनुवर्ताओं व सताव। बहि पुरुषे भी ऐसा किया हो धूनी अध्यर तुन्हें भी बस्त प्रदेश ( राक्ष्मोंने भीनसंस्था कर जीवार कर हो। चीनकेन

क्यास्त्रको साथ केवर नलके प्राप्त जाने और वर्ष को **ब्राह्मकर क्ष्मान को गर्न । तस्त्रेसे जनविक्रोको कार्य** रकार्येके क्यानका अनुस्तर नहीं हुआ। वस्त्रानुस्के परिवारकारे के इसर-कार पर करे। भीमारेकी अञ्चलके पर नामर वर्गरम पुनिर्देशो स्थ्रीकी प्रथ सामा यह है।

क्षार नगरकारी कार-कार कारत कार निकार से केली है कि यह प्राप्तके समार पहला कुनते तथाय होगार कर्मनक पदा है। उसे देखकर सम्बंध रोजरे बारे हो क्ये। कर-को-कामें का स्थापन करें और कैस एक । कार्य कारीया, विक्री बाहे-बाहे और विक्री भी थी, जो देखकेंद्र रियो आहे । काले पर शालेनिक पार्न देशकार आश्चर्य प्रकृत विकास और अनने-अनने प्रयूक्तिकारों करा। को नोने प्रश सम्बन्ध कि 200 किएको वार्च के। कि प्रशासके पात कारत पुरुषक भी । अञ्चलने यह महारा कियारे इस सका, 'काम केरी कारी औ : इस्तीओं में अवने परिकारके साथ है का का जो राज केली सारवंधि क्योच्य प्रसानने कार मेरे इकार काम का और उससारक्षेत्र पूर्व विकास विरम्पार बोरस कि मैं जा एक्साओं अब स्थेश हैया। कुछ की स्थाने किया का बार का करवा। से ही क्रांत्रक चेका लेका को है, अवस्तु ही यह स्ट्रीका काम है।' सभी कर्नींद्र सोन कर बहतारे करना होबार क्राहेताव काने तते। पास्त्र के या आक्रमेशक हैको हर की मुख्ये निकार क्रमें स्टो ।

## ग्रेपदीके स्वयंवरका समस्त्रार तथा बृष्ट्युप्त और ग्रेपदीकी जन्म-कवा

मानकोने क्या किया ? कृपक वर्णन क्रीनिकै।

र्वजन्तराची वस-वस्तेवव । ब्रह्मसम्बद्धे सर्वेक्ष पहाल प्राचन वेहास्त्रमा सच्चे हुए हती हाहालके कारे नियस करों हो। इस दिनेके कर अनेद को कर क्रमारी प्रदान नामा। महे सारा-सम्बद्धे को साथ विया नाम । प्राणी और पीची प्राणी भी जानी सेमा-सम्बद्धि राग रहे थे। प्रकारने कमा-प्रसद्धने केस. रोचे, नरे, पर और राजामोद्या कर्पन करते-कर्प स्थापी क्षा केंद्र में रूपा प्रेयरिके इस्तेवरको क्षा भी कही। प्रकारि विकारकंड हैपहेडी क्य-कम सकी पत्री. इसपर मा अधिकि प्राथम प्रशास पूर्वकरित स्वाप्यार पार्टन एगा—स्थाने होगानाची पान्यतीके हुए हुमाने नरानिक करक्या, तको वरी-वे-वर्गके दिने यो इसको के जी

जन्मेनको कुल-अन्तर । जनसङ्ख्यो जनमेरे कह । मिता । ये विकिश सुनेते जारण सुनेत का गये और हेन्स्कर्ण बाज हेन्से हिन्दे ब्यांतित प्रकारीकी चोवर्षे एक मालको सुरते अवसम्बद कृत्ये लगे । वे क्षेत्रसहर होका नहीं कोनके नहीं कि नुद्धे केंद्र संस्तरकों साहि। देतरे हो । जिल्ह Park of your property your, from from all चरित्रको नीका हिकानेचे में समर्थ न हुए।

> क्या इस प्यास्ट्रण इस्ते-दस्ते क्यापती नगरेके पार एक उपाय-कारोने को । जा कर्ताने ऐसा कोई नहीं था, को व्यक्तिक विभिन्न पान कर्ननार अस्त साम र हो । उसमें करकानोकों हो सहाम को ही शर्मा, तपसी और राज्यानांक्षेत्र से । उनके साथ से पता और राजान । उन्होंने कार्र होटे वर्ध उपकार पात कवन सेना-समुखाने हात जो जान किया और प्रार्थन की कि 'आप कोई ऐसा कर्न काराने, जिसमें में। वहाँ क्षेत्रको गरनेकारे प्रकार स्था हो:

मैं लायको एक अर्जुर (दल करोड़) गाय दूँवा। वहीं अहैं, अहमार्थ में हका होगी, उसे में पूर्ण कर्मणा।' उपलब्ध कहा, 'में ऐसा वहीं कर राकता।' हकाने फिर की एक मर्गतक उनकी होगा की। उपलब्धने कहा, 'राकर। मेरे कई माई क्षम एक हिन करमें जिसर हो थे। उन्होंने एक ऐसी समीनमा गिरे हुए करमको करा दिला, मिलाबी कृति-असुद्धिक सम्बद्धने कुछ जात वहीं का। मैंने उसका क्ष्म काम रेस दिल्या और रहेका कि ने किसी कराने माना करने, थे हुन्हार कहा करा हैंगे।' उन्होंने करमको जेना-इन्हाल



करके उन्हें प्रस्ता किया और प्रार्थना की कि 'वे होजसे हैं। और उनको पुढ़िये परनेकरण पुत्र कहता है। आप कैस कर पुत्रसे कराइये में आपको एक अर्जुद में हैंग।' कमने स्वीकार कर सिया।

चावकी सम्पतिने हुन्यका काकार्य समझ दुन्य और अभिकृष्यते एक दिन्य कुमार प्रमट हुन्य । उसमें इस्टिन्स रेग व्यवकारी आगोत सम्पत्त था । तिस्पर मुकुट और करीरका करवा था । उसके सबने बनुष-काम और स्वरूप से । वह बार-बार पर्यना कर रहा था । अभिकृष्णते निकालो ही यह

हैंका कुम्बर रक्षार समार ब्रेकर इक्षर-क्षार विवासे रूपा। ताची प्रकारकारी इर्जिट क्षेकर 'साकु-साव्' कर क्यूबेन करने सन्ते। इसी समय आकारकारणी कुर्-'इस पुत्रके कम्बरो हुक्का साथ क्षेक्ष विद्यालया। या कुमार ब्रेजको बारकेट रिको क्षी वैदा हुआ है।'

उसे बेटेसे कुमार्ग बहारसेका भी वश्य इसा। वह क्रव्यक्रमुद्धते, क्रम्यको क्रमान विकास नेवोबासी और स्थाप कर्नेक्ट्रे की । करके नीते-नीते देवपते बात, त्यान-तात हैंबे क्या, उपनी करती और देही भीई बड़ी मनोहर थीं। ऐस्त का पहल के करे कोई देशका मूल-वरीर बारण करके प्रबद्ध क्षाँ है। अरके क्षरीरते तुरंतके नितने नील कमानो समार सुन्त पथ निकलका कोसपलक केल की भी। जा क्रमा केरी पुन्ती पुन्नीमार्थे नहीं भी। अतके अन्य रेनेपर ची जनत्त्वचनीरे कश—'वह रश्लीता कृष्णा है। वेक्काओका अधेकन प्रदेश कानेके प्रेरंत श्रातिकों संप्राति मोहरूको प्रस्तात जन्म पुत्रत है। पुरस्के कारण प्रदेशको सहा वर हेना।' वह हुनका सभी प्रशासनाती तिहोके संगीत इर्जनां काने रुपे । इस दिव्य कुमारी और कुमारको हेक्कर हुन्युराज्यके राजी भारतके कहा आयों और प्रार्थना करने करी कि 'वे केने मेरे अतिरिक्त और किसीको अपनी र्वा र करें। कमी श्रमकी अस्तानके रिने कहा-'एक्स्प्यू ।'

व्यक्ति व देश कुमर और कुमारिका नामकर्ता वित्या । वे केसे, 'यह कुमार बाह यह (बीठ) और अस्तिम्यु है। कर, जल, जन अवना करक-कुमार जारिकी कालिसे हम्मा है। इसकी जाति भी जातिकी सुसिसे हुई है। इस्तिको इसका जान हैंगा 'इहसूज'। और यह कुमारी कुमा वर्णकी है, इस्तिमों इसका नाम 'कुमार' होगा।' यह समाप हो करेगा केमामार्थ बृहसूजको अपने यह है अपने और उसे अध-कुमार्थ विदेश दिशा है। यस मुद्धियन् होपानार्थ यह कालो में कि उसका-तुरका को पुत्र होना है, यह सो होमा है सोगा। इसकिने इसोने अपनी ब्रांतिक अनुसार अस प्रमुक्ते सो अध-तिका है, विस्तिक हमने कमार महन्त्र निवित्त सा।

## व्यासजीका आगमन और हैपदीके पूर्वजन्मकी कथा

र्वजन्मन को है-क्येक । ईक्के क्यूके क्षांत्र और कालेंद्र सर्ववाच्या सम्बद्धाः कृतकर कृत्युकोन्द्रा कर मेचेन हो पता। जानी मानुस्ता और होपटेके और और देशकार कुरतीने कहा कि 'बेटर । इनस्थेय कहर दिरोसे इस प्राथमके वाचे आरम्पूर्वक का रहे हैं। अब कांका का कुछ हमानेन देस कुछे; अल्डे न, कुक्त है प्रका है से प्रकार हेलमें करे ।' शुधिहरने कहा कि नहें तम सहकोधी क्रमारे हो से सरनेमें क्या जानी। है। प्रसरे फोस्ट्रीर से छै। प्रकारकी वैचारी 🚅 (

क्षी सन्त्र सीवान्यक्षेत्रका नास राज्यकोरे निस्त्रेके



लिये क्षात्रकार जनरीने आये । सम कर्मा चारतीने हजार कर्म क्रम नेद नई है भरे। जातमीरे एकामधे नामानेक किया प्रत्यात सीवात करके उनके वर्ष, उद्याचार, कारण कार, प्राप्ता, प्राप्तापक अधिक स्थानको were width alt artificum train firm, fen-किंका करणे कुरावें । इस्के कर अस्तुत्रकार करने हते, क्याने । क्योगी का है। एक को मानव अस्ति कुरचे और गुरुवारे कन्या के । यांतु अववधी, गुरुवारी और कामारिकी होनेवर की कृत्रमधीके हुरे क्वांकि कारकारत विकास को पार्टिक करने जीवार नहीं विकास प्रश्ने करने हेकर का रूपका करने राजी। उसकी का स्थानको प्रमुखान प्रेंबर सरक्षा हुए। उन्होंने अनके सामने अवद होवार पहार, ह क्रियोच का और है।' का क्रमाओ बारवार, शंकरके क्षांच्यों और कर जांगवेके निर्ण ब्यानेसे इंट्यू हुए पूजा कि व्य कर-कर करने समी—'मैं भवीनुवसूक पति काली है।' वंकरकाकार्दे कहा कि 'स्त्रे पनि करानंत्री पनि जार होंगे।' कन्य केले, 'में के आवकी कृतके एक ही पति बाइती है।" चलवार् संचाने बाह, 'रूने पति साह बारनेके रेक्ट बुक्ते प्रीय कर अवस्थि की है। येथे यह अन्यवा नहीं हो सम्बर्ध । कुले बन्दले हुई पाँच ही पति क्षत्र होंगे ( चन्याने । वर्त देववर्तरानी कन्या कुन्तारी व्यानिके प्रवाह uf to quelistik fieb fielb-fentrik strent unb अर्थकृत्यने क्या निर्मा है। तुने बावन प्राप्ताननारी खें। को कथा पुन्तिम शुक्री होओरे।' इस प्रवाद कहात क्ष्मानेको अनुसरित्रो स्थालनीने प्रस्थान क्रिक्ट ।

# पाण्डवोंकी पद्माल-बाधा और अर्जुनके हावों चित्ररच गन्वर्वकी पराजय

माने जानेपर पाण्यमेंने वही अस्ताताचे साथ शक्ती बाताची उनने करने पहाल रेकची मान थी। बहुने ही उन्होंने सकी असम्बद्धाः सहायाची अनुवति के ती और पासे काव अवहर्षे साम वर्षे हत्यम विश्व । वे होन कार्यो और कार्र सर्गे। एक दिर-तम बात कारोबे बाद ने बहुआरके सोपलवायक रॉब्वेंस म्हेंबे। जा उक्क अने अने-आने भहरकी अर्थुन कराता तिले कार रहे थे। उस डीकीर पता तत्त्व को कारत व्यासको प्रवर्गस्य अनुसर्गा

वैतानकार्यं कार्ये हैं—सम्पेक्त । सम्बाद् स्वानके । सोनीचे केरोकी बांब्य और महिकों कोर बहुत देश-सुमार मक सोध प्रकट किया और साथे अनुसारे देखातार क्ष्मकोरे केरव, 'अजी, विश्वे अन्तरे का स्वरिकायके क्या होती है, उसके कर जाती सब (पालीस दिनेष) के सर्वितिक सारा भागर पावर्ग, यह और राज्यकेंद्रे हिन्दे हैं। बिन्का सार क्ष्मा में पनुस्तिके हैंसे है है। को पनक सोनक इसके मेंद्र समयो इक असे हैं, उने इस और कश्च केंद्र कर रेवी हैं। इसीसे उसके समय जानों प्रवेश करण निर्वेद्ध है। सम्बद्धार ! दर ही रहे : वका दूपरहेगोंको (विकास) विक्रोंने साथ विकार कर यह था। उसने इन यह आई कि में नामरेटन अपूरारणें इस समय

समेरका देव प्रका और पूरे-पूरे सामसम्बन्धा पहनाती है। मेरे हो करने यह कर यो प्रसिद्ध है। मैं महन्ते करन माहे कहीं को पीजने विद्वार करता है। इस राजन कई राहक, संस्थान, देशका अवस्था पर्या कोई नहीं का सम्बद्धाः हम असे अब को हो 7'

अर्थुनने बक्ता, 'जारे जुर्जा । अन्त्रद्र, विकारणकी तर्जा और गुलकोके साम यह, दिन अवना सम्बद्धे समा विकास रिको सुरक्षित है ? यूक्ते-नेने, अधीर-नरीम, असीको सैन्ने पाल-विद्र शहर वर्षाच्य हुए जुला है, वहाँ अपनेत वेली इंद्रव्यक्त कोई नियम नहीं । वॉद नाम भी में कि तुन्हरी साह होना है से भी हम सरिए-सम्बद्ध है, किया सम्बद्ध भी मुचे मीत समाते हैं। मानवोर, स्ट्रेसक ही सुन्हरी पूजा करते हैं। क्षेत्रको गहा कामानवस्ती हो सबके रिम्बे वेरोध-केन है। हुद से इसमें ऐक-रोक करना बाहते हैं, यह जनकर करके feng fit mit dom gent megente ment ge गुल्यालका रार्च २ धर्म ? यह यह हे समात (' अर्थुनकी क्षत पुरुषा विकाशने बहुत प्रविद्या व्यक्ति कार होत्रने



प्रारम्भ वित्रे । अर्थुनरे अवन्ति प्रस्तान और सरक्या देख हान कुबना, किस्सो सारे कम वर्ज हो नवे।

अर्थनो बजा, 'जरे कवार्थ | असके कर्यार्थि कार्य काबीरो कार नहीं काला। से, ये सुक्ते कन्द-युद्ध नहीं कता, देव अन्य काम है। वह आनेका कृत्यीने महाकारो, पर्याको अधिकेक्को, आधिकारो मेरे पुर

महामारको विद्यार कर रहा है ? मैं अपने करके रियो प्रतिदह, | क्षेत्रकार्यको और उन्होंने मुझे विका है । हे, संभास (\* ऐसा क्ष्मार अर्जुनने व्यक्तिकात क्षेत्र । विकास एवं जान जानेके कारण रूपरण हो नक । यह अवस्थे देवले हाता कवार गया कि रावरे कुरवार कुके कर सुक्षाने समा। कर्जुनरे प्रमहत्तर अलो केन प्रमान केले और परीतकर अलो व्यक्तिके पात है अने। पन्तर्गनाते कुंपीनार्थ अपने परिकेशकी प्रारंक रिन्ने चुनिहितकी सरकारे जानी। आसी अस्तानको और १६६-अर्थनको स्थित होयत मुविहिश्ने आहत हे है कि 'अर्जुन । इस क्लोड़ीय, परक्रायहीन, क्लेपीहर मक्त्रवंद्धों क्षेत्र हो।' अर्जुको को क्षेत्रते हुए ब्ह्रा, 'गन्वर्ज । केंद्र न करे। करो, कुकरी कर उस गर्थ। कुररान कुरिक्केट कुने अन्यकान होते हैं। सम्बन्धि सहा, 'में हार प्रमा । प्रारमिको अस्तर अञ्चारकर्ण जन्म प्रोडो हेता है । यह सार को अधी हो कि पूर्व दिन अवका गरीत कि निरम । मैं कर्मनको नक्कोंको कथा है। या प्राप्त हेच पहला है। ये आप विकासने क्षांत्र हो गया। अपन पुत्रे काम्बर भी आपने अधिक क्रोड दिया, इसरियो आप पती याज्यागीर्थेट भारतन है। इस विकास का बाधुनी है। इसे कड़ी सेन्सरें, सोक्ने विकासमुख्ये और विकासपुरे मुक्ते विधा है। इस विधानत प्रधान पह है कि इसके करने अन्त्यों कोई में बसू, माई का रिवारी प्राप्त हो, रेजके हता प्रथह देश समारे हैं जो कः व्यक्तिका एक रेगले क्या थी, यह इसका अधिकारी है। पांतु में अपनी अधूरण पारत है कि हते आप किया जलके ही स्त्रीकार कर श्रीकिये। इसी विद्याने कारण हम गम्बर्ग क्ष्म्बोरे केंद्र करे करे हैं। ये आप एक प्रमुखोको गुन्दबरिक क्रिक केरहातमे और क्रमने हेरेयर जी क्रमी र क्रमनेवाले की-की बोदे के हैं। ने पहले हैं का पाने हैं, बाहते ही पाई क्कों करे जाते और पहले ही अपना रेग पहल होते हैं।" अर्थुको कहा, 'कार्याचन । की कुछुते तुन्तें क्या किया है, बहि कुछ प्रार्थिको मुझ्ले कुछ बेशा प्राप्तते हो तो मैं सेन्त्र पर्सद नहीं करका :" कर्का केला, "कर करकुर इसक्ट्रेड होते हैं, तम क्रमा पार्क केमधार बहुत ही है। ये अवस्था जेमबार पा बेह कुरता है। अस्य भी भूते आतेल असा दीनिये।' अर्जुनी age, 'बिया ! क्या कार ठीका है । इसारी मेडी सरका हो । तुन्हें विश्ववैका कर है से कामाओं । एक बार और कारकों कि हर्क इक्लोपोक अञ्चल दिस कारकरे किया ?" क्यानि बता, 'च सामानेन समित्रेची हैं और न प्रतिदित

रको क्रम हो करते हैं। अपनेत साथ हाहाम भी नहीं है।

इसीहे मेरे अक्टमन किया है। अस्पन्त पहानी मेरा समीको



मातृत है। जन्म आदिने मैंने सुना है और सब्बं भी पुन्तीशी ज्ञादिकाने समय स्था कुछ देखा है। मैं जानके जानार्थ,

निवा और पुरुवनोरे भी परिविद्य है। आपसोगीके विद्युव अन्य:कान्य, अस्त विकार और सेप्र इंबरन्यको पानकर की वैदे साहानाव किया । एक के ब्रिकॉके स्तमने अकरान नहीं तक कथा, कुले राज्ये कुमा कर अधिक कर करेने क्षेत्र भी अधिक आज है। योष्ट्र आप होता वर्ग सहकारित सहे कुरूरी है। उन्हरें प्रक्रावर्धिक कराय है कुछे हरता यह । बोर्ड मान्यवंति श्राप्तित रातिने येत स्वयन्त करण हो जो भारत है। यहण । अञ्चलकीय होनेवर की करि आये-आये ब्रह्म कर है है से लगे विकेश दुवेदिका दूसी है। क्योंक्या । बर्ज्यो प्राप्ति कि अधिकार क्यानाही अर्थिके हैं जे जनाव है किलेशिय पुरेशियको करीने नियुक्त को । अक्सानको आहेर और आहती पक्ष करनेके हैं तो कुर्वान् वृत्तीकारी अस्ति आवश्यकार है। क्योकार है किम प्राचनको प्रकारकाने केलल अपने परस्का अनक पुरवन-परिवर्णके क्षत्र पृथ्वीपर विकार नहीं जात की जा समारी । प्रतरिको असर भेड्र विक्रम भार त्येतिको कि साहाजको वेक क्यानेका हो विश्वासम्बद्धा पृथ्वीयास्य सम्बद्ध है है

## सूर्यपुत्री तपतीके साथ राजा संवरणका विवाह

वैशायकार्य कार्य हैं—कार्यका । गायकि पुस्तो 'तम्मीनवार' सम्बोधन सुम्बार अर्थुको कहा, 'गायक्रिक । हमलेग से कुमीके पुत्र हैं। जिन सुमने मार्गानवार कर्य कहा ? यह प्रमार्थ कीन थी, जिसके कारण हमें सम्बोधकार कहा है से ?'

श्ववरंशनं का — अर्जुन । आकरणं स्वरंश जोति । परवान् सूर्व, इस्की प्रका सर्वत्वः परिवास । । १०की पुरिका ताम का स्वरंति । वह भी इस्के-बैसी ही उनेतिकती थी। यह सावितीकी कोटी कहन थी तथा अपनी तयशको कारण तीनी सोवाने 'स्वरंति' सम्बंदी विक्तांत थी। वैती प्रमानती काम केमा, असूर, अपनंत वह सावि किसीकी भी नहीं थी। उन दिनी सावी स्वयान केमा कोई भी पूजा जी का, निस्तंत साथ भागवान् सूर्व अन्तंत विकाद करें। इसके दिनों ने सर्वत विमित्त का करते थे।

ज्याँ दिनों पूर्णकृषे क्या अवन्ते पूर्व संकाल कहे ही सरकार पूर्व भारतान् सूर्यक सर्व प्रकार ने व अधिहान सूर्योग्रमके समय अपने, पास, पूर्व, अध्यार, शुक्ता आदिने परिवारके साथ अपनी पूर्वा करते; निकर, अस्तार, स्थानको वर्षे समुद्र करते और आकारको क्षेत्र सर्वत-पासने अस्तो पूर्व करते। सुर्वत करने वीर-वार्ष क्षा कर अपने रागी कि ये नेट युवकों केना यति होंगे। बात की की देखें ही। कीर आकारण सकते यूजा और प्रकासकान कुर्व है, कैसे क्षेत्र क्षेत्रकोंने संस्थान थे।

का दिन्ही कर है। शंकान केंद्रेस पहला परिवरी तरहाओं और जेपालने दिल्यार होता हो थे। युवा-प्राप्तकी नामका क्षेत्रक अस्था केंद्र केंद्र मेर गया । हे पैतृत ही करने स्थे। जो समा रूपमें दुवि एक सुदा का**कार पर्छ**। क्यापने अधेतरे कामाने देशका है एकाक संस्थी और निकाने हमें । जो ऐसा कम पदा बाने सूर्यकी प्रधा 🕏 कुर्मिक जार आची हो । में खेकने जने कि देखा सुन्दर हार से की जीवनों साथे की देखा। एकाकी जीने और पर जाने का को; ने का कुछ का को, विल-क्रमान नहीं करें। के हेनेक रखेंने की रिक्षण किया कि क्याने विकोधीकः कर-क्षेत्रवं पक्का का पक् मूर्तिका कारिकार किया होता। उन्होंने बहा, 'सन्हीर है तह विकासी पूर्वी हो ? लुकारा क्यां जान है ? इस निर्वेद जंगलयें बिना जोतमते बिमा की हो ? तुम्हों प्रशिक्ती अनुका क्रिये आयुक्त की क्रमा वर्ड है। सिकेटीये ऐसी सुन्हरी और मोर्ट न होगी । हुन्हरे नियो मेरा मन अरकत बहुत और रमानीय है दा है।' समानी यह समार वा पुरु न

स्वाने को देवनेको कही केल की र अन्तर्भे अस्तरक हैनेकर विसाय करते करते हैं निश्चेष्ट है नहें।

क्षता संवरभवते मेहोस और वस्तरियर यहा देखकर स्वती किर कई अपी और विश्ववाधी क्योंसे बोली, 'तमर ! वृद्धिये, वृद्धिये । अल्प-वैद्धे क्रम्ब्यकाच्यो अन्तेत द्वीवार क्रम्बीनर नहीं लोटन पार्टिये ।' अपूरुपोर्ट्स केव्ये सुरकार संकरण का राये । उन्होंने कहा, 'सुन्दरि ! वेरे प्राप्त मुख्यो प्राप्त है। वे हमूरी किया भी नहीं सकता । हम स्कूबर रूप करें और सुद्ध सेवकारो यह कोहे । तुन पान्यविषयको हाए नुहे सीकार मर हो। युक्ते जीवनकान से हे सम्मीने बाह्न, "राजन् ! मेरे विशा भौतित है। मैं साथ अधने प्रत्यान्त्रों जातम नहीं है। यदि आप सम्बद्धा ही प्यानों केन करते हैं तो की विकास करते हैं।



इस परतल शरीरसे मैं जानके पास नहीं यह समझी। साम-वैसे कुर्तान, परावसाल और विक्रियक्त राजाको प्रतिकारो मीकार करनेमें मेरी ओरसे कोड़ों आपके जो है। अन्य नेप्रता, निरंदर और लगनाके द्वाद मेरे जिल्ला करने मुद्रं मांच लीविये । मैं भगवान् सूर्यंकी कन्या और विकास सारिजीको केटी बहिन 👫 का बहुबार रूपती उक्काल-मार्थको श्वरी गयी। छन्द संबरक बढी मुसिट हो अने ।

अती समय राजा संगरकाडे हैंशो-हैंगो उनके पन्ती, अनुवाबी और सैनिक जा खूँबे। उन्होंने एकको बनाव और अनेक उपापीने केलने स्थानको केल की 1 केवाने आनेकर उन्हेंने स्थापो लोटा दिया, बेमारा एक मार्वाची अपने पार एक रिज्या । अस्य ये परिवासको अस्य जोवाबार अन्तरकी ओन

कोती । बाहरूमें क्षेत्रसीकी शरह तकान अधार्यात हो गयी । १ पैह करते जनकार, शुर्वकी जाकार। करने करने । अहीरे का-क्र-का अपने पूर्वविष पहार्थि परिश्वका कान किया। दीक करावे कि वरित्र महर्षि अपने । उन्होंने राजा संकामके करात सार पार कावार को अधारत केल और क्ले सामने 🛊 चनवार पूर्वते वित्तनेके तिले चल पहे । सूर्वके सापने बाह्यत इन्होंने अपना परिचय दिया और उनके क्रमण-अब आविके अनगर प्रका पूर्व करनेकी बात सहनेपर वर्तने शरिक्षने प्रव्यामपूर्वक कहा, 'मगबन् । में क्रमा संवरणके विको मायको कत्या तस्तीको मानना करता है। अस्य उनके उनकार कहा, वाधिकता और नीतिप्रतासे परिनेता ही है। मेरे कियानो यह जानकी कलाके मेला परि है हैं क्यान्य क्वी सामास करती आर्थना जीकार कर सी और अधिक राज अधनी सम्बद्धित्वरी सम्बद्धि संवरणके कार केर दिया।

व्यक्तिके साथ सम्बोधित आते देखकर प्रवस्य अवसी



अस्त्रात्रका संकार न का सके। इस प्रकार मनवान् सुर्वेगी आराजन और अपने पूर्वेदित व्यक्तिको शतिको राज् रंगरको एवसेको अस् किया और विविद्योक पालियहरू-केकारले सन्दर्भ क्षेत्रक अल्बेड काथ असे वर्गतवर स्टाल्प्रवेस निकार करने राजे। इस प्रकार में बारद क्लांबा कड़ी खे। करकार पनीपर रहा । इससे इन्हों उनके राजमें वर्ष है बंद कर थै। जनकृष्टिके कराण प्रजन्मा नाह होने हागा। ओसल्ब न बहुनेके कारण अलब्दी पैक्सर सर्वक बंद हो क्यो । अस्य क्योद्ध क्षेत्रका एक-दूरतेयो सूटने-पेटने स्त्री । त्व वर्षस्य पुरिने अपनी तमस्वके प्रचानसे वहाँ वर्ष करवानी और करती-केवरणको अवश्वतीने से आने। इत् । आनके पूर्वपूरण कथा संगरनको पार्त भी। इन्हें पूर्ववात् पर्या काले साने । वैद्यावार प्राप्त हो नगी । सन्दान्तविने स्थाओं वर्षतक सुक्र-योग विकास

गर्मात्व वहरे है—अर्जुत १ को कृतिका उनके विकृति है।

बार्डके गर्थने राज्य कुरुका जन्म हता, जिनसे कुरुक्त करा। अस्ति सम्बन्धे की सामने 'तस्तीनकर'

#### ब्रह्मतेजकी पश्चिमा और विश्वामित्रका वसिष्टकी नेदिनीके साथ संघर्ष

*रैप्राचनार्थं कार्त है—कार्यका* ! गर्माटक विकरकोऽ मुक्ताने पहर्षि वरिक्रको पश्चिमा सुरुक्तर कर्मुनके पर्म्य उनके सम्बन्धे का क्षेत्रक हुन । इन्हेंने पुत्र, 'नवर्गकर ! प्रयोग पूर्वकोके क्रोडिय कार्मि वर्तना कीन से ? क्रान्स रुपका वर्षित सम्बद्धे ।'

नकारी कहा—व्यक्ति वरिता प्रदानो काला कु है। उनकी प्रतीका जान अस्त्राती है। उन्होंने अन्तर्थ उनकारे कारने विकास कि रिने भी अनेत बड़ार और बडेक्टर किन्छ प्राप्त कर भी थी। क्योंने अपनी इन्हिकेको करूने कर वैनक था, इस्तरेनचे ज्ञान जान जीता हुन्छ । क्रियानेसके बहुत अपराय करनेकर भी उन्होंने अपने पहले बहेब नहीं अने दिख और अंगे समा कर दिया। पहारि विकासिको उनके सी धुरोका भारत का दिया का और वरिक्रमें नक्तम रेलेकी पूर्व प्रक्ति हो, पित भी उन्होंने कोई उत्तीकत नहीं किया। वे कानुरीतो भी अपने पुत्रोच्यो सा सम्बर्ध थे, परंतु क्रम्बन्छ धनराजके निवर्गका सरकाय जी किया। स्वीको पुरेतिक बनाबर प्रकानकोडी कमाओंने प्रकार किया प्राप्त की के और अनेकों का किये थे। अध्यक्तिय की कोई बेले के प्रमान्ता और नेका प्राक्तनको एतेतित कन्यूने (

अर्थुको पुरा—'गरकांतक ! चरित्र और विद्यार्थक से अवकारतारी थे. उनके बैरका क्या कारण है?" प्रकारि कहा--'वह स्वारमान कहा प्राचीन और विवर्धकहा है। वै तुन्हें सुराता 🕻 । बारणकृत्य देशमें गावि राज्ये एक बहुत को एका है। वे एक्षि कृतिकारें। पूर थे। उन्होंने विकारितात क्य हुआ। एक बार विद्यापित सपने क्योंके साथ कार्यक देवाने विकास जीवने-केरणे व्यवकार मस्तिको अस्तवकार आवे : वमितुने विविद्यांक उनका सामग्र-प्राचार विका और अपनी फामधेनु नरिएनेके प्रश्नामां अनेको प्रणानके पद्मत, कोरब, रेव्हा बोज्य सार्विके हता को नृत किया : इस असीच्यारे विकारिकारों यह हाँ हुआ। अहेरे व्यक्ति व्यक्तिसे कहा कि 'ब्रह्मर् । जान सुतर्स एक अर्थुट नीई क मेरा राज्य ही है स्पेजिये, परंतु अवनी कावकेनु सन्दिये हुई।



अस्तिर, निगर और पद्मिक रिमे रक क्षेत्री है। आसी एकके बढ़ांकों भी का देने केना नहीं है।' विश्वासित केरि, भी वर्तन्य 🛊 और अन्य सम्बन्ध ( आर प्रत्य सहस्य 🕏 परस्य-साम्यानी रूपे रहते हैं, अरुर हरायी रहा कैसे करेंने ? आप एक अर्थाद मानके कार्यने भी हमें नहीं है सी है से में कार्यक्रम से जारेगा, कहानि व होईगा (' मसिहानी बोले, 'अस्य बरवान् अधिक है, जो पत्नी तुरंत भार अधारे हैं। जिन क्षेत्र-विकार क्या है?" जब विश्वापित कार्य्यक्त निरुपेको हैमलका से भागे रहते. अब क्षा इकारो हाँ वरितानीके पास अध्या पानी से गरी। वरिताने कहा, 'कान्याचे । में तुन्ताव प्रान्ता पून रहा है। विकारित सुन्हें कारपूर्वक प्रोत्मकर के का के हैं। मैं कारप्रतीक प्रकारत है। क्या करी, रक्करी है।' वर्षिती क्षेत्री, 'पानक् 🕻 में ज़ब जुड़े कालूक और इंग्रेने मेर से हैं, मैं अन्यक्ती तरह हवार। की है। कार नेते जोका क्यों कर रहे हैं ?' वरिक्र करका काल-कारण पुरुषर भी व कुछ हुए और न फीसे विकासित । ये कोले, 'इक्कियोचा यह है रेज और प्रायुक्तीयुर है क्षेत्रिके।' बरिक्क केले, 'मैंने बढ़ हुमार काम देखात, बिहा। येत ३५८न बार हुम्ब के पान है। लुकारी पीज हो हो कारते ।' वरिवरीने कहा, 'अवने मुझे क्रीक्ष को नहीं है ? चरि महि से मान्त्र्यंक पुत्रे कोई नहीं है का प्रमान है महिन्नुकी कोर्ड, 'सम्बन्ध । की तुने औं कोड़ा। की तुन्ने प्रति है हो पर पर, देखा, हैरे अवेच्छो ने होग मनगढ़ सहाँसे ब्रॉक्कर किये का को है।"

असिकुकी बात सुरुवार जॉन्सोका दिल करा का कवा। मीचे स्थार हो पर्यो । यह स्थापनंत्र अपने करने राजी। भावी चीरन पूर्व रेकका सैनिक कर करे। का सेसीन कारतो किर से बारेको बेहा की, तम बहु हुन्छे स्थान प्रमाने स्त्री। असे देन-रोधरे कने अक्सरेकी वर्ष होने रमी। उसके एक-एक अनुसे १३०, अवैन्द, इन्छ, कहा, पानर, चीन्यू, निराम, चीन, इस, निरामी, कर्तर, पान, क्तानी और मोच्छ प्रस्ता हे गर्न रूप हरियत प्रस्ता Presidents per-our different obs-tile, mar-our webs सा रहे। पासा रच गरी। अपूर्ण से व्याप्त कि परिवर्ध-पक्षका कोई भी हैरिया विद्यारिको हैरियापर प्राप्तानक प्रदार भड़ी करता का ( जब इसकी होना कान्यु कोना पार गर्ना और महे बोर्ड पान नहीं लिए, इस विकास tig tigder breut angefelten if til i and श्रमियमानो रूपे नहीं नहीं हो। ये जात हेन्द्रर बहरे क्षेत्र, 'ब्राविक्याच्यो निवार है। वाकान्ये स्थानेत्रका बाद है। उन्होंने प्रयोग साथ प्रोप्यान की विराह का ।



कार कार है। जब बारे से इन बेनॉका कारण क्येयत हैं। असन है।' यह विकासन उन्होंने असना विवास राज्य, वीकामकारी तथा जांतरिया सुवायोग होता दिये और क्यान करने राते । क्यानार्व निर्देश क्या करोड़ अनेने आहे रवेक्टीको अन्तर्भ केक्टा पर दिया और प्राथमनक प्रदार कियाँ।

### महर्षि वसिष्ठकी क्षमा-कल्पावपादकी कथा

गन्तर्गता निवस्य वार्त है—अर्जुर र प्राप्त कृत्यकृति मेरने करपानगर पानका क्या राजा है गया है। कुछ विस्तरी बात है, जा रिकास चेकनेनेड देखे बचने भवा। बीटनेनेड राज्य का एक ऐसे नार्गने अले राजा, विकले केवार एक है। मनुष्य पाने तमारा था । यह क्या-मीड और भूक-पाना से मा ही, वर्ती पार्नेक स्थानेने प्रतिकृति असे हैना पहे। सकिपुनि नरिक्के स्टै पुरोने सकते को बे र राजने कहा, 'क्रम कर बाउसे । मेरे देखें एक्स क्रेस से 1' करियों करा. 'महाराज । सन्तरनाचीत अनुसार वृत्तीनवा यह वर्तना है कि का प्रकारके रियो मार्ग क्षेत्र है।' का प्रकार केनोंने कार सदा-सुरी हो नवी । न स्वनि हटे और न स्वन्त । राजके हाकरे पायुक्त था, उन्होंने किया सीचे-विकारे स्वरंगर पाया दिया। परिवर्तने राज्या समाव समावा स्थे प्राप्त केल कि 'भरे नृतका ! व् दक्षाको तत् समर्थेश समूख समाप 🖫 इस्तीयों था, राज्या हो या।' क्या प्रक्रमानकारण है



नवा । साने बहा, 'तुपने मुझे अधीन्य कार विवा है, इस्तीरने 🖟 ले, मैं हुम्मी ही जपना एक्समन जनम करता है।' इसके

बाद करणावराद सकियुन्तिको करका तुरंत का गया । केवल सकियुन्तिको ही नहीं; व्यव्यक्षि निसने पुत्र थे, सर्वाको उसने या किया ।

प्रतिय और मनिर्द्राण दूसरे पुर्वेक पश्चाने साम्यान्त्र्य राज्यसम्मा से कारण या है, इसके मिला विकारित में राज्ये हेन्सा प्रत्या करके विकार गामके प्रकारको जाता है वी कि वह साम्यानकारों जोता कर जान, निराक्ते सारण यह ऐसे कीम कर्मी जाता कि इसमें विश्वाधिकारी के साम प्रमूप हुं। प्रमूपि पाना कि इसमें विश्वाधिकारी केला है। किए की प्रमूपि नाम सोकार्य बेगको की ही साम्या कर दिन्या, जीते प्रमूपि सामे प्रकारको। प्रमूपि जांबासको साम्या होनेस्ट मी उनसे किसी जावारका बाह्य नहीं क्षेत्रर।



एक कर प्यार्थ गरिए अपने श्रास्तानर स्वेट हो से । इसे समय देता जान यहा, अपने उनके पीछे-पीछे बरेई वसकू मैदोंका श्रास्त्रण करता हुन्य करता है। व्यक्तिने गुरू कि 'मेरे पीछे-पीछे सीन कर रहा है ?' श्रास्त्रण अपने कि 'में शासकी पुत-वयू प्रतिप्रणी श्राप्तवाची है।' व्यक्ति कोरो, 'केटी ! मेरे पुत्र सावित्तं समान करते तक्तु केट्रीका श्राम्यन सीन कर रहा है ?' अपूर्वप्रशीने कहा, 'साववाद पीछ ही?' यह सुनकर वरिक्त मुनिको कही प्रसन्तरा हुई। उन्होंने कोच्या, 'शामि करते है।' यह सावित्तं करते है।' यह स्वार्थ करते है। मेरी वेश-पर्याराका अकेट्र नहीं हुन्य ।' वहीं साव सोको हुए में स्वंट ही रहे से कि एक निर्माण करते साव सोको हुए में स्वंट ही रहे से कि एक निर्माण करते करते हैं। हो पाछे। कार्याराम्याह किन्नानिकोट हुएए मेरिल कर प्रथमित्र अस्तिह होका परिस्तु पुनिको जा



करेनेंड किये कीए। का सुरक्षाओं राज्यानों देशकार अनुस्थानो पर गांधी अपेर बाह्रने स्थारे, 'भगवन् ! देखिये, देशिको; यह प्राथमी भूकत कराड मेंको प्राथमत राक्षक छोडा आ 📆 है। अपन प्रस्तों नेरी रहत वर्शिक्ते ।' वरिस्तुने बद्धा, 'केरी, को ना । ना राज्य नहीं, नामानगर है*ं* भा सकता न्यूर्वि वरिक्रमे हुंबारसे हो उसे रोक लिया । इसके बाद उन्होंने नामको प्रापने संस्था प्रकार आधिवनित किया और कारकारको कर इस्ता। यह तुन्न क्राफी नुस्त हो एक। कार्य करीद कार आज का चारती पूरा । अस्वर तेन क्ष क्या, व्या होकने जाना और हमा बोहबर होट नहीं क्षीकृते वाही राज, 'बहराक्ष' में सुरातका कु परमानका सामग्रा परम्य है। असा कीरिये, में आवकी क्या केंद्रा करे ?' वरिक्राचेने सहा, 'यह एक साथ में फेबर, इनक-अक्टबरी है। उस पहले, तुप अपने एकावी देशकार करे । इर्ड. इतना कान रक्तक कि कार्य किसी प्रवासका अन्यान न हो।' समाने अतिहा बडी, 'महानामाना, व्यक्तिक । वे आवन्त्रे अवन्त्रत प्रत्येत करिया । क्षेत्री अञ्चलका विरक्षार को क्योग, उनका प्रेको करवार क्षत्रेचा ।' कृत्राहरील महर्षि करिया इसी पुरुवाती शासके सहक अबोक्कने उस्ते और अपने कृषकारको जो पुन्यान्

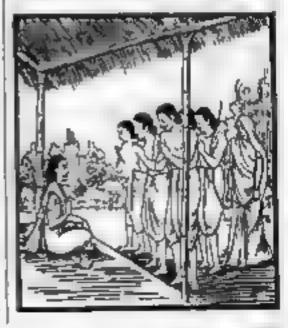
इत्यर परिवारी जातावार अध्यक्षणीके गर्पते परास्त्रका क्या हुन्छ । स्वयं भगताव्य स्टिक्ट्री करासको जाताव्यविद् संस्कार कराने । स्वयंत्रक करावार परिवा सुनियते ही अध्यक्ष वित्र स्वयंत्रके में और 'विवासी ! विद्यानी !' सहकार पृष्टांकी में । एक दिन अदुरुक्तांने करावार कि ने मुख्ये किया नहीं; मेरे फिल्को राइसमे का इसका का कुनकर उनके निक्तो बाह्य कुशा क्षेत्र कहीने जब राजवारीमा विजय प्राप्त कालेका विक्रम किया। महर्गि भविको प्राप्ति कवाएँ बहुबर को क्रमुक्ता और अवह को कि 'हुन्हर श्रामाण हरीने हैं। तुन क्षम करें, किरोको नगरिन क करें। हुने पर्ला है है कि इन चनाओपी करतें। बितनी आवश्यकता है।' वरिताके सवकाने-कुलानेसे क्षाकाने राज्यभोष्ये पराधित कारनेका निश्चम से क्षेत्र अल्पनी किसी है।

क्षत्र हैं, इसी असमूर्ये परासर्थीको जा भी संस्कृत हुन्य कि | विका, वरंतु राज्यकोचे विशासके दिनों की पत प्रारम्भ हिन्स । जा पहले का एक्सकेट पत्र हेने लगा, का पहली कुरका और व्यक्तिको को सन्दारका--'पराकर । अना ही प्रस्त वर्ग है। कुछो सभी पूर्वत इत्त्रकी गूर्ति है। मनुष्य से को ही बिसरीची कृत्युका निवित्त कर कारा है, हुए जा क्षंतर होत राज से हैं ज़र्किनेसी अवसी परासने भी कृता प्रकेश्वर भी और अपने चारतियों क्षेत्रकरूपे केंद्र दिया। आ शास जब भी संक्षात, एक और समर्तिको

# पाण्डवींका बौम्य मुनिको पुरोहित बनाना

हिल्लाकार्य कार्त हिन्सकोतात । कार्यकार्य कुरती पुरेपीतको महिना और प्रस्कृतक नहीं परिकार्ध क्यासीत्यतः सुरवार अर्थुन्ते कुल--'गर्कातसः । सुर के एक कुछ बानते हो। यह कालाओं कि इसकेनोके केना वेदार पुरोदेत वर्षण होना।" नज्यनि कहा, 'अर्जुन । इसी कर्ना अवोचक तीची हेकाने होते वर्त भीन उपका कर क्षे हैं। आपलेगोकी इका है में क्षे प्रोक्ति कर से हैं प्राचे का अर्थनी क्यावितको विक्तिकंड आवेतक दिया और प्रसारताने बढ़ा, 'नवार्यका । कुन में ओहे देन बाहते हो, में अभी तुम्हरे ही यज यो गनन आनेक हम क्षे से होंगे।' इस प्रकार अध्याने क्ष-दूसरेका सत्कार करके गवर्ष और पायम प्लाबती नागीरबोके प्राचीय हरके कपीत लानकी और कर प्ये।

प्राथमि इस्तोषक तीर्थये धीना मुन्कि जातानस शासर इस्से पुरेशित करोबडी प्रार्थन की। कैन्से करा, मूह, परस्ते पाणकोका कागत किया और मुरेदित करन स्रोका कर दिन्त । इससे चन्द्रध्येको इतने उसकत हु और उन्हें ऐसा चालून हुआ कि माने उसी कनाने और राज भित्र गया। उन्हें हुए बारुका पहल मिन्तान हो नगर कि उन्ह स्ववंदरने प्रेक्के हुने ही मिलेगी। सन्तान समाय हो गर्ने। बीचा मुन्तिके भी हेला दीकाने रूपा कि इन वर्मान्य बीरोकी प्रमाने विश्वासभीत्याः, स्थित और असमुद्धे प्रमानवार शीत है राजकी प्रति होती। यहनावाले अनगर पाकर्तन क्षेत्रकेंद्र अनंत्रके सेन्द्रे कहा की।



#### ब्रैपदी-स्वयंतर

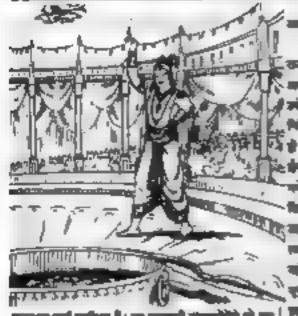
रीतान्त्रभावी वाले है—करवेवन ! जब जर-का कावान साराी नामके लाव राज्य हुवाने हेंद्र देव, कावी पूर्व होंच्ये और उसके कावंपर-प्योक्ताको देवनेचे तियो कावन हुए, जब उन्हें सार्गी एक क्या है श्रृष्ट-के व्याप्तांके कार्य हुए, प्राप्तांके प्राप्तांके पूर्व कि 'अपनोक व्याप्ति प्राप्तांक क्रित कार्यको का यो है ?' कुविद्धित्ये क्या क्षित्र, 'यूवनेक प्राप्तांके ! हुव सब माई एक काव हो संते हैं और हुव कार्य एक्ताका कार्यके का यो है।' प्राप्तांकी व्याप्त, अवस्थांक आज है पाझाल के्तां एका प्राप्ता केंग्नांकी व्याप्तांकी व्याप्तांकी कार यो है। आहो, हमलेन प्राप्ता-कार्य क्यो !' कुविद्धित्ये कार्य क्या क्यांकार कर हो, स्वाप्तांन एक स्था है कार्य एक्ट ! युक्त आने व्याप्तांनर क्यां व्याप्तां केंग्नांकी क्यांकार की श्राप्तां



श्रीभाषाक्षक प्रशेषार देवले हुए तथा स्थान-स्थापक जिल्ला कारो हुए तथ लोग आगे कहते तले । साविकोची प्राथकोची परिका परिक्ष, अधूर स्थापक, पीती दाली और स्थापक-प्रीतकारी पहुन अस्ताता हुई। जब पर्व्यकोचे देवल कि हुन्तुत्वर निवद आ गया है और अस्तात प्राप्तकारी स्था दीस हों है, वस अपूर्ण एक कुन्युत्वक कर देव दाले किया । वे अस्ता पर प्राप्त अध्यानोचे सम्बद निव्यापृत्तिको ज्ञापक प्रीप्त-निर्मात करने लगे । किसी भी नागरिकाको पह पार मानून नहीं हुई कि वे पाराष्ट्रपूत है।

राजा हरतके पनने इस कराकों कही स्थरपता की कि पेठे

को हैक्ट्रेक विवाह विक्री-र-विक्री प्रकार अर्थुओ साव हो। परेह इस्ट्रेनि अक्टब व्या कियार किसीयर जबाद नहीं क्षिता। अर्थुनको बहुबारमेके क्षिते उन्होंने एक ऐसा बहुस वनकार, में फिर्म कृतिने हुन्ह र एके। इसके अतिरिया उन्होंने उत्पादकों कुछ हैता कर देखा हैता, को साल बारक राज्य का। अधिके कार केवनेका सक्ता रक्ता नवान प्राप्तरे कोवाक बार के कि को बीर-सा प्रश्न बनुकार केरी बहुम्बर हर रहे हुए मानोंने कुरनेवाने धनके विक्रापेट लक्ष्मक सरेगा, जारे नेरी पुरीको जार करेगा । सर्वकरका रुवार करते हंकर कोन्से एक स्थान और सुपर (कारवर करवाया गया था। आवेर वारों और वये-वये प्यार, क्रमोटे, प्रकृषी और क्लक को हुए थे। उनके करों और क्रमान्त्री सरक रहे थी। जीतीकी केमाई और रंग-विरंगी विकासकोर कारण में बहुद क्षेत्रसम्बन्धी कर कही है। एका इन्होंडे इस्स अवलिका परवति और समस्त्रात क्रकेट-अन्तरणे आकर अपने रियो क्याने पूर् नियानीके क्षापा प्रक्रोण केले स्थेत स्थित अस्ति प्राचन की प्राच्यानोके प्राप्त राजा प्रत्यका केला केला क्रिके हुए नहीं आवे और व्यक्ति सम्बद्ध केंद्र पर्य । यह साम्बद्धा होत्याची दिन भी।। हुन-कुमारी कुम्बा कुमा बात और आयुक्तोंने <del>त्रक शक्ता क्रमणे कोनेकी कार्यमन हैंको स्थानीको</del> १५-वन्यको आसी । बहुबुक्तने अपनी सहित प्रीक्तीके पास क्षे हेकर कथीर, बहुर और दिव बानोसे बहुर, 'क्रवंताके ब्हेंज़र्ज अन्यपंत गरवरियो और एजबुद्धारों । आयर्नेम बार देवर हो। यह धरूर है, ये बार है और स्ट्र अन्यक्षेत्रीके आको स्थल है। आवलेग कुन्ने हुए क्यांके विकारिते वर्गीन्य-रो-जानिक प्रीय प्रान्तीके प्रांत स्वयूक्तीय कर है। के सरवार, क्रमान् को कुलैन पुत्रन पर पहन् कर् करेना, मेरी चारी महिन बैच्छे जानी अर्जुद्धियी करेगी। वेरी बार कार्य हाते नहीं हो समाते ।' व्या मोरामा करनेके अनवर ब्राप्ताने हेक्ट्रेकी और देखका बड़ा, 'बहैन है देशो, कुराइके करवार का कुर्केश, कुर्विश, पूर्वश, product, faitheilt, fleurit, greent, grett atift, वीरकर कर्मको साथ नेकर पुत्राने मेंनो वहाँ आहे हैं। बढ़े-बढ़े परायाः और बुरुपेन नापति, कियमें प्राकृति, पुरुष, बहुद्रकार आहे. प्रयास है, सर्वकार्य तुन्हें प्रत्येक रिको पहुँ असे है। अवस्थाय, घोज, परिवान, स्वरोध, जनसोन, एक मिराट, सुरुषं, बेबिसान, चैयक्क, बाह्रदेव, सगहर, कार, विक्तार, जनसम्ब और ब्यून-से द्वासित् सम-



न्यात्ता वह ज्योक्त है। इन स्थातनो श्रमानिके के इस प्राथन कह के उसके मोने हा कामान के का थे। जिल्ला श्रमान कह के उसके मोने हा कामान के का के उसके प्राथन कह का उसके हो। के मान, का के कि की प्राप्त कहा का का है। के मान के कि की प्राप्त का का के कि की का है। अहे का के प्राप्त का का की का का है। अहे का के की प्राप्त का का की का का की की की प्राप्त का की करे पूर्व

ह्युक्ता वर्णन सुनवर तुर्वोचन, वालब, काम आदि और राजपुन्यतंत्रि काने भार, विश्वा, युगः और सन्नेत ल बनुष्यके सुष्काचन सेपी स्थानेकी चेला की; सर्दर हा कृतका करा कि ये करका-वसक वस्तीया वा पश्चि कारण रूपका उद्धान हो दुर है नया; साथ : मुह्हद और हार थी गिर को, इन कुल गया। थे पानेची अल्हा क्रीइक्टर अपने-अपने स्थानपर गैंड । कुर्वेशन श्रामिको निराक और उद्यक्त देशकार करुरी-|व्यक्ति कर्म का । उसने बनुषके करा काकर इतन्य: सी और देखते-देखते होते यहा है। या क्रमानते हैं क्षा कि संपन्नी चोरते केल करी, 'वै सुरापुतको क्रीज़ी।' क्रमीन व्या सुरुक्त ईम्बोक्सी ईसीने साम हेवा और व्यामने हुए बहुक्को गीचे २क दिया। जन हा प्रकार बहुत-है सोन निराम हो गये, तम विराहरात बहुत की रिको शाचा : विद्यु करून जातिक समय ही का क्राजेंद्रे कर मेचे मा यह । मरास्थानी भी भई गाँ। हाँ और यह उसी प्रमुख जानरी ध्याधारीके दिन्ने प्रमान कर को एक प्रकार की बढ़ी गरी थाँ, मे विकास को हो हो । यह इस अधार को-को प्रमाणकारी क्रमा स्थापनेत व कर सके, सारा समाग सक्ता एका (मानकेकारी कारणीताला केंद्र क्षेत्र गयी 5 जारी प्राप्त अर्जुनकेंद्र विकारों प्रमु संस्कृत हुन्। विक अन्य में प्रत्नवार प्रश्नवरेण करें।

## अर्जुनका लड्यवेच और उनके तथा चीयसेनके हारा अन्य राजाओंकी पराजय

विशानकारों सहते हैं—कालेका है उस्तानकी कालां सहते को हो जो । पान सुन्धा एवं और अल्लेको कहा बहुतिको हिन्दे किया हैसाबार अक्टानकीन करिया पर गये। मोई सोको सन्दा कि कई का इन्तानित हैसे व कर है। कहा राजालेग इसके काल कालानित हैस न करने हने। मोई-ओई कहा साम कि 'का अलाहे और है, हसका मनेश्व पूर्ण होगा। देखों, का लिएके सामन काला है। गावपानके सामन कालान् हैं, कि तम कुछ कर सामा है। की इसमें हरिया न होती तो कह ऐसी हिन्दा है को मता ? सामने मोदिवानी अक्टानके दिन्दों करियोचों मोदि मता कर सामन है। परस्थानी पुदर्श करियोचों मोदिवानों कालां

क्रमां भी है कि यह उन्हर्कत वह है।' क्रमान क्रमां क्रमां क्रमें करें।

विक्र समय क्ष्मानोंने इसे जनावारी आंगों को है हो थी, जारे काम अर्थन अपनी यह पहिन गरेने जाते क्ष्मान जानकी को मान्य और महत्वती कर क्षमान जानकी को महत्वती की की मंद्र की की, कि भी क्षम साहे, जारे अनुकार को महत्ति क्षम परिता कर दिना और काम-परि-मानों होंगे कहा है। जाने स्वेतनेकी अर्थन अर्थन जीव-रीक कर महिन्दी कर्म में कि जाने में काम उठावार उनमेरी एक स्थानस करना और का मान्य क्षम होतार क्रमेन्टर दिर कहा र करों हरक मोत्यार होने साह, उन्हेंग्ये जिसस दिन पुग्लेकी कर्म होने सनी, उदाव अपने पृथ्हे दिसाने समि। अर्जुनको देशकार हुनको प्रसारायां सीमा न रही। अर्जुने सन्-हो-मर स्थित कर रिका कि अवसर कहोपर में अवनी प्रमूखें हैं-को क्रम इस मीरकी सहायदा करेना। जब कृष्टिहरने देशह कि अर्जुनने अपना काम कर रिका, तब में हार कहान और स्वांकको रेकार कामि अर्जुने निवासकारमार को अर्जुने कर नवी और सो कर्म मोर्गो क्रम दिया। प्रमुखेंने अर्जुनका काम्बर किया और में सैपरीका साथ गांवासिको काहर निवास।

जब राजाजीने देशा कि राजा हुन्द से अपनी कन्याना नियाह एक सहयाके बाद कान्य वाले हैं, इस वे सहर क्योंकित हुए और एक-पूसरेसे कहने लगे— देखों से लई. एका पूर्व इमानेपोको विरुक्तिको एक तुन्ता समझका अपनी होड़ करनाका किया। एक प्रकारको साम का केन नावस है। इनावेगोको सुरक्षका देशा जिल्लाह से नहीं करना वाहेवे म । यह इमें कुछ नहीं सम्बाहत, इस्तरिको झालती परका न करके इसको नार इस्तन्त ही जीवत है। इस राज्योंनी हराजनको क्षेत्रकेका कोई कारण नहीं है। क्या क्रलकेफोके इस मी ऐसा नहीं है, फिसे बहु अवनी कुरीके चौन्य सन्तहे ? सर्ववर श्रविकोके रिन्ते हैं, अपने स्थाननेको अनेका कोई अधिकार की है। वह का काल इसले मेको बरस की कार्ता से इसे अस्तरमें इस्त हिंगा जान । प्रश्लाककृत्यानी कारणाच्या इत्रालेगोचा अधिक किया है। योह को से प्राक्रमके नाते क्षेत्र देश ही स्थित है।' समाजाने देखा निकास कारके अपने-अपने एक यह तीने और हुनाओं पर क्रमनेके रिजे सैके। राजाओंको क्रोनिक देशकार हुन्हे प्र गरे। ये इन्द्रामोधी प्रस्ताये एके। कुमाओ क्याबीत और एक्टबोको अक्रमण करने देश चीनतेन और अर्थन उनके मोको आ गये, राजाओंने प्रश्नीक क्यार केल किया। प्राथमि एक-मानी मृतको और कामका क्रिको हर कक्ष, 'कारा नहीं, कर सुन्दारे प्रायुक्तिके साम रुक्ति । अर्जुक्ते मुक्तपुकर कहा-'जाहको । जापकोन एक और सह होगर रामका देखरे पहिले । इन होओंक प्रेन्टे से में ही बहुत है।' अर्थुन कर्म कामार जीमरोजों: प्राप्त करेंग्रेट प्राप्तन मनिकार पासरी रहते हो गये । यहोपात कार्य अहारे, संदेखे सामने आते देख है जनगर दूर यहे । साथी अधिका चीर पुरस्ती प्रक्रमोच्छे करन अर्ध्य नहीं है, ऐसा सहकर उत्तर अञ्चलक करने अले । वर्ष्य और कर्मका स्थल हरता । अर्थुपरे हेरे याच सीय-सीयकर करे कि कले बुद्धपृथिते ही अर्थन-पर से नवा । सेनी बड़ी बीसको साथ स्थ-ट्रानेको



विकास क्षेत्र क्षेत्र

विका समय कार्य और अर्थुन एक-कृतरेते थिए हुए थे, कर्क समय कृति सम्पन्न कार्य और पीतारेत एक-कृतरेको समयको हुए स्थानार कृतिकोशी तक दुत कर से थे। अर्थ क्षितको, पीके क्ष्रोककार एक-कृतरेको पितारेका प्रवक्त कर्मा और साम-नाइके कर्म कर्मक पृत्येकी मोट करते। पतारोक समा-नाइके सम्प क्षेत्रोके क्षरीर सामान्य से थे। के स्थानक सम्पन्नकार भीतारेत्रों क्ष्मकार्थ कार्याय विद्या दिया। सभी अस्तान कृतने तरो। पीमानेकात क्ष्म कार्य और भी अस्तानंत्रकार क्षा कि अर्मूने अपने कृतको वार्यायर निरामान भी अरो कार्य नहीं।

इस प्रकार जब धीमरोजने प्रत्यको ध्यापु दिया और कर्ज

भी बुद्धारे हर एक उस सभी लोग सर्वक हो गये. । हर, हैक्द्रीको साथ लेकर, अपने निवासस्थन कुन्हास्थे प्रवंदानतिने पुत्र के कर दिन गया। यक्तर सेवानने पहले हैं पहला रिका का कि ने हे सकता है, सर्वाने अहोंने इस एकओको बढ़े नामके साथ संबक्तक कि इस मानिक्ष करीर अनुसार क्रेजरीयों प्राप्त विकार, प्रार्थकों प्रस्ते पुत्र करन जीता नहीं है। चनवार श्रीकृतनके क्रमाने-क्षांकी और बीचडेमोड परक्रमते विशेष्ट क्षेत्रर तम सीन **५३ में। असे अवने-अवने निवासकानक सीट गये। वीरे-**चीर चीड बेक्टे सभी। भीन्सोम और अर्थुन प्रवास्थित किरे

वाची खेर को:

पिता रेकार स्वेटनेका संगव की सूक्त था। गाल कुन्ही अपने पूर्वोचेः सम्बन्धः न स्वैद्येने स्वय-शक्तावी आहंकाई बर को भी। नामके सेक्स ब्राह्मक के संस्था है है। है एक कर खेकरी कि कही हवीकर जाहे करवाके सुर्वेपे करका कुछ अस्ति को नहीं कर दिया, वहीं रक्तांभी से बराबेद नहीं हो गयी। जारी सम्बद सीमने पहर सीमनेन और अर्थर प्रेर्णाम्ये स्वय हिन्दे ब्राम्यके बरका अन्ते ।

## कुन्तीकी आज्ञापर ग्रैपरीके विषयमें पाणवीका विचार तवा श्रीकृष्ण और बलरामसे मेंट

र्वप्रकारको साथै हिन्स्पर्वेशक । अस्तिन और अर्थने प्रेकीय एक प्रमुख्य करों उनेह करते अर्थन भारती क्या कि 'वर्ड, अस्य क्रम्बोर का विका सामे हैं है भारत क्षूनी ३६ समय करके औरत थी। उन्होंने अरले पुखे और विकासी हेने किए ही यह दिल कि 'बेट, सोबो का विकास अल्पा अर्थन करो । सार विकास का क्षानीने देशा कि यह से सामान्य विका नहीं, राजकूमधी photo to the six set any support goals to suph क्ष्मी—'हम्प-सम्ब । की क्या किया ?' से हुक हैक्क्रिक प्राच परावासर पुनियोश्यो धार के नभी और बोली — 'बेसा । या भीनतेन और उन्हेंन इस समझ्यारी क्रेन्स्रेप्से नेपार बीतर साथे, तब 🎒 क्षेत्रा देशे ही बाद क्षेत्रा के इस अब क्रोग निरम्पर क्रमक क्रमोन करे। की अस्तरक कर्प मोर्ट कर हुए। नहीं कही है। जब दून कोई ऐक जनन बाराओं, किससे क्रेंबर्डकों के अवर्ग न हो और नेरी बात हरी भी न हो।' पुषिपुरने हमाना निकार करके अस मुन्तीको ऐसा ही चरनेवर उपक्रमन क्रिया और अर्थकारे हाराजर कहा, 'मार्च ! तुमने पन्नीहके अनुसार है पहिल्हे प्राप्त विका है। जब विकिन्तर्गक जीव क्रमानित करके अल्क वारियान करे।' अर्जुन्ने कहा, 'व्यक्ति । ततः पूर्वे अवस्थित जागी पर वस्तुको । सर्वकोरे क्रापी देख अवस्था नहीं किया है। पहले अपर, तम पीन्सोन, तमन्तर में किया करे। कि मेरे का न्यून और सहोत्का निवाह है। इस्तिने इस राज्यामधीया विवाह से असमे ही साथ होना पार्टिये। सन्य हो यह भी निर्मेशन है कि जान करनी पर्दिशे बर्ग, कह और हैल्के देखे जैसा करन जीवा सकते. बैसी अपन है। प्रस्तेन अपने अधानते हैं। उनी प्रस्ता



कर्मुका के और प्रकार का बसर सुरक्त क्रिकेंको देखने रागे । जब प्रत्यन क्षेत्रही की कही स्वेगीकी ओर देख को थे। हैकाँके सीवर्ग, पादर्ग और सीवीरणने कुछ क्रेकर चीची चाई एक-क्सरेकी और हेक्स लगें । उनके मनवें क्रेकी कर नहीं। बुक्रिक्टिये अपने प्रशृत्वेकी मुक्तकृतिके इनके नमका पान कारकर और महर्मि मारावे वक्नीका कारण करते. विकारपूर्वक कहा कि 'हैनकी हम सब प्रकृतिकी पत्नी होगी :" इससे सभी प्रकृतीको बढ़ी उसलार र्जा । वे अपने कामे इसी कारकर विकार करने हमें ।

प्रकार क्षेत्रकारे कर्ववस्ये है पायक्षेत्ररे प्रकार सिका बा । तम में बढ़े गई जनसम्बद्धि साथ पायारोंके निकस-क्यानकर आने। उन्होंने कहाँ परिनों महत्त्वोंको हेककर पहले



सर्वतम पुनिनीत्रके करणीया कर्य किया और अपने-अपने मान कारताने । याच्यांने बढ़े प्रेमते क्रमत कारता-सामार मिला । केनी प्रकृति अपनी सुध्य सुन्तिके बरावोर्वे अन्तर किया । युविद्विपने भगमान् स्वीकृत्रको सुवात-अस्त्री सन्पर पहल कि 'बरावर ! इसलेग हो भई क्रिक्टर का के हैं । सामी हुने कैसे पहलर प्रेरण ?' करवान् श्रीकृष्णने हुस्से हर पहल 'महराम । का लेप हिन्दे हाँ अपने नहीं है। तेरे ? कार भीगानेन और अर्थनो निस पराहाच्या धरियन दिया है, यह पान्यानेक अतिरिक्त और विकास सम्बद्ध है ? यह कई सीनान और आरम्पी पता है कि कुरिय और साथ करते

होकार्ध अधिकार पूर्व २ 💥 । आयाचेन प्राप्ताचनाओ आरों का निर्मा । अस्ते संस्था पूर्व हो, साववह विद्वार सम्बंध हो। तम इसलेग वर्ष शरीबच वेताक रहेने हो क्षेत्रीको पात पात पात्रेच । प्रशीरके प्रवक्षेत्रीको अपने क्षेपर व्यत्यो अनुसरि क्षेत्रियं (' मुक्तिकारी अनुसरियं पन्यान् वीकृष्य और करवेद क्यी समय होट गर्व ।

किया प्रत्या चीवरोत और अयोग प्रीयर्टको एउन हेन्द्रर क्रमाने मा ना से ने, जा समय क्रमाना शहरत क्षिणकर करने की-की जाने रूपा था। जाने प्रथ और अपने कर्मकरिनीको निक्ता कर दिया और कर्म समय होतार पाणानीके पात हो तैत हुए । यह पाणानीके उस पान नदी राज्यानीले देश का या। यादे भाइतीने विद्धा संस्कृत अपने बढ़े बढ़ों कृषिक्षितके सामने एक हैं। कुनतिने हैंपारिके बक, 'बरवारित । यहरे हम इस विकासी केलाओक र्जक निकारते, उद्यक्तिको किया हो, आरिलोको क्रिये । क्रके हर अगन्य अल्य पीयर्गनको हे हो । अन्तेने पर क्रिके स्टब्से कार्यम का है।' कार्या क्रेक्टरे अंपनी सामग्री आजारें विनवे ज्ञानको संबद्ध किने विना जनस्वारे स्वास्त कान किया। योजनके प्रक्रात् सकते हिन्ने सुप्तासन विकास। सकते अपने-अपने कुमार्क निकाये और भारतीयर ही यह रहे । क्षाओंने अक्षा विराहत स्टील दिलमें विराह । विराही और बांस करने और पैरोबी और एक्कूबारी बैच्छे सेवीं। रहेते करण है जोग आकारों एक अभी, अल्बार, प्रश अस्तिको देखे विविध-विविध करे कर यो के, साने कोई duffeet) it i

## भृष्ट्यप्त और हुपदकी बातचीत, पाण्डवीकी परीक्षा और परिचय

र्वतायकार्थं वर्त है—कालेका ! पूर्वा प्राच्यांके हिन्दा निकट बैठा हुस्स था कि यह उनकी करने से सुर है कु या. जेपरीको देश भी रहा या । अल्हे धर्मकरी भी अल्हे क्षान है है। महीकी इस कार देख-सुम्बार का करने निक हरके परा ग्रीम । हम इस सम्ब कुछ निर्मित हो हो थे । क्योंने सबने पुत्र बहुत्सुकारे देशके ही पूजा, 'बेला, बीको कहाँ गयी ? जो से सम्बद्धां कीन है ? मेरी कुमा प्रियति भेतु श्रुप्तिम अध्यत उच्छानके प्राचने हो पहे है न 7 कहीं वितर्ते मैरन पा सुक्तारे से नहीं जिस्त करें ? क्या है अनुह हेत, की देतें सेक्क्को हो। सक अवेको अस हाँ बोर्स 7'

कृषा पर्यक्रमाने स्थाननेत किया का, यह बड़ा ही पुर्वस्ता और भीर है—इसमें संबंध नहीं। निया कृतम बढ़ सहित केंग्रेको साथ रेपार स्थानों और स्थानोंके प्रीवरोंके निकार, का स्था अने मुस्ता किसे प्रकासे संबोधका नाम नहीं था। जानी विकार देशका राजानेन क्रोको मान-पुर करे और कावर अस्त्राचन पर बैठे। अस्त्रे प्राची qual but dated en franc que cons fire aft. जाने प्रकारोका संसर प्रतान कर दिया। बोर्ड एका उनका कारण क्षेत्र जो का स्था। वे हेने वेरी क्षित्रके सेवर नकारे बाहर कुम्बारके कर करे । वहाँ कुछ अधिके प्राप्तन देखीयमें की बैटी थी। अध्यक्ष ही का उनकी पाता होगी। पुरपुरने काः—'निवासी । निवस कृष्णकृष्णकीयारी पान्य । जानेक पाल और भी औन परन सुपार नवपुरस्य मेरे हुए से ।

उन्होंने जरनी माजके परस्तेने जरान करके हैं न्योंको स्थान परनेकी जाल है और अधनी प्रायके पात और एकार होंच पाई विद्या परिने करे पने । विद्या लेकन स्वेटनेस्ट हैं कीने माजके अदानुद्धार केवा, उत्तर अधीन विद्या कोने देखेंको और होगीओ परेखा और हाल स्थान । हैं की अबके पैरेको और होगी। एसी स्थान के स्थेप अधनाने के व्यावके का हो है, या प्रायको, नैपनो का हुने-नैसी नहीं भी । का होने पुजल हालक रहती के और मैंनी नहीं कृतीन अधिन ही किया करते हैं। हुने से ऐसा माजून होता है कि इक्टी अस्ता पूर्व हुई है और अधिकारों क्यों स्वकारों ही सेरी प्रायक्त पूर्व

पृत्याच्या वाको पाठ सुनको गई जावाक हुं। उन्हेंने पूर्व अन्यत परिचय आह करनेते तिले अन्ये पुरेषिको वित्र । पुरेषिको पाठानोधे यह पाठा हुन्यो आयोगांतपुर्वक वित्रवीको हैं। प्रश्नान्त्रम्य पाठा हुन्यो आयोगांतपुर्वक आयोगोंका परिचय पाठा पाठा है। वीत पुरुषो । वित्रान्त्रम्य प्रश्नो पार्च वित्रवार्त्तिक अधिवारण औ कि वित्रान्त्रम्य प्रश्ना अपूर्व है वेदी पुरिचय प्रश्निक्ता को कि वित्रान्त्रम्य प्रश्ना अपूर्व है वेदी पुरिचय प्रश्निक्ता को के वित्रवार पूर्व हुन्य और वित्र पुरेष्य क्षा है इस प्रश्नान्त्रम्य वेदी वित्रवेत पूर्व हुन्य और वित्र पुरेष्य प्रश्नान्त्रम्य व्यवस्था विद्या प्रश्नान्त्रम्य अप्रत्ने प्रश्नान्त्रम्य वेदा परिचयोग्य प्रश्नान्त्रम्य अपर वित्र पुरेष्य प्रश्नान्त्रम्य व्यवस्था विद्या प्रश्नान्त्रम्य व्यवस्थान्त्र



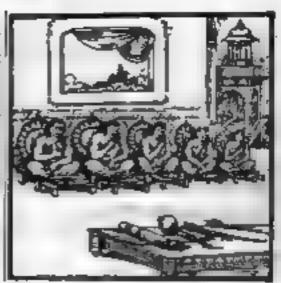
व्या हुन्ते प्रथम कर्क अपने मुस्ता विका करनेना क्रिक्ष क्रिया कः वह इस्तिकां अनुस्त है वा। सर्वार करनेना संदर्भ क्रिक्त व्यक्ति स्था विवा करने हैं पर प्रवाने का। इस बंदने करने विकादी। असे एक इसको प्रशानिको कोई अवस्थान की है। इसके इस करने विवाहतीन क्षित्र इस प्रवार कह हो है, उसी सर्व एक हुन्ती क्षित्र इस प्रवार कह हो है, उसी सर्व एक हुन्ती क्षित्र इस प्रवार कह हो है, उसी सर्व एक हुन्ती क्षित कि 'क्षात्र हुन्ती अस्तिनीह चैकको हैंन्दे स्थेड़े क्षित कर ही है, अवस्तिन निकानों निवा होन्दर क्षात्र हो है, अवस्तिन निकानों निवा होन्दर क्षात्र की क्षेत्र क्षात्र को विकास क्षात्र की प्रवार हो।

कता हुन्यों पान्यकोची अवस्थित परिका नेनेक रियो एक्कान्से अंक ब्युक्तेने क्या देश या। पता, पूरा, अल्ला, पार, प्रीकृषी, बीध और कुरुक्षेत्रकेंगी पशुरी एक और क्याचे परी और कुली कथती क्रिक्साओं कुली आनेवारे जीवार को को थे। यदा-समुखे मिलीने दूस और, क्रांचे और क्रांत, क्रांचार, चेदे, पर, क्रांचर, क्रांच, करा, प्रति, जो और प्रदुष्ती साथ पुजारे सामीको क्षेत्रकारण भी । कार-कार पता, कार्यका अन्य प्रकार क्षेत्रक का को थे। जिस्स समय कामानिक रहा अर्थ कोचे, जनह grid aft property first in absent unb refe. राज्यात्वा विकास को आहर-सामारक पान कानी जनकरी और जनकर किया । इक्ट राजा, पन्नी, राजकुमार, क्लो प्रान्तिक, कर्मकारी और सम्पन्तित परुष पान्कानेके प्रवेशको कार, काल-कार, प्रथम, प्रवास आहे देशकार बहुत अभिन्युके पूर्ण प्रत्या कारण कार्य लगे। यो प्रदे क्षेत्रे-क्षेत्रे और क्षापुरूप प्राणेतिक आहरन लगाने पने हे, क्रमार पाण्या किना किनी विकास पालर के हुने। इस-इसी खेनेके कोचेंने बड़ी इस-इसके प्राप्त प्रस्क तुमा क्षेत्रन परवने रागे और व्य होपोने व्येक्ट रेकिंद्रे पुरुषो पान विकाश गोजनके बाद का यह समाधीको देशने विकारिक अपनार अपना का पायकॉर्न पहले अर्थ बदाने और किया, विको पुर-समानी पर्वाई रखी हां बी। उस्ता पर कार देशका राधी लोगोंक कार्ये पर

[ 039 ] মত মত ( 'আমাই—ছব্ম ) ৬

निवाय-रह हो गया कि ये अवस्थ है पायक-राज्यका है।

पहालका इससे कांचन कृष्यिको अस्य स का-'शामीन प्राप्त, देवर, श्रीन श्रमम प्र है—या पार पुर केरे प्रमूत करे ?' वहीं सरस्येत देख ये की है, को नेरी पुलेको प्रश्न करनेके रिप्ते इस नेका अन्ते है?' पर्यक्तम कृषिक्षेत्री बाह्य-'कोन्ह 🛭 आवर्ष गरियरण्य पूर्व हुई, आव उसस हो । वै महत्वा पानुसार पूर पुरिवृद्धित है। येरे चरते चर्चा क्रीन्सेन, अर्थान, नेपाल और सर्वात व्या केंद्र हुए है। केंद्र बाल क्रुप्ती एक्कुमार्ट क्रीक्क्रेक साथ रविकासने हैं।'



## व्यासजीके द्वारा द्वेपदीके साथ पाण्यकोके विवाहका निर्णय

शर्मपुत्र सुविद्वितयो यात सुव्यार हुन्त्यी अधि असलामी फ़िल औं । अन्यकार हे फोर्क फारन में कुछ भी बोल म सर्थ । पूछारे नही-तर्थ कर्माः अलोको सन्तरस और नृष्टिक्षिको बारकारक प्रकार साहा-प्रकार विकासक wert vor erweit der Feder perse ger प्रतिकृति रांक्षेत्री प्रत्यक्त सक बढी बढ़ ही। कर प्रवाहे क्रायाची बात हुए पूर-भाग बात और व्यविदेशको सामान दिया कि में 'लुका करा को विकास देखा।' अनवर अधेने कहा कि 'चुनिहर । अब हुए अर्जुन्हो अवन के कि के विशिक्षक प्रेक्टिक क्वीक्स करिया मुधिकिरने कहा, 'राजर् । निष्या की मुझे भी करन ही है।' हुन्द केले--- 'का तो की अभी कर है, तुन्हीं मेरी कानका विविद्यंक प्राथितकः करो।' वृतिहर्तने कहा, 'सकर्। अक्की राजकृतारी इन सकती परताने क्षेत्री। इक्की मतानी ऐसी ही जवत दे कुकी है। इस्तीनो अने अहत र्विनिये कि इस साथी इसका अल्बा कारियाक करें।' एक हुन्द बोले, 'कुरलंक कुरूब । तुम बढ़ कैसी कर कर रहे हे ? एक प्रजाने महान्त्री धनिनों से हे समझ है, परंतु हक वाने क्य-से पति हैं—ऐसा से क्यो सुननेने नहीं अन्य । पुर अपेक कर्यन और चरित्र हो, इसे संस्थानकंत्र और करींद्र नियरित ऐसी बात सोकारे थी वहीं करिने हें पुनिर्देश

केरे--- 'कारक ! कांधी भी की पान है। प्रत्येप से को क्रीया-क्रीय एउटाने भी नहीं है। इस हो उसी पार्टिन पहले है. विकार पहलेके कोण पहले से हैं। की पहलीरे कभी कर ची निवत्य है। येद पर क्यों अअधि ओर सी पास । केंद्र प्राथमको देखी असून है और केंद्र एन होने स्वीकार करता है।' हुमारे कहा—'अपने मात है। महरे दूस, हुमारी प्रशा और पूर्वपुर तम निरम्बर फर्तमान विशेष को और दिए कारको । उसके अनुसार को कुछ करना होगा, कुल किया 

का लेन इकट्रो होबार विकार करने रूपे। इसी प्रथम क्तान, केल्पन अवस्था मा यो । स्था होगीने अयो-अने जनको उठका करक स्थान-अधिकक् किया और अवान करके को सर्वतेश कर्न-विकासकर बैदाया। व्याननीची आहारी क्या रहेग अपने-सपने आहरता वैठ को । कुमार-प्रकार निवेदन करनेके कहा एका पूजाने क्लाक् केवल्याचे तर दिया, 'बन्यान् ! एक ही ही अनेका पुरुषोधी कर्नको किस अकार हो सकती है ? देख करनेने संकरसम्बर केन क्षेत्र का नहीं ? जाय कया करके केर <del>वर्ग संब</del>ट हर मोधिने ।' स्वयुक्तिने बहुर, 'राजन् ) एक बोदे अनेव भी हो, यह यह स्वेदत्यार और वेहदे विद्या है। स्थापने पर प्रवर्तिक की नहीं है। इस विकासे दार

विगाँने क्या-क्या सेच रहा है, जाने सरमा का सुनातो ।' हुएने नदा, 'परकर, में से ऐसा समझा है कि 'हेला करन संपर्ध है। लेकाकर, केड़कर और सहकार की विग्रात होनेने कारम एक की जूस पुरानेनों को नहीं है समझी। में निवारों ऐसा करन अवर्थ है।' बुद्धान केस, 'क्यार, नेस की नदी निक्षण है। कोई की स्वाकरी पुरान क्यो पर्दानों सबके साथ कैसे सहवास की समझा है?' सुधिहित्ये कहा, 'में आवस्त्रों मेंने सामने किसो का का सुरात है कि नेसे अवस्त्रों कभी सूझी कस नहीं निवसकों। मेर भन कभी अवस्त्रों कोर की जाता। सेसे वृद्धि कुछे एक सामेत है से कि का सम्बंध नहीं है। सामोने पुरानोंके क्यारों है की कहा नहां है कि कुछानेन विश्वकर्त करने है। बाताने हमें कहे अद्या से है कि कुछानेन विश्वकर प्रदेश हरका निरस-मुख्यार प्रयोग करें। नेसे सुनाने के केस



करन वर्ग हो बैसता है ?' कुनोने कहा—'नेस केत चुनिहित कह वर्गिक है। उसने से कुछ कहा है, बात देखे हो है, युहो अपनी वर्गी विश्वा होनेका कर है। इस्टिनो साम्बदेश बताहरों कि अब ऐसा कीय-सा स्वया है, जिससे में असम्बदेश का शाहै।' ध्यासमीने बहा—'कल्कान, इसने स्टेश नहें कि असरवर्ग तुन्हारी यहा हो बायनी। हुयद । स्वया बुनिहित्से यो पूजा कहा है, यह वर्षके अतिकृत रहीं, अनुकूत है है। परंतु इस व्यवस्थ रहत में सबसे सामो पहीं जाता सकता। इस्तियो हुए मेरे साम एकानार्थे जाते।' ऐसा व्यवस्थ व्यवस्थी का गर्ने और स्था हुएका इस प्रस्तुकार एकानार्थे से गर्ने। बृहसूछ आहे समग्री बाद देसते हुए क्यों की सो।

न्यानकी हुएको एकामने से सकर प्रैपरीके प्रशेके वे बन्देको कथा सुनवी और वह कारपना कि भगवान बंकाके करानके कारण वे पाँचों है हैंग्सेके पति होते। प्राचेत कर उन्होंने कहा, 'हुन्य : में अराज्यायकी तुन्हें किया हरे के हैं। अने इस हम मा प्रकारिक पूर्वजनके प्रतिनेको देखो ।' इन्हरे धगकार् बेह्नमारके क्रमा-प्रसाहरे हिमा हुई। प्रदा करके देखा कि 'कोबे क्यूबरेके हिमा प्रद क्या हो है। वे अनेनो आयुक्त करन विने हुए हैं, विकास कहा स्थानक विकास कहा है; में ऐसे कार बढ़ते हैं जाने कर्न परम्बर क्रिया, आदिन अस्त्रमा क्ष्म विराजनात हो रहे हों । स्थल है उन्होंने यह भी देखा कि उनकी पूरी हैपती हैंग्स क्या प्रकार अवना जीवारको समान देवीयमार है को है, बाके अलो कराने भगवानुकी दिवा नाया है अवस्थित हो रही हो। या प्रमा, तेन और क्रीसिंट कारण क्षाकारे सर्वेष अनुस्थ केल की है।' या प्रवेश देखका हुन्तको व्यक्ति प्रशासन प्रष्टी। अञ्चलेकवित्त क्षेत्रक उन्होंने कारपीके करन पढड़ रिले। क्षेत्र ओ---'क्रम है, क्रम 🕯 । अवस्था कृताने देख अनुस्ता क्षेत्र कुछ विकिन्द्रान्त्री है।' राज हुन्युने साने बाह्य, 'जनमन् | की सापके कुससे नामक अपनी कनाके पूर्वनपाद वाह नहीं दुनी की और क विभिन्न दूस की देख था, समीतन में पुनिश्चितनी करका किरोब कर रहा व्य । परंतु विकासका देख ही विकास है, का जो और दान करता है 7 अपन्यों केने आधा है. केरत ही फिला कावना । धराबाद संबादरे जैसा का दिखा है, करे का कर्न हो का सकरें, बैसा ही होना करिये । अब इसमें केत कोई अपराय नहीं सन्दर्ध कावणा। इस्तीनचे पीची अवहर जनकाने स्वयं हैपरीका परिवरण को : स्वीकि कुंच्छं पाने चारमेक्ट क्यांके क्यां प्रस्ट हाई है।"

#### पाण्डवांका विवास

तान नगवान् वेदानासने हुनके साथ पुनिवेदाके पान आकार बढ़ा, 'आम ही किस्सुनेड रिप्ते चून हिर और चून मुक्ते हैं। जान पहला पुन्न नकुरता है। इस्तीरने अपने हुन श्रीकर्षक पश्चिक्त करे हैं अस्य है विकासकर सम्बद्ध होता, भा निर्मय होते ही हुन्यू और बहुबहुत अस्ति निवाहके लिने आकारक सामग्री जुल्लेका प्रकृत विकास विकास नकुरा-भूत्वका अवध-स्तव कहा और आयुक्त स्कृतने करे । समय होनेयर हैंपारी संस्कार्य साली गर्ना। राजरांत्वाको हर्षाया, प्रची, प्राप्तम, प्रतियः मुरक्त को जानको जिल्हा देशनेके रिप्ते आ-आवार अपने-अपने चीना इक्कांपर वैद्रवे राने । का प्रथम विवाद-सम्बद्धाः सीनार्व अवन्त्रिय के राज था। जल और सम्बन्धनो अन्तर वंदी कथा थे वकारंकारो सम-वकार काराव हराके अंकारे असे । रिक्ते आने-आये नेकारी पुरोद्वीत श्रीवा पार में है । वेदीका अपि अन्यस्थित को गर्ना । युनिहरूने विकेशनेक क्रीयकेक पारिताहरू किया, हाना हाता और अपने फोर्च कियाता विभाग्नेकों समाप्त विकार कहा । इसी प्रकार क्षेत्र प्रकृतीने औ क्षमकः एक-एक विर प्रेयकेका पारित्रका क्रिकः। प्रा अन्यास्य सकते विकासन जात पह हाँ कि देवति आहति काशनानुसार प्रोक्ती पूर- अमेनिन कामान्यकारे प्राप्त हो कास मार्गी थी। विश्वकृष्टे अन्तर एक हुन्हरे क्रूंबर्ग सहर-ते का, बन और जेब्र सम्मित्री हैं। फोसे कई की, हरास. जनम नारिक्ट कोहोंने भूते भी तथ, भी हाथी, स्वास्त्रकाओ विपृत्ति से वांतियां प्रमेश सम्बद्धों से नहीं। प्राचेत शरीरिक की बहुत-सर कर, का और अलंबार करवारीको रिये नमें। इस प्रमात सम्बन्ध अंबर क्रमार और बीचा प्रैंपरीको प्राप्त करके प्रथा हरको कर ही पुरारो को प्रयो । हुमानी रानियोंने सुन्तीचे पान सरकर, काके पैदोक हिल

प्रकार कारम मिला । देशमी साथी पाने हिंग्सी की सारको अन्यम करके इस नोई नह करने अन्ये हतने कई है



को । का पुरसेने पहे पेको अपनी प्रोतकारी पुर-पद केलोको अवस्थित के हुए कहा, "केले इन्हारीने इन्हों, रुवाने अर्थातं, रेप्रिन्देशं सामान्त्रे, क्रान्त्रांने महाने, अक्कांने परिश्वते और संबंधि नगवान् नारावणसे हेस-नेन निरमण है, केने ही हुए भी अपने परिन्दोंने निरमण । हुए अध्यक्ती, वेदालीकी, वेदालकी और वीताता होसा हुक केरों । अधिकि, अञ्चलक, साथ, 📹 और संस्कारेकी सारकार पान काल-केन्द्रने हैं तुन्त्रता समय असीत है । हुन अपने संसद् पतिचीकी प्राप्ती करे । बाधाईक सारे प्रश क्षेत्र मिले और तुम की करेला करका अन्योग करे।"

करणात् क्षेत्रस्यने प्राथकोताः निवाह हो स्वरेशन मेंटर्के इनमें बेहर्व आहे. परिवर्तने बड़े हुए सर्वातंत्रहर, ब्रोडाई कार्य, रेज-विकेश्वेद स्कूपुर्व्य सामान, प्राप्तान, वैकाई क्षांत्रची, बहे-बहे केंद्रे, क्रमी, राग, करोड़ी बोहरें और क्रब्रहें रकेण केवा । युविश्वरते भगवान् बीकृत्याको प्रसन्तरको हिन्दे तम क्षेत्र को स्रोते सीकर दिया।

## पाण्डवोको राज्य देनेके सम्बन्धमें कौरवोंका विचार और निर्णय

अपने गुरुवारेंसे बीस ही बालून हो गया कि सैन्स्टेक निवास | कीरबोर्क कुनेबहारसे जिल्हा होकर अहे लिहारस । मान्यानीके साम दूश्य है। स्थानकेश सार्वनाएं और बोर्ड नहीं,

वैज्ञायकरको करते हैं—क्यानेका ? सामी एकाओंको ) हुन्य । इन्होंने कावालोंके का कानेने जाताता प्रकट को और

कुर्वेक्त्रको यह सम्बद्धाः कुन्निक यह कुन्न हुआ। यह कार्य चीरवर अर्थुन से । उनका साथी, विकले कारको चाक । अपने काली अवस्थान, क्रवृति, वर्ज आदिने साथ पुरस्की क्षिण क्षा और पेत्र क्लाक्यर को-को क्षाताके को पूका संस्थानी हिम्मानुस्थे हिम्मे श्रीट पह । कुलसमने दिने थे, भीमतेन वा । इस समामारसे सचीको कहा अधार्य । दुर्वीकको बीचे सरसे बहा, 'धाईमी, अब मैं ऐसा समझ सुर

है कि धाना है जरामार है। जाको कुछ नहीं होता। वर्षा तो पान्या अन्यक नी में है।' जा राज्य करने सौरव हैर और निराध हो मों थे। उनके इक्तिकार पहिल्लेस धानित एक प्रमाश पुन्कर विदुश्योंको कही जरामा। हुई। ने नवी एकर प्रमाहके धार नामार भोगो—'आध्या, क्या है, क्या है। कुश्मिकिनेची अभिनृद्धि हो को है।' क्या भी जराम हैना माने राने कि 'को जरान्यकी बार है, को अन्यक्ती बात है !' कुराह्मी ऐसा राज्या विकास का कि होता मेरे पुर कुश्मिकों जरास हो। हासीको अहारे क्या-क्याके नामें सेनकेकी जरास हो। हासीको अहारे क्या-क्याके नामें



माओं 1 मिनुस्ते सारसाया कि स्थानिक निवास वायाओं साथ हुआ और में महे आगयाने कुलावी रास्त्यन्तेने निवास बार रहे हैं। कुलाइने बाहा, "निवृत, शानकरोच्यों को में अपने कुलेंने जी बहुबार नामर बारत है। उनके जीवन्त्रों, विवास और हुस्तु-नैद्धा सम्बन्धी बाह्य होनेले में जीव की साम हूळा है, हुस्बके अस्तान्त्रों में बहुत है स्टेंस अन्तर्य आगती बुद्धि हेती ही बची रहे हैं

जब निवृत व्यक्ति को वर्ष, इस हुनेवन और कार्ति प्रारम्के कम अध्यत बड़ा कि 'बहारक, निवृत्ते कार्ति इसकेम आवर्षे कुछ की नहीं का प्रस्ते । आव अस्के स्वयत्ते सहस्रोकी व्यक्तिको अपनी क्यां व्यवस्त हो इसके कार्ति हैं ? इमें हो राज-दिन स्वयुक्तिके बार्क्ड न्याकी कुन्ते सने कुन व्यक्ति इसे तो अस्मीत कोई देख अस्य करना वाहिये, जिससे में अस्मे वस्तार हथारी उन्यस्ताविको इतिका न शके। ' मृत्यायु संतो-- 'संदा, यह तो में में महता है। यह विदुत्ते इत्यमें सामीते तो मक, सेहोरों की मेत यह वाब उत्यस नहीं होना पाहिते। यहाँ यह मेरे पालको चीर र है। इत्योग्ने में असके सामने पालकोके हो मुल्लेका करान करता है। हम सेनों इस सामा जो करना जीका समानो हो, यह सामानाते।

दुर्वकाने का—विकासी, नेस से ऐसा विकास है कि पुरा विकासी पूर्वकी अनुद्राय काछ करा दिया काम अध्यक्त दाना और आहेंके पूर्वकी अनुद्राय काछ करा दिया काम अध्यक्त दाना हुए, उनके पुरा और अधिकोधी मोनको कोई केहा कालो काई कालो कर केना काहिने और उनके हास उनको काई विकासन केना काहिने काई बोधा काम सीमानेको काम का कोई, का से साम काम है वन काम । चीमानेको किया आहोत के हुन्दी कालो कालो की पहा की है। यदि से काल आहोत के हुन्दी कालो की काले पात केना है काहिने । काल के सोन कालोई साम कहाँ का कालो की एक वाहिने । काल के सोन कालोई साम कहाँ का कालो और पहा काले काहिन कालो काले । हुन्दाक पूर्व विकास और सहस्मानुकी काह काले काले । हुन्दाक पूर्व विकास और सहस्मानुकी काह काले काले । इस कालाको हुन्दारी कहा एवं है ?

करी का-"इसेंकर, में से इन्हारों एक कांद्र नहीं कारत । पुत्रारे कारावर्ध पूर्व अन्तर्वेश कार्य्यक्रम अस्त्री होत्र क्रमार को देवता। वे बायाने क्रमा है। करते हैं कि करपुरस्का कोई के नहीं वैकास । सनका हैन एक है कोने है और यह किस्सुके क्रम जार है, काले जनके प्रतिकार और भी निरंह होती है। एका हुम्ब की एक शेह पुरूष है। यह करकर लोगी नहीं । हुन साथ राज्य देकर भी उसे पाणकोंके निवक्षमें की का समार्थ । अकाम बीक्रमा कालोकी होना रेकर प्रन्याचेको सन्य दिल्कानेक रिल्वे राजा हुउनके पहरी न्हीं महेको, राज्येका हम अपना पराकार उत्तर कर सी । बार पर है कि सीवृत्या पायाबोर्क किये अपनी अन्तर सम्बद्धि, करे भेग और राज्यका भी जान करनेने नहीं विक्केंने : इस्तिको पेरी सम्मति को यह है कि इस एक बहुत क्ये सेन रेका अधी कार्य का दे और हराओ हराउस क्ष्मानेको परामाने ही पर हातिः क्ष्मीति प्राप्ता सहय. कर और के-बीको कामें की किने का सकते। इस बीरोंको से बेसार बीराएको हो पर कारण बाहिये।" करको बहा, 'बेट कर्ग । तुर सम्बद्ध-कुरूत से हे ही, , चेरिक्ट्रबार भी हो। यो कुछ दूधने बहुत है, व्या राजारे

अनुसार है। परंदु केरा विकार का है कि कावार्य होता,। भीव्यक्तिका, विद्रा और दल केंगे-पान विकास हत सम्बन्धने किर विचार कर हो और ऐसा उदान निकाले, जिससे परिकायमें सुक्र मिले ह

राजा प्रतरहरे भीवनिकास अधियो पुरस्का । सम होत् गुप्त स्थानमे बेहक्द जिक्कर करने हते । चीन्पनिकान्हमे tage, 'मुझे राज्यकोचे राज्य मेर-विदोध पारण कांद्र की है। मेरे दिलो बुसराह और पान्य क्या बेनोके स्वकंट एक मे हैं। में सकते एक-सर चार जरता है। केने नेक को है करकोड़ी प्रका महत्त्व, केले के सुक्रकेपोच्या की है। में काव्यकीने प्राप्तक करवेका समर्थन नहीं कर सकता। इस उनके संबंध केल-विकास कार करे और उसके आया करन है से । केरे क्ष का एकको अन्ये सन्तरकोत्ता सन्तरो है, की है पर एको पार-पार्टका भी से है। दुव्यंका ! भीर मा राम प्राथमोंको पर्धि विरोध्य में तुन पर प्राथमध्य कोई पी पूर्व अन्तेको का प्रवच्या सामानिकारी केने बह स्त्रोत्स ? तुम को अच्छी एका युन बैठे हो, यह वर्गीद विकरीत है। इसके की पहले में प्रकार अधिकारी है। इसे हैती-क्रारेचे करका क्या और क्या करोचे । क्रारेचे कुक्त और श्रव मोनोका मान है, सन्त्रक नहीं । तुन अध्ये विराग क्षतंत्रका देशा को लग प्रे है ? क्या में एवं कि क्रमी और पीचों क्रमूब बाव हे नवे, तको वेरी अधिके ब्राक्ते स्थित का गया वर । इस्ते करनेका क्षेत्र विकास इपन्य समाना तथा, साम्य पूर्वजनका नहीं । कर वान्यनिक भौतित क्षेत्र और विरामेशे तुम्बरी अवस्थिति विरामी क रावती है। प्राप्तकोंके पीतिक को सब इस में उने उनके प्रान्तरे व्यक्ति नहीं कर सकते । वे वृद्धिवन् और वर्णान्य है । सामार्थे केल-जोल भी रकते हैं। उन्हें तुक्ते अवता सं राजने स रक्ष्मेक प्रका किया है, यह अवर्ग है। कृत्यह, मैं तुन्दें स्वयुक्तको अपनी समाति बातको हेता है। जी हुन्दें कारी एसीयर भी केन हैं, तुन मेरा दिल और अवन्य कान्यन करता पारते हो, तो प्रीज-से-पील पंचानीका संस्था तमा उन्हें सीहा से ।"

होक्कानी करू—करवा । विशेषक पढ़ी को है कि का इससे बडेई सरम्ब पुत्री जन क्षेत्र न वर्ग, अर्थ और नक्सी पृद्धि कारोपाली सम्पति है। मैं महारूप भीनाती समाति कांत मत्त्व है। सनकर वर्षके अनुसर में बढ़े होना सम्बद्धा है कि राज्यमंत्रों आया रूप है देश कर। अर किसी विभावती पुरस्को इसको सम्बन्धी वेरिये । यह पर्यानी रेकर क्या और इस्सों को कि 'महस्त्व हुन्द । अपके बीक बंदले राज्य होनेते समस्य कुर्त्वारको, राज्य कृतिहरू और क्योंकरको बढी प्रस्तान स्वर्थ है । इसे में अपने फूल और नेराको प्रदेश करते हैं।" इसके बाद का कुसी और क्ष्मकोच्छे सहकार है, सम्बन्धे-सुप्रधे । यह उन सोनीके विकार अपने प्रति विकासका क्या हो क्या और ने काम हो क्षेत्री, क्षेत्र इनके सामने वहाँ अनेका प्रसाद क्याँका करे। हुनकृति ओरसे क्षेत्रिकी जिल कारेका कुरालक और विकार्य होना कुर्व जन्मनोत्रहेश कावत सम्मानक साम प्रेयक्षे और पाम्बानेको से उस्ते । उस्ते उसका पैतना राज्य है हिसा कार । उसका आहर करनेते सारी जन्म जारवर अस्ति होगी, क्योंकि एक लोग ऐसा ही पहले हैं (इस प्रकार में एक उपसी सहस्य भीनवर्ष सन्तरिका अनुवेदन प्रापत है और आयोह केलको सरका केल है। प्रतिने अवन्ये संस्कृती धरलाई है।

shadower aft groundel ten greet and का-भूग का बा : काने बाह्य कि, 'बहुतान, विकास धीने और जानार्थ केम आयके हता एक जनारमें सामान्ति और कारण है। जान अन्य प्राची अपने किनकी सरावा होते ही को है। यह विकास अलब्द बल्पने एक विका है है क्षरे संस्थानेड प्राप्त हो व्यानेवर भी बाई आवसे हाजसे नहीं किम क्रमा । यह बांई अपने इसके क्रमां क्रमां क्रमार हो इन्हेंचे अन्यक्ताचे न्यून्ट करावे से सन्त्रावर पुरुषके कारण पहल जो प्रकार पाहिले । जान पार्ट प्रदिश्यार हैं। व्यक्तिको स्थान्य साम्रो है का पूरी, प्रतास विशोध साम सामे वर्धिको । क्ष्मीचि अस्य अस्या हिन और अहिन से पर्यापिति प्रमाले से हैं। क्षेत्राध्यमि बाह्य कि, 'शरे वार्ग । मैं सेरी कुला रूपका पता है। केरा इंदर पुंचीरको परिपूर्ण है। पू magning affig write fire port sought aftg-व्यक्तियो काला रहा है। वेरे अपने संपन्नाने क्रम्बासकी रहा और विकास करा करी है। यदि इनार्ट मानको कार्यक्रका अधित क्षेत्र पत्रता के तो तही जिस्सी द्वित क्षेत्रे, वही पद । नै बड़े देश है कि इससे सरब्द न मार्लमें सीच ही क्षेत्रकां का विकास के सामग्र है

केरले का-बाराय, क्षेत्री क्ष्यु-सामग्रीको सह क्रमेका है कि से निकालोध आयके क्रिकी मात कर है ? परेत आप किसीची बात सुक्ता भी ते नहीं बाहते । इसीसे कान्द्री कारों क्षानें सान नहीं हैं। जिसका बीक और आवार्ष हेकने बहुत ही दीन और दिलहर कर कही है। लोह आधने क्षा को को सीवार किया ? मेंने सुब सेव-विवासन कौर नक्षान् हैं कोचे हैं में अनेकों प्रधानके का और सामग्री , देश किया है कि भीना और सेकों सहकर अस्पन्न कोई निम नहीं है। वे होनी महत्त्वक अवस्था, बुद्धि और प्रस्तातन अही सुची करोंचे समसे को को है। इनके इसके अपने और पालुके कृष्टि प्रति समान लेक-पान है। नावे कुनारे भी बाज कालनेवाले अर्थुनको और से क्या, सर्व हम्, की पुरुषे नहीं जीत सकता। बहुत्रम् और विस्तर्यो मुख्यतेथे इत हमार प्रविचीयां वार है, जाको देखालोग भी पुत्री कैसे जीत सकते हैं ? राज-बोहरे अपूरत-साहेत अपना केर्न, क्षा, क्षण, क्षण और क्यानको पुरिनार क्षेत्रक वर्गका पुनिक्रिएको ही मुख्के हता निश्त प्रधार हराना जा सन्तर ? आध्यो सम्बा केन माहिने कि प्राथमिक महत्ते अनं बीकारापर्या और सामन्ति है। सरमान् बीकृत्य उनमे प्रत्यक्रमा है। महामान् हर्ग आनेक क्यूनी उन्हें सेके अलोकी बाजी समानेको जिल्ल है। यदि युद्ध हुन्स से पुरवारोंकी विकास निर्देश है। यहि तहा को से कि अनकार यह निर्मात नहीं है, बिर भी को साम मैल-लेक्से निर्मात कृतवा है, को इन्दा-वर्गक करते प्रीकृतव कर के बहोची पुरिवर्तने है ? सबसे प्रकारों का बार करून की

है कि साम्बाद मोर्थिया है, जानो कभी नागरिक-जनगरिक इसके दर्शनके दिनो साहक हो से हैं। इस समय परमानोंके किन्द्र सोई साम स्वत्नेते राजानिक्षण हो सामाना। अस्य महोने अस्ति अस्तार्थ और इस केरियो। कुर्वेचन, कर्म और समूति असी असर्थ और इस है। इसकी समझ अस्तितक करने है। इसकी साम जर मानिये। मेरे सामानो पहले हो सुन्या कर हैसा सा कि कुर्वेचनके अपरामने साथ प्रमानन संभानक है सामान।

कृत्युनं का— किन्न, भीनानिकास एवं नामार्थ हैन को है कृतिकार एवं स्थितुन्य है। इसकी सराह मेरे पान हैलाई है। इसने की को कुछ बढ़ा है, को मैं सीनार करता है। कृतिहार आदि कोनो गायान केने क्यूबंट पुत है, कैने हैं की की। के कृतिकी गाया है सरकार सरका की अधिकार है। हुए क्यूबंट देवने माओ और एका हुकाकी अनुनारिक कुन्ती, सैंक्ट्री क्या क्यूबंट से स्वाप्त प्रकार की से असती। कुरस्कृती अद्योग निवृत्ति हुकाकी स्वकानिक तिले अस्तान हैका।

manget and

# विदुरका पाण्डवांको इस्तिनायुर लाना और इन्द्रप्रस्थमें उनके राज्यकी स्थापना

वैक्रमध्यम् असे हिन्त्यानेका । काम विद्या स्थान स्वार होकर प्रव्यवनिक यस रखा कुम्बरी राजकारीने नवे । विद्वार्थी हुन्य, जन्मन एवं प्रीयक्रिके दिन्ने तदा-तदाके क और अध्यार अपने साथ हे गर्य है। वे बहुने नियमनुष्टा एका हुंग्सी लिए। इस्में क्युंट्य बड़ा सजार किया। भारत-प्रथमे अन्तर विदार बीदाना और परच्याने निर्दे । इन लोपोने विद्यार्थीको को प्रेयमे सार्यानमा की। विद्यार्थीने कृतसूच्यी ओसी बार-बार पायक्रीका कुक्त-व्यक्त कु और सको दिने साथे हर क्यार अधित विजे। अनुक अवसर कवा काक विद्वार श्रीकृष्य और काक्ष्मीके सामने ही कुमहो निवेदन विका कि 'सहाराज, जानस्वेप कुम क्रमें नेते प्रार्थनाथ भाग है। यहाराम क्रास्ट्रिंग माने क्र और मॉक्बोप्रवित कारने कुराव-बहुक पुत्र है। कारके क्षांच विवाहसम्बन्ध होनेसे उन्हें आरम्प प्रस्तात रही है। विकास चीवा और होमाधानी यो अस्ताने कृतान सामने हिल्ले कहें उत्पूर्वता उत्पद्ध की है। इस अवस्थार से विदर्श इस्ता है, कर्ने इसकत को शब्द-साबसे में वह होते। क्षत्र आप पाण्यांको इतित्रमुद पेकोची क्षेत्रते क्षेत्रिकं । अभी कुरमंत्री सम्बार्धेयो हेक्केट क्रिके अध्यक्ति हे से हैं। कुरकुरमधी नारियाँ नकस्य बीचरीको देशनेके दिस्ते। प्रस्कान कर से है।'



त्वातिक है। जन्मकेको भी अपने देखने करे जात हैन है। एके। ये भी वहाँ कार्नको दिन्ने असूब होंगे। आप श्रम इन इक्केनेको वहाँ शानेकी असूब हैं। अस्पने असूब असू होंगे हैं ये वहाँ होंग्स येन हैंना कि 'जन्मक स्वेन अपनी नवा कुनी और जन्मकू होन्दिके अस्य अस्तरमूर्वक हरिकरमुख्ये दिन्ने प्राचन कर से हैं।' एक हुएएने वक्-'म्हारम सिद्दा, जानका कहन होक है। इस्तिविक्षेत्र सम्बन्ध करके मुझे के कम जानका को हुँ है। पारक्षेत्रत सम्बन्ध एककानि करन से प्रीक्ष है है, जांद्र है अपनी कारनों का बात का नहीं सम्बन्ध। कानेक दिने कहन मुझे कोचा की केता।' कुनिहित्ये कहा 'महत्त्वत, इस्तिया कार्य अनुवारित्योग कार्यों कार्यों है। अस्त अस्तिया के अस्ति होते, नहीं इस करेदेः' करकात् अस्तिया के अस्ति होते, नहीं इस करेदेः' करकात् अस्तिया कार्या कार्यों केता करवा हम करवा कार्यों स्तित्व कार्यों केता कर्ते, क्षित करवा कार्यों ' हम्द्र केते, 'पुक्तिया कार्याट् क्षित्रम केता करवा है। इसमें क्षेत्र क्षी कर्ते है पारक्षित्र है। वाक्षांक्षी क्षित्र क्षी स्त्रा है क्षार्य करवा करवा है, अस्ति हमें पारका की महीं करते।'

इस जनार सरमह मान्ये पायक एका हुमारे तीन हुं। और पायम् अीक्ना, मान्या विद्रु, कुमी उन्ने हैं किंदिये पाय हरितामपुर पहुँच गुने । एकोर्ने किंदियों निर्मी प्रकारका बहु नहीं हुमा । यह पाय कुमाइको पह साम मान्या हुई कि और पायक तह में हैं तम क्लेर्न अन्यों अपने अन्यानों किंदि विकार, विकास और अन्यान प्रीरम्पेनी केंद्र । हो-पायकों हिस्स पायकोंके सर्वकों किंद्र मान्याने स्विधानपुर्ण अंद्रक्त हिस्स पायकोंके सर्वकों किंद्र को पार्टिकार प्रमानिकार हुए पहले हैं । अन्ये स्ट्रांटिकार प्रकार कींद्र कुमाइकों के पार्टिकार कुमाइकों पायकोंकी प्रशंका प्रदेश कांद्र कुमा हुए हो गाया । साम स्वान, होन्य, पान आदि पुत्रक की पुन्नकार्त किंद्रा हो से सामें पालकांका प्रमान प्रीवस्था कींवरका हानी कारोने हो ।

पान्यतीने सारावाने कवार राजा कृतस्य, वीवारिकाच और समझ कृत पूक्ति वरकार्त अनाव किया । उन्हों आज़ारे वोकर-विशास करकी अनावर कृत्वानेतर के किय स्वाह्मिक साथ सारावानीयों मेरी गास सुन्ते । अन सुन्तानेत्रीया कृतिक आदिके साथ किसी तत्वाका कृत्वा और वनवुक्ता र है, इस्तिने तुम अनाव सन्ता क्षेत्रा काव्याकारकार्ने अन्ती कृत्वानी कर्ता को और वहाँ को । वहाँ तुन्ते किसीका कोई यह नहीं है; क्षोंकि जैसे इस केवलकोची एक करते हैं, वैसे हैं अर्जूड तुमलेगोची एक करेवा (' क्षावानेंने क्षाव कृतस्तुकी का बात क्षावार की और उनके करनोने जनक करते हरकारकार सुने करें।



पान करी पार्टिनेंगे पूज पुरुषे बली पत्था प्राच्यांक्रीकोक सञ्जूतार प्राचनकार्या गीव अल्बानी । बोर्के ही क्रिकेट वर्ष केवर क्रेकर क्राफी समान शिकाबी के राजा । कुमेर्युरने अन्ते कराने हुए नगरका पान हम्बाक रहा। करके बारे और समुखे समय मार्ट काई और सामस्वयो क्रांकारी प्रकारिकारी करावी गयी थी। बहे-बहे पाठक, केंगे-केंगे पहल और जेपूर दूरते ही दौन पड़ने में। जान-कारण अस-विकास असमें को हुए से । महोत्रम बाह्य सन्दर्भ प्रकार का । वर्षियों, तोय, कर्नुके और अन्यान्य बुद्धसम्बनी क्षेत्र एकान-स्थानकर स्नामने हुए थे । सङ्घेद क्षेत्री, सीबी और कार भी : देशी कारके दिनों भी काल का दिने पने में । अवश्रमीके जवान इन्हास्य नगरी सन्त-सुका प्रकारित बक्रोफित भी। नगर कैयार केंग्रे ही विभिन्न नामाओंके कामकार ब्रह्मान, सेठ, साक्ष्मार, कारीयर और मुमीकन आ-ज़ाकर काले हुने। कहे-कहे ब्हान, जनक हुरे-भएँ पास-पुन्तोंने एके कुलोरी परिपूर्ण हो रहे थे। अहीं पक्ष और नाम सी है से बढ़ी कोब्रिकर बुद-कुद सर रहे हैं। पहिल्लेख कराना निरामा है का। एक-उन्होंचे सोहायहरू, स्था-कुछ, विकास संदर्भ, जन्माने बहुन, कृतिय प्रतरे, वागरियाँ स्थान-कारण को पानवार की। सर्वत, स्वस्त, पीने, पीने कारण क्यों क्या किराहर कर हो थे ? नगरवर्ड करावट और प्रकारी कारणारी पाणानेको सही अस्तात हा । अस्ता आस्त राज्य विश क्या, कर बस क्या, दियो-दिन स्वती होने लगी र बस कार्य बेसको होया राज-पान करने राने, तब जनसन् क्षेत्रम्य और सरराथ उनसे अनुस्ती रेस्टर प्रस्तर बते गर्ने ।

## इन्द्रप्रस्थमें देवर्षि नारदक्षत्र आगमन, सुन्द और उपसुन्दकी कथा

कर्मनको पूळा—सरकार् ! इन्हारकका एक करेके का साव्यानी नका-का किया ? उन्हीं कर्मको हैंच्छी उन्हें इत्या कैसा काव्यान कर्मा थी ? वे एक कर्मने उन्हारक होनेवर की पारस्वरिक कैननक और निकेशने केने क्यों को है ? वै उनकी कवा विकारते सुनक वक्षात हैं, जान कृत्य करने सुनक्षे !

रीतामानको सह—कारोका, सहयोगानी सामानी क्षांत्रस जुलिहर अवनी को बैच्हेंके साथ ह्वासाओं पुसर्वेच क्यार पहलेची स्वरूपाने समूर्व प्रयास चलन काने राने। सारे कह रुगके नकने हे नने, वर्ग और सरावास्त्र पारत करोंके कारण उसके अन्तवारे किसी प्रकारको सन्ते नहीं थी। एक किस्सी पता है, सभी सम्बन एक्सको बहुतुन अस्तिकः बैदे हुए सम्बद्धन कर में थे । अर्थ प्रथम संस्थाने विकासे हुए देवर्ति क्या पार्ट का पहि । मुनिद्धिरने अपने अस्तानो क्रांबर उनका सामा निम्म और क्षेत्र केलोक क्षेत्र के अलग केवा। क्षेत्र व्यवकार विशिव्यक्ति अन्तरं, पाल अस्तिके पूजा को पत्ने । पुनिर्देशने बढ़ी जातारों औं अन्ते प्रत्यकों कर बड़े लिएए पी। मान्त्रवेरे इनके अञ्चलको पूर्वा प्रतिकार पार्थक उन्हें वैधानिकी माता है। हैपहेनो देवर्ष कालो पुरवक्ता अवस्था this fire wert absorbt gloch auf abnen alle पांचवानीके ताम केवर्ग पांचके पांच काची और उनकर बारके बढ़ी बनोटके राज हम नोइकर करने है नहीं। हैतरि कार्य अवस्थित देखा क्षेत्रको प्रीत्यानी करेकी सका है से।

प्रविश्वे परं कांग्र नेवर्ग जानो कार्याको एकपारे कुरवार कार—कीर नावको | कार्याकी क्रिको हुन पाँची पश्चिकी एकपार वर्गनात है, इस्तीको हुम्सोन्मेको कुछ हैसा विश्व क्षण लेगा साहिते विश्वो अस्तानो किसी प्रवेदनको इस्तान कोर्याक को । क्षणीय स्थानको क्षण है, असूर-नंबर्ग कुछ और असून्य कार्यक से वर्ण है गये हैं। असी इसनी करिहार को कि स्थार कोई इसना की कर स्थार का। वे इस साम प्रश्न करते, वृद्ध साथ कोले-कार्यके और एक साथ ही साहित्य कें। वरंद वे कोर्ने सिल्केक्स सामको एक ही कींचर दिहा गये और इन्क-कुरवेक प्रश्नोके सामक कर पर्ये। इस्तीको 'तुस्तानेव ऐसा निका करवाले, विस्ताने आपसाम हेस-नेता और अनुसाम कार्यी कार्य न हो और न कार्य अस्तानमें कुट हो पहे।'

चुनिविषके विकास्त कानेक केवाँ नाको सुद और

कानेवनो पूक्त--नगवर् ! इक्काबका एक करेके कर | उनसूचनी कंक अल्ब की। उन्होंने कक्क कि



'विकासकीयुक्ते संस्कृते निकृत्य नामका एक महानाते और अवन्ति केट या। कार्यः से पुत्र से—सुन्द और अशुन्द सेने को करिकारी, परावसी, कर और वैलीके संख्या थे। करोड क्षेत्रण, बहर्ग, पाय, प्राप्त और इन्या एक ही जनताये. है। इसके किन कुररा न से नहीं नता और न कुछ माता-केल है था। अधिक से क्या—वे एक प्राप्त, के के वे। क्षेत्रोकी पृद्धि की एक-भी है होने रूमी ( अहीने सिलोकीको बीरनेको प्रकारो निर्मिकांक सेका महान करके विकास स्थान करणा करणा गर्म । वे भूगे और व्याने शुक्तर क्टा-सन्दर्भ करण किसे हुए केमान हमा बीकर गणना करने क्ष्मे : क्ष्में प्रतिका निर्मुख्या के रूप गया । केन्स्ट इस वैगुरेक काला कई होचा होगे हुन जन दहने में सुनेदी और इस्टब्स निकासे रहते। जात दिनोतल हेगी संगतन करोंके किया पर्यंत भी प्रकारित हो एक । उनकी तप्रधानत पाल हैकेंद्रे रिक्ने इसने अध्याची प्रश्नात हुए और उनसे मर वॉकोस्टे बहा। तुन्-कातुन्ते ह्यानीको देश, हाव केंद्रकर कहा—'जबो, बाँद आप इमारी करस्वामे प्रसन्त 🛊 और इमें बर केव स्वाहे हैं से ऐसी कृत्य परिवर्ग कि इस होते केंद्र परवारी, अञ्च-कार्गिक वास्त्रार, शेकानुसार कर वक्रानेकरे, बरकान् एवं समा हो जाने हे बहुतसीने बहुत, 'अवर होना से देवलाओंको निकेचता है। तुन्हारी तपस्पानः यह जोरन भी नहीं का। इस्तरिजे जना होनेके शिव्य और जे कुछ तुमने जीवा है, यह प्राप्त होता (' दोनी प्राप्तीने कहा,



'तिराध्या, तम जान हमें ऐसा कर देखिके कि इस कंपनके वितरी भी क्षणी का कहानके कुछ न गरें। इसकी मृत्यू कानी हो तो एक-कुरोके इसको ही हो।' उन्हरणीने उन्हें कह का दे दिया और दिन्द अपने लोकाको करें गये क्या से होनों कर पासन अपने कर और उन्हें।

सुन् और स्पष्टको कन्-प्रत्योकी प्रत्यक्ती सीम र श्री केने को का-कामर समय काने रहे। 'साओ पीओ, मीध अवस्थे' की शामानमं जनक नगर नेत तक। क्षा कराने का-बर हर क्यार काल होने तथा तथ सुन्य और कासून्द्रने को बुद्धोंकी सरावारी विशिवनको हैको बाल की। क्ट्रॉने इन्हर्लेक, बज्र, राजल, बारा, श्रेमक आहे, सम्बर विजय प्राप्त करके सारी पृथ्वी अपने बजने बरनेकी बेहा की होनों कहनोकी आज़ाने अञ्चलन क्य-कुनका कार्सि और एकवियोका सत्यनाच करने लगे : वे क्यान्तरेके आंत्रक्षेत्रको अति अञ्चल वर्गाचे पेन्स के। सर्गालकोक अक्षाद क्या गये। कामें हुटे-कुटे कामका, सूचा और करनावेंद्र है इसंद होते थे। जब व्यक्तिलेन द्वांव स्थानेदे का-सम्बद्ध क्रियमें लगे तम से बेचों समूर क्रमी, लिंड और बाब बनकर करकी हरूब करने हरने अञ्चल और इक्टिकेस विकास होने लगा । यहा, लाकाम और उसलोके कर होनेसे करों और इक्कार एक नवा। बाधारक कारोकर के बे नमें , मंत्रासीका स्थेप होने और इंद्रिकीका केर रून जानेसे पृथ्वी अर्थकर हे गर्फ ।

इस स्थानक इताकाणको देशका किरीक अवि-पूर्ण और व्यानकरोंको क्षम कह हुआ , सब मिराकर क्रांतकों गरे। इस समय ह्याकीके यह म्हाकेन, इन्द्र, अवि, कन्द्र,

सर्वे, कह अब्दे देवक, वैकारत, कार्यक्षक आहे सभी विकासन से । महर्तिनों और देशकारोंने बड़ी महराके सहय महानीके सामी यह विशेष किया कि सुन्द हुई उनहानी प्रमाणे किन अधार चीना किया है और किनने निहर कर्य विक्रो है। स्क्राप्ति कृतन्त्र स्थेतका विक्रापतीयो सुराज्य और कहा कि हुए एक ऐसी समुख्य सुन्हों की बताओ, जे प्रचंको सुन्त है। विक्रमार्थनीर महा सोव-विकास एक Seriografi arapiral finder figur i stereit de what fire-ferror sig there are yes-yes say क्रमण पन्न का प्रयोक्ते स्थानीने सा क्षेत्रीका नाम क्रिकेटच रका। जिल्लेटचने स्थानके सामने हता-क्षेत्रकर पुरा कि 'कावन, जुले कर अध्य है ?' स्थानकी का—'रिकंको । हर कुर और प्राप्तको पना जाने और अपने पर्वतुर करते उन्हें तुन्त को। कुछती सुन्दता और बोजाओं अभे कुद पह पाप, ऐस्ट अभ्य सरो है क्रिकेनमाने अञ्चलकेकी आहार गरियान पार्ट्स जनान किया और तथ देखाओं अधिका की। अलेंद्र कार्यी सेवा हेपाल केवलको और पहिन्दोरे सरका दिना कि अप पास क्रपांचे अधिक विकास की है।

pur del for quite: flete me weit feliper काले रिकामक शास काले हते। उत्तर स्वयंत क्षात्रेकारम् से पोर्ड क पर्वी, प्रश्लीको से जालगी और french if wis yet the skill and frestrament उन्तरकाराजेंगे एक-क्रिकें पुजीवें स्में सुविक्यक स्था-सहोध्ये हुरसूर्यः सामोद-समोद स्वर यो से । सही समय जिल्लेका कर-नर्गते प्रथ समेके पूर्णको पूर्णी हा क्रमें पत्नों का निवासी । वे केनी सराव पीवार नवेंने बेब्रेस हे जो हे । अपनी अभिने कहे हो थी । मेलकेक्सल एक्टि पहरे है है क्रान्त्रेक्ष है को और अपने कानमें उठका क्रिकेनको पास मा गर्ने । से इसने बारवाण हो गर्ने में बिं उन्होंने किया कुछ क्षेत्री-विकारे विश्वेतनाओं स्वयं पताह रिली । सुन्दरे कुनी कुन भवाक और उनसुन्दरे मानी हान । वे केने कारेरिक कर, बन, नहें और अनवारें एक-शर्मके कर व में । इस्तिको स्थापन्त होन्या सामाने ही गमानी सामे लने । सुन्दरे बद्धा, 'जरे । च्या से मेरी वर्ती है, तेरी चानी हरती है।" अनुबने कहा, "वह से मेरी पत्नी है, सुबसी कारको समार है।' हेनों ही अपनी-सपनी महापर नकाई को और 'हेरी नहीं देवी' कड़कर इतका करने लगे। को को अकेको केचे अवने केव और सीवर्तको पूरर गये। गयाई की और पहले मेरे हतता हम प्रवाह है, यहने मेरे हतता हान प्रकार है, ऐसा नको हर केने एक-इलोस कु को। केनोंके करीर क्यारी सम्बन्ध के गर्न । कुछ ही हम्मोर्न केवी पर्वकर अनुस पृथ्वेचा निक्षे पूर् क्षेत्रको ग्रेश काळी ग्रह हार देशका करने सभी की-पुरूप करायाने कर गर्ने। हेरत, महीं और एमं प्रकारि हैलोजनको प्रक्रिक को और को यह का दिया कि किसी की क्यूक्टी दक्षि ख़कर क्षमिक हेलाक पूर्व दिन स्पेन्डे र हमाने कर निरम् रांताको जनाब देख हे गये, उद्धानी सन्ने रवेकको क्यों को ।

अर्चने वह-वाश्वनकः । पुत्र और असून् एक-क्षारेको अस्तरमा विके-निक्ते एका एका प्राप्त, यो बेह से । परेह एक भी का देनोंकी कुट और विवासका फारन करी। बेक कुरुलेनोपर असिक्स अनुस्ता और बेह है। इस्तीनो वै गुजलोगोंके का बाद कह रहा है कि इस ऐसा निका करा हो, fond finde men gerbild grap gibm nich अस्तर ही न आने र देशने जन्मधी पता सुरुपर वान्यवीन अंत्या अनुनेतन किया और उनके सामने ही यह प्रतिहा की कि एक निर्मात सरकाय हर एक व्यक्ति पन क्रेम्बे रोपे। का एक को ईस्टोके तथ एकको हेक, का हरता पर्या पूर्व न राज्या। यह बोर्च पर्या पूर्व प्रकार : क्रिकी अध्यक्षी पूर्व भूती पर समी।



के स्थानकार के लेन के जो प्रकृति हैंगा पाद गर्नाव कर्ना द्वार क्षेत्र । पाद्यांके निवस कर निम पार्क स्थानके सम वाकि को गर्ने। क्यांच्या । यहे काला है कि कालांगे ईन्तरेंड सारव

## नियम-पक्षके कारण अर्धनका वनवास एवं उल्लंधी और विकासदाके साथ विवाह

नियम करावर वर्ष करे रही। उन्होंने अपने प्रारोशिक कर और अवक्रीकृतने एक-एक करके एउटलोको कहने कर शिषा। हैन्हें सर्वाके अनुकूत रहते। प्राच्या को प्राचन बहुत संदुष्ट और सुनी हुए। में कर्य-तुरता प्रकारत प्रकार मनते है। उनकी वार्षिकताके प्रकारते कुलबेदिगोंके केंद्र भी रिक्टने कर्ता ।

एक विश्वती बात है, सुदेरोंने मिली प्रवासको गीर्ने सुद हीं और रूपें रेकन पानने समें। अञ्चलको कहा होना अन्य और व्य इन्हासमें अवन प्रव्यांके सामे काम-अवन मतरे तथा। प्रक्रमरे बढ़ा कि 'प्रमुख । इस्की ध्रम्भरें सुराज्य और हुए सुरेरे केरी औई प्रीनकर वस्त्यूर्वक देखें क यो है। हम ध्रीकार अर्थे कामनो । जो एका प्रवासे पार नेकार भी जाको प्रक्रमा ज्ञान नहीं बरता, ज्ञा निकृत्वे क्यो है। मैं प्राह्मण है। पैनरोक्स किन कहा भेरे कर्वक करा है। उसे र्रोपत है कि इस समय तुम पुत्रे प्रतिको नेरी मीओबी एक करो ।' अर्जुन्ने अक्रमाद्र करून-क्रमा क्रमाद करें बहुत

र्वतन्त्रकार कार्य है—अन्तेका : काव्यक्रमेप ऐसा : विकास : परंतु कार्यः सामी अनुवार का की कि किस कर्ते कता पुनिन्तित स्वेपकेके पान की पूर थे, असे करने अन्ते सक-क्रम से । विकास पूर्वत अर्थन का परने नहीं का प्रस्ते थे। एक और फीट्रिक्ट निकर, क्षारी और प्राधानकी करण पुरस्त । अर्जून को असनेवसमें व्हानने । उन्होंने खेळा कि 'उन्हरूपक योगा सीतावर अदि बोह्या येत विद्वित कर्तक है। की में प्रस्की अंका कर देन से एकारों अवर्ष क्षेत्र, इक्केनोकी निष्ठ होती और यस भी सरोला। इसरी और प्रतिकार्णन करोती भी कर सरोबा, कर्मा करा कोच । असी कर है। मैं प्रक्रमधी रहा करेना। कोई स्कारक हो से ग्रे । नियम-स्कूके कारण विज्ञान भी करिन जार्यक्षण कर्ये न करना पते, बाते प्राण है क्यें न बारे वार्यः इस दीन प्राप्तकों केवनकों प्राप्त करना केर को है और का की जीवनको पहलो को अधिक सहस्तको है।' अबीर सुका कृषिक्षेत्रके वरने निकानकेच कार्य नवे । समाध्ये अनुगति सेन्द्रर पूर्व कारण और जावर प्रमुख्यों केले, 'सक्क्योंका I जारी पाने। अभी ने एक अधिक एर जाति है। अभी

अपने शिक्षा पहुँचका है हुक विनेत्र हैंगों छहा भने। अक्टोरे ज्यार-स्थारण अधिकेषधी स्थारत पर सी। स्था-स्थापकी भनीर स्थानों स्था क्यांग्य पुँच पर्स ।

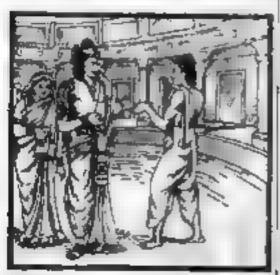


क्क दिन अर्जुन साल बारनेक रिन्ने न्यूरवीचे सारे । से pro-orier work your works that was floorabilitation ने कि जनकार सर्दिने कार्यात्म होवार उन्हें चान्ये जीवर पृत्तिक क्षेत्रक और अन्तर्भ प्रकारको के पानी । अर्जुनी देशा हैव को जोन और उन्होंना है का है। उन्हेंने साने हता face are arbitral new unit wearen night बुक, 'सुन्दर्ग । इस कौर है ? दूस ऐसा सबस करके चुते रिकार देशनी में अपनी हो ?' अनुसीने कहा, 'में देशका चंत्रके कोरण करको करना अपूर्ण है। मैं आको हैन करती है। आर्थाः अधिनिक नेथे कृतते गति वही है। अस्य मेरी ज्ञानिकाम पूर्व क्रिकिट, पुत्रो प्रवेचक स्थानिके (\* अर्जुक्ते) प्तात, विके । की कर्नराव चुनिवीरको अञ्चलने अरहा करिए स्क्रायनंत्रा नियम के स्वय है। में स्वयंत नहीं है। में हुनों ज्या करण पाइन के हैं, पांचू की अवस्था कभी किसी प्रवास असमञ्जयन नहीं किया है। मुझे सुरुष्ट बार में सर्थे, की वर्णका रहेप ने हैं, ऐसा है काम दूरों कामा वाहिये हैं क्युकेरे बढ़ा, 'कायारोन्चेरे क्रीयहर्क मिले को प्रयोक कारारी थी, को मैं जानते हैं। प्रश्नु यह नियम क्रेक्ट्रिके देख वर्ग-कार कार्रेक रिये है है, इस सोकों में। क्या क क्ष्मिक रकेर नहीं होतर । एका ही कार्य-भार भी से भारत कर्र है। मैं पूर्वकर्त हैं, असके सबने से बी हैं। बाँद अप मेरी हका पूर्व की करेंने हो में का कडीने। मेरी अवस्था



भीवनका कहार कर नार्थे ।" कोई है हैतरे कहेनी कार्येकी वीकारते सुदेरोंको करकर गाँ**ए अक्रमको सीप छ**। मामरियोरि अस्तियो वहाँ प्रयंत्र यो, पुरुवद्रियोरे अधिनका किया। अर्थुन्ते पुनिर्देशके फार पाना कहा, 'धार्वनी | मेरे अरमोद्र एकल्यपुर्वने व्यवस्त प्रविद्या गोवी है। (मारिने पुत्रे क्या परिवा करवार करवेची आहा क्षीत्रे ( सर्वतिक प्रात्मेन्द्रेने हेला नियम का कुला है।' क्रकारक अर्थनो पुरते ऐसी कार जुनकर पुनिर्दार क्रीको का गर्न । क्ट्रोरे व्यापुरू केवर कर्युओं बहा, 'सेवा ! ची इस मेर्ब बात करते हैं से मैं को बहुता है, सुने। की हुन्ते रिकारक विकास की है हो उसे में इस्त करता है। मेरे अपानकार्य असे अविक भी द्वार नहीं हता. हम्मे से बहुत रूपा पान विका। यह वर्ष प्रीके राज वैदा हो हो मही होते. महीका कारा अन्यान नहीं है। होता वर्षा होते. प्राय केंद्र है से वहाँ को व्यक्ति को साथ साहित है। क्यापास्था कियार होड़ हो । य हो हुएहो वर्गका होन हुन्ह 🖣 और न तेव अस्तान (\* अर्थन्ते सहा, "साम 🕏 बहते 🖟 कि वर्ग-वस्तरों कानेकवी नहीं करने कहिने। है एक कुंदर पंच-क्य प्रकृत है कि अपने कर प्रतिक्रमों कुनी भार्वे नेतेगा।' अर्थुनने करणात्मी वीक्र की और सम्ब क्षेत्रक कावार करनेके जिले पात प्रदेश अर्जुनके साम बहुत-ने के नेरहाने पर्या, सम्बद्धान्तर, प्रकारत करी प्रकृष, करायका, कराया और विक्रमीचे पी परे । प्राप्त-स्थापन प्राप्ताई होती । उन्होंने सैक्ट्रो पन, द्योग, गर्व, कुम्मोर्ग, देव को बन्तके की किये। सरनेते आववा वर्ध-नोप वही होता, जार्च-प्राच्या पूजा ही होता। आप जुने जाय-दान देवार वर्ण अवर्धन प्रतिविधे।' अर्जुनने अनुसेकी जाय-दानको वर्ण स्वयुक्त अवनी हवा पूर्व वर्ष और प्राच्या वर्षों हो। हाले हिन वे व्यक्ति शिवासका पर दिना कि 'वितरी की जायका प्राचीने आवाले क्या नहीं होता। स्वयं व्यव्यय आवीत संवीत हो अर्जुनने क्यांकी स्वयं वर्षा। अर्थायका, वर्षिक्तकी, पृत्रप्ता अर्थि प्राचीनोंने काल करते, जाविश्वेति संवीत संवीत विवाद करते रूप्यांचिति वर्णा करते, जाविश्वेति संवीत संवीत विवाद करते रूप्यांचिति काल करते, जाविश्वेति संवीत संवीत विवाद करते। सर्वीत काल प्राचीन वीति संवीत विवाद क्यां स्वयं स्

अर्थुन अर्थेक सर्वकार होका समुद्रों विकार काके-वाले मणितुर जूने : व्यक्ति काम विकासक को कार्याम थे। अर्थे अर्थोंकुक्ते कामान काम विकासक का। एक हैं। अर्थुन्यों हुई कार्यर पढ़ गयी। अर्थेन सामा विकास कि प्रा क्योंकी राजकुमारी है। और काम विकासकों का कामा विका—'राजर् । मैं कुम्पेन कृष्टिन है। अरथ कुम्पे अर्थ्य विकास विवाह कर विकिते।' विकासकों कुम्पेन क्योंक



कारताक कि 'मैं पानपुत्र अर्थुन हूँ।' विश्वकारने कहा कि 'भीवार ! मेरे पूर्वनीये प्रमाहन जानके कुछ क्या है को है। अपूर्व मंत्र म होनेवर का करवा करके देखांकि। व्यक्तिको प्रमाहन करके देखांकि। व्यक्तिको प्रमाहन करके देखांकि। व्यक्तिको प्रमाहन करके हात कि प्रमाहन करके हात है। व्यक्तिको प्रमान के प्रमान करके हात है। व्यक्तिको प्रमान के प्रमान करके हात है। व्यक्तिको प्रमान के प्रमान करके हात है।

वंक्षणे कैया है होता जाना है। मेरे यह एक है कामा है, हो। मैं पूर ही उनकृता है। इसका मैं पुरित्यक्षणेत अनुसार निवाद करिया, जिससे इसका पूर्व मेरा मृतक पूर हो काम और नेया नेवाक्षणेत करे।' अधूनने राजको कर्त गुरू हो। क्रिक्ट्रिक निवाद दूसरा। पुर होनेवर अधून एकाड़े अनुसार नेवार किर कैनेकालके जिले करा बहे।

केला अर्थुर व्यक्ति काला स्ट्राके कियारे-कियारे अन्यकार्थि, हो भारति, पीरवेपार्थि, कारकारोपी और कर्मकार्थकी को। इन सेवॉक करके क्रिन्ट्री इस्ते कार की करों थे। अर्थुनके पुरनेकर प्रस्तुय हुआ कि कार्ये mb-mi me unt 2, mi unterfeit Seine unt fie क्रमीक्रमेश केंग्रामेक थी अर्थुको स्तिथातीचीने भागार सार किया। का कई माराने अर्थनका मेर कार्या, का मे को अंत्रात कर से साने। पंद का समय पढ़ को निर्देश कार को कि का कर कहार कुछ प्रदर्श अवस्थि करने क्षीत्वा क्षेत्र पर्या । अर्थुओर पूर्णिया अन्तराने बेरायमा विक में कुरेन्सी जेन्सीवर्ग करती असर है। इस बार है अन्त्री पार प्रतिनांके साथ क्रमेन्सीके करा पर की वी। कोरों क्या क्यांके क्यों क्यांके के अप अवक प्राप्त क्यांके कियो कारक के क्या भी कुछ, पांचु उन्होंने ऑक्ट्रफ प्रांत है किया कि 'पूर पाँची पत्ता प्रेमार की पर्वतान करीने को है देवर्ग कराते का बारका कि कन्द्रत अर्थुर पार्ट सरकर केने से डिलोर्न प्रमानेत्रीका प्रकार पार केरे, प्रार मोन हर सेवंनि भार होकर के सी है। असरे नेस से उतार का देख, जब नेते कर क्रिक्केश की उद्धार कर केलिये। स्कृतिके प्राप्तको स्थाप अस्तिको सामारीने कोई धन हो क ही नहीं, उन्होंने का अध्ययनोका बहुत भी कर दिया और उनके अन्याने पहलि एक मेर्च परवर्षन को हो गर्ने ।

व्यक्ति जोत्यार जार्जुन किन एक बार प्रतिसूर जते। विवादको गर्वते में पुत्र हुआ, जनका कम वश्वस्त्रम प्रशा गया। अर्जुन्ते क्या विश्वस्त्रमणो कहा कि जान इस स्कृतिको से प्रतिनो, निकार इसकी पूर्व पूरी हो प्राचा वर्षों विवादको भी पश्चिकानो प्रशान-नेक्सको हिंको पूर्व प्रनेती स्वास इसका अलेके किने प्रसुक्त क्रिके वर्षाने निकार प्रथा इसका अलेके किने प्रसुक्त किन विवादको हिंको प्रथा इसका अलेके किने प्रसुक्त किन

वृष्टिको समुद्धे सरस्यकार्त सेव्येची बास बारो असून बोहरी समुद्धे उरस्की रीवीची बात करने हते। बाद के उत्पादकोर्न बहुने, जब बनसान् औतृत्वसको नहीं उन्हें अस्तेचा सम्बन्ध निवन और उन्होंने उसी समय अपने परस

विता अर्थुनके वितानेके रिक्षे प्रचलकोत्रको च्या पर्ध । उर और नारायको जिल्ला आवक्ती बाद का नहीं, सेवों परावर गते निर्मे । कुछल-महरू, रीजेपाय और साके मारवर्ष सम्बन्धे विद्यारते पालीत हो। पुरू स्वयंके बाद होने दिया जिल्हा प्रतिका स्थाप स्तर्थ रहते हरते। वहाँ बीकुम्मके केवलेंने व्यक्ति ही तम प्रवासकी समान्य क्रं काने-बीने, सोने, कुलोबी सुविक्य कर रही थी। वहाँ चनमान् होन्द्रव्यक्ती ओरहे अर्थुस्का एकोचिन सन्धार और 🗒 हरक-संदेशो भगोरक्षण किया गया। राजको सोनेके समय अर्थन अस्ती पालकी करें प्रमादे के।

मार्थि एकर कार हेका केवें कि हाका को। anish mensik flet grounglik wers, spec, एक्टे--वर राज्य हिने पने ने ( स्कृतिकोंने को सामाने ) प्राप अर्थुनक स्थापन-कावार विका और समये प्रेयों), का - पूर्वने के प्रमान, बीकुम्पके कि प्रयोगों के उन्हें और केनी और चेंग्यकोर असार प्रस्ता अधिकार विभाग । प्रस्तान । अधिक स्वीतिने एक प्रस्ता ही सेने ।



#### सुध्द्राहरण और अधिमन्द्र एवं प्रतिविच्य आदि क्रमारोका जन्म

री,स्थानको सहते हिन्नकार् । एक कर वृत्रित, चीव । हैनो बुधियुको करा कु केवा । वृत्रियुको कृति साथ प्रश (तर्थ भागतः) हम अन्यारमा अ**न्यानेको एकते या और** । अर्थुनको शका कम्पीका का किया गया। यहाँकी याच्या कर-मनका जात के थे। अहर, सारव, यह, यह, विहर्क, हैं निकार, पार्थपपु, पुत्, निपृष्ट, साम्बर, स्थापीय, श्राहिका, बहुद, करान देश अन्य प्रकार स्थान स्थानी सामी-अभने प्रीत्योके राज्य सम्बन्धी खोना बात को से र नजर्म और प्राचीवन उसका विश्व समान को थे। नामे-बाबे, कार-समाचेको परेद सम अहेर राज्ये हाँ थी । इस स्थानने कार्यान, सीहरूम और अर्थन भी को डेमरे साथ-साथ कुर को थे। को संक्रमको स्थेत हुन्छ। भी औ। सत्त्री कर-सीर्ज मेवित होनार अर्जून एकतक आसी और हेकने रूपे। धनगर कुमने अर्थन्त्रे अधिकामधे सामार यह है। 'ब्रांसिकें को सर्वकारी कर है। यह का विकासी कि सुरक हुन्हें सर्ववर्ध कोची क नहीं अनोकि स्वाधी की अस्ता-अस्ता केरी है। क्षतिकोर्ने सामपूर्वक प्रसार पास करनेको भी नीति है। तुक्ते रिन्ने को कर्न प्रवक्त है।'

और अध्यक्ष बसोवें: ब्यानोर्ट पेतान्य वर्गान्य बहुए बहु । अवस्थान अनुसेवर विका । सुन्दे स्वेद आरेन्स बीकुन्स्री



भागवार् होत्रामा और अर्थनो यह साम्य कार्य अनुवरिषे । अधिनद मी । अध्यानि प्रकारीका विकार कार्य प्रा



क्यारी हारवाचे देश्ये स्थान हो, एव जनकर कवार अर्थुको भागपूर्णक क्षेत्रे व्यवस्थार रकते विका तीला और का पुरर्वापर रमने राज्ये प्रकारी और यक दिने। देखिक शुभावताला यह पूर्व देशका विकास हुए हाराइको कुल्यो सन्तर्भ को और महिना एक प्राप्त कहा । प्रत्याचारणे पुरुष्का कार्यकारण बेका क्यानिक सामेद विकास मह आवाल पुरवार शेवा, राज्यक और पृथ्वि पंत्रवेदि प्राप्त अवने सालो संस्थ-प्राप्त होदकर वहाँ इक्ट्रों होने रूने । सन्ता चर नहीं । वैनियोके मुक्तो सुन्तास्थलका नृक्ता कुम्बर कालोको अन्ति कर् गर्नी । उन्होंने अपने प्रत सरकारक कहत रेक ही निर्देश विकार स्थेतं एवं कोतने एका, सोर्त्तं करूप सौको रूपा, सोर्त्त लक्के मारे पुर चेज जेतने लगा, पुत्रको समग्री page होने सभी । बारप्रस्थीने बहुत, 'बहुर्वक्रियो ! श्रीकृत्वाची नार सुरे मिन हमकेर ऐसी करम्बूबी क्यों बार को है ? इस क्षित्रपुर्वते गरवनेका आधिवास क्या है ?' हरके कर् अनुर्वेत मेक्नले यह, 'नयर्ग । इसरे इस पूर्णका एक आणियान है ? पुष्पार विकासम्बद्धार अर्थुनका उत्तर सामार किया गया और उसने निवा पालने सामा, उसने हेव निया। यह रूपम नेसमा होन्यान कुल्या है। अलो साथ राज्य करनेमें भी कोई अवसी को है। दिए की उसने का समार करके हुने अवसानित और असाहा निरम्प है। आसा मह कर्म हमारे मानेका के रक्तनेके करवार है। मैं कह जह स्य सकता । मैं अनेतार ही कावत कुल्वेक्टियोंके रीजो कावत है। मैं अर्जुनकी बिटर्ड क्षम नहीं कर समातः।' काररावशी- ।

की वीरोर्निय काका सन क्यूबियमीने अनुकेदन विज्ञा । जबके असमें काकन् जीवमाने का—'अर्जुन्ने हमारे वेकक सकाम नहीं, सम्बन निज्ञा है । क्यूने हमारे अंककी



नाम राज्यान से उनारे महिरका क्रम केया है। क्योंकि को कांक्सी प्राप्त करते विकारी क्रमेंह था। इसका प्राप्त इक्टिक्ट केंद्र अनुकार पूजा है और पूजारे चौजा है। सुरक्षा और सर्वेशको जोडी जाता है सुन्दर होगी । जाताना जनको बंधाना और युव्यिकोषके कैंद्रिको साथा देखन गरत बोहान भाग, किएं अपनीर हो सम्बद्ध है ? अर्थुनको प्रीतना भी पनवान् र्वाचरके अधिरिक्त अप्रैर विकासिक विको कुम्बर है। इस स्वरंत क्य पुर्वति काल मोजुको पाल की एव और बोदे हैं। मैं क्षाकार है कि इस समय स्थानीय ब्रह्मोग न करके शर्मकोट का कर दिल्काने क्या हों। देन है स्तर है। कहें अर्थुर्ग अर्थको है हुन्कोगोंको चीह रिच्या और सन्याच्ये इतिरुपुर से क्या से क्यूनेक्यों सही सहरायों होगी। यहि उसमें विकास कर की काम से प्राथक पढ़ बहेगा ।' क्रम को मेंने क्षीप्रमानके स्थार पान को । सम्बनके साथ असून लोग साथे, को। प्रकारी सुरक्षके काम जाना विकित्तीय निवार्तन्त्रार प्रत्या हुआ। विवार्त्ता वाद ये एक वर्तन्त्र क्षानामें के और केंग समय पुजार क्षेत्रमें अर्थत किया। बाह्य वर्ग पूर्व होनेका है सुच्छाके राज इन्ह्राम्य और आहे ।

सर्वृत्ते नाराके साथ अवने को धर्म पृथितियो सरवीने नाराक करके अवस्थिती कृत वर्ष । क्रेजीने उसे क्रेयात नाराक दिन और उसेने उसे असा विकास सुन्दार स्वार रंगकी रेहामी साही महिनकर न्यानिनके केवरें रेनिकाली भारते। कुन्तीके बरण कुर्। सर्वाकृतुक्ती पुरस्कूको देशका



कुर्ताने आशीर्वाद दिया। सुरक्षणे श्रीवरीके के कुर्वार काइ कि 'वर्डिन ! में तुम्बरी इसते हैं। श्रीवरीके आवकार वर्णार गाड़े सभा लिखा। अर्थुनके अर कामो काम वर्णार नवाने अस्तानकी त्यार केंद्र नवी। का इस्तानों का कामान स्वेदान, वहराय, वहर-ने केंद्र क्यूबंधी, उनके कुर-केंद्र क्यूबंधा, वहराय, वहर-ने केंद्र क्यूबंधी, उनके कुर-केंद्र क्यूबंध क्यूबंधी, स्वाराय की मानानी इस्तानके किये कामा हैं। अर्थे सुधागमनका समावार सुन्वत मुसिसिस्ते न्यूबंध और स्वाराय कर दिया गया। करून और अन्याकी सुगन कार्ये कीर केंद्र करा दिया गया। करून और अन्याकी सुगन कार्ये और केंद्र नवी। श्रीकृष्ण और अन्याकी सुगन कार्ये पहुँचकर सबके साथ प्रधान-आसीर्वाद आहे जीरे अन्याकी

मगवान् श्रीकृषाने सुन्याकं विकासं उपलब्धने व्यूत-१व रहेन दिया । विश्विणीयारवर्णका बार बोहोरी कुछ पहुर सारविस्तित सुवर्णनदित एक स्वासं १४, अनुस देशकी कुणर क्ष्में क्षीत का हवार केंद्रे, एक हवार स्वर्णपुरित स्पेद रंक्डी चेड़ियाँ, सबी हाँ तेन जानकी एक इसल क्सिया कहरेचें, इब इकासे चेन्य स्वक बसियों, एक त्यन क्रेडे और ब्हेज्दे करहे कह कम्बल भी दिने कह दस घर स्टेना और रुक्त क्रमार नक्षमा हाची मिने गने । पुनिवृक्तिकी संपत्तिः क्ट पढ़े। इस होन समामान्यें कुरूत मान्येद-प्रमेश करने सने। प्राथमोके आन्त्रका दिकान न रहा। बहुरीही सी कुछ क्रिकेटक वर्ज स्कूकर हरकायुरी करे को । यांतु धनवान् श्रीकृत्या युक्त सम्बन्धे विस्थे अर्थुनके पास इनक्रमधर्मे ही रह मते। समय आनेपा सुच्छाके गर्पसे एक प्रत अपन हुआ, काका जल अधिकम् रक्षा गया , असके क्याचे अवसारम मुक्तिको का इका गीर्ट, बात-क सोना और पर, पर आविक कुन विका । अधियन्तु पानकोको, वीक्षणको और पुरवारिकोचो सहा कारे स्थाने है। श्रीकृत्यने उनके हम प्रस्तार सम्बद्ध किये । वेदायस्थानी बाद उन्होंने अर्जुनसे वन्त्रेत्वरे विका प्राप्त की अधिवन्त्रका अध-औशस हेककर अर्थनको बढ़ी जनकता होती । वे बहुत से गुणोर्ने ती प्रवाद संक्रमादे कुछ है।

हैक्द्रेंक्र पर्वते भी पांचे प्रमानेक हत एव-एक पर्वत जनका चीव कुत सरस हुए। अक्रमाने चुनिहिरते सहा, 'बार्ड । शास्त्र का क्यानेक कर सार करोने विकासको समा सेम, इस्तिये समा राम 'प्रतिकिका' केच। चीनतेनो एक सहय सेमका करके पुर करत क्रिक है, इस्टीको उनके पुरस्क नाम "सुनसोम" होना (" अर्थुको बहुत-हे प्रसिद्ध कर्म करनेके जनका स्वेटकर पुर क्षक किया है, इसलिये इस बालकाम नाम होता 'क्रुक्टम्' । कुरुबंहमें यहते प्रतानीक नामके एक बढे अताबी राज्य हो को है। नकुरू अपने पुरस्क नाम अविके अववर रक्तम बहुते हैं, इसरिये इस पुत्रका नाम 'इतानीक' होगा। सहदेखका पुत्र कृतिका बहुतारे जपह हुआ 🕏 इसरिको कामक नाम 'सुनसेन' होन्य :' धीम्पने इन ब्यास्मधीके शंभाग विविद्धंक कराने । बाह्यकॉर्न बेह्याठ समाप्त करके अर्थुको विका और पानुस बुद्धानी अवस्थिक आह की। इन स्म करोते पन्यवोद्धी बड़ी अलाज हाँ।

#### लाणव-दाहकी कथा

रिज्ञण्यकार्थ कार्य हि—कार्यका ! की सेंध हुन राक्षणों और परित्र कार्येते युक कार्यकारित कार्य स्थाने स्वार और अपनी आति कारता है, मैंसे हो जात कार्यका मुक्तिहरूमें एकाने प्रथम पाकर सुद्ध और प्रार्थकों स्थान आति कार्य स्थानिक हो गयी । जातार्थी कृति कार्यक्ष हो गयी, मानेका कोर्यकार हो गया । मेरे पुश्चिकों कियेत कार्यकों देशका मोगोर्थ के और कर बीवार हो कार्य है की ही समूर्त जात एका पुषित्रिकों क्षांकों आर्थका हो कार्यी । यहा पुषित्रिकों केशक एका कार्यक हो आर्थका मानि होते की वर्षक से कार्य को होते हैं कार्य से को अवकां अर्थका होते की वर्षका से कार्य को स्थानिक, जावक आर्थका अर्थका कार्य नहीं कोरता से ! मे की अर्थका कार्य कार्य कार्य, सेंसे ही प्रकारी भी । इस प्रकार कर कार्यक सामें केश सेंसा एकारतीकी समान करते हुए अस्तरकों सुत्रे से ।

एक दिए अर्जुनकी देशको परवान् सीकृत्य करेटक चुनिक्कियो अक्षा रेका प्रकृतके पान् पुनिन्तर बार-विदार बारनेके किये एके। वहाँ पर मोन्येकी मुक्त-शुक्रियाचे रिश्वे विद्यान-युक्ति सुराविता कर ही गयी थी। क्षा सम्बद्धिसम्बद्ध क्षम और और उन्हें विकास-स्थाने मीरा, नहरू और बोहरी साथ क्योंकी कुरकुर करि हे औ थी। परमार संस्थान और अर्थुरने वर्ड वर्ड अरायाने भाग अध्यक्षेत्रक कारन । हेले विश कर-ही-कर महसूत्र आसमीयर केंद्रे पूर्व से । असे समय द्वार क्ये प्रीय-कैनके हाहाज वहाँ कारियत हुए। क्रम्बा प्रतीर क्षम वा, आवे तकार पूजा सोन्ह है वा। जिल्ला विक्रमानांकी नहाई, मैक्स करो-के और करेंग्यर कामान कक है। इस बेकाई प्राथमको देशका सीवन्य और अर्थुर सा पन्ने हुए। प्रकारने कहा कि 'जाप क्षेत्रों संसारके केंद्र और और महापुरत है। मैं एक जहफोगी हन्द्राल है। इस सन्त्य मैं काच्या काने पता की हुए उद्यक्तेगीने सामने प्रेमकती विद्या प्रतिने अवना है।" भगवान् बीम्राब्य और अर्थुन्ने प्राप् कि 'अध्यक्षि पुरि: क्रिक्ट अध्यक्षेत्र अध्यक्षे क्रेक्ट है ? अध्यक्ष महिनने, इमरनेन कर्मके हैंन्से प्रवास करें हैं इस्तानने बहा, 'मैं अति हूँ । मुझे साम्बरण सक्तवी साम्बरणका नहीं । साम पुत्रों सही अब हैरियों, जो मेरे योग्य है। में ज़ायहर बनको महाच प्रात्तक प्रात्तक है। भारत प्रत्य पानों सतुब्द आप अनने परिचार और निजेंके सुम्ब स्वान है, इसमिने इस सर्वाद इस कार्यो रहामें तरफ सहस है। यान-कार में इस कार्यो जायने-



भी बेहा करता है, तन-का का पुरस्त करनमें भएएँ क्रेस के है और मेरी सनका पूर्व की हो करी। अन्य केमें अक-विकास कावारी है। इस्तिने आयर्तनोत्री सहकाती मैं इसे करा अन्या है। मैं आयर्तनोत्रे इसे चेन्यकी कावस करता है।

कानेकाने पूर्वा — वागकर् । अधिकेव कानेको प्राप्तियोसे को वृत्ते अपके क्षण कुरविता स्थापका करको वर्गो करमना प्राप्ति से ?

वैक्राप्तराज्यों सह—अञ्चेतर ! प्राचीन प्रथमध्ये पात है। एक वह 🗗 संविकारने और नामानी केलीव राजको अभिन्द्र क्या था। इन हिनों मैरव पहलेगी, बात और व्यक्तिक कोई एक भी सा। सार्थ को को पर सिन्हे। इतके पात कराते-कराते व्यक्तिय जाति करू वाते, कर पाते और वाफी-वाफी से अलीकार करके जले जले। परि राज्या का से कामा है करा । वह अनुस्थ-विश्व करके और सम-दक्षिणा है-वेक्ट अक्टबीओ असर रकता । अन्तर्य जब सामी जातान का करते-करते कर गये, तथ शक्षाने क्याब्रेके क्रूप क्याब्रम् क्षेत्रसको क्रास्त्र क्रिया और क्याक्री अक्षाओं कृष्यंता ऋषिके हात ब्यान् यह करवाया । यहले वाक को और दिन हो कब्रि आकार्य दक्षिया देनीवर रुवाने इत्यानीको इन्स किया। पूर्वास प्रस्त हरू। सन्त क्रेडीक अपने सरस्यों और पहिल्लोंके साथ कर्ग मिलारे । इस करें बद कांद्र ऑक्ट्रेंचे केंद्रे असक पाएँ पैनी थीं: इस्से उनकी पायन सकि श्रीण हो गयी, रंग फीका पर नमा और प्रभाव पर हो पना र सा असीयोह सारक प्रमात सङ्ग-अन्न वीरण पढ़ क्या, तम कार्नि इक्सानिक क्या कार्या सर्वाच की कि जान कोई ऐसा उसका कार्याचे, जिससे में बहुते की राज पाल-बंगा और स्वाच के कार्ये।' उद्यानीने कहा, 'स्त्रितिक ! पति हुए सरकार कार्याचे आप के से पुन्हरी अर्थाव और अर्थानं हुए हो जाने और हुन्यरी कार्याच की मिट जावगी।' वहांसे अवकार अधिकाने साथ कर पालका कार्यों अर्थनेयों बहुत की, परंतु प्रकार मंद्राक्यों कार्या में अर्थने प्रकार स्वाच की, एस प्रकार कार्या किर्मा होतार पुनर्गा उद्यानिक कार्य को उस्त अर्थने कार्यान् सीकृत्य और अर्थुन्यी स्वाच्याने प्राप्त कर कार्यान्य स्वाच कार्यान्य और अधिकाने क्यान-कारर साधर कार्य कर्मीक कार्ये करीं।

अञ्चलकेकारी अधिरेकारी प्रापंत सुरक्ता अर्थुओ क्का--'असिवेद । मेरे क्या विकासीकी काहे की है। क्रमें हुए में चुट्टों इक्स्प्रे भी क्रम्प समात है। क्रम् भेरे वाकुमरको सन्दान सन्दर्भकारा बहुत मेरे बार जो है और र का अवलेक कानुक सहार से कान हो है। एक भी से ऐसर मही है, भी पनेष्ट्र बाजांका बोहा हो सके। होक्सांक पह भी इस समय परेई ऐसा समा नहीं है, जिससे ने पुत्रमें साने और विकासीको पार प्रवेश सामान कर सामाने प्रकार इतको देवलेके रिन्ने कुटु-सामानिकी अञ्चलकारा है। का भीर कोकर इसरे पता है, सामग्री आर ग्रेनिये । अर्थान्ती क्ष्मणेतिक वाची सुरवार अधिकेको काश्मिनके लोकाका मक्तमार जारम मिन्छ। तुरंत काल प्रकट हो गरे। जाति कहा, 'आपनो एक होको असद समार, न्याचेन कहा और पामाचिक्रमूक काराने गरिवा दिन का दिन है, बह पीट युद्रो रोनियो तथा बाह भी द्विपये । होकुम्ब और अर्थुर च्या तथा पार्चीय बनुष्यी प्रकृत्यानो नेत सह चारी साथ रिन्द कोर्ग (' नरुको अभिनेतको प्रश्नेक स्रोक्टर को। रहोने अनुनारे व्या अक्षय सम्बद्ध और न्यानीय बहुद है हिया। नामीन पहलबी महिला अहलत है। का विक्री भी क्ष्माने बाद नहीं क्षमान और सभी क्षमाने बाद प्राप्ता है। काले चेन्द्राच्या चल, कान्य और कल बहुता है। यह अनेहरे ही स्थापी अपूर्णके स्थाप, स्थापीस और कींगे सोपारि पुनिय बचा प्रवंतिन है। सम्बा सल्पियोंसे मुक, सम्बंद रियो जानेन, पूर्वके समान विशेषका और स्वाबीत एक किया राम भी किया। उस रामने कर और प्रधानोह समान केव करनेकाने स्टेस्ट, सम्बद्धेते, इर ध्यूने इन् कवार्य-देशके केंद्रे मुते हुए थे। स्वया सुकानि अंदेने कर्मका कराने जिल्हारे विक्रिय क्या पहल की थी। यह इस फार अर्थको ।



व्यवस्त् । विकृत्यः और अर्थुवर्धः अनुमति प्रकारः स्थित्वेतने नेत्रेत्रण कृष्णनात्वा प्रदीन स्था व्यवस्त विकार स्थानकाः अवस्त अर्थित्व व्यवस्त्रात्व क्ष्यो वेदसर स्थानकाः स्थान अर्थित्व व्यवस्त्र कृष्णने स्थाने विकारते और विकार । स्था करके स्थानिकारों आर्था विकारते और विकारते सूर्व क्ष्या कर्या । वीर्त स्थाने प्रवास व्यवहः विकारते अर्थे प्रकार व्यवस्तिकार क्ष्या क्ष्यो प्रकार प्राप्तः विकारते अर्थे । व्यवस्तिकार क्ष्या क्ष्या क्ष्या प्रवास प्राप्तः व स्थान स्थानकार स्थानकार क्ष्या क्ष्या क्ष्या स्थानकार प्राप्तः स्तानी आम इस अधार क्ष्माने और सामने तानी कि असानी देशी-देशी इस्टे अस्तानकार जूँक नहीं। वेत्रामांके इस्टे कैन्सिकी होने एसी। असानी नहींने एसान होतार राजी वेत्राम वेत्राम इसके कार नवे और कहारे एसे, 'वेलेस | बना जा आन सामक आस्तानका अंकर की अस्तिनी । क्षमा आसी अस्तानका सम्मा का कार ?' वेत्रामश्रीकी कार्याद्य और आर्थनने अस्तिक होना और अस्तिनी का स्थानक कर्युक वेत्रामर कर्य कुछ सामक असाने आसी कार्योंके देखे किया हुए। क्यारी सामको सुर-के-सार प्राप्ता सामका कर्युक क्षमा अस्त आहे और



पहलब्दान्ति साम कालवी कंडी-कंडी काराई कालाने सले।
अर्जुन्ते सपने अरक-कंडिकको आपने कालांचे हुए जालवी
कंडार रोक ही, साम आवारम बालवंडे हुए हेल कि रख कि कोई यी प्राणी आसे निकरणार बाहर न या कारा : आ समय आपराय गक्षक कालांच कालें भी का। यह कुलवंड काल गया था। परन्तु आवार हुए अनुकंड कालोंके हेरिये कार न या स्वार । अनुकंड कालों को निकरणार क्यानेकी क्वेरिया की। यह पुस्ती खेलां हुए करके पुंक्तक निगार की गयी थी, परंतु औरका अर्थाय कर करने वीवमं ही पामने लगी। अर्जुन्ते ऐस्स स्वक्तम निकास करा कि अरका कर निव मन्द्र। इस अर्जुन्तक यह काली काली में उन्होंने अनुकंडको क्यानेके दिन्ते क्वेरी कालां और बूदोकी स्वेत्तर हासी कि अर्जुन इन्होंने इस केलेकी वान वान करने। अर्थुन कोचने निर्माणन को और मैंने तथा केन करने अर्थाणको क्रम्यून कुमी मिन्न गये। इस्ते पी अपने कीन्य अव्योधी वर्गाने अर्थुनको उत्तर दिया। उत्तरक वान पर्यक्त स्वारंगित स्वारंगित प्रमुखी क्षूण करने स्वारं । अव्याद्य करू करमानेकारे क्रमुखी क्षूण करने स्वारं । अर्थुको व्यावस्थालको अर्थुन किया। इन्तरक यह कम्मुखेर वह प्रमा। वान्युन निर्माणको क्ष्मुखे गये, वार्युन्य क्ष्मुखेर वह प्रमा। वान्युन निर्माणको क्ष्मुखे गये, वार्युन्य क्ष्मुखेर वह प्रमा। वान्युन निर्माणको क्ष्मुखे गये, वार्युन्य क्ष्मुखेर वह प्रमाण क्ष्मुख्य क्ष्मु

क रूप हेक-पुरुष्य देवरान प्रकार कोनानी सीना न 🐞 । के केवलनेकारे ऐरावत प्राचीयर प्राचार श्रीकृत्या श्रीह अकृतको और सेहै । उन्हेंने जनकातीने अपने बहरता हवीन विका और केम्प्राओंने विकासका प्राप्त कि 'कार्या-कार्य केनो भी जाने हैं। पत्नी वेस्तापनी अपने-अपने अब ब्हाने । करणको कारकाय, कुनेस्ने गांव, बसलो पारा और विशेषा का । इसर मनवान् ओकृष्य और अर्जुनरे भी अपने बाहर कहाने और निर्माणको साथ प्रदे हो गर्ने। इस केवे विकेशी पान-कार्यंत सामने इन्हर्यंत्र देवताओवी एक व कती । इसके मन्तरकारका एक विकास कारका आईनार है, करनेकी केंद्र की, कींद्र इसके कहते हैं किया बार्गाओं चोटने का इकारों सुबई हो एका का । जनके टुकड़ोंने काव्यान काले कुम्ब, प्रकृत, सार, कार, रीक, क्षती, सिंह, मृग, की क्या अन्यत्य कर यह और बड़ी कारण हो नकरीह क्षेत्रर जनने रुने । एक सौरमे साग समझो यो नाना जाहरी ही, इसरे ओसी फल्बल बीक्स और अर्थन्ती कार-कर्य । कोई व्यक्ति पास न स्थार । श्रीकृष्णके बाह्र और अर्थुनो क्योंसे कर-करकर बीव-बन्द सहा है है थे। कारत अभिनेति शास्त्र तीकुमाने तत समय समय कम्मानक प्रकट कर दिया था। देवता और दानक सभी उनके वैकाको देखका दंग सा रहे ।

कर समय इसको सम्बोधन करके प्रस्तिहर व्यक्तिरे अन्यत्रकारके हुई कि 'इस् । सुपार किर राज्य कुरक्षेत्र करेके करूक इस पर्वकर अधिकारको कुछ गई, यह गंधा है। हुए अर्जुन और अधुक्ताओ कुछने कभी किसी प्रकार की बीच सम्बो। हुई सम्बास पाहिने कि ने सुपारे किर-प्रोक्षित नर-मरायम है। इसके प्रक्रि और सरावन १ इस अधिनक्ष्माने केवल का प्राप्त कम समे-- असरोन सर्व. उसीय है। ये समके रिजे अनेप है और देखार, असूर, पक्ष, प्रकृत, गमर्थ, किसर, पहुच्च तथा सर्वादे सम्बंद क्रिके पूजरीय हैं। तुम देवताओंको लेकर नहींसे बले काले, हरीने हुन्द्रारी प्रोप्ता है। इस अवस्तरनर प्रत्यान करना यह देखें ही रच रक्ता है।" आध्यसम्बद्धारे सुरक्तर देवरात इन्ह स्रोप और प्रेमों क्षेत्रकर मान्दें और नहें, देखाओंने की अपनी होतको ज्ञास करका अनुगयन विकार केन्य्राकोची करू-प्रोंको को वेसकर फलाद बीक्स और अवेसे की-भारि को। सम्बद्धा का अन्तर्यक्षे करको उन्त कर-कर करने सन्त ।

पामन् औक्रमने देख कि तम क्रम पश्चक प्रवासके निवास-स्थानके निवासका भागा या यह है और अहि मुर्तिमृत् होकर कार्यके रिल्टे अस्ता चीता का स्थ



है। अहोरे का हानको पर इसनेके रिने यह स्टामा । श्वाने बाह्य और पीछे बावकानी जानको देखकर बहारे से क्य राज्य क्रिक्टॉनरविष्ट हो जन्म, गीके सामे कुछ सोकारर पुरुषरा—'चीर अर्जुन | में सुद्धारी करवारे हैं। केवल हुनी वेरी रहां का सकते हो।' अर्जुनने कहा, 'हवे नव।' शर्मनको शामकान करते देशका चनका औरमाने 🖦 रेफ रिना और अधिने भी उसे पान जा किया। पान क्रकारी था। हे गयी। का बन पंत्र दिनका जनता का। क्य द्वारा और बार प्रार्ट पत्नी। लर्ड पश्चिमीने निव वक्काने और का चीववोंने सबसे यह वरिशानिने अधि-वेकाली सुनै कावे अपनी श्रामक बचन हे रिव्य वा।

अधिकेने परमान् संकृष्ण और अर्थुरकी सहस्रको उन्हरित होकर पालक भागों कर करना। अरहर **ब्याजने करने अने सम्बंद प्राप्त प्र**ाप्त हो। जही समय देखाय इस की केवलाओंके राज्य अन्तरिक्षते वर्षों करे। उन्होंने श्रीकृष्ण और अर्थुनो कहा, 'अवस्थिनोर्ने यह ऐसा कृष्णर व्यार्थ विकार है, को देख्याओं के रिके भी असाध्य है। में कुल्लेप्टेन अस्य है। इस्तिये आय मनुष्टेके सेन्द्रे क्रांथ-से-वृत्तेय कहा थी कुम्मी मीन समते है।' अर्जुन्में बाह, 'मुझे अपन पान प्रकारके अपन ने ग्रेमिनो (' इसने कहा,



अर्जुन । जिस समय हेवाचिदेव पहलेब तुमरा असी होंगें, का समय क्याने करके प्रयासके में तुन्हें अपने कारे आह है हुँच । मैं कारक हूँ कि का रूपय कर आयेग ।' परावार् बीकुम्बने बहुत, 'हेमराम ! अवद मुझे यह वर रीतिये कि वेरी और अर्जुनको निक्ता कुल-कुल कहते कव और कभी न हो।" इस्ते इस्ता क्षेत्रर कक्षा, 'ज्ञामस्'। वेनताओंके क्रमेके कर अधिक जीवन्य और जर्जुनका अधिनका कर्मा वर्त गर्ने । जनसन् स्रीकृत्य, अर्जुन और पन दारम वयुक्के प्रवन पुरित्या सावर बैठ पर्व ।

# संक्षिप्त महाभारत सभापवं

# पयासुरको प्रार्थना-स्वीकृति एवं भगवान् श्रीकृष्णका द्वारका-गमन

न्हरायको जनसङ्ख्य नरं कैव नरोठपर्। देवी सरकाती ज्यसं ततो जयमुदोरवेश्॥

समायीय वरावणास्य करवान् सीवृत्य, उस्के निक सत्ता तराव अर्जुन, दोनोकी सीवा अवट करनेवाली धगवारी सरवारी एवं अर्थके कराव कारवान् कारवाने कारवार धरके आसुद्दे सार्थातपर कियम प्राप्त करानेवाले सहस्राप्त प्रस्तात पाठ करना वालिये।

वैत्राध्ययनम् सहते है—जनपंचय | अब क्यासुरवे भावार् श्रीकृष्यके यस के हुर अर्जुनकी कर-कर जनस की और इस सेक्स कुर वर्णने कह-'बीसा अर्थन । बराधार् औकृत्या अस्तर चाह कालका जुले कर हाराना चारते थे और अफ़िटेब चारते से कि इसे नत्य वारी। आपने मेरी १३८ वर्ष । ३०० कुमा करके कामगुळे कि वै आपको क्या सेवा करो। अर्थुनो बदा—'अनुस्थेत । तुपने येरी रोच्य स्वीच्यर करके बड़ा ही रमकार किया। तुष्प्रस् अञ्चलका हो । इसलोग सुकार प्रस्ता है, तुम भी शायर इस्ता जुना। सब तुम का समने हो।' नकसून्दे कहा-'कुनीवरून । आयवा कहना जाय-वैसे बेह पुरूषे अनुभव ही है। परंतु मैं बढ़े जेससे जानकी कुछ सेव्ह बारण **ब्राह्मा है। में कुल्लोका विश्ववर्ण है, प्रकार दिलगी है, ज्या**र मेरी सेवा जीवार कॉविये।' अर्थुन्ने कहा— 'वकसूर | हम देशा सन्त्राले हो कि मैंने प्राप्य-संकटने हुन्हारी पक्ष की है। ऐसी जनरबार्वे में तुम्हरी कोई सेक स्वीकार जा धर शकत । साम हो मैं तुन्हारी अभिरमधा भी जा नहीं करना प्राप्ता । इसलिये हुए धनवान् औक्रमाकी कुछ सेना कर है। इसीरे मेरी सेवा हो जानगी।'

वय प्रवासुरने करवान् श्रीकृत्यसे प्रार्थक की, वर उन्होंने कुछ संगवतक इस बातरर विकार किया कि क्यानुरसे वर्धन-सर बात्रय होता जातिये। उन्होंने जन-ही-कर निकास करके क्यासुरसे कहा—'क्यासुर ! तुम हिल्क्योमें बेह हो । वहि हुए कर्मस्य कृषिक्षितका क्रिय कार्य करना ध्याते हो ले अपनी क्रिके अनुसार अब्दे हिस्से एक समा बना से व्य



सामा देशों हो कि बहुत जिल्ही की देशका उसकी नकता र का नकों : अपने देखता, मनुष्य एवं असुरोका सम्पूर्ण काम-कोशन जकत होना वाहिये।' समकन् अधिकातकों काम सुनका कास्तुतको बड़ी अस्ताता हुई। उसने केसी हैं साथ करनेका निकार किया।

इसके कर पनकर औकृष्ण और अर्जुनरे का कर सर्वत्यर पुणिहित्से कही और पवासुसको उनके पास से गये। पुणिहित्ये अस्त्या कथायोग्य सत्तार किया। पवासुस्ते वर्गरान मुनिश्चितको देखोक निर्मात गरित सुन्ते । युक्त दिर गर्म दशकार परावर्ग, शीकृत्य और सर्वृतको सामाके अनुसार संध्य करानेक स्थानको निर्मात निर्मा और किर पूर्ण पुरूषि स्थान-अनुसार, सहस्थ-ग्येकर एवं दार आदि करके सर्वपृत्तानमा एवं किया सम्बद्धा निर्माण वारकेके किये दश स्थार प्राय ग्येसी करीन नाम गर्मे।

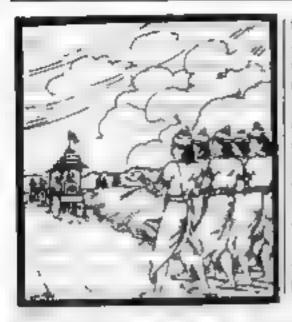
कार्यक्य । यात्राची भगवार, डीक्स्म हो पान कुर्वक है। पाणकोंने को केली चलकात् बीकुन्तका सावार विका और वे कुछ दिनोत्तव पढ़ि बढ़े सुपाने हो । अन उन्हेंने अवने नित-पानके दर्शनके रिन्ने उत्तक क्षेत्रर क्षात्रा पानेका विकार विकार और प्रत्ये क्षेत्रे वर्णतम मुनिश्चरणी अनुसर्क प्राप्त की । विश्वकत्व सरकार् क्षेत्रकारे अवने पुरारे कुलोके परकोंने किए राज्या प्रथान किया और अपेरे उनके कि देक्कर जो क्रम्मे तथा विन्तः। क्रमे नार भगवन् श्रीकृष्ण अवनी भाँति सुध्यक्षोः यस नमे । ३३ इतम जेनसङ् क्की नेवोंने असि काकार आये थे। सामानी असी यकि महत्यांको संभानको इन्तको वहा केहेरे सम, उत्पेकन्यूर्ण, ब्रिट्यारी, युक्तियुक्त वर्ग अवस्था प्रकारिते अवने प्रातेन्त्री अध्ययनात् सम्बद्धाः 🐠 सीलान्यको सुन्दाने भी नाग, निया सामिले बढानेके प्रेरं प्राचेत्र विने और अपने पाई बीक्स्प्राच्या समझा सामेंड जो प्रमाम किया। परावाद अविकासने अपनी बर्वेजसरे प्रसार करके पानेची अनुवति की और मिर पूर्वेदील बीचके चार गर्वे । परवास परमाधा सीकामाने पूर्वे क्रिको नकामा कर्का श्रीपर्देश्वे श्राप्ता वैवाक और उन्हों अनुनी रोका कक्केंट पास आहे। अपने कुफेरे चाई सच्चानेक ताल होक्याकी मैरी ही क्षेत्रन हुई, जैसी ऐक्सओंके बीच देवराय हुनुबंधे ।

भगवान् श्रीकृत्यने पात्राके सामा किये वानेवाले वार्व प्रताम विश्वे । अपूर्ण काराविशे निष्य क्षेत्रर शत्रकृत्य वारव विश्वे और पुष्पचला, गया, नामकार आविशे कृत्या वृत्वे साक्ष्मणेती पूष्प की । जब सब काम सम्पन्न क्षेत्रकृत्यन विश्वा की पहारकी कृत्वेद्वीयर आवे । साक्ष्मणेने कृतिकायन विश्वा और अपूर्ण करके प्रतिकृत्या की और अपने क्षेत्रिक क्ष्मण सम्बद्ध हुए । यह सीक्ष्मणी सब मानकृतिहासे विद्यास काल, गहा, च्याह, सरकार, प्राह्मिनुक आहि आयुक्तिसे कुछ का । अपने जैन्द, सुनीय आहि नामके मोने जुले हुए के और

प्रस्थानके समय विकि, न्याम आहि भी महासमय हो के वे श रकके करनेते पूर्व राजा चुकिया प्रेमते जाना कह गये और कामानुके जोत कारीय दावकाओ हटाकर उन्होंने सम्बं केड्रोकी राजा जाने हाममें से स्वै। अर्जुन भी कारावार जार राजार सम्बद्ध हो नवे और अपने हाममें के बैकरकी सोनेकी डोड़ी प्रस्कृतन को हाकिये और हरवने राजे। मीनसेन, महास,



नक्षेत्र, ज्ञारेकर एवं बुरवारियोधे साथ राज्ये गोके-पेके काने हुने । का क्रम्ब अपने पुन्तेरे प्राक्तिक साथ प्रग्यान् क्रीकृत्यको इसेक्ट ऐसी मनोहर हुई, माने अपने प्रेमी जिल्लोके काम कर्न पुरुष्ट्रेण है जान कर से हो। अर्थन भगवानुके विक्रोद्धसे बाई ही व्यक्तित हो रहे थे। भगवानुने उन्हें ब्रह्मके रूपायन करी काँडम्सासे व्यांच्यी अनुपति थे. कुरिक्षीत और पीन्सरेक्का सन्दर्भ किया, वर स्वेगोरे क्ये अपने इट्यां रूपाय । स्कूत, स्वर्थने उनमे परमोने ननमार किया। सन्तान रह ये कोड का चुका कर क्यान्ते हुति प्रधार पुनिश्चिमधे सीठनेक रिप्ने राजी विका और वन्त्रि अनुसार प्रमोह चरण कुळा नगरकार विजाति कुष्णियने उन्ने साम्बर सिंग श्रीय और उनको जानेकी अनुमति हो । कनवान् श्रीकृष्यने उससे पुनः त्यैदनेकी प्रतिक्रा बी, बिजी अवस अनुवार्धि राज करको श्रीटाया और विस बरकाकी काम की। अपनेक रच दीसता का, प्राथमोर्क के उन्होंको और एक्टब्स अने थे और वे पन-हो-पन उन्हें पेक्रे करने हो। अपी राज्यतीक प्रेम्पूर्ण मन बहुत ही क



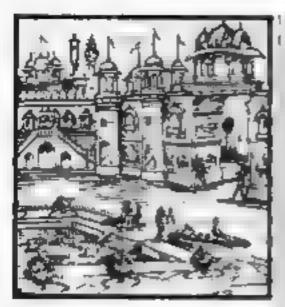
विकास प्रामित सरे सीकारतमेस प्रामान् सीकृत्य उनकी आंकोरे मोहान हो पर्व : सामानीक नाने कोई पार्व गर्ह आ : प्रित्र पर्व उनके अन्यद्धे समझ कृतियाँ बीकृत्यको और हो बहु आ गुड़े भी : उनके माने सानेवर में कृत्याप सीड्यार अपने प्राप्ति पाने आहे । प्राप्तान् सीकृत्यको परवृत्ति सामा प्राप्ता सामानिक अधिरिक प्रमुख्यी और सामानिक भी हो । पुत्र ही इसको प्रापान् सीकृत्य को अधिनारी हरका पर्वृत्त कर्ता प्राप्तान अधि प्रमुख्य को अधिनारी हरका पर्वृत्त कर्ता सामानिक अधि प्रमुख्य को अधिनारी हरका पर्वृत्त क्षाना विकास । प्राप्तान्ति सामानिक प्रमुख्य विकास क्षान प्राप्ता सामानिक । प्राप्तान्ति सामानिक प्राप्तान और अपने पुत्र प्रमुख्य सामानिक अपनार प्राप्तानिक अधिनार्थ अस्तिव पृत्रावर्थिक अस्तिक अनुसार प्रवित्तानिक अक्षाने अस्तिक अस्तिव

#### दिव्य सभावत्र निर्माण एवं देवर्षि नारदका प्रश्नके क्यमें प्रवचन

पैतानकार्यं कार्ते है—कार्यकाः । भागाम् श्रीकृष्णीः प्रकार कर वानेवर क्यासाने अर्थनी कहा—'बीर । वे इस प्रथम आवारी आहा रेगार फैल्माके उस्त केवार केवार कार्थ कहता है। नहीं निव्हारके समीव देखीरे एक का किया था। वर्षों की एक प्रविश्व पार क्यांक का और पह हिस्सम चुक्कांबरी स्टबामें एका नवा दा। वहि यह सकता बार्रे क्षेप्त से उसे लेकर में जीव की पार्ट स्वेट अवस्थि। पार्ट प्रस को निवित्र सार्गायक, पुरस्त को बनावा कर की है। क्राच्या कोनेके तारे अहे हुए हैं। कृष्यवानि सक्रुव्येका स्थार बारके कर भए शिक्षी कोट सक्तेकरणे वारी नक वहीं पत होदी है। का शासी गहओबी तुरमाने महिनेन है। का आयके माध्यीय अनुको स्थान ही बीवसंबंध केया होती। केवरत नामका सहा भी नहीं है, जिले ततकर में अध्यक्षी भेट कारतः।' या कामार मनापुरने ईवान कोनावी पास की और यह पूर्वीय कियुसारक स्ट्रीय नेवा : क्या अधीरधने गालकोके अवसरमध्ये सिन्ने वहीं तुपत्रव की नी और प्रवासतिने जही सक्षमार सी यह किने में ! केराम इसने नहीं हिन्दि प्रश्न की थी। वहाँ सहको प्राची परमार् संपन्नी कारान्य करते हैं. को या-करनाय, ब्रह्म, बार, विन स्कूक कार्यंगी बीत करेगर का कक्षे हैं और उस्ते करवार श्रीकृष्णने भी व्यक्तिक यह करने भी कुर्णनीयत

t women afer blieber um fiert er t

क्रमंत्रक ! क्रम्पुरने वहाँ क्षमंत्र सभा क्रमनेवी सारी सामती, पूर्वेक पक्ष, देवला क्ष्मु और अवस्थित पर अवसे अधिकारमें का रिवा तथा कारी त्येत्वार पुणिहित्ये रिवी विक्रिकेश्वर महीताक दिल्क प्रत्याक्य विकास विकास । यह क्षेत्र पह भीन्द्रोक्को हमें केवल प्रश्न अर्थनको क्यार दिया । कर इक्क्ष्मी जारीन कार्रिको सीची होचा करिन उससे थे। यह जाना क्षा कृत्य कृत्य राज्यी-पीडी की । क्षाने प्राथ्यी नहां राज्यका को है। बह देशी बहुर पहली, पान्ने सूर्व, जाति अवका क्याच्या स्था है। सामी सार्वेशिक चयव-ध्याके सार्व पूर्वती प्रथा भी चीमी वह नाती थे। नवसूरकी ज्याने ज्या हमा विकार एक्षम कर किम समामी रकारणे और वेसारकर करते थे । वे शासरकरण होनेपर को कारे क्यान्य भी से या सबसे से १ का समा-धारनी क्या किया सरोवर भी था। यह अनेक अध्यक्ते र्वात-व्यक्तिकारो संबिक्तेरे सोपानगर, काल-कुतुओरो जनमंत्र और क्षेत्र-क्षेत्री बायुक्त सर्वाते साहस्थान गाः। विक्रमें हो को बड़े मरवरि भी आके बराबदे मार सम्बन्धन बोक्स का जाते हैं। अस्ति करों और ननरमूची मुझेके हो-हो रहोको साम पहले सही थी। वधाने पार्च और हैमा संरक्षे को सकत थे। होते-होटी वायरियों मी,



विनये हेता, प्राप्त और काका-काकी होत्यो यूने है। सर और स्थानकी कान्य-वंकियों अपने कुणको सोगोको कुक कार्ती यूनी ही। मयापुरने केवल केव्य न्यूनिने इस केव समाग्रा निर्माण करके कर्मध्य पृथिक्षितको विकेश किवल ।

सम्पेतन । नर्मान मुसिविको कुछ मुर्द आनेवर का हमार हाक्रमोधी पान, काय-मूल, पाँच अभी प्रया-प्रयास भारतीया जीवन सराना । उन्हें क्या, कुमाना, डोटी-वर्डी सामग्री जारियों दूस अन्येक अमेनको एक-एक एका गौओबा कर विकार सामें बार कर में समाने अनेस बारने हर्ने, इब अञ्चलकोन पुरुषक्षकार सामे रहने । माने-सामे और पान-पान्तेने देशकालेको पूक्त को नहीं । पान-प्राप्त (प्रकारकार और समेत), नह, मैसलिया और वसीवार्जने धर्मतकारे अपनी-अपने काम रिकामचे । इसके कर के क्षाचे प्रकारिक साथ देशका इसके सामग्र सामग्रे विकासका हर्। उस्ते साथ समा-नवाओं क्लेक्ट्रे अपि-कृष्टि वक्त एक-महाराज भी बंदे हुए से । जानिकी पुरस्ताः अस्ति, केवल, कुम्महेरकर, बीमीर, बहारकक श्वाद के केहनुके पासली, क्येंड, कंपनी एवं क्यान्यार केरे हुए के । नामकर, मार्श्य दिल इससेए भी वहीं से ( सवामोने बहाने). क्षेत्रक, सम्रह, कम्पन, म्हाकशियके स्टापुर, पुनिन्द, सङ्ग, बहु, पुत्रका, समाव, पान्यक एवं अधिक स्वार्ट देखींक श्रामियकि पहाराज पुरिक्षेत्रको सेवाने कारिका के। कर्युको अब-विक संपर्वनाते राज्युका और बर्जनी ज्यूहर, प्राचा, स्वानकि जादि भी मही बैठे हुए से। कुमून, विकास आहि गर्का एवं अपगर पे के करिएको प्रका कानेके

हिन्ने बहुँ आकर नाक-कवाना करते हैं। कर १९वर्षे कुँचिहरूको ऐसी होन्छ होती, माने महर्षियों और समर्थियोंही हिरे अने सहामी हैं अपनी एकाने निरामधान हो।

कर्मका ! एक दिन महत्त्व संस्था और मनवें आहे. का दिन प्रचारी आरम्बरी विराजनात है। इसी समन देनति कार और भी अनेक अस्तिनेत राज वहाँ स्थानक हुए। कुल्लू ! केली अध्यक्षी महिला अध्यक्ष है। में केल हो कर्मनकोवं, पारक्षी विद्वाल है। यह नहे देखता करकी एक कतो है। इतिहास, पुरास, प्राचीन काम और पूर्वीसर-क्षेत्रकारी विद्याने के केन्द्रित है। के केन्द्रित का अन कार्यन्त, कान, विकास अधिकों के बानते ही है, वर्गके की को कर्मा है। वे बेक्ट बरक्राविकार कार्गिकी एकाराकार, कुरूने जिले पूर कार्योच्या कार्यंद समुसार पृष्टाराण और क्षा अनेव क्षांकि एक साथ जानिक होनेक अनेव सम्बद्धाने अस्तव निवृत्व हैं। वे इतस्य नका, सर्वतवक केवारों, नेति-कुवार एवं सहक पत्री है से बार्व और इतके निवासको सामाँ है। वे सामा, अनुवार एवं स्वातकारों हत का विक्लेक रोप-ठेक निहल कारे हैं और प्रतिका, के, प्रकृतका, प्रध्यक पूर्व निर्मादन-पूर्व करेंग्र अक्षेत्रे कुछ पार्कोद्धे कुल-केन सूत्र सरकारे हैं। स्वास्तरिके कार कार्योश क्षेत्रेयर भी में उत्तर-प्रमूतन करते में विकास है। वर्ग, वर्ग, कार और भेक्-सार्थ पुरस्तवीक सम्बन्धी कार विकास सर्वेश कुरवृत्त है। क्यूने क्यूने कुलोको जनर-वेचे, अलो-देहें, प्राप्तक देख रिस्मा है। सांचय और योग केने हो पार्टीको से बाजते हैं और देखाओं तथा असूरीके प्रक्रोबर विकारको रोड रहतो है । केल-बोल और वैर-विभावके रुक्तको भारतिकालि पान्यो है और प्रश्न तथा निरूपी स्थितको को-को प्राप्त रहते हैं। सुन्य, विनाह, बहुई, युद्ध शतक ज़बी, पुजर्नेकी और पुजर्नेति भी को पूर्णतः इस है। और क्षे क्या के बारे प्राच्योके निर्मा विकार है। के बाद और भावक के केंद्र के के हैं, उन्हें बाही भी आने-मानेने मोर्च प्रधानक नहीं के। केरो-केरो अनेका नाम अपने हैं। यह दिन के लोका-लेक्ककरों कुके-फिर्म्स परिवास, पर्वत, सुपुत्त जावे, क्रिकेट कर प्रकार है जिस्केट दिने उनकी संपर्ने था व्यक्ति। अनुनि कर्मात्र केन्स्ते समार वर्षा आसर जेनसे कांद्रकारे आयोगंत रिया—'का है । जन है ।'

्या वर्णीके वर्षा क्या चुनिक्कि देवर्षि नार्यको आस्त्र वेत्रवार प्रकृतिके क्या झार्यर स्टब्स वर्षा हो गर्ने, विनयसे झुन्नार वर्षे हेवसे नार्यकार क्रिया और विनियूर्वक चेत्र्य जारान्यर वेद्रवा । जबुर्वक कार्यके झार्य क्यारी स्थिति पूजा सम्बद्ध हुं देवर्षि नाम् प्रत्यात्मेन समारके ब्यूट प्रता हु। और कुस्तर-प्रयोध ब्यूटने उन्हें बर्ग, अर्थ क्या प्राप्ता अरोहा करने तन्हें।



पाएको बहा--वर्गपुर ! आखे प्रकार की अधीन हे हेता है र ? अरखा पर से वर्गड कार्ने पुर राजा हैना रे जाता है ज्या पूर्ण होने । सरको अने कभी हो विकास की जाते होंने। अल्केट किस-विकासने दिसा प्रकारक पान विकास, को को को को अबंद अवक्र कुछ मेरिका जाका अलगे के रिला होता। अवनके शर्वित्यात वर्षकी, वर्गित्यात कर्षकी, कारतीत्या अर्थ और वर्षकी पांचक म होती। आये के सम्बद्धा करा सन्ते है। अर्थ, वर्ष और प्रथम-नेकाके रिक्टे असल-असल सरक निविद्य कर किया है न है सम्बद्धि कर पूज होने कार्यिक-माध्यानक्षतिः, श्रीवरः, नेमानीनाः, वरिधानक्षतिः, वीति-विकास और वार्तकार्यक्रिकेट स्टार कार्य है--यम, ओपनि, प्रमुक्तार, प्राप्त, सार, सम्ब और पेट र पूर्वेत पुनोचे प्रय हा उपयोक्त विकास करन सहिते और अपने केन्द्र क्षेत्रेंस हुए रहानी कहिने। ये केन्द्र केन है—गरितमात, हुठ, क्रोब, इयह, देवंसुमत, प्रतिसंका र्शन य करन, जानक, इन्हिक्टनहरू, केनर कर्मक है क्रियान, पुरुष्टि प्राय सरका, विक्रीत कार्यने सन्त्रकारेता, सारकारे पुर न रकता, प्रसम्बद उत्तम आहे न करना और एक बाब ही वर्ष क्यांनीया बाब्रे का देशा हम देखेंगे क्षाका कार अपनी प्रति और प्रमुख्येकक श्रीक-श्रीक

क्रम प्रकृते हैं य ? अवनी शरीर और शबु-सरियो अनुसार स्त्रीय कर विश्वा करके उत्तर अपनी केती-वारी, व्यापात, विकास, पार, पानी, प्रेंच-क्रोबा अवदिकी सानें, कराई बसुती, उत्पन्न प्रान्तेचे खेगोको कावन काहि काचीकी केल-रेज डोक-डीक रक्षी हैय ? स्थितित ! आयो राजके कारों अंग-कार्या, पत्ती, विश्व, परवास, राष्ट्र, वर्ग और कुरवारी प्रमुखेले फिले से नहीं हैं ? व्यक्तिया बूरे प्रकारोंसे को से 🛊 ? अवके और कार्य देखनुष्टि से 🛊 न ? सही अपने प्रमुखे पुरास अपना निवास समावर आपने पा अपने वर्षकोरी सामग्र महन्य-वर्षक वान में भी सेरे ? जान जारने निक्ष, पहरू, जासीन लोगोके सम्बन्धने पह सान को स्थाते हैं व कि के बाब भारत बाहते हैं ? अब मेरर-निरारण अवक के निर्देश सरको अनुसर है कर्य है प ? क्ष्मान्त्रेक और विकार क्ष्में से नहीं एकते ? आर्था सभी mak & man grape, graner, magner, gefre ale bei in Bur?

श्रीबोहर । विकास पूर है जाने विवारीओ जीता सार्ग्य प्राप्ता एक आयो विवासे और संवार्थको क्रांक्रिय रक्तो है न १ इसी जन्मर केरको च्या होती है। सह कर्ती अल्बाने क्रानेक्ट कर के नहीं कर होते ? आप अध्यक्ष है निक्षके पहा हो नहीं है पाते ? बीच समन्तर काम को उन्हों है 7 स्त्रीओंड निकाल सामने प्रमाल अपने अपने अनीत अन्यापने विभाग के बातो है व ? बार्ड आप अनेको या स्वापेट श्रेप हो कवाना भूति करते ? आवादी सरस्य कही कहोताला से नहीं पहेब करते ? और इनामी को नहे कर्म निद्ध हो कार्य, ऐस्त फोक्कर पार्च जनमा पारते हैं य ? वर्षी ऐसे कार्योंने जालका से व्यो सर बैजरे ? क्याँ विकालके बाल आको अन्त्रणे से नहीं रहते ? इनक जनकर विकास हो है ये 7 कही अनकी ओरसे जासीन न है विकित्ता, कावा केन ही सम्बद्धी कारीचा कारत है। विकारकेका पान किवलनेन, निर्माण और कुरवेनोरी ही कारकार कार्युने । आयोः कार्योश्ये सुधान शिक्ष्यु जार्र हेन्से वाले के के कोगोंकों नहीं दिल वाली ?

आर्थे अवदार्थ वर्षा एवं कार्यस्थाने नियुत्र होतार कुमारोको क्षेत्र-तीका पुन-विद्या होते हैं न ? अस्य हवारी कुमारोक प्रत्य पहा विद्यानका संख्या है। अस्यो है ? विद्यान ही विव्यक्ति सम्बद्ध प्रत्य स्थापता है। अस्यो इस्य विद्योगे कर, काम, जाता, काम, काम, काम, काम, कारीयर और कैमारोका कीम-तीक जान्य है न ? यदि एक परि पत्री केमारोक होना-तीक जान्य है न ? यदि एक परि पत्री केमारो, संबद्धी और स्वपूत्र हो जो सभा परित्यक्तिकारो

नियुत्त सम्बन्धित एतमी कर देश है। अन पर्य-अपूर्ण ( कारे, प्रेडिश, क्रांस्ट, सेनाके, प्रस्का, अक्टेरिश, करागारामधः, प्राथंके, कार्येक पुरस्कृतनक निर्माणकः, प्रदेश, नगराविक्ती (क्षेत्रकार), कार्य-निर्वाचकां, कर्राज्य, सन्वर्धा, क्ष्मार, पुरिवाद, चीवन्यत और क्रमिकारके अधिकारीयः क्षेत्र-क्षेत्र अक्षाद गुरुवर रहते हैं र ? यहाँ होनोची प्रोड्स्स अपने पहले के व्यक्तिकारियों-पर भी बीत-सीत क्षेत्रे गुरुषर रखने व्यक्ति । अस्य स्वयं private that short was brook than the paint कारका पता सरावें। संबंध, यह से पत्रकों के सरकार पुरोधित सुरुपित, जिल्ली क्ष्म निकार, क्षे है पर स्थ रिवर्धन्तिपुर एवं रिवार के नहीं है? अप अपक रीया-रीय समार यसे डेंगे। आको प्रदेशक सका को विकि-विभागका प्राप्त प्रतिन्तुः विश्वास कर राज्य है थ ? यह कृत्य की हुई और की व्यक्तिकों स्वकारिक रिवेदन के कर प्राता है ? आवका क्योतिनी प्रात्मके मारे अवशेका निकेचक. पहलेको पहल सामा साविता हता वर्ष समाह साविता पहलें ही पार रेलेंबे नियुक्त को है य 7 अवनी अन्ते क्रमेशारियोंको सब्दी गीथे-सेने सम्बेट्स क्रममें से नहीं सम्ब दिया है ? आप अपने निर्माण, प्रत्यासम्बद्ध और प्रमाणी tellucited secure movibur falls sit und teal if ? अपने प्राप्त की प्रोप्त-सीवन और देखते विवसी केवर प्रात्तर प्रदोर प्राप्त से की पाने ? की बीक भाविता प्रतिक प्रत्याचनका और सिवर्ड व्यक्तिकारी प्रत्याक ference we hell ft. dat all mill mes sellent on ridde काराव अस्तवार असावर को नहीं करती ?

शरमका सेनागीर वेपाली, और, बुद्धिकान, वेपोलारी, परित्त, सुरातीय, सामित्रका और कहा को है न ? आपकी सेनाके सब कारणी सब अकारके बुद्धोंने कहा, निकास, सुराति और अवनों हार सम्बन्धि को है न ? आप अनकी सेनाके लोका और केरनका अकन समका सीक-दीक साती है न ? नहीं देर और कार्य से मूर्ती कहा होता है और मैं अपने सामित्र ही विकेश कर बैस्तों है। आपके कुराति सर्ववारी क्या अवनों और सिंग्से अप रहती है कि सावस्थानस होनेपर सामके विके अपने आण की निकास सर दें ? कोई का चेहार से मूर्ती कर सामित्रकी सकार सर दें ? कोई का चेहार सामित्रकी मान्युक्त की स्वास्थान सर दें ? कोई का चेहार सामित्रकी सामुद्धिक कार्य करका साम्युक्त कर है ? जब मोई कर्तवारी मान्युक्त केराय करका है, श्री श्रीच अस्तार विहोग सम्बन्ध करका सामक जेवार की स

वेतर वक् के हैं न ? आप विकासिनमी, जारी पूर्व गूम्के कुलोकी प्रकारण क्रमके हात तेया करते हैं न ? शतकः। यो लेन अववादी प्रकार क्रिके कर पिठते हैं या अववेद्यों क्रमके क्रिके कर पिठते हैं या अववेद्यों क्रमके क

व्यक्ते आवनी इन्द्रियोगर विकास आहे कार्या का इन्द्रियोक्ते अन्येत क्ष्मुओर विकास आहे की कार्या है। क्षमुओरको व्यक्ते क्ष्मुओर विको कार्य, क्षम्, क्षम् आदि क्षाची अस्त्रोत्ता अस्त्रोत्त कारण कार्युले। अन्ये पानकारी प्रकार व्यक्ति कार्यका कर्येत क्षमुक्त कार्यो कार्यो कार्युले और को संस्त्रका किए क्ष्मी प्रमाण कार्यक कार्युले कार्युले। अस्त्राच ही आण हेस्स ही

अन्य अन्ये सहनी, गुज्यन, ५३६, मानारी, सर्वानंत, क्षातिक और विद्येषक पण-सन्तर्भ प्रदा-स्थित पराप-दोखा के बाते है प ? के लेग अवस्थे और क्रवींट कार्ये निकुछ है, से प्रतिक्षित सम्बद्धेर प्राचने सम्बद्ध दिवास की नेवा कारों है ? कारों निजी क्षेत्रक को क्षित्रे कर्नकरियों किए अरुपादे से पाला से भी पत्ते ? वर्त किसे भारते तोची, चोर, प्रमु अस्पन अनुसन्धोनको तो नियुक्ति नहीं है नमें दें 7 बढ़ी घोर, जारबी राजकुतर, शरियों का सर्व ज्ञान से रेक्क्सरिकोची क्षा से नहीं की ? विवसनीकी जिल्हा रहारंच साहित्रों । पांचा अंतरके प्रांत्यारें सालों सामानंत को बारक को बारकारों है न ? वहीं सार्थ सेतीको क्रमीड करेंचे के नहीं ब्रोप रचा है ? विस्तालक बीच और नेवर कर्प का जी क्षेत्र कांग्रिके। अध्यक्तता होनेक बोक-क मान रेकर को पर भी देश करिये। सारके कार्य केरी, योगा और सामासमार्थ सेन्सेय क्रेजन्म्(रोजे क्रेने है **प** ? क्<del>रांज्यूक व्यापारों है हाल सुपत</del> होती है। आपके कच्चने कवा, स्वातीस्थार, सार्वन, पेतनारा और मन्द्र—ने कोवी प्रकार दिवने काम और परिवर्तनीये बाल बारोकारे हैं व ? कारबी रक्षके रीजे परितेकी राज के काने से अवस्था है। अन्त्रेकी पता भी प्राय-पताने राजन से अपने क्षेत्री पातिले । पातिक प्रधानन को निर्देश सम्बन्ध निवा करते हैं य ? अवनेद राज्यमें अपनानी, चोर क्षेत्र-प्रिये, समा-क्रियकर गर्निको सुको तो नहीं है ? अहर कियोंको प्रतीतत और सन्तर से रकते हैं ? कही जार उनक विकास करके उन्हें पार बाब से नहीं बना से 7 अपर कहीं योग-विश्वस्ति तिहा होतर विश्वतिकी क्षेत्रा हो जह कर मैठा ? अपने रोजक साल वक् पहरे हमाने सहस् तिने अपनारिकोंके तिने काराज और पूजनेकोंके दिने कांका हो है न ? जान तिन एवं अधिन कांकिकोंकी कार्यकोंके महिता करके ही तो कान्कार करते हैं ? इस्टेडकों की विद्या है निवामीके सालने और ओक्सोंके होनानों एका कान्यी कीक् निवामी है हानी पुरानोंके सालंगके । जार अन्या कार्यकोंक सेक्स हो करते हैं ?

आयोर केंद्र आहार-विकित्साने निवृत्त, हैर्सनी, रेली वृत्त सरीएको बेस-रेस रक्षनेकारे है प ? बाह्रों अप होता. योह मा अधिकारो अधी १वं अवधिनो (विशेषिको) को अधेक में जो कर के ? आर सोच, चेव, विकास सम्बद्ध तेनके अपने आदित करोबी क्षेत्रिकरने आब हो जो अबबे ? सामके पुरस्तारी एवं देशकारी पारतीने पार रोकर और विका-स्थापन चीता-ही-प्रोत्तर असलाह विरोध से जी करते ? ज्यान-प्रथम कता क्षेत्रस्थक क्षेत्रर अवके वैक्ते प्राचीकी बांदि देनेके विन्ते विका एको हैं वा नहीं है उसकती विकास और मुखोके पारक प्रश्लाक और तेला उसकी कारणाज्यवर्गियो प्रयोग्य करते हैं का नहीं ? आब उन्हें प्रतिस्थ की है या नहीं 7 ऐसा बारच अवसेद विनो कर्न और बोकार हेतु है। अस्पेट पूर्वकोदे जिला वैभिन्न सहस्मान्य पारत विकास, जान्या प्रीयानीय पालन करते हैं प है अपने महामें अवधी अंकोंके सक्ते कार्यन साहत सर्वात और स्टालकर पोसन करके क्षीला से को है न है अप पूरे संपन और एकता पनके सनक-संन्यकर, पत-वान उसीर से करते है होंगे। सामि-पाई, गुरू, को, केला, सरकी, केमबान, सुध प्रथ और सावाजेको नगवार को बन्ते हैं न ? आप वित्तीचे कमी श्रीक क क्षेत्र से नहीं उपासी ? कोई पहुंच अपने इक्ष्में पहल-प्राची लेकर करके पह प्राचीत सहय है न ? अववादी का महत्त्वाची वर्णानुकृत वृत्ति सर्वत स्थान्यी क्याँ से है ? ऐसी वृत्ति साथ और प्राच्यो वदानेवासी एवं वर्ग, अर्थ और सरकारे पूर्व वालेकारी है। को ऐसी नहिं रसला है, ज्ञाना के कभी संबद्धका नहीं होता, सारी पूर्ण्य अल्बे कहने हो कही है। यह सबी ibin fili

करेशन ! कही जारने हाक-कुरस मनी अहानका किसी मेह गरिन निरम्शन पुरुषके मोर-मोई सम्मान्तर स्थाने से नहीं है ? महीं अपने मर्मनारे पुत्र सेकर प्रमाणि पोत्रके मिना इसके हैं और से नहीं हैं? ? कारी वनी एवं हरितके निरमाने आरके नर्मनारे बनके सोपारे वरितके साथ अन्यान से नहीं अर बैठरे ? मैंने पहले किय केश केशक वर्णन किया है, उससे अन्याने समाप्त मास्य कर्णने । केशके समाप्ता कार्य, अन्याद स्थानको एवं हासको क्याना प्रीत प्रमाण सहस्वाहों होती है।

क-एनो स्थापन करनेकाने बैठनोते डीक-डीक कर से क्यून होता है र ? सक्याचे वर्ष देशमें ब्यापारियोक्त सम्बात के क्रेस है ? से वर्की क्षेत्रे-अर्की कावार हमें के वर्की को ? अन गुजानेले प्रतिहर वर्गतास और अर्थतासम्ब क्यम के करते हैं? केंद्री-करिते करता हैनेकते अप. कुरा, करा, चेरक, क्यू, कर अवीर पहले वर्ग-स्थिते मान्योंको सिने पाते हैं य ? काम क्राफी सारीनरोजो जीवा कारते. वेतर और पास के के है व ? समर्थ कारेकार्के को गरी क्याने कामका-सारम और आहर-स्वाहरको गाउँ के देशानों हैं व 7 अल सभी जनाओं प्रकास-चैते क्षेत्रक, प्रमुप्त, अवस्था, अक्षेत्रक, जनसा और कारिकारामा अध्यक्त से करते ही होंगे। साथ सम ज्ञानं अव-वक्, मानावोन, सोनविनोंदे विके मेर अकरण कारणे होंगे 7 कार आहे. हिम करा, येग एवं व्यक्तरेचे प्रमुखे पश्चमी एक करते हैं न ? अन्ते, मूँगे, सैन्छे, लुते, अवस्य को साथ-शंकारियोंके सर्वत: राज्य आप है है। जाराज । सम्बद्ध रिजे कः क्षेत्र अवर्थकारी है—जिल्ल, कारक, पण, स्रोध, पूछत और संपेद्यता।

विश्वण्यानं वस्तं है—कारोका । देवर्त नासारी कार्य हरकर कर्मक पुनिक्षितं उस्ते सरगोका तर्य दिया और क्षेत्र सर्वकः (अस्त नेरी पुनि स्त्रुप हो यह गती है।' स्त्रु कार्य कर्मकः (अस्त नेरी पुनि स्त्रुप हो यह गती है।' स्त्रु कार्य उन्होंने स्त्री तराय वैशा सरगेकी चेत्र प्रशास कर है। देवर्त नास्त्रे क्ष्यु—'स्त्रे हास इस अस्तर कर्मका-क्ष्मेश प्रशासका है, यह इस स्केसने हो सुन्ही होता ही है, कारोकाने भी कुछ पास है।'

## देव-समाओका कवन और स्वर्गीय पाण्डका संदेश

र्वतन्त्रकार कारो है—कारोजक ! देवर्षि कारके क्योह । विस्ते कारकार ने इस्के सम्बद्ध हो को है । कारकार है सुनकर वर्गग्रहने उत्तक बहुत है कारण-स्थापर विकास विकासके पक्षाय किर करने पास कारिया क्षेत्रर वर्गरावर्ग मा प्रक विजा-'वेकों ! जान रक्त-सर्वत समेद समान मर्पात कर्णा राते हैं और अग्रामें करने निर्मात सेव्हेंबा हर्मन करने रहते हैं। अपने कहीं देती का करने अपने प्रका देशों 🛊 ? क्या करने कारकारे ।' वर्गराव मुनिर्देशका का का पुरवर देवर्ग करूरे गुल्काके हुए कहा बार्कर महा-'वर्गराव । मनुष्य-रवेकमें देशी चर्चवरके सका की म देशी है और म तो समें है। मैं आवको मनराम, माम, इन्ह, कुनेर एने अक्राब्दी सन्दर्शनक बनोर सुरात है। के सीविका तथा असीविका क्रमा-क्रीक्सीने कृत है । क्रमा-समोसे वर्ग हेरेके बारण एक-एक प्रका अंक-अनेक प्रमोते केवली है। केवल, मिल, पार्टकार, बेट, बार, प्रार्टक मुनि असी पाने मुनिनार होनार विकास करते हैं।" देवसि मानको साथ सुरुवार परिवे चलका और उन्हेंबार इंब्युक्त-मन्त्राची का सम्बद्धानिक वर्गन कुल्केंद्र केले अन्तर सनुबन हें नवीं। उन्हेंने हत्य जीवृत्ता प्रत्येत की कि 'जान अववय ार प्राथकोत्ता कर्मन प**्रियमे : इस एक को केन्से प्र**प्य West fil & word Service regards Service राज्यी-कोड़ी बती है? उनके समारक कीन है? और की जारे क्या-क्या विशेषात् हैं ?' क्यांशक्त पर ५० सुन्धर देवर्गि पार्त्यने देवराम इन्द्र, सूर्वद्वा कर, ब्राह्मिक, बर्का, प्रकारण करेर और सोपानिकार प्रकारीको अलेकिक समाओक किसामी क्वी क्रिक 降

सरवेशय । दिश्व संपदलीका कर्तन सुरक्षा कर्तन्त्रने देवर्गि सरको सह—'धन्तक ! अस्तर्भ करतकारी समावे प्राप: संबंधे राजाजीको इस्तिकोल्हा कर्मन विराप । क्यानको क्षाने परं, देवएक, नहें और सन्दोकों निकी कारकते । कुकेरकी राजानें यह, राह्मम, नवार्थ, नहाब और कार्कनकी कारिकति भी इसमें जान हों। आदने का काराव्य कि इक्कानेची सामने चाप-पुन, देखा और प्राच-पुत्रक निवास करते है। अपने केरका प्रश्नाती समाके केरका, गर्मा और क्रॉन-गुरेशोसी मन्त्रा भी कर से। जाये बारपम कि नहीं समर्थियोंने नेपाल इरिक्रम् है रहते हैं। उन्होंने ऐसा कौन-का क्ष्स्वर्थ, करका अवस्त कर किया है.

जाको निराधेको मेरे किए पांचको विस्त प्रकार देशा वा ? उन्होंने के हिन्ने करा परिवा दिया ? उत्तम क्राफ वाले अन्यान अपने का समाने।

रेक्ष करने का—राजन् । वै आपके अवके अनुसन कार्यी इतिहासकी महिला सुरक्ता है। में बीध-बीट एवं एकक्य लाहरू है। पृथ्वीके सभी नरवरी करते हुके शहरे ये। अनेने अकेने ही सम्बद दिन्यक अनु की वी और बान का राज्यका अनुसर किया का तथ पार्टाओं क्षे का किया और उनके बहाने बरालेका काम किया। संक्यांने उस्ते किल्प योग, अन्या प्रोक्ता इन्होंने हिन्ह । क्वोंने प्रकारोको सोचर, क्या और प्रेस, स्तर तथा बैक्रपोर्क कराई देवल इस क्रमार प्रस्ता बार रिस्ता कि से केर-देशने उनके बहुबारको बोरका करने रूने । बहुके पात को प्रकारकोके आसीर्वास्त्रकार प्रतिकृत प्रकारकार आंधिक हुए । के एक एक्सून का बारता है, संश्रवने बीह विकास किया पर विकास है और बीज तपालके बारा प्रतीपका परिवास करक है, यह देखार प्रभूको सम्बर्ध सम्बर्ध स्थाप का बला है।

मुधिकेर । अस्तोर विका चन्द्र प्रतीप प्रशिक्षकार देखने हेरकर विरोध्य हो पर्य। यह उन्होंने देशा कि वै व्यूक्तरेको क कु है, का अहेरे बार्का मेंने कु हरिह केल-- 'पुनिक्ति । तुन्तरी पार्व हुन्तरी नवार्व हैं । इस्तीर्व हुन अभी पूर्वी जीवनेने सर्व्य हो । वेरे विस्ते तुन्हें बहुन्द् बहु राजकुर करना पाहिने । पुनिर्द्धार । सुन की दुर हो । पनि सुर रमका पर करेंगे से में में देशक उन्तरी प्रमाने प्रशासको समान विश्वप्रशासनीय अध्यय भौतेया।' करिया । आरक्षेत्र विश्वके सामने की का मौजार कर दिया 🕶 🏗 अस्त्रों 🖦 संदेश व्यक्तित एकम् । जार अपने निकास अकार को करें। इस काले परावस्थ केला अनके निरुष्कों ही नहीं, क्यां सामको को नहीं स्वान प्राप्त होत्य । प्राप्ते संदेश नहीं कि इस नहाने को-बड़े दिहा अले हैं और प्यापेडी एक्स की जवलाबी अधिकार्य रही है। केंग्र-स की निर्मित जिल मानेक्ट केंग्र क्लेक्ट वरिन्दुरक्तक दुव है बात है, विक्रो एक प्रवासी पुष्पेचा ज्ञान ही जारिका के बात है। वर्गप्रम ! यह सब

<sup>&</sup>quot; महत्त्वप्रशामें देशसम्बालेका वर्णन बहा हो सुन्दर और विस्तृत है। महत्त्वक-विद्यानुश्लेके हिल्ले कह बहे ही बावको बहु है। उसका अध्यक्त मृह प्रभमें 🖠 करन चर्डिने ।

होच-विचारकर अन्ते देले के कायानकारी सर्वोत्त्ये, जो | देशिये । मै पनवान् ऑक्ट्रकारी नगरी हरका वादैना : प्रतिकेते। साम्बान स्वकार कार्चे कार्वेकी रहा करते हुए कार्ति और अरुप्द प्रस कॉनिये क्या सहायोको संदूष परिवर्ष । अन्योः ज्ञाना कर हे कुछ । जन को अनुवर्ष । व्यानोधे ताथ एकसूर कुछी विकार सन् गर्ने ।

कार्यकर ! देवर्षि नाम प्रतान प्रकार रापने राज्ये व्यक्तिके स्थीत व्यक्ति को गये। करिया पुनिश्चेर असने

#### राजसब बजके सम्बन्धमें विचार

वैशायकाओं कार्त है—सम्बोधक ! देवनि पाणकी बाद । सुरका कर्रशाम कुमिक्टि राजसूच बहाबी निकाले बेबैन हो गर्ये । अपूर्विन अपने सम्बद्धकोका स्थापर विकास में उसने अपने **ह**रा सन्तरन हुए, परंदु क्रमका पन प्रशासको संस्थानने 🗗 पञ मा। क्योंने अपने वर्गमा निवार वित्या और निवा अका। बनावी मत्यां हो,को करने तने । वे किलोकर के दश नहीं करते थे। उन्होंने अपना कर दी कि ब्रोध्ट और अधिकार क्रोडमर राज्या समा सुबर दिया पार । असे पुन्तीने मुचितिया सम-सम्बद्धाः होने सन्त ( कर्नाटक मुचितियके राज्यकारो प्रया प्रश्र वितासे स्थान विकास साने रानी । प्रमोद पाध निर्धानी प्रमान न पर्ट, प्राचीको से अन्यतासम् क्यूनामे समे । युनिव्हित्ते अन्यते अध्यते वैत्यतः । भीपाने स्वयंदे रहाने और अर्थुन प्रयुक्तीके संस्तरने सबर खो । प्रकृति प्रयोगस्य कारण करते और प्रकृत सम्बद्धते ही सबके राजने हाम करे। अस्त्री प्रसार के-विचेद, भव-अवर्ग मिल्युस नहीं हो। सभी अन्ये कर्वनारे अंतर में, सरकार को केते, तम हकी थे। वह समय बहुनी वर्तिः, नोरक्षः, केवी और व्यायसको काक काव क्रीकार पहित्र गर्ने । प्रमास कर भागी नहीं सहत, कहना नहीं नात, मसुर्वने निर्माणे स्ताच भी तता। देन, जी क मुख्यांका विश्वाची थय नहीं छ । लोटे, क्या और वेहरूने प्रमान किसी अवस्थि अवस्था क इनके साथ हुत अवदार भी कर यहे । देखते सभी समन्त विशेष देखेंड बैच्योके साथ अध्यार वर्गरामधी परार्त्, लेक, कम्यून और श्राचि-विका आदिने स्थानीय क्षेत्रे से व वस्तीका सुविद्यार निक राज्यार अधिकार वार लेले व्यक्ति आहाल, व्यक्ते और सारी प्रका बनारे प्रेम करने लगती थी।

सबवेजन । वर्गगानने जनने नंती और पहलोको समानत पूर्ण कि 'राजसूच बहाके सम्बन्धने अवस्तोगोकी क्या सम्बन्धि है। पनियाँने एक सासे बढ़ा कि 'वनकुष बड़के अभिनेताने एक सारी पृत्योगा एकका सामी हो कता है—सैन वेरे हैं की जाके एकका साथ कान है। अन

सदाद होनेकोच्य है। एउएक्य यह बारनेका यह अवस्तर भी है। को बराबान है, बढ़ी का प्रत्यक अधिकारों है। इसकिये आर अन्तर का का कोविये । प्रतर्थ विचार चार्यको कोई



मान्यका नहीं है।" प्रतिकोधी कर सुरक्षा करियाँ जनो पर्व, प्रतिष्य, सीम हो जीवन्यक्रियन प्राप्त असीतो पटवर्ड किया । साथै स्टेप्टेने बडी परावर्ड किया कि 'श्राम प्रत्याच महान्या सरवेते प्रत्येत स्रोम है।' प्राप्ती राज्यो सुरका परा शुक्रिकर् वर्गएक कृषिक्षाने सार्क क्षानानों रिली कर्प नमन्त्री-मन विचार विकास प्राप्त । सुद्धियान् पुरुषो करिने कि अपनी प्रतिः, सामन, देश, प्रतार, आव और पायक पार्वपर्वति निवार करके एक पुक्र निवास करे। ऐस करके विकासकी सम्बद्धक नहीं शहरी। केवल केंद्र निवार्क्स है से का नहीं है जाता, का संस्कृत है पहला ज्ञान करना करिये । इस ज़कर मन-ही-मन विशाद करो-करो करंगम चुनिहर इस निश्चमार पहिले कि मताबाहरू मानवाद औदान्य ही प्रत्या तीया निर्मार का सकते हैं। वे

बागर्ड समझ लोको और लोकोरे हेट 🗓 अन्या क्रमन । उंधी विश्व वृत्र प्रवासिकोचे साथ को शतन्त्रते को सन्ते। कौर प्राप्त अनाम है। उनकी प्रतिः केनोब है। क्यूनि सम्बन्ध हेनेपर भी करवाता करवाल करनेके रिजे स्टेसको है कन प्राण किया है। में प्राण कहा जानों और सम कहा कर साओ है। बड़े-से-बड़ा चार भी उनके रिन्ने बहुत है हरका है। ऐस सोवकर क्योंने यन-हो-का कामानुबी क्राम औ और कांध निर्वाय पाननेका का निर्वाय किया । तक वर्गायको क्रिकेक-र्वादेगांच परवार श्रीकृष्यके रिग्वे बढे स्वरूती हर लेखा। क्षा क्षीतराची रकार क्षमा क्षेत्रर क्षमाने करावन् श्रीकृष्णके पास पहुँचा। परमान् संकृष्णने कुछे व्यवसीत काले की निश्चम किया कि 'क्लेक्ट चुक्किंट मुक्ते केरक पारते हैं, अतः असे कर्ष कियान करिये हैं उन्हेंने अहै करन प्रश्लेष क्रमे क्रम प्रयासको पान कर है। सम्बद् श्रीकृष्ण नहीं होता है जोजन जाहों से । इस्तीने बीवरणी स्थाप समार क्षेत्रम अनेना वेलोको या करते हुए ये हम्हानको हर्मरायके पास या पहिले। कुमेरे यहाँ करिएक और सीव-प्रेक्षे विकास समाय कारण समाय किया । सहरका परावस् सीकृत्व कही अनकारने अवनी युआ कुलोड़े रिवर ( मैं अवने ) बात जान ही बीच-दीवा कारण रिवर्ड है (

अर्थन, कार्यन हमें नकुत एक-वृद्धिते उनकी एक करने सने । क्य कि का प्रमान अंदर्भ निवास का चंद्र और को अध्यक्त दिला, श्रम करंगक चुनिहारों उनके पार कार अक्ट अफिल्म प्रकट किया। कांग्रमी कार-'ब्रीकृत्यः । मै रामपूर्य यह करना महता है। मोतु आप हो कर्ज है है कि एक्ट्रम का केवल कारोपाले है जो केंग्र । को क्रम क्रम का सम्बद्ध है, जिसकी समेत क्रम होती है, को क्लोकर केता है, बढ़ी राजसूज पदा कर राजसा है। मेरे दिस एक कारते काहे है कि तुम रामतुम यह असरम करे । क्षेत्र प्रस्ताः विक्रम से अवस्थाः सम्मतिसे हे हेन्य । महत-से त्येन हेर-क्रमको सामा और मुख सोन जारीय सारम केरी पुरित्योको न सरस्तकार मुक्तके चीठी-चीठी वाले ही पानके है। कुछ स्टेंप को अपनी भरतांकि सामको ही मेरी परराईका भी करण सम्बद्ध केली है। इस प्रकार मोश सर्व-संख्याकी नार्वे काले हैं ह परेतु करण कालोरों को है। आपने राज और हेजबा हेवा को नहीं है। में राजसूत का धर समाता है का नहीं, बह

# जरासन्यके विषयमें धगवान् श्रीकृष्ण और वर्धराज युधिक्रिरकी वातचीत

मरकर् बीक्रमरे वर्गरको वहा—सहरात । अस्मी ( राची गुरा है। इस्तरियों साथ प्रमातन व्यक्ते बावानी अभिनाती है। अस्य सम्बद्धाः स्टब्से हैं। किर भी सामोद क्रमेवर में कुछ बद्धात है। इस समय एक कामको



क्षाने प्रकारके एक एकाओंको इएकर रूपनी प्रवक्तनीने बैबा कर रका है, यह उससे लेका तेना है। इस समय नहीं है एकाई प्रमुख प्रमुख । प्राथमी विरुद्धपाल असीमा आधान नेनार होजनीका काम कर का है। कामहेशमा अधियति, मे कारती और क्या-पुत्रों कुमत है, तिस्के समार करमानको केन काल है। प्रक्रियके अनुस पान्तको पुर और नकारेक्के कारक कार्याक्षिपतिये भी स्त्रीकी अधीरत जीवार कर भी है। अनको निरुद्धे कि वगरत भी अससे कार्योक करनेने हुन्हें रहते हैं और उसके इसारेरी अपने एनका क्रमान करते हैं। यह, क्रमा और क्रिएन-देशका कार्य निवास्त्रपुर्वेश क्षम्यकार मेरे निर्द्धेको बारण करता 👢 अवनेको पुरानेता कालाता 👢 पेटी प्रवेदातो 🛊 पीलित है. जिस की उसने इस समय बायस्थ्यका है अन्यक से पहल है। जातारे से कार जाने कैंदिये, मेरे सरी कहार बीवाया, जो क्कीरे बहुबीकरे कारी और हमारे सन्ता है, पोजवन और बेलएम बिजरो निकास एकते हैं, बिन्होंने अपने निवान काले बाला, क्रम और केंग्रिक देलेगर नियम प्राप्त की सं, विकास वर्त परवृतको समान बलवाद है, वे भी काको पालाई करते हैं: फिर भी ने इससे जी, इसने प्रमुखे पेत रकते हैं। के प्रशासको प्रतिते परिता केवर क्षाने कार्यानिकार और कार्याकारको क्षेत्रकारि केरर मतानको प्राप्तमे स से है। क्लिक ! सार विक्रके अविवर्ति अस्तरम् भोष-परिवर नरावनम् नगर्वन क्षेत्रर परिवादी और पान को हैं। पूर्णन, ध्वाबर, पान्य, बीब, परवर, सुरका, सुद्धह, कुर्तिन्द, कुरित, कारकार्थ असी एका, स्क्रिक्सभूत्रात हो कृतिकेका और पराव, कंपकार, साहि कर हेलेचे एक क्यानको करने अस्त-अस्त एक होतार परित्र और सीरकारी और पान को है। शुन्दर्भ केंद्र क**ी-पहले के पहल सामक** कर के भा । यह अलबी अनीति यहत यह गरी, यह की प्राचे पारपालके रिक्ते पारपालको पान नेपार उत्तक पान विकास हैंगा भारते केल्या का से कहा हा, क्षेत्र कालक और भी करता है कहा। अन्तर्ध केंग्र का समय क्राने क्यार है राजी को कि कोरे प्रकारित अस्त-कारोवित प्राप्त कीर की करीयद करवारा अस्ता क्षेत्र करने को तम से अस्त क्षांच्य क्षांच्या गर्दी घर यहे। यह अपने प्रांतके प्रकारतेको परिवास अपने पान्नी विकोगो संद पर तेल है। मराध्यम् प्रध्यम्बी कारायको है को ऐसी स्टॉक प्रशः हाँ है। क्या अस्ति अभिन पूर्व क्षेत्र क्ष्मी है। विसे समाजीक क्षम का बार करना करना बाहत है। इस्तीओं और बंधाओं के विश्वम जात्र पार्शनो विश्वप क्षेत्रका काले स्वारे का केले श्वाकोको कुदाना काहिने । धर्नशाः । और अस्य राजस्य पत बारना पालो है से सर्वज्ञवन कर्तन है केरी एकाओबी पुरित और परमानवार पार । यह साथ मिले मिना प्रमान पात नहीं के सकेता । अपने पाने बुद्धियान है । पानके सम्बन्धने मेरी तो बढ़ी समाति है। जान पता नालेको जोनकर पता विकास परिविध्ये अर्थेत तथा आपनी कामानि पातान्ते ।

वर्गत्य कृष्णियो काम-नार्याक्रमणा वीकृष्ण ! सारने कृषे पीटी प्रमाति थे हैं, वेशी और फोई भूते हैं सारता ! सार, आपके सारता संख्या निक्रमेक्सम प्रमीता और और है ? सारकार से पर-माने राजा है, साने सारका-अपना जाने सिद्ध करते हैं, परंतु के सारता वहीं हैं ! यह पर वाले कांडियांकी निकास है । परवान् ! सारताना से हो भी पीका है है । सारकुर पर पान कुछ है। इस से आपके पराने हैं अपनेको सारकार करते हैं। यह सारवान् महिन्दा है, तम में अपने सारता से कि आपने

प्रकार प्रमुख्यके कहने हैं। इस उनके जेन शक्ते हैं, वास्तान, चीनकेर या अर्जुर—इनमेरे मोर्च को नार सकता तको कार्य करते हैं: किर की ने इसके की, इसमें कड़के हैं। कि नहीं में इस व्यवस्थ कड़क निकार करता है। मैं से इस एक्ट्रों हैं: के कार्यक्रकार्य कोटिये कीया क्षेत्रर को स्वाधिक और कार्यक्रकार्य कीटिया के किस्तानि केट

> कांत्रको का तुम्बर के बाद पीरतेनो का-'ये क्या उद्योग भी करत, पूर्वन हेरेगर में करवाड़ी जि कार है, क्रिये काम भी हेवा, का इस बाहा है। सम्बद्धन, अक्रेची और बीति-नियुक्त प्रचा यह प्रतिक क्रेनेकर की क्रमान् प्रमुक्ते चीव तेक हैं। भाईती है श्रीकृत्याने नीति है, मुक्तां कर है, अर्थुनों विकास करेगी बोलात है; हार्यीको इस क्षेत्रों विकास सरमानके चनका बात पूर कर होते।" भीतको साम प्रत्यान परमान् अनुस्थाने साहा—"राजन् । कार्य जेक जो से या सम्बंध अपने शहरीनम्, हर-कार, जन्म-स्रोठ और स्ट्रांट्-पाने पुर है। क्ट्रांको केवा एक पूर्व है—का। से प्रोप आर्थ केवले राने कर है, में की सार्थ सरका भी है। अनेकि का इन्हें इस्त पर-पर अन्यन परंत है। इस्ते मेन्य कुलोको क्षांच्या कार्यो सम्बन्धा अस्य का का तिया है। इससेप को प्रक्रोड़ हैंगी साथा फर्लड़ कीर प्रमाने हैं। किराहरी क्याओंको यह बेद कर क्या है, चौच्ह और पानी है। निरा क्ष प्रकार कर काम कर्मा है। ये आये हा पुर क्रमेंसे केंद्र करेता. यह यह पहली हेता और यो प्रशासनार रिकाम प्राप्त करेला, विकास की बाद समाद होगा।"

> वर्गन मुख्यिको सहन-जोगमा । वै स्थानमी स्थान होन्छे सार्वती सहन पान्छे साम्यती मा ग्रीन्सेन, अर्थनुको स्वर्ग केले केल हैं ? स्विकांत्र और अर्थून होन्से मेरे नेत हैं : अप की पान है। वि अपने केल और स्वरूपने मोस्यत कैले स्वित्या स्व सार्वून ? स्वरूपने साम्यानों मेरे के सुरात हो विचार हिल्ला है। अस स्वयूपन संस्थान सोह देश सार्वुन्ते । सूत्री के सार्वाद संस्थानको हो सार्वे तेल सार्वात है।

> विकायकार्थ कार्य है—कार्यका | इस स्थायकार्थ अर्थुंग प्राचीस कहुर, अश्वाय कार्यका, हिम्म राव, कार्या और साथ आह कर कुछ थे। इससे उनका कार्या कंपनीयर था। अपूर्णि कांग्रामें कार आकर कहुर—'कहारी | बहुब, कार्य, कार्य, वरकार, स्थायका, पृथि, वाह और सेनाकी आहि कुछ करित्रकारों केर्ती है। स्त्रे साथ कुछी मानाव्य आह कर किल्य है। सोन कुस्तीनसाथी अर्थस्त कार्य है। परंतु मुझे के क्रिक्टोका कार और कीराय है अर्थस्तीय जान पहली है। कीं कुस्तोन राजसून बहाको निर्मित कराकर अरास्थ्यका कार और केरी राजसायित राह्य कर साथ सो इससे कुस्तर

और कह हेन्द्र ?"

नहीं पाने । अन्तरक अरमेको पुरुषे प्रकाश पूर्वे अन्त भी 🕽 तान तो प्रका है है।

क्षे पनि हमा है। इस्तीनो भीर पुरस्का कर्मना है कि जा मनवन् अंकृत्यने वह--वर्गवकः । प्रवासक् विकेशीतः । अस्ते इन्योगके तिसे और नेतिके अनुसार सहसर कुर्योत्स्य अर्थुन्ते नेतरे मुद्धि होनी व्यक्ति, व्य अवक्र दीका व्यक्ति करके विकासी परस्य बेहा कर है। सरकाराये की है। इसके मृत्यु को किनों है का कार्ने, इस कार्यों कार्या | कोबा, किस्तावाने कार्यवा—केनों है अवस्थानों सावय

#### जरासन्यकी उत्पत्ति और शक्तिका वर्णन

रिज्यालयो नार्च है—सरवेतव । करंतव पुरिवेदरे बीक्न्यको बाद कुम्बर करते उक्त किया। क्यूंने पुल-'ओक्स ! यह बरसाय और है ? इसे इसी स्टीड और परातान कार्यके तहा हुआ ? कान कारहने से उड़ी, जैसे बनकरी हूं आपका सर्वे करने काल कर करते हैं, के ही कर जारतो राह्या करने भी करा की है कह---कारत वेश कारण है?' चन्त्रात् सीकृष्णे बहु--'कांद्रवः? परात्मके मार-विशेष करते में करता है और पह में परामक है कि इसके अधिक करोबर को की अवस्था औ क्यों और रहत है। कुछ काम बाते नाम्बेहर्म बहुद नामके एका एका करते थे। वे संग अर्जनिर्देशकोधे काले. मीरनारी, सरकार, कामान, प्रतिकारक एवं पाईका थे। वे freit, greeter, waar uit burburd die seit. पारिएकार्थ से प्राप्ति सम्बाधीने किया किया और उसी अविका की कि 'मैं हम खेनोंके सक्य सम्बन देन रहेका है' हत प्रकार विका-नेवन करो-करो उन्हों कक्षणे बीत नहीं। परंदु प्रकृतका होन, दृतेहैं का आदि करनेना भी उन्ने पुरस्के प्राप्ति नहीं, हुई । एक दिन अन्तेने कुछ कि नौतन कहां वान्ते कु बहुता क्यारेकिक स्वयंक्त स्वयंत्र होता हुन्य असे है और एक पुत्रके की वर्त कु है। एक पुत्रक सबसे केले व्यक्तिके राज उनके बार एके और का उनकेली के क्रमें उन्हें राष्ट्र किया। सामग्री प्रमानीय प्राप्त एक पुरस्को बदा—'ठमन् रै पूक्ते समूह है, यो बदा मुक्ती भीत हो हैं कराने कहा—'क्यान् ! मै अच्यान हो संवानकीय है, राज्य क्रोड़कर क्रवेकको आ क्रक है। बाध, अंब में का रोकर क्या करेगा ?" कराबी करत कर्मा पुरुषा प्रवासीतिक स्त्री कृतारकता हे को हुई बाल करने राने । उसी समझ जिस अवनंद वेज़रे जीवे वे की पूर् बे, साले एक प्रकार काली खेरने लिए । यह परत का से बहु भवा, परंतु किर की लेलेकी चोचले अञ्चल वा । व्यक्ति को अववार अधिपनियत क्षित्र और राजाये है किए। प्राचाने

ार्थे क्र-असी करनेके रिने है क्षा रिना का प्रमुखा क्यानीकियाँ क्याने बाह्य कि 'अब क्या अवने पर और



काने । बीत है हुई कुन्दी प्राप्त होने हैं क्राव्यक बहुद पुरुष अवने कानानेने और अने और कुन मुहाँने पह बाल केची रानिकोको है ज़िला। रानिकोने अल्के से हुमाई फिसे और प्रीकार भूग-एक कृतक का विरुद्ध र संयोगको पहलू मानिकी सारमाहितके प्रधानने क्षेत्रों सनिकोको नर्न स भगः, जन्म कुलकार्यः असमानार्थः स्थितः न स्त्री । सर्वसान । क्षा अनेन केवेंद्र गर्ने प्रतिका एक एक दुसम् वैद् हुआ। अलेकने एक जॉव, एक बीह, एक पैर, आब पेर, कार के और कारी कार भी ! को देशका केरी कीरबी कर्म करी। ज्योंने द्वाकरो कारफा बढ़ी सरखा की कि इस केचे इस्कोची केच दिया जाता होतीकी वार्रिकीने अवस को हो होनो समीव हमहोको सार्थपति नेकार प्रीतासके वेकर करा केवा।

करा वर्ष स्थ कारो वर्त है। अस्य उप क

प्रश्निकार विकार, कारण, कारणा और व्यक्तिया एक प्राणित है। इसे कारणानी कई अधिकार है। इस्त है पर पूर्ण है। इसे कारणानी कई अधिकार है। इस्त है पर पूर्ण कारणाने केई देने एकके पर वाकर बोले— पूर्ण कारणाने केई देने एकके पर वाकर बोले— पूर्ण कारणाने केई देने एकके पर वाकर बोले— पूर्ण कारणाने केई है। के इसके पर वाकर बोले— पूर्ण कारणाने के अपने केई कि एकके पर वाकर बाले— प्राण है जा अधिके। उन्हें कारणाने पूर्ण की है, आर इसे कारणाने को अपने केंद्रों कारणाने पूर्ण की है। उन्होंने को अपने केंद्रों कारणानिक एक्सिक है। कारणाने को अपने केंद्रों कारणानिक एक्सिक है।

वेता जान व्यास है कि तुम कोई वेता हो। वाल वह सरत है ?'
बाध्ये व्यास—'एसन् ! अववाद कारणात हो। में बाद नामती
पानती हैं। में आहरपूर्वक आध्यार आपने पाने पाने पाने हैं। में पुनेक अध्यो वर्षाकों भी निमान कवाती हैं। आपने क्योगे हो एस हो कवा है ? किंदू में आपने पाने क्यांक स्तायर मार्टि है, अवनो हस्सा है, हार्यर में आपना पुन आपने हार्योगे सीन की हैं।' कर्पता में का प्रकृति हस्सा व्यास्त अपनेत हो पाने और क्या पुन्ना नामता विद्यान से स्वायर विद्यान पूर्वक हुए, जान प्रकृतिक सामान हों। संस्थार विद्यान मार्वक नाम । मुख्यान कार्य प्रकृति स्वायर कार्य हुए वहा कि इस कारणाओं कार्य अध्यात विद्या है (क्या है), हार्योग्ये हस्सा नाम 'कारणा' होना । कारणा से स्वायन



नय | यह मूल पीती और मंद्र मान्नी सी ( कुलो अर पुनर्वेची कारण और संयोगना पुनि-को के मार्ग्य दिने एक मान्न केंद्र दिना ( यह, त्रण क्या, क्षेत्रों हुन्द्रों निश्चार एक मान्नी और मान्न परावत्नी प्राव्युक्तर कर पत्र ( यह प्रश्नि आक्षांकीया है ज्यों ( यह प्राप्तकीयानीर हुमारको अंशाया थ स्थ्यों । कुन्याने मुद्दी प्राप्तक पुनर्वे कार्य में और व्यक्तियांच नेक्सी प्राप्तकी समान प्राप्त पुनर्वे कार्य में कींद्र क्यांकारोंच नेक्सी प्राप्तकी समान प्राप्त पुनर्वे कार्य में पूर्ण किया । प्रत्यक्ती स्थान वह प्राप्त क्यांच । प्राप्ति सामान पुनर्वे और स्थान क्या पह मुक्ति वह प्रश्नि क्यांकारी सामान पुनर्वे अपन क्या प्राप्त कारण है स्थान क्यांच प्राप्तकी प्रम्म



[ १३५ ] सं० घव ( अवड-एक ) ६

सुप्रमानके प्राप्ताके समाग पूर्व क्षण की क्षूँ आपके क्षणान अध्यार और काम्ये दिल-दिन कार्न क्षण अपने मॉ-नामको आनंकित करने राजा।

पुक्त प्रस्तको बाद पहर्षि कावानीकित पुरः वन्त-देशने सारो । प्रवाने अस्त्री वही अस्तरभवा सी । अहेंने प्रश्न हैभार बहा—'एनर् १ जरासमध्य बन्नदी सारी बारे पुले हिमा हृदिये काव्य है नहीं भी । हुन्तर पुर कहा केनती, शोनारी, सामान् एवं काव्यन् होना । हान्ये ब्यूक्तको असे हुक भी असान्य ने होना । सोई भी हसका बुक्तका नहीं कर क्रमेना और निरोधी अपने-आप नह हो जानेने। देवताओं के अध्य-क्रम भी हो चोद नहीं पहुँचा स्थेनी। हाची तीन हम्बी अहम नानेने। और से क्षमा, हमादि आयमनाहे अस्य होचर इस्तं नामान् इंग्या हमें दर्बन हेंगे।' इस्ता क्षमार पहुँचें क्षमार्थीक्रम चारे परे। एका बुक्ताने करमानाहं एक्सीव्यक्तर अधिकेद हिन्दा और इस्तं ने एनियोदे हमा क्षमार्थीक्षमके क्यो-निर्देश हो है। क्यादि इस्तंना मरस्यात् हैं, हिन्द की अस्ताक नीनियाँ हहिने अस्त्री संग्रह करते हैं।

### श्रीकृष्ण, भीमसेन एवं अर्जुनकी यगध-वात्रा और जरासन्यसे बातजीत

गानम् अंकृत वाले हैं—वर्णात ! नारामको पुरस् सहायका थे—हेर और क्षिण्या ! वे करे वा कुछे ! सार्थकी सहायक के लाका है । अवने नामके क्ष्मकी के नाम प्रथित सिने जाको हरण करिन है । इनकिये करते हुन्दुद्द अर्थत् कृतते स्वकृत है को जीवन कर्यको । वेशे तीन अधिनीई क्षमार्थ संभाव होता है, कैने है केरे मेरी, भीवनेको कर और अर्थुकरी राजने क्षमको केर होती हो का अन्यक है जिस्से-न-क्षितिको साम पुत्र करण हो का अन्यक है जिस्से-न-क्षितिको साम पुत्र करण होतार कर नेमा ! का विद्याल है कि का क्षमकी कीन्तिको है क्षामको क्षमको है। क्षामको प्रथम अर्थका है । वह अन्य केर क्षमको क्षमको कर्यको है। वानो है, कुल्पर विद्याल क्षमों है, को क्षमके और अर्थको कर्यको हो।

वंशन्तवनकं वालं है—कन्नेक्स | कनकत् लेक्काको कार्य कुन्नार वीपनेन और अर्जुन इक्कानकं चार किया थे थे। कार्या और देककर कुथिहिएने कहा—'लेक्का । उक्त हैरी बात र करिये। अस्य इतारे कार्य है, इस अपने आहार सर्थ है। आंध विकास पहारों है, अस्मी विकास निर्देश है। आंध्या अस्ताने निया हेन्यर में से ऐसा सम्बा का है कि बारसम्बद्धा कर, कैरी राजाओंका कुरुकार, कम्पून कार्यों क्षांसि—एस कुछ स्तुकार स्त्यात है गया। कार्यों ! अस्य क्षांसि—एस कुछ स्तुकार स्त्यात है गया। कार्यों ! अस्य क्षांसिक हैन्स में जीना परंद की करता। अर्जुनके किया अस्य और सापके किया अर्जुन क्षांसिकता। अर्जुनके क्षित अस्य और सापके किया अर्जुन क्षांसिकता। अर्जुनके क्षांस क्षांस्

कारोर ही इन कार्य-विशेषक प्रथम क्षेत्रे । अर्जून अवस्था, बीकोम अर्जूनका अनुस्तान करें । मेरिट, क्या और मार्ग्डर बेको अस्तान विशेष्ट्र विशेषी (\*

वैज्ञानकार्य कार्य है—सन्तेत्रकः । मुनिश्चिरकी अनुसीत ता करों तीवान, भीगोर और अर्थ-की पर्छ प्रकार के कि बार यो। प्रकार, सारकृत, राज्यती, व्यक्तिय, क्राप्टीस, पहुर, क्योन्स्सी आहे। क्यीर सीर को-कोचो कर करते हुए वे पणकोत्तरे का पहेंचे। उस कार में जोन कार्यान कर बारत किये हर में। कुछ ही क्ष्मण्यों में केंद्र पर्वत भेरवार पहुंच नर्ने : जावा क्ष्में क्ष्मा-सूचा कुछ एवं बारायम थे। मौओंके रिमे से सह कुर के या । वहींने करकात्रकारे राजधानी रखा क्षेत्रा रही 🐠। व्यक्तं पहिल्लो 🛊 उन रहेपाँने समझे पहले एकाव्यक्तिकी पूर्ण को न्यू-का कर थे, स्वरूपर नगकपूर्ण संबंध किया। इस दिनों वर्ज बड़े असकून हो यो थे। प्रकारोंने कार करवाको स्थित दिना और सांद्रिकी प्राप्तिके तियो पराज्यको सामीचा पदाचर आजिको उपक्रिया क्रमाची । क्रमें क्लाक्सको भी अधिक्राणिके रेक्पे बक्त-से विकासिक कारत करते हुए सरकार किया। हसर पंताबाह बीकृत्व, चीनोम और अर्थुन अच-क्योचा परिवान काले कार्यकार्थेक्-से वेचने नहाराच्यो बाह्युत् कार्यका उद्देश्य रक्तका नगरमें यूने । उनके विश्वक महःस्थल देखका जन्मिक क्षित को विश्वित हो हो है। उन्होंने हामशः कर-संबर्धिन कुछ सुरक्षित बीन इसोहियाँ कर वहीं । से विकास कानी कातम्बके कार कौथ गर्ने । कठान्य उन्हें देशते ही कार हो पना और उसने अपने, पान, प्रमुख्यें आदिसे उनका Design Street

कानेका ! बीकुमा आदिके केली उनके आवश्यका कोई मेल नहीं था । इसलिये कासकार्य कुछ निरम्धारपूर्वक महा—हमानो । मैं सन्ता है कि सामक महामानी सम्बर्ध सारेके अतिरिक्त और किसी भी सनय पारत और प्रमान सारा नहीं मारो । सामानेग, भारतुर्ण, और है ? अनके समाहे साम है, सारेरार पुन्नोकी सामा और अकुराय भी है। आसरोगोकी पुन्तानोरर प्रमुख्यी जानकामा निकान गया इस्ताक पा है। आसरोग सासी होका क्यों नहीं आये ? निर्मानामूर्णक नेग प्रमानार और पुन्नोको सोहकर मानेका साम कारण है ? आसरोगोंकर वेच से अकुरायका और पार्म सामानाम प्रमोगन क्या है ?!

वरसम्बद्धे वर पुत्रका कुला वरा प्रति लेक्नाने विन्तुः प्रभीर गांगीरे वरा—राज्यः । इन बाराक अद्यान है, यह से अपनी सम्बन्धी करा है। सरकार में से ब्राह्मण, कृतिय और वैश्व—सीनों है बारण का सकते हैं। पुरुष्णा पारण करता से लेक्नानेका करण है। श्रीव्यंकी पुनर्त् है क्यान कर है। इन बाजीकी चीरता नहीं दिसाते। यह अपन हमार पाहुका देशना चाले हैं से अभी देश से। बीर, कीर पुरुष सहके पाने किया हमके और निवर्क काने हरते जांत्र करते हैं। इनने की कुक किया है, सब सुरुष्ट्रा है।

अवस्थाने कहा—सि विभा संख्य आवस्त्रेचीके साथ बहुता या कुर्वकार विभा है, यह ब्यान देनेनर भी बाद की पहल । युव्र निर्धालको कृतु सम्बन्धिक क्या कारण है ? बाद सर्वृत्योके रिन्ते नहीं अध्या है ? मैं अपने वर्गते साथ है। प्रशासन अध्यार नहीं करता । किर मुले कृतु व्यानीका बारण ? कहीं अध्य क्याक्षण से ऐस्ट नहीं बाद से है ?

गणवान् अंतुम्बने कह—सकत्। हुन्ने इतियोकः प्रतिकृत कार्यका निक्षय विका है। क्या का हुन् कर्न अस्तान कार्य है ? हुए हार्यक्ष एका होकर की निरमाय एकासोकी विका करना केसे स्वीत कार्यको है ? किंतु कर कार्य है इस दुन्तियोकी स्वास्त्रत करते हैं और तुन असिय वातिका नाम करना करते हैं ? हम, व्यक्तियों अधिकृतिके हिन्ने हुन्तरे क्याक निक्रम करके की असे है। तुन के इस प्रत्यक्षों कुने रहते हैं कि मेरें स्वयंत्र कोई केसा क्ष्मिन नहीं



है को मुखाय प्रम है। इस विभाग पृथ्वीके मधःस्थानम् पृथ्वी की अधिक की। हैं। इसमें मिले दृष्ट्या का करका सामा है। अपने कारकारणांके सामने का करका कोड़ हैं। अपना हुने कृद, कभी और सेमाके साम कथ्योंके वासा कोड़ा। इसमें आनेका कोड़ब निक्षण है कुछ है। इस प्राह्मण की हैं। मैं हैं क्लोकका पुत्र कृत्या। में सेमों हैं पान्कृतका बीमकेन और अर्थुन! इस हुने मुसके दिन्ने स्वस्थात हैं। इस के के करका कैसे नायतिकोको कोड़ है असका हमारे साम बुद्ध करके पहलेक निकात।

अवस्थाने कार—'आपूर्वण ! मैं मिनती भी राजाको किया गीरे नहीं सामा है। समित्र विश्वामों से सही—का कीन हैं, किसे मैंने सीमा न हों, जो मेंद्र सामाना कर सकता हो ? क्या मैं तुम्मी इरकर हर राजाकोंको होए हैं ? च्या नहीं हो सकता ) हर च्याने से सेनको साम स्था भी । मैं स्थाने स्था का तीनोंके साम अवेतने ही त्या सम्बद्धा है। याने एक साम त्या को भी शास्त्र-आता ?' जा कामार करामानाने अपने पुत्र साहरेकके राज्याभिकेतानी आहा दें ही। भंगारान् श्रीकृत्याने देशा कि शास्त्र-कालोंके अनुसार कट्योरियोंके हम्बाने सरासन्यका यान नहीं होना चाहिते। इस्तीनने उन्होंने नरसम्बद्धां सामे न सरासा भीनोंकों साथे सरायनेका निकार किया।

## जरासन्य-चथ और बंदी राजाओंकी मुक्ति

विद्राणकार्थं वहरें हिं-कालेका ! जह कारकृत् वीद्राणके देखा कि वर्गास्त्र कृत करनेके किने उत्तर है कहा है, यह उन्होंने उत्तरी कृत-'एकर्! दूध हम डी-प्रेमेरे किनो प्राण कृत करना वाले हैं ? हमाने कीन पृत्रके किने किया | उत्तरे वाला और व्यक्तिक विद्रा करना कीनार किया | उत्तरे वाला और व्यक्तिक विद्रा करना करिये, पीढ़ा विद्यानेकारे व्यक्तिय व्यक्ति, व्यक्तिक जनार करियाका किया | अधिकारोके अनुवार कार्य करना व्यक्ति, व्यक्ति उत्तर और करनेकी व्यक्ति हमा कहा है क्या | स्वासकार कहा-'वीकोस | अस्त्रो | व्यक्तिक हमा स्वासर हस्तेका की कहा है विकास है !'

अन्तार् चीमनेन श्रीकृत्यते नवनकं तेका अक्रात्तेते स्वीतंत्रकः कव कव्यक्ताते विक्रोके दिने अक्रातेते उत्त एवं । मेंची ही अवनी-जन्मी क्षित्र वाक्षे थे । क्षेत्रीत ही अवनी-जन्मी पुन्तानीयों ही प्रवा क्यात्र का । इस विक्रातेते पहले एको कृतेना के हुन्य, व्यवका क्षात्र और कहा होस्को



हुए परावर गुज ज्ये। उन्होंने एकपीड, पूर्वकोग, तमुद्रिक आर्थि अनेको हाथै-पेच सिक्षे उनकी कुश्ती अपूर्व थे। उनका मारामुद्ध हेरानेके दिन्ने हवारों कुश्तानी स्वापन, समित, वेरण, सुर, भी एवं कुद्ध इकट्टे के उन्हों उन्हों। उनेर पीना-इकटेंने कही कर्वक स्वार्ट केने रचनी। वे कुशी-हामोंने एक-पूरांको इकेंद्रा देते, न्यांन प्रस्कार मुख की, सामी एक-पूरांको इकेंद्राते, समित्रों, स्वर्टाटने, सुर-बेंटे मोट

वैदायकार्थं कार्षे हैं—कार्यका ! का कार्यका ! कार्य कार्ये और हुंका करते हुए हुंखोश आर करते । वे विवार इस्त्रोंने देशा कि कार्यका कुनु करवेके तियों तका है कार्य का कार्येंने करते कुल—'एकन् ! तुम हम कीरोमेरें इस्त्रों और शब्दी कीरवाले कार्यका अपनी पुजाजोंसे हुस इस्त्रें साथ कुनु करना वाहते हैं ? हम्पोने कीन कुनुकें अक्षा रहा हुनु करना वाहते हैं ? हम्पोने कीन कुनुकें

क पुरु करिक कुमा प्रतिकारो आत्म क्षेत्रर समाता नेव्ह विर-कारक निया कार्य-मेर्च और निया को प्रश्रास का । बीकारे दिन राजेंद्र समय मरावाम अकार कुछ दीला या गया। अवकी या हवा देशकर भगवार बीक्रकाने नेकार्य केकोरको उन्हाके हुए बहा-'क्षेत्र केकोन । क्य कोवर प्रमुखी अधिक स्थान प्रतित मही। और ! अविश्व कोर राज्यनेतर सो कह गर ही सहयाह हार्रास्त्रे अब हुन करामानको ज्यादा न क्याच्या केम्ब्रु बाहुदुन काले हुई ।' क्षेत्राणको साथ सुन्ते ही चीन्होन्ने बरासन्त्रको विवति साम्ब के और की यह करनेका संबद्ध किया। करनाव क्षेत्रकारे परिवर्धको और वो पूर्वी प्रत्येत विन्दे प्रताहित करते पूर्व प्रतिक विकास कि 'भीभारेत | पुरुषे हैकार और क्यूनर केने है विकास है। हुए प्रश्निकार स्टिस क क्रमेको विकारको हो ।" बीक्रमंत्रका हुन्तर सम्बद्धार सम्बद्धार चेंग्योशने संस्थानको अहा नित्य और को बोरहो को कारताने क्याने जने । सी बार क्याबार को क्योंने संधीतवा परका और कट्टोकी बोटले उसकी रीककी रीव लोककर पीस क्षेत्र । साथ ही ईक्टन करके साथत इस के करका और दूसरे केरका अध्या के रहाकर को हे भरतीये बीर हारवा । जरहास्थ-की इस कृतिक और भीनतेनकी गर्जनको क्रांकित करता अवनीत हो नहीं। विकास हो नर्मपालकारों नेवल हो नकी । एक जोन वर्षीहरू --- विशेषक होत्यार क्रोबारे करने कि **१**००ी केन्द्राच्य से नहीं कु. यह, पूजी से साव-अन्य नहीं हो नहीं |

वन्तान् संस्थान, अर्थुन और धीमसेन्से प्रमुख्य साथ बार अर्थे प्राण्यीन इन्देशको एनियासको इकेदोन्स प्रसा दिया और वे एसो-राम व्यापि व्याप नियास गर्थे । सीकृत्याने करामको व्यापनिया विका एकतो जोता । अस्यर भीगकेद और अर्थुनको वेद्याना और व्यापि व्यापना केदी एकाओंको साथ व्यापी कोद्या व्यापना विकास । अर रचनो ही वे एकाओंको साथ व्यापी काम गर्थे अस रचनका नाम था सोदर्जवान् । हो प्रमुख्यी साथ्य एक साथ वैकास भूदि कर रचनो हो । अस्यर गीमसेन और अर्थुन केठ गर्थे । धानकान् वीकृत्या सामित को । असे रचनर वैकास अपने व्यापने विकासको वार हानसेन्स संस्था विकास था । असमें कार एक विकासका हो, यो विकासिती अस्यर के हैं एक्सकी एकी, हानसन्त्यी-सी व्यापनी और एक केवन दूसरे हैं। होना कारी थी। व्या त्या हमारे वसू नामके स्वाको, बसूने बुद्धस्वको उठैर बुद्धस्वने करसम्बक्ते दिया वा। व्या दिव्य एवं पाकर बड़ी जातकासे तीनो व्याप्तारे व्यारेर वाता थी।

परम बसली करनाकरनासम कावन् सीकृष्ण रव इकिसर गिरिकासे बहर निकरों, सूने मैदनमें साथे। वह प्रदान आहे रागरियोंने इसे कैरसे कुटे हुए एकाओंने शिकृष्णकों विधिकृतिक पूजा वर्ष। राजाओंने कहा— 'सर्वश्रियान् प्रयो ! आवने योग और सर्वृत्ये साथ को हुकृतार सपने वर्षकी रहा वर्ष है। वह आवके तिने कोई निकास नहीं। इस जगरस्यक्रम विशास वार्ल्ड हु-स-सर-इसमें केस को थे। आपने हमारा सहार किया। सर्वण्यक्रम यहानाव ! इस दु-बाने कुछ हुए। आपने उपकार बोलिकी



स्वापना की। इस आपके सामने कालाने बुनावर सने है। इसे कुछ आहा ग्रीनिये, आपका करिय-से-करिय काम की वारें।' भगवान् अविकासने उन्हें अववासन की कुए कहा—'वर्षराज कृषिहिर कालाविक्द प्रश्न करनेके विको राजसून का कान्य कालो है। आपकोग असमी सहस्वा क्षीनिये।' राजस्त्रीयों अस्ताताकी सीम्बं न स्वी। अनुनेरे इससो का प्रसाद करिकार किया। अस ने सोग मनवान्

श्रीकृत्यको साराहिको के देने लगे। भगवान्ते उत्तर कृपा करके क्या कठितारित केट जीवार की। गरासका पुर स्थान वनित्यके साथ पुरिश्तको आने कर अनेको स्था लिये क्या नाराहते श्रीकृत्यके सामने उपनित्त हुन्त। भगवान् श्रीकृत्यने भवकीय स्थानेकको जानकाल देवर पेट स्थानर की। संस्कृत्यन, उत्तर्व और गरेपसेनने क्या स्थानेकका अधिकोड किया। स्थानित क्या मस्यातारो अपनी राजवानीने स्थेट नवा।

पुण्येत्व वर्णान् अव्यान अस्ते हेनी पुणेरे पहानेके और उन एक राजानों ताथ धन-रामी तमे राज्य होजानान है इन्द्रांश पूर्व । उन्हें देशका सर्पानके अन्यक्षी सीमा न ही । परावानों बद्धा— 'राजेन्द्र | यह को संभानाकी करा है कि केरान चीमरेने वरसम्बक्ती बारो और वैद्धी राजानोंकी कैसी हुदानेका सुनक जात किया है। इससे स्थान और क्या आक्षा होन्य कि चीमरेन और अर्थ कार्न-रिद्ध करते समुकार निर्मेश तर्पेट आहे । वर्षाम पुणिदिने वही अस्ताताने पणवान् सीम्पानका समार किया और अपने प्रावानों प्रेमी गरी सम्पान । वरसम्बद्धी मृत्यूने वाची प्रावान आयोगित हुए । उन्हेंने सम क्यानपुष्ट राजानोंने निरम-पेटका सम्बद वर्षाचित कार्य-कार्या किया और सम्बद्ध हुई विद्या किया । सम्ब सीमा कर्माक्षी अनुमारिने कही प्रवासको स्टब्ट विधिय कार्यांके हुए अपने-अर्थ देश करे न्त्री।

पान प्रयोग नगमन् बीकृत्यने पूर जनार नगरानामा पान करावन वर्षणाच्यी अनुगति प्राप्त करके कुन्तो, जैनदी, बुच्छा, पीमलेन, अर्जुन, स्कुल, स्कुल और बीचसे तिहा सी तथा अर्थी स्वपर, को वरासन्तके चानि से आने थे, बुविद्याची कहनेसे स्वार होचर हारवाची वाता की। बच्चेड सन्त पान्यांने आन्त्रकाम प्रगानन् सीकृत्यांकी बच्चेतित अधिवासन एवं प्रतिक्रमा की। अन्तनेत्रथं ! इस बेरिकृतिक सिन्द एवं स्थानतेथी हुन्दाका अथन देखेंड कारण प्राच्यांकीय पन्न दिन्-दिन्दानों पैन्द गमा। वर्षस्त बुविहिर शमकते अनुगतर क्यांस दृढ स्वकत जना-पानन करने एके। वर्ष, काम एवं अर्थ---सीचों ही पुरवार्य उनकी सेकार्य संस्त्य स्तुते के।

#### पाण्डवोंकी दिक्किक

रीतानाकानो साने हैं—जनसेनव ! एक हिए अर्जूनो सर्गराम पृथ्वितारो साहा कि 'यदि जान जाता है तो मैं दिन्यानके निने नाई और मुख्येके तभी एकाओंने आकंत हिने का बसून कर्ता ! पृथ्वितारों उस्त्रेंत्रको साहानेत करते हुए क्या — 'जनाक, तुन्हारी विजय निक्षित है !' पृथ्विताको आतंत काह करके काही प्रदानोंने दिन्यान-करण की । सारोगांव । पहानि काही प्रदानोंने एक उस्त्र ही पारो दिसाओंकर विकास आह भी भी, वित्र भी मैं हुनो उसका करता सरोग कर्ता कुलांता

पन्नेत्रम । अपूर्ण अस्तर विद्यासी विश्वनात चार् वेत्ता मा । अपूर्ण पाने सामाना परामानो ही मानते, परामुद्ध और पुरित्य देवीमा विश्वन अपूर्ण परादे केत्नाईक शुन्तात्रको सीत विश्वा : शुन्तात्रको सामी सामान् शामान्त्रीय और अतिनिधा पर्याचे शामान्त्रीत्र विश्वन अपू मो । साम क्षेत्रके सामान्त्रीत्री प्रत्यात्रकोत्र विश्वन अपू गामान्त्र पुद्ध विल्ला । सामु अपूर्णि सामान्त्रीत सामने अपू शामा ही पद्म । अस्त्री सामान्त्रको अपूर्णि सामानेत्रियपुराद पद्मा ही पद्म । अस्त्री सामान्त्रको अपूर्णि सामानेत्रका सा गामान्त्रके सहायस विल्ला, चीन आहि सहाने सम्बद्धि वेत्रके साह देशोंक स्थान मो से । अस्त्र विल्ला पर्याचन पुत्र होनेके साह की सर्युग्या पूर्णिय सामान्त्र देशका पर्याचन पुत्र होनेके साह



क्या—'न्याचाडू अर्जुन | सुनारा पराक्षम हुम्पूर्त ही चोन्थ है। तुम देशराज हुम्मो पुत्र हो र | इन्यते पेरी विस्ता है और मैं असी कम कीर नहीं हैं। इसकिये में दूसरे युद्ध नहीं कर समस्ता। मेटा | मैं शुक्ति हुम्मा पूर्ण कर्मन्य; सदस्ते, इस व्यक्तं हो ?' अर्जुनने कहा—'रावन् ! कुलांतरितर्वेणित सम्बद्धीया वर्षण्य मुचितित सम्बद्धार कहा करण काहते हैं। वेशे कृतिक अधिवाक्ता है कि से व्यक्तार्थी समस्त् हों। आप अर्जु कर रोजिये। अपने के जिला कृत्यों निता और में दिलेशे हैं। कृत्यों को स्वापकों अपना को है नहीं समस्त्र, आप अन-व्यक्तों ही अने के दिलिये।' क्यान्तर्थ व्यक्तः—'अर्जुन ! वर्णश्य कृतिहित की सुन्दार्थ ही समस्य मेंदे प्रेमका है। में हुन्दारी कृत्या पूर्ण कर्मन्य : और वर्षहें बात हो से बाहों।' मीर अर्जुनने क्यांक मार्च कृत्यात्मा मान्यर कर्मांक आरोकी साम्य

कर्मन्त्रे कुनेनके क्रम सावित कल दिसावें बदकर व्यक्तिक चीवर-स्वार और आग-व्यक्ति कर सार्थिक अभिनार कर रिम्म । सहस्र देशके एक प्रकार केर पुत्र कर्म हर करी और यह अर्थुनकी प्रत्यमें अरवा। अर्थुनी कुरमान कम आधि सीमार असी सक्तानी र्वेजनिक्को देशका पाना बोलभार को राज्यभार धर दिया। काराः केश्वर, कार्यन, सुक्रम, सर्वक्रम और तथा अनुव क्रिके एक्जोक करने करते पहल्लोक जर्म कार्य किया । अनुने केला मानके एकाको उत्तर पहाड़ी सुदेशे और मेंच्योची, भी साह अवस्ति हे, बीटा। करपीरके पीर क्षािक और का क्यानेका कार्यक क्या स्वेतित औ उसके अचीन हो गये । कियाँ, यह और खोखनको नरवति सर्व करणका हुए। अर्थुनी ऑक्शाप्टेस ऑक्शाप्ट बार्क अर्थ रेलके राजा रोजकरको हराया और महरिक पीरोको अधने अवीन वाले. हार, पामोप और व्यक्ति देशीयी अपने सम्बोध विस्ता । मानिक रेहाचे क्षेत्रेके अंतरके स्टब्स हो रेसके तार चेदे रियो : निवार और को विकासकर विकासीकारो कहरतार बनलीवीयर केलका पहाँचे जाती।

अर्थ्य कार्यक्षः विव्यक्तवानिक व्यक्ति हराहा और इसका देशके पाका मुख्योको हराहार प्रकारोकर पहिले । वहाँ अभिवानि कवित बालामेके हरीन हुए। बहिने हराहा देशके अराव-अर्थ को अरावेका की अधिकार कर दिखा। अरावार अर्थुको उत्तरी इतिकांकर विकास आहा करती बाही। वर्षा वर्षा अरोह कारो--र-करते कई और और विद्यालकाय इस्त्याकी आसार अरावारमं कहा — 'अवहाय ही आप कोई कारकारण पूर्वा है। वर्षोकि व्यक्तिक पहुँचना एकके दिखे सुक्ता नहीं है। आप वहाँ आ गये, अही विकास है। व्यक्तिक वर्षों की कहा कुम्ब-सार्थरसे नहीं हैती वा स्थारी। इस्तिको विश्वकारको से काई बास हो नहीं है। इस्तोन आपका प्रस्ता है। जारका कोई जान हो से कर सकते हैं।' अर्जुन्ने हैंकों हर कहा—'नै जरने को पाई करेरा मुक्तिहरको बातवाँ सकद करानेके तिले दिन्यान कर रहा है, जोर कुको इक हैसारें कुकोचा अस्ता-नाम स्थित है से मैं इसने नहीं पूर्वेत्य; सुन्तांत केंक्स हक कर है हो।' हरिकांद संस्थेने अर्जुन्यों कर-कारों अनेकों दिन्य कहा, दिन्य अस्तुन्य और पुग्तामें आदि दिने। इस स्थान असर दिन्यार विकास करके पीरवर अर्जुन पहल् कहायों मेंकों साम कई सामानको इस्ताम संबंध आवे और साम कर इसे साम करों।



भागोतान । अस्तिको साथ ही चीनकेन भी वर्णकारी अपूर्णाको पहल बड़ी सेवा रोजार पूर्व विद्यार्थ दिन्हे कर वर्ष de gereiteite von gesch fiest fiedt weit. भीवनेत्रों साथ वस्-दृद्ध किया। भीजोको अहे पराधा कर कामद्री चौरकाने काम है। अनन्य हेन्यपति क्या विरूप । अनुनि man: septe, ploper seit islanty mu राजीयर अधिकार कर निष्क । चेत्रिदेशके यथा विकासको । क्षे पुरु नहीं करण पह । जाने शब्दको बारण वर्गराको स्थेतनकारों हो पर देश सीवार कर दिला। स्वान्तर भीवरंको कुमार देशके राज्य वेकिक्स्त्यो, कोरल्लेसके स्थापे वृह्द्याच्यो और अनोन्सावित्ती प्रयोग्य होर्बन्सको अनावास ही बसर्वे कर सिम्बा। करवान्त् कार बोतान, भारतेत और विकासकार्य क्लेक्क्क्रिके पान करे अभीन विक्रो । साहित्याचे सुरख्यु, सुन्धर्यं, स्रवेश्वर सुन्य, न्यास हर्व परस्केतके नीर्वे हर्व बसुपृत्तिको पी अपने अधिकार्य कर रिम्म। पूर्वोत्तको देवोने नहकर, स्वेक्केप हर्व

व्यक्तिको भी उन्हेंने हैं अपने कर्मने किया का। प्रनरिक्ते काफे निवारण और योजगासर विकास प्राप्त करके र्वक्रमान और मेनकर पर्वास ये उन्हेंने कमा का किया। प्रारंक और कांकार किया जार करनेके कर क्यानोको ची सको नवारें कर रिव्य । सुद्धा, अनुद्धा, कन्द्र, क्ष्मार असे कारी असकत है का<u>र है गये।</u> निरंपको नामकाका स्थापको प्राप सेवर प्रोप्यसके क्ष्मका संक्रम किया । योग्यक बाह्येम और क्रीक्रिया नहेके हिंचने दर्शनाता क्या भी पर्याचा है गया। मंग्रेसके राजा उनुसार, क्यांत, वर्वतरियती सामीका और प्रधी समुख्यात्वर्धी क्षेत्रक भी उनके अधीर हो पने। इस प्रकार क्षानेक हेलोरन विकास प्राप्त करके चीन मोमलेन हर्वतिकांह कार आहे। समुद्धाः और सनुत्रोः शहरोते पुनेवर्ता मेन्डोने किया पुरुषे ही उन्हें तरह-करहरे हीरे, चेती, मीरा, व्यक्तिक, सेना, कोई, वार्न-सुधे कहा आदि हिने । अनुदेन



क्ष्मते चीन्योनको सन्दुष्ट कर विचा । चीमसेन सम दन तेकर इन्द्रालक स्केट अस्त्रे और उन्होंने कहे प्रेयते साच-का-सारा कर असने को चर्च कर्मराजको सीर विचा ।

वनमेकव ! जरी प्रत्य स्त्र्वेको की बहुत बड़ी सेनके साथ विधिकको तैको इतिकामी बाता की वो उन्होंने समझः पन्छ, मारकोड़ और अधिराजके अधिरातियोको कामे कर्का काम सामक बन दिवस । राज्य सुकूतार और सुन्तिको बाद विधिय मारक और परवालेको जीता और सामकोड निवारपूर्णि, मोन्युपर्यंद और शेलियन् राज्यको सामे बाहने कर विच्या । माराह्मार जिसस प्राप्त कर होनेके

कर, कृतिराधेकर, अक्रमण किया और उन्होंने कर्ज़ | अनेको उद्यारको कर्ज़ अक्रते करने उस हाँ ही। उस seferanc mare where we firm I park my make गर्मकारी ओर को ( जार उन्नेनके जीवड़ कीर लिए और अनुविकारो इतकर काले का रिका नाम्बीय और है। बार्योको परुका कर पहला क्ष्म पुरुषकार अधिकार बार रिच्या । इन्होंने हान्यकः वर्षाद, पाल्याय और मुलिन्द्रीको प्रशास प्राच्यानरेक्टर विकास प्राप्त की और विक्रियाओं के कृते द्वितिकृति कील तथा अदिस्थानित काल केल दिया। गर्नकर मुद्धाने कह नक्षाम मीत करने कह रक्षाम क गर्ने। आने ब्यूबन शियुर-पहल्ड और चीरनेकरको करने विका । मुत्रपुरेशके कार्य जीविकासर्व अवक्रीतर क्रिक भार करों। भोजवाओं कभी और निमाने चेन्यकों का क्षा केया : जा जोगोंने जीवरणके कारणको कारण करे केनरी प्रकृतिकारी अञ्चल कार को। व्यक्ति करावार पूर्वाच्या, शासकार, रूपका और समुद्री राजुकोच्छे अपने अधीन प्राची हुए मोन्ह, निवाद, पुरसाब, कार्यक्रमाना एवं सामानुस-हिल्क क्यून प्रता राज्यांक विकार प्रता और । क्षेत्रकारण, पुरशीयहर, सम्बंध और राज्यक कर्य स्थाने हे गये। राजा शिविद्वार, बहुरने केरल, इस वैत्याने पूरण करन प्रश्रापनी नगरी जनकी से गन्दे । सम्बद्ध और सम्बद्ध की इस्तम नहीं छ नवे। पान्युव, इनिंद्र, उन्दं, वेहल, अन्य, पारमान, पारित्व, अस्पारितेक, आस्त्रीसूधी और अस्त्रान्तन कारी प्रभावने राजभाविकों की प्रकोर कहने हो राजी। राज़ीको हान्छे श्वरा सङ्गावित्रतिके पान् सन्देश केल और विधीकाने जहे प्रेयमें को सीमदा बार दिन्य । स्वर्धको हो पामान श्रीकाराच्ये हे पहिला भगाई। साथे स्वानेचे उने

कुछ केल्टर, सामने पानम बराबर वही प्रीत्याने सुदिवार व्यक्ति इस्तान और काने और छारी नक्ष्टे नर्गराचको सीवकर वे सुकार्यक इच्छाराने खरे रहे ।

करनेका । स्थानने भी जारे स्थल बढ़ी गाएँ हैंग तेकर where formed therein first preach there are tenth-वर्तीको करे कर, क्या, नेकर आधिने परिएर्ग ऐतिहरू-हेली बहरि पानकृत प्राथमधेत पान उत्तर चेर संबंध हुआ। अपने पहुरको पहानुति, हैरोनक और असके पन्नार चोर्क्सकर पूर्व सर्ववसार कर विन्य । क्यांने सामग्रेकको कारों करके दक्षायें, किमि, विकां, अन्यष्ट, पासब, क्ष्मान्त्रीय, प्रकारक, मारावार और देशकेंद्रों सीन विस्ता ह वहाँके मौतवार पुजार अलो विकासी असमा-संकेतीको, विश्वकारी प्रकारिके का प्रशासिकारी को और अवनीरोधी पहले कर रिल्म । प्रमुखे प्रकृत्य, अवर पर्वत,



ज्ञार कोटिया, दिल्लाहर मनर और प्राप्तरर प्रको अधिकार-होत्रों आ पन्य । पश्चिमके समय, कर और क्रम आहि समा नकुरको अञ्चलको उनके अधीन हो सने। हरकानाही क्लांको और औक्तानों को बेनसे म्युरम्बर सामर सीवार. किया । नकुरको कथा प्राप्त भी हेनसे राजेर राजेन हो नते । वे कर-सामी भेट तेमार नहताने समुखे राष्ट्राधेवे हेरेको भगवर संस्था, पाय, स्वरं, प्रतात, कार और मेंद्र लेकर है प्राप्तकारण सीट आने । ज्युक्तने पर और 🖟 सुरवित्व और ओक्नावारा अधिकृत प्रीतन दिवार्क जैतना क्यकरमें को कन-राशि जार की की, जो का कार ककी की 🖟 सारा कर अपने को गाउँ चुकिएसको सींप दिया।

इंग्रहां को अपने दिन्छ । इस्पीरी सुन्दर-सुन्दर अनुरक्षेत्री | करिन्दारी से सबसे से । इन्हरूपने अन्यर उन्होंने कामहार

#### राजसूप-यज्ञका जारमा

ि-स्वयंक्त । प्राथनिका, अकाबारणमें अनुसार और अवसंबार वेककर सही। प्रया अपने-आर अपने-अपने वर्षका प्रतम करने लगी। प्राथमे अरुवार करकी बसूचे और वर्गपूर्वक प्राप्त करनेसे सम्बन्ध बनवाई वर्ष होने लगी; रह सुन-समृद्धिर्थ थर पंचाः राजाके प्रत्य-प्रधानमे कंती-करी, व्यापार और मे-राज बीक-रीज होने सभी। प्रसाने परकारकी बोबोबारी, योगे और मूच्या कर की की का राजकांकारी कुठ जी बोल्ये थे। क्लिक्के क्लीकाओ अतिकारि, अन्तवद्वी, रोग, अति आविकार कव प सा । त्येन उनके पास केंद्र हैने का दिन कार्य कार्यके हैंग्से ही उनते, बद्ध र्मातिक विशे वर्षाः वर्षाः क्यां अवस्थित क्षेत्र बरा-पूर्व पूर्व अञ्चय है का का

क्ष वर्गाच्यो हेला के भेरे अप, क्या, का शाहिक सम्बार सर्वाच पूर्व है तक उन्होंने यह करनेका संकार किया । रिपोने करने अस्तन-जरून और प्रबद्धों केवर ची आता किया कि की का करनेका क्रम समय है। उस कीए है का आरम कर देश करिये । विश्व तीनों सोनोंका आरम शीयावः पहेल गया था, उन्हें दिनों चनवान् श्रीकृष्ण कर्ष है बहाँ एका गर्ने। कानेका । भारतम् क्रीकार कर्म ही मानुक्ता है। ये ही बेह्नकार है और बहे-बहे क्रान्तिके ब्यानमें अनेवारी है। यह-बेतनम्य जनत्में वे सकते केंद्र हुई विक-सद्भावको उद्भावकार एका उद्भावकार है। में पत् चरित्र, जांकको साथै, दिवसक्य, व्यवस्थान स्थ आपन्यासमें प्रत्य देनेवारे है। परावान् बोकुम्प अन्ते ५% चुनिक्षित्रपर स्थान करनेके नित्ते जनांका कर, जनाव कराति और पहल रेन रेकर राज्यी व्यक्ति हिन्द्रविकालो मुक्तरित करते हर इन्द्रमानने उट पहुँचे। सबने उनकी अनवानी करके उनका वर्षाचित सत्वान विकास वर्षावर मुनिविर अपरे पाई, पुरेवीत बीमा और स्वेक्स्मकेराकर आहि अभिनेते साथ उसके पाल गर्ने तथा विकास, भूदिशान्त्रक आदिके कानस्य जासे कोले-'केव कांग्रन्थ ! मह राश पुरस्का काली क्या-सामारी है हमारे



असीन हुआ है। जहार-सी कर-राज्यति भी हमें जात हुई है। क्यू कर्त अन्तर्गत देखे हैं है। अस में प्रदूश है कि पुरस्ते हुए। विक्रिक्तिक पूर्वन और प्रकार-प्रोत्तन सम्बद्ध हो । अब अस में अभिनामित राजपुर-याओ रिल्वे मुझे अनुमति ग्रेसिये । नेकिय । तक ताप कामी देखा काम मौरिको । तापके करे है रिका से करेगा। जनमा को है कार्यक्ष लेकेको अनुसरी दीनिके । आपन्यी इन्हरूके अनुसार ही साद कार्य सम्बद्ध क्षेत्रा । मनवान् क्षीकृत्यने मुखिक्रिके गुज्येका क्लेन करते कुर कहा— 'बहारक ! जान समाद हैं। आपको है जा पहला करन कहेंचे अब अब इस पहली देश क्षेत्रिको ।' पुनिष्ठिरने विरामपूर्वक कहा--'हवीकेल । आग नेते इन्हरूके अनुसार करने हैं। अन वर्ग है। इस्तेने ही येख अंबार्य रिद्ध हो गया, अस यह सम्बन्ध होनेने कोई सन्देत जी सार्थ

क्रम कर्नाम पुरिन्दिनने स्थापेत और पश्चिमोस्ट्रो आहा दे कि अक्रुपोधे को पुरोक्ति चौत्रके अज्ञानसार कार्यों सारी समये हीता है नेपालनी साथ। अन्ये वर्ध- क्षय नहित्तिहरूकी बात पूरे भी नहीं हो चर्चा की कि सहते हैं। बाद की अधीर देखींक तथा, मीताबुर, बाद्धीय देखांने तथा, नप्रकारी निवेदन किया--'इन्हें ! अवन्यी करवारी चाले ही मह कार हो क्या है।' इसी समय महर्ग सीक्षणक्रियक है रेवाली, रापनी और पेदन हरकारोंको हे अले। के सब प्रकृषे अक्षा को और सुरामा प्राप्तकेको अनुस्ता । स्वयुक्ती मारकावन अव्यर्थे हुन्। येल और औरन होता । इन प्रार्थिकोधेः चेत्- चेदाइपासकों किया एवं पुत्र सदस्य हुन् । अधिकायकार्क अलगार बालकी जायतेला विकिन्ते सम्बन्धमें परावर विकास क्राके विद्याल पहलाकाका पूजन किया गया । विजयकारोने आक्रमें अनुसार केमनियांचे समान बहुत-से सुन्तिका प्राचीका निर्माण किया : अस्त सर्वाच्याने उत्योक्तां का MICH I De Propuse biefe fied ge stad : mabert क्षांको चेतरे प्रथम कह दिया कि देशके समझ सक्ता हो। अभियोको निरम्पान है आओ तथा मैदन और सम्बाधकेंग प्रारंको पान्य ही से आपते । बारेने बेसर ही निरमा ।

देवपेक्य अञ्चलके होना सम्बन्ध कर्पप्रकारे सम्बन्ध ब्हार्स हैवा है। उन्होंने स्वाले स्वाल, बर्ड, सने सकतो, सका-सम्बद, समान्त श्रांका और गरिवयोके तथा प्रतिकार शर्मी स्थान व्यासामाचे अनेत्र किया। वार्चे जोत्ते प्राप्त-पायक, वेर-वेदानमें नियम हात-के-हात सहस्य असे शरी अनके विकासके दिन्ने हवानी कारीनार्गके हता कारन अलग ऐसे स्थान बरनाये जमें थे के उत्तर, करा, करा क्वाहित परिपूर्ण एवं एक प्रदुष्टिके केन्य कुरुक्त स्थानके परिपूर्ण हो। का निकासकानोधे प्राक्षण कथा-पार्टी इसे क्षेत्रण आहे. प्रतान निपाने काने को थे। यह देखे वर्ध की बोलक में का है—'देशिये, बेरियों जोशिये, जोशिये ।

समेरास मुनिहिरने भीना, कुरारह आदिको कुनानेके हैंजी नकुरको इकिनायुर केसा। उन्होंने कई कावर सकते सरकारपूर्वक विनवके साथ निरुक्तम दिया और वे स्टेन बढ़ी असकताओं विभागना स्वीकार करके स्वाहरतेके रहण नहीं शने जिल्हा चैन, समार्थ हेव, सामान क्राह, महारज विदुर, कुरवार्थार्थ, कुरेंक्ष्म आदि सभी स्टीरस, नामार देशके रामा सुमान, सन्द्रान, अध्यान, कृतव, कार्य, स्वरूप, वर्षीय, सेम्पत, मृरे, पुरिस्ता, सार, अवस्था, क्यान हुन, पृष्ठपुर, जनन, मन्त्रत, वर्वतेन प्रदेशके नरवी मुद्रात, पीपहर, बारहेब, सन्तियोग, सर्वाधारियाँ। यह, असर्थ, कुमल, पास्य, अन्य, इतिह, विक्र

बिन्दर और उनके पूर, कार्यकर, विश्वपाल और उनके लड़के -- सम् के सम कार्यांकों आहे। कार्ये समागत रूपा और एककुम्बारेको नामम साहित है। सन्दी बहुनुस्य पेट ले-लेकर अने हे । काराय, अधिका, कार, साल, पर, जात. साम, कार्यम, समुख आदि समस्य पाएन महारती भी अने। वर्णतक्को अञ्चले सभी क्रमण्य समानोको सावस्त्राचेक सावन-असम् स्वान्त्रेमे उद्याचा गया। उनके क्ति के काम करवादे को थे, अन्ये कामे-रीनेकी सारी कारते, कारतेन्त्री और हो-नरे ज्यानकोहर एक्ष है। सामा नामानंद नात का लोग अपने-अपने निवासकानोते का को ।

कांकर प्रविद्धाने चीव्यविकाय और एक होन्यवाकी कार्योंने प्रचल करके कर्नत की- 'अनुस्तेष प्रश्न बहुने पेरी सहस्त्रत बर्देशिये । इस विकास कामासको अध्यक्ष को सम्बन्धि और का प्रकार कार्य वर्तिको, विसर्क पेश करेरक स्वयत हो ( कार्टिक कर्रवाने का सेनीको सम्बन्धि अवसे एक-एक कर्ण और दिया। इस्तापन चेजन-सम्बन्धी पहानीची देशकाले, अकुमान प्रकृतीकी सेम-दृश्यमें और कार राजाओंके सामा-सम्बद्धी निवृत्त हिने पूर्व ।



धीव्यक्तित्व, हेजावार्थ सभी वार्थी और वर्शकरियेका विरोक्त कार्य समे। कृत्यवार्थ संग-वर्षी और कोची हेलासक तवा वीक्रण देनेक कार्यवर निवृक्त हुए। व्यक्तित, कृत्यह, लोगहर और व्यक्ति कार्य कार्यको का निवत हुए। वर्गके कांग्र महत्त्व निवृद वार्थ कार्यको कार्यो और हुर्गकर चेटले आहे हुए व्यक्तिको स्वानेक कार्यो क्रिये। मनवार, श्रीकृत्यने कार्य है ज़क्कतींट चीव व्यक्तिका कार्य अपने कार्य विर्माण हुरी ज़क्कर सभी प्रविद्धित कार्यकोंने अपने-वार्य विर्माणि क्रिसी-व-विरामी हेकाकर वार्य विरम्भ।

वननेवन ! वर्गतान चुनिहास्य गर्वन करके कृतकृतः । होनेने विस्ते वर्षा निवाने तोन स्वतिका हुए थे, स्वतेने विश्ववेद सहार पुत्राने पान गेट नहीं हो ( सभी काही से कि केवार मेरे ही सनने गां। सम्बद्ध हो साथ। सेनारे पहु, विस्ता

विकालकी पंकिन्तं, रहोनो राविः संस्थानको विकान, सहायके स्थान और उन्हर्शनोधी पंक्षि पृथिति के प्रस्ति स्थान स्थानी प्रोत्ता स्थान हो यह सभी। कांग्रेस पुरितित्ता ऐसर्व संस्थान करणो प्रमान था। अपूर्ण प्राप्त हारा सम्पान्ता स्थान करणे पूरी-पूरी प्रीत्ता हेकर पहले हारा समान्त्रा स्थान विका। अस्तिक सम्बादांची पुरुगीते सद्धि देवर स्था। सा स्थान-स्थानेही किया देवियो, अस् ही हीर-पेक्षणो अस्य प्रित्ते पुरु स्था है। स्थान प्रमान प्रमान स्थानी अस्य प्रित्ते पुरु, तिल, सामान आहिती साहति वेदर केन्यानी विकास सर विचा। प्रतित्वाने स्थानना स्थान स्थार स्थान की सन्त्रा हो गर्ने। प्राप्तिकार स्थान धर्मे, स्था प्रस्ते स्थानो एक्स विकार ।

#### भगवान् बीकृष्णकी अप्रपूजा

र्वशासकारी साले हैं—क्लोक्स | सहसे अपने अधिनेकांत्र हैन सन्तरके केच वहर्षे और उन्हर्नेन महाराज्यते अन्तर्वेदीये इतेष विभा । वार्षः आहे महाराज राजनियोधे साथ को है होन्यनका है से थे। या अवलेक देशी कान पहली मानो लाक्जोंसे करा सामाना है हो। उस राज्य कर्त न कोर्न पर, पर और न से संस्कृति किस्सी । धर्मराजनी राज्यसङ्ग्रे और व्यक्तिन देशका देवर्गि जन्मको नहीं बरावता हों । श्रीरेश्वेच्य रूप्य वेरस्पर को पहलेबी यह महत्व पाए आ गाँदे, में भागकाहों सामानों सामानों महत्त्वेषणे हुई थे । एवं उपात्नेका समान्य ऐसा कर सहते राज कि इन जारि देशा है इसके हुए है। अब उन्हेंने मा-श्रे-पर कारानार परावर् श्रीवृत्तीक स्ता विका केली जार संपर्ध करे-'क्या है! वर्तकारक. अपूर्णनाक्षक अन्तर्वाची चनवार नारावको अवनी प्रतिक पूर्ण करनेके प्रित्ये क्रिक्टोने सम्बद्धार प्रमुख विका है। प्रित्यूनि पाने नेजाजीको पर स्था में 🗗 कि तुम्लीन नृजीने नामतार लेकन संवार-कार्य पूछ कर्य और निवर अपने लोकोंचे का जातो, जो कान्यनकरी करतान सरवार संस्था महुनेपाने अनतीयों हुए हैं। वेतराय इन्द्र जाति काला महुन् पुरंत विको बाह्यसम्बद्धी स्थापना करते हैं, बढ़ी अनु बहुई मनुष्यके समान केरे हैं। सर्वतकाश महाविक्त इस बाराहरू कृतिकारको अवस्य हो पुरः निवतं कारोपे। प्रमुक्तर



व्यक्तार लेकर संग्रस-कार्य पूछ करो और निर जाने लोकोने या जाओ, नहीं कार्यानकारी करावान लगान्द संमुख्य स्कृतंत्रमें अन्तरीतां हुए हैं। नेक्टन इस साहि काम महत्त् पूछा निर्देश स्कृतातां कार्यान करते हैं, नहीं अनु वर्षा प्रत्यको समान करें हैं। लाकेकार महत्तिन्दु इस कार्याकों स्वित्यकारों अन्यस्य ही पूक्त निर्देश कार्यों। प्रयक्तर संकृत्य ही समस्य कार्यके हारा अन्यका, सर्वाजीकारम् इस



असन कुछ करे और इसमें को सर्ववेद्ध हो, उसकी सबसे पहले ।' वर्णतामने पुरस—'वितासक । कृत्य करके बरस्काको, इन सम्बन्ध स्थानोने इनकोन सकते पहले विस्तारी पूजा को ? उपन किसे काले केंद्र और प्रमुख्य मेन्द्र स्थाति है?' साम्युक्ता भीको सङ्ग—'धर्मास । पृत्तीने क्रमंत्रीकोर्जन जनकर् होक्या है रहते भएक प्रापेत का है। का कुर की देश को है कि अतिका प्रवासोंने क्लकन् बोक्नम अपने देव, यह और महस्त्राची की है केंद्रिकार हे से हैं, मैसे होटे-होटे शर्टमें पूछा-मासहर कारणम् सूर्व । वैसे समस्त्रकात स्थाप सूर्वके जुलागानारे और क्युड़ीन प्राप्त कर्युक्त संस्थाने सीधन-कोतिने जनपना जान है, जैसे ही प्रश्मान् बीकृष्णके ह्या हमारी सचा त्रमुक्तिक और प्रमाणित हो स्त्री है।" प्रीमानी अञ्चा विरस्ते हे जाती सहोत्तरे विविद्धीय सम्बद्ध श्रीकृत्यको अर्थाहरू किया और वीकृष्णने प्रायोग्ड विभिन्ने अनुसार पूर्व स्वीत्वार **वर्षः । करो और अन्यद समापा माने (ल्ला ।** 

शिशुपालका क्रोच, युधिष्ठिरका समझाना और भीव्यदिका कथन

रैरान्यकाची असे है—कारोका ! वेदिका विश्वकात: भागवान् औष्ट्रांसकी अध्युक्त वेषस्थार निश्च नवा । असरे परी प्रमाने भीवादितामा और भागेचा गुनिवीरको विकास हर बीक्रमान्त्रे परावस्ता सूच वित्रा । असे क्यू--- 'को-को महाराजी और राजमिंधेचे प्रशीका को एकके प्रकार राजेकित पुरुषा पात कुछ पत्ती हो स्थातर। महस्स धावामी कुमारी एवा करते अपने क्षेत्र कान की किया है। पानको ! अभी सुरानेग करका हो, अमें सूत्रन वर्णका इतर नहीं है। पीकनिवान्य की सरिव्य करे हैं। grad स्ट्री र्मिक्सिनी नहीं पूर्व पर्वा है। पोला। हुम्हरे-बेले बस्तेतर पुरुष भी तक कार्यका काल काले तथाते हैं को कार्यको सपमानित होते हैं। कृष्ण राजा नहीं है। बिस पद एकाओं सन्पानकः पान केसे हो सवता है ? भ्यू अपन्ये भी के सबसे मुख्य नहीं है। इसके दिया क्युकेट अच्छी चौतिता है। बारि इसे अवना अन्य दिनेचे और अनुद्वार प्रश्वकार हुमार्थनीने इस्मेरी पूजा की है से क्या का कुलसे कावार है ? की मुक्तांग कृत्याची आवार्ग पानते हो हो की होत्सकार्यकी अस्तिति इसकी पूजा प्रशंका अनुविक्त है। अस्तिक्की इतिसे भी सम्बंधे प्याप्ते विकासमेन्द्र मनवान् मीक्न्यक्षेत्रायनको ही पूजा होती चान्नेके और चुचिन्हर !

इक्लाम् पुरुषोष्ट्र पीनारिकामध्ये रहते तुन्ते कृत्यास स्वत केले किया ? क्रायानावारी और अनुस्थानावेंद्र सामने कुम्मेंच्ये पुत्रा चाल, वित्रा पृद्धेले अधित हो समाते हैं ? धक्को । राजानिका कृतेका, भारतीको आसार्व स्थान कृत, विज्युक्तिके अस्तर्भ हुन तथा संस्कृत समाप मान्त्रीत वर्गन्त्राच्याच्या केन्द्रको क्षेत्रका, अन्त्री स्थानिकी हम्में कुलाओं पूजारेंट अन्तर्व देत्रों कर दूतता ? का कुला प व्यक्तित् है, व राज्य है और न से आसमें ही है। फिर हुसी किस सामानो प्राथम पूजा को है ? वहि तुनों प्राथमी ही अवकृत कार्य से से इन राज्यओको, इनसोगांको स्वस्तार हर होता करवार से नहीं काय चाहिने का। हारतेन धन, क्षेप अधिक बारक हुने कर की हैते. इस तो हैता प्रयक्ती वे कि का लेका-कार बर्जाका करून है, का सहस्र हो जान में अपन है है। से.एन इस गुन्होंन स्टब्स्ट पूरा सरकें इन्हर्नेनीक तिलकार कर यो है। इन जनानक हैं क्यांसको करने उत्तक हो गये। तथी हो तुपने इस वर्गकार्या एवा करने अपनी वृद्धिका विकरियाका Europa & 1"

विक्रुक्ट व्यवस्य विक्रमाची और पुँच काले कहा—' 'कृष्ण । मैं मानक है कि प्रमुख केवारे इस्सोक और एक्टी



है क्योरे यह हैंगा हैंगा से क्या से हुने से कम केन महिये वह हैंग हैंगा पूर्वा अधिकारों है। महि सामकों और वृत्तेसमय इन्होंने हुन्य पूर्ण कर में है से पूर्ण अमेन्य हैंगार को मीन्यर को सिमा ? केने कुम मुख-तिकार मान-ता दी बार से और अम्बेन्स कम-अम्ब मुख-तिकार मान-ता दी बार से और अम्बेन्स कम-अम्ब स्वानेसी सहा मार रहे हैं। हुन्यरी इस अमुक्त पूर्ण हैंगा कम्ब स्वानेसी हुन्यरा है तिस्तार कर में हैं। म्हेन्सम्ब मान मारम, अम्बेन्से क्या हिस्सार, मान्यिक्स कम्बन्स केन हैंगा जिस प्रधार सम्बन्ध है, केने हैं हुन्यरी क्या पूर्ण भी । हिस्से कुनिहिए, भीना और सुक्तो हैना विकाश हुन्य भी । हिस्से कुनिहिए, भीना और सुक्तो हैना विकाश हुन्य भी । हारों कुनिहिए, भीना और सुक्तो हैना विकाश हुन्य भी ।

करंगन कृष्योत्तरे तासन जिल्लाको नस कार कासने हर गहर कारोरे कर—'लान् । आत्मा स्वरूप स्वित नहीं है। कर्मी सार संका निरमंत्र से है है, सामने भी है। इसने रिताना भीना सर्वता करन न कामो हो, ऐसा नहीं है। अन्य कर्म उनका विश्वास नस बर्धिको । देशिने, नहीं अन्यत्ते भी विश्वासको पूजा कृषि नहीं प्रमूप हुई है। आत्माने भी अनुवेद समान इसके प्रभावनों कुछ नहीं सहन साहित्रे । वेदिनरेत । विश्वास जीना ही समानन् सीकृत्याने कामनित्र सामानाने सामने हैं। श्रीकृत्याने समामने उनके-देश सामाना आत्माने

वर्ष है। मुंबद्दिक इस प्रकार मन के यो वे कि क्षेत्रिकको उद्दे समोधा काचे कह-'वर्गतन । जनकर् सीकृष्य देशनेकोनेदे समर्थ मेरू हैं। यो असरी पूर्वको अञ्चलका वर्षी करता, आरो अनुवर-विराम करण अनुमेश है। अधिक-वर्गांद्र अनुसार को जिसे पुत्रूपे जीव केसा है, ज्या सकते केस प्रकार स्थार है। सरकार, सीकृतको हर अस्तिक क्याओंके विस्तर क्रिका जी का की है? कृतका भी बाद से कारकारों । वे केलल इसमें ही पूर्ण ही, हेरी बार जी; पाप जन्म इनकी समारत करण है। इस्ते क्रमार विकास प्रदा की हो। इसका ही नहीं; समूर्त कराई इस्तोतक प्रतिके स्थापाली किस है। मैं चनस है कि नई ब्यूर-वे मुक्तन और पूज स्थिता है। तिर के पूजेंक **बारको हा क्यार बंदानको है एक वर ये है।** क्यान् क्षेत्राच्यां कृतात् विशेष कर्मात अधिकार क्रिकेट के पूर्व है। वेर अपने क्रिक्त बोक्टों को को प्राणिकोच्या सार्वाण विकास है अपेर जनके मुंबसे सावाल गुरतीके अक्षा कराई संकृतके दिन पुर्तास करे पुत्र है। कई आने हुए केंद्र पुरुषेकों सन्तरि भी की कर ती है। क्षेत्रेर अर्थ क्ष्मा नेका अव्यक्त किये को किये हैं, pent fit die geith met fiere fit frigere ! इसलेन केवार पार्टका, सम्बद्धेत करान अस्ता उत्तरारी केको है जनकार सीमानको कुछ नहीं करते। इसरे पूर्वा क्षात्रेक काम के यह है कि अववाद अंदिन बागहें क्यांक अमेरनोर्फ सेंस्वे जुलकारी है और सवस बेद्ध पुरूष इसकी पूछ करने है। वहाँ किस्ते स्पेप है, उस समझी, को-कोबी परिवा कारे के की है। यह, श्रृता और रिकारों पोर्ट की सरवान् औत्तरकों समय जो है। अन और यह केने है पृष्टिकोंने सरावाद श्रीकृतानी सक्तर सही कोई नहीं है। कर, बोकार, क्रमांतर, क्रांतर, क्रेकेंस, बोर्ल, मुद्रि, मिन्स, स्वारी, केर्र, हुई और पुड़ि, सभी सुन मनकान् संस्कृतको निया-निरम्पत निरमा सन्ते है। पराम्हतनी संकृत्य कृतरे आवार्त, रिवा और गुरु है। सम स्वेपीयर्थ जाने क्रमिक स्थानेन देश व्यक्ति वा। वे इच्छे व्यक्तिन, पुर, विकास, कार्यक, राज, रीच, पिर राज सुक्र है। इसेरियो इस्ते उनकी जानूना को है। धरावान् औतृत्या है कुर्जुर्ग विकासी अंतरि पूर्व प्रत्यकोंड एका है। क्रांसी स्टीसके हैंसों है बार का नेतर करते हैं। ये हैं अव्यक्त प्रकृति हैं और वे ही इनाल कर्ता है। जनवे-सर्वेवारे सम्ब व्याचीरे वे परे हैं, इसरिये समसे बर्कर कुम्मीय हैं। युद्धिः का, ब्यूटाम, कम्, तेव, जार, अस्वास, पृथ्वे और साथे

प्रकारके सम प्राणी परावान् श्रीकृष्णके सम्बन्धर है जिस्ता | सम्बन्धिय स्टब्स्ट्रेट प्रराणके सरक्ष पहले अन्य । सा सम्ब है। हुई, प्रमुख, पह, नक्षा, दिख, निर्देश, क्या-के-क्य वीकृष्यामें ही निवत हैं। केंद्रे केंद्रेमें अधिक्रेज, क्रव्हेंने मानकी. क्यूबॉर्वे रामा, नरिवॉर्वे सम्बद्ध, नक्ष्योचे क्यूबा, क्येडिकार ने पूर्व, करिये के और क्षित्रोरे तक के हैं, की है Britistal und, von alle tenbeitunge fielele प्रतिकोरी पालान सीकाम से सामित है। विकास से सामे पाल्या असोव कारण है। यो या पाल्या पर पालि women admirer trades under une under Rappie II : इसीचे का देशा का रहा है। को सरावादी इसे बुद्धापन पुरस बर्वात को कारत कहार है, जो बेल कांक कर-हार क्षेत्र है बैता रिव्ह्यालको पढ़ी है। इसे हो साथी राजी निकास है की हो। को फिले केरे-को कार्न-कार्न अधिक है, अने पूर्वन देखा है को पलवान क्रीकृत्वको कुछ मही कारत और कारते क्षेत्र की बरेश ? स्थापत क्रियुरात इस प्रयामी पूरा सम्बाध है। यह सम्बाध करे, यह को होना करते कर करता है।

भीतारिकाच्य प्राप्त बंदाबोर देश है गर्ने । अस्य वाहितवार प्रश्लेको कहा—'कारका, संस्कृत कार कारकारी है। उनकी की पूर्व को है। जिसे का बात बहुत की हो को है, उनके रिरायर में रचता मारवा है। मेरे प्राप्त स्थानेके स्वर् प्रशासके निर्देश करना हो, यह कोते। मैं करका कर करिया। सभी सुदेशकर करते शासानं, तिया, युक्त पूर्व पूर्णांक प्रकारत श्रीकारमधी प्रमान्य सम्पर्केत करें।" संबोधने इस अकत बहुबार चौरते सार बहुबी। बांत का चानी और बारवार एकक्षेत्रेचे विकास प्रशिक्ष सम्बद्धान राष्ट्रीयके विरायर पानीकी कर्या होने राजी और अहरकारके 'सामु-सामू' को जाने सुवानी पढ़ने करते । देवाँने नावः सी बढ़ी केंद्रे से 1 करती सर्वातर प्रतिद्ध है 1 अभेरे सर्वाद करते को राज क्रमोने कहा कि 'से लेग क्रमानक प्रमान श्रीकृष्णको एक गाँ कर्त, उन्हें किया स्तरेवर के गाँ हैं प्रमाण पश्चिमे । उनके साथ से कार्य सामना को कार्य माहिने (\* इसके अनगर सहोदने प्राह्मण और हानिनोदी नकोशित पूरा को । इस प्रकार प्रमान काम समाह हरता।

करवान् श्रीकृत्यको कृतको विश्वकार प्रोक्षके भारे अन-क्यून हे क्या था, आयी औरों जुन क्या भी भी। . आहे एकाओंको पुब्रास्कर प्रकारिक में जेवाकी कामार राह्य है। जब आयारेन किस क्रोब-कुओं यहे हैं ? अहारे, प्रकार करने करने और प्रकारीकी सन्तिक सेको विक राजे ।' इस प्रयास विकास स्थाने विक प्रार्टनेके विको

it nive mit mit fereitene uit it, findere fermer un welt थी। ये को क्षेत्र को ये कि बीवन्त्रकी पूरा और विभीत्वा सारा-अभिनेक न होने पर्व ।

करंतर मुख्येस्ने देखा कि बहुत-से लेन कुछ बानस्की भीति अध्यान पहि करने काले है। सर अहेरे केवरिकारको पात्र साह-"रिकारक १ अस पहे क्या काना व्यक्ति ? जान व्यक्ती निर्मित समाति और प्रकार क्रिका अपन करनाते।' पीर्वासामाने क्क-'केर । जनेकी कोई बार नहीं। कर कभी कुछ विकार का बार्क्स है? की को से उन्हों कांनक विकार बार केरण है : बेर्स सिक्रंड को जानेवर कुले खेलाते हैं, वेशे ही पानवान सीवानांके पूर्व रहतेते ही वे तिलाव रहे हैं। को विकास सरकारों हा एकओओ काफी येक्स कार है। विकास परवाद सेवान विक्रमत्त्वा हैन tiller free made \$1 to flerend teller free trade \$1. जारेची ब्रह्मि हेती हो जाती है। ये पारे बाजहोर गुरुकारण और प्राप्त-स्थान है। कुर निवित्य को है

केन्द्रीकान्त्रको कर विद्यालको को प्रती। प्रती केवलो प्रोठो हुए पाए—'नीमा ( हुनो प्रथा प्रवासीको क्रमाने सम्ब हमें की आहे। जो । को हेकर जरने कुमानी पूर्व कार्यका करते हैं ? पूर्व और कार्यक क्षमानी प्रशंस करने समय पुजारी मीनके सी प्राप्ते करी नहीं हो बाते ? पूर्व से पूर्व की विश्व की है. हारी नामीनवेची पुन हत्यी होचार क्यों प्रसंस्थ कर रहे हे ? वर्षि इसरे क्यूकर्न विक्री चार्न (क्यूक्र), बोडे (केसी) अस्ता केंद्र (क्षांकहर) को चर है क्रान से एक हरत ? ने कोई पहले ज़लाह को पार्टि हो । पहि हामें बेलपाईन इन्हों (क्वार्ट्स) को के पासार रूप दिया से क्या करनार हुआ ? भी, हुस्से नोबर्जुन कर्वको करा दिसाक उठा रका से फोन-के अलेकिक पाल पर गयी ? और, व्या हो देवकोच्छे चौरीका है। सम्बन्ध है, का सम्बन्ध को अञ्चर्ध हुमा कि पेट्र कुमाने पोप्यूरिनर स्थानना तात एत सिना । जिल पहलारी संस्ताह काल सामार पह पान था. जीको हाने पर प्रत्य । है न कुरहातको छ ? कर्यक्रमेनी है करिंद्र अञ्चल औ, भी, अञ्चल और विस्तवा अब कार. विकास सामान्ये को, को नहीं पराया करिये । किरमे क्याँ 🛢 🛍 (ब्हुब) को कर करन, उसे हैं हुए करवारी कारको हे ! स्टिक्टी वरिक्टरी है। असी, इन्हरें बहनेसे ना कृष्ण ची अपनेको पैता ही पालो क्लेपा ! अपी. वर्गकारी !

हुनने अपने साधानको गीनकार्य कारण है पानकार्यको ऐक करा दिया है। दुसने वर्गको अवको जो-को नुकार किये हैं, मे जब कारी किसी इस्तिचे द्वार किये का कार्या है? कार्या-पेस्स्वी कार्या अस्ता सावको अन्य पति कार्या पानी भी, पांतु पुर को पानकार्य हर कार्य। यह पति-सा वर्ग है भी? पुणाप अस्तार्य कार्य है। पुण्ने गांतकार अस्ता पूर्वताके कारण या इस पत्ता है। पुण्ने गांतकार सुरने कीर-सी उस्ति कारकार की है जो, वर्गकी को सा-कारक अस्तार करते हैं। इस्ती कोन कारकार कार्य करते थे। उन्होंने कुमानो हस स्वतार की इस्तार का नहीं विकार उनकी हसा करते हम कुमाने पीनकार और अस्तिके साथ विस्तार को कारका की, जो बीन दीक इस्तार है? आवार्य की कार्य इस्तार की कारक

सम्बद्धाः भी सर्वात्रकृति हो तो हैं। एवं न हे, हुन्हरे-वैसे न्यूस्त्रक, पुरुषानंहीन और मुद्दे का सम्बद्धि देनेवारे हो, तब देखा होना हो पाहिले !'

विक्तालयों कारी और महोर वार्त सुनवर प्राणी भीगतेन सोको विक्तालय हो। साने देशा कि पीमले प्राण्यालयेन सबको क्यान और पीस को है। वे मोबने अपना विक्तालय हुएवं से साले में कि महत्त्वहू कीमने अमें केस विकार क्यान क्या सेनेपर की विक्रार कार—'पीला । मी हुमा। की सो से मा। अपने केसकर कार—'पीला । मोद से, मोद से सो श्री। अपने नाम लोग देशोंगे कि यह की मोदकों अपने सालेग्द्र महित कार से कुर है।' बीकांग्यालयों विक्रारकों सालां और मोदे बाद नहीं किया है से बीकोन्स्से सालांग्री होंगे से

## शिञ्चपालको जन्म-कवा और वध

र्मन्यतिकारो सह—नीयके। या विकास का



वेदिशको बेहार्षे पैछ हुना, तम इसके तीन नेत वे और कर पुराई थी। पैछ होटे ही कर गर्नाके सनम रेकने-विकासने रूपर था। सने-सन्दर्भ क्यां या हुता देककर का गर्ने और इसके जागका निकार करने सने। वाक-निका, वन्ती साविका एक ही विकार देककर जाकासन्तर्भ हुं— 'राजप्! पुनारा वह पुत कहा कीयम् और कर्ता होना। इसके करो यह, निकास होनार इसका करना करे।' करन वह सुरक्तर होन्से कर गर्नी। उसने हुना ओइकर कहा—'विकास

में पुर्ण क्षण्याने का व्यक्तिकार की है, का को धोड़े है—एक क्षण्यान, केवान अंक्षण अप—में को क्षणा कार्य है और कार्य क्षणा और कारण कार्यों है कि मेरे पुरुषों कुछ किशाद कर्यों केवी।' आक्षणां के व्यक्ति पुर्णा केत्र किशाद केवों कार्यकार कुछरे भूगवों के व्यक्ति पुरुषों की कार्य कार्यों कुछ केवी।' का कारण का निर्मात क्षिति क्षित्व कार्यका सुन्धार भूगवेंके अधिकार कारण का निर्मात क्षिति क्षित्व कार्य के। वैद्यालये कार्यक क्षणीया स्वाहत क्षणी जानक किश्रुवालयों कार्यक केवों स्वाह, वर्षा न अधिक पुरुषों विश्व और य के सीवार के सुद्ध कुछ।

प्रमान सीमृत्या और महामानी सन्तरंग भी सारां।
पुरान नियम और उनके स्थानको देशनीह हिम्मे सीहर्दर्भ
वर्ण । अस्मान स्थानित और पुरान-पहारके पहारद्
कामा-सम्मान हुआ । अस्मान सुभागे अस्मा प्रतिव । उनी सीमृत्याको मोहर्ग केलो अस्मा धारमा एक हिम्म । उनी सम्मान सम्मान सीहर्द्भारमा महा स्थानमा हो प्रदर्भीत है।
पुरान सीहर्मा अस्मे सामा स्थानमा । मै दूसमें प्रदर्भीत है।
हातीको पुत्रो एक पर से । तुस मेरी और देशका हिल्ह्याको सामे अस्मान है।
हातीको पुत्रो एक पर से । तुस मेरी और देशका हिल्ह्याको सामे अस्मान है।
हातीको पुत्रो एक पर से । तुस मेरी और देशका हता। ही यर प्रतिव हिल्ह्याको सामे अस्मान है। विकार बहार हारे जार इसला व्यक्ति ।' जीवारेन । इस्केरे मुक्त-बर्लाव शिक्तुराराणे आया भरी सामाने केट दिख्यार विकार है। भरत, और बिहर राजाको देखे बिलार है, के इस प्रकार नेटा अवस्थार कर एके ? जा पुरूर-कर्माव अव बाराके नामाने हैं। इस सामान का पूर्ण इस्केन्ट्रोंको पुरूष न सामाना रिकार समान काइ का है, परंतु इसे जार नहीं कि मुख ही सामोंने सीकृत्य अपने इस केवारों से रेज्य काहते हैं।'

थीनको यस विक्याच्ये सहै भी गर्ने । यह क्रोको बारकार कहते सना-'चीव्य । हुन व्यक्ति समान चार-वार विस्तार पुरापन का है है, वा कुछ को वो कुछर अकरी प्रधान विकासका 7 कर के निक्रम क्षेत्र करते के करते है। यहि तुन्हरी आका ही जनस करनेकी है के झालेकी प्रशंस को की करे ? राज्यन नहींकारी सुनै करे, हिल्लें प्रच्यों ही पूर्णी कॉन करी थी। अब्ब-स्वारीनकी, यानं, नहारती होन और अक्ताना—इनकी नानंद्र सुति कर हो। क्या तुन्ने इतंत्र करनेके दिने कोई निकास 🕏 भूते ? हम अपने कार्य हो चौकारी केराके कार्या कृतान कुरमानो हो तथ कुछ प्याच्या सन्ते पाता हो हो ? स्थाननी प्रस्ताकोच्छे क्याने ही हुए की को है । ये क्यों से सार्थ सुकारे अन्य से से। अन्यपुत्र कुत बहुत की पर्वेद के।" पोन्निकाको क्यां—'विद्युक्ता । पु वक्ता है कि वै प्रमाशोबी कृतने जीवित है, प्रश्नु में कृत राजानीको कृतने: बरावर औ नहीं संबद्धार । हमने जिस सीकृतसभी कुछ की है, के सम्बंध सामने के कैठे हैं। को नरनेक मेनने सामन्त्र से के हो, वे का-महारात सेक्काने कुछो के सामान करों नहीं? में शर्तकें साथ करता है कि उनके इस्तकारनेवास्य रजपूनियें धरास्त्रणी क्षेत्र और को उन्हेंने कृतिएवं स्थाप विलेक्त ।' क्रियुपाल केंद्राचे क्रानार क्रीकृत्यकी और क्या करके चेला—'कृष्ण । मैं हुने स्थानका है। अपने, पुरसे पिए जाने । में शन्तवीके साथ हुने कान्ती केव हैं। प्राथकोंने पूर्वप्रवास सुपारे-वैसे करा, पूर्व और अयोग्यको एक की है। जब तुधलेगोका का ही जीवा है।"

हिन्दुसरको यह समझ होनेल क्यान् अंक्याने नहीं प्राचीतको नपुर सन्दोरी सहा—एकाओ ! यह इक्योनोका स्वान्ती है। दिन भी इससे कही बाहुत रक्या है। इसने इस प्रमुद्धियोका सामानाव करनेने कोई कोल-काम नहीं भी। इस दूसकाने में? आप्योसिकपुर करने कानेस किया किया सप्तावको हो अस्कानुरी नाम होन्सी चेहा थी। किया सम्बन्ध कोनपुन विकास कोलपुर मिहार करनेके सिनो को हुए थे, इसने उनके सभी सामिनोको यह उत्तव सम्बन्ध कोनका

अवनी राजकानीये हे जया। जब मेंर जिल अवनिय कर के
थे, उक्ष इस कारायाने उसमें निय आपनेके दिनो वहाँव अवको काद्य रिका था। यहाँको सरस्वे प्रमुखी भारी निय सम्बद्ध सेवीओओं दिनों या की थीं, यह उसे वेस्ट्यन मेंत्रित हो जब और कार्यूके हर है जया। इससी मनेत्री यहां पर्ध कार्य्यक से इस दिन्या। यह इस देश-सुन्यत पूछे यहां कहां होता था, परंगु अपनी युआवी क्या मनवार में अवस्थ वृक्ष था। अस्य यह हुए आपनेनोंके समने हैं निवासन है। यह इससे भारी समाने की होते चेस्ट स्वयक्त स्वयक्त हैं वह आपने हुए आपनेकी स्वयुक्तिकीये हरने कर्य किया होता। अस्य पूर्ण हुए आपनेकीय राज-स्वयक्त वीचने प्रमुख्यक को पूर्णवाल विस्ता है, यह में क्यांनि इसने नहीं वह स्वयात है

अनुवान् अंक्ष्मण इस जनस्य वह है से वे कि निर्मुपान अंक्ष्मर पद्मा है जबा और द्वार-एउस्सर हैसने जन्म । जसे वह — 'कृष्म । यह दुई ही बार परण है से नेरी कम पूर और वह । में करा है हो से चारे कर रे। देरे होना वह अनुवास का जबार यह देहे को न से साथ।' विस्त संपर्ध किञ्चलों पाला परण निर्मु । उनस्य करो-न-करों पाल उन्हें कृष्मों कन्मों स्वया । जनस्य करो-न-करों पाल उन्हें कृष्मों कन्मों स्वया । जनस्य के हुमा विस्य के, इसका कारण यह के कि की इसकी समाची जानेगी, इसके की असराव क्रम करवेगी क्रम सीवार यह सी थी। अन्त की क्यानों कन्मार संस्था पूरी है यथी। इससियों



है। पराचन क्षेत्रकारे यह बहुबर क्षेत्र किरान को मानने विकासकार किए बाट प्रत्य और यह होन्डेके देखते नेक्से ही पद पहारिक्ष वर्गकों समार बाउवाची हो गया : जा प्रत्य राजामंत्री देखा कि विक्रमान्ये प्रधेतरे कृषि इत्यन प्रवाहणान एक लेख कोडि रिकारी । उसने weeks according towar also and your first and first

कारानेगोंके बाजने हैं हात्या सिर कहरे जाल किने देशा | और लेलोंके देखते-देखते हैं या उनने कवा गर्ने १ भई उद्देश महत्व देशको अवस्थित करता आक्रारंगीया है। को। प्रची कर सही जनकर बैक्सको जांस करे राने । वर्षका यूनिहारकी महाराते भीयतेन आहिने तत्त्राता जाने के नामाला जान दिया। सामग्र एक पुनिवेशी क्याँ नत्वतिकोतं क्रथ विक्रमानो प्रमात नेरियमान

#### राजस्य-बज़की समाप्ति

रीतन्त्रकारों कहते हिन्त्रकोतन ! परम असमी मुर्जिक्षिरका यो सन्तरः देशवीचे वरिपूर्ण साः। को देशकर कारके बीरोक्ट कर्स प्रत्यक्त हो। जाने उपनेकारे निक अयो-आव पाना है नवें। सारे कर्ने मुख्यूनीय हुए। वन-कार्यात आवारकारको अधिक आवी । अर्थको भीरवी और अधिनोंद्रे क्यो-मीरे क्रोपर की सक्ते चेवल को थे। प्राच्या प्रशास पार्ट के कि को प्रशास सेवान सके इंतरका थे। करेतन वरिवीरने यह जनकारों ना का पूर्व दिया। प्रमान का स्थान को है गया, प्रमान पूर्व-शरिकाम् प्रार्थ-पर्य-पर्यासी प्रमान् क्षेत्रक असी suril sees tit i

क्षत्र वर्गतन वृधिकेर बहायारे समापूर्व कार का मुने, तम रूपी एकाओं अन्ते यस अवस वया—'प्रचीत प्रसाद ! पर को भीनानको कर है कि सारक का निर्देश समझ है गया। आको सामादुन्य जात संबंध अवसीवनंत्री श्रामात्रीक यह उत्पार दिया है। उनेप ! इस कार्य हरू नहरू, कर्मनुहरू रूपांत हुआ है। इस महत्वे हुमलेगीका की सब प्रकारमें आविष्य-सरवार हुआ है, विभी प्रधारची और नहीं हो है। अनुस केरियो, तथ कुमलेप अवस्थितकार्य राजपानीमें कर्ष (" वर्गराको कर्मा प्रार्थन स्थितार कर्माः भी प्रोमालक पहेंचा अपनेत रिन्ते व्यक्तिको निवृत्त विस्त और बद्ध-'जन्म क्लांके, अल्यानेका बहुर हो।' चीपसेन, अर्थन वाहिने को प्रतिको अञ्चले अलेक राजको प्राच्यारकोक विका किया ।

कर राज राजा और सामन साली प्रसार गरी, इस नंगानत श्रीकृष्णने भारतन कृष्णिरसे कहा—'स्तकेन्द्र । यह सीध्यापारी कार है कि अल्पका राजपुर नकारक सम्बद्धा समाप्त हुआ। का में प्राप्त करेंद्र देनों कानदी अस पास है?

कांद्रको कहा—'आवकान्य नेशिय । यह पहा हो केला अन्तरे अनुवाने हे कुछ हुआ है। यह जाननी कुछना है क्षा कर है कि इस प्रतासी नेते सर्वाच्या सीकर बन्धे का हैना और क्यां का यूने करिया हुए। स्वीकृत न्यूयनका अंग्रुव्य । मेरी मानी अंग्रुवने मानेके हिन्दे this said? small flow wis tree grants flow till tad! कारण नहीं निवास । यांतु कार्ड कार, सामाधे है । सामाधे कारत की के कांग है कोता।' बहुत्वर कारता, सीहरू कांद्रकाको पाला नेकार अध्यमे प्रश्ना भूतनीके पाल गर्ने और को अवकाने केले---'कुमार्ग । जनके कुरेने स्थातूक का अन्य का निरुष्ध। इनका क्योरक पूर्व से गना। का-प्राचीत भी पहुंच अधिक विक्र पत्ती। तम तप प्रकार के के वर्ष का का का का का बाहर 📳 इस स्वार सुच्छा और डीच्डीको भी जान कर कारण श्रीकृष्ण कारणे पहल उत्तरे, कार-पर आदि कार्ये (कार्यों) समित्रकार करावा। इसी स्थम क्रमा पेयों क्षान प्रकारको स्था संस्थात है आया । स्वर्गीरदेशीय मनवान् त्रीकृष्य मनकृष्यन् एक्के पात्र श्रमी, व्यक्तिमा सी और जावर क्यार हो गये। तम राजन कुमा। पर्यक्रम चुनिहर अपने क्षेटे स्वयूनोंक साम पेतर हो राज्ये पीछे-पीछे करो (हो) कुमानक पंतकर केंक्सने क्रांगर रह केवाबर वर्गकारी काई—'एकेन् ! केंद्रे नेव समय अभिकेची पह कथा है, वैसे विकास कुछ सभी परिक्रोंको अवश्रम केल है, जैसे ही जान नहीं सामन्यानीने प्रधानन पासन वर्धिको । जैसे क्यी केवा केवरण इनका अनुस्थन काते हैं, के है अपने सभी पर्य अपनी इस्तर पूर्व की। इस प्रकार एक कारेने कह सन और निल-नेत्वार श्रीकृष्ण और प्रवास अपने-अपने प्रधानम् वर्ते वर्ते ।

#### धर्मराज युधिहिरसे व्यासका धक्यि-कथन

र्वेजन्यकार्थः स्थाने 🗗 सम्बोधनः । अतः स्थानका राजपुर, विश्वका होना असला कृतेन है, सन्दर हे कुछ का



परायम् अस्त्राम-देशसा अस्त्रे विश्वीते साथ सर्वता मुनिविक्ते पन् असे। पुनिविक्ते प्यानेक साथ स्थान पात, अवस्थ आहिते क्षत अन्तरी पुत्र परि; क्यूंने कुर्या-विकास केवर पुनिहर आहे काको से किन्दी अपन है । ३६ सक्ते हैंह क्लेस प्रकार स्थान काले कहा-'क्रिमीनका | इसमें काम कुर्निय स्टब्स्ट्राम् अञ्च स्टब्स्ट इस देशको बढ़ी उसके की है। यह बढ़े सीयरनकी बात है कि कुरते-वेले सर्वाले कुर्जकारी बोर्लि वह गर्वत । इस गर्वन नेरा भी बहुत सम्बार हुन्छ । तक मैं कुनने वर्तन्तर्थ अनुस्वीः

काल है।' वर्गतको इस स्रोडकर विसन्ध कारका क्लानर्हे किया और क्षेत्र—"ध्यान् ! भूते एक कारण संक्रम है। जान है तमे कुर कर सम्बद्ध है। बेवर्नि नासूने अब्ब या कि प्रकार असी किया, प्रकेश आहे अस्तिश और पुरुष आहि पार्थित स्थात हो रहे हैं। आप पूजा सतके पह बारायाचे कि रिव्यूजनकी मृत्यूने करती समाहि हो गयी था वे अपी कार्य है।' वर्गत्य मुनिक्तिका उस प्रमान प्रमान **ब्रांक्ट्रेक्ट्र** कहा—'ठबर् ! इन जनावेका कर तेव करि कर हेना और का केम समझ व्यक्तिक संदर्भ । कर कान क्ष्मेंबनके अवस्थाने सुद्धी निवित्र करोगे और सब कृतिक प्रकादी क्षेत्रका कोमलेन और अर्जुनके करही पर falle if service absprecharts per proces report अन्ते दिल्लोंके प्राप्त केरमा वर्त परे । वर्तराम पुनिद्वेर किन्या और फोन्फो निवास है गर्ने । उनकी सीम नाम कार्य राने । वे क्षेत्र-केको भगवत् स्वयन्ते बार यह सरहे अपने अवस्थिते काही कि 'अवस्थे | सुनात करवान है, जाको नेपै को अधिक है को सुने। अस मैं रेख का बीवन की क्या करीज़ ? जो। बीचा हो है तो अन्तर्क में विनमेर्ड और काली बाद की करूँच । वर्ष-क्यूनोची अहाली खुकर उनके कमनापुरार काम करीना । अपने पुरा और प्रकृष्ट और एक-का कार्यन करनेले सुक्रये केए-कार्य जी सेना का के-का है से स्वर्धनी का है र ।" करिएक चुनिक्कित प्रकृतिके राज्य हैन्स नियम सनावार अस्तर काल करने हरते। ये रिकाले जिल्लेका तर्पन और केम्बरोबी एक करते । इस प्रचार सम्बद्धे को करेकर भी केवल पूर्वेकन और प्रश्नित धर्मका सुनिरीरके कता अध्यक्ति है है है।

## द्योंबनकी जलन और शकुनिकी सलाह

कैरन्यानस्था नक्ते है—अस्पेयन ! एका हुवीकरने | और दु:की एरं स्थीनन हुवा । का कारी असी कुछ ही जाने सक्तिके राज इन्हासम्बद्धाः व्यक्तिकी साथै सामाना निर्देशक किया। उसने वहाँ हेला काल-बाँद्रात देखा, जो पुरितनपुर्वे क्यो देशा नहीं का । एक दिन स्वयं पुरते । सह संबंधित असे अपने सब दक्ष हिन्छ। येथे अध्य

बढ़ वा कि कालो बोबो स्वतिको समान निर्मत का एवं क्ष्मानेले सुन्नेच्या कामसेचे का पहर । वर्गराजकी शहराते क्रेक्टोने उसे उसक-साम कहा सामार हैये। उसकी बहु दहा समय मुर्वोचन विक्ती स्वतिवर्धे क्षेत्रमें पहुँच कथा और उसे | देशकार चीनलेन, अर्थुन, उनुस्त, स्वदेश, अस-के-एक हैली क्षेत्र कृतिकाके अवस्थित विकास अवस्थित होतीले प्रकृती पुत्र पानपार और कुन्न कुछ। और का भी ही पुत्रर-कार । अन्ताम हुआ, परेतु आहे अपने मनका भाष क्रिया हिस्स और परमाने समा। अन्तर्मे मह एकामधे बार सम्बन्धार मिर पक्ष । अन्तर्ध और दक्षि क्षत्रकर देश्व भी गृहै । इसके बाद का क्ष स्वाकोर आकारको स्टब्सि-विर्मा गीवको काटक सम्बाकर पुर्ने सन्त, वन ऐसी टास्ट स्टिकि को बाद आ गया। इस स्वाक्त को-को विवाद बात केन कोन्ने स्था से कुरी और गिर प्याः एक बार स्टिक्सि स्थानेस पूंचा से यो बोका सम्बाकर कारमें और काया। इस समार बार-नार बोका कानेसे और बाकी कार्युक विद्वित देखनेते कुर्वेतकोर पाने बारी बान्न एवं पीक खुँ। यह पुण्यिको अनुपति सेवार प्रक्रियमुग्ये नियो पान प्याः पानने सन्त पानस्ति हेम्ब एवं संगतिके विवास कुर्वेकनेसा गर पानस्ति हेम्ब एवं संगतिके विवास कुर्वेकनेसा गर पानस्ति अधिकार पूर्वेकनेस विवास कुर्वेकनेसा कर्त प्रक्रियो अधिकार पूर्वेकनेस विवास क्रिक प्रक्रिया स्टिक्ट प्रक्रियो अधिकार पूर्वेकनेस विवास क्रिकी व्यवस्था हुई विवास स्टिक्ट स्टिक्ट क्रिक्ट व्यवस्था स्टिक्ट स्टिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट

राष्ट्रपिने अपने गांगेको निकारका राष्ट्रको स्था—शूर्वीका । समाची प्राप्त सम्बद्धी को स्था राष्ट्री है ?

ुर्वोक्तरे का—गामको । कर्मकृत पुनिश्चित्वे अर्थुन्छे क्या-क्रोप्रसारे जारी पृथ्वी अपने अन्देश कर भी है और क्टोने इसके समान निर्मात रामधून यह सन्तर कर जैना है। अपना पत्र देखने देखनार मेरा प्रतिर पत-देश सामा कुल है। ब्रोक्समें सम्बंद करने हैं क्रिक्समध्ये का निराया । पांतु किसी समाजी बुंहक कामेकी बुंहक न के हाँ । पारिकार्त हो गए है कि मैं अधेका अवती प्रमाणकार्य है जाति प्रकार और पूर्व केर कोई स्वानक क्षेत्रक जी है। उस मैं प्राय माननेका विकार कर रहा 🕻 मेरे करने पुनिक्रिया पहार देशमें देशकर भारी निकास प्रधा कि जारक ही जाता 🛊 और पुरस्ता करो। की चाले सम्पन्ने सहस्ता उसा विस्ता का, परंतु ने राची विचतिलोंके क्या पने और उस दिनोदिन काम केने का परे हैं। यही को फैजरी अध्यक्त और पुरुवार्थको निर्माणका है। केनावे अनुस्थानको वे कह यो है और पुरुषार्थ करनेपर भी येधे जनती होती का रही है। मानाची । तक जारे कुछ दुर्शको प्रकारकारी अञ्च क्षेत्रिये, क्योंकि में जोकको आएमें क्षान्य सा है। जान वितासीके पार ज्यार पर सम्बद्धार तुन हैनिकेस ।

त्तुर्वति केश-वृत्तीयन ! प्राच्यात सामने पराप्यानुस्तर त्राप्त भागमा योग कर रहे हैं, उससे हैंग नहीं करना प्राचिते । दुव्हारा प्या सम्बद्धाना क्षेत्र नहीं है कि मेरा कोई सहायक नहीं । वर्तीक तुत्तारे प्राची प्या दुव्हारे समीन एवं अनुसानी हैं। पहाचानुर्वर होता, अनेके पुत अक्षात्मान, सुरुद्धा कर्मा, नक्षात्मी



कृत्यानी, त्या धीनाहीर क्या काले नहीं हुन्हों कहते हैं । हुए इनकी महत्यानों कही थे सहें पुरस्कानों नीत समझे हो ।

ुर्वेशनो सक्—नामको । यहि शासको अग्रार के से अनको और अनके प्राथमों हुए क्याओको प्राप्त औरोको भी साथ रोजार में प्राप्तकोको जीत है और उन्हें है। रोजा प्राप्तक प्राप्त है। इस सक्क प्राप्तकोको जीत रोजेगर साथ प्राप्तकार के को प्राप्तक, इस प्राप्त क्या ग्या दिना स्था भी वेरे अजीत हो प्राप्तकी।

अपूर्णने कार—पूर्णना | पालान् श्रीहरण, अनुंत, पीलांग, पृथितिए, यहान, समोग, हुमा और प्राह्म आरियो पुत्रां चीटना को को केवलांगिन प्रतिन्ते भी कार है। वे साथ पहराबी, तेव कपूर्ण, अपा-निरामं पुत्रातः और स्थान केत्र हैं। अपान, में सुन्दे पृथितिराको जीतनेका स्थान कराता है। पृथितिराको स्ट्रांस प्रीम्न के ब्यून है, पांचु कर्षे केत्रम नहीं जाता। यहि कर्षे पुत्रके तिले पुत्रमा जात से वे 'पा' वहीं कर करेत्रों। और मैं सुन्ता केत्रमें ऐसा निप्ता है कि पुत्रमानां के स्था, तिस्तेनोनें को मेरे सामान्त कोई नहीं है। इस्तिन्ते दूस क्याचे पुत्रमाने, मैं पहुराईसे करवा साथ काल और वेश्या के हिंदा। कुर्वोत्तर | ने साथ को तुम अपने विद्या पुत्रमानुने कहे, क्याचे अनुन विद्यानिर्दर मैं अने क्याच्या जीठ होता।

्रुचेंशले कहा—श्वयाणी ३ शत्य ही कहिने । मैं नहीं कह किया १

## दुर्योधन और धृतराष्ट्रकी बातचीत तथा विदुरकी सलाह

स्तुप्रिये प्रकारत कृतिहरू यस स्वयंत्र सहार-"महत्त्व है मैं सामको समयगर थई शुनित विके देश है कि कुलेकाक चेत्रा कार गर्थ है। यह दिनोदिन कुमल और पीरम क्रेम क पूर है। साथ प्रतके प्रदूषीया प्रोप्त, विकास और प्रतिक एकारका का को की राजने ?" क्रांस्ट्रों कृतेकार्य सम्बोधन करके बाह्य-'चेंदा ! तुन अपने किए करों है से हो ? क्या प्रमुक्तिके बाज्यप्रमुक्तर हुन मेरो, कुन्ते दर्ग विनर्ग है को है ? कुछे से हक्तों क्षेत्रका कोई कारण की करून बेला । स्पारे पाई और रिल को बोर्स अभिन की करें। मिर हुआरे कार्यका कारण ?' कुर्वेकले कहा—'निकासी । वे है बायरेंके स्थान का थे, बालार जन्म कर कर क है। मेरे कुरूने हेक्की आग नक्क को है। किस किसे की युविद्वितको सम्बन्धनी देशी है, युद्धे बाल-चेन अच्छा यहि हरे हता । में क्षेत्र-पूर्वत हो पह हैं । जुनिहित्से पहले समानेतें हाता कर-एवं हैंका कि की आसे काने कान देशा में कर, सुरातक नहीं का । कहानी अनुसर करनारेंग्र देशकार में नेनीन है गया है। सीकृत्यने के सहयुक्त सामान्त्रिके पुनिवित्ता अधिकेंद्र किया था, उसकी करन के कियों अब के की हाँ है। सोरा प्रमा सोर से विशेष्यक पान तेने हैं, परंदू सारको और प्रोह्मेंके रिया कोई मूर्व करा, रिकामी ! अर्थुर क्ष्मीरे भी अपन का-रावि से राज्य। स्वय-स्वयं प्रक्रमोदे पोचन करनेक संदेशकारे में प्रकार होने थी, को बार-बार सुरकार भेरे रोजरे करे हो माने । सुनिक्किके देशकी राज्य होत, कर, कार्य, क्रमेच्या की देवने जी होगा। उनकी एन्याक्ती देशका नेत तिम जार या है। मैं सकत है का 🕻।'

दुर्वकार्य कर सम्बद्ध होन्स कृतकृष्ट कार्य है ज्यूनी । कार—कृतिक ! का राज्यकारी स्तेवत कार्य से दूरों सालका है। मैं सुर्वाकार्य संस्थान कार्य संस्था कुळार है। सुविद्वित कार्य से से व्यवस्थान को संस्था की कार्य ! पूर्व को सुर्वको । मैं कार्यकार्य को संस्था किए हैं कार्य सार्य दिन्स सम्बद्ध है हिंच !' कुक्तिको कार्य है है सार्य कुर्वकारों कहा—'निक्रमी । सुर्व्यक्तिकार सार्या केस्सा हिंससे हैं। कार्य कुर्वके सार्य है सेनिये।' स्तरहरूने कहा—'सेरे मानी निद्द को सुन्दिक्त हैं। मैं कर्या कार्यको अनुसार है कार्य करता है कर्या परार्थ करवे मैं विद्यक स्वर्थन कि इस निक्यमें मुझे कुछ करवा कार्यन में

> सवाचा को है कृतिका विद्वारि संस्था रिवा कि अब व्यक्तिपुर अवका करण-पुरवा प्रताम व्रेतिकास है। विकास का का भी है। वे को सेवाले कारहरे पर बहेरे। यह व्यक्ति जानोंने प्रतान करके उन्हेंने का—'कान् ! में पूर्व कोचने का है जहम स्थान सन्तर का है। अन देश कान मौतिये, जिल्हों पूर्ण कारण अपनेत पुरु और भरीयोगे परस्यर कैर-विशेष न हो ।" कराइने कुछ — भी भी हो भई करता है। संद सहै देखा हमारे अनुबार होने से पुर और भारतियों भारत नहीं होता । क्षेत्र, होना हर्व मेरी और हुन्हरी अधीवतिमें किसी अधारणी अनेति नहीं होती हैं कुछन सहस्थेत प्रथम मुसरहारे अपने पुन क्षांक्रको सुरक्षक और एकानने अस्ते सहा—'संस् । किया को बीक-विकास और प्राणी है। के क्षेत्र कुछ आधारि क्रमी नहीं है सबसे । यह से पूर्वती संदूध मारको है, स्थ हम प्रकारिके हार प्रकार करानेका प्रकार क्रीड के । क्रियुरकी का पर केरावारी है। इसकी सम्मानित काम मारोने ही कुला केर है। अन्तरम् कुलारिये केरान इताले जिल -स्था-पालका रुप्येत किया था, बिहा सब्ये पर्या है। कार्कने की उत्तर, केरे हो कीरकोने निवृत । सुने से क्लूने विदेश-से-विरोध क्षेत्र रहा है। युक्त जानसमी फूटबी भूत बारक है। इसरिये इस इसका स्थोप मंद्र कर से : देखे, बाक-विश्वास काम है जिल-सर्वत सम्बद्धा केरा। हो मैंने कर है। हो ने: नो ने:-परमक्त एक जा है पन है और की ार्चे का-निरम्भवात कार भी कर दिना है। जुरूने क्या रका है, क्षेत्रे पर बरोक । पूर्वेशको बद्धा—'निसानी । नेरी वन-सम्बद्धि से बहुत है। प्राप्तान है। पुराने 🚾 सन्तेष नहीं है। वे बुव्हिस्स सेस्टब्स्स्मी और उनके अधीन सारी कुर्वा देखकर केवेन हो पह है। येथ अलेका निहर रहा है। हम ! वेट फ्लेंब प्रमुख हैं, हमी से मैं हमी को फला और तम पान तमा है। मैंने अपनी अधिने देशों है कि

बुविद्विको वर्ष शेय, विलय, स्वीकर, कारकार और लोहांच आहे एक एकंके एका निर्मात कारो सेक-सहर कर रहे थे। समुद्धे अनेव क्षेत्रों, क्लोब्री कानी और दिवसमध्ये राजा स्टिक्स हेर बारके आने के; इस्तीओ असकी भेंद्र अस्त्रीकार कर की गयी। जुनिहारी चुते ही लोड और केंद्र राष्ट्राचन प्रकारके साथ बसेकों केंद्र केन्द्रे केन्द्रे निवृक्त विका का, इसरियों में एक कुछ करता है। होते, क्यों और वर्षि-मानिवरोधी इस्ती पति इक्क्ष्मी हे नवी थी कि क्रमें और-बेरक पाठक नहीं पराय था। पर प्रवेशी बेंद्र हेत्रो-हेत्रे और द्वार बाद करें, की इमाना निवास किया, एक मेंद्र रिप्ते एकाओवी चीव बढ़ी कुछक सन वसी थी। प्रभावत विकारवेगारी अनेकों का में क्या है और पुर्वाद्वारको निर्मार विकास कार्यान को प्रमा के है। मैंने को कार करता रिका और स्वतिकांत नवाद का सहस्वत काले terf i Muliul in major du fin de in Part प्राचीत देखावर भीवांक के गया है और क्रोबी प्राचानों से विश्वपुर पूर्व है। किए सम्बं में क्रांतरियों स्वरिक्य पर प्राथक्तिक पाल्ये तिर एका, यह प्रत्य से केवार केवते हैं भी, कुम, अर्था, प्रेयदे तथा और भी महत्त्वी निर्मा हैलरे रूपी थीं। इससे मेरे विकास बड़ी और रूपी है। जिल क्रोंस की क्यों का के जो हो है, जो की क्यांके क्स अवदे असि देशा है। स्कृतका म सम्बन्धको क्योरी रहतेकारे बेराम, संग्रह, क्यानि और विकासमानिके शोग, को क्योंके अस्तो अस्त अब्बोद क्रूप ही सीवन-निर्माह कारों है, अनेकों का, करारे, मेंबे, भी, सुकर्ग, सम्बर, के और प्राप्त-परकोर कामान लियो और देवेबको पातासामा पाने के





कार् को बोर्ड भीतर की पूजने देश था। ग्लेबक्ट्रेसक्वियति प्राच्योतिकारेल कामा धार-में देखे कार्निक केने और क्यान नेकार अस्त्रे थे, कांतु उन्हें चीतर सुक्षनेकी आहा नहीं किसी । क्रीय, क्रम, ओप, बेमली, मर्गर, माले-माले हार, हर, पहले, केर एवं अनुस देहते बारी एवा रोके अनेके बारक प्राप्तर हो को हो। और की किसने ही ओर द्वारक क्या कर्मको इसे, अस्में मेर्ड, क्योंके कुक्का सेन मेर्ड हेका करने के पांच प्राथमें भी मही पनि हुई। विकासी ! जान के भारते ही है कि के और प्रदर्शनाओं क्षेत्रमें क्षेत्रक प्रमाण नहीं है। उत्तरे होने उद्योग प्रतिरोके मुख्य क्रकेको बोलोबी की क्रामी पास, एकसर, उर्थ, प्रदर, केवेंबेच, पाना, क्रीला, स्कूल और पातकल आहे. क्षांच्या कार्या है। उनके राजा क्षांच्याचे पर-परकर ब्रीक्रिकेट प्राप्त पाने सामित्रीय पेटके निर्म के सामे में। क्राव्यलीयाचे कार्याव और अञ्चलके व्यक्ता-निकारी फिरम थी, जो केवल कल पहले, कब रकते और कार कार-का करते हैं, जबहार से-नेपार आने में 1 जितने है राज करे-करे चीतर जोश करवेगी बाद देखते और प्रत्यक अर्थे पहल्कों स्क्रोकी सहस करते थे। वृध्यिकी विकास वर्षका पर रक्षके रिये प्रीय प्रकार क्रमी हिंहे हे । किराबी ! इसमें समोह नहीं कि अर्जुन होयुक्तकरी क्ष्मा और क्षेत्रमा सर्वुत्रको मानक है : मार्चुन सीव्यवसी को स्थान कुछ ब्यहनेके रिको स्थाने हैं, में उसे तत्साल पूर्व पत के है। जीवर का बहे, अर्थनो दिने सेमृत्य लगेरा ज्ञान कर सबसे हैं और अर्थून ब्रीक्नानेड रिप्ने हैरती-हैरते प्राय -बोकायर कर समाते हैं। सन्तु, चारों वर्गीके दिने हुए प्रेसेकार, विकासियोधी जारियों और उससे हाथ समान देशकर मेरे करती करने सभी है, मैं करने कहात है विवासी ! करतिक कहें, रामा कृषिहित कमें और पहे अकरे विश्वा समान्योकन करते हैं उसमें दीन पता हुए हुआर इस्ती-मोड़ेके समार, एक अस्त नहीं और असेक्ट फेल्ट हैं। वारों करति स्थेनोंने मेरे तो देशा किसीको नहीं देशा विकरे कृषिहित्ते कहें पोयन, कर, असंकार एवं काकर कहा न विस्ता है ! कृषिहित सरसाई हुमार कृष्य कामकोका परमान्योकन करते हैं। यह हुमार कामका कृष्यन कुण्यके परमान्योकन करते हैं। यह हुमार कामका कृष्यन कुण्यके परमान्योकन करते हैं। यह हुमार कामका कृष्यन हुम्पके परमान्योकन करते हैं। यह हुमार कामका क्षा ! क्षेत्र करते हैं कि मोर्च कुण्यके कृष्य इस माराको क्षान-बहाबन करते हैं कि



'वितानी | प्रमुक्तिक साथ प्रायुक्तिक सम्माद है और सन्त्रक तथा पृथ्वितंत्री सम्बद्ध स्वात हैं। प्रायित्वे केवल पहें मेने उने यह नहीं हों। सम्बद्ध सभी सम्बद्ध प्रायुक्ति है। महेन्यहें एल्टाहिए, नियुन, सरी, प्रथा, प्रायुक्त, वैतंत्राली, वर्णाया एवं प्रायुक्ति आवित्रकों सभय प्रायुक्ति संस्था रहें हैं। प्या पृथिहित्ते अवित्रकों सभय प्रायुक्ति सर्वाविका रस से असे। साथ पृथिकाने असे व्यव्योध देशके समेदा बोई योगे, प्रायुक्ति सुर्वाकों प्रथा, न्यवस्थाने मासा-प्यादी, प्रमुक्तिने साथ वर्णाय होती, क्ष्मानको पूर्वे, स्थानित्रकों अधिकारों सिये अन्ति सीवीक साथ सम्बद्ध दिया। एसको सुन्दर मुद्धकों साथार और पृथ्विकीक स्वाह, वेशिकानों सहस्था

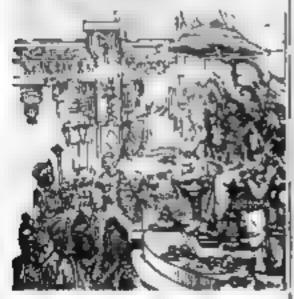
पुरेशेय क्षेण और कार्य कार्य राज, अस्य और देवक पुरेशे क्षण पुरेशीरका स्थितंत्र विका; स्थ अधिकेको वार्य परहरणके क्षण बहुत-ये केवरवार्य प्राथ-कार्य कोन्यान्य हो में थे। अधिकेको स्थय स्थानिते राज पुरिवीरका क्षण, अर्थुन और चीक्सेनो कार्य स्थानिते राज एवं स्थानित दिन्य कर्मा है एवं थे। यक्षण देवस्था कार्योकी क्षण, जिसे स्थाने हमाने दिन वा और स्थान कियेक पुरुष, जिसे स्थानों हमाने दिन वा और स्थान कियेक पुरुष, जिसे स्थानों हमाने दिन वा कोर स्थान क्षण क्ष, क्षण क्षणान्य पुरिवीरको दिन और स्थान स्थान क्षण हो केव प्राथ-केवो दिने। अर्था सीच सोनो को हुए थे। स्थानुक कार्य स्थान पुरिवीरको केवो सीचान-स्थान



कर्क हो से कैसे इंग्लिक, जारान, सामात, कर्, पृष्, जर्मनक, क्वारि और म्यूक्की के नहीं होगी। दिसानी ! उन्हें एक कारकोरे मेरा हता क्विले हे हा है। कैन नहीं है। मैं विशेषित कुळक और पीरक कहता जारा है। कोकके सन्दर्भों कोर्न का का है।

दुर्जेक्समी कर हुन्यर कुराहाने कहा—'वैदा ! तुम मेरे कोड कु है। क्यानांसे हैर का करे। हेरीको मृत्युक्त बहा कोन्यर कारा है। कब के दुमसे हैर नहीं करते, उस तुम कोवार कारो हैर करके कर्ते अस्तात है से है ? उसकी इसकी क्यों कहते हैं ? की तुन्हें काके समान का-वैद्यवकी कहा है से अस्तिनोंको अस्ता है, तुन्हों सिनो भी एकसून स्वाच्या है बाद। तुने की राज्यानेन स्था-उद्यादी केंद्र है। वैद्या | कुरोक्षा कर प्रधान से सुदेरोका कार है। को अपने करते स्पूष्ट द्यार अपने निवस क्या है, जो सुनी होता है। कुराविक्ष पन पर्त पाने ! अपने कर्मान्यकारों साने को और को सुक्र पुन्तरे पात है, जाकी शाह करें। वही बैक्याना स्थान है। को विपतिसों क्या नहीं, कुरावकारों जाने कार्य करात है और पानता है सामग्री जाति, को स्वाच्या और विनवी है, को सर्वत प्रभूतने ही स्थान होते हैं। को केंद्र ! में सो रोग स्थान पूचा है। इस क्यान्यकारों अवर्थ-ही-कार्या है। इसके और सुन्तरे कार एक हैं। हुए क्यों अन्तर्वता कींव के सो है?

दुर्वोक्त सहा—'जित्ती | आध ही को अनुक्की हैं। शापने कितेतिक क्वा नुक्तकोची केंव की की है। कित आप की कार्य-ताकार्य क्वा को क्वत है है? अधिकेक प्रथान कर्न है क्वापर किया। किर इस स्वक्रमी



कर्र-सबर्गकी संबंध क्यानेसे क्या नामक ? पुत्र वा प्रकट क्याबसे स्पृत्तीको क्यानेस्थ सामन है क्या है। केव्यर पार-काटके साधनीको है से क्या को क्या । असन्तोको है राज्यसम्बद्धीको प्रति हेरी है ( इस्तीको में के कान्योको है केम करता है। सन्तरि स्तोवर भी उसको कृतिके विले

प्रणा करना नीति-नियुक्ता है। को साध्यवधानसायक कर्नुकी
कारिकी ओरसे अपनीन काम है, का करने हानो अपना
स्थान को बेदता है। कृत्यारी काम है। की है साधारण कर्नु की
वार-नीवंते अधिकृत होकर को कृत्यार संदर्भ कर धरनी
है। क्ष्मुकी स्थानिको हेककर प्रभाव की होना आहिते। हर
सावत नावको सिराम कामने स्थान की बार है है। का
क्षमुनेकी अधिकाल आसिका कीन है। कामनोकी
सामानी अध्यान है किन मैं निर्माण करि है। कामनोकी
सामानी अध्यान है है। वर्ग है—नाक्षमोकी सम्मति
है सेवा अवकर्ष पृत्य है की क्षांचन क्षमाने की पृत्य है
केता है।

कृत्यपूर्ण सक्त—'बेटा । ये से बारकानोके साथ विदेश कार किसी प्रकार अधित नहीं सम्बन्धा। वन्नोके कैर-विकेको कृत्यम् असेश्व कहा से कारा है और का कुल्लाको देखे किया अनेश्वर सक्त है।' दूर्योकने कहा—'किसानी। जा कोई नवी शत से नहीं है। पुराने सोग कुल्लाको किया करते थे। उनमें न से इस्तान-असेश्व कार्य कीर कीर देशे हैं सम्ब-क्वार कम्पनेकी जाता सीविधे।' कृत्यमुने कहा—'केशा। दूर्वारी कारा पुत्रो अस्ता नहीं स्वेत क्वारका न पहें। क्वेकि हुए कर्मके विवर्गत ना से हैं। क्वारका विवर्गने अस्ती किया और बुद्धिके प्रकारने सारी करों क्वारका विवरंग अस्ती किया और बुद्धिके प्रकारने सारी करों क्वारको है कार्य के हैं। संबोध ही ऐसा है। सरकारी है। क्वारकों कुल्का क्वार्य क्वेकर समय निवार सारा दीस क्वारकों कुल्का क्वार्य क्वेकर समय निवार सारा दीस

राजा वृत्तराष्ट्री क्रोचा कि हैन असन्त वृत्तर है। देखें प्रार्थकों से अपने विचान कृत गये। पुरुकों भार नानकर उन्होंने सेवकोंको अस्ता है कि 'पुनरकोग जीत है सेनावकारिक सम्बद्धी स्वया वैचार करावते। उसने एक हजार सम्बद्धी-वौद्धाई एक-एक कोनवर्धी हो। राजायपुनरार कर्माक्ती-वौद्धाई एक-एक कोनवर्धी हो। राजायपुनरार कर्माकारी सन्ता वैचार की और उसे प्रस्न-सरकारी कर्मुओंसे सम्बद्धी-वोद्धां सन्ता वैचार की और उसे प्रस्न-सरकारी कर्मुओंसे सम्बद्धी-वोद्धां

## युधिष्ठिरको इस्तिनापुर बुलाना और कमट-सूतमें पाण्डवाँकी पराजय

रिज्ञानकार्य बहरे है—अन्तेयन । जब उच्च कृत्यक्षे अपने मुख्य क्यों किएको सुरमाध्यर कहा कि 'लिएर ! तुम



मेर्च अवर्त्त इकाम करने और क्लान्यूर प्रश्नियने सील है कई सुरू सालो । युविहासे बहुक कि हमने एक सामादिश साथ, विशाने प्राप्त सामा और अवल्प स्थाप-खानार सुनवित है, क्यांची है। जो वे अपने भारतीके साम आवार देवों और इक दक्ष-रियोक्ट काम बहुर-बर्दिक क्षते।' महाना निवृत्यो मह नात नात्मे प्रतिकृत कर पादे। उन्होंने कामा विरोध कर्या हर काराहरे बक्-'आरबी व्ह तका मुत्रे जीन वह बन पहले । अरम देश करानि न करें। इससे अरमके मुक्तें के निर्देश और गुरु-काम है जायात, विससे सारे बेजक नाह है सबका है।' कृतरहरे बहा—'सिद्ध । यह के किरोबी बह हुआ हो हुवेंकाके कर-विशेषके भी सुने कोई दुःस की होता : संस्तरमें कोई एक्क्य की, तम देखके अधीन हैं । दूस कारत क्रोक-विकार न करके केरी अंध्या जीवार करें और परव प्रतापी पञ्चानेको से मान्ये।"

रिवरमी इच्छा न होनेसर भी कृतसङ्ख्या अक्षाओ निका होकर प्रीक्षणानी श्वापर समार हो हन्द्रमान गर्ने । महीबी कलाने सामस्त्रीय वर्षे वर्गायके देवनेको राजनीयसे प्यूंबाया । राजा सुनिविद्य बाहे क्षेत्रते उत्तरे निवे । सुनिविद्या इनका क्योंकित सरकार करके कुर-- 'किन्स्ती ! आरका का कुछ रिया-सा कर पहल है। आर समुक्त से अने है

। फारन से करते हैं ? फैरर के उनके अधीन है ?' किट्स्मीने क्या—'बेक्टास इसके समान ज्ञानी कृतव्य अपने पुत्र क्लं राने-राज्यक्रिकोटे साथ समुख्या 🐌 जानकी प्रांतर और अलेक प्राच्या अवेने का सर्वता नेक है कि 'तुनिहर'। की भी तुमारे सम्बन्धेनी एक बड़ी सुन्दर सम्बन्धानी है। क्षा असने राष्ट्रकोटे एक अध्यार जाना निर्देशन करो और व्यक्तिक साथ प्रान्तिक करे ।' कृतस्था सन्तेत सुनवर कांतर कृतिहर्त व्यान-'कवारी । कु केरत से मुहे क्रान्यकारी जी पर पहला ला से केवल प्राप्ते-क्योंकेटी है कह है। ऐसा कौर पान कारणे हेन्स को सूक्त केरना कार कांग ? इस सम्बन्धे आस्त्री क्या सम्बन्धे है ? क्रमचेन में आयो बहानांके अनुकर है कर्ण कारा कार्व है।' विकृति सहा—'कांग्रक ) में का भारीपाति क्या है कि कुछ केरना को अन्तर्वेक कुछ है। सेरे



को वेक्कोके विको पहुल प्रत्या विका, परंतु सरकारता प किसी । वै कुरायुक्ती आक्रामें कियम होकर आया 🛊 । आय के जीवा सन्तरे, को करे।' मुधिहरने पुत्र-'प्यानस् । क्य वर्ष कराएके कु क्षेत्रन, कुशासन आहिके सिवा और भी विस्तरको प्रकारके हैं ? इसे बिल्मों साथ पूजा चेलांके रिक्ने मुख्या का या है?" विद्वारति क्क्-'कबाराव बकुरैको से जार बाको है है। यह को बेक्केने इसिट्स करोका निर्मात और सबसे बक्र विकासी है। कार्क अधिक विविद्यति, विकार, समा न ? हरारे पाई क्रॉबन आदि तथा शृतकार्यों सहस्था सम्बद्धाः, कृष्टिव और वय आदि यो वर्ड विद्यमन हैं।'

पुनिहित्ते बहु:—'पायानी | उस के सामका अहात है दीक है। इस समय बहुँ को नहे महत्त्वक और पायाक दिलादिनोक्त पायाद है। अब्दु, ताब संसार ही दैनके सचीत है। कोई प्रकार नहीं : बोरे कृताबू बुझे र कृतके के मैं कृत्विके साथ बुक्त केरलेंड किने बावति नहीं पाया ।'

मारेशको विकृतियो हेल जानक श्राम की कि 'जार-काल मेंची शाद एकिनेंक सक पूर्व कर नहें इतिकान परितेशको एकार्यकी करके के नेक्के पूर्व पार्थ की एकी प्रेम पुरितेशको एकार्यकी करके के नेक्के पूर्व पार्थ की एकी भी । इतिवान व्यक्तिया कर्माण पुनित्ति कीन, मेच, पार्थ, कृत्यको मार्ग श्रिक्षाको स्था विविद्यको किने । पार्थका शादि मार्ग, प्रवेक, क्रम, क्रमूने, क्रम्यक पान्य, इत्यक्ति शादि मार्ग, प्रवेक, क्रमूने, क्रम्यक पान्य, इत्यक्ति श्री मार्ग, प्रवेक, क्रमूने, क्रम्यक पान्य, इत्यक्ति स्था मार्गको पान्यको पान्यको स्थान क्रम्यको स्थानको प्रवेको स्थानको स्थानका प्रवेक स्थाद किन्यों को स्थानका प्राप्ति क्रमुक्ति स्थानका प्रवेक स्थाद किन्यों को स्थानका प्राप्ति क्रमुक्ति क्रमुक्ति क्रमुक्ति स्थानि क्रमुक्ति क्रमु

क्षा के प्राथम के यह सेप विकास के विद्रा क्षेत्रर कृत्याची अनेन प्रयाने गर्न । कृत्ये निर्माणिने पहिंच्या स्कृते प्राप्त क्रिया । अञ्चलेते अन्यने अहैन्यत राज्ये साथ प्रमाणेन्य प्रणाल-आर्थीओर, प्राच्या-स्थाप अविकार सम्बद्धार विजया । इसके बाद राज कोण अन अन्तर्वे अलुके अनुकार योग्य अवस्थार की गर्ने । सहस्वर्य माना प्रकृतिने असाध किया—'क्येक्स । यह सम मानको है जीका कर की थे। अब को अगवर केल क्षम करना करिये।' युविद्याने क्या--'एकप्! श्रूजा प्रीतमा को क्रमान्य और पानका पुरु है। क्राने न से श्रीरचेतिक वीरक-महावंत्रक क्रमार है और न से इसकी कोई निक्रित नीति ही है। अन्तर्क कोई की कारकपुत पुजारियोके सम्बद्धार्ग जनसम्बद्धी अर्थमा भूति भागतः । अस्य बहुके क्षेत्रों क्यों सामाने हो यो है ? सामाने निर्देश पुरुषोंके सकर कुमारी हो पर्यात करोबा उच्छा जी करन धार्मिने ।' सुकृतिने बाह्य--'कृतिद्वितः । देखे, बालान्द् और प्राच-कुरास पुरूप कुर्वल एवं प्राच्योगिके क्षार आहे. करते 🛊 । देती चुर्तत से सभी कान्येने हैं। यो बाने बेक्कने बहुत है, बह बहे बहैकारों अञ्चलको जीत है से अस्त्रों कुर्व महोत्रा का करन है ?' सुविद्यों कह--'असी का । मह से बाजाराने, महन्दि इक्टरें सो सेवेरे मुझे विसन्ते साथ कंतन्त्र होता 7 और कीन क्षाने त्यारंत्य 7 कोई डेमर हो हो कंत्र कुछ किया जान।' कुर्वेचन्त्रे क्ष्म—'हीन त्यारंत्रेक हैलो क्षम और का हो मैं हुँगा, चरंतु मेरी कोरहे चेतने की काम क्ष्मुने।'

पुरस्य प्रश्ना हुन्य, जह समय कृतापुर्क साथ पहुन-ते प्रथम पहुने अप्राप्त करें के—भीमा, हेम्म, कृत्यावार्त और विकृति औ; प्रश्ना कर्मी कर्मी प्रथ्म प्राः पुनिर्दितने वहा कि 'सामकानों सरमा, सुम्मानि स्था आकृतानों केह प्रमा कृत्या क्षांस्थम कर में स्थार स्थास है। अस साथ प्रथम, जान क्षांस्थम क्या माने हैं ?' हुनोमाने पहुन कि मेरे प्रश्ना पहुन-ती भनिन्दी और बस है। मैं उनके प्रथम विकाद सहंग्या पहुने दिस्ताम प्रदान । अस्य इस समिते



चौरिने हो ।' इसे तर कारेना कारोंके निरोक्त सकृतिने इच्चने करे कारों और बोला, 'का क्षे मेंछ पह ।' और इस अवस्य असने करे कारे कि सामपुत्र असकी जीत पह । कुल्डिसे कार्क—'कार्यने । जा से सुन्तारी काराजाते हैं। अच्चा, में इस कार एक समझ अस्तरह हकर पहले भी केर्यन, अवस्थ कर-कार्यन और क्यून-सी सुवर्ण-पाति क्रिक्ट समाज हैं।' क्यूनिने 'इसको पी मैंने जीत रिक्ट 'का का्यन करे केर्य और असेरकी पी हों। कुणिहिसने क्यून—'मेरे काल क्ष्मी और स्टेक्टी सम्बुकोर्ने कर सी सामने बंद हैं। एक-एकने पीक-पीक होना सोना भए हैं। मही में व्यक्ति सरावा है।' क्रमुक्तिने महा—'तने, मेरे मह भी मीत रित्य' और प्रम्मुख बीत रित्या। इस उत्तार पर्नमार मुशा उत्तरेक्षर महोने क्रमा। मह उत्ताम निहर्ताके नहीं देशा राजा। उन्होंने प्रमानन-मुख्या हुए मिला।

मिट्राजीने सक्त-नक्षात्रण । सरसावात केलीको अर्थेका अवते नहीं सगती। ठीक बैसे हो, बेरी बार उरायतेनीको कार्याः नहीं रागेनी । विश् भी मेरी प्रार्थण ब्यान देवार खरिये । मा क्यो क्रॉक्न किस करूर गर्मके बात सक्य बा गीरहरे स्थान विकास समूचा । यह सुराहर कुर्वाहरे गावका कारण करेगा। यह कुरस्काल अपने अने है पूरा है, जो अन्यदे नेक्स क्रम क्रम स्वाप्त है। है कारको नीरियो का धनकार है। यह क्रमई क्रम संस्थ रूपत हो पत्ता है, तम हते अपने पत्ता पेनेका भी होय औ पाता । ज्या बेनेक चा करीबे अन्यक्त है वा क्यांक कि पक्ता है। की है हरीका कुले कोने हमा उनक से फ है कि हो हर सरका में यह की है कि प्रकारों क्षेत्र-विक्रोध क्षेत्र केलेका पान प्राथको क्षेत्र प्रदेश क्षेत्री । सुक चेकांसी एकने पुरवसीओंसे केली किने करने कुकार्त पुरुष्य परिस्तान कर दिया का । भोजनंदिकोने कुछना संस्ताके क्षेत्र दिना वर और मनकान् ब्रीकृतनके द्वार सान्ये करे पालेका में सुबंधे हुए है। स्वयू ! जान जाईनको जाना हीरियों कि यह पानी पूर्वीयनको एक केवर होन्ड कर है। इसे एक देनेपर ही कुमलेगी रीकड़ों क्लेम्स कुसी क प्रमाने हैं। सीव का गोवाके प्रत्य पूर्वभाषो जानकर कहा अनक विकोर समान प्राच्यानिके अपने पास तथा स्वितिके । अपनेकी भोग र हो, क्रम्या को वर्ग है। बल्कोने स्थापको पक राज है कि फुलबी सहाते किये एक पुरस्कों, जीवकी रकारे रिले एक कुरवारे, देवची व्यक्ते रिले एक जीवको और आजानी पहलें। दिले देखकों भी ब्रोड है। सर्वत महर्मि प्रकारकारी कन केलके परिवासके सनव वस्ताते एक बडी एक्ट क्या नहीं थें, जो में आरको कुमा है।

व्यूपि कहा का कि किसी धर्म ब्यूप-में नहीं का कर्म में। में प्रम-मे-सम सोना उनका मनते में। का मेक्का करा कहा है लोगी और कूले था। उसने खेनका अन्ये हेकर एक साथ है बहुत-सा खेन मनते क्रियो का व्यूप्योधी परमा उत्तर, तम कि में अपने-अपने क्षेत्रलोगे निर्देश कामरे बैटे हुए थे। इस कराया क्षेत्र क्षेत्र हुआ ? क्यों कि को उस समय से सोना नहीं है लिया, जानेका वार्ग की बेह हो गया। मैं एना क्यों केता हैं कि साम्यानेकी महत्य सम्मान क्षेत्र क्षेत्र हो हि साह

तोत्त्वन एकाके राजान काव्यवेगीको भी-मीहे प्रकारण वृत्यः। एकार्षे व्यक्तारे वीका स्वयंत्रे । मैसे मानी उद्यक्तके वृत्येको सीमात है और समय-सम्बन्धन मीहते पुर्वेको पुरात वी प्रकारशाली इस्ते कर-कर कोइ-कोइ कर मीते पहिले । वृत्येको का्ने उत्यस सम्बन्धन क्ये भाग कर्मके सामा सम्बन्धित प्रकार कर्मको केहा जर कीचिने। उत्तर दिल्ला सम्बन्धित क्याकोते एका निर्देश करनेका कार का्ने क्रेस कि उत्तरके केवा, प्रकी और कृतिको कररावाल (श्रीकी क्याक कोन्यः) के क्या क्याके होका राजपुरिने उत्तरी, उत्तर क्याकोते राज्य कर्म पुरा की इंग्या कुमानाल औं कर कोन्ये।

प्रभावे | कृत्व संस्था करवाया पूर्ण है। यूट्रो आपातार कि-वाद या है जात है। यह गानी करात का मते हैं। कृतिक इस करात कर निकासी यूट्रोने संस्था के संस्था कारायों जाति, सरामु और सद्धीकों सेक्षा के संस्था व्या करेंगे। की उत्तर के सको प्रतिके अपने नामते हैं। कारा कर है। है की है होंका अगावाय अपने रामते मूर्या करियार कर यह है। अगावेश करा की किस मूर्या | क्रिके करा की क्रिकार सराम है थे है को प्रतिके करा की है हतान कराय होए, निके क्रिक्त करते हैं को की तान करते से कार्य है। यह क्रिक्तकीका है। कार्यका निक्त की अग्रेस है। यह क्रिक्तकीका है। कार्यका निक्त की अग्रेस सामत

ज्ञांक और फार्स्ट बंदको । आसमेन इस समने इनेक आदिनी स्थानिक और क्यो की साम कर है, कंड्र इस अवस्थित अनुवानी करवार सम्बद्धी आरमें में इसे। में कुट करका को क्यानेका मानेत तिस्तार कर कि और में अपना प्रतेष न केंद्र स्थाने, तम और करहाति समय आसमेगीरेसे कीन क्यान करेगा ? सहराव ! आर में कुट करे भी कोई बंदि की थे, वसी थे। जिस आरमे कुटो कर महोत्तिका अपना करों सोना ? महि अस अवस्थान कर बीत भी से में इससे आपना क्या परत है अवस्था ? अस कावानिक सम भी, कावानिक है। अवस्था ? अस कावानिक सम्बद्धी करों-अस अवस्था है कावानिक की है। का कावानिक सम्बद्धी कुट-बोहरूसो थे अवस्थित की है। का कावानिक सम्बद्धी कुट-बोहरूसो थे अवस्थित की है। का कावानिक सम्बद्धी कुट-बोहरूसो थे अवस्था है कुटा। का कित यह सम्बद्धी, उसी वह सीत हो। महित सीठा देशियो । पर्यक्रमेने उत्तर प्रमुद्धे यह उत्तरिये ।

पुनोकारे का-निवृत्त ! यह मौकारी बात है कि तुन सब पहलोची जांका और क्रूबरेनोंकी निष्क करते हैं ? काने इसमीची निन्ध करना के मुख्यात है। हुन्हरी कीन हुन्तरे परस्ती का कारण की है। हम सीवर-ही-सीवर हम्बरे विरोधी हो । तुम हमारे रिक्ने चोवलें की स्टेन्के सम्बन्ध हो और मानोबारोका भारत घोटनेक साथा हो । इसमें महाका पान और अब क्षेत्र ? क्या हुने हात्या का नहीं है ? हुए कहा से कि मैं को के कर सकता है। केर सकता का को और कहारी बात भी बात बोला करें । मैं कुलो अपने हैं क्रिके इन्तरको कर पुरस्त हैं ? स्कृत स्थानुस्तर, इस हे उसी : अस मुद्रो का बेमो । देशो, रोसरका स्टब्स करनेकार एक है है, हो नहीं है। यह कहाके पत्नी के विकास करन करन है। मैं भी अमेरेंड एमाओं अनुसार काम कर का है। पूर बीवनें कार-पूर् नवायर यह या वर्षे, मेरे कारने हार्योग पर करो । प्रत्यसिक सारको उकसावार चार वाक व्यक्ति : वहँ में 🇱 राम की नहीं निस्ता । हुक्ते की प्रमुख्ये मनुष्यको अपने पार भई दशन्य भाईने । इस्तीनो पून पाई माने, को काने। वह एक्टी सक्काना भी है।

मितुर्ग क्या—'पूर्वोक्य । जुर अच्छे-वृत्रे साथी च्यानेने



मीठी नात सुनना चलते हो ? जरे चल्ली । का के तृत्वे किसी और कुर्लोकी सरक्त रेजी काहिने । देखे, किसी-कुन्ही व्यक्तिकार्ध करियोक्टी कार्य नहीं है। प्रश्नि वेले सीता व्यक्ति कृति हैं से अधिय निरु द्वीतवारी पात कर्ने-सूनी। भी अपने प्राथके दिल-अधियका पायल न करके वर्गस्त स्वाप पहला है और अधिय क्षेत्रेयर भी दिलकरी नात पहला है, वहीं एकटा कहा पायक है। देखी, क्षोप एक सीवी पारत है: यह दिला केला केला है। देखी, क्षोप एक सीवी पारत है: यह दिला केला की पास का स्वापी है, हुर्गन नहीं। हुए हुर्ग है। इसे सामुख्य ही पास का स्वापी है, हुर्गन नहीं। हुए हुर्ग ही पायो और क्षापि क्षाप्त पारते हैं, हुर्गन नहीं। हुए हुर्ग होता पुर्वेद का और पास्त्री क्षाप्त पास्ता है, हुन्मारी की इस्ता हो पाये। में पुर्वेद हुर्गने नमस्त्रात पास्ता है। विद्वारणी भीत हो पाये।

अपूरिते का-'जुनिहित्। असम्बन्ध तुम बहुत-रा। वर हर क्षेत्र है। यह दूसरे यह इस और यन यह है से क्रमेश्य रको ।' युनिवीहरो सक्क--'क्रमुने ! मेरे सार असंस्थ कर है। को मैं करका है। इस क्रमेक्टर कीर 7 अपूर, ज्यार, पहर, अर्थर, कर्त, चंच, निकर्त, पहरदस, बोरी, मुख्यम और परार्थ क्या पूर्व भी अभिन्य कर मेरे पार है। में का करेन करता है।' क्यूनिने पता नेनके पूर् and the state of t का-"अक्रमें और करके सम्बन्धि सेक्स गर, देस, भूति, प्राप्त और कारक पर में कृतिक रूपाता है।' प्राप्तिके हर्मन्यु इतनी को फेक्सर कहा—'तो, व्या की वेश कार' on philps sup-thole in mo-me als विकार के कार्य है, किस्तुत कर्त एकन और परी क्यांनी है, रूपी स्थानको, स्रॉ सको पाने गाउँ स्थानको में स्वीता ल्यात 📳 प्रकृतिने यक् — 'ज्यान, हुन्तने व्यक्ते वर्ता राजकृत्यर ज्युक्त की अभीत हो को है और पत्ने पेंजाबर जाने किर बंक-'क्ष्मरी बीत स्त्री !' कुनिहिले बक्क-'मेरे नाई स्कोद करीं, मानस्थानमं है। हुने तर मोन पीया ब्यूने हैं। जन्मन ही भी गर्ने गर्न प्रतीन वर्षम लक्केक जी है। किर भी में इन्हें सर्वपर रकता है।" क्रमुनिने पूर्ववाद सक्रोवको भी जीव क्रिया। बुविद्वितरे व्यक्त—'मेरे वर्ष अर्थुन उनावी और और संजन्मीकर्मी है। ने राजिक सम्पनिकेन्य नहीं हैं। बिरूर भी मैं इन्हें राजिक स्वारत है।' इन्द्रिनेन किर इससे को वेकका अपनी जीन घोषित का है। कुरिक्षिणे कहा—'श्रीयांत हवारे लेकारि हैं। वे क्यूचन करों है। इंग्लेट कमें शिक्तोर समान है। चीड़े कही क्षारे हैं : प्या-पूजानें अधिन हैं और सर्वेद क्ष्मुजीवर होते कि रहते हैं। मेरे पर्य प्रीयरोग अवस्थ हो दर्शवर रहतेथे न नहीं हैं। फिर भी में इन्हें क्वीक रकता है।' ककुरिने इस बार भी

अपनी जीत बातकरी : वृधिहितने कहा कि 'मैं इस बहाकों । होनेक्ट क्रायक स्वारी है । हो, जर्म कर्मानुक्त क्रायक्तकों बहु और समझा बहुत है। मैं कर्मकों स्वीप्त क्रायक है। बहुत में हुए कहाना से तुक्तर काम करीना ' क्रायुक्ति के क्रायक स्वार्थ के साथ है। क्रायक से क्रायक क्रायक करी क्रायक करी क्रायक क्राय

इतुर्विते कर्गरकां क्या—'राज्यू । हुक्ते अवनेको जुल्ले हारकार वर्ग अवर्थ किन्द्र, क्योंक कुरत कर कह जुले अपनेको हार जारा बद्धा सम्बन्ध है। अन्ये के हुन्द्रोर कह स्वयंत्र सम्बन्ध अवन्द्री कर बीत से ।' सुनिर्द्धारने कहा— 'सहुत्रे । हैं कहें सुनीरकार, अनुकृत्या और रिज्यादिस असी पुलोसे परिद्धा है। यह सरकाई और रोज्यादि की बीते सोती है, स्वयंत्र कहने सामाह है। इस्सी साम्बन्धि होने-स- हैनेक्ट प्रस्कार स्वारी है। हो, जहीं कर्माह्म्यून्ट स्वान्यनकों हैन्सुंकों में प्रेक्टर रख यह है, जाकि ऐस करते स्वय पूर्ण व्यान श्रम हो या है।' कुनिक्टर हैसा करनेनर करों और है विकारकों की करें सारों। साथ स्वया हुम हो सरी। साथ एका को काही से हो में। बीका, हेका, कुनिकार व्याह स्वान्यनकों के करेंद करों के हम हैंद कालकार विचारका हो को। क्वाइ हरिंग हो सो थे। से कालकार कुनि—'अस इसके तथा हो करेंदी?' हुआका, कार्य कार्यकों करेंदी कार्य क्वाइ है की हमी। संस्कृत क्वाइनेन्द्र के कोई कोई कोई को में कुनिकार कार्यों की के और अपनी विकार के किया कर है।

#### कौरव-सभामें ग्रेपदी

र्वारक्तात्री वाले हिन्तकोवन ! अस क्ष्मेनको विद्वारोधो पुरस्कार सङ्ग्र—'विद्वा ! तुन पर्दा सम्बो । तुन मानार पान्याचेको क्रिकामा सुन्दर होन्यांको प्रांत से काओ। व्य अधारियों वर्ष अव्यर प्राप्ते व्यक्ति प्राप्त राजाने और क्रान्तिकोंके साम को ।" विकासीने स्कार-- "सूर्या है रहो पार रही है कि ए परित्रों स्थान का है और परनेपाल में। राजी हो मेरे पीतने देशी पान निवास की है। उसे । यू इस पालक-रिक्रेको करो क्रोडिया कर यह है 7 जेरे विरस्त विर्वेश सींप प्रतेयके कन फैक्ट-फैक्क्स पुरस्कार को है। है उसके केंद्रकारी करके प्रमाण का व केंद्र, क्रेक्ट कानी कर्त पार्ट हो सकती । परिवेदसे अवस्थितर को समेन्द्र राजान है। प्रत्यक्तों । कर ब्रोक्स पक्ष हेनेस हेना है, का उसमें पदा हरते हैं। जानारे दुर्वोकने ना-मुख्ये जा हेरेके रेजे है जाके केव्यों के कैर और बहुक्कको हुने की है। मरमास्त्र प्रकारो विराधिकका प्राप्त नहीं होता। किसीको मर्पलेको चीहा नहीं प्रकृतनी साहिते । महोर और जोल्यारी प्रकार प्रयोग भी बाय स्थिते। यह स्था समानास्थ हेत है। बहुबी बात निकासों से बैहुने हैं, पर प्रसाद शिये निकल्पी है, उसके पर्यक्रमध्ये कुपकर राश-देश विद्वार किया करती है। इसलिये हेला कथी नहीं करना कहिये। बतारक को प्रयंकर और विकट संबदके निकट मौध गण है। दशासन आहे की प्रतिकों हों-वे-डॉ जिल्लो है। क्लो हैंबा करनें का बाब, पांधर हैरने हमें; बांत का मुर्ज पेरे वित्रकारी कात नहीं मानेयां । यह विश्वेदी लेख और विश्वयदे ।

का की हुन्छ। इसका स्थेन जाता का छा है। इससे विक्रम होता है कि सीच है कोरनोंक सर्वजनस्था हैट् करेकर निर्मात होना।'

का नहांच दुर्वाचने विद्वारों विकास गर्र प्रचर्ने अर्थकार्थने का जून होते साथ काना ब्रेक्टिको से कानो । कनानोरी क्षातेनके कोई बात नहीं है (\* जारिकारकी कृतिकारे अवस्थाता हिन्दीके बार पान और का-'लाओ । जान, क्षेत्रीर कृत्ये प्रथ धन का गर्ने । का क्रमेंकर राज्योंको कुछ र का क्रम क्रमेंने नेवालेको, अवनेको और अन्तर्भ जनको भी हर दिया। जन जारे इत्रेक्स केर्न हो पहाले हैं। सामने समेर देसे रुपोरे को पेन है। यह यह है अब ब्रीस्टेंग गाउ निवाद साम्य है।' प्रेमिकी यहा-'यहाना । असला विकास को विकार है। करना, कुद्र समीवर कुछ-स्वतः के बक्ते हैं है। क्याएं को सबसे बड़ी बड़ा है। बॉद हत कारते वर्गन अन्य से वे व्य प्रवर्ध रक्ष करेगा। हर-समाने बालो और बाकि वर्गामाओंसे मुझे कि ऐसे अवस्थान को का करन करिये । मैं क्येक अल्पन की करण बाह्य (' क्रेक्टिको बात सुनकर जनिकामी सम्बर्धे सीट अल्पा और प्रश्नान्द्रोंने पूजा कि क्रीन्सेको क्या स्तर हैं। का समय सम्बद्धानि अवना-अवना है। नीवे कर हैया। क्वेंबरका कर सामकर विश्वकि कुछ उत्तर नहीं दिया। ब्ह्याना पाण्या का समय कड़े दूनी और देन हो के थे। मे सरको मेंने होनेके करून क्या करना शाबिने, इसका

होना-रोजा निर्णय पारंको सरावर्ण थे। पाणानीकी विरासको हाथ उदाबार कृतिकार सहा—"आदिवार्ण ! या, हु प्रैप्तिको पार्टी से या। उसके प्रथमा कार पार्ट है विका सावना !" प्रतिकारण प्रेप्तिके स्रोपको भी काम था। कार्य कृतिकारण पाण दासमार सावारकोरो किए पुत्र कि "वै क्रेप्ति-से शब्द पार्टी ?" कृतिकारों या यात पाल कृति कार्य । कार्य प्रतिकारणेयों जोर कार्येट कृति वेक्त्यर अध्ये क्षेटे पार्टी कृतारकारों पाल—"पार्ट ! यह बुद्ध प्रतिकारी भीनतेत्वों का पार्ट है। इसरिक्ट हुन कार्य पालार प्रीप्तिको पाला सावते । वे हारे हुन पालाव कृतार बुद्ध भी नहीं निरास कार्यों।

बढ़े मार्चकी महार कुछ ही दुःशासन संगत-सार मेर किमें महाने पर पड़ा और परवालेंक निवासकारने कावर हिन्दिसे चेला—'कुन्ने । चल, खुडे कुन्ने जीत रिन्ध है। अर अवह क्षेत्रकर क्षेत्रिको केन । प्रश्ते । क्ष्मे कांद्रः हो या दिना है। जब बच्ची का और क्रीरकेंद्री हैन पर ।' श्रुवासनको बात स्टब्बर क्रेक्टेबर इसर श्रुवको का क्षता। के भीता है गता। यह अर्थकारों के सम्बद राजा कुल्लाकुके राज्यासम्बद्धी अंतर कुँदी। वाली कुन्नासम्ब क्रोक्ते प्रस्ता को बीच और पीक्षेत्रे खेळार स्वाराणी Budde this the tiere the this was हिला। हार 1 हरर । । अपने बड़े कर बढ़ है हिन्दें करे राज्य-पाने अवचय सामो सम्ब सम्बद्ध वालो सीचे गर्ने में । दूरावा पुरस्तान कावानिक विलक्षर करनेके विले अपन कही पालोको पाल्यकेट प्रथानक स्वेपकेचो अन्यको रामान बसीवता काम का रक्ष है। ईन्क्रीका केन-रोग करें। 'का का । सरीर प्राप्त करा का । में किसी का की की । क्रेंब**ि**ने वीति व्यान-'शरे कु इसमा कृताल । वै नवसाद है, इक्ष में क्या करे है। ऐसी अवस्थाने को को से साम अनुभित है । इत्यासन्तरे होन्दीको मानस्य कुछ बहुन न हेक्ट केलोको और वी केलो काळ और केला—'इस्स्की मेरी ! यू रातकार हो का एकक्या, जाते ही यू नेनी हो, हको क्तरे कुले जीता है। यू इसकी करते हैं। अब इस्ते जीत मिनोके समान इसरी सारेगांने क्रम क्षेत्र (' क्रमान प्रीयरिको स्थाने करोट राजा ।

दुःशासनीः वसीयनेते श्रीवरीके केख शिकार गर्व । सार्थ कृतिको वस विस्तवः गया । यह सम्बद्धाः प्रोचने तसर क्षेत्रम् वीरे-वीरे चौरपै—'अरे युद्ध । इस सम्बद्धाः सभी क्षात्रके हुव्या, कियाबार, इनके सम्बद्धाः स्टिक्का मेरे युक्तम् केते हैं । इनके सामने इस स्टानों में वैसरे काहि हो सर्वेनी ? सरे हुटकारी ! यूपी काहिर गर, गरा गरा कर । इस नीच कारेंग्रे सनिक कर थे

रही । केल, चर्च इसके प्रत्य कारे केला और प्रश्नापक करें से वी चन्कानेके हमारो तेत कुम्बारा न होता। अनेतम अनी क्षांतर अक्षर है, के सहय कर्मका पर्ने करते हैं। युक्ते से कार्ने एक के एक केवले हैं, शर्मिक की क्षेत्र की कैवला। क्रम-पुरत ! परवर्गकारे निकार है : इन क्रमूजेंने क्रमियरकार क्य कर क्षेत्र । ये सक्ये बैठे कर कोल्ट अपनी अस्ति इतकी क्यांक्स कर देश है है। होन, चेन और महत्त्व विकृत्या जानकार भाई भया ? भाई-मुद्दे हुन्द अन्तर्गको कर्ते केवा को है ?" क्रीयक्षेत्रे कर बात क्रीतित पान्यजीकी और कर्मालको देवले-देवले ही बढ़ी, माने बढ़ उनके हरीली मुक्ती क्रोक्टीओं और वी कारण की है। यह सन्त क्रमानेको केट द्वारा प्रका केला क्रमाने क्रमा, वर्ग और सेह क्रोंचे दिन करेंका की नहीं दूजा का। राज्यनेकी ओर वेताचे वेकावन कुशासको और भी चौराई प्रीमहेन्छे बारीहा और 'जो क्की ! को करते !' कहावर ब्रह्मचर हैओ प्रस्तु । कारी प्रकार कार्या बाला अर्थन किया और प्रकृतिने जान्यो प्रयंत्रा की। इन रॉलीके अतिरिक्त हानी स्थान के कि का देखांका अध्यक्त के की हुए।

भीवती का का असी कारणकारोंने करियो वर्गाञ्चको कथा चेललेके दिन्हें देवार कर दिला और क्रानी जों और उनके राजेकाचे और रिन्हा ( उन्होंने च्हारे कार्र प्यान्तेको, तम अन्तेको झालार पुत्रे स्ववेदर सन्तक है। वै क कार बाली है कि अब भई को भूगेश लगानेक क्की अकृतन अधिकार 🗷 😘 महिं। पह्नी समाने अनेकों कार्मानी की है। के की जापर विकास करके टीया-डीक कार है। पान्कारेका कृष्ण और क्रिक्किको काररात देखकर कारकारका निकासी बात - 'समाराते । बीवरेके प्रवर्क क्याच्यों इस सभी लेगोची हीय-हीय विवार कर जार देख पार्विते । प्राप्ते और क्षेत्रेकर क्ष्त्रे साधनानी क्षेत्रा प्रोप्ता । shadows, her gong aft speak betall per कियाने परान्त्री करके कर क्यों भी है से हैं ? जाबार्य क्षेत्र और कुरवार्त की कुर है 7 वे राज राग-देव क्षेत्रकर को भी इस जान्य निर्मन करते ? आयरोप प्रतिकार बैच्छेके जनमा विकार करते. जारा-जारा जारा पर 200

इस जन्दर निकर्णके कर-कर सहोगर की किसीने कुछ नहीं बड़ा। अस विकर्ण हात करकार सम्बंध ऐसे लेखे हुता कोक—'कोको ! ये सम्बद्ध आर है का था है। इस विकर्ण में विका कारको न्यायस्तुत सन्दर्भ हैं, बढ़ कई विका न सूच। अंद्र पुरुषेने सन्दर्भके कर न्यास बहुत हुर सहावये

है—हिन्छर, करण, कुश और सी-अधूने अवसीत। कुले रोत्रस हेनेकर बनुकारा पान हो गांव है। वहाँ कुआलिके कुलनेवर एका कुनिर्देशने अध्यत कुलाई उपलिचना Andreit gefete sem fiene gand bemer gfielgeraft gi की नहीं, जानर चीचों पाणकोवा करान अधिकार है। यह पार भी जान वेरेबोन्द है कि चुनिहिस्से सम्बंबरे हारकेंद्र बाद बीपरियो करेपर सम्बद्ध। इस्तीओं मेरे विकास परिवरित्यों पर अधिकार नहीं के कि ने हीप्रीको कुछैन्। सरावें। इसरे कर मा है कि अमेरे केवाने जी. क्षपुर्वनको जैनको को क्ष्मिय रहा वा । इर सब मानेशे में से क्षा निश्चन्यर पहुंच्या है कि होन्छे कुले की हारी नहीं है विकालको बाल पुरस्कर सन्ती जनसङ् जनको प्रतंतर और प्राप्तिको विका भारते राजे । भारते और भोरतकार होने राजा । पार्टित होनेपर पार्टिन प्रोताने भएकर विश्वानीका क्षेत्र प्रकार रिया और बोसा— विकर्ण । ३ हाली हानी को को कर पा है ? मानून होता है कि हूं अपीरते करना अधिके हजार क्षाने पंत्रका है सरकार करन नक्षा है। हैनकी बार-बार पुरुषेतर भी कोई समास्त्र कर कही है का है. हरनार अर्थे जुरू है कि तम सोग जानारे करिए अनुसार बीती हाँ जातो है। ह वयकांके बारण बीरव क्रोकर को मुहोबरी-सी बार्वे क्या रहा है। एक से तु कुर्वेक्सने होता और कारे वर्गन पर्नके अनिक है। देवे तक बुक्कि निर्मक महान ही क्या है ? क्षेत्रहित्ते सकत सर्वत कृतिन सम्बद्धत कर दिया. एक क्षेत्रको किया गोरके किने को ? क्षेत्रको भी से 'सर्वार' के पीतन ही है। क्या होन्स्ट्रेफो स्वर्वेपर स्वयानेने पायकोची राजांत वह की ? जोद के देख राजांत्व है कि श्रीपरीयो रचनान होनेके समय सच्याने नहीं साल पार्टिने क से इसका उत्तर भी सुन । तेकामोंने सांके दिले एक ही परिवार विकास विकार है। होंगड़े पांच चरिन्तेकों को होतेह कारण निवाली केरण है। इस्तीओं केंग्र प्रमानों इसे कुर्वज्ञा अवन्य क्याहित होनेक की सकते हरता अनुवेद मी है। अरः पायम, अन्यं को हेको और उसक सर या जीत किया करा है।' अब कारी इन्हरूपाई और

वेशका का—'कुकान | विकार काम्य हेका को-कुरेकी-से करें कर का है। इसका कार मा के और हैकी क्या क्यानींट करें का उत्तर हो (' क्यांकी का सुन्ते हैं) क्यानींने अपने क्षानोंट का अबर कहा और कुकास कामूक्त केंग्सिक का आहोका जात करने सना।

विक स्थान कुत्रासन हैन्सीया क्या स्थानने स्था, हैन्सी प्राण्य अंकृत्यास स्थान सकी स्थानी-पर सर्वत सकी स्थान-है चेनिय ! है हार्यासकी ! है स्थानुस्थानकार हेन्सर ! है सेनीस्थानकारण ! है स्थानिकन् प्राप्त ! है स्थान पूर्व अन्यास कर से हैं। एक यह सार मानको प्राप्त पर्व हैं। है सब ! है स्थानमा ! है सम्यान ! है अधिनाम प्राप्त ! है स्थान ! अप स्थानकार है। अस्य स्थान हैं। अस्य प्राप्त प्राप्त को संख्या के स्थान हैं। स्थान ! में सोरवंति विकास को संख्यान पर्व हुन्स हैं। अस्यार प्राप्त हैं। अस्य मेरी एक प्रतिकृत !

हैं की क्रिक्स की जनकर क्रिक्स के कार में तबाद है के कामन होने सारी। जान्यों अर्थ पुरुष्ट भएतान् नेक्स्परे का कृति, कात इन्हें क्यानों का आया। कारणार प्रमु केररावत होका हरकाची होत. घोषन और स्वृत्येको भी पूरा भने और कैंग्ने केंग्नेके प्राप्त चूंचे । अर अल्प क्षेत्रहें अपनी रक्षके दिले हे कुछा ! है किन्ते । हे हो ।" इस अवस्य कुळा-पुष्टारकर क्रम्या रहे के। वर्गकाम करवार बीक्रमने गुरुवारे वहाँ आकार क्या-में कुन क्योंने डेंप्स्टेको सुरक्षित कर दिया। स्टाल्य क्ष्मारम क्षेत्रकोची नेती वर्तको हिंचो वस्त्रेको लिएक क्षे भीका, जाने है बसोबी काते हेती वाती। इस प्रकार विन्नीतर्थे बहुत-से बस्तोका केर तथा गया । बन्द है है सर्वकी नोहरू सर्व्या है । बीक्रमध्ये क्रम अन्तिकरूप है । कारी ओर समाने इत्यास क्ष नवी। यह अनुपूर पटन देशकर वर्ग प्रकार स्वकृतमे द्वासमाते निवाले और प्रैयकेची ज्यांस करने सने।

कर सरक चीमरीओंड केंचे होत क्रोचले करि रहे हो।

वेशिक् प्रत्यावारित् पूर्ण केंद्रान्तित । वोत्ती प्रतिपूर्व के कि न कामीत केंद्रान् । के का हे स्वाचन प्रमाणविष्यान् । वोत्तावांकां प्रमुद्धारत काम्येन । कृता कृता प्राचितित विकासत् विद्यानाः । कामो प्रति वेशिक्त कुमानकेंद्राविद्योत् ॥ (६८) ४९---४६३)

स्तिनि सरी-सम्बर्ध हम-से-सम्ब कार्यार गरको हुए सम्बर्ध स्तिन्नियु नेहानारके नुपतिनार ! कार्यने मेरी कार सुने । ऐसी कार न कार्य मिन्सीने कार्य होगी और न कार्य कार्य मिन्सीने कार्य होगी और न कार्य से मुले सामे पूर्व कार्य से मुले समय स्वाप्त से मुले सामे पूर्व कार्य से मुले सामे पूर्व कार्य से मुले सामे पूर्व कार्य साम प्राप्त कार्य कार्य स्वाप्त स्वाप्त कार्य कार्य स्वाप्त स्वाप्त कार्य कार्य स्वाप्त स्



स्ती। सोन वक्षते सने कि 'कौरव डीम्टीके जानेका राज करों नहीं हैते ? इस्प-इस्प का तो को सेवकी जान है।' जब करके वर्षत किंदुरकीने हाथ कात्रकार सम्बद्धी प्राप्त करते हुए काइ---'ररफारस्तुत्व । डीकी आक्रानेकोंके कारने जा। 'साबार अनावकी समान से खों है। परंतु सामकोन्सेको कर्द्ध भी असके प्रश्नका जार नहीं देश। यह सम्बद्धी है। जार्न पुराप पुरसाधियों कारकार ही सम्बद्धी हरण सेवह है। सम्बद्धीको वालिको कि साम सोर बर्चका कारको सेवह जो सानित है।

तेत्र पुरस्केको सरको अनुसार वर्गलकाको अनीको गरेगांसा अवस्थ करने व्यक्ति । जिल्लाने अपनी वृद्धिके अनुसार उत्तर है किया है। अस आयरोग भी राम-देखके मेगको केकाम हैपाएके प्रस्ता जीता उत्तर हिन्दि । यो वर्गह पुरस् इस्त्र केमानेका कार स्थाता है। यो सूडी कर कहा। है, उसके अवस्थाने के कहा। है क्या ? इस विकारों में सारकोगोंको एक इतिकार सुन्यता है।

का प्रतिकास का है कि एक बार देखाएंके उद्धारकों पुत विशेषक और अधिया अधिक पुत्र सुक्याने एक कामा जात कानेके प्रेमें अध्यान में प्रेमा और 'में केंद्र हैं, में केंद्र हैं। देनी प्रतिक्रा करके होनोंने प्रान्तेंको काबी रूगा रहे । per Annapara Proba speciale Most spirite aggregated all कृष । प्रस्के कार काकर क्षेत्रीने कुल--'अल प्रीवा-द्रीवा मेर्ना देविनो कि इस क्षेत्रोंने सेष्ट करेन है।" प्रक्रावरी क्षे क्राव्यक्रमचे यह नवे । एक ओर पुरुषे प्राम और दूसरी ओर वर्ग ! क्या भी विश्वय न कर प्रकृतिके कारण प्रद्यानी भागि क्यूक्को कर नरे और उस्ते का—'महमान । सार केवल, असूर और असूरनीया वर्ष जानों हैं। मैं इस समय को कर्न-संबद्धने हैं। आय कृत्य करके यह बतानको कि विद्यारे अनुबार कुल न है के संबंध अंदर-बुक्तकर कुछ-मार-कुछ उत्तर देखे कथा गाँव क्षेत्री है (\* म्हार्थि करकारने क्यां--- 'भी कान-स्थापका एक-हेव अक्षेत्र क्यांचे बाराम होन्य-तीना कार वर्ड केट, अवना को गमाइ लगाड़ी देनेने दिलाई करता है क कुछ-का-कुछ बढ़े देश है, का करनके सहस्र पासोंसे सीधा बात है। अनेक वर्षने करके चारवी एव-एक गीर सुरसी (a) इस्तीयदे किसे सम्बद्धा सुरुपष्ट इवन हो, उसे साथ ही केलन करिये। किल अवाने असानी सर्वानी क्या दिया and है और व्यक्ति सन्तरम् मामनेको नहीं इस्ते हो हम्बद्ध है कारकारी होते हैं। जिस समाने निर्मात कुलाबी निका नहीं होती. नहीं सम्बद्धिकों उसके अधनेका आहा, करवेकलेको कैवर्ज और अन्य सरकसरोको सी पापका चौचर्च कार प्रश्न होता है। वहाँ भिन्ति युक्तको निन्ह होती है, वहाँ सम्बन्धि और सदस याय-मुक्त रहते हैं, सारा पाय केवल कर्माओं के समाप्त है। प्रवाद ! को जान-सहस्रात जनका कार वस्कि जांत्रकर के हैं, अनके आगे-पोक्रेमरे पाल-पात चेकियाँ और और-मार्ग आहे. कुमकार्य रह है। बाते हैं । एकक्रिकेंट क्षेत्रक जानेकर प्रमुखको महुत बद्धा दुः स हैंसा है। को पुरुष हुए कोल्ला है, उसे उसके भी अधिक दुःस केवन पहल है। अरुह देशका, भुनका और करणासे ची

नवाही हो का सकती है। सामकार स्वार्थित को और अर्थ रह नहीं होते।' सम्मान्ते ! कर्मकारीकी कम सुरक्तर हैनराम प्रहारों अपने पुत्रते कहा—'नेस क्रिक्ट ! सुनकारे जिस अहिए सुनके जेते हैं। इन्क्यारी काम सुनकी पासकों के हैं और सुनका सुनके जेते हैं। इन्क्यारी अन से सुनका ही सुनके अन्तर्भित कामी है। में काने सुनके प्राण से से और बाते कोड़ में।' अनुनकी सम्मानिक जाना हैनर सुनकारों काम—'प्रहार ! अर्थ पुत्रके जेन्यकार म हो कर्मकर काम से ( इन्क्यें में अन्यक्त कुन सिक्यकार अस्त्रीकार केट हैं कि बहु सी क्यार अर्थित से !' अन्यक ही कर्मकर कृत स्वीत प्रहार अर्थ सुनकों कृत्यों और अर्थकों सामकी क्यार्थित स्वार्थ हुए , स्वयन्त्रकों ! अन्यक्त सामों को और सामकी सुनकों होन्से क्षेत्रकोंद अन्यक्त स्वीत

विकार में बार के बार के बार करें के बार कर है के बार के कार क अत् वर्धी देवा । काले कहा—'कुशासन धर्म । पून दानी र्वेक्षेची पर है सक्ते ।' वर्णवी कहा को है शुक्रात प्रते सरवये क्षेत्रीको सतीको तथा। यह सरवयस सर्थको प्रानी और पान्क्रमेची और देखकर बोली—'क्सो का महत्त्वें भूते अपू कृ करा कार्ते, का कन्यतीने स्था जी होता। आज वह दुवारा जी सकते जुड़े करीट वह है, पर में इंग्लंपाओं की वह हो है। में बॉन्जोबी चुनेंद्र समार पुरस्त् है। यर से मुद्दे इस हेम्पने यह देख बेह्न जहीं संस्थे । बढ़ी प्रमाणक बेर है। इससे अधिक क्रमीन बार और सम होती कि मैं अला पर्छ स्थाने नरवेडी का पूर्व हूँ ? अला राजाओंका वर्ष कर्म कर ? अनंदरक्ता संबद्धे का अकर प्रभावे सरकर कोरकोरे अच्छा समास्त्रकर्य 🔫 विस्ता 🕯 । मै गुरक्तोकी स्वथिनी, स्वयुक्ति सीहर और सीकृत्यकी कुमायक है। इस । यू क्यें क्यें आप मेरी हर्डक की व्य की है। ब्हिस्से ! में करेतुकार को और अवन्त्र है। कुर पूर्व हती बनाओं कहें अकती, जे कहे करेंग्डे: शंह क क्ष्मास्य चौरलेको चौरीने करूक-वर्णन्य सम्बद्ध पूर्व को क्ष्म है का है, उसे में नहीं यह सकती। दुस्तीन जुड़े बीती को सनकारे हो का नहीं 7 एक बारान के, में केरद क्षे कर्मने (

ग्रीवरितासने कहा—'कामानी ! कर्नबी भी कही ग्राम है। को-को विकार, कृतिस्था भी सरका स्था समझ्योगे गूल कर कर्त है। को कर्प समझ्ये सरकार और सम्बोगिर है, कही अध्यक्ति कामानों सम्बन्ध का नाम है। गुक्ता प्रक्र महा सुन्द, ग्राम और गौरकपूर्ण है। कोई भी

विद्यानकृषेक इसका विर्मन नहीं है सकता । इस समय कौरते एतेया और चोड़के कहा है उसे हैं। यह इस कारणी सुनात है कि तील है कुम्बूनकार जान है कारणा : हुए किस कुरवारी वह हो, उस कुरवंध और वोन को-को हुए सहकार भी वर्ग-वारोहें जो किसो । इसिंगे इस दुरंकारों प्रकार भी कुम्बर कर्मकी ओर देखारा इस कुरवंध अनुसार है है। वर्गके कुम्बर कुम की है। मैं के देखा सरदाता है कि वर्गकों कुमिर इस अस्ता कैस जार है, को है प्रकार करना साथ । इस जीती कुम कुम की, इसको सन्ते में हो को !

इसके सब सोर क्ष्मिको कार्या होने सारम हैन्सियों हुईस और उसका कार्य-स्थान सुन्या में बीक-अपूर्णिय हुए नहीं केरो । हुईसारे सुन्यानपर हैन्सित क्या--- 'हुक्सी केरो । तेरा पर उस से उस--सामा की बीक, अपूर्ण, स्त्रीय और कुल्ले प्रति है पर । वे हैं के प्रस्ता कार करी नहीं हैं? परि में जान सन्तर्भे सामा का दे कि मुनिश्चित सुन्या कोई अधिकार की और कई सूध्य कार है से हु अभी स्वरोपनेने मुन्त हैं सकारी है।"

बोबरोजो अपने क्षत्रभवित शिक्तपुत्त उठावर कार--जन्मको । भी व्यवस्थितिको वर्गस्य प्रस्ते कार्याट कार्य-कार्य और सर्वेश म होने की करा देन स्थ क्रमाना प्रमुख पार होते ? से ह्रमाने पुरुष, तम और जीवनके कारों हैं। महि में अपनेकों कुछ हुआ कारते हैं से इस भी हत को, इसमें राजेंद्र ही कहा है ? चारे मेरी प्रयुक्त होती से कव इतका इन्हरून क्षेत्रकेंद्र केन प्रथमक, पृत्रिक विराधा और पेरोले हुकारकार भी अन्तरका मोजिन खाना ? मेंने इस संक्रामध्ये समान सन्ते और भेरे पुनत्त्वीयो देनिये। इन्हें बीचनें आका एक का इन्ह भी थिए साथ। मैं वर्षकी प्रतिके केवा है। अर्थकों पूर्व देख विक है। वर्गणका बीरव भी मुझे इस संबद्धते कर प्रेचेके दिन्ने कुछ करने नहीं केता। बढी, वर्णका मुझे इसारेसे भी सरका है हैं की इस बहर क्युओंको में कुलधाने ही काल अले।' मीमारी क्रोक्सीओ बच्चाने देशकर जीना, श्रेम और नियुक्ते क्का—'प्रीकारेक ) क्षमा करो । हुन्करे सिन्ने कुछ परै कठिन वहीं है - हुए राम कर समझे हो ।' जा समन वर्गतन वृधिहित नेक्रेय-ते के ये में। क्योंकररे कई पुत्रशब्द बहा-'सम् ! चीर, अर्जुर, न्युल और स्थान स्थाने कार्य है। जार क्यों क्रेक्टिके जारको जार से । क्या दूस ऐसा अल्ले हे के ब्रेपके क्लेस नहीं हती अरे 7' मानाते हराता कृतेकार कृतिहराते हेश ब्याधार कर्मको और हैया और जुलकाका क्षेत्रकेता स्तिता करनेत हिन्दे अपने कोट-ओट वार्थी और दिवाने स्तात क्षेत्रकेता अपने कोवड़े स्तात हो नहीं। उन्होंने विश्वकार सम्बन्धकाओं विश्वकार करने हुए वाह— पूर्वका ्र कुन, और वालुकों हैरी का और सीकोओं अपने वाझे नहीं और में के वा बाकों कृतिकारिक स्थान कर्नुकी वा ताल करें। का इत्तत कोवड़ों को क्षेत्रकार हैक-तेवले विश्वकार की वाल को भी।'

विद्वार्णने कार—"कार्याणी है मेको, इस समय भीकोंको कार पर कार्यका कर विका है। कार्यक है आगा का अगू पर स्टेश अगा कार कार्यका कार कार्यका कर कार्यका कर है। कार्यक क्षेत्रकों । कुमार का पूजा अगा कार्यका कर्यका कर है। इसमें अगा कार्य का्य क्षेत्रकों की किया। कुमारी करि-गति कोर्य कार्यकों की कार्यकों है। कार्य है। कार्यकों स्टेश कार्यकों कार्यका क्ष्म है। कार्यकार कार्यकों स्टेश कार्यकों कार्यका कार्यका कार्यकों कार्यका क



क्ष-क्ष्मार किस्सर्ने प्रत्ये। या प्रकारक कोतवान कुरकर प्रकार प्रत्य । प्रीम, प्रेम और कुरक्तार, व्यक्ति

। स्थीत' बढ़ने रूपे। विद्या और प्रस्तारी स्वरावर करा कृतकुर्क प्राप्तां कृष्या थे । कृतकुर्व कृतेयाने व्याप्त-पि कृष्टिकेट । केट को प्रकारकी भावताक के गया। और मुद्रे । ह कुरहरको पहिला और पत्थानेची राजवरीको बच्चो रच्चर को का का है?' प्राथ्ये प्रथ सेक-विकासकर क्रीनकेको क्रम्यको हुए बक्क-'बब् । सून परन परिवास और नेने पुरूपकोरी अनेनेह है। शुक्रणे के हमा है, पहले जॉन स्वे ( हैपोर्न ५३)—'रावर् । परि सार कुछे पर हैते हैं के मैं का चरित्री है कि मार्थाण समार् कुरिक्केट समापनी पूर्वा के कार्य, विकास मेरे पुत्र प्रतिविक्ताओं स्कारमञ्जू कोई करानुत न को।' क्रास्त्र के क 'करवाले । तुमारी प्रकार पूर्ण हो । अस तुम और कर मोसे; क्षांत्र पूर्व कुछ हो पर करेन्द्रेस नहीं हो।' हैन्द्रीने सहा--भी कुरता पर पढ़ मौताते हैं कि उस और बहुतने साम क्षेत्रके, अर्थन, प्रकृत और स्क्रोप भी सुरातनो सुरका, क्रमीत हे करें।' क्रम्मी क्रम्—'सेमानको ख् कुरूरी प्रकार पूर्व हो। जोडू हम्मेले ही पुश्चार प्रकार गाउँ हुत्ता । हुन और भी पर पश्चि ।' हैपानि कहा--'महाराम । अधिक क्षेत्रको कर्नक पर्य केंक्स है। बीतक पर परिनेत केरने पीर निरामी प्रतास्त्र नहीं है हर्नर न को ने प्रसानी admitted to make argust threat year, क्षांत्र-प्रांत्ये हें, प्रांतिको हीन और प्राप्तानको हो पर Ains affects \$1 pt year \$1 th species went? र्केक्सर की पूछ को है, कहा से उसने प्रकारीने पूछ पहले क्षा कर रेमेश क्रेक्केके पुरित्रकों केलक कर्न जानी क्रांक करने करा ।

वीनांत्रों पृथ्वित्ते व्या—'एकंब्रू ! मैं आने प्रमुक्तिके वही वह वहाँ निकास है जार उन्हेंच ।' अर वाल प्रोक्ते वह वीनांत्रका देश-देश अस्य उन्हर का मा। मीई वह वह वी और पुण विकास है जार वाल पृथ्वित्तर निकासकी प्राच्य विकास ! अस्य प्रतिके, जार इन पान परं, अस्य प्राच्ये व्यक्ति है। इन के विनयसकाय आवनी आरकों है वहार पाने हैं।' वृत्तवृत्ते वह—'अन्यक्त्य पुनितिर ! पृथ्वित प्रत्यान है। जानकों को। इन अन्यत्त राज परं लेक्ट्र और पानों और अपने प्रत्यास पानन परं। वह, पृथ्वित के पाने अस्य है। वेद पान पुन्ति केंद्र प्राच्ये कि है। पुनितिर ! कुन पुनित्तार, प्रसंबर्ग, किया और पुनितिर केंद्रक हो। पुनि, और स्थानकों के है। दूस अस को। जान पुन्न विकास केंद्र वह वाले करो। केंग्नेकी,केंद्र म नेपानर गुणीको ओर नेपाने हैं और मिनेया को निर्माण मारते हैं नहीं। सामुख्योंको हुने काममंत्री और है जाते हैं। सामुख्योंको हुने काममंत्री और है। सामुख्यें की मार्चा मेर-विशेष काममंत्री हो से को पूर्ण पाने हैं। सामुख्यें की मार्चा काम नहीं पाने। नीपा मूख्य सामारण मारावीयांने की मार्चा काम पाने हैं। और मारावा सामार सेपीको पुरान कामेर काम सुन्या काम मार्चा कामें हैं। काम पुरान किसी की विश्वान काम मोर्चा मार्चा मार्चा काम हो कामें के मार्चा मार्चा काम मोर्चा मार्चा कामें हैं। हम प्रमाण हमने मार्च के मोर्च कामें काम हम हम हम को मारावा काम मोर्च मारावा हम हम हम हम हम हम हम हमारावा काम हम हम हम हम हम हमारावा हमांचार हम हम हम हम हमारावा हमांचार हम

वांको । अन्य बूदे और सन्ये पहरणो देखो । वी व्यक्ति के पूर्वा क्रिकेट के दिवा था । किर नियोते नियमे-पूर्णो और पूर्वा प्राथमा देखोंने किये इसकी सामा दे थे । पूर्वारे जैसा प्राथमा और विद्युर-नैया गन्ये पावन पुरानंक क्ष्म के पूर्वा है। पूर्वो कर्ष है, अर्थुनी बीटक है, प्रान्तिको प्राथमा है, स्कूक्त और क्रिकेट निवृद्ध गूक्तनेकाल पाव है। वर्तार १ पूर्वाच कार्यामा हो। अस दूस साम्याकास वर्तार ।

क्षांत्रक पुरिवर्तित व्यक्ते कामाओ तिक्रामारके साम जानका कृत्रकारी अञ्चली आह करके अन्ते पाई-जातु एवं ह्या-विक्रीत साम इस्त्रकारी तिन्ते प्रशास हुए।

#### कुमरा कपट-युत और पाष्ट्रजॉकी वनपाल

यानीयको पूरा-विश्वभाषाची अक्षतक। यह राजा सुरराष्ट्रि यामुकोको अन्तर यह और स्वातीह किस्ट स्वातिको अनुसार हे हैं, तक क्षतिक अलेको कक्ष क्षत हो ?

वेशन्त्रकारोते सहा-न्त्रवाहते सामानिको यन सामानिके प्राच कर्नकी अनुसरि है है, वह सुनते हैं दु-कराल अपने बई भाई क्रोमनके पास पता और महे दुःखके क्रांच कक्र है। 'भैपा । यहे समाने कारी को पहले हता काओ को हैना । क्षत्र कर सहस्रोके द्वापने काल गया । अन्ये कुछ क्षेत्र-क्रियां। करण है से बार से !' का सूत्री है कुनैकर, कर्ज और एक्ट्रीरने आरखरें सारह की और स्वान्ते-का कर सकते हैं करमाने पान नवे । अनुवेदे यहे जिल्लाहे काह---'राजप् १ मनि हम राज्य इंज्योग सामानेते आह करते हमा 🕸 एकाओंको प्रसार करके पुरुषे सेनो ईका का हैसे से पूर्वा यम प्रति को ? वेरिलो, वेरलंको हैकर कोको को स्थिको मनेमें सरकार या पीठन प्राचन और वस प्रवास है ? हर समय प्रमान भी सर्वीद समान ही है। वे लिए समय रवर्षे बैठकर एककोर्स सुराधिक क्षेत्रर प्रमार काल केल हैने जब समय इसकेरे निकारिको चरिक न होत्वेने । साथ में केक इक्ट्रों करनेको निकल को है। इन्ने एक कर उस्ते निका कर रिवा है। अस में हमें हमा नहीं करेंने। हैंप्सीकों को हेवा पर्वेच हैं, उसे उसमेरी कोई भी क्रमा की कर कार्या ! इसलिये इस कामलावी हर्तनर प्राथकोके क्रांस विकास कार मेलेंने । इस प्रध्यार से इसारे कहती हो कार्यने । जूनमें को की हर करे, हर क ते, नाह क्लेक पुनकर प्राथ्य करें से और तेराने वर्ग किसी स्माप्ते इस कावार क्रिकार के कि

विश्वीको क्या व करि : करि क्या क्या कर काम कि ये कीएक या क्या है को किर काम क्यांका करमें रहे : हुए क्यांपर आप किर कुमा केरणेकी अस्ता वै होतियों : क्या काम अपूर्त कामका है : करि क्यांका क्यांकिए का कर्त पूरी कर रेगे सो भी का क्यां कामकों क्यांका क्यांकिए का कर्त पूरी कर रेगे सो भी का क्यां कामकों क्यांका क्यांकिए का कर्त पूरी कर रेगे सो भी क्या क्यां कामकों क्यांका स्थानित क्या क्यांका हम कुन्ने सी क्यांकालोंको कीम क्यांकों : हस्तिको जाम क्या बाल अक्ट्य मान

कारकने क्रमी पर में । अनेने प्रका-भेत पहि ऐसी बात है से पालाब कु बाते गये हों, तब भी हत प्रेमका उन्हें हर्गर कुल को । में आ करने को बिरद पूर्वी प्रसंपर फेल हो ।" करामुची के जा सम्बद्ध केवाबार्व, कोवहर, बाह्यस, porent, hep, separte, uggg, धीवनिकास और विकास-कारीने एक सरसे कहा हिर 'अब कुमा पर केलो, शारित करण करे ।' परंतु पुरस्केत्वक करवाने अपने क्यों क्यांत्री निजेबरे समझ दुकरा ही और क्रमानेची कृत्य शेलनेके रिंग्वे कुष्ताका। यह सब देख-कुम्बन वर्गनरका कथारी अल्प लेक-समा से रहे वीं। अपूर्ण करने वर्ति कुरुताको सञ्चल- 'स्वामी । इसीवर क्यों हे गीएके स्थान हैने-किस्सने हमा या। इससिने अबी समाव परंप हानी जिल्लो कहा कि इस पुरुष्टा परिस्तान कर से । मुझे ती जा कर कर करके वहीं परत्य होता है कि व्य कुर्वनंत्रक कह कत्ते होहेत्र । वार्तक्र । वार्व अपने केवते प्रकार विवक्तिः सारश्री यस क्षाकृते। इन क्षेत्र

पूर्वोको 'ह्र" में हो पर निरामने । हर बेहका नाइ २ | सन्बार कुल क्षेत्रियो ।' कांत्रम केले—'सभी प्राणी केले ब्रोसिये। सेथे इस् पुरुष्को यह केविये। बुक्ती व्हर्ड साम विन बारक अंदेगी । परवास प्राप्त और बैर-मिरोको निवृत्त है। अपने अब होतिन करने क्षेत्र को है। पानि पर का अपर पानते हैं, फिर भी में सरका किया और है। स्वर्दित पुरुषके निवास प्राप्तके उन्हेशका नाम-पूरा पुरु भी उन्हार भूष्टी प्रकृत । पांतु अस्य युद्ध होयार कालकोको-सी पाल करें, यह अनुवित है। इस प्रमान अन्य अपने पुरस्कार प्राथमीयो शायने बसाने परितये । यहाँ से द्वाचरे होतार अन्यते विशयन न हो पाने । कुरावर्तना हर्ने करको उत्तरका हो सेनकर है । मैरे इह इस्पर केंद्रवह केंद्रवही यह नहीं वानी थी। यह उस क्रोक्ट पता है। साथि, अर्थ और परिचरेकी सम्बक्ति अपनी निवारतकि सरवित एरेक्वे । प्रयद या वर्धिको । किया विकारे पान करना सामनो पढ़ गुण केया। राज्याक्ष्मी कुरके कुथमें पहचर अरोबा सामग्रह कर के है। सरक प्रान्तके पास पाना से का नेती-स-नोदी पानके 🕯 ।' गल्यारेको का सुरकार कृतक्ते कक्र—'फेने । 🕬 पुरस्कार नाम क्षेत्र के है के होने है। मैं को नहीं केन हिल्ला । अन्य के कृतिका और दुःहाराम के कहें, नहीं हो क भाविये । पंत्रकारोको गर्वेट आने हो । मेरे पह बिश अनके स्थव मुख्य मेलेंग्रे।'

कालेक्ष । एक कृतकृती अञ्चले अनिकारी पाण्याके भाग गोवा ( अंत गुरुवान्य वे त्रोग वार्गने का



मार्ग वह को थे। प्रतिकामीने बद्धा-'एकर् । किर संब जोड़ी नहीं है। सहराम बहराहने बढ़ा है कि आप किर का

कर्मन है। क्रोके अञ्चल सुरू-असूच परु योगो है। विक्रतंत्रक कोई वस नहीं है। याने, बिट बन्स चेतना नहीं। है के देख है सहै। मैं सामक है कि देख बारनेसे बंगका क्या है कारण। जिस भी में अपने को तास्त्रीको अस्त केले हाई ?' मुनिहेर पहलेके साम जिस लोड सामे । मे 'समुद्रीन क्रमोर है'---माद्र मान मानवार भी मिनले अस्के नाम कार केलनेको केवार हो गये । वर्गरामधी पर स्थिति देशाका उनके निर्माणी पड़ा पह प्रमान

क्रमाने कांक्रकरे राज्येका करके सक्त-'राजा । इससे कुद्ध स्वरूपको सामग्री समाप्ति आक्ष्मे पान है स्टेप से है। इसमें इमें जनकर हुई है। उस इस एक दाने और समान काने हैं। बाँद इस सामने कुले इस कर्म हो कुनाई कारम करके करा कांकर करने हो और देखने को किसी कारने न्यानकानो और भीर का प्रमुख कोई पहला है से बाब को और भी करने हो। और गाँद का सरकते हता है से क्रेंब्रेडे क्रथ शास्त्रोग कुम्मनगर्म बारा करते बाह कांक्ट करने के और रेक्टो को नजरावार को । परि सा क्या कोई प्रकार के से मिल सब्द भई कार्ने रहता हैया। हम अबान केन्द्र वर्ष की होनेपर साम का इस प्रविता रीतिको अंदर्भ-अवन्य क्षाप्त के होते । इस्ते प्रारंतर कुरस्तेन वितर पत्ते केने ।' प्रायुक्ति कर प्राप्ता सभी समान्त्र विकासे गर्ने । के बढ़े कोलों प्रथा अध्यक्त करते तमें कि 'अन्ते ब्रह्माई कुरके कारण आनेवाने घनको देश की हो या नहीं, परंतु इनके निवा को विकासके चोच्च है, क्योंकि वे कुरकरर इनकी क्षणकार नहीं का यो है।' प्रकारकोची यह बात सुविद्यार की सुर को से और से पह भी रूपका को से कि इस कानो स्ट्रांस क्य क्यारेयाय होता ! किर भी उन्होंने बढ़ खेक्कर कि वीरकोका विश्वासम्बद्धाः समीव ३० पता है, पता फोरान क्षेत्रक कर रिवा । इन्हरिने उनकी स्वीकृति करें है उससे करे करे और क्विडियों कहा 'स्ते, यह दर्श मेरे चीत

कुरने इस्कर कव्यक्तेने कृष्णपुनवर्ग जाता क्रिक और करने कानेक रिल्वे वैकार हो करें। उनको ऐसी निवरिने हेराका द्वाराध्य बढ़ने समा कि 'बन्ब है, बन्ब है। जब न्यादन त्योकस्था सारा प्रत्य हे यस । बन्दन निपरिपे का को। एक इस से को कुदियार है। किर उन्होंने सकी कन्य पायनोको केले माह थे ? जरे । ये पायन के न्तुरुषः है। हृध्युची वेटी ! अस हो ने परवान बोडे-से पन और पुरावर्षते क्या नरीकीके साथ बनमें अवना शीवन करवाते पुरस्को वर क्यों नहीं लेती ?' दुःशासन कारण की रह । चीकोको बोस्रो सरकारका बढा के ने कर ! हो हमें अपने प्रकृतनारे नहीं बीता है। इस-विद्यार्थ प्रत्यन बीतकर र बेजी करार का है 7 ऐसी कार केवल करी है क्षत स्थाने हैं। यु इस समय कहते कालोड़े कालो इन्हें मार्गकानम् कोट क्या है। में समझीतों केंग मार्गकानीको पारकार इसकी पार दिस्कारेन । अन्य को स्टेन कोच क होधके बढ़ावें होचन तेय बहुबन कर से हैं, वेरे पहला की हर है, जो भी में प्रश्न-विकोध सकत बनराज्ये कालो

इस समय जीवनेत मृतवर्ष काल किये कई थे। वर्षीः सारा वे स्टब्सिया राज की कर सकते हैं। चीनकेके दिस कर्नुनेश पुरसारात गरी समाने 'ओ बैसा ! को बैसा !' महारा निर्माणको तथा काले-काले समा । वीकांको कह-- में का रे बाद करना पानी को कर्न और अली ? श्रामी श्रामाण श्रीनकार अन्य कक्-बक्कर वाले कम का है ? गरि वह पुर्वदर भीन कुलोबी बोचना पन है से प्रााधुनिये नेता प्रातेका चीरकार चान क्रिकेट । यदि हेता व करें हो हुने पुरवदायोका स्वेचा न निले । मैं हान कहारे हैक सामने ही बुक्ताकुके सारे-के-बारे कृतिका संक्रुप करके क्राप्ति जार करीना। यह मेरी साथ प्रना है।"

पान्त्रम सुवस्त्रात्रको बहुर निवासने रहते । चीनके निकेट इत्यान चीर-चीरे कार को से । कृतिकर उन्हें विकारोके केले केले ही कर्मात रोके-रोके सारके प्रत्या। जीवलेको पहुचन देखा और बाह्य कि 'जुलें । यह बाध वहीं की समझ हो की है। में होरे स्वाह्मकारिक जाना केना पाना करते करून ओड़े ही मैहनीने इस हैरीक कर हैता।' पीपलेको अवस्थे क्राय करके करिया पुरिन्दिरके रिक्रे-रिक्रे करने हुए ही बक्त कि 'में क्षेत्रका, अर्थुन कर्मका और रक्षेत्र प्रयूपिक पत करेंगे। मैं यह अधाने किर कर काम कमा है कि केवा इमारी बात अवस्य पूरी करेंगे। मैं गहाने दुर्नेशनको जीव श्रीकार इसके प्रिरूप अपना के रहिता और कुरमानके क्षतेनेका पाक-गरम जून चैकिंग।" सर्जुर भी क्षेत्र को-'पाई चीवरोत ! आवती अधिकास वर्ग करनेके रिक्षे अन्तेन प्रतिका करता है कि का पंजानने कर्न और अर्थः पूर्व सावियोका संप्रत करेगा। अपने साव का करनेवाले सभी भूशोंको में करराजके उनले कर्मना। माजि ! हिमाल कामे स्थानरे दिन बार, सुन्ने अंबेर हा जान, कहना करवारी जान का कार; कोई मेरी कार रे

विकालेंगे, सु जान इनके क्रीर केन केन्द्रे श्लेम्बी ? अन्य बिस्ती | सुद्धी नहीं हो समझी । वदि केन्द्रवें वर्ग क्रॉबरने इनस्य राज्य समानवर्षक नहीं सीत दिया से हमारी कामी अवस्थ हैं। का-मार केवर केवी (' सकेव) बाह--'मरे कमाने कुरकार्यक ! किये व करी क्या का है, वे मेरे रिप्टे मीखे कुछ है। वे हेल और सेंगे सम्बन्धिकोका अपने प्राथी समानाव कर्मना : प्रतं केमान चार्ने है कि ह रमपूर्विमें इतिसीकी तरह बद्धार विक्रम, के का बराव ।'

> कुरमून प्रस प्रमातर और भी भारत-शी प्रतिकारी करके राजा कुरायुक्ते पाल को। जुनियों से कक्-'राससी। वे धरतांको क्येक्ट विवास सेन, सेन्दर, सहीत. हेक्कार्य, कुरावार्य, अकुमाना, विद्यु, क्रोक्सांद्र सक कई, पुत्रम्, प्रकृष, अन्य मध्यी तथा समारकेंग्रे आक्रा mer count find ur un hi unte wieder क्रायकोगोके क्षांत्रक स्वीतान जार होगा ।" का समय बचाने किसे बचानके पृथितिको क्री का भी की कर भवा । स्टब्सके कारण सकता हैस और क्रुब्र मना और सम क्ष-ही-का वर्गराच्या मान्याच चार्च सर्गे । विदाने क्या-'राज्यमे । अर्था कृती राज्यस्थाते, कोयन सरीर बीर बळा है। अब वे जर्मक असाव करनेचीन्द है। इसरिये क्रमक करने पान जीवा नहीं है। में सामारकृषेक मेरे भर थों। भा पान कारान्तेनोते सक्तार में आसीर्वाद केता है सिट अन्यक्षेत्र सर्वत्र स्वयंत्र और अस्त हो।' सुविद्विर्य का — 'विकास | इस अवस्था अवस्था दिनोबार्च काले हैं। an put mai, Regre \$4.50 mg archi miter fil flegraft mar-'eftige ! aus uch mit fil अर्थन विकासित है, भीगरेन स्थानका है, पहल कर-रिकालकार है और स्क्रांस समानीको कराने करनेकारी है। क्षेत्र पूर्व केन्द्र है, जीवात होयहे वर्ष और सर्वके संभागे निरम है। अब प्राची परतन त्रेय-व्यवसे स्त्री हैं। क्या भी आयोह विकास चेव-सम्बद्धी सुद्धी नहीं कर सम्बद्धे । जार करे विलेख और प्रत्येणी है। जनस्के सभी लोग अवस्था वालो है और अपने दर्शनों मेरने सक्रान्तित सही ो । क्षेत्रकारक केरदावर्ति, जरणावस्ये कारावी, पुग्तक वर्तका परस्राधानी और कुम्ली नहींके सरपर महावेगनी अक्को वर्षेत्रेष कर को है। अञ्चन वर्षका अकी क्रिक्ट ब्याजिसे और बहुनाओं नदीके स्टार जुगुप्तिसे इस्त मान विकास है । देवांचे नाव्य समोदा आपना दे<del>वा रेवा रकते हैं</del> और बीक्स्परि से अपनेह परेतित ही है। देशिये, विका चौर्मिकोलि पहाले अवसरपर वहीं का धर्मिकोस अमेरा पर कृत व्यक्तियाः पाणकांश्व । त्राय पुरुषकासे पी अधिक

एवा पृथिति विद्युग्योगी कामेको तिर-अपिते प्रदानन प्रीमानिकाम और प्रेमानार्थको अन्यत्व कर उस्तो के स्वाप्त तिथे पर भी । तिल स्वाप पृथ्विको अन्यत्व कर उस्तो के स्वाप्त के सी । तिल स्वाप पृथ्विको अन्यत्व कर उस्तो के स्वाप्त अन्य प्रदिक्तातीते विद्यु केनेके तिले अन्यति, उस स्वाप्त अन्यत्वदेवे क्या कोन्यास हुआ । कारा कृत्यति कोन्यानुस्य वार्थासे क्या—'बेरी ! तुम किनोका कर स्वाप्ती हो । इस सोद संसदाने क्यास हुआ यह करवा । हुन क्या प्रीप्त और



सर्वकारमें सन्पन्न हो। इन्स्टिने प्रतिपत्ति अपि हुन्हरें कर्वकारे सन्पन्नों विश्वा देनेकी कोई आवस्त्रकार नहीं है। हुन कर्य परन सन्बर्ध, पुलबर्ती और केने कुरवेकी पूजर हो। निर्देश कीन्द्री। दूसने कीरवोको अप केनर जन्म नहीं कर्त निकारक हो। सहार असल थे। कुरीन सिमी ज़कारक दुःस व्यक्तेशर काराती नहीं । पतित्रत-वर्ण प्रतीय इन्हरी दक्क करेना और सब प्रकारसे हुन्हरा म्यून्त हैग्द । एक बान कुलो कहती है। हुन जनमें यही करन मेरे जारे कुत स्मृदेशका विक्रेप साम रक्षण। कहाँ उसे कहा न होने वाले (\* माना कुम्बीने राज्यानीको बद्धा — 'बेटा । तुपरवेग क्यंपराचन, क्याचारी, चक्क, चपरतित और देखाओंके कुलारी हो र प्रकार पढ़ संबाद बैसी भा पड़ा 7 अवक्या है यह प्रशासन क्षेत्र है। कुमलेगाँन से ऐसा कोई अध्यास किया **वर्ष । यह अन्याद है मेरे मान्यात होद है; क्योंकि तुम पेरी** कोसारे निकार हो। अध्यय सञ्जूल-क्रया होनेक भी कुलो क्षा और संस्थान की काल है। हा कुल । ह कुरमानीक । क्र अन्ते । अवन क्रम चनानक सक्ते नेरी और मेरे पहल्या पुलेब्दी पहा करों पहिं करते ? साथ अवस्थि और अस्त्र है - के आपका निरम्तर ब्यान करते हैं, अनकी आप श्राह करते हैं--अरको सम्बन्धार्थ के प्रतिनिह हुए समय रिकार केले हे को है ? मेरे कुछ शार्तिक, गर्म्बर, मकाबी और पराक्रको है। इनके क्यर देख कहा पहला स्थल नहीं है। क्षणकर् । इनका क्षण स्टिक्ति । हात्र है, जीति और स्वस्तुत्रमें कुरता चीन, होन और एक्समाँ आहे, पुरस्तानी वाकारोबी अविवरित्ते ऐसी विवर्तन केले आ करी ? केल म्ब्रोठ ! ह से कुटे सजेशे की अध्य कारा है। ह कुटे



क्षेत्रकर कर्षी का का। जा, बा; क्षेट आ है

माना-सन्दर्श दिया होचर प्रत्यूकोंने उन्हें उत्पन्न किया और कावी और करे। शिवुरकोरे कुलीको बैक्सी उनल्या कुरकार काम किया और कार्य असमा असे विकार कुँ कुमार रक्षकर इसी मालकी किया करती हों।

। बॉरे-बॉरे क्वें अपने पर से गते। प्रीरामुख्या प्रतिसारी मता कृषी अवंद क्षेत्रम विकास करने करों । एको क्षा-सकर्ष क्षेत्रकेलों से करा, उन्हें केल प्रकार सरीठरा करी, आक्रमार देशकर कुवैधर आदियो निष्य करने सनी और समाय-पानसम्बद रोवे सभी । से स्कूत देखक अनदा

## पाण्डवीकी वनयात्राके बाद कौरवीकी स्थिति

र्वतन्त्रकार्यं कार्त है—कार्यक्षणः । तथा कार्याः अस्ते क्ष्मोका अन्याय संपर्ध-संपर्ध स्ट्रीय हे गर्ने। एक क्ष्मके रिने को पूर्व सारित को जिल्लो और किसी अक्टा की प विकारिक क्योंने विकास का का बेकार को कुरवास । forestite acriver with upo-flore t grabotes बारेश्व कृतिहार, जीवलेन, अर्थन, स्कूल, स्कूल, क्रोसेट बील और पंजीवने प्रेमी—ने सा विता अवार करने क के है, इस राजा अपने केसे बेल है, वह इस में पूजा प्रमास 🗓 ।

मिन्द्रवर्तने सहर---व्यानाम ! यह से स्टाइ हो है के मानके कृति क्षत-कन्द्रों कृतिकास सूत्रों और वैभाव सीव विभाव & the of Bosenia priceral all with freelow सहीं को है। इसीने से स्टब्स्ट्रॉस्ट एउन्स्कृत बैटने अनेपर पी आपके कुर्तेगर क्यामार ही भाग रकते हैं। वे अपने क्रोककर्त नेतोंको के प्रित्ने कर है। ऐसा इस्तरियों कि पार्टी करनी क्ष्मा-स्थान अधिकेंद्र सामने पहलार स्टीएवं पान स हो सामि। इसीले प्रमेश्य पुणिश्चित जनम क्षेत्र काले क्षत्रावर काले पान से हैं। चीवनेवारे अपने सहामान्या पहा अधिनार है। वै अपनेको वेजोद सम्बाते हैं। हासीको वे बन्तवराके सकत प्रकारिको अपनी परि पेतल-विकासन विकास ना यो है कि सम्बद्धाः में अन्त्रे व्यक्तसम्बद्धाः जीवर विकारितः । कृतीनका सर्वत प्रवेशको वेशे-वेशे कुछ स्त्रये का यो है। इस क्यार में कर बलबी बचना है से हैं कि बज़के करने इतुओपर केसी क्राय-कर्ष करेंगे । इस समय जैसे वह का आगा-असन व्यू पूर्व है, बैसे ही अर्थुन सहयोग्स जाएन-असन कर-वर्ग करेंगे। सकेंको अस्ते केंद्रन कर कर रती है। पुरिश्चितके पीके-पीके प्राच्यार पाने से पह सक से है कि बोर्ड नेट के न देखें। नकुमने के अपने सारे करिये है कर पर से है। उसके समितान का है कि मेर सहय स्तार कर देखकर कही कर्मकी कियाँ बेबिट र हो नारी। केंद्रों का काम रमकता है। वे एक है कर पहरे, नेज कोलकर रोते-रोते का की है। उन्होंने काले सनन्द कहा है कि

कियो करण मेरी का उद्देश को है, उसकी कियाँ की आयोर केंग्रुवे वर्ग अपने स्वकारियों पृत्यूने कुरिया होका इसी जबान इन्सिकपुरने जानेच करेगी ।' समन्दे आगे-आगे कर से है क्टेकि कीया। ये निवंदन कोनकी और कुर्बोकी केव करते क्योक्सान्यको सावक्योग प्रथम वर हो है। क्रमा अधिकार मा है कि स्वयुक्ति महिलाने जो सर्वत क्रके कु-पुरेश्वेत के हुआ प्रकार क्रकेश पन करेंदे।

'कुल्कोची करकाको विकास क्रेकर सभी नागरिक विस्तान करने हुए ब्या के है कि 'कुल-कर ! क्यारे करने साथ, इस प्रचार करों का के हैं। कुम्बुरकों को सुक्रीकी क्षा क्रांचको विकार है। वे जोजबस वर्णना क्रांची हेहारों निवाल को है। इस सो इसके किया अलाम हो गर्ने। इस अन्यानी चौरकोचे राज्य इसारी चोड़ी स्वानुपूर्ण क्यी ची है अब इस प्रचल किया हो है और क्या राज्योंके करे हैं अवस्थाने दिना वेकोर ही किस्सी कार्यो । युको नरवर्ष न्त्री । क्रिया श्रामकारको ही क्रुवेशका स्था गया । नगरकी वृत्तिनी जोन प्रत्यात्मक दृश्य । गीम, गीवह और और आहे बंदरमधी कीय देवाराओं, सूत्रों, मिलों और अंटरियोस क्षेत्र क्ष्में क्ष्में क्ष्में स्था। इस क्ष्मानेका करन है नकर्मकृत्या सामान्य । जा सम आवनी कृतिका कर 🛊 ।' किस सम्बद्ध निकृत्वी मुख्यपुरते इस प्रवास कह थे है, उसी सका केवर्ग जास बहुत से अधिकोचे साथ कवरणक वर्ग औ क्षेत्रे और यह सम्बन्ध धन सहका करने मने कि कुर्वेकको अन्यको प्रत्यकात क्षावद बोहाने जां चीवारेन और अनंतरे हानी कुम्बंद्रमा विजय है

का क्वेंबर, कर्ण और प्रश्नुनिने क्रेक्कक्वेच्छे हैं अरुक अधन असन सन्दर्भर चन्द्रमंत्रा सत्त राम को सीप रिका । क्रेमसम्बन्धि कक्ष-'प्रस्कृतियो । प्राप्ता क्षेत्रकारों के पूर्व है। उन्हें बोई सर नई सबता। यह सक सची प्रकार कहते हैं। फिर की कुसाईके कुनेने मेरी अरब ती है। इस्स्ति इस्से प्रकार राजानोंके साथ में अपने हासिको अनुसार इनकी पूरी-पूरी स्कानका कर्मना। में इसरामनाका ततन नहीं कर सकता। इस्ता न होनेना की वह स्वाम करना का दात है। क्या करों, हैन ही संबंधे कारकन् है। सौरती ! क्याबोको करमें केंग्नेसे ही तुक्तक काम पूरा नहीं हो गया। हुने अपनी कार्याका काम सीम करना नाहिने। पुष्पुरा एका स्थापी नहीं है। यह कार दिनकी चौरती है। से सहिता किराकाद है। इससे पूरणे का। को नहें कर करें। साहाजोको हार हो। को कुछ करें, सुका कोर सो। कोदालें वर्ष तुन्हें नहें कहने कहन होना।

होक्यानंतरं का हुन्कर वृद्धवर्त क्या—'त्रिकृत ! गुजर्वीका स्थान शंक है। तुम परम्कानेको स्वेदा स्थाने । वर्ति में स्वेद्धवर में कार्य कर हो, जिससे मेरे पुत्र क्यान करने हुन्सों को।' यह स्थान्य में स्थानकों करने गये और विश्वा सहसे स्था। क्या समय स्थानकों करने स्था कर विश्वान हो स्था। क्या समय स्थानको क्याने क्या कि 'स्वानक ! आपने परम्बानेको स्थानको क्याने स्थानको क्या विश्वान स्था कर-वैच्या और पूर्वि हरियम स्था। अस्य स्था क्या क्या स्था कर हो हुन्दि स्थान स्थान । अस्य स्था क्या स्था कर हो हुन्दि स्थानको हुन्द स्थान । स्थानकोर के स्थानेक स्था स्थान, विस्तानको हुन्द स्थित स्थाना है ? के स्थानकार, स्थानकार और प्रमानको है।'

त्राचने त्रीम नन्तर होना का — खाराम ! सक वा तिक्षित है कि सामके कुरमार तो जात होगा ही, निरीह प्रमा भी म कोगी। चीम्परितासह, होनामार्थ और विद्वारोंने शासके दुएला पुत्र दुवीकरको खूत होना। किए भी जा निर्देशने राज्यांकी किए कही कर्मराच्या है-स्वान सी का निर्देशने राज्यांकी किए कही कर्मराच्या है-स्वान सी का निर्देश के सामक हो साम है साम हिनासकार उसीय आनेकर सुद्धि महिला है जाती है। अन्याम भी कामके समय देखने हाता है। जा बात हात्यां हाती के जाती है कि मनुष्य साम है। जा बात हात्यां का का हे साम हो का का साम है। जा बात हात्यां का का है कि मनुष्य साम साम है। का का हात्यां का का है कि मनुष्य साम साम है। का का हात्यां के साम क्षित का का है कि मनुष्य साम साम हो हात्या है है कि बहु चुद्धिको किएतेंस का का साम साम हो क्षा का का है है कि बहु चुद्धिको किएतेंस का का

करेको कृत और बूरेको परच दिसरको स्थातः है। आपके पूजेंने अकोनिका, परित्रता, अधिकोदीसे अपक सुन्दरी प्रेयदीको भरी संभागे अध्यानित करके वर्षकर बुद्धको न्योता है दिया है। ऐसा निक्तीय कार्य हुई तुर्वोधनके अस्टिरिक और कोर्ड नहीं कर सकता।

THE RESERVE OF THE RE

कराइने क्या-स्थाप ! में भी तो भी बच्चा है। क्रेक्टबर्ट आर्ट स्ट्रिये साथ पूजी करन हो सकती है, हमारे प्रांति से रक्षा है क्या है ? इस समय वर्णवारियों सैपरीको समाने अपनानिक हेटे बेसकर मानवंत्रकी सभी कियाँ क्याचेके कर अवश कारतान्त्र करने लगे वी , प्रधान भी बनारे विरोधी हो भने हैं। वे सर्वकाल हवन न करके क्यांकोके बाब कही बातोकी बच्चे काते हैं और दूरवी होते राते हैं। किस समय भारी सभामें हैंपरीके बना करेंचे गये थे, का सकद तुरक्षम आ गवा। विश्वली निरी, सन्वयक्त हुस्य। किया अन्यवासको ही पूर्वाभूका लगा गवा। सारी अना प्रवासीत हो गांधी थी। रचासारकार्ये आन रहम भावी। मन्दिरीकारी कार्या वित्र ने सभी । कार्यास्थ्ये विश्वानिये 'हश्रा-हश्रा' कार्य क्यों। यहे रेक्टरे समे। ऐसे अपक्रकार देशकर श्रीका, कृतकर्व, सोक्टर, बद्धीक और होगावार्य स्थानकरहे इंडबर बले गर्ने । विदासी सम्बन्धि मेरे बैपदीको मुँहर्गीय कर हिना और पाण्यानेको इन्हारक जानेको अनुपति है हो। जरी जनव किराने पुराने बच्च वा कि ब्रैफ्टैको अपनानित कानेके पारत्यका जातनंत्रका नाम होना । श्रीपदी देवके इए जन्ह एवं अनुषम त्यापी है। वह पाणानीके पीई-पीई किस्ती है। का भारत अयमन और हेल प्राप्तर, प्यूपेशी और प्रकार को संदेगे: क्योंकि इनके सहस्था और रक्षक है सम्बद्धित कावाद श्रीकृष्य । वहुत समझा-बुह्नाकर किहरने हमारे फाल्बाशके दिन्ने अन्तने यहाँ सम्मति ही कि अप सक्के प्रतेके दिन्हे क्यावारी समित्र पार सीविये। प्रमुख । विद्रुतकी कार कार्यनुकृत से वी ही, अर्थकी हुप्तिसे भी कम लामको नहीं भी । यांचु मैंने मुत्रके मोहमें महमत

\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_\_

# संक्षिप्त महाभारत वनपर्व

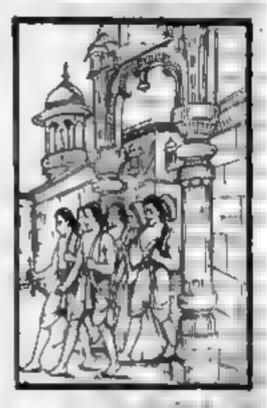
## पाण्डवोंका वनगमन और उसके प्रति प्रकाका प्रेम

शायमं जनस्था तः चैव न्योक्स्यः देवी सरस्रवे व्यक्तं वर्षे क्यमुद्रीरचेत् ॥

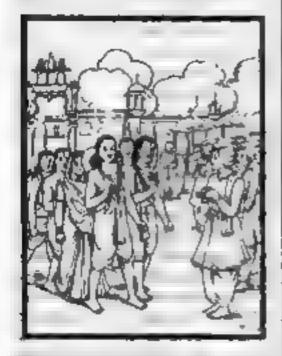
जन्मर्थाने राज्यमसभाद काळ्यु श्रीकृत्य, उस्ते विश्व प्रचा नरमका नरक सर्वृद, जन्मी तीना प्रचट करनेपाली भगवती सरकती और जन्मे बच्चा व्यक्ति वेद्याधानों नमस्या करके आसुद्धे सम्बक्तियोगर विश्वय-वासिकृतंक अन्य:वारणको सुद्ध करनेपाले न्याव्यक्त स्थावट वट करना वालिये।

अपनेकारे पूरा-मार्थे | हाउंचा कुर्वेकर, कुर्वकार आदिने अपने विश्वकारी प्रकारतार्थ काळ-सूत्रने वाल्यकोको जीत रिला। हाउस ही नहीं, उन्होंने वैरस्तक सहानेको तिले पास-पूरा की कहा। तककार मेरे पूर्वक वाल्यकोरे हरा विपरित्ये पहकर विश्व उत्तर अपना सकत विराद्ध, उनके साथ कार्य कीन-कीन गरे ? वे कार्य कार्य कार्य करते थे, कथा पोसन करते के और कहाँ हाते के ? कार्य उनके करते वर्ष किस उत्तरर सार्थित हुए ? पहन सी-पानकारी सामकार्यको राजकुमाहै औपनीने किस उत्तरर कार्य कुर्वको एका ? आप हम सम्म असोका कर्यन करते वेते आकन्यर कार्य वर्षित्ये।

वैदान्यपननी कहा—वन्नेवन ! भहरता वन्नव दुराव हुनोंचर आविके कुर्णकारको हुन्दिन और क्रोबित होन्दर सपने जना-तथा और राजी हैप्सिके काम इनिक्नपुरते निकरणार उत्तरको और पाने । इन्दरेग आहि केन्द्र होन्छ निकरणार उत्तरको और पाने । इन्दरेग आहि केन्द्र होन्छ मी अपनी किथोंके साथ शीवनामी राजेपर समार होन्छर उनके पीने-पीके पाने न्या इनिक्सपुरको सम्मानो काम सोन सोन्दर मानुस्य होन्छर करावार र रहा । सब सोन सोन्दर मानुस्य होन्दर इन्दर्ध हुद् और निर्माण्यके साथ पीन्यितास्य, आवार्य होन्य आहिकी किन्द्र करने सन्ते । वे सामानो कहने राजे—'दुस्तर हुनोंचन सन्तिन आहिको काम और वालेश और वालेश होन्हर वाले



विकास के स्थान करना करना है इसके समये हम, इसस् क्षेत्र, अर्थाय सहावार और घर-इस्ट की सुरिक्षा होंगे—इसकी काल नहीं है। एक सभी हे और उसके सहावक भी पानी हो से काल कुरु-अर्थाय, अर्थाद, वर्ग और अर्थ केले से कालते हैं? और उसके न स्थाप सुरावधी से अर्था है। क्या है सकती है। कुर्वेकर एक से अपने नुक्तनोर्थ हैन करता है। दूसरे संस्थी क्यांदा और अर्थ-स्थेत्व, कमकी और कुरके बासराये इस पृत्योक्त है। सर्वन्या निक्ति है। अर्थादे, हम सब वही बारवार से वहाँ क्यांत्र करने सहस्ता कालव जाते हैं। ये स्वस्तु, नितेत्वर, काली और क्योंत्र हैं। इंडिन्ड्यूको काम इस उचार अवसमें निवार कार्क महीरे का वहें और प्रकारोंक का कार्य कई स्थाने इस बोड़ बड़रे करें—'कार्य ! अवसोगीक सार्यन



हो । आजनोग हमें हरित्यपुरमें कृत्य भोगमंत्रे जिसे होहबार पूर्व क्यां क ये हैं ? आयरोग को करेंगे, को उन के भरोगे । काले हमें का कार मानून हां है कि हमेंकर आहेरे मही निर्वणाले कवा-सूत्रने इतकर अग्रमनेगोको करकारी क्या विक है, सबसे इस्तरेन कहा भवनीत हो नमे है। हमें पेती अवस्थाने क्षेत्रकर जान क्षेत्र नहीं है। वह अपके सेक्क, जेनी और विशेषी है। कहाँ दुरावा कुळेवनके कुरावाने हुगर। सर्वनात न हे बाद। शाम सान्ते हैं है 🕿 😅 पुरुषोधे प्राप्त फरोपे क्या-क्या समित्री है और सायकोडे साम रहनेने क्या-क्या साम 🕻। कैसे सुन्धिक कुलेंक पंतर्गते यह, हिल और साम सुनरिक हे को है की है स्पूर्ण भी भने-मुरेके एंग्ले अनुसार माल-बूस हो जाता है। पुरोके संपन्ने पहेला वृद्धि होती है और सन्प्रकार्क सामग्रे बर्मकी इसलिने बुद्धियान् पुरस्तेको स्थापने कि उन्हें, कहा, हमान, श्रास्त, विवेतिक और क्यांचे पुरुषोद्ध है संय को : कुरीन, व्याप को कर्पमायन बक्तोब्डे केवा और उत्पाद सर्ताम प्राचीके साम्यानमें भी बढ़कर है। करी पूर्वके दर्शन, त्यर्श, कर्ताशाय करनेले उन्हा अन्ते साथ बैडनेसे अर्थ और व्यवस्था जाए है जाता है और आहिने स्थानम्य स्थानीत होती है। नीकोंद्रे पंत्रते प्रकृषोधी पुद्ध जा होती है और प्रमृत्योंके संपर्ध जा स्थान है जाती है। प्राथमी । व्यवहाँ पुत्र-से-पुत्र और हेंद्र प्रक्रमाओंने प्रमुखके अध्युद्ध और वि:सेक्सकें लिये किन पुर्णेकी आवस्थात व्यवस्था है, से स्था-के-स्था आवस्थानोंने विद्यान है। इसस्थि आध-केंद्रे सम्बुखकेंद्रे स्थान है इस्पेन युक्त वाहते हैं, स्थोंक स्थानेंद्र स्थान करनाय है।

अवन्त्रं का कुम्बर कांग्रर कृष्टिसी बहर—मेरे पुरुषेत्र कीर साहरपीय प्राह्मणारी प्रयापन । बारहपाने प्राप्तांनीनी कोई पूज नहीं है, जिर भी आयानेन होड़ और हराके यह केवार कार्य पूजा देश रहे हैं और अध्यक्त कर्णन कर रहे हैं—यह बढ़े सी प्राप्तकारी कर है। मैं अपने प्राप्तकोंने साथ मानाचेणीरी प्राचेत्र करता है, अरह अरहे देव और कुराओ हमाहै बहर र्शन्तर को । हर प्रमय इकिश्यपुर्व दिल्ला भीना, एका कुराई, नोक्स किए, इच्छी नाम क्रुपी और गामारी तथ कारे जनी पूर्ण-सन्बन्धी स्तार निवास बार से हैं। जैसे बनारे वेको आयानेन १:को हो हो है, वैशे ही अबके बहुउये की बहु सीर महाने और उसका पासन-सेन्स्स और हेक-रेक कोजिये। आक्लोक बहुत कुलका आ नवे, अब आगे व कारे । की जी कारण-सम्बन्धी अन्यस्थेगीके पास वरोहरके कार्ने रखे हर है. क्योर काम जेवादा व्यवसार करें। मैं आवस्थेगांसे अवसे कुरुको सको बात बढ़ का है। का लोगोंको छा। ही येव राजने बाह्य पर्याप है। आन्यानेपाँचे मेरन करनेते स्त्रोरे पहर क्योप होना और मैं जो जपना है समझा समझैता (

विका स्थान कर्मराक कृतिहित्ये अपनी असमी कह सहर कहे, उस स्थान एक लोग को आर्थनानों 'हान । हान ।1' कुमर उठे । पाण्यांकी जुन, अपना अस्तिका स्थान सहर्के उनकी अस्तुवस्तानों सीना व की उठें। वे हुक्त १ क्रमेश्ट की कामानी अस्तुवस्तानों सीना असी । उस पुरस्ता सीट गर्थ, उस कहा सम्पन्न काम होकर पहुन सरस्त प्रभान रामक कहा कहे करणाने काम असी । उस समय प्रभान हो कही थी : वह असी हमा कुम कुम महान में हमान क्रमान प्रभानोंके कहा असी, उसमें कुम-में अस्तिकोटी हमान भी थे । उसकी क्यान्तिन केंद्रका परस्तानिन क्रिया स्थारकी कर्मा करते हुए कहा सिना थी ।

## धर्मराज युधिष्ठिरका ब्राह्मणोसे संवाद और जीनकजीका उपदेश

र्वप्रकारको अपने है—स्वयंत्रक । यह बीह सबी। पाल्यक विरामकोर्ग विदास हुन्। यस उन्होंने बनमें अनेनके र्देवारी की, तम वर्गपुत्र वृत्विहरने साहाओं क्का—'बहुव्यक्षे । इस समय इतात राज्य, त्यूकी और पूर्वास प्रमुखीने और विश्व है । इस कायु-मूल-कारमा क्रिकर करते का करने विकास करने का दो है। करने को-को विका और बाजरे हैं। इसरिये आसमेग्रेको कई कह कह होगा। प्रसारिये आपनोप अन अपने-अपने अपीत स्मानको पाने ।' ब्राह्मशोरी सहा—'राजन ! हेर्न्ड कारण प्रमाणेन आपने बाब क्रम बाते हैं। हो बाब अपने क्रम रक्षेत्री हमा बोरिको । वर्गराम । इसमे पालन-बेनलो सम्बन्धने अस्य सनिक्ष भी विकास करें; इस अपने-अस्य अपने भोजकार प्राप्त कर होते और आधीर काथ करते होते। बाई को केनो अपने अकेन्या लाग कोने, कर कोने, कस करेंगे: उससे जानका नात्रका होता। वहाँ कुन्य-सुन्य मानाई पुरावर को पुराते करने निकारे ।" वर्गराकी क्षा - 'बालाओं । अवनेतीना बाल क्षेत्र है। वै सर्वत हान्युरोपे है क्या कावत है; बरेत इस समय मेरे बार का नहीं है, प्रवर्तिको सरकारी है। प्रत्या, मैं का बात कैसे देश स्कृता कि आवलेग कर्प अर्थ केवनका प्रकृत करे। हार | सार ! मेरे बारण जायनेगाँको निजय साथ सेना ।"

का बनेपन प्रविद्याने हुए उत्तर होना उत्तर किया और उद्यात होच्या पृथ्वीका वैद्य गये, तथ आव्यक्रको सौनवानै उनके क्या--'शनम् । अक्षाची महन्त्रोके सामने प्रतिकेत सीमन्त्रो और प्रवारों क्षेत्र तथा भवते अवसर अन्य क्षत्रों है. प्रानियोके स्वपने नहीं। अप-की सरपाय हेले अध्यातिके कर्म-क्यानमें नहीं पत्नी। में के सर्वत पुरू के पत्नी है। आवन्त्री विश्ववृत्ति यम्, नियम साथि अहाइम्बेयमे परिवर्ष है। बर्ति और मानिके कान्त्रो भागत है। जानकी-केंग्री करत कृष्टि किसे प्राप्त है का सम्मानिक महाने, अन्य-कार्यक र किरमेंते, योर-से-योर विचलिये समय भी द्वारी मी होता । कोई भी जारोरिक अवना कारोसक द्वार को उपलिए नई क्षर प्रवास । प्रकास क्याने क्यानको प्रारोगिक और मानशिक कुराने पीर्युक्त देशकार कांग्यी स्थानिक विन्ते वह मात कही भी । जान करके जबन सुनिये । वर्रानके कुनाके चार कारण है--रोग, क्ष्मद क्याबा सर्वा, अवेब्द परिवय और अधिकारिक मनुष्या न विकास । इन निविधीने कार्ये किया है बारी है और मनविक्त क्या है आदिन्ति करवार का बारव बर रेखा है। रहेतेका परंप पोता पदि कोड़ें | रहेत है पोता बज़े हैं। प्रशीकी हो बज़ है का को-को

करने कर दिया कर हो का पार भी नाम हो बाता है। येरे के कार्यक्र बेक्के करेर के कार्यक के करा है। कर्राक्रे केरे करके प्रय अधिको शहर किया तथा है, केरे ही हारके हुए करके बाक रकरा पाठिये। करका कृषा कि करेका प्रतिकार कृषा को किर कार्या है। करके कृषी होनेका कारण है जोड़ । चेहके कारण ही करूक विकासी पेताल है और अनेको अञ्चलके दृश्य चौराने सरका है। केहके बारम ही हुआ, पान, फोब्ड आहे विकारीकी आहे होती है। फेब्रोड मारम है निक्नोको स्तानक अन्यत होता है और किर करने रूप हो जाता है। विकासि विकास और रामधे भी प्रकार कोड़ हो है। केंद्रे प्रदेशकों जान तथरे प्रकारों पता सराती है, केरे के बोक-वर की कर कई और अर्थका क्रमानक कर तेता है। जिल्लाहें न निरमीना को जन्मेको सामी सकता है, क रूपों भी है। करायों क्या रूपों से के हैं, से विकाली विकाल की अभी होता हो। बहुता है और असी हर क्या है। विरक्ष एक देवतील की क्रेस है। इसकेंने को क्षा कांक्क्ष्में भी केन्द्र पाता करती कि और करक रोजा के प्राप्त पार्टिने, गांडू उसने असाहित ची कार्य करिये । विकास प्राप्त केंद्रक प्राप्त होता है। मैते कुमाने कुमा जा गठन औं से सकता की है विकेशी, वन्त्रकारिके प्रकार और आक्र-आने प्रकार विनये केंद्र औं दिया सम्बद्धाः । विभागोः दर्शन्ते असमे रामनीय-सदिः होतीः है। जिस क्रिक्स प्रमुख होने राजती है। उसे लेनेकी हुक्त होती है। फिल क्रानेपर अलग्री फट लग जाती है और बार-बार औ क्षतेको सुन्य होती है। यह सुन्या ही सरसा करतेका कर है। क्षेत्रकी करते है। अन्तरीहे पूर्व और परंचर है। यूर्व क्रमा साम नहीं कर समाते । यहे हेनेपर भी वह सही नहीं हेको । यह प्रारीनके स्तान निकनेकाली बीमारी है । इसका स्वान बारनेते ही संबंध साम प्राप्त होता है। बैदी स्पेड्रेंब बीवर प्रापेत करके कर अल्क यह का देती है, जेरी है जिसकी इसमें उनेप करते का एका भी जाना भार कर हैती है और कर्ष करने जो दिस्ती। जैसे हेकर अपनी ही जाएसे पान हे गांध है, की है लोगों एक स्वापतिक खेमते ही क्यू के बाज है। कैसे व्यक्तियोधे मिल्पर पुरस्का कर सर्वत समार कुछ है जैसे ही करी पुरुषोकों राजा, बाल, अहि, चौर और बद्धानका पन एक ही बना रहता है। बैसे मांसकी अवद्यान्त्रे कहे. व्यक्ति हिस्क और और क्यूपे प्राप्त-प्रक का बाते हैं की है करी कुछके बरायों की तम बाई कुछें प्रक्रियानेके हेंनो भी कर अन्तर्वक ही प्रमूप है। ये उन्हें प्रदा क्षेत्रको प्रामेश्व विने प्रामेते एक वाले हैं और अनन परा कार्याच कार्येदे कार्याचे हो करे है। क्याँ इकार्यंत बर रवेच, योड, बंदलती, परम्ब, बेहबरी, भग और बोरमबे कालेको है। बनके के करोगे, का करोगे और कर्न करोपे भी का राज सक्य थात है। वर्तन किने लोग एक-सारेके जान से सेर्स है। बाँद कर सकी पान प्रवाह के बान हो व्या नारे हुए प्रश्लंद समान है। समादे क्रेकन की महिन हे पहल है। बनको दिन्हा करन अपने नाह करन है। इसीके अवदानी सर्वाद अवस्था पाठे हैं और अभी क्यात । बनारे नाम क्रमी साली नहीं। अन्तर्थ ओरमे क्रेड केर ही पराम सक्त है। सक्त उन्होन ही चरन क्रान्ति है। वर्नका । क्याने, सुरक्षा, बोका कोची क्रीड़, देवर्ग और दिन क्या त्रया व्यक्तियोग्ना सम्बन्ध—संबंध व्यक्तिय है। व्यक्तियम् एका को बच्चे को ब्याना (स्तरिये क्षेत्र का है कि का उच्चमके संबद्ध-परिश्वाच्या परिवाल पर है: और स्था कानेके साराय को कहा भी बाद साराय परे, उन्होंकरों कारों। असला सराहों कोई में संबंध राज्ये संबंधे प्राप्त सभी औं देशा गण है। इसीने वर्णना पर स्थी प्राचनो उत्तार करते हैं, से अन्तारे अह स्कृते हैं स्नाह he and marble first of our establish solver to water है अबार है। यह अन्तरे क्षीयाओं क्षेत्र है क्षीप से जाको प्रधा से क्ये कम 7 कांच्य । प्राचीको जान विजाते भी प्राञ्चनी हेका पर परिन्ते । भी अन्य अन्ये पर्नार अस्त कृत काहे हो से काली हका सर्वक कार है।

वृतिहिएरे वहा—आहार्य । वे इस्तरिके कर नहीं व्यक्ता कि उसका कर्ण उपयोग करों। वे के केवल साह्यक्षेण परम-सेवल परहर है। मेरे कियमें परमा स्थेण जीवा में नहीं है। महामान् । में प्रमुक्ति पुरस्त है। ऐसी अवस्थानें अनुक्राधियोगा कावन-सेवल केरो न करों। पुरस्त पुरस्तें सेवलरें सभी जानी है से सोपीयो योग्य करते, से अपने हाको अब नहीं प्रमुक्तें करों दिस्कोंके अवस्था, हैए हा स्थान कर और मेरे महत्वा करते सम्बन्ध कर्ण हैसा। दुःशीयो सीमेंके हिल्ले प्रमुक्तें करों स्थान कर्ण हैसा। दुःशीयो सीमेंके हिल्ले प्रमुक्तें केन्द्र से स्थान हैसा। पुत्राची सीमेंके क्षेत्र प्रमुक्तें केन्द्र से स्थान कर्ण हैसा। पुत्राची सीमेंके क्षेत्र प्रमुक्तें केन्द्र क्षेत्र अपने अल्ले, को क्षेत्र क्षेत्र हैसे। मनसे करके मेरे प्रमुक्त करें। क्ष्युर वार्मानें केरे और उद्यवर स्थान है। स्थितिको स्थान हुव्य देशकर अग्रमनी और सरकार से करना है पार्थिने। को

पूर्वा आवितः, भी, मारिकारे, मारिक, मार्न-वन्, पी-पूर्व और प्रेम्बरेका इस्तार भी करण को ने नाम आको है। पूर्वा केया और निर्माण सिमे भीकर कन्ने। मूर्वे, कावाल और भीक्षणोंने रिक्ते भी निर्माण है। यह मीर्वेकोल कर्न है। मार्निकेल करके और पुरुगिये विकास कार्य है अनुवादेशन है। मार्निकिक नेन्नि पूर्वेको हेले, पानी सामा पान कर्ने, इस्त और पोटी कर्निए क्रेसे, प्राथित कार्या तेना करें और कार्येक कर्ना कर्ने क्रिक्त क्रिके करें। प्राथ्य का पान्यित कर्ने करने कर्ने क्रिक्त क्रिके करें। प्राथ्य का पान्यित कर्ने क्रिके करने कर्ने क्रिके क्रिके विकास-निर्माण कार्निक क्रिके क्रिके क्रिके क्रिके प्राप्त क्रिके क्रिकेट क्रि

होना क्षेत्र करूप हुए स्थापन क्षेत्र करूप करते है। कार-वेशे सरकूत क्रारीको विशेषके विना कार्य कार्य-वेशेने dealer mai it also meder arous die webile fiele क्रानोध्य इस भी ता नाते हैं । इतिहारी वर्ती नतावान हैं, पराय ands diebt denter then we sk were & fix wit वर्ग-क्रमांक कर माँ कहा। दिस संस्थ होता और विकास संबंध होता है, जा समय क्रमेंबलीन संस्थार male until more de until E i un fine pièrnis finnels का बात है, अर्थकों केपनेके रिले सहस्रत है जाते हैं और प्रकार की होने स्थान है। प्रकारको प्रधान प्रकार होती है और विकासिका प्रेरोन पहला है है। इन केनोने पहल कियत हो जाता है और फानेंद्र कोच्छी परिक्रेनेंद्र सन्तरन जागार्थे गिर पहला है। यह अपनी सामग्रेक अनुसार सामिक और बन्नेनीहरू बोनोर्ने हुए उत्पार पूर-विश साथ है कि औ सरो-सरको भी का माँ करो। आको पान कारवर्ष, बावरावर्ति हेनेक तथा, तथाने वारण अनेको इस्प्राचेंद्र प्रोक्त-अनुमित्र कर्म होने प्राप्ते हैं। सिर से कर्मीद अनुसर अनेक चेनियोपे पालना अनिवार्त से पास है। aunit from Brokens weren, some alle weren ज्ञानिकोर्ने को जान करून जाता है। यह भी। से मुन्दिनेन विकासक अधिकोची होती है। यो सोच अपने तेव Girls काम करते हैं और मनाके कारते एक होना कारों है, जा ब्रह्मिकनोधी यह सुनिये । यह यह और यूर्व कोड थे, ये केन्द्रें की वाले केट्या है। इसरिनो करकि आंक्करी केवल सम्बन्धर है को को और सरका साग प्रत्येकारं को क्षेप्रश्न सम्बद्धान्य है जानक श्रमन करें। कर्न पहले और न करनेका—अपूर्ण और निवृत्तिक जानक अपूर्ण मुद्दिके अधिरक्षणक गृहि काल प्राव्हित व पार्थि जात मार्ग है—क्ष्म, जानका, कृत, जनका, काल, जन्म, पूर्वित्वित्तिक और निर्द्धिकार: कृत्ये पहले कार पर्श्वका है और विकास पार्थ करोपालका । इतका अनुस्ता की कर्यकानुदिसे अधिराम प्रोद्धान ही करना काहिये। को सोन्द प्रस्तानक विकास प्राप्त करना पार्थ है, जो पार्थकारी हम निकासिक क्षार करण करिये—कृत् संकार, इतिसीय नियमक, क्षार्क, तर्दिता आदि ३०, मुख्यकी रोक, गोकस्की शुद्धि और रियमिक्ट, सक्-क्षाबीया स्ट्रापूर्वक स्थानकी; क्षांत्रस्थः कोन्छ, नेक्षा अपने-कर्ण अधिकारों निया है। कर्मारा कोन्छ नेक्षा अपने-कर्ण अधिकारों निया है। कर्मारा । साथ भी पूर्व नियमों और स्थानके क्षार्थ देशी विद्यु आह कोनिये, किस्से अक्षानोंने नरण-नेपनकी कृषि अस् हो नाथ।

## पुरोहित धौम्यके आदेशानुसार युधिष्ठिरकी सूर्योपासना और अक्षयपात्रकी प्राप्ति

रीतानुकार्य करते है—कारोक्य ! प्रतिस्थानिक स्थ प्रतीत सुरक्षर प्रमेशन मुनिहिर सामे प्रतिकृत भीत्रके पात आ गर्न और अपने प्रमुक्तिक स्वयन्ते ही उनसे पहले राजे---'भागवर ! केवेचेर को-को कथावर्ड ब्रह्मण मेरे सम्बन्धण कार्व पार के है। उनके पारण-योगभाई मुक्ते सम्बर्ध औ है, इसमें में बहुत कुन्ती है। य हो में क्यार बाला-संस्था है mr mein & afre n wit eine if mire fie felt श्रीरिक्षांत्रमें पूर्व क्या करना पंजीने, अन्य कृता करने पा असरकार्य ।" वर्षधमा गुरिवीतमा जस सुन्यान गुरिवीत स्रोतकार structer aus states per fierere fruit fiem : स्थापन प्रारंत्वको सन्तेका कर्ते का-'गर्नस्य । महिन्दे प्रतानमें का जाने प्राची भारते नकहरा है थे थे. हव प्राप्तान् सुनी हवा करके विद्यांत सुनान अन्ते विक्रा करोंने पूर्णाका रस परिवा और किन एक्टिकानों स्थान अंदर्भ अनेदर किया। इस अवस्य कर कहीने क्षेत्र किया कर दिया, एक प्राप्ताने कामें ओपीओवर बीच प्राप्त और जाके प्रशासका अपनी जाति हो। जाति साले जातियोति अपनी मृत विवासी । सर्वतात । स्कृतिक तालमां स्वा है कि कुर्वकी कुरमते अस करता केंच्यं है। कुर्व है करना प्रातिकोची का करों है। की सबसे निता हैं। इसरिये कु प्रमुख्य सुरोदी करण पहल करे और उनके क्रायासको इक्टजीका चेकन करे।"

पूर्वित श्रीयने वर्षस्यको सूर्यको आसमा-वर्षी सारपदे पूर् कहा—'ये सूर्वे सूर्यके एक स्त्रे कार का सारपदा है। सारकान होका स्वयं करे—सूर्व, सर्वकः, का, साह, पूरा, अर्थ, सवित, की, नपरिकार, साब, कार, पूर्व, करा, प्रभावत, पृथ्वी-का-नेत-का-सारपा, पूर्व, करा, प्रभावत, पृथ्वी-का-नेत-का-सारपात-सरकर, सेथ, स्वारपीठ, स्वार, सूर, नेतान, इन, विकासन्, क्षेत्रांष्ट्र, सुनि, संति, सर्वहा, सहा, विन्तु, सह, प्रकार, कर, केंद्रा जॉड, पाठर जॉड, देशन ऑड, क्रमाताः क्रमाताः, चेत्रवाताः, चेत्रवातः, चेत्रवाताः, संस्थः, तेताः, हरा, 🖛 करा, फक्र, जुर्ल, हरा, सार, हरा, र्वेक्स्टरको, अक्टर, बारकार, वैध्यान्यु, कावत पुरुर, केचे, कहा, अन्यत, करान, कारान्यत, प्रशासक, क्रिक्टमां, वर्णमुद, काल, सामा, जंब, मीपूर, भीवन, अधि क्राकेट, क्रावीं, क्रावेक्टव्यक्त, स्कृ, संवर्धक कदि, कार्डी, कार्वेलुन, अरम, वर्गन, भाग, बान्स, क्रांक्रेयुक, पूर्व, विकास, यहा, क्रांक्युनिवेधिक, यस, कुरते, भूतरे, प्रीतन, प्रशंकाता, कन्नी, वृत्तेत् कार्विक, अदिविद्या, प्रमुख्या, अर्थिकाव, नागा-विसा-भिक्रक करने, सर्वहर, प्रवाहर, मेंसहर, व्याहर केवर्त, प्रशासका, विकास, विकास्त्र, जानकार, क्रांबरण, कीम और क्रमंत्रनिया। सर्वरात । क्रमंत हेकारी एवं बोर्टन करने मेच्य परावान् पूर्वके में एक सी कार पान है। उसे स्थानीने प्रमान करीन विश्व है। इस क्रवीका उक्तरक करके भगवान् कृतेको इस प्रकार नगर्मार कृतना पार्वीके । सम्बद्ध केवार, दिवन और प्रश्न विरूपी सेवा करों है, कहर, रक्षक और सिद्ध विन्तारे करना करते हैं, त्रकर्प हुए क्षेत्रे और अधिक सम्बन जिल्ली कारित है, की भकार भक्तायों में अपने क्रिके लिये अनाम करता है। को प्रमुख कुर्वेदिको समय कुरूत होकर हान्या थार करता है उसे औ, एव, बार, श्लोबी राहि, पूर्वजन्मक स्ताम, वैर्व और केंद्र बुट्रिकी जाहि होती है । को यहक परित्र होकर सुद्ध और क्षेत्रम बनसे बनकर सुर्वेदी प्रश्न स्ट्रीका पाठ करता L का समझ क्षेत्रोरों कुछ होकर अमीह क्या जार

प्रेडिट बैक्को का का सुरका उनके हुने स्थाती पर्वतको प्राक्षेत्र सम्बन्धेने मनकर सुनेको अस्तक और करका की। वे कान कारके पनवान क्रमीर सामने क्यो हर और राज्यन, जनायान आदि करके जनवार सर्वेदी शुद्धि करने समे। युनिहिस्ते कहा—'तुनीहर । अन को कारायोग मेंता है। सम्बद्ध अधिनानिक अंतरण है। कार्य ही संस्था प्राणियोके मूल पारण और वार्वीयोके स्थापन है। संक्रान्तिक और योगन्तिको उत्तरक अन्तरे आको है अस होते हैं। जान मोहके सुत्रे प्रत् हैं और मुख्यूकोंके करन माराज है। आप है समझ स्वेकतेची बारण करते, प्रकारिक मार्गे, परित माने उस्त किया किया सामीद पारन माने है। अवस्थार को को प्रतिकार अपना पर है और सब भी बेदर प्राप्तन अपने प्राप्तांच्य पन्तेचे हुए सम्बन्ध आवना उपनान करते हैं। विद्यु, काल, करती, पक्ष, पान और पान अपने पर उठा करनेके जीनायाने आपने दिन राजे रोते-वेते काले हैं। केरित केला fieble auft bereit, ales ein wies ist auseit आराजनारे ही सिद्ध हुए हैं। विकास सारम्बकोर पुनोसे अलब्दी प्रमा काके अस्य वर्षेत्र्य समान करते हैं। पहला, रितर, केला, परमा, राजी अरुवादै एक बानो भीरवारिक क्षेत्रे हैं। जार पर्य, राजाय प्रवासन, प्राप्त का, क्रांकान और पासचिक्य आहे प्रची आपनी आराजाने नेवालने अपूर् सूर् है। अक्रान्तेकारे अकर पुजरिवर्गक स्थान स्वेकांने देशा कोई भी जानी नहीं, जो जानले सहकर हो । वों से सहर महै-बड़े प्रतिकाली समाही विकास करते हैं, पांतु अल्बोर प्रथम और महरिकों सारने में भी तहर सालों। निहाने भी कोरिनोच पर्वा है, से प्राप्त असको अध्यनि है। अस्य प्राप्ता कोरीमोधेः सामी है। साथ, सक्त और सभी अनीवाद नाम नापने ही अभिक्रित है। प्रत्यान किया विकास सालेह क्या मारोक काम को करे हैं, क सकते हैं अंको का हुआ है। आर जीन पहुले जानी किरणोंने समाह कोचीन, रस और प्रारिक्षोंका हेन वरिंच नेहे हैं और क्यों बहावें सीट कें के वर्ग प्राप्त अवन्य है नाइन्से प्रियम करते हैं, बराती है और गर्वती है। वे है किवादी बनवर बनवाई है और बाहरोंके करने बसाती की है। जाती दिवसे हर परमध्ये अहेतो, ओक्टोने और पंचानेने पैता हुए जी रिकार केंद्र जानको विद्यालेने निकार है। जान जानी र्राज्योंने तेख डीपवाची प्रक्रीको प्रक्रावित करते है। कार विना विक्तीवर्ध स्थानकाची अनेकाने तीनी लोकोने, विन्ते समें दाते हैं। बदि अवस्था क्रम न हो हो सहर बन्छ अन्ह

वे ज्ञान वर्षे, अर्थ और करकान्यकी करोनि किसीकी क्रमी है न है। प्रक्रमादि दिम्मी-सेम्बर, पत्र, पन्न, क्या और कर्मकोषित कर्म अन्तर्ध क्रमसे से मारे हैं। महान्या एक विर एक इमार गुणका क्षेत्रा है। उसके आदि-क्षणके विकास भी आप ही है। यह, बराहा, बराहा, यह स करणा और जाती सम्बोध थे कर्मा आर है है। प्रकार पान अनेन आयो बोचरे है पंजांत और क्रमार क्रेमा है और होनों लोकोचो जल्लाहर आराने नियत हो कार है। अन्यक्षी विकालोंने ही रंग-विरंगे हेटवर्श आहे मेर और विकासिकों पैक होती है एका उसका कासी है। जाप के करा पर करकर प्रका आधियोधे नामवे प्रतिक है। जानको करण पार्ट समुख्या करू कार अन्ये किरजोर्ध क्या होते हैं : इस. विच्या, बा. उन्हार्यांत, आहे. साथ पत. प्रथ, प्राथम का अभी अपने हैं यह है। अन्य है हैत. परिवा, पान, अंबानानी, क्यानी, विकास, निर्देश, प्रया, निय क्या वर्ग है। अस ही सहस्रतीय, असीरत, स्पर् which, under, sed, the gel, were set finner \$1 कार 🛊 विकास, सारानी, धारनेकी, विरोधन, अनुस्थाने, क्येंक और प्रतिवाद प्रकारों है। ये सहसे अंक्ष्म स्थिते हैं। अस्तान और पंतिसे अंक्ष्मी एक करत है करू आंकार नहीं करता, को स्थानीकी प्राप्ति होती है। को अन्य विकास अस्त्रती कुछ और प्रकार असे हैं उने करि, कार्रे रूप अस्मिन्ने की सामी। आयोह पता समझ रोगोंने रहित कारोंने पूरत, सूची और विरमीयी होते है : हे अर्थनों ! में बहुत्वृत्तीत सम्बद्धे अप देना और सम्बद्ध कारिक करन कारण है। पूर्व आर्क्स कारण है। अन क्या बार्क हेरी अभिनक्त पूर्व ब्रीकिने । अपनेद कालोरी क्तरेको कहर, जाल, इन्ह सब्दे स्ट सनुवरोको वै प्रकार करता है को कर, विकास आहेके प्रतास है। शुध्य, फेरी आहे अन्य पुरुषाराओंको भी में प्रसान करता है। से पुर क्रमान्य की प्रक्र करें।

या वर्षस्य वृतिद्विति युवनयास्त्र याप्तत् अंत्रु-वर्णानी इस प्रवार सुनि वर्षि, तम उन्होंने प्रस्त होवर अपने अधिके सम्पन देवीच्यान स्विध्याने उनको सुनि दिया और वर्षा—'पृथिति । तुन्हारी अधिकाल पूर्ण हो। में बार्स वर्षाय पूर्ण आधान कर्मन्ता। देवो, यह प्रविद्या वर्षन में पूर्ण केव हैं। हुन्हारे स्त्रोत्रेवरमें को कुछ करन, कुन, कब्ब अर्थर कम अधानको धीवनसंस्थानो सेवार होगी वह सम्बद्ध अरुन पोणी जनसङ्ग श्रीयके परस्ती योगी। आवर्ष्य क्रीयूनों कर्मी तुन्हें अरुन कन्य निर्म क्याना में हुन्हा क्षत्रार



बगबान् पूर्व अन्तर्वत हो गरे।

यो पुरूष प्राप्त और स्थाताओं प्राप्त विश्वी आण्यात्रकों इस जोजको पांच कामा है, फारवान् सून्ते अस्पर्ध एका पूर्व बाले हैं। से बार-बार प्राप्ता अस्पर और अस्पर कामा है औ नाको जिल्लाको जुएतर पुर, धन, विका आदिकी जाति होतो है। बी, पुरूष कोई भी दोनों प्रथम पुरूषा घठ को से केर-के-केर संबद्धों भी पुरू कता है। यह सुनि इक्करे इन्तको, इनके जवाको, जरहों बीकामें और धीकाने पूर्वविद्या जान पूर्व भी। इससे पुनिश्चिकी प्रति अधिकारों पूर्व हे परी। इस घोटको बाउने संवस्तकों विकार और कारकी जाति होती है, परी पान पुरू कारे हैं और अपने पूर्वकोगानी जाति होती है।

वन्त्रेयम । इस अवार कर्नाम चुनिहारे बर्ग्यम् सुनिहा वर अहा किया : कारणर करते कहा निवस्त्रार पुरिहार वीन्त्रके करण प्रमान हिन्दै और प्राइनेका आर्थियून विकार । वान्त्रार मह कर वीन्दिनो के विकार रातेई विकार हुई । वीक्त-सा प्रमान हुआ अब की का पानके अभ्राय पुनिहार आर्था और अवान हुआ अब की का पानके अभ्राय पुनिहार आर्था केवल करने रहते । कर्मका पुनिहार अञ्चलीत केवल कर्मी । कर का पानका अस्मा स्वाप्त हो सामा । इस अवार पुनिहार प्रमान पुनिहार अस्मा का महा करते अवार पुनिहार प्रमान पुनिहार अस्मा का महा करते अस्मा पुनिहार प्रमान पुनिहार अस्मा का महा करते अस्मा पुनिहार प्रमान पुनिहार अस्मा का महा करते अस्मा पुनिहार प्रमान पुनिहार अस्मा का महा करते

# युतराष्ट्रके क्रोर्थित होनेपर विदुरका पाष्ट्रकोके पास जाना और उनके जुलानेपर लौट आना

वीराम्यकार्यं कार्यं है—सम्बंधाय । यह सम्बंध कार्यं स्रोत गर्थः तम प्रशासकृ कृत्यकृतं विकारं कार्यं क्रिक्ट और प्रशास होने तमी । उन्होंने कार प्रशासकार कर्यंका तिहुत्यों प्रशास प्रशासकीर स्थान पुत्र है, हुए प्रशासको कृत्य और स्थान प्रशासकीर स्थान पुत्र है, हुए प्रशासको कृत्य कार्यं स्थान क्रिक्ट स्थान कार्यंको, विवार्थ क्षेत्रां है । उस पुत्र सर्वे हैं और दोनोंके जी। क्षूत्रां कार्यं हुई है । उस पुत्र सर्वे हैं हा अल्ल कार्यंको, विवार्थ क्ष्रों का है है । उस प्रशास कार्यंकों ? प्रशास क्षित प्रशास कार्यंकोंकों केर्यं क्ष्रों न कर स्थां, हैल स्थान हम्म कार्यंकोंकों कोर्यं क्ष्रीं न कर स्थां, हैल

तिपुरवीने कहा—राजन् ! अर्थ, वर्ष और काम—हा क्रीनोके पासको प्राप्ति करने ही होती है। कव्यको कह है कर्म। आग कर्मने सिका होकार पायकोको और अपने एलेको वास वास्तियो । सारकी पुरांचे प्रमुक्तियो सारकारे गरी संपन्नी
पर्यक्षा विस्तार विस्ता है, क्ष्मोंके सारकार पृथिहिसको
वास-वास्त्रे प्रस्तार अपूर्ण समाम सम्बंध प्रीन शिला है। यह
वाह अध्या हुन । इसके निमान्यका मेरी पृष्टिचे एक है।
राम्य है। नेता करनेतो कामात्रा पुर पांच और नार्थकारो
प्रमुक्तिया आह करेता। यह समय वह है कि सारमे
प्रमुक्तिया को पूछ दीन समा है, वह सक उन्हें दे किया
समा । प्रमुक्ति कुछ पर्यन को है कि वह समये इक्कों है।
प्रमुद्ध हो, कुलेका हक न कहे। वो समय की नारसम्बद्ध है।
प्रमुद्ध हो, कुलेका हक न कहे। वो समय की नारसम्बद्ध हो।
प्रमुद्ध कोर सम्बद्ध पूट कामात्र, पार्च-पार्टि पूर पार्टि
पार्टि महेर पार्टि की नीत समय प्रमुक्तियो समुद्ध को और
प्रमुद्ध को केया कर कर के स्वाप्त प्रमुक्ति की स्वाप्त काम का
समय प्रमुक्ति के दे पार्च हो दो प्रीक-से-एक वह करने को हरे





क्रुत्तांक्वर पत्त है क्याता। यह अवन्या कु पुत्तांक प्रतासार प्राथमिक साथ क्या बीमान कर में तथ से तीन है है, अन्यक परिवार और प्रतास कुन करने मुख्यिकों प्रतासिक्तांकार केश सीमिने । पुनिवित्ते विकास विकास किसी के प्रतास करें। की एक स्थेप केश किसी के के क्यांका प्रतास के के एक स्थाप प्रतास करें। की एक स्थेप केश किसी क्यांका कुन के के के पुनिवित्त हो। पुनिवास करें स्थाप क्यांका क्यांका केश केश किये असीका हो। पुनिवास करें स्थाप क्यांका सम्यास केश प्राप्तिक क्यांका हो। प्रतास क्यांका करें, कर, जार क्यांका प्राप्तिक क्यांका हो कार्यने।

कृत्युने का—'तिपूर ) का कृत क्या का वो हो । हुन प्रकारोगा हित काले हे और में पुलेका अधित । में काले हुन्हरी नाते नहीं बैठतीं । तुन कर-कर फल्कामेंक पहल्की है सार कहा है । काल, मैं उनके हिन्दे अपने पुलेकों केले केल पहल्की है । किन्दू ? में के हुन्हरा हक्या सम्बन्ध कर्या है और हुन मेरे पुलेका अधित पहले हैं । अब कुते हुन्हरी कोई साम्बन्धरात नहीं है । हुन्हरी हमार हे में कई को अस्ता को काले ।' इसमा क्याकर प्रदाय कर को हुद और हम्मा बहुन्ने को को । प्रत्युक्त का क्या केलाव किन्दुरे क्याकर हमोंने स्वकारोश किन्दुरेके हिन्दे क्या कर से ।

यों के विद्युव्यक्ति विकास कर्मदा की प्राथमनेती विद्युव्यक्ति तक्ता कर्य क्यों थी, प्रश्न आप कृत्युके व्यवहारी जो साम्ब्रो पुर करनेका अवसर मित गया और उन्होंने एक रकार करार केवा कामक परार्थ पात पर देश राजे बोलको पोर्जेरे कोई है जनको जहें वह वर्षण हैया। उस क्रम क्यांक पृथिते प्रकृतों, ध्यूनों और शैक्तिक प्राप्त की हुए के। उन्हेंने ऐसा और मुख्ये ही पहचार रिन्स कि विकृत्यी को प्रोताको प्रको पात सा यो है। पुरिर्द्धान्तीने चैकांको का-'भार, यह जो कि इस पर विद्वार्थ पर्ड अवस प्रकारिक क्या कार्य । स्टब्स्ट प्राथमिन स्टब्स्ट विकृत्यांची सम्पन्नी पर्छ । प्रान्त-सम्बद्ध विक्य । विकृत्यी of marries and finite famula arrest second-उनके क्यानेक कारण कुछ। इस उन्होंने कुरसाओं कार्यक्रमा वर्णन विकास सुवात-प्रकार समाप्त हो नानेके कार, निर्माने कहा—'कर्गराव । में आयो को सामग्रे बाद बाबार है। को पहला बाह्यमोंके दु:श देनेपर की क्षण बार केल के और अपनी जानिया अन्तर्भार देखाँचे गार्थ्य है, साथ ही, अवने प्राप्ति और स्कूपकोचा संग्रह करता दशा है, जी इंडरेका एक होता है। के अपने प्रमुखेको आरम्द नहीं कर inc, Present and met vern & melt mer melt



विक्री भी का चापाओं सब सोध निरम-कुल्बार कालो स्वान करते हैं और फर्रीकार भी १ इससियो भ्यानीको अस्ता पढ़ी करना जाति । प्रमुखेंचे साथ सभी और मानवपूर्ण कर्य है । करनी जाति और ऐसा व्यवस्थ करवा खाति है जिससे किसीको कुछ ऐसर न है । यो कर्य करवा, नहीं अपने प्रदेशोंको भी साथ बैटाकर दिसको । अपने आसम्बे पहले है उनके आरामकी व्यवस्था कर है । यो ऐसा करवा है, असीका करता है ।' पृथितियों सक्त-'क्षाको है थे कहीं साथवानिक सभा आसके उनके अनुसार काल करिया । और भी अस्य इसस्योगोंको अनुसार अस्यके अस्यका करून करेंगे ।'

कारेका ! इतर का किट्टा इतिताहरों कार्कां पात सामक कार्ने करे गरे, तब राम वृत्ताहको सम्मी पुरान कह पहालां हुआ। वे किट्टा इत्यान, रीति और प्रान्त-विद्या माहिती कुमानका करण करके होको लो कि 'अह से पाक्कांको का गर्ना। स्ट्रीची कार्नी होनी हो इत्याह काकुल हे गर्ने और गरी सामने रामाओंके सामने है पृथ्वित होकर गिर पहे: जब होता हुआ, तब उन्होंने सामद सहावारे बहा—'सहाव | जेस कार्न कार्न किट्टा केस परम हिल्ली और वर्नकी प्राप्तान पृति है। अन्ने किटा केस परम हिल्ली और वर्नकी प्राप्तान पृति है। अन्ने किटा केस सलेका कर पह है। मैंने है हो कार्का होकर अपने निरम्याव भाईको निवास किटा है। हुए कार्न कार्य दें अन्नोकी पहां करें।'

वृत्तरकृती साहा वीवार करके सक्तको वस्त्रक वनकी बाता की। कालक करने प्रृंकका स्वाधने देख कि कर्मक पृथितिर प्राकृतने जीने अपने कई और विद्वानीक साम क्ष्मिर प्राकृतने कावा वक्तको स्वाधने अपने क्षांच्य करन और प्राकृतने कावा वक्षको स्वाधना क्ष्मिर करना और पुन्तर-प्राकृत प्रात् सक्तको अपने क्षांच्य करना कार से हैं। आप इतिनापुरने क्षांच्या अने स्वाधन क्षित्र के कर से हैं। आप इतिनापुरने क्षांच्या अने स्वाधन क्षित्र के कर सामान प्राप्तान क्षांच्या क्षांच्या क्षांच्या क्षांच्या नंदे आने। विद्युत्ते जिल्लाक वृत्तामुख्ये नहीं जाताल हुं।
उन्हेंने बद्धा— मेरे कारे कहें । तुन्ताल कोई अपनाय नहीं
है। वह को लेपानकों कार है कि तुम सकुताल लोट आये।
वृत्ते कहें की कर से असमें की न ? शुन्हारे वानेके कर मुझे
और नहीं आयी। में कायम् असम्माने हैं। अपने सरीतकों
विदेश रेपाल का। मेरे तुमसे जो कुछ अनुक्तित कहा, उसके
लेखे हुने अन्य कर है। विद्युत्ताने कहा— 'राजन्! अस्य
मेरे पूजनीय और को है, मैरे से आपकी कारोपा हुन कान
है जी दिन्ता का। अस्य काल, उसमें अन्य करना क्या है।
असमें पूजनीय की को है में को आपनी कारोपा हुन कान
है जी दिन्ता का। अस्य काल, उसमें अन्य करना क्या है।
असमें पूजनीय की को है में को असमें असमें है। मेरे लिये पायुव्य
नेता करने के प्राप्त कारोपा है। किए भी पायुव्योकों असहाय
नेता को धनमें सामाना है। किए भी पायुव्योकों असहाय
नेता की धनमें सामाना होगी एक-मूहनेको अस्य करके सुन्ताने
को सके।



# दुर्योधनकी दुरचिसन्त्रि, ब्यास्त्रीका आगमन और फैक्कीका प्राप

र्वज्ञास्त्रको सार्वे हैं—अओसर। यह कुरात कृतीयनको यह सम्बद्धार निरुष कि निरूपके प्रध्यानिक प्रसारे सीट आने हैं, तम को यह देश हुआ। उसने करने पान इनुरि, वर्ण और दुःसम्बद्धे कुलकर बहु-'सम्बद्धे क्षित्वे और प्रमेरे निलामिक मानाक नामी निवार करते मोठवर सा गये हैं। ये निवासीओ देशी साधी-सीमी प्राच्यानेंने कि किएते प्राच्या प्राप्त दिले धार्य । उनके हेता बार्टको प्रको हो अपनोप बोर्ड ऐसे ब्रॉप सम्बर्ध, विन्ही नेता बाज कर बाव ।' क्वीकाका अध्यान सम्बन्धाः कानी मा-'ता सर पान हो जाता बाव करे रक्त सबार में और बनवारी मान्यतीको पर क्रान्तेके दीनो धार भी । इस प्रधार पर्यापनियों प्रमुखी तात सोन्मेंको नातुन 🗣 भूति होन्हें और हमार बारम् भी सहके रिन्ने सन्दर्भ हो क्रमंत्र । कारण प्रमान स्कृत-विकृतिः विने समूच नहीं है. there it array it refers over free me tic है के कहिये हैं उनके कुछ सकते वालेके पात परिवार पह भी। है का प्रोची अभीन होचर रचीक करत हा और प्राण्डाची चारनेके दिनों पानों दिनों पान की।

महर्षि स्थान को है सुद्ध जना:बरनके मुख्य है। स्थानी uppel affeliebe \$1 fice new afre weather कृतिक करनेके रिक्टे कहा कर रहे थे, उसी अन्य से बाई अर पहिले । इन्हें अनुनी दिवन इतिहाँ कौरकोची कुर्दिक्का पान पान गुल का। उन्होंने उन्हालाओं आहा देवर बीरवीओं कैल धारोने केन दिया। करनका बताहके पेता कामा वे केले—'क्लाइ ! में हुम्मोनेंके केलडे पन पहल है। क्ष्मीकर्त कार्यकृतिक कुळ पोलाक कार्यानियो हर दिया और अने करने केन दिया, यह यह गुड़ो रहती जी रहते हैं। पत्र निर्देशन है कि तेना पानित कर को गांधि हैने हुए कहाँ जो कारत करके राज्यस यहा आपना करण करेंगे और सामोधी बीक्रमधे द्वारते कृतिक कांत्र कर क्रांगे । कार, वह केंग्री बात है कि बातन क्येंका एकके मोनने क्यानेको पर क्षारमा पहला है। में कई देताई कि दून अपने साकृत देशके इस कामते थेक हैं। यह कुरका का कैंग्र के। की पान्तनीको कर करनेको बेहा की वो बढ़ कर्न अन्ते प्रानोसे प्रान को बैठेगा। यदि एव उनने गुरुवी हेर-बुदि विद्यानेका का र करेने से कह अन्यव क्षेत्र । नेरी राज्यी है का है कि रूपीयन अनेत्य है कार्ने बावन पाणांके पास रहे। सम्बन्ध है राज्यकोंके सर्वापने क्लेक्स्सा हेराकर क्र क्रेमर प्रेरफायको जागृति हो जान । यांत यह बाद है जान

करित, क्योंक क्यांत सम्बन्ध महत्त्व कर साथ गर्स मुर्हे है। यह हम कुर्वाहरूकोधी एक और उसका स्थान महत्ते हैं से हकता कुर कुर्वेकर सम्बन्धेक साथ नेत-निरमण कर है।'

प्रस्ताने का— 'परन प्रान्तास्ता नहीं ! को कुछ जाय का ये हैं, जो से में की काल हैं। या कार सभी लोग काले हैं। जान कोरकोको असी। और कारवालके रिन्ने को काली हे से हैं की जिल्हा, चीना और क्रेन्डकार्य की देते हैं। जी असा की कार कानुका करते हैं, कुळाडिकोपर कार काते हैं। ये कारवाले कुछ पुत्र कुळाडिको हैती है तिका है।' वास्ताने कार—-रावर् ! कोड़ी है देनी नहीं केल कहें का से हैं। ये कारवाले निरम्ता अस क्रान्तानों किया कार्य है। ये के कुछारे कुळाडे नेत-निरम्ताका उनके करते हैं। हैं, इस कारवी कुळाड़ में हिने केस हैं कि ये को कुछ करें, किया सोक-नियसके करता वाहिते। वही उनकी असाव अस्तान होना से हैं कोनके प्रस्ता है कि ये को कुछ करते.

मार्गि केलके प्रवासे हैं बुसाइ अपने कृति शक्ति कार्यों केल-सम्बद्धि रूप रूपे । विकासके प्रकार, कुरराह्नी वर्षे क्रिकेट सम्ब पुत्र-'नावन् ! अस्य क्रुक्तावृत्तं देशने च्यांत्रक आरामने से आने ? पीओ पानक समुदता के हैं ? ये अपने प्रतिकास पायन करना चलते हैं समया नहीं ? आर क्रमा करते का से कारवाले कि कीरव और क्ष्मारेंने सामेंद्र दिनों केत-विकास के कारण ना क्षेत्रकोरे कह-'एक्प्) में सीर्वकता करो-करो क्रमाहरू देवने एक छ । वहाँ संबोधना प्राथम वर्णे वर्गराज प्रतिकृति के हैं। सभी । वे आवकार का और कुर्वालय करूप किये अवेक्स्में निवास कर की है। उनके व्यक्ति क्रिके क्रो-क्रो व्यक्ति वृत्ति अर्थ है। कृतक् । क्री क्री क हुत कि हुको ज़ाँने सहारक चूक केम्बर असे साथ अन्याय किया है। या हो हमलेगोंके रिप्ते बढी क्यानी पता है। कारि मैं तुकरे पार नामा है, क्योंकि मैं क्रमार सक्तमें केंद्र और केंद्र रकता है। क्रमा ! यह विजी अबार जीवा नहीं है कि तुम्हों और मीमके मेरित रहीं हकते कुछ एक-कृतिने विशेष करके कर विदेश हुए समावे केम को केमने, क्या करने अर्थने करने हैं ! फिर हम और क्यानार्थ कर्षे अनेश का के हैं ? तुमरी समार्थ तुमारे रायरे प्रयानीके राजन को जन्मन-कार्ग हता है, आहे? जार-वरियोक्ते सम्बन्धी क्यारी बडी होती हुई है ? अब औ

रीयार काले / इसके बाद इम्बेंकावरी और ब्रैड केव्हर महा-चेद्र हरोज । वे हको देख्य कर का क है। यह तरिक सरकार्यांसे कर हो। क्याचेक, . स्वतं प्रमाना और क्वार के दिन क्या दिन इसीमें है कि तुन पाणकोरों होंद्र का करे । वे स<del>क्त के उस</del> बीर, केन्द्र, कर्कार, कृ वृत्रं जनका है। वे को सावारित. अस्तारियाची और एक्सोंके एक् हैं। ये बने का केंद्र एक क्षाण पर सकते हैं। इनके इन्ते कोन्स्ने राज्यकेक ना dicheren & afte fiction, was, facilit milt combai उन्होंने जर भी उसक है। किस समय राजने ने महर्ति का चे थे, विश्वीर-वेशे बारवान् स्थानको चीकोरने बाध-यो-बाराने पार कृत्य । पूज से जानों है हो कि दिन्तिनको सकत चीन्होंन्दे पर प्रधार प्राथिनोधे समान वाले नगरराज्यों जु का दिया। परवान् बीकृष्य असे सम्बन्धी है। हार्ल्य पुर अने जाते हैं। याच्याने साथ पुत्रने जात नेनेकार हुए संबंध कोई और है। इसलिये कुई सबसे साथ बेल कर नेवर बार्तिने । केस । हम नेते बार कर हो । स्रोक्ट कर सेकर अन्तर्व का को ।'

रिया प्राप्त कार्षि केले इस उत्पास कर हो है, का राज्य पूर्वीचन मुख्यताच्यर बेस्से वार्यन कृत्यने और अपनी बैडके सतान जीवना सकते कार क्षेत्रने सन्तः। नृत्येकनकी यह menn breut februft seint sen bien freit faces : Partieur war ung fin Brentenft beit fir gent थी। जारेंने पार रार्ज करके एकार एकॅकरके प्रान हिया—'यूर्व क्वेंबन ! यू मेरा हिरफार करने है और पेरी बात नहीं मतला । से तु इस अधिकानका करा करा । हेरे इस हेर्क करण करेको और कश्चके के यह हेना। असे



बीकांग पहाली कोटते हेरी कोन लेड, इस्तेने।' महर्गि किर्म के व्यक्ति कार्य करते वरकोश गिरवार अनुवा-विका बार्ल क्ले क्लेर क्लेरे ब्रह्म--'क्लान् । हेरी क्या क्रीकिये, विवासे का पाप प स्थी।' वैकेनरीने स्था---'राज्य । वर्षि कुपूरत पुर बरुब्बामेंसे मेल बार तेगा तथ के केंग्र कार नहीं स्रोतक, नहीं से अस्तरूप स्लेगा।' सहन्तर कार्व केवर कार्य प्रकार किया । क्वेंबर यो चीमनेत्रके क्रिक्ट-सक-सक्त्रची पराक्रमको सुरकर काम पुरुषे महिसे जार कर ।

#### किमीर-वपकी कथा

र्वज्ञानको नहर्त है—कारोकर । जिस्र पुरिन्हे नहें | वानैसर एका वृत्रस्कृते विकृत्यीचे पुत्रः—'विकृत । पीक्लोको 🖟 कियोर राज्यस्था के कई हो ? इस हुई कियोर-स्थानी क्षा सुराते।' विद्याने वक्क-"तार् । क्षानेंड सभी कार सलेकिक है। हुई हो सल्बल को पुरस्क अवहर विद्या है। यस् । विश्व कर्ष प्राप्त सूत्रों प्रत्या अध्यानक तिथे प्रतिनामुक्ती स्थाप प्रत्य कर सम्ब

करों उनेब करने करने के, आधी रहते सका का करेंग्रे केवकर किसीर एक्स बाज हो नहां। यह इसमें काली हो कुछ देन्ते हुए छ। कुमाई समी भी और छन्। परंजर। अभि काल-स्वाहं । शिरके वर्षे-बाढे काल, बाने आवारी तन्त्रे हो। यह क्षत्री वक्ष-बद्धकी पत्रत कैसाता से क्यी बाह्योधी तस नरवत । जानी गर्मधर्म सारे जनगर कार्यक्ष होकर कुरावरम को। जीवी करने राजी। क्षुओ इंगालार तीन दिवाना चलते हैं हो। विक पानित ने बालावा । सब्बान आचानित हो नवा। हैपति तो आने दर्शनगानी बेब्रेस-सी हे नवी । उसकी व्याचक देशकर पुरेक्त केंबर क्ष्मेंद्र मनस्य यह करके रहती मान न्ह कर है। जरी क्रम किमी रक्षत प्रमाने केने प्रमानेके सामने नामर पुन्न है गुना। प्राप्तनोक्त परिवार कारकर विकरिते कहा कि भी क्याएसक वर्ग और विकेचक कि है। इसे भीगरोगो उनको पारा है। इसरियो अस्य अस्ता अस्ता मिल। इसे में रापी जा किने जलता है।' अर्थ सन्त भीपरोनो एक बहुद बहुद के उसाह और साने को रोश-सहका केन कि। बीकोन्ने स्थाने सन नैनीर बारकर पृक्षको जान्य और प्रकृतको निरंपर हे पारा । पर्यह इससे राज्याको कोई काराइट नहीं हुई। राज्याने उनके कारा कृत करनी हाँ रुक्ताई फेबरे, यांतु बीनकेमें कैसी करनार अरुनेको क्या रिवा । प्रत्ये का केनोर्ने क्रमार कुछ-युद्ध हुआ, विकासे आस-पासके बहुत-में पूछ आ है को ह भीवरोत्तरे क्षात्रीचे समात क्षात्रकर क्षात्रको अन्तरे महिने मींच के हिम्बा असरक, गरंह का ओर करके निवास गया और उस्ते भीनोवधे है कहा रिया प्रत्या पान्या should seek univer by the aft such un-पुरुषेत्रे क्याकर गरम चीर विकार कामन प्राप्त वेका वह गावा । असेवी निवास असरी । इस प्रवास विकास प्रवासके पर क्षानेक प्रभावको को प्रमान हो। सर होन क्षेत्रकेनको । कृत्या शहर है भी और अहेंने सन्ते सी सी।



अनुस्त कार्य अने और जिल कार्यमा कार्य स्पेत किया (" हर प्रधान विकृत्योंने विकास-कारणे बात पुरस्तर एका

### चगवान् श्रीकृष्ण आदिका काम्यक वनमें आगमन, उनके साथ परप्रकोकी बातचीत और उनका दापस सीटना

राज्यक साथि बंदरेके जाता, नहरूको पुरस्का, वेरिकेटके कुरोह एवं केमन देशके राजे सम्परियोको यह संसद बिहर कि पान्क्रमान असना इन्हों क्रेकर बनकारेले को गये और ब्राज्यक समये विकास कर हो है, एक ने चौरतीयर बात विकार संबंध तथ अन्यों निया बसी हुए जनक कर्तक रिक्रम करनेके रिले संस्कृतिक कर गर्ने। समी क्षानिक प्रत्यान होकामाओं सामय नेता प्रत्यान पर्वतान पुरिक्षितके कार्चे और मैठ नमें। जनकर औक्रमने मुरिक्तिको स्थापन करके को शिक्ताके का कह-'राजाने ! अस या कार निर्देश है करे कि कृत्ये कुछन कुर्वेचन, कर्म, शकुनि और दुःहानस्था जून केनेचे । यह समापन है कि में पहुन विक्रीओं जेता देता सुक्त-नोग कर दत है, उसे कर कारण व्यक्ति। अब इसलेन इस्ते होका सौरवों और उस्ते स्कूमकोसो

रीक्षणकार्य असे हिन्दाकोच्या । यह योगः, योगः, । युद्धोः यह असे एक वर्गका वृधिक्षणका एक्सिक्सकार

सर्वृत्ये देखा कि प्रार्थितीया विश्वास क्रेनेट स्टास क्यान् श्रीकृष्य संत्रेषिय हे गर्ने हैं और अध्या संत्रान्ध उत्पाद करना पालों है। तम उन्होंने स्वेचानकेवर सनातम पुरुष मनकर ओक्रमको साम करनेथे दिनो उनकी सुनि की। अर्थुको सङ्ग—'सोकुक्त । जान समस्य प्राणिनोके प्रदर्भ विकासका अन्यानीकी अन्या है। एक्स वन्नाद् अन्यते ही प्रस्क केवा और अच्छा: अपने भी रूप कवा है, संपत्त क्याबारोची अधिक और साथ है है। साथ निम पहलासर है, आग्ने अवस्थातम्य चैताहरको चरका चरिते हेनो कुम्बल अनुबंधे किने क्या प्रमुख्ये प्रमुख भी आपने ही किया है। जानो पन्तर्थे उद्याश्ये हैंस्वे ही महन्त्रेरी अवतर सहन निया है। जान ही जाराजन और हरिये कारने प्रदार हुए थे। क्या बहुद, प्रोप, कुर्र, वर्ष, वाल, करराज, जॉरंट, कपू,

कृति, सा, काल, अल्बाल, पृथ्वी और विशासका है। परवेशन ! जान कर्ग सम्बन्ध और बराबर नगरके करा है। आपने हे अवैद्रीके यह समय विल्हा करने अववार जान किया था। जा समय जानो केवल तीन करते वर्ण. पूर्व और परास्त सोब्येको नाम दिल्या ( सर्मानका ) आर सूर्वये कार्या क्लेकिंड सक्ले कुला को अवस्थित सक्ले हैं। अपने विरित्न प्रकारके प्रकृषे समारा पहल पाने वर्गविदेशी असूरोका संक्रार विकार है। आयो व्यक्तिकारी इरकारनरीको अध्यक्तार प्रीतानक विकास विकास है और क्रवर्षे कार को समूच्ये हमा हैने। अन्य प्रवंधा कारण है। हैला क्रेमेनर की मनुद्धान है आपने बरेगा, ईन्सी, हैय, अस्तर और करता नहीं है। चनित्रमा के पत्ना, के के बैक्टे समझे है। अन्यतः । एक प्रतिन्तिः अन्यते अन्ये प्रत्यानीकरे ference that within that tarties arrest trees पाल क्यों और केंद्रकों पालन करते हैं। प्रत्यके साव अप प्रतासको प्रथम प्रतिकोची शक्ती सकती और क रेवें और बुक्ति रूपन रूपना प्रमाने कार्य कार हो जारे है। उद्धार और संबाद क्षेत्रों ही आपने उत्पाद हुए है। आपने प्राथमिको सन्दर्भ कारान्थी साथ प्राथम थी-को अलीविका कार्ग किये हैं, जो अवस्था न से बोर्ट कर क्या और प अपने यह समेदन ("

श्रीकृत्यांचे आयां आर्थुर क्यारी इस अवस्य सुनि वालंड इस से गये। यस व्यवस्त् अध्यानाने वाक—'अर्थुन । इस इस्तार की से और में इक्तारा प्रकार है। यो मेरे हैं, से इससे की क्यार है और को इस्तार केनी हैं, व्या केरा केनी हैं। इस पर से और में न्यायामा। इससे मेरे स्थित के और में इससे । इस केनोंने कोई असर नहीं है, इस केने इस सामा है।' किस समय वानकार संस्थान अर्मुको का बाद का से में, अर्सी समय वानकार संस्थान अर्मुको का बाद का से में, अर्सी समय वानकार संस्थान अर्मुको का बाद का से में, अर्सी समय वानकार संस्थान करनेने सिन्ने अर्था कुछ वान अनकर कार्म सन्ते।

अंगर्धने का—'गनुसूता । की जाता और वेसर पुनिषे कुट कुट है कि वृक्षिये जानमें जानो अधिने हैं किस निर्माण काम्यांक काम्या संभावित कृष्टि की । परमूर्वामधीने पुनि का बात कर्य भी कि जान सम्पर्धना निर्मा है। जान बन्दान, जा और बन्दीन को है। पुनियत । सभी जान सम्बन्धे क्रास्त्रम बाह्रो है। अपन पहासुरुवामय है और इससे सम्बन्ध होनेक्टरे बारकास को है। हेल क्यूकाकी कहा का। आप प्रकार हेक्साओं के सामी, स्य प्रधानो कामानो सम्बद्धः, स्थिकां और मोश्रर है-क का नामकी कही है। मैंने बाल्य अपने विक्तीनोंक प्राप्त करणकारों प्रोत्ता है, वैसे ही आप क्या-संबद-पर आदि वेपाउनीये बार-बार चेस्की बाते हैं। कर्न आपके बिरतो, पूर्वी अपके बैरते और बारे क्वेच अवन्ते अरहे प्याप्त है। उसर सन्तरन पूरत है। नेतृत्वासी कं अली, प्रक्रमणे, अधिकांके मुक्त, प्रक्रमानाम करणा और सम्बद्धी संपातियोके स्वयं करणास्त कालें करने पहलि होनेको अस ही है। आर बढ़ने की न दिवानेकारे मुख्याल क्षानिकेत हुई क्षान्त कार्निकीकी पार भी। है। तक अबोर प्रमु है, सिंगू है, क्यांबर है और आपको प्रतिको से एक सम्बं कारोने प्रत्यों हे से हैं। सोचा, क्षेत्रकार, सरक्ष्यार, क्ष्में दिवारे, सामास, पदार और कां-का अपने से सोवील है। अरिप्लेकी पार, केन्याओको सरस्या और संस्तरोह सरका कार्य आयो ही अनिक है। साथ सारक अनेनारेक हेना है, हारीओं में beit gereit werd gereit gete feiten mirt fie रोक्स । वे क्यानेकी पाने, क्यूक्रमाई मोन और अक्टबर्क सामी है। मुक्त-बेर्ड भीरवासरिकी भी गरेखोंकी को सकते कार्रे कर, का निर्मा प्रकारी कर है। मोरवंग बेहेकारेने हमार एका होन रिना, और पंत्रकोशी क्रम क्रम क्रिक और एकाओंने उत्पादन करी प्रधाने क्रम क्षाच्या रचनमा सोम्बे केटी क्षाउधर स्थीत केन्याका । प्याप्तान । वे काली है कि पायीन समुख्ये अर्थुन, चीनरेन और आयोद स्वीतिका और बोर्स नहीं नहीं पढ़ा प्रकार । बिहर की भीनारेन और अर्थन मेरी एक नहीं कर सके। विकास है इनके बार-कैकाओं । इनके जीते-की कुर्तीकर क्षापार को बेक्से क्षेत्रिक है। यह बढ़ी क्षूर्वितर है, जिससे नामान्य सर्वान्य क्यानेको इन्हरी स्थाने स्था प्रसिद्धानुको निकास क्षिप्त वा । प्रतिने बीन्कोनको सिन् केवर बार प्रात्मेकी चेक की भी । चीन्सेनकी आप केर की, किय का कर, में में को-यह द्वारे का है। विश् समय बीमारेन प्रयानकोटि सहके की में में में है, पर सारव क्ष्मेंकाने इसे प्राप्तिरे वैक्साबार प्रकृति हाल हिना वा । अनरम हो में नहीं होत-स्थान रेसार निवार आहे। स्वीकेने क्रिकारेने भी काने बोर्ड बतार नहीं करें। किस समय इक्टों कर अपने पोत्रों कुमेंद्रे क्रव कार्याका भवती हो रहे थी, जाने आन हत्त्वकर अने कार इसलेको बेहर की। केल मीन कर्न गरन, और औन मनुष्य कर सकता है।

बोक्ना ! भूत क्षांची चोटी महत्त्वर कृतासमे परी समाने करोटा और वे भन्ता दुश्व-दुश्व देखते चे !' इंग्रहेको आंसोने सोस्की करा का करो ! का सम्ब हैंड इक्टबर देने समी ! उसकी सौर समाहे काने समी ! साने सामोको कृत रिभाग और महत्त्व कारते क्षोको मानर रिट काने समी !

हैन्द्रने का—'अंकृत्य ? यह कारणोंधे तृष्टे सह वेरी
पन करने व्यक्ति । एक से तृष्ट में सम्बंधी है, कृते
अविकृत्याने अपन होनेके कारण में चौरवक्तिओं है,
हीरते तृष्ट्रने सब्दे पेरिका है और चीने हुक्त केंद्र पूर्व अविकार है स्था तृष्ट मेरी एक अल्पेने स्थाने हैं ।' इस संकृत्याने गरी अपने चीनेके स्थाने क्रैंच्यीओं सम्बंधीय करोंद्र का—'कारणांधी ! पूर्व कियार क्रेंचिक वूर्व हैं,
स्थाने कियाँ भी इसे एक केंपिन क्षेत्र के क्षित्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र वालोंने बदसर क्ष्त्र संक्ष्य क्षेत्र के सम्बंधिक अनुवृत्य हैया। हम होना का करों । मैं सुनने सन्त अपने क्षत्र क्षात्र है कि हम



प्रमाणनी क्योगी। क्यों अवस्था कर क्या, दिनामी प्रमाने-प्रमाने के मान, पृथ्वी क्या-क्यू के कान, कपूर स्ट्रार जान, परंतु केंगरी। मेरी क्या कानी खुटी नहीं के सकती।' कैंगरीने श्रीकृत्वाकी करा पुनवार देखें नजरते अर्जुनकी और देखा।अर्जुनने कहा—'देखें। कुम देखें का। क्षीकृत्वाने के कुछ था। है, किस है होगा। उसे कोई सार भी सकता।' कुछुद्दाने कहा—'कहिर। में होगाओ, हिसाकी केल्डिकाकुओ, फीलरेन कुलेकाओं और अर्थुन कर्माओं कुर क्रानेने : कहा हमें कारकार्य और परवान् संकृत्यानी कुछुवा। कहा है, तम सार्थ कुछ की वहीं बीट सकते। कुछुवा। कहा है, तम सार्थ कुछ की वहीं बीट सकते।

का सबसी इति पानस्त् क्षेत्रकारी और पूर न्त्री। अध्यक्षे वर्गराव वृत्रिक्षेत्रको सन्त्रोतित करके us-"out | की का स्था में प्रत्यामें होता से अन्यको कृतन कृता नहीं उत्तरन पहला। यदि पुरश्चेती पुत्री पूर्व को ने कुछो, का ने में सर्व को शता और बहुर-के केन विकास पहला अन्तर्ग रोक केता। मै बीन्योक्टब्स्, हेन्यवारं, कृतवार्थ और नहींक्सी क्षात्रका कृत्यको कक्षा — 'शावन् । तुथ अपने पुत्रोमे क्शा का कारको । का करे ।' कुर्यं केरले एका गरन्तरे सिलानी विवर्तन करने की, का वे अने पुराता। वर्तत्व १ करी कुछ कारत से जान भी राज्यका हर है। पूरते निया सम्बद्धे है का-सन्तरिका निरमा हे मान है। सार-बार क्रेन्टरेकी देवी परण्ड कारत हो माती है कि सामी सबी क्रमी ही औं। क्रियोरी हेल्लेस, युश्य चेलमा, दिस्सामा क्षीक और प्रदान केंग्स—में बारे को प्रताह शुरू है। इसी करूक सीवा है केवर है। भी से कार्र करी बार्र है, परंतु ज्ञाने पहल करते पर-पहलर है। यूसी एक विनमें ही सारी सन्तरिका कर है जेसे है। भूका पूर्व आहमें केर बात है। को, अर्थ आदेका किन ओने ही नक हो कता है और प्राचीर प्राप्ता विकास की यो गाली-मानीस होने राजनी है। मै राजा कारदाको करके और भी कहा-ने क्षेत्र मानवार । पहि वे नेते कहा जान तेते को पुरस्तकका करवान होता, नर्गती का केवा। यह वे मेरी प्रोतीन्तरूनं हिन करनेको स्रोतार भूषें करते के में कामूर्वक उन्हें कह देख । जोई उनके चुना है राज्यात का निक सामानवार प्राथम पक्ष होते से मैं कई पह क्रमा । का बारू मेंर प्रत्याने न ब्रानेटे हैं कारने पुरस केत्रकर पर मेटे किमीर चुना सी और साम मैं नामको इस Personal Spectrum (§ 117

वृत्तिहरू पूर्व— 'जीकृष्ण | तुन का समय प्रत्यामें भूते तो बार्ड के और जीन-मा बाल बार के के 7' जरावन् अकृष्ण वक्— "वर्षण्य | वह समय के सामका और सम्बंध मनावार कियार भी भार बात बारोरेंड दिने प्रत्याने बाहर बाव जब का 1 विशे समय जानके राजपूर्व काने मेरे सामुख को नवी की और विश्वपारको सुसाके कारण के को परे प्रकार काले हत कर करा क, का करा है से वर्ष स और उसर दिवासाओं कृतुस्य समाच्या कार भारतमें प्रस्तापर कार्य कर थे। 🖦 अपने स्ताकाईसंबैत क्षेत्र विकास बैठक को कराने अन उपने स्थानोक्त संदर्भ करने एका। सन्दर्भावेत, प्राप्त व्य-स्थ होने राने । असे नहीं सोनोसे इस प्रकार पूछा कि 'कार्यकार पूर्व कुछ। कहाँ है ? मैं उसका परण्य पूर-पूर कर हैंग । स्थ पर्य होता. वहीं में अनेह पार पार्टिय । में अपने प्रकारी होराम सामार सम्बन है कि मैं कुमाओं मारे किया स्टेड्स नहीं।' प्रत्याने कोनोंके और भी बक्क कि पेन्यानामार्थ कुम्बर्ग की किए तित्तुपतान्यों कर प्रथ्य है। इस्मीको स्थान में को प्रशासके काले करिए (' वर्गराव ! कारणे पह कुछ कर-मध्यार प्रमानमें स्कृत करन अध्यक्ष और स्रोप Brance Cour hit was night even A was right पालकर प्रत्या पर्वता अंदेश की महीकी क्या देशी, 🕮 पूर्व बहुत क्रोच आया और मैंने अलबी बस्तुकर क्रिकेट करके मही विकास विकास कि जानहीं बार आराफ पार्टिने । मैंने क्रांत प्रत्यको बाहर निकासको असकी स्टेप्ट को, स्त पह सम्हाने क्ष प्रकार प्रेरो असे और विकासीय विकार के क्षेत्रकान प्रकृत्र समागर पुरुषे क्षेत्रने प्रकृतनो सामग्राम । क्रम संबंधात हमारेनीने केर युद्ध होता का। अन्तरे की कृतवाली समा समावे प्राप्त परवारी कर केवा को करण है कि में का काम हामान्तिने नहीं था। संब

है औरकर क्रम्या जीवा तक जातून हुआ कि इतिवासुत्यें कारकुरके क्रम्य आपलोगोचों जीत दिला गया है। उसी क्रम्य में कांग्रे करू यह और इतिवादुर होकर नहीं अपना है।

प्रमाण क्रिकामी पुनिश्चित्ते पुर्णन स्थापी कम विकास कुन्नी और अपने क्यां क्रांस कारेंसी अनुर्वत पांचे । अनुर्वति विक स्थानन प्रत्यान सीवन्ताने वर्गराव पुरिव्योतको प्रतान विका, भीमरोतने मगावाप् क्षेत्रमञ्ज्ञ दिल पूचा, क्षेत्रमञ्ज और अर्थुन पर्छ एने, स्तुतर और क्यांपने को जनान किया, बीचा पुरेशियो कान्य क्रमान क्रिक्ट, क्रेम्ब्रॉन अपने स्ट्रिकोचे जीव्याच्या निर्पे क्रिक्र । क्रीकृत्या अवने क्रायंत्रको सुरक्ता और अधिकपूको वेताका पुरिक्षितको कर-मार बीरम है पुरस्कारे हैंस्पे स्थान पूर् । सहरकर पुरस्कृति प्रीवक्षित प्रतेको लेकर अवने जनके किये प्रकार किया। कियानानी का महस्त्रों राजी गाँउ क्षोजुन्ती (प्रकृतको सी) को केवर अपनी गरारी श्रीकार्यको स्था स्त्री। सनी जना-स्थापन अपी-असे के तौर को । क्वानी बात क्वा-सुराधा असी प्रमाणी जीवन्य पाहर, यांच्य सोच सीचे नहीं । यह कुरू कह serge un | Bert ment und eduber unten कारण अपूर्णिया प्रकार विका और उन्ने आहे क्लेकी अनुस गाँधी और ऐसकोरी कहा—'हमलोग रेप deute wir i'

# हैतवनमें पाण्डवोंका निवास, मार्कण्डेय मुनि और दारभ्यवकका उपदेश

वीत्रण्याची वाटी हि—सक्तेवय | याव प्रणान् सीवृत्ता साहि अपने-अपने प्रणानों सिन् प्रणान है गये एक प्रणानीकों सेन्स्य देवानी प्रणानों केंद्र-नेत्रपूर्वण प्रणानीकों सीने अध्यान विक्या | इसकेन पुण्याको प्रपानी, साहित्रों और प्रणान्त्रणीयों सेन्स्य तीत विकासि सेन्स्यानों सारात प्रणानों किने साहब हुव्या | याव प्रणान प्रमानी नामीका वर्तारा पुण्यान्त्रम् आस्त्र सामा अध्ये काने कहे हो गये और वर्तारा पुण्यान्त्रम् अध्यान प्रणानकों, एक्स अर्थायको वर्तार पुण्यान्त्रम् अध्यान प्रणानकों, एक्स अर्थायको वर्तार साने हो गये और अर्थाय व्यवन हम्मे । यह सम्बन्ध का वर्तार प्रणाने हैं अपन्याने सामा—'हा स्वयन्त्र | हा वर्णाया ! वर्तार प्रमाने हम्मे अर्थाय अर्था—'हा स्वयन्त्र | हा वर्णाया ! कुल्लेकिकोनं नेतु और क्यों जानी हैं। जान इस के तथा हम स्वतिकोको क्रेड्सर कार्ने जा से हैं ? क्या दिया कभी अवनी संस्थाने इस जानर अवना करता है ? कुरबुद्धि कुर्नेका, स्वतुत्रको कार्यको विकार है, विक्रीन जान-नेते वर्णाना स्वतुत्रको कार्यको हुए केरकार दु:सी करना पास है। अब अवने व्यवको हुए केरकार इस्तान क्ष्मित्र कर्ने नहीं वरता स्वेड्सर कार्ने या से हैं ? जान इस्तानेगोको क्यों नहीं वरता सो कार्यको पास कुल्यन क्ष्मित्रकार कर्नुको साई जनमें हैं ?' जनावी पास कुल्यन क्ष्मित्रकार कर्नुको साई जनमें सेवे करने क्ष्मि —'क्राविका क्यारियों । क्योग कर्म विवार करनेके पाद यह क्षम्बान क्ष्मित्रकार अस्तान क्ष्मित्रकार क्ष्मित्य मोनोने वैसा करना स्वीकार किया : उन लोगोने कुविद्वितके च्यून कड़नेपर पाणकोको सर्विने करके विश्वसके सस्य अपने-अपने परकी यात्रा की :

असाके वाले जानेपर सरकारिक वर्णात्व वृत्रिक्तिने अन्तरे पारकोरी बाद कि 'हमें बादा करेगक निजंग करने रहता है। इसलिये इस बंगलने वहाँ फुल-फल अधिक हो, स्वान रमजीय और मुख्युबाब हो, कविनोधि परित आसन हो, देशा प्रदेश के देन पार्विये।' अर्थनने वर्णात्मका पुरुषे स्थान सम्बान करके कहा कि आपने को को करि-पूर्ण और महत्त्वांमां देना की है। महत्त्व-लेककी कोई ची वातु आपके देनो अञ्चल नहीं है। इसरेको आपकी नहीं प्रकार हो, पहीं विकास करना पाहिले । पहाँची १ अस को कर पहेला, काका नाम देखन है। कामें मीता करते भरा एक शरीबर से है है, रिन-विरोधे कुल भी विराय की है और अवकृष्ट पर भी यूने हैं। यह यह बहिन्सेंड कारको परिपूर्ण पहला है। जुड़े से इक्त करने पहल अच्छा रूपक है. पांतु आपको अनुसार हो हनी : अहंद बोरिको । मुनिहारी साहा कि अर्जुर । मेरी भी भारी सम्माति है : आओ, हानसेम क्रैक्टर्वी करें।' विक्रम के सारंगर अधिकेंगे, संन्यारी, प्रकारकोगं विकास, बन्द्रास, बन्द्री, उत्ते, बाला प्राथमिक साथ प्रयोग्य प्राथमिक विकास प्रयोग प्रिया



व्यक्तिय तमार्थ एवं परित समामको सामनको

वर्गताको स्थाने आये। वर्गतानी वयायोग्य सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः स्थानः इत्या पुरासेसे सदे व्यवक्षाः पुरासी व्यवको सम्बद्धाः सेव स्थाने स्थानेतः, सैपति, अर्जुत, स्थानः इत्ये और स्था वर्गतानके पास सम्बद्धाः सेव स्थाने व्यक्ति स्थानः वर्गताः स्थानः अतिथि-अन्यानसः, मानि-मूनि और ब्रह्मलोको सम्ब, मूल, धालमे तृत वान्ते स्थान पुराहितके प्रतिकृताः होती । समृद्धिकालो प्रश्वान (स्थान्या सम्बद्धाः सेव्यक्षाः होती। समृद्धिकालो प्रश्वान (स्थान्या सम्बद्धाः सेव्यक्षाः होती। समृद्धिकालो प्रश्वान हम्मानका सम्बद्धाः सेव्यक्षाः हम्मानका सम्बद्धाः हम्मानका हम्मानका सम्बद्धाः हम्मानका स्थानका सम्बद्धाः हम्मानका सम्बद्धाः हम्मानक

क्षी क्षेत्रों कर केमाने महातून पर्याचेन पानायोके सम्बन्धर अने । महामनको पुनिर्द्धरने केन्स, गावि और regulat gurter transporter Arbeiten geren-कारण किया । वार्व योगनी पहारक सम्पन्ती सम्बन्ध और क्षेत्रकेची और देखकर मुख्याओं रहते। वहाँचम सुनिर्दित्ते पहर-'मानके । अन्य सभी समग्री मुझे इस इसाने हेकार संबोधके की कुछ बोल की को और अन मेरी और पेकाकर पुरस्कार को है। अन्यत क्या अध्याप है?" क्रकेन्द्रेयको प्राप्तः— "मै वृत्ये इस द्वार्ग देवन्त्रा अस्त्राओ भी कुल्या का है। जुड़े विक्री बताबा करें। की है। क्ष्मानेनोको इत क्ष्माने वैकासन युक्ते सामनित् इतारमञ्जून क्कार् राज्यको स्था है असी है। उन्हेंने वितासी अब्राजी क्षायात करून रेपान सीता और त्यायमध्य साथ क्रमान किया सा । उन्हें की स्थानपुर, वर्तनपर विकास समय हेका का ( फलकर राजस्य इसमें की बराबार, नवसो की क्या केरेकी स्थीत राजनेकारे, महत्त्वाची समा निर्देश में। किर की उन्हेंने निवासी अवताने करकार सीधार करके अको कर्मका करून फिन्ह । कहरि अर्थे संस्थाने कोई भी बीत भूती समारा था, जिन भी उन्होंने प्रचोधिन मोगीका क्षान करके करवान किया। इससे व्या रिट्ड होता है कि पनुष्पको भी सङ्ग बारकार् हैं —हिल क्रम्युक्त अवर्ष नहीं कान कार्कि । कारमानीर कोन्यहे इतिहासकीरम् राजा बच्चन, जन्मरब साहिते सानके बागम है पृथ्वीका हासन् किन्त का 1 वर्गक्य I इस समय अन्तरमें ब्रन्तरा कर और केव वेर्डेन्क्यमा क्रे पक्र है। तुन्हारी व्यक्तिकता, सत्यनिहा, सम्बद्धार पनको समक अधिकोधे को-को है। हम अपनी अधिकांके अनुसार कामानुस्ती तमाना कर हेरेके 🚌 अवनी हेमोचनी एमलक्ष्मीको कौरबोसे हीन लोगे, इसमें कोई स्टिप्ट वहीं।" इस प्रवास करका स्वास्त्री पार्ककोव क्षेत्रीक केन्द्र और वान्क्ष्योंसे सम्बद्धि नेवार स्ता दिलाकी और को नवे।

कारी महाराज पाणाम क्रियानी आधार छाने समे, उसरी मा निरास का प्रक्रणोंसे का क्या। उस कार्य स्था अरोपालों अप्रध-पास ऐसी नेहामनि होती थी, जिससे बह इक्टबेकके समान कन पहल का। व्या करि के सन्तर. अभिने अपने का का कर्ता। एक दिन सम्बद्धक दनिने प्रध्यको प्रथम वर्गराम मुचिहिरसे बहा कि "राजन् । देखा, क्षित समय क्रिक्टको अञ्चलीये स्था और उसकी स्थानीकी बाहाति प्रकारिक के को है। पुगु, अधिक, बरिख, बरुका, अगवन और असे गोलके जन्म-जन्म तनको ब्राह्म अस मनिक कर्मा इस्से हुए है और कुन्नरे संस्कृतने मुश-सुविधाने साथ अपने-अपने धर्मक धरान कर हो है । मैं तुम्बचेगोंसे एक बात करना हैं। सन्वनमेंके साथ सन्दे । का बाह्य और अधिय विक-स्थार क्रम क्रमे हैं. एक-पुरारेकी स्थापना करते हैं, तम उनकी साति और अधिकादिक होती है। फिर हो से अधि और प्रकार सम्बन हिल-पितनार प्रसानोके बन-के-बन पान कर अपने हैं।

दिन प्राप्ताच्या जाताच तियो दीवेकारात्रक साथ प्रचार करनेकर की विकासको प्राप्त स्थेक और परस्थेकको प्राप्ति नहीं हे समारो । वर्णनामा और अवंशासमे ज्ञांन निश्तीनी (कारणका अवर्थन सेका **है** देशा अपने इससीका राज कर क्यात है। एवा व्हर्णको स्वयन्त्रोको स्वयन्त्रापे ही स्वर्धन क्का क्षेत्री। स्थापन एक अनुसर ग्रीह और अभिन एक अनुवन बार है, ने दोनों का साथ रहते हैं, तब कार्यने सुबर-कर्मिको अधिकृषि होती है। इस्तिन्त्रे विद्यान समित्रको कार्तिके कि अलाह करतकी लाहि और लाह कराकी बृद्धिके विक्रों प्राथमिक केमा परिषे उसने अन अन्त करें। कृतिहेत । तुन से प्रकानमध्य प्रकानोक्ते साथ उत्तय कान्युर करते ही हो। इस्तीओ ओकने हम बहाबी हो सो हो।" कोरक कुंबद्वाने बड़े अस्तातंत्र साथ दश्यावय पुनिहे कार्यका अधिकादः विकास प्रकृति वेदानास, गास, परपुराण, कृतुस्त्रम्, इनस्त्रुत, धानुनित, इत्येत, अर्थित्रेयम अती, बहुत-से जनभारी बहुत्योंने सुरभ्यक्त और धर्मपुर पुरिन्देशक सम्बद्ध दिखा।

---

## वर्गराज युचिहिर और श्रीपदीका संवाद, क्षमाकी प्रशंसा

रीरपारमधी कार्य हैं--वालेका । एक दिन प्रधानेक प्रथम कामार्थी भागात कुछ क्षेत्रपास-ने होनार होपारिके माम बैठकर बालकीत कर दो है। कालकेटके विकासिकेसे बैंग्बी कहरे रूमी-—'लबकुर इस्तेवन बढ़ा हर और इस्तब है। इसलेगोधी वृत्ती देखकर को सन्दिक की से क्षाप जी होता। हरे, हो । असने हम्लोगोंको प्रशासक ओक्स्पर पीर बंगरकों पेन दिया, पांच को रवीचर की पहरसाय नहीं हतह । समस्य ही उसका इस्त जोतायुरे कम होगा। एक से उसने कार-सुरूपे जीव शिष्या, विश् अवय-वेसे साम्य और वर्णावा फुलको मरी समाने बाडोर कान बड़े और सा अपरे रियोंके साथ चीन बढ़ यह है। उस में देखती है कि आयानेन सुन्धरी परीन ओड़बर सक्त-सम्बद्धे विर्धारीयर से रो है. को इन्हें-रोज्य विकास पह का करन है और पै थे पाली है। यहेन्यरे एक सामलंकोच्छे के साहे है. सारत्येकोच्या परीत प्रकाशनीत होता था। साथ अस अवेतरे मेले-कुमीले जंगलोटी पटक रहे हैं। यहाँ प्याप, कैसे भारित मिल सकती है। अपनेह बारवेंचे प्रतिवित हमारी प्राथमिको प्रचारसार योजन बराया जाना का और आज इमलोन फल-मूल काकर जीवन-निर्वाह धन रहे हैं। धेरे ध्वरे

कानी भीवतंत्रको बनावती और १:की देखका आयो। निवारों करेज क्यों अही उपक्रता ? शीमलेप आहेती ही रकार्तियो प्रक कोरबोको यस असमिक क्रवाह रहती है। पांच अध्यक्त एक व देकका पर अनेकका या जाते हैं। अर्थन के ब्रोहके होनेका भी हजार पहिलासे पार्शकीर्व अर्थुनके लगान बलसारथे हैं। इन्होंके अन्य-बरेशरओ ब्रोक्ट क्रेकर बढ़े-बढ़े एक अनके चरनेने प्रवास और आयके काने आकर महान्त्रियों होता काते थे। वही हेवता और कन्योंके पुजनीय पुरुवसिंह अर्थन आज चनवासी हो से हैं। अवनंत्र विकार प्रदेशका अन्य क्यों नहीं सेता ? प्रविचय रंग. विकास स्टीट, स्थाने कार-सरवार और बीराहमें अस्तिय। देशे उन्हरू और स्वदेशको बनवासी देशका अत्रप क्यों क्य हे से है। एक ह्याची की, भारत पानकी माराय, श्रीब्युक्तकी बहुन और मान्युक्तेकी परिवास पत्नी में आज कर-यन पटक रही है । अवस्थी सहन-स्रतिको बन्द है। शिक्त है, अवन्ये करेण नहीं है : जिसमें बहेश और देश न थे, जह कैसा **श्रील । को रूपम आनेपर अपना तेज नहीं उन्हर प्**र सकतः, सभी अभी अला विराधार काते हैं। स्वाओंसे क्षण्या नहीं, प्रक्रमके सरसार मनकर करना शाहिये हैं

हीरहीरे मिर कहा—'राजर् ! यहने क्यानेने राजा चरित्रे नापने विकास प्रक्रांसरे पूजा का कि 'विकास ! साथ जान है का ब्रोप ? अप कम करके पत्रे डीय-डीय सम्बाहते ।' प्रक्राणीने प्राप्त कि 'क्षान और स्रोप क्षेत्रेकी एक व्यवस्थ है। य सर्वक स्रोध स्थाप है और र बना। में पूजा सर्वक क्षम करते जाते हैं उनके रोक्स, पूर, राख और उदार्थन वृत्तिके पूरम की कटू कवन कहकर विराह्मार करने राज्यों है. शब्दान करते हैं। पूर्व पूजा श्वासांस्थ्यो क्लाका कार्यो क्षीको को इकरता मान्यो है। किन्द्री की लेक्कानुसार कर्मक प्रस्ने अपनी और पालिका-वर्षते प्रश्न होपन अपने परिवा भी अपनार कर करती हैं। इसके अतिरिक्त के पूरव वाफी क्षमा नहीं काला. क्षेत्रस प्रोच की चानत है, वह प्रोचके अलोकरें अवसर किया निवार किये राजको राज ही हैरे क्षाता है। यह विशेषा विशेषी और अधने प्रद्रावका पत् है बाता है। सब औरसे अपयोगित है केरे बहला उसके अनकी अपि होने रूपती है, सम्बार निवर्ण है। सरके चंदने संदर्भ, हैंचा और हेव क्यो स्थाने हैं। इससे अलो सहस्रोकी मुद्रि होती है। यह कोच्याक अन्यायन्त्रेक विक्रीको एक है बैठक है: इसके प्रकारकार देवारे, प्रथम और सकी प्राचीने भी को क्षत्र क्षेत्र कात है। यो सको देव-कानी साम है दिलाता है, अल्ले सोच दाने लगते हैं, कानदी चानई करवेते क्षत क्षीय होते हैं और कारों क्षेत्र देखकर वार्ट और वैतन हेरे हैं। इस्तिकों प सो इनेसर उज्जानस कर्मन करना काहिने और म हरेका असंस्थाना । सम्बन्धे अनुसार जन और ससन क्ष करत प्रतिके। यो सनको अनुसार स्थापन और क्रमाच्ये क्षाप्त करात है. को का लेक और परस्थेकने सकते प्रदेश केती है। अब में भूने क्षण मार्टिक समारा बसराक्षा है। यदि विस्ति समुचने व्यक्ते सम्बाद विस्ता है. रित कारो कोई कहा अध्यक्ष का तान से स्वानेके उनकारकर हीं। रक्षका को अन्य का देन वादिने। यदि और नाम मूर्जतालक अवराज कर है. तक भी क्रम कर हेम काहिने: क्योंकि एक लोग क्यी कारीये बहुर नहीं है सकते । इसके नियात को लोग कार-सहस्का जानाव करते हो और सहते हों कि काने साथ-शतकार अपराय नहीं किया है से उन्हें केड़ा अपराध करनेपर भी परा एक केन साहित । कृतिस पुरस्तेकी क्षमा नहीं करना कार्निये। इस बास्का जनसम्ब से क्यो क्रिसीक्य यो क्रमा कर केश सकिने, वर्ण दूसरी बार क्या अकार हेना वाहिये। युक्तामी का और कोयल क्षेत्रे जनसंख्ये पुरुष चलाने जिस्से जा समाने हैं। मूहर पुरुषके देखे कुछ भी अलाका नहीं है। इसलिये पुरस्ता हो बंद सामन है।

कार देश, कार, प्रापको और कमकोरीमा गूर-पूरा निकार करके मूह्यक और काराका मान्युर करना चारिये। कपी-कारी के अवसे के इस्त करनी पहली है। वहि कोई कार कई कारोंके प्रतिकृत कार्य करना है से को इस्त न करके कोशके काम तेना काहिते? हैं अपीने आगे महा— 'रानर्। कृत्यको कुत अवस्था-पर-समस्य करने का रहे हैं। वनका साराव असीन है। मैं काबानों है कि उस उनकर समेव करनेका काम 20 मना है, आब उन्हें क्षण न करके उनकर कोण क्षरियों।'

वृधिहरने कहा—कि ! क्युक्का सोधवे करने न होकर क्रोकको अपने बक्को काना काकिने । जिससे स्रोकपर विकास प्राप्त का हो, का बाराज-आवर है गया। सोको कारण क्ष्मकेक कर केल सबस देखता है। में अवन्तिक हेत प्रदेशके करूने देतरे हे सकता है ? होती प्रमुख यन करता है, मुख्यानीको चार क्रांत्रका है, जेक्क पूजा और वास्थापासारका क्कुलोका भी करोर कालीको जिल्लाम करता है। प्रत्याः है। क्षेत्री के पह पहल है। क्षेत्री पहल पह पड़ी सपक समस कि एक पान पानिने, एक भी को माने आना गर क्राच्या है। को इस बातका की पता नहीं करना कि क्या करण करिने, कब करें। से बन्ने कर उनका है। का विकास केवाओं का अल्ला है, यह कामें केवाओं पूरा करण है और ब्रोकोर अलेको अलकान मनके अपने-अक्टबंदे प्रस्कृते कार देता है। प्रतेष क्षेत्रीका पर है। सुद्धियान् क्यांने अवने लेकिय जाति, पायनेकिय सुख और पृथ्वि क्रम करनेके हैंको क्रोकार विकास करा की है। क्रीसके क्रेम विशे वहीं का समाने । इस्तेने, बढ़ी सक्त स्रोकने-विकारनेके की क्रिक्त होन भी अस्त । से पहुल क्रोप कानेवलेयर भी कोड की करता. एक करता है, बहु अवनी और छोब करनेकारेकी ब्यानकटके एक करता है, वह बेन्नेका रोग तुर क्रुलेकाल जिल्लाक है। बहु बोलनेकी अपेक सक केराव कानामकर्ते है। क्राताको अधेक कोमान्यक स्तर्भ है। इतेकारी अधेका क्षमा केवी है। मदि क्वीयन मुझे पार भी करे के भी मैं अनेकों खेजोंसे भरे और प्रक्रमाओंसे परिचक्त ब्रोकको केने अन्य समाग है। मैंने यह निश्चय कर दिया है कि सम्बद्धारी पुरुष्यें, जिसे देवाची बढ़ते हैं, ब्रोम होता ही वर्ति । को अपने कोभारे अन्दर्शिसे सामा कर के हैं, उने ही देवाले सन्द्राम्य काहिते । कोची मनुष्य का अपने कर्तव्यको है पूर करते है, इस उसे कर्तवर सकता पर्यादको स्थान है, क्षे केले सकता है। ब्रांध्ये एस्य अवध्य प्राणियोको पार करवा है, पुरुवनोक्टे कांधेड़े क्यन करता है: उस्तीओ पहि

रायनेमें तेन हो से पहले ह्योकको ही अपने बहाने करना चाहिये। काम करनेकी चतुर्रातं, उत्तरर विकट प्राप्त कानेके क्यानका विकार, विकार प्राप्त करनेकी स्त्रीत और स्कृति तेमस्वियोधे गुल है। ये शुल ह्योची समुख्ये नहीं स्व सकते । स्पेक्ष स्थानो है इसकी अहि हेती है। अनेव स्थापुरूक मरिणाम होनेके कारण मनुष्योकी कहा है। इसरिजे क्रोप क्रोक्स क्षाप के बाग करिये। एक कर अपने वर्गते हा बाना भी सकत, परंतु क्रोब करना अकर नहीं में भूकांकी मत यह कार सम्बद्ध ग्रुप पान, क्रमा राज सेसे का राजका है। वर्षकोंने वहि करावीलका न हो हो सब खेल आमलमें तब-इम्प्रकार कर किंद्रे एक द्वानी हरतेयाँ द्वान दे, राज्य देनेकाने गुज्यनीयर भी जार करनेको काम हो आहे. तम को कहाँ कर्न के ही नहीं, अधिकांका नक हो गांव । ऐसी अवस्थाने क्या होता? यहाँकि बहुतेने नाती, बहुते भारतेमें नार, तिरामारके बाहोने तिरामार : निवा कुरके, क जिलाको, यति पर्वाच्ये और धारी परित्यो जुः कुन करो । कोई मनोदा, बोर्स क्यापात, बोर्स सीहाई न हो । यो पानी केरेक्ट भी, नारनेपर भी क्षमा करना है, क्षोधको बधुने करता है, म्ब स्ताम विद्वार है। सोची नुर्व है, नरसमा सारी है, सा सम्बन्धे प्राप्त कारमध्ये ध्वासील पृथ्वेक सीवर्गे क्ष्माको साध्यक्ता गीत गावा है— क्षांत कर्न है, क्षम का है, क्षमा मेर है, क्षमा भागमान है। यो महत्व अन्तर्भ हत

क्रोंक्ट्र सरमधे करते हैं, में स्थे कुछ क्षा कर एक्स है। क्ष्म हार है, क्षम पान है, क्षम हो पा और परिचक्त है. क्या पर है. क्या परिवार है. क्ष्मिरे ही इस बंगाएको व्याप्त कर रहा है : अधीरकीकों को एकेक निपन्ते हैं, इससे की जनके लेख इपलागेको पितने है। बेट्डॉक्ट्रे, एक्सिक्केको और समित्रहेको इसरे-स्मारे क्रेक निकारे हैं। पान क्षणानकेले अवस्थितके और स्थेत जिसमें है। प्राप वेक्जिक्कोका रेख है, सर्वावकोच्या छाइ है और सरक्यानीका कर है। क्या में संस्थेतकर, क्या है सारित है। क्यानें हे को होता. होकोकसम्बद्ध पत्र, बाब और बाद प्रतिक्रित है। केट क्रमको पास, मैं कैसे क्रीड समझ है। जानी पुरुष्को क्षांत क्षांत है करना व्यक्ति । जब तक वहा बार कर देश है, का का रूप का है जाता है। अक्वानीको का स्तेक और परसंख्य केने रेका है। वह सम्पन्न और परस्थेकने कुल गरी । जिल्होंने सम्पर्केत सार सरोमको समा क्रिया है, उन्हें परम पनि प्राप्त हो पनी है। दिन्हें । महत्त्व बारानपरे अधनाहै महिना इस अवार गानी है, इसे कुरवार इस क्षेत्र को के और क्यांका अवस्थान करो । परवान बोकाना, चीकांकासक, अवसर्ग केम्प, सन्द्री विक्रा, क्रांक्सर्ग, प्रकार और प्रतास वेक्स्पन की क्याची ही उल्लेख करते हैं। अबर और क्या ही अभियोक्त सरमार है, यह सरावर-वर्ग है। में सराहित क्षान अन्य और वसाध्य पालन कार्यन्त्र ।

# युचिष्टिर और ब्रैपदीका संवाद, निकामधर्मकी प्रशंसा, ब्रैपदीका उद्योगके लिये प्रोत्साहन

मर्गान वृद्धिको कर पुनक हैन्द्री कह--कर्वत्व । इस जान्य वर्धावस्थ, इसायल, इसा, सरकारके नहीं मन्द्रार स्था लेक-नियाक अवसे एकारके महानाते मिन्ती पर बात प्रकार है कि असमें तथा आको महानाते माइपोर्ने जनायालन करनेपोन्य कथी गुज है। आवशेन एक पोगने-नोम्ब नहीं है। जिस भी आवशे का बहु खाना पह दा है। जान्येर पाई राज्यके समय से वर्धन हेम स्थान पी के, इस हीन-हीन इसायें भी वर्षने क्यान्य और विवर्धने भी प्रेम नहीं करते। ये पर्यको अपने अन्तर्भ में बेह प्रकार है पह बार बहुएग, देखा। और गुफ सप्ते बानते हैं कि आपना राज्य कर्यके लिने, जानक स्वीवन क्यांके क्यांके, सुनि इस बाराव्य कु निक्षण है कि असम वर्षके हिन्ते भीनतेन, अर्जुन, सकुत सम्बंध तथा पूर्ण भी त्यान सकते है। पैने सपने गुफ्तनोसे सुन्त है कि महि सोई अपने कर्यकी दक्ष करे वे वह अपने काकारी एक बनता है। परंतु पुते से ऐसा प्राप्त हो पर है कि सम्बे पह भी मानकी पता नहीं करता। कैसे मनुष्यके पीके उसकी कावा बस्स बनते हैं। अन्य पता स्वर्थ पुतिह सर्वाद करीत बीके पता बनते हैं। अन्य पता स्वर्थ पुतिह सर्वाद करीत बीके पता बनते हैं। अन्य पता स्वर्थ पीके पताकारों पर स्वर्थ पता पति कावा वह, बारेबी को पता है पता: जावने स्वर्थएन पति किया वह, बारेबी को पता है पता: जावने स्वर्थएनका अधियान किरमुख पति वह । आपके प्यापने रेक्साओं किये 'साहा' और निवारोंक किये 'साहा' की व्यक्ति गुरुकों की हो है। साहा और अन्य पति अस्तिक-स्वाद्यानके रेक्स होती ही है। साहा स्वर्थ अस्ति और मुक्तकेकी सारी सावस्थानकाई पूर्ण की थीं, उन्हें तुह किया का। उस समय आपके पत्स ऐसी कीई बाई पति को संबंधित हारिकों किये केसस विश्वविद्या पता किया जाता है और अस्टे बाद अस्तिको एक प्रानिकोची [ शिलाका हेन को हर अपने अपन सीमा-निर्मा है सह है। आवर्ध्य मुद्दि ऐसी उसरों हो नदी कि जनने बन्द, बन, भाई तथा पुरुषकामी सुर्मे हार दिया । आयार्थ हार आर्थ-विपासिको देखकर भी पनमें कही बेक्स होती है, में बेहेक सी है करते हैं। यहण इंपरके सार्थन है, सामने कार्यन्त पूर्व भी भूति है। इंदर ही अधिकोट पूर्वजनके स्वर्वकेतारे अनुसार उसके पुरान्य का विश्व-अधिक क्याओकी स्वरक्षा कता है। की कठवानी कुन्यको इकान्सर गान्त्री है, केने में आदे जना ईसरेकानुसार संसारके क्षकारमें नाम रहे हैं। ईवर सम्बंध बील और बाल करन भारत है, स्थानो देशित पारण और साम्रोतन्त्रो देशात गाउँ है। जीव एक करानुसरी है; वह स्थान नहीं, हेवरानीर है। की सूत्रमें ऐसी को मानियाँ, नामें कुए कैन और कार्याएने रिते कुछ कुछ पराचीन होते हैं कैसे हो जीवा भी ईक्टके अप्रीत है। को पास जिल्लों स्वेन होती है, सरस्यन हो यह होती है। विश्वविके कारण पाछ असी, पाला और कारणी विश्वविक असीन राता है: दोना केरे ही बीच आहे, क्या और अच्यों ईक्से के अलोग पाता है। पोलको दिलके भी सालक कीया-कीय हानं भई है, इसरियों का सुक करे का दु:क इसमेरे सामार्थ है। का बेबरकों के देखाने क्षात्र ना सरकरें जान है। जैसे कर्क-अर्थ विरुद्धि कामुक्ति कामीन होते हैं, तीर्व ही प्रच्ये कामी ईवाओ:। वैद्ये बहुत दिलवीओओ जीतर-ओतलाहर उन्हें कोड् देशा है, बेर्स हो प्रमु जगरूने जीनोंके राजेश-विकोणकी सीता करते को है। राजपूर में के देख करवाने हैं कि हैक प्रतिकोधे साथ नाम-विकास स्थान कामार कांग जी करते: वे से बैस्त कोई सामान पूजा होको सामान कारकार करता हो, फैल्ट ही करते हैं। जब में देशकी है कि अव-वेरे प्रीत-स्वयासम्बद्धाः अर्थ पूजा असीधारि बीयर-निर्मात भी नहीं कर समाने, विकास विद्वार को है। कीर अनार्य पुरुष जुक्त जोगते हैं, अब अक्षेत्र पक्ष १८ मा होगा है : आपको पह विराध और क्ष्मेंकनको समाधि देशकर में ईवरकी रिष्यु करती है, क्योंकि का विका दुविसे कर्तन करता है। यह कर्मक पान कर्ताको निरमत है, दरनेको भार्ति, हो बढ़ विकार रहि करनेका पार जन्मन ही इंक्स्सो रिलेगा। की कर्मका परा कर्मको नहीं निराता, का से अपनी जारिक्य कारण लेकिक बार हो है, को निर्वार मुक्तिके रिन्ये नहा स्तेत्व हो का है।

कार्यक मुध्यिको अस—सिथे । विने कुमारे प्रमुत, सुन्तर और वाहार्यको समय सुन किने, सुन इस समय अधिनकारको

कार कर की हो। दिलें ! मैं कर्नका परस पानेके दिले कर्न जो करता। मैं से दल देश वर्ष है, इस्तरिने देश है जा करन कार्रिके, इस्तरिके का करता है। करा निर्दे का नहीं, बन्द्रकाते अवन्य कर्तव्य करण कार्यने; इस्तेरिस्ये में अपने क्षांत्रका कार कार है। सुवी ! में कॉ-काफे रिने को नहीं करता, को-पालकार कारण जा है कि नेहोकी हेती बादम है और संस पुरानेंने सरका पहला फिला है। मैंने प्राचनको हो करने बनको कांचे लगा दिवा है। किसी भी वर्षेत्र प्रकारे केले करीर क्षेत्र जेल-डोल काय बात है किन्द्रकेन है। यो वर्गको सुरत जाएन है, को वर्गका प्रक व्यो विकास । को वर्ग कार्क जीतकातमञ्ज आगर संबद कारत है, यह कार्य है। मैं तुनों यह बात बड़ी कुलांके साथ कुल्ल है कि अनंतर कारी एंका न करना। करेनर चेनरे व्यानेकारेको सक्तेपरि होती है को कुरिसहर पूका वर्ग और प्रानिकेंद्र क्यानेवर प्रकार करता है, यह बोधने हर हो कार है, बेहनाड़ी, प्रणांत्व और कार्यन प्रणांके ही पन्न गाही कार है। यह करी से बोरोंने करान है, यो पुर्वालय कार्योक्त अन्तरम् वाले कांक वंका काता है। दिये ह अपने हुम्मे कुछ हो हिए पहले प्रत्य स्वयंत्री मार्क्यमेय स्वर्णिको हेका था, को वाहित प्रकारको निर्मानी है। प्रतान, सर्वित्र, विकेश, जाया, लोकहा, शुक्त आहे। प्राची महिन वर्ध-नतराजी ही ज्ञानकारण कुर् है । यह बात तुन्हारे आवने है कि वे लोग दिन्हा केलो एक है, क्रांश-संस्कृत ने सामते हैं और केलाओंसे की क्षे है। इन होगाँने अंचनी कदना प्रतिनो के और वर्षका कारणकार विकास है। में स्तेत बर्मकी हो बर्गानकर कर्नन करते हैं। रूपी ! इस अध्ये कुछ करते हैंबर और बर्परर अपनेक पन करे और न कोई संबंध ही करें। कर्नवर संबंध करनेकाल एकं पूर्व होता है और बढ़े-बढ़े विकासील एवं विकारकोच्छे स्थान माना है। वह को-४३ पहलूकोची कार और प्राथमिकमा जीवान न करनेके कारण असकी है। यह प्रमुखी अपने प्राची अपने प्रमुख्यात्वा निर्देशात करता है और केवल का लोगिएक पाहकांको ही साथ अन्तर है, दिन्हों अधिकोधों के प्रश्न विकास है। यह रहेकोता क्युओंके सम्बन्धे सर्वक अक्षय है। को धर्मन संस्थ करका है, अलो: रीको इस लोकाने कोई प्राथकिय नहीं है। यह वर्ष करनेक की स्वैकिक और पारतीयिक अपनि नहीं कर क्याता : यह प्रकारते हेंद्र मोडमार मेर और प्राक्तिकी निर्मा करने लगात है। बरमार्शी और सोमारे मर्लपे करने स्थाता है। इसके प्रमाणका को सकको अपि होती है। यो यह विश्वको निर्माण क्षेत्रर कांग्रर है प्रमान करता है, उसे अन्य राज्यों अहि होते हैं। ये व्यक्तियों का यह बनता, वर्धक कान नहीं करता, सामोक अलाहन कारत है. का एक क्या से करा, क्लेक क्योंने में उत्तरि नहीं जार बर सकता। एवंत्र और सर्वदर्श अभिनेते एरावनकांका सर्वन और प्रात्पानीने जाना आवश्य विकार है। उसमें बाब, र्शना करनेका अवसर हो बार्ड है। वैसे प्रमूद पर कनेके प्रकृष्ट जाराधिक रिन्ने बहारकार ही अक्राप है, की ही पारतीकिक पुरस्-भारिक इक्कानेक क्षेत्रे कुळाटा वर्ग है पाल है। स्त्यारे । यदि वर्णानकोचे प्राप्त विका स्तर दर्गपारम रिकार है कर से क बाद कार अहरके के राजकारने का कर । यह करात, स्वापने, का, कार्यन, कर और करावत निवास के उसमें से बिद्धांको केंद्र प्र विकेत aild floor is oil, fleathail an is fluit, and eith sug-बर्गाचे हे नार्थ । नाँदे देशा होना हो प्रापुरम वर्गका आवरन ही क्यों करते। इस्तुने क्येत्रक एक वोग्रेक्स हैती। बर्ध-को प्रति, देवता, कार्य सामानिक, हेर्नक की करिया प्राण क्ये वर्त ? अनेने यह सम्बन्ध कि ईस सर्वक that being his \$. when there form \$ also moved कर्त परच सम्बद्धा है। जो और अक्षरों केंग्रे के विकास की भेते । किया और राज्या पता से पर प्रमान से देश को है। पूर्व में नेहरी प्राथनिकार कारिय करेंद्र करेंद्र कार्य कर्तको ब्या का है, प्रानी है बार भी है। तुक्ता अन्य सनुष्यत् भी से बर्गकी पहिल्ह है सबद बरवा है। इकार और तुमारे पान्या गान पानम कवित अवस्था धना है. यह बात बना दुन्हें मासून नहीं है 7 हुन्हरे जनका बुन्हन्य है। का बालको रिज्य बारोधेर किये बार्यत है कि बार्वक बाल सम्बद्ध निरम्ता है। वर्णना पुरूष संसोधी होते हैं। परंह सुरियोर पुरुष कहा पर्क वितरोगर की संद्रध की होते । यह और मुख्ये प्राप्त अप, क्वेंचीका हेत् सम्बद सारव अभिन्न और अस्ता नव करनेवाले विक -- इन सन कारोको देशलकानि पुर एक है । सरकारक मनुष्य कुन सक्तोको का भी भी सका सकते । में राज्येना इसका सुन्त राज्य मते है, में धरमेंद्र रिम्मे क्षमीनुहर नहीं क्यो सिंह क्रमों रियत क्रेकर कर्म करते क्यो है। क्यानको के का क्रिक केमराओं हैं। विशे की गोपनीय है। समाधि विश्वा, विश्वकेती, किरोनित हुए तमाने चोची सात किराने बाज बारोड पर्वोच कार्रेक काम कर होते हैं। अर्थातक कार्रेक भी और क्षारक परत न निर्देश की भी क्षारित कोड़ नहीं करना व्यक्ति । और भी उसेन करते का करन पाति। जिलेक उतन माने हम करत शादिये। इस सामेद सद्वी महर्षि सहस्य हैं

वि अक्रमानि स्थिके जनमाँ अपने सुनीने व्या कहा वा—"कर्मका करू उत्तरक निरम्म है और वर्ग स्थासन है।" तिने ? कर्मक क्रमानी सुनाय क्षेत्र मुनोकी उसा नह है। वान । क्रमा क्रमा कर है, ऐसा निराण करके तुम वाक्रियकार्य क्रमा कर है और गर्मकर करे। तुम्ही अपने हेती क्षार कर्मा म उसमें। विनमी क्रमाने माल पूजा कृत्वीकार करा है करे हैं, उन स्पर्केश सरमानामा क्षमी विस्तान नहीं करना माहिने।

र्क्योरे का-कांत्रक । वे वर्षे अवस्य हेक्सकी लक्कान और विरक्षा क्यों की क्यों । मैं का समय विक्रीको बार्ट (, प्रातीन्ते ऐसा उत्ताय कर रहे ( । मैं अभी हा क्रमाओं और यो क्रिका क्रमेने । क्रमान क्रायके वर्ण अवस्थ हो परक करिके उन्हेंकि किए पार्ट किये these was travel at the speak of, there are it will be कृतिकारें, क्रमेंकी कह से तरिक-स्त विकार करने हैं किछ के बाते हैं, क्वेंदिर पानक बाद्या प्राप्ते हैं हुआरे देनों धर की राज्या और का राज्येक प्राथाने का बैठना है। अवस्थ ही इस विकास कुर्वनकों संस्था काम बाले को है। सब जनी अपने कही स्थाने है और अस्वकारों असे क्रमीक कर केन से हैं। असीने अस कई स्ट्रीनरे, असी प्रकारको ना । अस्य कालीः स्थानको सुरक्षित क्षेत्रत सुनी हेक्ने । स्थानी स्थानोधेने को बोई क्या कर्न करनेकी लिक्न the dis most to mill not the firstly विकारण-वेता पाल भी अतिकित परचा पान और आये परित य हो को बोर्ड विकोने हरिए हो करना है। कारियो कराई एक और पृद्धि करनेके दिन्ने पूर्ण करनेकी गाँव आवश्यकता है। प्रभा की, वर्ण व को से अब्द करना की उसका कर्न विकास को जान के जानकी इसकि कहा जान । यहि कार्यको निकास करा साथ के भी कर्न से करना ही परेगा: क्वॉसिट कर्न किये किया किसी प्रकार के लिए उन्हों पड़ा करती । के क्यांके कर कोना कर्मा इन-म-११४ को के छो है. क्रमादी है, कर्न ही क्यानीकी जाति करते हैं, वे प्रवेतपूर्व क्वोंको स्रोकत जो क्रमे : जो पर्य सरकत प्राप्ति । क्रे कर्न र करके अवस्थान जीवन कार्रात करता है, यह पानीचे को को कोको पाँचि पर मारा है। यो कान करनेकी इतिह को हुए भी अस्ते इतका अल्प रहते हैं, वे विश्वजनाय वीकरकारण भी नहीं कर सकते । यो पराव्य इस संदेशों रहते है कि भूते अपूर्व बर्जका चार विशेषा या गाँउ उन्हें कर्जका क्का भी पान नहीं निरम्प । से निर्माण होते हैं, से अपन

है और परचंद्र सम्बन्धे कभी बंध नहीं सम्बंध भी देश मनुष्य होते हैं पहल कोड़े । फिश्मन इससे कारी जोतकर उस को देतर है और संदोक्ते साथ प्रतीक्ष करन है। प्रताह कर मोचे हर असमो चानो हीचकर अंगुर्वत करनेका कार नेव करात है। बाँदे केन किसानवर अनुष्या न करे, बात २ करते, तो जामें विकासका कोई अध्यक्ष नहीं है। उस सकर विकास

काम बना हेते हैं। और पुरूर सर्वेद कर्न करनेने रूने क्ये | क्ये सेक्स है कि दल सोगोन जे काम किया, क्ये की की विकास का केव बारते था न बरते: बाल मिले का न निर्फे. शिक्षार निर्देश है। मैसे ही और एकाको अपनी स्थिके अनुसार हेता, बहुता, सबिर और उपयोग्ध ठीया-ठीया विचार कार्क अकर कार करन सामि। ने बारे की अपरे रिक्रमेंके काम सहसी-मेरिके कर्ड निव्रमेरे हुने हैं। कार विकार कार्के अपने कार्यकार निकार क्रीनिये।

## यशिक्तिर और भीमसेनकी कर्तव्यके विक्यमें बातचीत

र्वेशन्त्रपार्थ्य कारो है—जनवेशक ! होपक्रिकी वाले सुनकर प्रीयरोक्के प्रथमें क्रीय गरा गया। में राज्ये स्टेंस रेके हर वृतिहितके एक मान अस्तर बढ़ने सरो—'वर्तको ! जान सर्वकोतिक वर्गानुकुत स्वयंत्राची वरित्रो । यदि स्वयंत्र धर्म अर्थ और महक्ते वर्ष्टिन होकर इस मनोकाने यह चीने ते हो क्य विलेशा । श्रीकारे हवार राज्य-वर्ग, सरावार अवक कर-पीत्रको नहीं रिष्ण है। आने कार-क्रांक स्क्रां क्रानेको केन किन्न है। का चौरतीर अन्यक्तो दिलया-मिलया क्षणा पत्थी पत्नी हैं, जनव-प्रकृत में हमें असमर्थ पानवार हुआ की जा हो है। इससे के नहीं अन्वत है कि प्रथमेश दानाओंस न महचे स्वार्ट हेंद है। निन्धका भारते पुद्ध करते हुए की हम का की कर्ण से अका है, क्योंकि स्टारे क्यें अव्यक्तिकीकी करि के केरी। और परि इस कीरवोक्ते सहस-न्यस सरके प्राथित एका हे साथ हो भी हमारा करपान हो है। इस अपने करेंगे रिका है, इन बाइते हैं कि इससा बाह हो और स्टीम्बोले केल्का क्वाल की है। एक हो यह जानस्थल हो जाता है कि इस पुद्ध-केराओ का है। प्रमुख्य केवल को, केवल को कवल केवल कामके सेवनमें हैं। नहीं एक जाना कहिये। इन सैनोका हैं। प्रकार केवल करना बारिये, विकासे करने निरोध न हो । जर विकामें शासीने स्थानको बढ़ा है कि दिनों बाते बानों बर्मकरण,ठारे चार्च क्लेकर्मन और सर्वकार केलेल क्राप्तरंकन करना साहित्रे । वे जनक है और साथ जनने है क्षि जान निरनार कर्नाकरणये जेवक रहते हैं। फिर की सकी अस्त्रों केरपनोंके दाए कर्न करनेकी सरका की से हैं। हत, या, सपक्षीकी हेवा, बेह्यापन और सरस्था-- वे भूतम क्षार्व है र इसके पालनारे इस लोक तथा पराकेकने सम बिराता है। यांत क्रमंत्रज ! मन्त्रकों को सबी नृत्य हो, बिर भी बन न हो हो बर्माकरण नहीं हो सकता । यह निकाय है कि क्रम्बर्क अल्यान वर्ग है और क्योंसे हेट कोई बच्च नहीं है। विकार को कार्रकार केवल की अल्डेड द्वारा की होता है। कन निकारतरियों अवका सामार्थन सेवार केंद्र करेंगे नहीं शिक्ता । यह के वर्गका आवरण करनेते हैं निराता है। प्रकार से क्षेत्र जीवकर की अध्य प्रीक्त-निर्मात कर क्रवात है, बांच क्रांतिकोड रिको से इस बुधियत रिकेश है। करीको अल्ब्लो के परवान बारों है का परेका उद्योग बाग करेंगे। जब उस्ते ब्रोडमर्गको धीका करेंग न्यानी और अर्थनों प्रशासिक पात करवाने : प्रशासिक किया जा करते प्रस्तातम करते आवनी से पार क्षित्र, व्या विरोधा नहीं केया । अध्योत दिनो हजायहान ही सन्दर्भकों है। बाँदे अन्य स्टिकोनिय प्रयोक्त परिवास प्रत हेर्न को क्लाले अल्पनी हैर्स क्षेत्री। जनुजीवन अपने सर्वहें क्रिका संस्ताचे अच्छा नहीं पाना चा सम्बद्धाः अस्य विकास क्षेत्रिके ( क्षा व्यक्तिको समान मीरला क्षेत्रकार काके अपने वर्गका चार कहा क्रीजिये । परश्, कारावाने से अवस्थि समान बनुवकरी और बाँग फेका है ? घरिकारी हेरेकी समाज्य भी नहीं है। मेरे कवार गहामारे ही कौर है ? अने क्षेत्रेकी सम्बाधन भी धर्मा है। सरकार परन अली सालों प्रदेशे यह करता है, ऐरिक्सेकी प्रकारत कारर नहीं । उत्तर काराव आक्षा गोरियो । पहार्थ प्रकारी भविकामी कममोर होती हैं, दिन भी से तम विस्तार नंब विकारनेतारेका प्राप्त के रेसी है। मैसे ही निर्वत परम भी इस्तुरे होकर करकार स्टूब्स गाह कर सकते है। कैसे सूर्व अन्ये किर्मिते क्ष्मीका रस जान करता और यह बरस्कार प्रकास पासन करता है, जैसे ही जार पी क्रोंकारे तक बीवका अक्रमा चलन क्रीसिने। हमारे विक-रिकायने प्राथितिको अनुसार अवासारन विज्ञा है। अध्यक्त इसर सम्बद्धानाई है । एक इतिम बुद्धमें निमन प्राप्त करने अवस्थ अधीवी कींग केवर को चीर प्राप्त करना है. यह सरकाने प्राप्त भी जो प्राप्त से समझी। प्राप्तान और कुरमंत्री इनके केवर की सरकाले जानते जल-अधिकारों क्या करते हैं। अपने क्षेत्र, व्यवस्त, क्षेत्र, पन, बान आसि कमें पुत्र की बोल है। बी, जब एकओंडे किनाओं कारों उसे हो से का को डीक औं है। क्योंकि एवा पूर्ण प्राप्त करनेते हैंने से का का का है. वर्त बड़ी-बड़ी रविनाओं पह पत्थे हर बत है। अस क्रिक्रमीको प्रमारी गोर्ड और गोबोब्स दार धर्मार करने पर मानेंगे। अस अब क्यांत का क्यांची राजी राजार ह्मानोको पर देखे हिन्दे रीकालो प्रकार सक्त कर केंपिये। अन्य ही कृप हैन है। प्रकारोधे व्यक्तिकार मरवाने और जाने अवस्थितकात बुलॉर पहलेडे प्राप्त प्रीप्तरपुरसर कराई यह वेदिये । साम्बर्धको राज्य केमानवंशके राजा और वृत्तिवहरूपुरस्य सम्बद्ध संस्कृतकारी सरामाओं का क पुरुषे विका औं प्रश्न का उन्हों ? प्रश अपने सहायकों और वरिको हता पाले हरको अवस प्रक करों के कीए के 21

क्षांत्र विकास का - केव केवल ! जान कुनार्य, मानिकार और बीकारों एक होनेवर भी अपने करते काले भूषी बार सम्बद्धाः में कुन्तरी सम्बद्धाः सम्बद्धाः नहीं बद्धाः । में है। संस्थान है कि मेरे पानकों केता है होना बहु का । विहा राज्य का पूजा जेतनेचे जिने का क्ष्मणे जाते. जा जनक क्ष्मीयको बराबांको स्थाननेक स्थाने स्थानक स्थानका । काने कहा कि 'पुनिविद । जो तब काने कर कानेने जे रचे अवनोतरित पान्य करेल्य कार्य सुरू होना और देखते को गुरुवास करन क्षेत्र । गुरुवास्थ्रे सम्बद्ध और कीरवीके का रूपों के निवानीयों को दिया जाएड पानीई निवने कानों पाना परेगा और देखने जर्नने बढ़े बात होगी। बढ़ी में हर पक्त हो हर सभी पाई सरना देवने क्षेत्रका आर्थ निकले समुतार मानास और मुहत्यस क्रांचे हैं भीनते हैं की क्रांचिकती बात कर सी थी और बैसी है ज़रीका को थी। यह बात हुने और अर्थन्यों भी परवृत्र है। इसके बाद का अवर्थनर प्रश्न प्रमा, क्रम्मोन कर पर्ने और विनयके अनुसार जनसार कर यो है। सर्वकारिक स्वयने क्या कर अतिका अपने किर राज्यके विको स्थीप अनुस्य उसे सेनेत्रा । एक कुरवेग अनुस भीरे राजके दिने प्रतिक्रापक सकते को या को है हो का मतमसे भी अधिक ए-सदान्य क्षेत्रा । की कर्माची केरेके मीनमें अरिकार्यक को बार कही है, उसके में दल औ

आका राज्यने केल कार है, केले हो तुनों को अवनी आदिके राज्यको जानेहा करने चालिने; साराप अतने किना कुछ वहीं होत्या । चीपरोट । तुन मेरी कार जीवता सुन को, में देवसकी जाति जाता इस रवेकानें जीविता स्तांत्वी सावेहा की सावेही अविता केन पासा है। मेरा नेता कुछ निश्चान है कि राज्य, दूध, पर्वार्त और कर—ने कुछ निरामान्य साराधानीय सोताहरी हैसोकों की करावारी नहीं कर सुनकी।

क्षेत्रकेने का नाईकी ! केने सत्यांने लेकेनेते एक भैर नक्षा सन्दर्भ के बात है, मेरे है बहुबाई आह का-कार्यर प्रोक्ति का भी है। देती निर्माले पर्यक्रिये क् सम्बन्धी पार मोड़ने हुए पैड दाना पाड़िने ? हिसी अपनी राजी कामा पार है, अपने अपनापका हार है, पो कु-कोन्य आहे तम कहाओंची प्राप्त हेत समझ है. केवल अरोप्के सम्बन्धी अरोक्क सामी कार्कि । पूछ् विराधर क्रमा है, अधीरने साथे अवह क्षेत्रेड क्लो से हो राज प्रक क्रमेक प्रतान कर तेना काहिने । आप पुरिवास, परकारी, कारक और सन्वरीय बंक्के हैं। साथ काराइके द्वा फूरेंपर क्या गर्ने करते हैं ? इस एक क्यान केंद्रपट किया करनेका कर कारण है ? जान इसले गोको करने गा रक्तर व्यापने हैं, बाद को ऐसा हो है, कीने कोई प्राचाने प्रतेनते क्रिक्टक्को इक्का को। जल एक क्यान्सीरह क्रांतिः है। केरे वर्ग अवस्थाने क्रियम्ह को निका प्रवास, हैसे हैं अपर में को भी कि उसमें । उन्हें। स्कूत समय सहेत हैं एक प्रमा स्थान केले किन सम्बंधी ? पान, पद एक्स्सी क्षेत्रके के केले किल्पान चोली। पाने तो बाबे और पाने सानी परकारों है. में इस कांग्रस पूर्व केने दा अर्थुना ? इसलेप राज्यक करने हेक नहींने जिला करें हैं । बेहरें, अद्यानकार जन को से देख का दिन स्वितित । अपने कार्य, प्रतिनिधि है। इस्तिको लेख नहींकों को रोख कर्वकी अस्ति। यूरी कर सम्बंधी है। पहाँची । अस्य प्रद्वानीके विभावको सिन्हे प्रक निक्रम पर गरिको । कृतिकोट रिको पुरुषे अतिरिक्त कोई वर्ग को है। इसोंके साथ युक्क निक्रण परिवर्त ।

वृद्ध अर्थनार्थ में प्रसूप है। इसके बाद का अवर्थनार पूछा पूजा, इसकोग इस पर्थ और नियमके अपूरात जानात कर यो हैं। सरपुरावेंक सम्भे एवा कर अर्थना जानात कर कर्मके मिले कौन अपूजा को सेनेका। एक कुरवेग अपूजा पिर सम्बंध दिनो अर्थनार्थक को का को से से के का महत्यों भी अर्थनार्थ को कर कार्य के से का का महत्यों भी अर्थनार्थ के कार कार्य है, उसके में का का महत्यों अर्थनार्थक को कार कार्य है, उसके में का कार्य सम्बंध अर्थनार्थक को कार कार्य है, उसके में का कार्य सम्बंध । सैसे विस्तान मीन कोकर कार्यक्त अर्थक कार्या कार्तित होचार चारम्याच कवळके बारण दून किय बारको प्राप्त करनेके हिनों यह को हो, उसके राज्यकों कुरे बहुत कुछ पहला है। पुरितास, प्रत्य, प्रत्यसम्ब, प्रीत्य, होत, कर्न, सक्कार एक कुर्तेन, दुःशका वर्नाट् कृत्यकृति ज्ञास्य पुर क्षत्रस्थानिको को कुक्त और क्रमर क्षाप्रका करनेते रिन्ते केवर हैं। जाने क्रमनेती बिन समाजीको कारमुर्वेक कुछ दिन्त छ।, ये तान उससे निस रावे हैं। क्योंकारे कील-रोक्ये तब बीरें, केक्सीयों और महिन्तेची तथा करेंद्र परिवासक्तेची, की उपन-अन संसूर्य का चीन-सम्बर्ध केवा अपने पहले कर सिवा है। में का को उर्वोक्ता धोलो रहते, देता केत निर्देश विकार है। प्रकृति भीव्यविकाया, जेपलार्थ और कृतवार्थ अन्य और अन्य सम्बद्ध की रहते हैं, स्वापि अहेंने एतका क्षा क्षाण है, इसीस्वे आका बदाव क्षाणेके हैने कृतिकार्ध जोरते अन्यवसी स्वीते। वे प्रव muramit win alle genete fil bet freint fi fin सम्बद्ध हैन्याओंके पान इन्ह भी उने भई नीत समते। क्षांको केरण, स्थाप और प्रयोगक सर्ज है। उनका सरीर मनेव करको क्या क्या है। उसके की किय हर कृतिकारों क्**रिया** सम्बंध ।

का अवार गोकोरके साथ मुनियून नारानीय कर है से वे कि प्रमान् वीकृष्यक्षेत्राम् वेदानास्यो वहाँ जा पहिने ।

# युधिष्टिरको व्यासजीका उपदेश, प्रतिस्पृति विद्या प्राप्त करके अर्जुनकी सपोवन-यात्रा एवं इन्द्रवास परीक्षा

वैद्यानकार्यः कार्यः है---वार्यकाः । पानकार्यः आगे | अन्यार्यः हे ग्ये । कावार वेद्यालकीया साम्या निवतः। उन्हेंने स्थानकीयो शासनका वैद्यापार जिलिक्ष्येक अन्तरी कृता गर्छ । वैक्यामा-कीने कर्मकर पुनिवेशने बाह्य कि 'जिन्ह पुनिवेश । मैं हुन्छारे पराची प्रमाणीय पराच्या है। इसीने इस समय हुन्छने परा शास है। पुनारे क्राफ्टे चीम, प्रेमामार्ग, क्रामार्थ, सर्ग, अध्याम और कृतिक आदिया को कर है, जल्मा दे भारतेल रेकिने विकास करिया। तुम मेच सारामा द्वार उत्तर करे, इस्ते पर्का सार इन्हें कि सम्बद्ध हैं क महार केलाएको पुणियुरको एकामारे से गर्न और केले—'बुविदेर ! पुन मेरे करवाना किन्न है. प्रतरिने है तमें प्रतिकार वैत्रीको स्थान अविल्ली जनकी विका केन है। हुन का विका अर्थुनको निरम देश, इसके बारने का हुन्द्रार राज्य प्रकृतिक प्रकार प्रीत रोज्य । अर्थुन करता स्था प्रसामकी प्रशा क्षेत्रामोंके क्ष्मिकी केन्यत रकत है। यह नारावणका प्रकृतन व्यास्त्रकारी स्त्रीय पर है। इसे पोर्ट जीव व्हें सकत, पर अव्यासका है। इसकि कु इसके अवस्थित साह करवेडे रिये करवाट् कंकर, देवराव इन्ह कार, कुमेर और करियानों पान मेंग्रे । यह काले अस जारा करने को परकारका साम करेगा। जान उपयोगीको किसी क्षारे करने जावर क्षाप करिने; क्लेटि क्लीक्लेक् विरस्तातक एक उक्तान श्रीय कुरस्तानी है जात है। हेला बहुबार भागतान् वेहामाताने राजा मुनिहिल्को प्रतिस्कृति विद्याला उस्तेत किया और उस्ते अनुसी सेकर में नहीं

कार्या पुरिन्देश कार्यान् कार्याः असेवानुसार असमा कार और एक मारने होते । अबके मनमें बढ़ी उन्हानता 🚅 । में का हैनको पानक शरामीकार्यी मानक पर्ने आहे । केट और प्रशास सामन के उनके पेके-पेके नहीं आ वहुँचे । वहाँ श्राम्य वास्त्रम अपने मधी और चैनकोंचे साथ विशिक्षांक विका, देखा और प्रमुक्तिको संद्रुप्त काले तथी । क्षत्रिको एक दिन स्थाननीके अमेरानुसार अनुस्को क्रांच्यों कृत्या और केरे—'अर्थुन । जीव, केरावार्ग, क्रमान्त्रं, वर्ण, अक्रमान्त्र आहे आव-वर्णके को गर्पह है। कुर्वेक्स कारण कार्य उन्हें अपने पहले कर दिना है। तार क्रमें केवल क्षमों के जाता है। में इस समय तुन्ने एक अवस्थानंत्र अवस्था है। परावस्य केश्वासने सुने एक गुर विकास उन्हेंस सिन्ध है। स्टाबर प्रयोग कार्नेपर सम जनार भारतिक क्षेत्रके समात है। कुन स्वयमानिक स्वय सुक्षा मा प्रभाविता तीना को और सरकार देवनाओवा कुरकारक प्राप्त कर रहे । इसके रिमे दुम दूव स्थाननीतर करक करों क्या बहुद, कप, क्रमक और प्राट्टा नेकार सम्बन्धिको एक वर्गने वित्तीको जनवरह विने विना सार देखको कुछ करे। वहाँ दुध का समस्य करके समस्य पंचालको सीन करते हुए केन्सओको कृता प्राप्त करने र इक्षपुरचे जनजीत होयत देवताओंने जनने एक असीयां वर्त क्रमाने स्त्रीन क्रिया था। इस्तरियो स्त्रोर अध्य-क्रमा इसके ही का है। हर इन्ह्री कराने काने, वे हुने पर अब हो।

हुए जाता है समानी क्षेत्रा क्षेत्राच इस्तेषके कांन्ये तैयां अक्ष्मे ।' करंगमने संकती अर्थुनको कार्याक्रिके अनुसार इस करंगर द्वा कम त्रिक्ता क्षित्र और उपानीत कांग्यी इस्ता है है। अर्थुन मामीक बहुए, अर्थन करंगत और कार्याची सुरक्तित क्षेत्रा कांग्ये केंग्रर हे गते।

तार सम्म प्रोद्धिने अर्थुन्ते कहा आगर सहा—वीर ! वार्थ कृषिकाने असे प्रस्ते पुत्ते कहा-को अनुविध कर्षे कर्षे भी। पहारि अरथे पुत्ते कहा कुना पुत्ता का, तिन की कृपते विकासका कुना जो आहो की कहा है। परंत्र हमते वृक्त-कुन्तवे कृष्यका हुन्ति काले हो। हमानेक्या बीरा-सरसा, काम और देवने साथ हुन्तते के पुत्तकांका अस्तानिका है। इस्तिको में पूर्ण करेगी क्रमति हिते हैं और कामान् तथा समझा देवी-केस्तानोते हुन्तते कामानकी हार्थन करते हैं।

सर्वति अस्ते पहाची का पृतिहार चीमको वृति चर्चा हाम्ये प्राचीय स्पृत तेवार तरा दिवारी पान की। पर पराह्मी अर्जुन का हमारा वृति करानेवारी विकास पृत्र हैवर व्यक्ति सार हो थे, तम प्राची सार्था काम एका होहबर हुए हा मते। अर्जुन हम्मी तेव चामके को कि एक ही हिन्दे परिता और देवतिका दिवारम्बर का वृत्ते सर्वतार है प्रथमाहर करिया भी और वहीं सम्बन्धनीत हास सा-दिन सारा बारती-काली हमानीनके समीन पहिंच मते। वहीं हमें एक अव्यक्त हमानी वहीं—'वहीं हो काले। इत्तर-कार देशकेल कातृत हुआ कि एक प्रकार समाने बोर्ड काली बैठा हुआ है। तमाबेचा कृति से कुमा बा, क्षेत्र इक्कोनको करण यह यह यह इस कारणार्ध स्थानीको केरकार अर्थन को हो जो। स्वामीने क्या-'शुन कुर-कार, कुरूक और सामग्रा मारण विश्वे कीन हो ? वहाँ तारेका कर प्रयोगन है है कई क्योंका पूरा काम नहीं। प्राप्तानका करती को हैं। युद्ध होना और प्रश्नीको दुस अवक बक्त केंद्र हो। प्रशासिन पुरस्करायार वर्ष और मह कार कही, परंतु अर्थुन सह-रो-मार नहीं हुए। वन्हेंने सरह न minimum flages san vom est antiputi attitum brente. क्यानि हैतो हर का-'अर्थुर । में इस है। कुकरे से क्रमा है, सुक्तो परि को है अर्थको होने प्रथ केक्सर क्राक्षे प्रचय किया। येते---'प्रायय । ये जायते सम्पूर्ण अक्र-विका सोक्षक प्रकृत है। जान पूछे पड़ी पर सैनिये।' इस्ते का-'जब हम क्योंको शीकाम एक करेने ? वय बाहे केवर्रकोण जांग हते हैं अर्थको बाहा—'मैं सोया, बार, हेका, युक्त अचक हेकांके हैंनो अन्ते सहयोगी करने भूते होड् स्थाता । में से अन्य-निया सीकारत अपने व्यक्तिके कर है और वारीय ।' इन्हें अर्जुनके समझाना कार — 'क्टेर | एक सुन्ने करवान, संकरका वर्तन क्रेगा श्रेष कुरों में क्षम किया जाता है हैंगा। जून जनके स्वर्ध की किये जनक क्षते । क्रमी क्रांभी निर्म क्रेकर तुम मार्गरे आओगे (' इस वर्षे अन्वयंत्र हे स्थे।

## अर्जुनकी तपस्पा, शंकरके साथ युद्ध, पाञ्चपताब्द तथा दिव्याखोकी प्राप्ति

कारोकाने पूर्ण-कारण्यः । कार्या अर्थुको विका अध्या विका अस्य उपन्न विको ? यह नाम में विकासके सुराध प्राप्ता है।

वैशायकाओं वह--जनका ! यहन्ती को कृतिको सर्जुत दिवारण लोकार एक को वीटोरे सहार्थ का वहें। सामी हो क सपूर्व थी । को देखार सर्जुनके करने लाका हुँ । में साम (हुए) के कथा, कथा, कुम्बारण और कर्मका सारत सरके आर्मकार्शक करना करने रहते । यहने पहुँगों कहाँने कीर-तीन विकार केहीने किए हुने को क्या । हुनो पहिने कर-कः दिवार और कीरी पहुँगों की क्या-क्या दिवार । योगे महीनेंगे की क्यान्तर नेनक क्या केवर लाका सरमा निरामार कहे हो को और केवल हुना केवर लाका सरमे हुनों । दिना करने कार करनेक कारक करनी कठाई पीड़ी-तीरते हो करी थी । माने को मान-वृत्ति जनकर इंग्राले पार कारा प्राचंत्र की। उन्होंने कहा—जनकर | असुंत्राची सरकारे केलो किलो कृतिय है जन्मी। जनकर इंग्राले उनसे मान-पी जान अर्थुको प्राच को कर्मण हुना पीरकार प्राच कारा किला। कृता क्रांत्राच कारा क्रांत्रा की केले। प्राच मान किला। कृता कारा कर सरकार क्रांत्रा की केल समान पील-नेतिकिको केलो स्वतंत्र कारा है। विले! पीलकेकारी कारान् क्रांत्रा अर्थुको कारा जातर देशा कि कृत सरकार केला क्रांत्रा कर्मण क्रांत्रा कारा जातर देशा कि कृत सरकार क्रांत्रा क्रांत्रा कर्मण क्रांत्र क्रांत्र क्रांत्र क्रांत्रा क्रांत्र क्रांत्र क्रांत्र क्रांत्र क्रांत्र क्रांत्र देशा क्रिंत्र क्रांत्र कार है।" जो हो उन्हेंने कल होतुन बाह, बीरकेस्करी विकासीये रोकामा पाता कि भी पहलेखें के उसे मारनेका रिश्वाम कर पूर्वा है। इसमित्रों द्वार इसे का करों ।' अर्जुनरे भीताची बाराची मुख की परवा न वालो सूचनक बाल छोड़ हिला ( केवर्गाने की उसी करना अस्ता का-स कान काराया होनोक्ते कल मुकले प्रतीत्वर ककर टकराचे, कहै प्रशंकर कावान हो। प्रत प्रकार आरंग कावेरी कुकाक इतिर विश्व गया का कामके प्रथमें प्रथम केवर कर गया। केल अर्थुनने जीरवारि और देशा । अर्थेने व्यक्त—'यु और है ? इस प्रकारिके प्राप्त विश्वेत अवदे बच्चे दल का है ? यह कुमार मेरा जिल्ह्यार कारनेके दिन्ने वर्ष्ट्री आपा या, की पहले है इसको धारोबा विकार भी कर दिल्ल का। जिस हो प्रसार क्या क्ये क्रिया ? अन में क्ये फेटा औं क्रेडिन हैं वीलने बहा — इस कुमारक की कुरते व्यक्ति अपने किया । हैश विकार औ हुन्से व्यक्तिया का । व्या केत रिश्ताम का, की ही हुने मारा है। तुन स्त्रीना जार करने । में कम कारण हैं, प्रतिक को तो उन्हों 6 नहीं की सुन्दी पुरुषर काम परवाले 1 भीताको पात पुरस्कार आईन कोमको आरामपुरम हो पर्न । वे भीतवर बाजीबी कर्ष करने हमें द



्यानुंतके साम केने ही भीतके पात कार्त, पा उन्हें पात् तेला । भीतनेकारी भागवन् संबत्त हैतान बाते कि 'सन्दर्भ । सार, जून सार; तरिक भी कार्य न सार ' अर्थुको सामीकी हुउई रचन है। हेनों ओरहे सामीकी मोट होने राजी। भीतरसा एक मार की गाँचर न हुउद। यह हेराकर अर्थुको अञ्चलकी ग्रीमा न हो। अर्थुक कुरु-कुरुकर साम कोर्यु और से सामी क्यूको कुरुकी जेकने पास्त हुउद किया। भीतरे कुरु को होना किया। सामान्या अहर किया के यह के सुबक्ते होना करीनार किर मही। पासी और देखोंने आहर सरस माहा से मीरको आहर सरनेके पासे है होता किया। अस पूर्वेची मार्थ आसी श्रीको मार्थिय कोर्यो के पूर्ण मार्थ, असी अर्थुक्य होता हुआ है साम । अस मीरको सामीको सेटी मुख्योंने स्थापन किया से साम होता हुआ की कुरुको सोटी मुख्योंने स्थापन किया होता हुआ है। साम पुरंग हुआ को

कोडी के बाद अर्थुनको होच आया । अहीने निर्दर्शकी एक केंद्रे करानी, जानर चलवान् प्रांतरकी प्रान्तना की और क्रास्त्रक क्रेक्ट काळी चूक करने रागे । अर्जुनने देशा कि को पूर्व अपूर्ण दिवस्य विकास कारण है, यह स्थेरको स्थित्य है। वर्षानके अस्तरम हो, पुरा-पुरा प्रत्य हुए। इस्तेने पीलके mentil bereit flatt : women, gleich meit field angelulus और प्राप्त अर्थुको सेवनाचीर सामीने क्क-'अर्थ । क्यूरे अनुसर कारी में अस्त है। पुण्यो-सेत्य पूर और और श्रीमा कुरत नहीं है। पुण्या तेत की कर की क्रमा है। में कुलर जाता है। कुन मेरे प्रकारक प्राप्ति करें । हम सरका खर्ड है । हमें में दिन क्रम केव हैं। इसके जनको पुरु प्रमुख और विकासीको को बीच इस्कोने। मैं जान क्षेत्रम हुन्हें कुछ देशा राज बारका है, जिल्ला कोई विकास की कर सकता। तुर इसलावें हैं नेव पढ़ अब आप का समीते।' अब क्रमूंगरे परवर्ती वर्तनी और मनवान् प्रेमामा पर्तन किया। उन्होंने कुछे केस, चरणोवा एनई कर मनवार,

अपूर्ण परमण् शंकाको असर गरनेके सिने दुन्ति परने हाने—'प्रणो | आप पेन्यकांकि कारणी प्रकृति है। आपके स्वापने सम्पूर्ण उपारस्था निद्ध मेरिक्स है, निराम क्षा है। असर व्यापनोके भी परण परस्य, विनेत पूर्ण मानक है। आपके पेन्यकांकि आसर्य एवं प्रमानके पुरूष परस्य है। आपको पोर्च नहीं जोत समस्य। आप ही विचा जोत आप ही निष्णु है। है अस्तके परसांने प्रमान परसा है। जान स्कृति प्रोतके विकासक एवं प्रतिस्थानका है। सामके स्थापनो नेत है। जान सर्वाक्रक, प्रधानकान, विद्यालकारी एवं नियानकारि हैनोंड

COLUMN TO SERVICE

सूर्वतरस्य, सुद्धमृति एवं सुद्धिके विश्वास है। मैं आगके सार्वार्षे प्रयास करता है। सर्वभूत्रकोकर, स्त्रीकर, कारणा-सार्थ, परकारण, स्तृत-सुद्धक-स्त्रास है में अपने सर्वनको सार्वार करता है। भूते क्ष्मा कोविये। मैं आगके सर्वनको सार्वारा सामा किया है। इसे अवश्वाद स्वान्ति, यूक्त सर्वारा सामा किया है। इसे अवश्वाद स्वान्ति, यूक्त सर्वारा सामा किया है। इसे अवश्वाद स्वान्ति, यूक्त सर्वारा हैत को सौर सर्व्याप क्ष्म स्वान्त्रकर सेते—'क्षम किया।' किर भगवाद संस्त्राने अर्थुक्तो गार्व सामा विराम।

परवान् प्रांतरने कहा—'सार्व्य | तुर अध्यक्षको निर्देश स्थापर पर हो। पुरस्तेकर सिम्बु और हुन्हरे पान वेनके आवारपर ही परात् विका हुआ है। इसके अधिकारो समा हुन्ते और श्रीकृष्यने धनुष काकर कृत्योका यक विश्वा था। आज मेरे पापासे भीतका हम बात्य करके तुक्ती अनुसन मार्थ्याच बंदून और अक्षण उरध्यक्तको स्रीत सिना है । अस हुए क्दें में को । तुन्हरा करेर भी मीरोप हो बक्का । मैं तुन्हर प्रभव है, तुश्रारी को प्रथम है, यह यान को र अर्थुको महा-'पापन् । नी, जान पुरस्त प्रस्त होकर का देख बाहरे हैं के जुड़े आप जनम क्यूनकार ने बैरियों। यह अकृतिर जन जनको समय सम्बद्धा पन्न सम्बद्ध है। सर अवाने में भागी पुरूषे अवाने गीन साई। ऐसी पूरण परिविते ( मैं का अक्रमें राज्युपिये ग्राप्त, राह्मा, जुत, विकास, प्राप्त और सम्बंधों भी भाग बार हातुं । में सम्बंध है कि मोट बहुका होदनेया अञ्चलाक्योते हवाचे तिञ्चल, वर्णका पहले और प्रचीवार पान निवास यहते हैं। मैं तम चार्यकारो भीना, होता, कृपालार्थ और स्रदूषको कर्नोद्ध साम राई।' जनसङ् इंबर्स का कि 'तर्ज अर्थ । हुई में अंबर फार पागुनतास देता है जनस्थि हुन सरके काल, उन्नेप और क्रमोद्रारके अधिकारी हो । इस्, क्रमंत्रम, कुनेर, क्रमंत्र और मानु भी उस असके बारण, प्रयोग और उसकारों स्वास नहीं हैं। फिर मनुष्य से प्रसार, साथ हो फैसे सकते हैं। मैं हुनो भ्य नवा देता है, योगु तुम इसे विस्तिके कार स्थाल होना गा देश । अस्पानीक अनुसार्वेद कार प्राचेन कालेवर जा जनावार कार कर करेना। यदि संग्रहर, वार्थ, अपूर हास्त्र कुरियो — विस्ती की ज़बार समुक्त इसका अकेन हो हो वह अस्थि चत्र का क्लता है।

अर्जुन कान भारते परिवारको राज्य प्रमुक्तन् श्रेष्टको स्वय आये और बोले कि अस कुते परमुक्तकारी विका देखिये। महत्वेत्रजीने अर्जुनको प्रकेशने हेका अस्त्रोहरूक इस अस्त्र इस्स अस्त्रक दिया। अस भारूनकार पुरिवान् कालो स्वयन अर्जुनके चाल जाना और क्यूंन्टे और ब्यून कर दिन्य । उस सन्तर नवीत, कर, समुद्र, उत्तर, भीन और जानोंके साथ सारी १९वी इस्तरको सन्तर । चनवान् संवरने अर्थुनको अद्या छै कि 'अब क्षूत्र करों काओ ।' अर्थुन चनवान् संवरको सन्तर करके इस कोई को से । चनवान् संवरने नान्योक बनुस



अपने सम्बन्धे स्थानकर अर्जुनको है हिन्स । वे अर्जुनके सावने हैं। अस्त्राहरूकारी को एवं ।

अपूर्वा अपरित्य विक्षि कही विरुद्धाल हो हो हों। वे लेख हो वे कि 'आज पूर्व परावाद इंपलके हर्तन दिले। अपूर्व मेरे प्रतिस्था अपना बात हमा केंद्र। में बात हूं। अस्त केंद्र बात पूर्व हो पादा।' अपूर्व वह का श्रेष रहे वे कि इनके सामने केंद्र्य विक्षा अपना का निवाद अपना है। कि कार्यों का कार्य, सुवादि कार्या कार्या कार्या की बहुत-से प्रतान कार्य कार्य, सुवादि कार्या कार्या की कार्या आकार कार्यों कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या आकार कार्य। कुछ ही काल बाद देवारण हन्य की क्ष्माणीके साथ देवारण केंद्र केंद्र कार्या कार्या कार्या कार्या कार्यों कार्य कुछ कार्य केंद्र कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य किल हुए कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य हो प्रतान कार्य कार्य कार्य कार्य हुए कार्य का श्रीकृत्याके साथ स्वारं पृष्टिका चार विद्याते । वै हुन्दै अपना वह स्वय हेता है, जिसका कोई निकारण की कर अध्यार करा, पूजाबर विवार तथा प्रकेण-कर्मकृत्यां विवित्र भी सीवा की । कामने कहा—'अर्जुन । वेरी और देखो । वै अस्त्रातिक करण है। येरा वाक्य परस बुद्धारे कर्मी निकास नहीं होता । तुम इसे काम करे और क्षेत्रके-कोटकेकी मुद्धा विवि की सीवा से । तरकासुरके कोर संकारणे इसी कामने कि इकारों हैलोको स्थानका कैंद्र का विकार का । हुन इसके इसा बादे विद्यारों केंद्र कर सम्बन्धे हैं।

सर्वृत्ये प्रश्न स्त्रीका का होनेस धनवीक कुनेसे कहा--'अर्थुन | तुन वर्गकान्त्रे रूपका हो । व्यक्ते व्यक्ती पुत्रे हक्ते राज्य वहा परिवय किया है । इस्तीको पुत्र पुत्रको कुन्ते हक्ते राज्य अनुका अक्ष प्रकृत करो । यह करा, पराक्रम वर्ष तेन देरेनाता असा मुझे बहुत ही जात है। इससे वह वर्षि-से हेन्दर ना हो जाते हैं। यनसन् इंग्यरने विद्याहरणे व्ह जाते समय हाल्या प्रचेश करके असुरोको जात कर काम का। या पून्नी रिल्मे ही है, हुए इसे वारण करों हैं। अर्जुनोट स्वेच्छर बार रेजेसर वेक्सांट इससे नेवक्योंट बानोरे कहा—'क्षिय अर्जुन, तुम करवान्ती नरस्ता है। हुने काम विदेह, देखाओंको परम गति प्राप्त हो गती है। हुने काम विदेह, देखाओंको परम गति प्राप्त हो गती है। हुने केक्साओंक को-को काम वरते हैं और वार्गी है। बानम है। इसके विनो हुन केक्स हो कामो । मारावि स्वार्थ हुना विनो एवं काम सम्बन्ध । मार्ग वारण में हुने दिन्य अंका को हुने।' हुन प्रचार समी कोक्सानोंने वारण मन्नी हुना क्ष्मी को प्रचार-दूस्य आदिसे दूस्य की। वेक्सा अपने-अपने कामके को मने।

## स्वर्गमें अर्जुनकी अस एवं दृत्य-तिक्षा, उर्वशीके प्रति मातृपाय, इन्द्रका स्त्रेमक मुनिको पाणकोंके पास केजना

वीताक्षकार्थं कार्यः है—सन्योक्षकः । वेकास्तरोधेः आने वारोपर अर्थुन करि शुक्तर वेकास्त इसके रक्षकी अर्थका कर रहे थे । कोर्यु हो देखें इकार सन्योक नामांत्र वेदक रक रेकार



मार्गे उन्हेंस्का हुआ। ३१० रकारी इन्टबंड सानिको आचासूना जैनेट कि रह सा, काल जिला-किशा है से थे। भीवन करियों विकार्ष अधिकारित हो रहे थीं। कामी मारित विका थी। एक्टी शरकार, प्रतित, नदाई, तेनकी पाले, नप्र, व्यक्तिकारी केरें, व्यक्तिकारे नोविकारे केव्यक्तिकारे स्था, सर्ववे क्या और भी ब्यून-से क्या-क्या मो हुए में। का प्रमा बाक्तमंत्र केने जाने को हुए थे । उस मानामन विका रकती क्रमाने व्यक्ति प्रतिन्य कर्ती। होनेके इच्छमें क्रमानके कारत प्रकारकोची केवचनी जयम प्राप्त प्राप्त परित्र पर्दे भी। महर्तिः सार्यक्षेत्रे अर्जुनके यस अकर जनाय करके कहा— 'क्रमुक्त । क्रेम्बन् केनतम इन्ह सामसे मिरना बाहरे हैं। अपन करते हम भागे रहने सनार होन्यर होता है मानिने (" रामधिको का सुरकार वार्त्तनके कामें भागे अस्तात हो। उन्होंने नकुर-जान करके पॉकासके साथ विधिपूर्वक मकार्य का विकार । करायार प्रात्मोच्य रहिलो देवता, याचि और विकरिता प्रमेन विकार । विर पन्यायकारे आहा मॉन्यार प्रमुक्ते किया राज्यस्य वस बीटे । तस सम्बद प्रमुक्ता एवा और ची काक हुए । इसकार्य ही का रह कर्याकाओं उठकर शहरि कार्क पुनि-युनियोकी इहिते ओहरू हे भया। अर्थुओ देख कि वहाँ सुनेका, कदमाना अवन्य सामिता प्रकाश न्हीं का। इसाटें कियन नहीं अद्युक्त कामी ममक यो में। मे

अपनी पूर्ण्याम् कारितरे कमकारे एतं है और वृत्तीते तार्रेके कमने वीवकारे समान ऐसको है। क्या अर्जुनने इस विकास स्वासित इस विका, तथ सम्बन्धि कहा कि 'बीर ! पूर्व्यापास किनी आप तार्गोंके इसमें देखते हैं, वे पुरुष्णांका पूर्णोंके विकास कार्गे दिवस गया था। इसके वाद राज्योंकीके पुरुष्णान् लोगा प्ये। सहस्वत इसभी वृत्ती अन्यस्थानिके कार्गि इस्

स्वर्गनी योगा, हुर्नान, सिल्बा, अधिकार और दृश्य राष्ट्रा है था। यह लोक महे-यह दृश्यक्ष्य पृथ्येको जात होता है, जिसमें तर नहीं विता, जाजिल नहीं किया, के मुक्ती पीट विस्तायर भग गया, यह इस स्वेक्ष्य सहेर यहि कर स्थाना। यो यह नहीं करते, यह नहीं करते, बेह्यक नहीं सामते, सीमीमें कान नहीं करते, यह है, सराबंद, पृथ्यतंत्र्यको, मौत्रामें कीर दुराव्या है, यह है, सराबंद, पृथ्यतंत्र्यको, मौत्रामें कीर दुराव्या है, यह है, सराबंद, पृथ्यतंत्र्यको, मौत्रामें विवास करहे थे, स्वक्षी हंगर-उपलं जा-जा हो थे। स्था अध्यक्षा और प्रवासीने देखर कि अर्थुन अर्थि का नवे है, साम मैं उनकी सुनि-सेवा करते हत्ये। देखा, स्थानी, हिन्ह और यहाँ अस्त्रा होया अस्त्रात्वादेश अर्थुनकी पृथाने सम् मौत्र कार्य करते हत्ये। अस्त्रात्वाद कर्या हेक्स, विश्लेक, प्रवन, अर्थिनीसुन्यर, अस्त्रीका, यह, आहाँ,



क्यार्थ, तुन्द्रक, नाव्य तथा क्षत्रा-सूद्र जादि पंचानीक इसंद किये। वे अर्थुनका स्थापत कारोबो रिप्टे ही बैटे हुए थे। रुके क्रम व्यवसके अनुसार विस्तरत असी व्यवेकर अर्जुनको देवराम इसके दर्शन हुए : तथारे जारकर अर्जुनने विकास इसके करा का, किए सुकारका उनके करणोपे प्रयास विकास । इन्हरं अपने क्षेत्रपूर्ण इस्तीने अर्जुनको अञ्चल अपने चीक वेकारनंपर बेहा रिच्या और बिन सुपनी गोर्स्स बैहाकर नेपके किए केंगा। सहीतनिका और सामनारके क्रांत करण हुन्युक आहे, गर्मार्थ डेक्के साथ परोहर गुलाई नाने १९वे। अन्यःकरण अवा चुन्निको सुमानेकासी प्रतानी, केन्या, रूपा, कृतियोत, सन्ध-प्रधा, अर्थती, विक्रवेदती, इन्हर्नेशे, क्यांक्ष्मे, सेवाली, स्वयन्ता, क्रम्यदेति, अवन्य, विकारित, विकारिता, सहा, जनुसरा आहे, अकारोर् सक्ये स्था। इसके अधिकारके अनुसार देवता और कार्योंने अन्य अपने अर्थुनका रेका-सम्बद्ध विका। क्लो के पुरस्कार आकार कराया । इसके अवसा अर्थन केराज्य प्रमान भारतमे एके। और अर्थन प्रमान स्वास्त्री व्यानकार अवस्थित अचीन और अपनेतारका आधान करने रूपे । के इसके दिन और प्रमुखनी कारका भी अञ्चल कार्य सने । अनीने अञ्चलक ही पहर का बाले, गर्मना करने और विकासिकोचे प्राथमिका भी संभाग पार विकास प्राथमिक क्या-अव्यक्त प्रथ आहे करनेचे अरनार आहेर अकी क्तानी प्राथमिक एएक करके कार्ये वर्तानेकार आश पादने थे। पांचु प्रथमी अवस्तो से बीच पर्यत्या सार्थि 童 油土

व्य क्षेत्र अनुबूक्त अवसा पायर वेतरण इंगरे अल-विकाल वर्णा अर्थुको व्या कि 'तिन अर्थुद । अल पूर्व विकाल वर्णा अर्थ गाँव की स्वाद्य प्रोक्त हो। साथ हो सर्वालेकार के काल नहीं है, उन्हें भी स्वाद्य प्रोक्त हो।' इंग्रेंक विकास कहा केशर अर्थुव विकालको विकाल हो। अर्थुव हुए विकाल प्रयोग्य है गाँव। यह स्वाद्य वर्ण अर्था वर्णा, उन्हें के हुन्तने विकाल है गाँव। यह दिनको काल आ वर्णा, उन्हें के हुन्तने विकाल है जाते। एक दिनको काल है। इन्हों देशा कि अर्थुव विविधेय केलेरे अर्थुवधी और हेल पह है। उन्होंने विकाल के प्रयोग केशर व्याप्त कहा कि 'दूप अर्था' वर्णा कि 'में केशरण इन्होंने अर्था केशर काल अर्थुव स्टिन्हों, हुन करका अधिकार सुन्ते। वश्यम प्रयोग अर्थुव स्टिन्हों,



क्रथात, का, प्रत, विवेदिकत अवी अध्यक्ति पुग्लेहे केल्लाओं और क्यूनोर्ने जीतीहर, करन्यन् एक प्रतिन्तरमञ्ज fit flege, begef, ber, seem, gene, merridirent, केर-वेक्स्यूस्तान राज्य ज्ञान प्रतासिक अन्यासी को निर्देश है। आह प्रकारी पुर्शेष और आह प्रकारे पुर्शेकरी कृतिको पूर्व कानो है। ये १०४ ज्ञानको और सरको से है है, प्रातुक्त और जिल्ह्याने भूद्र है। कामी समस्य भी प्रस्ता है। केरे इन्द्र प्रार्थकी पहल करते हैं, केरे हो से वित्र विक्रीकी सहस्रतांत पृथ्वीकी रहा कर सकते हैं। वे अपनी नहीं, दूसरीकी प्रकंशा करते हैं, यून्य-से-यून्य प्रमाणको भी स्वान बातवी तथ कर रेने हैं। क्वारी क्वारी भंदी भेदी है, विश्वीको पूर्व विकास-विकास है। सार्यानी, व्यांकारबीहर, प्रेमपात और कुप्रसिक्ष हैं। में अपने सेक्कॉनर कक् जेन रकते है और गुजोरों हमूके सम्बद्ध है। हमी अवस्य है अर्थुन्छ पूज सूने होंगे। वे दुव्हरी सेवाचे क्रान्ट वृक्त बहा करें। अन्तरे मेले हुई पेरी यह कानी व्यक्ति।' वर्वप्रीते विकारिका सत्यार विका और अस्य होता कहा-'गर्बाएक । तुम्ने अर्थुन्के किन जनन-अक्षय कुलेका बर्गन बिका है, उसे में मारे ही सुनकर अपन मोहित हो भूको है। मैं अनुस्ते केन बरतों है और क्ये पहले हैं क क्षेत्री है। अब देखानकी अदल और कुन्हरे क्रेमरे करके और मेरा स्वापनंत्र और भी कहा है। मैं अर्जुअब्दे रेका करियों । श्राप का सकते हैं।"

विवयंत्रके को कार्यके का अनुस्ता रोक करनेकी मालको अंदोने मानको सम सुनक्कान किया। या सकत के की हैं, अब्बे-अब्बे क्लाकुरन की बारन कर हैन्द्रे । सुचीकर पूर्णकी जाता प्यानका करेती का अधारमे स्था-पर सुनी । एवं का पुरुष्टराती हो प्यान और मनके सम्बद्ध केन परिसे कुलकाने ही अर्जुओं स्थानगर जा पहिले । प्रश्नकोंने असे आनवनस स्थानार अर्थुओ यस योक्सा अंदी अनुस्थ यस यूंच नवी। अनुस यर-ग्रे-वर अनेवरें अवस्थी इंचा याने रूने। उन्हेंने इंक्ट्रेक्ट अपने जॉसे के कर्क जनम किया और मुख्यमके क्रांबर अध्या-कावार करके काने लगे-'देनि । में पूर्वे किर कुळाबर करावार कराव है। में तुकार सेक्क है, कुछ करण करे।' कांडी अनंत-से के गर्थ। असे क्या - किराय प्रकारी अञ्चली विकास गुरुष की प्रका सम्बद्ध था। अस्ते हेरे पास आकर आवके गुलीबा कार्यन विकास अर्थन अस्तरके पास अस्त्रेगकी सेराव्य की । आरावेद विकास कृद और विकास गामांची आहाते में आवार सेना कारेके रिक्षे अस्ति है। केसर अस्तिकों से कर नहीं। करते मेंचे जानके मुख्येको सुध्य है. बामीके मेरा यन जानवर तन गया है। में प्राच्छे बच्चने हैं। बच्चन दियोंने में स्वरत्या कर रही हो । आक पहे कोकार क्रीकिने (' अर्वतीनवे बाद पुरस्का अर्थन संबोधनंद भारे बलानि महत्त्वे मने। अन्ति अन्ति क्रमोरे पहल के बार दिनों और बोले-- 'हो-हो, नहीं पह कार केंद्र प्राप्तको प्रकेश न कर पान्य । देवि । निकारेश रून केरी मुक्ताको प्रवास है। हैन्सपाने की पूर्व निर्मित नेतीने देशा व्य सम्बद्ध, रहेडू की बचने बोर्ड कुठ कम नहीं वा । में बढ़ी होना का का कि पूर्णकर्मी बढ़ी आरम्परणी बाता है। क्ष्में प्राच्यानों ही वेरी जॉनों जानको विक्र करीं। इसीचे मै हुनको हेल पह सा। देनि । वेरे सम्बन्धने और कोई बात होक्सी हो नहीं कहिने । हुए मेरे रेग्ने बहोन्से भी बही और की व्यक्तिकों करती हो।" उर्वहरित क्षेत्रा—"सीर । इस अन्यक्तांचा विक्रीके साथ विकास नहीं होता। इन प्राप्तक है। इस्तीओं यहे पुरुषकों पहलेगा प्रतास सीमा नहीं है। अन मुक्तक प्रस्ता हो कहने और मुद्र बरावर्गदिसम्बर जाग का बंधिको : में काम-नेगरे जल की है। जाप मेरा कुक विकाल (' अर्थुनने स्था — देवि । ये कुम्मे साम-साम साह का है। दिया और विदित्तार्थ अपने अधिदेवताओंके साथ केरी बार सुन हो । बैसे कुन्सी, बाही और इन्ह्रवारी हाथी केरी कार्य है, बैसे है हुए भी पुल्काची जन्मी होनेके कारण नेरी प्रकारिक बारा हो। वे रुपारे परमोगे मेर प्रकारकर अकार करता है। हम कालंड समान मेरी पूर्णीम और में सुद्धार पुरुषे समान स्थानित है।'

अर्जुनकी बात सुनकर असी स्रोकके पारे अधिने कर्ता । असने पोट्टे देवी करके अर्जुनको साम विका—'अर्जुन ! मैं पुणारे दिया इनाकी असारके कामानूर होकर पुणारे कात शाबी है, दिन भी हुए मेरी इक्का पूर्व नहीं कर को है। इसस्मिन काओ, हुनों किमोने क्ला होकर कात कोना और सम्मानरहित होकर हुन क्लानको कारने असिद्ध होओने।' इस इक्का अन्तिके नोट प्रकृत को थे। स्टिस्ट क्ला का प्रो



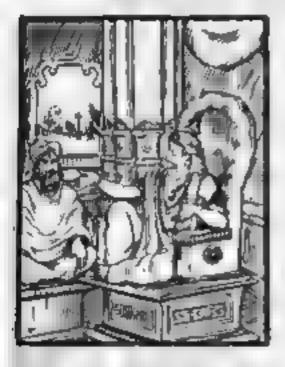
वि । यह अपने नियासकानपर लोड गयी । अर्थुन सीमकारे विकारेनके पास गये और अंतरीने को कुछ बच्च था, यह सम बच्च सुनाय । विकारेनने अर्थी वाले इसके कार्ये । इसके अर्थुनको एकामणे कुछावट व्यक्त कुछ सम्बद्धना-कुछाव और तिनक ईसते दूर बाह—'किय अर्थुन । इन्हरे-जैसन कुछ पासर कुछी स्वापुण पुस्ताती हुई । इसके अर्थने वैचेने प्रशिक्षको भी और सिया । अर्थुनि हुई को साथ दिया है, अरसे सुनारा ब्यून करण बनेना । विस्त सम्बद्ध हुन केराने वर्षी पुस्तास करोने, उस समय हुन स्वृत्तको इसमें हुन कर्षानक विकार व्यक्त साथ भोगोंने । विस्त दुन्हें पुरस्तकको प्रकार हो। हो

ने नकार्यक निकारिको साथ दावार सम्बि सुक्त सूको हो। स्थानेत्रण । अर्जुनका च्या करित इस्टर परिता है कि जो इसका अधिकि असम करता है, उसके करने की प्रम करनेको इच्छा नहीं होती। स्थानने अर्जुनका च्या महित ऐसा है है।

हवी दिनों एक दिन न्यूनि लोवस सर्गने सामें। उन्होंने हेला कि अर्थन हमादे आने सारायक की हुए हैं। वे की एक अध्यक्त केंद्र पर्व और यन-ग्रे-वन सोचने अने कि 'अर्थुकारे च्या अलान बैनो निमा नवा ? इसने कौन-सा बेसा पुरुष विकार है, जिस्स देखाँच्यो चीता है, जिसमो इसे क्रिक्वनित इक्सन जार हुआ है ?' देखान इक्ने स्पेनव कुरे कार्य का का हो। जोने का-"जाने । आपके पाने में विचार काम पूछा है, जाका कर मैं देश है। या अर्थन केवल गूज नहीं है। यह गुजनावरी हेक्स है। वर्ष्ट्रवर्धि से पुरुष्ठ अवस्तर हुआ है। यह संशास स्क्री पर है। इसमें इस समय पृथ्वीका अस्तार सहन निर्म ो। अपूर्ण पर और जाउनके कार्यका परित्र पृथ्वीश वीकृत्य और असंबंध काले समार्थित हुए है। इस समय विवासकार्थ कार देश महेनार होनार नेप अस्ति कर हो है। वे संस्थान प्रकार अपने अनेको पुन पने हैं। इसमें समोह नहीं कि प्रमान् श्रीकृतने की कारिन्हेंके वर्तान्क्राते शरीका कोद किया था, येथे हो ये पृष्टिनकारे निवासकार देखीको अनुवरोत्तरीय ज्यु बार सम्बर्ध है। पांतु इस कोठेने स्थानके हैले करवार् औक्ताले कुछ कहा रोग्ड की है, क्वोंक है महान् तेकापुत्र हैं। उसका कोच कही कम को के का हारे बन्द्रको सरकार जान कर संबक्त है। इस कालो रीजो हो अनेको अर्थुन ही पर्यात है। ये निवारणाज्योंका कहा सरके त्वा व्यूक्तकेवारे कार्ये । अवर्षे । आय पूर्णीयर कावन कारक करने क्रांत्याने त्यातिक वर्णाना वृतिहारते निर्तित्वे और कड़िने कि में अर्थुकार तिका की किया र करें। साथ है का की कड़िकेश कि 'जब जर्जून अवस्थितमें नियुग है गता है। यह दिला जुले, जनन और सदस्यावनें भी सह कुरूक हो कथा है। आप अपने प्रकृतिक स्टब्स स्टब्स और र्थका लेवॉकी बाज क्रीकिने। तिर्कारकारे आरे पाप-ताप क्य हो कारेने और जाम प्रीक्ष होकर एक चोरीने हैं अपूर्वे ! अस्य कड़े कामी और समर्थ हैं, इसरियो पृथ्वीपर विकासे कृतन पाणकोका लाग प्रीत्येगा।' हमानी करा कुम्बर लेक्ड युने कावक कार्ने कवारोंके क्या आने।

## 🐷 अर्जुनके स्वर्ग जानेपर धृतराष्ट्र और पाण्डवॉकी स्थिति तथा बृहदशका आगमन

वैक्रम्बर्गानीने क्या—कारोक्य ! समा कृतसङ्ख्ये अर्थनके अर्थने निवास करनेका सकावत कावान व्यवस्था प्राप्त हुआ। उनके सानेके बाद क्यानूने संस्थाने **प्रश्रा—'शंकर ! मेरे अर्थुनका सम स्वत्रकार पूर्णकरके हान** रिका है। क्या तुन्हें भी का जनका नक है? मेरे कु कुरोधनकी मुद्धि कर है। इसीसे वह को आजो और विकार केन्द्रेये इत्तर शुक्त है। वह अपनी बहुत के कारण भागवता नास कर उसेन्य । वर्गसम्ब पुविद्वित बद्धे बहुतक ै । में सामारण मारामीतमें भी साम मोराने हैं। उन्हें अर्जन-स



बीर केन्द्रा जार है। अवस्य ही क्ला राज्य रिल्वेपीये हे सकता है। तिस प्रमान अर्जुन अन्तर्न की बारवेका प्रमोन करेगा का समय पाय, कीन इसके समने कहा है सकेल (' संबंधी कहा-'महाराज । जाकी रूपीकको सम्बद्धों से कुछ बड़ा है, या सन है। अर्जुन्ते सम्बद्धने मेरे का एक है कि उन्होंने बहाने अपने बन्दका कर विसायत मनवान् संबारको प्रस्ता का रिन्य है। अर्थनारी मंत्रीक्षा करनेके रिजे देशाधिक भनवार संबंध करे चीरावर वैश्व बारण बरके करने चल काने से और कारे चुनु किया या । अनुरेते पुजारें अतन क्षेत्रत अर्जुनको दिव्य अतन दिवा । अर्थुनको तपरमारे जाता क्षेत्रर क्रम सोकामसोने अवकर

कारकारणे अर्जुनके सिका और स्क्रीन है ? अर्जुनका कर अवार है, अन्तर्ध कृतिः अवरिधित है।' ब्रुवस्तृति कहा-'संक्य ! मेरे पुत्रोंने स्टब्क्जेको कह कह दिया है। प्राच्याचेको प्राचि कारो है या छी है। जिस समय करनाय और बीकुम्म क्रम्पानेकी स्थानता बारनेके दिन्ने प्रमुक्ताके चेद्राजोको उन्हादीत करेंचे, उस प्रथम औरवयक्रका कोई को और करवार सामग्र को कर सकेगर । सर्वनके बहुसकी रंबार और पीपकेरको परावा नेन स्व सके, हमारे पक्षत्रे हेक कोई भी राख नहीं है। मैंने दुनोंकनकी करोंने आहर अपने विभिन्ने पुरस्तेको हिलमारी वाले नहीं पानी । बान पहला है पूर्व संबंधे कई स्रोध-सोक्यम प्राप्ताना पहेला।' संबचने कार-'राजन् । अस्य एक प्रकृति का सकते थे। एनंह सेह-बार अपने अपने पुरुषों हो बारोंने देखा नहीं। स्पेक् क्रमे हो। ज्योक क्षेत्रर कर आको प्राप्ते अनेक्स है। दिन स्था क्या का-मुत्ते हुएता यूने-यून **ब्राज्य का भने थे, इस मन्त्रान् सेक्ट्रांग्ले वर्त पाला जो** अरकारण किया था। उन्होंने क्या बुक्कुक, क्या विरक्ष, क्रकेर तथा केवल आहिते कई पायनों से क्रम कहा था बढ़ क्रोते कार्य क्षेत्रेस की अस्त्री तेलारे निवेश कर क्षिया का । किया सरका में साथ इक्तवेग्रीयर पदाई करेंगे उस क्रमा और रूपक प्राप्त कोण ?"

अभीकारे ५६६-चरावर् ! महासा अर्थर पात अस जान करनेके तैनने इन्हालेक बले गते, एव कान्कारी per fices ?

र्वअन्यक्ताओं वहा—धर्माक्य । इन देशों प्राच्या कारणक बनने निकास कर को है। वे राजाके उसा और अर्थनों विकेशने कई है हुआ है से थे थे। एक दिनकी कर है, कन्यूम और क्रेंप्से इसी संकल्पने कुछ कर्या कर हो से । चीयलेको एका चुनिविषके कहा कि 'वर्लकी । अर्जुत्वर ही कारोगोका सक चार है। यह उसरे प्रामीका आधार है, का हर राज्य आधार अहातो अध-विद्या सीक्षेत्रेड हिन्दे गया हरूप है। इसमें एंग्रेड मही कि बाँध अर्जुनका बाही कुछ अस्ति हे गया से राज इस्ट, बहुद्धा, साम्बंद, भगवान् श्रीद्वारा और इमरवेश की जीविक नहीं रहेंगे। अर्थकोर प्रश्नातकोर व्याचनपर ही इन्स्बेग देशा समझते हैं कि शह इनसे हरे हव है. एक्ट इसरे कहने आ नमें है। हमारी नोहोंमें बस है। मनकन् अंबरम्ब इस्तरे सहस्यक् और रक्षक हैं । इसरे पनरे क्ष्रीरखेंको जील कुरुनेके देलो कार-कार क्रोक बरास है। परंतु अर्थुनको क्रांन क्रिने और क्रिन अक-१७७ हिने। ऐसा इन जानके बारण उसे चैका या करें है। इस चनकान तीन्त्रभवी स्थानसमें सर्व आहे सब स्वयुश्वेको कर सलेने और अपने वाकुकाने साथ पुनर्वको सीतकर राज्य करेने । पर्यामी ! चकाक दुर्वेकर पुनर्वको पूर्वपर्वित अपने नदाने बार से, उसके पहले हैं को और आके कुटुकाओ जर सालन वाक्षित । प्राचीने से पहलाद कहा नवा है कि बानमें पुश्चित कार कार्क की वार सालन वाक्षित हर्मान्ये परि आए मुझे अदब है से मैं अरमाध्य कहा प्राचकर वहाँ कार्क और कुनेकाना नाह कर हात्रे।' चीनानेनको क्या सुनकर

वृत्तियानं उन्हें कान्य करते हुए नाम हैना और क्या—'मेरे सारवारणं प्रेस ! तेन्द्र वर्ष पूरे हो जाने हो । फिर हुए और अर्थुन होनों जिल्लान दुर्वोकनका नाह करना । में उसका नहीं केल सारवार; क्योंकि सुहाने असरव है हो नहीं । भीमसेन ! जब हुए किया कारकों भी दुर्वोकन और उसके सहस्वकोंका नाह का नामों हो, हुए अपन्य कानेकी नाम आवस्त्रकारा है ?' कर्मका चुनिहिए हुए अपन्य भीमसेनाको सम्बाह ही सुं से कि नाहों कृतका उनके नामनाने असरे हुए होना गई।

## नल-द्ययनीकी कथा, द्ययनीका त्वयंवर और विवाह

वैद्यानार करते हैं—सन्तेयन | महर्षे मुख्याको असे देशकर कर्माय मुखितिने आने काकर इस्कानिको अपूरतर अस्ती पूजा की, अस्तान्यर कैदाना । उन्नेत निकान कर वैनेयर पृथितिर करते अस्तर प्राप्त करते हन्ते । उन्हेंने कहा कि 'सहारास । कौरकोरे कावट-मुद्धिने पुत्रे कृत्रकार नेय इस्की क्षेत्र किया । इस्ता ही नहीं, असेने केये आन्यतिक हिन्दीको प्रशिद्धान नहीं सामाने अस्तानिक निका । असेने असमें हमें कारते प्राप्तास्य ओव्हास्य चौर कार्य क्षेत्र विचा । वहाँ । उस्ता ही कारताहर कि इस प्रवर्धन क्षेत्र क्ष्मा क्ष्मा । वहाँ । उस्ता ही कारताहर कि इस प्रवर्धन क्ष्मा कुली

त्रश्री कृत्यां का—वर्गाता । आवका का काल श्रीक की है कि कुल-ता दुःवी एका और कोई की हुआ; क्वोंकि में दूपने भी अधिक दुःवी और नव्यक्त प्रकास कृतान कानत हैं। हुक्की इका हो से कुल्की।

सर्गतन कृषितिर्गतं उद्याद्य करनेल वहाँ वृत्यपने स्वयन्त्र स्वरण वित्य—सर्गता । नियम देहाँ वीरशेनकं कुत नव प्रमणे एक एका हो कुछे हैं। ये कहे पुरस्कार, परंथ हुन्यूर, स्वरणते, किलेकिन, सर्वाद दिया, नेतृ एवं प्रकृष्णकं थे। उसकी रोना कहा कही भी, ये कार्य क्रमानिकाले कहा वितुत्य थे। तीर, पोन्ह्या, त्यार और प्रकार पराह्यानी भी थे। उन्हें कृत्या पोरस्तेत्वर की कुछ-पुष्प छोना का। उन्हें दिनो विद्यार्थ देवारे पीपक नामके एक एका एका पत्या करने थे। ये भी नामके कुलान ही सर्वापुरस्तानक और पराह्यानी थे। उन्होंने कुला व्यक्तियों प्रार्थ करके अस्त्री कार्यारामी थे। उन्होंने कुला और कुला । पुर्वीकर त्या कार्यारामी। इन्हान्ती स्वयूनीकं सम्बन कार्याराधी। स्वी। उसके नेत्र विस्तार थे। केंग्यारामी और क्यांने भी देशी

> क्षा दिन एवा नामें अपने बहाओं ज्यानमें **पूछ** ईसीओं देखा । क्योंने इस क्षेत्रको पन्नव्य निवत । इंतने नाहा — आग



मुत्रे क्षेत्र देशियों से इक्सोग प्रायमीके पास मानत आपके मृत्येका हेता करीर करी कि यह आपको सकर्य-स्वारम वर लेगी (\* माने इंस्को प्रोद किया | वे एक स्वारम स्विप् हैं। मेर इंतरणी अपने पात इंतीको हेंशकोर स्कूष अपन हुँ। और इंतरणो पायकोर विसे उसकी और होंड्रो सारी। इस्तरणी जिस इंतरको पायकोर्ड विसे होंड्डी, जहें केल उपन कि 'सरी हरवाची । स्वया देंड्डो एक पात पायका राज है। यह अविनीकृत्यको सम्बन कुपर है। प्रमुखोने उसके सम्बन्ध हुए असकी पात है। यह पाने मूर्तिकर, पायकोर है। यह हुए असकी पात है बालो से हुपाय पाय और सार केले समस्त है करने। इसकोर्जने हेंग्डा, पायको, बहुबर, इस्ते और समस्त है करने। इसकोर्जने हेंग्डा, पायको, बहुबर, इस्ते और समस्त है करने। इसकोर्जने हेंग्डा, पायको, बहुबर, इस्ते और समस्त कुपाने पूर्व क्षा । वेसे हुपा किस्तेन कहा है, कैसे है अस पुरसोने पूर्व का है। इस केलेक्ट सार्च के हम्मानेका क्षेत्र वाहस है होने निक्त केली स्वेत्यह सार्च क्षावानिका सीत बाह हिया।



वस्त्रणी इंग्लें नुसरे राज्य नस्त्रणी क्षीति जुनकर इस्से तेल करने इस्ती । जासी जासीच इक्तरे क्ष्म नकी क्षित्र क्षार राज-वित्र करना ही जार करनी क्षेत्री । व्यक्ति कृतिक और कृत्यल है जेला । जा क्षेत्र-मी क्षेत्रणे समी । व्यक्तिकी कृत्यलीके इस्त्रणा जान स्त्रकर विवर्णनाकी निवेद्धर क्षित्र कि 'आंक्सी पुर्ण अस्त्रमा है गाने हैं।' क्षार जीवको अन्तरी पुर्णिक सम्बन्धी क्षार किस्ता । अन्तर्भे क्षा इस निर्णिकर पहुँचा कि मेरी पुरी विवादकोगा हो करने हैं. इस्तिने इत्त्या क्रवंपर कर हैन वाहिने। अहेने इत् प्रमानीको सम्बन्धा निन्त्रणन्या नेन हिला और सुवित कर दिला कि एकानोको क्रवंपतिके स्ववंपति प्रधानको प्रधानको प्रमान करना वाहिने और येक क्रवंपत पूर्ण करना व्यक्ति। क्रिक्टेक्टे करनी इत्यो, क्रेड्रे और रचीकी व्यक्ति पृथ्वीको प्रशासि करते हुए प्रमानकारण स्वयं देखने प्रदेश हो।

देवर्षि नाम और वर्षक्रंड प्रश्न देवसानीको की स्थापनीके कार्यकारः अन्यानः निक नातः। इतः साहि सन्ते लेखालः of anyth would after respictive floor first first रक्त हुए । एक सामा किन पहलेले है क्रावरीयर जासक हे कुछ वा। अही भी एकपनित सर्वकार समितिस gibbs firb flegri byent unm ut i burgetit serbi कानो कान्य देख केला कि भागतेलों। प्रदान सुन्दर पत क्रान्यके अधाने, हैने या ये है। मान्यी पुनीर क्रान्य करि और प्रोक्षेपर प्रमान्त्रिको हेवल भी प्रतिहा हो पर्ने । क्योंने पहलार क्रिया कि में पत है। उन्होंने अपने विकारियों आधारणों संबंध पर दिया और गीचे आस्तर नानो नंबा—'रावेच पत । आर को सरवानी है। सार इन्स्वेचीकी स्थापक कार्यके हैंनो कुर वह सहये।' सकते mitter wir ift afte war fin funfen if fiere war fin आजनेत बहैन है और पुछे का प्रशंका कीए-का पान रेन्द्र कारों है 7' इसने कहा—'इसलेच देखा है। में इस्ट है और वे अति, काल और का है। इसकेन इक्क्नीय सिर्व बहु अपने हैं । अपन हमारे कुर प्रश्नात क्रम्बन्दीके बहुत पहले और करिये कि इस, करण, अनि और क्योंका इसरे कर आका कुम्मे कियाह करना कहते हैं। इनवेंने कुन कहे किय केन्याची परिषेत्र कार्य स्थेत्यर कर तो।' जाने केरो हाव केंग्रवर अकृ कि 'रेज्याव ! वहाँ शासकेंग्रेफे और पेरे क्ष्मेळ एक है उच्चेका है। इस्तीओं आप गुड़े का बराबर नार्ग केर्रे, व्या क्रिक नहीं है। विकासी मिन्सी स्रोक्ते प्रतिके काने कोची हरत है जुली है, या पान, अल्ब्रो कैसे होड़ क्ष्मण है और सबसे पान पासर ऐसी मान बाद ही कैसे राजार है। आसमेर कृत्या हत निकारे पूर्व कृत व्यक्ति ।' वेक्कानोंने कहा—'नत ! हन पहले हमलेगोते अभिन कर पूर्व हो कि मैं हुन्तुन्त कान करिया। अब अधिक मा सेके। अधिकाम कई करे कार्का निर्मा क्या—'क्ष्मकारों निरक्त कहा कहा हुता है, में कैसे क महेल ?" इस्ते बक्क—'काले, पुर वहाँ सा सकते।' रक्षा अवस्थ अस्त सम्बद्धान्य वेरोय-दोक जोत करके

करवारीको देखा। राज्यनी और संविधनों भी को देखकर मूख अवाद का नहीं। वे इस अनुका कुक्त पुरालो देखकर मूख हो गर्नी और सरिक होकर कुछ कोल न सर्वों :

रामनार्थने अवसेको बीमाराकर राज्य नावारे कक्य-'स्वेर १ इस बेस्तनेमें को सुन्हा और निर्मेश कर पहले हो। पहले अध्या मीरकर कराओं ) तुन वर्षी किस ओइको आने हो और पर्वे असे अन्य इत्यानी तुने देशा को भी ? उसे प्रतिक भी चंक से मानेवर मेरे निवा उन्हें बात बात एक से है।' असने बहुः—'बहुकानो । वे बहु है। ओकावानेका हुए बनकर प्रकारे पास जाना है। सन्दर्ध ! इस. अर्थाः, बक्न और पर-ने पार्च हेका हुन्हरे हरू दिखा करने जाते है। हुए प्रत्येते विक्री एक वेक्काको अपने परिषेत्र काने परम कर सो। को संदेश नेकर में इसके करा अन्य है। इस विकासिक प्राथमाने ही पान में सुपारे पहाची उनेह पहाने रन्त तम पूर्व कोई देश गाँँ तका। की देशकांका स्वीत बार किया। अस सुनारी को स्थान हो, करे ।' कारपारी पहले स्त्रके ताम वेताओचे उत्तम वर्ण कर-क मुख्याचर भागो कहा---'भोग । जान को डेक्टीचे think after secon withink the 4 wanters sprough was केट करे। में सार्थ | की अपन सर्वक और अस्ते-आपको भी आपके परणोपे और दिना है। आहे मुक्तार विकासकर्त होन परिश्लित । विका दिल्कों की इंगोप्की कर सुनी, जरी दिल्लो में आपके मिल्ले समझूत हूं । अलब्के देलों क्षे मेरे रामाओको भीड काली को है। यह ताब का करीको प्रार्थन कर्माच्या का हेरे से में कि एक्स, अल्बे संरक्षा, 'करीमें क्रम्बार का कॉसी सरकार अवनंद तिसे कर राजीती ।" रास्ता मान्ने बाह्य-- "का मंद्रे-को स्वेक्ट्यार हुन्हरी प्रमान-प्राथको प्राप्ति है, एवं हम युह बहुवाडी को यह रही हो ? का ऐक्वीकारी हेक्काओंके परण-रेज़के सन्धन थी तो में नहीं है। तुम अपना पर उन्होंने सलाओ । देखकाओंका अप्रिय करनेते वनुष्यकी नृत्य हो शारी है। तुम वेरी रहा करे और उसको करण कर हो है जानदी बात कुम्बर कुम्बरी कारा नहीं । उसके होयें केटेंने जांच करक आहे । का बड़ने रूरी—'में सब केलाओंको उत्तव करते अवन्ते से परिकारने तरण कर रही हैं। यह मैं अब कुक्क का रही है।" कर रामन दमनारीका प्राप्ति काँग रहा का, हाथ पढ़े हुए थे ।

एक नतने वहा—'अका, तब पूर्व देश है करो। एसू भा में अवताओं कि मैं वहाँ उनका कुर बनका संक्षेत्र पहुँचानेके दिन्दे अका है। यदि इस स्वयं में अका कार्य बनाने समु से बिजनी बुधे बात है। मैं अका कार्य से क्षेत्र

वै करन वर्कने ।" इस्वनीने नत्त्व कराने कहा-'जोबार ! अस्के रिप्टे एक निर्देश करान है। अस्के अनुसार कार कार्यका आवती कोई केर नहीं सरोगा। यह उपाय मह है कि अन लेक्सलोंके तथा सर्वत-स्थानी आहे। पै क्षके अपने ही अध्यक्षे परच कर ऐसी। एव जायको होन न्हीं रुपेच।' जब एवा नत हेकाओंचे पता आहे। वेक्कानीके प्रात्तेन प्रयोगे प्रात्त— भी कामकेगीकी आसावे क्रान्त्रीके बातने एक । बाहर वहे प्रस्तान बहुत है से है, रोष्ट्र अपूर्ण अञ्चलकोतीक प्रभावको स्त्रो देशा गर्छ । केवल क्रमणी और सम्बंधे सामिनीने मुझे देखा। में आक्रमीने पह गर्नी । की क्रांपनीके प्रताने आक्रोणेक पतीन किया, गांव पह से जानारोगीओं न प्रकृतन मुद्रो है गांच बनरेनर क्षेत्र हो है। अने प्रकृति कि 'क्ष्य देखा अपने साम कर्मकारे उसमें । में कार्य प्राप्ते हैं आपनो करन बार केरी । हमारे आपको होत को स्थापन ( की आपनेगोर्क सामने क्रम को बढ़ हैं। अधिक प्रयास सामरोग है है है

राज क्षेत्रको हुन कुलि सर्वताल प्रत्य रहा और लेकेचे कच्च केच। उस एक अस्ते-अस्ते filmentali in-atti string-Mapi gargar fal रूपे । इसे राज्य कामाओंने पर गर्मी । यस सुध स्रोप अवने-अंको अध्यक्त के गाँ, एव कुमरी द्रम्पनी सन्त्री अक्रुवार्मिको एक्सअपित पर और वेलोको अस्पी और कार्यांक सामी हाँ द्वाराकारों जाती। राजाजीका परिवर्ध निया करे राज्य । कामणी एक-एकाके देशकार आने सहवे राणी। आने एक ही हमानवा नालेंद्र समान आबार और नेपाइको परिव साथ हमाई ही देते हुए थे। इसकारीको प्रोदेत हे पर, पर पर करते की समय सही। यह जिसकी ओर देखती, नहीं नार नान पहला। इसलिये विचार करने राजी कि भी केवलकोंको बैसी प्राप्त है और में राजा जर है--व्य केले करी?' जरे कहा कुछ कुछ । असमें इन्स्पर्याने वही विद्वार विकार कि देखारानोकी प्रत्याने व्यान है जीवा है। इस नेइकर प्रमानपूर्वक सूति काले क्षेत्र - देवकारो ! इंक्कें मैहरे मरका वर्णन समाप मेरे जरे परिवासी करन कर दिया है। में मन्त्रे और स्थापि मानो अधिरेक और विश्वेको को बाहरी। वेकाओंने निक्केवर कार्या है पेर पाँउ बना दिया है उच्च मैंने कार्यों अराजनके रिने हैं का उस उसमा किया है। मेरी इस सता क्रमण्डे मान्य केवलनेत नुते जो में दिवार है। वेक्प्रेक्सी सोकारों ! आवरोग अवश् कर प्रवट कर

हैं, जिससे में पुरावस्त्रेक नार्यात मानको क्वान है।' देश्वाओं देशकार्यका का अवस्तिकार सुध । अस्के कृष विश्वास, सभी प्रेस, अस्तरहृद्धि, सृद्धि, श्रांक क्षेत्र अर्थर का-प्रश्चनात्राको देशकार उन्होंने उसे हेरी क्रांक दे के जिससे का देशकाओंक क्रांस्टर कार्यना नहीं है। क्वाके विश्वती नहीं हैं। मारक क्वान्स्टर्सी नहीं है। क्वांस्टर मेरा नहीं है। विश्वत है, प्रांत्व क्वान्स्टर्सी नहीं हुई। क्वांस्टर मुख्य बहुद और कार्यक की दे। सरको क्वान्स्टर निर्म की है। उसेर कार्य क्वान्स्टर्स की



क्रमानि इन क्रिक्नोरे केम्बर्स और पुन्तस्तेष नामो प्राणन क्रिया। फिर कर्क अनुसर नामो परम का क्रिक्त। क्रिक्नोरे क्रुक्त अनुस्तान क्रिट काइ क्रिया और मार्के प्रदेशे क्रिक्त क्रात है। क्रेस्स और पहिले क्रियु-काब् क्रिके क्रिके राज्यानीने प्राथमार क्रात नाम।

रामा जाने कान्यांतिकारे कान्यांका वर्षिण्या वित्रण । क्ष्में बाह—'कश्यांको ! क्षमें नेन्याओंके कार्या स्वतंत्रर के क्ष्में परण न कार्या पूर्व कान्य क्रिका है, इस्तीरणे हुए बुक्को जेकसायम की सम्बद्धाः में क्ष्मारी कार्या कत्ताः कार्याका मेरे समीरणे जान क्ष्में, स्वतान में कृतारे जार

कारण—यह में कुछते इत्यवपूर्णक साथ पहला है।' केपोने केपो एक-कृतिका अधितनका कारक इसकी हेवलाओंकी



पुरस्य पहल भी । विभार भी बहुत प्रस्ता हुए । उन्होंने नामके अक्ष कर देने । इसने सक्क-'पान । तुन्हें बहाने नेता दर्शन होता और उसन नहीं निर्माण है अधिने सहर-'नाई तुन वेश करण करेगे, नहीं में उत्पाद हो कार्रगा और मेरे ही हरून प्रध्यक्षण क्षेत्र हुई कह होते हैं प्रमुक्तने क्क्र—'कुक्रदे कराने हाँ जोई बहुत कीरी होगी और हुन क्रमें करें। क्र क्षेत्रे (' क्रममें क्यू--'क्यू हम प्राहेते, को कर अबद हो कारण। हुन्हरी काल कार भवते क्षीदर्भ क्षेत्री।' इस अकार क्षेत्री का देवन राज देवता अवने-अपने लोकों को गो । दिश्रीका राजानेन भी किस हो को। बीकाने उत्तर होतर क्रमणीया पार्क स्वत विक्रिपूर्वक विकास कर दिया । प्रमा कर कुछ विकेशन विदर्श देवनी प्रशासने पुन्यान्त्ये हे। जानार सेनकसी अनुबंध क्रम करके वे अपने पत्ती कावसीके आव अपनी क्रकानेने और असे । यस यह समर्ग रामसाने क्री अनुस्तर प्रयास्त्र स्वतन स्वत्ये तये। समयुक्त उनके पूर्व 'राज' भूग राजीय हो पत्र । उन्होंने अवनेय आदि यहान्हे यह किये। समय अनेकर शतकारीके गानिर इस्तरेन रामक कु और इस्तोन करन करना में कर दूसा।

## कल्पियुगका दुर्धाव, जूएपें नलका द्वारना और नगरसे निर्वासन

महर्षे मुक्ता कारो है—ब्रोक्ट्रिट ! मिल समय | इनक्तीके वर्षकार्ध स्वेतकर प्रसाद स्वेतकर अपने-अपने लोकोंने व्या खे है, का करत करती पार्नी है करिशन और प्रधारों पेट हो नहीं। इसने पहल-पाने करिन्तुर । कर्ज का खे हो ?' करिन्तुर के क्या—'वै राज्यपतिक व्यवंत्राचे अस्ते विषया बारवेके वैश्वे वा या है।" इन्हरे हैंगबर बद्ध—'आर्ट, या उलंबर से क्योबर एक है म्या । क्ष्मपुरीये राजा नाम्यो करण कर दिया, कुल्लेन ताबके ही सा गये।' करियामरे ब्रोक्ये परकर बहा-'ओइ, सब तो चड़ा अनर्थ हुआ । सामें देशकातीकी कोदह क्षाके प्रकार अन्यत, इसीये कार्य एक हैट वार्षिये ।" वेकामधीने कहा—"स्वयन्तीने प्रान्ती सामा प्राप्त अरक्षेत्र कार्या कारण निर्मा है। पास्तानी पार सर्वेपुरुसम्बद्ध और अस्ति कोन्य है। के प्रश्नात करोडि वर्षात और प्रमुखारी है। उन्होंने इक्किन-पुरानीके स्थित केटेका spaper flow & it webpart and busselish up करते हैं, कची किसीओ स्थाने वहीं, सम्बन्ध और कु-मिक्रपो है। क्रमपी पहुरता, वैमें, प्राप्त, प्रश्नात, परिवार, क्रम और पान सोक्यालोके सन्तर है। अनके बाल केंग्र के नरकारी बाजवरी अंतरने निरम है।' यह प्रदेशन वेजावरेन क्रमे यहे।

अब करियानी प्रयत्ते का-"याई । मैं अयो कोवकी प्राप्त नहीं कर प्रवास । इसकिये में नामोद प्रस्तिमें निवास कारेगा। में को राज्यका कर हैय। तम का क्रान्सीके साथ नहीं या अवेदना । इस्तरियो क्षण भी भूतवेद करायेने प्रवेक काले मेरी सक्रमण करना (" क्रमरने करकी कार स्थितन बार सी 1 प्रचर और क्लीस्पून केंग्रे के नामके एक्पूनीने मा करें। बाच्य वर्गतक वे पूर्व बालको अर्थाहरूने के कि स्तम्में कोई दोष दीस जात। एक हैन राज्य का सन्तमके प्रमान रामुस्कुरते रितृत क्षेत्रक के बोचे क्रिक क्षेत्र शासकर पाओं रोजाय-समार पानो पैट गर्ने । भू अस्त्रीक अस्त्रात देशकर करिन्द्रग उनके प्रदेशों जनेव कर नवा। साथ ही कृतन प्रता करने के कुकारके का तथा और कोगा—'हम नानो राज बुजा कोबो और नेरी स्क्रमानो पूरमें क्या सामारे जीवकर नियम देशका क्या प्रश्न कर हो है पुरस्क अपनी कर सीवार बनके बनके बन परता क्रमा भी पालेका कर बारम करने उसके पाल हो रिम्ब । जब एकाने एक नामी कर-कर कात सेलनेक साक किया, का राज पर क्रावर्तको सामी क्यों महोद्ये कार-कारको तरावकारको स्त्रु न सके। उन्होंने उसी समय कारे कोलनेका निश्चम कर लिया। उस समय नार्क सरीरनें कारिन्युर पुरस कुमा का, इस्तिनो रांका कर दांतेने क्षेत्र, वरि. रच, कार्य जादि को पुक्र समयो वह इस करो। प्रया और वर्षकारेंगे कारे काब्युन्तराको साथ क्या नरसी निरम्बा पूर्वे। उसका आध्यान कारकर द्वारवार पानी स्थवनोत्रें क्या नका और केला कि 'आप कारवारों निर्मेश कर देखिले, जाव वर्ष और अध्यो कारवा है। आपकी सारी क्या अध्या पूरक कहा य होनेंद्र कारक कारवाय स्थापनेय अध्या पूरक कहा य होनेंद्र कारक कारवाय स्थापनेय अध्या पूर्वे है।' कारवारी कर्ष कुमाने नार्ने कुमाने और अध्या कु का यी की। जाने अधिनोंने नांन्य कारवार महाने और अध्याने कारवार्क कारवें क्यांन्य क्यांन्य क्षेत्र केला आपते



निवर्त आये हैं और मुक्तिया एके हैं। जाय जाने जिल स्मिनि (' परंतु का करिन्युक्ता कालेस होनेसे कारण कुछ की जा किए। व्यक्तियाल और प्रकार सोग क्रीकास होता की क्या एक क्या और कार्य को प्रहारिका कुल होता का क्या एक कर करवर हातों को। क्या कर बूलों जो कार्य केवले, ने करवर ही उनके प्रतिकृत पहले। इसक का हान्से निकार करा। का एक्क्सीको हम काला एक चाल, जब उसने बृहतीना क्वाची व्यापके हुए। एका जानके सार्यक धान्में को कृतवाका और उसने चाहा-- 'सार्यक | हुम राज्यके जेन्यता है। जान चा चाल हुमते कियी नहीं है कि महाराज को संकारने हो। जान चह चाल हुमते कियी नहीं है कि महाराज को संकारने पह गये हैं। इसलियों कृत चोड़ोको राजने चोड़ को और मेरे होनों क्योपको राजने कैस्टीका पुत्र चोड़ को और मेरे होनों क्योपको चो चाही होड़ केता। सुन्धारी हुखा हो को चाही चाला। चाही हो चाही हुमरों वागा करते काना करके व्योचको सुन्धान्त्र स्थान हुम्सर मानिकार का साम करते हुमरा और चाही चाहुमार्ग सम्बाद का सार्यकार का साम करते हुमरा।

क्रामीन प्राथितिक कार्र कार्रिक कार् पुत्रकारी प्राथित फेरने प्रमा मन्त्रा राज्य और यन से रिन्स ( साने नान्त्रो सन्योकन भरते। हैली इस बाह-'और कुला बेलोने ?' पांच प्रमारे पास समेरर स्टालेके हैं से कुछ है है जी। यदि तुम दानवर्गाच्ये सुवेशर स्टानेकेच्य संस्कृते ही हिए होस है। सामा हरा माने सात है इकाले कह भी जी बोले । क्योंने अपने प्राप्तिके स्था अकायुक्त उत्तर दिने और बैठार वृद्ध वर्ध म्यूने नगरते यहर निकार । कुरवारीने भी केम्प एक पाड़ी पहाचार अपने परिचा अनुस्तान विर्धा ( भागोर जिल और सम्बन्धियोगो यहा फोव्ह हुआ। पार और क्रवन्ती हैनो नगरके कहर तीन उत्तकता हो। कुळाडी जनस्ये विहोत्त विरम्प दिया कि को अनुक्त उनके और सहसुपूर्त प्रकार करेगा, असको करियोदी एका ही जावारी । एकके पारे भगर्गंद्र स्वेग अपने राजा नाम्बा स्वयस्थान न कर सर्थः। राम का तेन विर-सामय असे उनमें का बेका करी भीवत के। क्षेत्रे मेर को बढ़ी पूर्व करो। तैन क्षेत्रे करा-पुर कावा व्यक्ति अने करे।

एक दिन राजा जातो देशन कि बहुत-से गाड़ी उनके गाड़ है की है। उनके चंत्र सोनेक समान एका से है। जाने सोचा कि इकके निरात गुरू पर विशेषा। ऐसा प्रोक्तकर उन्हें प्रवादोगोर दिनो पानो उत्तर उत्तर सामा बहुनोक्त प्रवाद कर दिना । पाड़ी उनका पत्र तेयार का तथे। अस पान मेंने होकार पाड़े दी-मानो साथ है। वैसे किसे पाने हो जारे। प्रवाद का । उन्हें देशकर हमें बड़ा पुंच्या हुआ का। है। उन्हें पाने का देश सारेन्यर क्या देनों या से है। इस पाड़ी नहीं, जूनके बाते है। जाने प्रयानीसे मारोगी बात यह हो।



अर्थ का साने का-कि ! हम देश की है, नहीं कान्त्री कर्न है। एक अवसीको और बाता-है, सुराय पंजाबन्द प्रवेत्तर क्षेत्रल क्षेत्रक क्षेत्रको । सामने सिम्ब्राजन पर्यंत्र है। यह पर्यक्रिक यह राष्ट्राओं निर्मान है। ये अपूर्णिकोंक्र साध्य है। प्रार्थिक चंका निवर्ष देवको जाता है। यह बोरको देवलो भागे है।' इस अवस राजा गर द्वारा और क्रोक्टरे परकर क्यो राजकानीक साथ स्थापनीको विद्या-निका पार्ने और अस्तर बदलाने राने । प्रत्यानीकी अस्ति अस्ति का कर्त । या कहून करते ब्याने लगी—'लामी । जान कथा क्षेत्र को है। मेरा कुरीर कहा रहा है। क्षारेकोर्ने सहित का को है। आकार काम काम, कर गया, प्रतीरवर कहा नहीं क, को-की का पूरी-करों है का में अक्को हत निर्मन करने क्रोड्स्यर समोतरी नहीं का सकती है ? ये आएके त्यम क्षावर सामके हुआ हुर कर्मनी । कुलके सामारीपर करी पुरुषोद्ध दिनमें अधिपद्ध है। यह देनी देवार परिचेह दु:सामहे कम करते है। यह कर केंद्र में स्टेक्टर करते हैं।" जाने म्बा- 'तिये । इन्हर कहन ठीव है। नहें नेता है, यह जीवन है। पांतु में से सुकार जान करना भई कहार। तुम ऐसा स्वीद कर्य कर जो हो ?' इस्तरकी धोरवे—'इसर मुझे कोइमा नहीं बाहते, पांतु मिन्धं देहच्या भागे वर्षो कारण रहे है ? जारे निक्रम है कि जान मेरा जान नहीं कर सकते । किर भी इस राजन आरमा पन सारत हो जना है, इसरियो देशी

सहार कारते हैं। अनको आने बालनेके केव कर दुसरा है। | कभी राजा का। इस करने में संबदने पहकर उनके प्रस्त नहीं बहि आप मुझे मेरे फिल का किसी सम्बन्धिक का नेकन कारों हो तो होक है, इस केने साथ-साथ करें। मेरे केने एक ही काओ हारेर कर बनमें इसर-कार कुनो थे। विद्या जानका सरकार करेंथे। आप वहीं हुससे क्षेत्रेण हैं । कूल-व्यापने व्यापुरत हैकर होती एक वर्णसाराजे अपने साने कहा—'डिये ! हुपारे विक एवा है और मैं भी। और वहा करे।

कर्मण।' उस पर कारचीको संग्राते हुने। कारचर

## नलका दमयन्त्रीको त्यागना, दमयन्त्रीको संकटोंसे बचते हुए दिव्य ऋषियोंके दर्शन और राजा सुबाहुके महलमें निवास

कुरदक्षणी करते हैं—पुणिश्चिर । जब सक्ता राज्य करते | क्या काने कुरूने हो रही है। जब की बिना दुःशी होयार काने प्रतिपार कक्ष नहीं या । और से क्षेत्र, कालीका विकारिक विको | कैसे किनेती ? हैले | कू अपनिवर है; हमारिको आस्थित, कृत करते के जो के। प्रशेष कुछो समस्य है का वा क्षा-प्राप्ता पैक अलग है थी। एक पर वर्णना है से एके । व्यवस्थित कोकाने भी कभी देखे विश्विती पूर्व आपी हो । यह सुबुक्तरी की वहीं से पनी । कुरूरतीके से सानेक रामा कामती नीह हारी । इसके सात को पढ़ की कि में दू-पत मोर क्षेत्रको अधिकाले कारण कुरूकी और हो की की उसी उनके है। असि पुरसंपर समेंद्र सामने राज्यके किए जारे, सर्ने-प्राम्यप्रिकोर्क सुरमे और प्रक्रिकोर्क क्या लेकर का मानेक सुरम इस-एक करके आने समें। ये सोधने हमें कि 'सम्बन्धे गुरू-यर बढ़ा प्रेम करती है। प्रेमके मारण ही का उपने क्षूप की चीन रही है। नहीं में इसे बोदधार बाद बार्टिन हो का उनने विताने कर पानी वालेगी। मेरे साथ के इसे इन्कानी-इन्क भोजन बहेता। यदि मैं हो होहकर करत करते से सन्तर है हित हुने सुद्धा भी निवन करण ।" अन्यने राज्य जाने पढ़ी निवास किया कि कुरवारीओ क्रोड़कर जारे करेने ही पास है। प्रकारी सभी भीतात है। मोर्ड की प्रकंड सरीकारों कह जी कर समाग ।" इस प्रकार स्थाननेका निवास करोड और प्रतीतको श्रोपरे निर्देशन होका राजा नामे का विकार किया कि 'में नेना है और हमक्ताओं प्रतिस्वर की केवल एक ही करा है। फिर भी इसके क्लोमेरे जाना कर रेम्ब है केनाकर है। पंतु काई कैसे ? प्रांत्य का यन जान ?' ने करिएकों इसर-कार कुले तले। जन्मी हुई एक वित्र स्थानी क्रान्यरपर पढ नवी । समा नाने को सह शिम्ब और व्हिले इस्पर्योक्त आका यह कारका अस्त वर्गन कर रेग्स । कारको पोर्ट्न को । एका का उसे क्षेत्रकर निकार परे । केसे देर बाद तान करका हुएव सान्त हुआ, तथ वे नित्र वर्णकारकों और आहे और क्रावर्तीको बेसाबर होने हमें। वे स्टेक्ने हमें कि 'क्कान मेरी जनकिया अग्रह्मके मार्के वर्डी थी, हारे कोई ह भी जी सकता था। जान पर अनको स्थान जाना



क्यू, का, सरिवरिक्रमार और प्राप्त देखा हैने प्राप्त करें।' का सम्बद्ध प्राप्त का कुल कुलके भने कुन्दी-कुन्दी हुआ ज का या, वे क्रुपेकी तथा कार-का कर्मकारको बक्रा निकाली और किर सीट आहे। करीरने करिएकका अनेहर होनेके कारण करेंद्र तक के पाने औ, प्रतरिन्ने अपराः ने अपनी अन्तरीत्व प्रतिको सन्तरे अकेरचे क्षेत्रकर पहिले पारे पर्व ।

का क्रान्योको नीह हुई।, उस जाने देखा कि उसा सा क्षा को है। का सावंकारे गायर फ़ारने हनों के 'सारका । कानी ! मेरे सर्वत्र । अस्य बाह्य है ? में अबेरती क्र रहे है, जल कई को ? यह, अब अधिक हैती प व्यक्तिये । मेरे कठोर स्थापी । जुड़ो क्यों कर रहे हैं ? बीज । मार्गन रोजिये । मैं जानको देश स्त्री हैं । स्त्रो, यह देश विस्ता । रमाजीकी अध्ये क्रिकार पुत्र कर्षे हे से है ? में दुःसमें पहचर हात्व मिला कर की है और अंश मेरे फार आकर वैर्ध भी नहीं हो ? राजनी । युद्धों करना या और विर्माण शोषा नहीं है । पुत्रों केवल इसमें ही लिया है कि सार इस भीर पहलाने सबेले केते जेने ? स जार । विनेत्रविकारको सारको जिस पुराने यह दक्त की है, यह अध्यो की अधिक सुर्वताच्ये प्राप्त होच्या निरम्पर कुन्नी भीवन क्रिक्के हे वृत्तवनी इस अकार विराम भारते को इसर-कार केहरे सभी । यह क्यान-पी होका क्रार-कार कृतते हुई एक अवस्तादे कह का प्रदेशी, सोकारक होनेके कारण अहे हुए कारक का की व्हर्ति प्राप्त । अध्यक्त प्राप्त-बीची निवाली संस्था । उस प्राप्त मी इन्तराधिक विकार अपनी गाँउ, एका मानती हो किया की कि वे अवेदने वैक्ते रहेने । यह पुरस्तरने सन्त्रे—'स्वाची । यहाँ अनामकी पश्चि का अन्यत निर्मा का है, अन को क्यानेके विन्ये कर्वे नहीं और उन्हें ?" क्रान्यकीयी उत्तराज



क्ष क्याने कारमें पड़ि। यह कार है कुन का वा। यह वह कुमार आया और यह देशका कि क्यानीको अवगर रियार पड़ि है, अपने केंग क्ष्मिने अवगरकार कुँ और कार्य । असे क्यानीको कुमार क्यान, अवकार केंग्र केंग्र कराया। संस्थारी कुमान कुछ जाना हो। स्थानने कुछ-

'सुन्ति । तुन बर्धन हे ? विका ब्यूने पहला विका संदर्शने वर्ष अली हे ?' इन्क्यारि स्वकारे अपनी स्वा-व्यूनी वर्ष । क्यानीकी सुन्या, बोल-वर्ण और मनेद्वा देशका बाव व्याननेहित हो गया। व्यू मीटी-मीटी बारे काले एक्याबी अपने व्यूने करनेकी वेट्टा करने हता। इन्यानी पुरावा व्यानके कालो श्री कालको सोवके अलोको अन्तिका है नची। इन्यानीने व्यानके सावकारकी बेट्टाको ब्यूडा केन्द्रा व्यक्त, परंतु का यह विका प्रकार म व्यन्त, का अलो हान दे दिला—'महि हैने विकान की विका है से व्यू पानी हुए बाज स्वकार की विकान की विका है से व्यू पानी हुए बाज स्वकार



ही नवानके प्राप्त-पत्तेक वह गये, यह बसे हुए हैंउकी राख गुजीबर निर नवा :

व्यानके पर नार्नाम क्ष्मणा एका माम्यो हैस्ती हुई एक निर्मन और पर्मकर कार्ने का पहुँची : क्ष्मण-में पर्मा, नदी, नद, ज्यान, विक पह, पाती, विकास आदिको देसती हुई और निरम्नके राजापर उनमें राजा नार्मका पात पुत्रती हुई का राजाबी और कार्ने एन्टी : तीन हिन, टीन पात चीन प्रानेके कार दान्यन्तीने देखा कि इसकरे ही एक बढ़ा सुद्दर राजेकन है। का संस्थानने करिया, पूर्व और सामिक समान निराधिनी, सम्बंद, परित्र, निर्मेन्सन और समान्ती कृति निरास कर हो 🛊 । ने क्योंकी कार अवका मृत्यासन करन किने हुए थे । 🍴 इनक्रोको कुछ वैयं जिला, उसने स्थानमें ज्यापर नहीं मानावे जान सरकी अभिनोधी प्रभान किया और प्रम मोहकर सुद्धी हो रूपी। अधियोंने 'सान्य है' सहकर क्रमणीया सम्बद्ध किया और बेसे 'मैठ पाओ । उन हुनार एक कार करें ?" इसलांने यह बोहरके सका कुल--'जानको सरस्य, अति, धर्न और प्यू-न्यून के क्षेत्रकार है प ? आयोह वर्तावरकों से फोर्ड किए जी पक्षा ?' व्यक्तिने कह--'कानात ! इन वे इक क्रवाने प्रमुख्या है। एवं मोन हो, बिक्त महेनको नहीं अभी हो ? हों बढ़ा अवहर्ष है का है। क्या पुत्र कर, क्यांत, कोकी समित्राहरूक है ?' एकप्पीने प्रकृतः— 'प्रकारको ! मे कोई देवी-देवता नहीं, एक क्यूक-को है । में निवर्णनरेक एका भीनकारी भूते हैं। मुक्तिया, मुक्ति को मीनीनको निवयरोस महाराज पत मेरे पति है। कम्बाइको निर्मेखा कृतं दुरावा पुरस्केतं की क्यांच्या कांग्यते कृतत कोम्पनेके विन्ते काराद्वीत करवेद करवंद करवा और वह से प्रेरण है । मैं कड़ीबरी मती करवन्ती हैं। संयोगकर में मुत्रको निवाद गर्न हैं। में उन्हीं राज्योंको, प्रधानिकानुसार वृत्ते प्रकास गरिनेकती हैंकोडे तियों पर-पर पान्य पति है। मैं मीदे उनों प्रीय की नहीं देश पार्वन्द्रे से मीमित नहीं क असूनी। उनके मिना केव कीवन विकास है। वियोगके द्वारकों में स्थानक गा आईके।" तपरिवर्णने बहा— 'कान्सकी ! इव सक्त्री तक्त्रपृद्धि इक्तिरे देश हो है कि हुन्हें आगे बहुत हुन निर्माण और बोदे हैं। केरोपे राजा नरस्या वर्धन क्षेत्र । धन्त्रीका निरूपकोच कोडे ही दिनोंने समया क्ष्मोंसे कुरुक्त सम्बन्धिकारी निम्ब केल्पर राज्य करेंगे। अर्था क्या प्रमानीत होते, विक सुनते होने और कुटुन्दी उन्हें अपने बीचने पास्त्र आजन्ति होंने।' इस प्रचल बहुबार में का गरावी राजने जाताओं काम जानार्थन हो गर्थे। यह अञ्चलीको सत्य देशका क्रमानी विशेषक हे पर्या । यह योजने तथी कि 'कहे । मैरे यह कह देता है क्या? पर वैतरे परण हो नहीं। वे सन्तरे, साला, परिवारिका की, कर-करोंने को हो-को कह मर्ज को ?' करवरी किर सक्छ हो करी, जनक दक मुंखार्थ गया ।

व्यक्ति वरकार विवाद कार्या हुई त्यवनी एक अलेक-मूर्शके पार पहुँची। जान्यी अभिनेत्रे प्रर-कुर आंधु इर के थे। जाने अलेक-पूजरो गर्थर भारते कक्-'प्रोक्टरीत अलोक। ए वेग प्रोक विद्य है। क्या वहाँ हुने पान जान्यो प्रोक्टरीत देशा है? अलोक! तु अलो फ्रोक्टरावक व्यवको प्राचीक कर।' एकक्वीर असोकानी प्रतृष्टिका की और वह आने वहीं। जनकर करने अनेको वृह, पुरस, क्वीरों दिक्तर और नविकोध काल-कल अनने प्रतिदेवको कुल हो हानों, केही और रजेंके साथ जानसी वीका एक हैंहें आरे कह एहं हैं। व्यवकारियोंके प्रधानमें कालवीय करके और का काश्यर कि वे व्यवहारी क्या सुवाहोंद राज्य वेदिरेकारों का हो है, क्वानकी उनके साथ हो जाते। उनके काले असने प्रतिके कहा के व्यवकार कहारे हो का की की। कई विनोत्तक करनेके कहा के व्यवकार करने हो का की की। कई विनोतक करनेके कहा के व्यवकार करने काल करनेके कालक स्था लोग की को की। इस्तिको उन स्थे की कहार काल स्था होना के कालका होता । वैस्त कालकारियोंके अधिकार का। साथके कालक कहारी हानों कालकारियोंके इस्तिकोचर हुए को और असकी कालहारों काल



के-सब मामारी न्य-प्रमु हो नवे १ कोत्यहर सुनकर इन्यानीकी नीट दूटी। व्या हर महस्त्रहरका दूस्य देखकर कामारी-सी हो मधी। जाने कभी देशी काम नहीं देशी थीं। व्या उत्तर व्याप्ति पान निकारी और वर्षा पुत्र को हुए प्रमुख कहे थे, व्याप्ति प्रमुख । प्रमुख प्रमुख उन केन्स्सरी और संस्कृत कामार्थिक स्वया, को जा न्यास्ट्रहरूसी कम मणे थे, इसीरपर अस्त्रा क्या कारण किये कामने सभी और सामंबदस-के सम्ब केरिनंदा राजा सुव्यक्ति राजवानीके व्याप्ति।

विस समय क्याची एककानेके एकस्थार कर सूरे थी. नागरिकोने को सन्दान कि का कोई कालने की है। होटे-होटे वर्ष जाके पैके एक नहें। इस्तारी एक स्थाने कार का क्षेत्री । उस प्रकार सम्बद्धाः सम्बद्धान्त्री हैन्स्कोर्ने बैटी ह्याँ भी । क्लोंने क्लोंने विशे क्लान्डेको क्लाकर व्यक्ती महा कि 'जरी । देश जे, जा जी की दुविक करून पड़ते है। अपने रिल्टे फोर्ड जातन हैं। प्रते हैं। को इसे दुःस है के है। ह जर, इसे मेरे परम के आ। यह सुन्दर्ध से इसके हैं, जनके मेरे प्रकृतको भी प्रकार हेती। बाको साम्राज्यक विस्ता।



६०**१**%) कारकार्य श्रा गरी । सम्बद्धाने क्**राम्मीका सुन्**र सरीर बेराकर पुरा—'हेडानेने हो हम इतिहार कर पहले हो, से की समाप पार्टर क्रान्य हेन्स्त्री केसे है ? माहको, हुन

र्जन हो, किसबी पाते हो, अस्तान अवस्थाने भी विजीती इसी को औं है ?' क्वाबीरे कह—'में एक बीतरा को है। ये हैं के कुलेन नोड़ क्लीका कार करते हैं। अक्टबुरने क कुछ है। में बढ़ों भी स भारते हैं। करर-कुर सामार दिन किया देती है। मेरे चरिनेन महत पूनी हैं और ब्युक्तो केन भी ब्यूक्त बारते हैं। मेरे अध्यानकरी बात है कि मे किए मेरे किसी व्यवस्थित हो जाके प्राप्त पुढ़ी सोसी क्षेत्रका र जाने कहाँ क्ष्में भी। में राजनीत अपने अन्तर्वाच्ये कृत्ये और उनके निर्मार्ग जानी सूची है।" प्राप्त करो-वको कुल्लाची जीतीने जीव उन्ह भारे, म्ब हेने रूपी । इस्त्राधीले कुन्दानरे निवासने राज्यातामा सी पर सम्बर्ध में कही सभी—'कामानी ! केंग्र हुमरा साम्बर्धिक हो जेन हो यह है। हुए मेरे बात यहे, में तुम्हरें वृतिको हैकोबा अन्य करोगो । यह वे सामें, राम तुन करते को निकल है इनक्सीने भार — 'नाराजी । में एक पर्तक अपनेट पर पर स्वयानी है। मैं कार्य पहल न सामिनी, निर्मानेट के जो केंद्रिये और पर-पुरुषेत्र शाम किसी अधार भी कार्यात को करिये। की मोई पुरू गुप्तरे प्रकेश करें सें को एक देन होगा। बार-बार देशा करनेनर को जन्मन क्या के देख होना । मैं अपने परिच्ये देवनेते दिनो हास्तानिते करानेक करते सूनी। उत्तर पदि नेते वह वर्ग स्वेधार की क्र में में स्व क्रमते हैं, अन्यक नहीं है राजपान स्वयती है रिक्कोको सुमान पहल अस्त हो और उन्हेरी पहल कि ऐस है होना । स्वरूपर कहेंने अध्यो भूते सुरूक्तो हराया और क्का कि 'मेरी 1 देखें, इस ब्रह्मेंको देखें सन्दर्भ । पह क्रमानो पुरस्ते कामानो है, प्रश्नीको प्रश्ने सन्तेने अन्तर (क्यापार के क्षेत्र क्यापार क्यापार के क्याप को ।' सुरूक जानामके तथा क्षरप्रशीको अधने स्थानो है पर्यः । कृष्यम् अस्ते कृष्णम्यारः निकान्ता परस्य भारते औ

#### नलका रूप बदलना, ऋतुपर्णके यहाँ सार्राव होना, मीमकके द्वारा नल-दमयनीकी खोज और दमयनीका मिलना

शासन सामी—'राजा पता !'जीता बैबी ! पूर्व बचानी है' साने बद्ध—'हरे का " ने चैड़कर कुकराने पूर को

कुरुश्रापि सह—भूतिहर । विका समय कथा कर | है। असे हक सेवकर जानो कहा—'राजर् । मैं कार्योटक इनकरीको होती होहकर जाने को, जा सनक करने जनका हार्र है। मेरे देवको ब्रोन नकाको बोर्स क्रिय था। क्षणाहि तम पूर्व की। यह कुछ दिएक पर्ने, उनके करनेने | उन्होंने ताम ने दिया कि अवस्था एका यह पूर्व के बहाते, काराक नहीं पहा रह । उनके उठानेवर दू सावसे पूर्व आवागा । उनके प्राची कारण में स्थाने एक पन भी इतनाह नहीं और देशा कि नागराम क्यांटिक कुम्बारी सोमकर पड़ा दुश्य । स्थाना । तुम प्राप्तरे पेरी दशा करे । मैं तुमी हितकी जाव महार्टिश और पूच्या कि वंद कारिया । मेरे कारों की मा । मैं अभी प्रमान के मार्ग हैं हैं का मैं पूर्ण करार के मार्ग । महा को अलगा क्यानको कार के साथे । कार्गेकारे महा—'रामर | पूज अभी जुड़े पूर्णकर के साथे । मुख्य मर्गता कियों कर्म कुर कार्ग । साथ कार्ग को के कार्ग पूर्ण क्यान कर करा और कार्ग 'मार्ग, को है अभीका महार्ग की किर किरा । सामा किया के कि का कोई 'मार्ग सामांद्रिक अपने साथे के नाम । सामार्गकरित मार्ग करों महार्ग्ण | पूर्ण कोई स्था । सामार्गकरित मार्ग करों महार्ग्ण | पूर्ण कोई स्थान के असे, प्रमाण मेरे

एकत का नक देख है, करियुओं हुई क्या दुक



हिना है, तम मेरे विकार का एकर करियों कहा हु: की होता। तुमने केरी उत्तर की है। अब इन्हें विकार कह-प्रको-अब और इक्क्ष्मकारिय की कोई कर की दोना। अब हुकर किसी भी निकार तम्मा नहीं होना और कुलों उन्नेत एकरी कीड होनी। अब दूध अन्य नाम बाह्य रहा को और कुल-हुक्त रांचा अहन्यांची कर्मी अवेदानों काओ। हुन उन्हें केनेंगी निका कर्मान्य और वे हुन्हें कुरूबर रहना कान्य मेरे हुन्हारी कहि, हुई, हुन, क्रम्य इन्हा कुल निका कान्य। का हुन अपने कुले उनको करना कारी, इस मेरा कार्य

करना और की दिने हुए कहा भारत का हैना है यह प्यापन सम्बोरको से दिना गया हिने और वहीं अन्तर्जन है गया ह

त्या पत्र वाधे सामान दाते हिन क्या सहमांची राजानी अधेनाने पहुँच को। अहेंने वह राज्यस्मारों तिकेश दिया कि 'पेय कर सहस्य है। मैं केहीको हमिने क्या जो उत्त-ज्याची चारे शिकानेका साम करता है। केहोको क्रिकाने हो-केश विद्या इस क्या पूर्णांका और



कोई नहीं है। जर्बस्त्वाची तका जन्दाना पंचीत संपादनंती-पा है अबार सम्मीत देता हूँ और उसंदें बनानेंचे भी कहा है कहर है, इसे इक्कांस्टरने सभी करण स्था और दूसरे भी करिन करणेंको में करनेंची बेहा कर्काः। आमें मेंहें आयोगिका निर्देश कर्नेंद चुने एक स्वैतिनें हैं अनुकारी कहा—'कहा । हुए क्ले आने । हुएले किसे ने सभी करण होते । पहुं में बोलमानी संवादिको विशेष पहेंच करणा है, इस्तिने तुम देश क्लोग करों कि मेरे पोड़ोगी करण तेन हैं कथा। में तुम्हें अक्लांस्टरना सम्बद्ध मनता है। हुन्हें अविदिक्त क्लोग (नाम्बर पुरस्त कर्नि) और पीचन हमेल हुन्हों क्लांस (नाम्बर पुरस्त क्लांस) और पीचन हमेल हुन्हों क्लांस क्लांस क्लांस पुरस्त क्लांस्टर्स क्लांस क्लांस करने क्लांस क्लांस क्लांस हम्म अक्लांस मान क्लांस हमें एक अधितिन स्थान क्लांस हमान अक्लांस मान करते कि 'इस-इस्टर्स स्थान क्लांस क्लांस स्थान करते क्लांस करते कि 'इस-इस्टर्स हमिन्नी इपवणी पूरा-जासरे कारावान कारी-वाड़ी उस मूर्वाचा जरम कार्ती होगी और न कने कहाँ होगी होगी? परस, सह अपने जीवन-निर्मालो डिमी डिस्स्टेड जार कारी होगी?' इसी प्रकार ने अनेकों कोंगे लोको और इस प्रकार प्रमुखनीर कार होगे कि उन्हें कोई कारान न सके।

या विदर्शनीय शीरावाको या समावार विदर्श कि वेरे हातार तार राज्यपुत होयर देती पुत्रीके स्था करने वारे को है, तम अहींने आहानीयों पुरस्काय और उन्हें बहुत-तर का देवर वाल कि अराजनेय पुत्रीकर सर्वत या-वाकर नात-दावनीया यह सम्बद्ध और उन्हें हैं। राज्यों । यो प्राच्या या बराव पूरा कर संगा, औ एक स्थान की और वालीर ही वालेगी। यदि आवलेश अहें सा न प्रति, केवल पता ही समार सर्वत से भी सार हमार गीर्ष में वालेगी। विद्यालांग यही सराजाली नात-दावनीया यह समावेशे हिस्से निवास यहे।

सुरेग नामक स्थाप का-कारणीय पात अवनेते हैं के वैदिनोक्ता श्रामानी करा। अने एक हैन श्रामानी कारणीयो हैक रिया। या साथ समाधि महाने कुम्मानाय है या या और कारणी-सुरक्ष हम सब वैद्यार है का स्थापकार के यो थी। तुरेश स्थापने कारणीयो हैकार सेवा कि कारणी की बीचक-जीवी है। की क्षामा की का मार्थ हैका या, कैस है उस भी हैस यह है। यह अस्ता हमा, तरे हैक लेके नेते का



त्रकार हो नवी। सुदेव क्रम्यांकि यस गया और मोता— पिदर्वनिवरी। मैं हुम्मी प्रांका नित्र सुदेव प्रमुख है। रूप भीनवारी क्ष्मांसे तुन्हें कुनेके मिले वहाँ जाता है। तुम्मी नात-नित्र और यहाँ क्षम्य है। तुम्मी सेनों को मी क्षमां देवने अनुवास है। हुम्मी निजेक्टरे साथे कुटुमी क्षमांस-ने हे से हैं और तुन्हें कुनेके मिले निवर्ध प्रमुख पृथ्वीन कुन के हैं। क्षमानीने क्ष्मायको प्राचन मिला। वह तान-नामके सम्बद्ध कुम्मी-नात्रको प्राचन किया। कुने-नुक्रे ही से बढ़ी। प्रमुख क्षमानीको पता करते होते देवकार क्षमा नवी और जाने जाननी क्षामें क्षम प्रमुख कुन कुने कहा। प्रमुखा क्षमा क्षमा प्रमुख हमी क्षम विवरत कुनी और क्षमानको क्षम क्षमा पुन्ने सन्ते कि 'न्याराज है वह विकर्ण पत्री ही किस्सानी पुन्ने हमी कि 'न्याराज है



विश्वक करते हैं ? सुनने इसे पहलाया कैसे ?' सुनेतरे जर-करकारिका पूर्व परित्र सुनाया और बद्धा कि जैसे रासपे इसी हुई जान करति जान की बाती है, पैसे ही इस देवीके सुन्दा पान और कार्याकों मैंने इसे प्रकार रिश्त हैं : सुन्धाने जाने इस्कोर्त कार्याकिया कर्याक में दिया, विससी उसकी मीहोंके पीकास कार्य विद्व पानपाके समान प्रकार है गया। सामारका मा दिल देकाबर सुनन्दा और राजधाता होनों हैं से पूर्व । अमूने में प्रकृतिक दान्यानीको अपनी इसलिए स्थान रहा। यान्याने कहा—'इस्कारी ! मैंने इस दिल्लो पहालन रिन्हा कि तुन वेरी बहिनको दुनी हो। तुन्हारी पहाल भेरी साथ ब्रांस है। इस क्षेत्रों दुवाओं देखके एका सुक्रमाओं पुनि है। तुन्हारा जन्म मेरे निताके बर ही हुना बा, जन सनम मैंने हुनों बेका था। मैसे हुनाते विकास का हुनात है, बैसे ही बह पर भी कुदाय है है। यह सम्बन्धि नेसे नेते हैं, की ही हुन्हरी भी।' क्रमानी सहा जनक हाँ। जाने जनमे मीरीको प्रकार करके कहा—'भी ! हुन्ने पूर्व प्रकार महीं तो क्या हुआ ? मैं की है वहाँ स्कृतीको है करा । कुले वैदी अधिरक्ताई पूर्व को है तथा बेरी पहा को है। पूर्व पूर्व स्रीक्ष नहीं है कि में अब बढ़ा और बी सुसले बोगी। कानु है 🖟 महार विश्वेरी पूर रही है। मेरे कोटे-होटे के को विकासीके है अञ्चलको एक प्रकार गैथे, गाँव एका कर देवल संतुष्ट विद्या ।

कर हैं। वे अपने विकादे विकोशनो कुन्ही सूत्री होंगे। न बाने उनको पन्न राम क्षेत्रों । आप यदि पेट द्वित करना पहली हैं से बन्ने जिल्हों देलने नेजबा मेरी इच्छा पूर्व बरेनिने ( राज्यका बहुत प्रस्ता हो। उन्होंने अपने पुत्रसे कहतर कार्या पेकाची। केवन, का और क्ल-सी बसुई देखा एक बड़ी रोजके संस्कृतने दुनवनीको किए का दिया। कियाँ देशने क्वयनीया यह समात दूशा । इनवारी सकी कर्द, क्ये, कम-विका और सक्तिकोंने किसी। असने देवता और प्रमुख्येको कृषा को। राजा श्रीयकालो अन्तरी पुर्वतीः वितर करोड़ों कही प्रशासना <u>प्रां</u>त अपूर्ण स्थाप राज्या

#### नलकी लोज, ऋतुपर्णकी विदर्भ-यात्रा, कलियुगका उत्तरना

| पुरुषानी नामो है—शुंधितः । अपने विकास का क् हिर निवास करके क्यान्तिने अपनी पाताचे कक्ष कि 'काराची । मैं जारके तक कहती है। बाद अन्य खुड़े फीनेंक रकार महारी है से की प्रतिकारों है।कारेका उद्योग मॉर्जिये (\* रागीने बहुत कु:पिक्ष क्षेत्रक अपने चर्ची राजा भीनाओं कहा कि 'स्वामी ! क्यानाही क्राप्टे चरित्रे, हिन्दे बहुत ब्यानुस्त है। उसमें संबंधन क्षेत्रकर पुत्रको बद्धा है कि कर्षे क्षेत्रकोचन क्योग करण पाकिते।' सम्बन्धे अपने असीवन अञ्चलोको सुरमाना और नरमधे पुरुषे रिल्ने कई रिल्का मत दिया । असुरकोने दमकतीके पास अवता कहा कि 'अस §म राज्य प्रशंका करा समानेके किने का जो है।' कुनकारीने प्रकारोंने कह कि—"जपलेन कि क्यारें जर्ग, बहें मञ्ज्ञोन्द्री सीवमें यह बात कहें—'केंदे कारे करित्या, हम केंद्री साईपेंग्रे आणी फाइकर तथा पुत्र इसीको कर्ना केली क्षेत्रकर कहाँ करे गये ? तुम्हरी का क्षेत्र अब भी असे अवस्थापें आधी लग्ही पहले तुन्हारे आरोकी बाद जेव जी है और लुक्तरे क्रिकेनके रहकारे रहती है की है।" उनके सकते मेरी एकावर मर्चन क्वींकिनेना और ऐसी बात क्वींकेना, निसारी ने प्रसात हो और भूतमार कुछ। करें 1 नेरी कह कहनेकर मदि अपन्तेगोध्ये परेई हका है तो यह स्तेन है, कहाँ खुल 🕯 🚁 राजेक परा एका सैकिका और आका आर का रक्तकर मुझे सुराहमेगा । इस महत्तक भी सकर एरिस्टेन्ट कि शासनेत क कर मेरी असको कह से हैं, था को साहर र होने पाने हैं । इस्तुमाना स्वाप्तीके निर्देशकार राज्य नरमधे हैं।नेके देनों निवास पहें।



अक्रमे काले अका शब्दांचे दश—"(क्रक्रवरी) वे अवपन्ति निर्देशानुस्तर निर्वधनदेश नेत्राहर पहा स्वयस्त हुआ अवोज्या का पहेचा। वहाँ की राजा बहुपरकि पास करता नवी सन्तर्भे रूक्तरी बाद क्रांग्ये। परंह वर्ध किसीने दक कर को रिका। का मैं काने रूपा, का अस्के बाह्य क्या सर्वाने को एकाओं कुलकर कुछ बदा। हैंबे है क सामि एक ऋतुमधि बोड़ोको तिहा देता है, सामित म्यून दिन्नेन्य हैंचने-सोमनेके बाद कर्या, नामक जोका बराज है परंतु सम्बे हम बोर्ट और बरीर कुरार है।

उसने सम्मी स्रोत सेकर हेते हुए कहा कि 'कुर्तान कियाँ मेर कहा परिवर भी उसने जीताओं यहा करती हैं और उसने स्वीताके करानर सर्ग पीत जेती हैं। वाली अवका की उने स्वात भी है से ने सोग नहीं करती, उसने सहस्वारणी दहा करती हैं। स्वातनेकाम पूरत किर्नालने पहलेस करना स्वीत और उननेत हैं यह यह इसकी कर्मकर स्वोत्त करना सीव क्यां है। करता कि परिते अवकी क्यांकर मोन्य सम्बद्ध की हिम्मा, नरीह यह उस समय सम्बद्धानी मूझ, कुम्मूर, पुरसी और कुर्तालय था। ऐसी अन्यादने समय सोव सर्गा क्यांस मही है। यह यह अवकी समयको अस्पात होने सीविक्स कह रहा था, तम पहले से अवकी समय है। इस जेता साथ करता सुरक्तर में हुन्हें सुक्तेंक्र किने अस्पा है। इस जेता सीवत संस्थार, असे। वहने से सामयको भी सह है।"

प्रकारको यह पुरुष्टर क्ष्यकोशो अधिके अधि क अली। अली अस्ती गाँधे एकान्यने ब्यास—'बरावां | कार पद बार निराधीये र करें। में क्षेत्र स्वयूक्त पर बाकी रियुक्त करती है। जैसे सुरेको कुते कुन मुहाँने नहीं बहेकाई था, की है का दूस कहन देखका उन्हेंका कर और हैं। प्रतिकेच्ये सर्वेकी पुरित को / इसके का कारपीने पत्रविका सावार कार्यः को तिव विका और कोवको भूतमा । क्रमनीने प्रतेको कह—'स्वानकेका । उत्त धीव-ने-पीत रागेच्य नार्ति समा एक प्रकारि या मात करिये कि चीनध-पूर्व क्याची कियो क्यांपुर्व क्षेत्रकातुरगर पनि- करण कारत कारते हैं । को-बाई राजा और राजकुमार व्य रहे हैं। इस्पेन्स्सी डिवींट कार ही है। इस्तीओ महि जार पहुँच हाते से वहाँ पहले । बाल्डे और जनस मरनेका विश्वविको पहा नहीं है, इस्त्रीको का करा सुर्वोदको प्राप्त श्रांचा गी। परच करेचे / क्वान्त्रेकी का कुन्हर मुक्ति अयोध्या भी और उन्होंने एक बहुतनोरे एक क्यां भाग भी ।

रामा अध्याने सुके सहामधी मार सुनका स्कूबको हिन्दा और स्कूर कर्मने सम्बद्धार पढ़ा के 'स्कूब | मार स्थानका स्वयंद्ध है। में एवं ही दिनमें सिहमें हेलने पहुँचन पहला है। याँचु नहीं हुए इतना साथी कई पहुँच नाम सम्बद्ध स्थाने, तथी में कई सक्ति। अधूनमंत्री कहा सुनका मानका सर्वना करने साथ। अधूनमंत्री सहने सन्ते



भेका कि 'नगणांने कृताने अनेता हैकर है देश करा हैना । सम्बर्ध है, वह देश कराय महाते है । परंतु नहीं-नहीं, जाने मेरी जारिये देश है । मेरे कृतिकार को लाग कर कही हुआ। की । अवध्या मेरा है है । यह कारी देशा नहीं कर सम्बर्ध । अवध्या मेरा है है । यह कारी देशा नहीं कर सम्बर्ध । अवध्या मेरा है अस्तर का है—यह बात हो वह क्षेत्र में सम्बर्ध होनी । मोरू स्वयुक्ति हुआ। पूरी सहये मेरा के सम्बर्ध होने । मोरू स्वयुक्ति सरका है।' स्वयुक्त अवस्थानमें सम्बर्ध है।' स्वयुक्ति सरका सरका है।' स्वयुक्त अवस्थानमें सम्बर्ध है। सेहानी मेरोहा सरके हो। । स्वयं अक्षी करिके कर सीतामधी बोदे रहने और हिन्दे । स्वयं स्वयुक्त रहना क्षत्रम हो भो।

की सामाणानी कहे आवासने उहाँ है, की है महत्त्वा पर की है समाने नहीं, कार्य और मनीको लॉको तथा। इस स्थानक एक प्रमुख्येक पूर्व की गिर क्या। उन्होंने कड्कारों कहा—'त्रम ऐसी, में कार्योंको औ रूपा कैसरी।' उसने कहा—'आवास कहा गिरा से सबी है, परंतु अर हम कार्ति एक केमन आगे निवाह आने हैं। का का नहीं उठावा का सबसा।' जिस समय यह बात है की की, जा स्थान कह रम एक मनने करा यह बात है बहुरुनि बहु--'बहुद्ध । तुन वेरी गरिक-बिहारके बहुरई देशो। सामनेके मुहमें नियने परे और पान शेंस से है.



इनकी जर्मका चुनियर गिरे इस फल और पने एक भी एक पूरे अभिक है। इस पुक्रकी केनी बाजाओं और श्रानिकीश पीच करोड़ को है और से इसर पंताओं करा है। कुक्र है हुन्या है है दिन को 1' जबूचने रच कहा कर दिना और नहा कि भी इस कोरोके प्रकारों प्रशास इनके करने और पर्याच्ये श्रीवान्त्रीम निरमार निर्मा करिया। समुक्ती केल ही किया। फल और परे डीवा करने की हुए, विकास कराने माराजने थे। आ जाजनीविधा हो गर्ने। समुद्राने स्कू---'अस्टबर्स निवा अस्टुल है। अस्य अस्ति निवा जनाव दीरेने ( जारूकी कह-'गरिस-विकास है क्या में पासीकी वसीकरण-निवासे भी ऐसा ही निपुत्र हैं।' कांकुकरे बहा कि 'अन को का बिहा दिका दे से मैं उसकी कोहोंकी भी किया जिला है।" सहस्रकोदों निवार्त के पहुँचनेकी बहुत अली भी और अश्वतिका सीक्रानेका स्केच भी मा. इस्तिने क्योंने एवा नाम्को करोबरे किस निका वै और कर दिया कि 'अवस्थित रूप को पीड़े विकार देव । मैंने हैं नहीं-करविकार अगन केली रूपी ।

को हुम्बरे याथ करोहर क्षेत्र दिना।'

विका समय रांचा पारने पारतेको निवा सीवते, बसी समय कार्त्वम् कार्योतक चनके रोचे निकाले असता हुआ नताने इतेनो बहर निवार क्या। वरिन्युगरे बहर निवतनेयर काओं पह कोच जाना और ज्योंने भी प्राप्त देश पहला। क्षतिल्य केने हम फोड़कर चलते करिया हुआ कहरे क्रम—'आप क्रोप क्रम मीरियो, में आरमी परसी क्ष्मद्रीयः। आयो विद्या स्थय क्ष्मणीया साथ किया चा, उसी प्रकट जाने चुने पान दे विक का। मैं को दुःकके साम क्रमोटक जनके कियो काना क्षम आयो प्रसंत्ये रहत an में अनबी करनों हैं, वेरी अनेत हो और मुझे सार व हैं। को आपके कीका परिचला कर करेगे, अहे बेरा धन वहाँ होता।" एक परने क्षेत्र क्षत्र निरम। व्यक्तिय कार्यात होतान कोहोके वेहमें पूरा गया । यह संबंध करियहर और सम्बंध अधिरिक और विशोधी करान नहीं हता। यह um da-m d wer.

हा। ज्यान कार्रेस्पुर्णने हत्या नान्याः गीवन क्रोद दिना, परेतु क्षाची प्रमान कर भी चल्ला था। अन्तिन अपने राजको जीरहे क्षीता और राज्यकार होते क होते से विदर्ज देहारे का पहुँचे। क्षेत्र चौपक्षके पास समाचार चेला पत्त । उन्होंने स्कूपर्णको अपने पढ़ी कुल रिन्य । स्कूटनोंड रककी प्रांकरते हिसाएँ पूँच रही । कृष्णिननपरने राजा नालों: वे खेड़े भी स्तुते थे, खे क्रके क्योंको लेकर अने है। स्वयंने परवरहरूने क्योंने क्या नामके बहुबान मिन्स और वे पूर्वपत् अस्त हो नवे। क्रमानिको भी बहु अस्तरण वैत्ती ही बहुत वहीं। इत्तरमति ब्याने राज्ये कि 'इस राज्यों बहारतहरू भी विदायें जारतर केन करते हैं, अवस्थ है असके अक्रिकेशने मेरे परिकेश हैं। पनि स्वयं ने मेरे साल नहीं उत्तरेंने हो में समयती उत्तराने पूछ पहेंगे। की कमी ऐसी-पोलने भी उससे पुरु बार कही है, इनका बोर्ड अनकार किया हो, प्रतिक करके खेड ही हो, देखे कर जो अले। ये प्रक्रिक्तरी, हजाकन, बीर, क्या और कुरुवर्गकार है। उसके विकायके मेरी काले पर रही है।' कारणी महत्त्वी इतार कहता रकता शहर और इसारहे

# दपयन्तीके ग्रारा राजा नलकी परीक्षा, पहचान, मिलन, राज्यप्राप्ति और कथाका उपसंहार

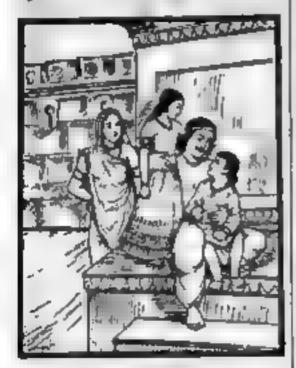
महरक्षा वहते हैं—सुंबहिर ! किस्पंत्रोत क्षेत्रको अधीरकविपति प्रश्नुवर्णका स्तुव स्थापत-सम्बद्धाः विपन्तः। प्रत्यबंद्धे अन्ते स्वान्ते स्वयं देश वर्षः अर्थे कृष्टिनपुर्वे अर्थनस्था कोई विद्व नहीं हिस्सकी कहा। धीपकारों इस बाला विश्वपुत्त का जी वा कि राज ब्रह्मूचर्न मेरी पुर्विक क्रमंत्रएक विकास प्राप्त गाँ आने हैं । क्योंने क्यान-व्यानके बाद पूज कि 'आप वर्ड किस क्षेत्रपद्धे प्रवारे 🛊 ?' अनुवानि अवंतरकी कोई नेकरी न देखकर नियम्बनाव्ये कार दका है और कहा — में तो केवल अरक्षे प्रमान कार्नेक सेन्द्रे है कार माना है। कैन्क्र मोको तमे कि 'से केंग्यको के अधिक हर कोई समाप करनेके किये नहीं का सकता ( अस्तु, आने वसकर का कर कुल है आयेगी है जीवको यह स्वकानके क्या आया वारके प्रमुक्तिको अपने पहाँ रक्ष विकार व्यक्त भी क्वांतके साथ अवस्थानमें इंड्रावर केंद्रोकी केंद्रावे बंदर के क्या ।

इनकर्ती आहार होबार क्रेकी रहते के 'रककी वर्ति से कें परिकेश्वेद राज्येत ही संपान जान पहली थी, परंह उनके कर्ती क्षांत्र वर्ती के से हैं। से-व-से मानोंको उससे स्वतिका सीक जी होती, इसी ब्रांटन राव उनका मानून पढ़क का। सम्बद्ध है, पहुरुर्गको भी यह विद्या करनुर हो । असने अधनी हासीक्षेत्रे ब्रुलाबार कहा कि 'केरिन्में ! तू का ! इस ब्राह्मक पता करता कि बद्ध भूजार पूजा भटेन हैं। अन्यन है, बढ़ी हमारे पतियेव हों । वैरे हाहाजोके हारा के सबोहा केल का की क्षेत्र कारणना और कारणा कार सुनवार सुक्रणे कक्षण । केकिनीने प्राप्तन बाह्यको साले थीं। बाह्यको समाने अनिका कारण जात्वा और संबोधी क्षानीय तथा अवसी अधिका हो येका बनावेची बहुताका योका वेका। केवियोरे पुत्रा—'शक्ष्य ! तथा यह नहीं है ? क्या तुर कारते हो ? सम्बद्ध सुद्धात सामी बाजीन कारता है ?" बहुदने कहा-- 'केकिसे । जानीय तथा जनके कोको जा क्रीडोकर कांच गर्थ का। जो अन्ते सम्बन्धने कुछ भी नाहरू नहीं है। इस स्वयं क्लाब कर बहुत नहीं है। है हिन्दिर राते हैं। उन्हें क के क्ले ने हैं पहला सकते हैं या उनकी पानी श्वापन्ती। क्योंकि वे अपने पूज विद्योग्यो क्यापेके स्वपने प्रकार करका नहीं काले । केटिएमी ! राजा था। केपिएमें बाह नवे थे। इसीसे उन्होंने अपनी व्यक्तिक साथ किया। प्रथमप्रीको अपने प्रतिपत् प्रदेश नहीं समय प्राप्ति । जिस इस्था से परेजनकी विकास थे, बढ़ी उनके क्या लेकर का



त्यां । इत्याद्य द्वारण विद्वारों कर्तीता का । यह तीक है कि उन्होंने अपनी व्यक्ति काम जीवा क्यान्यतः नहीं किया । नित्र की इत्यानीको उनकी कुरवकायर किया क्रिके सेवेच नहीं क्यान्य व्यक्ति । यह काम अस्थात इत्या क्यान्य है तथा । अस्ति में सर्वित् का नवी, के रोने पत्ने । केवित्तीचे इत्यानीके पास् अस्थार क्यांको जाव क्यान्यतः और उत्यादा रोना की क्यान्यतः ।

अस क्याच्यांकी आतंका और की कु हैंने लगे कि की क्या जब है। अपने क्योंने कहा कि 'केकिनी! हम किए क्या जब है। अपने क्योंने अहा कि 'केकिनी! हम किए क्या अस्त करेंगे और उसके क्या किया कुछ केने कही को। असकी बेट्टानेंगर क्यान हो। कह आग मींगे से मार्टे असकर क्याओं हो कहा हैया। असका क्या-क्या कीत कुछ असकर क्याओं हो अनुमानि क्यान क्या-से क्योंन हैक्सर लॉट आसी और स्वाचनीसे कहाने लगी—'चनकुमानी! क्या की कर, क्या और असियन सम समूसे कियम प्राप्त कर की है। की क्यानक हैसा पुरुष न कही देशा है और न कुम है है। की क्यानक हैसा पुरुष न कही देशा है और न कुम है है। की क्यानक हैसा कुछ जा असा है से का हिम्मा की, को देशकर का है कीता है जाता है। यह किया सुक्त है क्या काल है। होटे-मे-बोटा हैट की असके सिये मुक्त कर काल है। की काले किये को को रहने हैं असके सिये मुक्त कर काला है। की काले किये की को रहने हैं के से असकी हिसे कार काला है। की काले किये की को रहने हैं करने हैं, ये असकी हिसे कार काला है। की काले काले किये की रहने हैं की है से असकी हिसे कार काला है। की काले काले किये की को रहने हैं की है के काल है। और वित्या और यह जाने क्या | इसके अधिरंक यह सांक्या एवर्ड करके ये अस्ता नहीं है। यने जाके हणानुसार कहत है। यह का अपने हामसे पुरुषेकों मसारने स्थात है, तब वे कुन्याको नहीं और अपूर्णका तथा सुन्याका ही करी है। इन अद्भूत स्थानोको हेकावर में से परिवर्ध नहीं यह नवीं और वहीं सीवातको तुन्दारे पास कर्य अस्ते।' इसकती व्यूक्तके कर्य और बेह्नकोको सुनकर निर्धानकम्मे यह नवीं कि वे अवस्थ है की परिदेश है। अस्ते केलिको हाथ अपने रोनों क्योको सरको पास क्ये क्या । व्यूक इन्होंना और इन्होंनाको प्रकारकार उनके क्या था क्या और योगों स्थानकोची क्यांति स्थानकर गोर्टो केल किया।



अस्मीः मुक्तपर निराक्ति क्यान क्षेत्रके काम प्रमाट होने समे। सहस्मार बाव्याने क्षेत्रें क्यों केशियोंको है हिने और सहा—'ये क्यों मेरे दोनों क्योंके संस्थान हो है, इस्तिमंत्र में इन्हें देखका हो पहा । केशियों ! दूप कार-कार मेरे काम काठी हो, सोग्ह म जाने क्या स्थेकने स्थाने। इस्तिमंत्र व्या मेरे काम बार-कार आशा अस्मा क्योंकी हम्पी क्यों क्या ही।

श्रम इसक्तीने केटिन्सिको कान्द्री पाताके कार मेना और बहुश्यात कि 'मतानी ! मैंने सका नक सम्बन्धान कर-कर सन्द्रकरो परिश्व करवानी है। श्रम मुझे केवल कान्के क्राफे

कार्यको है और के पन है। अब मै को अन्मे परिका कृतन कक्षारी हैं। इसलिये अप कक्ष्मको मेरे पहलमे अरनेकी आपूर्व है दीजिये अक्टन उसके पास ही जानेकी acm हे देविनने । आयनो हका हो हो यह बात विशानीको कारण हैकिने अपना का कारणाई है एनोने अपने पति चीववारी अनुपति की और बाहकारो रनिवासमें कुरुवारेकी अद्भार दे ही। काह्य मुन्त रिक्क गया। दमक्तीके देखते हैं क्ता पुरुष एक प्राप हो प्रोप और दु: मुले पर आया है कांचुक्रोदे यह रूपे । बाह्यकार्ध सामुख्या देशकार दश्याची वी जोवाक्या हो गयी। अर समय दमक्ती गेरुआ क्या पाने हर थी। केलोकी जहां के पनी थी, प्रतिर शीवर था। क्रमानि कहा—'क्षमूक ? यहते हम मर्गद्र पुरुष अपनी पालिको करने होती होदेकर करने गया था । क्या कही तुन्ही को हेका है ? का प्रथम यह भी अपने-मोर्ट भी, जीएते श्योग भी: हैवी विरामान चीवो पुरुष्यानीक विवयनोक्ता रिका और चीन पुरुष निजीर करने होन्ह स्थाता है ? देंने जीवनवाले जान-कुलार काका कोई भी शयराम नहीं किया है। हिस्स की में बुझे करने होती क्षोक्रकर करने गये।' हतना काले-काले सम्बन्धीके नेत्रोले आंग्रुओंकी हाड़ी रूप गर्नी ( हमकरोके विकास, स्रोकते इवं शतको नेतोचे असि ठमकते हेक्कार मान्त्री का न गमा भी संदर्भ करो—'तिने । की क्षानकार व से सम्बद्धा राष्ट्र विस्ता है और व से सुन्हें (कार्य है। यह के प्रतिस्थानों करता है। में कारता है कि करते हुए पुत्राने निवासी हो तत्त्रों रात-विद नेस ही करण-जिल्हा करती राजी हो । व्यक्तिका मेरे हारीकी स्वकर हुन्हारे कारके कारक कारक रहता था। की उद्योग और क्यानोंद्र कराने जाना किया या ती है और अन इमरे १: क्रमा अन्य आ पना है । करिन्तुन अन पूरो श्रीकृषन करन गया है, में एक बार हुआरे मिनो ही बार्ड आपा है। बार से क्रानको कि दुन मेरे-बीहे डेबी और अनुकूल परिवादे क्षोक्रकर किल अकार कृत्ये परिन्ते विकास कारोके रिन्ते वैकार हाँ हो, कहा कोई सुरती की ऐसा यन समसी है ? सुन्हारे क्रमेश्वर राजवार सम्बद्ध है से समा बहुवर्ग अहै चीवको साथ वर्ष अने हैं।' दानायी का सामार पाने को कर-वर समिने राजी।

्यान्ति इस कंद्रका का—आर्थपुतः । युक्तमः होष स्थान क्षेत्रत की है। अस्य कारी है कि मैंने अपने सामने प्रकट देखावानोको कोद्रकर आवको बरण किया है। मैंने स्थानको हैंहनेके क्रिके क्यून-से प्रकारोंको भेता था और ने मेरी काई कर कुरतो हुए बारों और पूर हो है। एसांद प्रसंध क्यांना अनेवापुरीने जानके प्रमा भी पहुँच आ।
माने आपको मेरी पाने सुमाने भी और आपने प्रमा मानेवित मार भी विता का। जा प्रमाणा पुनवार मेरे अपको कुमानेके रिन्ते ही पर पुनिश्ची थी। में पानते हैं कि अपने अतिरिक्त दूसरा पोर्च प्रमुख नहीं है, जो एक दिनों पोड़ीके रचने से चेवार पहुँच प्रमा। में आपके परणंका रूपां करके प्रशासकी सहन्तात प्रमात है। बीर की पाने करते भी पर-पुनवार कियार नहीं किया है। बीर की पाने करते भी परनाम दिला हो से निरात पुनिश्च विवास मेरे प्राचीता माना कर है। में सीनों नेवार क्यांक कुम्बानने निवास है।



है एक्वी बात कारण है और कोई मैं करियों होते तो सूने जान है। 'आरी संगय आपूर्व जानाविकों जिला होतार कहा— 'राजार | है ताम कारण है कि श्रमण्डीने कोई कर अहीं किया है। इससे तीन करिया जाने उन्कार कीर्यावकों एक मी है। इससे हैं। इससे सर्वकारकों सुकार को तुन्हें हुस्कें रियों ही ही जी। कार्यकों इसकती तुन्हरें कोच्या है और तुन्ह इस्वयाधिक कोच्या है। इससे कार्यकार्त सुकार कोच्या है और तुन्ह इस्वयाधिक कोच्या है। कोई क्षेत्रा न करों और इसे स्वीकार स्वी।' किस समय प्रथम देखता का बात कह हो से, अस समय अवकारकों पुर्योकों कर्या होने लगी, देखताओंको सुनुष्टियों सनने संगी। इतिहस, कर, सुन्यम कन्नु कारणे पंजी। ऐसा अद्भुष्ट बृश्य देशकार एका मलने अपना करेंद्र क्षेत्र विका और जनराम कार्य-कार्या विका हुआ जवा ओक्कर स्थान स्थान किया। उपना शरीर तुरंत पूर्वजर हो पता। वस्त्रपति एका नरामों पहले कार्य देशकार इससे लिएट पत्नी और सेने लगी। स्थान स्थाने की प्रेमके साम इस्त्रपतियों प्रांगी साथा जीव होगी नार्यकांची इससिंगे विकासकां असी कार्य जालवी कार्य करने हुने। साथी एक स्थाननीकी कार्य कार्यकी कार्यने ही बीस पत्नी।

प्रमाणकार होनेका जह-मो, सुबार कहा व्यानकार द्वारकती और राजा कर कैक्सके कार को और उनके वारणोर्ने प्रधान विकार। कैक्सके को अल्लाके उनका स्थानर किया और अक्सकार किया। का-की-नातमें का प्रधानकार राज्य पहुंच कार, अवको पर-वाटी अस्तवामें कास्तर उक्का कराने हुने। वैकारकीयी पूजा हुई। क्या कार्य व्यानकीयों का कीर पासून हुई कि स्वकृतको उनकों के राजा करा है थे, वहाँ आकर के अवको कार्यो किए को, तम कई बाब अस्तवा दूसा और उन्होंने सामको अवने कार मुख्यासार क्षण कोनी। राजा करने



क्लें निव्यक्षरोंकी जानका कारकर प्रवंता की और उनका स्थापन किया । स्थाप ही उन्हें जवनिका की मिन्ना ही । एसा उन्हारकों किसी कुसरे सारविक्षी रेकट अपने नगर को शबे ।

समा नार एक पहेंचेताक कृषिकननगर हैं है है। सहनाई अपने कहुर परिवासी अद्धा सेवार कोवेरे सोपोको साथ है

केतमर्भवा एवं, होतव असी, प्रथम बोधे और वः ही पैदल राज जाके बाव केन दिये । अपने नगरने उनेक करके कथा मान पुजारते जिले और कोने कि 'या तो हुए काटपरे जुल्हा केल किन पुत्रको सेलो वा बनुस्कर होरी बन्दाओ है पुत्रकरी केरकार कहा—'अन्तर्ध कहा है, तुनों कुमकर सम्मानेक विस्ते हिर का जिस गया। साओ, अवन्त्री का प्रचले का क्या इसकर्ताको भी बोत सँगा ।' क्या नामे बाह्य--'अने बाह्ये ! युक्ता केल हो, क्यते क्या हो ? हर कहते ने हो हुन्हरी क्या क्षा केरी, बाजों हो ?' कुछ होने साम, राजा माले बाले ही पुन्नेने पुन्तराधे राज्य, सहोके जन्मार और अली अलीको भी जीव रिच्या। उन्होंने पुष्पारके बहुत कि 'बहु तक कथा नेक हे गया। जब दम दमक्तीयों और असि अञ्चल भी नहीं देख सबसे। हर क्ष्मपानि क्षेत्रक हो। जो पूर । पहले बार भी तुमने पुत्रो गरी बीवर था : यह बतन स्वतिभूतवार सा, हुने इस बावका पान वहाँ है। मैं व्यक्तिको केरको हुन्हरे रिए जूरी पहला परहार । तुन अध्या चौतन सुधाने निवाले, मैं तुन्हें ओड़े देता है। तुन्हारी तथ बस्तुई और सुन्हारे राज्यका



पान भी है देख है। तुमार मेरा केर चालेके 🕏 समान है। कुर मेरे पाई हो । में कभी तुनवर अभने और देवें नहीं भर्तन्य । का को क्लंब्स कीओ ।' कन्द नाने इस उन्हर नहानर

अक्षा है। पुष्परने क्षम क्षेत्रकर राजा मानके प्रमान विका और पहा—'क्यूने अपनी अधून क्षेत्रि हो और अस क्षा प्रकार वर्गक्रक युक्तमे चीचित हो। जान मेरे अलाहात और प्राथमका है।' पुलार यहे सामन्द्र और संभावके प्राथ इक महिनेका एक अस्के उन्तर है रहा। करना हेना, रेक्ट और स्ट्रीयक्षेद्र स्टब्स अपने नगरने पता गया। तमा बार की पुरवारको पहुँकाकर अपनी शतकानीमें सीट सारे । क्रांते प्राचीत्व, प्रत्यास प्रकृतक वाक वरित्रवादको रवेन दक्षा जनके कारत बहुत उसस हुए। अनूनि देपस्तित इटरके इन्य केंद्रकर राज्य नागरे निवेदन किया-'शबेदर 1 तान इस्तोप कुणते पुरस्का राज्य पुत्री पूर् है। जैसे हेक्स प्राची केंद्र करते हैं, केंद्रे हैं आवनी केंद्रा करते हैं रिक्टे कर एक अपने हैं।

> पर-पर सामग्र पराचा वाने तथा। बाते ओर पान्ति पैता एकी। बहे-बहे अंध्या होने जाने। राजा नारने मेना फैक्का हरकरीओ पुरस्तात । राजा चीवबाने सक्ती पुर्वको सहर-क्षे महारे केवर सञ्चाल केव किया। स्वयंत्री अपनी केवी हेरानीको हेरबर सहरते जा गयी। एका एक यहे आरख्ये काम काम विवासे रहते । क्रमा नराकी स्थाति वृत-बुरस्क केल गाउँ । ये वर्गकृतिको प्रयासक पहला सार्थ्य भने । उन्होंने को-वर्ष का करते जानावर्गी असाधना की र

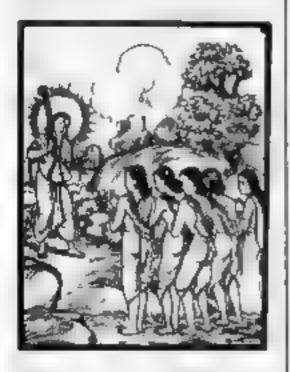
> मुद्रकार्य कर्त है—सुनिहित । तुने की नेते है हिनोंने हक्का क्रम और प्रने-सम्बद्धी निम श्रानेने। एक महाने कुट संस्का यह जारे क्षण मेल से रेजा था। अने क्रमेले ही एक इ.फ. कोएक यह: वर्ष्य तुम्हारे अंक से अई है जेन्छ है और बई-यह स्थित् तथा प्रत्यारी सक्रम है। हेरी दलने होना करनेकर से ब्योई बारण ही नहीं है। संस्थानकी विश्वतिको सर्वक एक-सी नहीं रहती। यह विकार कारे में उससे अधिपृद्ध और हामने विचा की करने वाहेने । कारान क्रमोरक, क्रमची, यह और बहुरसंबर्ध बहु कुछ, कहने-सुरुवेशे करिन्दुनके क्योंका जात होता है और क्षेत्री महत्त्वेच्ये केवं विरुद्धा है।

> वैक्राम्पराजी कार्र है—सम्बेशन | दिन महर्मि सुरक्तां वेकि करनेतर वर्गता सुविधितको अर्थनार ने उनके कारोकी बारीकारक-विका और अञ्चलिक विश्वासकार स्थान करनेके रिक्ते करें को। उनके बानेवर कार्यक पविद्वित व्यक्तिकृतिकोते अर्थुन्यते सम्बन्धे सम्बन्धे सारामीत कर्मे स्ने।

#### नारक्षीद्वारा तीर्धयात्राकी पहिमाका वर्णन

विकास के प्रकार करने किए उक्त अपने द्वीत विकास ?

रीतपारमधीने सहा--कार्यमय । यह अर्थुन तसमा करनेके ओहमते वर्त गये, तम होन चन्यांनी अर्थुनके वियोगमें बढ़ी क्यूसीके साथ करने दिन वियाने । में दुःश और होकर्ने को को थे। उन्हें देने पान देक्की देवीं याम् असे नियसस्यानसः असे। करित्र चुनिहरने माओर्कात को हैकर प्राचीय देखि उसमें पूर्व की। केर्न करने करन-उन फारर में सकता देख



और कहा—'पृथिदेश | इस अवन तुम क्या कहते हो ? मै एकारा चौन-स कान कर्त ?' करिया धुनिविश्ने उनके कार्योने प्रचार करके वही नामके साथ कहा— 'बहराव क्षणी लोग आपनी पन्य करते हैं। जब उत्तर प्रमान प्रत्य है से इमलेग देख अनुष्य कर हो है कि अवन्त्री कुमले इसरे हारे काम रिव्ह हो गये । जान कुछ करके इसकेक्टेके एक कर बक्तसूर्य। यो डीवॉक्स सेवर करण हमा पृथ्वीकी अधिक करत है, उसे क्या पता विस्ता है ?' बाहाबैने क्क्-'राज्यू । हुन सम्बद्धान क्षेत्रर सुन्ते, एक बार कुछारे विकास पीन इरिवारों स्थित देवता हां विश्वेषी वृद्धिके

बरनेतको पुरा—बनकर । वेरै वक्ता अर्थुको । तेले योई अनुसार कर ये है । वर्ष एक दिन पुरस्क पुनि अने । भीवने उत्तरी रेक-एक मन्त्रे को उस विना, यो हुए भूतने कर हो है। असे कार्य पुरस्क पूर्वने के पुर बक्त, को ये तमें सब पर है।

> पुरस्कारी का नोम । तीनीने प्राप्तः यहेनाहे अपि-वृत्ति करो है। वर सीवेंकि सेक्स्से को पहर प्राप्त केला है, us में तमें स्थात है। विस्ते हम कर रेने और सूरे कर्न करनेते अधिक नहीं हैं, विकाद के निकादक्क पूर्णीवर पहले है अपने पीय-पण्डानोको अपने पीचे न प्रशास प्रतांको हुक ब्यूंबरोड रियो परची है, किरावा पर शुरुरेश अन्य-विकास क्या हुआ है, विकासी किया काल-पोहर-क्यान अंतिले पुरु पूर्व विकासकारी र हो, निरामी सरस्य शया:-करणार्थ पुरिद् और वंग्यास्थानाओं देश्वे हें, विश्वासी पुत्री और मोर्सि निष्मारंक थे, को रोजीक का फार, विश्वित कारों क्यांत है, कर केल है । को विक्री क्यानक कर की हैता, को पूछ जिल्हा बाद अधेने पंचा दाता है और साथ हो उन्हेंबर भी भी करता, के दूध एवं बायगाने रहेत 🗓 केड़ा कार और प्रश्निकों करने रक्ता है, साथ है समझ करोंने क्या के कहा है, में कभी किसीयर क्रोब की करता. क्षाच्याने ही एक्स्पा चारत करता है, बुक्ताने अपने नियानेने बेरक सात है और एका जानकों सुक-इ-सर्वो असी क्रांग्डे क्य-इक्से क्या है स्थान है, जो शब्देश हीर्वकारको प्रदेश होती है। रोर्वकारको हारा निर्वक गतुन्य भी को को क्योंक चल अह कर सकत है।

> व्यक्तिकरे व्यवस्था कुल्या सीचे बहुत ही प्रसिद्ध है। कुम्बरने करोड़ों सीचे निवास करते हैं : मादिता, बहु, सा, १७४६, १९६५मा, पर्यानं, अकारते तर्यंत्र वहाँ वर्गायत रहते। है। को बड़े देवता, देश और स्कृतिनेत्र सरका करके पर्ध केरीह प्राप्त की है। को अंधर एक करते भी एकरका सराम करता है, उसके पान पर से बाते हैं और प्रार्थियों आहि होती है। को इक्का को प्रेमी कुमारों निकास करते हैं। इस तीवनि को पान करना है और देखा-रितारियों संतुष्ट करना है, उसे अक्रमेन काले भी दल मुख करन विश्वत है। की कुम्बरक्त रोजी एक महत्त्वको यो योजन करता है. उसे हुए रहेक और प्रकरेशमें सुद्धा निवस्त है। प्रमुख कर्न साथ, क्यापूर, पास असी, विशे क्यूनी अध्या जीवन-निर्माह बन्ता है, जब बन्दरे इस बन्दरे राज बन्दरमध्ये बेसन करने । किसीसे के ईमाँ र करे । यो प्रक्रम, क्रमिक, केरक और पुद्ध परम परित्र पुजार नीवीने जान करते हैं, उन्हें बिहर



पान नहीं बहुन करना बहुत । व्यक्तिक करनी कुक्त की की बहुन करने अञ्चल सोकोशी अही होती है। को नाथ और असावास होनी प्रथा को इसने सोकोशी कान करनेका कुछ अहा होता है। को अन्यत कुछने अपनी अनुकारों को कर किया हो, जब कर कुछन बीजोरे कार करनेकाओं जह हो जाता है। की सेकाओं कारवाद किया अन्यत है, की ही बीजोशि कुछरराज अन्यत है।

गर्स तथा अन्यान शेनीया के वर्धा वर्ध हुए कुनावनी क्या—गर्धन है गिर्वास प्रकार के व्यान की व्यान की व्यान की के व्यान की की व्यान की की व्यान की किया की किया की है। अन्यान की व्यान की विवास की है। अन्यान के विवास की विवास की है। अन्यान के व्यान की विवास की है। अन्यान के व्यान की विवास की है। अन्यान के व्यान की विवास की व्यान की अन्यान की व्यान की व्

को-को तरानी कवि प्रकारतिकी स्वयंत्रत एवं ब्यावार्ती तमा कार्षेक्ष करा देवराओचा प्रथम करहे हैं। इसीहे क कार परम परित्र है। अभिनोध स्त्रों है कि अंपनि समेश क्षेत्रोंसे क्षेत्र है। जनगणी बाजाने, जनागके नाम-संबोधीयने और प्रचलको निर्देशिक स्टब्सि प्रमुखके करे पान पूर जाते हैं। के विश्वविकास पहल्यकों भारतमें जार करत है, जो क्रमपुत्र क्ष्मे अवस्थित प्राप्तान पान प्राप्त वेदा है। यह देखाओंकी यह-चुनि है, यह बोह्य-सा के दल करनेते यहर बाई पुरुष्या कार विभागा है, पहुनी केहरे और स्टेक्ट कार्यहरू इंड्रुबंबर पुरुष्के बहुत पूरा बहुत गया है, जिन भी प्रधानकी इत्यूषे सम्बन्धने ऐसी पात वहीं ओपनी वाहिये : जनायने त्रक्ष-सर्वत्र साह करेड़ का इसल क्षेत्रीक भारित्य क्रम है। पार प्रमानको विकारकोर्धः सम्बन्धनम् और साराम्बन्धनस्य को पुरूप होता है, यह पहल-कपुराबंद सहयाने कार करतेही होता है। क्रमुक्ति मानके केनावती तीवीमें ब्रांस कामेशे अवस्थि बहुबर कर देशका है। विवर्णिकार इंग्राजन मीर्ने इसे पहुल्लाकोरिक सीर्व के की है। और हो का, केन्सी न्युराधी वर्षा भी हो, वर्षी साथ साथेले कुरहोत-पासका परि निवास है। महारक्षाओं कामकारका विकेश कहारक है। हजार th mich th equal \$1

कियारे सेवाओं पान किये हो यह की गरि एक बार नक्रमान अपने जन्म क्रम है तो नक्षमान करने मारे पार्थको केंग्रे ही पहल कर अल्ला है, फैसे अधि सुसी एक्क्रीकों। कारपुर्वे राज्ये क्षेत्रं पुरुष्याच्या होते हैं। केहारे पुरुष्ट और प्रकार कार्यक्रको निर्माण गरिया है। वारिन्युगर्ने से एकार्यक भारता महान्य हो सकते हैं। इंप्याने स्थान, महानंत क्रीबेश कर, वारक्षकामा स्त्रीत-क्ष्य और पुगुरुक क्षेत्रक अन्यान करना होतु है। गाँह कुमार, सम्बोध, न्यून कुर्व नगरं। देखने काम्याको ही साल-एक चीरियों तर करती है। ग्रहाची क्येकाककारे क्येथे थे बाती है. लोजकारे कारकावार करते है, कार और मनते एक पेरिसोरक परिवा कर हेती है, कारक पशुरवारी सुद्दी ग्यूनवराने सुत्ती है, रामक उसे प्रापंति सम्बद्धन आह होता है। को प्राप्यतीर्थ सर्व कुम्बद्रेणेक रोगर क्यों हैं, से भूगर क्यार्थर करके समीत अधिकारी क्षेत्रे हैं। सहागतिने यह बात रखा बढ़ से हैं कि नहाने राजन बोर्ड केर्ड नहीं, जनकारों बहुबर बोर्ड देखा भी और क्षान्तिने क्लार कोई जभी औं । वहीं स्कृती है, भूमी परिवर्त हेता है, जारी परिवर स्थेपन है। उत्तरसञ्जय स्थान sh flaCasin fi i

चीमा ! मेरे को रोधीनसम्बद्ध सर्थन किया है, यह साल है:

क्षरे अस्त्राम, श्रामिन, नैशन, सरपुरम, कुर, निरम, सिम्म और शेषकोको गोपनीय-चे-चेपनीय निर्मितं स्थले स्थलवे बारसम् पार्किने । इस महाजनके वर्जन एवं बावानी सहा कल मिलता है। इससे कहा पहित कराई होती है। इससे करी मर्जिक लोगोको एका पूर्व होती है। येने किन सैव्वेका कर्णन किया है, उत्तेसे वहाँ वाना सम्बन्ध न हो, वहाँ वानसिक मता करनी साहिते। अन्ते कोन्को देखा और साहितीने कार विका है। पील ! पूर प्रदान्त्रीय क्रायोग निवसमुद्रार इन्द्रिकेको सह रक्तो हुए संबंधि कहा सबे क्षीर अपना पूर्ण बक्राओं । प्राथकों संपूर्ण 🛊 उन सीवीको प्रश्न कर क्रको है। निकाहीन, शर्मकरे, अधीवर एवं चोर का रीचीची जनतीय नहीं कर क्रमते। इन राज्यारी हुई कांके राज्य हो ( कुन्तरे कर्नकरण्डे उकारी सभी दार के के है। इनमें के केवर, निवर, सानि आहे. संबंधि संबंध्या कर देश है। एने के लेक और यहन बरेलिकी जारि क्षेत्री ह

'वर्गाता । पीनानिसम्बन्धे इतना महनार कृत्यन सुने गाँँ अनार्थात हो गर्ने । फीनासिक्याने निर्मित्यंत सीर्याता गर्मे । यो इस वितिसे पृथ्यंत्री प्रवित्या क्या है, उसे सी अवनेकोका परत प्राप्त होता है। इस से अवेटी नहीं, इर व्यक्तिको की रोवॉर्ने से कार्याने; अतरियो तुन्हें अक्रमून कत क्रम क्षेत्रा। बहुत-से तीचाँको राह्यसँने रोका रका है। को केवल हुनी स्रोप का सकते हैं। डॉमॉर्ने महनीकि, करकर, एकावेद, फुक्काइर, विश्ववित्र, चेतव, असित, देवार, वार्यक्रेम, नारम, प्रसाम, वरित्र मृति, सारम्य, होत्या, नाम, कुम्बोल, कुर्मल, नामानि सादि यहे यहे हरूबी अपि हन्तरी अरोधा कर ये हैं। हम कर लोगीको क्रम रेले हुए इस डॉम्बेनि माओ । पान रेजकी खेणा सार्प की इन्हरूने काल आयोगे । उन्हें की हरे हमें । मैं की करीका : तुम क्यांत और पुरुवको सकत बातके करीका है। तुम राज्य भनीरम और सोबारीनएम सम्बंध समान समात राजाओंसे नेव हो । यनु, इक्कानु, कृत, कृतु और इसके प्रतान कराओ क्या प्रकारका है। दूस अपने इस्त्रोपन नियम प्राप्त वाले प्रकारकार करेते और वर्गने अनुसार पृथ्वीका साहत्य चीन करते कुछ कार्यक्षेत्रं अर्थकोत् कृत्यन क्रांतिकर हो ओने ।' इस प्रचार करेटन कुनिहारहे बहुकर देवर्नि पान को अनुबंद हे को । इस्तेन पुनिष्ठित सेवेंचे स्वयूक्ते ---

### बोय्यक्कत तीर्वोकः वर्णन

र्गालकार्या कर्मा है—क्लोबाव । क्लीवन सुधिक्रिये हैनर्नि नारको जीवीका बक्कान्य कुलकर अपने बक्कारेले सामक की और उनकी सन्तरि कानकर के जानने परोक्रित भीनके पास गये और बोले—'बनवन् ! बेरा वर्ष अर्थन मक्र ही और, भीर एवं परात्मी है। की अनने उद्योगी, माध्यी, जनिवाली को स्थेपन भाईको सम्बन्धि जन करवेके दिन्हे करमें केन दिया है। मैं से देशा सम्बद्धा है कि अर्थन और मीकृष्य चन्नान नर-नराज्यके अवदार है। परम सपर्व बगवान् बेह्नावर भी देशा अली है : इह क्रेजेने सप्ता ऐश्वर्ष, ज्ञान, क्षीतिं, एक्सी, वैराज्य और वर्ष-ने क भग विका विकास करते हैं, इस्तरिको करों करकार करते हैं। सार्थ देवाँचें जाना भी यह बात बातो और उनकी अनंदर बातो है। अन्तरको इति और अधिकार प्रम्कृतक है मेरे को बैगरम इसके पान असलिया साम बारनेके रिज्ये केसा है। महाती अर्थुनकी बाद हुई। कौरकोब्ध ब्यान आहे ही सबसे पहले पीनारिताम्ब और बेनावाबंधर होहे कही है। अवस्थान और कुछवार्य भी दुर्वन है। हुवेंक्सरे फ्रांसरे हैं। इन म्यूरिक्योंको अधनी ओरसे एक्टोब्स क्यार लेकर बांब

वका है। जुल्लुस कर्ण की स्थारको है और विश्व अवस्थित प्रयोग करण कारण है। श्री हैय विश्वार है कि याकान् सीना अलेके कर तथ लोगोंके रिश्वे अलेका है। पर्योह होता : अर्जुनके असिनिय हमारे रिश्वे करेड़ सहार: नहीं है। इसलेन अर्जुनके कर नोतरी हुए है नहीं निवास कर हो है। उसकी पूरण और सरवर्धार हमार विश्वास है। हम सभी अर्जुनके रिश्वे कहार: है। अल्ब कुछ सरके कोई ऐसा परिवा और रमलीय कर कररवहने निसरों कहा, परद, पूरण असिके अधिकारा हो हमें पुरुषाया सामुख्य रहते हो। इसलेम अही करनार पुरुष निरोधका हो और सार्जुनकी असिका करें।

पुनिष्ठित क्षेत्रने कार—कर्मराम कृतिहित ? मैं पूर्णे परित्र अक्षम, सीर्थ और कर्मलेक कर्मन कृतता है। कारो क्षाकारे क्षेत्रकी और कुलकेगोकी त्यासी दूर हो जायगी। तीर्मोका नाहान्य अक्षम करनेते पूरुष होता और व्यक्तसर यह उनकी कारा की जान से सीनून अक्षिक पूरुष होता है। अब मैं अपनी स्विकें अनुसार पृथ्वितनके सामर्थितीका तीर्मोका

सर्वान करता है। विधिवारण्य तीर्थका नाम के तुमने सुन हैं। होना । वहाँ देशकाओंके आरम-आरम व्यूत-से होत हैं। यह शीर्व परम परिता, पुरस्कार एवं रससीय मोसबी नहींके तटकर fine \$1 or investigation or give \$ after oil-oil build क्रमार प्रेमन करते हैं। प्रमुखे प्रत्यक्षी अधीन विक्रमेंने महा है कि मनुष्यके बहुतनों पूर हो से अवहा है, क्सेरिट मदि अन्येके कोई एक भी शंभ केली साकर विकारन कर है, अक्रमेन का कर है अक्स केल क्लेताने कर है से उसके पहिले गोकेची पान्या गीकियोचा उद्यात हो साम है। एक होतारे एक महत्त्वी मानवा और मनवित मानवा सैर्चनान 🕯 । यह महारक्षे प्रतान् है । एक अञ्चलक कारका महारह है, क्षा रिकार परिते अवस्था कर विराज है। क्रिक्टियार प्रवासका कार कोतियों को, को कोने प्रवासक प्रव form or, of front & & countries would मागीरजीको निवाल करा की पूर्व दिखले हो है। उसके प्रस्कर बढ़ी-बढ़ी परिवासी केवर राजा भारतको बढ़ा-ने पह मिले थे। गांत और प्रमुख्या निवर्णनका सहस्यका प्रमान है। यह परम परित और पुरुषक है। यह बारे की speak that with \$4 water payable and man-ti-महत्याम सिन्दे में । इसीसिन्दे उसका नाम प्रकार पहा है। अभाग भूमिया काम आवम और पर्य-वर्ड समीवनोते परिपर्ण शरोबन की प्रवेशिकाने ही है। कारकार प्रवेशवर हिर्देशको आक्षा है। अनक कांद्र का रक्तीय, बॉवर एवं कान्यानसम्बद्धांके क्रम्यूक है। परमुख्यम्बद्ध क्रम्यक्रेस म्बोल पर्वत, विस्तार स्वाने मा किया था, कर है है। बाह्य और रुख रामको परियों भी बड़ी है।

इक्षिण दिवाले गोवाकरी सामाने वर्षण नहीं व्याही है। जर महिना कर प्रमुख्यम एवं स्वतिवर्गके हुना शेरिक है। जाके सरमर बहे-महे व्यक्तिके जामन हैं। जेवा और व्यक्तियों प्रदेशों भाग भी कहे परिता है। जार है क्या पृत्यके प्रयोगी नहीं भी हैं। प्रयोगी नहींका कर व्यक्ति, पृत्यक्तिर अभवा मानुके हुना जामन वर्षण्या स्वतं कर है से परिवर्गकों प्रया नहीं हैं। इस और महा जादि इस महिनोची रखा जान और कुमरी और परम परिवा एकेमीको, में प्रयोग्धी जी ही सबसे क्याहर होगी, हैल मेरा कियार हैं। हिन्दु देखके अन्तर्गत प्रयास दीकी अन्तर्गति , क्यान्तीय और मुख्यितीओं भी हैं। क्याव्यक्ति मही, गोक्यर्ग-जामन, अगवान-जामन काहि भी क्या है पुरुषात और स्वतंत्र हैं।

सीराह देशमें बड़े ही महिमानन आधान, देशनदिए, नहिमाँ

और सरोवर हैं। सीरहा देखके प्रम्लोक्स और प्रम्बार सीर्व के विक्रविकार है। विकासक होने एवं उपलब्ध पर्वत की है। बीराष्ट्र देखने ही हारका भी है, जिसमें पुराय-पुरस्केशन एक्ट there about from the \$1 is bround tolk पूर्विका, काल है। केंद्रा और स्थान पहाल बातानों क्षेत्रकार को साम बताते है। काराना प्राचन बीक्रम परिवारि परित, पुरसीये पुरस, सहसीने पहल और केम्बारतेचे केम्बा है। वे हर, अक्षर और प्रक्रीतय-सम कुछ है। प्राप्ता प्रहार अधिका एवं अनिर्वासीत है। से ही इक प्राथमने निकास करते हैं। पश्चिम विकासे मानते देशके अन्यानंत स्वतुर-के चीनत और कुम्बाद केम्पनिय प्रमा सीर्थ हैं। वर्त कुरुर्ताक्षक कर्मन कर्त है। अन्त्री और प्रश्लेषको जीर है। असे कार को प्रकानका हुए, आदियों एवं पहल है। की केक्कोर परिवा बीर्च, केक्कीवर, नकी, धन, पर्तात, मानी हेना, मान-मानी, विद्य-मान्त और महेनाहे कुमार असिर कोश्वेद बीटा बाले बार बरके रिवे अपो है। पर्नत करत है दिवस पुनित अवस है, पहाँ क्षतेत्वा सन्य प्रश्न का निर्वित्वार प्रश्न पर्यंत की minutes if he are income, from with after पारकर—ये और मीर्च है। केम्प्रकरण पारको इस परिव का है, काले कालो प्राप्तान रहते हैं। प्रश्नावन कुन्यक्षण त्रारोक्त पुरस्का की बहुत जीम्बद्ध है। यह कार्यपार्गको स्वापकार हाराज्योग अस्ता होनेवारे स्थितीय परित शासप है। हरते राज्यको एकं बीव्हाचीने बहु है कि के पन्ती क्या प्रको भी प्रकार रोजेको पायको हका बरला है, आहे: करें कर रह से करे हैं और अनमें को सर्वकी अपि min fin

जार दिवाने पाम परिवा सरावती नहीके तरावर सहा-ते तैयाँ हैं। जनुन नवीका जाएन भी जार दिवाने हैं हैं। इक्षण्यास्य नायके स्मूरण्या क्षेत्री यह करके सरकारी नहीने जायपुर्वाकान किया कारा है, दिन्द क्षण्यो प्राहित होती है। अग्रितिय पीर्ण भी नहीं है। सरावती नदीके तरावर क्षण्याका कारान करते हैं। इसकार कार्य मा स्मूरण अग्रिका व्याप्ताका कारान करते हैं। इसकार की नहीं हैं। जाराका कार्योगोंसे एक पर्यापके प्रोह्मण गुरुकी निकाले की। जारी कारावा का गुरुका है। जह परिवा तीर्योग महे-यह क्षण्यी क्षण्या करते हैं। कार्यास्थ्य संस्कृतात्वा निवासकान है। पूर करते की वहाँ है। कुनु पुनिवति तपस्त्राका स्थान पुनुक्षा व्यापकों भी है। पुरुकेतन है। उसके चौति चक्के म्यून्सर्गत है। उसके विकास मानदी कारी सहित्यकाओं का है। विकास नगर्व तीनों स्वेक्टोचे परंग परित और जीवह है। बहरिकासमें कर कुछे ठंडे एवं नाम करनी गुर कही | भी। अने होनेको के पानक करती थी। को-को भरि-मुनि, देवी-देवता कामान् अशाकाको नगरमार करके विके क्षा आक्षाने पाते हैं। इस्ते पराज्यका निकासकार होनेके भारत का रीकी कमाई सन्तर्ग सर्व और देवनीय निवास । होती । पुरेष्ट्रित कीम इस अवार धान्यतीसे मह रहे थे, स्वी मारते हैं। बहु पुरुषकेंत्र, रॉर्ज क्ष्में स्थीनन क्याहरूका है। समय करन केवानी स्थेपक प्राधिक स्थीन हुए।

-प्रमुक्तन् नताकस सर्वतः, सर्वत्यस्यः, वर्ववरिक्यन् सूर्व | क्योंकि देखनितेन निर्माणकेक-स्कृतः वर्वनतः सर्व वस ज्यानमें निवाद करते है। कामानके पान सकारके थी पहला रेक है, को कभी किसी अवस्था क्षेत्र नहीं होता। वर्षी चनकर्षे नियमस्यान निरम्भ-वर्षास्थानपर्वे को को देवाँ है, हिन्तु और प्राप्ती निवास करते हैं। असाव ही जा क्षेत्रों क्रान्यक कीवा रीविति की परम परित है। करिएक ! पूर्व केंद्र प्राथमित और अञ्चलित साथ सीवींकी मान करें । क्षूत्री करवा दुःक विदेश और समिनवर पूर्व

#### स्प्रेमश मुनिके द्वारा पाण्डवोको इन्हका सन्देश मिलना, ज्यास आदिका आगम्न तथा पाण्डवीकी तीर्धवात्राका प्रात्था

रेप्पणकार्य कार्य है—अस्पेक्ट । पुनिश्चित आहे, सची क्षात्रक, प्राप्तक, क्षेत्रक-नाव-के साथ स्टेशक स्ट्रीएकी आवयालने पर गर्ने। हेच-सामर है जनेके पहले, mfelbeit um fie 'serner ! finde nigenit sernen सुरवाधन क्षता है 7' ओनस चुरिने अस्त्रान्ते स्था क्रिय कारोंने बारा-'पान्कान्या । वे सम्बन्धानमे सेन्यानुसार पार लोबोर्ने कुरता बात है। एक बार में इक्केंबने क पहिला । बार्ट मेरे देशा कि केमरायाने केमपा इनामें अन्ते शिक्रकारक तुम्बरे भई अर्थन केंद्रे हुए हैं। मुझे नवा सन्दर्भ हुआ। वेतराज प्रचारे कार्युरची और वेतरावर सुमारे साह वि 'हेर्ज' । इस प्राथमोद्रे पात करते और रहे अर्जुनक सुवात-बहुत कुमओ ।' इसीसे वै कुमोनोके पान अपन 🛊 । में कुरलोजोंसे हैंक्जरी बात कहता है। हुन इक प्राप्तकार होकर सुचे। कुल्लेगोकी अनुसरि रेकर अर्जून निक अवस्थितको अञ्च करने गर्न थे, बढ उन्हेंने कियानेले उत्तर कर की है। परकार कंकाने का दिना कराओं अनुस्केत प्रमु हिस्स सा और तम नहीं तार्कुरको नियम है। साने प्रयोग और प्रत्यकारिको विका को अर्थुको स्रोक की है। आसे पदि निरमराधिनोधी कृत है कर से उसका प्रमाशिक भी उन्होंने पान जिला है। उस अवको पान हुए वन्हेंनेको से पुर: ११:-भरा कर सम्बद्धे हैं। उस अवके निवारणका कोई क्यान गर्दी है। व्यक्तिकारों अनुने का हिम्म असके साम ही पान, कुमेर, काल और इसले भी दिल अब-४वा



प्रमा किने हैं। विश्वासमुद्धे कुत विकारेर परवर्तने अपूर्णि राज्यपुर, चीव, पुरद, कार्य अवदि ची चरनेपारि सोक रिजे है। अब वे पाणनिवारी विका जान करनेके अन्तर अन्यक्रीपुर्वेचे अन्यक्ते निवास कर के हैं। इसने हुनवे कानेके रिको का बरेश कहा है—'नुविद्वेर ! स्वाय बर्ध अवस्थित निवन हे पन है और तम को बर्ध निवारकार काम अस्तिको सारा है। यह सार प्राप करिन है कि इसे को को केवल की आई पर क्ली । क कार करते अर्थन हुन्हरे कह कार करेग्य । इस अर्थ प्राथमेंके पान स्थान करके आवागमा स्थानंत वाहे । समारे बहुकर और कोई क्यू नहीं है। करने ही पहुचको मोद्धा आहि क्येंन्स्के प्रकृतीयी आहि होती है। में पार्च और अर्जुन केनोको की पानता है। वे पानता है कि उन्होंने करने मार्गको क्या के पत्री है। जोड़ में यह बार राष्ट्र वह है। () विक सार्थ अनुविद्ये सोराकृते क्षेत्रके कामार को नहीं है। पुरारे पाने सेनंबक करनेक के इंकन है, जाकी हुकी सोलक स्त्रीन कुपारी स्थानक करेने ।" इस प्रकार हुनुक सिंख व्यापन सोयकने कहा—"पुनिन्देत । असे साल अर्थनों के पुत्रके बाह्य कि 'क्योंका ) हुए कवि कांद्र एवं क्रमण हो। हमले राजपर्ने अपना प्रमुख-वर्गवा कोई से पाल् क्रिया नहीं है। इसलिये की पूर्ण नहीं सुविद्यालये ऐसा करोज धीरिको कि से सर्वेको कुंची प्रस्कृत करें। अस्य पानकोको रोजेकार करावर अने कुन्नको भूदि करें। अहा: इन्यू और अर्जुन्ये हेरनानुस्तर में बुच्हते हत्या रीजीवात पहरित्र । की पहले भी हो धार तीनीवाल को है, अब नेटी का वीसरी पाना क्षेत्री । भूनिद्वार । शुक्रादे व्यानको क्षेत्र वर्वने र्जित है। शुर्म बर्गीद नर्ग्यून एवं स्वयूजीवा हो । तुन सीवंग्यास्त्रो अनेनारे समझ जासकियोरे कुमार पुत्र है कारोपे। के प्रमेश मनीरण, मन और चनती मन्त्रूमें बक्त्यों और विकार हो गये हैं, बेले ही हुए भी होओंने !"

अभिनेतरे कह—वार्षे । जानको कर कुरवार मुक्ते कह पुरा विकार है। पुरी पह नहीं सुक्रात कि में अन्तरको स्था जान है। केरावा इन्ह विशवा उत्तक करे, अलो सर्वक पान्यसभी और बाँग होगा ? विसे साय-वैसे सायुक्तका श्रामाण जार हो, जिसके अर्जुन-जैस्त गर्ड हो और विस्तर कारण हमारी क्या है, सम्बे चन्द्रसारी हेने रख श्रीह ै ? केरपन इसने असके हात पूर्व को डीमीच्छा करनेका मारेश दिया है, जाने दिये से की बहुते हैं। अपनर्य भीनके कारतनुसार विकार का एक है। अब एक अवसी अवा हो, तथी में अपनेह कार-100 कीर्ववार करनेते हैं से परिष । मेरा को देख ही निकास है, जाने जानकी बैसी

बीन स्थापन कम्बन कार्ने निकार करनेके पास वर्गस्य-तुमिहरने रीर्जकायकी देखते की। उत्त त्रवय

भारती हाइन उन्हें का सक्त मेरे के 'कारन ! बार लेक पूर्व और पहलेंद्रे कर बॉक डिवॉक्ट कर करने का से हैं। साथ इसे की सबने साथ से परिन्ने, स्पेटिंड कारके किए प्रमाणेन प्रोतंत्रक प्रतिने अवसर्व है : विश्वत रह-मार्थ और नहीं आहेंहे पहला हर बेसीने अन्त राज्यात गुरू जी स इससे । अवने शुसीर अपनेत पंचायते स्वयत् प्रात्तेत्र की अवस्था से सीर्ववास कर क्षेत्रे । अभिन्या प्राथमिक स्थापनीत्व के तेन हैं । प्रार्थिक



इन अलके एक प्रयक्त आदि तीर्थ और साथि पर्वत, नक्न क्षारी नहीं एवं अञ्चलक जाति मुद्दोंके दुरोग करके बुलावी होने ।" जब करवाडी प्रकुर्णने इस प्रकार साधारपूर्वक वर्गराम मुनिश्चरमें प्रार्थन वर्ष, तक वे अल्लाके अस्तिकारी नक गर्न और केले कि "स्कृत अस्त्रत, आध्यतेन ची स्त्रीत्ते हे" का कर्मकारे हुए प्रधार स्केन्द्र पुनि पूर्व अपनार्थ कैन्स्सी सम्बद्धिक अनुसार पर्याची और श्रीपदीके स्वाप सीवीकात करनेका किया किया, उसी राजव करवान् बेहालास, देशमें कार को करें। पूर्ण कार्यानेकी सुधि केनेके हैंओ बाध्यक करने आने : चुनिहिस्ते समग्री प्राचीक निविधे पूरा की । क्योंने कहा—'हार्थिक सुद्धि और व्यतीका सुद्धि हेचेंकी है अवन्यकार है। बनको सुद्धि है पूर्व सुद्धि है। इसल्कि

काम कुलारोग मैकरीमें प्रति हेम्बुद्धि न एकावन सम्बोद्ध प्रति | निरमुदि रहो । इससे हुन्दरी जन्मीका स्ट्रींड से व्यक्ति । का रोपंपात करें।' अभिनेत्रों पर बात करवार केंग्रो और परकारोंने जीवा को कि इस देख हो करेरे । उस देख क्षे कार पुनिश्री क्षीतकात क्षित्र प्राचन और प्रैयक्ति एव प्रक्ति-पुनियोक्ते करण पुरः । वर्गातीने पुनिवक्ते

सरकर कुल नकाचे पुरेशेल औरव एवं कशासी स्मान्तेक क्रम क्रमानेने वेशंगता अन्य ग्रहे। वह क्रमा सक्ते हानमें की थे, प्रारंत्यर करे कहा तथा मुनवार्ग है, असरकार कराएँ भी, प्रतिर अधेक कामधीरे को पूर् थे, क्रममें असूब, कमारे सरकर और केमेन कमानी सरकार रही हुए हे क्या इन्होंन आहे हेक्क बेक्रे-बेक्रे बाद रहे थे।

## नैभिवारण्य, प्रयाग और महाकी यात्रा तथा अगस्यक्षमये होमदाजीहारा अगस्य-लोपामुझकी कथा

मैशन्यकार्या कार्य है—सम्बोधन । और पानवा अस्ते । राजियोके प्रमुख बहाँ-वहाँ करते हुए देविकाल्य केली पहिले । वहाँ गोपारिये पारत सामोद उन्होंने पहालनाई पन और rift um all i fire been, finte alle papeibalt gur un क्योंने कामानीर्थ, अनुसार्थ, मोसीर्थ, कामानेरीई और निकास कोतर निवास का ब्यूब कोने कर किया। कारि में वेज्यानीकी चाल्यीर प्रवासने वहेंचे । वहाँ कार्याया सम्बंधि पहा-क्यूबर्क संगठने सार कर अस्त्राकेन भूत-शर का दिया। इसके बहुत्यू से प्रधानी बहुत्यूरी केंद्रेपर गर्ने । वर्ष बहुतनो करतो निवास करते हे । इस फारनर क्यार और क्यानोंने काला की और है। र वे प्रकारों से पाने बाद, पूर, वर्तने दूर करे हुए एक पहुँचे । व्यक्ति नाम्बर्धार पानका वर्षत्र और केंग्रोट करने किये क्रां सीं। स्वर्गाया अक्षांची प्रत्याती को है। स्वर्गास क्षुविकारीका पर्वता हिन्द्रवेकात परकीवर कवड कांड भी है। यह पर्यक्त अक्टूबर जनका कहा है भीका क्षेत्र है, बढ़ी क्रमान अर्थतम् कर्व निवास करते है। एक समय बगकर् अनवस्थी भी व्याँ पूर्वेद्ध वन्तको निस्ते अने थे। विज्ञासमारी सीम्बादेवनीका थे इस दीवनि दिला विकास है। इसके प्रत्यार अनेको सुनिका निकास करते हैं। इस देखके स्थानी उनोचन अक्रमा पहाराम कृतिहरूके पास अने। जाने बेटेक विकित्ते कट्रानंत का बटना। में विकास मेर-नेक्यूके चरमानी तथा विका और उसी

[ 039 ] tio tio ( tare—tre ) e

का समाने कुन्त नामके एक निक्रम् और संस्थी कामारी थे। उन्होंने अनुसंख्येत पुत्र छवर्ति प्रकार स्तरित कुरमा । वे कोरे-'वर्ड स्थाप पाने अनेको पूर्व क्लोबर अनुसार किया है। अनेद पहले पहला और व्यक्तिकारी को करना है। अपने सेवाई-कारों पर्वत हो। को थे। क्षेत्री केवले को और खोलो गरियांन्सी खारे क्षे हैं। अन्तेवन व्यक्तिय होत रूप अर पार पानकोची निन्दारी पुत्रे प्राथे कर दिया करा था। दिश जनार रोसारने कालुके बान, आकारके तथे और कराते हुए नेक्सी साराजीको चोर्च नहीं किर कुळता करी प्रकार करते पाने से हां प्रदेश्या की निर्म को का समाते। कुरुस्पर पुरिवर्षित ! राजानि जनके होते ही अनेको पह इस सरोजाके सम्बंध पूर् है।"

हर ज्यार नकील होकों कर्तनीय का कर, ह्यानीको व्यानी प्रीत्य रे पुनित्या पुनिति अगरकायरे अने । वर्ष करते स्वेतव व्यक्ति वक्क-"कुलस्तर । इक कर चनकर अन्यवने एक गुरेगे अपने जिल्लोको अन्दे सिर राजको देशकार असी पूछा, 'बारमधीन इस प्रकार नीवेको हिल किये क्यों एकके हुए हैं ?' तम उन केइबाई अनिवॉर्ड कह, 'इन हम्हरे ही विद्याल है और पुर हेनेकी आहा क्षण्यों इस पक्केंगे करके हर है। वेट अपका I वहि हुन्तरे एक कुछ हो पान से उस नरमनो हमार कुरमार बहुत को को । अपूर्ण भाग कोहकर कुछ कारकार्य | हो सकता है और दुनों की स्वर्गत मिल सकती है।' अपहर्श महे तेवाची और सम्बन्ध है। अनेप निक्तेते पहा, ] कोवर जन्मकारि ताले बहा, 'हेर्च | तुर इन सहसूच



"मिनरोको इस उत्पार बॉक्स केल करवार अन्यक्त जिलार विकास कि मेहरपरम्थाना अक्रेब माझे आसीको विकास करण अवस्था है। सिन् करें बोई भी की सको सनुसार में भाग पढ़ी। तब क्योंने बिदले देखके उत्पादे बार बावा यह 'राकर् । पुनेतरिता इकते के विका विका करोबा है। प्रारंति में अन्तरे अन्तरी पूर्व सोन्युक्ताओं मेरिका है। जार मेरे साथ इसका किया कर देश

ेंचुरियर अन्तराची **या यात्र हत्या उपके हेर क** मने । में न दो अन्तर्वकर हो कर इसे और न कन्य होना हरका है। अनेने महाराजिक पार का उन्हें का नृक्षण मुलकार कहा, 'तिने हे नहीं सरकार को ही देवारी है। के प्रतिका है को के हो सामग्री क्यानक जानके कार कर क्रलेंगे। बताओ, इस विश्वकरें प्रयुक्त कक का है?' का रामा और रानेको अलग्न गुन्ती देश राजकार स्टेक्स्यूको अन्ते पास जाकर कहा, 'विताली । वेरे तिले उत्तर प्रोद व करें, खुने बगरव मुनियो सीयबर अनवी रहा करें।"

"पुरीको वह नात शुन्धार एकाने इत्यविक्रिको जनस्थानिक रहण अस्तर विचान कर दिया। को जिस

'नियुग्य । अन्य निक्रिया रहिने, में अन्यकी प्रका पूर्व । ज्यानुस्थानों अपन के ।' जर संस्थानुस्य अपने क्रांनीय



ध्युक्तभ और खोन क्योंको को उत्तर दिया तथा चीर, बेहबी इसके का और नुगमर्ग वारत का का अपने परिके क्रमान की प्रत और नियमीका चारण करने अभी र सहस्वार क्यान अपन प्रदेश केले अध्या अपने अनुसा भावति समित्र कोर समान करने रागे । स्वेपानुक बढे ही हेव और राज्याओं अपने परिकेचको केना करती भी तथा पानार जनकारी भी अपने बार्स्ट प्रश्न को जेनक

''क्यन् । जब इसी जन्मर ज्यूह प्रमय निकास यक्त से एक दिन गुनियर अन्यवनी अञ्चलातो निवृत्त 🥡 (केन्युक्रको देशत । इस समय उपके उपक्रपट्टे उद्वादी करिन् बहुत वर्ष हा थे। उसको सेवा, परिचया, संबय, कारित और सम्मान्तीने भी उन्हें मुख्य कर दिया था। अस: उन्होंने काम क्षेत्रर सुरवानके विन्ते कारका आवासून विकार स्वा करवाची लेपानुदाने कुछ सकुवाते पूर् प्रथ ओक्सर कहा, 'युन्तिकर ! इसको संदेश नहीं कि यांत संसारको विको ही पार्टीको क्षेत्रक करता है। जिलू मेरे जी अन्वती जो प्रति है, उसे भी लार्वक करूरा ही चाहिने । मेरी हमार है कि अपने पिराधी क्लोंने में जिस प्रकारके सुन्दर केंद्र-पूजारे विश्वविद रहती

बी, मैरे ही वहाँ भी रहें और तम सामने साथ केंद्र एकाएक है। सब है जब वी बहुत हर और अवस्थी विकृतित हो। इन काव्यक्तकोको अस्त करके से है समाप्त नहीं कोशी । यह एक्टा यान यह चील है, हरे रिक्तों को स्थार सम्बेगानिके कुछ सम्बोध नहीं पुरस माहिने (\* अन्यक्तानेने कहा, 'स्त्रेसको । हुन्हरे विकासीके करने को अन क, काम से हुक्तरे करा है और न मेरे ही कर है। जिन देश की से स्टब्स है?' सोचकुर बोसी, 'त्रवेषन । इस पीनलोक्से निवास कर है, यह समयो साथ अपने क्लो प्रचानते एक स्थलें है जिल कर सबसे हैं।" अन्तरको केते, 'दिने ! इत के काली हे हो दोन है, हिंद हेला करनेते राज्या को इस होता। पुत्र कोई हेती का मताओ, निकारे मेरा वन क्षील न हो है सोवानुको कहा, क्रिकेट । में अध्ये सम्बो के क्यू माँ काल करते. इस्तिने शार जानी पह क्यों हुए है नेवें प्राप्त पूर्व भरों ।' तम सम्बन्धा होते, 'हुम्मों ! महि हुम्मे अस्ते कर्ता देवर्ग भोगोचा है दिवस विका है से पूर वहाँ क्रांस विकार वर्गक आकार करें, में कुछरे हैंको का रहते माहर माता 🕻 ।'

"शिक्यमुक्तरे देशा व्या व्यापि अन्यता वाद प्रोपनेक तिले प्राह्मण सुम्बर्गित व्याद काले । उसमें सार्वव्य प्राव्याद प्राव्या प्राप्त सुम्बर्गित व्याप कोंच उसमें सार्व्या कालाने तिले आते प्राप्ता सीव्याद्या आत्मा और उस्ते सार्व्याच्या काला प्राप्त के प्राप्ता विविद्या सार्वा आर्थन विवाद विवाद काला प्राप्त के का अन्यत्वव्योगे व्याप्त, "एउन्ट् । में काली प्राप्ताने आवक्त पाल आवा है। अस्त अस्त्रकों को यह सुम्बरोगों व्याप व्योक्तने विता निवस हो, अस्तिकों क्यान्तवित सीवित्रे।"

अन्यानवीची कात पुनस्तर एकाने अपन्य प्रारा सारा-कारका दिवान रुको उद्योग रहा दिया और प्राप्त दि इसमेंने जान को का देखा कीका उन्हरें, बड़ी के हैं। अगरकारीने देखा कि उस दिवानमें आय-कारका देखा मध्यार था। इस्तिन्ने का सोकार कि इसमेंने केड़ा-का की कार रोगेने अभिन्योंको दुन्दा होना, उन्होंने कुछ नहीं दिया।

- जिल में कुर्जाको साथ सेका अक्को पास गर्छ। जानाने में अपने राजको संस्थार आवार का ग्रेनोका विभिन्नत् स्वाप्त किया, जाई वर से जावन अर्थ और पास दिया तथा करकी जाता समार गाई प्रशासको अर्थ का प्रशास सम आवारकोने बाहा, 'जावत् है इस ग्रेनो आर्थ्य पास का नेनेकी इकारो अर्थ हैं, जात तुम सुसरोको मेंगू व ग्रीकारत

क्या किने हुए क्लोंसे हमें सक्कान्य साथ से।' अनक्तोची का सुनका राजने हुई आव-अवका हैतार विका विका और बाह्य कि इसमें को बाद अविका हो का आप हे स्टिकि । सम्बद्धि सम्बद्धाने अन्य-स्थापन होता क्सका वेककर विकार किया कि इसमेरी हुआ की क्षेत्रेत जनिकोचे क्ष्म से सेना। इसरिके स्थाने सा हेनेसर केवान क्रोक्कर से सीचे पुरस्कारके पत पहल बनवान सना मानुष्टे का और स्वानुकार्यय कारत प्रास्त्री के जो असर करना सामा-प्रस्ता किया। को बे अन्य-अवस्था केंद्र समान हैकारत क्योंने बन नहीं किया। का का तक प्रकारोंने अपनाये हिनार करते बाह्य. 'पुनिवर' । इस सम्बद्ध संस्तरने प्राप्तन शासका एक देश बहा करवान् है। अस्ति विभा प्रथ पता स्रोग से बन्धी हवार रक्षांकारी ही हैं हैं जारा में पान विस्तापन हमाराओं पान बारे । क्रमानो पर पाल ३४१ कि नार्षि अवस्य राजाओंके कार विनो आ हो है से काले अपने प्रश्निकारोंके स्वीत राज्यकी क्षेत्रक कावर कावर कावर किया। विर प्रात क्षेत्रकर का. 'अवन्योंनीरे पूजर देतो क्या की है; करीने, वे आपनी क्या केल करों ?' कर अगमन्त्रीने हैराका करा. 'अञ्चलक । इस जानको बद्धा सानकोतान् और कन्युनेस क्याने हैं। में इक्त को एकालेग हैं से में विशेष करी नहीं है और पूर्व करवी पूर्व अवस्थानक है। सह प्रतिके पह क्षेत्रके क्रिक के नावपुत्र पर आवर्क क्रिक है, जा सकी करना क्षत्र कर करायोंड को देखि ।" का सुरक्षर इन्सर्ग पुरिवरको जन्म बताहे बहुः, 'पुरिवरः । मै विकास क के बहुत है, की सार में का अवेतावादे कहा है है में अल्पने कर है हैंसा।" अल्पनाओं केरे, "असुरक्ता | पूज अनेक भारतो एत एकर गीएँ और इस्मी हो सुवर्गपुर्वा देश कारों हे क्या हुई हमसे हुने और क्षेत्र कुल हुन, एक क्षेत्रेमक एवं और मनके कारण नेपालन् के बोदे हेरेकी हुन्यूकी क्ष्म है। इस पात सम्बन्धर देखों यह सामनेवासा रख सोनेवार है है।' यह सुरक्ता का फैलों कई बहुत-का का दिशा। उस क्यों को कुर मिराम और कुरक करने कोई दूर्वा है सम्बूर्ण का और सम्बक्ति स्थीत जनस्मतीको उनके अध्यानक से अपने । पिर सगवन्त्रीयो असा कार सम्बन्धन अपने-अपने देखोंको को गर्ने और सन्दर्भनोंने श्रीपारतकी समा समार्थ एवं हो। क क्षेत्रको का—'क्ष्मर्! जापने येरी समात

कामको एवं का हैं, अब कार के नवंदे एक परवामी पा

क्रमा करें।' अन्यक्रमी केले, 'सन्दरि । मैं तक्रमे सहस्वासे

म्बाह्य असरा हूँ । इस्तीरचे दृष्ट्यी संतरिके निकाने केरा जैसा क्रिकार है असे कक्ष्मा है, सुने । स्वाध्ये, तृष्ट्ये स्वास कुर हो,



या सहस्रकृतिके सम्पन्न सी पुत्र हो अन्यत्र सी-सीके सम्पन

का पूर हो ? 'वा स्मानीयो परस्य कर देनेवाल केतार इस है पूर्व है ?' स्वेच्युक्त व्याद्ध "त्योवन ! पूर्व से स्मानीयो बरवारी करनेवाल एक है पूर केविये। व्याप्त-के अधेष्य पुरुक्तेर से एक है चेष्य और स्थित पूरार अध्या है।'

प्राप्तर पुरिवार अन्यवनी "बहुद अवका" नह प्रशुप्तास आनेक अवसे प्राथमिनीके साथ समानय विकास क्षांक्रको पहल है कार्य को को हो। उनके कार्य को क्लोका कार्य कर्मका यह गर्न पेट्योने कार्य प्राः। का कारण वर्ष के समझ है कहा से सोपानुस्के गर्मरो कृत्यु राजका एक बढ़ा है प्रदिश्य और रेमाने बारम प्रस्त हुआ। यह कार कारके अना क्रमूनेशकु केंद्र और उपनिच्छीका क्या कानेकात का ह उसका कथा क्षेत्रेयर जगतकारीके विक्रमेको अनके अन्तिह लोका आह को नने । क्रमीनो पृज्यीनर क्ष करन अन्यवस्थानको करने प्रतिस्थ दृश्यः। सम्बर्धः स्थ mer mital werbe welch seine fie feit, feite क्रमीर पह परकर्मका व्यापेशकी प्रवासिक को पूर्व है । महे-बादे केवल और प्रधान के प्रधान होना बाते है। यह प्रभूतिय की केवोरे औरह है। कावर हीको मुक्ता काबुराजके वेकाने क्रमिता कर क्रिया था। जो उन्हेंने इसी निर्देश करन करके पुरः उत्तर विरुद्ध का । इस प्राप्त सुन्द्राय केव की कुरोंकाने इस प्रैनका है, हो कुछ इस सीवीने काल करते। ले प्रदा करें।

## परवृतमञ्जेके तेकोहीन होने तथा पुनः तेज प्राप्त करनेका प्रसङ्ग

वीतन्त्रकार वाले है—सबर | वहने स्वेन्सकी का बात सुनवर बहारन जुंबिहिटो वालों और सैक्टिके सर्वत इस सीती काम करके अपने दिला और देखाओंको अनुह विस्ता ( अपने काम करकेर अपना तेवली करीर और की कामित्सन् स्वीत होने रूपन और में क्रुअंकि विसे दुर्वत हो को । जिर कामुल्या जुनिहिटो सोम्बानीको पूछा, 'मानार | कृत करके कामुले कि प्रश्नामकोको पूछा, 'मानार | कृत करके का और को उन्हें किन किस समार सार कुता ।'

होग्याचे सेरं—महाराम । ये आवको क्यान् श्रीकर और महिन्दा परपुरावकीको क्यां कुम्बा है, जार सम्बन्धन होत्यर सुनिये। नहामा स्थापनीके क्यां कुम्बारे अन् नामान् विन्दुने हैं राजनके करके हिन्दे सामाना करन किया था। सहस्कारन सीरायने सामानासने हैं अनेको

व्यक्ति परवाल विशे थे : उसका सुनव सुनवर रेतुकासुकर पूर्वा परवालकारको कहा कुनुतर हुआ और वे अध्यक्त इतिकोधा एका करनेवाला किया प्रमुप से इनके प्रसादकारी परिवा केनेच तिले अपोध्यापुरीये आगे : जब रहारव्यापे उसके अपायका प्रमादक सुन्य से प्रमुपे प्रवादकार सेवा इतके आगे प्रकार अपने एकाको सीवाधर सेवा प्रमुप्त की प्रकार अपने एकाको सुन्निय देश प्रमुप्त करात है, पति हुन्ये कहा हो से इसे प्रमुखे ।' तब सीटनव्यापुरे परव्याप्त के हाको जब दिव्य प्रमुप से तिला और कोव्याप्त केना पद्मा हिला । वित प्रस्तावन हुए उसकी प्रमुप्त केना वित्य । अपने प्रमुप्त अपने हैंसे प्रमुप्त के पत्न करने प्रमुप्त क्षा है पद्मा केने हुए अपने हैंसे प्रमुप्त के पत्न करने प्रमुप्त क्षा हुए पद्मा है । इसके प्रमुप्त कार्य परवृत्त की पत्न क्षा क्षा हुए पद्मा है । इसके प्रमुप्त कार्य परवृत्त कार्य क्षा हुए पद्मा है । इसके प्रमुप्त से क्या दिया, जा और वेश केम करें?' का परव्यवसीने को एक विमा बाग देवर कहा कि 'हरे बनुस्पर रक्षावर को बन्दान्य क्षीत्रकर विकास ।'

था स्कार औरामकारे यह, 'बुद्दम्या । अन् यहे अधिकारी बाद पक्षी है। मैं अपनी को बनकर की सन्तर्भे कर का है। अपने अपने निवन्त्र क्वीकारी कुरवर्त निर्देशकः श्रामित्रोग्ये प्रशास्त्र हो यह क्षेत्र प्राप्त निर्मा है: दिश्चम प्रतिके आल मेर की विश्वकर कर को है। अस्का, मे कारको दिन्न के देत है, उन्हें जल की जलको देविन ( का पुरतिक परवारामने प्रत्यान औरायके करोली उर्जीकर, बहु, सह, स्टब्स, प्रवासन, निवर, अहि, व्हार, मह, गर्मा, राक्षत, प्रश्न, नहिन्दी, वीची, व्यक्तिकारकी, आवाह करवान सुरिकार, केवर्रि समा सम्पूर्ण समूह और पर्यक्रेको देखा । इनके रिया जरे जाने जानिकांचे स्थित केंद्र, क्याहरू और बा-मामानेक स्थान सर्वाच सामानीयाँ और वर्षोप स्था मेंग, तर्ज और मिद्रुप्, ची विकासी जैने। तैन भगवाए बीएको का बान क्रोड़ से क्ड्री-बड़े रूपरेके स्थित पूरत यहाता होने स्टब्स्, प्राप्त पूरुवहर बहुतवर्ष और वेकापाँहे क्षा गया: कुमी वर्तको असी असा प्रमीत भीवत अस्तर और प्रदेशर संबद्ध होने तथा। प्रश्यमध्योगी भूकालोंने होई हर्

क्क सम्बंध काकुरायकीयों भी जाबात कर दिया और केमल क्रमा हैन क्रमा कर दिन राजनीके पन और आया : नम क्षे कुछ बेत हुन्य से उनके सरीरने नाने जननेका प्रश्नार हे एक और उन्होंने परावाद विकास अंकार परावाद बीरामको उत्पन्न सिन्छ। दिन उनको अञ्चन प्रचार ने महेन्द्र पर्याप्तर को नवे और को अन्य एवं तरिका होकर नहीं हुने राने । इस प्रकार एक वर्ष बीत बारेवर क्य विद्यालने देशा कि बाहरावर्ग को निसंग हो से हैं, उनका सार पर क्त-पुर के जब है और वे असला द्वारों है से असेने असे महा, 'बार ! हुन्ने साहात विष्युके सामने क्रिकर केरर बर्जन किया, यह रीया पूर्वी या। ये से दीनों स्वेकोंने सर्वक 🕏 पुजर्वन और करवेन 🜓 उस हुए करार प्रकृतकृत मानको धरिक नहीं कान करें। सरम्पूर्ण तुन्हों प्रक्रिक्त कुन्ने क्षेत्रोद पालक सीवीये कही सरकत नहीं भी । असमें साम करोते हुक्ता वर्षेत पुरः केवले हे कावता।'

विक्रोंके इस इस्पार बाइनेके परभूक्तवर्धीये इस सीवीये कान जिल्ला और ऐसा कानेने कर्षे पुनः अपना सोवा-इस्रो केंद्र प्राप्त के नाम । महत्त्वम । परावरण्याची पराप्तरावाणीने हर प्रकार विश्वपालको अञ्चल अपना देन को दिन या, को क्रम कीवीर काम बार्ला क्रम प्राप्त कर रिस्ता ।

#### वृत्रवय और अगस्यवीके समुद्रशोषणका वृत्तान्त

पुरिवरितरे अव्यान-विकास । में अञ्चलके अन्यवनकीके | कुन एक क्षर बीटोम्मान बढ़ा पर्यवार और सुबुद का बनाना । अस्पुत करोंको निकारो कुरूत कहात है।

होरहाची केरो—एकम् । मैं परम देखानी अन्यवसीयी कारण दिन्त, अस्तुत और कार्योक्टक राज्य कृतवा है, इस हारकार होकर कुने। सम्बन्धी कारकेर पर्यक्त को मानेकर और प्राप्तित क्रियमा थे । में सुम्बनुओं असीत सुनार कर ज्याने क्यानो क्रमेंस से जाने तथी केम्प्रकोच्य अञ्चलक करते करे थे। वन तन केम्प्रकॉने निरम्बर पुरस्तुको प्रकार आहेन अहरू विकार है है हुन्होंने आगे केवन अक्राचीके पास जाने । अक्रमे व्या केवलान करते बार, 'रेन्डानो । हुन के काल करन चाही हो, का कुछी किया नहीं है। में दुनों कुमतुरके बचना करना करता है। मूलोकमें दर्शन करके एक को स्टल्लन कार्नि हैं। हर सम लोग मान्यर रुपसे कर गाँचो । जम मे असम क्षेत्रर दुन्हें कर देनेको हैका हो से उनसे ऐसा बहुता कि मुन्किर । सैको परेकोके देताके रिजे अस्य हमें अन्तरी हरीको दे हीकिने । सर में देह जान कर दन्हें अपनी इतियाँ दे देने । कावदि इहियोसे

का काले हुन्द पुरस्कृतक कर कर क्रोला। की सुने एक को का है है, अर पाने परे ?

व्यक्तनीके इस प्रकार कालेवर करकी आहर है एक देखा क्रालादेके कृतरे कारण कृतिक स्कृतिके कारणार्थ आहे । स्कृ अस्तर क्रोको अव्यक्ति पुत्र और स्थापिते सुरोपित था। वर्त सुनी प्रचन देवानी व्यक्ति क्रांतिक वर्तन कर उनके कानोने प्रचल किया और स्थानोदे सकानुसार उसी पर-अपने रीने प्रचीत भी। सब प्रवीप स्थिते अलग जारा होकर बहर, 'हेम्पन । त्युरा विसमें हैत हो, नहीं मैं कर्मन्द्रः कुन्तरे मेले में अपने करियते भी न्येक्सर कर स्वकार है।' किन केम्बाकोंके अनिवासका धारनेवर गम और इक्किके करने रक्तनेवाले सुनिवर स्वीपने प्रकृता असने प्राण प्राण हिले। वेशकारोंने प्रकारकों आदेशानुसार असेड विकास वर्गस्थी व्यान्त्री के जी और विवासमंत्रि पता अकार अपन प्रकेशन बहाता; विकासनि उन हर्षियोंसे एक नर्गकर पत्र रेकर किया और स्थल्ड प्रस्ता हेकर हुन्हों



बहा, 'देवरुव । इस बच्चे आप देकाओंके इन्हु उन्हार्य कृतसुरको चन कर जरिन्दे ।'

विकासित हैना कार्यन देवता हुनी उस तेवार सरवाही देवताओं क्षेत्र के पृथ्वी और अवस्थानी मैस्टर कई हुए पुलसुरस्य साम केस दिया। उस ज्यान विकास्त्र अर्थनोंके प्रथम विकासित कार्यन कर के मैं। देवता और अभिनोंके देवते सम्बद्ध प्रथम कर का मून देव पुलस्ते कार ओंगा विकास विकास कार्य कर हुन देव पुलस्ते कार ओंगा विकास विकास कार्य कार्या गर्मनके पूर्वी, उसकाय, सम्बद्ध विकास के प्रथम और असे मान्युरस्य अस्ता बीचन क्या केस्ट। उस कार्यी केरले प्रास्त्रिय केसर कर व्यक्ति आहे प्रथम क्रियास कार्यन कार्यन प्रस्तिक केसर कर व्यक्ति आहे प्रथम क्रियास क्यांस्

कुम्मुरचे नारे जानेसे सभी देखा और म्युनियोची कहा सामन्य हुआ और ने हमादी सुद्धि करने समे । इसके प्राप्त अमूरि कुम्मुरचे करने हु-सी कालकेमादी इसका दैखेंकों भी मारन जारना किया । तब ने सब देख करते परन्थीय होकर वर्ष-बढ़े क्यारे और मायोसे को दूर समाय क्रमुरने भूतका दिवा की । व्यक्ति ने अस्तन मायुक्त होकर आवसने वित्रोबनिक नामका काम सोको भगे। विकास काले-कारो कई कालक एक बढ़ा है नार्यकार काम सुना। काले विक्रम विकास के समझ कोबोबी यह समझे होती है, अर: सको बढ़ने कामा है नाम काल काहिये। वृत्योगे को भी अन्तरी, कार्यक और प्रामीन पुरस है, उनके प्रहारके लिये प्रीकार कारने काहिये। बढ़ा, उनका कहा होनेते हरता संसार अर्थ है नह हो कामणा।

हैना विक्रम कर में एन्यूको खाते हुए ही वैस्तोनकीका नाह करनेने साम हो नमें। में सोकानें पर नमें और निम्हाति शामी स्मूको नाहर आकर अवस-नामके आसम और मीनाँदिनें प्रमेशको कृतिकोडों पर नाते सका दिनमें समूकों किने रहते। सम्बद्ध अस्तानकर नाहिन्स नाह कि रहती पुनर्केण कारण ना कृतिकोडी स्नूकों विकारों हैने सामी और उनके कारण नाहिन्सोडी कार नाहिन्सोडी स्नूकों करी हो हो।

राज्य । जब इस प्रकार संसारका संहार होने राजा संबा क्ष-भागांकि प्रकार या है को से देवलानेय को कृषी हुर्। क्योंने रेकाम इसके राज निरम्बर सरबद्ध औं और हरणान्यकार केलीन्द्र सीमारायकार्य प्रश्न सी। क्रामाने वेक्टमाना अवस्थित प्राथान् वर्श्यात्वे यस करण उन्हें प्रकार किया और उनकी इस उनकर सुद्धि को -- 'प्रची | आव को इंताओ समीत, पाला और संद्रार क्रमेको है: अन्तरीने इस बराबर निवासी राज्य भी है। कारकार ! कुर्वकारने तक पुन्नो सनुहो कुर गयी भी हो कार्योंने व्यवकार कार्य कार्य होता उद्धार क्रिया था। पुरुषेका । अवसीने पृत्तिकार करण करके न्याकती क्षातिक दिश्यक्रीएक यह विमा या। महर्कन परिचक्रे मारक विक्री की केक्सीके सराबों कर नहीं थी, उसे भी अन्त्रीने सामाना पाला करके तिलेक्टिके ऐक्टीने पह किया था। यहान बनुकी सम्ब ब्यह है कर और पहरवताहै-को श्रेष्ठ करनेकार का राज सुर्वाद्य क्रूनका भी जानने ही सारा जिल्हा के। इसी अंबर्ध अंबर्धे अनिवर पराहर है। है कहतुत्तर । इस कालीरोंके से एकपान आप ही कार्यन हैं। सात है देवलेक्ट ! जिलेक्टिक कार्यानके रिले इन अस्परे प्रार्थन करते है कि इस प्यान सबसे सम्पूर्ण कोचा, केवनक और प्रस्ताने एक मोनिये। इस समय रोसारका बढ़ा पारी पर अपनिवत है; पता पड़ी, राज्ये कौन उपका इस्तुम्मेको का उनका है । ब्राह्मभोका नास होनेसे से क्वांका है कह है कारण और पृथ्विक रह हैनेसे उस्ते की न्हीं का प्रकेश । करावों ? अब वो श्रायकृतिक आयोह सहर करनेसे हैं इन सोकोक्त संक्रम कर सकता है।

हेक्सकोधी अर्थन सुरक्त गर्थकर कियुरे क्या— देक्सक ोनी का प्रकारोंक श्रमका करना को का जनक



है। स्थाननेत नागरे प्रसिद्ध एक देन्नेका का निकार के है। के सब देन कुमसूरका अन्य निकार कर संस्थान नैदिन सारी में। दिनों से नामों और कालेंगे को दूर प्रमुख कैंद्रे स्था है, लिलू सारिके क्या संस्थाका कर्क करनेत दिने सादा विकासकर प्रसुक्तिक क्या करने है। समुख्ये करनेत सादा वुक का देनोंका क्या को कर सको है। समुख्ये करनेत स्थान सुख का देनोंका क्या को कर सको है। समुख्ये स्थान स्थान देनोंका क्या को कोई समय की है समया इस्तिने सुमाने निना कर देनोंका प्रसास की है समया। इस्तिने सुमाने निना कर देनोंका प्रसास की है समया।

भागार् मेण्युकी या यात सुरक्तर केल्क सहस्तीकी
अद्यार अगवन सुनके जाकमार अले। यहाँ उन्होंने देवा कि
विभागांक पुत्र पराम रेक्की वर्षपूर्ण प्राप्त अगवकरी
सुनिके सिर्दे पूर् विपालकर हैं। केला उनके निकट करे और कुनिके सर्विक्त कर्मीक वस्तान करते हुए उनकी इस अगर सुनि करने रुगे—"मूर्वकारों का इसका प्राप्त प्राप्त क्या रोकोंको संस्ता करना अरुक विभा से आपानि उनका दुःस हुर किया सा और उस संस्तरके स्वारकारों हैसरवेकके हैसरीर निराक मा। कर्यवस्त

विश्वकार स्वंतर कृतित होकर एक स्वय कृत सेनी है। बाब का। इससे संस्तरने सेनेच खो समा और प्रमा पृत्यों केंग्रिक होने सभी। का समर आपकी करण सेनेसे ही और बानि विश्वने थी। क्यान्य ! इस भी कृत प्राचीत हैं, अब बान ही हकों असाव है। अस्य कार्यों हकारे पूर्व करनेनाते हैं, आर: हर भी होन होकर अस्तरों कर मॉनरे हैं।

कृष्णीरने पूक्त-वृत्तिता । पुत्रे व्या नात विसारने कृत्येची पूजर है कि विकारणंत क्षोवित क्षेत्रर शकानात् क्षो व्याने राज्य था।

विकास सेचं—जूर्व अस्य और असा होनेमें पर्यातास कुर्वासीओं कुर्वेक्को अधीतास किया करते से १ पह नेतासर कियानासने कहा, 'कुर्विक ) किस असार दुस हुनेत्वेच पार्ट ककार निरम्पति असारी परिकास करते है, जारी असार मेरी भी किया करते।' इसारर सूचने कहा, 'मैं असाने इकाले अधीतास करते।' इसारर सूचने कहा निर्मेश इस कार्याता कार्या करे है, उन्होंने मेरे निर्मे का मार्च निर्मेश कर दिना है।' है संस्थात ! कुर्विक इस असार कार्यन्तर किया करेकों नार नाम और कुर्वे इस असार कार्यन्तर कार्यन्तर कार्यनास अधानाह कहा उन्हों की कार्यनार अस्ति की केचने रागे, किया असे असारी कुछ भी म सूची। सिर्म में मान-मेर-सम्ब क्यांक्रकारों केंग्र, मान्यनास्त्री और अस्तुनावरसावनी अस्त्रकारीने क्या नामे और असे असना आसेका असोवन असोवन



धुनानां । वे व्यक्ति सरी, 'जनकर् ! क्रोक्के क्लीयून हुन्य जा प्रकाराज विकासकर पूर्व और पंजारको कार्य शक्त व्यक्तिको परिको वेक रहा है। दिक्कर ! स्वयंके दिका और कोई भी पूजा अरुको रोकनेचे प्रकृत जा है। इस्तीको आप रोकनेको कृत्य करें।'

देशाओंको यह नात सुरका सरकारी सन्ती पार्टके इतिहासिकारको यस आवे और साते चेले, 'क्वेकार!



मैं किसी कार्यने विकासकों और सा द्वा है इसलिये नेरी इका है कि तुम पुढ़े उत्तर कार्यका मार्ग के । सकारत में उत्तरते और ततात तुम मेरी उत्तरका कार्यका मार्ग के एक इकार्यकर सहते दाना ।' कहारता पुणिहित्यों | किश्वास्तरकों का कहारकर अगवनार्थी रहित्यकों और पाने गर्थ और पानि आसतात नहीं रवेटे । इसले अगवनार्थिक प्रधानों किस्मानत्त्वा सहना कहा हुआ है । तुम्हरे पुल्तेसे का स्वयं प्रशाह मेरी तुम्हें सुना विका । अस, किस प्रधान कार्य का स्वयं ।

देक्याओंकी ज्ञानंता सुनका कारकार्यने कहा, 'अवन स्त्रोग कहाँ मैसो जाने हैं और मुहानो क्या का कहा है है ' कहा केस्साओंने कहा, 'महारान् ! इससे ऐसी इच्छा है कि कहा महारागरको थी प्रकृते। ऐसा क्षेत्रेगर इस देखोड़ी कहानकेनोंको अन्ते परिवारको स्त्रीत कर इस्तेने।' वेग्यानोधी बाद सुनवर पुनिवर अगसने बढ़ा, 'अबा, मैं बुकरी इका कृषे करीय और संसाधक दुःस हर कर हैंगा।' व्यानक के स्थानिक कृषियों और वेग्यानोके साथ के महीनक समुद्धे सारम पहुँचकर चार्च स्थानिक हुए देवल और बुक्तिके बढ़ने राने, 'मैं संसासके हिस्के किने समुद्धात पान बनवा है।' ऐसा बाहकर उन्हेंने कार-बी-बनके समुद्धात सार्वान कर हिया। यह केंग्यानोग अवस होका अपने दिव्य



इस्तोनं कार्यक्रमेका संद्वार कार्य लगे। इस प्रकार गर्ने-नर्वका प्रमुद करते हुए देकारमोधी कारते वे मासुद्धा हो गर्म और उन्हें काल्य केन समझ हो गया। उनकी पार सावार हो बड़ीनक से कार्यक्रमेनोने भी अर्थका निक्षण करते हुए करकेर कुद किया। बिन्नु के परिवादम पुनियोक तपसे पहले ही एक हो चुके से, इसलिये सारी इस्ति लगावार प्रथम करनेपर भी वे देक्तासंग्रे हमारी नह हो गर्म समा के किसी प्रकार दहर संद्वार के कहे, से पुन्कियो परेक्टन प्रशासने कसे गर्म।

इस अवार कुम्मोका शंस है जानेम देखाओंने अनेता अवारते सूचि करते हुए अवस्थानीते आर्थना की कि अम अस पीने हुए कराको क्रोकार किर स्मृतको भर सैकिने। इसका अन्यक्षानी कोरो, 'का बार से का नवा, अस समुक्ती कार्यके विनो हुए कोरो और असम सोको (" महर्मिकी इस बारते देखान्त्रोको बहु अस्तुने हुआ और से अस्तुन हो समे। मोद्रमार करने समुद्रको भरनेकी प्रार्थना को । प्रमुक्तिने कहा, । भर जनका । अग्रामीकी मात्र सुनका केवता अपने-काओं । जानसे बहुत हरून बहु राज बनोरन असी बसी हरी।

किर को प्रमान कर ने ब्रह्मानीके फल आने और इस | पुरस्तानीक ब्रह्मसंब अच्या करेगा, अओ समूह किर मान्से दिल्ला : अब हुन हमानुसर अपने-अपने पालोचो | अपने पालोचो प्रदे को और आ स्वयक्ती आहि।

### सगरपुत्रोंका नास और गङ्गावतरण

भुविद्यार प्राप्त—स्थान् । समुद्धे करोगे क्वानको । पूर्वपुरू किया प्रकार कारण हुए, पर्योगको असे किया प्रकार मरा-व्या प्रसङ्घ में विकास प्रकार प्रकार है।

सोबक्रमी बोर्ड—राज्य । इत्यानुबंधाने सगर जनके एक



शक्य केंद्र के बने ही उनकान, कारतान, उत्तरही और में ब्रह्म महर्गित हो। इसकी चेहपीं और पीवल प्रमानी के सिन्हों भी। उन्हें साथ तेवार में बैतमा क्लेकर को और मही चेंगाच्यात कर्त हुए कहें करिन हरशा करने तने। कह बार्ड तनार वार्तक जो विक्रात्म क्रिके प्रकार श्रीवरको गर्मन हर। यहाराज शनको क्षेत्रों अनियोधि राहित जननार्के करणीने प्रत्यन किया और पुत्रके विशे अर्थन की।

तम बीम्बरोमनीने प्रतात क्षेत्रर राज्य और चरिनोर्ड बाह, 'रावन् ! कुम्मे विद्या मुक्ति का भीता है, असके अन्यवने तुम्बरी एक रागेने से आपना भवीर और जूरवीर

साट हम्या पुत्र होते. मिलू में साम एक साम ही यह हो क्षानि: क्ष्म कृती क्रमेरे मंत्रको क्यानेवाल केवल एक है कुरबीर पुत्र होना । हैला बहुबार भगवान वह वहाँ अनायाँन हे को और एक एगर कार्यन अंगत है अपनी शनियोंके सर्वेत का लीट आहे । किर कारतनकरी केटर्स और केटर्स नर्ज बारम क्रिका और स्थम आनेता कैस्पीके गर्पते एक हैंसे जन्म हाँ क्या कैन्यने एक केन्यनी नारान्य स्टब्स किन्छ । एकाने प्रस तुंबीको केव्यक्तनेका किनार किया । इसी क्रमा क्रमीर संगो पह अस्मात्त्वामी हाँ कि 'दानन् । ऐसा ब्याहर न करो, इस प्रकार पुलेका परिवास करना अधिन मही है। इस क्षेत्रिक बीच निवासका को कुछ-पुत्र गाम किये क्षु बोले भरे हुए कहेंचे कृषक्-कृषक् रक के। इससे तुन्हें war gent die mit fift i'

कारकारणी सुरका राजने वैता है किया। इन्हेरे हैंबोब्स एक-एक मीन एक-एक कुन्यूर्ज बटने रक्तना विश्व और प्रामेश बहेगी रहा कारेंके रेग्ने एक-एक क्यों नियुक्त कर है। कहा काल बीलोगा मनवान् इंकानी कृताहे क्रमोंने अञ्चलित केवानी साठ समार पूर अध्यक्त हुए : वे बड़े ही कोर अक्रमिके और कर कर्म करनेवाले वे बचा साम्यक्रमें उक्कर बार्क थे। प्रकार बहुत होनेके बारण ने देवताओं के स्त्रीत समूर्ण संस्थापन विशासर विका कर्या थे।

क्षा अधार कहा गुजर विकास प्रानेतर राजा समार्थ अक्रमेक प्राची केवा हो। उत्तक क्रोड़ हमा केवा पृथ्वीपर विकर्ण सन्द । एकाके पुत्र कामते एककार्यपर निवृक्त थे। कृतक-कृतक वह वस्तुनि समुद्रके कर पहेला, वो इस समय का भनेतर का यात था। मही रामध्या वही प्राच्याकी क्रमी केंबर्स कर से थे, से भी का वहाँ पहेंच्येपर अवस्थ हो रूपा। यह यह हैहरेपर भी न मिला हो वनकुषेने क्षमा कि उसे किसीने पुत्र सिमा है और राजा सन्तरे कर अकर देख है कह दिन । वे केने, 'दिवानी ! इनने क्रमुर, क्रीय, क्रम, क्रीत, न्थी, न्यू और क्रम्पराई-सची उन्नान कान करेंद्र, करेंगु हमें न को बोड़ा ही जिल्ला और न उसको पुरनेकाल हैं।' कुरोकों का कर सुनकर सनस्को कहा सोध हुआ। और उन्होंने-जब्दा ही कि 'चारहे, किन चेवेच्दे खोज । हेक्से की ही बारण नष्ट हो यहे हैं हुआ अपने कांची १४४ करों और किस का सहस्रहोंड़ सीहकर पर अहता।"

निवाका ऐसा आवेश पाकर समस्त्रा किर साथै प्रश्लीने मोदेकी क्लेन करने हमें। अन्तर्ने इन ब्रुप्शीचेने एक जन्म पूर्णाको यदी हाँ देखा। अस्ये उने एक विद्र भी दिसाओ दिन्त । तम में सुद्धान कम कारे प्रतिकारोंने का केंद्रकों कोवरे रूपे। कोवरे-संदर्भ को बहुद सबक हो गया, सिह् बिन्द भी मोद्रार हिलायों न हिला । हुनसे उनका कोंक और भी मह गया और उन्होंने ईसान मोनारें उसे मदासाला सोह इत्ता। वहाँ अहोने अपने चेहेको चुप्ता देशा तथा अस्के मान है कई अनुस्थ तेथेएति पहला करितः भी दिशाओ मिने। बोहेको देशकार उन्हें पूर्वते सेनाक के कांक, फिट्ट माराज्य भगवान् श्रामित्यार वे क्रोक्ये वर गर्ने और उनका तिरसम्बर करके बोदेको हेन्छे विन्ते को । प्रस्ते बहुनेकारी कवित्रमान्ये यो कोच है अन्य : अहेरे औरी क्यूना प्राप्तकृतिका अवना हेन क्षेत्र और वन क्ष्युव्यक्तिको नाम कर दिया अर्थे मन्त्रीपुत हुए देश देवर्ष राज्य राजा समाने पार आवे और जो सारा समावार सुन्त देना । आवानीकी बात सुरकार एक पुरुषि रिन्ते से राजा अग्रह हो गये, बिहर मिर अहे पहलेकारिकी कारणा करना है। सामा । तम उन्हेंने असम्बारको पुर अपने पोर्ने अंजुपानको स्थानक पात. 'बेटा । मेरे अनुस्थित सेअकी साथ क्यार का कारिकाओक



और प्रसाद के करने देने की सुका निवाद की र्जावाच का दिया है।"

अभिनित्ते पुरम-क्लोकर स्केमकृती ! समाउद्देशे क्षेत्र सनले अपने औरत पुरुषे क्यें उतन देख क ?

क्षिकार्थ केले—एकर् । बहुएक इनस्था क्षेत्रके नकी जन्म १६६ कु असन्तरम् नको विकास थ । यह काने पुरवर्गताचेके कृति वारायतेको वेने-विकासनेक धी नाव प्रकार कोचे हरू हेत या। इस्से इस पुरवाई धा और फोफने म्हापुरत पूर्व अने और इस दिन रुख लगाने चीर कारण क्रम मोकार कारो हते, 'सहच्य । सार इन्हरी प्रमुखोने प्रारम्भविकारिक संबद्धोने रहा कानेकारे 🗓 तरः इस समय असम्बातको हमें को बोर भग असीवत हो नक है जाने की हमारी पहल बोर्टिकों हें पुरवर्तालोंको बता कुरमा महाराज समर हो। पुरुष्ताक बहार छे। और बिह चीनवीची पुरस्कार इस प्रकार कहा, 'बाँद आवलीन केरा किय करना काहते हैं को शुंख ही एक करन परिचित्ते —पैरे पूर आत्यक्रमानो अन्ते पुत्र नगरते बाहर निवास देखिने।' सम्बद्धे आस्तुन्तर परिवर्णने पर्यापन केवा है किया। हर प्रकार बहुतक कराने पुरश्राविक्तीके हिल्के विन्ते अपने पुरक्ते Section that at a

कारने अञ्चलके पक-'चेरा । तुन्तारे वितानों से क्काने क्रियाक कुछा है, मेरे और सब कुर बात हो राजे हैं और पहला केवर की जिला को है; इस्तरिकों की विश्वने कहा केंद हो का है। हम फिली सकल केंद्रा देहकर फाओ, जिससे ने पहलो पूर कार्क सर्ग प्रदा का सद्धा सामान्य प्रशा हरकर अंक्रमानके बढ़ा क्ष्मा क्षमा और बढ़ करी स्थानक अरुप, अर्थ पूर्ण कोषी गयी थी तथा उसी पार्वसे समुद्रमें क्षेत्र किया। वहाँ उसने उस अब और व्याज्य करिसको केवा । क्षेत्रोरिय परवर्षि क्षांत्रको स्त्रोन कर अस्त्रे प्रकार किया और उपनी सेवारें कई अलेका प्रयोजन निवेदार किया । अञ्चलकृती को सुरक्त स्वर्थि करित बहुत प्रसार क्ष और कारी चेरी, 'बाद । मैं तुन्हें का देख बद्धा 🐔 हुकारी को प्रथम हो करेंग रहे हैं अंजुकारने खाले बहाँ बहाँक अक् क्षेत्र और वृत्तरे वर्गा अन्ते नितरोको प्रतित कालेकी-अर्थन और सा महानेकारी मुनियर सामितने बहा, है. करन ! तुमार करणान हो, तुम जो पर गोफी हो का मैं कुषे देशा है। कुपये सुन्ता, वर्ण और प्रस्त विकास है। कुसी प्रमाण बीचन प्रमाण क्षेत्रा और कुदारे विदा भी पुरसार-निने कर्मने । तुम्को प्रकारको ही सनरहत सर्व प्राप्त करेंने 🗠



तुन्तार चीर भारित सन्तर्भाना उत्तर सन्तर्भ हैं को सहस्रेणवीको सन्तर कार्यः सर्गात्रेणको न्यून्तर्गको स्कांत्र और च्या व्यक्ति जब से तुन सन्तर्भाने के चालो ।"

करिकारिके हुए प्रधान क्यांग्य अंकृत्यम् चेत्रा तेका एक सगरकी बातासाओं आन्ध और आने उनके बरनोने प्रकार किया । एक स्थापने अंश्वनकार कि बूंबा क्या यह प्राच्या कि चेत्र व्यवस्थाने अ तथ है अहेरे पूर्वि की सार्वेका प्रोच्य जान दिया। उन्हेंने अंजुल्लाका वक्र आहा किया और अपना असूत का पूर्व कर दिया। इसके कर क्षा हिन्नेस्य एका सगरने क्षणी प्रकार पुरुष् करन हिल्ला । जनाने अपने पीजना राज्यका चार क्रीक्टर कर्ण कर्ण शिक्षरे । माध्या अंकुरान्ते यो सक्ते विशासके स्थान है आरम्बर पुरस्कारक करन किया। इसके विशेष सम्बद्ध धर्मान कु १३४। को सन्त सीववर अंक्टबर् की पराजेकामारी हुए। हिसीकारे वस अपने विद्यालके विराक्तको बात कानुन क्षाँ से अनेस झालने बहा सन्तान हुआ। में उनके उद्धारका उत्तर संक्रिने रागे और म्यूनकेको सरनेके दिनों भी उन्होंने बहुत जना। विकार वरंद बहुट बेहर कानेवर की वे सरका न हो उसे । उसके काम देशवंकारी और वर्ष-सावन करीया करूबा दुव १३६ । उठे राज्यस अधिकित कर दिलीय कमी को गो और वहाँ बताया अवस्ताहे प्राराजने सर्वकारी से करे।

महरूत । एक भगेरथ महरू बनुर्वर, महरूरी और न्यूपर्ता से । उनके दर्शनकारों का स्वेकोचे पर और रचन क्षेत्रक हे को थे। जो का करून हक कि वरित्रजीके कोको कके विकास थान हो गये में और क्यें कार्यकोककी भी प्रति को हो से है है दूरी हुए और असर करन प्राचीको प्रीकार प्रकार करके दिन्हे दिन्हे विकासकार वर्ते गर्ने । वर्ष उन्हेंने करू-पूर और करना है अद्भा करते हुए हेक्का रहेके एक इक्त करिया और उनका बी । एक इकार क्षिम वर्ग सैवनेक सहस्रहै पहले औं अवश्व हर्षन विक और बद्धा, 'राकर् ! पून पुराने कर कक्षां है ? बताओ, में तुन्हें क्या है ? कुन को व्यक्ति, व्यक्ति करियों ।' स्थाननीके इस अवस्ट कारेक राजाने कार्य कहा, 'हे बाराजिति ! भेरे विद्यापत नक्रारम समाने कर कार का बेक क्रिके रेने निकरे ते । अने सम्बद्ध करियमे पात करके बनलोकों नेता दिया ा है सकती: । क्यान्य अस्य अस्ये वालो प्रत्या अभिनेत भी कोची, कराव्य अस्त्री सहनी। मेरी के समारी। पर कुरुक्तुओंके अञ्चलके दिन्हें की में आपनी अर्थना भारता हैं।"

होन्द्रभ्ये वार्षे हैं—रामा वर्गातकरी कर पुरस्त विकास के प्राप्ति करते हर करत वहा, 'रास्त् । वें हुमारा करते कृत कर्मक, करते के क्षेत्र मही; वित् कित करत में कावादों कृतिकर निर्मति, कर करत केर केर करता होता। क्षेत्र रोकोंने क्षेत्र कोई महीई के मुझे करत



कर सके। ही, एक देवांकित जीवकार करवाद इंकर अवदाव हुई करवा दारते हमार्थ है। कावको ! हुन अर करके वर्ष अवदा कर हो। का मैं पृथ्वीक विशेषी से से हैं। कुई अपने कराकार वारव कर केरे। हुन्हरे किरकेश हिए। करनेके मिले के अवदाव कुकरी हमार कृत करेंगे।

मा सुनवर महाराज वर्गासा वैज्ञानकर को और कुछ व्यानिक तीह सरका करते उन्होंने स्वक्रेक्टोको जाल कर करते उन्होंने अपने दिलारोको कार्यने स्वूंक्टाके उद्देशको ग्राह्मीको वारण करके रिल्वे कर आहु कर रिल्या। वर्गारकको वर देवर करवान् इंक्टर हिम्माक्टा अस्ति। वर्गा तादे होकर असी कड़ने रहते, 'सहवाड़ो । अस पूर्व पत्ती-राज्युवी ग्राह्मी अर्थाच करते, में इन्होंने निर्मानर को मारण कर दूंगा।' यह कुकार पहाराज करते करता सरकार होकर पहाराजका जान करते रहते। उस्ती इस्ता करते

है जीवालिका प्रमुखी मानेवर्गको एकं ऐतावर साम्याको नियो सर्जी। उन्हें किसे ऐसावर केसा, मार्जि, प्रमुखे हो पर्ज । सीमानेवर्गके महाम्यास के इस अवार स्वारित हो पर्ज । सीमानेवर्गके महाम्यास के इस अवार निर्मे साथ साम के विका । इस सीमानेवर करते हैं; सार कारतो, 'साम ! में हुन्तरे किसे हो पृत्यीवर करते हैं; सार कारतो, में किस सर्जित कहें कृतिकों स्वतीर कार हुए के। ग्राहानीके साले साझ स्वारक कर करता । एक धारीरकों अवारी स्वार सामा । किर सामानाकोच्या होतार एका सामित्रकों माने सामें निर्मे हुन्ति मानावर्गित हो। इस स्वार किस साम समुख्यो अवनेत विका स्वारकों पृत्यीवर प्रशासि, यह सम्बर्धकों सामा मानावर्ग करनेत विकास हुन्ति प्रशासित हो। इस स्वारत किस सामा मानावर्ग अपनेत विकास हुन्ति प्रशासित हो। इस स्वारत किस

## अव्यम्बुका वरित

वैशासकार्य केले—एकर् । किर कुर्वोक्क् बहरास सुविद्धिर क्षानाः उन्त और अस्तान्त क्षानार्थ अधिकेश को, यो श्राम अवस्थि क्षाम और अवस्थे क्षा करनेकार्थ है। वहाँ हैक्क्स प्राचेत्रर कावर कहाँने बहुत-सो असुन्द्र कर्ष देखी। उस स्थानका विरात्त कर्षु कहार द्वारा का और निवर कर्ष होती ही। वहाँ केक्स्प्रकार साम से सुन्य काल का, विद्यु कोई कावकार करनेकार दिखानी नहीं केस का।

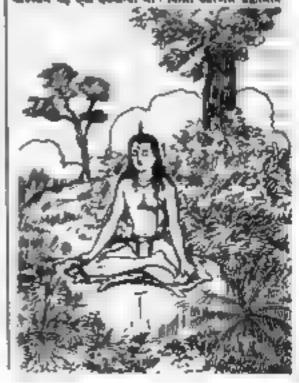
ाण रावेपारवाने कहा—कुम्बार । वहाँ स्था नहींने कार कार्यते पुरूष राज्यास कार्युका हो माता है, हार्यारचे अस्य कार्योग्राहित इसमें साम करें।

या सुनवार नाराम युधियार अपने वाई और सर्वकारिक सहित न्याने कान किया और किय प्रीतार नारवासी अस्य प्र राज्यीया और प्रीया कोशियों नार्वका कोशियों है : इसके कार, 'परात्रीया । यह परावर्गिक केवादी कोशियों है : इसके कार यह विद्यार्थिका राज्यीय अस्य विश्वार है । इसे प्रश्नास प्रकृति । नार्वि विश्वर वास अस्य है । इसे स्थानी और संप्रोतित थे । एक बार अस्य है होनेवर कहाँने अपने स्थाने प्रयाद कार्य कर है थे । वे प्राप्त कार्य और सम्बंधियान क्रिया कार्य कर है थे । वे प्राप्त कार्य और सम्बंधियान क्रिया कर्य कर है थे । वे प्राप्त कार्य और

वृतिहरने पूक-कर्तात् । क्यूक्तांत्र क्यूक्तांत्रके इत्तव केतिसंसर्ग होच से प्राच्य और स्केक क्षेत्रकेती है दृष्टिने क्षित्रह है, दिन सरकारकी कारककरण स्वक्तांत्रने पूर्णके कर्तके कैसे अप विच्या ? तथा अन्तवृत्ति होनेकर कर सामक्रके कर्तके क्रास्त्रका क्ष्य करनेकारी हाले कैसे कर्ता की ?

शोगाओं मेरी-एकर ! मार्चि विचायक को से

कापूर्णकार और उपाणिको समार तेमानी है। उपाप मीर्च अन्तर का और कापाले कारण अपा:कारण कुट है गाम का। एक कर के एक करोबारण कार करने गये। च्याँ उर्वहीं अपाणको देवकार कार्य है उसका बीर्च स्वाधित हो गाम इस्टेबॉले व्याँ एक कार्य गुणी आयो और का नालके साथ कर बीर्चले की भी गयी। इसके अस्तरे गर्च सु गाम। नालको का का केरकामा भी। वित्री कारणो प्रकारों



हते जान की हर कहा का कि 'ह वृत्यक्रीने क्षण लेकर एक मुन्दिकको अपन्न कोगी, तम कारमे कुट व्यवनी ।' विधान अञ्चल है, प्रतीसे महापुनि महमानुष्ट कर मुख्ये पुन हुए। के बड़े क्वेनियु के और एलंड करने के बढ़ करने के। क्लोर शिरुपर एक सीन का, इसीयों के साम्बन्धा कारने प्रसिद्ध हुए । उन्होंने अपने जिलके शिक्ष किसी और प्यूप्तकों नहीं देखा श्र, इस्तीन्त्रे उनका पर सर्वक अपूर्णने दिना सुख था।

करी प्रवर्ग अंग्रोकने मध्यक स्वास्थ्ये कि एक मोपना राज करों ने । इसने देश क्या वा कि अनेने किसी इक्कानको मोर्च क्षेत्र क्षेत्री प्रतिक करके रोडे को निराध भार दिन्स वर : प्रशासिके इन्ह्रामधेने करायो ज्यान दिन्स । प्रास्ते काने राजाने कर्ता होती का हो नहीं और प्रकार स्वाप्त स्थ मका का अपूर्ण करना और करनी स्थानोंने पूर्ण, 'भूते । अर वर्ष केरे हैं, इस्ता कोई स्थान कार्य हैं है राम अपना-सम्बद्ध पर प्रमाद करने रूपे । वर्ग अन्तेनो एक मुन्तिको बद्धा, 'राज्य । सञ्चन आरम्प पुर्वन है, इसका शाय प्राथक्षित परिचने । स्वयन्त्रक पानक एक पुनिकृतार है । में करने ही रहते हैं और को है कहा एवं अवन है। क्रीकारिका में क्ये मोर्च पता है नहीं है। क्ये साथ सान्ने फेर्क्ट कुछ परिविध्ये । ये स्वीर स्वर्धी कर सम्बे के सुरंत के सम्बं क्रेमे सम्बंधी ।" भर कुल्बर एका स्टेमराको इक्कानेट कर कावर अस्ते क्रमारकात प्राथकिक कराया । क्रमोद्र प्रधान क्रेमेनर क्रमोपे अर्थ वर्षस्त्रीचे कृतवार सम्बद्धानो सामेद विकास मक्ता किया । अपने सम्बद्ध करोड अन्तेने अपने सम्बद्धी प्रचल-प्रचल केरकानोको सुरुख और उन्ले कड़ा, 'सुन्दरियो । हम किसी उचार मोहित करके और अन्तेने विकास अवस्थ जाके मुनिवृत्त्वर व्याप्यक्रको मेरे कार्यने हे काओं (' तम प्रत्येते एक पुत्र नेक्यने पहा, ''ठवन् । मैं राजेकर व्यवस्थानको स्थानका प्रवार तो कार्रेगी, परंतु पुत्रो वित-वित्र जेग-प्राथवित्रोधी अवस्थानका है का सम्बर्ध हिल्लोको साथ साथ सारे।'

तम चनावर सावेद सावार का प्रक्राने कानी पुर्दिके अनुसार चैकाके चीवर कुछ कारण केवल कराया । उस अञ्चलको अनेक इस्टानों पान और पुर्नाको स्वयन्त्री बुक्रोंके समाच्या गया, विजयर तका-सम्बद्धा आदिनों और सताई क्रमी हाँ थीं। यह जैकारण यह हो स्थमीन और भगको सुध्यनेकार वा । ३से विश्वयक्ता मुख्ये कारान्त्रे कोड़ी ब्रुटेंगर बैक्काबार गुरुकरोते इस बातकर पता रागकात कि मुनिवर किस रायव आस्तरते बाहर को बाते हैं। किर विकासक पुनिवरी अनुसरिवरिको समय असमी पूरी वेदावाको सभ पार्ते सम्बद्धानार प्रात्मन्त्राचे करा मेळ । सर चेत्रपने मारापने जावर उन उन्हेरिक परिवासके ठाउँन किये और कारी बहा, 'युनियर ! यहाँ क्षा कारण अकारणे हैं ५ ? अस भी कार्यलं है न ? उस्त सारका नेवानक से अपने तरह **100 (1977)** 

क्ष्मानुर्वे वह-अस्य क्षात्रिके कारण सकत् देव:पहलंद स्वयन प्रकारकारण प्रदेश होते हैं, मैं आपको कोई क्यांक कार्यक सम्बद्धा है। में प्रशासनके निर्ण ज्यानको पहर ऐपा एका अपने सन्दि अनुसार पुरू पाल भी पेट कर्मक। देशिये, यह कृत्यानुष्याची क्या दूधा कुलका कारण है: हात्या निराम पहले । सामग्रा मार्गम पहरे है ? और अरू वैद्रा जन्मे प्रसिद्ध है 7

वेज्य केली-कारकावका । येथ अक्षय ३० व्यक्ति



का और व्यक्ति क्षेत्र केनाव्यक्ष हरीया है। मेरा देशा निवक है कि में विक्रवेच्यो प्रस्तान नहीं करने केन और म विज्ञवेद्धा विद्धा हरत पाड है करने बारत है ( वै अवस्था प्रयन्त माँ है, मरिक अस्य हो भेरे क्या है।

क्ष्मपुत्र केले—ने विकास , उत्तीतले, सरकाद, हेन्द्री और विकास आहे पके हुए कम रसे हैं: इनकेंद्रे आप अपनी वरिष्यं अनुसार् अन्य करें।

लोनकर्म कारो है--राजर् ! यह बेरवाची स्वकारि कर सक प्रत्येको ज्यानकर उन्हें अपने पाससे को सर्वले, दुर्वनीय और धनिवर्धक स्थादिक पदार्थ दिने । इसके मिया सुनन्धिम चारतो, विभिन्न और सम्बद्धीहे कहा तथा सहिन्द-सहिन्दा करण भी दिने। उन्हें पायर व्यवस्था को असा हुए और हैरने-सेलनेचे उनकी अपूरि हो पनी । इस अवस्य उनके यनमें विकारका अंकृत कृत्या देश केतम जो अव्य-स्थाने सुन्ती। प्रानी। किर वाई बार करका गाव अलेक्यून कर काकी ओर बारताला करनी अलिक्या बारन करके बाने का है। एक पुन्ती बीरानेगर आकानों काकारका विकारका पुनि आने। अनेने देशा कि बाकन्यु अकेतनों कान-वा सामाने बीरा है। अन्तों विकारी विकी कर्मका किर्माद हो नवी है। बार अस्ताने वेक-देशकार कर-कर हैने विकार क्षेत्रमा है। बारवी ऐसी क्षेत्र इस वेकारर असेने काल, 'केरा। अस्ता सर्ववासको अजिलेक्या क्षित कुले प्रतिवादी बीरा क्षेत्र जी बी, क्ष्म अस्ता हुए अधिकेत विकार क्षेत्र है। क्षात और विलोकी सर्व अस्ता क्ष्मी कार व्यक्ति; क्ष्मे ही विकारका, असेत और क्षेत्र-में विकारण क्षित हो हो। बाराओं सो, अस्ता करीं कोई अस्ता का क्या ?''

क्षण पूर्ण करू--विकासी ! यहाँ अवस्थाने एक महामारी प्रक्रमध्ये आया था। यह सुमर्गेड सम्बद्ध सम्बद्ध-सर्ग छ । अरुके के राज्यके अनुम विकास थे। यह यह ही राज्यक, भूपीई समान देशको और अल्प गोरवर्ग पा । अले रिरायर गढ़ी सुराविका और राज्यों-राज्यों बाजरी जराई भी। वे सुन्त्री जेरिकोचे नेकी हाँ की। आवशको की विकास कारकार है, जारी असार जाती जांगी सुकारी आज़ात क्रिलाविकत को थे। गरोजेर भीचे अल्बोर को मांतरिक्य थे। थे रोज्यीन और बड़े हैं। नेनेहर थे। जिल समय वह बलक ब करके पैरोते कही है अद्भुत प्राप्तार होती की गल मेरे कृतांने नेते का काश्रमी भारत केने हां है, अरी क्या अलंड क्षेत्रं प्रभोते प्रान्तवरसं ह्यं स्थेतियां स्त्रीवर्त पक्षे ह्यं वी : असमा पूरा भी पदा है किमा और सूर्वनेत सा। सरसी बाराबीय सुरकार स्थापे ज्यानकारी एको उठने राज्यो थीं। काकी क्षेत्रकारी-सी कानी कही ही सुरोली थी। को सुन्तेओ भेरे पुरावये इन्त-सी काली थी। यह मुश्यिकार क्या का, पाने कोई बेक्का ही था। उसे वेक्का मेरे कालें अल्के की बाहर ही जीति और जासकि हो गयी है। उसने खुते उसे-उसे करा हिंचे थे। की अध्यक्त जो-जो करू करने हैं, इस्पेने स्टिप्टिने भी भैसा एर नहीं जिला। उनमें न से भेरे मिरको हो है और म अन्दे प्रतार पुर है है। या ध्यान्य वृत्तिकारों पूर्व बाब है सारिय कर पीनेको दिया था। उसे पीने है जुड़े को मारकात अनुष्या हुआ और पृथ्वी पृथ्वी-से विकाली देरे सगी। में जो नहें हैं मिसित और सुगरिक पूज पड़े हुए हैं, आके वक्तें पूर्व हुए थे। इन्हें विश्लेखन यह तन्त्रे वैशिक्षपान कृतिकृत्यर अपने आक्रमको करा करा है : अन्ते कते ही में अवेद-स्त हो गया है और की प्रतीतमें सक-सा होगा है। मैं बहुता है, जान<del>ी से जानी करके</del> पास पहले और इसे वहाँ सावार साह अपने साम रहे।

मिक्का नेते—केट । में से प्रश्न हैं। में ऐसे ही

विभिन्न और दुर्जनेन सकते पून्तो एक हैं। ये बड़े ही पराक्रमी होने हैं और ऐसे कुपर-सुपर पंज बारण करते पर्यक्ष सरकार्ण किए कारनेका विभाग करते पूर्व हैं। किए किर्तित्व कृतको जान स्वेकोने कारेकी हवार हो, जो इसका साम नहीं करना काहिये। ये को कारी होते हैं और स्वतिवर्णको निहा कुण्यान ही अस्त्र होते हैं। कार्यकों से जनको और आंक्ष सरकार रेक्स की नहीं काहिये। केर | दूस किए कारिय से प्र कारकार रेक्स की नहीं काहिये। केर | दूस किए कारिय हो क्षेत्रों (म-निरंगी सुपन्तिक कारान् क्षानों हैं। ये की व् कृतिकोंट किये नहीं कार्य करते हैं।

में काम हैं देश बहुबर विभागक मुनिने असे पुतारे हेक दिया और एको का वेदनाओं हैहने एके। क्या केन दिन-क्क कार्या कोई क्या न रकत हो आकर्त्य और आने । इसके बहुत्व का और विविधे अपूर्ण निकासक गुनै किर पर्या रेरोडे रिम्ने पर्ने के यह बेरमा मान-पूर्वके पीरारोडे रिम्ने बिर आजी। अने देवारे ही प्रान्तपुर को इतित हुए और प्रकारकार अस्ते कर केंद्र अस्ते करा असी बोले, हेली, रिकारीके पार्ट अनेके पार्ट से एवं पूचारे सरकाते कोर्न हें है राज्य । इस मुक्ति विभावता मुनिये एकपान का सम्बन्धानको पर माँ-वेटीने मानना स्वय तिथा और उसे mirror & septembs south set another unit स्तुतान स्वेत्रपाके पात से आवी ( स्तूतान को सकी अन्य:पूर्ण के नने । इननेहीने क्योंने देखा कि सहस्र पृष्टि होने हरते और सब और कर-ही-कर है अब । इस प्रधार करते कार्यक्रम को होका एक लेक्सने हमें अपने क्रम प्राप्त निवस है।

क्षा था विकास ही कर-दूस रेकर सहन्ती नोर्ट के बहुत ब्रेड्नेंसर की उन्हें अनव कुत शिकाके प किया । इसके उन्हें बाह्य ही च्योच हुआ और ऐसी अट्यंब्स हुई कि पह तारा बहुक्य अनुस्तानक ही पना हुआ है। असः में क्ष्युनविकारिको करके नगर और राष्ट्रके रावित भारत कर ज्ञानके किवानो कामपूरीको जोर को। कर्नने काले-क्रमां का ने क्रम एनं और उन्हें पता सताने तथी तो में नारिनोदे प्रचारितारी सेतीये अस्त । चार्यने स्तवा एक्सओके प्राचन बाह्य अस्तर-एक्सर विरुध और बाह्री उन्होंने क्य का विकास विकास का नेपॉर्न जनकी जनक आवकार की से उन्होंने का, 'क्ये वर्ष । इस विसर्ध रोकक हो ?' एक में सची न्यारिकों कोरो, 'का सब आपके पुल्की ही सम्पन्ति है।' इस प्रमान देख-देखने इस्तान पानेसे और देते ही पदा काक सुरुके जनक का क्षेत्र कात ही नवा और वे प्रश्ना कियते अञ्चयको पात पहुँचे। नयोप्र लेक्काने उनका विकिन्द एवन किया। उन्होंने हेवा कि अनंत्येक्जे जैसे वेनक्ज इन, यही हैं, जैसे ही वहाँ उनका पुत



विश्वास है। तथा है जहाँने निवार्त तथा वनकारी अलगे पुरुष क्रमाओं भी देशा। भुगरों अनेनों क्रम और बोच नित्रे देशका तथा क्रमाओं देशका अन्या क्रम और अस गुरू। पिर में निक्षों एवा लेककारी निर्देश क्रमात बी, तहीं क्रम अनेने किया। पुरुषों वहीं क्रमात अनेने असों क्रमा, 'तथ हुन्हों पुर क्रमा है जान से एकका तथा क्रमात क्रमें क्रमार क्रमों है क्रमें आनं आसा।'

प्रकार को दिवानी अञ्चल जान कर किर जाति। मारा कोरे आने। प्राचा भी तक जनार राज्ये कीले



अनुकृत जावारण वारोवारचे थी। वह यो वनमे है पुकर अवार्त सेवा कारो (ली। विता प्रकार सीमान्यको अस्पारी अस्मार्थ, त्येकपुत अस्पार्थने और कारणो नरान्यो होगा कार्या थी असे प्रकार कारणो थी अस्पार नेतपूर्वत अस्पे कारणार्थ प्रतिकेशको सेवा की। वह प्रतिकार्यमितारचे अस्पार्थ अहीं व्याप्तपुत्रका है। इसके कारण इस समीपन्यों वितास सरोकार्यी कोचा थी कहा कह गयी है। इससे काम कारों हम कुरसूका और कृत है कारों, निर दूसरे सीमोंकी

## परशुरामजीकी उत्पत्ति और उनके चरित्रोंका वर्णन

विश्वकान्तं कार्यं हि—सरवेशव ! इस संवेशको कार्य सरके प्रकार पुणिके स्वितिको नांके विश्वके होते हुए सरकः सभी द्वीवेशकान्तेते नांके किए अहोने समुस्तराम प्रकार महामानिक स्वयुक्तरामान्ते निर्मतं हुई पर्वव को महिनोत्ती सम्वितिका कार्यो कार्य विश्वकः इसके स्वयुक्त के समुक्ती विश्वती-विश्वको अपने प्रकारिक वर्षात कार्यकृतेकने सार्ये । वहाँ सोमान्त्री कार्ये कार्ये कार्ये हैं। इस स्थानम्य विश्वकार्यका सारक विश्वक स्वयं वर्षात्वाने कह विश्वक कार्य इसके अन्यार वान्यवान् प्रत्यानी है व्हेंस्सीत वैताणी नहींने उत्तरप्तर वित्तर्यात किया । उस समय न्यापन वृत्तिहर नामे एके, 'खेलकुमी । इस नहींने आक्रमन करके में तमके प्रत्याको अन्यति विवयोसे पुत्रा के चना है। आपनी कृत्यारे पुत्रे साने खेक दिखानी है जो है : वेदिक्ते, वह पुत्रो परा करते हर वान्यवादी प्राथमओंका सम्ब सुनामी है दह है । उस सोधकारीने कहा, 'सकत् । पूर्व के नाहने । यह करने हो पूर्व नीय कृतार कोना हुएते सुनामी है जी है।'

वेजन्यकार्थ केले करके प्रकार, ध्याना कृषिका

महेन्द्रकंतर को और क्याँ एक रात निकास विकार कार् स्वेन्द्रकंत त्रवांस्थाने क्रमार क्या प्रकार विकार। स्वेन्द्रमान कर कृत्, अद्वित, मरिया और कार्यक्यंस्थान स्वित्रमान परिचय दिया। किन क्रमा क्या क्रमार राजानि स्वित्रमान क्या विकार और परस्थानकों के स्वाधिकों के क्षार प्रथम क्या हैं। अपनाम परस्थानकों का स्वाधिकों के कारण कारण हैं। अपनाम के सात भी क्रमार को असे क्षार क्षार हैं। अपनाम के सात भी क्षार में की के क्षार कर है गांव होगा। असके और सम्बद्ध में में है है। इस्तिकों में सीत है स्वाधीकों होता है। असकार एक क्षार कर्म्य क्षार है स्वाधीकों होता है। असकार क्षार क्षार क्षार कर्म्य क्षार के स्वधीकों होता है। असकार क्षार क्षार क्षार क्षार क्षार क्षार क्षार क्षार की क्षार क्षार क्षार क्षार क्षार क्षार्यकों होता है। असकार क्षार क्षार क्षार क्षार क्षार क्षार कार्यकार क्षार क्षार कार्यकार कार्यकार क्षार कार्यकार कार्य

वृधिकेरे पूर्ण—अस्य क्रमहोत्रस्य प्रक्रमधी परकृतस्य वीके रोजन है। उन्होंने चाले जो-के पूर्ण मिले हैं, के एक आरमे जन्म देखें है। आर मिल जन्मर और मिल विकास उन्होंने पुरुषे वृद्धियोगों प्रस्ता किया था, जा सम आर सुते पुरुष्के।

अनुस्तानमें कहा—एकप्। मैं पृत्यंकों अनक हुए प्रस्तित्त्वम केवहुम्य जनवान् प्रस्तानकीका सदित पृत्यका हूँ। यह आव्यान कहा है कुक्त और न्यून्य है। अविने हैक्स्पेसने अन्य हुए जिस कार्नकी अनुस्ता कर विका या, उसके एक हमार पुनाएँ थीं। बीएक्सपेयकीकी कृष्यके और एक स्टेनका विकाम जिस्स का उनते प्रस्तिके सची प्रतिकारित अस्ता प्रमुख का। उसके प्रस्ति प्रतिको कोई की एक नहीं सम्बन्ध का। उस प्रा और क्रांके अन्यको का की हैक्स, यह और प्रति—समीको कुक्तो सम्बन्ध को है।

इसी समय कारणुक्त (कर्मांक) समय जारने साथि गंगमा एक बरमार एमा एम्म करना था। या करने सम्बर एमें समा। यहाँ आके एक क्या अवस हुई थी, के अवस्थित समान पुन्ति थी। उसका जान वा सम्बर्धाः। आके दिने पुनुक्ता अवस्थित पुण्ति क्या सम्बर्धाता नाम थी। एक माधिने व्यक्तित पुण्ति क्या सम्बर्धाता नाम बार दिया। विवादकार्त सम्बर्ध है जानेस कृत्वी अने और अपने पुन्ती कर्मां नेस्ता के क्यांस हूए। उस उन्हेंने पुन्ति क्या, 'सीपान्यकार व्यू । तुर वस मोते, हुन्हारी को हका होती नहीं में तुंगा।' असने अपने सन्तुरक्षियों असम देसकार अपने और अपनी क्यांस दिने पुन्ती क्यांस सी।



वन पूर्विने कहा, 'हुन और हुन्हाटै कार ब्रह्माट कारेकें ब्रह्माट कुनेव्योक्ती कार्यकों अस्ता-अस्ता पूर्विका व्योक्षा करका। का बीव्यका अस्तिवृत्त करे और हुन बुन्हार करका। इसके क्षित्र की शारे संस्कृत पूर्विका हुन्हारे और शुक्ति कार्यका निके को स्वास्त्र में से का तैयार विके हैं, इसे हुन सामकार्यों का संस्था है ऐसा बाह्मार सुनि-अवस्थान के रहे। बिद्ध अन्य ची-बेटीने कर महाना करने और बुनोका सामिक्षान करनेने सरह-बेट कर दिया।

ज्यून दिन वीक्ष्मेण वान्तान् पूर्य किन स्केरे और उन्होंने तिया हुदिनों का जान जान हों। तब उन्होंने अपनी पुत्रबाद सरकारिते कहा, 'केटी ! यक और द्वांने आप-देश करते तेरी असाने हुद्धे कोस्ता दिया है। हुने को यक जाना है और निया पुत्रबार आविद्युन दिया है, उनके प्रवासने देश पुर व्यक्तम हैनेयर भी हातिनोंदे-से आवस्त्रवासम होगा तथा तेरी व्यक्तमा पूर्व हरिया होया भी प्रवासनेदिन्दे अवस्त्रकार, यहा तेन्यती और स्वयुक्तिये सार्वता अनुसारव करनेवाल होता!' तब उसने वास-वार प्रार्थक करते अपने स्वयुक्तियो प्रतास दिवा और प्रार्थकार की कथा। पुत्रवीने 'अवस देश हो में या बहाबर अपनी पुरवाद्यास अवस्त्रवार दिया। स्वतासन्त्र अस्ते स्वरंगे वास्ताह होताह कथा हुत्या। ये बाहे ही केनावी और स्वारंगे हो।

माज्ञपत्नी नवर्षात्रने मेल्यमान आरम्ब किया और निक्यनुसार काव्यान करनेसे सभी बेटेको क्यान कर हैं। वो । दिन अपूरेने राजा अरेनिआहें करा ककर उनकी पूरी रेजकाने: हिन्ने पालक की और सवाने उन्हें अनवी नेटी बिकाइ है। रेजुकाका सावश्य एक प्रकार अपने परिहेरके अनुकूल व्य । उसके साथ अक्रमणे खुक्ता ने कारक बंधने क्तो । उनके क्रमसः कर कुर हुए । इसके कद परशुक्तकीका प्राप्तभीन कुमा, ने प्रोचने से। जाइनॉने कोटे क्षेत्रेकर भी ने मुजीये समझे को-को से । एक दिन का एक पुर कर लेके क्षिणे वर्तने पाने हो प्रामहीतन रेगुन्तर काण कार्नेको नहीं। विका समय वह सहय पार्टाट आवन्यको होट पट्टी की, अपने कैरपोगसे एवा विवरतको करणाँक करी देखा। सर रामित्रामी एकको मानीकार करते केलकर रेजुकाका रिता करायमान हो एक । इस कारीका निकासी हीन, असेव और त्रस होचा सारे आवन्त्रे क्रेक विकार क्रा तिकारी अन्यापि सुनिने तथा पाठ पान की और पने अनीर एवं प्रक्रोको पह हाँ देशका बहुत विद्याला प्रत्येकी उनके क्षेत्र कुर प्रकरणम् और किर सुरेग, यह और विकास भी इत गये। पुरिने क्षमकः का समीचे बढ़ा कि इस काली मोंको तुरंत गर करने । सिंहा के मोहनक होत-सोत-से का गरी, कुछ भी न योग एकंट। एक मुस्ति संत्रेरिक क्षेत्रार उन्हें हाप किया जिलाने प्रस्की विकासकृतित जा हो सभी और वे

पून पूर्व प्रदिक्षिके समान बाह-मृद्धि हो गये। उन समाने पीडे समुद्रक्षके परिचा लेका कानेवारि परसुपानके आये। उनसे समानको अन्योत पुनिने कहा, 'चेटा! अवनी इस पानिन्दी समानके अनी नार हाल और इसके निने पनने किसी प्रकारका नेद न कर !' यह सुनकर परसुपानने परसा लेका अरी अन्य अवनी सारामा परसक कार सारा।'

एकम् | इसने क्यादीस्था क्षेत्र स्थात इसना है गया और क्याँने अला हेकर बाह, 'बेट | तुमने मेरे कानेसे यह काम किया है, जिसे करना बढ़ा है करिन है; इससिने दुखरों से-के कामनाई हैं. ने प्रम मीन सो !' तम अहाँने क्या— 'विद्यार्थ ! नेरी नाल मीनित है काम, उन्हें मेरे हरा करे कामेश्री काम का न से, उनके मानस सामका नात है काम, मेरे कारों कही काम है आई, पुत्रूमें केरा सामग्र करनेकाल कोई य है और मैं राज्यों बायू अंश केरी।' कामनाई कुई का हैं।

र्क कर इसी हक्ष उनके राज कुर कहर नमें हुए थे; सरी इनक अनुव देशका प्रधा कार्यवीचे अर्जुन अरर आ निकास ( किस प्रधान का उनकानों पहुँचा, कुरियारी नेतुकारी नेताका असीत्या-सम्बाद किया। कार्यवीचे अर्जुन कुरको नहरी



नकी होपनेतुके इकारों स्त्रोतर की अनके कादेको हर

लिया और महर्षि प्रकृषि भी छेन मिने। सब परमुख्यमी आक्रमने आने हो सन्ने बन्द्यक्रिकीने उनके हती बाते कर्नी : रुपोने ब्रोककी गानको भी रोडे देखा। ब्राइने के बढ़े ही कुरिक हुए और कारके क्यों पूर हुए स्टब्सर्वुनके पास आने । स्व क्षाहरूपय परश्चामधीने अपना सुन्दर करून हे अन्दे साम क्षे बीलासे बद्ध शर की वालोंने जन्मरे वरिकारक इससे भुशान्त्रीको कार द्वारा एक जो नगर कर कारके प्रकरे विकास । इसके समुकार्युरके पुत्रोंको बढ़ा स्टोब हुआ और वे एक किर परश्रसम्बोकी अनुस्तिकीले अध्यक्ते के क् क्याद्वीरवीया का द्वे । पत्त्र तेकाचे समावित्वे से कार्य अक्रम ने उन्होंने बुद्धारे कुछ भी नहीं किया से भी उन्होंने क्षे कर बाल । इस शब्द में अन्यकार बदा है कर ! है का ।" को विकास के का अन्यों कर करके ने अहश्य-से पाने नवे को परसूरायको समित्रा केवार आहे। बहुर्व अस्परे विकामीयारे इस अवस्य वृहेकपूर्वन्त की देशकार को बढ़ा कुना द्वारा और वे कुट-कुठवर केरे सन्देश कुछ इस्थानक में बरमभायुर्वक तत्त्व-तत्त्वके विकास काले हो, मिन व्यानको पृत्यका अनेको आवेदारो साहाद वारको समाद हो को और अहीरे अकेदो ही कार्तनीयोद इस पुरोको कर कार्य । अर कार्य किन-किन क्रियोंने अस्का पह दिया, इस समाद की उन्होंने स्वयंका कर दिया । इस प्रकार इस्तित कार क्यान्त्र वस्तुरायने पुर्वकों क्रिक्टीन कर दिया और असे एको प्रकारकात क्षेत्रमें यांच सरोवर कर दिये । इसी कार्य कहीं पूर्वकाने सामाद प्रकार होकर कई इस बोर कर्मा होता । उस अहोंने क्रियोचा संक्षार करना मेंच् कर दिया और कार्य कुन्ने प्रकारनोको केत्रर में इस मोदा प्रवास क्या प्रकारक प्रकारनोको केत्रर में इस मोदा प्रवास क्रिया क्यांच होता

वैज्ञानकार्यं कार्यं (---रामम् । किर भीवसके दिर अपने विकास अनुसार महत्त्वा परसुरावनीने समझ संद्राण और महत्त्वोंके श्रीत प्रकृतक मुक्तिविक्ते हर्षय दिये । वर्गरावने अपने महत्त्वोंक स्वीत अनुस पूजा विका और नहीं सुनेवाले का सह्योंका के मूल समझर किया । किर परसुरावनीकी अनुसार का रामको महिन पर्याच्या है सुनार के सुनारे दिन स्वीतनार्थं और सहे ।



इन्होंने अपने पितानेंड एक प्रेसकार्य फिले और उनका शक्ति-इंतकार कर सम्पूर्ण शक्तिमाँका संक्षान करनेकी प्रक्रिक की ।



#### प्रचासक्षेत्रमें पाण्डवोसे बादवोकी भेंट

वैजन्यकर्ता केरे -- एकर् ! व्यास्त्र युविहिर प्रमुक्तरके | सम नीमेंकि वर्शन करते आने कहते रुप्ते । वे रूप प्रकारके प्रश्नवारका पारन करते थे । उन्होंने अक्षरतेके स्वीत शर्था हीकोंने कान किया। किर वे क्रमकः समुहत्तकिनी प्रकारत महीपर पहेंचे। यहाँ कान और सर्वन पर उन्होंने केंद्र इक्कुजोब्धे बन दान विका । इसके पश्चम् ने केट्यारी क्ट्रीयर आये। जाने कानदि करके नियाय हो अहोने हरिया देहने समुद्धीरकों परमाधिक समयक्तीर्थ और नारेतीर्थके दर्जन बिने। बिर से पूर्वारम होतने पहिले। वहाँ राजुर्वात कुछ अंश्राको यह करके ने एक प्रतिक करने अपने। वहाँ उन्होंने बनुवारियोगे केंद्र परसूपनवीची केंद्र देशी: प्राके आस-पास अनेको प्रपत्नी रहते में और कुण्याना पूछा हते पृथ्वीय भारते थे। इसके पहाद उन्होंने वह, नक्तान, अधिनीकुमार, साहित्व, कुबेर, इन्ह, किन्तू, सर्वेक्ट, विका, क्यान, पूर्व, क्यान, साम्यत्या, क्या, विकृत्या, वर्गाके who we would then ally appear humable were चरित्र और वनोहर वन्तितेके दर्जन किये। उन क्रीवॉर्ने प्रयु-रायुक्ते अन्यास कर अनुने काराहि विस्ते और विद्वान प्रायमिको स्थापन स्थापि हम धर वे सिर जुर्गाचा होतने शीद जाने। व्यक्ति से प्रत्योक्ते स्वीत अन्य रुपुत्रवेरवर्ती भीओंचे वर्षे और किर वृथ्वीचरचे प्रसिद्ध प्रचलकोच्ये आहे । पहाँ काम और एनेजारी करके उन्होंने देवक और निराहेको का किया। पिर क्या विशास केवल का और कर है मक्षण करते हुए चारों और अति सरस्वत कर विकार

इसी कमन परमान् लेक्ना और कारणमें हुए कि महाराज मुनिहिर जगारकोर्य का नरना कर से है, से वे अपने परिकारिक साथ कमके पास आर्थ। उन्होंने देखा कि पाकारकोर पृत्वीपर को हुए हैं; उनके प्रतीर कृत्यों सने हुए हैं तथा कहरकारके अखेला डीन्सी की कान् कुछा जोग पति है। यह देखकर के विकास-सिश्तासकार देने तने। महाराक मुनिहिर कुणा-पर-पुत्वा मोग से है, से भी उनका कैयें सिनिहर नहीं पहा था। उन्होंने कानाम, कुछा, प्रदूष, काला, इसमादि, अनिकाद तथा और की सभी वृत्याविकालेका कहा सोहर किया। उनसे सम्मानित होका क्यांनी की उनका सबोवित सरकार किया और किर देखा जीने इसके कार्य और बैंद नारो है, जारे अधार से कार्यन मुनिहारको केरका कैंद्र गरे।

त्रदश्याः शारदेवकी कमानका पण्यान् प्रोकृत्याते कहा—'श्रीकृत्या ! देखो, वर्गत्य हिस्सर मध्ये व्यस्त करके बन्ने सुते हैं और वरवार-वसोंसे जरीर वसकर तरह-करके बढ़ भेग से हैं तक पायामा दूरोंका दृष्णीका १८६० कर रहा है। इस । इसके रिक्षे पृथ्वी भी नहीं फटती। इसके अल्पकृति, पूरण से नहीं क्रमहोंने कि बर्मावरणकी



अपेका पार करता है अच्छा है । वे साक्षात, वर्गके पुत है, पर्न ही कृतका अकार है, सरको की ये काथी नहीं हिंगते और िरन्दर कुन भी करते को है। इनका राज्य और तुक पाने 🛊 जा हो जान, मिन्नु बर्चको छोड़का से काची बेनसे नहीं बैठ क्याते । व्ययो कृतराहुने अपने निर्देश व्यक्तिगोवरे एन्यारे िकाल क्षित्र है। जब, करकेकमें विद्युपनके लायने वे कैसे कारेंगे कि की उनके साथ जीवत व्यवदार किया है। हेश्ते, अब भी अने बढ़ जारे सुरक्षा कि 'मैं पृथ्वीये इस प्रधार व्यक्तिके स्वकार को अस्त हुना है और उने राज्यकुत का देनेने तम पेरी क्या गरि होगी।' यत्त्र इन पाणकोवत वे **एक प्राप्त करेंगे ? प्राप्तक प्रेपको से इन्द्रजॉको हेन्द्रक**ा रंकर करनेके रिक्ते सरकोकी भी अध्यक्तकरत नहीं है। इसके वो इंपरको ही मैनिकांके कर-पूर निकार पहले हैं ऐसी, का पर एक्टिएको दिन्तिकाके लिये गया था से इससे अनेले ही बहुरेरे रूप राजामोंको उनके अनुवारिक सहित परना का दिन और क सकसर अपने नगरों लीट आया. कोई इसका कार की कीवा नहीं का सका। मिन् जाय पह मारे-मुराने कहा पहलार हु-इन परेग पहा है। इस पुनर्तित वीर इक्ट्रेडमो हैको। इसने समुझानार अपने स्थाने इस्कुं होचार आये हुंद् वरीत्राहेडमो सभी प्रकारतीय होंग पहें पर दिने में 3 अपने पह पी तपाली परा दूनता है। होपड़ी तो परा परिताल और सब अगार सुख भोगने परेगा है है। ग्यारपी हानके समुद्धाली पराची केरीले इसका सम्ब हुन्य है। पह पान, मननारक्या हु-इन कैसे सबादी होगी ? कुणेयाने स्थानस्थाने परिवार कार्यक्षकार्थ हानके पानी, को और अनुवारोसीय सम्बन्ध बहुद विवास दिया और यह दिनोंगा मान हा है—यह देसका इस पर्यंतनस्थानविका प्रमुखराको केर्य वर्ष नहीं होता ?

सामान कारे हमें बहुमानकी। यह समय कार्य पक्षानार कारेका नहें है। कहान सुविद्धेर कार्न कुछ का गर्डी के हैं, हो भी अब आने हमारा को पानंग के बड़ी हमें करन करिने । संस्थापे किनके कारे साम्य होने हैं, के सान काम नहीं किया वानों । मेरे क्वीत अल, क्रम्म, उक्क और सामा परवार केले की हैं? हम हो सेवी लोकोकी पह बार सकते हैं, दिए इस्ते पता सन्तर में में मान्यान्तेन धारचेत्रके कारे ये.-चा केरे के सकत है ? उस्प के भनेको प्रकारके अध-क्रम और सम्पन्नीके प्रवाह पार्की बेगा क्या वरे और अलो पर्याचन क्रेयन क्योंक क्रांच भारतीस्त्रीत कारतेवाको कारा कार्य । कारतावची । साथ क्षे अवेदने ही अपने कोपने इस नकीका पता कर सकते हैं. अत: देवराम इन्हरे की प्रशासक एक विन्य का, उसी प्रकार अन्य द्वीयनको अन्ते सम्बन्धिकोत्तील पार अस्ति । में के अपने सर्वत विकास व्यासके प्रधान तीयो काओंसे अरके मेरको क्रिक-पित्र कर हैया और किर को अपनी पैनी सरकारसे रसाक्ष्मणने बच्द कर्मुना । किर सम कौरकोको मरकर उनके अनुवर्गका भी नाम कर हैना। तिल सनक अध्यक्षी अवाय-प्रकार करेता कीरोका संकर करेंचे का बमन, तिनकोकी देरी जैसे जागको स्कार नहीं कर कवारी, क्सी प्रकार उसके होड़े हुए तीको तीरीको कुमानार्थ, श्रेणाचार्य, कर्ण और विकर्ण एक की सकेंगे । अधिकालो पराज्यको भी ये जुल जनतः है। वे रजपूरिये उद्युक्तीके 🕏 समान है। और शामा भी अबने व्यक्तिको स्था और कार्यक्रिके सकित कुल्बसनको कुल्बन सक्तते हैं। के मान्यकानिकार यहे हैं राजार है, इनके समझे से बोर्ड की स्य समाता : औक्तमाने निवसने क्या को ? निवा प्रकार के अंक-भारती सार्वित हो स्टाप-स्टाप साम और स्टाईन सह बारण करते हैं. इस समय कहते इसके बगावरी कोई नहीं

कर सम्बद्धा । हेक्काओंके स्वीत इन समूर्ग लेकरेंगे इनके रिको काँच-सा काम करिन है ? इस समय अनिरुद्ध, गर, राज्युक, मानुक, स्वपु, नीय और समर्थीर सुम्पर निराठ गया राज्युक्त, मानुक, स्वपु, नीय और समर्थीर सुम्पर निराठ गया स्वपंक्ति मुख्य-पुरुष केंद्रा तथा सारका एवं सुरसुराकी सेनाई रिकाका स्वपृथ्वि वृत्तपाकं पुरुषक संदार कर सम्बद्धा गर्भ अहर करें। ऐसा होनेका स्वस्ता वर्गराम मुनिद्धिर सुमा संस्थित सम्बद्ध कर सिको हुए निकाका पासन करें, स्वसाय वृत्त्वीके सारकावा मार अधिकाकुके हुआने स्वे।

वानार् अंध्राम करें— वानांवा ( सुवारों कर निःस्तेष्ठ तीक है, हमें पुण्या कर्मण क्रीकार है; किंदू कुम्याक अपने कुम्माकों न बीती हुई कुम्मिको लेगा किरते क्रमार पांच न कर्मण काम्याक कुमित्रीर किसी क्रमार, अस् या क्षेत्रकी क्रमार्थक आग्न नहीं कर क्षमारे । इसी प्रकार चीप, अर्जुन, न्यूकर, व्यावेश और वीचकी भी काम, गोध का क्षमारे अवना कर्म नहीं क्षेत्र क्षमारे । चीम और अर्जुन ही असिरकी हैं। कुम्मारे देखा करेड़ बीन नहीं है, भी कुम्मारे इनके प्राय करेड़ा के सके । व्यावेश पुत्र कुम्मार और अन्तेष्ठ भी कुम्म करूर नहीं हैं ? इस क्षमार्थ प्रमुख्याने ही वे सम्पूर्ण पुत्रविका कारान करेंड़ा में करें ? किस कर्मण व्यावका प्रमुख्यान कुम्मार कुम्मारे कुम्म पड़ेरी का समय क्षमारोक्त क्षमार निवार भी न क्षेत्रा

वह पुन्ता साराज वृत्तिरंगे का — वावत । आय जो पुष्ठ वह से हैं, आये आधार्यकी सोई क्षा पढ़ी हैं। वाक्तारें, में वाक्षाको दीक-दीक बीकुमा है जानो हैं और उनके वाक्षाको भी कवार्य रिकिसे में बानता है। सामकि । हेसो, जब बीकुमा पराक्रक दिक्कोंकर संबंध समझोगे जभी समय हुए और बीकेक्स कुर्वेक्सपर विकास ग्राम कर समझेगे। अस जान का पराक्र और अपने-अपने परोक्षे प्रधारें, आयलोग पुराने विकासि विसे वहां आये, इसके निर्म में आपसा पुराक्ष है। आय सामकारीने वर्षका पहला करें, में किन आप समझो समुकार एकतिक हुए टेन्ट्रेगा।

वन अन कहा करेंने क्योंको अनाम किया और कारकोको सुननो स्थान्य। इसके प्रमान ने अपने-अपने वर्षको करे को तब पायकोने तीर्ववात्रके रिप्ने प्रस्थान किया। इस क्यान बीक्काको किया कर वर्णस्य सुविधित करने कई, अनुकर और स्वेचस्थाको सर्वत परम्पवित्र प्रकेकी नदीपर पहिचे। इस नदीके तीरपर अपूर्णको पुर एक करने स्था अनुवेश का करके इसको तुर किया था।

# राजकुमारी सुकन्या और महर्षि क्यवन

वैहरूपकरणं कार्त हैं—एकर्! क्लेक्सिने सान कर महराज पुणितित केर्न्स पर्वत और नर्वत नदीको और को । नहीं बगकर्न् सोधको सबसा तीर्थ और देवकानोका परिवय दिया। तम पद्मानेक सर्वत भर्तताक अपने सुपीते और सराहके अनुसार कर हत्यी बीचोंने को और भाई इकार्य प्राह्मणोंको धन दान किन्य।

निर लोगना पुनिने एक तकनकी और तमेर करके स्वाप्त—'राजन् ! यह महाराज प्रायमिका यहारकान है, यह महीसिका मुनिने अधिनीशुरूपरोके स्वीत स्वयं ही कोशकान मिना या। इसी ज्यान्तर यहान् तसकी व्याप्तर पुनि इन्यान यूनिस हुए से और उन्होंने को सामिता कर दिशा का अधा यहाँ अमें प्रशास्त्रकों राजनुमारी सुन्तन्त्वा अन्न हुई थी।

वृधिहरने पूर्ण-नद्भागस्य चावनको स्रोध कर्षे हुन्। ? अहीने इससी काम्य कर्षे किया ? तथा सर्वेशीकुम्बरोको अहीने सोपधानका अधिकारी केसे क्लाब्ट ? चलकर् ! कृत्य सर्वेश का साम्र कृतन्त्र पुत्रे हुन्यको :

त्येपार्थ केले-कार्ष कृत्या काल राज्य हुए बहु ही तेवाली पूर था। यह इस सरोवरोड अपनर स्वतात सरो समा । एकर् । यह भूनिकृत्या स्था सम्पन्न कृतके स्थान निकार प्रकार एक है। स्कानन जीतराओं बैठा प्रदा धीरे-धीरे अधिक समय बीलनेयर अल्बा क्रांत का और क्लाओंने इस गया। उत्पन्न चौटियोंने अद्भा करा प्रयादः आदि मोनीके कथारे विकासी केने राने । ये करते औरते केन्स्टर निहीकर रिष्य जान पहले थे। इस उधार पहल बाल सालेब हैनेके बाद एक दिन रावा क्ष्मांकि इस सरोवाचा ब्रोडा भारतेके रिने आधा । उसकी चार लाक सुन्दरी सनिर्दा और एक पुन्न पुन्नतियोगानी कृत्या थी। कृतका जल सुकृत्य था। या शिवा आयुक्तानेते विश्वतित कृत्या अवनी मोरियोके साथ किस्सी का प्रकारीकी क्रेसिके पत पहेंच गयी। जाने जार मोनीचे विद्योगे सम्बन्धीओ प्रकारी र्श्व गरियोको देखा। इससे उसे बक्ष कुनुसा हुन्छ। दिल मृद्धि प्रतित है जलेने जाने अने करिले हेद दिया। इस प्रमान आहें पूर करेने फार मुन्ति का क्रीव हता और अक्षेत्र प्रथमिकी सेनाके गत-पूत्र केंद्र कर दिने। कर-पूत्र एक अनेमें सेनाको बढ़ा बढ़ा हुआ। यह दवा देखकर राजाने मूक्त, 'यहाँ निरसर तपसाने निसा बनोद्ध पहारत कारन रहते हैं। वे स्वमानमें को हरेगी है। उनका कानकर अकता बिना जाने जिसमे अवकार किया है ? विकारी भी ऐसा हजा हो, यह जिन्ह जिलका किन्ने श्रंत कहा है।"



वार कुल-कारों से तार कारों प्रस्तुत हुई हो जाने बड़ा, 'में पूर्णी-पूर्णी एक प्रतिकेद पान गयी थी। जाने मुझे एक प्रतास पूर्ण कीय दिकारों दिया। यह पूर्णा- कार प्रतास पा। को की कीय किया। यह पुरुष्णा कारोंदि होता ही अधिकेद पान गया। यह को तारोंपुत और प्रयोद्ध प्रवास मुन्द दिकारों किने कारों कारों हाथ घोड़कार हेगाओं है त्यूपा वारोंगी कार्या की और कहा कि 'प्याप्त है मानों है त्यूपा कारी में का पूर्णान्य प्रवास है, जो हम्मा कारोंगी कृपा करें।' यह पूर्णान्य प्रवास है जो हमी कहा, 'इस गर्थीकी कोयांगी कार्या करनेके हिन्दे है पेरी अधि प्रोही हैं। अस मैं हमें प्रवास है हमा कर स्वास है।'

रवेग्ज़र्व वार्ट हैं—रावन्। यह बात सुरवार राजा इंक्विने किन कोई विकार किने खालट कारमधे जानवे कन्य दे हैं। आ कन्यको खंबर कारम मुन्दि जाल हो गये और अन्यो कृष्णो हैंतानुक हो तथा सेनके सहित अपने नगरने और आका। सभी सुकन्या को अपने तथ और निकार्वका कारम करती हुई प्रेम्ब्युक्त अपने तपायी प्रतिकार क्रीन्यको कारने करती हुई प्रेम्ब्युक्त अपने तपायी प्रतिकार क्रीन्यको कारने करती।

एक दिन सुकत्या जान करके अपने आवाधी कही थी। कर समय अस्पर अधिनीकृत्वरोको दृष्टि यही। वह साहात् कृत्यनको सन्तर्के हरकः अधित अर्जुवाहरे थी। हव समिनीकुमार्सेने उसके समीव काकर कका, 'सूक्ति ! कुर किसमी पुनी एवं किसकी पार्च हो और इस करने कम करती हो ?'

क्ष पुन्तर पुक्तारे समझ काने कहा, 'में महत्त्व सर्वतिको काना और मानि कानाको कार्य हैं।'

तय अधिनीकुमार कोरो, 'इय केम्बाओंक कैस हैं और तुम्हर्ग परिको पूजा इसे स्थानार कर समझे हैं। हुए इन्सरी यह बात अपने परिकेशने स्थान कहें।'

उनको बद्द वास कुम्बार सुकता ज्यान बुनिये क्या गरी और उन्हें वा बात कुम थे। पुनिये जो अनवी इक्किनी है थे। इस इसने अधिनोकुमारोंने केसा खरनेके किये कहा। अधिनोकुमारोंने वास, 'सुनि इस प्रतेकाने उनेक करें।' बाहरि कामा कामान् होनेको उत्ताब थे। उन्होंने हुना हो बाहरी कामा किया। उनके साथ आधिनोकुमारोंने की करने मोता (जाका) जिस एक बुनुई बीतनेका थे कीनो का



संदेशको कहा निकारे । वे हाथी विकारणायां, पूर्वा और समान अवदानिकारे थे। वन तीनोंको है देशकार विकार कानुस्ताको वृद्धि होती थी। वन तीनोंकोरे बाह्य, 'सुबारे ! तुव इसमेरे किसी भी एकको वर हो।' ये बीनो ही समान प्रमानके थे। सुकारण एक बार से स्वार करो, वर्षा वितर साने यन और बुद्धिके निकार कर अपने परिवर्ध बालका दिन्दा और वर्षों ही बार । इस अवार कारणे कही और न्यवाद शर हो बीवन काका काका आहे सहा असा हुए और अधिनीकुमारोंसे बोले, 'मैं कृत वा, तुमने ही युद्धे का और बीवन क्षित्र हैं। इसलिये में की तुन्हें कोनवानका अधिकार विकारिया।' व्या कुमकार अधिनीकुमार असा होकार कार्यको कोंद्र को तथा व्यापन और सुकाना उस अध्यानमें केम्बाओंके सामार निवार बाले रहते।

का प्रवर्षिये सुन कि बावन पूर्ति पदा है नवे हैं हो उसे नहीं है जनकर मूर्व और मह अपनी सेनाके सहित उनके अवस्थि अन्य । प्राप्ते देशा कि चौरन और सुधन्या साहार. केव्यान्यति-से बान बहते हैं। इससे राजा और रागीको ऐसा हुई हुआ क्यों औं सार्व कुलीका है शक विश क्या है। किर कारण पुरिने एकारी बद्धा, 'राज्यू ! मैं आपके पह करकेय, अस्य कर सामग्री एकतित मोलिने (' एमाने नहीं प्रकारको उनकी के बात लीकर का सी । के बहुके हैंसे प्रमुख्य कामनाओको क्ष्मी करनेकारक सम्पर्धिन उपस्थित इस्त हो एक क्रवरिये एक सुन्दा याभका देवार कराया। अतिहे कुनुस्त्व व्यक्ति व्यवको प्रवादे व्यक्तुहरूका आहेकन विका । क्रा बहरें के की बातें हो, को सुनिये । जिस समय काल पुरिने अभिनीकुपारीको बाला बाग दिना, या इन्हों क्षे केवले हर कहा, 'येरे विकास हेगी है अधिनीकुमार कार्यन हेर्नेड अधिकारी भी है। सामने बहु, 'हे हेचे क्रमा को 🗗 जवाती, जारकार, क्रमान और बनवार ੈ। भाग, हुम्मने क कृत्ये वेक्टवानोके सामने भ्रमका प्रतेमकानो लोकार को जी है? इस्ते कहा, 'से विकित्सकार्य करते हैं और बनकम रूप बारण कर प्रायुक्तिकों की विकास क्रो है। इन्हें केन्द्रकारक अभिन्या केने के बनता है?"

पार वापन प्राचिने देखा कि वेक्यान बार-बार कारी बालपर जोर है को है जो अपने अवको अनेका भार अविक्रीतुम्पारीको देनेके किने जान परेन्यात किन्या। अर्थे इस समार आकार्यकंक जोग तेले वेक्नार इसने बाव, 'चारे हुए इसारे किने वेचार हुए श्लेम्बरको इस समार अविक्रीयुम्पारीके किने वर्ण प्राप्त बालेन को मैं हुकार अन्यत्व वर्णकर बात बोद हैया है हैस बालेनर भी व्यापन पुरिले पुरावरको हुए अविनीयुम्पारीके किने सोच के लिया। जा को इस उत्तरा अपना पर्वचर बात बोकोनेके दिलो समय हुए। वे कीरे ही प्राप्त करने को कि व्यापने अर्थायुक्तानेके 'व्या' नामक एक अन्यत्व वर्णकर प्राप्तको अर्थाय किन्या, जो अन्यती पीचक पार्यनाचे विक्रानको जाता किन्या, जो अन्यती पीचक पार्यनाचे विक्रानको जाता कारण हुआ इनको नियस व्यानेके तिले अन्यती ओप कीरा। इसके इनको करनी भी कारण हुई और



क्षार नेता कांने की होता? इसरे कर हेता कह स्थ चुनुस्कृत बहुत्या बायस्या कोप प्राप्त हो एक और स्कृति इसको उसी समय क्षा इन्हर्स पुरू कर दिया। स्टबर ! यह क्रिल्डिकार्य हुन्ने क्रियरंपुर नामका सरोगर **गर्व** जनन पुण्या है। तुम अपने अवस्थेत्रवित इस सरोवापे केवतः और जिल्होंका कर्मन करें। जो भगवान शंकाके प्रजीका कर करनेको पुर निर्माह प्रदा कर क्ष्मते हो। यहाँ नेता और क्रमाची सन्तिके समान काम शाला है, इस टीमीने सार करनेकरनेको करिन्द्रनका एउसँ गाँ होता । यह सब धार्येका बार करनेवाल है। इसमें कार करें। इसके आने अधीय वर्षा है। वहाँ अनेको वर्षाचे महर्षिका निवास करते हैं। प्रतयन अनेक प्रकारके देवनकर हैं। यह कहाराओं होत्रं है। बहुर कालीसाथ पानके रोकाने और कायुक्तेनी करकार रहते हैं । यहाँ तीन विरक्तर अग्रेर तीन झाने हैं । ये बाहे ही परिवर है । तुल अर्जुहरूम संस्थे अस्ता: इन संधीये प्रयोग कार करें। अने पार है प्रमुक्त की नहें हैं। क्रिय क्षेत्रकारे के वर्ष समझ्य को बी। पहला, १०वेंक, चीवरेंग, क्रेयदे और इय सब की लुको साथ इसी स्थानवा कोने । इसे बन्द्र बहुन् अनुका राजा मन्त्राक्ते भी का

#### राजा मान्याताका जन्मकृतान्त

सहराज पुनिवित्ते पूर्ण-सहर्तः । क्षण मुक्ताक्षेत्रः पूर्ण मृत्योग्र सम्माता प्रीनो स्थेनतेने वित्तवात से । उत्तवा सम्म वित्त प्रकार हुआ का ?

विगतनी वेटे—-एक कुनाब इस्पाइनेश ने उनक हुआ हा। उनने एक महान अध्योग कार्क और भी बहुत-के का हिस्से और उन सपीने बहुत नहीं-बड़ी एकियाएँ ही। उनमें पित्रवीपर एक्कार भार क्षेत्रकर का मनती राजाने वानेन्छा हतते हुए निरमार कार्य ही सुन्त आधान कर दिया। एक कर महिंगे मुन्नोर कुने असने पुन-आहिके विनो का कराया। एकिये मनव अधानको नार्य मुक्त कार्यके बारण एकार्या हाई खाल हती। उनमें आधानके जीवर कार्यर कार मिंछ। हिंगु सर्थ लोग प्रतिके कार्यनाको जीवर कार्यर कार मिंछ। क्षेत्र सर्थ लोग प्रतिके कार्यनाको कार्या एकी। व्यक्ति कार्यक क्षेत्र सर्थ लोग सरका एक क्षेत्र मा। उने देकारार एकाने कार्यने कराये हेस हिंगा।

कुक देखे तकेकर कृतुकके स्रोत सब पुरेश्या को और कर सुधीने कर कोको अलगे कुली देखा। तब कर सुधीने



आपराने विशावन पूछा कि व्या विशावक काम है। इसका
पूछानाओं सक-सक क्या दिया कि 'नेए' है।' व्या सुनका
पूछुमने कहा, 'राकर ! व्या काम अवका नहीं हुआ। हुन्हरें
एक महान् करकान् और पराक्रमी पूछ करका हो—एसी
सोरवाने मैंने व्या कर्म अधिनानिक करके रक्षा व्या। जब को
हो गया, उसे परच्छा भी नहीं व्या सकता। जवका ही को हुका
हुआ है, व्या कैस्सी ही जेरकाने हुआ है। हुकने व्यासने
स्वाहुतर होकर मनापूर क्या विद्या है। हुकने व्यासने
पूछ जनव करना होना।'

देशा बहुब्बर गुनि अपने-अपने स्वातीको याहे गये । वितर तो वर्ष बीतनेपर राजाकी वाणी कोचा व्यापका एक कुली सम्बन्ध अस्तरण तेवसमें बालका निकास । देशा होनेपर भी व्या



कह आक्षरं-सा दूधा कि इससे राजको मृतु नहीं हूरें। उस करकाको देखनेके दिन्ने कर्ष देखरान इन्द्र कर स्थानमर कार्य : उससे देखराओंने पूछा 'कि कार्यात' जा कारक कथ विकेश ? इससर इक्ते आको पुसारें अपनी कर्यनी जीवृत्यें कुरुको अन्तरे किस्सा है।'

वेक्स ब्या, 'या भारत (मेरी जैनुकी विवेश)।' इसीसे वेक्सकोरे असका बाम मन्यासा रखा। किंत असके ब्यान करते है कनुमेंको स्वीत सम्बूर्ण केंद्र और बिम्न करता असके पास अधिका हो एवं सामाडी आजनाव नामका पनुष, सीगोंको कने हूद बाग और अपेट करवा भी का करे। इसके प्रशान सर्व इससे है असका राज्यसिक्तनमार अधिकेच किया।

एका कावाल सुनिक समार तेवस्त्री का। इस प्रध्य पतित्र कुन्योग प्रदेशमें का उत्तेवका का करनेका कान है। हुन्यों कुन्यों उत्तवे करियों निरम्यों कुन का, सो मैंने उत्तवा कुन्यों कुन्या हुन्य किया। एकम्। इसी होत्रमें कुन्ने प्रध्याविने एक इक्या करिय पूर्ण होनेकारक हुन्नेकृत नामका कुन्याविने एक इक्या करिय प्रधानकों कुन एका गाँधि इन की भी तका अनेकों कुन और उपकार करके निर्मेद प्राप्त को भी। यह हेता न्यूनके एक पुरस्कार्य एका क्यांतिका है। वहीं एका क्यांतिने अनेकों का किये थे। इसी करम् कुन्याव पताने थी अक्षानेय का कारके कोंग्र कोंग्र का। एका कारकों भी पुनिवर पंजर्वकों सावस्थानाने इसी क्षेत्रमें कुन्न किया था। एकम् है वो पुन्न इस केंग्रीने सावस्था करता है, उसे सम्पूर्ण सोक्योका कृत्य होने समारा है और वह समझ स्वरोधे युक्न हो कारा है। हुन्न इसने आस्थान करते।

व्यक्ति स्वेतवासी वह बात सुनवर साहयोक स्वीत वर्गतव वृतिहित्ते कान किया। वह समय महर्तिकां स्वीतवासन कर के थे। बान कर कुमनेवर उन्होंने स्वीतवासने कहा, 'हे समयरशासनी मृत्यिवर! देशिये, इस तपके बावकरें कुछे इस स्वेतवारी देशे हैं। ये ध्वरिरे केंग्न कोंग्नर कई हुए अर्जुनको देश दस है।' सोस्ट्राजीने कहा, 'स्वावको । तुकार कान दर्शिय है। यहर्तिका इसी बावहर कांग्न इसेन किया करते हैं। देखे, वह परावसीय स्वावको नदी है। इसमें कान करनेते पुत्रम सम पानेते सुक हो साम है। यह बारों ओरसे पांच-पांच कोसके निरासस्वाती प्रसारती सहस्त्री केंद्री है। नहीं महात्मा कुनका होत है, को अस्त्रोत समझे विकास है।'

### कुछ अन्य तीर्घोका वर्णन और राजा व्हरिनरकी कथा

हरमाई नहें अहरन हो नहीं है। यह स्थान नियह देखका प्रद है। वर्षों कर विकास कि निवसकेन को द देशे संस्थाती अधिये क्रमा गयी है। इसके आने यह समस्त्रेजी नामका स्वान है, वहाँ सरकारी निज सकट के बाती है और को अभे प्रस्के निर्द्धनेक्ती स्व परित रहियाँ निर्द्ध करी है। या प्रियुक्तिया जात का रीवीवान है, इसी क्या अन्त्रकारोते संग्रामम क्षेत्रेया स्तेतान्द्रानं उन्ने परिकारते नरम मिना था। यह विष्युप्त राज्या परित सेनी दिवारों ने स्व है और यह विशास नामधी पान पवित्र को है। है कृत्यम । यह समये परित्र कारपीर परवार है । वहाँ अनेको पहारी निवास पारते हैं. इस सक्कांके स्तील अन्ते दर्शन करो । यह यहनारोजस्था हार दिवाओं ने यह है । इस बीजी एक बढ़े आक्षानंती कर है। जो का कि का एक पूर पूर होता है को पढ़ी बीनानंतीयी और पानंदीके स्वीत प्रकानस्था कृत करण कार्रवाले क्षेत्रकोष्ट्रकोष्ट्रके सूर्वेत होते हैं। विलेग्विय और अञ्चल्द पर्यक्तनेत जन्मे परिकारो क्रिकी कामनाने हम सरोवरना के बसरों कम करके बीम्ब्यूबेक्बीका कुवन किया करते 🖣 (

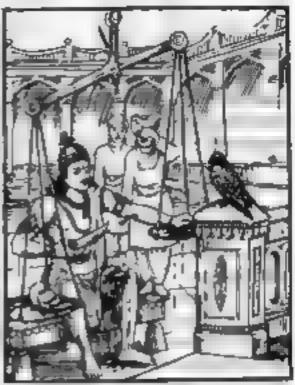
मह सामने उज्यासक शीर्व है। इसके पास 🛢 मह कुछन्छ। भरीकर है। इसमें कुर्वक्रय नामके कम्पर क्रमत होने हैं। पांचानकः । अस तुम भारतक वर्गनको देखोगे । पहले सम्बद्ध भावको यह कारनेवाली इस विजयत नहीके सहीय करो । वे क्यानकी ओरते अनेवासी क्या और क्याना कम्मार्थ परियों है। प्रशीके तरपर प्रतानकार काले एक क्रानित इसमें भी बद गये थे। एकर ! एक बर इन्द्र और नहीं काची परिवा भारतेचे हिन्दे जाते। इसमें बाजका और अतिने प्रमुपका उस कारण किया। इस अकार ने महाराज्ये महाराज व्यक्तिरके यहां गहेते । इस व्यक्ते प्रकार इतकर करवार अपनी श्रामंत्र मिले गुलाबी मोदीने दिन गया। तम कालो कहा, 'तकार! समक्ष कवानम केवल आरको है पर्याप करते हैं, को अन्य का कर्मने प्रचीते विकास बार्य बेलो करना व्यक्ते हैं ? में कुलसे पर बार है और भी कहार नेरा आहर है। जान करिंद्र सीपले कुल्की पह न-कों।' राजाने बहा, 'बहुपश्चित् ! यह पक्षी काले इसक मनपीत हमा जनने राज बनानेके रिक्वे मेरी प्रतानी राजा

कोरकर्ष केले—राजर् ! 👊 विश्वास कीर्य है। पहले 🛊 । प्रतने आपन प्रानेके किये हैं येश नामर रिस्त है। परि में इसे तुम्हरे संगुक्ते न यहने हैं से इसमें दुनों कर्य करों नहीं कान पक्षात ? हेको, पद कारकाको गारे केसा करि का है। करने जानोच्छी एकाचे किने ही येरी करन स्वर्ध है। ऐसी हिल्लीहरे (के स्थापना के बादे बुदर्शकों बात है। को पुरुष <u>ब्याइकोको अन्य करता है, यहे जनग्राता ग्रीका वथ करता है</u> और को पुरस्तकारको उद्यक्ता है—उस सैनोको पुरसर कर राज्या है।' यान मेरा, 'राज्य है तम अभी अधारते ही करत होने हैं और अक्षानों ही अनकी पृद्धि होती है एक अकारों है ने कैपित को है। फिर बच्चो स्वामा कारफ करिन करा कर्ता है, सभी किस की क्यूब बहुत देनोतक क्षेत्रिक क्षा क्षात्रक है। मिलू फोजनको स्थान कर कोई भी अभिन्न प्रत्याच्या पूर्व दिना समानः। अभ्य आर्थः पूर्वे केंग्रामे पहिला का दिया है, इस्तीरने में की नहीं सहीता। और कर में पर पार्टिय से में सी-को भी पर से से करेंने। इस प्रकार इस कान्यास्त्री बचावार आप वर्षे अभिन्योको सामक प्रमुख हो सामेने । यो वर्ग पूर्वर वर्गसर कारक हो का करों जों। कार्य ही है करों से बड़ी है, विश्ले विकास कारी कर्मकर विशोध न हो । यहाँ के बन्चेंने विशोध हो, वर्त क्षेत्रे-वर्क्य निवार का विस्तात विसीते विरोध ने हे. हारी वर्गकर हारकाम करें । अंदः शुक्रम् । आप भी कर्ग और अक्टीक विलोको चीरक और सरक्यार होट्ट रकावर निर्माण निर्दाण पूरण हो, करी अलेंद्र आवरणका निर्दाण करें।"

| अन्य क्याने कार-पश्चितकार | अन्य स्थान अ**न्या**ने कार्ये क्ष्य के हैं, क्ष्म अपन सक्ष्मण, पश्चित्तम नक्ष्म हैं ? इसमें के रीह जों, जल करके पर्मको जन्मी तरा सन्दर्श है। आध के करे कर से है ने कही है जिसका और अनेशकत है। मै बद भी देशता है कि ऐसी कोई बात नहीं है, जो आपको पालन न हो । सिन्धु परमार्थिक परिवासको जाप कैसे अका भारते हैं ? प्रक्रियर ! अस्पाद मह प्राप्त प्रमुख आहारके हैं से 🛊 कर पहल 🖫 से उलको अकुर से इससे पी अधिक हिंग क स्थान है। स्वेतिको, मैं अपनाते विक्रि प्रदेशका प्रमुद्धिकारणे पाण्य केन्द्र है। और भी आवनो निवा वस्तुनी हमा हो, न्यू में दे समाख है। बिद्ध इस करमने आने हुए प्रकृतिको नहीं अपन सम्बद्धाः । विकृतिकाः । विकृतिकां प्रवासी प्रकृतिहे तक हरे केंद्र सके, का मुझे काराने । में बड़ी करीना, किंद्र इस क्यूनरको से नहीं ट्रैंस 1

नय नोल—कृत्यर । यहि आक्या इस समुहायर सेंह है सो इसीके बरावर अरब धार कारकर अरावों रहिये । कर का तीलमें इस अनुसाके धरावर है कर हो की धुने दे दीनिये । अरोने मेरी होते हो जावारी ।

त्मेराज्यों नामे तमो---एकन् ! किन करण वर्धा उद्योगसे अपना पांस नारकार गौराना आरक्ष विका : कुले कर्नाने पता हुआ क्ष्मिर क्षमों प्रोहसे चारी है निकास, में इस्ट्रीने निम अपना जांस कामार रहा । इस जकार वर्ध जल करनेकर की पता संस कामारके कामार व हुआ से वह कर्म है साम्यूने केंद्र करा । यह नेक्स्पर क्षमा कोशा, है कर्मा । में इस है और में अधिनेक हैं; इस अश्रमधी क्षमित्रकों परीवा केंग्रेस रिन्टे ही जानकी व्यवस्था करना कोगा, जनका अस्पनार सुनव निवाद सोगा और अस्प पुण्याकेकोच्या और वर्षा ।' एकाने ऐसा कामार गरी क्षमपुष्टा राज्य करनेकार और महाराज ना परिवाद असर गरी क्षमपुष्टा राज्य करनेकार है। महाराज ना परिवाद असर असर प्राचेकर नाम करनेकार है। आप मेरे साम इसके दुर्धन करें।



# अष्टावकके जन्म और शासार्वका वृत्तान

पुनिका रोजालो वास—गण्डन् १ सहावकाते पुत्र केलोस् इस पुर्वाभारते कालाकालो पासून्य संस्कृते वाले हो । यह निरक्तर पास-सुर्वासे सम्बद्ध प्रशेषका अञ्चल अविका है। साम पुसरी दर्शन गरिनने । इस आधानमें प्रश्नि केलोस्कृतो मानगीके कालो साक्षात् सरकाती केलोके दर्शन हुए हो।

लेगज़नीने कहा—अहरक मुनिका कहेद रायसे प्रसिद्ध एक रित्य था। उसने अपने मुख्येक्टर बड़ी रोज की इससे उसस होका उन्होंने जान कर सब के पढ़ा दिने और अपनी क्षम्या सुरक्ता भी उसे कियाब ही। कुछ करन जीवनेतर सुनका पर्भवती हुई। का नर्भ आंक्रिक सम्बन केवाडी था। एक दिन नहीड़ केवाड़ का भी थे, अर करन का केवा, 'पिनावी। आज राजपर केवाड़ कार्य है, सिद्ध का कीव-कीक नहीं होता।'

विष्योंके बीचमें हैं इस जवार अखेर करनेते विकासी बहुत सोग दूसर और उन्होंने उद जरस्य बालकार्ध श्वाप विद्या कि यू पेटनेरे ही देशी देशी देशी बाते बारता है, इसलिये अवद बारासो देश जरस होता। जब अञ्चलक बेटने बहरे समी में सुकाराओं कही पीड़ा हुई स्टीन उसने एकानारे जाने वन्तीन परियो कर स्वानेत सेनो प्रायंक को। बहुद्देव सन् सेनोत तिनो एका करवाने पता गर्ने, विश्व वर्त्त सह करनेने कुमार कर्याने उन्हें स्वानांत्रों हरा दिया और स्वानांत्री निवानों सन्तारा को क्याने हुनो तिन्त गर्मा। जब स्वानांत्री का स्वानांत्र विविध हुना से उन्होंने सुनातांत्री पास सन्तार उने त्रक क्षात सुन्ता की उन्होंने सुनातांत्री पास सन्तार उने त्रक क्षात सुन्ता की और क्षात कि सु स्वानांत्री इसके विवानों कुछ पत क्षात । इसीहरे स्वान सेनोत क्षात्र अस्तार क्षात सन्तार कुछ पता व सन्ता। से स्वानांत्राची ही स्वाना क्षित्र स्वान्तांत्री में और स्वांत्र पुत्र केनोत्राची सामा वार्त करती थै।

एक दिन जब अहानकार्यों आबु बाद्य वर्षमी थी, वे बहानकार्यों गोर्थ मेंदे थे। उसी समय नहीं देवकेनू उसने और उन्हें निराम्की गोर्थमेरे क्विकार कहा, 'यह गोदी हैं।' बहानी नहीं है।' बेराकेनुकी इस कट्टीसों उनके विकास क्ष्मी कोट राजी और उन्हेंने कर कावन अपनी मातारों पूछा कि 'मेरे निर्धा कहीं गये हैं।' इससे सुकारकों कही कारावृद्ध कुई और अपने जानके पान्सी सम बहा कहा है। यह सम स्वास सुनका अभीने स्थिते समय केवनेत्रते निरामार





मा सराह की कि 'हम होती राज सम्बन्धे बहले करे। मह यह यह विविद्य कुल काल है। मही इन इन्क्रूलोके को की प्राचार्थ कुमेरे।' ऐसी सराब करके वे होनो करा-नाओ राज करकके समुद्धितामा काले रियो कर दिये।

व्यवस्थाने प्रदान धुनिवार का ने बीता को तर्त में इसने प्रत्यानी कहा—अध्यानी गोली प्रणान है। इस के सामान्या प्राप्तन वार्त्त्रेणाते हैं, प्रणाने अध्येतानुसार कृष्णा को निवेदन है, सामार आप कदन है। इस व्यवस्थानी वार्त्यक्रियो क्रानेशी असूर नहीं है, वेदना कृद्ध और विद्यान स्थानन से इसने प्रतेश बाद समाने हैं।

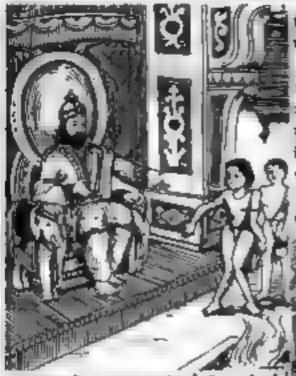
त्व महत्वाले बहा—इस्ताल ! वनुष अधिक वर्षेणी इस हेमेहे, बार पर बनेते, बनते अक्या अधिक कुटुबारे वहा नहीं पान जाता। हाहाओंने से बहे बहा है, से बेडेबर बचा है। अधिनोंने हेता ही नियम बाराम है। में इस एक्स बार करोंने निराम बच्चा है। तुन केरे ओरते बह पूजा महाराजको है है। अध्य पुन हमें निहानोंक कथ इस्तार्ज बरते हेसोने और कह बहु बनेपर वर्षोको परास इसा प्रशित।

हरकर मेरा—'अक्टर, में किया उपकर अवस्थे इत्तरों से क्षेत्रक प्रका करता है कियु वर्ष ककर अवस्थे विद्वार्गिक केन काम करके दिवान व्यक्ति (' देख कहकर हारतार उन्हें राजाके पान से गया। यह बहुत्याने यह, 'राजर्। अप वान्यानंत्रने उत्तर त्यान रकते हैं और कार्या पान है। की चून है, आकंद यह वन्दे पानका योई विक्रम् है। यह प्राह्मणीयो प्राप्तानोंने पराता पार देश हैं और किन अन्यानंत्र अवस्थितोंने उन्हें मानने इसका देश हैं। यह यह प्राप्तानों के मुक्ते सुक्ता में अर्था कहा विक्रयार अपने प्राप्तानं कार्य जाना है। यह वन्द्री यहाँ है, मैं अपने विक्षमा !'

इक्को नक— 'वन्नीया जनाव बहुत-है वेहनेश संप्राण हेल कुछ है। हुन बाली इकियों न सम्प्रणान है जो जीवनेकी आहा कर थीं है। यहने बितने हैं स्वकृत आहे। बिहु दूर्वके आगे जैसे तरे परेके यह जाते हैं, जाते प्रवास में सभी कर्तके समय पूर्ण पहला है गये। इसका अहाआओं बढ़ा, 'की-कैसेंसे प्रवास नहीं पहल, इसीने वह सिंहके सपान विर्णय हैका को क्या है। बिहु अब मुक्ते पराश हैकर वह स्ती अवस्थ पूर्ण है कार्यण, की एसोचें हुए हुआ रच कहीं-का-सबी पहला करता है।'

त्य क्यारे अञ्चलको एरेक करनेने विकासे बहा—'को पुत्रप तील जावाय, काम श्रीत, कोबीस पर्व और तीन भी एउट अरोकारे पहार्वको जानता है वह बहा विहास् है।' यह सुरक्तर अञ्चलक जेरो—'विस्तवे बहारण कोबीस पर्व,

949



स्त्रुक्त कः गांच, कारका काद्य अंक और दिशका केट से साठ और है वह जिल्हार कुलेवला संव्यवस्था कारका आवनी दक्षा करे।'

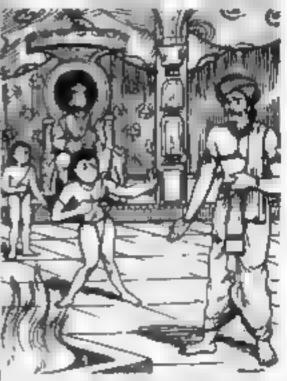
ऐसा वक्का उत्तर हुन्यर कार्य में उन्न किये— 'सोनेके इत्तर कोर के नहीं कुछ ? क्या ऐसेके कार कियाने पति नहीं होती ? हाम कियाने नहीं है ? और मेनने कीन पहाल है ?' अहम्माने पहा, 'सामने सोनेके समय के नहीं कुछ, अवह अपन होनेकर चेहा नहीं करवा, पायर में हाम नहीं है और नहीं नेगारे समूत है।' जा पुरुष्टर राजाने पहा, 'अपन हो नेगारवांके समान प्रचानकार है। में आपको पहुंच नहीं प्रमास । आप वास्त्रक पी नहीं है, में से आपको कृत ही पानता है। पान-विवाद करतेने आपके समान कोई नहीं है। इस्तिकों में आपको मन्याकार हर सोना है और नहीं का

तम आस्त्रान्ते कर्यच्ये और कुम्बर का—आयंक्यो <sup>1</sup> अतिकारी माननेवाके क्यी 1 सूचने इसनेकारोच्ये सराने कुमेनेका निका कर रक्ता है। जिलू मेरे सामने तुम मोरू नहीं कुमोनेश कीर अस्थादारित आधिक निकार कर्यका प्रमाह कुम कारा है, जरी प्रकार मेरे सामने सुनारी कारायिक नह

हे जाननी । अस तूम मेरे प्रकोचन तक के और मैं तुमारी मालोबन तकर हेमा है।

इक्ट्र / यह वर्ष सकते अञ्चलको क्रोबंके स्वयं ग्रह्मकर इस अवट अस्त्रका को नदीने यहा—"आक्रमका । एक ही अधि अनेक अक्रमते अक्रमीत्व केका है, एक दुर्ग सबै कार्यको अवस्थित का पह है, शहरोंकी तक करनेकाल केवाल इन्ह्र एक है और हैं कहा जिससेका ईक्ट काराम की अब्द की है।"

अक्षणाः—''हम् और ऑह--ये हे देनस हैं, पास्त्र और स्था—ये देवर्ण भी हे हैं, से ही अधिनीमुकार है, राजी



कोले को है होते हैं और विकासने की और कोल्पों स्थान की से हैं करने हैं*?*"

नदी—''बा स्वयूर्व तथा कर्मका तीन जवारते याच करण करण है कर कर्मेक जीवादन भी तीन मेर ही करते है, सम्बर्धन भी जाट, सम्बद्ध और सार्थ—इन डीनी समय बाला अनुहान करते हैं, कर्मानुस्तर जार होनेनाते मोनीके देखें कर्म, कृतु और नरक—मे स्वेच भी तीन ही है तथा वेक्ने कर्मका मोतियों भी तीन जवारकी हैं।'' अक्षण्या—"इक्षणोंके तेनो सातम चार है, वर्ण ची बार ही व्योद्धार अध्या-अध्या निर्माद वस्ते हैं, मुख्य दिलाई भी बार ही है, संभारके सावार, स्वार, श्रवार और सर्व-माता—ने बार ही वर्ण है तथा परा, प्रकारों, स्वार्ण और बैसरी चेत्रों सानों भी बार ही प्रधारकों बाई पाने हैं।"

क्-्री—''कासी शांत्रणों (जाईका, क्रीक्रणांति, शाह्मणोंच, राज्य और शाक्तश्रक) चीव है, चीव क्रम् की पीच पहोशाल है, यह भी (जाजित, इसे, क्रीक्रिका, पाह्मणित और सोन) घीव है जवारको है, इतिबंधी चीव है, क्रिमें यह शिक्ताकारी जानाध्यों की चीव है क्रम्म संस्तालों परिवा गृह भी भीव है जांस्ता है।''

नहरूकः—''निहाने हैं इस प्रकार कहते हैं कि नामिका आधार करहे उत्तय हरिएकाने गाँधे का है देने कार्यन, कारकारते बहुई थी का है कहते हैं, कारबीय इस्तेनिका थी का है है, कृतिकार्य का है तक सरका केर्ड़ने स्वयंक्ट यह भी का है को गाँधे हैं।''

वर्षा—"राज्य यह साथ है, क्या वसू भी साथ ही है. बहाओं पूर्व करनेवाले क्या भी साथ ही है, अभी साथ है. क्या वेतेके सवाद भी ताथ हैं और बीव्यके तार भी साथ है. प्रसिद्ध हैं।"

त्रहाका—"तैकारे वक्तांका क्षेत्र कालेकारे कल (संग्रा) के पुण तर्वड होते हैं, विकास कक्त कालेकारे प्रश्मके करण भी अन्य ही है, केवानारोंने कह अनक देवसओंको भी अन्य ही सुन है और तम काले कालानके कोल भी उन्छ ही नहें हैं।"

वन्ती—"शित्यहारों सारिया क्रोड़केंद्र कम में बड़े नने हैं, युद्धिने अकृतिकेंद्र नियान को में हैं सिरने नने हैं, कुछी इन्बंद अकृत को में ही हैं और विनये अनेकों सकारकों संकर्ण सरका होती है, ऐसे एकसे लेकर अंख को में ही हैं।"

श्रुवाकः—''संस्तरने दिवादी कर है, स्थानको संस्था भी भीको एस बार मिननेसे हैं होती है, जर्मको की भी गर्भवारण दस बात है करती है, सरका स्वदेश करनेकारे भी तस है तक प्रकारकोश भी कर है है।''

क्यूं—"पत्तुजोंके स्रोतेने काद क्रिक्रोंक्सी इन्हर्व व्याद होती है, यहके साम व्याद होते हैं, अभिनोंके

क्रियान भी जान्य है तथा देवताओंने का भी जान्य है जहे को है।'

अनुस्थाः—'ग्रुप कार्नि स्थूनि साद्य होते हैं, जनती हन्कों। करनोने को साद्य है अहर होते हैं, अनुसा का बाद्य दिनका साह है और और कुलोने आदित को बाद्य है को है।''

करो—प्रिक्तिने अनेदर्शियो काम प्रकृष्टि और पृथ्वी को केस् क्रीनेवाली स्थानकी कर्त है। "

इस अक्षर करोबे साथ सर्वेक हैं स्वाप्टर पूर्व हैं करेनर सहस्वार्थ हैंव असे इसेक्सरे पूर्व कर्य हूर् वहरे सरे—'साँग, क्यू और हुएं—ने पीनों देशता हैत इसेक क्यूंग स्वाप्ट हैं और मेट्टि को क्रिया असी स्वाप्टिकारे अधिकाद को क्ये हैं।' † इसका सुनते हैं व्यक्तित पूर्व मेंका है क्या और क्यू को विकारने पर क्या । क्यूंग स्वाप्ट स्वाप्ट क्यूंग्ली करते हुए अहानकार करा स्वाप्ट स्वाप्ट क्यूंग करते हुए।

ाक्षणको क्रा—'शाम् । यह वन्द्री प्रतासको अनेत्री विकृत् प्राह्मणोको करावा कर नागरे कृत्या कृत्य है। अर पुराची भी हुत्ता,आहे चीर हेन्से वाहिये।'

क्टोरे कह— 'कहाम | मैं क्लाबीह वकावा हो है। मैरे जिलके वहाँ के आवनी है कहा कहा करेंगे हुने हेनेकात का है का है। जाकि दिनों की कार्य हुमांके कहारे हुने हुए के स्वापनीको करणानेक केन दिन है, में कार आवी स्टेट आकेरे। अहाकावारों में पूजनेत हैं, हमारे हुन्छों कार्य हुन्छर मैं की आके दिना पर्तमांको सीम किरोका क्रांचान क्रांचा करेंगा।'

व्यक्ते वर्णने कर्णने ग्रेड है। कर्ण रेजका महाका कर्ण तमे—एकर् ! मैं कई बार क्ष्म कृष्ण, मिर भी हुन स्वाक्ते इस्तेष्टी तक कुक्क भी सुन नहीं में है। इस्ते कार्ष्ट कुछ है स्परिकेट नहीं के क्षेत्रक करने तुन्हारी कृष्टि जह है नहीं है अनवा हुन इस कार्यक्रकी नहींने जा को है।

करको बहा—हैन ! मैं जानको हिमा मानी सुन रहा है, अबन स्वकृत् हैमा पूजा है। कारने सामाधीने मानीको परासा कर दिसा है। मैं अवन्ये इन्द्रानुसार जानी-जानी

<sup>°</sup> स्पेटचे तिषस्य प्रस्त क्वंदस्टोकने को दे।

<sup>🕆</sup> अवंद्यक्रींन सक्त केली इच्छेन्छर्जनरिक्कर्जन स्थान

prite transf bereit bereit f

वर्दरे का—एवर् । जनका कु हेनेरे को हुदने कुछ थे का भी है। वे अक्रका के कुछ दिनेरे को हुए जनमें दिन कहेका सभी हुईद करने ।

रोगरानां वारो हैं—सम्बन्धं इस जवार वार्वांव है है हो की कि समुद्रों इसमें हुए इसी वार्वंव वार्वांको वार्वांक केम पहुँचे। उसमें बहोडों कहा, 'म्यूब्ल होरे ही वार्वोंक किस पुरंगे। उसमें बहोडों कहा, 'म्यूब्ल होरे ही वार्वोंक किस पुरंगे कारण करते हैं। किस वार्वांको में वह कर करा था, नहीं में पुरंगे करते हैंएक हिंदा। पान्त्। सपी-कर्षा पूरंग स्मूचको भी वार्वांका और पुरंगे भी विहार पुर करता है कार्वा है।' इसके कार्यं करते कार्वांकी अञ्चलको पूर्वा की और अञ्चलको अन्ते विकास पूर्वं विहार किस अर्थे कार्यं केसेलुके अञ्चलको कर्यं मितावां की। वह ब्लिक्टर क्योंकी अञ्चलको कर्यं 'सुर्व हर करता नहीं क्येंका करे।' वह, अञ्चलको की है अर्थे हुस्सी करार्थों कि क्योंके और कीर्य है क्यें। क्येंक क्यांने हुस्सी करार्थों कि क्योंके और कीर्य है क्यें। क्येंक कार करता है, वह सब करोरे दुख हो बात है। राजर्] इस की प्रेकी और व्यक्तिक स्थित कार और सावका करनेके रिन्ने इसमें प्रदेश करों।



#### पाण्डवीकी गन्धपादन-वाता

 विकासी है का है। कई जनने मनते कर और स्रोपकी विकास हैता। इसरे का हैना क्रिका बीतन्त्रत अंतरन इस्टेरिक है। काकि वृक्ष सर्वत कर-पूरतीने तने क्यों है। कई निकास करनेते हुए इस कामीने मुक्त है करनेते।

एकप् ! हुन व्यक्तिया, नेक्या, देव और वाल नायके वर्णकों को वर्णकार जाने निकान जाने हैं। वह साथ जवारसे व्यक्ति हुई औष्प्रणीत्वर्ध सुरोतिया है। यह वाल है निर्माट और व्यक्ति कान मुख्योंको दिकायी जाँ नेका। हुन वैर्मपूर्वक क्यांकि कान कर्मकोंको दिकायी जाँ नेका। हुन वैर्मपूर्वक क्यांकि कान कर्मकोंको दिकायी नहीं नेका। हुन वैर्मपूर्वक क्यांकि कान कर्मकार क्यांको। वहाँ परिचार स्थापका पहा हम क्यांका कुनेट रहते हैं। सामन् ! हम वर्णकर सहारती हमार क्यांची और विकार राजा करते क्यांको महा अनेको मन्तर्के प्रक करन किये कहराय परिचारको सेवारे गारिका पात है। ये तथा-अपने प्रक वारण कर तेते हैं। वाई उनका प्रधान है, निर्माण के स्वाहर बायुक्त स्वाहर है। या सम्बाह यह और एक्सोसे सुरक्षित प्रमेक कारण ये पात को हुनेन हैं, इस्तियो कां, पुन बाय कारण प्रभा। इसे वाई कुनेरके हात्वी को की सामको कारण प्रमान है, असी सामका करना प्रदेश। राजप् ! कैसाल प्रमान है, असी सामका करना प्रदेश। राजप् ! कैसाल प्रमान है, असी सामका करना प्रदेश। राजप् ! कैसाल प्रमान को प्रमान कीं । यह पर्याहर होता हो कार हर मेरे सामका करें। प्रमान कीं सुन प्रमान कीं प्रभाव करने प्रमान पुनिक्तियों प्रभाव कों। इस प्रमान प्रमानिक प्रमान करने प्रमित्तरीय प्रभाव कों। इस प्रमान प्रमानिक प्रमान करने कोंगलकोंने पुनिक्तियों जनकार कोंगल कांग्र करने

एक नार्या पृथ्विते अपने वालों वान-वालों ।
वालि स्वेपायों इस देखारों जानमा प्रवेदत करते हैं।
इस्तियों कुमलेगा डीपरीची पीमाल रखे, इसमें प्रवाह प्र हो। यहाँ पन, वालों और करीरते को वाल पाने है, वह प्रामें को सुनी है है। जान वाल विकार को इस्तार डीपरी दैसे महेने। वहीं है, एक काम वाले स्वाहेत ! कामान् वीत्रा, रस्तेहकों, पुरवाविकों, रख, केहें, वीवार-वालाने और सामोश कहा म वह सामनेकाले प्रवाहकोंकों केवार हुए तर्वेद बाओं। यै, नकुमा और बनवाय कोस्पादी-अपने ही अस्पादास्था निवास प्रयोग हुए इस व्यक्तिया वालेने। वेरे बीटका अभेतात हुए सामवानोंको हरिहालों को और बालाक में न जाते, हैपरीची प्राप्तिकों हेसानेका

वीनरोतरे नार-पाल्य | इस पर्याप्तर राक्षणंकी नापार है। भी भी व्याप्त है हुनैय और बीहन है। क्षेत्रन्यको हैपदी की आपके मिन लौटन नहीं व्याप्त है। मैं इसके स्तरीय की उद्धा आपके की है क्षा व्याप्त है। मैं इसके वर्गने का त्या अस्ता है, वह भी कर्म जॉ लौटेंग। इसके निवा सभी और अर्जुनको देशके निर्ण व्याप्त कोन्छों हो से है, इसकिने सम आपके स्त्या है व्यक्ति। वहि इसेन्डों सुप्रअंकि वास्त्य इस वर्गन्यर स्वोधे काम करना सम्बद्ध



न के के इस बेक्स के कारेने। और आध विकास न करें। वर्ष-वर्ष केव्यी बेक्स न कर कोवती, वर्ष-वर्ध में इसे कार्यका कारका के कर्तृत्ता। में पाठीकुमार पहुला और व्यापेश की सुक्रमार है, वर्षा कर्षी कृति क्यापार्ट इसे कारोबर्ट कृति कहेवी, वर्ष इसे की मैं यार असा हैता।

क नुनवर पृथ्विको नक्त—'हुए कहरियो सहारको और नुप्तर, स्वकेनको को है करनेका संस्कृत हैएस रहे हैं, का कई अस्तानकी कर है। किसी पुत्रको हैंकी अस्ता नहीं की जा ककती। कैसा । सुद्धारा करन्यका है और सुद्धारे कर, कई और सुन्याकी कृदिह है।' किस क्रीकृति और में किसा कहा, 'राज्यू ! में सामके साम है कर्तुनी, आर में किसे मिना क करें।'

क्षेत्रको केले—कुन्येन्यतः १ इस गव्यवस्य पर्यापाः कन्ये अध्यक्षे हे व्यव व्य स्वतः है, इस्तीको इन स्वीको करका कानी व्यक्ति। सब्दे इस्त हो इन, सूच दवा नकुरः, स्वतेष और जीकोन सर्वुक्को देख स्वोते।

र्वज्ञासम्बद्धः स्वते हैं—एक्ट् ह्या प्रकार कार्यात करो वे जाने को वे उन्हें शक्त कुमकूक विश्वत देश

विकास दिया। पहुँ हुनी-केवोची पहारका की एक कैवले | उत्पार अन्ये वहाँ हैं। पहुँ करिन, पुरुष, पृत्रु और अंधिर बिराह, रोक्स और पुरिष्ट कारिके होन को थे। क्य पुरित्र देवके राजको पा साथ कि उसके देवने परकारोग नामे हैं से काने महे देन्से उन्हा सकार किया। काले पुलित क्षेत्रर ये को आधनाते जाने को के कृतरे कि स्थापन होनेसर अवृति कालि पहालेगी और प्रकार किया । क्योंने प्रकार साहि संस्थानोत्तो, संबोधनोत्तो त्या बैपर्टके सारे सम्बन्धे पुरिन्युकाके नहीं केंद्र विक और जिस वैकार की अपने को ।

रित् वृष्टित हर प्रयार यहने हाने—स्वेम ! मैं अर्थ्यको देशनेकी इच्छारे ही पाँच वर्गरी हुए समयो साम दिले सुरण तीर्व, कर और सरोक्टोंने कियर का 🖢 क्षेत्र अनीकर प्राथमक और पूर्वीर अन्यानको य हेन प्रकृति पूर्व कह राम हे का है। अर्थुओं मुलेब्धे तथ कर को ? और होते-से-होटा आएसे भी जाना निरम्बार फाना हो भी पह को अन्य पुर केन था। प्रोती-पाछ ब्यानो प्रातेकारे पुर्वाको बढ कुल-पूर्णन केल वर और उन्हें अधन कर केल था । की कोई क्रम-सम्बद्ध अस्ति ताल का कर्मा से बंद कर्ष हुए ही क्यों न हो, उसके हुम्बर्ग कर नहीं सम्बद्ध का। अपनी करनमें उठने हुए कहुनर भी जानक यह उद्धर मान कार का । इस सम्बद्ध की बढ़ सक्रय ही का । बढ़ कहानेकी gentelteier, ser prereit mital einebarer alle प्राणीको कृती प्रत्येकाल सा। देखो, अपेटे बाह्यकोड मारको पुत्रो विक्रोपोने विकास दिना स्था निर्मा तो। क्रमा प्रमाण महस्तरी होकाँच, बीवन क्रमोह और कुमरे कार तेना है। अस्ति देखके लिये प्रकार गमनाबर क्लेन्स का से हैं। इस देवने बोर्ड बालपैस बैतकर भूति कर अवस्था और २ कर, सोची कर असल्योग पुरूर ही महान्दी माल कर समाते हैं। को लोग अर्थनाने होते । है उन्हेंको का क्यारे, क्यार, बोर, हिंद, ब्याद और इपीर करते हैं, इंप्रोलोंके से वे करने के वर्ष असे। अक हरें संबक्षीय और अल्बाहरी होकर इस कांजबर कार करिये।

तोगक गृरे येते—हे श्रीन्त । यह ब्रीक्स और स्थित जानाती आवारक जो यह सी है। यह महिन्दानको हो रिकारी है। वेजनिया प्राप्ते साम्बद्ध रोका करते है। आवाहकारी कारिकारण और नार्वाच्या के हाके

कोरे भूतिना प्रत्य तरहे जन्मान किया करते हैं। न्युक्ताने पानवान् इंग्याने इसे नहंगा यह अपनी नाउनेने काम किया था। पूर पत निवाद मानो हा पराची व्यक्तिके यस साम प्रथम करे।

कार्यन को प्रकृती कर का पुरस्त प्रकारि empresis on their part flore, all fitt all CONTRACTOR AND ADDRESS.

अंगानी का-कार्ग के यह केवल कांग्रेड विश्वाली अवार संदेश-संदेश बाद्य-सा विश्वाली है दह है. का राज्यपुरस्य प्रतिन्ते है। कृतिकाले केवाल प्रतास हिन कारेके रिन्ने इसी सकारत सरकार निर्माने कर दैसका पर किया था। का किये का इसर कांग्रस करोर प्रशास करके प्रमुखन केना पहल । अपने क्योगार और मानुनाके महारा यह देवलाओंके रिप्ते अकेट हो गया का और उन्हें सक्ष ही हैं। मानद पुरा था। इससे इससी यह कारपूर हुई और ये पर-**\$-का कार्य्य, निव्युक्त विका करो हरे। बालाहो** प्रकार क्षेत्रार कर्नन दिये। इस समी केवल और स्वरिनॉर्ने कारों स्थाप नहें और अंगर तथा यह कुछ हैता। हाता क्यान्ते बहु, 'केराव । हुने नावसूको पन है, यह मैं कारता है और का बात भी मुक्तने केवी नहीं है कि का अपने



त्वको उपायको द्वारण स्थान कीरमा प्रायम है। को हुन विक्रिय को। या तरस्कार सर्व ही मिन्नु हो प्या हो, को भी मैं शील हो को चार सामृत्य (' रेम्ब्यको देश प्यापन कहीं-क्य ही प्रमानेने काने आप से नियो और या चोट राज्ये हुए सर्वको स्थान कृतीया निरं गया। इस अवस्थ प्रमानको हार को हुए का दिवानो हिन्नोक हैर ही या सामने दिवानों है बार है।

्याने दिया अधिवयुक्तकात्य एक और वर्ष की व्यक्ति है। सारकृतने अधिवेश कीनात्रका कावा कार्य कार्य के। अब समय पृत्य क्षेत्रेत कावन सभी भागी व्यक्त का नामे के। अवसे वारते जातात्व कृती कार्य कीतर सी केशन कृत नामें और सीनात्रकारों करानी कार्य कार्य

क्षां--'क्ष्म्यर् । अवस्थी कृष्णे में स्कृत सम्बद्धा जिस र्के: संकृत्या केला स्कृत कर कर है, इस्मीतने में दक्षा नहीं इस्कृति । मेरे इस कारको जान हो कृत कर क्ष्मदे हैं। में अस्त्रात्वा है, अस कुमार कृष्ण क्षीतिने ।'

वृत्यके ने क्या कृता सेंगाकर सहा—पृथ्वे । ह क्या वेदिन है—व्य सेंग्ड है सिंह गावते को स्वा नहें है। मैं क्या हैश प्रका करेगड़ किया है क्या है क्या है। क्या सीवाओ परस्का कर साम किया। किर पृथ्वि करों क्या सीवाओ परस्का कर साम किया। किर पृथ्वि करों। क्या सीवाओ परस्का के क्या स्वांत करों। क्या साहता क्याओ कृत्यर सम्बद्ध करे जाते। क्या सहता क्याओ हुत प्रांति करहे-साथ करने पर्ने।

### बदरिकम्बपकी यात्रा

वैश्वासको वसने हैं—नाकर् । यह सामानेट गणावान प्रतित्त पहलेल विशा से यह अपन्य कार माने राजा। बागुंद बेगरे कुछ और को सुने तमें। उन्होंने सामानाव पुर्वी-सामान और समूर्ण विकासीओ अपनावित का विशा । कुछो पारण अपनाव का व्यक्ति से पता। कोई देखें यह बाजूबर बेग कर हुए। से कुछ सुनी भीर से पत्ती और प्रश्नाकोर कर्ष होने साले। अस्तानमें कुछ-कुछो विकास प्राची सामें और प्राचालके सामान नेतीओ प्रत्नकार होने सामाने सामें और प्राचालके सामान नेतीओ प्रत्नकार होने सामाने सामें और प्राचालके सामान क्यांग क्यांग कर्मा और साम हुआ, प्राचाल कर गाँउ और पूर्णीय उनकी ओरड़ो विकासको प्राचीन सामें।

इस दिवारिये प्राथानारोग आनः एक चौरा ही गये होने कि प्रशास-राजपुरवरी जीवरी इस कर्मकाने अन्यक्तरे क्षाव्यक्त दिवित्य हो गयी। यह पुष्पायकी ची, इस अन्यत्र वैद्या प्रशासन करो आन्यक्त ही नहीं यह, इसकिने यह पृथ्वीनर केत गयी। उस वर्गका पुणिद्वित्ते वसे गोवारे विद्यासन चौरानोन्त्रों स्वाह, 'चैंचा परेंग्र । सार्थी को स्वाहन के जीने-चीने चर्चा अन्येते । वर्षके स्वरूप अन्यों कर करना वहां ही न्यक्ति [ 059 ] एक एक ( खायक—एका ) १० क्षेत्र । अवद सुबुकारी बीच्छे बैस्ते कोन्से ?' एवं पीक्सेओ बाह, 'एकर् । में अर्थ के आपनों, बीव्हेंचों और मुद्रान-सर्वकारों से कड़िया अर्थ मिन्स न माँ । इसके



का अन्यक्रमें कर सम्बद्धा है। सामग्री स्थान हेर्नेकर का हम भारती से प्रतेश ।'

यह पुरस्तर कर्गतको कहा, 'से मीन । हुन को यह मान सो ।' करवी सामां होनेक पीकोली अन्ये पक्का पुरस्का इस्तम विकास और उनके स्तरम शर्मा है पर्यक्रमा वहाँ अभिन्न हे गया। असे हम फेक्टर कराने और सन प्रकृतिक अभिन्ना किया क्या क्याँने भी जाना प्रवेशित सरवार विच्या इसके बहुत्य, पर्वका और प्रदेशको हुन बोहका भीनोन्हे बहु, भी अन्तर प्रत्य करों हो जानको सेवाके रिम्बे क्लीमा हो एक है। क्लीमे, THE STREET \$ 7"

इस मीमरोजने को मोली सम्पन्तर बाह, 'मेरा 1 हैंसै माता प्रेथवे बहुत कर गयी है, दू हमें अपने कर्मण कह है। इस प्रकार की में बार के बाद, दिखते हते बाद न है। "

महोत्त्रको कार-भी स्थान है करिया, भीना, प्रेर्की और पहुल-स्कृत-- सम्बद्धे से पान सम्बद्ध है, विकास औ मेरे बाथ हो और भी बैच्छों इच्छानुसर कर करन महर्गकारे केवले कुलीर है, में उत्त्वनोंके स्थीत अन प्राचीको है। कोरो।' ऐसा ब्याबर की क्योबान से हैकोंको होकर पायकोचे बीको पार्ट राज राज होते एक्षा प्राथमीको है जो । अनुस्ति हेमार्थ नार्थम् होनक हो अने हचेनायों कर्व है अध्यक्तार्थ करने स्त्री (अह सरक में दूसरे जुल्के संस्था है जान पहले से । स्टोन्स्टनकी अपनी अक्रमेको की स्तरे क्यानेरे क्रमोन क्या क्रिका। इस प्रकार में क्रुरक कर और क्रुक्तकों के देखते हुए बर्गानाअवस्थ और को । राहम से बहु के कार्नको में, अमिन केरी से देनों ने उन्हें बहुत हुए है। परे। भागी बाते हुए क्योंने नोन्होंने बने हुए का केटबी बना बहाँकी करेंकी पानों और महा-स्टब्सी बहुउनेने सन्दर्भ प्रमेतको सर्वित्योको देशाः यह देशने अनेको निकासः, बिहर, नवर्ग और बिन्युक विवर के वे इस वर्ड-को महानो करर, बबुर, कारी कर, का, कुर, कुछर, कार, कीरे और संग्रह पूज को थे। काम-काम महिलों को विकासी केरी जी।

हार ज्यार कार कुलोकारो जीववर कर्नुनै अनेको साक्ष्मेंने एक केवान पर्यंत देखा । उनके कर है औनर-नारायको आक्रमके सर्वन किने । यह अक्रम क्रिय प्रक्रीते । यहनुष्टम भी सर्व में ।

रित्य हिरिम्पाका कुर महोताल की कालों मेरे ही हत्यल है. | सुनोतिन का, को एक ही परत-पुरनेसे रखे पारे के । यहाँ क्योंने का चेतर शास्त्रियांचारी मजेवर सहरेके की सूर्वन किये। इसकी प्राप्त कही है प्रीप्तर और स्वयन की, राज इसके को को निकान और कोन्सर के। उसने कहा नीते-नीते कार तरो हुए थे। जा कार्यके तथा भ्यूनकर में तक व्यक्तका और व्यक्तकोग राज्योंने कनोने उस को और किहाँ कर्ष ब्रीक-नवायन निवास्त्रे हैं, ऐसे उठ सालासी क्षेत्र किलो हो। इस अध्याने अवस्था गाँ या, निर्द क्योची सामान्ति कारण इसमें पूर्वची विश्वनेका प्रदेश भी नहीं होता था। इसी प्रस्ता इसमें कुंबी-मार्ग, प्रीय-समा आहे. केवेको काम भी जी होती भी गया हतारे उनेह करते.



है क्षेत्र अवने-अस रिवृत है जात सा। यह स्वर्शियोधी चीद राजी रहती भी तथा अवह-ताम-मक्तरत हारही, स्वारी किरायकान भी। जो रहेप वर्गजद्विकार हे, उनका हो हससे उनेक ही नहीं हे कुमारा था। जिल्ला देव सूर्व और अर्डिके इन्दर के और अंग्राचरणका बार करते क्या है गया था. ने महर्गि और एंक्ट्रेनिक पुतुन् करिका है वहीं को से। पुरुषे रित्य वर्ष असी विवरियो अस अनेको सहस

का प्रकृषिकोचे पास गर्ने : वे क्रम दिल्ह क्रमानका ने । अनुने । और नेप-नेक्सूने संस्थान कालों क्राइन्टेके सर्वत का क्षा पहुच्छा मुनिश्चेत्रको अपने सक्तानो सक्ते हेवा हो है । करेतन और परिक्र सक्तानों उनेस दिया। यह संस्कृत क्षात होकर सार्वार्थंद होते हुए काका सारक करके हैं हो । इसकार और सार्वित प्रथम जान काम का । व्यक्ति एक सहै । अन् महर्मिश्रेका हैया अधिके समान का और वे निरुक्त । अवनोका सहोन कर वे काम क्लिस पार्टीरकीये समार मान्ये । व्यानावर्धे तमें यहे थे। अनुमें विकिन्तिक करेतवार वहाँ यह सेकावमधे विकास है। अने सामादिसे गाँक हो, समापार किया गया परिवा करत, पूजा, पास और पूजा प्राप्तेय 🖟 हेगात, श्राप्ति और निकरेणा कर्मन पूर्व पन पास्त्रे से स्त्रे किये। यहाच्या पुनिश्चित्ते भी सही किरानो महन्तिकेका आज्यांने साथ असने असायाँ सुने शर्म।

विदेशिय और परिवासक पुरिसीहर काली जाएगोंके प्रदेश | प्राथमा प्रतिकार विकास । किर चौपारेन कादि धाएगोंने हैंपाई

# भीमसेनकी इनुमान्जीसे भेट और बातचीत



प्रकारी पानकारोप का स्थानन कः एवं खे। क्रान्की विकोगसे ईसानकोणको स्रोतने वहाँ हुए व्यक्ति एक इंद्रालक करात के आया। यह यह है जिल और प्राप्तत सुर्वक समान था। जसकी पान बढ़ी ही जन्ही और परोपोक्त थी। पृथ्वेपर निस्ते ही जसर वैपरोधी हो।

मैक्स्यापनको सहते हैं—कारोका । अर्जुनके निरातेको | कार आयो और मार्थे आरमा प्रथम होकर पीनलेपने पहले त्राचे--'कार्च । वे का कारत करेतुमको पेट करेगी । पहि नारकार मेरे और कारकार जेन है को मेरे सेलो हैते ही बहुत-हो पुत्र के आहो । मैं इन्हें कान्यकारों अनी आअन्तर से कर कार्य है।

> चेकांको हेल व्यक्त प्रेथके भी स्था का कुलको रेक्ट्र अनेताओं यह यह असे अस्ति । स्वयंति हैयर्पक आराम प्रमाण महामारी भीतरीय अपनी विभागा विश क्षानेकी इन्हरते किए ओरड़े बादू को अपना राज्य या, क्षा और कारे कुछ केनेक विचारते क्या रेजीरी चले। क्योंने पानीद विक्रोची प्रात्नेक विने अनन सुनर्गाती चेवनार बनुत और विकार सर्वित सराम पैने बाल से रिन्ने और ये पुर्विक विद्व अध्यक्ष पराचले हार्गाके समान पतने लो । वर्णने काले समय ने अवसाने स्थानते हुए कालनेके क्रकर चीवन पर्वत क्रमें को है। का क्रमों चीको हेका याच राज्यी गुरस्कोच्छे क्षेत्रकर भागने रागे । धंगाने क्षेत्र कर्न-वर्ग क्षेत्रने सने, क्यो प्रवर्गत होका अने सने और पूर्विक होंद्र काराकर चौकड़ी भागे लगे । भीमरोचकी पर्यक्रो प्रतरी दिलाई गुंज करी। वे बराबर अपने बक्ते पर्य । केई हा जारेश को नवस्त्राच्या चेडील एक कई चेवन इन्या-चीक्र केलेक्ट करीका दिवानी दिया। यहानसी चीव नृतिकों स्थान गर्मन करते हुए हारहकार उसके पीतर क्स भवे ।

क्रा बनने प्राचीर इत्यानकी रहते थे। उन्ने अपने पार्ट पदी। उसे देखते ही का का सैन्यिका अवकात कामको अंक्षतेनके जार अनेका पह सन पदा। उन्हेंने सेवा कि बीधरिक्या प्राप्त होना कारी नाम तीन भी है, क्लेंक ऐसा कारेने प्राप्त है नामि जोने तमा विस्तान का दे अनवा को जान है है। यह क्लेन्स अनवी शहर नामेंक दिवासी में केलेंड क्लेंकेंटेरे होना नामेंको प्राप्त करेंकें रिवास के स्थान वह स्थान



हैन्द्रर अपनी पूंच परकारचे से हो जानी जरिशकी तक और फैल जाती थी। इससे यह महावर्तत इन्स्टबर्न सम्बद्ध स और उसके जिन्हर दह-बहना सुकत करे थे। यह कर्य मामाने हमीची कांगको वी क्रायत कांग्यर हम ओर रीतर रहा बा । जो सुनवार चीनकेनके येएँ कई हो पने और में अनोर बार्लाके क्रिकें केनी इस केनेके वार्वकी तब कोर कुमी हुने। हैको-हैको उन्हें का वन्त्रिकों एक नेवी हिलावर सेटे हुए कारायम इनुकन् दिलावी हिने। उनके अहेर करते थे, बीच और कुंद्र बात थे, बालेबा रंत के अंश-तक्त या, और बेब्रान की तथा चुले हुए पूराने करेद, समोके और हीसे की और को दोस्की में 6 क्लो पारण कामा बार मिरमपुर बन्धवर्थ सका बार बाल बा। वे बड़े ही लेकारी से और पुन्तरे स्वत्यीयुक्तेक कीवने केरे हुए देते कर ध्वते वे कने केसरोंने बीचने अक्रेकना कर प्रता है। सब्दे सहकी करीय प्रवर्कन व्यक्ति स्थान की और लक्ष्मी प्रवास प्रवास पीतरी अधियोंने प्रवास्त्रका हेना के में। उनका करोर बढ़ा स्कूट व्ह और में उनकेंद्र पालेंद्रो केवार केवरकोट समान दिना है।

का पहल करते पुरुष्यकोची असेने सेटे देशका महत्त्वाची भीवतंत्र रिर्मा रुगेर पार पाने गरे और विकारीको प्रकृतके क्यान भीवन विकास करने सर्ग । र्वान्त्रेत्रको इत वर्वको सन्दे वीव-वन्तु और पहिलोको का जुल हुआ। यहानती हुनुबन्धने भी उससे नेवीको कुळ-कुळ फोलकर ज्येक्कपूर्वक योग्लोककी और देशा और किर उन्हें अपने निवाद पायद गुरुवाओं हुए बाहने ताने— 'बेबर । में से मेनी हैं, जाई मानवारे भी पत्र था; हम्में मुझे क्षे क्या हिमा ? इन सम्बाद्धार हो, हुन्हें चीनोंपर कुल करनी कार्रिये । मुख्यारे अवृधि देशे अमेरा अस्य कार्यवारे तथा पर. कार्य और प्राप्तिको प्रतिक करनेवाले पुर कार्गीन वर्ग होती हैं 7 सहस्य होना है, पूर्वने विद्वार्थियों सेवा नहीं की । महाउसी हो, हुए हे बॉल और हर परने फिलीओ आने हे ? पह हो न कोई बाज्यों कर पर समाप्त है और व कोई प्रमुख हो। ताने पूर्व महोत्या काम है? ब्यूनि अर्थ से व्यू पर्या करून है, इसना कोई भी पह नहीं सकता। सत: हुए मे न्यको समान क्षेत्रे काम-मूल-पान भागार विकास करे तेर बड़ी केरी बाइबों केरफर समझे हो महरते और पानी । हुने वहनेने कर्ता करने क्रमीको अव्यक्ते क्यों क्रमते हो ?'

क हुन्तर जीतरोजे बहा—सारराव | जार कीन हैं और इस कार-केको जानने क्वो कारन का पता है ? मैं से कन्त्रेको अवार्ण कुर्वाको जान हुना है। सैने मात कुर्वके नामी जान तिका है और मैं बहारान संस्कृत पूर्व है, सेन को सामुक की बहारे हैं। मेरा मान सीमानेन हैं।

हर्नान्त वंदे—में से बहर हूं, हुन से इस जानी नाम जाने है से मैं दुन्हें इसर होनार नहीं जाने हुन । अपना में आहे हो कि दुन जानी लोट शाओ, नहीं से मारे जाओं ।' ग्रेंग्लेनने नाह, 'में पत्र या नहीं, हुमते हो इस विवासों नहीं इस वह है : हुन कर जानार कृते राजा है से मुझे स्वीतना जारे जाओं ।' गीमरोन जोतं, 'हानारे जानोंने जानेकारों कि में हार्याकों समझ आवका का सेवान नहीं कार्याका हत्य है होता से में दुन्होंको समझ आवका का सेवान नहीं कार्याका हत्य है होता से में दुन्होंको समझ हह प्रमेशकों की मही प्रकार सरित जान की हम्मान्त करावा हत्य स्वात की मही प्रकार सरित कहा, 'का हम्मान्त करेंग का, को समझकों स्वीत को गा। की हम्मान्तीन कहा, 'का हम्मान्त करेंग का, को समझकों स्वीत को गा। की समझकों करें, 'से मानाराका मेरे पाई है। से मुखि, करा और समझकों करें, 'से मानाराका मेरे पाई है। से मुखि, करा और समझकों सन्तर तथा को गुलवान है और एकावानों ने बहुत हैं विकास हैं। ने जीवनवादांकी चार्च खेळालेकी कोच कारोड़ तिने द्वा है इस्तीयों ही खेळा विदाय बाहुकों सींत गर्ने ने। मैं भी बार-परसाम और केचों कांकि सम्बन्ध है। इस्तीयों तुम को से बाओ और पूर्ण क्या है से। चाँद मेरी जाता नहीं कांनों से हैं कुई बाबुदीने केच दूंच । इस्तार स्मुक्त ब्याद, 'है अपना । तुम केच म बाते, बुक्तोंड़ स्टारण सुक्तां कांनी क्यांड की है। इस्तीयों कृष्ण कांके मेरी की स्टारण निवाद कांगे।'

प्य पुरस्का पीमांत अपकार्यक जिल्हा ताले करे इंड्रां इनुसर्वीर के अले हते, किन्ने के के का-के-पर म कर सबे । किर क्योंने को केनों इकांने करना जात. जिल् है इसमें की अस्तानों के। तह के उन्होंने समाने कर नेक पत किया और होनों क्षात्र चोत्रात प्रमाण प्रमांत पाने पहले. 'बागराय । अस्य पुरस्य अस्य होत्ये और की को बह war said it, main that mit war attlant of service परिवर क्या प्रकार है, उस्तिये क्या करने कार्य के उ प्राप्त करावा कर करन करोको अन केन है। केर्र रिकारी, वेकार है, कराने हैं कारण नाहक है ? और का कोई मुद्र रहतेबेच का प हे और के सुलेबेच हो से पै कारको प्रत्याना है और विश्वासको प्राप्त है, अवस्थ मारोबी कृत करें का प्रक्रमाने बढ़ा, "कारकार the ! A worder burth and work account काबुरे कारत कृता कुनुसर् नामक काम है। अधिकी वैके भारती कर जिल्ला है, उसी प्रसार नेती विकास कर्मनारे की । first except with any my system from the मा । तम बहुत दिनोतक में भेरे तहन जानपुरू पर्यक्त से है। वह समय दारकरका प्रभवत बीचन दर्भावसभा कियर को थे। ये मानवानकारी स्थापन किया है थे। अपने विवासी अवस्था पालन करनेके किये में बन्तरीके केंद्र इक्टबर्की अली कर्ता और होते कई स्वानाके स्थीत इक्कारनकों साथे । जिस सम्बद्ध के कारकारने को थे. का प्रकारको जनारे समारिक सुम्मान पृत्रक्ष का करण कर्मकारे पार्टिक राज्यके प्राप्त क्षेत्रोमें सामान सामाना क्षाच्या राज्या कार्याच्या कारात कार्याः वार्याच्ये क्षा से गया। इस उपाय सीमा अवस्था होनेका औ पहलि साम योको-योको नकान् श्रीरामध्ये सम्बद्ध वर्गकरः बानराम सरीवरे मेर र्यं। मिर वर बेनोबी अवस्ती Pers हो गये और ओपनाने प्रतीको पानका इन्त कार सुर्वको सीवारीको सोनके तिले स्वाली कार मेंचे । इस सुरूप एक करोब कारतेंचे संस्थाये भी दक्षिणकी और पहा । का पहला प्रस्तिते नामा कि मौतानी से क्रमाने को है। इसीको कुनकार्ग कावान् होरामका बार्स पर बरनेके हैंने की पहला सी बोबन विकासकार क्या का विका। का नगर और व्यवस्थित परे कर प्रमुक्ती अपने प्रसादको पर धर में प्रकार नगरने परवानिकी बोलोकानोसे निरम और फिर अपूर्तिस्था, प्रस्कर और केन्द्रांको सुधोपक संवासुरीको सारावर वहाँ छन-पानको बोचना करके होट अला ह येरी कर मध्यक कम्मानपर परवान क्षेत्रन तथा है करेड़ों करतेके साम पते और समुद्राप्त पुरः बोस्त्यूर संस्थाने पश्चित्र व्यक्ति स्टापने क्रमक च्यानीको और समूर्ण लेकोको प्रामीकारी राज्यको आहे. कच्-कारकोचे प्रतित पारा और अपने क्रांक्षिण क्रम करोमारे गाल्यानिक पक्र विभीवसकी therit were sofuten form; for up al Africa क्षानिक सामा जानी पार्यको है करने और जाने साम अवने क्रवाची अनेन्यानुक्षेत्रे और आने । यहाँ यह करवा would be see in the see up on who for the प्रमुख्य ! मानवा इस पुरुषकार आरची परित्र केवा के, अवस्था में केरिक को 1' इसका अनोने करा, ऐसा के हे (' बोकोन । बोलीलबीबी क्याने वहाँ यहे हर ही दुहो इंक्स्पुरंगर देशक कोण प्राप्त हो बाते हैं। औरामनीचे स्थापन रक्कर वर्गनक प्रजीवर एक किया, दिन में अपने धानकी को गो । हे अन्य । इस स्थानना पत्त्वर्थ और सम्बद्धी क्रके जीव तुम-तुमका को अल्पिक क्रमे पूर्व 📳 इस वर्गने देवता होन यहाँ है, महाबंधि हिन्दे यह अध्य है, इस्ते की को देख किन्द्र का शाया है, इसने कोई इन्छर। विस्तार कर देन रूपना हुन्हें कर है देता: क्वेरिक पर रिव्य वर्ग केव्याओंके रिप्ते ही है, इसमें पर्पाप जी करे। हर कई करेड़े हिन्दे अने हे, का सरोवर हो 电影电池

पुरस्तिको प्रतिक स्वार्थन क्ष्मिक स्वार्थन क्षमिक स्वार्थन क्ष्मिक स्वार्थन स्वार्य स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्वार्य स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्वार्थन स्वार्य स्वार्थन स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थन स्वार्थन स्वार्य स्वार्थन स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स

पुत्रों संस्थेप भी होता और सम्बंध मानतेने निवास भी हो सामग्राः

पिन्संपने हेल व्यक्तिर परत वेजावे हुनुवाहतीर हैल्कर व्यक्त, 'जैया | दुन का कार्या देश नहीं क्यांचे और न कोई अन्य पुत्रन हो को देश क्यांक्ष है। आ स्वत्यकी का ही हुन्से की, अस वह है ही नहीं। सार्युप्तक कार्य कुन्छ का क्या नेता और हार्यका सुरक्ष हो है। व्यांक को निरम्धर हार्य वार्युप्तक हो है, अस वेश वह एक है ही नहीं। पृत्ये, नहीं, पृत्रा, पर्वत, निर्म्य, केला और नहीं—में प्राची वार्यका अनुसाम वारते हैं। अनेका सुनके अनुसाम हकते हैंद, वार्य और प्राच्याने प्राचीवकार होती प्राची है। इस्तियं हुए का कार्यों देशनेका अध्यक्त कींग की पुत्रने के पुत्रने हुएका अनुसाम कार्यक्तिया प्राच्या है, ज्योंका व्यक्तका वार्यिकायक वार्या निर्माण कार्यों कार्यों कार्य की है।'

वीगांग्ये नक—अस पुत्रे कृतिको संक्या और उस्तेक कृति सरकार, वर्ग, अर्थ और व्यवको स्वयः, कर्मकारक इस्तार तथा अर्थाः और विवाद कृत्युने ।

क्रायको सेते—सेथा । सन्तरे प्रतान कुलकुर है । कारी पामान-कांची पूर्व रेजीर पूर्व है कर विकास की बोर्ड कार्यन केंग की कहा। इस समय क्रमेरी धीना की हती की फेरी और निर्मात पान्ने का नहीं हो कहे। दिन पारकारों करने पीपक का पार्ट है। कुरुपूर्ण र कोई आफि-स्वादि भी और व इन्हिलीने हो स्वीतान साली भी। सह काल बोर्स किसीबी रिन्ह नहीं बस्ता क, विश्वीको हुन्हरे रेक की कार के और ए दिलोंने कान्य के कार है है। arrents peck, annex, its, speck, we, store, first और नामका से इस पुरुषे कर भी नहीं था। उस सकर मेरियोट गांव असन और समूर्य कुरेंद्र कार्य, प्रत्य बीनायनसम्बद्धाः स्टा वर्गः १० असन्, अस्ति, वेस्य और का—सभी पर्न पन-पनारे सक्ताने उत्पन्न को वे उस प्रकार अपने-अपने कार्रेने अपर कहा हो। सक्ते अस्तान का परमान से थे. जनका और तान भी समझ का है था, सम्बंध पुरुष-पुरुष वर्ग होनेवर भी में एक बेहको हैं। मारोकारे से और एक है कांक असराय कर्य थे। से करों अक्टोनेंड करीका निवास भावते आवता करते कार नहि जार करते ने १ इस उत्पार का सामानकारी जाहे। मरानेकार को निकास है, यह सुरुपुत प्रमुख करिने । का समय करी करोंचा वर्ग करों पहोंसे समझ सार है। म्ब से सार, स्व, स्थ—तेन्द्रं पुर्वने तीव कुरुपात पर्यम् हरा। अन् वेतन्त्रका काम्य स्त्री । उत्त समा बहुती

अपने होती है, वर्गक एक पर यह है जाता है और अनकार रकारणें हो जाते हैं। स्वेगोंकी अवसि सामर्ने करी है तथा उने जर्म क्यान और पान्के अनुसर कर्न और सम्बे कर निराये हैं। में अपने करेंग्रे नहीं दियों और करें, पन करें क्यांदे करनेने कार साथे हैं। इस अवस नेतापुर्वने समुख करने करने निवा और क्रियाकर होते हैं। इसके प्रकार क्रमने क्रांड केक हे पर ए को है। निवृत्तकार्य की। वर्त हो पाना है और वेपके पार भारत हो पाने है। उस प्रकार कोई रहेन को पहले के पहले हैं हका कोई हीन, कोई के और कोई केवल एक केवल सकतान करते हैं और कोई in mit d mit bi im mer milk fen-fen b करेंद्रे करेंदे भी के हो कहा है का उस का और कर—इन के कार्ने के जान केवर पतार्थ के कार्ने हैं। का क्या कर केवल कर र करेते केवेद अनेव के से सरे है कर राज्यकर इस है कोने साले से किसे-विकारिको के विकास पहले हैं। सरको पहल क्षेत्रिक पहला कर प्रकार स्थापिको और प्रकार की अपेकों है पानी है पान मारानी केरी समार भी होने सन्तरे हैं। करते सारान मेटीक होश्यर स्टेंग पर पाने सनते हैं पक्त उनकेरे अनेवर्ध और और प्रानिको प्रकारो पहारक्षात करने है। इस प्रकार स्वरस्ताने राजनींड कारण प्रका और होने प्रान्ती है। फिर करियुरानें में को केवल क्षेत्र में बच्चो विकार प्रात है। इस क्येनारी कुन्दे आरेक क्यान् क्यानार्थं हे को है, वैद्या स्थान मा है को है कर करें, का और क्रिकार द्वार है सार है। इस समय हिंद-बीरि, मार्टि, पाछ और होनादि सेप क्या प्रधानको स्थान, प्रशासिक विका और अपा—अ कार्या पृथ्वि क्षेत्रे सामा है। इस अवार पृथ्वित परिवर्तको कारी भी चरिवर्गण होता सहक है और कारी परिवर्गन होतेही रोक्सी विवरित्रें भी भीतारित के मारा है। कर रोक्सी विवादि किए पानी है, एक साथि उपलब्ध पानीबार की श्रुप है कार है। जब कीए है करियून कारेकार है। इसहैंसे क्यें में के पूर्वता देवनेको क्षेत्रात हुना है, का ठीक नहीं है। क्यापा रोग वर्ध करेंद्रे किने आह वर्ष क्रिक करे । इंड अकर दूरने खुक्ते के को की थी, वे तक देंने का है: तम हुए जनसङ्ग्रीय न्य सम्बं है।

वंगतेले का—ने अवनंत पूर्वताओं केने किया गाँधे वितर्वे ज्ञान गाँधे का सकता। गाँधे कारकी मेरे कार कृत है से जुने जाने गाँध जाना करवाने।

भीनकेको इस समार सहनेवर स्तृत्वन्तीने मुस्यक्तर अन्य म्हण्या सिकाय, से अनेने समुह स्त्रीको सन्य सरम वित्या वा । सारने पाईस्से प्राप्त कालेस हैंगरे अहंगे अहंगे कारियों बहुर का का दिया और यह सम्मान नैतृत्वी सहा कारिया का का । सा सम्मान नहीं मा कीरिया हुए प्राप्त करिया सामानित हैं नाम । मुख्येष नीतांत हुए और उससे कालेस का विवास का देवावर कई निर्माद हुए और उससे कालेस का विवास के समा । और पुन्नेका का निर्मा केमा का ए उससी विवास का और क्षेत्रक कान्य-का का व्याप का र उससी विवास का और क्षेत्रक कान्य-का का काम का का नी विवास कार्य का देवावे हैं कीर्यों असे असमा काम मां विवास मोद्या कार्य का विवास और असमा काम कार्य क्षा मोद्या कार्य कार्य हैं कार्य केमा कार्य कार्य हमा कार्य कार्य क्षा मोद्या मान्य विवास हैंक विवास कार्य कार्य हमा कीर हैं का मोद्या मान्य विवास हैंक विवास कार्य कार्य कार्य हमा कीर हैं



पूर्वित सम्बन है और वैकाद पर्वतंत्रे सकार अपरिवाद क्ष्रं हुएको पान पाने हैं। मैं अवकार और देख गाँ सकार। है बीर है मेरे पानों से साम पाने पान अध्यान है कि अवके सर्वाद गाँ हुए की आंध्यानोधी सम्बन्धे कर पुत्र करन पान । यह संस्थानों से पाने पीता और पानों कर स्थान से। साम से आने पानुकारों सामने पान कर सकते थे। पानस्वाद । ऐसी पोर्स पानु पानि है से आनारों आह र है;

काम के जरने परिवरके पहिंच अकेते जाको है सहकेते इसमें नहीं का?

केरवेनके इस प्रकार कार्नेस्ट करियोई शुन्तन्त्री की गुन और राजीर अपनेने कहा-- करता । हुए पैसर कहते हो, औक ही है, यह अपन राजक स्थाननों नेच सामान नहीं कर क्ष्मार वा । किन्दु सारे खेळीको व्यक्ति समान सारानेवाले क राज्यके की में पर कारत से होराजांको का सीवें केले मिलाती, प्रातिके मेरी जानकी अंदेशक पूरा की और वीरशास बीनपुरूपकोने केलके स्त्रीत का राक्षसायनका यह विका और प्रोक्रामीको अन्यन्ते कृतिये के अवने । प्रवर्त क्षेत्रहेरे अन्यत हरू में फेर क्या। अंबर, चुटिएर, । तम हुर वासी। देखों. यह साम्प्रेकाल कर्न गौरानिक प्रकार गास है। यहाँ हुई पह और पहलेंसे पुरस्क प्रमेशक क्रिक निकेत्र । हुए का है करोड़े कुरश्ता का बारे राज्य । जुन्हेंके से विकेश्यानों हेन्स्सारीका पान करना है साहिते । वैदा है हर सहार का पर केरन, अन्ते पर्नवा पाल बाता। अपने वर्गने निवह कारत हुए सेंद्र वर्गना हुए प्रत्याहर करे और क्यों क्यार व्यवस्था पाने । क्योंकि करीनो पाने किय और व्यक्ति होना नेतर किया पुरस्कतिक सरवार होते हुए औ हुत वर्ग और अमेरि प्रकारों नहीं पान संस्तो । विश्ती प्रकार अवने को के सकते हैं और को करने हैं बाता है। आत को और अवलंबर कारण-सारण हार होना पाहिले, सुदिहीर केंग काने नेतिए हे करे हैं। वर्ष अकारो हेना है, वर्षी केंद्र महिन्दीक है, केन्द्रेने पहलेब्द्री अनुसि हाई है और पहलेकें houselell finit &: houselelt auslifem deputife विकास काराचे हुए सहित्र है और स्ट्रालेका सामार कारती और कारती कारती हो मेरिकों है। इस्के व्यक्तिक वेद्याची, वीच व्यवसी और प्रविध क्ष्मकेरियो ज्याच्या निर्माद पानो है। इस सीची प्रतिकोद्या रीक-दीक प्रचेत होनेसे सोवासामध्य निर्मात होता है। इस क्रेनेको सम्बद्ध अनुनि होनेने इन्होंने प्रका वर्गको अनुनी कर्मा है। दिव्यतिकोरे प्रमुख्य पूर्वन वर्ग आध्यक है का पा, जनक और पर-ने के सवस्त को है। इसी ज्यान वर्धन्यका पुरस्त धर्म ज्ञानस्त्रम है और बैशनका व्याप्तर, रस सेने पर्नोदी क्षेत्र काय-व्य क्रोस पुरुष वर्ग है। उन्हें विकार, होन अवका सरकार नहीं है. उन्हें से दिवनेके जरेंगे सुकार उनकी सेवा है सारचे काहिते । कुन्यीनपुर । कुक्रम् निकाली से अधियोध्य प्रकार को प्रकारकार से हैं, जाकर कुर विश्व और इतिहासिक-कृषेक कारन करे । वो शास कुछ, सायु, बुद्धिमान् और

मिश्वनोके ताम परामर्थ करके क्रांतर करता है वह रावान्य है बारण कर स्थाप है, क्योर-नेमा से विरम्पार है होता है। बाब राजा प्रजाने निवाह और कनुमाने जीवन रेजिने प्रमुख होता 🖢 तथी स्थेकको पर्याद्य सुम्मानीका होती 🛊 । अतः रामाको हेहा और पुराने काले राष्ट्र और नियोकी होनाओको रिवरि, पृथ्वि और क्षणका कृतेक्षण सर्वत पन सन्तरे कुछ शाहिने । साथ, दार, रुख और चेद--ने चार कराय, हर, सुद्धि, गुप्त विकार, कामान, निर्मा, अनुष्म अहेर समया—ने पुन है राजामोंने कार्यको तिद्ध करनेकरे हैं। राजको कार, द्वार, बंद, द्वार और क्षेत्रा—इन बंद सकावेदि हुद काम या जारान-अस्तान प्रयोग्याचा काली काल करा हैने कहिने । है जराबेड़ ) उसरे नेतियों और कृतेका कुर पुर विवार है, इसलिये किया पूज विकास कार्यको सार्थह हो, अरीधी क्राइलोके हाथ कारण यहे । की, पूर्व, कारण, शोषी और पंच पुरसंखे क्रम तथा विवयं स्थाएक स्थाप भागे कर्ता, प्रत्येत प्राप्त गुद्ध प्रकार्य न करे। परान्त्रं विद्यारोके साथ करना काहिके को सामार्थकर हो, उन्हों बार्ल कराया जातिने और को ब्रेसियी हो, उनने मान कराया कार्यने । वृक्तीको से सभी बाजेसे आरण रताम कार्यने । राका प्रवेकानोपि व्यक्तिकोतो, अर्थकानी विद्वारकेको और बिक्षेत्रे बान बारेके रिन्हे ग्रहुकारेको रिन्हा को एक वालोर कार्येने सुर अनुवीनोः स्वेन्तेस्त्रो स्टब्स्ये । कर्तना अर्थन province freet and aft opens sinist male वाने तथा बहुआंके अञ्चलका भी क्रम रके र बुद्धिके जिलको असूर्व बराइ परीक्षा धार तो हो, वर सामू पुरानेपर क्रमुख्य करे क्या मर्वादाहीन अधित पुरुष्टेका क्या करे । इस प्रधार हे पार्च । भी तुन्हें कक्षेत्र राजकर्मका उनकेत किया : इसका पर्न सम्बद्धने उत्तम यह कठिन है। इस अपने बन्दि विश्वानमुहार प्रकार विश्वपूर्वक भारत वार्थ । विश्व प्रकार ब्रह्मम तर, वर्ग, रूप और काम्युटको हार काम स्थेक माप्त करते हैं तथा कैस्य कर और आविकाली अनेति क्रमाति प्राप्त कर लेते हैं, जारे प्रकार को रूपका डॉक-डॉक प्रयोग करते हैं, काम और हेन्से रहित हैं, ओन्हीन है और बिनमें क्षेत्र नहीं है, ऐसे क्षत्रियाचेन कुमीने युक्तिक स्थान और शिक्षेका करन करते हुए सरक्रमेंको अस् हेनेकारे क्षेत्रदेवे जले हैं।

वैजनायको सहते है—किन सक्ती इकासे बहुने हुन इत्तेरको विकोदकर कतरथा प्रदूधकर्मने क्षेत्रो शुक्ककोरे पीमसेनको क्रतीसे स्वयंत्र । इतसे सक्तार ही पीनसेनकी सारी क्रायंत्र नाती स्त्री और सब उपस्थती अनुसुरसाधाः अनुभार होने राजा । उन्हें ऐसा जान चढ़ा कि मैं बड़ा बराबार् है और मेरे कवान कोई की पहलू की है। किर इनुवान्तीने ऑक्टोने कोई काका स्वैद्धारीने न्यूग्यकार हो जीन्योनसे बद्धा, 'बैंका ! जब हुन काको, ककी कोई कवी करे से के



ज्ञान कर लेख । और मैं इस स्थानके एका हूं—'श्रु कर किरोले कर सक्य । अब कुनेरके प्रवास संबंध हूं किर्मुकाओं और अवस्थाओंके वहाँ अनेन्स सुवस हो गया है। तुम्हारे कान्यों सर्गारका नर्का होनेसे मुझे की संसारके इसको अन्य हुन्हें की मेरे दर्बनोका कुछ पत्र आह होना कार्मुने । तूम अनुस्तके नती है मुझसे कोई वर मोंगे । वहि तुमसी हुन्हा हो कि मैं इकिल्मपुर कान्यन हुन्हा भूतका-पुरोको कर कार्मु से का भी मैं कर सन्यत है तथा तूम कही से कमरोसे का मारको न्हा कर है अन्यत अभी दुनिकाको नोजकर हुन्हारे कर संस्ता है । सहस्ता है ।

स्पूर्णम्मीची न्यू धार सुनका भीगांत आहे अस्ता हुए और उससे कहने लगे, 'जानस्था | आवका महुन्य हो: मेरे वे दान बाग से आव कर है कुछ-अब इसके होने में कोई संदेश भूति है। बस, आवकी सम्बद्धि करी हो-न्यूट में कहन है। आव इससे दान्य है, इसस्यों का प्रवासनोग सन्तव हो जबे। आयों ही आवसे हम सब इस्ट्रॉको जीन सेंगे।' और सुद्ध होनेके नहे ही में हुन्हारा दिन करोना । निस करना | करोगा, निससे स्थानोंके आम सुद्ध कारोने और तुम उन्हें क्रवेचे, जर समय में क्रवरे क्रवरो कुक्सी नर्वकाले क्या विकास और नहीं अवस्थान हो नर्वे ।

चौक्रीको देश कानेवर उनके प्रमुक्त्योने चाह, 'चाई | हैच तथा अर्कृतको बादावर बैठा हुआ ऐसी चीचन पर्यंत हुन इतिह और बाजोंने जाप राहुकी सेकर्न कुरकार विकास | कुरवारको कर सकोने 1' देख कहकर हुन्छन्तीने उन्हें कर्न

# ्भीमके सौगन्धिक वनमें पहुँचनेपर वश्च-राश्चसोसे युद्ध होना तथा पुधिष्ठिरादिकाः

# भी वहाँ पहुँच जाना और सबका वापस स्त्रैटना

वैद्वानांकारों कार्ते हैं—करिया सुनुकर्तकों अन्तर्यान हे बानेपर प्रक्रमानी चीन्स्रोन प्रमाद बताने हुन् पार्नाचे नाथावाहर क्षेत्रपर सक्ते को : वार्गने ने हुनुसन्तीके विकास विका और अलेकिक सोधका तथा स्वरधका कारण बोरालके आहरूप और प्रधानक विकास करते जाते है। सीपनिका बनको देवानेको इच्छाने वाले हुए उन्होंने वाली रक्षणीय का और जनक देशे तथा तक वक्क प्रकृति वक्षोरे सुरोधिक प्रयेक्त और नदेवाँ देवाँ ।

कृती प्रकार और जाने कहरेयर से कैन्स्स कोन्से समीव सुनेत्ते राजपानके पास एक प्रतेवतके निवाद पहेंचे। चीवहेरते वहाँ व्यक्तित प्रत्या निर्मत कर सीमास्त रिया। महत्या कृतेर इस सरोवरचे कारतीका विन्या करते ने उसके जासपास देखता पायर्थ, अपन्य और स्त्री स्त्री बै जा सरीवर और सीग्रांक्य प्रमुखे देशका बीमांत को प्रभन्न पुरू । यहाराज कुमेरको ओरले ह्यापी स्टेक्कल राज्येक एक्स त्या नाहके प्रका और पहरानोंके सुराधित है इस हंदानकी रहा करते से ( उन्होंने पहलाई धीवके पात समार कारों पहल, 'कुरवर्ग कालको, आप खीन हैं ? अध्यक्ष केंच के मुनियोका-सा है, पांतु आप इतिकार भी देखे हुए है। क्रकिने, 'कर्ड आय किस जोउनमें आने हैं ?"

" भीकरेंने क्या—राजसो ! मेरा राज भीकरेन है, मै करिया कुथिहिनसे क्षेत्र न्यासन नान्यस कुर 🕏। ये धारूनेके सत्त्व आचर विद्यालने त्या हुआ है। व्यक्ति बायुरे उद्युक्त एक सुबर स्वैतन्त्रिक पूर्व हको निवासन्तर पदा का। उसे देशकर प्रीपक्षको केरे के और मुक्त सेनेकी इक्त औ। इसीने मैं-पाई जान है।

क्षाती का<u>—पुनवा</u>कः। यह व्यक्तव कुनेस्का क्रिय स्थितकार है। वहाँ सरमध्यां मनुष्य विकार नहीं का सकतः। वहाँ देवाँचें, यह और देवदा भी वहालको जना



नेकर ही जान्यान और विकासी कर सते हैं। फिर आप 2000 निराहा करके कारता कपत करो होना चाहते हैं, और हेरत अन्याप करनेका भी अपनेको कर्गराधका चाई केसे बहुते हैं ? जाद नहरूरमधी अहत से स्वैतिये जिल सहा भी वी सबेटो और कमत भी से या सबेटो; नहीं से साव क्रमलेकी साथ क्रीड भी नहीं शहते।

क्षेत्रोर कोरे-एक्सरे ! राक्सरेप मांच नहीं करते, को सन्तरन-वर्ग है। और मैं किसी भी प्रकार सरकारीको क्षेत्रक औं बहुता। वह सूर्यन प्रतेकर बहुती हरनोसे करा है। क्रायर कुनेलंड समान ही अगव्हा अधिनात है। ऐसे प्राचित्रकारणके प्राथमिक क्षेत्रे कीन किससे पर्याप की ?

हैंसा अञ्चल भीगरिन इन सक्स्तेको जेवा का कार करनेके रिन्दे इस सरोवरमें स्टर को । स्ट क्या सक्सानेन जो रेका और में एक साथ हो क्या अस्तिक उनकर सूर को । गीमरोपने भी अपनी कव्यानको सम्बन सूक्तांपरिकास सूरों गिर्दा अस्तिर 'स्वारे ! कार्य !' हेसा विकासो हुए इनकर



व्यास्त्रका निर्मा । इससे प्रश्नास्त्रका रोग मो ग्रम नमा और थे मार्ग जोरते वैरमार जनार लेगर और परिता अमी अमा-सम्बोधी वर्ष करने सने । ग्राम्य प्रीपने उनके मार्ग मारोको निपार कर विमा और उनके सम्बोधि प्रमा-सम्ब मारोक सरोवाको प्राप्त ही संग्रहों सेरोको निर्मा दिया । पीपनेनको मारसे पीरित और असेश हुए वे ब्रोक्कम प्रमान रमाञ्चलको भागे और निपानोपर प्रमान सम्बद्धकानको सैरमासम्बद्ध मोरीजीयर पर्य गर्म । उन्होंने प्रश्नाम कुलेको पास प्राप्तर पहुत करने-दानी पुक्षों पीनकोको प्रसा और परस्तामका कर्मन विमा । इसर भीन सुनिम्मा इस्त

राज्ञानीकी कात सुनकर कृतिर को हैने अर्थन कोले, 'चूले इन सक बारोका पार के जीवारिक दिलो जीवारेनको जिल्हो कामन बाहिने जाने के कार्य।' इसके राज्ञानोका कोच रोज़ का नवा और के बीवारेनको कात आहे।

पूजन कहरिकाश्यमने भीमरोगके पुत्रको सूचन केनेकान कहा-केनवार, हीसा और कुत करस्तीकाल कहा काने



तम औरतीने महा—''राक्ष्य् । आयुने सहस्य को सौननिक्य करान करका का, का मैंने डेस्स्पूर्वक चीतसेनको चीट करके महा का कि नारि 'आवन्त्री ऐसे कहूत-में पूर्ण मिल नार्ने के आप उन्हें सेवार प्रति हो आ कर्त्य हैं में महानातु नेस निक करनेके निक्षे कर कारतांकी कोनाने सामान के पूर्णेंगर मिकानों और गर्न हैं हैं ''

विवर्तिक देखा कार्यन्त व्यापक पृथितित्ते स्कुल-स्थानेको कहा, 'किस और तीन रखा है, स्था और इस सम्बद्धी भी प्रीवा ही साम-स्थाप व्यापक प्राहिते। राक्तारकेच से प्राह्मिको है क्यों और पैका प्रदेशका ! पुन इंक्टिको से कार्य । देखो ! भीकोन सहस्रात्ति विद्या पुरुष्टिका कोई अस्तरण करे, उससे चले है की इस अन्यनोनोंके प्रमानके धीन कर्ष से चल असन हो।'

का परोक्रम कामी एवं प्रकार 'से अपन' देश प्रकार पालानो और अनेको सामानेको स्टाबर खेपराचीके सन क्रमणीयारो पार दिने, क्योंकि वे अपने स्थानका क्योंके अरोबारको जनते वे । उन्होंने प्रीत ही पायन एक शुन्दर पनने अगरको गमसे स्वादित एक सारण नवेश स्रोधा देखा । असेके सीरवर अने भएन तेवाको बोनकेन दिवसमाँ दिने और उसके पहल है अनेकों को हुए यह भी देशे । बीन्सेनको बेलबार वर्षप्रको बार-कर उनका आतिवान विकास और किन मीडी क्योंने कहा, 'क्योलक ! एवं का का का के है ? यह से तुन्हार जाता है है, इससे वेजावनीया नी अर्थाल हुआ ही है। चीर दूस मेर बाल काले हो से देख कार दिन करों का सरक।' इस उत्तर कीन्सेन्स्से प्रशासकार अनोचे भौतानिकार स्वतान के तिनो और किर केवलाओंके सराम करी सरोवरों कीक करने स्मे । वर्गकीने क्षा वर्गोकेंद्र रक्षक विद्यालकाय कक्ष-एक्स प्रकार के गर्ने र क्योंने वर्गराव, अहरा-सक्षेत्र, महर्षि सेमक क्या हतो Magazini bereit Brent ment were firet : करिएको सारका केले वे कोरके का करन हर और कुनेएको यो पान्कानेके आनेकी कुळव निर्ण नहीं। विश अर्थनंत अर्थनंत अर्थनं कर्ता कर्ता हुए अर्थनं कुछ सारकार कार्व राज्यानाओं, विकास से निर्वात विरुद्ध ।

वहाँ रहते समय एक दिन होन्छो, नहाँ और उन्हानीके

मान कार्यालय करते हुए वर्गराय युविहित्ये कहा, 'नहाँ व्यक्ति और व्यक्तिवादी निवास किया है, हेने अनेवाँ वर्षण और व्यक्तिवादी सीवी और प्रत्यते आनिवाद व्यक्तियों वर्षण हमारे हर्षण किया है। साथ ही व्यक्तियां व्यक्तियों कार्य क्षेत्रीते कार्य किया है तथा सर्वद पुत्र और व्यक्ति क्षेत्रीत कार्य क्षेत्रीते कार्य क्षित्र है। इस प्रवार वर्षण है करते विश्ववेद्या भी कांग्य किया है। इस प्रवार व्यक्ति होत्र का व्यक्तियों सेवित कुनेरबीक्त वर्षण मिन्स है। कार्य व्यक्तियों कीवत कुनेरबीक्त वर्षण मिन्स है। कार्य व्यक्तियों कीवत कुनेरबीक्त वर्षण मिन्स है। कार्य व्यक्तियों कीवत कुनेरबीक्त वर्षण मिन्स

क्षित्र क्षण्य कर्नराय इस क्षणार मताबीत यह ये वे असे स्थाप कर्षे जायावामानी सुनायों थे—'अस पुत्र प्रारंति आसे वहीं जा समझे, जा जार्थ कहा हुनंत्र है; इसरित्ते बुनेशेंसे आसरों असे न अवका पुत्र विका चार्यते आसे हैं, उसीने बीनर-नारायकों काम वहींगासकाकों रेवैद पाओं। जार्यते हुन दिन्द और पारणांत्रे सेवित कृष्यांची आभवाकों पहरा; यो पान कर्या हुन आर्ड्डिक्टेंसे मामानी सिवास करना : असो पान कर्या हुन आर्ड्डिक्टेंसे मामानी दिनास करना : असो आने प्रारंत्र एन्डें कुनेशेंसे मामानी दिनास करना : सामा क्रांत्रिक पानकाम प्रीरंत मामानी दिनास करना आह्योगा व्यावस्थानकानीको सुन्यार पाना पुत्रिक्टिंद कार्मी बीन्यादी आस व्यावस्थानकानीको सुन्यार पाना पुत्रिक्टिंद कार्मी बीन्यादी आस

#### वटास्र-वध

दैनकोगरों एक एक्क कर्मराकों कर एक प्रकृत काल और 'मै समझ एक्कोग्राओं में हैं। और नगर्मकाने कुरात प्रकृत हैं।' ऐसा बहुकर का सर्वक व्यक्तोंक करून और प्रकृत क्या प्रैकांकों का से बानेको व्यक्तों कहाँके कर पूर्व क्या। अस पूर्वक क्या ब्याइए का। राजर् । एक स्वक भीयऐस करने करे हुए से तका लोगपाड़ी कार्निका कार सारों को को से। अस समय क्याइट क्यानक क्या कारत बार दीनों प्रकृत, जैनको और सारे क्यांको स्थापन से कार। उनकेरी स्थापन क्रिसी प्रकार प्रकृत करके हुए को और अंत (अक्रापे अपनी कॉरिसकी नामकी तरामार कीनकर विक्र और चीवकेन को थे, उस और आधान समाने तरी।

विक निर्में स्थान हो दिनों जाता था, उन वर्गराज कुमिद्विपरे जानों गया, है पूर्ण | इस कथार कोरी कार्गरों से हैरे वर्गमा जात होता है, यू इसका कुछ भी निवार नहीं करता | तुने सब प्रधार अर्गमा निवार करके हैं। काम करना कहिने ( अपलिया पुरानोंको पुरा, प्रकार, नियं और विचास करनेकारोंने क्या निवास क्या कामा हो और निवास करनेकारोंने क्या निवास क्या कामा हो और निवास



केई सम्पानने सुक्तपूर्वक या है। अरे कुट्टैंट । इकार आध सामान यू को ही कैसे इनना वाकात है ? इस अवस्त से नेस आधार, आयु और मुद्धि—सब्दे नियमत हो नमें। अब कुछ बरना बाइता है। जरे प्रकृत । अन्य यूने इस बावबीयत कर्ष क्या निका है माने कोने रसे दूर विकास है किनका निका है।'

ऐसा बदाबार पृथितिए अस्ति निर्म वार्य हो पर्ने, उनके पारते क्वान उसकी गति आसी तेव नहीं की । अब बर्गाजने महत्त्व और बीधरीमें बद्धा, 'तुम इस पूढ़ एकाममें बदे पत्त, वैने इसकी गतिको पुरिष्ठा कर विचा है। कामे बेदी ही हा महत्त्वाह चीमांच होगा। पास, अब यह आता ही होगा, किर इस एकाममा कहीं नाम-निशान भी वहीं खेला।' तकावता इस पुरुष्टि राजमको देखका स्वकेशने वर्गाच पुनिहिस्से बदा, 'राजन् ! यह देख और काम होगा है कि इस इससे बुद्धा बारे। यदि इस युद्धा हमें बार हाले से विवास प्राचेते और विद्या ही गते भने जो कामान क्या बारेंगे।' जिस्स उन्होंने राध्यसको सरकार के हुए बद्धा, अने जो राह्या ! अस वद्धा वह । यू का से पुने प्रस्तान बीच्योंको से काम, वहीं हो अपने भी हमारो नाम सामार काम क्या काम बरोबा।

मार्शिकुमार एक्ट्रेस हैंचा कह है को वे कि सम्बन्धात् बरावारी इनके अभाग पाइवारी पीमसेन दिकारी दिले। उन्होंने देखा कि राहका उनके पाइवों और डीवटीको विके बाता है। यह देखकार वे डोवसी पर नवे और उस टाइवाको कोले, 'रे नानी ! मैंने को तुझे पहले ही इच्छोबी परिद्वा सहसे कार कारत देखा था। विश्व व क्यो को कारानेको क्या था, कारियो में हुते कैने कारता ? 'यह सकत है' ऐसा क्षेत्र के किया अवस्थाने मास्त्र है, यह नरकने जाता है। और से किया अवस्थाने मास्त्र है, यह नरकने जाता है। कारून होता है जान तेरी मीरा श्रद्धानार्थ है, इसीसे हुते ऐसी कुन्दि उनने हैं। अवस्थ अद्युक्तानों कारते ही हुते कुन्या क्षेत्र करनेको कार सुकार्य है। अस ह जाई पान कारत है, वहाँ नहीं का क्षाना, स्टिक हुते कर और विकारके स्त्रीने कार होता।

वीनारेको ऐसा वालोकर वालाकी प्रेरणारी का एक्स वर क्या और उन सकती क्रेस्कर का बुद्ध करकेड रिक्टे हैंचार के क्या । क्रेसकी उसके होट करियों को और अले क्या क्या है, उसके पान की सुने हैं, आज होरे ही क्या में इसके क्या क्या का को साम की सुने हैं, आज होरे ही क्या में उसका क्या करका। 'क्या का को नेने का क्या क्या का का कुन्द होंगे रकता। एक को में सारीक्ष्मण्या की क्या क्या क्या आरा हुए की १ वर्षा की सम्बंध किये कहा है, हुए अराज एक्स क्या कुद्ध हैंगा !' का, अब के को में और अराज हैंगा क्यार कुद्ध हैंगा !' का, अब के को की अराज हमा एक्स क्यार का कुद्ध करने रूपों की क्या और सारकारों होंगा क्यार का की स्वार में केरी किए कोर हमा हमा



कृत क, जरी अधार इन केमोबर भी कृतमुद्ध होने रूपा, | क्रांसीनरे पृष्टीपर है पारा और उसके सारे अङ्ग पूर-पूर विकारी महाकि अनेकों पूर्व उसके पर्य । किर वर्षाने महत्वे प्रयान नेन्याली विकाशोंसे स्थान अस्या क्रिया । अन्तरी वे अस्पनार्थे एक-सुररेकर प्रैरतेकी कर्ण करने एने । पूर्व सुवक भीकोनरे सामुरको स्थानस को केन्द्रो पुरू करा। उठारे महें रेक्स महत्र बीटन एक नवा। करें कार हुआ देश हैंका अही अबार स्थानकोर चीपलेनकी प्रक्रंपत पहले हुने।

बार क्षेत्रे । किन बोदनीकी चोटने जाना तिर बहरो अस्मा usz filar i

क्रा अक्षर क्षा व्यक्तक क्षा कर चौकांत्र पुविश्वित्ते कर सार्व : इस समय प्रस्तान जैसे हुनकी सुन्नि करते 🕻,

# पाण्डवीका वृत्रपर्वा और आष्ट्रिवेणके आश्रमीपर जाना

किरकार्य कारे हैं—कार्यका । कार्यको को ह कानेपर महाराम मुनिरीहर बिट होरेनर-महामानके सामान्ये अन्यान रहने हमी । इस समय उन्हें अपने पर्छ अर्थनमध्य समय है आरा । वे हैपर्यके सहित एक पहलेको स्वरूपन काने करे, ' अर्थुओ कार्य कहा का कि 'में योग कर्नका अनंते क्षत्राचिका सर्वेकनेके जान वहाँ प्रत्याचेकाने और अवस्था ( हुराविको जिला सामन अर्थात अन्यानिका गोलाका वर्धा उनके, का समय हमलेगोंको असी विस्कोद देखे केंद्रा स्त्रम पादिने।'' इस अक्रार कारबीत करते हुए उन्होंने अक्रान और भारतीके साथ जानेके दिन्दे प्राचान विश्वता के कहीं हो पैपार परनो से और भारी राज्यसभार को क्रमंपर वैद्यापर से पानो । वर प्रचार राजेचे वैद्यायकांत, वैद्यायकांत और

मनपादनकी तलेटीको, ब्रेसिनियो एक उपन-उपनके महाबोधी अनेको निर्मल परियोको देखते वे स्थानो क्रिन विभारतको परित्र पुरुष पहिले । वहाँ उन्होंने राजाँ

कृष्णकंक क्षेत्र आत्र हेरा : मा अनेको प्रकारक कृषित कृतीले सुबंधीक का। पान्कोंने उस आक्रमी पहुँचकर परक्रमानिक समिति कुण्यानिक समाप क्रिया। समिति कुछेके कारण कारण अधिकारण विकास । उद्देश कारण सामान के कार्याने गाँ कर का निवास विवा । आक्ष्में दिन उन्होंने क्लाक्ट्रिट्ट क्लाक्ट्रियों अपने भानेक्ट्र प्रकृत अवस्थ परि । उनके कर के रक्तक कर यह था, यह उन्होंने उन्होंकों है वैक तक अपने पहला, का और आच्या भी अनेके अक्रमणे क्षेत्र क्षिते । स्थापि कुलावां पूर्व और शरिव्याहोत अन्य क्या क्याक क्योंक्र करीत है। इसूरी क्याने सकत पर्यक्रमेको पुर्वेकी बाह्य अनेहर दिया। दिल अन्तरी आहा fent it mit fremit wit i

कारे कारणकारी क्रुपीनका वृतिहित माहरोके सहित बिहर ही बारे । यह जाना अनेक प्रकारके व्यक्ति एवं था । एको महत्वेच कार अध-अधके प्रतीकी बुद्धीये निवास करों हुए अनुने कीचे दिन केरफोल्पर पहलंग दिन्छ। केल्प्स एक बहुत यह बाह्यको स्थान स्रोत्-अनेत् दिकारी देश कः कृत्यर भरावी अधिकास वी तथा गरिन्, कुर्ज और कोईको दिलको थी। काचि केना, क्रेकी, पानक और न्यूनि स्थेत्रक माय-साथ ही बारते हो। अस्पेके कोई भी करका जो था। ३४ जवार वलके बलते मे वाल्यकर् वर्णन्यर पहित्र वर्षे । जाते ज्ञार व्यवस्त अक्षेत्रे विज्युक्त, विद्यु और व्यक्तोंसे सेव्या गयामको कृति किनो : उसे देखकर उन्हें हुमेंने शेमका हो उपया ( सन्पत्त: उन क्षेत्री कर और देवीको अवस्थित करनेवाले पाच प्रशिक्त व्यवस्थाने करते हते क्रिया। इस समय बहुत्य पुरिव्यापने चीनसंज्यों डेक्यूनंबर कहा, 'अहो | यह क्रमाहरू केल केल होपहरूत है। इस बनेहर बनने को निम्म क्या है तथा पर, एक और फलोको सर्व्यापित कता-करायो स्थार्थ है। इसर, इस परन परिता देवनकी नकृतको और से देखों। इसमें अनेको करकंत क्षांक कर रहे 🕯 उका इसके कामर कृषि और विकासकेंग निवास करते 🕯 । हे क-बिक्यन चीम ! त्यह-त्यहरू बाह्य, नदी, विकार, मृग, यही, क्यार्व, असार, क्योरन एक, अवेको आकारीके सर्व

और सैक्टों विकारिते स्टारेनिक इस वर्गरतकारी और उस इक्षियाय व्यये ।'

नीतपानार्थं वहते हिन्तानोक्य ! इक अध्या प्रत्यीत पाण्यम् अपने राज्यमानसर ज्ञीनका करने को ही आर्थाका हुए। जल पर्यमण्डाच्यो देखते ने क्यो तृहि। नहीं होती थी। किर अपूर्वि करा-कुरावको वृक्तोर्थ सुन्नोध्य स्थानि आहिंग्यका महत्त्व केला । राजनि वर्षे हो करावी थे । उनका क्रपेर अंशन्त करू था, अर्थनकी औँ विकासी के राजी भी और हे समझ वर्गीद चरपार्थ है। प्रश्नामें कहे पह वाका क्यायोग्य प्रजान विकाश करेड़ आईविकने हिन्स भृष्टिको मानक्रवीको सङ्घ्यान हिन्दः और इन्को बैठनेके डिन्ने कहा ।

पाण्योके के जनेक जातर आहिकिको क्रांकोर्वे क्रा वर्गराज वृद्धिक्रिरका सरकार काके प्रका, 'राजन १ तत्करा कर



कभी असलमें से नहीं जाता, तुम बराबर बार्ध्य किया रहते हैं। न ? चुन्हारे माना-धिनाकी सेवामें से कोई अन्तर नहीं अस्त ? अपने समझ गुरुवन, बहु पूजा और विद्यालेका हो हुए समार करते हो न ? पायकर्मोंने हो कभी कुन्नक कर आहे किया है तुम क्रम्बारका कहार जुकाना और अस्पारको कुर माना तो अपने तदा सालों हो न और का प्राच्या रहें समिनान से नहीं होता ? तुमसे बचायोच्य कन कका प्राचन काम रहते हैं न? बनोंने रहते समय भी हम बर्गका 🕏 अनुवर्तन करते है व ? तुन्हारे व्यवहारते बीधनवैद्यों से

क्षणी कह नहीं होता ? हार, वर्ग, इस, हरेस, आर्थस और विविद्याला सम्बन्ध करते हुए हुन अपने कप-दुव्येके जीतका अनुसरण करते हो न ? तुम स्वार्थियोके इस्त आवरित मार्गसे है कार्र है २ ? का अपने कुतमें कुत क करिया कम हैता है से विक्रवेकने क्लेक्ट वितर है से में और फोक भी क्याते हैं, क्योंकि के प्रोचके हैं कि पता नहीं हुने हालो कुकार्गिते कृष्ण 🛊 योगन बहेन या इसके पुष्ट करोंसे सुक्र विरोग्ट । है पार्च ! को पुरुष पाता, निवा, अति, गुरु और अस्तराकी पुरुष करण है, यह प्राप्तिक और पराचेक केन्द्रेडिको बीध होता है।"

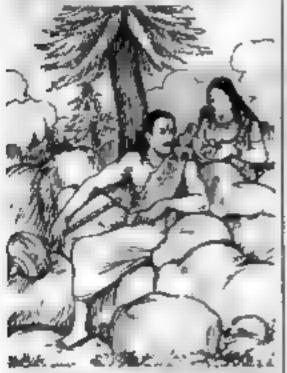
इम्पर नकरण वृधिकेते वक-नवन् ! आपने वह करिक क्यांच कारकार करोग किया है। मैं भी प्रशासित अपनी केन्स्राके अनुवार कृतक विकित्ता करन करता है।

क्विकेन का-न्यंत्रया और प्रतिकाली प्रक्रिये इस क्यांच्या केवल कर के प्रश्निकों। ही वेदिन करनेवाले मुनिएक अव्यासकारों आहे है। यह समय गाई भेरी, प्रमान, होना और पूर्वलेका कब्द भी सुनावी देता है। सारक्षेगरेको सही केंद्रे-केंद्र उन्हें सूनक काहिये, बढ़ी कानेका विकार विराह्ता न्हीं काम साहिते। बहीने आगे हुन्हों दिनो साना हानक भी जाति है। व्यवस्थित अन्य आगे वेसलाओको विद्यालयोग है, med ungebild tift till fi macht per Create विकारको स्थितक केवल प्राथमित और केविना है जा सकते हैं । बाँद कोई क्यूबा करावातका आनेका प्रचल करात है के अलो सबका करेरीय और हैन काने सगते हैं और कारणकेन को रहेकेटी वर्डिनोधे वाले है। वर्नेतरिकोपर वर्ष नत्वाहर कुलेरमें भी बढ़े हत्व-बाटने जाते हैं। इस Ermeit ferment if bert, were. fecht aft mitrat उद्यान है। इस प्रवास पर्वसन्तिकोचा वहाँ सभी प्राणिकोची हेली ही बहुत-भी जिल्हित करों दिखानी दिख करती हैं। उसा: कारक अर्थन आहे, स्थापक दूध वहीं निकार करें।

अञ्चलित केनाचे कृतिया आदिनियको पह दिवसर पात कुम्बर काम्बरकोत विरुद्धा अधिकी आहतो. अनुसार कार्यक करने सने । में विवासमध्य क्षावा महर्गि ओन्दार्ग राध-रक्षे उन्हें सुने को वे : इस प्रकार नहीं को हुए उनके कारास्थ्य परिवर्ध को बीत परत्। ब्राह्मेस्थ्य हो राहकोन्द्रे रहान पहले हैं जान पना का। जाती बार का कह नना का कि नक्षकारक पहलेका में किए उपनिवार हो बाईना। इस अध्ययस प्रम्थानीन कई गाताक से और उन्हेंने अनेकी अल्युक करनाई देखीं र क्या दिन ब्यूका हुआ कषु ही क्रियानको किसानो तम प्रकारके सुन्ता और सुनन्तित पूर्य का राज्य । वज्-कारकोके स्त्रीत प्रान्थवेने और स्त्रावित्री ब्रीक्टीने वहाँ वे प्रवरंगे एक देखें।

# भीयसेनके इत्यसे यक्ष और राक्षसोंका वय तथा कुबेरके द्वारा शान्तिस्थापन

क्य किन चीनतीन का पर्यतपर आनन्त्रते एकामाने बैठे थे । उस समय बीपारिने उनसे कहा, 'नवाकारे ! जी। कनारे रेडाने आयों नेपूजारों पीड़ित होकर इस पर्वाच्ये क्षेत्रकर कथ कर्ष से केसा से ? फिर से आओ सहस्रेको इस वर्णका



विभिन्न पुर्वाचरिकारिका महत्त्वाम है। का उन्हें स्था और बोहरे रहेव दिवाली हेल । गीयसंद ! मेरे कार्ने बहुत दिनोंसे का बात का औ है।"

ब्रीमहेन्द्री बाद सुरक्त चीनकेले सुवर्गकी चीरकात बन्द, सरकार और सरकार उद्धा मेंको और ने प्रकर्ण पह रीक्षर केंक्क्के गणपादकर आने कार्र रागे । यह नेरायर हीयतेका सरकार उत्तरोत्तर काने राजा । प्रध्नपुत्र पीजारंग्यर म्हारि, चर, काकरता और नवस्ताकर जनक से किसी हरूप भी नहीं होता था। जस कॉलब्द्रे बोटीयर जाकर मे कारिते क्रमेरके महत्त्वको ईसाने साथ । यह सुमार्ग और इक्टिक्को ज्यानेने सुरोपिक व्य । ज्ञाके वर्त्त और धेनेका परस्केत करा हुआ था । उसमें तम प्रस्करके का कम्परना से में और उस्त-स्तुके आन अल्डे क्रीस पढ़ से थे। इस अकार राज्यसम्ब कुनेरके सामरित और कुम्पानमधिक प्रमाणको देखकर बहोने अपने इन्द्रमाँके रोपटे बहे कर विकास प्रेश क्याना क्या अपने बनुस्की प्रस्तक और सारियोंका पीएन क्या करके सब बीटीको मेहित कर दिया। उस कुम्प्टे पह, सहस्र और गम्पनेंकि रेपटे सबे हे

क्षे और वे कहा, परिष, अलगार, क्रिकुल, पाकि और फसरा केवा बीकोस्पर्ध और बैंद्रे। फिर से उनके साम भौजनेत्रक बुद्ध होने सन्ता । शौजनेतने अपने प्रवास बेगवासे चाने कार्क कार्य हा डिव्हर, इस्ति और परसे साहि शबी क्राओब्डे कार काम । उनके क्रावोसे कुटे हुए आयुक्तीसे करे हुए का और राज्ञानोंके इसीर और सिर सम ओर दिकारी होने रूपे। इस प्रकार जेग-मंत्र होनेसे प्रकृतिन भीवकेनचे बहुत कर करे. उनके हाजी रहते अन्न-हाल गिर को और में क्षेत्रर खेलार करने लगे। असमें प्रयूप अनुबंध बोक्सोन्सरे प्रत्यान के अपने पत्ता, तिसान, सरम्बाद, क्रकि और करने आदि केलकर रक्षिण दिवाको करे । स्वर कुर्वत्रको विश्व भौजवान् कामका एक एक्ष्मा पहल मा । सामे कश्च-राक्षारोको कान्यो देखका पुर्वकराकर कहा, 'अरे l हुए अनेकोको ज्योजे अवस्थित प्रयक्त कर विका । अन्य तुन इमेल्के का माकर का कारेंगे ?"

का सकते हैता बढ़कर का राजन प्रतित, कियुल और च्या रेक्ट चीवकेश्वर द्वा वक्षा भीवनेको भी वदातानी क्रमीड सम्बन औं अनमी और अभी देखका अपने कारण कारक और कारकेरे अन्तर्ध कार्याल्योचा उद्धार विरमा । इससे चीराव्या, अस्तरे धोर्थने या गया और सार्व अपनी पारी यह क्राअट प्रीयनेनके जन्म क्रोड़ी। यांतु श्रीयनेन परायुक्ती पारचेरे का का थे, अर: उन्होंने अरके जर



महाराको व्यक्तं कर किया। इसी कार्य कर सकारने छोनेको पुरुष्पाने एक गौरकारको सकि कोड़ी। यह गौरका इसीव गौरकोरके राष्ट्रित इस्ताले कार्यक महारे स्वीतको समादे निकारको हुई प्रकार गिर गर्या। उस गायिक समादेशे अमुस्ति अस्ता पुरुष्पांत स्वातं प्रदे हुई गाउ द्वार गी । ते अस्तावाने स्वारंका कर गायको पुरुष्पां हुई अस्ता होर होर होर और संस्थानपुरिये पर्यकर गर्यक स्वातं हुए उसे गोरकार्क स्वार केर्या। यह गाउ प्यपुक्त सम्बन्ध के नेपाले का स्वातंत्रका संसर करके पृथ्वेकर गिर गर्या। स्वितकार्को कार्या पृथ्वेपर गिरते हेक को प्रथम करवेड़ स्वातं को ने ग्रांकर स्वातंत्रक सको पूर्वकी और भूगा करे।

इस समय पर्यक्रमी पुनाशीको अनेक अक्टांक, बोक, पूँचने देशकर अमानवाद पुनिवीद, ग्युक, स्वांक, बोक, प्रेमि, अद्यान और एक पुरावन वीकानको र देशकर बहार हो गर्ने। जिन हींक्टीको आहेरिक पुनिवो एकेका है एक वीर मान-एक नेकर एक प्राव व्यक्ति एक्ट्यकर हुई अस्ते हो प्रावकी पोर्टावर मुख्यम उन्हेंने एक्ट्यकर हुई अस्ते हो देशा कि एक और मीनतेन कहे हैं और क्या उनके अने हुए अनेको निवासकाम एक्ट्य पुनिक और विश्व कहें के को। प्रावस का नहीं उससे गर्ने किन्न और पर हुए एक्ट्यक्री वेस्टान का निवास है किन्न है; हुन पुनिवोद्ध-सा जीका प्रातस का मोहकर है किन्न है; हुन पुनिवोद्ध-सा जीका प्रात्स का मोहकर है किन्न है; हुन पुनिवोद्ध-सा जीका प्रात्स का मोहकर है किन्न है; हुन पुनिवोद्ध-सा जीका प्रार्टिश कर हो है, इस अकार कार्य हका बहना हुने बोका मार्टिश हो हैना में सहस्त। '

इयर जीवारेन्सं आक्षणको को हुए कुछ राहात को तैनीने धेक्क कुनेन्सं पान साथे और बीक्-बीक्क इन्हें। बाने समें, 'बहरात ! आग संस्थापूरिये हुए असेने बनुष्यते कोववा नामके राहारोको बार काल है। ये साथ अस्की मासो निःकार और अव्यक्ति हुए को है। इस वैसे-तैने साके हुक्को क्षणका शायके कहा आगे है। आवक्ष साल मणियान की पास जा कुका है। वह एक काल एक बनुकते हैं कर काल है। अब वो करना कहें का कीविये।' वह सामका पासर समस्य कहा और राहारोको काली कुनेरती बादे हैं कुनित हुए, उनको असि साल हो नदी और ये केले, 'यह साम कैसे हुआ ?' किस वह दूसरा कारणा भी बीधसेनका ही सुनका कई बाद कोब हुआ और कहीने असा की कि हमारा प्रतिक्रिक्तके सामन सेवा रूप सामा



ग । तक महाराम **कक्**के <del>अनुन वाकवारी</del>

भक्ताची पुत्रीको देशकान कुनेनजी भी बढ़े प्रसन्न हुए । वे उनके

वेस्ताओंका एक वार्ष कराना व्याप्ते थे, इस्तीरणे उन्हें वेस्तवर में इस्तारे संसुद्ध ही हुए। कुनेरणीये को सेनक पीई पूर्व पूर्व थे, से पश्चिक्ति सम्बन्ध स्त्रीय ही उस पर्यक्तर पहुँच गुने तथा बहारावाची पायानीयर अस्तर देशकार उसका वर-पुत्राव की हर हो गया।

वर्गके प्रत्यको कार्यकारी वृतिद्वित, ज्युरु और स्क्रोपने क्रमेरको प्रणान किया और सन्त्रोको प्रणान सन्दर्शनी-स माना ( अहः वे इस वक्षात्रको नेकार हान नोहकर करे हे क्ये । इस हरूप चौमलेको इस्क्रें करा, काइन और ब्यूप भूकोपिक से और से कुमेराकी और देश को से। उन्हें देशकार म्राह्मम् सुनेरवीने वर्गराज्ये बहा, 'वर्थ । आर समक प्राणिकोका हैता करनेवे सरार रहते हैं—यह कम सब औव मानते हैं। इस्तीनों अपर न्यानोंके स्वीत बेपाटके इस पर्यापर रहिये । देवितने, जीमसेनके कार आप क्रोन न करें: क्योंकि शहार से अपने कारने ही मरे हैं, अनका वर्ष से क्रामें विकित्तार है। प्रकृत प्रकृत कर कुल्पनी नागंद कारमें देशकानेको एक करना हुई हो। जल्मे पुने भी बारवया गया था । रेस मैं सरह-असूनेर अधा-क्यांने कुलीवत आरमा प्रमेश्वर तीन भी स्थापन स्थापित साथ गर्नी गया पर र शानीं भूते पृत्रितर् अगन्यक्ती विके। ये क्यूनानीके करूर कही कहोर तपाना कर रहे थे। अन अनक बंध विक राज्यन एक परिवाद भी मेरे साथ ही था। असमें पूर्वता, अद्यान, गर्च और सेंडके अधीन क्षेत्रर काराने का महर्षिक कार स्था हिवा । शब युरियानी कोच बरके युक्तो बक्क. 'कुनेर 1 देखों, तुष्परे इस समाने पूछे कुछ न सम्बाध्यर नेत शिरकार बिरुक्त के पुरुष्टिकों यह अपनी सेनाके सहित केवल एक हैं। विक्रमके प्रत्यके बार्स जानका । तुन्ते भी अपने पुर केमलिकोके काएग द:की क्षेत्र प्रकेश और फिर कर नक्ष्मका दर्शन कारीकर है शुक्राच का शुक्त हर होगा।" इस प्रकार वहन्तिकोधे होडू आगवरवीने मुझे पह जान दिया का। कर जायरे आव आपने पार्टने मुझे पुरत किया है। राजद ( स्टेडिक मध्याचे वेर्न, संस्थात, देश, करन और शासन—३० भीव सामनीकी कही सामस्यकता है। सामकुकरें स्वेत है कैर्पवान, अपने-अपने कामेरे कृतान और पराक्रमी होते में र को ब्राविय पैर्ववान्, देश-कारका हान स्वानेकाय और सब प्रकारको वर्गविधिये नियुक्त होता है, यह स्कृत प्रकारक मुखीका प्राप्तन करता है। जो पूरत समझ करोने इस प्रकार वर्तन है. यह संसारने पद्म प्राप्त बस्ता है और वस्तेपर सहाति पात है। फिलु को कोफोड अलेक्ट्रो अको पात्कर रंक्षे की हरूना और किसके पर-कड़ि फर्जे है स्थ-पट

में हैं, मह से फैक्स करका है अनुसरम करता है। तम क्रमीका विकास न व्यानोक्ते कारण व्या इस स्वेचा और प्रतिकृते नामको है जाए हैता है। यह चौतरोन भी वर्गको वहीं करता, पर्नारत है; इसकी पुन्दि करनावेंके स्थान है, स्कृत कृतक के बढ़ कारण है नहीं और हुने बिसी प्रकारका क्य के जो है। प्रतिने अर दिर एक्टी आहेरियोड अक्टाने कार को सन्दर्भने । यह सम्बद्ध नाम स्ती क्राल्पे क्योव प्रतियो । मेरी अक्राते अल्बायुरीने खुनेकारे समझ पह, मन्दर्ग, विकार और पर्यवसानी सामग्री हेल-भाग रहीने । भीमसेन साहस करके नहीं उस एक है, को अन्य सम्बाधकर इसे ऐसा करवेले रोक दीनिये। इसमें होटा आध्या भाई अर्जुन से व्यवहारियक्षमें निपुत है और प्रम प्रमानको कर्मनग्रिको भी स्थान है। प्रशिष्टे संबंधने विकास को सर्वीय विद्युवियों है, ये सब उसे प्राप्त है। करोर किया करने कर, शहर, बार, सुद्धि, सरका, बेर्च और क्रा-ने का पूर्व की है है है



कुनेरके में काम सुमार कावा को असा हुए। भीगतिनों भी छतित गात, साहा और प्रमुख्यों पीठपर बीचका उन्हें अनाम किया। इस्त्यानामध्यक्त कुनेरतीने भीगतिनों कहा, हुए इंड्राइनेका मान पहु करनेवाले और सुद्धिक सुख्यों कृति करनेवाले होती।' किर वर्धरावसे केले, 'जा अर्थन जवानिकाले निवृत्व हो गया है, देशरावः इसने भी जो पर कानेकी अवस है से हैं: इस्तीमें अब कह है कुनेरतीकी जायानी पहलांत भीचे शुरूपत हैने भरे। इस जीत है नहीं आकेता।' इस अधार कान कर्न करनेकारे | जवार चुतुने मारे करेरो नहें गीतपार अनारकीका के कार बर्गराम पुरिश्वितको उन्हेड कर ने अपने स्थानको पाने गये । बा, उत्तरका भी अपन हो पान । पानाबोंने बाह राज बड़े भीपरिन्धे हामरे को राहरर को को के है, उनके हक अन्यको कुर्वरराके बहुतेये है जिसके।

# धीम्यका युधिष्ठिरको नाना स्थान दिसरहाना और अर्जुनका गन्धमस्त्रनपर स्त्रेटकर आना

पीतप्रकारणी करते हैं—बाह्यकर जारकेका ! स्ट्रॉवेस | स्ट्रॉव केवल और स्थानकेब्दे भी सूर्वभ है। यह स्थानकर होतेवर पुनिवर कीम अपने आहिता मानेवे निवस हे स्वार्थि मार्थिकाके स्था पत्थाकेकी और करे। पत्थाकेने स दोनोके परजोने प्रयास किया और बिर प्रथ खेळका अन्य सब बाह्यलोका भी अधिकासन विकास किए धीनाने धर्मण्यक हाथ प्रवाहकार पूर्व विद्वारको और संबेक करते हुए यहा, 'महराज ! यह को समुक्रानीस पुर्वकार पैनक हुआ महारक्ते हिसाबी है का है, इसका कर क्यावस है। केरिको, इसकी केसी कोशा के की है। अब ! thiorage और हरी-परी वस्त्रपासिक्षे यह दिसा केली राज्योग सान पहली है। यह दिसा हुन् और कुमेरका निवासकान मही सभी है। unisely, glass, server, first, mer ally bornely इसी विकाले जीता होते हुए सूर्यका कुटम कार्ये हैं। अनक अभिन्नोंके अनु परमानंत्र काराम इस स्थित हैंसाने रहते है, जो मरनेवाले प्राधिकोन्द्रर गणाक स्थान है : जा बरिया और अव्युत्त विकार्य देशेयाती इंक्क्लियूर्ड है। वह जेतरू क्षेत्रको निकास-स्थान है। इसका देखने की बहुत बहा-बहा है। इसर, पश्चिमकी जोर को पर्यंद्र हिसाओं देख है जो असामक बढ़ते हैं। महाराम काम इस कांग्र और महारामुक्ती स्वकार प्राणिकोची रहत करते हैं। यह सरको साल 🗐 दिवासी अस्त्रेमित कथा हुआ परंच प्रधान वेकार्यंत प्रदा इक्ष्य है। इसमा केवल अध्योग है जा सकते है। इसके क्रमा स्थानिकी साथ है और स्थापर के स्थापर-प्रक्रमानी रकता करते हुए निकास करते हैं। इसी प्रकेश्वे क्रमर मसिक्रादि समर्थियोके उदार-अक्षा होते वहाँ है। तुम श्रीका मेकार्यको इस परिश्न दिश्वको शहर करे । अवस्थि-निवाद जीवाराध्यमका स्थान इससे प्रदे परे समझ द्वा है। यह समिनोयय और काम परित्र है, बेलाह भी उसका कृति नहीं कर सकते । आहि और सूर्व उस क्रान्यते इसलीहरू नहीं सह 🕏 गुमते, मह तो लगे अपने प्रमानश्री ही प्रमानित है। सल्या

अधिकान्त्री सेवरि विराज्ये हैं। यो महत्व् सपसी और कुरुक्रमंति परिवर्धिक हो गये हैं, ये अञ्चल और मोहते रहित बेनरिक पहला बरिका है पश्चिम हत्त उनके पार या समाने हैं। वहाँ कावत से नितर इस स्तेपाने नहीं आहे। राज्य । यह परमेकाका ज्ञान क्रम, जञ्जन और अधिजाती ि हम इसे प्रमान करे । देखे ! हमें, कहार और समझ करानाः अवने-अवने वर्षाक्षे सुध्य प्रचंत्र प्रारं पर्वत्र वेक्को ही अधीवना वित्या करने हैं। इसकी परिवास करते हर हो नहारोजे सहित करान वर्गसर्थिकोचा स्थल आनेवर व्यक्तिक विभाग करते हैं तक व्यक्तिकार्य पूर्व कर्त, बाह् और संस्थान सुरक्षेत्र सरकारेले सामित्रीया चेत्रण सन्ते हैं।



है करत । परावन् कुर्व है सबक जीवेबी जब्द और ह क्षातीका विकास करके दिन, उस, करब, करब, अवह बहरूके उपलब्धेकी रकत करते हैं।"

हरनेक्को पाककारेग का वर्गक्य है निवास करने राग्रे । अर्जुर अवस्थित सीकोके हीने इनके कर को थे। कान्याद वर्गतार सोट को।

वे चीत करेल्ड इसके चयनचे दो और उन्होंने देवरामसे आति, बरुव, क्याप, कंड्, कियु, इस, पसुरक्ति, पार्यही an, उन्हर्नेत कर, क्रता, समिता, त्यहा और कृषेर आदि र्वतम्प्रकारो कार्य है—राजान् । किर साम प्रत्येका प्यान्य | वेकाआदेकि अच्छ प्राप्त क्रिके । किर कृत्यरे उन्हें पर जानेकी Man है हो। इस में उन्हें अनाथ कर नाई सुरहि-सुनी

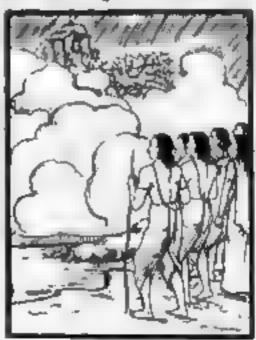
# अर्जुनकी प्रवासकवा—किरातका प्रसङ्घ और स्त्रेकपालीसे अब प्राप्त करना

हुन् अध्यक्षक उस वर्णनवर कारे । अनुदेने राजने जातकर चाले मुनिवर बीमको और मिर सहाराज मुनिवीर और पीनलेनके पारकोर्धे प्रमाण विरक्ष । प्रस्के प्रमाण अपूर्ण और स्कोरणे प्रमुख अधिकारण विकास । विका प्रकारको विकास अधि असे भीतक प्रेमानक के विकासकृतिक को नहीं पुरिन्देशके करा काबार काई हो गरे । अधूनिया प्रचानकारी अर्थुको विस्त्यान पुरुष्यांको कहा है हो हुआ। हवा अर्थुनको भी उने नेकावर अवार जानन हमा और हे आराज पुनिश्चित्रको प्रकृत कार्य स्ते । पाकांने इसोर एक्ट पात कारत जनसे परिकार की और पूर्वके सार्गंद अस्तिका प्रक्रंद सरक है स्वकार मिला और सारो एक प्रधार देशाओंका कुल्ल-क्षेत्र पूछा। मार्गाले थी, रिना जैसे मुख्यो करेड कमा है उसे समार. मान्यानीको उन्हेंच करके उनका अधिनका विका और विक क्षा आर्थित प्रभावकार्यो एकमें बैठकर केरवल प्रकट गान WAR THAT I

मार्गालके को कानेवर अर्थुओ केशाओं की हुए असला सुन्त और स्मृतुन्य आयुक्त सैन्स्टेबों हे सिने। विर सुन और अधिके एक्टन देवारी पाला को स्थानोंके बीजने बैठकर के प्रकार कर करें सुबने रूपे। उन्होंने कारण कि दिस-इस अवध्य की हुन, कांचु और एक्क्यू औन्यानेक्सीने कार प्राप्त किये हैं तका मेरे सम्बाकों भी हम और सम्बा केला पूर्वतव राज्य थे ( इस उच्चर पुरुषण नर्मुक) संक्षेपने अपने पर्नाच अवसम्बद्धानको स्थान-संग्रह स्थाने सुनानी । भिंद कर राजको उन्होंने कारणकृषक नकुरू और स्वयंग्ये सत्य स्वयं किया। एति बीक्नेयन प्रातःश्वासके समय वे महाबोंके सहित बर्मगुकके पास करे और उन्हें प्रकार विकार।

इसी साम्य देवकम इन्ह्र अपने सुमर्गनदेश रामते आगार का पर्मकर जारे। का पान्यमंत्रे अने अपने रेका से में क्रमेंद्र चार जाये और क्लाब विशिष्ण, यूक्त विकार पान ने विकार जावर वारी प्रथमिका जाह की ? और बैसी

वीरामान्त्रज्ञी कारी है—स्क्रामीय आर्थ्य प्रमादे राज्ये केटे | तेवाली आर्थ्य भी वेवरावाको प्रमाय विकास और सेवालके क्रमा अने पात पाई है नहें। इस स्थान अहारिया क्रांद्रकार क्ष्म इसी कार पर क, उन्हें देखान इसी क्या, 'कार्युक्त र पूर्व जारत को, इन ही इस पृथ्वीका कारण करोते । अस कुन कारणक कराये तीर काओ ।



अर्थुको कहि सम्बद्धानेस्रो पुत्रको स्तव सन्त कह यस निर्म 🛊 । अरने नेत रीम भी विक्रम है। अब इसे रिस्पेमी भी नहीं जीत समार्थ ( क्रामीका कुनिहित्तो हेल कह से दिल समीको र्खेट क्ये ।

इन्ने को क्रोपर वर्गरको महत्त्वकात होकर अर्थुनी कुरू—"केवा। तो इनके हते किस प्रकार हरू? क्यारन् संकरते हुन्तर्थ कैसे समायम दूआ ? दुर्मने

शीरहरोजीकी जारावार की ? प्लाबन्द इस बहुने से कि । 'असूरने पेरा दिया किया है।' से दूसने उनका क्या काय । विकास पा ? में सब बही में विकासने सुन्ता ब्याव है।''

क सम्बद सर्वाने क्या-व्यवस्थ । विश्व प्रकार पूर्व इन्द्र और परावान् संवारके दानेर हुए, वह सुनिने। आसी पुत्रे वित्र विकास करेल विकास है, को सेवायर कारणी सामने में एक करवेड़े किये कही एक। क्रम्बंड करते बताबर की प्रमुख पर्याप्त जावन का करण आपन बिला, जिल कर्ड में केलन कर से पत का। अनेक पहले मैं हैन्यरायस सामा का बारो राजा। मैं। एक मानिएक केवल कर और करना अक्रुट किया, क्रांस की में कर पीकर विकास और संबंधे महिने निकास पर । बोबी महिने मैं कारको क्रम करने क्रम रक । यह तम हेनेनर सी विर्माह कर का हो कि भेरे प्रान की हुई। चौकरे करिया एक फिर बैसोल एक कुल इन्ट-कर पुरस इस में साले अकर पदा है पना। अले पैसे-पेसे एक किराम्बेपको पुरु शामा । यह पहुर, बाज और सामार करन किये हुए क क्षा आहे की की को दिल्ली कर भी भी। उस की कहा रेकर कारर बाल कहना और का बेलाककरी हजरको बॉब देखा। असे एका अर चीरने की कारण प्रका बन्ध पॅरियार काम क्रोड़ा, जिसके क्रि केट का खुरू-सा परा। राजर । जिर जाने काले काल-'का कार के काने केंद्र निकास का क्या था, किर दूपने आयोग्डे नियमको क्षेत्रकार अस्तर कार क्यों किया ? अस्तर, पून राजनात ही पाओ; वे सबरे पेरे पाणीते सबी हुन्हरे गर्मको प्रा किवे till fit der unter at framere steh udeb राजन निकार करे हर पुरुषो बागोरी साकारित कर दिया क्या की भी भीतम कारावर्त करते जो का दिया। जा राज्य साथे रीवावी-सहस्रों का प्रस्तर होने राने और मैं उस इंग्वेंबर सामकर्ष करने सम्ब । बिट वे हारे कर मुझे एक इंट रिकारी देशे. तो की वहें भी बीच दिया। यह हाती कार्यको करनेकर भी मैं और चुन्नों पराका न कर राज्य हो में बन्दार होता। दिए पह भी रहता का र स प्रमा । इस अवार पार्यक्रमाओ सुनियर इतर देशकर गाँ। यदा है मिनन बुसार फिन मेरे खाँग-खाँको जनक क्याचन, करनात, करनोंच, कारनात और आव-पर्याच भी प्रोहे। मिलू बहु बील वर सुनी अन्तरीको नियस गया । उनके कर किने क्रमेनर मेरे ब्राह्मका असा थे। उसमें निकारों हर उन्मरित क्योरे पर का ओसो क्य गया । पांतु अर महानेताची भीतने को पी एक हार्कने ।

है क्षान का विका । उसके काई है सरोवर से पूर्व कहा है का हुआ । किर की कहा और उसके केचे अहम उसके। तेकार असर कार किया । किंतु कह उन्हें की निवल गया । इस अकर कार कार्य असा कहा है को और मेरे करि करि अनुसंख्ये कह निवल गया के केच और उसका कहाडूद हैने समा । में कुछा-पूर्व और हाकारई करवेगर की कर पूजाती करवात ने कहा कार और अनेत होका पूजीवर गिर कार । किर के केको-देखने का हैक्सर कर कियोंने सहित कहें अन्तर्भाव है कथा । इससे में बीकार-ना का कथा ।

का तथा कीवा करते से तेमाचिता परातेन तथ विकास के के जाने किया है जाने हैं। जाने किया है कि जाने किया किया है कि जाने किया है किया है कि जाने कि जाने किया है कि जाने किया है कि जाने किया है कि जाने किया है कि जाने क क्रमाने वर्ष को हर थे, जबने विनाद गान का और सकते केरी पार्टिस और में पूर्वका हो पहले दिन्से वैपार पान था। विक्र अमेरि वेरै प्राचुका आमार प्रदा कि 'मै सुनवर प्रतात है।' यह व्यक्ति अपेरे की की हर बहुत और अध्य क्षणेकारे क्षेत्रों परकार सीवा दिने और बद्धा, 'हे बीर हे हारें काम कर हो । वे दूरका जाता है कामो, दूरहार करा कार करें ? राजी करों से बार है, बार बार के। क्रम्यक्को खेक्का और हुन्तरी का कामना में पूर्व धर हैया।' मेरे पानों अब्ब हो सनावे क्षत् थे, सारीनों की हाथ बोहरूर को करते प्रयास करते हर बाह्य-'बारवर । बहि कार अन्तर है से पूछे से देखानानिक दिना अन्तरिकों पाने और उनका अधेन कारनेकी हो हका है-वही केए अधीह या है।' अब बंगवान कैलोबाने कहा, 'अबहा, में तुने बह का है। अर बीत है हुन्दें केर प्रमुख्यान प्राप्त क्षेत्रा (" देश कहार उन्होंने अपना पहल, पाइनलाव मुझे हे हिंगा, और मित बहुत, 'हम हम असका मनुष्यंपर साथी हमीन व करना क्योंकि की इसे सारमीर्थ प्रतिकोधर क्रोक्स सामग से पर विलेक्टिको पान का देखा। अतः पर तुन्ते आतत बैद्ध हो, राजी हवाका प्रचेत करना । अनवा कम प्रशुक्ते होडे हर अवस्थित रेक्स है, का इसका प्रधेन करना है हरा क्यार चण्यान् चंत्रास्टे प्रस्ता होनेसे यह प्रयास अवस्थे केंग्र केनेवारक और सार्व किसीचे न प्रकारेवारक किया अवा क्षींबर क्षेत्रर मेरे परा सा गया। फिर प्राथास्थ्री अक्षा क्षेत्रें में वहीं के पक्ष और मेरे देवते-देवते से अनातीन के को ।

न्यान्यम् । केलोन शीन्यानेकनीकी मुन्ताने गाइ तम विन स्वान्यपूर्वक गाइँ निवाली । कुले हिन का दिन प्राप्ते स्था हो का विकालकारी व्यक्तिने विका, नवीन और सुगनिवा पुर्योकी क्यों होने स्था, राज और विका मार्थकी कानि क्षेत्रे स्था स्था वेश्या इमाधी स्तित्व स्थानी हैने सार्थ । जीवी देशों जेह क्षेत्रीये तुरे हुए एक अस्तर स्थानित राज्ये वेशाय इस इमार्गामित वहीं स्थारे । उसके साथ और भी सान्धे वेशाय आये थे । इस्केटि कुछे माहन् हेन्यांस्था स्थानां विद्यालयार स्थार्थ हिंदे । विद्या मेरी दृष्टि वरित्य विद्यार्थे विद्यालयार माहत्व मानगार पड़ित्र मेरी दृष्टि वरित्य पदिवार्थे विद्यालयार माहत्व मानगार पड़ित्र मानग्री किस इस मोनग्री पूर्टि वैश्व विद्यालय माहत्व मानगार पड़ित्र मार्ग्य १ अर स्थाने पूर्टि मार्ग्यवर्थित है । तुन्दे केस्ताओक्षा मार्ग्य दिन्दु मार्ग्य विश्व है मार्ग्यवर्थित हों सुन्दे केस्ताओक्षा मार्ग्य दिन्दु मार्ग्य केश है मार्ग्यवर्थित सार्थि हुए से । तुन्द इस स्थाने अस्त मानग्री विश्व है स्था है मूल्य में इस्तान्य स्थान मानग्री सार्ग्य क्षेत्र के मेर में मार्ग्य केश है स्था है सुन्दे स्थान है सुने मार्ग्य केश है

अवने-अवने खेळांचो यहे वर्ष : वेक्ट्रण (१९८ भी अवने वेकोचन शक्त क्यूबर जुलते जक्त, 'अर्थुन ! पूर्वे शर्मने अहल होन्द । कुन्ने वर्ध कर संस्थित कर किया है और कही कही क्यूबर की की है। इस्तिन्ने हुए वर्ध समस्य साम । वेटी सद्दानो क्यूबरि हुन्हें स्वर्थी पहिला हैना।'

क्या की कृता कहा, 'मानक् | अन्य सुक्राम कृता व्यक्ति, में सामके अवस्थित प्रीक्तेने किने नावत पुर क्षेत्रक कहा है।' इसने कहा, 'मानक | हुम मेरे स्वेकतें स्वक्तर कहा, साहि, कहा, कहा और माहदाय—स्वारित स्वक्रित विकार कहा करना। इसने अवहर साध्यापन, सहर, माहते, सर्व, सहस्य, किन्यु और विकेतिके क्षा करने मेरे अवस्था की हान कहा करना।' मुक्ते ऐसा माहता इस की साधार्य की हान कहा करना।' मुक्ते ऐसा माहता इस की

# अर्जुरहारा स्वर्गलेकमें अपनी अवशिका और पुद्धती तैयारीका कथन

अवृति वक्ष-एकर् । किर क्षिण क्षेत्रोते जुते हुए इसके | विकार और वाकास्य एकके लेकर नातीर मेरे कर करका |



और मुक्ती केरण, 'केराज इन्न अन्तरो निराम प्राप्ते हैं।' मह कुरवार मेरे पर्ववराण क्षेत्रसम्बद्धी अविद्या पति और क्ष्मी जाता केटर का श्रेष्ठ कार्ने समार कुछ। क्ष्म सम्बद्धियों निरमात समारित्रे का यन और प्राप्ते समार केवळ केवेचे होता। यह बतांनी देशा कि रचने दिल्लेक भी में विभा चुका है को करने बढ़े आक्षानेंने पहलर पहर, 'जान पूर्व का का मिल्ट का निवानी है की है। रकोर कोंद्रे कालोकर की देवराजको भी दिवसे हुए देखा है, जिल्ला हुन जिल्लाहर रिवर दिवारों की हो। तुन्हारी यह बात के पूर्व प्रश्नों के बक्कर बान कही है।' ऐसा काले-कही पार्टींच राजाने अस्तारामाने केवा है। एक और मुझे हैशनाओंके च्यान क्या जिलान दिखाने राजा । कुछ और आगे व्यवस्था काने मुझे देकारओंके रूपनाहि पर और रूपन दिवाने। काने जाने इन्हरी अन्यान्तीपुरी दिवानी है। जाने पूर्वका कर जो हेन और र प्रीय, उन्म क वस है सेता है। का बुद्धानसम्बद्धाः भी बाह्य नहीं है और न बाही होता. दीनता ना कृतिका ही दिवसमें हैं। है। व्यक्ति व्यक्त-से निवासी विकाली बेह्ना अकाली विका हो थे। इस उकार देशक देशक क्या में और आने कहा से जुड़े कहा या, साम्बर, प्रकार, आदिव्य और अधिनीकुमारोके सर्वय हुए । मैंने कर वर्षाची पूजा की और क्योंने चुने सामीयाँद निया कि 'हरे कर, बोर्ग, यह, केर, तक और युद्धरे नियन महा हो है

हरके महरू की देवता और प्रकारोंने पूर्वता अगरवर्ता-पूरीने जरेव किया और देवराय इनके पास पहिचार उन्हें इस प्रेक्टर जनार किया। का प्रतियोगे हेड इन्हरे बैटनेके तिये पूर्व अपना सामा विद्यार किया। गर्वा में क्यानिया ज्ञा करता हुआ गरंग प्रयोग देवता और गन्यनेटि प्राय जुने क्ता। भूति-भूते विश्वासमुक्ते कुत्र विश्वासको नेती विश्वास हो यथी। जाने पुढ़ो सन्पूर्ण मान्यनं प्राच्यानी विद्या हो। नहीं इन्हरभारने सुक्त की तथा-अवके कर और क्या हुने तथा मान्यापुर्व्योको पान पान्ते देशाः । विश्व प्रम प्रमा वार्थेको अन्तर सुन्ताबर की अवस्थित है विशेष प्रवेशिक किया। वेरी देशी प्रमुक्ति देशकार देवराज की मुहत्यर प्रथल को और कार्नने युक्ते हुए मेरा समय जानको बीतने सम्बन्ध मुक्ते बानीका महा निकास मा उत्तर अव्यक्तिकों को मैं काफी लिट्टन हो गया था। एक दिर इससे मुक्ते बाह, 'बाह ! अन इसे पुर्दे हेवा में पराव नहें का सकते, किर मानेतेकों पुरेशको केवरे प्रमुखोधी से सार है कर है ? हम पुरूषे अपूर्वित, अनेप और अनुकर प्रेचे। अवस्कृति कृतान कारण कर करें, देश कोई सेर की क्षेत्र। इन क्रेसी भारतान को है, सन्दार-काल है, कारता है, विवेदिक हो, अञ्चलकोची हो और सुरवीर हो। सुरवे पेहर अब प्राप्त निर्म है और तुम उनका प्रमोग, उनकेहर, आयुर्ध, प्राथमिक और जीवरक-एक चौच विक्रियोको यो अर्चा त्व कार्य है। आ: हाइस्म ! अब पुन्तिमा हेरेक tiere als vier fin Principals while their its signific में राज्यके जीवर कृति स्वापने रहते हैं। से बीत सर्वेद सकते मारे हैं और का सार्थिक पान, बार और प्राप्ता सामा है हैं। कुत करें भार अलो। यस, इसकी पुरव्यक्रिया पूरी हो कारणे (' हेला व्यापक हुन्दरे पूर्व अस्तर अस्तर प्राप्तक क्रिक रम क्रिक । को बतारि सरमक का और मेरे सिरपर का आरम् अध्यक्षम् मुद्रा स्थानः। एक अनेत और सुन्त कार प्रकार मेरे गानीय क्यार एवं अक्ट तथा वह श्री प्रधार कर पूर्व कर अध्यक्त पुरुक्तानोई पुरुष्टित कर दिया हो मैं कर रक्तर कहकर देखेंके संस्थ

। बुद्ध करनेके विने बार दिया। तम तम रक्की करवरहर सम्बद्ध पत्ने केन्द्रण सम्बद्ध राज केन्द्रत केन्द्रत होन्द्रत मेरे नास अमे । किर वहाँ पूछे देशका उन्होंने पूछा, 'अर्जुन । पूज का बरनेको केवरीने हो ?" जब की उन्हें पन कर करका age, "I Promoundate our spring fielt is up & मा: मान पुढ़े हेल मामीधीन सैनिये, किस्से येए स्थूस हो ।' कर क्यूरेने जाता होकर चुकरो कहा, 'हरा रक्तें कैंक्सर इसने कन्यर, पहुनि, नेरन, कुर और नरक जानि क्यारी देखेंचे बंध है, का प्रयोगक । इसमें प्रय पूर भी रिकारकारेचे पुरुषे पराव करेपे।'



### अर्जुनहारा निवासकवर्षीके साथ अपने बुद्धका वर्णन

मर्दने का क्या। कभी को हर भी अन्य-अन्यापर पहार्थिका पेरी स्त्रीत करते थे। अन्यारे की अवस् और प्रकार समुद्धे का व्यंत्यत देश कि अले बेरायों जिल्हें हो पहाड़ेके समार देखी-देखी सहते कर नही र्थी । ये पानी प्रश्न-कार केल पाती जी और कभी आनाने कारत करते थीं। तम और प्रामेशे भरी हाँ हवानी नाने पर भी भी एवा बड़े-बड़े पता, कहुए, लिन, विशिक्त और मकर कार्ये हुने हुए पहाल-से बान कहते से । इस उकार सा मानन वेरदार्थी पहरायको देशकर आहे पात हो मैं। बहुर आहे। अहेंने इक्तों उकाको पीरक कर और

क्रमोते यह इस उनक नगर देखा। वह पहुँच्यार कारोंको अपना रच उस नगरको और वैकामा। स्वाकी परकरहरते करवेंके हरूर कुल गये। इसी समय मैंने गरे को अन्तरो वॉर-वॉर जन्म देवार नामक वंश प्रवास अराम पर दिया। या प्राणी अपनामचे राजापर स्टीम्परी पैद्ध कर है। उसे सुरका कहा-ने को-दो बीच भी नवभीद बेकर इक्ट-कर किए को। पिर अनेको प्रवासे अक-क्वोरे स्टान्ति स्वाचे निवासकाय देव गारसे आकारवारे क्यो क्यारे आरण किये। इह उत्पार निवासकारोंके साथ नेता पीत्रण संवाद किए तथा। जो देशनेके देखे वहाँ अनेको देखी, क्यारी, ज्ञानि और किन्नुवेद जा गये। और मेरी है निवयकी जन्मिकारों कृत्य कार्यक्षारा मेरी सुक्षि कार्य गये।

क्षान्वोंने मेरे क्रमर गया, प्रतिप्र और सुर्लेकी अनगर वर्षा

स्तरमं बार के और के स्थाबंद की राजंद कार निरने ताने।

का की बहुतेयों से अनेको इतन्त्रा कर परवर करमानी कर दिना । इसी प्रधान अनेको कोरे-कोर्ट प्रमाणि भी की प्रकृती असरीको कार कात । इसर केरोकी मार और रक्तेंद्र जारती भी अनेकों प्रकार कुमल को और किलो है बैदन क्रेडकर चन नवे। इस निवासक सर्वाते मानोबंदे कर्त करके नेरी गीतको केवले राले । वस की इस्तानो श्रापिपणित वाले सामी होते-होटे कम होतान were water my first t an area are builds first-from करिये करे अवस राज्या अवस वाले राज्य, केरे कर्य-प्राप्ते पर्वतीको चोरियोचे कामके धाराई बागे अनकी है। राज्य । फिर का और फॉल्डे क्रमा क्ली-क्ली प्यानीको पार्च आस्म को। जाने के पक्षे पक्ष हो किए पर हिया। इस की इन्हरूके हुए अनेकों करके से केनको क्रम क्रेस्टर को पर-वर का केन। का उत्तर कारोबी कर्ष क्या हां तो योध-योधे कामती कातरे रिपरे उन्हें ह इस्ते पूर्व विद्योगन पंत्रका एक विदेशाओं वित्र ज्ञाब विक या। जो लेक्से का जब पता दक पता। प्रत्ये प्राप्त क्षांनोंने कारकार असे और पान क्षेत्रे । तम तथा ही मैंने पानको अभिने क्रम कर दिन और ईस्लाक्ट कर्नो वेस दिया। जानेदीने एक पांच पारके से तम क्रमा अनुसर हो गये और इस अन्याचीनी प्राणको बोर्स भी सम्बन्ध की देखेंकि कारणी में मेह । इस अवसर अवसंग सहकर ही में मेरे कारर काक कारने तमे उचा मैं भी अक्टबबर्क हुए उसी पुढ़ करने रना। इस चुरियो गान्धीय बनुस्ताच क्रीडे हर कन वर्क-वर्क में केन से, नहीं सम्बद उनके हिए बाट प्राप्त से र क्या में इस प्रकार प्रकारमें उत्पाद पीतर पहले तथा है है अपने कार्यके क्षेत्रक नगरी का गरे। केलेके क्षे वानेते कर व्यक्ति एस्य स्टब्स् हे नवा से मुझे सैकाई-इवाले कुनक मरे दिशानी दिने । वहाँ कैलोकी इससे तरवें पदी वी कि क्षेत्रोंके रिन्ने कुक्के कर कार पर रक्षण कठिन छ। इस्तिने घोडे पुन्नीसे अञ्चन आधाराने विका हो गर्ने । सिंहर - अल्या ।

निकारकार्यने सहरकारको प्रभाविको वर्ण करते हुए अस्प्राच्यो की अस्प्राचिक कर दिया। प्रमाने क्या करे और केलेको को आ कुछ देशका क्या, 'असून । असून । जो का, नात्रकार क्यान करे।' स्वयन् । जातिका का क्या हुन्कर की देशकारक क्या का क्या और एक अधिका कारक वैद्यार प्रचावको अधिकतिक कर की स्वेके को हुए काले अनाम की बाल कोई। जन कालूक कार्योद केलो अस्प्र हेम्बर में कार्यके समय विद्यालकार कि एक-पूर्णिय किया-विकास प्रचावन सुन्तान की। सामो काला अक्ष्राची करा से का हुई कि इसना संस्था हेनेका की रूप, कारति का बोहानो किसी की स्वानकी हुनी की पहिल्ला

रिक्र पार्टिको हैराकर पुरस्ते प्रकार, 'जर्जून । तुसमें बैसा पर्यापन केवल पहला है, केवल को केवलाओं में भी भूति है।' पूरा ज्ञान कर निकासकारोपा अन्य हो गता से गताने जाकी कियाँ हेने-बोको सन्ती। यह समय देखा पान पहला या पानी प्रकार के अपनेत कर है के है। कि में मारिके साथ, इस मानाने पाय । मेरे पायक बोध सुनवार देखेंबी कियाँ बहुत करीं और जो बेसकर वे डॉड-की-झंड मांगरे ल्ली । क्या परा अन्यान्तीचे की का-कार था। रेसा अस्कुत नवर देशकार मेंने कासीको पुत्रत, 'देरो सुन्दर नगरमें क्षेत्रकारेण कर्यों जातें पाते ? नहीं तो यह इन्हर्योंने की सकार कर बाल है।' कार्रिने बाद, ''कार्रे का गार कार्रे केराम प्रथम हो या किए कि निर्माणकार्यों क्रिकारोको पहिले पात हिन्ता। पहिले हैं, पूर्वकाली सहस् क्या करके क्रम्बेरे करवान प्रक्रमके प्रतक विना और क्यों अपने प्रापेद्र रिमी यह स्थान और युद्धी देखाओंसे समय गरिए। एक इसने सहाजीते का उत्तरीय की कि 'mount! must flesh flesh anne ill group there क्ष्मिके (' तम प्रक्रामीने महर, 'इन्ह्र | इस विकास विभागामा विभाग देख है है कि दूसरे वर्गराहर तम है कारत जान करोने ।" इसीने इनका पन करनेके सिने इसूरे एके अपने अपन किये हैं। तुमने जिन असरोंका संकार किया है, उन्हें देखा की यह काले हैं हैं।

इस अकार का कार्योचा जाव कार्य का नगरवे सामित स्थापित का मैं भागतियों साम किन वेपरनेकारों मान कार्या।

# अर्थुनके द्वारा कालिकेय और पौलोमोंके साथ युद्ध और खर्गसे विदाईका वर्णन

अर्थन करते हैं—लोटो समय कर्षि हुई एक इसर किल परंद विकास दिया। यह बात से निस्ता और असि को पुर्वति समाने व्यक्तिस्थल व्य । तमे प्रवास्थल गाउँ गाउँ है जाना जा सकता का। अल्पे भी देवलोप ही जाते थे। उस विका साम्ये देवका की वर्ताले कुर, 'क अनुव स्थल क्या है ?" नार्वालने कहा, 'सुन्देना और कारिका मानको के क्रमीरकों को । उन्होंने सहस्र दिव्य वर्गतक नहीं प्राचेत्र प्रच्या भी । एको अन्तर्ने स्था अक्टबीने प्रान्त होनार बानों का बोन्डेकों बार से अपोरे पर गाँच कि उसरे पुरोको सोहा-ता भी सह प हो, हेन्छ, प्रकार स मान-पोर्श भी जरें सह प्रचारे क्या उनके क्रमेंद्र विभे इस आरम्भ स्थानेन, प्रकारकार्य और अस्टाइकार्य करर है। का प्रकारि वार्तिकारे पुरेश रिने पन उपानी क्षोंने सुर्वाचन, वेकाओंके रियो को समेन, एक प्रकारके सचीत योगोरो पूर्व तथा हेल-सोवको सीव या उत्तर हैयार विकार को महर्गि, यह, पर्का, पर, अपूर क राश्चर-कोई भी नहीं भीत समसे । यह गार सामानाने भी राजा करता है। उसमें बार्वनका और क्योनको का है को है। वे क्षेत्र कर प्रवास्त्रे बोट और निरात्ते पर प्राप्त को अनुसन्दर्भ प्रातने निरमान साम्ये है। योथे की वेपाल पूर्व और मही प्रकार । अवने अन्ये कह बहुतने इस है रही है, क्षा: हम महापूर कर हुनेन और महानारी केनेका भी अन्त une die d

क्ष्म की अस्त होका प्राथमिको बहुद, 'अस्ता, हुए सामी मुद्रो हर रुपने से पाने । को पुत्र केन्य्रको सेह कर्क है, उने में अभी सहस-स्वास कर करोगा है साराधि होता है सूत्री का पुराक्षेत्रक नेतरके पादा के गया । शुह्रो केरावार में देख कारण बारत कर, रजेंगे लगार हो बड़े नेन्स्रे मेरे करा कु बड़े और अस्त्रम् क्रोपर्वे परकर मेरे कार मालेक, मारक, व्यक्ते, असि, असि और बोक्तेने का बार्च करे। का मैंने अपने सक्तिको परसे भीगर बारामाँ का उनके एकपृक्षिके रोक्ट दिया और वन प्रमण्डी मोदिन कर किया, निरानो वे श्रापालों ही एक-क्रारेश उक्तर कारे रागे। उनकी इस पुन्तवस्थाने ही भी अनेको प्रमानको हुए साथ कोहान रीवारोंके मेर कार करे । यह उत्तर का क्रांस कर केरे सका हो के किए अपने नगर में की का गये और शब्दाहर का पुरीके कृतिन अकारको का पने । यह विकासोट प्राय कोई का प्राप्त पराने मेंने देखोंके प्रतित अर अवस्थों के किया। मेरे क्षेत्रे हर लोकेंद्र मान सीचे पर निकल करोकरे थे। उनसे

क्र-कुरुकर वह कैनोबा नगर पृथ्वेकर गिर नना।

विश्व के मुक्त पूज करनेके रियो प्रयोग माठ कुरार रखी प्रतिक केवल में क्या का आये और मुझे मारो ओररे मेरे विवा । कियु की केनेकी काम क्षेत्रका अर सर्वको नष्ट कर क्षिण । केवी के देखे समुख्यो स्वारंके क्षेत्रम क्ष्य सुद्धा कर क्ष्म क्ष्मण । जब की यह सोमकर कि मानकी पुजार इनका क्षिण क्षमा कर्मान है, और-की क्षमा असोका असेन ज्ञानक कर विवा । कियु के दिन रखी बड़े के विविध केवा की के किया सम्बद्धा की सारमें करें । कब की देशकिया की केवा सम्बद्धा करका कुर्तिक कार्यकोंक सम्बद्धा का्या का क केविया कार्यकान किया की की की की कीड़ किया । सम्बद्धा कार्यक करते की कार्यकार नहीं करते की कीड़ किया । सम्बद्धा क्षमा करते की कार्यकार कार्यका

इस उत्पाद का विश्वासाय विश्वास क्रिकेट रेक्का उत्पाद प्राप्त के स्वाप्त क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट इस के अपने अपने के इस के क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट इस के क्रिकेट इस क्रिकेट क्रिकेट

इस जनकर जा मुद्राने विकास सामार में बाहा जाता हुआ।
दिश सामित सामीर मुझे राजपृतिको हुन्छ है इसके
राजपानाने से पाना। वहाँ प्रमुखनेन्द्र जातिको हिरानावारको
साथ आहे राजी मुख्यानोको न्यो-का-को सुन्छ दिना। यह साम राजपाद सुन्छर न्यापात इस को अस्त हुन्। और उन्होंने से साहर कान कहे, 'पार्च | सुन्ते संस्थानने केस्ता और असुरोत्ते भी साहर सामार किया है। मेरे सह्यानेका संस्था सारके सुन्ने अपने मुख्यानिका को सुन्ता है है। जान केस्ता, सामार, पाना, पाना, पाना, असुन, नामां तथा पाना और नाम-सामीने रिक्ट हुन्ने प्रमुखनावार सुन्तिनका कोराज मुस्लिहर निकासक राज्य करेंगे। तुन्हें साथी हिम्मास अस्त है, इस्तीओ कुरकारणें कोई | देवलि क्या अर्थकारी हेक्स—सम्बन्धे-सम वहाँ अस्वर भी चेन्छ तुन्तर परायम नहीं कर सकेन्छ । केन 🕽 जब कर इंद्रायपृथ्वि हाई होते हो पीया, होया, क्या, कर्या, कहान और अन्य तह राज राजारें सेरावर्ग कारके मरावर ची करी होते हैं

किर राजा इन्हों नहीं प्रशेख्यों रहा करनेवारत का विक अपेश करन और पह सेनेकी राज्य ज्ञान की। जान से अपेंदें का हेजार मानव जंबा की हैका, विस्तारी अस्वान बात हैंगी है, और पर दिला फिरीट से क्यां अपने इक्से के बसाबकर रहत । इसके बाद कड़ोंने ने बढ़त है सुन्ह दिना क्या और आयुर्ग भी युर्ग ज्ञान निर्मे । इस समार इन्हों क्रमानित क्रेका में वर्क क्यमेक्टरांके साथ क्रे अर्थन्त्रकोत् रहा । यहाँ मेरे और वर्ग बोर्ड । एक दिन हमारे पुरस्ते कहा 'अर्थुर । अस्य तुन्धे नहांचे काम नाहिने । हुन्हरे क्षा क्षेत्र पर कर से है।" इसमें में बढ़ोंने करा अपन और ताम क्रा मनामान पर्वतीः विकास प्राचीनीत आसा कार्यन सेंग्स्य है।

कृषिक्षर केले—बन्द्राच । यह क्रारो क्रिये वहे सीपान्यकी कर है कि इसने देखान इसके अनगी समाजनाने उतार Short afte arek fiber arm sept fiert i weist beieb mer है कारत होशाया तुन्हें जाता होने हात क्या हुन्हें जो अवनी पुरुषाताने संतुत्र विस्था-न्या से और भी आवणारी बात है। तुम क्षेत्रकारोते भी निने और मुक्तनवृत्ते पूर्वः वी पाल लीड जाये, इसमें साथ नुबो बढ़ा सुना निरम है। अन्य के मैं ऐसा संस्थाता है कि मैंने यह सम्पूर्ण पूजा और की और मृत्तरकुके पुत्रोको भी अपने समीन कर मैन्स । सन्हेर । सम में का दिला अवस्थित देखात स्वाहत है। दिनाने करने पैसे mercen feetenderbet me farm bi

पुरिविक्ति हेला स्थानेनर अर्थानो हेन्सामधेके हिने हुए उन Red braifut Rentem fruit fürer und ab d विधिपूर्वक कान करके बुद्ध हुए, किन अपने अपूर्वेर पान कारियान् देख कवन वारण कर विन्ता। एक इसमें मार्थ्यक कनुव और कुरोंने केवल बहुत से रिका : इस प्रकार मीरोपित नेवले पुरतेपित हो महम्बद् अर्जुरने कर विकासीको प्राप्ताः विकास आत्मा विकास विकास अस् अवस्था अनीन अनुमा दृश्क, पुरुषी पृत्तीनक्षित सर्वन असी, गर्दी और समुद्रोंने उच्चन का गया, पर्वत फरने राले, परवृत्ती नकि एक भनी, सुनंबी वारित चीकी यह गयी और जाली र्ज जान भी का नगी।

करनार समझ अवस्थि, हिन्दू, महर्गि, सन्दर्ग अन्त्री,

क्रांपिक्ता कु । लोकविकाम्ब स्थाप और मणनाम् संसर भी काने वालेक्क्रित वहाँ कार्य। किन तम देवताओंने व्यक्तकीयो अर्थन्द्रे पास केया। ये आकर अर्थन्त्रे



चेले-'जर्जून । जर्जून । जर्जन, इस प्रचल इस विस्तवसीका इकेन न करे । किया किसी स्थानके प्रमान प्रचीन नहीं किया कता। की कोई का रूपन है से भी करावा का सबसे कार अपन कार्य प्रकृप प्रश्निको, समान्य अपनर भी विभागोमा प्रयोग गर्धे करना पारिये । अन्यमा प्रयोग पार्थ प्रयोग करनेवर पहुन् अवर्थ हो बाता है। यहि नियमनुसार हुन इनकी पहल करोने से ये प्रतिकारने और हुन्दें सुक केरेकारे होने, इसमें सरिका भी संक्षा नहीं है। करि समने कार्य प्रयोगके प्रस्की रहा नहीं की हो में क्रिकेटीका नाह कर क्रांनी: अतः अवन्ते किर वानी देखान करना । जुनिहेत । हर की इस करत हरते देशका स्टेप कोड़े; युक्री जनकेल गाँउ करो समय वह अर्थन हर विभागीका ज्योग करें, का देश रोग (

का जबार का कामनीने सर्वुगको विकासीका उसेग करनेसे केक किया, का एक केवल तथा अन्य प्राची, जो जाते अने थे, व्यक्ति को और प्राथम भी प्रीप्रीके साव का बनने अस्तावस्थान को हमें ।

# पाण्डवोंका कव्यमादन पर्वतसे चलकर अन्यत्र भ्रमण करते हुए हैतवनमें प्रवेश

अर्थर अवशिक्षाको पूर्व विद्या प्रचल प्रश्नाको सीट बापे, काफे बाद रूको निराम्हर परमाजि सीव-सा पार्ज

रीतन्त्रकार्थ केले—अर्जुर क्रमानिक सीवाकर हमाहे संपंत पहल परावसी और हो गई थे। उनके साथ संपं राज्या का कृतेल करेंने हैं जुदे हुए सारण राज्येत गावनामा प्रकारत निकारों उस्ते । आ पर्यकार को से समा भाग को हर के तथा कई क्या प्रधानोंद्र प्रकृति निवार क्लेको राज्यो पीरा होते छाते के का प्रमुखे केको छ। विरोहनारी अर्जुन नहीं पूर्णा और हाकों बहुत रेकार कह Michiganistic Mount flore and \$1 timetree कुतेको अनुस्को नहीं क्लेके हिनो ज्या निरमानका पास्त को भूपने थे। अर्जुनके साथ ने बड़ों कर कर्माना थे, परंह अनुको बद्ध शामक एका राजांत शतक हो अनीन हुआ । प्रकृतिके प्राच्यांके क्याराचे का को सकत्वंद बीट को।

इंबरपार एक दिन भीन, साईच, नक्का और स्कूपेन इस्तरपूर्ण एक वृष्टिहरके कर बैक्सर उनके गीड़ क्रमार्थि कार्ज दिलाई कर केते, 'कुकार ! कर करते हैं अवनाई प्रतिक सभी के एक इस को कर्त करना करते हैं, के आपनो दिन होते । अपने होते बन्यासम्बद्ध का नामार्थ को बल का है। आपनी अका विशेषणे कर, का-अवकारत विचार क्षेत्रकर इस निर्माणस्त्रीय प्रत्ये निषद से है। इसे विकास है, इस कोडी वृद्धियाने क्रुवेकनको कारण हेकर तेत्वरे पर्वका अञ्चलका भी कुको व्यक्ति करेंगे। एक पर्यक्रक नुप्रधितेसे प्रमान करते जिल्लाम का नवस्त्रका अधिकार ही संबद कर उन्हेंने (

नीत्यकार्थ कर्त है-वर्ग और अविद्र सामग्रे मनोवाते वर्गपुत चाला सुविद्यारो का अने च्यानेक विवार अच्छी तथा पान विवार, इन इन्होंने कुनेलेंड इस नियासकारको आदिका की और काकि उसम सकर, जो, सरोवर क्या समझ पदा-राजस्तेने वानेते हिन्ते अस्ता पनि । सरकार एक चुनिहर जनने सनी चार्चों और स्वानीचे साथ सेवार विश्व पार्णने अल्पे से, अतीने खेट पते। इसोने का बढ़ी भी जगन पर्यंत और प्रस्ते जले. कई प्रदेशक

कारोकारे पुरा--वैद्यालकार्थे । जब महारथी और । इन समाधी एक ही साथ कारोबर उठाकर पार परिधा तेत था। व्यक्ति सोवको का प्राथकोची व्यक्ति प्रस्तान कार्त वेका से फिल अक्षर क्ष्मण् निया अन्तरे पुत्रोंको उन्हेल देख है, की हो का समयों सपर अनेव दिया और कार्य या-श्री-या प्रकार क्षेत्रक केवलाओं के निवासकारको पाने को । पत्नी प्रकार राजनि अर्थितिको भी वर समग्रे व्यक्ति दिया। सम्बद्धात में प्रयोग प्रत्यान परिवा सीचें, परोहर क्योक्यों और को-बंदे सरोक्टोक्ट सर्वय करते हुए आने क्ये । वे कर्चा राजीय क्षेत्रें, कर्मा नहेंचेंक साम, सभी चारानोंके जिससे और वाचे स्तेतीकी केरी-वाडे पुराक्षीने राजके सहयो जाते थे । इस प्रकार पायी-पायी थे क्षा प्रकारि अन्य परेश अन्यार प्रदेश कुल्यांकीने इन स्थेनीया बंध सम्पर-सम्बद विका और क्ष्मकोने विकास करके कारणा हा होनेपर अन्ते सेहे-सेहे reserve wheel Print Bell III, III WE SHARE Principles in grave i

> क्ष्मिक अध्ययम देवता और मार्थि अस्पर निवास किया करने थे. इसमें का उसका परिवा हो गया का । पासक में नहीं कर पर कुछर हुओं हैंद क्येंने महीचारण सीर्व-विकास करते असे । वर्ष करता मान्यकारे केमी एक पासका ने की आपनों आप थे। किए जिस वानंत अने हें, असेने लीटकर कांग्रेने विशासका सम्बद्धेंड शानको और प्रधान दिन्हा । चीन, सुनत, इस्टू और क्रसिन्ह् केरोको, वर्ज को और परियोधी कार्ने हैं, लीकार तथा हैनारको होने औरतेनो पर करके उन्हेंने एका कुनकुक क्या हेका ।

> राज शुक्रकृषे कर सुन्य कि में राज्यमें पाञ्चकरण करारे हर है. से यह यह जाता हुआ और उनको बाहर आकर इनकी सनकाने की। एक प्रविद्याने की सनका सन्तान किया। सम्बन्धे वर्ष एक छ। उन्होंने को आनदारे नातीत की। वर्गरे क्योकावाने काले अनुकरोस्त्रीत किए कर विचा । और सुवाकोंड दिने पुर म्यूट-में रच और सारवि साथ रेका का अवेतार पहिले, को प्रमुख्या अराजाकर है। कानर कार्य का दो थे, जाने विश्ववासित विश्वार कारमध्ये किरवे पत्रेचे के और जन्म रंगके देखाये पत्ते है । मीरक पायकोंने का फांतर विकासका नाजा

कार्ने निकार किया। यह स्थान् का चैतना वनके सका सोधानका वा। वहाँ कार्ने सारकपूर्वक एक वर्ष व्यक्ति किया।

वर्ष निवास करते समय एक दिर गाँव वर्षकी कान्स्ती एक प्राथमी सम्पन्ते पात जा बहुने, यो मृत्यूरे एकम भगानक और प्रस्तो पीतृत का । उसे देशके ही भीत कार्यता हो उसे, उसकी अन्यसमा विकास और मेहले कार्यता हो उसे। उस अस्त्यमने बीजके इस्तियो समेद तिया। में नामके समुखे हुए रहें में। उस समय पहलाम पुनिर्द्धित हो हिएके समान उन्हें हरण देनेवाले हुए। उन्होंने ही अस्तार उन्हें इस्ति चंतुरको हुएया।

जा राज्य प्राच्यांको कावाराका नाम्युक्त वर्ष पूरा है का का और बारहार्थ वर्ष समीव था। जार में विकी हुएरे कावे प्रभव कावेके दिन्ने जा कैतरकोट कावन सुन्दर कावे काव निकी और नाम्युक्ति निकार सरकार्ध महेके कावर कावर क्रिकारों पहुँचे। का है। नामक एक कुमर क्रोकर भी था।



## भीमका सर्पके चंगुलमें फैसना और युधिष्ठिरके द्वारा सर्पके प्रबोका उत्तर

भागीनको हुल--चुनिकर । जीन से इस इच्छर इजीवनेंद्रेर समान नार्थी और जानका पराधान विकानेकाले हो । ये उस अन्यपारों अस्त्राच पराचीत केले हो को ? यो कुलेकाले की पुन्नों संस्त्राधार स्थाने हैं, इस कुलूका औनको असर एक समिते इस हुना कार हो हैं । यह को अध्यानीकी नात है । हमें का सुननेके निन्ते कही अस्तराहा है, उसन कुला करके सामाने ।

वीतनायार्थं सेरे—एकर् | निया साम्य वान्यवार्थेत महर्षि प्रकार्थंत साम्यम्पर आणे और व्यक्ति अनेत्री महाराधी साम्यम्पर वटनाशीसे पृष्ठ वन्नेत्रे नियास करते रूपे, उन्हें दिनेत्री सार है। एक सम्य वीत्रोत सेन्द्रपुत्तर प्रमान सम्बी कार्यों आस्त्रप्त वीत्री के और हार्यों कहुत हा? वीत्रप्ति वीर-वीर करते का भी थे, इस्त्रेपे अस्त्री हुनि एक विकारमान अभागार पड़ि, में एक वर्तवार्थं करारांचे कुछ हुन्य था। अस्त्रेप वर्तवार्थं समान विवास करीरमें सारी मुख्य कर्मी हुने थी। जो बेसले ही पत्रके क्यों क्यों सेरे क्यों है वारों थे। अस्त्री क्योंस्की सार्यन का, उस्त्री कर क्यांस्की कर्मे थी। अस्त्री क्यांस्की साराम का, उस्त्री कर क्यांस्की कर्मे थी। अस्त्री क्यांस्की साराम का, उस्त्री कर क्यांस्की भी । यह बीचने बलकार अपने करते बाद शुन का ; यह अवन्य कारके जन्म किकाल और स्वाम अभियोको कार्यक कारकेकाल का। जनके साँछ होनेने के पुरस्तार प्राम् बीको का, उसने काने यह सम जीवीका विरामात कर यह का।

भीनारेनको सकात अपने निकट पाकर तह बहुआर कारण कोलने पर गया और उसने बान्युर्ग्य केने पुन्तारोके सक्षित उसके हारियको स्पेट विच्या। अवन्यस्त्रो विस्ते हुए वसके हायायको अस्त्रात प्रश्नी होते ही गीन्यसेनको केरण सुन्न हो गयी। व्यापि अस्त्री पुन्तारोने दस हुआर हारियकेशा कार था, हो भी वह स्त्रीत प्रेमुको पैसे अस्त्रात्म सेने कारण अस्त्री ऐसा गाँव विच्या कि में हिए भी न स्त्रीत । भीनारेनको पुर्वान्य का अकारण अस्त्री पुन्तायो। भीनारेनके कारण अस्त्री नेत्र परिच्या थी, विस्त भी ने संग्रीक कारणार्थ कारण अस्त्री अस्त्रीत करकारणे स्त्री में संग्रीक कारणार्थ कारण अस्त्री नाम स्त्री।

इनर राजा कृषिक्षिर बड़े वर्षकर अधिकारी उरका देखकर कारा उसे : उसके आक्रमके स्त्रीय जामें सवासक जान राजी और उससे उसे कुंगिरही अध्यक्तस्थात कार्य कामा मीतवार करने समी। इस उत्तरह केन्से बहरे समी, ति और केमहोसी क्यों चूक हो क्यों । सब ही मुख्यिएका सर्वा इस की प्रकार स्थात से तम अवस्थान देखका क्रियम् क्षम पुविद्येत समझ को कि इसवेगीय कोई महान् भाग अपरिवाद सुन्ना है।

एक्रोंने जैपरीये पूछा, 'बीयरोप मार्ड है ?' क्रेक्ट केली — 'जर्दे तो काने गये बहुत है। हुई (' यह पुनवार ने उस्त ते मैक्सिको सम रेक्स धीवको स्रोक्त को, अर्थुनको क्रेप्सिकी प्राच्या कार्य तीथा और प्राप्त-साक्षेत्रको प्राप्तकोको रोकारे निकृष्ट का क्षित्र । भीको केर्निक विद् देशारे हुए में उस करने उसकी स्टेंग करने राने। केंद्रे-केंद्र मानिक पूर्णन जोकर्ग काला क्योंने केला कि एक सहर अवनाने अहे सब्दर्भ दिला है और में स्थित हो को है।

अनमो का अवस्थाने देखकर कांचकने कुछ, 'बीच ! भीरताता क्रुतांचे पुत्र क्षेत्रत क्रुत क्रुत आवस्ति केले केल गर्थ ? और यह पर्यमान्यर अवशर चौन है ?"



को को कांत्रको रेखका केले अस्त का सकता मह मुक्ता कि किस उन्हरू समिद्र बंजुको नेहलूर वे मेहचीन हो को है और अच्छी कहा—'पैना है का पहलाई सर्व हुत्ते का करेके दिन्ने काले हुए है।"

पुणिक्ति सर्थि कक्—आकृष्ण् । कुर की इस अन्य

क्षे इस्त सहर हैत।

वर्ष केल--या क्रम्युक्ता की मुक्के पात कर आहर चुने अस्तरकार्ये अस्त हुआ है। तुम कार्स करे जानो, कार् बाजनेने सारकार को है। अगर को छो ने छे बार दूव की मेरे स्थान का कार्यने ।

पुरिवरित सहा-कर्य । तुम कोई देवता हो सा क्रेप आवश क्ष्मकर्मे हर्न हो हो ? क्षम बदाओ, हको पृथिद्विर इस कर का है ! मुख्यून ! केलो से सही, है कोई देशी कहा दियो क्यार अध्यक्ष कामका सभी प्रधानक के 7 हार चीपरोपको केले क्षेत्र कराने हो ?

हर्न केल-स्वयम् । वे सहरे सन्दर्भ हुन्। । पूर्व अहर कारण करा था। प्रश्नाको बोववी वेदोने में आपू नायक क्या हुए थे, उन्हेंपन में पूज है। पैंने अनेपते पड़ बिंदरे, सरका की, कार्याय किया तक अपने का और प्रीकार्यर की विकास बार की। इन कर कामानी क्या अपने पराक्रमते भी चुटे क्षेत्रे स्वेत्रवेद्या देखने प्राप्त हुत्या था। यस देखनेको दावार वेट स्थानक का एक। की अधीनम होतंत्र हाहालीका सरकार विकार, इसके पुर्वता है। महर्ति अन्तरानो पूर्व इस अवस्थाओं चौमा विका। यहाराम सरावाच्या हो कृष्णते अवस्था हैरी पूर्वभाषको अनुसि स्कूल नहीं हाँ है। व्यक्तिक सारके अनुसार दिनके हर्ष जानने का हुन्तरा नई पुत्रे प्रेमनके उसने अप हुमा है; आ: मैं म से इसे इसेईमा और न इसके कहरे कार। अवहर मुंच किया एक बाव है, यदि दूव मेरे को दूर कुछ अलोका जनर अन्ये है होने को करने क्ष्म तुम्की नहीं चीवनेत्रको में अन्यान क्षेत्र हैया।

इधिले का—सर्व । कुर इकानुस्तर उस बर्ध । प्री पुरत्ये हे उन्हेंन्य से हुन्हार्थ अन्यवाने देनो अवस्य प्रत प्रातेषा उत्तर (मा )

क्षमि पुरस्य-पाना पुरिवर्तित । बाराओ, स्ट्राप्टन क्ष्रीन है ? और जाननेकेन्य राज क्या 🕯 🛭

पुण्योर कोते—पण्याम । सुनो । विस्तरे सत्त, सुन, \$P4, सुर्वेशमा, कुळाच्या अन्याप, प्रदश्य, इसा—के समूच दिवाचे हैं, को प्रकृत हैं; देश स्ट्रीकोस दिखान है। और क्षानेकेन एक से वह रहका है है, से कुष-मुक्तो नो है और नहीं जीवबार का किहे सांस्कार पहुंचा क्षेत्रके कर है कहा है।

र्ज केल-वृद्धित । इस और सम से पार्र क्लेंक्ट मिनो विकास रेका जनमन्त्रत है तथा नेहरे बताने हर कार. कर, अनेकार अपान, कुरताका न होता, अहिंदा और एक करकारी पार्ट्य क्षेत्र हो। तुक्ती पूस विदानेंद्र क्षिते हैं। अबी, सन्तुत्व से-सुहोंने भी बारे बारे हैं। बार: तुक्ती

कान्यताने सन्तरार तो ये भी अञ्चल को सा सन्दर्भ है। इसके रिया, यो दूसने द्वारा और सुरको रहित केंद्र (सामनेनोप्प) यह बदलाया है, जामें भी मुझे आर्थीर है। मेरे विकालों से का आता है कि समा और रहना केनोंसे चीता कोई सरस कर है हो खाँ।

वृधिको बह-नहे क्षत्रे सार आहे अर्ग्ड सहस्र है और प्रायानमें भी है से भार पार पार भी है और पर स्थान प्रकृता नहीं है। हे सर्र ! जिसमें ने साम कवी स्थान हो, अरे प्राप्तान सम्बन्धा करिने और किएने इनका अध्यय है। सन्दे 'बा' करना पांडेचे। एक का में इस्ते करा कि सम-द्वारों सीव कोई कृत्य का है है औं, से हुक्ता क मा होना है। कराओं में स्थान है और कार्ति है उस हैनेवारम है, ऐसा पर कोई भी क्यों न है, कुल-ए समें सुन नहीं है। जिल्ला किए प्रकार चीतार करनी उनका भी नहीं हता का सरस्यको अभिने स्टब्से होसाम की हैसे, मनोनिक प्राप्ते परकार निर्वेण हैं, उसी प्रकार को केव पर है, रिहो केवल अञ्चलका आवरण हा करके अर्थको अर्थका species it, species and alternative or structure प्रस-१/को सम्बद्ध की केस।

वर्ग वेता-राजर । यदि का अन्यानो है उन्हालकी परिवा करते हो, जब की जनका उनके अनुसार कर्न य हो कारीर वार्च के है।

परिका करन जात कठिन है क्योंकि इस समर्थ समी क्वींक आकारे तंबर (सम्बद्धाः) हे का है। सची परन्य का करियाँ कियोंसे संदान करता कर के हैं। मेल-बाल, वेक्नो अनी क्या क्या और माय---वे सब मनुसीवें क्य-से देशे करें हैं। का किया अर्थ अपन की निरास है। 'वे प्रकारो' का सुनि करिया विकास ने होनेके कारण 🖟 'बो इसबेन का कर बे हैं' देता प्रायम्बरूको निर्देश करती है। अपने 'में' (में) का सर्वजनके राज प्रकार अबोर पोर्ट निर्माण नहीं समान्य गान है। इसरिन्ने मो क्तार्जी विकास है, से सील (सरावार) को है जनाना के है। यह सामक क्या रेवा है से नार-केंग्स पार्ट कायर क्षान्याने संस्था किया काम है। उसमें पाना साविधी पालको है और दिया सामार्थ । पालक बारणावा पंचार कारे औ वेदक स्थापन न करना नान, राजान ना कुके समाग है। व्यक्तिकारक समेत हिमेक्ट कार्यपुत्र प्रमुखे salt finder fiber fir with fibben steuer weite ferreiren करनेकर को प्रीपन और कहाबार नहीं आहर, के अपने क्रमार कांगंकका है—ऐसा विकास्त्रीय विकास विकास गया है। fort south me the air power from th. and the region of present than \$1.

हाँ थेरर--वृतिहेत । हर कारोबोच सबी हक वाले हें; करने के के उसेका कर दिया, को की मरीनांति शुरू पुष्तिको पाल—मेरे विकारके को अपूर्णाने पातिको विकान कर में पुष्तां पात्रं नीपनेत्रको किने पा प्रवास है ?

# युधिष्ठिर और सर्पके प्रश्नेत्तर, नहुषके सर्पयोनिमें आनेका इतिहास, भीमकी रक्षा और नहचका स्वर्गगमन

असर अभ किया-सर्वताय । एक सम्पूर्ण केन केन्द्रसंबेद आक हो: ब्लाओ, जिन करोंकि शायरको सर्वेतव नहे प्रत 前的 第7

ल्लि क्य-क्या । इस विकास के कि क्रिक्ट के का है कि सारकार्य दल केले, भार और दिन करन चेलाने उस अभिसामानी तापर सानेसे परमाको जान गति प्राप्त होती है।

वृध्येत कोने-कन और सरकों सौन का है ? अधिक मीर विकासक-नामें विकास मान्य अधिक है और विमल्या कर 7

समी करा-एका । का, ५००, अधिका और

राजि प्रयोग रात देशे पाल पुण्यातो सर्व राजी हता। देखा पाल है। विस्ती क्रमों से सरकार पहल का साल है और विक्री कार्यकरमारे कर कहार होता है। हही उसत बर्जी से दिन कोलनेकी उल्लेख अधिताका उद्योग्य नीरव है और वर्गी अहितारे भी बहुबर हैनारायनका पहला है। इस उत्पार इनके चीरव-सायवच्या निवार कार्यको अधेकारे m ti

> पुरिक्षेत्रे पूर्ण- कुर्जुकाराने करून अवन्य प्रतिर से शही त्यान केन है, पिन किना केल्के हो पह कामि कैसे पाता है और कर्नेक अवस्थानी कार्यों भी देशे घेगता है?

तमें व्य≔तका । जमो-जमो वर्गेक जनसर जीवोची होन जनारको गाँउ देशो गाँउ है---सर्वशेषको विकासन इतक भीत-तरक करवेदी जातके अनुसर प्रति, सनुसक्तिमें क्या तेना और यह-दक्षी आहि मेनियोंने उत्ता हैना। " वस, ये है तीन मेनियाँ है। इस्मेंने में बीम म्यून्यमेनिये जरण होता है, यह वर्ष अन्तरम और प्रमुख्य जरण है से उसे पुरुषकों अधिकारों जरण इस्में करण है से उसे पुरुषकों अधिकारों जरण इस्मेंक्से प्राप्त है से उसे पुरुषकों अधिकारों जरण इस्मेंक्स म्यून्यमेनियें तथा प्रमुन्थमें अधी मेनियोंने क्या क्रिक्स केम प्रमुख है। सितु प्रमुन्धमें अधी मेनियोंने क्या नियंक्स है; यह यह कि करण, क्रेम, लेग और हिल्को अपन क्रेक्स मेनियां मानियांने उहा है जाता है—अपनी प्रमुख हैनेक्स मेनियांनी में क्षेत्र है, यह सैनियोंनियें क्या प्रमुख हैनेक्स क्षेत्र साम्योंका अस्मान क्ष्मेंके विकार क्ष्मा है। प्रमुख अस्मार यह वस्माईंड मोनीसे विकार हैक्स प्रमुख है करण है।

पुरिवरिते पूर्ण—एवं । साम्य, पार्वा, साम, पार और प्राय—पुरुष्पा आवार करा है, प्रायम पार्वा देशिये वर्णन करों। पूर्व पार विकासि एक पार्व पहल करों की करते ? पुरुष्पा पार्व भी बाराओं।

सर्वे बोराए--एकान् । विनो जोन सारक सामग्र उस्त व्यक्ते है, यह प्रकृत-कृत्य प्रयोग्यानी अवस्थि स्थीन्यार करनेके कारण पुद्धि आहे. समाध्यामने पुष्ट है बाल है। और बह अविकेशितिक अस्ता है हरियोंके कर गांव समाने, गोन भोताम है। प्रारंगिका, ब्राह्म और मा-न्ये के का करेगी इतके करण (भोगवक्ष) है। यस 1 विकासि आयरका मो में इतिहारों हैं, इनमें दिवस हुए पनके हारा का अनेकार बाह्यभूतिहास कामकः विकासिक विकासिक क्षेत्र कामक है। विकारिक अध्योशके समय कृतिके हात यह गए विकारि एक है विकार हमाना करत है; इस्टीनने एक राज असके प्रथ अनेको निकांका काम समय नहीं है। किसे इसने कृति, इतिहर और मनो कुछ होनेस 'जेकर' करना है, जहें अलक का अवस्थान विकास जाती हुई उपल-अवस कृतिहारे कार्या किक्नोची और वेरित कारत है। बुद्धिके अक्नाताने में निवन प्रमोद्ये का अनुपति विवासी हैते हैं, नहीं **द**िक्य तम और जान होना एक जान जात है। जा हार ही अवस्थान संस्थान है और बढ़ी स्थापन अस्थार है। राजन् ! कर, को लेख अवस्था उपलोग करनेकार विधि है।

पुण्डिको न्या—हे सर्व | मुझे का और मुक्कि डीक-सीचा सक्षम कारते । अक्सानकारको निवानेको इतका बाका अस्तर अस्तरका है। सर्व केला—करून् ) वृद्धिको जानगर्व स्वाधित संस्कृत कार्ति । एर्टिनेनो का अन्ति असिक्तान्त्र अस्तान्त्री पूका करती कार्ति है, जन्मका का जानगर्वे विना दिन्ह नहीं क्षात्री । विका और प्रतिवर्गित संनोगरी वृद्धि जनव होती है और कर से कारोने ही करता है। वृद्धि कर्न कारास्थानों नहीं है, कारास्थाना के कर ही क्षात्र स्वाधित है। कर और मुद्धिने कुला ही केर है। हुन भी इस विकाल है। कर और मुद्धिने कुला ही केर है। हुन भी इस विकाल है।

पृथ्वीत केले—पुद्धिकारों हेड़ ! ह्यारी युद्धि कहे कार है। इस से के कुछ सामय है, यान पूर्व है; वित कुछ को पूर्व है ? इन्हरी इस इन्डिके विकास पूर्व का क्रिक है या है। इसे को-को साझा कर किले, कर्नका विकास साम और साझा से इस ने हैं; यान पूर्व कैसे येह इसा, को साझानेका अञ्चल कर कि ?

क्ष्मी वक्र-१८म् । यह वस और समित स्वे-को कृतिकार और सुरमेर क्युनोको की नोहर्ने करा के हैं। पेस हो पर अवस्था है कि एक और नेतन्त्रका सेवन करीत क्रमेक्ट रूपी पहुंच भेड़ित हो जाते हैं। यही बहाल है कि में भी केवलीर मोतारे मार्गेचनर हो पता था। इस मीतारे बारक का नेत अवश्यक हो गया, एवं केंद्र हमा है। अर्थ हर्षे अनेत का का है। पहला । अन्य हरने मेरा बहुत कह कर्त दिल्ला, इस प्रकार दूसने कार्यक्षण करनेके कारण नेत क्ट बहुद्वानक प्राप्त निवृत्त हो गया । अब में अपने मानका होंकुछ हुने का रह है। एनेक्स में का में सर्वका एका का, दिवा विकास प्रकृति अस्ताहर्ष विकास सुदा सा । का राज्य क्यांकारके कारण में विश्तीको क्रम नहीं अन्यान क : कार्नि, रेक्स, पर्का, यह, एकस और राग सबी मे भी इस विकोधीने निवास बारते थे, सभी चुने बार दिया करों है। एकर् । यह समय मेरी होते इतनी सकि भी कि विकास और अर्थन स्टाबर बेसाइ, अर्थना देव और सेना क्षा के अन्यन नारिक का गया कि एक इसार क्यूनिकेके नेरी प्रतासी होती पहले थी। इसी अनायाने को उन्त्यक्रीते हर कर देख। जीवर अगव्य का पालकी को रहे थे. की करों त्यार कमानी र तम से सरेवमें क्षकर फेलर, जो जो कर्ष ! व नेचे निर !' उनके हतन कारे ही में। क्ष्मी कार्मिद्ध रहा हो गये, में जा जान क्रियाओं नीचे निरा । इस समय मुझे मातुम कुल कि मैं सर्व होकार केले मेंद्र किये किए पड़ा है। तम मेंने अनवान मुनिरो पड़

<sup>&</sup>quot; में ही हारक कार्यन्ति, परकारि और अधीरतिके कारी प्रसिद्ध है।

व्यक्ता की, 'भगवन् । वे प्रत्यक्ता विवेककृत हो गया था, इस्तित्ये वह चीर अपराम हुआ है, आप हत्या करके ऐसी कृता करें, विससी इस जानका जन्म हो सक्ता'

जुड़े नीचे गितो देसस्वर उनका इस्त कर्या है क्या और वै सेले—'एकर्। करेगम सुविद्धित तुन्हें इस कारमें पुरू करेगे। क्या पुन्तरें इस अवंकार और सेन सम्बद्ध कर क्षांस है सम्बन्ध, उस समय दुनों जिन्द शुक्तने पुन्तनेशा कर अप होना।'

तक मुझे जनको तरकारका महत्य पता हेताकर महा अनुसर्थ हुना। भगवाका । तो, म्या है तुम्हार माई महानारी मीनसेर। मैंने प्रतानी दिया महीं भी। तुम्हार सम्पान है, अब मुझे निग्न में; मैं पूरः कर्गानेकाओ मार्टन।

यह कहारत पात मूनने असनपता प्राप्त त्यान हैया और विम्न के बारम कर पुरः कार्नने की गरे। वर्णना मुख्तिर की जाने वर्ष बीन और बीनापुनिको साथ के सामान्य और आहे। वर्ष द्यारित हुए स्मानोते पुनिद्वित्ते वह साथै कारा केंद्र सुनावै।



## काम्यक वनमें पाण्डवीके पास श्रीकृष्ण और मार्कव्येय मुनिका शाना

हैं (स्वाप्तां कारों हैं - कि हैंगों क्या को कार्तिकार्ध स्वरंग निवास करों है, असे कांध को कार्तिकार्ध पूर्णभावा को सन्ता। इस स्वयस्तार क्या में को को स्वापित्रोंके क्या सरकारी-सैकेंगर कांध अनुसार कृतकार्थ वित्ये और इस्लान्यकार सारका होते हैं है की कुरिके कांध सार्थि और असे करनेकारी संक्योत्रिय साम्बद्ध करनार्थ कार्यों होते। वहाँ क्यू केंगर कुरिकोंने स्वयक्त असिक-स्वापत किया और के हिंग्सोंके असिक क्या कांग्य असिक-स्वापत किया और के हिंग्सोंक असिक क्या कांग्य कांग्य

एक दिन एक प्राह्मण, जो अर्जुनका किन निर्म था, जा प्रदेश रेकान साथा कि 'न्यानामू प्रमानान् प्रीकृत्य जार्ड प्रीकृत हैं प्रसारनेवारों हैं। प्रमानान्त्रते जा सार्व्य हे सुध्य है कि बारसकेय इस कार्ज आ पने हैं। ये तहा है आपन्येगोरी निरानेको उत्पाद रहते हैं और आपनो बारकारकी को संग्रा बारते हैं। दूसरा हुण संबाद कह है कि बारकार और उपनाले एने प्रतिकार कारकार्यकी बारन् कार्यों बारका पार्वव्योकती की प्रााह ही आपरोत्नोरी निरोने हैं

्या अञ्चल इस प्रकार करें कर है या का कि देखीनका मनवाद अध्यक्ष समानको साथ रकत

र्वप्रमानको बहुत है—किन हिन्ते काम्याकेन सरकानिक विद्याल कहाँ का मुन्ति । उन्होंने राजो पीचे अरकार महे हुन्ति



प्रमंदन कुमिहिर और महमानी चीनके मरकोने प्रमान भाके किर बीचवृत्तिक पूजा किया। किर स्कूल और सकेने को प्रमान किया। इसके बार करवार अर्थकारे क्षार सम्बद्ध कि और हैप्तीयों करने बैदी करेरे कालना थे। इसी प्रवार सीवन्तवो वर्ग सामावय थे रोकोने को सम्बद्ध निर्मा ।

इस प्रचार विद्वारत क्रमा क्रेनेन्ट क्रमी प्राथकीने अपने पार्ट प्रेरणे और प्रतेष्ठित बोमापूरिके साथ श्रीकृष्णका सम्बार निवय और उन्हें कर ओसी पेकार के नदेश तम परावाद अध्यापने अधिकारी वाहा-'पान्यकोषु । धर्मका पान्य राज्यको प्रतिको यो सहका मनावर क्या है, वर्तकों ही प्रार्थिक दियों कुछ क्या उन्हेंक क्षेत्र हैं। तुसने प्रारम्भाग और प्रथम अध्यक्तके ह्या अस्ते धर्मका प्रतान बातो हुए इक्टबेच और प्रतावेच केरोका विकास प्राप्त पार को है। हुए किही बहानको हैंसे बहे, विकास करते सुध्यक्तीक असरता सुन्ने हो। वर्गाः क्षेत्रके की क्षान्त्रक प्राप्त नहीं करते । हक्ष्में ही प्रत्यक्ती धून वर्णनाम महानती हो । हुनने हुन, साथ, हुन, बहुह, सुदेह, क्या और वेर्ग-सब कुछ है। एस्स, बन और मोनोस्से कार में इस्ते हा अनुसंधे तह है कि रक है। आ: इतने कोई स्थेत नहीं कि तुक्ती क्रमी व्यवसार कुने होती है

शरकात् नाम्यन् प्रीरपीते मोगि--'म्बाकोकि । हुन्हारे पुर बड़े हैं। सुर्वात है, अनुषेद सोकांचें कावद बड़ा करूकर है। वे अपने विश्वीचे साथ स्कूजर कहा है अस्तुकारेके स्कूजनका पारम करते हैं। क्षीमधीनका प्रमुख किस प्रकार अस्तिक और अभिन्युको अव्यक्तिकारी विद्या देवा है, वेहे हे ह्याहरे अरिनिक्क कारि पुलेको औ रिपालका है।"

per beite findelt und giber mein-seiten सुराकार सीक्षाको पुरः वर्गतको ध्या-"वंबन् । स्टार्व, कार और सम्बद्ध वेहोंके बीर कह आरबी आहरू पालन करेने और आप उन्हें नहीं कहेंने, नहीं से कई खेंने। म्बन्दी प्रोक्तम्ब अस्य पूर्व होते ही क्याईनेकी फेक अवन्ये क्षत्रमाँची संस्थात संसर वह कारेंगे। वेश अन महाने देशो होकाहित हो अपना राज्य प्राप्त हर हरिएकाहरे क्षेत्र करेंगे।'

ेबाम्य पुषिक्षेत्रने पुरस्तान श्रीकृत्यके विकाद सहरे मान्या चारका आधी आहेल की और उसकी और कुछता इडिसे देखते हुए हाम खेड़कर बढ़ा—'केक्स ! इसमें समिद भी स्थित नहीं कि चन्द्रकोर्ड केवल अन्य है सहते है.

स्वानेतर स्वान हमारे जिले, को पुत्र का वो है जातो की महत्तर पार्च करेंगे। इसकेचेंने अन्तर्ग अध्याने जनसर प्रय: बाब्र क्योंक इक्ट निर्मर करो हर-दिस्कर व्यक्ति बर विक है। जब विकित्संक सहाराज्याको सर्वाव एरी कारे ने काक अपनी है करन होते।"

(मा प्रकार सीवृत्य और पुनिश्चित का बात कर दो थे, को सन्त इससे क्वेंचे अनुसार स्थाद म्हास क्रवेक्वेक्वेन का वर्षन दिया । क्रवेक्वेक्वे अगर-अगर है: वे क्या और कारण अवहि कुमेरे कुछ है तथा है से अवसे बर्ग, जिल्ला केवलेंगे देशे बार दर्शन है बारे कोई दर्शन कांक काम है। वहाँ कारोक समझ सकत, कार्या, क्षेत्रण और मन्त्रको सहागोरे मर्कमोन पुरिचा पूर्ण कर्मा को केलेड रियो सामा दिया। उपया श्रातिक क्षेत्रार कर्णाः वे सामान्यर विश्वासम्बद्धाः हुए। हुई। प्राप्त केली जवादे वह अ वहें। प्रकारि जाया से mant flows profe and mores print



कार्रात्मक करनेके क्रिये कार्यक्र मुक्तिहरूने पर्वाद्यक्रियोग्ने इस क्यार प्रश्न विकास-"कुने ! अवद समसे प्राचीन-है, देखार, हैम, अभि, महत्त्व और क्योर्नि-सम्बद्ध परित्र आवश्चे विरोध है। इस्तिने में जानो कुछ पुरुष न्यास है। सर्वता कार करोगर भी का मैं अपनेको बुगोरी क्षीका पाता है कुरविके कुर अस्तर्य है करवर्ष है। इसे विकास है, करना और एक कुरवारने हैं तमें कुनेवारे कुर्वेक्ट आहियों

प्रतीक ऐवर्पतार्थि होने देशता है तो की काने प्रायः का प्राप्त प्रता करता है कि पुत्रन किन शुभ अध्या अञ्चलकोंका आसरत करता है उसका करा किस क्या केवार है और ईवर कर्मोंका नियंका किस प्रकार होता है ? क्यूकाओ हुक सरका हुआ नियनेने कवा कारण है ?"

क्ष्मंचीवर्ग केले—राजव् ! हाले को यह उस विका है. मह वित्रकृत रीक है। यह जननेबेच के कह में है, क प्रम तुन्दे विविध है। केवल क्षेत्रस्थांकारी स्वाके विन्ते प्रस मुहारे पह यो हो : आ: यहम हर होना अध्या प्रत्येक्टी देशे सक-द:क्या प्राप्तेत करतः है—का क्रिको नै के कुछ बताई, को मान देवर प्रते। इन्देशक प्रकार सहायी असर हुए। उन्होंने बीबोबेट किये निर्मात उन्हा निरहार प्रतिर करते, राज है पुद्ध करेना प्रत्न करनेकारे जान वर्गसामाने अवद विश्व । यह सम्बन्धे पानी गरुम अस इतीया पहल करनेक्षते हैं। अन्य संस्कृत क्षणी कर्त की पाला कर के सबर के स्थापनाथ किया करते थे। एक के-सम पर्या अक्षान्त, पुरुषाता और केवेंद्र होते से। सनी terminajús sourprofit span (totali). Popil माते और सम्बन्धारी क्षेत्रेन मात्रम यन प्रकृत हुई पुरः तर्पट अते थे। ये अपनी प्रथम धेनेपर की पत्ने और प्रथमके अनुसार ही जीविक रहते से । उन्हें विक्री इन्हरूकी करण नहीं प्रशासी भी और न कोई कर है होना था। वे उन्हारने सीत. पूर्वकान, प्राप्ती कर्नोंको जाला करनेकारे, विदेशिक और राग-क्षेत्रके रहित केरे थे। रूपमाँ अन्य हमार क्योंको केरी थे और वे क्रांस-क्रांस संगत प्राप्त करनेकी अन्यत राज्ये है ।

प्रतये प्राण्य कारणपाने ग्रुप्योगी आवास-गीः यह है गरी। होन गुण्येग है कियाने हते, उनस् कन्, क्षेत्रका अधिका हो गया। ने इस-कारके विकित्स काले हते और हतेन द्वार पेक्के नवीपुत हो गये। इस्तिने इस कर्मका कारण अधिकार न गा। ने नार्यार स्था-म्यूबी चेनिकों कार-गरभक होता चीपने हते। उनकी कार्यार, उनके कारणपति कीप हो गयी। उनकी सम्बद ही काले हक- कारेको केव के रूपे। इस अवस्य पर्यकरीर अपूर्व हर चरियोची अने कर्मनार अब में का हे गरी। हे क्रपीनका । इस संस्तरने प्रश्के क्ष्मार, बीवकी गति आके कर्मीक अनुसार ही होती है। करायके निया किये हर पुन्त-करकार्वेद कारक अधीन करनेवाल की प्रश्न हर एक-इनको एर करनेने कार्य नहीं है। कोई क्रमी इस लेको एक का है और परनेको हता। किसेको प्रातेको है एक विकास है और इस स्वेकने एक। Renthal abil at edualit gar firmen & aufr fireftalt केन्द्रेकी करण अध्यक्ष पत्रात है। विश्वी पत्रा बात पर होता है, में अपने प्रतिकारे पर कराते समानार नित्र अरुपद योगो है। अपने केले हैं सुसने आपक हर का प्रदूर्वीकी केवल इसे रहेको युक्त निरस्त है। पराहेकों से इन्हें किने करावा कर की की है। को ओप इस स्टेक्टर चेन्यानक करते हैं, काँडन क्लाकों उसे होते हैं और कार्याको स्था पूर्व है पात इस अकार विशेषित हुई अधिकारराज्य क्षेत्रर जो अपने प्रतिस्को हुनंत कर क्षेत्र हैं उनके रिन्ने इस स्तेकनें हुए। नहीं है, वे परस्तेकने हुए। आते है। के को कांच्य अकाल करते हैं और कांक्रांक है कार्य अवर्थन करके भागान चीने विवास कर उसके पास वार-कामानि का बनका अधूननेथ करते हैं, उनके रिन्दे का नोप्त और प्राचेक क्षेत्रों हो सुकने स्थान है। योठ को नुक मनुष्य विका, यह और सम्बंद हिन्दे अवतर में अरके केवल जिल्ल-कुरुके ही दिल्ले प्रच्या करते हैं करते दिल्ले द से कर लोकने कुल है, न नक्केकने । एक सुधिहर | हुए अब स्थेन को है परवाली और सरकारी है। देखताओंका करने निया कारोंके देखे हैं हम इस व्यक्तिक अनुवर्धन हुआ है। हुए कराया. कर और सक्तमानी सहा ही करर क्रमेनारे और हमीर है । इब संस्करने को को कालपूर्व कर्न करके तुन वेक्ने और ज़रियोधी रीव्ह करेंगे और अपने उठन रवेकोने कालेने। असी इस कांचन बहुको देखकर हत कर्ने किसी जवल्यी संबंध ने करें। या शक्त में द्वारो कर्त इसका है करता है।

#### ज्ञय ब्राह्मणोंका यहत्त्व

र्वतम्यकार्थः कार्ते हैं—कारकार वायुक्तीने महत्त्रका मार्केटवेशवीचे कहा—मुनिवर ! इस क्षेत्र क्राक्कोच्छे महिन्छ सुनना वाहते हैं, कार कृतका कर्तन विभिन्ने ।

मार्ग्यक्रेयती केले—देशकांकी इतियोक्त परप्रकृत नामक एक राजकृत्यार, जो बढ़ा ही सुन्दर और अपने चेठकी मर्पाद्वको सङ्ग्रेकामा व्य, एक दिन करने विकार सेलनेके रिजे पना ! तुम और लक्षकोधे पने हुए का करने कुछे-क्ष्मों का राज्युव्यारकी हुद्दि एक पुनिस्त कहें, यो बारत मुनवार्ग ओहे केही है सुन्तर केंद्रे में । कुन्यरने उन्हें सामा मुन ही समझ्य और अपने सीलाट निवाल क्या दिया। जुनियाँ हमा है गर्ना—या करका प्रमुख्यको सह अनुसर हुआ, ब्या प्रोत्यने मुर्चित हो गया। जिन ब्या हेल्यांकी श्राविक्षेके पास गया और उस्ते प्रस क्षांटकका समावार सहा पर सुरकार से भी सहा हुआते हुए और से मुनि विसर्फ पुत्र हैं, इसका पता समाते हुए कार्ययम्बार ऑफ्निकिंट शासकार वर्षेत्रे अर्थ सुनिवर अधिक्रोमिको प्रकार करके वे पुढ़े हो गरो । युनिने उनके आतिका-सम्बद्धके रिले प्रमुखंड आदि सामग्री अर्थन की। यह देखका में मोले-''पुनिवर र इम् अपने दुनित कामी नामत अवनो लावान समेनोमा नहीं सी। इनमें प्रकारकों हुना हे गयी है।"

अहार्षे अर्थहर्नेनिने नदा—'जारावेगोंचे उद्यायकी हाक कैसे हुर्ने 7 और यह जगा हुआ आहार कहाँ है ?' उनके मुक्तिमां हात्रियोंने पृत्रिके क्याका सारा स्वास्तार ठीवल्डीक बता दिया और उन्हें साथ लेकर का स्वास्त्रर उन्हें, वहाँ मुनिको हास हुई की। जिल्ह वहाँ उन्हें परे हुए मुनिको साल यहाँ विस्ता।

तम पुनियर अर्थनिनि उससे बहा—'परपृश्क्य ! इकर देखों, ज्यों वह काइया है जिसे हुमानेगाँने पर इसका था ! वह मेरा ही पुत्र है और तमेक्सले बुक्त है।' कर वृत्तिकृष्णस्थों जीवित देख के लोग कई अरक्षपंजें पहें और कहने रूने, 'वह यो कई ही अरक्षपंजी कात है। वह गरा हुआ पुनि वहां केले आ गर्म ? इसे किस अवतर जीवन किसा ? क्या का सरस्वाच्या ही कहा है, किसने इसे पुनः जीवित कर दिखा ? विकास ! इस वह एक सुक्ता सुनक काहों है।'



अवस्थि उनसे कहा--धनाओं | मृत्यु इससोगोपर जपना
अध्या नहीं इस प्रमानों | इसका बना सारम है, यह भी इस
अध्यानेगोच्छे कालो है इस साद एस्य ही घोरसो है और
सब्दा अध्ये वर्गमा चारम करते हते है -इससिये हमें
मृत्युक्त भाव नहीं है। इस आहरणोंके कुदारमों, उनके
हुस्त्यानेंछी ही क्यां करते हैं; उनके होगोबा बनान नहीं
करते हुस्त असिवियोगों अस और अस्ते हम करते हैं;
हमार विनक्ते कारमका मार है, उन्हें पूर्ण कोना हैंने हैं और
उनसे बना हुन्य उसस कर्म कोना करते हैं। इस हमा हाथ,
हम, अन्य, वीर्यनेक्य और इन्टों सारद प्रत्याने हैं; परित्य हैसरे निकास करते हैं। इस साथ कारणोंने की हमें मृत्युक्त
या नहीं है। में एक करते कीन संस्थेपने ही सुनानी है। उसस अस्त क्यां, अह्युक्ताके कारने इस समय अवप्रश्रेगोंको कोई क्या नहीं हा।

च्या पुरुषण कर विकासि व्यक्तियोंने 'एकपर्यु' कहातर पुरिचार करिष्टरेनियम सम्मान एवं पूजन विकास करेर प्रसास क्रेमर अपने देखको चारे गये।

#### ताक्ष्य-सरस्वती-संवाद

कार्यने सरकती देवीसे एक प्रथ किया था। अस्ते स्थाने प्रशासीने को कह बहा, का मैं होते हुन्छ है, कार वेकर सुन्हें।

स्वयंत्री पुरा-पर्य । इस संस्तरमें क्यून्यक श्राम्यक क्रानेवाली वक्त क्या है ? विका प्रकार शरकरण करनेले करून अपने कारी प्रष्ट कों केश ? देनि । दूस मुक्ती झावा कर्नन क्षते में तुन्हारी अञ्चलक पतन क्षतेना । भूते कु निवतन है, हरको उन्हेल पहल करके में अपने वर्गने तिर नहीं समझा :

सरकरोरे वक-मो प्रयद्ध क्षेत्रकर परिवाधको निर्म कारतम—अभा-कारत का काल गांव है और अ**धि** काहि मार्गेरे प्राप्त होनेकेन समुख सहको जान नेक है, कहि केवलोकारी करार प्रमुख्येकार्थे काता है और देवलाओंके साम अस्तर जेनसम्बद्ध (विकास) से स्था है। सर बारवेकारोको भी जान लोकोको प्राप्ति होती है। वक-दान कारोकास कारकेको कार है। कुमर्र केनास हैना होना 🕯। को अब्बे रंपनी हो, पुरस्काने पूर पुरस्क रेसी हो, अब्बे बाहरे केनेवाली हो और केवल लोकपर बाल बानेवाली न क्षे-वेशी पीका को लोग दान करते हैं, में जेके प्रतियो बिक्से केई हो, जाने क्लीएक एक्लेकने कुरुवालेका इपयोग काते है। यो करिन्स गीवो क्या जेवन्यर उन्हे



मर्ककोशयों करते हैं—राजुनस्य ! एक समय पुनियर | जार कोर्सियों सेहनी रसकार को हत्य, उस आहे स्थ र्वाजनके कर कर करता है का स्थाने भार वह से क्षाकोन्हे कार्ये अस्वत होकर उसकी सारी कापनारै पूर्व करते है। चेद्रम करनेकाच बनुक जपने पुत्र, पैत्र मादि कुछ पेक्रिकेस नरको उत्तर पासा है। कर, सोप आहे ्रकोड चंतुरुवे चेतरकर कोर बहानाध्यक्तासे परिपूर्ण एरको निके हुए प्राणीको का चेवान जही भीते बचा लेता की क्लके इसमेड काली क्ले नाम अनुबने इसने पुर क्यूबाको । प्राप्त किनाइको विवित्ते क्यान्तान करनेवाल, प्राप्तको पूर्ण कर हेरेकान और प्राप्तिय निर्मिक अनुसार क्षान्य प्रकारकोच्या पान कार्यकारक प्रश्नुन्य प्रश्नानेकाने साता है। के भारतारे सकर नियमपूर्वक तार क्लीवक प्रवासिक अभिने इतन करता है, यह अपने पुरस्कानीये अपनी साल प्रमानी और सात नेवेची पेतियोग उद्धार कर देता है। क्राओं पुरा—देविः । अधिकोत्तरे प्राचीन नियम क्या है ? कारती नक---कारीक अवस्थाने और प्राय-वेर मोने किया हरू नहीं करण काहिये। यो बेक्स पाठ और अर्थ नहीं कुम्बा, अर्थ कारनेका थे। जिसे कारका अनुस्था नहीं है, क अधिकेत्रक अधिकारी भी है। हेक्स का पार्टाकी कुर्बार रहते हैं कि नरूप किया पानने हमने बार पार है। में क्षेत्रक प्रकृति है, इस्तिको अञ्चलीन पुरुषोर हिने हुए ब्रोल्यको स्टेक्स भूते कार्थ । केर् न मान्नेवाले सम्बेतिन कुरुको हेन्याओके मेले इंक्लि प्रकृत करनेके नार्वीर निवृद्ध न करे; क्वॉकि वैसा मनुष्य को इसन करता है, पह कर्त है कर है। असेरिय पुरुषो मेरी समूर्त (सम्बोरिका) बक्षा क्या है। की प्रमुख समितिक पुरस्का हिया जार मोजन नहीं करता, वैसे ही अध्येतिकार दिया हुआ होंग्य देशक नहीं जाल करते; जात को अधिक्रोत नहीं करना कारिने । यो यन अवस्थित अधिनकारो परित क्रेकर सम्बद्धान करण करते हुए अतिक ब्यह्मपूर्वेष ह्वान करते हैं और इकतो केन अनुसार कोचन भारते 🗓 ने बर्वेटर सरावसी पर हूर चौओंके लोकने जाते हैं और बहुई परंप दक्षा सरपालका कांग करते हैं।

> asaर पुक्र-सुम्बर ! वेरे विकासो से सुर कार्यात्रकाने अंत्र कर्मणा क्षेत्रका अव (अप्रतिका) और कर्नकरको प्रकारित करनेकर्त सन्दर्भ बुद्धि हो: बिह्न करावने हुन क्या है, या मैं पुरू का है।

> प्रत्याते केली—मे परापर विकासक स्थानती है। कुन्तरा रोक्षय पूर करनेके लिये के पाई क्याट क्रूं है। अस्परिक सद्धा

और पार्क्स भेरी विश्वति है। वहाँ बद्धा और पान हे, वहीं में प्रकट होती हैं। इस निमाद हो, इसलिये मेरे इससे हर शासिक विक्योंका प्रकार कर्मन किया है।

कार्यने पुरा-नेति । विद्रो परम काम्यानामा काले इस यूनियन इन्द्रियोका निवस आदि करते हैं अब निवस काम मो क्राल्यामें और पूर्ण उनेक करते 🕻 का क्रोक्टरीय पत्र योक्तरस्था कर्मन स्टेपियो । क्योंकि विस्त परत योक्सरको सांक्रकोगी और करोबेगी करते हैं, उस करतन मेक्षालको मैं नहीं करणा ।

हारती मेर्च-मान्यक्ता चेक्ने हमे हुए का कन्मे ही वर्ग शाननेवालं जेगी हत, पुरुष और केलोंड सम्बद्धेत विस परक्कारे जार कर कीकरील हे गुरू से जारे हैं जी परायर समस्य हता है, बेलोस असे परम्पनको अस् होने है। का मरमाञ्चले सहारकारके एक विकास केवल कृत है. क्ष भोगकानकार्य अन्य प्राच्याओं पुरू एक प्रश्न प्रथमी विकास की की स्थान के स्थान है। इस स्थापकारी वृक्षक पूर अभिक्ष है। अविकासकी मुख्ये धोनवासनामधी ज़िल्कर बहुनेकारी अन्तर गरियों राज्य होती है। ये गरियों कारके के रक्तर्यन, परित्र शुगन्धकारी जाति होती हैं तथा क्युंडे स्थान प्रकृत एवं असके समान स्थान करते कार्नकारी क्रिक्टोको बहुन्य करती है, पांतु बारतयमें में सम पुने हुए क्षेत्र प्रमान पाल हैते वे असमर्थ, पुत्रीके प्रमान अनेक क्रिकेक्स्प, हिंदर करनेले जिल प्रकारणार्थ आर्थात् महिलेड स्त्रार अर्थाता, युवे क्रकेट क्रमन सरस्य और चीरके कारण प्रक्रिया सर्गानकार्य होनेवर भी गाँगहरू समान विकार परिच्या अथवा करनेवारने हैं 1 कालुके क्रांगेके स्थान ब्रहरूप क्रिका एवं अक्षाब्दकर्य केल्के दक्की साकाओंचे बहुनेकारमें है। जुने हुना, अधि और पनन आहे मेन्सा क्याएगोर्क साथ जिस स्थानो प्रश्न कारेके निन्दे क्योग्रय विकास पुरुष करते हैं, यह मेग परकार है।

## वैवस्कत मनुका करित्र-महामत्स्यका उपाल्यान

र्वज्ञानको पार्ट (--कामे यह राष्ट्रका पुरिक्षेत्र) भारतेन्द्रोक्तरोते प्रदा, 'अस्य आस इसे सेन्द्रस्य सनुदे सरीह सुराक्ष्ये ।"

यांचीको होते—सम्बद् । किल्बार् (सूर्व) के एक प्रतापी पुत्र का, को प्रकारीको समान कार्यकरम् और नातन् भारि था। जाने वाहरिक्तामाने सामान तथा वैतार पाने हो केनी बढ़ी सबर बठायार जोर हवार धर्माचा बढ़ा बढ़ी कर किया। एक दिनकी नाम है, अनु चौरिकी अर्थेक कारर प्रकार कर थे थे। वहाँ उनके पात एक पात उनका नेतन, 'सहस्तर | मैं एक क्रोडी-सी चाली है चुने चर्च सन्तेते बड़ी म्हानियोंने तह का का दान है आम कुछ बर्क बेरी रका करें।"

वैकास करके का कामध्ये का समान की का आही। क्योंने को अपने झकर का मिना और पनीसे बाहर लावर एक यहकेने रहा किया। अनुधा का मानने कुथन है पना ना, उनकी अधिक देश-पानके कारण क जा भक्षेत्रमें बहुदे और पुत्र होने सरह । कुछ ही सरहाने व्य बहुबार बहुत बहुत हो गया। आतः वटलेले स्थानत सुन्य कठिन हो क्या।



अब आप पुत्रो प्राप्तरे अच्छा कोई कुरत स्थान देशिये।' तथ इस दिन का महतने मनुब्दे देशका बहा, 'पानका । बहुने को पटकेमेरे निकालका एक बहुत बड़ी ककारीने

श्रम दिन। या जनते हे चेंचन समी और एक चेंचन चौड़ी हो। यह में यह महा अनेकी क्वेंडक कहत का और हान का गया कि अब अनद विकास हरीर करने के नहीं और सका। एक दिन असे किर नक्तों कहा— 'समावन् ! जब से आप पूत्रे समूचकों करी ग्राहकोंकों कामी बाह है, वहाँ में आएकों या सक्षान; जनता उस्ते वहाँ केंक समाहे, वहाँ मुझे पहेंचा है।'

पत्तमंत्र ऐसा महानेपर पहले को गढ़ाशीके जलने से बाका क्रेड़ दिया। कुछ कारणय वर्ष संबंध प्राप्त पा और भी का गया। मिर जाने करूबो देखका बाह, 'प्राप्तन् । तम हो बहुत बहु हो सन्बंद बहुन में गहरनीने मी दिल-कुल मही संबंधा : आर श्रामार कृत्व करवे अन प्रमुखें के वरिन्ते , तब बहुने को महत्त्वीके कानो निकास और से जाकर समूतके जलमें हत्त विचा । समूतने कलनेकर का महामालने करूने ईमावा कहा, 'बुल्ने नेटे हा प्रश्नाने रक्षा को है। अन इस अवसरपर की कर्ल अपिका है, को में बताता है; सुने । बोडे ही करवने इस परानर करवाय प्रत्य क्षेत्रेयाला है। समक्ष विकास का सानेका समय का गुना है; अत: एक सुबूद जन नैकार कराओ, उसमें बादे हां मुक्तुत राती बीच हो और सहस्थितेको हाथ लेका उत्तर बैद्ध कारो । एक प्रकारों, जार और ओपनियोंके सेन्सेना शतन-जानम् संबद्धे काथे क्ष्में साविध्य काले पानन एक हो और पाक्यर बैठे-बैठे हो बेटे जाहिल करे । सम्बन्ध में शीपक्षांते बहायसक्ते कार्ये आर्थेया, हास्ते हम मुझे बहुकर हेना । अस में या स्व है।"

इस प्रत्यके क्रथमपुरार म्यू तब अधारके कीय रेगर गावरें बैठ गये और उदाल स्पूर्णने स्वाप्ते कूर स्पूर्णने कैने हमें उन्होंने अह व्यापस्थाता स्वाप्त किया। उनके विशेषा कानकर का अध्यानी परता नौकाके पान उस गया। पन्ने इस एक्टीका पंता असके सीनमें इस दिया। असने बैक्कर का प्रत्यक का नामको यह नेगरो समुद्रने विश्वने स्वाप्त और समय प्रयूचने केवी-केवी नामें उठ की की, कानको केवले समय प्रयूचने केवी-केवी नामें उठ की की, कानको केवले समय प्रयूचने केवी-केवी नामें उठ की की, कानको केवले समय अग्रमा की की। उस समय न पूर्णका को कावल का न दिसाओवा। पूर्णक और साम्यक —स्वाप्त करनक है का वा। केवल मन्, स्टार्ल और साम्यक —स्वाप्त करनक के की विश्वकी पहले में। इस प्रकार का प्रयूचना कहा करियक व्याप्त करनका



क करने सरकारीते स्थ और सीध्या क् ।

इसके बाद यह उस शामको स्वीचका है स्वरूपको समझे तैनो कोटीनर से पना और सरका की हुए यहिनोंने है स्वरूप केसा, "तैनारकके इस तिकाने नामको बीच है, हैंगै न को हैं यह सुनवार उन अधिकोंने संख्य है। इस नामको विकार में बीच विचा। आग भी दिनारकका यह तिकार "तैयारकपर" समझे विकास है। इसके बाद महामाराने दुन: उनके दिलाने कम कड़ी—"में भगवान् प्रकारती है, मुहाने पर कुटले कोई बाद वहीं उनकाय होती। मैंने ही महस्तवाय करक बाद तुम्मनेकोंको इस संबद्धने बताया है। अन मनुको करिने कि नेक्स, अधून और मनुका आहे समझ प्रवासी, तम स्वेकोंकी और समझन प्रवासी प्रदि कोंगे। और नेरी कुटले अध्यक्ती प्रदेश करते समन हमें येस नहीं होगा।"

कं बक्रकर कं बहुमहार अन्तर्धन हो गया। इसके बाद कंश पनुत्ती पृष्टि करनेकी इक्षा हुई से उन्होंने बहुद मही अन्तर्थ कर्का हाकि जार की, उसके बाद सृष्टि आरम्प की। किर से से बादे कार्यके सम्बन्ध प्रचा सरमा बाते लगे। वृत्तिहर | इस जार्थन तुमको बहु मसक्या प्राचीन कार्यकान सुनाया है।

# श्रीकृष्णकी पहिमा और सहस्रयुगके अन्तमें होनेवाले प्रलयका वर्णन

केल्युकार्थ कर्त है—क्लोककार सुरनेक कार | बाँगितिको पतः पनिका पार्वक्योकशीले स्था, 'बाजूने ! अपन्दे प्रमार-प्रमार क्योंके अन्तरने क्रेनेक्स अनेको महाज्ञान देशे हैं। इस संसारमें अपने इसार पार्ट अवस्थात करा कोई विकास में जो देत । जन सम्बद्ध राज्यको प्रारंको जिल्ला है पराकेको आस्त्रो महिनाना कांत्र पान होता है। उपनो स्थानी स्थानीकांत्र कारपूर्व प्रश्निकारको कविकास बोलाई सामग्रे क्रमान कर वेशन और सन्त्राले प्रत में वेल्नविक्रय विकास किया प्रकार का अने की बाद सामानात किया है। प्रतिनिन्दे समानो प्राप्तेकाली पृथ् और समाने प्रतिनाने क्रीन स्वा कृतेन क्योजाती कुछुकान आवस सार्थ की कृती । बहुद्राराजेंद्र समय कर पूर्व, आहे, बाबू, कका, अवस्थि, पूर्णी आदियों कोई भी केंच नहीं सुता, सारे लेख जानात है उसे हैं, प्रायर, पेना, देवा, अपूर, वर्ग आदे करियाँ यह हो जाते हैं, का प्रमुख प्रकृतकार क्षेत्रिकारे वर्णकृतिक teriffe un mer ben me & bent wit b: विकास ! यह प्रात्त पूर्वप्रतानिक प्रतिकृति आसंके प्रात्तक केवल हुआ है, अनेकी बार अनुकार विकार हुआ है। संस्कृत रहेकोने कोई ऐसी कहा नहीं है, को सरकारे जान न हो। सके में कारते सारी पृथिक बारवारे सामान स्वानेवारी कार स्तरा भारत है।"

क्षेत्रोच्ये केरे-पासर् । ये सरवाद करवान् स्थानके गमस्तार करके तुन्दें का कंक कुनता है। वे के इनलेनोंके थात केंद्र पूर पीतान्यरवारी जनाईन (श्रीकृष्ण) है, में ही इस प्रेरवरको स्त्री। और संक्रम करनेको हैं। वे से क्रमकर प्रमाण प्रशेषि अन्तर्मानी और प्रमोत स्थापित है। ये पराव प्रतिक, अधिका को अध्यक्तिक तथा है। में प्रकार कर्ता है, कृतका कोई कर्ता की है। पुरुषकेंकी प्राहिते की से है कारण है। के अन्तर्वाकीमध्ये समयो अन्तरे हैं, इसे के की की पानो। समूर्व अल्ब्स जल हे कोन्डे म्हलू हा जारिका कार्यक्रमें है का समूर्व जार्जनक कार्य **इन्द्रकार्क समान पुरः तत्व्य है बात है।** 

बार हमार किया क्योंका एक कार्यपुर कारण गया है, करने हैं (बहुर) से वर्ग करवी समय और सम्बंधके हेरे है। इस अबार कुल सकारपैस से दिन्य वर्ग समयुगीर है। हींग इसार दिला करोंका नेवाका होता है, क्या केर-केर हो दिश को सामी सम्बद्ध और सम्बद्धकों केरे हैं। का जनार

इसर दिला वर्ग है तक करने हो (ये) भी दिला वर्ग जाती क्या और सम्बद्धकों हैं. जन: एवं विस्तार कैवीस सी हैक को क्रमके है। करियाका बार है एक हमा हिना करें। उसकी समाह और प्रकारिको यान भी सी-सी दिवा कर्र हैं । कुछ प्रकार कार्रकार कार्य भी दिव्य क्येंका होता है । करित्युक्ते औषा हे व्यक्तिर पुतः सत्त्रवृतका आरम्य होता है। इस प्रकार करड़ कमर दिन्स करोंकी इस कार्यमें केती 🖟। क्य प्रमार कर्जुन चीलनेवर प्रकारत एक दिन होता है : का करा करा, सहको दिनपर रहता है, देश समाज होते ही m it wer it seiner ver female went wart fie

व्यक्तपुर्वादी प्रवासिते का बोदा-ता है सम्ब हेव के बात है, जा सबस कॉल्युनके अलिए धारामें प्राप: सामी क्रूप विकासको हो जाते है। प्राह्मण स्ट्रॉनेंड वर्ग करते हैं. क्क बैरनोधी पानि का प्रांत्य करने राजने हैं अध्यक्त अधिकोहे कारोंने परिवाद परवारे रामाने हैं। अक्रम प्या. कार्यात एक और पुरुवर्ग आदिया लग कर केरे हैं. कार्याच्याच्या विचार होड प्राणी कर प्रश्नम करते हैं सक काले कुर चलाते हैं और दक्ष प्राथमिक कालने अध्याने हैं।

का प्रकार का स्वेनोंके दिवान और व्यवकार विवरीत के करे है से प्रत्यका पूर्वका आत्म है जात है। पूर्वका क्षेत्रकेक एक है जात है। भारत पानी और जासनाबी कार्य, इसा, बुरिन्स, कार्य तथा आधीर वातियोक होत राम होते है। प्राप्तान, व्यक्ति और वैतन-सर्वे अपने-अपने वर्ग स्थानकर काने कंत्रीकि कर्म काने सन्ते हैं। स्वाची कार, कर, बीर्व और कारान कर बाते हैं। करून नहें काले होने सनते हैं; उनकी बातबीतमें क्रमका अंच बहुत कुन होता है। इस स्वयन्त्री कियाँ भी नारे सन्त्रशानी और सहार क्ये कि वास्तेकानी होती हैं। उसमें सीता और सहस्रत को पर साथ । जीव-जीवों अस विवारे राजता है. स्क्रम्थ के बेक्ने हैं, कियाँ केश्वादति काने लगती है। जीवे शहर पान कुन हेती है। कुछोरों पुरत-धरत पहुत पान सनते हैं। क्या अन्ते प्रक्रियोक्ते काले अभिन्यतर स्त्रीए ही क्यांच 神龍

व्यापनीय सेपाय पाली स्थानोते में हरिया की है करे बर्वक क्षेत्र रक्ते हैं, विकार परित्वेके काले दसी दिकारोंने कुर-कुर्बार जोते करते हैं। गुरुव भी अपने स्वर रेक्सका पान कर नामेंसे हमा-क्या चोचे करते विस्ते हैं। म्बाल कृतिकेश के बनावर केरलांको वीविका करते न्य पुरा प्रतीत सी हिमा क्योंका होता है। हावकार कर से 📲 तथा करिय की और गुरासीके साथ करियार करते हैं। किस्से सरीरमें कंस और रख को, उन संविक्त करवेंको है सारी है—पूर्वत होनेके अबसे उस और क्यासका कर नहीं होते। उस समय न तो प्रकार क्यां होती है और न केने हुए कीम ही सीम तपाने करते हैं। स्वेक्त क्यासी त्रीक-नम्बे सामाद करते हैं क्या क्यासरी कहे करती होते हैं। स्वाप् । कोई पूछन विश्वास कर करोड़कों रेशिने उसके कहें कर इससे हैं से पानी निर्माण अवकी सरोड़कों पूछन करोड़क प्रकार करते हैं और असने यह के हैं कि 'इससे कई हुकार कुछ की कों है।'

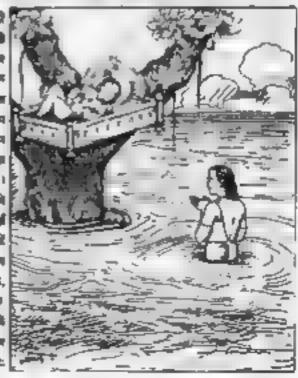
प्राणी है। यह पुनरंपर क्रिक्ट के उपने प्राणक क्रिक्ट व्यक्त क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्र

सम्पूर्ण सोक्ष्में केल कार्य है। इस्तीया थेसन कर मा आहि सारामकान्ये कूंच कार्य है। इस्तो केच्या, इत्तम और कार्यको कहन्द् सम केस हो कार्य है। यह नागरवेकान्ये कार्यकर इस कृत्योंके जीवे को कुछ की है, यह सकती कार्यकों का कर होते हैं। इसके कार्यकार्यकारी कार्य और का करि केच्या, असूर, शक्तां, कहा, सर्थ, राहस अधिने कुछ समस्य किसको है कार्यकर कार्य कर हारते हैं।

किया अवस्थाने नेकोको करकोर कर विष अवसे हैं। विकास कोको समाने हैं और परंकार गर्मक होती है। का करन हान्ये वर्ष होती है कि या जनामक नामि सामा हो करते हैं। में के का का परंकार कर्य करते हमें हैं। इससे समुद्र गर्मात कोई हों हैं, परंत कर करते हैं और पृथ्वे कराने हुए कार्य हैं। करहान्य करते हैं केने आरावने हैं स्वराध्यय में मेन की नह है करते हैं। इसके का प्रकार करते हैं। इस करना केका अवह, मह, पहल तक सम्ब कराने हैं। इस कार्य केका, अबह, मह, पहल तक सम्ब कराने की का है कहा है कारत है। केवा में है का प्रकार करते हैं। हो स्वराधित करेड़े करता हुआ हका हका-अवस करवार

## मार्कप्रेयद्वारा बालमुकुन्दका दर्जन और उनकी महिमाका वर्णन

🐃 प्राचीनोत्तरी काले हिं—प्राच्या पुनिर्द्धित । एक प्रान्तवारी 💯 शत है, यह में प्रधानिकों करती प्रधानकार्यांच यही क्रिक्स केवा-नेतर कहा हुए सत्वार क्षक गण से निस्तान लि-एक्का कोई भी सहारा न का शतक किसी एका उस क्षान्य जल्माहिये मेरी एक बढ़ा सुन्दर और विकास कर कुछ देशा। जानी चौड़ी कासान्त एक नकनीनका प्रमाणकार पात्रका केल का। सामा एक कारान्के सावन क्षेपार और प्राथमक समाप केरोको आरम्प केरेनास स तथा अस्त्री अभि दिल्हे हुए कमान्के कवार निकास भी। राजर्। जो देसका पुत्रे कहा अवहर्य हुन्छ। स्टेबने हर्मा-सार्थ संस्तर से ग्रह हो नगर, केर का बाक्स की **पै**से को रहा है। में पूछ, चरिन्य और व्यंकर—कीचे कारोबा प्रका 🖟 से थी अपने क्लेम्बारे कर्मचीं 🖛 । सर्वानेक भी उस नात्रकारों न जान स्वतः। इस व्या नात्रक. विभागों अस्ति-पृथ्ये स्थान प्रवासपुरक कारिय को और विराजे बाहाराज्यस बीकाई प्रोध्य या एवं वर, मेरे बाउनेके अनुस ओल्या सूचा-स चोला, 'बार्य-केव र में कारत है बुन म्बून क्या गरे हे और जिल्ला सेनेक्ट इन्द्रम करते हे । अतः



है पूर्व ! हरकर कृष्य करके में यह निकार ने पर है है

ज्ञा व्यक्तकोर ऐस्त बहुनेपर पुत्रो जपने ऐसं जीवन और मनुष्पार्वारका बहा सेन् कुछ । ५०%की व करावने अवन हेड फेलाना और क्रियोगरों में परवक्ती गाँदि करने उनेह कर गया, स्थान करके काने वा बात । बाते पूर्व समय पाते और नगरेंसे चरी कुँ यह पूजी दिश्यक्ष है। की उनने पहल बसुना, कन्नवरण, करवली, सिन्यू, कांक्र और कालेप्टे आहे. रहिलोको भी देशह क्या को और मरसमूकोरी गए हमा समूह, दुर्व और कहाराते छोप्तकरूप आधान क्या कृष्टीवर अनेवी कर-कारर में देवे। मार्ट की वर्णकर-करिक प्रवासन् नेतरने होते देखा। प्रक्रमण्डीन सरोबी प्रवेदान क्षम कर रहे थे, अधिक राज्य प्रत्य क्षमीची जनस्य अनुस्तान करो—सबको सुबी और जन्म रंकने थे, केन्सकेन न्यानकृषेक क्षेत्रीया गान और न्यायर कर के में और का वीनो क्रिमारियोको सेनामै संस्तर थे। स्थानक एक पहल्लाके अर्थ प्रमा कता हार का समे का से वेनक, क्रेस्क्ट, रिक्स, केलरेवर, मध्यक्तक, मन्द्राच्यक, बीरवरिवर, An, ferment, sern, seffente soft fineb 40 unte 2. क्रम को दिशानी यहे। वहीं हमर-क्रम निकर्त-निकर्त की इन्होंदे हेकर, यह, साहित्र, यह, अदिनोद्धारर, परवर्ग, क्षा, स्त्रीर तथा देश और क्रमोंके क्रमुरेको भी देश। केवरियम कहें, इस पृथ्वीयर को कुछ भी बराबर अन्तर् मेरे देखनेने सामा था, तम इस करनाके आर्थ पूर्व देखा पह । मैं इतिहित परस्कृत करता और कुरता रहता। इस अकार से क्षेत्रम विकास रहा, विक् क्रमी आहे हरीरका अन्य न किया करते की पर-पानी का कारण हैना कारकारी ही प्रत्य सी। यह, प्रकार उसने अंगण पुस फोला और मैं कपूके क्यान केन्द्रों अवस्थान अनके पुरस्ते बाहर का गया। देशा से यह अभिन हेमारी बालक प्रशंकीको प्रति जो निकारो जनने जारमें रजाकर करी बरम्बन्धी प्रास्तागर विराधाना है। पुत्रे वेसावर सा प्रकारितको पेरामरकारी कारको अस्य होका क्र मुसकारो कुर कहा, "कर्कनोम । वै युक्ता है, तुसने मेरे कर इसीरमें क्रम किसान से कर रिव्य है थ ? तुन बन्दे-से कर पक्ते से ।'

का अवस्थित हेकाचे सामध्येत आणि प्रचानको हेराबार की अन्ते साल-साल उत्तानों और कोनल जैनुदिन्तेने सुत्रोपित दोन्डे सुन्त करणेन्डे मताबसे कुमानद प्रत्या किया। जिस विकास तथा और अध्यक्षित जाने पस सावार वहा सर्वपृद्धानाराम् वायरमञ्जन पंगवन्ति दर्वन

विको और काले कहते एका, 'यावका । वैने आयोह सरीसके भीता अनेता काने, को सन्ता करकर करन, देश्य है। जबों ! बनकों हो, अध्य इस निराद निकासे इस जनार कारो सरम कर को सारक-रोजों को निरुपमार है? कार क्षेत्रम अवनेद जारने विद्यानिके विका है ? बावाना कर का करने को सेने ?"

per sum नेते अर्थन सरकर में मरावरोंने केंद्र रेक्ट्रेय क्लंबर को सम्बन्ध देते हर केले-विकास 1 देताव की बेरे क्रमाओं तीम-दीम भी मन्ते; उपारे प्रेमपे में लिए क्रमा कर बनवुओं रक्षण करता है, ज्य मताता है। दुस विकास है, क्राने महान प्रकृतकोवा भारत किया है, इसके हिला, हुए नेरी करणमें भी अपने हें । इसीसे हुन्हें मेरे इस कारकार करेंग हुआ है। पूर्वकारों की हो करकर 'नारा' का रक्षा कः का 'नाव' नेता अवन (भारतकार) है, इस्तिको में जारांका पानले विकास है। में सबकी समित्रक कारण, कमान और अधिनाती है। क्रमूर्ण क्रोमी सुद्धि और हेक्स कारेकात में ही हैं। बंबा सहा, किया, देख क्रमेर, डिल, मेन, अंश्वी फान्य, सता, निवास और (日本年前年)

आहे केरा पूर्व है, पूर्वी बरन है, क्यान और पूर्व के है, कुलेक केर कराय है, जानाम और दिसाई में बाल है। का बात के जारिके फरिनेते हकट हुआ है। कर्य के बनके हिन्तु है। पूर्वकृतने कृती का पतने का नहीं थे, से पैरे है श्रामुख्य बारा करते हो भागे बहा निवास था। कारण केंद्र पूर्व, अहींना केनी चुनाई, विरंप पता और पहां क्रम है। क्रुनेट, क्रमनेट, क्रमनेट और अवस्थित—मे कुरचे ही जनर होने और जानों ही जीन हो पत्ती हैं। क्राविकारी प्रस्ताती पात और प्रतिकारियर संचय कारनेवाले विकास की। और केंद्र स्थान कोई मेरा है स्थान एवं उपलब्ध कतो है। अवस्थानके तारे मेरे बेमकन है। समूह और व्यर्धे किवारी मेरे कहा, कुन्छ और निस्तार-पन्सि है।

वर्णनेत्रेष ! किन क्रमेंकि स्वत्यस्त्रो स्थ्यमधे प्राच्याची अहे हेरी है, ये है—सब, घर, पर और अधितः। विकास सम्बद्ध प्रधानमे वेद्येच्य समस्यान और अनेको प्रकारक का बनके साराधित हो स्रोपसूच होका कुते ही आह करते हैं। करी, लेकी, कुराय, करायें और अभिनेत्रिय पुरसोको में कभी भूति नित्त सकता । सार-कार करेको स्थान कोन सम्पर्धका प्रस्तान होता है, सकतान में क्रमान करन करन है। द्वितने देन स्कोनको देन और कुरून कहार जब इस संस्तरने करते क्षेत्रर अस्तरका काहे है और देवता भी उनका क्या नहीं कर पारे, उस समय में एक्यानोदे पार्च अवदार लेकर रहा अस्त्रकारियोच्य संसर मारात है। देवता, महत्व, गर्मको, राज, राह्मर स्वर्धि प्राप्तिको तमा स्थापर धुरोको भी मैं जरूरी प्रचारो हो रसात है और मानको ही अल्बा संकार करता है। में सुद्धि-रक्तकोर प्रकृत अधिका संस्था कारण करता है और कार्यक्रमी स्थापन कार प्रकृति हैं के पार्य करें सो अवकर लेक है। सावपूर्ण के कर्ष हैं।, केवरें पीका, हमसें काक और व्यक्तिपूर्ण कुछ क्षेत्र है। करियों बार्वका एक ही बाद क्षेत्र कु बाता है और अवस्थि होन चान को है। यह बन्यूका विकासकार अनीमा होता है, तम महास्थान भागतमा होता में अनेता हैं जाना-नंतम सन्तर्न डिस्टेन्डेन्डे ना का है। है।

में सरम्, पर्वनातम, अन्त्य, प्रतिक्रोचा प्राप्ते और महान् परकार्य है। यह से तम कुरोस्ट संहर कानेसंहर और कामो अनेपारीस कारोबास निकास सामग्रह है, कृतका स्वात्रक में है काता है। हे पुनिवेद । ऐसा नेव कारत है। में अधूनी स्थितनोधेंद्र औरत हैंकर है, सिंह पूर्व कोर्ड को अन्तर । मैं कहा, बार, कर शरण करोकार विद्याल नारायन है। इस्कार्यको अन्तरे में उत्तर होता है, अस्ये कर्न ही सम्पन्नक क्रम अधिकोच्छे चेहित कर्ना सत्त्रे कार करता है। पार्टी में कारफ नहें है, जिस के कारफ बाद मही भागत सारक पालकान करने करने कई दाव है। विकार । इस ज्यार की हरते अन्ये सर्वकार प्रकेश किया है, विश्वको चारण देखा और अनुसेंद्र किने को

। बर्धिन है। बार्कक क्वार महाया समस्य न हे, सारक हुन सन्ता और विकासमूर्वक सुराते निकार्य को। अहाने कानेन में उसी एवंद्रिया क्षेत्रर आवश्य, वाय, देश, कर और प्रजीको एक अन्य परकर प्रकेशों की बाँह क्रांग्य ।

वर्षिक्षर । यह व्यक्तर वे परण सर्वात प्रत्यान् कार्युक्त अवकार है को। इस प्रकार की सहस्रकृति जनमें का आवर्षभन्त जनमन्त्रील देशों हो । कर सहस किन करवारताल जुड़े रहीन हता था, वे तुन्हों इन्याओं क्षेत्रमान्य में हैं है। इन्हेंने परान्ये मेरे प्रस्काति कार्य क्रील नहीं होती, अरुषु राज्यों हे राज्ये है और पूर्व मेरे कार्षे कारी है। ये पूर्वकर्षकर्म अवस हुए औक्तान कारावारे पुरस्कृत प्राच्या है। इसके स्थान स्थित है, से धे थे कारों सकते सोला करते हरूनों क्षेत्र को है। ये हे हर विकासी प्रदेश करना और संबंध कारोबाले प्रशासन पुरुष है। prie merent etremen fest fil it riftig fi क्रमानीओंक भी भी है। हो नहीं नहीं देशका पूर्व कर प्राथमी लागे हैं। सामने हैं। प्राप्त है है के प्राप्त है अपने नियं-पात है, इस इसीबी प्राप्तने करते, ये है काफो gen frant fi

केन्द्रपार्थ करते हैं—असंस्थेत सुनिये इस अनुस कारेंकर युक्तिकेर, भीता, अस्तेत, त्याता, व्यक्ति और केची—कर्म शासर सरसार, तीकृत्यको असम विका और मध्याको भी उनका आहर करते हुए अवस्थान दिया।

#### कलियमं और कन्कि-अवसार

कुषितिरने उपर्यक्त कथा सुनकर पुरः वर्णान्येकविते वक्त चार्ग्य । आपसे मेंने उरस्ति और प्रस्तानी आक्रांतनी करा सुरी। तक मुझे परिन्युरके जिल्लाने सुरवेका स्वीतुस्त हो क्षा है। वर्तमाँ का समूर्य वर्षोद्ध कोई है सकत. सामे कर कर होगा ? करिएको भूत्वोदे करहार कैसे होने ? करके अवहार-निवहरका करका बच्च होना ? स्त्रेगोच्ये बायु विराण क्षेत्री? स्वाबने केले क्षेत्रे? करियुगके किस सीमासक पहुँकोमार कुट सामकृत आरख ही परकार ? मुनियर ! इन क्या कालोको आप विकासके पान नामने: अनेकि जानेक स्कोक के सह है। Briter it i

क्कानेते एक बाने हमें—कार् । सारिताल आनेपा इस क्यांच महिला केला हेन्स-इस विकास देने केल सुना और सनुराम विका 🐧 🐠 सम हुन्हें महारा 🔓 काल देखा सुवे : कार्युक्तें कर्व अपने प्रमूर्वकाने प्रतिकृत होता है: जानें करा, करार मा का नहीं केया । का समा का सर्वकरी क्रमके कर्षे धरम मौजूर को हैं। वेशकुरायें इक अंसपें अवर्ग जनक के जन्म केन हैं, इसने बर्मबर क्या के होन हो प्राप्ता है, फिर क्षेत्र ही पैतेरों का निवस पाता है। सपरमें को अन्य है क नात है, आयेथे अवर्ग आकर दिए जात है। फिर क्योजन करिन्तुओं आनेपा कीन अंशोंने इस नगरन अवर्थका जाहरूमा होता है, बोबाई अंतरों है वर्ष मुक्तिके हर अवट कुनेस पर्वकेको औवन और 🎉 क्या है। साम्युक्ते बाद को-को दूसरा कुन शता है

होत् होता जाता है। पुनिश्चेत । करिन्यूनों सहाज, हरिन, देशा और क्यून्नाओं करिनोंक सोन चीवर काट रक्तात पर्यक्ष आवरण करेंगे। प्यूक्त करिन्यूनों साहज सकत होगोको अवसी देशावेंगे। अवसेको विकार कारनेकारे लोग सकता महा घोटेंगे। एताको हानि होगोर करवी अल्यू कोड़ी हो बावनी। अञ्चली सामेके कारक वे पूर्ण विकारण अवसीर नहीं कर एतेंगे। विवादीन होगेरे अवसी अनुवादेको लोग इस लेगा। एकेच और क्षेत्रको करविष्टा हुए कुछ कुछा सहस्ताओं सामक होगे। हानो समे अन्यत्वे के क्षेत्रक, दिए के एक-पुरोगेंड साम सेनेकी कारके सम्मान होगे। सामान, इतिय, केस-न्यो आध्यान करवा करित्र हो कारका। में समी एए और सम्बद्ध वरित्याम करके हालो समान हो कार्यन।

करियाको समाने संस्तरको देशी है एक होती। बसोवें प्रत्येत को इस कहा अच्छे अपने सामित सामित कोडोकी प्रशंसा होती। यह सभय कुलोकी केवल विकोध रिकार क्षेत्री । जोग स्वासी-मांस कार्यंगे और स्वारी-पेडस क्ष्म नियोगे। गोओका से कांग शर्मण हो कारणा। स्टेन इस-कारोको लहेंगे, जारेने । धनकानका कोई कम नहीं नेगा। सभी नामिका और चौर होंगे। बहाओंके अन्यको मेरी-वारी क्ये केंग्र के सावनी: लेन बद्धानों केंग्रहर परिकास करार अनाम कोमेंगे, उनमें भी पाल महत भाग विलेख । श्राह्मकानेन प्रत-निवर्णका पासन से करेने नहीं, कारे बेकेकी रिच्छ करने सर्गेने; कुन्क सर्वनाएने जेकित होपार में पालीय तल पान प्रोप देंगे। लोग गांची और एक प्रातनेत बहारोपैत बाबोपर युवन शास्त्रत हराने ओरोपै । और कार होगा 'अर्थ प्रकारिक' कांग्रस्ट गाउँ समागत करेंगे, प्रशामि कन्त्रमें कोई भी उनकी निम्ह नहीं कोना। कारा क्षात मोत्रांका पर्वात क्षेत्र, स्ववर्ग और यह आविक कोई कुछ भी र हेगा। समझ विच अवन्यक्रीत, अक्षेत्रकृष ही जावगा। लोग प्रायः सैनी, अस्त्राची और विकासकीया बन पर लेने। ब्रक्तिकारेंग हो बनाहों हैंको बनेट बन पार्वेदे। सार और अवंध्यपने वह रहेने। असबी रक के करिने जारें, उससे काने बेटनेके दिन्ने लोग जरिनक रहेंने। एक बहुत्वनेवारे लेगोंको रिप्त प्रमानो तब हेरेवा क्षेत्र होगा। स्टेन हरने निर्देश हो कार्यने कि समान पुरानेतर भी अध्यापन करके उनके पन और चौचार क्रप्यासे उनकेन करेंगे। इसे रोते-विकासने रेक्सर भी दश नहीं असेनी। न हो कोई किसीसे कमानदे कावन करेना और 7 कोई क्र-बाह्म ही कोंने। कारियुमके पर-क्रमा समी-साथ ही इसकर कर होने। इस सम्बद्ध पूर्ण और असंतोषी समा सम इसके इसके पूर्ण - अपने एमे-सम्बद्ध ही सम्बद्धिको हम्म इसके हुटेया--अपने एमे-सम्बद्ध ही सम्बद्धिको हम्म इसकेको हो कर्मने। इसक्त, श्रीम और मैक्नेया कर पी वह असमा। एक एक मानिके हो कर्मने। पहास्त्रकारका निवार कोइकर पन सोग एक-सा ही असूस इसके कर्म और प्रिकारको स्थान महिन्दर समेगे।

अस्तु और वर्गन का नायमा । य कोई मिनीमर्ग क्रमेश पुनेना और य कोई मिनीमा पूर होया । वस स्वानमें पूरे पोने । का प्रथम प्रमुक्ता अधिक-मे-अधिक अस्य ग्रीत्स वर्गनी होती । पीन-हीं कः वर्गनी कार्ने क्रमार्ट् गर्मनी होतार प्रथम क्रमेश वर्गनी । क्राय-अस्य वर्गनी स्वानार्ट पूरम की-अस्य क्रमेश क्रमेश ग्रीत्मी । क्राय-अस्य वर्गनी । अस्य प्रतिने वर्ग और अस्यो क्रमेर यह प्रमुक्त वर्गने --वेर्ग ही असूत क्रमार प्रयुक्त और सरकीका श्रीका क्रमेरे ।

व्यापार्थ प्राप-निवासको समय स्वेतको प्रशास स्वयो कारको उनेथे। बैदरानों स्थानको व परावकार की उसे कारनेथे इक्ट होने । सभी सामान्यः कर और एक-इस्टेंबर अधिकोन राज्यकेकारे केरे । श्रेण वर्गाचे और यह कारण करिये, प्रस्के रिक्ते अन्तेः प्रदूजी सरिवा भी गीवा न होगी । सर्वेक क्ष्मको क्षेत्रकर यो सींह हे जनगा। सोधी प्रतुत्त अक्टानोकी क्रम करने अस्त का ब्रोजकर मोर्गेने । सुरोते विकेश हुए दिन पान्ती प्रकारतर मान्ने स्त्रीने । इसाने हुए स्वाप्ता को और कांग्रेक आलय होने। हह समामोदे कारण प्रमा समीव देवलांड भारी भारते वर्षा क्षेत्रे र प्राप वर्तका अलेक करेंचे और प्रकार उसकी लेकमें खेंचे, उसके उन्हेंजोको जन्मकिक करावेते। समक्ष स्वेकका संस्कार क्रियोंच और अन्त-पुरुद हे अन्त्या । लोग हो बडी ही केवरोको एका करेने, देवपूर्तिकेकी नहीं । अहा समर्थार प्रश क्रिक्रीकोची केक नहीं कोंने । महर्विकेंक्र आसार, स्वाक्रीके पर, केम्बार, प्रमंतमा असी सभी माधीकी पूर्वि इतिमाँसे बर्ध को होगी । रेक्स्पिए कही जो होये । वही एक प्रश्नासकी प्रकार है। किस समय अधिकांत प्रत्य वर्धीन, यंसकोबी और प्रसुख कैनेकाले होंने, जली संबंध इस कुराबा अन्य होना र का सका किस समयको वर्ष होती। फिन्म एसमीका अवस्था करेंगे, यह अस्था अहित करेंगे। आसार्थ बन्हीन केरे. उन्हें विक्रकेटी परस्कर समग्री पहेगी। बनके शासकी है कि और प्रधानी अपने निवाद सेंथे।

कुरान्द्र आनेवर समझ अभिन्येक्ट अन्यन हे स्वयन्त्र । क्रेस्टरकी नही अन्यत्र होती। वह समय एक नार इस सरी दिवार्षे प्रजारिक हे हरेगी। करोबी क्या करी सोनी। उक्का और महोन्ही गृधि किसीन हो जनमें। श्रेनीको बराइल करनेकाम प्रकल अर्थिको और्थ, बहुन, भगवी सुबन्द हेरेवाले उत्पासन्त अनेको का होने। एक सर्व हो है हो, कः और सहय होने और सहये एक प्राय करेने । माज्ञानी को विकास गिरंगी, राज विकासोंने आप राजेगी। महर और असके समय दुर्ग प्रदूषे मदाना सेन योगा। इन्ह किन प्रत्यको हो वर्षा करेना । बोधी क्रू सेली उनेनी ही नहीं। विका करोर संस्थानाओं और सहधारियों होती। उन्हें तेया है अधिक फांट क्षेत्र । वे प्रतिकी असाने नहीं क्षेत्री । पुर गामा-विकास अना करेगा । पानी अपने बेटेसे विस्तार परिचा कर कर करेगी। अन्यवसाधि निया क्रे प्रवंत्राक लोगा। परिवरंको गाँउनेस वर्डी उत्तर, सह व क्रियां के किये काल नहीं क्रियेगा; वे क्रम ओको कोरा क्रमक पाकर निरुक्त है। राक्षीयर ही पढ़े खेरों । कीए, हाथी, पह, पती और पून आहे युगायके समय नहीं करोर जाने कोलेंगे। प्रमुख नियो, सम्बन्धियों तथा अर्थने प्रदानके कोनोको भी मान है। इन्हेंस मानवार परदेशका आश्रम हेते। प्रथी लोग 'प्र तल । प्र बेट ।' इत उच्चम वॉन्टें कुकार प्रवासे हुए कुरस्काओं कामने मेहरेने। कुरुकारे

रवेकक संस्था सेवा।

प्राचे पहार करणवारी संस्कृतका आग्न होता, करतः प्रकृत अभि वर्ग प्रतिकासी होंगे। लोकके अञ्चलको सिन्ने पुर: वैज्ञारी अनुबुक्ता क्षेत्री । पन: सुर्व, कत्तक और सुकारी एक है एर्डिने — एक है एक नक्षत्रम कार होते. के साम समयाना प्रसम्ब होगा । फिर से नेप क्रमंदर करी काक्रमेंने । नक्रमेंने क्रेम का मानगा । महीकी नों अन्यक्षा है अन्यने । सन्या पहल हेना राज स्थित जोर अलेक्स विकास होता ।

क करन बराबर्ध देखाने क्रमान पास अपने अपने रियुक्त नामे हक्तारे वर्षे एक मानक तका हेना, जावर कर हेना कान्ये विज्ञानता। वह ब्यानकृत्या पहले हैं कारणा, स्टिकान, और सरकारी हेल । करते हार विचल चले हैं आहे पत उचारतार कार, अक-का, केंद्र और कारण कारियत है सामेरे । का कारणोदी केन साथ रेपार बंधारने सर्वत केने पूर मोन्होंका कहा कर अलेगा । जहें का ब्होंका नात करके सामानका प्रकार होता । धर्मीः अपूर्णा निवन प्राप्त पर क कार्या एक क्षेत्र और इस धन्दर्ग सामाने आगव असन करेना ।

## मार्ककंकवीका युधिष्ठिरके रिज्ये धर्मीपदेश

र्वेजनकारी साथे हैं—अभागत राज्य प्रविद्याने एक मर्क्यकारी पार, 'पूरे ! जवाचा पारम कर्त सन्द पूरे क्रिके वर्गका आवस्य करना करिये ? मेर्स व्यवहर और बर्ताव केरत हो, किरते में सम्बद्धे प्रकृत होते ?"

सर्वयोगर्थं गेले—तुम्बर् । तुम तम प्रामिक्वीय क्या करों । सकका हैश-सक्त करनेते रूपे रहे । विस्तिके गुजोरी रोच म देखों । स्वयं कार-भाषण करों । सम्बंध प्रति किनोत और कोमल को को। इतिलोको कार्य एको। इन्यापी रक्षाने प्रश्न स्थार पहे । वर्गका आवश्य और अवर्गका स्था मारो । केवताओं और विक्रोधी एवा करें। नहि अक्रमानोहे बाला क्रिकेट पाने विगति कोई सम्बद्ध है जान है को अच्छी ज़बार हानसे संतह बतके बहाने बन्ने । 'मैं सरका कामी हैं , ऐसे आंबारको कभी कर न जाने थे. क्य अपनेको साह वराजीन सम्बाते छो।"

तात चरित्रीत । की तुनों को बढ़ वर्ण नवाना है, उत्तरक क्तकारणें भी कर्ताव कर बतर करते से है और परिवर्त की प्रकार करने अवस्था है। तुने हो कर करून ही है: क्योंकि इस क्योंकर भूत वा अधिक देशा कुछ थी नहीं है, जो हुन्हें करा म हो। जीव्य कुरशंतने तुन्हरा क्षम प्रमा है। अनः मेरे इन्हें को कुछ बताया है जाना पर, क्रमी और क्रकी क्रमा को।

व्यवस्ति का -- क्रिकार । आयों को उपरेक्त दिया है, यह में। बारनेको महार और मनको बहुत हो दिन रहना है। पै प्रकारके अपनी अक्रम परन सम्बर्ध स्थे ( वर्णका मान केल हैं लोग और एवं आदिते; मेरे मनमें न क्षेत्र है. न प्रमा । इसी उक्तत किसीके प्रति उक्त का कारण भी आहें है। इस्तिने आपने में। हिन्दे जो कुछ भी करता की है. सम्बद्ध करून स्टॉन्स ।

र्वतन्त्रकार्यं वहतं है—इस प्रवार जनवन् प्रोक्तनाके रहीत सुरक्त क्याब तथा वर्ध अने ह्यू सची प्रति-महर्तिका वृद्धिका वर्तक्षेत्रकेन्द्रीके मुक्तके वर्तिकेत और कर्मा सम्बद्ध बहुद प्रसार हुए।

## इन्द्र और बक मुनिका संवाद

इसमें कर वर्णण पृथितियों अर्थनोंकांसे निवेदर किया— पुनिदर ! सुनवेषे अस्य है कि अब और सुरक्ष—में केवे पहारता विशेवति हैं और केवाय इन्हों इन्हों किया है। अतः में कहा और इन्हों स्वागनका कृतमा सुनव व्यक्ता है। असर उसका प्रकारत करोर कॉरिंग्ने।

मर्गन्देशको नेतं - एक समय केवल और अस्टोर्न वक् मारी संमाप कुमा, जसमें इन्ह विकासी हुए और उन्हें तीनो सोकोन्स स्वास्थ्य प्राप्त कुमा। उस समय सम्बन्धर कर्माच्यीत कर्म केनेके कारण नेतीनों उपन आवित्य होतों की। प्रमान्द्री कोई रोग नहीं होता का और प्राप्त कोग अपने कर्मने विका रहते थे। जनके हिए कई कैन्से बीत रहे थे।

इस विनयी बात है, देवराज इस जानी प्रवासो देवरनेके रिनो देशकायर कावार निकारे । वे पूर्व विद्याने सन्द्रको सनीय एक सुन्दर और सुवाद कारवार, जाई हरे-यर इक्षांको पेति सोचा दे रही थी, जाकासारे गीचे जारे जाई एक व्यूट सुन्दर जासक था, जाई कहा-ते पूरा और पत्नी विकासी पत्नो थे । कर रेपलीक जासको इससे बच्च पुन्निका दर्शन किया । क्या भी देवराच इससो देशकान पत्नों बच्चा सराह हुए और



उन्हें कैठनेको आसम केवर पाड, आर्थ एक पस-मूख आहिके इस उनका पूका—आसिका-सरकार किया। अव्यक्ति इस का पुनिसे इस प्रकार प्रक किया—'इह्नत् ! अव्यक्ति वह कृत स्वत्य वर्षको हो गयो। अपने अनुस्त्राते काव्यके, अधिक कामसक वर्षको हो गयो। अपने अनुस्त्राते कुन्न नेकार काव्य है ?'

काने कार—अधिक बनुवर्गके साथ दास्य पहला है, दिखा काधिनोंके का अनेसे इनके विचोधका हु-स्व पहले हुए जीवन जिलान बाल है और कभी-वर्ग्य दुह प्रमुख्येका स्तृत भी अस होक साथ है, किस्तीची प्रमुखोंक विन्ये इससे बनुवर और बच्च हु-स होगा ? अपनी आंखोंके सामने भी और कृतेकी कृत्य होती है, वाई-कन्यु और विशोधक सदाके दिन्ने विचोध हो साथ है। वीवन-निर्वाहके दिन्ने परार्थन होतार कृत्य बद्धा है, कृत्ये लोग विरावहर बारते हैं; इससे बनुवर हुन्स और क्या है क्याना है ?

(प्रति पूर्व —कृते । तस्य का कातृत्वे, विस्तीवी क्यूकोको सुक्त विस्त कारते हैं ?

कर्ण कह-- ये अपने परिवारों आर्थन काके पर्धे केवल साथ क्याबर काल है, मगर कुरनेके असीन नहीं है, को है सुक है। इसरेके सम्बने छैनता न दिसाकर अपने पाने पात और जान चेजन करना अका है, पांत हमोके का विरक्षार सहका जीतीय बीटा प्रकार साथ भी जाना न्हीं है। नहीं सायुक्तीया विकार है। नो दूसरेकर अन्न कृतन चाइन 🐍 चा कुनेकी माँति अध्यतनका दुख्या पाता 🛊 । आ. कुलका पुरस्कों केले कोजनको निराहत है। यो श्रेष्ट देख प्राप्त जनिकियो, युव-प्रामिको स्था विवरीको सर्पना सहके अर्थात्, वॉल्डेंक्ट्रेन करके क्षेत्र शह कर्न क्षेत्रन करता है, उससे बक्रमार पूजा और क्या हो समाता है ? इस ब्याचेद आहरी महम्बर परित्र और पहुर हुतरा कोई मोजन नहीं है। यो सह-जनिकियोको नियासन सन्तं पीक्षे परेजन करण है, उसके जनके जिल्ले करा जरिति जन्मक क्षेत्रन करता है, उसने हैं. हवार भी कोके कुलको कुल का बतायते होता है। तथा उसके हरा पुज्यकरकारों को पान हुए होते हैं. वे सम नह हो जाते हैं 🖅

इस सकार देववांक इन्य, और चक्र मुनिनें बहुव देखकः सारचीट राम उत्तम काम-कार्य होती रही । इसके पश्चार् मुनिनें पुरुषार इन्य कारने पतार सार्गालेकानो क्यो गर्व ।

# क्षत्रिय राजाओंका महस्व—सुद्धेत्र, शिक्षि और ययातिकी प्रशंसा

र्वज्ञायकार्यं कार्यं हैं—सहस्तर जन्मचेरे वार्यन्येनवीते बहा, 'मुनिवर ! अपने ब्रह्मजोची पर्ययः से मुख्यो, अस इस इतियोधे स्वरूपे विकास अपने सुन्य जन्मे हैं।'



वर्गानंतर्वते वदा---वन्ता कृते, जब वै व्यक्तिका प्रश्ना सुनातः है। कुनांत्री वृत्तिकोने एक सुनंत कन्न कन्न पूर् थे। एक दिर वे प्यक्तिका सार्वत करने पर्ने। जब वर्गीत कीट से एकोमें अपने एककेकी जोरते उन्होंने वर्गीतरपुष एक दिलिको रक्तर अस्ते हेला। निकट श्रूमेंकर वर दोनोंने अवस्थाने अनुसार एक-कुनोका सन्तान निक्तः पर्वत गूनामें अपनेतने करावर सम्बाधन एकाने दूसतेक दिसे एक नहीं ही क्रानेहींचे वहाँ नारहनी जा पहुँचे। उन्होंने पूजा—ंब्र्ड क्या कार है? दूस होनों एक-दूसरेका कर्न प्रशान क्यों हाई हो ?' वे बोले—'वर्ग अपनेते ब्यंब्रो दिया बाता है। इस दोनों को समान हैं कार: बोन विसंबर्ध मार्ग है ?

कः सुनकार करक्षीने दीन इस्तेक प्रो, विनका सारांस मा 🛏 भीता ! अपने साथ मोगलतामा मानि करनेकानेके दिन्ने कुर पहुंचा भी महेनार कर नाता है। कुरता बो 🐗 बरोके अंत है विकास है। परंतु साबु पुरून यूहोंके सर भी सामुख्या है जाति करता है फिर व्ह समाजि साथ सामहास्था कर्ताव कैसे नहीं करेगा ? अपने क्षेत्र एक कर किये हुए उपकारका कारत पहुंचा भी सीगुना करके कुछ १९७० है। देखकारोंने ही व्या उपचारक धान होता है. हेला कोई शिवन नहीं है। इस व्यक्तिस्कृत्यर राजा विभिन्न age हुन्हें अधिक अक्त है। मीन अक्तिवरके पशुप्तको हुए हेंबर पहले को, प्रतेको अवध्यक्तले जेते, हुस्को क्रमाने और सुरको आके न्यवहारने अपने बसमें बरे । आह हुन केनी है जार है; जल दूसपेटे एक के अधिक कार है, क्द कर्न क्षेत्र है।' ऐसा सहकर जन्मनी मीन हो नने। यह हुनका कुरुनंती राज सुतेत विभिन्नो अपनी दार्थी और कानों अननी अनंता करते हुए करे गर्ने। इस अन्तर क्रमानि एक विकित भाग अपने पुसरे यहा है।

अस एक कृति इतिथ राजावर महत्त्व पुणे। जुनके पुत एका कवाति कम राजािक्षणान्य विरावपान में, इन्हीं दिशी एक ब्रह्मण गुन्दविला देशेके दिन्ने पिका मांगनेको इकामी उनके पान शाकर बोला—'राजार् ! मैं गुनको दक्षिणा देशेके विश्ले अस्ति करके आना है, पिका माहता है। बंदरानी अधिकांक मनुष्ण वांगनेकालोही हेव करते हैं। अतः दुस्मी मुक्ता है कि क्या हम नेरी असीक्ष मक्ष है स्वारंगे ?'

हक नेते—में इस देवर अस्ता वस्ता स्त्री करत; के बहु देनेकेच है, उसकी देवर अपना पुत्त उपनार करता है। में इसे इस इसल प्रमा रंगकी गीर्ड देवा है, बनोंकि स्वयपुत्त करना करनेकांच आध्या पुत्ते कहा दिन है। समय करनेकांचर पुत्ते क्या नहीं होता और कोई मन इसमें देवर में उसके रिलो कमी प्रशासन भी नहीं करता।

्रेस कहका राजने ब्रह्मसको एक इसार गीएँ ही और अञ्चेत वह दान स्थितार विज्ञा।

#### राजा जिल्लिका चरित्र



शाकरने सरम्ब की कि प्रकोषर फरकार कार्करनके कुर राजा विविध्ये सामान्ये परेका करें। एवं अति स्वपूर्ण स्थ बनावर करन और इसने कम पत्नी होकर बोलके मिले काका केल किया। एक विशे अपने किया विकास के हुत् थे, कामूल रूपती चोवने या निया। यह देशकार राजाके पुरोदितने बद्धा—'राजन् । यह बज्दान सामके इस्ते अन्ते प्राण नवानेके तेन्ये अस्त्यते करवले काला है।"

समुद्राने भी कहा--व्यक्तराथ ! बाज नेवा बैका कर सह है, काले प्राचन जानरकांके प्रेंग्टे सामग्री करानी सामग्र है। बाइको में बाहर जॉ. स्त्री है मेरे एक बरीसो सुरव करिर क्रका दिल्या का । अन्य प्रान्तकाल होनेके करून जान ही भी करत है, में अवस्थी प्रत्य है, यूने सम्बाने । यूने (काषारी प्रवक्तिके; केहोबा सामान करके की अपन प्रतिर कृतिक विकास है, में संबंधी और निवेदिक है। स्वायानीक प्रतिकृत क्षणी कोई बात नहीं बाहत । ये सर्वक निर्माण और जिल्लाम है, जन: पूछे कामो इसमे व महे।

त्रम धन बंदर-एकर् ! अस इस कक्कारको रोकर के कापये विक व क्लें।

मार्ककेरचे नवरे हैं—मुक्तिए । एक राज्य वेकारकेरे | क्षेत्रक वाली केरके हैं, केले क्या कभी विसीने प्रशिक्ष पुरुषो सुने है ? मैं किस अधार पुर केरोका प्रस्ता समान जीवा मात करें ? को प्रमुख अपनी प्रत्यमें आने हुए कार्यात कारीको अन्ते स्थाने प्रथमे हे केत है, कार्के देशमें क्रकार अच्छी कर्य जी होते, अन्ते धेने ह्यू मीन नहीं क्यों और वह क्यों संबक्षेत्र क्या का अपनी रहा बहता है के उसे कोई पहला नहीं निस्ताः। जानदी संतान सन्तरनारे है पर वाले है, कार्क निक्तियों निक्तियाँ स्टोको स्थान नहीं जिल्ला । यह प्रमाने सानेवर बहुते रोके स्वेदन दिया कार है, इस अर्थर देखा अल्डे अंधर नक्का सहर करते हैं। इसरिको में प्रान्तकार कर हैना, वर काकुल नहीं हैगा। माना 🛚 क्रम पुर कार्य पहुर को अंतरने । क्रमूताओं से में मिन्सी नस्त जी है सकता। इस कायुरायों हैंग्रेड विश्व और यो पी इन्हर कि बार्व हे, यह बचाने; को मैं धूर्व बर्वना ।

कर केल-कर् । अन्त्री हानी स्थिते बांस सरकार हर क्रमानो परायन तेल्वे और क्रिक्ट भंत को, भी भूते क्षांक प्राप्ते । हेल्ट कार्यकर क्यूतावर्धी रहा हो एकती है।

का समाने अनमें क्रूपी बीचने नोत बंद्रवार को तरस्वार रका, सिन् पद कामूनके बरावा नहीं हुत्य । मिर कुरते नहर रका हो भी क्यानका हो प्रथम नहीं देह । इस प्रथात क्षापा: क्योंने कान्ये पानी अंगोध्ये मोन क्या-मारामा क्षेत्रक प्रकार, किर की क्ष्मूल है जारी दें। एक प्रकार कार्य 🛊 करायुक्त व्यक् गर्य । ऐसा बहुतो सम्बंध अन्तेह सम्बंध बीरक के देख की दूरत । यह देखकर कर केस कर — के नवी काकुनवी पक्ष ।" और वहीं सरकार हो गया।

अन क्या विक्री क्यूनर्स चेले---'क्योत । व्या साथ कीर ar ?' ककारो बहा, 'क बाव सकार हुए ने और मैं अपि है। एकर् । इस केरी एकरी समुद्रा रेकरेके रिन्ने नहीं आने वें। इसे में कारेंने के वह अपन पांत राज्याने कारका हिला है, हरके कारको में अपने अका मार देता है। पहाँकी क्यांका रेन एक्ट और सुन्धान से नामना तमा इससे नही वर्षेका एवं सुंबर पथा निकास्त्री होगी। तुम्हारी नेवाके इस विक्रके पारते एक पारती का अन्य होना, विक्रक नाम हेन्य क्लेक्सेना।'

का कारणात अधियेव करते भने । एवस विश्विते कोर्ड कुक ची चौनात, में दिने किया नहीं ऐसे से। एक बार राजाके वर्षकर्वेने उनसे पहल—'बहुराज । अपर किस हकासे ऐसा क्षा कारे हरे—में बाब और बाबार निवास बाद प्राप्त करते हैं ? जोन बाह्या भी दम करनेके बात है बाते हैं। क्या अस्य पद्म चाहते हैं ?'

तम थेटे—मही, मैं पताबी करणाते सामा ऐसाकि । रिपो देश नहीं करता । मोगोसी अभिनासको भी मही । अमंदर पुरानेंगे इस मार्गका सेमार वित्या है, साहः मेरा की महामको मै सान को कांग्य है—ऐसा सम्बन्धार ही मैं मह साम कुछ करता है।

सामुक्त किया मार्गते को हैं, वही जात है—वहीं सेककर की बुद्ध जान बचका है असान सेटी है।

नर्गच्येण्यं स्वयं है—इस अध्या प्यास्तय विशेषे व्यास्त्यं में न्यास्त है, इसरियं मेंने कुम्मे अस्ता क्यास्त् कर्मन विश्व है।

#### दानके लिये उत्तम पात्रका विचार और दानकी महिमा

गहराज पुषिति पूक्ति हिन्तुनिवर ! स्तुत्व विका अस्तरकार्ये शत्र हेरेसे इन्हानेकर्णे काकर सुक्त सोगक्ता है ? संबो क्षण आदि सुचक्रमोंकर चीग को विका अकरर आह होता है ?

वर्गभंत्रणं मोर्ग—(१) में पुन्नेय हैं, (१) में वर्गिय मोनन गरि मार्गन करते हैं (४) तम यो केवल अपने रिले ही गोनन करते हैं, देन्सा और अतिक्रियों अगेंग नहीं मार्ग—इन कर जन्मरने जनुन्नेया कम गर्न है। में मार्गन्य का गोनारा—अञ्चलते पुर: गुल्ल-अक्टबर्ग रहेंद्र शामा है, जनके दिया हुआ हान क्या अग्याको कामने हुए क्या हम कर्य है। इसी अग्या कीवा ब्युन, चीर, क्याल, विश्वासकी गुन, करते, कृततं, क्यालका, नेक्स किया सारोगारं, शुर्ति का करानेक्सो, आवादीय कर्यन, सुरक्ते की एवं वीरान्याको हिना हुआ हम की कर्य है। इस इन्तेयर कोई क्या नहीं होता। इसकि साम अग्याकाओं स्था अग्रास्त्रों कुम क्या क्यालनोत्रों ही हैने व्यक्ति ।

पुष्तिर कोले—हे कृते । सक्तम जिला विकेश कर्मका मारक करें, किससे ने कृत्योंको औं वार्रे और कर्म की बर कार्य ?

नार्वभावनी का—सहात्र वर, प्रथा, नार, होया. सार्वभाव और वेदाव्यक्ति हुए केदावी वेदाव्य निर्धांत कोई क्रमार प्रकेष हैं। सार्वभावेद केदावा कोई क्षाव्यक्ति हैं। सार्वभावेद केदावा कार्यके क्षाव कार्यके क्षाव कार्यके क्षाव कार्यके क्षाव कार्यके क्षाव कार्यके क्षाव कार्यके कार्यक कार्यक

जिन्नमें बाद निर्मा है जात है और निर्मा बाद प्रमानको जारे जमार नह कर देता है, जैसे अहि बाहुको जारा जानों है। जिलू है सम्बन् । अंगे, गूरे, बहिरे आहि जिन्मों प्रमाने करिंड कराया है, उनको बेहनापुर जारानके साथ आहों निकास है स्थाने हैं।

कृतिहर । अस में रूपे का बनाव है कि कैसे कारियारे का हैया काहिए। को सन्दर्भ सामान्त्र विद्वार हो और अन्त्रेको क्या कुलको सार्वेको प्रतित रकता हो, हेरो क्राक्रमको पान केन प्राधिने । अतिविध्योको कोचन देनेवह ची व्यक्त का प्राप्त है। उन्हें चीकन करानेसे अधिके विराप्त रिक्र होते हैं, जाना पंत्रीय को इतिनामा हका पार्ट और पुरुष एवं पहल पहलेले को नहीं होता। अतः तथे अभिनियोको कोलन क्षेत्र प्रश्नेका एक क्षेत्र प्रश्ना करना व्यक्ति । यो स्तेष दुस्ते अस्ते हुए अस्तिनिको वैर यो नेह सिनो करा, क्यानिक विशे क्षेत्रक, प्रोक्रमोर विशे अस और स्वारेत रिये कार के हैं, जो बच्चे करावते रात की साथ बार । समित्र केंद्रा का सामेरी मनुष्य निर्द्धांके प्राप क्रमेरे कुछ हो काम है। जार अपने एक समानी हाँ करिता में प्राप्तकारे कुन करनी पार्टिये । कुनवान प्राप्तान क्षेत्रिक हो, निरम अधिहोत्र कृत्या हो । दरिहारके प्रतरण निर्मे की और शांकि विस्ताल काने पाने हो तथा किसी अपन कोई उनकार न होना हो, हैसे खेगोंको ही गाँ जन करनी कार्यने, करवान्त्रेको नहीं । एक पात और वहन स्वारेको है । क्य ने एक है उन्हानको देने कादिने, बहुत-से प्राह्मणीको नहीं; क्योंकि एक ही मी मी महानेकों ही पनी तो वे उसे केवकर जरूरी परिषय और होंगे। दान की कई गाँ नहि केवी कारणे से वह बसाबों दीन पोबोसवाको हानि प्रोक्षांनी । में रचेन फेमेन बजा उठानेचे समर्थ बसमान बैस सहाराखी हान करते हैं, में हुए। और हेकारो युक्त होका करांकोकको को है। से बिहन प्रकारको पूर्व कर करते हैं, का व्यते हैं। आवानस्य पहण से समसे कावत है। गरि गरें ग्रेन-पुर्वेत पविषय काव-गरित, पूजा-गराता, श्रुवको वैदेने आवार विस्तानों पुढ़े 'क्या व्यति जा नित्त कावता है ?' और गरेंद्र उसे आवारताचा का भार दे से का मनुष्यको भी अव-ग्रावका है पुन्य विश्वक है, शृतने श्रीवक भी सीहा नहीं है। मंजार क ग्रावका है पुन्य विश्वक है, शृतने श्रीवक भी सीहा नहीं है। इस्तरिको पुनिश्चित । हुन अन्य प्रकारके दलोबी आवार काव ग्रावक सामन आयुत्त पुण्य और विस्ती ग्रावका नहीं है। मंजार कीही का अपनी श्रीतिके अनुसार प्राथमाओं जान आवारन कावता है।

वह उस पूज्यके जमानको जमानिजनेकाको जात होता है। केहेरे जातको जमानि कहा है, जमानी संकरण पान गया है। संकार कहान है और यहाँ समाने स्थित है। यहां है समझ कहान जाती जन्म होते हैं। इस जमार अब है इस वक्कीं केह है। को लोग अधिक कार्यमाने तासक मा चेहरे सुरुकते हैं, कमारी और कुई मामाते हैं, दूसरोंके क्रिके संबो कर्यकार्य हैवार करते हैं, जमारा दूप करते और सीडी कार्य कोरचे हैं, अहें कारायकी कार भी मूर्ग कुरुकी कार्य ।

# थमलोकका मार्ग और वहाँ इस लोकमें किये हुए दानका उपयोग

रैशन्यकार्थं वाले है—कारावाम का हुनकर पहामोसाम्य वर्गाम पूर्विद्वीरके काले वाल कौत्राम हुना और अपूर्ण व्यापन पार्विकेक्पीये हुन अपूर्णिका । अप यह काराने कि इस पर्युक्तिका । अप यह काराने कि इस पर्युक्तिका विकास हुनिया है, कि वाल कहा है और वाल कारा करते मुख्य असरी क्या स्थान है।"

मार्थिको संसे-क्यांकालोने के पुनिष्ठेर । एके भी बेहर गुरू कर विशेष है; यह बाह है परित, वर्गनाया राजा अधियोके रिक्ते भी अस्तरात्रीय है। सुने, में सुनारे अब्बा का है। है। है। यून्यके और क्यूकेटरे क्रियामी क्रांतर योगाच्या अत्यत है। सनके वाली सुनवार आकारपार है, यह देखेनमें बढ़ा प्रकारक और वर्गन है। मही न पहलेकी प्राप्त है. न पानी है और न बोर्ड देख साथ ही है, नहीं एक्टेबा क्या हता और क्यापर भी निवत्त कर शके। काराजकी अलाने उन्हें का वहीं तारे हैं और प्रवासिक सामेवाले सभी जीवोंको करमानेक कामान है जाते है। जो स्तेत कर्ष प्रकारोंको पान प्रकारों केंद्रे अभी प्रका क्षण मिल्ने होते हैं, से उस नार्गाय उन्हें स्वाहतेले बाते हैं। क्रमान कानेवाले प्रमुख्येको जा प्रमुख 🕬 निरम्भ है. विस्तों ने कृतो बक्कर करते हैं। अकटन करनेवाले केंब पर्व तम केवल पात करते हैं: निप्तेने अवकर नहीं किया है. में मुख्यत कह सहते हुए करते हैं। कह देनेवाले करते चानकर जरूने हैं। चरिनका कर करनेवाले तक कानसातीने राम क्षेत्रर को आनवसे कहा करते हैं। उस्त (जनाव) कर धारोकाने सराते वाते हैं और मधान बनव्यक हैनेकारे

विक विकास को असाको वास बात बात है। वारी दूस कर्मवासोको वार्व बाराया बाद वार्व होता। दीन वास कर्मवासोको विने सेमेरेने बारचे समय उत्ताहका उत्तव वीम है। नेवान कर्मवासे सम कर्मने सुद्ध होते हैं, जात के वी कुळते बात कर्म है। विकास व्यवसाय उत्तवसाय क्रिया है, में इंगीने कुछ हुए विकासित बेहतार पांच करते हैं। वी पांच उत्तवसा के इक समय पोजन करते हैं, में अध्या होत्योको अस्त होते हैं। कर देनेका प्रभाव होता है। असीविक है, जेतनोको बात बहुत हुए देनेकाम होता है। सर्वे वास्त्रोको सामी पुर्वकार क्यानो को कर्म होते हैं। वे अस्त्रा वीतार और सुवाके स्थान करूर कर की है। के सामी पीच है, उनके विने बाद पीय-सी है जाती है। इस असा बाद नहीं साम प्रभावतानोंने एनं करनेकारी है।

जातः है स्वयन् । सुन्ते भी इन जात्वामीका विशिवन् पूजन कारण कालि । मी अवस्थानकी पूजाता हुआ धोजनकी अवसमी काल्य कार काल, अब अविधिका, जा जाव्यामा हुम किसिका, प्रत्यान कारो : हिन अविधिक या आवृत्य कार विश्वीके काल्य कारो है, को आके पीछे इस आदि वासूर्य केसा क्षित्य कारो है, की, कहा जावा अवस्थ होता है तो के भी प्रस्ता होते हैं और की, जावा नहीं होता तो के इस केसा की निरुक्त सौट कारो है। जाता राजन् ! हुम भी अविधिका विश्वाद सामार कारों हो । जाद माध्यों, और क्या सुन्ता कारों हो ?

## दान, पवित्रता, तप और मोझका विचार

पुण्डिर कार्ने एन<del>े पुण्डिर ! अन्य धर्मको कार्नको ।</del> है, इसेलिये आपसे गारकार पै वर्धको नारे सुनना सक्क है।

मुस्तिर्वन कार्यन परिवाह व प्रकार पात पुरस्त प्रकार है।

पर्वाची मान सुनार है, ध्यान हेकर सुनो । प्रवाहणका कार्यर सानेरो शांत सुनार है, ध्यान हेकर सुनो । प्रवाहणका कार्यर सानेरो शांत सुनार कार्यर सानेरो शांत है जोग का प्रवाहण कार्यर से तो में की पात साम प्रवाहण कार्य है तो हो जोग का प्रवाहण केरकर पुत्त और वेट ही पाहर निवाल हो, जारी साम प्रवाहण कार्यर प्रवाहण कार्य के प्रवाहण कार्य है जार्य केरक प्रवाहण कार्य है जार्यर कार्य के शांत कार्य कार्य केरक प्रवाहण कार्य है जार्य है जोगी कार्य है जार्य कार्य कार्

यो दिय अवने हायोगो मुहलेके गीतन विभी हुत् मैलपायने जानती और साथ राज्यम जोग्य गरण है, यह अपनेको और बूलरोगो सारनेने समयी होता है। यो महिरा गृहि बीते, विजयी चन्त्रमें निया गृहि होती और यो मिलिन मैलिन संवित्तासर सुन्यर पैतिसे पाठ मानो है, ये ही सरनेने समय होते हैं। बोलिन साम्रण क्या (प्रशासित), पान्य (नियमित) सन्यार साम्य पान है; येसे मन्यसित्य असिये किया हुआ प्रमा सम्यार होता है, मैसे ही बोलियको दिया हुआ प्रमा सम्यास होता है।

पुष्तिको पूरा-पूर्ण । अस मैं का परिकारको सुनक स्थान है, मिराने प्रोपेने प्राप्तमा स्था पुन्न गुर्मा है।

वर्णकंक्यों केलं—वर्णकां दीन प्रवासकी है— कार्णकी, वर्णकी और जरूकी। इन सीने प्रवासकी परिवासमें को कुछ है, व्या कार्यका अधिकारी है—इसके सिमा में सीक्ष नहीं है। यो जाइका जरूर और कार्य केले समयकी संच्या तक्ष प्रकारका कर करता है, प्रवासकी कुछारों असका पर्य ना है जाता है। व्या स्वकृत कुळीका कर कर्णकारे प्रवासकों का यदि विश्वति को है से कुछा होगार को कुछ पहुँचारे हैं और प्रवास स्वकृत को कार्यक विस्तास कहा को स्वकृत । प्रवास स्वव कुछारों सम्बाकों केला है। वह केल कहा हो या नहीं, असके साम संवक्षत सबसे कुछा हो। वह केल कहा हो या नहीं, असका अस्थान नहीं करना व्यक्ति—और साम हो की हुई अधिकार कोई केर नहीं स्वच्या। नहीं सामकारी, हानी और समस्यों केला प्रवास नहीं को, वहां साम नगर है। मोहास्त हो या स्ववस्थ नहीं कहां क्या व्यक्तनी क्राव्येका क्रान रक्षनेकाले प्राप्तक रहते हो, यह स्थार तीर्थ क्ष्मण्यक है। परिश्त दीर्थीने क्षान, परिक्त नेद्रमणी का अवकान्त्रेक क्षातेका क्षातेन हुई क्षात्र्वाका कार्यो है। स्थाप क्षात्रेक्षण—पुन कर्योको विद्यान पुन्न क्षात्र कार्यो है। स्थाप पुन्न क्ष्मणुको परिश्न क्षात्रे हैं। को न्या, कार्यो, क्षात्रं और दुव्हिले कार्यो कार्य नहीं करते, वे हो प्रमुख्य सरको है; केवार क्षारेट कुकान ही सम्बद्ध नहीं है। को स्था-अवकातादि करके पुन्तिकी कृतिको क्षात्र है सिद्ध अपने कुट्यूनीक्योकर क्षात्रिक की क्षा नहीं कुकान हो सम्बद्ध अपने विद्यान नहीं हो सम्बद्ध। उस्त्यों क्षा निर्देशना अस्त्र क्षा कर्यो निव्यान नहीं हो सम्बद्ध। उस्त्यों क्षा निर्देशने सम्बद्ध कर्यो होती। को निर्देशन कर्यान स्थान के प्रमुख क्षा क्षा है।

स्वयं । सामाने जिनका अलेका नहीं है, ऐसे कार्नेकी अपने कालो सरकार करते। त्येन समावी हुई वित्त आहिएर कैसरे हैं। यह तक होना है सरकारे: पाववर पारोको पाश्योके वित्ये: वर्षा इससे केवल सारवाले कीड़ा होती है, और गोई साम नहीं होता। वित्तवा इसस कहा और पावको सुन्य है, सामों कारकार्योको आहि भी नहीं पाल स्थाती। इस तथा तथा वर, कारते और प्रशिक्ती पुद्धिते ही युद्ध वैशास और प्रोक्त आह होते हैं: केवल कार सामे का इस विकार प्रोन्ते तथा किर पुँक्ती, का कोड़ते, जहां पाक्री, प्रशामि कंपने, जलके बीतर कहे पूर्व का विकार क्योत्तर स्थान करते हैं से तथा सीतर कहे पूर्व का विकार स्थानकार कार्ने ही सार-पृथ्व अली संस्थान कारकार आहिये पूर्व हुए बीच नहीं करते, अली अवहर हारकारी आहिये कारी अविद्यान्यनित हेस्सेके बच्च हो कोनेक पूर्व अरके अवस्थाक संयोग नहीं होता।

क्ष्म का आवे प्रशेषको भी वर्षि सम्पूर्ण पूर्तोके झायरेश में विश्वकार अवस्तार हार हो जान वो अनुकारे समूर्ण सामोके स्वावकारक प्रयोजन समाप्त हो जाता है। कोई 'तर' इन को ही काइगोरी आगलको जान रेती हैं, कुछ स्तेत सम्बद्धित पुरू सेकड़ों और हजारी अर्थनवर्द-वादयोंसे आगलकार्के सम्पूर्ण है। जैसे भी हो, आगलकार्क सुपूर्ण केंग ही योश है। विसक्ते प्राप्ति संस्त्र है, आस्पाके प्रति अभिनात है, उसके निक्ते न लोक है, न पराकेश और न स्ति सभी सुप्त ही विस्ता है। इतन्त्रह पुरूषिन देख ही बद्धा है, इसकिने बद्धा और निवासपूर्णके निहानकार सोध ही मोकका अस्पर है। यदि तुत्र एक अभिन्तारी एवं सर्वजनस्क आहारको एकियोंके जनन शको है से कोए सर्वन्यद क्षेत्रका श्रृतियों और मुक्तियोका अञ्चय हो। उनमें अस्ताका क्षेत्र कानेवाली ब्यून जाम चुकियाँ उसला होगी। जो सुन्द्र तर्कमा अवस्य लेख है, को सामगारी क्रियोत्तरके केरण अस्वकार सिद्ध की हेरी : उक आरमको केटोके करा ही बानना करिके, क्योंकि अञ्च बेहरकार है, बेट ही कारक प्रतित है । बेटने ही नव्यका केय केल है। अवस्था से बेलेका उपसंक्रम या एक केला है। काम कार्य कार्याको सर्व है सर्मा माँ है, सरक अनुसार सहार स्ट्रिके इस होता है। अर: मनुसाको इन्हिनेकी निर्वालाके हात विका-योगोको ताल देख कार्षिके ( का इन्हिकोके निरोक्तरे होनेकाला अनाहन (कारावर क्ष विकासिक अध्यान) दिवा होता है। तको वर्ग विकास है, कुनने जोगोंनी आहे। होती है, संश्रंकानसे पाप न्या होते हैं। परंतु प्रोक्त के क्रायते हैं होक है—ऐस्त सम्बद्धार पाहिये।

# बुखुमारकी कवा—उत्तर्भू मुनिकी तयस्या और उन्हें विष्णुका वरदान

हरूरका महराज वृधिहारी पार्यकोरकोरी पूछा- कुछे है हराने सुना है इक्ष्यानुसंबर्ध एका चुन्यानक बड़े जाउनी थे। वे राजा कुछ समयके बाद 'कुब्बार' राज्यों विकास हुए थे । हो उनके इस नाम-परिवर्तका बना कारण है ? इसे मैं कवार्य रैतिसे सन्त जन्म 🕻 ।

वर्षकोश्यो केले – राजा क्यासरका वार्टिक इक्कान मैं तुन्हें सुवारा 🛊 , ध्यार देशर भून्छे । पूर्ववसन्ते असु पानके प्रसिद्ध एक सहवि हो गये हैं। फर्कांड (भाग्यक) के सुपत प्रदेशमें करका शासक था। एक सनव न्यूर्वि कार्युर्व अवधार् किलाको प्राप्त करनेके लिले गहा वर्गीनक कटोर प्रयास बर्ध । जनकारने प्रतात होपार को अन्यक्ष स्तरंप किया। रूपके



प्रकारके बरेजपात करते हुए उनकी सुनि काने समे ।

अञ्च केले - प्रस्कत् । केला, असुर और पतुष्प आवर्ते 🛊 क्रक क्रू है। अवन्ते हैं चरावर प्राणियोको बन्ध दिवा है। केलंक बहुरती, केर तक करके हात काशनेकोच्य को कुछ भी कर्म है, का सबको वृद्धि आयमे हो हुई है। देवते । सामात सामात प्रकार है, क्यें और बचारा के हैं, बाह स्त्रीत है और अहि अरक्का तेन हैं। सारी हिसाई आकर्ष पुजारे हैं, पहासानर कर है, कांत कर है और असारिक बंधा है। कुलो आयोह करण और जोगरियों देन हैं। हुए, सेंग, जीत, कार्य, देखा, असूर, यान-ये सब आयोर मामने नावक है कर जानों सीवों को हुए हक केंद्रक प्रकार करते हैं। पुरुषेक्षर । आव सम्पूर्ण प्रक्रियोगे स्वाह है। को को कोनी और कार्नि अल्बंधी हो सुन्ति किया करते हैं (

प्रश्नुबर्ध पुरी सुरक्षा कावान् बहुत प्रसार हुए और कोर्स, 'इस्तु ! में कुम्बर प्रस्तः है, कोर्स बर गरिये ।'

क्राज बोले-- प्रयो । सारे जगराबरे सुक्ति करनेवाले क्रिया क्रमान कृत आर करवान् करावनमा पुढ़ो स्वीन निरात. बही की रिज्ये सकते महत्त्वर गर है।

मेन्त्रो श्रह—बहुद् । तृक्षण ह्रम्य लेपसे बहुल नहीं 🦜 पुरुषे तुमारी असन्य नक्षि 🖒 इन कारणीये में तुप्पर विक्रेप अस्य है। युवारे कोई वर से सुने समस्य है सेना क्षांकिये ।

प्रक्रंबरेको करते है—इस प्रकार कर भागानी का चौरावेके केले करकार अनुदेश किया, तम उत्तुनी इस केष्ठका व्यावर जीवर—'हे बायासकेवन । वहि आय मुहस्स अलग है और सुत्रे कर देना है सकते हैं से ऐसी कुछ क्रीतिकों किरमी येरी बुद्धि श्रम प्रय-दम, सरमाज्यम तथा करीने हैं। हर्ने में और असके जनस्का जन्मस कभी कुछे न पाने ( क्लान्तं क्ल-मुने । तुस्तं के कुछ योगः है, सब पूर्ण

मा । इसके जिला एकारे इसको आ बोनविकासा धी क्ष्मियों पूर्वि निक्रत है। यह और बढ़ी विनयके साथ नाम । ब्राह्मि होना, विनयसे दूस देवलाओं तथा पून तीनों लोकोंका

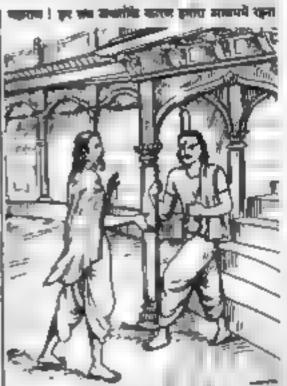
रासा रीच्ये सोम्होच्या विराण करनेके रिम्बे चेर स्थान मारेगा। का क्युएका कर विकास हामने होनेकान है. क्षांका चम एकें काल 🖒 सुने। इस्कृतंको एक शहरूक, और विकर्ष एका होता, 2042 जन होता— । जानि अनुसरे हेवा बहनार नवानर अनुसरि हो पर्ने ।

बहुर कह कार्य हिन्दु करोपे। कुनु कारणात एक पहलू | कुन्छ। कार्य 'कुन्यतव' नागरे अधिन् एक पुत्र होगा। यह मेरे केनकार्य अध्या तेका तुक्तरी अवसी मृत्युको नार कोटा: सा प्रत्ये के इस प्रयूपे 'क्यूनर' के अपने

# उत्तक्तु मुनिकां राजा वृहदश्वसे युन्युको मारनेके किये अनुरोध

मार्थकोर्थन वाले है—सूर्वकोची राजा इक्काइ सम परलेकमारी हो नवे तो अस्या पुर करान का क्योपर राज्य क्षार्थ सन्त । अस्ति राज्यानी अधेन्या के । क्यानक कृ क्ष्मार्थाः, स्वकृत्यस्य अनेता, अनेत्रस्य पृष्ट्, पृष्ट्या विकास, जाका गरी, अधिक पुरुषक और सम्बंध प्रा क्षाम पुरसः सामके सामक पुरसः विवाने सामके पानके पुरी क्रसारी। अध्यक्षके पुरस्क गांव पूर्वत पूर्वत, जनक पुर कुम्बद्धके जनमें विकास हता । कुम्बद्धके इस्टेन क्यार पुर हो । हे प्राची विद्यासीने प्रतंत्रा और महत्त् कारकर है । श्रेवा बुक्तावर भी गुजोवे अर्थ किया व्याप्त वर्ग-वर्गावर का। यह का राज्य सेपालनेक बोन्य हो नवा में अने विशाने को राज्यका अधिकिक कर विद्या और वर्ष राज्यक क्षातिके रिक्ते काचे आनेको काम क्रे नचे ।

पहार्थी अरहारे कर पर पुन्न कि इस्तव कर्ज अनेकारे हैं से में कान्ये एक्काकी अने और एक्का रेजरे हर अपने लगे—राजन् । हमलेग आवादी प्रधा 👢 अल्बार वर्तक \$—असमी पहा करना। जल क्ले असी इस क्लर कर्तकार हो पाएन क्षेत्रिये । आवन्त्री है कुमले सार्ग प्रका और का पृथ्वीका स्ट्रेन हुए होना । भाई खुम्बर प्रकारी रहा कारोगें से बड़ा चारी पूर्व विश्वाची हेता है, बैसा वर्ग करने कारत स्थान प्रतिने भूति द्वीचारत । जातः जानी जानको हेला विकार नहीं करना साहिते । सरको विका इस निर्मितनायुक्ति बंधका जो पर राजेने । पहरेशमें इसरे स्थानके निवाद ही देवने नहां हुआ एक समूद है, अस्त्राह कर है सम्बद्ध सारत । जानो संवादी-चौदाई अनेको चेचन है। नहीं एक का सरवार क्षम स्था है, जन्म भने है—एक्। म कर्पाटकका पूर है। पृथ्वीके भीत्र क्षिपकर का करण है। सामुक्ते क्षीर क्षित्रका स्थानका वह न्यूक्षा क्रिय वर्गकार्थ कुछ बार सीस रेखा है। जब बहु जीन क्षेत्रक है, उस समय पर्वत रहेर क्लोके समित्र ना पृथ्वी डोलने लगती है। जरके काराको जॉबीसे रेजक इसरा देका वर्षकर बठना है, विसरो सूर्व भी कर साल है, सात दिनोक्य पुराल केवा क्या है। अधिकरे तनरे, किन्मारियाँ और वर्ष करते उसे हैं।



करित है एक है। जरा है सबद । पर्नोक्त करवान करनेड हिन्दे जान का केनका तम कीविये ।

इन्य सहरको अन्य क्षेत्रका क्ष्म-क्षान् । जाप निस कोरको वहाँ कहारे हैं, जह निकरत जी होता। मेरा पह कुम्बन्द इस मुजनूरनी अद्वित्तेत्र और है, यह यह देवं रक्ष्मेपाल और पुरसिंग है। आरबार अधीष्ट्र कार्न क क्रवरूप पूर्व कोता । इसके क्लान्य पुत्र की क्राव-एक लेकर इस बुद्धने इसका साथ हैने। ज्यान सुत्री क्षेत्र हिनियो; क्योंकि जन की प्रकारको स्थान दिया है, मैं युक्तने निमान हो गया है।

अक्षुने बहा—'बहुत अका।' किन समर्थि कुम्पाने अस्त कृतिको अञ्चल काला उनके अभीत कार्यको पूर्व कार्यके रियो क्षयने पुत्र कुम्मानकारों अहोत्त दिया और स्वर्थ तथेकानने को को।

जानस्य नहीं सुना। व्या देश सीन वा ? जानस कुछ परिकास सीमिये ।

रार्धवंत्रमं केरे—बहारव ! वृत्रु प्रवृत्तीरच्या पुर हा। इस समय असने एक रैशने सन्दे होकर बहुत कमानक प्रमुख गरे । सामी प्रमुखने प्रमुख क्रेकर प्रमुखनेने अस्ते वर मोगनेको नदा । व्या भीता, भी तो वही पर प्रकार है कि केवा, शुक्त, मंदर्व, बहु, एक्स और सर्व-इन्मेरे किरिके हामने भी मेरी पूर्व न हो।' सहस्तीने कहा, 'अन्यत का; ऐस्स क्रे क्रेगा।' उनकी क्षेत्रकि कावर सुन्दुने उनके परकोका अपने महाकारे रुपई किया और सहीरे कार एक ।

त्रपोत्ते वह असून्ये आक्रमके पता अनने बारमी जनमारे किरगारियों क्षेत्रमा हुआ वेतीयें पूने रहत । एका कुरुक्ते का को जानेके कर अपना कुर कुमानक अपनु मुन्ति साम केला और संबंधी हेक्कर वहाँ का पहेला । क्राफ्त होकर से केवल अस्ट क्रांबर्र रोज वी । अध्यक्ती अनुगरिते भगवान् विकृते सवात स्रोकीका कार्यका कारोड विन्ते एका क्ष्मतानुमें अवना तेज स्थापित कर विच्या। सुवतानु उसे ही



नुविहित्ते पू<del>रा पुनिवर । देख पहलाई देख से की | मुद्रके दिने</del> सामें कहा, साकाराने का सामो का सामाज देश उसे कि 'का एक कुमानद कर्ष अवस्य स्वास कुनुको व्यरेण और कुनुवार कालो विकास होगा !' हेक्सओरे जाने करों और दिव्य पुत्रोंकी वर्ग की, जिस बचाने ही केवलाओकी कुटुपियों कर की, ठंडी इन्य करने लगी और पुर्वकारी अपनी वह बान काल करनेके रिन्टे इन्ह वरि-वर्षि क्वं चरी लग

करकर केन्युके देवले अस हुआ राजा स्टीत ही समुख्ये कियो जोज और अपने पुत्रोस करों ओस्की गेरी सुरुपने रक्षा । प्राप्त विभोजक सुराई हेर्नेके बाद प्रक्षात्रकम् कृत्य क्रिक विद्यानी पक्ष । कार्युक्ते भीवर ज्ञानत स्मृत स्कृत सिकारत प्राप्ति क्रिया हुमा था, यो प्रमाद क्षेत्रेस अपने तेमके केंद्रेणकर होने साम, कार्य पूर्व ही प्रवासकार हे यो ही। कृष प्रत्यक्रमान्त्री अधिकं प्रयान पश्चिम विद्याले केवल को पह पा। कुम्मानको पुनोने को सब ओरसे बेर हिन्दा और डीक्रे कव, नव, कुसल, पहिन, परिच और संस्थार अवदि अध-क्षणोते अस्य प्रकार काने रूने । उन स्तेगोली का काकर का बहुकारी देख स्टोनचे चलार का और उनके कराने हुए वक्-स्वकृत जन-सर्जाको निगल गया। इसके कर क पुरस्ते संबर्धक अधिके सन्तर आगवी लग्दे रास्त्री क्रम और अपने देवने का सब संबद्धानरोको एक क्रममें है हुआ प्रकार काम कर दिया, केले पूर्वकारको जगरपुर्वाको प्राथम स्थापने रूप किया क, व्य क्**य अर्**तुत-तो कर के नहीं।

का तथी राजकुकर मुक्की हरेवातिये स्वाह हो गर्व और का बहुकान देश हाते हुम्बकानी समान जगकर सारका हे पर, जा स्कोताई एक कुलाब अस्टी कोर बढ़ा। जनके सरीरते धालको नर्या होने तनी, विसने थुकुके पुराते निकासी हुई जानको पी तिना। इस प्रकार क्षेत्री कुमलको कोनकाई का आगारे शुहा दिया और हर्न ब्रह्माचना अनेग करके समझ चगरूका वन कू करवेदे हिन्ने कर कैवादो कराकर कार कर करत । कुसूबरे बारनेके बारण मह 'बुन्कुकर' नामरे प्रमिद्ध हुश्त । इस मुद्धारे राजा कुलावको केमार क्षेत्र पुत्र क्षा को थे--कुताब, कार्यक्रम और बन्ताय। इन क्षेत्रोरे ही इत्यानुनंतर्की पालम् अनेताः वर्ते ।

## पतिवता सी और कौशिक ब्राह्मणका संवाद

श्रवंत्रोवयं गोरो-एकप् ! इसी विश्वं प्रतियो सेवाले स्वारियेक्टर विश्वय पत्ती है स्वा वास्त-विश्वयो सेवा धरके इसे त्रस्ता करवेवस्य पुत्र इस संवारणे कृष्य और स्वतःस्वयंत्रीयः विश्वार कर स्वतन्त्रे अपन् सोकोची आह होता है। इसी अधरकारी सेवार में सामग्री कार स्वरूप। पहले प्रतिक्रमके पहला और मर्गक कर्मन करवा है, कार्य विश्वर सुने।

पूर्वभागों वीकिया नामक एक अवस्थ का, व्या वर्ष के समीमा और समाने था। उसने अनुनेत्रीय केर और केर इसरिक्योंकर अस्तरंग किया था। एक मिनको व्या है, व्या एक बुक्के पीते कैरावर केरावर कर या था। उसने समान इस बुक्के और पीर कर है। इस्ताय सोमले उन्याय का और समूलीका अस्ति किया थाओ हुए अस्ति और देवने समा। सेनारी विद्या केरो किर वर्ष और उसके अवस्थान हुन्य और सो अस्ति हुन् इन्हानक वह व्यावका होने समा। असेर सो अस्ति हुन् इन्हानक वह व्यावका होने समा। सर्वोध दुन्ने निकल पहल-'ओए ! असा मैंने स्रोयके सर्वोध्या केया किस अनुनिक कार्य कर कार्य।

इस प्रमार बारकार का काकर का काक नीको विकास सिमी राजा। यह नीकों को कोए पूर्व और कीक बाकरमानारों थे, अधिक कोकर विका मौतात हुन्य प्य एवं ऐसे कावर का पहिंदा, नहीं पहले भी कभी विका मान कर मुखा था। इस्टर बाकर केशा—विका केश, नहीं।' समुख्यी सेवा—इस्टें पह कभी अशाववानी नहीं करती

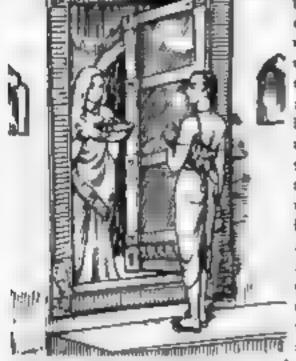
वीताओं कृष्ट बॉर्न कहा, 'ठहरी, कवा 1 अभी स्वती हूं हैं ब्रा को अवने वर्ग्य कृष्टे कार्न सत्य कर की वी र प्यो ही वह उस कहारते निवृत हुई, अरब्दे पिंठ वरपर आ गये। ये ब्राइट ब्रुक्ते हैं। परिच्छे अरब्द देश ब्रीच्छे ब्रुब्द करे हुए प्रकारकों ब्रुद्ध न वी । ब्रुट्ट अरब्दी सेवामें ब्रुट क्यी र वारी स्वच्छ सतने व्यक्ति देश बोचे, हाल-पुट कुल्सा और वैटनेकों आसर देशन इक ब्रुव्दें कुल्द कारिए क्येन्ट प्रशासकर सामी और बीक्टेंड रिन्ट सम्बद्ध स्वाह्म केन्ट्र प्रशासकर सामी और

वृत्तिया । यह यह प्रतिवृत्ति प्रतिवृत्ते गोयन करायाः उनकेः व्यवस्था प्रत्या संभावतः यह प्रेरातं पोयन करती थी, व्यवस्था ही अन्यस्य करती थी और सायोगं नियानों सम्पूर्णका कियन नहीं करती थी। यह वर्ष्ण करते थी सम्पूर्णका कियन नहीं करती थी। सम्भे प्रत्या सम्भ व्यवस्थान प्रयोगी सेवाने सभी पानी थी। सम्भावतः वह अस्ति प्राप्त थी। यह वर्षाय व्यवस्थान प्रति थी। सम्भावतः प्रति प्राप्त थी। यह वर्षाय व्यवस्थान प्रति थी। सम्भावतः प्रति प्रत्य थी। यह वर्षाय व्यवस्थान प्रति थी। सम्भावतः प्रतिकार प्रतिवृत्ति वर्षाय वर्षाय वर्षाय थी, कृतुम्बर्ग प्रतिवृत्ति प्रतिवृत्ति वर्षाय वर्षाय वर्षाय भी। वर्षाय प्रति प्रतिवृत्ति



भी। अपने पन और इंग्लिनेस काला पूज अभिनात सा। परिच्यों सेवा कसो-कसो जो पिक्को कीमें कई हुए इक्कानो का अपी। परिच्यों सेवाचा सामानिक कार्य कर्त हो ही कारा सा। या पिका नेका को संबोधने

कूर्त हो हो कुका गा। जा विद्या रेका को संबोधको इंद्यालको निकट गर्थ। प्रदास काल-कुरा कहा का, देवले हो बोरस—''हेरो। जब तुन्हें देर ही करनी बी बी 'कारे स्टास !' बहुबार मुझे होबा करों ? उन्हों कारे कमें नहीं



हिया ?' अवहाराच्ये क्योशनी जाती ऐसा उस प्राणीने कही क्यांतिको सदा—'पन्तिया कामा । क्या करो; मेरे समले प्राप्त् केक्स की पति है। से पूर्ण-माले, क्ये-नदि करण आने से; उन्हें क्येक्स केले आही ? उनकी ही सेमा-स्वापने काम पत्ती।'

महान नेता—का बड़ा ? महान को नहीं है, जी है समसे बड़ा है | गृहत्व-कार्न को हुए वो हुए महान्येक सरकार कर की हो । इन्ह की स्वाह्मको सकते हैं र हुम्मते हैं, फिर मनुवांकी से बात है कहा है ? कहा हुए स्वाह्मकोंकों नहीं जारती ? कती को सुहोंसे की भई कुछ ? असे ! हाहान असिके समार तेमसी हैं, में कहे के इस कुम्मिकों की सरकार काल कर समसे हैं।

सर्वे और का—समाने काक ! क्रोध व ध्वीनिये, मैं यह बागुली विद्या नहीं हैं। मेरी ओर को साल-साल असिं बारके क्यों देसते हैं ? असर कृतित होकर मेरा क्या निर्माह

हेने ? में प्रकृतिका अन्यत्र नहीं करते । प्रकृत से केवाको समान होते हैं। जानका जनगण मुहाने हुआ है, क्रमें रिजे क्षण पाली है। मैं प्राप्तानोंके केवले अधरिकिय भूति हैं, अबके अहन् सीमान्यको भी बालती है। ह्यान्यके है क्षेत्रका पहर है कि समुद्धा पाने क्षेत्रकेण नहीं का। वे पहल् प्रकार और प्रकास काल पुनियन है थे, जिसकी क्षेत्रक्षि क्षत्र में एक्क्स्प्लये के कुली। प्रकारिक है विश्वासको सामानि राज्या अन्यक्यके पेटने बागान एक रहत का प्रकार प्रकारोपा प्रधान पता पता पता पता है। क्रमकोक्त प्रदेश और असर होनों है। यहन् हैं। इस समय काले में अलबी स्थेतः हां है, काके लिये आप क्षम करें। हे से चीनो रेसरे किए क्विस प्रशान होता है, बहे अधिक बहेद है। वेपाल ओने पटे के रिप्ने पति है सकते बहे केवल है। में के काश्रामकाओं का पानिकालकर्वका है पासन कुर्वा है। इक्कान्त्रिका है इस प्रतिकारक पान की आप प्रकार हेता स्टिपिये । सामने चुनिय होतार बनुसरे वाहीयो क्षा किया था, यह बार यहे साहत है गये। सन्तः ! क्यून्बोक्त वृक्ष बहुत बहुत है, को उनके सरोरने हैं। पाल है: कारणा नाम है—ब्रोज । को ब्रोम और मोहको जीत से और में राष्ट्र कारकान करे, कुम्पानेको जेमाने लाख रसे और विकास प्राप्त का मानार भी को न भारे, को अन्तरी क्रीकरोको पहले बत्ते परित परको कर्न और साम्रायने रामा थी. विकास बाजको पाँच विमा है, बहुत, हेस्सामध्ये क्यों प्रकृत है। किए बर्ध्व और भारती पुरवका प्रापृत्ते सन्तर्भे और सम्बन्ध्य है और संधी वर्धीन सनुसर है, को काल-पावन, अध्ययन-अध्ययन आहे अञ्चलकेतिन क्रमेंको काटे हुए अपनी प्रतिके अनुसार कर भी करता कुछ है, इक्कुबर्ग-सर्वकार्य जो श्रद्ध नेदोक्त अञ्चलन करता है, जिल्लो नित्न प्रवच्यापने कथी थूल नहीं होती, अरीनो केव्यक्तेत्र अवस्था पान्ते है। उत्यक्तिके निधे के कारकारकारी कर्न है, उसीका उनके समझ कर्नन कामी बीवर है। इसीरियो में अलब्दे सामने यह मात यह यह है। बाइन बामानी होते हैं, उनका पन कथी असरको नहीं अन्यतः। स्वयुक्तिः विश्वे प्रत्यकानं, स्थ, आर्थेव (स्वरत न्त्रम् और संस्थापन—न्द्र परम को बतलाना नेना है। कारि वर्गक समान समानेने कुछ स्टीन है, ज्यारि स्ट कार्य प्रतिक्षेत्र है। यह पूरू बढ़ाई है, कवि विकास केंद्र ही प्रमुक्त है, केंद्रों ही वर्षका राज होता है। समाधि वर्षका काम्य कार्थ है देखा जात है। केवल के प्रानेते कान्य कार्य का अब्द है है जनग-नेस्त निर्मा रूपसे नहीं

बर्वका क्यार्थ एक इस नहीं दूस है। प्राकृत्येत ! नहीं हुए करते हैं। विकास क्षेत्री क्षेत्र है ?! यह अल्प कारण व्यक्ते हैं के | अक्रूप वेटन-केवे ( हुवारा कारणाव है) में सुपरा विश्वितास्त्रकी धार्मार कारा-विकाले भाग, जानकाई और अबूद प्रतात है। केर होने अब दूर हे सुका है। तूमने मुझे जे विकेशिक कर्मनामको पुरित्ये । यह मानवार्ध कर्मका काम जनगण्य क्षेत्रक है, यह मेरे हिन्से बेटकारी ही है । इससे पेस कुरक्त देश । करवान् अवस्था प्रदेश करें; अस अवस्थी । यह कान्यान हैनेकाल है। हुकार करा है, अब मैं निर्देशन महो हुन्या हो, मही प्रवारी। बाँदे में। पुरारो मोही अभूतिया । महोत्या और अध्या मार्ग तिन्हु महीता ।

शक्त का समात । मेरा के का कियार है कि अभी सामग्री | का निवास करी है के इक करे, क्वेंकि क्रियोगर समी

क्षांकोश्रो करते हैं—का परिवारको करते सुरक्ता | स्रोपात करें, के इस केनी बरात करें हैं मीरिया प्राकृतको कहा आर्क्ष पुरुष । अस्ते प्रदेशका कारण करके का जनस्वीकी वर्षित जननेको विकास सन्। दिन अनेकी स्थल गरिया कियार कर उसने कर के का यह रिका किया कि 'खो जा स्त्रीके ब्यांग्स तक और विकास करना पासिये, अतः में जनस्य ही विश्विता बार्रेश और का बर्गाक कांच्ये जिल्हार वर्गककर्य THE MINERY (\*

per much freit un un ubegenen febenegfeit कल दिया । राजोमें की अनेकों जंगल, गाँव और जंगर पारे कारे गई। सले-नाते का राजा करणाते सुरविका क्रिक्तामुर्वाचे वर्तुच जना । इस नजरबी सोच्य बढ़ी शुक्र बी. कामें करेका पालन करनेकारे करकोता निवास का और अनेको सानोपर यह तक क्षेत्रकाची सहस् उत्तर ह को थे।

बोरिका प्रकृत २० रगरने प्रकृतका सा और कूले और कर्पनायकः पता समाने सन्त । पृथः सामना जाता सन्ते 🌃 🗝 क्षा से सहयोरे को क्रमा लाग का देखा। वह क्या हेका कि बर्धनाथ कर्माकारेंने बैठकर चंग केव का है। इस्तर एकानमें बाबर के नवा। मानको का नवता है क्या कि बर्स प्रकार पुरसे निरूपेके रियो असे हैं, उस-क सीव प्रकृतको सर्गेष साम्य और केंग्स—'क्लार । अपनोर्क परनोधे अन्यान है। मैं आरमार साम्या करना है। मैं ही वह जान है, जिसे हैंको हुए आपने चारिक आनेका कह प्रियम है। सारकार पान हो। आहा शिन्ते, में क्या रोजा कार्के 7 ज्या के में जानका है कि जान कैसे चर्चा कार्य है। का प्रतिकास प्रतिने की अवनको निर्माणने केना है।"

कामको पार सुरक्ष अक्षार को निरमणे पह और मत-ग्री-पत सोवने समा—यह कुरता आश्रूमं हेक्सेंग्ये

### कौद्दीक ब्राह्मणका मिक्लिये जाकर वर्गव्यावसे उपदेश लेना



(क्कानने अलग होकर कहा, 'शिक है, हेला ही करो है हिट अपने-अपने प्रस्तान काम और पीछे-पीछे काम । प्रांची व्योक्तार वर्गनकामे प्रकारभागाने पर योजर वेतनेको अक्टन दिखा। उत्तरम बैद्यान काथे न्यायमे बद्धा, हे नात : बहु बर्वक केंद्रनेका काम तुन्हारे कोन्य नहीं है। सुत्रो से सुन्हारे कर बोर कर्नमें बढ़ा हैना है का है।"

ज्युन क्षेत्र-विकास । मैंने बह साम अपनी प्रकासे नहीं स्थान है। यह केन मेरे कुरूमें कुछे-नरक्कोंके कान है करर मा रहा है। इसने में हेरता कोई कार्य नहीं करता, को वर्षके विवर्तम हो । सामध्यक्रीके साथ खुदे भी-नायकी रोगा करता विहा । महाबने बद्धा, 'बह स्थान अरुपके केना नहीं है, बहैं, | है। साम बोस्ता है। बिसमियी किए नहीं बरता । यबाहारि कुम देश हैं और देशक, आधिन क्या देशकोंनी चेशन देशक । स्त्रीयते या देशका वर्णका लाग नहीं सतरा पाहिने । दीश यो अवता है, क्सोने अनदी चीरिकट सरका है । व्यक्ति प्रदेश हमेंने पूरा न वर्ड, अपने मनके सिपीत

मुख्य वर्तम है—सेक्: नैरक्कर वर्त है सेनी करना और युद्ध करना इमिनेकर कर्मण कराय गया है। महत्वनंद्य परन, उत्तरत, नेक्कपन क्या स्वरम्यक्य—ने महत्वनंद्य परन, उत्तरत, नेक्कपन क्या स्वरम्यक्य—ने महत्वनंद्र इस है परन्य करनेन्द्रम करेंद्र परन्ये एक हैं। प्रताद वर्तपृथंय परस्य करेंद्रम ने लेग वर्तने किर को हैं, कई पुर: वर्तपारकों स्वराते। क्यान ! क्याँ प्रका क्याने परन्ये परेंद्र में प्रेय महिन्द क्यान करेंद्र क्यान स्वरम्य परें। वारों करोंद्रि होन अपने-अपने क्यांद्र प्रयाद करनेव्यक्ति, यह अपन कुत है क्यों न है, वारोर क्या के हैं। (अक: आप कुत्ये का और क्याने विकासकारीये स्वर्णकी स्वरंपत प्रताद है।

मैं कर्ष किसी प्रीक्षण किस की करण। कुरोंके को हुए पूजर और पैसोका केस बेकबा है। किस भी मैं कर्ष भीत कार्य की काम । स्कूबल प्राप्त होनेवर ही की-जंसलें करण है। दिनों सार ही उत्थास और समित्र केबल कथा है। कुछ सोग की प्रसंसा करते हैं और कुछ सोध किस; परंदु मैं का सकते सहस्वकारों प्रस्ता रकता है।

हमोमो पहार परता, जाने हुई सुना, तम अभिन्योक भीन्यतमे अनुमार शास्त्रम प्रान्त—मे स्थलोनिय गुण प्रमुखने ज्ञानके किया नहीं आहे। पर्याक्ष निष्णा क्षेत्रकर क्षिता कहें दूसरोका नाम करना कालेने। किसी कल्टनने, व्यंको का हेक्का कर्मक जाना नहीं करना करिये। शिव कर्मकी जाहे क्षेत्र इसेने पुरत न गर्छ, अपने मनके क्षित्रीत कोई बात है काम के दुन्ता न करे; आर्थिक संबद्ध जा क्षेत्र काम के क्षेत्र की कीर किसी की अक्तानों अवन करेंन कोई। की एक कर पूजरे करके किसीन कोई काम है काम, के पुर: कुछा का काम न करें। के विचार करनेना अपने और पूजरेंक रियो काम्यानकारों जाता हो, कर्म कामों अक्ताने सम्बद्ध कामों । कुछाँ करनेकारोंक जाता कामों के पूजरें म करें, अन्ती कामून कामी न होई। के कुरतेकी मुखाँ करना कामता है, जा करी अपने-अन्य को है कामों के की बीचा कामों क्षेत्रके कर्मक पुजरेंक कामों अन्ति कामों कामों क्षेत्रके क्ष्मित्रक कामों क्षाने को है। कामामें अने पुजर क्षेत्रतीर क्षमा कर्म क्षाने को है। कामामें अने पुजर क्षेत्रतीर क्षमा कर्म क्षाने को है। कामामें अने पुजर क्षेत्रतीर क्षमा

को जन्म कामार्थ का मानेपर सम्रो कृपारे पश्चासाय ग्रामा है, मह उस पांची कृप सम्मा है उसा 'गिए ऐस कर्न ग्रामी नहीं करोगा' ऐसा कृप सम्माप पार तेनेपर मह पर्यापार्थ है लोगों जन्म ही पाप करनेपत निमार करते हैं। पार्थ पूर्ण इससो क्षानी मान करनेपत निमार करते हैं। पार्थ पूर्ण इससो क्षानी मान करनेपत कर्नी अध्याने पाप पूर्ण है। इसमें इन्यायंग्य, मानो प्रतिवाद और वर्णन्यायंग्यी शामार्था —मे सम्मा से होने हैं, विस्तु वर्णामा पुरानोकानस विद्यामार नहीं होता।

### तिहम्बारका वर्णन

शर्वकार करे हैं—कां-क्रका अन्तुत अनेत पुरुष कोतिय अपनार अने कृत, 'प्रक्षेप ! कृते दिव पुरुषोके आवारक अने कैते हैं ? कृषी पुरुषे विद्योके अक्टान्कर कर्मा देतिये कर्मन करे।

व्यव गेरा—प्रदाय | यह, तर, तर, वेहोका काव्यव और सरकारक —में पॉक को दिख्न पुरुषेंक व्यवहरणे का सूती हैं। में कार, कोच, सोच, इन्के व्यवहर्ग नहीं होते, में हैं सूर्णुगोको जीत रेते हैं, कभी इनके व्यवहर्ग नहीं होते, में हैं सिख्न (अस्त) व्यवहरूते हैं और अवका है सिख्न पूर्ण अवह करते हैं। में सात ही यह और स्वक्रकार्य रूपे सूत्रे हैं, कभी सामाना स्वक्रकार नहीं करते। सामानस्था निर्मार व्यवस्था सहना—दिख्न प्रकारक सम्बद्ध रुपा है। सिख्नाकरी प्रकार पूजारे केचा, क्रोकचा समान, समामान और मुच-न्ये का समुख अवस्थ केटे हैं। केच्या कार है कान, समामा कार है इत्यासिक और इत्यासिकाय कार है जाता। यह जान तिल्ल पुरुषोंने कहा विकासन पहला है। को तिल्ल हैं, के कहा है निर्माण जीवन कारोत कारों हैं, कारीर पार्गपर हैं। कारों हैं। पूजारे अञ्चल प्रस्ता कारों को हैं।

हातीओ है को । कुछ करेबी पर्याप क्यू करनेकरें जरितक, जारी और निर्मेंगी पुरुषोध्य एक्यू क्षेत्र हैं। एक्यू व्यक्ति पुरुषोधी रोक्यों को । व्या करेंग एका नदी है, पीन इन्द्रियों इसमें बात है, काम और खेमकानी पान इसके पीतर वरे को हैं। कब-नरकांट हुनेंग अंतरने का नदी का पत्री हैं। कुछ केनेकी अवका बैठों और इसके दुनेंग खानों—नकादि

हैक्ट्रेस्ट पर पर पत्रने । कैंद्रे बोर्ड मी रंग कोट क्योग । क्षे अवही क्या विस्तवा है, जहीं उपरा विकास करने क्रांनेकके प्रताने के क्रमत: परिवार क्रिया क्रांत करें और जिल्लार महत्त्व वर्ग भाषेपाँकि जनारिय होता है। वर्षिका और पाम-इनमें ही सन्दर्भ जीवीयर करवाय होता है। क्रांडिक समसे प्राप्त वर्ष है, परेत असबी अस्ति है स्थाने । पालके आकारकर ही तेन प्रकारित कथी पहले अवस्था होने हैं। प्रातिको पान हो गोरकको नहा है। प्यापपुत करोंका आराम वर्ष प्रक्र पदा है। प्राप्ते विश्वीत को अनुकार है, जो ही बिहा पहल अपने सताते हैं। को स्रोच और विन्ह नहीं पाने, रिक्नो अवंत्रार और प्रेम्बोबर कर भी है, को करन une enduch affe une trench ger f. of विवासको पहले हैं। उनमें सन्तर्भावको पृथ्वि होती है। विकास पालन करतेको कठिन जातिन क्षेत्रा है, ऐसे अक्रमार्टका के में प्रशासकांक पारत करते हैं। अन्ते साहतींक पारत है करना सर्वत कार्ट होता है। करके हरवरों पान्ने हिना कार्ट, बीर कर्न पर्दी बेरे । सरकार पूर्ण नकारों पता आ पूर् मह समाप्तर को है, इसके कोई किए भी सकता । सकते प्रभाग पर्ने के पहु है, विस्तान के प्रतिपाल करते हैं, प्रत्य मह है, विकास कर्नर वर्गराजीने हुआ है। जेनस वर्ग है विक्षा (पांत) कालीका अस्पारम । इस प्रकार के कालेंड केन रेक्टन है। विद्यालीने परदान होता, गीवनि सार करना हवा कृत्य, प्राप्त, कोन्यामा और परिचार आहे, प्रमुख्येक

भारत दिन्द्र प्रत्योंके हैं। अध्यारों देशन चाटा है। मी स्थापर एक करने हैं, किसीबर की नहीं हुएकों, क्रभी करोर क्यार की केरके, में है तेन में बिद्ध पूरत हैं। किने शुरुवाय क्रमेंके परिवासका प्रान है, यो न्याकीय, स्वरूपी, सन्दर्श जनको देशके और पद्ध सन्दर्भर चलनेवाले हैं, वे सन्दर कुल के लिए है। उनका कर कारेका करवार होता है। वे विक्रों भी कहाने कहें। और प्रभावे क्षेत्रक की जीवार क्यों है जब कैर-श्रामित तक अन्यों कृष्य रहते है। सी और रोक्कोची कह न हो, हरती हिन्दे भी से अब इसकार को है और उन्हें अपने प्रतिको अधिक 44 आहे की रहते है। वे सर्वत प्रमुक्तिकः पक्ष करते हैं। संस्तरने कीवननिर्दाह केने हो, कर्पनी एक और जानका प्रक्रमण विदर प्रकार हे-एन कर करोज जाकी होंदे कही है। अहेला, करा, क्षमाच्या अन्यान, प्रोत्याच्या, होड और अहंप्यारका स्थान, तमा, क्षम, प्रम, एर, प्रदे, हैचे, प्रोकार, प्राप्त हवे हेन्सा अध्यय-न्ये एक विद्यु पुरुषेते पूर्व है। इसमें भी प्रधानक प्रोत्मके है-निवर्तकों होत् न पति, प्रथ पत्राप्त के और राज कोर्ड । पार्टिंग, संतोध और मेर्ड प्रधान-में भी किया पुरानेके पूर्व है। इस अवसर सिहोंने आवार-कार्याच्या साम्य कार्यकारे सहस्य बहुत सबसे एता है को है। हे अक्रम । इस अक्रम केस की प्रम और कार है, अलो अनुसार विश्वविद्य आधारक प्रथमे कार्यर ferr fo

### धर्मकी सुक्ष्म गति और फरूघोग्रंथे जीवकी परतन्त्रता

वर्णनीयमं जाते हैं—सर्वकार्य स्वीतिक इक्कार्य सहा-- 'युद्ध पुरानेक स्वाप है कि बनीद विनयने केवल मेर अनाम है। यह बात निर्माल सीवर है से से वर्णकी मेरे क्यों पुरान है। साले अनेको मेर, रानेको सामार्थ है। मेरो समानो वर्ग और सरामध्ये राजर्य साला गया है मेरे प्राथमी वर्ण और सरामध्ये राजर्य साला के और वर्ण सरामा मेरेना गर्थ है साल है। यह अन्याप्त है सरामध्ये हैं। स्वाप्त सिराने अस्ताप्त है मारा हैया है। इससे का निवार निरानको मेरा स्वाप्त विवरते मेरान मेरानेस भी कामार्थ साल है। इसके निराने मेराने मेरानेस भी कामार्थ साल है। इसके निराने मिराने विस्ताय अवित हैसा हो, सुरानेके प्राप्त नाते हैं, का हैसाने साल होनेस्ट सी मारावार्य साला हो अवल है। इस अवार कियार करके देखे, से वर्नमी गीर महि सहस् देशको देने हैं। यहुन में भी सुप मा सक्ता कर्न करता है, अन्या पत्त को अवस्थ है मेनना पहता है। मह करे पूरे कर्मों करतानमा असिद्धार क्या आह हैती है, हुन्स भा माने हैं, से यह केलाअरीको विन्हा करता है, ईवरको मोराता है, मंदू आक्रमण अस्ते कर्मींद्र परिवास्तर राज्या जान मी सात । पूर्ण, कम्मी और महत्त कियानार प्रमुख एस ही सुरू-दुन्तमे क्यानो पहा कार है। अस्ती मृद्धि, पुन्त हित्स और पुन्तमंत्र पत्त कार्योन र होता से विकास को क्या होती, अने ही आह धर सेता। प्रांतु देख का माना है कि को-को संस्थी, क्यांकुत्तक और मुद्धिपान् प्रमुख की अस्ता कार करते-करते क्या करता प्रमुख, को बीकोसी विस्ता करता है और सह लोगोंको हमात है जाता है, चैनसे निहरी बिक्त प्राप्त है। कोई दिना क्योंकों हो अधार कार्यातक करते हे क्या है और दिस्तियों दिनकर काम करनेकर कार्यूरी की मतीय नहीं होती। बिहतने ही हीन समुख पुत्रके तिसे जनस्थ करते. वेकाओको पत्रते हैं: जिल्ल करते बारामा के हेम्बर बहरूमें बहरकु राजानेकांने निकास साथे हैं। और बहरू-से ऐसे 🗓 को अपने निराक्ते कराने हुए वन-कम उस प्रकृत धीप-विकासके सामगोंक पान गय रहे हैं और लेकिन पहरवामं है इसक यन होना है। इसमें बोर्ड सींड जी कि प्रमुखीकों को रोग होते हैं, में इस्ते बालींड हो पान है. कीरे बहेरिको होते. पूर्वाच्ये पहुरू की है, जारी प्राथम से रोग और न्यारियों पीनोची बीच हेते स्वरी है। (बीच स्व होनेवर) जीवजीका पंच्य रक्षनेवाले विविधानकुकले के का रोगोका वर्ती प्रकार विकास कर के हैं, की बर्वनक पुर्वाको पर्या हो है। विस्तर 1 यह से दुल की देखते हे कि हिन्दे पर पोलस्का संस्था का पा है, में उत्त हेक्पुर्वाने व्यक्त या महे हैं, को पत नहीं क्रमके 1 दूसरे और, विनावी भूगाओंने का है--नो काल और समिनाती है, से

अबके अध्यक्षी 'जार्ड 'जार्ड का से हैं, बढ़ी करिनकारे इसके केटी कुछ का पाता है। इस समार का संस्थार कास्तुत्व है और मेंप्र-क्रेस्टरें कुल हुआ है। सर्वेदि आपना प्रकार प्रमाने पहले रिस्पा सामी सामि-मानिकरी प्रमान क्यांके कोई का का है। यह जेन कर मोगरेने काल हेक, से य मोर्ड पता और य पूज होता। सभी नरवाडी कुलकारेको प्राप्त कर रेले, अधिकारी प्राप्ति से विस्तीको केर्स हो जो। देखा जा का है कि कबारे सभी सोग समस्रे केल होना पहले हैं और हरते हैंनो स्वाहति हमा पी क्यों है, मिलू बेसा होता को । महत्यों अनुमा एक ही सहत और सालों क्रमा होते हैं, जोतु पुरस्क पुरस्क क्रमीका लेका हेरेके बारत करती प्रतिने बहुद रूपन है करा है। व्यक्ति व्यक्त पान, प्रेया अवने कालेको आनेकाने प्रयूपी को विकासिका कारियकार गाउँ हैं। श्रुतिको अनुसार गाउँ की गाउँका सम्बद्ध है और प्रमुखे प्रतिन्त्रीका एतीर माहणानु है। प्रतेशन आपन करनेने प्रतिकार के बात है जात है, सिंह स्त्रीकाही क्षेत्र को परा: का क्रांक्यको क्षेत्र हुआ हैत कारे करीन्त्रे अनेक के कार्य है।"

# जीवात्मकी नित्वता और पुण्य-पाप कमेकि सुमाशुम परिणाय

स्टीज्या अकुरले अस् विकालने कार्यकारकोरे के 1 बीच प्रस्तान केले हैं, इस विकासों में डीफ-टीब राज्यान परकार 🗓 ।

वर्गनवर्ग का-नेत्रक नात क्षेत्रक स्टेक्स राव नी हैता। वृत्ते करूवा में कहते हैं कि बीच करता है, से उनक का प्रत्या विकास है। जीवा को उस प्रतिको प्रोक्यर सारी सरीतरे काम काम है। सरीतके जीवें सामेका प्रमान-प्रमास पूर्व पूर्व कि पान है सामा नव प्रकार है। इस क्यानी क्यूनको जिले हुए क्योंको सुन्ता कोई नहीं केया। अपने को कहा कर्न दिला है, को यह सभी है जेनेना । देवने हर कर्मका कमी गतः गर्धे केम। गरियाम गर्म कारकार्वेका अस्तरण करते हैं और नेम नुसर कारकार्वेने प्रमुख होते हैं । से कार्न जनुष्यका अनुसरम्ब करते हैं और उनसे प्रथमित होगत यह कुरत जन लेख है।

क्रमण क्षेत्र--वीव सुरुषै क्षेत्रिने केले सन्य रेखा है ? मान और गुजरों उसका सन्तन किया ज्वार होना है ? और प्राचननी तथा चयमनी चेनियोची अधि को बिजा राज 動作 計2

अवार कुरस्कानेक अनुसार कार नीवियोंने और कर-क्रांकी अनुसार अध्य चेलियोचे बाध काल करता है. anen पे अंक्रेको कर्तन सरक्ष है। केवल कुमकार्थेका क्रेकेन क्षेत्रके बरेकको केवलको आहि क्षेत्री है, सूच और अञ्चल केनोच्या विकास होनेवर कह जन्मध्येतिये साम होता है। चेवने क्रानंतारे प्राप्त करोंक जानामारे पद-वर्ती कती चेतियोर्ने क्या कता है और करी क्यूब नरकों पक्षा है। यह सन्दर, मान और वृक्कानको दृश्मेले सक् विभिन्न होता पुरस्त है। अपने ही प्यापेक समान को धार्मका बंधारके हेवा मोको पहले हैं। वर्ष-कवानों की हुए की कारणे प्रकारकी किलेक्केरिको और नत्कोने पक्षर सरकता कर्ता है। कृतुके पहल् काकारोंने कुछ प्राप्त होता है और का प्रशासक चीन करनेके दिनों ही का नीम नीम पारियों क्या होता है। यहाँ किर नहे-नहे बहुत्तरे सम्पर्क कर बैठता है, क्रिक्ट कारन कुरूब वह रेजेक्ट्रो हेनीकी राष्ट्र की पूर-कर प्रकार कर पेनरे को है। हा जार करि क निरका क्षण बद्धता कुछ है, उन्होंने अयोको क्षणी की कुन्छ, र स्था है हुए प्रमुक्त रामा है। कुरुक क्याने क्रमंत्रको का-चीर कर्मकेबेका संख्या करते विका (इसनेवारं क्रमीका क्षेत्र क्षेत्र की होता और नवे-क्षे कर्न करते पते हैं, तनसक अनेवाँ कहोंको स्कृत करना हुन्छ था। कहाकीराज्य इस संसारचे च्यान स्टनाम कहा है।

ाक्य क्यानकारक कार्रोक योग पूर्व के बारे है और सामनेक प्रता जाने प्रति भी शर पाते हैं, का बा का और क्षेत्रका सारम् करण है। अतः पुरुषकोति करणस्य को कार लोकोंको प्रति होती है, वहाँ सम्बर यह कोकरें जी पहार । पान पहलेकाले महत्त्वको कारको कारक हे बारी है. किर असेंद्र पायका सन्त नहीं होता। इस्तीरने यून्य करनेंद्र हिन्ते ही प्रकार करना जाहिये, पानका हो त्यान ही अधित है। को संस्कृतसम्बद्धाः, विलेशिक, वर्षेत्रः तथा क्यान पान्य रेक्टरेकारक है, जर सुद्धिमान् पुरस्को होती है क्लेक्टरे सक्ताने जाति होती है। इस्तीनने अनेन्द्र क्यूनानने कार्यने जि क्षा प्रत्यक्रोंके वर्षका कान को और विद्वार्थ से समान बतीय को । पंतारमें विकार विकार का व जोने, ऐसी मृतियों मीतिया करावे । अपने कवि अनुसार ही धर्म की, वितासे कर्तीका संबाद (निकास) म क्षेत्रे कर्ते । सूदिकार, पूजा वर्गते हे अरुप करता है, क्लेक के सकत करत करता है और अभि कराने हुए वर्गक कर वर्गना है पुर pliner \$1 per rest og seden der \$, some fre !

क्रम को जान हो पान है। ३मा विजयनोरे संबुद्ध होनार का प्रश्न क्षेत्र और प्रकारकार की आगरिक क्षेत्र है : वर्षात्र पूर्ण प्रमा, नार्व, प्रमा, प्रमा और पाय-पायी प्रधानके क्रिक्ट-कुछ रूप अनुस जार करता है। भा रिक्ट स्ट्रेंड क्षांक्र हो परस्य पान पान है। क्षांत्र प्रत्यक्ती संस्थित सकोको पावर निर्म होई या संबोध नहीं होता, या अन्यक्षिके कारण वैदानको अञ्च क्षेत्र है। बुद्धिके नेवीचे देखनंत्राम पहुल ११४-देश आहे. हेप्पेले पुरा नहीं होता । यह क्रिक्ट से पूर्व हे बास है, पर क्लेक परिवार नहीं करता। हत्वर्थं कार्युक्तं पाक्रमान् सम्बन्धान यह स्थापने 🛊 ज्याननेपा See बद्धा है, अप्रतास आसम्बंद गरेसे न बैदयन का जीवां करायो परिनेद रिने क्योग करता है। का उपनर वैक्षाको पात क्षेत्रर व्य क्षाव्यक्तिक परिवार करता है. विक्र कार्निक होका अन्तर्ने मेश प्रतर कर तेता है। चीनके बारकारक सामन है तथा और स्थवत पूर्व है तम और क्र--- कर और प्रतिकोश्य किया अंत करने । अन प्रतिक हर काम अवसे सभी पर्वाचीका नवाजीको हार करता है। इतिहासिक, प्रारम्भक और प्रश्नान-प्रार्थ प्रय पहुल परस्का (मेंब) को की कर का रेस है।

## इन्द्रियोके असंयपसे हानि और संयमसे लाग

अक्रमणे तम निमा—सर्वातम् । इतिसर्व औष-काँगः है ? अन्याः निमाः निमाः अक्रमः चारमः व्यक्तिः ? निमानाः चनः चना है ? और उम्र चारमी जाति निमा जनार होती है ?

वर्गनाय क्षेत्र — विश्वविद्याद विश्वविद्याद वर अवव हार जात करनेके तिये जाते व्यक्त वर्गनाय कर अवव होता है। करने चार हेमेपर प्रयक्त अस्ते और त्या वर है। हो जाता है। किसमें प्रय होता है, अस्ते तिये वर्गना अस्ता करता है। और जात होनेका अपने असीव विश्वविद्या करनार करता करता दाता है। अधिका विश्ववे अस्ते दान करना होता है असके निर्माण सुन्तिक स्था है। हो अस्ते हैं: विन लोग और योग करते हैं। इस जातर स्वेचले अस्ता है किस लोग क्षा पर्म करता की है। इस जातर स्वेचले अस्ता है, किस लोग क्षा पर्म करता की है से कोस कार्यामा होता है, अस्ता ओटमें प्राप्त की दाता है। कार्या कार्यामा करनेकार प्रयुक्त कार्यामें अर्थ कार्या है। कार्या करीय प्राप्त करता है किस अर्थनी विश्वविद्या करता है। कार्या क्षांत्र स्वाव्य करनेकार प्रयुक्त कार्यामें अर्थ कार्या है। के स्वाव्य करीय स्था करता है किस अर्थनी विश्वविद्य होगे करता है, से या करीय स्था करता है किस अर्थनी विश्वविद्य होगे करता है, से या करीय स्था करता है किस अर्थनी करता हालने पान करनेकार करता है किस वस अले कि और विद्वार पूजा को इस करने रीकरे हैं, से अले कार्याने का सवायोग करा की पूर भी भी नेहारिकांक कार्या है। स्थानने में की कारण करते हुए तीन प्रकारके सवार्य होने सब्दों हैं—(१) का मार्ग जनका विवार कारण है, (२) कार्योंने कार्यों हैं क्या बोस्ता है और (३) कियहार में कारण है सामाण करता है। अवनि का कारण उसके अके गुण यह है जारे हैं। अपने की कार्याकों क्यांगां कार्यों किया कही है। का कार्यों का लोकने से दुन्ह होता है है, पहलेकने भी की वहीं पुणीर केगां कार्यों है। इस प्रकार महान कैसे पारांग्य केस है, यह कार कार्यों स्थी।

अस वर्गको जाहि केले हेती है, इसको सुने : किसमें हुए है और किशमें दुःस—इसके विकेशनों को पुजल है, व्या अपनी कीएन वृद्धिते विकारमध्यो दोगोंको पहले ही सबझ नेवा है। इससे वह सायु-व्यापनओंका प्रमु करने समझ है। उपयुक्तको असकी युद्धि कर्ने अपना हे बाती है।

विकार । पहासूनोधे बना हुना यह प्रस्तृतं चरावर जनात् प्रकारका है। स्वासे उत्तृत्व चोई पर नहीं है। याँव पूरा वे हैं—आवार, जन्, आंत, कार और पून्ती : एक्ट, सर्था, हार, रस और कार—ने कारक: इनके निलेग मुन हैं। योग पूर्विके असिरिक इस साथ है नेतन्त, इसीको कर कहते हैं। सार्वा तथा है बुद्धि और आठवाँ है अहंकार। इनके रिला पाँच प्रानेतिकों, जीवारमा और साल, रच, का—साव निरुक्तर साथ सार्वोच्या यह सामुद्ध अव्यक्त (पूर्ण प्रवृत्तिकों कार्य) कारकार है। याँच स्वतिकांके सभा कर और बुद्धिके को कार्य और अव्यक्त विका है, कार्यद्ध समितिस कार्यमें यह सामू। वीशीस सार्वोच्या कार्य कोन्यका है।

पृथ्विके योग गुण है--नाम, स्वर्ग, सर, सा और नमा।
हार्ग गण्यको क्षेत्रकर सेच सार गुण करणे भी है। नेमके
सेन गुण है--नाम, सर्ग और सर। वामुके कम्म और
स्वर्ग--हो है तृतः है और आसरक्रम क्ष्म हो एक गुण है।
दे पाँच गूण एक-गूलोके किया भी स सम्बद्ध, इसरेणक्यो
प्राप्त सेचार ही स्थून करणे आसरित होते हैं। जिस सम्बद्ध सरावर सार्ग सीध अंबारणंत हार अन्य क्ष्मी प्रमाण कर्म है।
हुई क्ष्मी कियारणको ही करणी मृत्यु कर्मी है। इस असरे हैं।
हुई क्ष्मी कियारणको ही करणी मृत्यु कर्मी है। इस असरे हैं।
हुई क्ष्मी क्षित कियारणको ही करणी मृत्यु कर्मी है। इस असर है।
हुई क्ष्मी अस्वेद अंगरी की रहा कार्मि क्षमा करणा क्षमा है।
है। वाह्य इत्तिक्याहा नहीं है, केम्बर क्ष्मुणानो ही असर क्षमा है, सो अस्वाद क्षमा मृत्यु है, केम्बर क्ष्मुणानो ही असर क्षमा है, सो अस्वाद क्षमा ही है, केम्बर क्ष्मुणानो ही असर क्षमा है, सो अस्वाद क्षमा हो है, केम्बर क्ष्मुणानो ही असर क्ष्मुणानो ही असर

सपने-सपने विकासित स्वित्राचन व सरके इच्छिक विकासित व्याप वारनेवाली हम हुन्दिकोची तक साम्य सपने बहार्य करात है, इस समय वानी व्याप्तमान करात है— इन्हिम्बिश्रह्मारा मानी आस्वारकोची स्वयुक्तकारका अवल करात है। इससे आस्वद्धि अप्त हो जानेके करात वह समूर्ण हमेकोर्थे सम्योको कराम और सपनेन्द्र सम्पूर्ण हमेकोको सिक्क देखा है। इस प्रकार पशस्त्र सहाको कानोव्याक इच्छे पुरुष प्रकार प्रस्ता है। इस प्रकार पशस्त्र सहाको कानोव्याक इच्छे पुरुष है। इस अवस्थानोंने एक पूनोको आवस्तानो देवनेवाले तम आहुन्द्र इस्तीका कथी थी अधुनकरोंने एंचीय पूर्व होता। यो पर्णायन हैकोचो स्तीर जाता है, उस घोगीको एकेवन्त्रिको अध्यक्ति इस्तानिक इस परन पून्नार्थ (योक) की स्तिर होती है। बुद्धियन् अपूर्ण देवोके इस पूर्व प्रीयको आहि-अस्त्री एहिए, स्त्याम् अधिकारी, अनुपर क्या निरुक्तर क्याना है।

हे विद्या । सम्बद्धा पूरु है यह और तय होता है इतिस्पेंबर बंबार बारदेशे थे. और विजये प्रकार नहीं । सार्ग-नरफ आदि में क्या भी है, यह उस इन्हियों है हैं। मन्ताहित इन्हियोंको रेक्ट हो चोचका अनुहान है . यही भागूर्व स्थानाका शुरु है और प्रतिप्रतेको अधीन न रक्षना है। नरकामा हेत है। प्रतिप्रतेका क्रम हेरेचे-इनके दीने कारनेके सभी तराके क्षेत्र संबंधित केरे हैं और क्योंको पहले कर नेनेसे विश्वीय प्राप्त होती है। अपने प्रतिनों हो निकारत मनसहित क्यों इत्यानिया को अभिन्तार प्रदा कर लेखा है, यह जिलेशक पुरूष पायोगें ही नहीं प्रमात, बिर अन्वीति के उत्तका संबोध के की फैसे प्रमात है ! प्रकार का करेर है रह है, जारन कार्य है, इतिहाँ केंद्रे हैं। की कुछल सम्बद्ध केंद्रोको अपने बस्पे प्रस्कर बक्कर्यक काम करता है, उसी उत्तार शामकान पूर्व अपनी इन्द्रियोको अन्तेन रक्तकर संस्कृतेक संस्कृतक पूर्व करता है। को केवली शर्म की हर पर इसे इन्हिस्करी के परावत् चेत्रेची सन्तरेत्वो होको सेच्यात है, वहे जार सार्ति है : सहस्रात्त हैं इनेवाले बोहोंकी तथा विक्योंने विकरनेवाली हर इन्द्रिकोची कराने करनेके दिनों वैक्यूर्वक प्रकार करें, कैलावर्गक स्टोन करनेवालेको अन्तरन के उनस विकास आप केती है। किस्सोकी और वानेकाली इन्हियोके फेंक्रे नहीं बनको ची रूप दिया मान हो था बुद्धिको उसी पति हर लेता 👢 केरे नहींकी महत्वारणे बरावी हां जवको कपुरत होका अने रेहर है। इन हः इन्द्रियोक्ते विकास बहानी पूरूर प्रोड्सक हराकी कारण करहे हैं, फराबर्ट सिद्धि मानते हैं। यांतू से उनके रोगोका अनारंकार करनेकाल केराएंग परंग है, वह कार्या निरम्भ करनेह न्यानका आगन्य संस्था है।

#### तीनों गुणोंका स्वस्थ्य तथा ब्रह्म साक्षात्कारके उपाय

मर्गानोपर्य करते हैं—इसके बहुत्य धीतिक प्रकारने गर्मनामधे कहा, 'जब में अल, रच, तर—इन तीते गुलीका सरका कानत कानते हैं। गुलते इसका प्रकार गर्भन करो।'

कर्मनाय क्षेत्र—अस्था, अस में होनी कुन्नेका पुत्रम्-पुत्रम् करमा स्थात है कुने। सेनी पुत्रमें को एमोनुना है, जा मेन अस्थानेकाल है स्थोनुन करमेंने अपूर्व करनेकाल है। पांचु सम्बन्धार किलेय अस्थार अस्थान किसनेकाल है, इसलिये का समये आप काम गया है। क्षित्रमें अञ्चाद अधिक है, जो मोहारका और अस्थार क्षेत्रम दिन-रात तीर लेता स्थात है, विस्तानी इत्तिम्ब क्षणों पूर्व है, जो अधिकेदी, सोची और अस्थाति है—ऐसे स्मूचनको समोगुनी सम्बन्ध्य काहिये। को अपूर्णिकी है काम सार्थनाया और विकारतीय है, कुलोर्क क्षेत्र मही देवाल, सक्ष मोदी-

और विकारतीय है, जुलाके क्षेत्र को बूक्क, तक कोई-ग-मोई कान करना काइक है, विकार विभागक अञ्चल और अधिमानकी अधिकात है, कान्से प्लोगुनी पंचाले । विकार भीतर जकाब (जान) अधिका है, को और और विवेदका है, मुस्तियें क्षेत्र में देशनेकाल और विवेदका है क्या किस्से प्लोगको जान दिना है, वह साविका पूजर है। प्लानको काम दिना है, वह साविका पूजर है।

पञ्चलका बाह्य इस हानका भागर कर उहार अभा-भागमधी हुद्ध रसे। साली बहुने और विहास बहुने स्ता अपना यन आव्यक्तियानमें सनावे। इस प्रवास के सह अपने इक्के आव्यक्तिश्वासका अपना करता है, वह प्राणित वेपनाकी भागि अपने मन:अर्थको निरामार अपनावा कर्मन (बोच) प्राप्त वारके पूक्त है अपना है। इस स्वामें अपनोर्त प्रतास और संच्या कृतियोको कृतमा वारिने। संवासी वहीं कर है और वहीं क्यानामार कर आहरेनामा सेंदू है। स्टब्के स्रोचनी, वर्गको हेक्से, विद्याको

इस्टाब्स अपान (रूपा) समये बढ़ा वर्ष है, अब समये प्रयान कर है, कर है प्रमाने ज्ञान क्षा है और जालाकर हार ही संबंधे ज्यान क्रान है। एक बोलन पाद करनाकारण है. सार्कों के प्राच्या नेवार है। विसन्ते प्राणियोग्य अपना कारण हो, वह समसे कावर राज करा करा है। Armir कर्म कामनाओं सेवे कु रही होते, विक्रमें अपना कर कुछ ज्यानको अधिने हमन कर दिना है, नहीं सुविद्यान है और नही स्थानी है। फिली प्राचीकी किया न बारे, सबसे निरामान रखते हर कियाँ । यह सुर्वन प्रमुखनीयन प्राच्या विद्यांको केर २ करे। यक भी संबंध न रकता, वांधी इक्षाओं में संबंध रकता, मानक और स्वेत्स्यको उत्तर केच-को सबसे जार प्राप है और भूते अवस्थानको सामन है। सब प्रकारोह संस्थान तान कर परावेच और ह्यानेको चीपीकी केरते कुछ वैदान बारन कर क्षत्रिके प्राय गय और इत्रिकेक संवत करे । को विकेषिक है, विकास करना अधिकार हो नवा है और यो अधिक पहलो जीवनेकी प्रका करता है, जिल क्ष्माने को प्रतेषको का पुरिन्ते आसंक्षि पेतृ पालेकारे योगोरी अस्तर—अस्तरक स्थार करिये। वर्ज गार के राज्य से क्यों है, को विकालिये आस्तिको सीव है, की कृतका निर्माद्वासम्बद्ध है बना किराबी प्राप्ति अक्तको किया और कोई सम्बद्धन की है—को अद्यान हर होनेवर राजेंगे अधिकारणे प्राथमित होता है, को सहका पर है, नहीं असीन अपन्य है। को पनुष्य सुद्धा और दश्का होनोहरी प्रकार राज्य देता है कहा को सावना आसंस्थितक है साता है. को मान्यों कर हेता है। विकार | उस उत्पार इस किरमध्ये की केल कर और काम है, को उस असाओ we fem

कर-सरकारो और स्थानको प्रकार कार्यको ।

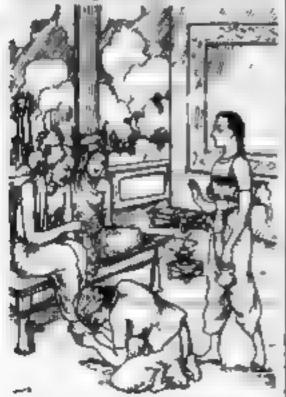
#### बर्मव्याधकी अपने माता-पिताके प्रति चक्ति

मर्गामोरची मार्थ है—चुनिक्केंट | इस प्रमान सम अर्मन्यस्थे पोक्तासम्बद्ध वर्गीया सर्वत शिक्ष को स्वैतिकद्व अरहान सरका प्रमार होन्यर को नोत्त, 'कुनो मुक्तो को कुछ मार्ग है, सम नाशमुक्त है। मुझे को देख कार प्रमान है, वर्गोंद्र विकास है, सम नाशमुक्त है। मुझे को देख कार प्रमान है, वर्गोंद्र

वर्गन्यको का<u> अञ्चलकोत् । अस मेरा आक्रम कर्ग को</u> मारावार केरियो, निरामके मार्जनक मुझे यह सिर्देह किसी है। मन्द्रे चीतर प्रकारिये और मेरे निया-नाताका वर्धन क्षोकिये ।

म्हानके हैंसा स्थानेक अनुस्ताने चीतर प्रमेश वितान, नहीं जमें एक स्थान सुन्तर पूर्व वितानी पहल, जिसमें बार करते थे, बूनेकी सकेटी की हुई थी। जह मराबी प्रोच्छा देखते ही पूर पोड़ स्थान था। देखन जान स्थान का आने वेकताओंका निकासकान हो। देखनाओंकी सुन्दर प्रवित्तानोंके यह प्रकर और भी सुनोतीका हो सह सा। एक और सोनेके दिनो निर्धारीतिक पारंग था, सुन्ती और बैठनेके सिन्दे आहार एके दूर में 3 नहीं कुर और केसर आदिकों फैटी सुर्गय फैल पी. भी। इंडायर्थ देखा एक ज्यून सुन्ता अवस्थान धर्मकामके विद्या-स्वता फेलन करके प्रश्ना विकास की हूर है, उनके वरीरपर केन क्या ओशा वा हो है और पुण-स्वया शाहिते अन्तर पूजा की हुई है।

वर्गन्यायने विता-काराको ऐक्से हैं अने वरकोवर हैं। इस दिया, पृज्यीका क्षेत्रक स्वर्धन जनाम किया। कुछे माता-विरा को केंद्रसे खेले, 'केटा ! इस, उक्तः हू वर्गको कारता है, वर्ग ही सदा तेनी रक्ता करे। इस केनों तेरी सेन्यते, तेरे सुद्ध व्यवको कहा प्रकार है जेरी अल्थु कहें हो। हुने इसक



गति, तथ, इसर और हेब सुद्धि उद्या की है। केत ? तु सस्युव है, यूने निज निवमसे इमारा सरकार—इस्परा कृत्य किया है। इसको है देखता सम्युवा है। दिलोके सम्बन्ध प्रत्य-दक्ता प्रत्य विका है। मेरे जितके विश्वास्त और अधिकास्त आहे क्या हुए योगे भी तेरे इस सेवाधार्य स्थूप अस्त है। कर, सब्बे हेवाने सन्य प्रांत है।

और करियों कथी यू इसरी सेवा नहीं होहता। अब भी तेरी यूदिमें इसरी सेवाके शिवा और कोई विचार नहीं है। क्षायुक्तकोंने किस सकार सपने कृद्ध पाता-शिवाकी केवा की को सबी सकार—सहसे की क्षायर सुने इसरी सेवा की है।

स्वतान् कारणे अपने प्रयानियाको प्रमाणकेताका परिचय दिया । जाँने भी प्रमाणका सामा-सम्मान दिया । सामाने कृताका अगट की और पूर्ण, 'जाप दोनों इस मरमे पूर्ण और संस्थानितिय समुख्या से हैं न ? आपका प्रशीर से नीरोग है न ?' अपने बद्धा, 'ही ध्यापन् ! इसारे परमे सभी संस्थानित का मी प्रमाणका है। आप अपना कहें, अपने पार्ट स्माणका पहिल्लों न ? समोने कोई सहा से नहीं हुआ ?' अपने स्वाह, 'हों, सुने पोर्ट कहा नहीं हुआ।'

स्ट्रांचर म्हण्ये अपने निक-मध्या और देशते हुए व्यक्तिक अक्रमने का -- कावन् । ये पाल-विका ही वेरे प्रचान हैंगता है। को पुष्ठ देखाओंके दिन्हें बहना पाहिने, यह शब में प्रश्नी केलेके रिल्के करवा है। इसकी जेनामें मुझे अलगार पही क्रेक । केर्र स्वयं संस्थाने मेंन्वे कृद अवदि तैतीय देवता पुरुषेत्र है, जही प्रकार मेरे तिन्ये ये युद्धे बाता-विका पूजा है। विकालेग हेकाअओके दिन्ने केंग्ने कमा प्रकारके क्याप्त समर्पण कशो है, करी जबार में भी इनके दियो करता है। बहार | से करा-निका है मेरे सर्ववेद्ध देवता है, मैं कुल-परत और स्त्रोते इन्हरूके संस्कृत करका है। जिन्हें निकृत् लोग अही। बदले हैं, वे भी किये के ही है। बार्ट केंद्र और बहु भी मेरे दिखे के नार्त-निया ही है। इन्होंके रियो मेरे पुर, की रूपा दिस है। वे क्रम को इसीबंदे रोकों स्टापित है। सी-क्सोंके साम निया में इन्होंको सेवा करना है। उसे है जह जानता है, करण केळ है और सर्थ है प्येक्ट प्रतेसकर विकास है। है कारण है हुने क्या कारण है और क्या जातें । हुसीविन्ने हुनकी वर्तक्री बीवें सात है और के इन्हें अबने नहीं समती, बा चौन नहीं समय । इस अवहर अस्तर्भक व्यापनर में सद्य इनकी

### कौशिक ब्राह्मणको पाता-पिताकी सेवाके लिये उपदेश और कौशिकका जाना

पूर्वान्त्रेयको स्थाते हैं-इस प्रकार कर्याचा स्थानने हारामध्ये अपने पाल-वितास स्थान करानेके प्रकार करा. 'बाह्मण । यहा-विकासी सेवा ही मेरी तनात है, इस राज्या क्त दिवने । इतीके प्रधानने मुझे दिन्न दक्षि प्राप्त हो नहीं है, विकासे में बार कार गया कि अप का परिवास कीने बाउने बार्ड जाने हैं। विकासतीने जानको बार्ड नेवा है, यह अपने पारिकारके प्रधानने करावने ये उन्ने करे करती है। अर मैं सारके हिन्दे दिन्दे कुछ बारे काला है, सुनिये । आपने बेहोका करणाय करनेके दिन्ते निता-नाताकी अपन वैन्ते विना गुरुवाग विरया है, इससे इन बेन्सेयन वैतासका हुन्य है और भा आयो दिने आएम अनुभित्र मार्ग है। आयो बीकरों में केंगे को मारा-निता अन्ये हो नने हैं: बहुने, उने अस्त सीविने । ऐसा सानेने आवस वर्ग ग्रह भी होगा । आय सम्बद्धी पहला और वर्णन्तानी है। मिलू पाल-निवाली बेबावेर दिया में तक मार्थ है। आप तरेव है मामार उने प्रत्य मानिया हैए कार्य क्रिया परिचय, या की आयो किल्ली मात कही है। मैं इससे बहुबर और कोई को नहीं ममकाता (

सहार गोव-जनकिंद् । या नेरा वहा सीवान सः, यो मैं वहाँ आया और दुवारा सम्बद्ध प्रस्न हुमा । हुवारे स्थान वर्णका तम समझानेनाने लोग इस गंजारने हुनेन हैं। इसम से इसारे जन्मोंने कोई मिरत ही ऐसा है, जो वर्णका तम प्रान्ता है। या वह वी समः निरम्त वहीं। सुक्रा सम्बद्धा है, असा में दुवार दुवारे समझे करना वहुत प्रस्ता है की स्थाने का दूर राजा क्यातिको करने वैद्याने समायां था, असे अधार दून-वैद्ये संस्ते आया केर नरवाते स्वार निरम है। अस में दुवारी व्यापेस अनुस्ता अस्त-निरम्द होना क्यातिक स्थान अस्ता हुद वहीं है, वह सर्ग-स्थानेस निरम्ब सम्बद्धा करिन है, वह-

करिके प्रमुखने की विकास है। मैं तुमको का नहीं प्रनता, विक्री प्रमुख प्राप्तको कारण सुन्तर सुप्रवेशिये अन्य है। नक्ष है।

व्यक्तको पुरुषेतर ज्यावने करावा कि 'मै पूर्व-क्यमें वेक्नेक स्वकृत का; क्यक्किमें मेरे हात कुछ ऐसा कर्न कर कक्ष, निवस्ते कुछे क्यकिक कार प्राप्त हुआ। स्वी सार्वने मुझे कुल्किमें नाम होना क्या है।'

महानारे नक्ष-कृत है नेवर को मैं पूर्व आहमा ही मानता है। को महाना हैकार की कारी, वालों और अस्तानार्थक मानोकाल है, का कुत्ते ही उनकर है। इसके निराम को कुर हैकार की कर, तथ, कार करा कर्मका स्थान पारता है, जो मैं स्वापन ही बानक है, क्योंकि कर्मक स्थानारते ही महाना है। हम असी। सम्बद्धि कारी है और सार्थानको पृष्टि किसार है, इस करी। सम्बद्धि कार्यों के और सार्थानको पृष्टि का्रुक्त कार्या कृतार्थ है। सम्बद्धि कार्यों स्थान में कार्यों स्थान हुन्ति का्रुक्त का्रुक्त कार्या है। हम्मान कार्याम हो और वर्ष सक् मुक्ति क्यान करें।

व्यव्यवस्य वर्ता है—ब्रह्मानको नाम कुम्बार वर्गाया सामने प्राथ केंद्रार कहा, 'क्यून शका, शव आप पर्यार ।' प्राधानके वर्गकानको प्राधिका को और क्यूने कर दिया। या कार्या कार्ने कार्य-दिशाओं पूर्व केंद्रा की और क्यूने प्राधानके अस्ता केंद्रार सामी की प्रश्ना की। पुनिश्चित । पूर्वत को अस्त विकास, अस्ते अनुसार की बरितास की और अस्त्रकार पहला पुरुष्ट क्यून की बरितास की साम-विकास सेंद्रास कींद्रा कही की, यह की पुना है।

पृथ्वीत कोर्ते—मुनेबर | आपने कार्यर विकास का क्या है अर्थुक जनकार सुरात है। इसे मुख्यर इसके सुरा विका है कि ब्यून-प्रा समय भी एक क्रमके स्थान केर सका। अवनो का कांकी साम सुन्ते-सुन्ते पुत्रे सुरी ही नहीं हो भी है।

#### कार्त्तिकेयके जन्म और देवसेनापतित्व-प्रहणका कृतान्त

मुधिक्षेत्रं पूक्त-वार्वकोहः । जाविकारिकनवेका क्या क्रिया प्रकार कृता या और ने अफ्रिके पुत्र किल क्यान हुए, यह स्ता अस्तुः सुत्रे अवास्तु सुननेकी कृत्य करिनने ।

प्रशंकिको सह—कुरुक्त | सुनिषे, है अवस्थे महिन्द्र कार्तिककोटे कक्षा कृष्ट सुन्ता है। पूर्वकारको हेक्का और असून आकार संस्था एउनते को हैं। इसमें एक है कोर कारवारों असूरोधी हेक्काओवर विकास होती की। जब इससे कार-बार अवनी हेकाको नह होते देखा के वे कारत कर्कावर कार्यन एक क्षेत्र रोजाकी जान करनेके हिन्दे विकास करने रूपे। इससे उसके कारोपे एक क्षिके सार्तनात्रका इत्तर मद्भा का कर-कर विकासी थी—'अरे। कोई पुरूष हैंके। की एक करे।' इसरे इतका विकास कुरूपर कहा, 'भीत। यु का का, उन्न के



रित्ते जानती कोई बाद नहीं है। विकास करके बाद न्यूनका हैवा कि उसके बानके क्रमां आह रित्ते केली है। पहा है। इस उस कान्यका क्रमां नावकार इसके बाद, 'है कीम कर्न करनेकारे हैं के किए अगरत क्रमां केन्यादा क्रमां कारत पहास है ? जाद दश, में जातार इस है। उसमां क्रमांका क्रिया केल है, उसमांकार केला, 'अरे इस है जू ही इसे केल क्रमांका में काम बाद कुका है। देख कार्यका है है बोका-बारका अपनी पुरीने और इसका है।'

्रेण स्थान केवीने इसाम अपनी गा प्रोड़ी। सिट्ट इसने नामने वास्तार को बीम्ब्रीनें कार साम । किन केवीने सामन कुन्द केवन इमान एवा प्राड़ायी पहल केवीन सम्मी और असी देश इसने को यी शुक्तो-कुन्तों करके पूर्णिया दिया मितने सामन सामने केवीको ही चोट एसी। जा परियो पारामार यह का बन्नायों क्रोड़कर पाना। केवीके पान प्रानेगर इसने जा बन्नायों क्रोड़कर पाना। केवीके पान प्रानेगर इसने जा बन्नायों पूछन, 'सुनुनित । पुर गाँन केन्ट विकालको पूर्ण हो है ? और पाई समुन्य पना महत्त है ?'

अन्यने करा—'इस ! में अवस्थिती सुधी है, तेरा कर देवलेन है। देवलेन नेरी महित है, तरे यह केशी यहते हैं।

वा कृषा है। इव केने बढ़िरे प्रधारतिको अद्धा केनर सम-राज्य केलके किने इस जानर पर्यापर आवा करती वी और व्या केनी केन जिल्लारि इने अपने साम कालेके तिने व्याप करता था: किन्नु केलकेनका से इतरर केन सा, मैं इसे वहीं कालों की। इस्तीको उसे से व्या के जाना, मैं अन्तरे साम-पर्यापनी क्या गर्था। असा कृत किस सुर्वेद सैरा केलेट कहिए होती है। अवसा, वसा की परिचा केले का होना कालिने। साम केली, 'से केला, एनम, पहा, काल, जान, एका और कुत कैलेनो केलनेनान, महान् करवानी और असान कालान् हो समा के तुन्हों साम विकास करने सर्वेदन करनेना प्रदा कर हो, वह स्वान्ति और कोलिनो वृद्धि करनेकाल पुरुष हो नेस की होता की होता

व्यव्यवस्था होते—एकर्! का क्ष्मको का पुनकर एकमे पढ़ के पूज और महोगे लेख कि वेस पढ़ बढ़ती है, केल से बहेर् कर इसके दिने दिवाको नहीं केल्। किर है को क्या से क्षान्येको नितास क्षान्योको पहा एकं और असे क्या, 'जनका्। अस्य हुए क्षान्यके दिनो कोई स्वयुक्ती और पुनर्कर पति काल्ये !' क्षान्योने कहा, 'इसके दिनो किस सम्बद्ध हुन्ये विकार किया है, बढ़ी कल सैने को सोबी



है। जिस्कें हरा एक महत् परावनी नात्म हेना। मह इस मानावा परि होता और इस्के केनानावाम नाम नरेना।'

"बहुम्मीको जा पान पुरस्तर हुन्हों उस्ने हरणा किया और उस करणाओं साम हेगार जाई महिन्दू हैं सामित्य को जा जा मी और देखीं में, जाई पर्ने । उस दिनों में पानित्य को जा जान को थे, प्रातिकीय सामान्य सरनेपर अधिकेत की पान जाने की जोत उसकी सामान्य सरनेपर अधिकेत की पान जाने किया दिस्स देखाराओं के इसे । उस प्राप्त पानित्य किया कर देखारा अस्तिकी इसियों सामान के सभी और में जाक विवास प्रात्नेकर भी पानकों केवाने होता में को । विवास प्राप्त अस्ति की । इस्तिकी अधिकेता पान प्रमुख संस्था होने समान इसे की । इस्तिकी अधिकेता प्राप्त प्रमुख संस्था होने समान इसे की । इस्तिकी अधिकेता प्राप्त प्रमुख संस्था होने समान

तार अर्थन्य को स्थानने काल हुए कि वे प्राप्तिकोत्त्वेत् योक्षित होतेले कान्योक्ष होता कर्म को को E si poi from four for 'A si unfrainzian un क्षारण करके अने अवनेने आरक्षक कोन्यी । कुरते करका के में। कर देन का सरमा और नेर्ड कारणात्रको स्ट्री होती।' यह स्रोपाल्य स्वाहने यहते वहनि अहेराची पार्ट का-गुरुवीसमाति विकास का सरस्य विरुद्ध और साहिthis we wan out only tethin till worth कारी का भूते हैं, इस्तियों इस मेरी इस्ता पूर्ण करें । माँ। इस हैला नहीं करेंगे से भेरे प्राप्त नहीं कर करते। में नहीं शक्तिकारी पानी दिला है।" एक शक्ति पहल प्रत्या होना अन्ते प्राप प्राप्तान विका । साहते उनके मौनेको अन्ते प्राप्तक के दिल्हा और को एक स्टेनिक कुम्बने रक दिला। पूरी कार करने कारियोके क्रोक्स कांक्स क कारण पहले अंतिकी पाल-कृतित की। सिंह उत्तरणांके १५ और परिकारने प्रधानों का सामा का काल जी कर संबंधि । इस अवसर कारणास सरकारे स्थितको मेर कः यह शासिक प्रोपंको जाते जुलानिक पुरस्को एक। जाते एक महिन्द्रीता काल्य क्ला हुमा। क्लीक प्रेरी क्ला हेंनेके कारण करका पूज 'काए' इसा । उसके का हिए, बाह्य पान, बाह्य के, बाह्य पुराने क्या एक केन और एवं पेट या। जा दिर्शायको अधिकार हुग्छ, हर्गियाको रित् का और पदार्थको अञ्चलको सन्तर हो गण। निस प्रकार बरेडा होता हुआ सूर्व सराम्पर्व प्रसानने सुरोगिक हो, उसी मकार विद्यालया जनाव नेको किन हुना



व्या व्याच्या कार पहार था। किर विद्युतिस्थायक व्यक्तियाँ विद्युतिस्थायक व्यक्तियाँ पहार देशके व्याप्त व्याप्त क्षेत्र कारणार्थि क्षेत्र क्षित्र केर्युति क्ष्युति व्याप्त विद्युत्त क्ष्युति क्ष्युत्ति क्ष्युति क्ष्युत्ति क्ष्युति क्ष्युत्ति क्ष्युति क्ष्युति क्ष्युति क्षयुत्ति क्ष्युति क्ष्युत्ति क्ष्युति क्ष्युत्ति क्ष्युति क्ष्युत्ति क्ष्युति क्ष्युत्ति क्ष्युति क्ष्य

वित्र प्रकृति क्षेत्रणांको जार करे होतार है जारावरे पूर सौद्यानंको जाती जीव दिन । असे दिन्दी होतार है। और पूछ पाने असा की नेकानंकार करे हैं। व्यक्तिकारिक प्रकृति दिन्दू होतार सौद्यानंक सरका आरोग्य करना हुना कि पान । असे विरोधर हुनो करे को बाद बीतार करने एके ; वर सावक आरो कांग्या का बीतार-इसर हुनावर की प्रकार असे वित्र विवास करने करोग कर अहींने का प्रतिकार होता के साथ को नेको हेंग्यिति इस विद्यान विकास कोड़ साथ । उसके वालो विद्यान पूर्ण का केकांत कराय हारे प्रकृति क्षेत्र प्रवास होतार वहाँ साथको का प्रवास हारे प्रकृति क्षेत्र प्रवास होतार वहाँ साथको का प्रवास हारे प्रकृति क्षेत्र साथितकोचे प्रवास कोनार वहाँ चएप्रोमे दिल श्रुष्टाचा और वे किर गुण्डीपर आ नवे । कसी सुद्धानुबद्धी पद्धानीके विव स्तेन करका पुत्रन करने स्त्रो ।

हार, का स्ट्राविकोको का महन् तेकावे पुर्ण उत्तर होनेका समाचार परमूच हुआ के उन्होंने अन्तर्गतेन नित्य और स्ता कोम्योको जान दिया : विद्यु क्वाको स्ट्राविकोरे कार-बार कहा थि 'में अन्तर्ग कहा कालो है जो के पुर है; आन्त्रोल जैसा सम्बात है, केरी वाल की है।' विकासिकोर्ग हिंद का मारिकाको बाम्यपुर देवा या हो ने भी स्ट्राविकोर्ग हिंद करके सुरक्तरों उनके मीते करी भी के हमस्मिने को सम कालेका सीक-सीक वहा था। उन्होंने भी स्ट्राविकोर्ग कहा कि 'इसमें आवस्त्रोगोंको प्रतिकोधा आवस्त्य नहीं है।' नित्यु करते का करे क्याका कुनकर की उन्होंने अन्तरी चीनकोको स्वार्थ है हिया।

का देशाओं कार्य का रक्षांक को पूर्व के क्योंने आरक्षणे निरामार क्रमी पहर, फेलाम । प्रान्ता पाल अस्ताह है, अरूप को प्रांत गर क्रिकें। गरे आप ऐसा महीं करेंगे के नहीं देखकारिक एक वन बैठेश (" प्रकार कारि अपने विकास स्थेत था, से भी अर्थने देखकार पाला का केलाओं पान से करवर क्या केर देखा। mf uferer pu un von beneit dem fibrer fact in peak grost toffloods of regula राजद बढ़ी करी गर्मक थी। यह महत् सम्बर्ध देखालोची केल अनेत-नी से नहीं और कार्ने जारकार्य का समुद्रे क्षा कार्य के कार्य करें है कि कार्य के कार्य के कार्य हिले कामा देश स्त्रीत्कृत्यर कार्निकारे कृतिन क्रेसर सन्ते पुरुषे अधिको कामाने क्षां कामाने क्षेत्री। के राज्ये पूर्णांतर संबंधे करियों हुई देखांचाके जाउने उन्हें । इसके देशासंबंध प्राप्त, प्राप्त, अनुक और प्राप्त पाले एके हक्त से लिएर-विकट से बानेसे किस-विका सरावरणके सामान अर्थेत होने रूपो । इस अव्यार व्यान-तुम व्यानी व्यानी इसको हेक्कर अतिहर स्थानों है जना भी। का जो का de fam:

वैसारवाँके जान हैनेकर इससे अस्तावर जा होता । या बारने बनके वादिन अपूजर चोट की। जाने उसके अपूजेरे एक और पुंचा अस्ता हुआ। यह पुज्याक जाना किने था। स्वापके अपूजें पद्माता असेत होनेने जाता होनेके चारण का "मिसारा" जातो असित हुआ। इस असार आस्ताविके साहर केंद्रारी एक-पूजरे पुजाको सामा हुआ वैसावन इसको बाह्य गांव हुआ और अपूजे हेन्द्र चेनाकर सम्बाधी है प्रस्त

सी : पार्चु कार्यो केरके स्वीत इसके अध्य-का दिया। का केरकोण जन्म कार्य केरत कर्ष मनारे लगे।

ता प्रमुप अभिने उन्हें कर-विमोद्ध । प्रकार कार्यान हे, पुर सन्तर्ग सेक्टेस स्मृत करे। अभी तुने कार हुए का जीवर्ज है और है, फिर की कुले करे कोबोब्दे करने धारूने कर रिवा है और निम तुन्हींने इसे अच्छा को दिला है। अतः अस पूर्वो हुन करवार सीवी रोकोको विश्वीप कर से !' सर्वाच्याविकारे पूछा, 'कृतिका है यह इस विक्रोनीका क्या कार करता है और र्वका प्रकार का क्रिकानीको पहल्ला है ?" व्यक्तिके का, इस करवा सारियोची का, केन, उस्त और सुस प्रकृत केवल है प्रका प्रकार केनेनर की जून प्रकारको इकारे को कर केन है। या दूसकरियोचा संक्रम करता है, marketel up was I am afteile min unit कार अनुसार करने है। का पूर्व की पात से भी पूर्व से पान है और पहलांक अन्तरने की प्रचल होता. कारक है। इस्ते उत्पार को विश्वनीका कारवेशे अहि. कर, पूर्व और बार पर भारत है। में है एक पान हमारे कर्ण करते हैं, अवेदिक प्रकृत करा करा होता है। बीरवर ? तुम को बड़े हैं बस्तका है, इस्तीओ हुनी इसरे हुन कर सबसे ।" का प्राप्ते भी बात, 'बातवार्क ! इस इन्द्र बनावर इन सम्बन्धे क्षा करे । का प्रकारों का फांद बेन्स है, क्रारिये साम ही करना अधिक प्राथमें ।" सामने पान, "क्या । साम है निर्देश्य केवर विलेकीका प्राप्त करें। में से शास्त्र रोक्क है, पूर्व प्रकारको प्रकार को है। इस बोर्ट, 'बोर है रक्षत का सरका है, इससे मामको क्रांत हुए असी माने निर्दे वर्ष प्रतिने देनोचे । नहीं नहीं, में हमारे बीमारें नेव कालेका भी प्रमान करेंगे। इस समान नार्यन ही बाजेंसे मेरी और कुमारी समुद्धी करेगी और बैदी मेरी बारणा है, उसरें विकास समार्थ के केनी। प्रातीओ इन्हीं हुए कर पहाते, हुए किन्तरे कोई केन-विचार का पारे हैं कारने पता, 'कार-। प्राप्त विरामेक्ट्रोके अर्थन मेरे भी अपन के राज्य है, स्वर्धिये, में आरबी दिया अञ्चल पारत पार्ट ?" इस मेरे 'सम्बद इसमें कारोते हुए के मैं कर प्रीप्तः विज् की समझा प्रम मेरी अपना पानव पान्ये हो हो साथे। सन वेजनेपानीके पहल अवस अभिनेद पार से !' समझे पहर, 'बीच है, gradic from, immedial artifolic ten til alt स्त्रामंत्रेड हिएके लिये जान के क्योंके प्राप्त मेरा अधिकेक अस्ताको का वैक्षिपे।'

पर्यक्रमण कार्य है—सम्बद्ध इस प्रकार सहनेपर इसी

प्रसार केम्पानंति पर्याप कर्ष केम्पानंता केम्पानं कर हैए।। का प्रसार प्रार्थियों स्थित केम्पानं कर्ष है पुर्वारिया हूए। क्रांत कराकार पुरार्थाय कर रामाना करा। प्रारंशीय बहुँ पानेतीयों करायी हुई एक काम क्रांत गांधी काम है। अस्तिकेर एक पूर्व हिला। आसी कामाजिक क्रांत क्रांत है। अस्तिकेर एक पूर्व हिला। आसी कामाजिक क्रांत क्रांत क्रांत रामाजिक मेशू, जान, क्रांत और काम है काम क्रांत क्रांत है। अस्तिकेर केम्पानंति है क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत्व है गांध । क्रिंत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत है। क्रांत्व है। क्रांत, क्रांत, क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत्व है। क्रांत, क्रांत, क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत्व है। क्रांत, क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत

इसके पहला, कारिकामीके अले प्रकृत के के के के कार्य जारिक हुई और पाने स्टार्ड कि 'अल हकरे की है।' जा जारिक का इस्मीको स्रोधान किया और अलो सम्बद्धि कुन्ति के स्टार्ड कार्या है। किए हाइको केक्कि साम्ब्रे कुन्ति हुई केलोकार स्टार्ड है अला और वे खेक्के को, 'इक्टो की, वर्ष हुई है सहामीने केलोकार पति निका किया है।' जात के सामान्युरोंने स्टार्डक पर को सामाने पता को की सामे पान, 'सानेह । सहामीने अलाहे कन्तर पाने हो हुई अलाहे पता, 'सानेह । सहामीने अलाहे कन्तर पाने हुई हुई अलाहे पता निर्देश पर क्रिय है, इस्तिने अल विक्रिया



व्यक्तिकार्यक प्रस्ता वर्तन्त्रका व्यक्तिक । सा व्यक्ति विकार कामा वर्तन्त्रका विकार का प्रस्ता प्रकार कृत्यक्तिक व्यक्तिकार्यक और प्रकार क्रिक्ट । इस प्रकार कृत्यक व्यक्तिकार्यको व्यक्ति क्षेत्रक व्यक्ति हो। इस्तिक व्यक्तिकार्यक व्यक्ति स्वार्थ, व्यक्ति, व्यक्ति व्यक्तिकार्य, व्यक्तिकार्यक व्यक्तिकार व्यक्तिकार व्यक्तिकार व्यक्तिकार्यक व्यक्तिकार व्यक्तिकार

#### श्रीकार्त्तिकेयजीके कुछ उदार कर्य और उनके नाम

मानेनेन पार है—सार् । सारिका सेसाय और देसारों का देसां हुआ देस स्वाधित है. पार के क्या कर आहें। वे अन्वता और सार्वित की, किए के प्रतिनें को सार दिया था। उन्हें देसोंक कार्य प्रताद कार्वित के पार, नेता ! इसमें देखान परियों स्वास्त्र है इसमा सार कर कि है, इसमित इस प्रवाद की इसमा सार है। उन्हें किसीने का प्रवाद की सा प्रवाद है। इसमें है हमार क्या हुआ है। अस इसमें असे बात स्वाधित हों। हे स्वाधि देश को दिया का हुने कारत पुर को साम कार्यों है। इसमें दिया का हुने कारत पुर में साम कार्यों हैं। सामने साह, "निर्में देखने । अस में साम कार्यों हैं। सामने साह, "निर्में देखने । अस में साम कार्यों हैं और में सामका कु है। इसके दिया सामने ।" व्यव व्यक्तिकारों अस्ती व्यवशेषा हर जन्म दिन विवा में स्वामे की कारी बाद, 'हुन की जीता पुत हो। में कार्यों हैं कि इन नेय एक सरमात कुर्वन दिन कार्य करे।' का कार्यों उससे बाद, 'हुक्दी क्या हुआ है?' स्वाह बोलो, 'में कुटक्यांकीलों कार्यानों क्या हूं। क्यांकों हैं। अधिकार केंग्न अनुदान हैं। किंतू अधिकों कुर्वन्य केंद्र केंग्ना बाद की है। में किंत्यर क्रिके साथ कुर्व कहती हैं।' का कार्यों कीं, 'इक्टक्वेंक इक्ट-कार्याने की की कहती कर्यों कुट सिने हुए होंगे, उन्हें में 'क्या' ऐसा कहतर ही अधिकों इक्ट करेंगे। कार्यानी। इस क्यार आधिक पूर्वक

क्यापने ऐसा नाइका नित काहाना पूजन विकाश हरते जो नाइ प्रेसीन हुआ और नित अधिनो संयुक्त हो नाइके



क्षान्त्रा पूरत नित्य । सहन्तर स्वान्त्री कार्य व्या, 'तृत स्वर्ग दिवा क्षित्रिकासम्ब व्यानेत्रीके नाम कार्य, क्लीके स्वयूर्ण सोवर्धेक वित्ये वित्ये वात्र्यम्, व्याने स्वीत्ते और स्वाने प्रव्यूष्ट स्वेत्र कार्य तुन्हें स्वया वित्य है।' स्वान्त्रीयो व्यू वात कृत्यार सोवर्गिकायो 'व्यान्तु' देख व्याप्तर स्वातेत्रवीके प्राप्त करे गये।

वार्तविकार्य वार्त हिन्सित समय हमारे करियुक्त वार्तिवेकार्याचे सेनायरिके प्रकार अधिकिक विकार करियों करिय इस सुर्वित समान करियारिक स्वी वैद्यार प्रकार करिये करिय इस सुर्वित समान करियारिक स्वी वैद्यार प्रकार करिये वैद्यार करिये असी प्रकार थे। इस ऐस्कार कर्मार वैद्यार करिये असी प्रकार थे। इस ऐस्कार काम्यर वेकार्याचे स्वीत करिये वहाँ थे। इसकी विशे विकार कर्मा और स्वीते स्वीत करिये सहस्य थे। कर्मार्थ करिये और कर्माय की मृत्युक्त सर्वित करिये स्वा थे। कर्मार्थ करिय क्षात्राम् क्षात्राम काम्य क्षात्रम थे। क्षात्रमा क्षात्रम मानवा किन्नुत काम्य काम्य वेक क्षात्रमा क्षात्रम मानवा किन्नुत काम्य का्य मानवे की क्षात्रम्थक मानवारी विदेश क्षात्र था। कार्य की क्षात्रमा क्षात्रमा मानवारी क्षात्रमाने मानविकाल करिया थे। क्षात्र प्रकार का्य और

सम्बद्धांकानीने कही कहरताओं कारिकेणकीने बहा, 'हुन कृषित सामकारीने कहानी दहा करना (' कार्यों बहा, 'पनवर् । मैं आको रहा अवतम करिय । इसके शिक कोई और सेवा हो से कहिये।' बीव्हादेशको केसे, केस ! माम करनेके स्वयम को पूप मुझसे निव्हों स्वया। में दर्शन और अकिसे पुष्टार परण पाल्याम होगा कोहर कहिये करनेकिकारीको हाइसी समावर शिक्ष विका। सम्बेद निव्ह



होते ही कहा जारी जाता होने स्थान शासने समाध केलान सहस्त मोहने कं गये। अहानेके सहित जाताल करने रथां, संस्तर पुण्य-ता हो जात, पुण्यी हाणायांने और उद्यापने राजी, जातहों जातालार का राजा प्रार्थकोंने नहीं पर्यंत और मेडोके समाध अनेकों जाताके जातुकीरी सुराधित कही कारामा रोग विस्तानी थी। यह कही के बीचन और असंस्थान की तथा अनेका जाताले कोशाला कर रही थी। वह विकाद कहिनी सहस्त प्राण्यान् संस्था और समाध केलाओंना हर कहि कहा अनेकों जाताले कान, पर्यंत, कारामें, जात, जाताल, परिच और प्रकारित कर्य करने राजी। इस पर्यंतर प्राण्याने क्योर क्यांता होका कोही है हैले हिलाओंकों सेन संस्थान कोशाल अन्तर स्थाने समी।

क्षणको केंग्रिस होकर अपनी सेनाको भागती हेश देवतम इस्त्रों को स्वत्रश केंग्रिकर कहा, 'मीरो ! गय कोड़कर अपने कहा सेनातके, हुन्तरस व्यक्त होन्छ । यह परास्त्रम दिन्हानेकर सहस्र करो, हुन्तरस क्षण दु/स दूर हे नामना (दून अवस्था और दु-सीरा सन्तर्वेको परास्त्र कर है । अस्त्रों, पी राज्य निराम्बर इन्पर यु: पढ़े।' इन्हरी पार कुरून केवलाओंको कोरच केवा और के प्रशास समान रंगार शनकों के कर करने रूपे । तब के रूपका देशका और पहलाती मान्। साथा एवं बसुगान भी सबुजारेरे निव्ह गार्थ तथा उनके क्षेत्रे हर अच-एक और वाल क्षेत्रोके प्रतिरक्षा गरवेट प्रवित पान कारने सरो । सारनेकी कर्वते सन्त्रोके सरीर ३००वे से गये और वितासने हुए कालोके हकान रजपूरियों सब ओर गिरने सने । इस प्रकार वेकारकोंने का कुनवसंग्राको अनेकों प्रमारके मानोसे व्यक्ति कर स्तव और अल्के के ज्याद हिने। क्रानेद्वीये बहुन नामका एक क्रमा केन वक्न पार्थ पूर्वत रेक्टर देवताओंकी और बीवा । को देवनार केला चार्यर स्त्री । विश्व कार्य वीक्ष कर्ये वार्यत हर् केन्यरकेन क्ष बार कर देव। सके बाले स एक बेड बराजानी हो गर्ने। किर नकेनातुर सुर्वा हन्मानेड सहित केवलक्षीया द्वा पद्धा। जो अवने और जाते देव इनके सहित सभी देशनव्य जानने सने। तब स्रोप्यपूर व्यक्तिकार् क्रांति सरावान सहित राज्ये पान थीना और सरावा पूर प्रमुद्ध हिन्ता। यह देशका बीध्यक्षेत्रनीने महिनाहाने प्रेहरको संसाम का उसके कारका बीकासिकेनकेट करानं क्रिया। क्या. अर्थ सन्त्य कार्तिकम् कार्तिकम्

एकपूर्विमें इस्तीवत हो जो । वे क्षोधनो स्वर्वेक सम्बन काराय स्रो वे । वे स्तान कक्ष महते हुए वे, उनके जोने स्वान रंगकी

अलाई थी, उनके रचके कोई राज्य थे, ये सुनर्वका मानव करण विश्वे से राज्य पूर्णके साध्या सुराही कारियाको राज्ये विरायका थे। उन्ने देवले की देवलेको सेना कीइका करने हरणे। व्यासको कार्यिकाको प्रेमिकशुरका नाम करने कि एक प्रकारित वांच्य कोई। उनने पूर्ण है उसका विवास प्रकार कीई कारा। विरा करने ही महिनासुर प्रकारित होकर प्रभावन विरा नाम। यहिनासुरके पर्वतस्त्रक विरात । इसे प्रमाद का वांच्य करना कोई कानेकर स्वासी प्रमुखेका बंधन करके किन कार्यिकाकों है इसकी सीट अपने की। इसे काराने कीर्यका कार्यिकाकों है इसकी सीट अपने की। इसे काराने कीर्यका कार्यिकाकों के पूर्ण अन्यकारकों, अर्थ प्रात्नेकों और कार्य केर्यकों नाइ कर वेडा है।

किर इन्हेंने प्रत्यक्त प्रकारको प्रतान किया और क्षेत्रकारोंने अवका कुळन विकात प्राप्त ने विज्ञाननारमध्या कुर्वेद सवान पुर्वापित हुए। ११० इसने उन्हें आनिना पानो कार, 'कार्विकेच्यो : या महिनातुर त्यानीले वर जार विक्रों पूर्व था, प्रामीको प्राप्त देखा। इसके विक्रो प्राप्त प्रमान कें; को असर असकी हराका कम कर दिया : इस प्रकार आयो केम्प्रातीका पुरू बहु करी बर्वध निकास दिया। इसके किया अवने और की ऐसे ही सेवाड़ी सुन्तरीको एस्तेनसमें then flow, through the capit and make may their air हेर । अन्य पापान् प्रांचरके प्राप्ता ही संवासने अनेन होंगे स्रीर का अञ्चल अवन करावन अस्तिक क्षेत्रा । सीनी स्वेक्सेमें कारको अञ्चल प्रदेशी देशन प्राप्तको और हे स्थानको । सन केवार आयोह असीच चीचे ।' क्यांनिकेवर्गासे देसा करणा हेक्सओंके स्ट्रीत हम जनकर् दिक्की अक्षा प्रकर व्यक्ति कार क्षेत्रे : विर अक्षेत्रको अन्य केल्काओं कहा, 'हुन स्त ब्राह्मिक्ट्यांको के हे एका प्रकार में हेल ब्रह्मार दिवसी प्राचनको को गई और केना अपने-अपने कारोको और अपने । अतिकासर कार्तिकानको एक ही दिन्ने समक्त क्षणकोच्या जेवार कालेड जिल्लेकीच्यो जीत रिच्छा। सस क्यूनियोंने कार्यों कार्यक् प्रधानमें पूर्व की :

वृधिर कोर-दिवसः । मैं परकर् कार्तिकारीके सेने लेकोने विश्वका राज पुरस्त बाह्या है।

वर्षक्रेक्कोरे कक् - कुकिने । आहेत्व, कान्य, दीहकीर्ति, अन्यस्य, क्यूकोर्यू, कर्मका, प्रहेश, प्रक्रिक्कोर, कार्यन्यू, कार्य्य, कान्य, सरकार्य्य, प्रक्रोकर, विज्ञु, प्रीत्र, शुव्हि, कार्य, दीहकार्य, क्यूकान्य, सामेश, समय, रीह, विश्व, कार्यस्य, दीहकार्यि, जारान्यस्य, व्यक्तार, कुटमोदन, महीरिय, वर्गान्त, परित, महम्मातः, मान्यमार्ग, नियम, 📗 कुरान्तेन्ताः, विक्रमित्रदेशः, वेशोन्दरियः, महोन्दरियः 📠 क्योप, रेप्सीसूर, प्रमु, नेतर, विसास, नेप्सेप, सुद्धार, विकास—ने कार्तिकारीके क्रेस्ट कर है। के इसक् पार कुल, लरिक, पारमधीकरव्यांच, प्रत्यांचे, अकुकरी, जुर, व्यापा है का विश्वविद्व करों, बोर्सी और वर प्रदा करता है।

#### डोपरीका सत्वधरमको अपनी चर्चा सनाना

रीजनार्ज करे हैं—एवं दिर पहला करना और प्राप्तकारेण अस्तवने वेरे वे । उसी प्रका दिकारोहरे प्रेकटे और प्राथमा यो भारतमें निरक्षर एक बच्च केंद्रे । उन फेलेंबर के बहुत दिनेतर हाँ थी। इस्तीको ने प्रेस्ट्रॉबर आयसने हैंसी करने तनीं और कुमकुर को क्युक्तो सम्बद्ध प्राप्त-सर्वारी क्यों कारे सर्वे । इसे समय क्रीकृत्यकी डेन्स्टी म्हार्यं कारान्त्रे हकारिये कृष्यां यह, 'नक्षेत्र । मुद्दारे यहि कावकार्यन क्षेत्रकार्यके अन्तर सून्येर और सुद्ध प्राचेत्वाले हैं कुन उनके साथ किस प्रधारका कर्मन कराई हो, निराते कि ये तुवयर वाची कृतिक वह होने और सर्वेद्ध सुनारे अधीर पाते हैं ? किये ! मैं देखती है कि मानामतीन सर्वेद्ध तुन्हारे अवने नही हैं और तुन्हार है। संस्थ भारते हैं: को यह रहका युक्ते भी कराओं न । क्यानते । हर चुने भी कोई देख हर, तर, करर, कन, ओनॉन, दिसा और बीचमका प्रथम प्रया गय, होय या यही-यूरी कामले, जो क्या और सीनाम्बद्धी पृद्धि बार्नकार हो और विकास करेंब है श्वामसन्दर भी अर्थन के।' देख क्वान कारीनी कारकाम पूर्व है नहीं। इस मीतरकाम सीवानका क्रीपरीने करने बढा---

'मार्च । तुन पो जुमरे कुरवारियो निवर्वेड आवरतार्थ मार कु सी है। कार, वर होना साकरणवारी किनोंके मार्गको बतो में बेजो कहें ? उनके निकानों के तुक्का उस फ स्कृत करना की जरेतर नहीं है, क्योंनित हुए बुद्धिनती और होपुरश्राची भूतवहिती हैं। का प्रतिको का प्राप्त हो पता है कि गुलेवी को कम्पूर्न करनेके विन्ते विन्ती पाय-राजका प्रयोग का की है हो यह सामे क्यों उच्चर कू यूने लगा। है, मेंने बारों को हर सोको । इस अवस का किस्ने और है बाता है से सारित केरों का सकती है और को साना नहीं है, बसे सूस केने नित सकत है। नात कक-कको कवी के बीर रायनी व्यक्ति यहने नहीं हो स्थान । इसके नियरित इसके कई प्रकारके अन्तर्भ हो जाते हैं। कृतिकेन समार-अकरके बहुने है।ई परिचे है कि है, दिनाई पर्वकर देन बैंक के ताते है जात धनिके सह इसी निवारे जिल्हांक दे इतनते हैं। ये ऐसे पूर्ण होते



िर्माह सबी इसर असको चार आते। ऐसी किसी अपने चरिनोच्ये तक रहाके केनोच्या विस्तार करा हेती हैं। वे उनकी कुम्मीको पर्याप्त, कोव्, कुक्ते, पर्युक्तका, स्थान और कविपास आदिने पंजीवे पर कृति है। इस प्रकार पारिजीकी कते करनेकार्य है करियों अनिर्धा अपने परियोक्ते इंच सह कारों है। बिरा क्रीकों में बानी किसी प्रकार अपने पतिका after of work that is

कार्यको समयने । प्राप्ता प्राप्तकेषे और है किय अंकारका कावान काती है, यह सार सक-प्रता पुरानी है, हुए सुने। मैं ज्यांकर और चाप-सोचयों क्रोड़बर नहीं हानकारेले एक क्ष्मानेची, उनकी अन्यान विश्वेषे हाहैत केक करती है। मैं ईम्बले कु रहते हैं और मनकी काहों रक्षकर बेम्बल होबाबी कुछारों है अपने परिचीबी का रहती है। यह तम करते हुए भी मैं अभिनानको अपने पास नहीं है कि किये पहि पति विक्र का प्राथमों भी एकों कर के हो थे | करकारे केते । मैं कटुप्यानको कर सूची है, असम्बद्धाने कही नहीं होती, प्रवेदी कारोबर बुद्ध नहीं कारबी, पुरी बाहरर भी केले, होता आवरमके यस भी सामा क्षा को अधिकारों सेवाय असाम करते हैं। देखा, पहुच, पूजा, कुत, स्वयस्थात, को सकत कामान्-वेतर है पूछा है, वेश वर पाणानेके पूछा और कर्ती जी पाता। जन्मे परिचेति क्षेत्रन किने किन में धोबार को बतारे, कम केने किस कम की कमी और की किया करने नहीं कैतती । यक्त-कर की की कार्य अस्ते हैं. प्रभी में कार्य केवल अवस्था और प्रभा केवल उनका कारण कार्त है। में प्रके कांग्रेके कीव-केवर कार रहती है, कतुर रहोई वैचार करती है। क्रम्बन्ध भोकर करती है। एक क्षांक्षण क्षते हैं, वाले कुत्राओं अवश्रमा सहय राजते हैं और पंत्रके प्राप्त-पुरस्कर साथ रकती है। मैं व्यवस्थित विश्वीबा विरामा जो करते. करता विश्वेष का गाँ पारको और स्था है परियोधे अनुसूक्त सूचा असलाये क्र खरी है। में क्रानिक मार-मर काम करी औं होते प्रता कार्य या कार-वरका प्रतानेको प्रन्य भी अधिक नहीं क्यूटर्डी, निर्मा कर ही अस्तरकारण उद्देश चौरकेकारे सारत कारी है। प्रतिकेशोद विका अनेको पहल पुत्री विकासक स्थीद स्थी है। एक फिर्म कीट्रॉक्स कार्यने परिनंत काट करे हैं से है एक और कामगीको संस्थार निवन और उत्तीय कान करों का रहते हैं। वेरे की निता बीचको नहें करों, नहें पीते सकता रोकर को बाते, जाते में की का कर्ण है। विक्रोंके रिके प्राप्तने धो-धो करी करावी है, का प्राप्त में भारत करते हैं। प्रतेषके प्रवासन क्यानकरेने पुर्वीका प्राणी है तथा सर्वत प्राथमार सुसार परिवेशका देश सहरेते कारर कारी है।

साराजीने पुढ़ो कुटुन्सरमान्यों को-को वर्ग बताने हैं, उन स्वयद में पालन काती है। फिक्र केन, कुल, बाद, क्षेत्ररोज काल काल, क्ष्मीनीक काल कार कर aft of al-al art ift fieb fefter f. an neben f प्राथकारिये का-दिन जावरण करती है। वे विनय और विकासि सर्वत स्थ प्रकार सम्बन्धे करी है। वेरै की प्रकृतिक, प्रत्य कार्यक, प्रात्नीय और प्राप्तनीय है पारका करनेवाले हैं। मैं सर्वत सामकान रहकर करकी लेकने प्राप्त सूती है। मेरे विस्तारमें के विस्त्रोक्त सम्बद्धकार्य चीनेत अवीत करत है है, नहीं उत्तव क्षूत्रेय है और नहें जानन है; भाग भागा अक्षेप और कार्रिक करेंगे ? में अन्ते प्रतियोहे सहका पानी नहीं रहती, उनसे जनक योजन नहीं कारी, अस्त्री अधेक्षा गरिमा प्रसादनम् जॉ मानके और | हैरीको भारे मह से गरी है।"

ान क्रमी प्राप्तवीचे 🛊 का-निका करती 🗓 पन एक हैं कंपनार पत्रम करते हैं। सुमने ! में सामानीसे प्रचीत अपने प्रतिक्रेंडो पहले काती है तथा बड़े-मुझेब्डी सेव्यमें समी करों है। इससे पीर की बच्चमें करे है। कीरमाता, कार्याति, जार्च कृतीयों में धोमा, मंत्र और जरू अर्थाले तथा है सेवा करती रहती है। यह, आपूरण और चेक्कोने में क्यों के उसके अवेदा अर्थ दिने कोई विकेशा को रसती। यहरे कारण प्रविद्विरके स्वास्त्रे निकारी अस्य कुमार प्रकृत पुजर्नीत प्रशोधे प्रोपन दिना कृतो है । पहरूप पुनिर्देश अञ्चली हवार गुरुष कारणीयर क्ल-बेन्स करों में और उनके वस प्रकर करियाँ की। मे चीरवीत कर्मी अवस्थिते स्थापनोते स्थापन पूर्व थीं। पूर्व क्लंड पूर्ण, पार, भोगा, पार-पानी मारोबा पार देशी का और प्रम प्राथमी की रिकाइ पानी की हैंद विदायों कर we we from It also we will forme where क्रमीरकारों का उचार क्रीशर्म क्रमोने बात रेक्ने किन-पत अविनिक्तेको कोकर सरावी पार्क वर्ष। निक्त कामय इन्द्राक्ते सुकर महाराज प्रतिकृत कृती-कारण करते थे. का समय करते काम एक तरक बोड़े और एक रचना हानी करते हैं। उसकी परस्य और अस्था में ही मानी भी और में है कान्ये आवरणकार्थं सुन्ती थी। अन्तःपुन्ते चालें और न्त्रतिकोई होतार वाची संकारीक बात्रकारको देवानीय की A DESCRIPTION OF REAL PROPERTY.

कार्यको साम्प्रके । पहराज्यो से पुरु अभागी, साम और करक केंग्रे की, कर समझ्य निवरत में अनेतरी के स्वारी थे। क्यूक्तेन क्यूक्त जर यर में कर खेळा कार-कारों करे को से और उन्हे-न्योंक न्यान-संस्थार कर्मा हो, और मैं का उच्छानों, पास क्षेत्रकर प्राची रीजान कार्य हो । मेरे कर्याचा भीरपोका हो स्वयंक संदारके समान अबर करावा कर कारण पर। भी कर पार्टाको पर। मैं वक्र-प्रातको प्रकार का-कि बच्चनीकी रोवाने लगी क्रमी ( इस समय राज और दिन भी रिक्ने समान हो गर्न से । वेदी बढ़ बात सुन एक बाने कि मैं बढ़ा ही सबसे बाते उठती की और सकते पीचे सोती थी। पतियोंको बसमें करनेका मुझे के बढ़े उसम दालम है, बुल कियोंके-से आवरण न से बै क्रमी है और न मुझे अब्बे ही लगते हैं।

केर्याची वे वर्गक्त करें सम्बद्ध समयायां आवार बादा करते हुंद बड़ा, 'कहारवें ! मेरे एक जर्बन है, हरा मेरे को-कोको अस करन । सम्बद्धेने हो प्राप-प्रक्रका भी हेती

#### प्रैपदीका सत्यभाषाको उपदेश तथा सत्यभाषाकी विदाई

प्रीयति का—सर्वे ! मैं परिषे किराबो अपने बहाने करनेका 🖦 निर्देश वार्ग काली है। जी तुम झामर क्लोची तो ज्ञाने सामीके नगको अपनी और सीम कोनी। बीके रिये प्रत लेख क परलेखने परिये प्रयान कोई सारा देखा नहीं है। कान्यी मारावात क्षेत्रेयर ज्या क्रम प्रचारके सुख प क्रमती है और असंस्था हेनेकर अपने क्रम क्रमोमो निवृत्ति रिशन देती है। है सानवी ! जुनको ह्वार कुछ कभी नहीं निर्म प्रमात, कुरवाहिका सामन वे कुछ 🛊 🕯 । साः हुन पुत्रका, तेन, परिवर्ष, कार्यक्रकाता क्षा वय-व्यक्ते पुत्र और प्राथमिके ओक्नामों केना मने तन किए प्राथम मे च्या ज़रही कि मैं हुई बारा है, हुए बड़ी बाज करें । कर हुम्हरे कारणे जीतीकोट प्राप्त अलेको अस्तर बहेको हुए अस्तिको काड़ी होनार उनके जाननके मैनने नेवार रहे और नाम में चीवर 30 पानी को तुरंत की जातान और पैर क्षेत्रिके मेंची पान हैका अपका राजार करे। यदि वे किसी कार्यो हैंग्वे कार्यके अपन है से तुन करों हैं। उठकर उनके तन करन करें : श्रीकृत्यक्ष्मको हेला नातृत्र होना चाहिले कि हम स्था प्रकार उन्हें है पहली हैं। तुन्हारे की नहें दुस्तों कोई ऐसी बाद कहें कि निते पुत्र रक्षण जानामध्य न हे से भी हुए और किसीहे या वर्ते । पनिवेक्त के रीत, बोर्ड और क्षेत्री हो, उन्हें सक्-अक्टे कालेंसे चेत्रन काओ अब के अब्टे क्ट् क्रोक्रमीय और जनुर्धानयम हो सक्या उन्हें औ क्राव्याच्या रकते हो, असी सर्वेदा कुर रहे । अक्रूप और साम्ब प्रवासि तुम्बारे कुछ ही है, को भी क्यान्याने के उनके पाल भी नत बैदो । जे काल्य कुलेन, बेक्स्स्त और क्यों है, उन्हें कियोरी तुम्हारा केन होना करहेते; कुर, स्वहत्वी, चेंहू, कोरीसी आक्षमानी, युद्ध और बहुत्त जनस्वती क्रिकेंसे सर्वेद्ध हा रहे । इस प्रकार हुन क्या हन्द्र अपने परिदेशको होना करे । इससे हुन्दरे पर और सीमानको पृद्धि होती, अनावे सर्व निरोगा तथा कुछरे विधेनियोक्य अन्य हो कारण ।

इस समय परावान् श्रीकृष्ण वार्यक्षेत्रादि पुनियो और प्रदान्त परावालेक १८४ तक्क-स्थानी करोऽनुकृत करों कर रहे थे। ये जब हस्तार करनेके सेको प्राप्त करने हो उन्होंने स्रत्यक्षाच्यो कृत्या। या स्वयक्ष्यक्षेत्रे श्रीव्यक्षेत्रे गरे निरुवार अपने विकारके अनुसार व्यक्त-तर व्यक्तः वैवानेकार्य करों करों। ये बोर्स, 'कुको ! तुर विकार न



करे. व्यक्त क हेक्टे और इस प्रकार रात-रातमा जानरा क्षेत्र हो । इन्होर्न केन्द्राम्य गाँव वितर अन्यत राज्य आह नारेले । कुन्तरे रूपान प्रीरमान्यस और सामस्त्रीया महिलाई स्रविधः हित १:७ जी चेन्य करते। येने महत्त्वतीय मुक्तो न्य बार पूर्व है कि पूर्व अवस्थ ही विकासक क्षेत्रक अपने मिनोके महित इस पूर्णांपर राज्य करोची। इस हरित ही देखेंगी कि पूर्वेकाल का कर्ता पृथ्वीना पहारत मुक्तिका अधिकार होता। तृष्टें प्रताने देखका की विक्रित तुक्ता अधिव मिना, का करनो हुए मासने गया है क्रमाते । चरितीय, गर्मन, अर्थन, नक्रम और सावेक्ट्रे क्रमत हर कुश्वरे को प्रतिविक्ता, सुरायोग, शुरावार्या, श्रुवारीया और कुरतेर सम्बद्ध पुत्र है, वे समी इसकियाने नियुक्त बोद्धरे बीर है। के अधिकानुको क्या है पढ़े अञ्चलो हारकारे रहते हैं। इन्क्रवेची उनकी प्रक प्रकार स्टबरे समान ही देश-पास रक्ती है। ने विक्री प्रकारका भी चेत्रका न रक्तार उनस निकास के रहती है कहा अने कहाने कहा और प्रकार हुनो वहाँ है। अञ्चल्यो कहा कोरानोको यो उनक हर अध्य स्थानका करते हैं और क्षेत्रकार्यक भी भाग आहे. अपने पुरोसे उनमें किसी भी प्रकारका भेड़राव नहीं कसी।

और भी औक्तरावयों काहि एक अन्यक और कृष्णिकी कारण अनकी तथा अव्यासको सुनिवालको स्थान रहता है। उन्हें | सम्बर कई नवीं । अध्यानको पुरानकार औरतीको गीरण महा और कुमरे मुख्ये और एक की मीने है।' ऐसी है सक्त-वर्त केव, साथ, आन्यकांक्ती और करेडनुसूर को । हरकायुरेको की।

काचे जोचन-स्वार्तको देव-भाग समुर्त्य रकते हैं, क्या | बहुतर कारायकोने ओक्ट्रफरे एक्सी और पानेसा शिकार विजय । उन्होंने क्रीयर्टियो परिकारण की और किर केवान और पिर प्राच्यांको स्वेदावर केवोको वेस करके

# कौरबोंकी घोषवाता और उनका गन्धवंकि साम युद्धमें पराभव

क्लोकरो पुरा-पुर अधार करने सुकर सक्त, नर्ग, बायु और भून स्क्रांसे नामेड क्यानोंक वर्तर बातु एक है राने के। ऐसी विकास कर्ज़ने हैं काओ कर चरित्र कर्ज़नक अका निर का किय, से सन भूको काँगे।

वैक्रपुरूर्व क्षेत्रं—सम्बु का सम्बंध क्रोबरूर सामार पाणानीने सान्ने दिर्शायकारोची निरू कर दिना क्या वर्त क्रुटी बनावर साम-वर्गाद राजीवा वर, क्लेड और गहियोंके विकार विकार हो। यह से मेरलेस इस अवार पूर्वी विकास करने ताने की उसके पता अनेको वैद्यालकार्तिक प्रश्राम असे क्यां कार्येषु पाणकार्यक ध्वाप्रति काली रोज करते । इसी दिने वर्त एक सामान क्रानेने कुराम प्राक्षण गांचा । अन्ते विल्लार का व्यक्तिने विका और निर कृष्णुनीके कर ज्यूंब र वृद्ध कुन्छको असल देवर उल्ला पर्वतिन अलार किया और किर



स्थानुकृषिक प्रमाणिक कृष्णक पूरा । सा अनुवाने पात वि हार समय कुरियोर, चीम, अर्जुर, महत्त्व और स्तरीय यह चीवन कह का में हैं कह और कुछ बारत उन्हें सरीर बहुत कुछ हो पने हैं। होप्योंकों के बात हो पत पुलि, बा केरको हेका भी अनकारी है रहे है तथ एक ओस्ट्रे एकोचे को भू है।

अवसे को कुमा का कुमाने पर दुन हुन। का उन्होंने पूर्व कि प्रकार पूर्व और मैंन प्रेमर में क्रमानोन हर प्रकार दुःसनी नक्षेत्रे यहे हुए हैं से उनका क्षा परकारों पर अस्य और वे सब्बे-सब्बी सीवें रेकर काले तरी, 'सर्वेद्धा चुनिहा से के सरदाकार स्थान नहीं क्षेत्र अर्थन को क्योंका अनुसाम करेगा। विरुप्त इस करवारको भीतवार योग से असे असल यह रहा है, वैसे हवा कारोंके साथ पुरस्कार पूर्वी है। इस क्रीकारकारी जरवार जा क्षेत्र क्षण-से-कृष्ण कारकार कृत क्रवान आलगा प्रणानक और को भोगे रिल्स कुछन है भागे केरे पुत्र और बीधीको जालकर का कर हैया। जो । इन क्वेंबर, सहरे, कर्न और क्ष्मारस्थी सुद्धि न सार्व महाँ सारी गरी है। इस्वेंने को सान पूर्व इस क्रीन है, को ने पहुन्ता नीक सन्ताने हैं इसके हुए असे कर्मनकर्मा और इससी हुई ही नहीं सती। देशे । प्रभूतिने स्वयंत्री क्रमे क्रमार तका नी विस्त, हिंद को प्रकारि क्रमी सामुख भी कि उसी समय जो नहीं क्या । जिल्ह् इस कुनुबन्धे जेवूने चैतावर मेंने हो का काम कर कार, विश्वके कारत चौत्रवेका अनावास संबंध दिसावी है का है। समारको अर्थुन अविशेष प्रमुक्ते हैं, जनक प्राचीय प्रमुध भी को प्रथम नेग्याम है। और सम साने रिक्त करने और भी अनेको हिम्स अन्य अने कर रिन्ने हैं। कार, देशा वर्षा और है में इन होनोंके तेलके पहन कर सके।

कृतकृष्ट वे सब करे कुलाकु स्कृतिने सुनें और दिन क्रमींद्र साथ इक्षान्तमें बैठे हुए कुर्वोचनके पान नामार को क्रमाँ। क सा क्रमा का समा क्रमुद्धि कृतिन क्र कार हो गया। जब इस्कृति और कर्नी जाने कहा, 'यहतन्त्रत्त | अपने प्रशासको हुम्मे प्रशासको स्वाधि निवारण है। जब रूप सकेले ही इस मुख्येंको इस उत्सार मोगो, बैसे इन्द्र सर्वेका राज्य जोगाय है। देखों हे सुक्रमे



वाहुम्माने साथ पूर्व, विकास, व्यवस्त, कार—कारो वितामतिक प्रमानाम तुन्दे कर के हैं। को कैदिनकी सम्मानी पहले वान्यानोको तेका करती थी, अस्त का तुन्दे और तुन्दाने वाहुमोनो निक्ती शूर्व है। कन्द्र | कुन है कि आक्रमान वान्यानोगा है क्याने एक स्त्रोधनके काल पूर्व बाहुमानेने साथ रहते हैं। सो मेरा देखा निकास है कि तुन पूर्व काहुमानेने साथ रहते हैं। सो मेरा देखा निकास है कि तुन पूर्व काहुमाने महिना करते और पूर्व की असने तान्यों काला को। तुन्दारी महिना की व्यवस्थानोनी कुन्यानको हेकावर करते और तुन्दार्थ हो कान्यास्थानोनी कुन्यानको हेकावर करते देखी नारे साथ करने ऐक्टांचे कान्या की सामाने।

वनपंचय ! कुर्नेपन्ति देश काइयर वार्ल और क्रमूनि सून हो गर्ने । तम पाना हुर्नेयनने बाह, 'कर्म ! हम जो कुछ महारे हो, जा बाह तो मेरे मनमें भी मारी हुई है। पान्यक्रेको मान्यतम्बद्ध और कृतवार्ण ओई देखका मुद्दे जैसी सून्द्री होगी, केरी इस सारी मृत्योवा पाना पानार की नहीं होगी, भाग, इससे महका मान्यकारी बाद पान होगी कि मैं हीपदीको बानों पेटन करने पाने देखें। मानु मुझे कोई देश

त्रवाच नहीं पुता चहा है, जिसने कि में है।काओं वा आहे और बाहराज की मुझे नहीं कारेकों आहा है है। इस्तरिकों हुए मान्य काहरि और काई पु:कारकों साथ सामह करके कोई ऐसी बुक्ति किसालें, जिससे इसलेंग है।कारों का सकें।'

ज्यान्य का लेग 'जूद डीवा' ऐसा व्यावर अपने-काने एकरोको को एते । यदि बोलनेस धोर होते हैं वे दिन पूर्णकरके कार जाने । तम कानी हैंतबर पूर्णकरके कहा, 'जनर । युवे हैंतकरमें कानेका एक उत्तव सुरू गया है, उत्ते कुलिये । अपनकार अवस्था मौशोक चेत्र हैंतरमाँ ही है और वे जानकी जातिए कर के हैं, इसलिये हमानेस के स्वावत केत्र काने वहीं कोने हें यह सुरक्तर अवस्थि की हैंतबर केत्र अपने की कोने हें यह सुरक्तर अवस्थि की सुन केता। है । इस कानके तिनो वहारण हमें अवस्था अपनी अनुनति है तेरे और सामानों केत्र-केत्र करनेते हैंतमें की सम्बन्धोंने। काने सोग हैंतकने हमाने आनेकी कार ऐसारे ही है, इसलिये केव्याकर्क विकास हम कहाँ कार का काने हैं।'

राजर् । इस प्रचार साम्या बार्ग्य वे सम राजा वृतराकृति पात अस्त्री और तम तक्त्री शृतराकृति तमी शृतराकृति अस्त्री बुक्तस्थानसम्बद्धाः पुरा । उन्होंने बार्ग्योगी सर्वत्र नामके द्वार



नेपको प्रकार होना कर निष्य या। उसने राजा प्रताहकी रोजने निषेत्र किया कि सहाराय । आवक्त आपको नीत् इसीय हो आसी हुई हैं। इसफा कर्न और इस्कृतिने संस्कृ

'सुरुराज ! इस अवन्य गाँउ को स्थानिक प्रदेशमें उसरी क्रांडि । का समय गान और कारोंची पानन करने उन्य उनके रेन और आबु अस्तिक कोस रिवानेके रिके की बाल उत्पुक्त है। इसरियो आय दुर्वोक्तको बहाँ जानेको अञ्चा हे दीविये।' मा सुरकार कृताहरे कहा, है था। वेशोको देशाया करनेने को जोर्ड अन्ति जो के किया की राज है कि सायकर नेपार्व्ह राज्यकोंन में कर की कार्योंने को हर है। स्वतिने में इस्तोगोधों को कोची अस्ती की है क्रमार, क्लेकि कुले क्ले क्लाने क्ले क्रमा है और क्ले करने सुका बात बाद चीचन पहा है। कर्न ! से लेन करने निरमार तर करते हो है और अब क्या क्यान करिन-सम्बद्ध है को है। दूस से अवंधर और मेहने पर है से है. प्रशासि क्रमा अवस्था विसे क्रिय पानेने नहीं, और देख होनेवा से अवने एक्से प्रधानमें हुने अन्तर नार कर हैंगे : पत्री नहीं, करके पास राज-क्रम की है है ( हार्याओं क्रोकिस हो सानेवर से चीचों चीर जिल्लार हुनों करनी क्रवारिनों की होन काले हैं। यह संस्थाने अधिक होनेने पारत दिनी प्रकार करने हैं जो कर देखा में यह भी स्वापी नेकार है सकते कार्या । और मैं से इन्हों देनों उत्तर कर कर कार्यकार के सम्बद्धार है। देखों । अर्थकारे किए समय देखा काम नहीं किये थे, सभी अंग्ले सभी कुम्मीओ चीत रिम्प का कि। अब विकास करत तुने का सामन आहे केने कीन को पर है ? असेने को का असेनेक को पर अधित नहीं जान पहला। भीतनेकी मन्त्रकों कीने कोई हारे fogueum augel fall im mit fil' poor Syfiel कहा, 'राजन् | इसलेन केवल चैशोबी गुजन करन करने है। प्राथकों के विकास करना कियार औं है। इस्तीओं अहीं पूर्ण को अध्यक्ष होनेने सम्बन्ध जी है। जी साम्बलोग को होते. को से इन सार्थने से नहीं है

प्रकृतिके इस प्रकार सहनेता महाराज प्रवाहने, इस्ता न होनेतर भी, पूर्वेक्ताओं वर्षांत्रिके प्रश्नित पानेकी उत्ताह है है। उनकी अहम प्रकार पान पूर्वेक्ता कही पाने केन नेकर हिलापुरते कार। उनके साम दुःवासन, प्रकृति, वर्ष भाई और पूर्वारों कियों भी। पाने किया आठ हमार पन, गीरा हमार हाती, हमारी केवर और नी हमार कोई भी थे साम रिक्ट्रोसी संस्थाने केवर केनेत कारो, कुकरे, प्रनित्रे और संक्षाद भी पाने। इस साम स्वकानके साम पद नाई-वर्ष प्रकार हमारा चेक्नेत साम पहुँच गाम और वर्ष जनका है। साम हिला। उनके स्थानकों भी उस सर्वपुत्तान्त्रम, रावारिक, परिचार, सामार और सामा प्रदेशने अपने-कारो हरानेकी नगई तीन कर (मैं।

an अवार का समये कालेका रोग-कार हो गया से क्षांकर्त असी असंबर चेंडरेच्ट निर्माण किया और करत नका और निकास क्षताका सकते शतन-आरम प्यापान कर है। किर पहलेस निवासे क्रमानी और उसी में मुक्तेबेल है, उदे अरल यह दिया। प्रमाणे पीई क्षेत्रे-क्षेट्रे क्योंकारी थी. अन्त्री आत्य क्यम कर है। इस जबार एक पान-साम्रोकी पानत कर करेके दीन-तीन क्रांड क्यांडो असन दिन का नामने साथ अभनाते करते विकास करते रूपना । करते-करते व्यक्तिकार्यः प्रयोगस्यरः भीता । यह क्रमा सामा राह-नाह महा भी-नाह का । मही का करेशको सामर हो बर्गकुर कुनिहेर कुटी बनावर रही है। वे बहुत्तरों होनहेने स्पेश हर राज्य दिना विभिन्ने एक केले समझ क्रेसिका एकोर्ड परका पर का यो थे। प्रार्थ क्षांकर्ण करने प्रकृति केन्द्रांको स्टब्स से कि और से पर्व ब्रोक्स्प्राप्त केवर करें। सेक्स्प्रोप कावाची जिला रस जीवनका प्रकृति विकासी विकासी सरीवरण की। का वे वनके प्रस्कावेरे कुछ करे के वर्गक पुणियाओं गणानी केंद्र हिन्द, क्योंकि इस्ते प्रोक्तेने पहले ही वहाँ राज्योंक famile weeks with fruit archites, but aft क्रमान्त्रकोर्वेद अवित अल्पा द्वारा पर और अंतर्ने ज्या क्षेत्रको के एक का

इस अवार सर्ववाको विच हुआ हैक है तर पूर्ववाको का स्तर आहे। उनकी कार कि 'त्रों कांध निकार है' अन सर्वकार केंक। उन्होंने कां जागर नकांधि कहा, 'इस साम कृतकों का पान है, इसलिये हुमाने कांधि कहा कांधिकार केंक। उन्होंने का कुमान प्रकार कांधि कर कांधिकार केंक का पी है, इसलिये हुमाने कांधि कर कांधी।' एकपुन्तिकी का क्षा कुमान प्रकार हैंकों कांधी और कोंधे, 'साइन केंक है हुमान एक इतिया कहा है पान्ति है, जो कुमाने कांधा है इसले का विकासीयर कांधी कांधी हैंकारी का क्षेत्रका साथ कांधी हैं कांधी कार्य कांधी हैंकारी कांधी की कीर प्रकृत हैंकों कांधी कार्य कांधी हैंकार कीर कांधी, जी हो इसी साम प्रयासके पानी कुमा कांधी।'

का वे तम क्षेत्रा प्रस्तुं क्षेत्रन पूर्वेकनके पान आर्थ और कार्कीन क्षेत्रके क्ष्में कही थीं, वे तम दुर्वेकनको सुरा ही। इससे दुर्वेकनको सोधानि प्रकृत क्षाे और उसने अपने सेनामतिनोको अद्या थै, 'असे ! नेत अन्यत्व कानेको इत पारियोंको कर समा तो कता ते। कोई परक नहीं, वहीं विकासीके स्थीत कर्ष एक है और नहीं न करते हैं। हुनोबनको अञ्चल को ही क्रावहके सभी कुर और स्वानो केट क्या करका रेका के गर्न और प्रकारको मार-पीटका करपार का बनमें का गर्ने।

गनावेति यह स्था जनावार अपने काली विकारिकां पायर समाया ( तम असने उन्हें अद्याप के कि 'साउते, पर नीय कॉरबेबी अधी तक जन्म का है।' का वे सक के बन अञ्च-प्रक रोजर बोरचेयर दह यहे। बोरजेरे यन जो कार्याच्या, प्रविचार काली काली और उनमें देशा थे थे इमें धनके हे को-हे एको इसके उपल पाने व पर क्यों कर क्रमुनि, हुन्हासन, क्रिक्टने एक क्रमानुके कुछ रूप कु रबोरर कावा रूपमेरि सामे हा गर्न । वर्ण का समी अपी रहा। यहा, होनी ओरले यहा चौचक और केन्यहरूपारी पद कि गया। वीरशीयो सरस्वती गामानि विकेत बीरे का दिये। तम प्रकारिको प्रयूपेत देख विकरेनको bite un seen afr und afteiler um unbie fich व्यापास प्रतास । विकासिकारे प्राणाने वर्धे का प्रतास प्राप्त के प्र क्षा प्राप्त प्राप्त-एक प्रोता बीतारे क्षा-का गावली के दिला। अन्त्री करने पीड़ित होकर के रलपूर्विके क्रम नेकर जाने १ इस प्रकार क्येंस्वॉक्ट सारी केन्द्र फेलर-कियर के जनी ( अकेता सर्व है कांग्रेड सवान अपने स्थानन अवान सह एहर : क्योंकन, करने और क्रकृति क्रकृति क्रकृत क्रक्टर हो नहें है से भी अनेन नवानीह अपने पीत नहीं दिवानी। है बहुबर पैहरते हो है हो। तह रूपमेंने सेवड़ों और प्रवारोकी संस्कार निरमात अवेदने प्रार्थना है कहा केन दिया । उन्होंने कार्यके राजके हमाडे-हमाडे कर वाले । तम स्थ श्रुवने क्षान-स्त्राचर तेवार रक्षते वह वह और निवाली प्रथम बैठकर जान क्यानेके पिनो उसके कोई क्रेस विने।

अब ही रूपीकाके देवती-देवती कोरकीकी केव पहली लगी । सितु और सम प्रकृपोके पीठ दिखानेपर भी क्वेंपनने मैंद्र न मोद्रा । पार इंदर्न देशन कि अंग नामार्थिको कामन सेमा अर्थीको अरेर कह रही है से असने असका कामा चीवन बारावर्षके हे दिया। किंदू का कारकार्यको सुद्ध भी परवा र कर गयनीर को कर अल्लेक विकास करने औरते के रिजा। उन्होंने अपने वाणोरे अस्के स्वको क्र-क्र कर दिया। इस अध्यर रक्ष्में क्षेत्रे मिर क्योगर को विक्रयोगी प्रपटकर जीवित ही कैद कर रिच्न । प्रश्ले कर कहा-से गनवाँने रहने की हर् दु-प्रायनको बेरबार काळ हिन्छ । बिक्सी क्षत्रे सुरानेका नहीं है। देखे, वे होना काले पीतित



करोरे किन्, अनुविद् और प्रान्त प्रान्तकोनाओं कार रिच्य । प्रथमिक अपनेते पानी हुई सौरवीकी केलने क्रमा क्रमा-सूच्या परचाय सेवान पान्यकोची प्रतय हुने । प्रत क्षेत्रको प्रकारित सेवेते ह्याचेते वेत्रो अत्यन् अन्तर हत् क्रके पश्चिमी वे-देवर क्रमानले क्रक, "महराज । इसरै क्षितार्थी प्रकार कृतराष्ट्रकार प्रकार कृतिकारी गावर्थ प्रकार रेजे को है। उन्हेंने इन्हार, श्रीक, वर्गक, कृतिक प्रथम पान पानिकोचके भी केन्द्र पान विराम है। जात: सान क्रमाने राजनेत किये जैतिये ।"

क्वेंबनके का को परिवर्धकों द्वार प्रकार कीर और द्वारी क्रेकर कृतिहाके सामने नियमिक्तों केल चीमकेनी सक्त, 'हर बहुत अपने करते हर्गी-बेद्रोते हैंस होवर को बाल कतो, बढ़ी जान पर्कारी कर बैका। यह बार इससे सुन्देने अपने है कि को लोग जातको पुरुषोत्रो हेर करते हैं, उन्हें दूसरे रवेन ही केवा विका के हैं। यह बार पूर्व क्यानी अनह कर्ने दिस्स है। इसलेन इस समय बनने स्वयन सीत, बाबु और धान आहि का में है तथा कर कानेसे हमारे सबैर नहर कुछ हो जो है। इस अवस्य हम इस सम्बंध किपरीत विवरित्रे है और कृषेका सकावी अनुकृतकारे मीन कह का है, को क्ष रूकि हो हा अवसमें देवन पहल स । पासके कोरकारेन को है कुछिए हैं। का भीन्योर कठीर स्थारे हत प्रकार कहते राजे के वर्गराको बहुत, 'मैक्ट गीम । बहु समय

होबर उससे पान पानेके सेनो हमारी सरकारे आये हैं और इस समय बड़ी विकट चरिकितियें प्रहे हुए है। किर तुम देशी करें को को है ? करियांने कर्यर और स्वर्ध-इन्से होते ही रहते हैं, काफी-काफी उसमें केर भी तर बाता है, लिख् यान कोई बाहरका पूरम उसके कुरम्पर आस्त्रमण करता है से का निरम्भारको में नहीं रहा समझे। समर्थ मेंग ! गुन्धर्मलोक बलात् कृतिशतको प्रकारका के वर्ष है और इस्तरे कुरभक्ते कियाँ भी जान कहते लोगोके अधिकारणे हैं। इस अबार व्य प्रतरे कुरुवर है जिल्हार है। उत्त: कुरवीये ! प्रारमानोकी एक करने और अपने कुलको उनक रकनेके हिनों पूर्व हो सकते । अन्य-पूर्ण बारण कर रहे । हेरी न्य करों ! अस्ति, अकुल, प्यापेश और तुम क्रम निरम्बर सकते और व्योक्तको प्रकारमध्ये । देखी, कौरवीके प्रयासकी मन्त्रभोक्ते रवोने तम प्रकारके अध-तम केंगूर है। तुन प्राणी बीडवार सामने और पानमंत्रि सामना क्योनमधी कुरानेके विन्ते प्राथकातीले प्रकार करते । अपनी सामार्थ आसे हरूकी से अनेक राजा पंजाबंधि पहर करना है, किर इस के महायती चीम हो । चाल, इससे महस्या और क्या पात होची कि जान क्वील तुन्तरे वाक्रमके भरेते अपने बोक्नके आहा कर का है। है और ! मैं से कई है इस करकी कैसे मिला; मिल्यु इस स्टब्स मेरी यह आरच्य किया है, इससेको मुझे हुए करन कोई हुएत विचार की करना करिने । हैएते, महि वह राज्योगा अवकाने-स्वानेने र को से संख पराक्रम विकासर क्रोकारको कुछ स्टब्स और स्त्री क्रानी-



हालका पुर्देश करनेवर भी का भ होते हो किसी भी प्रकार की वारकर कृतेकाओं कुछ कर देता है

वर्गरावाकी यह बात सुभवार अर्थुवने प्रतिक्षा को विह 'स्त्रीह वाध्यक्षेत्रेण सम्बद्धाने-बुद्धानेने कीरवीकी यहि होतेंगे से आज वृत्तवी वाध्यक्षित ज्ञासन को गी (' सरवाकी अर्थुनकी देशी प्रतिक्षा कुम्बार कीरवोके भी-में-भी आखा।

#### पाण्यवाँका गन्यवाँसे युद्ध करके दुर्योधनादिको सुझना

वैज्ञाननम् वदर्व है—रामर् ! वृत्विद्वित्वदि वाले सुन्वार भीय आदि एत्यी चायानीय पून इस्ते विलय एवं और वे भूशो मिले सारामित होयान एवं हो एवं । सिन क्योंने अध्येश माना जीन ताल-रामांचे दिया आसूत्र वारण विलये और गम्बार्गेसर वाला चेसा दिया । या विश्ववीत्यस गब्धांने देखा कि स्तेमायालीये स्थान चारी चायान स्थोपर व्यक्ता एमापूर्वित्ये अपने हैं से वे सीट एवं सीट व्यक्तायना करके अर्थाः सामने साहे हो गये ।

तम अर्जुनने पन्यानिको सम्बाधने हुए खहा, 'हुम मेरे पाई राजा दुर्वोधनको होए हो ।' इसका पाणवरि खहा, 'हुने सहस्र देनेसाल हो पाणवर्षक विकानिको सिच्छ होत सोई नहीं है। एक ने ही हुने जैसी उद्यास होते हैं, जैसा हुम करते हैं।' पाणवर्षिक ऐसा बहानेका कुन्योनका अर्जुनने उससे विश खहा, 'करानी जिल्लोको प्रवादका और प्रमुखीके साथ युद्ध करण—ऐसा निक्तिय काम से प्रवादकारी कोच्य नहीं रेस । तुम्लोक वर्णस्य पृथितिकारी अस्त भागका इस नहीं कोकेने से मैं सर्थ है परस्करहारा इसको हुए पूँचा।' ऐसा सक्तिया भी स्था संभावति अर्जुनकी काम स्था से से से अस्त अन्य कि-देने काम बारस्ते एने स्था प्रस्कृति की अस्त अस्त कि-देने काम बारस्ते एने स्था प्रस्कृति की अस्त अस्त कि-देने काम बारस्ते एने स्था प्रस्कृति की अस्त क्ष्मित्र क्ष्मित्व काम सी । अर्जुनने आसेनास कोइस्त क्ष्मित सी सीके-सीके सीरोले प्रस्कृति क्ष्मित्व अस्त का क्ष्मित अस्ति अस्ति काम क्ष्मित्व के स्थानस्त का साथ अस्ति कारने क्ष्मित अस्ति अस्ति कारने का स्थानीको इस प्रसार दिन्य अस्तोते कारने सने तो ये क्ष्म्यकृषि पुर्वेको लेकर सरकाराने क्ष्मार काने सने । कुलीकृष्यर अर्थुनो उन्हें अवसारकार्य जोर अन्ने देख मानोका एक हेला विक्रृप कार का लिख कि निकाने कारी होएले उनकी नारि देख ही । उस कारणे में उसी अवस्थ कर हो गये, जैसे विक्रियें दशीं । अतः में सामान्य कृष्टिंग होत्यर अर्थुनपर गया, स्तरि और अर्थि आहे समान्यकार्यको कर्य करने सने । तम स्कृष्टिर अर्थुनी उनकर क्ष्मानकार्य, कृष्णात्मार, सीर, लावेच तथा सीमा अर्थि विच्या समान्यकार्य, कृष्णात्मार कार्य केमा रहा का और इसर-समर कार्य से अर्थुनों वास्त्रोंसे वीक्ष्य समान्य में और इसर-समर कार्य से अर्थुनों वास्त्रोंसे वीक्ष्य समान्य ।

क्या विवासेको देवा कि प्रवर्ण अर्थुको क्यांनि अञ्चल प्राप्त हो है से या पढ़ लेकर क्यांनि और देंगा। किंदु अर्थुको अर्था व्यवसेत्रात कर क्येंग्रेसी पड़के क्या दुवाई कर हिर्दे। तम यह व्यवसे अपूरण व्यवस अर्थुको स्थल पुढ़े वाले स्था : इससे अर्थुक्यो यहा और हुन्य और से हिमायोंने अधिकारित अव्यवस्थारी अर्थुको पुढ़ करने सर्थ त्यांनि अर्थुको स्थापित की व्यवसे व्यवस्थ अपूर्णिक कर वाले प्रवर्णि वालोंने की वीक्ये करने। अर्थुको कर अव्य-स्थापि विवर्ण विश्वित्य का और वाले अर्थुको कर क्या-स्थापि विवर्ण विश्वित्य का और वाले अर्थुको क्या



श्राक पृथ्व में कुकरा जरूर विश्वतेन हैं।' शर्जुनने का सबसे इन्हान्के पृक्को कर्वतित हैला से उन्होंने अपने दिस्ताकोंको सीठा दिल्या। यह देखकर सम कावक की असात हुए और दिल रकोने केंद्र हुए चीन, अर्जुन, स्कृत, स्कृति और विकास सामान्ये कुकर-अस करने समें।

तम महत्त्वपूर्वर अर्जुनने विश्वयोगसे हीस्कर पूळा---'वीरवर । कोल्डोक पराचन करनेने सुदाय कर बहेक वा ? हुसने विक्रोंक स्थीत इंडीनरको पन्ने केट विक्रम है ?' विक्रोरने क्का, ''और क्यान्य ( केरराव इक्को जार्गि है बुसला क्षेत्र और क्षेत्र क्षेत्र अधिकार करून हे परा थी। वे होत का कोक्का कि आक्का प्रकारतेन कार्य विवर्तक परिवर्तकों स्थान अन्तर्कोंकी तथा बाद कोग के हैं और इस पूरा अल्पनी है, हुई देवले और इस पूर्वकरों प्राथिको संपर्धको ऐसी अपनेके रिको आने थे । प्राची देखें कोर्ध क्लेप्स कारकर क्लेने खुको कहा, 'जाओ, क्रोंक्सके कर्माः अने और गणियोधेः समित गणियाः नहीं it auch i fing bab, ungebit seine anfreit me अबार पक्ष करन: क्योंकि को शुक्रत दिन तथा और (नाजीकांका) जिला है।"तम केम्प्रानके कहरेते में तुरंत ही कई जा तक और इस कुछरे बॉब पी रित्या। अब मै केरानेकाहे का का 🕻 और इसके आहानुसार इस दुरासाओ भी के कारिता।" कर्जुनने कहा, 'विकासित । पनि दूस मेरा कि बारण पहले हो हो वर्गस्तकोई आहेतने हुन इन्हें आई व्यक्तिक के होता है।

शिक्तेन्ते कहा—अर्जुत । यह याची है और यह प्रमाणने यह रहता है, इसे क्षेत्रक प्रमाण नहीं है। इसने के प्रमीतन और कृत्यकारे केरण दिया था। वर्तरकार हम समय यह को कुछ बारण प्रमाण था, जानक पंचा नहीं है; अपान, पाने उन्हें कहा करने यहा देंगे; किर रुपक्ते कैसी हफा होगी, केहा कोने।

वित्र में श्रम म्हाराज मुनिहित्ये पास गर्ने और जंगकी सम मारे जो बाम ही। यह अस्ताताम् स्वाराज मुनिहित्ये जन्मकी कहा सुनार जन्मी अस्ति बड़ी रही, 'अस्तियां बीतकोची सुना दिया। ये प्रकारी बड़ी रही, 'अस्तियां बातकान् और सर्वित्राच्या है जो को सीमानकी नात है कि अस्ति मेरे सर्व-कन्यु और मिनानोके स्वीत दूरावारी कुनिहरूक कम नहीं किया। मेरे स्वार जानकोगीका का सहा अस्ता दूरत है।' किया मुनिहरूक महत्त्वक मुनिहित्सी अस्त



तेकार अध्ययकोचे क्ष्मिए विस्तेकादि स्थार्थ आहम् अस्ता-श्रीताचे कर्णको करे गये। देवराम इन्द्रने दिन्य अध्याको कर्ण कर्णके कौरकोचे इस्को को हुए गणकोच्छे चौरिता पर दिया। अस्ते उनका और स्वकादिकाँको मन्त्रकेट मुख करावर सम्बन्धिको की कहाँ प्रस्ताका हुई। चौरकोने को और कुमारोके सर्वत प्रकारकेटा कहा सरका विज्ञा।

तम व्यक्तिके स्वीत वश्वनमें हुटे हुए कुर्वेक्करी प्रमेशक वृत्तिक्षित्ते को जेमरे व्यक्त, 'मैक्स ! ऐसा प्रमूक्त किर कारी को करकः देखी, स्वकृत करनेवारकेचे कारी हुक नहीं निरम्यः । जब हुए कव व्यक्तिके स्वीत कुरुस्त्वर्थक अपने वर वार्त्यः । इस वटनानं करने किसी अकारकः सेत् प्रमा व्यक्ता । वर्षाणके इस अवात अहता देखा पूर्वेक्तने हुने अवान किया और कृत्वर्थे अस्त्वन इस्तित होतार अपने नामके आने कार्य एका । अह स्वत्य वह ऐसा व्यक्तिक हो दहा वर्षाण करने अस्ति इस्तिकं रह हो गर्वी हो त्या होत्यक कराया अस्ति हुन्न करा व्यक्त या।

## दुर्वोधनका अनुताप और प्राधोपवेशका निश्चय

करनेक्को पूज-भूतिका । पूर्वोका स्टब्को स्वतारे स्थूत इस १९४१ वा तका प्रोडको स्थान स्थूत सावक स्थूत हो रहा धा । ऐसी विकतिये उसने इतिनास्त्राचे विका प्रस्तार प्रवेदा विका, यह सुझे विकासो सुनानेकी सुना संस्थिते।

वैश्याननार्थने नदा-नावन् ! तथ वृधिहित्ते वृत्यावृत्या वृधिकान्ये विश्व विश्व के वृत्या न्याने पुत्र नेवा विश्व वृत्या के वृत्या वृत्या वृत्या कर्मित्र कर्म



बहर-प्रचेत्र ! तुन्हें अस्तरमें मेहका पक्त नहीं है, इसीसे मे हुन्तरे सामन्त्रस कुरा नहीं संत्रसा । हुन के नहीं सन्दर्भ हे कि गमचौको देने अपने पराक्रमसे इराया है। उन्हें बार से यह है कि मेरे और मेरे प्राप्तकोंने साथ गनाओंक बात देखक बुद इशा और कामें केनें ही ओरकी सूनि भी रहें। विद्यासन में पायाने पुत्र करने रूपे तो इस कावार सामान नहीं कर रहे । अन्तर्भे हार हमारी है हुई और गम्बर्कीने हमें केवल, बन्धे, कुर, की, रोज और समारियोके अधिन केंद्र कर रिवल । वित्र के हुएँ अववासमार्थके के बके । उसी प्रत्य कुर्य कुछ जैनिक और मिक्रियोंने पायाबीके बाह्य कामर क्षात्र कि 'मुक्तांखेन क्षाताहरूमार राजा क्योंकाको अन्ते वर्ष और विकोध स्थीहर प्रस्कृतर के का दो हैं, इस करन आप कई सुरक्षा ।' का वर्षात्व सुधिवित्ते अस्ते सब व्यक्तिको सम्बद्धान पूर्वे क्रमानो पुरुषेके हैंजी अक्षा है। पानकारोप का स्थानक अपने और मन्यवंधिये पुरानेकी पालि रक्तों हुए भी अन्तेने उन्हें प्रमुख्याचार व्यक्तिसूर्यका क्षेत्र केरेका जनका विकास विकास राज्यों को क्षेत्रनेको रेजर नहीं हुए । इसकर चीन्सेन, अर्जून, मकत और सकेव अवर कारोबी को कार्र को स सम्बद्धित रक्तवृति होतुकार हुने वर्गारक्षे हुए आवक्तवने व्यूके १९ने । वस स्टब्स कुले अर्थन काली हो देखा कि कर ओस्टे माजोर्क पारको किया हुत्य अर्जुन हिम्स अस्त्रोको सर्व धार सह है। इस प्रकार कर अर्थनके की बाजोबी उनके दिखाई कर गर्थी के अर्थकों दिल विकासिकों अन्यत क्रम प्रकार कर विकार बिल क्षेत्रों किया जागराओं सुधा विशे और क्षेत्रोहीने कुमान-पश ferm | mir | fire migere artifel firm first mem-कृतिक पेड़ बाल कही, 'बीएकर | अन्य मेरे प्रकृतिको छोड हिरियो । परव्यक्रीके जीविक रहते पूर् प्रकार निरम्बार नहीं होता पादिये (" महत्या अर्थन्ये इस प्रमाद सहतेया नामानिक विवर्तन्ते को बाल्या कि कालोग प्रमानोको काली पन्छि सकित क्रम क्रीशाओं देखानेके मिनने बार्ड कर्न के । विकासिकों बार ने क्रम्ब को से में समाने पर जीवने स्टाह कि बराई का कन से में वहीं रूपा बार्ड । किर परवालेक स्वीत क्यानी व्यक्तिको पास सावार हारे केलेको इल्लाने साझ विकास और क्षे भी क्यारा जोटा विकार सुराष्ट्र । इस प्रकार सिक्टेके सावने में रोज और केरीको सामने चरित्रासको चेर किया राजा । महारुते, इत्यो सम्बद्ध कृषाको और क्या बाद क्रेसी ? विकास की सर्वाद्य निरामर विकास और विकास स्वापी कर क्षा का, अभी पुर क्यारियो सकतो हरून और सुरे जीवनकान हैंगा। है बीर । इसकी सरेका के की कर का रंजनमें मेरे जन्म निवास जाते को ब्याट अपना होना । इस प्रकारका जीना किसा काणका ? नहीं, गर्मा पूछे कर करती है

हुम अकार कुर्वेकर आक्ना किनात्मक है यह का । असे दिन कुमायाओं पहल, 'मैना ! धून मेरी बात सुने । मैं तुने राज्य देता है। इसे प्रतिकार कार्या तुल नेती जन्द्र राजा सनी और कार्ग राज इन्द्रविको सरकारे का संप्रदेशकारी पृत्रविका क्रांतन बारो ।' कुर्वेजनकी क्षा क्रांत सुनका कु क्रांतनका नाम कुळाले कर जाना और जाने कुनोधनके करणोगर हैसर रकते हर रेका कई, 'बहुराव । देश कर्ष की हे स्थान : सारी कुर कर कर, कुर्व अपने हेजके और कराज अपने क्रीसरकार्य गरन है, क्रियरण अपने प्रारंग्यों और है और अति क्रमानक वरिवाप कर के में भी आपके देना है क्वीक्र प्राप्त की क्रांग्य । जह, आप प्रमुप के माहने ।" हेक स्थापन कुछारान्ये होती हाधीले आणी यह माहित पाल कार हैन्द्रे और का एक चारवार देने लगा। क्रॉपन और ुकारको अन्य दुविता हैय करोडो भी को समा ह्य और अभी क्यो कहा, 'अप क्षेत्री महत्त्वारीने सामान कुलोचे समान कर्ता सोचा करते हैं ? सोचा सारवेकालोका कोच्य को कामी कर नहीं हो प्रकार । उसके कैर्य कारण करें, इस प्रकार क्षेत्र करने प्रदर्भका हो यह बक्को । प्राथकोरे क्रमको प्रकारिक स्थाने क्रमण-ऐसा मनके से अपोने अपने वार्वकारक ही पासन विका है। राजको सीतर सुनेकारे पुरुरोको सर्वक राज्यका दिल करना ही काहिने । इसरिन्ये ऐसी कोई कर हो की क्यों से अपने आवको संस्थ नहीं होता uffit birt, mei nebring fruit gent आको सभी वर्ष अक्ष से को है। इसलिये इस संवक्षको क्षेत्रकर एक्ट होएवं और अपने अञ्चलेक्ट बाहर बैचाहने । चहि आप केरी कार नहीं परनेंगे से में भी आपके करणोंकी केवने वहीं द्विता। आयोह मिना हो मैं को बीचित नहीं

त्य पुष्पानुत ज्ञानित में पुर्वेषाओं तनाओं हुए क्या—एक्प् ! कार्य के क्यानं नात नहीं है, व्या के तुमने सुने है है। किए की तुन्हें को सन्दिक्तांतिनों राज्याक्यों क्यानोंने इन्कित है है, जो हुए इस ज्ञान मोहनत क्यों क्षेत्र क्याने हैं ? हुए अपन पूर्वतारों है अपने ज्ञान उद्यम्भेको सैपार हुए हो । जनका मेरे विकालो हुमने कार्य को-मुहोको सेवा नहीं की, इसोसी ऐसी कार्या कारे सुहारी है। यह तो हुनेकी बात है और हुम इसेक कर को हो ! हुन्यात का प्रत्मार करना चाहिने और हुम इसेक कर को हो ! हुन्यात का प्राप्त को उसका ही है। इससेनों हुम कार्या केन्द्र के और प्रत्मानोंने हुन्यारे साथ को उनकार किया है, जो उत्तरम करके को उसका राज्य है हो। इससे हुम बात और वर्ग कहा करेंने। हुम नेती कार पानकर ऐसा है कहे, इससे हुम कुम्बर करें बातके को अपनी क्या केन्द्र के और उसका प्रमुख राज्य करें और को। इससे हुने सुना किया ।

वैशानकार्य करते हैं—राकत् । इस अकार कुर्वेकरको अस्त्रे सुद्धा, सन्तरे, भाई और सम्बन्धनकोने स्कृतेक सन्दर्भाषाः परंतु स्व अपने निक्षणके नहीं क्रिया । अस्त्रे कृष्ट और सन्दर्भके क्या कारण वित्ये और सर्ग-अहिन्दी कृष्णके श्रातीका संत्रम कर सम्बन्धके नियमोका फाल्य करने सम्बन्ध



## दुर्योद्यनका प्रायोपवेश-परित्याग

क्षांधनको प्रयोगनेक करते देशकर केवराजीके पर्यापन पांतालवासी देश और क्षत्रपोने किवास कि पनि इस उच्चर कुर्वेक्तका प्रत्यक्ष हो एवा दो हतार बहु निः शावनः। इसरियों क्योंने को अपने पास सुम्बनेके देखें सहस्ती। और कुराने कराने हुए अवस्तिकेच कर्मक्रम औपनिन्द क्रमेकान्द्र अवस्था किया । केन्-केट्यूमें निम्मक अञ्चलकोण पनोपारमधूर्वक अधिने वी और सुवकी अब्द्रीत केरे सने । कर्म समाप्त होनेकर बावकुन्कामेशे एक बड़ी 🛊 अर्जुन कुरू गोधाई लेटी प्रकट क्षूं और मोतरी, 'मरपाओ, में क्या करी. ?' तम देखेरे ज्यान होचार खहर, 'सु प्राचीवर्षण करते हुए एका कुर्वोचनको पहुँ हो जा ।" सब कुरुक "सो उद्यान" सकुकर समी और एक क्षणमें ही क्योंबनके पास पहेंच नहीं ! किन एक क्षणमें ही उसे लेकर स्मातलमें पहुँच गर्जी । दुवाँचनको सन्त्रा देशकर कुनलेके किए जन्म हो गये और उन्होंने जाने अभियानपूर्वक कहा, "वस्त्रकुरस्थिक यहागम कुर्वेका ! न्तपके पास सबा ही करे-करे सरकेर और प्रान्त की रहते है। किर अपने यह प्राचीपनेकका सहस्र क्यों किर्फ है ? जो पुरुष आत्यक्रमा परस्ता है, यह स्त्रे अधीननिवर्धे प्राप्त होना है अपैर लॉम्परे भी अस्थी निनंद होती है। अवस्था पह विकार हो बर्ग, जर्ब और स्टान्स राज कानेन्यत है; इसे कर होत. बीजिये । जाय होन्स क्यों करते हैं, अल्ब्हे किये अब

विकार प्रधानका कार्यार नहीं है। जानकी स्वाप्तातके किये अनेकों प्रधानीर कृतकी जानक हो चुने हैं। कुछ कृतरे हैंगा, बीका, प्रेया और कृत आसिन्ट क्रांटिनें अनेक करेंने, निर्मात में कुछ और क्रेक्स किस्स्मानिक केवार अनुनो क्यूनोंने संस्तर



करेंगे। अन्तेः दिया श्रुतिकवानिये जरण हुए उत्तर भी अनेको देव और दावा आयो प्रमुखेंके साथ बुद्धों को पराधानसे पिछ जारोंने। पहारको कर्ण अर्जून सका और भी सामी शुक्रुशोको परावा करेगा । इस कामके निमे इसने संवरतक नामबारे सहवों देश और राह्मोंको निकुक कर दिन्ह है। वे स्त्रारित्य और अर्थुनको नष्ट कर क्रमेंने । जान क्रोक भ करे, क्षक इस पृथ्वीको समुओसे रहित ही सम्बद्धे और निर्दाण क्षेत्रम इसे कोरो : देशियो, देवताओंने से पान्कानेका जनका हे एका है और आप एजंदर हमारों गाँत है।' इस प्रवास क्वींकनाई हरते। देवा क्ट्रोने कहा, 'अब आप अपने पर जाउने और एक्कोपर कियम प्राप्त क्रीकिने (

दियोगेंड विद्या करनेवर कुमाने कुर्वेभनको विद प्राचीपनेत्रके जालक ही जीना क्षेत्र और का वही अनानीन हो गयी। कृत्याके क्ये क्रानेक कृतेकको के हुआ और असरे इस एक अर्थानको एक ब्राप्त-सा अन्यक्र । कुसरे कि प्रबंध होते हैं। कुल्का कर्मी क्षण ओड़कर हैरले हुए कहा, 'बहुतरक ) यरकार कोई की करूक इन्द्रुओंको नहीं बीत । त्रोन इन्सिक्यपुर पहित्र नवे ।

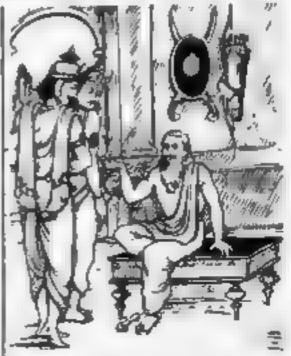
क्यार: के बीच क्या है, का मधी सुरुके दिन भी देख तेया है। जान इस तत्व क्यों को यो है, फोमाओं ऐसी क्या का है ? एक कर काने नरावाओं प्रशासिक संतप्त करके अब परत को बढ़ते हैं? आपके अर्जुनका प्रकार देखाना कर के नहीं हो करा है। वहि देशा है में आवर्ड आर्थ राजी अभिन्न करके कहात है कि मैं उसे संसामने कर क्षारंगा । वे औद्यापूर्वक प्रका कुकर महता है कि पान्कोंके बहुमानकार केंद्रानी वर्ग समझ होते हो में उन्हें जानके अर्थन कर देखा।' कर्मक इस प्रकार माले और इन्सालकोके कहा अनुस्थ-वितय कार्नेपर तथा केलेकी बात बाद करके कुर्वेक्त अध्यक्ति स्वय हो नया। साले पाणकोचे जाय पुद्ध करनेका थला विश्वार कर रिस्म और बिर हरियाल्य करनेके रिन्ते रच, हाची, कोहे और बहरियोसे पूर्व अवनी बहरियुको सेनायो देगारी कानेकी अवार है। वह विकास काहिये प्रजन्मकार पहुल्लीके क्रमाने अन्तर कार्य स्थाने । इस प्रकार कुछ है सपन्ने प्रक

## कर्णकी दिम्बिजयं और दुर्योधनका वैश्यवयाग

क्तर्रकाने कुर--चुनिका । कृता काले कहिने कि निक समय जामना पान्यकारम क्रैस्टरमें यूने थे, उस समय होत्यापार्थे प्रहासमुर्वेश कृतराह्यपुत्र, सुरापुत्र कर्ण, व्यक्ताती प्राप्ति, मीम, हेम और कुरावारी का किया ?

वैद्रान्यकानी केले—शामन् ! कृतीकाके क्षेत्र कानेक निवास्त्र भीनारे अल्पे बहा, 'बरह । यस पूर हैस्सन्तरे जानेके दिन्दे तैयार हुए थे, जारी त्यान मेरी तुमले बद्धा का कि पुत्रे दुवारा नहीं जान अच्छा नहीं नत्त्व होता। वित् पुत महा बारे है को। वहाँ सहकोचे इनको हुने बन्धको सहस पक्ष और फिर वर्षत्र परकारोंने ही दुनों उनसे कुछन्।: इससे तुर्वे सन्द नहीं आगी ? देखे, इस समय तारी सेच और हिन्द्रीरे भी कारणे ही यह हतपुर गमानेंसे कार्यन जान जात का । इस समय तुमने व्यास्ता क्ष्यूब और **सुमुद्धि कर्यका** पंपालन भी देशन ही होना । यह सामें के अनुमेंद, क्रामीना या वर्षने प्राथकोके क्षेत्राई हिंदके बरावर की नहीं है। अब: इस कुराबों वृद्धिके रिन्ते में हो सम्बन्धिक रूपन सीने कर रेना है अच्छा सम्बद्धा है।'

चीवाके क्या क्यार करनेका राज्य कृतिका हैएका प्रस्तिकों साथ पान दिने। उसे जाने देखका कर्ज और बिका सुने किया है बाते देख श्रीकारी भी अपने करको पाने क्ष्माराज्ञादि भी उनके फ्रेंक्ट के विस्ते । उन्हें जननी पूरी वर्त । उनके मानेपर क्षारकपुत राजा कुर्रोचन किर उसी जाय

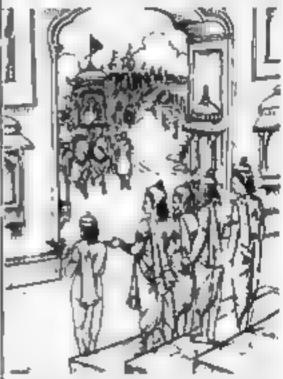


सावार अपने प्रविकारित सामग्र कार्ने तथा कि 'इम्बर विश विका प्रकार हो उठेर अस हमें क्या कारण कार्नि ?' अस समय कार्नि कहा—'राजात् ! सुनिये, में आपने एक कर बहात हैं। चीका राहा हो इसारी निका कर्या करे हैं और प्राथ्यां की प्रदेश करते हैं। असमी हेन कारणे कारण प्रम्या मेरे प्रति की हेन हो जाता है और असमी आने में मेरे राष्ट्र-तावारी निका करते हैं। से में चीनाने का क्यांग्ले कार मही कर प्रकार । आप मुझे संस्था, मेना और क्यांग्ले केया प्रभावों किया करनेकी जाता ग्रीनिये। असमी किया करता होती। में स्थांग्ली क्यांग्ली क्यांग्ली क्यांग्ली

कार्ये में उत्तर पुरसर दुर्वोकाने आवश जेरते कहा—'कीर मार्ग ! यून कहा है नेता हैत करनेके तिले जान जाते हैं। माँद हुन्हें निक्षण है कि में अपने मार्ग कहा कहे।' कुनेकार्या हैता यो हुन आलो और मेरे परको प्राप्त कहे।' कुनेकार्या हैता वहनेकर कार्यों अपनी हैतिकाय-व्याप्त किने जाते आवारक प्राप्तिक प्रमाने आप कर सुन नक्षण और विकिने मुख किथा। इस समय प्राप्तकीर को अस्त्रीको किया प्राप्त हाली राजनी पर-वस्ताहत जीनी सोका हैता और

इतिमान्त्रों क्ष्में भागे सेनके साथ कारण करे महायाचीर कार्यने एका कुमारी संग्राभनिको पेस और बाह चीनम तुत्रु करके और पुत्रकों अच्या अभीन कर दिन्छ। इसमें बारकपर्ने इसने बहुत-मा स्टेबंट वर्षी और संस्थ-नन्दार्थे का रिमे । प्रतांत का भी पत्ना प्रकार अभीर थे, उने बीतका उसते भी चार किया । किर बहारे करका का उसर हिंदार्थे क्या और उपके सम समानीको इक्या । महस्तव कारताले जीतकर के इंजुजोंने सक्त-स्तृत कुमारकर बद गया। इस प्रकार का ओरके सम क्यानोको जीवकर इसमें नेपाल देशके एकाओंको भी परावर विकास निम हिमानको नोचे अस्पान कृतेको और कथा किया । और उस जोरके सह, बह, करिह, श्रुविका, विविधा, करव, मनंत्राच, आवसीर, चेच्च और सर्वेद्यन साथि एर्न्सेके धीतकार अपने धनाये विक्या । इक्ष्मेंड पद्धान्य अपने मसामुनिकडे बीता और फिर केमला, मुक्तिकामते, चेक्समन, विदुर्ध कोर कोराज्य आदि पुरियोको अपने अधीर किया। इन सम्बद्धे जीवचर और इस्से कर रोकर करने रविकासी ओर प्रत्यंत्र विकार । उत्तर भी उसने अनेको न्यार्गकांको करना दिन्छ। सम्बोदे राज कर्मका वहा केर कुद्र हुना, किन्तु अन्तर्में उसे भी इकानुसार का देख चक्र । किर 🕸 वस्क्र नीर सीतीत्वारी जोर अव। वहाँ केरल, नील और वेजुद्दिन्त्वा आदि अनेवाँ राजासोसे कर रेक्टर दिन विज्ञात्वार पुत्रको पर्शा विज्ञा। अन्ते अवस्थातको नो राजा थे, जो को रास महाजीतो जाने अवीन कर विश्वा । इसके व्यास्त्र अधीनदेशको राज्यशोको जीतावर सामपूर्वक वृत्तिकोशाचेको अपने प्रस्ते विज्ञा और पिर पश्चिम देशाको जीताव अस्था किया। उस दिसाने व्यास काने वचन और वर्गर राज्यशोको कर विज्ञा। इस प्रवार उसने पूर्व, पश्चिम, उत्तर, स्वित्त —सभी दिसानोचे सारी पूर्वी विज्ञा कर सी।

इस त्राह साथै पृथ्वीको अपने साथै पाने तार पह



अनुनेर बीर वार्च इतिराजपुत्रों उनका तो एका पुरोक्तने अपने वार्ड, वर्षे-वार्ड और काम्-वान्यांकोंक स्त्रीत अनवानी करके अला विशेवाद सहकर किया जात नहीं अस्तरतारी वसकी दिन्यांकार्ड केवा वस्त्रों। किर कर्नाने कहा, 'कर्न । सुनांक व्याप्त हो। सुनने पुत्रों वह जीन दिल्ली है जिसे में वीन्तर, क्रेम, कृष और व्याप्तिकते की जान नहीं कर संवतः। वो स्वाप्ति-वेश-त्रवा काम्या क्या दूसरे राज्य तो सुनारे सोत्यांके अंक्ष्मी नरावरी ची नहीं कर समाते। मैंने पान्यामेश काम् वार्च राज्यांक का देवल का; को साम मेरी इक्स भी राज्यांक वार्च राज्यांके है, तुम सने पूरी करते।' सुनोक्त्योंक इस अवधर कार्कार कर्मी अस्त्रों कहा, 'राज्य ! इस समय सभी तम पूर्वोकाने अपने पूर्वेशियको मुस्तकर उनसे कहा, 'हिस्तर ! अस्य मेरे दिन्ने सम्बद्धितर विकित्ता राजपुत का आएक कर दीनिये। इसकी सम्बद्धितर में क्षेत्र रहित्यको दूर्व !' इसकर पुर्वेशियने कहा, 'राजप् ! पूर्विद्धितके मेरिक एते हुए आप का का की कर सम्बद्धे । मिन्नु एक कुल्स का है, को विस्तित लिये की निविद्ध नहीं है। अस्य विविद्धा को की स्वीतिये। अस्यत क्ष्म केल्स का है और का स्वाद्धित को है। स्वीत्तक है। इसे का कहा कि है। साले अस्यक्ष की होगा और का निया विस्ति निक्त-कारको सम्बद्ध है सामका।'

अभिनाके ऐसा स्थापन क्या पूर्वभागे कर्वकारियोक्त बनायोग्य आहा है तथा उन्हेंने उत्तये आहानुकर करन्तः प्रारी नेवारियों कर थी। तब महत्त्वीर निव्ह एवं भन्तियोंने कृतीकरको सूचन ै -- 'राजन् । यहानी सन सम्बर्धना हेन्सर हैं। प्रोनेकर महापूरण इस भी कर सुबार है और बातक निवस इत्या भी भा गांच है।' वह कुनकर एक कुर्वेकाने कह आर वर मानेकी आहत है है। कर, पहलाई आएम हो क्या और कृतीकरको प्रत्याकृत्यर विक्रिकृतिक स्वाची देखा है नहीं । इस क्षमा कृताह, निकुर, चीचा, क्षेत्रम, क्षम, वर्गा, क्षमूनि और गान्यारी—सर्वाको कहे असलत हो। राजश्री और प्राप्तानोको नियमितः धारनेके निर्म प्रीप्तानको पुर नेके वर्ष । के क्रम रिच करनेवाली सम्बर्धियोग केंद्रकर क्राई-सर्वे वाले रहते । अनोते एक राजो र: प्रायमने बहा, 'तुन बीच है क्रियन करते र्केर सहाँ रहनेवाले भाष्युक्तें अन्य हाहान्त्रीको विशेषक पहला नियमान हो ।' उसने पान्कमोनेः यस मानद प्रचार विका और इन्से स्था, 'बहुराज | नृपतिबोह कुर्वेचन उपने पराहरूको बहुत-सा पन प्राप्त करके एक बहुन्या कर से हैं। अल्ले समितिक होनेके दिन्ने नहीं नहींने ब्यूए-से रूप और स्थाप आ रहे हैं। महत्त्वस कुठराजने जुड़े अन्त्रको लेकाई पेकाई। वृतराष्ट्रकुमार बहाराज कुर्वेचन अस्त्रको च्हाके विन्ते नियमिक करते हैं। आप उनका यह अमीह यह देहानेकी कुछ करें।"

कृत्यते वह बात सुनवार एका कृतिहिन्ते वहा, 'अन्ते पूर्वजोकी कीर्ति कहानेकाले एका कृतिका नक्तवाको करा है। सन्दान्त्व कका कर हो है—क्द कहा अल्डाब्स करा है। इस वी उसमें स्थालिया केर्ते; मितु इस स्थान देखा किर्ति अवहर नहीं हो सकता, करोकि तेल करेडक हमें कनकाले नियमका करान करना है।' करिएककी वह क्रम का कुन्तार भीमसेनने कहा, 'तुन कुरोकनले वह हेना कि क्रेक कर्त



बीवनेतर कर पुरुष्याने अस-क्योरे प्रणापित आहिने हुने होना करूप, वर्षा करेतम पुनिष्ठिर नहीं आगेने र योजने हिना अन्य कथायोरे पुक्र भी नहीं बद्धा। दिन पूर्ण हरोकको कर कथार कर करे को-को-सो हुन है।

ताव अनेको देवरेले प्रकार-जवार पुर्वा और जाहाय इतिरामपुरने आने जने। वर्षा विपुत्तकेने कुर्वेशकको आदाने साथे वर्णोद पुरानेका कवार्येत्व सामार विकार साथ उनके इत्यानपुरका काले-बीनेकी सामारी, सुरानिक काल और प्रदा-स्थाद कहा हैकर को सेक्षु विकार एका पूर्वेशको प्रथाने वर्णे प्राचानुस्ता कालोत्व निकारपुर करवाने राजा साथै एका और प्रवासिको बहुद-जा का नेकर किए किया। किर यह बाहुने तथा कर्ण और प्रसुक्तिके सहित इतिरामपुर्वे और आहार है

करनेक्यों कृत—पूरी ! कुर्गेक्सको कथानो सुद्धनेके प्रकृत सहस्रती पायकोंने इस बनने कथा किया, यह पूछी सहस्रको कुल करें।

विभागवनमाँ नोते—स्थन् ! कुछ दिन तथी वनमें प्रकार विभा वर्षण वाकान स्थापन राजा दूसने सामित्रोके सर्वता नहींसे बात विभो । इससेन असीद रोजाद भी उनके साथ हो दिन्हें । विभा विभा भागी पुद्ध जान और साथा जानका सुभास का, असने वास्त्रार ने कान्याद्यनमंद परिका अध्यापने पहित गरे।

### व्यासजीका युधिहिरके पास आना और उन्हें तप एवं दानका महत्त्व बताना

वैशासकार करते हैं—कार्यका । इस प्रवार करने खंटे
पूर प्रशास पाणांकि कारत कर्ष कई बहुसे कीर : वे पाल-पूर प्रशास को थे। सूच केन्स्के केन केन्द्र की पाल-पूर कारत थे। वे सार-के-साम प्रशासक थे, इस्तीरने का इंक्कार कि 'या इकरे कहाक समाव है, इसे केन्द्रक साम कारत कार कारत की का पाल है। वे साम के हैं इससे कार्निय के बाद है। वे साम में हैं अवसावनों के बाद केंग्र हैं बाररीका से बाद है। वे साम में हैं अवसावनों के बाद केंग्र हैं बाररीका से बाद करने इक्न कार्य- हैं कुन में हैं साम की भी असी की साम पुरित्यक मुझ केन्यक कार कर की बीची की साम पुरित्यक हैं कारत कार की कार होने हैं। वे। असावपूर्ण केंग्र कोंसे अने प्रशासक कार है कारत

एक सम्बन्धि वाल है, सामानिकार गामानी कामानिकों हैसानेके रिक्षे वाल सकते। उन्हें आते हैसा मुनिश्चित सकते प्रकृतर को साधारके प्रत्य निक्षा सकते। उन्हें आवश्यके प्रत्य हैसा असावकर वैदाया और परिच्याको प्रत्या कामे प्रत्य हैसा। किए सकते भी नेकाई विकारको विकारकोच कामे मुनिश साल ही वैदा गते। अनने पीजोको कामानको कामो प्रत्यो कामे वैदा और पहली करण-पुत्र सामार कीवल-विकास कामो विकार मालकोची अधिनेते अन्ति पर आवे। से प्रत्या कामाने



क्षेत्रे—'म्ब्रावस् मृतिक्रित । सून्त्रे, संसारने राजसके विना (कड़ उठने किया) किसीओ भी उद परेडिया पूरा गरी विकास । क्यारे सक्तार कुमत कोई स्टब्स नहीं है, प्राप्ते ही पहल पर (१६६) को अर्थन होती है। बहरिया करें; तुम केंग्रेने प्राप्त है कर को कि ऐसी कोई कहा नहीं है, के propert is then soft i bert, betrett, mitten attent, केवार और अधिकियोंको केवर अवस्थि बहुत करना, प्रतिकों और परको पहले स्थान, क्रारोके क्षेत्र न देशना, किसी केवादी देश न करना, स्वार-श्रीताची वरिवत रकन-ने क्षानुस मनुष्यको परिवा करनेवाले हैं, इनले अरमूका और निःशेक्कको सिद्धि होती है। को खेग हम क्वोंक परस्य म कर अवनंत्रे क्षेत्र रक्षणेकाले हैं, उन्ने पक-पत्नी आहि लियेन-वेरियोचे क्या तेव प्राप्त है। का बहुदायक चेरियोचे प्राप हैकर से क्षाची सुक्त नहीं पति । इस लोकर्ने की सुक्त कर्न किया करते हैं, जरूबा कर करवेकरें जेगन करते हैं। प्रतिको अको प्रतिको यह और निवरोक्षे प्रकार समान कारिके । राजन् । सम्बन्धर गाँद गाँदां सक्षात्र का आरिकि अर कार के प्राप्त क्षेत्रर अपनी प्रतिकंत अनुसार करे दान है, विभिन्न पूर्व करके और अन्यन को और करने कथी नहार (के) के कर गर्म ।

कृष्णिको पूर्ण-स्वकृष्ट्री । यह और सरकार्षे विस्तरका स्वतः अधिक है ? और कृष कृष्टेंचे स्वीत स्वतित है ?

क्योंका कारा कोई जी है। लोगोंको बनका कोण विहेन केल है, का निरुक्त भी को कहते हैं। इसाई। नरून पनके रियो अपने बाते प्रायमेका की बोद कोइकार ब्यूक्तीये बहारती है, सनुकों नोचे समार्थ है। कोई मीडी बारते और बोई मीडी पान्ते हैं। बोई सेन से बन्धी इक्सो क्रारोबी क्रारत भी क्रीकार कर हेर्र है। इस ज्यार कह स्थापन क्याने हुए करका स्थान बढ़ा है करिन है। अतः हमसे हमार कोई कार्य नहीं है। इस्तियों में ब्रान्यों प्रमंखे प्रान्त है। उससे भी भीर कर नामके कमाना पना हो और उत्तर हेता. काल एक प्राच्या विकास करके हारका क्षत्र विकास साथ हो प्रस्कृत और के अधिक महत्त्व समझन चाहिये : अन्यासपूर्वक प्राप्त किमें हर बनसे के सुर-वर्ग किया जाता है, यह सर्तांकी मान् भगरे दश भी बरहा। चुनिहर ! यह असे क्रमकर सुद्धकारी क्रमकार केंद्रा भी क्रम क्रिक्स जाय हो प्रत्येकमें काका अन्य फार होता है । इस विकास कानकार लोग एक पुराने प्रतिकारमध्य काकरण दिया करते हैं कि पुरुष व्यक्ति एक होण (साथै पंच संस्थे लगभग) वानका का करके पहल कर जा। जिला था।

#### मुद्गल ऋविकी कथा

वृष्यिको पुल—सम्बद् । ब्यास्य सुद्दारको एक क्षेत्र सम्बद्धा कर केसे और जिस विशेषो किया था, श्या व्याका विको दिया गया था—व्या स्था पुढो ब्याहके।

कार्य वेते - तक्त् ! कुर्काने एक पुरूक कार्य भागि रहते थे। ये बादे कार्याक और निवेशिक थे। जहां ताल बोचने और विसरीयों की निका की बातों है। अविधियोची रेगाया उन्हेंने पर हे रक्षा था, बडे क्लीबा और उन्हों महाना है। हिस्स और उन्ह-कृतिने ही उनकी चौतिनक भारती भी। पेक बैलोमें एक क्षेत्र बात प्रवास कर रेती थे। जाति 'स्तिका' नक्क का बस्ते और देखी कि प्रकेट अभावका तथा पुरिवाको हर्छ-वैजीयस क्रम विका करते में। क्योंने वेचना और जनिकियोंको वेकी यो जन क्यान, करीचे परिवासकीय निर्मात करते थे । करने को थी, 🗫 था और वे कर्ण है। होने एक पहले एक है दिन केवन करते में । महत्त्वम ? रूपका प्रमान हैता का कि प्राचेक पानित हैत वेपराम इन्द्र वेपराओके प्रतित उनके न्यूनी सामान उनकिया क्षेत्रा असरा पाग रेते थे । इस इच्छर क्ष्मिकीये क्षम और क्रमा किस्से अतिविध्योधी अन्न क्रिय-पदी क्रमेंड क्रीक्सम प्रम था। किसीने प्रति हेर व स्थापार को प्रश्नाकारों ने कर कारों में। इस्तरियों का एक क्षेत्र अब बंक्स विरुद्ध चीतर कारी काता नहीं हर, कावल कहार कहार हाई एकानेका अभिनि देशको का अवने अवन्य बद्धि हो बाही हो। रीकारों उस्तरण और निवृत्त् आवेशे कोलन को, पर कार्य वर्धी असी ।

मुनिके इस जानती स्वाति ज्ञून स्वात्त केन पूजी हो।
इस दिन उनकी निर्मिक्त पूर्णिक वानोपे ज्ञूने के वे नेग-वर्ड़न पानसंबद्ध-मा केन कालने हैंड नुकूले कह काल काई हर कहाँ का पहुँचे। जाते हैं केले 'विकार ! जानकों मासूस होना चाहिये कि ये केवनकी इकाले का अल्या हैं!' मुस्साने कहा, 'ये आपका जानता केला हैं।' जोत च्या, अर्थ, आकालीय आदि पूज्यकी व्यापती के की। उनकाल उन्होंने अपने पूर्व अतिविक्तों कहाँ कहारों केवन परोस्तकर निमाना। ब्रह्मसे कहा हुआ च्या आह कहा स्वाद कहा होटे पूर्व तो के ही, तम का गते। मुस्सा क्ये कावल कहा होटे पह जोर ने उसे हकर करते हो। अल्यों क्या उतने समें हो के के मुख मूझ आह च्या था, उसे अपने इसीस्ये समेट विकार जीर निमास आये थे, अबर ही निकार गते। इसी क्यार कुले परीस भी जाये और मोजन करते करते को। मुस्सा मुनिको परिवारस्तित मुक्ता च्या नाम पह । किन के आलंड



क्षणेगार संबद्ध करने समे। भी और पुत्रने भी उनका साम विश्व : मुक्तने उनके मान्ने सनिक भी निकार या मेद नहीं पुत्रत : क्षोण, ईम्बर्ट या अध्ययस्था माथ भी नहीं कर । वे म्यो-मे-नमें प्रान्य वर्ष थी । भर्त अन्तेयर हुर्वास्त मुद्दि किन उनमेक्स हुद् । इसी प्रकार में स्मारतार कः सार प्रत्येक पर्याप्त अस्ते । किन्दु कभी भी पूर्णाय क्षमिके करने कोई विश्वार नहीं वेका । इस कर कनके विश्वको क्षाप्त और विश्वेस की क्षमा ।

इससे पूर्णकार्य नहीं जनस्या हूं। उन्होंने पुर्वकारी कहा, 'कृते ! इस पंत्रवारी हुन्हों समान कहा कोई भी कहें है। ईम्ब्री के हुन्यते हुन्यत नहीं गयी है। पूरा कहे-बहे स्वेन्त्रीके व्यक्तिक विकारको हित्य देती है और कैब्रे इर नेती है। बीच को सम्ब ही दहरी; जा नहा रास्त्रा आक्रमण करनेवारते हैं, चनुष्यका किस रास्त्री और स्वीवती ही पहरी है। चोजनो ही प्रक्रियो राह होती है। यन को हरना चन्ना है कि इसको बच्चे करना आवण करिन बाव पहला है। यन और इन्तियोधी क्याकारको ही निक्रियकारों सर कहा गया है। इन उच्च इन्तियोको चान्यों सकता पुरस्का कहा स्वाते हुए को परिवासी प्राप्त किये हुए बनको सुद्ध इसको दान करना अस्त्रवा करिन है। किन्नु का स्वात दुक्क पुत्रने विद्ध कर विचा है। चुनके निकारका में बच्चा प्रस्ता है, तुष्टारा अपने करा सनुष्य पानता है। इन्हिम्बिक्स, बैर्च, इस, इस, इस, इस, इस्म और वर्ष-न्त्रे सम दूक्ते पूर्वक्यते विश्वकत है। दूक्ते अन्त्रे पूथ क्वेंदि इसी लोकोको जीत दिल्ला, जान कर कर क्षत्र विश्व है। देखा भी तुक्ते क्वाकी न्यांका पा-नाकर अस्मी सर्वत्र चोक्सा करते हैं।'

वृत्तील पुनि इस तकार बात बार ही को थे कि वैत्याओंका द्वा एक निकानके साम बाई शा पहुँचा । उतने तिया इंट और तारत नुते हुए वे और उतनो दिया सुन्त्य वैद्धा वहीं भी। यह देखानेने बाहा ही तिब्बार और इस्कानुकार कारनेकार का। वैत्युतने कार्ति पुरुकारों बाहा—'पूर्व ) कह कियान आरक्षों सुन्यानोंने जात हुआ है, इसका वैदियो।



जार तित्व हो चुने हैं।' केव्यूनको क्या सुनकर कार्निन जाने कहा, 'केव्यून ! जानुकारिने तका का एक तका कार्निने ही निजया है कार्नी है, जारी कैदीको सामने एककर में आवादे कुछ कुछ एक है, स्थारने को साम और ब्रिटकर बाद हो, जो सामार्थ ! आवादि कार सुनकर किर अवन्य कर्मका दिख्यित कर्मना ! जाद का है—'कार्नि क्या सुन्ता है और क्या क्षेत्र हैं ?'

रेक्ट्र केरर--व्यक्ति कुट्या । आवनी कुद्धि कई उद्यक्त है। विस्तरों सुरी और श्रम कहे और स्वकृते हैं, व्य सर्गाव्य अपन सुन्त आवने कार्योगें और पह है, किर औ आप अन्यत-ने क्ष्मार हान्ये सम्बन्धने क्षितर वाले हैं—

नुकति है बढ़ बैज़ार है। अल्पादी अध्यक्ति अस्तरार में बालान है। कर्न व्यक्ति बहुत करस्या रचेच है, क्रम्बो 'स्वस्टेंक' भी बक्रो है। को उसन करोड़े कई करा होता है, कहिंद होत बाह्य विन्यानीयर विचार करते हैं ! विदाने तथ, हान का पहला का जो किये हैं, अकब को अस्तवकार्य का जारिक है, उनका उस कोमाने प्रमेश नहीं होता। यो लोन पंपीता, विकेषिता, पाल-पान्हें सन्तर और हेन्स्सूत है तथा विन्हेंने क्रमानंबर परस्य निवस है, से उस सोवाने बाते हैं: इसके विका के सुरक्षेत्र और विकास स्वीता स्थाने अभावित के सुनी 5. verfreimit miraurit \$4 mp! funt, reun, fiegine, पहिले कर, बाल, पर्याप और अपना-१८ प्रमुख अस्ता-अस्ता अर्थेको सोच्छ है, यो व्हो ही व्यक्तिगर, इच्छानुसार अञ्च होनेपाले प्रोमीते सम्बद्ध तथा वेजाती है। क्रांने विरोध हमार क्षेत्ररूपा एक बहुत क्षेत्र कांट है, निवास कर है कुरेवनियों । यह कांत्र कुरुनेक हैं । असंद अन्य केव्याओके जन्मका साथि अनेको सुन्दर उद्यान है, जो पुरसामाओं विकास एका है। यह वितरिको पूछ-पहल मूर्व करता, पाने कर्या अपने मूर्व जाते, पूर्व और क्यों का का की होता और न बोर्च कर है होता है। का कोई हेती अञ्चल पद्म नहीं होती, निरामके देशकर पूरत हो । का और पान्नो प्रत्ये करनेकारी कुरूव कारी क्रों है. बीमान-सम्ब हाम भागती है। साम और एक और बारनीको क्रिय राज्येकारे कुछ कुर कार्ट है। यह अभी क्रोध नहीं होता, विकास विकास की सुकती हैया; न बुहाया काता है और न प्रारंग्ये कार्यकाल अनुस्ता होता है। सर्गातिनीके करीनमें रेपान कारणी अधनता होती है। से करीर पुरस्कारोंके है 🕮 ओरे हैं. नाम-निवासे एक्क्रीकी करकी अपनि नहीं होती । उनमें क्यों कारेज नहीं निकास्त, कुरेक नहीं अली और मार-पूर्व की कही निवासका। इसके कार्यहे कार्यों कीने जी होते। जाकि दिल कुतुरोधी जारती दिल पुरस्क पैनलो क्यो है, बाची कुमालो कीं। तुम्हो जाने के क् निवार है, हेरे कियान वहाँ सबके पास होते हैं। ये जिसीसे ईम्ब्री पढ़ी रकते, हेव नहीं करते । यह सुक्रारे जीवन व्यतिह क्को है।

इन वेक्साओं होकोंने में करा अनेकों हिम सेवा हैं। इन्हें सको अस ब्राजनेक हैं। वहीं अपने सुख करोंने परित्र करि-वृत्ति को हैं। वहीं क्षपु मानक वेक्स भी रहते हैं, जे सर्वकारी विकासोंके भी पूजा हैं। वेक्स भी उनकी अस्त्रका करते हैं। उनके सेवा कर्याकार है, वेक्सी है और क्रम स्वाबी कर्याकारियों पूर्ण कर्याकार है, केई

रोपरेंचे देवलेंड रेले मनने ईम्ब्री नहीं होती। अवहीला काको संविक्य निर्मर वहीं हुआ क्षरती। अने अनुस चैनेकी भी शायरपावस नहीं रहते । उसके के दिना न्योदियंत है, कारत परेड़े किहेन अस्पात की है। के इस्तानक हैं, श्वा-भेगकी प्रकार में कभी नहीं होती : में हेमकारोंके भी केवत को समारन है। बहुद्वारको सका भी उनका बाब च्याँ होता । फिर कार्ये परा-कृतुस्थी आहंग्या से हे ही फैले समारी है ? इने-होति, समान्याय, समानेत आहेला असे अरम्भाषाय केला है। क्लीन केला भी का विकास जात मारण बातो है। यह पर सिर्देशको अन्यता है, यो अन्यते सराय नहीं है। योगोबी प्रयूप रक्षनेताई से उस विदेशने प धी नहीं समाते।

में को विरोध देखा है, उन्होंने स्वेक्टेक्ट करेती पूरत काम निवासीके जानस्थाने सन्ता निविद्यांचा दिने हुए कुसने प्राप्त करते हैं। एको अपने क्रमंत प्रश्नानां का प्रयानी रिन्द्रि प्राप्त की है, अपनी क्यावर्थ सेवले देवीकावन होकर सार जान्या जनमेन वाते । हे विक्र | नही प्रशंका पुरू है और वे से प्याप्त अनेको प्रकारक रहेना है। इस प्रकार अन्यान, से मेरे काचि पूज काचे है, अब क्षेत्र भी कुते । कारी अपने किये हुए फरोबिट ही पता चोचा पता है, पता मार्ग को विका पारत। साविक क्षेत्र अवने का वेश्व र्मवाकर ही प्राप्त होता है। नेरी संस्कृते नहीं स्कृति साले महा क्षेत्र है कि नहींने एक-न-एक कि बात है है बात है। सुनार देवानेका अन्योग काके अन्ते वित्र सकार्य वित्रवेकारे अधियोंको को असंस्थेत और पैक्स क्षेत्रों है, सरका कर्मक मरना समित है। उस्ते सोस्टी चाल कुनूस जाते हैं, सहै सामि निर्देशी सुरूप है। यह देखते ही उनके करने कर सन्य पाता है-अब निच, अब निच। क्रमा स्टोप्स्पक प्रभाग पक्षा है। जब निरने सनते हैं तो उनकी बेताय गुन हो यानी है, तुम-पून नहीं दहती । ह्यान्वेक्टरमा विकार भी हवेन्द्र है, राजाने पह पान क्या प्रकार है।

पुरुष्ट केरो-मे से असमे स्टिंग महत् के बाजे। यह परे ।

इनके अधिरिक को रिखेंच लोक हो, सहका नर्कन की किये।

रेक्ट्रले क्या-प्राचिक्ते की उस्त विकास परन क्षान है अर कह समाज महेतिर्वय स्थेक है, उसे पराक्षावद की बार्व है। अन्तर्य पुरूष से बार्व का है नहीं समारे ( १०४, १५४), होंथ, मेरा और लेको पूछ पुरुष भी बढ़ी बढ़ी खूँब सकते। कों हे क्या और स्वांकार्ट चीत. इन्हेंसे पर फनेवले. विवेदिक करा कारकेशी (लो फोसले प्याप्त पूर्ण हैं पा करते हैं। पुरुष्ता ! सुबारे अबके अनुसार में सारी बातें मैंने का है। अन क्या करते करते, करते करें, है। व कर्ते ।

न्यवर्ग को हैं—देखाओं यह सुरक मुहार स्वीते mer sert ufan fem fam sit fer unt-विकास है केन अल्पाने अलाव है, कार अस्ताताने प्रकारिये ह करने से कह करों केन हैं। कुछे पर सामें और कहीं हकते कोई कम नहीं है। ओह । यसके सह से फर्न-व्यक्तिको बहु वर्ष द्वार और बहुतकर होता होता। प्रतिने को वर्ग को साने। को सबर सब और बोको रिक्ष कुर कर, केवल को स्थानक अब में अनुसरकार कारिए ।" केल कालार धार्मान्य स्त्रीने केल्क्सको ने निक कर विकार् और कार्य पूर्ववत् विलोक्क-वृतिहो सुने क्ष करन रेकिने क्षानक कारत करने रूपे। उनकी होतिने रिका और सुरित, रिप्तिया केल और सुरुते—सब एक-से से पर्ने । से विश्वाद प्रारम्भेत्रास अस्तर से विश्व स्वानमोत्तीर प्रकार को रहे । जानो वैद्याल सा सबर में साव बोज प्राप्त कृत्य, जिल्ली प्राप्त अनूनि मीक्षणक पराप सिदिह **30) कर की । इस्मीओ कुविहार ! हुनों की छोका नहीं करना** वादिने । वर्षाव्या स्थाने कर रूपा और रूपाने बाद प्रक अब्बा साथ है। तेवारे करित बाद तुने अपने जिला-विकासीया कर्म अन्यम् इत्य हेचा । अस् अन्ते प्रस्ती विकास कुर सबसे ।

र्वज्ञानकार्य कार्य है—सन्तार् सामा सुविद्याने इस ज्ञार व्यक्तर कु: तर करनेके देनो अपने समापार

# दुर्वोधनके हारा दुर्वासाका अतिषि-सत्कार और करदान पाना

मान्य कार्रे निवास कर ऋषि-मुन्तिकेंद्र साथ आजन विभिन्न कमा-वार्ताई सुन्ते हुए उत्तर काल आकर्त्युर्वक म्बर्गीन कर रहे में कर समय द:शासन, कर्ण और इन्हरियाँ।

वर्गनेक्ने कुल-केहरकारको ! विकासका महत्त्व | सन्य केसा कर्मन विका-कार्यन् ! अस आप पुरे बहे यात कारणे ।

र्रक्रप्रकार्थ केंग्रे—पहराव । यस क्रुपेयाने का सुख कि कथ्यक्रतीय से कार्ने भी जारे प्रकार जानको रहते हैं. रापसे चलनेवाले प्रचानारी बुरावा पूर्वोक्ता आहिने उनके | केते नासके निवासी का बासो है, तो उनकी शाई करनेवार

विकार विकास किर से क्रस-कमटकी निकाले उसीय कर्ण और कुशासर सामित्री प्रकारी श्वातीत हाँ और सम्बन्धेयो कृति पहुँचानेके अनेको उन्तकोकर निकार क्षेत्रे अन्य । इसी बीचमें प्रमुख्य प्रमुखी महर्गि कुर्वश्रवरी अपने यस हमार हिल्लोको स्थव दिन्ते कुर् वहाँ जा को । कार कोची कुर्वका मुनिको करका स्थारा देश कुरीका सूछ किरव विकास हुआ महामोस्तीय उनके पास क्या और नातामुक्त को अस्तिकारकारके हिन्दे निर्मानक विकास ( बाह्री विकिसे उनकी पक्ष को और क्रमं दालवी भीति उनके केलने क्रम रह । क्वांसानी वर्ध दिन वहाँ दहरे रहे । क्वांकर आभाग क्रेंस्कर का-केर असी सेवा माता का। व्यक्तिकार कारण औ, इनके प्राक्ते इनकर बहु तेवा करता था। बुन्यक भी सम्बन दिनेश का वर्षी वाले—'सुने बड़ी पूरा जाते हैं, बनन् हैं शीव भेजन रैयर कराने । ऐसा बहुबन जाने को उसे और महरित औरते पहुल के बारके । आनेवन बाहते 'अलन के भूक विश्वपुर नहीं है, नहीं साहिता है का काकर दक्षिते कोक्स हो करे । इस प्रकारका वर्तक उन्होंने करंगर किया, से भी क्षेत्रकोर करने न से बोई विचार दूसा और न सांच ही : इसके कुर्वजानी जनत हो गये और चेले---'में हुन्हें का हैरा कहना है के हका है, बॉप सो (

पूर्णकारी का का एकार पूर्णकार का वान्द्री-पर ऐसा स्वाह करें सामा तक का हुआ है ! पूर्ण संपूर्ण है से उसी का बीनस कालि—हुए काले दिने का, पुत्रासन व्यक्ति का पहलें हैं सामा है चुनि है। का पुत्रिने कर बीनोकों का में उसने को अस्त हैंकर का बादन गीया, 'जान ! कार्य कुल्में सबसे को है पुनि हिए ! में इस समय सको बालोंके का बन्धे निवास कार्य है। को गुरावान् और हुल्का है की अपने दिन्तिके साथ आप अस्य इसरे बालि हुए है, उसी अकार उनके की अस्तिक है। हो। में बाला पुनि कहा है से मेरी एक और प्राचनार कार्य स्वाहर सन्वेता। किस समय सम्बन्ध को मेरी स्वाह प्राचन और सामो प्राच्या का सामे है, जा समय आप को प्राप्त कार्यों।

'कुम्बर जेन क्षेत्रके स्वापन में ऐसा के कार्यमा।' स्की स्वापन कुर्मांक्रकी की अपने के, कैसे के क्षेत्र गये। कुर्मेक्यने इन्सुक्त असा 'मेरे कार्यों कार तथे।' असने असम क्षेत्रम कार्यसे इसा निकास : कार्यों की स्वाप—नके सीम्बर्गांक्य गता है; अस के स्वाप का गया। राजन् | शुकारी क्ष्मा पूर्व की और कुमारे केन्द्र कुर्मांके अक्षासागार्थ कुन गये—नक सम निकारी साम्बर्गांक्ष स्वाप है।

### युधिष्ठिरके आध्रमपर दर्वासाका आतिष्य, भगवान्के हारा पाण्डवीकी रक्षा

इसर, परितया प्रैप्योको सरको विन्ने बढ़ी विन्या हुई। इसने बहुर सोचा-विकास, मितु इस समय अब विस्तेतक कोई उपन्य समय स्वत्ये नहीं अच्या। उस का मन-ही-कर धारवान् वीकृत्यका इस प्रकार करना करने राजी—'हे कृत्या ! हे प्रकारतु वीकृत्य ! केन्स्टेनकर ! हे अभिनाती बाह्यके ! बराजीने यहे हुए कुक्तिकोका दुःस हर करनेकले



हे जन्मीबर । तुन्दी सन्दर्भ बन्नहोर कारण हो । इस निवासी । कराना और विराह्य तुन्हों हो प्रश्लेष्ठ सेल है। प्रयो । कृत अभिनादी हो; इरमान्यतेको यह करनेनारे गोकल ! दुर्जी समूर्ज प्रकार प्रकार पराच्या हो; विकासी वृत्तियों और विद्युक्तियोंके प्रेरक तुन्हीं हो, मैं तुन्हे प्राचन करती है। सबके बरन करने पोन्य बक्का अन्य ! अन्त्री; जिलों तुम्बरों विका दूसरा कोई स्कूपर केल्क्स नहीं है, इस अस्त्राम मध्येकी स्त्राच्या करे । पुरावपुरत । प्राय और मनको वृत्तियाँ तुन्हारे वाहत्वक नहीं बहुंच करी । सबके साही कामान्यम् । वै तुकारी कामाने 🌓 कामान्यामान्य । कृष्य भारते पुत्रे बनाओं । नीस काराव्याओं सामान रेपान्युपार ! क्रमानुष्यके भीतरी भागके अन्यन विक्रीहरू हरा। वेक्सारे ( मीजुध्यनिविश्वनित एवं पीक्रमर मान्य मानेकते बोक्का । तुनी समूर्व कुरेके आहे और अन हे, हुनी परम आजन हो । तुनी परात्तर, क्वेतिनेय, सर्वकारक हवे राजीना है। इसके पुजारेने सुनाई ही इस जानत्या जान कीव और प्रापृत्वं सम्बद्धकोच्या अधिकान बद्धा है। हेवेक । यदि हर में अब है से फुला हारी विश्ववित्त हर रहे से से भव नहीं है। आपके पहले समाने कुळालाके हामके मैंके हुनने नुहो बचाया या, जरी हजार हत सर्वनार संगठने भी नेता स्वयुक्त करते ।" "

प्रेपरेने का इस प्रकार प्रकारका कार्यक्ती सुधि की में को बारून है क्या कि प्रैक्टिक संबद का बहा। है अधिकारी परमेक हरन को का ब्रोबेट करकारको आक रेक ग्रेकीके जनकार कर न यह: को प्रकार करके इसने हुमांका मुनिया अस्ते आहिया काच सम्बद्धार का सुनाव्य । पराव्यन् केले, 'कृष्णे । इस सक्य में बहुत क्रक हमा है, युक्त रामी है; यहने बीच खुने कुछ कानेकों है जिल

रात जनम पंची दांश (

रुवा कर पुरुष केंग्डियों की समा हो. केली—'पनवन् । सूर्वकरायकार्ध 🗗 💅 परलेईसे से रुपेक्ट का किया है, बावक में पोपन न का है। साथ में में भी फेक्न कर कुकी है, बात जान कुछ भी नहीं है, unde rock?

पनकारों बाह, 'हिंपतें । मैं से जूस और बाहानको बाह पर पह है और हुने हैरी खुआी है। यह ईसीबा सरव नहीं है, करने का और बदानेई सामार नुत्रो दिसा।" क्र क्या क्र करके प्रत्यान क्रिकीने क्यानेई



कृत्य स्थानको हेल्लीनस्थानम् ॥ सर्वाच्या पराव्यक कार्या प्रत्ये गता। यो। यो सुराव देव प्रत्यागराधारा ।। पदार्ग्यक्षेत्रेश्वयः विकासक्ष्येत्रा में लेक्टरकरम् सम्बद्धियो पुरानं समेर च पराम्यः। प्राप्तातं व्यक्तिवृक्ताः स्थानिकः भी क्षेत्रं शिक्तां सर्वसम्बद्धम् । तथा वर्षन देवेश सर्वपद्ध्ये वर्ष न हि ॥ दुःस्तरकतो कृते समान्यं पोषिता कथा। स्त्रीय

मस्त्रिक्षिकारुमः। विकासन् विकासन् विकासः प्रयोजनायः॥ कारक । अवकृति के कि कियोगी प्रारमिक नाहरिय है # गरिक्षाः प्राप्तासम् वनमञ्जूष्यकारोकः ॥ स्था<del>तीश्चणपुरम् ॥</del> संबद्धारमञ्जूदक्षीयवर्तम् ॥

रैनकानी । देवा को जाने मान्ये करा-स साथ सम्ब हुआ है, इसे हो लेकर क्योंने का रिका और मेले—'इस कार्यके हारा संस्कृत जात्के अस्या महानेता परमेश्वर दूस को सेहा हों।' किए स्वाचेनसे महा—'अब सीत ही मुन्यिको मोरानों दिनों मुला सारते।' अस्ती अद्या को ही स्वाचेन हुएंसा आदि साथ मुन्यिकों, जो केन्स्ट्रीने सारकों किने को हुएंसे, मुलाने करें।

पुनिस्तेन पानीमें करें होबार अवनर्थन कर पी थे। उन्हें सहस्य पूर्ण होंदे करूप हुई, जाने क्षेत्रण कर कुछे हों; कार-बार समादे रहते कुछ अवने अले सन्ती ( कालो काल जिस्स्कार राम कुछ-दूर्ताची और देशने सन्ते। कालपी कुछ ही अवस्था हो पी थी। किर सम और दुर्शाको कालो तर्थ, 'ब्रह्मों | एकाको अस विका करावेशी अस्ता देवर हम्लोन



मही नहाने काने थे, पर इस सम्भा से इसकी हुए हो नवी है कि नामतक साथ भरा हुआ नाम न्यूना है। कैसे मोनन मारेंगे ? इसने जो रसोई डिचार नामकी है, यह नाम होगी। रहन इसके दिन्दे कमा नामक माहिने ?"

हुर्वास क्षेत्रे<del> सम्बद्धा हो वार्थ केटा करवात</del>ा

इस्तोची राजरि वृतिद्वित्या कार् अन्यव किना है। सम कारोकक प्रथम अनी हरे पूर्व नहीं है, उस काराम्ये कर् कर्ला में क्लान्से अक्लेसे कहा उसम क्ला है। समझ कार्का में मेरे ही नहाता है। वे आर्थिक, बुर्कर, विद्वान, कार्करों, कार्कर, सहकारी क्लान्स क्लान्स कर्त्वकों कार्करों है हमें क्लान्सरें हैं। कैसे आग खंकी वेरेकों कार्य कार्कर है। इस्तीकों हिन्मों। अस कर्त्वक इसीमें है कि कार्करों है स्था क्लान्स होनेस होन्स पायक में हमें कार्य

अबरे पुलेद कृतिक पुनियों यह यह कुमार यात, विकालेय केरो कर करते हैं ! चन्यांके पानी परावार कार्य क्यों दिवासीकी प्रत्य भी। सहोको का देवनहैं च्युनकेरे चुनियोको च्यु देखा, हो असामानके कारोपर कुर-पुरुष्टर सोचने समें। वहाँ सुनेवाले स्वतनी व्यक्तियों इन्होंने प्रच्ये कार करेका समाधार सुरा, तब वे सुधिक्रिके क्या सीट जाने और जाश मृतन्य करते निकेद बार दिया। लब्बुक्त् विकेशित कामन कामे पुरः गाँद आनेकी आसाते बार्व हेराना प्रतीक करते हो। अनको का स्पेट का कि 'पूर्व क्रमी प्राची का अवस्था संस्था है। इस करें। क देवका इसकेनोयर कहा जेवह आ नवा, विशा ज्यार इंडले इन्यर अञ्चल हो ?' इस जनार निन्ता भारते हुए में क्रांबार क्रकुबात सीवने रागे । क्रमधी बंद बसा देशे भगनान् अंश्रामने क्या- 'पान होची पूर्णांस पुनिसे आवसेगीयर बहुत कड़ी क्रिकी अलेकार्स है, यह सरकार प्रीकृति मेरा इंदर किया था: इससे में हांच वर्षों या गया। अब कारतेनोको पूर्वकारो सन्दित भी पण गाँ है, के बागके केको अस्तार पहले ही पान गये हैं । को स्तार पानि तरपर पहले 👢 वे दुःसर्थ जाँ सहये। अस आयर्थनीयो जानेके दिल्ले क्यून प्रमुख है। काराजेशीया प्राप्तान है।'

वनकार्यी वात सुनवार हैंग्योशवीत पान्यकोशी काराहर वूर हुई। वे कोले—'पोलिय | तुन्हें ही अकन रक्षण पान्यर इसकेन नही-नहीं निवतियोगे का हुए हैं। वेले मानगागाये इसके हुएको नकान मिल कार, अंगी अकार हुए हमें स्थापक मिले हो। नकते, यो ही पत्तनेका बारकाय किया करे।'

इस प्रकार उनकी शतुरति सेकर पराकर् सैन्डम इस्कान्तीको करे को और सम्बद्ध थी प्रैयदिक साथ एक करने कुने कार्ने कुने हुए जनकात्रकृति को सने।

### जक्दक्के हुस ब्रैफ्टीका इरण

र्वज्ञानकार्थ कार्र है—एक सम्बद्धी कर है. प्रत्यक्रातेन क्रेक्ट्रेको अपने आजन्य अवेन्त्री क्रेक्टर पुरेतिन केन्यकी असाधे प्राप्तानीके दिन्ने प्राप्तानक जनन काने काने को को है। इसी स्थान मिन्यूरेसका एक करता, को प्रदेशमध्य का का निकासी उकती कान देशको और या द्वा था। या व्यक्तम दक्तो रह-काले एका दूधा था, उसके साथ और भी अनेको एक थे। उन प्रकृत प्राप्त का कालक करने आया। वर्ष निर्मन करने अपने अध्यक्षक प्रत्यानेक प्रत्यानेक कार्य वर्त की सही भी, प्रसादकी हो। साला पहें । यह अनुस्त सुन्ती भी । अपन्य प्रमान प्रार्थन एक दिल्ल तेवले प्रमान प्रमान. आजामोर निर्मात करवार भाग जानको वस्त्रीयमे जानकार हो का का। जयानके साविकोंने का समित्र सुरुरीको और देशकर हाम जोड़ रिम्बे और यथ-ही-यम तथे-मिलबे काले क्रो-क बोर्ड अवस है के देखका है अवस हेक्सओबर एकी व्हें कथा है ?

हिन्दुराय समाध्य का सुनारहोंगों नेसकर पेकिस के सना, काले काले हुई कियार को और यह समाधे नेतिय से सना। इसमें अध्ये साथी समा कोडिकामानी साथ, 'कोडिका! जा। जानार पात तो समाधी यह सम्बद्धान्त्री किरानदी की है। अथार यह महामाधीनी की है से नहीं! महि यह किस जान में मुझे विश्वनारी कोई अवस्थानका से महि रहेगी। दुझे हो, यह विशानती है, बद्धारे जानी है और हुस कोडिल जंगानी किस स्टेक्स हाना आधा हुआ है? सहा यह मेरी सेना स्थानत कोची ? इसे पानार से में कुळार्य है असर।'

तियुगानके बचन मुनकार कोरीक रखते नीचे कार पहा और गोवह मेरो जाताची कीरो जार करे, असे उपधर हैपानेंस पास जातार कोरा— 'सुपति ! कारणकी कारी सुकारत हरके रखारे इस सामाप्या करेगी एकी हुई दू बर्धन है ? तुझे इस प्रकारक धंगतानें हर नहीं समझ ? कार हू किसी देश, यह या सामाप्यी क्यों है? जावाच कोई केह स्वयास या जानकथा है ? काराब, कार्याट, जावा और कुमेर—इनमेरी तो मू किसीकी पाने वहीं है ? कार, बाता, विकारत, सरिता, विक्तु या इन्ह—किसके कामसे मू पानें सामी है ? "में राजा सूरवाल पूर है, मुझे कोन 'कोटिकंस्स' कार्य है। इस्क स्केटीन देशके आया राज्यपुत्रार क्रममें कार्या लेकर किस्को शब्द रहे कार्या है और क्षः इकार रही, हाथी, सोहं, वैद्यानेको केच्य साठ किसका अनुसारण किस्स कार्यों है, के क्षेत्रीरतरेख राज्य जावाय जावर कार्य हैं; अन्तर अन्य कार्यी कुमले सुन्तरेजे की आवश क्षेत्रा। इनके साथ और की कार्य राज्य है। असना वरिकाय के इनके कार्या, यर होरे विकाल साथी कुम अन्योद्धा हो है; असः जात, यु विराली पत्ती है और विस्तानी सुन्तरें ?"

क्षेत्रिकालके उस कानेवर प्रेयमेंने एक कर क्षेत्रे जानों और देश और प्रक्रमधी क्रांसिट प्रवार जेक्सर अपने देवने कहा राजाने हुए नेनो हुई महाने नक-'राज्यात्रात ! की अध्ये सुदेशे निवास्तर अध्ये तथ क्षाक विका है कि वेरी-वेडरे ब्रोको सुपने बनलीत करन जीवा नहीं है। का नहीं इस समय सुरक्त कोई पूरण या की केंग्रा औ है, के तुनारी बातका बजान है उनेत; हारीओ बोलक पहर है। में अपने करियातकांका भारत कारोनाओं की है, को भी क्रा समय अकेसी है; क्रा मनमें अकेसे तुम्बरी क्षत्र केले पाछ कर सकती है। परंतु में तुन्ते महतेले ही जानी है कि हुन एक सुरक्षके पुत्र से और हिमांच क्षेत्रिकार कर है, इस्तीओ तुमले अपने क्युओं और निकास बेक्का परिचय है जी हैं. में एवा कुक्की पूर्व है, नेत पान कुम्बा है। पाँच पानकोंके प्रस्त नेय विकास हका है वे इस्टालके स्टोनको है, उनका लग भी तुमने सुना हेका । अस्त पुत्र तक लोग करने बहुन फोलका वहाँ उत्ती, क्ष्मांका स्तरिक स्त्रेक्ट का फिर अपने क्रमीह स्कारको वर्त करना। उनके आनेका समय हो गया है। बर्वराज आविषयोक्ते को नाम है, जानवोगोको देशका बहुत उसस होने (

हैपरी चरेरिकास्तर ऐसा व्यक्त अपनी पर्णकृतिये काले कर्म । सब्धा का सोगोपर विकास हो गया था, जार करके अतिकि-सरकारको तिकालि एक गर्म । मोरिकास राज्यकोते करा गया और हैपरीके साम को हुक बात हुई थी, गया बाद सुरावी । सन्धी करा सुरकार दुष्ट नवहरूने कहा, 'में एक काकर हैपरीको देशता है।' यह अपने का प्रमुखेंको साम रोकर, केरे भेड़िया विकास मुजाने प्रयोग कोर जारे प्रकार परम्पानेक आसमाने पुता आया और जैपकेंसे बोरस, 'सुन्दर्ध ! सुन पुत्रमाने वो हो ? सुन्दरे स्वामी स्थाध स्ते हैं, समा और सिन सोनोकी सुन कुम्बन-फन्टन रसकी हो, में समानी से समुक्ता है र ?'

होन्टोने कहा—पानकुमार ! हुन कर्ण सकुमार से हो १ ? हुन्दरे राज्य, सम्बन्ध और सैनिक तो कुमार्ग्य है २ ? मेरे पति कुमार्ग्यो राज्य वृधिद्वित सकुमार है ज्या कर्ण सब धाई भी कुमार्ग्य हैं। राज्य | यह वैर केनेके सिन्ने जार और सामन पहल करो । हुद राज सोनोके सरकारके सिन्ने अची प्राच्या करती हैं।

वन्तर गेल-नेरी कुलत है ! करवानों हैनों हुए के कुछ देन पहले के, जब चुने बात के चुना । जब हुनने ची कहार है कि राज्योंके पाय अब कर नहीं का, वे राज्यों विकास दिने नमें । तस हुनती रोगा करना व्यर्थ है। इसमी मुस्ति को हुन हुनती होता करती है, जनक कर के केवल हैना है होगा । तुन हर पायानोंको कोड़ से और नेरी जती हैनार सुन्त जोगों । मेरे साथ ही समूर्थ निम्यु और सीधीर हैतार राज्य हुने जाता होगा—राजी सम्बंगी ।

स्वयंत्रकों के क्या संकार हैंग्सेका हम कांच का, सारकों मीई रेपसे तम पर्यों। सहस्य कर स्वान्ते कर पैके हर गरी। उसके इस स्थानकर विश्वास करते हैंग्सेंचे कहा करते करते सुनावी और जेगरें, 'कानकर ! किन कभी ऐसी करत पुरसे का विकासक, हारे इस्तें उसके क्योंकों। मेरे की महत्त् कांकों है, सक मनेंगे स्थान क्येकारे हैं, पुरसें करते और राजस्त्रेका भी मुख्यालय कर क्यों है। ऐसे व्यास्त्री मीरोजी सबस्यें किरायत ओसी को कांगे हुए हुने सन्त्र महीं जातें) ? जरें पूर्ण ! क्ये कींग, केंग्स और मस्युक्त—ने पहले केंगर अस्ता नासकर लेने हैं, केंग्सेकी क्या अस्त्र पृथ्वें मुख्यें दिन्ये ही गर्य कांग्य क्यारी है, अर्थ अध्या है की स्वयों मीराके दिन्ये ही मेरा अस्त्रात्व करना कांग्स है।

नसाय मेल—कृष्णे ! में इस सायक है। यूने सूच मानूस है कि दूसरे पनि राजपुत सामा केते हैं। परंतू इस १९४४ वह विधीविक दिसाबर दूध इने इस जो सम्बद्धी । इस तूसरी बालोमें नहीं का सम्बद्धे । कम तूसरे सामने निर्क से बाम है—वा तो संख्ये तत्स्वते इसी वा स्थान सामान केत सामने वा पारकारेंके इस कानेना सीबीतराम बाक्यको दोनसायूर्वक निर्दाशको इस् कृताको क्षेत्र क्षेत्रमा ।

प्रीकारी कहा-क्षेत्र करा, केरी शरीब महान् है; किस् केंब्रेरककर सूदिने में कृतन के प्रतित हो रही हैं। मुझे अपने कर विकास है, में बोर-कायारी करनेसे में में प्रयासके काने कथे हैन कार नहीं बोल सकती। एक राज्य एव एका बैहरूम भगवान् बोसून्य और बोरवर अर्जुन निरम्बर कोवने निकारेने, का बीवरीको देवरान इन्द्र की इसकर नहीं हे का करते, केवरे अनुस्तरी से समार है गया है ? अर्जुर का सहरकके मेरोका संक्रुष्ट करने रूगते हैं, का समय कुलकेक दिन साल कार है, वे मेरे रिल्टे अपकर देशे केवाको पहरे ओरहो हेर रेने और फरिंड किरोने आप केहें क्रिअक्टोबर्ड करवारी है, बैस्ते हो पहल कर करेंगे। विद्या प्राप्त ह पार्थान अपूर्ण होने हर पाराम्युक्ति देवीयोगी प्रथ केनले उन्हें केलेना और करवानी मीर अर्थुनार हेरी पूर्व योगी, का क्रमर अपने का कुम्पनिये यह सरके हू अगरी बुद्धिको निकारिया । जो मेल । यस मीन प्रमाने यह रीको केंग्रेने और ज्यूका-एक्ट्रेंच क्षेत्रकाम क्रिक कारने हुए हिरी और हर कोंगे, कर हुई यहा रहातान होगा। यह देने कभी क्लो को अपने प्रकार परियोग्स स्टब्स्ट की किया —



वर्ष केन अक्षण चारेकम सुरक्षित है, से इस सरके उपनकों में जान देखेंगी कि मानक सुते जीवकर अपने मार्गने मारके जनीकार करीड को हैं। मैं जानती है हु मुसंस है. मुझे मारपूर्वक स्वीतकार से जाकात; कार इसकी की कोई मरका नहीं। मेरे पति मुख्याकी बीट प्रीता ही पुहारे निर्मने और उनके साथ मैं पुन: इसी कामका करने आकर सुन्ते।

स्वारण प्रेम्पूर्व देशा मन्त्राको असमी मुझे प्रमाने आ एई हैं। तम यह प्रेम्प्यर मेरचै, 'सामकार । यहें मुझे हम म समाना !' किर मनमीत क्षेत्रर करने अपने पूर्वेदेव क्षेत्रर पुनिको मुकारा । उन्हर्ण मन्त्रामी आने मन्त्रर प्रेन्ट्रिके हुन्द्रेच्या कोर प्रमान शिला । हिन्द्रिके को बोलो बक्त क्षित्र । बहुन्द्र स्वार करने सन्दर्भ कार्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य स्वार स्वार की पानी सन्दर्भ कार्य करने हुन्द्र पूनकी भारत करने को सन्दर्भ करने को ।

्रमुद्धाः प्रकार सिंग्या और को बोल-ओरसे कॉयने समा । श्रीवर्धाः कारण्याः क्रमुक्ताः सेने समी और उसने नैसे-पैसे बीमा पुनिके करवोने प्रकार किया और १७४८ का पत्ती ।

र्वण गेले—सन्तरः । यह श्रीत्योदे अधीर सर्वतः हो समान कर । यहनावै समान गीरोन्स विका करे किया हुते इसे से सम्बंधन कोई अधिकार नहीं है। यहने हैं वर्वतान साहि समानोदे पुरुषेद हो सानेवर हुते इस मीम सर्वता कार विलेख—इसने सोई को प्रोह नहीं है।

यह स्थापन सीमा पूर्व इस्तर हे साथी साथे हुई सम्बद्धानी होन्द्रोड सेक्ट्रे-सेक्ट्रेस्स संस्था होन्द्रों साथे इसे।

#### पाण्डवोके द्वारा श्रीपदीकी रक्षा और जयद्रशकी पराजय

र्गशरमध्ये कर्ष है—का काका करवेर सामगढ़ी और तरेंद्र को थे, जा काक एक गीता को केरते होता हुतर उनके बाद कामो निकास गया ( इस सम्बद्धान्तर निकार कर हाना वृत्तिद्वारों सीय और अर्थुन्तों कक्—'का मैक्ट्र इस्ट्लेगोंके कामी और अरबाद की केसा है, इससे क्या काम पहला है कि पानी कौटनोंने नहीं सामान कोई नवान उनका निका है।' इस उनकर करों करते हुए का में अरबायन अरबे सो देवतो है कि उनकी क्षिता जैन्सीको क्यों कामेन्सिट के स्त्री



है। जो का अवस्थाने देख इक्कोन सार्त्य रामने कार पढ़ा और वैक्के हुए अन्ते क्या कावार बेला—'यू इस सद कावीकर का?-कार करों से दरि है ? तेस कुँद सूका हुआ है। कि है का है। जा निर्देश और कार्य बोरचोंने कार्य आकर कावारक हैंकीको कोई कहा से की दिसा ?'

शर्म कोर्ग — इन्हों समान परहात्मी इन प्रोक्षों पान्हकोंका जनकर पारते कथान कैन्सीमों इन में गता है। ऐसी, अभी जाके रक्की जीके और सैन्सिकेंक पैरोके विद्या नमें को हुए है। अभी जनकृत्या हुए की मनी होगी; जानी एक लीहाओं और जनकृत्या कीका पत्री। अब कई अधिकां हुए नहीं होनी करीके।

प्रस्तान कर्मनार हुन्दु सर्वनी नांति पुनरस्तार स्रोहते और सन्देन प्रमुख्या केवल करने हुए सरी मार्गते मार्ग । पुन्न ही पूर कर्मनर क्यानकी जीनके केहोनी सर्वोधे स्वतं हुए केवल पुनिकों भी हेवल, को भीनको पुन्तर हो से । स्वत्वकोंने पुनिकों सामानार दिया कि 'तक ताल सुरस्पूर्वक करियो ।' दिन का उन्होंने एक से रावने सन्दर्ध तिकाला प्रेस्ट्रे और क्यानकों केंद्रे हेवल को उनकों सोचारि प्रमानित से उसी । दिन को बीम, अस्तुन, उन्हर्स और स्कूचन — स्वतं क्यानकों स्वत्वकर । क्यानकों सामा हेन्स स्वयूनोंक होता बढ़ गये । कैवल रोज को ब्यून हर गयी, हाल केहने सन्दर्भ । सामानोंने उसे को सोद दिया; विज्ञु केव को होना की, उसे तम स्वोरहे संस्वर हाली क्यानकों की कि सम्बन्धरन्तर स्वा पत्रा ।

का रिन्युरको अपने सम्बद्धे एकाओको उत्तरहित करते

हुर बदा— 'सन्भोने पुकारतेने स्टब्स्ट स्ट्री हो जाने; होई, यारो (' फिर उस युद्धों बहान् कोस्त्रक कारण है गया। हिन्दि, सीर्थार और सिन्यु देखोंके सैन्यि पहालाकान् त्यासके सपन परेम-अर्जुन-नेसे कार्य औरोको देखका स्टार उठे, उन्हें कहा विचार होने स्त्रा। पीकार अधा-स्टारिको वर्ष होने हागी, सिद्ध ने विचारता वर्ष हुए । उन्होंने वर्षायकी होनके आवादागरे दिवा स्वारतिक इक हानी और चौद्धा दिखोंको गहाने वार कारण। अर्जुन्ये पर्या को बहारको वीरोका संदूर किया। कुविह्निते सो कोद्धानीका वर्षा दिवा। अनुस्त हाक्ष्मे सरकार के रकते नीचे बुद पर्या और सह्योंके प्रवाद कारकार हुए चाले कार्या होने स्वारतिक विकार हिना और जैसे कोई विचारी केन्नर की हुए चोरोको वर-मारकार गिराने करते कारणा कार्याने केन्नर की हुए चोरोको

इसनेने तियाँ हैतना राजा करूव संबाद अपने विकास रक्षते नीचे जार यहा और यहांचे जहारते राजा पृथिहितके बारो योहोंको जार हाता जाताचे अपने निवाद आक हैता राजा पृथिहितने अर्थकमहत्वार बालके अरब्धी हालीको चीर हाता। इससे का राज कर्मा करता हुआ निर्वार का पत्क। बोहे कर बानेसे पृथिहित जरूने सार्ट्य हजारेको स्थय स्थारे हारसार स्वरोकके विकास स्वारं बेद ग्ये।

वीयरोनने देशा मेरे क्रम राजा क्षेतिकाल वहा आ खा है; उन्होंने हुए मराकर असके सारविका नकाल कार तेन्या, मितु जो पतालक न काल। साएको मरनेने कानो कोड़े रशाधुनिये हकर-उक्त जानने जारे। कोतिकारकको नियुक्त होकर कारते देश भीयने प्राप्त नकक स्वकारे को कर हाता। अर्युनने अपने तरेने सामोद्देश स्वीति होता काल एकाओंके सन्त और प्रस्ताह कार दिन्हों। उन्होंने दिन्ही और इस्तानु-संत्रके राजाओंका हाल दिन्हों और विन्युद्धिको नुव्यक्तिका भी संहार किया।

इन सम वीरोके मारे जानेका अव्यान बहुत का गया। काने हिन्दीको नीने कार शिक और कार्य जान व्यानके मिने बनवी ओर फान गया। धर्मराको हेवा कि बीवाको आने करके डीवरी आ रही है से स्वयंको हुन को रक्तर बहुत दिना।

कृत संशत होनेस क्षेत्रने मुधितिसी कहा—'सैया ! अनुशोध प्रवान-प्रवान कीर करे रूपे । बहुत-ही इंगर-प्रवार कार की को है। आर स्कूतर, स्वतंत्र और प्रवास कीन्य पुरेंग्से स्तार कार्यन्यर कार्य और प्रेयरीयो साम कीनिये । मैं से आ पूर्व कार्यकारे कीवित की होने समाता । असे हैं यह प्रवासने कार्यर किय क्या है अस्ता सर्व हुए सारवि कार्यर कार्यी सहस्ता कार्य आ क्या है।'

वृत्तिहरी कहा-व्यक्तिया चीन र नगरि सिन्धुसम व्यक्ति वहा हुई है से भी महित दुःसला और मेसनिनी मानारीका कुमान करके समझे जानसे ना मारन।

कारणा प्रमा वृथिति वैषयेको तेका पूर्वतिस्थाने साथ अव्यापना आहे । बढ़े पार्काके पूरि तथा और भी जहा-से व्यापन-कवि विषयेके तिले होता कर रहे थे। यह उन्होंने व्यापनिक वर्षप्रको औरते हेला और उनके पुनाने सिन्दु क्या औरति देलोके मीरोकी पराज्यका सम्बाह सुना हो सम लोग जहां उत्ता हुए। एका उन व्यक्तियोके साथ कहा कैठे और विषयि जहान-सहोक्षके साथ आधारणे प्रकेश निर्मा।

इयर भीन और अधुंगको व्य क्या मिला कि सम्प्रण एक क्षेत्र अपने निकल क्या है, तक वे अपने ही हाजोरे जोड़ोको इक्तरे हुए को केमले होते। वहाँ अधुंगने एक अस्पुता पराक्रम दिक्तका; व्यापि क्याब को मील आगे व्याप्त प्रेरी अपने नार अधिवाधित किये हुए व्याप क्याबर इसके कोड़ोको नार क्षाब । कोड़ोके करनेले क्याबर व्याप्त हुए ही हुआ और अधुंगको ऐसे अस्पुत्र पराक्रम करते हेक असने पांग धानेथे है सकत अस्पुत्र दिक्ताका। व्याप्त करते ही अपना पराक्रम दिक्ता व्याप्त है को अपने केसका पीक्षा करते हुए व्याप्त पराव्याक्रम । सीटो, सीटो; सुकाछ प्राप्त अधित नहीं है। क्या इसी कारका पराची क्रीको स्वयाक्षी के व्याप्त व्याप्त के ? अरे ! अपने क्रेककोची प्रमुक्तिक बीचमें कोड़ देसे व्याप्त व्याप्त को है।

अर्थुनके इस जनस सक्नेपर भी सिन्धुराज नहीं तीय। इस महत्त्वाचे भीमने वेगसे बैदकर जानत पीका किया और कक्—'क्या क, सब्दा हर ! अर्युनको सब्दाक्यर दश्य जा क्यो, उन्होंने कक्क—'भैका : ओ जानसे न महत्त्व ।'

#### चीमके हाथों जयहरूकी दुर्गति और बन्धन तथा युविहिस्की स्थासे सुटकर तपस्था करके उसका वर प्राप्त करना

योग्योलो सहा—हार जीवा पार्टीने हेला करेके अन्योत्त हीव्यीयोः कहा पर्वृत्याया है, अतः अस्य केरे हामके इत्याव प्रीतिता द्वारा क्षीयः भी है। लेकिन कमा करी ? कमा पुनिश्चित कहा है इसालु को कहा है और हुए भी जातकानिक कारण की हेरी बहारोंने बाब्द पर्वृत्याक्ष करों है ?

हैश्वर कक्ष्मार सीचने जन्मको सम्बेन्समे करनेको अर्ववन्त्रकार सम्बद्धे पृष्टका प्रीय केरियो एक दी और कट्ट बच्चनोसे सम्बद्ध तिरम्बार बतते हुए कक्ष्म —'अरे यूव । यह तु जीवित दाना वरता है से मेरी बात सुन्द । वृ सन्तरकेको सचाने एक्स अपनेको दास करना कर; यह प्रत न्येकार है से तुने जीवन्त्रक है सम्बद्धा है।'

जन्मको जीका विका क कुनो सम्बन्ध और शक्तिना है जन जा। जा बस्तिकार उन्नेकी बेहा करने हमा। यह देश पीमने को पीधा और उद्यापन जनने रचना हास तिका। जिर अर्जुनको साथ देशो अस्तकार पुणितिको मास आये। धीमरोनने जनहरूको जरी अस्तकारो कर्नातको साधने पेड़ विका, वे हैस को और कहा—'अका, जन हमे होता है।' पीमने कहा—'हैन्सिने की का का कह देने वाहिने, अस यह पानी पानकारेका क्या हो कुन्छ है।' जर समय हीन्दीने पुणितिकों और देशकार पीमरोन्से कहा—'आपने हासका तिस पुलकर पीच चेन्दिकों रस से है, हवा यह पहाराजकी सरस्ता थी सर्वकार कर कुन्छ है; जन्म क्या हो होता तेना काहिने।



ज्ञाहर क्यानी पूक्त कर विकासका। असने विक्रूण होकर राजा पुनिश्चाको क्या व्या वेट हुए भागी पुनियोको ज्ञाम विक्रण। श्रमणु राजाने करवाँ। जोर नेक्यार व्यान—'जा, सुनि क्या को जीवा है ही, मेर सामी की की ही पीचा है। सुने पराणी प्रीको ज्ञारकोची क्या की र विकास है शुद्धे। ज्यान, मेरे रिस्म पूनरा जीव अनुमा काना ज्ञाम होना को ऐसा कोटा वर्ज करे। ज्ञामां में मा, अस कानी प्राप्त को में स्थानाता; असने राज, बोदे जीन विक्र—त्या साम हिस्से जा।'

वृतिहितोः ऐका बालेका काइक स्मृत स्थित हुआ। स्थ कृतकाय नीवा है। किये कार क्या : स्वयानीसे वर्गातित और अवस्थित है के बारण को भाग दुःस हुआ, जान अंको विस्तार क्षेत्रको न कामन का क्ष्मार करन नाम । व्याप्त कामन क्ष्मार काम सेवार काने बहुत नहीं स्थला की। विस्तार कामन बहुत अस्य हुए। अहीने स्थला अस्य होका अस्या कृता अधिकार की और कर्ष का गरिनेको नदा। अस्याको बहु — में कुन्ने स्वस्तित योची स्थलानीको जीता है, बहि स्थला है जिले। म्हणान् संस्त्र कोले — ऐसा नहीं हो सकता। सामनोत्रों के मुक्तें न सोई बीच स्थला है और न कार है स्थला है। सेवाल एक दिन हुन अर्थुनको बोद केर कर सम्बद्धिये कुर्ज रोडे का सम्बद्धे है । अर्जुरस रूकरा यह पुरातिये नहीं परेना कि ये देवताओंके काली नरके कारण हैं, कियोंने वहरियासको प्रकार करावको साम त्रपश्च को है। कहें से साम निश्च भी नहीं मीन समया. वेक्साओंके हिन्दे भी में अनेन हैं। मेरे उन्हें कहना जनक हिल साम दिया है, जिसमेंद्र सुरम्पना मोर्स अब है ही नहीं । हती क्राइट क्यूनि अन्य कोकामकोसे भी यह आहे पहल अब-प्रज प्राप्त सिन्हे हैं। इस सन्दर कुलेब्स नाम और कर्पनी क्षा करनेके रिन्ते कावान् किन्तुरे क्यूनेकरें अन्तर क्रिया है। अधीयो सोग सीकृत्य पढ़ते हैं। में समाह, अन्य, अभ्या परनेवर है वह:स्वाचार औवालीयु और अक्रोपर क्षूपर चैतान्यर कारण किने एकासून्या श्रीकृत्यके प्रकों सब अर्जुनको राहर करने हैं। हालीओ अर्जुनको वेतन भी नहीं हुए समारे; किए समुनांधें करिन ऐसा है, जो उन्हें और स्थेतर ।" ऐसा सहस्रद कर्वतीयाहित धरामान् संगार महीते अन्तर्भव के गये और समृद्धि गया प्रयास अपने बार्को स्थल गया। पाञ्चलकेन जरी सामान वर्गने निका करते से ।



# श्रीराम आदिका जन्म, कुनेर तका शतक आदिकी उत्पत्ति, तपस्या और वरप्राप्ति

कारोजपर्ने पूक्त--वैद्याबाकश्ची । इस जनार जैक्टीका अव्यास्त्र हो जानेगर बहाद कहे स्थानेके बाद बनुव्योगे सिक्ती समान पराक्राणी पराक्रमोने क्या किया ?

वैज्ञानकार्य नार्य है—जन् । जैना कि की क्यान है, प्रसादकार जीतकार उनके हाजले हैं क्योंको हुए हैं के के प्रसाद वर्षणां पृथितित पुनिकारांको जान के थे। प्रसाद वर्षणां पृथितित पुनिकारांको काल करकार प्रोचितित कहा—'जनका । जान कुछ, प्रतिकार करके पृथितित कहा—'जनका । जान कुछ, प्रतिकार कर विश्वास है। जानसे में जनने हाजको एव स्वीद पुन्छ है, सामा निवारण व्यक्तिये। जा स्वेचानवार्य कहा को स्वत्य पहाडी केहिते ज्याद हुई है, हते प्रवेचातका कहा को स्वत्य पहाडी केहिते ज्याद हुई है, हते प्रवेचातका कहा को स्वत्य पहाडी । महाना पर्यकृती पुनिका है नेका की स्वत्य है। कुछ हाला अस्त जानती और उसका करना करती है। देनी पत्रिया की पार्च जवारती और उसका करना करती है। देनी पत्रिया की पार्च जवारती अर्थर कार्यणां करना करती है। देनी

वया-व्यक्तीः व्यक्त कोण को है। असः कुम्ते हैं—आको स्थारे स्थान क्याचाना कुम्ब इस जान्त्ये कोई और भी देशा व्य स्थान है?'

व्यव्यक्षिको केले—एकप् ( वीरानकप्रतीको मी कानास और क्षितिकोच्छा स्वान्त्र क्ष्मु मोगन्त्र क्ष्मु है। स्वानस्थ कृत्य स्वान्त्र प्राव्यक्ष्म विकास अध्यक्ष्म हीएम-क्ष्मुनीको स्वत्र सित्यको हा है भया था। न्यापुने अस्ते क्ष्मुनी विद्या क्षम् सित्या से अस्त्र व्यक्ति यस स्वान्त्र। पिरा औरानकप्रती सुवीकको स्वान्त्रमार्थे क्ष्मुनार पुरू क्ष्मिक्स स्वान्त्री एवं और अस्त्रो सीसे मानोसे संवान्त्रो पहा कर क्षीत्रको क्षम्मा स्वान्त्रे।

कृषिक्षेत्रने पूक्त-कृतिकाः । सै पुरस्कारणं सीरानकारणीयाः वरित कृष्ण विकारके स्था सुन्तरा व्यक्ताः है। तकः अस्य कार्यके कि वीरानकार्यके नितर वंदाने प्रकट हुए, कार्यत करः और पराक्रम कैसा था। साथ है वह भी कर्यके कि राजन किसमार पूर्व था और सम्बद्ध वीरानकारणीरे क्या केर वा।

वर्षान्त्रको केले—इक्टाकुके भेतने एक सब नामसे ऑसट राजा हुए के। उनके पुत्र के—दसरक, जो कई है।

[ 039 ] सं० य० ( खण्ड—प्क ) १३

परिता आकरणवाले और सारकारप्रीक से। सहरको वर्ष और अर्थका तक जाननेवाले बार पुत्र हुन्—राम, स्वान्त, परत और प्रहुत। शमकी वर्षा धौरतको थी और वर्षाकी वैत्तेत्री, तक स्वान्त्रा और स्वप्ना सुन्धिको पुत्र थे। लिहेड देखके राजा कामको एक पुत्री की, विस्तक कम का सीता। सरे साथ विश्वसाने ही बीरामकानुकीको कारी राजी होनेके रित्ते राज वर। इस प्रवद्य का की राम और स्वीतके कामका इसाथ कारकार्थ है।

शहर राजमके करावी कथा सुने । सन्दर्भ करावूकी सुन्हें महत्त्रेवाले स्वयंत्र स्थानी एक्यके विकास में । उनके पान हिन मान्य पुत्र पुरस्कारों से । पुरस्कारी प्रतिका पार स र्गी; कालो बैसका (कुमेर) नामक पुत्र हुआ। यह निराम्को क्रीक्रमर विवासकारी सेनामें क्रमे राजा । हास्से कुरकारके सक्र प्रीप हुआ और अपूर्व (पोलबरकी) अवने-अवको ही जुले प्राणियों जनाव निरम्म । प्राप्त सम्बद्ध आणे प्राणियों सम्बद्धार बारय कर पुरस्कारी विशेष करते विकास हुए। वे वैकारणधर प्रदा चुनिक का काले थे। सिंह्यू अकुराती जाएन प्राप्त थे: इस्तीन्त्रे क्योंने कार्यों क्षणाव प्रदान विकार, बनका साथै और सोवायस करूब, व्यक्तिकी अन्ती निक्ता बरानी और मान्यूबर नामक कु प्रकृत किया : अवीने राक्षणीये वरी संस्थाको कुनंदकी राजकारी कराय और उन्हें इच्छान्द्रार विभारनेवाला पूर्व क्लाब्द आवंद्रा विभाव दियां । इतना ही नहीं, इन्हारनीने कुनेत्रनो नक्केन्द्र प्रतानी करा रिया और को 'एक्स्क' की क्यांक को है।

पुरस्काने आहे हेंद्रमें जी 'विकास' करना सूनि प्रवाद हुए के, वे कुनेरको कृषित इष्टिले हेक्पो पर्ण । एक्टरमेंके काली सुनेत्सो का बात बातुक हो गयी कि मेरे विका बहुतार जायत 🖺 २०११: वे उन्हें प्रस्ता रहानेका प्रकार करने हाने १ इन्होंने औन राज्य-कन्याओको नितानो सेकने निवृत्त किया। वे बहु सुन्दरी और नामने-मानेथे निवृत्त भी । तीनों ही अध्यक्ष पान बाहरी थी, इसलिये एक-कुसरीसे स्थान-और रक्तकर सब महारा किम्बाको संगुष्ट करनेका उनक किन्य करती वी इनके नाम से --पृथ्वेत्वळ, राज्य और फरिनी । पुन्ने इनकी प्रेयाओं रे उसक हो गर्ने और प्रत्येकको लोकपालोके स्थान परकारी कुर होनेका अस्तर किया। क्योग्यटको से कुर हुए—गळण और कुम्बदर्ज । इस पृथ्वीयर इस्के सम्बन्ध बलमान् दूसर कोई औं था। चारिनीसे एक कुत निर्माचनका नग हुआ। सकत्वे गर्पसे एक पुत्र और एक पुरी हुई। पुरस्य नाम सर सा और पुरस्का सम पूर्वजन्त । विभीषण इन सबसे अभिक सुन्त, धन्यद्वारी, वर्गसूब्द

और स्वक्रमंतृत्वार था। उनकोर द्वार पूजा है, जा पानसे जोड़ का। स्वत्वा, जार और पराक्रमंगे की मा महान् वा १ इस्टिन्स जरूने कुन्यवर्ण स्वत्यों का-अद्या था। स्थापी और राज्युक्तर से चा है, देककोर की चार कर्कार का। सरकर पराक्रम कर्नुविद्यार्थ कहा हुआ का; वह मांशाहरी और सहस्रोंका हेवी चा। पूर्वनाहकी आकृति कही क्यानस्थ औ; यह साह मुनियोको स्वयूक्तरे विद्य क्यान करती थी।

एक हिर कुनेर पहार समृद्धिरे पुत्र हो पिताके साथ बैठे हैं: शयम आदिन का उनका पह बैधन देखा से उनके मनमें का के प्राप्त का देखा से उनके मनमें का के प्राप्त का देखा हो। उन कार्न समया कार्नका निश्चन किया। कार्नकों सेतृह कार्नके नियों उन्होंने पीर तपका आदाव की। समय एक बैस्के पाइ हो पहार्ति गायता हुआ पाइके आहारम स्वाप्त एका प्राप्त किया के प्राप्त कर्मका स्वाप्त कार्यका कार्यका प्राप्त की। कुन्यकानि भी आहारका संस्था कार्यक करता था। विश्वनक के प्राप्त एक प्राप्त का कार्यक प्राप्त की। कुन्यकानि कार्यका है है जा का, के बाह का किया करते हैं। हुन्यकानि और विश्वनका की कार्य है कार्यका करता कार्य कर विश्व । इस्त और विश्वनका की कार्य है कार्यका की। कुन्यकानि

क्ष प्रकार कर्ष हुई क्षेत्रेका शकाने आको प्रसास स्थान-स्थानकर क्षांकिन अन्त्री अन्त्री है से। अनी इस अनुसा करीने प्रकारी बहुत सेहुद्व हुए। अनूनि अने स्वाकर



कर क्रमको उपक्रम करनेही रोच्या और राजको क्रमक-क्रमक क्यानक लेप दिवले हर बक्र, 'पूर्व । ने इन क्यार प्रता है, यर गाँचे और तसी नियुत्त हो व्यामी। एक 🕏 माराज क्रोड़कर को जिल्ली इच्छा हो, चौन हेंद क्या पूर्व होगी।" (पित राजवारी और सब्ब काले कहा—)"हुन्से कारपूर्ण का उत्तर करनेकी इकाले अपने किन कारपीर्य आहरि है है, हे पन पूर्ववर, हुन्हरे करियों युद्ध वानेये। हुन क्षानुसार कांव कारण कर सम्बोधी कांव पहारी प्राप्तकीयर विकास होगे-इसमें सरिव्य भी संदेह नहीं है।

क्रम केल-नवर्ष, केवा, क्यूर, च्या, क्यूर, सर्व, विकार तथा पूरोंसे नेरी मानी पठनम न हो।

महार्थने वहा-मुक्ते किन लोगोबर कर विगत है, हनके किरोंने भी तुने भव नहीं होता। केतार परावदें हो सवता है।

क्रमें हैस महोना राजन बहुत क्रमक हुआ। कार्ने सीवा-न्यून मेर क्या कर तेते, में से उसस पक्षत करनेवाल है। इसके का इद्वार्थने कुनकार्यने वक्त मांगरेको सहा । अस्त्री युद्धि नोहले जल की, श्रामीको उन्हें क्रिक्ट पारस्था नीर हेल्का क्यान बरेत । उद्यानी को 'रामान् बहुमार निर्माणको पास को और कर्मान क्का-- 'नेता ! मैं तुमका बहुत प्रकार है, हम भी का बीचे ('

मिनीयम चीरो-सामाद् । सञ्चा बाह्य प्रेस्ताः अलेकाः सी कर्षी भी करने करवार विकार न होर क्या किया क्षेत्रों के की इत्यमें 'अञ्चासके अयोगकी किया' स्ट्रास्ट हो बाय ।

बहार्योंने कह--- कहार-चेरियें क्या रेकर की हुन्हर का अवनंति नहीं सारा है, इस्तीओ तुन्ते 'अन्तर होने' कर ची वर रे का है।

वर्कनोक्सी बहुते हैं—इस जनात कब्हुन इस कर हेर्नेकर रायको सबसे पहले संबद्धार हो पहलू भी और कुमेरको मुद्राने गीतमा (रेक्ट्र) संस्त कर विन्त । कारक सुनेन संस्त क्षेत्रका कर्मा, यह, रहत और विकासि सम कर-मानत्त्वर सामार पाने लगे । समानो उनका पुरस्का विकार की प्रीन रिला। जाते वह क्षेत्रर क्लेसे क्षण दिवा कि 'क



कियार हुमारे बनार्तने नहीं का समान; को पुत्रने हुने बर क्षारिक, अर्थिको स्था स्थान करेगा । मैं शुक्राश करा नार्व और पान था, किर भी प्राणे मेरा समयान विका है; इसका कार का क्षेत्रा कि बहुत कार कुछार कहा है जानार।"

प्रियोक्त कर्ताव का, व्या क्रमुखीके वर्गक विकार क्षानो एक क्रवेरका अञ्चलक विकास करता था। इससे प्रतान होपत कमेरने जनने पाई विभीत्रणको यह और राहरतेथी केनाका केनामी क्या दिया ( हमा, मनुष्यक्षी प्रश्ना और बारको विकासी जिल्हार राजनको अस्य राजा वस् किया । स्थापना स्थाप सम्बद्ध कारणात् वा; अस्ते पदाई श्राप्ते केले और केल्प्रामॉके पता विदाने का थे, सबका अध्यान बर रिच्य । गारे संस्तरको सम्बन्धे बारण जनका 'राज्या' जन प्राचीक हुआ। देखकारोंको हो यह एक प्राचीत किये

### देवताओंका रीख और वानर-योनिमें उत्पन्न होना

मर्कन्देवने कार्त हैं—तातरका राजवारे बहु को हुए | अन्य है आबे कार्य हमारी रहा क्रीसिंहे।' प्रकर्ति, देवर्ति तथा सिक्टम्म अधिकारो आगे कारो माने परदार देवर विश्वपादे का बहुआरी राजनको अस्ता 🖟 विश्व 🖫 अन्न प्रोत है सामा करन है बाकत । मेरे पहुर्वन

बाज्येरे कार-'जारे ! केवत या अपूर को युवारे यही महाजीकी प्रत्यके को । अधिने बहुद, 'कारकन् । असमे को 🛘 बीट शबको । हुएके दिनों को कार्य आवरकार का, का पैनिकार कर दिख है, यह अब सेतरको समझ जनको सक का है। । बनकन् विकास अनुसेव किया था, वे वेटै अर्थनसे संसारवें स्वतार है कुछ है। ये है राज्यके दरस्का कर्ण करें। ' किर इसके सहय करके कहा, 'इस ! दूर भी का बेस्साओं का कुर्कार है। और धारपेंके करने गय से और इंकानुशार इस करना करनेवाले करनार, दूर अवक करें।' किर इन्द्रयी कामारी करनीरी कहा—'दूर भी बेस्सावंकी निक्कि दिने प्रजीवर अन्तार करना करें।' सहायोक आहें। सुनकर कुर्की कथाने करने अवसे अवदीने हों। या करेंग्से कुनकों हो। हती उनकर इस आहे वेक्कारतेने को ज्ञानीनों होकर रोड़ और सनरोकी किकोने पुर सरहा दियों। से सब कान्य और रोड़ यह सबा कानों अपने दिया देखाउनोंके सकत ही हुए। ये पर्यक्रीके सिद्धार खेड़ कारते थे। ज्ञान और आहेंके पुत्र एक परस्की पहलें ही उसके आहुत हो। सबका सरीर कार्के स्टब्टन समित्र और कुड़ था। ये सब्दे इक्कानुसार एक कारण करनेवाले, मरस्का होर पुद्र करनेने निवुध थे। कहानोंने यह सब व्यवस्था करके कारायों यो सब्दा हैंका था, जा को सन्दात दिया।

# रामका वनवास, लर-दूषण आदि राक्षसोका नाज और रावणका मारीसके पास जाना

कुषितिते ह्वा—कृतिकर | आपने सीरानकारणी आहे । सूची प्राप्तांके क्याबी कथा से सूच है, जब मैं उनके अभ्यासका कारण सूचन प्रकृत है। श्वारकपुरतार राग और स्कृतक तथा प्रकृतिती सीराको करने कमें कमा कहा ?

व्यक्तियोंने व्यक्ति असमे पूर्वित वनके एक कार्यकर्ते वर्षे व्यक्ति हो। उसके में तेवकी पुत क्रमकः कार्य समे। उसमें उसम्बद्धि व्यक्ति विश्वमत् सहक्तिका पंत्रक क्रिक और वेद तथा सम्भवनित वनुष्येके कार्यक विश्वम् हुन। एक्सिपुस्ता तथा उससा विवास हुना, का समय एका विशेष उससा और सुनी हुए। बारों पुनीये राम काले मंद्र के से असमे बनोहर क्या और हुन्द कार्यकर्त समय उससे शामित सुनी है, समया क्य अभी रक्ता का

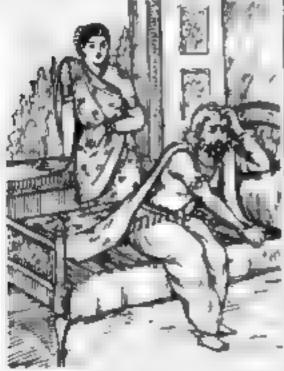
राजा इसरक बड़े बुद्धियन थे, उन्होंने संख्या—'अब मेंछे अवस्ता बहुत अधिक हो नयी, आः राज्यने कुक्टाक्याना अधिविक वर देना बाहिये।' इस विकार्ग अहीर अपने अधिकों और क्षाईत पुरेहियोसे की स्टब्स भी। अबने एक्टोंक इस कार्याधित प्रसावकार अञ्चलेश विकार।

शीराश्याप्रसारे सुन्दर नेत कुछ-नुश्च तला थे, पुनाई कुट्रोलक लगा थी, वसा कुलोचे समान कान थी, वसी बीड़ी और विस्तर साले-काले कुँगाले काल थे। देवनी विका सालि एसकटी एली थी। युद्धों उनका नरकान कुलान प्रमुख पूर्वत साल नहीं था। उनका नगनाविसम नम केलकर अनुवे भी के और मन सुन्धा जाने थे। ये स्था क्वींक राजकेता और कुलाविसे हामान मुद्धिसन् थे। सम्पूर्ण कराका उनके अनुसा था। ये सभी विकालों प्रमुख कराका क्वींक्य, कुलेके एक देनेवाले, सर्वाच्या, सामुक्योंके राजक, वैक्कान, पुढ़ेंचे, विकाल संदर्भकारे पुलाने देश-देशकर राजा कारण कहा वीतानाम्बाको पूर्णिका जात्म करते हुए समा कार्य के पूर्विका पूर्णिका केम आनेकार है। आप सम्मानिकारी सामने कुछ परिवर्ध की सामनी हाली पूर्णिकारी कार्या है। आप समानिकारी सामनी कुछ परिवर्ध की सामनी हाली पूर्णिका की है हैलिये। सामनी का कार्य कीरी—'साम कीरों।' अप सामने सुपार्थ किये हुमांचारी केमारा की है। संस्थानकार है जात्म अका है कि उसके पुरस्ता सामनिका है का है। सुपार्थ हैरी चाला बाई ? सुपारा पूर्ण है समाना अधिकारी है नहीं है!'

मध्याको बात सुरकार प्राप कुन्यते वैज्ञेनी एकामाने



मको वर्षि राजा इतरकके कह नहीं और देन काशी हुं हैत-ईसकर मजूर इक्होंने केशी, 'राजर्। जान को सरमाही है पहले को कुछ एक वर देनेके कहा क, जो दीनिये।' राजाने कहा, 'जो, अपने देत है शुक्राने के इक्का हो, जोन के।' कैक्टोने एकाको नकन्यत्व करके कहा, 'आपने राजां दिये को राजाधिनेकाल कारान देनार कराया है, इससे चरावा आंग्लेक किया कर और राज करने को जाने।' कैक्टोनिये का अंग्लेक कर सुनकर



राज्यको कहा पुत्रम हुआ, ने पुँको कुछ भी व कोल सके। रामको जब यह मानूम हुआ कि निवासी कैनेन्सिको करवान हैका मेर बनवास स्तिकार कर पूर्व है, तो उनके स्वाच्यी राहको सिन्ने से सब्दे बनवारी और कार दिये। स्वाच्या की हाको बनुस निर्म भावित योगे हो सिन्ने स्वाच स्तिको भी राजका साथ हैका। राजको का करें जानेवर राज्य स्वाच्याने सरीर स्वाच दिया।

सहस्यार कैन्नेस्तिने भरावको (नांग्यसको) मुख्याका और इन्ह्या—'स्वता सर्वकाली हो गये और राज-स्वयस्त करने हैं. इन्ह्या कहा विद्याल स्वयाका निकारतक हो जब है, हुए इसे स्वया करो।' गरात कहे क्ष्मीतक थे। ये स्वयाकी का सुरुवन बोले—'कुलकारिनो! क्षमोद्धा सालको हुवे किन्नकी सुरवाका कार विस्ता है। पवित्रते हुन्या की और इस कंडका सरवानास कर करना। मेरे मानेसर करनेकार दोना राज

हिमा।' यह ध्वक्रकर से पूर-पुरस्कर रोटे समे। उन्होंने सारी प्रमुक्त निकट अपनी समाई ही कि इस ब्यूनमाने मेरा किरमुक्त हमा नहीं था। किर से ओरामक्साकीको होटा समोब्दी श्रमानो ब्रोसिंगका, सुन्तित और बैस्केनीको आगे करके ब्रह्मको साथ बनको यहे। सामने बनिया-मानोन



स्वती चंद्रा-ने स्वयुक्त और इसारी पुरवारी की में। विकास कांत्रार अध्यान कराने स्वयुक्तातीय श्रमको करून इसारें हैं से स्वयुक्ति केची देखा। श्रमको अनुस्थ-विनय धरनेगर की कर र्वेडनेको करी न हुए। विश्वती आसम्बद्ध करान करात का, इस्तिको उन्हेंने करानको ही सम्यूक्त-पुराचार करात कर दिवा। जनावी अनोक्तार्य न जाका गणितामधे कुछे शर्म और करानार् औरस्थाति करान-प्रमुख्य सामने पुरावस स्टामको अस्य देखने हुने।

हानने लेखा, वर्ष वर्ष शृंता से नगर और प्राचने लेग करकार उनने-वर्ण खेंगे । इस्तिले से इस्ताह मुनिके आवश्ये पाम कोर संगलने करने गरे। इस्ताहना आवश्ये पाम कोर संगलने करने गरे। इस्ताहना अवश्ये कोर हाने हाने। व्यक्ति पाम ही सन्त्रवान नामक सन्त्रात हरू मान का, उसमें 'तार' राक्ता पान का पूर्ववाक्रीय कारण राजका अस्ति साम केर से गया। औरम्बाहनी व्यक्ति उन्तिक्रीकी प्राची विभे बीचा इकार प्रकृतिकर संस्था किया। व्यक्तिकान् एवं निर्मय का दिया। पूर्ववाक्रीय का स्वार के व्यक्तिका एवं निर्मय का दिया। पूर्ववाक्रीय का और होड कोट देश्ये गये से, इसकि कारण व्यक्तिकर एक्स हुआ था। व्यक्तिकाले से हमा प्रकृत



मारे गर्ने, तो पूर्वज्ञाता संसारते गर्ने और दुःचाने मानुसन् होनार राज्यकोर करणोवर मिर यही : इसके गुजानर अन्य की सोहके द्वार पर्ने हुए थे, जो पूक्त गर्ने थे । अपनी महिन्छो इस विकृत हालने देवन्यत राज्यक प्रतेकते विद्वार हो उद्या और वृद्धि करणादान हुन्स विकृतनको तुन यहा । इसने महिन्छोको वृद्धि हो हो एक्टनाने वाचार पूर्वज्ञातो कहा, 'व्यान्यको । व्यान्ते श्री विद्यार मेरी करणा च करके, मुझे अन्यवाधिक व्याने सुन्दारी यह वृद्धा की है। क्रीन तीन्ता विद्यार सेव्यन्ते क्षार्थ क्षार्थन वेद्याने व्यान है ?' इस अकार कोन्से हुए राज्यको काल, नामा और अस्ति असी विद्यार विद्यार आगारी



THE PERSON NOT I

पूर्वकारणं राजके पराधाय और पर-पृथ्वकारित श्रामक राजनीके संक्षाया साथ पृथ्यक । कार्ने अवनी व्यक्तिको क्रान्यम है जीन का स्थापका कर्मका निर्देश करके नगरकी राज्य आस्त्रित ज्ञान्य पर आधारकार्यकी स्था । जार्ने पाने व्यवस्थानको यह विस्ता, विस् ज्ञापर-ही-सार गोवार्य-नीर्वाचे प्रतुक्ता । सहाँ अस्त्रार राज्य अपने पूर्वको पेने पार्टकारे निरंग, को सीरायकार्यको है करते वहाँ विकास समझा कर रहा था।

#### कपटपुगका वय और सीताका इरण

सर्वन्यंत्रमं सहते हैं—राजनाओं सामा हैस करीय स्थान उत्पार पाहा है जमा और फल-पून आहे राजार आने आसर अतिथि-सामार विका । किर कुमार-नंपानों पहाल पूछ, 'तथुसरात । ऐसी अब आवारकात वा पाह, विकास रिने आपने पहालक आनेका पाह उत्पार ? पूछले पाह अपका मोई कठिन-से-कठिन पार्च भी होनेकान हो से हमे नि:संबंदिय बताये और ऐसा सम्बों कि यह पास्य अब पूछ है हो गया।'

प्रमण हरेन और समर्थने कर हुआ का, उसने एक-एक क्रिकेट करके प्रमणे साथै करको संक्षेत्रने करून करें। सुनकर क्रिका

नारियाने कहा—'रायात ? और समझामीको पास आनेको पुष्पार कोई समयायों है। मैं उनका परमास करता है। सर्था; इस कम्पूर्ण ऐसा कौन है जो उनके मार्गाका मेन रह सके ? उन्हें स्वपूर्ण के काल जान में कई संस्थानी करा बैदा है। सहस्र विभेशी मौकाले उनके पास करता पुरुष्के मुख्ये काल है ! किस पुरुषके सुने हेला करनेकी सरका ही है ?'

कामध्ये करा सुन्कार राजनके स्तोधका पान और घी का नक। जाने बॉटकर कड़ा—'करीक | वर्ष सु मेरी करा नहीं करेना से निवास करा, सुने अभी पृत्युके मुक्तमें जाना कोना।'



मार्गको मन-ही-पर संप्रा—गर्द पूर्णु निक्रित है से मेर पूजर्मी ही हानसे परना अच्या होगा। निर असी पूजर, 'अच्या करेता, जुने तुमारी जम स्वाच्या करते होगी?' राज्या करेता—'तुम एक कुम्द गुण्या कर कारण करे, निर्मानी हींग करान असीत ही और सर्गानी केंद्र भी विज्ञ-निवित्र करेता ही स्वाच्या करे क्यार को गुण्यानी । स्वाच पूर्ण नेक्से है, कारह सर्गको संस्थे अवस्य ही क्याप्यानी पूजारे पास क्षेत्री। सम्बद्ध हुए कर्त वालेक संस्थान क्षेत्र गुण्यानी सारग प्रस्था होगह। मैं जमे हरकोर से बार्गका और गुण्यान सारग क्षाप होगह। मैं जमे हरकोर से बार्गका और गुण्यान सारगी कारी होन्हें क्षित्रोगों केंद्रुव होन्सर असे है हैंने। यह, हुनों वही स्वाच्या करनी है।'

राजनकी कर सुनकर वर्गकिको स्थूप हुन पूछा। यह प्रकार गोर्थ-पीडे करवा। स्टेस्ट्रान्डार्ड स्थापको निवाद पूछार होन्ट्री पहलेको स्थापके सनुरक्त कर्म स्थाप कर दिया। कृतकार्थ पार्थक हेरी स्थापका स्थाप हुन्य, जारी पीता हो। करियानि देस स्थेत। विकित्स विकार प्रकार है। स्रोकी क्रेस्ट्रान्ट्री सीताका दिया करनेके दिये हुन्यके क्यूप हे कर्म हो मुख्यो मार्ग कर्म और स्थापकार सीताको पहले निवृत्त कर दिया। स्थापी अंकर होना हुन्य क्ये ब्यूप हुर से ज्या ह का प्रमान प्रकार क्या प्रकार कि वह तो विकास है। उसे साने अव्युक्त कामाना निवास क्या । स्थापको है। सानाम बोट सामान पार्यकने स्थापका । स्थापकारोके सामानी बोट सामान पार्यकने स्थापका है सरने हैं। सीते है है।



व्या व्यावसंघरि पृष्ठार यूनवार शीवा विकास आवार्थ असी थी, उस ओर सेंद्र पड़ि। यह ऐसावर स्वावस्थे वृद्ध--'वावा । अतिकी संद्री कार पड़ि है। यान सर्वेत ऐसा है को सनवान् सम्बद्ध वार सर्वः। वयस्यो पड़ि, एक ही पुक्रूमि हुए असने प्रतिकृत बीरानवाद्योग्यो यहाँ उपरिचय देखोगी।'

स्वयुक्ताची बाद सुनवार सीमाने अने संबंधियों दृष्टिसे हेका। कालि का सामी और बीमाना की, स्वयुक्त की सामा कुम्म का स्वयंति सीमानाका का स्वयंत्री प्रति को की सामा कम्म सहने स्वयं । स्वयंत्र जनका सुनवार काली केनी और सदावारी थे, सीमाने, पर्यपेश्चे क्यान सुनवार काली केनी बात क्षा का रिक्षे और सीमानाकानी जिल्ल मार्ग्स गर्थ थे, जारिस के की कार को। इसमें क्यून से बीसानों काम-विद्योगों देसमें हुए में आगे कह गये।

हारी जनकरणर प्राचनी शीतानको हर से जानेकी हमारों प्रेरकारीको पेकने एकम वहाँ जारिकात हुआ। प्रतिको अपने जाराको जाराज हेल कर्मको जानेकारको जनकरणियोंने प्रशासको प्राचन जारिको जारिकि-सामारको तिसे जसे दिवस्थित विक्रमा। एकम कोरण, 'स्टोबे । मैं राक्षसीका प्रशा राज्य है, वेस नाम सर्वात जिल्लात है। समुस्के प्रश्न करानी कुं राज्योग स्कूलपुरी पेनी राज्यानो है। सुन्दरी ! तूम इस करानी राज्याने क्षेत्रका मेरे राज्य स्मूलमें परसे। वहाँ मेरी पसी प्राचन राज्या। स्मूल-स्था सुन्दरी किसी राज्यान होगी ।'

राजवार्क ऐसे जबन सुनवार जानवारीने अपने घेनों कान पूर्व किने और बोली—'बस, अब ऐसी बानें पुरसे नत निकारः । आकारतसे करे दूर कों, पृष्णे दूष-पूक हे जन्म अर्थर असि असने कन्द-स्थानका ज्यान कर दे से भी में श्रीप्रधानकीका परिकार नहीं कर सकती ।' का स्वापन का आसमें कों है प्रमेश करने राजी, एक्कने दीकार को ऐक रिया और को करोर कार्ये उसने-अवकाने स्था । केकरी होता बेहेच हो गयी और एकस असे केम क्याकन स्वाप्तिक अध्यक्षितारोंसे से कार्य । ज्या 'क्या' का ज्या है-लेकर से दी भी और राक्षण को इस्का निके का या था। हसी अवकारों एक क्यांकी पूजाने क्यांकार कुछन अध्यक्षेत्र श्रीसाको हैना।



## जटायु-वध और कबन्धका उद्धार

पूर्वभाषि कार्य हि—शास्त् ! पृत्राच्या व्याप् अस्त्रका पूर्व का, इसके को बाईका नाम का सन्तरि । क्या स्वरक्ते साम असको को विकास थी । इसी नामे का मीतान्त्रो असको पुरुषकृति सामन सम्बन्धा था । उसे प्रकारक बंगुनाने पैनाने देशकार करापुर्व कोनानी सीमा न पूर्व । व्याप्त वीर को व्या मा ही, प्रकारक क्षाय केनाने झावट और स्वयक्तारकर कार्य साम — 'निसाकर । शू विभिन्नेकानुमारी सीमान्त्रो कोन् दे. सूरत होड़ है। बाद मेरी पुरुषकृतो नहीं क्षेत्रेन्ड को सूने सीमान्त्रो काल कोना कोना है

हैता बहुकर बहानुने एकपाओ हेक्स आरम्प विकास पहरोंसे, बेक्सेस और कंपसे पार-गायकर अर्थ्य केप्सी काम इस दिये। साथ प्रश्नीर अर्थर हो गाया। केस्से रक्पमी काम इसे स्था, पत्ने प्रमुखे प्रश्ना भिर यह हो। उनक्पमांकर दिन और हैता प्रमुखे प्रश्नी हो। उनक्पमांकर दिन साम हिम्सी सम्बद्धा ही और सम्बद्ध होने केस काम प्रश्नी। इस प्रश्ना करानुकरे मारकार का उक्स सीताको किये पूर् किम आवस्त्रमार्थास का दिया। रिमाको का बार्डि मुन्तिकेस आवस्त्रमार्थित का दिया। रिमाको का बार्डि मुन्तिकेस आवस्त्र रहिन्दा, नहर्-नहर्म नही, तालका का बेकस्स दिवासी पहला, उन सब स्वानोधर का बोर्ड्-न-कोई अपना पहला सिता हैते हो। अर्थ काम स्थान हैता है इस क्लेक्सी कोटीयर बैठे हुए योग को-को कामर्सिक केस्स, का ये अर्थन अर्थन प्रश्नीय एक काम्युक्त दिला क्या निता हैता। एकमा आयाक्षा स्थान एक काम्युक्त दिला क्या निता हैता। एकमा आयाक्षा स्थान हो। प्रश्नीका स्थान का निता हैता। एकमा



तिको हुए क्रिक्कार्यस्य करावी हुई अपनी पर्यक्रपुरी सङ्घाने या पहिला।

हुन अधार कृतर सीता हते गनी और अक्ष बीधमक्त्रमाँ अर क्वाइम्पाको व्यक्तर स्थेटे । एतेने उनकी संकारको भेटे वृहि इस बीर जेगस्टरे कानकीको अवेटसे क्रोइकर हुन वही कैसे बसे आरे ?' लक्ष्यको सीवाको बाह्य हुई साथै को को सुना है। सुनकर जीनाककारीके काले बाह्य हुंसा हुआ। सीतानपूर्वक जानाको पार पहुँकार अपूर्ण देखा कि एक पर्यक्रि स्थान विस्तारकार पृत्त जानाय पहु हुआ है। केले बाई जब निवाद पहुँचे से पृत्तने उससे बाह्य — उस्त केलेका कालाय है, मैं एका स्वारतका नित पृथ्वता बाह्य है।'



सानी वाल सुनवार दीनों आई गरवार वाले तमे—'आ वीन है, को इसमें जिलाका गान लेकर परिवाद में रहा है ?' निवाद जानेपर क्योंने काले दोनों पंक करे हुए हेले । जुड़ने बताना कि 'सीनाओं सुक्रमेंक तिले युद्ध करते जन्म एकाओं हाकों में बारा नवा है !' राजने पूक्त—'राजन विका दिसानी और नवा है ?' जुड़ने दिए दिसाबार हवारेसे विका दिसा बतानों और उत्तन लाग दिया । असका सेनेस सम्बद्धका परावाद राजने विकाका विका होनेक नर्स को असर की हुए असका विकाक अन्ते हिन्सकार किया ।

स्तरकार आसम्पर काकर उन्होंने देखा कु कारी करहाँ उन्हों हुई है, कुटी उनाय हो नवी है, कर सुना है। इससे स्विक-कुरकार विश्वय हो सर्वेदी केले काव्योंको बड़ी केला हुई। उनकार हुन्य कु का और सोक्से काव्युक्त हो गवा। किर के स्वेतकारी कोज करते हुट् द्वाकार काके स्विकारी और काव हिने।

मुख हुर जानेवर जस म्हान् कार्ने राज और स्थानको देखा कि कृतिके सुन्द इकर-अस चान भी हैं। बोड़ी ही ऐसी उन्हें

कारण कारण विकास पह । का नेनके समान कारण और कारणे स्टूड विकासकाय था । जारणुवाकी वालांक संभाव अस्ती कान-काने कुमारे थीं । कोड़ी कारों, विकास कोरों, स्टूड-सा के और उसमें कुमा कार स्टूडनका हान कार किया और उन्हें अपने दुख्यों और कींचा । इससे स्टूडन कहा हु:की हुए और राजा अधारहें विकास काने को । यह कारणार साने स्टूडनकों की हैं। हुए का-नार्व्या ! हुम की न करें; मेरे को यह सामा दुख्य कारण कींचा नहीं कर कारण । तेको, में इसकी वाली पूछा कारण कींचा नहीं कर कारण । तेको, में इसकी वाली पूछा कारण कीं हुम भी कांग्रेसी और कारण की ।' यह कांग्रे-कांग्रे कारणे किया कींचा कर सामा कारणे एक जींड कींड़ी कारणारचे कारणार निर्मा कीं। किर स्टूडनमें भी अपने कारणों असकी सुनरी और कार की और कारणोंपर भी प्रदेश किया । इसले कारणों सामा कारणोंपर कर गये और की पूर्णोंपर



तिर प्रकृ । अस्मी देवले एक सूचीक समान सकासमान दिवा पूजा निकासका अध्यासमें दिवा हो गया । औरप्रवादसीये असरे पूजा—'यू सीव है ?' असरे व्यक्त—''पास्कर् । मैं विकाससु जानक मन्त्रवं है, अञ्चयके स्वपंते राहसमोनिये आ प्रकृति अध्यास आपके स्थाति है सावपुरक हो गया । अस सीटाको सम्बद्धाः पुनिये—सङ्कारक राज्य राज्यस्थाः शीटाको इस्तर-से क्या है। वहाँसे कोही हो तुर्वर ब्यूक्यम्ब पर्वत है, उसके निवाद 'क्या' करका बोटा-सा सरोवर है। | का सबाते हैं। मैं से इतना है का सबात है कि शरकारी वर्त हैं अपने कर निकरोंके राज करा सुर्वन का करते हैं। वं सुवर्गवकावार्धं पासराक् वालेके क्षेट्रे वर्ध है। उस्ते और राजान मानके ही समान है, अवदन ही ने आनवी पहर 🖣 जात विशेष्ट हुए ।

कर्माने के होते।"

यह स्थापन का प्रत्यक्षाणियान् द्वीव्य पुरूष अध्ययेन हो मिशमा आप अपने दुःसाओ पारण काराने; अनार प्रीतः | पण और एम पण स्थापन होते ही सामारै कर पुरसार

#### धगवान् रामकी सुधीवसे मैत्री और वालीका वध

मर्केचोचर्य व्यते (—सरस्य वीत्युरूको दृशके मानुस श्रीतृत्यकारी प्रथा स्टोक्टवर असे । असे करने काम करके अधीने निवरीका वर्षक किया; किर केमी पाई प्राचनक प्रकेशर कहते हुने । यह समय वर्कत्की कंटीक क्षे परि करा दिलायी यहै। सुर्वकरे का सेरोको आहे देखा से उन्होंने अपने मुद्रिकार क्यी इनुकल्की उनके यक बेना। इन्यान्त्रे बालबेश हे वालेश हेने इन्हें कव क्षतीयके पात नने । औरान्यवपुर्वाने प्रक्रीयके जन्य पैसी ग्री मीर कारो अपना बार्च निवेदर किया । उनकी बात सुरवार बार्गाने को बह दिन्द क्या दिकाशक, तिले हरणके काल भीताने अत्यादामें नीचे कुछ दिया था। को प्रधार प्रमाधे और भेड़े निक्रम हो गरन कि शीताओं एक्क है हे एक है। का प्रमय औरल्यानुसीने हुन्नेयको स्थल पुरस्कानेत मानरोके राजकार अभिनिक बार किया। साथ ही उन्होंने बह प्रतिका को कि 'में पुरुषे कार्यको कर क्राएंसर' का सुओवने भी शीताको है। लानेकी प्रतिक्रा बी । इस प्रकार प्रतिका अस्के होनीने एक-इसरेको विकास दिलाना, दिन सब मिलकर पुरुषी इकाले किकिन्याको परे । वहाँ ब्हेन्कर सुप्रीयने बढ़े जोरसे नजना की। करमेको बढ़ बढ़र नहीं हो क्या; उसे पुरुषे निये नियालो ऐस अस्त्री की जाने पेकते हुए कहा-"नाम ! अवस सुबीय किस प्रकार शिक्षाक, कर यह है, जासे चल्हा होता है कि इस स्टब्ट उसका कर बदा हुआ है: उसे कोई कप्यान प्रकृतक मिल पत्रा है। अह: आप परसे न निकाते।' सालीने बद्धा, 'तुम सम्पूर्ण प्राणियोगी आयावने हे अन्द्रे जिनकों एक बुद्ध कर रेती है। ओक्कार कराओं से स्की, सुवीकको निजने सहात क्रिक \$ ?' ताप क्ष्मापर विकार करनेके बाद कोली-'एका बरायको पुत्र नहामानी प्रमानी सहै सीताको जिस्सेने हर सिन्ह 🕏 उसकी कोजके दिने उन्होंने सुर्वाकरे दिल्ला केही है। होगोंने ही एक-कुरके प्रकृत्वों इन्ह और निश्चनों निश्च पहल किया है। औरामधन्त्रमी धनुर्वर और है। उनके होटे पर्छ । किर मरनेके किये क्या कार्य का पाई ?'



शुम्बकुमार स्थानन है, उन्हें की बोर्ड पुद्धों नहीं बोर सकता । इनके किया केंग्, क्षेत्रिया, इनुवान् और जानकान्---में सार मुख्यकों जनते हैं; ने लोग भी बड़े बलबान् हैं। जला इक्ष क्षाप बीक्शकार्यके बरुका सक्षय होनेके बारस सुर्वेण पुन्हे जार करानेने समर्थ है।"

करने कहाँ। उसके दिलकी कर बढ़ी थी, से भी उसने कर्षे कर अक्षेत्र विका और विकास-गुरुखे प्रस्ते ब्यार निकल अन्य। सुर्वेण व्यवसार् वर्षको भार प्रकृ बा, वर्षा व्यूचका कराने असे कहा—'को ! तू से अपनी कर सकार किया का पाने अनेकों का तो पूर्ण जीतकर भी मेरे पर्स कारकर जीवित क्रेड दिया का ( कारक

अल्बी यह सुन्दर सुनीव चनवान् सन्दर्भ सुनित कारो हरूमी हेतुको कार बोले—'बेब्ब ! हुम्मे नेए क्या है प्रिमा, की बीन ली; जान में किसके आसरे मेरिया स्तू । च्यो स्त्रेकार परने करा आवा है।' इस अध्यर क्यूप-स्त्रे करे व्यवस्य कारी और सुरीय केने एक-क्रारेके पूज को। इस कुरूने प्राप्त और सक्ते कुछ तथा स्वास्थ्यी स्मूले—ने ही उनके अल-एक में। वेंची-वेचीयर जान भागे, केंची करीन-पर पिर वाले और फिर बेंध्वे ही बहबार विविध हेन्से पैसरे कारणे क्या पूर्व और पूँतिने पार्थ से । एक और प्रीतेने क्षेत्रोंके करीर दिला-विक क्षेत्रर स्वेत्-सुक्रम के ये में। पता त्वीं कारत का कि और माने हैं और कीन सुकेत । एक \$\$11म्ब्रीने सुबोकको पहलानो सिन्हे करके गरेने एक पहल अस है। विक्रमें इस कुमेनको पहल्लाका मनकर उनने अपना महत्त् वरूप परिवार प्रदान और वालेको प्रदान क्षाते क्षान क्षेत्र हिंदा : यह क्षान कार्यको कार्यने कार्यन रागा। सार्थने एक कर असे सानो को पूर् स्थाननाविक मानुसान राज्यारे केवर और उनके इस मान्येकी निन्ह समान प्रभा का पुरिसंत होकर कार्यकार गिर कहा। कार्यकी कुन्हों name gebal declaration and after more assu-श्राविकार पन्न दिना । इस प्राप्त कर्मकारको अस्त्र थः;



नाः औरत्यकपुर्वाने व्यवस्थान् पर्यक्रमः है प्यूका वर्षाके पार पहेंचे वर्तात किये। इन देशों सुक्रेको पार्शकति उत्तर

## विकटाका स्वप्न, रावणका प्रलेकन और सीताका सतील

वर्तकोच्यां नवतं हि—व्यानकं कक्षीपुत हुए कावने | 'व्यक्ति | हुन्यतेन पुत्रे कावी का वार्य । तक इस बीवनके प्रीताको प्रमुखे से सामा एक प्रमूप नकाने आरम्प । मा कार उद्यालको स्थान करेवर उद्यालके कीवर अहोन्द्रमहिन्द्रको निकट क्या हुआ था। सीवा स्वीकारिको कों है करें और करा छ-जनाय किया करते थे। शिक्त अपने साम्ये औरानकपूर्वत्या किया कर्य-कर्त पह कुलते हे नवी और नहे बहते दिन व्यक्ति पर नहें थे । राज्याने सीवाची ध्रामेंद्र नियो कुछ राज्यते विक्रोची निकृत क्षर रक्षा का, जनकी आकृति कही क्यान्यत की। कोई करना मिले हुए की और कोई संस्थार : मिलीके कुकने क्रिकुत क से विस्तिके क्षान्ते पुरुषः । कोई काली हां सुआठी हे विस्त राती थी। वे सम-में-सम सीवाको सब जोरते केरकर वहाँ सामकारोके शाम का-दिन कान्यी यहा कानी थी। ये महे विकार केर बनावार करोर जाने सीताको जनकारी हां कारमध्ये करती की-'श्राशं, हम सम निरम्भर इसको प्रक क्षते और तिरुके प्रयान दुक्के-दुक्के करके कीवार सा नार्थ।' उसकी बातें सुरूपतं एक दिन सीवार्ग नवा-

हैंको हरिया को क्षेत्र नहीं है। मैं अपने बहानी बानरक्तीयन चनवान् एको दिन और ही भी बहती। हानपारेके विकोशने जिल्हान के खाना कावना करोर सुपत कर्तुगी, जिल्हा इनके रिक्ट हुओ पुरस्का सेका नहीं करीनी । इस धाराओ सार करने और इसके बाद को कुछ करना हो, बारी ।"

हीताको कात सुनकार के पर्यक्त प्रत्य करनेजाती प्रकृतिको एकमध्ये सूक्ता देवेचे रिग्टे कली पत्नी : उनके को कोवर इक विकास समग्री एकती को या गयी। मा कांको कानोकारी और सिंग नकन बोलनेकारी थी। असी सीराको सरकार के कृ कह—''वासी ! में तुम्से हुक कहर पहले है। पुरुष निकार करे और अपने इसकी भक्तो निकास से । वहाँ एक हो। कहार यहा है, निराका का है अधिका। का कह होनेने साथ है कहा मुद्रियान् है और सह सीचनकन्दर्गके दिवसिकारों समा करा है। अस्ते हमाँ वक्कें किने वह संदेश मेना है—'बुक्ते स्थानी महामाने परमान् राम क्षापो पाई स्वयनके साथ बुक्स-

पूर्वक है। वे इसके समान देवली कारताब सुर्खनके स्टब रिक्ता करके तुन्हें कुछनेका ठकेंग कर ये हैं। जन एक्को भी तमें पथ नहीं करना खड़िये; बर्गेनिक सम्बन्धारी के असको श्राम दे रहत है, असेले तुम श्रुवीहर खोणी। एक पार रुवणने नत्त्वकरको को रुवणका प्रकृतिका का, प्रतिके क्रमको प्राप दक्षा । अस म्यु अन्तिनेत्रम राज्यस विजये की राजीको किएक करके जानर बराजनार नहीं कर सकता । इकारे ज्यानी सीरामकावारी स्थानकावी प्राप्त रेम्बर स्टीत ही पर्ध अनेवाले है। जा स्थव स्त्रीय कावी पान्ने खेने। प्रमुखान् राथ अन्यस्थ ही तुन्तें स्थारेत कुछ से आयेने ।' की स्थे अनिकृषी सूचना हेनेकारं चोर कहा देखे हैं, किसी इक्स्पा विनाशकास निवाद पान पहला है। सन्तरेने देखा है कि रायाणका दिए मेंह कियर गया है, अलबेंह सारे प्रारीरमें बेल सम्ब है और का बॉकामें का का है। का भी देखने अला कि गळोरी को दर १४वर सक क्षेत्रर का करणार जन का है। अंतरे शांध हो ने मुक्तावर्ण आहे, भी हैंह मुहले रचन करार रामाने सार-सारा पुरानेकी पाता पाने की होता होता विकासो का हो है। केवल विकास है के का करण किये प्रदेश पानी जाने केत दूस और बन्याओं प्रतित हो केरामीती: करर कहे विकास को है। विजीवकों बार वर्षी के उसके बाब अधीव केवरे देशे गरे हैं: जा: ये लोग जर अल्पेकारे म्बार्ग, मक्ती पुरू हो आयेते । सक्ष्में मह औ देशा कि मरमान एमके बाधों से प्रमासकीत समार्थ पंची आकारीत से नहीं है. अतः या निवार है कि त्यारे प्रतिकास सुरक्ष संस्था भुवन्त्रस्थ्ये केल प्राचना । जीते । अम प्रम प्रीव ही अपने प्री कौर केवरसे फिल्कर करता क्षेत्री हैं

क्रिक्टाको ये मार्गे सुरक्षर मोतको नगर्ने बढ़ी आका क्रैव

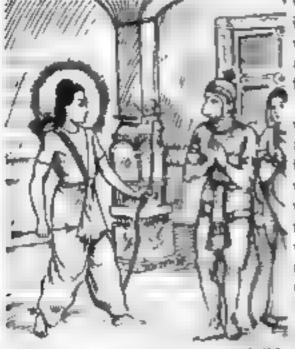
क्यों 🐍 कुर: परिकेशने पेट क्षेपी। इसकी बात समान होते हो सची तहारीरची सीतानेह पास अध्यत उसे बेरफर बैट न्त्री । बहु एक हिल्लार केरी हाँ परिची फरने से रही थी । क्रांबोंने क्यांबने सरकर उसे देखा और करपणाच्यो पैकिन होकर उसके प्रयु ४५ पन्छ। सील उसे देखने के प्रयुक्त के कर्म । एक्क कहने एक्ट्र--- 'होते ! आकाव एक्ने के अपने चीका अनुव्य विकास, या बहुत हुआ; जब मुहनर कृष करे । मैं तुने अपने का क्रियोने देवा आसर देवर कारनी कुरूप कार्या है। देखा, कुछी, सुरुष और देख-हर प्रकार प्राप्ताने नेर्दे पातिक प्रकार वहाँ विद्यापन हैं। प्रतिहा क्षत्रेड् विकास, अञ्चलंत करेड् राजन और इस्के तियुरे कह नेरी सहस्रका पहला पाने हैं। मेरे भाई सुनेरकी तरह पेरी रोकाने को अध्यक्त कार्य है। मेरे नहीं की इनके सकत दिना बोन प्राप्त होते हैं। वहाँ करेंने तुषाय करवासका दुन्त हां 🛊 कारण; इसरिये शुप्ती ! हर मध्येतरेके प्रमान नेरी याते से सम्बंध (

जनको देश कालेकर सीमाने पूर्ण और पुँह के वित्रा, अस्त्री जीकोंने अध्यानियों के इसी राम गयी। इसकी और करते का पर्जानी को बोली—'एक्सराय ! इसने अनेकों का देशी को में सम्बंध कही है; इसते को का बाद पहुँचा है को भी मूझ अवविश्वीकों ने सबी को सुन्ती पड़ी हैं। तुन केरी और अस्त्रा अन्य होंड मों। में काची को है, परिवास है; हुन किसी तक हुने का को सकते।' का काकर मीधा अवविश्व अस्त्रा हुने काकर पुरु-पुरुवर रोगे सभी। अस्त्रा कोच काम कार राजन बाहिन अस्त्रांत के गया और अस्त्रारे कुन्ती हुने जीका राजनियोंने किसी की पूर्ण संस्त्री। इस सम्बंध किसा है अस्त्री सेना किसा करती की।

## सीताकी खोजमें बादरोका जाना तथा हुनुमान्जीका श्रीरामचन्द्रजीसे सीताका समाचार कड़ना

मुर्वजोगती नहते हैं—शीवनकमूबी स्थानको स्थव मारकान् कर्तवर रही थे; सुनीको उनकी सामक पूरा प्रक्रम कर दिया था। एक दिन कामन् उन रामकाने बोले—'सुनितानका । तर विश्वित्तको नाकर का तो स्थानको सुनीब क्या कर रहा है। मैं तो सम्बद्धता है ज्या अपनी भी हो अधिकार भागक करना नहीं कामतः अपनी मारकुद्धित सरका उनकारीका भी अस्तार कर रहा है। बीट बार सीमाने दिनों कह स्थोन न करता हो, नियन-भीको है असरक है तो को भी हुन मारीके हैं मार्चना म्यूंब देश। भीद हुनों कामके मिन्ने कुछ चेहा घर पत है तो को साथ तेवार प्रीप्त हैं भी मार्ट सेंट आज, जिस्मा न बरना।'

जनकर राज्ये हेना स्थानन यह पाईची नाहा कार्यकार धीरकर राज्यभनी प्रतास कहाना हुआ पहुन रेक्ट्र विहंपकारको और स्था दिने। नगाहारण पहुंचकर वे केरेट-टोक्ट जीवर कुछ गर्थ। सामग्राच सुर्धन स्थानमधी कृतिस आस्वार बीचो साथ है बहुत ही विनीतपाली उनकी शनवानीमें आये। उन्होंने इनका पूजन और स्वकार विका, इससे स्थापनार्थ प्रसार हुए और निर्मय होन्सर खीयान-बादवीका सामेश सुनाने लगे। तम सुन सेनेसर सुवीबने हमा बोहकर बहा—'सब्दान । वेरी कृदि कोटी नहीं है, में बुतका और निर्मा की नहीं हूँ। सीताबी सोजके निर्मा को बात की मिला है, उसे बाल देवर सुनिये। तम बिताबोर्ने सुनिर्मय बानर बताये गये हैं। उनके सीटनेका समय भी निवस कर



हिया गया है। कोई भी एक महीनेसे अधिक समय नहीं स्था प्रस्ताता। अने आज्ञा दी गयी है कि ये इस पृथ्वीया कूर-पूर्वार अभेक प्राप्त, वंगस, अनुह, गर्वेश, नगर और कार्य सीतावदी कोच करें। योच रातमें काले सीटनेका समय पूरा है जावगा, उसके बाद अस्य सीराक्क्याक्रीके समय स्था ही जिस समाधान कुरेंगे।

तुर्धिकारी बात सुन्तार सावनाथी बहुद उसता हुए। उन्होंने सारा प्रतिय साम दिया और इस जानको तिये दुर्धानकी बाद उद्योश की। किन उन्हें साम सेवार के कियानकार्योके मारा गरी और सुन्तालने को कुछ जानक किया का, उसे उससे निवेदर किया। सनक पूरा होते-होते कीय विद्यालयों सेवा मार्ग्य इससी बानर सा पहुँचे । वेदन्त राविका विद्यालये गये दूर् बानर अधीतक नहीं तीटे के। अपने हुए कानदेने बानक कि 'बहुत हैं होन्दर भी हमें एकन और स्थानका पता नहीं सन्ता।' किन के मारा कार्यात होनेपर पुक्त बानर कही प्रीकारते

सुर्वाकके पान आये और खड़ने सगे—'बानरसम् । मान्ये अब्ब आपने जिस महत्त् म्युक्तकी अवस्था दहा को है, यह आप अक्ष्म है दह है। असमें जिन-विनको इंकिन पेक था, वे पानकदार इनुवान, व्यक्तिकृत्यर अञ्चय समा और भी व्यक्तिके कार समुक्तका सेकानुसार आधीन कर हो है।'

असी वृह्याचा समावार सुनकर सुतीय स्पष्ट गये कि उन्होंने अकरा कार पूर कर किया है। वनोकि ऐसी मेहा ने ही पूर्ण कर सकते हैं, को सक्तिकर कार्य सिद्ध करके आने हों। ऐसा सोककर पुद्धिकर सुतीको सीरामकत्त्रवीके पास कार्यर का समावार कह सुनका। जीएनकत्त्रवीके पास समुद्धान किया कि का कार्यने अवस्य हो सीराका सर्वर किया होता।

कारण कृत्यम् आहि कार वीत नश्चान्ये विभाग कार्यके प्रकार पूर्वाच्ये निरामेक तिये एक-स्थानके निर्माट असे । उनके कृत्यम्पति वात-कार और मुक्तको जनाता देखका वीत्रमण्डाच्ये का निर्मात है क्या कि इस्से हैं सीताका क्षांच हैं। इन्तर्य आदि वहाँ आवर बीदान, पुत्रीय क्या प्रकारको जन्म विचा । किर राज्ये पुर्णेक्य इन्तर्य का प्रकारको जन्म विचा । किर राज्ये पुर्णेक्य इन्तर्य का —''राज्ये ! मैं साम्यो व्याप होता है। वहाँ इस स्था लेख कारो दक्षिण दिवाने कार्या कार्य, वस और गुरावशीय क्षांच कारो दक्षिण दिवाने कार्या कार्य, वस और गुरावशीय क्षांच कार्य की । इसके एक व्याप कार्य कार्य कार्य कार्य



कुरुक्क क्रिकेट का, पने संस्था के और सामें <del>पहल से जान</del>क को थे। बात रहाक को है करनेके बाद सुनेका उपलब देखनेने अपना। वहाँ इस बात तुन्दर दिन्य पान्न कर हुआ **था, यह पन कुरकार निकारका नवाद जात है। उसमें** प्रयासी कामरे एक सर्वतारे का बर को थे। जाने इनावेगोको क्या प्रकारके योजन हैने, विन्हे सानेके इसरी क्षात्रकट पर हो नहीं, सरीरने बात का नहां । किर क्रमानीके कराने हर पानी हमानेत जो है पुरुष्ते बहुद निकार औ है हेल्ले हैं कि हर लक्स्पानकों निवाद पहेच को है और कहा, मतान रहता स्ट्रीर नामक पर्नत हमाने सहकी है। जिस हम का क्षेत्र मान्य पर्वत्या पद गये। व्यक्ति का रुपुत्रार हरि पत्री से प्राप्त विश्वासे भर गया। इस सीमानो निरास हो रावे । प्रवंतार वाल-क्यूजांके भार पूजा पत्र संपाई केवन विकृत महरतार केते वर विका पारण, यह सेवाल हो स्त्र १/क प्रशा । अन्तरी अनका सर्वेद प्राप्त स्थान केनेवा निक्रम करते कर तक जोन कई बेद गये । अन्याने कार्यक होने सनी; बीचने परायुक्त करता हैया करा। को सुनकर पुत्र क्षांत्रीयक्षाचे समान विद्यालकात केरवानकारी कांचा मधी बनारे सामने अस्तर कुछा; हेकनेने नार सहस सा माने सारे गाव हो। साने सालोगोचे पात अधार पात- 'स्रीन **क्षात्मको कार पर एक है 7 में अनका यह पार्ट है, मेरे पर** समापि है, भूते अपने भर्तुओं देशे सहा दिन हे नमे है, सक कार्यः सम्बन्धे में कारण प्राप्ता है।" अर इस्ते कारणके कार और आकोर संकारका प्रकारका संबोधने कुल किया। पह अधिक प्रमाणार फारवर असे बढा बढा हरन और फिर पहने क्रम्य — 'राज बर्पन है ? जीक फैले हरी नवी ? और क्टान्स्टी पुत्र किल प्रवास को ?" क्राके उत्तरमें हमने आपका परिचया, \$स्वयर सीमाहरण, सटान्यरण आहे संबद्धीका स्वयंत्र काल श्राप्ते सन्तरमञ्जू कारण—म्बू सद सूक्त विकाले स्थापः। का क्रमान काने कार्यानीको स्थानन कानेने सेवांना

क्या—'एक्क्सो में काला हैं जानी मानुते स्था भी मेरी देखी हुई है जा समुतके का घर कियुट गिरिको सन्दर्ग नर्स है। विदेशकृत्वते संख्या नहीं होगी; इसमें तनिक भी निकार कारोबी जानाकाल नहीं है।'

''कारबी कार शुरुषार इमलोग दुरंत उठे और समूह चर करकेंद्र विस्ताने सामग्र करने रागे। का बोई भी को स्थितिका स्थान न कर सन्ता, एवं में अपने निता पासी काराने क्लेश करते के बेजन निरात राजा तरे गया। प्रमुखे करने का एकती थे, को समय उसे में या कता । स्थाने पहेनका राजनके असत्यारों की प्रतिकार जीवाला कृति विकार को आपने वर्तनारी सरकारी परावर का और प्रकास करती रहते हैं। उनके पात एकानारें पाकर का — देवी । ये श्रीकारकपूर्णका कृत्युक्त कर है, अगर्थे करिको रिश्ने अवस्थानार्गाने वहाँ सामा है। सेनी एक्सूना। औरत और स्थाप प्रधानों है, यागराम क्रांप इस समय कर्ता राज्य है, का राज्ये अध्यक्त पुरुष्त-समामार पूजा है। अब बोटो की विनोधी जानरोकी केना शहक केवल आपके कारी को प्रधानेको है। अब वेरी पत्तीक विकास की, में काम भी है।' क्षेत्र क्षेत्र हैल्ला दिवार माने केरी-'अधिकांत कामानुसार में रूपानी है पुत्र 'क्रमूकर्' है। असे इन्हरे-केरे परिवरोते पुरत सुधीववा भी व्यक्तिक केला है। पहलाहें । असे कुछ भारतार राज्ये पार बाओं ते हैंका बाहबत जाने जानने पहलाओं तीनों का एक चीन है तथा विकास विकास कियो है है कर कथा भी सुनारी; का कार विकाद पर्वतार रही है, का समय आपने एक क्षेत्रके प्रधा प्रीकास क्षम पात छ। भूते जा क्षमाना मुख्य किया है। इस इयार सीतामा संदेश अपने इसमें कारण करके की संक्रमधी करावी और फिर आपकी सेवाये कार आवा ।" व्य केन सम्बन्ध सम्बन्ध औरानवन्त्रानि अनुकार्त्य वर्षे प्रशंस की।

### चानर-सेनाका संगठन, सेतुका निर्माण, विधीषणका अधिवेक और लङ्कामें सेनाका प्रवेश

सर्वाचेवर्वं कार्त हैं— त्यान्यत बहोसर सुबीवन्ती उद्यान्ते बहे-बदे ताना गीर १६६वित होने तने। सर्वाच्यम कार्यका बहुर सुवेव श्रीरामकवार्योको सेव्यते अस्तिक हुन्छ, उत्यक्ते हाथ नेगवान् कार्योको इस अस्त सेना क्षेत्रत आहे। न्याक्यके श्रीत भीर भाग एक-एक अस्त सेना सेवार आहे। न्याक्यके साथ साठ अस्त कार्य है। यक्तवाहर प्रातंत्रत स्वतेकाल गामगहर नामसे अस्तिह कारर अस्ते साथ ही अस्त

क्षण्येकी स्वीत शिक्षण आया । यहांचरती प्रसासेक साथ कावण करोड़ सेवा भी। जानक परक्रमधी द्विष्मुक भी तेनसी सारतेकी बहुत नहीं सेना लेकर करनेका हुन्य। भाग्यान्त्रोक संध्य भाग्या सेवा दिखानेकाले बाले रीकोची सी जान तेना भी। में भूबा और भी बहुत-से नानर-सेनाओं के सम्बद्ध सीरान्यान्त्रातीकी सहायकाके दिल्ले वहाँ प्रकारत हुए। इन सानतेकी विज्ञानीकी सहायकाके दिल्ले वहाँ प्रकारत हुए। इन वर्ष वैदेशिय कर केरे और काले के किया है कर्-कार्य कारत-कैरे करेब के क्यांका कुक किन्द्रके सम्बद्ध काल का। बानरोकी का विकास सेना परे-पूरे कारतालये काल हिशाबी पहली की। पुर्शाककी अकारी का समय कालकार प्रकेषि है जात-नार काला काला का गया।

इस प्रकार का राज ओरारे वागरोबी कीय हमाड़ी है। गयी, वा सुर्वावसाइंड कामान् राजने इस तिन अवारे दिवि, जाम दक्षण और सुध मुद्दिने बाहिरे कुछ कर दिया। जा साम देशा अंडर सुध मुद्दिने बाहिरे कुछ कर दिया। जा साम देशा अंडर सुध मुद्दिने बाहिर की गयी थी। कर मुद्दिने अवस्थानों का दो थे। इसके अतिरिक्त का, जेस, अबूब, इस्ता, मेंच और दिविद की नेककी दक्ष करते थे। इस सामें इस सुर्वित होकर का कीय सीरावक्षाक्रीका कार्य दिख सर्वित होकर का स्ता थी। कार्य अनेकों केस्स साम सामोग्री कार्य अस्ती हुई का स्थानसम्बाक्त कार का पहिले और सामें सामार्टी कार्य सहाने देश कार दिया।

स्वतंत्रार परमाण् रामने जाराव-तथान वानरोके बीच वृत्तीवर्त सार्याचित वाट मही— 'इन्यी का केन कहा जहां है और सार्य जाराव कारावर है, जिस्सी पर करना जहां ही महिन है; देश उत्तार्थ आपलेग का वान वानके दिनों के क्या स्थान दीन सम्बंधने हैं ? इस्ती केन आपने कार्यके दिनों के इसकोगोके पर्य क्यों भी नहीं है। वास्त्राण्यके व्यवकार किने के को इस्ते कैने पहुँचा स्वार्थ हैं ? इन्यों कीन अपने कार्यके दिनों हों है, नहें इसका पहला अध्या कार्य नहीं इस्त से बीचा समान कर इसका नाम कर सकता है। इसरे विचारने के वह असा है कि किसी कार्यने समान है। इसरे विचारने के वह असा है कि किसी कार्यने समान है। वहीं वहां वहां कार्यन है। उपलेश अधिके समान देवनके अधीच वार्योंने इसे वस्त्राच्या से अधी अधिके समान देवनके अधीच वार्योंने इसे वस्त्राच्या है। क्या कार्यन होने

वी संस्कार शीरायकाशी सद्यावसाहित अववाद करके अपुरके कियार कुशासन विकास होट करे। तत वह और नदियोंके स्वारी संसुद्धरे सरावरोंसकित अवट केयर कहाने बगायान् रायको दर्शन दिया और वच्छा क्यानेने कहा— 'केयवायकान । में अपनी क्याने केशके हैंनो मार्ग बहाता है, विकास वाकार राज्यका कर बार साहै। बहि मीरे मांग्नेयर की सामा न सेने हो अध्यानिका किये हुए हैंका बावजेंने तुन्हें सुन्ता कर्मुगा।'

श्रीराज्यकारीको कर सुरकार शकुरको बहर कह हुन।

आने हम जोड़कर कहा—'जनकर् । मैं आरका मुकायस करक पूर्व पहला और अपने कामने का इस्तेनके भी मेटे इका नहीं है। पहले मेटे का सुन क्षेत्रिके; किर जो कुछ करक अध्या हो, प्रतिनये। यदि आपको आहा पानकर पह दे हुंग को कुने लोग भी जनुकता कर दिसायस पूर्व हेती अहा दिना करेंगे। आपको सेनामें यह नामक हम पानर है। यह विश्वकर्णका पूर्व है, जो विश्वपत्रकार अध्या हम है यह अपने इक्तों को भी तुम, करह या पानर सलेगा, जो मैं समर सेने सुना। इस समार आपके निन्ने एक पुन सेवार है कामना।'

वी कांकर संबंध अन्यर्थन है नया। सीरायकप्रधीने बरण कोड़ दिया और मनको सुरस्कर महा—"नरः ! हुन अनुस्कर एक पुन कराओ, सुने मानून हुआ है कि तुन इस कार्यने कुनार है।" इस अवसंद नारको अनुसा देकर प्रशान्त् कार्य पुन नेवार कांक्या, निर्माणी सन्वाई चार को कोंक्यां और कींड्राई कार्यना कोंक्सां की। आक भी का इस पूजीवर 'सारोश्व'क कार्यों कींड्यु है।

जनगर वहाँ हों राजकसनोंके करा एक्सरण राजजार वहां करन वर्कान्य निर्भावन अरवा। उसके साथ कार मनते की थे। कारकार एक वहां हो उन्हों क्रूबनारों के, उन्होंने विक्रियनको कारकपूर्वक अवना निर्मा । शुनीको प्रश्नी केला कुर्व कि का समुक्ता कोई कार्युक्त न है, परंतु



फ्रीका करो। को साथ और मुद्ध पाना, क्रांसिनो क्यूंने नक्न प्रशास होच्या अस्या आहर किया । इतना ही नहीं, उन्होंने कर क्षा विजीवनको राज्यकोचे राज्यकार अधिनेक कर विका क्रायमध्ये अस्ति विभाग करा के और सम्बं करे अन्य पार ११९अपुरात करा किया। जिन विश्वीकाली सम्बक्त लेकर श्री रवेन क्षाकी एको को और एक व्यक्ति स्वकृत कर चौक गर्ने । बहाँ सहस्रकों सीनावर क्येत्रको कालरो का फर्ने और

क्षीरामकाश्रीने कार्या होता. व्यवहर एक वर्षा क्योचकोठी | कार्य क्षीति व्यक्ति वर्ष सुरूर-सुन्द वर्णकोची सहस-सुन्द कर करना । राजधारे से मन्त्री में, सुन्त और स्वरण । ने बेनों के लेवे अन्ये से और बाररोके बेचमें रामध्यक्रीकों सेनामें भिक्र को थे। विश्वीयक्षरे का संगोको पहचानका प्रवास शिला । किन क्या ने अपने अस्तर्य क्यापें प्रवाट पूर् को उन्हें धनको सेन्द्र दिसाबार प्रोड दिया। संबक्तके अवस्थि मेन्स् क्षारची करी और करकार रूपने असला पुनिवरन् अनुस्की 🖴 बराका राजनके पता पेका।

## अङ्गदका रावणके पास जाकर रायका संदेश सुराना और राक्षसों तथा वानरीका संप्राप

पार्वकोच्या कार्य है—सङ्घले वस कार्य आह और (१९८८) पानीका अधिक सुचेक का, कहा और बुद्ध प्रकृत कार्य प्राप्त थे; प्रतिनियो वहाँ सेपावत प्राप्त प्रोप्त था और प्राप्तान राज सम आरोर हे इसकी रक्षा करते थे । इकर राज्य भी स्थानने कृत्योत्त प्रकारते युक्तमानीका संबद्ध करने तन्त । स्थानकी प्रकृतिकारी और नगरहार बहुत है प्रक्रपुर के अब्द संस्थान ही किसी अध्याननकरीका वहाँ व्यक्तिय करिन का । ननके कारों और भ्रात रहते करहाई थीं, विकार अन्यव कर के और असमें बहुत-में करा असी जरावानु को रहते थे। इन कावानीने प्रीरको बोले ग्राही हो थी. बराबूत कियांत्र रूपे थे, फेल्क्सरी महरनेवारचे पहरीने दिस्स की राध्ये की इस सब कारणोले प्रकृते प्रवेश करन वारित था। मूला, क्वेडी, साथ, होका, शरकार, पार्क, मोमके पूर्णर और शेप अधि अध-प्रयोगा भी निर्देश संबद्ध था। जनसंद्र सची क्रमानीन क्रिन्यार वैद्यानेके रिक्ते क्यों को हुए से और क्य-विकास कहा करनेकारे रिश्रादे भी हैनात किये गये थे। प्राणे अधिकांक पैका और ब्यून-से द्वाबीनकार तथा बुद्धसम्बर भी है।

इतर, अनुवर्गी कु। कम्बार राष्ट्रामें गर्थे। मनराहरका महिनार उन्होंने राजको बार कार सेजी और निवा क्रेकर पूर्विने अनेहा विका। इस सम्बद्ध करोड़ी बहारकेंड क्षेत्र महाकारी शहर बेमपारवारे विते हुए मूर्वकी शक्ति कोन्य का रहे हो। एक्सके यस व्यक्ति स्थाने कहा-"रहक्तान ! कोरमर देखके राजा सीरायक्तकरीने दूपनी बहुनेके हिन्दे के रविक मेजा है, उसे सुने और अल्वे अल्वेर कार्य करे । 'से अबने मनवर काम न रक्तकर अन्यायने काम दाना है, देते राजाको पाकर असके अधीन स्वतेकले देव और रूप भी आ हे जाते हैं (\* सीलाक करावृत्येक अवस्था करके अवस्थ से अवेले तुनने किया है: परंदु क्राव्य क्या बेधले विश्यतक स्त्रेगोंको याँ योगना पहेता, हुन्करे सक्त वे नी नारे वार्यने । समने भार और आहेगारसे उत्तर क्षेत्रर कनवारी जानियोगी प्रमा पर्दे, देवताओवर अपनान वित्तव और एकविंदी क्या रोती-विकासती अवस्ताओं के की प्राप्त निमे । इन सम अलाक्षारीका थल अस अस अस होनेकारम है। मैं सुन्हें मन्त्रियोग्रहित यह असेगह सहस हे से युद्ध करके येका दिसाओं , निरम्बर । यहादै में मनुष्य है, के पी मेंने बनुष्यहे



प्रतित देखना । जनकारियो जीताओ होद थे, अन्यथा थेरे कुरूको पहर्याः भी कुरूका प्रदेशका होत्य अस्त्यान है। मैं अपने तीको बाजोसं इस कुल्यालको राक्तनेसे कुल कर हैंगा।"

**बोरनक्यांके हाके मुक्तरे ऐसी ब्लॉल बाद सुरुक्त** एक्स स्थान न कर सन्दर । यह सरोक्से उन्होंन हो एका । उसका इकारा पाकर चार शहारा को और जिस प्रकार पत्नी सिंहको कारो, जबी तथा अनोने अन्यको चार अंगोको कार्य दिन्य। अंग्रह इन कारोको केले-दिने हो सहस्त्रका स्कूलको करका ना बैहे। इक्को समय उनके इतीकी पुरुष्कर ने पाने सक्षम ज्यांत्रका जा निते । उनकी काली पाट गयी और अभिन्य मोट समनेक कारण हुने बढ़ा पीड़ा हुई। अंच्य व्यक्ति केंगूरेपर क्षेत्र के किया क्षेत्र का स्वापिक क्षेत्र कर अपनी सेनाकं समीप आ पहेंचे । वहाँ बीएनकमूबीसे फिल्मन उन्होंने कार्य कर्ते कार्या : राजने अंत्रवाधी कर्त प्रतंत्रा स्त्री, जिन्ह से संस्कृत सेन्त्रके द्वारा राष्ट्रपार एक साथ काम केल दिना और अलको कहारविकारी सुक्रक करनी । नगरके विकास सुराने उन्हेज भारता बड़ा कठित था, सिंह स्थापनने मिनीनम और



मानवान्त्रों आरे कार्या औ भी सुन्ते किस देखा। विश क्षत्र करनेते कुमान कारा-नीरोधी भी जरूर केम लेकर है सामने बीधा बढ़ गया।

िरहरकार धनकान् समने कामूके समान वेशवादे कारतेको | स्कूनके भीतर पुत्र गर्न । उस समन क्रमी काम तीन कार्यक् धानुआंको होना भी थी। इबर क्यानने भी राहास मेरिको कुम्बर अलेख दिया। स्थात पत्ते ही हमानुसार उस मास्त क्षरनेकारे पर्वका राक्ष्म सामा-सामार्थी दोसी करायर आ व्यक्ति और विद्रशेषिक काले काल-क्रमोकी कर्यक्रण कारतेकी स्वाने और अपने महान् काहानका परिवाध केरे राने । इसर कर में क्योंने का-काकर रिकामरोको निरार्थ स्ते। कारी और प्रकार राजे कालेंकी भयों काके राज्य संदार अहरूब किया। एक और स्थान भी अपने भूकु नाजीसे क्रिलेड चीतर कुरेबारी कुमलेड जान सेने सर्गे ।

> का एकाओं का इस इस्टबर इस हमा में वह अपने अस्टर विकास और एकारेकी असमती रोग साम है कर्न वे पहले देने आ पूर्वता वह हारे मुख्यानी स्वान Cassand सामने प्रतित का सुक्रमी परानी हुई हैतिये कारे अपनी केलक पह रकता और वानरेका जंदर करने अन्य । क्षेत्रकव्यव्यानीये जात राज्यमध्ये म्युक्तमार सेनाके साथ रक्षत्रेको प्रयोक्त केला से उन्होंने अलो पुरस्कारेनी कुल्लोको सहस्र हाँ रेतिने अपने नेपाना पह रक्षण । दिए द्वापांके साथ परावाद राग, इन्हर्नेनाके साथ समाग्र, विकासको स्था सुनीय, विकासीको स्थाप तार, सुनाके साथ का और बहुतर्थ प्रसम्बद्ध मुद्ध क्षेत्रे रूपत । विदर्श विदर्शनी क्रपने क्रोक्रक प्रमाण, यह क्राफे साथ निर्म गया । यह पुन sping up the make moone heavy-doors proble

#### प्रहस्त, मुप्राझ और कुम्मकर्णका क्य

पर्वाचेवने कार्ते हैं—सामध्य पुत्रूमें क्यानक करकर दिक्कोबाले प्राप्ताने सहस्रा विभीवनके पात अवस्थ गर्वक करते हुए को पढ़ने भारत। विभीनको भी एक महत्त्वकि इसमें हो और को अभिन्यित का अलके क्लाक्स के मारा । इस स्रक्रिका केन कालो स्टब्स काला पुरुषो हो प्रकृतकार मराव्य बारकार किर बहु। और बहु अधिके रहाये हुए पृक्षके संबद नराहाती हे नवा । सन्बर्ध नको देश बुप्रांक नामक शक्षण को बेम्से कारतिको और बैक और अपने बाजोंके प्राप्त सकते इवर-उन्ह बनाने रूमा। मह देश काराम्बर हुरकार्त सुवाहको अल्बे केहे, राव और स्तरविस्तीत कार कारत। काले परवेले कारवेको कुळ सर्तारमे 🌿 और ने अन्यन्य राज्योंको काने समे।

इनकी भवेदार बार पहुनेसे राजी राजस जीवनसे निरात है को। जो जानेने को, वे करके को जानका स्मूलों हुन को । वर्षी कावन सकते राजनको मुख्या समाचार सुनाया ।

इन्हें पुराते सेवरवीत जान और सुप्राप्ते बच्चा कृतान सुनक्षर राज्य नहीं देखक क्रोकांचे उत्त्वास सेता का: प्रित विकासनी उठकर कहने लगा-'अब कुम्बद्धवंदे पराहम् हिलानेका प्रथम जा नना है।' हेस्त लेक्टर जाने देखी जानाववाले कथ जातके नाने क्रमान्त्रे और निशेष प्रयक्त वारके और निश्ची प्यो हुए कुम्बार्मको बन्धम । दिन यह यह कुछ साम और शास हता से काले सरकारे बद्धा, 'बैचा कुम्मकार्ग ! सुन्दें पता नहीं, इस लोकोंपर बढ़ा कारी कर जा पहेंचा है। मैं समकी

की सीताओं हर स्थान का, उसीको कारण हैनेके किने कह सन्द्रास पुन कर्मका कहाँ आत्म हुआ है. उसके साथ बावरोंकी कहा नहीं सेना है। सावत्म काने अला आहे. हमारे कहाँ जातनेथ व्यक्तियोंको मार प्राप्त है और स्थाननेक संस्था पना रखा है। तुन्हारे हिना कोई ऐसा बीर नहीं है, के अमे मार सके। हुए कारणानेथे जेता है, इसकिने कारण आहिसे तुसकित हो पुन्हारे दिनो कानो और एम सबी सन्दर्भ अहुओंका नास करों हैं

रामानी आहा चानक कुम्बार्ण वस अवदे अनुसरी-



प्राहित भगरते बहुत निकास तो उसकी दृष्टि सकते हैं कही हुँ सारर-रोजार करि, से विकास उसकारों सेचा में भी भी। रिस्त कह असने भगतान् राजके दर्शनारे इकाने का रोगारें हमर-उसर तृष्टि हमते से उसे हमते स्वान्त केंद्र स्थानकों स्वान्त नहीं हैं हमनेदीने सारवेंने अस्यत सुराह्मांकों स्वान्त औरते पर किया और स्वेन्यों केंद्र स्वानका साम-प्रकाशित सहर करने सने। कुम्मार्थ हमने स्वान के समान देखते सहर करने सने। कुम्मार्थ हमने स्वान के स्वान देखते सहसे साम करने। कुम्मार्थ क्रमां स्वान के स्वान देखते स्वान कर करने। कुम्मार्थिक स्वान सुराह सामा। देखते देखते साम करने। कुम्मार्थिक स्वान हमार्थी क्षते देखता तार आहे साम कर्य हो और सहे सोरहे सीसवार करने रुपने साम सम्बन्ध सुनाम सुनीम वहीं

को सीकामों हर सबया था, उन्होंको कारत हैनेके लिये था। इस्तुप्तर पूरा बोजका वहाँ जान्य हुआ है. उनके साथ बावरोंको बहुत बड़ी रोज है। अवस्था अने अला आहे. इसरे बड़े बावरेंच थारियोंको बार साथ है और स्थानोंको के साथ है क्या। किर से उसने निकार गरीय की



और शुक्रिकारी साम्पूर्णक प्रकारकार अध्यक्ष होगी भूगाओर्ने कुल विकास कार्यानको पह पान देशा गई थे। अने यह शहरत क्रांकको नेकर करने राजा के के बैदकर सरके स्थाने का न्हें। उन्हेंने कुम्बानांको लाह काके एक बड़ा नेपहाली कार भार, का उसके प्रकारको स्थापन प्रतिनको सेवान हुआ एकरक्षित हो जर्माओं जान चना। जाती किर वालेके ब्याल पूर्वकारे से अले क्षेत्र दिन और जपने से इस्तीने क्ष का को कार तिने स्थानक नाम निना। व्यक्ति के को बीताओं राज है तीने क्या करका कार को हो सामा देनों पुष्पमोंको बाद इस्स । अस उसके कर की हो थवीं । कुम्बकरनि पुनः वार्ते इन्वेपे क्रिक्ट नेका अध्यक्त किया; विद्यु सुनियानकारे इसल्या दिसको हुए फिरले कम भारता उन सारी प्रकारोको भी साट हिया। तम उसमे अपना प्रशीर स्कूट स्कूट कर रिका: अपने अनेको पैर, सनेको दिए और अनेको पुजारे हो पर्यो । यह देश स्थापनने अञ्चलका अहर करके इस पर्वताकार सक्रकारों चीर काल । जैसे निजरी गिरपेके कुछ कराहाची हो कार है, उसी प्रकार का विकासने असूत प्रमाधीन होकर गिरते देख कहावारीन पत्रके को चान विकास कर करे को।

हेकर वह पहानती शक्षम मुर्थांसर गिर पहा । कुम्बकर्तको है को । इस पुत्रों कहरतेया है अधिक संहर हुआ । मागर

# राप-लक्ष्मणको मूर्का और इन्द्रजित्का यथ

week to the

मर्वायोग्यो वर्ता है—स्वरूपार राज्यमे अपने मेर पुर क्वांतिको स्था-चेटा । ॥ क्वानारीयोगे सेट है, सही प्रमुखे भी गीतवार हो अपने बन्नात कुनकात कियार विका है। जातः चुक्कुविने सामार राग, साहरण और शारीकाम गाम कर (

इसीरहे 'यह अवा' यहक निवादी अवा सीवार की और काम बीध, राज्या बैडकर तुन्त है संकारपुरियदे कोर कर दिया। वहाँ प्रदेशका अले स्थापनारे अस्त कर सामार परिचय दिया और बुद्धांट प्रेमें उत्पारमधी कारकार्य । स्थानक भी क्यूनकर जान जेकान निर्मे को नेनकी अर्था सामने अन गये और सिंह बैचों कोई मुनीयों अपनीत करता है, जारे प्रकार अपने बहुनको इंकारने पान सक्निके प्राप्त होने राने । इन्हरीनर्, जीर स्थापन क्षेत्रों ही विभागनीया प्रयोग परको थे, योगोधी हो उत्तरात्ती यही स्वरूपीट थी, क्षेत्रों है क्य-क्रारेक विकास करा काहरे के उस्ते उसने को धोरकी अवर्त केंद्र गरी। इसे मीचने वारिव्यूनार अनुवने क्या पेड़ राजाकृतार को इन्हरिक्तुके दिशान जाता । चोट सामार भी पह विकासित नहीं हुआ। इस्तेने अपूर् अस्ते विकार पार्र अरमे । विरा के काने काकी वाजी परासीने बढ़े कोरते गांध भरी । अपन को कारणा थे, उस्ता उसके इस उक्तरणी अंदोरे कुछ को को लिखा। को को मानकर पुरः एक प्रतासका कुछ क्याद रिच्या और जो इन्हरिल्हें अन्य केया; जानी कोशों आका रच पक्ताका है गया और केरे क्या स्वर्तन यर गर्भ। तम इन्हरिया दश रकते कुद यह और सामका आक्रम हे पड़ी अन्तर्भाव हो गया। जो अन्तर्भीय हर देख भागान राम भी बढ़ी जा भने और असने संराक्ती सक श्रीरमें रक्षा करने लगे । इन्होंनेल् भी क्रोक्ये मरकर राम और क्ष्माणके सार्व प्रतिरम्भ केन्द्रती-कुनार्ते कार्यकी कर्म सस्ते रेता : कारोंने देश्व कि यह क्रिकार कारोबी हती राज रहा है, से ने हार्योमें वही-बढ़ी दिलाई दिले आवरफने उद्यान उत्पाद पता समाने रागे । इन्हर्यक क्रिये-ही-क्रिये उन कारों तथा राज और स्वारणको भी वाजोंसे बींबने राजा। क्षेत्री अक्ष्योंके प्रारंत कायोंने कर गये और वे अस्तावारों निरं हुए पूर्व और प्रमुख्याती भारि इस पृथ्वीपर पिर पहे।

इसनेने वहाँ सिजीवन जा पहुँचे एउन्होंने प्रक्रमारे उन्हारे

। बुर्ज पूर और सुरीको विकास समग्री ओपनियो दिना करते अकिरोंका करके को केरी प्रकृषेकी केरी समाज । क्रमें: अध्यक्ती कुरस्तानुर्वेक क्रमें: क्रारिस्ट काम निकासकर क्रमांस्ये हे क्रम क्रमा हे गया। इस करवारते ये मेर्ने पहलूका बोल है होकों का गये, जातका और नवायद क् के नवी। काश्या करवान् एकको नीहारी पहित देख क्षित्रको प्रत केरकर यहः-- 'बहरू । केरिस्के पूर्व आवर्ध केवने एक पुरुष जान है, नो कुनेस्पी अवस्थे का किया भार के आपक है। इसके आँका को रोलंपर आप क्षाको क्रिके हर जारिकोको भी देश समाते हैं बचा विकेशियों का बार हैंगे, कान्या शहन भी उने देश



ब्हार बहुबर डीएक्क्ट्रजीने बहु पर जीवार किया और असे अपने केंद्रों केंद्र केंद्रे । प्रस्के कर सरकार, सुर्वेण, व्यानकार, इर्फाल, अञ्चर, बेच, द्विनेश और गीराने भी उसका करवेग किया। जन्म सभी प्रमुक्त करवेंने काले अवने-अपने के कोने। विधीनको मातने अनुसार ही दस अस्तिते क्योतित प्रशुक्तिक भी अध्य क्षेत्रे रूपा ।

इन्हरिक्ते का दिन को ब्यूक्ती दिशक्ती की, अलक मसान करनेके रिन्ते का अपने विकाल पान पान पान पान महीते पुरः मुख्यी हमाने मह क्षेत्रमें मत हात अर का क, क्षाने क्षित्रीराज्य अन्तरित्रे स्थानाने आहे. अस अस किया। यह देश इस्तित्ते अनेको करियो काम कामर

करमा प्रथम देखा गया। एक ही अपने उन समग्री ! सहरमाधे गाँव असा। इन स्वरूपने भी अफ़िके समान क्षक क्रमेरे इस्टेंग्से कर बार दिया। स्थानकी चोरते ज्यान होकर इन्हर्कन् स्रोकते मुखिन हो गया और जरने जपने समुद्धे राजर विकार सौरोधे प्रपान आठ बाज गरे। किर सक्ष्मको भी अधिके समान सीचे सर्वाचारे हीन क्षण गरे । का कालोक्स कर्मा होते ही इन्हरित्रके अन्तवसीक अक्ष भो ।

### राम-रावण-युद्ध, रावण-वद्य और राम-सीता-सम्मिलन

मुर्वकोपनी बहुते हैं—दिन पुत्र नेकसहोद को सानेना राजक सामक्रित सुकर्मके एक्टर बैठमार स्थानने कान । सम्बेद साम तक्-तक्षे अक-क्षोरे सुरक्षित अर्थके क्षेक राज्ञान में । इस ज़कर यह समय-मूक्तरियोके ताम मूक्तरेह मार्गा रामगीकी और भाग । यसे स्रोकापुर क्रेमार राज्यीकी कोर जाते देख सेनाचे प्रदेश केन, नीत, नत, जाहर, इनुवान् और व्याप्यान्ते वारो ओसी पेर विस्ता । उन के और बानर बीटेंने कुळोची मारते राजनके केवले-केवले आयो सेनाको सहस-पहल कर दिया । पाकानी एक्कावानने कर देवर कि क्यू मेरी सेनाओं का निर्म प्राप्त है से उससे माना फैलानी। बोदी ही हैंको सब्बेट प्राचेको निवाले हुए कारा, सामि और सही आहे आयुक्तेने सुरवीका बैक्को-इमार्चे एक्स दिकाची हेरे तमे । जिन्ह यनकार् एको

हिना सम्बोधि हारा उन समीको पार करन। इसके कह

transfer yield were decemby may the affer respectable of का करण करके एव-सकानको ओर वैक् । राक्सरानकी हर प्राथमके देशकर भी उन्हरकर्गको किसी प्रमासकी कारकः औं हाँ । अपेर राजाते बहुः, 'बावान् । अपरे ही क्रमान जामारकारे इन क्यी राज्यतीको भार क्रारिये।' तम बॉराको क्ये पक्त और में अनेको एक्ष्मोको बराहाची

क्रमी राज्य क्रमावा सार्ग्य प्रशासि मीरवार्ज बोदोसे युक्त हुआ कुर्वीत समान रोजाती रच रिन्ते का रामकुलाने राजनीके कार अमेरिका हुआ और उसमें कहते तरार, 'रहुराजनी । यह कीरे कोडोरो जुला हुआ। इनुसार कीर साथक बेहा रक्ष है, इसीवर व्यक्तर इस्तरे संवारपुरियों संबंधी देख और सुरक्षोत्तर यंत्र



किया है। पुरुषसिंह ! स्थान भी केरे प्रकारको इस्तीपर समार होकर तुरेत राजभको चार क्रारिये, देरी यह क्रीरिये (' स्थ भीरतुराधको प्रसार क्षेत्रर 'डीक है' ऐसा महाकर जा राज्यर का गरे। राजकार कार्य करते ही तम राजन हकानार काने राने राज आकारने देवाराचेन कुट्टीनकेक प्राप कतो हुए सिंकुक्त् करने लगे । इस प्रकार चन और चननक कहा भीवन शेक्षक हैंबा गया। जा पुत्रकी कोई हमते जन्म निरामी असम्बन्ध हो है। एक्स्सपन एक्सने राजके अस पुनांक प्रकार प्रचल पूजा जनकर करते। विद्यान क्रोक्स । अस प्रियुक्तको राजवीने राज्यात अपने की बालीसे कार बार्य । प्रस्ता का रूपन कार्य देखकर राज्यान का कार हो गा। और बढ़ प्रोतिक क्षेत्रर कुमरो-लाको सेको-सेको बाल शिरताने रूपा । उनके रिका आने पुरुषी, पूर्व, पूजा, मनसा, समित और प्राप्त-नरहके जानवनकी प्रतरीकों और पैने-पैने क्रुरोकों को कर्ज आरम्ब कर थे। एक्नुबक्ते हुन विकार पालको देशकार समझ करर इकर-कल जाने हरों। तब रामनीये अध्ये राज्यमंत्रे कृत राज्य परिचयर को स्थानको जन्मिन्द्रिया किया और किर कर क्यूनिया प्रमानपूर्ण बालको राज्याना क्रोड विका । राज्याने प्यां 🕸 बनुषको कारतक परिचार को होना का प्रकृत असी रहा, केंद्रे और एक्सिके स्वीत जेवन अधिने महा क्रेका करने भेरत् । इस प्रकार पुरुवकार्य कारकार् कारके हामाने राजसका क्या दुस्ता वेकावर क्याचे और कारणेके सहित क्या वेका को असम्ब हुन्।

राजन् । देवताओं हो इ कार्यवाले रीच प्रदान राजनको भाषा गर, स्थान और उनके सुक्रवेको बहा सारच हुता। रिन्द केन्स और ऋष्मिने यक-सम्बद्ध करते हुए जाबीर्वाद वेवल पहलाह रायका अधिकार विकास संबंध दिलाओंने कमरानका चनवार् संबंधी स्त्री की और क्यांती कृतोकी कर्ष तथा पान करते उनका पूजर किया । बिर चनवार रायने स्थानके राज्यस विश्वेषणका अधिकेक किया। इसके पहाल् अभिन्य कामा बुद्धिकर् और मनोत्रह मनी सीताभीको लेकर विधीनको साथ एककोड बास अध्या और उनसे बड़ी रोम्लापूर्वक बड़ने सन्त, 'ब्लासन् । सरकारकारका केले जानदीको स्रोक्टर क्षीनिये ( उस समय सुन्ही बीसीनामी एक फलम्बेने बेडी भी। ये प्रोक्त अलग कुल हे यथी की तक उनके प्रतिये मैल कहा हुआ वा और बधाएँ नहीं हाँ ही। उन्हें देशकर प्रान्तीने बहा, 'कामानवित्री ! युद्धे को कार करना था, यह मैं कर चुका; अब तुकारी रहा इस्ता है कई कर्त करते ।



में क्यान को पूजा क्रमीतिकार्ध कारनेवाल है, या हुतरेहें: इन्यों जमें हुई क्षीयों एक पूर्ण को मैसी रक सम्बन्ध है?' क्यानीके ऐसे करोर क्यान सुर्वार सुकुमारी सीमाओं क्यानुस्त होतार करे हुए क्षेत्रोके समान क्यान पृथ्वीपर गिर वही राम समास करा और संस्थानकी भी का बार सुरवार क्यानीक से बोकर निकेश या गये।

इसी राज्य प्रेसानकी राज्य ब्यटनेवाले हेरानिहेंच ब्यायनी विकारक बैठका कई कारो। अनेत साथ ही हम, अहि, कन्, कन, करवा, कुकेर और जारनियोंने भी दर्शन दिया तथा तिक दे<del>योक्टी दुर्वे कार्य किये द्वा दशरक भी एक</del> इंग्लेकनं प्रवासकृषं केंद्र विकारकर केंद्रबार आने । उस समय केवल और रूपकोंके स्थान यह सारा अस्थान वारोंने सरे हुए क्षप्रकारकेन व्यवकारके सम्पन कोचा पाने रूपता राज वक्रीयनी व्यानकोनीने उन सबके क्षेत्रमें क्रुडे क्षेत्रम विश्वास कार्यक्रमाने बीवनकार्यने बद्धा, 'समझ । जार वी और पुरुवेकी नैवरिके अधी शक्त परिचित है, इसरिको में सम्बद्धी कोई केव नहीं केवे; बिह्नू आप केरी बाद सुनिये । बह निरक्त नरियोक क्षय सभी अभिनोके भीतर कर का है। बहै के क्षेत्र कोई पर किया हो तो यह की प्राणीको हर के। बीरवार ! भारे की बदानें भी जानके सिवा किसी और पुरुषक किया न किया हो हो इन देखाओंके साधी हैनेक तक को स्वेचन को ( का कहा बड़ा, है एक । है

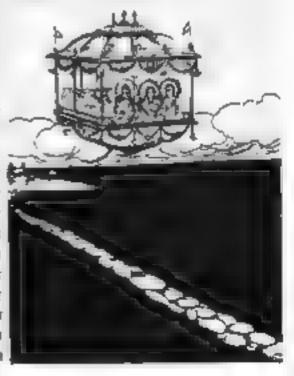
निरसर गरिवरित बाहु है। सीध संबद्धा निवालेक है। हुन क्षानी प्राथिको सीमान करे ।" अप्रिने कक, "स्कृतका । वै प्रतिकोंके सरीको पीतर सहस है, जन्म में अधिकोची बहुत कुर करोच्ये भी कारत है: मैं सार कहत है कि वेपिलोचा बार भी अपराय नहीं है।' करना चेते, 'राज्य । समार क्रोंने सा सुक्ते हैं अस्य केंग्रे हैं, में विकार्यन क्रमे महात 🖟 हुए विकित्सकुमारीको अञ्चल परते ( स्थानकी कहा, 'रहुवीर | इस्ते देखा, कवर्व, सर्व, यक्ष, क्रमा और बहुवियोचे कह राजनका का किया है। मेरे काफे प्रकारते क्ष अवस्था राजी जीजेंके दिनों सनका हो का वा । विस्ती प्रात्तवार की पुर प्रमाने हैंने इस करेंची लेख का है की। इस दुवरे अपने पानके किये के प्रोक्रमके एवं ना मताकृतको प्राप्तात की है पालकोची यह कर से ही। एकाओं पहले हैं का करा है एक साहित की है किसे प्रत्योच्या प्रीतः सर्वारे प्रयूक्ते विका तेन करेला से के हिल्ला अन्यस्य के रीवाजे हात्ये के व्यक्ति हैं जाति वहन केवली एक । कुछ निर्मा सकारची पहुत कर करे और मीताको जीवार का छ। इस्ते देवकानिक वक् नार्ध करन किया है।" कुरवाले बढ़ते हते, "बात है में कुक्ता किन प्रकार है। में प्रकार बढ़ा जान है, प्रकार कार्यान

हें। में तुने आता देश हैं कि तब हुन अखेनाका एकं करें।' का एकती बोले, महराब ! महि आप मेरे क्रिकी है से में आवादों प्रकार कथा है। में कारकों कारणे अन सुरक्षपुरी अखेनाको कारण।'

महंत्रकेश्व वहां हैं—एक्ट् | विर स्वयंत्रे सव हे इस महार सीरोक्तरोहे जिले, येते इस इस्तर्वते निर्मा है। इसके पहला महादूक्त कीरायको स्विक्ताओ अवीह मह दिया और विकार सक्तरोको पर और अवहारी मही किया। यह सब है पहलेश प्रश्नात प्रमान मही उसने पहले किया। यह सब है पहलेश प्रश्नात प्रमान मही उसने पहले के पहलेशे कार्य प्रश्नात म है और स्वार्थित हिस्सी है। इस प्रमान है से दिन की ओ प्रमान स्वार्थित के प्रमान की साम है से दिन की ओ प्रमान स्वार्थित के प्रमान की साम सीरायको सीराई की ह्यान्तरीको प्रमान की है की। इस प्रमान सीरायकारी सीराई की ह्यान्तरीको प्रमान की है की। इस प्रमान सीरायकारी सीराई की ह्यान्तरीको प्रमान की है की है। वहां सीरायक ह्यान सीरायक है। की सीरा की सीरायको स्वार्थित की है। वहां साम के सीरायको है।

## श्रीरामचनुत्रीका अयोध्यामें लौटना और राज्याभिषेक

प्रत्ये प्रकृत विभीवन्त्रे सम्बन्धि से सीतन्त्रकारी स्कूली रक्षाय प्रथम किया और बिर क्रांस्की सभी प्रमुख कारोंके स्वीध आन्यक्रकारी मुख्य किवारण बैठकर हेतुके कार होकर समुक्ती कर मित्रा । समुक्ती इस और शासर क्यूंटेन व्यक्ते व्यक्ते अस्ते कृत्य-कृत्य सम्बन्धेत स्त्रीत प्रापंद विरक्ष था, महीरद विकास विरक्ष । विद परवस्त्रीय करवान् ग्रंथने कांची केंद्र केंद्रर करवा कि और करवेंची र्वता करते किए किया। जब राज रीव-कार करे को से आव विश्वीपम और सुर्वाको सर्वत पुरुष विश्वासाय विक्रिक्तापुरीको करे। अस्ति सामानिको सम्बर्ध रक्तीकाला दिवारि करते थे। विशेषको खेळा क्टोरे पहलू परकारी अञ्चलो पुरस्क-सहर अधिरेक किया । किर से समझे साम विसे समस्तानीके करिए, विस राती अर्थ थे, अर्थये, अध्ये राजकारीको करे । सक्केक्के कृतीय पर्वत्वाद करोंने इत्यान्त्रीयो अवन कु कालार धरतीयीके पास चेवा । या इनुकर्मी सक्ती-कुर जन्म पनेपाट प्रयक्ति और उन्हें क्यांके पुरस्कारक क्रि समानार पुराबार और आने से सम स्वेप परिवारणे पहिने ।



कार्याने हेका कि चलकी चीतका चाने हुए हैं। उनका चरीर र्वताहे परा हुआ है और वे प्रभुवार्ष हामने रहे जनान्तर बैंटे हैं। यस और समुक्ते निकास परन परास्थी रहनकारी र्वार लहरूको गई प्रसा हुए। किर पता और प्रपुत भी अपने को पार्टी मिले। कान्योग्येके स्थान करके पी परा-प्रकृतको बहा इनं हुना । स्वयंत्र प्रकारिने वहं

मनपर्व }



आरम्प्से प्रम्यान् राज्यके अपने कस करोड्स्करने एक हुना धनम्ब राज्य पृत्तिय दिया । जिल विष्णुकेतराज्यके साम्बन्धकारा

[ पुरुषीया अनेपर परिश्व और व्यवस्थ हेरोने निरम्पर पुर्वकोचीत प्रकार् स्वया स्थापिकेस क्रिया।

आधिकेक हो बानेपर औरएमक्यापि कविराध सुर्वाण और कुरस्थानका विभोजनको पर कारेकी राजा है। धनकान्ते तमा-प्रकार पोलोधे प्रस्ता प्रकार विकार इससे स्था करें अस्य और सारप्युक्त देशों से उसके पर्याप सम्प्राप्त औं किए किया। इस स्थान राजने निवृद्धनेने को यह है कुन हुआ। पिर पुष्पक विश्वनको पूजा कर को कुनेरजीको है है हिना करा देवनियोगी पहामकों गोमती नहींचे तीरपर क्षा अनुष्येत पत्र वित्ये, विश्वर्थ अक्षाविन्तेके वित्ये हर प्राप्य 1940 WH WE W.

क्षंत्रोक्ष करे है—स्कृत्य पुनिहर । इस प्रकार कृतिकारणे अञ्चलित पदानमें औरत्यवस्ता गरमाने काम का मर्गकर का चेन पुत्रे हैं। पुरुषिक । पुर galler हो, फोक्ट कर करो; हम अपने पुलबारके करेते अल्ला कर देरेकोरे कर्गार कर के है। तुकार इसमें अनुसार को अवस्था नहीं है। इस संस्थरपूर्ण मार्गने से इसके प्रतिक रूपने देखक और असुरोको आग्त पक्ष 🕯 र मिल् जिस प्रसार प्रमाने कंपनीयों संस्थानको प्रशासका नाम किया का, क्षा अवस्य अपने इन केन्द्रस्य बनुर्वार प्राइपोनी स्वाप्यवासे **हर अपने सभी शहरतेयां संयाममें पराक्ष करोगे** । राम**में** को क्रोक्टर के मध्यार करावारी राज्याची पुरुषे मास्या कारकोबोको से काले थे। इनके एकावक यो केवार पानर और के ही है। इन क्या करनेपर तुम विचार करें।

वैज्ञानकार्थं कार्ये हैं-इस प्रकार महिन्यम् मार्काण्येत-की एक पुरिकार्ध की केवल।

#### मावित्रीचरित्र—सावित्रीका जन्म और विवाह

स्रोक होता है बैस्त न से कपने लिये होता है, न इन चरान्येके हिनो और र एक किर सामेके दिनों हो । यह नेसी परितास है, बैसी क्या कोई एउटी प्रत्यक्ती राधे भी अपने पूर्व क्यों देखी क स्ती है ?

मर्काचेनकोने वहर-स्थल् । राजकाना स्ट्रीकीने किस प्रकार के कुलकारियोक्त परंद सीधानक प्रतिक्रका सुबार जार किया था, बढ़ मैं क्यार है क्यों। कारेकों अक्रमीन्यमका एक बहा ही वार्मिक और अक्रमानेकी राज

च्यारे, पुरव्याचे और देशवाधियोगा जिल, समक्ष ज्ञाणियोके क्षेत्रमें तरपर स्वमेकस्थ और श्रमासीस वा। जर निमयनिष्ट क्याकी कर्महोत्त्व ज्येष्ट क्योच्ये गर्म रहा उद्देश वद्यासम्ब आहे। एक कम्मानको कना अपन हो। समाने प्रसान क्रेकर कर कंपके वारक्यादि सम संस्थार निमे। यह कन्या प्रतिकृषेके कन्यापा स्थान करनेपर सावित्री वेटीने ही जल्द क्षेत्रत है की; इस्टीराने ब्याइनॉने और राजाने साका कर 'कवितो' रहा ।

जुर्तियती स्वकृतिके सम्मन था। अन्यः धीरे-धीरे यहने रहनी । था। यह अत्यन उद्यासून्य, सत्यनित्, विक्षेत्रिय, सुनी, विकासम्य उसने मुख्यसम्य प्रमेश विका। कथायी मुख्यी



हुँ वेकार प्राप्त अवयति को विक्रित हुए उन्होंने सावितीसे पड़ा, 'वेडी | जब सु विवाहके बोग्य हो नहीं है, इस्तरिये कर्य ही जपने पोग्य कोई पर कोग है। वर्गक्रकार्यी ऐसी आहा है कि विवाहके बोग्य हो सर्वेयर को क्राय्यका मूर्टी करता, यह पीत विश्वकार पड़ा है और प्रतिके पर कर्वकर क्षित्र करता, यह पीत विश्वकार पड़ा है और प्रतिके पर कर्वकर इस विकास गामका को प्रस्त नहीं करता वह पुत्र निक्किय है। उसार यू पीत ही पर्वकी कोग कर के और ऐसा कर, जिससे में क्षेत्र आहे पूर्व अधियोको अक्रा है कि 'अववर्षण सक्तर उन्होंने अपने मूहे प्रतिकोको अक्रा ही कि 'अववर्षण सक्तरी नेकर सामित्रिये साम कर्य !'

त्यांकनी सामितीने कुछ सकुमाने हुए निवासी साहा सीमार को और उनके सरलोंने नवस्तार कर हमलेके रहने कुमार कुट मिननोंके साम करकी स्तेष करनेके दिन्दें कुछ है। यह राजविंगोंके राजनीय अनेकानेने जाते और उस सामनोंग कुछ पुरुषोंके करकोंकी क्यांच कर किर सम्बद्धाः आप सब मनोंगे की विकासी रही। इस कब यह सामि सीमोंने सेंड सहायांको पन-साम करती विकास देखोंने क्यांने स्वास स्ते

राजन् ! एक जिन महराज अक्षानी अन्त्री सामानें कैठे हुए देवर्षि पास्त्री करों कर यो थे ! उसी समय न्यांजांके स्थान सामित्री समयह सीवाँमें विकासकर अपने विकास कर पहुँची । वहाँ विवासो नारवांजीने सामानेंठे हुए देवरकर उसने सेनोड़ोके बरगोर्ने प्रमान किया । उसे देवरकर नारदानिने पुरस् 'राजन् ? जारको यह पुत्ते यहाँ जाने वो और अब कहाँ। अब रही है ? यह मुक्ती है गाने है, फिर भी जार किसी कर्मा हान्य हान्या विषय करों नहीं करते ?' जवपतिने यहा, 'हमे मैंने हसी मानके दिन्दे केवा का और यह आज है स्पेटी है। कान हसीसे एकिये हमने बिसा मरायो पूरा है।' इस निकाल यह कहाँको एकिये हमने बिसा मरायो पूरा है।' इस निकाल यह कहाँको है। समस्त हम मुसान सुना में समीसीरे अन्तर्थ कार मानका कहा — 'सामकोहसे



कानो विकास एक को सर्वास राज थे। बोई ये असे हे को थे। इस जनार आयी जाने जानेरे और पुन्ती सर्वास्थ्य होनेने अन्तर कारा उनके पुनेशह एक प्रदेशी राजने अन्यर प्रमा हर विका। इस अपने संस्कृत पुन और स्वानि उन्हेंस ये काने जारे अन्ये और मो-नोई स्वान्स सारा काने हुए कारम काने राने। उनके हुआर सम्बार, से उस मानों को हुए को हे को है, मेरे अनुसार हैं और मैरे काने अधीको अपने परिस्तानो साम हिमा है।

क दुस्कर करानी कह—शकर ! भई शेलकी शह है। इस ! सामितीयों के मही कुछ है गयी, के इसने किया बारे हैं कुछकर सन्वाकर सरकार्त्कों का सिमा ! इस कुमारके विवा साम मोतारों हैं और माता भी सामाध्यक ही काती है। इसीने साहानोंने इसका नाम 'सामाप्त' रहा है।

करने पूर्ण-अन्तर, इस संबंध अपने विवास त्यक्ता राजकृत्वर सरकान् तेवली, बुद्धिकन्, क्षणाम् और बुद्धिक से है प

कारची केरे-बद्ध इस्कोरका और 90 पूर्वी समान केवली, कारपतिके समार परिचयर, प्राप्ते समार कीर, प्रवर्तके समान समाजीत, रनिसंगके समान सार, जारिनके पुर हिकिके सुरान प्रक्रमा और सम्बद्धी, प्रमालिक सम्बन कार, प्रमानके समार रिकार्शन और अधि-वेदामारोके समाय अस्तितिय सम्बन्धन है। यह विनेतिया है, परान्याच्या है, मुरबीर है, साववारी है, निवन्त्रकार है, इंग्लॉबीन है, स्वाववीर है और देवारों है। इस और चीरानें को हर स्थानकोन इंक्रियों असे विकार देश कहा है कि अभी अस्तरकार निरमार निर्माण सारा है और अपने काफी कार्यानर निर्माण है यको है।

अक्टबीने क्या-नामक् । अस्य में अर्थ समी मुख्येते सब्दा करा हो है। अब बारे कार्य कोई दोन हो के मे भी नही मरामाने ।

बल्दवरि का-कार्वे केवल एक है केर है; विद्यु अस्ते काने को पूर को हर है तथा किसी उपलक्षर में को निपृष्ट भूति विकास सम्बद्धाः। अस्तिः विकासनी अर्थेर कोर्न केन स्त्री है। यह केर यह है कि कारने एक को कर समस्याहरी अन् समाप्त के स्थापने और यह सेकाल सर देना।

हर क्याने स्वयंत्रीये क्या-न्यामिके ! वर्षी का ( वेदर, स् हिंदर क्षा और मिल्ही कुल्टि बाम्बी क्रोम बार । देवलि पान्त्रमी पुराने कहे हैं कि सामान्य में सरकार है, यह एक वर्ग के क्षे वेक्स्पर कर देखा।

स्वीतीरे वक्-विकारे । वक्-वचनारिका दूसक एक बार है जाते आला होता है, बन्बादन एक बार है किया बाह्य है और 'की दिला' ऐस्ट बंबारन की एक कर है होता है। ये और करें एक-एस बार ही हाम करती है। अब ही किसे मेरे एक बार साम कर निम्य-मह सैप्पेंग हो अवक सरमानु तथा जुनावार् हो अवकी गुरुकीर-वही केर भीते होत्यः किसी अन्य पुरस्को में नहीं पर सम्बर्ध । पहले मनते निक्रण करके किन कारीसे कहा करत है और उसके बाद कर्नक्षा किया बाता है। अतः की तिने से पन है करन जमाना है।

उरहर्ज बोरो--राजन् । सुकारी पुनी सार्विजीकी सुनि Republicus & spoliet più facili di secre par mili विवरित भी किया जा सकता : सारकारों के-के पूर्व 🕻 वे दिस्सी इसरे प्राथमें हैं भी नहीं। तरफ पढ़े भी नहीं अवह कार प्राप्त है कि अंग औ सम्बद्धन का है।

और मिली जबार कारी नहीं का इन्हर्स । असः में ऐसा ही कर्मन । मेरे से साम से पर है।

किर सन्वयुक्ति निवर्ण नाम्बीकी अञ्चली है क्रिकेकर्व प्रथा एक अक्रपतिने तम वैक्किक प्रान्ती कारीत करकी और कर 1860 अस प्रतेतिको सहित सकी क्रीकरेको कुमका सब दिन्ने कन्तके स्ट्रीत प्रस्तान किया। कर एक परित करने राज्य कुमानेनके सामानार चाँने से प्रमुक्तिक राज्य केश्व से उन राजकित करा गर्ने । को उन्हेंने नेवहीन पास श्रीमहेनको साम्बन्धके रीचे एक काले अमरकार मेटे देखा। एक अक्टबीने एवर्नि क्रमांच्या प्रकार प्रश्न की और विरोध क्रमांचे उने अवस परिवास किया। वर्णन रामधिने अभी और आसन वेपार राज्यस्य सामार विका स्ट्रेर प्राप्त, 'बरीचे, फिल निवित्तरे प्रकारेकी क्रम की ?" वर अक्पतिने कहा, 'राजरें ! मेरी क सारियों मानवी एक कामती कामा है। इसे अपने नामेंस अवसर अस्य अस्ती पुरुषको कार्य सीवार सीविने (

क्रालेनो ब्या-का राजनो पर हो क्रेड हैं और पार्ट क्यों सामा संक्रमकेंद्र अधिकतेता संकर व्यक्ति माते हैं। अवनी क्या हे पर पर पर पर परने वेने भी है। य क्षा अकल्पे क्यानको पुत्रको स्थान करती हो कैसे 100 2

सक्ताने का-राज्या श्रुप्त और प्रश्न से काने-कानेकारे हैं, इस बातको में और मेरी पूरी केनी कानो है। की-जैसे अन्तरीरों अल्प्यों देखें बात नहीं कहते चाहिले, दें हो का प्रयान निवास करके ही आयोह पास आसा है।

कार्यन केरे-कार । मैं से चले से आर्थ्ड संभ राज्य करन पाइट था, जिल्ह राज्यक हेनेके करण कि क्रमध जिल्हा केंद्र दिन का जब की नेरी जानेकी व्यक्तिसम्बद्ध क्रमं हो पूर्ण होत्य प्राथमी है तो ऐसा हो हो । आप ते मेरे अचीव स्वीति है।

क्षान्तर का कालमें क्षतेकते हमी क्षानतेके समावर केने कारती विकास विकास नामा करना और क्याचेन्य देशिते पर-कन्याची आकृत्य आहे भी हिये। प्राचे पहार कर अवनी को अन्त्रको अन्ते धानकी स्केट अले । अर सर्वपुरस्थाना पर्याची प्रयत्न सरम्बन्हरी वर्षे प्रशास हाँ और अञ्च भवनम वर पावर वानिसेको को बात उपनय हुआ। विवासे करे करेनर सावितीये शह ज्यापुरुष उतार दिने और मान्यत-नव तक गेरद कराडे पहन तियो । सामग्रे रोगा, पूजा, विश्वय, संबंध और समग्रे पन्छे प्रकृते कहा—आहते को बात बढ़ी है, यह बहुत दीया है । अनुस्कर काम सम्मेरी संभीकी बहुत संजीप हुआ। असने इतिरक्ष सेना और यन प्रकारके नकानुकर्नेहरी समाके और देवाले एकन समाप करते हुए अकट जानीका संबद करके समुख्यीको संसुह विभाग हाले प्रचार गहर जानक,

क्राचेष्ट्रकारका, प्राप्ति और एकायानें क्षेत्रा करके परिवेशको अक्षा क्रिकः । इस अकार का कारायाने प्राप्तर समझ करते पूर् करें मुख्य सम्बद्ध क्षेत्रा ।

#### सावित्रीद्वारा सत्ववान्करे जीवनदान

पान बहुत हैं। बोर गर्ने से अपने पह पूजन भी सर है । अपने प गया, बिता दिन कि सामान्य वर्षनेकार का सामिती एक-एक दिन निनदी सूची भी और सान्ये द्वाराने जन्मनीका मकर राह्य हो करा रहता थे। यह आने देखा कि अने हरो केंचे दिन मरना है हो करने हीन कैनका इस करना विकास और मह रात-दिन विवार क्षेत्रार बैटी रही : ब्लाट महिनेक्के अन्य प्रयाग करेंगे, इस कैप्सारे सार्वितीये केंग्रे-केंद्र के 🗪 🗪 विशापी । इसरे मिर पढ़ सोजकर कि साथ है पढ़ मैन है, साने क्ष्मीओर कर क्षम करा रहते नहते जनने तम अधिक पूर्ण क्रमात किये और प्राप्तिक सर्विने सक्तियों ही। किर समी प्रकृत, को-भो, साथ और प्रमुख्यों करना: राजान कर इंदरपूर्वक हाथ बोह्यार कही हो। इस स्थेकनी स्थेकती प्रभी शर्माक्ष्मोंने उसे अवेक्ष्मके कुमक कुम उस्त्रीमाँद दिवे और प्राणितीये स्पत्रिक्योची क्य प्राणीको 'हिला है है' इक मेंबर बहुक्योंको विका क्षेत्रर प्रकृत किया। प्रती सकर प्रातकार कालेश कालाई रहावर वाले स्रीतक सामेन्द्रे हैंबार पूजा । एवं सामितीये बाह्य, "अवन अनेवरे प पानी, "में भी आको साथ प्रतृति ।"सम्बद्धे बहा, 'सिने । तुर वहते कारी करने नहीं नहीं हो, बनका राज्य बड़ा करिन होता है और हुए उरवासके करना कृति हो स्त्री हो; निर इस निवार मार्गि विक्र ही कैसे क्लोगी हैं स्वतिकों कोली, 'क्रम्यकों मारण मुक्ते मिली प्रमारको क्रिकिटम क कमान नहीं है, कारोट रिये नामें बहुत कराय है। इसकेने जार हेरीको का ।' सरकार्त्त कहा, 'की तुने करनेका सामा है से मैं से को तुन्हें अच्छा लगे, करनेको डैकर है, किंगू दूस करानी और रिजानीके की अलग में को हो

त्तव इविद्यांने अपने प्राप्त-समुख्यो प्रणान करके कहा, 'मेरे स्थानी कराति समोगो किये करने चा रहे हैं। यदि समागी और समुख्यी अपन में में आध में भी इक्के स्थान करने करने हैं।' इसकर सुमारेको कहा, 'क्कोरे निवाले करकार करने रह सामिती कह करकार समारे समागन करनेका स्थान कही है। उसके किसी भी करके दिन्ने समाग करनेका स्थान कही है। उसके साम इसकी इकार समाग पूरी होनो कहिने। अच्छा, बेटी ! ह का, कारीं समागनकी सैकार रकता।'

इस प्रकार सामे-समुरको अञ्च पानर प्रवासिको सामित्री



क्षेत्री थी, सिंदू अलो झारने दुःवाकी ज्यास क्या पूर्व थी। और राजकार्य काले से अलग वाधि स्वीत पान केरकर एक होकरी पर हो और निश्च का स्थादिनों काले लगा। स्थादी कालो-कालो परिवाको काला हो प्रश्नित उस काल और इसीसे उसके सिराये को होने स्था। इस अकार अवले पीड़िय होकर जाने साथियोको पास ज्यास कार, डिले। अस्स सब्दी कारनेके परिवामसे मेरे सिराये की होने लगा है जात कारे अनुनेने और झालने भी वाय-सा होता है; जुड़े कारि हाल अल्पाय-मा कान कारा है और ऐसा मासूब होता है कि कारों भी सिराये कोई कही हैए सा है। कारकारी ! अस में स्थेत कारका है, बैटनेकी मुक्तने स्वित नहीं है।'

व्या सुनवार समीती अपने परिनेत वास आयी और सरका तिर चेदोने रककर पूर्वीपर वेट चर्चा। किर वह नास्त्रीकी बाव वाद करके का पुतुर्ग, क्रम और दिल्का विचार करने हर्नी । हरतेहर्ने को वहाँ एव पुरुष विश्वतर्ग दिया । अह करू इस्त अहे था, जल्दे किरार पुतुष्ट या और समय देवाडी होनेके कारण या मुस्तिक, कुमी क्रमार यार यहा या ।



असमी हारीर एकान और शुका का, नेत उम्बर-रक्तर थे, हामने क्रम का और देवानेने का बड़ा कमानक कान क्रम का ! को देवारे ही शामितीने सीरेले प्रक्रिया दिन भूमिनर रेस विभा और प्रक्रमा कारी हो गयो । अस्का हाम क्रमाने राजा और उसने अस्तर असी होका उससे हाम क्रमान क्रम, "मैं संपन्नती हैं काम कोई देवार हैं, क्रमोंकि अस्तरका क्रम क्रमान स्मृत्यका-सा वहीं हैं। यह सामग्री हामा हो से सामने क्रमा सीन हैं और क्रमा करना क्रमा है।"

करण्यने वज्ञ — साविती है तु विकास और स्थानियों है, इसरियों में हुआरे शब्दाकर कर कुछ है तु पूछे करण्य कर । तेरे पति इस प्रकारकर सरकारको अस्तु स्थान है पूछी है, अस में इसे बाहामें सोकार के स्थान्त । बड़ी में करण्य बाह्य है।

सारियों कहा—करावन् । कि से ऐसा सुध्य है कि महाभोधी सेनेके रिने आपके दूर आप करते हैं। वहाँ सर्व आप से कैसे प्रवारे ?

क्रपण केते - सरकार् वर्गात, क्रप्तार् और गुक्केक्ट

कपुर है। यह की कुटेक्सर से काने नानेकोना नहीं है। इसीसे में काने अपना है।

इसके बाद करायां भागार् सम्बाद्धे प्रशिक्षेत्रे प्रकृषे वैच दूस्त अंगुल्या परिकारमान की निकास । को विधा के स्थानको और का दिने। यह दूस्ताहुत स्वरिक्त की कार्यां के की बाद के। यह देशकर कार्यां क्या, 'सारिकी । यू त्रीर यह की प्रकृष्टि प्रक्रिय की की दूर्व यू व्यक्तिकोट स्वरूप्ते युक्त के पानी है। परिकेट की दिन्नी व्यक्तिक स्वरूप्त यह स्वर्थिक सर पूर्वत है।'

क्षांच्ये केलं—के चरित्रको नहीं भी से नामा मानगा अनवर नहीं ने कर्ष करेंगे, नहीं नहीं में नाम पाहिये नहीं क्षांक्रकार्य है। करवा, मुक्तिस, प्रतिवेद, स्तावस्थ और अनवती कृतकों केटे गरि-नहीं भी कर नहीं क्षांक्रो।

करण केरे—सामित्री । वेरी पार, अक्टर, प्यास्त एवं प्रीक्तोरे पुत्र कर पुत्रकर में बहुत अस्त हूँ : हू सम्बद्धकों पोक्तके रित्त और कोई की पर और से। वें हुते सम अस्तरक कर देखें किया है।

क्रियोंने पहल्लोंने सकुर राज्यका होकर नामें रहने तमें है और उनकी अभि की क्रियों रही है। हो से आरक्षी कुछड़े के उस्ता करें, जनकान हो कार्य और अधि राज्य सुनीव समान केनाकों हो कार्य।

करूक कोरो—साम्बी साविती । मैं हुते का कर देता है। जूने कैसर कहा है, कैसर ही होग्य। यू मार्ग करनेसे विशेषक-भी काम कहते हैं। तथा यू सीट का, निससे हुते विशेष क्यान व हो।

स्वति पह --विदेशों स्थीत द्वी हुए को स्था देशों है सबसा है। जहाँ भी सम्बन्ध सेने, जहें के दिस्त सरम होता: देनेहर ! जहां आप परिदेशों से पा है हैं, वह नेरे भी भी होने कहिने। इसके दिस्त भेड़े एवं सम और सुनिते। सर्वृत्योग्य से एक परवस सम्बन्ध भी सरमा सर्वीह होता है। सन्दे भी पहला उनके सम्बन्ध सेन हैं पाना है। जीवन्याना निकास कभी नहीं होता, अनः सर्वाद समुक्तिक हैं। साम सुन्य पानिते।

पराप्त केरो—श्वासियों ! हुने को दिलकी बात पड़ी है, बहु मेरे पराधी बड़ी हो दिन बात बड़ी है। जाले विद्वारोगी की वृद्धिका विव्यान होगा ! अतः हम शतकान्त्रे भीवनके विव्या मुख्यें की दूसरा बर बीच से।

करियोंने स्था—खाले मेरे महित्यान् समुरबीका को राज्य और दिल्या राज्य है, स्थानमें साने ही आह हो साथ और के अपने कर्मका उत्तर व करि—यह मैं अपनो कृतरा कर मीराही हैं। कारण बोटो—राजा पुरस्कोर पीठा है जानो-जान संबंध प्राप्त करेंगे और वे अपने पार्वका भी जान नहीं फोरेंगे। जान सेरी प्रकार पूरी हो नागी; सू सीट का, विवासे सुझे मार्थ कर न हों।

स्वितिने वदा—के ! इस वार्थ प्रणाण साम निकाले प्रेंग्स बारों हैं और सामा निकास सामें को सामेंह पान भी हैंते हैं, इसीने अब 'बन' रामने निकास हैं। अब मैं में बात बाती है, जो सुनिने। बाद बान और वर्धने बावस प्राणियोंके प्रति आहेत, सामार कृत बारम और वन हैत—या सामुक्तीया सामानानों है। और इस प्रणाणका में प्रणा: बहु सभी सोच्ह है—बानो बहुन अवसे हमिके अनुसार कोम्सलका सामि बातों हैं। किंतु से सामुक्त है, में से असने पास आने बहुओरर भी कृत बातों हैं।

कराज कोरों—सारकारी | जाके आवर्षको कैने जा कार आरम्प केता है, केट का जात केले ही दिन कार्यकारी है। इस सरकार्क जीवनके दिन्दा कृष्टित कोर्ड अर्थाह का प्रांत है।

शास्त्रकोरे सहा—मी निका राजा अध्यनते मुख्यीन है। उनके अपने मुख्यारे वृद्धि करनेवाले की औरण कुछ हो—च्या वै सीरसर कर परिवारी है।

करवन केरो—कस्तुती ( वेरे निकार कुरावनी कृति, करतेशासे की रेकारी पुत्र होंगे। अब देशी इका पूर्ण के गर्णा, सू और चंद्र अंध कहा हुए यह गर्णा है।

स्वित्ते कहा—विकास संतिष्ठ सारण का हुक हों सी जार पहली। मेरा नर से कहा हु-दूरको के राजका है। आ: अब में जो नाम पहली है, को की हुन्तेको हुना सारे। आम विकास (शूर्य) के प्राचनी हु। है, हस्तिन्ने सीम्हारण सारकों 'नेकाम' कहा है। अब पहलिकानिके कैश्वारण सारकों 'नेकाम' कहा है। अब पहलिकानिके कैश्वारण सारकों है। हसके तिका पहुंच आयुक्तेका केला विकास करता है, केला अवस्था की पहला आयुक्तेका केला हिमास करता है, केला अवस्था की पहला करता है। और किशास करता है, केला अवस्था की पहला करता है। और किशास करता है, केला अवस्था की पहला करता है। अरेट हिमास करते अविकास के स्वरूप है।

क्यान केटं—सून्ते ! दूने केटी बाद करी है, केटी केंट हैं। दिखा और किसीके पूरते नहीं सूनी । इससे में क्यू जाता हैं। यू इस समकार्क बीकर्क दिवा कोई की केंवा का की से और कारी और का।

क्रिकेट का—मेरे प्रत्यक्ति इस कुल्की पृति करनेको को काकट् और परात्रको से औरस कु इो—का में केटा का गोगते हैं।

कारण क्षेत्रे—अवस्ते ! वेरे यात और परातक्षी स्त्यात वी कु होते, विको क्को क्का अन्य आप होता । उपयुक्ते ! अब वृ और आ, विससी हारे बकान न हो । मू पहुर पूर का वर्षा है !

सारितीर यह—मानुष्योगी वृति विराद धारी है यह सारिती है, से बानी दुर्जित का मानित नहीं होते । सानुष्योगी सारित की सानुष्योग समाना होता है, यह बानी विन्यत नहीं होता और संस्थेत संस्थेत बानी जार भी नहीं होता । सानुष्य सार्वाद सामग्रे पृथ्वेतों भी सारो सारित सुर्व की है, से अपने सार्वाद प्राथानों पृथ्वेतों भी सारो सारित सुर्व है। संस है पूर्व और अधिकार्ता अस्यार है, सार्व भीवने सहार सानुष्योगी नानी संद नहीं होता । यह सम्यान सामग्रेत सानुष्योगी मेनी है—ऐसा स्वान्यत सानुष्य गरिनकार सारो है और सानुष्यास्थ्यों और सामी हों। यह समाने।

क्ताव नेते—परिवर्त । केते-केते वृत्युक्ते पानीर अवसे कृत को विकास तिय सम्पोधानी सर्वापुक्त कर्ते सुमाने सबसे हैं, केते-केते हो तेरे जीन केते अधिकारिक ब्याह होती सबसे हैं। ताब वृत्युक्तते कोई अपून्य तार कीर से।

व्यक्ति वह—्ये क्या ! आको को पुते पुत-जारिका वर विका है, जा किया क्रम्यकार्गके पूर्ण वर्ती के क्यारा ! तक अप में वर्ता कर परितर्त है कि ये सरकार परित्त के क्रम : इसके उद्यक्तिया क्यार करा क्रेम, क्योंकि परित्त की क्रिया को में क्रमेंक मुक्तने हैं पहि क्रां है। परित्त किया पुते क्रिया के सूक्त किले, पुति असकी क्रमा पहि है। परित्त किया पुति असकी की क्रम्यका पति है। परित्त किया परि स्वकरी क्रमा को में स्वितिक स्वयुग्ध की महिला की आप की परित्रकार्त क्रिया को में स्वितिक स्वयुग्ध की महिला की आप की परित्रकार्त क्रिया को में हैं। अस्य में क्या पर प्रति की महिला क्रमा को में हैं। अस्य में की क्या पर प्रति की महिला क्रमा क्रमा की क्यारा है क्यार, इससे भी आपका है क्यार क्या क्रमा है

क्य सुनकर सुर्वेद्धां का को जाता हुए और 'ऐसा ही हैं' कहा हुए कारकान्सर कारण होता हैंचा। इसके कह के कारिकोर कारो होते, 'हे कुरानक्षित कारकारी। है, मैं देरे वरिको कोइटा हैं। अस का सर्वका नेरोग हे कारका। हु इसे का से का, इसके सची प्रवेश्य पूर्व होंगे। का सेरेस्ट्रीय बार औं कारक कीरिया सोगा समा कर्नपूर्वक कार्युक्त करके



क्षेत्रमं प्रतितं अस् धनेता। इससे तें पत्नेचे श्री कुत अवस इति (' इस अवस्य सामितीको पर केवर और को स्वैदायर अवसी कांग्रक अपने स्वेत्रमको पत्ने परे।

प्रभावको पने प्राप्ति इसमें प्राप्ति व्याप्ति प्राप्ति प्राप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति प्राप्ति व्याप्ति व्यापति व्याप्ति व्यापति व्यापति व्यापति व्यापति व्यापति व्यापति व्यापति व्यापति व्यापति वयापति वयाप

सारकपूरी कार—कीका है, काले । वेको, जब मेरे सिएमें की । नहीं है और न मेरे किसी और अंगमें फेड़ा हो है। नेस सार हरीर जबक असेरा होता है। में काइता हूं तुम्हारी कुम्मते बीवा ही अपने कुछु पाता-विसर्क सहीर कारे। सिम्हें। में किसी हिर

की है। करके जातानों नहीं जाता था। सन्तव होनेसे पहले हैं। तेथे जाता हुते जाहर जानेसे केन्द्र देती थी। हिन्में पी, जात में जाहरूसे जाहर कान्य से मेरे जाता-तिया मेंने दिन्में विश्वाने हुत जाते से और के जातीर होन्द्र आवानकारियों के हम से पूर्व हैहनेको जात हैं? में। अंतरहर कान्यनी | पुत्ते हम सम्बद्ध अपने अन्ते विश्वासी जीर कान्यों सेवाने स्वती हों दूर्वस्थापिर जावी नामानी विश्वासी किया हो पहें है, कानी अन्ते हरीरकी की गहीं है। मेरे पराव कृत्य परिवास कार्य-तिया मेरे सिल्ट आवा कितना संवास गढ़ पहें होंने | जावास मेरे माता-विश्व कीचित है, वर्णावस में भी परिवास कारण मिल्ट है।'

प्रोची का हुन्या सर्वती क्यों से न्यी। असे सरकार्क स्टांक, अने को क्योर सन्या हम रहा और सुर्व हम साथी कराने साम्बर की से पानी। सा



प्रमाणको स्था, 'गाँक । इस राहोनें आने-सामेवा आणाल होनेके बारण में इसने आधी नाह परिविध है, और अब पूर्वाचे कंपने होचार पात्रकारी परिवर्ध भी मैनारे साति है। इस बात विधा सामेवर मान मीन रहे थे, वही आ गया है; इसमिनों जब हीने इसे मानी पात्र बाते, हुस और सोम-विधार पात माने । मैं भी जब बात्रक और सामा हो गया है और माता-निकालों देवानेकी मी मुझे मानी है।' ऐसा बाह्यार मा बाली-साती असामार्थ और मानो हमा।

## शुमतोन और शैक्याकी चिन्ता, सत्त्रवान् और सावित्रीका आश्रममें पहुँचना तथा श्रमतोनका राज्य पाना

कर्मभोरको सहते है—एकन् १ हारी सीवने सुवक्तेनको । बोर्ड सारण नहीं है। पछि प्राप्त हो गयी और उन्हें कर मसूचे दिसानी हैने राजी ( पुरुषे न आनेते क्यें क्यी विश्वत व्हें और करी पैन्यके स्थित वे जो का जानगोर्ने प्रमान देशने तहे। किर उनके प्रक प्रमुख आवस्थाओं प्राह्मण आहे और जो बीरट केन्द्राव काके आह्मपाने से गये। बढ़ी बढ़े-बढ़े प्राह्मण अंगे अधीन शुक्रकारेकी तरक-सर्वाकी काराई सुरक्तार केर्न केंग्रावे करें। क्षेत्र था। असने कहा, "सरकान्त्रके की सर्वत्रके कर, प्रतिकारका और प्राचनांका केवन बारनेकारी है। इस्तीको बहु सन्तर बोरित होता।' एक कारे प्रक्रम पीतको पहा, 'वेरे अपूर्वेसक्ति केटीका जन्मका विका है और बहुत कराय औ भी है तथा कुनारकार्यने प्रकुषनंत्रसम् और पुर करा शामिको सह को जिल्ला है। इस करकार्क अकारने पूर्व हररोके मनकी बात करून हो बाते है। जार नेरी क्षा रख माने, सरकार अवस्थ मोरीन है।" किर सभी माने माने हते, सारकारको को सावितीने सर्वजनके प्रकार प्राप्ते the part from & and print the & & if great up, 'http:// service up flock fraft welch हराबार बारण निर्ण किया ही सरकारको संबंध गाँधी है। अस: मह अवस्य जीवित केना प्राप्ति हैं

का सरकार प्रतिनोते क्रालेको इस प्रकार स्थितको हो जन समानी बात परकार में मिनर हो गये । हान्ये पान ही है। यह समयानुके सहित सामिती वट नवी और ये केने प्रसार क्षेत्रे पूर् अक्षापने पूर्व गर्ने । उन्हें केवाचर अञ्चलोने कहा, 'तो राजप् । तुने कुत विश तका और के की बात है गर्ने ।" किर सारकाको पूज, "स्वरूपन् ! पूज भोगे साथ गर्थ है, जो पहले ही क्यों की लीह अर्ज ? हानी का बीक्नेयर फैसे और हो ? देशी क्या सहकर का पनी की ? रामकार । आज के कारे अपने चाल-निवा और प्रम समयो भी बढ़ी विकासे द्वार दिया, तो इस नहीं जनने क्या कारण हुआ। जस एक वाले व्याप्तके हो (

सरकारो बद्ध-में विकारी है उसके लेकर स्वर्थिक एकि एक था। वह बेनाने स्थाने बारो-करते मेर मिएने क्रू होने हत्या । उठ सम्ब देश बार बाह्य है कि का वेदरावेद कारण ही में बहुत देखान रहेला पूछ । हरूनी देर के मैं पतारे कमी जो सेचा । जान तम लोग किसी जकरूबी

नीतर केले—कार्याम् I हन्द्रते विका सुमत्तेनको अस्य सकार की प्रदा है गये है। हुई बाराविक कारवात पार नहीं है, में एक करों से क्रांबित कर समारी है। क्रांको ! क्को कुन प्रचलने प्राप्तान् प्रत्येको (स्थाननी) के क्रमान के सम्बाद है, को पर-प्रतिमालको महीका भी अन है। व अध्या सारम अवहन मानते हैं। इसे को सुन्तेनी stat & को बंधे सोमर्थन न हो से हमें भी पुरू हमा है।

अर्थकोरे कार-अपन मेला कारण यो है, मेली ही मात है। सारक क्रिका निका नहीं है समझ । वेरी यह भी सामके किनो नहीं है। अंदर को प्रता है, नहीं पुरार्ध है अन्य क्षांक्षिके । पारक्षिके पुत्रों का कहा विका जा कि अधूध्य किर होरे परिवर्त पूर्व होगी । यह दिन साथ आपा थी, इस्तेके मैंने इसे काने अवेदरे नहीं बाने दिया । यह में ओने हुए से ओ साहता, कारक अस्ते और इन्हें बोक्सर सीवन दिसाओं से बहे । की का क्यांक्रिय का वेप्योक्षण सुनि की। इसका अर्थने सुने परिव कर दिने, को सुनिये । सन्तरपत्तिकों केत और राज्य प्राप्त हों-को पर के के हैं, के निकारोचों की पर निर्देश और की पूर बारे प्राप्त हों-के के के प्राप्त परिवर्ध करके अनुसार भेरे क्षेत्रेय सारकारको पार से करेको नाम अस धर्म है। ubibant alem-mitele Reit if 42 un per fierer un : धाः अक्षानं निवासको वेनै आरमको सन न्यारण जात विधा ।

क्रांच्ये क्य-क्यां १ व् सुत्रील, जन्मील और भीक काररररकार्ध है। हुने कहर कुराने क्या किया है। एक क्यांत्रक श्रमकात प्रीता श्रम अध्यासन प्राति का करा था, से दने को प्राय रिप्प ।

वर्गनंतर्थ करते (-रावर् । वहाँ एकोला पूर् अनियोरे इस अकार उद्योग करके कोरास्थ्य सामितीया कारण किया हुआ एक और एक्ट्रायरको अनुसरि हेकर अवविकार अपने-अपने अवविकार को गये। इसरे दिन कारकोको समस समस्यांकरियोंने अन्वर ब्रमानेनो प्रका कि 'क्यों से एक का को अधिक मन्द्रीने पार अस्त्र है तका अनेद विक्री स्थानक और कमनको भी भीवित जो क्षेत्र है। प्रमुख्ये कारी सेना पान पनी है और सारी प्रमाने आपके रिकारों कुछना क्षेत्रर था निक्षण दिना है कि उन्हें सेवाल हें कारत न रोक्स है, ये हैं इसमें कर होते। समन् | हेल निक्रम सम्बंध हो हमें नहीं भेडा पता है। इस अवनेक किया न करें। इसी निर्मानने इमें अपनेरें देरी हो पनी और । पैकों से सम्बन्धि और अध्यक्षी बहुरक्षिकी क्षेत्रा साने हैं।

आपका यहर है, अब अका करनेवी कृत करियों। जनामें आपकी कर बोकिट कर है नहीं है। जान अन्ने बाग-दारोंके राज्यपर विस्कारणक अधिक कें।'



वितर एका दूसरहेनको नेजपुक और जान प्रशेषनात्त्र हैक्सर इन स्पर्धक नेज साम्रायंत्र किला के और उन्हेंने को हिस सुकाकर जानन किया । एकारे स्टायमंगे कुनेवाले पून् स्मायनीयार जान दिने । वहाँ भ्यूंकनेयर पुरिविताने नाई साम्याद्या कुन्नसंख्या एकारियोक्त किया और उनके पुन साम्याद कुन्नसंख्या एकारियोक्त किया और उनके पुन साम्याद कुन्नसंख्या पुन्तस्य बनाव्य । इसके बहुत समय कर साम्याद पुरि करनेवाले कुन्नस्य में, इसे स्वयंत्र कीर साम्यादिको रागे कुन्नस्य कुन्नस्य में, इसे स्वयंत्र कीर साम्यादिको रागे कुन्नसंख्या कुन्नस्य में, इसे स्वयंत्र कीर साम्यादिको रागे कुन्नसंख्या कुन्नस्य साम्यादिका, साम्यादिको साम्याद कुन्नस्य साम्यादिक स्वयंत्र क्षेत्रस्य साम्यादिको, क्षायन्त्रसंख्या की अस्य कुन्नस्य सम्याद सार किये ।

वैज्ञानकार्य व्यक्तं है—रामम् । इस जन्मर व्यक्तंकार्यके काम्यक्तंको कोच और वंताको तुम क्रेका व्यक्ता वृधिद्वित काम्यक्तको युने समे । यो पुरुष इस वस्त्र वर्षेण आधितीवरिकाचे अञ्चल्यंका सुनेत्र, यह वस्त्रत वर्षरकोटे विञ्ज क्रेको सुनी होता और वस्त्री कृषाचे वर्षी अंद्रित ।

#### खप्रमें ब्रह्मणवेषधारी सूर्यदेवकी कर्णको चेतावनी

वन्नेयको हुआ-बहुन् ! स्वेत्वानीने इसके वक्तवन्तर । पासुद्वर वृत्तिहरूते जो का व्यावद्वने स्वयं का का कि । पूर्व को कहा जारी एक कार्य सुता है और विस्तादी हुए विस्तीके सामने कर्जा की वहाँ करते, को की अर्थुको सामीने सामेगर में दूर कर हैगां। से बैक्तव्यवस्था ! कार्यका पहारक वृत्तिहरूको कार्यको कह जीन-सर्व कारी कर्ण कर, विस्तादी का विस्तिके अर्थ नात की वहाँ कार्यक थे ?

है अपन्यान कार्य है—पहलेश एका क्यांपन । इस पूछ हो है, अरः मै तुर्वे वह क्या सुनवा है उनकारिते मेरी बात कुने । का मान्यानोक बन्तासके कार्य को तीत गये और तेत्राची वर्ष अपन्यान कुछ को पांच्यानेके वितेषी इस कर्मने उनके कार्य और कुच्यान परिचानों नेवार हुए । का सुन्धिको इसका ऐसा विश्वार कार्य हुआ से ने कार्यक पास आने । आकृतारोकी और एक्यांची परिचार कार्य अन्यन्त निक्षित होकर एक सुन्दर विक्रिनेवार्य का्युक्त सेवार सोवे हुए थे । सुन्दिय पुराक्षेत्रका अस्यन्त द्वार्थ, होकर नेत्रांक (**क्षानके करने सकावनको उनके सामने आने और उनके** क्रिके रिने प्रायक्ती हर इस प्रधान व्याने साने, 'कारपादिगोर्थ होता स्थानक कर्य । मैं कोइनक दुस्तरे परंग क्षेत्रको कल कहात है, जानार स्थान हो। देखी, सामानीना हित करनेकी हकारो हैगराज हम स्वयुगने कार्य हुनारे यास कार्य और शुरुका चीपनेके रिप्ते आयोगे। वे रुकारे सम्बद्धको करने है क्या हारे संसारको भी तुन्हारे इस रिकारका पहर है कि किएने सायुक्तके मौगनेपर तुम आसी अनीह कहा दे की है और सर्व कमी किसीसे कुछ नहीं चौनते । बिद्ध चरि तुम अपने कपके साथ है अपने पूर इन क्रक और क्रम्बरवेको दे होने वो तुन्हारी सायु क्रीण हो कारणी और कुन्हारे कार पृत्युका अधिकार हो जायात । तुम तक करो, जन्मक सुकारे पास के करक और कुन्कल शेंगे, तुन्हें बुद्धमें कोई भी प्रजु नहीं जर सकता। ने स्वयंप क्रमा-क्रमान अनुसरे उत्पन्न हरू हैं: इसरियो पदि तुन्हें प्राण पहरे हैं के इसकी अवस्थ पता करनी चारिये।"



कारी पूर्व-जनवर् । तक वेरे और असन्य केर विकारों पूर्व पुत्रों कारोब कर में हैं। जी इक्त है से कार्यों इस स्मानकोटी अस्त सीम हैं ?

स्कानने कहा—हे तहा । मैं क्ष्मं हुं मैं केंक्स्प है तुने ऐसी सम्बद्धि है कहा हूँ। तुन मेरी क्षम कनका ऐसा है करो। इसीने तुन्कार विकेष कनकान है।

वार्त क्षेते—क्षा कर्म काकार काका है कुछे की वितास इकारों उनके कर के हैं से केव काव करकान से शिक्षित हैं हैं; किंदु जार मेरी का क्षांक सुरुवेची कृष्य करें। शाम करहावक के हैं, जारकों मतम स्वते हुए में केव्यूकेंक का निकेश करका काता है कि की अंध कार करते हैं तो इस जारते पूछे विवासित न करें। सूच्येव । सेकारने की इस जारते सभी स्वेप कानते हैं कि में जेव क्षांक्राने के सींग्लेगर अपने जान की समझ्य क्षा कर सकता है। कर केवार हुए पाक्षारोंके क्षांक्र क्षांक्र कर सकता है। कर करते मेरे पास पिक्षा वींगलेके क्षित्र जानोंगे के में उन्हें अपने में दिवा कावा और कुम्बार अवदान ने दुवा। इससे सैंगों सोंक्सोंने जो मेरा जान के यह है, जो कहा नहीं स्थेक।

कें-वेदे लेखेके पराची है आह करने पाहिने, अमेंकी वहीं । इंदरायें पहाली होका हो नरण पादिने ।

तृपि कहा—कर्म ! तुम देवताओं मी माने नहीं मान सम्बद्धे ! इसरियों इसमें को स्त्रम है, यह में तुमें नहीं बताना स्वाद्धाः समय कानेश तुमें यह कर्म है मानून हो वायात ! सित् में दूससे किए भी बहुता है कि दूम मौतनेगर भी इसको साने दुस्तान कर हैया, वर्गीक इस दुस्तानेसे मूल स्वोत्तर को सानूर और सम्बद्ध क्या क्या इस की तुम्हें पुद्धि स्वास्त्र करनेने समर्थ नहीं है। इसरियों पदि तुम सानूनको मीता। सान्नों हो सो में हिला दुस्तान इसको करानि कर हैना।

कार का-कृतिक ! आश्रोद जीव केरी मेती वर्षित है, बहु उत्तर काओ है है, वका बहु बात भी आश्रोद कियी नहीं है कि मेरे दिन्ने अनेत कुछ भी नहीं है। प्रत्यन्त ! आश्रोद और मेरा अंक्षा अनुदान है वैचा जेन से बी, पुत, शरीर और कुछोंदे और भी भूति है। इसमें भी प्रमेह नहीं कि कानुशासोका अस्ते पतार्थित अनुदान दार है करता है। अस्त इस करेते आप में मेरे दिन्ती कहा कह दो है, उसके दिन्ते में आश्रम्भे दिन हम्बाद है और आश्रम्भे जनक पतार्थ हुए बार-बार बाई इसकी करता है कि अस्त मेरा अपरांध कुछ करे बच्च मेरे इस अनक अनुस्तेष्ठ करें, विसरों कि काम बार करनेतर में इसकी अपने प्राप्त भी कुछ कर ताहै।

तुर्व केले—अका, यहि हुए काले वे दिख कारण और कुमान के है से अपनी विकास दिलों उनसे यह प्रार्थना करना कि विकास | अस्य युक्ते अपनी कहुनोंका संहर कानेनाकों असेन इस्ति दिखिए, उस में आपको कारण और कुमान हैए। ' महत्त्वको इस्ति यह बाँत यही प्रसर है। कारण यह स्थित्ते-इसारों क्ष्युनोंका संहर महि बार लेती क्ष्युन कोनोक्तोंके इसमें स्टेटकर नहीं आही।

हेला बद्धकर जवकर हुई असर्वार हो नवे। दूसरे दिन का क्रका करनेके अन्तार कर्मने वे रख वाते सूर्यनारायगरे वहीं। नवें शुरूका परावर परावरने मुस्कारकर कहा, 'यह कोस क्रक ही नहीं है, तब तबी बटन है।' तब कर्म भी उन करोको क्रीक क्रम्युक्टर हाँक परिच्छी हकारो हकारे असीहा करने सने।

### कर्णकी सचकमा—कुन्तीकी ब्राह्मणसेवा और वरप्राप्ति

वन्नेवरने पूज-नुनिवर ? स्वीको को पुत्र का इतिहाँ जुड़े काली, यह क्या की 7 क्या कल्कि का से कावन और कुम्बार के, ने कैये में और उसे कहारी जाह हुए में ? तन्नेकर ! ने इस साथे रे सुन्य काहत है, कुम्बा कर्नन

नैतन्त्रपारची नोर्ट—राज्यः । वै तुन्ते च्या पूर्णालकी पुत्र बात काला है और च्या की सुराता है कि वे बाला और कुच्छार कीने से । पुतनी बात है, एक बार क्या पुनिय्योगकी



भाग एक नहार है जाने आहान आया। अस्ता परित च्यून हैंगा मा तथा पूंछ-उसी और तिरसे कार को हुए वे १ नह बढ़ा है इसीरीय और फायपूर्ति का तथा हानने दखा निन्ने हुए बा। अस्ता स्वीर तेशने स्वक रहा का और न्यूके रूपन विद्वाराणी हा, कारी नहुर की एका उस और स्वक्ता है इसके अस्त्राता थे। अस स्वक्तानेत्रात्री रेजाने बहा, 'एकर्! में अस्त्रात्री कर निक्षा मौननेक निन्ने आया है। किंदु अध्यक्ती का अस्त्रात्री स्वक्तानों नेता मोई अस्त्रात्र नहीं करना होगा। नहीं अस्त्रात्री स्वीत हो तो हस प्रकार में आयके च्यां रहिता गरीर इक्तानुसार अस्ता-कारत स्वीता।'

त्व प्रशा कृतियोगने जेन्द्रांच उस्ते नहा, 'न्यान्ते! वेरी पूजा नामकी एक कन्य है। व्ह वही हुनीस्थ, क्रकारिको, क्रेक्कारिक और महिन्दरी है। यह पूजा और कार्यस्थानेक आयारी सेवा किया करेनी। अस्ते क्रीक-अक्रकारो अल्बो अवस्य संतोष क्षेत्रा ( ऐसा क्ष्मकर राजाने विकित्ता, प्रमुख्योकराज्या सरवार सित्या और विकासन्त्रमा कृष्णके पास कामन बाह्न, 'केटी । वे स्तुरस्यम प्राच्यानेत्राम क्षाप्ते न्यार्थ स्थापन कार्याः है और मैंने सुप्रपर पूरा क्रोहर स्थापार कुम्बदी कार क्षीपार बार सी है। असः विस्ती की अकार केरी बाराबों हुइसे बार होने देखा। वे को सुक मार्ने, बढी बीच जिल्हा अनकाने हेती खुल । हाब्राम परन तेओस्ट और प्राथमप:सब्ब्य होता है। अहम्मीको नवस्थार कार्यने हैं। क्ष्मीक अल्बासम् प्रकारिक होते हैं। केरी ! का प्रकार-केम्प्राची परिवर्णका चार ही इस संस्थ हुई। सीरा या पह है। तु विकायपूर्वक विकासीत प्रशासी रोजा भारती खाला। पुत्री 🛚 मैं कारतों है कि तेना प्रकारकों की क्राह्मरोके, गुरुवर्गके, बन्द्रश्रीके, बेन्क्केरे, विक-सन्त्रको और नामाओके स्था की होते क्रम कामर कामरमूक बताब रहा है। इस नगाने अवका अक्षानुरूपे ऐसा कोई भूगम नहीं साथ पहला, को तुहली अनंतर है। ह वृत्रिकांतर जनम हो प्रातेकार जातियाँ क्रमा है। क्रुरे मकानों क्री मेरियुर्गेक राख स्थानिन सुने हाराज्यको हे दिला का । वू अञ्चलिकी महिल है और येरी क्रांक्रकेने सर्वतंत्र है। एक बुरसेक्टे देखें प्रतिक्र की के कि अवनी अवक संस्था में आवको हैंग।' यह अतिहासे अनुसार ही कार्यंद्र देवेले जू नेरी पूरी हुई। की मेटी । पनि स् हर्त, कुल और अधिकारको क्षेत्रकर हुन प्रशासक प्राप्तक-केन्द्राची होना करेगी हो अन्तरम करणांग प्राप्त करेगी।"

| स्मृत क्रमाने कहा—राजन् | जानकी प्रतिक्राके अनुसार मृत क्ष्मान्य राज्य १४ व्यक्तिकालो सेक करोती। प्राथमंत्री क्षम करना से पेरा स्वयंक है है। इससे आफार देख और वैदा बरव क्षमाल होगा। ये कई सार्वकालमें अस्में, कई समी अपने, कई पेतनी अपने और वाहे अस्मितको क्षमा अपने, हुई में किसी अपनर कृतित हेनेका अस्मात नहीं हुने। राजन् | इसमें से मेरा बड़ा साथ है कि क्षमात असाने राज्य स्वायकोंकी क्षमा करते हुए अपना

कुर्यकोः ऐसा कहनेवर राज्य कृत्तिकोननं उसे बार-कर इसको स्थाप्य और उसे उससीत करते हुद् साम्या पाय वर्तक प्रमुख कृष्य । समाने कहा, 'सीक है, करवानी ! युक्ते नि:कह होकर ऐसा ही करना व्यक्ति ।' उससे ऐसा वर्तकर काम कहनी कृतिकोनने उन प्रकृतकेकानको व्य

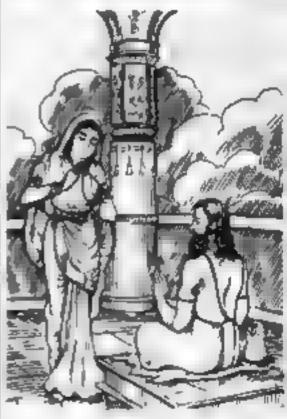
[ 039 ] सं॰ य॰ ( खण्ड--एक ) १४

क्या और है और उससे बढ़ा, 'उद्धार !' मेरी वह क्या होटी आयुक्ती है और बहुत शुरूने वाले है। बाद इससे बोर्ड अकाम के बाद से आप कारत बात न है। बहुतान प्रकारतीय पुत्र, करूब और उपनिक्षेत्र से अन्यान करनेशर भी अनः औध नहीं करते।' वह सुनका सहागरे बाहा, 'रीका है।' इसके पहला राजने उन्हें उसका होबार हैस और पन्नभाषे समान केन प्रातानने से अपना रकता कार्र सक्रियालाने अन्दे हैंन्वे एव तेवली आसन विकास नक तथा उसी प्रधार पूर्व-पूर्व उदास्ताने वर्षे प्रोधनाविकी समस वसूर्य क्षेत्र सम्बद्धा को गर्ना । राज्युको पूका क्षेत्र आरम्ब और अधिमानको एक और रक्तका उनको बन्धियोगे स्तरिक हेका लग गयी। अस्तर जानाम बद्धा सरक्रांच 🐠 । असे हुद्ध मनते तेवा अर्थ का राजनी अञ्चलको पूर्वताच अल्ड कर रिच्छ । उनके विकासने, सुरा-तरम करने तथा अधिक भाषण कार्नेवर भी पृष्ट उनको अग्रेय सन्तरेकाच कान जी मारते थी। जन्मा मन्त्रात प्रमु अवन्त्र था। याची है आंग्यत सम्बन्द आते, कभी आते ही नहीं और कभी ऐसा योजन मांगते, जिलका विश्वमा अवस्था कठिए होता । विश्व मुना इनके इस काम इस अकर कर देती करने उसने न्यूरेंको ही प्रस्की नैवारी कर रखी हो। यह विच्या, पुर और विदेशके समाय क्यारी सेवामें समार पार्टी थी। कार्क हीता-सम्बद और संबंधने प्रायुक्तको बद्धा संबोध हुआ और वे अन्हे करणायके देखे पूरा प्रकार करने सने :

याज्य ! कुलियोक सार्थकाल और सभी होने समय पृथाने पूरा करते थे कि 'केटी ! साहाग्यदेखता तुमारी सेवाले प्रसार है न ?' कार्तकरी पृथा को बड़ी जार देखे की कि वे सूच प्रसार है इससे उदार्थका कुलियोकको बड़ी प्रसारता होती की। इस प्रसार एक वर्ष पूरा हो बालेगा भी जब उन किपारको पृक्षका कोई दोष दिसानी नहीं दिया से वे कई प्रसार हूए और उससे कहे, 'साम्बान्ध ! केटे सेकार्स में बहुत प्रसार हूं। दू मुझसे हेसे वर माँग हो, वो इस सोकार्स मनुष्योके दिल्ले दुर्लम हैं।' तक कुल्लीने कहा, 'सिपार ! अवद वेदलेकाओं दे लेड हैं। अवद और विवाली मुझसर प्रसार है, मेरे

सम्बद्धाः से इसीसे सकतः है गर्न । अस मुझे बरोकी कोई अध्यक्तकार नहीं है।

व्यापने नक्-मो ! वर्ष यू कोई यर नहीं मौरती हो वेक्करोंका जनका करनेके रिन्दे चुक्ते स्थ पन प्राप्त कर हो । इस करके यू किस वेक्काक आवाहन करेगी, वही



मेरे कार्यन हो कार्यया। जनकी इच्छा हो अवसा न हो, इस नक्षक प्रभावती यह प्राप्त होचन शेवकके समान तेरे आगे विर्माण हो जानना।

ज्ञ्यान्यदेश्वाने हेरत बहुनेवर अनिन्दात पृथा ज्ञापके सबसे हुतरी बार उससे बना नहीं बंध सबी। उस अहोने उसे अवसंबंद-हिरोधानमें आने हुए सम्बोद्धा उससेव किया। पृथ्यको मन्त्रान करके उन्होंने कुन्तियरेशको बद्धा, 'राजन् | 'मैं हुन्हाने वहाँ बड़े सुकसे रहा। हुन्हारी कन्याने मुझे सब अकान संबुह रहा। अब मैं बार्केमा।' हेस्स बद्धार से वहीं अन्यानांन हो गुने।

### सूर्यद्वारा कुसीके वर्षसे कर्णका जन्म और अधिरशके यहाँ उसका पालन तथा विद्यास्यवन

वैद्रान्त्रकार्यं कहरे हैं—राजन् ! इन **स्वरू**णहेकार्यः को | क्रोपर का क्रमा क्रावेंट क्रावासेट निकार करने सारी । उसने सोचा, 'उन पहारतवानि मुझे में कैसे नक दिने हैं, में बीज से इनको सकियों परिका करेगी।" एक दिन कर महरूपर साई हुई ज्या होते हुए हुनंबर्ध और देश परी बी । सम प्रथम अस्तरे की दिन हो गयी और को विकास समय-कुरकारकारी कुर्वनराजनाके दर्जन क्षेत्रे रागे । असे काम सनके प्रवर्गे सहक्रके दिवे हुए अधीवने परीवालम क्षेत्रुक हुआ । काने विभिन्न अकान और सामान्य बान्के कुनीवक आव्यक्त विस्था । इससे हुरेंस ही ये उससे पार २० पने । इसका इतिः बच्चोः स्टब्ट विक्रमार्थं था, चुनाई विकास थी, जेवा शक्ति संगम थी, मुकार पुरस्कानकी रेका थी, पुरस्कारण मानुनेत् और निरसर नुसुद्ध का क्या क्रिके क्राया प्रापेत वेदियमान था। वे अपनी योगस्तीओ वे उस अपन का एक्सो प्रेसारको प्रकारक करते हो और हारोपे क्याके कर शा गये । अनुरेने बड़ी कनूर कालीले कुन्दीले बाहर, 'बड़े । सेरे बन्दवी राकिने मैं बरकारों मेरे सबीन हो गया है, बार, मैं क्या महों ? अब हु को जाहेती, नहीं में करीना (\*

मुलाने कहा---वरावार् । अवर व्यक्ति आवे हैं, वहीं कवार पताने: मेंने से बोक्सको से आवस आवसन



इसके देखे जान मुझे इस्त करें।

हर्ष कंटरे—क्षित्र ! व् सुक्रमी बानेको बदली है हो मैं करन है सहित, पह देखाना अवस्त करके को दिन कोई प्रकेशन विद्या विके स्वैद्य देशा नाध्यत्तक्षण नहीं है । सुन्दर्श । हेरी हेर्सी प्रवास की कि "सूर्वार्ध की युव हो, कह रहेकारी असुनिक पराक्रमी हो और कारण गया कुम्बान पारण मिले हो ।' असः व ब्रुवे अवन्य करोर सन्दर्भित कर है; इससे मेरे, जैसा तेव केवल था, केव हो कुछ अवस होग्य ।

क्ष्मी कंसी—सीववारिक् । जाव अपने विवासक वैद्यार प्रवारिये । अपी में क्रमा हैं, इसकिये देख अपराय करक मेरे प्रियं बढ़े कु क्रमी बात होगी। मेरे बाता-विका और को करने गुरुवन है, उन्हें हैं इस सरीएको दल करनेका अभिन्यार है। में कर्मचा स्थेप नहीं क्रावेगी । स्थेकने विश्ववेति सहकारकी है चूना होती है और व्या स्तरकार अपने प्राप्तिकों अन्यादारो प्रतिका रकना हो है । वैने मुक्ताहे मन्त्रके बरकही परीक्षा करनेके प्रियो ही अरावका आध्यान विकास सा, हो मनवर्ष । यहे व्यक्तिका कामध्य स्था अध्यक्ति धाना सर्हे ।

शुक्ति कहा-नीक । तु कारिकार है, इस्तेरिको में तेरी कुळान्य कर रहा है; निर्मात कुरते कोच्छे में निरम नहीं करता । कुनों । व नहीं अनन्य प्राप्ति दल बार है, इससे हुई प्राप्ति Sales I

कृष्ये कोचे-केंब ! मेरे माता, निव तथा शब्द शब्दनी अची मीरिया है। उनके रहते हुए से यह समझन विधियार लोप नहीं होना काहिते। यदि आयोग साथ मेरा यह सामानिनिक्ते क्रिक्टीक क्रायानी इत्या को मेरे धाएक संस्थाने इस क्रायानी बोर्कि पर हो जाननी । और चीर जाय हमें वर्ष मानो हैं से अपने कक्ष्मकर्वेके दान न कानेका को में आपकी हवा पूर्व कर कवनो हैं। मिलू आरको हुन्दर आस्पद्धर कार्रेकर की मैं सही ही रहे, क्योंकि संस्थरमें प्रतिकांके करें, प्रता, बर्रीरी और साब् ज्ञानीके क्या जनानिका है।

स्कि का-स्वारी। ऐसा करके देश आवरण अवर्णन्य जूरी मान्य व्यवस्था । पहला, स्केक्ट्रोके द्वीरावरी वृद्धिसे में के अवर्गक अध्यक्त की का स्थला है ?

कृष्टी केली—पनवन् । यदि ऐसी पक्ष है और मुक्तके अन ने कु अक्त की का नवते हैं जान करन और कुक्त को हुए हो जो की साथ जानका सम्पन्ध हो सजता है। जिलू बह क स्थापन, कर, संबंद, ओव और वर्षके समझ होना दूननि स्वा—राधकनो । वेरी वाता अधिकेशे सूत्रे को कुत्वान और जान कावा त्रिके हैं, वे ही मैं उक्त कावानाओं हैंगा।

कुर्ता बोली—रहिम्माहिन् । आप बेसा कह से हैं, की बैसा ही कुन सुप्ताने हो तो मैं कई डेम्मो आमी साथ स्वाकत

तीत्रभावनार्थं कार्त है—सब धरावान् वास्ताने अपने हेकते क्षेत्रे मोदिव कर दिया और योगलविको अपने विका नहीं कार्ता गांधं कार्या किया, आकं का्यावको हुन्या नहीं किया। गार्थावार हो पानेवर का किया स्थेत हो करे है का कुछ कारत आवालने नेते का्या होता होता है, केरे है का कुछ प्रतिपदाने दिन पृथाने नार्थ सार्थित हुआ। अर्थ्य वापा-पुण्णे पुल्लाको एक वापाने क्षिया और कियो बोच्यो हरका का वहाँ काल। हुन्यी पृथाने वापानक एक केश्योद का्या वहाँ काल। हुन्यी पृथाने वापानक एक केश्योद क्यान वहाँ काल। हुन्यी पृथाने वापानक एक केश्योद क्यान के हाँगला काल और कालोद हुन्यां काले क्यान के हुन्यां वापानक और कालोद हुन्यां के कियो कालो अपने पृथाने वापाने सरका काले एक विद्यार क्याने कालो अपने प्रदान काले काल अंकाल विद्या कालो कोर केन पृथा किया। विद्या काले काल अंकाल विद्या कालो केरा काल कालो कालो

स्वतास्य अञ्चलको होड् दिया। यस विदारीको जरूनो होत्ती स्वता कुर्याने के-रोक्ट को अन्य को थे, वे सुने--'नेटा। नक्तर, इक्टब्स और काल्यर कीम इक्ष दिया आगी हैरा पहुला को। तेरा काले अनुस्त्रमा हो। सहसे हुने कोई जिल प हो। जरूनो पहले अन्यो क्यान हेरी रहा को, आकाशने सर्वेचानी पहले केस रहका हो हता होरे दिया सुनीय हैरी स्वर्णत रहा करें। है कानी विदेशमें भी विरोधन हो इन काल्य और कुर्व्यानेंसे में हुने पहलाथ हैंगी।' पृथ्वने इसी जकार बार्व्यानुकेंड कहा विवास किया और विरा अन्यन कराकुरव केवार कालेंड साथ स्वयानामों और कारी।

वह विद्रारों तेनते-तेततो अक्षणांने वर्षणती (वाणान)
वहंगे नवी और काले कडूनने वहंग गयी। जिन नम्नाने
वहंगे-वहंगे का पहारोंने काले गयी और वहाँ लियाय हर वहंग वहंगे का पहारोंने का गयी। इसी जाना गया कृतकृत्य कि अविद्रात अपनी कीचे आग पहारत्यार काम। पताए। अन्यों को पता संसारों अनुपन कथ्यती थे, तिन् अन्ये कोई कु वही दूश्य वह। इस्तिने वह पुराराहिते किये विदेशकारों का करती पत्ती थी। क्षेत्रकार अन्ये पूरे पहारोंने बक्ती हुं विद्रारित पहे। का वह वह वहस्तीनों स्वयुक्त अधिरामां क्षणार उत्ते भागों भार



निकारकाथा। यह को औवारोंसे सुरुवाण के जाने एक प्रस्ता सुरुवि सरका केशने कालक दिवाले निक। वह सोनेका काला पहले हुए या तथा काला पुत्र कालाल कुरुवालेका कालावे हिए या का।

केरेको पृष्णि की कृतिकृत जानून करा तिया कि करका केन्न यूक अपूर्वकर्ष एक स्टूलके का गर का है। अधिरको का क्षेत्र कि अब पर कहा है गया है से को विकोधकार्य किये इतिकानुत पेस किया। वहाँ यह होगावाकी जान सकत अवस्थित हो नहीं। उसने होग, कृत और परकुरावर्गाने कारे क्षित्र हो नहीं। उसने होग, कृत और परकुरावर्गाने कारे असरके अवस्थान स्थानक सीवा और इस अवस्थ प्यान् कर्ता होवान समूर्ण संबद्धोंने अधिद हो गया। यह दूर्गावनी केर कहा ही अर्जुको कृत करनेकी क्षेत्री कारा था।

राज्य | निःशंकः वही कृतिनकी पुत कर भी निः कर्मका क्या कृतिया कृतिकी जारते हुआ वा और पास्त कृतिकारों : वर्मको क्यान-कृत्वास्त्रा देशकार स्वारास्त्र कृतिकार कृति की । व्यापक ! कर्म क्याकृति काम कर्मने कृति क्रिया कृति की । व्यापक ! कर्म क्याकृति काम कर्मने कृति क्षेत्रर क्षाम क्षेत्रकार सूर्वकी कृति क्या करते थे । क्या क्या क्षाम्यक्षेत्र क्षा क्षेत्रकार कृति क्षाहि क्या करते थे । क्या क्षाके के; क्योंका क्यांट क्या कृति कोई कर्तु कृति की, नियो के क्षाम्यकारी व ते क्यांट ।

-

## इनुको कवच-कुण्डल देकर कर्णका अमोच प्रक्ति प्राप्त करना

सीर्वसम्बद्धार्थं काले है—एकार् । क्य विव केवाक इक इक्ष्मणाट का बारण करके कालेंक वाल आने और 'निश्वे केवे' ऐसा कहा। इसवर कालेंने कहा, 'कालेंके, उनकार कामस है। कालेंके, मैं आवादे सुवालीकपृत्येक कियाँ है क कहूत-यो मीर्कोकाले जीव अवंक करी ? आवादे क्या रेखा करी ?'

अवन्तरं का—इनसी पुत्ते इच्छा नहीं है; जी, जान बातावर्गे सताप्रतिहा हैं तो आओ को ने नामके ताम जाना हुए बाताव और कुम्बान हैं, वे ही बातावार हमें वे दीविये। आपने पुत्ते इन्होंको सेनेकी महुद्र स्थायानी है, वेरे विक्ते वह सामने महुक्तर स्थायकी बात होगी।

वर्णी कहा—विकार | वेरे शाद जनत हुए ने काम और कुम्बर जन्मका है। इसके काम दोनों से सेकोने बुड़े कोई बड़ी पार सक्ता । इसकिने इसे में सबनेते नियम काम नहीं कहा। इसकिने अब पूत्रकों नियम और समुदेन पूजीबर राज्य के सीचिये, इस काम और कुम्बर्गिकों केवर को मैं कामोकर विकार कम कार्यमा।

का हैशा कानेवर भी इसने दूसरा का नहीं गाँच हो। अनेको उद्गानीका संदार का देनेकारी है।

करने क्रिकार कार, वेशराव | वे आवको पहरे ही पहरान पता है। में आवको कोई कहा है और उसके वहांच्यें पुते पूका की व लिए, यह जीका नहीं है। आप संदर्भ देखाया है; आवको की पूर्व कोई का देख वाहिने। आप अनेकों अन्य बीकोंके कानी और अवको रखन करनेवारों है। वेशहर | यहि वे आवको बावब और कृत्यान के हैग से वहांजीका कर्या है वादिना और अवकारी भी हैंसी होगी। इससिको कोई कहाता देखा आप पत्ने ही ये हिन्स कार-कृत्यार के जहाते; और किसी क्रकार में इन्हें दे वहां सकता।

इन्हरे कहा—में तुम्हरे कार आनेवारक है, यह बात हर्वको कार्य हो नकी बी: निःसंदेह अवनि तुम्हें यो एक बाते श्राह है होगी। सो, कोई काल नहीं; कुप मैदन कहते हो, कैसा ही सबी। हुन एक कालको हो हकर पुत्रसे कोई यी जीन परिन सबसे हो।

वर्ग केले—इस्सेव । अल इन कारण और कृष्णरोंके बालेने कुछे अपनी असीय प्रति है सैकिने, को संस्थाने कोनों प्रदानोका संस्था कर तेनेकारी है।

तम प्रतिके विवयमें केंद्री देर कियार करके इसने नहा. 'तुर मुझे असने सरीरके साथ अपना सूर कारण और शुर्वास है के और पुत्रमें मेरी प्रक्रिके के । किंदु इसके साथ एक पर्व है। यह यह कि मेरे हमारे कुछोग्र यह इस्ति अन्तर है र्मेक्ट्रो इस्ट्रऑक्ट संसुर करती है और दिल केरे हैं इसमें लीट सारी है। में यह कर हुएने प्राप्ती पूर्वनी से में रास्त-गरकार तुन्हें अवन्त संतर कर का हेना, देते एक 🕏 प्रकल कराओं भारकर किन मेरे ही संबंधे का व्यक्ती है

कारि बक्र-केरराज ! मैं भी केरना एक ही ऐसे प्रमुखे मारण काला है, जो करकेर चुक्को नाम-नामकर पूर्व संदर्भ कर रहा है और विस्तों को यन करन है गया है।

हुए जेले—हुन पुरुषे लगाते हुए एक जनक हुनुकी भारेंगे से उसी: मिलू विसे कुर चरना प्रस्ते है जानी का हो भगवान् बोद्धाना करते हैं, निन्हें बेह्म पूजा अधिक, कर्णा और सर्वित्या गायका सक्ते हैं।

कारी कहा-परवाद ! पार्ट \$ देखी कर है। समारि आंध को एक बीचक यह बालेकारी करोब होता है किये. fresh for it arrival step welfent urgen ster. सार सम्बंद ।

हुन केरो-स्टूस बार और है। यह अर्थ क्रावेंक को पूर् और प्रकास संबद जारिया होनेते यहने है हुन जनकर क्र अमेर प्रतिको होन वेने से या एको है जन महेते :

क्षारी कार-अस् । आयोद सामानुसार में अन्यादी हार प्रतिको को भारी संस्कार ध्वानेना है ब्रोईना, च्या में इन्द्र-शन प्रमुक्त 🗓 ।

रेजन्यानं को है-क्या। का वा अमान एतियो हेकर कर्म एक की क्वाबे अपने सरक्ष अन्त्रेको क्रीरक्त काम कारने रूने । उने कामो अनव करी। कामी और बार-बार मुस्तकारो हुए वेसावर केमानोप पुरुष्टियाँ । से वे वहे प्रसान हुए।



काले हती और विमा पूर्णोकों को कार्न हती। इस प्रकार क्षको प्रशिक्त क्षेत्रकार क्ष्मिन वह सूचने भीगा हुआ हैन्स कार कार्य है हिए का देने कुमानेने से कार्य कारकार करों और दिया। इस इस्तार करनेंद्र कारण ही में 'कर्म' सक्तर ।

पूर प्रयास कर्मको क्रमका और उन्हें संस्थाने नसमी कंत्रका हुन्तुने विद्वार विक्य कि तक प्रत्यक्षेत्रा कान दिन्द्र है मन्त्र । प्रत्येत प्रमुख्य से क्षेत्रके क्षेत्रके केवलोच्याको व्यक्ते गाने । पान कृतकुर्वेद पुर्वेको कर्मके एने धानेका समाचार मानुस हुआ को से बादे ही पुत्रपति हुए और उनका सारा गर्ना गीएक था। गरा एक क्यानी पान्कोंने कर्मको देती गरिनियोंने यह सुन

# ब्राह्मणकी अरणी लानेके लिये पाण्डवीका मुगके पीछे जाना तक भीमसेनादि चारी भाइयोका एक सरोवरपर निर्जीव होकर गिरना

क्याच्यात हो जारेने से क्याकेंचे का करे का हरू बा ( अत: उनोंने को फिर फकर क्या किया ?

र्वतम्बरम्य चेले-इस प्रवास क्रीकीय हो कामी

त्या कानेक्टरे पूज-पुरिक्त । इस प्रकार प्रीयक्षेत्र | यह-पुत्राहिकी प्रमुख्या भी क्या तरह-तरहके पृक्षेके कारण का कहा रंगलीन साथ बहुद्ध था। वहाँ में निराहरणे होनान परसहर करते हर प्रेच्छेके सहित यूने सने :

का बनने एक प्रमुक्तके अस्तीतबीत समस्त्राहरे एक आक्रम कुर्नी हेकर रामा मुक्तिर कामकामको क्रेप्रकर । इस्ति सीन सुकराने रामा । वैनकेगरे का काह आके सीमने प्रकृतोस्तरित पुरः क्रीकाने ही जा करे। कई सुरुद् | केत करा। पृथ कुछ को बेलकेरका वा। का को रिन्ने हुए इंब्यूज़ अतिबोलकी प्रकृष्टि निर्म करणका कारोने मन्त्रमंत्रि चरा नाम । जाने नाम्बंदि साथ कैंद्र हुए महाराज वृत्रितिको पार जायर बद्धा, राजर । वैने अरब्ध



समित अपना प्रत्यानकाह वेहचर श्रीन विका सार अपने एक मृत अपना सीन सुरक्ताने राज्य, इससे बहु सरके सीभी केस भवा । यह विकास पूरा चौचाही पचल हुआ इसे लेकर पहल गया। से आप अस्ते क्रेंके किन्द्र देवले हुए को क्काहिने और व्या प्रवासका का विनित्ते, नित्तने की अधिक्रेयक म्लेव न से हैं

प्राथमध्ये बार सम्बद्ध महत्त्व पृथितिकारे बहुत कृत्व हुमा और वे पाहबोस्त्रीत बनुव हेवार कुनके पीके बाते । उस पहर्वीने को बीपनेका बहुत अबत मिला। बिह्नु से इत्यार प हुए अबा वेसके-वेसके यह करवी जीसकेरे जोड़ार हो एक । क्रो न देवाचन ने इतीताह हो गये और अंग्रे बहुत क्षण हुआ। कृतो-कृतो है नकर कार्य एक करवाको करा पहुँचे और भूक-प्राप्तते विभिन्न क्षेत्रर अस्त्री स्रोक्त क्षणाने केंद्र गर्ने । हम कांत्रको अनुस्तारे बहा, 'बैचा ! हन्त्रने में हम पाई माने और बच्चे इस है। माई पना है कही जह म व्यवसम्बद्धे कर उसका होनेकाले वृक्ष हो हो देखे (' सहस 'से अक्र' काकर कामर का को और उत्तर-कार देखकर बारने रूपे—'रायन् । जुले जराके पास सन्तेकाले बहा-शे

क्रमात-कृत्या वृत्ते सकारमें पहुँच गया। यह वेकावर यह 🛭 कुछ विकारी है यह है तथा सारतीया रूप्य भी सुनावी देश है। इस्तिने वहाँ अवस्य क्यों होगा।' यह सत्वीक् व्यक्तिको प्रकार, 'वो सीन्य । धन सील ही काओ और

> को पहाँकी ज्यार हेनेज नहत 'क्या अक्षा' ऐसा ब्राह्मर बड़ी डेमीसे फांर और चार्च ही बालहरूके पाछ व्योग गर्ने । वर्षी प्रान्तरेने विश्व पूजा व्यक् निर्मात वहा हेन्स्वर वे को है पेनेंद्र रिने हुने कि उने वह आवाहकानी कुरूपी है, 'बार कहता ! सकत न करें, व्हलेकीरे मेर एक निवन है। मेरे प्रकोचन कार से । करने बाद चरन पीना और से कार ।' किंदु स्कूलको बढ़ी काल लगे 🛒 वी । उन्होंने का जल्मिको कोई परका पहें को । सिन्दु को है कह होतार कर बीचा कि को बीटे हो में पुलिस तिर गये।

> क्कालको के हाँ देख क्रानीनवार युविदित्ते और सर्वालकी बाहर, 'बाहोल । हुन्हारे कोड जाता पाई सहरतको गर्ने बहुत के के भवी है। जात कुर करात को विभा करती और करा के रेजे कान्ये।' सहके भी 'जे लाहा' देता सहका करी विकार करे । यह उन्हेंने यह स्कूतको पुर-अवस्थार इंडिंग्स गई देखा । क्यें न्यांकि रिन्ने चड़ा फ्रीक हुआ, सित् इकर प्यास की कीहर कर रही की। वे पानीकी और करें। को राज्य अध्यानकारोपे सहा, 'का कांग्र । सामा प करे । क्योंकीने मेरा एक नियम है । मेरे अलेका बतर हो । कानों का बहर कीए और है काना ।' स्कूबेकको को बोरबरी कार रुपी हुई थे। उन्होंने का पानोब्दी मोर्ड परवा नहीं की । जिल्हा बनों की क्योंने कह प्रीताल करन कीवा जिह उन्हें कीते ही में पुनिया कि को।

अब धर्मराको अर्थको ध्या, 'प्रमुक्ता अर्थन ! सुन्हारे नर्दा न्युक-स्थान को हुए है। हुन को रिका साथो और कर की से अपने । किया । इस कर इन्हिक्तिक हुए ही एक्से हे ।' व्य कर्नुनी क्यून-कर्ण काम और गाम्बर मानो महर निकारों । इस जबार ने सरोवरपर बहेंबे । सितु बही उन्होंने हेला कि जल लेनेके किने आये हुए उनके केनी पाई नरे को है। इससे पुरवरिंद्ध करोबो बहा कुछ हुआ और बे बहुत कहाकर का करने पर और देहरने हमें । परंतु को खड़ी कोई भी अभी विस्तानी नहीं दिया। तम स्वास्त्रों विश्वित हेनेके कारण ये जारको उठेर करें। इसी सबध उन्हें पह क्वारकारी सुरुवे हे—'कुर्यन्तन ! तुन प्रतिकी ओर क्यों जाते हो 7 तुम क्याईस्तों यह पानी नहीं पी सब्दों है। धरी कर केरे पक्षे हुए अवस्थित स्वतर है होने हो ही बहुत भी समझेने और से का भी सम्बोगे (" इस प्रमान रोके मानेना अर्थनी सहा, 'यह जात होका ऐको। किर से में सक्तेंसे किन् होका ऐसा कहनेका स्थात ही नहीं का सकते !' ऐसा कहका अर्थुनरे इस्टोशका कॉन्स्स हिमाते पूर सकी हिसानोंको अधिशिका कारोंसे न्यह का हिमा। हम कहने कहा, 'अर्थुन ! इस कृषा क्योको क्या होना है ? हुन मेरे अर्थेका जार देवन कर की सब्बो हो। यह क्या कार कि बीओ हो की की ही का कारोंने!' क्या है से और में का अर्थाका क्या कारों हो का कारोंने!' क्या है की और में का अर्थाका कारोंसे हो की कार्यों कोई क्या नहीं की और में कार की ही कि की।

सम कुर्गात्त्वर पुनिद्वित्ते चीनकेको बाह्य, जनान्त्वर । बहुता, स्टबंग और अर्जुन बाह्य सम्बेद तिन्ते बाह्य देखे को हुए हैं, अधीतन नहीं स्टिश हुए हुने विकासको और बाह्य

की से आओ !' जीकोर 'जाून आका' हैता वहांकर उस स्थानमा आहे, जाई कि उनके सब अई परें को थे। उन्हें नेसकर जीकारे का इस्त हुआ। इस्त जाता भी उन्हें नेसाइ स्था जी थी। उन्होंने समझा 'जा जान जान-नाहरतीया है और आज जुड़े उनसे अनरन जुड़ करना परेगा, इसलिये पहरे करी भी है।' वह सोकार से जातारे व्याप्ता होनार बालारे और जारे। इसलेंगि जाई सेता आहे, 'जैस जीवारे ! साहब न जाते। जानेबीरों सेता एक निकर है। मेरे असेता जान हेकर हुए जान में सजाते है और से जा भी प्राची है।' असुनित्त केताबी सहाये ऐसा व्याप्ता मारे में चीनां जाने जानेबा तरह हिन्दे किया है जार मीना और पीते हैं में जीवार किर करें।

#### यञ्च-युधिहिर-संवाद

र्वजन्त्रकार्य करते हैं—इसर सहराज चुनिकेर भीवने बहुत जिल्ला हुआ बेकावर को निर्मित हुन्। उसका विक क्षीकारमध्ये संसार के जार और ने कर्ण क्षे कार्रकों करे है गर्ने । जल्लाक्रमें संस्त्र महिन्दार अनुमि देशा कि उनने करों मार्च को प्रत्य को है। उन्हें दिशोह को देशकर न्यूट्टा सुविधीत अत्यन्त किस हो गर्ने। सोकसमूत्रने कुनका ने सोवर्ने क्रो—'क्र बोरीको विकास करा है ? इसके अक्रोंने कोई प्रकारकारका विद्य भी भी है और वर्ज विक्रकेंद्र कारणिक की विकाली नहीं की। जिसमें मेरे प्रक्रवंबी नाव है, मै इत्यानक है, यह कोई महान् सामी क्षेत्र । सम्बन्, पहले में क्षातालकोस अस्ते सारमध्य निवार करे राज्या पर चीनेवर पूछे अर्थ ही पुरस्का पता शत सामना । देखा व हो कि इन्तरोगोरो क्रिने-क्रिने बुटबुद्धि समुधिके क्रुप क्रुनेक्से बह विनेत्व सरोवर मन्त्रा दिवा हो । विद्यु प्रत्यात नाव विनेत्व औ मूर्व कम पहल, क्लेकि का बलेक की मेरे इन ब्लावेके प्रारी में कोई कियार नहीं कर पहले क्या हुन्हें केहेंगा रेन भी जिला हुआ है। इनमेरे अलेक चलके अला अव्यक्ते स्वय व्यवसी है। इन कुम्लोक्टीय स्वयम के साहत् प्रमालके दिला और बीच बार समात है ?"

यह तम सोमानर से मानी सालेको तैयर हुई। हार्थ हारम उने आनरकारण सुन्तरी है। सारे कहा, 'में कहान है। मैंने ही हुन्तरे सहयोको मारा है। महि तुन मेरे जार्थका सार नहीं सेने से ध्येषणे तुन भी इन्होंके बाद खेंगोले। है सारा ! साहार म करो । मेरा मानेकोचे बाद निका है। तुन मेरे प्रातीका जार है से । जिस बाद पीना और से भी काम ! मुध्येशने कहा—बढ़ काम व्यक्तिक से हे नहीं सकता। तार: मैं आसी मूलता है कि आप का, कह अवसा महारू आहे प्रमान केमाओंनी जीन है।

पहले कार—में कोश मानवर वहीं हो नहीं है, में यह है। इस्कों से महत्त्व केंद्राती नहीं की ही जो है।

व्यक्ती का अन्यक्ष्मको और क्योर क्यो सुरक्त राज्य कृषिका अस्तर कर कावन को हो नमें 3 अमेंने देशा कि



एक विकास नेवीन्यत्य नियानाम्याम यह युवाने स्वार पैठा है। यह पढ़ा ही पूर्वर्ग, सामने समार प्रमान, आहिते इस्तान रेमानी और वर्गत्ये समार निवास है, बड़ी अपनी नामीर सहारों मार्गति उन्हें सरावार यह है। विश यह यूनिवेशके सहारे समा, 'कार्ट् ! दूनके इर अवस्थिते की सम्बद्ध रेमा सा, फिर भी इन्हेंने शुक्तिको मार्ग के मान्य ही माह्य इसीने की इन्हें पार समार । यह सुन्ये सम्बद्ध क्या के है । वेश मार्ट मांग मही पीड़ा माहिते । यह समार मानेवाले केन है । वेश मार्ट मान है कि माने भेरे समोबा अपर हो, सामें मान मार्ग मीन और है की माना। '

कुविद्वित्ते वहा--वै अवनोट अधिनकाती चोकको है साथ नहीं बहुता। अन्य मुहले अह व्यक्तिने। बोर्च पूक्त इस्ते क्रै अपनी अहंशा करें, इस बारकी संस्कृत बहुई नहीं करों। वै संपनी बुद्धियं अनुसार करों। क्रम क्षेत्र।

नकरे पूरा—क्षांको कौन जॉक काळा है ? आहे काछे कोर कौन काले हैं ? जो अबा कीन काळा है 7 और का किस कोर्स हैं ?

ा करे कुछ-जन्म सोविक वित्ताने होता है ? जहन् पहले वित्ताने हाथ जान करता है ? विताने हाथ का विशेषकन् होता है ? और विज्ञाने पुटिल्पम् होता है ?

नुविद्यानं कार-वृतिके प्रश्च क्रम्प क्षेत्रिक होता है। बनारे स्थापन् प्राप्त करण है। वृतिके वैत्रीकाम् (स्थापन) होता है और वृद्ध पुरुषेको सेकारे वृद्धिकर् होता है।

रकरे पूरा-प्रमाणीने केवल करा है? उसी राजुरसोकान्य कर्म करा है? समुख्या करा है? और असायुरसोकान्या असमान करा है?

पुण्डित गोरो---नेरोका सामान्य है स्थाननेने हेवा है, सब स्थाननेका-स्थ को है, जान प्रमुख पात है और निवा सरमा असम्प्रतीका-सा अध्यस्य है।

्यको पूक्र-वारियोचे केवल क्या है? उसी सर्मुक्तोबर-सा वर्षे क्या है? क्यूब्बल क्या है? और उसी असरपुरमोद्या-सा आवश्य क्या है?

वृधिहर केले— धार्यांका इक्रिकेस देवल है, वह उत्तर सायुक्तिक-मा धर्म है, यब यानती यात है और दीनोकी रहा य करण असमुक्तिक-सा अमारण है।

नको पूज-सौन एक कहा पार्त्तव साम है ? सौन एक सरकार । सारित कहा है ? सौन एक कहा पहला करन करते है ? और । का है ?

-----

्रांबोले तम देश—सम्ब है काँच शाम है, या है कांग पर्: है, एकमा शाम है कावा करन करते है और एकमा बाहक है का अधिकास की करता :

न्यारे शुक्त-आकार (देववर्गम) बारनेवारवेंके तिये कौंग क्या केड्र है ? निकार (किरोका क्रमेंक) करनेवारवेंके तिये क्या केड्र है ? प्रतिकृष व्यक्तिवारवेंके तिये कौंग कर्यु केड्र है ? क्या प्रतान व्यक्तिकारवेंडे तिये क्या केड्र है ?

वृध्यित केले—असम्बद करनेवालोके तिने वर्ष है। कहा है, निकान करनेकालोके तिने क्षेत्र (क्षा-सम्बद्धि सम्बद्धि) है। है, अधिक कर्याकालोके तिनों भी हो। है और पंतान करनेकालोके तिनों पुत्र है।

नवर्ग पूछ—नेता और पूछा है जो इतिहासि निर्माणी अनुका करते हुए, क्रांस केंद्रे हुए एका इदिस्तान, स्तेकने सम्बद्धिक और सब प्राधिनीका करनीय होनार भी बाह्यकने सीविक वहीं है।

पुण्योत्ते वया—को केवता, अतिथि, सेकब, जाश-दिता और आवा—इव प्राथ्येक्ट चेकन नहीं केवता, यह बास क्रेनेव्ट की जीवित नहीं है।

प्राचे पूरा-न्याचीले की कार्य क्षा है ? अस्वात्त्राचे की क्षा क्या है ? कामुके की तेल कार्यवास्त्र क्या है ? और किराक्षेत्र की अधिका संस्थानी क्या है ?

कुविक्ति क्षेत्रे—शास पृथ्यते भी पारी (काकर) है, जिला काकामने भी सेवा है, पन बाजुते भी तेन पारनेवारत है और विच्या किन्यतेले भी समुबार है।

कार्य पूरा-को कानेवर करका बडेन नहीं बुंहरा ? अपक्ष होनेकर बेक्क बर्क नहीं करका ? क्ष्मण विकास नहीं है ? और केन्स्रों कोंच करका है ?

पृथ्वितने नक—नकती सोनेवन भी मानक जॉ मूंसरी, जनका जनक क्रेनेनर भी चेक्स जॉ करता । पाकरने क्रूप नहीं है और जो नेमले कहती है।

नवर्ग पूज्र-विदेशने जानेकारेका दिश और है ? साथे क्रोनकोका विद्या और है ? रोगीका विद्या और है ? सीर कुछुके अनीय जूने हुए कुछबार दिश और है ?

वृत्तिक्षेत्र कोरो—स्वाकोत काली विशेषाचे जानेकारेके हिल हैं। को परचे पहलेकारेकी किए हैं। की रोगीका किए हैं और दार मुमूर्ट (गरनेकारे) पुरस्का किए हैं।

नको पूज-समस्य ज्ञानिकोचा अतिथि और है? सम्बद्ध को का है? अनुध का है? और का सारा कास् का है? नुष्यांको जार है का नाता समाज्ञा स्थानके को की है, सौना कुछ अपूर्व है, अधिनातों प्रत्यकों ही समाज्ञ को है और पासु का सारा काम है।

मध्ये हुम-अनेदन कीन विकास है ? एक कर जनह होनार पुर: भीन करना होता है ? सीतनी ओनी कस है ? और सहस्र अस्तरम् (होन) कस है ?

पुष्तिर वेते—पूर्व अवेदन विकास है, क्यान एक सर सन्द नेकर पुरः क्य रेता है, अति प्रीतकी ओर्का है और पूर्वी कह पार्ट सामगा है।

नशरे कुल-कर्मका कुरव जात करा है ? बक्रका कुल स्थान करा है ? जर्मका युक्त जात करा है ? और कुलका मुक्त कान करा है ?

पुरिक्षणे केश—वर्गका पुरुष प्रकार सहस्त है, प्रकार पुरुष स्थान सन्त है, सर्गका पुरुष स्थान सन्त है और सुस्तका पुरुष काल सीत है।

नको पूज-अनुकास आरम कर है ? जनक हैकार इस्ता मॉन है ? जनकिन (मॉनकार १६८०) कर है ? और जनका कार अस्ता कर है ?

कृष्णिर कोर्छ—पुत्र कांक्या असला है, जो सारक्षा केन्द्रात संस्था है, येथ उपयोजन है और सार करण सामान है।

नक्षणे पूर्वा -- कार्यकांक कोता पुरावेगे उत्तर पूर्व कर्या है ? क्योंने उत्तर कर क्या है ? स्वापोने उत्तर कार्य करा है ? और सुवोगे केश सुका करा है ?

पृथ्वित योगे—न्यम पुरसीवे स्थान ही साम पूज है. मनोवे प्राथ्वाचन प्रथान है, सामोवे आयोग्य प्रथान है और सुमोवें संसोव सेंह सुम्र है।

नवाने पूरा—कोकाने केंद्र धर्म करा है ? विशव कारकार धर्म करा है ? किएका वहाने रक्तनेते क्षेत्र नहीं होता ? और विश्वके साथ करे को संबंध नह नहीं होता ?

पृथ्वित केले—स्केवले क्या केवा वर्त है, केलेक कर्त निता करकारत है, कामों काचे रचनेते क्षेत्र नहीं केवा और प्रमुक्तिक प्राप्त की क्षेत्रीय का वहीं केता।

नकरे हुमा - जिस बसुधे त्यानोसे करूम दिन होगा है ? जिसे त्यानोपर होता नहीं करता ? किसे त्यानोधा धड़ सर्वनान् होता है ? और किसे त्यानगर सुन्दी होता है ?

पुषिक्षर नेले—मानको जामधेरे ज्युन्य क्रिय होता है.

कोनको उपयोगर प्रोपा गृहि काम, प्राथको साम्पेगर पह अर्थकर होना है और सोमको भागकर सुन्ही होता है र

नकरे पुत्र—साहारको विनारिको छन विना जाता है ? यह और नर्वकोको क्यों कुछ है। है ? सेक्सोको कुछ हेनेका क्या प्रकेशन है ? और राजको को कुछ दिना जाता है ?!

वृत्तिको का—जाह्यको सन्ति विने इन दिन कात है, यः-नर्वकोच्छे वक्के विने इन (इनार) हो है, रोजकोच्छे उनके काल-वेकको विने इन (वेडन) दिन कार है और काको काके काल कर (कर) हो है।

नकरे पूक्त-चन्नद्र मित्र चन्द्रके क्यार हुआ है ? विसर्वेत चारण वक् अवस्थित वहीं होता ? महुन्य विशेषके विसर्वेतके उन्तर देख है ? और अपने विसर चारकते वहीं चारा ?

वृत्तिरने जार दिया—बन्द् जातानने कता हुआ है, क्रमेनुको कारण वह क्रवातित नहीं होता, सोपके नहरण प्रमुख विश्लेषो जान हेता है और आस्तिको बहरत हर्नी नहीं कार।

कारे कुल—कुम विका समार गरा हुआ ग्राह करता है ? गड़ विका समार गरा हुआ ग्राहकता है ? आदा विका समार गुर हो गाल है ? और गहा कैसे गुर हो बाला है ?

पुण्डिर जेले—जॉव्ह पुरस गरा हुता है, किया राजांका राज्य गरा हुआ है, ओजिंग प्राथमके किया शाद पुरा हो जाता है और किया विकासका ग्रह मरा हुता है।

नकने पूक्त-स्थान क्या है ? जार क्या है ? आह क्या है ? जिन क्या है ? और अध्यक्त स्थल क्या है ? भट्ट बसाओं ।

पुणियोग्ने का—राज्याव विशेष है,\* आवारक पात है; भी आप है,\* अनीय (प्रांत्यना) किया है और उत्साव ही सामुखा राज्य है।2

प्याने हुम-स्थाप क्या पता है ? सम्बाधियों पहते हैं ? इसका सम्बाध क्या है ? और का क्या स्थानका है ?

वृत्तिको वदा—प्रदोषो सहस्र कृतः है, व स्वतिकेश स्थानो हर साथ राजा है, अपने कवि सुध्य पर है और प्रधान सम्बद्धाः हर है।

नक्षरे पूर्ण-राजन् विशेष किसे सक्से हैं? इस क्या स्थानका है? एस विशेषक नाम है? और सार्वन (अस्ता) किसे सक्से हैं?

<del>पृथ्वीर केले - क्रांकिक क्युब्धे ठीव-ठीक व्य</del>नग

<sup>&</sup>quot; क्वेंदिर में भगवास्थितक चर्न बताते हैं।

र्ग करोंकि गीरो दूध-माँ आहे एक्ट होता है, ताओ इम्प्यान वर्षा होता है और करिने क्या होता है।

<sup>🕯</sup> अर्थत् का उठा स्थान मिले, उसी कान स्टब्स करन फॉर्डने।

क्रान है, विकास कार्रित क्रम है, क्रमोड क्रूसमी इस्ता श्वास क्रम है और सर्वात्त क्षेत्र आर्थन (सरकता) है।

ायकी हुए - महामोगर हुनेव इस प्रधेन है? अनव मानि प्रथा है? साबू पर्रेन परण परण है? और स्वतान् किसे प्रकृते हैं?

्रमुक्तिये का—स्टेन हुवंत हत् है; सेन अरण नाति है; यो समस प्रमितीया हिए करनेवास है, यह सामू है और निर्वेत पुरस नाराम् है :

नवर्षे हुण—राज्यः ! जेव विको प्रकृते हैं ? ताप प्रक महाराज्यः है ? आसाम किसे कानदा आहेते ? और फोक विको महोते हैं ?

नको कुल-व्यक्तिनी विश्वता क्रिके कहा है ? वैसं क्या बहरतार है 7 कार किसे बाले हैं ? और कुर विश्वका कर्म

कृषिकेले कार—संपर्ध कार्ने किया पान के विकास है, इतिस्थितम् वैर्थ है, प्यासिक प्रातेको प्रोत्तव पान है और अभिन्योको एक प्रस्थ कर है।

नको पूर्ण-विका पुरस्को चरिका सम्बाध्य साहिते? गामिक जीन सहस्था है ? पूर्व चरित है ? कोन कहा है ? राजा भरतर मिलो सहते हैं ?

पुण्डिते वक—नर्मान्ते परिवार सम्बाग्ध व्यक्तिः पूर्व परिवार श्रद्धानमा है और गरिवाण पूर्व है; जो जन्म-नरामान संस्थापक पान्यत है। वह कारता कात है और सावक सन पावर है।

नंतर्ने पूर्ण-सर्वकार विको कहाँ हैं 7 वाम क्या स्थानकार 'है 7 किसे जानीय कहते हैं, यह बता है 7 और वैश्वास विकास अन्य है 7

्रुपिति कोरे—न्यान् धारांत उस्तेवता है, अपनेको सुराकृत वक्त कर्याय प्रदिश्च कार्यः क्या है, कार्याः कार्तः हैत साहाराता है और कुरायेको केत्र सम्बद्ध केतुल (सुरायो) है।

नाने पुरा—वर्ग, जर्म और पास—ने पाइस-विकेशी है। इन निता निवाहोचा कुछ उपानन की शंकेन हे प्रमाश है ?

नुष्यिक्ते वहा—सन वर्ग और पार्च परस्यर नाववर्ति हो सो वर्ग, अर्थ और स्थव—सोवेक्ट संबोध हो समझा है। " ा मधने पूक्त — मराजोश्व ! अञ्चल गरक विका पुरस्को प्राप्त तेला है ?

पृथ्वित योगे—को पूजा विश्वा गरेन्नेसारे विशी समित्रान सामानको सर्थ गुरुवार पित को नहीं हैता, पह स्त्राम करण प्रदा करता है। को पुरूष केंद्र, वर्धसाता, साहाज, हैताता और विद्यालीने विस्तानुद्धि रकार है, यह सहस्य करता साह स्थान है तथा धन कहा होते हुए की को सोन्याल हाए और कोनके रहित है तथा पीतेले का बाद हैता है कि देरे कहा है है नहीं, यह अस्त्रम सरक साह सरका है।

नको पूर्ण—पानम् । पुरन्, आसार, स्थानाय और प्राथमसम्बद्धाः क्रिकेट प्राप्त सम्बद्धाः सेन्द्र होता है, स्था स्था निकार करके सम्बद्धाः ।

पुर्वाहरणे कहा—दिन पेड़ | युने | हुन्त, प्रश्नाहर और प्रश्नाहरू—इन्मेरे सोई | पिरतीह सरकार है सहारकारों कारण है। अतः प्रश्नाहरूं क्रांस्वरणे एक करने कार्युर है। स्वाहरूकों से इत्तर विकेशनकों हुई रहनी सामस्थ्य है। क्योंकि विस्तरह क्रांस्वर अव्याद यह है तथा सहारका की वन हुन्त है और विस्तरह अव्याद यह है तथा, यह से स्वरं भी जा है तथा | क्रांस्वर, क्यांस्वरणे क्या हात्स्वर विस्तर् क्यांस्वर्ध—में क्यां से क्यांस्वरणे और पूर्व है है प्रतिकृत के कहि है, यो अपने क्यांस्वरण करना करता है। वारों के वह दिन्ती की प्रसार कुले क्यांस्वरण करना करता है। वारों के वह दिन्ती की प्रसार कुले क्यांस्वरणे कहा कारणे है हो वह दिन्ती की प्रसार कुले क्यांस्वरणे कहा कारणे है।

कार्य कृत-स्वाध्ये, त्रकृ क्यान स्वेतनेवालेको क्या विकास है ? स्वेत-विकासका कार्य प्रत्येकाल क्या पा त्येक है ? जो क्यून-मे विज करा त्रेका है, जो क्या काल होता है ? और को कार्यका है, जो क्या विकास है ?

वृध्योगी का—नमूर प्रथम केसनेवास सकते शिव होता है; स्वेथ-विकासक साम कानेवारेको अधिकार प्रथमक विकास है; को स्कूप-से विकासन सेता है, का सुवारे क्या है और को क्योंना है, जो प्रवृत्ति विकास है।

क्याने हुमा—सुरक्षे स्थान है ? आश्चामं अन्त है ? जार्न क्या है ? और सामी क्या है ? मेरे इन चार अन्तेका जार से ।

पुण्यांचे का—किस पुरस्का जान जा है और को प्रकार जी है, का दिनके बीको का पूर्व प्रस्तों भी अपने

<sup>ं</sup> अर्थाद् का पार्च कर्मनुवर्तिने हो हो इन सैनेका संबोध हो सकता है, शबैकि कर्च बकता आवश है, यह बाँद आंग्रहेत एवं दानादे वर्णका विशेष नहीं बोली से उनका २००१ए अनुसार होनेसे ने अर्थित मी सामक हो अर्थेने । इस अवह काय, वर्ण और अर्थ—शैनोका साम-साम सम्पादन हो रुकेता ।

मन्त्रे पीतर पाई प्राण-पात है प्रकार का से से बड़ी सुनी है। ऐय-ऐस प्राणी प्रमाणकों पर पा से हैं. जिल् यो वले हुए हैं, में सर्वात जोते दानेकी हमा करते है—इसमें प्रमाण और गया आहार होगा। सर्वात पादी विभी नहीं है, सुनियों को विमानिया है, एक ही सुनि पाई है विभागा प्रमा प्रमाण पान पान गया कर्नात साम पुरूष निर्मात है अन्तर्थ अस्मा पुत्र है, अस्ट विभागे पान्त्रमा सामे से है, यह पार्थ है। इस महानेहाना पान्नों पान्त-मन्तर्थ है। इस महानेहान पान्या प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र पान्ति क्षार-मन्त्राव्य सूर्वात्म आहि और पान्तिकार विभागे हमा सेम से है—पाई पान्ति है।

नको पूज-पूजो के सब अलेक सार श्रीक-श्रीक है हिने, जब कुर पूजकी की जबका कर के और का बताओ कि सबसे कहा की और है ?

नृष्टितः सेरो—निया व्यक्तिक पुरस्कारीकी कांत्रिका पुरस् व्यक्तिक पार्न और युविको सर्व कारत है, व्यक्तिक का पुरस् की है। विश्वको दृष्टिने तिथ-अधिय, क्षक-कु-क और कृत-व्यक्तिक्त्—मे जोड़े समान है, व्यक्तिकारों करी पुरस्त है।

पश्ने वह—राज्य है को सबसे बनी पुरूष है, कान्यी पुत्रने रोश-रोफ सामका कर है, इसरियो अपने प्रकृतिके जिस एकको दुर पाई, जो जीवन हो सबका है।

पुण्डित सेले-न्यक् ! यह से एकान्यर्थ, स्थानस्थन,

पुनिकार प्रात्मको सथन रेज्य और चौड़ी कारीनास न्यानकु स्कूत है, नहीं नेतिय हो नाम।

कारे वह—राज्यू ! जिसमें का ह्यार हाकिनोंक प्रमान का है, जा क्षेत्रकों क्षेत्रका हुन ज्ञानकों को जिल्ला कार्त हो ? कार्त जिल्लों क्ष्यूनका क्ष्मी क्ष्यूनकों के पूर क्ष्में के ? कार्त जिल्लों की ब्रोड्स पूर्ण ज्ञानकों किल क्ष्में कार्यका है ?

कृष्णिक्षे का—जों वर्गका नात विका धाव से वह गृह हुआ वर्ग की कर्मकों भी गृह कर देश है और वर्ष असकी गृह की नाम को की अर्थकों भी गृह कर देशा है। हुसीसे मैं वर्गका ग्राम नहीं करता, निर्मा के नह होकर वर्ग है के नाम में कर है। मेरा देश विचार है कि महाता सम्बंध और सम्बंध का पान पान पान को है। सोग मेरे विचायों ऐसा है सम्बंध है कि रामा पुनिहित कर्मका है। मेरे विचायों एसा कुर्या और काई—के पानहिं की, के देशों है पुनवारी करें की—देश के विचार है। मेरे विका मेरी हुन्से है, कैसी है काई है; उस होन्सेने कोई असल को है। में सेनो पास कोंके और सम्बंध करा ग्राम है रक्षकों क्याना है, इस्तरियों स्मृहत्य है

कार्य कार—बनारोड़ । हुन्ये अर्थ और बारसी थी सन्तातक निर्मेश सारत किया है, इस्तीरचे हुन्हारे संध्ये धाई बोरिक के कार्य ।

## सब पाण्डवीका जीवित होना, महाराज वृधिहिरका वर पाना तथा पाण्डवीका अज्ञानवासके लिये सब ब्राह्मणीसे विदा होना

रीतन्त्रपार्थ्य करते हैं—कार् । तम प्रकृत बहुते हैं तस पांच्या करते हैं पने तथा एक इसमें हैं उसकी क्रम पुरु-स्थार करते की।

वृतिहरने पूरा—पानकर् । आज स्वीन है स्वीह है ? आप पाइ ही हैं, ऐसा से मुझे पानून नहीं होता । आप स्वयूननेनेरे, प्रारंगिरे सामक पानोजेरे को सोई नहीं है ? सामका पाने वेतराय हमा ही हैं ? मेरे के पाई को को-नी, हमान-इसार वीरोसे पूर्व पारनेवारने हैं। ऐसा से मैंने पोन्ह नहीं देखा, विमाने इस सामित्रों स्वाप्तीजें सिंग हिया हो ! अब प्रतिवह होनेवर की इसकी इन्हिली सुसानी नीए संख्या को ! अब प्रतिवह सामन असन दिवसकी होते हैं, हो अब इसके बोर्ड सुहार् है सामका मिता है ?

सको कहा—सरलीहा । मैं हुन्हारा विकास स्थापना हूँ । हुन्हें देशकोड दिनों ही सही अध्या है। भारत स्थार, इस, स्लीप,

नुष्ट्रांत, रेगारं, अवस्थानमा, स्वयं, तथं और स्थानवर्ध—में प्रमा मेरे सरीर है तथा अधिता, रामात, राम्या, तथ, प्रीय और अगराम—इन्हें तथ मेरा मार्ग सम्बाधे । तथ पुत्रो सात ही तिय हो । यह नहीं अगरामांची मार है कि तुष्टारी सार, हथ, अन्त्री, विविद्धा और सम्बाध-—इन प्रीय स्थानकर सीति है तथा दुष्ये पुत्रा-न्यार, फोक्ट-मेर्ड और सराम्यते ही दुर्श है, सीवके से त्यान्यत्वकर अध्येगर होते हैं तथा अभिन से हेन अगराम्यावकर असी हैं। हुन्हारा प्याप्त हो, में वर्ग है और हुन्हारा सम्बाधित सम्बाधित स्थानते ही वर्ग सामा है। निकास रामा है हुन्हारी सम्बाधित सारण में दुष्यार सामा है, हुन्हा समीह पर परित और, जो मेरे पत्र है, कार्यो सामी हुन्ही।

वृत्तिको सह—परमन् ! पहल पर तो मै पहें मंगळ

है कि विस सहस्यों अरलैस्बीत प्रत्यस्थातुको पुत्र तेका साथ एक है, उसके अधिकेतका तोच न हो।

क्षणे कहा—राजप् है जा प्रमाणके अरुवीतर्वित सम्बन्धातुम्बों से दुन्तरी वरीकाने निर्ण में ही मृत्यानारे हेक्टर मान मना वा । यह मैं तुन्दें केत हैं। हुए कोई हुमरा यह और मॉन हो।

कुमिहर बोले—इर माद्य वर्गका करने हो, जन तेवार्थ वर्ग जा लगा है; जल: देख वर वैश्वित कि इसने इने कोई पहालन न सके।

वह दूनसर वरकार कारी बाह—'कैंगे हुनों बह कर विधा। सबारि हुम पृथ्वीपर अपने इसी कारते विधायोगे, में भी हुनों सोई पहचार को सबेता। तथा हुमनेने मो-मो नैसा-केस प्राकृत, बह वैसा-बेसा ही क्या बारण कर सबेता। इसके रिसा हुम एक सीसार कर की बॉम सो। राज्या | तुम मेरे पृथ हो और बिहुरने की मेरे ही अंशने क्या सिमा है; अस: मेरी पृष्टिनें तुम केनों ही प्राप्तन हो।

पुष्तित्ते वहा-प्यापन् ! आप स्वतान वेकनियेत हैं। आप सामान् बावके ही वर्धन हुए, इससे अब के क्षेत्रे वचा मुक्ति हैं ! से भी आप जुड़े भी वह देगे, वह वै हिस्-अस्तियर सूना। मुझे देशा वर केविको कि मैं कोच, बेस् उसैर अवेबको चीत सक्षेत्रक दान, वय और सम्बर्ध कर्वत के प्राथित अवृत्ति सो।

वर्गरको बद्ध:— वास्तुमुत ! इस मुक्तेले के हुए सामानते ही सम्पन्न हो, आने भी तुन्हारे कावनानुसार कुन्में वे सम वर्ग भने सीरो :

र्वतन्त्रपायस्य कार्य है—देशा सहका सम्बद्ध वर्ग असमान हो गये तथा सब पायाम साम-साम असमाने स्वैद आये। यहाँ सामन कहोंने जा कार्यों क्रमानको सम्बद्ध असमी है है।

को रहेग इस सेतु आर्कानको कानने रहेने उनके पनकी असमि, सुद्राविदेवने, दूसरोका कर इसनेने, परकीनकाने अक्टा कुम्पासने कभी अवृद्धि नहीं होती।

र्वज्ञानसम्बद्धाः स्थानसम् । वर्गतन्त्रः आहः सकः सर्वप्रकृति चन्त्रसम्बद्धाः अनुवद्धाः स्थानसम्बद्धाः सर्वति पुरस्तरम् स्रोति । ये सम्बद्धाः स्थानसम्बद्धाः स्थान

करनेवाले थे। एक जिन के अपने हेगी व्यवसार कराँकारोंके काम बैठे थे। उस समय अवस्थानातके तिले जाइन लेलेने दिले जाउँने क्रम जोकार कहा, 'माँनगण' देश कास वर्णना रास्-



ज्ञान्त्री करित्यान्त्री प्रमुचे हुए कार्गे निवास कारो रहे है। अन् इन्में अध्यानमञ्ज्ञ केरान्त्री वर्ष होन है। इसमें इन क्रियकर एकें। ज्ञान इने इसके रिक्ते आहा देखारे कुछ करे। दूरावा कुछेंकर, कर्म और इन्क्रिने इन्मेर पीछे गुप्ताबर स्था दिने हैं इन्में पुरवासी और सम्बन्धित समोर कर दिना है कि गी। इसे बोर्ड अस्मय देखा से अस्मेर इन्मा कड़ाईका स्थादकर सिन्धा स्थान अस्म इने प्रस्ताकरों अन्या कोन्द्री असा प्रदान करें।'

तम समझ नेहनेता गुनि और परिचीने उन्हें आहीर्ताह हिने और उससे फिर की चेंट होनेकी आहा श्रमकर में अपने-अपने आवामीको करें नमें। फिर बीवको साथ प्रीची पर्याप जाने हुए और डीवटीके सहित नहींने करा दिने। एक कोश जाकर के हुन्हें ही हिन्हों अझलावार आहम्म करनेके दिने आवास में सुन्हें ही हिन्हों अझलावार आहम्म करनेके दिने आवास में सुन्हें करनेके विन्ने बैठ पर्ये।

# संक्षिप्त महाभारत

# विराटपर्व

# विराटनगरमें कौन क्या कार्य करे, इसके विकास पाण्डवोंका विचार

न्तरायणे करतात्व नरं चैव क्येलक्य। देवी सरकार्थी कार्स वसे कार्य्युटीर्पेत् 🛭

अन्तर्भारी जरायकात करवान् संकृत्य, उनके निक एका नामका नरसा आहेर, अबदी सीमा प्रकट कार्यकारी भगवारी प्रशासी और असे क्या न्यूनि वेहन्यान्यो नवस्थार करके आसूरी सम्पतियोगर विकासहित्योक अन्तःभारतको सुद्ध कार्यवाते व्यापाससम्बद्धाः भारत साहिते ।

कानेकारे पूरा-सहस् । वेरै प्रीरक्कोरे क्रोकके शको शह उठते हुए विशवनात्वे अवने अवनवात्रका समय किस जन्मर एस किया ? तथा १:वा-पर-१:क महानेवाली परिवारत होवती भी वहाँ बैजो क्रिक्टर क सर्वा ?

वैप्राणकार्यने वदा—राज्य । तुन्तरे प्रतिवाद्योगे वर्त निम प्रकार शहलकात किया था, से काला है कुने। महारो प्रस्तान पालेके अन्तरत एक हैंग वर्णका प्रसा सुविधियरे अपने साथ पश्चामेको पास सुराज्यार इस अस्तर सहा—'राज्यसे बहुर होकर करवें यूने हुए हमलेगोडे करा मंत्री बील गर्ने; जन का नेपाली लग एक है, इसमें कई कारते करिनक्ष्मेका भागम काले कुर गुल्लाको स्था क्षेत्रा। अर्थने । तुन अपनी प्रतिके अनुसार कोई अरक्ष-स ्रिकासस्थान महाओ, **पर्हा इंद एक लोग काल्कर एक को** हो और प्रवर्ताको इसकी कानोकान कुनर न हो (

अर्थुन बेरो---पहराव । इसमें समिक भी संके नहीं कि वर्गएको हिने हर बरके जनावते हुने कोई भी करूक क्षांत नहीं सकतः का इसलेन सकान्यवर्गन इस पृथ्वित विवासे खेंगे। से भी मैं अपने निकार कारेकेक **पुरा** रमधीन एवं तुस पहेंके जम सारहा है। कुरहेकके जारा-पास व्याप-से सुरम्य और है, नहीं बहुत जात होता है।

कार्य, न्यास, कार, प्राप्त, पुगवा, क्रमिताह, त्राह और अवन्त्री । प्रत्येशे विक्राी भी देशको आर निवासके किये अब्द कर है, अरोपे हम एक लोग इस वर्ग रहेंगे।

प्राथिति व्या-पूर्णले काले ह्य देवीकी मानदेशका एक विराह बहुत कान्यान है और प्रावहनकार हेय की रहता। है, तरन ही पह अहर, कर्मान और पुद्ध की है। इस्तीओ विकास माने हो हम एक वर्षतक निवास और और राजाका कुछ काम करते हो। किंदु तक इस लोग का कराओं कि मताबेदाने राते हुए हम राजा विशासके जिल-विरा कामोओ बार प्राप्ते हैं।

अर्थने पुरत-नर्वत । अस्य अन्ति राष्ट्रमें केले रह रमेरे ? अवना प्रदेशना काम करनेते विराहतनार्थे अस्त्रक का स्टेंग ?

पुरिवर्ति जोते—में पाता चेरक्षेची विद्या भागत हैं और क रोत को क्या भी है; इसीओं क्या गामक हकान करका राजके कर बाईना और उनकी राजस्थाता एक सम्बद्ध करा क्षेत्र । वेश स्थव क्षेत्र--राख, वन्द्री इस रामके जनकियोंको कारा केरकार असा स्वाम। चीनके ! अस हुए महाओ, चीन-सा साथ सारेके सिएको भूषी जलकार्यक स्व संबंधि ?

चीनने बद्धा-में रखेड़े बनानेके कामने बहुत 👢 उता: काम कार रहेका कारत रुपके सवाले असिवा होतीय ।

कृष्णिर—अस्तर, अर्जुन प्रश्न कार करेगा ?

सर्पुर-में इस्केर्न सङ्घ तथा इस्तेश्लेखने श्रीवर्ध व्यवका प्रित्या केंद्री ग्रेंच क्षेत्र और अपनेको नद्वाका चेति कर 'ब्रुक्तव' तम काईन्य। वेश काव होच-राज विरादके असःश्रुतकी विष्केको संगीत और क्सके राम वे है—पक्षार, वेदि, कला, क्लोप, पटकर, | कृतकालको विका हेगा। सब हो उन्हें कई प्रकारके कार्य

कमन्त्र भी मिलाग्रेग्ट । इस एक नर्तकीके उनले में सक्तेको । हिपाने स्ट्रीय ।

वृद्धिर—चैना नकुता ! अस पूर असने पात बाजतो, एवा निरामों को एसमें इस कीए-स कार्य एक्स है शबेला ?

२५२५ - जुले अवशिकारकी विश्लेष स्थानकरी है, बोव्हेंको बात विकासना, राजी रहा और परान करन रूप रूपे रेगोको विकास करव---पुर प्रम कार्योने में विकेष कुरार 👢 आ: रामाने वह वाकर में समय जन परिचय बार्कान और कावा अक्या कावार दोवा।

नव पुष्कियो स्वयंत्रचे पुरू-नीमा । क्याबे पात पानर तुम विज्ञ प्रवास अवन परिवय होने और सीव-स काम करके अपने क्रमानको गुरू एक सन्देगे।

अवरंग-- ये राजा विरामको मौजीबो विभाग रहेला । विकास हो दक्क भी नहीं न हो, मैं और पहलूने पर सेवा है। भीओंचे कुने और परिक्र वानेने पी मैं कुमर है। मैंओंचे | नेवे एक करेबे। जा: जान नेरी ओस्त्रो निक्रिया रहे।

जो रखाय का वरित पहरणमा होते हैं, रूपका भी मुझे अकर क्रम है। मैं का चूच स्वक्रकेवारे केवेचों भी व्यवता है, किनके कुमको केन नेनेनकमी महित की भी गर्भ बारण कर करते हैं। इसीएमें में मेंओपी सेन्द्र मतीया। मेर नार हेल 'स्टिक्सर' । यहे बोर्ड प्रकार की सबस: में अपने कारी कारको अस्त का है।

अब पुरिक्षेत्र प्रीर्थाची और ऐक्कर कहारे तरी-बा इक्कामते के इमानेनोको अनोधे की अधिक मारी 🖢 यात यह वहाँ वाकर सील-का वार्य करेगी ?

हर्पन्ते केली—सहस्रक । आप के विके विका प करें । में कियां कारोंके पर नेवाके कार्य करते हैं, उसे रीरपी बाह्रों है; अत: मैं 'ग्रेरफो' बाह्रबर अवना परिवार हेती। विक्रोंके श्वासक कार्य में अबके तरह सरवते हैं। पहलेक medel für fi Bribel wift alle fi gut: applieft केन्स्रात् राष्ट्रिके प्रातंत्र अस्त्रात, निरामको कर्त सुकेना भी

### धीम्बका पुषिष्ठिरको राजाके यहाँ रहनेका देन बताना

सुनकर एक कृषिहरने कह-"विकाल विकास अनुसार को-को कार्य हुमाचेन आरोगओ है. हो इस हुको सुना दिले; पुढ़ो की अवसी व्यक्ति अनुसार को क्रम अस्ति क्षा प्रकार क्षेत्र करना कर्मक कराया । सक प्रवेशिक क्षेत्र भूमि लेक्को और एलोक्कोंके साथ एका कुळके प्रश्वर प्राचन यों और प्रमारे ऑक्वोत्रकी यहा करें । इन्होन आहे सर्गांव और रोबक्यान जाती एक हैक्स प्रत्या को जाने र प्रथा के सब कियाँ और प्रेंक्टेकी दासिको सरोहको और बैक्टरेसक्ट पञ्चालको सीट जाने । विस्तिके प्रक्रिक सब्बो बढी ब्राह्म कारिये कि "इमें क्रायानीका पात नहीं है, वे इनको हैतावनी ही क्षेत्रका न कर्न कही करे गर्ने ।."

क्षा जनार परस्य निक्रम करके प्राथमोंने कैना बुनिसे सरका हो। बीमाने उसके सरका अपना निकार इस इकार रता—'राज्यमे ! तन्त्रे सक्तनः सक्तः सेन्दः स्काः मज-एक और मंत्रि आदिने क्यापने नेकी व्यवस्थ की है, तान डोक है। अन में हुने यह बाद देश प्राप्त है कि एमके माने सुम्बर केरर कांच कांच कांचे। एकारे मिलन हे से पाले हरकाओं निवास कार्य जात पेन हेनी कदिने; रामाओवा ५० किवार कवी वहीं करन चाहिये। अपने लिने चही अधान करेंद्र करें, विकास क्रास्ट

कैल्याकारों करते हैं—कैपरीपरीक तक प्रकृतोकों को | कोई कैल्याक न हो । अन्यकार प्रकृतको कार्य स्थानके खरिकोचे केल-केल वहाँ कहारा वाहिने । इसी प्रध्या पी



अन्य:पुरमें नाने-आनेवाले हो, जा लोगोसे तथा हवा विकसे

रिक्रम नहीं परानी पातिले । प्रोते-से-प्रोच्य पत्रमें भी सम्बन्धे कारकर हो करे, ऐस्ट करनेटे कभी हारे नहीं सहनी जाते । स्ति और वेकाने क्यार मानवर प्रतिहर प्रमाहीक क्राम्प्रे परिवर्ध करने व्यक्ति । यो उनके स्वय करतार्थ कर्तार करता है, यह नि:संबेद करा काल है। एक विक-विक क्रांके केने आहा है, जाका है काल करे सामध्यों. मानवा और क्रोकको सर्वक अपन है। जिल और विस्कारी मात को; तिक्से भी देशका कामका बाह्य निर्देश है । सके विक्यों और सब बसोने प्रमाध अनुसार हो। से बीन राजाको पर्यंत न हो, जलका कहानि होकर न करें। सर्वंत कारतीये प्राचनीत कारण क्षेत्र है और मानी भी सनने क्रानके विकासित न हो । देख कार्यन कार्यकार करून ही राजके को या पासक है। विकास पूरत प्रकार स्थीने या क्षाचे जारते की: यो प्रका लेकर कार केरेकरे हो, अहे एकाके, विकारे जानमें साम कार्यने । बाँव राजा कोई अर्थन बात बाद है, से को बातोंके करनी अध्यक्ति न बारे । 'से शुर्तित है, कह मुद्रियत है, ऐसा मनमा न विकारे, सक राजाको दिए समर्थकास कार्य करता हो। अस्ते केनी क्रम, ओड और कुटबेको कार्च न दिलाने; बहुत कर्न न क्याने । विकारिको हैंको हो रहे हो से सहा हुई न अबक करे। प्राप्तकेकी तरह सहका प्राप्तार की र हैंसे । में किसी क्यूफे पिरानेपर प्राथिक यारे पूरा नहीं काल, अनगत हो जानेगर महार कृती नहीं होता और संबंधे बंदबर्ग तथा सम्बंधन सहस है, सभी राजांद्र कर्त दिया सकता है। और कोर्न कभी पहले राजका कृष्यका रहा है और मेंहे अकारण जो एक भोगन पहे. तो भी चहि का स्तारी निष्य नहीं करता हो जिन क्षे सम्पत्ति जार हो जाती है। एक जनन ही त्यान सेन्कर श्वाकी कुरोंके साथ अधिक बालबंध नहीं कंटाने कडीने. यह आहे येथ अवस्तिय उसको स्व प्रकारों स्वोधिक प्रक्रियोरे क्रिकेट करनेका जन्म बाते रहत बाहेने । यो बाते हर अल्प्यूर्वक रहते लगे ।

है। रखते हो या जो लोग रहकते कहता करते ही, करते भी । यह उत्तर है एकनियाल, मुद्धि-सलते पुरत, करतीर, सरकारे, एकट, विदेशिय और प्रणायी मंति समाने की कार्रेक्टल है, जूरे एकके करने पुरवत कर समारा है। का इस्तेको विस्ती कालो किने मेक क का है, का प्रकार को कर्म है कावन आगे जा बाग और एके-'मेरे हिंको क्या साहत है ?' क्या प्रतासकों दिया समात है। प्रकार राज्य अवसे केन-पूर्व र काले, उनके अरुप रिकार, व को प्रका अनेको समारको निकास सरसा न निका को । हेना करोते हैं बहुमा राज्यका क्षेत्र हो समाग है । परि कराने विक्रते बारपार नियुक्त कर दिया हो, हो जाने दूसरोले काने कामें क्षेत्र में कर म रेजे; क्वोंकि के मोरीका कर केला है, जो फिल्के-प-केलो दिन प्रमान सम्बद्ध प्रमान स्थान क्षेत्रम पहार है। क्षत्रमा । इस उत्पार प्रकार्मक शब्दे करको बहुने एकबार अबहु बार्गन करते हुए क्रेसली वर्ग पूर्ण करें; इसके बाद अपने देखते अपना शब्दमा निवास ।"

> क्षेत्र है । इसके बादा कृषी और बहुतहरूमन, विद्वार्थको क्षेत्रकर कुरूत कोई नहीं है, जो देशी कर करा सके । अब हुने कुर प्रत्यको सुरक्षात्रक विकासे, स्वाधि प्रत्यान सार्थ और विकासी क्षेत्रके हैंकों जो कर्तक आकारक है। को आप पूरा करें ।

> रेक्क्कार्य करते हैं—एका चुनिविश्वे ऐसा सहरेका इंक्क्रुकोर्न केंद्र प्रोक्कारे सामने समय की क्रेस्ट की प्राथमिक कर्तन है, अन्या विभिन्न सन्पत्न किया। क्ष्मानेकी अभिनेत्रात्मानी अधिको अन्यतिन काके उन्होंने well miffe går flemmir fieb deren went jeit विकार हेरलेंद्र कर परकारी जार, प्रकार और क्यांक्योची प्रविचन की और बैपरीको आने करके ने अक्षातामान्द्र मिन्ने पान दिने : अनोद्र प्राप्त वानेपर सोप्यानी का आक्रमीय अंतिको लेकन पहाल देखने करे गर्व । तथा इन्द्रसेन आहे सेक्क प्राप्ता पानार एवं और चोडोंकी राज

# पाष्ट्रकोका मत्त्वदेशमें जाना, ऋषीवृक्षपर अक्ष रखना और युधिष्ठिर, भीम तथा द्रीपदीका क्रमञ्जः राजमहरूमें पहुँचना

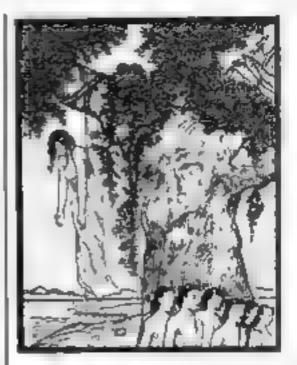
बयुनाके निकट प्र्यूजकर उसके दक्षिण क्रिक्टरेरी करने रहते । जाकी बाता फैला है है की की की। ने कारी कर्मानी मुख्यमोपे और कभी संबक्तेंने दहती नारे हैं। आने नायर में कुराबंते उत्तर और प्रक्रमणे दक्षिण बहुतरहेव और 'एक्कानेके निकट पहेंच करे। तब मुख्यिति अर्थनी

केल्लाकाओं कारो है—स्थानकर म्हानस्थानी पालाम | पुरसेन देखोंके बीचसे होकर कहा करने समे। उनके हाधारे क्ष्मुन और कमरने कालार थी। इसिन्सा रंग फीका हो गया था, कही-पूर्वे वह नहीं भी। धेरे-धेरे कावत पार्न से करके ने महानेहरूने का पहुँचे और समया: अपने बाहरे हुए निरुटकी बहर—'रोज । जन्मरे अनेच करनेच वही वह निजय है बारा कार्डिये कि इसकेन अपने अक-क्या वहाँ रहें। दुखारा का गार्कीय समुद्र बहुद कह है, इंकाल्डे इस सोनोने इसकी प्रसिद्धि है, जन्म की इसकेन अक्षेत्रों क्या नेकर इसके प्रवास केने। ऐसी स्वासे हमें अपनी प्रतिक्राके अनुसन दिस बाद्य करिंग हैंनी कार्यास करना प्रदेश।'

अपूर्णने करा—सकर् । प्रणानस्युपिके निकट एक देशियर जा करिया ज्युर करा ककर कुन विस्तान है जा है। इसकी कानाएँ नहीं करावक हैं, अंधः इसके अबर विस्तान करून और है। इसके निक्त कर समय जाई ऐसा कोई प्रमुख भी जी है, जो प्रजाननिको इसकर करा रकते हैंक कोर । जा वृद्ध राजीने बहुर हुर अंगराने हैं, इसके साल-साल हैशक कीय और सर्व अबी को है। इसकिये इसीयर इस इसके अब्ध-एक रजवार करावें प्रकेश करें; और वहाँ कीय इसके की, अबके अनुसार साल करीय करें।

केशानकार्य पार्ट है--क्लिक्से में प्रकृत अनेत शक्त-प्राथमिके वर्षा रक्षानिक क्रवेग करने उन्हें। यहने उन्हें क्रफो-क्रमो बनुस्की होते अतर ती; विद बस्माकी हां प्रकारों, प्रकारों और क्षेत्रें अलग क्षेत्रों परकारे क्षानीको अनुबद्धे साथ गाँवा । तथ श्रुविद्धाने अञ्चलको क्का-'पीर । तुम प्रचीवर पहलत में कहा रक से + अर्थन पुले ही नकुल का पश्चापर कह नवें और कालेंड कोंक्रें में, नहीं वंशीका पानी व्यानेकी संभावता नहीं की, समके बहुव पंताबर ज्योंने एक कान्या स्वतिने क्रमान्ये राज्य बीच द्विया । इत्त्वे बाद पान्कारेने एक पुरेकी मन्त्र सम्बन को अंत क्षेत्रधर सहका दिया, जिसमो उसकी पूर्वको कारण कोई मृत्या सुक्रके निकट भ आ समि। यह सम प्रमान करके बुविद्यित्वे पीची व्यक्तिक एक-एक गुप्त कर रखा, जो भागका कर जनसर है—जन, जनस, निजन, जनसेन और क्षपञ्चन । किर क्षपनी प्रतिक्राके अनुसार अवस्थान करकेके रिजे अपूर्णि विराधिक व्यूता कई नगरने प्रवेश किया।

नगरमे प्रकेश करते समय महाराज चुनिरहिले चहानेके प्राच निरामार विप्रकोशरी दुर्चका समय विकास होती प्रस्ता हो नगी। और कहोंने अबट होतार निराम तथा सम्बद्धानिका बाह्यन दिया और यह भी कहा कि 'निरामनको दुर्गो मोही चहान नहीं स्थेतन ।'





त्यक्तार से एका निराहकों समापे गये। उसा निराह एकसम्बद्धें केंद्रे से। समापे महत्ते मुश्लिष्ट उनके दरवारणे पहुँचे, से इसा कारणे माने बर्धकान होते गये से। सही पहुँकार उन्होंने राजाहे निरोदन किया कि 'प्रसाद ! में एक



प्रदान है जेरा सर्वक तुर गया है, इस्तीओं में अपने पहें व्यक्तिकोंट रिन्टे जाना हैं। सरकी उच्चले अपूरण स्था कार्य वाले हुए आवस्ति निकट प्रतिकी में इक्स करणा है।

प्रमाने सही प्रशासको साथ उनका सामा किन्छ और इनकी प्रश्नीय शरीबार कर सी। किर प्रेम्कृतिक पुत्र— इस्तुत्वकेला । में बढ़ सामना बक्ता है कि तुमने किस एसाके प्रमाने बढ़ा राधारकेका बढ़ा किया है, हुन्करा सम और मोग करा है, इक्ट हुन क्वेंच-सी करण नामी है।

पुरिक्षीर कोर्थ—एकप् । वै व्यक्तमार गोर्थ्य जनसङ्घार है। मेरा नाम है कंका। चाले में राता कृतिहित्यों साथ चाल वा । जूना चौरानेवारवेथे पास्त केक्क्रोको व्यक्तमा चुले विक्रोग साम है।

तिएटने सहा-केक | की सुन्ने अध्या कि क्याना; सैसी प्रवासिने में कामा है, केसी ही सुन्ने की निकेशी | व्यानकेके क्या और पोजन-नान आदिका जाना की कर्नात कामने योगा | व्यानके एउना, जोना और तेना आदि क्या कीनके वान-दारा आदिको देखायान सुन्तर कोना, दुन्तो कोई नाम की राज्यसम्बद्धा काठक स्त्रा सुन्त कोना, दुन्तो कोई नाम की राज्य आया | जो लोग वीविकाके किम कह पाने हों और सुन्तरे पास अववार कामन करें, उनकी अर्थक हुन हा काम पुत्रको सुन्त सकते हो; सुन्ते विकास दिस्ता है कि अन् प्रानकोसी सभी कामनाएँ में पूर्ण कर्नाट । तुन मुक्तो पुक्र भी सहते सम्बन्न कर्ना का संबोध न कामा । तकारे इस प्रकार कारकीय करके मृतिहित को सम्मानके साथ वहाँ सुरक्षकंक स्तुने करो । उनका मुद्दा स्थल विस्तीयर अब्देश न हुन्स ।

कारकार सिंक्की-की जात कारको कार्यो हुए वीकोन कार्यो इस्तरों उसीवा हुए। उसके इकने करवा, करवी और कार बड्डिके किये एक स्वेतिक करवा हुए। वा। वेस वो स्वेतिका का, पर उसके कार्यको केव निश्वत एक था। उसीने अंको ही कहा—'स्वान् | नेस नाम कारका है। वे स्वोतिक कार्य कार्या है, युक्ते बहुद अन्या कीरण करवन अंका है। असर इस कार्यके लिये गुड़े रहा है।'

शिवटने कह—काराम । जुड़े विकास नहीं होता कि हुन संक्षेत्र हो, हुन को इसके समान रेजाड़ी और पर्यक्रमी क्षेत्रकों की हो ।



धीनकेन कोले—सहाराम । विकास कीमिने, मैं सरोहका हूँ और अध्यक्ष होता करने आया है। राम्स कुमिहिन्दे भी मेरे कार्य हुए पोक्सका हबाद विका है। इसके विका, मैसा कि अध्यो कहा है, मैं पराक्षमी भी है; बताने भेरे स्थान दूसरा कोई नहीं है। पहलाबोनें भी मेरी क्यावरी कोई नहीं कर स्थान। मैं विकों और इस्थियोचे चुन्न करके आवको प्रसान विकास करेंगे।

मिर्टिन सहस्-अस्तर, वैका। तुम अवनेको योजन करनेको स्थानने मुख्यार व्याते हो तो नही नहा करो। नहारि मैं यह काम तुम्हते योग्य नहीं प्रत्याता, तथानि तुम्हती हुन्छ। देशका सीकार कर रहा है। तुन नेरी पाककारको उत्तर अधिकारी रहे । यो लेग पहलेसे कामें काम कर ये हैं, मैं क्षुंद्र का सम्बद्ध काली का पह है।

का प्रवार चीपरेन एक निराली चनकाले जनन सरोहने हुए। उन्हें कोई पहलार न सन्तर । सन्तर्थ में को ही क्षित्र क्षेत्र गर्ने । इसके बाद क्षेत्रके क्षेत्रकेवा-मा केन करावे पुरित्याची कहा स्थापने प्रकाने ताली। यह समय कहा विराजको सभी पुरेच्या अपने महत्त्वे सम्पन्धे प्रोप्य ऐक स्त्री चीं, जनकी पुरि होप्योगर पारे । वह एक बात बारण किने सन्त्रका-सी पान पहली थी। एक से अलब्द अस्पूत वा ही। एमीने को अपने कार मुस्तकर कुछ--'काकारी । हम कीर से और एक वस्त काले से ?' ईक्टर का-



'ब्याएनी । मैं ग्रेरकों है और अपने केन काम ब्याही है, से पुत्रो निष्टक करेना, में अस्ता कार्य करेंगे।' स्टेक्स केरने—'मानिन ! एकारे-वंशी प्रकारी कियी वेसकी जो हुआ करती। कुम से बहुत-से कहा और दुविकोको स्थापनी | समी: उसे भी कोई बहुकर न सहस्र।

कर कारी है। वही नहीं आँचें, कार-रकत ओठ, प्रश्नके क्रमान नरण, नद्र और नर्फानी मांत्रसे इसरे हां और पूर्ण कारको क्रमा कोहर बुक्तवका ! व्य 🛊 हुनार सुना का, विक्रों स्थ्योनी का पहते हो । आ: सब-सब कारको, कुन कौन हो ? ब्या मा देनतर हो नहीं हो ? जबका हर कोई सराय, देशकाय, नारकाय य बाहरती पेतियी या इनक्रमी के नहीं से ? अकब तथा या प्रसार/स्थी वेरिक्केरिके कोई के ?"

क्रीवर्ड क्षेत्रके क्षत्री है से स्वत्र प्रकृती है क्षेत्रत वा प्रकर्ष की है, तेवका कार करनेकार्य संस्त्री है। करनेको सुक्त कराना और पूंचरा करनी है, करून क अकृतन भी बहुत अवहा तैयार करती हैं। प्रतिस्था, जनस, करण और पांच आहे. पूरांचे जूत सुचर हो विकित-निर्मित प्रत पूँच प्रथमी है। आपने चारे में प्रमारनी क्रेक्ट्रेची सेवाने क पूजी है। वहाँ-वहाँ पूज-वितकर लेखा करती रहती है, और भोजन रूपा पळके फिक और क्क को नेती। का वी किया निरू कर, अनेते ही संतोष कर लेकी है।

बुरेन्फर्न का --- भी राज कुमर भोतित न हो ते मैं तुने अपने मेरावर रहा समाजे हैं। जिल्हा कुछे सेवेह है कि एका दुनों देशके ही सम्पूर्ण विकास तुन्हें बाहरे हरनेने।

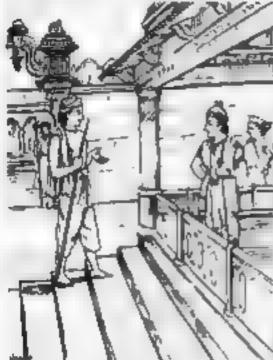
इंग्डे केचे—बहुतनी । एक बिट्ट अक्ट केंद्रे भी मनुष्य कुछे प्राप्त की का सकता। बीच तकन गन्धर्य मेरे भी 🕻 के ला। नेर्य पता करते चरते 🖟 को पूर्व अपनी कुरन नहीं हेता, जुलमें के नहीं जुल्लाता, अरके अपर मेरे वीं। नक्वलीन उस्ता रहते हैं; परंदु को पूछे अन्य सावारण विक्रोंके सम्बन क्रम्युम्बर की क्रम्य बस्त्युक्तर करना आजा। है, उसके करी एकने इसीयकन करना चलता है; की पति को कर उससे हैं। अब: कोई भी पूरू गुड़े सरावारते निकरिता जी का सबस्य।

हरेकारे का--वीदनि । यदि देशी शत 🗓 से वै हवे काने व्यापने रहेगी। तुने पैर वा सुप्तर नहीं हुने पहेंगे।

किएको एपीने का इस अवस्य आवासन दिया, उब व्यक्तिकर्पका कार कारेगाचे स्टी ग्रेकी को उसे

## सहदेव, अर्जुन और नकुलका विराटके भवनमें प्रवेश

वैज्ञानको कर है—सन्दर्भ स्वरंभ भी व्यक्ति के बनावर वेटी है क्या केवल कुछ उस निरुद्ध भोगासके निर्देश आया। जा तेवली पुरुष्को कुछ्यन एक कर्म उसके सर्वाप गये और कुछ रूपे—'हुए विज्ञाने अस्ट्री है, कहिंसे कार्य है 7 कीयना बाल करण व्यक्त



है ? रोक-संबा काओं!' स्कूरेंगरे कहा—'मैं करिया पैतर है, तेरा कर अधिक्रीत है, बहुत से क्याओंड का पीओंची संवारके दिनों कहा था, वर आ से से पता नहीं सही को गरें! दिना कर दिनों परिच्या नहीं कर पहले और क्याओंड कर अपने दिना कुना कोई कर पूर्व गरेंद नहीं है, निहांक नहीं निवारी करें!!'

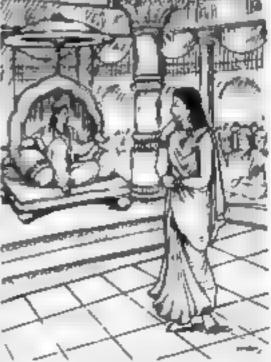
राक निरातने कहा—कृषे किस कारणका सनुष्या है ? किस क्रमेरर कार्ड क्रमा कहा हो ? और इसके मेरने हुन्हें क्या नेतन हैन क्षेत्रा ?

उन्होंन कोले—में यह जान पूजा है कि काम्यांकी गैंआंको रिकारनेका कार करत था। वहाँ जोग पूछे 'तरिकार' वहारे में। कार्यक कोलक अंदर निवाद कीए यहाँ है उनकी पूछ, अधिक और कांचर कार्यकी संस्था पूछे का कार्यूम वहाँ है किया गिए भी, फिटमी है और किरानी होंगी—इसका पूछे कीम-कीम जान पहाँ है। मिन उसकोंसे गैंअंकी महात होती हो, उन्हें कोई गेंग-न्यांनि ने

क्काने---इन प्रकारों में कानता है। इसके दिला में उत्तर स्वापनीयकों होने केलोकों की प्रकार रहता है, विशवा पूर हैकोब्याको कव्या कीलों की पूर्व प्रकार है।

निवाने कहा—मेरे पाल एक है रंगके एक ताक पश् है, इसमें दानों जान गुलेका समित्रमा है। सामके पर पहलों और इसके पहलोंको मैं दुखारे आमिकारमें सीवता है। मेरे पह अब दुखारे हो जानेन चोंने, इस उच्चार समाने परिचय करने उद्योग कही दुससो साने समे; उन्हें भी नोई पहलान न समा। समाने उनके परणा-नेपालका जीवत अवन कर दिया।

आरमार को एक क्यून सुन्त पुन्न देश पा, यो विकोस कथा आधुरण पाने हुए सा, उसके कानेने कुरवार और सकीने पश्च तथा सेनेकी पृत्ति थी। अली रुके, रुके केस पाने सर से : भागई मही-मही और स्वीके



वाका वरवानी कार थी। माने वह अपने एक-एक प्रगते पृथ्वीको क्षेत्रका कारका का। वह बीरार अर्जुन का। क्या विराह्मी सामने प्रमुख्य होते अपना इस अवस्य गरिवन विका-स्वाह और क्यो कारका है। तृत्व और प्रनित्त्वी कारको कहा अर्जन है। का मुझे अरुपको इस कारकी विका देनेके विने रक्ष है। में सहस्योके का रावनेका कार अर्जना।

विकरने कहा<del>ः प्राप्तके । तृष्यने की प्राप्तके के पा</del>र क रोता पूर्वे अधिक नहीं जान पहला; अध्योग में तुम्बरी प्रार्थन क्रीबार कमा है, तुन मेर्ड बेटी कार क्का रामप्रीकारकी अन्य कमाओंची पुरुकत्त्वची हिन्दा हैना करे।

यह स्थापत महाभारेको स्थापताको प्रशेष, जुल और सका प्रक्रमेची करमानीने परीवा की। क्राके बाद अपने मनिवारि के सरस्य सी कि इसे अकानुसर्वे एक्स वर्काने स नहीं ! फिर करणी कियाँ पेकाइर आके उपुंतककोची करित करानी : यब सब रखारे जाका ग्रांतक क्षेत्र प्राणीक के गन्त, तम को सन्याने सन्तः पूर्ण सुनेत्री सदस विसी । पह्नी प्राथम अर्थुन क्या और अस्त्री व्यक्तियोग्ये क्या अन्य स्वतियोको यो गाने, कमाने और नायनेकी विश्वा हेरे रानी: इससी में इस समावें किया हो गये। बायानेओं मानाओंके साथ यहे हर थी अर्थन सह अन्ये कालो पूर्णकर्मी बहाने रहते हैं। इससे बहुर का बीधरका कोई भी Di Tour 7 per :

हरके का गड़न अक्टाएवट के क्या किये एक विराज्ये को उपनित्र कुछ और एक्स्प्रेस्ट पास इधर-अभा कूप-फिरकर कोई बेक्टो क्रमा। किर कमाके इत्याले अकर करे कह—'बहरू । अक्टा करून हो। में अलोको किया देनेने निकुत है, बहे-बहे एकाओंक मही आहर मा मुख्य है। मेरी पूजा है कि अल्पोर मही मोबोको विका देवेका काम करे।

मिरारों कर-में हुने सामेंद्र सिंभे कर, अवादे और बहुत-प्रा वन हैगा। हम इसरे नहीं केड़ीको डिवार हेनेका बार कर रूपने है। सिंदु पहले का दो बारानो हुएँ अकारणभी किस करवात कियेप जार है। साथ है सामा धरिका भी हो।

नुसर्ग का-बाराय । मैं पेड़ोबी नहीं और समान पर्यापक है, जो विका देवर परिच का प्रवास है। 😥 पोदोचो प्रीय करनेका थी उक्तर करना है। इसके हिन्स मोहोची निविधालका भी युक्ते पूर्व क्षान है। येथे विश्ववर्ध हो



केंद्री की नहीं निरापक्षी, मेरर केंद्रीकों के बात ही करा है 7 में काले राजा मुनिर्देशके कई बाद करता था, कई वे तथा हार्ट स्टेन भी जुड़े क्रीकड करते पुकारते है।

मेरर बेरो-भी भार मिलने घोड़े और भारत है, इस सम्बद्धी में अन्यते हुन्हारे अमीन बतता है। योद्रे योतनेवाले कुराने स्वर्णक स्वेत की सुकारे अधिकारमें सेंगे। ब्रमके विलयर अन्य यूक्ते कार्य के जाताना वर्ष के विलये एका कुष्णियं सर्वनसे क्रेटी थी।

हर प्रकार क्या विराटने सम्पर्धना क्षेत्रण सक्तम वहाँ रहने अने । काराने कुन्ते अन्य भी अन्न कुन्ता कुन्नान्ते कोई पहलान न्हीं कर का । विश्वेद श्राविकाओं है करोबा गए हे जात का, वे क्रमुकर्वक पृथ्वीके कामी क्रमुक्तकेन इस तरा अपनी जीवान्ते अनुसार न्यूकान्याची सर्वांत परी करने सने ।

#### भीयसेनके हाक्सरे जीपूर नामक पहलका वध

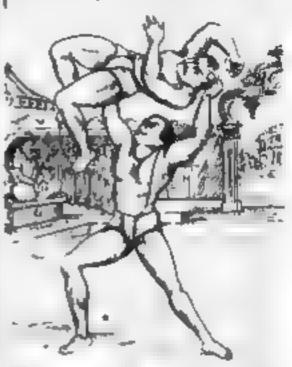
पाण्यमान्य विराहरमध्ये क्रिक्टर सूने रूने, उतने बाद इसरिन्ने ने क्रेपदीकी देख-नेज रखते हुए जून क्रिक्टर १६८ क्योंने क्या किया ?

राज कारोजको पूर्ण-प्रकृत् । इस जन्मार अस हुने। प्रत्यक्रोको कृत्यक्रोके पुनेसे सब स्ट्रुप करी वारी थी; थे, पाने पुरः नामके पानि निवास कर के हों : इस प्रकार वैजन्यकार्थ केंद्रे—राज्यू | कंक्क्रोने कई किने सुकार | जब तीन कोंद्रे बीठ को और कीने क्रिनेक आरम्ब हुआ, राम मिराटको जलक रकते हुए को कुछ कार्ग विका, को । इस समय बताबेदाने अक्राबोदानका बहुत कहा समारोह हुआ। उसमें सभी दिलाओंसे हमाने पहलाम हुट है। है। है हुम-चे-सम को परलाम में और उस उसका विशेष समान दिला करते हैं। उसके करों, कार और मैंसा विशेष समान है; हरीरका रंग केस का। समाने निकट उन्होंने अनेकों कर समानेने निवास करते ही।

का प्रार पहरणानोंने भी एक सकते बढ़ा था। उत्तक कर या-जीवा । कारे अवाकेरे कात्वर एक-एक कर्त्व संबंधी स्थानेके रिपरे पुरस्ता। गरंह को सको और पैधरे म्यानी देश मिलीको भी उत्तके यहा व्यनेकी दिन्स न होती भी । बार सभी पहल्लान समाहतिन और स्थान हो गने, त्रक प्रस्तनरेवाने अपने रावेष्ट्रकेको सत्त्री राज्य विद्यालयी अस्त्रा है। प्रचलक प्रमान राजनेत रिजे परिन्तानो विद्याल समान क्षेत्री पारमंत्रे परमात्र रेगमुनिने अपेश विका; विक को संबोध करते हेल बहुन्यों करता क्रांब्यों की Martini Kaite find frut frut samerit wert विकास परावाची प्रोप्तानके सामग्राहत । केनोचे के सामग्राहत प्रसाद था, देनों है परानद पराइन दिखनेकारे वे और केनोबेंद्र के प्राधित पानद करोड़ पराध्याहे क्रान्तीके सम्बाद केने क्या व्य-प्रदूष थे। पहले का क्षेत्रोंने क्या-कुल्ले नहीं मेनलकी, बितः में परहरा सम्बद्धी हमाती मूल सामको पुद्ध सार्थ रहते । मेरे क्या और क्यारे श्वरतको और क्या क्रेस है. उसी क्रमार करेंद्र पारसम्बद्ध अनुसार प्रकार करू होता या । एक-एसम्बद कोई अंग जेएने क्यान के कुरद को इस तेना। येथी अपने हामोने युद्धी क्षेत्र परावर कहर मारते । बोनों बोनोंके सहैरके गुज नारे और फिन बांद कुंबर क्या इसोची हर इस की। कभी एक इसोको जानकर धर्मान्यर रमक्ता से कुरए नीचेंसे ही कुर्ल्यकर कररकारेको कृत केवा केता। योगी बोगीको पानमूर्वक रोखे इटाने और मुक्तोंसे क्रमीयर मोट करते। कथी एकम्बे कारा अवने क्रमेश का रेमा और जनक पुर मैंचे करके कुमकर परक हैता, जिससे को कोरका कथा होता। कथी परस्पर पहासको समान प्रम्य करनेक्सरे ब्लंटोबी कर होती। सभी सम्बद्धी शिगुलियाँ कैन्यकर एक-सुरहेको बच्चह पानो । कथी नकोते बन्धेको । सभी पैरोने सत्काचन एक-क्रानेको निय के. काची प्रदर्न और मिरसे कार नासे, जिससे विकास निरमेक समान प्रमा होता। सभी अधिनहींको नेवले करीट त्यारे. काची क्लेमों ही उसे हामचे क्रीय होते, काची हाचे-वाचें वैहरे बदलते और कभी एकबारादै पीने क्लेस्बार पहन्न के थे। इस प्रकार दोनो दोनोको अन्त्री कोर परिको और परनोते प्रदार करते थे । केवल ब्यून्स, प्रतिस्तर और प्रत्यक्ती

ही का कैरोबा पर्वका पुरु होता रहा। किसीने में प्रकार अन्तेन नहीं किया।

कारकार केने सिंह क्रावीको प्रकार लेखा है, उसी प्रकार कीमरोजने कारकार जीवृतको होनो क्रावीने प्रकार शिवर और कार कारकार को कृतका जाएक किया । उनका का परकार



हेकतार सभी व्यवसानी और माननेताने एवंचा लोगीको वहा अक्षार्थ हुआ। भीगो जो सी वार कुमया, विस्ती वह विभिन्न और वेदोक है जबा; इसके बाव उन्होंने पृथ्वीयर व्यवसार जाना कातृतर निवास जाता। इस जातर चीनके इसको हार कारणानिहा व्यवसानके जारे व्यवेशे राज्य विश्वको वही कृती हुई।

इस अब्द अवस्तृते बहुत-से बहुतकारोतो नार-कारकर जीवनेन राज निराटके सेन्याम कर पर्ने हैं। यह उन्हें दुस करके दिनों अपने समाद कोई पुरार नहीं निराट, से इतियों और विक्षेत्रे कहा करते हैं। वर्जून की अपने प्राचने और वर्जनी कारको एका क्या उनके साव:पुराती निर्वाचने जाता उनके थे। इसी प्राच्या कहार भी अपने हारा निराटको हुए नेपले कारनेवाले केन्नोंको त्या-कारको कार्ने दिसावार कारननेपाको संसूह करते थे। स्वाचेको निराटको हुए कैरलेको केसकर भी कार्ना को प्रसार क्या है। इस प्राच्या उन्हें करते थे।

#### ग्रैपदीपर कीलककी आसक्ति और उसके हारा ब्रैपदीका अपमान



अपने जानो जनत बना भी है, जाने से कार्य पर न्यानी गर्डी देखी गर्ज थी। देखानाके क्रमान जा मनको मोदे रेखी है। जिस्सी की है? जोए कार्डि केर्डी कार्ज हैं? जिस्सी की है? जोए का्डि कार्ज हैं? जेरा का्डि कार्ज हैं? जेरा कार्डि कार्ज हैं? जेरा किए क्रमों कार्जि की चूका है, जो मेरे क्रमानी प्राप्ति है एकें। जहीं है को अपने क्रमों का है कि वह तुम्कों का्डि है एकें। जहीं है को कार्ज कार्डि क्रमों कार्ज कर्मा कर हो है, जा कर्ड क्रमों क्रमों केंग नहीं है। मैं से इसे कार्ज त्या कर्ड क्रमों क्रमों है। मैं से इसे कार्ज तथा कर्ड क्रमों क्रमों कराना है।"

्रात अक्षार करी सुरुवासे बहुबार कोवक सम्बुक्तते हैप्पर्केट पात अपन्य बोला —'साम्याची ! हम स्टीन हो ? विकासी करण के और कार्यी अपने के 7 में उस बातें उसे ब्याओं । इस्तर का स्टब्स कर, का दिन करें। और यह कुरुवारक संस्करने समस्य प्रकार है। और यह उन्चरत सुक्ष हो अवने क्यांच कारियो क्याराओं भी लीका कर पूर है। कुल-बैसी बनोहारियों को इस पृथ्वीपर मैंने सरकारे पहले क्रमी नहीं देखी के ( सुरुक्ती ! क्रमानों हो दून क्रमलोने क्रम करनेकार्य स्थानी हो का सम्बाद बिन्द्रति ? सम्बा, हो, की में और पार्टिक—इन क्षेत्रिकोचेने कुन चीन के ? यह प्राप्त दुस्तरे क्षेत्रेक लावक नहीं है। इन सूत्रा चीननेक चीन्य है और वहाँ कहा कहा की हो । मैं तुनों समीतन सुक-भोग क्रमांच करना पहला है, सीकार करें। इसके किया तुमारा का कर और क्रीकृत करते का का है। सुन्दी । की तुन कार है से में अपने पहले कियोंको साम है अवधा अहे हुक्तरी क्रमी करावर रहे। में इस्तं भी सेवकके सनाम हक्ते सक्त स्था

र्जन्दिरे क्या—में परानी भी है, जुनसे हैता सहना स्रीता जों है। जनस्के सभी सम्बंध अपनी सीने सेन सरते हैं, तुम भी क्षांबा विचार सम्बंध हैता है बारो। तुम्पेकी सीची और सभी विजय प्रवाद भी पन जों जनका कहिने। सम्पुर्णिका का निवार होता है कि से उन्होंका समीका सर्वादा साम कर केरे है।

शैन्योंको पर कर पूर्णार क्रीरण केश—'सुन्ही ! हुन मेरी प्रार्थनको इस रखा पर दुक्तवजो । मैं सुन्हो सिन्हे बहा बहा पर हा है, हुने असीकार करके सुने बहा प्रस्तान क्रेमा । इस सम्पूर्ण करकार मेरा ही सासन है, मैं बिन्होंको भी समझने करकोची क्रांक रकता है ! क्रांतिक करकों सी मेरे समझन इस पुळ्लेगर कोई नहीं हैं । मैं सन्दर्भ सहसा राज्य सुन्दर विकास कर कहा है। कारानी करने और मेरे साथ स्वांतन क्रेम कोनो ।'

वैश्वी केशी—कुल्कु ! यू इस प्रकार मोहके पंतेने प्रकार अपनी जान न नेवा । वात रका, पाँच मन्दर्भ मेरे पति है से वहे ज्यानक है और सब्द मेरी रक्षा करते खते हैं । असः इस कुमिता किकास्त्रों जान है; जो से मेरे पति कुमित होकर पूर्व पत्र अनेने । वाले अपना सर्वनका कराना बक्का है ? कीवार ! पुरापर कुट्टी करनार यू अवकार, प्रवाद पर कुट्टों भी व्यानका हिसे से भी मेरे अवकारतारी परिचेके इसके सीतित भूषी का सम्बद्धा । कैसे कोई रोगी बहु पादार



भीतको सुभावे, उसी उत्पार यू की बारान्यक्रिके प्राप्तर नुहर्ने क्ष्मों क्षमाना कर का है ?

इस्कृत्यनी संचारेक इक्टानेनर बोनाव व्यानांत्र है क्षेत्रमके यह बाकर बेला, 'बोल ! निया उपको में देखी गुड़े जीवार करे, हो करे; जी से मैं अलो बेलो हाल दे ऐस !' इस प्रकार विराध करते हुए बोनावर्त का कुरवार पानेने कहा—'मैंना ! मैं संस्थित्ये क्ष्यानने हुको एस केन दूंगी; नहीं परि सम्बद्ध है से जो उनने इक्टानुसार स्वाम-सुमाना अला कर सेन्द्र !' अन्ती परिचयी का प्रान्तार क्ष्यांच्या कार्ये करत क्या और विराध कर्ये हिन सपदे वरसर माने काले-बेनेजी ब्रह्म अला क्या के सामित्र क्षामाने ! अल्बान्य सुरेक्काने अल्बे बेनाको हिन्दे आलाको क्षित्र ! सुरोक्ताने क्षरात्रीओ क्षामान क्या का सामाना क्षित्र ! सुरोक्ताने क्षरात्रीओ क्षामान क्या की

सीरको जोरचे—रानी | मैं समझे घर नहीं कारीओ | साम में बानती है है कि वह मिनन कहा निर्माण है | मैं अवके मही रुविध्वारियों होजार भई स्ट्रीयें | मैंका समय मेरा हम पहारमें उनेज हुआ का, उस एक्कानी प्रतिक्ष से अवको बार होगी है | फिर मुझे क्यों क्षेत्र रही है ? मूर्च क्रीका स्थानो परिवा हो रहा है, देससे है मेरा अवकार कर बैटेना | आके महीं और भी सो बहुत-सी हमिरवाँ हैं, क्रूडियों किसीको

नेन बेरिको । मैं से कश्माको इस्ते बहुँ नहीं जान बहुती । हुरेकाने नहा—'मैं हुने बहुते मेंच शर्र है, असः बहु बहुति अनकार नहीं कर समझा ।' बहु बहुतर आने असेव इन्होंने बहुतनहींस एक हुक्तंत्रन कर है दिया। प्रेस्की को

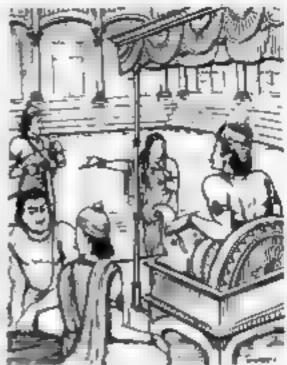


तेकर केवी और उसने हुई बरिकाको करवी और करते। अवनी सरीमकी एकके किने का पर-ही-कर परावन् कुर्वती परावने पत्ती। जुनी उसकी देख-देकके तिने पुरस्कारे एक पत्तम केवा, जो एक समस्कारी सम्ब कुरूर अस्त्री एक करते समा।

श्री को प्राचीन हुँ इतिनोधे स्थाप दारो-वारो काले पास पर्वा । जो देवले हैं का कालारों कालर प्रदेश है पाय और जेलर—'हुन्हीं । हुन्हार स्थापता है, मेरे तिले आवारी परिच्या प्राचा कहा प्रमुक्ताय होता । मेरी राती । हुर मेरे तर कालारे हुन्हेलले हुन्हों काल पर कालार केला है कि होंगा कालार परेनोचा का से आलो, पाता कहा की है।' परिच्याने कहा—'कालारों ! काली नेकली हुँ पीने दूली क्रांसार्थ पहुंचा होते ।' यह कहारर काले हैंग्सीया कृतिय हात करता दिया । प्रीची पोसी--'पारी ! यह मेरे आव-का करता किया । प्रीची पोसी--'पारी ! यह मेरे आव-का करता करता की अपने परिचोध निवाद आवार पहिं किया है से इस स्टाले प्राचारने हेर्नुची कि ए प्रमुक्ते वर्गाना होन्हार पुर्वावर काला का है।' े इस प्रकार वरिकारक विराज्य करती हुँ हैकरे थेडे इट सी भी और का तो प्रकार करता कर वा का प्रकार देवर अपनेको हुमनेकर उद्योग कर ही भी भी कि परिकारने स्थात इस्ट्यान इसके हुम्मुंकर और प्रकार किया । जब कह कहे केरसे उसे करवृत्ते इसनेकर अवता करने स्था । वेकसी हैक्ड़ो वार-वार स्था प्रसि केने करते । किर हैक्सकर अपने काले परिकार का करियों हुँ दोइकर करवाकको सरको आ मिरावर का करियों हुँ दोइकर करवाकको सरको आ मती । व्यक्तिको को उद्यार कालों हुँ हैक्सका केरा केरा वार इसके केन कराइ किये । किर स्थान केरा के हिल्ला वारा निराकर का कराइ किये । किर स्थान केरा के हिल्ला प्रवास किराकर का करा । इसके कुछ स्थान केरा हु केरा विराह करवाक स्थान कराइ साथ कराय कराय केरा केरा करवा केरा हु केरा विराह । वरिकारका स्था साथ कराय कराय कराय केरा केरा का निराक्त

सन सन्य राज्यानाने गुविद्वित और गीननेन की मेरे थे, उन्होंने जैन्सीका वह अनसम्म अवनी आजी देखा। वह अन्यान इससे प्रदा नहीं गया, हैनों पहुँ अनमेरे कर नमें व भीन से उस दूसका गीनकाको कर जननेनी इससे इसे को प्री पीराने करों ( उन्हों) आंग्रेसेट सम्बन्धे कृति इस नका, पीर्ड केड़ी हो नगी और सम्बन्धे करोचा निकालों सन्य। ये जोन्यानेन उत्तन ही कालों के कि शुनिद्वित्ते अपना गूर्ड सुरूष प्रवाद हो जानेन्द्र इस्से अपने जीनुदेशे उन्हान किंदुस क्षानक अने होन्द्र विचा।

इतनेवें क्रीओं संभागनाओं हरपर आ पनी और वालपानमें सुनावार वहने लगी---'वेरे चीर संदर्भ कराएको कर जननेकी प्रति रहते हैं, बिन्दु में करिंद रहते की क्र है, में काली सम्बन्धित सर्ववती है, से भी आप एक प्राप्ता मुक्ते त्याव वर्गते हैं । क्रम | यो इत्यानविकीयो प्रकृत वेतेवाले 🖟 और अब फलाहों गुहानाओं निकारों जाते 🕵 ये मेरे जी। महतवी कीर क्षत्र कहाँ हैं 7 जरवन करवान और रेकार्ड होते पूर् भी से अनमी इस विकास एवं महिला प्राण्ये एक कुल्के प्रशा अववादित होते हेश केले कारावेकी पासि क्षर्यक्त कर के हैं ? व्यक्तिक एक किराद की कर्मको स्थित करनेवाल है। इसने एक निरमान खोको अपने साथने कर सार्व देशका भी सक्त कर रिन्म है । चरन, इसके को हर् मैं करने इस करपारका चलत क्योंका से क्यानी है ? यह रामा होका भी कोणको प्रति क्योपित नक्य की कर का 🖁 । परवराज । तुन्दान न्या सहेरोका-सा वर्ग इस राजाराको क्षोपा नहीं देता। इन्हरें निकट अध्यक्त भी क्षीक्क़के क्रम के



मार्थि को प्रमाण हुआ है, यह काफी मिक्स मही साहा का सम्बद्ध । संभावन्त्र लोग भी मुक्तुमोर हुए असम्बद्धान्त्र विकार महित यह इन्त्री से कामी है हैं, इस महन्त्रपेक्षणों भी प्रमेश्नर ह्यार महिता हुए हैं से संभावन्त्र भी अनेको महितान्त्रों, सभी को करेको न साम्बेकाले हुए राजानी होना सहते हैं।'

इस अवार जीकोचें अहें। वरे हैं वहें वे कहा-मी अहें प्रकार राज नियाओं स्टब्स्स हैंया। दिए संपानकेंक पूर्णनर राज्ये कार्याका कारण कारण। इस स्टब्स्स प्राच्या राज्ये साम्याद कियाओं राज्यकार्यी गर्मस की और प्राच्या करेंचा है, को जीवनमें बहुद बढ़ा नाम निरम है। प्राच्या करेंचा है, को जीवनमें बहुद बढ़ा नाम निरम है। प्राच्या गर्म केंद्र की कार्य विकास करिन है है। इस से इसे अन्त्री नहीं, हेवी कार्य है।

इस ज्यार कर समाम्बर मोग होन्सीकी प्रशंस कर हो थे, चुनिहरने जामे कहा--- 'तैरको ! जब वहाँ कहाँ न है, एनी सुरेकको व्यारको करते था। हैरे पति नावर्व साथी अवस्था नहीं देखते, इस्तिको नहीं अर 'हे है। ये अवस्था है केए किन कर्म करेंगे और निवाने हुनों बहा दिखा है, अरे नह बार हरोंने।'

केंग्री करने करों, उसके बात जुले हुए में और आंधे कोको तस्त हे रहे भी : यनी सुदेखाने उसे येते और आंध् बहते देसका पूरा—"काकानी | तुन्हें विस्तने यात है ? केशी-- 'सुन्हरी | व्यक्तिक कानसे मानवान क्षेत्रत करनात |

करों से हो है ? विकास कामसे जान कुछ का नगा, हिन्दार जानकर का रहा है। पुनरी राज हे से में अब्द है विसने तुम्बर्ध अञ्चल किया है ?' ब्रेफॉने कह—'आल | जो पत्ता कहै।' क्रेफॉने कह—'मा विस्ता सरस्य का हाजारने राजाके स्वरूपे ही परिचयाने पुढ़ो करा है है जुनेस्क | का है, ये ही लोग समझा कर करेंचे ह तथ समझन ही पह

#### डोफ्टी और भीमसेनकी बातचीत

र्वतन्त्रकार्यं अस्ते है—सेकारी संख्याने काले सार भारी भी, दश्रीसे क्यांकिनी स्वस्तुकारी क्रेक्ट अनके क्यांकी कार धोपा धारते थी। एवं चार्यको हिर्दिको हैन्से जाते भीतरंत्रका प्रत्य क्रिक और स्टेक्ट स्वय करती प्रत्यते बद्धार प्रत्ये पहली गरी। व्या क्या क्या प्रत्ये पत्नी अरमानक पहा ग्रह हुन्स का । भागकार को क्रमे करे है काने कहा--'पीकांस । क्षेत्र, क्ष्में: नेत का कह नक्ष्मकी हैवारति पुढ़े तक बारकर अर्थ जैतिक है, से के हुए पह Definer aburt deit sir eit ib 7'

हीपहोंद्र प्राप्तकार भीमहोत सामी प्रांतकर सह वैदे और कारो पोले--- 'किये ! ऐसी कर अवस्थानक सा नहीं कि प्रम जान्तरी-सी क्षेत्रर मेरे यस करी अपने ? देशका है, सुमारे सरीरका रेप अस्ताधारिक हो गया है, पुत्र कृति और बद्धा हो रही हो । क्या पहरण है ? पूरी बात बहाओ, निवाने में कर कुछ सल सहे।'

होन्सीने कहा—नेता पुरस्त कहा कुन्ते दिशा है ? एक का शासकर भी क्यें पूजी है ? क्या उस दिल्ली क्या पूज नरे हैं, को कि अधिकारी को 'दली' बहकर की सकते प्राप्तित से पना का ? का अवकानकी कारणे में तक है जाती राजी है। संसारने की जिला दूसने कीन राजकना है, को ऐसा क्षा भोगकर भी जीवित हो ? कशासकी समय क्तावा सब्दावने को नेस उन्हों किया, व्या की निजे कृत्य सन्तर्भ क्षेत्र पर उसे भी सहस्र ही पहा ( असकी कर पुरः महर्षिः वर्ष राजा निरासकी अधिकेचे सामने का हिन क्षीकको प्रश्न करवानित औ। इस प्रकार कारकर अवस्थान पुरस् चेननेवाले येथे-वेश्व ब्रीन को अपने प्राण बारण कर सकती है ? हैसे अनेकों कहा सहसी सहसी हैं, का तक की देशें सूच नहीं हेते; जब देशे वीनेशे क्या साथ 🕯 ? वहाँ क्षीक्ष नामक एक सेन्स्बी 🕏 को जरेने एक शिराक्ष्मा साला क्षेत्रा है। यह बढ़ा है कु है। अभिनित हैरराजेक केवने पक्षे राजनकारने देशकर कहात है-- 'कुन केवै भी हो करते ।' हेर-केट अले कार्क उसका सुरहे सुन्हे मेरा इत्तर निर्देशों हो यह है। इसर, क्यांका युनिव्हितको जन



क्रमणे क्रीनिकाके रीवरे सारो क्रमानी उत्तराना करने देशकी है से बहु दूध हैया है। यह कालावर्ग भेजन हैया क्षेत्रेक पुर विकासी होको वसीवा क्षेत्रे और सामेची सारक-सम्बद्ध रावेद्वार करते हे, उस प्रथम की पतने बड़ी केरण होती है। यह प्रश्न और अर्थन, की अनेतर ही रको बैठकर देवकरो और प्रतुष्पेत्र निवन प पुरा 🕏 क्रम क्रिकारी क्रमाओं के ज्ञान शिक्षा का है। करि, प्रकार और सहस्थानमें से बन्दर्ग बनाके रिने एक अवनो पा. क्यो अर्थनको प्रोचे क्षेत्री देशकर अस्य पेरे इसमें किया क्या से की है । कुछी सेटे वर्ष स्थानको का में नोओंक क्रम न्यूनोंक केमरे जाने देशकी है से भी इतिस्था एक पूर्व काल है। पुत्रे पात् है, यह बन्दो असे हमी इह एक्ट क्या कुनीने केंगर यह यह—'प्राकृती है कोन को का कर है क स्कूचने, सर्वाय एक अपने प्रज प्रकृतिका काम कार्यकाल है। जिन्हु है पह संबोधी: कर हते अपने हत्यते चोजन कराज, हते बद्ध न होने करे।' का कहा-कहा उन्होंने स्वक्रिको प्रतीने सन रिया था। जान जरे स्क्रोक्को ऐसार्ट है—का-दिन पीओंकी ऐसमें कुछ कहा है और राज्यों काओंके करते विकास भोता है। यह यह रूप रेक्सर की में विकारिके मीमित में ? सरकार केन में देखे-को हुक्त कर, राय-विका और रेमा-वर्षि – का क्रिकेट तथ करवा जात है. या नवल आन जियहोड़ वर योगोपी नेवा पत्रा है। कार्य रोको अर्थना क्रेक क्रेक्ट करे हैं। क्या का एक देशका भी में सुकते का करती है ? का श्रुविद्वितको पुरस्का भारत है और उत्तरेक कारण को उक राजपानों सैनार्विंद करने साथा समें स्हेजाबी केंग्र मारणे प्रकृति है। पानकोची महत्त्वती और हुवक्तेक्सी पूर्व होत्या की अपने केर्र का पहल है ! इस अवस्थाने की विकास बर्धेय की बीविक प्रमुख प्रकेशी ? की प्रमु केवले करेका. पालक तथा पंजानकेत्रका भी अन्तरम हो का है। इस सम रवेन बीमित हे और मैं इस अधीन अवकाने पहें है। एक हैत प्रकृति कारावाची सही कुची विवाद अनीन थी, आग भारी ही नहीं महेन्यानीह अन्तरित हो जानोह पांचले करी रहती है। क्रमीनकर । क्रमी रिका एक और अस्त्र द्वार, यो मुक्तपर का पढ़ा है, सुने 1 जाने में बात कुन्तीओ क्रीड़बर afte finelik flob, and arait flob ob each amor self मीनती थी: परंदू तथा राजाके किये कावून विकास सहस्र है: देखी । मेरे क्रवॉमें को ब्यू को है, पहले देशे जारे है।

पेता बकार क्रेपरिने जीवनेत्रको अपने क्रम दिवाने। रित का रिकारण को कोली—'न जाने केलाकोच्छा की मीन-सर सन्दान विकार है, को मेरे तिले जीत को नहीं जाती। भीवने अलो पाले-पाले हाबोको प्रधानन हेता, एकाहर क्राने-काले कुण पक्ष गर्व थे। जर क्षणोको अपने कलका क्रांकर ये ये यहे। अस्तिओंकी हाही रूप पर्या । किर मानारिया देवसी पीड़िया होका भीवलेन कहते हती-क्रिको । वेरे प्राप्तरको विकास है ! अनेको प्राप्तीय क्यूनमें भी निवार है, यो हुन्हरे स्थानसार योगार हुन्ह अरब बाले का गरे ! का है। समाये में विराहका सर्वकार का करना अवन देवनीं को उन्त हुए बीववूका यसाद केरेले कुरूत कुरूत: कियु वर्गस्त्रको सहस्रह स्वार ही, क्यूंने कनकियोर्ड देखकर जुले पन कर विकार हर्य प्रकार राज्यते पार होनेपर भी के कौरकोच्या पार जो विका गया, क्योंकर, कर्या, कक्ष्मिर और दशासनका सिर की कार रिमा गया—इसके करण उठन की वेश प्रशेष कोशके

जाना कुछ 🖢 जा कुर तम भी कुरूपे बरिधी उसे करावती रहते है। एन्स्से । हम अपना वर्ष न होयो । परिकार है, क्रीक्क एक करे। पूर्वकारों भी सहरूरी विकास परिचे प्राप्त का कारण है । प्राप्ति प्राप्तपूर्वि का क्रमा कर के थे, जा काम उनके करोरका केरकोची कीची का गरी थी। उनकी भी भाँ राजकुमारे सकत्व । उसने अरबो को देख थो। एक करवारो को बीतार पर है क्रमें क्रम है होगा: यह बेर क्रमी मीलेंस बीएनस्वातीकी केवले करी थे। एक दिन को एकक इसकर संस्कार्य से करा और प्रशास्त्रकों का देने स्पात से भी कार्य का क्षेत्रपण्यांको है तथा पह और अनमें ब्ह्र अन्तर्वे केलने क्षेत्र की करो । इसी प्रकार सोच्याकारे सांस्तरिया प्रकारिक क्रम कर्म क्रमण मुन्ति क्रमण विमा म । सामित्री हो अपने परि साम्यान्ते पीछे प्रस्तोपालक पत्ती गर्धी थीं। प्र क्यानी क्षेत्रक क्रिकेट केन काम साथ गर है. बेकों को पूर्व की हो। पूर्वन की के अभी संस्थान कीवा है। क्रमानी । जब हुने जरिया दिनोत्तर ज्ञांक भी करने है। वर्ण कर होनेने सिन्दे केंद्र महीना वह नका है। हेन्द्रानी वर्ष वर्ष केरे है का करानी कोची।

ाणि गोर्ल-क्या | इक्षा क्यून क्यून क्यून क्यून क्यून इस्तिने क्या होका की जांचू क्यून है, जान्य गाँ दे रही है। तक इस स्वयं को कार्य उपलिख है, जान्य दिन्स क्यून है । एक दिन की जाने क्यून-'विक्या | दू कार्यन मेहित है। एक दिन की जाने क्यून-'विक्या | दू कार्यन मेहित होका पुरुषे पुरुषे कार्य क्यून है, जाने रहा कर । मैं की प्रकारित एनं) है, से को बीर और स्वार कर कर । मैं कर कुले क्यून-'वैरकी | मैं प्यानीत स्वीक्य की जुड़े हक्या । वंक्यने की समझ पुरुषे की जाने हो मैं उपल संसर कर करोगा । तुन पुत्रे कीकार करें।'

प्रमाण पार जाने वाले क्लेक्सरे निश्चार करे कुळ विकास । पुरेश्व अपने पार्कि जेनका पुत्राने करने राजी—'कामानी । पुत्र विकासके पर सावार मेरे विने प्रमाण सम्बो । में नर्गा; पहले से जाने अपने बाद अन्न केनेके विने सम्बाधना । किंतु कर मेरे जानकी प्रार्थना दुकरा है, से जाने कुम्मा हैन्सर कामानार करना पद्मा । जा बुक्ता स्थानक पुत्राने किया न पहले इस्तरियों को बेन्सरे सम्बाध की सावारी करनामें गर्गी । बाई भी पहुँचकर जाने सम्बाध स्थानक है नेव स्मार्थ विचा और पुरुषेत्रर निराहत सम्बाध पर्ये । सीचक सम्बाध स्थापि है, एका और एनी होनों है को बहुत पानते हैं। परंतु है यह बहा है करी और हर । प्रवा रेजी-विकलाती सा कारी है और यह अल्बा कर सुर साला है। स्वाप्तार और वसीद्र कार्यन से बा कार्य पास्ता है नहीं। कारत भार के और साम हे कुछ है जब को देशेगा, पुरिस्ता ज्यामा करेणा और हुक्कानेश सुद्धे करेणा । इस्तियों अब में अपने जान है हैये । अन्यतानी समय पूर हेरेकर की पूर कोने से इस बीको करते हुए केन प्रोगा। अभिनय साले पूर्व को है समुद्ध तथ करता। पांत वर्णताकों और इन्हरे देखते-देखते बीजबने पूर्व स्था मार्थ और तलकेगाँदै कहा भी भूति किया। हमने स्टाइएसे मेरी शहा को है, जुले इस्तर के क्लेक्के क्लाक्के के पर्यापत सिक्स है। तम इस क्योंको की नार करते। यह क्रांचर मेरा अस्त्राम कर तह है। वह का क्लीनकर परिचित्त क राजा, हो में जिल कोराजार की नार्विती । कीन्सीन ( पूर्व क्रीलकोर अर्थन क्रेनेको स्टेब्स हुन्तरे करने कर कार देना में अच्छा चन्छारी है।

था पात्रका होवड़े परियोग्डे पात्रका नैत की और प्रद-फरावर रोने समी। बीपने को करको सम्बद्ध आकारण दिया, काली आंकुओंचे चीने हुए नुकाली अपने traft the air stoock all after the wa-'क्रम्याची | तुन सेक बाहते हो, बढी करेगा; कार श्रीकारको उत्तरे वन्-कन्यनेश्रीत का क्रांतित। हुन शयना कृषा और होता कु यह जान अल्ब्सानों अलो साथ विकारेका संकेत कर थे। तथा विकार में जी मानहारत करवाची है, उसमें दिनमें के करवाई सकत मीकती हैं. यांत एकमें अपने पर क्ली कभी है। वहाँ एक बहुत सुन्दा नजबूत परीन भी विका सुन्दा है। तुन देतरे बहुद करों, जिससे बीचक वहाँ ता कर । वहीं में जो सम्पूरी चेज देख।"

क्रा प्रकार पालबीत करके बेजीने केन पति नहीं विकासको व्यक्ति की और अपने इस संव्यक्ति करने हैं। क्रिया रका। इसेरा क्षेत्रेयर क्षेत्रक परः राजनकाने अस और क्रिप्रीसे बजने समा— 'संस्थी | सम्बने एकके सम्बने है हुनों निरुद्धार की सब हुन्य है । देखा केर प्राथम-7 अस-तुर पुरु केले बारवान् क्षेत्रके इंड्वेने बंद सूची है । बोर्ड सूची क्या जूर्व प्रकार । क्रिया से प्रकृतिकाले हैंनी प्रार्थकार राज्य है। कारावारों को में ही बहुरिक केनारोंडे और उसकी हैं।-इत्तरिये कार्य क्रांपे है कि इन सहते-सूची खूने स्थेयत बार सो । बिर को मैं कुकुत करा है काईना ।

होरते कोची-चीवक । यहि हेती कर है, के वेरी प्रक कर्त जीवार करे। इन केरोके रिकन्सी बार शुक्री अर्थ और किस की म स्थाने मार्गे ।

बर्गकाने कहा--कुन्दी । तुन केंग्ड अन् पने हो, नहीं mira.

होत्रों केंग्री--एक्सी को पुरस्तात्व क्ष्मानी है, का राज्ये करने करने के अपन सेनेस्त के जानेस क्षा नहीं all 1878 I

जा ज्वार क्षेत्रकने साथ बात वाटी सम्बंध ही प्रीकी अब देन के एक महिने समय गरी गाहर हुआ। प्रश्निक का कृषि कर होता अपने पर क्या । यह पूर्वको का बात न का कि संस्थानिक करने मेरी कुछ का गरी है। इक्त हैंग्सी क्रम्बहासाने कावर अपने पति चीनसेन्से निवर्त और बोली—'बरचन ) तुन्हारे कमनानुसार मेंने क्षेत्रको कृत्युकालो विकास्त संदेश पर विकास । यह परिनेत्र सम्बद्ध का सूने बरने अनेको आनेना, काः कान अवस्था को पार अल्बे ।' भीनने बढ़ा—'में सर्वे, यह तथा प्राचीकी प्रथम कामार कहता है कि इसने निया प्रमार इक्तरुको पार क्रांच क, जरी प्रकार में भी बोलकार प्रक ने हैन्य । की मलबोइको स्वेग अलबी सहस्वताने आदेगे हो उन्हें की चार कार्नुना; इसके कर पूर्वीकरको चारवार पृथ्वीकर राम प्राप्त करोग ("

होन्हों केली-पान । हम की हैंनी करनक लगा र करव । अवनेको क्रियाचे हुए ही क्रीक्काको पार असम्बन्ध

क्यांने कह-क्षेत्र ! दूस जो क्रम करती है, की क्रांग्य: अन्य क्रीयकाओं में उत्तरे क्यानीसीत का कर

## कीशक और उसके घड़योंका वय और राजाका सैरस्त्रीको संदेश

वैद्यानार्थं कार्त है—राज्यू ! प्रार्थः क्या भीगांत | अवस्था भीभवः भी मनवारी स्वापी समावार राविके समय महाराज्यों कावर कियार केंद्र भने और इस नुमहाराजें आया। यह संबेदरसान सम्बाधन गुण्याराजें प्रकार बोक्कारी प्रशिक्ष करने हुन्हें, जैसे तिंतु पुनवी करने | चीतर कात क्या का करन वह पनन सन ओर अवकारसे र्वका पुरा है। इस समय प्राह्माध्ये पुन्द एकान्य होनेकी | नवा बा। अगुरेक करवानी पीनतेन से नहीं पालेकी

मीकु ये और एकावरी एक सम्बन्ध सेटे हुए वे। वृत्ती। कीवक भी वहीं चूंब एक और उन्हें हमसे ट्येसने सम्बन्ध हैनहैंके अवकाके करण चीप हम स्थाप होन्से कर से



वै। वास्त्रोद्धित वर्षकाने सन्ते वाद व्यक्तित् हुन्ते स्थानका से मुख्यस्थान काह—'हुन्तु ' सि अन्ति स्थानका से सन्ता का संवित्त किया है, वह तब वे हुन्ते के सरसा है। एक नेता से सन्त्रात्रात्री काला सैन्द्रों स्थानकोंने सेवित, का-सम्बद्धानकी स्थानकोंने वित्रुवित और सीक्ष्य एवं रवित्री साम्बद्धानोंने सुन्ति का अन्या है। से स्थानकी संवित्र स्थानकों में सुन्ति का अन्या है। से स्थानकी संवित्र स्थानकों के प्रकृति स्थानकों स्थानकी है कि आवर्ष समान सुन्तर के-पूराको सुन्निका और

भीरतोग्ने कार—जान क्वीनीय है—न्यह कहे उत्तरकाती बात है, सिंहु अपने ऐसा सर्वो कारी कारी की विका होता।

हेता व्यवकर न्यानाहु भीन्यांन स्वतात व्यवकार कई हो गर्ने और जाती हैतकर व्यक्ते जाने, 'रे पानी | पू पर्वको समान कई जील-बीलकाला है: सिद्धु सिक्क्निरे जिल्लान गम्मानको प्रमीदशा है, जारी जन्मर अन्य में खुटे पृथ्वीकर महासून्य और नेरी नहीन का त्राव देवोनी । इस जन्मर कम पू यर व्यवका से सैरवर्ग बेक्नको विकरेनी एका जातो परि में अल्लाहो जाने दिन विद्यानीं। एक स्वाकार्य चीनने जातो पुरुष्यिका केन्द्र प्रकार रिप्ते । क्षीत्रका भी बन्ना सरस्वान् वा । आमें अपने केन्द्र कन दिनों और बड़ी फ़रीते होनों हासीते क्षेत्रोक्को क्याड रिजा। चित्र वर क्रोकिट पुरस्तिकोने पारक पासूब्र होने राजा। देनों ही बड़े बीर से। प्रस्ती पुष्पक्षीची रुपाने चीन पटनेची ध्वनको राज्यन बहा सारी कम्प होने राजा। किर जिस समार प्रथम सांची मुख्यो हमानेद सारवी है, उसी प्रवास गीनसेन मीमामाने बांद देवार करी कुलकारको कुलने राने। बहुबली बहिबबले भी अपने कुरवेची चोठले चीवचेकची कृतिया तिस विशा स्थ बीमानेन कुम्बानि प्रमाणको समान को बेनारे स्वानकार को हो गये। भीन और भीतक होनों हो कई मरस्वर हो ह हम प्रमान प्रमाणि प्रताम में और भी उनके हो को सभ नानी प्राचे कार का निर्मत कार्यक्रमाने एक-एर्टाको रणाने तने। ये क्रोधने कावर धीवस गर्मक बार रहे थे, हाती का च्यान कर-कर देश काल का। अनुने चीनतेन्हें क्रोकरें करकर उसके कार कबद रिल्वे और को बकर देखका हम प्रकार करती पुरवकोचे कर देखा, केहे रहतिहै पहलो परि हो है। अब बीजब पूरे हुए कालि प्रश्नार का-काले प्रकार और अन्तरे पुणानीते कुलेक किंदे बंधनंतरे रूपा। विज् चीन्सेन्से को कई बार पृत्रीवर कुरूकर करका पता पता किया और कुरूको कोवको क्रमा करोचे दियों को बोकों तरो । इस क्रमा क्रम काले तम जेन प्रकारमध्य हो गर्ने और अहिलेकी पुर्नानमें पाहर निकार अपने के उन्होंने जाती पैठक जरने केने कुने केन हिने और को अपनी पुनाओंने परीक्रकर महान्द्री चीत

व्यापकार व्यापकार वीक्योंको अस्तो हुन्। हैर, तिर और प्रमान आहे। अंगोंको विकास पीतर ही पुरत तिया। इस प्रमान प्रमोद तम अंगोंको तेन-गरोज़कर को परेसकर लोग करा दिना और जैप्योंको विकासर पहा, 'क्यापकी । करा पूर्व अस्तर देखों है इस प्रमान परिवारों क्या गरि करानी है।' ऐसा प्रमान क्योंने इसमा परिवारों विकासों पैरेसे प्रमानक और जैप्योंने कहा, और । में बोर्स दुस्तर करा पुन्नी क्योंना, यह पास जानक और जाकी पूर्ण पास होती। इस प्रमान प्रमानकों प्रसान होता पह गया हो में जैप्योंने प्रमान प्रमानकारों महे आहे।

व्योक्काका क्या कराकर क्षेत्री वर्ध जाता हुई, उसका साथ संसाथ काण हो क्या । विश्व जाने उक् नुश्वश्रमकारी स्वामानी करवेगालोंचे कहा, देवते, यह ब्योक्स पहा हुता है: मेरे प्रति प्रकारि साम्ब्री मा नात की है। पुण्योग का प्रश्नार देखें तो सहि। प्रीकोधी का का मुख्या राज्यक्रमानके स्थानो कीवीदार मानते लेका का सामि। पित कहेंने को मुख्ये लक्का और सम्बर्धन सम्बर्धन पूर्वांतर को देखा। को मिना एक-वीवाद नेपालर कर सम्बर्ध कहें का हुई। को का निकीण देखकर करोबों कह निकास हुआ।

हती संपंप की काले का का<del>लू का</del>मन वहीं एकतिल हे गुढ़े और को कार्ड ओरसे केसक विकास करने करें र सांस्थी



ऐसी हुगी। देशकार सक्तिक देशके आहे हो गये। साल्के सारे सामका सरीरमें पूर्व कार्यिक सारात का पूर्णिया निवासकार एके हुए का्युर्क सामान काम कांवा का। जिस्त साले स्थे-सामानी सामान का्युर्ककार कार्यके जिसे सामाने कांवा है जानेको तैयारी कारने सामे। सामाने पूर्ण सामाने कोंगी ही दूरीयर एक कार्यका सामान जिसे सामे हुई सैन्सीयर गर्थ। साम सामाने हान्युं हो गये से मा सामानिक (स्थितकारे भाइकों) में काल, 'एस बुरावों आर्थ गार कांग्य कार्यकों प्रश्निक स्थान स्थितकारी हान्य हुई है। सामान कार्यकों की साम आवादकारत है, कार्यकार सीमानके सामा ही हुने की काल हैं; ऐसा कार्यकों यह सामान भी कार्यकार की

हेना (' जा ओकार उन्होंने क्या किसारों आहे, 'प्रोपकारी पूर्व रीवजोंके ही कारण हुई है, जार हम इसे प्रीपकार है एक बात देश बाहों है, अग इसके सिने जाना है सैनिये (' राजाने कुन्होंके पराज्ञानकी और देशका रीवजींकों प्रोपकार कुन्होंके पराज्ञानकी स्थानी है है।

वात, उनक्रीक्योंने काले सकेत हुई क्रम्स्टन्स्नी कृत्याओं काल किया और को क्रांक्याओं एवंपर काल्यार कीव दिया। इस प्रकार ने उसी क्रांक्यर गरकाओं और काले। कृत्या सनामा हैनेवर भी कुल्युओंचे चंतुकरों प्रकार अन्यासको क्या कियार करने राजी और स्वाच्याकों किये कियार किराव्याद काले राजी, 'क्या, जनता, क्रिक्य, क्यांका और क्यांका केते के तुने में कुल्युक मुझे दिन्ते का की है। किरा केन्याद क्यांकींच क्युंक्यी प्रमाणका प्रीक्य कार क्रांक्यावृद्धि स्वाच्याको संस्थान भूताकों केत हैं और क्रिक्य राजीका क्षेत्र काल ही प्रकार है, वे नेरी पुनार सुने। क्या । वे कुल्युक मुझे कियों का सी है।'

कृत्याच्यां यह क्षेत्र जानी और क्षित्रण कृत्यार गीनसेन क्षेत्र कोई नियार निये जानी जानारे प्राई हो गये और क्ष्मी जारे, 'संस्थां ! यू यो कृत्य वस रही है, अब मैं पून रहा है इस्तियों जांच का कृत्युक्तियों हैरे दिनों कोई जानारी कार वहीं है।' ऐसा क्ष्मीया से गानवार जरनोटा जांग्यान मोहर आये और को केनोने सम्बानकार ओर जांच। ये हदने केनों गये कि कृत्युक्ति क्ष्मीय हैं। जावदमें जून गये। किरातें स्थान को ताह्यों कानार एक का नावा' ताला पून विकासी हैशा। जानार कानार में गोरी-योटी की तथा कारसे जा सूनार हैशा का। जो जीनसेनो मुख्यानोंने भरकार क्षमीये सामान कोर अन्यादा कानार किया करेंद्र और क्षमीय इस समान क्षमी कान्यांने स्थानकों समान कृत्युक्तियों गरे कोर। इस समान क्षमी कान्यांने कारतान कार्र जानेकों कार, गीनक और क्षमीय ऐस्ट गीर गये।

चीन्योजको सिंहाँद स्टब्स्न कोजपूर्णक अपनी और अस्ति देखकर एक कुल्दुक्ष का गर्थ और गण एवं निकालो कर्यन्ते कुट् कहरे तथी, 'असे | वेको, च्या कलकान् नमर्थ एक क्टान्ये को सरोवारो इस्त्री और आ रहा है; न्याची है इस सैस्त्रीयरे कोबो, इसीनेट कारण हमें का अब क्यांचिक्त दूश्य है।' जन दी-चीन्सरेनको पूछ क्टान्ये वेक्स्पर वे नम-चे-तम पैस्त्रीयो कोबाल नमस्त्री और ज्यान्ये सभे। अने भारते देशकर कारस्माद व्यवस्थानों, इस मैदो क्यांचिक्त क्यांचा है करी

प्रकार, जा पहले एक से चौप क्रमीकार्टको कारायके क र्थम दिवा र काले पहाल उन्होंने हैं कीओ कवानी सुराधन



क्षपुर विच्या। इस प्रान्थ प्राक्षण्योके विक्रेषे विराक्त अभिनेत्रोकी बारा का रहे को और बड़ करन्स कर है सी भी। जारी हर्बंच भीर जीवलेको स्कूर, 'कुन्ने । हैरा सोई अपराम म होनेकर भी जो स्तेप सुते तन करेंने, ने इसी प्रकार मारे कार्यों । अब स् अन्तरको कार्य का, हेर हेन्से कोई कार्या क्षात नहीं है। में कुररे राजेंग्रे राज्य मिनाटके सर्वेज्ञंगरकी और पार्वन्य ।'

क्षा पारिवासियोंने यह साथ करण देखा से उन्होंने रावा विराक्षेत्र याच सावार निवेदन विषय कि जनवाँने ब्रह्मकर्ती क्रान्कोच्छे पार द्वारा है और रीताने उनके क्रमते इतकर राज्यकारको और या रहे है। अस्त्री व्याच्या सुरका काराज निराठने कहा, 'लायलेक सुन्युकेकी अन्तेती क्रिक करें। महात्मी सुराणित पहले और क्लेंके रचन रच वर्तकारेको एक है प्रस्तिक विदाये करून है।' किर ब्रीक्योंके प्रको प्रकरित है जनेके करण उन्हेंने न्करानी मुदेबरके पास जावत बाह्न, "पाव संस्थी पढ़ी अने से हुए मेरी कोसरे उससे पह बच देन कि 'सुप्रित । तुप्ताच मानाम हो, जब इन्हारी जहाँ हवा है वहाँ करी करते; महाराज प्रजानोकि हिराबारऐ हर रूपे हैं।"

राजर ! जा मनरिवारी हीयाँ विकार करें हाँ मुनीके

क्ष्मान अपने प्रतिर और वस्त्रोको बोकर नगरने अपनी ही और क्षेत्रका पुरस्का लेग मक्कोंने प्रवर्णन हेकर हार-३४१ कारों करें क्या कियों-कियोंने के ही के दिन हैंगे। सकेंवे बंबर्क नुस्तरावर्ध अर्थुको नित्ती, को वन किये राखा विकासी सन्दर्भ कान्य हैरकतो है। अपूर्वि सहर 'जेल्बी ! यु का पार्टियोंके कुमले केरी सूटी और के कैसे गारे को ? में सब करें के बुक्तों को की तो पूरण प्रथमी है।"



रीरामंदि सहा, 'स्वापने | अंध तुनों पैरामीने बना प्रत्य है ? क्वेरिक कुन के नीकों इस कामाओंके बामा:पूर्ण एकी हो । अववार प्रेरवीय घो-वो इन्ह यह ये हैं, असे तुने का कारक है। इसीहे केरी हैसी करवेके रिप्ने तुम इस अवसर कु को हो (' कुकारको कहा, 'बारकाओ । हार उत्तरक सेनिये व्यक्त कुलाव भी को पहल हुआ वा दर्ज है, उसे नवा ह नहीं सन्त्राती ? में हैरे साथ पड़े हैं और तू की हम समस् एक सुनी की है। जान, जी कम सुन्त यहनेश फिलकी क्ष्मान होगा ?'

कृतके पहल्य क्रमाओंने एक है कैन्द्री राजध्यको गयी और राजी सुरेक्कके पास बाबन कारी है गयी । तब सुरेकाने एक विरामे क्षत्रमुक्त उपने बहु, 'प्रो । व्यागमधी क्लाकी तिल्हा क्षेत्रक का है। व की तरुनी है और र्वाक्टने केरे समान कोई कथनते भी दिसानी नहीं देती। पुरुषोको निका से सम्मानते ही प्रिय होता है और तेरे गन्दर्व रेक्सीने बहु, 'बहुएर्सको । केन्द्र दिलो क्रिके बहुवस विकास 🚾 उनके बन्धु-बन्धकोता भी जनस्य है बहु मुद्रे। और क्षम करें ( इसके पहलू कर्माना मुद्रे कर्म । देश होना (

महें बोबों हैं। अस वहाँ देरी हका है, वहां कार या? है है के करीने और अवका की दिस करेंने। उनके हस

#### कौरवसमामें पाप्पवीकी खोजके विषयमें बातचीत तथा विसटनगरपर सद्माई करनेका निश्चय

रिज्ञायकार्थ कार्य है—समार्थ । स्थानिक स्तीत धीकक्षे अकलात् यस एक देशका क्ष्मी लेलेको बहा अवसूर्ण पुत्रा तथा का करन और राष्ट्री कई मार्च से आकारी विराज्य देशी कर्ज करने ज्यो—'ब्युकारी क्रीकड सर्गरी भागीताके कारब एक किएको बहु बाद ब, कारे gried thereign sign form up fling met fi me an मरबोलामी सा, इससे का प्रतीको भवतीन सर कार्य ह व्यक्तिक । प्रत्योक्ताका संस्था अपनेताले पूर्वन चीर स्वीत्त्रको क्रिकारों देश-देशमें देशी हो चर्चा होने राजी।

हार संबंध अवस्थानको अवस्थाने अन्यानेक पर समानेके रिजे हुर्नोधकों जो पुरुषर केने वे वे अनेको करा, सह और नगरेंने अने प्रेन्थर प्रतिस्थानने और अने । 🚟 वे राज्यसमार्थे केंद्रे हुए कुकरान क्रुगिनके बारा नवे। जा सारव वहाँ जाता कीया, होया, वार्ग, कुछ, क्रिनकीको राजा और क्योंक्यों भर्द की कीवा से ( का काले लागी क्योंने सहा, 'एकर् । 'प्राथकीया कर क्यानेके वैक्टे हर रादा ही बद्धा प्रच्या करते को बिद्धा के बिद्धारने निकास को, या हम मान ही न समें । इसमें वर्ततीये होने-होने विकासीत. विद्यानिक देशोंने, प्रमालको भोड़ने क्या पनि और मण्डोने थी उनकी बहुत कोच और पहुं वहीं भी उनका पक वहीं राज्य । जानून होता है से विकादान नह हो नहें; हस्तीनों जान को आयोह दिन्ने प्रकृत हो है। इसे क्रम्य पान अस्पूर्ण सन्दर है कि इस्तेन आहे सार्थि बच्चानेंक्र किया है हारकापूर्वने भारते हैं; बहाँ य को क्रेस्सी है स्टेंट न पनवार है है। हाँ, पहन क्षेत्रे आश्चार कृताका है। यह यह कि एक विराज्य के पहालको ऐरावती क्षेत्रक या, विसर्व केंद्र अन्ये पहाल मरकाओं वैनर्परकारे सीम कर हैया का उस मानवारे माले पहलोशकि रहिने गुरुवारे नवारी कर साम है।'

कृतेको च्या का शुरुका पूर्वका च्या केवाव विकार कता हा, अने वर्ष अने क्यावतेरी वहा- 'क्यावेद सहाराज्यानोः इस केवार्गे कामि खेते ही मिन क्षेत्र है। क्ये का प्रकार से नहां से सामग्री समान महत्त्वे सभी और विकार प्रचेकि राजन सोचारा होकर चौरानेके रिले



ुरकार्त हो कार्रमें त्ये सामी रामकार हिराम प्रत्येकते हैं, प्राचीको साही करिईकामाने किये होंगे। प्राचीको करेई हेला ज्ञान करन करीने कि वे अपने प्रतेतको पैकर विर कार्ने है बहे करें। इस्तिने बीट है उसका यह समानों, विस्ते कि इससे का उस्त कर उससकी विजन्मक और क्रिकेरिकोरे पुरु होका विस्तानका अञ्चल कर हो।' ज्य क्रमार करों। कहा, 'जरावन्त्र । हो प्रीत ही दूसरे कर्पकरार कहा येथे जर्म । वे पुरस्को का-सक्तृते और वनकीयं देखेंने जाने एक सूरण क्षाओंने, सिद्ध मुक्तकारेच अक्रकेंचे, राजन्यतेने, तीर्केने और भूगवश्रीने व्यक्ति विकासिकोसे कहे विनीत सक्तीये पुरिवर्तक क्षान्तर कृतका पात समाने ।' शुक्रासामने बहुत, 'राजन् ! किय कृतेयर अल्बारे विशेष परीवर हो, में पार्यक्रम हेकर विश क्रमानेकी मोना करनेके हिन्दे आहे। कालि को कुछ सहा है, का हो बहुत ठीव कर पहल है।"

'पाणकारेप प्राचीर, विकार, संदेशार, विवेधिक, वर्षेत्र. कार और अपने पीत पास कांग्रमको अक्टने पालेकारे है। देते बहुकुल न से नह होते हैं और न स्थिति किरकुल ही होते हैं। उनमें बर्वाया से को है प्रार्थित, क्लावित, waren, Affren, offenen aft bert fit pit if व्यक्तिये केव केवेश भी कोई जी स्वापन करेगा। तसः इस प्रकार अपन रहावर हो हो प्रकार, लेका, विद्युपन समय का अन्य स्थेनीते, यो विद्याने प्रकारने हैं, विकास पर्याचे (

क्रावे पहार नकारियोंके किया, के-पाले क्राव और सरका क्षतिको पार्शकात बोक्कोने प्रीरकोचे विको find may, "warrant I wountlik formet den be-विकास है, यह स्थान है। यो नेविन्दर प्राप्त होते हैं, उनकी पेरिको अपेरियरका होन भी छ। असी। अ प्राथकों के निवास के के इस का प्रमानने के सार un mich f. mit 4 mirk gliebt augen men f. bern wie um uf men i chebred it 40r f. 2mm) मेरे-केरे पुरस्को सामी रिच्य गाँ करने पानिने । को राज्ये सीते हे पहल पार्टिने, स्टेडीन पहल देवले उत्पत हीया नहीं है। एका परिवाहर दिया गान के पहले होने सहीकी went of predict florestick, fielden afte crossins होती। जारी में को होते काहिर कोट डिक्सरी, संस्थी, कारपारको, आराह, सीचा और पार्वकार होने । नहीं कारों दिवति होती, व्यक्ति प्रमुख कर्त है कर्वने कार होते प्रका के गुलाने क्षेत्रका अस्तेत कार्यकारे, ईन्कंग्, व्यक्तिकरी और पहाले की होंगे। कई हर सकत बेहतारि होती होगी, बालेरे प्रमांतीको हो कही होती कहा पही-बहे व्यक्तिकारोक्तरे कार-ने पर होते होते । वहाँ के निहत्त है रोक-रोक कर्ना करता केंगा करा पानियों की पन-कार्या और तम प्रधाने सामग्रेते क्या हेनी। वहाँ सानकारी पार परात होता, वर्तमा सामा परावसून होता और विक्री प्रकारक पर जो केना। वर कारण नेकोबी अधिकार होगी और वे कुछ का क्रांस न होका पूर साम् होती। अनोर एक, को और वो भी को बाल और प्रमुख्यान होते। एक पुनिहेत आरम करिया है। उसे साथ, केर्र, क्षा, प्राप्ति, क्षम, सम्बद्ध, औ. प्रतिति, देश, सम्बद्धक और सराब्य मेरकर निकार करते हैं। बाद: बान सम्बद्ध पूर्ण क्षे क्या, प्रमुक्तकेन परै को को कालक क्यारे । उस्तर कार् देशे राज्या पाने वाले. वहीं भरितान वालामारेन ना रेडिसे

हरू हरमार्थकों परवरतालये होनाकारी बाह, रे को होने । हर को जाना भरे हैते, इसके रिया अनेह क्रिक्टो में कुटी कर जो का क्यारा। यह तुन्हें मेरे कारणे निकार है से प्रस्ता निकार करते के लीक करतो. भार स्टीबर के सकते ।"

424

ताने पाल कर्ने उत्तरके का उनने का, 'नवेदर र्कुलकेक प्राथमोंके निकारों को फारत है, यह पुणियार और प्रमुख्युत्तन है। अपने कां और अर्थ केंग्रे हैं। निर्देश हैं, कार है कर बाह करूर और हेट्योंका की है। उन्हेंके करूरत का निवानों केन की को कामन है, यह रूपे । प्राप्तिय कार्योचे प्रकारिको गी। और विश्वतिका प्रशा सम्बद्धारे और को नेविका कारण थे। से इस समय विकासियों हो । यह पहर रहते कि अध्यक्तमानकी अन्तिन सन्तरह होते ही कार्या क्षेत्रकोता स्थान का यह सम्बद्ध । स्थान केन के अवस्थित है हो । असः इस समय वर्षे अपनी सेना, क्लेक और केरिया पेपाल प्राप्त पार्टिये, विकास विकास आर्थिक हम क्यों क्या प्रकार संवि कर को । बहिले भी हुने अन्तर प्रतिकारी कोड कारी कारिये और इस कारक भी पता द्वारा milph für graft meurs, afre finder finitet felten witer ftend fie gell mod der, Rept safe wenn ublied. केवाबी कर देखार का निक्रम करना मानिने कि का तुमते र्जन्म है क नहीं। कालेंद्र अन्यास के को च्याओं वे लेकि पा रिका कार्र होने-नहीं क्षेत्र संख्य होती से इन प्रदूरतेके अहं अपने बहुत रिकारेने और की का अनंबर केरी के उसी प्रेषि कर हैने। जन (प्रयक्तक), उन (भग आहे केम), चेन (कोड रोज), केन्द्र और धर रोज-पद पीति है। इससे प्रमुखे स्वतासम्बद्धाय, पूर्वलोको मान्यो क्यानार, Steine breite mate afr tremt Pervener afr केल्ली, केल्ल अपने पाल्के पर रोगा पार्टिने । इस प्रकार बहै कर अपने क्षेत्र और सेन्यूबी कहा होने हो होया-हीय प्रकारक प्राप्त कर सम्बोधे ।

इतके पहल क्षेत्रकोएक एक पहलते पुरुषरे सार्थ-की और देखते हुए दुर्शीधर्मी बहा, 'राजन् ! मार्ग्याको प्राथमंत्रीय क्या पर-वर क्यो कर अक्रमा बस्ते चे है। यानवाको संभागी महामाने सहस्य बरेनाको ही पूर्व और वेरे कम्-मानकोची पहुर रंग किया या। परिचक प्रश है कार्यान, कर, अरवन्त्रीत और क्षा प्रवर्धिक पूर्व कर । कारत पराधन पनावेकाता थे । (स्तीनो इत पनन इनारी कार जो गाँ। अन का सरकार्थ और उसेस स्टाइनको क्यांने कर क्या है। उसके को सामे दस विक अक्रमान और निरुक्ता हो गया होगा। इसीको परि शासको, सनका चौरनोंको और महानम कर्मको ठीक मान पढ़े तो मेरा तो जर देहायर कड़ई करनेका नम होक है। अर देहाको जीतकर को निर्मित प्रकारके का, जर, कम और क्यू हाथ सरोगे, उन्हें इस आकारने बाँड हेंने।'

विपत्तिकारी बात सुनवार कानी कात कुर्वेकानी बाहा, 'राजा सुक्रमी बही ताकी बात बाही है। वह कानको समुतार और इनारे को कानको है। आतः इन्ट केंच कानका, को कोटी-कोटी हुन्दिकारी परिवार सम्बद्ध केंद्री सामग्री सामग्र हो, मेरो ही होत कर देखनर बाह्य कर दें। विन्तरित्व और आनंत्री क्या कृत्यार एका कृतिकरें कृत्यानकों अदेव हैं, 'न्यां । कृत को कृति उत्तर करके व्यक्ति विक्ती करों । इन्तरित एक कोरबंधि व्यक्ति एक कोरबर कर्मने और स्कानी सुकर्व विनादिस्थ कीर और करी केन्स्री कर्मा कर दिन क्या क्रमा कृत केरण में क्रमीत असी एक दिन क्या क्रमा कृत केरण में स्वांतरित्तर अस्तर्यक करके विराद्या केरण कीर हैंगे। उन्तरे कर हर भी अस्त्री तेराकों के स्वांत्री विकाद करके एक विद्यालों कुत स्थक कीर्ट होते।

#### विराट और सुन्नमांका युद्ध तथा भीयसेनद्वारा सुन्नमांका पराभव

र्वेजन्यसम्बं कर्त है--एक्स् । सुकारि अस्ते पूर्व बैरका बहुत रेनेके दिने हिन्तिसके बच्चे त्वी और नहीं मीरोको रेन्यर कुल्लाकुकी प्राह्मी विश्वित हैए विश्वकर्ती मीर्व प्रोक्तेक रिन्ने आरिक्येक्से सम्बद्धन्य विका । सन्दे क्रमी जिन संपक्त कीरमोर्न मिरस्कर क्रमी ओप्नो परकर विकासी हमार्थे भीदे काद और तम हक्केमों हिने हर क्रांतिक तेवाची प्राथमीया देखाई वर्ष क्रानेपति प्रयान है कुमर सा । इसी समय सुराजी कहाई बारके कमा विराहकी महा-तो और केंद्र कर ती । यह देखकर राजाक उत्तान नेव बड़ी हेजीसे पगरमें अपना और फिर रचने कुम्बार कफायाने महिनात राजको प्रतान करके बढ़ने राज, 'बहरान ह रिक्तीयमें केन की बन्नों काल बन्ने नाकी का राजा नीई रिल्मे का रहे हैं। अप क्ये कुक्तिका करण मोनिने । ऐसा न हो आवका चीवन बहुद हर निकार कान (" यह तुन्ते ही राजाने नतानोताने पीटेकी रोज एकतिन की । कार्य रस. हाती, योडे और कालि-सभी उकारके केन्द्र थे; अनेको क्या-प्राचारी बहुए छी में तक अनेको क्या और राजका पानमा पानकर बुद्धके दिले वेचार हो नवे थे। हत प्रमार रीयाओं विकास महार्थिकोंने क्रेमानी समय बारण कर दिन्ने और बुद्धारायनीये सम्बद्ध स्पेन्ट स्पेनि सोनेक सामसे समें हुए केंद्रे जुलाकर उनक बैठ-बैठकर नगरके सक्ता निकाले ।

इस ज़कार जब सारी सेना संबार हो नजी थे कथा निराहते सारने कोटे गई करानीकार्स बढ़ा, 'वेट देख निर्वाट है कि फंका, जारूब, संतिकार और पर्निका भी को बॉट हैं और निरावेश मुद्ध कर सकते हैं। इसे भी व्यक्त-वासकार्स सुसोपित रच और जो समरते कु बिद्ध पीकाले कोलार हो, हैसे कथा से।' राजा निराहकी कु बाद सुनका प्रतानीकाने

चन्यानेंद्र हैंको की एवं कैयर बारोबी आता थे। और महार्थी कम्बन्स कुर्णनीत स्वेंश बढ़का एक साम है एक मिराको सेके करे । वे बारों ही बाई बड़े सुरबीर और तवे परातानी थे। उनके तिया जाट हमार रवी, एक हमार नवारोडी और पाठ इवार बहुतवार भी राज्य विराहको साम माने। मानांस ! विरायको यह रोगा बड़ी ही माने मान पक्क थे। या पंजीके मुरीके किंद्र देवती आगे करे ल्ली। कार्क्सिय और गगरते विकासकर स्वारकनाओं विभिन्ने को और उन्होंने कुई क्रामी-कानो विगर्तीको कराउ निया : कार, केमी औरके भीर परस्पर प्रत्य-संपालन करने तमें और क्यों देवानूर-संस्थानी प्रस्त बक्त है पर्वतर और वेकाककारी पुरू किंद्र गया ! का समय इतनी बूठ को कि पक्षी भी अंधे-से क्षेत्रम पृष्टीयर निर्म तमें और केमी जोरहे केंद्रे गये बालोकी जीवने पूर्वजनायम भी दीवले केंद्र है को। को रोक्नोसे, काहि काहिनोसे, बहुतवार प्रक्रामधीले और पालवेडी राजावेडियोचे विक गर्न । वे क्षेत्रमें मनका एक-कृतियर सामार, गर्देश, जान, प्रतिक और केवर असी अव्य-नवीते जात करने तरे। परंत चरिनके राज्य प्रकार पुरस्कारेंगे उद्धार करनेता भी वे अवन कारन परनेतारे गोरको पैके जी का को थे। कार-की-कारने कार्य रजाहीन को हर महत्व और हिसे हर विक्रेस परी-मी दिखाची हेने सभी।

इस अकार युद्ध काले-काले इसालीकने सी और जिलासकने कार की प्रित्तते बीलेको सराहाओं कर दिया। किए में दोनों व्यानकी इसुआंको बेलाके भीतर कुंच रहे और जिलाही बीलेको केहा प्रकान-प्रकानन परकाने समें तथा उन्होंने व्यूकोके राजेको कालनाकुर कर दिया। एका विराटने परिव रहे राजे, आठ सी मुझसमार और परिव ब्यूकारी कर इस्ते। फिर स्था-अद्यो राजपुत्ता भीवार दिवाले ने होनेने राजर कहे हुए सुसर्वार सावर विश्व गर्ने । उन्होंने वह वान्योंने सुकर्णकों और श्रीव-बांच वहांनोले सरके कार्ने बोहोंको भीन सावन हुएत को पह प्रदेशन को पाता सावने भीव दिवा । सुसर्व कहा प्रदेशन भीत का, उसने पातानकार कार्ने सेन्याने अपने प्रवास प्रसादकों के बारत और विश्व क्या विष्याकों और बीहा । उसने विराजित राज्ये कोनी कोनेको प्रवास अनुस्कास और स्वासिको पातान अर्थ विश्व हो प्रवास विश्व और असरे राज्ये सामार क्या विश्व ।

यह देशका मुन्तिन्त्वा युक्तिको चीकांको यह, 'महामाने | सिन्तिया कुंको यहराम निरामको तिने का यह है, दूस उन्हें इस्तर पुरू तहे; देश म है ने प्रमुक्ति केरोने देश याने |' इस पीन्तिको प्रकृत सहराम ! स्वापकी काइतहें यह अपने पुरूष हैं। इस स्वापको पुरूष इसको प्रमानका इसके हैं। यह से प्रमुक्तिको चीका यह हैना।' पुरितिय सेते, 'चीकोन | देश प्रमुक्तिको चीका यह हैना।' हा। पुरुषो से प्रकृत पाने हैं। यह हम देश अधिकान्य कर्म सारोगे से सोन प्रकृत सारोगे कि यह से चीन है। इसकिन हम सोई इसरा है स्मूक्तिका इस्ता को चीन है। इसकिन

करियांक देख बक्तेयर भीनतेओं बढ़ी कुर्तीने अन्य होड़ करन प्रथमा और के की जर बस्तक है, की है सलागीयर जाजीबी वर्षा करने तने । यह देवन्यर पावनीके सांक क्षानों करन क्षान्यर और वह और एक निर्मेणों हैं। है। एवंदे भीनवांनको विद्यानको ६ महैनकोठके तथा केवार विराहको बामने से बैक्को-समार्थे रवी, गळातेली, जवाचेली और प्रकार क्रुकारी प्रकीरोची कारकर निय विकासक अनेकी वैद्धारिको भी सम्बन्ध करता। हेला निम्बर पुर वेदनका रनोपर पुरुषेता सार पर कर पार, 🗷 🛍 नेपके भूगांशालों। तिमें विक्रित हो कहा और पढ़ने राज्य-'क्रम ! को हर समय ब्यासक बहुत कहने दिखानी हेण गा, गा मेर पर्छ से पहले हैं कर पत्र !' किन का पीरकेनस बार-कर तीने बाज केंद्रने तथा। या नेसका क्ये कवान इतेवर्धे पर गये और चेव्रोको जिल्लीकी ओर चेव्रकर उनक हिला अलोकी वर्षा करने रहते । एक वृत्तिहरने कार-की-कर्त्य एक एका चेत्रकारेको पर द्वारा, चेनलेमी साव कुमत विकासिको करावाली कर किन्न कर्मा नकुराने प्राप्त प्री और सब्देवने सीन सी चौरोको न्या कर प्रस्ता।

अपने प्रेमनेर सुकारिक पास अपने और अपने कैंने बारोंने अर्थ्य चेड़ोंची तथा अनुरक्षकोची गार अस्य । विस

| उसके सार्यक्रको २४के सुरुताते गिता दिया। सुसर्यके | रकता साराहक महिद्या मीनक मार करने साथ।



प्राचीने कृद होनेसा को राजा निराट राजने कृद को और राहा तेलार जहें चोरते जानार हान्यों। राजांन के कारेने सुकर्ण प्राच तेलार संस्थे काम । उस चीरतेलों काम, 'राजांक्यार'! तेलों, पूर्व कृद्धारे चीर दिसामा प्रतित नहीं है। क्या करी कर्मावर में इस जानों राजने कृद को और सुकर्णि जानोंने प्राच्या होनार जानों की बीरें। क्योंने सरकात्मर कृतांनी प्राच्या क्या तिले और उसे कारावर कृतांनी कारावार कृतांनी कार काम तिले और उसे कारावर कृतांनी केवांना कार्यों हिस्सा क्या करी और उसकी क्यांत्रित कुत्रे केवांना कार्यों क्या होता क्या कि वह जानेंग हो राज । व्यारची कृतांनी क्या होता क्या कि वह जानेंग हो राज । व्यारची कृतांनी क्या क्या क्यांत्रित क्यांत्री क्यांत्री त्यांत्रा चीरतेलों केवां क्यांत्री क्यांत्री क्यांत्री क्यांत्री कार्या चीरतेलों केवां

व्यक्तिको क्षेत्रे वह हुआ हुइवाँ अपने प्राप्त वानानेके तिने प्रस्तात वह वा। अन्या स्थय अंग कृत्ये वर गया वा और केवल हुइन्दी हो क्यों थी। व्यक्तिने उसे मीनकर अपने उत्तर एक विच्या और व्यक्तिय वृधिद्वित्ये क्या से व्यक्त क्यों दिखाया। वृधिद्वा औ देशकर हैंसे और



चीमकेसो जोते, 'तैया ! इस मध्यानको कोई है।' चीमकेसो सुरारको चार, 'र मुद्र ! महि है जीतित धान चारता है तो हुते निक्को और प्रसाननेची समाने पद चारक प्रोट्टा कि वै क्या है। तमी हुते जीवनकार कर करना है। हरसर वर्णताको प्रेस्कृतिक कहा, 'सैचा ! चारे हुए मेटे साव कारों हो हो इस प्राप्तकर्ष सुराधीओं होंद्र हो। यह स्थारण निरमक्षा करा तो हो ही सुराध है। जिन क्षेत्रपरंत्रकरों स्थार, 'कारों तक पूर करा नहीं हो; जिन कभी ऐसा स्थाप का प्रस्ता।'

पुनिश्चित्रको जा का पुन्ता पुरुषि अवनो पुन तीक कर विका और का भीन्तियो को केंद्र दीना के उसने दावा किराओ का काम जो अनान दिन्दा । इसके बहाद का अन्य केंद्रा का का का । किर कार्यक किराओ कर्यो अन्य क्षेत्रक पुनिश्चित्रको कार, 'अन्यके, इस विकारत्यक दार्थि है । इसके विका सम्बद्ध कर्यो की कोई देखी कींव कर्यों का के, को संस्तानी जानक पुलित हो, तो बह की मैं देखी कींवा के, को संस्तानी जानक को सभी कार्य करेगी में

व्या पुनिर्देशिये पालस्त्राको स्वाह, 'स्वाहात है अन्तर्गर क्षण वर्ष है क्षेत्रेय है, मैं कार्यो हरको स्वाहय भरता है। अस्य को पालहु है, मानाम् सामानी संग्वेश क्षण अस्यत्र आवन्त्रेय एके। कार्या । अस्य क्षेत्र है कुलेको अस्यत्रे विकासको। वे अस्यके सामानिक्तांस्त्रे हार पुन समामान्त्री कृत्या है और मान्त्रों अस्यक्ष विकासकी चोत्रका करा है।' एक सामाने कुलेको अस्त्रा है कि 'पुन समानी नामार मेरी विकासकी कृत्ये संग्या और क्षणे और हाल-रास्त्री सामा क्षण करके स्वीत्र होने मानाभी स्वीत्र क्षणे और हाल-रास्त्री सामा कर करके स्वीत्र

#### कौरवोंकी चढ़ाई, उत्तरका भृहत्रात्मको सार्गच चनाकर युद्धमें जाना और कौरव-सेनाको देखकर इससे भागना

वैहानकार्य कार्य हिन्सामा । यह सामाना विद्याः
गीतियो पुष्टिके दिन्दे दिन्दिकेकार्य और नमें से पुर्वेकन
भी सैका देखकर सकने स्विकारित स्वीत विद्यानकार प्रमु आसा । भीवर, सेक, कर्य, क्रम, अकारण, क्रमूबि, पुरतसार, विशिवारि, विकार, विकार, पूर्वक, दुःसार स्था और विद्यानी साठ प्रमार गीनोको साथ के। ये साथ कौता और विद्यानी साठ प्रमार गीनोको साथ ओरते प्रमोधी पंतियो देखकर के बले। उन्हें सेकानेवर का मान-बीट होने सभी से व्यक्तियों का महत्रविकारी साथने र सहर सके और क्रमूबि मार साथार कोरा-ओरसे विकारने प्रमुख कोर्य का मानियोंका स्थाप स्थाप क्रमूबर साथा बीनार्य का केस-विराससा प्राप्त साथा। यह सीवा सामानार्थ स्थापकोन्द महिलासा प्राप्त साथा। यह सीवा सामानार्थ स्थापकोन्द महिलासा प्राप्त साथा। यह सीवा सामानार्थ स्थापकोन्द

विकास कु अधिक (कार) विकास सेपासने स्थापी का उन्यास कु दिन और बाद, "काकुमा । अवनी का इक्त पीजीयो भीता दिने या में हैं। अप उन्यास महे दिनीकार है। इस उन्यास अपने अनुस्थितियों का प्राप्त कारों के पानिया अपने और पत्र है और प्रश्नि में आपनी उन्यास करते हुए जब अस्त की पत्रो है कि 'तेप क्षेत्र पुरस्तीकार कु से मेरे अनुस्था और क्षा पुरसीर है।' असः इस प्रस्ता अस्त सुक्त से पीजीयों कुलोने दिनो प्राप्त और पुरस्तीयों क्षानमों का कारों दिस्साने।'

एकपुरमार अन्यत्यूरने निर्मोके बीचने बैटा था। सम माने पातिको ने बाते कहीं हो यह अपनी पहले पाता दूसर बाते रहता, 'बाई I असा में निया और नीई नहीं है, जबर अस्तर कारिया। मेरा समुत के पानती पानहा है; निर्



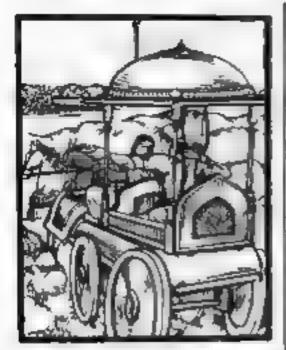
विकार देने प्राथिकों आवश्यकार है, को केंद्रे कार्कने कहा विकार है। इस समय नेटी निराहकों कोई देखा अवस्थे की है, को केंद्र उपाधि का इस्कें। अवस्था हुए कींग्र ही केंद्रे विके कोई कुछा अरबिं कार्का करों। किए तो, इस केंद्रे कार्का, कुछावार कर होंगे हैं उसी अवस्थ में कुछोका, कींग्र, कार्क, कुछावार, जोगा और अवस्थाना--इस कार्क कहा, कर्मों की कहा क्ष्मित है की कार्का कुछावी कींग्रेंगे, उस समय इसे की कहा कोंग्रा कि वह सामाह कुछावा अर्थन हो से से इसे तेन नहीं कर पता है।

वान राजपुत्ते विश्वेषे वीक्ष्ये कार-कार अर्थुकार जान रिला से बैंपरीके न पर राज : व्या विश्वेपेने करवार कारके राज्य आयी और आसे कहते राजी, 'व्या को इस्तित स्वार विश्वासम्बद्धाः सार्थि के वा : व्यक्षि व्यापक स्वार्थि के पाल के आप निकास है : पाल के आप निकास है जा मोरालेको पीरावार अपनी केंद्र सीत सार्थि ! गैरानोको हेला व्यक्तिय आसे अपनी व्यक्ति सार्थि व्यक्ति व्यक्ति आरा होता है ज्याद सुकारको पहिला सार्थि व्यक्ति व्यक्ति आरा होता है ज्याद सुकारको पहिला सार्थि अवसी सार्थि राज्युकारी अस्ताको हेलावर सुक्ति । विश्वासी पुर कार्य , 'युकारी । व्यक्तिकोन हक्ष्ये राज्यों मीरावा दिससे पुर कार्य, 'युकारी । व्यक्तिकोन हक्ष्ये राज्यों क्ष्ये



शहरम करते का का है। हुए मेरे व्यक्ति सार्थक कर माओ और क्षीरवर्षन नौओको हर केवार करी, अली व्यक्ते ही श्र कर्णेंद्र पास पहिला से हैं सुन्यारी क्यारांके इस अधार सहनेतर अर्थर औ और एक्क्यर जाने पार आये। ब्राहरपकी बुरहोती काले हें सम्बद्ध राजनहरूपानी पद्धा, 'सुरहाले । जिला क्रमा में जीओको क्रमानेके नियो महिलानि राज्य पुद्ध करी, इस समय हर की कोड़ोको उसी अकार अपने कालूने रहाना मिल प्रमान पहलेमी रकते अन्ये हो । मैंने सुन्त है पहले तुन अर्थको प्रेम कार्यन के और तुम्हारी स्वाच्याने हैं प्रमाणका अर्थको साथै पृथ्वीको स्थेता वा 🕆 हराके प्राप्त उन्हों कुर्विद् समान करकार्यत हुआ कीमा करना आरम किया क्या अपने राजन निकास व्यव स्टानकर बृहक्तरको सार्थि कराय । तेता व्यूकुण अनुत और जूत-से जान-तान कन तेका जाने पुत्रके मिने कुम मिना। इस क्रम क्रूबलको एको जात और सारी चन्यओंने प्रस् 'कुकले ! तुर संकारमूमिये अलो हुए भीमा, होगा आहि बहैरकोको जीवकर इन्सरी मुखिबोके रिज्ये रंग-विशेगे महीन और कोप्यत करा स्थान । इसपर अर्जुनने हैसकर कहा, 'परि ने उपकृष्ण का राजधुरिये का व्यार्थियोंको पराचा कर हेरे को मैं अन्तरम उनके दिना और सुद्धर पक्ष लाईगी।"

श्रम राजकुमार उत्तर राजनानीते निकलका बहुद आशा और श्रमने वार्यको बोला, 'हुन निकर गरीवालीन करे हैं, जार ही राज के वाले । वहाँ को स्टीएकोन निकलकी आहाती



आपार प्रमादी हुए हैं, का समयो जीववार और काले जीवे रेकार में बात कर और आदेश (' वन वन्यूनका सर्जुनो प्रतानेत प्रतान चारिनेत चोद्रोन्दी राज्योन धीरनी बार ही । आहेनके प्रोक्रानेले के प्रमाने बात कारी रूपी और ऐसे विकासी हैने स्थी माने आध्यक्षमें का रहे हो । बोड़ों है हा व्यक्ति कार और अर्थनको प्रक्रामाने बर्धन्तोची होन्य विश्ववर्ध से । यह विश्वास शाहिनों क्रवी, सेवे और एमेंसे नदी क्रू मी। कर्ग, कुर्णेयर, क्षप्रकर्ण, गोल और अक्षप्रकारे गोल गान गुर्जा होन जानी पता कर से थे। को नेतनक जनके केनी पते से गरे और उसने सकते व्यापक क्रेकर अर्थको व्याप, 'नेरी राम नहीं है कि में कौरतीय राज्य लोग से सबी: देवने नहीं हो, मेरे अने रोजो कर्ड हो गये हैं 7 इस लेकने हो सम्बोध बीर दिसाबी है को है। यह की बढ़ी ही निवार है, वेनामानेन भी इसका समय नहीं कर सबसे । मैं से अभी बसका है है, प्रशासका को निर्मेष अध्यक्त नहीं किया है, दिन में अकेश है हा एकविकाद करनाची कामीरोसे कैसे एक्रेंग । इस्तीनो बहुकते ! क्षूप रहेंद्र सन्ते ।'

इस्तानं का—एक्कुबर । तुन्ते श्री-कुन्नेके स्वाधं शको कुश्तावंदी नहीं प्रशंसा की वी और तुन कहारे स्वापेट दिनों ही बस्ते निकारे हो, बिट जब कुन्न क्यों की कारे ? वहि तुन हुने कराता किये किया का और कारेने से उस की-पूजा आधारे नितासर हुन्द्रश्च हैरी करेंगे। सुप्तां भी हैरजीने हुन्द्रस्य सरका करोच्छे कहा का, इस्तीओ अस किस कीई हिनो पनाब्धी और करा केंग्र काम नहीं है।

उत्तर कोरा—कुरातो ! कीरकानेच मामरामधी बहुत-सी पीड् प्रिको आते है हो है। अर्थ और की-पुरूप पेरी हैरी करें हो करते हों, सिन्दु अस युद्ध करना मेरे कारकी कार नहीं है।

हैंसा सहस्यर प्रस्कृत्यन कार रमसे कृत पह और सार्ट पार-वर्गाद्वारी विश्वकृति हैंसर बहुत-बान पेक्सर प्राप्त । यह देशकर कृत्याकी कहा, 'मृत्योरोकी दृद्धिये पृद्धकारों पारच हो अच्छा है, जाता कीर दिशाना स्वका नहीं है।' ऐस सहस्य कृत्योगकर अर्थुत की उससे कृत की और पानते हुए संस्कृत्याकी कीर्य हैंदे और नहीं देखेले सी है पानकार स्वकार कर्युत किंगे। अर्थुरक्षण प्रस्तृत किंगे फानेनर सहर साम्योगी कहा कीर होने हैंदे कीर नहीं देखेले की है पानकार कुताले ! जुने, हुन कार्यों ही उस सीवा के फाने । देखें, किन्नुये रहेनों से अन्त्रे हिन की देखनेको निश्त है वार्यने !'



जार इसी जारा वयरावा जून अनुसर-विश्व करता का, विश्व अर्जुर हैस्से-ईस्से को रजके पात के जाने और काने रूपे, 'राजपुरका । वहि कहानोसे पुद्ध करनेकी सुनाते है-का कहें है से हो, तुम कोईसी राह समाले; मैं पुद्ध क्षणा है। पुर एक प्रियोधी नेपारें को करो; करत का, | बुक्कर बोरवोड़े सहेप और कुछरी मेर्ड़ बुक्कर स्वरंज । मैं अभी बाह्यरानी तुम्हारी रहा स्वर्धन्य । और हुन क्यों करें हैं, आदित हो को अधिनके हो पालक । विन सहस्रोंके अर्थुरने बुद्धारे हरका पालों हुए सन्तर्क सन्तराता और स्त्रो सामने जानक भारतन केवर ? हेको, में इस बुर्वन केवरें | विकास पहा हैका।

कृत करा मेरे स्वर्गिकाट करन कर थे ।' क्रा प्रकार नेक्सीर

#### अर्जुनका शमीवृक्षके पास जाकर अपने शबाबासे सुसज्जित होना और इत्तरको अपना परिषय देकर कौरवसेनाकी और जाना

रीतनाराज्ये कार्ते हिन्दाकर् ! यह सीवा, होक क्रांक्रे, प्रयाप-प्रयास कोला पहलीकोते का स्थापकोत्सकी पुरुवको उत्तरको स्वयं पहाच्या कर्मानुकार्या और सक्ते हैक है में मर्जुरको आहेवा करके पर-क्रे-कर पहुर हो । का क्षणिकारियाच्य क्षेत्रामार्थवीने विवास स्टेमके स्था. 'भारता । या के व्यक्तियारी प्रियाणी हेता है, या प्रयक्त पुर करियान अर्जुर कर यहत है। या अस्तर है हमें यूक्रों भीतकर गीएँ से पालक । इस प्रेमाने गुर्ह के इसका प्रान्तक पार्तकार कोई से केंद्र दिवासी को केंद्र । कर्क है कि दिनान्त्रपर तथला क्यो स्वयं अर्थुने क्रियुक्तेवसर्थ कारान् रोकाको भी पुत्र करके प्रका कर रिच्य कर् कृत्यर कर्ण केला, 'शरमार्थ । जान कक् क्षे अर्थुको पुरः गाबर इनारी निका किया वालो है, सिंह का घेरे और कृतिकारीर हो। सोरावारी अंग्रानेड परकार को नहीं है।' कृतिकारे महा, 'और कर्म । चीर का अर्थुन है, तर के पेच करन है धन पंचा वर्षीय कामन रिन्हे कारेड कारण अस प्रश्वकोच्ये दिल वास्तु वर्णनक वर्णने विकास बहेता। और मेरि कोई कुरत पुरूष पहुंच्यके कार्य कार्य है से में हो अपने की जागोरी जरावाची कर है केवा?

चन्न, । इतर अर्जुन रक्तारे इत्तेत्र्यके कहा है को और कार्या केले, 'राज्युनार । मेरी साम्रा व्यवकर पुर प्रीप ही इस देवपानी जान कार्य, में हुएते कहा मेरे व्यक्तिको स्वा भी का प्रकेशे । इस कुछार चल्कानेक कक रहे हुए है।' या शुरुवार राज्युत्पार कार राजी कार पढ़ा और को नियम क्रेकर कर बुक्रपर क्यान वक्षा। अर्थुको एकप केंद्र-केंद्र के दिवर अवस्त थे, 'उन्हें क्रमण्ड काल स्वक्रें, केंद्रे मत करो और जार्ची ही इनके डासर जो बखाती तिस्को हुए हैं. उन्हें स्रोत हो। जन जन्मकींद्र दन सामुख्य कनुरोक्ते देखर नीचे जारा और क्यार क्रियरे हुए बसोब्दे हटावट करें अर्थुओं अने रका। कारको नाम्बीको तिया वहाँ पर बनुष और दिसानो दिये। उन सूर्यके प्रत्यान देखाती बनुवरेको कोराते ही पान और अन्तरी किया प्रतर्भ देश नहीं। जा



काने वर प्रकारको और विकास बनुसेको प्रकार क् um für "A Ressis & ?"

म्पूर्णने का-राज्यात । इस्ते या से अर्थका सुनीब्द राज्योग अनुर है। या संसामधुनिते सहस्रोती केवली हमाराने जान्या का करना है, तीने संबोधे इसकी सुप्रतिहित् है और यह सभी सम्बोधे बदा-बदा है। बह ज्येत्व है एक त्यक्ष क्रमोकी बरावरी करनेकारा है। वर्षको प्रतिके क्रय सेकापने केवल और क्यूक्तीको परावर किया था। वेको, वह विश्व-विशेष स्थीते स्थापित. रक्तकोरण और गाँउ आहिमें दक्ति है। आरम्पने एक इकार क्लंक से इसे सहाजीने करण किया था। किर पीच औ र्थन कर्नक का प्रकारिके कर का उसके का स्थानी को जो जाने करण विका और चीन सी कोल्स कहानी तमा की वर्गतक बरुवने अपने चरा रक्षा। जब पैस्ट

वर्षवास सर्वाद् सादे करीक करनी व्या करन विन्न पहुर अर्थु-के नाम है; उसे व्या करनते हैं जान हुआ है। दूसर को सोनेर्स की हुआ केव्या और पहुंच्येसे पूर्वित सुन्दर पीतवास पहुंच है, व्या वीवसंख्या है। क्यूकर चीवने इसीसे सारी पूर्व विका पीती की। वीवस व्या इक्योचके विहासका अनेक्ट कर्युक व्यापना गुनिविक्या है। चीवा करूद, विसाध सोनेक्ट कर्युक व्यापना गुनिविक्या है। चीवा करूद, विसाध सोनेक्ट कर्युक व्यापना के हैं, व्यापना है स्था किसमें सुक्योंक सारित्र विकास है, व्या चीवार्य कर्युक मार्थ-क्या स्वास्त्रक है।

उत्तरं का - वृक्षातं ( किन प्रीक्षणावानी महत्त्वकारें। वे सुन्त और सुन्तरं अनुन कर कार्य कार्यन को है से वृक्षापुर अर्थुर, कृषिक्षर, स्कृत, स्कृतं और चौर्यांत कार्य है? वे से सची को प्राप्तुत्वक और प्रमुखीक संकृत कार्यकारं के ( कार्य कार्येंने कृत्यें अन्य राज्य क्रम है, कार्य कार्य विकास क्रम स्वाप्ति की कार्य । क्रम विकास सामाना क्रमानाहारां केयी को कार्य है ?

अर्जुको वाह—में ही कुमानून अर्जुन है, गुरुव संस्थान्त् केया गुविद्वित है, हुन्दारे विश्वाक स्थितं स्थाने स्थानक स्थानक भौतानेत है, अस्तिकृत्य प्रतिकत्त स्थान है, मोदाल अधिनका स्थानित है और विस्तवे विश्वे स्थानक सन्ता गया है, यह विस्तवि होताहै है।

उत्तर केला—पीर अर्थुनके श्राध तता होते हैं। यभ हर मुझे इस गामीके कारण सुन्य के तो मुझे सुन्यारी कारणे जिल्ला है स्थानत है।

अर्थनो बहा—में हारे हिलेको चीलकर असी का सरकर धारतिके बीचचे निवस था, इसलिये 'क्रम्याम' कृत्य । मै सक संस्थापने काम है जो बहरी कुछेन्क इनुओंचे जीते किया कारी जो लेका, इसीले 'विकार' है। संकरपुरिले युव करते समय मेरे राज्ये सुन्यको सम्बन्धते होत अब बोटे नावे है, इस्तरिको में 'बेलवाइन' है। मैंने कावनवाल्युकी अञ्चली हिन्दे स्था हैयारथंपर क्य रिवा था, इसरिय्टे स्टेप मुझे 'परत्पुर' कही हमें। यहाँ को भई क्योंके ताम पुर कारो समय प्रमुते केंगे सिरफर सुर्वके सम्बन्ध केरावरी निर्दार बहुताब्द था, इसरियो में 'ब्रिजीटी' हैं : मैं चुद्ध करते समय कोई बीक्स (थथानक) कर्न नहीं करता, इसीने में केस और बहुव्योगे 'बीबहरू' धनले जीवत् हैं। पर्याप्तकारे भूर्वियानेमें के रहेन्द्रे हाल कुरहार है, इस्स्टिओ क्रेस्ट और सनुसर पक्षे 'सन्धवार्थी' नामसे एकाको है। करो समुख्यीन पृथ्वीने मेरे-वेला ब्रह्म कर्व इसंघ है और में कुद्र है कर्म करता है. इस्तरिये लोग मुझे 'अर्थुन' नायसे व्यानो है। मैं कुर्वेश, कृति, क्या कार्यकास और इसका पुत है इसीन्ते देखेंत और क्युकोरे 'लिन्यु' जायते विकास है। येव दसमाँ जम 'कृता' विकासिका पत्ता हुआ है, क्योंकि में उपलब्ध कृत्यकर्त क्या साहाय माराक क्षेत्रेत प्रश्रा विकास अक्टरिंग कार्यकास का।

व्य पुरस्ता विराह्याने अर्थुनको जनम किया और बाह, 'में पुनिवास सम्बद्ध शक्कुमार है और येव नाम जार की है। आग नेव कह कीपाल है को में पुष्पपुत अर्थुनका हर्तर कर का है। मैंने सामको म पहल्यानेके करण में अर्थुक्त क्रम को है, इनके विशे अरम मुझे क्रम करें। जान इस सुमार सम्बं क्रमण होतने। में आपका सार्थन महेना और किया केसमें अरम पहलेको कहेंगे, जान्ति में आपको के कहिना।'

अर्थुनने काम-पुरस्तोता । मै सुनस्त जाता है; सुन्दारे निर्णे कोई सामोताने काम नहीं है, मै संभागने सुन्दारे तम सामुनोनेंद्र कैर जाता हूँगा । सुन पान्य को और इस संभागने सहातेनेंद्र साम त्यारे हूए मैं को सीमान वार्त कामे, जा रेक्सो को । निर्मा सम्भा में सामोता बनुन सेन्द्रर सामुनोनों रामार समान होतेला, कह सन्दा सामुनोनों सेन्द्र पुने कीन नहीं समेती । अब हुन्द्राण क्रम हुट हो काम माजिने ।

क्षेत्रक प्रकार अनुनने पुत्रकार्यक रक्षण प्रतिपृत्त क्षेत्रक प्रकार किसी समस्य अवसेची स्थल किया। उन्होंने अवद होका इन्ध चौक्षक कहा, 'पायुक्तमार | आगोर क्षण इस एक उपरित्त हैं । आनुंत्रने कहा, 'तुन सब मेरे कार्य किसार करें।' इस अवतर अवसेची स्थल करके अनुनका चेत्र अस्तावको किसर पत्रा और अनुने पाय्योग अनुकार होते च्यावको किसर पत्रा और अनुने पाय्योग अनुकार होते च्यावको है अवसे ट्यावन की है, इस एक्सावके परस्पारी अनेकी च्यादांकारेको प्रकार की है, इस एक्सावके परस्पारी अनेकी च्यादांकारेको प्रकार की सेच्या प्रकार हो जा है।' वह कुनकर अनुन किस्परित्तकार है। पहि और कार्य स्था, 'चीर है होरे प्रकार स्थान क्यावने, अनेरावेची चेत्रकार के समस्य या की महावाने क्याबंदि युद्ध किया वा उस समय हैय स्थानक वाँच वा ? देवरावांत किये निवासकार और कैयों के कैयों के बाव युद्ध करते समय केया कीन सामी वा ? हैंपाईके क्यावाने का पुत्ते अनेवारे स्वास्त्रीया सम्बद्ध करना करना वाह वा, कि समय किसने नेते स्थानका की वो ? वे पुत्तार हैयावार्त, हुन, हुन्ते, करतान, काल, अस्तित, कुन्यवार्त, स्वासीयों वीकृत्य और स्थानका व्याद्ध-नृत कालक अस्तान या पुत्रा है। किर काल, हुन्ते युद्ध को वहीं वर समीवा । हुन हुन स्थानक कोंको कोइकर कालोंके राज्यांको ।

इसे जागर जारको जागा कार्या क्यान प्राथमार स्थानकार अर्थुनने अर्थ्यमुक्ति एरिक्स को और किर अपने प्राय क्यान इस रेम्बर अधिनेको दिने हुए रामका कार किया। जान करो है आव्यानके एक कार्या-रामकार कुलेचित दिना प्राय कारा। अर्थुको जानकी प्रार्थिका की और एक प्रायकी कार्यामार कार्यो केंद्रसर समुख-साम कार्या किने सामको और प्रस्थान किया। पिट उन्होंने अपना कार्या को को को स्थान किसामा पीचन और सुम्बर कार्योको केंग्रेट कार्य हो गये। प्रायक्रियो कार्यो कुलकर केंद्र गया। स्था अर्थुको एवं प्रतिकार केंग्रेटको कार्य किया और स्थानको स्थाने स्थानकर अव्यावक केंग्रेटको कार्य किया और स्थानको स्थाने स्थानकर अव्यावक केंग्रेटको कार्य किया और स्थानक कार्योकर, हम अर्थिक हो हो। पिट का्रोटको कींग्रेट स्थान कार्या कार्योकर हम क्रिकेट केंग्रेट

तारने वशः—की सङ्घ और पेनियोंक सम्ब से स्मृत हुने हैं बना रोजनी पोर्नेक्योंचे एके हुए स्थिपनेटी किन्स्य पुज्येका भी पुत्रे कई बार समागर मिला है: किंदू ऐक प्रमुख्य सन्द से की पहले सभी नहीं सुन । इसीने इस स्मृत्ये सन्द, सनुमती रहार, स्थानने स्थानको अस्त्यन्त्रे पुत्रोची ह्यार और रंजनी मरामरहारते नेत यह बहुत है समाग पह है।



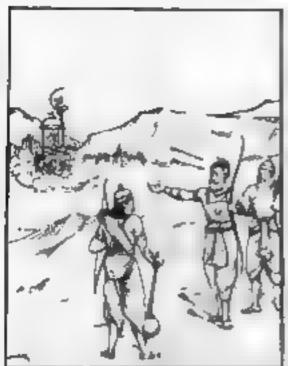
इस जवार वाज करते-करते एक जुहुनेतक आरे वसले प्रानेण अर्थुन्ने उपने प्रमुद्ध, 'अब हुए रचनर अवति स्थारे कैन्सर अन्ये औरते वैदनेक जानको सकत् हो स्था प्रानेको स्वकानीते निकार तो, वे किन प्रमु काला है।' तब अर्थुन्ने हेले जोरचे प्रमुख्यान की, जाने से पर्यंत, गुरुत, विहार और व्यक्तिको विश्वेष वार हेने। अस्ते व्यवक्ति होचर अस्त किन रचके कीतर पुरस्कर केंद्र गया। अस प्रमुख्यानि, न्याकेक्यरे स्थान और रचकी करकराहरके काली आरंग करते। अर्थुन्ने अरास्को निक्त कैये वैकासा।

# अर्जुनसे युद्ध करनेके विषयमें कौरव महारक्षियोंमें विवाद

सा गीरण शासके कुनार करेगांचाने होनावारी वहा— मा नेपालंको समान को राजारे गीवाम मराराहर सुराधी है मी है, निकारे पृथ्वीने भी कमा होने समा है—इसके कम पहला है कि या अर्थुनके रिका कोई और नहीं है। देको, इसरे स्वानित कार्या परियों पह गार्थ है, योड़े भी जाता नहीं कम पहले और सारिहोणोकी आहियाँ भी जातावादिन मी हो पूर्व है इससे कम प्यास है कि मोई अपना गरियान नहीं होगा। उनके बोद्यानोंके पूक्त रिसोण और यन अस्ता दिखानी होते हैं। असर इस गीनोंको इस्तिन्स्पूरणी और चेनकर प्यास्तान

करके सब्दे हो जाने।

अन तक पुर्वकर्ण संस्तु होन और सहरके कृतकर्थं। कह—मी और कामी जाकार्थकरमारे का बात कई कर कहे है और किर की कहा है, कक्कोंने इससी का बात सहसे के कि कूट्ने हस्तेयर उन्हें करा क्रमेंक कमें सुना कोच तक एक वर्षक किसी तगर का कामें आजाताहरू करवा कोचा। अनी इसका नेरामाँ वर्ष पुरा नहीं हुआ है, और वर्षि उसके पूरे होनेने काने ही अर्जून इससे स्वस्ते आ का है से कक्कोंनो सारा करेगा किर समर्थे कुछ पहेंगा।



इस भारता निर्माण जिलाबा भीका कर समाने हैं। इसके निर्मा इस बाल का भी है कि इस शबरें नेताकर काई कामाना किया आबा हो, बादे अपूरंत, इसे तो अवने सम्बंध हो है। ऐसी ही इयानी प्रतिक्षा भी है। किया में भीका, होना, कुछ, निर्माण और अपहासाम्य आदि कामानी इस प्रवाद निरमाण होकार करों मैटे हैं? इस समय सभी कामानी कामाने में दिस्तानों होते हैं। किया इसके निर्मा और कोई बात हमारे किये हैंगकार नहीं है, इसलिये आप सम अपने मनवाद समानित रहते। की हेंगका इस और कार्य काराय भी संसाद करके इसके मोकन होना से से देसा कीन है जो हरियनपुर स्मेटकार कान्य कार्यक ?

तुर्वोक्तरण कर दुनकर कर्नर करा—अवस्थित क्रामार्थ हैंगाओ रोगांचे मेंसे १९१कर बुद्धकी नीतिका विकान करें। हैंगाओ ए, अर्जुनको आते देशकार में अवसी प्रक्रंस करने रूने हैं। इससे हमारी सेकावर क्या अध्यक्ष च्येतर ? इससिये देखें नीतिसे काम रेका करिये, किससे इकारी केवाने कृष्ट र को। किस समय के अर्जुनके क्येत्रोकी दिनविकार कृष्टि र को। इस समय इस विदेशने हैं और को करी नेन्काने को कुए हैं, राजीकी सद्ध है राजा कर्नु इससे निरुत्त अस क्येत्र है; इससिये हिस नीतिका अध्यक्ष सेन्स काडिये, निरुत्त कृष्टि नीतिका अध्यक्ष सेन्स काडिये, निरुत्त क्षेत्र क्षे

भा को को इसमें मिली जनारकी सामा गाँ रेकी काहिये। विकासियों प्रोच्या को मनोरम महर्ति, समानोंने और कर्मकोंने विक-विकास सामाई सुनानें हैं। है। सामा सीर्वेक्कोक्योंको प्राय महत्वा संस्थान करनेने साम कीर्माई वित्र करने अलो पुरित्र हो मानेवर की पविद्यानिको सम्बद्धि करन ने समानी है। सार: प्रमुखी प्रशंस्त करनेनाने प्राय परिवारको मेंको कीर्केको और प्रमुखी प्रशंस करनेनाने प्राय की, सिलाने प्रमुख काम है। इस मौजीको बीचने प्राप्त कर की। सन्तेन काम जोए प्रमुख्यान कर हो तथा दशक्तिको विद्यान करने प्रमुख्यान केर्का कर हो तथा दशक्तिको विद्यान करने प्रमुख्यान केर्का करने महिला कर हो सुना है। सामा अनुस्था काम प्रायम्बद्धिन कर्मुक्या करका वृत्तिकामा अनुस्था काम प्रमुख्या हैए।

क इन्दर एककी का-कार्त ! पुरुषे विकर्त इन्हर्ग कृदि कर है नहीं कहें दाते हैं। हम न से कार्नक कारण बार के हे और न आहे नी नामका निवार करहे के। विकास धारोवर के की सम्बामें आता है कि इससीय अर्थनो स्टेस रेकेने कार्य जी है। देखे, जाने अनेतरे ही विकारित प्राथमीर रीजवरियो पुत्र करके समझ स्टीरपीयी रक्षा को को प्रका समेदने ही अधिनेतको शुप्त नित्या या। पान विकासको प्रमाण प्रकृत समी सामने आसे से असे भी जाने अवेतने ही बाद किया था। निवासकार और बासकेय इन्कोंको के देखर की की एक सके थे। उन्हें की उसने चुतुनें अनेकोर की १९४४ का अर्थनिये को अर्थनीर की अर्थनी राजवरीको अपने अधीन का तिथा या; तुन्हीं बताओं, तुनी भी अनेतरे कुमार कभी कोई ऐसी कारता करके दिसानी 🖟 ? अर्थुओर एका पुत्र कारोबरी सामग्री के इन्हों भी नहीं 🧞 हुन के उसके साथ विकासि बार कहा से है, इससे असून हेन है दुस्तव चरितक दिक्ते नहीं है। इसकी दुने का करणे पार्टिने । इर्ड, क्षेत्र, इन्टेंबन, चीबा, इत, असमाना और इस—सम विशवक अर्जुनका सरका करेंगे; तुम अवेतरे है जाने विक्रमेक्ट प्रमुख पर पर्छ।

इसके कर अक्रकान कहा—आधी हो हमने गीओंकों बीक को को है और न इस मामराज्यकी सीमायर है धूने हैं, इतिकान की जाने कहा हु। है। किर हम हैने का-कामरा को को करते हैं ? कूर्वेकर से कहा है चून और निरंग्न है; जा से कुर्ने राज्य जीतकर काल, किस हाजिसको होने थे होता ? जातः किस कामर हमने कुमा केरत का, हमहास्थ्यों जीता का और डीकड़िको जानन् सक्तमें कुमाब का, जाति जाता जा आंद्रोंको साम संस्था करना। जरे ! कारह, मनन, पृत्यु और सहकारण क्या कोन कारो है तो युक्त-क-मुक हैंग कोन के हैं, जिलू अर्जुन तो कृतित क्षेत्रेगर कुळ भी कार्जा नहीं कोन्नता : उनका जिलू जम्मन कुलने व्हास्त्रकाने कमूनियों कलाकृते जूजा चेत्रता था, उनके जम्मन हुण मान्यतीयों हेन्स-रेकाने ही अर्जुनतो त्या त्ये । अर्जु ! और फोर्ड भी बीत मुद्ध बारे, मैं तो अर्जुनतो त्यूंगा नहीं । महि पोई लेनेके हैं और महास्त्रात विराट अस्ता तो अस्ते में अस्त्रम मुद्ध कार्जन

वित्र पंजितास नेते—अधनाम और कृत्याचंत्रः विकार कृत दीय है। कर्न से वित्रवानीक अनुसार कृत करनेपर है दूस्ता हुआ है। किसी की स्व्यूक्तर अवस्थाने आवार्ष क्षेणपर सेव नहीं स्वास्त्र व्यक्ति। और क्या अर्थुन हमारे सामने आ गवा है से आपसमें विशेष करनेकर अवस्था से व्य है है नहीं। अववार्ष कृत, सेवा और अवस्थानको की हम समय क्ष्या है करना करिये। कृतिकार्यने सेवाने सम्बन्ध रक्षनेकारे जिसने सेव बतार्थ है, उसमें अस्थानकी कृत सकते क्यार है।

दुवीयनी नदा—आवार्यवरण । इस समय क्ष्मा करें और शामि रहीं। चीर इस समय मुख्येतके निक्रमें चोई अच्छर र आया, वधी इसस्य आनेवा काम काम सम्बद्ध है।

त्या वार्य, तीना और कृत्यात्रानी स्थित कृत्येवनों सामार्थ होमारे समा करनेकी जारंग की। इससे प्रान्ध होमार होमामारी कहा, 'सामानुस्त्या कीनाने को समा कही है, मैं तो उसे सुन्तकार ही उससा हो गया था। अच्छा, अस मुख्यी नीरिका निमान करें। कृत्यानको सम्बद्धीय हेएसे इससे पूरे होनेने स्थित है, जिल्ह ऐसा हुए विना अर्जून कर्मा हमारे सामने नहीं अस्ता। पुन्तेवनने इस निमाने वर्ज करके इस्तुन की है। सारा: चीनानी इस निमानने होक निर्माण करके क्रानोकी कृत्या करें।'

इसर सिवाय योगाने शक्ष काता, व्यक्त, पूर्व, वित, पहा, मास, नहात, पह, बहु और संकार — ने सब विश्वयत एक कारण्यक करे हुए हैं। यह कारण्यक कारण्यक्रिकें विभागपूर्वक कृषण काता है। उसमें पूर्व और कारण नहारोंको साँच जाते हैं तो कारणकी कुछ वृद्धि हो काती है। इसीसे हर पाँचके पर्व हो पाँचिने कह जाते हैं। इसरिको मेरा ऐसा विचार है कि पांचकारेको जब तेतह करेले पाँच ब्योने और सारह दिसका समय अधिक हो गया है। पांचकारेने के-के प्रदिक्तों को थीं, उनका ठीक-ठीक करन किया है। हत सन्द्र हत अवस्थित भी अच्छी तदा निश्चन करके हैं। अर्जुन हमारे साधने अल्बा है। वे सभी बडे पहलब एवा बर्ज और अवस्थि कर्मक है। करा, कृषिहित निर्मेक नेता है से क्षांके विकास कोई क्ष्म केरों कर सकते हैं ? पान्कारकेर निर्मेश है, उन्होंने बाह्य एकर धर्म किया है; इसरिने वे राज्यको के किसी केरियेक्ट उपकरे सेना नहीं कार्ति । पराक्षाम्बर्धक राज्य केर्नेचे हो के करकाराके समय की समर्थ है, किस कर्मकारों क्षेत्र होनेके बारण के अव्यक्तनंत्रे विकासिक नहीं हुए । इस्तरियों को ऐसा क्रवेगा कि अर्थुन निकासकार्थे हैं, को ब्रेडब्बी भागी पहेंगी । पाण्डमलोग चैक्को परे सना हैंगे जिल्ल असलको कभी पूर्वे अध्यक्तकेते। एकक क्षेत्र करने केले कोरता की है कि समय आनेका कृष्या को इस होगा, जो वे बारबार इससे साहित क्षेत्रेकर भी नहीं क्षेत्रेणे । इसलियो समान ! ब्रुट्रोक्टि समान क्वेंट्रिक कोर्ड भी काम बीत हो करे, क्वेंट्रिक अब अर्थन webr ift an von fin

ुचेंकरने कहा--विशास: ! पान्करोको राज्य तो मैं हैच मही; अत: अत्र को बुद्धते दिन्ते तैयारी करनी हो, कही चीत करो ।

क्षेत्र केरे—इस विकाय वेदा वैदा विकार है, या सुनी। इस में क्षेत्राई सेया रेकार इतित्रापुरकी और को पाओ। इसरा क्षेत्राई क्षण क्षेत्रोंको देकार करन सन्ता। क्षेत्र आधी केनके साथ इस अर्जुकार कुकारका करेगे। अर्जुन पुरुके दिन्ते का राम है, जतः है, क्षेत्राचार्व, कर्ण, क्ष्याचामा और कुकारार्व करारे पुरु करेगे: बीक्ने विद्यास्ता विकार का स्वर्ध इस की आवेदा हो, जैसे तह सद्मानो चेक्ने सन्ता है उसी स्वरूप की आवेदा हो, जैसे तह सद्मानो चेक्ने सन्ता है उसी

व्यक्तक वीकामी व्या कर अधीको अवही सारी। दिश वीकारक कुर्वेकाने भी बैस्त ही विश्वा। भीकारे व्यक्ते से कुर्वेका और मैंडरेको निय किया। अस्ति व्या पुराव-पुराव सेव्यक्तियोको स्वास्त्व करके प्रमुख्या आस्त्व वही। उन्होंने व्यक्त, 'होनानी ! आप से बीकारे एको होहते, अस्तानाम वर्षी और से, परियान् कृत्यवाने सेनाके स्वाहेने पार्थकी यह करें, कर्म कुन्नक व्यक्त स्वरक्त रहा कुर्वेगा।

#### अर्जुनका दुर्योधनके सामने जाना, विकर्ण और कर्णको पराजित करना तथा अरख्को कौरव वीरोंका परिचय देना

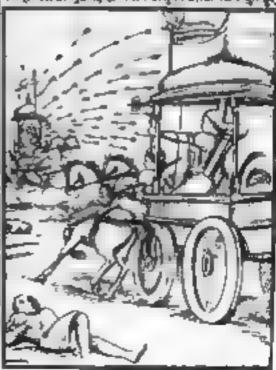
विश्वास्त्रभावि अवसे हैं—इस प्रकार का सौरकारणारी बहुत्वना है गयी से हांग है अर्जुद अपने सामारे वरवरहार से अस्मारको मुख्यमान सभी हुए जा गये। यह तम नेकासन हैणाबादने सहा, 'येथे। देखे, हुएते हैं यह अर्जुन्सी स्थायमा अभ्यान दीए दहा है। यह अर्जि समारे सरकारणार है और सम्बंध स्थायम वैद्या हुआ यह सहस्थी अर्जुद है अर्जि हजान करोर दहुरा कानेकारे गायांच कनुकारों सीच यह है। हैजे एक साथ है में से साथ में पैरोपर अस्मार निर्म है और से मेरे कानोंको स्वर्ध काने हुए निकास गये हैं इस समय यह अनेकी अस्मित्रानुष कर्म करके बन्धाकारों स्वर्ध है, इसलिके हम्में हारा यह कुते अन्यान करता है और मुक्ते स्वराज-समायास कारा है। अर्जु क्यू-वास्त्रमांके अस्माय रिय अर्जुनको आस हम्में बहुत हिनोबर देखा है।'

(भा अनुसर्व क्या—सारके । हुन रचको क्यांस्थ्योक्तो इस्मी दूरीवर से पाने, विक्रमी दूर कि एक साम काम है। क्यांसे में देखेला कि कुम्ब्युस्ताका दूरीका नहीं है।

इसके कर अचुंनने नहीं सेनावर हुई सामात रेका, जिल्ल करें युवोंगन करी विकासी नहीं देश । मंत्रहम होना है का स्थिति हुमांगन में नहीं विकासी नहीं देश । मंत्रहम होना है का स्थिति मार्गत नीई सेकार अपने जान समानेके विके हरितन्त्रहमी और मार्ग नया है। अन्तर, इस रमसेनाओं में होंद्र हो; उस ओर करों, निका कुर्वेचन नया है।' अन्तर्मी आहा पायर अगरे करों ओरको रस होंद्र मेंचा, विश्वर दुवोंगन नया था। दुवोंगनके पास म्हेकार अन्तर अगरा गम कुराबर अन्तर्भी वेशनर दिश्वनोंके समान सम्बंध महाने हने। अन्तर्भ कोई हुए बाजोंने कर कानेके बात्रक पुनरी और अन्तरहा विकासी हैने केंद्र हो गमें। अन्तर्भकों स्वाप्त कार्य स्थान स्थान स्थानकों किया प्राण्यात, प्राण्योंकार दूवर और अन्तरी स्थान केंद्र है। स्थान प्राण्याते क्रम नोरंश मोत्रकर स्थानकों अर्थर कार्य हुनेकार है।

वैद्रम्णकार्यं कार्यं हैं—कार्युत बनुवारियोधे क्षेत्र का, कार्थे राष्ट्रियंको को केन्से कार्यात पीओको और विर्मा । इसके बाद पुत्रकी एकानो का कृष्टियाको और कार्य । बीएव कोर्थें देशा और से बीह गाँगो विज्ञानगरको और कार्य गाँ और अनुन समस्य क्षेत्रत पुर्वेकाको और कार्य का है, से वेकारी पीजनारों नहीं आ पहुँचे । बीएकोको कार संस्कारे देशकार अर्जुनने विराटकुमार कार्यने कार्य—'राजपुत ! कार्यकार शुक्रिकाम बहुत प्रकार कर्म बहुत अधिकारी हे दह है, बहु बुक्रि शुद्ध करन कर्मन है; जहार पहले अधिके पास मुझे के पाने हैं

कारने अर्जुनका रच पुरूष्ट्रीयके मकाभागमें हे पहचार क्या मिन्य । प्रानेचे विकास-, संकारवित, शहरत और क्या आहे. महाच्या और असके मुख्यमारोजें अह होते पुरत हैना क्या । अर्थुको प्रकोर राजेको सभी प्रकार करा कर दिया, वैहे अन्य करको काम इसको है। यह यह प्रशासक संसाध है हह था, उसी क्षेत्रक कुम्बनेक्ष्मा जेल केला विकास रावार केलाह अर्थुको अवर यह अव्या। आहे ही यह विवाद नामक क्षणोद्धी क्याँ करने राज्य । अर्थनने अस्ता करून कारकार रकारी व्यक्तके दुवाई-दुवाई कर दिने । विकारी में व्याप गया, नियु 'क्यूनर' करक राज भागी आवत अर्थनी प्रकार मारा पर्याः सिर्द को मैसे प्रमाण आधिके केन्द्रों को-को व्यक्तिक कुछ केल काले हैं, काले प्रकार अर्थनकी भार शासक क्षीत्रकोत्रको और क्षीजो हाते। विकासे ही अवता हो प्राण स्थानका पृथ्वीका निर पहे । इस पुरुषे इसके समान का**ला** है। भीर भी अर्थुनके द्वारा पराका हुए । यह ब्रह्मलेका लेक्स करता इस्त पुरुष्टिने कियर द्वा का क्रानेमें कार्रक पाई संसाध-किन्द्रो करावी भूटचेड् हो असे । अर्जुको अस्के रखये चुते हुए



मास-त्यात को होन्दी धारणार क्या है सामसे आवार सिर साट हैंग्या । भाकि यारे सानेना कर्ण क्यारे पराधानके कोताने सामार अर्जुनकी सोर रोड़ा और क्या क्या व्याप्तार साने अर्जुनको, सीच इत्या, अर्जा कोड़ोको हेन्द्र दिव्य और राज्युत्यात सामों हाकने की चोट प्यूंताको । यह तेस अर्जुन भी, कैसे गावह नामकी ओर सेंद्रे साने प्रधार, कार्नवर हुट महा । ये सेनो हीर एक्यूनी क्यार होने सेनो लेखा हुट देसनेके सिने हानी करिया कीर क्यार सानेनाओं से । इन्यार कुट देसनेके सिने हानी करिया कीर क्यार सानेनाओं सहे हो गाने ।

अपने अच्छानी कर्याची सामने काहर अर्थन क्रोब और अंग्रहते पर पदा और एक है करने जाने हानी स्थानकी भी कि एवं, कार्रांच और मेहोस्स्तित का किए एक । हास्के बाद क्रोमोके अन्तव चेन्द्रकोनो नी अर्जुनो स्व और प्राथिपोस्तीत केव प्रमय । जीवर महीर की मानो राजसीत अपूर्ण क्रायोरे कर गर्ने । इसमें अपने क्रेक्न क्राया मध गया । प्रानेने सन्ति अर्थन्ते अनान व्यवस्थि कार वैचा और अवर्धने करकर असे करों केहें एक करविन्हें की हिया । जान ही राजवंदै कामान्त्रे की बुद्धा हारह । इसके बहर कारे अर्थको भी सम्बंद किया। समित्र सम्बंधे साम भीका अर्जुन होते कुट् विक्रंड कवल कल का और अले कार कुछ पाणीकी कर्य करने शरण । असने असके असके केतावी धारतीये अपने कार्यके की, जार, बकार, सरका और क्या आहे, अवस्थि गीम करन । क्यांक प्रतेर अग-विश्वा के गया, अने बड़ी पीक्ष क्षेत्रे करी । विश् से, जैसे एक अधीने दारकर साथ सभी कर साथ है, उसे उसक च्या पुत्रके वैदानमे चान कहा हरता।

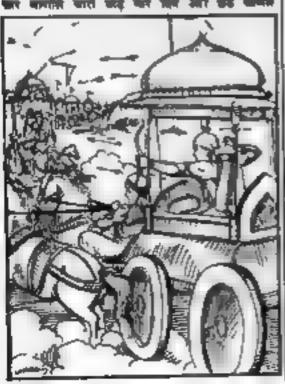
सामित वास वालेवर वृत्तीवय जाते, वीर सपनी-सपनी सेराके साथ वीरे-वीर असूनकी और वह अवने । वह अबूनने हैंसबर हिम्म जावांचा असेग असे हुए कौरकोन्धर हरवाहरूपण किया । उस क्ष्मण उस होनको रच, कोड़े, इस्के और कावा जाविनेने कोई की हैंडा नहीं बचा वा कियने वै-वे अंगुरुपर अर्जुनके दीनों कावोका बचा न हुआ है । अर्जुनके दिन्यकाला अर्थन, कोनेकी विद्या, उसस्वी रच होननेकी काव, पार्थक अवसंवासनका बान और परवाहर देखकर वह भी कार्य करते हुने अर्थुन अल्ब्यक्तिय अधिके समान शहालेको परर कर प्राच्या अर्थ कर करा असे। केसके वैद्यो हुए सबको समीच आनेवर एक ही बच कोई की वह सहवान परसा वा, कुत्रस्य असे हस्त्रस्य अस्तर नहीं विकास: व्यक्ति अर्थुन होत है कर स्त्यूको रकते निराधन स्थानेक मेन नेत था। समझ बोरन मेनिकाके हारेर उसके हात किय-पिता होन्सर कहा या हो थे; या अर्थुकार ही बाय या, बूलोने अन्यति द्वारण वर्षि हो सम्बत्ती थी। उसने हेन्यानको साहर, बूटकार्यको स्तर, अक्ष्मानको अस्त, हु-प्राण्यको साहर, बूटकार्यको स्ति, बीटको साह और बूटेकारको सी कार्यको सामा विवास किर सामि जानक याम कार्यक सर्वका साम सीच साहर, साथ ही उसके धोड़े, हारति साम भागों भी सु सन दिया। यह नेताकर सारी होता विवासी साम भागों भी सु सन दिया। यह नेताकर सारी होता

का विराज्यका जाने अनुंत्रों कहा—'विका । अब अन्य निर्मा केवले बारून्य पालो है ? साहत सेविके, में बही क से बहै।' कईसे बढ़-'क्स । जिस सब्दे साम-साम चोडे हैं, विकास केली पंजाबा पहला की है, अब पान्य की हुए के जानक कामानकारी केवने नकामानेकारी न्यान्त्रन विकासी पाने हैं, ने है प्रायन्त्रमें और पाने है जानी tier e gen und mit fragt fragt fie wait e afte beit ! किन्दी कराने कुर्णान करकात्वा कि है, वे है के क्रमण क्रमणानिकें केंद्र अस्तानं होता है। हम केंद्र रक्ते क्रमणी व्यक्तिका करो । यस के मुहत्यर सहार करेगे, बानी में भी इनका क्रम क्षेत्रियः ऐसा कारोप्ते में मुक्तार क्रीय पहीं करेंगे । इससे कोड़ी डी कुरूर, जिस्सीर स्थानी धारवारी 'बापूर' का निक्र देशको देश है, यह कावार्ग होलवा पुर प्रवासी अक्टमाना है। एक जो प्रकेशी होनाओं ग्रीकरी होगाने साथ पदा है, क्रानीय काम को है, विवादी बाजाने उता सुकारिक इस्पीया विद्धा करा है, बढ़ी का क्लाइका पुत्र स्था क्षेत्रन है। विस्तारी व्यवके आपरान्त्रे क्रवीकी सुन्तर नुक्रानका कि वेदलवी है को है, यह कर्ज है: हमें तो तम कारे ही कर को हो । क्या किस्के सुन्तर स्वयर सुवर्णस्य बीच क्यारकारी मेले रंग्यी मताब प्रदाती है, जो क्ष्मारमा पहले इस है, जिल्लाह करूर महार महा और पराक्रम नकर है, विनके काम रकार सर्व और ताएओंके विक्रवासी अनेको कार्या है, अवस्थार स्टेनेका क्षेप और अस्टे इसर के का क्रेक क रहा है, जो मेरे मनमें भी जोग का करते को है—ने हैं इस तक लोगोंके रिखाना बानागरका क्षेत्रमधे । इनके कह सकते क्षेत्रे करूना कहिये; क्योंकि वे में कर्मने किए की करेंगे हैं

सर्वृत्यक्षे वाते सुनवार कार सारावान हो गया और वहाँ कृत्यकर्वका स्थानक, वहाँ अर्जुनका स्थानी से गया ।

# आसर्व कृप और ब्रेफकी पराजय

र्वजन्मको कार्व है—सियरकुमाने एवं काम्बर | कृपनार्वकी प्रविकार की और किर उनके सामने को से बाबर सहा का दिया। स्वतंत्रर, अर्थुने अस्य का मताबर परिवय दिया और देखता करक कई करी बहाओ बोर्स्स क्याचा । इससे प्राणी क्षेत्री शासक हाँ, पाने पर्यंत पक्ष का है। या प्रदूष्पर अध्यक्षने पूँच राज और असी के क्रीमाने हुई, व्य ब्राह्मानी एकर कर वहे। युक्ता पहरवी क्रमानाकी के अर्थु-पर कृतित है जनक पह केसी क्याचा। काला कव्य तीचे खेळीने व्याप्त हो गया। किर क्यूंटे अला महत् कृत इसमें से अल्बी स्टूटर की और क्षापुँगके सबर एवं इकार क्षाणीयों कर्य करके किया राजिय की। तम अर्थनो भारत जनक तीका कर काश्रा कृताकार्वका करून और प्रकारण कार रिक और कारको हुमाहे-हुमाहे बार हिले । जिलु कर्माट क्रारंतमां स्थितक भी हेक मही पहुंचाया । कुलावाची कृतस अनुस सरावा, पर अर्जाको को भी बाद देना। इस प्रधार का कुराकानी कई जून कार आहे हो क्योंने अन्तरित सक्षेत्र सरात काराती हुई एक प्रतित अर्थुनके कार केंग्री । अवकासने क्रमाने कामर अर्थ क्षार आही को इस प्रतिकों अर्थनी का बान करकर कर हाल । सिर एक काली कृताकार्यंत रकता कृत कर देख, कार बागोंने जारी जेड़े कर दिने और वह कार्य



स्वर्शनक रिस काले असन कर विचा। यनुर, रच, कोहे और सार्शनके जह है कानेश कृष्यमार्थ हावलें नहा लेकर कुंद की और उसे अर्जुनके समर केवा। महानि कृष्यमार्थन का गांकर कहा संमानका कावाया को, ही भी अर्जुनने बाल मांकर को सार्थ लेख दिला। स्था कृष्यमार्थकी स्वाच्या कार्यकार केवार केवा कुम्मीनकालों कार्रे ओपने केवार बाल बरसार्थ हरूरे। मा देश विद्यात्मका क्यांक कराव्या सहस्रोतियों मांसर्की सुमाना और क्यांक क्यांक क्यांक कराव्या स्वाच्या मांसर्की मांस की। स्था

🚧 आयार्थ क्षेत्रके अर्थक्यो १९६४ भागे झ्रांस मान बारे से बाल क्रमी पहिलों भी नहीं पाने से फि सर्मुनी बीक्रमें ही बहुद हाते। इसके कह हाड़ोंने अर्जुनके रक्तर हमार वान्येकी कर्न काते हुए अन्या अवश्वात इसलकार दिस्तरका, क्या उनके क्षेत्रकर्मकारे भोड़ीको भी प्राचल विकास १ हम्म अस्तर होनी-हो-दोनीयर सम्बन भावारे बाला-कर्य करने करे । क्षेत्री ही विकास परावसी और आवन रिजारी हे। क्रेकेट के। क्यूके समार तील का और होते है कारकोचा प्रचीप सामी थे। उत्ता कारवेंची इसी समाते हर से वहाँ उद्ये हर राजानीको जीवेन करने शर्ने । पुरुषे महानेका कर्द क्षर चीर जिल्लाको स्त्रच करते थे, 'चला, अर्थनके हैं हमा करता और है में चुनुने जेजावार्यका सायश कर स्थेत । व्यक्तिकार कर्न की किरुना करोग है, जिसके कारण अर्जुनको पूरके द्वाव त्यून यह रहा है।' होनावार्ष हेन, पाचक और आदि आदि जे-जो अस अर्थनवर हो हो वे, वर सकते का विकासोधे हत यह कर कि वा।

आन्त्रकृष्णरी देवता अधार्थ क्षेत्रकी प्रयोग करते हुए सहते. क्ष देखें और देखाओंक्ट विका प्रतेताले जाना प्राची शर्वरके साथ को डोमाकानी पुत्र किया, जा कहा है कुछन महरूरी है । व

अर्थुरको पुरु-परावर्ध अर्था विश्व निर्म थी; या सनुरको अस स्थापन असरोने कर हुन्य अर्थुन कर केने | जीतन्त्रकी केन्नेको प्रोक्तम हुन्य रकपुनिको कहा है गर्थ ।

क्रमोरे प्रीका, का समा दिक्तिक प्रमान वाजीक पर्यार क्षान्त का बाह्य और देखनेवाले जावांकी पहचर कार-क्य स्थापन स्थापी सरक्षा करने राजते थे। यह आवर्तक को पर करों करोबी वर्ष होरे एनी और वे रक्तकी 🗪 को, इस इस रोजरी बढ़ा प्रस्तात यह पर्या। रिकाश करनेने कभी पूराम नहीं था, उसके हम्बेने वहीं होसावार्थक रचनी जान शह वर्ध थी, काराने हमारे-पुर्णी की और पत्र पुरास्त अपने काम कैथात था। यह ताम । युक्तों हं पने में और सरका करिर भी सामीसे इसा-विकास देसकार अध्याने प्रेणको भी बहुत विभाग होता। पार्चांक हो पह पद अतः ये परा-पर मीच्या विसरो ही अपने

# अर्जुनके साथ अश्वत्थामा और कर्णका युद्ध तथा उनकी पराजय

क्रार क्रमा वित्या। मैसे केम पाने क्रमान्य है, उसे उत्पार आनंद अनुसर्वे साम्बोधी क्षेत्र क्षेत्रे सम्बेत प्रमात केर अनुके राजान प्रयास का, वो भी अर्थानों सामक सामें को केद दिया और अलेर चोड़ोची अले बल्डेने पायबर अवनय बार दिया। कामल हो जानेके प्रत्या को विकास पान न पा: पक्षाती अक्रमानने भी अर्थन्ती सक-ते असम्बद्धानी देश द्वार वाल गांव और प्राची क्यूनवी अस्ता कार हो। क्रानेर का अल्पेरिका पार्टको देवाचर देवकारोटे प्रशेश की और होग, बीग, कर्न इस इस्त्रकारी की पाकार दिया। सरकार अध्यानको सरम सेंद्र करन कानकर अर्थुनकी कर्ताने बड़ों कान वर्ते। अर्थुन विकारिकारका हैत पक्ष और उसने वान्त्रीयको साम्युर्वेक प्रकार तुरंत है जास को अवहा कह है। कि क केनोंने रेजाक्रकारी कुछ जाराना हो जान । केनों ही सामीर के अवस्थि अपने सर्ववार अध्यक्ति कार्ये है एक-कृतेश्य चेट करने समे । व्यापक कर्युनके करा से किया सरकार थे, किसमें क्षणी क्षणीकी कभी नहीं होती थी: इस्तीने व्ह पहुरों कांको सवार अवस या। इकर स्वाताम अची-चारी कार का का वा, इसीनो सके मान रहता है गरे: वहः सन्त्री अनेक शर्मनक मेर अधिक रहा। यह देशकर कारी काले कंत्रकी टहार की: असकी अस्तर स्टब्स अर्थुनो जब कल देखा से कर्नना अवसी दी पर्या रेसले है अर्जुन कोकों कर क्या और कर्मको चर प्रस्तेको इक्करे अस्ति पक्ष-प्रकार करती ।

रीतायाचार्यं कार्यं है—सरकार अव्यवस्थानं अर्थुकंड | और देवने राज्य । विशः अध्यवस्थानं क्रीकार कार्यः संस्था क्षानंदर कारत विकास और निभार कारतर बाहा-- 'कार्ग । पू संस्थाने के बहुत और होकार का कि पुत्रने मेरे समान कोई है ही औं, को साथ करने हैं कार्नेकार जाना भई अन्यार कार् कुल है। जुल्ले कुळाला हुए किए हो को यू बही-बड़ी करें क्या करता है, अल्थ इस प्रतिकारिक बीच की साथ बुद्ध बार्क अल्बो कर नेव्ह पर । यह है, जबके बीको कुरकेर क्षेत्रहें को बहु पहेंचा की में और सु बनाता देश का मा ? अला का अन्यानक फल चीन। क्षा दिनों वर्गके क्यानी की कोंग्रे काम की तब कर तका का तिया था, विक काम का क्षेत्रक पत का पढ़ारें नेते कियाचे स्थाने a den i'

> कारी कहा-अनुर । यू को बहुता है, उसे करते हैं सा । को सहा कर-करूप ध्यास है; यर काम में हुने किया है, का विकास की है। पहले के इस हो सहर विका है, करने देवे अनुवर्णक ही कारक की। ही, आको की देवीगा, हो हेव परावान की कर हैका। और पूजरो स्थानियों को हेरी हुका है, यह से अपी-जाने हाँ है; दुवनी नहीं भाग पहले । अका, अपन है भी पान पुत्र कर और नेस बल भी देश ।

> अर्थाने सक-रामाह्य । अन्ये केडी है के हाँ, हू भेरे कार्य कुरते कर रक का स्तितिये हेरी कर क्य करी. केवल हेन कोठा पर्य है पाय क्या। पास, हैरे किया कुरत बीव बन्ना होता. को जाने पहाँकों भारतका पुर होसका भाग भी जान और प्रत्यकोंके बीच पंचा हेचर ऐसी नहीं

देशा बहुबार सर्वेर कारीव कार कावलों भी क्रिक-निया का देनेकरे वर्षका कार करने राजा। कर्न के अपनेक वृद्धि करण कृत कृतकारेचे का गया । अर्थुको कृतक-५०% क्षान पास्त्रर कर्णके चेडीको चीव दाला, जल्का क्षान्यन कार दिया और भागे अरुवानेकी स्वती भी कार करते । का करनि यो तरकारते और निवाले और अर्जुन्ये क्रमोन्से भीव हिला, इसको उसको केने कई पूर्व क्ला क्लो । सन्धान, बहुमाह अर्थुको सामीत अनुस्ताते काट दिया। अनुस कर क्षानेक काने वरिवास प्रकार किया; बिन्ह कर्युं से पानीते अरके भी दुवाई-दुवाई कर दिये। या देश कामीर अनुवार्ध चेजानी एक साथ अर्जुन्यर असामय किया; गाँड् गामीको हरे हर वागोहरा है उन-दे-सर कालेको असिकि हो गये । इसके बाद अर्जुनने व्यानक्ष्य बन्नुव परिवाहर का तीने करोते कर्मक बोकेसे बीन करन । सरकर हर् होते पृथ्वीपर निरक्षर पर नवे । दिस अर्थुओ एक नेमकी बाज कर्मकी कर्मले माय । यह बाज कम्बादी बेंगकर इतके सर्वपर्वे पूरा पया। सर्वे केन्द्रेश है करा, अल्बी आंश्रोके जायने जैनेय का गया। सीमर-ही-सीमर पैका स्ताता क्रमा का यह क्षेत्रका प्रतर विकासी और साम नकाः स्थानको कर्नुत तक उत्तर का स्वतते गर्नक करने जने।



#### अर्जुन और भीष्यका युद्ध तथा भीष्यका मुर्खित होना

वैश्वन्तवानी वाली है—कार्नार विवास करेंके सरकार सर्तृत्वे आपने कहा— हाई पान्यी सरकार्त हुम्मीना साहार विद्व विकासी है पत्र है, क्षेत्र रिक्के करा मुझे के बाले । वहाँ मेरे दिवाना गीनाकी, को नेकके नेककके समान साहा है। उसरका सरीर कार्योश बहुत मानान हो गुन्या था। आर: अपने अपूर्ण बहुत— मीनार । साम में अवन्तीर बोहोंको बालूने की एक कबता । मेरे प्राप्त संस्ता है, कर बारा दहा है। आकारका किसी भी पुन्नों मेरे इस्ते स्रतीरोंका स्थानक नहीं देशा था। कार्योश अस्ता कम हम स्थानोंका कुन्न देशारा है, यो नेस पत्र प्रीवादीर के सामा है। सहाअसेंक सम्यानक कार्य, बहुनेकी असी कार्य, क्षेत्रीका सिवास, प्रतिकारी विश्वाद क्षार विकास कार्य कार्य हो से स्थान सामा है। सहाय सामानिकारी सिवास क्षारी-सुन्नों मेरे कार्य कार्य हो से स्थान सामा हो से हैं, सरवासाहित सीम हो सभी है। अस मुख्ये कार्या हो से हैं,

कर्नार रोजस्तिको प्रति जी स्न गरी है।'

अर्थुन्ते कहा—वस्तीत् । इसे का, वैश्वी रखो; सुमये वर्ते पुत्रमें को अस्तुन वरावाण दिसाने हैं। इस समानेत पुत्र हो। अनुसंक्षा कार करनेताले अस्तानरेकके विकास केलों दुक्ता कार हुआ है। इस्तीनने इस अवस्तावर हुन्हें कर्ताहरीन वर्ते होना कार्युने। कार्युक्त में कार्युक्त निकास रखो। अकार, अब पुत्र पुत्रों कार्युक्त कार्युक्त कार्युक्त रखो। अकार, अब पुत्र पुत्रों कीर्युक्ति केलाके स्वापने हैं कार्युक्ति कीर देखों कि में किस अकार किया अवस्था अकोग करात है। आप सार्य सेनाको तुम कार्युक्ति क्या अन्य प्रत्योचे। इस समय में तुन्हें बाल पायनेकी तथा अन्य प्रत्योचे स्वापनानकी वी अवसी केलाम दिस्तानीता। मैंने पुत्रीको वृद्ध रखान इस्ती, इस्तोनके पुत्रतें अकार्योंने साथ प्रत्यानके अवस्थापर विकास अकारते पुत्र करनेकी कार्य प्रत्यानकेले सीक्ती है। इसी अकारत उसने सेनाकारी, जानाने कार्याकारी, आसि असोकारकारी और कार्युक्तिकार कार्याकारी दिस्ता आह की है। आ: दून पर पर करे, में अनेले हैं औरकारी. करके उन्दर हार्न्ड ।

इस प्रकार अर्थुनने का बीरच बैकाय, इस उपर काले रमको पीकामेके क्रम सुरक्षित रक्तेनको कर से सक। धीरबंदर विका परेकी इसको अर्थुनको सबने और उसने देश निक्षा परकाम विकारियाने स्कूपस्था सीमाने वीराज्यांक अपनी की केंद्र है। उस असूरने कम करकर चीधारीके राज्यो भारत सहसे कारावर निर्म है। इसी प्राप्त महामती क्षेत्रकात, विकार्य, कृतक और विशिव्यति—कृत बार बीरोंने अस्तर धन्यकार्य कारों ओरहे के दिखा। इत्यासनो एक बारतो विराहतका अस्तो वीच और कुरोसे अर्थुन्तरे क्रांतीये केंद्र ब्लूंबली । अर्थुन्ते वी सीमी बारवाले वालके कुचारायका सुवर्धकरित बंधुन बंद्ध क्रिय और करवी क्रांसेने पॉच क्रम मारे । इन क्रम्पेने अस्में न्यूरे पीक् हाँ और व्या पुद्ध होड़कर पान नवा। इसके कर विकार्य अपने प्रोचे कामोचे अधीनको कामक काने समा। इस अर्थुको साथे स्थापनो एक बाल बाद । साथै स्थापे ही बानक क्षेत्रर बढ़ रक्ष्में निर बढ़ा। बक्नार दुन्छ और विविश्वति होगो एक सन्य आवार अपने पाईका पहान रेनेके हिले अर्थुन्यर क्रमोची क्यें करने रहते । अर्थुन वरिष्य भी विकासिका नहीं प्रस्थ, असने के तरेको काल ब्रोडकार पन केन्द्रे



व्यक्तिको एक हो साथ गाँव मिना और उनके जोहोको भी वार सामा । जब सेक्कॉन देशा कि क्षेत्रोके जोड़े पर नवे और इतिर पानार क्षेत्रा स्कृत्युक्त हो यो है, तो ने उन्हें दूसरे स्वयद विश्वाद पुत्रपूरिको हम हो भने । और विश्वाद विश्वाद साथी पानने नहीं बाता का, यह भागानी अर्थुर स्वपूर्विको पानो और पूर्ण स्था ।

कर्मका ! क्यानको ऐसे परात्रण देखकर पूर्वीकर, कर्त, प्रशासन, विविद्यार, होन्याचर्च, शासनाम पन्त नकृतकी कृतकार्य अवस्थि का पने और को बार कालेकी इक्को अपने कु बनुवेशो दक्त करते कु पुनः यह साथे। को अकर कर कर राज अर्थरण वाल परातने रूने। इन्हें दिल्लाकों कर ओरचे सरकत हो पारेके पारण करें क्षेत्रक से लंडून कर नी देश की बना क विकास काम प राने हो। ऐसी अवस्थाने अर्थुको प्रतिक क्षिक्र सके प्राचीन अपूजर हैए-असका स्थान विका और पालोको प्राप्ते स्थानका धनका धरेकोको ५वा हिन्छ । कर्त होने साम्ब केहे किवली अञ्चलको प्राथमकर सम्पूर्ण विकास और पूर्वकार्य प्राथित वाली है, की प्रवार कार्याच व्यूचने हुई हुए सम्बद्धात वर्ग दिलाई आसार है नवीं । सरपूरियों पाने हुए क्षारीसमार और रागे सब मुर्चित हे को । स्थाप अध्य देश यह गया, विस्तिको होता ग रहा । कर्ष केन किल-किल के पनी; सभी बेद्ध जीवनसे निराह जेकर करों और करने रही।

व्य केववार सावपूर्णण वीकावीने सुवर्णवरित वपूर और वर्णवेश वाल नेकार अर्थु-के अगर वाल किया । अर्थेने अर्थु-को व्यवपार पुन्तकारों हुए समिक सावन आठ वाल करें। उससे व्यवपार सेवत हुए व्यवपार वहीं चौट पहुंची और एक व्यूच को कारेसे कीवारीका इस व्यव हुए। अब अर्थ्न में एक व्यूच को कारेसे कीवारीका इस व्यव हुए। अब अर्थ्न में व्य पुन्तिया तिर पहा । साव ही अर्थे अर्थने व्यवपार पर वालोंसे आवार किया और वीवायपूर्णक अर्थ्न केन्द्रियों, पाईपालको अब्ब कार्यकों पर नहीं कर करें। ने अर्थु-पर विव्यवस्था प्रथम करने करें। क्यापार अर्थ्न में विश्ववस्था प्रथम करने करें। क्यापार करने में कीपो व्यव्यव और हार्यक स्थान केव्यवस्था संभाव होने स्था। बीतप अर्थ हार्यक करने हुए करने स्थान-पीकावीने अर्थुनके साथ में पुद्ध साथ है, यह ब्याप ही हुकार करने हैं। अर्थुन करनान् है. तरमा है, रामपुक्त और पूर्वी करनेवाल है; वाल, यूक्री पीमा और प्रेमके मिना शुरत और प्राप्त केनवी हव प्रमान है? जर्जुन और पीमा केनों ही पहलुका का पुढ़तें प्रमानक, ऐना, जातेन, पैडा, पासन, बोनेर, पाना और पानमा आहे हिमासोबा प्रयोग करते हुए समार से थे।



# दुर्योधनकी पराजय, कौरव-सेनाका मोहित होना और कुस्देशको लौटना

र्वतापालको पान्ने है—कह भीनको संबद्धका पहल क्षीक्रमर रंगले बद्धा है नवे, उस समय क्रमेंचर अनदे रक्तमी परायाः प्रकृतस्य तथा गर्मसः हरक क्रमणे बहुत के काक्सपके रुपर पर आगा। जाने कारतक बहुत स्वीवका अर्थाओं नरनाटमें बाल परा।; यह बाल स्वताहरें बेरर नवा और उससे गरभ-गरम रक्तवी आप काने साथ । इसके अर्थुनका होता कह गया और यह निवासिक समान हों से सम्बंधी हरीकाओ क्षींभने प्रतात । इस प्रकार अर्जुन दुवॉकनको और क्षांजन अर्थुनको श्रीवर्त हुए जायसमें युद्ध काने सने। प्रायक्ता अर्जुको एक बाल बालार कृतीकाको करती हेर से और उसे भावत कर दिया। किर उन्होंने औरबोधे पुरुष-कुछा चेद्धानोको मार चनाचा । चेद्धानोच्छे चानने देख द्वाँकारे भी सकत रह पीड़े सौद्धना और चुद्धते चलने सन्छ। अर्थुनने देखा एवँकारत प्रति क्षाणा हो गया है और यह पुरिते एक कथन करना हुन्य कही तेलीके साथ पान्न का पह है। तथ जाने पहली उपानी जानी पुनाई ठोककर कुर्वेशनको सरस्यास्ते हर् कहा—'नुकाकुनक्र । बुद्धारे गौठ विकामन क्यों भागा जा दक 🐍 मरे ! इससे देखें



तिकार कोरी जा है स्ति है। हैरे विकार को की पहले कर्म है, मेरे अस नहीं जब से हैं। सुने किये सम्मान असर विका है, कही कारण मुनिहरण असरकार का गण्यन पायक अर्थुन पुत्रके लिये कहा है, यस मीने विकार कुँ से दिखा। सामने कर्मणका से करण कर। मेर पूजा पूर्वोचन ! अस आर्थ-की तेस कोई समय जी विकार केस, प्रतिने जान का और हार कार्यक्त क्रमों अपने कार प्रतिने जान का और हार कार्यक्त क्रमों अपने कार प्रतिने जान का और हार कार्यक्त क्रमों अपने कार

कृत प्रकार पुरस्ते पहाला अर्थुन्ते स्थानकारोका अंगुकारी चौद वाले पुर मून ग्रावकाके सम्बन्ध स्वीधन और बहु । अवने क्रत-विकार करीरको जिल्ली कह सैपलनका भी पुरः पहले आते देश कर्ण कार ओरके अल्बी रहा करता हुआ अर्थुओं मुखानांको ३४ पना । पश्चिमको सन्तरी प्रकृत करनेके हिन्हे बीकामी करूप प्रदाने और आवे । क्षेत्रकार्य, क्षत्रकार्य, क्रिकिट्टी और द्वारामा और सक्ते को को क्यू मेंनी चीत है असे । हिम्म अस चारव किने हुए का चेद्धाओं के अध्रेकते भारों ओरसे के देखा और जैसे कहा पहलां कर कर शोरते करी बरवाते हैं, उसी अबार के आगर कालेको कर्य मारने करो । अर्थानी अरले अक श्रीकृषण प्रमुखीने अन्योगा विकारण कर विका और जीक्षांच्यो उन्हार करने संन्योदन गालक अन्य प्रचार विराय, विरायत विचारण क्षेत्र पार्टिन को । हरके बाद अने पायुर आवान सामेक्टो अन्ते प्रकृति हैनों क्षणीये बानकार का जारते कवाचा। कारती जातेर क्रमिने दिशा-निविता, पूर्णमा तथा अन्यस्य ऐस की अर्थको कराने हुए का कहानी आगान सुनका चौरक चौर बेहोता हो गये, अनके हामोठी बनुष और फान मिर पड़े तथा मे राजी परम सामा—विशेष हे गये।

वर्षे असेन हुए ऐसा अर्थुन्यते उत्तरावती कारणां इत्तराव है शावा; असः असने कारणे कहा— 'राज्युन्यत ! कारणा हुन वर्षायांच्ये होता नहीं होता, त्याराव है तुम सेन्यते बीचाने निवास कारणे और होजायांचे तथा कृत्यावांचेत केत, कार्यों पीते सवा अश्वासाम हमें कृषेचनके नीते जब सेन्यत और अक्षेते । में शाक्षाया हमें कृषेचनके नावेत हैं, क्योंकि के हम सम्बोद्धायांच्ये निवासन कारणा जानते हैं। इस्तियों असे सोव्हेंको अपनी वार्यी और क्षेत्र्यात कारण, क्योंकि को होत्यने हैं, उनसे हमी सकार सामकान होकर कारण कार्योंने में

ार्क्षको हैता कहनेवर किरायक्रकर जार कोड़ोको बालडोर कोड़कर रक्तो कुद यह और पहार्टकोके कहा है पुत्रः जीत है उसवर का बैठा १ जानका वह रव होककर अर्जुनको पुड्रके पेरेसे बहुत है जाता। इस प्रकार अर्जुनको



तातं हेल पोन्पणे को मानोर्ध माने हमें। या सर्जुने पी कार्य प्रोहेको मानार को भी वस मानोर्ध पीम विन्य; इसके बाद सार्वाको भी प्राप्त से सिन्छे। विन्र को पुत्रपृत्ति हो। होशका बहु प्रिनोधि श्रमुको मान का गया। उस सम्बर्ध बाहुको कार्य पूर्व कृषेको बादि सामार्थ सोमा हो।

इसके कह क्यों कीश्व कीर विर-विते हेन्स्ने का सने ।
कृतिकरों कम देशा कि अर्जून बुद्धके कीसे काहर होकर
लोको कम है, से का मीनकोसे काव्यक्तों साथ कीरम—
किवान ! का कारके हामने कैसे कम राम ! जाने भी
कृतका कार—मंद्र कीरियों, किससे हार्य न पाने !' कीरमें
हैंस्वर कहा—'कृतका' ! कम ह क्यों किया कहुत और
कारकों कारकां कई अर्थेट पह हुआ का, का समय देशे
कृति कहाँ की, परामान कहाँ कार सम्बाद, कराया पर कारी
विवासका कार्यार नहीं कर सम्बाद, कराया पर कारी
कारकां अन्य नहीं होता कार्यार ! कहाँ कारक है कि उससे हार
कृतकों का कम सोवोंके क्या नहीं हैंस्था कार ह है। क्या ह होता हो
कुरकेताओं और कार, अर्थून की गीओको कीरबार संदर
कारका ! मोहकां कार कार्य सार्यकां ही कारम वाहिते।'

विकासके में वैक्सारी क्या सुनवर हुनैयनको अब इस युक्ते किसी सामग्री आजा न सी। यह मीसर-ही-मीसर कारण जनवंता पार रिन्दे राजी सीर्थे पचा हुआ पूर्व है। गर्मा। जन्म केन्द्रामोको भी मीन्यम पद कम्म' है।कम अर्था हुआ। पुन्न करनेथे से अर्थुन्तमी जाँद रक्षेत्रर अम्मित ही होता क्यों भी, इस्तिने हुनेक्यमी एहा कर्मा हुए हुआने सीट क्योंको है एक कांच सी।

स्रोत्य नीरोको सीरते देश अनुंत्रको स्त्री प्रकारण हुई : इसमें अपने दिलाया कार्युक्तक और और आवार्य हेन्स्के इसमें अरमीयें सिर सुकारक अरमा किया तथा अस्त्रकात, इसमें इसमार्थ और अन्यान कार्यक कुमार्थकोची कार्यको विशेष पैतिले कार्यका किया । तिर एक कार्य कार्यक पूर्विकाक सामार्थित कुमार्थको नक्षा अरमार्थ कुमार्थ सुकारो मान्त्रीय मीरोका सम्बद्ध कार्यकोच कर्यको सुकारो सुकारो

वन्त्रको चुंकान्यन घर दिया। इतके यह स्वस्त देगहर अध्यक्ष प्रश्नु वश्यक, निर्म पुन्यत प्रद्यानेका दिल प्राप्त नवा। उस प्रमुप करने नवादी सुंदर्गकरमध्यित कालो सन्द्रा अपुनोका विश्वकर करके अर्धुन विकालेक्स्परेली पुनोक्ति हो यह मा। यह बर्धना यहे नवे तो अर्धुनने अस्त हंग्यत कारते यहा—'रामकृत्यत । अस्त मोदोको ह्येट्ससे; सुद्धिन वेश्योको इसने जीव विकाल और यह यह गर्म एके; हर्द्धाने अस्त आरम्पर्यक असने नगम्बद्ध और यहने।'

वर्षत्त्रोधाः अर्थुकोः साथ होनेवाता या अर्थुता युद्ध नेवातर किरायोग को साम हुए और अर्थुनो प्रकारका सरम करते हुए अर्थ-अर्थ स्वेवको यहे गर्थ।

# उत्तरका अपने नगरमें प्रवेश, स्वागत तका विराटके हारा युधिहिरका तिरस्कार एवं क्षमात्रार्वना

विश्वासमयों कहते हैं—हम अक्षर जान पृष्टि प्राणंकाल अर्थुन संस्थाने महिन्योंको सीतात विश्वास का बहुन केवन एवंडाको के सामां। यह कृत्यकों पुत्र इक्षर-कार क्षेत्र विश्वासोंने पान गये, जारे सामन बहुन से क्षेत्रकोंके सीतात, यो को स्थूनने किने हुए थे, निकासका कार्य-को अर्थुकों पान आये। से पूर्ण-माने और को-न्यीर के क्योनने इंग्लिक सारण उनकी विश्वासना और भी यह गयी को। उन्होंने उनका कार्या अर्थुकों कहा—'कुन्योंक्यूक 1 हमानेन अस्ताती विश्वा स्थासका प्राणं कोरे ?'

अर्जुले कहा—पुज्यनेगोध्य कांगल हो । इसे पर, कांग देशको स्वैद जाओ । मैं संबदनें पहें हुस्सो नहीं परना प्यक्त । इस सारके निस्ने हुम्म्येगोको एउ विकास दिस्ता है।

सह अववादनपुरा कानी कुमार वहाँ आने हुए गर्ना वोद्धानोंने अन्तु, वोशी क्या कहा देनको अववीनांत्रेले अर्थुकारे जाता किया : जाके का अर्थुको जानको छत्याँ संगानर व्यक्त—'तारा ! यह के तुन्हें चानून है हो का है कि तुन्हारे निराके पास पायक निरास करते हैं कोड़ अपने चानते असेश करके तुन पायकोंकी अर्थसा न करना, नहीं तो हुन्हारे विता करकर आन त्यान हैने ।' जान केन्य--- 'तन्याकोंकन् । सातका आप हम मातको अध्यक्तिय करनेके विको तको पुराने भूति करोगे, तकावा विकानीके निराद आओर विकानों के कुछ भी नहीं करोगे।'

वस्तरतः, अर्जुन पुरः एक्सम्बुनिने अस्तर और अर्थ इत्तीदक्के पार अस्तर एक्स हुआ । अर्थ एक्स अन्ते राज्ये



करवाम वेटर पूरण अधिके समान रेक्को विद्यालकान कार्र भूतेचे प्रका हो अक्कालने का गया। इसी प्रकार को कार्य थी, कह भी विस्तित हो गयी। दिन रक्का विद्या विद्यालने राजा किरामारी कार्या गांव हो गयी और अधुनेके इस इस्ता, कार्योग कहा क्या कार्याल पुरः समीदक्तों और स्थि होने गर्थ। सरकार: महाना अर्थन सार्टन भागार वैद्या और उपन स्वी मनकर जानपहर्वक नगरको ओर पान । अर्थुनो कुरः चेटी मुंबबर बारर कर सी और सुख्यानंत केली हेकर केहीओ बागकोर सैचारसे। एकोने बाबार अपने असती बाह्य-'राजकुमार ! जल इन फारवेको अदल के कि के जीत है नगरने काबर देख प्रकार सुराने और तुन्तरी किनाओ क्षेत्रका अने ।"

अर्जुनकी बात पश्चार स्तरने हुता है हुनिये अर्जन **थै**— तुपल्लेग नगरने प**्री**क्यार सामन से कि सन् सरकार चार गये, रायमे विवाद हाँ और मेर्ड मेरावर माना सामे प्रकी है।

बारवेगा । संस्तरि एक विश्वते के होना विश्वते मीओंकी बीतकर करों गान्क्योंको साथ दिनो कही जनजाने जान करते होता किया। उसी संकानी विकासिक विकास काली की । विकास समय अनकी पान की हैं प्राप्त रेकर पान्क्रवेस्टील कई प्रकृति किया, जेर क्रमा कार्यी किरवारीचे समूर्व क्षेत्रा हे यो थे। उज्यासने पहिच्या जाने विकासको सुक्षेत्रिक विकाह को देखका सहर-सम्परियोधी कहा हर्न हता। इस स्वेप प्रमानीक कृत विराद्य राजवी तेव कर्न हमें। इस्के बद राज विकार का—'कुमर जार कही एक है ?' उसके काओ परिवारने प्रानेकारी कियों और कन्काओं विकेश किया—'नगरून | अन्ते पाने को कोना बोल को आपे और प्रेशियो सामत से मार्ग सर्ग । यह कमार सम क्रीमार्गे पर गया और मरमाम स्वकृतके बारण अनेतरे ही उन्हें धीननेके रिक्ते पर दिया। सामार्थे सारविके प्राप्ते पुरस्का है। कौरवोकी सेनाने जीवा, कुलवार्ग, कर्म, हुवीकर, हेम्पयार्थे और अफनाया—ने कः पहार्थे अने हैं।"

विश्वको का हुना कि 'मेर कु अनेनो कुलासको है। रावि करावार केवल क्या रक शतकों से को लोगे कुट बंदने पना हैं तो उसे बड़ा दू-स इका और अपने प्रचान यंगियोरे केल-'मेरे से बेटा विकासि साथ पुरुषे देशकर न हुए ही, वे बहुत-पर्ड सेना स्थल तेकर जारकी प्रमाणे निये कर्षे ।' सेरावरे कनेकी बच्छा केवर करने पर मेनिकोंने कहा- 'काने बीत इस कारका का रूपाओं कि कुमर नीवित है का नहीं। निस्तान सारोप क्या विमान है. अरके अध्यक्त चौरित रहतेची से राज्यान से नहीं है /

क्या मिल्लानी क्षेत्री देशका वर्गका वृधिक्षेत्रने हीत्रकत् क्क-'रावर् । बदि ब्रह्मान सारवि है से विवास परिविधे, आकार कुर समझ राजनी, मौरवी राज देखा, सस्रा, तिन्द्र और पहाँचों की पुत्रूने और राजता है।' क्रानेने क्याचे केंगे हर का विराहतनारों का पहेंचे और उन्होंने कारकुमारकी विवासका सम्बद्धार स्टब्स्य । जो सम्बद्धार क्रमीने राजाने पास कार का-'माराव । जारे स्थ पैशोधी बीत किया, स्टीनक झार करें और कुमार अपने सार्टकिक स्टाब कुरुराष्ट्रकेत का यो है।"

कृतिक करें- 'यह यह प्रीम्मानकी बात है कि मीई बीतकर करना राज्ये नहीं और बीरत प्रत्येश भाग नहें। विद्य प्राणी स्थापने पार्टिको सामान्यका नहीं है। विद्यापन करानि ब्रह्मात्व हो, करानी निजन से निर्देश ही है।"

कुरको विकासक समायार कुरकार छना विशाले हर्गसह क्रिकास न का । उनके करीरमें देनाकु हो उसना । क्रांस्के pare four well's referring some il for 'comble कियरे विस्तवसम्बद्ध कहानी कहिये। कुलो समा नाम अकृतको प्राचीनकोई केन्स्रानकेको पुत्रा होती पाहिए। एक कुमान और प्रधान-प्रधान बोह्य नाथे-बाबेबेर शांध भी पुरुषी अन्यवसीने पाने । संबंध पूर्वा आहनी प्राचीना वैद्यार चंद्रा कामी हुए हारे नगरमें मेरी निकारका सन्त्रकार सुन्त्रके।" एकाकी इस अवस्था सुनकर समझ नगरीनवासी,

सीचानको रूपये दिवसे एक शुरु-सामय आहे प्रायुक्तिक क्ल्र्ड क्रांच्ये के पाने-वानेके ताथ विरायक्रमार स्तानक्रे नेनेके किन्ने अपने गर्वे । इन समान्ते बेक्टरेके प्रकार राजा विराह को करन होचर केले—'हैरभी ! या, यहरे से आ: केवारी ! अब कुल जुनम करना कड़िये।' यह सुरुवार चुनिहित्ते कहा—'मेरे एक है, जातक हुन्हें को हुए व्यापक विकासीके जान कहा नहीं जेतना वाहिने। जार भी कान जानवादत हो रहे हैं, कटा जापके राज्य सेल्पेका राज्य नहीं होता। पास, जाप कुछा क्यें सेसरे हैं ? इसमें के ब्यूत-के केन हैं। ब्यूनिक सम्बन हो, इसका लाग ही कर देश जीवर है। आपने मुध्यत्मिको देशर होता, असवा जनक का से पन से होगा: है अपन निवास साहाना तथा व्यक्तिको भी सूनों इस गर्न से। इस्टेसिको में सूर्यने कांद्र नहीं करता । से भी की, आधनी तिकेन हुआ हो से mit feftige

कुराया होत अस्य हो गया। सेरावे-केरावे विराहरे



कार — देखों, काम मेरे बेटेने पन समिद्ध बोमबोनर विस्ता वार्थ है ।" सुनिर्देश्ये क्या--"क्यान जेनका कालि है का पता, पुरुषे को को बोरेका ?' भा अन्य पुन्ते है उसा कों को बरवार बोरो-'अवन अकुन । तू के बेरेनरे कांना पान क्रिक्केंग्रेट रहा पान पर पान है ? फिल क्रेनेंग्रेट पानरा में हैरे इस अपरायको से क्षम करता है। मिनु गरि जैपित सूच प्राप्त 🗓 से मिर कभी देशी बता न बहुता।' उसा कुष्णिओ क्य-'रावर । को हेजाबार्व, बीन, अक्रवान, कर्न, प्रधानार्थ और रूपेयन आहे. बहुरकी बुद्ध करनेको उनने हो, क्षा बुक्करमके दिला दूरता और है से उनका मुक्कार कर सके। विसके समान किसी जन्मकार व्यवकार न हमा है न आपे क्षेत्रकी आका है, जो देवका, असूर और सनुव्योगर भी विजय पर पुका है, हेरो जीएको एकानक पाकर जार करों न विजयी क्षेत्र ?' विराहते कक्क-'अनेक्टे कर राज किया, विन्तु तेरी क्रमाय संद व हाँ ! एक है, यदि मोर्च एक देनेकारा न को को पनका कर्मका आकरण नहीं कर सकता !" का क्यूरे-स्थाने राजा कोंग्से अचीर हे जब और कार उसका इसने बुविश्वितके मैहारा ने पारा । नित्र हरिके हर बाह--'अब बिर क्यों देख न करना।'

भारत कोरते शराः। पुनिश्चितको जन्मो एक निकासने समा । जनकी बूँद पृजीपर पहनेके चाले ही कुनिश्चितने जनने सेनो हानोथे उसे रोक जिला और चार ही जाते हां ब्रीकोकी ओर देखा । प्रेरवी अपने चरिका आध्यान समझ गयी । यह जानरे परा हुआ एक कोनेका चारेश के आयी और उसने यह सम एक उसने से रिका ।

कारधर एक्कुबर कार्न नवले को प्रसाधके साथ प्रमेश किया। विराह्मकारे भी-पुरूष तथा आहा-प्रात्मे अनके लोग की सरकी अगवानीमें उसने के सको कुमारका कारण-प्रस्तात किया। इसके यह राजधानके हत्या प्रोक्कर आरे किल्के पन सम्बार नेवा। हरवाले क्षांकर करूर विराटों कहा—'नहरूप । कुलायके साथ क्रमान्तर उत्तर क्रमेदीयर पद्धे हैं।' इस भूथ संगादमे राजाको बर्क प्रस्तात हो । उन्होंने कुरपारको बद्धा — 'क्रेनेको स्रीत हो भीतर रिका स्वर्धा, में उससे विक्लेम्बो उत्स्वत है (\* इसी सरक ब्रीको प्रकारको स्थाने बीको सासर सह—"सहरे रिस्ट अक्टब्से को ने आया, ब्रह्मात्सको की, क्योंकि उसने क्षेत्र अभिन्न कर रहते हैं कि 'से पंजाबंद विका नहीं अन्यत मेरे बारियों बाद कर देगा के श्रेक निवास देगा, अस्का प्राप हे क्षेत्र ( में कारने का देखवार का हो करें पर प्राचन और का देवाने का निरामचे अन्यो क्षेत्र, समारी तथा व्यक्तिकां पर क्रांग्य ।"

क्रम्बास् कारे कार्य है स्थापनपर प्रवेश किया। साते है विताक करनेमें सिर पुकरण, बिर बंधमारे मी प्रवास बिका। जन्मे देवा, 'कंप्यमीकी जानकारे रहा वह पह है



और वे एकारामें पुणियर की हुए है, साथ ही सैरपी उनकी | रेकों क्रांसिक है।" तम उसने मही क्रांक्टके साथ अपने मिनासे पूज-'राज्य, । इसे किसमे जर विचा ? किसमे बह पान कर काम ?' किंग्राले कहा--'मैंने है इसे कर है, जा बार सुरिए है, इसका निराम आए दिया करा है, सामेदे योग यह सकति नहीं है। देलों २, तक हमूरी प्रतिकेट प्रमुंका की बाती है जा सकत कह का दिक्तेकी सरीक करने लगता है ।' उस बोला—'बहुतव ! आको बहुत बुद बाल किया हो क्यो प्राप्त केथिये, वहीं से प्रकारक क्रिक अपनो समा मह बर हैना है

केंग्री का सुरका एक विकार कुर्वानक जुन्दीको क्षमान्यकता की। राजन्त्री क्षमा मोन्से देख पुनिक्षेत मेहे-- 'रासन् ! इस्तम्ब इत से की विकासको से एक है, मुक्ते प्रदेश अहार ही नहीं । ऐसे पहलते निवारण हता नह नक चरि पुर्वापर गिर पहाड से इसमें कोई संग्रेड नहीं कि सम्बन्धे काम ही तुन्हारा विनास हो बाबा; इस्केरिये राजको वैदे निरमे नहीं किया जा।"

मन पुनिविश्वा लोह रिवारण का हो करा, उस मुख्यानने भी भीता जीवता विचार और संबक्षी प्राचन किया। विरात्ते अर्थुन्के सालो हो सनकी तर्पना पुर यो—'वेकेनोत्त्वत । तुन्दे काल आर वे कालाने पुरावत् हैं। कुन्हरे-बैसा कुन न से मेरे हुआ और न क्रेन्सी सम्बद्धान 🕯 । बेटा 🛘 जो एक साथ एक हमार निकास पारनेवें भी कभी नहीं कुमत का कर्मके शाव, इस समाने मिनवी संतर्क कारनेवाल कोई है से नहीं का जीवनकेंद्रे कव का चौरवोंके अव्याने होता, अध्ययमा और चोड्याओको केव देशको प्रकारिक साथ पूर्ण केले पुरस्कार विका ? प्रधा कृषेक्तके साम भी तुन्हारा विस्त प्रचल बुद्ध हुआ ? ब्ह पता में सुरूत पाइत है।'

या, मिन्नु कर केप्युक्ते पुत्रो सीराम्य और १४० ही करने । जाने अनुसार पहले किया ।

रकार वैतकर चीजोंको बीख और कीरवेंको इरामा है। उसीने कुरवावर्ग, क्षेणावार्ग, भीषा, अख्यायामा, पार्ग और कृतिकर—इन इः अकृतिकरोको स्वया पारक्तर रक्षपृथिको चनाना है। कारीने अनवी रागी पोनाको झराबार है।जे-केस्से उनके एक भी और दिये।

मेराट बोले—'का प्रकारक चीर देवपुत कहाँ है ? मैं उसे देशन ब्याह्य हैं।' जाले बहा-'बह से बही बनायंत्र हे नक, बार-मारोक्य को उत्तर केवर खाँग देखा।"

क्रमान पर संबंध अर्थुनके ही विश्ववर्धे था, पर पर्युक्ता-बेक्बे क्रिये क्रेनेके कारण मिराद को प्रकार न सका। उनकी अंदर्क कार्यक्ष में उस करते, को पुत्रते साथे गये थे, राजकृत्यरी जाराच्ये हे मैले। सर च्यूनूत्य एवं रंग-विरंगे



असने बहर---व्यक्तरण ! यह मेरी विकार नहीं है । यह सक । वस्त्रोको पायर असर बहुत असर हुई । इसके बाद अर्जुनने काप एक केन्द्रमारने किया है। मैं से इस्कर काम आ का | राखा कृतिहित्से प्रथा होनेसे विकाल कारो प्राप्त करते

#### पाण्डवीकी पहचान और अर्जुनके साथ उत्तराके विवाहका प्रस्ताव

महत्त्वी थाकवॉने कान सरके केत कक भारत दिये और राजीवित आकृत्योंसे पूर्वित हे जुनिहरको अले कले समामानमे प्रदेश किया। समाने प्रदेशका ने रामानोंक

मैक्स्पनार्थं करते हैं—सहरूपर प्रत्ये जीतरे दिन प्रीची | देसनेके लिये कर्य राजा जिस्स वहाँ बचारे । अतिके प्रात् रेकाचे पान्कांको एकामन्त्रर बैटे देश राजाको बदा प्रतेत हमा। पिन केही हेराक मनही-मन विकार करके उसने केमले बहा-'तुम से मस्त सेलन्तिके है । सभागें गाता केन्द्र आसम्बन्द किराजनात हो नने । इसके कह राजकार्त | विकारके दिने हिने दिने हुने निश्वक किया का । जान इस प्रकार

कर-सम्बद शिक्सकार कैसे की गो ?"

राजाने था कान्य परिवासके जावसे कहा छ। जो सम्बद्ध अर्थनो सरावाराचे वर बळ-'७४५! इन्हरे रिकारकारी को पान की प्रथा है, में से इसके की आये कारतर बैठनेके अधिकारी है। वे स्थानके पहल इक्कोंके विक्रम, लागी, ब्याबार्ट और कुटके कब अन्ते प्रतबा पालन बारनेवाले हैं। ये पूर्तिवार वर्ग है, परावनी पुरुषोते हेतु 🖟 इस कनाई समाने सनिक धुनिक्य और स्पारको अस्तव है। किन अच्छेको केवल, असूर, क्यून, एक्स, गमर्थ, किसर, सर्व और म्ये-व्ये जल भी भी दानो, ज्य प्रकार प्रदे जन है। ये सेवंतर्जी महानेमानी और अपने देशकारिकोचे प्रेमपता है। ये महर्तिकोचे समान है, राजमि है और समझ लोकोंने निकाल है। महरकी कल्कार, धर्मपायम, धीन, बतुर, सम्बन्धी और विमेन्स्य है। ऐसर्न और धन्यों में कह और कुमेरके समान है। इनका नाय 🛊—धर्माएक पुषिश्चिर 🕽 ये कोरवोले सर्वलेख हैं। अस्पकारकीय प्रचंकी बाज अंचाके सचन इनकी सुरक्षांकरी चौति सनक संस्तरमें पैन्दी क्ष्रं है। ये वर्णक्ष्म सक कुल्लेक्षमें खते के, बल प्रमुख इनके पीछे क्षा क्षार केन्सार इनके तथा अन्ते केहेंसे क्षे इंद सक्योगान्यमध्या तील इसर रह करने है। जैसे केला। क्रमेरबड़ी अपासना करते हैं, कैसे के क्या एना और महीरवालीग हरवाहै कारतना विश्वत करते के प्रचानि हार देशके सस एकाओंसे कर रिच्या है। इनके वर्षा अतिकिन अञ्चली हमार कालक प्रवासीकी जीविका काली थी। थे पहे. अनाव, रीगडे-राते और सन्वे यनुगीयी रहा व्यसे थे। प्रवासने तो वे राहा पुत्रके समान जाको वे । इनके स्वर्णुकोको गिलामा नहीं जा समारतः। ये निवन कर्मयकारं और स्थान्त है। शबन् 1 ऐसे काम पूर्णोंसे चुक होकर की में अपने राजासन्पर बैठनेके अधिकारी क्यों नहीं है ?"

विस्टरे बदा--वरि वे करवंत्री क्रातीनका राज्य क्रिकेर हैं, तो इतने इतका चाहं अर्जून और महामाली चीयलेन कीन है ? जनक, सबदेव अवना प्रवासिकी होपड़ी कौन है ? सबदे पाणकारोग जार्चे कर गर्चे, ठवले कहीं की उसका कर र्जी लगा।

अर्थनं वज्ञ-शक्ष्य | वे को क्लान-कावारी जानके रातेक्या है, में ही प्रवद्भा बेग और पराक्रमक्तरे चीमलेन हैं। क्ष्रीकरूको पारनेवाले पन्दर्भ भी ने ही है। यह नकुल है, जो <sup>‡</sup> गाल और नारकोलका यह सम्बन्ध वर्षिय ही है।'

अवस्था आरम्बे वर्षा चेद्रोका प्रमान कर रहा है और पर है सहरेग, जो नौकोची रीपाल रकता या है। ये है केनी माराची कल मार्टिक का है। तथा का स्वर्ध, से आपके वर्त कैरमीके अध्ये की है, क्षेत्रके हैं, इसके के लिये व्योक्ताका विकास विकास कर्या है। मेरा नाम है अर्जुर ! अक्टूब ही आयों, कानीने कामी मेर नाम भी पड़ा होना।

अर्जुनकी कर रूपान होनेपर कुमार आरने भी पान्हणीयने क्षापार करायी। इसके कह अर्थुश्का परकार कराना कारण किया, 'निकासी ! में ही मुद्दारे गौशीओ जीतका से करने हैं. इन्हेंने हे कोरवोची इतना है। इन्हेंने सहाची प्राचीत कारि सुरकार की कार कारे हो पर्य से !

का समार राज मैराटो कहा—'कार । अस हमें क्रमानोको जनम करनेका स्था अध्यार जात हुआ है। सुकारी राज के जो में कर्मको स्थानी काराच्या काह बार है।" कारा केल-'वास्त्रकारेन प्रसंता केष्ट, प्रसरीय और कलाओ केंगा है, तक प्रत्ये हिये हमें बीवा भी दिल गया है। इंतरियो आर प्रमान सम्बाद अवस्थ को (' विपाने पहा---कारों में भी क्यानेके केने केन एक मह का समय वीकारेको हो को कुछना और गीजीको भी बीला है। मैरे अन्यक्तो एक चुनिहित्यो को चुन अनुवित प्रचन को है, उनके दिन्ने कर्माता पानकुनवार पुत्रे क्षणा करें।"

इस प्रकार कुलावर्षण करके राज विशासको बाह्य संतोत हुमा और संस्ते पुर्वत रहता सरदा सरदे अपना प्रात एक-पाद और क्रांत्रण पुनिश्चितको सेवामें श्रीप दिवा। विर प्रकारों और विश्लेषा: अर्थनके क्षान्ये अपने सीमान्यकी सरक्षण को। प्रमुख्य कारक सैक्कर जारसे गरे लगाया। इसके बाद का अदाप नेजोंसे उन्हें एकरका नेशने हमा और अलग प्रस्ता होता युधिवित्तमें केस्थ—'को स्वैधानकी बात है, को कारलोग कारलपूर्वक बनारे लीह आये। और क्य की अच्छा हमा कि इस स्थानक्य अवसम्बाधकी क्राविको अध्यो पूरा कर विच्या । येश सर्वत्व जायका है, इसे नि:संस्कृत संस्थित करें । अर्थन केंग्रे एवं आएका प्रतिपद्धण करें, वे सर्ववा अस्ते साधी होनेबोन्य हैं।"

विकारके देवा बक्तरेका चुनिहितने अर्जुनको और देशी । तम अनंतने मतनकनको इस प्रकार कर दिया—'क्रबन् ! मै अवसी कन्यको जनने चलको जन्में सीवार करते हैं।

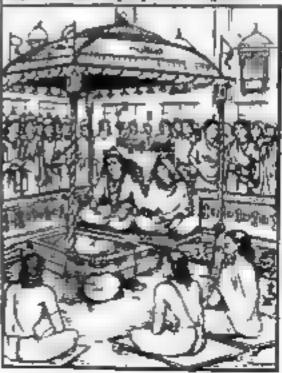
#### अधिमन्युके साथ उत्तराका विवाह

वैज्ञानकार्य करते हैं—अर्जुनकी कार सुरकार एक विराटने बद्ध-'जब्बकोड़ ! में उन्हें इन्हों करनी करना है का है, जिन तुम को अस्मी मानेक करने समें नहीं स्थीनकर काले ?' अर्थुनने कहा—'राजन् ! मैं ज्ञून कालका अवन्ते फीवारों का है और मान्यों कामको स्वापने क्या क्रमंत सामरे पुरीपाकरे ही देशका आप है। अपरे भी मुक्तकर विदासके स्थिति के विकास किया है। मैं सम्बर्ध क और सहीतावर मानवार भी 🖢 इस्तीओं यह मुक्तों के से कहा करती है, परंतु सदा पुत्रे कुत ही करती असी है। 🖦 भवत्व हो गर्न है और काले साथ एक क्लिक पूर्व प्रान भक्त है। इस फारन हुन्हें का और विक्राविको प्राप्तर करेड़ों अनुवित संबंध न है, इस्तीओं अरे में अवनी पुरस्तुके समर्थे ही परण करना है। ऐसा फार्फ ही में छुड़, निलेकिन करन मन्त्रों करने प्रतिकास के स्त्रीय और प्रतो अस्त्री क्रमांक परित्र भी कुद्र सन्तर कारण। वै निन्तु और विश्वा करपूर्व करण है, क्रानिये कारायो कुल्यपूर्व हो कारने प्रदेश कारीया । नेता का भी केन्द्रामाओं समान है, का मननाथ् बीयुक्तका भारताः है । ये उत्तरर बहुत प्रेम रकते है । इतका पर है अधिकपुत का उस उसको अवस्थित हिन्दुन है और दुन्दारी सन्ताना की होनेने सर्वता केन्द्र है ह

नियाने सहा-नार्थ | पूर कॉरनोने श्रेष्ट और कुर्गाके पुत्र है। एवं कर्नाक्त्रीय हातर विचार होना जीना है है। हुन इस्तु कर्नेने तानर रहनेवाले और हात्री है। अब हात्री कावन को कुछ कर्नान हो, को पूर्ण करो। यह अर्जून मेरा सम्बन्धी है रहा है, से नेरी कॉन-सी कावन अर्जून का माने ?

विराटने ऐक बहुनेकर अन्यार देखकर राज्य कृतिहिरने भी इन होनोबी जातीका अनुवेदन किया । किर निराट और कृतिहिरने अवर्थ-अवने निर्माण वहाँ तथा काम्यार सीकृत्यके करा दृष्ट केता : अब तेवार्थ वर्ण कीय कृत्य का, इसकिये क्यादा निराटने क्याच्या काम्यान क्यादांवीतिकोची कृत्यका स्वा ३ माहिरास और पीक्य—मे एक-एक अधीरिको होना सेम्बर कृतिहिरके वहाँ प्रसादान्त्योक कार्य । राज्य हुन्य की एक अधीरिको होनाके साथ आये । उनके साथ विराटने और कृत्युप्त की थे । इनके निराय और भी क्यून-से नरेव अधीरिको सेनाके साथ कहाँ कार्य । कार्य क्यादाने कार्योका सरकार किया और सामको काम कार्योवर कार्यका । अन्यान् श्रीकृता, व्याचेत्र, कृतावर्ण, स्वत्योक्त, अकृत् और प्राच्य आदि अधिय अधियन्तु और सुप्तावर्ण साथ ने कृतानेन आदि स्वर्णी भी रचीस्त्रीत वर्ण आ गये। वयवान् त्रीकृत्यने स्वर्ण का कृतार क्रमी, तर इत्यर पोर्टी, एक अस्य एवं और एक निकर्ण (क्रम क्रमा) वेतृत सेन्य थी। वृष्णि, सम्बद्ध और भीवर्णकृति भी क्रमान् राजकृत्यर अस्ये थे। व्याक्त और भीवर्णकृति भी क्रमान् राजकृत्यर अस्ये थे। व्याक्त और भीवर्णकृति भी क्रमान् राजकृत्यर अस्ये थे।

रातां विकालं का कहा, येथे और केहन आहि व्यक्ति-व्यक्ति कार्य कार्य करें। असानुस्की हुन्दर्श कियां कार्य प्रकारके आकृत्य और व्यक्ति स्व-व्यक्तर कार्योगे वीवकं कुकार कार्य करें। है सामुख्यते आगे वरके पहारागी हैन्सिक को का ओरवे के हुए कार की थीं। हैन्दरिय कार्य कुकार आके का, सम्बद्धि और कोच्यकि साम्ये साम्ये कार्य कुकार आके का, सम्बद्धि और कोच्यकि साम्ये कार्य कार्य किकानुकारिको अस्तार किया। का साम्य कई इसके सम्बद्ध केन-कुक कार्य किये क्या कुनिहार की कहे थे, इसके की कार्यको कुनाकुके कार्य अहितार किया।



भिष्म हुन। विकासको विराहने प्रमाणिक श्रीको विधियम् ह्यान करके प्रकारणेका सम्बन्ध किया और बोजने भरपहरूको बायुक्के समान केन्याके साथ इसल कोई, वो सी हाती तथा बहुत-स्त बन दिया। तथा है राजवाद, सेश और | हजारी-साली हृहपुत बनुव्योसे परा हुआ मानवरितका 🙉 सामानेसर्वेत अपनेको भी क्षेत्राचे समर्थन विकास

हर्वन्तर नगरान् श्रीकृष्णके सामने अधिकन्तु और उत्तरामा | जिल्काः सम्या हो नानेवर नुविद्वीरने भगनान् वीकृष्णसे बेटमें किले हुए करनेते प्रकारोच्ये बहुत कुछ दान किया। इसारे मेर्ड, का, क्या, पूरव, कहर, निर्मार तथा कारे-बेनेको अस्य कहारै अर्थन की। जा पहेलाको समय नगर बहुत है होभावनान है दह सा।

विराहपर्व समाप्त

# संक्षिप्त महाभारत

# उद्योगपर्व

# विराटनगरमें पाप्यवपक्षके नेताओंका परामर्श, सैन्यसंब्रहका उद्योग तथा राजा हुपदका भृतराष्ट्रके पास दूत भेजना

नंशको समस्त्रत सं चैव मरेकस्य्। देवी सरक्षती व्यक्त ततो नवसूर्वस्थल् ॥

शक्तां में नारकात्मका कावान् संकृता, उनके विश् इत्या नारकाम नारत अर्जुन, उनकी स्वेत्य उत्तर करनेकाचे मानती करवाती और उतके वक्त वर्षी केवकात्मके नारकार करके आसुरी अन्यतिकोगः विश्वकातीत्पूर्वक अन्य:करवाते वृद्ध करनेवाते व्यानाता कन्यका वात करन काहिते।

र्वजन्तरमध्ये वक्ते है—रावर् । सुरक्तवेर प्राच्यानस अधिनपुरः विवाह करो। अस्ये स्तुत् वास्त्रोदे सर्वत वर्दे प्रसार हर और समिने मिल्हम बरके बल्टे कि कोरे के विराह्मी सन्दर्भ पाँच भन्ने । सक्ते काले

वाननीय और युद्ध विश्वत एवं हुन्य आसनीयां वैदे : विश् विश्व क्यूनेवर्गके प्रतित करनाथ और वीकृष्ण विश्वतमां हूं । सार्वाक और वास्तानकी से पद्धारमध्य हुन्यके पास वैदे क्या औकृष्ण और पुनिद्धिर राज्य विश्वतके प्रतीय विश्वतमान हूर । इनके पद्धार हुन्यस्थके संच पुन, भीजांग, सर्वून, न्यूनन, स्वकेत, ज्यून, साम्ब, विश्वतक्षके प्रविद्ध सर्वेक्षण और सेन्द्रके सब कुन्यस—ने सभी सुनर्गवदित्र सन्देश सिद्धारमोक्षर का कि ।

का कर लोग था को से ने पुरस्तोत आयतमें फिल्मर हात-पर्यक्षी कार्यात पाने लगे। जिल औक्ष्माची सम्पत्ति क्षानकेंद्र मिली एक जुलीक्या उनकी ओर देशती हुए अवन्येक की यो । जब ओक्स्प्रेन बढ़ा, 'सुबरुक्त एकुनिने विता प्रकार कार्यकार्य भागार महराव्य पुनिश्चितक पृथ्य क्षेत्र विकार और उन्हें करकारके निवधमें कीव क्षेत्र) थी. यह तम के कामनेगरेको मानून ही है। पान्कानेग का समय भी सरका प्रका लेकेने समर्थ है; प्रश्न के सलन्ति है, क्रारीओ ज्योंने केंद्र वर्णनक कर करोर नियमका पासन भिन्छ । अस्य अस्पानेन ऐसा उपाय सोचे, यो कीएव और क्रमानेक रेजो कर्मानुका और क्रीनिकर हे: क्योंकि अवन्दि हर से वर्गएव चुनिहिर देवलओंका एना यो नहीं रेक्ट महोते। हो, वर्ग और अर्थने पुरू हे से हमें एक भीवक अधिका जीकर करनेरे थी कोई आयति नहीं होती। कावी क्याहरे कुर्वेद कारण हुने अलाह कह योगने यहे हैं, उसकि अपने प्रार्टीके संक्रित में शर्मत उसका बहुल ही बहुते हो है। अब ने पुरस्तान अवस नहीं एक बार्क 🗓 निसे इम्बेने अपने बाकुलसे चनासीको परास बरके ज्ञान किया का । यह बात की जायायेगांती कियी नहीं है कि क्य के बारक थे, अमेरे भूतकथान औरत पूर्वे रहि पढ़े हुए हैं और इनका राज्य हक्त्रमेंके रिजे तरह-तरहके बहुरन रहते हो हैं। अब उनके बर्ड-को लोब, एवा वृतिहित्ती वर्णका और इस्के करायरिक सम्बन्ध निवार कार्ष आर सम निरमार और अस्ता-अस्त नीई का का की : वे सोग से सम्बन्ध कराय किया है। इस्केंचे की अप कार्यकों का अन्याय करेंगे से वे उन्ने पर करेंगे। और इस कार्यों असा अन्याय करेंगे से वे उन्ने पर करेंगे। और इस कार्यों असा अन्याय है का को सुब्राम भी अन्या कुरायस करेंगे। कियु अनीत्य इने सुब्राम भी अन्या कुरायस की वस नहीं है कि वह का कराय काम है और कुरी औरका विवार को किया कार किया का की कोचका स्वार की की कर सकते हैं? इस्केंगे अर लेन्येको सामार और वसाम पुर्विहाको अरक एक विवानिक हैसे इसको कोई वर्णका, प्रकारिक, कुर्लन, सामाय और सम्बन्ध कुरा कुरा कुरायर का काहिने।'

सार । क्षेत्रकारा पार्च कार्यक्र, पह और पश्चमार्थान्य वा । व्यवस्थाने जानो नही क्लेस की और मित इस प्रचार प्रकृत आरम्ब विका, 'अलमे सीवृत्त्रकार वर्ष और असींत अनुसूर्ध भारत द्वार र यह बेसा करियाने रिको ज़िलार है, बैना हो कुमाना कुरोकाने मिनो को है। बीन कुन्तिकुत आधा राज्य स्वीरातेके वित्ती प्रोत्तका सेच उनकेके रिनो ही प्रकार करना व्यक्ते हैं। अतः महि हुनैयर अस्त राज्य है है से यह बड़े सरकारों रह सकता है। अब: यह क्ष्मेंक्षका विचार वाली और को पुनिश्चेरक स्थार सुरानेके रिजी कोई कर केवा चान और इस उनाल मोरक-परक्रवीका निकास है जान से चुने नहीं जातात हेरी। वहाँ जो हर करा, उसे दिस करन सकते कुरावेद चीच, कृतरह, होण, अवस्थान, बिहुर, कृत्यार्थ, प्रमुक्ति, कर्ग क्या क्या और सम्बोधे चयुष कृत्ये कृत्यकुर कारियत हो और एक एक क्लेक्ट्र एवं निकादक पुरस्कार थी वर्ष आ पार्थ, तब को उनका करके एक पुनिवेद्या कार्य हिन्दु करनेवास क्या कहन काहिये। किसी मी अध्यक्षमं कोरमेको कुम्ति जी करन करिने। उन्हेंने राजन होकर ही इनका कर होता था। मुख्यिसकी जुल्ले शासनिक वी और सपने दिन चुनका अञ्चन सेनेन्द हैं। उन्होंने इनका राज्य इस्त किया था। यह क्युनिने इन्हें बूट्टे हा दिया को इसके समस्य कोई अगराम नहीं बाह का समस्य ।

कारायकेटी का बात सुकार स्वामीट एक प्रेम स्वामार एका है भग और उसेट कारायों जान निक करते हुए इस माना काने लगा, 'मुकाबा केस निय होता है, वैसी है का बात भी कहत है। जानाट को नैका हमा है, केसे है करा का से हैं। संस्कृत कुसीर भी होने हैं और कारार



की । कोनोर्ज में केची पहा पूरी तरहती देशे करते हैं : पहा डीमा है कि कांट्रक बाल केलना नहीं बाजों से और समूजि पूरा क्रिको पार्ट्स का मिलू प्रमाने काले स्टब्स नहीं की । ऐसी विकाल कार अले पूर्व कुरके मिन निर्माणन कार्य जीत द्वित्या के अवकी इस चीतको कर्णानुसूत्र बैठो कह भारते हैं ? क्रको । पर्रश्निमे तो इन्हें कुरसम्बद्ध सम्बद्धकेन दूराया या; वितर उनका नाम कैसे के जनका है ? महाराज सुनिक्ति मननारामही अवस्थि पूर्व करके कर प्रकार है और अपने निर्म राज्येक अधिकारों है। ऐसी विवक्तिये के उससे चीका परिने---व्या कैसे हो सरकार है ? भीना, प्रेरण और नियुक्ते को सौरकोको बहुदेश काबुक्ता है: किंद्र प्राच्यांको अलगे बैह्न सम्पन्ति हेरेले हिलों करवा, पान हो नहीं होता । जान में एकपूरियों काफो पैने क्रमोते अहे चीमा कर हैना और महत्त्वा पुणिक्षियोर परमहेरर इसका केर एकक्कारिया । यदि के इनके आने झकानेको तैयार न इस हो उत्पने परिवर्णसङ्ख्या काराव्यक्रे कर व्यक्ति । कारा, हेसा बोन है से संस्थानकियें नास्त्रीकाली असूंत, स्टाप्यति बीकृत्य, कुर्वेन चीव, बनुबंद नकुरत, उत्तरंत्र, चीरवर किराह. और पूर्व क्या नेत के सकत कर सके। यूक्का, राज्यमंत्रि चीव पूर, बन्नोर अधिकानु तथा बाल और सुर्वित समान पर्यारचे नद, अञ्चल और शान्त्रकोडे प्र्यापेको स्थान करनेकी भी स्ट्रीन कर रक्ता है ? इसलेन स्कृतिके संदेश दुर्गेकर और कर्मको करकर महराज वृधिहरका राजापिका महिते। जानाची प्रमुखीको मार्गनो से काछ मोई होन नहीं है। इस्पूर्णने साने जीवा जीवा से अवने और अनवस्था ही जारण होता है। जार जानानेन सावन्यति महानम पुनिहित्ते हारणकी जा जानिकाल पूर्व करे कि से क्षाय्यकों होतो ही अपना साम प्राप्त कर है। इस अवन्य को जा से अभी क्षाय नित्त जाना जानिने, नहीं से करे कीवा पुत्रने मारे सामार पुनिस्त क्षाय करिने।

इसरा एक हुन्छो कहा—बहुनको । जुलैका प्राणिको राज्य नहीं देखा। पुरस्के मेहब्बक कृत्यन की सर्वेक्ट अनुसार्वन करि तक बीच और क्षेत्र वैकावे करण और वर्ण हव शक्तीर प्रभावके ज्ञांच्या-का व्यांता की व्यांता के बीकानेक्लोक प्रधान नहीं सेक, रेस की प्रारंतिक इक्कानों पुरुषों हैल काम है पाहिने । हुनेनमें सामें मीटे पक्त के मिली अधार नहीं सेवले साहिते; केट देशा विकार है कि का कुर मोठी फलोसे संस्कृत आनेकाल नहीं है। द्वारतेन मुक्तारीको चरिकान सन्त्रको है। वे वहाँ वर्गी वर्गी वर्गा है, नहीं अपना माराज प्रमा हुआ संपन्न होते हैं। इन नह नी करेंगे, पर मुख्य क्षे करता उद्योग की अरराज करें। क्षेत्रे अपने दिलोंके पास कुर नेवले साहित्रे, मिनलों के प्रवर्त किने अपनी किंग केवार रहें। काम, ब्रह्मेंगू, कामोप और केव्यवस्थ — इन समीके यस प्रीक्षणानी कुर चेनले पार्वेगे । पूर्वीका भी निक्रम ही राज सम्बन्धीके प्रकार हुए नेकेस उर्केट के जिलाने प्राप्त पहले सामग्रिका होते, पहले अलीको विद्यालयोक सिन्दे सामा है हैते । इत्तरिको राज्याओंके कार संक्रो इमार विकास पूर्व — इसके विन्ते सीवात करने साहिते । मैं के राज्यका है हमें बहुत को बातका पार करना है। वे की प्रोहितकी करे विक्रम् प्राह्मान है, इसे अनव प्रदेश केवर राज्य कृतराकृते पास नेतिके । कृतिका, चीमा, कृतराकु और हेजाबार्व-इनसे काल-जातन को पुरू बहुतन है, यह इन्हें सम्बद्ध केंग्निये।

सीप्रण केरे— नहाराज हुम्मी बहुत होगा था। बाही है।
इसकी समाति आहिता तेजकी महत्तात मुनिश्चिक व्यानेके
हिन्द करनेवाली है। इसकेन सुनिश्चिक व्यान केम प्रान्ति है।
अहा सहते हमें ऐसा है करना प्राप्ति । को पुरूर विश्वीत
सामात्रा परता है, यह हो नहान्ति है। कानु और प्राप्त हानकी दृष्टिके अस्य हो हर समये यह है, हम राम से अन्योत्ति विश्वास्त्र है। जहार राम क्षान्त्र करनेवाल है ऐसा तीव विश्वास्त्र है। जहार राम क्षान्त्र करनेवाल हो। जान करों को सीह विश्वास्त्र करनेवाल से अस्य प्राप्ति करनेवाल प्राप्त होना। वह कुरुराज क्षाराह्ये न्यान्त्रकार सीम कर हमें

ये किर कोन्स-क्याबेधः चीवव संहर नहीं होता। और की नोहक कविकानो सक्त पूर्विकाने सेवि करन कोवल न किया से व्या व्यावकानुकंट अर्थुन्ते कुरित होनेकर अरने सरकावत और को-सम्बन्धिके स्थित व्या-व्या हो कान्य।

इसके पहला राज निराहरे लेक्नावा प्रस्ता करके वर्षे प्रमु-कार्यां त्रीत किया । प्रमुक्त है इस्ता परं कार्यार पुनित्वार पाँची कई और राज निराह पुनित्वी सब केंद्रीयों करने करेंद्र राज निराह, हुन्य और कार्य प्रमुक्ति की और में पाने प्रतिपत्त पुनित्व प्रमुक्त प्रमुक्ति की कीए और कुलका निराहण प्रमुक्त प्रमुक्ति को की है—या सब्दे को । प्रमुक्ति को क्षेत्र क्ष्मां कार्यों के की है—या सब्दे । आ प्रमुक्ति की की प्रमुक्ति क्षान्यां की की अने । आ प्रमुक्त प्रोह्म और प्रमुक्ति क्ष्मां की निर्दे अने । आ प्रमुक्ति क्षमें प्रमुक्ति स्वाप्त की की

रुक हुन्तरे अपने पुरेषिको कक-पुरेष्क्रिनको । जुलेने



जनावारी केंद्र हैं, जानिकोंने मुद्दितों कान केनेवाले कीव केंद्र हैं, मृद्धिकृष्ट कीनोंने प्रमुख केंद्र हैं, प्रमुखोंने दिन केंद्र हैं, दिकोंने विद्यानीका तार्व देना है, विद्यानीने विद्यानकेंद्र जना जन्म हैं और विद्यालकोंने ज्याकेता केंद्र हैं। मेरे विद्याली जान विद्यालकोक्तानोंने जन्म हैं, जारका कुल की महार होते हैं हमा अन् और संस्थानको मुद्देश की अल मेत्र हो हैं। अक्सी पृति शुक्रकार्य और वृह्यतीको सम्बद्ध है। महाराज के अक्सी कार्य हो है कि बोक्सी क्षामको उन्ह मा—स्मृतिके कार्य से किसी की असर राज्य की हैं। कियु असर क्षरामुको कर्मकुक को सुरकार उनके कैरोक विश्व सामक कहा है सकते हैं। कियु की की अवके कार्यका समर्थन करें। अस बीन्द, होन, और कुन आहिने व्याप्त हैं माना और पोत्तकोंन करते किया है कार्यकों के बोक्सके हो उन्हें क्षराम करते हमा क्षरी और व्यापकोंन हम हो उन्हें क्षराम करते हमा क्षरी और व्यापकोंन हम अभिक तथन रणारेका प्रथम करें, क्वेंबिंग अपने हाते हूर में हैंग्य एक्विंग करनेका करण नहीं कर समेते। ऐसा की सम्बद्ध है कि अपनी संगतित कृताह आपने कर्कपृत्त क्वा कर है। अप वर्णानु है जाः केत ऐसा विश्वन है कि उनके क्वा कर्कपृत्तक आपना बरके, कृताह पुरुगेके अति क्वांकुलोके हेकोची कर्ता बनकर और को-मूनेके अति क्वांकुलोके कर्का हुए कुल्याचीर कर्ता कावाह आर अर्था विश्वेतके कात है। अतः अन्य पुरित्तिको कर्नीतिको सेते पुरु क्वांत और विश्वन सुद्धि अस्ता करें।

हुनके का जनम सम्बद्धांना करते स्वकारणका और अर्थकीर्वाच्या पुर्वेश्व जन्मकेस हैन करते औरकी अर्थ क्रिकोसीट प्रकारतको जन हैने।

# श्रीकृष्णको अर्जुन और दुर्योधनका निषम्बन तक उनके द्वारा क्षेत्रों पक्षोंकी सहापता

मीराज्याची वहते हिन्दान्त् । हरिक्रमपुर्व्यं और पुरेषितको नेशका विश् सम्बन्धी वर्धान्या समारतेके पर हर पेते । इसके पहलां जीवनावनातो नियमित पारणे रियो पूर्व कुर्यानका अर्थन क्षरकारो पर्व । कुरीकारो प्र राजी नुस्त्रपोद्वस शत्यानेकी तत बेह्नजोना का तन गया । को यह पासून हुआ कि ब्रोकृत्य निर्देशनको प्रत्यक मा से हैं से बोर्ड-से रेक्के कर कई पूर्व क्या। की दिन पाणुक्ताल अर्थन को पहिले। जार्र व्यक्तिक अन्य केले धीरोंने क्षीकुरमध्ये स्थेते पायतः वर्षे कुर्वेचन कुलकाराने जागर करके रिरामनेकी कोर क्या काम सिकारनार के राजा। प्रत्ये क्षेत्रे अर्जुनने प्रयोक्त किन्य। ये ब्यूटे न्यानने हाम चोडे हुए श्रीकृत्यके चरजेंबर्ड ओर रखे ये । व्यक्तिक भगनान्त्री हो। यहते अर्थुन्तर ही यहै। देश करोंने अर होनोक्केका ज्याना-सम्बद्ध कर उससे अलेका करना प्रका तम दुर्वोजनने हैंसते हुए कहा, "पान्काबेके सतम हंचारा के बुद्ध होरेनाला है, अस्में आरको हमारी सहस्था करनी हेनी। अराजारी हो जैसी अर्जुनसे विकास है, बैस्से क्रे पहलो पर है क्या हम केनोसे एक-सा है सम्बन्ध भी है। और अन्य अन्य यी पहले में है है। सायुक्त करीका साथ क्षेत्र करते हैं, के धारे आता है आ: अन वो सल्योंके अवस्थात है अनुसरम् करे ।'

त्रकृष्णने कह—आस पहले तको है—इसमें से संबेद रही, किंतु मेरे पहले देखा अर्जुनको है सहः अस्य पहले अस्य है और अर्जुनको की पहले देखा है—इस्तीको वी



केनोईको सहामात करिया। मेरे मात एक अस्त घोष है, है मेरे ही एकान कीना है और सभी सेकाओ बुधनेकों है। उनका नाम नाएका है। एक और से में बुधेन हैंकित सीने और एसरी और में कर्ष क्षेत्र; किंदू में मे से बुध करिया और म प्रका है जाना करोगा। उन्हेंस। कर्महास नाहें हुचें कुर्णेका अधिकार है, वर्षोंकि तुव कोटे हो; इस्तीओ बैगोमेटे तुन्हें किसे लेना हो, जो से स्त्री ।

श्रीकृष्णके ऐसा बहुनेन अर्जुनी अर्थको स्थूप्तान्ते श्रमा अस्ट मी। यस अर्जुनी अर्थको स्थूप्तान्ते श्रमाणि इस्तान क्षेत्रास्त्रमात्री ऐसा है हो। इसके श्रम्म, क्षा बहुनोन न समी प्राप्त होना से हो। इसके श्रम्म, का बहुनोन करकी प्राप्त का ग्रम और उन्हें कार्य कार्यका साए समावार सुनाना। यह सम्बोधकी बाद, 'पुरुकोता। मैं वीकृष्णके किए एस इस्त की ग्रहीं मू सम्बद्धः स्थाः अर्थक कर्म देशका की का विकास कर किया है कि मैं म से अर्जुनकी सहस्त्रमा कार्यमा और म कुकरे साथ है। एकि।'

भागान्त्रीमे हेल क्लेक्ट हुवेंक्जे उत्ता आस्त्रिय निर्मा और यह प्रायुक्तर कि नारांक्के केंद्र केंद्रा की वीकुम्बन्धे इन विन्तु है, जाने जानी हो जीव पाडी सन्तुरी। इसके पाडाद का कुम्मानीक पास आवा। कुम्मानी को एक अवस्थिती रोग है। उस साथै सेनाके स्वीत कुमैंबन इसी कुम्म-कुम्म पाडि पास विचा।

इसर जम हुनोमा श्रीकृत्यके महत्तरे बाता सम्ब से प्रमानको अर्थुको हुन्द, 'शर्मुक' मैं से अर्थुक गर्ड, सिर हुनो नम प्रमानक सुने मीमा ?' अर्थुको पाइ, 'मारावर् | मेर प्रमो पाइने पाइ निकार साथ है कि आपको अर्थक पाइने सम्बो पाइ निकार देशों पाई एकिमो निकार नहीं है। अला हुने पूरा कार्यको सूच्य करें।' अर्थुकारो पाइन गर्नी है। अला हुने पूरा कार्यको सूच्य करें।' अर्थुकारो पाइन पाईगा।' पाइक्या अर्थुको पाइन पूर्व है, में हुन्तार साराम पाईगा।' पाइक्या अर्थुको पाइन पुरुषो साम पाय पुनिहित्ये पाइ स्थेट आहे।

# पारुपका सत्कार तथा उनका दुर्योधन और बुधिष्ठिर क्षेत्रोको वचन देना

वैशानकार्य कार्य है—राज्यू | क्रुप्ति कृतने व्यवक्रिया भीता पुरस्ता राज्य कार्य कहें अस्ते केश और अस्ते बहुतवी कृति परित्र राज्याची स्वाच्यांके दिनों और । उनके कार्य हराने कहें तेल की कि अस्ति क्रुप्त के बोकके बोकके पहला का ( वे एक अर्ज्यकियों केन्यके सामी में ताल अन्यों पेताने संस्कृत-कृतारों हात्रिय और स्वाच्यांक में । इस विश्वास वेताने साहत में बोक-बोकने विश्वास करते और-बीरे पेराक्षेत्रें पास करें।

कृतीयने यस महराती क्रमणी सम्मानी इत्तर्थको हिनो नाने तुना यो उसने सार्थ सम्मान उनके क्रमणाम्य इत्तर्थ हिनो नाने तुना यो उसने सार्थ सम्मान उनके क्रमणा उनके हिनो महरात हिनो स्वार्थित इत्यान्यम्य सम्मानित स्वार्थित हिनो स्वार्थित इत्यान्यम्य सम्मानित व्याप्त स्वार्थित स्वार्थ स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वार्थ स्वार्थित स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्य पुरिव्यक्ति को इस काली देश सम्बद्ध कारा जाहिते।"

प्रभावित वर्षण क्षेत्रत वह तम प्रभावत हुनीवनको प्रभावत हुनीवन्ते कम देखा कि इस प्रथम साम्य असम असम असम है और अपने आग देखा की रिवार है से वह आहे आगते का गया । बारायने दुनीवनको देखातर और यह साहा असम कार्यण वानकार को असमारको गरे बना रिवार और वहर, 'बारपुष्यम । असमा क्षेत्रम कार्य हो । असम पुत्रे असम्य वाद देखिये । नेथे इस्ता है कि असम मेरी प्रमूपी केसके असमा हो ।' प्रमान बहुत, 'अस्तार, की सुन्तारी बारा कोवार की । बारायने बहुत, 'असमा, की सुन्तारी बारा कोवार की । बारायने, सुन्तार और बंधा बहुत बारी ?' इस पूर्णीवन्ते बार-बार बहुत बारा कि 'नेस मेरे असमे साम कार्य

हरूने प्रमण् उत्तरने कहा—पूर्णका । हुए अपनी एक्कानेको कालो, कुछे जाची पुनिश्चिपते किला। है। जाते विकासन में वीचा है तुम्हारे पाल का माजेखा।' कुर्णेकलो कहा, 'क्कान् ! कुनिश्चित्तते किलाकर काम प्रीता हो आहें, हार से जान आपने ही आर्थन हैं; हम्बो करहानको बाल कार एसे।' किर काम्ब और कुर्योक्त कार्यर गते निते । हुर्योक्त कार्यकी अक्षा सेकार जांचने अनारों काम कामा और कार्य



हुनोंकरको यह इस बात सुनानेके दियो पुरिवोदने आने । निराद्यगरके असूक्त क्रोक्रमें वर्तृतकर से संस्थानेकी क्रकरीने आने। वहाँ उन्होंने दानी परव्यक्रोको देखा और उनके मेरे हर् अर्थ-नामानिको म्हल निरम् । निर नामको कुरारकाको प्राप्त पुणिक्षित्वा अस्तित्वन विका का चीत्, अर्जुर और अर्ज पान्यो नकुरू-प्रयूक्तिको कृतको रूपकार का ने जाररपर केंद्र गये हो अनुरेते एका चुनिश्चरसे कहा. 'पुरुषेष्ठ ! द्वन कुत्रारमी से हे ? च्या बड़ी उल्लाहकी कर है कि दूस सनवारको बन्धको कुद नवे । तुनने बीचकै और भारतीके सकेत निर्वत करने खकर सकत्व बढ़ा हुन्तर कार्य किया है। जासे भी कठिन बहुताकारको भी तुन्ने अन्तर निमा दिखा। तस है, राज्यका हेमेशर से शुक्र ही चोकत चक्रम है: जिर सुक बढ़ों ? राज्य, हे क्रम, इस, राज्य, अविता और अपूर्व प्रारुति—ये तुमने सम्बन्धः विवासन हैं। तुम नदे हैं मृतुस्तराया, न्यार, इस्त्रांसरोबी, सन्दे और क्ष्मित है। तुन्हें इस महान् दुःस्तो नुक इश्व देसका नुहो बारी प्रकार से पड़े हैं।

इसके कर एक हाको किए प्रकार कुरोबको सक उनका समाधम हुना का, वह सम और उसको सेका-कुन्न तमा उसके कर देनेकी क्षत भी जुविद्वितको सुन्य है। वह

अस्परे वंश-चुनिहर । सुने, तुषाय बहुत हो । हैं संस्थापुरिये कर्मक काली असरव वर्षुण, क्वेडिंक सह



को कर्षम सीकृत्यके समय में स्थानता है। उस समय में अध्यक जाते की और आदिय करन कर्तृता। इससे समय वर्ष और केव जा है समया और दिन असको जारब सहस है सामया। करन्। इसने और अँगरीने मृत्ये समय बड़ा दुन्त प्रकृत किया था। मृत्युत कर्मने तृत्वे को बन्दु तकर सुनाये थे। से तृत्व इसके दिनों अपने विकार होता यह करों। दुन्ता को को बड़े सहस्तात्री को उद्दान पहले हैं। देखी इसक्तीये स्वीत सर्व्य इसको की स्वान्तुत्व उद्धान पहले हा।

# त्रिद्दिरा और वृत्रासुरके वधका वृत्तन्त तथा इन्द्रका तिरस्कृत क्षेकर अलमें छिप जाना

जनार अस्ता चेर दुन कार का का क करवेंची कु अकर है।

सामने कार-माराबंध । पूर्व, में सुने का असीन इतिहास स्टाला है। वेकोड जाहा करने एक प्रकारी से। इन्दर्भ हेन हो व्यन्तेक कारण उन्होंने एक बीन मिरवारण पुर कृतक किया । यह मासक अपने एक पूरती नेशक कता क, कुरोने सुवायार करना का और बीनोने करने तन दिसाओको निपान बालक, इस अवस्य देखका था। यह यह ही सकती, पुरू विशेषिक क्या को और सकी क्या का क्रास्त्र सम प्रकृ ही तीम और कुमार या । जल अनुसिध नेपानी कारकार रावेक्स और सार वेक्कर वेक्स इक्के का पोद हुआ। इन्होंने सोच्या कि 'यह हुन तनकाके प्रशासके इस म हो बाज । जार यह विका प्रचार इस मीनन प्रकारको फोड़बर चीरोंचे आरम्ब ही ?" इसी क्षतर कहा सेय-विकारकार प्रकृति करे कैलानेके विको अध्याननीको अध्या है। इन्सारे साहा प्रकार अध्याचे विकेशके कहा अनी



और को क्या-क्यांके प्राथिते सुमाने साथै। मिन्दू विदेश्य अवरी इतिहाँको पहले कर्म पूर्वतपुर (अक्टब महाराजा) के भगान अविकार कें। अवने वहा जन्म

कुरिहोरने पुरा-राजन्। इस और इन्हालेको निवस | कनके अन्यार्थ इनके साम स्वेट गार्थ और उनसे इस बोक्सर कारे राजी, पहारक ! विशिष यह हो हुनें है, जो र्वती दिवास प्राप्त नहीं है। अब और में पुरु परना पाई, का करे (" प्रकृते अध्यक्षकोच्ये से सामारपूर्वक किया कर किया और संबंध पत्र विकास विकास कि। जाना में बसपर मह क्रोड़ेक, विवासे का हुन्त है का हो कारक ।' ऐसा निवास का उन्होंने प्रतेकने काकर विशेषकर अपने भीवन काकर अपूर किया। कार्यः सन्ते है यह विश्वास वर्गतविकारो क्रमान मनकर पृत्तीयर गिर यहा। इससे इन्द्र जनक और वित्रांत क्षेत्रक स्थानिकारको सके गये ।

प्रवासी ब्यानमं का बानुम हुआ कि इसने मेरे पुस्को कार करना है के करनारे आणि क्रोक्से लाल हो गयी और कर्ज़ीरे कहा, 'मेरा कु साह हो हमाहोत्त और प्राप-दमसमास



का। का रूपका कर का था। इसमें को निया निसी अवस्थाके 🖟 पार अस्त है र इस्तरिये अस में इसका नाम करनेके किने पुरस्तातको सरक कारीना । होगा की बरकाय और क्योबरमार्थ देवो ।' ऐसा जिलास्कर न्यूबर् महास्थी और क्यारे अक्षाने कुन् क्षेत्रर चलका आकान विका और अभिने अपूर्वि क्रायमा कृष्यपुरुको अपने कर उससे कहा, 'क्राहरूको । भेरे उनके जन्मकरो तुम बढ़ चान्त्रो ।' बढ़, सूर्य

[ 039 ] र्सं० म० ( ऋण्ड — एक ) १६

सीर अधिके समान नेवाकी कृष्णपुर असे जाना कामन आवश्यको हुने सन्द्र और कोस्त, 'वजीने में क्या करते ?' स्थाने कहा, 'इन्ह्यो कार अस्ति ।' तम का सन्ति नवा । का कृत और कृत्यको कहा जीवक संस्था हुन्य । अन्यने कीस्तर कृत्यकोर केवा कृत्यको कामके सिन्या और उसे सामित्र की निरास कहा । एक कैन्द्रास्तिने कृत्यक काले कानेके निर्व कैन्द्रांको स्थान की और को ही कृतने केवाई की कि केवाल अस्ति और सिन्योक्टर काले कृते हुए मुस्तरी नेवार को नवे । इन्ह्याने बाहर काला केवाला कुत होने काला हुए। इन्हें प्रशास कीर कुत कालार कीर कुत्यका कुत होने काला । काल कालाक रूप और साल कालार कीर कुत्रवह संस्थानके अस्त्रवा प्रशास है

हमारे पान वार्षते हैकारमंत्रों कह है के हमा मौर के स्थाने तेवसे मानावार हम और मुस्लिने का निरम्बर स्थाने बारे समें कि अब का काम करिये। हमी कह, 'देशाओं | कृते से इस सारे संस्थानों के लिया है। वेरे का देश कोई क्या नहीं है, जो इसका का कर सके। अव: केंद्र से देशा कियार है कि इसकेन विकास कियुक्तकार्क सामने को और कार्य सम्बद्ध करी हम हुके काम स्थान मानुन करें।'

प्रसार प्रधार क्यांच्या यात्र वेच्या और व्यक्तिक प्रशासक्ताल अन्याद विकासी सरावे तीन प्रकेश कीने प्रदेश होते, 'पूर्वकाल' अन्यते सरावे तीन प्रकेश कीने प्रदेशको दान दिन्य का । आग प्रधार वेच्यानेक प्रकेश है । या प्रवास कार्या अन्याद कार्या है। इस कार्य का प्रधा कार्य प्रमानुको कार्या है। अन्य है अपूर्णिकाल । जार प्रधा प्रमानुको कार्या है। अन्य वेच्या । विव्यक्तिक में देख प्रमान कार्या है, विवर्त प्रस्था कार्या है प्रार्थिक में देख वेच्या, व्यक्ति और अन्यतिका अनेत्र करें। इससे दून को मीत स्वीर अन्यति है स्वर्थातिका अनेत्र करें। इससे दून को मीत प्रमान कार्या । इस अक्टर मेंद और इससे अन्यक्ते स्वारी जीत होती । में अद्वाकालों देखकांक अन्यक मान्ये प्रमान कार्या। ।

विन्युचनकारोः ऐस्त काशेस का शेवक और व्यक्ति और भूते काने कह बुवक का अवस्थ काना है। विद्रिश्तक कृतकों जाने काके कृतकुर्वा कार को और उससे कोते, 'वृत्तक सीर | कह साम काम कृतके केशे कहा है से की | के समात ।' ऐसा विकासक कृतने को ही विन्युचनकार्या



हुन हुन्नको कोन कहाँ सके हो। हुन हैन्सेको स्थाने हुन् सहून स्थान कीन पत्त है; इससे केनात, अपूर और स्थान—सभी प्रकार कर सो।' कार्यिकोसी का कार सुरकार पत्त है कारी कुने कहा, 'असे कार्यकोसी आ कार सुरकार पत्त है कारी हुने कहा, 'असे कार्यकोसी अस्तान ही मेरे अन्तर्कत हैं। हिन्दू को कहा में कहात है, का कार्य में क्रारेको सेनार है। हुने इस और नेकारकोस किसी भी सुन्नों का चीनी कर्युटो, पासर का स्थानकेन, कुक का अक्तो असका हिए जा सार्य में मार्य होन्द्रात कर स्थान है।' का अधिकों क्रिके क्यारे साम सार्थ करना होन्द्रात कर स्थान है।' का अधिकों उससे क्यार, 'दीना है, हेना है होना।' 'हार प्रकार करिन हो कारीने क्यार्ट्स क्या प्रसार हुन्य। केन्द्रात की करने प्रसार के हुन, किन्नु ने स्था सुन्नपुरकों कारोबा असकार है।हो एके थे।

एक हिन इसने सरकारताओं कृतश्राको समुद्रके स्टब्स विकास देखा । उस समय ने कृतको दिने हुए सरपर विकास करने समे—'यह सरकारकार है, इस समय न दिन है न गर्थः और भूते अपने इस कृतका कम अन्तरत करना है । पदि अस्य मैं इस कहन् अनुस्तको कैसोरो नहीं सरसा है से मेरा दिन नहीं हो स्थास ।' देखा विकासकर इसने पत्नों ही विस्तृतनकरक्ता



कर्म किथा कि को समुद्धार गर्मको समान केन उसके हिजाबी हिया। ये सोकचे समे—'जा न मुक्त है न चीता, और न मोई क्या है है। जार की मैं को कुम्बुरक्त केई हो जा एक क्षमों है यह है जाना !' जा सेक्यार कार्टने

हुन ही अपने काले स्थित था फेर दूससूरपर पेका और काकर, किन्दुने कर फेक्ने अनेश करके अरी समय कुळ्युरको कर काल। कुळे पत्ते है सारी प्रका प्रसार है क्यों क्या देखा, कार्य, कह, दक्त, जल और कृषि—में सार हुन्की कृषि कार्य रूने।

पूर्ण केन्याओं किने काम काम को हुए महानां कृतपुरका का के नित्ता, जिल्ला कार्य निर्मिताओं पारंत्रें जर्म कुं इक्कानके कारण और अन असर कार्य कार्यके कारण जिल्ला हैनेसे के कर-ही-कर कहा हु: जी क्रिने लगे। इस क्रमेंक कारण के संस्थापन और अनेतन-के है नमें उन्हें क्रम्यू संबंधियाँ क्रिकार कार्य कार्य क्रिकार पूर्ण को उन्हें। का क्रिका इक्कानके पीड़िय होकर कर्म क्रिकार क्रिने को का के उन्हें पूर्ण क्रिके कर्म कर्म और कर्मोंके क्रूब क्रिकेट कार्यकों है नमें। अन्यकृतिके कारण क्रिके क्रिकेट क्रिकेट कार्यकों के नमें। अन्यकृतिके कारण क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट कारण। क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रिकेट क्रम हों। क्रिकेट क्रिकेट

#### नहुषकी इन्द्रपद्माप्ति, उसका इन्द्रणीयर आसक्त होना और इन्द्रणीका अवधि यौगकर अश्वमेश यशक्ता इन्द्रको शुद्ध करना

एक लाग करने हैं—चुनिहित | इस कम देखा और अभिनेतें कहा कि 'इस समय कम जून कहा लाग लागे हैं, अभिने देखाओं उपन्याप अभिनेत करों । वह कहा है देखाई, कहाई और वार्षित है।' वह सरका करने कर है सहने मुंबोर पाह समय कहा कि 'अस हमने कम है सहने।' उस कूमने कहा, 'मैं से कहा हमें हमा है।' अभि और नेकाओंने कहा, 'राज्य, | हेका, एउटा, कहा, करि, राज्या, सिहारा, कमर्च और यहा—में सम सम्बद्धी हुटिके समये कहे होने। अस हम्में नेकाल ही हसका के हमान सरकात हो अमेरे। अस क्यांने असे रहते हुट समूर्य

हान तरन करने हिन्तुनिहित । इस कम देखात और ! तोन्होंके जानी कर नहाने कम उपनंतेकारें दाकर सहिति क्वेरे कहा कि 'इस समय कम नहा बहु आप उसी है. क्वि देखाओंके दामकार अभिनेत करों ! यह बहु हो है अनेतेकारें पहुंच्या राज्यत्विक कर दिया । इस प्रकार कर तथे, बहुत्वी और वार्षिक है ! 'क्व सरका करने कर इस्कृत तोन्होंका अस्त्री है गया ।

> विश्व इस पूर्वभ पर और स्थानि एक्या प्राप्त पहले विश्व कर्नवराका पूर्वभ भी या भेगी है गथ। भू समझ वेकेक्योंने, क्यानामें स्था कैरवस और विश्वसम आई प्रांतिक विश्वपेत्र वस्तु-सर्वकी सीक्षाएँ करने स्था। इससे अस्ता पर दृष्टित हो गया। एक दिर वह सीक्ष बार सा था, असे समझ असमी दृष्टि केम्पनामें मार्थ सम्बंधी इस्तानीयर पहले। जो देसका यह दृष्ट अपने समासरोंसे बहुने



कात, 'में वेपताओंका राज्य और उन्यूर्ण कोकोका जानी है फिर इन्त्रमी पश्चिमी देवी इचानी येरी नेकको दिन्ने क्यों जी अपने ? आब हुका हो समीको की पहन्यों अपना परिके ।

महत्त्वी वात शुरका देवी इच्छानेके विकर्त वहीं केट रती और वाले फुल्परियोगे कहा, 'बहुन्द ! में आपके करण है, जार जुन्हों नेरी धार बरें। आजे जुड़े कई बार अक्षय सीपाणकार, एकाकी कर्ता और भीताताका काल वित्य हैं: असः अवन अन्तरी बहु कारी प्रत्य करें।' सब पुरस्कीओं नवसे व्याप्तात हुई इन्हर्योंने कहा, 'हेवी । की थो-जो बहा है, यह अवस्य है सन होता। हुन ज्यूको सर क्ये । मैं सन्द करूत है, तुन्हें बीच है इन्हों निवन केया। इया का शुरुको नातृत हुना कि इसानी सुरतानितीको शरकने नहीं है से को बढ़ा बड़ेच हुआ। वहें ब्रोकने कर देशकार देशका स्टीर व्यक्तियोंने बहा, दिवस्ता । सर्वेशकारे आरिये, आप-मैते प्रापुष्य अतेव नहीं किया करते । इस्तानी परवाँ है, अतः आर को क्षण करें। अन अपने बनको परवर्गनगन-वैसे पानते वर रहते: अवनिवर अवन केवरक है. कारः अपने प्रमाद्यः वर्षपूर्वतः प्रश्ना करे । चनवान् अस्यक्षः म्बास करें।

अभियोंने इसी अकार न्यूनको बहुत सामानक, किन् कामासक होनेके काश्य अस्ते उनकी एक र सुनी। एक वे बुक्त्यनियोंके पास गये और उनके कोले, 'वेलॉबेंक्ट ! इस्ते सुना है कि इनक्सी जानको क्रायने आयो है और अवक्रोके कारणे है जमा अवस्थे जो अध्यक्षण विश्व है। पांतू हम हैका और कांग्योग आपने प्रायंत्र करते हैं कि आप जो खूनको ने विविध्ये।' केवार और खुनियोधे इस अधार क्यांतर नेवी इन्हामीके केवेंचे अदि पर आये और खु क्यांतर नेवी इन्हामीके केवेंचे अदि पर आये और खु



क्ष्मको जीनाको स्रोकार नहीं करना कक्षाते, मैं आकार करको है, अस इस न्यान् करने घेटे रहा करे।' क्षार्वित्रकोने कार, 'इन्यको । नेश कर विक्रम है कि मैं करकेकारों और सम्बर्धात है, इस्तिको में हुई नहीं करकेकारों और सम्बर्धात है, इस्तिको में हुई नहीं कर्मका ।' कि केकानोरे कहा, ''मैं वर्गवित्रको करका है, मैरे वर्गवाकार करक दिवा है और स्तामें मेरी निहा है, इसके दिवा में है को स्वाप्त करिया, इस्तिको में मेरे न करने केवा कार नहीं कर सम्बर्ध । अवस्थित कराने, में ऐसा नहीं कर स्त्रीय । इस विकास पूर्ववासनों प्रकारित कुछ क्या करे हैं, अने इसके—

'जो पूरण जनधीर होकर जरममें आवे हुए व्यक्तिको जन्ने हम्ममें दे तेत है, समका बोध्य दुवा बीच सम्बद्धर नहीं जनक, अनके होनमें सम्बद्धर वर्ष नहीं होती तथा पहाकी जनक्ष्मकता होनेशर औं बोर्ड एक्क नहीं मिलता। हैसा वृत्तिकीय पूरण को अस (धीन) जात करता है, यह बार्ग है साता है। जनकी बेद-सहाति नह हो नाती है, यह बार्ग से गिर कात है और वेनावलेग काचे समर्थित हम्मने जान नहीं कारों। काची संतर्भ अफारमें हैं नह हे काते हैं, उतने विदार सहा अस्कोंने निवास करते हैं और हमके स्वीत वेनातनेग काचा नामका करते हैं।<sup>क</sup>

"भा प्रवार स्थानके कामनुकार करणायके जानो होनेसाडे अवसंबद्धे कामो हुए में हुन्यानियों न्यूनके हुन्यों नहीं है समझा। सम्बन्धेन कोई ऐसा उपना करें, विनाने हुनका और पेस होनोका है कि हो।"

तर देशकारी एक्टरोरे व्यान्त हेवी । यह स्थान नेपन रात कर, एक तुक्ते है अव्यक्ते दिया हुन है। पुन परिवास और सारान्तिक हो । एक पार न्यूनके पार पाने । हुन्हरी कायन करनेते यह करी होता है यह है अनगा और वेदान प्रकारित सरका देवने महा करेंगे। अपनी artificate fine homelis has fear and provi कारण संबोधकुर्वेश शुर्वात गारा गरी । को वेसका वेसका भूको प्रकृत 'सुविधियो । में बोटो स्टेबर्डेका स्तर्प है। इस्तीओ सुन्दर्ध ३ तुम मुझे बर्तिकारों वर हते।' जूको ऐसा कालोका परिवास क्षेत्रको काली मानुबा होकर करिये हर्गो ( माने हम केइका बहुम्बीको करवार किया और केराम कानो कहा, 'होका । वै अन्तर्भ कुछ अनके मोपरी है। सभी को नातृत भी है कि देवतम एक कई को है और में किर स्टैटकर आलेने क वहाँ। प्राची प्रीय-रॉब्ड फोब कानेगर नहें काल का न राज से में शासकी रोज करने स्ट्रोपी।' स्ट्राने बाह, 'ब्रुपरी । हर बैद्धा बन्दरी है, बेस्त है हती । अन्तर, प्रवास्त का रूप को । सिंह्यु देखो, अपने इस स्थल क्यानीको बाद रहाता ।"

इसके पहार जुनमें जिल होका इसानी भूतमांत्रिके कर आगी। इसानीकी नात कुनका साति साति केना इसके होकर इसके विकास विकास करने जाने। जिस ने देनाविकेट परवास विकास जिले और उसके जानुका होकर कहा, विवेशर | अस्य काराहों, कार्या तका इसके अस्तान और पूर्वन है। आप समझ ज्ञानिकोकी स्थाने दिन्ने हैं विकासना है विकास हुए हैं। जनकर् | असके तेनारे कुनसुरका विकास है



कारेगर प्रकार सहस्रकाने के लिख है आप जानो कुटनेका काम कामने 1' केमाजांकी यह जात हुनकर किम्युक्तकार्य कहा, 'इन्ह अवलंक कामहार केरा है पूर्वन करे, मैं को समझ्यानों कुछ कर हैंगा। इससे यह सब अवस्थित कामे कुछनार किन हैक्सओंका राजा है जानक और कामदि कहा कामे कुछनों का है जानका।'

प्रमान विकास प्राप्त करें। सुन और अनुवासी पानी पुन्ता विकासित पानि और अनुवासी प्राप्ति कर प्राप्त पर्दे, वाई पानी मानुवा हुए किने हुए थे। पार्ट हुएको पुन्तिके वैस्ते मानुवासको निवास प्राप्त अने पुर, नहीं, पर्दात, पृत्ती और विकास परि विचा : इससे हुन विकास और नि:प्रोप्त हो गने। बित्तु पान से असना प्रमुव पुण पानेके दिनो अन्ते। बित्तु पान से असना प्रमुव क्षेत्रकार्तिक प्राप्त प्राप्तानों कुन्ता हो यह है तथा अपनी पृत्तिने ही पान समस्य प्राप्तिकोंके नेक्सो जो पान करों है। पान देसकर से पानो पानि को और पानि दिस पाने पने, तथा अनुवास संस्थान प्राप्तिक पाने हुए सम जीनोरी अनुवास प्राप्ता विकास हो।

<sup>&#</sup>x27;न तस मौन रेडरिंग रेडस्टरें न तस को काँदे काँग्रहें। गीठं करतं करवंदि कार्ये न से करते रूपये जागीनकान्। मोनवारे किन्द्रीर काण्येक: कार्यक्तोबाद करवीर कार्यक: : बीटं करते करविर से मैं न तस हम्मे प्रतिगृहन्ति देख: ॥ करीनों कार। इस हमारों तक किन्दरें निर्दारमा कुन्दि : बीटं करते करविर कार्य केन्द्र देख: आस्त्रसम् कार्य् ॥

# इन्हकी बतायी हुई युक्तिसे नहुक्का पतन तथा इन्ह्रका पुनः देवराज्यपर प्रतिष्ठित होना

पुथितिर १ इसके वाने वानेसे इसामीनर फिर क्रोंकते । बाह्य मैडपने पर्ने । व्या मानवा कुनी होवार 'हा इस !' हैस बहुबार निरार करने लगे और बहुने प्रमी— 'वॉद मैंटे इस विका है, इसर विका है और पुराननेको अपने सेवारो प्रमुह रहा है तथा मुहाने क्या है तो पेरा पार्वकार मानवार थे, मैं करी किसी अन्य पुरानकी और न हेंगू । मैं इसहारकारी अधिहारी सामितिको प्रमान करते हैं। में पेरा मनेरक स्थान करें।' मिर करने एकस्प्रिया हैकर स्थिति इसहारकार की मेर क्या प्राचन की मैंट 'व्यापित हैसराम ही, बढ़ स्थान की मेर क्या प्राचन की मैंट 'व्यापित हैसराम ही, बढ़ स्थान की मेर क्या प्राचन हो हैसराम ।'

इन्हर्णको यह अर्थन सुरक्तर उन्होंने हेनो पूर्विकते हैंनर अर्थर है गर्ज । उन्हें देखकर इन्हर्णको नहीं अर्थन हूँ और अर्थ करका एकर करके कहा, 'केने । अर्थ और हैं? अर्थका परिचय पर्योद्धे की खूने की अर्थको हैं। अस्तुनिते कहा, 'हेती ) में अस्तुनि हैं। हुमारे सबसे अध्यक्ते ही से सुने सूर्वर देशेंड किये अर्था है। हुमारे सबसे अध्यक्ते हो से सुने सूर्वर हो, में हुने देखकर इन्हर्ण करा के कहिनी। हुए कर्माने में की की-नीचे कर्म अर्थके इन्हर्ण उन्हें की हो हो सामे ।' किर क्यानिक सर्वरूप क्यान क्यान क्यान क्यान



अर्थः कुन्दा विकासः कार्याशनी थी। जो एक केंगी उत्तानारे ग्रीरवर्ण ग्रामान्यको के रचना था। जाना जा कार्याके ग्रास्थ्यो पराव्यतः स्थाने इन्द्राणीके स्थित अर्थक विच्या और वर्षा एक उन्तरे इन्द्राणीके स्थित अर्थक विच्या और पूर्वकर्णीक उत्तरेक कार्यो हुए इन्द्राणी स्थानि थी। इत्तरा इन्द्री वर्षाः, विस्ति। पूर वर्षा केंग्रे आयी हो और तुन्दे नेया पता केंग्रे साथा ?' जब इन्द्राणीने उन्ते ग्रामुक्ती कर कार्य सुनावी और अपने कार्य कार्यात सामा जान करनेकी क्रार्यना थी।'

क्रालाके का अकार व्यक्तित हमारे व्यक्त, "हैवी ! इस प्राप्त प्राप्ता का का हुआ है, अभिनोते हान-कम देवर को बहुत पहर दिया है। इसरियों यह परावान प्रयाद सरवेगा समय पूर्व है। में सुने एक पुरित करका है, उसके अनुसार बान करे। इस इकामरे माना मूनने कहे कि 'तुन प्राथिको अपनी पालको उद्यापका मेरे पाल आओ को में क्रांत क्रेका तुम्हरे अर्थन क्रे कार्यने ।"" क्रेस्टक्के प्रेत क्ष्मोंक इसी 'से अक्षा' ऐसा सकतर महत्ते कर गरी। को देखका जाको प्रकारकार कहा, 'कामानी ! हम सूच अपनी । कुछे, में पुन्हारी कक्ष रेपन करते ? पुर किस्तार करें, में सामग्री प्राप्त करके बहुत है कि में शुक्रते जह अवस्थ कर्नुक (' इक्कारेने कहा, 'क्याओ | वैदे आरहे को अवदि बोचे है, में अलो बोलनेकों है ज्योदानों है। पांतु मेरे मनने कुछ ब्यांत है, स्थान अंशार विश्वार कर हो । यदी आर मेरी क्य जेनमधे बार पूरी यत देंगे से मैं अवस्य आवंदे असीन है कार्रनी । राज्य । नेरी ऐसी इच्छा है कि व्यक्तिन अन्याने विकास सम्बद्धे कारबीमें वैद्याल मेरे पार लाहें।"

जुन्ने वळ—'पुन्ही ! हुन्ने से मेरे दिन्ने का कड़ी हैं। अनुद्री समारी कान्यों है, हैने जानगर के चोर्ड नहीं कहा होता। यह चुने कहा परंदर अला है। चुने में हुन अपने समोन ही सन्दर्भे ! जन्म स्टार्टी और महानित्तेण की करानी हेन्सर करेंने !' हेला वाहबार राजा जुनने इन्सरनित्ते सिद्ध बार दिना और अस्तरण कानसम्बद्ध हेनेके कारण व्यक्तिके

इसर इस्तीने कुल्लोतकीये थान कावर कहा, 'जूनने हुई। यो जानी है थी, यह मोदी ही केन या गयी है। अस आर पीत ही प्रक्रमी कोन करहाने। मैं जानकी पता है, जार मैं। कार कृष्य कों।' इस कुल्लोतिनीने कहा, 'ठीक है, तुस पुल्लिक कृष्यों किसी जातर यह यह काने। यह नरावस पहुचिकों अननी कर्मा क्रमा है। इसे मर्गका हुए भी इस्त भी है। इसरिने अस इसे गया है समुद्रों। यह महुद हिन इस प्रामनों नहीं क्षित्र शब्दाता । हुन क्षित्र की पता करें, जनवान् सुद्धार अनुस्त करेंगे ।' शब्दों क्ष्मान् व्यक्तिकार्थ इसर विकार और अधिकारों इसकी कीच करकेंद्र हैंग्से कहा । अन्त्री काहत काहर कांग्रीको सार-वर्तना, अनेकर और प्रमुखें इसकी कोच की । हुनो-बुंहरे के यह सरोकरण पहुंच करें, वहाँ इस किने हुन्ह से । वहाँ अने केन्द्रमा एक



स्थानसम्बद्धिः स्वयुर्वे क्रिके द्वित्यक्षि क्षेत्रे । स्था क्ष्मीने सुक्रमानिकीको सुक्रम ही कि इस अनुक्रम स्था कारण करके एक सम्प्रान्तिको स्थान ही क्षित्रे हुए हैं । यह सुन्यार क्ष्मण्यीको केरण सम्बद्धिः स्थान स्थानको स्थान स्थाने स्थान स्थाने स्थान स्थान स्थान स्थान होत्र के अवस्य पूर्वे स्थान वरित्यति स्थान स्थान

ायन् । निम समय कुरुगाँकी इससे ऐसा यह यो ने उसी समय नहीं कुनेर, यह, प्रश्नम और नहम मी उस परे

और राज देखा देखात इसके शांध निरम्पर न्यूनके नामका काल प्रोक्तरे राजे। प्रक्रोडीने वर्ड गरन समस्य अगस्यानी हिलाओं हिले । उन्होंने प्रकार सर्वितन्त्रन करके कहा, 'कही प्रकारको का है कि निकास और प्रमानुस्ता का है क्रमेरे आरक्ष अनुसर्व हो रहा है। अरब सहा की केन्द्रकारको ५० हो करा । इससे भी मुझे बाह्र आताना है ।" का पूर्व अन्तरम्पनिक्षः संस्था-सम्बद्धाः विका और पन ने अक्षारक विराध को हो उसी पूछ, 'बकार्! में बा व्यक्त व्यक्त है कि कन्द्रीद श्रृतका कर किरा प्रकार हात (" राज्यकारि कहा, पिताम ! सुर्वित जून विक अबार सर्वते रिय है, वह अबह में सुनता है सुनिने। व्यक्तपान देशी और ब्रहार्षे पायत्व प्रकृतमे चालको उठावे क्षा हो थे। यह समय अभियोधे साथ सामा निवास होने रूप और अक्नोरे पुद्धि मिन्स बानेके बारण काने की महामान्य राज्य गरी । पूर्णि भारता तेव और वासि ग्रह है नकी। क्रम मेरे जाती कहा, "एकन् । हुन अभीन महर्निनोके कारणे और आकरण मिले कुट कार्नपर क्षेत्रारोपण करते हैं, क्रमें क्रम्पे प्रमान नेकारी खुनियोंने सपनी पालबी क्रमानी है और मेरे प्रतरत तात नहीं है। इसरिने हुन पुरुक्षीय क्रेक्ट पुरुक्षिण स्थिते (\* अस तुम क्रा क्रान्य सर्वतक अंबलका का काम करके भारतीये और इस अवस्थित संकात क्षेत्रेकर किर व्यर्ग आहे करोगे ।' इस क्रमार मेरे प्रापके



मह तुद्ध इन्हराते पुत्र हो पत्त है, तम जान कर्नकेटने | पहल्कत राम कोच्छेन्य पातन चौतिनो (\*

सब वेदशंख इन्हें ऐरावा इस्पीनर प्रकृतर अभिनेत, वृहराति, यम, बराव, पुनेर, सपस वेदावन सवा नवार्थ और अपराज्योंके साहित वेदानेकाओं नवे। यह इन्हानीले विस्तवार ने सरवाद अपन्यपूर्णक सब स्वेदनेका प्राप्त करने इसो। इस्ते कार्य वहाँ प्रमुख्य अभिन्य प्रकरे। अन्नेरे

अध्यक्षिके वसीने देवस्थान पूजन विकार प्राप्ते इसे च्यून अंतर हुए और उन्हें यह पर-दिना कि 'अनने अध्यक्षित पान विकार है, इसीएने इस नेवरें जान अध्यक्षित पानों विकास होने और प्राप्ता पान भी प्रद्रा प्राप्ते ।' इस प्राप्ता अध्यक्षित आधिका सम्बद्ध पर उन्हें पुत्रते विद्या दिना । तिला ने पानका विकार और प्रयोधन अधिनोधा सम्बद्ध यह वर्णमूर्णेंड प्रमाना प्राप्ता पाने जाने।

#### शल्यकी विदाई तथा कौरव और पाण्डवोंके सैन्यसंप्रका वर्णन

स्तरण सरण वक्ते हैं—वृधिद्वित | इस जानत इसके अपनी ध्याचि समेद कह जोगना कह वा और अपने सहजोगा क्ष करनेकी इक्तमें अहसावास की करण पह सा | असा नहिं तुन्तें हैं को इनके दिनों दून केन व करने क्षमार कह मोगने को हैं से इनके दिनों दून केन व करने । वैसे इन्नों क्षमपुरको पास्तर पत्न जहां निश्च का, जमे क्षमार तुन्ते की अपना पत्न विशेषा । जम की अन्यक्तिके क्षापह तुन्ते की अपना पत्न विशेषा । जम की अन्यक्तिके क्षापह तुन्ते की अपना पत्न वह को है दूनको कह कर्ण और कृतिकारिका की बाह है सामका ।

राजा करवाते हुन अकार ब्रोक्ट वेबानेनर कार्नेस्ताओंने होतु सुविधीरने करवा विकित्ता सर्वार किया। इसके ब्राह्म ब्राह्म करते अनुनति तेवार अवनी तेवाके स्वीक हुनीवाके बाल करे आहे।

रीत्रपारको वर्ग है—एक्ट्र । इसके बहुत पहल अक्रारको सामन्द्रि बडी चारी जाराज्ञिको सेना रेजार करन श्रुविक्रिक्ते पहर अले । क्यारी केवारी विकारिका देखीने साने हर अनेकों कीर सुरते किन का को थे। करता, पिनियात, पूर्व, सोमर, मुहतर, वरिंब, अद्वे (साबी), चहा, सरवार, प्रमुख और त्रस्य-प्रसुक्ते करकानो हुए संगोधे करकी सेना एकदम दिन की भी। यह केम राज्य मुनिश्चितकी क्रमानीये पहेली। इस्ती कहा एक अध्योगियों रोज रेजार बेरिएक प्राचेत् आण, एक अवस्थित सेमके साथ जगसन्त्रका पुर कम्पाएक कार्यन आता ७६६ समुखीनार्थी तत्त-तत्त्वेत क्षेत्रकोके त्या क्ष्माच्या की कृषिहिल्ही केवाचे कारियत हजा। इस उत्पार चित्र-चित्र देखीओ क्षेत्रका स्थापन होनेसे चन्क्रम्बक्ता सैनसमूहण नहा है क्षांनीय, कम और प्रतिसम्बद्ध कर पहल वा। महत्त्वक हरदार्ध सेना भी उनके महत्त्वी पूर्व और देख-देशसे अन्वे हर् जुर्त्वरोके ब्राएक बड़ी बाले जान पहले थी। मनमहेतीय एक विएक्की हेराने अनेको क्लेक एक सम्बन्ध थे।

महराज हरू बहुते हैं—बुधिहर | इस प्रकार इसको | व्या भी वाष्ट्रकोंके हिन्दिनों पहुँच नहीं । इस प्रकार मही-ती भ्रम्भकि सहित कहा मोनना पहा था और अपने अतिहा वक्ष करनेकी इक्सने अहारावास भी करूब पहा । अहा नहीं तुन्दे होन्द्री और अपने महामोतीक मनने | इस विकार महिन्देको केस्ट्राट प्रमान की असा हुए।



द्वारों और एक प्रमान एक अझैनियों रेख देखर औरचेका हुएँ कहाना। उसकी होनमें चीन और किएक देहोंके और हो। हुती प्रधार कुनैयनके पहलें और भी कई एका एक-एक अझैनियों देख रेखर आहे। इस्टिक्के पुत कुन्नमाँ जोड़, जनका और कुनुन्नदेशिय पहला मेरीके सहित एक अझैनियों रोज रेखर कुनैयनके पास प्रमान हुए। सिन्दुरीयोंट रोज़के जनका आहि समानोंके प्रथा भी सहाँ अश्रीदिन्ती होना अस्त्री। साम्योक्तरोग्र पुर्वदिन्त सन्त्र और मन्त्र वीरिके स्वीत आवा। सर्त्रके सत्त्र भी एक स्वर्तिद्वित्ती सेना थी। इसी अवस्त्र स्वित्त्रकों पूर्वत्वा स्वा नीत इतित्र देशके स्वान्तरी गीरोके स्वीत अस्त्र। अवस्ति हेना सेका पुर्वतिन्त्रयो सेनाचे स्वानिक्त हुए। केनाच देशके एका प्रति स्वोत्तर धाई थे। स्वानि सी एक स्वानिकी सेनाचे साथ स्वतिक्त होनार पुरस्तानको अस्त्र विद्या। इतके हिना वहाँ-सहस्ते अस्त्रे हुए अन्य एकाशोधी तीन अञ्चीतिन्ती होना

और में हो गयी। इस ज्यान हुनीयनके पहले कुल मारा समीदियों सेन एकवित हुई। यह उदा-स्टाइटी व्यवानीसे सुनेवित और व्यवानीसे विद्वाले हिंदी असूद्ध थी। यहाना, कुल्याहर, पेहिल्मा, भारताइ, अस्विता, कारबहट, प्रमुख्य, वाह्य, व्यवस्थ और व्यवस्था पर्वतीय अहेड— यह क्या जन-वाल्युर्ज विद्या क्षेत्र वीरवीयों सेनारे यह हुआ था। व्यवस्थ हुद्दारे ज्याने विद्या पुरोहित्यों दूर बरायन नेवा था, ज्याने ह्या ज्यान एकवित हुई वह व्येट्स-नेवा केवी।

# हुपदके पुरोहितके साथ भीन्य और भृतराष्ट्रकी भातचीत

र्वक्रमध्यम् असे है—सरमार यह हमात पुरेक्षित पंचा काराहके पास क्षेत्र । काराह, जीव और बिहरने कामा यह समार किया । पुरेकिनो यहारे अपने कहता कुमल-समामार कह सुराका, बेके उनकी कुमल (ब्रुटै । हाली कर अने प्रपक्त सेकानियोंके बीच इस प्रपत क्या-'यह बाब प्रतिद्ध है कि क्रारच और क्या केर्ये हवा pl frende yn 2, ann frende meer debrus pears अभिकार है। यांतु श्रवसार्थ्य पुरोधों से उनका बैहार पर मार पूजा और राज्यके पुत्रीको नहीं निरम-प्राच्या राज कारण है ? औरवॉर्न अनेकों बार वर्ड ज्यान करके पायकोचे प्राप्त सेनेका उद्योग किया; परंतु अस्त्री अस्त् हेव हो, इस्तरियों से उन्हें समानेक न नेता हुन्हें। इसने कह रेक्टरेके बाद भी महस्ता पायकोंने सक्ते करते राज्य बहाय: किंतु कर विचार रक्षनेकारे एकाइएसेंने एक्टिके कर विकास प्रतसे या प्राय कम और विकार कम सुराहरे भी इस कांका अनुवेदन किया और पायक तेना करंगा कार्ष क्रमेको विकास किये गये। इस राम सरकार्यको प्रत्यार में उस भी कौरमोंके साथ सम्बर्धक है करन पहले है। सार: चन्याने और कृतिकादे कार्यकार स्थान हैका निर्धा राज हिर्देशकेका यह करोगा है कि ये क्रॉक्टको एन्यूको र पाणा की है से भी वे जीतवेंचे ताल यह करन जी माहते । काची से नहीं हवार है कि 'संस्थाने करतेहर किने बिना ही हमें हमारा पान किस पान ।' कुर्वेदन किस स्वापको कारने रतनार पुरू करण प्रथम है, वह तिहा भी हे प्रमान: क्वोंकि प्रकार कर कार्यन् नहीं है। क्वेंब्रेसके पंता भी सात सकीतियों सेना एकत के नवी है और बा पुरुषे किये सर्व्य होयर उनकी आहम्बी कर बोहरी है। इसके रिका पुरशसिंह सामाधि, भीवनेत, स्वार और

व्यक्ति—ने अनेतरे ही हमाने अजीवियों हेनके बनावर हैं। एक ओरने न्याप अजीवियों हेना आने और दूसरे और अनेत्र आहें हो से अहीर ही संग्ते सहसर दिख होगा। ऐसे ही पहल्ला सीहरण भी हैं। पायकोची हेनाओं अनेत्र भी प्रत्य पराचन और सीहरणकी हुन्दिस्ता देशका भी प्रत्य पराचन और सीहरणकी हैंगर होता? अनेत्र पर्न और पंजाबार विचार करके आवरोग पायकोची में हैं। चेन्य पान है, को पीड अहन करें। यह प्रापुक्त अनात अवनेत हानने पान व पान, हान्या करा प्रापुक्त

वृत्तिको कान कृत्या महसूदिमार् वीकारेरे काली कहे कांस की और यह सम्बोधना कान कहा---'ज़हर् । यह सीकानकी कार है कि हानी कावत अने अस्तार हो कि उने कार्याकों स्वापका अस है। यह कानकर कई अस्तार हो कि उने कार्याकों स्वापका अस है। ये कीचे कई कावत कुहका विकार सामार काने काहतीने कीचे काई कावत कुहका विकार सामार काने काहतीने कीचे कांस कात है। या से और की अन्याकी कार है। वासानों किरीहकारी अर्जुत कावत कुकला कीन कर सामार है ? साधार हमने की इस्ते कावत की है। किर कृतर कहनकारियोकों से कार है का है ? मेरा से विकास है कि यह सीनो सोकारें एकावस कार्या की है।

जब बीकानी इस प्रकार कहा हो है, उस समय कर्ण सोकाने का पास और शृहकपूर्णक रूपकी बात कारकर कहाने रूपक—'कान्यू । अर्थुंच्ये प्रतासकती काठ किरहीरे क्रियो वहीं है। जिस कारकार उसे कहानेते क्या साथ ? पहलेकी जब है। इस्कृतिने ह्योंकाचे सिन्हें जुन्हों बुधिहिंगको हरावा हर, इस समय में एक दर्श प्रत्यक्त करने नने में। उस कर्मके पूर्व किये किया ही वे पाला तथा पश्चाल देशकारकेंद्र अरोसे



क्रके इस्ते राज्यस संबद्ध पाग भी नहीं हे समाते । नहीं से अपने काम-दार्वेश्वर काम केना पहले हैं को करिया के अनुसार निवा सम्बद्धाः पृथः वस्ये हो । यह वर्षे स्रोकार त्यानेशर ही उसका है से इस कोरड मीरोके पास आनेपर से मेरें क्यनोब्दे के कार्यमधि वह बरेंगे।'

क्रांची क्रेले-एकपूर ! पुर्श कारोबी क्या अवस्थिति है। एक कर अर्थुओं इस वरकायकों से बाद कर हो, का कि निरादनकरके संवादनों कार्न अवेश्वे ही क बहुर्शक्केको कीर विशव का । हुन्द्रमा नराहरून को उन्ही समय देखा गया, यह कि अनेको यह काके सामने व्यवस तुनी क्या हैना यह । यह इसकेन इस अञ्चलके कार्यानुसार कार्य क्षा करेपे, से जनान है बुद्धने पानकोचे हानते मरकर हो कुछ कांकरो पहेली ।

बोलको से कथन सुनकर कुराहरे रूपका सन्धान जिल्हा और उन्हें काम करते हुए सम्बंधी ब्रोटकर कहा—'श्रीकारीते के बढ़ा है, प्रतिने इक्ता और बावकोवा देश है। कृतिये कार्यक की प्रकार है। अध्यक्तिका । में सानी प्रता हरू कर्ष स्थानके सम्बद्धि यह नेतृता। अन अस बीक्र ही और व्यापे (' ऐसा प्रत्यान कृतवाने मुक्तेविक्या सरकार किया और अंधे पाणकोंके करा केन दिया।

# युतराष्ट्र और सञ्जयकी बातचीत

र्वतन्त्रकार्थं कर्त है-स्वरूपर धूनको स्वरूपने है राधार्थे कुरसकर सहा—'तहार । त्येण व्याने है कावार इन्द्राल गर्भक स्थानी शासन सा से हैं। हुन में कई सकत इसकी गुप्त औं । अध्यानकत् चुनिवित्तने स्वध्यकृति विस्तान महान-'बंदे आरमादी बात है कि बाजनेन अब साने स्थानक आ गर्न है।' कर क्या स्थेनोंसे इन्तरी कुलल कहन और क्रमंद्री शुक्ता । के परमारके केना काइनि भई से, जिर में का एवं जो चेपन है पहर प्रतिक में उसके इपलेगोल प्रतेष को है। करावरों ने वह निकास और सम्बन्धिक क्रमान भारतेमाले हैं ( स्थान ! की सम्बन्धिक सभी केंग्रजी करी की देखा। इन्हेंने अपने कालको रक्षणी प्राप्त करके भी तक मेरे हैं अभीत कर है भी। मैं सक इसमें केंच हैता करता का का कभी कोई भी दोन म क शहर. बिसरी हुन्छी किए करी। में करन सहरेगर कर देशन नियोकी सहस्था करते हैं। प्रकारने भी इसकी निवासने

क्यों जो क्यों। वे समझ क्येंकि क्या-स्थार क्यों है। सामानिकांकी स्वतिनोधि पहले पुलीवन और सामित रिया कुछ कोई भी कुछत यह नहीं है। कुछ और रिकारोंने रिक्षी हुए इस पानकों के सोनाओं से की कैसी महारे को है। यूर्व कृतिक सम्बाधि की की जान कर अञ्चल कर रेज्य क्या अञ्चल है। जिस मुख्यिको पैके अर्थुर, ब्रोकुमा, चीननेत, सामादि, महाल, स्वारेत और राजुर्व सुक्रमांती और है, काका राज्यमान पुरुषे असे हैं। हे देखें कारणात है। जान्द्रीमवाचे अर्जुन सरोत्ते ही समी बैठकर सारी पृथ्वीको अध्ये अधिकारने कर सकता है। इसी ज्ञात विक्ती हो होई की बाला ओड़का दी कैंगे क्षेत्रों करने हे सकते हैं। बीवके समान गहावारी और हरीको प्रकार करनेकाल से कोई है है जों। आके साक बंदी के दूधर को बहु मेरे पूर्वीको बालका पाल बार कारेन्द्र (-सकत् हर में को दूरों हर की सकते। सर्वातक नकुर और सहोव में सुद्धांचय एवं कामान् है। बैसे के बाव प्रक्षित्वेचे सन्द्राव्ये जा करें, इसे कामा वे देनों नहीं समुख्येको नीचित नहीं कोड़ सकते। प्राच्यान्यक्षणे के कृष्णुत नामक एक केटा है, यह बड़े बेनले युद्ध करता है। बारकोशका राजा किया भी अपने क्योनक्षण क्ष्यानंत्रा



स्थापमा है; सूना है वह पुनिश्चित्वत वहा अला है। प्राथमकोत्तवा ध्या की बहुत-ते तीरोके स्था काम्यानीकी

स्वात्रकाचे रिजे अस्या है ! सार्व्यक्ष में रूपकी आपीक्षणिक्ष्में रूपा ही हुआ है (

"कुन्तीकार पुरिक्षिर को अर्थात, Hairster और बारकार है : प्रायुक्तम से उन्होंने किसीबंद प्रति किया है नहीं ( बिज् क्योबनरे उनके स्वयं की क्लामित्या है। मुझे तो प्रय है कहीं से ब्लेक करके देरे पुत्रोंको असकार भाग न कर क्रमें । मैं राज्य मुभिद्धिरके क्रोपसे जिल्ला कृता है उतना भरा चुते बीमुरमा, सीम, अर्जुन, ज्युत्रम और प्रमुदेशने भी नहीं है: क्योंकि क्यिक्रिर यहे क्यानी है, क्योंने निकासकृता mperion पारन किया है। असः से अवने पनमें जो भी संबाह्य करेंगे, व्या पूछ होका ही होगा । पान्कव ओक्रमारी अपूर केन रहते हैं। इन्हें अपने आजाके समाप चानते हैं। कुम्बर भी बड़े विक्रम् है और सहा पान्क्रमोके दिलसाधनमें लगे रहते हैं। ने चरि स्तिनके लिये कुछ भी कहेंगे में चुधिहिर चान सेने; वे प्रकारी बात नहीं दान एक्टो । ह्याचा । सुध बही केरी अंबरके परप्यको और सुक्रमचंत्री मोरोको नमा बीक्स्स्स, अवस्थित, विश्वाद एवं क्रीक्सीबेट पाँच मुलोको भी सुनात प्राप्त । वित्र राजाओंके कथारे सारामुक्ता से भी भीता हे, बताबीर करक । जिसमें बारावेडियोका है। हे, परस्पा क्रोप का मनगढ़क ने क्ये और बद्धका कारण भी प्रपतिकत र होने करे—देशों कहा करती सहिते।"

# **उपप्रव्यमें** सक्षय और युधिष्ठिरका संवाद

वैत्रायसम्बं कार्य है—एका क्षाराहुके कवा कुथार सहाय अध्याने निर्माणके तिथे अध्यानमें नाम । वहाँ महैकार कार्य महोत्र कुर्मीनका राज्य कुविद्वित्यां जन्म वित्रा, इसके यह जस्म होका बहा—'कार्य ! वहे सीमानकी नाम है कि अपन अपने सहायकोके साथ अप सकुवार दिवाणी दे के हैं। अधिकारणका राज्य कुराहुने आपको मुस्तार पूर्व है। धीम, अधुंध, मधुना और स्वादेव के कुजारकुर्वक हैं प ? सामातांचा अध्यास करनेवारी चीरकार राजकुर्वक हैं प ? सामातांचा अध्यास करनेवारी चीरकार राजकुर्वक हैं में अस्म है प ?'

रक वृष्णिकं कह-स्ताव ! तृष्णा काक है, तृष्णे विस्तार आव हमें वही प्रसारत हूं । इस स्पर्न व्यवस्थित साथ वहीं कुरतायूर्वक है । इसने विसाध विकासित कुरता बहो, क्या उनका इससे मेंगर पूर्ववर बेह्या है ? अपने पुलेसहित एका कृतक इसने बहुताय बहुतिक से कुलताने हैं न ? सेव्यय, पृत्तिका, राजा आध, पुलाहित क्षेत्रावर्ष और कृतकार्य—के अक्रम बनुर्वर भी साहब है न ? करवर्षकारी साई-वृद्धी विक्रमें, माहाओं तथा स्कृतेको तो कोई वह नहीं है ? समेई कमनेवाको किर्मा, हासियों, हुद, सानवे, वहींने और केरो निकायरमामसे रहते हैं न ? हासा कृतिका रहते हैं में की ब्राह्मणीको पृति ही की, असको क्षेत्रम को नहीं है ? क्या कभी सम स्वीप्त इसको होन्सर कृतदाह और दुर्वोक्तमो पृत्ते हालामान देनेके विक्री कहते हैं ? राज्यों स्पृटेशके दानको देसकार कभी उन्हें सीरामणी अर्थुनकी भी यह अती है ? क्यांका कभी उन्हें सीरामणी अर्थुनकी भी यह अती है ? क्यांका अर्थुन एक ही साथ इससह क्ष्म स्वाप्त संस्थात है । भीरामेन भी उस गड़ हाकों नेवा है को को देसकार इस्तुसमूह स्वीप कहता है । ऐसे पराहस्मी भीरामर भी कभी वे सरका करते हैं ? महावासी एवं सामुस्त क्षांका अर्थि कम सोटे क्षियारसे बोक्काशके सियों कनने सभी और युद्धने प्रपंतित हे उत्यूक्तेंकी बैक्ने का पहे, उस स्वयूक्त भीगरंग और अर्जुन्दे ही उनकी रहा की भी—बह बान उने बाद अर्जा है या नहीं ? सहाय ! यह हमलोग कुर्वेशनको सर्वाचा पर्शाका व कर प्रकें से केवल एक बार अस्की पहर्युं बार हेनेसे उसको बक्नो बरना बर्किन ही जान बढ़का है।

स्त्राण कंत्रा—गाजुनका ! आपने को कुछ कक है, वित्यकृत श्रीक है। वित्यको कुछार आपने पुत्री है, से उपने कुछोड़ स्वाप्त हैं। कुर्वेक्ट को स्वयुक्तिकों की कुछ करण है, किर सहायोकों के कुई कृति केट कीन सकता है? वृत्याकु अपने पुत्रोकों आपके हैं। करनेकी आहा कहीं हो। में के उपने हैं। करने कहीं अपने हुए सहायोकों कुछारे करणर सुन्ते हैं कि 'पित्रवीद का मोतकोंसे चारी पाप है। चुड़ाकी कर्क व्यवकार राजा कृत्याह कीरावकी असून, न्याकरों कीट क्या राजकीर महान-सहायकार सहा है जाता करते हैं। अञ्चलका है अस्त आप ही अपनी कृतिकों कियार करके कंद्री देशा कर्न विकासिने किससे कीरण, साम्यक तका कुछानकींकोंको हुछा वित्ये। कहीं को सामा अस्तिकों है, उपने कुछा असिने। अस्त मानकों और पुत्रोकों की साम स्वीपने किस आपके काम कुछानों को सीन्ता केना है, उसे कुछा असिने।



वृधिहरने वदा—स्तुत्व ! वहाँ व्यववान् होकुम्ब, सारविक वचा राजा विकट सैन्द्र हैं: व्यवक और सुराय-स्था एकविन है। अब वृधरकुका और कुराओं। सहाय बोरय—शत्क कृत्यकु बुद्ध बही, द्वारित व्यक्ते हैं। अहाँने कही जाकरोंके साथ रूप विवार कुराका पूछे बही

नेक है। मैं सम्बद्धा है पर्य, का और बुद्धमाननेक साम राम पुनिष्ठित हुन कारणे पांच करेंगे। इसमें वास्तुनेका हित होता। कुलोके पुत्रे । कान अपने दिना सुरीर, नाता और सराच्या आर्थिक कारण सम बनों एवं उत्तम नुजोबे चुक है। तरण कुराने अवस्थितीया मान हुआ है। आप बढ़े हैं कुरुकु जोर क्षत्री है। सम्बद्धाः अंब्रोची, शीलक्षत् जीर क्रमेंकि परिवारको बाननेवाले 🖁 । बायका इक्क सामनुवासे चरिएमं है, अब: आक्रो बिसी कोटे करोबा क्षेत्र शास्त्र नहीं है। यह अध्यानिये बोर्ड क्षेत्र केल से व्या अब्दर क्षे मान: एक स्पेद क्यारे वाल्य दल दिन समाव है? जिल्ली करनेने प्रकार किनात विकासी है, सब प्रकारसे करणा अने होता है और अनाने मालका हुए देखना पहे. कर पुत्र-किये करोर कन्दि क्येन सम्बद्धार पूरू ज्ञान हो सकता है ? वहाँ से अब और प्रक्रमा क्षेत्रों समान है। भाग, कुमांको कुछ अन्य आवाद पूर्वभोके आवान हैशा वार्य बराजेके रिको केनो रेक्स हो गरे यो य कर्मका स्टानक है, य अर्थका । वर्ष कार्कर कार्तुक हैं, अवने वृद्ध बहुलतान हुया है; हुन राज्यों अन्यन् करके में अन्य करण प्राप्ता है। क्षय जीवारत आपलेगोव्ये प्रत्याचे आवा है; वेरी प्रार्थनावा व्यान केवर को कर्ष करें, मिलने कोरव और शुक्रवर्गधार कार्याल हो । जुड़े कियाल है जनवान ही कार्य और अर्जुर केरी प्राचंक कुमारा नहीं सकते; और से क्या, मेरे प्रीपनेवर अर्थन अर्थने अर्थनमा है सन्तरी है। हैसर प्रभावतर ही मै सम्बद्धेः हैन्से प्रकास करता है। सम्बद्धे क्रान्तिकः सर्वोत्तर काल है। चीलपिकाम और एवा क्लाइको मी पही क्रमानि है।

वृत्तिकार का — स्वतृत्व । तुत्तरे ऐसी कौन-सी कार सुनी
है, जिससे मेरी मुक्कि इका सानकर मनमीत से छे है ?
वृद्ध करनेकी अध्यक्ष उसे व करना से अध्या है। स्विक्त्य
कारन कार को कौन कुद्ध करना करेगा ? इस बसको में
की सन्तानक है कि किन कुद्ध किने मारे केड़ भी साम है से
की कुन करना कहिने। स्वान ! तुन कारों है इसने करने
कि साम है सरका है। किन भी सुन्तरी कारका सवाल करके
इन कौरकों अपराव अप कर सकते हैं। कौरधोंने कुने
कार नेव कारका मा को साम है। सुन्तरे कारका साम हम से
साम कैस की को कार्य किया और एवं समय इनकों में साम प्री
साम कुने केस है है सकता है। तुन्तरे कारवानुशार इन प्रवास (किएके) में केस है राज्य को और कुनेकन इस कारको सोकान करके क्यांका राज्य को और कुनेकन इस कारको सोकान करके क्यांका राज्य को सीर कुनेकन इस कारको

सहय बोल-अक्ट्रन्ट्र ! आस्त्री प्रकेष चेहा करिय अपसार केती है, का कर रहेकने अधिव है और देखें की स को है। कार्य का जीवन अभिन्न है, नकार्य इससे महान् स्वत्रकी जाति हो स्वतनी है-इस व्यत्यो सोक्यत अन अपनी बोर्लिका नाई ने करें । अजनावारों ! बोरे केंग्स बढ़े किसे बिना ताचे अपना राज्यकान न हे सके हो भी में अन्यक और पुणितांची एकाओंके राज्यों और प्रोपका निर्माह कर होना अच्छा प्रमालक है, यांतु बुद्ध करके प्राप्त राज्य या लेक मी अच्छा नहीं है। मनुष्यका मीकर बहुत कोई स्वयक्ता स्वनेवास्य है: यह सहा औरत होनेवास्य दः समय और पहल 🕯 । अतः भाषामः । यह नरभोहर बुच्हारे महाने अनुस्तर मही 🛊: तम बुद्धकर्यी पापमें प्रकृत यह होओ । इस मनवुष्टे जीवा धनकी तथा। बच्चार्थ कारनेवाली है, कार्य पीतलेवर वर्यने कावा आती है। यो धर्मको अञ्चीकार करता है, बढ़ी प्रान्धे हैं मोरोकी हुन्। एक्नेक्स मनुष्य अर्थनिर्देशो 💥 हो कहा 🕯 । को प्रमुख्ये और कर्मकरक्या मान्य करते। प्राथमें प्रकृत होता है शब्द औ जुल्लाके बारण परल्वेकार अधिवास काता है, यह अप्राणी मुख्ये पश्चात बढ़ा कह केपना है। परलोक्स कार्रेशर भी अपने पहलेके किने हुए पूनव-पानकर्या कर्मेश्वर भाष नहीं होता। यहले तो यथ-यून्य ही यरपके पीड़े करते हैं, जिर समुख्यों इनके पीड़े करना बहुत है। इस सरीयके राते हुए ही कोई भी समार्थ किया का सबसा है, नरवेके बाद कुछ भी नहीं हो सकता। आपने हो परलेकार्य कुछ केंग्सले अलेको एवन कर्न मिरने हैं, किनकी सरपुरुवोने बढ़ी प्रश्नेसा की है। इसनेका भी बहि आकर्तनीको थड मुजुल्पी पायकर्य ही करना है, तब हो विश्वकानेंद्र हैंग्से आप बनने बाबन हो-न्यां अच्छा है। बन्धासने दःस से होगा, पर है का वर्ष । कुलीनकर ! आधवाँ कृति कभी भी अधर्मने नहीं लगती, जापने इतेकाक क्यी क्यूकर्त किया हो, ऐसी बात भी नहीं है। जिर कातुने, क्या कारण है जिसके दिने आप अपने विकारके क्रियोश कर्ण करक भागों है ?

वृधिहिरने करा—१८५व | तुकार का कहन किनकृत दीक है कि सब प्रकारके कमीचे वर्ध है केंद्र है कोनू में के कार्य करने जा रहा है, का वर्ष है का अधर्य—इसकी व्यक्ते कुछ अधि कर तमे; किर मेरी निष्य करना । कहीं को अवस्थे हैं वर्षका कोला कुछ लेता है, कहीं पूरा-का-पूर कर्ण अधर्षक क्यांने दिलायों देशा है और कहीं क्यों अपने क्यांको ही जान है। विकासनेन अपनी बदिले इसकी परीक्षा कर होते हैं । १९६६ कार्यक वित्ते को बार्ग है, बढ़ी इसीके लिये आवर्ग 🏗 इस अवहर कहारे का और अवर्ग निव्य युनेवारे 🗓 कर्मार अर्थातकरूपे इसके अदय-बदर भी होता है। से बर्ज विकास किये कुछ बताया गया है, यह उसीके किये प्रकारक है। कुरावि द्वारा उसका व्यवहार से अविकास है। अभिकास साहर राजंधा जा हे सानेदर जिस बुलिया आसद लेनेसे जीवनकी क्या एवं कामजीका अनुक्रम हो सके, उसका आसम लेख व्यक्ति । के अपनित्रक्षर न क्षेत्रेयर भी का सम्बद्धे वर्षकर पालन करता है एका को स्थानको आधीतको होपार भी तदनसर वीविका नहीं कायता—ने सेनी ही निकाके पता हैं। वीविकाका पूर्व सावन न क्षेत्रेयर प्रकारनेका पात न हो प्राप्त, करतेर विको विकासको अन्य करतेको सनियो सोविका weiner mie fieb melber meben feute fiert fi. क्र व्यवस्थाने अनुसार पति तुम नुहे किंपरेत आकरण करते देको के अध्याप निष्क बारो । समीबी पुरस्कोको सम्बाधिके कारके वह क्षेत्रिक क्षेत्री क्षेत्रक सेनेक वक्षात सरकारीके व्यक्ति विश्वत लेकर सीवन-विवोध करना व्यक्तिने अस्ति दिसी प्रकारक देख कियार है। एता जो साहण नहीं है तक formal produced from tall for track first अपने-अपने कर्नीका चानक के उत्तव चान गया है। मेरे विका-विकासक तथा उनके भी पूर्वज विका भागीको जापसे रहे. एक बहुबरी इन्हारते से जो-को कर्म करते रहे. में भी इन्हीं वाणों और बाओबो कामत है, इससे असिरिया मुर्वे । असः मै नारितक जो है। सहय ! इस पृथ्वीयर जो एक की बन है, केव्यको, प्रजानिको तथा सहाजीके स्थेकर्व की जो वैक्य है, हे बच्चे पहे प्राप्त होने हो तो की मैं उनों अवर्पसे लेना नहीं कारेग । का कामान् श्रीकृष्य हैं, वे समझ धर्मके प्रात्त. कुकत, नीतियान, जाहरूपक और वनीची है। को-को क्लाब्स्य राज्यको तथा फोलबंक्स्य सारस्य करते हैं। बदि में सन्धिक भीत्रान अवका युद्ध करके अपने वर्षने प्रकृ हो निन्द्रका पत का का है, तो वे पगलानु लाहुदेश हुए विश्ववर्षे रूपने विकार प्रकट करें: क्योंकि इन्हें केनें! पश्लीका किन-सम्बन अपीड़ है। ये अलेक कर्मका अनिय परिणाय न्यन्ते हैं, व्हिप्टन हैं: इनमें बोह श्वरत कोई नहीं है वे उन्हों सबसे नक्कर द्वाप है, वे धूनको बता कारी नहीं क्या क्याना ।

#### सञ्जयके प्रति भगवान् श्रीकृष्णके वसन

परवान् संपूर्णने का —स्कूष ! किस अक्षा में परवानों की विनासने भवान कहता है, अपने देवर्ग दिवान तक उनका किय काना कहता है, उसी अक्षा अनेको कुछेते मूक राजा कृताहके अन्युक्तको में सुन कावन करता है। मेरी स्वत्रका की हका है कि देनों क्या क्षा भी। उसा पुनिद्दितकों भी जानित है किया है, का करा हुन्ता है और पन्युकोंके समझ इसे स्वीकार भी करता है। वरंतु सहाव !



वानित्वा हेना करिन है जान दक्षा 🖫 अब व्यवह अपने फुरोसहित रहेपावस इतका राज्य भी क्रूब रहेज काहता है, के करण कैसे नहीं पहेंगा ? तुन नह करते हो कि सहसे क मुधिहिरते वर्धका स्रोध नहीं हो सकता; तो भी इत्तरहते हत्य अपने वर्षका पालन करनेवाले सुविद्वितके वर्णलेककी संबंध तुन्ते क्यों हाँ ? वे से पहलेसे ही प्रस्थान निर्मित अनुसार कुरुवर्ष का हो है। अपने राज्यपालको प्राप्त करनेका को के अवास करते हैं, इसे तुल कर्मका लोध बच्चे कहा हो हो ? इस प्रधानके नाईकानीयनका भी विश्वान से है है; हुई क्षेत्रकार वनवासी क्षेत्रेका विचार से हाक्काने क्षेत्र काहिए। कोई से गुराधवर्षने सुन्दर सर्वयोगके इस वास्त्रेतिक लिहिन्छ। होना मानते हैं, कुछ लोग कर्मको जानका जानके छन्। ही विश्वितक प्रतिपादन करते हैं, परंतु काले-विशे किया विश्वीतके भी मूल नहीं निट समाती । प्रतीसे सहनेका अनीके रिको ची गुरुकोके का विद्यासक विकास है। इस अन्यकेशकी विकित्स भी करके साथ है विकास है; इस्त्रांब किया हुआ बर्ज रुक्तित हो जाता है, क्यान्कारक नहीं होता । इसमें कर्मकी

मानका केवल संस्कृत आदिको है को शीप जान पहली हैं. ने कुर्रंत है: उनके कमनका कोई सूच्य भूति है । शक्तवं ! सुप के रूपूर्ण रहेकोचा वर्ग मानो है। प्रकृत, कृतिव और वैद्रकोवर कर्न भी तुन्हे अहात नहीं है। ऐसे झानवान् होकर ची कील्लेके हिन्दे हुए हट क्यों कर यो हो ? एका परिस्तित क्रमांचर स्था माध्यम करते 🕻 स्थापेक और राजसूच यानेक अनुसार की इन्होंने किया है। इसके रिया बन्त, कम्प, इ.चे. केरे, रव और एक आदिते नी कर्नाओंत सम्बद्ध है। क्षानुक कामपीनुस्तर कर्मकाल प्रस्तन करते हैं और क्रिकेटिक बुद्धकारी प्रकृष क्रेकर पनि देशका पुरस्को भी अंदर है जाने के कुमारे का पूरव काम है भागी जावती। भी तुम तम कुछ क्रोकार क्रांस धारण कानेको है वर्ष काले हे से व्या कारते कि युद्ध करते से समाजीके वर्षका बीक-बीक करन होता है का चुट होड़का जान वानेते ? इस विकास में कुलता समान सुनना बाहता है। पान्यमीका में क्यापान करेंद्रे अनुसार करें बाह्य हैना पाहिने, को कृताक प्रकार प्रकार रोगा प्रकार है। इसके का समक्ष और व के अर्थिक स्थान है सो है। कोई भी अस्तिन एकार्सकी और दुवि को कारका । सुदेश किये सुकार कर जुल के जाय अवका कारने जान्यर करम्पूर्वक कारा करो-धेनों है दसाये का निन्द्रमा पत्र है। महत्र । दुन्हीं क्लाओ, इनोंकर और का कोर-सम्बन्धनेत्रं क्या अस्तर है ? क्योंकर से स्रोक्त प्रवासूत है के हैं: जाने के इसमें राज्यका सम्बाध किया है, उसे लेको सार्थ वर्ग करता है और स्टब्बरे इंक्सिन सहक है। किन् सम्बन्धिक राज्य को क्रोहरके करावे रका गया था, को कौरककोन देशों का समझे हैं ? कुर्वेशनी विन्हें पुरुष्टे केले एकटिक किन्छ है, से मूर्च राजालोग क्रमेक्ट ब्रह्मक चीतके केनेने आ कीते हैं। अञ्चल । वरी सचाने कोरबोने को कर्मन किया था, उस महत्त् परस्कारंतर भी हुष्टि खाये। चन्यानेको नाटि नही सुत्रीत्य होनको स्वस्थानको अवस्थाने तपार्व सर्वा गर्व: पर चीच आहे हवान क्रीस्ट्रेने ची ज्ञान्ती ओको क्येक्ट विकाली ( उस समय महि सारकारे लेकर कुरेक्ट सभी करेल इ.काररनको बेक देने से येख किय कर्म केल और कुरराहके पुलेखा भी द्वित होता। सम्बद्धे व्यक्त-से राज एकतित थे, अंतु क्षेत्रतावक विकास भी उस अन्यानका निरोध नहीं किया का राखा ( वेज्ञार विद्वारीने करन को क्रमान्त्र वृत्ते द्वीकरते परा क्रिया वाः सद्भव ! काराओं वर्षको किया एउन्हों ही तुन इस सन्दर्भ ककुरका भूजिहितको है क्लंबर ठावेश करना कहते हैं ?

अपने अपने परियोध्ये संबद्धते प्रधा क्रिया । अरे पार्ट विकास सरमान सामा पदा । सपाये का अपने बक्रोंके कर कही भी से भी उसे तका करके करका करने कहा-'बाइसेनी ! अब हैरे दिन्ने इतर्थ की की है, कार्य करवार इन्नेंबनके प्रकारने कार्य का । ऐरे परि को क्राफेर्न कर कुछे हैं: क्षत्र विक्री कारे परिची पर है।' यह क्षत्रक करने क्षत्रेके लिये बहरा परावर्ग बहरा बह से थे. उस समय द:सामाने पर विक्रमें पहले पर पहले-'ये प्रमन्ते-एव जंताव अब या है गये, विरव्धातके हैंसी सकते वर्तने कि पते। शक्त । अवतिक अर्थे, जुल्के प्रत्य निवने निर्मात करन मते गये थे. में का हुने हात है से भी का लेकड़े हुए

हैं गर्देरे का स्थाने कावर कहा कुकर कार्य किया, जो कि । कार्यको कमनेके हिन्ने में इस्ये हरितवपुर करना कहता है। की पानकोच्या कार्य का निर्म किया है पहेरतेके लाव र्जन्य करानेने सरक हो सका से मैं करने इस कार्यको बहर है पूर्वक और अन्युक्तकारी एन्स्ट्रीमा और गोरल भी बीतके प्रतिके पार कार्यने । परित्य सामानोके समान है और क्या कार्य अस्ति स्थाने स्थान । जो स्थानीका स्थान तेले किया स्थाने पर जी स्थानी। पायान साराहकी रोमार्क रिप्ते भी रेक्स है और पुत्रके रिप्ते भी। उस राजाओ वे अका हते. को लेकर को ( क्या क्या असरव क्रमेक्टरे हैं: कहाँ। ये प्रतिकारी केटर है से भी साँप करनेको उसक है। इस वे पन बार्ते ब्राह्मको अच्छी हरह प्रमुख हैया।

## सक्षयकी विदार्ग, वृधिहिरका सेंदेश

स्थापने पदा-पार्थक्षका । जानका कार्यका हो : जब में जाता है और इसके रिप्ते आवन्त्री आक्र प्रकृत है। 🕸 मानारिका अवस्थित प्राप्त कालीके को कुछ बंध किया, इससे आकर्ष वक्ष से भी हम ?

क्षेत्रेत केले-स्थार ! जाते, तुन्तर करणा है। क्षम हो काची हुने बाह्य देनेकी बात होको की नहीं। सनक मोत्रा तथा इन पान्यानांग पानो है तक्तर इस कह है और तम किसीके प्रकारती न होवार सवास्त्र हो। हम विकासीय है, एकार्प नमें करपानकारियों होती हैं। हम शीरकार और संक्षेत्र है, इसरिये को किर समा है। इन्हरी गाँउ कभी मोहित नहीं होती; यह जबन बहरेनर वी क्ष्में कभी क्रोम नहीं क्षेत्रा : सक्षम । इस इसरे क्षम हो और मिताके सामान का कार्यान अपने हो तथा अर्थनके क्षेत्र कराउ हो । यहाँ पासर मान्यानदोश प्राह्मणे, संगातिनो ३०० मनकती प्रवस्थिते और ध्येन्को जीवीते नेव असाव **ध्र**क्षा । बाब्दी को लोग हो, क्लो कुक्ल-स्टामार कहन : मो प्रमान पत्तन करो हुए राजने विकास करो हो, हर इतियों और नो राहके पीतर जायर करने मीनिक जन ये हो, उन केलोरी भी नेरी कारत काकर उनकी भी कारत पूर्ण । जावार्व होकरे प्रकार कहना, अवस्थायाकी कुतार कारा और करावार्थि का कार्य केंग्रे ओसी उसका पारनवर्ग करन । विक्रों सुरक्ष, पुर्वशासक अपान, स्पन्न, बद्दि, जील, जलकार, राज्य और कैर्प आहे. सर्पण विकास है, इन प्रीकारीके कार्योंने मेर नाम रेकर प्रकार बहुन्य । तथा वृत्तराहुन्ही प्रकार बनके वेटी बहुन्त

बहुद और क्रॉक्ट, इ.स.स्ट एक कर्न आदिने के कुसल कुर : इरोधनो पामकोरे पुत्र बारोपे हिले किर बहाति, प्राथमक, केम्बर, सम्बद्ध, क्रियर्व तथा पूर्व, जंतर, पश्चिम, क्षील को कांग्रेप अन्तरिक राजाओंको क्षारीत किया है. करने के लेख करवाने सीता. बार्ताल और अक्रवारी हो, कर तको से पुरुष कृत्य ।

का काम । उन्मेर एड्रिकर छैर्परची विद्राली इन्स्पेनोके हेची, नूच, काली, रिशा, मारा, विक और प्रची है, जन्मी भी नेर्रे ओली पुरस्त पूजा। पुरस्कान्त्री के सर्वपुरस्तानक व्यक्ति क्षेत्री क्षेत्री कराई है, इर समसे विकार स्थाप स्थाप सकत रक्ष को को स्थापे पहलेको विक्रों है, का सकती कुमार कुरू । ये सुन्दर क्रोसियुक्त और अनेतर्गंत आवश्याती कियाँ वर्गाता राज्य सारवानक-पूर्वक प्राथकांका फाल से धर पति हैं र ? उसी का धी कुरत—'देवियो ! हम अपने प्रकृतिक साथ सम्बद्धानम क्या कोमार वर्ताव से करते हैं य ? हमारेग्रेक हम्हरे पति निया प्रकार प्रताप भी, बैतर ही धनकार से फारी साती के भ ?"

**चेक्क्**रोते क्षान-'कृत्यहुक क्षेत्र प्रचीत सदायाच्या पारम से बारत है व ? हमें २०८ जवरहें धोश तो केंद्र है व ?' कले-कुम्बं, लैगबे-लुले, रुपि तथा मैंने पहुच्चेते थी, विशवत हुनोबन पारन बरात है, कुरात पुरुष। तुर्वेकसी स्कृत—'मैरे कुछ प्रदानोंके तिथे वृतियाँ निवा कर रही थीं, जिल्ह क्षेट है ल्वारे कर्मकरी अनेके साथ दीक सम्बद्धार नहीं करते। ये करको पराः पूर्वकर

40.00

उन्हें कृतियोशे कृत देवान प्राप्त है। इसी अवस् राज्यों वहाँ किसे अन्याया-अतिथि कारों हो उच्च का दिल्योंने मे-वो कृत जाने हो, उन राज्यों कृतक पृत्रण और नेरी कृतक भी उने सुन्त केता। कारी कृतियाने नेती वेज्ञातीया संस्था किया है केरे इस पृत्रीया कारों के हैं, क्यांने को है हिस है। मेरे पास से सहस्था नात कारोंके दिनों हम वर्ग है सहस्थानात् है। स्वाप्त ! कृतियाकों हम जा नात की कृत हेता—'शुक्त कृतकों सो जा कारक प्राप्त की स्वीधा मोर्ड उत्तर की है। इस हेते की है, को कृतका कृतका जा दिन कार्य होने हैं। कारों की है, को कृतका कृतका (सिस्टी) का राज्य सुने हैं में जनका कृत को।'

्यान ! इस्ता-अवस्थान, वाल्य-वृद्ध, विलीय कार वाल्यान्—सम विश्वताने वाल्ये हैं। में वीलय-कार्या विहास कार्यन्त हुए साम्यो नेते क्षेत्र विली कार्य केंद्र । किर राज्य कुराह्यो कार्य कार्यर कोई प्रणान कार्यर केंद्र ओरही कुराह्य क्ष्रांचा और का्या 'आर्थ्य ही बरावानों पाल्या सुवार्य्य जीवन दिना रहे हैं। जा ने काल्य के स्था सामग्री ही कुराहो को राज्य विलय का । एक कार कार्य राज्यार विहासर अस को राज्य विलय का । एक कार कार्य राज्यार विहासर अस को राज्य केंद्र केंद्र एक्सकेंद्र विलो पाल्या कही है, इस साम ओर विलयर साथ राज्या कीवन कार्याह को; ऐसा होनेसर आस कार्या कहुआंकेंद्र कार्य कार्याह को; ऐसा होनेसर आस कार्या कहुआंकेंद्र कार्य कार्याह कोंद्र हैं।

इसी सदह विश्वास्त्र भीकाओं भी मेरा पान से, सिरा 🖠 और सर्वोर भी।

कुष्णान प्रमाण करना गाँउ वनसे कहरा—'शिक्षणा,} मह प्राच्यका गंग एक मार हम कुष्ण मा, मार्ग्यने हमाने पृष्ट प्रमाण किया है। अस्य अस्य अन्यो पृष्टिके विभागकर ऐसा मोर्गु प्रमाण करियके, विभागे अस्यके स्पष्टे चैत प्राप्तर प्रेमुक्ति चौचन कारण कर समे।' इसी प्रमास मार्ग्य विमुक्तिको चौ कारण—'सीन्य । अस्य पृष्टिक्तिक विस् साक्ष्रेणको चै।

इतके कर कृतिकरों की कर-कर अनुस्थ किया करके कार-भूत सौरवेके सहस्य काम न को । प्रकार कारण मानवार होनेकर को बढ़ाने बड़े-बड़े होया रहा पूर्वत है, क का सभी कोता कानो है। इन्हारी अनुस्तिते पुरक्रमाने al Bublic des masur serus firent fires, per अन्यक्ष्मा में इस्ते कोई समार माँ किया : किट अब सर स्वयं श्रीवा चल हेरे । इस इसके कारी जनने लेक्ट्रक वृद्धि प्रक को । ऐसा कानेसे के सामित क्षेत्री और परसर के में कर रोग । इस सार्थ बार्क है, इस इस-रवेगोको राज्यका एक ही दिला है थे। सुनोधर । जीतका, कृतका, पालनी, पारमाका और पॉकर्व कोई भी एक तरंप है है, फिल्ले इमलेगीक पुत्रकी सब्दर्भ के कन : इस क्षेत्र व्यक्तिको पनि है गाँव है से, जिसमें करिए करी थें।' स्थान ! में क्रांति रक्तेंमें भी कार्य है और यह करनेने भी। प्रमेशन और अर्थनाकार भी को क्षेत्र का है। मैं समयानुस्तर कोपर भी हे स्थान

### सञ्जयकी धृतराष्ट्रसे भेट

विकासनार्थं कारे हि—एकन् 1 व्यवस्था कार पृथितिन स्त्री आसा से सम्बन्ध व्यक्ति करा विका । इतिकाद्वाने व्यक्तिकार कार प्रीति हैं। अन्यः पूर्णे क्या और हारकार्यः केया—— 'आरी ! तुम पंचा कृतद्वाको मेरे आनेकी सुक्ता है से, पुले इससे आक्ष्य आकारकार कार्य है।' हारकारने कार्यः कहा—— 'एकन् ! प्रमान । प्रमुख आकारे निकाली क्षित्रे हुन्ये हुन्ये आक्षेत्रे, कारे हिस्से क्या आहार है ?'

कृत्युरि दश—स्थापको अवस्थापूर्णक चीतर से उपले; पुत्रो तो कभी भी करने निकारोगे स्थापट नहीं है, फिर पह इरकानेपर क्यों सदस है ?

तरपद्धार समानी सदल पानर स्वापने अन्ते महत्त्वे

अने किया और विवासनार केंद्र हुए सम्बद्ध करा का इस्त चेक्टर का—'रावर् । में बहुत जानको जनान काल हूँ। जन्मको किरावर वहाँ जाना हूँ। जन्मकार काल मुख्यिको जानको जनार कहा है और कृतना हुती है। अपूर्व कहे जानको काल अन्यत्त कृतिका समाजार हुता है—जान जाने पुत, जाते, विव, नाते क्या आसितोके प्रात आनवार्षक है न ?'

कृत्युने वहा—साव स्थान । वर्धसम् असने पन्ती, पुत्र और महानोबेंद्र साम सुरक्षानों से हैं ?

कार केरा—कार् । सुविद्धिः अपने वन्तिकेरं साथ-कृत्रसम्बद्धेय है। जस ने अवस संस्थानय केश कार्य है। से विद्युक्त प्रकार वर्ष और अर्थका सेवन करनेवाले, जनसी,

विद्वार तथा पीतवार है। बिद्ध हुन यस अवदे क्वीची और से हुए बार्च । वर्ष और अर्थने कुछ के हेतु पुरस्तेक मन्त्रपुर है, जारते विरायपुरत विकास कुनुस्य सर्वात है। प्रायोह मारम इस लोकने के कुछाएँ जुल निष्य हो ही चुन्नी, बह पाय करतेकार्थ भी कुन्तरा विका को ब्रोडेन व तुम अपने कृतिक कार्य हेकर पाळाबेके किया है साथ एक अपने अधीन कर लेना चाले हो । उत्तर । उत्पर क्षत पूर्णांगर वक्ष अवनं कैलेक: वह वर्ण कुले केल कार्यन पर्ध है। पुरिवर्धन, इरायादे कार्यने स्थाप, कर, र्रीर्वकारतामः वेर रक्तेन्यके, अञ्चीकाने अधिक्या, परकार्यान और अदिद्व प्रकॉन्ट अलोज्ये क्र पहले है। से महावारी कुलने जला, भारता, पहली, निक्रम् और विशेषिक है, यह अरुवांट अनुवार क्रायांको अनु करण है।

<u>श्</u>यारे वे प्रणीलोग तथा कार्योंने तमे कुकार विका एकरित हो बैठक किया करते हैं, इन्हेंने बावहबीको एका र देनेका को प्रकार निवास कर रीवन है, का कोरवोंके सकता है जारम है। की अपने काले सरफ क्रीमोक सम्मक्ते ही निवास होनेवारंग होता हो हारका साथ सरपाय सुविद्यार

इक्ते है जिस्स रहका इक्ता कियह भी करन कोंगे। इस्तीन्त्रे संसारमें कुक्करे बढ़ी निक क्षेत्रे। कार् । इस क्लाहों जिल-असेल, स्वय-३:वा, जिल्हा-इक्के**ल**—ये मनुष्यको जातु होते ही सहते हैं। परंदू निष्य स्थापनी होती है, के अन्याप करता है करत प्रशंसा की सरीकों को करते हैं. विकास मन्त्राम अकृत करण होता है। जनसंदार्थे निर्देश र्वजनमें कारण में हुन्तरों हो निष्य करता है। इस निर्वणके पारम निवास के प्रमाननीया कार्यका क्षेत्र । पारे संस्थाने इस अवहर पुरस्के अस्पेन होने को मेरे कुमको हो देखा है। तुस्से हेते ह्येनोच्ट संबद्ध किया है को विद्यालके योग्य नहीं हैं; सब्द क्षाने विकासकारिको सुन्द्र विका है। इस पूर्वनाराधे प्रतरण अस हुए पुनर्केकी रहा करनेने कपी सबर्व नहीं हो सबसे ( इस संस्था रचके बेरले बहुत हिल्ले-क्रुप्तेचे बारण में बब्ध गण है भी जात से से निर्माण सेनेत किसे पाते। प्रात्मान कर्या बोला का क्याने एका होने, उस प्रका स्कृतकानुके पाता सुनदा :

क्रायुने का-भूतपुर । वै अत्य केत है, हुन करन सक्तर क्रमा करे। जमेरे सन्तर्ने ही तुन्हरे कई हर पुरिवीतके स्रोतको संबंध स्रोत प्रति।

## विदुरजीके द्वारा मृतराष्ट्रको नीतिका उपदेश (विदुरनीति)

(पाला संघाप)

रैजनानार्थं रुप्ते हैं—स्क्रुपंड को क्रोप्त स्क्रु पुनिसन् रूपा कृतवाले प्रश्याको स्कूर-पे विकास मिलना पहला है। जो को फीत कुछ राजने ।' कुछकुका मेला क्ष्मा यह कुत मानार जिल्लाने बोल्स-'महानदे । इन्हरे सानी न्यायम वृत्यम् आयते निवन्त चत्रुते हैं।' अस्के ऐस कवनेनर जित्राची राजवातक वात कवार क्षेत्रे-'हरफार ! कुरस्कृतो मेरे आनेश्वी कुळन है हो ।' हरफाररे मानव बहा-'महारूप । आश्रमी महारूपे विद्वारी वर्षा हा पहुँचे हैं, में आपने कार्योक्त वर्तन करना नकते हैं। जुड़े अदार देखिने, जो एक वार्त नात्ता कर ?' कुरुक्ते क्या—'पान्यदिकार, तुलावीं निवृतको नहीं के अध्यो, नुहो इस निवृत्ते निरानेने काचे भी अक्रमान नहीं है।' प्रत्यक्र विवर्णे पास आबार केला—"विवरणे ! जान पुद्धिकर् म्हापन काराहरे अन्यःपुरुषे प्रतेष्ठ वर्धनिके। महाराजने मुक्तमें कहा है कि 'शुद्धे बिहरते निरूपने क्या आकर **न्हीं दे**र<sup>™</sup> स ६—५ स

भीता साधार शिवाले को हुए शामते हान चेतृकार केंग्रे—'महरूक ) में बिहुर है, सामको सहस्रो कहें आया हैं। यदि मेरे अपने पोन्न कुछ नाम हो हो में उपनिवा है, जुड़ी सामा परिविधे हैं स ७-८ ॥

प्रस्ताने का निवृत्ते स्थाप अन्य श<sub>र</sub>ाक्षे कुर-कार व्यक्तर कार कर है। अन्न प्रथमें यह महाराजह चुनिर्द्धानोः कार सुक्रतेना । अन्य में जा पुत्रानीर चुनिर्द्धानो का न का क्या-को मेरे महत्त्वों पता का है और इसीने पूर्व अवस्था पास रखा है। साथ । मैं विकास कारक हुन सर्वत्रक पर पर है। मेरे विने के बन्धारको पर राज्यों, जा बड़ों; क्लेंकि कुर वर्ग और अवंके प्रकॉ रियुक हो । सहस्य नकते पानकोचे नहीं। तीवका आता है, सकते कें करने पूर्व प्राप्त की निस्त्री : सपी इंदिनों निकल हे की है। कार का का कोगा, उसी बारको स्तो हा। समय मार्थ भारत विकास को को है है ए ए--- १२ स

निपूर्ण केले - जिसका कामान्त्रे स्टब विरोध हो गूना वैद्यापारको कार्त है—स्वापार विद्या कृतको कारको | है का सामग्रीन कृति क्यूकार्ध, विश्वक स्था कृत हर

तिया गया है सामेरे, कार्योंको संबंध केरको करने जायनेका रोग राग कारत है। गरेख | कार्य स्थानका भी इस म्हान् प्रोमोसे सामको से नहीं है गया है ? कार्य कार्य कार्य सोमको से आप कार्य करिया को हैं ? ४. १९-१४ ॥

वृत्यपुनी नक्षाः—मैं सुन्दारे धर्मपुक्त सक्षा ध्वानकार बारनेवाले सुन्दा गयन सुन्दा पास्ता है। वर्णेनिक इत राजानिक्ताने केवल सुन्दी विद्यानोके भी धाननीय हो ११ १५ ॥ विद्यानी कोले—बहुत्ताल कृत्यपुत्ता है केह सक्ष्माकी सम्बद्ध



राजा परिवरित होनो स्टेक्टोकेट काची हो सकते है। में आपके अञ्चलकारी थे, या अवन्ते प्रति कार्य केव विन्ता अवन बर्माना और वर्गने वानकार होते हुए भी अधिके अंके होनेके कारण करें पहचान न हके, इसीने उनके विनरेत है गर्भ और जो राजका भाग देखें अवसी सम्बंध गई हाँ र बुविद्वित्ते कुरुवाके अभाव, क्या, वर्ग, स्वय क्या स्टब्स्ट 🛊 में आपने कुम्बद्धी, रक्षते हैं। इसी स्वयुक्तीक स्वास्त्र के मोन-विवास्तर कुरसाव बहुत-ने क्रेस स्त्र में हैं। साव कृतीयन, प्रमुक्ति, पार्च तथा कुन्नावर-वेथे अन्तेष्य कारियांच्या राज्यात भार रशायर केले देखकादी बाहते हैं ? कपने व्यवस्थित प्रकारका जान, कोन, कुन सहनेकी प्रकार और वर्षने किस्ता—ने पूज किए क्यूबाड़ो पुराजनेते पहर नों क्यों, को पंचन बहरात है। में उन्हें क्येंक बेकन करता और वरे कामीसे दर काम है, सक है के शावित्य और अञ्चल है, सर्वेत में स्वयुक्त मीवत होनेके रायान है। क्षेत्र, हो, जो, समा, स्टब्स्स स्वा अपनेको एम राज्याय—ने चन निरुक्ते पुरुष्कोंते वह नहीं करो. कही मन्त्रित व्यक्तावर है। यूको स्थेप विद्रश्ये पर्यान्त, समाद

और कारेज़े किने इंद विकारको नहीं कार्यो, वरिश्व स्थाप एवं होनेक ही जाती है, जी पॉक्ट कहता हैं। सर्व-वर्ण, यक-अन्तरम, सम्पत्ति अध्या प्रतिशा—के निसमें कार्यने बिज नहीं करनो, नहीं परिवार कारणात है। विकासी श्रीविक्य मुद्रि वर्ष श्रीर अर्थका है। अनुसरण करती है और को चोचको क्षेत्रकर मुख्याबीका ही करन करता है, न्ही चरिका सहरता है। विसंस्तर्ग मुद्धिकरे पुरू स्टिके अनुसार काल करनेकी प्रकृत र एते हैं और संस्ते की है, संस्त विजी क्युको हुक सम्बन्धार काली अञ्चेतना भी करते। कियो क्रिक्टमें देशक सुरक्ष है मिलू होता है हरका केया, प्रमाणका वर्तन्तवृद्धिते पुरुषाचेने प्रमाण होगा—कामगारी की, किया को कार्रिक निरममें कई कोई बात की सक्त-क विकास मुख्य शक्त है। परिकारिकी-सी बुद्धि रहानेकारे बनुष्य हरीय बसूबी सामना नहीं करते, कोची को कहाके दिल्लाने कोचा करना नहीं कहते और विवरित्रों बहुबर बनातों नहीं । यो बहुने निहान करके बिन कुर्मका आरम् परवा है, कार्योद्ध बीचने नहीं कारता, प्रकारों कर्न जो मने केर और विचयों नहमें परता है. वहे परिका बाहराय है। याववृत्यपुरस ! परिकायन हेंद्र क्रमीने क्षेत्र रकते हैं, क्रानिके करने करते हैं उसर फारहों करवेळालेटे क्रेंप नहीं निकासी। यो अपना असर हेनेस क्षी को का भी उस्ता, अन्त्रासी संग्रह भी हेता सम नक्षातीके कुन्तुके काल किलो क्रिको क्षेत्र भूते होता, क बीका कारका है। ये उन्तर्न मीतिय कार्योकी अवरित्याक्त क्रम प्रकारिकात, तथा व्यानीके प्रात्मेका क्रम् कारोब्यक राज प्रमुखीये संबद्धी बहुबार राज्यका पानकार है, बहु बहुब परिवार सक्षमात है। विकास पानी बही कारी नहीं, के बिरिया देगरे करलीत करता है, तर्कनें निवृत्य और प्रतिकारात्त्री है तथा को प्रत्यके सारकोको सीता बहा प्रमुख है, जब परिवार सहस्था है। विरासी विका वृद्धिका अनुसरम करती है और बृद्धि विकास, तथा की क्षिप्र प्रकोची नर्वाक्रम प्रकोचन की कृत्या, की 'परिका' की पानी क समझ है। जिना को ही नर्न करनेवारे, बंदि होका भी को को करहारे प्राप्ति गरियो की विना काम किये है का करेको इका रहनेवाले सनुवको परिकारनेग पूर्वा बाहरे हैं। को अन्य कार्रिय प्रोड्कर सुरहेके व्यक्तिकार काम करता है, तक विको पत्न असत् अवस्य करता है, था पूर्व कहराता है। यो न कहरेगालोको कहरा है और व्यक्तिकारोको सार्व देश 🐧 एक यो अवनेते बराबान्ते राज के बोक्स है, जो 'इस विकास प्रमुख' बड़ते हैं।

को शहरों दिए कमा और दिसरे हैं। बसी हर को नह प्रोक्त है, तथा सद को क्लेक अल्प किया करता है, क्षे 'क बित्तकल' कहे है। प्रकार । से अने बार्केको पर्या है पैरस्का है, वर्गत सेंकु करना है कर जीव होनेक्सरे महाराधें भी हैर सरावत है, यह यह है। के विकरिका बाद्य और रेक्क्सोच्य एकर नहीं करण एक किसे सक्द किस नहीं निरम्ता, को 'युव निरम्भार' बढ़ते हैं : यूव निरम्भार अध्य प्रमुख किय बुराने ही जीतर पात सामा है, किया पूरे ही बहुत बोरस्त है, अब अधिकारनेय प्रमुखीयर की विकास करता है। अपना कामात केव्यूक होते हुए की की सुलेका उत्तरे हेन बतवा अक्षेत्र करत है इन्ह में अवन्ते हेरे इर की व्यवेका होना करता है, या करून व्यवकृत है। के अपने बरमको य सम्बन्धन जिल्हा बाल किनो हो वर्ग और शर्मी दिख्य तथा र यमे योग्य माहार्थ हमा मारत है, यह कार इस संस्थाने 'सम्बद्धि' स्थानक है। कार । के अलिक्सिक्सीको प्रजेष हेता और सुन्यकी उपलब्ध कारण क्रिक्स है रूपा को कुरमाना राज्य हैंक है, को कुर विभावत वर्क है। को बहुत तथ, विका तथा देवनोंको कथा हारावार नहीं, मा परिवार कारणात है। यो अल्लेख्य करण-वेक्कोट केना मारिकोची बढ़ी दिना अनेतरे है अबर चेनक चला और श्रुपा क्या प्रकृता है, जाते सहस्र क्या और क्षेत्र है करक अवेदल पार करता है और बहुत-से स्वेप करने सैन कार्य है। बीच क्रमेनारे से वह नारे हैं, या काना कर्ज है क्षेत्रका भागी होता है। किसी क्यूबंट बीटके क्रम क्षेत्र हाल काम प्रमाण है इसको भी गारे से न गारे । भना संस्थान-हरा प्रकृत को हाँ हुद्दि राजातनेत प्रमूर्ण सहका विकास कर सकती है। एक (ब्रवि) से वें (श्वतंत्र-अवसंत्र) का विश्वाद बार्ग्ड कर (कार, सर, भेर, क्या) से मैन (एस, हिल तका जामीन) को पहाने क्रीतिने । पांच (प्राप्तिने) को चीतकर कः (सन्ति, विकार, कान, जनान, हैवीनक और समाजका) गुलीको कानकर एक नवा (को, कुछ, कृत्या, यह, कठोर नका, स्थानी बडोचा और अन्यको प्रकार प्रसार्थन) को क्रीडकर सुनी हो प्रकार : निरुक्त रस क्या (पीनेवाले) को है जाता है, संभाने स्टब्स है का होता है, जिल्ल करावा पुरुष पह और जानके साम है राजका भी विश्वत कर उत्तरता है। अवेती स्वर्गता चेनन ग को, अनेतर दिनो विकास दिवन न को, असेतर प्रसा म बले और सहुत-में लोग सोचे हों से काने सबेता न व्यक्ता से ॥ १६—५१ ॥

राजन । मेरो समानेद पार जानेदे हिन्दे पान ही एकनात

सामन है, जारी प्रधान करनेंद्र तीने तान ही एकमान सोनान है. करन नहीं: किस जान को नहीं समझ दे हैं। अमासीस क्रुकोर्ने एक है दोवका सारोप होता है, दूसरेकी ये सम्मानन है औं है। यह हैन यह है कि इससीत महत्त्वों लेन अस्तरात्रं समाप्त होते हैं। जिस्सु समाप्तील प्रत्यक्षा यह सेम नहीं मानव काहिये; क्योंकि क्षया महत्त बढ़ा मान है। अप स्तानमं स्टूब्लेक पूर्व क्या प्रत्योक पूर्व है। इस क्याने क्षय वहांकायक है। क्या, हमाने का नहीं दिया केर ? विकास प्रथमें कारियानी करानार है, जाना का पूजा कर कर होते ? एकडीत स्थानने निर्म र्ख कार अपने-अस्य प्रमा वाली है। प्रवाहीन पूरण नार्यको संधा हारोच्छे की क्षेत्रका करण करा है। केवल वर्ष ही परंच क्षानकार है, एकपार क्षात्र के प्रातिका अनेकेंद्र करन है। एक विकास के पान संबोध वेतेमाली है और एकपान अधिक हो पूजा केन्स्रामी है। हिस्सी पहलेक्से नेक्स आहि क्रीकेको केर्र और पर पाल है, उसी समार पर पूर्वी प्रसूते क्रिकेट न करनेकारे एका और कार्यक्ष संगय न करनेकारे कार्य—पर केनोको का करी है। कर भी करोर प केरण और क्षु पूर्वका ज्ञार व करण---पूर के कर्तीके कानेकाल करूक हुए हरेकने निर्देश प्रोधा यहा है। कुली क्षेत्रस्य कर्ते गर्ने पुरस्को सामना करनेवाली मिर्ची गर्ना करोके कर पूर्विक मुख्या काहा करनेकार पूरा —ने के अकारों सोन कुराउंका कियान करके चार्काकी होते हैं। औ नियंत्र क्रेक्ट भी च्यून्यून्य कसूची इच्छा रहाता और शासंपर्ध बेकर में क्षेत्र करता है—ने केने ही जाने शरीरकों सुना क्षेत्रकोर प्रक्रिकेट सरकार है। वो को अपने क्रियरित सम्बेद काम क्रोपा जो परे—अक्रमेश पुत्रश और उपहर्ने सम्बद्धाः संभागते । सम्बद्धाः ये से प्रमानके पुराव कार्यके भी कार रक्षा को है—सर्वताहरू हेनेवर की हमा करनेवाल और विके हेनेकर भी कर हैनेकरन । न्यानवृत्तीय अवस्थित क्षेत्रं हुए प्रस्तेः से ही कुमलोग सम्बाने माहिने —अस्तानको केव और सावाच्यों न देश । यो वनी होनेना भी दल न दे और जीव क्षेत्रेश भी कह सका न कर सके--ज़र्ग से अवस्तोः करकोको गरेको पत्तार बोधकर परनेने उस देश व्यक्ति । पुरस्कोष्ट । ये के प्रचलके पूरण सूर्वनव्यक्तारे वेक्कर कर्मानीको जल होते हैं—चेनव्क संन्तात और संस्थाने लोहा होते हुए बादा गांवा प्रोद्धाः। ध्वास्त्रोतः ! जन्मोदी संस्थितीको रिये जान, मन्यन और समय-न्ये की प्रमानके उसका पूर्व पार्ट हैं, ऐसा बेदबेका विद्वान कालो है। कान् । जान, प्रमान और अवय-ने तीन प्रकारके पुरूष होते हैं; इनको सक्तकेना तीन हैं उच्छानेक कार्वेने सन्तर स पादिये । स्वयन् । तीन ही यनके अधिकारी नहीं करे क्यो-की, बंध रक्षा करा। ये के बात करते हैं, बंध पर उसेक होता है जिसके अभीन से को है। उसके बनाय हरण, करोच्ये औरत संसर्ग एक सुद्ध विकास परिवार—ने सेने ही होन पात करनेशारी होते हैं। बहन, हर्डन और क्लेप--ने आराम्य राज प्रारंपाने पराक्षे की सम्बर्ध है: अर: इन है देखे जान हेरा पाहिले। पासा । परवान साथ, सन्तरकी प्रतीत और पहला प्राप्त—में कीन क्या और और स्पूर्ण प्राप्ते 1600 — बार कर तरक: ये क्षेत्र और बार एक कावार के हैं। पान, रोक्स क्या में आपना हो है, ऐसा सार्वकारे—हर र्वान जनानके प्रस्तानक न्युन्तीको संबद बहुन्य भी नहीं क्षेत्रमा पार्विने । बोक्से पुरिकारों, पोर्चक्रिक, स्वायक्रम और पुरी कर्णकरी (केलेके इस्त पुर समझ मूर्व करने माहिते । वे बार्च प्राप्तको एकके विने सान्त्रे केन बार्च को है. विक्रम् प्रकार हेर्ने स्थेपीओ प्रकार है। कर है प्रकार मेरे किया राज्यों कर असरों। कार्ने कर असरके स्मूलकेको सक कुर प्रार्थि—असे कुट्रकार कुर, प्रेकाने का १४० ज क्षात्रको पहुंचा, क्षात्रीय विकासीर विकास क्षात्रकारी परिवास महाराज । इन्होर पुल्लेक एन्हे कुल्बीन्डेने वित्र करोको प्रकार कर देवाला काला था, जो कर पुत्री स्तिने-देशकानेक कंकर, व्यक्तिक उत्तर, विद्वारोको पहल और परिचोक्त क्षेत्रक । पार वर्ग अन्यके हा करनेवाले हैं, जिल्ह से की बाँद ठीक रायाने सम्बर्धीय ने हों हो कर अपन करते हैं। वे कर्न है—अध्यक्ते करा अधिकेय, अवस्तुनंद केरका कारत, सारापूर्वक धारकार और कारको पान पानक अनुसन्। प्राप्तकेष्ट रे निया, पाना, पाने रेवा परने पानि । हेका, निरंद पर्या, बंगारी और अतिथि—इन चौचीको कुछ बारवेकार करून सुद्ध का अप करत है। करा,। अस व्यक्तियों करेने व्यक्तियों नित, प्रमु, बहारीन, अकार देनेको प्रथा सामान रानेकारे—ने चीव अन्यक्षे की को दीने। चीव जानेन्द्रवर्गेकाले परमच्यी गाँद एक भी प्रतिप केंद्र (केंप) पक हे कर से असे असी बुद्धि हर जात बहर नेवान नही असे पराचको केवसे काची ॥ ५२—८५ ॥

आति व्यक्तिको पुरसेको और, एक (केंग्स), कर, प्रतेष, अलाह एक केंग्रुवर (कार्य है क्यांको कार्य राधिक के राजनेकी सक्ता)—इर का पूर्वलोको सार्य केंग्स व्यक्ति । उत्तेश न देनेको अकार्य, वन्तेकाल न करनेको

हेता. यह कालेने असमार्थ तथा, बटु क्यार चेतनेसाले को, जानो क्रमेकी क्रमानाने चाले करा बार्ग क्रमेकी इक्कान्तरं नहीं—इन प्रत्यों करी नहींते और है, की प्रमुक्ती ग्रेर करनेवाल क्यूक भागे 🥶 नावका परिवास कर देता है। बर्जनो क्यो में सार, कर, धर्मनमा, अस्तून (गुनोदे क्षेत्र दिवारीको अवस्थित अवस्थ ), समा एका कैर्न-३२ छः पुर्वेक्स काम नहीं करक स्वर्धने । कनकी आन, निर्मा मेरीन कर, क्रेक अनुसर एक विकासित क्रेम, पुरस्क अक्टाके ओहर कहत क्या तर पेतु प्रश्लेकाचे विकास हार-में पर को इस क्यूनारेको सुरक्षानिये होती है। कर्म किए दर्भवारे का दश-बाद, क्षेत्र, खेश, बेह, का प्रका स्वापनिकों को अपने कर रोका है, यह निर्देशिय पूजा करोते हे रिया की होता, दिल हमी अन्य हेनेको अवसीती हो बात है कहा है। विद्यार्थित का प्रकार के उन्होंने क अध्यादि गोरोजे अपनी सेनिया कामो है, सारावेची इन्तरीक नहीं होती । योग अवस्थाना पुरानी, मैंस रोगीसे, कारण क्रियों कार्रिकोरे, पुरेशीय कार्यकोरे, साम क्रमान्त्रके एक विक्रम् एक मुनोति असमे सीविका कार्या है। अलबर भी क्य-रेश व कार्यते भी, रेखा, केरी, को, विकार करा कारोबे नेहर—में का चीने गढ़ के बाती हैं। वे कु: एक अन्ये पूर्व अन्यारिका अन्यात करते है—किया क्या हे कांग्रेस क्रिय आकर्षक, विकास के प्रतास. कारकारको सन्ति हो मारेस मूल्य होता, क्रास्टर्स पुरुष १९८७कात, पहिंची कृषेत कहा का यह हेनेवाने पूर्ण क्षाका क्षा हैनी पूजा हैन कुछने कह बैहाना विरस्ता का के है। मेरेन क्या, क्या न हेन, बरोको न राजा, राखे होनोर्ड साथ नेत होना, अन्यदे पुरिश्ते परिचया कारत और निक्र होका साम-प्रकाश के छ। न्यूक्तकेको पुर्व है। ईस्वं क्रावेकार, कृत करोगास, मान्योची, प्रोची, पात प्रतिया प्रानेशाला—और प्रतिये वानक क्षेत्र-निर्मंद्र कार्नेकार-ने प्रः तक प्रशी को है। वृद्धिकाद अमृतिः, युक्ता, दिवार, महनार, सकारी करोसा, जानव बठोर एक हेन और नक्का हरुखोग कर्म-ने का इन्हरूचे के समझे का जान के व्यक्ति। इस्ते क्रमूक राम भी प्रकः मा हो वर्त il o 49—49 ii

विस्तानके पुसाने प्रानेकाले अनुस्कों आहे पूर्विका है—अवार को यह साहानोंके हैन बदसा है, बिन अनके विरोक्ता यह क्या है, साहानोंका कर हुए। ऐसा है, करको करना साहात है, साहानोंकी निराहने आनना मनता है, कार्यों आहंत पुन्य नहीं सक्ता, यह-सामांकी उनका कारण नहीं संरक्ष एक कुछ मोनोग उनमें मेंच निकालने कारत है। इन कर केंग्रेसों मुद्धान्त प्रमुख सामों और स्थानकर जान है। यहा 1 दिलोहें सामान, अधिक समग्री आहि, कुछान आविष्युल, पेकूमों अपूर्ण, स्थानक तिया क्या मोला, अपने कार्या सेनोगे आहि, अपीह तियाची हो। हैंदे से कार्य क्यांत्रक सुमान के साम वियाची हो। हैंदि, कुरतियां, इत्रिक्टिक्स, सामान, क्यांत्रम, अधिक व मोला, प्रतियों अपूर्ण एक और कुछान—में आह पूज कुछाने क्यांत्रि कहा हो है। यह विवाद पूजा (आह, कार आहि) से स्थानकारण, तीन (कार्य-तिया सामाना क्यांत्रमी) संयोगारे, तीन (कार्य-तिया सामाना क्यांत्रमी) संयोगारे, तीन (कार्य-तियान) सामाना क्यांत्रमी निवासकारण हम प्रतिस्थान कुछा

महाराज कृतरह ! कृत प्रधारके स्रोग धर्मको नहीं सानो. प्रतिक्ष पान क्ष्मी । नर्राची नवस्थान, अस्तरकारन, पानस्त, क्षम इस, ब्रोमी, कुल, सरकार, लेखे, क्यांत और सायी—में का है। अरा हा पता अनेपोरे जिल्हा पूर्व सामित न बदावे । इसी निकारी असरोवे प्रचा प्रदानी मुक्ताकोर साथ अस्त्रों कुलो और कुल अनेक किल का। पीतिक स्थेग जर पुराने इतिकासका कावुरण के हैं । यो राजा मान और क्षेत्रक लाट कात है, और कुळाके का हैव है. विशेषा है, प्रत्योगा ज्ञार और वर्तन्त्रको प्रीत पूर कर्मनामा है, को एक होना प्रकार करते हैं। को प्रान्तेने विकास क्रमा अस्त व्यक्त है, विकास क्रमा क्रमान क्रमानित है पना है उन्होंको एक देश है, में उन्ह देनेनी न्यगरिक पता तथा क्षणका अध्येत काला है, जर राजधी होकने समूर्त सन्दर्भि वार्षे वार्ती है। जो किसी इनेक्स कन्यन नह करता, एक राजका सकर प्रमुखे राज बुद्धिएकी प्रथान करत है, जन्मनोंके स्वयं कुट परंद नहें करता हुना समय आनेक्ट परकार शिकास है, बढ़ी की है। को कुरका पक्षका अवि धर्मक क्रमी इसी जी हेल, वर्षक सामकारीके साथ उद्योगका उत्तरण सेवा है, उन्हें सामका रूपा सहया है, अल्बे पहा के पर्यापन हो है। को निर्मात विदेशवास, पादियोंसे केन, परबीनवन, करावा, चेरी. पुगरकोचे क्या महित्यम नहीं समार, वह स्वर हती सात है। जो होन या सामानिक राज कर्न, अर्थ राज बालका भारम नहीं करता, पहलेका कराई पार हो समाना है. विक्रोड रिप्ने प्राप्ता नहीं पर्यंत करता. जाता न पानेपर सन्द

। नहीं होता, कियेक नहीं को कैठता, हतरोंके केश भारी देशता. कारत क्या करता है, हुर्मत होते हुए विश्लीको जनाना नहीं केता. जाकर नहीं बोरवार कथा कियाबको स्था तेवा है, ऐसी पराय तथा प्रस्ता प्रशंसा पराय है। में पानी संस्थान-सा केर को करात, कारोंक करने अपने परक्रमधी यो ही। नहीं इंदिस, क्षेत्रके व्यवस्थ क्षेत्रेक भी बद व्यव नहीं बोरजा, क्ष बहुनको सोन एक है जारा बन्द सेते हैं। यो पाना हाँ केको सरको किर सन्दर्भन को करता, को को करता, क्षेत्रक नहीं दिखाना क्ष्या 'में क्षितकिने पदा है' देशन स्टेमकर अर्थान कर जी करत, वर राम आवरणको प्रकारी अवर्थना वर्णकेट काले हैं। यो अपने सामने प्रत्या पड़ी होता. करोड़े करके समय को नहीं परस्त और कर देकर प्रकार जो पता, क सम्मेरे स्थानचे स्थानते है। क्षे वक्ष देखें क्या, संस्थात का प्रतियोक्षे कार्रिके पालेको प्रथम करण है, जो साम-अवस्था विकेश हो कार है। या वर्ष कार है, वहीं बहुत करताकुर अपने प्रकृत कारीय कर रेवा है। यो श्रीकृत्य कर, योद, मार्क्स, कार्का, राम्बंद, कारकोरी, प्रयूक्ते हैर, नामारे, पानक तथा दुर्वनेको निमाद प्रोद केन है, यह तेव है। में सर, प्रेय, केम्प्रमा, महर्गाला मर्ग, प्रायक्तित तथा with provide talking assure—on they find achieve मनीको करता है, केमालोग अस्ते अन्यवस्थी सिद्धि करते \$1 th such recoverable user floor, floor, record क्या ब्याचीन कामा है, होन पुरस्तिक साथ नहीं और गुर्सोने को-को प्रामीको साह अस्ते एउना है, यह निर्मानी मीरि लेता है। को अपने कार्रिक करीको परिकार कोवा ही पोजन करण है, यह बहुद अभिन्य बाल करके भी क्षेत्र होता है का चौनोदा के दिए की है जो भी का देश है, जा पतारी पुरुषको नारे अन्तर्ग द्वाचे हो कोड़ होते हैं। विसर्क अन्तर्थ इंकाले अनुसार और सुरारोधी प्रकार किया कर्मको सुरारे होता कुछ की नहीं बान पहले, बना गुह बाते और असीह कार्यक क्षेत्र-होन्द्र सम्मानः होनेते काला जावा चीहा भी कार विकार नहीं पता। यो पनुष्य समूर्ण पूर्वोको हासि ज्ञान करनेने सान, स्वाच्यां, क्षेत्रल, इसरेको असर देरेकार क्या परिव विकासकार होता है, यह अच्छी सामसे रिकार और क्षमारे हुए केंद्र सामी भाग अपनी व्यक्तिकारोंने जोवन प्रसिद्ध करा है। को कर्न है साविक रामाचीत है, यह तम लोगोंने हेव प्रस्ता नात है। यह जनमें जनक तेथा, कहा तथा एवं एकप्रकारों कहा हेरेके बारव कर्तको सुर्वत समार सोचा पास है।

पुत्र करने करका पूर्, ने पाँच इसके सम्बन स्वविकाली | साथ कारून चोटियो । नरेन्द्र | देख करनेरर कार देखा: है, को अपनीने बनवारों करता और विश्वा से है, वे की अपन बनुव्योद्धी देखा-दिव्यवीचे जिल्ला जाति सह सम्बद्धी महाच्या चानन करते छुठे हैं। छुद्ध ! कहें | व्यक्ति हा १४६--१२८ श

अभिकारम्बर ! बावने क्या क्या क्याके यो बीच | क्या मानोबिक क्यापन केट जार अपने क्योंके

#### विद्रनीति

(क्सर अध्याम)

हरावर केले—सार १ में विकास कारक हुआ अन्योजन | है, केले सुन्दा कारको सुरूप । आली सहित्र करेले इसी हाँ बाग रहा है इस की कार्राक्षीया को बार्ज करही, जो कारणो; वर्षोकि हुए वर्ष और अर्थने अपने निवृत्व है। क्यांकित किए । इन जन्मी बुदिसे क्रियाकर मुझे टीया-टीया प्रमोत्त करो : यो जात युविविच्छे नियो दिवका और मौरवंधें दिये काचानवारी संबुधे, यह सब अन्यय कारको । निहर । मेरे पाने अनिहर्का आवंका को पाने है. इस्तिने में सर्वत अधित है देशका है अहे व्यापुरू इसकी में तुनते पूर पूर्व है—अवसरको पुरित्तेत अन पहले हैं. को स्य दीवा-बीवा कताओ ॥ १---१ ॥

विकृति का—मुख्याने काहिये कि का विकास १९४४ गरी जाता, उत्तको जिला को यो कारकार करनेवाले क अनित करनेवाली, अवके अवका कुछ-को को बाद हो, कत है। इसरियो करन् । विकास समाध्य महिल्लोका है। हो, मही बार आपने महिन्द । मैं भी भारतन्त्रकारी क्षेत्र करेनूक करन का देत हैं, उसे अब कान देवर हों-कात ! अतत जानों (कुल साथै) कर प्रचेप करके से कुकारणें कार्य हैंस्ट होते हैं, कर्ने साथ पर पर सम्बद्धे । इसी प्रकार काने उपयोग्त उरवेग करके सामग्रानिक साथ विका गान कोई कर्म परि स्थान न है तो एडिएकर पुरस्को साथे सिने काने कारीर क्यों कारी कांग्रेट । विश्वी अनेकारी विन्ने को कारोंने पहले उस्तेकाको साक्षा केना वर्ताने। पुरा सीध-विकासार कान काना काहिने, जासकारीके विकास कामका जारमा जो काना करिये । चीर महत्त्वको जीवा है कि पाले क्योंके प्रयोगन, परिवास तथा असरी अधीरक विकार करके दिए काम आरक्ष करे का र करे। के क्या Ruft, mit, gift, wenne, bie beit beg aufhab महाची नहीं रामधा, या शंकार विक नहीं सा सहसा ! के हरते अध्योधी दीव-तीव कारत है एक को और अवंदे इन्दर्भे दर्शानन सहार है, यह राज्यको उत्तर करता है। 'जान के राज्य जार है है राज'—ऐस्त सम्बन्धर अञ्चल नहीं करन कार्रिके । जाकार सम्बन्धियों उसी प्रकार नह कर केर्ड

न्वेहेकी कार्यको स्टेपने पहला निगत वाली है, उससे क्षेत्रको परिवासक विकास नहीं करती। अतः अपनी उसति व्यक्तिको पुरुषके वही पशु कारी (वा व्यक्त कारी) काईने के स्वनेकेन हे का साथी ना तके, साने (पा कान कारे) पर पत्र कर्क और पत्र पानेवर वैश्वकारी हो। के देवते कई व्यक्ति केंद्रव है, यह उन व्यक्ति पर से बार नहीं, अन्दे का पूछके प्रीचका नात होता है। श्रांत के क्रान्स्य को हर करको पहल करता है, का पराने रह क्या है और का क्षेत्रमें का कर प्रकार करता है। वैसे चीव पुरतेको दक्ष करता हुन्छ हो उनके प्रमुख्य आरम्बान करता है, अने अवत राज्य की अवस्थिति कहा हैने दिया है असे का है। हैते कार्त करिये एक एक दूस देशक है, सर्वार वह भूमें कारण, असे अधार राजा प्रजाबी रहार्यक उसे का है। क्रोक्स करनेक्सेस्टी रख वह वह सह सरहा व्यक्ति । इसे करनेते येख क्या त्याच क्रेमा और न कानेते का को होने-का उसस करोड़ किस्से करियोंत निकार करके जिल महत्व को या व करे। कुछ ऐसे अर्थ कार्ग है, को निम अक्षात होनेके कारण अराज कार्यकोचन नहीं होते; क्योंकि उनके दिन्ते वित्रम हुआ पुरुषार्थ भी आर्थ हो जान है। जिल्ली जारस्कार कोई पार नहीं और कोंध चै कर्न है, उसके इस सामें बराय जो कहते—देहे को न्युंतकको परि को कारत प्रकृति। विकास पूर्व (मामन) होता और पार भाग्य है, युद्धिकर पूर्व अवही सीवा ही अवस्था कर देख है, जैसे करनेंने वह निक्र गहीं साने केल। को प्राप्त, पानी जोत्तोते भी वालपा--इस प्रकार जेको साथ कोगार बुद्दिसे देखता है, यह पुरसाय देख की हो वो भी प्रमा कामो कन्त्रम रहती है। उस्त कुल्के भीत तको रूप करने (जता करे) या में फरले कामे से (अधिक देरेकाल न हो) । नहीं प्राप्ते पुरू (वेरेकाल) हो: हो भी निवास कहा न का लगे, ऐसा (पॉक्के महता) होबार ये। वक् (धन प्रतिकात) हेनेपर को (प्रक्रिसन्तर)

की भीते अमेरके अबद करे। ऐसा करनेते का यह स्वी बेबा। यो राजा नेत. पर, कसी और कर्म-का करेंसे क्रमको प्रसार करता है, अरोधे प्रधा जारा सभी है। जैसे month who werder that it will water flood more प्राची क्रमे हैं, यह सम्ब्रुपर्यक पृथ्वेक्ट एक कहर की इन्हरनोके इस जान दिया नाम है। जन्मको दिया इस एक बाय-क्रकेक एवर पायर थी अगने ही क्रमेंति को इस तक पता कर देता है, जैसे इस काराओं केय-निमा कर देती है। परस्कारों समान पुरस्केत्रण किये वह वर्गना सामान क्रानेक्से एकके एककी क्ली वर-क्लो वर्ग हेकर क्यांत्रको अस्त होती है और अलो देखनंबरे बक्ता है। को प्रमा वर्ग बोह्यत अवस्थित अञ्चल करता है, जानी पुरस्कृति आस्तर पूर्व हर प्रयक्ति नहीं कहाँक हे साथे है। को का कुले राहुका नात करनेके दिन्हें सिन्ह काल है, वाले अन्तरी श्रामकारी प्रातनोह तिर्देश व्यापन अनिता है। वालीहे ही राजा जार करें और क्लोर से जलाई दक्त करे; क्लोर्ड वर्गकान्य राज्यान्यनेको कथा न से कथा को संस्था है और न पूर्व राजाको क्षेत्रको है। निरसंख क्षेत्रकेवारं, प्राप्त तम महत्ता करनेवारे कोने नी का जेले धर्ड नहीं राजनी का पहल करनी पाहिले, जैसे पारतीयेने क्षेत्र है। then som to this supplied abbour services क्य-क्या क्रम प्राप्ता प्राप्त है, उसी अवस्त की एकाओ पर्ध-सर्वेश पानवर्ग क्याने, प्रतिको और सावसीक क्रेस करने पान्य काहिये। नीई नकारे, इंब्युलारोन केहेरों, प्रका कारकोरी और सर्वक्रवारण अधिके केवा करते हैं। राजन । यो पान को कठियांने को लेते हैं, या यह देश कारों है: जिस को कारवनीने इस देती है, को लोग कह जी की। को बात जिला गरम जिले बार जाने हैं, उन्हें सामने नहीं संपत्ते। को पान पर्य क्रमा केर है, जो पते क्रमानिक प्रकार की करते । इस स्थानके अनुस्ता क्षत्रिकर प्रकारके जीवा परवाली सबने हुए कर महिने; में जीवर मामानो सार्च ह्यात है, यह पाने हातेस्थाने ज्ञान कारत है। पराजेंके पहल या कानी है जाता, कुराउनेके रक्षपद है पत्ती, कियोंके बना (रक्षप्र) है की और प्रकारोंके सम्बंध है के । सामने अनेकी एक क्षेत्री है, चेन्से विका सरकिए होती है, सरकांते सका करवार रहा होती है और प्रायम्भी कुरुपी रक्ष होती है। सेमनेने कामधी रक्ष होती है, फैननेसे बोबे सुरक्षित को है, करण्या देशकार करनेते चौओवी एक मैले मारते जिलोकी राज होती है। मेर देशा विचार है कि शहरकरते होन बनुष्यक केवल देखा

बुक्त कम नहीं है तकता; क्लेकि नीम कुल्में तकत महत्त्वीचा भी भक्तवार है जेह करा कहा है। को इसपेके वर, कर, परस्पर, कलेका, प्रस्त, सीपान्य और GAGART कार करना है, जानदा पर देन अस्तरमा है। स करनेकेन कर करेके, करनेकेन कामों प्रमाह करके तक कर्म किए होनेने करते हैं यह उत्तर है करेरी 1844 व्यक्ति और विकास क्या को, देशा के पार्टि की पार्टिके । विकास था, बनाव का और संस्ता की करावा का है। वे वसंती प्रकारित दिन्ते हो यह है, वरंतु सरका प्रकारित दिन्ते क्षांद्र प्रकार है। याची विकास मार्गने राजनोद्धार प्रार्थित हेनेक सुरक्षेत्र अवनेत्री अधिक हा सनते हुए भी शस्त्र कानो राज्ये हैं। कराती पुत्रतीको स्तारत हेनेकारे संत है, राजिक की स्थाने तीर ही हैं, स्थानिक की स्थान हैरेगाने तीर है, पर प्राप्तीन अंबोधी सकत जो हैते। अन्ते नवानाम प्रचलके बोलक (अवन्य प्रचल करू तेना) है: निराके पाप के हैं, का की कार्यों अवसंक्राओं की लेता है; प्रवासिके पालेकार पार्टको पीत रेका (शर का तेका) है और क्षेत्रकार पूर्व कार्यर नियम या तेला है। यूक्ट प्रीत है अंधान है, विश्वनक कही गई है बारत है, इस संस्थाने जाना बीचन, कर और क्याओंने कोई इस्तेजन रिव्ह जॉ-होता। परकोड़ । क्येच्या पूर्णोके प्रोक्तमे बांतावी, प्रमान वेत्रीकारोडे पोजनी नोरवाची तथा धीरोडेंड पोजनी रेतन्त्री प्रकारक क्षेत्री है। ब्रीट परम एक वे स्मादित मोजन करते हैं, क्लेंब्रेंट पूर्व हैं। स्थापने करते हैं और बह वन्तिकोड रिप्ते प्रार्थक सुर्वन है। स्वयन् । संस्तरने यनियोको प्राप: पोक्स करनेको स्थान नहीं होती, सिंह हरिहोके पेटरें कुरत की एक करते हैं। अध्यक कुछलेको प्रतिकृत न होनेही कर राज्या है. क्यान संगोधि करूपोंको पुरसुते पत्र होता है; परंतु कर प्रकोशो अध्यक्ती है कार पर हेता है। में से केनेका नक्ता अवदि भी नक्त 🕸 🕏 बिंक्य ऐसर्चका नक्ता हो महा है पर है: क्वोंकि देवर्थके महते मानाला पुरूष पर हर विका होताने नहीं आता। यहाने न होनेके बाएक विकामि रक्तेकार्थ प्रक्रिकोरे का संस्थर अने काँके कह करा है जैसे सर्व अवदे क्योंने नक्त विरक्तत हो अने हैं n ४--५४ n के क्रिकेट पहले कानेकारी साथ और इन्हिक्टेर और

को क्षेत्रोको सहस्ये कालेकारो सहस्य प्रोप हुन्त्रको प्रीत तिरस गण, जरको जरपरियाँ सुहत्यको स्वयुगती गाँठि स्वत्री है। पुनिकोत्रदेश मनको गीवे किए है यो पनियोको सीतनेको हुन्स करमा है या गरिकोको आसे जर्बार किये किस सहको जीवना प्रमुख है, उस जानितेषिक पुरस्को सम सोप ज्यार हो। है। यो पहले इन्तिकोरसीस प्रमुखे हैं सह

संपन्नका बीठ हेता है, जाके का बड़ि का परिवर्ध तक एकुओंको जीतनेको हुन्छ। को हो होने स्थानक निकार है। इन्हिनों स्था गुरुको बीलनेकारे, अन्याधिकोनो एक बेरेकारे और सौध-परशंका धार्य करनेकारे और प्रकारी स्थापी अस्तर होना करते हैं। समन् ! अनुवादा प्राप्त रक है, पुरिद सरर्गंत है और इन्हिली इसके चेचे हैं। इनके कहारे कर्ना सामग्राम सम्बाध पहर हुने बुद्धिमान मुख्य कानूने विजे हुए बोदोसे रबोबी भारत सुकर्तक पत्रा करता है। विद्या न माने हुए तथा प्रजानों न अल्लेकारे केंद्रे केंद्रे गुन्ने अल्लेकारे मार्गि मार निराते हैं, कैंग्रे हैं से इन्हिमी कराने न करना मुक्तको पार क्रान्टोने भी कुन्यों होती है। इतिहर्ज करूने न होनेके बारण अर्थको अन्तर्व और अन्तर्वको अर्थ बन्दाका आहारी पुरार पहल को शुरकतों भी सुन्न पान कैता है। जो को और अधेका चरिन्सन करके इन्हिकेट करने है जाए है का चीन के देवरों, प्रत्य, वस क्या ब्योगे भी क्रम के बैदला है। में अधिक करका साथे होचा की इत्योक शामिकार को रकता, का ब्रीकोको काले व रक्तकेट कारण ही ऐश्वर्गते प्रश्न के काल है। कर, बर्दिक और plunial and activ as activity and acceptance याननेकी प्रका करे; क्लोकि आरक क्षेत्र अवद क्या और arrent of arrent top & s forest met med annumb di कीत दिला है, कारवा अवस्था हो अल्बा बन्ध है। बढ़ी सब्द क्या और को निया का है। सम्बर् ! किस अवट सुन्द केवराते परान्ते केवे को के की-को प्रातिन्त्री निरादार कारानो कर प्राप्ती है, जरी अबार ने कान और बोच-बेने विक्रिप्त प्राच्यों तह कर के हैं। यो इस कराई का NA) अर्थका कियार कर विकास-स्वापन-सामग्रीका सेवह बरात है, बढ़ी का सामाजित एक होनेके स्वारत कह सुरुपूर्वक समुद्रिप्रकारी होता पूजा है : को विकास विकास पूज भीत प्रतिकारके क्षेत्र प्रदानोको बोर्च क्षित्र ही कारे प्रमुखेको जीतन कहता है, जो हमू क्लीका कर है। है। इन्हिलीया अधिकात व होनेके कारण को-को त्राण थी क्योंने क्या एक्स्पेन एक्स्पे चेन-किस्प्रतेने के सर्व है। क्षांबर मान न बस्के उनके साथ जिले क्रोड़ो विश्वत्य प्रसार की प्रमान है हमा को है, जैसे सुबरे समझीने निहर सानेसे गोली भी बल कारी है इसरिओ हुए मुख्येके साम कृषी केर न करे। से पीत विकासिकी ओर श्रीक्रेक्स अपने

चीव इत्रियक्षणी सहकोच्ये ओह्न्ये स्थरण बसले नहीं करता. का बन्धको विवधि कह रेकी है। युवाँमें क्षेत्र न देखना, कराया, चीवना, समोच, क्षिप करन बोलन, इन्द्रियकान, प्राथकार कर अवस्थाता - वे कुछ कुछार कुछोपे नहीं होते । जाका । जाक्याना, विरामान्या अभाग, स्वान्यरिकार, कांगरकारा, काराची रहा कहा का-ने पूर स्वयन पुरुषोर्ने नहीं क्षेत्रं । मूर्वा समुख्य विद्युष्टेको पाली और निष्यारी कुछ पहिल्लो है। पारचे देनेवारच पापका भागी होना है और क्रम कानेकाम प्राप्त कृत के माना है। शुरू पुरुषेका पार à thre, consider on à est bu, fariber un à the और गुरुवानोका बांग है क्षांच । सार्थन् । बाजीवार पूर्व संस्थ के ब्यूब करिय पाना है गया है। परंतु विशेष अर्थपुत्र और क्यानारको कर्या नी स्वीतक नहीं केली का सकती (१९४५) नवृत सम्बोने कही हो बाद अनेक अवस्ति कानाम करही है: विद्यु को भी बहु प्रकोंने को भार से पहलू अवस्था बारक का करों है। कालोने बीका पूजा क्या करतेले कार हात का भी करा करत है। वित् ब्रह्मका क्वार जातीरे विकार हुआ अवस्था काम नहीं भारत । कर्ति, परसेवर और कारण कारण कारणेको प्राधिनो विकास स्ताने हैं। प्रांतु कह क्रमानकी सुर्वित अही निवासक का शकता, क्योंकि यह होत्यों war der beit fie Gwiterft und wurd Practiere कुरतेके कार्यर केंद्र करते हैं; इस्ते अवूत प्रमुख रात-दिन प्राप्त क्षात है। अनः निवास युक्त दूसरोपर उपका हजेग न को । देवनाकोण किसे प्याच्या केरे हैं: असकी सुद्धिको पहले है हा तेने हैं: इससे का मैच करोंग है सकिए होरे रकार है। विकास सार्थ अधीवार क्षेत्रेयर कहिर महिला हो पाली है: किर से पायके समान प्राप्ति होनेकाल अधान प्राप्ति बाहर जी निकारत । भारतीत । आओ प्रतिनी यह पृद्धि रह हो-नवी है: जान ककानेंद्रे साथ विशेषके कारण हा अपने क्रोको क्रमान भूति को है। सहराम क्रमाह िको राज्यकारोंने सन्दर्भ होनेने कारण विश्ववनका की राजा हो राजन है, जा अल्बार अवस्थाती पुनिश्चेत है इस पुजीवत क्रमण होने चेना है। यह नर्व हका समीर हामधी क्रमोकाव, तेव और बुद्धिने कुछ, पूर्व सीपान्यक्रमी तक सामके सभी पूर्वेसे मह-महका है। क्रमेन्द्र | व्यक्तिविधि तेतु पुणिक्षित एक, सीन्यासम् एक अवन्ये सिक्तमके कारण-समेको कह रहा का है । ५५-८६ ॥

#### विदुरनीति

(तीसरा जन्माय)

शृतकृते कार—नक्ष्युद्धे ! हुन कृतः वर्ग और अर्थके कुछ कार्ते कक्षे, इन्हें सुन्तार पूछे तृति नदी होती । इक्ष विकास तुन अर्थुन भाषण बार दी हो ॥ १ ॥

हिन्दर्भ नेते—इस द्वेशीने कान और तम प्राप्तिन साम कोपालका कर्तर—ने देने एक समान है। समान मोपलाके कांका विशेष यक्ष्म है। विषे । अस अपने पुत्र वर्षस्य, प्रम्मुक क्षेत्रोंके साथ सम्बन्धानी क्षोप्रकारक कर्पन क्षीतिने । हेला करकी इस स्वेकने महान् सुनात साह करके नरवेदे पहाल् अस सामानेकारे वारोते। पुरुषोषु ! ३० सोधने सन्तव भट्टकवी करन परिशिक्ता पान किया भाग है, स्थानक कह सर्गेश्वेनको प्रतिक्षित केवा है। इस विकास का प्राचीन इतिहासका प्राथम दिया करते हैं, फिल्में 'केरिन्से' के लिमे सुकन्मके प्राण विशेषको विषयमा धर्मन है। स्थान् । एक स्थानकी मात है, केविनो राजवानी एक अनुस्य सुन्दरे कन्ध सर्वक्षेत्र परिवारे परण करनेकी इन्त्रको क्रानेकर-सन्त्रको क्यांक्रिया वर्ष । उसी पानव क्षेत्रकुमार विरोधक क्षेत्र अस करपेको प्रकारके वर्षा आरम । यस केन्द्रिनीने वर्षा केन्द्र्यको प्रशः सम्बद्धाः प्रशासीका गति ।। ए---- (i.

केरियों जीती—विकेशन! अञ्चल क्षेत्र होते हैं का दिन ? की अञ्चल क्षेत्र होते हैं तो में चूक्त्यले किया दुवों भ कार्य ? n ८ n

विरोधाने कहा—चेदियाँ ) इस प्रधानविकी केंद्र सम्बन्धे हैं, जात: करते जान है। यह सारा संस्था इसलेन्सेका है है। इसरे सामने केंद्रसा या प्रदान्त कीन चीन है ? स ५ स

नेरिली केली—किरोक्त ) इसी काय इस केने प्रतिका करें, कार प्रतःकाम कुक्ता वहाँ श्रापंत्र, किर में कुन दोनोको एका काविता देवीती ॥ १० ॥

त्रियंक्त अंतर—साम्बन्धि । दुध केल साली हो, वही सामिता । तीरु । साम्बन्धि तुम पूर्व और सुक्ताको एक साम क्वरिता देखोगी ॥ ११ ॥

विद्वार्थ करते हैं—राजर्। इसके कह कर कर वा मीती और सूर्यनकाला जान हुआ, जर सम्ब सुक्ता का स्थानमा अस्य कई विशेषन केलिनोचे साम नैजूद था। मरात्मेश । सुकत्य अस्त्रात्मुक्तर विशेषन और केलिनोचे पास असा। अस्त्रात्म अस्य केल केलिनो उठ का सूर्व और उसने और अस्तर, पास और अर्थ निवेदर विस्ता । १२-१३ ॥



हुक्ता जेरन—प्रकृतकात । मैं शुक्ता हम कुमलेन हुन्दर विक्रमनको केवल कु लेला हैं, शुक्ती काथ क्रान्द मैठ वहीं क्रमका; क्रमेंकि ऐसा क्रेमेर्स इन क्रेमी एक समान ही व्यक्ति स एन स

तिरोचाने कार—मुक्तावर् ! श्रुषारे तिथे से पीड़ा, कराई का कुकारत जानान जीना है। युवा मेरे पूजक वरामाके आक्रमण बैठने कोचा हो ही नहीं हा एक ह

कुक्त्याने कहा--विका और पुत्र एक साथ एक आसम्बर्ध वैश कारण है। वे कहाया, में अभिन, में कुछ, के बैक्स और के बुद की एक साथ मेंब समयों है। मिन्तू दूसने कोई में व्यक्ति कारण एक साथ नहीं बैठ समतो । सुमाने दिया प्रकृत् कीचे बैठकार है केरी सेवा विकार करने हैं। तुम कारी कारणा हो, करने सुमाने को हो; अता: तुमी हम मानोबार मुख्य भी साम नहीं है में १९-१७ ।।

निरोधन कोरण—बुक्तकत् ! इस असूरीके पास जो कुक भी सोटा, भी, कोड़ा आदि कर है, अस्परी में कारी समास है इस-इस होनों करावार को इस निरमके बालकार हो, उनके मुद्दे कि इस होनोंने कीय केड़ है ॥ १८ स

हुक्क बोरक-विशेषण ! सुवर्ण, याच और बोह्र हुक्को ही कहा थे। इस दोनो अलॉब्डी कावी समाकर यो कामकार हो, उससे चुटे ॥ १९ ॥

विशेषाने का—जन्म, प्रत्योकी वाची लग्हनेके पक्षात् इस होनो बाहीं कॉनेंगे ? मैं को न बेक्कानोंके मास व्य प्रकास हूँ और न क्रमी म्लून्डेंसे हो निर्मय करा शब्दता हूँ **॥ २० ॥** 

हुक्क केल—जामोंकी क्यों तम क्येक्ट इस केके पुकार निराके पास कांग्रे । (पुत्रे निकास है कि) अहम अपने केटेक रिके भी हुए नहीं केल सकते ॥ ११ ॥

विपुरमी करते हैं—इस तरह कामी सम्बद्धार जारना हुन्ह, हो निरोक्त और सुकता होती इस समय कई नवे, वहाँ इह्यादवी में स ११ स

अहरते (बर-इं-वर) वहा—को सभी की एक सम्ब नहीं भारे थे, वे ही होगों से सुक्का और विशेषन ज्ञान स्थिपते तथा सुद्ध सेवार एक ही गती जाने दिखानों की हैं। (विश विशेषनारे बहा---) विशेषण | वे तुम्तो पुल्क हैं, क्या सुक्कांत साथ सुद्धारी विश्वक हो नहीं हैं? किन कैसे एक साथ आ यो हो ? यहते तो तुम होगों सभी एक ताथ पड़ी कारों से !! ११---१४ ।

विरोधन क्षेत्र—विकासी । युक्तकों साथ केरी निराता पत्नी हुई है। इस दोनों प्रात्मेकी काकी स्थाने जा को है। वे आपने प्रवार्थ जान पुस्ता है। की स्थानन हुएक स्थार के प्रीतिकेश () १५ ।।

क्षारने क्या—संक्यों । कुक्ताचे तिले कार और कपूरची स्थाते। (बिट कुक्ताओं बाका) अक्षार, । कुत में पूरतीय अतिथि के की कुक्ते तिले संबंद के बुक्त मोरी-राजी कर रसी है ॥ २६ ॥

शुक्तक मोरा-सहस्र । ताल और म्यूनके में मुझे धानी ही निक गया है। तुम में भी मैं मुझ का है, तम त्रावक क्रीय-क्षीय जार हो-क्या त्राहम केंद्र है काम्या विशेषण ? ॥ १७ ॥

सहस्य केले—प्रकृत् ) मेरे एक ही कुन है और इसर हुए कर्ष क्रमीकत हो; काल, हुए क्षेत्रोंके क्रियाली की-जैस प्रमुख केले निर्माय है तकाल है 7 स ए८ स

पुक्ता संता—संतिपन् । कुछरे पास में तक कुस्य में कुछ भी देश कर है, जा तम अपने औरत कुर विरोधनकों ये है; पांतु इस दोनोके विकारने तो हुई टीक-टीक उस कुछ इरै माहिने ४ २९ ॥

म्हारते कहा—सुक्तान् । अस में हुमते वह बात मूहता वृ—को एका न कोले अवका अल्ला निर्मय करे, ऐसे हुस मुख्यार का निर्मा होती है ? ॥ ६० ॥

सुभाग ओश—सीतवारी की, कूनों हरे हुए कुळारी और ध्वा होनेसे लाकित इसीतवारी प्रमुख्या राजने को स्थित होती है, वही रिवरिट सम्बा न्यान हैनेवारों मक्त्यकों भी होती है। वो हुट्टा निर्माण केता है, बहु राजा नगरमें केंद्र होक्टर व्यक्ति दरकानेवर मुक्तका कहा प्रत्या हुआ कहून-में प्रदेशोंको देवता है। यह केलनेसे की प्रमु पत्या हो से पीय कींकार, के कहा हो से दल पीड़िकों, केल पत्या हो से सी कींकार और प्रमुख बदल हो तो एक इसार पीड़िकों करकार पहले हैं। प्रोनेके किने यूद्ध केलनेकाल कुछ और प्रतिका पत्नी कींकांकों करकार किराता है। पूजी दक्षा कींक किने यूद्ध कहनेकाल हो कपण प्रतिकाह है कर तेका है, इस्तिन्ते कुछ कोंके लिये कभी युद्ध न केलना । ३१—६४ ।।

आहर का-विरंत्य ! सुक्यके विवा अद्वित सुक्रमे



तेष्ठ है, कुळ्या हुन्यों तेष्ठ है, इत्यार्थ जात की तुम्हारी बातारी वेष्ठ है; अक: कुर काम कुळ्याते द्वार को । विशेषक रे अब कुळ्या हुन्यारे अव्योध्या कार्रिका है । तुम्बान् रे अब पाँडे हुन है के के मैं विशेषकार्था कार्र कहात है । ३५,—१५ ॥

हुक्क बंदर—अहार | दुक्ते करेको ही स्रोधार किया है, प्रार्थका हुए नहीं जहा है, इस्तीओ अस इस कुर्वन पुत्रकों किर एसे ये का है। उद्धार | हुन्तो इस पुर विशेषनकों की पुट: हुन्दे हे किया। कियु अस कह मुन्तारी वैश्विनीके निवाद सरकार केस पर कोने स १४—३८ ||

विद्राण कार्य हि—इस्तरिये स्थाप ! आय पृथ्वीके स्थि बृह्य न कोर्ड । बेटेके स्थापंत्र सभी स्थाप न कहकर पुर और कीराओंके क्षाय विश्वसको कुटाये न साथ । बेक्साओं में काराकोंकी कहा होता नेकार पहुंचा नहीं हो । ये किरायों रहा करना कहते हैं, जो जाम कुट्सिये कुटा नार केरे हैं। प्रमुख कैसे-कैसे काराकारों ना सम्बद्धा है, बैसे-झै-कैसे स्थापेंस सारें सम्बद्ध विद्या होते हैं—इसमें कीराय की रहित्र नहीं है। काराह्यों काराहर करनेकारे कारावीकों के क्योरी पूका गृही कारी। मितु जैसे पंच निवास आनेन विशिष्टेंक वर्षे मोजला क्षेत्र की हैं, उसी प्रधान केंद्र भी अन्यव्यवस्थे उन्हें क्या के हैं। सरक फैन, काल, अनुके साम के, प्रीत-प्रतिये के बैक करना, कुल्पनानेने बेक्ट्रीय करना करता, राजके साथ हेत, की और पुरूषे विषय और मूर्न क्रमें—ने अब अवन देने मोच्य मार्ग्य को है। हार्ल्यक देकनेवाल, जेरी करके प्राचर करनेवाल, कुमारी, पैस, प्रत. कि और पारम-पन सर्वोधी क्याँ में नवा र क्ष्मते । अक्षरोह स्तव अभिन्नेत, साहरपूर्वक केन्स्य कान्य, राष्ट्रपूर्वक स्थापन और आर्टने साम प्राची अनुहार—ने पार पार्न भारती हुर करनेकारे है, सिंह ने ही पनि बीक सरावे सम्पतित न हो से एक अहन कानेनाते हेने है। पूर्वे अल क्लानेमान, कि क्रेसास, करन संस्था कर्मा क्रानेवाल, होत्रस्त देशनेवाल, प्रश्न क्रानेवाल, कुराको कार्यमान्य, विकासी, प्रशासन्ता, नामेची हाना कर्पेयालां, गुर्वातामां, स्ट्राम्य क्षेत्रम क्रमार केनेकारः, अधिक होने क्रमानका, बोरबो क्या क्रीन-करि प्रारंगाल, गरितक, वेक्टी क्रिक वर्तनात, कुरवंत, भीति, कर तथा प्रसिद्ध पूर्ण कूर पहले हैंग्से प्रार्थन करनेक ची को दिला भारत है—ने स्था-के-सब प्राथमानेक सरात है। परवर्ष को जानमें सेनेकी पहला होती है, सक्कारने प्रात्मको, व्यवहारो सामुक्ते, यह अनेक सुर्गा, आधित प्रतिकारी पीरची और स्थाप अस्पिने प्रमु एवं दिल्ली परिवा होती है। कुल्प क्यूप करके, जान धीरताच्यो, पूल् प्राणीयो, क्षेत्र हेर्काची स्वयूत क्रांकरक्को, स्रोध स्थानिको, तीन पुरुवेकी केना सामानामारे, वाम समानो और अधिनाम वर्गमाने ना कर देश है। एक क्योंने स्कृतिको स्वर्ध होती है, प्रगानकारों करते हैं, ब्युकारों का क्या रेजी है और संबन्धे सर्वेक करी है। अन कुन कुनको क्षेत्र करते \$—वृद्धि, कुलोनात, कर, प्राप्तकर, परावर्ग, स्कूर प केरलं, वक्षातक कर और कुद्धात । तथ । एक पुरू देख 🖟 जो इन सब्दी पहलपूर्ण गुजोवर इतम् अधिकार कवा लेख है। किस सदाव एका बिस्सी अनुस्थात स्थापन कार्यन है, और राज्य का एक है पूज (राज्यान्यन) सभी पूजेंसे काका क्षेत्रा पात है। राज्यु ! प्यून्यकेको ने अस पुन क्रांतिकार सूर्वन करानेकारे 🖢 प्रचीते का वो १८६०वेट अन्तरण करते हैं और चारका कर्ष समय है अनुसरण करो है। एक, क्रम, अस्तरूप और तर—में कर सम्माने बीडे बहुने हैं: और इनिस्तितक, सन, सरस्या एका है। सपने पर और इन्सिनीको बहुने बरनेवाले विकासि

कोनामा—इन कारोबा संतरोग वर्ग अनुसरण कारो है। का, अव्यक्त, का, तर, का, क्षप्त, का और क्रवेश—ने कर्मंद्र स्वय प्रकारके मार्ग करने तमे हैं। क्रमेरे को क्रमेंस से क्रमें हैंने में केन किया क कारत है: परंतु अधिक कर के के बहुतक नहीं हैं, अभी पर है की सबसे : बिल प्रकार को को की, का सका की; के कांद्री कर र को, ने को जी, किस्पे कर जी, का की कों और से करतो को है, का राम की है। संस् विकास कर, प्रायक्ता, विका, प्रतीनत, पीत, यह, बर, पुरस्त और प्रकासायुर्ज कर बद्धय-ने इस स्टिंड कार्य है। बार्किनियास प्रमुख कार्यास करते हुआ कुर्वा कुरुको है कह बन्ता है और कुरुकार्य करूप पूर्व कार कर अल्प कुल्लाका है अधेन कर्या है। प्रतिको प्रश्नीता प्रत्या अस्यत्य करनेवाने पुरस्को या चूर्व करना वाहिने; क्लीब करनार निजा हुआ पर क्षतिको पह पर देश है। जिल्ली पुनि पर हे पर्या है, क्ष कुछ क्षा का है बका युक्त है। हार्र कार शास्त्रार form gan gree gilgeit worm is formelt gille me करते हैं, का बहुद करते कुछ है करता है। इस उन्हरू कुलकर्म अपूर्ण कृत्य करण हुन्छ कुललोकर्मा है जाता है। प्राचीनके प्रमुख्यको पार्वाने कि क्या प्राच एकार्यान्त क्षेत्रार कुरका ही रोवन करें। पुर्णीने क्षेत्र देशनेकारा, जर्मना क्रामां भागेताल, निर्देश, प्रद्वात करनेवाल और पर्द मनुष्य करवार आधान करवा हुआ और है महान् बहुओ क्रम केवा है। केन्द्रीयों सीव कर बर्दिकारों पूरण सक प्रमाननेता अनुहार करक दूशा महत्त् सुकको उत्तर होता है और राज्ये अस्ता सम्बन्ध क्षेत्र है। यो बुद्धियन पुरानेसे सक्दरि का बन्ध है, को बोबन है। अनेकि बुद्धिनार कुछ हो को और अधेको जात कर असकार हो स्टब्सी कारी करनेने करने होता है। विश्वपति वह बार्य करें, विवासे द्वारों स्वासे दो और आठ नहींने का कार्य करे, निवर्तने क्यांके पार महीने सुरक्तां व्यक्ति बार क्यां । पार्टने अवस्थाने का कान करे, विभागे बद्धानामाने मुक्तपूर्वक स् को और जीवरका यह कार्य करे, किससे परवेके बाद धी क्करों स्व शब्दे। समान पुरूष या परनेगा सहसी, रिकार्शक कारणे बीच कांगर कोंग्डी, संताय जीत हैनेपर क्रमी और क्रमान जार है जनेगर कारीकी कांसा करते है। अवनी कह हर बन्धे हर में देन दिनाय कर है. का के कियार नहीं; जाने किए और उसा देश उसार हो जात

कर्मनारोके सामक सर्वता काराव है। जनि, की, भक्तवाओंके मुक्त तथा कियोंके दुवरितका गुरू जी करन का सकता। राज्यु । अध्यक्षेत्री कृषा कालेकाल, कृषा, प्रकृतिकारिक प्रति प्रदेशनकात्र स्थाप कार्रेकार और होतामन् राज्य विश्वारकाम् पृथ्वेका प्राप्तः करतः है। पूर् विद्वार् और रोवाकर्गको कन्नेको—ने क्षेत्र ज्ञातको ननुष पृथ्वीसे सुवर्णकरी पुष्पका सक्का बाले हैं। पारत रे बहिन्नों

क्रमान्य गुरु है, यूप्तेंने क्रमान एक है और क्रिने-क्रिये यात | विकासका विश्वे हुए कर्न क्षेत्र होते हैं, माहमस्त्री किन्ने क्लोक्को क्या प्रस्तव सेवीके हैं, बहुएसे हेनेवाले कार्य अवन है और भार केनेका बाल यह अवन है। एकर् ! अब सार पूर्वोक्त, ककुनि, पूर्व पु:कार्य क्रम सर्वाश राज्यका का रहकर मार्कि केमे काले हैं ? धरतकेतु । परका से हामें राज्य पुलोसे सम्बद्ध है और जायने विवादन-सा भाष रहाकर बर्धान करते हैं। तार भी कानर पुरस्तन रहाकर प्रतिक स्तरीय स्टेमिने स ३५-------------

# विदुरनीति

(चीवा अचाव)

विद्रानी सहते हैं—इस विकास स्टालेन और प्राप्त केलाअदेखे संबादकर इस प्राचीन इतिहासका उद्यक्तन विक करते हैं: 👊 भेरा भी सुना हुआ है। प्राचीन कारनारे मान है. जाम आसारे महानुद्धिकन् महर्षे शाक्षेत्रको का (पान्द्रंत) क्रमो निवर से के उस सक्य साथ देशकांने कारे प्राप्त- ।। १-५ ।।



ताम नेते—पार्वि ! इय तब लोग सब्द देवल है, आरको केमा देखका हम अवने निवर्ण युक्त अनुसार नहीं कर प्रकरे । हमें से अपर कारकारणे कुछ, और एवं

मुद्रियान् वान पहते हैं; जतः इनलेनोको बिह्नवर्ग अवसी क्का कर्णा **स्कोच्या क्**या करें श ३ ॥

इंपने वहा-केम्प्राओं । की सुरा है कि कैर्य-बाल, क्वेरिक्ट एक अन-धरीका राज्य है कर्तन है; इसके हुए। कुरुको काहिने कि प्रकार करी गाँउ ऑस्ट्रांट क्रिय और स्क्रीयको अस्ते आस्त्रके समय सन्दर्भ। धूनवेसे गासी सम्बद्धा भी कर्न उन्हें नाती न दे। ब्राप्त करनेवालेका रीवी हुआ होन्स ही गानी हेरेकारेको काम इस्ता है और कार्य पुरुवको भी हो होता है। कुलोको य हो गाली है और य क्लबर अवकार करे, विशेषे क्षेत्र तक कीय प्रक्रीकी सेवा न करे, क्रम्बार्स क्षेत्र एवं अधिकाचे न हे, कही वका रोजसी क्रमोक्त परिवास करे : इस कराहो कहा वर्ते प्रमुखेंके न्तरेकार, सुर्वे, कुछ कक सन्तरेको एक कार्यर स्वती है। इस्तीको प्रचारित्यो पुरस् करमनेकारी सन्ती बारोका स्थानेह क्रिके बरियान कर वे । विश्वकी क्रिकी कर्ती और जनता करोत है, को वर्णना उत्तवता करता और वान्याणीसे क्यूबोको बीहा पहुँचारा है, यह देख सम्बन्ध बाहिने कि का मनुष्योंने महावरित है और अपनी चारोंने वरितारको पवि हर से का है। नहें सुरह कोई इस पर्युक्त सही और कुर्वेक समान कृष करनेवाले तीचे बारवाकोरी बहुत केट भीताने से का निवास पूरत चेट प्राचन अस्पन्त वेदना प्रवर्त हुए की ऐसा समझे कि का मेरे कुम्बोको पुत्र कर पत्र है। चैसे कक्ष किया रेग्ने रेंगा जान बैस्त ही हो बाता है, उसी अकार चीर कोई समा, जनमान, उनमी जनमा भोरती सेवा कर्म है के जाना जर्मक रंग पह प्रदा है। से सर्व फिलिके और पूर्व बात नहीं बनाता, स्वारोधे भी नहीं बक्तकत, पार क्रकर भी क्योंने न वे सक् शरव है और न करतेले हैं नरवात है, जनराजेको भी को मारक नहीं

बारत, देखा भी अने अध्यानकी पट नेको छहे हैं। बोजनेरी न बोजना अनुसा समाना १५७ है; सिंहु एक बोजन बाजीको बसरे निकेच्या है, बानी पीनको अध्या भी बन सामग्रद है। साथ भी भी। तीन बोरम नाम से बीसरी विश्वेत्वा है और पर भी भी भरीतन्त्र कर कर से बद कारभवी कौकी विक्रेणता है। यकुन कैसे स्टेन्सेंक प्रत्य स्वतः है, बैसे लोगोब्हें सेवा करता है और बैसा केन बाता है. बैसा हो हो जाता है। जिन-जिन विकासी समादे प्रदास करत है, अन्तरनो सुरित होती पाली है; इस प्रधान पढ़ि इस ओसी नियति हो बाग से मनुष्यको रेक्ट्रनम दश्यान भी कार्य अनुबार न हो। यो न तो क्रम निर्माने जीवा क्रमा, न प्रश्तिको पोत्तनेको एका कारत है, य विक्रकेट कार्य है: मारात और न कुरारोको चोद पहुँकरम बाह्य है, यो निया और जांसाये सवान कव रकता है, का हर्न-सोकारे को है and he shows more man A. Both अवस्थानको कर पाने भी भई स्थल, यो सामानी, कोमल और विवेशिक है, यह जान पूजा पान गया है। के हारी साम्प्राय को देता, देनेको प्रतिक करके वे हो हत्या। है, बुलारेके केनोको सम्बद्ध है, यह मध्यम केलीका पूरत है। दिन्दे, इतासन क्यानेंद्वय पीत कर, सक-क्याने विश्वीर्थ दिस्स गर्फा, (इस स्वयं प्राच्यांचे स्वयंको प्रश्न भी:) में भी का पूजक प्रतेषके क्यांचा है क्यानीकी प्रार्थने के भूति पोदरा ( ब्ला इरास्त विक्तिका भी मित वर्ती है। देशी विकासि अक्य पुरतीको हो दूजा कामी है। को अपने विकार संदेह होनेहे सारण हालोड़े सी सामाल होनेहर विद्यास नहीं करता, विजेको की कुर रकता है, अवस्य ही का अवन पुरुष है। भी अपनी स्वति प्रदेश है, यह उतन क्रमोची ही सेवा करे, समय का स्कूटेन मातन कुम्बोदी भी सेवा कर है, परंतु अकर पुरनोक्त सेवा करावि न करे ह पनुष्प ह्य पुरुषेके बारचे, निरमान्ये क्योगने, क्षतिसे उन्ह पुष्पार्थने कर पाने के प्राप्त कर हो; गांत क्रमते काल कार्यन प्रज़ोंके सम्बान और सरामानको का करानि को प्राप्त कर सम्बद्धाः ॥ ४—२१ ॥ मुख्यू ने महा-निर्देश की और अवित विवस्तान

मृत्यहरे नदः—विदुर ! वर्ण और असीत निरम्बाता एने प्यूत्वत केवल भी काम कुरूपे अपन पुरम्पेकी इच्छा कत्ती है। इस्मिन्ने में कुत्तरे यह तथा करता है कि अपन कुरा स्मीन हैं ।। २२ ।।

विदुश्यों जेले-जिनमें तथ, इतिस्थानम, मेहेका सम्बाद, यह, परित्र विवाद, तक अन्तरून और सम्बाद-जे तत दुव कोचन है उन्हें तक कुल कहते हैं।

विकास सक्ताका विकास नहीं होता, को अपने होबोड़े कत-विकास कर की पर्वेक्त, असर्वकारे वर्षका कावरण करते हैं तथा असरवाद परिवार घर अपने घरनाहै क्रिकेट क्रोडिं करते हैं, उन्हेंका कुल अपन है। यह न होनेतें, विकार प्राप्त किया करते हैं, केवद लाग और वर्गका करवान करनेते काम कुल भी जवन हो जाते हैं। देवकाओंके बनका जब, स्वयुक्ति बनका अवहाल और ब्रह्मकोची भवीतका कराइन करनेते जान करा भी अधन हे बावे हैं। जाक ! ऋक्ष्मचेक अन्तर और विन्हारे तथा क्वेज रकी को बक्का किया नेनेके अच्छे करा भी निक्षित हो जाते हैं। कीओं, करूबों और बनसे सबक होबार भी भी कुल संक्रमानी हीन है, से अन्त्रे फुरवेंकी गुजनाने न्हीं का सकते। बोडे बनवाने करा भी परि सदावासी समा है, से में असे कुलोबी गणनाने का माते हैं और कार पत्र कर कार्र करते हैं। सहकारकी रहा कार्यके करती क्योंके; का में जान-कार राज है। का ब्रीय हे कारेरर ये महत्त्वरी पहुच और की पन मतः, वितु से प्रकारको पर हो गया, को से भी ही संस्क्रमा पार्टिने । पी कल सक्कारों क्षेत्र के हैं, वे कैजी, बहुओं, केंद्रों तथा हरी-वर्ष केतीके सम्बद्ध हैनेवर भी उनति नहीं कर पते। कारी कारणे कोई के कारोबाता न हो, हसाबिक कारक सन्तरण कार्यकान राज्य अञ्चल कभी न हो और निकारित. कर्मा क्या अस्तवसम्बद्ध व हो। हमी हकार पाता-वित), केला हुई अतिक्रिकोची भीतन वारानेसे पहले प्रोचन करनेकाल भी न है । इक्त्वेनोन्देरी में प्राह्मनोन्द्री क्रवा करें, प्रक्रमोंके साथ हेन को एक वितरोको विकास एवं तर्वत न करे, वह क्षमधी सम्बन्धी न कान। तुस्तका आहान, पृथ्वी, कर और चौची चौदी कसी—सक्तानेंद्र करने इन सार चीनोची कभी कभी नहीं होती । स्तरप् । एककार्य करनेवारि क्यांच्य एक्टोंके वहाँ में एक आदि बस्तुई बड़ी सञ्जूके साथ सरकारके क्षेत्रे कारियन की जाती है। नपवर । ब्रोटा-सा ची का चार को समझा है, जिन्ह कारे कार नई-बड़े होनेवर भी देख नहीं का समाते. इसी अनांत अंतर्थ कुराये स्वयन सहाही नुष्य कार रहा सकते हैं, बूलरे बनुष्य बैसे नहीं होने ( विसक्ते कोमने करमीर होना यह उस इंग्लिन होका विसाधी सेवा को जन्म, कर निकान्त्री है। निकानो नहीं है, जिसपर निरासी चीति विकास किया क सके; इसरे हो संगीपात हैं। पहलेसे बोर्ड सम्बन्ध न बेनेवर भी के विकासक सर्वाय करे करी बन्द, बड़ी बिट, बड़ी प्रसाद और भी जानन है। विस्तरका बिता प्रसार है, से बड़ोकी लेका नहीं करता, उस अभिक्षित्रमति पुरुषोः सिन्ने निजीवर केल्यु सामी नहीं होता । बीवे इस सुने सरोवरके आय-पास है नैकाकर का बाते हैं. चीतर जो प्रदेश करते. अने अवस निरम्धा विश्व प्रदान है. यो अक्रमी और प्रतियोग्ध गुरुष है, जो क्रमी प्रति स्वी होती । 🖦 प्रजीका संभाव पेपके सतान प्राप्ता होता है, वे स्तारा कांच कर हैओं है और अवस्थ है अपन से असे है। को दिलोंने सम्बार क्रांचर और उनकी स्वाच्याने क्रांच्या होबार की उसके नहीं होते. देखे बुद्धकोंके क्लोबर करका नांस मंत्रकंत्री क्या भी को सभे । का हो या न हो, नियोग्स से क्षान्तर को हो। विश्ववेदों कुछ की न बांग्ये हर क्रम्बेट कार-असरको परिवा न गारे। संज्ञानो का वह होता है, अंतरको बार रहा होता है, संतरको अन रहा होता है और संतापसे मरून रोगको प्राप्त केवा है। अर्थक कहा खेना मार्ग्यों नहीं जिल्ली उससे के बेन्सर प्रतिस्कों बढ़ा होता है. और कह प्रस्तुत होते हैं। इससियां अस्य कार्य क्रीक न करें। मनव्य मार-कर प्रका और जब केवा है, बार-कर हाने इहाता और कक्षत है, बार-बार कर्च स्त्रोंसे पाणना करक है और कार्र कार्य पायम करते हैं, तथा करन्यन मह कार्यके Red wher were & afte und arrie find uber wert & : मुख-ब:च, अवति-विकास, साथ-सूर्वि और जीवन-बारग-ने क्यी-कार्रित प्रश्न होते सूत्रे हैं: इस्तीओं बीर प्रकार क्यों क्यों की भी और और जी बस्त प्रतिने। में का प्रतियों बात के प्रकार है। इस्पेके मो-मो प्रीका fere-fiet fortral six upli & orri ufa mit अवहर और देनी है जैसे को कोने की तक प पाना है स २३ — ४८ स काराने का-कारने केवी को अलके सका सुक

कृत्यपूर्ण नक्षा-कारणे क्षिती क्षूर्व आपके समान स्कूल करते मेर्च दूर राजा वृधिद्वितके साथ कैने किया जनकार किया है; अतः से युद्ध करके मेरे पूर्ण पूर्णका नक्षा कर आतेने। महायो । यह तम कुछ तक्षा क्षा करके व्यक्ति है, पेच यह पर भी पनारे अहित है; इस्तीनों को खोलकून और सामग्रास के, नहीं पूर्ण करान्ये सं ४९-५० स

विद्वार्थी सेरे--पायक्षण नरेता । विका, वन, इतिहर-विज्ञा और लेपनामके दिया और सेर्स आपके विके साविकार स्थाप में बड़ी देखता । बुद्धिने स्तुष्य अपने पायके दूर करता है, तपकारों न्याद पायके जार होता है, तुम्बुक्षणों स्वर और योगने पायि पाता है। योकारी प्राप्त राज्येकारे स्तुष्य श्वारों पुण्यात अञ्चय नहीं सेरे, नेटके पुण्यात भी शताय नहीं रेसें। किंतु विकास मानवें स्वयंक्तों रहित से इस सोकार्य नहीं रेसें। किंतु विकास मानवें सम्बंदित होता से इस सोकार्य विकास सुने हैं। सम्बद्ध अवस्थान, न्यायोगित सुन्न, कुलकर्ग और सन्त्री तद्य की हां उपलब्धे अन्तर्थे सुक्रकी वर्षि होती है। राजन । आयरमें कट स्वानेकारे स्वेग अब्बे विक्री-वेसे कुछ पर्यन्त कुछर भी सभी सहस्की नींद नहीं सोने को; केई विकोध कर स्थल तक बंदीकनेंद्रमां की 🗃 रही प्रमान भी प्रशास नहीं हेरी। में पासर नेक्सन रको है, हे कुने बनेक अस्तरम की करते। एक की की यो। अर्थे पेट्स की प्राप्त होता तथा स्वत्तिको बार्न की नहीं स्कृति। दिल्ली कर की मही कर से उन्हें उन्हों की सरको, उनके केय-केमको को निर्देश नहीं हो पर्ता; राजन, ( बेहुन्यकारी प्रकोबी विशालक दिन्य और कोई गीर नहीं है। मेरे फेटोने पुर, सक्ताने एवं और पुरावे दिखेने **ब्यूजनाया होना अभिन्ह कारण है, वरी जनार अपने** वर्तन-क्युओरे तथ होता की सम्बद्ध हो है। निर्म सीवार कार्य हो बाली स्वार्थ कार होनेके कारण कहा सर्वेतिक क्या अक्टरबंध क्रोबंध स्थानी है। यह यह साम्यानेके नियमने वी सम्बादि कहिये। ये कृति होतेना भी सामुक्ति सर्विती treat it up it works t week at tredail असम-असम होनेवर सुर्वा केवारी है और एक साथ होनेवर प्रकारिक हो कार्यों है। प्रति प्रकार वार्तिकार भी पाट केरेनर इ.स. इतुनी और प्रकार हेमेज सुनी रही हैं। कृतरह । जे रोग प्रक्रमी, कियो, जारियाची और मैध्येश है पूछा प्रकार बाजो है, से इंप्रत्यों कोट हुए स्वालेकी गाँति मेर्च निर्मा है। बारे क्रम अनेतन है तो यह बताबन, श्रुपुत तथा यहा बाह्य होनेवर की एक ही हामचे जीवीके प्राप्त करनाईका क्रमान्त्रेत्रकेत बरावाची क्रिक क क्रमा है। विश् मे का-में ५३ एक साथ दावन प्रमुक्ते काने नथे हैं. में हक-दालेके काले कही-वी-कही अधिको भी पह समले हैं। क्री प्रकार समय पूर्णने सन्दर्भ क्यूनको भी अनेती हेर्नेवर पत्र अपनी अवस्थि अंदर सम्बद्धी है, मैंसे अमेररे कारते पान । जिल्ल बरहार नेता होनेते और एकारे दुसरेको सक्रय नैकलेने कारियाने सीन इस प्रयास पश्चिमी जात क्षेत्रे है, जैसे दारावारे करता। प्रकार, भी, ब्रह्मारी, बाराबा, सी, अक्टाम और प्ररामक—ने अक्टा होते हैं। राज्य, [ अवदा करवात हो, ध्यूको हा और आदेकारे होहतर कुर्य कोई जून वहीं है: क्वोंकि तेनी से प्रोंके समान है। माराज ! को किया नेतारे अपन, महत्ता, सिराने को पैता बारनेकाल, काको सम्बद्ध, बहोर, शीका और गरम है, की सक्तवेतर का करनेवेच है और विसे हर्नन की में स्वाने---वर क्रोकको अपने यो पाइने और प्राप्त होहमे । देशो पेटित बहुव गहर परनेका जात की करे.

क्रिक्टेर के उने दुक सुक्त क कर नहीं विराध । केने कहा | करें । उनी चौरन एक-कुलेके राष्ट्रको कह और निराधी ही क्रमी रहते हैं, से म से क्य-सम्बंधी पोनोब्ह और न सराब्द्र है अराज बस्ते हैं। एकर ! क्यारे करने क्रेकीको मीती गर्ने देखका मेरे बडा था, 'आप कालोबाने जातक क्षरिकारो देखिने, विद्वारकोत इस अस्तुतको विसे कर करते हैं। जिल्ल जारने मेरा कांक की कांच। यह का जी, विस्तार मुक्त कारावांट प्राप विशेष हो; सुरूप वर्णका होत ही रोजन करना चाहिने । कुरमञ्जूनेक उपानंत की हाँ सकते मध्य होती है, बारे यह ब्रह्मसम्बद्धि सहस्थे कर्ष है से पा-वेदोला विषय पार्टी है। प्रथम है अपने पर परकारोबी यहां करें और कामुके कुत आपके कुरोबी यहा । देवियों ह ५१—४४ ह

निया सम्बोध काम्बा एक है कर्तन है, सभी सुनी और प्रमृद्धिकारी होचार सीवन प्रचलित करें। अन्यवेद-कुरान्यतः हे इस समय कार है कौरतीके आकारतां है, करांच आयो से असेन है। यह । क्लीके पर आरी करूक है और करकारों बहुत बहु या पूर्व है। इस सबय अन्ये प्रकृती पुरू क्रांते हुए क्रम्युक्तिक प्रवृत्त प्रतिविधे । कुम्बर । जान नाम्कारेंशे सन्ति कर हो, विससे क्यूनोसी आकार हिंदू हेक्टिका अकार न किले। नवीन । सनका कार्या सार्था को हर है। ध्रम आग अपने पुत्र हर्गायनको

## विदुरनीति

(परिवर्षा सम्बाह्य)

विद्रार्थी कहते हैं—राजेन्द्र ? विविध्यवीर्थनम्बर ? काम्यव्य मनुर्वीने पद्धा है कि नीचे रिक्के प्रत्य प्रमानके कुलोको कह इस्में कि परावक्षेत्र सामाने हैं को हैं-से कामानार पृष्टिने प्रकार कारत है, न हामाने का सम्बोधाने क्योबारीय प्रदेशकारे प्रकार कारण है, कारणे प क्षांच्यानी पूर्वची विश्लांची च्याकृत्या प्रचल चला है. प्रात्तको अनीमा पुरुषा धारा अन्य है, पर्नाक्रक कारकार करके संख्या केला है, प्राह्माने केला कारण है, क्षीरकार्य क्षण अन्यो जीविक पात्रम है, क्षणम कर्यके शरीम प्राप्त प्राप्त क्रमा है तक आध्यतिक क्रमा है. अरके फारने ज़रूर होकर भी भीन कर्न करता है, ज़र्नर होकर भी जनमान्त्रों के बॉक्स है, बहुमीनको उन्हेंब मता है, न प्राप्तेकोच्य पर्युको चलक है, बाहर होकर पुरानको साथ परिवास पर्यद करता है एक पुरानको स्थानको संबद्धते कुलार भी एक काले कान्ये जीवा बाह्य है. राजीसे समाप्य करता है. आवश्याताले आँका श्रीकी निन्त करता है, बिजरिये कोई कहा ककर की 'कर नहीं हैं' ऐसा फाकर को क्यान प्रमुख है, परिनेतर कर केवर जानेत दिन्ने अन्तरी और क्षेत्रक है और क्षानके प्रक्री सामित करनेका प्रयास करता है। यो पर्वा अपने साम पैसा पर्याप करें, उसके साथ केंग्र के कर्मन करना पार्विये — पार्वे नेति है । प्रयत्ना आवाल कार्नेकारेके स्था क्यादानी कर्मन करे और अध्या नार्मन करनेवालेके स्वय साय-व्यवकारों ही येत जान व्यक्ति । बहुमा जाना, मात्रा देवंका, पृत्यु प्रायोग्य, असूच वर्षायरमञ्ज, कार

सम्बद्धाः, शैक पुरसीको सेवा स्वयुक्ताताः, प्रोच राष्ट्रीका और अभिकार वर्गकाया ही कहा का देता है ॥ १००८ ॥ कार्याने कार-या पार्थ केट्रेने एकारो भी कर्रकी उपयुक्ताल कारण गया है, से यह फिल फारणसे अपनी पर्य अपूर्ण की करा ? र ५ ४

मेहरको सेरो---रामम् । सामग्रह काम्यानां हो । असमग्र सन्दित्ता, स्त्रीच्य घोरणा, सालका अन्तव, स्रोप, शर्या ही पेट कार्यन्त्रों विकास सीव विकास —में हर शीवर सरकारें क्षिकारिकोची अस्तुची बाजारी है। में ही कर्मनीवर प्रथ करती है, कुल नहीं । भारत रे की अध्ये कुदर विकास सारवेदार्शिकी क्रीके साथ सम्बन्ध करते हैं, गुज्योगाने हैं, असून क्रेकर स्टाब्से क्षेत्रे सन्बन्ध रहाया है, बरान पीता है का से क्षेत्र हुए। कार्यकात, कृतिकी सीविका मह weburn, supplied through first pur-our भेजनेकाल और प्ररातकार्यी दिल करनेताल है—के sm-के-का बहुतकोंके समान है। इनका सह हो जानेक अवस्थित को-क केलेको अस्ता है। क्लेको अस्त मान्त्रेमाता, नीरिया, श्रासा, प्रास्त्रेय आह भीषण संस्थेताता, विकारीया, अन्यविकारी प्राम्बेंके पूर राजेवारण, प्राप्ता, कारको और कोमार सम्बन्धान विद्वार सर्गातमे होता है। राजन् ! क्या दिन कथन बोलनेकाल जनुन्न हो १६१००रै ही जिल सकते हैं, किया को अधिन होता हुआ हिलाकी हो, हेरो कारको करण और स्रोता खेनों हो सर्वम हैं। यो वर्गका अस्तर नेपर स्वा स्कारेको देव स्टेन्स च अदेव--प्रस्का निवार क्षेत्रकर अधिक क्षेत्रेगर भी हिल्ली करा बहुता

है, उसीसे राजाको सबी सक्रमक विकास है। पुरानक रहको रियो इन्ह पर्वापाद, प्रांत्रकी पहले दिनो प्रांत्रका, देखारी राजने दिनो गोजन और सामाने मानामने दिनो सारी प्रभोक्त जान पर देन प्राचिने । अध्यक्ति विन्ने कान्यी प्रभ करे, बनके क्रय भी सीवर्ग एक करे और की रूप कर होनोचे हार कर अपनी रहा को। जानेके करको पत्र प्रेसमा 'महनोते के क्रमनेका कारत देखा पता है, कार ब्रियान पर्या शिमें भी बता न केते। यसर । की कुरका होता आरम्प होते हतना भी सक् वा कि सा केट मार्ट है। जिल्ह केलीको की एक और एक मार्ट करे, उसी तक वेरी का बात की आवको अच्छी नहीं रहते। नरेक । आप क्षेत्रोंके क्यान अपने क्षेत्रेक क्ष्म विशेष स्वापने मोरोबे स्वयुक्त पाण्यानेको परानिका करनेका प्रयक्त कर यो है. सिंहोंको बोहाबर सिम्बरोको रक्षा कर को है: समय अलेकर मारको प्राप्त किये बहुत्वार बहुत पहेल । सन् ! से कारी का किलानमें को क्षेत्रके करने पढ़ केन्क्रल कारी सोध पढ़ी करता. जाना पुरस्तात विद्यात करते हैं और को अपनीको समय को नहीं होतह । केन्कोको चीनिका के करोड क्रारेवेड राज्य और करोड अव्यानका प्रका जो काम करिने: क्लोकि अंगति जीनिका हैन करेनों केनोंडे महित होपर पहलेड हेनी पनी भी हर सबस विकेश कर मारे हैं और प्रमाण परिवार का के है। बाले बारेना, terr-wer afte aften derr aufben Pages state für स्वीत्र सहक्रांचा राज्य यह क्यांकि व्यक्तिनी-वर्धन कार्य भी सक्रमकोतात जाना होते हैं। यो जेनक स्वामीके माणिकाच्यो सरकावर आरम्बरतित के सरका कार्नेको पर were & sh fired on majores, terberg, war-और एकबी प्रक्रिको पालेकाव है, को करने सकर सन्तरका कृत्य काली कार्रिये। को क्षेत्रक स्वाधिक उद्या केंगर काची बाराब्य जातर नहीं करका, विजये कामने समाने मानेपर इनकार कर काता है, अपनी कृदिका गर्न करने और प्रतिकृत केलनेवाले प्रत भूतको श्रीत है त्यल हैव साहिते। महंबाररित, कावारतकृत, बीत कार कर करनेकार, इपास, प्रकारण, सारोंने सहस्रायेने न स्वयंत्रास, केरेन और अपूर वाजनारय-अन अन्य मुख्येसे युक्त मनुष्यको 'का' बनाने जेन्य कारण एक है। सावकार पर्ट्य विकास होनेकर की सार्वकाराओं काची प्रश्नके कर ने काच, पहलें क्रिफेटर चौरानेस्ट म स्टब्स के और एका निवस कीच्ये साम करण जाता हो, जो प्राप्त करनेका का न करे। क सक्रमधीयाम शेला का बात सोनीचे साथ प्रकास-

े समितियों बैक्सिट प्रस्तात से एक हो, कर प्रस्ता असकी प्रस्तात क्ष्मक न करे. 'में स्थान क्षित्रात नहीं करता' ऐसा की न को। अभिन्न कोई पुक्रियंगा बहुत कराका व्यक्ति हर कार अधिक प्रकार छन्। स्वतिकारिकी भी, एक्यमंत्रारी, का. वर्षा, कोटे क्योंबाली विकास, सैनिक और निवास अभिवास कीन रिव्य करा है, यह पुरत-का सबके क्रम रोज-वेजक जनकार ने करें। वे आह एस प्रान्त्ये क्षेत्र करते है—बुंद, कुलेला, प्रान्त्यन, physical, reme, after a sixther press. कंप्यक्रकि द्वार और कुरहका । सन । एक गुण देशा है, जो हम सभी महत्त्वपूर्ण गुजीवर हाज्य अधिकार कर रेता है। रामा किस प्रमान किसी मनुष्यका सामार करता है, उस समय पद पुन (एक्सम्बन) उन्हेंस सभी नुवासे बहसर क्षेत्र क्या है। विक कार करवेवले परूपको कर, १४४, क्या, कर, रूपका वर्ण, कोपल्या, प्रमुख, प्रक्रिया, क्षेत्र, सुरूपका और पुन्ती कियों-न्य का लग आह होते हैं। बोक चोचन करनेकांच्ये निवादीय कः पन सहर केंग्रे है—अर्थाण, जान, यह और सुक्र दो निहरते हैं। है, सानी संकार कुन्द केरी है, क्या 'का बहुत फानेकार है' रेख प्रकार सेन कारर सकेर भी पत्रो । कार्यन्य, age quibals, see sir-lik de metus), auton ternit, GE, Ep-annelle per is thebank afte foller केर करन करनेकारे मनवादी कावी अपने करने न हराने है। बहुत दु:सी होनेना भी कुरण, नाती बक्तनेकारे, गुर्चा, stared episaris, qui, Switell, Rabill, fie ufwfienis और काराने क्यों सक्तानको स्थान भी करने नाहिते । हेक्स कर्ष कर्मकार, उक्क स्पन्ने, पट अस्तरकार मानेकारा, अधिक प्रक्रियाता, केवर्स रहेत, अपनेक्ट्रे पहर कानेवाल —हर हर अधारते आणि पुरुवेची क्षेत्र भ सहे । बन्धी प्राप्ति स्वान्यवर्धी अधेवा रकती है, और स्वान्यव पानको अनेका राजते हैं: ये केची स्टब्स्यानेके आर्थित हैं, वरत्वरतेः प्रकृषेत्र किया क्रमति निर्देश नहीं होती। प्रतीको जना कर जो जनके पानी पुत्र करके जन्मे दिन्ने किही वीरिकामा प्रथम कर के जिए क्याजीक केन्द्र वस्ते पान किया कर देनेके पक्षात करने प्रतिकृतिसे रहनेकी उच्चा करे। को संस्था प्राण्यिक रिस्ते क्षितकर और अपने रिस्ते भी सरक हो, उसे इंडएप्टेनब्दिसे को, सम्पर्क निर्देश्योक वर्ष मुख्यम है। जिसमें बर्शनिक स्ट्रीक, प्रभाव, तेय, पराधन, सामेन और विकास है, उसे अपनी जीविकाके जनका का कैसे हो सकता है? राज्यनोंके साथ बढ़ करोगें को दोन हैं, अनग होड़े करियो; उनसे संचल क्रिक बारेवर हुए आदि देखाओंको भी सह है उसन प्लेख। काने दिला प्रतिके साम की, निज जोगानी जीवन, व्यक्तिक तक और क्युओको सामद होना। सम्बद्धाने तिको जीवा हुए पूर्वसन्तरं वेले सले संसारचे जावारिक और प्रस्ता कह है जात है, जो एक पीन, जन, हेन्यकर्प और राज्य पुनिविक्ता जहां हात कोय हार वंतरायक संका मा सकता है। सामग्रे से पुत्र, वर्ण और वॉट कवा--ने इस विकास राजुरानीय प्रान्ती पृथ्वीचा प्राचन का राजने है। राजपु ! आरक्षेत्र एक करते। संस्थान है और प्रमाण आर्थे क्षांको सहा है। अन प्रस्तांत्रीय क्षास करते यह प प्रतिके का करों का नकांची हा र नकां। नकांचे हिना करको रहत नहीं हे हमारी तथा गर्मक निम्न नाम नहीं क्ष अपने: वर्गोर्क क्या कानी का मने हैं और का क्राजेबी। विकास का कारेने क्या कुत है, में लेन कृतिके करणायम पूर्णको करनेकी केरी एका नहीं रक्ते, रीवी कि प्राप्त अवस्थानेको मान्त्रेकी रकते हैं। को अर्थको पूर्ण दिनोत पालक हो, उसे पहले कर्मक ही आवर्तक बारना जाहिये। वेले कानी अनुसाहा जो होता, उसी प्रकार क्षांचे अर्थ अरुग नहीं होता । विकासी सुद्धि समस्रे स्थापत कारकार्य प्राप्त के गयी है, अभी अंतराते को भी अवसे और विकास है -- का सम्बद्धे पान दिला है । को सम्बद्धाना करें, क्षाने और पहल्का रोजर फावा है, यह इस रोगा और कारोक्रमें को कर्न, अर्थ और कारको अञ्च कार है। राज्य । यो प्रदेश और प्रश्नि की हुए केनको केन्द्र तेसा है क्षीर अस्पतिने भी बैनेको एवं नहीं बैठक, नहीं राज्यस्थितर अधिकारी केवा है। पेनल | अल्पना सामान है, पहुनोर्ने राह्य परिव संवक्षणका करने होता है। उसे श्रुपिये । यो संबुध्यन है, na miles um automo la veniras Petros que um la

। परिवरित्येन वर्गके स्वानको स्वेतन कर बाले हैं: और क्रम ! के क्रम-अन्त्रेरे प्रश्न हान सामानिक कर (बद्धकार क्षेत्र) है, यह 'अधिकार' नामक चौचा कर है। पाला ! किससे इन सभी परतेका संख्या है पाला है, पर क्टोने केंद्र 'सुद्धिक नार' बहरतात है। यो सर्वान्या बहुत 🝅 अवस्था कर राजता है, उस पुरुषो पाय वैर राजक। का विभागक निर्माण न हो जान कि मैं कारों पर हैं (यह वेट पुरू जो कर सवाब) । देसा कौन प्रक्रिकन् हेचा की की, राज्य, सांच, पढ़े हुए पाड, साराजीवतने जाति हरा, केन और मानकार पूर्व विकास की संबंध है ? विसंबंध व्यक्तिक व्यक्ती पान पान है, यह बोबके दिलों न कोई बेट है, म क्या है, म होना, म नका, म कोई महानेन्द्र पार्ट, म क्रमानिकेस अनेन और ए नार्राचीर रिद्ध पूर्व हो है। mer i myseel unit for sp ute, selt, the ele-अपने कुरूने क्रांक महीकता अन्तरह न करें; वर्गीक ने सर्प को केवाबी होते हैं। पंतारने अति एक बहुत् तेन हैं, का कुल्ली केली जाते हैं, जिल्लू करताब कुले लोग को अवस्थित र का है, क्लाक का उस प्रकार पूरी परार्थ । यह असि बाँद प्राप्ताने प्रमुख्या अर्थात कर वे प्रमुद्रे हैं, यो पह अपने रेको क कार्यो एक इसे बहुत्त्वो भी नार्य है जार क्षाता है। इसे प्रकार अपने कराये करता ने अधिके सरात क्षेत्रक क्ष्मा क्षमानको पुरः और निवारकृत है कहाने क्रिको अनेकारी एक पराच्याको स्थित है। अपने क्रोत्सीय अप राजाने कारत है और पाणार नक्षर कारान्त्रको स्था है पहर पुरुष साम रिने विश्व स्था कर्न का भी क्याती । क्यान् १ सम्बद्धानस्य । आयोः पुत्र एवं प्रम् और पाणकोच्छे अल्बे जीतर क्लेक्से हींह कार्योको । कार । विकास दान हो कानेपर कर गा हो जाता है और समीह किम सिंह की का के बाते हैं स १०-६४ ।)

## विदुरनीति

(क्या सम्बन्ध)

अस्त है, का एका परपुरुक अधियो प्राप्त कारणो सारे राजों है. किर का या बज़के सामाने सरकर नाम होता और प्रचान करता है, से पुर: प्राचीके सामानिक रिपटिने [ 039 ] सं० म० ( खण्ड-- एक ) १७

विद्वारों बहुते हैं—का कोई कश्मीय पृष्ट पूजा निकट | अपने निक्री मालो, स्वान्तर सामानकार स्वाहकर जात क्षेत्रन करावे । वेदवेशा प्रक्रमा किलके वर कराके स्वेप, जब क केन्द्रकि काल कर, यकुके और वैक्षे औ जीवार कारत, के पुरुषेरे का पुरुषका बीधन कथ प्रश्न क्षरक है : और पुरुष्के पार्श्वके, कर बोई राजु पुरुष | बारक है । वैश्व औरवाज करनेकार (वर्ष्य), अवस्त्रीये अतिकिके सार्वे परार अपने के पहले सारार देवर, बार पाए, बोर, बार, देवाबी, शर्मक्रवार, सेरावीची और राजा आने पराव प्रकारे, किर आनी सहात प्राचन वेटीयोगा—ने प्राप्त के बेनेने नेना भी है, क्यारियारे

अभिनेत केवर अने से विदेश किए पानी आसाहे. पोन्प होते हैं। काक, प्रवार हुआ अल, खूरे, कुछ, बाबू, केल, बी, बिल, प्रोत, पान, पान, साथ, साथ प्रपत्न, क्रम प्रकारको प्रथ और पुर--पूर्वती प्रसूर्ध वेक्केबेन्स नहीं है। को प्रदेश न भारतेकार, वेटर, बाबर और सुकारिके क्षा-क स्थानी-पतार, प्रोकारीय, सर्विय-निवासी स्त्रीय, निवा-नवंत्रको क्षम, क्रिन-अदिवाद जान कार्यकात क्रम आर्थन है, क्रो पिश्चमा (संन्यासी) है। यो चीवार (चंन्यने पायान), कार-का, केवा (विश्वीक) और कार कारत निर्माट कारत \$, wood word your \$, solicity water \$, well there भी अतिकित्ताने एक सम्बद्धा एक है, को पुरस्का राजरी (शासकरी) केंद्र करा गया है। प्रदेशकर पुरुषा मराई करके इस विकासक निक्रिक व को कि 'हैं कर हैं'। इदिशालको पहि बड़ी हान्छे होती है, कारण करेगर का उनी परिने कर्मन हैना है। ये विकास कर की है, इसका से विश्वास को है की; विश्व को विश्वासका है, करपर भी जाविका विकास न भटि। विभागी कुलको प्रमान हुआ पन कुलेकेर पर इसला है। जुलाने पार्टिने कि क ginfelfer, fignilent toper, specifical recognition forms धारोबारव, दिख्यादी, सन्धा तथा विक्वेंद्रे निवद गीर्ड करन बोरानेकारा हो, परंतु करोड कहारें काची व हो। कियाँ करवी राज़ी कही गरी है, वे साराज सीव्यानकारियों, प्रकार बोन्प, परिवर तथा कामी कीमा है। उस्तः इनकी विकेशकारों रहा अनी साहिते । अन्य:दूरको रहाया सार्थ विवासी और है, रातेष्ट्रीयका प्रकार पासकी प्रकार है है, पीओको केवाने अपने समान मारिकारे निवास को और प्रतिका कार्य क्यां करे। सेक्कोड्रास क्रांतिक-स्वापत को और पुरोके हुए इक्क्नोची रोक को। जल्मे और, प्राथमको स्थापन और प्याप्ता सेम्ब पैक्ष प्रथम है। प्रशास केन प्राचेत प्रमाद होनेपर भी अपने इत्यक्तिकानों पाना है जात है। अन्ते कुरूने जन्म, जीत्वे कुन्ता केन्न्त्री, कुन्तक्रीक और विकासकृत्य संद पूजा एक कार्यूने अधिको प्रति बारताको विका पूर्व है। विकासकारी मनावादी उसके बहिरंग एवं अगरेप सम्बद्धांत्रक नहीं करते, इक और हरि रक्षनेवास च्या रूपा विकासमाह देवलेवा उनकेन कार्या है। सर्थ, बाल और अशंतकारी पान्तीके पार्राते पाने व मार्ग्य, बरबे ही दिवाने : ऐसा बर्ग्यो अपनी प्रकार हतरोवर प्रबट नहीं बेटी । पर्यक्रमी बेटीन प्रवस्त अवस राजपारको प्रयास स्थानी संस्था सा संस्थानी विर्वत क्लारस प्रकार करनी काँको। हे पास्त । को निवास हे.

बिया होनेवर भी परिवार न हो, परिवार होनेवर की विरायत कर कारों न हो, जा अपना का प्रमु सम्मेक्षे क्षेत्र नहीं है। राज काही परा परेवा किने किन किसीको काम मनी र. क्यते। क्वेंद्रि काली प्रति और प्रकारी सामा प्रा क्लीनर ही पहल है। विकास वर्ग, अर्थ और प्रश्नानिकाल सची कर्मीको पूर्व होनेके बाद है संपादकान बाद पार्ट है. को एक एनक कामोने हेतु है। अपने नकते छा रक्तनेकारे का एकाको निःशीत निर्मेद करा होती है। की बेक्स के का करता है, यह का क्योंक निर्मात की कर होते हुन्ते बोक्स्ट के हुए से वैक्स है। उस्त सम्बंध अनुसार के क्या केन्सार केस है, जिस करना न निर्मा क्षान प्रभावनात्र प्राप्त पान पान है। वैसे वेटीको को क्रिय प्राप्त असमा स्थिति की हेता. की हकत बर्गेच, विका, पान, सारान, विवेचन और स्वासन पाना क्ष मानेको पाने विन्य कोई पुत्र मनावा सुन्तेका अधिकारी: को हेन । एउन् । यो प्रोप-निषद् आहे का पुनीको mounth's more after \$, field, who ally grand करता है एक विकोर सरकारों कर लेग प्रत्येत करते हैं. कर्त राजनेत अनीन प्रभवे पानी है। निरम्बंद क्षेत्र और इन्हें कर्त की को, के अंकरण करीबी को देवतार करते है और कुम्बनेकों भी कर्न ब्यूनकारी रकता है, जान्यों पुन्नी कर्मात कर देवेकाची के क्षेत्री है। प्रतिको साहिते कि अपने 'क्या' नामों और छमेतिक 'क्या' वारतमें पंजा रहे। केंब्राटेको वर्गात कर है, यह उन्हेंने ही प हाल है। क्षात्रकारी स्थापन प्रत्यात है, फीस्ट्रो सन्तर पनि पानता है, क्योंको एक क्या है और एकको भी एक हो सरस्त है। कार्ने जाने हुए कार्यान प्रत्यो कार्य क्षेत्रम नहें कार्यने । नहि जनम कर जॉन्फ न हो से एक होकर करके पार समय किराम करिये. और कर हैनेका और यह है हराना पार्टिये: क्योंक और कर पार र गया हो उससे होता है। पर उपस्थित केम है। केमर, समाय, रामा, बढ़ा, माराम और पेपीयर हेनेकहे होकहे उक्कपूर्वक हेकम बाहिने। निर्वक काक करण क्योंका काम है, स्टेक्सन एकको इसका जान कार पारिये । ऐसा पार्नेनी को लोकों नार निरात है और अन्तर्वक सामन भी करन पहल । विसर्क प्रस्ता हेनेका बोर्स कर जो उस निरम्ध होता में कर्ष होता है. केरे क्याच्ये क्या जारे पाँठि गाँ बाहर केरे की गर्दछा चीन्यो : वृद्धिके बार प्राप्त क्षेत्रा है, और मूर्चता वरिकास्य कारत है—हेशा कोई विकासी है। संस्थानको प्रतासको केवल दिवार पान ही चानते हैं, बार्ग स्टेप नहीं। धारत है

क्रों भन्न क्रिया, जीत, अवस्था, बुद्धि, बन और बुदलें को प्रान्तीय प्रान्तेका राष्ट्र अपादर किया कथा है। विकास सरित निकार है, जो पूर्व, मुलॉर्न होय देखनेकाल, क्षापिक, वरे क्यान बोलनेवाला और ह्योकी है, उसके हाल चीत ही अनर्थ (संबाद) रह पक्षो है। उन्हों न बरुब, कर देश, कारण कारण करा और असी वक्त करी से किसी मार -- में सम सम्पूर्ण पूर्णको अकर कर रेते हैं : विस्तीको भी बीहर न देरेकाल, कहा, इसका, ब्रॉड्स्कर और करत राज्य करवान भूतन हो व्यक्तिर भी स्वापनानेको पर कार है. अपनि को स्थापक निक्र करे हैं। वैर्थ, स्पेतिक, इन्हिक्कंबन, गॉब्बवा, क्या, चोन्यत कामी और निक्को होड न करण--ने सार करें स्थानको कालेकानै है। स्थान् है यो अपने वात्रिलोने बरका सैन्य-सैन्य बैस्क्य की कार्य तथा थो छा, सराह और निर्माण है, देशा एक हा ओको कार केरेग्रेस है। यह साथ सेवी सेवार भी विसेष अस्तरिक करियो कृति बस्त है, व्ह स्टीका को क्लेको पराचकी पति रागरे कराने की से सकता। पता !

जिनके उत्तर वोक्यरेपक करनेसे चोन और क्षेत्रमें बावा असी हे. इन खेयोको केताची भाँते एक उसस रकत पाहिले । को कर आहे. पहार्थ को, जनाते, परेशा और रोग पुरुषेके हानमें सीप दिने नाते हैं, ने संस्थाने यह नाते हैं। राजन है न्यांच्या सामार स्रोत, प्रश्नारी और सामाओ प्रश्नारे हैं, प्रार्थित त्रीन नदेने धाराच्या कारण वेहनेवालोबी चाहि विवक्तिके क्ष्मिक कर करे हैं। के लोग विकास आवश्यक है, उसने हैं करने हने छते हैं, सर्वकार क्रम नहीं करते, उने पै परिवार पर्यास है। क्योंकि अधिकारे क्षाव आहरा चंत्रपंदा करून केल है। नुकारे निरुद्धी सार्थक करते हैं, करन निवासी प्रयोगाया पार करते हैं और नेएकई विहासी सहस्रे विकास करते हैं, यह पहल जीता है मुद्दिश्रमान है। धारत है आपने का पहला अनुनंद और अवस्था नेपानी पाणकारियों क्षेत्रकर के का कार, देवलेका कर हुवीकांक करा रहा किया है। इस्तरिको सामा चीता हो कर देखनीयहरे पुर कृतिकाओं नियुक्तके सामानको निर्दे हुए बर्तिको पति इस राज्यों प्रमु होते हेक्सिया स १-४० ह

## विदुरनीति

(सत्तर्वा शब्दाय)

कृतरहर्ने कहा—विद्युत | यह कुळ देखलंबी आहे। और बाहारी करून नहीं है। अक्षाने कारेले केंब्री क्षूट्रें कारकुलकेली मंति हमें आपकारेंद कारीन चार पता है; इस्तीरने हुन कहाँ। कारेंद्र में सुननेके रिन्ते केंब्री कारण किये केंद्र हैं ॥ १ ॥

तिहुत्वी बोले—नाम | प्रमानके जिन्हीय नके कुलानीकरी पुरा कोले हो जनमा अन्याम ही होना और जनमी पुरा होने होने अन्या है होनी । संस्थानों बोई जनमा हम हेनेले जिन होता है, जुला जिन क्यान जोन्सेले किया होता है जीए की सामानकों दिन है, जा को साम जिन्हों है। विस्तार है। की माना है। विस्तार है। को माना के माना को माना का का है। विस्तार हो की माना का माना माना है। विस्तार हों को माना का माना माना हों। तो माना का माना का माना होंगे। की माना का कि 'में माना होंगे। को माना होंगे। को माना का माना होंगे। को मुख्य होंगे को माना का माना को होंगे। को मुख्य का माना होंगे। को माना होंगे। को मुख्य का माना होंगे। को मुख्य का माना होंगे। को माना होंगे। को माना होंगे। को माना हमाना होंगे। को माना हमाना हमान

है। नकरण । जनावर्त में इस कृदिका कारण होता है, अह इस है जो है। सितु जर सामको भी इस है मानवा कर्तको, सित्ते कर्कत क्यूनीका कहा है जान। कृतह । कुछ सीन मुख्के कर्ता होते हैं और कुछ स्तेत कर्कत करी। के अन्ते करी होते हुए की मुख्येंक कंत्रस्त हैं, उन्हें सर्ववा उसक् क्रिको कर २-०८।।

ज़राहरे का - सेंबुर ! इस की कुछ का की है, वरिवानने वितास है, कुक्किन सेंग इसका अनुनेता कारो है। या भी ओक है कि बिस और को होता है, उसी पहाली की होती है को भी मैं अपने बेटेका जान नहीं कर

निहरनों कोरं—को जानक मुगोसे समय और सिक्सी है, यह जानियोग्या करिया को संकर होते देश जाकी कारी जोशा की कर कथा। को सुरुरोकों निवानों ही स्तो पाने हैं, इसरोकों कुक हैंगे और अध्यानों पूर कारनेके सिने सहा क्रमाओं सभा जब्बा करते हैं, जिनका स्ट्रॉन सेवसे करा (असूक) है और विनक्ते साथ खानेने की बहुत कहा स्वारा है, ऐसे स्वेगोने कर किनेने नक्तन सेव है और को दोने बहुत बाह्य पान है। इस्तोंने यह प्राप्तनेक मैननक स्टब्क है, जे बार्ची, निर्माण, क्रुड और असिव पानी है, वे साथ रहानेके अयोग—निरिक्त को नवे है। अर्थक केवेंद्र अविधि और भी भी पहल देश हैं, उस्ते पुरू पहलोका साथ कर देश व्यक्ति। स्रोहर्शनाम निवस हो व्यक्ति सैन पुरुषेका केर नह हो साथ है, का सोहाईसे होनेकारे करान्यी निर्देश और समाध्य भी नाई है जाता है। जिस का मैन पूर्ण निवा बरनेके का करता है, बोदा भी समस्य है जनेका बोहाबा विकास के किये अहीन अन्तर कर के है। को बरिया की साचि की विकास का अवस्था कीए, कर प्रका अभिनेत्रिक पुरस्तेने होनेकाले सहका अवली मुद्रिके पूर्व विश्वार पारके विद्वार पूछन को एको ही काल है। को अपने कुरुओ, बर्रेड, धैन तथा रोगीका तलुब्द करून है, ब्ह कु और वहओंसे एक्ट्र होता और अरुप बार्क्सका अनुभार करता है। सर्वेष, । यो क्षेत्र करने व्यक्ति प्रका करते हैं, क्षे अपने जाति-व्यक्तिको सानिर्देश क्ष्मण व्यक्तिके इसरियो जान परियोगि असे कुलकी मुद्दि की र राजन् 1 में जर्म बर्ट्यायनेका सामा क्या है, जा बन्यायक मानी होता है। महत्त्वेश । अपने महत्त्वके स्वेप प्रस्तीन हों. में भी उनकी पहर करनी कड़िने। फिर को उक्तके क्रमाध्याको एवं गुजनात है, जनमें के बाव है क्या है ? एक्ट । अन्य समार्थ है, और प्रत्यक्रीक क्रम क्रीकिंगे और profit affirmate firet une alle & differt ; where I then कारोते आवको इस संस्तरने यह प्रश्न होता । यह । अस क्या है, इस्तीओ आवनो अने क्योग कार करन पारिये । भारतीय । सुत्रे भी कार्यक दिलाई ही पार महाने प्राचित्रे । जान मुझे अन्यत्र विनेत्री संपन्नी । कार । जान पाइनेवालेको अपने वार्तानकानेके काच काळ नहीं करन पादेने; परिच अनंद सब निरामा पुरस्क अधीर परच मानिने । जारियाद्वानेंके साथ प्रस्तान योग्या, प्रात्नीय हा है। सारा है कांग है: उन्हें कर बच्चे निर्देश की करक व्यक्ति । प्रस क्रम्पूने व्यक्तिपूर्व साक्षेत्र और प्रकार भी है । अनमें को सरावारी है, वे के सामी है और पुरावारी कुछ देते है। सर्वेश्व ( अस्य प्रमानविक्र और स्वाप्यकार करें। प्रमान १ कारी पुरविता क्षेत्रर जान कहारोंके अकानको को खेने। क्रिके बाग प्राप्ते निर्मे हर मारके पह परिवार की मुगरों कह योगना पहला है, उसी जबक यो कार्यय कर रायने बनी बन्देंदे पास खेंबबर कुछ पात है, उसके गुरुका वानी का बन्ते हैंसा है। स्थांत ! अन्य कार्यकोको अक्षा असे प्रतेषों को स्त्रो सकत की संस्था की है।

क्षा: इस स्वयम्ब स्वरंग के निरम्पर कर स्वीतिर्व । (इस वीवनक कोई रिकास नहीं है।) किया करीर कारेड़ो अपने मारान बैटका पालम गरे, उतको पाले है सी करन पर्यापे । सुरुक्तानी तिया द्वारा कोई यो परण हेता की है, को नैतिका सरकार की करता। अब: की बीत पान को बीच पान, अन केन महांच्यान कियार आप-वैसे श्रीकृष्ण पुरानोक्त है। निर्धर है। जेत्यून । कुर्वेजको पहले स्वी क्यानेंद्र और यह अवस्था किया है, से आप पर सरकों को-को है: अनके प्रश्न जनक पार्चन के जान पार्चित्र ज्योग । यह अन्य अन्यो राजनाय स्थानित कर हैंने ही संस्ताने आकार कारक का पालना और आप सर्विमान क्रमोदे क्रानीय हो वार्यगे। यो बीर पुरसीय वयरीये व्यान्त्रकार क्रियार वालों। क्रो प्रार्थकारों परिचय कारता है, मा विश्वप्रकार प्रकार पाने का यहां है। कुरत नेका केंद्र करा भी अब्देश निवास करा अन मार्च के है, पहि कारो कर्मकार प्राप्त न हमा जनना प्राप्त क्षेत्रेयर भी क्रमका अंब्राज न पूजा । यो विश्वाद पायका पात देवेगाने कार्रीका कारण भी बारत, यह स्थान है। जिल्लू को पूर्वने निर्देश हुए क्योंका कियार व करके क्योंका स्थापन करता है, का पुरिवारित मेनूनी अन्तरंत परिवारी और पुर प्रकारी निराता कार है। ब्रह्मिक्ट कुल मनानेक्ट्रे का कः क्रारेको पाने, और बारको रहित रहारेको प्रकृति हुने प्राप्त के रबी—पर्केस्स संबद, निक्त, आवश्यस चल्हेंची कारकारी प रक्षण, अन्यो देश, युक्त आहित्या विच्यान, सुर अधिन्योजे क्रिक्ट और वर्ध कारर भी मधेक प्रथम । समय है को बन प्रतिको मानका राज्य के किये कहा है, यह अर्थ, वर्ष और व्यानके मेकनरें हुन्या पुरस्क कुद्धान्त्रेयों भी शहने यह सेन्ह है। यहरपरिषे राजन पर्य भी प्राथमान समया पुर्होकी केवा किमे किए वर्ग और अर्थवा क्रम नहीं क्रम कर रुकते। एन्यूने निर्ध को करा न्या हो करी है। को सुनता जी, जारों को इंड का ना है करी है। अनिर्देशिय पुरुषको पुरुषको और एक्ने किया क्रूब क्रूब भी ग्रह है है। प्रदिस्तर पूजा पुरस्को जीवकर अपने अनुवासी बारमार क्यारी चोत्रकारण निवास करें, जिस दूसरोहे पुस्तार और कर्ष केवाबार पार्वाच्यति विकार करते. विद्यानीके साथ निरादा को। विनवस्था अवकास पात करता है, प्रशास कर्मको पुर करना है, क्रम प्रकारी प्रोत्रका नाम करती है और सरावार करवालका रूप करता है। राज्य र जना अवस्त्री चेनावसी, वह, वर, सांध-स्वारके के और चेका तक कक्के कर काली परीक्र करे।

के पियम से टीट एकके कर के की मानक करने कार: व्यक्तित हो हो पह कार्यट निर्देश नहीं पतात. विर बारतास्त्र मनवाने रिले से बारत से क्या है? मे विकासिक संदर्भ सुनेकाल, बैंक, व्यक्तिक, केवलेचे सुन्तर, केतोरो पुता तथा स्यूप्तारी हो, ऐसे दुस्तुकी कर्वता १३**३** कारी काहिये। अथन कुरूने करता हात है का उनर कुराने-मे नर्वक्रम सरक्त की क्रम, क्रमेरी असेर्ड एकत है, बोधक संध्यनकत तथा तत्व्य है, यह नेवजें बार्गिनोरी बंधकर है। बिन के सन्नोधा विकार निया, पूर कामके पार दाल और परिवर्त परिव निवर वाली है, उनकी विकास परिचे रह नहीं होती। मेनाकी पुरस्को परिहे कि कृतिंद्र कर्न विचारसरीयने क्षेत्र पुरस्का कुमने अर्थ हुए कुई-भूरे जीते परिवास कर है, क्लेकि आहे कर को हुई दिनक महा हो जाती है। जिल्ला पुरस्को जीवा है कि अधिकारी, मूर्त होती, सब्देशिय और क्योंने पुरसेके राज निरम र मते। देश में ऐस क्षेत्र कांध्रे को कुछ, व्यक्ति parent, mar, or argue recharge, faithfur, क्योंको पोल क्येन्स्य और वैत्रीक अन्य व क्रानेन्स्य है। इन्हिनोको एलंका देख रक्तान से काहो यो क्वानर teller is afer and formers work plus about investables भी नाम हो बाता है। सन्पूर्ण अधिनानेते और कोन्स्याना भाग, गुलोंने क्षेत्र व देखता, क्षणा, नेर्न और विलोक्त अवस्था न कार्या-ने प्रम पूज आयुक्ते वक्त्रीयके है-देश विद्वारात्रेश पाने हैं। यो अन्तरने व्याह्म करते विकासिका जारू से अपने नेतिये पुरः सेवा स्थानी इन्हरं करता है, यह बीर कुल्लेक-सा अध्यान करता है। जे क्रानेवाले क्ष्मको केम्प्रोका क्यान व्यान्त है, प्रांतकारिक क्रांको करने क्रांतिक राजेका है भीर व्यक्तिकारमें को कर्मक क्षेत्र का गया है, को भी कावत है, यह करून बाचे अलंधे क्षेत्र की होता : बर्जून पर, कार्य और बन्धेरे विश्वास निराम जेवन करता है, यह सार्च का प्रकारों अपनी और सीच तेता है। असीने का करपालकारी कार्योको ही करे । अकृतिनक अकृतीका रहाई, विकारियोका निर्देश, बाराया जन्मस, उद्योगतीला, संस्थाता और सामुख्येका साम्बार श्रांत-ने एक कारानवारी है। स्वोकों समे क्या बन, राज्य और बार्गालक पूर्व है। प्रातिने क्योप न क्रीव्रेगाल नहन महान हो जाता है और अस्ता समाचा कामीन करता है। सत्त । क्षार्य पुरुषे सिने सम क्षार और सम सम्बन्धे क्षानके प्रमान क्षित्रकारक और शासना बीतन्त्रक क्षान्तिकार

कार कार भी कर का है। से प्रस्तित है, या से कारत कुछ को है; को प्रतिकार है, यह भी प्रामित तियो क्रम पहे । क्या विहासी स्ट्रिपे अर्थ और अनर्थ होनों प्रयान है. उसके रिप्ये के साथ उस्ता है दिलागरियों होती है। विशा कुल्ला केवर करने प्रतेतर में प्रतूप को और अमेरी पह मार्थि क्रेसा, कारक क्येक सेवन करे; किंद्र मुख्यात (अससीक को अन्यानपूर्वक विकासिकत्। य गारे । को बु:ससी पीरिका, स्थारी, परिवर, बारवरी, अभिनेतिक और सालातीय है. उनके वर्ध रचलेका कार नहीं होता। हह बुद्धियारे स्तेश सरावाले पूर्व और कुरस्ताके है बहरत सम्बन्धित क्यानको अस्तान कार्यार सामान विकास करते हैं। अस्ति ह the artere spit, salt if meir, affen me-विकास पारत कार्यको और पृद्धिक स्थापने पूर क्षात्रेकारे पर्वकांत्र कार सक्ष्ये प्रचले यारे गाँ वाली र पुजाबारी न से संस्था पुजाबारिक पात पूर्व है और न बार निर्नेकोर्ड करा। यह ५ से बार-से नुजोको बाहरी है और य मुख्यीओं प्रति क्षे अनुसार १५०ती है। प्रयस मोबी भारत कर अन्यो सकते कर्ती-कर्ती ही उदल्ली है । केरोबा परस à minim term, messageme une à milem afre कारण, क्रोबर कर है सी-सुद्ध और पुरुषे अहि रूप कारक पान है हार और अन्तरेश । यो अन्तरीर हार कार्यो हुए करते पराचेत-सामक चारति कर्म करता है, यह अस्पेत पान्य केलो पहाच्ये भूते पान्तः वर्गतीय अस्या पर हरे कारों अपना होता है। योर यंत्रकों, हर्गद मार्गने, व्यक्ति अवनिके सन्तर, प्रवासाओं और प्राप्तके रिये पास के क्रमेवर भी क्रमेकानात्रक पुरुषोक्षे एक नहीं होता । स्क्रीय, बेकर, कहती, कालावी, बेचे, स्वीत और क्षेत्र-विकास्तर कार्याच्या करण-पूर्व आविष्य गुरुष्य प्रवृतिये। auftraber um f. pr., debreufen um f. de. अस्य भीता पार है जिस और गुरुवारोक पार है बात : का, शुर, कर, इस, बी, जाक्रमधी इकार्यों, गुरुक कार और जीवक-ये जात हुनके बाहब की केते । के अपने जीतकत जान को, को इसरोके प्रति भी न करे। कोकेने वर्णका नहीं कातन है। इसके विश्वति विश्वति कारको उसी होते हैं-यह से अपने हैं। असरेको क्षेत्रको जीते, जारावको स्वास्त्रकारमे वसमें करे, कुरमध्ये द्वारो कीहे और सुरुपर समये नियम प्रदा बारे। बी. वर्ड, जानती, इस्लेक, बोबी, व्हन्सको अधिकारी, केर, करक और महिकामा विकास नहीं करना पाहिये। जो निता पुरस्कोको प्रमान करना है और यह प्रकारको केवले

एला एका है, उसकी कोति, अस्यू, यह और कर--ने कारों सहते हैं। जे वन अस्यय हेल इसकेते, कर्मका अस्यूय करनेते अस्या एतुके सामने दिए सुकानेते का केवा है, रहते जार पर प समाहते । विद्याप्ति पुत्रम, संकर्तनिक-रहेत कोतरहू, असार न कर्मकाले प्रमा और विना कमाके पहुके दिन्दे होता करना काहिते । वरित्रम पद काम्य है-वारितोक सुप्रमा है, सम्बोनाते वरित्रम काम विक्रित होता एतियो है। अस्याह न करना केवान काम है, स्वाप्तिक केवा हारा है। अस्याह न करना केवान का है, स्वाप्तिक केवा हारा है। अस्याह न करना क्वान्यका कर है, स्वाप्तिक केवा (काम्य-पुत्राह) पूर्वीका का है क्वा हुए केवान पुत्रमक कर है, ब्रोज एने इस-मिक्सिनों काम क्वान्यका कर है। होनेका कर है कीड़े, स्वित्रम क्वान्य है चित्र, प्रीप्ता कर है। प्रीता और ग्रेसेका यह है यह । ग्रेकर मैंद्रको चीवनेका प्रकार म करे । कार्यप्रधानिको हात बाँको ग्रेसनेकी हवार न करे । एकड़ी कार्यका सामनो जीवनेकी आहात न गये और अधिक प्रीत्त वर्षण परिच्छी आहात्वो जीवनेका कार्यन्त को । विस्तार निक पर-वारके हाय कार्य सा पुन्त है, कह पुन्ने चीव विके गये हैं और विकी कार-वारके हाय कार्यपुर हे पुन्ने हैं, कार्या विकास सामन है। कियो प्रात्त हास है, वे के अधिका है, तक विनये पास में है, के की वीता है, जान व्याप्त वृक्षण प्रीत्त कह बीवन क्षेत्र है। इस पुन्तिक को मी कार, जो, सोना, यह जीव विकी है, वे स्था-क-तव एक पुन्तके निले के हो नहीं है—ऐसा विकास वारके वारक व्याप्त कोरों की पहला। पान्त है में का कार्य है, को आपका अपने पुन्ने और पान्तकोंने स्थान पान है से इस सामी

## विदुरनीति

(आदर्गा

मितृत्वी वाले है—यो सकत वृत्योगे अवह काल आसंक्रितील के अपनी स्थितिक अनुसार कर्य-राजन करता राजा है, जब बंध पुरस्कों कीय है सुरक्कों जाति होनी है; क्योंकि र्रात विकास अंतर क्षेत्रे हैं, यह साथ सुनी पहले हैं। को अवनोरे अवनिष पहल बनग्रामिको पी अवनी और अराबाह हुए मिना ही जान हैता है, यह बैसे साँच अननी पुराधी केंगुराको क्षेत्रमा है जारे जन्मर, इ.स्टेंसे मूच हो सुरस्त्रकेंद्र श्रापन करता है। ब्रह्म बोलबार जाति करना, राजके प्यानक क्रामी करना, गुन्हों की विकास अग्रह करना—के तीन कार्य प्रकारके समाव है। गुर्गाने क्षेत्र केशक क्षत्रक कर्य रामान है, बाटोर बोराना का निवा बारना स्वयूनीया का है। कुरनेकी इक्ताबा क्रमान या नेपाका क्रमान, क्रमानका और आम-जारेसां— ये सीम विकासे प्राप्त है। जानसा, प्राप्त मेंह, बहरका, पोड़ी, बहबाव, अभिन्यन और स्वेच-के रता विद्यार्थियोके तिने छन्। ही सेन माने मने हैं । तुस Anglescheit from might fleit ? Dage angleschile fleit समा नहीं है। प्रकारी बाद से हो किसाबों सोटे और किस को से सरका जान करे। ईक्को जानकी, व्हिक्के राष्ट्राधी, समक प्राणिकोरे कृत्या और कृतिहे कुरस्त क्रीकी कमी होते को होती। अक्टर कैर्वको, करहाड राम्ब्रिको, स्रोप स्वर्गाको, करणात पद्मको और सार-

रीभारतक अध्यक्ष प्रमुखीओ यह बार हेता है। हमर एकं ही सराम गर्फ इस्त है जान से समार्थ गांधा गर्फ का देता है। कडरियाँ, परिवार पार, परिवे, पार्व, अनी परिवर्तना क्षा, कही, वेहकेश अकृत्य, जून जुड़ानी और नियमित्रक कुलीन पुरुष-में तता अंग्लेट कार्ने तता भीन्य रहे। पाल ! जन्मीने पाल है कि देखा; अञ्चल वर्षा अधिनेकोडी पूरावेद तिथे ककरी, केंग, कक्षा, मीमा, हर्नेन, पन्, भी, हर्नेहर, सर्विनेट कर्नन, प्रश्नुत, प्रशास्त्राम् और चेरेक---ने का कार्य कार्य रक्षणी कार्यने । तता । अन में पूर्व पर बात है जानपूर्व एवं करोगी पुरस्तानक बात का का है—कामलो, भयते, लेको वर्ष का बीधको रियो भी साथी वर्णका स्थान न करे। करो निरा है, सिंह enter aftet fo the fire fo to pres men (अधिका) अधिक है। जान परिवर्तको क्षेत्रकर निवर्तके तिका होत्रमें और संदोध कारण मौतियों: स्पोधित संदोध ही पाको बहु स्थान है। बार-कामाहिते वरिवृत्ती एक्केटर प्राप्ता करके अपने राजक राज और विद्या भोगोंको की क्रेक्सर वनकर्क वहने को हर को को बरावान को महानक राजभोधी और रहि क्रियो । सार् । विस्तारे को बहुते पर्य-नेतर था, को पूर कर भी भारत है से अनुसारते उद्यापन क्रांत करने कहा कर हेते हैं। पहले हो कान्ये निर्म कार विवादने काम सरोपे किया करते हैं, फिर सम्बद्ध बारको परि सो क्लो किया होत के है। में हर क्यूनका कर इसरे त्येन मोनो है, उसके शरीनकी बाहुओंको पक्षी क्लो 🛊 या शान मालते है। यह स्मृत्य पुरत-पानो वैश्व कुल इन्हें होतोड़ साथ पानेको जन बारता है। राज । विना पान-पुरुषे बुधार्थी नेसे पाने क्षेत्र केरे हैं, उसके प्रकार कर तेराको करने नारिन्यको, सुबद् और पुत्र विताने क्रोड्यर लीट स्थ्रो है। अधिने वर्त वर्ष का प्रकार की से केवल अस्ता अस्ता किया हुए क पास कर्य है जान है। हमरिये कुलको पर्वापे कि यह बीरे-बीरे प्रकारकोडः कर्मका है संबद्ध करें। इस खेळा और पारनेको जार और गेनेका स्वी अध्यानम महान् क्राव्यक्त रेवन प्रथम है। यह प्रतिकोधी स्थान सेवने क्रमधेवारम है। राजन् ? अस्य इसको बाल स्थितिने, विकासे का आरक्षा परर्श न कर सके। वेरी इस कराको सुरकर नहीं अहर पत होना-दीन रूपा उन्हेंने से इस स्मूललेकने आयम्बे महान् यह सार् होता और ह्यानेक एक करानेकने आओर लिये थय नहीं होता। बाला ! यह बोबारक एक नहीं है। इसमें पूरण हो तीनों है, जानकावा बरावालको हताक क्रूपम दूधत है, दीने के इसके जिलारे हैं, इसके दूधकों स्कृत प्रकारी हैं, पुरुषकार्ग करनेकारक अनुन्ध इसके काल करके प्रसिद्ध होता है। क्योंकि लोपरहित अस्त्य तक परित्र ही है। काम-कोमादिका प्रकृते जाते, यदि इत्यानिक करने पूर्व इस संस्थानकीके जन्म-कार्यक्ष स्टॉन प्रमालको कैनेको नेका क्रमाक्त कर क्रेडियो । क्षेत्र क्षेत्र, वर्ग, विका और जनस्थाने को अपने पन्यको सावा-स्थापने प्रसा करके उनने क्रांध-अवनंत्रके विकार जा करण है, वह कभी चेड़ने भर्ती प्रकार किया और बहुत्तरी बैचेंसे एक को, अंचीन कामचेत्र और भूकाको ज्वासाओ नैनेपूर्वक महे - इसी जनार

इक्क-वेरवर्ध केलेले. के और कारोबर्ड मनसे तक पर और क्षानी सक्ष्मीरे पह करे। ये अधिन सरसे सान-क्रम्या-वर्णन आहे बहुता है, जिल्ल पहोचनीत बाल्य किसे बंदर है, दिन बक्रमाद बन्ता है, पॉलनेका अब लाग देता 🖢 कुर केरका और गुल्को संख करता है, यह प्रकार करते महत्रकेतारे प्रष्टु की होता । बेहोको प्रकृता, अस्तिहेको लिबे ऑक्ट्रे को और कुछ विकास तथा प्रकारके प्रतेष्ठरा क्षार कर और प्रकारकेक पास्त्र स्टब्हें से और प्राध्योके कियों दिन्ने इंड्यापे पुरस्को जात हुना श्रृतिय स्थापे अवस्थान क्षेत्र हे समेद सारम दर्जानेकारी जात है। रिका कोर के:-कार्योक्त अकारत कार्येट प्राञ्चन, अधिन प्राय अमेनकारेको सम्बन्धानका अन्ते हेकर अन्त्री सहस्रतः को और कोन्या होने अधिकोध प्रीक भूकती सुराय रेसा हों को का करवेके बकान सर्गानेकाने बैचक सुक्त धीनना है। क्य पन्ने प्रधान, श्रांत्य और मैनको सन्त्रो न्यायपूर्वक केल करके इसे लंदूर करता है से यह व्यवको रवित हो. क्योंने कुछ होका केवानके दक्षण सर्गतुसका स्थ्योन करण है। सहस्रव ! आयारे या येथे पत्ती वर्णीका धर्म करावा है: हुई क्रानिक कारण भी सुनिये । आयोह करावा क्रम्बरुक्त पुरिवीत सरिवधार्थने क्या है से हैं, जन: आप को एक राजवर्धने विद्युक्त स्थितिये ॥ १००१९ ॥

कृत्यपूर्ण करू-कियु । तुम जिल्लिन युद्धे जिल तकार अन्तेत क्षेत्र करते हैं, क्ष्म क्ष्म हीक हैं। धीमर दूप युद्धि में जो कुछ यो काले हो, ऐसा हो मेरा की कियार है। कहारि में बाव्यकोंके की कहा देशी ही युद्धि रकारा है, तकारि युद्धिकारों जिल्लोचर किया युद्धि याच्य वाली है। आग्वकार अन्त्यून करनेवर स्तित किसी भी कालीने नहीं हैं। में से अन्तवकारों हैं अकार मान्या है, सम्के सामने पुरुवार्थ तो वाली है स १०—६९ ।।

#### सनत्सुवात ऋषिका आगयन अम्बद्धातीय—च्यान अध्याप

कृतरह चोते--विद्या । यदि तुन्दावी वालीसे कुछ और कहन सेव रह गया है से बड़ो; मुझे उसे सुननेकी कही हका है। क्वोंकि तुन्दारे अञ्चलका सेव बड़ा अनुसा है ॥ १ ॥

विदाने का—वास्त्रांती कृतका । 'समस्यात' समस् विकास को सहायोके पुर पत्त्र आवीन सम्बद्धन कवि है, अवीने एक बार कहा क:—'मृत्यु है ही वहीं।' व्यान्त्रतः । वे

जनस्य पृद्धिकारोंने शेष्ट हैं, ये हैं जारके हरावर्षे दिवत व्यक्त और अव्यक्त—साथी प्रकारके प्रतीवत राजर होंगे ।। १-६ ।। पृत्यकृते काल—विद्या | सम्ब तुम उस तत्वकते नहीं जारते, जिसे अब पृथ्य स्थानक व्यक्ति पूर्वी कालवेंगे ? वर्षी सुवृत्ये वृद्धि वृक्षा की काल केती हो की सुवृत्ति पूर्वे तिहुए गोले—सम्बन्ध मेश क्या पूछ प्रोक्ट सम्बन्ध हुन्छ है; असः इसके असिरिक और गोले उन्नेत्र देनेका मेस अधिकार नहीं है। किंदु कुमार स्वस्तुकारको पुन्दि सम्बन्ध स्थानको विभय करनेकाली है, मैं उसे समस्य हैं। स्वस्त्रको निर्मे विस्तास पान हुन्या है, यह चारि गोलकी संस्थाक पत्र भी असिरासन पार है से भी केस्साननेकी निर्माण पत्र भी संस्ता। भी कारण है कि मैं अन्य असेन्स न करके समस्यो समस्यासकारकार गाम कारकार है। ५-६ ।

कृत्यक्षणे नका-सिकृत । जन परन अन्योग सन्यका अभिन्या मार मुझे नताओं । परन, इसी देखों नहीं ही जनक सन्याम सैसी हो सन्यता है ? ॥ ७ ॥

वैजनाकार्थ सार्थ है—एक्ट्र । सारावर विद्वार्थने

अप अवसर के सिद्ध के किया स्वरण किया। उन्होंने भी वह अवसर कि बिद्ध के किया कर से हैं, प्रस्कृत सूर्वन किया। क्रस्तुने भी क्रांसीय किथिने प्रश्न-अर्था, प्रमुखंड अर्थी अर्थन करके उनका समान किया। इसके बाद कर से क्षूत्रपूर्णक कैंद्रका कियान करने रूपे से बिद्धरे उनसे क्ष्म—'श्रेणका क्ष्मायान मेरे क्षात कराने अध्या नहीं है। आप की इस विश्ववाद्या निकास करानेक बीचा है। जिले क्ष्माया की इस विश्ववाद्या निकास करानेक बीचा है। जिले क्ष्माया की नेता साथ कुलोने कर क्षेत्र वार्थ की रूपा-व्यान, कर-देवार, विश्व-अरावाद, काल-सोच वार्य कारी-अस्परी-—में इन्ह इन्हें बाह न व्यान्य कराने स ८--१९॥

## सनत्सुजातजीके द्वारा धृतराष्ट्रके प्रश्लोका उत्तर

समस्यातीय—दूसरा अध्याय

रैतन्त्रकार्या पत्नो है—स्वयंत्रस् सुद्धियार् इसे ब्यानन । राता वृतराहुने निवृत्ते को हुए तम वक्कका अनुसेवर काके अपनी सुद्धिको परमाधानी विकास स्वातंत्री विकेत एकाराजे समस्यान मुनिसे तम विकास ए ॥

कृत्यम् संतं -- सम्बद्धमान्यः । मै का सुन करतः है कि है "सून् है ही की" ऐसा आवक्षा विद्यान्य है। साथ है का के सूना है कि देखता और असूनीने कृत्यों करनेके विके स्थानक्षा करतर किया का। इन क्षेत्रीने कीन-की का तीन है ? ॥ २ ॥

अंगानुआरो नहा—पासर् ! हुको को उस विस्ता है, जाने
है यह हैं : मृत्यु है और का कार्यने हुए होगी है—एक का:
और 'मृत्यु है ही नहीं'—यह दूसरा कहा । परंतु कारावाने का
कार केरी है, कह मैं तुने कारात है कारावे हुन और के
कारावाने संदेश न करना । इतिय ( इस उनके इक होने हैं
पहलुओंको साम समझो । कुक निक्काने चोकाया इस मृत्युओं साम सीकार की है । मित्रु मेरा कहाता हो का है कि
प्रमाद ही पृत्यु है और उनकार अनुत है । अन्याको है काराव अस्तु है सम्परिकारे मनुष्य कृत्युने कार्यका हुए और अस्त्राक्षी है केरी सम्परिकारे कहाता कुन क्रायकार है वाले हैं । यह निक्षा है कि मृत्यु कारावो सम्बन्ध आवश्य है सहसे हैं । यह निक्षा है कि मृत्यु कारावो सम्बन्ध आवश्य की नृत्यु कहते हैं और इसको दुस्तापूर्वक अस्ता विश्वे हुए साम्यावेश ही अपूत मानते हैं । यह हैक्स विवास विश्वे हुए साम्यावेश ही अपूत मानते हैं । यह हैक्स विवास विश्वे हुए साम्यावेश



है। वे पुरस्कार्ध करवेशाओं किये सुक्रदायक और प्रतिकारिक विको वर्णका है। इस प्रथमी आहारी है क्रीथ, प्रकार और संस्थानी कृतु प्रमुक्तोंके विनासमें प्रवृत्त होती है। अव्वकारके वर्णामून होकर विनरीत कार्यन करता हुआ कोई भी प्रमुक्त कार्यकार एवड्काकार नहीं कर पारत। प्रमुक्त वोद्यका आवितारके कार्यन है। इस स्वेकारे कार्यन पुन:-पुन: क्रम-अरक्को कार्यने कहते हैं। प्रस्तेके क्रम अन्येत पन, इत्यिय और प्रान्त भी प्रथम कार्त है। प्रसीस्त्री प्राप्तकारी इत्यिकार विश्रीय होनेके कारण मृत्यु 'मरण' संस्थाने जार होती है। प्रारम्बदर्गका क्या होनेपर कभीद करामें असावित रक्षानेकारे क्षेप अनीत लेकोका अस्तरम करते हैं: 10किम ने मुख्यों पर नहीं बर परे। वेहरिकानी बीव परपारमाञ्चालकारके प्रमानको प सामग्रेके सामग्र पीपाई बसनामें सब ओर कर जबरूकी चेनिकोरे व्यवस्था सुरू है। इस प्रकार के विक्योंकी और हुएक्स है, यह अवस्य है प्रक्रियोको जाल पोठने जालेकार है और इस पुढे विकाम राज्य राज्य के महत्त्वकी कार्यी और अवि क्रेक काराविका है। विकास औरतीयें अस्ताविक ग्रेनेसे विकास अनःबरमधी प्राथमित या हो गर्ना है, व्या का ओर विक्रोंका है जिला कात दूसा का-हे-का रूका सामाहर काता है। पहले से विश्वतेया किया ही खेलीको मारे क्रांस्था है, इसके बाद बढ़ माल और क्रोमको सन्त हेक्टर पूर्व: करते ही उपार करता है। इस इसार के विका-विकार, पास और प्रोच के विकेक्द्रीय प्रदूरवेको कृत्ये निवार व्यंताने हैं। वरंतु को विक्लुदिहरूके पूरत है, वे वैर्पने पुरुषे। पार हो करते हैं। असः को पुरुषो क्रिक्निकी प्रथम रक्ता है, को साहिते कि विकासि सरकारा विकास करों जो तुन्ह जनका कुछ थी व निगदे हुए उनकी प्राप्तकारोंको सराप होते ही यह कर करे । इस उन्हर्ग की Super Street of success floor day \$1, 2000). (version प्रतियोगी) पृत्युकी भारि पृत्यु भूति क्षणी, असीर सह क्षण-भारते पुरः हे जाता है। कामपुरतेने के मान्येनाम मनुष्य प्रत्यनकार्ते एक ही या है साथ है और कामनाओका साम बार हैरेयर जे यक भी इन्हरून रखेना है, जब सकते का पत पर देश है। यह कार ही उपन प्राणियोंके रियो मीहक क्षेत्रेके बारण क्योपन और अक्रानकर है तक नरवने समान द्वाराओं देशा माल है। वैसे पत्रवाले पूरत परार्थ-करने बहुतेवी और वैद वहां है. बैसे ही बाबी पूछा चौनोंने सुना मानवार उनकी ओर बैड़वे है। किसके किसकी वृतिकों कावणाओं मेंबील नहीं को है. का इसी पुरुषक इस स्वेक्ट्रों विश्ववेके क्याने कुए स्वापके कुमान पुरु क्या विभाव क्याबी है ? इसलिये क्यान् । इस कारकी साद (सपा) जा कारनेकी इकारे कारे किसी की विकासीयको कुछ भी न विकास सामग्र विकास साथ देश कदिने । राज्य | यह जो शुक्रो प्रतिनो सीता अवस्था है, मेक्के बर्धाका क्षेत्रर की क्षेत्र, लेग और फ़रूका है कार है। इस इक्टर मेडाने डेनेनाले पत्त्वचे जनकर के

इत्या । अन्ते साम्मे आवर प्रमु और अध्या नह है जाते हैं, वैसे कृतुके अधिकारने आवर हुना परनवर्ण कृत्य ॥ ३—१६॥

वृत्यपुर कोरो--विकासियोके विको पाने हुए विकास वार्थ को को सोम्बरिय वार्थ करायो गयी है, पार्थ के प्रमुख्य करायो करायों कर करायों कर करे करायों करायों कर करायों कर करायों करायों करायों करायों करायों कर करायों कर करायों

करमुक्को सह—एकर्। जहारी: पुरुष ही हर इक्कर विक्र-रिक्स क्षेत्रोमें रूपन करता है तथा मेद कर्यके स्कूक-मे उत्पेयन की कारो है। स्वंद्र को निकास पुरुष है, यह अन्यवनिक हात अन्य वानी कार्योका मोस करते कार्यास्त्रात्मक होता हुआ ही परवास्त्रको छात्र होता है। १६० ।।

पृत्यक्ष कोने—नेवार् ! की व्या परकारत है सनात: इस सन्दर्भ पानकों काने जावर होता है, से शत शतका और पुरत्यक पूक्का कीन प्रात्तक पानक है ? शतका उसे इंध पाने आनेकी पान शानकार्यक है और पान पुत्र निराध है—बह सक पूर्व डीया-टीक पाताने अ १९ अ

क्ष्मां का — तुष्कर अवने के अनेको निकाय क्षित्र को है असे अनुसार केक्स माहि होती है और उठे क्षेत्रस कर रेटेके कार्य केंग आता है; क्योंकि अनार्द क्ष्मां स्वायको जीगोसा निक स्वाय क्ष्मां क्ष्मां क्ष्मां है—ऐसा क्ष्मांने क्ष्मां की पी पुरा-पुरा प्रयक्ष होते होते हैं। का के दुर्वकान क्षमा है, का परकाराका स्वयं है मीर क्षमांने अस्ता करता है, क्ष्मां क्षमां का क्षमांना केंगों इस विकाय अस्ता करता है। का विकार करते क्षमांना केंगों इस है—ऐसा काम करता है। और ऐसे अवीद प्रतिकारमें केंग्र

पृत्यक् केरे—इस कारही कुछ लोग हैते हैं, जो कर्मका अक्टरण नहीं करते राजा कुछ लोग उसका अकटण करते हैं। अत: मैं कुछक हैं कि वर्ष कारके छात नह होता है या वर्ष हैं। कारको नक कर नेंग्र है ? ॥ १९-॥

कालकी सामु (साम) यह बारनेकी हवाकी कुले किसी की विकार केमको युक्त की न विकार सामक जिलार साम हैन बाहिने। राज्या | यह को कुमने करीको कीमा अवस्थान है. मोहको कर्योच्या होनार यही छोज, लोग और पृत्युक्त हो बाहि है। इस अकार पोहते होनेको पृत्युको कानकर को हारनिंदा हो असा है, यह इस स्थेको मृत्युको कानकर को हारनिंदा हो असा है, यह इस स्थेको मृत्युको कानी नहीं साथी सम्पन्नः प्राप्त हुए कृतिवार्थित कालोः कालाः अनुस्त्र सरता है। इस प्रकार पूज्य और पायके को सर्थ-नरकाम से अविवार पास्त हैं, उनका पोग करके का इस काल्में अन्य हैं पुनः तस्तुतार कार्योमें स्त्रा जाता है। किनू कार्योक सामको बाननेवारण निकास पूछा कार्यका कार्यके हास अपने पूर्वपायका कार्य ही बास कार देश है। इस प्रकार कर्य हैं अल्पन करकान् हैं: इसस्तिये सर्वाचरण करवेवालोको सम्बानुसार अववय निर्दित साम होती है। ११९—१५ ॥

कृतपट्ट बोले—विद्यन् । पुण्यकर्म करनेवाले द्विजानिकोको अपने-अपने वर्षके प्रस्तासका जिन समझन लोकोको आहि बताची नवी है, उनका साम कल्लाको; उन्य करने निक को अस्तान अनुष्ट बोकसुक है, जाका भी निकास ब्रोडियो । अस में सकाम कर्षको नात नहीं जानम व्यक्त स १९ त

स्वस्थानने व्या-वीते वरवान् व्यावकानेने अध्या कर बहारेके विकित एक-व्यक्ति स्वय-इट रहते हैं, वर्ती प्रवार को निकारकशासको का-निकासिको पानको स्थानिक कानेका प्रधान करते हैं, वे अक्टूबर व्यक्ति भरकर करते कर provident anni denne sonre forest de financia बर्गाशयमधी सभी है, उनके रिन्ने वह प्रत्यक प्राप्त है: विता में ब्रह्मण की स्वयम्पाको अस्ता अन्तान करें से मानके प्रकार नाहींने केन्द्राजांके मिनासकाम कार्यने साते हैं। अञ्चलके सम्बद्ध आकारकी केवलेल पूजा प्रयोग करते हैं। वित् अपनेने कर्णाक्रमका अधिकान एक्तनेके कारण जे महिन्देश हैं, को अधिक म्हल नहीं देश पाहिते। से विकासभावते सैतसमंग्र पासन कर्यते अन्तर्गत से पान है. ऐसे पुरुषको क्षेत्र राज्यस्य व्यक्तिये। की वर्षा बहुने मुज-पास काविकी बहुताओं होती है, उसी जबार कही प्राचेता संन्यानिक योग्य अस-नाम असीवनी अनिकास बाहुन पत्रे इसी देसमें खुब्बर जीवर-निर्माह करे। भूक-मार्ग्स अवस्थि कर र स्थेतने। सिंह वह अन्य माहरूप प्रकारित न बलोवर क्या और क्रमहरू प्रधा केया हो. वहाँ राजन भी जो अनमी निशेषता प्रवाद भी करता जी केंद्र पुरुष है, सुरस् नहीं। के मिलीको आन्यानंता करे हेता जाना नहीं, तथा साहामके बनका सन्दरम बनके अर्थान भी धारत, जाने अपने सीवार करवेरे कुरमुख्योकी सम्बक्ति है। वैसे कुला अनव कवर विक्रम हुउछ मी का रेला है, उसी प्रकार को अपने पराक्रण क गानिकास्था प्रदर्शन सरके सीविका भरवते है से इंग्यानी

कार-केरन करनेकले हैं. और इसमें रूपनी स्वा है सकती होती है। यो प्रदूषीश्चोंके बीचने प्रकर भी अपनी क्रथ-क्यों उसी कहा का रहानेका क्या करता है, ऐसे प्रकारको है विहार एक ब्राइक मानो है। इसरिके कार्युक काने जीवन विकारिकारी व्यक्तियको भी प्रकार प्रयास प्राप्त हैता है, बहु भी अपने अक्रमानको ऐसारा है। इस प्रमास को चेत्रक्षण, विद्वार्तीया, अधिकार, सुन्तु एवं राज अधारके हैंगडे र्वात समय है, अनेह सम्बन्धे पानन्ताल चौन प्रक्रमेता पूजा करका पूरर (अव:पान) करना पर्योग ? जो अप प्राथमं कांग्यन आकारो आहे विश्वतिकारो सन्द्राता है. अस्तरका अस्तरक करनेवाले का चौरने कौन-ता प्रय नहीं किया ? में कर्तव्यक्तनमें कभी बकता नहीं कर नहीं रेगा। क्रमुक्तोचे सम्बन्धि और शाम है, क्या क्रिक्क क्रेकर भी विकास विकास की बरत, को बदाय कानेता हो प्रकार है। यो खेरिका बरबी पृष्टिये रियंत क्रेबर भी देती सन्तर्वे क्या पत-कारण आहिले सन्तर्वे हैं, वे इतेर्र और निर्मा है। उन्हें स्थानी साधार वृति सन्दाना वाहिने। वहि कोई इस रहेकारे अपीक्ष पिछ करनेवाले सम्पूर्ण हैक्साओंको कार है, हो भी का सक्तर्यक्रके समान नहीं होता । क्योंकि क्ष में अप्येष्ट प्रश्नित विरोक्त विरो ही प्रश्न पर रहा है। की इस्टोडे सम्बन चकर में अधियान न करे और सम्बारकीय कुम्बको हेकावल जाने नहीं, तथा अवस्थ न करनेगर भी विकासकेन दिनो अन्तर है, को कासको सम्बन्धि है। धनको जब विद्वार एक आहर है से सम्मानित प्रातिको ऐस कारण कार्रिके कि आंक्रिके कोलने-कीक्रेके समान अर्थ लोगोजी यह साम्यक्षिक वृति है, जो अवूर की है। बिद्ध इस क्रमानों के क्रावर्धने निवृत्त, क्रार-अन्याने कट्ट और जननीय क्करोब्द अञ्चल करनेवाले या प्रत्या है. वे अवस्त्रीय कारिकोच्य काची अवहर नहीं करेंचे । यह निश्चित है कि मान और चैन सब एक साथ नहीं छते; नवेंकि नामसे इस स्वेकनें क्या जिल्ला है और फैनने परलोकने । हानीयन इस कारको कारते 🛊 । राजन् ! लोकोने देवर्थकान स्वत्यी सुकारत पर भागी भ्यो है, फिल वह की कार्यानवाकी सुरेशेक्ट वर्ति विक्र क्रान्तेकार्थ है। प्रवाहीन प्रमुख्येंद्र रिप्ये हो सहस्रानमधी रक्षणे राजेक क्रुपेश है। संस पुत्रम मही तस प्रकृतुससंस असेको हर कारतो है, जो कि पोहको समान्याने नहीं है हका विस्को कठिनासे बारक किया जात है। उनके नम है-सज. सर्वन्ता, समा, का, श्रीम और विद्या स २७--- ४६ ॥

#### ः ब्रह्मज्ञानमे उपयोगी मौन, तप आदिके सञ्चल तथा गुण-दोषका निरूपण समस्यतीय—तीसर अध्यव

शुरुष्ट्र शेलं—विद्यन् । यह यीन विकास अन्य है ? (बागोका संपम और परमाध्यक करून—) इन क्षेत्रेले फ़ीन-का पीन है ? वहाँ पीन-कारका करून करियते । क्या विद्यन् पूरम चीनके क्षा पीनका परमासको अस क्षेत्र है ? यूने ! संसार्थ लोग यीनका अस्परम विद्य प्रकार करते हैं ? ॥ १ ॥

सक्तुवारने बद्धा—शावन् ! जहाँ बनके सहित कार्याच्या केंद्र नहीं बहुंच परते, इस परमानकार ही सन मौन है: इसरिने बहुं मौनकारूप है। वैशिष्ट समा स्वैतिक कार्याच्या व्यक्ति प्रापृथ्योग दूशा है, ये वर्गाचार कार्यासमूर्यक जान कार्याने प्रमाश्चाम असे हैं ॥ १ ॥

शृश्यपुर मोले—जो आयोद, प्रमुखेंह और स्वयनोहको सान्त्रत है तथा पाप करतर है, यह सर पानने विद्या होना है सा यहिँ 7 () क ()

सम्बद्धानाने नवा-स्थान ! वे तुम्बो अन्तान नहीं व्याप्तः प्राप्तः, साम अक्षण व्यक्ति—कोई भी वाग करनेवाले अवानीवरी मानो धारणानी राज नहीं करते । वो व्यवस्तृतेक धार्मक आकारण करता है, तम निकास्त्रातिक नेतृ व्यक्ते बहुद नहीं करते । जैसे पंचा निकास अनेवर वंकी अवक बोससा क्षेत्र के हैं, जहाँ क्षणार अनुवासभी के भी सरका परिकास कर के हैं । ४-५ (।

कृत्यह भोले—बिह्न | नहि धर्मके बिना के यहा कानेने प्रापर्व नहीं है तो बेलोचा हकाओंक परित्र होनेका जनक " विरकालमें क्यों काम आहा है ? ॥ ६ ॥

सम्बुजनने कहा—वहानुष्यमः । यस्त्रकाके है क्या आहे विशेषकाने इस प्रमान्ति अतिति है ते हैं । यह बाद के ('है प्राय इसके इसे' इसकी प्रमोहत्या) अवसे एक निर्मेश करके पहले हैं । विश्व व्यवकार अस्त्रत इसका इस विकास विश्वका भारत जाता है । उसकी आहे के विश्वे केहे (कुळ-पान्तकानी) कर और (कोनिहोपाहि) न्यूका अधिवास विश्वा पूर्व है । इस व्यवका हमा इस केहिन विह्ना पूर्वको पुरुषको आहे होती है । विस्त कर पूर्वको प्रमाने नह सर देनेके पहला, हमन्ते अकरकार वह सबसे वहिन्दक्ष सरकार हमान्तकार करका है । इस प्रधान विद्वार पुरुष इसको सरकारों आहे होता है । इस प्रधान विद्वार पुरुष इसको किर्य-कारकी हुक्त रहानेके कारण वह इस सोकरे किये हुए हानो कार्योको साथ सेकर अने परियोको केरणा है स्था योग सन्दार होनेकर पुरः इस संसारकारीने स्थैत आसा है। इस सोकरो उपना को जाती है और परिवेकने स्थाप परः पोगा कार है (—वह सबके दिने सामारण नियम है)। पोगु अवस्थ कारण करनेकेरण स्थाप हिंदा सुनेवारे आयोग पुजर्गके दिने हो पहि लोक है—अने परि (प्रीवस्थानने हैं) सामाय कार मार हो कारा है।) 4—10 ||

कृत्यक् केले—सम्बद्धकारकी । एक ही तसकी कभी युद्धि और काफी हानि कैसे होती है ? आप इसे इस उकार कार्युये, विस्ताने इस अस्तीयांति समझ इस्ते ॥ ११ ॥

अस्तुनारनं बद्धा—को बिहारी कामना का पायरण होगरी पुण वहीं होता, जले विश्वय प्रण कारते हैं। केमल कही तम बद्धा और सपुद्ध होता है। (विश्व का उस तममें कामना का पायरण हेमला संसर्ग होता है से अस्तरी हाति होने समती है।) पायन् है पुण को पुछ पुछले पुछ रहे हो। यह स्था तमसे ही परण अपूर्ण ही जात होनेकाता है; नेक्नेया विद्यान् इस तमसे ही परण अपूर्ण (मोक्षा) को साह होने हैं।) २२-१६ ।।

पृथ्यम् केरो—सम्बद्धभावते । वैते सेपादिक स्थानका भारत सुरक्षः अस स्थानको को केट हैं, उन्हें कराइने, विससे में इस सम्बद्धन नोपनीय सम्बद्धों कान सब्हें ॥ १४ ॥

क्षण्यानाने क्षण--राजर् । सरकाके क्षोण आदि वारा क्षेण है तथा नियु प्रकारके क्षण पूर्ण कोते हैं। निर्माण और क्षणानेके कर्म काले क्षण पूर्ण कार्योंने प्रतिद्ध है। काण, कोच, कोण, जोत, जारंगंच, निर्माणा, असुना, अस्मित्रन, कोच, कुछ, ईक्षों और निर्मा-- प्रमुक्तीने रहनेवाले में काण केप कारा के काण देनेकोच्य है। वार्तेख । मेंने व्यासा प्रमुक्ति वार्तेका अवकार देनकार हुआ अन्यति तोहरें तथा पूर्णा है, असी कारत हर्नोंने एक-एक केप प्रमुक्तीका किन्न देवाकर कराय आक्रमण करता है। अपनी चूल कहाई करनेवाले, त्येत्वन, आक्रमण करता है। अपनी चूल कहाई करनेवाले, त्येत्वन, अन्यत्वनी, निर्माण कोती, व्यास्त और आधिताविद्ये रहा नहीं प्रमुक्त भी के निद्यर क्षेत्रर हम कार्यकार्योंका आवारण करते हैं। संगोणने हैं पन समानेकाले, निवस्ता रहनेवाले, आवार कारी, जुन केसर पक्षणाय करनेवाले, अर्थना इक्षणा, अर्थ

<sup>े</sup> जानन् सम्मिन पूर्व महरतंके महंग्यतं । (महन्य, कनुनेट और सम्मोदके जीता क्षेत्रतः स्वाप्त सहस्तेक्षमे प्रतिहत होता है) हिन्दि क्यन वेदनंता सहस्तेकि परित्र एवं निमान होनेको सात सहते हैं।

और प्रापकी उर्वास करनेवाले क्या कियोंके केवी—वे प्राप वर्षेत्र प्यारंभेड हाः, कृता तेन्द्र अध्यतके प्रमुख नुसंस-कर्ष (का-समूद्धार) को को है। को सब, संस्कृतिका, सर, महाराज्य अध्यय, समा, सहरतेल्या, विनरेने केंग र देखना. यह करना. सन देश, मेर्च और सम्बद्धन-के क्रमुक्तके बाव्ह कर है। भी इन कर्या इसों (पूजों) कर अपन प्रयुक्त रहाता है, यह इस इस्पूर्ण पृथ्वीके काम्बोको अपने अबीन कर सकता है। इसमेरी गीन, से क एक मुनते भी जो पुत्र है, अन्ते कर क्यी उत्पन्न का है—हेन मन्द्रामा पारिये । हम, जान और आवन्यक्रमाने प्रमाद प करना—इन जीन पुलोने अनुस्तक करा है। को करीकी (प्रदिक्तर) प्राप्तन है, ने काले है कि इन पुनोक्त पूर्व प्रत्यक्तर प्राचनाची और है अर्थीर वे प्रत्यकारी प्रक्रि मरानेवाले है। दर अक्षरय कुलोकाव है। (निवार्द्धान मठारा बेगोके सामको हो भटास पुत्र सम्बाध कारिये—) क्रांबा-अवसंख्ये विकार विश्वास करणा. असलपानम, गुनोने केन्द्री, श्रीविकास कारण, स्व क्रमेपार्थनों है को सुन, चेरेका, होन, होन, हुन्स, रेगेल, चरानी कारेकी शाका, तक, क्रिक संशव, विन्या, मर्गालको विकास, अधिक क्ष्यान्य और उपनेको बहु स्थाना-एन क्षेत्रोते को पुत्र है, अनिको स्थानन कम (Britfen) und En gie-re it

अपने अस्तरा सेच है: क्या को इसके विकास सुनेता बितों गुने हैं, में ही पहलें रोप बदाने गुने हैं। (असे बहते करान क्षेत्र भी बढ़े कर्नने () जाग प: प्रवासका केल है. का क्यों अवस्था अस्य अस्यक काम है. जिल्ला इसने क्रीतर अर्थाद् करमताम बहुत है करेंद्रन है, उसके हरा भट्टम करन जनाएं इ.सोबर्ड निक्रम हो भार पार पान है। कारपा रेवान कर हैरेवर कम कुछ जीत हिंग्स जाल है। राजेन्द्र । क प्रकारका को सर्वकेश जान है, उसे कराते हैं : सक्कीको कारत हर्षित न होना—मह प्रसम त्यान है: यह-होनाहिने क्रमा पूर्व, तानाम और वर्षके कराने आदिने कर वर्षा करना कुछर स्था है और तह वैदानाते कुछ सामा सामाह तहन करण-यह दौराय जान बार पता है। अब देशे सामीको सविकानकारका बाले है। अरः यह सेराह काम विकेत गुरा बारा गया है। पहासेचे सामने से निकारक साथे है. ष्ट सेक्क्यूर्वक रूपात क्राचेन करोते नहीं असी। अधिक धन-सम्बंधिक संस्कृते भी निष्णायक नहीं विद्य होती सक

जनक सामन्त्रांकि मेले उनमेन सामेते भी सामका उत्तर नहीं होता। जिले हुए कर्न मिन्दु न हो तो उनके निन्ने दुन्हा न करे, कर शक्तो प्लाने नहीं कार्य । इन क्रम पुजीने प्रक मत्त्र परे उन्हार हे से में या तानी है। कोई अर्थन करण है जार के भी कभी सम्बन्धे न जाह है (यह भीक सार है) । असे सामेद पहर्य-को-स्वाहियों कार्य क्षाका न करे (यह प्रोक्षणे आत्र है) । सूचीना भावकोर जा कोच्या को एवं करें (के क्या स्थान है) । इस सको काराज केन है। इन सम्मन्य मुलोसे मनुष्य स्टानाकी क्षेत्रा है। उस अवस्थाके की साठ कुल पाने नवे है—सत्था, ब्लान, समाचि, को, केराना, चोरो न करक, अध्यक्ष और अवस्थित । ये अस्ट पुन रेवन और जानवर केरोके ही संस्कृते वाहिने ( इसी जन्म के कार्य जाता क्षेत्र कार्य करे है, जनार सर्वेष्य स्थार पारत पार्वेषे । प्रयानो आह सेथ हैं, हमें भी कार देश काहित। प्रतार ! पीप इतियों और प्रदा का-पूजारी अपने-अपने विकासी को चोरमुर्दिको अनुसि केर्स है—क: से में है क्याद्वीनकाय केर है और मूल्यालकी विषय क्षा परिचार्य आसा—हे केन ने हैं इस अस केंग्रेसे कुछ पूर्व सूची होता है। राजेन्द्र । दूस सावकारण हो नाओ, कराने ही जन्मून लोगा करिएक है। में हम, उदाय और आपन् आहे पूर्व भी कलावान परवासानी हाहि क्रांकेक्से हैं, कार्य हैं अनुस्त्री प्रतिक्र है। क्षेत्रोको निवृत्त कर्मे है को का और सम्बद्ध समारक करना साहिते—शह विकासका करूक हुआ निका है। साथ ही सेट पुरुषेका हरा है। कर्मानो अर्जुक क्षेत्रोंने रहेत और मुनाने बक्त क्षेत्र कारीये । ऐसे प्रकार ही किसाद प्रथ आरम्भ समझ होता है । राजन् ! तुनने जो सुक्रमें पूजा है, यह वैने प्रेक्षेपने करा किया । चा कर गण, पूर्व और बद्धावश्यक्ते बहुको रह करनेवारस. क्ष्मार्थ क्या कार कीता है ।। २६-४० K

कृत्यकृषे काम—पुरे ! इतिहास-पुराण विनये प्रीतास है, इर क्रमूर्ण केलेंड क्रार क्रुक क्रोगोच्डा विकेशकरहे जान विश्व क्या है। (अर्थाद के प्रक्रोणी क्यानको हैं) कृति होता क्योंडी और विकेश करो जाते हैं। इसी क्यार कुछ होता क्रिके, एकनेडी क्या अनुष्टे क्यानको हैं। इसमेंही सहिन्दी हेते हैं, किरों में निविध्यानको स्थापन सम्बर्ध ? ॥ ४१-४२ ॥

सम्बद्धानं का-राजन् । एक ही नेताने न सार्वनेक कारण कहा-से के। यह जिने पने हैं। यह प्राथनिका एक केले हमारण परपालमें से कोई जिससा है दिसा होता है

(सहै इक्कान माननेबोध्य है) । इस प्रवार बेरके राजको न सानकर भी कुछ लोग 'मैं विक्रम् हैं' ऐसा नाको अनते हैं, किर उनकी हुन, अध्ययन और यहाँहे क्योंने लेकिक हुई धारलीकिक पालके लोगसे ज्यान होती है। वास्त्वमें के सामक्षकम् परभावतसे प्रकृत हो गये हैं, उन्हेंका देख संकार होता है। जिन सत्यक्ष्य बेटके जानस्थका निक्रयं करके हैं अनोर प्रश्न पहोच्य विभाग (अनुहान) विज्ञा जाता है। किरतेका यह जनसे, किसीका क्योंसे तथा किसीका क्रियांके हारा सन्वादित होता है। पुरुष संवक्रपण है और धह अपने संचारपके अनुसार कार हुए लोकोका अविद्याल क्रेक 🛊 किंद्र जनाक संकार प्राप्त न हो, स्थापक देखिन-सरका आकारण अर्थात् स्ट्राप्ति कर्ण करते खान वाहिते। व्य 'हीक्षित' जब 'हीक क्लदेते' इस बलुसे बना है। सन्दर्शके हिन्दे सारामाध्य परामाना ही सनते मध्यार है। अलेकि (भरपासके) जनका यक उत्तक है और उत्तक यक परेस 🖁 (इसरिन्ने ज्ञानका 🗗 आसन्य सेन्य व्यक्तिने) । अस्त पहलेबाले आधारको केवल बहुताडी (बहुत) सरकार पाहिये । इसरियमे शारित्य । बेटबरन साले सन्तानंतरे ही किसीतारे शिक्षण न पान होता । को संस्थानक प्राथनको कभी प्रकट न्हीं होता, स्लोको हुए प्रकृष सम्बद्धे । स्वस्त् । अवकां पुनि एवं व्यक्तिसम्हायने पूर्वकारको विस्तका नाम विका है, वे ही क्रम (बेर) हैं जिल समार्थ के पत्र लेनेवा की के बेरोके हाए जाननेकोच्य परमात्माके तत्त्वको नहीं जानते के बाकावये बेरके विद्यान नहीं है। भरतेल ! क्रम्य (बेर) अर परफल्याने समाप्य समान्यके विका है (अरबोद् का:प्रयाण है)। इंग्लिक्टे उनका अध्ययन करके हैं केल्वेल आर्थकर केडकर परमात्मके तत्त्वको ताम हम् है। एउन् करनकमें केलेके तत्त्वको जाननेवाला कोई नहीं है, अवका वो समझी कि कोई किरला है उनका सुप्ता जान करता है। जो केवल हेट्डे भावपाँको जानता है, जा बेरोके हाए जाननेकोच्य परधनकको महीं जानता। किंतु को सत्वये स्थित है, वह बेटलेड माराज्याको जनता है। जे हेन पन आदि अनेतन है, कापेते कोई हाता नहीं है । इसीलिये बच्चा पन आदिके श्राप न से आलाको कनते हैं और न अनलकको । यो आकाको जन हेता है, बढ़ी उत्तरवाको भी जानरा है। जे केवल जनरवाको जनका है, जा संस्थ जानकारे नहीं जानता । जो पूरत (हाता) वेदोंको जनक है, वही वेदा (जनव् आदि) को भी जनता है; परंतु कर क्रायको न बेहजाडी बानते है और न वेद हो। सभावि के वेदवेश अकृत है, वे का अनुस्तानको वेदके हुए है कारो है। दिर्शायको सम्बन्धी स्थ्य कारको बतानेके रिध्ये जैसे प्रकृती जालाकी और संकेत किया कहा है, उसी प्रकार का क्राम्क्रका सम्बन्धका हान बाहनेके रिप्पे ही केहेका औ अस्थेल किया जाता है—देख विद्वार पुरुष पानते हैं। मैं से इतिको प्रकृत सम्बन्ध है, यो परमध्यके तुमको कान्ते-कार और केटेंक्ट क्यार्थ व्यारमा करनेवाल है, जिसके अपने अंदेश निर्द भने हो और बुसरोके यी सन्दर्श संस्त्योको जिला पूर्वते । इस आजवादी क्लेज बारनेके रिक्टे पूर्व, संदित्त, पहित्र क उन्हरी और अनेवी आवश्यकार नहीं है, जिर आर्थेय आहे कोमोंको से बात है क्या है ? हमी प्रकार हिंचियानमें सीत प्रदेशमें भी अने नहीं देवना व्यक्ति। उन्हानक अनुसंबाध अनावा-पदार्थिय में बिस्सी सरह बारे हैं। जी, बेहरे करवोर्ने की न देशकर केवल तको प्रयास प्रयुक्त सामानकर गर्ने । अब प्रकारको चेत्राते रहित होधर परमानकारी उपस्था करे, मनते भी कोई चेल न करे। गतन् । हम भी जपने ह्वानकात्त्वमें विका कर विकास प्राचेताच्या अवस्था करें। चीन शाने अवस्था जेनास्में निश्चास करनेकालो कोई पनि नहीं होता। यो अपने आत्माके करूनको जानता है, वही केंद्र मुनि बंदरनता है। सन्पूर्ण सर्वोको स्थापन (प्रकट) कानेके कारण झनी पुरुष वैकासना बहुताना 🛊 । 📭 समझ अवस्थित प्रकटीकरण युरुपुर बहुले है होता है, अतः वही पुरुष वैधाकरण है: विकास प्रश्न की सहायुक्त होनेके कारण हाती प्रकार अवींको म्बाकृत (माक्र) करता है, इसलिये यह भी वैधाकरण है। से सन्दर्भ रहेकोको प्रमान देश होता है, यह प्रमुख उन सब लोकोका बहुत्वम अहत्वल है (शर्का नहीं होता) जिल्ह को क्षानक सरकारक प्रदाने हैं निवड है, वह असरेना आक्षा सर्वक हो साला है। राजन, पूर्वोक्त कर्य आदिने दिवल होनेसे तक वेद्रोक विकित्त अध्यक्त करनेसे भी बनुष्य इसी प्रकार प्रस्कृतक साम्रात्कार करता है। यह बात अपनी बुद्धियार विकास करके में तुन्हें बंदा दहा है ॥ ४३—६५ ॥

#### अहरकर्य तेवा ब्रह्मका निरूपण

सनतस्वातीय—चौवा अध्याव

पृथ्यपूर्ण श्राम्य स्वत्यस्थातात्री ! जाम विश्व सर्वेतम और सर्वेतमा अवस्थानियी विवासक अन्येत बार से हैं. सामें प्रियम-मोगोंकी बार्च विरुद्धार नहीं है। कुमार ! नेत से बा बाइना है कि जान इस परम कुमेर विश्वका पुरः अधिकान करें ।। इ ।।

समयुक्ताने कार—सम्बन् । हुन को मुझसे तथा करते समय अस्त्रात इसेरे कुल उठते हो, तो इस जवार कावस्त्राते सारोगे इक्कार जातील नहीं होती । कुट्रिये करके एक हो सानेका तथा मृतियोका निरोध कानेकाली को मिक्सी है, जाता नाम है अक्किया और कह स्वास्त्रावेका प्रमाण करनेते ही समस्त्रा होती है ॥ १ ॥

वृत्तरहरी कार—को कर्नोहरू जारण होनेकेन नहीं है, तक कार्यके समय भी को इस जानाने है क्यों है, जा अनय बहारो जन्मन रचनेकारों हुए सन्तरून विद्याकों गाँद भाग बहारकोरे ही बहा होनेकोन्य कहा हो है को पेर-गीर्स लोग हहाराज्यकों अनुसार (मोह) को किसे का समार्थ है ? अ ह ह

सम्बद्धियां केले—का मैं कारण अपने सम्बद्ध इसनेवाली इस पुष्टान विद्यावर वर्णन कालेगा, के प्रमुखोंको सुद्धि और स्थापकी इस प्रमुखोंकी है, जिले प्रकार विद्यान पुराव इस मरणकर्मा सारितको स्थापक दिन्ने स्थाप है। है गया को बुद्धि गुरुवनोंने निरंत विद्यानन प्राणी है। प्राप्त अ

कृतरहरे कहा अहार ! यदि यह स्वर्धका स्वाच्यके इस है सुगवतासे करी या सकति है से कारे कुटे यहै बताइये कि अक्रमधंका कारण केरे होता है है थे।

स्तिकृतियाँ शेरी—को लोग आवार्यके आवार्य जोड़ कर अवने सेवाने अन्ते अन्तव्य पद्म हे ब्राह्मकंका पहन्न करते हैं, वे वहाँ ही इस्तव्यार हो जाने हैं और केव्यापके पताल पत्म योगाना परमास्त्राची जीव रेते हैं जोर आही रिवर्ति आह करनेके सिन्ते हैं पता अवस्थि इन्होंको वहर करते हैं, वे सम्बग्नाने सिन्त हो वहाँ है कुंको सीकार्य पति इस देहरे आसार्यो (विशेषको छ्या) पृथ्य कर रेते हैं। धारत । स्थाप पता और निक—के ही केने इस करीनको क्या देते हैं, स्वापि आवार्यके अन्तेहको को कम अहा होना है, वह पत्म पत्मा और अवस-अवर है। को परमार्थ-एकको अन्तेहको सार्यको अवस करते अस्तान अस्ता अस्ता करते हुए अहारपादि पर्योगी यहा करते हैं, इस आवार्यको निका-साम

ही प्रमाणना चाहिने तथा बनके किये हुए उपकारका स्नरक करके कची रूपते केंद्र नहीं करना पार्तिये। स्थानारी किन्नको पाविने कि यह निज गुरुको प्रमान करे। अक्टर-चीरत्ते चर्चता हो जनार होहका साध्यवने पर स्थाने, अधिकार न करे, कार्ये क्षोकको स्थान न है। का प्रकारका पहला पराम है। यो शिक्षको स्थिते स्थाने ही पीकर-निर्माह क्रमा हुआ प्रति है जिस्से प्रश्न करते हैं, अल्बा यह नियम के अध्यक्तिकार पहला है कर प्रतरकार है। अपने अध और का स्थाबार भी पन, जानी तथा करेंने आवार्यका क्षेत्र करे—व्य क्रिकेट यह क्या करत है। पुरुषे प्रति विकास केता राज्य और कन्यानपूर्व कर्मन हो, पैरत है ज़ब्दी को और कुछ अब में हेन सहिते। या भी **व्यापनेक क्रिके राह है वहारक है। आवारी के अपन** क्रमार किया, को जारने रक्तमा तथा काहे से प्रयोक्त विद्यु कुरत, अलब्द को विकार काल्के का-क्रे-का अस्तरभ अन्य क्षेत्रार क्षित्र अन्यानीके प्रति यह देशा पाक रहाता है कि प्रमाणे पूर्व को कार जनकारों ग्रीम दियां—क स्वापनीका कीराय पात है। आसार्थके कावारका कहत कुकरने किया असीव मुक्तकिया आदिके हारा उन्हें संहत सिने किया विद्वार किया वहींने अन्यत न बाब । (दक्षिणा केवर वा नेवा बार्क) कभी पत्नों ऐसा विकार र लावे कि 'ने गुल्का रूप्यान कर का है,' एका कुले की कवी ऐसी कार के निकार । यह अक्रमनिक कीचा कार है। अक्रमारी रिक्त पहले गुरुके निकार विद्यार और संस्थानस्वर क्या प्रस्क प्राप्त करण है, जिन काव्यापूर्वक तीवन बुद्धिके ब्राए को बूतरे पालक हान होता है। सरकार, अधिक कारतक पनन करनेचे का जीतरे कार्या जान जात करता है, किर कार्यके प्रत राज्यक्रिकेंक स्तम क्रिया करनेसे का चीने प्रतको कारत है। कुर्वेक कहा को उनहें विशवे समय है, तक कुले-कुले पन-रिकामी, विकास अङ्ग एवं अलाव-सर्वित अल है, यह प्रमुखर्ग अरावाचीद सम्पर्कती कुमार केरके अर्थावा क्यां व्यक्तेरे हैं क्यार होता है—देश विद्यवीका करून है। पुर कहा अनुवर्षकरम्भे अनुव होका को कुछ भी का प्राप्त हो सके, को अञ्चलको कर्गन करना कविने। ऐसा करनेसे का किया सर्वकरीयी अनेक गुलीवारी वृत्तिको प्राप्त होता है। पुरुषुक्ते प्रति भी जान्ये नहीं दृति होती है। देती वृत्तिले क्ष्मेनको विकासी हार संसारमें सम अकारते कार्ति होती है।

ब्द ब्ह्ना-ने कुत और क्रीवह क्या बस्ता है। समूर्ण

दिशा-विदिशाई अस्ते दिले सुरामी वर्ष करते है क्या | साने निवट बहुत-से हरते तीप अप्रवर्ग-पालको हैओ िमास करते हैं। इस अप्रकारिक कराओं ही केवळालेंने केवल NR विक और काम क्षेत्रणकाली करेनी प्रक्रिकेको क्ष्रिक्षेकमी जाति हां। इसीके प्रयासने कमार्थे और अध्ययभौको किया क्या प्राप्त हुआ। इस सहकारित हो प्रतासको सुर्वरिय समझा लोकोको प्रकाशिक करवेले कार्य होते हैं। सामेदक्य विचानकिसे सकत कार्नकालेको सेने काके अभीष्ट अर्थको जापि होती है, असे अध्या सहकर्ष की मनोबाधिकत कहा प्रकृत करनेवारच 🖫 देख सम्बद्धकर हे **व्यक्ति-देशक आहे. व्यक्तिकी प्रकार हैने प्रकार आहे हुए।** राजन् ! जो अन महामार्थका जन्मन तेला है, यह सहस्राती पंप-नियमाहि तपका आवरण करन हुआ अवने सक्ती शरीपाने भी परित्र करा रेता है। तका कुल्ते विद्वार कुल्त निश्चन ही आतमानको प्राप्त होना है और अन्यवस्थाने वह मुख्यों भी जीत रेक्ट है। एकर् र क्रक्टर पूजा करने पुरुवकारिक हारा राजाना होकोको हो जाह करते हैं, किन् भी अक्रमो पारनेपाल विकार है, बड़े कर अन्तर करन कार्यका बरायकामाने प्रदान होता है। भोजने विशे प्रकार दिस्स क्षात कोई वर्ग नहीं है।। ६—२० ह

कृत्यम् जैते—विश्वन् पूरण वर्षं सरकारक परामासके वित्तं अपून एवं अधिनाची परामासक साक्ष्मासन करते हैं, क्रम्बर कर कैसा है 7 जना वर्ष प्रवेश-ता, शतन-क असक बर्यक्त-ता करना या सुकर्ण-केने पीले राज्य असेत **### \$** 2 10 7% 11

सम्बद्धकारी बद्धा-कार्या क्षेत्र, कार, कारो, लोहेके स्त्रक जनक सुर्वेद सन्तर प्रकासकार-अनेको प्रकारके क्य प्रतीत होते हैं, तमापि अक्टब्स क्यानिक क्या न पृथ्वीये 🗓 न आव्यात्राने । संसुद्धाः जल भी आ इतको भूते धारत करता । अवस्था का एक न वार्टने हैं, न विश्वलीके अहीता है और न कक्षानीने हैं दिकायी हेवा है। इसी प्रकार बाब, केक्प्रमा, कन्त्रक और सुर्वने भी वह नहीं देवत कारा । राजाः ! व्यक्तिको व्यक्तियो , वर्षाको प्रकारी, अवर्षकेता स्तापि क्या किन्द्रह स्तक्येदर्ने की यह नहीं दृष्टियोगर होता । १४७१र और बाह्रेज करूड सामने तथा बहान कार्ये थी असका कांन नहीं होता; क्लेकि वह इस्त निज है। इसके का सक्तानक कोई कर की या स्थाना, का शहानका अध्यक्ताने को है। ब्यायरको सबदा अस कानेवास कार में अपने सेन हे जात है। यह का अलोकी कार्य क्रमान आरम्प पुरुष और पर्वतीये भी महत् है (अपोत् पह कारों भी क्षरका और महस्तों के पहल है। । की समया करकर है, बढ़ी अनुस है, बढ़ी रचेना, नहीं पहा राज नहीं पहा है। सन्दर्भ कर कार्यो अबाट कर और अरोपे लॉन होते हैं। निकार स्थापे है--कार्यक्षण करत कार्यका निकारपत है। निवा रिकारे का सन्दर्भ सन्तर प्रतिक्रित है, उस निवा कारणकार अंद्राच्ये के जानते हैं, वे अपर हो जाते हैं। का इक बेन, सोच्य और चयमे रहित है और अस्ता महार यह tole from gas & n e s.— n e n.

## योगप्रधान बद्धाविद्याका प्रतिपादन

सन्तसुवातीय—पर्ववर्धी अध्याय

सन्तमुकारणी कहते हैं—एकर्! क्षोण, क्षोण, हरेण, बारम, मान, आकरत निक्षा, ईसर्ग, खेड, कुम्म, व्यापमा, मुलोने क्षेण देशना और निष्ण करणा—में काल प्रमृत् केण मनुष्णिक प्राप्त-काल हैं। रातेणा ! क्षा-क्षा करके में सभी क्षेण मनुष्णको बार होते हैं, निष्णी आवेकमें आवार प्रमृत्यों सानम पर्यकर्भ करने सम्बद्ध है। रातेणुव, हुए, क्षात्रोरकार्थ, कृत्यन, मन-की-पन क्षोण करनेवाले और अधिकार आव्यापित्र कारनेवाले—में का प्रमार्थक स्मृत्य विक्रण हैं कृत कर्म करनेवाले होते हैं। में का प्रमार्थ में आवा कार्यम महीं करते। सम्बोगने कर सम्बोधकों, क्षित्रस्ता स्वानेवाले, कारना आधिकानी, क्षेत्रा केशर कहा और होवानेवाले,

कृत्यन, कृतिन होतान भी अपनी स्कृत सहाई सारनेताले और विकारों एक हेद रकारेवाले—में सार अधारोंद प्रमुख ही पानी और सुन को को हैं। सर्ग, सरह, तर, इत्तिवालेगा, अस न करवा, रूपा, स्वारवित्या, विलोके होन न देवाना, कर, सामक्ष्म, सेवें और समा—ने सहायके सरह महत्त् अत हैं। को इन जाना सरोंसे कभी खुत नहीं होता, तह इस रुक्त पुल्लेपर प्रस्तन का सब्धत हैं। इनमेरे तीन, तो ना एक पुल्ले भी को पुख है, सरका अपना कुछ भी नहीं हेता—रेखा सम्बन्ध आहेंने (अर्थाह समझी विलो भी नक्ष्म क्यान भई होती)। इत्तिवालिया, त्यम और अस्मार—इन्हें अमुक्ता विकीड हैं। इस है विलंका प्रसान

राज्य है, का मुद्रियार, अक्रमोंके ये ही मुख्य सामा है। सबी हे व दुरी, श्रम्पेची निया करन उन्हरनेको होना नहीं केत । में ओन इसरेंकी निष्ठ करते हैं, वे सम्बन्ध है नतहने पत्नों 🕯। बर्क अक्षय देव हैं, जो पहले सुवित करके पी रक्षामध्ये नहीं काले को बे—कोकवितेची कार्य करन. प्राचने प्रतिकृत आवरण करन, गुलिनोवर केन्द्रवेचल, असरवर्गानन, बार, क्षेत्र, पराधीनन, सारोबं केंग बतान, पुनर्ता करता, करवा कुक्त्योग, करवा, का, प्राणियोग्ये यह प्रदेशन, ईम्बं, हुई, बहुर स्वह्मार, विकेश-सुनका तथा भूगोपे क्षेत्र हेकानेका अन्यतः। इस्तीन्ते निहार पुरूषो महोद क्लीपुर पूर्व होना पाहिले; क्लेडिड सारक्योंने इसकी साठ ही किया की है। क्षेत्रमें (किया) के कः गण है, से अवस्य हो कालेक्च है। सहस्रा हिए होनेवर सर्वित होना और अधिन होनेना भाग्ये बहुतक अनुभव माना---ने से गुन है। जीवता कुल पह है कि जावब के सक Percifier on E. sit Park whiter it gain | Fauls Sei अपन्य पाद भी अन्यन देवियोग हो जाते हैं, और से पत्र, प्रकृति योगनेवर मह पुत्र कार्यो अपने दिल कुर, बैचन का पर्मान्ते भी काली विकोर किये विकास कर केन है । विकास मन देवार उसके नहीं अनुस्थार परेची बारानको निवास ए को-या भीवा गुन है। अपने परिवक्तरे आर्थिक कावा अपोग को (विलयी कंपर्यंत अवसम्बद्ध न यो)---क परिवर्ण गुरु है। तथा विकास चार्याहीर सेंग्से अपने पहेंचारे माना न करे—का क्या कुल है। यो कर्ष कुल्ट कुल हकार पुरसार, जानी और जिल्लिक होता है, जब जनमें चीकी | हुनी करा का है थ र⊸२१ ।।

इन्हिंग्डेरे पर्वे विक्क्षिके हुए रेक्ष है : जो वैशुक्तकी क्रांकि काम समावे प्रश्न है को है, ऐसे मनुष्योंके दिवा लोकोबी अधिके संबद्धकोर स्थित किया हुआ यह हरिकारियहरूम एव बन्द होनेन भी केनर कर्मलेकोची प्रतिका कारन होता है (मुक्तिक) भी। क्लेंकि स्वस्तान प्राप्ता क्षेत्र र हेरेंसे है का क्यान क्रोकी क्या केरी है। क्रिसेका क्य कारो, विक्रीका चार्नाने और विक्रोका विकास प्राप्त प्राप्त हेना है। जनकारिया वर्णन समाग्यकार्थ संस्कारतीय क्रमी निष्यान कुल्ली स्थित क्रमी होती है। निर्द मानोकाको निकार कार्य के विशेष्ट है। प्रस्के विकार प्रक का और भारत है, सुने । यह महत्त्वपूर्ण साथ परत प्रसारत क्रमानको प्रदी करनेकाल है, हमें दिल्लीको अनवन कार व्यक्ति । सरकारों निवा का साथ दूरव-प्रश्ना andres frances freedom fraggire mais fie per केन्द्राच्याने का कान्यानीकावा सन्ताने हान प्रतिद्वित के इसे को पान होते हैं, के अन्तर हो जाते हैं। पानर, रे केवार प्रस्तान कुरवार्तिक प्रया स्थानकार प्रमुखी पूर्वि सीता या स्वतात ( अवस्था जो हान क का किया कता है, इससे भी अहानी पूरण अन्यासको नहीं या सम्बद्धा तथा अन्यवस्थाने को प्राप्ति भी भूति मिलली : तथा प्रकारकों चेतुको रहेल होका स्थानसमें कालमा करे, मनते भी बांद्र बेहा म होने हे क्षा स्ट्रीको हेन और निष्याने प्रतेश न करें। राजन् । प्रवर्षक शायन प्रतनेसे नकुण वर्षों है ह्याचन साम्राजनार करके आने दिवस हो जाता है। निवास ! केवेंने कारणा: निवास कारों: को की बाजा है, करी

#### परमात्माका खरूप और उनका योगीजनोंके ग्रारा साक्षात्कार सनत्त्वातीय-- इटा अध्याव

शरहजार्य करते हैं—मे अस्टित क्या है का बाद, प्यार 🖡 प्योतिर्मेश, वेदीयमान एवं निवास सहस्रत है; सब केवा मार्थको रूपस्पत करते हैं । उसके अध्यक्षके सूर्व प्रकारिक होते है, का प्रमाण गरावास्था मेनीता अञ्चलक करते 🕸 क्षत समित्रमा परायसे हैरनारभंगी जनते हेरी है सम न्सीसे पद वृद्धिको प्राप्त होता है। यह प्राप्त नहेरिकेट सार ही सूर्व आहे, प्रम्यून न्योप्रेलोचे चीवर विवय क्षेत्रर प्रकास कर

था है व्या कुरवेले प्रवासिक न होता कर्न हो स्वकार ज्ञानक है. जो सनाम चनकन्त्र धेनीका साहमका कर्त है। परमानके जान कर्तात् प्रकृति क्रमत हाँ, स्कृतिसे सर्वितन वार्थ व्यवस्था प्रयास हारा, उसके श्रीतर अस्थाताले सूर्य और पासक-में के देवल सामित हैं। सामुक्ते अपन करनेवारे अक्रमा से अनंत्रकात सरम् है, वह सह राज्यात स्वयत हा होने देखाओं एक पूर्ण और

भाषाताको बारण करना है। यह रूपाल परमान्त्र केरीका साम्राज्यार करते हैं। उक्र केर्ज केव्याकोच्ये, पृष्टी और अध्यक्तको, समूची विकारतेको उन्ह पुरा विकारते पह प्रदेशक है भारत करता है। जाते देखाई उन्दर हुई है, क्सोंने सरिवार्ष प्रकारित होती है और क्रांग्से बहे-क्रंड क्यूड अबट हुए है। जा प्रमान करकार्य योगीका अवस्थात करते है। इसमें विशासकीय क्षेत्रेक की विस्तवा कर्न (कोने हिना) नह नहीं होता. जा केवारी सबके बनायो सहजे हो हर इतिनकती बोदे सुदिवसम् जैस्य एवं अवस् (तिन नवीप) चीपालाको जिल परमानवर्ध और है को है, उस सनातर काम्बन्ध चेत्रीका सक्षात्वार करते है। उत कर्पातास्य इंडाम किसी सुरोको कुनको नहीं उन सन्दर्भ, को बोर्ड पर्य-क्युओंने नहीं देश स्थाता । के विद्यामधितक पटिकारे, अन्तरे और प्रमुख्ये को पान क्षेत्र है, से अन्त हो सारे 🗘 व्या समाप्तन परावानुका जेनीचन प्रायुक्तकार करते 🖫 क्षर इतिहर्ष, पर और मुद्धि—इन बार्युका समुद्रक निर्माद भीतर प्रोचा है तथा के परमायको सुरक्षित है, का अनिवा शामक नकेंद्र विकास पहुर भारतो देवने और फैनेकले सोग पंचारमें चर्चकर इस्तिको जात होते है। इसके कुछ क्षत्रेवाले का क्षत्राम पानकात्रा केन्द्रेयन क्षत्रात्राज्ञ करते हैं। केरे कुरुके क्यूकी आहे क्यूका मध्या संख् पानके किए आने पानकार अने पीती सुनी है, उनी अबाद यह प्रमणकीता संसाध और पूर्वजनके संवित कर्मको इस क्यमें योगस है। जामस्माने समक अभिनोधे विने उनके क्रमांनुसार असकी व्यवस्था का रही 🖟 का स्थापन भागानुबार मोगीलोग साक्षाध्यार बाले हैं किसके किनावारी पते सुवर्णने समान पर्नेरम दिसानी पक्षे हैं, इस संसारकार्य शबास बुक्रपर जानक क्षेत्रत बंगकीर जीव कर्मकरी बंक शास्त्रका अपनी बलागाके अनुसार विकित योगियोचे पहले है; विश्व विकास अलगे भीनोच्छे पुरंत होती है, जब सन्तरन परमाजका कोनीकर बाह्यसम्बद्ध करते हैं। पूर्व करमेकस्से मेह बतरे हैं, फिर पूर्वने हैं पूर्व खाने करका कार्यहर होता है तथा अपने एकमा भूगे बहु है हैन स्वता है जन सम्बद्ध मरमान्यका चोनीरकेन सम्बद्धकार करते हैं। कर कुर्व काले ही बायुक्त आविषांब कुला है और उसेने काली प्रेक्षी है। क्सीमें अति और सोमब्दी अच्छी हुई है, क्या उसीवें हुए प्राणका निवसर बुआ है। बाहराका निन्तने, कुन असल-अहल

क्युओक का सामें असमर्थ है हुए क्षान है समावे हैंड सम कुछ कर परमानको है अबट हुआ है। यह सन्तरन वरकान्या चेन्हेकेन साहात्वार करते हैं। अधानको जन अवन्ते तीन कर रेख है, अवको कदमा, कदमको सुर्व और कुर्वको परम्बार अवनेने स्थीन बार रेका है; यह समावर परनेपाला योनीयोग साक्षात्वार काले है। इस संसार-क्षीलको कर का इस इंसम्ब क्याका करने देख अंक्रमो कर नहीं उठा दह है नहीं उठे भी नह कर उठा है हो सबका कम और पेक्ष स्वप्नेत रियो विस् साथ। सर सम्बद्धन पर्यक्रमध्य पोर्गीयन संस्थानस्य कारी है। इस्सीसर्वे क्रिक का अनुस्थान अपार्थको प्रशास विक्रुवरीको क्रमानो जीवसको स्थाने सह क्या-मन्त्रको प्राप्त होता है। क्षा कालोर प्रतास्त्व, सुरिनोर चोन्च, प्रार्थस्त्रार्थ, स्थाने आहे-कारण इसं सर्वेत विश्वासाय पास्त्रकारको यह पुरुष रही देश को; सिंह केकिन का स्थापन पारेकाका साक्ष्मकार करते है। कोई सक्तरमञ्जा है या सत्यनहैन, सब पनुष्योपे हरकारकारके का हाक पुर्वतनेत्रार केटा है। यह बाह्य और मुस्ती भी प्रत्याको विका है: अपन प्रत्य ही है कि इन केरोपेरे को पूका पूरून है, से आरम्बर्क सूत्र कोच काराज्यको प्राप्त हो को है। को इनकर करवान्त्र बेगीलेन प्राथ्मस्त्र mai d'e franç gen suplement pro pre eine afri पर्यापक क्षेत्रीको सम्बद्ध करके स्थानसम्बद्धे साह क्षेत्रा है। उस क्षमा उसके क्षमा गाँद आँमहोत अतारे मार्ग न भी हुए हो, से भी से पूर्व हुए अस्तुते जाते हैं। सन्तर् ! यह ब्रह्मनिया तुपने क्ष्मात व अले हे, तथा इसके प्राप्त तुन्हें का उद्धा अस हो, नियों की पुरुष ही अपने करते हैं। उसी अवस्थे हाया योगी-लोग उस सन्तरन कायनाच्या साझावार करते हैं। इस क्रमा परवालकाको क्रम हमा क्रमा पुरा आधिको अकरेने बारण कर होता है। जो उस पूर्व परमेश्वरको जान रेका है, कारका प्रयोजन यह वहीं होता (आर्थात् वह कुरस्कृत हे जाता है) । इस समाप्तन परपायाच्या चौनीरहेग साहास्वार करों है। कोई पाने समान कैनकास करों न हो और पान रवक्त भी पंक राजवार वर्षों न औ; अनाने को इस्वरिका क्तव्यक्तने 🤹 अन्त प्रकेश । अस समझन प्रसादकार केनीका सक्काका कारो है। इस परकाशका सक्का देखनेचे नहीं आराः जिल्ला अन्तः करण आजन्त विशुद्ध है, से है को देश भारे है। को सबके ब्रिटेंगी और भारतो बहारे करनेकारे है एक किनके नगरे क्यी दुःस नहीं होता—हेसे

हेकर के शंभ्यात तेते हैं, वे पूक्त है करे हैं। इस समस्तर परभारताबार योगीरचेग साकारबार कसो है। कैसे साँव प्रिलोक्ट अवस्थ से अध्योको क्रिक्ट सूत्री हैं, वही प्रकार हुक दभी पर्न जानी किया और व्यवहरको सकते असे गृह पार्थको क्रियको रकते है। जुले बनुव्य अन्यर क्रियक माफे आरफ पेड्रों ए। असे हैं और को कराई नहीं करी भरमानाके जार्गमें कार्यकाले हैं, उन्हें भी में कार्य कार्यके रियो मोदिय कारनेकी केल करते हैं: किंदू मोरीकर मानास्त्राच्याने काले केलेने न आकर कर सरसाय कालाव्याव ही राज्यात्वार करते हैं। राजरू है में क्या विकास असरमध्या पान नहीं होता। य पेरी मृत्यू होती है व कथा, किर मोख से हे ही बहुकी समझा है ? (क्वोंकि में निरम्पूस महा है i) स्तर और असल तक कुछ पुत्र स्वयंत्र कर सहसे रिवर है। एकामा में हो सब्द और अपन्ता जनस्वा जनस्वा है। पेरे क्राप्ताधूत का स्थान परवासम्बद्ध चोनीवर शतकाश्वार करते हैं। परमान्यका न तो साथ करते सम्बद्ध है और न जातपु कार्यर । का विश्वका से केल्पिकार्य मन्त्रोमें ही देशी जाती है। अञ्चल सर्वन समार ही प्रमाना नाहिये। इस प्रकार हान्योगमे पुरा क्रेसर सह आनवार प्रकृतो ही करेकी इस्ता करे। इस समाप्त मामानाम चेनीरचेन साहास्तार करते हैं। इस उक्तनेता पुसरके हरूको निकाद स्थान संस्ता जी करते। भी कामाय नहीं किया, अधिकेत नहीं किया प्रकार करें थे जाने मनको हेश नहीं पहुँचली । इस्तरिका सीत ही को यह

का पुरिष्के कर यो जा क्षेत्रेयोग है, जा समारत क्त्याच्या केरीयर साधारकर करते हैं ॥ र—ए४ ॥

हार प्रकार को सपका पूरों में परकारकों निल्ला देखता है, बह हैकी रहि जा। हैनेके अनगर अन्यत्थ विवय-धोगीने कारक प्रकृतिक क्रिके क्या फ्रोका करे ? मेरे सक और

कारते हम्बान्य को बढ़े मानसम्बद्ध जार होनेपर बरके सिर्व अन्या करेकी आवश्यकता भी होती, जरी प्रकार आहर-इसीके रिको सन्दर्भ बेहोबी जरूरत नहीं रह बाते। यह अक्रुप्तात अन्यवांकी प्राथाना स्थाते. ह्यानोह भीतर विका है,

विन्तु किसीको वेदवानी नहीं हेता । यह सम्बन्ध, परावरतकान और हिर-एवं प्राथमार स्टोम्बल है। मो जो बार है।। है, का विक्रम् परवास्त्रारे नियम हो काता है ॥ २५—२७ ह

कराइ । में हो समग्रे पाल और विता है, में ही पुर है और सम्बद्ध जान्य भी में है है। को है, यह भी और को नहीं है, बा भी में हैं। बाज ? में हे तुवारा मुख निरामह, निक और पूर की है। हुए इस स्थेन की ही जानामें विका हैं: फिर भी न तन इसो है और न इस इसारे हैं (क्वेंकि ज्ञानक कुछ हो है) । असन्य हो नेता कहार है और असन्य ही नेत क्या (अपना) है। मैं सक्यें ओनारेत और अपनी प्रवा (निक-मूहन) परिवासे विका है। में अवस्था, परावरसंस्था क्रम विक-रात स्वयंकन स्वतेकात्व है। युद्धे जनकर विद्वान पुरुष करण प्रस्ता है जाता है। परवास्था भूशको भी सुरूप तथा विकास अन्यांत्य है, जहीं एक पूर्वोंने साम्यांनीकारो विराज्यार है। सन्दर्भ जानियोधे इवक्यभूतमें दिवत उस परम विशासी विद्वार पुरूष ही बाजते हैं स २८-११ स

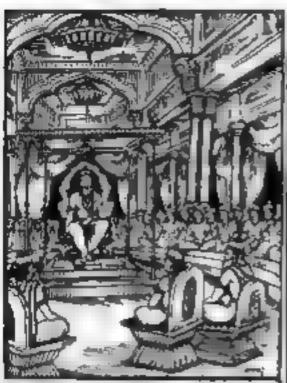
# सञ्जयका कौरवोंकी समामें आकर दुर्योधनको अर्जुनका संदेश सुनाना

प्रमास्त्राम और पुनिसार नियानीके साथ मार्कार करते एमा कृतद्वाको साथै यत बीट क्यो। आध्यक होते ही बेहर-देशामारेले अस्त्रे हुए स्था संवालीय तथा औष्य, होवा, कृत, करण, कृत्यमाँ, तत्यक, अवुरक्तम, विकार्ग, प्रोत्यक, महिना, तिहर और पुलुक्ते न्यासन काराहके साथ क्या पुरावसन, विकास, समुद्रीन, पूर्वस, १८५८, कर्न, अनुव और विविद्यानिने कुरुराज कुर्वेकाचे १०० शब्दानें अनेत विव्या । से

निवार कृष्टि (स्थान कारती है, जिसे और पुरूष ही जाह कारते हैं।

रीतन्त्रकान्यं कार्य है—यक्ष्यू । इस अकार करवान् | जनी सहनके पुराने पान्यवेची क्योबंद्रश करें सुरुके रियो असुष्ट थे। सरको प्रोचका ने सम अपनी-अपनी क्वीक्रके अनुसार आक्रमोक्त केंद्र वर्षे । इत्त्रेशीर्थे अल्याके कुरूप के कि सहक अन्यके प्रत्या का यूने हैं। सहाय हरंह हैं कारो अस्तान समाने आहे और काले रहते, 'कोरवनक । मैं क्यानेके करते था छ। है। अपूर्व अपूर्व अपूर्व स्था कीरवेको समायेग्य सता है।" क्रकाने पुत्रा—सम्राम । मै **व्य** पुत्रता है कि नहीं सम

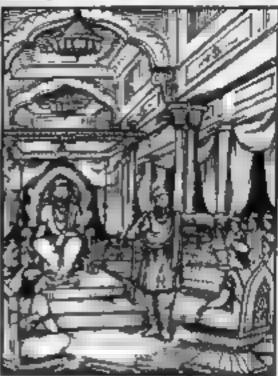




प्रमानोके क्षेत्रमें दूरमाजांची जन्मक क्षेत्रमें अपूंतरे क्षम का र

सक्ता का-राम् । वह अंकानो काने काएन श्रुविद्यालयो सम्बन्धिये महत्त्वम् अर्थेको अने स्वयः अर्थे हैं, उन्हें क्षमान क्रोंकर पून हैं। उन्होंने कहा है कि 'से कार्क माराने अनेनारा, मन्तुन्ति नामुक सुरद्धा एक है जुले कुद्ध करनेकी कीन क्षेत्रक साम है, जर स्कूतको प्राप्त सर्गको सुराकर एका यो स्थानकेन कामानेत साथ पूज करनेके तिये कुलये गये हैं, उन्हें कुलते हुए हुए केर संदेश इस अकर पहल विसर्ध परिवर्धके सर्वेश श्रम क्ष्मेंका औ प्त-प्त पुर शर्थ ।' वाव्यविकारी अर्थन पुरुषे विन्हें अनुव भाग पहला था। जाने अपि लाल वालो वक्स है—'नही कृतिका महाराज चुनिहितका राज्य क्षेत्रनेके विन्ने वैदान नहीं है तो अवस्य है ब्राटक्के पुरोक्त कोई ऐसा करकर्न है, मिलका पान कई योगना ककी है। नहीं तुनोंकर पाइस है कि कोरहोक्द मीन, अर्जुन, स्कुल, स्कूल, अंकुल, सामनित, पूर्वार, विकायी और अपने इंबर्क्सको इसी एर्न आबाहाको पहर का सकतेनाते पहराम पृथितिको राज बुद्ध है से ठीक है; इससे में पाणकोपा साथ पर्वता पूर्व हो बायरा। प्राथकोंके ज़िलारे हर्षिके सामको साँच

करनेकी कोई जनसम्बद्धाः भूति है, दिन से मुद्ध ही होने दें। ब्ह्यान बुव्हित के नक्का, करस्का, स्थ, वय, वर्गाका और



क्ल-क्ष प्रभी मुनोने सन्दर्भ है। है बहुत हिनोने अनेक प्रकारके कहा करने स्टेनर की तल ही बोलने हैं तथा अन्यक्षेत्रेके कक-व्यक्षारोको स्थान करने युने 🖫 विस् निवार प्राचन ने अनेपारे पानोंके पूजाई हुए अपने प्रदेशको व्योग्योग क्षेत्रेचे, ३० सम्ब कृतेनमध्ये नक्षमान पहेना । विकार समाप कृतिकार राजने और हुए प्रकृतकारी जीवानेत्रको जाहे नेको प्रोक्का जैन जनसे हुए देखेंगा, इस समय प्रते पुर् करनेके मेन्ये अवस्य बहुत्ताव द्वेच्य । किर प्रकार कुरस्की क्रेंच्यीकोच्या परित्र आगरे कारकार प्रकार क्षेत्र बाता है, केली ही बात मीरवीकी देखकर, क्रिकारी करे हुए होतक समान अवने विकास वादेगीको महत्त्वपु देशका तका भीवरोजकी क्रमानिने क्रान्तकर किन्ने ही बीरोक्ट बरासाची और विकासीको पानी बागो देशका श्वीकाको पुत्र केलेके तियो जन्म प्रकारत प्रोत्य । जन विक्रित्र पोद्धा नकुल दुश्वाचलने प्रवृत्तोंके विरोधी वेदै लगा देगा, यस समाधीस रवण्यादे और समझ क्योंका आवरण करनेकान पुर्शीसः, चीर स्थापेक प्रश्नुजेवेका संदार करता हुआ इन्हानिशर आकारण करेना और का कुर्नेका क्रैकीके न्यान् बनुकं प्रत्येत और



रभावुद्धविद्यास्य सुर्वेको स्थैरकोयन् क्रायको हेरोला को अने प्रक कारनेके रिश्वे अवस्थ अनुसार क्षेत्र । अधिकार, से साम्राह् बीक्सको समान है करते हैं; विशे क्रम्ब व्यू अस-क्रमसे धुसनित होता गेथेचे ज्यार कन्त्रमाँ करके प्रदूरोको संतप्न कोणा, का समय क्वींकरको एक रोपलेके किये अवस्थ पक्ताना श्रेगा। विक अनव कृत् बहारको विराट और हतर अवनी-अवनी रोन्सओंके सहित सुसन्तित होपार हो-अनहित कृतसङ्ग्रहेंका हुई करोंगे, का भाष कृतिकाको प्रकृतक हैं मारन प्रोटा । यस मीरवोने सचनका नंतरियोजीत सहस्रह भीना विकामीके हाजरे जाने वालेने हो में का बहुता है के पांकु कर नहीं स्थोरने । इसमें पूरत प्रतिक की प्रतिक प्रकार । कर अतुरिन्त तेवली सेनानावक बृह्युहा अस्त्रे कालोहे वृह्यकुदे चुनेको पीडिय करने हुए होनाव्याचेतर सहारामा करेने के कुर्वोचनको बुद्ध केंद्रनेके रिन्ने प्रात्तन्त प्रकृतः। शोवकारंपने केंद्र अक्रमानी समाजित जिस सेनावा नेवा है, केन्द्रे केन्द्र्यो पुन क्षणी सह नहीं समेले। तुम दुर्वोकाले बहुना कि जान दुन राज्यकी आहा क्षेत्र हो।' श्योंकि हुको दिवनिके केल, युक्को अद्वितिय ह्यो, पदायसी सार्व्यक्रको अपन स्कारक कर क्षिया है। यह सर्ववा निर्मात और अध-कृष्ण-संबद्धाने पाधृत है। किस समय क्वोंबर रबये पाणीक बन्ध, ब्रीकृत्व और उनके दिव्य चन्नवन्य १६४, घोडे, ये अञ्चलकार, केवल पक्ष और मुक्ता देशेगा का काश को चुन्ने हियाँ पालाव

ही होना : निस्त समयं युद्ध करनेके दिन्ने इक्ट्रे हुए हों लुटेरोको न्य करके नकीन कुमको अनुस करनेके दिन्ने में अवनके समान अवसीता होनार कौरकोको प्रस्त करने स्वाृंगा; अन्य कर्मा पुर्वोके स्वीृंग महस्त्रम कुरस्कृतके भी बहा कह होना । कुमेंकनका स्तात पर्व गरिका हो आभाव और अपने वर्क, सेना समा केनकोक साहत क्यारे पह होकर कह नकारी कैरिनोके हाथने कर सामार क्यारेने स्वांन्स समा कर नका प्रशासन होना । भी कहनार इनसे कह कर सीम का कि हुए पुंजाने कीन्ना मेरे सहस्त्रम हो।

प्रा पेन पूर्वाहरी में जब करते बैठा के कि एक



व्यक्तने अत्यक्त कुलो कहा—'अर्जून है हुन्हें हुन्यर जाने करन है, अन्त्री कहानोंके एक युद्ध करना है। दून कहा कहा है ? जी-तन्त्र केंग्रेस सैटकर यह इक्को हिन्हें इस हुन्हों कहानोंका कहा करते आगे-अर्ज करते, अवता हुन्हेंच नाम करते हुए किंग्रे करें ?' तम समय मेरे बहानांत्र हुन्ह्यों केंग्रेकर इस युद्धों सहस्त्रकतान्त्रमं अंकुन्त्रका है वरता किंग्रा । इस अवतर इन इस्कृत्योंके वर्थके निन्दे मुझे अंकुन्य निन्ना को है : कहान होता है का नेकारानोंकर है किया हुआ विकास है । सीकृत्य करते हैं युद्ध न करें, किए भी यह से करते हैं किरवेंकी क्याद्ध सर्विम्यन करते स्त्री से देवता

और हुए है जाके पह है, किर पर्वकेंग्री से बार है कर \$ ? इर श्रीकृष्णरे आवश्यक्ती सीचकरें सामी प्राथमिक और भारती तक सामने पुरू विकास से और सीमचे दानानेपर ही सामानी होड़ी क्वां सामीको स्थाने बाह्य किया का। जान हमके नेमको कौर महाम स्थान कर कारत है ? में सम्बार्तिको इन्छारे कियाद बीन्ट, पुरस्कीय अरुवार्त होता और अनुस्त्र की कुश्चानंत्री प्राचन करते. पुर क्रिका । मेरे विकास के के कोई जनका इस बुद्धों पायामोरे कोना, सरक नियन वर्षतः निक्रत है। बहैरके । मैं दूसरे राष्ट्र करूत है, कारहके पुरोका केवन की एक एकत है से पुरुषे हर रहनेका है हैक सम्बन है, पुरु करनेका हे कीई भी नहीं अरोग्ड । यह बार निविद्ध है कि में संस्था-श्रुविते कर्ण और कृत्यपुर्विको अल्बर कोल्बेका सन् प्राप्त चीता होता । विका प्राप्ता कारणावानु स्कारणा चूरिकीता । वोई । वैका कारीयर हो बहैरमालेल चीतित रह समेरते ।"

| अपूर्णित संस्थित क्री सम्बद्ध-क्ष्मेरक अन्य श्री है, वैसे क्री अञ्चले हरता सीवानाओं भी इसमें कोई सीड नहीं है : मैं कर्य के सम्बद्ध होका सबसे बुद्धिने देशता है से पूछे इस बुद्धार अपने रूप हेल है दिसानी देश है। मेरी योगहरि औ व्यक्तिकार्तको भूग धनकेशसी भूति है। सुने एक केल का है कि बुद्ध वार्र्यकर कुलाकुके का धीरिक नहीं खेले : विसर प्रकार जेन्यासूची अति प्रस्कृतिक होनार पहुल बनको पास उराजा है, वे अवस्थितके विवेश रेतिकेले स्टूबबर्ग, प्रयुक्तक, कुलका और इस्कूलाई स्थान् अवलेखा प्रयोग सरके निर्देशियो कारी को क्रेड़िया ( प्रक्रमा ) हुन असी स्पष्ट का हैया कि मेर बढ़ बढ़ और रंगर विक्रम है कि चुने देश करोज़ है वाजि विलेगी। असः वर्षे मही मतम महिने से युद्ध चीन, कुर्वकार्य, क्षेत्रपार्य, अध्यक्षमा और पुरिवान, विहासी

#### कर्ण, भीषा और द्रोणकी सम्मति तथा सञ्जयद्वारा पाण्डवपक्षके वीरोका वर्णन

समापे सभी राजालेन एक जिल में । सहस्थार मानन समाप क्रेमेवर सम्बद्धान्य क्रीको क्रीको बक्र, "एक सन्द कुलवरी, THE PARTY



केल्यानराई पहले हैं—अस्तरभाष । अर सम्बन्ध कोल्योको । इह्नाबीके पास को और को केसर केह को । जारे समस है प्राचीन पानि अपने रेपाने समाने वित्त पूर्व रेपाको इस्ते पूर्व काओं लोककर करें गये। कुरमारियोंने क्यानीसे कुर कि 'थे केंग्रे कार है, को सामग्री स्थानक विके दिया है परे क को है ? तम अक्रमानि कालका कि 'वे प्रथम परावसी ब्राज्य स-प्रकार पूर्व है, जो जबने देवने पूर्वी पूर्व क्लांको प्रकारिक कर यो है। इसोने अपने कर्मप्रे समूर्य र्वेक्टोंके उपान्यको कहाना है। इन्होंने घरत्वर अधिक होते हुई भी असुरोबार विभाग बारवेके निर्म के प्राप्ति बारवर किसे हैं। ने जानक कुद्धिकार तक प्रकृतीको संस्ता कानेकाले हैं। अन्य देखा और नवर्ग प्रमाने पूरा बाते हैं।" 'सुसी है—अर पुज्रों के अर्थन और लोक्स एक्स है, में देशे क-माराज्य काले क्राचीन हेवल है है। इसे इस संसारने इक्केंद्र स्थीत रेज्या और असर भी भी भीद समते। इनमें श्रीपुरम्भ करावन है और अर्जुर का है। बहुत: नामान और श-मे से क्योंने एक से कहा है। बैक क्योंकर । विस कार हुन कहु, यह और एक कारत किये वीक्षणको और अनेको जस-प्रस एवं वर्षकर प्राचीन पर्न दिने अर्थुनको इक ही अपने की देखीने, जा कृतन तुन्हें मेरी बात कर क्षानेची । चंदि दुवा नेवी बारामा स्थान नहीं होने के प्रमान सेना हैंद्र कोरबोद्ध कर का गाँव है एक तुरहरी पृद्धि अर्थ और करेंगे प्रक्र हो नकी है। हन्हें को तीन्क्रीयने सरकड़ दीना जान

मार्थ है—एक से अध्यक्षी सुरक्त कर्मकी, कुले मुक्तान्त्र प्रमुक्तियों और वीसरे अपने कुरुद्धि कार्यक गाउँ के कारणनकी ।"

हरूर वर्ग चेत उठा--विकास ! उठन केरी कर का यो है, यह जाय-केने क्योक्ट्रोके पुराने जनारे जो समाते । में श्रामानकी विका शुक्त है और कानी अपने करिए परिवास मही पारता । पेरा देता बॉन्स-मा दुरावार है, विवादे बारण अस्य मेरी रिन्हा बार रहे हैं? जिंदे कुर्वेचनका कभी कोई सरिक नहीं किया और समेतव में ही बढ़ते रहको उहने उहने रायक प्रमुक्तिको पर अनेता ।

कर्मार्थ कर सुनार विकास क्षेत्रके राज काराव्यो सम्बोधन करके बाहा-'नार्ग के सब्द है का बाहर हक कि 'में राज्योंको कर कर्तृत्व,' से का सक्त



सोसको अंतर्के बरावर भी भागे है। तुम्को का मुलेको के अभित्र कर निर्णाणक है, जा का इस कुनुन्, कुनुकार 🦚 करतूर है । तुन्हरे कुर कदलीर कुळेकरने 🕪 इस्तेव्य कर माना करना रिरामर किया है। चन्नावेरे निराम और क्सान-असन मेरे ज़म्बर कर्न किमे हैं, केश इस कुल्को मीन-सा परमान किया है ? जब विराहतनाने अर्थाने इसके सामने ही इसके कारे पाईको कर काल का से इसने असका क्या कर रिल्म का ? जिस क्या अर्जुनी अनेती ही करता

क्षेत्र विके, का राज्य क्या का करी बाहर काम गांव वा है केरवाको सारक का राजवंदित सुकृते पुराको केर करके ते को थे, का राज्य का कार्य का ? तम के का नेताओ क्या कर का है। क्याँ के बोबरेन, अर्जन और कुत-क्योको विकास हो प्रस्तिको पहल विकास । पारत्येक् । यह बंधर की पार्यव्यक्ते हैं । इसकी साथ बार्ने इसके एक प्राप्त है। यह से वर्ग और सर्व सेनोडियो औरट यह Bergen #1"

चैक्को यह पुरसर पहल्य आवर्ष हेल्ले उन्हरें अनेक भी और पैस राज क्राइटी कहा-'राज्य | माराबेश भीना वैशा बाहरे हैं, वैश्व ही करों; को जीन कार्र और करनोत है कुन्य है, उनकी बार नहीं घरनी महिने। में के पूजारे काले कर्कानोंके ताम तरिम करने हैं। अक्ते सम्बद्धाः है । अर्थुनने को पात बाही है और सहायने जाताः से स्थित आपन्ते पुरुषा है, में अन क्रमाने स्थानक है। असून क्रमान केला 🛊 कोन्त । उसके स्थान तीनी लोकोंने कोई क्लारे की है।

राम वृत्यक्षाने चीच और होमांद्र कारनार कोई श्राप नहीं किया और में सहायों कामजेंगा करावार करने सने । क्वोरे प्रान-'राह्मा ! इनारी किरान केवाव राजार कार करेतुर का पुनिहाले एक बाह का ? पुनुषे हैंऔ ने क्या-क्या वैकरियों कर हो है क्या करने पाई और कुरोको पर्याप-प्रांत अस्य प्रकेश हिलो अन्ते प्रकृति और कारते स्त्री है ?"

सामने का-नागम । एका विश्वतिक मुक्तको और में क्यान और कहाता होते ही कुट्योंके लोग देवले हारे है और वे प्राथिको अञ्चल की है। उपारिको और पाइटिकोई रेकर पहला, केमांच और मता हैवाँके राजनेतरक रूपी. चुन्दिरका सम्बन करते है।

क्राव्यूने प्रारम-प्रकार । यह के बळाओ, पानक्रातेच किश्रमी मध्यम पायर हमारे भार चवाई सर यो है।

स्थापने सह-एकर् । प्रत्यक्षीके पहली जोन्को बोखां सन्तिम सुर है, उसके जान सुनिते। असको साथ पुर करनेके जिन्ने कीर बहुबहुत करते जिल्ला राज्य है । हैरीहरू प्रकृत के उनके बढ़ारे हैं। क्षेत्रांत से अन्ते करके दिने प्रस्ति है है। करणका कार्ये क्वोंने शासकोधी कार होनेसे बसाबा म । जाँने नक्षात्र कांत्रक क्षेत्रक कार्य स्थातेयां कह दिन्छ वा । उनकी कुमाओं का हुमा हावियोंक पूर्व है। जहाँ महत्त्वाचे मीनके क्रम पानकार्थन जानवर चौरानेमा अस्तामन किया और हुई पराय करते हुनते कहा। अस्तामन कर रहे हैं : अर्थको परायमके विकाने हो सहन्त है क्या है? श्रीकृत्यके साथ कांग्रेन कांग्रेन है जांग्री पृथ्वि विसे पुत्रों इसको पराय कर वित्य था। इसीन पुद् करके सावाद वेद्यांकंत प्रिकृत्यकि सावाद प्रकरको अस्त किया था। यह नहीं, अपूर्वर सर्वृत्ये ही सावाद सोक्याकंत्रों पीत सित्य था। इसी अपूर्वरको साथ हेका पाया आकार कार्य कर हो हैं। जिल्होंने पंत्राहेंने करे हुई पृक्षित देशाओं अपने आर्थन कर वित्या था, ने स्त्यु-स्टाकं पुत्र करनेवाद थीर न्यूटर थी उनके साथ है क्या कियोंने कार्य, अंत, भाव और करिता देशोंको पुत्रमें कीट वित्य था, ने स्वादेश भी आपर्य आर्थन करनेने उनके स्वायक है। वितासक पीत्रको सम्बंध कार्य का्नु सरस्य किये का्नु कर हिला है, यह वित्यक्ति भी पद्म भारी बजूद सरस्य किये का्नु कर है। है भी कार्य कारण करके आपर्य कर्य क्या है। आर्थ क्या है। है भी कार्य कारण करके आपर्य क्या है। आर्थ क्या है।

यो आवारों संवार करना पहेना। यो आसामासके समय क्ष्मानोंके आसाम को थे, उन एका विद्यानों की पुनुस्तानों आन्यानोंकी पुरुषेत्र होगी। यहांकी कारिस्टान को अवकी सेनाका केन्द्रा है; आरको असर कहाई करने समय जा भी उनके साथ एंगा। यो बीएसाने इंदिक्ताको समय और अवकाने प्राच्या पुणितिको समय है, इस अधिमानुके सहित अवकानोंग आकार आकारण कोंगे जिल्लासम्बद्ध पुणि हुत अवहितानों देन निका धानानोंके पाने सामित्रीका हुता है। व्याप्तानों पुण कार्या और अवस्थित—ये व्याप्तानों की है। प्राच्या है, से भी प्रान्तानोंके जोरसे ही यून करनेको निवाद है। व्याप्तानोंके हुत्य बद्धी भारी सेनाके स्वीत धानानोंके दिन्ये अन्याप यून करनेके दिन्ये तैयारे हैं। इसी अवस्थ पूर्व और अन्याप यून करनेके सिन्ये तैयारे हैं। इसी अवस्थ पूर्व और अन्याप पुण्यानोंके और भी रीकाने एका कान्यानोंक पहारे हैं, विकादी प्राप्तानोंक अर्थर पुणितित पुनुष्ठी वैवारे कार से हैं।

# प्तराष्ट्रका पाण्डवपक्षके वीरॉकी प्रशंसा करते हुए युद्धके लिये अनिका प्रकट करना

क्षेत्र वृत्तरपूर्ण कहा—स्तुत्व । वो तो हाको विक-विकास क्रातेष्ट निवस है, से कामी दाना गई कामड़ी है। बिना भी पूर्व क्षेत्र का समाके मिलाका समाक्षेत्र और कुली और अलेकी बोराओं । बैसे अन्य पीय रिक्से उस्ते को है, बैसे से है भी भीवने इतका साधर को-को ओरे हेता हुन। बावत बुक है। कुलोकुर चीन नक हो अध्यक्तांत, सहर कहा merimen, und del mebane, were, bit frempt देखनेकाल, करी गर्जन करनेकारक, महत्व वेगव्यन, सह 🛊 असही, विकारकार् और बड़ा ही करी है। यह अवस्थ पुर सरके मेरे अल्पकोर्च युवोको कर सर्वना । सरकी कर आनेपर नेता दिल बहुबले सन्तर्भ है। बहुन्यकार में का मेरे कुत काले काम केराने युद्ध करते में के वह उन्हें हानीवरी राया मत्त्रन कारता या । जिस्त राजन यह रजपूरियों क्रोलिय द्वीपा इस राज्य करनी पदाने एवं, इस्में, बहुवा और कोबे--समीको कुम्बर ब्रह्मेगा। जा नेरी सेनके बीकरें क्षेत्रर राजा निकास सेना, को इसर-समर पना देश और विश्व समय प्राप्ते यह तेवर राजपुत्तने दृश-सः करने लगेना का राज्य जारब-सी प्रका देखा। देखे, जनकोडके एका महत्त्वाचे बरासन्त्री का रहते दुव्ये अपने कहते करके शंतर कर रजी थे; किंदू गोपरेगरे श्रीकृष्णके क्रम आके क्रफायुरमें व्यक्त को भी पार काल। भीवसेनके करकते में है नहीं—ने भेग, बेन और क्यानर्य से अब्हें हता

कारते हैं। क्रेंबर के चुके वन मरेगोर्डर मिन्ने हैं, को काव्यानेकेंट साथ चुक्क कारोकर ही सुने हुए हैं। मितुरने असरावनें ही को केंध्र केंब्रा का, अला कही संस्थि आ नका। इस समय स्वीरकोचर को व्यान्त् निर्मात अनेकारते हैं, उसका उथान



कारण पुरुष हो जान पहला है। मैं बढ़ा मन्त्रकी है। हम ! देशकी स्वेत्रके हे की वह पहालय कर काम वा। सहाय ? मैं क्या बार्ड ? केले बार्ड ? और बार्ड बार्ड : के क्याली कीता हो कारको अभीन होका विश्वसको और ही या छे हैं। हाम ) हो पुलेंके असीवर क्षम यूने निवास होकर कानी क्रियोक्त करूकाका एक्स पहेला से मेरा भी गुड़े कैसे क्यां कोनी ? जिस प्रकार कच्छी प्रन्यतिक क्रमा अति बास-कारको देरीको पान कर देना है, उंसे ही वर्णनाई स्कापरासे पदावारी चीच मेरे सब पुरोको पार क्रकेटा (

देखे, आयरण पुनिव्यामी मेंने एक भी क्रुप्त बात नहीं सरी: और अर्थुन-नेता और सबके पक्षमें है, हार्याको बहु के विश्लेष्यांच्या एका की पर समझा है। राज-हिर विवास करनेका भी मुझे देशा कोई बंदस दिखानी नहीं देशा, को स्थापकों अर्थन्त्रा साम्या का सके। यह विक्री प्रकार चीतर Propert affr und wenn gewent meble fieb mit महें भी, श्री भी अर्थुकारे स्रोतनेन विकार तो मुझे सह नारी रानेत ही है। इस्टरियो मेरी कियम क्रेनेकी मोई सूरत नहीं है। क्यूंप को सारे देवनागोंको भी और पूजा है। यह नहीं हत हे-मा में। सामक भी हरा। क्येंकि से समाव और बाजनमें अधि स्थान है, हे बीक्स असे प्राप्ति है। जिस स्था का रमसुचित्रे रेक्ट्रॉक की की कामेओ कर्त करेगा, जा धार विधानके स्थे हर सर्वश्वरूप करके प्राचन को कन्द्रों काना असमान हो कानम । क्रा समा महरोने देश हुआ में यो निरम्त धीरवोचे सहर और पुत आदिकी बाते ही सुर्देशा । ब्यह्मा: इस बुक्रों सब औरसे परत्यंत्रपर विज्ञानमा है अञ्चनन होता।

राज्य । जैसे पायक्रकोग् क्रिक्यके रिप्ते असूक है, उसे the code was well all formula that extends after पाञ्चलेके रिप्ते अपने प्राप्त निकायर करनेको रीका है। इसने मेरे सामने प्रमुख्यको प्रकार, केम्बार, काल और परक्रेतीय राजाओंके जब दिने हैं। किंतु संस्तात्वा बीव्यंत से

इक्कान्यको इन्हों सहित हर सभी स्वेक्क्रेक्ट अपने बहारे कर कारों है ! वे की कामारोकी विकास विकास किये हुए हैं। सम्बद्धित को अर्थनो स्वरी स्वर्थन्ता सीम हो के क में गोर्क एका क्यांकी कई करता हुआ कुछकेमें उठा केमा । व्यक्तरबी शहरहा भी यह गारी प्रवास है, यह भी मेरे पहले बीटेंसे पुत्र करेबा हो। पैथा ! पुत्रे के हर सबस चुंचिहरों क्षेत्र और अर्थनी पराध्यक्ष उत्त नकुल-क्योग और पीन्सेक्स का रहा ग्रहा है। पृथिति क्रांनुस्तानक है और प्रन्यस्थित अधिके प्रथम रेजारी है। हेकर कॉन पढ़ है, जो कांगेको तरह कामें गिरना बाबेना ( प्रतरिको कोरको १ वेसै काम पूर्ण । ये तो उनके साम पुता प करन है अक्त सम्बद्धा है। हुन्दू करनेपा से निश्चन है इस को करका तक है करना। येर से को निक्रि विकास है और ऐसा करनेते हैं मेरे मनको सामित निका सन्तरी है। बार्व, पुर्व अल्बाने भी पहुंद न करना ही होना महत्त्व हो हो हुन official first street and a

अपन्ते वर्षाः—नक्षाराच ! अस्य केल वर्षा के हैं वेही है का है। यूने की पार्काण करूको समाह अधिकोका पार दिवाली है का है। देनियों, जब कुम्मापूरण देश से बैतुया राज्य है और केर तक भूमि आपको पान्यओकों ही चीती हाँ निर्मा है। यान्याओं अवने प्राह्मान्त्रे मीनवार यह पूर्ण अन्तर्को नेद का से हैं, पांचु अस इसे अन्तरी से लियन परि हाँ कानो है। का प्रकार कि विश्व अवने क्रोमी केह कर रिच्छ था, इस समय उन्हें भी अर्थन ही ब्रह्मकर रंगचे। वा । कल क्षेत्रनेवालोने अर्जून क्षेत्र है, वनुरोने गावदेव हेंह्र है, सरका प्राधिकार्थ संक्रिक क्षेत्र है और व्यवस्थित जानरके निकासको बाजा सकते क्षेत्र है। ये सक बस्तुई अर्थको है कर है। अरः अर्थन करकारके समान हम स्थीया नव का क्रोनाः। यसश्चेतः ! निश्च यानिये---निवाले संक्रमण भीन और अर्जून हैं, का सारी कुली अपने mittelt fin

# दुर्योपनका क्लब्प और सम्रायद्वारा अर्जुनके रथका वर्णन

नहीं । इसमें कियाओं कोई किया कारोबों भी अस्तरशब्दात नहीं है। इस करकी स्थीतरान् है और प्रमुलेको संबद्धने

क्य राज सुरका दुवीकरने कहा—बहाएन । अब्ब हरे | बराक बार कवाने हैं। विहर सबब इन्हानको बोही है दुविकर मानवारी कामानेके काम कही कार्य होताके साथ बीवाना अपने से कथा केन्द्रमधान, मूहनेत्रा, शृहसूत्र और प्राथ्यतीके



नावी अञ्चलक न्यारची एक दिन हुए से तो इन हमाने अञ्चल और एक करेरचीमारे जारे निन्ध की थी। में रचेन कुटुनकारित सामका नाम करेरचार हुए हैं इस का कावानोची अञ्चल राज्य सीरा केरेगी हैं सम्माने हुए से उस्त का कावानोची अञ्चल राज्य सीरा केरेगी हैं सम्माने हुए से उस्त का कार मेर करेरों करें का सीरा केरेगी हैं सम्माने का सामका मुद्दे की कीना, हैंना और कुटनकों भी इसकी सुक्त हैं । अन सम्मान कुद्दे की देशका का कि अस वाकानकोंग हैं । का सम्मान करेंगा अवेद करके मुनिएंगा है । वीना सम्मान करेंगा अवेद करके मुनिएंगा है । वीना सम्मान करेंगा करेंगा करेंगा हैं । हैंगा कि सिना करेंगा करेंगा है । वीना सम्मान करेंगा है । इसकी कहें ? मुनिएंगा का का करें — अन्योत करने हैं । हैंगा की सुनिएंगा है । वाना करेंगा का करेंगा है । वाना कर के हैंगा के साम होगी; का का कुटु करने में में विकारकारों हमारों हैं । वाना कर एका की हैंगा की अस्त की साम की हैंगा का सम्मान की हमारों हमार

पेरी का बात सुरक्षर होशायाओं, बील, सुवायाओं और अध्यायाने वाहा था— 'रावन् | तुम क्ये पता । जिस समय इयरवेग कुत्रमें सब्दे होंने, क्ष्यु क्यें जीत नहीं सबेले : इवकेंसे अवेक सबेल्य ही सारे राज्यअंको जीत सबका है : अववें के सही, इस अपने पैने कामोसे उनका सात वर्ष देखा कर देले :' इस 'राज्य ब्यूओअसी होजावार्ष अविद्या ऐसा ही विद्याल हुना वा । पहले से सारी पृथ्वी इसले उन्द्रुओंक हो सबीन भी, सिन्दु अस यह सम-वर्ध-क्षम कृतने कृतने हैं। इसके विका यहाँ यो एक्सचेन कृतने हुए हैं, ये भी इसके कुत-नु-कानो अपना है स्वयूक्त हैं। स्वयूक्त में देरे विका अपनारे भी अनेक कर स्वयूक्त हैं। स्वयूक्त में कृत् कुत्यूक्त को कृतने विकास माने स्वयूक्त के विकास क्षम अपना अपनारे क्षिय व्यूक्त माने स्वयूक्त को सुन्तेन विकास करने स्वयं अपना अपनारे हैंगी व्यूक्त में हैं विकास क्षम स्वयूक्त में क्षम स्वयूक्त कार्यों हैंगी व्यूक्त में हैं। इनकेन प्रमोद्य स्वयूक्त में क्षम स्वयूक्त विकास स्वयूक्त क्षम व्यूक्त स्वयूक्त क्षम्यूक्त है। इसकिये आपनारे विकास स्वयूक्त स्वयूक्त है।

व्याप्तान ! अन्य पुनिश्चित भी मेरे बन्तवर्ग देशे कर गर्व हैं कि नगर न मोनवार केमल चीन गाँव बाँगने तुले है। अस को शुर्मीद्रा भीवको कहा कर्षी समझते हैं, यह भी जारका इन ही 🛊 : अपन्यों अभी भेरे प्रचानका प्रान्त्रा क्या नहीं है। इस प्रभविषा राष्ट्रभूत्राचे की समय कोई की नहीं है, य कोई पहले का और व जाने ही होन्छ। किस समय स्वाप्तियों चीनके कार नेते नव निरंगी, का समय काले कारे अह क्ल-क्ट हे जारेने और क्या करका बस्तीयर या ध्योगा। इसमें के का कार पुत्रों जान चीनसेनका कर न करें। आम कहन न हो. को थे मैं अन्यत्य पार इस्तुना । इसके किया कीम, क्षेत्र, कृत, अनुस्थात, कुर्त, पुरिस्ता, अन्यवेतिकाराको राजा, साम्य और अवहार —इनमेरे प्रातेक बीर क्रमानीको करनेने समर्थ है। किर विता समय ने सब विरम्बर क्रमर अव्याधन धरेगे, तथ से एक क्रमने ही उन्हें क्याराज्येत वर केन हैंगे। यहाकेनोसे पानेले जावत हुए अवस्थित विकास संबद्ध प्रशासको से देवल भी नहीं का राजाने । प्रस्के निवा उन्हें कार्यकारक भी संसारमें कोई नहीं है: क्योंकि उनके विका सामानूने उन्हें प्रस्ता होकर का कर हिला का, 'अलबी इच्छा जिला तुम नहीं अरोगे र' कुलो चीर पर्यापक होता है। उनके कुत सहस्राध्य की हाहासाने क्यूक है। आकर्ष कृतको भी कोई यह नहीं क्याता कि तक प्रकारको केवलाओंके स्थाप **प्रकार** है। अर्जून से क्रमेंसे मेंद्रारीकी और अधिक भी नहीं उदा समाता। में से कार्यको भी भीमा, होमा और कुश्यानकी स्थान ही सम्बन्ध है। संस्थान क्रांन्सोका कर की देशा है पराक्रमी है। ने से अर्थुनको जारनेमें अपनेको ही पर्याप्त संपन्नते हैं। अतः अस्के करके दिन्ने की है अने निकृत कर दिना है। राजप् ! जान व्यर्ज है परव्यव्येते इतना क्यों इतने हैं 7 क्लाइये ती, क्रमांनके को क्रांकर किन इसके बुद्ध कानेकार उनमें कीर है ? नहें अपन्यों कोई देखता है से मुझे कातुने।

सहजोकी हेताके से पाँची पर्छ पत्था तथा मुहसूत और सामाधि — वे प्राप्त ही चीर प्रचान चक है। जिल्ह हमारी ओर चीया, प्रेण, कृत, अध्यक्षया, वर्ण, सोमाण, स्कूटिय, प्रान्नोतिकादेशके एक, प्राप, सर्वीतरण विन्दु और अनुविष्यु, कराहत, कुरालान, कुर्देक, कुराह, शुक्रानु, विकारित, पुर्वास्ता, विविकारित, सार्थ, पुरिवास और विकारी—में बड़े-बड़े चेर हैं तथा करह असेहियों केन एकारित हुई है। अञ्चलके पात से इनसे कम केमल सक अओकिये रोज है। फिर इससे कर केने होती ? असः इर इस बातोंसे कार हेरी हेनकी समान्य और कान्यनेकी केराकी कुलिए। सम्बद्धार करावे नहीं।

हैशा ब्यापन क्या पुत्रोकारी कारणत का हुए बार्वको करोबी (कार्य कार्य कि कुर- कार) हर प्राच्यानेको सही प्रशंका कर रहे हो । जान पह से बसाउटे कि अर्थुनके रमाने केले कोई अर्थर केल्ड जनाई है।

क्षाणे का-राज्य ! का राज्ये कालो केकाओं शासके अनेव समाप्ता क्रेसे-वर्ड दिन और स्कूला मूर्तियो बनाओं है । प्राप्तकार इनुस्वस्थीने अलग अवनी सूर्वि महर्तिक की है और यह समय तक ओर एक सेमानक फैसी र्क्ष है। निवासको ऐसी क्या है कि कुलीके काल के इसकी गरिनों कोई काक नहीं आगी । अर्जुनके रकने निवारक गुर्थकोंद्र हिने हुए बायुक्ते सरका केन्याले सर्वाद रेजी अधन । होचार करवी की संस्थाने कामी वाली नहीं आती।



कारिक केंद्रे कुटे हुए हैं। उनकी गति पुन्ती, आजाक और क्रमांक विकास को स्थानने नहीं क्याने तथा अन्तेने की कोई का जाता है से अर्थः प्रकारको उत्तरनी बाग्द भग मोदा करता

#### सञ्जयसे पाण्डवपक्षके वीरोंका विचरण सुनकर वृतराष्ट्रका युद्ध न करनेकी सम्मति देना, वुर्वोद्यनका उससे असहमत होना तथा सञ्जयका राजा भृतराष्ट्रको श्रीकृष्णका संदेश सुनाना

केनाते पुत्र करेंगे, देशे किल-किम बीचेंबरे कुपने मुख्यितकी अनुसारकों दिन्ने वर्षा अन्ते हुए देश्य 🖴 रे

स्त्राको बहा-की हरकार और वृष्णिकारिय पावनीने प्रयान बीकुन्तको प्रथा केमितान और कार्यक्रमे स्ट्रा प्रेक्ट रेक्ट का। वे देखें कुरियद ब्यूटर्स अलग-अला एक-एक अवृतिको हेन लेकर और स्वातन्त्रेत हुन अलो दार पुत्र सरवीयम् और युक्कुमानिके स्थीत एक अर्थानिकी रीना लेकर आचे हैं। प्याराज विश्वाद भी बहु और तमा कुरमा अपने कु। तथा पूर्ववृत्त और चीएरहा अवसी बीरोके संख एक अर्थाविको सेन्द्र सेन्द्रर चुनिहित्से निले हैं। इनके

मुख्यपूर्व पूरा—स्थान ! यो सम्बार्केंद्र मैन्से मेरे पूर्वा | प्रित्य केव्यन केव्ये प्रक्रिय स्थानर राजा भी एक अवस्थिती हेक्के प्राप्त कवालोंके पार आने है। मैंने वहाँ आने हर् केवार करे है एक देशे हैं, यो प्रश्नावेश रिये ह्योंपासी रोक्का स्थाप करेंगे।

> एकर् ! संस्थाने दिन्ने भीना विकासीके देशोगें रहे अने है। असे पूर्णप्रकारों प्रस्तेतीय गेरोंके स्वयं शत क्रिक्ट चुँने। माराम प्रत्य बड़े थई चुनिहिस्के निम्मे हैं। अपने ही पहलें और पुलेंके स्थित क्योंका तथा पूर्व और स्थित दिशानोंके राज पीकांको धारा है। कर्ज, अवस्थान, विकार्त और विस्तृत्तन नवाहमते स्वानेका साम अर्जुकारे सीच गया है। इनके मिला और भी किन

स्वानंति साम कुरतिया पृत् करण सम्बन्ध नहीं है, उन्हें की सर्मृतने अपने ही विसोगे स्वा है। वेस्तर देखों को कार् सनुर्वर पीय प्रहोत्त स्वयुत्र है, वे इसरे प्रहांक केस्तवकी मेंद्र साम है वृद्ध करेंगे। कुरीकर और दुःसामानो साम पुत्र और साम कुरता सुरवानंत्र साधिकपुत्रे कार्यो सेन्यता सामक करेंगे। सोनवालो साम वेसियानका रावपुत्र होना और कोववित्र पुत्र बहावीर स्वयंत्रों कर्य ही आपने साले कुर्जुन्त्रों अपने हिस्से रहा है तथा असीनवान समुद्राने कहा, कैस्ता और सावकोंके साथ पुत्र करनेका निका किया है। इनके रिका इस प्रह्मुकों और भी की-के साम अस्तवी ओरले पुत्र करेंगे, उनके कार से-सेक्ट पुद्र करनेके रिको क्यानोंने कियानोंके निवृत्य कर दिना है।

प्रमण् । में निवित्या कीम पूर्ण का ह उसे कारण शृहकुर्ण पुरस्ते पात कि 'तुन सीम है पहिले कार्यो और प्रतिक्त को हैं। य कारते हुए वहाँ को कृतिकारी पात्रके की है उनकी, स्वकृति, स्वकृत्याचा, साधान, हु-प्रारस्त, निवार्ण, राम्य कृतिका और पीत्रको साधार पात्रके कि पूर्ण पहात्रका पुरिक्तिकों, साध प्रतिक्रम अर्थुन पुन्ते बार हाले । हुन वार्यों के कार्यक्रमों साधा-प्रार्थन करते । साधानकों सुर्वोद्ध कीर है, हुन अर्था कार्य-प्रार्थन करते । साधानकों स्ववित्य कीर है, हुन अर्था कार्य-प्रार्थन करते । साधानकों स्ववित्य कीर है। अर्थाकारों के साईजों प्रत्य करते । साधानकों स्वव्य की है। अर्थाकारों स्वर्ण की साईजों प्रत्य कार्य दान केरदारकों मानते हैं, बोर्ड की का्याकों भी

क हुनका उन्न क्याहरे का—हुनेका । हुन कुनका विकार कोई है । व्याहरूम पुत्रकों से किसी भी अन्यक्ति अवहर नहीं कराते । इस्तिकों केटा ! हुन कामानिकों उनका मजेतिका थाए है हो, हुन्ही और हुन्हों भी मोदी किसी के दिनों हो अवका राज्य भी बहुत है। ऐसी न से मैं हुद करना सहस्ता है, में प्राहीण अनके पहले हैं और में भी मादी करना सहस्तापा, स्वाप, सेम्बार, उत्तर का कुन्यकार्य है पुद संस्ता काले हैं। इसके दिना स्वाप्ता, पुर्शाय, जन और मुस्तिका भी पुत्रके महले नहीं हैं। मैं सम्बान्त है हुन भी सारती हुन्हार्त का पुत्र नहीं कर के है; सीन्य कामाव हुनासन, जाने और समुद्धि है हुनसे का काम करा से है।

्यार हुनेका का कियों | के बार, बेस, सामाय, सहस, चेस, कालोकारेड, कुर, सामाय कृतिया, भूतिका अवना अवने अन्यान चेतुरसेने परेसे वाकांको मुद्रोत निने अवनित्त नहीं वित्य है। इस पुद्रों काकांका संदार से हैं, याने और वाई दुन्तास—हम दीन ही यह लिए। या से वाकांकोंको अस्तार है है इस पुर्वाका वाका करिया का वाकांकोंच ही भूके अस्तार इसे चोनेने ह से चीवार, एउस और धार—में इस से क्षेत्र अस्तार है, जिल्ल कर्माक मेकारे कितने पूर्वर किन् सम्बत्ती है, अस्ते भी है वाकांकों नहीं है सम्बत्ता।

वृत्यान्तं काः—कवृत्यं ! युद्धे तुम सभी कौरावंके तिनी वहा कोळ है । वृत्यंक्यात्रे से मैंने साम दिया, किंतू यो स्त्रेम इस वृत्यंका अनुसाम करेंगे, से भी समास क्यानेकाने कारी । का कव्यानेकी जानी कौरावरेग मानुसार है कारा है, का हुई नेंद्रे काराका स्वरूप होगा । सिंद स्थानके कहा, 'कारा ! जाना कीइना और अर्थनो हुन्हों को-को



करें कही है, वे सक पुत्रे सुख्यते; वहें सुक्तेकी नेरी कही इक्ट है।'

सक्रमने का—एकप् ! औक्रम्प और अर्जुनको पी जिस विकरिने देशा था, व्या सुनिने वक्त का पीरोंने थी कुछ पहा व्या भी पी सामको सुनाता (। म्यानान ) अवस्था सीहत सुनोनेड रिल्टे भी सामने पेरोको औनुनिन्दोको सोत हुई। स्ताबर वर्षः सम्बन्धानेरे इत्य कोई अने अनःपुर्ते पना। का कारने अधिकन् और न्यून-स्थोत भी भी का प्रको क्षेत्र व्यक्तिक की देशा कि सेव्यक्त सकते होनी परत शर्जुनकी चोहने रसे पूर पेटे हैं तथा अर्जुनके करना क्रेकी और प्रसापानकी पोक्ने हैं। सर्वारों बैक्नेके मिले बुद्धे एक सीनेका पाइपीट (पैर रक्तनेकी बीची) विच्या। मैं को सम्बर्त इस्त्री करके प्रश्नीपर बैठ गया । इन केनी बहार्क्कको एक असम्बर केंद्रे बेक्कर भूके बढ़ा पन जल्म हुआ और वै क्रेक्ट स्था कि प्रकृति पुर्वेक्ट कर्मकी सक्ताको सावर हर विन्यु और हराते समान जैरोके सरकारों कुछ नहीं प्रवासक । का प्रचल कुदे से नहीं निवास हुआ कि ने दोनों विकास आद्याने यह है, का वर्णका श्रीकीरके करना हरूपन के पूर होना। बहाँ अनु-वालीको नेत प्रतान विकास राहा। किर आयाची के क्लेक्ट की कर बोक्का जो ालका सेहा कुमा। इसर अर्थुने बीकुमके बरकेरे प्रमाण पार्ट्य जाना कार देन्द्रे रिप्टे प्रार्ट्य स्टे । एक प्रत्याम् वेश गर्वे और अस्त्याचे बहुर सित् परिच्याचे करोर क्रमधेने महानी साले हाने—"स्वाप ! स्टीक्टर कारत. कुरमृद्ध गोल और आवार्त केलते हुए इसके ओरते व्य

स्तिक स्थान । कुन सहीको इनारा कराम सहना और छोटोसे क्यान प्राचन करें जा कहता कि 'तुमारे विराम थड़ा संबद मा पन्न 🖢 प्रातीको हुन अनेन प्रकारके पहिला अनुहार करे, अक्रमेको कर के और बी-पुरुके स्वय कुछ दिन मानद कीन से ।' देखें, अकड़ और कीचे वाते राजव हैक्ट्री से 'हे चेकिन्' हेल बहुबर पुत्र हान्यानासीकी पुष्पान का, अल्बार आन्य मेरे द्वार बहुत बढ़ गया है; बई एक अवको को के इसको हर नहीं होता । यतन, जिसके साथ मैं है जा अर्थुनसे पुद्ध कारोबारे वार्धना है।। भीट प्रमुख का सकता है, विकासे विराय करन न नाम यह से ? सुने से केवत, असूर, बरुवा, वस्तु, नवार्व और क्रमोपे ऐसा कोई दी विकास जो का से स्वयूजि अर्थुन्या सामन घर सके। विकास में में अपने कहेते हैं और कोरनेंचे समाव क्या के की और के प्रमुख्या बंधा के गये के-नाई प्रस्ता करोड़ अध्यक्ष है। यह, कीर्न, रेस, कुर्डी, क्षानको सरको, अधिकार और वैशं—वे सारे पुरू अर्थुले किया और विश्वी एक व्यक्ति पूर्व किस्से (" पूर प्रकार अर्थका अवस्थित करते हुए अर्थकाने मेक्के समान सरकार के प्राप्त करें थे।

#### कर्णका वक्तव्य, भीव्यञ्चरा उसकी अवज्ञा, कर्णकी प्रतिज्ञा, विदुरका वक्तव्य तथा वृतराष्ट्रका दुर्वोचनको समझाना

वैशायास्त्राती काले हैं—स्वयंत्रात ! तम हुगोंकरका हुने जाहते हुए साली कहा, 'नुस्तर परसुकारवीचे की को सहात्रा जाह किया था, यह जावीक्षा मेरे काल है। तमः सार्युक्ता बीतानेथे हो में सावति काह समार्थ है, तमे पराक करनेका कार की साम यह। यही नहीं, में साहात्व, काला, जाता और कि-मोतोके सहित काला साम प्राव्यांत्रीयों भी एक हमार्थ मारावार सामार्थकों हारा जाह होनेकाने स्वेच्योकों जाह किनेका। सितासह मीला, होनावार्थ क्या अन्य साम समार्थकों मारावार ही पास पहें सामार्थीयों से जावनी माराव सेनाके महित जावार में ही पार हैंसा। यह साम के विक्रो सहाई

बात करते इस प्रकार कहा हा। या तो कोनकी कहते इस्ते—'कर्मा । तुक्ति सुद्धि तो कारणक व्या हो भयी है। हुन इस्त कह-कहता करों करा रहे हो । यह स्तर्थ, इस कौरकोजी इस्तु तो कहते हुम-जैसे प्रकार औरके करे कालेकर ही होन्छे। विकास क्षेत्र क्षेत्र

यो निश्चित् की है है—बॉन्स उससे भी सहकर है। पीट्ट इन्होंने की दिनों को हुए कही सातें सही है, अनदा परिवास भी वे बात सोतकार सुत हो। अब मैं अपने सक रही देता है। आवारे हुने निश्चित राजदूनि का राजदानों नहीं देतीये। कर, का अववाद अन्य के सामना तारी पृज्योंके एक राजदाने होन नेपा प्रचास देतीये। ऐसा सहकर सहन् बनुर्वर कर्ण सामने उत्पाद अपने कर साम गाम।



वाद चीनकी एक स्थानकों का एक विशे हुए एक पूर्विवादों कार्ने एको—''एकार्' कार्य से साम्याधित है। विश् कार्ने को प्रकारित प्रकर्म देखे अधिक की को कि 'वे विश्वासी साम्यों बीचेकर संदार कार्निय', को का केर्न पूर्व करेगा ? प्रकार को और कर को करी जा है जन के, का प्राप्त कार्याद परवृत्तावयों के कार्य कार्यर अवनेको साम्या कार्यों हुए कार्य प्रकारिका परिवृत्ति की ।'

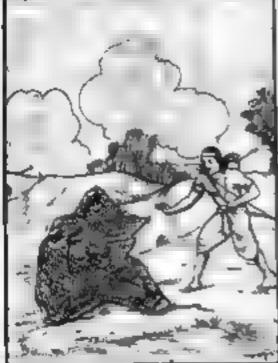
ज्या गोमने इस जान कहा और वर्ण क्या होहार स्थाने क्या तथा हो नामार्थ इसोका कहा तथा—नीवायह । क्या-स्थानकारी पूर्वी और क्यानिया, क्षेत्रकारीय क्या कथा हाक-स्थानकारी पूर्वी और क्यानिया क्या है है और है की होगों अनुकारतीओं है। किर अब्बा क्या क्या क्या क्या है कि पान्करोत्ती है किया होती ? मैं जान, होनावार्थ, क्याव्यर्थ, बहुतिया सम्या अन्य राजाओंके सम्याद का पूर्व की बन्द का है। पांची कथानोंकों को है, कर्ण और कही हुआकार—इस तीन ही अपने मेंने क्यानेही पार इस्तेने।

इसका विद्रालीने क्या---वृद्ध कुछ इस खेळारे कान्यों है। बारकानका सामर कार्यों है। में कुछ कर, कर, कर, कर और साम्याका अनुसरमा करता कुछ है, उसीको कर, क्षात और क्षेत्र क्याक्तुम्थले अनु क्षेत्र है। कर केन्स्यी कृदि कृता है, दम परित और समेशेनु है। इस प्रकार निराम्य कर निवृद्ध क्षेत्रन केन कह क्या है, यह पुरस्त कान्यद अनु कर केशा है। राजन् । जिस पुरानों सन्ता, वृति, अधिनां, केन्सा, कार, स्वापनां, स्वीतवनित्रां, जैसे, मृतुनारं, राजाः,



जन्मारका, जरिन्दा, स्वक्रेच, इंट्रॉम और सञ्च-इस्ते कृत हैं का क्रम (सम्बुक्त) कहा नात है। वनस्तित कृत क्रम, स्टेच, हो, क्रोच, निक, ज्ञा-क्ष्मम क्रोडे क्रमण, क्रम, ईक्की और क्रोक-इन्हें में सम्बे क्रम क्ष्मी प्रकार कृत —व्या क्रमणित कुम्बता स्वक्रम है। क्षे कृत क्रोडुक्ता क्षम —व्या क्रमणित कुम्बता स्वक्रम है। क्षे कुम्ब क्रोडुक्ता क्षेत्र, चोन्तेक विकास विक्रम और स्वक्री स्टब्स क्योर होता है, ज्या क्रमणित क्षम क्या है। स्टब्स क्षम्यक्रमारका, क्षामक्य, ज्ञानक्यक, क्षामक्षम और बुद्धिराज् कुम क्रम क्षेत्रमें कुम्बन क्यार स्टब्स्ट क्ष्मिक ज्ञान क्षाम है।

ताता ! इसमें मूर्वपृष्णिकों शृहकों पूजा था कि निकार प्रथम एक निक्रियारों कि विक्रियों के मीताने के निक्षे पृष्णियार कार्य कैतवाता । इस कारणे एका-सामा प्रानेकारों के प्रश्नी पीता गये । उस के होनों उस कारणाते रोकार उह करों । निक्रियार कों उसकार के देखकर उद्यास हो गया और निकार-निकार के जाते, उसकार हो उनके मीते मैंस द्वा वा । इसमेरों ही एक मुन्तियों अस्तर होई कहें । उस कार्यकों उस मुन्तियों होता हुए असे प्रकार ! यूने का मात नाई निकार जान कहती है कि दूर जाते हुए क्यिकोंचे कीचे पृष्णीवर कारण दहा है !! ज्याबारे कहा, 'से होनों कही अस्तराये निकार गये हैं, इसहिस्टे-पीर कारमधी निर्म का को है। जान कार्य कुर्मी सम्बद्ध होने समेक, बहुत में और कारमें का जानने हैं कोई ही देखें कारमकें बातीकृत हुए उन पश्चिमीनें समझ होने सम्बद्ध और में सब्दो-सब्दो पुर्वाचन निर्म को। बात, विव्यंत्रपने मुख्यान



प्रमुद्धे प्राप्त सामार का मेन्स्रमे काइ किया । इसी काइर श्रम् से कुटुर्विकांने प्राथमिक क्रिके सरस्यर प्राप्त होते सम्बद्ध है से से सामार्थित कंतुमने दोना काई है। सामार्थ्य केर कार में साम केरवार केरवार बारवा, कान्याने केरवी कार-बोत प्राप्त, स्वा-कृतिक सुमा-कृत्यको कृत्य और अन्यार्थ रिस्को-कृत्यो स्वार्थ है, विशोध सामार्थ की । में सुम्बारण कृति सामार सामेग्र नुस्तार्थक अध्यक्ष केर्न है, के सिम्बो सुर्वात्रक करते। सामार विकासिंह की सामार्थ क्रिकेट का इस्को।

्यत कर कई चील और प्रक्रामोंने तक इस नवांकर पर्यक्तर नके थे। कई इसमें एक कहती नय हुआ करा

देखा । अनेको विकास सर्व संस्की रहा कर यहे है । यह ऐसी
कुलकुछ यह कि कहि कोई पुन्न उसे यह है से अवन हो जात,
अवह होयन करे से सुक्रमा हो जान और बुक्र पुन्न हो जात है
वह प्रमा क्रिके से सुक्रमा हो जान और बुक्र पुन्न हो जात है
वह प्रमा क्रिके से मान के प्रमा और उस सर्वेकारों
पुन्न में साम क्रिके में कि अवह सामका पुन्न कुनेकारों
असे साम क्रिके कहि है कि अपने नातका सामका दिवासी
वही हैका। यह सर्विके, किए संबाद और स्वा मानुश्लेकों
असे साम हमाति है किए हिन्द सिनार और स्वेचारों भरा हुआ
अस्तुर—ने संस्कृत किसोकों भी जीता नहीं को हैने ।
इसकियों, यह से इन बोनोका पुन्न होनेका विस्तवती जीता
होगी—वह निविकारकार नहीं करा ना समस्ता।

मिद्राबीका बीचन्य शर्मा होनेवा एक ब्रावपूर्ण करें।--केटा कृष्टिका ! में कुकों की कुक कहता है, जावर भाग हो। तुल अवसान क्योड़िके सन्दर इस स्वयं कुमार्गको ही सुमार्ग क्रमा के है । हरोते हुए योजे प्राथ्वनोर्फ रेकको स्थानेका कियान का को हो। वरंतु बाद रखो, उन्ने कीरनेका कियार करण करने प्रात्मेको संग्रहने क्षरण हो है । बोकुम्ब समने हे, के, ब्रो, कुटुकों और प्रकारों एक और एका अर्जुकों कुरणे और प्रान्तुको हैं। अलोड निर्माचे पुन प्रामीको ज्ञान सकते है। वर्त अर्थ क्या है, नहीं संस्था रहते हैं; और निर्म केवलें करने क्रीकुरण पहले हैं, अलगा पेट को पुण्डीके दिन्हें औ अल्या के बाज है। देखें कुए सरक्षणें और सुधारे विकास व्यक्तिको प्राथिक कार्यपुर्वात आवरण माने और इस क्योद्ध निवास चीनारी सरावर कार है। मैं की स्टेश्वेमेर है देखते कर सेवल है, तुने नेरे कर में सुनी महिने जीत होगा, पुरु, निवानी एवं प्याप्तक **पार्ट्सको** साधानार भी ब्यून केन करीने। जनतेषु र वे तथ वर्गन परीत होरे बीरक वृत्तं पाणकोचा प्राप्तर सेव् एक्केबारे हैं। क्राः पुत्र प्राथकोको अपने कने पाई सम्बद्धान्तर उन्हें आया राज्य है हो ।

# श्रीव्यासची और गान्यारीके सामने स्सायका राजा मृतराष्ट्रको श्रीकृष्णका माहात्य सुनाना

ार्गतन्त्रभावां कार्ग है—कार् । पूर्वेक्सी हेल का एकः कृत्युने स्क्राको किर कार, 'स्क्राव है अब को का धूनाते का गते है, का भी का के र विकृत्यके कार अपूर्ण पूर्वा कथ कहा का ? उसे सुरुक्त हिनों पूर्व कहा को कुल है का है।' श्चाको का—बीवृत्यको का सुनका कुनीका सर्वृत्ये उनके सामने है कहा—'राह्या ? पृथ विकास भीका, बहाराम कृत्यह, होनाकार्थ, कृत्यकार्थ, कर्ण, एका काहीक, अक्षाकक, सोमाल, कनुनि, कुनासन, विकार्थ और नहीं इसके हुए सम्बद्ध राजाओंसे नेस समायोग्य अधिकारन सहस्र और मेरी ओरसे उनकी कुक्त पुरूष एक प्रकार कुनेयर, इसके पानी और पार्ट अपने हुए इस राजाओं के बीकुम्बरक्तका समाधान्युक संदेश सुनाबर मेरी ओरसे मी इसन कहना कि एतुकान अक्षाय पुनिवीत में अपने मीरो तीरों तुन्तर थोड़े, इसी और देशक केनके पानि तुन्दे परमुखे केन हैंगा।' पहारान 1 इसके बाद में अन्तेनो किए होसर और अक्षायको प्रकार कार्य कार्य में अन्तेनो किए स्वायको स्वानेके दिन्दे सुने ही वहाँ बाद अस्य ।

वैद्राण्यकानी कार्य हैं—पानक् ! अंकृत्या और अर्थुकारी इस बालोका पूर्वोकानी कुछ भी अर्थ्य नहीं किया। कर सीम कुर ही थो। किर बार्ट के रेस-देवाकानी कोस कीर थे, के मान अरुवार अपने-अर्थ्य केंद्रिये कार्ट कार्ट के इस क्यानकी प्रत्या कृतपहुने प्रस्तापने पूजा, 'सामा । हुनों से केनों प्रश्नेकी बार्याकारका हाल है, भी भी हुए कर्म और अर्थका कुछ अर्थ्यी तरह जानते हे और विज्ञी भी क्याका परिचाम हुन्छों हिया नहीं है। इसलियो हुन सीमा-बीक क्यानों कि इस होनों प्रश्नोंने कीन संबंध है और कीन विज्ञान।'

सङ्घयनं वदा---राजन् । एकानार्थं तो में अन्तरं कोई की बात नहीं कहन आहता, क्योंकि हमले अन्यके हरवने कह होगी : इसरिन्ये अस्य महत्यू तस्तरी मनकान् काला और सहारानी गरकारीको भी कुल लेकिये उन होनोके सन्तर्भ में



स्थानको सीकृत्या और अर्थुनका पृश-पृष्ट निकार सुन्। कृतः।

व्यापके का अध्या कानेपर पाणांचे और संस्थानानीओं कृत्या गांव और विद्वार्थी हुंस है जहें सम्बंधे से अपने। सम प्यापूर्ण जातानी राजा कृतरह और स्थापका विचार सम्बंध असी पालर हुई राजते हुए बाने स्था, 'स्थाप । कृतरह हुम्मो प्रच कर से हैं: असः इनकी अस्ताने अनुसार हुए अध्याप और अर्थुनके विश्वपर्ध के कुछ जानो है, यह सम को-सा-सरे सुन से।'

कारने का-अर्थन और श्रीकृष्ण होनों ही गई क्रमार्थिक क्यूपेर है। क्रीकृत्यके ब्यावाद श्रीतरहार भाग पाँच कुछ कोड़ा है और वे उसका इक्कानुसार प्रकेश कर सकते हैं। ररकारू, प्रचार, बंध और क्रियुराय-ने को कब्हुर मीर थे। जिल्लू बनकर कुमले इन्हें केरबोमें पराक्ष कर दिया था। भी इस ओर सारे संस्थानको और इसरी ओर रोक्तमधो रक्त मान से ओक्तम ही मतने अधिक निकारेंगे। से बहुक्यवालये कारे संसारको पान कर प्रकारे है। क्षेत्रका के नहीं पूर्व है कहाँ तरन, वर्ग, तरना और सरस्त्राच्या निवास होता है और यहाँ सीकृत्य रहते हैं, यहाँ क्रियम सामी है। ये सर्वान्सर्वाची पुरुवेत्तम अनाईन परिवासे ही एको, अल्लाक और जर्गलेकको जेतित कर ये हैं। इस राज्य संख्यो अपनी भारतने भोतित सरके से पान्यमीयरे ही निक्ति क्याबर आयो अवस्थित का क्योंको कर करन man fir it stiere if scott feiglich siglig कारान्यक, जगाका और जुगकातको प्रमाने रहते हैं। मैं सब 🚃 🚛 प्रकार वे 🛊 कता, मृत् और समूर्ण स्थान-जेगम जगरहें सामी है तथा अवसे मानाके हुए। संबद्धिको संबद्धी अले पाते हैं। यो लोग केवल उन्होंके प्रतस से ऐसे हैं, से ही बोहने नहीं पहते ।

्रास्ट्रने पुत्र-सम्बद्धः शीवृष्यः समझा लोकोके अधीकाः है—इस कारको हुन केसे जानो हो और मैं क्यों नहीं कान रुखा ? इसका कारक पुत्रों कारको ।

स्वापने वाह--राजन् ! आवको हान नहीं है और मेरी इन्त्रहिं क्राची वाह नहीं स्वाची ! को पुरार स्वाहित है, वह सीकृत्वकों साराधिक सामावते नहीं जान समाता । ये इक्त्यहिंको अधिकोधी अपीत और विवाह करनेवाले अन्तिह क्युस्ट्रहर समाज्ञाको जाना है।

कृतवहने पूर्ण—स्वास ! परावत् कृष्णमे सर्वत हुन्हारी यो परित्र राजी है. सरका कामन क्या है ?

क्षानने कहा— बहुराज ! आवता कान्यान हे, सुनिने १: मैं कान्ये भी कान्यात आसम् नहीं तेतर, तिसी मार्थ कर्महरू गय है: स्त: प्राचके मानवेत्रस मुद्रे क्रीकृतके सरमाध ज्ञान हो गवा है।

सह सुन्नार क्या एक्ट्राइने दुर्जकारो सहा—केया कुर्जेक्ट । सराय क्षेत्रों क्षित्रकरों और विकास्त्रक है। तरः पूर की इसेकेल, कार्लन भगवान् श्रीकृतकारी कृत्य स्ते ।

हर्वेशको स्था<u>—केशकी</u>कस्य प्रत्यात स्थल गाँउ ही तीनों स्वेक्प्रेक्ट संक्रुट कर करो; मिशु तक वे अवनेक्प्रे अर्थनका सका केवित कर करे हैं से मैं अवसे पारवर्ष नहीं भा समझा ।

तम बाराहरे गमारोवे का—नामारी । क्षुपा क पुर्वित और अधिकानी पुत्र ईक्जिक् प्राप्तकोकी कर म मानकर अध्येगतिको और वा छ। है।

गुन्धरीने अग्र---वृतीका । वृत्तक ग्रे बुल्कृदि और पूर्व है। और । ह देवचीर औरवी पीतवार अपने वर्ड-कारेकी शासामा अल्यान कर पंत्र है ! मालून होता है अस वू अवने देशके, बोकर, जिला और माला—सम्बोधे प्राप्त को सुबा है। देखा । यह श्रीमानेट सेरे प्राप्त सेनेक्ये देखार होता, उस समय सर्वे अधने विवासीची बाते पात अस्तेगी।

तिर व्यासनीने क्या-वनराष्ट्र ! तुम वेरी व्याप सून्ये + ह्या बीकुमाने को है। अहे ! तुन्तर बहुन नेस हा है, से तुन्ते काम्याराके नार्गने ही है सामान । इसे पुराक-कुछ श्रीवर्गकेराके व्यवस्था पर प्राप्त है। अतः की तुन क्रांकी बात सुनोने हो यह तुने उत्प-माराके महत्त् नवने पुन कर देना । जो ओप कावणाओंसे अन्ये हो यो है, वे अन्येके पीकें शर्म हर अन्येन्द्र समान अपने कार्यक अनुसार कार-कार मानके बुक्तने जाते हैं। मुक्तिनार वार्ग से सामी निरुक्त है, उसे बुद्धियान पूरत है पन्नवृत्ते हैं। उसे पन्नवृत्ता ने महायुक्त मृत्युरे पार हो जाते हैं और इनकी बड़ी भी अलानिक नहीं यहाँ।

त्म क्राएटने सहाको कुळ---वैका स्वाप्त ! कुम मुझे कोई हेर्ड निर्मन मार्ग काराजे, जिससे परस्कर में सीकृत्यको प सके और महो परमध्य अंत हो साथ।

श्रापनो अञ्च-कोई अधिनेतिक एका क्रीक्ष्मेक परावासको प्राप्त नहीं कर सकता । प्रत्येक विका उन्ने पालेका मोर्ड और पार्न नहीं है। हरियमें महि उपल है, इसे मौतनेका सायन सामक्रमेंसे चोमोंको जान केव है। प्रकार और क्रिशाने क स्वया—निःसीक्ष ने है झानके सुरूप कारण है। प्रतिकोची विद्यारकालो अपने सामूने रहना-प्रतिको विक्रम्पूर्वेग जान कहते हैं। करावनें बढ़ी जान है और बढ़ी

अवस्य नहीं करता, कामचेनके प्रश्न केंद्र क्या कुद्र हो | कार्र है, किससे कि मुद्रिकन्त्रकेन कर परमञ्जूषी और काले हैं।

> कारतने का प्रकार ! हम एक बार किन होक्स्प्रमाने सम्बद्धा करि करे, विवले कि उसी नाम और क्रमेंका रहत जन्मर में रूपे प्राप्त कर स्थी।

क्ष्मको क्ष्म-की श्रीकृष्णके पुष्प गामेकी स्थापि (बारवर्ष) सुनी है । अर्थमें निवास युक्ते स्वरण है, यह स्वरण है। क्षेत्रक से नातकों किसी प्रथानके विका नहीं हैं। क्रमा अभियोगो अपनी नामाने जापन निन्ने यूने तथा केवार को के जनस्थान के मेरे कारण में 'सामरोग' हैं; ब्यायक क्का महत्त्व होनेके कारण 'किया' है: कीन, अकन और मोनारे प्राप्त केनेके बहरून 'जानक' है तथा गया केनका करे कार्यकारे और वर्धनकार्य क्षेत्रेर में 'मन्तुवर' हैं। 'कर् कालका अर्थ करत है और 'ज' जाननका कालक है; इन होतें। कारोते कुछ हो के बारान क्यूकार्य अवसीर्य हुए सीविका 'कुम्ब' को को है। इक्कार पुनर्शीध (शेत कपल) ही अक्टबर्स निवर अवस्था और अधिनाही परमस्थान है, इस्सीकी 'क्यारिकाम' को जाने हैं तथा श्रार्टिका द्वार कारनेक कारक 'कबर्डम' है: क्योंकि आप सम्बन्धनों कभी पह नहीं होते और न वाफी सरकारी आपने करते ही होती है, इसलिये आप कारण है। जार्च जार्चाह अमिन्होंने अवसील क्षेत्रेके कारण अन्य 'अवर्षण' है कहा के हो आपके नेत्र है, इसरिन्धे आध 'क्यानेक्स' है। अस्य विकास भी समझ क्रेमेनाले प्राणीकी अनक नहीं होते हुन्सीओ 'अक' है । 'अहर'—इन्हिनोर्क हरने अध्यक्त और 'क्य'-जनक इसर कारोबाके क्षेत्रेने आहे 'क्रकेक' है : 'क्रकेक' वृतिसूक्त और स्वयम्यूकाओ बाहते हैं, अन्ते हेन होनेने अन्य 'हमेनेन' महत्त्वने हैं। अध्यक्ति कुळाओं १४० और आकारको बरन करनेकारे होनेसे ताम 'बहुन्बर्' है। साम कामी आंध: (मीनोधी: और) श्रीन को केंद्रे, प्रतरिके 'अधोक्षय' है तथा नरें (जीवों) के समय (सामन) होनेते 'जरानन' बढे बाते हैं। जो समर्थे कृषे और सम्बद्ध जातक हो, उसे 'पूर्वन' करते हैं; उसमें बेह क्रेनेते अन्य "मुक्केल्य" है आप सह और असत्—सम्बर्ध तापाँठ और समझे स्थान है तथा सर्वत इन समझे बानते हैं. क्रांतिको "हार्च" है। श्रीकृत्या सहयये प्रतिक्रित है और प्रत्य कार्य अविक्रिट है एका के सामने भी सता है; इसकिये 'सता' भी इस्सा का है। हे बिक्स (कान्सवरों अपने क्रमकोंसे क्रियाने स्थात करनेके कारण 'क्रिया' है, क्रथ करनेके करण 'किन्तु' है, निल होनेके करण 'सनना' है और में अर्थात् प्रतिकारेक प्राप्ता क्षेत्रिये 'नोमिन्द' हैं। से अपनी मोक्ष्में कर के हैं। निरमर कमि रिका सुनेको पणकर प्रकृतकृतका स्वयंत्र देश है। वे जीवन्त्रत व्यवका कीरवेको महारो बचानेके सिथे नहीं प्रवासेकारे हैं।

कुरुष्ट क्षेत्रं - स्क्रूच ! यो ह्येन क्यूने नेक्षेत्रे चनवान्त्रे रेकेल देख रिकास कार्र करो है, उन नेवलर कुले के

साल-स्कृतिहे अस्तामध्ये स्टब-सा विस्ताबर जारी प्रसानी | सामानी मुझे भी सामान होती है। मैं आहे, मध्य और अन्यसे र्वात, अनन्यकीर्ति स्था महास्तिते की क्षेत्र पुरुषापुरुष होनुस्ताको प्रत्य रेखा है। विन्तुरि ग्रीनी स्वेकोको स्वया क्षी को देशता, असूर, नाग और खाल संभीको अवति पुरनेवाले है क्या राजाओं और विद्वारोधे प्रचान है, उन प्रमाने अपूर्व क्षेत्रकारों में पूर्व है।

# कौरबोकी समाये दूत बनकर आनेके रिज्ये श्रीकृष्ण और युधिष्ठिरका संवाद

बैरान्यवर्गी करते हैं—इसर प्रमुख्ये की सानेवर राज्य मुरिश्चिरने क्यूबेश चरावान् कृत्याने केश, 'निवासम्बद्ध ब्रोक्टमा र पूर्व आयके दिला और बोर्ड देशा नहीं देखानी देखा. की क्रूने आस्त्रीयने पार करें। आरकेंद्र परोगे ही इस विस्तृतन निर्माप है और क्ष्मेंबनसे अवन बाग बॉक्स काले हैं।"



क्षेत्रकारे बद्ध--गुजन् । में के जानकी रोकने कारिका ही है: आर को पुरू प्रकृत पत्ती, जा करिये। सार के के शतक करेंगे, यह सब में पूर्व करीना !

कृष्णियों सक्य-राज्य कृष्ण्या और उनके पुत्र को पुत्र मारत चक्रो है, यह से सार्पा पुत हो दिन्छ । अहमारे हस्ते को पुरु कहा है, यह इस उन्होंका का है। क्योंकि दूर से स्वयोके करणानुसार है बढ़ा करता है; बाँद वह कोई कुसी

का कहत है से प्रान्तकार जिन्हारी सन्त्रा जात है। राज प्राराष्ट्रको राजका सह लोध है, इसीहे के इगरे और को रहेकि की प्रकारकात न रक्तार हमें राज्य दिने किया है सांध करक पारते हैं। इस को नहीं संस्थानार कि पहाराज कृतक अन्ये क्षात्रक काल करेंगे, करकी अक्राते पाछ कर्व करने हो और भूक वर्ष अक्रालवात विका । लिखु इन्हें तो बाह्य रहेश्व कार पहला है। ये कर्पका कुछ की विकास नहीं कर को है कहा अपने जूनी पुर्णक बीहरतकार्य कीने होनेके कारण क्रांको अञ्चल कारण पाठी है। इन्हों साथ से इन्हा विकास समान्द्री सर्वात है। समार्थर । यह सोविये से, हरते बहुता दुःसकी और कहा पर होती कि मैं म से मानवादी है रेक कर सवाद है और न अपने क्रमानिकां कार्य-चेक्स है। वहारे कारिएक, चेनिएक, व्यानानोत्रः, प्रश्नात्रम् और साथ भी स्वापक है से भी मै केवल बोध गाँव हो बाँव एत है। की से बाई मारा है कि अभिनक्त, कृष्यका, जन्मकी, धारमाना और पोपर्यों के के कहें --- हेरों चौक जीव का नगर हमें हे हैं, किससे इस चीकों कई विकास के सके और हमारे काल बलबेरका गार य हो । वरंदु कु कुर्वेक्त इतना भी करनेको हैवार मही है । यह सम्बद्ध अन्यक्ष ही बुरसार प्रदश्य प्रस्तुक है। स्त्रेणने कृति मार्ग बाती है, बुदेह कर होनेले समझ की रहती, स्थानके सबस ही क्रमें करन पहल है और वर्ध पना कि सो भी नियु है जाती है। बोहीन पुरस्तो समन, सुद्ध और सद्धानलेन हर यहे तको हैं, जैसे कुछ-करबीन पुत्रको क्रोक्सर पत्री यह जाते है। ज़िलेन असरका कही है कु सरकों है। कोई कोई से इस अवस्थाने ब्यूंबक्टर बीच ही जीनने एकते हैं। सोई बिस्सी दूसरे चौंत का करने जा बराने हैं और कोई बीतके चुसाने ही करे क्को है। को लोग करतो है निर्माप है, उन्हें प्रतया रहना करा नहीं कर पहल निराम कि रूपनी पाकर सुरूपे परे हर क्षेत्रोको ४५६६ पदा होनेका होता है।

क्षका ! का जिल्हामें असदा पहल निवार से पार्टि

[ 039 ] र्यंत मत् ( **क्रम्य—एक** ) १८

क्रि पूर्व और चौरवलीन आयाचे समित करके प्रान्तिकृषि क्षणनकारों इस राज्यस्थाकों धोने: और बॉर देशा न हुआ हो अपने हो गई करता होता कि फॉरमोको फरकर क प्रस्त राज्य हुए अपने अधीन कर हैं । बहुने से सर्वेद बारक है चता है और जन भी सहरनत को है। में से मेरीना आश्रम रोकर ही प्रश्न करीला; क्योंकि में व ले जन्म क्रेस्ट सक्ता है और न कुल्लार जल है, नहीं मेरी हता है। में से इस शाम, द्वान, इन्छ, नेह—इन्डी असमोहे असमा कार कर केमा बाहते हैं। किंदु नहि बोदी नकता विकारके स्थित है जान को बढ़ी अबके बक्कर कर होगी . और बदि समिद न को से क्षत होगा है, दिन परासम न करना अनुनिव ही होगा : यह कारियते काम नहीं परम्या से स्थाः है कट्टम स्थ नानी है। परिवर्तनि इसकी अन्य पुलोके कान्यने में है। इन्हें नाले के दिल्लों है, इसके कर एक-दूर्वाका क्षेत्र देवाने रूपते हैं, fine reifer meren und & produ ungen ufer femme afte क्षांतर प्रत्य होता है और दिश पुद्ध होने राज्या है। कार्ने को कारवान् होता है, नहीं कुरवेका संबद करता है। समुखीने की Sort with Project wit \$ 1

शीक्ता । अस में यह जानक प्रमान है कि ऐस्ट जानन इस्तिया होनेन्द्र जान जान स्टब्स स्टिस प्रमान है। ऐसा मौत करान है, जिससे इस अर्थ और क्षाने महिला न हो। पुरुषेत्रण । इस पहुचके सम्मान हम आन्यते होन्छार और विस्ति स्टब्स हो ? अस्ति, अस्ति संस्थान इन्यत हैन और हिती प्रभा समाग करोंकि परिकारको सामोगारम सम्मानी करिन है ?

र्वशायकार्य कार्य है—स्वार् । व्यापक कृषिहितके हेला सार्वार ओक्नाने कहा, 'में होनों कार्यके हिनके विके कौरवीकों समार्थ कार्यना और गाँध वहाँ आपके सार्वार्थ किसी अवस्थाने बाधा न स्वीतको हुए समिद करा स्वीतक को सामहिता पुराने कहा करी प्रमानको कर नका है

पुरितियरे धार-जीवृत्या । अस्य वर्धस्तीके धार वर्ष-इसमें मेरी सम्मति से है वहीं; क्योंकि अधके बहुत पुरितृत्य मार महत्त्वा भी हुनोवन को करेना वहीं । इस सभ्य वहीं हुनोवनके कहनाई सम राज्यकीय भी हमते है से हैं, इससिनों का सोनोके बीकरें अध्यक्त पहला हुने अन्या नहीं नाम पहला । पानम ! अस्यको बहु होनेका से हुने कर, सुरा, वेला और समस्य देखां कोरूर आवित्यक भी अस्य नहीं कर स्केटन ।

श्रीकृष्णने करा—श्वासन ! तुर्वोधन केतर सकी है—कह वैज्ञानता हूँ । विश्व पदि इम अपनी ओरसे समावादे स्था कह हैने को संस्थानों कोई भी छना हुने केनी नहीं कह सकेना। रहें मेरे किने अवस्थि कार, से निस्स छाइ विश्वति कारते दूसों संनाम कारवर नहीं दहर सन्तते, उसी प्रकार में संन्य करते से संस्थान को सन्त निस्मार भी मेरा पुन्तामान नहीं कर सन्तते। कार नेत नहीं कार निर्माण से किसी भी तथा नहीं से समाम। सन्तर है, बाल भी कर बाद और भीद कार न भी कहा से निस्हते से क्ष्य है मानेने।

वृत्तिको सहा—सीकृत्ता । यदि आवत्ती ऐसा ही स्थित साम प्रकृति है से अपने प्रस्ताताले कोरवेकि पास व्यक्ति । साम है, मैं आवती अपने कर्ताने सकता होकर वहीं स्थूतात सीट हुआ हेतीया । साम वहीं प्रवास्त्र कोरवेको साम करें, निवासे कि इन सामाने निवस्त्र सामापूर्वक प्रकृति । साम इने कानो है और कोरवेको भी प्रवासनो है तथा इन केरोबा हिए भी आप क्षेत्र कुराता है। असा निवस-विवस सामग्री कानो है से अस बाते आप कुरोबाको बाद है।

क्षेत्रम्य कोर्ड--राजन् ? वैने स्क्राम और आप क्षेत्रेहिसी कते हुन्हें है कहा चुने चौरून और आप केनोड़ीका अधिकान भी मानुर है। अरुको पुद्धि करेका आक्रम रिन्ने हुए है और रूपने प्रमुखने सूची हुई है र आग के करियों अच्छा समझेते. को जिला बुद्ध किये किए कामगा। पांतु महाराज । यह व्योगका नेविक्स (कारपरिवर) वार्च को है। संबो सामानारकेक पाना है कि श्रीकारों की मूर्त माँ मोपनी भाविते । अन्तेः विन्ते के विभावते यह समान्य को बताया है कि या से संसादने विकास कार करे का का बादा। बार्ड अधिकार करने हैं, केन्या अलंब दिले असंस्था चीक नहीं है। एकर् । क्षेत्रसाम सरस्य नेवार शक्तिकार जीविका भूति कर सम्बर्ध । अव: आर भी करकामकृषेक प्रदेशीया करन भौतियो । कृतरकुके कुत्र कहे त्यंत्री है। इसर सहत हिनोसे रूप राष्ट्र अनेने केंग्रस महीन करके अनेन्द्रे राजाओंको क्रमण विशे क्षम विषय है। इससे अन्तर्व प्रस्ति पर महा कर कर्म है। इसरियों से सामने प्रतित कर से--वेली से कोई कुल दिवानी नहीं हेटी। इसके तिया भीन और सरावार्य अविके कारण से अपनेको कारणन भी समझते ही हैं। आरः क्लाक आप कर्में एक क्वींक वर्तन करेंगे, समस्य से अवने राज्यके द्वारनेका है जना करिये। कुन्य । हेवे कृतिहर स्वयान और अक्टरकामधीके क्षाप आग मेल-विश्वास करनेका प्रका व करें; आवर्तके नहीं, वे हो सभी होगोंके <del>ana t</del>ir

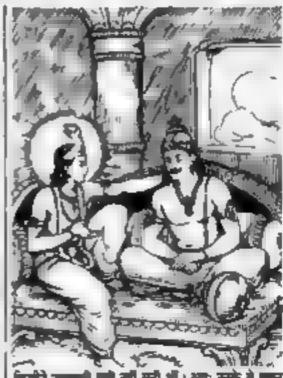
निक समय कुरुवा सेता हुमा वा और पानी हु सासन

अस्त्राच्ये स्थान रेडी हुँ क्षेत्रांच्ये अस्ति केन प्यान्तर राज्यानार स्थान स्थान था, जा सम्बद्ध पुण्यान था। अर क्षेत्रके सामने पी को बार-बार में बावनर पुण्यान था। अर स्थानस्थर अपने बावपालाओं बावनोधी आपने रेक विक सा। पूर्तीये वर्णनावारों केन बावेने बावण पुण्ये अस्त्रा पुण्या मी असेन्द्रर जी सित्या। बिंतु दुई और अध्या पुण्याचे से बार ही बारन्य वार्तिने। अतः बाद विवर्ध प्रधानमा विवर्ध म बारों को बार असिने। ही, अस में विवर्ध प्रधान पुण्या के हो। विकास बीचार की नामना पान विकर में है, बार हो आपने बीचार हैं। अस में बोचानेकी अपने बावस सम्बद्ध और कुर्वेकनों केन सामी सम्बद्धित पुण्येको असर कर्मन स्थान और कार्या अनुबुध्य होगी। शास्तिके सिये प्रार्थन करनेरर मी अवस्था दिन्दा भूगी होगी। तम छना मृत्यद् और ब्रोडकेस्ट ही निष्ण करेगे। में कोरकोके यहा कायर हम प्रवास सर्विके सिये प्राप्त करेगा, निससे आपके वा वासून कर सूना। मुझे से पूर-पूर पड़ी प्राप्त होता है कि क्यूओके स्था हमाय संस्था ही होता। करोंकि पुत्ते ऐसे ही क्यूओके स्था हमाय संस्था ही होता। करोंकि पुत्ते ऐसे ही क्यूओके स्था हमाय संस्था हमी मीरका एक निक्षा करके कार, कार, कारक, उस, हमी और मेरे निमार कर हो। हमो निक्षा को और भी मुझेयकोची सामनियों हो, में सम बुक्त हो। यह निक्षण को कि समस्य स्थानित है,

#### श्रीकृष्णके साथ भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेध और सात्यकिकी बातचीत

भीपारेको साम---वस्तुत्व ! अस्य स्त्रीकरोते ऐसी ही साने बहें, जिनमें में प्रत्य करनेको तैयार हो कमें; उन्हें प्रक्रको कत पुराबर कवरीन र करें ( कुळेक कह है अवकातीत, प्रोक्ते, अकुवार्टी, निवृत, कुरनेवरी निव्य कार्यकान और विवादिक है। यह पर सामन्त्र नित्तु अपनी केंद्र नहीं होतेन्त्र । विश्व प्रकार कृष्यु अञ्चले बाद स्रोम्बकार आरोग वर क्षणांको अस असे हैं, बैबे ही कुर्वेजनके क्षेत्रको एक दिन भूगी जन्मोही जल हो वार्यने : केहम । वारि, पुरावर्ग, बरमेक्ट, बहुर, बहु, शर्माक्टू, शर्माक्ट, अर्थन बीतपुरमा, प्राथीन, परपू, बाह्, पुजरमा, स्वार, पुरसात, बारम, मिन्यून और क्रम-ने जवादा कम ऐसे हुए हैं कियोंने अले हैं समार्थन, सुहर और पानु-सामार्थना हेश्वर कर कुरूर था। इस समय इस कुरूनेहिलोके संहरका समय आवा है, इसीसे कारणीती पढ़ पुरस्कृत पासक पूर्वोक्तर जनस्य पूजर है। जन: जनम को पूज्र करें, स्पूर और ब्होपस कारोमें वर्ग और अर्थने पुष्प रूपने दिल्ली है 🗪 करें। सम है का भी बार रहे कि का बार अधिकार आके पाने अनुकार है है। इस सब से मुनेकारे की कुरूर महि नहरापूर्वक सामा सनुसरन करनेको भी रैकर है, इसने प्रारम्को धरानंत्रका नात र हो । अन्य कौरानेको इन्हर्ने कारत हुन्तों कुछ कियान और अञ्चल राज्यात्रहेरे केल करके रिन्ते ही बडे, विश्वते बर्ख-बहारेंने केल कर के और हरोंबर भी जान हो बना।

रीतापुरुवारी कार्त है—सकत् ! प्रीकारिको सुराती कार्या



विज्ञानि जातावारी क्रांते जाति सुनी श्री । शहः उनके ने क्यान सुनाम सीकृत्या हैस पढ़े और निम चीमलेक्को अवेतिस श्रास्ते हुए हुए इक्सर कहने सन्ते, 'चीमलेन ! तुम अन्यान्य समय हो इन क्रुट क्यार क्याने सन्ते, 'चीमलेन ! तुम अन्यान समय हो क्रिया करते थे । तथा कुमने अपने चाहकोके बीकों नहा उद्यावार का इतिहास भी को भी कि 'मैं का बाद सक-सक क्या द्या है, इसमें तिन्य भी अगर नहीं का समस्य कि इंशाप्यपूर्णिये समये कार्नेपर इस गाउने हैं में हेम्यूनिय इस्तेयकार संग कर कर्ष्ट्रिया ! किंगू इस समय रेक्से हैं कि किस तरह मुख्यांतर क्रांच्या होनेपर मुख्ये किसे अग्रमी अनेकों अन्य पीरोका क्रांच्य संस्थ गा करते हैं है उनकी यहा है। इस समये से न्यूनकोंके समान गुणे में अपनेये कोई पुरावार्थ हिसानी नहीं केंद्र 3 में है जनकम्प ! इस समये कुल, जन्म और क्योंपर इसि क्यानार पाने हो समये : कार्य है किसी जनसम्बर किया मा करते और अपने इसियोगिया कर्मपर करते हो । सुन्तरे क्याने को इस करता इन्होंची कारण पुरावे नार्यनिका क्या करता होता है, ज्या सुन्दारे चीना नहीं है; वनोत्ति इसिन विस्ते प्राप्त क्या हात

बीवरोजने बहा-नामुकेत । में तो पूछा और ही सारव काहता है, सिन्दू अन्य दूसरों ही करा सब्दा गये। केंद्र कर और प्रसार्थ अन्य प्रश्नीके प्रशासको कुछ भी समस नहीं र्कता। अन्ते 🖫 अन्ती बह्यं काम-न्य सन्तन्तेती हृदियें अवही बात नहीं है। परंतु आको मेरे कुलार्जकी निका की है, इस्तीओ चुड़े अपने बाल्बर सर्वन करना ही प्रदेश । क्षेत्रेक कोई इंक्रोके समाय आप की इक मुख्यक्रीको से देशियो प्रमोत जीवारे पहला भी संस्थित निकास प्राय-देशा पुत्रे कोई विकास जी वेगा। विकास वे अञ्चलक करी, उसकी उद्धा के हुए भी नहीं कर सकता : पारक्षांतर अलावार करनेको जात हुन समझ प्रश्लेखक इक्रिकेको में पृथ्वीयर गिरामार कारण साम क्या का अन प्रार्थना । मैंने विका प्रस्तार राजाओंको जीव-जीवकर अपने अर्थीय किया था, यह क्या अस्य यून करे हैं ? यह सना संसार पुरस्तर कृतित होकर दृह यहे से भी कुछ का स्ही होगा। मेरे को ब्रान्सिकी करों कही है, वे से मेरकर नेत सीकर्त ही है; मैं ब्यायस ही एक प्रधानके यह एक तेला है और इसीसे अस्ता है कि चलवंतिओया उत्त न है।

अंकृत्याने कहा—सीमानेत । यैने की सुन्तान काल बाननेके दिन्ते प्रेमाने हैं ये बाते कही है, अपनी वृद्धिकरी दिसाने या प्रदेशके कारण ऐसा नहीं कहा । ये गुन्ताने प्रकार और सरसामीको अन्ती तरह कानल हैं, इस्तिन्ते सुन्तान तिरामार नहीं कर सन्तान । अन कार में क्रायक कार सामा आपलोगोंक सामानी रहा करते हुए सम्बद्धि कार कार्यमा । वहि उन्होंने सम्बद्ध कर भी के मुझे से विश्वकारी सुवाह जिलेगा, आपलोगीका काम है जानक और कारक

व्या वसरी सम्बार हैन्य । और महि अश्वीन स्वीवसम्बद्ध वेरी कर न करों से मिट मुख-नेसा प्रवाहर कर्म करना ही होना । क्रीयरेग ! इस बुद्धका एवट भार तुम्बर्ग ही कर शोग का अर्जुनको इसकी मुद्दी बारण करनी परेगी एका और उस स्केस हुन्द्वारी सहामें रहेंगे । युद्ध हुन्या से में अर्जुनका सार्राव वर्ष्णा । अर्जुनकी भी ऐसी ही इस्का है । इससे सुन का प सम्बाद्धका कि में बुद्ध करना नहीं ब्याहता । इससे क्या पूपने बायसकारो-सी करों की के मुझे सुनार विचारपर स्वीह है एक और मैंने ऐसी करों कहकर सुनार नेकको जनाइ दिया ।

अर्थः अस्ते एके--क्षेत्रका, यो मुख पदल वा स्था से महाराज पुनिर्देश है कह शुके हैं जिलू आक्सी मार्त सुनकर को से देख जल पहल है कि क्लाहके लोग और मेहके बारक जान समित होती प्रकृत नहीं सम्बन्धे । जिल्हा करि कोई कार दोवा विदेशे किया बाता है से वह सराज भी है है काम है। प्रमुख्ये काथ देख करें, किससे शहरांके साम सर्वेश के ही साथ । अववार कारकों, मेरी हम्मा हो, फैरा बरें; कारते के पूछ सोध रका हो, हमें हो बड़ी भाग है। जिल्ह को वर्गापको कर स्थान देखार को सार न वर सक और मानवात-केले पारित प्रतासने जनको राज्यात्रको हर ती, का कुल्या पूर्वेका क्या अपने पुत्र-वेत और मान्यकेंक रामित मृत्युक्त मुकारे केने काने चोला नहीं है ? इस मानीने रिका प्रकार सम्बद्धे कीयमें केयकेयो अवशानिक करके केय व्युक्तिया था, यह से अववादी पातृत हो है। इनने से उसे पी कार कर देखा । विश्व का बात नेते तथाये निरामुक्त नहीं वैक्री कि नई पूर्वेका अन परकारेके साथ अन्य कार्य कर क्लेज । साम चुटिने क्षेत्रे हुए बीजके अंकृतित होनेकी भी गया जाहा को या सकती है ? अतः आप जो विका लानो और निरामें पालक्षीया कि हो, नहीं कान कारी हरूमार कर है क्या हमें आमे को सहस सतन हो त्या भी een to

विकार का जान का अर्थन ! तुर को कुछ काले हैं. होता है। मैं भी कहे काम करोगा, जिसमें कीरव और शक्कों का हो। की है। पुरस्का कुर्वेकन से भई और खेल के केही को किसकार के कहें केवा नो भई और खेल क्रिकेट के पालस्था के की होता । अर्थक का स्वाध सरकार के क्रिकेट हो पालस्था की की होता । अर्थक का स्वाध सरकार का क्रिकेट हो पालस्था की की है। इस्तिक मान पाल हैंकर को की की पहुंचा । उसका से परिवारसाइत नाम के कर हैं कार्यन होगी। और अर्थुन ! कुई से दुर्वोक्त साम की भी विकासका की कहा है हो। किर सनकानको उन्ह मुहनो उन्हा क्यों कर को हो? पृथ्वीका कर उत्तरनेके किये देखालांग पृथ्वीकर अवसीर्ज हुए हैं---इस विका विकासको की दूस कारते ही हो। किर बसाउने को उनसे सामि कैसे हो सम्बन्धी है? किर की पूछे सब प्रकार कार्यकाको अञ्चलक कारण हो कारत है हो।

ज्ञांपर्यः ।

बीक्केन, अर्जुन, इक्केन, अरुर, बारस्त्रमणी, साम्राजित, विराट, उत्तर हुन्द्र, बृहस्तुम, कालिसम, चेविराज, पृह्नेन्तु और वेरे स्वयमे दिन्ह श्रोदे । अवन्ये बाहनेसर विषुर, गीन्त, क्रेम और श्राह्मिक बहु बाल समझ समेतने कि कीरकोच्य दिल विकाने हैं। और बिट के राजा पुत्रसह और सल्लाकारीके स्वीत बादी पूर्वेशनको सन्द्रात हेंने ।

स्वाधिनं कार-न्यामधी । महापति सहोतने महा हीना वाहा है। १०वा और नेत बरेन मी पूर्णभगना पन होनेना ही प्रभर होगा। बरेनम सहोतनं में पता मही है. सन्ताधने बही १०व प्रोड्डाओंका पर है।

स्वार्यको देख काते हे गाँ वैठ हुन् सन गोडा भगहर सिहत्वा कार्य तले। कर युक्तेश्वक बोगोने 'ठीक है, ठीक है' देख कात्रक स्वार्यक्रिको हरिंग करते हुन् तक प्रकार क्यूंकि सामा स्वार्थन क्रिका।

### धगवान् कृष्णसे प्रैयदीकी बातचीत तथा उनका हस्तिनापुरके लिये प्रस्थान

वीतन्त्रांकाओं काले हैं— एकर् | तक बहुराक क्षेत्रीएके | कर्ने और सर्वपुत्र क्यान सुरुवर क्या चीन्सेनको प्राप्त केराकर प्राथमीको कामा सब्देश और सामाधिको प्रापंत काली हाँ चे-पेकर इस प्रकार कहरे जली, 'कर्फ मनुष्युत्त । इतिकारी विका प्रकार कुरावका अवस्य रेकर पाणकोवरे एउएकरे पहिल किया क, जा से उनको भारत्य है है तथा सहस्वको समा क्याकृत एकरको अवक यो विकार सुनावा है, यह भी जनके किया नहीं है। इस्टीको पहि क्रॉपन हमार राजका चल हिने मिन हो सन्य करन माहे से आध को विसी उचन सीवार न करें। इन सहब मीरिके साथ पाणकारोज कुर्वेशनको स्थोत्पन संस्तते अस्त्री इन्द्र मुख्यम्ब कर प्रकृष्टे हैं। साथ या द्वानंत क्रम परिवर्गते क्ष्मा प्रचोरक निरम् होनेकी कोई अवता नहीं है, इस्तिओ आर भी उनके और कोई डील-सांत ने करें, क्योंकि निसे क्षपनी जीनिकामधे क्यानेकी इच्छा हो, जो स्वयं में क्षणे पानुमें न अनेवाने प्रमुखे और रूपमा है उन्हेन श्रीरव मारिये : अर्थ: अध्युत । अर्थको भी पामान और सुनुस

क्रीतेची स्वयं तेवत अर्थ श्रीत ही वहां दक्त देश काहिये।

'कार्यात ! कार्यावार मेर है कि को त्रेप अवस्थाता सब क्षानोर्ने हैं, बढ़ी क्षात्रका क्षेत्र न करनेते भी है । असः अस्य भी क्यांक कार्य और सुक्रम मीरोधे सक्षित देखा कार्य करें, किससे यह क्षेत्र अवस्था एउटा न यह समेत भारत, साहती हो मेरे सरकर पृथ्वीयर कॉन की है। मैं महाराख प्रमानी केवंचे प्रयाद को अपनेतिक पूरी है, बहुबहुबड़ी पहिला है, क्रम्बक्ते प्रिय संस्थे हैं, महामा प्राम्बक्ते मुख्यम् है और परिव इन्होंके जनन केनली पान्यमोनी पटरानी है। इतनी सम्बद्धिता होनेकर भी महो केल प्यानका सन्तरी त्याचा गण और फिर वहीं पाणकोंके सामने और आएके पीचित रहते को अवस्थित दिया यक्त । क्रम ! सम्बन्ध, महत्व और क्यान क्षेत्रीके द्वर-में-दम दक्षे में इन पारिगोकी सम्बर्ध क्तीकी दक्तमें चौक भनी। किंतु पूर्व ऐसी स्थितिये देशकर भी प्रकारकों न के होंथ है। आपा और न हमूरि कोई बेहर हैं को । इस्तिकों में से बड़ी कहती है कि वहि हवीपत एक पूर्व की जीवत क्या है से अनुंत्रकी बनुवंसा और भीमारेनारी मारानारको विकार है। जातः चाँद आप चूहे अपनी कृत्यको प्रमाणी है और माराजने पेरे प्रति आपको सम्मादि है से अपन कृत्यकृते कुमेरर पुरा-शृत कोन स्रोतिको (\*

इसके प्रान्त् तैयाँ। साने काले-काले तको केलोको साथे प्राप्ते तिने श्रीकृतको पास आधी और नेतोचे का



मर्गकर काले कहने सारी—'कारानाम क्रीकृता है साहुआंके सार्थ करनेकी तो जाराकी हुका है। सिंहु जाने इस काले मका में नाम पु:वास्तरके इस्कोर करिये हुए इस केराकाको कर गरों। पदि पीन और जाने कारान क्रीकर अंकर अंकर अंकर किये हैं कार्यक है से अनने कारानी पुर्गक स्वीत मेरे पूज किया कोराओं स्रोधन करेगे तथा अधिकान्त्रों करिया मेरे पूज काराना हुए जाने साथ जाति है की में देशा को मेरे कार्य केरा होगी ? इस अवसीका क्रीको माना अवस्थ कोराको काराने प्राप्त आहित करने पुने तेन को बीत को है। जान पीमसंस्त्रों कारानाको क्रिकार मेरा कार्यक कार्यक माना है। इस । आधी के कर्मको है देशान कार्य है! इस्का कार्यक मिलाकारी क्रीक्टीकर करक कर कार्य, आहितो क्रिकार क्रीस्ट्रांकी अस्तुलंकी हानी साथ करी, ओड क्रीको एने और क्रा

त्य विरायकष्ट्र श्रीकृष्णने को कैर्र केंग्रो पूर कहा—

'कृत्ये ? जुल चीता ही व्योत्योची निकांको उद्दा सतो देखोगी। अवन विनयर हुन्युत कोच है उन प्रदुशोके स्वस्त, सुद्ध और सेन्सिके यह हो जानेवर उनकी विश्वो की इसी अध्या रोजेनी। न्यूत्या कृतिहरूकी अध्याने सीम, अर्जून और न्यून्य-स्वांकके स्वीत में की देश ही काव करेता। वर्ष करानंत काने को हुए कृत्याहुएव मेरी वात रही सुनेने की मुख्ये करे जाकर कृते और गीद्यूकी चोचन करेते। हुन विश्वा काने — कृत्याल करे ही अपने स्वानमें तब बाव, पृत्योंके रीकाई दुन्दी ही जन्म नारोने नय हुना अवस्ता हुए की, नित्यु केरी जान हुनी नहीं हो स्वस्ती। कृत्ये हैं अपने अध्याल है प्रदुशोके भारे अनेको अपने प्रतियोक्त कीसका। विश्वाल है प्रदुशोके भारे अनेको अपने प्रतियोक्त कीसका।

नर्जुनने नका—सीमुक्ता । इस इसका उन्हों कुटबॉर्ससमेंके साम ही समसे कई सुक्ता है। आस होगों ही पक्षोर्क अक्ताबी और क्रिय है। इसिन्धे पत्थाबोर्क उत्तय कोरबोब्स मेंक करकार आयर्जने केनोकी साम वो करा सबसे है।

अंगुल्य केरो—व्याँ व्यावत में ऐसी ही तार्ते अर्थूना, के क्लीद अनुसूत्र होगी तथा विगते सुख्या और कोरातेखा कि केना। अच्छा, अब में पता शृतराहुने निस्टनेक सिर्व क्या है।

वैक्रणायानी सहते हैं—एकप् ! श्रीकृष्णायानी प्रत्यू व्यूच्या अन्य हेंग्येन हेन्याच्या इस्तान होनेसे सथा आसिस वासने देवती शक्षा और पैत पुर्वामें वासा आस्त्र्य सहि । इस सन्य अपूर्व सामने पास वैदे हुए शावनिक्षों प्रधा कि 'सुम वेदे वानी प्रधा, पात, महा, सरकार, स्वीत आहि सभी प्रधा तथा है !' इस अवान सम्बाद विचान प्रमान संग्यात हैंगा, शुरीश, नेव्यूच्या और प्रमानक व्यवस्थ वोद्योगों रहमें पेशा बचा सम्बाद व्याप्त प्रदेशाय गाव विस्तावसम्बद्ध हुए । इसके प्रधान सम्बाद व्याप्त पद्म गाव समाविक्षा में अपने साथ वैद्य विचान । किर जा रच पास से अवान संपत्ति होत्तासपुरकों वीद व्याप्ता देवता ।

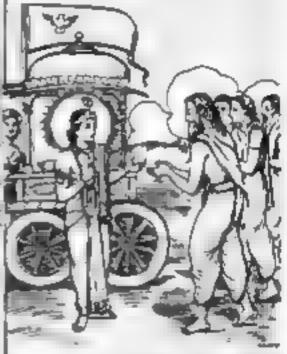
व्यानाम्के व्यानेवाः कुत्तीयुत्र वृत्तिहितः, वीत्रक्षेतः, अर्थुवः, व्यानः, व्यानेवः, वेशिकातः, वेशियातः, वृत्तिक्षेत्, वृत्ताः, व्यानिकातः, विकायोः, वृत्त्यातः, पुत्रेके प्रतित एका किराट और वेश्वत्यात्वः भी त्राने व्यानानेको वर्ते । इस स्थान प्रदासन वृत्तिहित्ते सर्वेषुक्तान्यमः स्टिस्टास्युक्ताको स्थानसे एकास्य व्यानः, 'भोतिकः ! इससी विस्त अस्तान प्रसाने इसे



वारकारणों है पार-पोत्तकर यह किया है, वो निर्मात स्थान और गर्मी लगी क्यार हमी कुक्य-केम्बा है जात कारी दार्ग है तथा निरम्ध केम और अधिककी कारत और पुक्रमोसी केमों का अपूर्ण है, असे अप कुक्स पूर्ण किया हमारी ओरते की जन्म कहे। अप इसमें दान केमा हमारी ओरते की जन्म को है। अपूर्ण क्यार हम अपनी दुर्गियों नातमों कुछ हम क्या हम हमारों हमारे निर्मा एका क्याई और हमारे क्यांद्र प्रमानोंके तथा भीमा, होग, कुछ, कहीच, जेमाइ अध्याक, प्रोक्ता और अन्याक क्यानीकों हमार प्रशासक, प्रोक्ता और अन्याक क्यानीकों हमार प्रशासक अधिकार की क्या क्यानीक अध्या करी अध्याक्त क्यान क्यानीकों देश ओरते अस्ताद्व करें।

वितर राष्ट्रीय कराने-काणी अर्थुनने कहा—'जेकिया) रहाने कर्मणांके समय इस्तर्गणोंको अस्त्रा राज्य नेनेकी कार कुई बी-असे एक राजात्वेग कार्यो है। अस कुर्येका है। बारनेके सिये रीकार हो, तम से कई अस्त्री कार्य है, उसे भी बाह्य कही आर्थितों हुई निया कार्यों। और गर्डि हेला म बित्स के मैं अस्त्रात्र ही साने क्यांके प्रस्ता हर्डिकारीचेका मात्र कर हैं।।' अर्थुनको का बात हुक्कर कीर्यांन भी की अस्ता हुए और अर्थुनको को बोनो निकास किया। अस्ते प्रकारित होकर को-को बहुवंद थी करिने त्रणे। इस प्रकार कीकृत्यको अस्ता दिक्षण सुनामत, उनका आख्निन कर अर्जुन भी तर्केट अर्थे। इस इस्स सभी द्यारोकेंद्र स्वेद मानेगर कोकृत्य करि देवीचे इस्टिक्ट्यूनकी और मार दिये।

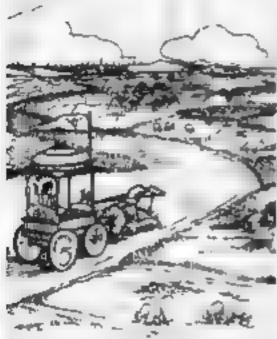
मानी ओक्नाने रासेके सेनी और कार्ड हुए अनेकी मानि देखे। ये तक ह्यानेकारे देखेनकान से। उर्ज देसते ही



वे तुरंप रकते कार पढ़े और उन्हें जन्मन का मढ़े आवरमायतें सकते १०२, 'कड़िये, तम स्वेकोपे मुख्यत है? सर्पका डीक-डीक कारत हो दह है? आजतेग इस समय कियर या थूं है? आजका क्या कार्य है? मैं आजकी क्या सेवा सन्दे ? आप तम पुन्नोतराजा किस विभिन्नते पन्नो है?

त्या सीपरक्रामकीये बीक्नाओं को स्थानक व्या-"मुन्ने ! में क्या केर्की, स्थानि और एकपिसीय आवीप कारको अनेक्ट नेक्या और अस्तिक हैए क्षित्र एकाओं है। इस कारकों अनेक्ट कीर अवकार देक्नोके रिन्ने आ है। यह सम कारकों। अन्यत्य है यह दर्जनीय होगा। यह व्यानकी कारकों। अन्यत्य है यह दर्जनीय होगा। यह व्यानकी कारकों। अन्यत्य है यह दर्जनीय होगा। यह व्यानकी कारकों। इसमें कार्य के क्या है। उस सभाने जीवा, बेज और व्यानकी विद्यानी स्थान है। उस सभाने जीवा, बेज और कारक इस अन्यत्य है यह हिस्सार और कार्य की मौजूद होगे। सेरवर ! अवय प्रचारिये, इसे शायाओं ही आपके वर्तन करेंगे।"

राजर्! वेजकीनस्य अोक्स्यसम्बद्धेः इतिहास्य करो समय का पहाची, एक इका चैतर, एक इका प्रकारत. न्यान्त्री केअन्तरको और रीवड़ो संबद्ध थी उन्हे सब है। अन्ते काने समय यो इकुन और अवस्थान हुए, उने मैं सुनाता है। का समय मिना ही बाहाकेंद्र बाह्य क्रीका गर्मन और निवर्शन्य फ़क्क हाँ तथा वर्ष होने रहते । हाँ विसामी और बहुनेकारी छः गरियाँ और समूह-में कार्ट महरे रहते । क्या दिवारी हेकी अभिनेत्र के पूर्वी कि यक प्रक ही न सगता था। सिन्दु नागेंने वर्डा-वर्ड बीकुम्ब करते थे,



मही बढ़ा मुख्याद जानु प्रताता 🕿 और समुद्र 👈 अस्ते 🕏 होते थे। ज्याँ-सर्व स्वको अञ्चल उनकी सुनि करने ठक मकुरके और अनेकों च्यानिका प्रकारे सम्बाद करते हैं। इस प्रकार मार्गि अनेको प्रमु और करोको देसने क्या अनेको नगर और राष्ट्रीको स्थीको से पहल रूक

वर्षेणका समाव स्थानी धीचे। वहाँक विवासियोंने जीवरणकारणा व्या आविका-स्टब्स्ट किया । इसके पश्चाद सर्वकारको, तक अस्य होते हुए सूर्वकी विज्ञाने स्था और कैठा की भी, ने कुम्बरका नामके गोवने पहिने । वहाँ उन्होंने २७३३ कारकर निकानुसार जीवादि निरमको किया और रव क्रेंप्रकेकी आहत क्षेत्रन सम्बाधन्तन विज्ञा । क्षत्रकरे धोडे होत क्षेत्रे : किर क्लान्से व्यक्ति निवासिकोधे कहा कि 'हम राज्य पुरिवर्षिको कारको या यह है और आठ एकको वहीं हहोंथे।" क्रमण हेला विकार कारधार प्राथमिकाचेने स्वारंतका प्रमान का दिना और एक श्रमने ही प्राप-काली जान सामग्री अह है। कि का चौरते से प्रधान-प्रधान प्रधान से, उन्होंने अवकर अनुनिर्वाद और कहारिकड कवन कक्ष्में हुए जनक



विशेषम् सरकार विकाः। प्रत्ये प्राप्तः करवान्ते प्रकृत्येको सुरुष् केला अरावर सर्व भी पोत्रन विन्य और सब लेकोंके सक्त करे जनको सा प्राची की थे।

## इस्तिनापुरमें श्रीकृष्यके स्वागतकी तैयारियाँ और कौरवोंकी समामें परामर्श

पुरस्काने परा रूप कि बीकुमा सा हो है से जो जारे बेनाहा है आया और उन्होंने को आदरसे चीना, होगा, स्कूछा,

कैलकाराओं कार्य है—इसर जब कृतेके द्वारा राजा | कार्यालेके बावसे इससे दिल्लोके क्षित्रे सीकृत्य का रहे हैं। के राम प्रकार इसके अवस्थित और पूजा है। सारे स्वेत्यस्थाहर क्यूनि अधिक्षेत्र हैं, क्योंकि वे समक अधियोक हंबर हैं; क्यों मितुर, तुर्थोधन और उसके प्रनिक्षेत्रे कहा, 'सुना है, किंद, सीवं, बाद और ओज—सभी पूर्वा है। ये सराहत

वंदेशन हैं, इसरियों प्रम जनार प्रमानके बोना है। उनका इत्थार करनेयें के सुन्त हैं, जनात्का होनेयर के दु-क्ष्में निवित्र कर जाते हैं। यदि इसरे स्वकारमें में संदूष्ण हो जमें से समझ एकाओंक स्वान इसरे कभी अर्थाष्ट्र सिद्ध के जमेंने। कुरोंका ? तूप उनके जनात-स्वकारमी अव्यक्ति सेवारी करते और एसीने क्ष्म जनाता अव्यक्ति अव्यक्ति सम्बद्धि सम्बद्धि किसामकार करवाओं। तुम देखा जाना करते, निवत्ते अव्यक्ति सुन्तरे जनर स्वता हो कमें। भीवाओं ! इस विकामें आव्यक्ति क्ष्म अव्यक्ति है ?'

तम चीन्यामे साथी सामान्यांने राज्य कृतसङ्ग्रे कामान्यां इतांसा को और प्रमु कि 'जानका मिक्स पहुंच देखा है।' इन सम्बंधी अनुसारि कामान्य पुर्वेकाने अर्थ-वर्ष हुन्या विकासकार कामान्ये कोन्य का उत्तरका रीजाये का स्थै से इता कृतसङ्ख्या इतायी कृत्या है ही। किंदु अनुसार्थ अर विकासकार और स्था-त्यांके कोन्यों और हुन्हें भी सारी कार्ये।

हवेंकारे तर तैकीने हुन्य कर एक कुराकृते विट्राजीने कहा--विद्रुप । श्रीकृष्ण क्यान्यको इस जोर भा के Et ann wiff general feine fem fit um प्रतःबाम वे का का का ने वे के के कार्यन, परावर्ग और भारतार्थ है। यावर्थका के विकास पत्ने हैं, प्रत्येक क्षाप्त और रक्षण करनेकारे में ही हैं। अधिक पंचा, में के theil pholitic former stambles of from \$1 posted इमारी की, पुरुष, बालक, कुद्र—सिलवी अंग है, उसे भागत संबंधि संबंध श्रीकामके दर्शन करने पातिये। सम और करी-वर्ध करा और पालाई लगार से तथा उनके कारोडे पार्थको प्रकृत-स्थापना जनम जन विकास से । देशो, श्वासम्बद्धा पान हर्वेषम्बद्धे गामसे भी जाता है। को बीह है स्वय करकर अची शर प्रश्नीका कर है। का मनाने बढ़े सुदा-सूचा करने और अञ्चासिकाई है. अर्थ का अध्यक्त आरम है और एक है जन्म सम प्रकारिक जार्माद विका कामात है। भी और सर्वेक्स प्रक्रमोर्ने भी जो-जो पविष्य भोगे हैं, वे सब असेरे एक है तथा अभेते हो-के पहार्य श्रीकरणके चेना हो के समाप अवस्थि चीर स्टार से ।

विदुरजीने कहा—नामप् ! जान तीनों होनोंनें को सम्मानित हैं और इस लोकानें बहे प्रतिक्रित क्या कनतीय कने वाते हैं। इस समय अस्य में बहों कह दो हैं, में इससे का काम मुक्तिके जानारपर ही नहीं कान बड़ती हैं। इससे कानूम

होता है सरकारी बुद्धि निवर है। क्योद्धार से अगर है हो। निज् में अवनको कारानिक नात काले देता है। आप वन देतार अवना केरते तरहे प्रवादान प्रीकृत्यको अर्जुनी असन न्हीं कर क्लेने । में क्षेत्रकारी परिषा काला है और क्रमानेन उनका बैज हुए अनुसन है, या भी मुझसे किया नहीं है। अर्थन के उन्हें जानोके समान दिन है, वसे के वे होड़ ही नहीं समाने । वे कालो जो हुए गई, पर मोनेके कल और काल-अवने रिवा आवती और विक्री चीनकी और से जोक कामहर को नहीं हेरोंने । ची, उने अधिक-सम्बार देख अवस्था है और से एक्साओंड कोन्य हैं भी। प्रतरिक्ते उसका प्रकार से अवस्थ बॉर्टिको । इस समय श्रीकृत्य दोनो प्रश्लोक केलको कामको निका कामके हैंगों ३६ को १६ वे. को अप पर को । वे से पायकोने पाप अल्पनी और पूर्वीकारी सन्ध करून बाले है। उसके इस करको शाय कर सीविये। margin ! and wombbit from \$. it appels up \$. and बार है, के आकंद सामने मातक है। के अपनेद साथ पूर्वेग्दी तक ही बर्लय कर रहे हैं, अब भी उनके साथ दिलाके समाने कार्यक करें ।

पुण्यम् केल—रिकाके । विद्यानि को कुछ कहा है, जीवर है हैं। कोकृत्याका पायकोचे की महा देन हैं। उने जाको कोई केंद्र नहीं प्रकार। आहः आग उनके प्रस्ताको हैको को बाह-काइको महापूर्व देश कहते हैं, में अर्थ करने नहीं केंद्री काहिने।

कृष्णिकारों को संसं पुरुष्य विश्वास विश्वास वासने वहा-अंकृष्यने अपने कार्य को कुछ बार्यका विश्वास वस विश्वा होना, जो किसी भी अक्षार कोई बहुत नहीं स्थान । इस्तिकों से को कुछ बाई, जहीं बात निःसंक्रम होनार वास्ती कार्यकों । कुछ बोई, जहीं बात निःसंक्रम होनार वास्ती कार्यकों का त्यों । अर्थकान अंकृष्य अन्यस्य ऐसी ही बातें कार्यकों, जो बार्व और अर्थकों अनुकृत्य होनों । अराः तुन्हें और कुछने सम्बन्धिकोंको इसके साम दिवासका कार्या वाहिये।'

ुक्रेक्स क्या—रिमान्त ? पुढ़े का बात संदूर नहीं है कि कारक में। सरीरने जान है, सकाक में इस राजात्व्यांकी कार्क्सि इस वरिक्त सोगूं। जिस महाकार्यको करनेका मेंने किवार किया है, का से कह है कि में पायानोंके पश्चमती कृत्यांको केंद्र कर है। उन्हें केंद्र करते ही समस्य पादन, सारी कृत्यों और वायानानेग मेरे अभीन हो जानेने और में करा आध्यांका की की ही हो है। अब आपरोग मुझे ऐसी सामा होनियों, किससे इस बासका कृत्यांको पास न सने और किसी प्रकारकी हमि भी न हो। श्रीकृष्णके विकार हुआँकाकी यह प्रवृद्ध कर सुनका राजा पुतराह और उनके मिक्किको पड़ी कोट लगी और वे भागुरु है गये। फिर उन्होंने तुर्वोकासे कहा—'केट ! तू अंगरे कुँगो ऐसी कर न निकार । यह सम्बान करके किन्द्र है। ब्रीकृष्ण को कुन कनकर आ रहे है। यो यो वे हमारे सम्बन्धी और सुन्द्र हैं। उन्होंने क्षीरवोश्य शुक्र जिन्ह्या यो नहीं है। किए वे कैद किये कारकोम्ब कैस हो सम्बन्धे हैं ?

वीनमं वदा--वाराम् ! नालूम हेना है तुनारे इस सन्दर्भत पुरुषो मोताने के दिखा है इसके एक्ट्र और सन्वर्भ मोई हैंगाकी बात बनाते हैं से भी यह अपनेको ही तसे स्थान बाहत है। यह पार्थी से कुनार्थने बनाता ही है, हरके रूप पूर्व भी अपने हितिकोची बाहतर बाहर न हेना हरकेको स्वेकना बाहता बाहते हो। एन मही जनते, यह दूर्णीय वर्ष अपन्या मुनावर्षने साहा हो नवा से एवं इनामें है अपने सब साराहकारोके सहित नह हो सामना। इस बनाने बनोको से एकदान विस्ताहति है ही है, हरका हान बहा है करोर है। मैं हरका वे अन्तर्वपूर्ण बाते किरानुस्त नहीं सुन सम्बना।

हेल महन्यर विनायक पीन्य अस्तरण स्रोकने परकर सर्छ प्रथम स्थाने स्टब्सर कार्य गर्ने ।



## श्रीकृष्णका हस्तिनापुरमें प्रवेश तथा राजा शृतराष्ट्र, विदुर और कुन्तीके यहाँ जाना

र्वतन्त्रकार्य काले है—हवर कुळाळाले क्षेत्रकारण प्राप्त:काल प्रक्रपार निरमकार्यसे निरम्त प्रम् और मैनर संक्रान्त्रेले आहाः लेकार हरितनस्थान्यो और चल दिखे । इनके चलनेपर को भागवासी अर्थे प्रदेशने गर्थ थे, वे उत्की अद्युक्त सम्बद्ध सीट. आये । गणरके राजीय व्योधनेयर कुरोजनके निरम और सम कारहारक तथा भीका, होना और कुछ आहे. कुछ वन-वनकर इनकी अगवानीके रिवर्ष आये । उनके रिवर्ण अनेको नगर-विकासी भी कृत्याहर्ककारी स्वरूपस्यके विकार और तस्कृतस्त्राकी कुलारिकोचे बैठकर करे । एकोचे है पॉन्स, होण और स्व असराष्ट्रपुत्रोक्षे भगभाग्रस्थ समागम क्षेत्र गमा और उससे जिसकर। क्ट्रॉने इतिरामपुरमें क्येष्ट किया । श्रीकृत्यके सम्बन्धे दिन्हें हारा नगर सूच हमान्य क्या था। राजकारी से अनेकरे बहुपूरूप और दर्शनीय वसूर्य बढ़े बंगने समानी गयी वी । श्रीकृष्णको देखनेको उत्तरप्रत्ये कारण तर दिन कोई भी भी. इक्षा क बालक पाने नहीं दिया। सब्दे लोग उनकानी ओकर पृथ्वीपर भूक-शुक्रकर श्रीकृष्यकी सुनि कर छे वे ।

श्रीकृष्णक्षन्तने इस प्राणी प्रीकृष्टने पान करके प्रकृत्यक पृत्तरकृषे राज्यकानमें अनेश किया । यह प्रकृत अस्त-प्रसम्बे अनेकों प्रकृति सुर्वोद्धित या । इसमें तीन क्रवेड्डियों थीं । उन्हें



सीवका सीकृष्ण एवा वृद्धकृषे कर वृष् को। सीवकुरावके पृथिते हैं कुरुराव वृद्धकृ, पील, क्षेण आहे. इ.चे स्थानस्थित सीत वाहें हो गये। उस सम्या कृष्णां , होनदार और बाह्मिको भी अपने आहम्मेर्स राज्या सीकृष्णां सामार सिया। सिकृष्णने एका वृद्धकृ और सिराद दीवके एस जावार सम्बद्धार राज्या कार्या सिया। इस स्थार कार्यी कर्तकृष्ट सुख कर वे कम्पकः सुधी राजाओं सिरों और सामुके समुदार राज्या कार्यांच्या सामार किया। सीकृष्णके सिरों कई क्या सुधा कुंचलंका सिवास रहा हुआ था। राज्य कुंचलुकी सरावसे वे सराव सिवास गये। सहस्रम कुंसराहुने भी राज्या विकास पूर्ण

प्रतांत पहाल, कुरुरामके ताका तेमार में विद्यानीके गांव प्राणमें आने। विद्यानीने क्रम जानावारी महानिक्ता प्राण्डे नेवार जाकी अगवानी की और जानी का स्वकार पूजन विद्या। विद्या में व्यक्ती समी---"प्रावणस्थान है जाना जानके पूर्वन करके मुझे केंग्र जानाव है कहा है, जह में जानके



विता जवार कहें जान से समस्य स्वामारेगोंक अन्यसम्ब है है। जिलिकाबार है कानेगर कहा विद्यानीने जनकारों पान्कोंको कुसरू यूर्व। विद्यानी पान्कोंके जेनी तथा कर्र और अर्थने समर स्वोचाने थे, और से उन्हें गर्या भी नहीं करता था। जत: अंकुम्बरों, पान्ककोर से कुछ करता च्याते थे, ये सब वर्गे अर्दे विधारके सुन दी।

इसके बाद क्षेत्रहरे बीवनंतर चनवान् इत्या अंतरी कृता कुर्योके कर गरे। अंकुरमधी आने देश वह उनके परेगी विश्वत पनी और अवने पुत्रोंको कर करके देने लगी। आज वानकोके अक्षा अञ्चलको भी उसने महत दिनोपर हेका वा । इसरिक्ते अने देशकार जानारे श्रीकृतिने अस्तुशीनरे कृत्ये राज गार्थ । यह अतिनिवस्तास हो पानेना औरन्यानां देर कैठ नवे के कुनाने न्यूनवान्य होका बाह, 'सावव । मेरे पूर क्षकारं है नकावेको देश कानेको वे । जनक जानसर्वे बढ़ा केंद्र था, इसरे लोग उनका आहा करते में और में भी क्रमंद्र और संस्थानक एको थे। सिंह इस स्थितिने क्रमान्त्रेय जो शतकात का देश और अनेको प्रमुखीय बीकने रहने कोच्य होनेकर भी ये निर्धन करने महत्वती रहे । ये इन्संकाको महाने कर एके थे, अक्रमीकी रोजा करते थे और कांद्र कार्याका करते थे : इस्तीको उन्होंने सर्ती समय क्रम और चोनोर्स के चेड़ रिका और मुद्रे वेती होड़कर क्लाने कह देते । वेश ? यह वे क्लाने नर्व थे, मेरे हारको में सभी प्रमुख अपने सुरक्ष के गये थे। मैं में अब विस्तुपत इत्यांचि है। यो यह है सम्बद्ध समया नरेसा रक्षणेकास, विकेशिय, अभिनीयर क्या करनेकरण, वील और स्थापनके समाप्त, अनेत, कर्ननुस्थानक और सेनों क्षेत्रकेक एक कार्य सेन्स है। सन्तर सुरुगित्तीने केंद्र सह अन्यानक पुरिनीत हत गरण पैतन है ? जिसमें पत बनार हरियोक कर है, से बाबुके स्थान केलान है, अपने प्रकृतिक निक्ष दिन कार्यके स्वाप्त को उन्हें बहुत नारा है, विकार अनुसंदेश स्थीत परिचय तथा अनेपान्य, विकास और कड़ करी करतेयाँ कर-की-कार्य कर काम क, कर: को परकारणे इन्ह और कोच्ने सकता संकारके समाग है, का बहुमाने क्षेत्रका इस प्रथम क्या इसा है ? से नियों कृतं, कर्णाः संकाने कृति, कृपाने पृथ्वे और परस्थाने कृतां राजन है क्या प्रमात प्रतिनतेको प्रतिनेतास और कर्ष किरोध कक्ने आनेकस्थ की है, वह दुवार का और करत अर्जुन इस समय पैस्ते हैं ? सहोत भी नहां है क्तानु, सरकानु, अस-सर्वाध्यः प्रता, प्रयुक्तसभ्यन्, वर्गक् और पूर्व कारण क्रिक है। यह वर्ष और अपने कुरूल स्था क्यो पहलेखी रोख करनेने समा रहत है। उसके सम जानरकारी राज कर्त कहे उसे जांजा किया करते हैं। इस सनक कारको क्या तथा है ? नकुल भी बढ़ा सुक्रमार, सुरबीर और क्रांनिय कुछ है। अपने प्रकृतीका से व्या बाह्य प्राप्त है है। क अनेक अध्यक्त पुरू कार्नेने कुन्ता है क्या पहा ही

धार्तार और पराक्रमी है। कृष्ण ! इस समय पद पुरानाने है न ? प्रकार होगड़े से सभी नुस्तिने सम्बद्ध, बरल सम्बद्धी और अन्ते बहरूमी बेटी है। मुझे यह सरने सब पुर्टिने भी अधिक द्वेच है। यह साम्बाधिन अपने बारे पुत्रोकों की होक्कर बन्यारी परियोगी सेम कर को है। इस कान क्षाच्या करा क्रम है ?

''कुला ! केरी सुद्धियें कोरब और परणकोंने ककी कोई भेदनाव नहीं पूर । असे सनके प्रणानने तक में कहतीना भारत क्रेनेपर पर्यक्रकेंद्र सहित एक्क्ष्रे सम्बद्धस भीनो वेक्षेत्री। परंतप ! जिस १००० अर्थ-व्या क्षा क्षेत्रेकर वी सीरीमें की, का राहियें चुड़े को अवस्तकारणी कई की कि 'तिय का पुत्र साथे पृथ्वीको जीतेना, इरावा का सर्वाच्य देश कारणा, यह महत्त्वहरूने स्टीप्लोस्टे कारण उनका कार प्राप्त करेगा और फिर अन्ते प्रकृतिके सर्वत केन सकतेन का श्रीता को में केंच नहीं की; में से सबसे नहार प्राचयन-सर्वात वर्धको ै नवस्त्रत क्रमी 🕻। 👊 सन्दर्भ सरका निवास है और को स्कूर्ण जनके करण मारनेकारक है। बाँदे धर्म कहा है से कुछ भी बाद राज माना पूछ क्षा क्षेत्रे, को उस प्रमुप केम्प्रानीने पाछ 🕬 ।

"मानव । तुल वर्गातम युविद्वितमे स्वयुक्त कि 'स्वयुक्ते वर्गको को हाने है को है के । एन को इस स्वार कर्न बरवाद का होने से ।" क्रम्प ! जो की क्रानेकी अधिका होकर बीजननिर्वाद करे, उसे के निकार ही है : केन्क्रमे अस र्ह्म जीविकाली अधेक्षा से यर साम है अवता है। तुर अर्थुर और केल क्लेक्बॉल चीनकेनरे बढ़ना कि 'क्लिकिंट किस ब्रायको विन्ने पुत्र उरका करती है, औ अपनेका समय उस गता है। हेसा अवसर आनंतर भी चाँद तुम युद्ध नहीं कडेने की इसे कार्य ही एवं दोगें । हम तक स्वेकोने सम्पर्धित है: हैंसे होकर भी नहि दूसने कोई निकास कर्म कर हाता से मैं फिर कभी तकार्य भेड़ नहीं देखेंगी। असे । समय नर महे हो अपने अरबोक्स भी स्वेच का करना।' वार्टके का भक्त-सर्वत सर्वत प्रत्यवर्गस को स्वयंको है। उस्ते करत कि 'जबोंकी क्यी स्थापर भी अपने परकार्य जा हर योगोसी है हवा करत: क्वेडि से पर्य क्रास्टि अनुसर अपना जीवन व्यक्ति करता है, शरोड करते क्राक्रमसे जास किये हुए भोग ही सुबर वर्ग्ड सकते हैं।"

"स्त्रुओंने स्थ्य और शैन्या—था की दुःसकी कर वहीं है: अपूर्वे हारना भी द:सकत कारण नहीं है। की पूर्वोंको 🛮 अधिकार करके दुर्वोक्तके पहलारी और गरे।

कारें कर का —इसका थी पूर्व देशा औं है। बिद्ध इससे क्कार दुःश्वयो और कौर मत हो समारी है कि देरी दक्ती कारकारे, से केमल एक हो कहा पाने हुए थी, परिटकर सम्बन्धे त्याचा पाना और क्षेत्रे क्ष्म पानियोक्ते कठोर कार सुनने प्रदे । क्रम ! आ समय का मारिक्ट करेंने थी । किन् अपने केर कोत्योची वर्गामीओं की का अवाजी अनावा-सी हो एक्टे । पुरुषेक्य ( वे पुरुषते हैं, इसके विच्य पुत्रे सुपार), क्ष्मान्त्रका और प्रमुख्या की क्य-पूरा कारक है। जिन्ह औ में हेते एक्स कोन रहे हैं। हम । इसी बीम और मुख्ते पैठा व केरनेकारे अर्थनो रहते मेरे या पता !"

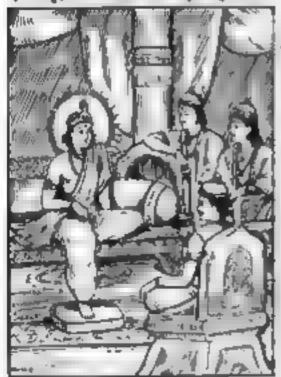
कर्षा प्रदेशे द:करे अलग जाकर वी। अन्तर्य देखे को क्रमार संकृष्य कर्ने (नी—'वृश्तवी । तुक्तर समान क्षेत्रकार्या और स्रीन की होगी। तम सना सारोनकी पत्री है और महाराज अन्यवेशके बंदावें कियाने अधी है । तुम स्य प्रधानके कृषणुर्गाते सन्त्या है। और अपने परिनेत्रके औ क्षाने पक्ष सम्बद्धन प्रत्या है। इस बीरम्पल और बीरकरी हो। क्य-बेची मोहन्सी हो तम प्रकारके समान्यकोको स्थ mark & mannin Par-me, titu-of, qui-विकास, सीव-कार-भूग सकतो जीतावर बीरोजिस अपन्यास क्षेत्र करते है। उन्हेंने और बैचरोने आवसी प्राप्त कारण है और अपने क्यान कारण द्वारा कुरात-राजाकर पुरा है। हम और ही पान्धकोंको मेरोय और क्रमान्यकेता केलोगी । अने सारे प्रमु मारे मानेने और ने अवर्ष केन्द्रोक अधिकत पावत राज्यक्ष्मीके सुर्वेदिक होते ।

क्रीक्रमाने इस प्रधार काइम वैचानेवर कुलीने अपने क्रान्यकित भोड़को एर बारके सहा—कृष्ण ? पान्कार्वेके किये को को बिलाकी बात को और असे किया-बियर प्रकार तथ करण वाले उसी-उसी प्रकार काना, शिक्सो कि वर्षका स्टेप न हो और स्थादको अध्यय न सेना यहे । मैं तुन्हारे सम्ब और करने अध्यक्षको सन्तर्भ तरह जनती है । अपने निजेका काम करनेये हम जिल कृदि और पराक्षमाने काम लेते हे, से पी स्क्राने क्रिये नहीं है। इसले क्रान्ये तुम मुलियान् वर्ष, साल और का है है। कुर सबसी पहल करनेवारे हैं, तुनी पराध्य है और कुले हे यह लाग जगह अधिकृत है। पूर्व देशा यह यो हे. इससे हर का कर नहीं जातर सन होका रहेगी।

हरनेंद्र प्रकार प्राप्ता बीकृत्य कृतीसे जाता है, उसकी

#### राजा दुर्योधनका निमन्त्रण सोहकर भगवानका विद्रश्रीके यहाँ भोजन तथा अनमे बातचीत करना

पूर्वोच्या अपने पश्चिमोस्स्ति अपसन्ते कहा हे पना। परमान् क्ष्येका और असे परिकास विजयत कि गई एक्टीन कु सब चयाओं अन्य अध्युक्त अनुवार विसे ।



भूतके पहला में एक अंग्लंड निकृद सुमानीक कांग्लंग केंद्र गर्व । व्यापान-प्रकारके अध्यार राजा कृतीकाने घोडानो रिने अर्थना की, सिन् श्रीकृत्यने को स्थेकन नहीं किया। तम तुर्वोद्यन्ते श्रीकृत्याने आरमाने चत्रु किंतु परिमानवे शततामे धरे हुए कन्दोपे बद्धा, 'कनक् । इस आच्छो ओ शके-अच्छे कारा और वेष पदार्थ तथा क्या और प्राचार्य चेर कर हो है, जो अप लीकर करों नहीं करते ? अपने से देनों ही पहाँको सहस्वत दी है और जान देन भी छेनेहरूका कारन जाएंदे हैं। इसके सिम्ब अब्द व्यापन ब्राह्मके सम्बन्धी और प्रिय भी है ! वर्ग और अलेका सुरक्ष भी अल अवने तथः भारते ही हैं। ज्ञारः हात्या क्या कर्मण है, यह में कुल्या प्राकृत है।"

पूर्वेकको इस प्रकार पुर्वेगर पहामन मनुस्कार असी विकास पुना उठाकर नेको समान कमीर वार्पास कहा—

र्वजन्मनननी कार्य है—सकर ! अध्यानको प्रवेचने ही | 'प्रकर ! ऐसा निवम है कि हम अपना बोहर पूर्व हेनेपर ही चोजवर्ति व्यान करते हैं। बादः का मेरा काम पूर्व हो बाव, का कुर भी पेस और मेरे पश्चिमीका सरकार करना। मैं बार, क्रोब, हेर, कार्य, कब्द लक्ष्या लेपने पहला कांको किसी प्रवार नहीं क्षेत्र सरकत । मोचन वा से बेनकह विका क्या है का अपनित्रे पहुंचन किया जाता है। से कुरकार को मेरे जाति देश नहीं है और में बिनसी सामतिमें बच्च न्हीं है। देखे, काला से दुखरे कई 🛊 है, ये कह अपने केंक्क्रिके अनुकार पाने हैं और उनने सभी स्थापन निरामान है। फिर भी दूप किए मारक क्याने ही इसते हेर करते हो । करके काम हेर करना क्षेत्र नहीं है। ये हो सर्वेद अपने वर्षने निकार पहले है। उनके को देख पानका है, बाद की पुरानों की देख कारण है और को उनके अनुकूत है, यह मेरे की अनुकूत है। कर्मना परक्रमेंद्र साथ से एवं पुत्रे एकाम हमा है क्या । यो पूर्ण पान और प्रतेषक गुलार है तथा पूर्वकारक पुरावकोचे विरोध और हैर काला है, उसीकी अन्या बाह्रों है। तुन्हारे इस सारे अञ्चल सम्बन्ध यह पुरुषोत्री है, इस्परियों यह सम्पेकोच्य पार्टि है। तेरा सो पार्टी विस्तार है कि मुक्ते केवल विक्रमांच्या अन्त काना वाहिये।"



वृत्तीं वर्षों देश वर्षात् अव्यान अस्ते प्राप्त निवासकर विद्यानीके पर शा गये। विद्यानीके प्रश्न है उसने विवसीके देखे भीका, होया, पृत्य, प्राह्मिक स्था पृष्ठ अन्य कुम्मांकी आये। उन्होंने कहा—'पार्क्ष । पृत्र आवादी उत्तर-अवय पहार्थीके पूर्व अनेको प्रथम सम्बद्धि अस्ते हैं, वर्षों प्रस्कर साथ विद्यास प्राधित्ये।' उसने कीनपुर्वृत्ताने सहा— अस्य स्था स्थेन प्रदारे, अस्य मेरा इस्त प्रकार सम्बद्ध अप्रमुख्य ।' प्रदार विद्या। किए प्रसुद्धि उन्हें अनेक प्रयानके स्थान और पुरस्कृत कोन्य और पेन प्राप्त हिया अस्त असने अनुव्यक्तिके प्रसुद्ध स्थान और पेन प्रदार्थ हिया अस्त असने अनुव्यक्तिके प्राह्म सेट्यार अर्थ पोक्ष किया।

पन चेताने पहार पातार विशास पारे तरे हे राजिये समय विद्रारको असी प्रका—"केवन । अस पाई शामें, यह विवास अपने होया नहीं विभार । सन्तरीव पूर्वीयन कर्न और अर्थ केन्वेदिको होत बैदा है। यह स्रोक्ट और मुख्यनीकी आहरका प्रत्यान वालेकात 🏂 वर्गकावको के मा पुरू समझता है भई, अपने है का रकता है। अहे विक्री समार्थि के पान असमात ही है। का विक्रोप क्षीता, अध्येतने यहा मुद्रियम् नाम्मेकाल, विकोते क्षेत्र कंतनेवास्य, समीच्ये सहाची रहिने देखनेवास्य, करक और सर्देशीय है। इसके विका साथे और भी अनेकों क्षेत्र है। उसक अन्ये किन्दी पर करेंगे से भी बह स्टेश्या पर स्टेन मही । पीचा, श्रेप, कर, कर्ग, अवस्थानां और जन्मानो कारण को इस राज्यको कर्न है हक्ष्म जानेका पर परोक्त है। प्रथमिनो हो। भूमित धारोच्या विचार ही नहीं होता। वही से पूर् निकास है कि सर्वतम कर्ण ही भी करे कहनांको जीव सेना : इसरिने पर तन्त्र नहीं कोना । तक वो सन्विका प्रका कर से हैं। जिस बाराइके श्लोने से का प्रतिक कर हों है कि 'पायकोची उनका चन वानी जो हैने।' एक करका ऐस्त विचार है से करने कुछ भी बक्क कर्य है होगा। मध्यस्य । वर्षा अच्छी और धुरी क्षेत्रे उस्तुजी वनको एव ही रख पुना बाब, वहाँ इदिकान पुरस्को पुना वहाँ बद्धन पाहिये। वहाँ कोई कर बहुत से सहरेके अने इन अक्षकेंद्रे स्थान कर्न से है।

'श्रीकृष्ण ! पहले जिन उपाठोंने स्वपंदे स्वय पैर ठाव

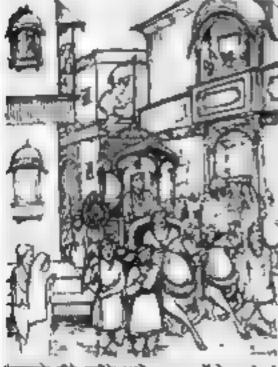
वा, का जाने जान जानके चारते तुर्गोतनका आताप दिना
है। वे इस चेद्रा पूर्वेक्नके साथ नेत चारके जाने प्रमासक
विकास करके साम्युक्ति स्थानको तैयार है। जार आर कर
सामे बीचने वार्थ-न्या भार पूर्वे अच्छी नहीं स्थानी।
व्यानि वेच्या सोग की आवके प्रापने नहीं दिना स्थाने और
है जानके प्रभाव, जान और मुद्दिको अच्छी मान वानका है,
वानको प्रभाव, जान और मुद्दिको अच्छी मान वानका है,
वानको प्रमास प्राप्ति है। वानकारणा । जानका प्रश्नेत करके आय
पूर्वे की प्रमास हो हो है, वह मैं आपसे क्या बातूँ?
जान को जाने क्यानिकोंक जानकार है, आपसे किया है
वान है ?"

अंग्रमने कर-विद्राती । एक स्थान सुद्धिनानको सैसी बार बाहरी बाहिये और पुत्र-बैसे प्रेय-पानसे आपनो के कुछ बद्धान कहिने हता आयो युराते वैसा वर्ग और अर्थते क्या प्राप्त करून निकारना काहिले. वैशी से बात आपने कार-विकास संदान बोहाबा बाह्री है। मैं इसेंबनकी दूसत और अर्थित चीरोके केरपान आहे पन करोनों परनार है अपन क्षेत्रमें के कार आका है। प्रमुखना कर्तन है कि बहु वर्षकः प्राप्त कार्यको को । क्यानाहिः अस्त क्रानेस्य की पहि बार जो पुरा प बार हत्ये हो भी जो आबार पुरुष हो अवस्थ ही जिल कारण---प्राणें को संबंध की है। क्रांधर और अन्दे विकास से नेरे प्रय, क्षेत्रकरी और वर्ग एवं अन्ति अनुसर का कर्म से करिये। में हो निकायरकारते धीरव, पाचान और पूजीताओं समारा अर्थनोदे केल्पा है जनम कर्मन्य । इस प्रकार केल्पा प्रकार करनेकर भी कीई कुरोधन नेती करनी प्रकुष बारे हो भी नेता किए के अला से केना और मैं अपने कर्तवाने करता भी है सर्वाच। 'बीकुम्ब सचि करा उच्छो से से ची उन्होंने क्रोक्के अलेको अने हर बीख-राज्योको रोका नहीं - का कर कुंद्र सकती न कई, इसलिये में वहीं सकि क्राउनेके रिल्वे अस्या है। क्योंबनने महि मेरी वर्ष और असीह अनुबार क्रिकी बांच सुरक्त भी अस्था भाग न विवा से बा and Street, etc. (City)

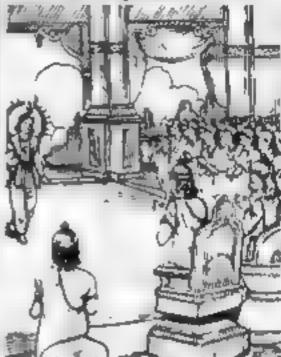
इनके खाल, बहुकुरायुक्त क्षेत्रका प्रतिगतर हेट गये। बहु साठि का महत्त्वा निहुत और अीक्ट्रकके हमी प्रवास कर

## श्रीकृष्णका कौरबोंकी सभामें आना तथा सबको पाण्डवोंका संदेश सुनाना

वैद्यानकार्य कार्य है—जाराकार उठकर संस्कृतको सान, तथ और आजियोगर निवृत्त हो उदिए होने हुए सूर्यका कारकार किया और किए क्या एवं आकृतकारि वारण किये। इसी प्रमण क्या कुर्वेकर और सुक्तको पुत्र कुर्वानने उनके मास अस्कार कहा—'खाराज भ्रत्यानु तथा भीन्यकि कुछ सीरव पहानुकान सम्प्रापे का नवे हैं और जानकी कार देश के हैं।' तम श्रीकृतकार्यको कही च्यार कार्योने इस हो-नेवार अस्मित्तकार किया। हासके प्रमण्य कार्योको साकार सीकृतको सर्वापे क्यान किया और उनका काल कोहोंने कुछ हुन्य कुछ त्य स्वकार कहा कर दिया। सीन्युक्तव कार स्वकार कार्या हुन्। तस समय कोरकार्यार उन्हें तथा औरतो केस्कार कार्य।



भगवान्के येके उन्होंके १क्षये समझ वनीको जननेवाले विद्रानी यो समार हो गर्ने तका हुवाँका और प्रकृति एक दूसर १क्षये वैद्यान उनके योके-पीके वर्ते। व्यक्तिव्यदि भगवान्का रंगे राजसम्प्रके द्वारण आ गया और वे अवले आस्वार मीतर समाने गर्ने। विस्त सभय व्यक्तिक विद्रा और सारविद्यान हाम प्रकृतिक सम्बाधकाने व्यक्ति, इस सम्बाधनाने कार्ये, इस सम्बाधनाने कार्येन सम्बाधनाने समाना कोश्योको निकोध-सा कर दिया। उनके आने-आगे दुर्थोक्षय और वर्ष्य क्या योके कुटक्यों और मुन्तिवेसी बीर करते हो थे। सम्बाध पहुँकोपर उसका कार्य कार्यके वितरे राजा कुत्रपष्ट वक्षा पीका, जेना आदि हासी लेख अपने-अपने आसनोरी करते हो गते। श्रीकृत्यके तिये उनकाश्यमे महत्त्वम कृतराहुकी आहारो सर्वतीमा नामका सुकर्णयम विद्यास गता क्या था। उसका बैठकर औरकामसुक्तर पुरस्करतो हुए राज्य शृतराह, श्रीभ, होण तथा कृतरे उन्यानीने क्याचील करने तथे तथा समस्य बर्धरम और उन्यानीने सम्बाधे करारे हुए श्रीकृत्यका पूज्य विद्या।



इस जलन श्रीकृष्णने श्रथके भीतर ही सलारिकार्रे कर्कार्ट व्यक्तिको छन्ने नेका। तम उन्होंने धरिसे कर्कान्त्रमान भीव्यक्ति वका, 'इस राजस्थाको देवानेके विके व्यक्ति स्थेण आसे हुए हैं। उनका शासनाहि केकर वर्ध स्थानको स्थानका। इन वृद्धिका मुन्दिकोंको सीत ही पूजा प्रतिके।' इस्तिको मुन्दिको स्थाको हुएएर सामा देव भीवानीने वही स्थानको सेक्कोको आसन स्थानको आहा कै। ये दूर्वर ही व्यक्तिको आसन से असने। जल स्थानियोने आसनीयर वैद्यास अस्त्राहि व्यक्त वह स्थित तो श्रीकृष्ण सथा जन्म समा स्थान की असने अपने असनोवन विद्यासको स्थान क्षान्त्रमा समान्त्रसर, विद्यासके विद्यासको स्थान हुना था, विद्यासको असन्तर्भर, विद्यासक व्यक्ति हिन्दासको हुना था, विद्यासको अस्तुक विद्यासका व्यक्ति हिन्दासको हुना था। में उन्हें देशते देशते अवती नहीं थे। जा शक्षणे सर्वेच्य कर श्रीकृत्यमें स्ट्या कुरत था, इसरियो विश्वविद्य कुलने कोई भी मारा नहीं निकासनों भी।

न्या स्वामें सक एका कीन होकर कैंद्र को से कीकूकाने व्यापन क्षराह्नी और देवते हुए यहाँ क्वार काले केंद्रा—राकत्। येए यहाँ आनेका खंडा कह है कि वहाँक वीरोका संहार हुए किया है कीच्य और व्यापनोने साथ है साथ। इस समय एकाओं कुकांस ही काले और काल काल है काल बाता है। इसने पाल और स्वापनात्त्र सन्वक् काल है काल और भी अनेको पुन गुल है। साथ एक्यकेकोंसी करेड़ा इस्क्रीविचोंने कृता, करा, कालक, कृत्य, कालक, काल और साम—ने निक्रेयकाओं को को है। इस प्रकारके गुलोंसे गीरवाधित हम केंद्रों आपके बारक की कोई अनुस्थित बात है से का स्थित नहीं है। की की कीक्य है



माम्बीका काम है। दूर्वोक्ताने मामके पुत्र वर्ष और अर्थकी ओरहे हुँद्र केरकर कुर पुरुषेके-से मामका करते हैं। माने कार प्रकृतिके साथ इनका मासिक पुरुषेका-का मामका है इस मितार सोपका पूत्र समार हो करेग्रे इस्ट्रेर कर्वकी वर्गाकुकी कृतका होड़ दिया है। वे स्ता कर्त सरको मासून ही है। यह परसूर मायकि इस क्रमा कोरकोश्य है अर्थ है और वर्षि इसकी मोदार की नहीं से यह साथ दुरुषेको चोदा का हैन्द्रे । चर्च कार कारने कुलको नामसे बनाना करें से अब को प्रतक रिकारक किया का सकता है। मेरे किवारसे ਸ਼ਾ ਦੇਵੇਂ ਬਹੁੰਦੇ ਦਵਿ ਦੇਵੇਂ ਬੜਾ ਬਹਿਸ ਦੀ ਹੈ। ਸ਼ੁਰੂ ਦਸਥ क्राणि बहाना अपनेह क्षीर भी ही हाचमें है। शाप अपने पुरुषो प्रयोक्तमे राजिने और नै पाणकोको निकरने रहीया । आरके कृतेको अपने वाल-क्वोसदित आरक्षी सद्वापे स्टूज ही पार्थिके : बहै में आयार्थ अक्षरमें खेंगे से इतका महा करों कि के समझ है। पहला ! आप प्राप्तिकों दलांगे सुकार वर्ग और अर्थवा अनुसार वीकिये। अन्यको ऐसे क्षा प्रका करनेवर भी नहीं दिन क्षाते । भारतेष रे फिलोर ओहर भीचा, होता, कुछ, पहर्च, विशिक्षांते, मकाराम, विकर्ण, सोमान, अञ्चीक, भृतिहिर, श्रीवरिन, अर्थेर, प्यान, स्वरंग, जामध्य और मुखुत्यु-वैशे बीर हों, अने पुर कारेको विस्त पुरस्किनको क्षेत्रता हो सकती है। बरेस और बन्धवेदे जिल सारेने आप प्रयक्त लेकीया क्राविका कर वरेंगे असे का आवक का की व विवास क्रकेंगे; क्या को एका आपके सम्बद्ध पर आपने कड़े हैं, वे थी आपके पान परिव कर हैने। देख होनेहें आप अपने कुंद, चीर, फैल, बर्ज और सुक्रोंने एक प्रमान सुरक्षित युक्तर सुराते जीवन कारीत वार क्रवेते। यदि आव कामकोको है अली रकावर हरका पूर्ववर्त अवद करेंगे के हा। क्षरी पृथ्वीका आनक्ते मोग का स्वेले । महराम l कर करनेने तो नही कहा करी संबंध दिकानी है यह है। इस जनम होनो पहलेका जान करानेने अनुबंध क्या धर्म विकासी केल है। अनः अन्य क्रम स्वेकन्यी पता ब्हेशियो और ऐसा ब्रोनिने, निवाने आपनी प्रमाना नाम न हो। पहि आप पुरस्तुनाको अन्त्र कर होने से कक्की पता होना वे सम्बद्ध ।

व्यापन ! व्यापने अवस्थे अंतर कहा है और अवसी असाम व्याप हुए वह असी भी है कि देनों असे स्वीपने होता असमी असामें है हमें दिनेता हुआ क्षेत्र है। इन क्षेत्र वर्तका कार्य है है और दिन देखाओं को जनसमूहने असमानको स्वापन किसान है। करवासको वर्त होनेदे समय हक्स वह निवास वा कि वस इन स्वेटेने के अस हक्षी उसर विजयी तक सुने। हमने अस क्षांत्र पूरी तथा कार्य जिस्स है इस्टीनने अस अस वी नैसा स्वाप का, केल ही कार्य क्षितने। हमें अस असने स्वापन कार्य निवास क्षांत्र के अस कर्य क्षांत्र अस्ति क्षांत्र स्वापन कार्य निवास क्षांत्र है। अस कर्य क्षांत्र स्वापने क्षांत्र कार्य है। इस्ति कार्य करते हैं। इस्तियों अस्त्र क्षांत्र स्वापने क्षांत्र होता व्यक्ति, सारको साथ हात्रय केत है वर्णय है। हातियो अप भी हारदे प्रति पुरुषा-सा साथाल व्यक्तिये। हारदेश महि वर्णपृष्ट हो हो है से अप हमें दीय राकेश साइवे और इसों भी साथालर विवा होड़ों। हात्री हिना आपो उर्था हात्री हम साथालोंने भी व्यक्तिया है कि वहीं करीं साथाल हो, वहीं कोई अनुविश का नहीं होने व्यक्ति। व्यक्ति साथालोंके देशते हुए अवकीं कर्णप्र और आवको साथा पांच हो से संस्ता भी तथा है काल है। इसे साथ पांचाकोण वर्णप्र ही साथा है काल है। व्यक्ति साल अनुसार साथ और व्यक्तुक बात हो बाई है। क्याने होए साथा है सार पांचाकोंने साथा है है। इसे साथा किया अवकों है।

जिने कोई और नात कहती हो से कई र नहि को और जर्मका विकास करके में सभी बात कहें से नहीं कहता होगा कि इस इंटिंग्सेको अस्य कृतुके केरेसे हुद्ध क्रेनिये। कराजेंस ! इंटिंग कारण क्रेनिये, क्रोनके वहा यह होड़िये और क्रांकोको उसका क्योंकित केरूक रूप्य है हैंगिये। हैस करके आप अपने कुमेंकि सहित अस्यकों चीन मेरियो। क्यान् । हम सम्बा अस्यने अर्थको अन्य और अस्यक्ते अर्थ चान रचा है। आपके कुमेंबर स्वेचने अधिकार क्या रस्त है, अस्य उन्हें का करान्ते क्याने। चानक से अस्यकी सेवाके क्या केरिये अस्यकों को बात अधिक क्रिकार क्या क्ये, इस्तिय कर नावते।

# परशुरामजी और महर्षि कण्यका सन्धिके लिये अनुरोध तथा दुर्योधनकी उपेक्षा

नैहरणंकरणे रकते हैं—जब करवान् कृतको वे प्रव करों कहीं तो सभी अकारकोची रोकान है अक्या और वे व्यक्ति-ने हो गये। वे प्रव-ही-का त्राह्म-सदाने विचार करों रहते। उनके मुस्तो कोई भी उत्तर भई निकार । उस एक्यानेको इस प्रवार तीन हुआ वेस वह सम्बन्ध मेंद्र हुए कार्य करकृतको बाह्ने रहते, "रावन् ? हुम तम प्रवारको क्षेत्र क्षेत्रको सन्तर नेती हम सम्बन्ध कर हुने। यह हुने सम्बन्ध करने तो सरके सन्तरतर



सायान करें । यहने क्लोड़न काका एक इस्तेंचीय राज् हो गया है। यह व्यारधी काल मिरासी जातावार काका प्रााप और श्रीकोंचे द्वार काला का कि 'क्या स्वारण, स्वीरण, केल और कुटेनें कोई ऐसा प्रकानारें है, को पुन्नों मेरे साया साया पुन्नों कालार हो ?' इस प्रमार काले हुए यह राज्य साया गर्मोंचर होतार इस सामूर्ण पुन्नोंचर विवासी यह, 'इस पुन्नोंचर हैं। केलाई कालामी हुए काची महिलानें अनेकोंची प्रशास किया है। काली कालारी हुए काची महिला सामेंने !' इसकर उस एकाने पुन्न, 'से वीर पुरान कहीं है ? उसेर कहा जान किया है ? में क्या काम काले हैं ? और से प्राप्त है ?' प्रवास के म्युक्तकंकानें ही आने हुए हैं; हुए इसके साम पुन्न करें। से क्यान्यक फर्कान कहा है जोर और और

"तामको जा बात सहर नहीं हुई। जा उसी समय मही जारी तेना तमाबार करके चार चार दिया और राज्यभारत्वर जाकर करकी कोण करने राजा। औही ही देखें को ने हेथें जूरि विकासी किने। उसके प्रारंगको विकाहक हो एके हाती जी। जीता, जान और चानुको स्वाप कर करे के चारण में जून ही कृत हो गये के। राजा उसके पात कंग और चारणपर्द वार उससे कुछार चूले। पुनियोंने भी चार, पूर, जासन और जाको सम्बाद सरकार करके पुन, 'कहिले, हम आपना क्या चारण करें?' राजाने जाई जारकारों ही सब कार्य पुनाकर करते कि 'इस समय में आपने जून करनेके विकोध अवार है। यह मेरी बहुत हैंस्टेकी अधिकासना है, इसस्तिन हमें स्वीकार करके हैं



आप येश आविध्य क्रीकिये। ' अर-व्यस्तकाले कहा, 'राज्यू | इसं आसमयें क्रोक-स्तेष आहे होत यही द्य सकते; वहं मुख्यों से कोई कर हो नहीं है, किर अक्क-दश्य का युक्तिय अपृतिके स्त्रेय कैसे द्य सकते हैं? पूर्वाचर क्यूक-से अधिय हैं, तुम किसी इसरी कन्यू कन्यत पुत्रके हिन्दे अधिय करों।' नर-नारायकाके इसी प्रकार कर-नार सम्बन्धित भी कन्यों संस्त्राची पुत्रतिस्था साथ न हुई और इसके दिन्दे उससे अप्रकार करार ही दहा।

'त्रव वागमान् नाने एक मुद्दी सीके लेकर कहा, 'अवहर, तृत्वे कुक्की बड़ी राज्यमा है वो अपने इतिकार आह को और अपनी संगालों तियार करने।' यह कुन्मार क्लोजान और अपने सैनिकोने अगार कहे की कार्याओं कर्या करना आपने कर तिया। जनवान् नाने एक सीकारों अपनेव अवकों करने परिणय करके होड़ा। इससे यह को अवहर्यकों कर हुई कि मुनिकर नाने कर एक बीरोके आहे, जक और कार्याओं सीकोंसे था दिया। इस्ते अकार तारे आवारककों स्पेत्र सीकोंसे था दिया। इस्ते अकार तारे आवारककों स्पेत्र सीकोंसे था देवाकर राज्य सम्बोधक अनके करवोंने तिर वहां और 'सेरी रहा करों, नेरी रहम करों इस प्रकार किलाने साथ। तब इस्तारकारकारक नाने क्लावान साथने कहा, प्रकार ! तुम हक्कानोकी सेवा करों और वर्याकों आवारक करों; ऐसा काम किर कार्य पर करना। तुम कुन्नाम अकार कों और सोकार्य औड़ हो साथ आवारतहन्त, निर्वाचन, श्रूचकील, मृहु और जान होका जनावा प्रश्नूच करो । श्रूच प्रक्रिक्ट पुर किसीका स्वयंत यह करता ।"

"इसके कर एक एक्टेश्न का मर्गवारोक परवीने जनार कर अन्ते नगरने सीट जाना और जानी तरह कर्ममुख्य करवाहर करने त्या । इस प्रकार इस सध्य असे न्द्र नक करे काम किया का। इस समय का है अर्थन है। का: कार्यक में अपने होड़ अनुव भावतीयवर वाल न कहाते, वर्णनेका कुर कार क्षेत्रकर अर्थुनकी सर्व है हो । को सम्बर्ध क्लाके निर्मात सबके सबसे और प्राप्त क्लोंके लाखी है. वे जरावक आईओः सका है। इसरियो सुद्धी अर्थाः वकारको साम कुन्ने नियो पारित होगा । सर्वुन्ने अगमित पुर है और संसुद्धा से अलो भी सहस्त है। कुलीपुर अर्थनके पुरतेका से शुर्व की वर्ध कर वरिवन वितर कुछ है। को बहुत भर और मारावा है, वे ही इस समय अर्जुन और श्रीकृत्या है । वर केलेको तुम समक्ष मुख्योपै हेतु और बहे चीर सन्दर्भ । वर्षर दुन्दे मेरी २०६ क्षेत्र आन पहली हो और मेरे प्रति किसी प्रकारका शब्देश म हो यो तुम समृत्यिका अध्यय हैन्सर राज्यकोषे साथ समित का लो ।"

वरहरायकोषाः वाक्य शुरुकाः व्यक्तिं काव्य यो द्योधासी वहरे त्यो--संवाधिकाम् व्या और ना-राशक--वे अक्षण और अधिकारी है। अदिनिके पुत्रोंने केवल किया है सम्बद्धान, अनोष, अधिनाती, नित्स और संबंध ईवर है। इनके रिका केन्द्रमा, सूर्व, कृत्यो, कार, कन्द्र, अति, जान्यास, का और करें — वे साथी किनाहरूक कारण क्यरिका हेंनेया सह है नाते हैं - क्या मंत्रकाता जनम होता है से वे सची पहलें हीनों खेळीको सम्बन्धान यह हो जाते है और सहित्यर अवस्था होनेयर कर-कर उसके होते रहते हैं। इंग सब बालीस विकास करते तुने वर्गतन वृतिहिएके साथ समित कर रेमी व्यक्ति है विससे क्षीरम और भाष्यक मिलकार पृथ्वीका पालन करें। कृषेकर | हुन देख का समझते कि मैं कहा बस्ती हैं। संसारमें बरकानीकी अनेका भी दूसरे वाले पुरूष विकासी की है। सबे पूरवी छैके सामने सेनाको सर्वेत एक भाग नहीं करती । पाणकाने से से सच्चे केवलओके अञ्चल सुरक्षेत्र और परकारों हैं। वे इसरे क्या, इस, वर्ग और होनी अभिनीकृतार ही है। इस रेक्टरमॉकी और से हुए हेए। भी जी सकते ( इस्तरियो इससे किरोच क्रोडकर सन्धि कर औ । क्रुडे इर तीर्वक्रकर श्रीकृत्यको इस अपने कुलबी स्थापन प्रथम करना पानिने। धार्ट केपी यासनी विस्तानकन क्षीरिकारराज्ये व्यास्थाने अस्त वार्त है और वे च्या-नदावर सोवित्यु ही शही औक्तासकारी विद्यापार है।

स्रीत केने पूर्वता, अल्बी औरी बाद गांधी और बाद बार्मको । जैसी केरी चीर क्रेमी है, असके अनुसार होवाने मुझे रखा है कोर देशका चोर-चोरसे हैंसने सन्ता। यह सुन्ने कन्यके 🖣 और कैस है नेस अन्यत्म है। अन्ने आयके स्थानने नक क्रमन्त्र कुछ भी जान नहीं दिया और साथ रोज्यकर इस | क्रेम है ?"

स्कृषि कम्बद्धी तात सुरक्तर कृष्टिक सम्बोत्सको | प्रकार कहते सन्त, 'कृषि | यो पुत्र होनेकस है और

#### श्रीकृष्णका दुर्योधनको समझाना तथा भीषा, ब्रेण, विदर और धृतराष्ट्रहारा उनका समर्थन

वैक्षणकरम् वर्ता है—राजन् । कार्यान् वेद्रव्यात्, क्षेत्र और राज्योंने भी कृषेक्तको अनेक प्रकास सम्बन्धाः का समय नत्त्वमीने को कही बढ़ी थीं, ने सुनिये ( उन्होंने बद्धा, 'संस्तरचे रहाएव क्षेत्र विकास बहोदन है और विकास क्षत व्यक्तिकार सुद्ध भी वर्तन है। उन्हेंकि विक संबदने अवर्ग सर्ग-सम्बन्धी भी साथ क्षेत्र के हैं. वर्क भी सक्त निक र्मन क्या कता है। अतः क्रक्टकर ! तुन्हें अपने विवेरियोओ करपर असार जान के। पारिने: इस तद वर करन दोक नहीं है, क्लेकि कामा परिचल कहा रूपकारों होता है।" कृत्याने का-कार्यन् । जान केल बढ़ से हैं, केक ही

है। मैं भी नहीं काइस है, परंतु ऐसा कर नहीं करता। पूर्ण कर ने बोक्सते कारे हरे-- नेवल । अपने मी कुछ कहा है यह तथ प्रवार सुकार, स्थानी हेनेकार, बर्पानुका और नाम्बांना है। सिंह में कार्यन की है। मननी हरोंका में कांचे अनुदार आकार की बता और ने प्राथमक के अनुसरन करता है। अन्य विजी प्राथम क्षी संप्रतानेका प्रयक्त बारें । भ्रष्ट गान्वारी, श्रीकृष्यन् विद्यार्थ राजा जीकारी को इससे राज्य हिरीती हैं, रूनकी ग्राम निकारत भी कर कार नहीं देता। अस पूर्ण आर है पर प्रकारित. हार और हाताब क्षेत्रकारी सम्बद्धांने । यदि इस्ते अन्यती मान पान रचे तो सामके क्षणते सामने स्वातीका का का भागे काम से कारण (\*

राव एक प्रधानेंद्र वर्ग और असंदे प्रसादों जानेकले श्रीकृष्णः कहर सामीने कृषेकाले सक्नो तमे—'कुकान्तरः । भेरी बात सुने । इससे तुर्वे और दुव्हरे परिवास्को ब्या सुक मिलेना। तुर्वने बडे बुद्धियानेके बुदलो क्या रिच्य है, हार्मिने तुन्ते पर पुन कान कर क्रांस्थ करिने। हर के 🕶 करन चाले हो, पैस काम हो वे लोग करने ै. के नीय पुतानों पैदा हुए है क्या स्कृतिया, कर और निर्माण है। इस विकास राज्यों के इस है का को कहार, अवनेतर और प्रायोक्ते प्याप्ते हैं। जाने अन्ति के केया। जाना कोई प्रचेत्रक परी नहीं है और न ना सनका ही हो सबसी है। प्रार क्षनर्वको ज्यान देनेयर है हुए क्षपन हुना क्षपने पहले, सेनक

और विक्रेस हैत कर प्रयोगे तथा कुर मो अवर्ग और अवस्था अधि करनेपाल कम काम काने हैं, असे हरे काकोने । देखी, काव्यक्तकेन कडे मुद्रियनम्, सरवीर, बरातही, कान्य और व्यूक्त है हम जाने जान सीन कर हो। क्रकेरे कुम्बर के है और नहीं नहारम बुसरह, विस्तरह बीक, क्रेप्सकर्ग, विजुर, कृतकार्ग, क्रेप्सक, सहिक, अवस्थान, विकर्ण, सक्षय, विविश्ववेद स्था सुन्द्रारे अन्याप क्यु-सम्बद्धे और विशेष्के द्वेण भी है। यहाँ है स्तीय करनेने के सारे कंपारको कारित है। उसने सन्ता, क्रमान्य और महरता नहीं एक भी है। अरः इसे असे नाम-निवासी महानों ही पहल करिये । दिना को पहल किसी के हैं, को प्रथ स्तेन हिल्करों बारते हैं। यह पहुन बड़ी चारी किमीलों पह जाता है, तक उसे अपने निरामी सीक्ष हो का अपने हैं। इच्छर निजयोंकों से परकारेंने साँच परना अका कारू होता है। आ: तुने और तुन्हरे मनिनोको पी मा जनाम जना सनम पानिने । यो पूजा मोहबार दिलाई कर की काला, अन् वैचेन्द्रीका कोई बाल पूर्व की होता और कोछ प्रकृतान ही जाके पहले पहल है। सिंधू पो विकास काम सम्बाद अपने मानको ब्रोड बाले अस्तिका अध्यान करता है, का लेकाने एक और सम्बंध कर करता है। में पूरु अपने पूरुव रचनावानीको क्रोड़कर नीम प्रकृतिके बक्तीका प्रेन करता है, जा बढ़ी जारी विपत्तिने पर करा है और फिर को उससे निकलनेका करता नहीं निकता ।

'ता । क्यो क्यो है क्यो सहस्थे साथ सम्बद्ध क्यार किया है; से भी काली चवानेंने दुवारे प्रति सहरक हो एक है। इसें भी उनके प्रति केल हो सर्वाद कान्य व्यक्ति । ये इन्हारे काल भर्द ही है, उनवर तनों देव जी रक्तन कड़िये। लेड पहन देख करन करते हैं जो उनमें, वर्ष और कामधी प्रति करनेनामा है। और परि उस्से का क्षेत्रेको निर्देश होनेको एउन्स्यान पढ़ी होती को ये वर्ग और अर्थको हो विका करनेकर प्रचल करते हैं। अर्थ, वर्ष और कार--- ने सीनों अनन-अराग है। परिवास पान इसमेरे करि अनुसूत्र रहे हैं, क्यान पुरुष शर्मको प्रधान मनते हैं

और पूर्व बरक्के हेतुमा कामके पुरस्क को उसे है। बिहर ची पुरुष इतिसोधि मसीपुर होका सोधवान अवेदरे होत् हेल है. या क्षेत्र करनोते अर्थ और कम्पर्कारको सहस्को पैसकार रह हो करता है। असः को क्यूक अर्थ और महत्वह रिमें अपूर्ण हो, को पहले पर्नेका है आवश्य करना पाहिले ( विश्वन्त्रचेन वर्गको से विवर्गको प्रदेशका स्थापक कारण मालो हैं। को पुरार अपने प्रान्य प्रत्यक्रमा करनेक्को कोन्छेहे इर्मकार करता है, यह स्थानकोंने करते उत्तर अन्य हो श्वानी का काला है। मनुष्यको कविने कि विने केवा विकालेकी हम्मा न हो, करकी वृद्धिको स्तेपने पह न करे। इस प्रकार विश्वकी बाँद लोगसे बॉन्स जो है, आर्टका कर मान्यानामान्यमे राज समारा है। देशा हाई स्टीस्थान एक्ट, चन्यांका के रूप, अंशाने किन्ते सम्बद्ध कृतीक के अन्यवर नहीं करता । विन्तु को बन्धे चंत्रुरूने चंत्रत हरत करूक अपना विनादित कुछ नहीं सन्यातः। लोक और केल्पे के बक्रे-बढ़े प्रमाण प्रसिद्ध हैं, उनके भी बढ़ दिए सामा है। अतः कृतियोगी अधेक्षा पाने दूस वान्यक्षीका एक करोगे से इत्याप काश्यम ही होना। हुए के पान्यकोची और पैंड मेरेकार किसी इसके जोने राज्ये का काम काने है का कुरास्त्रम, कार्ग और कुनुमिन्द्र कुन्नो अवन्य केन्नो औरन्द्रश पुर्व्याच्ये चीरानेक्ट्री शरका रहाते हो; हो बह्द एक्ट्रे—के हुन्हें प्राप्त, वर्ण और अर्थको जाति की कर जाते । कार्यको राज्यने इनका कुछ भी परायम नहीं भार सकता । हुन्हें सक रसायर भी ये सम राज्य कन्यानेकी बाल नहीं होन सब्दों ह सुको पार पर मिली सेन इन्हों हो है, पर क्रोफि चीवनेत्रके व्यवसी और से औरह भी नहीं का काजी है है भीन, हेन, वर्ग, का, चॉकवा, अवस्था और प्रकार मिलका भी अर्थुन्या मुख्यामा नहीं यह समझे । अर्थुनको पुरुषे कारा काना से प्रमुख केला, असर, नवार्थ और पनुष्योक्षेत्र की पहल्की कर नहीं है । (स्तरिको तुन पहले अन्य पन भर (मारको । अच्छा । पहल, तुन हो इन सम राजाओं है मोर्ड देख भी विकासों के मनमूचिये अर्थुमार सामाद मको मिर समुक्ता पर और बनाता हो। इसके रिजे विराहरणस्त्रे अनेतो अर्थनके अनेको पहार्थनके पुत्र करनेको को उन्हान कर सुनै करते हैं, बड़े करते उन्हान 🕯 । असी | बिहाने प्रेमानचे साम्रात्त और्यवस्थीयो भी संस्थ कर दिया, जा अनेब और विकास की अर्थुकारे हुए मीतनेकी जावा रकते हे 7 किर क्य में भी केल्के क्या है तम के, सामात हुए है क्यें न हो, हेल्ट बॉन है जो उन्हें मुकामलेमे अन्ये हुए अर्जुलाने बुद्धाने लिये लामका हर्ते ।

के पुरुष पुत्राने अर्थुनको जीतनेकी प्राप्ति स्वारा है यह के अपने प्रकार है और क्षेत्रकोको की प्रतिने निय प्रकार पाए कर स्वारत है और क्षेत्रकोको की प्रतिने निय प्रकार है। पुत्र प्रतिक अपने पुत्र, जाई, जानु-कारक और प्रकारकोकी और से देखी। वे पुत्राने निर्ण यह न है। हैले ! कौरकोक कीय करा पाने है, इस संस्थात प्रश्नाक पर करे; अपनेको 'कुरुवाती' जा कहानको और अपनी कीति-को कसंस्थात का करे। व्यारती प्रथान हुन्हें हैं पुत्रपण कर्मने और इस अवकानक पुत्राने किस प्रत्राहकों है प्रकारक करेंगे। देखें, जई अवकाने अपने पात्र आती हुई प्रकारक करेंगे। देखें, जई अवकाने अपने पात्र आती हुई प्रकार पात्र प्राप्त देखां अपने कर को। वहि पुत्र वाकानेने प्रतिक कर लोगे और अपने विकेतकोको साथ कानेने से विकारक अस अपने विकेत करा वाकान्त्रकोड़ प्रस्त कोनोने।'

ज्याने जनके । अव्यानक वा प्रकार सुरक्ष जन्मकृत्या जीवने वृत्तिको वा — 'अस्त । अस्ते कुरुंका दिन वाक्रियाने अधिकारे को एवं स्वात्त्वा है, इस्ता वही अव्यान है कि दुन अस्त को पान प्राप्त और कार्य अव्योक्षित्रा कोंद्र से । वही दुन प्राप्त अधिकार और न दून सुक्ष है क स्वाने । अधिकारों को दुक वहा है, का वर्त और अविदे अनुकूत है । दुन को श्रीव्या कर खे, कार्य स्वायक कार कार्य प्राप्त । वही दुन देशा नहीं करोंने से दुने स्वा दूकरे कार्य, कुरुंकर कार्यका सम्बद्धान करते दुन अवनेको कुरुंक नीतिकृत कार्यका सम्बद्धान करते दुन अवनेको कुरुंक, कुरुंकर, कुरुंकर और कुरुंक्यांकारी वस बद्धाना के कुरुंकर कार्य कार्यका क्षेत्रकारकारों इस कुरुंक । '

इसके बाद जेवावारी कहा— उसक् ! शीवृत्या और पीनाओं कहे बृद्धितान, पेनाओं, मिलेनिल, अवस्थि और कृत्या है। उन्होंने कृत्यों किताओं ही बाद कही है, हुए उसे बाद को और मोहकार अधिकार में है, उससे कृत्यां कुछ को कार नहीं कर सकेता; में को संस्थानों इस्तुओंचे प्रति कै।-विशेषकार कथा कृत्योंके ही मोटों अधिने ! हुए असकी बाद और पूर्व कथा कन्यू-कान्योंके प्राचीयों सेवाटों कर कर्य ! यह बाद निक्रण करते कि किस वक्षयें जीवृत्या और अपूँच होने, उसे मोदों भी जीत नहीं संस्थान ! भी दूध अपूर्व विशेषकार बाद नहीं करते ही संस्थान ! भी दूध अपूर्व विशेषकार बाद नहीं करते हो सीवाटों को कुछ कहा है हार सर्वाच ! प्रसुख्यांकी अधुनके विश्वास के कुछ कहा है, वाहरूमें का ठातों भी सकतर है, तक केम्बीनम्ह संकृत्य हो देवलाओंके दिन्ने भी दू-एस है। किंदु फान्यू ! तुम्हने सुरा और हित्रकों कर बढ़ेकों करत कर है ? कम्बू, दूकों हम बाते सम्बद्धकर कर से करि: अब को तुम्हरी हमा है, का करों। मैं तुमरे और अधिक क्रम नहीं करक प्राप्त (\*

इसी बीक्रमें विद्रार्थी को बोक्त को—कुमैनर । हुन्हारे रिके को नुझे कोई किया नहीं है, नुझे को सुन्हारे इन पुड़े मा-कारकी जोर रेक्क्स ही कोन्स होता है, को सुन्हारे-कैंक् पुल्ला पुल्लों संस्कृतने होनेके एक किर कारने कर स्वारत अस्तुत्व होनार कारोगे।' अपने एकः कृत्यु कहते सने— दुर्गोशन । स्तृत्वक कृत्यने जे का कहे है, जा कर उक्तर करवान करनेशारी है। कुर उसस्य कान से और अधेके अनुसर आकार करो। देखें, कृत्यकर्ण लोक्नकी स्वान्तारों हम तम एजाओं । शब्दे अधीर का काने और कह कान करो, किससे एक कृतिहित्ये का काने और कह कान करो, किससे एक क्यार्किको कृत्यन है। मेरी सम्बन्धे से वह सर्वक करवेश के क्षावन है, तुन होरे हम्बद्धे का काने हो। देखी, लोक्नक सर्वको किसे अर्थन कर से है और सुक्तो किससे का कह से हैं। इस सरक करि तुन हम्बद्धे करा की समोगे से हमारा कान किसी समान करिया करोगा।

# हुवींधन और श्रीकृष्णका विवाद, दुवींधनका सभा-त्याग, पृतराष्ट्रका गान्धारीको बुलाना और उसका दुवींधनको समझाना

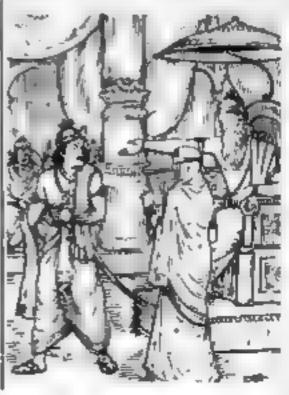
र्वतन्त्रकार्य कार्ते है—एक्स् ! ये व्यक्ति कर्षे सुवक्त | राम इनोक्नो अंक्रमाने यहा, 'नेक्स १ अवन्ते अर्था स्तर क्रीय-प्राम्बाधार केरणा पार्विने । साथ क्री प्राम्बानेके हेक्की पूर्व देवर प्रत्यो-संबंध पाने स्वाने हुए निर्माणकार्थ मुहे ही क्षेत्री कहत हो है। को उस आप कार्यकारक विचार mein ift geder fiebt fleer finet meb fi 2 ft freer ft आपं, विदासी, विदासी, सामानंती और सामग्री अवेदने मेरे ही करत सारे क्षेत्र तक ये हैं। की यो क्षत्र विकासक देख रिकार, पुत्रो अचना कोई भी को-से-कक्षा का कोई-से-कोटा बेप दिवासी नहीं देता। पान्यक्रमेग अपने ही छीपाने स्टब्स क्रेन्स्नेने अनुस हुए थे; असने काक प्रावृत्तिने अनका राज्य क्रीत रित्या, इसीयो क्यों करने साथ पंछा । स्वायको, इसमें नेपा करा मन्ताय का. जो बनारे साथ बैर सनकर के विकेश कर के है ? इस करते हैं पाकारेंने इक्या सरका करतेओं सन्द नहीं है, जिस भी मने काराओं सकत से हमारे और काओबा-सा कर्मा करों कर से हैं ? इस उसी प्रकार क्षणीको देशका या अवस्थेतीको श्रीतर कारोको सुरकार हरनेवाले भारे हैं। इस प्रकार से इन इनके सामने भी नहीं प्रायः समाने । पुरुषः । इसे यो देशा बहेई को वहीन विद्यापी नहीं हेता, जो युक्र्ये हमें जीवनेक्ट केल्या रकता हो । यीका, होग, क्य और करांको से देखालोग भी पहारे नहीं बीत समते; प्रकारियों से पार ही रूप है ? फिर स्वार्गका चलर करते हुए इस रहि चुन्नों काय ही वह को हो सर्व कार करेले। यह से व्यक्तियोग्य अवन वर्ग है:

इस जावार बाँर को पुजारे बीरायोंक कहा हुई से बाँग् प्रधानाओं वहीं होगा; क्योंकि कांग करना ही पुनवका वर्ग है। ऐसा कार्म पूर् बनुष्य काई जा अर्थ हो हो जान, मितु करे हुस्तक जी बाँग्ये । पुन-रंगा वीर पुरत्र से काँग्राक्षेत्र रिम्में केशार का्यानोंको क्याकर काम है और विश्वीकों से कुछ नहीं सम्बद्धाः । को हार्यक्या कर्ग है और नहीं मेरा कर है। विश्वास गुले कोई से की सम्बद्धाः मेरी पानवावासाये अहान क क्यांके कार्य है का्याकोंको एक्य निम्म क्या था। अस कु अर्थ किर नहीं किश स्थारतः। केशार है कांग्या में वीर्थित है, सम्बद्धा से का्याकोंको इससे पुन्ति की स्थारत है।

वृत्तीयनको ये वाले सुनकर श्रीकृष्णको गर्नेरो पद्म गर्ने । वित्र अवृति कुछ के विकारकार कहा — 'तुर्वेशन । वर्ते तुर्वे औरकृष्णको प्रका है से कुछ कि अपने व्यक्तिके स्तित वैर्थ करण करें । तुर्वे अवस्थ को विरोधी और तुक्ती पद करणा पूर्व होत्यें । वर यह रको, जहर नारी कर-संहार होता । और दूध को हेल्स वस्तों हे कि वास्त्रकोंके साथ वेरा कोई कुर्वेष्णार भी हुस्स, के इस विकारों वह से एका मौप अवस्था है से है दिखार करें । देखे, पाल्कोंके बैंग्यरों जल-पुनका तुमरे और कुन्नोंके हैं से दूआ सेरपंत्रकी सोटी सरका की की। बुद्धा से पहें अवस्थितियों पुद्धिको प्रकु करनेकाय है है । यो कुट पुरुष पुस्तों प्रकृत होते हैं, उनमें बरका और हिस्सों है पृद्धि होती है। और तुमने झैपड़ीको क्रमाने सुराकर पुरस्पसूचल केले-केले अपूर्वता करे कहे थे, रूपनी पाणीके साथ देशे कुमार क्या कोई पी बार प्रवास है ? अपने प्रायमार्थ, अलोगून और इलीव कर्मका कावाज करनेकले प्रकृतिके प्रतय कीन काव कारणी देख पूर्णकार कर सकता है ? का समय कर्ज, कुराव्यान और तुमने कुर और नीव पुरुषेक समान अनेको बहु सब्द को थे। तुन्ने सरकाराने साम्ब प्रवासीको काकी बताबे संदेत कुंब करनेवा वह कर्ष का दिव था। यह संबंध पायक्रीओ प्यूप-मा हरूर अन्ये पायके शक्ति किने-किने कुलकार नगरीले कुलन किलाह पह का है पूर्ण दिला निय हेरे आदि अनेको उसकीले हुन कामकेको मार्गनक का काले भी हो। वर्गन तुन्हारा कोई व्यक्ति काला नहीं हुआ। इस उन्हार पान्कानेके उसे तुन्हारी सर्वत क्लेडी कृष्टि और कार्यान्य आयरण का है। बिर यह बैजो पहा सा समान है कि महारात कामानेचे और मुख्या कोई काराज नहीं है। यदि तुस पायकोको उत्तक पैतृत कान नहीं होने हो करावर् ! का रही, हुई देशकी ५६ होका और उनके क्रमते मस्त्रारं यह देश पहेच्छ । हुन्ने चुनीतः पुज्येके प्रन्तर प्राथमिक प्राप्त अनेको न परनेकोच्य प्राप्त विस्ते हैं और आप के तुमारे सार्थ करन है विकास दे की है। तुमारे याता, दिना, विनान्त्व, जान्याचे और विनानी कार-कार सह यों है कि इस प्रतिब कर तो; जिर की इस स्वीच करनेको हैपार नहीं हो । अधने इस दिरिनियोगी चालको न व्यवका हुए कार्य तुक्त नहीं या सकते । हुन को साम करक पहले हैं, पह से अवने और अन्यवस्था है बनस है।

निसं समय प्रस्तार कृत्या यह सम वाले वह में में, उस समय बीवहीने कृत्यावन कृतिनको इस प्रकार काले रागा, 'राजर् । आग परि अपनी इक्कारे प्रमानको साथ श्रीय नहीं कारेंगे से आकृत होता है में बीवर, होना और इक्करे विकासी आपनी, मुझे और कार्यको व्योधका प्रमानकी कृत्यो स्थित है। ' सर्वाकी वह बात सुरकार कृतिनका होना और भी वह गया और वह सर्वाकी राह्य कृत्याकर मानत हुआ विकुर, कृत्या, बाहीबा, कृत, कोर्यक्ष, बीवर, होना और हीक्या—इन सर्वाका विकास कर वहारि प्रकारको क्षेत्र ही गया । उसे नाते देख कर्यक थई, क्या और स्था स्थापको क्षेत्र की साथ कोड़कर कर दिने । स्था विकास की स्थान है स्था कोष अस्तान तेला है। इसे सानका हुआ अधिकार है स्था कोष और स्थानने हसे क्या राज है। सीकृत्य । मैं से साथका है हस समित में तक कुर्वेजनका अनुसरम कर में 🖣 🖰

भीकारी ने करे सुरक्तर संक्रमाने कहा-- 'सौरनोंने को क्रकेट्ट है, का प्रश्नेकी का बाई पूर्त है कि से ऐक्कि कहाँ ज्ञान कृतिकाको करका, केन वर्षि कर हैने । इस विश्ववर्षे सुक्रे यो पता रच्याच्या देशको पान पहले है, यह में आसी साथ-एक को का है। अनको की का अनुबात और व्यक्तिर कर को से क्रीकिनेना। देशिने, नोक्टन उनकेनक पूर्व केल कहा एक्करों और कुर्दिद वा। उसने विकास जीविक पाने प्रमाद राज्य प्रोप विकास सा । अपने परे क्रजोरे क्रम क्रेम पहा। सर: सामचेन पी क्रोंबन, कर्ग, इन्द्रार और शुक्रमा-इन मारोको क्षेत्रकर पान्कर्मको सीव क्रीमचे । कुरमकी राहाके सिन्ने एक पूजाको, प्राप्तकी राज्ये किमे कुरमाने, केमची राज्ये किमे सामाने और अपने काचे देले कार्ड पूर्णको क्रम देख प्राहिते। क्रातिके सम्मानेत्र की कृतिकारों केंद्र वारके पानाकीते क्षांच कर स्वेतिके । कृतके अल्पके कारण इन एक खर्मिकोच्छा बारा के प्राप्तिक है



नामारीको समाये हे अन्ते। इसमें कारहरे बहा, 'कम्बरी । तुश्राध मह बहु पूर्व पेरी बात नहीं करता। हारने शांतिक पुरुषोधे समान राज पर्याक क्षेत्र के है। देखो, ब्ह विरिक्तिको बारा न अवकार हरू समय अपने पानी और स्व स्विकारिक स्वीत संपन्नते करण पन्न है।"

प्रतिको पर कार सम्बद्धा बार्माकर अन्वतीने बहा--- समय ! आर पुरुषे चौद्रमें फैसे हुए हैं, इसरियों इस विकास के उत्प 🛊 अभिन्त दोनी है। साथ पह जनसार भी कि हरीकर पह पायों है, ज्लोबारे सुद्धिके बीचे बालों से हैं। सुरोकाओं से कान, क्रोब और स्वेकने अपने जन्तने सेता रहा है। अब क्षाच करतात् भी को पुरा कार्यके पात्री पुरा समेत्रे । अवको पुरा मूर्त, पुरस्त, सुरको और सोची पुरस्के किस कर प्रोचे-सम्बंध राज्यती पान्योर शैचारा है; आर्थ्य शाम क कार भीन की है। जान करने करने के कर कर की है, कार्या मीवा क्यें करते हैं ? कर कह कार्यकेंद्र खटकर से क्षितिय आरक्षी हैंसी करेंगे । देखिले, बडी उक्क का नेक्के के कियों। का सबसी से से सोई भी स्ट्रीक्स कालोंके एक्क प्रयोग पर्ने क्रोम ?

इसके बाद राज्य काराबु और वान्धारीके बाहरेसे किएकी पूर्वीयको किर संभावे किया स्तरे। एवंपन्ती असि मोनने सार हे रहे थे और वह सर्वेद समान कुरवाने हो मा पा था। इस सम्ब क्षत्र क्षत्र करते है--- क्षत्र कुरोके रिने बिर एक्सपाने का नवा। तब मुख्यको प्रवीकाको विकास साथ परनेथे हैंनो का स्वार पहर, 'केट हुनोधन । जेरी च्या काम सुन्ते । इसमे सुन्तान और सुन्तारी क्षेत्रसम्बद्ध हिंत होना तथा परिचली भी पूर्व हुए। विकेश र कुमते कुनारे विचा, जीवनकी, डोव्यावार्ग, स्वयादार्थ और विकृत्यीये को बाज कही है, उसे तुम स्वीवदार कर रहे । पति हुन पांचलीरे स्थित कर स्वेते के, कर करें, असे विकास चीनाची, विराजीची, मेरी और ब्रेज्यानं असे अपने वितिभिन्नेकी तत्कारे बाद कड़ी रोज्य क्षेत्री । केंब्र 🕽 राज्यको पाना, क्याना और जेगन्य अपने काल्ये कर वहीं है। जे पुरूष विजेतीय होना है, नहीं राज्यकों दक्ष कर सकता है।

काम और सोध से ज्यूजाने अर्थते जुल कर के हैं। हाँ, हर देने प्राप्तिको जीवका हो एक सारी पृथ्विको नीत सकता है। ऐसी । किस प्रकार जाना कोई नार्गहिने गुर्स सार्ध्यको का अन्ते हैं, ज्यो प्रकार की इन्तियोको काल्ये र एका सक के वे क्यूक्तक कर करवेंद्र रियो भी क्यांत है। को पुरुष पहले अपने मनको चीत लेका है, जरकी अपने वर्तिको और प्रकारिको कोरानेकी प्रकार की कार्य नहीं जाती। इस प्रकार क्षीकर्त विकास संकर्त है, परिवर्तपर विकास अधिकार है, अपराधिकोच्छे को कहा है समाजा है और को प्राप करण लेख-क्याच्या करता है, अस्ते पात विराधारकात मध्यो सरी रहती है। कर । चीन्पनी और होप्यानार्थजीने को ५६० बद्धा है, 🗪 बीच हो है। कारायांने, श्रीकृष्ण और अर्थालके बोह्रे नहीं और कारत । इस्तियों पूर्व सीकृत्यकों साथ स्थे । यदि है अस्य कोने को कोनों की बक्षोंका किस क्षेत्रा ( बैका ) यस करनेने कारणाव को है। आने को और अर्थ से की है, ने क्या कहाँने होता ? युक्तों विकास किए ही स्थानी — हेता भी मही बढ़ा का सबता; इस्तीओ पुत्र पुढ़ारें पर पत राजाओं । यदि तुम अवने अभिन्योतिक राज्य मोरावा पातते हो से व्यवस्था के व्यवस्थित कर है, का उन्हें है है। क्रमानोंको सो तेना वर्गतक बहुने बहुन एका गया, बहु भी क्या अन्यत्म पुरुष है । अन्य स्टिम करके तुम इसका कर्मन अर में । पूर्व को जनकर्मका जान भी इक्टबर करने हो, देशा कारोबी पुष्परी करित नहीं है और वे कर्न तक कुछारत औ देख नहीं कर समेले । तुन्हारा से ऐशा विचार है कि चीना, होन और इंग्न आदि नहराबी अपनी पूरी सरितने मेरी ओरहे पुद्र करेंगे— यह भी सामन नहीं है; क्लेंबिक इन आस्क्रोबड़ी इंदिने से तुमारा और पाणकोचा समान स्थान है। इसकिये इनके हैंनों दून केनोंका राज्य और तेम भी समून ही है तका वर्गको के उसके अधिक जानते हैं । इस युव्यक्त कह कानेके कारण में अपने काम जले ही स्थान है, सिंह राजा मुनिहिएकी कोर कभी देवी रही नहीं करेंगे। तात । शंकारवें लोग करनेते विक्रीको सम्बंधि नहीं विक्रमी । असः एव लोग होड से और प्रकारिके समित कर को ।'

## दुर्वोद्यनकी कुमञ्जणा, भगवान्का विश्वरूपदर्शन और कौरवसभासे प्रस्थान

माननीयर हमोंकाने कुछ भी कान नहीं दिया और का को कोमने सभाको कोकान अपने सुमुद्धि गरिवलेके पार पार

मैतन्त्रकरणे कहते है—नामके कहे हुए इन मेरिशुक्त | करोने नितकार कह समझ की कि 'ऐको, यह कृष्ण ग्रक्त कृतका और चीनके साथ जिल्हार हुने केंद्र करना बहुता है: सी पहले हमीरबेन इसे बसाद बैद बर रहे। समानो बैद आवा । किर हुनोंकर, कर्म, अनुनि और दुकासर—हुन हुआ सुनकर प्राथमीका साथ अध्या है। यह आवाग



और में निकर्तन्त्रनिष्ठ हें कारेने।'

स्तावधि इसारेसे से कुलांधि प्रच्या बात चान तेले से : वे तुरंत ही स्वया बाय ताइ गये और स्वयाने बाहर आका इतावशीर केले, 'सांस ही सेना स्वयाने और स्वयान में इसीर सुविधारको श्रीकृत्याचे कुला है, तुम सर्थ स्वया सारण कर सेनाओं श्रीकृत्याची रितिले क्षत्री करते सम्माध्याको हुत्यार आ साओं।' बित सिंह कीरे गुजारी काल है, 'स्त्री ज्ञार समाने जातार अनुने बीकृत्याने स्वया वह सुविधार कहा सिया। किर से मुस्त्याचार एका कृत्या का सुविधार कहा सिया। किर से मुस्त्याचार एका कृत्या कीर विदारों कहारे साने, 'सामुक्तांची हुहिले हुन्यों केट बात्या धर्म, अर्थ और बात्या स्वया विकास है; बित्रु के मूर्य कहा सामेश्वर विकास कर से हैं। इसका वह मनोप्त विकास पूर्ण नहीं स्वयान पूर्ण नहीं से स्वयान से बात्या कीर है, सेने कोई कारक सराती हो अवयान कारोंने सरोहत कहें।'

साजनिया या वाच सुरवार सेनंदर्श विद्युत्ताने कृत्यकृते बाह्य—'रासन् । मालून होता है अवकोर साथी पुलेखों मीतने केर रक्षा है: इसीहों से न करनेकोना और अन्यवस्थाने आहि करानेकाल काम करनेका कामर करते हुए हैं। देखिये मं, में जोग आरसमें निरामार कामर इस कामनावन मीतृत्वाला निरामार करते हुए मैं मा कामनेका विकार कर रहे हैं। किंतु में नहीं कामने कि सामके कार काने ही सैसे नरंगे यह हो जाने हैं, उसी वास सीवृत्यकों कार ग्रोमने है इस्का क्षेत्र कि राज्य (

इसके बाद क्षेत्रकार कृत्यक्ते कहा—'रासन् । वहि वे क्षेत्रको भरकार पुत्रे बैंद धारनेका शाक्षा कर रहे हैं से अस् क्षा अवहर है देखिये; फिर देखें के पुत्रे बैंद धारते हैं का मैं इसे बॉग सेवा है। अवहर, चरि में इसी समय इसे और इसके अनुवारिकोको वरिकार क्षाक्षिको सींग हैं तो मेरा का प्रतिक अवहर केर है, हुकेंकनकी कीरो इका है, का केस कर देखे।'

इसकर महाराज कुछरहते निवृत्तो महा---'तुम सील ही वार्थ क्षेत्रिकारों से अक्षते; प्राच्या है, इस बार में अस्ते अनुव्यक्तियोगरीक जो दोन्ड राकेनर सर स्क्री।' विद्रासी इस्तेंकरकी इच्छा न हेर्नेगर भी उसे जिए समाने से आने । उस करण करोड भाई और एकालेज भी करोड़ कथ है करे हुए ते। का एका कुरसूने जाने बढ़ा, 'क्यों रे कुटिल पूर्वेकर ) यू अन्ये कर्ष स्वतिनोधे साथ विस्तार प्रकार क्रमानं अर्थन है साम् हे एवा है ? बाद रहा, ह्या-वैदा क्र और कुल्कांकर पूजा को कुछ प्रतरेका विचार करेगा, का कभी पूरा नहीं होगा: समने सन्दर्भ हेरी निन्हा करेंगे ह कारे हैं व अपने करी साधिकोंने निरम्बर हुए जीवृत्तकारे बैद करण पहला है ? जो इन्हें से इच्छे सहित सब देखत की अपने कार्यों की कर सकते ( हेंच का प्रशासन से देख है, जैसे कोई सारक क्यानको प्रस्तुन सह । मानुब हेता है जुड़े क्रीनेज़कोर अध्यक्तक कुछ भी पता नहीं है। अरे ( की करूबी इसमें नहीं करता का समया और पृथ्वीको रितार को काम के काम, की है डीक्सको कोई करते औं बीच सबस्य (

इसके जाए जिल्लाको केले—पूर्वोज्ञर । तुम वेरी वात सुने । वेको, सीकृत्वको केल करनेका विकार नरकासूरने की किला का; जिल्ला त्य सुन्योको साथ विकास भी वह देखा नहीं कर सकत । जिल तुम इन्हें अपने कर-कृतेक प्रकानिक नकत्वको को काले हो ? इन्होंने कार्य्यकायों है कृतना और कार्यक्रको का साथ का, गोवर्चन फर्ताको हाकपर उठा विच्या का तथा सिर्मा है। गोवर्चन फर्माए, केली और केलको की कृतने निरम हैंका था। इनके निरम ने कार्यक्रक, क्याकाय, किल्लाक, कार्यासुर तथा और की अनेको राज्यकोको नीका विच्या कुके हैं। साक्ष्यत् क्यान, अपि और इन्हा की इनसे हार कार्यकोई स्थानो केलोको प्रकार कुके हैं। वे स्वपूर्ण प्रवृत्तिकोक जेरक हैं, जिल्ला कर्य किस्सिकी की जेरकारो कोई कार्य नहीं करते । ये ही स्थान पुरमाओके कारण है। ये को कुछ करना कई की बाल अनाकार कर सकते हैं। तुम्बें इनके प्रधानकार कर की है। देखें, बीटे हुए इनका तिरकार करनेका सकत करोगे से कड़ ककर तुम्बत पाथ-निवान किट काया, जैसे सांतमें निवास परंचा का है कास है।

विश्वपंतिक व्यास्त्य स्टब्स्स होनेवर करवार कुन्यने सहर--'हुस्पेयन । हुए को ज्यारनकार का सन्यक्ते हो कि वै सन्देशन है और मुझे कुन्यत्य केंद्र करना काले हो, जो कर रखे, समझ पावान और वृत्ति एका अन्यक्तंत्रीय काल भी वहाँ है। वे ही वहाँ, आदित, का, वहां और करवा महर्तित्य की वहां पीयह है। देश कदातर क्रमुक्त श्रीकृत्याने अञ्चल किया। का, हुंसा हो प्रत्ये तम अपूर्णने विकाल-सी वार्तिकाले अञ्चलकार सब देशने दिखानों हो



स्तो। इनके स्टब्स्येसने स्वार, बस्र:स्वरूने स्त, पुज्जनोने स्वेक्स्सर और पुराने स्वित्तेस थे। अस्टिल, स्वच्य, क्यू, असिनीकृत्वर, इनके स्वीत स्वस्ट्राय, व्यक्तेस क्या कर, गत्सर्व और स्वास—ने स्वय उनके स्वरूपी अधित कान पहते थे। उनकी दोनों पुजानों से स्वयंत्र और स्टब्स कारण कार्य स्वोर थे। पीप, गुविद्या और मुक्तिनां स्वयंत्र प्रकृत्यनमें थे तथा प्रमुशींद्र सम्बद्ध और पृत्तिकांको स्वयंत्र अस-स्वयं रिक्ट उनके अस्तो होना स्ते थे। उस समय सीकृत्यके सनेक्ट पुराई दिवानी देवी थीं। उसने वे प्रकृ, बाद, गया, वर्षित् काई कहा, इस और नावक काइन दिन्ने हुए वे। उनके नेत्र, अधिका और कार्यरजीये कही चीचन जानकी सनते तथा वेपकृत्योंको कृतेकी-को विकले निकार नहीं थीं।

क्षीकृतको इस वर्गकर उन्तरको देशका सम राजामीने म्बनीत होचार के बैट्ट रिम्बे । बेजार होजावार्य, प्रीमा, निकृत, अञ्चल और चालिकेट ही अल्पा दर्शन घर समे। क्वोंकि बनवानी को बिक्त दक्षि है है है है। सम्बन्धनानी क्यान्त्र म् अस्त्र एक रेसका देसकोनी क्ट्रीक्टोक्ट कुछ होने तथा क्या कावकारो पूर्णकी हवी का वर्त । का राज कृतको कहा, 'कारराजा । सारे संस्थानेत विकास अस्य के हैं, अस्त अस्य हमार क्रमा बोरियरे । रेरी प्रार्थक है कि इस स्टब्स बुक्ते किया के आह हो: में केवल साम्बन्धि क्रांच करण प्रदात है, जिर किसी कुरोबों देखनेबों नेरी इका नहीं है।' इसकर नंगमार, क्रीकृत्यने सक्त, 'कुम्मापा क्रुप्ति अक्रूप्रमानो से देव हो कार्य ।" क्या सम्बन्धे वेदे हुए एका और महरियोंने ऐका कि नक्षाम क्षारक्षेत्रे के अपने हैं से उन्हें बड़ा है आक्षर हाता और वे सीक्ष्मकार्य सुनि स्टब्टे समें। इस समय पूजी क्रावनाने तनी, प्रयुक्ते क्रान्यती व्या गयी और सब धना बीब्रो-में कु रहे। जिस जनसङ्गे का सरकाको स्था क्षांत्रकी क्रिका, अस्तुका अर्थेत क्षित-निर्मित जानाको सनेद रिवर्त । कुरवेद पद्मान् ये व्यक्तियोगे आहार से सामान्ति और कुरावादीका क्रम प्रकृते सम्बन्धानको करा दिने । इनके स्थानी है जन्मी, बारे में जनमंत्र है गरे।

व्यक्तकार्ध कर्ष देश प्रवासिक स्मीत स्था वीरव मी असे केंद्र-मीड़े कार्य रहते। विद्यु सीकृत्यने उन स्थानीयी और पुत्र भी कार्य भूति विद्या। इस्तेहीने दास्का उनका विद्या एवा स्थानकर से आसा। भगवान् रक्षण स्थान हुए। इस्ते स्थान क्षा थे जाने समे से ज्यानाम कृत्याने व्यक्त, 'अन्तर्व ! पुत्रोपत नेता कर विस्तान कार्य करता है—यह अन्तर्व प्रदान की वेक विच्या। मैं से कक्षणा है कि विद्या प्रवास की करता है। जिन्दु अस मेरी दशा देशकार जान मुझपर संबोध न करें।'

हान्यर भग्नान्ध् कृष्याने कता बृतसह, होयाबार्थ, घीया, रिस्तुर, कृष्यावार्थ और बाद्धीयाने बादा—'इस प्राप्य वर्तराजेकी प्राप्यते को कुछ हुआ है, वह आपने आपन् देश रिप्ता कथा वह बात भी आप समके सामनेत्रीकी है कि मरावृद्धि दूर्योजन किस प्रकार पुनवाकर राजारे काण नवा वा। पद्धारान ध्रुताहु भी इस विकासे अपनेको असमर्थ काण पुरे हैं। कार कार में काम समाने आक्षा व्यक्ता है और राजा पूर्विद्धिरोक पास बारता है।" इस प्रकार काल नेकार का

व्यवक्त् रक्षणे बहुका करने हमें के श्रीष्म, होगा, कृप, निहुर, कृतकु, व्यक्तिक, अवस्थान, किवार्ग और मुकुत् आदि व्योगकीर कुक हा उनके पीके गये। हमने वाद का सम्बद्धे हेशके-देशको श्रयकान् अवनी बुआ कुन्तीने विसाने गये।

#### कुन्तीका विदुल्तकी कथा सुनाकर पाण्डवीके लिये संदेश देना तथा श्रीकृष्णका उससे विदा होकर पाण्डवीके पास जाना

वैद्यानकार्य कार्य है—राज्य । जनकार् कृत्योक वर बावार अस्तार करनावर्ग विका क्या धीरकोशी अभागे के कृता हुआ जा, का पंकेषये सूच विचा असेरे क्या, कृताओं । की और व्यक्ति वास-नवाकी वृत्रिकोश असेको वान्ये केरा कार्य कहीं; कियू कृतिकार्य विकास कार्य की विचा । कृतिकार्य अनुवानी का क्या वीरोके विचार कार्य विशा क्या है। अस में कृत्यो अनुवा व्यक्ता है, क्योंकि कृति क्या की है कार्यकोश वास कार्य है। क्याओं, सुवादी ओसी में वार्यकोशी क्या कार्य है।

क्राप्ति क्या-केराय नेचे ओरले तुम रामा मुनिश्चितते कारना कि एक्जिया पालन कारना स्थापन को है। जनकी बढ़ी प्रति के की है। से बात का इसे क्या कर परेना ( केस ) श्रामित्येको अस्त्रानि स्थाने अस्त्री भूताओं स्थान विका है, राय: को अपने जन्महरूले ही सामीतिका बारणे करिये ( क्षेत्राको कुमेरने राजा क्षुकुकाले का सारी कुमी है 🖒 हो, पांतु मुख्युन्दरे इसे स्थितार नहीं किया । जब अस्ते अन्ते बाकुरस्के हते जात किया, बची कुळवर्गेक कावन केवल साने इतका बक्तका हासन के विकार ककते सुरक्षित कुला प्रथम को कुछ कर्न करती है, जानक क्यूबर्गक करवाते भिल्ला है। यदि राजा वर्णका अलवन्तर कारत है से देवलोका प्राप्त करता है और अवर्थ करता है से नरकमें पहला है। की वह द्रव्यमेरिका भी डीक-डीक प्रयोग करें के कारो चारी वर्णीके और अवर्ष करनेते सककर वर्षकर्णने अवस होते हैं। बाएरवर्षे सत्प्रपा, केता, हाप्त और करिय—इन कार्रे क्लेक्स मारण राजा है है। इस समय अपनी क्षतिसे दून दिन संतोषको लिये क्षेत्र हो, उसे तो लुक्करे किया करवाने, की अवनः तुन्तारे विकासने भी कभी नहीं वर्षा । वे सर्वदा तुन्तारे बा, दान, तप, सोर्थ, प्रदा, संतानोत्पति, बाला, सत और मोक्की हो कापना करती गृहे हैं। वर्णना पुरुषके कहिने

विक वक् राम्य प्रमु करके विस्तीयने क्यारे, विस्तीयने करको और किसीयने नियुध्ययको अपने अधीन करें। स्वयूध्य विस्तानुनिते से, इतिय प्रमाणसम्म को वैस्य समस्या को और कुद इन सकती देखा करें। दुन्हारे लिये विश्वापृति निविद्ध है और कृषि करका में जीवार नहीं है। तुम कृषिय है, प्रमाणी क्यारे क्यारेकारे हैं; साबूब्यर ही तुम्हारी आयोधिकारका सम्बन्ध है। व्याप्ताके । तुष्पी विक्त वैश्वास अंक्याने कृष्टारीय इस्त विकाद है, तुर्च प्रमूप, कृष, क्या मा निति आदि विक्री की क्यायते क्याया उद्धार करणा व्यक्ति । इससे विकाद हुन्हायते क्या क्या होती हैं। अतः हुन्हायत्वीय कृष्ट्रार तुम बद्ध करें।

कुमा ! इस अध्यूषी में तुन्हें एक अधीन इतिहास सुनाती 🛊 : उसमें निकृत्य और असे पुरस्का संस्था है । निकृत्य क्षारणी च्या वर्डी क्लीक्रों, तैन समानक्ली, सुलीवा, क्षेत्रमञ्ज्ञीतम् अर्थेर श्रीचंद्रदिनेत्रे की । राजक्षमध्यानीत्रे अवसी अध्यति क्यांके की और क्रमानार भी को अच्छा जान का। एक बार कान्य औरत कु सिम्बुरायसे बरावा होका बड़ी दीन स्तामें पद्ध पुत्रस का । दल समय काने जो फरकारो हुए पहल, "और अरोह्यकर्ती ! सु मेरा पूत्र नहीं है और न हमें अपने वितासे वीर्वते है क्य किया है। इ तो प्रतुओवत आनन्द बदानेवाला है नक्कने कर की अक्टबिक्कन वहीं है इसरिक्ये क्रतियोगें से तु निम्म ही नहीं का सकता । तेरे अववन और हुद्धि आदि भी न्युलकोके-में हैं। जरे । अन्य एके वृ निएक के भवा। यदि ह बहुनाम प्राप्ता 🕯 से पुजुरत भार उठा । तु अपने असमाध्य निराहर न कर और अपने पनको साम्रा करके पहलो जाग देश करना ( एका हो का। हर स्थाबर प्रदेश पर या। इस प्रकार के हु अपना नाम क्लेकर इत्हारोको अपनित्त कर रहा है। इससे मेरे सहदोका नो कोच्य बद रहा है। देखा, क्रम



करेकी केवा का कार हो के सामन की होइक करेके : मेरे बार वित्त्रोक क्षेत्रर आवश्याचे प्रकार रहता है, मेरे क्षे ह भी राजपृथिये निर्मात विश्वर । प्रात समान हो ६ प्रात प्रमान थक है, जैसे क्येंड किसरविका पास कारा पूर्व के 1 करा, ए कार है या: प्राप्तियों हर काकर यह का का व रह कर. कर और बेदान प्रयान, अवस्थार्थ और सेव आसीवा आवस्था क हैं । इन्द्र ही सर्वकेंद्र है । अहीका कारण लेका प्रकृते कारणे कुलकर पर्याप कर । और पूरूप राजपूर्णियों काकर इस सूरे दिवस मानवोधित परावान विकासर अपने वर्गते अवस क्षेत्र है। में। अपनी निष्य नहीं करता। निकृत् पुरूत करा किसे का व तिले, इस्के दिन्दे विच्या नहीं प्रशंत । यह से निर्पार पुरवार्थसाम सर्व पास सुता है। को अन्ते देखे पन्ही भी हुन्स नहीं होती। है के से अनन प्रताब नहत्त्वर कर Print कर, नहीं से जीनगरिको प्राप्त के ( का प्रकार करोबो पीठ विकासत किसरिये की पत्र है ? अने नवंतक ! का तरह से मेरे क्य-पूर्व आहे कर्ज और सुरुक्त—क्षणी विश्ववि मिल गर्पे हैं तथा की चोगका सतवन को तथा था, बह भी नक के गया है; बिज सु विकासियों की पता है ?

"दान, तम, स्तव, विका और वस्तीव्यका तस्यू वस्त्रेयर विस सुक्का पुग्य जी माना कता, वह से अपनी पाताकी विद्या है है। स्वया वर्द से वह है के अपनी विद्या, तन, देवर्ष और परावस्त्रों दूसरे लोगोंको देन कर देवा है। कुछै निक्तवृत्तिकी और नहीं तावना व्यक्ति । वह से अवदेशि- व्यक्ति, दुःस्वाधिनो अर्थर यहकारिक स्वाधित है। अर्थ रख्य ! नातृत होता है, पुरस्ताने मेरे व्यक्तिपानो है क्या स्था है। हुतने करा को स्वधितान, उत्यह का पुरसार्थ नहीं है। हुत्रो देखकार कांद्रशोधी ही सुक्त होता है। योई की व्यक्ति ऐसे पुरस्ताने करात व करे। को अपने हक्ताति सोईक क्यान करते राज्य और कसदिकी स्थान करात है और प्रदूर्णोक स्थाने कहा खाता है, सहै पुरस्त है। को 'कुकर' व्यक्ता कर्म ही है। यह सुरस्ति, तेमसी, कर्म और सिक्ट क्यान करवाने करनेक्या प्रधा कीशाहित के साम है, हो को करात कराने कराने स्थानक से होती है। विका क्यार क्या क्रानिकोकों क्षीतिका सेक्ट क्यांन है, उसी अवर क्यांन क्रानिकोकों क्षीतिका सेक्ट क्यांन है, उसी

"का, किसी कांत्रीय विकास वास्तर या और प्रकृति कार अन्यव्यास्य आनेवी अतिहा कर । ऋ अवर-अवर से 🕯 है नहीं। केंद्र 1 केंद्र पान भी सहाय है, जिल्ह पूछे पहाने देख कोई पूज दिकारी की देत ! ह संस्थाने पर अस साथे ज़रूरे क्याचे क्राचिक बार ( का द कारक बा, का समय एक पुर-वरिकाले कालेको सुद्दिरान् अञ्चलदे सुहे वेशका प्रकृत का कि 'का पूर्व कर कही पारी विपर्तिये व्यक्तर सेंगर काली करेगर ।' का मानको बाद मानके मुझे गेरी विकालको पूरी अवस्ता है, इसरेले में सुक्तो कहा रही है और दिल भी बरावर प्रवृत्ती रहेते । प्रभार जुनिवा कारत है कि सही 'आम केवन नहीं है, न सम्बंध तियों ही बोर्ड प्रकार है'--हेको विकास रहती है, उसमें बहनतर हती पढेड़ों वहत नहीं हो समाने । जब हु हेबोन्ट कि आयोजिया न पहनेसे हेरे काय-काम करनेकाने दान, रोजक, अकार्य, क्रारेवन् और पुरेस्ता हुते क्षेत्रकर करे को है से रोग यह जीवन किस कानका केन्द्र ? पहले पैंने का मेरे बारिने काफी किसी सकाजरो 'नहीं' नहीं बढ़ा। अन की भूते 'नहीं बढ़ान पक्त से केत क्राय पड़ व्यक्त । इन रुक् कुररोको अञ्चल केने रहे हैं । दूसरेकी आहर सुरनेको हो अवस नहीं है। बहि मुझे किसी सुररेके आसी बीवन बक्रारम पक्र से मैं अन्य अपन हैंगी। देख, पहि हमें जीवनकर रवेच न विज्ञा से हेरे सभी सब बराख किने ना समाने हैं । सु कुछ है एक विकार, कुछ और क्याने सम्बन्ध है । ची ता-वैतः बहारी और उन्हिस्तात पुरू ऐसा विसीत क्रम्बान को और अपने पर्शन्त-मारको न उठाने से मैं इसे कुनु ही सम्बन्धी है। बाँदे में शुधे शहके साथ किवानी-कुन्धी वार्ते अनाते वा अवके पीक्रे-पीक्रे कराते हेर्सूची हो पेरे इतपकी

कैसे जानित होती ? इस कुरूमें ऐसा कोई पुरूष नहीं करणा, । सो अपने क्ष्मुका विकारम्य क्षेत्रर वक्ष के । वैचा ! युक्ते प्रमुख्य सेंग्या होतार परित्य विकास क्षम्य नहीं है । विस्स पुरूष्णे अधिकारुसमें जान किया है और विको क्षम्यविक्षा हाम है, यह प्रमुख्य अध्यक्षित्रकों किये वाची विकारित सामने नहीं हाम स्थाना । यह व्याप्त्य और के व्याप्त्य के प्रमुख्य स्थान है और विकार क्षमित्रकों हार्थीके समान सम्पूजिने विकास है और वेक्षण क्षमित्रकों हिन्दे अधिक क्षमुख्ये क्षम्यत्व के सुख्या है ।"

पूर बार्न स्था—वाँ ? तुम मंत्रोको पर मृद्धिकारी, विश् बार्ट में निद्दर और स्रोध कार्नकारी है। इन्हार इसके से मानो लोहेका हैं पद्धार कार्यक राज है। अहें । अस्तियोधा कर्म बहा है कर्डर है, जिसके कारण कर्म हुन्हें क्रांतकी मानके कारण अध्यक्ष पैसे निर्मा क्रांते वह की है, इक माना पूर्व पुरुषे किने कार्यकि कर रही है। में से पुष्पा एक्स्पेता पूर्व है। निर भी तुम मुक्ते देशी बचा का की है। बच तुम बुड़ीओ नहीं देशोगी से इस पुष्पी, माने, चेम और पीयमसे भी तुमें क्या सुक क्षेत्र ? किर हुन्हार अस्त्या क्षेत्र पूर्व में तो संकारमें बाल सा कार्यका।

क्रमं क्रम्-व्याप । प्रमान्धरोधी का अवस्थाई का का अवस्थित दिवसे को होगी है। उनका क्रीड नकावर की में खुड़े क्ष्मके हिन्दे अपनीत कर हो। है। का हि विन्दे कोई हार्टिक बार्ग करके विकारिक समय अवना है। इस अवनात्ता गरि तुने श्राप्त परस्थाय न विकास क्या अपने करीर वा प्रामुखे अति अक्षेत्रे प्रत्य न विका से तेल बार विकास होता । इस प्रया क्य हैं। अरबहामा अकार किरोर क्षेत्र का है, का सका बहि में ताले बुक न कई से लोग की बेमको नवीका-स क्ष्मेंगे तथा को सामग्रंकीय और निवासक बतावेरी । जस ह सरकारों निवित तथा मुक्ति सेवित वार्यको होता है। विसासन आवार प्रजाने से एक है, जा के बड़ी पार्च अविवार ही है। यूने से तु हमी दिन समेना, जब नेप उपनस्त सारकोंके केना होता। यो कुछ निरमहोत, सहसर नार्स न करनेवाले, ह्या और कृष्टित हुए पर चेवको ककर की सुक प्राप्ता है, अल्पा संसार करा कर्ष है। को अन्य कर्तनकर्न पति कारे शर्मका निकास कार्यक आवस्य कारे है. उन अध्यय पुरुषोक्षों तो न क्रम स्वेकाने सुन्ह निरस्ता है और न परक्षेत्रमें हैं। उत्पर्णको सुर्क्षियों से युद्ध करने और विभाग प्राप्त करनेके लिये हैं रचा है। यहाने जब का पान जात करनेदें अभिव इस्तरेक प्राप्त कर रेका है। सहजेको पडाने मरों अपन किस सरवार अनुस्ता करता है, वह से **अप्रकार का कार्यि को को है।** 

ुक कंपन—बाताओं ! यह ठीक है, मिन् तुन्हें अपने पुत्रके प्रति से ऐसी कों नहीं बढ़नी वाहिये । उसका का और पुत्रकार, होकर हुनों सकाईक है । उसके वाहिये ।

सराने का —केट ! किस कार्यर वृष्ट्री मेर कर्तना कर का है, असे प्रकार में सुने देश कर्तना सुना रही है। जब दू किम्बुंडाके इस बोक्कानिक संकार कर क्रारंगा, तब्दी में देशे प्रकार करोंगी। में से देशे कांडिकासे प्राप्त क्रेनेवारने किया से देखना कार्यों है।

पुष्टे कहर—बालावी ! वेरे पास म से पंताबत है और न कोई बालका है है: दिन केरे पास कैसे होनी ? इस विकाद वॉर्डक्सिका कियान करके में से अर्थ ही राज्यकी आहा होड़ केसा है, दीवा कैसे ही केसे पानी पुरूष सर्वास्तिकी आहा जहीं राज्यका। वॉर्ड इस विकासि की सुध्ये कोई ज्यान दिखानी केस हो से पूछे बताओ; मैं, बेला हुन बड़ोगी, कैसा है बालिया।

कुछ कोर्ग-केटा ! पनि आरम्पो है अपने पास वैभव म हो को इसके रिको अध्यत्र निरक्तार म वर्ते । वे सब-सम्बर्ति कारों न होबार कीड़े हैं करते हैं तथा होबार नह हो जाते हैं। तार प्राप्तक विकास की अध्यक्ष अर्थातंत्रकारों की पास्त्री नहीं बारके पर्राप्ते । प्राप्ते निर्ण से मुद्रियम् युवनको धर्मानुसार ही प्रकार कारण व्यक्ति । कर्जनिक परम्बंद सामा हो साहा ही अधिकार राजी को है। कार्य अध्या पान जिल्ला है और क्षको नहीं किएका को भी परिचान पूरत करने किएक ही करते है। के का है को करें, को से क्यी पर जो फिर सकत । अरः प्रतेष करूमध्ये पद निश्चम रक्षमा कि 'मैरा अचीत कर्न दिन्द होता है। को करनेके किने करते हैं काम कर्ताने, सामध्यम साम कालेने और देखपंत्रसिक्ष कामोने क्टे कुन कविने । कर्मने अन्य होते समय पुरस्को महानिका कर्म करने वाहिने तक प्राप्तक और देवताओंका एकर करने करिये। देश कर्मने राजकी असीर होती है। में स्वेग सोपी, समुद्धे हुए। प्रीव्य और अवधारित तथा उससे हुन करनेकारे हैं, उन्हें ह अपने पहले का से 1 ऐसा करनेते ह अपने ब्यापनो क्रमुओका नाम कर सकेरण । वर्षे पहलेबीसे बेहन है, केट सबी ही 25 और सबके साथ दिन पानन कर। हेला करनेले में अध्यान देत किया करेंगे। जब कराओं का करूव है करत है कि येग प्रतिपत्नी प्रान्यक्रमे कुछ करेगा से जाना जाना सेना पर नात है।

केली को अवस्थि करोबर सकतो काराज रही साहिते। बाँद काराइट हो की के काराजे हुएके अपान आकरण रहीं करना कार्डिने। राज्यको कार्यकर देखकर प्रजा, सेना और मन्त्री भी काकर अपना विकार बदल लेते हैं। उस्मेंने कोई के एक्कारेंने मिल अले हैं, कोई क्षेत्रकर को नकी हैं और कोई, विनका पहले अपमान किया होता है, रूप्य क्षेत्रकों तैयार हो जाते हैं। उस समय केवल में ही लोग साम देते हैं, जो सम्मेन गहरे पित्र होते हैं, बिंग्यु हितेकी होनेकर भी क्षित्रकेंन होनेके कारण में मुख्य कर नहीं पत्ने।

में कि पुरुषकं और मुद्धारकारे कारण जाती की, इसीमें तेस असके कारोके किये कुम्में ने अनुसारकी करें कार्ड हैं। वह तुसे ऐसा मालून केया है कि मैं रीक कह रहे हैं से विजय प्राप्त करनेके किये कारा कारकार कहा है का । हमारे पास अभी कह चारी कारका है। को मैं ही जानती है, और विश्वीको असका पात नहीं है। यह मैं तुझे सीक्सी है। इस्तुल | अभी से तेन इसायने पीड़ न दिक्कोकारे हैं।

राजा सहाय कोरे प्रचल स्वापनी था। जिस् वासको हैते बचन पुल्लार प्रतक्त कोष्ट्र वह हो गया। साने कहा— केरा बह राज्य प्रमुक्त जानने हुव क्या है; अब पूर्व प्रतका सहार बारात है, अही तो में राजधुरियों जान दे हैगा। सात । जुले धार्मी वैक्ताका हार्गर करावेगानो सुक-नेत्री क्याका हुकारी बारा पिली है। जिस पूर्व क्या किया है ? में क्याका हुकारी बारी पुल्ला बाहार का, इसीसे कीय-नीवर्ण कुछ व्यक्त किर बीर को साता था। सुकारे सम्पर्की सामन क्या पाई बारियायों सुकारको विले थे। कारों पूर्व एटि जो होती थी। अस में प्रमुकारको पुल्लेको विले थे। कारों पूर्व एटि जो होती थी। अस में प्रमुकारको स्थान करने और सम्ब बाह्य करनेके दिन्ते

पुरति स्वतर्ते हैं—सीकृत्वा ! मानाने धान्यान्तेने विकास प्रमुख सामे हुए घोड़ेने एतान आने धानाने संस्कृतार एवा बाम सिने। या आक्रमान नाम आत्मानंक और ऐत्यार बाह्य पा एवं हो, उस समय कभी उसे वह उसेन पुनते। इस इतिहासको सुनतेने नर्पनती जी निवास है और पुन अध्या बासी है। नहीं इकाची इसे सुनते हैं से उसकी खोकले विद्यासूर, हम:हुए, हम्बहर, केससी, बस्तान, बैजीवन, समोब, विकारी, पुहोका एका बस्तेगस्य, सामुओबा एइका, बारांका और सक्ता पुरतीर पुन अध्या होता है।

केसन ! तुन अर्जुनसे बहना कि "तेश बन्ध हेनेके सनव

कुते 😋 अवस्त्रकाची हुई वी कि 'कुनी ! तेरा व्याप्त इसके स्थान होता। यह चीमरोनके स्था रहकर बुद्धानराने आने इस राजी कौरबोको जीत हैन्स और अपने एस्ट्रोको काकुर कर हेना। यह सारी पृथ्वेको अपने अवीन कर लेगा और प्रकार का सर्वाचेकाल केल बावना। श्रीमृत्याकी सक्षापकारे यह कारे महिन्द्रोच्छे संसादमें सहधान अपने कोचे कू पंतृत्व अंतरको आह करेगा उठैर किर उरने प्राह्मीके सर्वेत होन अच्चिम का करेगा।" कृष्ण । मेरी भी देही ही प्रका है कि अध्यासमानीने बैधा बढ़ा था, बैधा है है; और बहै को प्राप्त है से देखा है होना भी। तुन अर्जुन और बीक्सेको बढ़े बहुत कि 'हामिको किस बारके रिने पुर जन्म करते हैं, उसे करनेका समय का गया है।' हिंकीसे बाइन कि 'बेटी ! तु अकं कुरूने अका हां है। तुने मेरे सभी कुलेके साथ कर्णानुसार कर्मक किया है—यह तेरे मोग्य ही है।' क्या ग्यान और प्रक्रेमने म्यान कि 'तुन अपने क्रमोबी की कबी रूकमा कामाको अन् हर मोगोबी क्षेत्रकेकी स्थान सर्वे ।

कृत्यः ( अप्रे पान्य वाले, सूर्ये इतने वा पुर्गेको जनगान हैनेका दुःश नहीं हैं। किंदू मेरी पुत्रती कृत्यक्ते सम्बर्धे कर कर्ते हुए से दुर्गेकाने कुल्यान सूर्य थे, ये ही जुले करा दुःश है को हैं। ये चील और अर्जुन्से तिलो से क्ये ही अर्ज्यात्मकास से। एन कई अल्पी पाद दिला देता। पिश क्षेत्रती, पत्रकार कथा अल्से पुत्रोंने नेरी औरने हासल पुत्रस और अर्जे पात-कर नेरी कुलल सुना देता। अल एन बाओ, मेरे पुत्रोंकी दक्षा करने पुत्रात हुना हैना। अल एन

देशन्यकार्थं कहते हैं—तक चगवान् कृत्यने कृतीको प्रकार कहते प्रकार क्रांद्रेशन करके बाद्र आये। नहीं कावत् कहते प्रकार कादि अध्यय-प्रवाद करियोको किहा किया क्या कर्मको राज्ये कैद्राका सामकिके साथ मरू विदे। जगवान्के क्रांत्रेस क्येरकलेग क्रांत्रको साथ करने विद्यार्थे आंखों अट्युत और अध्ययंक्तक वाले करने लगे। रणासे व्याद कावत् बीकृत्यत्वे कर्मके साथ कुछ गुद्र वाले क्ये और विद्य को निया करके कोई होया हिये। ये हाली केसीसे कहे कि अर सब्बे मार्गको वाल-की-वालयें तम करके क्रांत्रकों पहेचा हुने।

# दुर्योजनके साम भीमा और होणाचार्यकी बारचीत तथा श्रीकृष्ण और कर्णका गुप्त परामर्ज

रीतन्त्रपान कर है—युनान संस्कान के संस् रिया था, उसे सुनकर प्रमारण गाँव और सेवले कथा पूर्वेष्णण करा—'एकन् ! युनाने संस्कानों के सर्व और करि अनुस्तान को है का और मार्निय कथा को है, के पुन्ते पुने ! जब पायानानेन संस्कानों स्वाप्ति केंद्र है करिन में साम एक मिन किस करियो को कर छो। साम प्रमा या पुद्ध करना तुनाने हैं। यान है। यह इस साम तुने इसारी का माँ कार्यों के स्वाप्तान प्रमान कर भीतन सिकान और मार्वोचनी स्वार कुनार अन्यक कर अनेती।'

बा सुनकर राज कृतेंकर प्रकार हो गाउ । प्रतरे फुँ नीक कर रिन्ता रूपर नीवे निर्मात्त्वार देखे निरमको देखने रूपा । भी काम देखवर पीच और क्षेत्र मानामें एक-कुर्वकी ओर देशकर कार करने राने । चीनाने कहा-- 'चनिहीर राहा ही प्रमाण तेना करनेको सन्तर कता है, जा कनी निर्माण होन्द्रों की बरार क्या प्रवासीक क्या और प्रवासी है। काने हमें कुद्र करना प्रोत्त-इससे बक्कर द्वाराओं और क्या कर होती।' होन्यवर्ग होते-'पुत अक्रमानाची अनेका भी अर्थानों मेरा अधिका है। के का की कक विनोध है और नेम बढ़ा पान पानत है। अब क्रान्यनेक आहर रेकर पुत्रने भी काम दिन का क्यान्तरे हे पूर्व पुत्र कारक प्रकेश । इस कारक्षींको निकार है । कुनैयर । कुनै कुरमुद्ध मील, पे, निहा और कुम्म सभी सम्बाधित हर गये । यांतु तुन्ते अपने दिलको पाल सुप्ताने ही नहीं ! देखे ! इन तो बहुत दान, इसन और प्रक्रमान कर कुछे ै हमने भागरि नेपार प्राथमनेको भी पूछ गुरू मिन्स है और प्रवर्ध आपु भी जान मीत पूजी है। इस्तरियों इसने के के करक का, को कर रिच्या । किंतु प्राच्यानेसे केर ठानकर तुन्हें कही निचरित भीगरी कोगी। इसके सका राज्य, विकाशीर कर--वार्थका सकार है जाना । अर: इन बीरेंग्ड प्राय बुद करोबा क्रिका क्रेड्सा दुर साथ कर ले। इसेने कुरकुरस्ती पान्हें है। तारों पुत्र, मनी और क्रेम्बर पराच्य न कराओं ('

्यतः श्रीपुण्या वया प्रार्थको एको वैद्यावा इतिकानुस्यो व्यार भागो तो जाती ताती तीवण, पुतु जी वर्णपुष्ट व्यावको गाम-चार्ता ! तुम्पने वेशनेला प्राध्यावीको पान्नी तेवत पति है । गौर जनसे परस्पर्यक्तमा सम्बन्धी ज्ञात विक्रो है; पर वे दुन्हें पूक्त पुतु मारा स्थारता है। दुन्हों पुरुषोच्छी बर-मानवकाने अस्तिके



कर्वते 🕏 भाग रिक्स है। इस्तिन्ते धर्मानुसार तुम पान्क्रोड 🕏 कु है। भार क्राव्यक्रिये हुई समावे अधिकारी है। हुन्हरे विकास कार्य है और अनुवासे कार्य हुए की साथ भारों, पंत्रकारेको भी यह मातृत हो क्या कि हम प्रतिहरते के कार अन्य हुए कुन्तिके दूध हो । दिन हो नोबों पायक, जीवी क्षेत्रकीके कुछ और अधिकान् तुस्की करण कृति। तक कन्यांक पह रेनेके हैंस्त्रे एकतित हुए ग्रसा, ग्रावपुत और श्रीम क्या अन्यवस्थित एक पहल की प्रमूप करणकार आरंपे । नेर्ड इच्छा है कि बीम्पपुनि जान ही तुमारे रिने होन करें। और करें बेटेने हाल उन्हानरोन सुनार अभिनेत करें। इस एक स्तेन में नित्तार रूपाय है सन्त्राधिकेक करेंगे। वर्णमून काम कुरियोग सुद्धारे कुमस्य होंने और हमाने हेव फैसर लेकर हम्को येक्ट समार बैटेने। इन्हरे स्थापन संप्रोप का नहीं के इस स्थापने । अर्थुन कुमारा एवं इस्थिने । अधियमम् सर्वय सुमारे पास खेला क्या न्यूक, स्थाप, प्रीयक्षेत्रे प्रीय पुत, प्रकृतसम्बद्धनार और महारती कियानी कुछारे पीछे बलेंगे । में भी कुछारे पीछे श्री काल करीना । इस प्रकार अपने नहीं का**लांके** साम हुन क्या केनो उन्हा कर, होय और तता-तताके महत्त्वकारीया अंग्रह्म करे।

करी का-केरण ! अपने प्राप्त, सेतृ तथा

निकाके नहें और मेरे किया इच्छाने के यह कहा है, जा हीय है। इन सब करोबर महे भी पर है और, बेला अप सम्बद्धे हैं, बर्पातुमा में राज्युक्त हो का है। इन्हेरे क्षणावस्थाने पृथिकके हुए जुड़े करने करण दिया क और मिर अधिक प्रकृति जान किया था। अनेक पार अभिरय सह पूर्व देशकर कर है यूने और उन्होंने को सेहते मने अपने को समान्य गोवने हे हिना। जह समान की बोहते महरण राधाने जानीये कुछ करा जाना और क्रांनि का अवस्थाने मेरा मल-कुर उठका। आ: वर्णकारको भारतेकार पहा-केरा कोई की पूछा प्रकार विकास रहेत बैसे कर समात है? इसी प्रचार अस्टिक का की को अपना पर ही सप्ताने हैं और मैं भी बेहना को सहने शरना निता है सन्दर्भ का है। जानि मेरे नानवनीत् प्रेंशक्त भी कराने से एक अञ्चलकि प्राप्त करानेन नाम रसमान मा। पुरावका हेरेक अहेरे का करियों को विकासि केरा विकास कारणा था। अस्य अन्तरे की बीठ-बीठ की पैदा हो सुनेत है। एन बिज्योंने नेना प्रस्त जेनावा सामाने सेना कुमा है। अब में सब्दर्श दबसे का ओनेको हेरियो निर्माने शतका किसी जकारके हुए या जनते भी हर हज्यन्त्रियोक्ते क्षेत्र नहीं सम्बन्ध । हुनीयाने नहें में ही मरेले क्रमा सहनेता मन्तर विका है और इसीसे इस संसम्बर्ध नुही अर्थुओर प्राप हैरमपुत्रके रिने रिका किया गया है। मैं मुख, बचान, कर और क्षेत्रके कार हमेंकाले शेका भी वे स्थात । सब यदि मेंने अर्थानके साथ दिवसमूद्ध न विकार के प्रतके अर्थान और नेरी क्षेत्रोडीकी अन्वदीर्थि होती।

नित् वयुक्त । ताय एक निवय इस साम्य कर में । यह यह कि इसाएं के गुर बात हुई है, का व्यक्ति हो । यह वर्णाय और निर्मेश्वर वृद्धियां इस व्यक्ति को कर्ण कर कर क्या कि कुर्णाय प्रकार पह में है से वे इस क्षात की करें और मुझे का निवास सहकता निवय हो में को इसेक्स्क्रे ही है हैया। यहाँ मेरी सो नहीं इस्त है कि विच्छा के श्रीकृत्य और केस्न अर्जुन है, ये वर्णाय कृतिहर है सर्जंक एक्सार करें । में इसेक्स्क्री प्रत्याक्ति किसे कुले व्यक्ति के कुर्णाय को है, अपने कर इस्त्रित हैने व्यक्ति इसके प्रकार है। श्रीकृत्य । किस सम्य क्षात कुले अर्जुक्ते इसके कर हुआ देवले, कर स्थित क्षात क्षात कुले अर्जुक्ते हैं स्थानक रह पीचेंगे, किस समय व्यक्तिकृत्य कुले और विक्तायों केस्प्रवार्ण और भीचका क्षा करेंगे एक व्यक्तिकार प्रवार स्थान समझ होना। केसमा । कुलके क्षेत्र केसे रनेकोने जारण परित्र है। वहाँ वह सार वैभवजाती इतिकारकार क्यांजिने काल है जानक। आप इस राज्याने ऐसा करें, जिससे में अब हरिय कर्ग प्राप्त कर हैं। इतिकार कर से द्वाराओं का पान वा प्राप्तान विकार हुए पर पान्य है है। जार जान इसरे इस विचारकों पूर रकते हुए है अर्जुनकों मेरे साथ पुद्ध करनेके दिले से आकृत्या।

वर्णने वह कर हुनकर लेक्ना हैरे और फिर मुस्तकरों हुए इक जबार कार्ने लगे—बार्ज | से बाद कुने का राज्यभावितार जान को कंदर नहीं है ? हुन मेरो के कुने प्रकारक की प्राप्त की करना कहारे ? इसमें से श्रीनक की प्रोप्त कही है कि कर पर्यापनित की दोनी । अकार, अब हुन कहीं। साकर हेन्यकर्ण, जीन और कुनावार्णने कहान कि का मुद्दिश अबार है। इस कार्य करनेकी क्रिक्सा है, परिवार्ण कर्म है, यांचा कुना नहीं है। अबार सुकायन करना है। आवसे कर्मी व केंद्र की नहीं है। अबार सुकायन करना है। आवसे कर्मी केंद्र की नहीं है। अबार सुकायन करना है। आवसे कर्म और भी की-की एक्सोन अबार, कर सबसे की सामक्रम कुना हैना। इस्तारी क्रम कुन्न करनेकों है से में सामक्रम कुना हैना। इस्तारी क्रम कुन्न करनेकों में से एक्स

ज्ञार कारी अंकृत्या स्वार कार्य हुए का — महावाहों।
ज्ञार तक हुए जार-बुहाकर की हुई को मेहने इसका
कार्य है। या से पृथ्वीने एकंड संहारक प्रमान है सा गल
है। इसमें कुर्ड़ी, है, हु-कारण और पृथ्वीकुमार दुर्गीका
है। इसमें कुर्ड़ी, है, हु-कारण और पृथ्वीकुमार दुर्गीका
है में तब प्रकारिने जार होकर कररावके पर समेंने। इस
तक्ष्म को ज्ञानक प्रक्ष और क्रिक्ट पृथ्वीकुमार किया हुना। में
है। में तब्द है कुर्में केसकर प्रतिके रोगरे कई है कार्य
है। में तब्द है कुर्में केसकर प्रतिके रोगरे कई है कार्य
है। में तब्द है कुर्में कार्य केर मुख्यिक्स विकास सुनित्र
है। में तब्द है कुर्में क्रिक्ट कीर मुख्यिक्स विकास सुनित्र
है। क्रिक्ट हम्में हम्में केस्ट किएट प्रति है।
हिमानों है। क्रिक्ट हमें हमें हमार क्रिक्ट क्रिक्ट हमें है।

क्षेत्रकाने काम-कार्त । निकारेंद्र अस यह पृथ्वी विन्त्रकाके सम्बेश प्रदेश हैं, इस्टिसे को मेरी बात हुम्करें इस्त्रकों स्टाई नहीं कार्ती । का विनायकारण समीप का गाता है को अन्यान भी न्याय-सा बीसने समात है।

कर्मने कहा—सीकृष्ण । अस श्री करि इस महस्युक्तो कर्य को सभी आओं दर्शन होंगे। कों के स्वर्धने से इसरा आयर्रे फिल्म हेना।

हिर श्रीकृत्यमे किए होचर यह काचे त्यारे व्याप्तर अर्क वित्रे ।

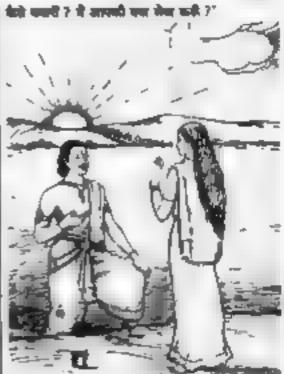
समागन होगा है। अबार, अब से फिर युद्धने हैं | सुकर्तनीक स्थार समार हुना और प्रतिस्थपुरको सीट गया। एक प्राथमिक स्थीत श्रीकृत्य सार्ववते वार-भार हैंसा बदाबन करने सीकृत्यामां नात आरियुन बिल्या । "जाने-वाले" हेरत बाह्ये हुए वही रोव्येसे पायानीचे पास

# कुन्तीका कर्णके पास जाना और कर्णका उसके चार पुत्रोंको न मारनेका वचन देना

वैद्रान्यकार्थं कार्य है—जब अकृत्य प्राच्यानेक कर करे | केंद्रे कवर्षे ? में आरमी क्या केंद्र करे ?' रावे से विक्रावीने क्षानीके यात्र सम्बद कुछ विकास से होकार कहा, 'हेवी ! हुन कारती हो येश का से सर्वत पुरुषे निकर ही रहत है। में विकास-विकासकार बाद राजा, बिह्न कुर्नेकर पेरी कारको सुनात ही नहीं। तार श्रीकृत्य स्थिको प्रकारे अक्राप्त क्षेत्रर गर्न है। वे सम्बन्धिको पुत्रके विन्ते विनार करेंगे। या कीएकोकी क्रांति तम कीरोका करा कर क्रारेगी। का बालको सोककर गुर्वे व दिल्ले केंद्र आणी है और म राजमें ही हैं

बिद्राजीको यह बता सुरक्तर कुन्बी दुःसने मानुस्त हे मनी और राजी-राजी सीत सेवार वर्ण है-पर विकास रानी--'इस कराते विकास है। इस । इसीय सेने जा मन्-वाचनोका जीवन संक्षा होता। इस प्रदर्भ अन्ते स्क्रतेका हो पराचन होनेवाला है, यह तम लोकवार की कितने बढ़ा ही दुःक होता है। कितन्त्र चीना, केन्यकार्य और क्षानी कृतीकर्मक प्रकृति सुनि । इसको नेपा कर और भी वस् प्रसंद हैं। आवार्ष होय हो अपने दिखाँके त्याव प्राथमित पर रानाबर प्रश्न न भी करें। विस्तव्य भी सम्बन्धिर सेव न करे-मा भी है सहसा। किंद्र मह कर्न की सोती क्षियाल है। या गोलक पूर्वीय पूर्वीकरण है अपूर्णन करके निरसर सम्बन्धि के किया करने है। इसने सह भारी अन्तर्वे करनेका इस पनाइ एक है। अध्या, साम में क्रांची राज्यो राज्योंके और अनुसार करनेका उत्तर करे और कामे काने जनका कृतन्त्र सुन है।"

हेल सेक्का कुनी गहसरमा समेंके बार नहीं । वह पहिलाह कुरांचि अपने वस सम्बन्धि कुछे चेहकहारी सानि सुनी। वह पूर्विप्युक्त होकर पुरस्त् कार काले स्थानक कर रहा था। जनकरी कुछ वन समझ हेरेको प्रतिकारी अलंद बीके साहे रही। यह सूर्यका तहा गीएका आने सन्त. हरतक सब काके कर्ण को है पैड़ेको सिए कि को कुसी विकासी थै। को देखते हैं जाने हत्य फेड्का जन्मन निरम और जिल्ह्यपूर्वक कहा, 'मैं अधिरक्या पुत्र कर्ण अस्त्रो प्रकार करता है। मेरी पालका कम रामा है। कहिने, सार



क्रमीरे का-कार्र । तुम एकारे कुर नहीं है, क्रमीने स्तरः हो । समित्य भी तुकारे निश्न नहीं है : तुमने सुराकुरतने क्या नहीं तिल्या। इस कियारे में को कुछ काती है, जा सुने : बेहा । विक सबस में क्या कुन्सियोजके ही भवनमें की, इस समय की हुनों नकी बारज विका था। दूप मेरी क्रम्बरकाने जन्म कुर् में काले को पुर हो। सर्व कृतिकारकार है हुई भी जातो जाता किया है। जाती शालक हुन कुम्बाल और महत्त्व कारण किये से तथा हुन्हार परित बड़ा है दिन और रेजनी बार बेटा रेजनी व्यक्तिको न व्यवक्रमेके सारम तुर से प्रेक्टन कृतसङ्गे कुछेके कहा करों हो, यह तुकरी क्षेत्र नहीं है। बहुमाँके कांका निवार करनेवर को निवार किया गया है कि विससे िक और पास जाता थें, बड़ी धर्मको पास है। पहले अर्थकों को राज्यसमूरी सरिवा की भी, उसे पानी कौरधीने स्रोक्तां स्रीत शिवा। सम पुत्र को उन्हें सीनकर चीची। हुने वावकोंके साम आह्वकारों निवार देशकर में करी हुने सिर सुकाने लगेंगे। चीती कृष्ण और मरन्तवादी चीड़ी है, बीरी हो कर्ण और अब्देशकी चीड़ी कर कथा। इस उकार का हुन होनों निवर स्वातोंने की हुन्हारे सिन्ने संस्करने चीन कथा असलत होनी हुन सम मुखोसे सन्दर्ध है और अपने चाहतोंने समसे को हो; हुन अवनेको 'सुन्दुक' का कहे. हुन हो कुनोंके परसानी पुत्र हो।

इसी साम कर्मको सूर्यनकालो जाती हुई एक अक्यान सूत्रयो हो। का निरामी कर्मके सम्बन्ध केन्द्रमें थी। उसने सूत्र-सार्य । कुन्तेने सथ कहा है, तुन कार्यको कर पान हो। यदि हुन निरा करोगे से हुन्तरा कर प्रकार हैन होगा।

No makes 44 mer es i mer greb afte feier पुर्वित कर्म इस उत्पार प्रकृतिक की अल्पी पृतिह निकारिक भूते हुई। असे पहर, असेने । कुछारे इस स्वयन्त्रे प्रत्यन हो अपने कर्मनाओं हारकों ही फोल केन है। माँ । हुको सुक्रे क्यानका से के प्रति क्या है अनुविध स्थापन के कि कारों के मेरे कारे पात और कोसिका वाक कर किया। की प्रतिकारिये क्या से दिखा, बिश्व सुबारे ही कारण केर अधियोका-पर संस्थार से भी है प्रभा । इससे बहबार केर अहिन कोई रहा भी करा करेगा। हरने पहले से पानके कुरवार की दिलका प्रथम मिला गई, उस देवार अपने विकास करते हमारों को सन्तम की है। कारेने से है धायकोचे पर्यक्रमे प्रसिद्ध है जी, बुद्धके सम्ब का का कुली है। अब भीदे में कामलेके कहने हो नाता है से श्रीमक्तीय को का कोंगे ? कारको कोंने है को सब अकारका ऐक्षर्व दिया है। अब मैं उनके वन उनकारीको पार्च केसे कर है? अस व्य कुर्वेकरके सामित्रके करनेकर समय । बारे करे।

सामा है। इस्तीने इस समय पूर्व भी अपने प्राणीका स्तेष र करके अन्त अन्य पुत्रा देश पाहिले। किर लोगोका क्ला-चेका दिना कता है, वे इनके आनेता अवन काम करनेते हैं। कृतार्थ होते 🖺 केवार प्रकारनिय पार्थालीय ही अवकारको पहुन्छार पार्तका होड केली है। में राजाके अवस्था और पूर्व है। अन्या न मा लेक करत है, न वसकेन : में कुल्काके पुलेके तिमे अपना गृह कर और परकार रूपका हुन्हारे पुरोधे पुद्ध करोगा। हुन्हारे प्राप्ते में हुई। का भी अहैया । कुछे स्तर्काने प्राप्त का और प्रक्रमाची का करने काहिने। इसरिने अपने कारको होनेक को में कुछारे कर क्रीकार की कर समात है किंद्र करवारी । कुछार बढ़ बड़ोन निकास नहीं क्रेफ । कार्य कुको सभी पुर्वको में मार सकता है, तो भी एक अर्थुनको क्रोड्सर से मुस्तिहर, चीन, उनुस्त और काहेर-इतके विक्रीको यह वर्तना । मुक्तिहरूची सेनाने केवल अर्थ्य है जुड़े पुद करना है। अहे नार्यों है जुड़े क्षेत्रम कार्यक कर और कुरू आह होना । इस जनार हर क्रालमें कुको प्रोप पर को प्रोपे। अर्थन न पर से बे कार्यक प्रमुख कोंच कोंगे और मैं कांच गया से अर्थन्ये स्रोत क्षेत्र क्षेत्र।"

वित्र कुम्मेने व्यवने अधिकार कैनेकम् कृ कार्यको गाँउ इत्याकर वाहा, 'कार्य ! विकास कांद्र कार्यकर् है। मानून होता है कुम जीवा कांद्रों है, केंस्स ही होता है। अस मौतव वह हो कार्यने : बिद्ध केंद्र ! हुम्मे की अपने वार मानूनोमी इत्याकत्त्र किया है, इस प्रतिकार्यत हुन स्थान रक्त्या ।' इसके कह कुम्मेने इसे अनुसार यहनेका आसीर्यन् दिया और कार्यने 'प्रकार' कहा। जिस के बेची अपने-अपने स्थानोको को कहे।

# श्रीकृष्णका राजा युधिष्ठिरको कौरवसभाके समत्वार सुनाना

वैतानकार्य कार्य मै—स्वरू ! इतिस्त्रपूर्ण अग्राम-स्वास जावर क्यान्य कृतने क्रीतंत्रीर कार्य यो-यो कर्ष हुई थी, के तक स्वत्यकोर्य हुए हैं। उन्होंने कहा, 'इतिस्तरपुर्ण कार्य की क्षीतंत्रीय क्याने कृतिकार्य वित्तुक हार्य, दिवसारी और देनों क्यांच्य कार्यक करनेकारी कर्षे कहीं। वरंतु का दूसने कुछ नहीं कार्य !' त्या पृथितिने स्था—श्रीकृष्ण । यस पूर्वेपको अपन कृष्णो स्था क्षेत्र से कृष्णुक निकास गीमने जाले यस स्था ? तथा अस्पर्ध त्रेष, महत्त्वत कृष्णु, स्था प्रश्नाति, वर्षा विद्यु और सम्बन्धे क्षेत्र हुए १०० प्रशासित उसे स्था सर्व्य के ? यह तथा सुत्रे कृष्णुने ।

*बंकुम्बने वक--यवन्* । **ब्योरनेकी** सपाने राज

[ 039 ] Yo No ( WHE—RE ) १९



पूर्णांकाने को करों कही जाते थी, से सुनिते। क्या मैं अनक सराव्या समाप्त कर पूर्वाच को दूर्णांका है। । इसना भीकाने में सोनिता सेवार कहा, 'पूर्णांकर । इस पुराके कार्याक्तों मैंन्से मैं को बात कहा। है, सरावर ब्यान है। सो सुन्या हु अन्ये सुद्धांका पराव कर। मैंना ! यू बार्या क्या कर। साम्या क्या पांचालोंको है है। कराव, मेरे पोर्तित क्यो वहाँ करेन क्या कर सम्बद्धा है? यू मेरी कार्या का स्वरं । मैं से सर्वाच कुर सम्बद्धा है। क्या है। सेवा । मेरे पूर्णि क्या कर्योंके और सुद्धारों कोई स्वरंग नहीं है और बढ़ी सर्व्या केरे क्या, स्वरं कार्या कोई स्वरंग नहीं है। हो। बढ़े-सुद्धांकी वाक्यर ब्यान क्या साहित्रे। मेरे क्या मेरे पूर्णांको सह स्वरंग क्या होना क्या

प्रेंगरजीके ऐसा बहुनेवर दिन जनकर्त होन्से कारी बहुन,
'दूर्योधन । जिस जनार नहाराज कर्त्यनु और जीन्त इस कुलाओं रहा करते ये हैं, मैंसे ही पहालत बच्चु की जनने कुलाओं रहाने तत्वर रहते थे। कार्ति कृत्यह और नितृत राज्यों जिसकारी नहीं में तो भी जार्ति कृत्योंको राज्य और रहा। सा। में पुनरकृत्यों सिंहासनवर मैंडाकर क्यां जनती रीनों पार्चाश्येकं सहित करने जावन करते तमे थे। निदृत्यों भी नीने मैंडाकर रहता करते जावन करते तमे थे। निदृत्योंको सोहास यो है और जरवा क्यां कृत्यों से हैं। निदृत्योंको सोहासी सिवाल करने, हम होंदे, सेक्कोंकी देशकार करने और कार कार-नेवर करने काश्वर नियुक्त किया करा वा तथा कारेकारी कींक राजारों हाता सकि-किया कारे और उनके काम हैन-के करनेवा काम करते हैं। उन्होंके कुरने अस्त होकर दूध कुरने के असनेवा जवा को कर से है। असने कामचेंक काम केर करते हुए इन धोगीको कोने। मैं किसी जवारके क्या का कार्यों करका का की वहीं कह का है! में से कांकारों से हुई कींग ही सेना कार्य है, इसने मुझे इन्ह भी देना नहीं है। कह दूस निश्चय करते कि वहाँ कींकारी है, वहीं होना की है। उसते हुए कार्यों आका कम्म है है। मैं से बैसा दूकरा पूठ है, कैसा हो कांकारों करते कार्यों है। मैरे किसे होरोंने कोई केर नहीं है। कांतू कम से उसी कार्यों है। मैरे किसे होरोंने कोई केर नहीं

हरूके कर विद्रापीरे विकास स्वेमली और रेसते हर क्क-जीवार्थी ? में भी विशेष्य पारता है, बह शुनिये। यह क्रमंत्र से एक उचारने पह है हो पूजा या। जारहीने क्षांच्या पुरस्कार किया है। उस्त अस्य क्रम क्रूमोंक्यकी बुद्धिका अनुसरक बार्ग रहते हैं। विज्ञु हुनवर से होना सकर है । यह बढ़ा है अनाने और कुरता है। विकिये या यह आपने को और अनेक निकट करनेतारे निवानीको सदावार भी प्रकार कर के है। इस इन्टेंबर्वा करन है इस सब क्षीरवेका पता क्षेत्र । महाराज । अस्य कृत्य करके हैले ब्रांडिको, जिसको इसका परक्ष प हो। कुरस्या पर्या होता देशकर साम क्षेत्रा न चारें । चानून क्षेत्रा है कुर्क्यक्रमा नाम सबीव का जानेनों ही जान आपनी हुद्दि ऐसी हो गयी है। अन्य या हो चुहे और राज्य प्रत्यक्षमां साथ रेप्पर मन्त्रहें च्यांने, नहीं से इस द्वारपुद्धि द्वा दुर्गोभावों केर कामें क्रमानोहे प्राथित हुए एनम्बी नामाना धीनिये।' हेस काकार कर-कर साँग कि पूर् विद्वारों और हो नवे।

इसके प्राण्य कुट्रकारे कहाने प्रवर्धन प्रश्नामें को हों।" परकर में वर्ग और सार्वपुत्र करने नहीं, 'हुगोंकन ! यू बहा ही प्रव्यक्ति और हुस्ताने करनेशाल है। और ! इस प्रव्यक्ते को कुर्वाची पहल्लाम सम्बद्धः चेगते साथे हैं। वही इससा कुर्वाचां हैं। किंतु अब अन्यक्ति यू इस गोरबंधि राज्यकों वह बार देशा। इस समय इस प्रज्ञावर पहारात कुरहां। और उसके होटे वहीं विकृत्वी विरायकान है, किर मोहबाह यू इसे कैसे सेना व्यक्ता है ? चीन्यनोद्धं स्वयमें से वे केसे दी परायक्ता है हैं। ज्ञानक चीन्य कर्मह है, इस्तीन्ये अपनी प्रत्यक्ता करान करनेके दिन्ये क्ता सीमार नहीं करते। करानके के व्यक्त व्यक्ति प्रवेश हैं है, किसी कुरोबों वहीं। इस्तिने कुरबेष्ठ प्यान्य पीयावी यो मुक्त बढ़ते हैं, यह हों विश्व किसी आजवानीके पान नेता पाहिने । जब बहराव कृतवा और विश्ववद पीयाकी अवताने वर्षका मुख्यिर ही इस कुरबंदाके पैतक सम्बद्धा पतान करें।'

पानाएके का अनार सक्तेपर किर न्यापन काराने कहा, 'बेटा । बाँद तुन्हारी दृष्ट्रिमें विस्ताबत बुक्त मौरव है से मैं हुम्मे के बात कहात है, कायर ब्यान से और अर्थके अनुसार काबरम करो । पहले करबंदाको स्ट्रीड करनेवाले स्वान्टे पुर मकति नामके राज्य से । उनके पाँच पुत्र हुए । उनने क्रमते को बाद वे और समझे कोटे पुरु । पुरु करता क्यानिकी आहा माननेवाले से और उन्होंने उनका एक निश्चेन कर्न भी किया था । इस्तियं होटे हेनेपर भी चनकिने उने ही क्वांसिहसम्बद बैदाया । इस प्रकार भदि नहां दुव असुद्वारी हो से पने सम्ब नहीं विकास और बोद्ध पूत्र गुरुवनोधी रोज्य करनेते राज्य अप का रेस्ट है। मेरे अभितालक स्वरूपन प्रतीम की इसी प्रधार समझ हमेंकि बालनेवाले और सैनो लोगोने विश्वास है। इनके देखाओंके समान मान्यी तीन कुर हुए। उनने को देखान है, उनमें क्षेट्रे बाहीक है और इनमें क्षेट्रे इक्टो निमान्य प्राप्तु थे। देशांवि मध्ये सार्, वर्ष्य, कमन्त्रि और प्रश्ले प्रेयपात थे. से भी कार्यक्षेत्र करून वे एज्लीकारको भेज भूति साने गर्ने । बाह्रीया पैतृष्य गुरुषको होतृष्य अपने नामाध्य वहाँ पुने हमे थे। इसरिन्ने निताबी कृत् क्षेत्रेक बद्धीयाओं अक्राते कार्येक्सात क्रान्तु है क्रान्यन अधिनिक हुए। हकी इकर प्राच्यो भी चुने वह राज होंग दिन था। मैं उससे बहा या हो भी नेतरीय प्रेरेके बारण राजके अधिनात्त्रे वर्षाव रहा और होटे होनेपर भी पाजुको राज्य निवल । जन पाजुके सरोवर हो यह राज्य अधिक पुरोक्त है। मैं से फनका भागी है नहीं, तुल भी न रामपुत्र हो और न राजमंद्र सामी है; स्थिर इसरेका अधिकार केले क्षीनन नको हे ? न्यूनन गुनिहेर राजकुत है, रातः जानतः 👊 राज्य सर्वताः है। बुनिहरूने हामाओंके बोन्य क्या, तिरीका, रूप, सरस्का, सामन्द्रा, अस्तान, असमार, जीवादक और स्वानोहर करनेकी श्रमता—ने क्षणी गुरा है। इसस्मिने तुम जेव होएकर कावा राज्य व्यवितरको है है और अध्य अपने प्राप्तिके स्वीत अपनी जीविकाके दियों राज हो।"

इस प्रकार भीषा, होया, विदुर, यानारी और एका वित्ती प्रकार वे सन्दर्शनकरे नहीं हैं। वे सब विना इसरहाने सम्दर्शनेकर की मन्दर्शी दुव्योक्तने कुछ ब्याद नहीं | वन कुछे हैं और मीत उनके निरंधर नाम की है।



क्षित । सर्वेच्य अन्ते, स्वयनका तिरमात कर स्रोतनी अति रकार किये बढ़ीने कर दिया । इसके पीछे ही, विन्हें मुख्ने के रका है में राजानीय भी भारे नमें । का राजाओंओ क्योंनाने मा आहा है कि 'आव पूज नहत है, इसरेजों आज है सम होन कुर्ब्यक्रमें कुछ बर है।' एवं वे जीवको जेनाकी बनाबर बड़ी जोगते कुरक्षेत्रको पार हिये। अब अरू यी से का बीच कर को, का करें। मेरे काओं हैंसे कर यो—इस इप्रेसे काले तो सरकार है उपोग किया वा : बिन् जा के सामगीरियों नहीं माने हो चेहका की हायोग जिला। की सम राजामध्ये राज्याता, पूर्वीक्षणका ग्रेह संद कर दिया राजा क्रकृति और कर्मको यस विकासा । किर कुरुवंश्वर्मे पूर न को, इस किवारने स्वयक्ते साथ कुनको भी को कही। मैंने हर्में को का कि 'सार एक दूसरा है का, इन केवल चीव चीव हे हैं; बनोकि तुमारे जिलको पामकोका पारम भी अन्तर करन पादिने ।' देख प्रकृतेश भी ३६ शुने आश्रकी चान देश जीवार नहीं विकार । तब, तर पारियोंके रिप्ने नुहो हे इन्हर्नेतिक क्यान हेना है जीवा नान पहला 🖢 और विसी जनार में सन्दर्भवाते नहीं है। वे सब विनासके कारण

#### पाण्डवसेनाके सेनापतिका चुनाव तथा उसका कुरुक्षेत्रमें जाकर प्रकृष डालना

रीज्ञानसम् वाते है—क्षेत्रमध्या कार पुरवत सरीमा वृधिहिते उनके सामने है जाने प्रश्नीने कहा, 'सीरवोसी सम्मर्ग को कुछ हुआ' जा तम से दूनने पुन रिका और सीक्षणने को बात कही है, जा भी जन्म है सी हैपी। आतः अस मेरी इस सेनवार विभाग करे। इसकी विभावते दिन्ने का साद अस्त्रीक्षणों केना इकड़ी हुई है। इसके वे सात सेनवाय है—कुछ, विश्व, वृक्कुत, विभागते, सारवेक, वेशितान और पीमसेन। वे साती वीर प्राच्या पुन, सारवेक, है तका सम्मातील, जीवितान और पुन्तक्षण है। है, वो कि राज्युविने बीच्यान अधिका सावना कर करे ?' सारवेको हता—'मेरे विकासों के स्वाच्या विराट हम

स्वयंको वाल- 'यह विकास के महत्या निराट हुन प्राचेत योगा है।' वित प्रमुखने वाल, 'मैं के मानू, जानामार, सुरुवेत्सा और वर्णकी शृक्षि महत्या सुरुवयो इस प्रकोश योगा समझता है।' इस प्रकार प्रतीकृत्यांकी कह शृक्षकेश असुनिये कहा, 'मैं शृक्षुभयों प्रधान केवाकी होनेनेन्य समझता है। में मनून, कावम और साम्बाद व्यश्य किये एक्सर को हुए ही असिन्ह्रमाने प्रकार हुए हैं। इनके दिस्स मुझे देसा कोई बीर दिखानों नहीं केवा, को श्वासनी श्रीवनकेक साधने हा संते।' प्रतिक्त बोले, 'हुम्बह्त दिखानीकर मान सीनानीके बचके निन्ते ही हुन्य है। जादः मेरे विकारने में ही प्रधान केनायति होने काहिने।'

क्ष कुरवर क्ष्म पुषिक्षेत्रने वदा—शक्तके । वर्णपूर्णि सीकृत्य सारे संस्थाने सामानार और कारकारको कारते हैं। साम: विस्तेत निर्धा में सम्पति हैं, वर्गको केरायों कराण याव । प्रति ही वह समस्त्रास्त्रानों कुरस्त है अवस्था न है, स्था दृद्ध हो या कुछ हो । इसरी जब का क्यानको कराण प्रकार में ही हैं। इसरे जल, राज्य, शक-अश्वा और सूक-बु:सा इसीयर अवस्थानत है। ये ही सबके कर्ज-कर्ण हैं और इसीके अवीन तक कारकेटी निर्देश है।

वर्षराज वृधिद्वितको न्य नाम सुनकर कामकन्त्रन नामकन् कृत्वाने अर्जुनको ओर वेशले कृत नाम-नामाण । आपको सेनाके नेदावके रिक्वे वित्र-किन वीरोके नाम रिक्वे नामे हैं, इस अपीको में इस काके कोच्य कारता है। वे सभी नाहे करावानी बोद्धा है और आपके अनुआँको कारता कर सम्बद्धे हैं। किन् बित भी मेरे निवारने मुक्कुनको है जनान सेनाकी बनाना अपित होना।

ऑक्ट्रप्रके इस प्रकार कहनेवर सभी अनक को जस्स इत्। उन्होंने कड़े इर्वकॉर की। सब सैनिक क्लोक विके इसकार कुरुश्रांत्रमें जाकर प्रदूष झालनां वैक्-कृत करने हने। सब मोर 'कुझ्के लिये वैका है पाओं' व्य इक्ट नूनरे रूना। हाबी, मोड़े और रबोका बेप होने

सम्ब क्या सनी ओर इस्तु और कुटुपिकी धीवन भारि कैट क्यों । सेनके जागे-कार्य धीवसेष, स्कुट, स्त्रदेष, जरिक्तक, श्रीवदेशे पुत्र, बूत्युत्र क्या अध्यान्य पात्रास्कीर को । राज्य कुर्विद्धर बारको नाहियों, बासारके सामार्थे, हेरे-शब्द और कारको आहि समारियों, कोसी, सबीनों, वैद्यों

्वं अवस्थितिकाकोको सेकर करे। वर्गराजको सिद्ध करके क्षातानुकारी क्षेत्री अन्य राजन्तिसाओं और क्षातानुकारी सदीव क्षातान्तिसामें क्षेत्रस्थ आसी। इस

प्रमान प्राच्याकोण परकोटी और पश्चेतारोधे अधने सन और सी आदियो रक्षाच्या प्रमाण कर मी और सुवागीदि कर करके सही विकास साहितीके साथ मध्यामंत्र स्वोमें बैठकर

कुम्बोत्ताको और कारे । का समय क्रमानाचेन सृति कारो हुए कहे केरका करा हो थे । केरका देशके चीव राजकुमार, पहुलेख, क्रमीवराजक पुर समित्र लेकियान, असुदार और

विकासी—ने जब गीर भी बढ़े उठारहरी अख-जल, कर्मन और आकृत्यासिक्षेत्र सुधारिक्ष के अन्य जान मले । सेराके

तिकारे कारणे तथा जिल्हा, सूच्या, सूच्यां, सूचीपायेव और

प्राच्छाके कुम से। जन्मपृष्टि, केनिसान, वृत्रकेत् स्तर

साऑड—ने सब श्रीकृष्ण और अर्चुनके जासपास संकर

को । इस प्रकार प्रमुक्तानाको स्थिते बसका स्था पायकार्यः

कृष्ण्येको पहिला। वर्ण व्यक्तिमा एक जोरते स्थ

चनकारोन और कृत्ये ओरने श्रीकृत्य और अर्थन प्रक्रूचनि

कारी तरो। जीकृत्यकोः एक्षु शासक्यकारी सहस्रकारी सम्बद्ध कीकल स्थान स्थान साथी सेनाक रोगटे करे हो गते।

का बहु और हुक्किनोंके क्रमके अब क्षी सीर्के

इस प्रश्नु आर हुनुस्थान क्रमा अव हुन बास्त विकारण विकार पृथ्वी, आवास और सन्द्रांको

गुरुवाक्षण कर दियो ।

differents and shall t

क्यून्यन एका बृधिद्विरने एक कौरस मैदननें, वहाँ कस और देवनकी अधिकता थी, अपनी सेनाम्य पहान इस्ता। इस्तान, कार्निकोक कालम, तीर्च और देवननिंदरेंसे दूर एकार अक्षेत्रे कीवा और स्वयोध पूर्विने अपनी सेनाको सारामा कहा कालकोके निर्म किया क्रकारका दिविर कालका कथा था, ठाँक बैसे ही देरे सीक्याने दूसरे एकारकी क्रिये तीलार कालके। ३६ सभी देवेंदे पीकाई अध्यास्त्री काल, जोटन और देव साम्योधी थी तथा हैका अध्यास्त्री की अधिकता थी। ये समानोधी क्यूनुका देरे एकारिया की अधिकता थी। ये समानोधी क्यूनुका देरे एकारिय रहा हम विकालकी समान वान कहा थे। उनमें प्रैस्क्रों कियी और पैस्क्रोण नेका देखर निपृष्ठ किये वर्षे थे। ध्वारम मुस्लिएने प्रतेष विभागे प्रमाह, गरूर, स्थान, एक, सहर, थी, स्वयंत्रत पूरा, कर, कर, पुन, शहि, म्हे-बड़े पण, क्या, क्षेत्रत, करते, खड़ि और स्थानस--वे सभी पीने प्रयुक्तने रक्षण से भी। उनने

चित्रम करना करण किये, इससे चेन्द्रामीके साम कृद्ध करोको अनेको इसी कांत्रोको स्था कर्ने विद्यालय क्षेत्र क्ष्मानीको कुम्बोली जाना कुम्बद उसी विद्यालय क्ष्म रक्षमेकारे करेको साम क्षेत्र और स्थापिनीके साथ उसी पास कारे करें।

## कौरवपक्षका सैन्य-संगठन तथा दुर्वोधनका वितामह भीव्यको प्रधान सेनापति बनाना

क्लोनको का:—गुनिका । जा पूर्वोक्तमो करून हुआ कि महत्त्व पुविद्वित कुछ कलेके निनो सेन्स्राधित कुल्लोनने आ को है से आने क्या किया ? कुल्लोनने कोरण और पांच्यानि को-को कर्न किये थे, उन्हें में विकारको सुरूप महता है।

रीतन्त्रकार्य केले-कार्यक्य । श्रीकृष्णके यहे वार्यक राता क्ष्मेंकरने कर्ण, इस्तान और क्ष्मांनो कहा, 'कुन्स अपने अंतुनारे असाधार होतार ही पान्क्रांके पान करें है। perfect it actual women flager of any spate flot इतेरिक प्रति । सामानी बीक्रमाओं पान्कोचेंद्र प्राप्त नेप प्रज होना है अनीह है क्या चीन और अर्थन में क्योंके कारी प्रतेकारे हैं। प्रतिकृत भी अधिकात बीमांत्रके पहले रहते हैं। इसके रिवार पहले मेरे करका और कार्क प्रकारिक Revenue of Pares (8 8 : Reven soles grouph of ther the fi-हो। ये क्षेत्रे सेनाके प्रकारण और क्षेत्रकार्क प्रकारन कारोवारे हैं। इस अवने यह युद्ध बढ़ा है पर्यवर और चैनावस्त्री हेगा। साः स्थ सामानंते सुहारे स्थ सालती वैकर कारनी कविने। कुन्कोन्ने ज्ञून-वो क्री कामाओ, विनमें बारवी सम्बाह्य हो और यह साविवार न कर रागे। उनके पाछ जार और साहत्वा को प्रार्थका करन काहिये। जारी ऐसे एक्ट बारे बाहिये, विश्वो बारेसारी क्यान्त्रेको प्रमु रोचा न सन्ते तथा जनते अनुस्तान सेवी प्रमु क्या हेती पादिने । सामें कंपा-संख्येत इतिसार रक्ता हो स्था अनेको काम-प्राथमधी समाप को और अबं देवे न सरके आर है जेवल कर से कि का रेनाव कर केना है का रन वीमोंने 'के जाता' देश करकर को उसकते उतरे ही कि प्रमुख प्रकाशीके ट्राइनेके विन्ते विक्रीत वैकार मन्य सिमे ।

न्य रात निकास नानेकर कर आतःस्थान हुआ से राजा कुर्वेशको अथनी स्थारंड अस्त्रीतियो सेकावा विकास किया। असने पैराठ, इस्पी, १४ और कुझाबार सेकावेसे अस्य, स्थाप और निकास केवियोको अस्या-अस्या करके उन्हें स्थासका विक्षा कर किया । वे एक बीर अनुवार्ग (१वाकी नगमाओं) रिन्दे करके मेचे बेंक हुआ करह), तरकार, करूब (रककी क्यानेका पान आदिका प्रदेश), उपस्ता (निन्दे प्रापी प केटे का करें, केटे बरवार), परिंद, निवड़ (वैद्यानेहार के याने व्यक्तिको प्रत्यक), स्वति (एक प्रकारको स्रोतिको रको), क्या, सामा, क्य-क्या, क्य-सक्यो संसर्थ, was freez, wormpfeije, (une waspert firefein क्क), तेता, बह, बाल, विश्वार सर्वति पहे, प्रत्यक्ष पूर्व, क्षेत्रकारम् (क्षेत्रकारिकारी कृत्य), ब्रह्माती ह्येड्रेके स्त्य, जीत कुम पुरुष धारी, क्षेत्रे, साल, विशेष्टरात (नेरिका), केव कुछे हुए मुख्या, क्रोडोकारी स्वडिमी, का. जैन रूपे पूर् पाय, यून तक क्षेत्ररियों, दर्शन, अपूर्व, केल, क्रीका करू, प्रकार (शेकेंट क्री या क्रीक कारी), बाध और मैंकेंड क्यांने को हुए एवं, जींग, जारं, कुरार, कुकार, डेरमें चीने हुए रेडमी बना, बी तथा चुड़ाती सन्तरम्य सामानियाँ निर्मे हुए थे । तस्य रचीने चार-वार खेडे को हुए में और भी-मी काम रहे गये में। जारा एक-एक सार्टिंग और के-के समाराज्या से । ये केनी के उसके शर्मी और अवस्थित प्रकार है। किस प्रवार रव समावे गरे है, केह ही क्रिक्टियों की सुरक्षिक किया पहा का । उनका सहा-सहा पूजन कैरते थे । प्रान्ते के सामानित वर्वकोंके सप्तान कान स्वते थे। उनमेरे के पुरुष अञ्चल सेवार महत्त्वाचा बाम करते थे। वे करने चेना थे. वे कारणारी वे तक एक स्वीत और विकारकारी का । इसी जन्दर अच्छी सरको सम्बन्धे पूर्व स्वयूपी बोर्ड और महत्त्वें पहल की तर सेवाने कर रहे थे।

विक्र तथा पूर्वेकको अस्त्री त्याने स्वीताहर विक्रेस पुद्धिका और श्रूरवीर पुरसोको ऐनापतिके पहार नियुक्त विक्रम ( उसने कृत्याकर्ग, क्षेत्राकार्ग, एक्स, कार्यक, सुरक्रिक, कृत्यामां, अस्त्राक्तमा, कर्म, पुरिस्ता, एक्स् और साक्ष्मिक--कृत कार्यक्रमां, कर्म, पुरिस्ता, एक्स् सेनाका नावक करावा । यह प्रतिदेश उनका बार-कार सरकार कराव क्ष्मा वा । किर सम एकाओको साथ से उसने हाक बोहरून विद्यापद चीधले कहा, "कुद्यती । विद्यारी ही बही रोता हो, यदि सत्त्वा कोई अध्यक्ष नहीं होना हो ना सहके पैद्यप्ते जाकर चीटियोके समय वितर-विवर हे जाते है। भूग जाता है, एक कर केल मेंग्रेयर महान्तेने कर्क की बी। का प्रका बैदन और क्योंने की संक्रमोकर साम दिना का इस अधार एक ओर दीनों क्लॉक्ट पुरूप में और कुली ओर हैक कृतिन से। यह पुद्ध आरम्ब हुआ से मीनों क्लोनि पूट पड़ गयी और उसकी सेन्ट ब्यून बड़ी हेनेचर की इतियाँने को जीत रिन्ता । तब प्राक्षणीने कृतिनोते ही जनने हरका कारत प्रा । क्येंड श्रीकिंगे करका कारक करते हुए प्राह्म, 'हा हुई बसे तपर एवं है पार मुद्धितर् पुरस्को आह पानकर लड़ते हे और तुन इक-के-सम सलन-सलन अक्ती-अभी सुनिक्षे अनुसार कार्य करते थे।' सा प्रकारोंने अपनेतेले एक पुरुविधिने कुलल भूतवीतको अन्तर क्षेत्रपति करूना और श्रीनोको पराम का निवा। हवी प्रकार के युद्ध-स्थानको कुत्रल, हैस्कारी, निकास प्रश्नीतको अपना प्रेमाची कराते हैं, वे ही लेकानों प्रमुखीको जीवने हैं। अस सुक्रकार्यक स्थान सेरियुक्त और मेरे देरीये है, बाल भी जानक कुछ नियम नहीं प्रकार तथा वर्गये आवन्त्रे अविष्यत वित्री है। असः अस्य ही हमारे होनावाल को। विका अकर कारिकार्तिक केसाओंड अने एके हैं. जी उच्चर जन इन्हें अस्ते को ।"

धीयने कहा—महत्त्वाहों ! हुन जैना कार्य है, जैना है है : मेरे नियं जैसे हुन हो, मेरे ही गान्यत की है। अतः मुझे मान्यतीने उनके दिल्ली कर कहती कार्यने और हुन्हरें नियं, कैस कि पहले में उदिल कर मुख्य है, युद्ध करना भी पूछे है हो। में अपनी मुख्यतिकों एक अन्यते हैं देखना और असुरोसे शुक्त हर सारे संस्थातको पनुन्तातिर कर सम्बता है। दिल्ली पायुक्ते पुलेखी में नहीं पार सम्बत्ता को भी में विकासीट उनके पहले हस हमार गोन्यत्वीका संदार का दिन्ह करना है। हमारे सेनापतिस्थाते में एक श्रातीक संदार का विकास कर सम्बत्ता है। इस युद्धमें वा तो पहले कर्ण सब से वा में राह है; क्योंकि संवायमें वह सुत्तपुत्र स्था ही सुताने वही स्थानतिर स्थान है।



कारी कहा—राज्य । प्रमुख्य भीनके जीवित रहते में युद्ध नहीं करीन्त । इसके सरवेदर ही अर्जुनके साथ नेत युद्ध होगा ।

विश्व प्रमाण विश्व है सानेवर हुनेवनने निविद्वंत्र गोक्कांको हेन्यकित प्रमाण मणिक विन्ता। जा समय राजालो कर्च अवानेकले सामाणको सैन्यले स्वाप अवेको गोर्च और प्रमु क्याने स्वो। अधिकोको समय अवेको गोर्च आस्तुन्द मी हुदः गोक्को हेन्यली स्वाप अधेको गोर्च आस्तुन्द सामा। विर उनके क्यानुक आहोश्योती अस्तिकालन कराया। विर उनके क्यानुक आहोश्योती अस्तिकालन कराया। विर उनके क्यानुक आहेश्योती अस्तिकाल क्यान्यला विर उनके क्यान्यक स्वापका और महारोके साम प्रभावको आगे कर अन्य एक हैन्यला प्रथित क्यांकि साम स्था और प्रथानिकाल क्यांकित स्थान प्रथिते, व्यांकित स्था प्रथानी हुन्यलेक्या स्थान है जान प्रस्ति थी।

#### श्रीवलरामश्रीका पाण्डवीसे मिलकर तीर्थयात्राके लिये जाना

्या कारोवको कुल-केलनाथश्री । श्रुप्तका भीनको सेनाति-स्वर वर्धिनक हुआ सुन्दर महत्त्वह सुविद्वित्ते क्या बद्धा ? एका चीम, अर्जुर और क्षेत्रको कारात क्या कार दिया ?

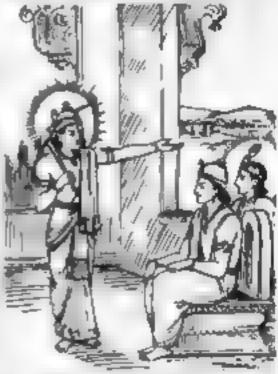
वैजन्यकार्यं क्यों तमे—कावक्रांने कृतात महारात मुनिहिरने तथ पर्यानेको क्या बीकृत्यको सुनाकर क्या, 'तुम्त्योग सून शर्मकार प्रो । सम्बो व्याने हृत्यात युद्ध विकास भीतको जान ही होता। अस तुम नेती सेकके सात काव्य सिंगुक करें।'

विकृतने वदा—राजन् । देशा समय आनेवर आवको मैसी कर कहते काहेचे, नेती हो आग वह हो है। पूर्व आवका कवन वहा किन बाग पहला है। अवस्य अब पहले आर अपनी सेवके राजक हो निवृत्त बोरिको।

त्तव महाराज पुरिवहित्ये हुन्य, विराद, राजनीय, बहुत्या, बुहुतेत्व, विश्वमधी और मण्यात्म सहोताओ कृत्यात्म अहे विभिन्नतेस हेन्यात्मकोड पहोत्तर अधिनेसा विश्व और



इस्ता सम्बद्ध पृह्युक्षयो बनावा। संशासको भी अध्यक्ष सन्देन बनावे गये और अपूँच्ये भी नेता करणान् कृत्य थे। इसी समय इस चीन संकारकारी मुख्यो क्रमीन आणा जान वनकार कारणायी, अकृत, यह, सम्बंद, स्था, अगुध और वारकेण आदि पुरुष-पुरुष व्यूविवायों से स्था दिने वारकोचे दिनीयों असे । अदे देशकार करेंग्रव मुनिविद, क्षेत्रका, व्यूव, वीरकोच और यह कारणा के कृतरे स्था थे, वे क्ष्म वर्ष हो चर्च । का कार्य कारणा कारणातीका कारणा किया । साथ पुनिविद्यों असे केन्यूबेंक हाथ विराद वर्ष हुम्बादी अनुने असाय विराद और यहे स्था पुनिविद्यों साथ सिक्तायार विरायमान हुए । असे वैद्योग्य वार और क्षम सोन वी वैद्य गये हो अनुने सीकृत्यकी और वेदनार स्था, "असे यह बहुम्बांकर सरवाहर होगा ही । इस



वैसे लिसको में अनिकार्ग है सम्याना है, जब हमें हरना भी क समान । मेरी हका है कि अपने सुदद् आप सम रवेगोको हम पुजारी सम्बद्धितर भी में नीरोग देश सक्षे । इसमें सेंग्र नहीं, भाई जो एका एकतिय हुए हैं समान को काल ही जा गया है। कृत्याचे तो मेरे बार-बार कहा के कि 'सेंग्र । अपने कृत्याचित्रोके प्रति एक-सा वर्ताय करे; वर्गोकि हमारे दिन्हे मेरे पावाब है, बैसा ही राजा दुर्गोकन है। जिन्ह में से अन्तुंत्रको देशकार सम प्रकार असीवर सुव्य करता है। भीन और कुरोंकर—में केनों बीर केरे दिल्ल हैं। पान्कारेसे किया क्रेकर रोजनसमीर दिल्हें करें करें।

है। सबस् | येस प्रिक्षत कियत है कि जीत परकारोधी हो | और नक्षपुरूषे कुल्ल है। अतः इत्यर वेस समान केंद्र है। होगी और ऐसा है संस्थान क्षीकृष्णका भी है। मैं से इस्तिकों में से तक सरकारिकों रीचीक सेवन करनेके श्रीकृष्णके जिला का क्षेत्रपर हरि भी भी कार क्षात्रक: | तिले सार्वण, क्षेत्रि ना हेरे हर कुर्व्यक्रियोंको मैं अपनीत अतः वे जो कुरू करन च्यारे हैं, उसीमा अनुवर्णन किया | इतिसे भी देश अनुवा ।'' ऐसा बहावर महत्त्वत् सरकारी

## रुवयीका सहायताके लिये आना, किंतु पाण्यय और कौरव दोनोहीका उसकी सहायता खीकार न करना

रीतव्यकार्थ करते हैं—सन्तेवक : इसी सकत क्रमा | चीनकार कुर कारी क्षा अर्थाकेंगी हेन्द्र लेखा प्रकारिक पाल श्रापा । जाने श्रीकृष्णको प्रकारको रेको पूर्वके समान रेजनिक्ती काला विको परकालेके विकास प्रकेश विकास क्षाक असी परिवेश से हैं है। एक पुनिर्देश जन्म ताने महमार जाता किया। सन्देने भी



यवानीन्त अवह किया और किन कुछ देर उत्तरकर उत्त बीगोंके सामने अर्थनके बका, 'अर्थन ! की एन्ट्रें किसी प्रकारका पर हो से मैं तुम्मवेगीकी सहस्रकारे मेंन्वे का गवा है। मैं पुरुषे दुखाउँ ऐसी सहस्ता करेगा कि कुछ उसे एक नहीं सकेने । संस्थारमें मेरे स्थान परकार्या कोई कुस्य करूक नहीं है । हम बुद्धारें पुत्रे किस रोजारे जोको रेमेक्स कर क्रीयोगे, क्रानिके में स्वाल-स्वाल कर हैंगा ( होंगा, कृत्य, चीन्य, कर्त-कोई भी भीर क्यों न हो, अवना ने सभी एका प्रस्तो होकर मेरे सामने आहे, में इन इस्टुओओ मारवार तुन्हें हैं। पुर्वाच्या राज्य सीच हैता (

तम अर्थन बोक्स और वर्गतकारे और देशका हैते और प्रत्याचको बढ़ने तहे, 'वित् कुकारते कर तिया हैं; क्षेत्रक ची मैं महाराज परपुरत कुर और होजावार्थका दिल्ल **बाहरता है, ओक्रांक के सहायद है और गायीय करने मेरे** कार है। फिर में बहु बैठों कह समाप्त है कि में इर राज है। नेका ! किए प्रत्य चौरकेंकी चेन्यकर्ष समारका पैने गानकी राज्य पुरु विका या, का समय मेरी सहस्था करने बर्धन ज्ञान्य का ? तथा विराधनगरने ब्यूत-के बर्धरकोंके प्राप अवेको हे बुद्ध बतारे प्रत्य युक्ते विकाने स्थानका है वीं ? की पुत्रके रिल्मे ही चलवान् संबाद, इन्छ, कुनेप, चल, बराव, अति, कुरावार्ग, क्षेत्रकार्ग और श्रीकृष्णको उपसना की है। तकः भी पुद्धारे करण हैं देनी पराचा पास करनेकारी कर से मुक्त-केस पूरूर साम्राज्य इन्होंद्र सामने भी नहीं बद क्रमत । हारियो पहलहो । जुहे किसी हरदाया पर जुहै है और न विश्तीको स्थानकानी हो आवश्यकत है। तुप क्यां। इक्यांके क्यूबर व्यां करा पहे, व्यां क सकते हे और सूत्रा बड़ों से अन्त्यारे को ।"

अन्ते कर क्यों अपने समुद्धे समान विश्वास वाक्रिनीको स्वैदनका कुर्वेकनके कन्न अन्या और वहाँ भी अपने केली ही बार्व करें। पुर्नेकरको पर्द अपने बीराजका अधिकार का, इस्तीयों उतने भी उत्तरी सहकता होना स्केवार नहीं विश्वत । इस प्रकार बहाराजनी और सब्दी—मे ये यौर जा चुन्नारे विकास्थर करे गर्थ।

मामानोबी रोजका पहान पर कलेक्ट किर भई क्या हुआ। होना है, जा होनार है पीता।'

का केने सेन्त्रतेक संस्तर हो का और उनके | मैं से इनका है हेन्कर है करवार है, पुरारकी कुछ नहें म्मूलक्षका भी निक्षम हो पन्य से क्या प्रवाहने स्थानने | होना । केरी कृदि होगोनो अन्तर्भ वद सन्दा लेती है, बिद् पुरत, 'सराम । अस होर पुढ़ो पढ़ बनाओं कि औरन और | कुनैवाओं निस्तेनर किर बहर नाते है। असः अस यो पुज

## दुर्योद्यनका पाण्डवासे कहनेके लिये उल्काको अपना कटु संदेश सुनाना

रतको क्य-स्थापन। स्थापन कम्बनीरे से क्षिरकारणी नहींके बीरपर भारत किया और कॉरवॉने एक क्षारे स्थानक प्राच्योक विकित्ते अवनी क्रमणी क्षार्त । वर्षा एक दुर्वोधनने को सामानो अपनी लेख सहरानी और विद्यानिक दुवादिकोचे दिन्ने साम्य-असन् साम्य निवृत्य क्रके का एकओवा वह समय किया। कि उन्हेंने कार्य, समुद्रीर और कुशासको साथ मुख्य पुत्र परावर्ध करके जिल्ह्यों कुरावर बहु, "जाद ! हर प्रश्नोते



काओं और बीक्सके प्राप्त ही पत्त्वारोंने का संदेश करे । निवासे विको क्योंने विकास हो पह था, यह पर्वत्य और पाणकोंका प्रवृत यह सब क्षेत्रेणला है। सर्वत । इसरे कृष्ण और अपने महाबंधि सहित सहको यो पर्य-पर्यक्र मही होसीको सरो मही थी, ने उसने कौरकोको रूपनी सुराची भी। अस उन्हें कर दिखनेकर तसम आ पना है। एकर्। कुर से को कर्मिक को को है। अब कुले ।

अवनंति कर क्यों राजावा है 7 इसीयों से विकारकत स्वकृते है। एक बार नामाने में विकासी इस उसकी एक क्रमान बहु था। या नै तुने सुन्ता है। एक पर एक विरुक्त क्रिकेट के कानेके कारण नक्तनीके स्टार क्रमंत्रम् क्षेत्रर कक् के गया और सब क्रमियोको अरम विकास जिल्लाके रियो भी क्योगरण कर यह हैं हैतरे चेक्क करने रूपा । इस प्रकार बहुत समय मीत मानेपर ची/चेंके जायर निश्चार हे गया और में जायर समान बारने कर्ण । उसने भी सम्बद्धा कि नेरी सरका सरका तो हो भूगो । हिरा बहुत देशों कह बहुई बहुँ भी आहे और उस क्यानिको देशाच्या कोच्यो एटो मित्र 'इस्परे प्राप्त व्यूत है। इसरियो इकारा पान्य मन्त्रात यह मिल्ला इन्ट्रोडे में बुद्रे और करक है, उसके पुर किया को है जा उन सकते उस विकासके पास पायार पाया, अगर प्रयोग प्राप्त अवश्रम और कार पहलू है। असः इस अस अन्यती प्रश्तानी आहे है। इतन प्रार्थक वर्गमें जनार रहते हैं। जन: प्रसार कह कैसे केन्याओंकी एका बाते हैं, सबै प्रकार जान बनारी रक्षा करें।

"भूजेंचे हर अकार ब्यूनेयर उन्हें अक्षण करनेवाले विकारने कहा- 'में इस भी करें और तुम सबकी रहा भी करे—ये केनों काम क्रेनेक्ट हो जुड़े कोई रंग नहीं विकासी केंद्र। फिन की सुद्धार क्षेत्र करनेके लिये मुझे तुकारी जल की क्रवहरू पाननी काहिये । तुन्हें भी निकारति मेरा एक काम करन होगा। मैं कठोर निक्षेक्ट पासन करते-करते बहुत क्या पान है। भूते अवनेमें फलने-फिल्मेकी तरिका भी प्रक्ति विकामी नहीं हेरी। असः अध्यक्ते युद्धे तुम निरम्प्रकि नहीके रोसक पहेंचा दिया करों ।' जुर्देने 'च्यून अच्छा' कहकर जानी कर स्वीकार का रहे और सब को बारक स्वीको भीत विशे ।

"किर से बढ़ करी निरम्ब का खुटेको सा-सम्बन मेटा क्षे पर्या । क्षार पश्चिमा संस्था दिनोहिन क्षाम क्षेत्रे सारी । १०० का राजने अञ्चलके निवस्तार प्राप्ता, 'क्यों की । पाना से वेक-वेब कुरका का का है और इस बहुर कर गये हैं। हुसका क्या कारण है ?' तम अन्ये क्षेत्रिक सथका के सकते बहुत बहुत कर, अन्ये बहुत—'कारको वर्तको बरुव बोदे हैं



है। अभी में दोग राज्या है इससे मेंग-जोस कह मैंगन है। से प्राणी केशन प्रयम् गुजरी हो काल है, उसकी विद्वारों काल भई होते। इसके अनु बरावर पूर होते का से हैं और इनकेंग कर से हैं। सभा-अवस दिस्के दिक्का पूरा की निकास नहीं है पूर है। सोटिस्कारी पह जात सुनकर सम पूरे काल गये और का हुए किशन की अनक-नह है। सेंगर पाना गया।

"हुएकार् । इस प्रकार तुम्मे की विद्यालया काल कर एक है। येथे कुर्ति विद्याली कर्मकारकार केंग का एक वा, वर्ती प्रकार तुम अपने सगै-सम्बद्धिकारों कर्मकारी करे हुए है। तुमारी करते हो और प्रकारकी है और कर्म कुरे बंगका है। तुमने दुनियाको उगनेके विश्वे ही केंग्राम्थल और सामित्या करिय करा पत्रा है। तुम का प्रकार करेग्राम्थ इस्तिया अपने करा पत्रा है। तुम का प्रकार करेग्राम्थल आस्त्र की। तुमने इससे महानोको करान करके सामान आस्त्र करें। तुमने इससे पाँच गाँव की थे। विद्यु का बोसकार कि विद्यो प्रकार प्रकारनेको कुर्तिक करके उनसे संमानकृतियो है। हो इस करें, इसने तुमको स्थान करने उनसे संमानकृतियो है। हो सेने दुस्तित विद्याले स्थान कर हम कालो कर करके से एक कर कई का करते। हुए वंति और करने मेरे सकर है है। दिन भी कृष्णक असम दिने करें केंद्र है ?

"तहात: ! किन पाण्यानिक यहा ही कृत्याने महाना कि तहां अपनी और चल्लाकोची पहल घरनेके निर्म अन्य सेमार होतार इसरे प्राप्त पुद्ध करे । तुमने कामाने श्रभावे को प्रमुद्दर का वारण किया था, बैसा ही फिर बारण करके अर्जनके सर्वित हरूर पहर्ष करे । इन्हेकर, याना अथना कार प्रकारक के हेते हैं, फिलू के रज्यात्मारे क्या बारण किये हुए हैं, क्रमार से पूजा नहीं विभाग समाते । में तो उनके माराण ग्रेमरें कार्यार गरकने राजने हैं । इस भी मदि कहें से आकारममें कर क्रको है, सक्ताच्ये एक अवते हैं और इन्ह्रमोन्डमें या समते हैं। जिल्हा प्रस्कों य को अध्यक्ष अवन्त्र निरम् हो स्त्याता है और व अपने प्रतिपक्षीको प्रशंक है। या सकता है। और हमने के का मा कि 'रलपुनिये कुरायुक्ते पुरोको परमाकर क्रमान्त्रोको अनका राज्य क्रियाकेन्द्र, जो सुन्द्रात यह स्थित सी स्क्राप्ते को कुन दिया था। अस तुन स्तरप्रदेश होकर पान्यकोर्क हैं जो परस्कान्यके कार कारके पुत्र करे। इस की प्रकार केंग्रा देखें। बोलगर्ने अन्यवस्त्र ही तुमारा नह का केर कर है। किए अब यूने मानून हुआ कि जिल लेकी तुन्हें मेरका बढ़ा रहा है, वे कारको पुरत-विद्व कारण प्रार्टनकोर दिनके ही है। पून संस्था हुए सेनाम ही से हे । मैर-केरे एक-नक्षणकोको हो सुन्तरे साथ द्वार करनेके हिन्दे हंजानपूरियों अल्ल की प्रक्रित क्यी है।

"उस किया क्रिकेट वर्ड, बहुवां की, अहारकार पृति, वृत्ती संस्कृतिको हुए कार-बार सक्ता कि हुए सर्वस्थाय इसामें सहसे को अंदिक कर कुछ हो, जो नित्त्य का कर देन । यहि स्वीत स्टूबर हो को दु:सारकार सून करना और हुएने को सक्ता का कि 'में स्वाकृतिने एक सका क्या क्याह्मुहोंको का अनुना', तो स्टूबर समय की अब अब एक है। दिस हुए मेरी ओसी स्कूबरने सक्ता कि अब स्टूबर कुछ करों । इस तो दुक्ता पुरुषां देवी । अब हुम कुमिहिरके सनुपा, मेरे और होत और ही-स्टूबर अबली तरह कर कर को । इसी उन्ह सक एक्यानोंके बीचने स्वाकृत की स्वाकृत कि हुन्हें को दु:का स्वाने को है, उन्हें कह करके अब सरवानानीने मुद्ध करों ।

''तिराह और हुक्को केरी ओरसे बढ़ना कि तुम सब हकते हैं कर पूछे जानेके दिने जाओ और जबने तथा कव्यवर्धिक दिनों केरे काम कंश्रम करों । बृहकुत्रसे बढ़ना कि जब तुम होन्यकर्मी शामने आओरों, उस तुनों मासूम होगा कि मुक्तार दिन किस करने है। अब एव अपने सुद्धाने स्वीक कैन्नमें आ पन्नो। किन किसाबीसे ब्यूबा कि पहन्तम् भीना सुद्धें की प्रत्यकार वहीं करेंगे। इस्तीनों हुन निर्मत क्षेत्रर बद्ध करना।"

---

इसके कर राजा हरोंकर कुर हैता और अनुको स्कूपे एला — 'तुध कृष्णके शामने ही अर्थनके एक कर फिर कहार कि तम का हो हमें पराश करके इस प्रकार करते. गाँ। तो करारे क्रमसे क्रस्कर तथे प्रश्नीवर क्रमर करना क्रेमा । विस कार्यके किने स्थानी का अला करती है, जाना सन्त आ गना है। जब एक संवापकृतिने कर, बोर्च, बोर्च, राजारका और पुरुषार्थ दिसावार अपने कोकको उंछ कर के। इसने तुन्हें कहतें इतना वह, दुन्हते सानने हैं। इस प्रेंबरेको कपाने छतीर सामें थे, दिए स्टीने पाना करीर लिये पहरे निवासमार हुन्हें कार्ने एक और एक क्लांक विकार वर्ष क्यार अन्त्री कुरूने बारोंद्रे हिन्हें पान्त् विकास । इस वेहारियाओं, प्रमानात और प्रीमदेशें हेहारेको पहर धारके करा गर्न कर जारते और सम्बन्धे साथ रोकर पहले नैहालों का पाओं । तुन पहुत पद-पहचा को क्याच हाते हे, से क वर्ष करना होहरू का कुछा देखा। भारत, तुन विकास चीवा, कुर्वि कर्च, बहुकारी कान और आवार्ष ब्रेणको चुट्टमें परावा निर्म किये किये एका कार माहते हो 7 अभी । पूर्णानर पैर रहलेखला हेला होना बीच है, रिलो प्रारवेका चील और होना संस्थान करें तथा जिसे

इनके राजन अव्योक्त रहाई भी हो साथ और दिए भी रह नीया खे। यह मैं कामा है कि बीक्स एको स्वापक हैं और कुछो कर कब्देन कहर के हैं। तक हकरे सकर कोर्च केंद्रा को है—का कर की सुक्रमें देखें की है। किय हो, जा पन करकर भी में तुकात राज कीन पर है। किसी देख कांत्रक करने से किसार विकास है और मैंने एक बोसर है : बाब आने भी सन्द्र-सामानेसदिव हुन्हें बारकर में ही राज-प्राचन करिया । अर्जुर ( विकासम्बद्ध स्टालको स्रोपनर मैरे रूपे करने जीवा था. का समय तकार नार्याय करों या और चौकोंक्या कर कहाँ करा गया हा ? जा सक्य से अभिका कुम्बको कुरके किन महत्वरी चीनतेन और नामीबनारी अर्थन की का समामो पूछ नहीं हो सके से ह देशके, पह भी नेता है पुरवार्थ का कि विराह्मगरने वीक्तोचको हो रावेष्ट्रं क्याओ-क्याने केन नहीं की और सुन्हें विराम केरी राजकावर विकोधा कर बनावर राजकावाओ नकार पहल का में हुएते का कुलके नको छन्। सह केरा । अस तुम और कुम्म केरों विश्ववार पदा करें । विश राज्य में। अबेद कार पूरेने, का राज्य कारों कृष्य और बीनको अर्थन कर्ता दिवाशीमें चल्ले विशेष । जिल हत्यारे सभी सने-सम्बंधी प्रश्नमें करें कार्य । अर समय सूचें बड़ा नेकर क्षेत्र और विश्व क्षित्र पुरस्कृत पुरस् क्षरीवर्किकी अन्या क्षेत्र बैठल है, उसी अवार हुन्हारी पृथ्वीचा राज्य क्येंबर्ड आहा हुट सार्क्य । इस्तिओं हुन क्रांस है पास्ते हैं

# उल्लाका पाण्डवीको दुर्वोधनका संदेश सुनाना और फिर पाण्डवीका संदेश लेकर दुर्वोधनके पास आना

सक्षय करते हैं—नक्षराय । इस प्रकार कृषेयनका संदेश रेक्टर अनुक पायकोधी कामनेते साथा और वायकोधे विस्तार एका युविहिस्से करूने साथ, 'आप कृष्टे अवकोसे परिचित्त ही हैं। इससिनो किस प्रकार मुझले कर्क नया है, असे अवसर कृषेयनका संदेश स्थानेतर साथ क्षेत्र न बारे।'

पुणितिस्ते नक्त--अनुकः । हुन्क्षरे विको कोई पानकी जात नहीं है : हुन केपारके अनुवाही हुनोकानक विकार सुनाको ।

उत्कर कर—एकर्। जासमा एक कुर्वेकरे इस भौरवित सामने आरके सिने से श्रीत का है, का सुनि । स्पूर्णि का है---"कवा ! तुर सम्बद्ध, कावस और श्रीवर्णि क्योकरकी कह का का कर का का का का ने।

वीकरोरने सक्ता न होनेया थी को ऐसी इस्ते की थी कि 'मैं टु-कारनका रक पीडिया,' को धाँद इसकी राम हो सो पी हैं। अक-कार्योर्थ कार्योद्धार देकारकोच्या आवादन हो कुछा है, कुरुकेक्यों कोच्या पूका नहीं हैं और वार्य बीट्य हो पने हैं, इसकिये अब कुरुकों साथ संवारपुर्वियों का कार्यो । तुस विकास भीनर, कुर्वे कार्य, खाकारी कुछा और आकार्य होनको कुछुने कार्या किये किया किया कार्या होता होता कुछों है ? कार्य, पृथ्वीयर केर स्वयंग्यास ऐसा कीन प्रवर्ध है, किये नारवेका पीना और होना संवारप कर है तथा किरे उनके कुछा क्रांडिया हमाई थी हो कार्य और नित्त भी यह जीता की !"



प्रकारमा पुरिविष्के देला का अनुसारे अध्येत्वारे और गुज भारते कहा—'अर्जुन ! आयते पहरतम कृतीयन कहते है कि हुए बहुद क्यानाह क्यों करते हो ? ये अर्थ करों क्यान क्षेत्रका पुरुषे भागते का साम्यो । तथा के पुरु पारोपे हैं कोई कान का स्थान है, को बनाओं कुछ नहीं होना। मै गामता है कि कमा हमारे सहम्बद है और हमारे कर मन्त्रीय प्रदूष भी है। तथा हुन्दरे समान कोई केशा जी है—यह बात की जुल्ले हियों नहीं है। सिंह तो, का स्था सारकार भी में तुन्हारा राज्य कीन का है। विकले नेना कर्मनक हुकों से विस्तय किया और मैंने एका चौचा है। क्या उसने भी तुन्हें और कुदारे सन्द-मान्यमोन्नो मान्यर में ही राजकातन कर्मन्त्र । सुरक्षीयाके समय का दुध सुरक्षाने क्षेत्र को से से क्रम समय अनिनिवार क्रेंपदीब्दी कुमलेंड किया प्रकारी चीन और भागकिकार करने से का समावसे करना प्रस्कात भी भी करा एके वे जिस्हानमध्ये की है करक हुने निरायर बेजी हराज्यात विकास कर बनावर एकस्थाता नवाना पढ़ा था। ये हुन्हरे क कुलके बच्छे राज्य नहीं हैना। अब तुल और कृष्ण केंन्रे विलब्धर इसले साथ पुद्ध करो । निस समय मेरे अयोग बाज श्रुटेंगे, इस समय इक्टरें सुन्त और सैक्कों अर्जुन क्लों दिवाओं ने पानते किरेने । इस प्रकार यब तुमारे तथी सरो-सम्बन्ध बुद्धां करे व्यवेद से तुम्हें बद्ध र्मताय होगा और जिस प्रकार पुरुष्यांन पुरुष करांकारियाँ

कारण कोड़ बैटाता है, उसी प्रकार हुन्तारी पृत्योगा एका कोडों अस्ता हुर कारणे । प्रवर्तिये हुन फ्रान्त है बाओं ।'

अन्यास्त्रोप से पहल्किते कोको गरे केंद्र से । अनुसार्धी से वाले सुनकर में और भी मार्ग हो गर्न और निवाद सर्वोक्त समान एक-सुरोक्ती और देखने सर्व । यह अविक्रमण्डे सुक्ष मुख्यानकर अनुसारे पहल, 'अनुस्त । यून वाली ही दुर्वोक्तके पात सार्थ और असमें पहले कि इसने दुखती बातें सुद ही है । सुनकर केंद्रा विकास है, केंद्रा ही होगा ('

चीनकेन वर्धरकोके संबेध और प्राथको सन्तरकार प्रदेशके अवन्यव्यक्त है को और होंद फेलकर अनुसन्ने बद्धने लगे, "शूर्व । क्ष्मेंचरने कुन्नो को-जो बाते बढ़ी हैं, में प्रक पूर्वन कुन को । अन में को कुछ पहला है, सुनो । हुन कम अमिनोके कामो मुल्युक कर्म और अपने विदा कृतमा राष्ट्रानिके सुन्ते हर हुनोंकाने पर सकत कि "र हरतरम् । इस को अपने जोड़ पास करिया पुणिक्रियो अस्तानोह रिप्ते सहस्रे हैं। अन्याचीको ज्याने च्हे हैं, पालूक होता है इन्हरें का करकारीका ों कुरानों कुछ भी अवहर पूर्व है। कांद्रान अपने कुराने कार्यानके देनों हैं। अरावाने बेहर वहाना करते हैं। इसीहे उन्होंने औक्तानको प्रोत्तानेन कहा नेवा वा । तिहा अन्याप ही में विरायर काल कर का है, इससे सु कारको पर काय पंचान है। सरका से उस निक्षण करन प्रभारे प्रस्थ है। प्रेस्टाव क्षेत्र । क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र व्यक्तिको नारनेको प्रतिकृत क्षत् भी है और ऐसा है होना भी ( समूह मारे ही अपनी मुस्रीहराई तीय में और प्यानीके माने भी उसके-इसके बढ़ साले, जिल्ह मेरा भागन प्रधार नहीं होत्या । अने कुदंदे ! कावान्य करे, कुनेर और का भी देवे स्थापन को हो भी पास्करनेन अपनी अधिक पूरी करेंने। मैं सूक सीमाध्या श्रेष्ट्रसंस्था पूर्व केंद्रेण । इस पुरुषे साथ जीव्यक्रीको जागे रक्षाकर जी कोई क्रमिक मेरे सामने कालेग्ड से उसे गुंधा मनक्रमों पर मेज हैया है कुछ अधिनकेची सामाने की ने विराली आहे बाही हैं, के सची सम होगी—का मैं अपने आत्रकारी करण करके व्यक्ता 🖁 ("

धीनकेवार कर सुन्यत कारेन मी स्रोडमें पर गये और इस जवार बढ़ते हमें, ''जर्गी जन्म ! मेरी नात सुनी - तुम अभी निवाध कावर सहया कि 'वर्डि एका कृत्यहरी तुमारा रूपाय न होता के इच्में यह पूछ ही न पहली (' तुमते तो कृत्यहर्ष बंध और राम लोगोंका नाम करानेके दिन्ये ही उन्य क्रिया है। तुम स्वकाद स्वकृतकी मूर्ति, जनने कुरकार उन्नेय करानेकारे और यह सभी हो (' उन्नूक ! बाद रखे, इस संकारने में पहले तुन्हें बार्डमा और बिट तुन्हरें निताने प्राथ सूना ("

चीप और सहरेक्टी कर सुनवर अर्जुनरे कुल्फातकर वीयकेको वदा—'मार्की ! अपने स्वय किर स्वेगीका कैर है, उनके सम्बन्धने तो अल नहीं सम्बन्धि के के कंतराने है हो नहीं। जिस्सु अनुवासे अन्तरको कोई कहा कह नहीं बहाने कार्तिने । का नेकारे क्षत्र अपराध्य करते हैं: उनके के केक महानेको स्थान जाता है, सेवर हो से हुन्य होते हैं है जीकोन्सरे हैं। बक्कर किर उन्होंने कुद्धानी जन्मे प्रत्यांकर्णने क्ष्म, 'अल्लवेगोरे क्यो तुर्वेकलके को कुन हों ? इनदे रियोक्सम्पर्के मेरी और बीकुन्सम्पर्के ही निष्क की नकी है । हर मारोको सुनकर अन्य प्रको ही दिलको दृष्टियो रोको यह गर्न है। नियु जानलोगोंकी सहायता और बीकुलको उजारते में सन्दर्भ क्रीन रामाओधी भी चुक नहीं सन्दर्भ । उत्तः अस सम्बन्धा है हो में अनुसन्धे कुछ सारोपा उत्तर है है। नहीं हो कार अपनी क्षेत्रको मुहानेवर मान्यक बनुको ही हव **प्राथमको जनाम हैया। बारोजें से दुर्गतकरोप 🛊 क्या**क दिया करते हैं।' अर्जुनको भी बाब सुरक्त स्वकार्यन स्थाते प्रशंका करने रूपे।

निय महाराज पृथितियों का काम्या कर्ना काम्या और आयुक्त समूतार सामार विका और पृथितमाने संदेशकारी सुरावेश तिये अनुकार काम्या-"अनुका | एवं मान्ने और सामान्यत पूर्ण पुरावतांका पृथितमां काने कि नाई | कुमाएं वहां काम्याद है। ताम तुम्मे इने पृथ्वते तियो सामान्यत के बार के विका है। तियु दुम काम्या हे, प्रमाविक हातरे सामान्यत प्राथित कीर संदेशका स्थानकार्यों कामे सामान्यत प्राथित परिवास । व्यक्ति अन्ते कीर अपने सेम्यानेन परिवास प्राथित क्षेत्रकार कुमान्यत क्षेत्रकार क्षेत्रकार स्थानकार सामान्यत क्षेत्रकार विकास है। विकास क्षेत्रकार क्षेत्रकार विकास है। सीर कार्य अन्ति त्योग तेनेकी सामान्यत क्षेत्रकार क्ष्रांका क्ष्री सामान्यत क्ष्रांका क्ष्रीय क्ष्रांका क्ष्रांका क्ष्रांका क्ष्रांका क्ष्रीय क्ष्रांका क्ष्र

अंकृत्यने कार—समूख ! इतके बाद दूस दुर्गोकको केत स्रोता कारण कि 'अब कार ही तुस राजपुरिकों का कारणे और अपनी मर्थानमी दिकारते । तुम को ऐसा सम्बन्धते हो कि कृत्य पुन्त नहीं करेगा: क्योंकि व्यक्तकोंने इसके अर्जुनका सार्थान बननेके सिने कहा है—क्या इसीसे दुन्हें केत कर नहीं है ? तो याद रखें, जुनकों अपनी कोई की नहीं क्योगा; जान की कार-पुरस्कों जान केते है, जहीं प्रकार अपने प्रकेशने में समझों भाग कर हुंगा। इस समय को म्हाराम पुनिकोत्स्कों अर्जाने में सुद्ध करते हुए अर्जुनको कारका ही करतेगा।

बाब करू से दूप होनों स्वेकोचे बाद कही बहुकर करना बाहोगे अवना पुनिष्ट कीय पुरनेक्ट प्रयक्त करोते, से भी वहीं तुन्हें अर्थुकार रच विकासी देखा। और दूस को चौपरोनको अधिकारों विकार सम्बार्ध हो, को तुम समझ तो कि कुमाननका जुन के उन्होंने अल्ब हो की तिल्ला । तुन कार्य देशी जन्मी-जन्दी को बन्तो है: महराव पुविद्वेर, चीमसेन, अर्थुन और न्युक्त-स्थारेंच के तुन्हें कुछ की नहीं संस्कृते ।' क्रमें कर कायकर्ती अर्थुन होयुक्तवी होर देशकर अनुवारे व्यापे तमे—'वे पूजा अपने परवासके प्रतेषे कारतेको प्रांचको निभी स्वस्थानसा है और सिन प्रश्नार अस्या कुरुस्ता करण है, वर्ष से महे है। कारो, तुम पूर्विकारों सहस्र कि प्रवासायों अर्थुनने शुक्रांचे पुनीती स्केच्छन कर रहे हैं, जब जानकी एक बीती ही पृद्ध जाएन है सम्बद्ध । मैं तुम्हरे सामने समने महते क्षूत्रहरू विवास भीकाम हो संहार करोगा । तुक्तरे अधर्मी धाई हुआसमरे भीकारेको स्रोक्ते करका समावे के बात कड़ी थी, उसे प्री हुन कोड़े ही मिनोने साम क्षा देखेंगे। क्रूरेंचन । आधानम, वर्ष, स्रोप, करूक, निवृत्ता, अधुंब्यर, कुरल, सीव्यता, वर्गीक्ष, मुख्यमंत्रीको कार ५ कारने और अवर्थक शुरे कृतिक कुनरिकार कहा साद तुन्हरे सामने आ प्राचन । केन, हेम और करींद्र पुद्धालाने काम आहे हैं दूस अपने मोक्न, राज्य और पुर्वेकी साहत क्षेत्र बैहोने। प्रक हुय अपने बाई और कुरोबी मृत्यूका अबाद सुनेने और क्षीनमेंव तुनी करने उन्मेंने, बाबी शुन्दे अपने कुकर्रीकी पाद क्यांनी । में कुम्मे राज-राज कहता 👢 में बाबी बातें सहर

व्यानका सुविद्यार किए कहा—'सेवा स्ट्रांट ! पूर्व पूर्वेकको स्वान केट वह कहा व्यान कि में तो कोई-स्वोदको की वह पहुँकन की बहुन, किए अपने स्वोदको की वह पहुँकन की बार सकता है ? इसीएं की व्यान है केवल की पाँच मंदि है ! किए सुन्तरा पर पूजाने हवा हुन्य है और दूप पूर्वतार है जब स्वाना किया करते है ! देखे, दूपने सीकृष्टकी की हिल्लानिक किया करते है ! स्वा अधिक कहाने-सुन्तरो का पहल है. दूष अपने कम् कामनोके सहित वैद्यानों का नाओ !'

होष्कर जोगी (\*

इसके कह चीमसेनो कहा—अहुक ! तुर्धका बहा है कुट्टि, करे, कर, कुट, कुटिक और दुराबाट है। तूम भेरी ओको असने कहन कि मैंने संशोध बीचमें को प्रतिका की बी ओ मैं सामग्री कृत्य करके श्रवण है, अवहब साम करीना। मैं सम्बन्धि हु-इससम्बद्धे पहल्कार करका सोह प्रतिका दक्क

केरी संकारते होतेन्य और हैरे नवाचीको नव कर करीना प्रश्न धान, में बृतादाहुके सभी पुलेखा कार है। एक मान और ची संप-नी भारतीय स्तीत तो पास्तर कांग्रयके सामरे ही हेरे दिल्ला का गर्वेगा (

विशः पश्चारमे कहा—'क्यूब | हुन कृतसूचे पुर कुर्वेजनके सकता कि की कुछारी तार बाते अपने करा तुन औ है। हम बच्चे केल करनेत करने का के हे, में बेल है करीना ।' सक्षेत्र कोरो, दुर्शेक्ष्य । तुम्बारा जो निमार है, यह राज करा से जानक और महत्तान मृत्यानो हुन्हरें हैंन्ये क्रोक करना क्षेत्रक (\* ३०के वहान विकासीने वहा, "विश्ववैद्य विकासने पूर्व निराला चीनके कार्क विन्दे हैं। उत्पाद निर्मा है। इसरिक्ते में सब बहुवीचित्र देखते ने को अवदानी कर हैना। निर पहुन्ताने भी कहा, 'नेरी ओसी हुए हुर्नोकारो स्थान के में प्रेमामानेको उनके उतनी और सम्बन्धिको प्रतित कर कर्मना (" अन्यन्दै न्यूराक मुनिवीतने कारणकर बिर कहा, 'में से बिजी की जाता अपने कुर्यावकेंका कर नहीं कराना काहता । यह ताब मैंबन के तुम्हर्ग ही केवले अपने है। और प्रमुख्य । अब तून या तो चानने का सुनेकी हवार है से क्यों को । कर भी राज्यों सम्बन्धे हो है है

सार उत्पाद पहाराम यूनिवित्तारी उत्पाद वा क्या पुर्वे करोड यात आया और जो अर्थन्या स्थेत क्ये-वर-जो सुक हिला। तथा अन्युक्त, चीनरोत्र और वर्गत्रक व्यक्तिको पुरवार्थका पर्यार कर प्रमुख, विरात, हुन्य, स्थापन, बुक्कुल, शिकामी और शोकाम रूपा अर्थुनने यो-यो करों मही थी, है क्रम क्यो क्रमार क्या है। स्तुपानी क्यो स्वयंत्र क्या क्रोंकर्ग द्वारास, कर्म और क्यूनिसे क्यून के 'स्व प्रमाधिको प्रथा अपनी और अपने निर्माणी ग्रेन्थको अस्ता है है कि बार पुर्वोदय होनेने पहले हैं यह केनाकी रेपार है कर्म ।' तक कर्मकी अञ्चलों कृष्टेंने समूर्ण सेना और राजध्येको कृतिकाचा जा आहेर सुन विचार

इक्त अनुसार्थी वार्ते सुरुवर कुर्तीरचर कुरिवेदरे की नेतानमें अपने सहाक्षिमी हेनावा क्रम कर हिचा । स्थारको पीम और अपनि आहि सम ओसो जानकी



हेक्-अर क्रमें काले से 1 साथे आने पहल क्यूपीर प्रमुख थे। उन्होंने दिया चीनक चैपट पता और पैनव उत्पाद था, पते क्षा प्रोतिक प्रविकारिक पुरु धारोपक अवस्थ से । अर्थुनको कार्यके पान, चीनलेजाने पूर्वोकानो प्रतय, बृहकेतुनी क्रमध्ये प्राप्त, उपनेकाचे कृत्यानीके प्राप्त, स्कृत्यते अक्रमानों रेक्ट, ईन्यमें कृत्यमंत्रि स्वत, सार्व्यको क्यानके राज और विकासीको भीनके राज पुत्र सार्थिक रेले रियुत्त किया। पूर्ण ज्ञार स्थानको प्रयुक्तिः केंक्सिका अल्लो, बीचकोड चॉच पुर्वको निगर्त बीचोरे और व्यक्तिकारो क्योप एक अन्यन्य स्थानोते विक्रेका सम्बंध विकाः सम्बंधित से उसे अन्यानपुरित्ये अन्योक्ता अनेताः चे अधिक अधिकारी कराते थे। वर उत्तर स्थ के अध्येक विकास कर उन्होंने अपने कार्य होनावार्यको एका और फिर धन्यानेकी विकास विसे रमापूर्णी प्रसामित होकर करे हैं की की

## दुर्योधनका भीव्यश्रीके मुलसे अपनी सेनाके रबी और अतिरवियोंका विवरण सुनना

हुर्वोक्सदिने क्या किया ? पुत्रो से क्या ऐसा कान च्यान 🛊 । क्या किया । मानो जीव्यक्तको सामी अर्थुको संस्थानी प्राप्ते स्थानको

हता प्राप्त ने पूर्व न्यान ! बार अर्थ्न स्वयूपिये | धीमधीमो बार हो बारत हो । इसके रिया बार भी सुराजी भीन्यका यह कारोके किये अदिवा की तो के यूर्व कुछ कि व्यानस्थानी जीवानीने प्रयान सेनार्गातक पर पायर पिर

सहार बहुने तमे-बहुराव ! क्रेमस्बद्धका पर पाकर

साराजुरुक्त सीकामीने कृतिकामी अस्तात सकते हुए सहा, 'मै इस्टिन्सीन पर्यान्त् स्वाधिकामीकेमको उत्तरकार का साम दुवारा केमधीर करता है। अस इसमें हुए किसी असरका संदेश में सामा। मैं सेनाककामी कार्यों और स्वाप्ता संदेश में सामा। मैं सेनाककामी कार्यों और असे मंतुष्य—सीनोदीयी स्वाप्तास्थ्य हार है जा हुए सम स्वाप्ता पर्योग्य विका क्षेत्र थे। मैं सामानुकार हुन्यूरी सेनाकी प्रमोशित रहा करते हुए निकासाम्बारी सम्बन्धित स्वाप पुद्ध सामा।'

पुणेयारी सहा—सितामा । यात को मुझे देवता और असुरोसे मुद्ध करनेने भी माहि त्रश्रात । विश्व का अस्य रिकामी हो और पुल्लिक जावारों क्षेत्र क्ष्मती रक्षमी किये पर्छ हो, अब भी काइन के बचा है? जान अपने और रिविक्सिके सब्दे की और अमितिकांको अस्मी प्रश्न कारते हैं। अस्त में और में इस एक्सकेंग अस्मी, पुल्ले उन्हों संस्था कुल्ल काहते हैं।

चीवाओं बहा-राज्य । प्रकारी सेनामें विको रखी और महारबी है, उनका विकास सुने । तुन्हरे बढ़ने बदेखें और आपों रही है। उनमें के उत्पाद-प्रमाद है, कारे पान सुने । समयो पहले हो इत्सालम् अभी अध्ये औ भारतीके स्वीत हुन ही बात बढ़े रही हो। हम रूपी हेरूर-बेरफी कुछार और गक. अस तथा करा-साम्यानके बुद्धने भारतन हो । मै इन्हरत बंबान सेपापति हैं। नेरी कोई बात तुनने क्रिके क्यों के अवने पुरुषे में अपने मुखाबर कर्नन करो, यह अंकर भई समाता । प्रशासनियों जेड़ कारकों भी शुक्रती सेवले एक अतिराधी है। महत्त्व अनुबंध न्यहरूप प्रत्यको की में अहिनकी मानता है। वे अपने पानने नकुत और सहोतानो क्रोक्सर हैन राम पान्कोंसे पुद्ध करेंने। राज्यकारियोदे अधिनारि पुरित्रमा भी प्रदुर्शाची सेराव्य बढ़ भीवन संहर करेंगे। वित्याम नवाको ने हे प्रीक्षेत्रे क्यार सम्बद्धा है। वे अपने द्वारण प्रामीको भी संबंध सम्बद्धा प्रवासीके साथ संबाग करेंगे । काम्बोजनरेव सुर्वोक्तम एक राजिक बरावर है । मानिकानियोका एका नीतः भी रखी बढा का सकता है। क्रामा पारेने हे स्थानके के पंच हुआ है। इस्पेन्ने का हुन्तरे दिन्ने चन्कांने त्या बावर पुत्र करत होता। अवस्थिति के विद्या और अनुविद्या को अब्हे एकी करे करे है। में क्षेत्री पुरुष्टि यह जेती है, इस्तरियों ने प्रमुखेनमें फेल-सा करते हुए बाराबंध सकार निकरेंगे। मेरे विकास रिनार्वेशके पाँच गर्द यो जात अस्ते को है। असे भी समस्य प्रयान है। तुमारा कुर संबंदन और इत्यासनका

त्वाच्या—मे होनी च्यापि काम अवस्थाचे और सुपूर्णार है, हो भी में इसे अच्छा तथी सब्दादा है। एका स्वाधार भी एक इसी है, अन्त्री होन्यों, पाय का भी संस्थाने अच्छा प्राप्त विस्तानेक। मेरे विचारते पृक्षान और चौरताय भी अच्छे रही है। पृज्यामार्ग से स्वाप्तार्थाचेक सम्बद्ध ही हैं। में अपने चारे प्राप्तांची भी सबसे स्वाप्तार हुन्हारे सहस्रोचा संहार सरेगे। में सार्थान स्वाप्ताराधिकांचे सुनार स्वाप्ता है।

कुमारे काम कहाने की एक स्था है। इन्होंने कामबोसे केर men f. sembet Rentin it web uit ber mitb : हेन्यक्रमी पूर अवस्था से यह को पहल्यी है। जिल हमें अपने आप बहुत बाते हैं। यदि हमने यह होन न होता हो हर्ने क्यार चेन्ह्य केने पक्षणी रेजभीने चोई नहीं या। इनके विक क्षेत्रपार्य से को क्षेत्रप, भी प्रशानीने असे हैं। वे संस्थानो बहुत बहु साम करेंचे—इसमें पुट्टो संबंध नहीं है। निवा अर्थुरका प्रस्का महा बोद है। प्रवर्तिके अर्थने स्वाननेत्रको और देखकर ने को कभी भी करेंगे; क्योंके को थे है अपने पूछते भी बकुबर क्रम्यूको है। यो हो क्रमूर्ण केवल, प्रकार और समुख निरम्बन भी प्रमोद सामने अस्ते हो के अनेके ही प्रकार समार होकर सबने दिया सम्बोधे को क्या-क्या का क्यों है। इस्ते क्या बहुएव केलके के ने पहरके सम्बंध है। वे पहला बीतेक संबंध प्रति। कारपूर्व बहुबार भी वृद्ध शक्त रही है। वह बारफो प्रमान इक्करे प्रकृतिकी केवले कुरेश । मेरे विकास प्रकृति स्था नामक भी रही है। अपने सेमले सहेद का भी सर्वाक मेद स्थापन पुरू करेव । स्थापन कड़ीक से अतिरवी है, को मैं संस्थानों सम्बाद जनएकोर समान सम्बासा है । वे एक का कुन्ने अध्या किन पैने कहर नहीं रकते। रोजपति सारक्ष्य भी एक बहुतको है। उसके हुमको नहे अस्पुत कर्न होंने। कहाराज्य सराज्या के जातको है हो। यह प्रारी क्रमनेनमें सर्वेतन रही और मानाई है तथा पान्हतीरी इसकी नहीं कहा हुएस है। अध्योतीश्वयुक्ते एका भागात को ही और और जाती हैं। में हमीपर सहकर पुद कार्यकार्यने प्रत्येश है और राजुरूने की कुरता है। इसके किया कनारोपे सेनु जनस्त और कुक्क-में से भई ची ताके रची है। ये केमी निरम्धा प्रदानीका संकार करेंगे।

च्या कर्ण, को हुन्हारा च्यार नित्र, सारक्षार और नेता है तथा हुन्हें सर्वक है। प्राच्यानेते कृतक करनेते सिने हच्यार करना है, जक ही अधिकारी, जनकारी और नीम अकृतिका है। च्या न से रची है और न अधिरकी ही है। मैं हुई अर्थरवी सरकारा है। वह चरि एक कर अर्थुनके सारने चरन रचा तो असके प्राथमें चीता सम्बद्धः नहीं स्विटेगा ।

क्ष्मी भारत हेजाबार्ग की बहुने सने-'चौजाती ! होक के आप केया बाद को है, बैसी हो बात है। सावका कारण मानी निकार नहीं हो भगवा । इसने भी प्रत्येक पहले इसे क्षेत्रके समाप्ते और जिल्लाकों के नेपन है। यह जनमी है, इस्तरियों में भी इसे अवस्थि है करता है।

चीना और प्रेमनी ने को पुनकर कर्मको औरी पर मधी और यह गुलोमें भर सबने स्त्या, 'रियम्बा । मेरा कोई स्थातक न क्षेत्रेयर की साथ देखक इसी प्रकार कार-कार्य को बाजानोर्धे बीका करते हैं। मैं केवल राजा पूर्वेणको कारण है जारकों ने ज़ारी भारते का रोसा है। अपन महि पूछे अवंत्रको मानेने हो साहा संस्तर भी का सन्तरका कि मीन प्रश्न पर्व केलो पुत्रे अर्थाची ही सम्बोध्य । निव् पुरुषक्त । शक्ति आनु क्षेत्रेरे, बारा पक्त करेवे अवक क्ष या व्यापन्त पुरुष क्षेत्रेरे विशी क्षीतको प्यापकी परि कहा कहा । श्रीमा से मलके मारण है केंद्र मान करते हैं। इसी प्रकार प्रकार नेपालकोड प्रत्यों, नेपार प्रतिका प्राप्ते और पह अंद्रीकर अन्य होनेसे देख समझे मार्ट है। उनन राग-देखी भी है, प्रातीओं मेहन्य प्रणाने काली रवी-अतिरोक्तिक विकास किया वाले है। यहराज पूर्वीकर है आप करा अध्येत करा बोधा-सोमा निर्मार परिनिये । पीनवीका पान बाह्य प्रीत है और ने अपन्य स्त्रीत करनेवाले हैं, इसरियों जान इसे स्थान देविये । बाही से रागे और अतिरामिनोचा विचार और वर्जा से अञ्चादिकारे क्षेत्र । इन्हें करा, इसका क्या क्रिकेट हैं। क्या है। मैं से अवेत्स ही सारी पान्यक्तीराके पुँच केर हैना। केनाबी काप् बीत कुकी है। इस्तीनों कारणी जेरणते कुन्मी कुछि की मोरी हो रुपी है। ये चार, युद्ध, सर-कार और सरकार्यकी वार्ते क्या समझे। सरकारे केवल क्योकी

मान्यर कार केरेको हो बहा है, अतिवाहीको नात्रपर गाँउ कार्रिक से भे दिल कारकोर्क समान ही माने जाते हैं। जहारि में अनेता ही पानकोची पूर पेनाची नह बार ऐसा, निक केपानी होनेके बारंग कामा यह से पीनाकों से निरोगा। प्रातीको प्रमाण्य के बीते हैं, क्षताब्द के में विदर्श प्रमाण प्रात नहीं कर सकता। इनके मरनेन्द्र से मैं राजी महार्थनपोके कार सक्तार दिया हैया है

बेको बढ़—कार्यः । वै सामस्ये पट जलाना नहीं प्रमुख, इसोने सम्बन्ध हु बीरिज है। मैं पूछ हूं से क्या हुआ, यू को अपने अवह ही है। जिस भी में तेरी पहाची recon aft abreit attent mit mit im Et क्यांक्रिक्य संस्थानों से बहेन्से क्या-एक स्थापक वेट बार को दिनाह करें। से व नाम, क्या कर सेन्ट ? और श्वरकारंक । प्रार्थि को आएवं करने करनी अपने ही केरो कहा की किया करते, से भी रेरी करवारेसे फुक्कर कुरे के करों कहते ही बहाते हैं। देख, यह माजिएको मही प्रकार हुआ का के की बढ़ी इसके हुए एक संबक्तीओ बोक्सर क्रान्तिसकारी क्रान्ताओं के रिस्त का। का समय देश-देशे प्रकरी एकाओसी की अवेतरे हे बुद्धानुकी परास का दिवा का

का विकास होता है कराए एका कृतिकारी प्रोत्सवीचे प्राप्त, Thurse ! June 4th mir bereit : acreit firere war करी काम जा का है। जार अन्य एकमा मेरे क्रिया है alle रहें। के विकास के जान केनोब्रेस नेस कहा नारी अस्तर क्षेत्र । उस मैं कहातीओं सेवले भी भी रथी और अधिरची है, अल्ब्स निवरण सुरूत पहला है। येरी इच्छा है कि में प्रदूर्तिक सरकारके कियाने सामानकी जात का 🖟 क्वीड आसको एक बीचो हो उनसे हमारे पूर्व the write it

#### पाण्डकपक्षके रची और अतिरिचरोंकी गणना

\_\_\_

बीकारों का<del>र कार्या की हुक्तरे कार्या को, [ है। कार्या का महरू कार्या की अन्ते की है। में उस</del> असिरवी और अर्थनवी हो सुन्य किने: अब की हुई च्यावन वार्यानकाने ही हुम्स्केशोबी अधेशा निर्माने वीहने, पारकारकांद्रे रही उसरे सुरुवेची अञ्चलक है, के बद की अपूर केवरे, पर्यक्रमांको प्रेटीन करने और पृथ्वीवर कुने । प्रथम को रामा मुनिदीर ही बहुत अन्ते क्ष्मी है । इसकार साहितने को को ने वे केम रक्ष्मीरने हमाई भीकोर से अस्त रविवोदे बरावर है। काम और भारते | केनको नह कर करेंगे, कुर इसने बुद्ध कर करें। अर्सुनको बुद्धारे असके अध्यन कुरार कोई केन्द्र नहीं है। असने इस हो अनुन्द्र औनस्थानको स्वाचना नाम है। देनी प्रश्नानी इन्तर प्रतिकोच्या कर है एका कह कह ही कारी और तेवाबी | संकारोपे आर्थन-नेसा रखी कोई भी नहीं है। इस सक्त ही नहीं, की के प्रकारकों के ऐसा कोई तके नहीं तुन । यह बहै क्रोब क्रेस के दूसने करे रेजके विकास कर Direct Arrival were to it it an own it to अप्रवार्त होता। प्रमारे विच्या क्षेत्री केन्द्रकारोजे बीवास स्टेर्ड भी भीत सालेंद्र अन्ते नहीं दिया प्रत्यातः। सिंह् हम होनी भी and said all said it said the said said said said. क्रमंब्रका है।

इनके दिना क्षेत्राचेत चौची कुत नक्षरची है। विश्वाबंद पुत शारको भी में अच्छा रची चलता है। न्यानबु अधिननंदु से रार्क्योधे रक्षेत्रा भी शब्दा है। या यह करेने सर् अर्जुन और अंक्रमाने समाप है। कृष्णिकी मेरोने करर प्रत्येश समाध्य भी रक्यक्तेच्य कुरू है। या यस से अस्टानहोत्त और नियंत्र है : अपनेत्राओं को में अव्याद एके मानता है तथा की निवासी पुरतालु की तथा रही है। विराह और पूजा को प्रेमेनर की पुत्रों अनेन हैं, में इसे मह पर्वारको और पहल्यो सम्बन्ध है। हुस्स्या पर विकास से का केवरी इस अवार रही है। क्षेत्रकारीया किया बहुबहर को जार प्राप्ती सेनावार अच्छान है। उसे भी में न्यूनावी और अभिरती नामा है। युक्कामा पुर क्रमानी अर्थरती है, क्षेत्रीकि अस्तर्य होनेके बारण अची करने निर्देश कीवाय गाँ भिन्ना । वित्तुपालका कुत नेविदान बहुनेतु नहा है की और बन्दर है : वा परवर्गका सम्बन्ध और पहरची है। इस्के रिया क्रमोप, पपना, अस्तिरोचा, स्टब्स्य, अब और पोप भी पाणकोंके पश्चमें बहुत् परकारी और बहुत्वी है।

केकन देशके पांच प्रकृति प्रमानुकार को ही कुलाकाओ, सर्व-सर्वा प्रचीने युद्ध कर्मको और व्य क्रोटिके रवी है। क्षेतिक, सुकुमार, बील, कुलेक, बील और महिराय-ने तथी को अके रही और पह्मकताने विनास | को-को क्रम में प्राप्त आदेने वर समझे करीना, बिहा है। महाराज पार्ट्डोपेको भी मैं महाराजी मानता है। एका कुर्योद्धनेके क्रम नहीं हैना।

े विकास को रविकोंने केन्न और काईकार भक्त है। वेशिकार, प्राची, मानव और प्रातेश—ने क्यूगोकों को अने रहे हैं। छेन्नीन्द्र या क्रोन्याचा नामका भी भीर है, बहु हो संस्थान और सर्वनके सन्तर ही मानान है। जो की हर जान रही करना महिने । कांक्रिया क्रम मानोनें का प्रतित और प्रमुखेना प्रेसर करनेवाल है। क भी पुरू शरीके बरावर है। हुम्बूबा पुन्त पुन क्रमानिक के अब्द प्रोमोंक करार है। को पूर्वाचे समा जीतनी क्षत्र का स्थान है। एक प्रमूप की प्रमुक्तीनार्थ क्या प्यारची है। यह यह है प्रतासने और भारत बन्दीर है। प्रमें किया ओपियान् और प्रया पश्चानको भी में अधिरकी 100

क्रमानेची और रोजना भी एक स्वारती है। पुर्शना कृतिकोन पह है कहतर और महत्त्वरे है। यह जीकोनका कार है। मेरे विकासी कह अधिरको है। चीकोनका कुर क्षाताम कोतान कह है अवस्थे है। को मैं सार्व-भीन्तेक में अवेदके इन्द्रका है। एकत् । मेरे तुन्हें के क्रमानीको अधार-अधार रही, अतिरधी और अर्थाची कुरुने । जुड़े बीकुरू, अर्थन क कारे एकाओं मेरे को बोर्ड नहीं के निर्माण को में नहीं ऐसलेका प्रकार करीना। परंत ची हराइक शिकाबों की सामने आका बुद्ध मरेगा से को है जो करेन: क्लेडि के वह क्याओंड सके अवन प्रात्मकोको प्रतिका पर्छ है। असः विक्रते परिको अस्पता को कारे को का है, कर पुरुषो में बच्चे नहीं भर सकता। कार्या पूर्ण पूर्व हो, तह विकासी पहले की वा क क्रमानो क्या हेकर क्षेत्र हुन हो एवं है। हसीने इस्तो में कुद जी करिया। इसके दिया राजपूरिये और

#### भीषाजीका दिरलप्टीके पूर्वजन्मकी कथा सुनाना, अम्बाका भीषाद्वारा हरण और ऋख्यास्य तिरस्कार

हुनोक्तो पुरस—प्रकृति । अस्तानी विकासी और | स्वतिकृत्यकार अधिकार विकास कर अस्ती की पूर्व है काका एक को नहीं करेंने ?

रमकेकों नाम पहाचन आरके प्राप्ते सामेच, से पी आप | गांधे से पात प्राप्तकीको प्राप्तकों की विकित्तीको प्राप्त करणा। विशेषकोचेको सन्तु पहुर कोटी थी, इसरियो नीवर्ग केले—कृतेकर । क्षित्रकारिको सम्बुक्ति सन्तरे । सामान्त्रि सहे केरी सहस्त्रकारी स्वयंत्र सूत्री वो । किर पूत्री सामने देखकर भी जो में जो मानेता, जानक कारण कुने : | किसी अनुसार कुरावी कारा के साम सामा किसा करनेती कार मेरे जामीरकार किया कार्यपूर्वी कार्यवारी हुए से | किया क्षां क्षारी कार्य मेरे पूजा कि कार्यातकारी सन्ता, की कानी अधिकादा पालन बातो हुए विकादकते अधिकात और सम्बन्धित नामनी होन सन्तरम कानही राजाजीको सर्वाय गया था। मैं भी उन्हेरत ही राजी महस्त कारिएकको एककानेने जीवा । जहं या निश्म विका एक क्ष कि यो सबसे परवार्थी होता, उसे ये करवाई विवाही क्षानेती । युद्धे कर यह मालून हुत्तर से कैंने केन्द्रे कन्याओको अपने रागों बैठा दिया और वर्षी हम्बों हुए कर कमानीकी कार-बार सुन्य दिया कि 'स्कृतक क्षान्यकृत कुर चीन हर क्रमाओंको क्रिके बाह्य है. अल्ब्बोन ५११-५११ का क्रमान प्रमे पुरस्कार प्रमा करें।<sup>1</sup>

हम है कर एक अब-एक तेकर की बात हा को और क्राप्ते सार्गान्योको एक सैनार कारनेका आदेश हेरे सने। क्योंने रवॉपर प्रकृषर जुड़े भारों ओसी मेर रिल्म और मेरै भी काम परप्राचार करें तक ओरते कर दिया। मैंने एक-एक गाम महापर करने प्रार्थ, योथे और सर्वाच्योंने परासनी कर दिना : नेरी वान नातनेकी देती कृती देशका उनके हैं। पीकेको दिल पने और से बैक्स क्षेत्रकर पान गरे। इस प्रचार कर एक क्याओंको बीतकर में इतिरस्तरने काव अपना और नाई विविध्यक्तिके हिन्दे से सेन्द्रे सन्ताहे पास प्रावयतीको सीच हो। येथे बात सुरुवार सावज्येको यहा आजन् इतर और उसने बाह, 'बेस्ट ! यह आननारी पता है, पुत्रने तम राजानीया किया जात की।' किर का seconded mergit finequal कैपार्ट होने राज्ये के महरित्याची राजी पड़ी पड़ी अन्यने कई संबोधने आह. 'बीयानी । अन्य प्राप्तनी प्राप्तीने प्राप्तक और पानिक प्राच्या प्राच्यात है। अहः वेदी कर्मपूर्वन कर कुरवर रित काम जैसा करना वरित करतो, बैना भारे : ध्वारे वे मन-प्री-मन राज्य प्रशासको पर कुछी है और क्यूंने भी विवासीओ बंबाट न करते हुए एकापने क्यो करिएको क्षेत्रस कर रेक्स है। इस अकर केंद्र का से शारी करन पैत कुछ है, जिन कुरांची क्षेत्रन की तरन कमानीको रिक्तकृति वेद्या हुई अपने पाने क्ये रक्तव जाते हैं 7 जा बात फलम करके जान करने करने कियार को और फिर पैस्त करण जीना सन्तरे, पेस करे हैं

का की कारती, मोनवय, ब्राह्मिक और पुरेशियोची महार्थित सेवार अञ्चलो क्रमेवी आहा है हो। सम्बर कुर मानव और वर्षिकोंको साथ सेवार राजा प्रात्मके नगरों गर्म । अपने प्रात्मके एवा कावर कहा, 'महत्त्वहे ! मैं अन्यानी लेकने जारिक है। यह सुरक्तर प्राचने कुछ

क्षणकोच्य कर्मवर हेनेवाल है। कारे एकीवे अभी | मुख्यक्षण कहा—'क्ष्यरे ! जाते हुन्या सम्बन्ध हारे पुरुष्ते हे पुरुष है, इस्कीने अब में दुन्हें बहीनारों जीवार नों का सकता। तक तुर चीनके ही पार कही जाती। भीका तुन्ते व्यवक्त कृतका के पान का, इसरियों में तुन्ते जान करण नहीं पहला। मैं के कुलोको पर्नक अनेत करता है और जारे का कारोक्ट करा की है। जिस बहुदे कुरोके साथ सम्बन्ध हे सार्वेक्ट भी मैं तुन्हें बैठों १३३ सम्बन्ध है। उन्हः जन हक्ती कई इस्त है, को करे करे रासे (

> अन्यने का—'काकानर ! श्रीन्यन्ती नेरी प्रशासाती मुझे नहीं के नारे से 1 में तो उह राजन विशास कर रही थी 1 में माराह का राजभोको इराकर को से ग्ले । बारपराम । मैं से निरम्पराम और आपनी सुपति है। आप पुत्रो स्थेपार परिनिये । अपने वेरिकाको अलग्य अनेताकोचै अका भरी परा गया है। में फेल्फोने आक्र रेकर होता है यहाँ का नवी है। चीनकोची की नेरी अधिकाम भड़ी की। उन्होंने से अपने कार्क रिले ही का कार मिला था। नेरी क्रेसे महिन अभिकार और अध्यक्तिकारक निषय उन्होंने अपने कोर्ट पाई Ordination in those it i der acroix from afte finell of क्रमा अपने काने किया की नहीं काती। न में कारे निर्माणी पार्ट होपल ही जनके पास जानी है। मैं शब्दी धरना ही है, इस समय करने ही अवन्त्रेत पास कारियत हो है और अवसी साथ पानते हैं।"

> इस इक्टर बरा-स्यामे अन्याने प्रार्थना की, जिला कारणको असकी बारले कियान गरी हुआ। अब असके नेतीने अधिक्रोंकी करा बढ़ने रूपी और उसने न्यूपर कम्पने पेक्ट, 'राजा ! आन को जान के हैं, जाकी बात है । सिद्ध की क्रम अक्टम है से मैं सर्व-सर्व भी कार्डनी, सर्व संस्थान मेरी एक कोने।' इस प्रकार इसने करनायुक्त करन विस्तान किया, किर की बाहकने को जाग ही दिया। क्या का नगरमे महार अली हो अले विधार किया कि 'इक पुश्रीवर मेरे क्रमार एक्टिम कोई भी क्रमी न होगी। अपने सर्वाधानी केंग्र सम्बद्ध रह है गया, इसकी भी केंग्र तिरस्कार कर दिख और अब प्रवित्यानर भी वह जोई सरकते । पूर्व क्षेत्र से मेरा है है। जुले सरिता का कि जब मौताबीसे चुन्न है रहा था, वस हत्वन में राज्य प्रतानके सिने राजों कर नाती। जान मुझे क सर्वका परत दिल को है। किंद्र का पार्ट आपति चीनके ही करक जानी है। जा: जब स्थान के पूर्व क्रम को उसी इसका करना सेना पादिने।"

#### अम्बाका तपस्वियोके आश्रममें आला, परशुरामजीका भीष्मको समझाना और उनके स्वीकार न करनेपर दोनोंका युद्ध करनेके लिये कुरुक्षेत्रमें आना

प्रांतवीने वहा—हैसा निश्चम कर यह उपरंग निकासकर स्थानिकों अध्यापन आर्थ । यह रात असने वहीं कारीत की और उस अधिन के मिला के और उस अधिनकों अध्याप करने उसे हिला है कि अप इस कार्यों की कि वहा इस कार्यों की कि अप इस कार्यों की कि वहा करने को कि अप इस कार्यों की इसके निवास करने को बीत के कि उस कार्या करने को बीत की बीत के कि उस कार्यों की इसके पात कार्या को बीत की बीत कार्यों के कि उसके कार्या की वाल । कि कि कि वहाँ के कि कि अपने कि कार्या की वाल । कि कि कि अपने कार्यों के कि अपने कि कार्या की वाल अपने कार्या की कार्या की कार्यों कार्या की कार्यों के कार्यों कार्या की कार्यों कार्या की कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों के कार्यों कार्यों कार्यों के कार्यों कार्यों कार्यों के कार्यों कार्यों के कार्यों कार्यों के कार्यों के कार्यों के कार्यों के कार्यों कार्यों के कार्यों कार्यों के कार्यों के कार्यों कार्यों के कार्यों के कार्यों कार्यों के कार्यों के कार्यों के कार्यों कार्यों के कार्यों के कार्यों के कार्यों के कार्यों कार्यों के कार्यों के कार्यों के कार्यों के कार्यों कार्यों के कार्यों के कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों के कार्यों कार्यों

अन्याने वाह---मुनियास | अब्ब में सामान्त्रिमें अन्ये निर्माणे का सीटकर जहीं का सम्बन्धि । हालो अन्यक्ष ही मुझे क्यू-बार्यक्षेत्रक शिरम्बार स्थान प्रदेश । जब जी में क्यान ही क्योगी, विश्लो अगारे क्याने मुझे ऐसा हुम्योग्य प्रशास में हो

र्वनार्व बार्व हैं-वे सामानीत प्रत प्रवास का कार्यक विकास कियार कर है के के कि इसकेंद्रे कई कर करती क्षाणि होत्रकार आने। उत्तरिकोर्ड स्थान, अस्तर और मार आहिते कावद सामार विकास का में आरामने मेंड नहें से उनके सामने ही मुनियान किए कह धानवारी को करने राने । अन्या और कावियाओं विकाले ये तम करें सुरक्त राजांचे क्षेत्रभावत्त्रको स्थान सेट हुन्छ । क्षेत्रमाहर जन्मके साम के। उन्होंने को नोवने कैतरका कुक्त बैकान और स्वरत्यार ही इस कार्यालका प्रा-प्रा प्रकाश पहर । अन्याने केल-केल पुर्वत का, रूक विकासी सुना दिया। इसमें क्यांनिको पहा कुरत और फोक कुमा और उन्होंने बन-हो-बन उस निकाले यो करीया था. जाया निश्चन कर जाती बाल—'केटी । वै है। इसने पित्रके का का का मेरे कानेते ह वनारीतरका परकृतकारीचे धार का । वे तेरे का नकत क्रोक और प्रेस्तवार्धे अवस्थ स्थापन से वर्षे हैंने। ये सर्वत महेन्द्र पर्वतवस का करते हैं। वहाँ कावर को प्रतान करते हु नेरी ओसी क्रम बारों कर देश। मेरा अब सेनेसे से देश जो भी अर्थक होता, को परा कर हैने । कहे । वे मेरे को हो प्रतिकास और केंद्री सकत हैं।'

निस समय राजार्ष होतवाहर अध्यासे इस प्रधार कह थे। में, क्सी तमय चार्ड परसूरामन्त्रिक द्विम होगक अमृत्याला और दिन इसे बाल करों हिंस ? देखें, हुन्हार इन्हों होनेसे

का पने। तम मुनियोंने करका स्थापन किया और अकृत्सानवरि भी मुनियोधी नेवानोध अधिवास दिखा : का का लेग औ करें ओसी बेस्कर बैंड गये में स्वास्त क्षेत्रमात्रको उन्हरे चुनिकर परवारावर्गीका समावार पुत्र । अवस्थानकी पात कि 'सीवास्त्रामकी सामने विकरिक तिने कर अध्यक्त है को सा से है।" का दिन उन कृतिकेके उपनाने प्रयुक्तकार्थ करे करते हुए निकार पक्ष । इसरे दिन कोर्र हो दिल्लोंने निर्दे हुए बराबान् परपूर्वकारी करते । के प्रकृतिको क्षमा भूते से । अनोर हिस्सर बार और प्रदेशने बीएक्स कुलेक्सि है। सबीने बहुए, कार और पास थे। जो देखते ही का उपारी, प्राय केम्प्यून और अन्या क्रम मोकार करे हे गरे। उन्हेंने परमुख्यानेकी क्यानेक एका की और दिल के उन्होंके साथ बैठ नवे । एका होजनकर और परस्थनकीने अनेकों बीठी र्ध करोबी कर्म हेरे रूपी। कर-ही-बार्म द्वारे करा. 'परब्रुप्तनको ! यह कालिसानको सन्त्र वेशे केवते है। हराया एक निर्मेश करते हैं, यह अन्य हर स्टेरिके (

अप संस्कृतकार्यने आपने सहा—'सेटी ) पेरा क्या काम है, बात से (' क्षणा अन्याने केंग्स-सेता हुआ का, जा एक पूरा दिया। यह में केंग्स कार्यूय, मैंसा ही कोंगा। यही अपने मेरी बात न कामी से में अपने कमियोसहित औं क्या का दूंगा।' अन्याने कहा, 'आप केंग्स अन्या आपने, बेहा को। मेरे इस संस्कृत कुछ कारण से ब्रह्मणारी चीवानी ही है। स्थानि कुछे क्याम् अपने अन्योग का विश्वत का। असः आप अने यह कर स्वास्त्र ह

अन्याने देख व्यानिक सीमानुसारकी भी तथा अन अन्यानी व्यक्तियों साथ के दुव्यनेतरें आये। यहाँ में सरकारी नहींने तीरका तहर गते। तीरसे दिन उन्होंने मेरे पाक वह सीवा नेवा कि 'में हुन्हरें करा एक विशेष कार्यसे आवा हूं, इस केरा ज्या किया कार्य कर हैं।' अकी देहते हैं वह तीमानुस्तानीक प्रवानीका सम्यान शुक्ता में होता है वह केमरे उनके विशान गया। मेरे साथ कार्यकों हासूका, वहिंगत् और पुरोगीत भी से नाम कार्य सम्यानके दिनों में एक में भी के गया था। अवार्य नामुक्ताकोंने मेरी पूजा क्रांचार की और कुनों कहा, 'भीवा! जा हुनों कार्य विशास कार्यकों हुना नहीं भी से हुना हार नासिक्ताकों दुर्शकों कार्य हुन हो गते थे नंत का जीवनीरे प्रष्टु है क्यों है। इसीटे राजा प्राणको हते क्षीकार नहीं किया । स्वतः तक स्वतिको प्राची क्षाकर तम भी करे काल करे। "

तम मेरी अपने बाह्य, "सरावार | अपने बाली अपने पार्टीक राज प्रत्यक विश्वक विराधि प्रधान नहीं पर राज्यकः वर्णेकि प्रस्ते कर्प से पाले प्रस्ते कर का कि 'में से प्रस्कर्य से कर्ती हैं।' एक नेरी अरक रेकर से का कारको उनको नहीं थे। में पर, रिप्ट, अर्थलोग का किसी करूपसे अपने americ Redict की है करता !" नेर्य का स्टब्स परस्रामकीकी माँचों कोवले कहन है अहाँ और वे बार-बार कार्य करे, 'बहि हम बेरी का आहा पालन नहीं करेने हे में तुमारे जीवनोके सहित हुनों यह कर ऐसा।" 🎁 🕸 धार-कर भीडी शालीने उस्ते प्रश्नेत की, बिर्ट में बाल न हर । तम पैने उनके करवीना तिर रक्तकर पूछर, 'जनकर । आप को प्राची पात करना अक्षी है, इसका पानक करा है ? वारकारकारे पुत्रे आयोगे यह स्वास्त्री बहुवित विकासी भी। अनः मैं से आपका विकास है।' परवृत्तवकोने क्रोक्षेत्र अभि स्तान करके कहा, 'बीका। इस पूर्व पुर सरकारे हो, जिर की केरी सरकारके किये हता कार्यशास्त्रकी क्रमाओं सोधार को बाते । देखें, देख विने निम हुने सार्थित नहीं दिया समार्थ (

तथ मैंने प्रकृत "प्रकृते । जान चार्च तम बच्चे करते हैं ? देशा हो जब हो हो नहीं सकता । मैं पहले हते जल पहल है । फारत, जिस्तका दूसरे पुरुषपर केन है जब बॉरफो कोई जिस्त प्रकार अपने पाने एक सकता है ? मैं इसके भागों भी वर्गका स्वाप नहीं करोगा । आम प्रस्ता के अवना न हो; और आरब्धे के करन हे, का करें। तल मेंर पुरु है, इसीले मेरे देशकृतिक आरक्ता सामार निजय है। सिंदु सर्वन होता है आर गुरुक्षेत्रप्र-सा महोन करना नहीं जानो । इसलिने में शानके शाद यह करोके रिमे की रैकर है। में युक्ते पुरुष्ठा, विशेषकः सहायका और उसमें भी प्रकेषका पर नहीं करता। इसीसे में अन्तरके कार्यकों का का है। सिंह extensité que legre llers à lie sè pière pièrels समान ही हरियान स्टाप्टर सम्पने जाने हुए हम्बानको — स्ट कि बढ़ करकर पुरू कर रहा है, विदन क्षेत्रकर पान र रहा हो-मार करूता है, को इक्क्स नहीं रूपती । वे के इतिय क्रम हुनुबुद्ध करनेके मिन्दे रीकर हो बहाने । जान को बहुद क्रिकेरे और क्रिक फ़र्स है कि 'क्रि अकेरे के पुन्तके सारे अर्थेल बोरा दिनों हैं' सो सुनिये, का समय चीना का चीनाके सभाव कोई भूगील अवस नहीं पूजा होगा। वेजली कीर के बैंके करत हुए हैं। कार से क्या-कुराने हैं जलारिया होने बें है। को जानके कुळपियान और बुळपियाको अपने राय न्द्र का सकत है, का पीनाम क्या से तम हमा है।"

का काक्स्पनकोने हैसकर चुक्रते च्या-'भीना । तुम र्वकानुमिने मेरे साथ पुरू करना सालो हो-या गाउँ प्रतासकारी कर है । सकत, तो मैं कुरुक्तेकारे करवा है; तुम के को सर करता। को सैक्ट्रों बालोंने बीवकर में हुने अक्षानी कर देखा। इस केंन क्याने तुन्हें तुन्हरी माता नक्स-हेवी भी हेकेनी। काले, रच आहि चुड़की क्रम शामार्थ है करों।' तक की परश्चवकारियों प्रकार करके कहा, 'यो mary.

क्रमों कर परप्रधानमाँ के सुरक्षोत्र मारे गये और मैंने इक्टिक्ट्राचे आकर कर नहीं नहां सत्त्वनीसे कहीं । पासने को अलोबोर दिया और में आइमोरी पुरमानागर एवं शाक्रिकार का प्रीकरापुरते विकासर कुरुकेशनी और का दिया। का अनव क्रमानाचेत्र 'का हो, का हो' इस प्रकार आहीचीर हेते हुए मेरी सुन्ति कर यो ने । कुरबीयमें स्ट्रेक्सर हत क्षेत्री कहते. वैको पराधान काने तमें । मैंने परहरावनीके स्थाने बादे क्रेबन अनन नेष्ट कहा क्यान्य । कर समय प्रहाना, करकारी, क्यारी और इसके स्थीत कर देवता वर्ष आकर वह किया पार देशने रागे । प्रीय-नीयमें दिव्य पुत्रोकी वर्गा होने तनी, नहीं-तहीं दिवा काने काने लगे और मेचोंका सब्द होने राज्य । प्रश्नायकानिक स्थाप को प्रशासी अपने हो, में भी चुद्रचुनिक्को चेरकर उसके दर्शक बन्द गर्थ ; प्रती शामन समग्र पूजेका कि प्रकृतिकारी कहा पहुत गृहिनहीं क्रेका की पास अपने और कहने राजी, "बेटा ! यह हुमने क्या करनेका विकार विका है। मैं अभी पंजारामांकि गार पायर प्राचीन क्यों है कि 'चीन से उपन्या किया है, उसके साथ अन्य पूर्व २ करें।' तुन परवर्तनानिक स्वय पुत्र कानेका हा यह करो । क्या तुन्हें यह मानुस नहीं है कि में कृतियोका नास कारनेवाले और लाइका बीन्यादेवकीके समान प्रशिक्तानी है, जो इस जबार करते हरेता सेनेके दिन्ते वैकार के क्ये के ?' शब मैंने 🛊 और शहरवर्षमें ही दिवस 🖟 इसस्पिने कान प्रस्तावासे मेरे 📗 होनों हाय ओड़कर मानवादे प्रणाप किया और परसुरायनीसे

यो करता थे, जा भी सुन है।

एके पाल पहानी परवासकीके कहा कर्षी और उसते क्या भीगती को बढ़ने रहती, "मूने ! अबन अपने दिखा भीनके कार युद्ध न करे।' वरकुरवानि कहा, 'हुन और उन्हेंने पुत्रके केले पुत्रे उत्तरकार।

की को कुछ कहा क, बढ़ पुन सुन हिला। साथ है अन्यक्षी | बीकारी है देंगी। बढ़ मेरी एक बाद नहीं करता, हाति में बुद्ध करनेके दिन्ने जाना है।' का गहानी पुरानेक्के करन विका और पाना अल्पी, जिल्हा पैने उनकी बात समिकार नहीं गरी। क्रान्तीये ब्यानमध्ये परमुख्याचे राजकृतिये विकाली दिने

# चीचा और परशुरामका युद्ध और उसकी समाप्ति

परक्राकांको कहा, 'जुने । जान पुर्वापर कहे हैं, इसलिये में रहते करकर अन्ते तक युद्ध की यर करका। भी आप मेरे काम बुद्ध करना बच्छो है से रक्तर का व्यक्ते और माना बार्य का संबंधि ।' क्यूसन्तीने मुस्कानक सह, 'बोल ! पूजी है केंद्र रच है, केंद्र कोई है। बाद सार्थन है और बेधनाता पानती, सामिती एवं सरकारी मानव है । उनके हारा सको प्रतीनको सुरक्षित करके हो में पुद्र करेगर ।' ऐसा प्रकृति परसूर्वकारि भीता कारानां काले क्रुते ता ओरसे क्या दिया। इसी सर्वन मेरे देशा कि ये राजन को हर है। अने अभूति करते ही अबाद विकास सार पह जान ही विकीता और नगरके स्थान विकास का बार्ग पर प्रमाने अराय-स्ताय अरक-सम्बं रही से और दिन्य क्षेत्रे सुने हुए में। क्रके प्रतिकर पूर्व और जन्मको विद्वीने हुवीचित्र क्रवच बा, प्राथमें क्यून सुरहेरिक का और नीवन प्रत्यात केवा हुआ था। इनके संतरिकक कान करका क्षेत्रकार अनुस्थान कर रहा था। में जुले इंग्लि करते हुए चुन्नके सेली कुछल को थे। क्रानेदीरें उन्होंने मेरे कार और कार होते। की जर्म समय क्षेत्रोची कामा दिन्ह और बहुतको नीचे एक रचने जारकर पैक्स है। उनके पात पात तथा उनका जानार फानेके क्रिके विकित्त प्रकार करते कहा, 'जुनिकर ! अस्य की पुर है, अब मुझे आपके साथ पुद्ध करना होगा: अव: अव देख अल्बीबोर सेविके कि केर्र किया है।' का परक्रवासीने कहा, 'पुरुलेंह ! सर्वताचा प्रकृतेयाने पुरुलेंची हेला है करन करिये । अपनेते धार्मिः स्वरं कुत् करनेकानेका चा कों है। यदि इस इस प्रकार न कमें से मैं इन्हें साम दे केंद्र । शब दूस सामकानीसे मुद्ध करे । मैं तुन्हें जनका आसीर्वाद के भूति हैया, प्रयोगित वहाँ तुन्दे ओठनेके तिन्ते ही आपन है। काओ, जब कुद्ध करो; मैं कुन्तरे नवांगरे गाए असा है।'

तम की उन्हें पुरू प्रभाव निरम्प और होता है त्यान मकुकर प्रश्न कर्माका । इसके बात इस क्षेत्रोंने एक-क्षारेको

प्रोतको कारो है—सक्तर् । इस की राजपुरियो कारो हुए । सरका सारोको इन्छानो बहुत विरोतक पुत्र होता रहा । इस इक्षों साहरावधीर की करा एक ही उत्पाद कर होते। का की पारंची मारिया एक बैदन वान होहमर उनके क्यूकार विकास प्राचकर दिया किया और वर्ष बाग क्रीड्यर इन्हें। क्रुरेनको स्टिक दिया । उस्ते पीर्देश होवार मे अनेत-से हो पूर्व । प्रत्ये पूर्व पूर्व पूर्व अपनी और वैसे बारण माने mm. 'mm afte mererbalt femte ft.t' profe mit fift इनक और पान को बोदे। इनकेटी देन प्रत्येगर स्वीत पूर्णको संबंध कर्मा असलातको और वाले पर्ने और कार पर के से मार

> बारे हिर क्योंक क्षेत्रेयर दिन कुई आरम्भ हुआ । जानी कानुराजवी मेरे अल दिव्य अब प्रोड्ने रुने । सिन्दु की अली सामान्य अवसेरे ही भूते देखा क्षेत्र । सिर मेरे परवाराज्यीका ध्यानका क्रोड़, पर उन्होंने को नुक्रवरको कार दिया। क्रमें: क्ष्म की अधिकांचा करके आविष्यक्रमा प्रयोग क्रिका, क्षेत्र वरस्थान् वरस्यानवर्तने वरकारको रोक विचा। इस प्रकार में परपूरानकोंक दिना अवस्थि केवारा रहा और प्रमुख्य परकृतको की विका अस्तीको किया। काहे यो । का उन्होंने क्षेत्रकों परकर पेरी बलाने बाग पारे । इससे मैं रकार कि पान । का समय मुझे अनेत देशकर तुरंत ही सार्थित राजपुरियो अलाग हो गया । येत होनेकर क्या मुझे सम क्योंक पर रूप से की जारीओ बढ़ा, 'पाओ । अस मैं र्वेका है, वृ मुझे व्यवस्थानीके पास से चल।' जल, सत्त्वीव होता ही पुत्रों हेकार फल दिया और कुछ ही देएने मैं परमुख्याओं सम्बर्ध ग्रीव पेका। वहाँ ग्रीको ही मैंने उनका अन्य करनेके जिन्नारमे एक करकपास होता कारणी एन्टर करार कर होता। उसकी नहरी चेट सामार परस्रायकी क्केट क्रेकर राज्यकिने निर गर्ने । इससे सम लोग काराकर **ब्राह्मस्य करने समे** ।

> बार्ज इट्रोकर वे रहते हो पने और अपने बनुस्पर साम का को विकास को स्थे हो ! एक से छ,

अन में दुने रह किने देख है।' अनुको कुलेक का कान में। क्षमें कनोर्ने समा । जाके जास्तो में झोके साथे हुए कुक्रक राजन बढ़ से निकार हो एक। किर में भी बढ़ी क्रहेंकि करा मस्स्यने तरक। सिन् ये साम अन्तरिक्रमें ही सा गये। इस प्रकार मेरे और परवारमधीके बार्गोंने मामावाको हेता और रिन्ध कि कुलीयर सुर्वेतर ताल पहला के हो पता और मानुको गति का गयी। इस प्रकार अनेका कार क्यांका नियं स्थे। परश्चमधीने क्षेत्रमें परकर महत्त्व असंस्थ क्रम क्षेत्रे और मेरे जाने सामि सावत बानोबे जो बार-पारकार पृथ्वीपर निया हिंदा । इसी स्था अलाहे क्रिन औ क्रमय मोर संपान क्रेस यह । परकृतनमी क्रो मूल्बीर और हिम्म अपनेके करवर्ती थे। ये रेप-रेप मेरे कर दिवा अवरेका से प्रयोग वाले. बिंद में को अपने प्राचेनी करते रनाकर उनके निर्वेची अव्योधे यह कर है। का । इस उन्नार पार मेरे अधीरो हो उनके वर्षको हैन्याकोच्छे पह पर हैन्य में में में है कृष्णि हर और सामानकों मेरे साम युद्ध करने रती। दिल्ला यह है पीवन पुर हुआ। अवस्ताने का कारों को थी, करियों ओटमें सरकार कायार अन्य हो गरे। शंतारमें निवासेनीका राज्य है गया । तुकाल क्रीवत करन भारते रहता । यस, इसस्य युद्ध भी क्या नक । असे अन्त संबंध विकास क्षांच्या संवाम क्षेत्रा पात । येथ समेरे पात साराम क्षेत्रा और सार्वकात क्षेत्रेश कक्ष कात १

का पत में अध्यय, निवर और देखा अधीरते कराबार का इसामाने प्राथमा मान्या विकास तथा है। 'परपूर्वभक्षेते नेश भीवल युद्ध होते जान बहुत हिन बीह गर्ने । परस्तुपारको को हो परसाठों है, सम्बद्धाः उर्ने में पुरूषे जीत नहीं समारा । की उन्हें संक्रम की रीको समान हो हो अस्य राजिने देखारतेन अस्य होन्सर मुझे वर्धन है।' कुछ प्रकार प्रार्थना कर में दानों करवाने को नवा। ब्रह्मने को मार जामार्थीने रहीर विमा और वाले ओरले बेलान महा- मीना । हम कर्य हो पाओ, उसे पत: इसे विज्ञी प्रकारका पन नहीं है। इस सुनारी पक्ष करेंगे, समेरिक पून इमारे अपने ही सरीर हो । परकृतक हुन्हें बहुदे किसी प्रकार नहीं जीव समारे । देखी, यह समाप पामका असा है: प्रापेड देखा जवानति है। इसका प्रचेन तम कर्ण है कर कालेंगे. क्लीक अपनी प्रदिष्ट तुन्हें क्लाब अन बन हुने परकृतकरी अवना पृजीवर कोई कुरत पहुन्य नहीं जनका। हुन इसे स्वरम करे। और इसेका प्रयोग करें। या उत्तर करते ही तुन्हारे पास जा जानना । इससे परश्चकारीकी कुन् भी नहीं होगी। इसलिये तनों कोई पान भी नहीं तमेला। हव

कारणी पीएको में अचेता हैन्यर को चार्नने । इस जातार उन्हें बठावा करके क्षेत्र संस्थानकारणों किए जाता हैता । जात, अब समेरे उठावार हुए ऐसा है जाने । यर और सोने हुए पुरस्कार में इस सम्बन्ध है सम्बन्ध है । यरहारावाणीओं मृत्यू तरे कारी हो हो नहीं सम्बन्ध । अबः सम्बन्ध को बाला ही मृत्यूको समाम है ।' ऐसा कार्याय में अपने सामा को सेवानी हो गये । उन सामोबी सम्बन्ध पान में और सभी को सेवानी है।

का बीवनेका में राजा। उस सम्बद्ध हुए स्थानी बाद सानेसे को को जनसम्बर्ध हो। कोड़ी देवने इनाय तुनुस युद्ध सिंह क्या । को बेक्सार अवके चेनटे कई हो बाते के । परपूराकरी मेरे कार मानोची वर्षा करने छने और मैं अपने पालसमूको को वेकास पा। इस्तेवीने उन्होंने अञ्चल क्रोकरे परकर मेरे कर एक पालके प्रथम करना कर होता। यह सुर्वत राज्य सरक्रमा हुआ बार नेरी इस्टीमें राजा। प्रस्तो से र्वेक्स्प्राण क्रेक्स पुरुवेक्स निर क्या । वेस क्रेम्बर वेने क्रूक कार्य कारत उत्परित प्रति क्षेत्री। या का विकासी कार्ति मान्य गर्ने । प्राप्ते से दिल्लीका के और बक्को व्यक्ति हाने । व्यक्तिक क्षेत्रेय अनुष्ये भी अन्य सहस्य क्षेत्र । को था करनेके हैंन्ये की भी सहस्रकार से उन्हेंन विकास काने प्राथमिक क्रेकर जानकारका-स्त क्षूप कारिया कर विकार के क्षेत्री प्रकार क्षेत्रकी कार्य करें। इसके क्ष्मानम् वक्ष भारे केन प्रवाद हो गया। सामग्री मानवाहे बची पानी निवास के नमें ? एक करोड़ देवने संबद क्रेकर कार-वार, प्रचल और देखाओं को की पढ़ी रीज़ होने हती, क्षेत्री कुरुवाने साथै और साथै उत्तरियोको पहर पह दूस्य । मानको साम सम गयी, वर्ड दिस्तानीचे दुशी भर पता क्या केवल, अपूर और राज्या क्रम्यार मार्ग हने। प्रती करू नेत विकार अस्तावन क्रोडोन्ड दूसा और संकाय करों है का मैं बन्दे इच्छा है नवा।

जो क्षेत्रोचे सिने उठाते हैं आधारणे क्ष्म कोरणाल हैने रुगा और स्थानीने जुलते कहा, 'कुटरणा ! हेते, क्ष्मानों रुग्ने ने क्ष्मारोग तुन्ते रेक्से हुए क्ष्म रहे हैं कि हुए सरकारकार स्थेण का करे। मरबूरागरी स्थानी, क्ष्मा, स्थान और हुन्तरे जुल है; हुन्ते किसी वी स्थान पुले क्ष्माना स्थान की करना चाहिने।' इसे स्थान पुले क्ष्मानाने ने सारों क्ष्मार स्थान स्थानी हिने र क्योंने कुरमानों हुए पुले कीने क्ष्मा, 'मरकार्य ! क्षेत्र स्थानी क्ष्मानान हुए पुले कीने क्ष्मा, 'मरकार्य ! क्षेत्र स्थानी क्ष्मानान है केस है क्या की का क्षमा अवको क्ष्मान क्षार

ंदिने 'प्रकारकाको जार जिला है—यह देखकर ( कहा, 'सुनियम । केरा यह निवय है कि पीठगर वार्योकी परसुरावजी को प्रस्ता हुए और सहसा कह रहे कि 'नेरी कुदि: क्रमिता है गरी है, बॉस्पने मुझे पराक बर विचा है।" प्रामेदीयें जो असे निता कार्यात्रये और वार्याय विकास विकारी हिने । में कहने रहते, 'आई । अब देख सकत स्थार मधी पर करना। यह करना इक्रिकेट से कुल्ला है। प्राथमिक पर्य पर से प्राप्य और प्राप्य है है। चीनके ताब जाना चुन्न करण है बहुत है। अधिक हर धानेने तमें नेवा देवना कोना। इसलेने सम हुन रक्षपुरिको हुद काओ । इस अनुकार्ध स्थान कर चीर उपन्य मारो । बेचके, प्रश्न समय सीमाओं भी देवताओंने ही बेच्य दीना है।' जिस अपूर्ण बार-बार मुक्तरे भी बाहा, 'परायुक्तन प्रुप्ताने पूर्व हैं, हुए इनके साथ युद्ध का नहीं । संस्थाने कानुसामको परास करना रुखारे दिले जीवर पार्टि है।"

विक्रीकी कह सुरका शरहराज्योंने कह-'नेत क निवार है, में पुजारे केंद्रे के पर वहीं एक प्रकार । धारे की की कार्य संसामने केर को दिकानी : हो, बाँद नीकारी हका हो में का पाने हैं पुत्रका बैदल क्षेत्र है है हरोजन ? तन में श्रामीकानि कुनितान प्राथमानेक स्टब्स मेरे पाल आहे और कारी करे. 'यात । एव जाताच परवराज्या का रक्षे और कुछ, संद कर के।" सन मैंने कुम्मार्गकर मिनान करके उससे

बीक्षार रखते हुए बुद्धारे काची मुल नहीं मोड सकता । मेरा चह विश्वित क्रियार 🛊 कि होधसे, क्रूपनतासे, चयसे वा बनके लेक्से में अपने सम्बद्धनवर्षक त्यान नहीं कर्तना (

इस समय परवादि पुनित्रम और नेवे गावा भागीरधी भी रवाकृतिने विकासन भी । ये जारी प्रकार बनुष बक्तने मुख्या क निकास किये पाक रहा। इस उस रहाने परवारामधीने क्षक, 'कुनुबर्गर ! अञ्चलोका प्राप्त ऐसा विश्वपूर्ण नहीं होना पाहिले । पुराविको जान पुरा प्राप्त हो सामते । सङ् सारता बंद करें। २ के मीव्यक तकते हाको मना बाना अधित है और व चोजको हो सुनारा जब करना चाहिने।' ऐसा कहकर अक्षेत्रं परस्कारकोशे इस्क रसन्य दिने । इतनेहीर्ने युक्ते में आव सामानी दिन दिवाली हिने । उन्होंने युक्ती प्रेमपुर्वक कहा, 'बहुम्बद्धे ! हम परमुखनबीके पान बाजो और स्वेक्ट्स बहुत करें।' की देखा कि परवृत्तकर्म बुद्धारे कर नवे हैं से की खेळांके कान्यकंत रेजे जिल्लाको बात कर हो। काकुरायकी बहुत कारका के भारे से । मैंने अनके पास सामार को प्रमाण विका और क्योंने पुरस्कारकर को क्रेस्ट्रिक बाको बाब, 'बोब्ब । इस सोवाने इत्यारे क्रमार कोई इसस वर्तिक भूति है। इस बुद्धारे तुम्मे भूद्रो बहुत अराह दिला है, सम्बद्धाः सम्बद्धाः ।'

#### धीव्यजीका वय करनेके रिज्ये अप्याकी तपस्या

मेरावी व्यक्ते है—अर्थावर ! इसके कर की सामने है परमुराज्योने इस कनाको कुलकर ३२ सब न्यान्यकोके बीजरें बढ़े के बज़ीने बड़ा, 'स्ते । इर एवं सेन्स्के कारने मेंने अपनी पूर्व करित राजावर युद्ध वित्या है। नेरी अधिकानी-अधिक प्रतित प्रतित हैं, में हो देन देन हैं ती। अस हैरी कई इका है, कई करी का। इसके रिका करा, मैं केंग्र और क्या कर्ज करी ? मेरे विकास से क्या व भीकाबी ही करण है । इसके रिका देरे किये कर्ता और उनक से दिवानी नहीं केता। को से भीमने को नदे असोका प्रचीन करके पढ़ाने पराक्ष कर दिया है।"

त्व तर बन्दरे बहु-'बन्दर् ! अपने बेहर बहु है, हीय है है। आपने अपने बाद और अग्रवादे अन्तवर नेरा काव करनेमें कोई कारर नहीं रखी। परंतु अन्तर्ने कार कहारे भीयसे यह नहीं सके। हवाने अब वे किर किसी जवार भीनके पान नहीं सार्कते । अब में ऐसी साथ सार्कते, नहीं रानेते में कर ही भीनका पहले संबद कर उन्हें ह

देश बहुका का कथा मेरे पहले हैंनी तर कार्यका विकार करके व्यक्ति काले गारी। परश्रुपाधवी मुहली व्यक्तर सब मुन्तिकेंद्र साथ मोन्युक्तियर यहे गर्ने और मैं राजधा कार हे हॉक्सपुरवे करन काना। वहाँ मैंने साथ कुताना क्या सरकारीको सुना दिया। मताने मेरा अधिनक्य विकार । की उस कामानेः समामान कामेनेः निन्ने बर्ज सुद्धिनाम् पुरुवेको निकुक कर दिया। वे मी दिलके रिले वर्ज सम्बद्धानित पूर्व दिल्लाने उसके आवरण, पालन और क्यापारिका स्थापार सुपने यो।

कुरक्षेत्रके कारका यह कन्या प्रमुख्यास्था एक आसमार्थे नवीं और वहाँ कहा अलीविका तर बाले शारी। यह प्रः नहींनेत्रक केवल व्यवस्थान करती हाँ काठके समान नहीं भी। इसके बाद बढ़ एक सारक्षक निराहर गुजर वयुक्तकार्थे स्त्री। पित एक वर्षतक अपने-आप प्रक्रका निया पुरुष परता प्रश्नावर पैसके जिन्नहेगर पहले रही। इस प्रकार करत वर्ष तमान करके ताने बाकात और पानीको संतार कर दिया। इसके पहाल कर आसी का कामें महीने यह | क्षेत्रोची बहा। जो करवारे केंद्र करावय करतेया कर पीक्ट निर्मात करने समी। किर छीलेरेकको सोचले इसर-कर इपनी का बहुत्रेकने खेळा. को जनने प्रमुखे प्रभावती बहु आने क्षतियों से अन्य कामडी नहीं के गयी और आने अक्षये कालोको कवाची बाग्य क्रेकर जपत को ।

Mi क्याने भी जो एक्का समझ कतो रेख शनक एपरिवर्धने औ रोबर और बढ़ा 'कि को नवा करन है ?' तब का कमाने का क्येच्या ध्वनिनीचे बाह, 'बीमाने वेस निराहर किया है और पूरो परिवर्णने प्रश्न कर दिया है। असः की बोर्ड किन स्वेक पानेके लिये जी, महत बीनाम कर कारोंके रिक्ते प्रयास संस्थान विश्व है। नेप का निवान है कि प्रीकादे यह बारेकर रही क्रारित दिल सामग्री । मैं से मीनकी काल सेनेचे रिन्दे ही एवं कर की है, आ: आसरीन सुते प्राप्ते रेके जी।' का जा का प्राप्तिकेंद्र केली जाओ भारतार क्षेत्रारं का प्रवर्तकांको कांद्र दिया और यह अनेव काली हैं देख बहारा काले प्रवेश कर गयी।

प्रोपः। प्रत्यार श्रीन्यानेकारीने कहा, 'शू श्रीनावा नाहा कर कोली ।' का जाने दिन कहा, 'परावर, । मैं से की है, इस्तीको नेत हुन्य भी आलग दोनंदीन है: शिर में पडाने चीवाको केने बीच क्रांटिने ? आप ऐसी कृत्य परिचित्रे, विसम्बं में संस्कृति प्राप्तकृतका गोलको चार सके।" क्रमार क्रेसर केले, 'लेचे बार अलग की क्रे उच्चति-क्रातिको है अन्याप ही पीन्याह पन मरेपी, पुरस्त हाह करेनो और कारी के धारत करनेवा की इन सन पातीको कर रक्षेत्रे। यु पुरुषे भई कम रोकर एक निवसेत्री, बोराताल बहुरको बरेगी। मैंने को कुछ धर्म है, यह एक केरे ही होता। ह सामानगरे जान रेकर भी हुन सामा बीक्रोक्ट कुछ हो कार्यों है हैसे स्कूबर मगवान बीकर सम्पर्कार हो नवे । ३३ वस्थाने वृक्ष बढ़ी निया नवाचर अधि profes of six 'S shows we write fich affelt

#### दिक्षिकी पुरुषत्वप्राप्तिका वृत्तान्त

रवेंकर पुरत-रिकाल । कुरश का कार्य कि । दिशाब्दी कथा हेनेवर भी मिर पुरू की है नगर।

भीनवी केले-कार । महाया प्रत्यकी वर्गावे व्यक्ते कोई पुत्र नहीं था। तम हुन्यूने शंकापताहिनोः विक्रे उपस्थ कार्ते भगवान् विभव्ते प्रयत्न विन्तः। समञ्जूनेकार्वने न्याः, 'तुम्बरे एक देश पुत्र प्रत्या होता, जो पहले की होनेवर भी चीके पुरस्त को जानगर । अस हुत तम करना बंद माने; मैंने जो क्रम क्रम है, का कभी सन्त्रता नहीं होता।' वस राजाने मगरमें सामहर प्रतिको अपनी समझा और मीन्युनेपनीके बाल्यी बात रामा हो। प्रमुख्यान आनेका राजेने वर्ण करक किया और प्रधानन का स्थानी सन्तरों तन दिए। किन्तु लोगोंने प्रसिद्ध का किया कि एक्टी कुर जनत हुआ 🕯 । श्रवाने क्षेत्र क्रियाचे रकावर प्रमोड समान 🗯 राज सेनावर बिलो । इस भगरमें इसको मिला इस खुकाको और कोई नहीं जारता था। जो पहलेक्टीकी सहये पूर्व निर्माण वा, इस्तिने उत् बन्धाओं क्षेत्राचे स्ताकत ये जो पूर 🛊 कको थे । जोगोर्थे का विकासी नामरे विकास को । अनेने पूर्वे ही महान्योके कारत, क्रियाओंड कारण और सम्मानी प्रयासके सारम पढ़ बाल मानुन है गया था।

एकर् । किर एक इन्द्र असी कन्यको सिन्हन-पहन तम विकास कारी सब विवास विकास करने जाने

राने : क्राम्बिकानेः रिन्ते यह श्रेणकार्यक्षेत्रे विस्तवार्थे रहे । एक कर समीने कहा, 'जहाराज । व्यक्तियोगी बात विसी भी प्रमान दिल्ला हो हो नहीं समावी। हुम्मीरने में को बात कारों हैं, उक्कारे की चाँदे कर जीवन बाम बड़े से स्वीतियों ( अक्ष विशिक्ष्मीक प्रधाना विश्वी पान्यती विवास धार होतिथे । नार्वकानी का तक केवर से संगी है, इसमें को बोर्ड संक्षा नहीं है। ' इस क्षेत्रोंने सेला के विकास कर स्वारणे देखांड क्रमानी बन्याची परण किया । तब बक्रानीराज विरध्यवयाँ दिक्यकेट कर अस्ते प्रत्यक विकास पर दिया। विकाले कर विकासी सामित्यनगरने आसर रहा। सही हैरनमानीकी कुम्बाको परसुप हुआ कि पद थे की है। सब जाने अपनी बहुवों और सरितारोंके सामने को संबोक्तों का का कोल है। या सुरक्तर को बढ़ा दश्य हमा और क्योंने रुक्तको पह सम्बन्धार पुरुष्ठेके हिन्दे अपनी दुरिवर्ष चेवी। उन्हेंने वह सब कृतान दहार्यग्रमको संग्रम । सुन्ते ही हमा को क्षेत्रमें पर पत्र और उसने हमाने पास अपना का चेवा।

क्रमें राज्य हमाने करा भा को एकार्यमें से बाबर क्य-'एका ! कारने द्वार्गानको धोला दिया है. इस्तिने उन्हेंने यहे प्रदेशों गरकर यका है कि तुनने नेतृत्व अपने करको साथ मेरी करकता विकास करकर मेरा पक्ष

कारकार किया है। तुष्कार को विकास कार ही स्केट का। इससिये कार दुन इस वोस्तेका कार कोरनेको सैकर हे कारके। अब हुन्दारे कुट्टम और वनिकोसीत दुनों नह कार हैता।'

एक्प् । कुम्बी का बात कुनका प्रकार हुए केम्बे क्यार कुम्बा पूर्व के एक्प । उन्होंने 'ऐसी क्या नहीं है, यह काइकर उस कुम्बे क्या अपने प्राप्तीके नामनेके मिनो वहा क्या किया । किनु हिरकावनीने किर मी क्या का राम्य किया कि का प्रकारकावकी पुरी हो है । इसिनो कर होता है प्रकारकोत्तर कहाई कारनेके सिनो नगरते केस्ट्र निकार पहले हैं का प्रमुख करके सभी प्रमाश्चीने पड़ी निकार किया कि 'महि विकारी कुमा है से इस्टोग प्रकारकोत्तरों कुसी उपनकों अपने क्या होते । किर हुम्ब और विकारकोको कुसी उपनकों गहीपर कैसा होते । किर हुम्ब और विकारकोको कुसी उपनकों

वृह्यां संस्था कर कु नेकार क्षेत्राकृत हुन्ते प्रधानमें से अभार अपनी चीने क्षा — 'इक क्ष्मकें विकाम से करने कई मुख्या के नवी। जब क्ष्म क्षा मार्गि ? ति क्षाक्षित विकास क्यार्गक्ष कर्या के की है कि यह करना है। यह मोजकर क्यार्गक्ष में ऐसा राजक है कि 'मुझे क्षेत्रस दिवा गया।' इस्तियों अक का अपने कि और सेवार्क क्षा केंग्र नक करनेके किने जा का है। अक सुने किमने हिस दिकानी केंग्र है, वह बात क्यान्ते; मैं केंग्र है कर्मना है'

तम प्रति कहा— 'तानुस्तिने केव्यानीया कृतन करना इत्यांतिकारिकोर्ड तिन्ते की लेवन्तर करना है। किर को दुःसके समुद्रों गोरी एक एक है उसकी को पात है क्या है? इसिन्ते आन केव्याक्षकों किसे हैं व्यान्तिया कुछ किसे किया है सौर पात । किर केव्यानीके अनुस्ताने पह तम पान दीना है पात्रका। केव्याकीयों कृता और बनुष्यका उद्योग——ने कोर्ने पात निरंत पाते हैं को पार्च पूर्णांत्रका विद्ध है काम है और यदि इसमें अवस्ताने कियोग पाता है को स्वयनका नहीं विस्ति।। अतः अस्य पनिवर्णके हारा नगरके एक्यानका सुरक्षक पार केव्याक्षका वर्षकु पूर्ण प्रतिकेश ।'

अपने जाता-विकासी इस जमान कर करते और सोकास्तुत्व होते देखकर दिशाधिकी की लिका-सी होकर सोको सभी कि 'से होनों मेरे ही बारण दु-सी हैं।' इस्टिक्ट अपने अपने जान सामनेका विकास दिल्ला किया। यह सोकामर कर मारो निकारकार एक निर्मन करने करने गयी। इस मनकी एक स्कूलाकर्म नामका एक समृद्धिकारों कह करता का वर्ष जनका एक कान को का हुता का। हिलाकिये जाते कारों कारों कारों । जाने कहा प्रमाणक निराहर कुकर अपने करियके सुरत कारा। एक दिन प्रमुख्यानीय जो एक्न देकर कुछ, 'कारे! देश का का दुख।' विशासिनोंने पार-कार कुछ कि 'हुन्से मेरा काम को है एकेन्य,' किंदु पहले की कहा कि 'में को कहा काम कर देख। में कुनेरका अनुवार है और वह ऐसे जिसे है अपना है। हुई को कहा। है, कह कहा है में हुई न हैन्किय कहा को है दूख।' तब किस्तिकिये अपना काम मुख्या प्रमुख्यानीर कहा दिया। और कहा कि 'हुन्से नेये हुन्सा हर कामोसी प्रतिहास की है, आहे हैंका करों कि में हुन्सार क्रमाने एक सुन्दर पुरूष का कारों। कामका स्थाननेता की वनस्त्रक पहुँचे, अपने महाने हैं हर मुख्या का कुन्स कर ही।'

नवर्ग का—'ह्यारा व्याकाम तो हो वाकार। सिद्ध इसमें क्या को है। में कुछ सम्बद्धे तिमें हुन्हें अपना कुमान है हैंगा: सिद्धा व्याकार विद्या का कानो कि पिए औ सीदानेके तिमें हुए वहाँ जा कानोगी। हुन्में विश्लक में हुन्हों कोलको नारण कर्मगा।'

जिल्लाने का — केवा है, में तुष्कात पुल्ता सीटा हैगी; कोई दिलोंके रिले ही तुम मेरा जीला प्रकृत घट रहे। जिल समय एका दिल्लाकों इस्तर्गीकको सीट व्यवस्था, उस समय में किर सान्या है कारोजें और तुरु पूजा है सामा।

का ज्यार कर का केनीने क्षीता कर सी के उन्होंने अपन्ते परीर पहल रिप्स । स्वयंत्रको पहले सील सरस कर रिच्या और विकामधीयो प्रकास वेटियामान रूप जार हो नका र हुए असार पुरस्क पासर विकासी सह असर हुआ और पहास्त्रास्थाने काले दिलाके पात पात आया। पा क्टब जैसे-जैसे हाँ थी, का तब इसाय जाने इसको सुन हिमा । इसमें इसको मही प्रशासन क्रि । उन्हें और उनकी चीको करवार इंक्स्पो यह यह है आयो। तह उन्हेंदे कार्याच्यके पात का नेववार कहारावा, 'बार कर्य मेरे पाई अरहने और देश स्पैतिने कि नेरा पुत्र पुरूष हो है। किसी व्यक्ति काले से पूर्व का कही है, जा सम्बेधेन की है।" एक इन्तवा संदेश करन दललंगको विकासीकी परिवार्क निमे कुछ सुवित्रोको सेना। उन्होंने आके कार्याच्या संस्थानी सामान वही प्रशासनी एवं कार्र क्षेत्रकार्याको जुल ही और कह दिया कि प्रकारकार किकाको परम हो है। का उना किरणवर्ग बह्री प्रस्ताताने इसके नगरमें अन्य और समग्रीते विसम्बद को इसी कुछ

दिर वहाँ दा। उसने विकायीको हाथी, कोई, वी और बहुत-सी वृत्तिकों पेंट वर्षि। हुन्सने भी अनका अनका सरकार किया। इस अकार स्टिंड कूर हो जानेसे व्यह बहुत उसका हुआ और अननी पूर्णिको हिस्स्कार अपनी सम्बद्धिकों बहुत गया।

इसी प्रीमार्थे विक्री दिन बक्षराज कुनेर कुन्ने-कुन्ने कृशासकीः क्षान्यर सूच गरे। अन्यकर्णका पर रंग-विर्वेग सुनावित पुर्वोसे स्वय हुआ व्या को बेसकर प्रकार के अन्य अनुवादेश कहा, 'यह स्था देश प्रका particular of the first on separate and section हों केंद्र है को को नहीं निकास ?' कहाँने सहर, 'सहरक' । एक हुन्दर्भ विश्वविद्धी जन्मी दूव बन्ध है, को विज्ञी महरवादे स्वयान्त्रकी अस्य प्रत्या है हिन्त है और सामा क्षीत प्राप्त पर रिन्स है। अब बढ़ बीकारों है करों बात है। अतः संबोक्तने कारण है का सरकारे नेवाने उन्हेंका नहीं हुआ। यह सुरक्ता आन केता हरिक सरको, केल करें।" एक सुनेरने बहा, 'अच्छा, इस अनुनको वेरै बार्चन हाचिर बार्ड, में को इन्द्र हैना। इस प्रकार कुराने सानेनर प्रकारको बोधाने है को संबोधने क्रांग्रेड का आका कहा है नवा। जानर इन्हें हेचर कुनेले कर दिया कि 'अस बा पार्च एक इसी जबार ब्रीकामें है पोना।' एक क्षारे वर्तने अन्यकार्यकी औरते प्रारंप की कि 'सहरक ! आर इस सामग्री बोई अवसि निर्देश पर है।' इस्तर क्षेत्रे वक्ष-'अका, का विकासी बढ़ने बता अवना से इसे फिर अपना कारण कात है जानगा है हैता सहका न्त्रकार्य् कुमोर तथा अस्त्रोते तथा अस्त्रकानुरोध्यो स्तर्भ वर्षे ।

इसर अंदिताका सारा पूछ होनेसर जिलाकी स्कूलाकार्ति क्रम पहुंच्या और क्या कि 'स्पान्य | ये का गया हूं।' स्कूलाकार्ति दिलाकार्यों अपनी अंदिताके अनुसार सम्प्रकार कारिया हुता देश कार-गार अपनी अस्त्रता समय की और को आस कृत्या सुरा दिया : कार्यों कार सुरावर विकार्याकों कही प्रसादा हुई और यह अपने नगरको खोड आया | विकार्याका हुस असर मास बना देश दाना हुस और क्या कन्-वाकार्यों कही प्रसाद हुई | इसके कार हुस्ते को कर्नुविद्या सीकार्यों दिया हुनारे साथ ही प्रमाद किया | विद्या क्रियाकी और शृहकुत्रने हुन्दारे साथ ही प्रमाद, कारण, अनोन और प्रशिद्धा —हम कार अनुविद्या सीवान्य कर्नुविद्या विद्या आहा की | वित्य क्यां, कार और और अंके-से देश क्यांन्यों को गुरावर इस हुनाके पात निवृत्य कार रही है, अनुविद्या ही पुत्री में साथ कार क्यांन्य है।

एकप् ! इस जकार का हुक्का पुर कारकी हिरावकी कार की का और मैंसे पुरुष हो गया है। का गीर हकते कुछ संकर मेरे सकते पुरु करनेके दिन्दे आयेगा हो न हो एक सन्त की इसकी और ऐस्ट्रेड और न इसकर कथा है। इसेक्ट्रेड : की कीन कीनों हका चरित्र से हातुकन असकी किना करने । इसकिये हुने एकने आदिका वैकारत भी में इसकर इस्त की होन्देश ।

नैराज्याच्यां व्यापे हैं—शोक्यां व्या वात सुन्दार कृत्याच कृतिकर कुछ देशका विचार काता था। पिर शरी चीक्यां व्यापानिक है कार गर्मे।

## दुर्योधनके प्रति धीचादिका और युधिहिरके प्रति अर्जुनका बल-वर्णन

सहायने सहा—बहुताय ! वह यह बीटनेश वह इस्तःत्वार हुना से आवके हुंह कुर्वेचनने विदान्त्व चीन्त्रते हुन — 'डाइनी | नामुक्त्यत वृधिहित्यी जो वह असंस्थ -पैतार, हाथी, बोड़े और महार्शियोरी पूर्ण जान काहिनी इस-सोगीने पुत्र करनेके दिन्ते तैयार के रही है, हुने जान विदाने हिनोंने नह कर सकते हैं ? तथा आवार्ष प्रोप्त, कुन, कर्ण और असामानाची इसका नाम करनेचे विदाना समय समोग ? मुझे बहुत दिनोर्स मा बाद कानोबी हवार है। मुस्तार सामसाने !'

र्थयमें करा-एकर्। हुम को इन्दुऑक कावकार्क जिकारे पूछ को हो, जो ऑक्स ही है। यून्से केए को अधिकारो-अधिक परज्ञान, सरकात और कुसओका जनमाँ है जा कुने । सर्वेद्रस्ति विस्ते हेला विश्वात है सरश सेन्द्राके तथा प्रशासन्तिक और नामानुन करनेमारेके तथा जन्मपूर्वक जुन करना माहिते । इस जन्मर कुन करके में अधिन जन्ममारेकके तम इसर पोन्स और एक हमार एक्सिया ऐसार कर सम्बद्ध हैं। अन्य नहिं में अपने पहल्य अधिका प्रयोग कर्म से एक म्यूनिमें समझ जन्ममानामा संसर से क्यार है।

हंग्यानी वहा—'एकन् ३ में अब ब्रुह्म है। नवा है, हो यो पीनावीके हम्पर में यो एक महिनेये हैं अपनी एकाडिको पाणानीनाको भाग कर समझ है। येथे महिन्से-वही प्रश्चि इसने ही है।'

कृत्याचनंत्रीने हो पहलेमें और अध्यक्तामने दूस दिनमें

क्रमूर्त वाकासहरका पंतार करनेत्री करनी सभि काली। वित्तु वाली वाक्, 'में यांच दिन्हों है उसी रोजका सम्बन्ध कर पूँच !' कर्मची यह कार सुनकर खेळाडी रिसर्परेशंकार हैन यह सीर कहा, 'एकापूत ! अकाम स्वयूपिने देरे सामने श्रीकृत्यके सहित अर्जुन रकते वेडकर नहीं अरहा, वाक्रम हू हर क्रमार अधिकानों यह हुना है, सम्बन्ध सम्बन्ध हैनेवर करा हू हर क्रमार सरकान क्रमान कर स्वेटन ?'

वात पुत्रतिनद्दा महाराज पुनिविद्यते का सरस्वार सुन्त के
प्रमुद्देन की अपने प्रमुक्तिओं कुरावार काइ— काइके ! साम कौरानेकी सेनाने भी को पुत्रका हैं, उन्होंने काईका सर्वेचका है का सरस्वार केना हैं। पूर्वेकको की-वाती हैं पूर्व कर स्थाने हैं ?' पुरुषा अपूर्वि काइ, 'एक काईको !' होना कर स्थाने सामे हैं सामको काइ कानेकी अपनी कर्का कार्यको । इस्तावानि अपने दिन्ते पूर्व कार्य कर स्थान है। सभा का कार्य पूर्व गया हो साने पीन दिन्ते करी सेनाक संसार कर स्थानेकी करा कार्य । अस्त अपूर्व ! उन्हा में की इस विकार सुन्तान कार्य हैं। अस्त कार्य हैं। हुए किसके सम्बद्धि कर स्थानेकी कार्य क्षार कार्य करते हैं ?

कृषिदिरके हर प्रकार पुल्लेक राजूंको क्षेत्रकाको और | हैने हो वह स्थानन वह हो मानगा।

देखकर कहा—'येत से ऐस विकार है कि सीकृत्याकी कारकारे में अवेरत है केवल एक रकत बनकर श्रमणारे केलाओंके स्वीत होने लेख और पूर, प्रतिमा, क्रांगम— इन्हें क्रीबंक्ट प्राप्त कर समझ है। यहने विराप्तवेतवारी क्यान क्रेक्स के साथ बाद होते समय उन्होंने पुत्रे में असमा प्रकृत करूरता किया था, व्या मेरे ही पत है। परावार, बेकर प्राप्यकारणे सन्दर्भ कीवोका संदर्भ करनेके विसे इसी क्षाका अनेन करते हैं। इसे मेरे रिज्य न हो चीन्य बानते हैं और म होता, कुल का अध्यक्तकारों ही हराका जान है; जिन कर्मको के बाब ही बाब है ? स्वार्थि इन विकासोधे संगान-कृति वर्गाको काला प्रकार की है। इस हो प्रोपे-पनि बुद्धारे हें क्याओंको बीत होने । इसी जबार आपके स्थानक में अन्यान की भी पूजनेने लिएके कारण है। में प्रानी दिला अपनेतंत्र प्राप्तः और पुश्चनंत्र विको असून्त है । पूर्वे मोर्स् जीव नहीं क्रमान । वे रच्यापने देशताओवी होनावा की संदार कर कको है। विकासी, पुरुष्पर, शृह्या, गोमसेर, महार, क्ष्मेत, पुरायपु, अल्बेला, विराह, हम, श्रंसा, सरोसाथ, हारका ब्रोह आक्षप्रवर्ण, अधिकानु और डीयरोके पाँच पुत्र समा क्षा अल्य की कीने हरेक्ट्रेक्ट का कार्नने समर्थ है। इसके क्षीत नहीं कि नहीं कार क्षेत्रकार्थक विश्वविक्त क्षेत्र हैं स

## कौरव और पाण्डव-सेनाओंका मुख्यभूभिके रिज्ये प्रस्थान

रीतापालको स्थले है—क्यर । धोदी ही हेल्ले साम् प्राप्त हरू । तम तुर्वेदनारी अधानो क्रमे पक्षेत्र राजस्थेत बाज्यभोगर करते कालेकी वैचारी करने रूपे । क्योंने कर्प फरके केर क्या और हर करण मिले, इकर किया और फिर अस-सम जाने घर समितान घरते हुए पुत्र करनेके हिलो पहें । उत्तरकारें अवन्तिहरूके एका निष्यु और अनुनिष्यु, केम्प्रकेतके हुन। और प्रात्तीय-नो तथ होन्यवार्वनीये बेहरको पर्त : उनके बाद अकुमाना, भीना, बन्हान, मामाराज फ़कुरि, दक्षिण, पक्षिण, पूर्व और उत्तरकी ओरके पाला, क्वांतीय क्वारेनका तथा प्रका, मिराव, क्वार, शिक्ष और बसाति वारिके एकालेन अपनी-अपनी हेनके सहित रसरा इस बनाबर कर दिये। उनके पीछे सेनको स्थीत इतकर्य, रिग्तीसन, महानेसे विश्व इत्त दुनीकर, कर, मुक्तिका, राज्य और कोसाराज महाय-इन राजने कव क्रिया। प्राथमी कृतवहुद्धा स्थल्द सारम कर मुस्लेपके रिक्को आने धाराने श्रीक-शेक व्यवस्थापूर्वक हाई हे गये।

कृतिकारे अपने विकास का जातर सुर्विका सराया के कि का कृतर प्रविकार के समय है का पहला का। इसकिये कृत कहा का। और तम एकाओं से निर्म भी अपने मेरे हैं कैसक़ें, इसकों के सरकारों के। उस पाँच केजन केसे हैं किसक़ें, इसकों के सरकारों के। उस पाँच केजन केसे काश्वाकों अपने सेकड़ों कार्यनियों करने थीं। इन कार्यनियों कार्याकों एकार्यक अपने-अपने कार और उत्सक्ति अनुसार रहते हुए में। एका कृतिकारों का आने हुए एकाओं के अपनी सेनाके सर्वात कार्य किया का। वहाँ में कारपारी और दर्शकरोंग अपने से, जा कार्यों की का विकास है। इसी कारण कारणा पुनिश्चित भी शृक्षपुत आहे, सेरोके राजानियों कार्यकारी अपना है। उन्होंने एकार्यकों हाकी, केरे,

वैद्यान कोर व्यक्तनोंके सेयन्य तथा जिल्लियोंके रिस्पे अन्यर्थ-से-अन्यरि केय-सरस्पारि केलेक आरोड दिया। फिर

बहुदाहर्षेद नेत्रावये आधिनान्, बहुत् और डीपाईके परेब पुरोक्ये

कार्युरको इसरे सैन्यसमुद्यको साथ चलनेको कहा । इन क्याकी श्रीरोक्त इस्टेंग्स आकारणे देवने सन्छ। इन सनके पीक्षे निरुष्ट, हुन्द बाब कुले राज्यजोके साथ वे स्वयं करें। का प्रथम बहुद्धानी अध्यक्षको काले हाँ क कका-रोज पर्रे हाँ न्यूनमेंके स्थान कर्यांको कामी विश्वयो केरी भी ।

क्षेत्री हर जाकर राज्य मुनिव्हिरने मृत्यकुचे मुनेको प्रस्ते इस्लेके रिले अपनी सेमाका बुक्ता स्थापन विकास अपूर्णि प्रीयक्रिके पुत्र, अधिकान्, क्यूनर, स्थापेन और राजक प्राप्तक बीरोको कर हमार बुक्सकर, से इकर गकरोके, का इकर देशन और पांच को एकियोंके साथ प्रीयकेनके नेपालने पाला क्षा बनावर पालेको सक्ता थे। नीको सन्ते नियह,

१९४६को थेता। इसके कह बीमसेन, सामाँक और | कालोन इक बाह्यमराज्युगत पुजरूपु और व्यक्तिकारो एका । इसके पीक्षे नकाश्वरामें हो बोदरमा और अर्जुन महे । काने आने-बीके शाब अंदेर चीचा क्रमार मुक्तसमार, चीम क्रमार प्रकारों क्या अनेकों रावे और पैक्स धनर, प्रवान, पदा पर्न क्यु-राजुके अला देखे बार हो थे। जिस सैन्यरगुरके मौजने इस्ते एका मुक्तिक्षा थे, उसमें अनेवर्ड प्रध्नाकेन उन्हें पारी कोती की हुए थे। भूकार स्वापंत को लाको रिक्पोंके क्रम क्षेत्रको आने क्रमने से मा रहा था। पुरस्तोष्ट श्रामीस और स्क्रांत रेसके कररकारक रहा करते हर निकरे भारती बार हो थे। इसके तिला और भी महा-से उनके, क्याने, क्यानियां क्या क्रमी-मोद्रे आहे सेनाके साथ थे। उस करन का रमक्षेत्रमें रमको बीर मही जनको नेरी और प्रश्लेको व्यक्ति कर यो थे।

# संक्षिप्त महाभारत

## भीष्मपर्व

# शिविरखापन तथा युद्धके नियमोंका निर्णय

नारायणं नगस्कृत्यः वरं वैधः नरोक्तमम्। देवाँ सरस्वती करसं ततो वयम्पूरीयवेत् ॥

अवार्णमी नागवासकाम पानाम् श्रीकृत्य, उनके निव सत्ता नरज्ञकर नराज्ञ अर्थुर, उनकी लीख उत्तर करनेवाली भगवती संरक्षती और उसके कहार वहीं केरणात्को ममस्त्रार करके आसुर्व सम्बन्धित विकासादित्वोक अन्तः वारवको सुन्नु करनेवाले प्राप्तास सम्बन्ध कर करन कारिये।

वनस्थानने कहा—सूते । अश्व में का सुनक कहाता है कि कीरण, पान्कम, सोमक तका नाज देखोंसे आवे हुए अन्यान पानाओंने किस प्रकार पुत्र किया।

वैहान्यकार्थं केले--एकर् । वर्तिक, प्रचान और सोमकंती वीतीर पुरक्षेत्रमें किया प्रचार कुट किया, या सुनिये । पुन्तीनका एका पुनिद्धित्में वर्ति सम्वाद्यक्य तीकी बाइरके मैदानमें इचाएं कीने कार्व करवाने । वर्ति इस्ती सेना इकड़ी हो गयी थी कि कुन्यकेको निका स्वति पुन्ती सुनी सम्मति थी । केवल कार्यक और कुट ही क्या नमें में, तरक पुरूव और बोडोका नाम नहीं का तका रच और हानी भी कहीं नहीं वर्षे थे । पुन्तीके सब देवोंसे कुटक्रेयमें सेना आर्थी थी । सभी वर्णोक लोग वर्ता एकतित हुए थे । सबने अनेवहें केवनके मंदाकमें केए उसक रक्त का । उनके कैने देखा, नहीं, पर्यंत और बन भी थे राजा पुनिद्धित सबके केवल-पहन्ता उत्तम अवस्थ किया था । जब पुनुका समय उपस्थित कुठा ती कर्णोने इस पहचानके दिन्ने कि व्य प्राच्छा-पहन्ता केवा है समके नाम, आधुकन और संस्था निर्द्धित विद्धित किये ।

दुर्वोक्तने भी समझ राजाओको साथ लेकर वाक्यतेको मुकामलेने व्यूप्त-रक्तन की। युद्धका अधिकन्द्रत करनेकाले स्कामलेझीय कीर दुर्वोक्तनको देखकर प्रवंसे भर पने और बहै-बड़े स्था तथा राजनेरियाँ कवाने लगे। स्ट्रन्टर हुट ही श्वास केंद्र हुए धनावान् जीकृत्य और अर्थुनने थी जनने-अपने वित्य बहु कवाने। उन पाकृतन्य और देवद्य नामक बहुतेकी धनंबार जायान सुनका औरव पोक्कानेके कार-यह निकार परे।



इसके बाद बोरव, पाणाव और सेमवंशी वीरोने विस्तार पुजले कुछ निक्षण बनावे और इन पुजारव्यनी वार्तिक निकारका पालन सकते लिये अधिकार्य कर दिया। वे निकार इस अध्या थे—'प्रतिदिन युव सपाम होनेपर हमसोग पहलेको है प्रति आध्यामें प्रेमपूर्ण व्यवहार करें, कोई किसीके साथ इस-कार्य न करे वो वान्युव कर रहे हो, उनका मुक्ताव्यक वान्युवसो ही किया पाथ। वो सेनासे बाहर निकार पत्रे हो, उनके कार प्रवार न किया जाय। रही रहीके साथ, क्षाची-सवार हाथी-सवारके साथ, पुरुसकार पुक्रस्वार के साथ और पैदान पैदानके ही साथ पुजा करें। वो विसको वोग्य हो, निसके साथ पुजा करनेकी उसकी हुन्हा है, यह उसके साम पुद्ध करे। विस्ताय मैस काव्य और बात है, उसके अनुसार है यह तबे। विव्यक्तियो पुनस्तार सम्बद्धन करके अहर किया नाम। यो अहर न हेनेका विश्वास करके नेक्सर है अवन्य पन्यक्ति है, उसका अवक्त न किया श्राम। यो किसी प्रकार काल पुद्ध कर यह है, सस्मर क्षाम कोई क्षण न होने। यो क्षरानी अन्य है

म पुत्र क्षेत्रवार भाग रहा है, अधवा निसमें अवा-सवा और व्यवस नह हो पने हों—ऐसे विद्वारोध्य क्षा न किया जान। वृद्ध, क्या क्षेत्रवारं, क्षा पहुँचानेवाले तथा भेरी और वृद्ध क्यानेकालोगर भी निस्ती सरह प्रवृत्त न किया कान।' इस प्रकारके निका क्याका से हानी राजालोग अपने रहिनाकों काक कहा कारा हुए।

#### व्यासजीद्वारा सञ्जयकी नियुक्ति तथा अनिष्टमुक्क उत्पातीका वर्णन

र्वजन्तराज्ञाने कार—राज्य | कारणार पूर्व और प्रश्लिम विकास आयाने सामने कारी हुई केचे ओरणा रोजाओं को देखकर पूरा, स्थिम और कार्यक्त—बीनो मालोगा कार राजनेकार भवकान् स्थासने स्थानाने की हुए राज्य क्षरसूची यहां आवार कहा, 'राज्य | हुन्दर्भ पुन्ने क्रम अन्य



राजाओंका काल आ पहुंचा है; ये बुद्धों एक-पूर्णभा सेहर करनेको सैवार हैं। येख ! यहि दूध इसे संस्थानो केल्य व्यक्ते हो में तुन्ने नित्त्वदृष्टि बद्धा करी। इससे दूध व्यक्ति कुद कर्ताचाँति देश सम्बोगे।'

पुरस्को कर—जहारिकः । कुट्यो में अपने ही कुटुक्का वय नहीं देशना बहता, सिंदु असके प्रथमको पुळ्ला पूर्व समावार सुर सक्के, ऐसी कुथा अध्यक्त कविनो ।

स्तरंत् बुद्धार समाचार पुरुष व्यास है—वह वानकर व्यासकीने सहस्वको दिव्यदृष्टिका वस्तान दिवा। ये कृतरकृति बोले—'राजन् ! वह सहस्व तृत्वे बुद्धार कृताना हुनलेगा। सम्पूर्ण बुद्धकेनने कोई की कात देशी न होती, तो हस्तो हिनी से ! यह दिव्यदृष्टिने सन्ता और कृती हो जनका । सम्बन्धे हे क क्टेड्ने, इंक्ट्रें हे क रहते, अवन करों ओबी हूं है को २ है, का बार की सहकतो जातून है जावती। हो इस जी कर संबंध, पीधन कह की पूर्व संबंध तथा पद पूरा पूर्वा जीवा-सामार निवास आवेता । मैं इन कीरवी और पान्यानेको कोनिका किराहर कर्तनह, तुम इनके रिजी क्षेत्र न करता। यह देवका विवास है, इसे दारत नहीं यह क्याताः पुरुषे तिल अंद को प्रेण, करी प्रश्नारे सीव केंगी। मध्यम । इस संस्थाने यह बार्च संस्था है।क क्लेकि हेरे ही क्लाइक्स अवस्था विश्वाची के हैं। हेरों बंब्बाओंकी केरको क्रिक्स क्रमारी है और पूर्वको हिएंसे कारत कर हैते हैं, में कार-नीचे सरेक्ट और स्तार तक मीनमें कारे होते हैं। कुई, कहारा और हारे करते हुए-में दीएते हैं। विर-राज्ये कोई अनार नहीं बाद सहता। यह समाय सब क्रमा क्रमेवनव है। क्रमिक्टी द्रमिक्टी नेरकानके प्राचन रंगवारे अववाहरों वाक्ष प्रभावित होनेके कारत क्षण केंग्रांस का, अल्ला केंग्र अधिके समान का ( इससे का सुष्पि होता है कि अनेको दूरवीर कम और राजकुमार चूक्ने प्राच्यात कर पृथ्वीत क्रम करेंगे। प्रतिक्रित प्रकार और मिरम्ब रहते हैं और कादा पर्वका यह सुपनी पहल है। केरपूर्वियों करियों, है।सी और एक क्या करते हैं बच्च अक्टनपर, पर्यानेसे वर हो जाती और गिर प्रकरी हैं। यो तीनों रवेकोरे जनसङ् है, उस पेरन साम्बी असन्यतीने इस समय वरिकारों अपनेसे बीके कर विरम्प है। वर्नेश्वर रोहिगीको पीका दे रहा है, चन्त्रमध्या कृतिहरू किर-तर गया है; इससे बहा करी कर होनेकाल है। आकारत कैंडोंके केले गये अपन केरे हैं। केडीसे केरे कार्यको अपनि होती है और कुछ चैदह के बर से हैं। को ओर को केरकी अभि करती है, भूरका अन्य के है जो होता। करेकर कुक्य होता है। रह कुर्वनर अस्तरमण करता है, केस विसायर विश्वय है, क्षेत्र पुण-व्यवने रिवर है, यह पहार वह होने सेनाओका केर अध्यक्त करेगा । महत्त्व जाते हेरकर पत्रा-नकृत्वर दिवा 🛊 । जुहरपति शरण-न्याकर है और जुड पूर्णप्यात्कार | है जनमा इंदर कोंगे । पृथ्वे हवारे राजधोवा स्थापन विभा है। पहले भीरह, पेख और सोरख बिसोनर अन्यवस्था हो चुन्दे हैं, बिह्न कभी पहले तेवाने दिन ही सन्तरकार हो है—या पुत्रे अस्य नहीं है। इस बार से एक है पहेंगेंडे होनों पहोंचे इच्छेरपोच्छे हे सूर्यमान और कहाबान हो को है। इस अधार दिना पर्नदा अपन होनेसे ने केवी पर अधार । यह दो है।

करेगी। केलाव, कन्यासार और विकास-नेशे पर्वतीशे कमारों कर केर कमा क्षेत्रे हैं. उनके जिस्तर कर-कमारे गिर से है और कोर्रे कार्यान्य असन-अस्त्य स्थानो तथा पृथ्वीपर क्रान्यतः वैक्र कार्ये पूर् मक्कार माने समग्री सीमाना सरस्यून

## व्यास-प्रतराष्ट्र-संबाद और सञ्चयद्वारा घृषिके गुणोंका वर्णन

र्वक्रम्यकार्यः सहते हैं—कारक्षके ऐस्त स्वाचन कृतिकर े में सूत्रक स्वाचन है। कारानी प्रचानको लिये बहुनमा हो गये: प्रचार कह किर बाहरे राने, 'राजर । इसमें स्टिप्ट भी सींद्र भी कि प्रमान प्राटे बन्दरका संहार कामा स्थान है। वहाँ साह स्वनेकान कुछ भी नहीं है। इस्तरियों तुन अपने मुद्दानी चौरवी, सम्बर्गनकों और ज़िली मिनोको हुए कुर काली केको, उन्ने कर्पकृत वर्गका उन्हेंह करे; जरने कथ-सर्थ्योक का करन कर मीन करते हैं, इसे न होने हैं । युर पहला मेरा अद्योग क पानो । विकासिक कामको बेक्सी जानका नहीं पाक गरन है, प्रकार शकर। चरत भी जो होता। कुरवार्ग कामे प्रशिको संपर्क 🗜 में अस्ता कर बरत है, या पुरस्कों में का बहुनक नाक कर देश है। इस कुरुवर्गकों एक कुर कर करके है, हो को कारणे हेरित होकर अवस्थिकरको सक्त अवर्थ-दक्षे अनुस हे हो है । हुई सम्बंध कर्मा बहु का अनर्थ my gar & wifer up mem greit var arbeit क्षा अने के विकास का का का में । बहारि द्वार अने का बहुत लोग कर चुके हो, तो भी भेरे कहनेते अपने पूजेंको अर्थका अर्थ दिस्तको । ऐहे राज्यसे तुन्हें क्या हेन्छ है किसमें करका चार्ण होना यह । वर्णकी यह करनेसे हुन्हें यहा, वर्ति और वर्ण फिल्मा अब देख करो, विकास मायान जनना राज्य का राजे और कौरण की कुछ-कारिया। शतुमय को 🕾 1. 电线

क्रांस्ट्रों न्या-सार ! साथ संसार क्रांकी बोर्ड्स है या है, मुद्रो भी सर्वस्थानकार्य ही भवि प्रव्यक्ति । वेरी मृद्धि की अधर्म करना नहीं सकती, कोई कब करें ? की का मेरे कार्य नहीं है।

माधानी क्या-अक्ट, तुन्हारे काले वर्षः पुत्रसं सुक पुरुनेकी बात हो से बड़ो; मैं कुमूरे सभी स्टिहोकों हर कर देख ।

कृतरहरे का—यनवर् । संख्याने विकास करे-बारऐको में हम इनुम दुष्टिगोका क्षेत्रे 🐍 उन सम्बन्धे | इस सुरुवन एका बुक्रस्त कियाओं यह गने। क्षेत्री रेताका

व्यापनि क्यां कार्यन अधिकी प्रथा निर्देश हैं, क्रमधी राज्यें कार अभी हो अनक अधिकातमारे पूर्वी हो, करते बुक्तें न निकारे, काबूति कारनेका कार्येशे परित्र गन्य र्फलने राने, के इसे पानी निकासक निद्ध मताना गया है। कता। किस पहले केन्द्राओं हुन्तो हर्नेक्ट क्या निकालों हो, उसका देवों क्या कहा हो, बहुनी हुई बाताई कुम्बार्क न हो, से ही पुजारी नहरमाराको पार परके है। र्कत केई है सा बहुत, बोद्धानीका आकर्षा को है विकास प्रकार स्कूल क्या गया है। एक-कुरोको अवसे का प्रात्नेकारे, काली, को आदिने अनावक राज कृतिकारी प्रमाण भीर भी सकूर बड़ी केनाओ गीर जानते हैं। बरि पुरुषे की के व प्राप्तिको प्राप्त है नात प्रेर्ड है, से में भी किया प्राप्त कर समाते हैं। अतः क्या तेना अधिक केरेले की विकास केरी हो, देखी बाद नहीं है।



। ज्ञार बद्धार धनवान् नेतृत्वास वले गर्ने और बद्ध

रोपका रूपेरे प्रकार का, 'काम । ये पुरुषेर्य समानेप पूर्वके लेको संगत्ता के लेकर कर प्रकारके साथ-प्रच्येक्टर को एक-इसनेकी क्रमा करते है, पुश्चिक देखांची प्रकार परात्र असे हर प्रमाधिकारी पार-पंत्रमा स्थाने हैं और प्राप्त की होते, हाली में सम्बंधार है कि पूर्वाचे बहुत से पूर्व है। वर्षी से प्रार्क किये बढ़ पर-अंबर बेस्ट है। अब: वन पानो का प्रार्थका की कार्यन करते हैं।

जारको अञ्चले समुद्रार पृथ्वीके पुर्वेक्ट कर्वर करता है. और अवट । परोधे, तीन केंद्र है--अव्याद, प्रोवण और विश्ववेद्य प्रभावत प्राप्ते हैं।

बद्धान । इन क्रीनेने क्षरपुर शेष्ट्र है तथा चरायुगीने प्रयुक्त और पह प्रथम है। इनमेरे कुछ सम्माती और कुछ क्रमानी होते हैं। 3 प्रायम्पतिन्तेमें प्रश्ना हेता है और करवारिकोचे सिंह । जावर का प्रकारनेको प्रक्रिया की सन्तरे है। इसके योग जारियों है-नवड, पहण, राजा, प्यापी और pagest (सांच asilt) । में एक मानिके क्यार्नन है।

का सम्पूर्ण कराव हार पृथ्वीयर है राजन होता और पूर्वीमें ना हो नाम है। भूमे है समार्ग प्रतीमाँ प्रतिहा है, चूमे है स्तान केश—पदालेह | आरको पनवान है। मैं क्रांक्ट कारका मिन स्हतेवारी है। विस्ताह धूरिया अविकास है, अरोबे बारने सन्दर्भ सरावर बारत् है। कान केवर सुनिने । इस गुर्कांगर से प्रकारके अन्त्री है—यर | इस्त्रीरिक्ट इक गुरिने आवन्त्र लोग प्रकार क्षर शर्मा एक-

#### युद्धमें भीक्षजीका पतन सुनकर धृतराष्ट्रका विवाद तथा संस्थयद्वारा कौरवसेनाके संगठनका वर्णन

र्वतान्त्रकार्यः व्यापे हिन्तान्त्रः । एक विरामी पात है, पुरुष पुरुष्ता विकास किया क्षेत्रण की थे। प्राप्त करन times almost of the region and was not after the बहुत कुन्ही होनार मोता, 'नहारून ! मैं सहान है, उन्तरको प्रकार करण है। कारायुक्तक स्थापनी पुत्रते करे रहे 7 से क्षित क्षेत्रकारें हिल्लामा और क्यूकीरवंदि सहते थे, वे करिकोंके जिलाब अन्य साथ-सम्बाध से से है। हिन महार्थीने कावीप्रीमें अकेले ही एकमा सबसे महानको नहीं मुद्रे हुए समस्य राज्यकोंको पुत्रुचे परास कर दिया का, को निहर होतार पुरुषे रिन्दे परमुख्याओं साथ भी निह क्रमें में और सामान परस्रातकों की निन्दें कर जो सके थे, है है आब विकासीके हानने पत्रे नवे । ये प्राप्ताने इसके क्रमान, विकास है क्रिक्ट करेंक, नार्वे साथ क्रमांक सामन और स्वानकीयसभे प्रणीके साम है, विन्तेने प्रधारे बाजोबी क्यों काने हुए इस दिनोंने एक उत्तव ने कार जंकर किया था, में ही इस समय आंधीके उसके हर प्रकारी चीति पुर्वापर रहे हैं। राजन् ! यह साम अवस्थारे सुव्याननायाः पान है भीवारी करावि देशी रहाके बेल्ट की वे (

पुरुष्य केर्ड-- भक्तम । स्वीरकोचे हेल और पुन्नके प्रकार परावानी विरादर पीनावी जिल्लाकोंके क्षाकों की को जो ? रनको पुत्रुका समाजार सुरवार मेरे इसको बढी कीए हो सी है। जिस समय में बुद्धके दिनो जलसर हुए थे, का समय क्रमेंद्र पीड़े कीन गमें में उसर आने औन में ? उनके जन्म और बाज के बढ़े है जा है, का भी बहुत जान कर है अपने बाबोरो जीतीन प्रमुखेके म्लाब प्रको से स्था परास्त्रीके क्रमान कुर्वन के । उन्हें पुत्रके दिनों उत्तम वेदनकर परस्कारिकी का को हैया की उसी की। में का दिनों हलांगर क्यान-रेका स्थार कर से थे। क्या । देश क्यार कर्न क्रमें, के अन्य कुर्नेट समाग करत हो पने । कृतावार्य और क्षेत्रावर्त के उनके पन है थे, से भी जनमें कुछ बैसी है पत्री ? किये केवल भी नहीं पत्र स्थाने से और को अंतिरसी बीर थे, उन्हें प्रकुलनोजीय सिकान्डीने फैरी पार फिरका ? मेरे **थाओः विक-विक संदेपे अपतास उपना राज्य पर्हे क्रोक ?** क्वीकादी अञ्चली क्वीन-स्तेत सीर वर्षे सारी ओस्त्रे मेरे 表 47

सहार । सम्बद्धा हो मेरा इंदर कारणा अन्य है, बंदा है करोर है। हमी से मीनकोबी मृत्युक्त समावार शुनकर भी क को करता। चैनाचेक सार, चुटि तक नीति आहे. रम्पुरावेको को बाद ही गाँवी थी; थे बहुतने विसे मारे गाँव प रक्षण ! कराओं, इस संभव प्राथमोंके साथ कीवानीका कैसा बुद्ध हरता ? क्रम । इनके मरनेसे मेरे मुलोब्डी सेना परि और काले हीन क्षेत्रें समान करताय हो गयी। इससे दिया केल बेरवामें प्रतिद्ध कर्मका और महामरहानी में, उन्हें बरकार अब प्रमा सीनेंद्र तिये के बाँच-सा स्तारा क क्या है ? मैं सम्बाध है नहींके पन क्षत्रेकी प्रधानको प्रकृत नामको पान्तेने हती हैएकर कैसे जाकुर हो पाने हैं, जारी जनार चीनाबीको पुरस्ते मेरे एक भी क्षेत्रमें इस गर्ने होंगे। कर कहा है कैवें सकक सामके करने विश्लेका पुस्तुते कुरकरत नहीं हे सम्बद्ध । अवस्य है बेबई बंध करवार है, भक्षं काले कोई के प्राप्त अस्तुन को कर सकता : मते हे जीवारोंने हैं अवने प्रताब बड़े बाहा के। स्वाहे रमपूर्विमें निया हैक हुनेकारे क्या किया किया ? क्या und, unter abe murrir war um? identite अतिरिक्त और विजन्मिन रामाओकी कर-मीन को ? उस्क कौन-सौन जाओंके निकाने क्याकर तार निवाने करे ? स्क्राप । में पूर्वोक्तके किये हुए द्वारावार्ध कार्येको सुरक्त क्षत्रता है। उस चोर संस्थानों भी-को घटनाई जो हो, ये कर सुराओं । जन्मद्रि क्रॉबरको क्रांतके कारण के वी क्षान अवना मान्यूनं बदलाई हो हो तथा विकासी इक्तरी चीवानीने को-को तेक्सीच्छापूर्ण करने विक्रे हो, से एमा पुत्रो सुराओ । सरभ ही यह भी सकतो हैंद्र बोरल और पान्ययोगी सेनाओं किया कह पुर हुआ? एक विकास कारणे विकास स्थान बहैन-बहेन-बहु पहली विकास प्राचन परित्र हुआ है

संस्थाने का—-व्यापन है अस्त्या का प्रता आक्री केना ही है करंचु का साथ केन जान पूर्णकर्ना है करने नहीं का पानते। को प्रमुख अरने ही कुळानीह कारण आहुन कार पीन दह है, उसे प्रता कारणा केन्द्र पुरत्येक कर्न प्रता कार्या करिये। पुन्तिकार कारणा अपने प्राप्त किन्ते दसे प्रताह एवं सायको आपी तहा प्रत्यूको थे, हो भी प्रमुखे केन्द्र सायको और नेपाकर कार्य स्थिता। अस्त विकास पुन्तते पूर्व पूर्ण-स्थित्याद-वर्षकरम्य प्राप्त कार्य आधानने विकास और विकास आहि आहि हुए है, जा प्रताहकर्य कार्याक्ष आहमी असाय कार्या कारणाविक्तीह रोपाक्षकर्य और अस्तुहा संस्थानका विकास कारणाविक्तीह रोपाक्षकर्य और

वास दोनों जोरको रोनाई तैयार क्षेत्रार व्यक्ति अस्वारको एकी क्षेत्रारी, जब पूर्वोचनने कुत्रास्तरों कहा— ''दुश्तरान ! वीन्यनीको दक्षके सिने को रच नियत है, उन्हें तैयार कराओं। इस पुंचलें वीन्यनीकों दक्षणे क्ष्राव्य कुत्रा कार्यकों दिवायको पहलेते ही वहा रक्षा है कि जिस्कादीको वहीं पार्वेग्य, व्यक्ति का पहले वीन्यनों द्वारक हुआ था।' अहः पैरा विचार है कि जिस्कादीके कुन्यते प्रांत्यकोंको व्यक्तिका विकार है कि जिस्कादीके कुन्यते प्रांत्यकोंको वाल्याका विकार क्ष्राव्यक्ति की वीर्त रक्षेत्र की विकार क्षित्रकोंकों कुन्यते होते हैं प्रांत्यकोंकों को वीर रक्षा अव्यवस्था स्थानीकारकों कुन्यता हो, वे विकारकारी प्रांत्यों की विरांत्र, अर्जुनके रक्षेत्र कार्य प्राप्तानी

पुज्जनम् इता कर दा है और दाहिने कार्क्य स्टानैका। अर्मुक्तो ने के दक्षक अहा है और अर्जुन कर्ष हिलाकीकी कार करता है। जरा- कुर ऐसा सकत करों, निहासे अर्जुनके हमा पुर्श्वास और केन्स्तो स्टेबिस हिलाकी निहास्तास क्या म क्षा कोट।"

करायर, यह रह मेरी और सुरोद्य हुआ से आयोह पुत्रो और प्राथमिको सेनाई अस-सम्बोधे सुराधित दिसाची हेरे ल्ली । क्ये हर केन्द्रकोड़े हको जून, बही, सल्वार, नह, पुर्वित, प्रोपन राजा और भी महान-ते सम्मानित स्वत होता पा के वे । बेक्क् और इम्मरोकी प्रकार हाथी, फेल, रशी और केंद्रे प्रमुख्येको पंचेने पेकानेद्रे किये बहुत्वह देखर पाहे है । कारी, प्राप्त, प्रयास, अवस्थित क्रिय और अनुविध, केक्करोत्, कन्केक्टर सुर्वकृत, क्रीस्कृतेक कुल्कर, रामा जनसंदर, मुद्धान और मुख्यामां—मे दान गीर एक-एक अभौतिको प्रेरमके सम्बद्ध से १ प्रत्येत विकार और भी स्थूत-के बहुतको कथा और कामुकार पूर्वेकरके असीन हे पुरुषे अन्यक्षे-अन्यके केनाअनेह काम नाई विकास है। में । इनके अस्तिक प्रत्यूनी पहुलेग क्रोक्स्पी जी। यह सब वेगाओंके आने थी, इसके अधिकार से अंगानुस्तान बीनावी ( महाराज | उनके बितवर प्रकेष बनाई थी, आरीत्वर क्रमेल करण का और राजेंद्र कोई भी समेलू से , उस राजन क्षत्रमें केंद्र कारियों ने प्रमुखके स्वाप कोया हा हो है । उने केराका को-बंदे करून करना करनेवाले सुक्रावरंताके और क्या पालक ताहि स्वयुक्त की भी भवनोत हो और उस प्रकार के न्यारत स्थानिकों सेनाई अल्पनी ओरसे काई भी। कार । जीरबोधी हाती को सेनावत देखा संगठन न वेरे क्षाची हैंगून का, न पूछा का (

पीणानी और जेम्मामाँ समिति सभी जानार सही प्रमाण पानों से कि 'राज्यानिकों नय है'; ते में अपनी जीवानी अनुसार से पुद्ध अपनी ही निस्ने पानों से ( जा हिए फेम्मानी तथा प्रमानीकों अपने पान सुरावार उनसे पूर्व जाना पान-'स्तिको । आगर्थ-गोंस हिन्से सार्थ समित्र मा पुद्धानी महान् स्वाचना सुरा गया है, प्राचेत हारा आप इन्याचेत और स्वाचनेको चा सबसे है। पाने आगर्थन प्रमाण पाने है, सर्वाचन अगर्थन पूर्वपूर्वोंने की अनुसरण क्रिया है। योगने पाने पहे-यो जाना सामामा सर्विको; हिन्से सम्बद्ध सम्बद्ध पाने है। पुद्धाने को प्रस्ता पूर्व होता है—यही प्रस्तार सम्बद्ध वर्ग है। पुद्धाने को प्रस्ता पूर्व होता है—यही प्रस्तार सम्बद्ध वर्ग है।

भीनवीची का कर सुनकर सभी एका बहिया-बहिया रचेंसे अंपनी सेनची सोचा बहारे हुए युद्धके रिप्ते सस्ते राष्ट्र: चीकाबीने काले. साथ-कक्ष रहामा हिने से । सामग्र ब्हेरवर्तेनके सेरामी चीवको १वक बेटे हर सुर्वेड स्टबर सुलोपिता हो रहे थे, उनके रककी कारावन विकास कर और र्मान तारोके किंद्र को पूर्व थे। अवनेक पक्षमें कियाने पहान् बनुर्वर राज्य से, में तब राजपुरस्य बोमलीको आहम्ये । ह्यां म्यूनके सम्बन देशानी हेरी थी।

सहे । केवल कर्म जनमें कभी और कथ-कथनोंके स्तीत क | कनुसर सुद्धेके प्रेश्मे रीकर हो उसे । जानार्थ होतार्थी को क्रमा पहल को थी, उसमें सेनेकी केरी, करावाल और प्रमुख्ये किह से। कृष्यकर्ण अपने सङ्ग्रहम् राज्य सैठकी क्रमके विकासी क्रम पद्धते पर ये थे। राम्यू । इस प्रकार अपनेत पुलेको प्राप्त अर्थादिको सेना प्रमुक्तने निर्देश

#### होनों सेनाओंकी व्यह-स्वना

माराहरी पूछा—१७३व । जीवाची से क्यूबर, बेक्क, है गुलाई और असरोक्स की करेनाओं ब्यूटरना भी करते है। यह प्रयोगे नेते नाता अर्थातियों सेनाको महत्त्वार की, तब पाण्डलका पृथितियों अवनी खेडी-तर केलले विका paren ou die ?

रक्षणी ध्रार-महत्ताच । धारको सेराको बहुतकत-पूर्वक सुरक्षिक हैन वर्गरात पुनिवृत्त्वे अर्जुन्ते कहा--'तात । न्यूमि कालतिक प्रकार का पात जल होती है कि परि प्राहमी अनेका अपनी लेगा केंद्री हो के को सनेकार बोडी ही क्रों रक्षका पह कामा कार्क्ष और पनि अपने हैना अधिक हो तो भी प्रवास्तार कैरनकर सकत पाहिने । यान बोधी केराओं अधिक रेजने अब यह बरण को से को सूर्वानुस राज्य जुल्ली राज्य कशी पाहिने। इस-रतेगीकी यह तेन प्रकृतिक मुख्यक्ति वहा क्षेत्री है. प्रतरिको तुन्द स्थानुस्थल सन्दे (

का सुरकार अर्थने चौनदिको क्का-'बहाएस । वै शायके रिजे बक्तवस्य पूर्वेत बहुत्वी रक्तव करत है। या पुरावा बताया हुआ हुर्बंग पहुर है। तिलबा केर बायुके कारत प्रमान और प्रमानिक विन्ते कुनक है, से संद्र्यकारी अवन्त्रम चीपसेन इस बहुने इनकेन्ड्रेड अने क्या पृष्ट मारेंगे। उन्हें देवले ही क्वींचन जाहि स्टेश्व प्रत्यांत होकर इस तदा जागेने, जैसे विकास केराकर का पूर्व प्रान नाते हैं।"

ऐस्स बहुबार बन्ह्यपने कारकाची रकन की। लेकको व्यक्तिकारों सबी करके उन्हेंन तील ही व्यक्तिकी और मदा। मीरवीको अपनी और असे देख प्रमाननेत भी जारसे जरी हुई नक्षाके सम्बन बीरे-बीरे जाने काली दिवाली केने क्यों । धीमसेन, बहुद्धा, न्यूटर, स्वकंत और पुरुषेत् — वे इस सेन्सके आने चल खे थे। प्रनके नीड़े सकत राज्य विराट अपने पार्ट, एवं और एक अवोधिनी ऐस्कोड साम रक्षा कर रहे थे। उद्धान और स्वतंत्र पीयरोजके दावे-

क्षाने क्षावर उनके रहाके पहिलोको रहा करते है। शैक्टीके कोडो कु और अधिकानु करके पुरुषानके रहक थे। इन सकते के किकारी पास्त का के सर्वस्की पासे प्रकार चेन्द्रवीका किराप कार्नके तिये तैयार या। अर्थुनके पीके पहल्ली कार्यक का तथा पुणवन्तु और उनमीना उनके कारोबी पूर्व कार्र से वेश केलेल ब्युकेट और मान्यान, वेरीकारण की अर्थानको हो एकाने है।

कर्मने विकासी राज्य को थी, यह नारपा नवसी सारकारो कुल था। अस्ते स्था और पुत्रा में, देवलेने बाह प्रधानको था। प्रीतिके सनुस प्रधाने विभारतीके समार प्राप्त हों से और क्रमें अर्थन पान्तीय करून क्रममें तेमार जाती एक कर हो थे। असेका आध्य रेकर पान्करसँग तुकारी रेक्ट पुरस्कारेने हो। हुए से । राज्यांने पुरक्षित का का कुन्य-कुन्युके हैंजो नर्जक अवेच का ।

क्रानेने क्रमीक्ष्य होते देखा समझः श्रीपद्ध संस्था-मन्तर करने रुद्धे। इस समय काले आधाराने बादन गाउँ वे से की केवाड़ी-की पर्यक्त कई और इसके साथ की पहले लगी। फिन पार्च अंदर्भ प्रचल्या स्त्रीओं क्री और गीलेकी और केमस मासाने राजी। प्रानी शुरू क्ष्री कि सारे कराएं क्षेत्र-सा क्षा पर्या । पूर्व विकासी ओर बहा भागे संस्थापात हुआ। जा अस्पर अस्य होते हुए सूचेने उत्तराचार नियो और बड़े क्षेत्रको अपनाम क्षाती हो पुर्वाने क्रिकेन हो पनी र

चंत्रक-कन्तरें बहुत्तर जब राज रैनिक नैवार होने तमी से कुर्वेची प्रथा फीसी पढ़ गरी हमा वृक्ती समानक सम्ब कसी हाँ कीमी और फटने लगी। सम विसानोंने बसमार बक्रका होने हुन्ते । का प्रकार बद्धावर अधिनवान करनेवारी धन्त्रण अपने का दर्जनमधी संस्था सामन करनेके दिन्हे क्या-रक्षण करके चीवलेनको आहे किये सके थे। उस पास्य माञ्चारी चीवको आपने देखका उपारे मोजाओको पन्या सल को के।

पुरुक्ताने <del>पूर्ण कहा</del>न र सुर्वोदन होनेवर चौनानी

अभिन्यकार्यं स्टोबाले की पहले की और पीम्लोको प्रेरायरिकारं कर्ताच्य हुए क्ष्मक्यको प्रेरिकोने क्लो क्रिकोने युक्ति क्षारो हुई उत्तर किया था।

हानमें बहा—नोन् । बीनों ही सेनाओबी समान अवस्था थी। यह बेंगों एक-कृत्येक पास आ गर्म से केंगों ही प्रसान विकाशी पहीं। हाथी, थोड़े और ग्योसे करी हुई केंगों ही सेनाओबी विकाश सोना है पति थी। व्यारक्तें करते पुरू पश्चिमकी और या और पासका पूर्विपनुत्त होका करते थे। बीटवोकी सेना देवरावनाई सेनाके समान कान पहली थी। और प्राथकीकी सेना देवराव हमानी केंगले समान कोना पा रही थी। पास्त्राचेक सेने हमा सामने समी और कोंगलेके पहलानों मोनाहरी पहला बोस्स्कुल काने समी।

प्राता ! जानकी क्रेनके महुने एक लावने अधिक

इस्सी थे, अनेश्व इस्मीर्थ साम सी-सी रम सही थे, एक-एक रमके एक्य की-सी पोड़े थे, अनेश्व मोहोर्थ साम दम-एक प्रमुपेर विन्दा थे और एक-एक म्यूपेरफे साम दम-एक प्रमुपेर विन्दा थे और एक-एक म्यूपेरफे साम दम-एक प्रमुपेर की। इस अवसर श्रीक्योंने आस्मी दिन की है। विन्दी दिन पर्यान-मुद्ध समो थे से किसी दिन दैव-पद्ध तथा विन्दी दिन पर्यान-मुद्ध बनाते थे से किसी दिन अन्द्रा-मुद्ध। अवस्थी सेन्सफे प्रमुप्ते प्रसुप्ते प्रदेश थे। पर्यार थी। यह स्म्यूपेर समान गर्जना करता था। स्थान । वीरक-सेम्य प्यापि अनेप्स और धर्मकर है तथा प्राप्तानिकी सेम्य देशी नहीं है, सी भी पेरा यह विश्वास है कि पर्यापि मही सेम्य पूर्वन और प्याप्त है किसके मेह पर्याप्त श्रीपृत्ता और असीन है।

## युधिष्ठिर और अर्जुनकी बातचीत तका अर्जुनद्वारा दुर्गाका सावन और वर-प्राप्ति

सञ्जय कारो है—कुम्सेनक्य ! मुविद्वित्ते क्या क्रिकाकेट रचे हुए अभेदा कहानो ऐसा से उक्तर होका मार्चुनने कारे एगे, 'सबहुत्य ! स्थितंत रोगावति विश्वास क्षेत्रको हैं, उन विद्यानें साथ इसलेक केरो कुद्र कर स्थाते हैं ? व्यानेकारी गीयाने सामोक विद्यार दिला क्ष्मुक्त निर्माण किया है, इसका केरा करना असम्बद्ध हैं। इसने के इन्टे और क्ष्मित्र हैं-कारो संस्थानें इसर दिला है, इस व्यानकारो इस्परी एक केरो के उन्होंनी ?'

तम प्राप्तानम अर्थुनने युविद्यारने बाहर, "राजन् ! निज युक्तिमें बोबे-से मनुष्य भी पुनि, तुष्प और संस्थाने अवनेत अधिक बीरोको बीठ लेते हैं, यह मुक्तरे सुनिने । पूर्वकारने केवासर-संभागके कवसरमा प्रक्रानीने प्रशासि केववानीने कवा का-'केलाओ । किनवारी हका रक्षनेवाले की बार और पराह्मपत्रे भी केरी कियन जो या काली जैसी कि प्रका, करा, क्यें और ज्यूनके प्रशा तात करते हैं। इस्तीने वर्ग, अवर्ग और स्टेमको अच्छी एक कानकर शामिका-शूम्प है क्रमानके भाग पुत्र करों । नहीं वर्ण होता है, उसी पहनी चीर होती है।" राजन, । इसी ज़कार जाए की जान से कि इस कहाँ हमारी निश्चम निर्देशन है। नासक्ष्मीच्या बाह्य है---'बाई कृत्या है, बहुई विकार है' विकार औरहरामात एक पूर्व है, बहु तरह इसके मोडे-मोडे बहुता है। चोनिनका तेम अन्य है, मे साहात प्रकार पूजा है, इसरियों ने बीवृत्या वर्ड है, उसी महाकी विकास है। एकर | यही हो आयो जिल्हा कोई कारण दिवाची जी केन; क्वेंकि ने विकास क्रीकृत्य



भी आवडी विकासी सुध कारण करते हैं ("

स्वकार, राजा वृतिहित्ते बीक्या सुकारत करनेते हिनो व्याप्तानों काई हुई अन्त्री क्षेत्रको आगे सक्नेक्टी स्वाप थे। उनका रण इसके रकके संगय सुन्तर वा स्था असर बुद्धको सामग्रे रखी हुई थी। जब वे अस्पर समार हुए के उनके पुरेखित 'क्ष्मुक्तेका नाम हो'—ऐसा कदकर अन्त्रीकांट देने समे तथा खार्चि और क्षेत्रिय क्षिप्तन् कर, सम एवं ओक्टिकोंके हारा सम अंग्रेस्ट व्यक्तियालन करने समे। समा पुणितिन्त्रे की समा, भी, धार, सुन्त और क्ष्मिन्तार् महाक्षेत्रों सुन करके किर बुद्धके सिन्ते शक्ता की। धीमहोनने आयोः पुरोका संबार करनेके लियं बढ़ा चनानक उस काल किया कर, उन्हें देशका आयोः चेद्धा कारा उठे और सकते मारे उसका सहस नामा रहा।

श्रास गण्यान् श्रीकृष्यने अर्जुनसे बहा—नस्त्रेष्ट्र । वे को अस्त्री सेनाके सम्बद्धमाने सके ही सिंको सम्बन्ध इसले वैनिकरेकी ओर देखा को हैं, वे ही कुश्कुताको व्यक्त पहारानेकाले गीकाची हैं। जैसे पेक पूर्वको इक देखा है, जाते ज़क्का के सेनाई इन बहानुष्याककों की कही हैं। हुन व्यक्ते हुए सेनाओंको जासकर किर बीकानीके साथ कुनुकी इक्का करना।

इसके बाद धरावान् जीवरणाने कोरव-केमाची और धृष्टिकार किया और पुरुष्ठा स्थल कारिका हेल अर्थको द्वैतके रियो इस प्रवार कहा—'बहुमको । युद्धके जारवाचे शास्त्रीको पराधित वार्गको दिन्दै पन्ति क्रेका हुन पुर्णादेखीको स्त्रीत सरो (" भगकान् आहुन्तको देशी अस्त्र क्षेत्रर अर्थन रक्ष्मे नीचे कार यह और क्षत्र खेळका हर्यका प्राचन कारे करे—'पन्याकरणा निकास कारेकार्य विद्योग्ये केन्द्रोती आर्थे ! तथे करकार कारकार है। तथी हमारी, काले, बायली, क्रांक्य, क्रमांक्रिय, प्रकारी और पहासामी आदि समोने प्रसिद्ध है। तुन्हें सरमार प्रकास है। सहीपर प्रथम क्षेत्र बारकेके कारण तुम कन्छी कारमती हो, अवसेको संबद्धते शास्त्रके सारण साचि हो। इकारे जरीरका किया कर्न करू है सुन्द है; मैं तुन्दे उन्हान कता है। प्राम्पणे ! तुनी संन्य और शहर कामानी कारवामनी हो और हुनों विकासन करकारियों करवी हो। हुन्हें विकास और क्याने नामने विकास हो । मोरवेकारी स्थारी काम है, नान प्रकारके आयुक्त तुमारे अनुवेती कीचा करते हैं : तिल्ला, करून और चेरक सादि सामुखेको धारण करती है। अनुगोपके संजये तुपरे अवसार निरम सा, इसरियो गोपेवर श्रीकृष्णची हुए क्षेत्री बहिर हो; गुरू और प्रशासीमें सर्वानेह हो। महिनास्त्या एक व्यक्तार तुन्हें कही प्रस्ताता क्र्रं भी । तुम कृतिक-गोको सम्बद्धर हेमेके कारण क्रीतिको नामसे भी प्रतित्व हो, पीनामन मनम करती हो। सब तुर इक्कोंको देसका अञ्चल करती हो, उस समय तकार वस **पान्ये समान जो**स हो काता है। युद्ध तुनों कहा ही किया है: मैं सुद्धे करकार प्रचान करना है। क्यां, क्रमान्ती, केस, कृत्या, बेटमनतिनी, क्राच्याक्षी, विकासको और सुसूतको आदि नाम मारण करनेपासी क्षेत्र ! तुन्हें अनेको कर कारकार है। तुम बेटोको सुति हो, क्यारा अस्तर अस्तर परित्र हैं; केंद्र और ब्राइन तुने प्रिय हैं। सुद्धी कालकेस अधिकी अधिक है, अध्यु, कटक और मांग्रहेचे तुम्बर निम्न विवास है तुम समझ विद्वारतीये क्राजिक और केमारिकेकी महान्ति है । भगवति ! हर कारिकेक्को पास हो, हर्गय स्थानांचे बास आरकेकाली दर्श हे । साहा, सब्द, कार, कहा, सरस्ती, नेट्याम साविती तक केटच-के तक रुपारे ही कर है। महरोमें । मैंने विकास क्षेत्रके सुन्तार कावन किया है, सुन्तारी क्रमाने इस रक्षाक्रमें नेरे क्रम है कर है। मी ! तुम बोर महरूमें, क्यपूर्ण पूर्णक कान्त्रोमें, करतेके, परने तथा पातास्क्री भी निक रिकार कारी हो । बहारे कार्योको शारी हो । हुन्ही कार्या, केंद्रिके, क्या हो, हो, संबंध, प्रध्यक्ती, साविके और क्षमं है। हो, यह, यह तक सर्थ-क्षमानो कानेकार्य केरिर भी दुन्ती हो। सन्ती ऐक्तनंतालेकी निपाल हो। बहुपूर्विको सिद्ध और चारम सुनारा स्त्रीन करते हैं।"

स्वयं कार्य है—नावर् ! अर्थुनको चांता देश समुखीयर एका कार्यवारमें केले जनकार् श्रीकृष्यको स्थानने आध्यक्तमें उत्तर हुई और कोर्गी, 'पायुक्तका ! तूम बोधे ही दिनोधे प्रश्नुकोच कियल आप्न करोगे । तूम सम्बात् ना हो, नारावण मुख्ये स्थानक हैं; शुन्ते कोई तक नहीं सकता । प्रमुक्तेकी तो कार्य हो क्या है, तुम मुद्धमें बन्नवारी इन्तके दिन्ये भी

वह मध्यांकरी हैवी इस जावर बहुकर क्षणपरमें अन्तर्धान है गयी। मस्यान पाकर अर्जुकारे अपनी क्रिज्यका विश्वाप है गया। फिर से अपने एकर जा मैठे। कृष्य और सर्जुन एक है स्थाप बैठे हुए अपने दिव्य पद्धा कराने लगे। स्थान् , नहीं कर्ने हैं, वहीं है सुधि और कारित है; नहीं लगा है, वहीं है स्थाने और सुमुद्धि है। इसी प्रकार खाई वर्ष है, वहीं है सीकृष्ण है और कहीं जीकृष्ण है, वहीं ही उस है

#### श्रीपद्भणव हीता

#### अर्थनविषद्योग

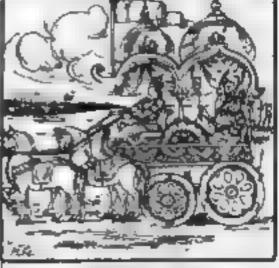
कुल्ली प्रकारताले की और राज्यके पूर्वीने पान Rott 7 in t in



कुराहर जोले—सहाय । कर्मपृति कुराहोकने क्**राहिता, ।** किराह क्षत्र व्यापनी तथा हुन्छ, मुहनेतु और चेनियान तथा करणम् करियान, प्रतिका, सुनित्योग और मनुजीने हेन् केल, कार्यानी पुरत्यम् तथा साम्यान् सार्याना, सुधारहा अधिकान् एवं प्रेयक्रिके क्यों कु-ने उन्ने बहाती है। क्राइनकेंद्र । अपने पहाने भी में प्रमान है, उसकी जान क्या स्वीतिये । अस्त्रमी मानकर्ताके रूपे मेरी सेराके मे-मे केन्स्री है, अस्ते प्रस्तात है। अस—वेपायर्ग और विकास सीमा क्या कर्ण और संज्ञानिकारी कृशकार्य क्या की है अवस्थात, कियार्थ और चोध्यालक पुत भूरिकाम: और भी पेरे रिप्ये जीवनकी आहा स्थान देरेवाले बहुत-के जुल्हीर अनेक प्रकारके क्रमान्त्रोपे सुरानित और का-के-का प्रज्ञमें करा है। जीकारितामकारा रिक्रा इमारी बह रोगा एक उक्तरणे अनेन है और भीभद्वरा रहित हर कोन्तेको का केल जीतनेचे सुराय है। क्रातिने एक कोरबीयर अपने-अपने जन्म विका सुते हुए आसरोग सनी विःसीह केवरिक्यकृती ही एक औरते रक्षा करें ॥ २--११ ॥

१९७४ क्षेत्रे—का सभव एका क्रूबेक्टरे ब्यूडरकायुक पालकोची संगानने देशका और होणावनके का अन्यत बह बचन बहा-- जाबार्व र अपने स्थितिक क्रिया हरद्वा बुद्धान्या बहुत्यार कई के हुई बब्धुकेंके इस क्षत्री भागी जेनाको केंकिन : इस सेनामें नके-को बनुगोवाले तक पुत्रमें पीम और अर्थुओं समाग प्राचीर सम्बद्धि और





क्रीरकोर्ने कुद्ध करे उतायी विद्यालक बीचने का रूपीयनके इसके हुन उरका करते हुए तह कारने विद्यार्थ रहपाके समान गुरुकार कहु अभावा । इसके पहाल सङ्घ और नगरे तक क्षेत्र-मृद्धः और नारिने आदि कर्न एक साम है कन उठे। करका वह सब्द कहा वर्षका हुआ। इसके अनन्तर स्पेट् कंदोने कुछ जान राज्ये केंद्र हुए श्रीकृत्या सहाराज और अर्थुपने पी अर्थिकिक एक्ट बनाये। श्रीकृष्य महाराजने पाइकन नगर, सर्वने देखन राज्य और प्रयास क्ष्मीयाते भीवतेनते सैन्य नामक प्यासक्त मनत्या । कुनीपुरः राजा पुरिवरित कारणिका कारण और स्कूल राज इस्त्रोपने सुर्योग अर्थैर मणितृत्यक राजक प्रक्रा कराने : लेह पर्वाले कार्तिएवं और प्लाबी विकासी की प्राप्त तता राजा निराट और अनेन सामन्ति, राजा हम्य एवं क्रिकें पीचें का और को कुळाले सुच्छाकुर अधिमणु—इन समीने, राजन्! काल-काल सङ्ख बार्य । इस प्रयासक प्रमाने आवान्त्र और पृत्रीको स्र गुँबते हर प्रशासुकी-आपके पुरुषे हरन विश्वेष कर हिते। एकन् । इक्ष्मे का करिकार अर्थनो खेर्क मॉक्कर क्षे हुए कृतसङ्क्ष्मेको ऐसका, क्षक कार्यको सैकारीके क्षाप अनुष क्राच्या तम इसेनेक अंग्रिक पहारामा मा कार बहा—'अवहर ! की रचनो होती होनाओंके संख्ये साम क्यांनिये और सकत्व कि में बुद्धक्षेत्रने को हर बुद्धके अभिराजी हम विपादी केंद्राओंको चली उच्चार देख है कि प्रत बुद्धान्य जानारने को बिल-बिल्को साथ बुद्ध करन धोष्य है, स्वरूप को स्था गीरते। युक्ते कृष्टि कृषिकार कामान मालेकले जो-को राजालेल इस होकले अर्थ है. का बहा कालेकालीको में बेबीया' ।। ११ — १३ ।।

तम्य कोरे—कृत्यकृ ! अर्जुनक्कय इस अक्षान कर्य हुट् प्रकृताम अविकृत्याकाले केले सेलाओक क्षेत्रमें सीव्य और वीक्षाकार्यके सामने तथा समूर्ज राजाओक स्वयने आव एक को क्षाह करके इस अवार कक्क कि 'पार्च ! कुळके सिन्हे कूटे



हून की स्थान देश। ' इसके बाद इवादुत सर्वृत्ते उन होगी हो से-इसोने दिवस साम-बाबोको, इसो-वस्त्रकोको, पुरस्तेको, सामस्त्रकोको, प्रदानोको, पुरस्को, पौजीको समा विकोको, सन्दर्शको और सुद्धानेको भी देखा। उन उन्हर्शका सामको पुरस्त होन्सर को सामतिहा अन्तर सामन कोत सामको पुरस्त होन्सर कोन्स करते हुए यह समा कोत साम-पन्न ।

अर्थुर जेले—कृष्ण ! युद्धकेत्रये प्रदे हुए युद्धके अधिरक्षणी हर कार्यन्तरहरूपानो देखका मेरे शह विशेषक हुए सा दो है और कुछ सुका का का है, कुछ मेरे उत्तीरमें कुछ एवं रोमाई हें रह है। हको पत्थीय बच्च गिर रह है और लख भी बहुत कर हो है तथा केर का अभित-सा हे पर है, इसकिये में एका रहनेको भी समर्थ भी है। केइमा । मैं लक्षणीको भी विवर्तन 🛊 देश रहा 🛊 ज्या पुत्रूचे स्वयन्त्रपृत्रकारे मारश्र कारकार भी नहीं देखता। कृष्ण ! मैं न हो विकास सहता हैं, और ने राज्य संबंध सक्तीको हो। गोलिय । हमें देने राज्याने क्या प्रयोगन है अवस्था हैने भौगोंने और प्रीमानों भी क्या साथ है 7 को जिनके देनों राज्य, योग और संसाधि अमीह है, के ही ने कर का और मीजनवीं आसाओ लागकर पुत्रतें क्षे हैं। गुरुवर, साह-क्षेत्रे, स्वापेट और असे प्रकार क्रेंत् करे, सक्द, राती, पाते तथा और भी सम्बन्धीलेग हैं। व्यक्ता । यूर्व वार्त्यन भी अवन्य तीनों लोकोने राज्यके रिको भी में कुद ज़क्को भारता नहीं प्राकृता; बिरा पृथ्वीके हिंदी के बद्धन है क्या है ? जनर्रत | वृतराहके कुलेको अस्तर र इमें क्या अस्तात होती ? इन उत्तासकियोंको नारकर हो हमें क्य है सरोग्य । अस्तुत्व कार्यस् । अपने हैं। साम्यम प्रत्याहरी पुर्वको नारकेर रिजे इन केना नहीं है। वसीक अपने ही **बट्टानको करकर इन केसे सुनी होंगे ॥ २८—३५ ॥** 

वाली रहेशने व्यक्ति हुए वे रहेग कुरको नामने अपन वेकारे और विजेसे विदेश करनेने व्यवको नहीं देशते, तो वो कर्मान ! कुरको जासने अपन दोसको वालनेकारे इसके केले इस करने इटनेने मैंनो क्यों नहीं विचार करना व्यक्ति ? पुरस्के व्यक्ति कनातन कुरस्का नहां है जाते हैं, वर्गात तथा है जानेका समूर्ण कुरस्को वाम भी व्यक्ति करा केला है। कुर्मा । पानके अधिक वह जानेको पुरस्को विक्ती अस्तान दुवित हो जाती है और व्यक्ति । विक्ति अस्तान दुव्या हो जानेका व्यक्तिका जाता होता है। व्यक्तिका पुरस्कातिकोको और कुरसको अस्ताने के बारेको विक्ती है होता है। सुन्न हुई निन्ध और फराकी विकासको अर्थात् साह और तर्गमते पर्यक्त इनके निज्ञालेय भी सकोन्यिको प्राप्त होते हैं। इन क्लीक्टलकरक प्रेचीने कुराकारिकोके प्राप्तान कुरा-वर्ग और कार्य-वर्ग जा है को बनुष्योकक अनिवित्त करायक परवाने वास होता है, ऐसे बनुष्योकक आमे हैं। इन होता । इन्स्तेन कुरायन केवार को पहन् पाप करनेको तैयार हो गये हैं, यो राज्य और सुक्यें हो गई आमें इस्त्योको भारतेथे किये उत्तव हैं। इस्ते हो गई पुत्र स्थानीत हुई सामग्र न करनेकानेको हास इस्ते दिन्दे हुई सुरायको पुत्र स्थाने कर करने हो यह प्राप्ता को हैं। इस्ते अनिवाद कुरायककारण होगा । इट—प्रमु ।।

राजप मेले—राजपुरिनों कोकसे व्यक्ति वरणात्त सर्जुः इस क्रमार बाह्यर, वायसम्बद्ध अनुस्को स्थापका राज्ये रिक्तो प्राणमें केंद्र गर्ने ॥ ५७ ॥



#### श्रीमञ्ज्यबद्गीता—सांख्ययोग

साम्य केरो—का उच्चा कामाने मात्र और अध्याने पूर्ण का माधुसर केरोकार प्रोत्तपुत्त पर अधीनो जी भारतम् प्रमुक्तरे या काम कहा ॥ र ॥

सीनावार् मेरे—जाईन | दुवे इस सामानने यह मेर दिसा हेर्ड़ो प्राप्त हुआ ? क्लेकि व वो यह सेंड्र प्रमोदाय आवश्यि है, न कार्यको केंग्सला है और न क्टिनियो कार्यकार ही है। इसरियो जाईन | ज्यूनकारको पढ़ प्रमा है, दुवारों यह सरिश नहीं वाल प्यूनी । क्लिक ! इसकारे सुक पूर्वकारको सामानार पुत्रके सियो कहा हो या ॥ १-७ ॥

वाली मेरी—वायुक्त | में स्वयुक्त विका प्रकार बाली प्रीवरिकाक और क्षेत्रकार्य विका स्कृत ? कर्तीक अधिकृत ! मे क्षेत्रों है पूक्ति है। इस्तील इन प्रकार विकास प्रकार में इस स्वेकने विकास अस में साम कार्यासकार प्रकार के क्षेत्र को हुए अर्थ और सामका प्रेतिकों से प्रेतृता इस प्राप्त के वह सामें कि इसी दिले युद्ध काम और न कारत—का मेरी कीर-का के हैं, सकत का में की कारत इस बीमों के कीर-का के हैं, सकत का में की कारत इस बीम में की बाले, में है इसी अवस्था प्राप्त है का इस कीरों मुक्तकार साम अस्ति विकास प्राप्त है का



व्यानमें पूर्णन है कि जो सावन निश्चम है करणानकारक है, वह मेरे लिये कहिएं; क्योंकि में सावका शिव्म है, इसलिये अवनंद करण हुए युक्तको विश्वा दीनिये; क्योंकि धूचिये निवानका, अन-कान्यक्तका एंजनको और देशताओंके साविक्तको कहा संबन की में इस स्थानको नहीं देशता है, को नेवी इन्द्रियोके सुकानेकाने सोकाको दूर कर सबोद ॥ ४—८॥

सराय बोलं—सबर्! निरुष्ये बीलनेसाने अर्थुन

अन्तर्वामी ऑक्ना न्यायको जी इस ज्यार कहार है। सीगोनिश्चगवारो 'युद्ध नहें अनेना' जा स्था बहार कुछ है नवे। जातवंडी कृत्या ! अन्तर्वादे सीकृत्य न्यायक सेगों सेनाओंके सीवार्ग कोक करते हुए कर कर्तुनको है।से हुए-में न्या काम बोरो— ॥ १-१० ॥

श्रीपरमम् केले—अर्जुन । ह न क्रोब्ड कारोकोचा प्रमुखीके रिक्ते प्रोचा परसा है और परिकारिक-से बच्चनेको महाता है। परंतु मिलके प्राप्त धारे को है, उनके हैंको और जिनके जान नहीं को है, रुगके हैंनों की परिवासन होना गर्वी करते । न के देशा के है कि में बिल्डी करतने नहीं का क है नहीं का अन्यव में राजानेन नहीं में और न देखा है है कि हराने अले हर तम नहीं तेतें। जैने बोच्छानाओं हर देखें कारकार, कारणे और कुलारका होती है, की है अन्य क्रांतिको अभी। होती 🖢 का निकाने और कुछ क्रोड़ेन जो होगा । सुन्तीयुक्त है सार्वें, नार्वी और शुक्र-ब्हुकारों केरेकारे इतिहा और विकासिक संबोध को अवस्थितिककार्यास और अभिन है। इसलिये चया । उनके यू व्याप कर, क्लीक पुजारेष्ठ ! कृषा-सुकारो स्थान राज्यानेकारे विका सीर पुरुषको में इतिहार और विकासित संबोध व्याप्तार नहीं खती, मह मोहक जेना होता है। असर बखुओं हो एक नहीं है और संस्था अनाम नहीं है। इस जनत इन क्रेकेस है इस इंग्ली पुरुलेक्का देखा गया है। व्यक्तवित से व कार्यो पहल, विसारे का सन्तर्ग कन्त्-प्रकार काल है। इस अधिनातीया विनास बारोनें कोई की सकते जो है। हुए नामानित, उपापेप, नियम्बन्धार बीव्यक्रको मे का प्राप्तेर पाक्रमान् को गर्भ हैं। इस्तरियो परतानंत्री अर्थन । ह प्रक संदर्भ के इस अस्ताओं कानेकार एक्क्स है उस से इसको परा पानता है, वे जेवों ही जो व्यक्ते, क्योंकि का अपन कारपाने न हो मिल्लीयो महत्ता है और न बिज्लीके हारा मारा साला है। व्या आहार मिल्ली कारकों की न के प्राथमा है और न साम है है तथा न यह सरका होका दिन होनेकारत हो है। वनोडिंड यह असम्बर, निवर, सम्बर्धन और पुरातम है; इसीको अरे क्लोबर भी बहु वहाँ बार काल। एकपुर अर्जुन । यो पुरस इस अस्तरको राजसीत, नित्त, सम्बन्ध और अध्यय कारता है, जब पूरण कैसे किसको मस्ताला है और फैसे जिसको बारक है ? वैसे क्यूबर पुराने मकोको जागबार दूजरे को कालेको जाल करात है, वैदो ही मीपान्य पुराने करीरोको स्वत्यार कुर्स नवे क्रांरोको प्रश होता है। इस आस्त्रको इस नहीं कहा सबसे, इसको आन नहीं कल समती, इसको जन नहीं गत्म एकता और कन्

न्हीं स्था स्थान; क्येंकि का सामा अधेक है; का शतमा लका, स्ट्रेस और निवृद्धि अहोता है तथा का आका नितर, क्रांनकचे, अध्यक्ष, निकर स्त्रोबाहव और सनातन है। म्ब अस्य अस्य है, पर बास्त अस्यित है और पर आसा विकारतीय बाह्य बाह्य है। इससे अर्जुन । इस अल्पाको अपर्युक्त अकारते कारकर सू कोक करनेके योग्य नहीं है और चरि तु प्रत आवसको सङ्ग सन्यनेकाल संबा संबु नरवेकाल कता है से में कावहें। हु इस प्रवार सेव करनेके केन जो है, क्वोंक इस कन्याके अनुसार क्वे इस्की मृत्यु निर्मात है और परे प्रत्यार मन्य निर्देशत है। प्रतासे भी अस किया क्यानमार्थ विकास ह होना सार्थके चेत्रा नहीं है। अर्थुन ? सम्पूर्ण प्राची जनके सहते अरुवट से और नार्वेस का भी अपन्य है करेकारे हैं, केवल बीचये ही प्रबंट हैं निवर देशी विवरित्यें क्या क्षेत्रक काना है ? कोई एक न्यापुत्रक के इस अन्यवनों अध्यानंत्री नहीं। देशता है और कैंगे ही कृत्य कोई प्राप्तक है हमके सरका आधारीकी जीति नर्गर काम है तक दूसर कोई अधिकारी पूजा है को अक्षानंतरं व्यक्ति सुरक्ता है और कोई-कोई से सुरक्तर की प्राच्यो भी कामा । सर्वन । यह शासा सम्बंध प्रतिवेते सम ही अन्यत्य है। इस्तीओ समूची साविकोधे निर्म कु होना मानेक केन्द्र की है ।। ११—३० ॥

जया अपने वर्गको देवकार भी हू पत्र कारोगोन्य पूर्व है, प्रांतिक श्रीत्रको तिनो वर्गपुत्त पुत्रको स्थापर कृत्य कोई सारकारण्या स्थापन पूर्व है। पार्थ । अपने-आर प्रमृ हूर् और पूर्व हूर् सामित हराया हुए प्रधानके पुत्रको साम्बाद इतिसामेन है पार्थ है, और पति हू हुए वर्गपुत्त पुत्रको नहीं पारंत्र के साम्बाद और प्रतिक्रिको प्रोत्तर सामको प्राप्त हैया। अस तथा स्थाप केरे पहुत प्रस्तानक प्रतिक्राती अपनीतिका भी कारण पार्थेन होड़ प्रस्तानक पुत्रको हिन्छे अपनीतिका



प्रसारं को स्कृतर है, और निजयो दृष्टिने सु माले स्कृत इस्तरिक हैंगर अब राजुक्तको आहे होगा, ने महरगीरनेन हुते प्रमान सारण पुढ़ाने किया दृश्य करेंगे; और वेरे वैरीरनेन हैरे साम्यांकी किया करते हुए हुते स्कृतने न स्कृतिकोग समार माले; जाने सांग्रह दृश्य और क्या होगा? का से मु पुढ़ाने करा माला कर्मको आह होगा स्वांका संस्थानो वीतकार पृश्वीका राज्य केमेगा : इस मारण सार्थि ! सु पुढ़ाने दिन्ने निजय क्षान्ते स्वाह हो मा। मान-प्राचन, स्वान-दृश्य स्वान प्रमानकार, सार्थ बाद पृक्षके दिन्ने निवास हो मा; इस म्यान प्रमानकी, सु प्राचनो नहीं आह होगा । १९—१८ ।

यूर्ज । भा सूचि हो। तिमे झानकेनके निवसने बाहे नजी और ताम पु प्रमानो वार्णनोत्रके विकाले श्रार—विका पुरिक्रो पुक्त पुरुष पु कार्रेक सम्बन्धों सामेश्वीत साम केया। इस क्षांकेको आस्था –क्षांका यह यह है और उसक पालार क्षेत्र भी नहीं है। यदिक पूर कर्नकेरकर राजक बोद्धा-सा की सामन कन्य-मृत्युक्त न्यूक्त् भवने अपन सेवा है। अर्थन । इस व्यर्थकोनों निक्रमारिका पूर्वित एक है होती है: flog affect fewerith females some regulation कृतिको निकार हो बहुत केरोबाली और अल्प्य होती है। सर्वर । यो योगीने राज्य हो से हैं, को कर्नकरके प्रकार वैकानकोर्थ के जीति रक्तनेकारे हैं, विस्तारी कृतियें कर्त है पान बाज बात है और में सर्पने कावार कारी बोर्ड करा है नहीं है—देशा सहवेदारे हैं, है अधिनेत्रीयर मेन क्या वेकांकी साहित्वे हिन्दे जन्म प्रकारको बहुत-स्त्रे किन्यानीक कर्तन व्यानेकाली और क्यांकर कर्मकर केरेकाचे इस प्रकारको विश्व चुनिया सन्त्रे विश्वक स्त्रे प्रमुख सन्त्रीको पहा करते हैं, का बाजीकरा हो हुए जिल्लाने जो जोन और हेक्सी कारण आराम है, का पूर्णियों परमानके कारणे विश्वभाविका क्षेत्र नहीं होती। सर्वत । सब के उनके प्रवारते तीयो पुरुषेके कार्यका अवस्थ क्षेत्रो एवं उनके सामनीका प्रतिकास कारनेकाले हैं, इस्तरिको के उन भीची हुई काके स्वयनोधे सामनियान, प्रशिक्षणी ह्योंने प्रीय-विकास कामानाने विका, चेनानेकाले न महानेकाल और बीते हर करवास्य हो । सब ओसी परिवृत्ते साराहकोऽ प्राप्त हो प्राप्तिक कोटे जलाकाची महत्त्वका जिल्ला प्रकेचन कहा है. कानो राजो जरनेको उपलब्ध सन्छ नेवेरे सन्त है प्रवेचन कु बाल है। वेस को बरनेने ही अधिकार है, उनके क्योंने क्रमी जी। जारिये व क्रमेंके बराबा है। या है इक्ट हेरी कर्र न करनेरें भी जनकी न हो। कक्टम रे व

अन्तरिको उपलब्धर एक विश्वे और असिव्रिये प्रस्तान वर्षिकार क्षेत्रर केली हैका इस कांग्यक्ष्मीके काः क्ष्मान के बोज बारामाल है। इस सम्बन्धन बहिलोगरी सम्बन्ध कर्ष अस्तर के निव सेमीका है। क्रालिने क्यान ( स सम्बद्धियों है श्रामक जान है। स्थेषि प्रताने हेर क्रमंत्रको सामन्त्र क्षेत्र है। क्षमान्त्रदेशका पुरान पुरान और पान केन्द्रेको प्राप्त स्वेत्वाने स्थान देशा है : इससे व् प्रमानका मोगके हिलों है जेता कर: यह क्यानकर योग है क्योंने क्राइस्का 🏗 क्वेंद्रि क्वाब्युद्धि एक प्रत्येक क्वेंद्रे प्रका हेर्द-को काको अल्बार कथान कमाने युक्त हो निर्मितर कारकारों आह हो जाते हैं। किस कारजे देरी चूदि मेहकार कुरुको व्यक्तिको कर कर करनी, अर रूपन ह सुरी औ और सुरांने अनेकार्य का लेक और परलेक-सम्बन्धी प्राणी कारेने केराव्यके प्राप्त है सामग्र । वर्ति-वर्तिके मनगोको क्षाने क्षेत्रका हो की पूर्व का बाधनको अवस्था अवस्थ और विका क्रेकर करा कारणी, तथ पू परावशादिनशम पेराओ का हे सम्बद्ध । ३५—५३ ॥

अर्थुर संदर्भ—केवान । जनानिने निका विकास पुरस्काः का अक्षण है ? का विस्तवृद्धि दुवन केले बोरचा है, केले वैद्या है और केले कारण है ? अ ५४ छ

क्षेत्रपक्षम् क्षेत्रे—अर्थन् । जिल्ला कारच्ये यह युक्त प्रचारे विकार सम्पूर्ण बारमानारोको पार्श्वपति स्थान देशा है और कारको अंबर्ध के संस्था पात है, जा बालने पर रिकारक क्का काम है। क्रांकीको प्राप्ति क्षेत्रेयर विलब्धे कार्य और। नहीं होता. सुबरोबर्ड आहेले को शर्मक वि:त्यूड है तथा विश्वेद राज, क्या और हारेच यह हो गमे हैं, देख जुनै विकासी बड़ा बात है। के पूज साथ बेहादित हुआ का-आ सुध पा अशुण क्यान्त्रे आह होयान न करण होता है और न हेन करना इसकी बढ़ि वियर है और बब्धका रक्त जोसी अपने अवशिको केले समेद होता है, मेरी ही पान पढ़ पुरूप हरिएकोके किन्नोने इन्हिनेको एक प्रकारने इस तेला है, एक बसकी बर्देट विका होती है। इत्यानोंके इस्य विकालको प्राप्त न करनेक्स पुक्रकों की केमल निवन के निवृत्त के मारो है। पोडु कार्ने सुनेकारी अमानिः नियम नहीं होती। हर विकास पुरुषो से अवस्थि भी परमासमा साक्षात्वार बनके निवार के बार्ट है। अर्थर | क्योंकि आप्रक्रिया शह र हेनेके कारण वे अन्यन्त्रमध्याताली इन्हिनी पक्ष सर्ते हर् बहित्यन प्रस्के पनको भी सप्तह हा हेती है, इसरियो सामकाओं पार्टीने कि यह इस सम्पूर्ण हरिन्नारेको बाहने साले समावितांकर हुना मेरे पराकत क्षेत्रर आवर्ष बैठे: क्योंकि

विस पुरुषकी इतिहर्षा कहायें होती हैं, उसीकी कृदि सिका केवी है। विकास विकास कालेकले पुरुषको उस विकासी अवस्थित हो अली है, असम्बद्धियों का विकालेकी बावका जनक बोरी है और कामनाने विक्र महोतो होना अस्ता होता है राजा क्रोको सामन पुरुषक असा है जात है, महत्त्रको लक्षित्र प्रम हे जाता है, स्पृतिये क्रम हो स्पृतिसे सुरक्षित जात हो जात है और मुक्किया नाम हो पानेसे मह पूर्वक अपनी रिमरिसे निर कात है। परंतु क्याने सामीन किमी हुए अन्तः वारणनात्त्व साधक बालों की हो, एक हैको बील हर्नक्रिक नेक्केंट विकास भारत हुआ अन्य:करणको जस्तानको पान केक है। अन्यास्त्रपानी अन्यास क्षेत्रेयर प्रस्के सन्दर्ग क्राकेस अप्राय हे बाल है और वस अवय-विकास सार्वकर्णकी सुद्धि सीव हो सार ओरसे समार एक परकारको हो सार्थ-धारि स्थित के जाती है। य जीते कुत पर और व्रविकोचारे पुरुषे निवासीयक एडि की क्षेत्रे; और वह अपूर्व महत्त्वके अंशःकारणे कारण की नहीं केती, कार मानवारेन समुख्यां) वार्तित नहीं विश्वती और वार्तिनविक महामध्ये एक बेले फिर कंपन है क्लेंब कर करते merhand rough this are shot it, this at foreigh

किवारी हाँ इत्रिकेंग्रेसे पर किस इतिएके साथ रहता है, यह एक में प्रतिश इस अवक पुरुष्की वृद्धिको है। तेनी है। प्रतरिको प्रक्रमात्रो । शिक्ष पुरस्कारी इन्त्रिमी इन्त्रिकोचे कियांको सब प्रकार निका की हा है; उसीकी कृदि विकर है। क्रमूनो अभिन्तेनेह प्रेरंग को स्त्रीको सम्बन है, उस निवन क्रम्बर्ग्य परवास्थ्यके प्रतिने विकास येथी सामग्र 🕏 और किस सहस्रान् संस्तरिक कुरूको अदिनों सब असी क्षाने हैं, कामाध्यक्षेत्र समाने मानेवाले मुन्ति हैं की बा एक्टि एक्ट है। की क्या नरियोधे कर का ओसी चौरपूर्व, अवस्य अवेश्वास्थाने सन्द्रापे कामके विमालित न कसी हुए ही काम करते हैं, जैसे ही पाल चोना निवा दिखायहा पुरस्ताने रिक्रो प्रदारका विकास करता विके किया है समा सारी है को पान क्षेत्र प्रार्थिको प्राप्त होता है, जीनोको पाईनेमारा वह । जो पुरुष प्रस्तृतं सामनाशोको जानकर ननगरकिन, आंधारकीय और स्थानकित कुल निरामक है, नहीं पार्टिनकी प्राप्त केवा है। अर्थन र पद सकते अस हर पुरुष्य स्थित ि प्रस्की आहे होका योगी वाली मेरिल नहीं होता और अन्यक्राराजे भी भार सामी विश्वतिने विका क्षेत्रण संभागनाओं प्राप्त के प्राप्त है से <del>प्रश्</del>रम की ग

## ब्रीमद्भगवद्गीता—कर्मयोग

अपूर्ण कोरो—अपाईत । पनि आकार्त सम्मेदी अनेवार प्राण मेव पान्य है तो पिट केशक । यूने कर्मकर कार्नने कर्म एरातर है ? आप फिले हुए-मे कवारोंने कार्य मेरी वृद्धिकों मोहित गुज रहे हैं। इसरिकों इस एक कार्यों निद्धिक कर्मकें कहिते, विद्याने में कश्यानकों प्राप्त है कर्म ॥ १-२ ॥

विकासम् केलं—विकास ! इस स्वेकारे से उत्तरस्थी
विक्त मेरिक्का पहले कही गयी है। अन्येकी संस्थानी-विकास
विक्त से अन्योगमेर होती है और चोनिय्योकी विकास व्यविकास
होती है। अनुस्य न तो कर्मीका आरम्प किये विकास
विकास स्वापनी —वीनिव्योक्त आर्म केल है और व केवल
क्षामीका स्वापनी त्यार्ग कर्मनेर विकास —वोनिव्योक्त
ही साम होता है। निर्माण क्षोर्म की ब्यूच्य किसी की कारको
क्षामाल की किया कर्म किसी आहे स्वाप्त कर्मीक स्वाप सन्यासम्बद्धान अनुसीयनिया पुरुषेक्ष स्वापन क्ष्मीक स्वाप सम्यास हिन्द स्वाप क्षित्र जाता है। को पुरुष्ट्रीय कर्मक समझ इनिव्योक्त क्षित्र अर्थन करता स्वाप है। का विकासकरी कहा जाता है। विकास क्ष्मीन स्वापन क्षमी है का विकासकरी कार्य करके अवस्था हुआ वसी इतिस्वेद्धाः कर्मकेतका सावत्व करके हैं. को त्रेष्ठ हैं। तु शास्त्रिक्ति कर्मकक्ष्ये करः क्येति कर्म व करवेकी अवेद्धा कर्म करना तेष्ठ हैं गण कर्म व करनेते तेना सरीय-विश्वेद भी गति विद्धा होना जानेते तिरित्त क्रिके क्रमेकारे क्रमोरे स्वतिरिक्त हुत्ये कर्मोंचे समा हुत्य है का व्यूक्तक्ष्यक्रम कर्मोरे बेक्त है। इस्तिन्वे सर्मुन । तु सालवित्ती चीता होकर क्रम क्राके निव्ता है। क्रमेकारि कर्मकक्ष्यों कर ॥ ३—९ ।।

अवायति अहाने करणोः साहियं नासाहित जनाओं को रक्का असे कहा कि 'हुन्तवेग इस काले हुए वृद्धिको अस ब्रेडको और यह कहा हुमलोगोंको हिन्दित गाँग अहान करनेकाला हो। हुमलोग इस काले हुए रेक्काओं के कस कर्छ और से नेकक कुमलोगोंको उसर करें। इस अकार दि:कार्ककालो इस्स हो कालोगे। काले हुए रुमलोग पास कालाकालो अस्स हो कालोगे। कालो हुए स्वापे हुए रेक्का हुमलोगोंको किस परि ही इस्कित परित दिहान ही से दोने हैं इस अकार का रेक्काओं हुए हिने हुए पोगोंको से पूरण करको किस हिन्दे इस्त पोगरा है, यह परि ही है। पहले कर्क



हुए आपको जानेकारो सेंड पूरण सम पान्तेने पुरू हो जाते हैं। और को कारीरकेंग अपना क्रारियोक्स कानेके दिनों ही सम प्रकृति है, के से पानकों ही जाते हैं। समूर्य जानी अकते



प्रशास होते हैं, असाधी अवस्थि पृक्षित होती है, पृष्टि जानो होती है और यह विद्याल कर्मोंने जनता होनेकाल है। प्रान्तिमुक्तकों यू नेहारे जनता और वेहाकों अधिनाती प्रशासकों जनता हुआ जान। इसके सिद्ध होता है कि सर्वकानी प्रश्न अध्य प्रश्नाम स्वा ही यहने अधिहा है। पार्च ! को पुरुष हम सोकाने इस प्रवास परस्पराने प्रयासित सृष्टिकालों अनुसूक्त नहीं कराता—जनने वर्तकाल जानन यह करात, यह इत्थिकों जन्म कोनोने जनता करनेकाल प्राप्ति पुरुष नार्च ही बीदा है। पांतु को प्रमुख अस्तानों ही स्था करनेवाल और सहसाने है वृत्त तथा आसमें हैं। संद्वा है, उसके दिने कोई कर्मन नहीं है। यह सहस्त्राच्या इस विद्वाने न है कर्म करनेते कोई उन्नेजन खुता है और न क्रमेंकि न करनेते हैं कोई उन्नेजन खुता है तथा हम्पूर्ण अभिनोने भी इसका विविद्याल की कार्यका सम्याव नहीं खुळा। इसके मूं अमानिते कींत होकर स्था कर्मनकर्मको कार्यभीति करता हा; क्योंकि आसमित्रो सींत होकर कर्म करता हुना करून परकाराको अहा है बात है स १०—१९ ।

वन्त्रश्री प्रारंभित भी आतंकिरहित कर्महार ही पान त्रिक्षिके जात हुए थे। इस्तिने क्या स्वेक्संग्राम्को देशते हुए के ह कर्म कर्मको है केना है। त्रेष्ठ पुरूष मो-को आवस्य क्या है अन्य पूका को बेस्त-नेका है आवस्य करते हैं। वह को हुक प्रमाण कर केना है, कामा क्यून-समुद्राय अधिके अनुसार वस्त्रने क्या वाता है। असून । युद्धे इस दीनो खेक्सेने य को पूका कर्मक है और न कोई भी जान करनेकेन करता



अस्ता है, से भी में करोंने ही मनाता है, क्योंकि वार्त । यह बादकित में स्वयंक्तन होकर करोंने न करते से वही हाति हो कर; क्योंकि ज्युक्तका एक ज़करने मेरे ही मार्गका अनुसारण करते हैं। इसरियो की में करों न करने से में सब क्या इस समझ कम्मके जूर करनेकरण करें। सारत । करोंने उसस्य हुए अस्तानीयन निवस ज़करा कर्म करते हैं। अस्तानिक विद्यान् भी सोक्सनेका करना काला हुआ उसी ज़कर कर्म करें। स्वयंक्तके स्वयंक्त करते निवस हुए इसके कुक्कको कालाने कि का साम्यानिक्त करोंने आसानिकाले

अज्ञानियोधी सुद्धिमें प्रय—कर्योमें अवद्धा करता न को । मित् सर्व जन्म-विद्या राज्या को जलेवनी कथा दुख इनसे भी मैसे ही फलाने। मख्यको सन्तुर्ग कर्न सब प्रचारते अकृतिके नुजोद्धरा किये करो है से भी निराम्बर सम्पःचरण स्थानारने मोद्देश हो या 🐍 देख स्थानी 'मैं चर्ना है, ऐसा फल्मा है। पांडू प्यान्मके है मुन्नोक्त्रक अर्थेर कानिकानो स्थानो कार्यनीत बारनेकार प्रान्तेनी प्रमूर्ण पून ही मुख्येने क्या है है, ऐस समझकर कार्ने असरक गाँ क्षेत्र । अवस्थिक मुख्येते सामग्र मोहित हुए समुख्य गुजोने और कन्तेने जनस्य एकं है, इर पूर्णत्या र प्रमानेवाने मचतुर्दे जावनियोध्ये पूर्णत्य मानोबाल हानवेपी निर्वाण न को। कुर राज्यांनी परवालायें तने दूर विसद्धात सन्दर्ग कर्मको पुत्राने अनेक काके आसारीत, गणायीत और संकारीक हेवल पुद मर । यो मोर्नु प्रमुख क्षेत्रपृष्टिये प्रीत और श्रद्धानुक क्षेत्रर की इस मनकर तथा अनुकरण करते हैं, वे भी सन्पूर्ण कर्नाते कुर कर्त है। परंदु को बकुत चुक्रमें केकर्यनक करते हुए में। इस नाके अनुसार नहीं बसके, उन क्लोंको कु रूपूर्ण इस्तेने मोदित और ग्रह हुआ है सन्दर्भ । वाची प्राप्ते अपने प्रत्यानके मानक हुए कर्न करते हैं। प्रान्थन् भी अपनी अपूर्वको शनुसार मेख्न पारता है। जिन प्रतमें किसीचा इव पण करेला । अस्तेक इन्डिक्के स्तेगमें राग और देव किने हुन् रियत है। प्रमुखको उन योगीके नक्ष्में नहीं होना प्यक्तिः क्योंकि में केनों ही इसके करपानकारीने किए कारोकारे महत्र प्रमु है। अच्छी जनार आवरणने रचने हुए सुर्गके वर्गते पुनर्राहेत भी सकत वर्ग आने कान है। सकरे कांगे ति मरना भी कारपालकारका है और कृत्येका को करको वेनेबस्य है ॥ २०--१५ ॥

अर्जुर गोरो—कृष्ण । यह प्रमुख सर्व न प्राह्म हुन्छ पी बार्क्ट, स्थाने हुएकी जीते किसके डेरिंड होबार बाजका सामाज करत है 7 ॥ ३६ ॥

श्रीभाषाम् जेते—नजेतुमारे जनक हुआ पद काम है क्रीम है; जा जून कानेकास और कह जमे है, इसके है हू इस जिल्लाने मेरी जान। जिला प्रचार सूर्वते आहे। और



नेतने वर्गन क्या पात है बना निय प्रकार मेरते नर्ग क्या कुल है, बैसे ही उस बालके प्राप्त का उस्त करा कुल है और अर्थुन ? इस अफ्रिके कवान वाची न पूर्व क्षेत्रेवाले कामका ज्ञानिकोचे। नित्त कैरिके प्रता मनुष्यका प्रान कका हुआ है। प्रतिकर्त, कर और पुदि—ने क्या प्रकट मध्यकार को धारे हैं। यह बाल इस पन, यूदि और इन्दिनोंके प्रश्न है इस्तरे अध्यानिक कर्मक जीवनायों मेहित वारत है। इस्तिनी अर्थन । यू व्याने इत्यानोको बराने धरनेर इस ३०० और निक्रमा पर क्रान्यते यान् वर्षे कामधे शास्त्र है कार्क्ड कर करा। इत्रिक्टेको स्थूत सर्वरते मा-नोह, भागान् और सुध्य काहे हैं; इन इन्हिलेंहें पर पर है, यानो की पर सुद्धि है और से धुद्धिने की अवस्त पर है यह अलग है। इस जब्बर सुदिसे पर—सूत्रर, बराबान् और आग्य केंद्र अध्यक्ते व्याप्तर और युद्धिके प्रश्न नगरी माने करे महत्त्वहों । हु हुए बरनकर दुर्गन सनुको पार Marie III Jan-Arie III

#### श्रीयद्भगवद्गीता—ज्ञान-कर्मसंन्यासयोग

का, भूकी अपने पुत्र वैकारत पनुसे कहा और पनुने अपने | बाद बहु बोप बहुत कालते इस पृथ्वीसोखाने सुप्रकार ही पुत्र प्रभा इंड्रम्ममुक्ते म्ब्यूर । परंतर अर्थुर ! इस अवस्त | यथा । तु नेत क्या और तेव सक्य है, इसरिये वही मा

श्रीमान्यम् केले—की इस अधिमाती बोजको सूर्वते वाहः 🕴 परम्पराते प्राप्त इत बोजको राजविकी जारा, बिहु आके



पुरातन योग अस्य मेरे हुइत्यहे बहुत है; क्योंन्स यह योग यह ही जान साम है ॥ १—१ ॥

त्वर्तुर योगे—आवाद स्था से अवधित—अवी हारका है और सूर्वका शन फारवी अविते हे कृषा कः तब मैं इस पानको बेले सम्बद्धे कि अवदिने पानको अविते सूर्वते या योग पाल सर ? 8 प स

श्रीपानकर कोरो--व्यक्ति अर्थुद ! वेरे और वेरे ब्यूट-के क्या है क्ये हैं। इस सकते हु जी करता, मितू है करता 🖁 । मैं असच्या और अभिनासीसम्बन्ध होने हुए भी गया समझ प्राणिनोच्या ईवर होते हुए भी अधनी प्रकृतिको अधीन सन्तर अवनी चेपनावाने प्रवट होता है। पासा । सक-सब वर्णकी प्राप्ति और जार्माको पृद्धि होती है, एक-तम ही में जनने भागको एकता है सामू मुक्तीका संद्वार करनेके विन्ते, भाग-कार्र कार्यवालोका विराम कारोके विन्ते और करेकी अंखी तरहरे स्थापन करनेके देखे में कुल-कुलो प्रकट हुआ। करता है। अर्जुर । मेरे क्या और कर्न क्रिक है—इस प्रकार भी करून तरनो सार रेता है, का क्रांग्यो सामावर नेत श्राप स्थान को बारत सिंह को है उस होता है। बाले की, बिल्लेड पूरण, जान और प्रदेश पूर्वका जानू हो जाने से और को मुक्तमें अन्त्य-प्रेयपूर्णमा शिक्त सके थे, ऐसे मेंने सर्वाता क्षुनेकाले बहुत-से परक करनुंक झारका हरते परित्र होतार में करनको प्राप्त हे कुछ है। अर्जुन ! जो कर कुछे जिल प्रकार पानी है, मैं भी उसको उस्ते प्रकार पानत है, क्लेकि इस्ते क्यून श्रद प्रकारते में है कर्नक अनुसार करते है। क्षा पर्वालोको स्थिति कारको बहुनेताते होन देशकानेक पूजा किया करते हैं, क्लीक उनके करते

क्या क्रेनेकारी निर्देश संख्य निरम करते हैं। सहाया, सनिय, वैत्रव और सूत—इन कर करतेका सन्द्रत, गुण और करतेक निर्कारणुकंक मेरे साथ एक एक है। इस अकर कर



वृद्धिरकारि कर्मक कर्ता होनेया थी यून असिनाही इस्तेवस्था है करणार्थ अकर्ता ही कर। क्रांकि करणे मेरी एक वहीं है, इस्तियों यूने क्षां निस्त नहीं कर्ता—इस उकार को यूने सम्बंध कर नेका है, यह भी कर्नोंने नहीं बैंचता। पूर्वकरको मुख्युओंने भी इस उकार करकर हो कर्नोंको है। इस्तियों वू को क्षांनोहारा सहयों किये जानेकारे कर्नोंको ही कर स ५—१५ ।)

वर्ण क्या है ? और शंकार्ण चंधा है ?—इस स्वार इतका विश्वेत करनेने वृद्धिकर पूका भी मेरित है जाते हैं। इसिनो का करोड़का में हुने काल-चाँकि अन्यकार कर्युत, विशे करवार में काल कर्युंगे और अकर्यका स्वार भी करना कर्युंगे क्या विकारका स्वारम भी करना चार्युंगे; क्योंकि कर्युंगे क्या विकारका स्वारम भी करना चार्युंगे; क्योंकि कर्युंगे क्या विकारका क्यांकि कर्युंगे सुद्धिकार है और क्यांकि क्यां कर्युंगे क्यांकि क्यांकि सुद्धिकार है और क्यांकित क्यांकि क्यांकि क्यांकित है। विश्वेत स्वार्ण क्यांकित क्यांकित क्यांकित क्यांकित है। की पूर्ण क्यांकित क् कृष्ण भी नहीं बारता । जिसका राष्ट्र-प्राचन और इत्तिकींत्र प्रतिय वर्षीर जीता कृष्ण है और जिसमें इक्का चोलोकी प्रमानिका परित्यान कर दिना है, ऐसा जाकार्यात कृष्ण केवार वर्षीरकार कर दिना है, ऐसा जाकार्योग कृष्टि अस होता । को जिना इक्काले जानो-जान अस कृष्ट पहाने के उस्त संतुष्ट पाता है, जिसमें इंजांका प्रतिय स्वच्या है। नमा है, को इस्तिक जादि हम्मेले प्रमंबा असीत है जन्म है—ऐसा दिन्हिं और स्वतिद्वित्ते प्रमा क्रिकाल कर्मकीनी कर्म प्रत्या हुआ की कारों नहीं बैकाल । विकासी जातिह प्रसंख क्षा है पत्ती है, को देखानिकार और क्यांक्ति स्वच्या क्षा है, ऐसे केवाल विकास वर्णाकार्य हामने विकास क्षा है, ऐसे केवाल वर्णान्यकार्य विकास हो कर्म करनेकार स्वव्यक्ति स्वव्यक्ति क्षा

निसं पाने अर्थम—मून्य आर्थ थी प्रम है और हार विसे पानेकेन प्रश्न भी आर है क्या सहकार कार्या हुक सहकार आर्थि असूति देनावम किया की आर है, का सहकारों रिका प्रतेनाते पुरस्कार साह दिनों कार्यकेन प्रश्न की महा है है। हाले कीर्यक्ष केव्यक्तीय पुरस्का कार्या है कार्यकारि अनुहार किया करते हैं और अस्य कोरीयन परामह परस्कारका आर्थि अर्थम्याकंत्रकार कार्य हार है आवारका कार्यक हारा किया करते हैं। क्या कोरीयन और आर्थ है और हार्य कोर्यकोंन सम्बद्ध सम्बद्ध हारा किया करते हैं और हार्य कोर्यकोंन सम्बद्ध सम्बद्ध कियानिक इत्यक्तिय अर्थकों कियाओंने और अर्थकों



स्पन्न विकालीको प्राप्ते प्रकारित अस्तर्भवपन्नेपन्न अपने इसर विकास करते हैं। वर्ष करत इसरावारी का कारेकारे हैं, बिहारे के उपस्थान यह कारेकारे हैं एवा कुले कियने के जोगावा एक करनेवारे हैं और विजने के अधिकारी केंग्रन जातेंगे पुरू पारवील पुरू प्राथ्मापका प्राप्तक करनेकारे हैं। कुररे किस्ते हैं केंगीकर अवस्थाकुरें प्रकारको इतन करो 🗓 केरे ही जन केरीकर प्रकारको अक्टन्यानुको हुक्त करते हैं एक अन्य विक्रो हैं नियानित राह्यर करनेवाले प्राच्याकाशस्त्रका मुख्य प्रान्त और अकारकी चरित्रके केंक्सर अलोको अलोके है इतन विज्ञा कर्म है। ये प्राणी सरकार कार्रेक्टर प्राणीका नहीं कर वेर्नेक्टर और व्यक्ति व्यवस्थाने हैं। इस्केंद्र अर्थुन । यहारे वर्षे हर प्रमाण अवस्था कार्यको वेत्रीकर समाहर प्रमाण गणनाव्यक्षे आह होते हैं और यह न ग्रन्थेश्वरि पूरव्येत हिंगी के का बहुआतेक भी समायक को है, जिल प्राचेक केने कुरमानक हो सकता है ? इसी प्रचार और भी बहुत सहस्रो का केंद्रको कार्योने विकासो सहे पूर्व है। उन प्रान्त्वो सू पूर् हरिया और एर्टरची क्रिक्सप्टर सम्बद्ध क्रेनेक्सरे बान, प्रा त्रका राज्ये कारक अन्ये अञ्चलका ह कार्यकाले क्लिक प्रकार है क्लिक म १४८—३२ H

क्षेत्र अर्थुत । जनस्य सामग्रे अनेतृत कृत्यत् अस्तर्य नेत है, क्योंकि काश्यक समूची कर्ग क्रमने समाप्त हो सक्ते है। का अन्त्रों हु सम्बद्धः क्षेत्रिय अवस्थि सामानीत पत् मानार उपको पानीभारि इंकाब्द प्रमान कानेते, उपकी सेवा करोने और कथा क्षेत्रम कारमापूर्वक उठ प्रश्तेत परमानकारों कार्रभावि सार्वकारे से प्रार्थ गाला हुई। का प्रमाणका उनके करेंगे, विसको पानकर किर है इस जनम नेवन्त्रे नहीं प्राप्त होना सभा अर्जुन । फिल हारके हार न् सन्तर्भ भूतोशी निःक्षेत्रनामने पहले अपनेत्रे और रीक्षे पुरु क्रीकरणात परकार्य देवेगा। भी है उस सम चरियोर्वे की अधिक पार कारोबाता है के की यू प्रमान कैन्यार नि:चीह सन्दर्भ पायेची जारेगीह स्वीव सन्दर्भ: क्वीदि अर्थुन । जैसे प्राथमित अर्थि हैक्क्यो पानका कर हेंगा है, कैसे ही ज़ानकर जाति सम्पूर्ण क्रमोंको अभवप कर केत है। इस संस्थाने इतने समान परित करनेताल िर्मिट कर भी नहीं है। यह प्रान्को किस्ते हे बहता कर्मकेको एव पुरुष:काल १का प्रमुख सर्ग-सार है जनको च हेरा है। विहेनिया, सामागरायम और दिक्त, पर्वे अनको जा होता है तक अनको उस हेका या विक प्रेरामको—सम्बद्धाः हो प्रश्वकारीसार

और संस्थापक पुरुष परमार्थने क्या है साला है। उसने की संस्थानक प्रकार हैं जेने से न का लोक है, न करावेक है और कारोंका परमानामें आर्थन कर दिन्छ है और विसने विलेकहरण 🎚 तियह हो जा और बुद्धके सिमे कहा हो जा ॥ ३६---४१२ ॥

परम क्रांतिको प्राप्त हो करा है। विकेशकोन क्या अक्रांतिक है सनका संत्रकोच्या जान कर दिया है, ऐसे कार्यान जन्त:-क्युक्कारे पुरुषके कर्ष रहीं बीधते । इस्तीनने असमंदर्श अर्थन ! वृ प्रकृति विका प्रश्ने अञ्चानसन्ति अर्थने संस्थानक न सक्त ही है। क्षण्यान । विचाने कार्यकेषाकी विविधां समझा । विकेतसम्बद्धाः सम्बद्धाः कार्यके समावता वार्यकेषाने

## श्रीमद्भगवद्गीता-कर्मसंन्यासयोग

अपूर्वर केले—कुम्बर । जान क्रमेंकि क्षेत्रकारकी और किर | कर्मकेनकी इहांका करते हैं। हमारिले इन केनोमेले एक मो विश्वित किया होन कान्यानकारण हो, जानो के केने मानि (१३ ।।

ही परवार वेरो—अर्थरायाम और सर्ववेष—वे क्षेत्रों ही बाल काम्यानके कार्रमाने हैं, बांध का केनोर्ट के कर्मातेन्यासमे मध्येचीय सामान्ये सुरम्भ क्षेत्रेसे सेक्ष है । साहीर | को पुरस न विकासि है। बारक है और न विकासि अल्पास्त करता है, यह बार्वजेंग्डे तक संभागत है सम्बन्धिय है: क्योंकि राग-देशारे इस्तेते कीन पूर्ण सुरस्त्रार्थक गंधानामध्ये पुरत से साथ है। सर्वाच संस्थात और कार्ययोगभारे मुहोरकेन कुक्छ-कुक्य कार केनेकारे कहते हैं, व कि परिकारण; क्योंकि केनोंको एकमें भी सम्बद्ध स्थारते रिक्त पूछर होन्सिके प्रमानक बरफायाको प्राप्त होता है। असनोगियोद्यात को परकाल प्राप्त केला जाता है. कर्मनोग्नोप्रमा भी नहीं जात केंग्स करत है। इसस्पेट के पुरुष प्राप्तांग और कर्मके गयो करकारमें एक देवाल है, जो मतार्थ देशात है। पांतु अर्थुर ! सूर्यक्रेणोर निया शंकार — पर, इतिहा और प्रतीपद्वार होनेकले सम्पूर्ण कर्वनि मुत्रोपन्त्रत जाग जात होना चाहिन है और नामन्त्रामनको पान कानेवाल करेंचेनी पास्त परमानको सीव है जा हो जाता है। विस्तवह पन अपने कहने हैं, को विलेक्ट कुई विकृत् अन्यत्वरकारमञ्जूष है और सम्पूर्ण प्राण्यिक अन्यत्वर परमाला है जिल्ला ज्यान है, देख कर्नकेरी कर्न करन हुन भी हैए। यह होता । जनको कालेनाक स्टेन्सकेची से बेक्सी हुआ, शुन्स हुआ, एसई फाला हुआ, ब्रैंगत हुआ, धोवन करता हुवर, याना करता हुतर, स्टेक हुआ, कुल रेक्स हुनेंदें, बोल्या हुनेंत, अल्या हुन्त, सहम बनेंदें हुन्ने स्था श्रीकोच्छे कोराम और पैक्रा १३० थी, एक इन्जिब अवने-अवरे अवीमे करत हो है—इस प्रकार सम्बाधन नि:सिंह देशा माने कि में बुक्र की नहीं अपना । मो कुल सम क्रमोंको परमाजाने अर्थन करके और जासकिको जानकः कर्ष करता है, यह पूजा जलते कारतों कोन्द्री वर्ति वाली तिया नहीं होता । करोबोची कारकादिएकित केवल हिनान, का, पुरंब और प्रारंपक्रय की जातनिकारे साधकार क्षण:कारणको सुद्रिको देखे कर्न करते हैं। कर्नधेर्गी धार्मिक करको पर्यक्रको अनेन करके भागवादिका प्राप्तिको क्रम क्रेक है और क्रकान पुरुष कामनाकी डेप्लाले कराने annu dun Gun bu t-tt il

अन्य:बारण विकास बहाने है, देख जावनकेनका अवसरण करनेकाम पूजा न काल हुआ और म कामारा हुआ ही रुव्युत्तेकारे प्राप्तिकार करने एक कार्नोको नवसे सारकार कारपहलेक प्रविद्यारपूरण परभागांके समापने विका रहता है। परवेकर भी न के भूगवानियोंक कर्तावनको, न करोंको और ने क्योंकि कार्यक संयोधकों है बाकाओं स्वता है, जिल् राज्यां । है किरान है क्षेत्र के स्थान अंस्थान परकार न विद्योगे राज्यानीको और न विज्योगेर संघ्यानीको



बरक 🖢 अवसम्बेद द्वारा ज्ञान कवा द्वारा ै, उसीसे बीब मेडिक के दो है। संदु विनकत बद उसान करकारके जानहरा नह कर दिया गया है, उनका यह जान

कृति सद्भा का प्रविद्यान्त्रका परभावको अवस्थित कर है। है। किन्द्रा का स्कृत है, विन्द्रात कृति व्यूप है और स्वित्यान्त्रका परभावको है किन्द्रात निरम्प कृतिनामसे विन्द्रित है, ऐसे सरप्रका पुत्र प्राप्तके प्राप्त परमानित क्रेक्ट अपुन्तव्यूतिको आह होने है। वे प्राप्तक किया और विन्द्रपुत्र सहायाने तथा में, प्राप्त, पुन्ने और प्राप्तकाने के सम्दर्शी है होते हैं। विकास का स्वयानकाने विक्र है, उनके प्राप्त प्राप्तिक स्वयानाने हैं स्वयूप्त संस्था और स्वय है, क्राने से स्वित्यन्त्रका प्रस्थानाने हैं स्थित हैं। से पूर्व क्षित्रको अस्तिक्षा स्वयानकान प्रस्थानाने हैं स्थित हैं। से पूर्व क्षित्रको अस्तिक्षा स्वयानकान प्रस्थानाने हैं स्थित हैं। से पूर्व क्षित्रकान

वाहरके विकासे अवस्थितिक अन्यः वारणकारः सावक शासामें विका में वारणकीत स्वरिका आरम् है, अस्के वाह होनेसे वाले-वाले ही कार-मरोवने सारक होनेसारे बेनाको स्थान करनेने समर्थ हो बाता है, वह पूरण चेली है और वही सुन्ही है। को पूरण निवादपूर्वक अन्याकार्थ है। सुनावाल है, जान्यने ही राज्य करनेशाल है उन्हों को बातार्थ है। इस्तावाल है, वह स्थितपुर्वक परवाहां परवाहां का एकी बातार्थ साथ स्थितपुर्व में साथ स्थापने आह होता है। जिनके तम का नह हो गये हैं, जिनके सब संस्था हानके हाए निवास हो गये हैं, वो समूर्ण प्राणियोंके



कियों पा है और कियार पर विद्वारणकार परकाराये विका है के इक्केस पुरस साम इक्को प्रमान के हैं। वर्ध -कोवरे चीर, जीवे हुए कियारों, नराका कामानाम संप्रात्मार किये हुए कार्य पुरस्के दिन्ने का ओसी प्राप्त परकार कारत हुआ कार है। वाहरके कियारोंगीको न विचार कारत हुआ कार है निकारकार और नेतीको हुआको पुन्निके बीको विका कार्य स्था सांस्थानों कियारोगाते अब और अधार बावुको सम बर्गा, निसस्त हुनियाँ, वन और पुन्नि जीती हुई है—हैसा को प्रोध्यायका मुन्नि हका, का और कोवरों पीर हो नका है, व्य सहा पुन्न है है। मेरा कार बुक्को सम बहा और स्थानन केमनेकारच, सम्पूर्ण एकेमोंक ईक्कोका की हंकर एका सम्पूर्ण कुल-प्राणिकोका सुक्त अवस्त कार्यार्थित क्यानु और प्रेके—हैसा समाने कारकार प्राणिको प्राप्त होता है।। २१—एए प्र

आप होता है: तहनका का सरिक्यनदावर कराइड करकारके कारकार योगमें अधिकाशासों दिवत कुछ अक्षम अक्षमा अनुस्त्र करता है। यो से इत्याद क्या कियां के संबोधने अस्ता प्रेरीमाले क्या क्षेत्र हैं, से कार्य कियां पुरुषेकों सुस्त्राम कारते हैं से की इत्याके हैं हेंतु है और अधी-अस्ताले हैं। इत्योकों अर्थुन ! युद्धिकार विकेशी पुरुष कार्य वहीं प्रस्ता। यो स्थाकों हुए स्थुक्तप्रदिग्ते, प्रदोतका

#### श्रीमद्भगक्द्गीता — आत्मसंयमधोग

श्रीपात्राम् कोरो-को पुरुष क्षार्थकश्यक अक्षाप न लेखन ब्युरेयोग्य कर्न करत है, ब्यू अंन्याती तथा केरी है, और बेक्टन आहिया जाग करनेवाल संभारते औं है तथा केन्स क्रियाओचा ज्यान करनेकरण केनी नहीं है। अर्जून ! विसको संन्यास ऐसा बहुते हैं, करीको र केन कर, क्लॉक **ईम्प्रत्योका लाग न करनेकाल कोई की पूक्त केवी नहीं** होता । सम्बन्धिकार कर्मचीत्रमे आरम्ब होनेको हकारकारे भागतील पुरुषे दिये चेनको प्रदिने निकानकारे कर्न बरन ही हेत कहा साथ है और बोगायन हो जानेगा जा बीगालक प्रकार दिन्ने सर्वदेशकारीका अध्यान है कार्यानने हेत कहा बाला है। फिल कारमें न के इन्हिकेंड भोगोंने और न करोंने है साराज केस है, यह कराने क्रांसकानोका जागी एक बेगाक्य कहा बात है। अने हरा अन्य प्रीतर-समुद्रमे प्रकृत करे और सम्मेको अधीर्याले न हुन्छे; क्वोंकि यह करना आर है से अन्त देता है और सार है अपना सह है। विश्व जीवात्महारा वन और इत्यिनेन्द्रीय कृतिर जीता हुआ है, जब बरेबावानकर को बढ़ आर ही लिए है. और विश्वेद हार का तथा इत्यानिकीत सरीर की जीवर गुना है, जोर्गंद रिप्ने के जान ही प्रमुख स्मृत समुख्ये करित है। सन्दर्भ-नामी और सुक-क्:सादिने क्या मान और अपमानमें जिसके अन्य:करणकी कृतियाँ करी-चाँति क्रमक हेरों क्वाबीन साम्बाबाले प्रकार क्वाबी स्वीवस्थानका परपाला सन्वयस्थातारके विका है--- असके प्राप्ते परणालके रिया जन कुछ है से नहीं। विस्तवर जनस्वान जन-Reserve est ft. Record Staff Descretter ft. Describ



हिनावी कार्यनाति जोती हुई है और कितके निन्दे निद्दे, प्रश्नार और सुवर्ण अधान है, वह कोनी कुछ— चनकर्-जात है, ऐसा बहुत काल है। सुहत्, जिन, वेरी, कहसीन, प्रवासन, हेन और अनुवासोंने, कर्यकाओंने और करियोंने की समान बहुत स्वयंभावा अस्तर केंद्र है। १—१ ।।

का और इन्द्रिकेरकिंक सरिएको मक्कर्ष एकनेकाल, अप्राचीत और संस्थापित केंगी अकेरत है एकरव स्थानने हिला क्रेंबल कलकको निरंपर परवेशको ब्यानी लगाने। प्रज्ञ कृतिले, विकास सारा समाग्रः स्थान, प्रश्नास और यस कि है-के उन्ने अनुनक्ते, र बहा क्रैस और र बहुद Aus, fine surer und -um mennen abent, firt और इत्तिवीची क्रिकारोची बढ़ने कर्षा क्या करके एकार काके अन्य:करणको सुद्धिके विने चेताका अन्यास करे। कृतक, बिर और गाँको स्ट्रन को अवस् गारन करके और विश्व क्रेसर, अवनी जारेजकोड अवचानमा होहे क्ष्मकर, अन्य वैद्यानीको व देशता हुआ-स्कृतानीके क्रमें क्रिक, समाविक क्रम सलीयांकि श्रीमा अन्य:करण-कार प्रकार केरी कान्ने कार्य कर्य श्वामे विश्वास और वेरे पराचन क्रेपन रिवन क्रेपे ( कामे फिने हुए प्रच्यात) केनी इस प्रकार आवारको निरमा युप्त परनेक्सके सामग्राने (Part Sale Sale) योगाने प्राचनको परवाद्यास्य प्रातिको अत्र होता है। असेर । यह मेरा न से यहत पुर्वकारेका, व बेल्क्स्स व ध्रानेवारेका, व बहुत प्रचन करनेके प्राच्याकारेका और म बहुत जाननेकारेका ही रिन्ह् केस है। इत्योक्त यक करनेकार चीन से बकायोग अक्रा-विकार करोचलेका, करोनि शंकारेका चेता क्रमेकारका और क्याचेत्र सेने एक जननेकारका से Sea होता है। आरम्प महाने नित्या हुआ निय निय महानी पांचाको है पार्वपति तिया है पांच है, जा फारायें सम्पूर्ण चौजोरो स्वकृतक्षित पूजन चोजपुरत है, हेरत बहुत पता है। फिल प्रकार कार्यकेत एकानों सिवा केवक कारानका नहीं होता, वैसी ही उपना परणायके ब्यानमें समे हुए घोणीके बंदे हर विकास कही करी है। मोनके बन्यारते निवाह विश्व क्रिया अवस्थाने कारान हो जाता है, और जिस अध्यानी परकारके व्यानते सुद्ध हो सुन्न सुविद्याप क्रमानको साम्रम् अस्य ५३० समित्रस्यान काम्रास्यने ही रोता क्या है, इनियोगे अरोग, केमल पुत्र हाँ स्थ्य बुद्धारा जान करनेचेन से अन्य आरम् है, उसके बिस अकारको अनुसार करता है और निवर अवस्थाने दिवत यह योगी परमात्माके कारणाने विश्वतिका होना हो नहीं; परमात्माकी प्राहित्या निश्व संभवको प्राह होना कारों अभिना तुसरा कुछ भी त्याप नहीं गान्या और परमात्माकी क्षेत्र किस सम्बद्धाने निवार योगी यह वारों कुछ से भी कारणान्या नहीं होता; यो हु सारका संदारके संयोगने पहिल है तथा विश्वता नाम योग है, सामने संगवन संवित्ते । यह योग न सम्बद्धाने कुए—दीवें और स्वात्मानुक विश्वति निश्वत्यक्षीय करना करीना है। संग्रहस्को सरवा होनेवाली



संबंध कामनाओं के नि:क्षेत्रकारों कालवार और वर्के हत शिलोंके समुख्यको सभी क्षेत्रके कर्मामाँग के**कक**ा— अन-अमरे अन्यास करता हुआ अध्यक्ताची जल हे उना केर्नपुत्त बुद्धिक द्वारा परको परमाधाने विका अस्के परमानगर्क विश्वा और कुछ भी विश्वन न करे। यह विवर न thinker of the flow work freeds निवित्तको सेनाको क्रिकाल है, उस-उस निवकते रोकाका हो। बार-बार कामात्मानें से निकल करे; क्योंकि विकास कर वारी प्रवार प्राप्त है, को कालो चील है और विस्तार रनेपुन साथ है गया है, ऐसे इस स्विक्तानकर सहाके कार्य दल्डिभाव हर जोगीको ज्ञाप उद्यान्य प्राप्त होता है । यह प्राथमित चेनी इस प्रकार निरुक्त आवक्को परकाको रुपाया हुआ सुक्रपूर्णेक पर्वाह क्रमानकारी प्रदिक्त अन्य जानकाचे अनुभव करता है। प्रतीकारी जनत चेतनरे एकीपामले विश्वतिका चेनले कुळ अळळळाच उचा राजने प्रमाणकारी देवनेवारक चोची आरमको सम्पूर्ण पूर्वाचे और सम्पूर्ण पूर्वोच्यो अस्त्याने देशसा है। यो पूरम सम्पूर्ण



कृतिये सम्बंध अवस्थान पुरू बार्स्यमध्ये है स्वयक्त देखात है, और सम्पूर्ण कृतिको कृत बार्स्यमध्ये अन्तर्गत है, उसके तिको में अनुस्य नहीं होता और वह मेरे तिन्ने अनुस्य नहीं होता । जो पुरूष एकीयांकने तिकत होतार सम्पूर्ण पुत्तीये जनस्थानो तिका जुझ सर्वेद्धानन्त्रम वास्त्रोत्तरों अस्तर्ग है, वह कोगी तक अवसरसे बरतात हुआ भी जुझने ही करतात है, असून । को कोगी अस्तरी पतित सम्पूर्ण कृतिये हम हैकता है और सुक्त अस्त्रवा दूर करते की स्वान्ते कम हेकता है, वह कोगी साथ केंग्न अस्त्रवा दूर करते की स्वान्ते कम हेकता है, वह कोगी

अर्थन कोने—अपूर्यन ! यो यह योग आर्थन राज्यानामाने यहा है, याचे अपूर्ण होनेने में हरायी दिख विशेषको नहीं हेरातः है, वर्षोंकि होयूरण ! यह पर बहुर ज्यान, जनकर जान्याकारान, यह हुद और वरस्थान् है। इस्तिनो जान्या जानों कान्य में बालुके बेकनेकी भीति अस्तान कुकर कान्या है। १६९-१४ ।।

श्रीनाव्यक् कोले—बहुताहो । निःसीह कर बहुतर और कठिनाको नको होनेकाल है: यातु कुलीकु अर्थुट ? यह अव्यक्त और कैरावारे कहते होता है। निस्तार पर बसमें विक्य दृश्य नहीं है, हेले पुरुवहारा कोन कुलावा है और बसमें विश्ले हुए प्रकारने प्रकारतिय पुरुवहारा सामन करनेसे असका प्रश्न होना पहला है—बहु पेरा का है ॥ १५-३६ ॥

ज्यून केले—सीकृत्या ! जो बोगमें इद्धा रक्षनेवाका है, किंगू संबंधी नहीं है, इस करण मिलका का अन्यक्रताने बोगमें विकास्त्र हो क्या है—देशा शतका बोगकी सिद्धिको न आहे होस्त्र विका गतिको आहे होता है ? सहकाहे ! क्या बाह्य कामकारिको कार्नी मेहित और सामधारित पुस्त क्रिया-पिश कार्यकारि भारि होनी ओस्से प्रमू होकर न्या से नहीं हो बाता ? श्रीकृत्य ! मेरे इस संस्थाको सम्पूर्णकारो हेदन करनेके सिन्धे आप हो क्षेत्रम हैं; क्योंकि स्थापेट सिक्षा पूराए इस प्रमुख्या हेदन करनेवाला निराम सम्बद्ध नहीं है स १७००-१९ स

क्षेप्रस्कृत कंते—सर्व ! उस पुरस्का न के इस लेकने नक होता है और न परायेकोर्ने हैं; क्लेंकि करें ! आरबेद्धारके विने कर्न करनेकाल कोई वी करून इस्तिको ताल नहीं होता। केंगावह पूरत पुरुषकोंके स्वेक्टेको अह क्रेकर, उसमें बहुत वर्गोलक निर्माण करके जिस सुद्ध आवारणवाले श्रीपान् पुरुषेके पत्ने अन्य तेवा है। अपना हैरान्यकर् पुराव रच स्वेक्वेचे न काकर हार्यकर् खेरीन्त्रेके ही शुरुले क्या हेता है। चांतु इस प्रकारका को वह क्या है, से प्राच्यांने वित्तांक्षेत्र ज्ञानक पूर्वन्य है। बहुर्ग ज्ञान प्रतित्ती संबद्ध निर्म हुए बुद्धि-संबोधको —स्वास्त्रहृद्धिकोणके हंग्यारोक्ये अध्यक्ता है आह है काल है और कुमनका। काके जनामारे यह दिए परप्याच्या सरीतमा निर्देशके निर्देश पहलेले की बढ़बार प्रकार करता है। यह बीकलोबेंद्र पाने जन्द विनेतास चोगाह पराचीन हुआ भी जा व्यक्ति अन्यास्त्री ही निर्माणे कावानुसी और आवर्षित विका पास है, एक श्रमानकृतिका चेत्रका निवास भी वेदने करे हर रामानकर्तिक क्याची करवान कर बात है। यह प्रयान



पूर्णक अध्यक्ष करवेकाल केची से विक्रमे अनेक स्वयंत्रें संस्थानकारों इसी क्यांने सेविद्ध होनार सम्पूर्ण क्यांने रहेता है कामान है परमणिकों आह है जाम है। योगी स्थितनोंसे हेंदू हैं, हात्सावनिनोंसे भी केइ काम गया है और सामानकार्य कार्नेनारकोर्स भी केनी होड़ हैं, हात्से अर्जून । यू कोनी हो। सन्दर्भ केपिकोंसे भी के स्थानकार्य केनी स्नूतने रूपे हुए असराव्याचे सुक्रकों निरमार संस्थात है, यह योगी यूडो काम केइ काम है स ४०—४० स

#### श्रीयद्भगवद्गीता-- ज्ञान-विज्ञानयोग

सीनगण्य होते—यार्थ । सारकार्यको मुझले आसकारिता स्था अक्टबंगाको मेरे वराकत होकर चेनले स्था हुन्त वृ निता सकारते समूर्ण विमुति-कर-नेकामीह कुनेनो पुक, सबके आकारत पुरुषो संस्कारित करेगा, सबको हुन । वै तेरे रित्ये हम विकासतीत सबकारको समूर्णनाम कर्नुता, विस्ताको सारकार संसारमें किए और कुछ ची सारकेशेन्य होन महीं कि बाता । हन्तरों पनुष्योंने कोई एक पेटे स्थानके तिन्ने या। करात है और उन या। सारकेशको चोरिनोचे स्था कोई हक मि पराचन होकर मुझलो सकारों अन्तर है। पुण्यी, करा, साति, करा, अस्तरहा, यह, सुनि और अवसार ची—हर। प्रकार का आह प्रकारते विकासित मेरी स्थानि है। यह सहस्र प्रकार मेरोनाकी से सारक—सेटे जब प्रकार है । यह सहस्र

व्यवस्था ! इसमें पुस्तीको, जिससे कि वह सम्पूर्ण जगत् वारण किया जाता है, मेरी जीवक्या परा—चेतन प्रकृति अस । जर्मून | ह ऐसा क्यांक कि स्टब्रूण भूत इस सेनी अकृतिकोसे ही उरमा होनेवासे है और में सम्पूर्ण जगत्का जगा जाता जावा है। क्यांका ! मेरे सिमा दूसरी कोई भी वार्य नहीं है। का सम्पूर्ण जगर सुक्ते स्टब्र्क मनियोके सदस मुक्ते हैंका हुआ है। अर्थुन ! में करने रस है, कर्याम और सूर्वन ज्यांका है, अर्थुन ने वेटेने ओहुन है, अवध्यासमें जबाद और पुरुषोमें पुरुषक है। में पुरुषोगे ओहुन है, अर्थासमें प्रवाद के है क्या कर्युन पुनोगे क्यांका मेंकन है और तर्याक्योंके का है। अर्थुन | तु सम्पूर्ण श्रीविध सनावन बीच पुरुषकों ही कान । में मुद्धिकनेकों सुद्धि और सेनकिनोका केन है।



मारावेष्ठ | मैं बर्ग्याकोच्या आसरीत और वात्रणाशीके गहित स्वत हैं और सब पूर्णोंने कावित अनुकृत कार्य है। और वी वीत सकानुकारे अवत्र होनेवाले काव है और को स्कोनुकारे सबा सकीनुकारे होनेवाले काव है, उन सबको है 'कुछले ही होनेवाले हैं' ऐसा कार। परंतु काराको अपने मैं और से बुछले वहीं हैं । १—११ ।

मुख्येके कार्यका सामित्रा, कारत और कारत-हर मीनों सकारके पाणेंग्रे का कर बंधार केवल हे का है. इसोरियों इस सीची पुर्वासे की पूछा अधिकार्याओं पूर्वी बारता; क्योदि वह अलेकिक विपुत्तकों नेते कवा वर्ड़ कुलर है। वरंदु जो पूजन केवल मुक्तको ही निरमान माजवे हैं, में इस मानाओं अल्प्यून कर बाते हैं। प्राथके क्रण मिनक ज्ञान हरा जा पुष्का ई—ऐसे आयुर-अध्यक्तके शरण विशे हर, बनुव्योपे रीय, दुवित क्षत्रं करनेकरो मुहरोन मुख्यो भरी पंजो । मार्ग्सकारोपे हेव अर्जुन । उत्तर कर्ज करनेवाले अवांची, जाले, विकास और इसी--वेले का प्रकारके मकना मुक्तको पनते है। उनवे नित्र पुरुषे पुरुष्टिन्यमारे विश्वत असन्य प्रेमध्यविद्यालय प्राप्ती पास असि ज्ञाम है; क्योंकि पुरुष्टे तत्को राज्येकके प्रानीको मै अल्बन्त क्षिप है और का इन्हें पूछे बतकत क्षेत्र है। वे साथे बदार है, पांतु इतनी तो स्वक्षाल पेय सम्बद्ध 🕏 है—हेला येव मत है; क्योंकि वह क्एक का-मुख्यितक इत्ती पक अति काम परित्यक्त पुरुषे है अबहे जाल निवद है। बहुत मन्त्रीय अन्तरे क्याने त्रव्यात्रको अत् पूर्ण, सब कुछ मानुदेश है है—इस प्रकार मुक्तको मानक है; यह प्रकार

कारण पूर्वन है। काने सामानारे वेति और उत्त-दन चंगोची कारणाहर विकास कार हुए या मुख्य है, ये सोग उत्त-जा निकामो मारण कारों अन्य देखाओं को कारों है। थो-वो शब्दान कार विक्र-विक्र देखाओं कारायों कारों है। पूज्य सामान है, अन्-अंद निकामों में साथ देखाओं उत्ति व्याच्यों निवा कारत है। यह मुख्य जा ब्रह्मारे मुद्रा होतार जा देखाला मूक्य करता है और उस देखानों मेरेहारा ही



विकास किये हुए का इकिस कोरोओं निश्तेष्ठ कार सरकार है। परंतु का कारण्यिकारोका का पास सारकार है सका से केवाकारोको पूर्वकारो केवाकशोको जार होते हैं और मेरे सक कई कैसे ही करें, अन्तर्थ के कुलको ही जार होते हैं। वृद्धिको भूका की कानुसन कविताही परंत पासको य कारके हुए कर-इतिकोसे को पूछ स्विक्तनकार कारणानको कुलकते व्यक्ति कारकार कार्यक्रमानको अञ्च हुआ कारके हैं। १६—१४ ॥

अपनी योगमाधारे क्षिया हुआ में समाहे प्रसास की होता, इसलिये का अपनी जनसमूख्य मुझे बन्माहित सविनाही प्रमासक नहीं कानात । अपूने । पूर्वये कार्तात हुए और कांग्रस्तों निकत तथा आने होनेवाले सब कृतेकों में वास्तत है, यांतु वृक्षकों कोई थी इस्क्र-मसिरक्षित पूरत नहीं काना । करानंत्री सर्वृत ! संसारमें इक्क और हेससे समझ युक्त-पुन्तारि हम्हरून मेहसे सम्पूर्ण जागी समाम अञ्चालो जात हो से हैं । यांतु निकासध्याकों सेतु कार्यका अध्याको कार्यकों निक्त कुल्लों थांत यह हो यांत है, से स्वय-हेस्सन्त इन्हरून भोत्रते भूता कृतिहासी एक पुलाबों अवस्थानको, सम्पूर्ण कर्मको और अविश्वानअभिनेतको भी पुरुषो है सम्मो है ।। २५--५० ।।

सम प्रकारको पानो है। यो भेरे करन होकर करा और करनके है स्वीत को अधिन्यओ एक्कि पुरा करनको नानो है; और नो बुटनेके दिनों का करते हैं से दूजा का उद्यानों, सन्दर्ग | कुर्वनिकालने दुनन इस उत्याद अन्तरकारों भी आओ हैं, में

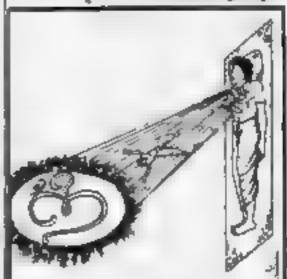
## श्रीमञ्जूपवद्गीता —अक्षरब्रह्मयोग

अर्थन्ते अञ्चलकोत्तम ! यह वह वक है ? अवस्थार क्या है ? कर्न क्या है ? अधिनक़ जनते क्या क्या क्या है और अधिर्देश विद्याले कहते हैं ? चनुसूद्धा । यहाँ अधिरक्त कौन है ? और मह इस सरीरमें कैसे है ? तक एक-विकास प्रमोद्धरा अवस्थानो आव विका प्रयास व्यवसे anh \$ ? p 1-9 (

होगरकाने रक-परंप अक्षर 'स्क्र' है, कीवाना अध्यान' नामते बढ़ा बाना है तथा कुलेके कामके काम कार्यकाल को साथ है, का 'कर्ग' अपने कहा एक है। रिवरि-विनाहरक्षेत्राके स्था प्रदार्थ अधिन्तुत है, हिरण्याक मुख्य अधिक है और देख्यारियोंने के अर्जुन । 🗩 प्राप्तिने मैं बार्त्वेन है जनवांगीकारों जीवन्द्र है। में पुरू अन्तरकारणे भी भूतको हो कारण करता हुआ शामिको स्वाच्या जाता है, यह वेरे स्वयूक्त अव्यवको प्राप्त क्रेक है—इसमें कुछ भी संसव नहीं है। कुमीकुर अर्जून | मह मंतुको सन्तवसार्थे किस-विशे भी नामको सराव करता हुआ प्रतिस्का कार करता है, उस-अस्को ही बाद होता है, क्योंकि कर एक उसी भावते कावित छ। है। यह रिका है हिर प्रमुख अपने जीवनने स्वय किस न्याच्या अधिक विकास काता है, अन्तकालमें को प्रत्यः क्रतेका स्वरण केल है और अप्राच्यानके स्थरमके अनुस्तर ही उसकी गति होती है। इस्रोतिये अर्जुन । तु तक समयमें निरन्तर बेरा करण कर और चुन् भी संद । इस क्लार नुसर्ग अर्थल किने हुई भा-सुद्धिते कुक क्षेत्रत स् निसंबेद्ध मुख्यको ही प्रसा क्षेत्रा स क---------यार्थ है का नियम है कि परवेदारके व्यानके अञ्चलका

चोनले कुछ, इसरी ओर न बानेवले किससे निस्तर किस्त कारता हुआ पुरूष करण प्रकारकात्माम करनेकरको है जाए हैका है। यो पुरान प्रत्येष्ठ, अन्तरी, प्रकारे निकास सुन्धारे भी अति सूद्ध, तको बारज-केकन करनेवाले, अधिनायकान्य, सूर्वीक सङ्ग्रह विवय केलन प्रकारकार और अधिकारी अंति को, सुद्ध समिद्धानकान परमेशका स्थल करता है, ज परिवृद्ध पुरुष उत्पादकारे भी केम्बलते पुत्रुद्धके कवाने प्राप्तको अनुको प्रकार स्थापित प्राप्ते, वित निक्रण मन्त्रे रनाम करता हुआ उस विकासकात परम पुरुष नरमाताको 🥼

क्रम होता है। बेक्के बाननेवाले निक्रम, निक्र राविद्यानक्ष्यका परमक्को अधिनाती वको 🕏 आविकरहेव चारबील संन्याती म्हलकार विसमें प्रवेश करों है और किस प्रश्निका बाहनेवाले अहावारी लोग प्राप्तर्पका आवश्य करते हैं, का परन्तरको में तेरे तिन्ते अंक्रेको स्ट्रीप । सब इन्यिको प्रतिको वेक्रका तथा परको बुदेखने विका करके, फिर उस जीने बूद करके हाट अगाओ प्रकार कार्यत करके, परमाना-सम्बद्ध केपपारगार्ने रिका क्रेकर को कुछ 'क्रे' इस एक अध्यानम स्थानके उद्यास करना हुआ और उसके अर्थ-सक्य सुद्ध निर्मृत



अक्रमा कियान करता हुना करीरको लाग कर बाता है, का कुल करन जीवनो जात क्षेत्रा है ।। ८--१३ ।।

अर्थुन । को पूरव मुहाने अनन्त्रित होसार तथा है निरसर मुख्य पुरुषेकमध्ये सरम करता है, जर निरम-निरसर मुक्ते वृक्ष हर चेनीके रिजे मैं सुन्ध है। यस सिद्धिको कार ब्यालासन ब्याली प्राप्त होकर गुरुरोके का एवं इनकृत पुर्वाचको औँ अप हेते। अर्जुन ह |ब्राइकेक्टरमेन्स सम्ब कोव्य पुनरावर्गी है, पांतु कुशीकुत | मुक्को जार क्रेकर धुनरांच नहीं होता; क्वोंकि में कारणतेत हैं और में सब अक्राहिके लेक बालके हुना सीधित होनेसे



अभिन है। बहारन को एक दिन है, स्तरते एक हवार कर्तुर्वित्रकारी क्यांकियांको और एविको की एक इस्तर अतुर्वेगोलकारी अवस्थितारचे को कुछ बच्चते कारते हैं, से मोगीयन कार्यक तत्त्वके पाननेवाले है। सन्तुर्ग पंचयर बुहरूना ब्ह्याचे दिनों हनेक्यारनी स्वाने स्वान्यरीको अपने होते हैं और अक्रमधी परिनंद अनेक्शमधी कह क्षेत्रकारमध्य स्थानेत प्रभूत प्रतित्वे के लोग के अने है। पार्थ । नहीं मह पुरसम्बद्धन सरस हो-होबर स्वातिक बसवे क्षार राजिके प्रवेशनकारणे स्थान क्षेत्रा है और दिनके प्रवेशन कारणे जिर जन्म होता है। उस अल्लाको भी अति को हतरा —किस्तुल को संगठन शतकात्रक है, यह पान हिल पुष्प राज पहाँके नह होनेपर भी रह पूर्व होता। को असमा 'अक्षर' इस नामसे अक्षा गरत है, इसी अक्षर जनक अस्तर-प्रकार पान गति करते हैं उसा किस सरहार जानक-भारती जात होकर कुल कारस नहीं अले. का बेटा करन होता है। ए २३ — २८ ह

बाव है। यहाँ । विका प्रत्यानको अनुनंत प्रतानुत है और किए प्रविद्यानकृतन करणात्वारे यह सम कन्यू परिपूर्ण है, यह प्रमान अव्यक्त परंग पुरूष हो अन्यवर्षिको 🗗 प्रश्न होने મોગ્ય 🕏 છે. ૧૪—૨૨ છે

और अर्थन ! बिला करूने छरीर स्वाप्तार को हर बोनीबन बारक न हवेंटनेवाली गरिको और जिस बदलमें को हुए सावस औरनेकारी परिश्लो ही सहा होते हैं, का कारको —का क्षेत्री नागीको कर्तुग्र । इन के प्रकारके कर्नेकि किया कर्नने ज्योतिर्वय अग्नि अधियानी देवता है. दिनका अध्यानी देवता है, कुल्काबर अध्यानी देवता है और जाराज्याके का महीनोद्धा अधियानी विश्वत है, का वानि क्लार क्षे हुए सहयेता सेगोवन उन्हेंक केमाओहर हमारे से मने कवर इसको प्रश्न होते 🛊 । विका कर्मने श्वमधियानी देवता 🖫 शक्ति-अधिवानी देवता ो एक अन्यकार अधिकारी देवता है और रहिलाकारे कः व्यक्तिका अधिकानी केवता है, यह बार्वने भरवार गया हुआ सम्बन्धार्थ करनेपाल भोगी अर्थुक हेम्स्सनीहरू कारों से एक दूश क्ष्माची जोतेको प्राप्त होका कारी अपने पुरस्कारीक एक बेगका कारत आता है। क्वेंब्रिक करमुक्ते के के अध्यक्ते-एक और काम पार्च क्ष्माण को पने हैं। इसमें एकके हुना गया हुआ—जिससे नायस नहीं स्वेदना पहला, उस पाय गतिको जाप होता है और क्रांचेंद्र प्रता करते हुन्छ किन कायन जाता है। पार्च है इस अवार इन केनी नार्नेको रूपको बानकर कोई पी केमी मोदिन नहीं होता । इस बारण अर्थन । सु कर बारको क्रमान्द्रिका भेगने कुछ हो। भोगी पुरुष इस प्रत्यको क्ता कारकर बेडोबेंड पहलेंगे तका बता, तब और क्रमिके कारेंगे के पुरस्कत बक्र है, का सबके विश्वित करमान का सब्धे है और समाजन परन पहलो जाउ

#### श्रीमञ्जूगक्दगीता—राजकिहा-राजगुह्मयोग

करण मोपनीय विद्यानगरीत आवको नार्वपर्वति कर्मण, मिनको सनकर र दुःसका संस्तरते पुरु हो जावन्छ। यह विकासन्ति ज्ञान सम् विद्यालीका समा, तक धोजनेकोका रामा, अति परिता, अति उत्तम, अवस प्रकारत, वर्णपुत्र, सामा करनेने बड़ा सुरूप और अधिवादी है। परंतर । इस अर्गुक कवि सहर्रात्त पुरा पुराको न प्रश्न होकर पुरुषक

भीकाकर केले—कुछ केन्द्रवितील करके विके इस | संस्थरकार्वे प्रत्य करते कुछे हैं। कुछ निकास सहस्वताहे मा सब करन् करने बराउंके सहस परिपूर्व है और सब कृत की अन्तर्गत संस्थानके साम्बर निवाद है, इस्तीरने करावने में काने विका नहीं है और ने एक पूर पुराने रिका नहीं है। किए नेवे इंडर्डन बोनवस्थिको देश कि जुड़ोका काम-बोरम करनेकार और मुखेओ जनक करनेकार भी येत कावा वाकवर्षे जुलेने स्थित नहीं है। वैसे आवादको उत्पन्न सर्वयः विकानेकाल सहान् कानु एक उत्पन्नको है दिवत है, वैसे ही मेरे संवस्त्रकार उत्पन्न होन्से उत्पूर्ण कृत मूक्त्रमें दिवत है—ऐस्स कान । अर्थुन ! कल्पोके आदिने उत्पन्ने मूक्त्रमें प्रकृतिको अस्त होते हैं और कान्मोके आदिने उत्पन्ने मैं पित त्यात हैं। उत्पन्नि अनुविको अनुविकार कार्यु स्वास्त्रको कार्यो परालय हुए इस सम्पूर्ण प्रकारमूखको सार-कार उनके कार्योक्ष अनुसार रकता है। अर्थुन ! उस कार्योम आस्त्रिकारित और अनुविको स्थून मैक्स हुए कुछ इस्सामाको ने कार्य-नहीं परिवंत । अर्थुन ! कुछ अधिकारको इंकाइको अस्त्री करावास्त्रका इस कार्य-मान्नो स्थातो है और इस हैन्से हैं का वंतारकक वृत्त कार्य हैं। १—१०॥

, मेरे परम फानको र कारनेकाले वृह्य लोग कर्नुकास हारीर सारक कारनेवाले जुझ समूर्ण पृत्योके न्यान् इंडकारे तृष्ट सम्प्रती है। ये नार्य जाता, व्यवं कर्म और वार्य झालको विश्वित्राचित अद्यानीका एक्सी, आसूरी और मोदिने प्रकृतिको ही सारण किन्ने हुए है। यांतु कुलीचून। केन्ने समृतिके आसित महासामन कुलाई तक पूर्वेका सन्तान सारण और अस्परित अद्यानेकार कारका करना करने पुत्र होन्सर निरम्य पत्रने हैं। में वृत्न निरम्यको प्रकार



निरुपर मेरे नाम और मुजोब्क बोर्जन बत्ती हुए क्या पेरी प्राप्तिक निर्म यक बत्ती हुए और मुक्तको कर-बार प्रवास करते हुए एका मेरे व्यानमें युक्त क्षेत्रर अनन्य प्रेयते मेरे ज्यासना करते हैं। तुसरे ज्ञानकेची मुझ निर्मृत-निरम्धार व्यवस्था अन्यसम्बे अया अधिकपालने पूजन करते हुए मेरी ज्यासमा करते हैं और पूसरे पतुष्य भी केवताओंक क्यमें विका मुझको निरम्भीया सम्बन्धार जान प्रकारने पुन्न विराह्मकाम पानेकस्की जन्मना करते हैं। कर्तु में है, यह



में हैं, सब्बा में हैं, ओबबिर में हैं, प्रथा में हैं, पूर्व में हैं, आहेर में है और इक्टरमा किया को में है है। इस समूर्ण अगलुका बारण कार्यकाच का कार्यक कार्यक देनेवान, किए, करा, विकास, स्वानेकोच्य, परिता, 'ओहरा' स्वतः अप्रेस्, सामनेद और क्यूनेंद्र भी में हैं है ह साह होने बीमा पहनशाय, बरक-केच्या कानेकाच, सक्का व्यापी, सुधासुमका देकनेपाल, सम्बद्ध कार्यात्राम, इतम होने चोन्य, प्राकृतकार व क्यांकर हैत करनेकारक, अपनि-अरक्कर, सम्बद्ध नेक्षीका करण, रिवार और अधिनाती कारक भी ये हैं। है। मैं ही कुर्वज्ञाने करता है, कर्वाको जातार्वत कराह है और को करमना है। अर्जुर ! मैं हो अपूर और पुस्तु है और सक्-असम् को में ही है। तीनों केटोने विकास किये हुए विकासकारीको कारनेकाले, सोपस्तको पनिकाले, पापीके नायाने परित्र हुए पुरस् युक्तको स्त्रोके हारा पुरस्का हर्राकी अपी ब्याहे है: वे पुरूष अपने पुरुषोक्षे पर्एतस्य सर्गातोकाको जार क्षेत्रन करने किया केव्याओंक कोगोको योगते हैं। वे उस विकास कर्गलेकाचे घोषकर पूज्य श्रीय क्रेनेश मृज्युक्तिकानी प्रदार होते हैं। इस प्रवार सर्गके सावनका तीनी केटेने कड़े हर सकान करांका आजव केनेवाले और केनोकी काय-कराते एक कर-बार आवागमन को जाउ क्रेंबे हैं स एए--- नए स

को जनन होनी जलका जुल परवेशस्त्रो निरम्तर विकास बारते हुए निकासभावसे भागते हैं, उन निरम-विराध्य केट बिकार करनेवाले पुरावेश्वर कोन्स्रोन में इस्ते जाह कर केट हैं। अर्जुन ! काणि बहातो कुछ को समाम प्रस्त हुतरे केटाओंको पूरते हैं, वे की पुरावते हैं पूरते हैं किट्ट उनका बहु पूरूर अहरनपूर्वक है; क्योंकि हम्पूर्ण क्योंका केटक



भीर कारी भी में हैं, यहंतु से मूल अधिन्यास्त्रका मर्पेक्टको कारके नहीं जानते, अभीने नियों हैं। वेक्ट्राओको पुनर्वकार्य केव्ट्राओको आह होते हैं, निर्द्राको कृष्टिकारे जिस्सोंको आह होते हैं, कृष्टेको कृष्टिकारे कृष्टेको आह होते



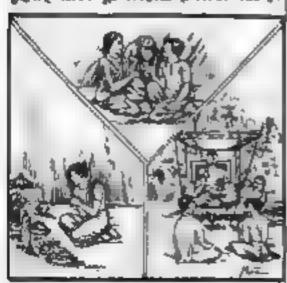
है और मेरे पाक पुल्कों ही जान होते हैं। इसीरियने मेरे बंधनेका पुरार्थण को होता। को पोई पात मेरे रियरे हेम्से का, कुम, बार, जार आहें। आंधा करता है, अर सुरस्तिह निकास देखें पातका तैयपूर्वक अर्थन किया कुमा कु का-पुण्यादे में अपुर्वकारणे काम होकर मेरियरियर पाता है। अर्थुंग | मु को कर्न कारता है, को काम है, को हमन महास है, को तार देखा है और को का करता है, का इसा मेरे अर्थक कर । हर कामरे, निस्तों सम्बद्ध कर्न पुरा प्रणामकुट अर्थक



नेते संपालकेगरे एक विश्ववास ह स्थानून कारण कर्मकारण पुरु हो अवना और उनसे युक्त होकर पुरुषो है जा होता। वै सर कृतेने समयाको जायक है, न मोर्ड मेरा असिव है और व सिव है; परंतु को चार नहमसे केंगरे करते हैं, से ब्हुतरे हैं और में से कामें प्रत्यक्ष प्रसाह है। भी कोई जिल्ला दुरावारी भी अन्यकानको येव प्रकृ हेकर पुरुषो करता है से था साथ ही करनेकेच है: क्वेंग्रेश का कार्य विक्रमाल है। का होता है बार्याय है क्षां: है और एक स्टोमली पान स्टिनको बाह केंद्रा है। अर्जुर ! यू रिश्वमपूर्णक स्थर चार कि नेस तक नह नहीं हेंगा । अर्थुन । सी, केंग्स, सुर तथा पायग्रेती---वाध्यासमी के कोई भी हों, वे भी मेंने फ़ाल होकर परंघ गरिक्यों ही कार होते हैं। फिर इसमें के बहुता ही क्या है, जो पुरुवसील क्यान्य क्या राजमि भक्तान्य परम गरिको जाए होते हैं। इस्टिको तु सुकरक्षित और श्रम्मान्दर इस व्यवस्थारको प्राप्त हेकर निरमा मेरा ही चंडन कर । मुहामें मनकारप के, मेरा थक थन, मेरा प्रान करनेवास्य हो, मुक्तको प्रवहत कर । होर ज्ञान ज्ञानको पुराने निवृद्ध करके मेरे पश्चक क्रेक्ट स कुरको हो प्राप्त होना ॥ २१—३४ ॥

#### श्रीमञ्ज्यवद्गीता--विभृतियोग

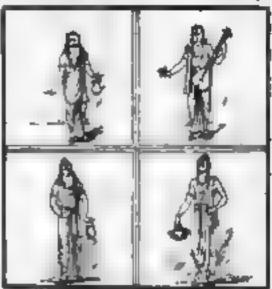
प्रेम्बक्ट कालो सुन, विसे में सुद्ध अविद्युप प्रेम रहाने-बारंग्के रिज्ये बिराबर्र प्रवासी बर्बाग्य । मेरी उत्तरिको न रेक्ट क्षेत्र जानते हैं और न पहलिंकत हो जानते हैं: क्केंबिंड में एक प्रकारके देवलाओंका और व्यक्तिनेक भी आदिकारक है। से मुक्तको अवस्था, अनादि और सोकोकर स्वाम् ईका सरको। शानता है, यह प्रमुखीये अस्तरात् पुरूष सम्पूर्ण प्रामीते मुख हो क्रांता है। निक्रम कारोब्डी सर्वेड, क्यार्च क्रम, सक्रम्बस्ट. क्या, साथ, इतियोक्त बसमें करना, बनका निष्क करन प्रस-द:स, अधीर-अस्त और धन-अध्य क्या अधीरा इक्स, संबोध, एवं, हम, वर्ति और अववर्ति— हेरे में प्राणियोक्त जना अध्यारके पान गुप्तने हैं होते है। जन प्रार्थितम्, भार कार्य सी पूर्वते क्षेत्रेकारे सरवाकी सवा प्राप्तम् आहे चेदा ग्यू--वे मुल्वे चलतारे तक के क मेरे संस्थापने जनस हुए हैं, सिन्स्ती संस्थाने का सन्पूर्ण star है। के कुछ बेरी इस वर्तक्ष्मका क्रिक्सिको और क्रेस्ट्रिक-को राजारे अलाह है, वह विकार प्रतिकोचके क्रूप पूक्त है विकार होता है---इसमें कुछ को संसाद नहीं है । मैं मासुकेर ही क्षाणूर्ण जनस्वती सर्वातका कारक 🛊 और गुप्तते 🖟 का बनाइ चेक्क करता है—इस प्रकार संस्कृतक कहा और चरीको कुछ कृतिमान् प्रतापन सुध परवेशाओं ही निरम्पर अपने है।



निरसंत मुक्तमें मन रामानेवाले और मुक्तमें ही हान्सेको अर्थन कंतनेवाले प्रकारन पेरी धनितको संसक्ति क्षय आपकाने पेर प्रभावको नारते हुए तथा पुरू और उपावस्त्रीय येश कतान करते हुए ही निरसंत संसुद्ध होते हैं और पुत्र वास्तुनेवाने ही

वीपनवान् सेर्पे—व्यागाही । किर भी मेरे परण सामा और । त्वनुष्ठ जकनको सुन, विके में सुद्ध अधिकान जेन रक्षाने-को किसे दिलाई इच्छाने काईगा। मेरी उत्तरिकाने न देव्या-त्वानो है और न पहर्तिका ही कानो है, क्योंकि में सब उत्तरी देवताओंका और महर्तिकोका भी आधिकारक है। यह अपन्या अध्यानके क्याने क्या हुए अध्यानको प्रवाहनक को अपन्या, अन्तरि और लोकोका प्राप्त हुंकर कानो । को अपन्या, अन्तरि और लोकोका प्राप्त हुंकर कानो ।

> अपूर्व करों—अवय परण ह्या, परण बाग और परण परिता है: क्योंकि आपको सम ऋषितमा समाता दिवा पूजा



पूर्व केलेका भी आहिता, अध्यन्त और तर्वकारी वसूते हैं। केरे हे देवले जरूर राज वाले असित और देवल तथा महर्षि कारत की कहते हैं और उसने आय की की प्रति कहते हैं। मैजान ! जो बुक्क भी पेरे प्रति आप महते हैं, इस स्वाब्दों में प्राप कारत है। कारवन् ! आवने, सीलायन क्रम्यको न हो कुन्म सानते है और न केवल हो। है भूतीको क्रयप्र क्षानंत्रको । हे पुनिक ईक्षा । हे केलेके के । हे प्रान्त्रके एकपी 1 है पुरस्तेतम । अस्य स्वयं ही अध्योधी अध्योधी कारते हैं। इसरियरे ज्यान ही इस अपनी दीवा विश्वतियोक्ते सम्बन्धिको सङ्केषे स्थापं है, जिन विजुनियोके हुन कार हुन क्या (क्षेत्रदेश) जाहा करके विका है। फ्रेन्टिंग । मैं विकास प्रकार निरुक्तर विकास करता हुआ आयको जानूँ और चनका ! जान किन-किन चानोंचे मेरे हाए कियान करने केन्य है। कर्मका ! अपने केन्द्रातिको और विश्वतिको पित यो विकारपूर्वक काहिये; क्योंकि आपके अमृतपर क्यानीकी सुन्दे हुए मेरी होते नहीं होती ॥ १२ -- १८ ॥

अंक्लबन् कंने--कुरबंध ! अब मैं मेरी दिवा

विश्वतियाँ हैं, उनको में लिये ज्ञानकारो स्थूचि; क्योंकि केंद्रे विश्वतरका अन्य नहीं है। अर्थुर ! में सम्ब पूर्णिक इस्त्यें विश्वत स्थापका अस्त्या है तथा संस्कृष्ट पूर्णिक कार्य, प्रणा और अस्ता को में है है। में अर्थिकि बार्य पूर्णिमें विष्णु और अर्थेतियोंने विश्वतिकास्त्र पूर्ण है तथा में अन्याका क्षणु-वेकताओंको तेन और नक्षणेका अधिवर्णि चन्नम्य है। में



वृत्ति है। योड्रोने अनुस्ति काम अपन होनेवाला और स्वाप्ति कृति है। योड्रोने अनुस्ति काम अपन होनेवाला और बार काम योड्रा, सेंड इत्तिकोंने हेराको प्रथम इस्की और स्वाप्ति हो। व्याप्ति स्वाप्ति संस्ताप्ति अपनित्ता है। कामोद है और सर्वति सर्वत्व कामुक्ति है। मैं मारोने केवलत, सरकारी और पर्त्तिकालाने जनका शिल्पीत काम केवल है और स्वाप्ति अर्थना कामक रिनरोक्त ईवा तथा कामन कामोकालोंने कामक मैं है। मैं हैकोंने प्रदान और नकाम कामोकालों कामक में है। मैं हैकोंने प्रदान और

केरोने सामांद्र है, देवोचे इन्द्र है, इन्ह्रिकोने का है और कुरमानिकोकी केरवा है। में एकाइक कांने क्रमर है और प्रश्न तथा राज्यपीये करका सामी कुके हैं। मैं आप वस्तुओं आहि है और विकासको क्रमेंग्रेस सुवेद क्रमेंत हैं। यूरोकिनेने इनके कुकिया ब्रह्मकी कुनको साम। वर्ष । में संस्क्रानिकोने



सकत् और जन्मस्योगे समूह है में महर्षियोगे पृतु और इस्टोंगें आह्वार है। सब प्रकारक यहाँने करवार और स्वित यहांबासोगे हिमालव महिद्द है। ये सक दक्षीने पीमलका दूसा,

मुगराज सिंह और पश्चिमोंने में करत है में प्रतिप्र

करनेवालोंने वानु और इस्तामानियोंने औरान हूँ क्या प्रकारकोंने सगर हूँ और नहिनोंने सीधानीरको पहुनती हूँ।



अर्जून । स्वित्रोका आदि और अन्य राज्य नका की मैं है है। मैं विकासोंने अध्यासनीया और करवर विकास करनेवालोका सम्बन्धिकोंके देखें किया अनेकाल कर है। मैं अक्टोने अवहर **है औ**र समसीने हुन नामक प्रन्यस है। <del>राज्यपारम - प्रतिका भी म्हानास तथा सम् ओर</del> पुष्पालक जिरह्मका समझ काल-थेक्ट करनेवाल थी में है है। में सबका नास करनेवारण पूरवू और परिचली हेनेकानेका क्रफीलका है तथा क्रिमोने कोर्ति, बी. मानू, ल्हीं, केवर, बूर्वें और इस्त्र है एवं गरून करनेवीन ब्रोटकोर्द में ब्रह्माल और क्रमोने नामनी क्रम है गया महीनोने वार्गरीन और ऋतुओने क्याप में है। ये क्या करनेकारोपे सुआ और प्रचानकार्य पुरुषेका सम्बद्ध 🕻। पै जीवनेकार्यका विकास है, विश्वास करनेवालोकर विश्वास और व्यक्तिक पुरस्का सामिक प्राप्त है। प्रत्यिक्तिओं में सर्व क्षेत्र प्रथा, प्राथ्यकोचे यू. यूनियोमे नेतृत्वास और व्यक्तियोपे कुलकर्त करि भी में हैं हैं। मैं कुल करनेनालेका दक्त हैं, जीतरेको इच्छान्यरोको नीति है, युद्ध रक्तरेकोचा भागोका कार्य कीन है और इस्तामनेका सरकार में हो है। अर्जुर ( के तक पूरोकी जनतिका धारण है, यह की में ही है। क्योंकि देख का और अवद मोहें की कुछ नहीं है, को जुल्ले गील हो । बरेन्य रे मेरी मिला विश्वतियोग्या अस्य नहीं है, मैंने अवनी विश्वतिकोचा जा विकास हो है। देखे इंक्रेयरे बाह्य है । यो-को को विश्वतिष्ठक, कार्यिक्त और राजिन्द्रक बस् है, उस-स्थान सु भेरे हेरली, अंशलते ही अधिकारिक पाल । अब्रक्त आहेर । हम स्कूल माननेसे नेस सबा प्रयोजन है। ये इस क्रमूर्ण जनस्को अन्त्री चेपक्रिको एक अंसपास्के काम काम्बे निका 🛊 ॥ ११—४२ ॥

## श्रीमञ्जगवद्गीता—विश्वसमदर्शनयोग

अर्थुण कोले—सुप्रस्य अनुष्या करनेके विशे अवन्ये को परम नोपनीय अध्यासमित्रयक प्रकार सहा, असने नेप या अग्राम नष्ट हो गया है; अमेरिक बञ्चलनेत्र ! वैति अध्यारे सुलोकी अपित और साम्य किलारपूर्वक सुने है तक अपनेको अगिनाकी पश्चिम की सुनी है। परमेका ! आप अपनेको जैसा काले हैं, यह हीका ऐसा ही हैं: परंतु पुरुवंत्रय ! अपनेको हान, ऐसर्च, सिक, करन, वीर्च और लेकने पुक्त ऐसरकावको है सामके देखना काइता है। क्षणु ! किए केर हाता आग्राका यह कार ऐसा जाना प्रकार है—ऐसा अन्य कारते हैं तो कोनेकर ! अस अग्रानाकी काइयका मुझे दर्शन कारको ह से कोनेकर !

ऑपरवार् चेले-कर्य । अस व् की संबद्धी-इकार्य करन

प्रवासके और नामा वर्ण तथा नामा आधुनिवाले असीनिक

क्योको देश : परमांत्री अर्थुन ! मुक्त्मे अर्थिनके प्रकार

पुलेको, जांच बस्तुओको, एकादश खोको, होनी अधिनीकुमारोको और उस्कार फल्ट्राओको देश तथा और भी बहुत-में खुले न देशे हुए आक्रमंत्रम क्योंको देश। जांचून । जब इस की हारीओ एक मन्द्र विका बस्तारात्रीत सम्पूर्ण नगर्को देश समा और भी जो कुछ देशमा बाहरा है, को देश। बरेतु पुलब्धे है इस अपने प्राप्त नेत्रोद्धरा देखनेने नि:स्केंद्र सम्बर्ध नहीं है; इसीने मैं तुझे दिल्ह बांधु देश है जाने हु बेरी ईस्टिंग बोगस्तिनको देश । ५—८।।

त्रक्षण कोरो---शक्षण् । प्रकृष्णे नेक्षण और स्था पायोके नाम करनेवाले जनवान्त्रे इतः प्रकार व्यक्षणः प्रश्ने पश्चाम् अनुंत्रको करण ऐक्कंपुक दिला काला दिलालका । अनेका पूजा और नैतरेश जुक्त, अनेका अर्थुण दर्शनीयार्थ, ब्यूप्त-से दिला पूजानेशे मुद्ध और ब्यूप्त-से दिला सम्बोनने इस्तीये कारने हुए, दिव्य कारण और क्यांक्ये वास्त्य किने हुए और दिव्य कारण्य सारे हारियों केन किने हुए, उस अकारके मध्याचीरे कुछ, शीकारवित और प्रथ जोर कुछ किने हुए विराह्णकार करायेख कार्यकारों अर्जुकरे केसा : साम्याक्रमें इसार दुव्योंके हुए प्रथ आप होनेही अरक को प्रवास हो, यह मी अर विश्वास करायायकों अस्त्रकके स्मृत्य कार्यका हो, यह मी । श्रीकृत्य अर्थुक्ते का समय अनेक प्रधानके विश्वस अस्त्री वाराहको हेनोके हेन सीकृत्यकारकारकों का करोरने इस बगद विश्व केन्ना । अनेक अस्त्रक वह अरक्षाकों कार्यका और पुर्वित्यक्तीर अर्थुक अस्त्रकार विश्वस्त्र परास्त्रकारकों अस्त्र-श्रीक्षात्रित विश्व अस्त्रकार विश्वस्त्र परास्त्रकारकों क्षेत्र-श्रीक्षात्रित विश्व अस्त्रकार व्यवस्त्रकार विश्वस्त्र वर्षकारकों क्षेत्र-श्रीक्षात्रित विश्व अस्त्रकार व्यवस्त्र वर्षकारकों क्षेत्रकार क्षेत्रकार कार्यकार क्षेत्रकार क्षेत्रकार

अर्थन कंट्रे—हे देव ! में आयोह प्रतियों समूर्ण केवेको तमा अनेवा कार्येक राष्ट्राचीको, कार्याच्ये जायाच्या firefile ment, makest afte mapé agtraint aus विका सर्वेकिने वेकारा 🕻 र सम्पूर्ण विकास सर्ववन् 🕽 सरकाने अनेक पूरा, देश, कुछ और नेक्षेत्रे कुछ गता एक ओरडे अनना करोबारत देवारा है। किस्तान । में आफो न अनाको brett E is retrait affe in berfrait fie bereit fi मुहदयुक्त, प्रदानक और कारनुक तथा कर ओसी प्रधानामान्य नेक्के पहर, प्रभावित आहे और कुर्वेट सहक ज्योगियुक्त, परित्याचे देखे कारेकोच्य और कार ओसी अविकास केला है। साथ है सांगोलेच प्रकृत परमारक है, आप ही इस सन्तर्के परंप आक्रम है, अस्य ही अनादि वर्गके रहका है और शाम ही अभिनाकी सनकान करन है। ऐसा केरा का है। आवन्त्रों आहे, अन्य और मन्त्रजे रहित, शतक सारकांत्रे कुछ, सन्छ कुरावारे, क्षत्र-सूर्वाच्या नेत्रोकाले, प्रण्यांत्रस्य अधिकाम अस्त्रकाले और अपने तेजसे इस जनसङ्घे संदश् करते हुए देवात 🕻 ( महारात् । यह सार्ग और पृथ्वीके बीचका राजूर्ग कावान तक सब विज्ञाद एक अरुपते से परिवर्ण है; उन्हां आक्ने प्रश अलेकिया और परंकर क्रमधे देखकर सेनी खेळा उसी व्यक्तको प्राप्त के रहे हैं। ये ही उस देसकाओं के क्या अवस्थे प्रयोग करते हैं और एक प्रथमित क्षेत्रर हाथ ओड़े आपके नाम और पुराविक जनसम्बद्धानी है कहा नहीं और विद्योंके सन्ताय 'कल्याज हो' हेला बताज उठक-उत्तर कोजीवर। आसकी भारत करते हैं। जो न्यापा कर और कराइ जादिन बचा आह जर, साधागात, विशेषेत, अधिनीयामा राजा प्रस्थान और विनरोध्य संबद्ध रहा कथाई, बहा, राजप और विद्वोंके समराय है—हे सब ई विक्रिक केंकर आपके

देवले है। पहलाई । असके बहुत मुख और नेकेंगले, बहुत हरण, जबूर और वैरोकारे, जबूर बरगेकारे और धनून-सी क्रवीक्रले. अक्ष्य विकास म्हान् सम्बद्धे देखका सम्बद्धीक प्रमुख्य हो को है कहा मैं भी स्थापन के पह है। क्योंकि कियो । अञ्चलको एको कानेको, देवीकार, अनेक क्योंने कुछ कथा फैरकने हुए कुछ और अक्टब्रधान विश्वास नेहोंने कुछ आपको बेसका भववीत अन्तःकारणवास्त में बीरव और प्राप्ति को पता है। आको द्वारोंके कारव विकास और प्रस्कारको अभिने स्थान प्रवासित प्रक्रोंको देखकर में बिलाओंको पड़े बानका हैं और सक्त भी नहीं कारत है। इस्तरिकों है हेनेश । है नगरिकार । आप उसक हो। वे सची वृत्रपहुन्ते कु एकजॉने समुद्रवसहित आवर्षे प्रकृत कर हो है और जैन्यविसाय, होपायाने तथा यह कर्य और क्यारे पक्षके की जानर मोजाओंके सर्वेश सम्बन्धे-सम को बेगाने क्रीको हुए अवन्ते विनादात दावीनाने प्रशासक पुकार्थ प्रवेक कर से हैं और कई एक कुर्व हुए क्रिसेस्ट्रीत अपने होतीने बीचने तमे हुए क्षेत्र हो है। की महिन्देने बहुत-में नारके प्रवाह सामाजिक है समुक्ते हैं समुक्त केंग्रे हैं, केरे ही ने व्यक्तिकोंड और भी आपनेंड प्रव्यक्तित बुकोचे प्रवेश कर से हैं। वैसे फांग ओहबस यह होवेंके दिखे अन्यतिक अधिने अर्थेंड केन्स्ने क्षेत्रके कुर अर्थेक करते हैं, वैसे है वह तब लोग भी अपने मधारे लिये आओर पृथ्तीये अति केलो खेडरे हुए प्रकेश कर यो है। उत्तर उस सम्पूर्ण स्वेकोन्धे प्रभावित मुलोहार कार करते हुए एक ओरसे बाट रहे हैं। विकास । आपका का अवस्था अन्यूनी जगारको सेकोर प्रधा चरित्रों करके तथा रहा है। आहे सारवाले कि अप अवस्थान गाँउ है ? देवोंने केंद्र । आपको नवस्था से । उक्क अल्ल होन्छे। अतिपुक्त अल्पको मैं विशेषकपरी कारत प्रकृत है, क्लेकि में अवस्थि प्रवृत्तिको भूती व्यक्ता ॥ १५—३१ ॥

अभिगवन् संतं—में स्वेकोन्स धाम कार्यभासा साम हमा न्यानार है। इस समय इन संगोको जा करनेक दिने अपूर्व हुआ है। इसरियो को अभिग्रिकोन्सी संगापे विका को साम की साम देरे किया को नहीं रहेगे : असाइम स्व इस । यह आस कार और साइजोको जीतकर सन-कार्याने कार्या राज्यको भोग : वे साथ श्रूप्तीर प्रानेतिनो को ही हाव को हुए हैं। सर्वास्त्रिक्ष । यू से केसार निवित्तपाल कर या : बोक्सकार्य और जीकारितायक नका समस्य और कार्य नका और भी कहर-के संग्राम करे हुए सुरुर्वार को हाओं-को मू सार । अस मार कर । निःस्टिह मू सुदुर्वी वैदिनोको बीतेगा । इंगलिये युद्ध कर ॥ ३२—३४ ॥

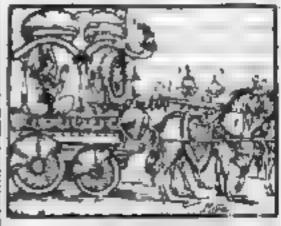
्रत्यस्य कोले—केश्वर्यक्षश्यान्तिः इस स्थानको सुन्तार मुक्तरमार्थे अर्थुन इस स्वेदकर कोल्या हुता नवस्था करके. सिर भी आवश्य क्षयपीत होकर प्रयास करके करवान् श्रीकृष्णके प्रति प्रदूषद् वार्णको केल्यः ॥ ३५ ॥

अपूर्वर केले—अस्तर्वाधित् । यह केन्य ही है कि असके भाग, गुल और प्रधानके कोलंको यह करना अति इसिंह हो का है और अनुसनको भी जात हो का है। तथा मनधीत रामक्त्रपेप विभावति चान रहे है और राम विद्युपन्तिक समुद्राण रचनावर कर रहे हैं। व्यानकर् अंकालेंड की आदिवार्ता और सबसे बच्चे आओ. रिप्ने से कैसे नगरदार न करें। क्योंकि है अनना । है हेरेक । हे जनस्विका ! जो सन् असर, और उससे परे सकिएनपहरून प्रदा है, यह जान ही है। आप आदिकेत और समाप्तर मुख्य हैं, आप इस सम्बन्ध पान जालय और आज्नेकले तथा जानने योग्य और परण पान है। अंगलका ! आको यह सब करण जास है। जान केंगू, क्याक, अति, क्या, क्या, प्रकार स्थाने ह्या और ब्राह्मके की दिला है। अलकोट रिप्ते हमाने कर करावार है व्यवस्थार हो । आकोर रिको दिल भी बार-कार ज़रास्थार है नामकार () है अन्या सामकाकार ! आयो हैंसो अंकोरी और पीक्षेत्रे भी नमस्तान । सर्वाध्यत् । आवन्ते विन्ते प्रक औरमें ही क्यानार हो: क्योंकि अरूप परावस्ताली सार्थ हाक कंपाराको काह किये हुए हैं, इसमें जान ही सर्वापन हैं। आरके इस प्रधानको न जन्मे इस्, आप मेरे सदय 🖫 हेला भागकर प्रेमके अथवा प्रमाहरों की मैंने 'कृत्य !' 'पावच ! 'रामें 🕽 इस क्यार से कुछ इक्ट्रॉन कह है और अन्यूत 🛭 साम जो मेरिकरा विजेको विको निक्रम, प्रत्या, आराम और भोजन्तरिये अभेजे अधार का सर्वारोंके सामने भी अवकारित किये गये है—वह एक अवकार अधिका प्रश्नाकवारे अस्तरे में क्रथ कार्यना है। आर पूर्व करावर भागतुके विका और समारे को गुढ़ एवं जरि प्यन्येव हैं। हे अनुसम् इपावकाले । तीनों सोकॉमें आयके समान की दूसरा कोई नहीं है, किर अधिक से कैसे हो सकता है। अध्यक्ष मुखे ! में प्रशिष्टो भलीभाँति चरकोमें निवेदित कर, प्रकार करके, छाउँ करने केना अस्य ईवरको अस्य होनेके किने प्रार्थन करता है। के ! विश की पुत्रके, सन्दा की सन्दाके और प्रति मेरे दिमरूपा प्रतिके अपराम सान करते हैं. केरे

है जाय की केर जाराजाको सहन करने योक है। मैं पहले ने देखे हुए आवके इस जाराजांकर कारको ऐकारत इतित हो का हूँ और मेरा पन कारके जाति काबुक्त की हो रहा है; इसॉरिके शांध जस अवने कानुर्मुल कियानायको हो मुझे दिसरमान्ये। है देखेल ! हे जनसिकास ! जसत क्षेत्रचे। मैं बैसे ही आवको मुक्ट कारक किये हुए तका नहां और कार हाजमें दिन्ने हुए हैकार कारको है। इसॉरिके हे विकासका ! है सहस्रकाहो ! असर जाते कार्युल कारको सकद होड़ने !! हे स—४६ !!

वीक्कार् वेले—अर्जुन । अनुस्कृतंक मेर अपनी केल्क्षाके प्रकार का परा परम नेतायम, स्थाप आहि और सीमार्गक विच्छ, कर हुक्को दिसासमा है, किसे मेरे अविशेष कृतो किसीने प्रकृत पत्री वेका था। अर्जुन ! स्थापनके का प्रकार विश्वपन्तासम् में न तेव और महोते अव्यक्ति, म क्यां, म विकानके और ए का सरोसे हैं सेरे अविशेष कृतिके क्यां देशा या समझ है। मेरे इस स्थापके इस विकारत करवार वेकार सुकार मानुस्ता नहीं हैती व्यक्ति और कृत्वास में नहीं होता महिले । सु स्थापित और वीविश्व करवाल जरी मेरे इस स्थापनका-पदा-स्थापुत्र कर्जुन करवाल जरी मेरे इस स्थापनका-पदा-स्थापुत्र

लक्ष्य केले—बासुदेव चारवात्वे अर्थुओः अति इस अवसर क्ष्मका किन केले ही असने क्यूपुंत कारको विकासका और



किर महत्त्व क्षेत्रुकाने सीम्बयूर्ति क्षेत्रर इस प्रययीत अर्जनको बीएर विकास १५० स

अर्थुत कंतं—कर्कार ! आवके इस अति हान प्रमुख्यान्यको देशका अस मैं निकार्कित हो गण है और अपनी कार्यानिक मैक्सिको अस हो गण है॥ ५१॥

अंकारका कंग-चंता को चतुर्पुत्र कार तुकने देखा है.

इसके दुर्पन को है कुर्पन है। रेमक भी बाह इस सनके | क्या प्रतेष करनेके विने—स्वीधानो अनु होनेके दिने भी बेस्त है, इस इकार क्यूक्ट क्याबाद है न बेहेसे, न रुपमे, न क्षमो और न च्छाने ही देखा का सबका है। वर्ष् परेतर अर्थन ! जनम चरित्रके हारा इस प्रकार चतुर्वन कृतकारण में प्रत्यक्ष देवानेके दियो, राजके सामनेके हैं ले

वर्शनको सामाञ्चन करते जाते हैं। किस समान तुमने पुत्रको | काम है। अर्जुन है जो पुरान केवल मेरे ही शेलो अस्पूर्ण वर्तकारणेको कानेनासः है, की भाषन है, येग ध्या है, कार्यक्रमीत है और समूर्ण मुस्त्रियोंने वैरमायसे र्वात है—बहु सरम-पश्चिमक पत्न पहाची है जा। केल है हा पर -- प्रमुख

#### श्रीमद्भगवद्गीता—चक्तियोग

शर्जन मोर्च-को अनस्य प्रेमी भवस्थ पूर्वीय प्रकारते निरम्पर आयोह भवान-स्थानमें अने संस्था जाय अनुसारम मरमेक्सको और इसरे को केमान अधिनाती सरिकानकान निरामार अपन्ये ही असि बेड्र मान्यो मान्ये हैं, उन देखे प्रकारके प्रकारकोचे आहे। जान चेनकेच चीन हैं ? हा १ हा

शीरतमान् योगे---युक्तने करको स्थाप सन्तेः निरम्पः नेत कार-व्यक्ती तर्ने हुए की बातका अतिहास केंद्र अञ्चली कुछ होकर बुह समुज्यान गर्माकुरको भारते 🕻 वे बुहको कोरिन्दोंने असि जान कोरी भाग है। वर्ष्ट्र जो युवर इन्हिकेंड्र राष्ट्रायको भागी प्रकार सक्तमे करके यन-कृतिहरे को, हर्तनारी, अवस्थितवया और एक इकार क्रिकेस्ट, नित्त, अपान, निरामार, अविकास, अधिकारका सकते निरमार एकोपायमें काल करते हुए करते हैं, वे सन्पूर्त चुनोके दिनमें रत और समने समानभावनाने मोनी जुलको है जार होने हैं। का प्रतिकारणाना निरामार कहाने आस्ता रिनामाने पुरानीमें सामानों केन निकेश है: क्योंकि द्विप्रधानियोके प्रच अञ्चलकियक गति दशक्षेट उदा की जाती है। परंतु को बेरे बरायण स्क्रोबाले अस्तवन सम्बन्ध क्षेत्रीको मुक्तवे अर्थन कार्यः कुत्र सनुसरका वरनेक्सको 🖟 शक्य प्रतिकोगमे निरमा विकास करते हुए अपने हैं: अर्थुन ! उन पुराये किया कमानेकारे प्रेमी पन्योक्य में प्रीक ही पुरस्कार संसारसम्बद्धते उद्धार करनेकारच क्रेशा है। सुक्रवे भनको लगा और महामें ही सुद्धिको लग्द: इसके अराज्य क मुत्रमें ही निकास करेगा, इसमें कुछ भी संद्रम नहीं है। नही र पनको नुक्रमें अचल स्थापन करनेके लिये समर्थ नहीं है से अर्जन ! अच्चालका चेनके द्वार चुक्को अन्न हेनके हैन्ये इच्छा कर। यदि व् उपर्यक्त अन्यासये भी असमर्थ है से केवल मेरे हिन्ने कर्म करनेके हैं। बरायण हो जा। इस इक्टर में निवित्त कर्मोंको करता हुआ भी मेरी प्राहितक सिर्देशको ही जप्त होगा : यदि मेरी अझरका बोगके सामित होकर उपर्युक्त रतकाको करनेमें भी व असमर्थ है तो या कृद्ध आदिपर विकास जास कानेकारम होकार सुध कन्मेंके प्रतासन



स्थान बार । कर्मको न जानकर किसे हुए अन्याससे ज्ञान सेह है, प्राप्त पुत्र वाकेश्वा व्यान्त्रका भाग होते हैं और ध्यानते थी कर बर्जीक परस्का जाना होत्र 🖫 क्योंकि त्याको नकार है परंभ शामि होती है स १--१२॥

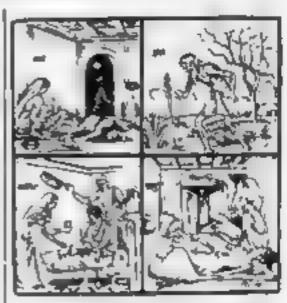
से कुछ सब कृति हैक्सको रहेत, सार्थरीत, सब्बा केमी और हेत्रपीत रूपम् है तथा मचलाहे पहित अहंब्यरहे तीता. शाम-२: कोची प्राहित्ये तथा और अपायता — अवसाय करनेकानेको के अक्त देनेवाल है; तथा के योगी मिरशर संद्र्या है, बन-इरिक्रोसबील प्रारीतको सक्तमे प्रिल्ने हुए है और पुराने कु निकासारम है, यह मुख्ये अरोग सिन्हें हुए का-मुद्रिकास केए यक चुहारते क्षित्र है। जिससे कोई भी केंग्र संगको नहीं प्राप्त होता और जो सर्व भी किसी बीचसे बोगमो भी उस हेरत: एक में हर्ग, अवर्थ, धन और ब्हेगर्राक्ते रहित है, जा एक मुक्तको क्रिय है। के पुरस अवस्थान रहेत, वक्ष-धीतारो सुद्ध, बहुर, पहारतसे र्नेक और दुःस्केरे बुट्ट हुमा है, बहु तक बारम्पीका तागी

मेरा चक गुलबो दिन है। यो न कामी इस्ति होतर है न हेर करता है, न खेक बनता है, न कामन करता है तक मो कुछ और अञ्चय समूर्ण कर्मोका स्वयों है, वह श्रीक्षणूक पूका गुलबो दिन है। यो कह-फिलो और नाम-कामनो सन है तक स्वयों, मरबी और सुक-दु:कार्ड हुनोने सम है और अस्तिको रहित है, यो निक-सुनिको करान सम्बानेकार.

यनमहोतः और विश्व किनये व्यवस्ते भी करीरकः विवर्धः क्षेत्रवे सक् के संसूष्ट है और चानेक स्वानमें मनता और आवक्तिके प्रीत है, का विवादिक चरित्रमान् पुरुष पुरुष्के किन्द है। गर्वत् को क्षानुष्का पूज्य भेरे स्थापक होकार इस कार को हुए वर्षत्रव सन्तरको विवादम प्रेमणानसे सेमण कारते हैं, के बात मुक्तको अस्तिका क्षित्र है। ११—२०॥

#### श्रीमद्भगवद्गीता—क्षेत्र-क्षेत्रप्रविधागयोग

श्रीपनवन् कोरों—अर्जुन ! म्ब करीर 'केव' इस मानके बाह्य बारत है: और इसकों को बारवत है, असकों 'केवह' इस पायरे करके एकसे अपनेकले प्रतीका बढ़ते हैं। अर्थन । ह राज क्षेत्रोंने केवा-जिलान की कुछे ही मान और क्षेत्र-क्षेत्रकार-विकासमीय अवस्थित और पुरस्का के राजने मानना है, जा प्रान है—ऐसा येरा का है। जा क्षेत्र की aft fint å eur fan fagrifund å allt fine untrolt भो हुआ है तथा पढ़ होदर भी को और किस उपलब्धन तन्त्र अधियोद्धार पहल प्रकारने पहल गया है और विकिन वेट-मनोतार भी विभागवर्गक सह गरा है कर अलीवर्गित विश्वय किमें हुए मुस्लिपुरू सहायुक्ती क्योहरा भी बाहा करा है। याँच महापूर, अवंबार, सुदि, और पूर सक्ती भी; बना क्स इंग्लिमी, एक मन और पाँच इंग्लिमोंके विकास—इक्स, इस्सी, क्रम, एस और राज्य तथा क्रमा, हैन, सुन्त, क्रमा, स्वार केकर विन्ता, केवन और वृति—इस प्रकार विकारोके सहित यह क्षेत्र राजेपमें बढ़ा गया । बेह्नाके अधियानका अधाय, क्रमानरमकः अमान, मिली में अलीको किसी उच्छर भी म सत्त्रम, श्रूपाधात, का-धानी आदिवी सरस्ता, ब्रह्म-गुरुवा सेक कार-बीतरको छुटि **परिकारित** क्रमा:करमधी विवरता और कर-इन्डिमोलील प्राप्तिक निया, इस लोक और परलेक्ष्मे सन्दर्भ भोनोंने अलाविकार अपन और आंबारका यो अयक; क्या, गुल, करा और देन आदिने कुल-क्षेत्रीका बार-बार विवास कानाः कुर, बी., बर और यन आदिने आस्तिका अक्टन, क्लाका न क्रेक तमा क्षित्र और अक्षियको प्राहित्ये एक ही किलको एक सुन्त, मुख्य माधेश्वरचे अञ्चय कोमके प्राप्त अवस्थितारीयो स्थित नव्य एकान और सुद्ध देवने सनेका सन्त्रक और विकासक समुखाँक समुद्रावये द्वेतका न होता. अध्यानकानमें नित्र स्थित और प्रमानके प्रार्थक पाक्रवाको ही देखना—यह यह इस है और जो इससे



मिनरीत है, यह अद्भाग है—देखा बाहा है। को याननेपोध्य है तथा विकास विकास विकास परवास्त्रको प्राप्त होता है, करको जानेपानि करेगा। यह कादिरहित परम हक्क न सत् ही कहा जाता है, न असन् ही : वह सब और हाक-पैरवाला, क्रम और नेता, विरा और मुक्तमारण और क्रम और प्रतन्तारण है; क्वोंकि का प्रस्तानें सकतो काप्त करके विका 🛊 📲 राज्यां इत्यानेके विकालेको जाननेवास्य है, पांतु जासकारे सम इन्डिमोने रहित है तथा आसस्तितहित और निर्मण होनेपर ची अंथवी चेन्यवासी सकता बारस-चेका कानेवास और जुलोंको योगनेकार है। या करावर सक यूलोंके बाहर-सीतर जॉरपूर्व है और बर-अबरस्य की बड़ी है। और बह सुध्य होनेसे अधिकेष है क्या अति समीयने और दाये भी विका को है। और यह विश्वन्यक्ति स्थानको आकाशके सद्ध र्जनको क्षेत्रेस की करकर सम्पूर्ण क्रोमें विकार-सा स्थित अनेन होता है। यह कारनेकेक परमतक विकासको धूर्वेको वारम-पंचम कानेकात और ध्यूनपरे संपूर्व कानेकात

क्या बहुतकारी प्रकार अस्ता करनेवाल है। यह हा। न्योतियोक्त भी न्योति इसं पान्यमे अस्तर्भ को कहा बाता है। मा परपाल जोकराया, जारके केन को सम्बद्धको छन्। करनेकेन्य 🛊 और प्रमाने सुरात्में विशेषकाओं विका 🛊 । प्रश अधार क्षेत्र तथा प्राप्त और व्यापनेपोन्य परणालका सामा इंग्रेनरे बहु गया। नेत पद्म इसको कालो कालार मेरे स्वयम्बर्धे अञ्च होता 🕯 ॥ १—१८ ॥

अवनी और पुरुष, इन बोनोब्डो हो यू अन्तरि जान और राज-देशहि विकारीको तथा विपुरतालक स्वयूनी पहालीको वी प्रकृतिको हो अवस्य साल । सार्च और स्वरालकी अवस्थि हैत प्रकृति कही जानी है और जीवनक सुस-दु-सोवेड जोननेने हेतू कार कार है। अपूर्णने किस है दूस्त अपूर्णने कार हिन्द्रास्त्रक प्रमुखेंको चोज्ज्य है और इस मुख्येका सङ्घ है इस चीपात्राके अची-वृत्ते चीनवॉर्वे क्य केनेका करण है - क पुराम हार देखी किया होनेवर भी पर ही है । बेक्स सबसी होनेसे क्षेत्रका और क्यानी सम्बंधि हैनेवाला होनेले अनुकार, क्रमकी श्वरण-योगम करनेवास्त होनेसे कर्त, र्शनकाले घोटा , आह आदिना भी भागी होनेने महेन्द्र और शुद्ध स्वीह्यान्त्रका श्चेत्रेने परम्यका—ऐसा कहा गया है । इस प्रकार गुरूको और गुजोके सहित अपूर्णकों जो अनुक सरको आजा है, यह १०४ अवस्था वर्ताकार्य कारण प्रभा की दिल नहीं जन्मल । उस परमारको विको हे बहुक से सुद्ध हुई सूक्त सुद्धिते अपनेट ह्या इत्यमें देवले हैं; अन्य क्रिक्ने हे इक्क्नेनके हुए और कृतने किलने ही कर्मयोजके क्राप्त बेरको हैं। यहंबू क्राप्ती कुले कर्म इस समार न जानते हुन् दूसरोही सुनक्त ही अलुलार अवसम कारते हैं और वे व्यवस्थातका पूका की मृत्यूका संस्था-सागरको निःसंदेह तर वहते हैं। अर्जून ! जिसने की स्कापर-पहुम प्राणी रूपन क्षेत्रे हैं, का स्थान है के और बीवाले श्रेनोगरो ही करना जान र को पुस्त नह होते हुए तम नगका मूनोनें परनेवरको नाजातील और सम्बन्धको विका देखक है, बड़ी नकार्थ देशता है; क्वॉकि का पुरूत सकते समामको विका परमेक्टरको समान देखना हुआ अपने द्वार अपनेक्टो न्छ

नहीं करता, इससे यह परंच परिच्छे आहे होता है और को प्रत सन्दर्भ कर्जेको सम्प्राचनस्य प्रकृतिके द्वारा हो किने परते हर् देशक है और अन्यको अकर्ता देशक है, बढ़ी बचार्च देशक ै। किन क्षम का पूरम क्षमेंके प्रश्नाद-प्रशन्द कारको एक परमानाने हो निवार तथा कर परमानाने ही समूर्ण पुलीका विकार देशक है, जरी हुए। को सहिद्युरूपूकर सहको जाए हो जाता है। अर्थन । अन्यदि होनेले और निर्मूण होनेले जह अधिकाती प्रकारक करीरमें स्थित क्षेत्रपर भी प्रमत्यमें न क्षे कुछ करता है और ने विद्या है होता है। विद्या प्रदेश सर्वत न्यात् अन्यात् सूत्रम क्षेत्रेके बातल क्षित् नहीं होता, केरे हैं। केले राजेर विका सामा निर्मुण होनेके पाराण केके सुरहेरी रियह नहीं होता । अर्थुन । जिस्स ज्यार एक ही सूर्य इस सम्पूर्ण कारण प्रकार करते हैं, उसे प्रकार एक से अन्त



सम्पूर्ण क्षेत्रको प्रकारिक करण है। इस प्रकार क्षेत्र और केवाके केवारे तक कार्यसांका प्रकारिके अध्यक्तो से कुल हान-नेतीहर शबंधे नानो है, से पहारतक परप हता परमान्यको प्राप्त होते है ॥ १९—३४ ॥

#### श्रीयद्भगवद्गीता--गुणत्रयविभागयोग

बै किर काईगा, जिल्लाहे बहुन्यार एक पुनिवार इस संस्तारसे मुक्त होका काम सिव्हिको अस्त हो को है। इस उनको अस्ताय करने मेरे राज्यको जात हुए पूजा सृक्षिक स्थापिक पुनः अल्या नहीं होने और प्रत्यक्तात्वरें की कामहत्व नहीं होते ।

सीमरकार् केले—आनोमे की असे साम का पान अनको | अर्जून | पेरी पहलूकारण प्रकृति —अकार्यन पान सम्पूर्ण पुरोको थेनि है और मैं का चेनिमें केतनसमूहायकम गर्मको कारण करता है। इस यह-चेत्रणंड संबंधारे सब पूर्वीकी अवनि होती है र आर्थन ! जन्म प्रकारको एक केनिकोर्ने जिल्ले जनैरकरी जाकी जनक होने हैं, अध्यासक माधा से इन सकते.

नर्ग बारण करनेवार्थ मान्य है और में बीजको प्रकार करने- । जावार्थको जात् होते हैं । विस्त सरक हता सीनी गुजीके बारण विसा है ॥ १—४ ॥

अर्जुन । क्रम्युम्य, रक्षेपुरू और क्रमेपुरू—मे प्रवृतिहे रायक सीनों गुरू आविन्यको गरिकानको स्ट्रांस्थे क्रीको है । है नियास ! उन तीनों भुजोंने इंतरपूर के निर्मात हेनेके खुलात प्रकास कानेवारम और विकास्तील है, यह सुपन्ने कानावहे भीर प्राप्तके अधिमानसे चर्चना है। अर्थन । चन्त्रक रमेनुकारे वापना और असर्वाचे स्थान वारत का प्रा चीनामानो समंदि और उन्हें बरलें सम्बन्धे बॉन्स 🛊 और अर्थुन । यह देशरिज्यानियोग्धे योग्रेश सार्थकारे क्षिपुरुष्ये अध्यक्षे अस्य कर । यह इस संस्थानकं men, armen afte flugde gert uftere filt gegie ! क्रमनुष्य सुरक्षे समाना है और स्थोनून कर्मने एक क्योनुक से अन्यते कावार प्रकारों भी स्थापन है। अर्थुन ! क्योपून और समेनुकाले कुलकर अध्यक्ता, सम्बद्धा और क्रमेनुस्त्यो क्रमका स्थेनुम, क्री 🛊 स्थानुस और क्लेन्ट्रकारो क्राम्बर करोगुक विश्वत क्रेस है : विश्व सम्बद्ध हुआ बेहरी क्या अन्यान्यस्य और प्रतिकारी केलक और विकास के जान होती है, यह साम देख सामा क्षेत्रे कि सम्बद्धा कहा है। अर्थुत । क्योनुस्तांत व्यवेतर स्रोतः म्बर्ता, सब अकारों कार्रीक स्वाम्यकारों अवस्थ, अपार्तन और विभागनेगोधी एक्स्स्य-ने प्रम प्रयुक्त होने है। अर्जुर । समेत्रुकों क्योकर क्रायत्कार और प्रश्निकी मामाना, वर्गमा-कर्मनि अवन्ति और प्रमान क्या निहाने, व्यापनायको योजिनी पुनिर्या -- ने सब ही उपना होते हैं। र्वत का जीवनमा सक्तपुरुको भृतिको सम्बद्धे आह होता है. शक को ज्ञान कार्र वारनेवारकोई विर्वत क्षेत्रक क्रानीह क्षेत्रकेको जार होता है। कोनुक्के बहरेनर कृतुको जार क्षेत्रर मनुष्य कार्योक आस्त्रीकारते कर्नुवर्तने सरक होता है तका वक्षेत्रभेक्षे क्वेपर कर हुआ कुछ कीर, कह उन्हें मुख्येरिनोचे जन्म होना है। सामिक वर्णका क्रे सारिका-सूच, ज्ञान और बेरान्यांदे निर्मात वाल काह है; रायत अर्थका पान कृत्य को सामा सुर्वक कर जाता महा है। स्तरपुर्वा प्राप प्रत्य प्रेस है और उक्रेम्स्स्ते निक्रमेंद्र अरेज लगा सचीपुराने प्रस्कद और मीन उत्पन्न होते हैं मीर अज्ञान भी हेता है। सरवजुराने देवत पुरुष क्रमादि ३० स्वेक्टेंको जाते 🖟 स्वोगुक्टो प्रिका राजस कुछ मकार्ये—मनुबालोकाने हैं सुते हैं और अनेपुकारे कार्यका निय, प्रमान और आस्त्रमादियें विका समाप्त पुरुष अभोगतिको-चौर, पद् सादि नेच चेनिकोचे एका

नामाधिक जाए होते हैं। विस्त काथ हाई तीनी गुजीके अधिरिक काथ किसीको काई नहीं देखात और सेनी गुजीके अस्ता को स्विक्तानकात्रकात्र गुजा प्रशासको सबसे कारण है आ काथ का मेरे स्वकारको प्राप्त होता है। यह पूर्व स्थानकारिको कार्यको कारणका हर सैनी गुजीको सन्दान करके काथ, पृत्यु प्रकारका और सब प्रकारके दुरसोने गुक होकर सन्तानको आह होता है। ६ — २० ॥

नर्जुर कोरो--कर दीनी जुनोसे आणि पुत्रम किन-किन राक्षणोरे पुत्र क्षेत्रा है और विस्त जनसम्बे आगरणीयास क्षेत्रा है क्षम प्रची ! चनुन्य किस करवाते कुन सीनी गुजोसे कार्यन क्षेत्रा है ? स २९ स

श्रीकारणप् कोर्न-कार्युत् । यो पूरण सारश्युतको कार्यक्रम प्रमानको अस्त स्वोत्युतको सार्यक्रम अस्तिको ४००



वणेतुमको कार्यक्य घोषको भी व तो उत्तर होनेवर सुध सम्बद्धता है और व निवृत्त होनेवर अस्त्री आकाञ्चा करता है; वो स्वार्यके स्वृत्त निवत हुआ पूर्णके हुआ विवारित नहीं किया का सम्बद्धा और पूर्ण है गुरुवेचे वसती है—ऐसा सम्बद्धात हुआ को स्वविद्यानकार प्रभारताचे एवडिमावर्स किया पाता है एवं उस स्वितिसे कभी विवारित नहीं होता; और को निरुवर अवस्थाताचे सिवत, पुन्त-सुकाको सम्बद्ध सम्बद्धानेकाल, निवृत, पात्रर और कार्यन्ट समान प्राथकारत,

[ 939 ] सं० मा ( सम्बद्ध — मृद्ध ) २१

निया-जातिये भी समान प्राथमात्रा के यो पान और अपराज्यों सब है इसे दिन और वैदिक्त पहले भी सन है. इत्यूर्ण आरम्बोचे कर्नावरके अधिकारने चीत का पूर्व गुजानीय कहा जाना है और थे पूरू अव्यक्तिकारी

प्राची, क्षेत्र तथा अक्षेत्रको एक-रत सम्मोकाल और अन्त्री ! वर्गक्रोतको ह्या सुक्रको मिरपार प्रवस्त है, वह इन सैमी मुनोको पहिंचीत स्थीनकर स्थितकरका अपनी प्रश होनेके देनों केना कर कहा है: क्लेकि का अभिनाती पर्यापाल और अपूर्वत क्या नैस्त्रवर्गक और अपूर्ण WEST AFFECT ARMS \$ \$ 11 20-70 H

# श्रीमञ्जनबद्गीता—पुरुवोत्तमयोग

इन्होंक्षेप पूर्व प्राक्तको विस संवातन पीयको प्राक्ते अधिनाती बढ़ते हैं तथा के बिलके वर्ष कई गये है—का पंतारका क्षम्ये के एक कुमाईत उनके नत्त्व है, क बेहते राज्योंको बार्यकार है। जा समारकारी सेवी गुजोका करके हुए को हूं को निवननेपका uftreifund im, neut allt ftrüm andt ubferm कारतार्थं गीने और अवर सर्वत पैजने हुई है तक ज्यूकानेतिने क्रमंदिर अनुपार क्रांचनेवाली अक्रम, नवाव और कारण्यक यहें भी नीचे और कार सभी खेळांने स्थाप के की है। इस statement were due une f. due une ferminisch भरी पना पाता: क्योंकि व से प्रत्या आहे हैं. य अप है एका य जलको जल्बी अन्यत्ये निवनि औ है। इसरियों इस अहंता, बच्चा और वासवाच्या अति का क्योंकारे संस्तराज्य प्रीतरको पृक्षको हुई वैरायकम प्रशासन कमानर, उनके पक्षात का परव पहला परनेपरको कार्रवाहि कोचना बाहिले, जिसमें नवे हुए कुछ दिल जीवकर सेवारने नहीं आहे: और विक परमेवरको इस प्रतान संगारकक्की ज्यानि विकासको उद्धा हो है, उसी आविकाम करानमाहे में उसक É—इस प्रचार का निक्रम करके का मानेकाका मान और निविध्यासम् काना व्यक्ति । विश्वका मार और केंद्र ना है मना है, जिल्होंने असमीतम्ब ब्रेक्को बीत किया है, फिल्की पाणकाके, अवस्थे दिल विश्वति है और विन्यति करणकी फूर्नक्षमध्ये व्या हो नहीं है—ये हक-दश्च क्याब हाईसे विकार जानीकर का अविनाधी कार बताबे प्रता क्षेत्रे हैं। निया परम परको प्राप्त क्षेत्रक पर्यक्त सीराकर संस्तरणे नहीं क्षाते--- उस कर्पकारण पास कालो न पर्ना प्रकारिक सर समता है, न प्रचल और न अहर है; को केन परव साम है।। १—३ ह

इस देवने यह जीवाला नेता है सन्तरान शंक है और बड़ी हर हिल्लामधी पानाने विशेष पर और पाँची प्रतिकोधी जाकर्गण करता है। क्या गमके कामसे मकको देने काम

श्रीपणकर् केले—आहितुस्य परकेवरस्य गुल्याके और [ यहके से माम है, केरे ही ब्रेडिका साथी बीयाना भी निय करेरको साम करता है उससे इन नगरकित इन्हिकेको अक्टर कार्क दिए किस प्रतिको उत्तर क्षेत्र है आमें पता है। पर मोचाना होत. पह और स्थानने एक स्टान, हाना और प्रस्के 2004 करके विकासि सेवन करता है। सरीरको क्रीक्कर जाने कुरुको अकाम सरीवर्गे विभा हरूको और विकास केला इसमें सकत सेनी पुलीसे पुरा हरूकी ची आवर्गातम नहीं चानों, केवल हानाय नेतीनावे प्रात्मिक के करको करकी है। यह करवेशको कैर्नाकर भी अपने बहुतने निका हुए आलाओ राज्यों मानते हैं। तिव्य क्रियोरी अपने असा:अस्ताओ युद्ध पूर्व विका है, ऐसे अक्रमेका से का बाते करेगा में का जाताको की कारों n क-- ११ n

कुर्वेदे विका को केन सन्दर्भ बनाइको समाहित पास्ता 🛊 कता को तेन क्याकों है और वो अधिने हैं, जनके यू नेप ही नेव पार । मैं ही पार्कने उत्तेव करके अपनी प्रतिनो सब कृतेको सारा कारा है और स्वाकास-अव्यक्त करूप होबार सन्दर्भ सोचवित्योको —क्यानीत्योको एक करता है। में के का प्राणिकोंके प्रार्थिनों निवा प्राणेकार प्राण और अपनारे एंक्ट केंब्रामर अधिकार क्रेक्ट कर प्रधारके अवको प्रयास है और में ही एक जानियोंके क्रांपर्व अन्तर्वार्थकाओं सिक्त है हमा गुरुते ही सुदि, जान और अचेकर केल है और एक चेटोक्स में ही नारनेके चेन्य हैं क्षा केव्यानक कर्या और नेव्येको जानोपाला भी में ही है। का संस्ताने जानान और अधिकारी थी, ये से प्रधानो क्षत 🛊 । इतमें कृष्यूर्ण कृष्यानिकोचे स्थीन से नासकार और जीवामा अधिनाती बाह्य जाता है। इन क्षेत्रीसे उत्तम संस्था हो अन्य ही है, जो रीजी खंडारेंने उसेव करके सम्बद कारत-केवल करता है इस अधिनाती परपेश्वर और वन्तान्त - इस प्रकार बढ़ा क्या है: क्योंक मै नाराकर नकार्ग बेडले से सर्वत अर्थक है और मानामें किस ऑक्स्को जेकरको यो स्टम है. इस्टिने स्टेक्ने और

मुक्त सब प्रकारते निरक्तर पुरा कार्युक्त करवेश्वरको है कारण | प्रकार और कुळाई है कारा है ॥ १२—२० ॥

केर्प भी कुल्वेसम् जनमे प्रसिद्ध है। स्वरत ! इस अधर | है। विकास अर्थुर ! इस प्रसार वह अति दासकुत गोपनीय राज्यते की क्रमी चुक्त सुक्रको पुरुषेत्रम कान्या है. वह इन्हें। क्रमा भेरे क्रम कहा करा, इसको समस्रे कान्यत प्रमुख

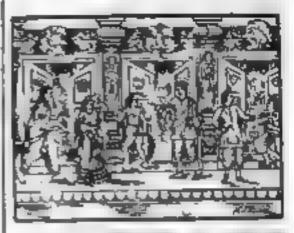
#### श्रीमञ्जगबद्गीता — देवासुरसम्पद्विभागयोग

पूर्व विर्वेशना, राज्यक्रान्थे क्षित्रे वक्षान्थेयमे विरुद्धः क्ष विवर्ति और सारिक्य क्षान, प्रतिक्रीका क्षान, प्रमुखन, क्षेत्रस और पुरवनोध्ये कुना एक आधिके आहे. एक क्लॉक शायरण कुर्व के:-कुर्बावक व्यान-स्थान क्या सम्बद्धकुरे कुन और गुजीबर बॉलंप, संधांपालको रिजे बहुबब्ध और सरीर तथा इक्सिके स्वीध अन्तःकरणकी सरावा, कर, मानी और प्राप्ति विभी जनत भी किसीको बहु न देन. मानवें और देश मानव, जनव अवकार कार्नेकारंगर के कोशका न होता, कर्मीने कर्लानके अधिकारका उत्तर, अल्लाकारकारी कार्रात, विक्रांच्यों को निकाल क सार्थ, ३०० क्रामिनोर्ने देशकि एक इतिकेस निक्तेक स्था सेनोग क्रेनेका जाने आवर्गकाता व क्रेस, स्टेम्बरस, श्रेस और वासने निवद् आकरणने क्या और वर्ज बेहाजीका श्रमान, तेप, क्षम, बेर्च, महामधी मुद्दि एवं विकास पर एक्स्प्रेयका व क्षेत्र और अवनेने पुरस्कों अधिकारका अवस्था—वे ५० से अर्थुर । देवी सामानको प्रश्न कुलके रायान है। यह । दूर्ण, क्लंब और अधिकार का ब्लेस. स्थान्ता और सहार भी-ने सब असूरी सम्बद्धा नेवार अवस पुर कुराने राज्य है। ऐसे सम्बद कुरिकेट हैंनो मीर आसरी सरक मोक्नेट रिजे करी नही है। प्रतिको अर्जुन ! तु होक पन कर; क्योंकि हु हैवी हत्यक्रको आप है ।। १—५ ह

अर्जुन । इस लोकमें समुख्यसमुख्य हो हो सकारका है, एक से देवी अपूर्णवासम् और दूसरा अवसूचे अक्रीस्थाता। क्रमेंसे हैवी प्रकृतिवास्त्र हो विकारपूर्वक बक्क नवा, क्रब सू आशुरी अपूर्णाकारे पर्यक्तानुस्था की विकासपूर्वक सुप्तते सुन। अप्रतुर-प्राथनकारे क्यूक अन्ति और निवृत्ति-क्य केंगोको ही नहीं जानते । इस्सीराने उसने न से स्वाप-नीतरहरू क्रिक है, न हेंद्र अवस्थ है और प स्तवस्थल है है। वे आएरी अक्रीनारे प्रमुख कहा करते हैं कि समा कारकारित, सर्वमा असरित और किया गुंबरके, अपने-२०० केमल ब्री-एउनके संयोगने उत्पन्न है. सरहण केमल चीनोंक रियो ही है। इसके रिस्ता और क्या है ? इस विकास अल्बाहें अवस्था करो-निरमा संदान रह है गया है हुआ कियारे मुद्रि पद है, ने समया अवकार करनेवारे सरकारी क्यूम केवल क्यूब्रेट न्यूब्रेट विके ही क्यूब्र होते हैं। वे क्यू कार और कहारे कुछ कडूक किसी जकार भी कुर्ज न होनेवासी वानकार्वका अक्षय रेका, अध्यानो विकार विद्यालीको प्राच्या कर और भूत अन्यारकोच्छे बहरण करके संस्तारने विकास है करा के कुनुवर्णना स्थोनाती आरोकर विकासीका आवाद रिनेकार, विकामोनीक योगरेचे कार सुनेकार और 'क्रम्प के अल्प है' कर जनार मान्येक्से होते हैं। मे अन्त्राची सैकाई परीक्षिते के हर प्रमुख प्रधा-हर्देशके पराच्या होतार निकाणीयोधे दिनो अध्यानपूर्वता प्राथमि प्यानीको संबद्ध करनेको बेहा करने रहते हैं। वे हरेबा करने 2 ffe 40 area we was not first & afte are per



क्केरकको प्रदान कर सूचा । की पास का करता कर है और किन भी मह हो मानना। यह तह मेरेक्टर मार बना और कर कारे प्रकुर्जाको की मैं कर क्राईक । मैं ईकर है, ऐक्किको भोगनेवास है। मैं सब सिद्धिकेरी युक्त है और करकार सक सती है। मैं बढ़ा करी और को कुटुम्माला है। मेरे सकर कुरत कीन है ? मैं का करोगा, कर ऐसा और आयोद-अयोद करीया . इस प्रकार अञ्चलके बोहित व्यत्याने एक अनेक प्रकारसे प्रवित्र विकासि, मेनुस्य बास्से सम्बद्ध और विश्वभौगोरी अस्त्रम् अस्त्रम् अस्तुरलेण महत् अर्थास नाकारे गिरो है। वे अपने-आवको है सेतु वानवेकते कर्यही पुरुष धन और मानके बदले पूरा होकर केवल नावकार्क पत्रोद्धरा पालपको सामाजिकिने पहिल करण करते है। है अवेकार, बरु, प्रमेद, बरमक और क्रोकारिके पराचन और इसरोब्री रिन्ह करनेवारे पूज्य काले और दूसरोके प्रार्थिन विकार महार अस्टबर्गानीको हेव आरवेकाले होने हैं। उन हेय करके बारे पारत्यारी और हास्कर्मी नरावर्गीको में संस्थाने सान-बार अस्तुरी पोनियोंने हे हालवा है। अर्थुन । पण-अपने आयुरी बोरियो प्राप्त में पूर मुख्यों न अंत क्षेत्रर, अली भी जारे नीय गरिश्ये ही प्राप्त होते हैं--बोर नरवाँने चहने हैं। करवा, स्रोध तक लोध--चे आध्यक्ष पता कार्यकले--आको अभोगारिये से पानेवाले मीन प्रमानके नरमके हार है । अनवन



इन बी-केको जानः देश व्यक्ति । अर्थुन । इन तीनी नर्यको इनोरे पूक पूर्ण अपने करणानकः आकार कामा है, इसी का पान्यतीको कामार अपनी इक्को पाना है। के पुरूष कामार्थिको स्थानकः अपनी इक्को पानामा आकार कामा है, जा न तिर्देशको अपने हेन्स है, न प्रथमतिको और न सुसको है । इससे के लिये इस पानंका और सक्कोकाकी स्थानको इस्ता है असामा है। ऐसा पानका सु सामार्थिको विका पाने है पानकोका है। ऐसा पानका सु सामार्थिको विका पाने है पानकेका है। १, — एन ।)

#### बीयक्गक्रपीता—बद्धक्रविधागयोग

अर्जुर कोर्र---कृत्या ? को ब्रह्मपूक्त पूरण प्रात्मनिर्विको स्थापकर देवादिका पूज्य करते हैं, उनकी निर्वाद किर कॉन्ड-सी है ? सारिकार है अथवा स्वतसी किया समसी ? स १ स

क्षेत्रपाल् भेले—ज्युकोकी का स्वतीय संस्कारेले स्वीत केवल जवानके उत्ता शर्ज सामिकी और समझै उत्ता



स्वार्ध — ऐसे दोनो प्रकारको है होती है। सरको हू सुनने
सून। जाक ! सभी नमुनोको बढ़ा अनो असाकारको
अनुकार होती है। यह पूर्ण सद्धारण है; इस्तीको जो पूर्ण वैश्वी
सद्धारण है, यह सम् भी वही है। स्वित्व पूर्ण देशीको
पूरते है, एउन्ह पूर्ण यह और प्रधानोको तथा अन्य जो
स्वार्ध स्थान है, वे देश और सून्यारोको पूर्ण है। वो प्रभूक सामानिको रहित केवल पर:व्यक्तिय कोर सम्बो स्थाने हैं स्था देश और अवंकारों पूर्ण हैं। को स्वीत्वयों स्थाने हैं सामों अधिनकारों की पूर्ण हैं, जो स्वीत्वयों किस पूर्णपुरुष्ण को और अस्ति करणों विश्व सून अस्तिकी भी कृष्ण वारोबाले हैं, उन अस्तिकोंको हू अस्तुर्ध स्थानकारों सान। भीनान को समयो अस्ति-अस्ति प्रकृतिके सन्दार होन प्रधानकों होते हैं। उनके इस पूर्णक-पूर्णक मेनको सुनानों सुन से १——॥। करते, सक्तानक और दुःशः, विस्ता एका रोगोको जनक करनेवाले अक्तर एकर पुरुवको दिन होते हैं। यो मोकर सक्तान, नार्यात, तुर्वकपुत, काली और अधिक है तथा तो अवस्थित भी है, या भोजन सामस पुरुवको दिन होता है। तो प्राथमितिको निका का करना है कर्तक है—इस प्रकार करना है वह स्वधिक है। यांचु अर्जुन । यो यह केन्सर क्यादारको निजे अक्ता प्रस्ता में हुमिर्ग रक्तार किया क्यादारको निजे अक्ता प्रस्ता में हुमिर्ग रक्तार किया क्यादारको निजे अक्ता प्रस्ता कर। प्रकाधिको हीन, अञ्चानको निजा क्रियो क्यादि क्या प्रकाश की क्यादा क्यादारको निजा क्यादा क्यादा प्रकाश का करते हैं। नेक्या, क्यादान, गृह और हार्यक्रियोग्य पुरुव, परिवास, सरस्ता,



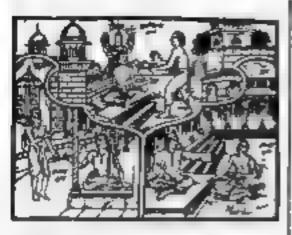
व्यापर्ध और अधिक — यह प्रतीकारणयो तथ थाइ सता है। को ओगायो न करनेवाला, दिन और दिलकारक एवं नकार्य कारण है हुआ को केल-बारकोक्ट करण दुर्ग परवेशको क्रम-क्रमा अध्यक्त है, यह पानीसमाधी का पंथा बात है। कर्मा प्रस्तात, कारायात, क्यानीका क्योका क्रमान, करूब निम्नु और अन्तःकारणी प्रवित्रता—इस इन्हर पह पनावामी तम बद्धा नाता है। करान्ये प बाहुनेकाले केची पुरुषेद्वारा परम बक्को किये हुए उस पुरुषे हीर प्रकारके समादे सहीवक कहते हैं। मो तथ भरवार, मान और पुजले रेंग्बे अवना केवल पासपारी ही किया जन है. 🗪 अभिविक्त को अधिक करणान का गई राजर बढ़ा कृत है। को तम कुशायुर्वक इठले, मन, काकी और इतीरकी विक्रके रहित अवक क्रानेक अन्ति करनेके लिये किया कारत है. 🖎 तम तामस बढ़ा बचा है : दान देना ही कार्तका ्रम्या च्याची को दान देखा, कारण और पासके का**र हो**नेपर क्रमान न करनेकालेके प्रति दिया जाता है, यह कर सारिकार कार एक है। जिल्ला के दार हेक्ट्रॉक तक अल्पकारके



काबु, सुदि, बाब, आरोप्प, सुक्त और प्रीतिको स्थानेकारे, रास्तुक, विकारे और तिर प्रानेकारे उस



स्थानको ही परको छिय—हेरो अक्तर सावितक पुरस्को छित होते हैं। स्थाने, वाहे, स्थानकुक, स्कूत नरम, सीसे.



प्रयोजनके अजबा प्रत्यको दृष्टिने रकावर किन विना ज्यात है. सह दनि प्रकार कहा गया है। यो दान विना प्रत्यको अवस्य विस्तामस्त्रकेत अयोग्य देश-वासको और कृष्यको प्रति दिख कावा है, यह दान राजस बद्धा गया है ॥ ८—२२ ॥

40, तर, सन्—ऐते व्या वीश प्रकारका समितन्त्रका

प्रकार का कहा है। संपेत्रे सहित्रे आहेकाराने प्रकार और बेद राजा कार्याद रचे पर्व । इस्तरिको बेद्यानवेका उत्पासन कानेक्से हेतु पुरस्केती प्राथितिको निकत का, कर और नकार क्रियार्थ अंद्र 'डी-' इस कार्याक्रके कार्या अक्रास करके हैं आरम्भ होती हैं। 'कर्' जमने को कारेंग्राने परमानक है के एक है-इस सामने करको न बाहरत क्षण प्रकारको प्रक्र-कर्मण क्रिमाई तथा सुनक्ष क्रिमाई कारणाची इकासारे पुरुषेद्वत की साती है। 'हार्' कह राज्यका का सम्बद्धां और बेहुकारों उद्योग किया नाता है तथा पार्च । उत्तय संपर्धि भी 'सत्' सम्बद्धा प्रस्तेत किया करता है। तथा पहल पर और सुनने को विकर्त है, बह भी 'पर्' इस प्रकार कही जाती है और इस परवहसाके दिन्हें विकास करते करते निर्माणकोचा 'सह'—हेन्से बाक पाना है। अर्थन । किया अञ्चले विकास हुआ एकप, दिया हुआ कुन एवं क्षक हुएक तथा और की कुछ की विकास हुआ कार्य है, यह प्रात्तात अगर - ज़र प्रधान बाह्य बाहद है, इसरियों बह न हो इस रवेको सामक्रमक है और म गरकेंद्र का है अ है) -- १८ ।।

# श्रीमद्भगक्दगीता—योक्षसंन्वासयोग

अर्जुत केले—हे न्यावको । हे अनावस्थितः । हे वस्तुवेतः । मैं संन्यासः और जानके सम्बद्धी पृथ्यक् नृक्षकः कारकः वाहतः है ॥ १ ॥

श्रीपानम् केले—फिल्मे हे परिद्वासम् हो कान्यकारोतिः लांगको संन्यास समझते हैं तथा कुछरे किया समुख्या पूरत हरत करोंके परको लागको उत्तर बढ़ते हैं। कई वृद्ध निकुद देख महो है कि करीता क्षेत्रक है, इक्टिके कार्यके केन है और क्रोरे निक्रम् का करते हैं कि का, क्रम और सकत कर्त स्थानेकेच नहीं है। पुरुष्केश सर्जुन । संजात और सान, इन क्षेत्रोंनेले पहले लागके निवचने वृ वेट निक्रम कुन्द क्योंकि जाग सर्वका, राज्य और स्थानकेले सीव प्रकारका कहा गया है। यह, देश और उनका वर्ग सान मारोके बोध्य नहीं है, बरिया यह से अवस्थानर्थना है; क्योंकि श्रमियान, प्रत्योक का, कर और क्य—वे क्षेत्रों के कर्म अन्तः करणको परिवा करनेकारो है । इसलिये धर्थ । इस का द्यार और तराव्य क्योंको तथा और भी स्टूर्ज क्यांक-कर्मोंको आहाति और पालेका तान करके अवस्य करना वासिये—यह येश निक्षण क्रिया हुव्य उत्तन यह है। निविद्ध और क्वान्यकार्योक्ता हो स्वक्रको लाग सरक जीवत हो है, परंद निका कर्मका एकपरी जान जीवा नहीं है। इस्तीरने चेक्के

कारण प्राथमी स्थान कर केन समय आग पहल गुरू है। को कुक कर्न है, ब्यू तक दु-करूप ही है—हेका संश्रासन नहीं कोर्य कारिनिक हेकके भागते कार्राव्यक्षकीया स्थान बार है, तो मा देश राज्या त्यान करते स्थानके बलको विदर्श प्रकार सी को करा। अर्थन ! यो प्राथमिक पर्न करना कर्तक **्रै—इसी प्राप्तों आहरिक और प्रत्यक्त त्यान प्रत्ये विका** कार है, को स्थित त्यान करा परा है। को प्रतुत्त अकुरात करेंने से हैर नहीं करना और कुकल करेंने जासका व्ये हेल. व्य पुन्न सम्बद्धाने पुन्न पुन्न संस्काहित, ज़रकार और स्थेत कानी है: क्योंमेंत प्रशिक्षाये किसी भी क्यूक्के हत क्यूकंत्रमे स्ट क्लॉको लाग देश प्रवय भूति है: प्रमाणि में कर्मकरका जाने हैं, बढ़े माने है—क बाह्य काल है। कार्यकालक स्थाप न कार्यकाले प्रमुखीके कर्मक में अका, बुध और फिल हुआ-ऐसे टीन जनगरका पान परनेके पहाल अवस्य होता है: जिल्ह कर्मकानक त्यार का हेनेकले पर्वाचेट कर्मीका कर किसी काराये भी भूरि होता ॥ १—१३॥

व्यानको । सन्पूर्ण क्षत्रवैद्यी निर्द्धको ने पाँच हेतु क्षत्रवैद्या अन्य करनेके निर्ण अवध कल्यानेकाले सांस्थाताकारी यहे नवे है, उनको पू जुक्तो वस्त्रीवर्धित जान । क्षत्रीको निर्द्धिये साविद्धान और कर्या तथा विद्या-निया प्रधानके करण एवं सन्द अकारको अन्तर-अलाग सेहाई और वेले ही चीवार्य हेता है। सनुष्य पन, कार्य और क्रांट्से आव्यानुद्धान अवका विपरीत मो पूछा भी कर्य करता है, आके से परेचे कारक है। पांचू ऐसा होनेस भी को मनुष्य अनुस्तृत्वि होनेके कारक क्षानिक होनेसे केवल—कुशुक्तक अवकारी कार्य सम्बद्धात है। यह परित्न बुद्धिकाल अवकारी कार्य की सम्बद्धात । जिस पुरुषके अन्तर-करको भी कर्या है हेला कार्य भी है तथा विकास मुद्धि सांसारिक पहलोंने और कर्योंने विपायकार-नहीं होती, यह पूजा हुए तथा संबंधीको क्षान्धर भी वास्त्रपर्य न से कारता है और न सबसे बेलक है। हाता, हान और संग—कह तीन अवकारको कर्य-नेत्रक है और कर्या, करण तथा विराय—कह तीन क्षानका कार्यका है। १९—९८ स

पुर्वाची संभ्या करनेवारे कार्यों क्रम और वर्ग प्रम कार्य भी गुजीके केलो सील-सीन प्रकारक को नवे हैं, प्रकार भी इ.सुक्तो भागेचीर सून। किस करते पर्य प्रमान-प्रमाद सम प्रतिमें एक अधिकारी परमान-प्रमादे विभागतीय सम्बन्धि विशे देखते हैं, जा अन्तरे से व पारिक्य कर और किए प्रत्ये क्या पर्या क्याने करेने विक्र-चित्र क्रायको गाव भवतिको आल-असल क्रायक है. क्षा अनुसारे हैं राजार जान और से क्षान कुछ कार्यका क्रांतियों की सम्पूर्णिक समूख अस्तरक है तथा को किया पुरित्यालय, तारिक्या अर्थने रहित और हरू है—या प्राप्त महार प्रकार है। यो पाने प्राथमिकि निवार निवार हुए। और सर्वाच्ये अभियासी सीव हो हवा कर र प्रक्रांको पुरस्कार जिल्हा राग-हेल्के किया एक हो, बहु सारीबाद स्था भाग है और जो कर्न कहा परिवारते पुरू होता है तक भोगोको प्राप्तनेकले पुरुषक्षा व अर्थकारपुर पुरुषका किया करा है, जा कर्न राजा करा पता है। से कर्न वरियान, क्रांने, हिस्स और सावधांको न विकासकर केवल अज्ञानमें आरम्प किया कहा है. का सुरात प्रकार करा है। को कर्मा जास्तिको सीता. असंबद्धको करून व कोल्प्लेकारक बैचें और उस्ताहरों क्या सता कार्यक्र हिस्सू केने और र क्रेनेंसे pri-जोकादि विकासेसे स्ट्रिन है, यह शारिकक कहा साथ है। में। बर्जा आस्तिमां यक, क्योंकि चलको ब्रह्मनेकाम और कोची है तब दूसरोको बहु देनेके अध्यक्तकार, अञ्चलकारी और वर्ष-संबंध कियायक है, यह राजस बाह्य नहा है। से कर्मा अलक, सिकामें दीन, प्रथंडी, भूगे और दूसरोकी जीविकाका नाम कर्नेशास्त्र तथा इंग्ले कानेशास्त्र, अस्तर्राहे

। और केर्पेक्षणे हैं, यह सामग्र पाइन सामा है। अन्याप ! अन्य व व्हेंब्रक और वृतिका भी मुख्येक अनुसार दीन प्रकारका थेद पेरंक्रम सम्पर्णतको विभागपर्यक प्रका कानेवाला सर । कर्त ! को कृति प्रवश्चिमाने और निवृत्तिम्बर्गको कर्तका और अवसंख्याते. एक और अवस्थाते तथा प्रचल और पीक्षाते क्यार्थ करती है का बहेद सारिवाही है। वार्थ ! बनक बिता ब्योंके प्रश्न को और अधर्मको एक पर्यान और क्यानिकाले को कार्या को जारता, का बुद्धि राजसी है। क्षर्यन ! जो तमोजुलते किये कई कुद्धि अधर्मको भी 'बहु कर्न हैं देखा पान केती है क्या इसी अबहार राज्य समूर्य पहलेंकि को निवारिक पान लेको है, बहु मुद्रित सामग्री है। यहले । विका अवस्थितारिको कारवासीको प्रत्य व्यवसेनके हुन। यह अन और इन्स्पेकी क्रिकारोको धनार करता है, ब्यू पुरि स्थितको है और कुलकुर अर्थुन । कुलको हकारवास पर्या निक वारणवारिको प्राय आरम्भ आस्त्रिको धर्म, कर्व और कानोंको करण किये राजा है, का कारणलीक राजाते हैं : कर्ष । कु वृद्धिकार गरुम किए धरावशिको प्रता हिए. 400. किया और क्षांको तथा क्षांकाओं भी नहीं क्षेत्रस क करकारीक करवारी है। भारतोष्ट्र है अब दीन प्रकारतेर क्रमधो भी १ मुक्ते एव । विश्व सुवार्ग सामक बहुमा प्रचन, काम और सेवाजिक अध्यक्ति रचन करता है और विकरी क्ष्मिके अन्यको साम हो बाता है—को देशा बात है, का प्रकार प्राप्ति विकास प्रकार प्रतीत होता है, पांतु परिवासने अन्तर्भ क्षत्र है। इस्तरेने यह परवासीयका बहिने जलको जला हेपेनास सुक्त सारित्य बाह्र पता है। के क्षा किया और प्रतियोक्ते रायोग्यो होता है, यह याने-योगातामं अपनो सम जीव हेरेवर यो वरिकारने क्रिके क्रम है: इसरियों मा सुन राजा कहा एक है। ये केन्स्सानमें १६० परिवापने की सत्तवाओ केवित करनेकार है. यह निया, आरम्ब और प्रशासनी क्या देश सुर समय बद्ध गया है। पूजीने क जानवर्षि अक्टा केल्प्रकोंने तक इनके लिख और कहाँ भी ऐसा कोई भी साम नहीं है, जो अनुस्थित अलग इस तीनों स्वाहेशे कीर से व रच-४० म

भंतर । आहण, श्रीम और वैत्योके तथा मुद्देके वर्त स्थानको जन्म गुज्देहरा सिमक सिन्ने गर्थ है। अन्य:कारणका निन्ने करण: इत्यानेका दूसर करना; वर्मकारको सिन्ने कह स्थान: सहा-चीताले सुद्ध सुना; कुरतेके अपराधिको क्षम करना; यन, इत्यान और स्थानको सम्भ रहना; के, जन्म, ईसर और पारतंक आदिने कहा रक्षम्। के-क्रकोकः अध्यय-अध्ययन करण और ह परमात्रको समापा अनुषय कर्य-ने उन-के स्व 🛊 इक्कान्ये स्थाननिया कर्ने हैं ( प्रत्योक्ता, तेन, वेर्न, क्यून्त और भूजमें न पागत, का देश और व्यक्तिपान-ने मान-के-सम हो इंडिक्के स्थापनिक कर्न है। केनी, गोरासन और सब-विकासका तम सम्बद्धर—ये संस्थे इसमाधिक कर्न है तक एक कर्मको सेक करन प्रत्य औ कार्याध्य धर्म है। अपने-अपने सामाध्या कर्मने सरवाताचे तथा हुआ अनुमा मानवातीसमा परव विशेषको प्राप्त हे बहुत है। अपने सामाजिक कारी तथा हुआ प्रमुख विस प्रकारके कर्न करके परत किन्द्रिको अन्त होना है. इस विभिन्ने हु सुन। विका परनेपारते सन्दर्भ सामिन्नेकी श्चित को है और विकास क्या समझ करता है, का परनेपाको अन्ते व्यापनिक कर्मीक्षर पृष्ट करेने स्ट्राप भारत विरोह्मको प्राप्त हो जाता है। समझी प्रस्तार साम्बरण किसे हर पुरारेके धर्मने गुजरहित की अवन्य वर्ग होत है, क्लेटिंड कार्यको निवत निर्म हुए स्थानिक कर्मको करक हुआ मान्य प्रथमो नहीं तथा होता अतस्य प्रथमेकः। हेक्ट्र होरेस में साम करेंचे की साम करेंचे, क्ष्मोंक बुदेने अनेक्ष्ये भागि सभी वर्ण विकास-स्थानी मोनमें कोड क्षेत्र हैं ।। ५१-५५८ ।।

एकोर आस्त्रिकारित मुद्रिकारक, स्वयुक्तिक और भीते हुए श्रम:बारमवास कुल संस्थानेको इन्त की पान र्वेचार्थातिको प्रमु हेश है। कुलोका । अन्य:करणबी सुद्धिकार निर्द्धिको आहे हाल मनुष्यं किल अकारके सनिवानकार प्रकृति जात होता है, जो हारणेनकी कह रिक्ष है, जारते ह सुपने संक्षेपरें ही सार । निष्कृद सुदितें पूरा गांव हरावा, जारिकां और नियमित भीका वारनेवारण, प्रवास विकास अन्य करके एकान और सुद्ध देशका हैका कार्नेकाल, सारिका पारणसन्तिके प्रत अन्तःकाल और प्रविक्रोंका संबय करके पर, कार्या और अंगिरको स्वामें कर रेनेवाला, राग-केवको सर्वका जा करके जारीवार्ति सा वैरायका अलग सेनेवास का आंकार, कर, कर्य, क्षम, क्रोध और परिवास आन करके निरमन व्यान्योगके मत्त्रक समेवारक, मक्तार्यक और क्रान्त्रिक पूका सविद्यान्य प्रदाने अधिवानाको निका होनेका परा होता है। किर के महिन्दरन्त्य अपूर्ण एकामाओं विका, प्रका धनवाना योगी व तो किसीके जिले औषा करता है और उ क्रिसीकी अवस्था है करता है। ऐसा सनक अनिनोने सम्पानकार सेनी मेरी पर पॉलको प्रश्न है।

सा पर प्रतिकों इस यह पूर परकाशकों, मैं में हैं और विक्रम हैं, सेन्द्र केस-पर-वैसा सकते कर सेता है तथा इस श्रीको पूजको उसके करका समास है जुक्तें प्रविद्व हैं। बाल है । 198—44 |

मेरे नरायम हुआ कर्मचीनी से समूर्य कर्मची सह करता हुआ की नेरी कुमाने क्रमान अभिनाकी परम्पकृती क्षत के बात है। तब क्योंके क्यते मुक्ते वर्षण करते का सम्बद्धिका बंगको अवसम्बद्ध माने मेरे परस्का और निरुक्त पुराने विकासक हो । अर्जुक प्रकारसे मुख्ये विकास क्षेत्रर व मेरी क्षाको समझ संबद्धिको अवस्था। ही पार बार परमान और महि अनुवारके नारम मेरे कमरोब्हे व क्रोन्य हो ज्यु है पानम । के हु अहुतरका असार लेका क का का है कि 'रे कुद की करेग', रेस का निवन form है: क्योंकि केर अन्यत्व तुझे कार्यको पुरुषे स्था हेका । क्रुओक्ट्रा । किल कर्मको सु नेक्के कारण वारमा नहीं क्यार, साम्बों को अपने पूर्वपूरा प्रत्यक्षिय कर्महें वैशा पुरत परवक क्षेत्रण करेगा । अर्थुन । प्रतेषका क्याने आक्ष हुए सन्दर्भ प्रतिकोको अन्तर्भानी परनेवर अन्तरी नान्यसै इनके क्योंके अनुसार प्रथम करता हुआ कर प्राणियोके हरूको सिवा है। पारत ! हु सब अधारते आ परकेशस्त्री ही क्राम्पे क । का परमानाओं क्रमने हैं ह पाप प्रातिकों क्षा सम्बद्धन काम कामची जात क्षेत्र । इस प्रमान पह केंदरीको भी अति नोपरीच प्रत्य की तालो क्या विधा । अस ह का स्थानक प्रत्यो प्रतिका पर्याचीति विकास सैते कारत है केरे हैं कर : सन्दर्भ ग्रेपनीचीसे अदि ग्रेपनीच मेरे परन प्राप्तपुर्वा क्षांपन्धी सु विश भी शुर । तु केंग्र अस्तिका क्षेत्र है, इससे का काम दिल्लाका काम में सुक्ती काईसा। अर्जुन ! वृ कुछने बनवाता हो, मेरा भारत कर, मेरा पूजन क्लेक्स हे और भूक्षे प्रवास कर । ऐसा करते है पूछे 🛊 क्या क्रेया। 👊 मैं कुलो साथ प्रतिका करता है, क्योंकि a केत आरम्प क्रिक है। सन्दर्भ कार्यकारोंको स्कूली कारकार वृ केवल एक पुत्र सर्वसरियान, सर्वाधार नामेक्स्पर ही सामाने जा जा। मैं तुने सम्पूर्ण क्योंने मुक्त का हैंगा, के क्षेत्र का कर ॥ ५६—६६ त

कुटे का गीतालय प्रकारण उपदेश किसी भी प्रशासने न में कमानित पर्यक्तो सदस्य काहिये, य भविताहिससे और ने वित्त सुरतेकी हकारणारेंग्रे ही बदना व्यक्तिये तका जो पुत्रमें संभद्दि रकता है, उससे भी कभी नहीं बदना व्यक्ति । जो पूजा पुत्रमें परंप क्षेत्र करके इस परंप स्वक्ष्युक गीता-क्ष्मको में। परंदीने कहेगा, का गुलको ही। अपर होता—इसमें बोर्न समेद नहीं है। येस उससे ब्याबर दिन कर्ष करनेकार बहुकोमें कोई को नहीं है क्या केर पुर्व्याचरमें अस्ते कहार दिन इस्त कोई चरिन्यने होगा भी नहीं। तथा को पूजन इस धर्मका इस दोनोके संस्थतना गीताबाक्यको पहेला, उसके कुछ में अन्यकोर सुनैका हें के पा-रेस मेर कर है। यो पूजा बहुपूर्व और क्षेत्रहिसे रहेल हेकर इस गीतास्थ्यक अवल के करेक, का भी पापीने कुछ होका उसन कर्न कानेक्सबेंक लेख क्षेत्रतेको प्राप्त होता। यथं । क्या मेरे हारा करे हुए इक उपरेशको एने प्रकार विचले सक्त किया ? और कन्मण ! क्या रेट स्थानकॉन्स मेर नह से नम ? (( ५०-४५ स अर्थन केले –अव्युक्त ! आकारी कुरातरे केंग्र मोह नष्ट हैं गया और मैंने भूमि आहु बार सी है; अस में संबन्धारित होनान विभाग है, अस: अराजादी आकृतका पालन पालेगा त पन् स

राज्य मेर्ट-इक अक्षर की बोलायुक्तिक और पहाला शर्मको इस अर्जुत स्वच्यूक, रेज्यूकारका प्रेट्याची सुन्त । श्रीव्यासमीकी कृतको दिव्य रहेंद्र प्राचन की इस परन नीवनीय घोषधी अन्तेनोह प्रति पश्चते हुए सर्व चेनेत्रह भगवार बीक्रमले अच्छा सुद्ध है। क्यार । सम्बन् बीकुम्बा और अर्थुओर हैल पहल्लुक, काल्यानकारण और अस्तुत प्रेयादको पुरः-पुरः स्थाप पारके में प्रारम्भा प्रसित क्षे रहा है। एकर् । बोहरिके का कारण निरम्भाग करको | देशा केठ का है।। ४४८—४८ स



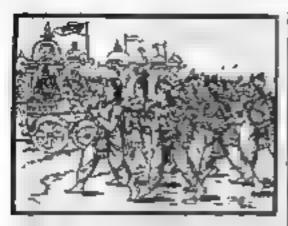
भी कुर-पुत: जाना करके मेरे निवाने नहान् आक्षाने होता है और में बारबार इसिंह है का है। सन्त्। नहीं क्षेत्रेक्ट क्षीत्राम्य परम्बन् है और वहाँ पार्थाय बहुस्थारी aufe ft, miter all, fitten, ftrigtt affe apure viffe f....

# राजा युधिष्ठिरका चीचा, ब्रोण, कृष और शल्पके पास जाकर उन्हें प्रणाम करके पुद्ध करनेके लिये आजा और आज़ीवांद मौगना

र्वजन्तकार्यः कार्तः है—एकन् । गीवा कर्यः कार्यकन् । क्यानाको पुरस्कानको निकारी है, इसरिये इसीका अधी राष्ट्र स्थापान करना पार्विने । अन्य बहुर-में प्राथमेक संस्थ करनेसे क्या गरम है ? जीवाने एक उपलोक सम्पर्कत है पाता है, भगवान सर्वकारव है, महाने सब क्षेत्रीका कार है इक बनुनी सक्तानेहरूला है। ऐसा, पहर, पानते और गोसिन्-पून गळारपुक कर नामोके इत्यमें रिका क्षेत्रेयर फिर इस सेसारमें कव नहीं लेख पहला। बीक्स्पने काराज्य-के सारकृत गीवाको किलोका को अर्जुनके मुक्तो होना 🛊 ।

रहाको कहा—तम अर्थुनको बाल और पान्योक बहुत मार्थ्य विने देखकर महार्थकोने किर शिक्षक किया। उस कृतक शतका, भोगक और उनके अनुवादी सुरहे शतकोत्र अरहा होकर कहा कराने राने सका धेरी, घेडी, क्रमान और नर्गतिनोके अकस्पाद का उठनेने वहाँ यह उच्च होने राजा ।

कर क्रमार केंग्रे ओरबी सेनको पुत्रके रिक्ने निवार बेहर महत्त्व कृषिक्षा अपने समय और सम्बोधो क्रेड्सर रहसे बार को और इस कोई इस की रेजीसे पूर्वकी और, नहीं समुची रोग एकी थी, निवाध भीनावी और देशने हर विकार ही करने दिने । अने इस क्रमार बाते देख अर्थन भी रकते कुर पढ़े और सब परायोक साथ उनके पीड़े-पीड़े बार देवे । कारान् औद्यान तथा द्वारे कुरू-पुरुष पता भी मही क्रमुक्तान्ते करोः पीते हे रिम्पे । उस अर्जुनने बहा, 'राजन् । ज्ञानका क्या क्रिका है ? जान हमें क्रेडकर मैदन ही उत्पूर्ण केमचें को का दो है ?" पीनमेर केमे, "रावन ! सहपक्रके र्रेनिक करना नारम किने मुख्ये रिपने जिसर करते हैं। ऐसी रिक्रीओं आप प्रमुखेंको क्रीडकर तथा करूब और इसा-क्रांत्रकर कहाँ कान्य काहते हैं ?' जहाराने कहा, 'बहुराना है जान हमारे बढ़े चर्ड है, जानके इस अकर कारेसे इससे



इस्पर्ने बढ़ा जब हो जा है। काळाने तो सही, जान कहाँ जायेने ?' सहोताने पुत्रन, 'राजन्! इस महाजवनानी रंगरकारीमें आ जानेनर अब आप इसे बंदकार इन इन्द्रश्रीकी और कहाँ जा के हैं ?'

भारतीय इस प्रवार पूर्णनार की बहराज कुनिहार बोर्ड उत्तर भार्टि दिया। में कुरवाय कालों ही गर्ने। वस बहुत्वकुमति सीक्याने देशकर बहुत, 'में इसका अधिकार समझ गया है। में भीका, होना कुन और काल अधि इस पूर्णनीये आहा लेकर बहुआंके साथ युद्ध करेंगे। मेरा देख यह है कि जो पूर्ण अपने मुख्यानंत्री आहा दिखे किया है जाने कुद्ध करने लगता है, उसे में कहा है अपने में के है और में सामानुसार उनका अधिकार बानों और उनने अहा रेकर संवान करता है, कामी अवहर विनाय होती है।

इयर कम श्रीकृत्या ऐसा कम हो में तो महेरलोक्ट केनाने महा करेरवाइन होने स्थार और कुम श्रीम रेश-में स्थान मुख्यान कहे हो। कुमेंश्वलो अभिकारी राज्य मुखिद्धिको श्रीम देशा हो में आपश्यों स्थाने स्था, 'अले ! मही मुख्यानेस मुखिद्धिर है। देखे, अस यह इस्कार अपने प्रदूपोंने महित इसमा पानेक्ट इस्कार धीनानीक्ट राज्य श्रा प्रदूपोंने-पीरे मीर हैं, फिर भी इसे समर्थ मैंओ स्था निष्ण र' ऐस सम्बार सिंह में रिन्स बीएमोसी असंस्थ सार्थ रूपे और असम होमार अपनी स्थानी प्रदूपने स्था र कुम असस पुनिद्धिको निकार का में सम भीर क्या सुरुक्ते रिको कि ऐसी, यह भीनानीक्ष क्या स्थान है और राज्यानुने स्थानोह सभा कृत्य और अपनी इस स्थानोही क्या सोरको है—-कुप हो गर्थ । इस सम्बंध प्रदूपाल पुनिद्धिकी इस मेहनो होनो होनो ही प्रश्नीय रोज्याई को संस्तुत्व प्रदूपाल गुनिद्धिकी इस मेहनो होनो होनो ही प्रश्नीय रोज्याई को संस्तुत्व प्रदूपाल गुनिद्धिकी इस मेहनो होनो होनो हो

पहारत पुरिश्वित सहसीकी सेनके बीवर्षे हेकर

पीपार्थके पास पहिचे और दोनों सचीसे उनके जांस प्रवक्तार कहने रूपे, 'अपेन विश्ववद्य | मैं आपको प्रकार करण हैं: युक्ते आपसे पुद्ध करना होगा। जाय युक्ते जाता



क्षेत्रिके और स्था है अनुसीयांद देवेची कुछ भी मीडिके।'

केवारे कहा-वृद्धिया । की इस समय तुम मेरे मास न असी से में मुकारी पराज्यको स्थित तुम्हें जान से हेता । सिंह्यू अस में मुकार ज्ञून मुकारी और तब इक्कार्य की पूरी होती । इसके निका तुम्हें कोई या वर्गनंकी इक्का हो से पति तहे; क्योंकि ऐसा होनेका किर सुमारी ध्यावय नहीं हो सकेती। राज्यू ! यह पूजा अर्थका एक है, जर्म किराबार की राज्यू की है—ज्यून सम्बद्धिया एक है, जर्म किराबार की राज्यू की है—ज्यून सम्बद्धिया स्थाप क्यूंक्यकोकी-की माने कर एहा है। केवा ! युद्ध को मुझे कीन्योंकी ओरसे ही करना पहेला। ही इसके निका पुत्र और को कुक ब्यान्त व्यक्ते, व्यावस्ति ।

कृष्णितं कह—सद्यानं । आपको से कोई वीत नहीं सन्तराः। इतिको नदि अस्य इताय दित बाहते हैं से सन्तरको, इस अस्तरको कुट्टमें केले चीत एकोले ?

चीन कंटे—कुचीनका ! संसमपृथिये युद्ध काते समय पूर्वे जीव सके—ऐसा से युक्ते कोई दिसावी रही देता। अन्य पुरुष के क्या, सर्च इसको ची ऐसी प्रक्ति रही है। इसके तित्व नेरी कृत्युक्त औ बोई निर्देश स्थान वहीं है। इस्तिओ | कुछ निस्ती हारे समय चुक्तर मिलना ।

ाव महत्वम् पुनिर्देशने सीवार्यको का बात विश्वस्त करण की और उन्हें किर प्रवास कर ने आकर्ष क्षेत्रके स्थानी और कारे । उन्होंने आवार्यको प्रवास करके उनकी परिवास की और किर अपने कार्याको दिन्ने व्यक्त, 'भारत्य । कुछे आयर्थ पुनु करना होना; में हरके किने अन्त्यती अञ्चा कार्या



है, जिससे मुझे कोई पाप न तने । ज्यान पह भी कारनेकी कुछ। कोरे कि में समुश्रोको जिला प्रकार जीत समुख्या ।'

श्रीकामणि कहा—राज्य । यदि तुम युक्का विश्वय करके किन मेरे कार न असे से में कुकरी परावकों सिने कार है केता। सिंह तुम्हरे इस अन्यानों में करता है। तुम युक्क करें, कुकरी जब होगी। में तुम्करी इकार पूर्व करोगा। स्थानों, तुने बना कार्य हो? इस विकालों अपनी ओसो युक्क करनेते विश्वा कुकरी और से यो इका हो, यह बजो; क्यांकि पुरूष अर्थका कर है, जब किरवेंका करा नहीं है—जहीं कार है और इस अर्थने ही कौरवोंने कुछ बोब दिवा है। इसेसो से बन्देश्यामणि तया तुमसे कह कहा है कि तुथ अपनी आंस्से बुक्क करनेके दिवा और क्या पाहते हो। में युक्क को वर्धस्थानी ओसरे करोंगा से विकास तुम्हरी ही कारवा है।

वृधिकरने कार-स्कार । आध स्वीत्योकी आरमे हैं युद्ध

को : किनु मैं की वर मॉक्स हूं कि मेरी किन्न कोई और मुझे उपनेची महस्मते हैं ।

श्रेणकार्य जेले—राज्ञन् ! सुन्दारे स्वस्त्रकारः साथे श्रीकृत्वा है. इस्त्रीतिने सुन्दारी विकाय को निर्देशन है। में सुन्दें पुत्रके सिको अपना केल है। हम राज्यकारी प्रमुख्येका संक्रार करोगें। जहाँ वर्ण काल है, जहाँ सीकृत्या को है और जहां श्रीकृत्या सते है, वहीं जब जानें है। कुम्तीनक्षर ! अब तुम काओ, युद्ध करो और तुन्दें को सुक्रम हो, सुन्दों है सुन्दें करा सामग्र है ?

पुण्यास्त्रे पुण्य-सम्बद्धाः । शतकारे प्रमाध करके में यहा पुरुष है कि सामके प्रमाण करा उदान है।

डोककर्ष मेरे--रामर् । संसामधूरिये राधार अस्य है तक में डोममें परवार क्वाकेटी वर्ष क्रिया, तर समय पुति का तक--र्तम से घोड़ें क्यू दिलावी नहीं हैता। ही, वह में तक क्षेत्रका अनेत-का कहा है का समय कोई केटा पुति का तकात है—का में हुको तक-पता व्याप्ता है। वृत्त सकी का तुने काता है—का मिनी विकासका क्रांतिक पुताने कुई कोई जाता असिय का तुनानी हैती है से मैं संस्थानकृतिये जान का क्रांति है।

क्षेत्राच्यांकीची में। बाद सुरक्षार राजा सुविश्वीर अनकी अनुस से आव्यानी कृतनीर पास आने और क्षेत्र प्रमान



र्ल अदिकार करके पहले राग्ये, 'यूक्ती ! सुत्री अवसी सुद्ध करन होन्य: इसके रिस्ते में अस्पर्स अद्युव मीनता हैं, विसरी मैं प्रदर्भकों भी बीत प्रकृत (

क्रुक्कानी स्का-स्थान् । मुख्या निकार होनेसर महि हुन की पास न आहे से में तुन्हें साथ दे देश। बुक्त अर्थका क्रम है, अर्थ विज्ञीका कर नहीं है—स्त्री रक्त है और इस क्लेके ही कौरवोने पुत्रे बॉक रका है; से युद्ध तो मुले उन्होंकी आंकी बारत प्रोग्य-ऐसा देश निश्चम है। इसीके न्यूनकारी तक मुझे यह बहुना पहला है कि अपनी ओस्से बुद्ध करनेके लिये महर्नेके रिका और तुकार्य के इच्छर हो, का पॉन सो ।

कृषिहरने वहर—अस्थार्थ ( सुनिने, क्रानेके में अस्यों **पुष्टवा है**....स्टा

इतन बहुबर वर्गाम व्यक्ति होयर अवेत-ने हे को और कोई प्राप्त न बोल कके। तब उनक अधिकार सम्बाद्धार कृपानार्वजीने बद्धा, 'तकत् । युद्धे कोर्न की बार मही अक्रम । सिन्धु कोई रिक्स नहीं, तुक पुत्र करे, और मुखारी ही होगी। सुखारे इस समय वर्डा आनेने बढ़े बढ़ी प्रसारत हुई है। में विश्वास समार सुन्तरी विश्वनकारण क्रानित-चार में तुपके ठीख-ठीक करता है।

कृपासानेपीकी कात सुरक्षर राज्य कृपिक्षर करकी अपना होतार पहला प्रकार पान गर्न कर्म को उत्तर



मीर प्रवृक्तिया करके अपने हिनके निमे उनसे बका 'राजन् । युद्धे आपके माथ बुद्ध करना है। इसके निसं वै

मुद्रो कोई पाप न लगे । इसके निज्य आवनी आहा होनेका | आवसे आहा चौनता है , जिससे मुद्रो कोई पाप न लगे हजा कारको अस्य हेनेयर में प्रमुखीको भी मीत सर्वाताओं

> जनने का-राजन् ! पहाचा निक्रम का सेनेवर पति कुर की कर न कार्ट के मैं तुन्हारे परानको रिक्ने तुन्हें साथ दे वेळा । ५०१ सम्बर अवका सुर्थने येख सम्बाद किया है; इस्तरिकों में सुरक्त प्रकार है। सुनारी इच्छा पूर्व हो। में सुने अदार देश है, कुर बुद्ध बत्ते, का तुन्हारी है होगी। तुन्हारी कोई और ऑफ्टबन से से मुख्ये कहे । मुख्य अर्थका कर 🗽 अर्थ किमोबर कुल नहीं है--बड़ी बाद सत्त है और इस अपनेते ही स्वीरवर्धिन कुछे स्तरित है। अपीरो पुत्रो न्युरस्थानी तथा पुरस्त पहला है कि अपनी ओरसे पुर करानेके क्रिक तुम और यक बाढ़ते हो । तुम मेरे धानके हो । तुम्बर्ग के इस्ता होगी, यह मैं यूर्व कर्मना (

> कृष्णियो क्या--व्यापानी । येने सैन्यसंप्रकृषा उद्योग करते कृतव आरक्षे को कर्नाम की बी, बढ़ी मेरा घर है। क्रमंते प्रयान पहि क्षेत्रे समाव आप काले. तेवका नास क्यों से ।

> शन्य कंत्रे—कुन्हेरुक्त । तुन्हारी व्य प्रश्ना पूर्व होती। काले, निर्देश्य क्षेत्रर युद्ध करें। में तुमारी बात पूरी कारकेकी प्रतिकृत कारका है।

> मक्रम कार्य है—राकर् । माराज करवाने आहा रेम्बंर राज्य व्यक्तिहर अन्त्रे प्रश्नुवित्रहित जा। विकास व्यक्तिहरे कहा जा को । इस बीकरे बीक्तार क्राफि यहां गये और असने बाहर कि 'पैने दुस्त हैं, भीन्यमीने हेन होनेके बारका हुन बुद्ध नहीं करेगे। बहै ऐसा है से बन्तक चीन नहीं परि ब्लो, रूपक्क तुन हमार्ट और आ नाओ । उनके नारे मानेक किर तुन्हें कुर्वेकनकी सक्तकता करनी हो इंकिट कार पत्ने हो किन क्रमो पुकार्यानी जानत बुद्ध करना ।'

> कारि कार-केराव । में तुर्वेशका अधिव कारी भूति कर्मन्त्र । अस्य पुत्रे अन्यक्ताले पूर्वे अन्यत विरोधी सन्दर्भ (

> कर्मको वह बात सुरका श्रीमृत्य खारि सीट आने और पत्त्वकोने का निवे । इसके बाद महाराज पुरिक्षिरने सेनके मेंको सहे हेका उससारे कहा—'से चीर हता सब देश को, अन्ति स्थानसके रिन्हे में इतका स्थानत बारनेको नेकर है।' का सुनवार कुपूरा कक प्रथम हुआ। उसने क्रमान्त्री और देशकर कर्राय कृषित्रसे क्रमा, 'बहुरका ! वर्षि जान नेरी शेक लीकार करें तो में इस न्त्रवद्वने अल्पने ओस्ते केसोक साथ वद्व करेना।

> र्वकारने का न्यूनके ! जाओ, आओ, इम सब विकास क्यां कुर्व साइयोधे यह कांचे। महाबादे ! मैं

भारतम् होतः है प्रकृताम वृतराह्नका मेह भी सुपते ही बलेना और कुमरे ही उन्हें विका विशेषा।

ारवर् ! दिस पुष्ता इन्हरियोग्डे साथ इन्हरे पुणेयो क्षेत्रकर प्रवासीकी सेनार्ने क्षात भवा। तम वर्गतन मुक्तिपरे अपने प्राप्तनेक स्थान जानस्मार्थक पुरः समय शास्त्र किया । सब होन अपने-अपने स्वीपर यह तमे और । क्यां करने लिए।

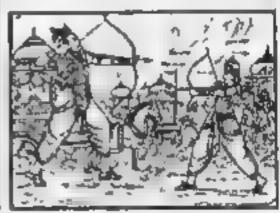
स्वात-अस्पत करता है। तुन इसरी ओरसे संकार कने। किर सैक्स्ने क्ट्रियकेक प्रेम होने रूपा और प्रोक्तकेप त्रक्त-तराहरे विकास करने रूपे। चावायोको रूपमें कैते देशका बहुबुक्तरि सम कामशोको नहा हुई हुआ। परवार्गीने वाकांकोका बान करनेका गौरव जात किया है-वह देशकर राज्यांने रूपका का स्थाप किया तथा अपने क्षम्-कामकोके प्रति रूपको सुक्रता, कृषा और त्याकी बड़ी

## यदका आरम्प-दोनों पश्लोके वीरोंका परस्पर पिडना

रुवा कराएमें वदा-स्थान । इस प्रधान कर मेरे कुर और पायकोकी रोजनोंकी प्रमुख्य हो गये हो उन होनोंमेंसे पहले किसने जार किया ?

राज्यको कहर--नाम्बर । तम माहनोत्री सहित मानका पुर क्वेंशन भीजवीको अस्ते रक्तार केन्स्स्कृत कहा। इसी part भीवरोजेंद्र नेतृत्वने का कवानतीय के भीवारे पुत् कारोकोर मेरचे अल्हालाओं आणे अवने। ह्या अवहर केनो र्मनाओंने केर यह क्षेत्रे लगा। पत्थानेने इसरी संस्थर आक्रमण किया और प्रणी अपन्य काम केल किया। केले ओरते देशा जीवन सन्द हो यह या कि सुन्यत देग्ये करे है असे थे। इस प्रथम महानात् मीनलेन से सहितने नहा भाग यो थे। सन्तरी सुरक्षों संस्थारी सेनाका प्रत्य दिए दहः एवा सिंहकी बाद सुरकर की हुने करती करनारेक मान-पूत्र निवारर जाता है, उसी जवार जानकी सेनाके हाची-बोडे आदि बाहर की पर्य-वह सामने रागे। पीयानेन विकार कर भारत करके जाने कहते रूपे। यह देखकर आरको पूर्वि कर्षे वाश्रीते हुए प्रकार क्षम दिया, वैद्ये वेद सूर्यको किया लेते है। इस समय क्वोंकर, दुर्ग्य, दुःस्य, इत्य, तु:श्रासन, कुर्विया, विविद्याति, विकासेन, विकासी पुर्वान्त, जब, चोज और सोमरत्त्वा कु पुरित्रण—चे सची महे-महे अनुस पहाचा विकार स्टॉके स्टबर क्रम क्रीप से में। कुरते ऑस्से ड्रीपदीके का, अधिकन्, नकुरत, सहस्र और बृह्युप्र अनने धानोंसे अवनंत कुछेको चैदिल करते हुए बढ़ रहे थे। इस प्रकार जनकारतीकी चीनम टेक्सके लाव यह पहरूप संपाप कृता । इसमें केनी पहरूके बीटोनेसे किन्सेने पीक्ने पैर नहीं रखा ।

इसके बाद प्रान्तनुत्रका चीचा अवन कारकवाके सनान भीवण बनुत लेकर अञ्चल्के क्रमर इन्नटे और परम केन्नटे अर्जुन भी अस्ता वर्गानुस्थात गान्त्रीय कहा संस्थात



बीक्यर द्वाः व्हे । वे हेमी कुल्बीर एक-पूर्णको करनेकी इन्हरते कुद्ध करने रागे । भीवाने अर्थुनको सीध प्राप्त, निरा की में रात-के-कर न कुए। क्यों प्रकार कर्जुन भी भीवनसेको संकारको जिल्लाकेल नहीं यह सबोद । इसी समय सामाजिकी कुरकार्यक आक्रमण किया। उनका भी बहा भीवन और तेवासकारणे पञ्च क्षेत्रे तथा। यहान् यसुधीः कोसानगरः कुरुको अधिकम् विद्या हुआ था। उसने अधिकम्पुके रक्की व्यवस्थे कार दिया और संग्रीकको भी पार करूप। इतको अध्यक्तपुरको महा प्रक्रेण हुआ। उसने नी बाग क्रोहमार वृद्धालको जीन दिया तथा हो तीको बाल क्रोड्यार एकसे जानी काम कार से और कारेड़े सार्गंद और कारकारके कर रिराका । भीवरोजका आवके पुर हुवेंबनसे संजाम हो का का। वे होनों पहालको बोद्धा स्वाहरूमें इक-दूर्शपर क्रमांको क्यों कर हो थे। उन विक्रमांकी पीरोको देसकर प्रभीको कहा किरान होता कर हरी प्रथम दशासन पहल्ली महत्त्वो विद्व क्या और दुईल श्वदेवक क्षद्र आना और व्यक्तिको कर्ज करके इसे स्वक्रित करने स्था । तब

मार अस्त । फिर में होनों और आगराने बहाब सेनेके विकारते एक-१५रेको भवेका बालोसे पेवित काने तथे।



क्रमें बहारक श्रीविद्देश प्राप्तके प्राप्ते आने। बहारक शास्त्री अन्ते कर्ने से इस्ते कर दिने । वर्गरावने तुश्य ही कृतन्। बनुष क्षेत्रार पहराजको कारोले जाकारीत कर दिया। कुरुपुत्र होपायाचीक सामने अपना । होपायाची कुन्या होपार अर्था प्रमुक्ते तीन इसके बन दिये और निम एक कारत्यको समान कह भीवन कान वारा, जो उसके प्रसीरवे कुल गर्या । श्रम शृहकुलने श्रारत करून रेकार केन्द्र काम होई और होगावार्वजीको बींच हिया। इस उच्चर ने केंगे बीर क्रोबर्ग परकर बढ़ा हुन्त बढ़ करने तर्गे । इंस्के क्ये केस्के सोपवरके पुर सूर्वकारक क्या किया और 'क्या ख, रका द्यां हेला बहुवार उसे राजामस्य । विन्त उसने उनकी स्वीतनी पुरत कर इस्ते । यह पुरिश्वको इंग्लाई गाँ। और संबंध बीबकी सुरिया अपूर किया। पूर अवस्थ का राजेनक बीरोका बढ़ा पीनल पुत्र होने रूपन। एक बाहीसको संभागमें देशका नेरियन बहुतेन समन्ते अन्य और मिको समान गरमकर करार क्या बरसाने समा। जाने 🕸 बान क्षेत्रकर राज्य बाह्यकर्को स्टेन दिखा। किर वे देन्हे चीर कोपमें परका गर्मन काते हुए एक-हुतांकी सकी सने। राज्ञारका असम्बन्धे साथ क्षरकार्य प्रतेतनक त्रिया पर्या ।

क्रुपेतने एक बहुत है शिक्स काम क्रीक्यर असके प्रारमिको । यदोन्यमने नामे माना करवार सारम्युकाने केंद्र करन काम अल्युको भी भीनतुकन प्रदेशकाच्या तुन्दी नोकासले क्रमके इसरी-क्रमके कर दिया। म्हणारी विश्ववदीने हेलक् अनुधानका आक्रमक किया। वर अनुसामने det ebeit abeut fremfel aufe un feu i far विकासीने की एक अल्प बीचे बानके ब्रेम्प्यूबार चोट को । इस प्रकार ने संज्ञानकृति एक-कुरनेकर बच्च-सन्द्रके क्लोंसे उत्तर करने करे।

> क्रेकक्क विराद बहुबीर शतकाते विद्यु गर्ने और कारक और युद्ध होने रूपा । येथ मिला प्रचार पर्यकर बार क्षात्रक है, जो उच्चार किएटो क्याएकर बाजीकी वर्ण की और नेश केले कुनेको इन्ह रोख है, केले ही पानहरूने राज्य formuly and mobil arrester at the county क्षण केवल्यान प्राथमात्र श्रीम विकास और अपने प्राप्तीते को निरम्पुर का दिल। इसी उत्तर वेन्यवसम्बद्ध कृष्णकर्वको सामोपे निर्माण कर दिला। वर दोनीने इक-दुर्गाने केक्रेको जनका सनुर बाद प्रते । इस प्रकार राजीन क्षेत्रक के कालुराहुद व्यरनेके विको आयाने-सामने शह wit i ser beet beete die fi were afte mate gig हुआ। प्रमा हुम्मी सम्बद्धान्य शासन्त्रन निरुद्ध । सम्बद्धाने क्षेत्र काम होतृष्यर हुन्ताओं जनक यह दिया और हुन्हों क्याक्यों करोते सीच दिया। अस्त्रेत दूर विकासी सुक्रकेकर कक्ष किया। क्षेत्रीये युद्ध का राजा। का क्षेत्रीये एक-पूर्ताच्ये कार्याने कीप विषय, शर्मा उपनेते विवरीने भी क्षेत्रं के भी एक । महारात वेदियान सुरायोग्य कर आया, मिन् सुराजी जीवन बानको सरके को अने क्योरी रोक क्ष्म । का विकास के मुक्ते पासर असे समोते श्वानांको अञ्चलका कर दिया। अञ्चलि गरवरकाओ प्रतिक्रियान्त अवस्था विश्वत विश्व प्रतिक्रियान्त अतिविक्ताने अपने केने कालोड़ों अने क्षेत्र-निक बार दिया। राहोको एव साकर्गन करनोय म्हारची सुर्वितरार आव किया। सुरक्षिणने को अपने वालोधे बीच दिया, दिन औ क पुत्रते दिन वहीं। जिस का कोवमें परवर अनेको करोते सुर्वात्रको विक्रेपं-स काम इत्तर केर पुद्ध करते रामा । अर्थुनका कुत इसकार सुराकुके सामने आसा और जाने बेडोको कर करन। इसका सामाने कृतित होकर-अपनी पहले हरफाएंड चेहोंको नह का दिखा। किर कर केन्द्रेक्ट चोर युद्ध होने सन्ता।

> पहरके कृतिकोच्यो अवस्थित विद् और अनुविद्याद र्वकर्ष कुछ । से अपनी-अधनी निकास माहिन्सिक स्टीत

प्रेमान करने एने । अनुनिक्तं कृतिकोकार एक कार्यके और कृतिकोको दुरंग है उसे अपने कार्यके कर दिया। कृतिकोको दुरंग क्या गरस्यार स्थितको करिया। इस प्रकार और स्थित को अपने कार्यको स्थितं कर दिया। इस प्रकार कर्म कह अस्पूर्ण कृत केरे रुग्या। केर्यकोको पाँच एकोहर एकपुर गर्याकोसके पाँच एकपुरस्तरोते पुत्र करने छने। साम ही उन क्षेत्रो देखोको सेनाई भी स्थित नहीं। स्थानका पुत्र केरसाह राजा सिराटको पुत्र उत्तरते स्थाने रुग्या और उसे असने पीने कार्यको प्रीय दिया। इसी प्रकार कार्यको भी सीको-बीको कीर कोर्यकार उस बीतको अधिका कर दिया। वैश्वित करने रुग्य क्या अपूर्ण को उसे क्या-कृतिको क्यांको वीकार आरम्ब क्या अपूर्ण पुत्र होने रुग्या।

ज्या समय प्रम चीन देशे क्यार हो यो में कि मोई किसीको खामन नहीं पाता मा। इसमें इस्तीके स्तम, रजी नके साथ, कुर्वाच्या पुरस्ताको साथ और चेहर पैराको साथ कि हुए है। इस क्यार एक-पुरसेर विद्यान का पेराकोच्या प्राप्त कुर्व और क्यारम पुत्र होने रचना। जर सम्पर्दात्वाच्यो स्वार किस और कारण भी वहाँ आका जा केससुरश्रीवाच्यो स्वार कोर पुत्रको देखने रागे। स्वान् ! जर पंजावश्वीयो कारण वहाँ देखना का और पुत्र किस से है। वहाँ किस पुत्रकी और नहीं देखना का और पुत्र विकास को निनंदा का । इसी जावर कहाँ पहाँको, कारण कामकी, अल्प कामकेको और विश्व विकास काम की काम हा । देश काम पद्मा को नाम से पुत्रको असीका होकर पुद्र कर यो है। इस क्यार का का संस्था कामकेको और अस्ता कामका हो कहा हो सोसके असने कामे हो कामकोको तेल करों औ।

\_\_\_

## अभिमन्यु, उत्तर और श्वेतका संयाम तथा उत्तर और श्वेतका यथ

राज्ञान्त्रे का -- स्वया । इस स्वयम केवलक कारा पान बीको-बीको का अनेको मोंको बीचेका बीचन संस्त से गरी, तब जान्ये का कृतिकारों त्रेरकारे कृत्य, बुलवार्ट, कार, पाल्य और निविश्वति निवास्त्र भीनानेंद्र पाल करें अपने । इन जीव अंतिरवियोगे युरक्षिक क्रेकर के कन्क्रकीकी रोजनें पुराने राने । यह देशकार क्षेत्रकार अधिकान अधिकान करने राजार प्रकार हात मीमानी और इस बोनों महार्थिनोंके सामने सामार का गया। अपने एक वैने शताने भीनावीची तालो निकासानी क्या कर है और फिर का सबके साथ संख्या केंद्र दिया। काने कुलकार्थको एक, क्रान्यको प्रोप और निरास्कृतो से बार्गोर्स बीच दिया। तिन एक सुनी क्रूं नेकाले काले क्र्युंशके सार्यक्का सिर बढ़ते आरम कर डिव्ट और एक कारते कृतकार्वकः कहर बहर कारतः हतः प्रकार स्थानीको पुर-सा भारते हुए जाने गई होते जानोते हाची चीटीनर प्रश किया : स्थापन हेला प्रकारपाल हेलावर देखानोत की प्रकार हें गये तथा भीवाती महाराजियोंने की उसे स्टब्स, अर्थकों समान हो राज्या। जिस कुरमार्थ, कुन और कुन्हों के अभिन्यपुर्वते वार्गोरी मीच विचा । तरंतु का वैकाद वर्णतंत्रे सन्तर रहेपुर्वित स्थित भी विवरित भी हमा एक कौता बीरोंसे किरे होनेसर भी कह बीर महत्त्वांने का प्रोची महिर्दिगोर पाणेची इसे इस से और उन्हें इससे धारोको रेपावर बीवानीय काम क्षेत्रो पर पर मीवार विकास करने स्था।

अन्य । किर पहाचरी चीनकी को है सरका और प्रथमक वेन्याक प्रकट किये और क्रियम्बर प्रमारी पान क्षेत्रकर को निरम्बार कर दिया। यह उनका बहु है अब्धून कारण कुला । इस विराट, सहस्तुत, हुन्य, चीन, सामानिर और नीय केन्द्रव्योतीय राजकुमार—मे पाणानकाने पुर महत्त्वी वर्त हेजीये अधिकानुब्री स्थानेत रिप्ते ब्रेडे । अन्तेरि सेने क्षे क्या किया कि प्रत्येपुरुष्ट भीवते स्वाहत्त्वस्य प्रस्तेत होत और सामाधिको से साम को तथा एक सामने सीमलेनाहे परमा बाह्य जाती । एक बीनकोचने और सामीते प्रीयस्त्रो, क्यां कुलवर्गको और उन्ह करतेले कावर्गको बीच किया । प्रत्या किराइके पुत्र उत्तरने प्रत्यीवर प्रकृतव को बेनसे कारकर काम किया । सामीको अपने रचको और बडी हैकीसे नाम देशका माराम कार्यने मानीहरू कार्या केन चेक विका । हालो का हाको किय गया और उसने रहके बहुदार पैर रतायार कान्ये जार्थे केन्द्रोंको कर क्रांता । बीट्रॉक्ट यह क्रांत्रिक कार्य रक्षे हे के हुए कार्यन उत्तरंत कर एक धीरन स्तित कोडी । जारो जारका कमा का एका, जाने हाको जंदन और खेवन असी, मिर गर्च और बढ़ असेत होकर हाचीसे नीचे निर नवा । मेरन करण करणार जैस्से रकते कर पहे और उस इन्हेंन्से हेड कार है। इसने का पर्नहर चीतार करता पर पान । यह परवान काले तथा क्या बरावानि राज्य

का विश्वापुर केले अपने पर्छ उत्तरको पर हुता और

प्राप्तको क्राव्यक्ति पात्र बैठा देशा से म्ब ब्रोको मार रहा और अपना विकास बन्ना प्रकार कामधी वारोधी किने र्वक । यह सम्बोधी भर्ग करता हुआ प्राम्पके सम्बोध और बाल। इस समय महराज्याने पुरुषे पूँको पक्र देशकर मानवे पक्रके सात महार्गकर्वेद कई करों ओसी के प्रिटंड । मोसाराज पुरुष, मनवर्ग स्वतीन, प्रत्यक स्वतात, कामोजनेक क्वीरंग, किए, अनुक्रिय और क्यान-वे पुरारों और बैटकों हिस्सर बंज्योंको कर्य करने उसने । केन्यसीर केले प्रता कलोपे का प्रताबिक बहुए कहा करे। क्योंने आने निर्मित्रमें हैं कुले बन्त रेकर केवल एक क्रम होते । वित् व्यापना केले साथ बान प्रोत्तात किर अनेत पहल **प्रथम दिने । श्रम का नक्कारियोंने व्यक्तियों केवल पॉन्स** गर्मन जाते हुए हम्दे केवल केवा । पांच अव्यक्तिकारे पारगानी बेलने सका ही बाजोंसे उन्हें की बाद किया। मित काने एक भीवन बाज तेवार को कारावार होता। कार्या भारी बोद रामांची काराय समेत होबार रामांड विकास परानी बैठ गया। को अबेत देखकर जाका पार्टीक क्या ही कृत स्वेत्रोचे देशने-देशने कान्त्रीको असन से नना : बिट केन्द्रमाने कः साम प्रकार का कई पहलीयोधी बानाओंके जानान कर देते और उन्हें केंद्रे करा प्राचित्रोको को बीच द्वारा । अन्ति च्यान् उने प्राचीने अस्तानिक कर रूप क्रमको रूपको सोर करा। अस्ते सारको सेराने यह मोतवात होने सन्दर्भ कर केनाकी केलको प्रारमको अगेर पाते हेवा स्थानका पुत्र कृतीका पीताको अरने कर एउटी सेवको प्रतीत ब्रोको रक्को सामने आया और मुख्ये पुराने प्ये इव एक सामाने उससे एक किया । का. मक हो कोर और बेन्सइकारी युद्ध होने सम्ब करा विकास पील अधिकपु, भीरतीय, सामग्रीह, केम्बरप्रकारक, बार्का, कर और वेदि क्या कालोको प्रकारिक कारोकी कर्ष करने उसे।

त्या प्रत्याने पूर्ण-स्थान । या श्रेष्णपुरूत केर प्रत्यके राज्ये प्रत्यने पहेला हो गौरण, व्यवका और राज्यकुरूत भीकार्थने प्रश्न विकासक मुद्रे प्रताओं।

राज्याने कहा—एकम् । यह सम्बद्ध स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं प्रेम्ब एकमुम्बर बेटवी रहा कर से थे। कहाँने निवास बीकांडे एक्को के निका। यहा है पनकेर पृत्र होने समा। बीकांडेले परायक स्वयंक्त अनेवाँ राजेंडी सुन कर किया। कर समय करका पराज्या कहा है कार्युट का। हवर समयुक्तर बेटने भी हकारों एकियोंका सरकारा कर विका और अपने कैने बारोंसे करते सिर उहा दिने। मैं भी बेटडे प्रकृत अन्तर कुरने कर देशा के पुर्वाचन राम नह जान राम निर्मार जनकारी जेनका संदार कर के हैं हो जा जीकानीको केव्यवर करियोको जेनका विश्वेष करने एगा। इस अक्षर अवस्था होनको किए-किए करने का दिए गीकानोक रामने अस्पर कर पर्या: किए के होनों और इस अहिर व्यवहार्क सम्बन्ध कर-कृतिक अन्तिके कक्षक होन्छ स्त्रूने एगे। केवने विश्वविद्यालकार होनों हुए में मान कोव्यवर कीनकीर क्ष्यूनके कर कुरने कर हिर्द और एक कार्यके सम्बन्ध क्ष्या कार्य क्ष्यों । यह देखाना आक्रेड पुत्रीने सम्बन्ध कि अस क्ष्यों नेकी क्ष्यूकर फेन्स्सी गरी सार्थने हास कार्यकारीन अस्पर होन्सर स्त्रूच कराने राने।

व्याप्त कर्मा क्षेत्र क्षेत्र अस्त संस्त असे असे सिंग,

अते । इस असे प्राथमा क्षेत्र इस अंदर्भ में क्षेत्र क्ष्म अंदर्भ में क्ष्मि क्षम् वर्म अंदर्भ में क्ष्मि क्षम् वर्म अदेश में क्षमि क्षमि

परका समने देसते देसते अनेकों लोहके बाजेसे बीवका चीवानीको व्यक्तर का दिख । इससे हात कुर्वेकाको बहे व्यक्ता क्षा और जानकी क्षेत्रने प्रकारत होने सन्छ। केलेड बाजोरे वायन होकर भीनवीको पीछ हो देशकर बहुत कोंग तो नहीं समझने तमें कि अब केल्के कुमने पहकर भीवानी पारे हैं कार्यमें । चीवानीने क्या हैवा कि की रहकी क्रमा काट ही गयी है और सेनाके भी के उक्क करे हैं के इन्होंने ब्रोधमें धरकर चार कार्यानी क्षेत्रके चारों चौड़ोको चार द्यारा, हो नाजोसे उसकी कान कहा उसने और एकसे सार्राणका किर कार दिया। सुत और बोहोंके करे कनेकर हैत रकते का पड़ा और का ब्रोधने जिल्लिक का । हेलको रक्षांत देवाचर भीनवानि अस्या एक ओरहे की बानवेकी भीकार की । तम उसने कनुषको अपने एक्ट्रो फेककर एक माराज्यको समान प्रसन्द स्तर्थि सी और 'नरा पुरस्क बारण करके एके हो। नेय नरकान देशों देख बक्कर को पीनकीयर केंद्र विद्या। जा चीवन प्रक्रिको आसी देख



सामके पूर्व इक्सार करने हमे। सिंह चीचारी वनिक

ची नहीं कराने। अपूर्ति अस्त-नी काम मास्कर असे मीमहीने कार. दिया। जा ऐकामर आपकी ओरके इस स्वेन कर-कर्मार करने अने।

का विचारता केले क्रोककी हैती हैती हुए पीअमीका प्रकार करनेके रिने पेत उठानी और बढ़े बेगसे उनकी ओर एँडा : प्रीमारीने ऐसा कि अलेड नेगबरे ऐसा नहीं स लकात, अक्ष: वे सरका बार बचानेके तिने पृथ्वीयर सुद यहें। केले को पुरस्का पीनवीके रक्यर केक् और क्लेक राजी ही उनका रच, सार्था, जन्म और चेड़ोंके सहित कुर-कुर हो गया। भीन्यमीमधे राष्ट्रीय देशसार शहर आहि क्रमें रची अपने-अपने रच हेकार कैंद्रे । रख में क्षारे रचना कानार केलो हुए केलबी ओर वहे। असे साम्ब धीनाओ अवस्थान हो-- 'सहस्यू चीन । होत है हो गरोना ज्ञान करे । विश्ववार्त विकासी की इसके प्रथम प्रथम विक्रिय किया है।" का शासासकारों कुरवार सीच को जाता हुए और औ पत करानेका निश्चम किया । जा सक्य देशको प्रकृति देशका सम्बन्धि, चीन्सेन, बहुबुह, हुन्स, केव्यक्तकपुरस्य, बृह्येल् और अधिमन्त् एवा साथ ही अवसे पर रोजार पारे । किन्नु होप्याचार्यं, कुमामार्थं और प्राप्यके राहित चीनकारि अर्थे प्रेयः विवा १ अर्थी क्रमच केली सरकार सीवका चीवकीका बनुष कार कृता । चीवकोने तुक्त ही कृता बहुत का रिका और बढ़ी देवीने बेलबी और अने । बीक्यें सामने सानेज उन्होंने प्रीन्तोनको साठ, सपियनुको हीन, सामाधिको भी, सुबद्धानको भीन और केरानाराजनो र्गात कम करकर केक दिया। दिन के होने केल्के सामने च्युंचे और अध्ये बहुकार एक मृत्युके समान व्यक्त व्यक्तासर जो अक्रको अधियमित यत्ने होता। या यत्न हेत्वे करणको चोड़कर उक्की करीने हुए गया और फिर विकारिके एकार कार्यका पृथ्वीने अवेश कर गुरू। इस जनार जाने बेक्स प्राणक शर दिखा। उसे पृच्छीपर नियों हेन पाला और उनके पहले इतिकारोग बहा होन्ह कारे हुने तक अनके का और अन्य कौरवाचेण को अस्त हुए। पुरवासम्य के माना मनाता हुना हुनर-कमर क्को छग ।

# मुचिष्ठिरकी चिन्ता, कृष्णका आखासन और क्रीड्रव्यूहकी रचना

शृतकानी पूर्ण-सञ्जय ! सेन्यकी क्षेत्र कर पुत्रकों प्रापृत्रोंके हम्बसे मारा करा तो उसके शहर पहन् वनुकी पातासकोरोंने सम्बाधिक स्थाप निरामन क्या किया ?

सक्रमने कहा—सहस्रक ! विकार होबार श्रुनिये—कार पर्यक्त दिनके प्रयोगका अधिकांस कर बीत करेना जगपग केवालो प्रथम आपनी क्षम सहस्रो संगक्तीने प्रश यह होने लगा। दिएको सेनामी क्षेत्रको मर हुआ और कुरावपांके साथ सामको पुत्रक रिप्ने विकार वेक्स्कर असूनि प्रकृति प्रव्यक्ति हो अधिके समान प्रमानुनात संस्थ क्रोकके कत कर । यह कामान् भीरने अपन्य महान् करून महानार पहराब सरवाले बार करानेकी इच्छाने क्रारंत आक्रमण किया । अस प्रमुख बहुत-में एक करतें ओरले श्रीवाकी देश कर रहे थे। अनु भारतेको क्याँ करता हुआ सामके राज्ये कर परित नेवा। इस पीतके मुक्तने परे हुए प्यापन कानको क्षानिक रिम्बे अस्मारी केम्ब्रेस राज्य महारावी-महाह्याः क्रांत्रें, क्रांत्र्य, विन्तु, अनुविन्तु, सुर्व्हान और क्रांक्र अने करों ओरसे फेकर एके के को और बंधके करावान बारतेको पर्य अस्ते सन्ते । ३५ सर्ताको इक स्था उद्धार करते देश रेजापति होता क्षेत्रपति बार गाना और बारूर नागाँद स्थात नीचे व्यवसेसे का मानोके बन्द व्यवस्था निवस्त करने एना । एक महत्वाह जीवा देखके संबंध कर्नन करते हुए विद्याल बनुष हामने लेकर प्रांतरण पद आने । अने अने हेक प्राच्याची क्षेत्र पराने वर्ग क्ष्मी ( क्षान्कीचे चीनाने क्षेत्रस्थी राहा करनेके रिन्दे अर्थन अरके आगे आवार कार्ड हो गर्क, दित हो पीनाबोके साथ इस्टीका पढ़ किय गया।

इसर, सम्याने हामये नक्क से अपने उससे आत्मान प्रेसकी सारों बोहोंको पार हास्ता : जम मोड़े पार नमें से संपा की साराबाद हामाने लेकर पूर्वत रखते कुछ प्रतानि किसी : अम पोजाली पहाला, पारत, केम्बल और अन्याकनोड़ीय पोजालीको सामाने मार-नारबाद निराने सके : किर, अमेरे आई-जार सामान कोइकार व्याक्ताराम हामान वाला किया और असी सेना कीमाने व्यक्तियों सम्बद्धि केम्बली हेरे साहो : वे पायान-वाली महाराजियोंको सम्बद्धि कामाने स्थान पार्च सभी : सामी सेना अन्यांका हो कही, जानक व्यक्त पह के गया : हारी कीमाने पूर्व पी काम हो गया; अस्तः कीनेने कुछ सुख नहीं पहला या और भीकानी को नेनारे यह से थे—व्यक्त देखार पायानी असी स्थान

अध्य दिनके बुद्धों का प्रकार-सेन्ट फैंडे इस ले जरी

और कृषित इस् भीनावत परावाम देशावार कृषीवन सुनी काने लगा. जा सबस वर्गतन प्रिकीत अपने सब्दी पाल्यों और सम्पूर्ण कव्यक्तीको साथ संग्यर तुरंत धनवान् श्रीकृष्णको क्षा को और अपनी पराक्षको कियाने बहुत कृती होकर कार्य तथे—'बीकुमा ? वेस्को हो म ? वर्मीकी मीतनमें कुले हुए क्रिकोल्पी बेरीको जैसे अला क्रमणार्थे करन करवती 🗘 क्यां प्रकार प्रकारक पर्यापन दिखानेवाले जीवानी अपने कारोंने नेटी केराको जानसाह कर यो है। ब्रोधमें को हुए कारक, बक्रवर इन्द्र, परकारची बक्रव और गर्सपारी क्षत्रेरको हो क्षत्राचित बहुने जीता या सबसा है: बिल इन बहुत्व तेवाको चीवाको बीताब असम्बन है। ऐसी इलाने में से अपने पुरिवर्ध कुर्मराज्ये कराय चौच्याची अयाव कार्य काले किया हुए का है। अस इस प्रकारों में कैन्स्स्य करके पुराने जी प्रस्ता पहला। पीपानी बहे क्याँ असलेक हैं; उनके क्रम क्यार मेरे लेनिक उसी प्रकार क हे करेंगे. केरे प्रस्कृतिक अर्थाने निरम्बर परिणे dagen ! see ift steerin fleet fier the E. meit wall काल बडोर राज्या बर्जनाः किर् हा किरोको बुद्धमें माने न हैंगा । चीवाची प्रतिद्वित मेरे द्वाराचे संद्वारचित्रों और श्रेष मोज्यानीका संभार कर से है। कावन ! तुन्हीं कावनी, अंध क्या कारोले अनारा किर क्षेत्र ?"

वह वहावन चुंचिहन क्रोकाने बेल्प के बहुत देशावा आहें। वह विको कर-ही-पन कुछ सोको हो। तब पनाधान अहिलाव कर्ने होच्याने विकि तान प्रमाद पाण्यानीको साराणित करते हुए खेले---'पारत'! हुनों इस कारण होण्या मूर्व करना कर्मिने। नेको को. हुन्याने पाई कैसी प्राचीन और विव्यविक्थात ब्यूचन हैं। में और महान् प्रकृति साराणि हुन्या तिव व्यव्यं करनेने स्त्रों है। में विराट, हुन्द, पृह्मुक तथा हा-पान्य पहालानी राज्यानीन हुन्याने कृत्यानीकी और पाया है। महामानी पृह्मुक तो साथ की सुन्दारां विव्यविक्था और तिथ व्यार्थ करनेनात्म है, इसने सेनामतिस्था मारा विकाह और यह विकामी को निक्षण है प्राचन करना है।'

श्रीकृत्याको ने कर्ते सुनकर वृत्तिद्विरने आहरकी वृत्तकृति काइ, 'बृहकू ! मैं के कुछ नक्ता है, जान नेकर सुने । आहा है, तुन मेरी कार टालेने नहीं । दून इसारे सेनामी हो । कार्यान् कार्यको दुनों का सम्माध दिया है। पूर्वनासार्थ मेसे कार्तिकारों केवारायोंके सेनाधीर हुए से, जारे अकार दून भी कार्यकोंके सेनानाकक हो । पूर्वासिद ! जाव अवना संस्तान तिकारों और कोरबोका संस्तर करें। मैं, पीमसेन, सर्चन, महरूप-सब्देव और प्रेयमिक संभी पुत्र तथा और भी से प्रमाप-स्थान राजा है, सब कुपले मीवे मरोने ("

मह सुरक्तर मृत्युक्तने कह जरमिना सभी सोनोंको जरण महतो हुए कहा, 'कुर्नारका ? मनकार संकरने युक्ते व्यक्ति ही होत्तवार्थका काम करमा है। अस्य में बीका, कृत्यवार्थ, होताबार्थ, साम और क्यास—कृत राग्ये अधिकारी बीरोंका मुक्ताका करमा है बहुत्या पृह्युक्त कर इस ज्ञार मुक्तेंद्र दिन्दे हेकर हुआ से स्वोच्या प्रकार और क्या-क्याका करने हुने। साध्वास, मुख्यिक्ते हेन्यवीत सूत्रपुत्रमें कहा, 'देकसूर-संक्रामने स्वरूपतिनीने हुनकि विशे किस सीहारक मानव स्थानत उन्हेंद्र विका का, अनेकी स्थार हुनकोग करें हैं

हारे दिन पुनिवित्तां आहातं अनुसर बृह्युक्तं अर्थुन्यो इत्यूनं केन्स्रे धार्च रक्षः रक्षाः के हुए अर्थुन अर्थ्य कार्योः कार्या और अन्तुक क्यूनो देशो क्रोत्य पर रहे थे, केरे क्यूनी विराणीते क्रोक्स्योतः राज्य हुन्य क्यून सही रोज्याने राज्य वित्ते अर क्रीक्स्युक्ते विशेषकार्थे विश्व हुन्। कृतिकोग और क्रीहाल—ये क्षेत्रे क्रिकेट स्थानक

स्त्री परे। इसम्बंद, प्रयाद, अनुषद और विस्तावित राष्ट्र बीको स्थानन था। प्राचर, पीन्तू, पीरवक और निकारोके साथ राज्य सुविद्यार करके पुरायकों साहे हुए। कार्ये होनों पंत्रीय क्यानी चीपरेन और मूल्ह्या थे। क्षेत्रकेंद्र पुर, अधिकन्द्र, महारक्षे सामन्द्रि क्या विद्याल, तर, पूर्व, कुन्देरीका, काल, केन्द्रव, सहस्र, पराञ्चन, करिन्छ, रिसिन, चोस और चन्छ्य देवॉमेंड की दक्षिण पहले विका हुए और जीवियेग, हुन्छ, घारमा, ग्रान्थारि, प्रमार, दक्षार, कक एका क्युटरनेतीय वीरोबेट प्रथ्य नकुल और प्रमुक्ति स्थान प्रभूको विभाव हुए । हार समुक्ति क्षेत्री प्रकृति क्ष्रूर हमार, क्रिकेमानो एक स्वयं, पुरुषानमे एक अस्त बीस इकार और पीकाने एक सरका समार प्रमाद रूप करने किये गरी वे। क्षेत्रे पक्षांक अले, पोठं और एक विस्तारोक्ट पर्वतके क्रमण केले प्रमाणकीयो बालारे व्हें । विराह, केन्द्रम, कामिया और प्रैक-में साके बेवानामधी रहा करते थे। इस प्रकार का पहल्क्याची राज्य करते राज्यत अक्ष-एक और काम आहेते पुरस्का है पुरुषे देने कुर्वेदनकी अधिक स्थले सन्।

# तूसरा दिन-कौरवोंकी व्यूहरचना और अर्जुन तथा भीव्यका युद्ध

शायने पश्च-राजन् । कृतिकारे का वह दुवेश प्रतिकृत्याची राज्य देवते और अस्त्य केशको अर्जुनको अस्त्यो रहा करो कथा से हिम्सकानिक एक अवस्त्र वही क्योंकर सभी सुम्बीनोते कहा—'मीने ! अस्त्र सम्बन्ध



यानं प्रकारने सक्तांबारानकी विका करते हैं और पुज़ारी करतने प्रकार है। आपनेके एक-एक वीर भी पुज़ारे परकारेको करनेकी हमी। एक्का है जिस की सभी बहरती पूज राजा निकास प्रदेश पारे, तक को प्रदूध ही प्रधा है ?"

जनके इस जनार काइनेसे चीना, बोना और आएके सची क्र विकास पायक्रीक पुरस्कानी एक पहल् बहुत्सी स्था करने रागे । जीवाची जाून बड़ी रोगा क्राय रोजार सकते आने वर्तः । अस्ति पीक्षे कुल्याः, यहान्तं, म्यानः, विक्रमं, नेवास स्था कर्मकारण नहीं देशोंके वीरोको साथ लेकर महराताची क्षेत्रकार्य को । नामा, विद्युक्तिया, विशेष और भागी। क्षेत्रिक राज्य प्रमुक्ति क्षेत्रप्रकार्यको स्थापि निवास प्रभार । प्रमास पीके अपने सानी भावनीके ताल कुरोपन या र उसके साम अक्टबर, विकर्ण, अन्यु, चोरल, त्रार, एक, बुद्ध और काम्य देशके केन्द्र है। इन सबके साथ का प्रकृतिकी केंच्या देश का देश का। पुरित्रका, प्रत्य, प्रत्या, प्रत्युत्त और विश्व-सन्तिष्य—ने ब्यूबंड कार व्यापको राह्य करने लने । सोमयका पुन, सुरायो, कम्बोनका शुर्दकन, शुरान् और अञ्चलपु—ने दक्षिण चनके रहक हुए। असलान्त, कृत्यार्थ और कृतवर्थ-ने जून को सेनाके ताथ बहुके पुरानाको सब्दे हुए। पुरुषे पुरुषेत्रका वे बेहुवान, वसुदान, वर्गकरको पुर तथा और दुसरे-दूसरे देहोंके एकाहोत्।

राजन् ! तहरूका, अनको पहलो साम बोद्धा पुरुषे रिकी

तिवार हो जां। जांर बादे अवन्तको स्था चाह समाने हुने
विकास करने समें। हाने को हुन किनाको विकास सुमान का
करने बहु कामान । तनुरास प्रमुखने सी अनेको प्रमुखन का
करने बहु कामान । तनुरास प्रमुखने सी अनेको प्रमुखन का
करने बहु कामान । तनुरास प्रमुखने सी अनेको प्रमुखन होन्।
सुमान कामा साम ओर गूँको समी । अवहाम, अर्जुर,
बीमरोन, पृथिहिर, महारा और प्रमुखने सी अर्थन-सम्बं
सुमू कमाने तथा काविरास, सेका, विकासी, पृश्चुस,
विराद, सारवित, प्रमुखनेसीय और और सैनाको हुन सी
को-को सुमू समानर विद्वित समान सुमाने समे । उनके
सुमुगारकी कीनी आवत्व पृथ्वीको सेकार आवादकार हुन।
करी । इस प्रमार कीरण और सामान एक-सुरोको सीव प्रमुखनेसी हुन सुनके विभी आवनो-सामने सामे हो हो गये ।

नुरस्ति हुम-क्ष क्षेत्रं ओस्स्य संघ स्कृत्यस्त्रक्षः कर्म के गर्ने नो चेद्धाओंने किस अध्या एक-कृतेन्द्र स्कृत करना भूक किसा ?

न्यापरं नाम-जाव क्षेत्रं और क्षण्यापानं केवाओं क्ष्या-रामी, तब कुर्वेश्वाने अवनं क्षेत्रकारोकों कुद्ध आराम कारनेकी कारत क्षेत्र मोद्याकों के विकास की क्षेत्रकार काव्यकों कारामा कि। मोद्यकों के क्ष्यान की क्षेत्रकार काव्यकों के कारामा किया। किर तो क्षेत्रों अर्थकार काव्यकों क्ष्यों के कार्यकार कार्यकार कार्यकार कार्यकार कार्यकार कार्यकार क्ष्यकार कार्यकार क्ष्यकार के कार्यकार कार्यकार कार्यकार क्ष्यकार, क्ष्यकार, क्ष्यकार कार्यकार कार्यकार, क्ष्यकार, क्ष्यकार कार्यकार कार्यकार, क्ष्यकार, क्ष्यकार कार्यकार कार्यकार, क्ष्यकार, क्ष्यकार कार्यकार का

अर्थुन प्यानको जीवनो ऐसे पराव्यको देखका को धर्म पर गर्थ और मनवान् श्रीकृष्णारे कोने, 'जनाईन | अस्र निवास्त्र भीवनो पात रस के वरित्रों, नहीं हो से इक्टरी सेनाका अन्तर्य हैं संसार तर करोंने । सेनाको श्राक्षांने विशे अन्य में भीवन्त्रत वस कार्यन्य / अीकृष्णाने व्यक्त—'जावार, बनाइय | अस सम्बद्धान हो जानो । यह देखों, में अन्तर्य हुन्हें विद्यानको पात पहुंचले देखा हूं / हेला पहुंचले सीकृष्ण कार्युनके पाता प्रोक्षको कहा हो सते । सोनाने जा वेस्य अर्थुंद जबने वालोंसे प्रश्नीतिका वर्षण करते हुए सहे वेस्त्रों का एर्ड हैं से अर्थ व्यक्तन उनका क्रम्पत मिला। उस कर्मा अर्थुंग्येड उसम चीकाने स्वक्रांता, क्रेम्प और व्यक्तपने के-चै, क्रमुंग्येड चीम और विकासी कर बाब उसे। इस क्रमुंग वरिष्य की व्यक्तित का विकासित नहीं हुए। अर्थुंगे कीवाल वर्षी औरसे वीची बालोंसे विका वानेगर भी व्यक्तियुं अर्थुंग वरिष्य की व्यक्तित का विकासित नहीं हुए। अर्थुंगे कीवाल वर्षीता, कृत्यवालेको भी, होवाचार्थको साठ, विकास तुर्थन कारण कृत्यवा । इस्त्रेशिये कारणित, विवाद, वृत्यक्ता, क्रेम्प्रेक चीम द्वा और अर्थिकामु अर्थुंग्यकी कारणान्ये विकास वृत्ये और अर्थुं कार्ये औरसी बेरकार हाई हो को।

वा योगने जाती वाल पाणार अर्थुनको वीत दिया। या देश योगनेकाले जोड़ा इस्के यारे कोएडाल काले रूपे। उन महत्त्वी पीरोका इस्का कुरुवार असरी अर्थुन उनके योगमे कुर गया और महारिक्षोंको विकास पाणाय असरे यागके योग विकार रूपा। अपनी रोगको अर्थुनरी विकार केया यह भारतार अर्थुन इसरी होराको सह कार या है। असर और जानार्थ होलके स्टिन्सी का रहा हो रही है। कार्य क्रमा रहा हिए महानेकाल है, गयर यह वी अर्थुनरे रूपाने नहीं असर। विकास होड़ कुटा है: इस्तिको यह अर्थुनरे रूपाने नहीं असर। विकास ! कुटा है। इस्तिको स्टान्स्ट्री

वृत्येक्तारे ऐस्त व्यक्ति स्वयते अग्रेर करें। अवस्थान, हैं या व्यक्ति अर्जुनके रक्ति और करें। अवस्थान, कृतिक और विवासी पीक्ता साथ विवा । अस्तुनी व्यक्ति का वैत्यास व्यक्ति इस अग्रेरो क्या दिया। वीत्रमें भी क्या करकार का व्यक्ति तेष व्यक्ति । इस अवस्था वेत्री एक-पुरसेके व्यक्ति विवास करते हुए को व्यक्ति व्यक्ति करें। वीव्यक्ति व्यक्ति देशे के। इसी प्रवास अर्थुनके कोड़े हुए क्या की वीत्रको सावकोंने करका पृत्यीक विवास को ने तेनों ही करवान के, वोनों ही अनेता। वैत्री एक-पुरसेके बोन्य प्रविद्या के। उस समय क्रिया वीत्रको और क्याक अर्थुनको इनके क्या आहि विद्योश

🕏 बहुमान पर्ते हैं। इन होनी परिवेद परकारको देशकर | अरकारें, बहुनों, हरूनों १४४ दाना अकाओ एसरे सभी प्राणी आवर्ष परते थे। वेले वर्षने निवा सावन वर्षाव बारनेवारे पुरुष्यें कोई क्षेत्र नहीं निवासक का सरकार, हवी प्रकार करको राजकुमारमाने कोई जुल नहीं क्षेत्रको यो । उस समय गोरम और परमानकोंके बोदा सेवरे बारवाले हैं की थे।

अक-उक्तेचे आपले कारक पक्ष से वे : इस अकार का का काम संकार कर रहा का, उसी समय इसरी और कारत-एक्स्पार बारवाई और होमानायेथे सारी प्रत्येश

# शृहद्वप्त और ब्रेणका तथा भीमसेन और कलिङ्गोका युद्ध

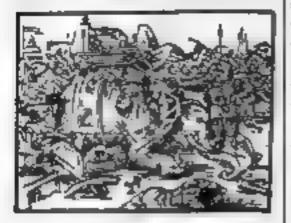
असावने एक-एकच ! यहान् बनुबंद होनावानी और [ प्रमाणकार प्राथाओं किस अकर पुत्र हुआ, से पूर्व

स्त्राचने कहा—एकप् ! इस चन्द्रान्य क्षेत्राच्या कर्णन श्रुविकार क्षेत्रकर स्वविके । यहारे क्षेत्रकारणी बहुबहुकको सीक्षे भागोंके बीच दिना। तम पुरुष्काने की ईसकर क्षेत्रको कर्ने बाजोंसे बीच प्रस्ता। व्य देश हेक्ने एक बाव्येकी क्यां मार्चे हुप्रश्नमारको इस दिश्व और अलब जनान करनेके किये क्रियेच कारकाक्ष्में रामान एक प्रसंका कार प्रकर्ण रिया । को क्यापर काले देख करी केवले ब्राह्मकर का गता। प्रतान ! का तक वर्तनः क्रम्याना अद्या पुरुवार्ध मेरे अपनी अस्ति हेवा। अस्ते पुरुषे पुरुष भनेकर का बाराची क्यों है बाद दिया। कि होगके क्रम केनेकी इच्छाने जाने नई केन्से प्रतिकार उद्धार विकास कर प्रतिकारे प्रेराम्याची प्रेरते-प्रेरते काट प्रिया और उसके प्रीय हारहे कर हाते। यह देश अलो पुर: चीन व्यवके होनाको बानार किया । तब होराने हराहरणाच्या करत कार हैया, निर ज़र्राक्रिको रक्तमे कर निराम्क और अस्के करो केटोको भी जार करना । सार्गांत और चेंडोंके पर व्यांको पर कर रमहित हो गया तो हकरें कह लेकर १४०ने यह यह और शक्त चैका विकाने राजा। इसी समय होताने एक सहकूर काम किया: बाब्या अभी त्यसे जात भी जी वा कि उनीने सनेको पान पान्कर उसके इसके पक्र गिरा है। का का कार और सरावार केवार को बेनके क्षेत्रके करर क्रवार, सिंह आवानी सनोदी उसी सरावार को जाने बहनेसे केन विक । कारी जाती की कह को से के का वर्त करीह साम क्रेमने कोई हुए मानोको कारमे नीवे कार्य राजा। पुर्वाने पहाचार्य भीवलेन प्रवृत्त सहन्त्री स्तुत्रकाने हेन्ते स्त् पहेंचे । धीयने जाते ही एका दीशे कवा गारका क्रेमाकर्वको बींच जारन और ब्रह्मपुत्रको सुन्त अपने रूपपर विकासिक। हव क्वॉक्से में द्रेगावर्षकी व्यक्ते तिने करिएएक मानुसानुस्ते बहुत सही होत्यके हरू। चेता । महत्त्वा !

अपने पुरुषो अञ्चले अनुसार करियोची व्य प्राती सेना वीवकेनों क्रम वह असी। बेपाबार्ट से निटट और कुलके कानने का क्षेत्र और शृहकुत राजा मुविहिसकी व्यान्त्रकोर हैं के प्रत्य पन्त । त्यान्तर, भीमरोन और क्षतिकोने महानकात्रक केलाह्याची पृत्व विद् गया।

क्षेत्रकेर अवने हे कहूमाने परेल करूप रेकाले हुए क्रमिक्रमाओं साथ बहु कार्य गर्मे । व्यक्तिप्रधानमा एक पुर या. सम्बद्ध पान का प्रमाणेय । साने अनेको पानोका प्रधार कर चीनकेनके केंद्रोकों कर कका। चीनकेन विना स्थाके के नो—क देशका अने बोक्त इसक दिया और जारा क्ष्मेंब्रालंड नेक्सी पति कालेसी इसी राज्य है। तस चीनने अलो उपन एक लोहेकी गता फैसी । उस गराची चीर कारत यह सार्वाक्षेत्र साथ हो कार्याच्या सुक्रक गया। अपने कुरको बनो देश करियुक्तको इसको स्थितीको सेन नेपार क्षेत्रको सार्चे ओसी के रिच्ये । सीवसेको का गार पेकाकर क्रमोने कर और सरकार से सी। या देश करियापन क्षेत्रकों पर पता और काने बोक्सेनके प्राप्त सेनेकी प्रकास क्रमा क्षा असी समान विकेश क्षात क्षेत्र । भीवतेओ अपनी सल्यानों इस सीचे पालके से दसके कर दिये और करणी संस्थाते प्राच्यात करते हुए बड़े जोरसे हुर्वनाह विराध । क्षत्र को करियाराक्षेत्र क्षोक्षरी सीमा व रही : असे शकाया त्यक्रार क्रिके क्रिके हुए चौच्छ लोगा भीगरोग्यो क्रान क्रिके । भीकरोजने हरंत सरकारते करते हमाने समझे बार दिने और केर क्युक्तरकर कवा किया। क्युक्तरने वालेकी क्यंके क्रमां का दिवा और जावरते विकास क्रिका भीकोन भी को केलो लिको समय सामने रूपे। जनार विकट नार सुनवार करियासेना व्यास इर गाँगे । असने सम्बद्ध रिका कि भीमतेन कोई सामारण मनुष्य भई है, देखार है। इंडरेने चीवनेन पुर: वर्शकर विश्वनक क्षत्रके इत्यो सरवार है अपने एको कर को और कारमानो प्राथिक होने होत क्याकर असे नारकार कर गरे। जो बस्ते देश करनार्थे वकिका इक्का किया; पा चौपहेनने अपने

सरकारने जानों में हुम्हों कर दिने और पानुकार्यों कुमरने सरकारका एक ऐसा क्षय करा कि उनके से तुम्हों



हे गरे। किर धीमरेनो जह सम्बन्धे का इन्हेंद्रे ची पंजेपर प्राप्त किया । पंजा पर कांग्रे क्रमी विश्वपात हात क्षात्रेक्तर गिर प्रधाः स्तम हो प्रेमकेन पर क्षात्रक स्थाप रिको पुरसीपर एको हो गये। अस में महेनको हारिकोको मानो-गिएसे जारी ओर कुले रूपे । वे क्रमीकक्षणेकी सेवारे का यहे और होती करवाने सन्वारंत क्ये प्रदेश का मताब बाद करने थे। प्रोतनेत का काम बेकर और अवेदने से तो भी छोजने को हुए प्रान्तकारीय कारानके प्रथम के प्रधानिक पर पहा से थे। प्रदर्शनों विवर्त समय से क्या प्रधानोंद्र कैंद्रों विकास से-व्यापी सम्बद्धाना कार राजाते, काची बोर पहले हुए अब बोर क्रमी, काची जिल्ली भारते, जानी सम्बद्धा तानी महो, पानी सब विकार्जीने जातन गरियो सामार होते, वाणी एक ही वैकाने मको जते, कपी मिलीयर को बेमले कक करने और कपी सकते कर एक साथ हो पहले कर हैते थे। ये बुक्कर रबोपर परित्र जाते और विजने हैं रिक्नोंके बहाद सरकारते महारूप रक्षारे कालों, साथ हो वर्तानार निया की है। क्रुपेरे विजये ही पोज्यानीको पेरोको स्थानका पर छन्छ। विवासीको कार अपनाका पाठक विवाद विवासीको साम्बानके चार कारा, विकारेको अपनी नर्वनको उपका प्रकार और किनने ही बोरोको उत्पने जसक केन्स्रे करावानी कर दिया। विकानोहीने हो इसे देखते ही समादे मारे उस्म साम हिये।

मा तम होनेवर की कार्यपूर्विको म्यूक नहीं क्रेस प्रीमतेनको कार्य औरते केवल का अपने। उसके मुक्तिक सुरायुको माहे देख कीवलेन अस्तर सामन करनेको कहै। उन्हें असी देख सुरायुके कीवली सामित की कम करे। भीवलेन कोवले साम करे। उसके होने असीक बीमलेनके दिनो क्य पुन्त रह से आप । जाना आस्य प्रेकर ज्योंने तुर्व ध्रतिकृतीर कुरुपुरर क्या विज्ञा । शुरुपुरे पुर: वीपसेरवर क्रम करमान करून कर विच । ताके क्षेत्रे हुए में सैसे मानोर्ड कामा क्षेत्रर भीन मोट काने कुर सर्वन्ती मंति क्रमारो लो। क्रमार्थ चैयों वो बाव क्रमा और रोहेके पार करोड़े कालको पीन करन । राज है से क्रमोरे अर्थाः चीरवेची एक करनेकरे प्राप्त और सम्बोधको सम्बोधक भेग विच्छ। किए विन सामोने केन्द्रपानके प्राप्त से मिल्ने । यह देशकार करियाचीर श्राप्ताको महा क्रांच हुआ और आकी केन्छं कई हुमार इस्तिपोने चीनको के दिन्छ। जिल के बारों ओरते चीनकेनकर सर्वेत. पात, सरकार, केयर, साहि और परावेकी कर्त होने तर्गी । चेक्नोन अन-क्रमोची कर्नचा निवास वाले. क्रमों नव is and dress authorised from tall after term of चेळानीको कारकके वर केन दिया। इतके बाद हुर: हे क्रमार करिक्कमीरोको क्रुप्तेन क्रीतके माद करार दिया। चीननेत्रका यह परायम अक्षुत या । इसी प्रकार में सारम्बर क्षीक्षांका क्षेत्र काचे रूपे। महात्व ! उस समय उसे house strain took that terrent tall took is for स्वकृत करण है केलोअक एक धारणक क्रीक्सेंट प्राप 强电电抗

प्रकल, केवली राजे क्योरे बीमरेजे बोदोके का कार । कर चीन पत्र कारों सेवल रचने कर की । sur, meetak skraisen fire artik firk shak सरविको कर विराध:। सरविको निको ही कोई हमाने कार्रे क्रमे हर केरको राज्योंको बहुर बाद है को। कैरहोन करियारिका संक्रम करके अर्थने के रोजके बीचने उन्हें से हो भी बोरवनाके किसी भी मीरवी उनके पर बरोबी डिम्स की र्ख । इसमें बहुक्त की आप और उन्हें अपने रक्ता विकासन सम्बद्धे हेक्के-देवले अन्तर्भ साम्ये से पका। बीजारेन क्यान और कान्द्रेक्ट बीरोने मिने। सामनित्रे क्षेत्रोत्रकी जांसा करो हर बक्क- 'यह सीमानकी कर है को अल्पो करिकृतक पानुसार, राजकृतक केतृकर, प्रक्रोप एक अन्य स्थान-से करियुनीरोक्त स्थार निरम १ क्रियुरोन्स्य सङ्घ बहुत बहु बहु हाले असंस्य हुन्दी, चेहे और एक के और बक्के-बढ़े और, और उसकी रक्ता करते के ह पद आयो अंदर्त है जाने जानगरे सहका नात कर क्रिक !" ब्रान्य बहुबन सत्यक्ति भीपसेन्यरे इत्योशे सन्त रिना और जो जन्मे रखरें बैठाबर जनाव स्थात पहला प्रमा बहु प्रा: कौरववीरोका संहार करने सार्थ ।

## धृष्ट्यप्त, अभिमन्यु और अर्जुनका पराक्रम

**२९९२ श्रा—स दिर का पूर्वकृता अधिक पान** कारीय हो गवा अग्रेर बहुत-से रक्ष, हाबी, बोड़े, बैदान और समार मारे क कुछे हो पश्चासनाकारण बहुदार अनेदान ही अवस्थात, क्रम और कृतकर्थ—इन क्रीर पहार्शनोंक कार पुर करने रूपा। साने सकामानके विकरितका बोहोंको रस करवेंसे बार अस्त । बहानेके को कनेका अञ्चलका प्रत्यके राज्यर यह गया और सहिते बहुस्तानर बाजोकी क्यों करने सना। शुरुश्राको अक्रमानको साम निके हुए देख सुभारतका अधिकन्द भी रहेको साम्बेकी वर्ष करता हुआ जीत्र ही तह पहेला। उसने क्रमणके पर्यक्त, क्षाकर्षको में और स्थानस्थलो आह वालोशे बीध देशका और अवस्थानाने एक, कानाने का और कुकाराओं रीन श्रीके कामोने अधिकक्को बीच दिया।

महराम । इतनेहीमें अवस्था चेवा कुमार स्थान अधिकानुको पुद्ध करने देश जाना सामन करनेको अ गया। विश्व का खेलीने यह क्षेत्रे सन्ताः क्ष्रेक्टे को क्ष स्वानको साधिकपुर्व अनेको सकोशे बीकार अनुवा मराताम विकास । इससे अधिकामुक्ते बाह्य प्रतेश हता और जाने अपने क्रमणी पूर्वी दिवाने कर जाना क्रमोने राज्यको सीथ साल। स्वयंको हक का बारका अधिनक्षे जुनको बाद हिंगा वह देश बोलाकांड मीरोने बक्त प्रमेनाव किया । अधिकानुने एक कृत्य अध्यक्त स्टब्स करून प्रथमें देखा। फिर से केनी एक-सुलंकर कर क्याने और मानो हुए प्रस्ता होइस सामोबा प्राप्त पारने अमे ।

स्वान्तर, अपने पहाची पुरुषो अधिकपुरे बानोले पीरिता देश कुर्वेचन करावी अञ्चलको देश्ये का ग्रीया ( ग्रा | औट 🚟

देश अर्जुन की कुरकी स्थाने दिये नहें नेपने क्षेत्रे। एक मीन और बेम्बनर्ग आदि को अर्थनक सामग्र करनेको का माने। का सभव सभी अपने कोलकर करने सने। अर्थुको हाने साथ सरकारे कि अन्तरिक, दिसाएँ, पृथ्वी और हर्ग के इक को, कह की की सामा का इस बसाधार ब्रह्में कियरे है रच, हजी और योहे जरे गये। श्रीओंग रच क्षेत्र-क्षेत्रकर चार्गने समे। व्यक्तक । का समय आपकी क्रेसचे एक की केंद्रा देशा नहीं दिकाची देता जा, को बरबीर अर्जनक सामन कर करे । के के सामने जाता, बढ़ी-बढ़ी अने बीचे वालेख निवास हेवार सार्वकार अतिथि THE PERSON NAMED IN

का अवसी सेनके की साथे और पानने हुने हो श्रीकृष्ण और अर्थुको अपने-अपने इतार प्राप्त कराये । उस कार भीनार्थाने होनाव्याचीने मुस्ताराते हुए कहा, 'भागान क्षेत्रकाके स्थाप का व्यानकार्य अर्थन अर्थको ही साधि सेनावय र्मकर कर का है। बहुने किसी तरह भी हुने जीतना असम्बद है। इस समय से अल्बार क्या अन्यवस्थान समराज्ये समान क्यंकर विकासी है रहा है। देवाने हैं न, इसारी का बहुत कही संभा किया शरह एक-कुरावरी देवता-देवते नेजीके काथ पानी 🐸 की है: तक इसे लीग नाना बढ़ा पुरिवास है। इचर, सुर्वे भी अवस्थानको मा पत्र है: अतः इस समय से सेनाको समेकार बुद्ध के करन है जुने होना नाम पहला है। हमारे मोजून कोर और हो हुए है, अन: अन सरसको साथ पदा नहीं कर सम्बेंगे (\* महाराज ! आकर्ष होजरो का बद्धकर क्षेत्रकोने आवदी केन्द्रको सुनुष्टिको छोडा विस्ता । पूरा ज्ञान सर्वागचे समय जनको और पासकोको से देशहैं

अक्षी सेपाओ एलप्रोक्ते क्लान्सी अद्या है। क्याँ क्लार क्योंने सेनाक गव्य-मह रहा और इस बहुके उत्तवकारे चौकते स्थानमा वे सर्व ही साई हुए। होनो नेहंब्दी बाह्य क्षेत्रासर्व और कुलार्ग थे। मिरोचान्ते अक्ष्मान्य और कृष्णार्थ एवं पूर् । इनके साथ प्रैंगर्स, वैकेश और व्यास्तर भी थे। न्याब, सिन्युसीमीर और पश्च-क्लेक्टीय क्रीडोर्क प्रत्य मुरितना, सरा, जाय, बन्दर और बन्दर- ने बन्दरी जगह कहे किये भने से । अपने पहाची और अनुकरोर्क शहर है

## तीसरा दिन—दोनों सेनाओंकी च्यूह-रचना और बमासान युद्ध

सक्रमने कार-का पत बीती और समेश हुआ के कीकरे । तुम्मेंकर पुरुषाध्ये दिक्त हुआ। कामोज, एक और क्षानेन्द्रीय चेत्राजीको साथ नेका किए तथा अनुविद का महाके पुरस्कानमें कित हुए । मनश और स्तीन्त्रदेसकी केन तथा क्रोपकारण उसके क्यें पंताबी जन्म सबे हुए तथा कारण, विकास, पृत्यं, कुन्कीपुर आदि योजा गुरक्रांत साथ वार्षे पेसके स्थानमा विका हुआ।

अर्जुनने कौरकोजनी व्य व्या-स्वना देशी तो शृहसूत्रको क्रम रेकर उन्होंने अपनी सेनाका अर्थकन्त्रकार स्पष्ट क्यकः। उसके दक्षिण विकायाः ग्रीमानेन सामेपित हरः।

तमें साथ अनेको अस-एकोसे एका निक-कित देवलें एका थे। चीवलेंको पीछे प्यानको निराह और हुन्द एके हूर। अस्ते याद गीता और गीतको जान पूर्णन्तु थे। पूर्णन्तुके साथ चेति, कालि और काला आदि देवलेंके गीतक थे। पूछ्युत और विकासी प्रकार एवं प्रश्वकानेतीन पीछाओंके साथ सैनाके स्वयंपानमें निका हुए। प्रश्विकोधी पेताने पान करिएन पुचितित भी नहीं है से। उनके याद गामकि और हीन्सी काल कुन थे। जिस् अधिकान था। जानने बहुके मान विकास अस्ते कित हुए जिनके प्रकार प्रश्विक पीछान थे। इस प्रकार पान्यकोंने हुए व्यानकारी

स्वारं पृत्व व्यारम् हे कार । राजने राव और हार्याने स्वारं पिछ गर्न । राजने करवारहाने हाक निर्मा हुना पृत्वपित्रोचा सर अक्तरहाने पृत्व रहा था । राजनवाले मान्योगी कामान कुछ किया हुना था । उसने साम आईर कीरन-मान्ये रॉक्नोमी सेनाचा संहार कार्य समे । मोन्य-मीर मी प्राणीमी कामा न कार्या सामानोंसे मुख्यानेने हो यो। कर्नेने एकाम किससे हाना मोर कुछ किया कि पान्यक्रियोग के उसक गर्ने, उसने कामाद क्या गर्ने । अस मीमसेन, मान्यक्रम, सामान्य, प्रेमितान और होन्यक्रेंसे क्योर पुत्र मी आवोत पुत्रोची सेनाची हम कामाद समान्य करने हुन, की क्या प्राणीमी । इस समार सामान्य कर-मान्य करने हुन, की

महाराज । इसी समय दुर्गीयन एक इसार रिज्योकी होना तैयार प्रदेश्याकों प्राप्त शासन । इसी प्रवास राज्या की बहुत नहीं सेनाके साथ जीवा और क्षेत्राव्यकींक कुळालोने का गरे । अन्ते भी केस राज्याकोंने इसारों एवंकि इसा वार्ट और में अभी देश राज्याकोंने इसारों एवंकि इसा वार्ट और में दि निका और वे उनके राज्या प्रतिक, पाह, वरिय, प्राप्त, पास्ता एवं कुला आहे, अन्य-स्वाकेंकि वर्षा हाने समें। वित्तु अर्जुनने दिश्चियोकी काससे सम्बन आही कुं राज्योकी कर पृष्टिको अपने माजोंने बीचने ही ऐक हिया। राज्ये इस अस्पेनिक इसारास्त्राको देशकार केंद्र, सन्त्र, राज्यां, विद्यान, सर्ग और राज्यस—समी वन्त्र-वन्त्र प्राप्ते (विद्यान, सर्ग और राज्यस—समी वन्त्र-वन्त्र प्राप्ते (विद्यान, सर्ग और राज्यस—समी वन्त्र-वन्त्र

कर्नुनके कार्यासे पीडिंक होका कोरव-सेक क्रिक्ट और कारो करियों हुई कारने सभी । उसे कारवी देश कोरवने को हुए बीक और होकाकारी सेका । इसेंकाओ देशकार कुछ



केंद्र औरने कर्ने । उन्हें सीको देख कुरने भी प्रेस्ट्रेसकड़ और राजे : कर्मके लीव सार्वेगर क्वांकाने चीन्यवीके पाद कार्याट बाह, 'रिकाम: । में को निर्देश करता है, जाना बाहर केरियो । जनावा साथ और सामार्थ होता वीरीवा है, राजानात्त्र, सुद्धारं क्या कृतकार्य काश्या मेजूर है, स्वराह्य प्रमाण केलावा प्राप्त काल कालाव अवस्थानीके प्राप्त गौरकारी का भी है। में का सबी की बन सबस कि बन्दर जन्मचेन्नेचे प्रकार केन्द्र हैं। अन्याप ही आप प्रत्येर कृत्याही। रक्ते हैं, बभी से इच्यों लेन यारे का रही है और नहर क्षय मिलों केरे हैं। जाने चारी बाद औ, तो बाते बाते हो बात केर जीवन का कि 'में काम्यानेचे, काम्याने और साम्यानियों करा र्जी करेन हैं को समय सरकते, अवसंबंधी हक कृत म्हाराज्यों का सुरवार में वार्चके सम अपने वार्तकार किया का रेक और यह कारायों अध्य पूर पुत्रका संबद्धि स्थाप को साम्प्रेयोग न समाने हो हो अवस्थे योको अपने पराक्षको अनुसार युद्ध करना व्यक्ति ।"

वृत्येक्तवर्धः व्या कार कृतवार ग्रीम वारकार हैतते हुए कोशके अर्थने विशासर कोशे—'राजन् । एक-वे वार नहीं, अनेको कर मेरे हुमसे ज्या साम और हितकर कर करायी है कि इन्योद स्थित कर्म्य देखा भी क्वाब्रोको पुत्रमें नहीं जीत सम्बंध । अस में कृत्य हो कच्छा इस स्वक्रमाने जो कृत्य कर सम्बंध है, सामेंद्र सिने क्याचे प्रशिष्ट करा न रहेता। हुम जन्मे प्राथमिक सम्ब देखी, अस्य में अनेदाव ही समझे स्थाने क्याब्रीको सेकाबीत मेने हस देखा।

नव मीन्परे इस ज़बार बड़ा से आवर्षा पुर आता होता? पेरी और सङ्क आदि वार्ष स्थाने समे। उनकी आवान सुनकर पाणान की सङ्क, भेरी और सेरचक तुमूत नाम करने

# भीव्यका परस्क्रम, श्रीकृष्णका भीव्यको मारनेके लिये उद्धत होना और अर्जुनका पुरुवार्व

शृतरहाने पूक-पर्याण | जब मेरे दृःगी पुत्रने उक्ताकार श्रीमच्चे कोच दिल्ला और उन्होंने मध्यार युद्धारी अभिन्न बार सी, उस धीव्यतीने चाव्यतीक साथ और पर्यासम्बद्धिने धीव्यतीक राज्य किन्न प्रवार युद्ध किना ?

शक्त बहुने तमे-का दिन का दिनका प्रथम चान चीत गंदा और सर्वनरायण चीक्रम दिसाबी और जाने तमे एक किश्मी पाष्ट्रम अपनी किमकाद्री सुनी मन रहे थे, उसे प्रमान विकास भीनाती हैन सरलेकारे बोहोरी को हर राजपर बैठकार पाणान-सेवाको और गई । उनके सामने बाल बार्ड हेना भी और आपके पुत्र राज ओसरे बेरबार जनकी रहा का हो थे। यह समय इनलेनोने और प्राक्तिने वैन्यक्रकारी संपान किय गया। योडी डी देखें केद्राजाने प्रवारी महत्वा और प्राय कार-कटकर क्योक्स निरने और राज्यमें सरो । विकानोडीके सिर से बाटबार निर गर्ने करर का धन्त-वास रित्वे क्ये ही क गये। कुनकी नहीं का करते। क्षा संबंध औरत और मान्युबोधे देशा चनानक बाद प्रकार बैसा न कभी देखा गया और न सुना ही गया है। उस समय चीवाजी अपने यारवंदी मध्याराज्यार काचेर विकास स्वीतेते इंग्लंड बार्स प्रथमा जो से । एकपृथिने से इतनी प्रविकाली एक और किया से से कि पालक उने बजारे करोने देखने उन्हें । मानी भीवाने कामाने अपने अनेको इस क्या तिये हो । हिन रवेगोंने उन्हें पूर्वने हेज़ा, उन्होंने ही अही कारण आकि पेरको ही पंक्रियमें भी देशा। एक ही हकारें वे कार और दक्षिकरें के हिमानी यहे। इस प्रकार इस बुद्धवें सर्वत ने-हे-ने विकार्य हैं। तमे : पाण्डानोजेने कोई शीवनतीको नहीं देख पाण या, इनके बनुषरी पुटे हुए असंबंध बाल ही दिवाली पहले थे । कोगोर्ने इक्कार पर गया। जीवारी को अकारकारो निवार को में: उनके पास इमारी राजा अपने विज्ञानके निवे क्ष्मी जनपर आहे थे. जैसे जानके पाल परिने । उनका एक भी कर काले की करा छ।

इस जनार अनुस्य परावाणी श्रीवाणीओं यार एकार पुणिवित्तारी होना इसारों हुम्ब्यूने बीट पाने। उन्हारी साम-वालि पेकित होन्यत यह बाँच उठी और इस स्था उन्हों परावा वाली कि से आहानी भी एक साथ नहीं साम सांध। इस पुजारे बैन्यता निवाले पुरावती और पुजारे विद्यालये पार सामा तथा निवालिक हामने पास नाम। प्राच्यालेक हैनिक सामी कामा उतारकर बात कोनो हुए त्यापुणियो प्यापति हिसाबी हैरे गारों। प्राच्यालेकाची इस अवस्य निवाली देस संस्थान जीवनाने रक्यते केवाचर अर्थानो पास, 'सार्थ | विसमें दिन्ने हुन्यारी बहुत दिनीसे स्वित्याना भी, यह समय सम्य स्व क्या है। सम्य जीवहर उद्धार करों, नहीं से मोहबार अल्डोने हुन्य को बैटोने। नहते हुन्यों से एकाओंके सभासों नहां का कि 'हुन्येंक'कड़ी केनके क्षीन्य-नेत्र आहि को कोई भी कीर मुक्तों कुद करने कार्यों है, उन सम्बन्धे नार कर्मुना', अन्य सर प्रतिप्रकार समी करने हिंसाओं। अर्जुन ! देखों से अपनी केन किना हरह हिस्स-किस हो गयी है और के सम्बन्धेन कार्यों क्यान कीन्यवीको देखाका ऐसे नाम खे है, बैसे विस्तां करने कोटे-कोटे जंगली जीन सामते हो।" कीक्सकों देखा कार्यों केर्यान कीन्यवीको देखाका हमान की।"

distant affent afte per discounts where share चीनकोंके पात का है परिन्ते, मैं जानी को पढ़ारें पार िनामा है।' तब मानवने बोद्धोंको हॉन्ड दिया और महर्र क्षेत्रकार क सह स, ज्या है सहने हुने। अर्जनस्रे बोलाबीके साथ यह सार्वके विन्ने तेया हेवा व्यविधानी कारी हां हेना स्पेट आयी । अर्थुनको आहे देख चीनामीरे शिक्षणा विकास और प्रमोद्ध स्थानर खानोपति प्रार्क स्थान हो। क्य से करने अर्थनक एक चेटों और सार्टनके पाय कारोते केन करा, दिकानी भूते केत कर। पांतु संरक्षात् बीक्रम के को सेनेकर के; से मर भी निमारित नहीं हुए, पोक्षेको बाउपन अपने प्राप्त हो बाने गये। हारी भागक अर्थको अध्या क्रिक प्रकृत उद्धारा और तीन बाजोते वीकार्वका करूप कारकर निरु दिया। बीकार्वने परस्क बारते ही कुरता अक्षार अपूर्ण लेकर अलकी प्रत्यक्का प्रकारते ह किंद्र को भी क्योंने को ही सीमा कर्नुको कर दिया। कर्जुनको मह पुन्ते देखका भौत्यने उनको उद्योग करते हुट् का, 'मानको । हाने कुर किया, यह महान् पराक्रम क्ष्मारे ही फोला है। केट 🗄 में सुरुवर बहुत करता है करों मेरे साम बुद्ध ।' इस प्रकार पार्चकी बढाई करके दूसरा महान कपुर दुवले से वे उनके स्वया बागोकी वर्ज काले सी। क्लान् बीक्रमने की अपने अक्रनांबालनकी पूरी प्रवीकत दिक्तवी । ये रक्तको जीवनपूर्वक सम्बद्धानार कारते हुन् चीनके बागोको प्राप: नियम कर देते थे : यह देश प्रीकर्न वीको बालोहे क्रीकुमा और अर्थनको सूच बायल क्रिया। किर उसकी अञ्चलों क्षेत्र, किन्दर्ग, क्याप्त, प्रतिशया, कुरावर्ष, कुरावर्ष, स्ताप, अव्यक्ष्मी, विन्द, अनुविन्द और सुरक्षिण आहे की रूप आया, सेकीर, कराति, सहस और मालकोतीय केन्द्र हुन्त ही अर्थुन्यर कह आये। वे क्यारी बोडे, बेबल, एव और प्रविचेकि ब्रोडसे किर एवं । उन्हें

नम अवस्थाने देश और इस्त्योंक एक्स का स्थानक आ पहुँचा और अर्जुनकी एक्स्प्रताने कुट गया। उसने सुधिहितकी सेनाको मुनः परमाने देशस्य बद्धाः, श्राप्तिको र कुर बद्धाः सत्ते ? यह सम्पूर्णनेका वर्ष नहीं है। वीरो र अपनी प्रतिका म कोहो, वीरधर्मका प्राप्तन करो।'

मगनान् अस्तिकाने देशा कि वास्त्रक्षेत्रके प्रवान-प्रश्नात राजा थाग रहे हैं, अर्जून बुद्धमें देवे यह रहे हैं और चीनाओं प्रवास होने जाने हैं। यह बात उनसे उद्धी नहीं नदी : उन्होंने सारविवारी प्रश्नास करते हुए कहा — 'डिन्किंगलेंड कॉर ! के मान यहे हैं, उनकी भागने हो; को उद्धे हैं, के वी चान जाने ! मैं हुन सोगोंका मगोवत पहिं कारत ! तुन देखें, मैं अभी मौना और प्रोणावार्यकों । यहाँ कारत ! तुन देखें, मैं अभी मौना और प्रोणावार्यकों । यहाँ कार निरात हैं। वीरवलेकाता एक की गाँ के हाथां कारते नहीं मानेगा । अस वे वाल अस्तिक का बात सांग्ला चालाती पीका और होचाने प्रता हैना एका प्राराहकों कारी पुलेकों सामार प्राव्यक्ति जाना करीना । वीरवलाहके राजी गांवारशेका वश्च करके जाना में अनावता; वृधिहिसको राजा क्रमार्थमा

इतना बद्धभार श्रीकृत्याने मोहोस्ती स्थाप क्रेस्ट्र की और इतमने भूतर्गन काल तेमार रकते कुद रहे उस बहान्या



क्रमान क्षिक समान और प्रचान वहां सहा असेव का। असेव किमानका माग क्षेत्र समान सीवा का। प्रचान कृष्ण को नेगले घोषाको और स्वारं, उसके पेरीको क्रमाने पूर्वी क्षित्रे क्षणी। जैसे विश्व प्रदान क्षणानकी और क्षेत्रे, उसी अन्यत्र ने चीवाली और को। उसके प्रचान विश्वपार स्वारं नेगले प्रचाना हुआ चीवालका कोर देखा क्षोतिक सेवा मा, माने नेवाली कर्मी क्षणा क्षित्र क्षण क्षी हो। स्वारं क्षण उताचे वे कहे चीवले क्षणा को है। उने क्षोत्रमें चए। देखा कीरवोंके संस्थानक विकार कर सभी अपके स्वारंग्य करने सगे। क्षाले एक्स उन्हें देखकर ऐसा का व्यक्त व्यः, पाने अवस्थातीन संबर्धक नामक वर्षि सम्पूर्ण कन्युक्त संस्था पार्टनेको अस्य हो ।

वर्षे चक्क दिन्ने अपनी अदेर आते देश मीनवर्षको हिन्छ भी चन वर्षे हुआ। में होनों हानोंसे अपने पहान् सनुस्ताः देश्वेर केलो हुए मनवान्त्रों सेरी, 'अहारे, आहरे, बेलेहर ! अहारे क्यान्यार ! में अवच्छे नमानार करता है। बहावारी क्यान ! आन क्यान्त्रोंक मुझे इस रक्षरे पार निराहमें आप सम्बद्धे क्यान्ये हैं, सबको साथ देनेकाने हैं; आयो हम्बद्धे क्या वर्षे में साथ वर्षाना से ह्यानेक और प्रकोकते में मेरा क्यान्या होगा। मनवन् ! अर्थ मुझे पार्थ अस्वार अस्वने सीनो शोकोंने मेरा नीरव बढ़ा हिंछा!'

वनकर्मा अने काने देश अर्थन भी रकते आसा रूके के के के जा का कार अही अभी केरों जा जबद भी । प्रकार रोको भरे हुए थे, अर्जुनो कहाकोवर धी वे कर न लोड । मेरो आंधी मिली बुक्को कृषि रिक्ने करने नाम, वर्गी अकार से जन्मेनको प्रत्येको हुए आगे बहुने हुए। तक अर्जून करवारे करने कोक्सर बैरोने का पूर्व । क्यूरेने करा कर सन्तरकर प्रमोद करण प्रकार विशे और सुरावे बाह्यपार व्यक्ति-व्यक्ति किसी अक्ता उन्हें रोवत । यह वे इन्हें हो रहे वी अर्थानी प्रथम क्षेत्रर उन्हें प्रणाम किया और कहा, किलाय । अन्यत्र प्रतेष काला परिनिये, आध हो प्राध्यानीके लक्षरे हैं। अन में श्रक्षनी और युगोकी क्रमन कारतर सक्कर र्ड्, अपने काम्मे केलाई जी करिया, प्रतिसक्ते अनुसार **स्ट** करिया । अर्थुनकी वह प्रतिहा कुम्बर बीकुना अस्त है नके और उनका दिन करनेके किये पुनः कामादित स्वकर का वेते। उन्होंने अपने पाहारूप प्रदूष्णी व्यक्ति विस्ताओंको निवासिक कर दिया। जन समय महैरकोच्छे केनामें बहेस्सक्ट क्य क्या और अर्थुको गामध्य समुक्ती हम दिवासोंचे क्षेत्रक कार्गाको वर्षा क्षेत्रे लग्हे ।

वय वृत्तिस्ताने अर्थुन्यर क्षण व्याप, वृत्तीयन्ते सीया, कृत्यने गए और भीताने प्रतिकार प्रकृत क्षित्र । अर्थुन्ते भी सार व्याप नास्त्रर पृत्तिकारे वार्णोको प्रश्न दिया, वृत्तरे वृत्तिकारका सीमर काट अस्त्र क्षण क्षण क्षण्यान का कोड्यार कृत्याने गता और भीवाको प्रतिकारो भी दुस-दुक कर दिया । इसको बाद अवृति होनो हार्गोसे मार्याय अनुवको विकास कामरायाने मार्गुन नामक अस्त्र अस्त्र क्षित्रा; केसकेने व्याप्ताय में अर्थुन्त और प्रयासक वा । इस दिवा सामके अस्त्रासे अर्थुन्ते क्षण्यान क्षणानक वा । इस दिवा सामके अस्त्रासे अर्थुन्ते क्षणानक सामोको पृत्ति हो यो । अस्त्र क्षणाने अस्त्रिके सम्बन अन्यत्तिक सामोको पृत्ति हो बारकार ने साम राजारते, इतियाँ और चौक्षेत्र वर्रातिने पूरा कर्त थे। इस प्रधार तेम कारवाले वायोका जान निवादत अर्थुंको प्रमूर्ण दिलाओं और अवदिशक्तोंको अञ्चल कर दिला और राज्यीय प्रमुक्ती तंत्रकार प्रमुक्तेके करने जानक पीता पर दी। राज्यी नहीं बाने करते। बोक्य-रोजाने प्रमुक्त परिवेदा जान हुआ देखकर केरि, प्रमूक्त, बारक और बारकोशीय चौडा राज्य प्रमुक्त प्रमूक्त कृतिया करने सने। अर्थुंक और बीक्सकों भी हुई प्रथट विकार।

स्वरतार, कृषित संपर्ध किरणोको समेको गर्ने । इसर मोराम-मेरोके सर्दर सक-क्कोरो इस-विका है रहे थे. मुरामकारको संपर्ध सब और विस्त हुआ अनुस्था हैस

अवा ची अव सकते दिन्ने अस्तु हो चुना च-्न सम चारोचा विवार करते संस्थानस्य अस्तिन हेवा चीना, होता, दुर्वेशन और चार्डक अस्ति कोरकार सेरायतिसहित दिल्लाको तर्वेट अस्ति । असूर ची वाहुआंचर विवाय और यहा चार चाराने और राजकोकि साथ कारायीने चारे गये । औरचोके दिल्ला विवास संवेशने समय एक-दूसरेसे वाहने समे— 'अहे । जान असूरने चारा चारा वराक्षण विवास है, सुन्य चीई देवा भी कर कारता । अस्ति है साहुस्ताने कार्ने सम्बद्धानी, खुदानु, बुर्वनंत, विवासेन, होना, कुन, सम्बद्धान कार्डक, चुर्निकान, साथ, समय और चीनसमित अनेको चोद्धानीयर विवास कार्यी है।'

# सांयमनिपुत्र और कुछ मृतराष्ट्रपुत्रोंका क्य तथा घटोत्कच और मनदत्तका युद्ध

रहाको कहा—राजन्। राज बीटनेयर चीचे हिर प्रतास्थाल हो भीवन्त्रे यहे होत्रने परवर सरी हेन्छे सहित प्रमुक्तीके प्राप्त अन्ते । अह प्राप्त होनानार्न, धुनीयन, बायुरिया, पूर्वलेख, विकारीय, उत्पाद्य कथा अनेको कृति राजात्वेग रुक्ते सत्व-सत्व चरु ये वे ( वीकवीने सीवे अर्थनक से भाग किया तथा उनके स्थव क्षेत्राधानीरे सन्दे बीर एवं कुमावार्य, कुन्न, विशिष्ट्रीत, क्र्येकर और पुरित्रक भी अहीपर इंट पते । भड़ देसते ही सर्वक्रमक अधिकाद करते. राजने नावा । काने वन न्यारिक्योके एक सन्य-पान पान क्रके और राज्यकार्य प्रवासीके प्रशास की का है। भीनवीमे अधिपन्त्यो सोहका अर्थना अस्तान विका बिद्ध किरोटीने मुसकरकार अपने मान्डीक बनुवहारा क्षेत्रे हर माजीते उनके क्षणसंख्याने न्यू कर दिख और उनक कई क्रमीके बाध कारामा आरम्भ निवत । तक भीनाकी अन्ते भागोंने अर्थनके एकसमूचको जा कर विका । इस प्रकार क्रम और सक्रमगीयेंने पीना और अर्थनका का अर्थन प्रसम्बद्ध देवत ।

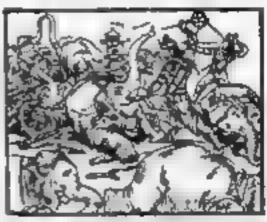
इयर अधिकपूको होणपुर अध्यास्य, पुरिवण, जान, विकारेन और सांकारिके पुत्रों के रिवण। उन पाँच पुत्रपरिहोंके साथ अधेतर पुद्र करता हुआ अधिमन्त्र हैसा बान पहला वा सानों कोई पोल्डा कहा गाँव इत्थिकोंने तह यह हो ! निरान्य एनकोची सप्तर्थ, जुल्बीत्वा, परस्थन और पुर्वाण कोई भी और अधिकन्युको करनारे नहीं कर कवाल था। राजर्। जन आपके पुत्रोंने हेसा कि सेना बाहे रोग आ गाँवी है सो अपूर्वने अधिकन्युको कारों ओसो के दिन्या। कांट्र सप्ताने रोग और करनों करनार अधिकन्युके क्रिया भी हिन्यर वहीं कुछै। यह निर्मय होयल यहेलांगारी सेनावे सामने आयार हर गया। उसने कुछ बारान्ते अनुस्थानायो और प्रमाने प्राण्यको बाल्यय यह बारार वार्गोहरा संवयनिके पुत्रकी काम कार है। किर पुरित्रकारी कोड़ी हुई एक सर्थेर समाप प्राप्य प्राप्तियो अपनी और अपनी देश को की कुछ की सामने कार हाता। इस समय प्रमुख कई देशने बाग-कर्ष कर है है। अनिक्यपूर्ण को वेकासन उसके कर्षी कोड़े सार करे। इस असार पुरित्रका, सम्बन्ध, अनुस्थान, संस्थान और प्रस्थ-पुरुषेक्ष बोद्यों की अधिकार्युक्त बाहुनाओं आगे की किर समा।

कर कृतिकाको अञ्चाने निवर्त, यह और बेजान देवके क्वीय हमार पीरोंने अर्थन और अधियम्ब केनोको पेर क्षित्र । यह देशकार प्राप्तानामकृत्या स्वयुक्त अपनी होना रेक्टर कड़े क्रोकरे नह और केक्टर देशके बीरॉपर ट्रट पड़ा । काने का मानोबे का प्रात्मिक बीरोब्डे, एकले कुलकार्कि पुराशासको अपेर एकाने स्वीतानके पुर सन्तरको भार करता। क्रामेदीने सांच्यानिक पूर्ण तीस व्यवसेने मृहसूरको और कालो जानके प्रारम्भिको जीन विचा। तम गृहसूहने आरयना कीत होकर एक की बागते तांग्यनिकृतका बन्दा करा क्रांत क्रम प्रतीत पान क्रोक्स ठाओं बोहोंको और रक्के इवर-उक्त क्रुवेवारे सार्वाक्येके मार निरामा । सांवयनिक्र लाम्बार लेकर रकते कुट पहा और बाह्य देवीसे पैदल ही रखयें केंद्रे इन् अपने उन्होंद्र पान पहुँचा। यह देशकर ब्रह्मपुत्रने अर्थेको अस्त्रार गराके जाता जाका हिर क्षेत्र दिया। महानी चोटमें जो है कह दूस्तीमें निया कि उसके हामसे का करकर और सार भी बुटकर दूर का पढ़ी।

इस अकार कर प्रमुखी राजपुत्रसंक न्यो करेशे आपनी हैन्सरें बड़ा इस्तुमार होने स्था । यस संस्थिने अपने पुत्रकें मन हुआ देखा तो यह अस्या क्रोक्ये अस्या पुरुष्ट्राच्यो जेन साम । ये होनो जीर अस्यो-स्थान अस्या स्थापुत्रकों पिड़ यो स्था वर्तेन, राज्या और स्थाप अस्यान क्रायुक्त पिन वाच गरे स्था सुनी ओस्ट्रे स्थापने थी अस्या खान सिव्य । स्थापके के बास स्थाने सुनुष्ट्राच्यो वहीं क्या हुई, तम अस्ये क्रोक्ये प्रस्ता प्रतिकार कार्योचे क्यायकों नार्यो क्या कर क्रिया । कुछ देशाय का दोनो पहारिक्योका पुत्र स्थापकार व्यक्ति । हान्योगि महाराज सरको एक वैथे क्यायके क्यायका क्याय कर्य

क्ष देशका अधिकन् को छोनने नकर करानके रकारी और रहेड़ा और क्षेत्र गीसे बागोंसे उन्हें बॉकने स्टब्स ( १६६ क्रॉबर, विकर्ण, क्रुवासर, विविद्यति, क्रुवित, क्रुबंद, विकारित, पूर्वता, सरकात और पुरुष्ति—में तक केन्द्र महराजकी रहा करने रहते । जिल्ह भीमसेन, स्क्रूप्ट, ब्रीक्टेके प्रीत प्रा. अधिकन् और नकुल-स्कोको हुन्हें केव दिना । वे क्रम और यहे काराइसे कारपाने युद्ध करने सने । इन देनी प्रशिक्षे दक्ष-दक्ष र्राविकोच्या पर्वचार पुद्ध उक्तरण होनेका उसे आरके और वास्त्रकोंके प्रक्रके दूसरे त्यों सर्वकोंकी तदा देखते को : क्वोंकर असम प्रोक्ष परवार का तीने क्वोंके प्राच्याको बॉब दिया तथा स्टिनियो बीम, विश्लोपने परिव, हांको थी. क्ष्मको सत्त, विविधानो प्रोड और कुमानानी तीन बाबा क्रोहमार क्रो फार्सर किया । तम मृहस्कूले भी अपने प्राथको एकाई दिकारे हुए इन्लेक् अनेकाको वर्षाय-वर्णात क्षाच भूरे तक अधिकको इल-इस कामोने सामान और कुर्वालको बॉक दिल। अकुछ और सहोको अवस्थ-स दिवाते हुए अपने क्या शायक शैके-शिके क्या कर्या । एक प्रत्याने भी अपने धानकोच्य अनेच्यो साथ कोई, सिंह महर्देक्तार नक्षर और सहोत्र क्लोरो क्रिक्ट्राट का जानेक भी अपने कानसे दिलधर नहीं किये।

वीमसेन्दे जब कुर्वेजनको अपने सम्बंध देशा हो छन्। इस्कृतिक अस्य कर देनेके हिन्दे एक ग्रह्म रहन्यो । वीन्योनको ग्रह्म करका वित्ये देशा अस्यके एक पुत्र इस्कर व्याप गर्मे । वस कुर्वेकन्ते प्रत्ये प्रत्यकर व्यापकारकारी कार्यो इस इन्यर स्थापेड्री सेन्त्रके सक्ति अस्ये कार्ये वीन्योक्तर व्याप वित्या । कर्त, मीनसेन रक्त्ये कुरुक्तर अस्यी गहारो इस्विकेको पुरस्को हुए रक्त्योत्तर्मे दिवानो समे । वस समय वीन्योकको दिस्को दुस्त्रानेवानी द्वादा सुनका सम्बद्धा सुनन्ते हैं गर्मे । क्य वैक्टिके हुए, अधिकान्, नवुस्त, स्वकेष और शृहकुर—ने प्राच्यापश्चके पीत नीम्पोनकी पीतेके एक बारों हुए समने पैने प्राप्तिके प्राप्ति सेक्के नामरेष्ट्री गीरिके दिन बारने एने । यह देखार नामराजने अपने देखाले समान नियारकार इस्तीको अधिकानुके प्राप्ती और पेता विचा । विद्यु और अधिकानुके एक है जानने उस हासीका पान समान कर दिया । और एक है जानने म्यान्ति मेन्सने पून-पूरवर श्रविकोणो अपने एक है जानने म्यान्ति सेन्सने पून-पून्तर श्रविकोणो अपने एक । उस प्राप्त हमने चीनसेनके प्राप्त-पूक आपने हैं इस्तिकोणो स्वेट-चेट होने देखा था। प्रोपसून पीमसेनकी



कोट प्रध्यात से क्रमी अवसे इमा-स्था जानकर आनकी हैं संस्थाने की क्रमके से। उस समय अवसे नकको एक और पुष्पति हुए भीवलेक ऐसे जान पहले से, मानो संस्थान संस्था हैं राजकुर्वाने कृत कर को हो।

क्रमी समय क्रमारी रिक्पोर्के स्त्रीत आयके पुत्र अन्तराने अंतरण प्रतिक होतार योगसेनचा अञ्चलक विकार । काले धीरा-केरवर कः काम क्षेत्रे तथा दूसरी ओक्से कुर्वेकनने में बावमेंसे क्रके वक्षा समाप्त कर किया। तम महत्वक् भीव अपने रक्तर कर को और अपने कार्रीय विक्रीकरों क्षेत्रे, 'देकी के बहुत्त्वर कृत्युकुत मेरे अलोके सक्क क्रेसर आहे हैं, से मै कुन्तरे स्वपने ही इनका सम्बन्ध कर हैगा। इस्तिन्त्रे तुन रहककर्माने की बोहोंको हुनके स्थान से करते।' सार्राजने देख बाज्यर अनुर्देव तीय काम अन्द्रश्रामी क्रानीये मारे । इसर हुव्वेयन्ते की स्टार् बालोके भीवनेत्रको और गीनमे उनके स्वर्गकको सामान कर दिया । किन नीन पैने पान क्रोडकर उनने हैको-डैको प्रकार बन्त भी फाट प्रात्म । तम पीमसेरने एक हरूरा क्रिया करन दिन्दा और अध्यय एक सेन्द्र करन कराकर अस्ते दुर्वेशनका यन्त्र काट शाला । तृत्रोंकाने की तृति ही एक कुरत धनुव विवय और उससे एक वर्षका करा होतुकर भीध-क्षेत्रको सलोका कोट को । उस बाजाने व्यक्ति हांकर पीयानेन इसके रिक्रके मान्त्रों केंद्र नमें और उन्हें मुख्यों के नमी ।

चीपसेक्को पृथित देखकर समित्रम् आहे चन्यानकार्यः महारको अस्तीम्यु हो उठे और हुनोकाके दिल्पर कैने के स्वाधि बोवन वर्ष करने एने । इतनेवीने बीवसंख्या के हो भारत । उन्होंने क्योंकारकर पहले तीन अंदर किन परिवासना क्रेंसे । इसके बाद प्रचीत कार द्वारा क्रायको पारे । अनी कारत क्षेत्रार पहरूव मैक्टर क्षेत्रकर करे गर्ने १ तम अवन्ते चौरक्ष पुर केलकी, सुकेत, जल्हाम, कुकेकर, उर, मीनरम, चीन, भीरक्षा, अमेर्फ, पूर्वम, कुमार्च, विविद्ध, विवाद और सम भीयसंस्के उत्पर यह आये । अन्ये नेत हो करे स्थान हो ये थे । क्ट्रोने एक लाव ही बहुत-है बाल क्रांस्टार केन्द्रोनको सम्बद्ध कर दिया। आपके पुरोको अन्ये स्वयंने देशका महत्त्वारी भीपतेल कारर इस प्रकार हुट गई, जैसे भेड़िया रहाओंका दुशा है। बिर क्योंने परवृत्ते समान स्थानकर एक की करावे केनावरिका हिर क्षा करत, और कार्योंने कार्यकार्य करत बाएके करका केव दिया, शुक्रेशको बाएका प्रस्कृत काली कर दिया, कामन मुख्य और कुम्बानेके विमुच्ति किर बारावर पूर्वियर निरा दिया तथा स्तर पान्त्रोरे वीत्वाकृषी आने केहे. बोला और सार्राधके स्टीत बरावाची कर दिया। इस्ते स्टा क्योंने चीप, पीमान और सुन्तेश्वरको ची सब सेमानिकोट हैक्तों-देखने करपालके कर चेत्र दिया । चीमकेनकर देशा १९४५ परासम देशकर आपके सेन कुर हरके मारे कुनर-कार भाग गर्ने ।

तम जीवरवी रे सम बहारिकोरी बहा, देखे, यह जीवलेड बहुरमुक्ते न्यूमरबी जुलेको बारे अस्पत है। और । इसे प्रदेश पक्रम हते, देरी भर करो ।' गीवाजीका ऐसा जादेश ककर क्षीरक्षपञ्चले प्रभी हैनिक क्षोपने परकर पहालती जैनले के अवर दूर प्ये । जनमेरे चनत्त्र जनने महोत्त्रन श्रामीका को हर स्क्रमा श्रीमानेनके पाल पहिचे । वहाँ पहिचने ही उन्होंने सामोनी क्षा करके चीपरोजको किल्लुल कर विवा । अधियन् आहे. भीर का राज कर्डी देश सके। उन्होंने की काल करताकार ध्रम्यक्तको धारो ओरसे अन्यवस्थित कर विचा और इनके हार्थीको पानस कर हरूब (सिंगु काम्यतके हर्वकोना का हार्थ क्र बहुएक्सिके उत्तर हैने बेगले रोहा, जन्ने कारको प्रेतित मनाम है है। इसके कर जैनल धनको देशका पत प्रााणिकोच्या समाप्त हेवा पह नावा और उन्हें का अस्ता-का कार यह ( इसी श्रम्भ कम्पूतने कोकने परकर एक श्रम भीकरेक्टी इसीचे करा। उससे कका हेकर भीकरेन अकेत-में हे गर्न और अपने रचकी काराके होनेक प्रकृत रेक्टर बैठ को । का देककर महध्यतानी कन्द्रत को जोरते हिंक्स करने तने।

चीनरोज्यो हेली रिवरीचे देखका घटोरकच्यो वह स्रोप हमा और का को अन्तर्भन हो कहा । बिट अपने ऐसी भीवन नाम केरवानी, जिसे इंस्कार कड़े-ओर लोनोकर तो हत्य केंद्र पन्छ। अस्ते है हान्ये वह बहु पर्वका का काम किये अकरी ही नाजारो रचे हुए ऐताना हाथीयर कड़कर उचाद हुआ। करने सम्बद्धको उनके सर्वासक्ति यस उस्कोन्डे निकासी उत्पर अध्य क्रमी होड हिया। यह वर्त्यून गठरास पराहरके हाबोध्ये बहुत पेरिता करने एता, निश्ते कि बहु आवत अपूर क्रेकर महत्त्वाको समान क्षेत्र सेरमे जिल्लाको समा। अभ्यत यह पीतम राह कुमता भीवन्त्रीने आवर्ष होग और एक क्षेत्रको कहा '३० सम्ब पहार बनुके समा अगदन इंकिकार का बटावको युद्ध बागे-कारी बाई आवतिये केल राते हैं । इस्तेले कावालोकी कृषेकारि और आवना को पूर् क्रवीका रेवनकम, सुनावी है रहा है : इसलिये करने, इस सम श्रम्ब अन्यसम्बद्धी रहा। करनेके हैंओ करें। यदि उनकी पत्र ने को नहीं से से बहुत जन्द जान रहन देंने । देखी, नहीं नहां है बीवन और वेक्क्कबारी संबाध हो रहा है। अरु मीरो ! प्रीक्रम करे, देरी यह करें। आओ, अभी वहाँ सहें।'

श्रीकारीको का पुरस्का सभी वीर भगासको रक्षके किने भीक और क्षेत्रके नेतृको करें। का संगानो वेशकर जागरी क्षेत्रका क्षित्रकेची क्षाकके क्षान को केरने गरम। जनकी का गर्वन सुनका श्रीकानीने क्षेत्रकार्यसे का, 'मुझे का सकत बुगाना बहेन्सको नाम संगाय करना अक्षा नहीं



कार पहार: कोर्निक वह कहा बार-नीर्वकारत है और हुई अन्य बीरोमे स्थानका भी जिल की है। इस समय के प्रकार का भी इसे नहीं जीत संबंधा । बाह: अब पाणानीके प्राप पुर करन होना रही होता; जा, जान को बाह कर कारनेको केक्स कर है कार । जब सहसेकि साथ स्थान बाल संस्ता होना ।"

इस्तिने चेन्यवेदी यह पुन्तर अहेरे पुरेतपूर्वक पुत्र वेद करनेकी केवना कर है। सर्वकार है का ना। आज कोरकरोग कन्कोर्ध पर्यातः होनेके बारक सर्वेत्र क्रेका अपने डेरेन्स स्वैदे । अन्यक्तकेत से भीतरीय और प्रदेशकान्त्रे अने कत्वे जानामं प्रतुकारिके तान विकास कार्र हुए अन्ते विकारम अन्ते; बिंगू प्राप्तांका वय होनेके कारण कीरमधीर क्योगाको आयुरो कारावे हुए है है। किया पूर्वेचन बहुत है विशिष्ट और होपानुस है का छ।

# सञ्जयका राजा वृतराष्ट्रको भीव्यजीके मुखसे कही हुई श्रीकृष्णकी महिमा सुनाना

-

रुक भारताचे पुरान-स्थाप । सामानीका हेला पराक्रक मुख्यार जुले बद्धा है। यन और विकास हो रहा है। एक ओरहे मेरे पुर्वेक्स है करायन है दह है—यह स्टब्स कहे कहे विका होती है कि अब मेरे पहल्के जीत केले होती । विकास ही, विद्वारी पालन मेरे इस्त्राओं पाल कर अलेले । चीन अध्यक्त ही मेरे क्या पूजेंको पार क्रोला । को ऐसा कोई बीर विकामी नहीं हेता, यो संस्थानश्रीको अस्त्री दक्षा का सन्दे। का ! में एक बार कुमा है और्थ-और स्थानों, प्रायकोंने बेली सामित कक्षामें आ क्यों ?

सक्तको कहा—समार् । अस्य सम्बद्धनीले सुनिये और सुरकार केला हो विकास सीतियों । इस समय में कुछ हो छा है, जब दिन्हीं भी पन या सामाने सारण नहीं है : बात सह है कि पहानकी पाणकानेग सर्वत कार्ने इसन रहते है और वर्ता वर्ण होता है, वहीं क्या हुआ करती है। इसीसे पुरूषे से अवका हो से हैं और क्यूनियों और भी हो स्त्री है। अन्तरे पूर मुक्तित, पारवरावन, निक्र और कुकर्व है जारिये है पुरुषे रह हे हैं। इन्हेंने तीन कुल्लेक समान पान्यानीक प्रति अनेको कुरावर्र की है। जब उन्हें का निरम्पर विके हर बायकार्वीका वर्गका पान प्राप्त होनेका क्रमा शासा है। क्रारियो पुजेंके साथ जान जान भी उसे फोरियो। जानके सहर नियुद्ध भीना, बोल और की की अल्बाबे कार-कार रोकाः किंतु आपने इसरी कामर कुछ धान है नहीं देखा। नित प्रकार गरणास्य पुरुषको औषक और प्रका असे नहीं एको, बेरे हे आक्को जन्मे हेरको यह अकी की पाएक हुँ। अन जार भे जुलो राज्यनेथी विश्ववदा चारण शुक्रे है, को इस निकामें की कैस सुरा है का बताया है। का किन अपने प्राह्मनीको पुरस्ती परातिक दश्य देखका एका क्रॉक्ने रासिके प्रत्य शिक्षमा प्रीमानके पूर्व, 'एक्सी ) मैं सम्बन्धा है कि अप, हेम्बन्धर्ग, अन्य, क्रम्बन्धर्ग,

सम्बन्धने, कृतकर्थ, सुरक्षिण, पुरिश्रण, क्रिकर्न और प्रमुख्य अवदि स्थारची सीची सोकामेंह साथ संसाय कारनेवें क्षण है। विश्व अन्य क्रम विकास भी परवालेके परवासके कारने नहीं दिना करें। यह देशका यूने बड़ा सीह हो यह है। कृत्या अध्यक्षेत्र, परम्पानेने देशी प्रमा पात है विकास सारण वे क्षेत्र क्रम-क्रमणे और रहे हैं ?"

वेक्सी क्य-स्था। इर स्टाबर्स संस्कारी अनवारक एक काल है। का मैं तुने बतात है, सुने। मीनी लोकोंने केरा कोई भी कुछ म से है, म प्रामा है और व क्रेंच्य है के बीकुमार्स सुरक्षित हुए प्रत्यक्रीको पहला कर तके। इस विकास परिवास पुरिवर्ति कुते एक इतिहास कुरू है, या मैं हुई सुनता है। कुरेसाली नवस्तुत क्षांत्रम क्षण्या केवल और मुन्तिया विभाग्य प्रदानीकी रोक्यों प्रयोक्त थे। इस सकत का सकते बीक्यों केरे हुए ब्रह्ममाने आकारणे एक तेथेका विकार देशा। तब उन्होंने क्रिकार के दूस कारण उससे किससे प्रशासन वरनेवरको अञ्चल निज्यः। प्रकारतीको कर्य होते हेवा सब नेका और वहीं भी क्षम मोद्रे करे हैं को और वह अञ्चल काम देवने रूपे। जगनवहा अहाने को विकिन्तिकालो पानकारण क्या किया और इस प्रकार करते करते रूपे—'प्रची । अस प्रमूज विश्वची आकृतिह कानेकारे, विकारका और विक्रों। अंतरी हैं। किया उस और आसी केम है। यह निष्ठ अवस्था पार्न है। जाप समयो जाने बक्रमें रक्तनेकारे हैं। क्रांसिने सावको निकेश्वर और बाहुरेस काले हैं। जान केपालका केवल है, में आरबारे प्रस्कर माना है। निकास स्थापेत । अन्तर्य का है; श्रोक्सीहर्ये तने व्यक्ति पानेका । अवस्थि वय है। वर्षाट सहस क्षत्रेकारे योगीवार । आवन्यों क्षत्र हो। संगर्धा आहि और जन्म । जनको जन हो । अन्तर्या चरिको होककन्त्रकारी

कार्या 📷 है, आपके का निवास है, साथ खेकेवारोंक 🕩 प्रेंग्स हैं. आपको कर हो। भूत, व्यक्ति और कांचानो कारों अध्यक्षी कर हो । अस्त्रका करून सीन्य है, में स्वयन्त्र सहा अन्तर पुर है। अन असंस्य नुवोदे सामार और समब्दे परण हेनेवाले हैं, जानकी कर हो। इस्केन्ट्र बारण **क्षरनेक्षरे नारक्य ! सामग्री महिलाबर कर कम बहुत हो** करिन है, आयारी कर हो । अन्य सम्बद्ध कामान्यस्य मुखीसे सम्बद्धा, विश्वपूर्ति और निराम्स्य है; आवादी कर हो । समाह्य अपीक्षकार कार्नेकारे ज्ञानक विशेषर ! सामग्री का हो। साथ महान् हेक्सम और महमात्र-कर सारण बारनेकारे हैं, समझे आदि बारण हैं, बिहरों हूं जानके नेवा है। पूर्ण है अपन्य पर हो, कर हो । अपन विक्रालेंड कर, हिलाओके जानी, विकास कावार, जाव्येक और अधिकारी है। ब्युट और अवन्य-स्था अवस्थित समय है, अरबोर क्षतेका काम असीय-अस्य है। आप इतिहोके निकास है, आयोद सभी कर्न कुछ-ही-कुल है। आयवी कोई इक्त नहीं है, जान प्राम्मकाः नामीर और प्रकाशी मानवाई पूर्व मार्चनाके हैं। साराची क्या हो। स्क्रूप । अस्य अन्य भोधानका है, विक है और प्रापूर्व कुलेको जनक करनेवाले 🕯 । जायको प्रक्र करना राजी नहीं है, आउनो सुद्धि सन्ति आप मर्गवा तथ पार्थको और विकासका है। फ्रांचे प्रकार परवास्तर् । अस्तात स्थल गृह केल इस्त भी रखा है। सरकार को हो चुका है और की हो पर है, सब अन्तरक क्रे कर है। आन सन्तर्ग कुरोबे साहि कारण और सोकारको जाने हैं। भारतक | आस्त्रो का हो। अस क्ष्मान् है, जानका सीमान्य महत्व है। असे इंद कारका भूकार करनेकारे एवं निष्ठ्य परावह है। स्थान करनेके क्षारामानमें अस्पात आविष्यंत होता है, जार बीवन्याओं दियान पराच्या है: अन्तरी पर हो। उस सम्बद्धाः श्रीसारकी सुविधे जन्म रहते हैं, अस्य है समूचे बहनारओंके कारी परवेशर है। अनुस्तार क्यांग्लेट कान, स्वाकार, मुख्यमा अठैर मिनन देनेमाने जान ही है। देव । जान ही प्रमापतिकोके भी पति, प्रकृतान और महाकारी है। उसका और महाचूत की जाय ही है। स्तवस्थान प्रापेश्वर 1 जानकी क्षय हो : पुर्वादेशी आपके करण है, दिलाई कह हैं और कुलेक मसक है। अबहुत जानकी पूर्व, केवल करीर और करूपर क्या सूर्व के है। इस और साथ आवस्त कर है उसा क्षयं और कर्ष अवस्था स्वकृत है। अधि अस्यका तेया, पानु सांस और जल पसीना है। अधिनीकुम्बर जायके कार और सरक्रादेवी आपनी विद्या है। बेट् अन्यती संन्यारिक्त है।

च्या तम्म अव्यक्ति अमारका दिवा द्वार है। केल-केवीहर | इस व से अववधी संस्था जानते हैं, प व्यक्तिका । अस्त्रोह रोग, काम्बान और बलब्दा भी हुने पता नहीं है। देश । इस को नामके प्रकार लो को है। आपके विक्केश करन करते हुए सरकते ही करकने पहे रहते हैं। कियते । एक आप परमेश्वर एवं महेशास्त्रा पूजर ही इन्तर काल है। जानहींकी कुमारे हमने पृथ्वीपर सहित, ऐसार, कर्मा, कहा, रहात, सर्व, विराम्य, मनुष्य, भृष्ट, पश्ची तथा वर्धके-क्यांके अवस्थित सुद्धे की है। प्रकारण ह विश्वासम्बद्धाः । श्रम्भारी जीवन्यः । अस्य ही सम्पूर्ण प्रार्थनाओं कारण और नेता है, अस ही संदारके पुरु है। हेन । अपनेद ही अवस्थि पूजी कहा निर्भव पूर्व है, इस्तरिये विद्यालकोचन है अपन पुनः कृत्योगर स्मृतंत्राने सम्बत्तान हेन्यारे कृतको बोर्सी क्यूको। प्रयो । वर्षको स्थापना, देखोके का और बन्तानी काले किने क्यारे अर्थन अन्तर स्रोकार क्षेत्रिके । चनकर् शासुके । आवका को परम पुरु काम है, कामा इस समय सामग्री है पुरस्के हमने बीर्टन flow \$11

का विश्ववार क्षेपराकर्त असमा बदा और राजीर कार्तने कहा, 'का | हकार्य को इका है, का पुत्रे केपरान्त्री वासून के नहीं है, का पूर्ण केपी।' ऐसा सहसर



में भई अन्तर्भन हो गये। यह देखका केवल, नवर्ष और अभियोको यह स्टबर्स हुआ और उन्होंने कई चौन्हालते प्रकारीये पूर, 'भगवन् । अपने विश्वके देखे और प्रकारेने सुरी की, वे और थे ? उनके विकास इस कुछ धुरुव प्रकृते है।' तम धरवान् सहते पहुर संबंधि सह, ''वे सर्व मराबद्ध थे, जो सनका पुरोके कावा, तपु और प्रत्यवासम्बद्धाः है। की शिक्षको प्रकारको विके उस्ते प्राचीय की है कि 'आको किए हैंगा, सुरक्ष और देखालेका र्शनान्ये का विका क, वे इस समय कर्यन्त्रे किने अवस हत 🖫 अतः आव प्रत्येः क्यांत रिक्तं वर्गत स्त्रीत क्युक्ताको अन्य होत्रने ।' हो अन में नर-भरतनर होतो है क्यूनारोक्तने क्ष्य लेगे, सिंहा पुर पूजा हाई व्यक्ता पूर्व संदेने। वे सञ्चानक-प्रकारी कर्तुरेश सन्तर्ग संपर्धेक संदर्भ है। वे क्यूक है—ऐसा सन्तकत इतका विश्ववत औं करन माहिये। में ही परण पुत्र हैं, में ही परणबह हैं, में ही परवह है, में ही पान पहा है और में ही अवूर, अव्यक्त पूर्व सरसार कि है। ने ही पुरत-सामने प्रसिद्ध है तथा में है पान हुए। और परम प्राप्त हैं। आर: जाने पुत्रदेखों अध्या कुलेखते कृत विरोध-बर्धेन्युप्रकारी श्रीवृत्तिक को विरम्बन्य करेगा, का चर्चकर अञ्चलको ग्रहेना ("

बीवार्थ कार्य है--केरव और ज्योगांने ऐसा प्रकार भीतवानी को तिहा सभी अपने संस्था कर को और है त्तव करोंने को असे । एक यह कुछ बोलाए जुन्स श्रीकृत्यके विकार कर्या कर यो थे; अवधि पुराने की का अचीन कार्युः सुन्त वर । यही बात की समाजितका परकृतना, भीत्वन् मार्गायोग और स्थान क्या जलावीले भी सुनी है। मह तम जानकर भी हमारे प्रियं बीचुनक कम्हरीय और पूजरीय क्यों जहीं हैं। इसे से अनवन ही कुमार कुमन सतक कार्तिये । येथे और सनेकों बेहरेका युवियोंने हो तुनों कार-कार मीकृष्य और चन्द्रांके सम कुटु डाम्पेर्स रोका कः विश मोहनम तुमने इस्त्या कोई तत्त्व ही नहीं सन्दार । में हुन्दें कोई कुरकार्य राज्या है सम्बाग है क्लेंकि हुए स्रोकृत्या और अर्जुन्से हेन करते हो । परस, इन सम्बद्धा नर और अराजको कोई कुरा पहुंच की के बर सकत है? में हुआ धीय-टोम महार है—ये सम्बन, अधिकारी, सर्वत्येकस्थ, नित्त, जगरीका, जनवार्ष और अधिकारी है। ये है कह मरनेमारी है, वे ही जब है और वे ही जीतरेमारी है। वहाँ क्षेत्रमा है, जो काँ है और क्या करों है, जो जर है। क्षेत्रक बारक्वीकी रक्त करते हैं, इसलिये उन्होंकी जब भी होती ।

दुव्येकाने पूज-दूक्ताती । इन क्यूकेन्द्रकारे सन्दर्भ ।

सोन्द्रोने महस्य कारण प्राप्त है। तसः मैं हुनको असीर और रिवर्टिके विकासे व्यास्त्य बाह्या हूँ ह



बेक्स होते.—बारावेस । अनुवेदकत्त विश्ववेस प्राप्त है। में पान देवनाओंके भी देवता है। पानकश्चन बीकुम्परी बाह्य और ब्लेड्रे की नहीं है। प्रार्थकोलनी प्रश्नोत विश्वपति बाह्री अर्थ्य को बक्ते हैं। ये क्लंब्रुक्त और यूक्तेतम है-शानिक सारामाने इस्त्रीने सम्पूर्ण केवल और व्यक्तियोखी रखा का करा से ही सरकती अपनि और प्रतासके, स्थान है। से सार्थ क्षांत्रका क्या कर्षा, काकृत्य और कृत्युर्व प्राप्ताकोकी चुकि सार्वकारे हैं। ये ही मार्ग, सार्ग, जाविक और सर्वकार है। पूर, परिवाद और कांग्यरको से इस्ति कार्यस को है क्या प्रचिन क्षेत्रे संस्थातो, हिलाओ, साम्बद्ध और निवर्तको एक है। जनिक क्या, ये जनिवर्ता त्रपु ही क्रमूर्ण जनस्की राजन करनेवाले हैं। इर परंच रिकाले प्रमुक्ते केवल कारकेलो है कार का लकता है। ये ब्रोहरे हे परा, तृतिक और यसवान् विविधान है। वे हे समझ प्रतिकारिक कामानीता है। इन बीवान्यकार प्रकारको क्षका कोई इसके कम न वाची वा, न होगा है। इस्ति काने मुक्तरे प्राप्तकोची, मुक्तकोसे धारियोधी, बहुतवोसे बैज्योको और बेरोने प्राप्तको जनम निस्ता है। में ही सम्बूर्ण मुनोके 2004 है। को पुरूष पुष्टिका और अनुवासको दिन

इरका पूजन करता है, का बरकार कर करता है। वे मस्य तेवाकाव्य और समझ क्षेत्रोडि निक्रम है। मुल्लि क्ष्मी क्षमिक्त करते हैं। ये ही सम्बंध रूपे अपूर्ण, विका और एंड है। जिल्हार में अस्त है, साने कने कनी शासक्तीया जीत रिन्दे हैं। यो पूरत पानके राज्य सीवानायी शास्त्र हेता है और सर्वत्र इस सुविका पक्र शासा है, का पुरस्तारे कार है और युवा पान है। भी कभी मेंद नहीं होता। इन्हें प्रकारकारको सन्तर्भ बन्दादे स्वर्थ और प्रमान क्षेत्रोंके प्रमु कार्याट हो राज्य मुलिहरने हरती कारा की है।

राज्य । क्षेत्रामाने ब्रह्माने और देवकाओंने इनका को क्रायर क्षेत्र क्या है, या ने एवं एका है कृते—'नाव्योपे कहा है—जन क्रमाना और केलाओंक के वेतांकित है तक उन्हों सेक्टेक करन वालेक्ट्रो और उन्हें अन्यत्कारको प्राप्ती है। वार्क्सकेट्रीन महा है—सार है पार, चौरपाय और श्रीमार है एक अन क्षातिक कर और स्थिति का है। प्रसूपी करते है—अस देवीके के है तथा भगवान् क्रियाक को पुराल गरवान है, मा भी जार है है। यहीं हैपराव्य करते है—अर अनुराधि वाल्लीर, प्रथमें की प्रयोग कार्यकारे और केलाओंके परकोर है। अधिराजी पड़ते है—अन्य पड़ते इसल्पेस्ट्रोसे का के इस अल है करना लेकोची रचन कार्यकारे है। केवर वर्षि कार्य है—उन्तर करके प्राप्तिके हरत है, जान अपने करने दिया है जा कर देवता भी अर्था है जन्म हुए है। अर्थन पुरित्म संस्था है—अर्थन हिस्सी प्रानितेक स्थात है और पुरताओंने पृथ्वी गया अवनी

करमें केंग्रें श्रेक है। अल सन्तर मूल है। प्रश्नाहर न्यान्यकोत् अवन्यो हेरो है सन्याने हैं तथा स्थानकी क्रिकेको दक्षिये भी अस्य सर्वोअस्य साम है। मधुस्टन । से क्रमूर्व क्रमेंने अस्तरम्य और संवारमं येथे क्रनेकारे नहीं है, क कार्याच्या प्रवर्तिकोचे प्राथमक भी शाम ही है।" केनकेकओरे के समस्याधीर हती प्रधार श्रीप्रकोत्तव क्कान्त्र सर्वेष कृत्य और कार्य करते हैं। स्थान् । इस हुन किरान और संक्रेकों की दुनों क्षेत्रकारक जनान पुन हिला। कर दून अवस्थितको उत्तवा पर्यन करे।

aste करो है—बहुत्तम । बीवार्गके पुराते का परित क्रमान कुरार एक्ट प्राप्त क्रमा स्थान क्षकार्वके प्रति कार स्वारत्यान से गया । विराजनो विसान बार्ड रहे, 'एकर् । पूर्ण पहला होकन्मधी पहिंदा सुनी क्का सरक्षा अर्थनकः प्राथमिकः स्थलतः भी धान तिन्छ । सूचे का के करन है है एक कि इन स-नारक प्रतिनेते fine pireit apper freit fit få gaft sobe pfr क्षा है ज्या कन्त्रकोष की पुत्रने विश्वकि हम परे नहीं का समाने, क्योंकि क्षेत्रकारका प्रकार बाद सुद्धाः अनुराज है । क्राजिने मेरा हो बढ़ी बढ़ारा है कि हुन्दें पाणानीके साथ संवि कर तेनी करीने । देख करते हा आपको अपने पाइनोंके क्ष्मीत राज्य चेन्त्रे । वर्षे क्षे क्षा वर-नारावण जनवान्त्रारी अवका बार्य का मीरिक की स सब्देंगे।"

राज्य ! देशा बहारत आकोर निवृत्य चीचानी जीव हो गये और हर्वेशको विद्य काने प्रकार तेट गये । हर्वेशक थी को क्रमा करते अपने विकास करत अपन और अपनी सुख सम्बाग्द को गाव ।

# भीयसेन, अभियन्यु और सात्यकिकी वीरना तथा भूरिश्रवाद्वारा सात्यकिके दस पूत्रीका वध

हुआ भी मेनी औरबी मेलाई युद्धके मेले आयो-सामे अल्बार का पाने। पानाम और गोरम केने में अपनी-अवनी संनाओको व्यास्त्रक कर परस्य उत्तर करने सने। चेक्नोने वकस्तुको स्वय की और अस्त्री सन औरसे कर्ज है रहा करने रूपे। फिर वे बहुत कर्ज रोज रोकर अपने बढे । उनकी सेनकेंड रखी, फैला, नकारोबी और शवायेकी कारी-अपने स्वाचनर सुक्रम एक-दूरारेके बीई बंदने हमें। पायुक्ति जो इस प्रकार प्रकृते दिने देवत देश अपनी रोजको उचेनपहले सामो जार किया। सामी

रक्षाची सह— व्यक्तिक ! यह एक बीतनेवर का कुर्वेटन | क्षेत्रके कारवर: चीवरेन, नेत्रोकी जगह चहुएक और विकासी, विकेशालों स्थानीय, गराज्यी जन्म अर्थुर, व्यवस्था अर्थातीको सेनको समित हन्द, रांक्यपक्रमें अविकित्तं काल केवारता का पुरुषाचे हैं पठेंदे भीव पुर, अधिकान्, रामा पुलिक्षित और नकुरन-स्थाप कर्य हुए। का स्थानिक वृत्त-स्थानो स्थानकार्य कृतका पीन्यतीके उसर करतेको कर्च उसरम् कर है। भीनाई भी भीनश कारानी करके मान्योंकी महत्त्वह सेनको स्थानी प्राप्ती कते । अवनी केनाची कार्याको पढ़ी देख अर्थन प्रटपट सार्ग का पने और क्यारों बाज बरसायन बीवाबीको बीवनेप्सनी

अपूर्णि भीवनतीके शालोको छेक दिया और कुरले जस्ता हुई अवन्ये होनाके स्वतित पुत्र करनेको दियो आगे आ गते ।

तव एका रखेंबको अपने पहलेके प्रवंतर संक्रमधी बाह मार माने आवार्न प्रेरको महा, 'आकर्त । अस्य का ही मेरा किर करते हैं और प्रमाने सीत नहीं, कर की सारवार और रिताम्बंद भीवनका आकर्ष सेवार संज्ञानने परान्य करनेके देखे केवताओंतकाको सारकारानेका सरका रकते हैं: किन प्रश क्षेत्रमात्राम्य पाण्यकोको तो जात ही क्या है ? अवः जान हेता बोजिये, जिससे के सम्बन्धनेत बील ही और करें ( क्योंबनके देला कहनेवर अध्यानं क्रेन कार्याक्रके देशते -देशते पाण्यकोषय ब्यून तोको राजे । एव प्रकारिको छाउँ पेका और जिन का चेनोका कहा ही मौक्य केर पुत्र होने रागा । आचापी कोचने भरवर की-की वालोंके सामाधिकी क्रेस्टोनके सुर्वेदर प्रमुप विकास प्रताने प्रीम्प्रेयको पहा कोना कृता और में सामनिवारी गहा काने हुन अन्वाचीयों कीयने शरों। तब होता, चीना और इंतरको भीनन सन्तरनों करते. भीनतेनको इक दिया। यह देशका अभिन्यू और क्रेक्केंद्र पुर्वाणे जन सम्बद्ध कार कारण जारका किया ।

वित्र वेक्त-कारी पुत्रते कहा पर्वकार क्रंस कारण विकार ।
इसमें करिएक और पाणक क्षेत्रों ही एक्कि हानेकी
प्रकार-प्रकार और कारण अरने । इस पाणकार स्टेंकर पुत्रते
कहा है और गामनंत्री काल होने काल । इस पाणक अपने
पाहपीको गाम कृतरे राज्यांक अनुसार कालों और वेड़े । कारक
हात देखान अर्जून काल कहाता कालों और वेड़े । कारक
पालकार पहुं और गाम्बांक अनुसार काल कृतकार काल कारी कालाओ देखान हमारी ओरचे काल सैनिकार्य हक्के
हार गये । किस सामा अर्जूनो अरामा पालकार अर्था नेकार पालकार आकारण विकार, जर काला कृतके कालों के हार पाये । कारक काला क्षेत्र काला काला के नाले । जर समाम पूर्व-पश्चित्रकार भी होता गही यह । अरामों कुरोने काला प्रकार पुरान्यीकार भी होता व्यक्त को । सामी स्टेंकर हेरे पालकीर हो साम की हा काले अरामपा की । सामी स्टेंकर हेरे पालकीर हो साम की हा पाये । अरामपा को साम देशन होरे पालकीर हो

पीत्मजोने संपर, प्राप्त और जराज आहे, जराज करनेवारे केन्द्राओकी विद्यान व्यक्तिके स्त्रीत अर्जुनका सामन किया। इसी प्रकार अवधितनके कावित्तनके स्त्रण, भीतरंत बच्चाके साथ, युधिहर क्रावके स्वय, विद्यार्थ स्वरंतके साथ, विद्यारेग कियानके स्वय, बन्ताका विद्यार और उनके साथी दुर्वोचन और अनुनिक्के साथ, कृत्य, विविद्यान और सामनिक न्यार्थ्य होना एवं अनुनायके साथ तथा सम्बन्धार्थ और प्रतयभी शुक्कांके क्षाव बाद करने क्त्रो । इस अध्या बोहोचो अले महत्त्वर हमा हानी और रकेको कुलका सब केन्द्र आवलने पिड़ को। पुत्र क्षेत्रे-क्षेत्रे कव्यक्क के कथा। सुर्वति सामग्री आकाल काली तमा । जा प्रका क्षेत्रा और प्रकारिने जानसने क्षी सीनक पार-बार क्षेत्रे राजी। चीन्यवीने प्रथ क्षेत्रके देशले-वेलले क्षेत्ररेक्या साने कहना हेका दिखा। इनके अनुसरे हारे हर तीये बार्यने केन्द्रेनको मानल कर दिया। तब पहानती र्वकारने अने कर एक आरण नेत्राची प्रति क्रेड़ी। जो अभी केल्पार भीनामीने अपने मानोसे बाद करत तथा एक और काम क्षेत्रकर भीगतेलके अनुसंद के दूसके कर दिने। प्रतिकृति प्राम्पनिके साथै कृतीके सामने अल्पन भीनवतिक कार क्रम अस्तर अस्तर कारण क्रम भीवनीने पूर्व भीवन करा कामार सामिति सार्वाच्या राजी विश क्रिया । कार्येक वर्ण वर्णयो कारमध्यक योद्रे इकर-कार भागने रने । इसमें साथै सेन्सरें बढ़ा बोलबहर होने प्रना ।

अस स्वेन्नाने स्वयुक्तिनार विश्वंत अस्य विश्वंत स्व देवनार सुद्धुत्रमी स्वयुक्तिकों और अस्यो पुर्वेती रेन्सार द्वा को। इस स्वयून की ओको बढ़ा की पुत्र होने राम । सहस्यो मिराको स्वयून कर विश्व । इस स्वयूनी कर स्वयोध अनुवादी क्रमीना बार विश्व असम्बादाने कर स्वयोध अनुवादी क्रमीना बार विश्व अस्यादानों क्रमा स्वयून संस्था का स्वयून कर विश्व अस्यादानों क्रमा स्वयून संस्था को स्वयोध स्वयूनको और स्वयून वास्त्री स्वयूनको स्वयून कर दिखा। अनुवादे की विश्व । वे साम स्वयून को स्वयून की स्वयूनको स्वयून को विश्व हुन्ता स्वयूनका स्वयून केम्बर स्वयून स्वयूनको स्वयून कोई विद्व दिवारों उर्दे किया। के पूनका प्राप्तानी स्वयूनको की को स्वर्ध देवे।

इसी बीक्यों युवीकारों कर कार्यसे पीम्पोरको बीक त्रिया। तम पीमसंगरे को तीको जान कोक्सर कुम्पारकों। कार्यको बीक दिया। अधितनपुरी का कार्यसे विकारकार और सारासे पुरस्कार करके का राष्ट्राकार्थ पुरस्कारीको सारा कार्यसे पाकार करके का राष्ट्राकार्थ पुरस्कारीकार राजा। का देखकर उसकार विकारोगी दश वार्योसे, पुरस्कारी सारा केर्य भीमस्त्रीति की शालीको कार्यका करिया। वीर अधिकानुरे इस अध्येष विकार क्षेत्रसे विकारकों कन्नुरहों कार इसका तथा सार्यक कंपकार्थ कार्यका क्षारीवर कार्य कोद्य। अधिकानुस्ता देख परकार देखकार आकार कीर्य त्वकृष्ण उसके प्राप्त करने रूप । तम सुम्बान्यको उसके कोकृष्ण को क्रमण करने रूप । तम सुम्बान्यको उसके कार्ते बोक्ने और प्रार्थकको मान्यार अन्यो के क्रमणे क्रमण अस्तानम् किया । इससे स्वयन्त्रमे स्वयन्त्र प्रोप्तको अस्तान्त्र अधिकनुके स्वयन एक कृष्टि बोद्धि । तते कार्यः वेक्कर अधिकनुके स्वयन एक कृष्टि बोद्धि । तते कार्यः वेक्कर अधिकनुके अन्ये पैने बार्याने आके दूब-दूब कर दिले । तत्र कृष्टाकार्यं स्वयन्त्रको अन्ये रूपने वैद्यान्तर स्वयोजने बाह्यः के गये ।

पूर्व प्रदेश का रीक्षण बहुत ब्लोबर हो गांव के अवनेद का और पायक्रमोग कार्न अलोको संबंधने प्रस्कर एक-इसरेस अहार करने रूपे । बहुमती बीमानीने अस्तर प्रदेशने भरवार अपने विका अवसेते पानकांकी होताबा प्रकरण करना कारण कर किया। कारी और रागेन्यन प्राथित अन्य प्रकारक विकास हुए स्कूर्णेन वालको पहले स्था । अने बक्ते देशका श्रीकाने अन्ते क्वानांने कृत कृतार रचीको योगा । परंतु सारान्यसम्बर्ध साराजीको 🗩 सभी बहुनेर वीरोक्ट दिन्स अक्टोड़े कर अरम ( इस उनक शक्त परावाम मार्गा का बीर प्रथमें अनुन तियो पुरिक्रमार्थः सामने आवा । प्रतिकारने केवा है। जान्तीको प्रचारी नेनाको मार विराया, के यह प्रदेशमें बरवार केंद्र और अपने पहन्त बहुको असके संबंध कालोकों की करने सार : वे कार क्या है, साक्षत कर है। स्वानीको पीते कालेको सेना क्ष बालोब्द्रे गार व सह प्रवेत अवस्थ सामा परंच ब्रोकार ह्मार-क्रार भाग गर्थे । माराबीओ वस म्हारबी पुर्देश पुरिस्थाना यह परासम देशा को में सरेकने को हुए उसके सामने आहे और अल्बे क्यर क्यांक्रिक वर्ष करने रहते । करके कोडे हुए जान पनवण्ड और पताके सन्तान सर्वकर थे ( मिद्र महरकी चुनिवसको उस्से सन्ति भी पन नहीं हुन। आर्थ अपने पास व्हेचनेसे प्रकृत ही अने स्टास्टर निए देखा। त्रक क्षण्य क्षणी काम्या म्यू असूत परात्रम ऐसा कि म्यू सर्वेत्स है निर्मेद होचार एत महार्गावनीके सभा मुद्ध कर दहा था। उन दाने प्रहार्गावनी मानपृष्टि करते हुए पृत्तिकाओ भारी ओसो केर दिल्या और वे उसे तर क्षण्येका उन्तान करने एके। यह ऐसा पृत्तिका। भी योधमें भर गया और उनके साम मुद्ध करते-करते ही करने उन समके मानुष काम दिने। हुए क्षण्या कनुष कर मानेपर काने अपने दीनो मानों है उनके कामक भी नाम करने।

अवन्ये व्याप्तानी पूर्णाको यहा देशा सामानिक गरकता हूंजा वृद्धिकालो आकर विद्यु गया। योगी व्याप्तानी एक-पूर्णाके राजपा आहर करने हन्ने। योगीने क्षेत्रोके एक्के क्षेत्रोको गर इस्तान और राज्योग क्षेत्रार हार्गानी कालार एवं बसा के इस्तानो-कृती आवने-वालाने आ पुत्रके विन्ने कर्द्ध हो गये। इस्ताने गीनकोली आवार सामानिकालो अपने राजपा कहा विका। तथा पूर्णाकरणे भी कालो देशकी-देशको पूर्विकालको एकाम विद्या विका

इस जावर इसर यह चुन्न कर यह या और दूसरी ओर काक्सरोग इन्द्र होकर महत्त्वी पीक्सीसे विदे हुए हैं। इंकारकार साथे-वाले सर्वृत्ये यही हैनीके साथ प्रवीत इसर वहत्त्विकोंको कर सरवा। वे प्रकृति हुनैंक्सिकी कामरे पार्थि क्रम कंत्रेकों गये के; परंहु की अधिके पार्र कामर परिने कर करते हैं, इसी अकार वे अधुनके पार कामर परिने कर करते हैं, इसी अकार वे अधुनके पार

इसी समय सूर्य आस होने साम, सारी हेना मासूता हो वह की, पोन्पनोके राजक मोदे की क्या गये के; इसरियो उन्होंने केनाको पुद्ध की कार्यनकी आहा है। अस्तार प्रचरामी हुई केनी सेनाई साम्यी-कार्यने सामानीने कार्य गर्मी ह सुक्रानोके साम पानका और गरिया की कार्य-अपने दिस्तिराई सामार विकास कार्य एने।

#### मकर और क्रौञ्च-व्यूका निर्माण, भीम और यृह्युप्रका पराक्रम

स्थानने कार-पानम् । यस करिय-पानम् विकास कर युके और राजि कारीय है पानै से पुरः सम-वे-सम मुक्के विने निकरें। तम कार पुनिवित्ते शृहकुत्ते वाहा—'महम्माहें ! जान हम व्युक्तेका नाम करनेके विने पानरकुत्ते रचना करें।' उनकी अस्ता कार महत्त्वी स्थापुत्रने समाग्र एकियोको महत्त्वार पाने हेनेकी अस्ता है। राजा हम्द और अर्जून स्पृत्ते कियोगानने तिला हुए। महत्त्वर और सहत्वेन दोनों नेत्रोके कारानर करने हुए। महत्त्वर भीनकोर पुरस्कानने थे। जानिकान्, डीजीको प्रीय पुर, बटोज्या, स्वामीक और वर्धराय पुनिहिर—ने बहुको बन्दानानो निका हुए। जान नहीं होनको स्वथ क्षेत्रपति विराट और वृह्यहा जाने पुरानानों साहे हुए। केक्योद्तीय बीच जानुस्था। अपूर्ण जानानों साह वृह्यहा कर एहं थे। बीचनान द्वित्वापानने निका होकर बहुको रहा कर एहं थे। बुनियानेन और क्षाप्तिक पैटीके बनाउने थे। सोमकोचे साम किकानी और इस्तान्त् कर सक्तके पुकारान्त्रों को हुए। इस प्रकार बहु-रकता करके काकालोग क्वीएके समय काव आदिसे सुरक्षिण हो बुद्धोंट केले रेकर हो पने और इस्मी, पोई, रच राजा वैद्या केंद्राज्योंके समय को स्थिते सामने जा होटे :

राजप् | पान्तव-संगाकी स्यूप्त-स्थान देशका प्रीत्यने इसके पुक्तकोने क्या कई क्षेत्रक्ष्म्या निर्माण किया। इसकी बीक्के प्रात्यन पहान् वनुक्ते क्षेत्राचार्य सुवोधित हुए। अवकारण और प्रात्यकोके साथ कुरावणी स्यूप्ते दिगोधानने विका दूर्वा। पुरस्ति और अनेको एजाओके साथ पूर्णका प्रार्ट्यामध्ये थे। यह, सीमीर स्था नेक्कोके स्था प्रार्ट्यामध्ये थे। यह, सीमीर स्था नेक्कोके स्था प्रार्ट्यामध्ये चे। यह, सीमीर स्था नेक्कोके स्था प्रार्ट्यामध्ये चुल्लोको स्था नेक्कर स्थानकारणे को पूर्व श्वाप, क्षानु और पुरस्ता—के स्था प्रमुखे स्थानोके संस्था थे।

इस प्रधार कहा-निर्माण है जानेवर स्पॉलको पहाल केने सेवाओं के पूर्व जाएमा है जाता। कुलोनकर भीकानेक होगामार्थकी सेवापर बाव्य किया। हेग्यकार्थ करें देवले है प्रदेशमें भर पर्व और एकोके को हुए में बावोले कहाँने प्रीयकेके वर्णकार्थ आधार किया। कार्यका भेग किया। साराधिक गर्देपर होजामार्थि सार्यकार्थ कार्यका भेग किया। साराधिक गर्देपर होजामार्थि कार्यका है सेहेकी साराधेर हैं पात्रकरंगाकर विकास सहने हुने। एक ओरसे प्रीम्मने भी माराध कुल किया। इस सेनेकी मार प्रमुखे कुला और हैं साराधी पीनाका संस्ता आपन विकास कार्यका हुने भी आपनी पीनाका संस्ता आपन विकास होने हुने सार्थ केंद्रानेक कार्यका है साराधी पीनाका संस्ता आपने केंद्रानेक कार्यका है साराधी हैं साराधी हैं साराधी केंद्रानेक कार्यका है साराधी हैं साराधी है साराधी है साराधी हैं साराधी है साराधी है साराधी है साराधी हैं साराधी है साराधी है साराधी है साराधी है साराधी हैं साराधी है साराधी है साराधी हैं साराधी है साराधी है साराधी हैं साराधी है साराधी हैं सार

कृत्यकृते वकः—सङ्ग्रास ! इत्यारी सेवार्थ अनेवारे कृत है, अनेवारे प्रकारके कोवा है और प्राचीक रिवित अलेक प्रमुख्य निर्धाण भी हुआ है। इत्यारे सैनिया अलाग प्रस्ता और इत्यारे इच्छानुसार करानेवारों है, वे ना है, अने कियी भी प्रचारका कृत्येसन नहीं है। साथ ही इत्यारी सेनामें न अलाग वृद्धे लोग है और न बालक हो। कहा मोटे और कहा कृत्येस कोन भी नहीं हैं। सभी काम करवेले पूर्णित और नीचेन हैं। वे कामक और अस-दश्योंने सुस्तियत है, प्राचीका संग्रह भी उनके कहा कर्याह है। अक: हसी सलकर क्याने, कृतकी सकृते

और महाबाद करवेर्ने प्रतीम है। प्राप्त, महिन, सोबर, परिव, विक्रिक्त, क्रांक और मुसल आदि क्रवीया संवारक भी अवर्थ तक करते है। इसके एकका यह वर इसियोके क्षकों है, को संसारकाने सम्बद्धकारी दुईएसे देखें असे हैं। में क्रेक्सचे हे अपने धेनकोस्सीत इत्तरी सहस्रक करने आये है। क्रेस्टबर्ग, क्षेत्र, कृतवर्ग, कृतवर्ग, कुलाग, म्बद्धाः, चन्त्रसः, विकर्णः, अनुसाधः, शकुनि और बहुदेशः अपने स्थान मोरोपे हमारी सेना सुरक्तित है; तो भी पनि स्थ बार्ट का रहे है, को इसमें इसकोगीका प्राप्त आरम ही कारत है। व्यक्ति पर्यो अवदा प्राचीन श्राप्तिने की कुक्त प्रत्य क्षेत्र अकेन कभी नहीं देखा केना। विद्रश्यी बुक्ते नित्र है दिल्ली और लायकी बातें बड़ा वाले थे. किया पूर्व क्वीकार को भी करा। वे क्वी है, जन्मी वृद्धिये आववार यह परिचाय जवाय जाना होगा; जनी हो उन्होंने अब विश्वा का । सामगा विश्वीका खेप नहीं, ऐसी ही क्रेन्स्सर की । विकासके प्रकृति पैता निरम दिया है, पैता ही होता। को पाँचे दाल भाग समाना ।

स्त्राच क्षेत्रे—सम्बर् । अवने ही अवस्थाने आवको यह संस्थानक सामना करणा पहला है। यहाँ को बृहता नीता हुआ का और आवा माँ पाणानोक स्त्राच पुत्र हैना गया है—हुन क्षेत्रोंने आवका है होन है। हुन त्येकरों का पारतेकरों बहुताको अवना सित्सा हुन्त कर्म अने ही चोगवा पहला है। अनवको को यह कर्मनुस्तर जीवा ही पत्न विशा है। इस बहुत् संबद्धकों कैर्मनुस्ता सहम बर्गनियो और पुत्राका तेने बुक्ताच संबद्धकों कैर्मनुस्ता सहम बर्गनियो और पुत्राका तेने बुक्ताच संबद्धकों हैर्मनुस्ता सहम बर्गनियो और पुत्राका तेने

पीनके सीके वाजीसे जानकी पहलेगाना पह तीकार कुर्वभनके पहलेके पास का पहले। वहारि भीनकी जा हेराको स्था ओरसे स्था पार से थे, तो भी हुआसन, कुर्विक, हुआ, हुमेंद्र, तक, जानतेन, विकारों, विकारेन, कुर्वार, जार्माल, कुर्वार, कुर्वार्ग और कर्म आहे आपके पहले कुर्वे का पास हो देसका से इस पहलेनके पीटर पूस भने क्या हाती. योड़े और रचनेनर पड़े हुए प्रतिकारिकको जावन-जावन मीरिको पान करता। बौरण उन्हें पत्कारा कालो से। उन्हांस मा विकास पीनको प्रतिक उन्हें पत्कारा कालो से। उन्हांस मा विकास पीनको प्रतिक क्या हा स्थान स्थान की का कालामको सामन सेनाम कुर्वेको नार अस्ता रच कोई आ महासामको समान सेनाम कुर्वेकर काला रचा कोई आ महासामको समान सेनाम कुर्वेकर काला संसार करने रुपे।

करी समय बहुकुत कीमसंत्रके रकते पास आ पहुँचा। असने देखा रव सार्था है और केवल कीमका सार्था विज्ञोक मही मौजूर है। यूह्युड मन-ही-मन कहा कुली हुआ, अस्मी बेतना तुप्त होने तनी, जॉकोरो अध्य करूक कई और कब्बवास तेने हुए असने न्यून्य करूतरे यूक्त—'बिडोन्ड ! मेरे सामोरो भी कहका दिन भीमरोन कहा है ?

विक्षोत्रको क्षत्र बोह्नका बहा—'मुझे बहाँ है सहा करके है इस सैन्थ-सागाओं पूर्व है। बाते समय हम्मा है बहा था, 'सून ! तुन कोड़ी देखक खेड़ीको केमकर वहाँ ही वेरी प्रतीक्षा करों। वे सोग जो पेत क्य करकेको नैकर है, इन्हें में अभी मारे हालता है '

राक्षणार, पीपसंत्रको स्वनूनां सेनाके जीवर वदा विशे होतां देश पृष्टपुत्रको बढ़ी सरकता हूर । कार्न विशेषको क्षणा--'महानार्थ पीससंग मेरे सका और सम्बन्धी हैं। वेश स्वता होत है और स्वता पुत्रपत क्षणीयो कर्म हैं। वेश स्वता हो में भी जाता हैं। यह बदकार पृष्टपुत्र कर दिया और पीयसंग्ने पहाले हावियोंको पुन्तपत्रपत्र को धर्म क्या विश्व क्षा, अतीने कह भी सेनाके भीवर या पुन्ता। पृष्टपुत्रने हैता--वैसे आंधी क्षणीयों तोड़ स्वता है। क्षी प्रयास क्षण भी हम्-सेनाका संहार कर से हैं तथा स्वता व्यवस्था आर्थका स्वार से हैं। सरकार स्वता क्षण प्रकार क्षणाहरू को अपने स्वार की हो। सरकार सेरा क्षणीयों सरकार स्वार्थका स्वार्थका है

सब आरके पुर शृहकुत्वर कालोको कर्व करने रहते। शृहकुत अञ्चल जनवरसे पुत्र करनेकाल का, शहुआको बालकांत्रे असे सनिक को काक नहीं हुई: अस्ते एक बोल्कांको अस्ते कालोपे कींव करना। इसके कह को



आवां पूर्वोको काहे देश पहारची कुराकुरारने 'प्रमोहनावा' का प्रवीप किया। असके प्रपानमें ने सभी परवीर पूर्वित हो को। हेन्सकारी क्या का सम्मचार सुना तो सील ही कर क्यान्यर आये। देशा को मीमसेन और पृश्चप्र क्या क्यान्यर आये। देशा को मीमसेन और पृश्चप्र क्या क्यान्यने प्रहासाका प्रवीप करके मोहनाक्षका निवारण क्यान। इससे असे पून: प्रान्त-तरित आ गयी और वे बहारकी स्टब्स्ट पीय और ब्रह्मपुत्रके सामने पुन: पुत्रके निये का हो।

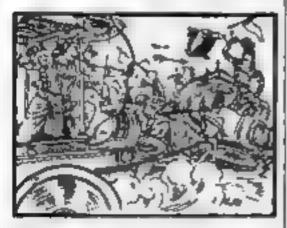
कृत शक्षा वृधिद्विषये अपने सैनिकोको कृत्यकर कहा, अधिकन्यु असी कारह बहारको बीर कारक आदिने सुर्वातका क्षेत्रक अपनी प्रविधान प्रवास करके बीच और पृष्ट्युप्रकेत कार आहे और अवका समाचार कार्ने, मेरा यन अन्तेत किसे अधिको पाए हुआ है।"

श्रीक्षीताच्ये आहा सुनवार सभी पराक्रमी चौद्धा चित्रुत अवार' कावार कर विचे । तर समय दोपहर हो कृत्य वा । कृत्येत्, होप्यदेने पुर सम्म केकान्द्रेतीय कीर अधिमन्त्रुको अगो करके वही चारी मेनाने समय करे । क्यूंने सुनीपृक्ष राज्य बहु करावार करिया सेनाका चेदन किया और मीतर करे गये । चौरक-मोद्धाओंको सीमसेन और मृहयुक्ते व्यानेके ही काव्येत तथा कृत्येत कर रहा। का, हसीरियो चै इन सोनोको देवनोने कराई न हुए।

वीवरंग और बृह्युम्ने यह अधिनन्तु आहे वीरोको अपने वाल आका देवा तो में बहुत प्रसान हुए और को इसकुमार्ग अपने गुर होगाव्यांको सहस्त वहाँ आहे देखा। इसकुमार्ग अपने गुर होगाव्यांको सहस्त वहाँ आहे देखा। इस अपने आवंद कृतेको वारनेका विचार त्यान दिया और वीयानेको केमानके रावने विद्यालय अक्तेके वारगानी होगाव्यांकीर वाला विस्ता। उसे अपनी और आतं देख आवार्यने कृत वाला वारवार असका बनुव काट दिया और कार वालांसे आके वाले मोहोको वारगार सार्गांको वी वारगाव्यो वार केम दिवा। तय महावाह पृह्युक आ स्थाने कृतकर अधिकान्त्रे स्वापर वा बैठा। उस समझ पायांकोना काम उसे, आकार्य होगाने अपने तीले वालांसे पारवार को कृता कर दिवा। दूसरी अहेरते व्यानतर जीवन्त्री भीवन्त्री भी

# भीम और दुर्योक्सका युद्ध, अधिमन्तु तथा द्वीपदीके पुत्रोंका पराक्रम

सहको देश—सहनकर जब सुर्विकार संख्याकी साली कर्म संगी से कुर्वेकने गीनसंग्या का करनेकी इकाले जगर जवा किया। अपने प्रो केरियो असे देश जीनहंगी क्षेत्रकी सीमा न गी। मे कुर्वेकनसं काले उन्हें, 'अन्य गुड़ों का जबसर निरम है, जिसकी जून क्षोंने जरीका कर सा क। वर्ष सु पुन्न केक्सर धान नहीं गया, से अवस्था है इस स्वय तेना यम कर कर्मुगा: जवा कुर्वोकों सो कह सरसे को है, इस्स्तेगोंने यो बनवास चीना है तथा क्षेत्रकी सो अवस्थानक कुल सहना पहा है, अर स्वयक्त कहन क्षात्रक और कुर्वेकन्स प्राण पहान पहा है, अर स्वयक्त कहन क्षात्रक और कुर्वेकन्स प्राण ।' वह बदाबर चीनसंग्री कन्न क्षात्रक और कुर्वेकन्स प्राण हैं अधिकी विकास क्षात्र क्षात्र क्षात्र कार्य करोह से से मामोसे सरका कर्न कार्य हैंगा, ऐसे इसके सार्वेकको कार्य इस्स, वार कार्यो करों क्षात्रको कार्य क्षात्र। इसके क्षा



राजे स्वयने हो ज्या करते जिल्ला धारते तने र

हानेने कृत्यवादी आका पूर्वाक्यको असरे एकका कक् रिका। प्रेमसेनने को बहुत है कानार और लाकित कर दिवा या, इसरिको यह रवके विवादी भागमें केंद्रकर जिलान करने समा। दरपक्षम् भीनको जीनको दिनो वह इसार प्राप्ते समा कार्यको आ वेता। वृहकेत् अधिकम्, बीक्टोके कु और केंग्रकोशीय प्रकारकार सम्बद्धे कुमेरे कुद्ध करते स्ते । इसी अवंच विवादेग, सुविध, विवाद्यंद, विवादांन, कार्यका, सुवान, कार्यक और उपनवाक-पून आह बावकी चौरोंने अधिकानुके रवको जारों औरसे के सिवा। यह देख अधिकानुके रवको जारों औरसे के सिवा। यह देख अधिकानुके स्त्रकारी प्राप्त-पाँच कार्यका विवाद कार्यका प्रशासकारों के नहीं यह सके, अस्त कार्यक विवाद कार्यका कर्ष करने समे। किर से अधिकानुने वह प्रकार विवाद कार्यका जिसमें आपके सैर्निया करि रहे। अने देशायुर-इंताकरें काम्यांन इन्द्र असुरोकों कारणीय कर हो हो। इसके बाद जाने कियानंकर कोन्छ कारोका आहर करके उनके सकते काम कार निरामी और सारांच स्था कोड़ोको पार शास्त्र। किर सम्बार कार्यो हुए कई सीही काम विकार्यको सब्द्र करके होने और वे सबके सरीरिको होक्या एंकीयर का निर्दे । विकार्यको कार्यर देशाका अस्त्रो हुसरे-दूसरे पाई अधियान्यु असी कारणीयका सर रहे।

कृतिने तथ साथ भारता हरकार्यको बीच कारा, एक कारणे कारणी कावा काट हो, किए स्तानने स्वर्शनको अर्थेर में केइंको फर नियम । इससे सुरक्तरांको बच्च क्रोक हुन और किया कोईके रक्तर ही कई क्षेत्रर जाने क्षांत्रके कार अन्यरिक सम्बन्धे समान समित क्षेत्री । यह तुर्वश्रम् कारण केवलर सरीवयों केवले हुई पुर्वार्थ सन्य गानी । इसर क्रमानीको राष्ट्रीय देशावा ब्यूगाची सुरासेको उसे अवर्ष राज्य किया रिका । स्वयंत् । इसके बाद आयके बहाओं कु क्यानेको कर क्राप्ति इक्से शुरुवेर्ति असे पार्क सरका । सन्तरोगने वर्षण्या मृत्यक्रमण्याः सुरुवीर्विते वर्षण्यो कार दिया। अस्ते पर्यका धनुष प्रध्य वेकाहर प्रतानीक वारमार विकास करते हुन। वहीं स्ट्रेस । उसमें अपने सुद्ध word west in with united were fair. जन्मोनके कर सरका नहीं कुमर्ग भी मौजून का, काने नकुरमुक क्रांस्टरेकांक बनुष्यके बार दिया । क्रांस्टरियांचे पूर्वा बन्द रेक्ट क्रमन क्रमीका संवाद किया और अबे कुमार्गको स्थान पानके बोद दिया । इतने बाद एक बाहरूरे ताने जुल्को करकर, हेने प्रारंभि और व्यवसे खेडोंकी मत करत । सत्य है को भी नात बालोंने कारत किया । हर्ने बहुए एक क्ल बन्द बन्दरे इक्टरांची हतोंसे कार किया, जान्यों कोर स्थापर का विकासिक आधारातें हो हर कुक्की भौति पृत्तीयर गिर यह । स्थायंको अस्तित वेक्कर प्रांत कारकियोंने कार्तनिकारे जाएँ ओरसे वेश किया और को बालोंके सम्बादी आन्वादित करने लगे। यह देख चीचो केमप्यतामपुरात क्रोममें को पूर् प्रतानीकारी एक्टब्स्फो किमे सेंदे । उन्हें आक्रमक करते देश हुर्वुक, कुर्वव, पूर्वलेख, सञ्ज्ञान और समुख्य आहे आपके महत्त्वती पुत्र उनके पुरुषकोरी आ हो। एक-दूसरेको अध्या दुरवन मानवेदाले हर राजाओंने पुर्वासके कह से क्षतिक असरा प्रवेदत संक्रम करे रका। इसावें रक्षियों और बुक्सकरोंकी स्वहें विक नहीं। अर शास्त्रकृतका चीनाती में महाता पानाने

पायक्रोत्स्या संकर करके धीवानीने अपने चीवानीको । प्राप्ता कुए और उन धेनीका प्रस्तक सूचने रूपे। पिन महे मींके लौदाबा और क्रमें अपने दिविसमें बके नते। इसर | इसके समने प्राथमिन पते।

सीर क्यान्सोची हेराको बमानेक पराने रुपे । इस प्रकार | क्यांका पुणिश्वर मी भीमसेन और मुख्याको देसकर को

# **इटे दिनके खेपहरतकका युद्ध**

स्तुक्ते क्या-म्बाराम ! तम क्या केया अपने-अपने | किविरोमें क्ले आने सांवेधे सकते विकास विकास और इक-इसोकर प्रधानोत्त्व प्रत्यात विकास तथा तुरते वित वित बार करनेके रिक्ते रिका ही गये। इस प्रमण स्थानके पुर क्रॉक्नो साला कियाको हेचर रिसम्ब धीमने पुत. 'हाराजी | आरक्षी केन बड़ी नंकानक है। इतकी महारकन वी बड़ी साम्बानीसे की जाती है। दिन भी कन्युक्तकां महारबी को लेक्कर हमारे वॉगेंको चर क्रान्से हैं। वे क्रान्टे भीरोको प्रकारने अञ्चल नहीं बॉर्सी पा हो है। उन्होंने जनके स्थान सुद्ध कराव्यक्रको भी तोष करत और उस्के भीता मुख्यात भीनकेची अपने मृत्युक्ताके समान अनव्य नागीके सुहै क्षापक कर हिना। भीधनी रोपएमं वृत्तिको नेपावर से मेरे सारे होया-पूजार का गये थे। जन्मीतक मेरा किस प्रत्य भारी है पाना है। महाराज्य । अन्यको स्थानकारो में से पुत्रने शब क्राप्त कर्मार पर्यक्रमेका बाल सम्बन कर केन बावन है।"

क्ष्मेंकार्य का बात कुरवार स्कारत कीम कुरवार में और असमें इस अध्या च्याने स्टॉ, 'राज्युकार ! में से अधिक में अधिक उच्च करते क्यानेकी रेजने पुरस है। आने भी में अपने जानीको बच्ची सम्बद्ध स्वरी प्रतिको श्राक्षकारेनके प्राच संकार कर्तन्त्र । तुन्तरे तैन्त्रे में, व्य कुतुरेश से क्या, सारे केवत और ईक्सेको कारोने जी



न्हीं कृष्टिया। में कृषे क्रांतिसे सम्बाधिक स्ताप कृष्ट् कर्मग्र और तुन्त्राच जन जनार देख करोगा ।

विकासकारी का कार स्टाबार क्योंका बढ़ा जाता हुता। प्राप:कारण होते ही कीवाजीने सार्व ही बहुतकता की । उन्हेंने क्या-क्यांद प्रकारे प्रतिका सीच्य-केन्ट्रसी क्यानव्याप्तरी विकित कहा किया। उनने प्रधान-प्रधान और, गलायेही, वक्रीर और पुरिचांको करावान निवृत्त विरुक्त । इस अवारे चीव्यक्रिको अस्त्रकृताने योग्वेन्द्रेशे साही होकर जानकी रोज कार्क देन्त्रे रिका के गर्क । के प्रक्रेसम्ब राजालेग रेसे कर कार्त है, अने सक-दे-तान पोजनीकों है रहा बार है है और चीकारी करारी प्रशाने सामा है। यह राज्यालाह बारा है इतेंह का और प्रत्या एक पश्चिमकी और एका गया का।

क्रा परम कृति प्रवासम्बद्धको केसका राजा सुविधिको अवने सेनावा प्रक्रमुह कराया । इस प्रकार जब श्रिक्ट क्रेकर क्षेत्रों संपर्ध अवने-अवने स्थानीयर साही हो नयी से क्रमार रही और अक्रोड़ी शिक्षण करने जो और चुनुने fied germet giest seg utgefen fire gurt mit ! हेक्कार्यंत्री विचारके स्थाने, अनुसामा दिक्कार्यके आगे और प्रार्थ राज्य क्योंकर बहुद्धानी कारणे आये । समुद्धा और रकोवने बहुराव क्रम्प्यर और अधिननेत्र किन्द्र और अन्त्रिक्षके प्रशासन्तर बाजा किया। और एव राजा अर्थुनके बुद्ध करने लगे । पीमारेको पुत्रके सियं बढते हुए कृतवर्गाको हमा विक्रमेन, विकार्य और दुर्वनंत्रको रोका ( अर्जुनका पुत जनिक्य जानके कृतेने विद्य गया, जान्योगियनेक क्रमाने प्रदेशकात अक्रमत क्रिया, एक्षम असम्बद्ध स्केच्यत लालाँह और इसकी सेनावर हुद यहा नवा पुरिस्ता बहुदेशुद्धे साथ बुद्ध करने समा। वर्णकु बुदिविर एका बुराकुने, बेबिकान कृत्यकार्यसे तथा अन्य सम बीर चीन्यवीसे ही लहने लने।

उपके पर्का को समाओंने स्थानसके सक रेकर करी जोरते अर्थकारे चेर किया। इस अर्थनी उत्पर कार्य वस्तान अस्य किया । दूसरी ओस्से राजसांग भी अर्जुनपर हकोब्दे कर्व करने रहने । इस समय बीक्स और अर्थनकी ऐसी विश्वति देखाना देखात, देखाँचे, गामार्थ और राज्येको सहा विश्वम हुआ। स्था अर्जुनचे क्रोकारे जरावर ऐन्द्रमा क्षेत्र और अपने सामीने एत्द्रमाँकी एक्टी क्रान्यमांको तेखा क्षिता। अर्जुनके इस पराक्षमणे क्षाण्यो क्षांकर कर दिखा। उनके सामने जिसने राजा, मुद्दरावर और गामानेको अर्थ अरावेको सामने जिसने राजा, मुद्दरावर और गामानेको अर्थ अरावेको सरम स्था। अर राजा अर्जुनके क्षारामार्थ अराव अरावे क्षाणे हुए वर मीनेके मीनाजी हो पहाल हुए। उनके इस प्रकार पाम आनेके आपनार्थ होना क्षित्र-निवार हो गामी और अर्थको क्षारांनी की एन्द्राने होना होने सरमार्थ है, उनके क्षारा कार्य क्षारांनी की एन्द्राने होना होने सरमार्थ है, उनके क्षारा कार्य

अन भीवारी को पूर्वींने काईको सबने आहे और असे युद्ध करने ज्ले। ज्ञार क्षेत्रकारी कल करकर मानवास निरादको कार्या कर हैया गया एक कार्या अस्ती काराच्ये और कारेंग्रे प्रमुख्ये कार क्षता। ऐन्याकार मियाओं तुर्वत ही बुक्ता करून के विकास और धाई कारकार्य हुए कारा दिन्ते । दिवर क्यूंने तीन वानोंके आकर्मको बीच दिवा, कारों उनके बोड़ोको कर इसके, स्थाने बाज कार इसके, धीयने नगरिको कार गिरान्य और एकते कहा कहा छात्र । इसमें क्रेम्सवार्वनी वहें सुनित हुए। उन्होंने जान पानके विरागक प्रोडोंको ग्रह कर दिना और एकने उनके सार्गकरके मार जान । निराट रकते श्रंड को और अपने करते रकत यद गये । तम ये निमान्त्रम क्षेत्रों ही सीवार कारकर्व करके माराज् आकार्यको रोक्ष्मेका प्रका करने सने : इससे विकास आवार्यने राजकृत्यर संस्थार एक समेके राजन विकेश कार क्षेत्र । यह क्षण संसक्ते इत्यको बेक्टर आहे सुक्षे सम्बद्धा क्षेत्रार प्रकारित का बक्का व्यक्ति क्षेत्रका करूव असमें जिल्हें ही यास गिर गया और वह सब्दे स्वासूनिये लोट गया। पुरुषो यस हशा देखाका राजा जिल्हा हा गर्ने अर्थर प्रेरमधार्थको क्षेत्रका बहुक्षेत्रको क्ष्मे पर्य । सा क्षेत्राक्षर्वकीने जन्मकोकी विकास क्षत्रितीको ईकाई-कृत्यारी पाएँचे विकास कर विकास

तिकार्याने अवस्थायांक सामये अवस्य तीन व्यवस्थित अवसी पृत्तुन्दिके वीक्षणे कोर की। इससे क्रोकरें प्रस्कत अवस्थायांने क्यून-के बाल करसावार सामें निवेचले के विकारतीयों काम, सामि, कोर्डो और इविकारोंको कारका पिरा विका। कोर्डोंक कोर कानेकर का रकसे कुद कक्ष और सम्बंध कारकारतायां तेकर कारकों समान कहें क्रोक्सं इस्परा। रवाद्युवारों सम्बन्धर तेकर कुछते हुए विकार्योंकर का करनेका अवस्थायांको अवस्थासक नहीं किस्प। किर उन्होंने



जनन ज्याने कल होई : विकासीने का बाद गणकांकी अपनी सरवाले हैं क्या दिया : तम से अध्यक्षणाने अस्ती कर और सरवालों हैं कुद्धे-दुब्बें कर दिया और अदेखें कोरवर्त करवेंद्रों क्रिक्सिकों के बीध दिव्य । अब विकासी अस्त्रीने सरवालों स्वयंत्र क्या गया ।

व्या गोर्था प्रमाणिने साने वेने सारोगे प्रश्ना आकर्षणी ज्ञान पर दिया। इसका अस्प्यूचने पी अर्थणाच्यार ज्ञान सेकार प्रश्नाविक्षा प्रमुप प्रश्न विद्या और स्थे भी अर्थनी व्यापोगे क्षापार वार दिया। दिस इसमे राज्यी न्याप करके सामा कामोधी होती हमा की। इस राज्य सामाणिका क्या ही अर्थना पर्यापा वेकाने आया। व्यापीनी तरिया की कार्याप्ट की हुई। उसने अर्थ्यमे विद्या हमा देखा क्यापा, जरने का राज्यी नामा समारास प्रश्ना हो करी। वित्र अर्थ अनेकों कार्य करकारत अस्प्यूचको क्या विव्य । इस क्याप कार्याप्ट हमा पीड़ित होनेपर यह प्रश्नाव सम्बाधिने अर्थ मीको कार्योगे सामा नवा। परस्थाकारी सम्याधिने अर्थ मीको कार्योगे सामा स्था। परस्थाकारी सम्याधिने अर्थ मीको कार्योगे सामा स्था।

इसी समय हंसको पुत्र पहालाची वृह्यपुत्रने अपने तीही तीरोले आपने पुत्र पत्त हुन्येयनको स्था दिला। विज् इसकी पुर्वेचनको कोई व्यापहाली हुई और बादी पुन्तीसे उसने जाने व्याप कोइकर पुद्रपुत्रको गींव दिला। तथ पूर्वपुत्रने पुन्ति होचन उनका पनुष्ठ काट स्थान, बारों पोद्रोंको पार निराम्य और स्था गीनो बायोंसे क्यां औ भी प्राचाह सह दिला। बोड्रोके मारे जानेपर कुन्यमा रक्षणे सूध पहा और जनकार लेकर पहाल ही पुरस्कारी और होदा। इसनेहीरी राष्ट्रांचने सम्बन्ध उसे अपने स्थाने हैंडा दिला। इस अकार दुर्गोवनको करका कर मृह्युप्तने अवस्थी सैनाका संद्रार करना असमा किया। इसी उसस महत्त्वी मृतकानि मीमसेनको बागोमी अस्मादित कर दिया। दम भीमसेनने भी हैस्पार कृतकार्यकर कामाजीर अस्मित्वो भी सिन्। दिशा सभा कृतकार्यको भी कृतन्ते कामोने कामस कर दिया। क्षेत्रके मार्ने अस्पार कृतकार्य क्षेत्र पुरुष्टिने अस्पारे साले मृतकार्य राज्यर यह गया। किर भीमसेन असमा होस्पो मरका दम्बाति कामाजां स्थान आपनी सेनावा सीना करने सने।

बहाराय । अभी केवार नहीं हता का कि अवनितरेश विन्यु और अनुविन्यु झालान्यों आहे देशकर आहे सामने क्षा नवे। कर, इरका का चेनाकुकरी पुद्र केंद्र गण। क्रावाको सरेको परका हर केनो अञ्चलको अन्तरे सेको बारोंसे बीच दिया । बहांने उद्योगे की हाउमन्त्री अपने क्षणीते क्षणत कर दिखा। जिस प्राचान्ते कर कान्येने अनुविक्के जारों खेडोको नकताची कर विकासना के रोजन क्षणीते अस्के बन्त और व्यक्तको कार निराम्य । स्व श्रापुर्वित्य आपने एको जारकर किन्तुके रक्तवर कह नवा । किर इन होनों कीरोने एक ही रक्षक बैठकर इरावान्सर बड़ी कुनीसे बाग बरसाना आरम्प केन्द्र । इसी जनवर इसकारों भी क्रोचर्न भागत का दोनों चलुकोना सम्बोधी हाड़ी सम्ब 🕸 क्षण अनके सार्वाकको भारतात निरा विकार अने अने कोई थयहे श्रीक्रकर करके १४४में लेकर हुम्प-३४४ चाराने राने । इस अक्रम इन क्षेत्रों चीरोको जीतकर इतलान् अक्रम पुरुषाई हिस्तते हुए नहीं तेजीके आयब्दी सेनाको व्यंत करने समा ।

सि समय प्रकारताम घटनाया रायस व्यक्तर वनालके सार्व वृद्ध कर रहा था। उसने वालोकी इसी समावार मगराको किल्कुल इस दिया। त्या उन्होंने उन सब वालोको बारका वही पुलीसे घटोरकाको मर्गस्थानीया कर विल्ला। बिल् अनेको बालोसे व्यक्त होन्यर भी वह व्यक्ता वही। इससे बुधित होकर ज्ञानकोतिकारेडाने औरह सेमार होते. बिल् प्रदोशकाने उन्हें स्त्वात कर इससे और सकर बाजेसे मगरावार कर विल्ला। तब वन्द्रताने उसके वाले केहोको मार हाला। घटोरकाने अनुहीन स्थामी ही उनका बहे केलो हालि होती। जिल्ला वगराने उसके दीन टुकड़े कर दिने और व्या क्षेत्रहोंने पृत्तीयर किर गयी। स्वित्रहों व्यर्थ हुई देशकर कटेरवाच क्यमीत होकर स्वाहुणने काम पा। । बटेरवाकका करू-करकान सर्वेद विश्वास था, को संवाप-चूमिने स्वाध क्ष्माया और क्षमा भी नहीं जीत स्वादे थे। अधिकों इस अक्षम कराहा करके द्या क्षमाह अपने हालीयर को क्षाकोंकी सेनाका संहार करने रूने।

इयर पहारच इयम अपनी महिनके मुगल पुत्र नकुल और स्थानको मुद्ध कर रहे थे। उन्होंने उन होनोको अपने बागोंने इन्होंने के दिया। तब सहोंको यो बाल बरसामार अवती उनहांको के दिया। स्थानको बागोंने आकार्यका होनेता उन्होंने उनके प्रशास्त्रको को अपने बानका मीहा रेसकार वही उनका हुई। इसनेहिये बहारची क्याने बार बाल होन्छन नकुलके बारों कोहोंको बस्ताकके कर के बाल। स्वान्त हुईत ही रकते कुलकर अपने मानित रक्यर कह क्या। इस उकतर वन होने बहारवी एक ही रवने बैठकर को पुलीने काल बरसामार खारानको क्या हिया। इसी सल्ला सहवेको कुलित होना। बारानका होने बाल होना। इसी सल्ला सहवेको कुलित होना। बारानका होने बारानका होने स्वान्त कारत बालुक होना रकते विकार भागों बेट गये और



क्रमंकि शक्को रमक्षेत्रसे स्वाहर से समा। यह देखकर जायकी हेन्छके समा कीर उद्धल हो गये तथा महारमी नकृत्य और शक्केंग्र अपने सम्बद्धी पठात करके हर्गध्यति और स्वहुनाद करने समे।

#### छठे दिनके दोपहरसे पीछेका युद्ध

स्तुपने नदा—च्यापन ! जब सुनीय जनकारके प्रीचीवरिक का नये हो छना विविद्याने बनावको देखकर असकी और अपने घोड़े कहा हिये तथा में क्या होउकर अरे मायल कर दिया। सुरावने उन कार्यको इटावन पूर्वाहित्यर सता बाज कोडे । वे उनके कारकती कीवकर उनका एक कीने राने । इससे राजा अधिहर बद्धा विगद्धे । ३५ सम्ब उनक करेथ देखकर एक जीवीको देखा जान यहने तथा करते वे सीमों लोकोको पान कर होंगे . यह देखकर देखक और प्रतिकार का लोकोची प्रतिकार किये प्रतिकारक करने सने । आपको संनाने को अपने जीवनको अपना हो क्षेत्र हो । विता कराती स्थितिहाने केंद्र वारतकार अपने ब्रोधको कर दिया और कुलापुरेत अनुसर्वा बारमार जलकी वालेको परिव दिश्य । विता प्रीम ही अन्तेर सार्तम और संस्कृती भी भार क्षाच्या राजा पश्चितिहरका देशा प्रमानक हेकावण क्षाच्या क्षाच्या अश्वरीय रथ क्रोड्यर नाग ग्या । इस प्रधार क्या वर्णपुर बॉबॉइरने समायको बगाल कर देवा से एक क्वॉक्कको शार्विकेन पीड विभागर भागने सर्वे ।

इसरी और केविजान महान्त्री क्यानानेको बानोने आकारीत काने लगा । तम कम्बकारी ३५ तक कान्येको गेकका सर्व अपने बार्गोंने केवित्रकारों वाका का विका जिर क्योरे कारे वर्णको कर करू, सर्गनको पर निरम्प तथा योग्री और दानों पार्शाक्रकोच्ये भी वराहानी धार दिखा । तस चेनिस्तामने रक्षमे महस्या प्राथमें शहर से तरी । क्षा गरामें जाने क्याकार्यके बोद्रों और क्षत्रिकों शह हात्व । क्रमाव्यक्ति पर्वाचित हाहे-साहे ही हात्वर स्टेस्ट कार क्षेत्रे के बाज वेकितानको पायल करके बस्तीने का पर्ने । इसमें बताब क्षेत्र कर गया और उसने अपनी गय क्रमानार्वजीवर क्षेत्री आकारि क्षेत्र असी देशका अपने स्वक्षों क्रमोंसे ऐक विका। तक बेर्कितार क्रकों सरकार तेकर उनके सम्प्रे आया । इसर अवकानी भी सामका लेकर रास्पर बाहे केमरे बाका किया / उका के केमें कीर एक-इसरेपर तीको तत्व्यापेके कर कवी हुए पृथ्वीका सोट-फेट हो गये। पदाने आराम परिश्रम पहले बहरण हर दोनोद्दरिको पुरस्तां का भनी । इसनेहरिये स्वैद्रार्थक्दर सर्हा कारकर्ग केंद्र आप्त और पेनियत्रमधी हेमी दल देशकर जो अपने रवर्षे बढ़ा दिलाः इसी प्रकार ऋषुन्ति कही कुरीहे करपानार्थको अपने एकने बैटा रिच्या (

वृष्टकेतुने नको बाजोसे पुरिसकाको मानल कर दिया। इसपर मुख्यिको अपने कोको-कोको कालोसे व्यासकी वृहकेनुके कार्या और घोड़को यार आता। तम महापता वृहकेनु जा १४को सीहका क्षणानिको राज्य वह यह। इसी स्वय विश्वकेन, विकली और दुर्धवेगने अधिकसूपर साम विका । अधिकसूपे अध्यक्षे इन सम पुरोको स्वर्धित ही का तिया। विज्ञ सीमसंख्यी औद्या यह करके स्वयः यह वहीं विका । विज्ञ सीमसंख्या सहित विज्ञास कीमको अधिके साम अधिकसूपी और नाते हेसा अर्जुनने सीमुन्याने सहा 'हरीबेटा ! विवार में स्वृत-ने २६ विकार है सो है, स्वर है अहर सम्बं साहोको भी सहस्ते।'

अर्थुनके देशा ब्यूनेनर बीकुम्पने, जहाँ सेलय है रहा था, कर और एवं प्रांच्या। अर्जुनको अल्बेक नीरीकी और सकी देशकार अववर्क सेना कहत कारा करों । अर्जुनने जीकामीओं रहा करनेकार राज्यकोक यह पहुँचकर अधेने प्रकारीने कहा, "मैं अन्यत्र है कि हुए को जान गोन्हा है और हमारे पूर्ण प्रमु हो। सिन्दु देशो, अपन सुन्दें तुम्हरी अनेतिशा करोर कर निरमेकान है। जान में तुमारे परलेकानसी विकासकेक दर्शन करा रेगा।' क्रामनि अर्थनके ऐसे करोर कार सुरका भी पाल-पुर पुरू नहीं पह । परिष्य पहल-से राज्यकोचे स्थान अर्थको अर्थ अस्यर वर्षे सम् ओसी केरकर काम कारान्य जनमान कर किया । अर्थन्ये एक इस्ताने है कर समावें, करण पहाट हाती और क्यों नि:तीय करनेके रिस्पे एक साथ है सम्बद्धे अपने कामोने पीच दिया। अर्थनकी मारने से कुनने स्थानक हो गये, करते अहा किया-चिता हो नने, जिर बराजियर पुरुषको रुगे, आक्षणेके वृते तक गरी और उनके जन्म करिनोसे कम कर नहें। इस प्रकार पार्मीक वरकारके भए पूर्व होकर में एक साथ ही बरावानी हो गये ।

अपने काची कथाओं को ज़्या गांव गया देखान क्रियंत्रम स्वार्थ वर्ष कृतीये को हुए क्याओंको साथ रेखा आने अपना का विकासी आदि वीटिंगे देखा कि अनुंत्रम स्वार्थों अस्त क्रिया है से वे काचे रावकी रावकी क्षित्र अस्त साथ अनेको प्रकारोंको असे देखा अन्ति विवार स्वार्थित क्ष्मणे अनेको संक्ष्म काम क्षेत्रकर उप सामित्र स्वार्थित क्ष्मणे अनेको संक्ष्म काम क्षेत्रकर उप सामित्र स्वार्थित क्ष्मणे अनेको संक्ष्म क्ष्मण क्ष्मण्य काहि स्वार्थित प्रविद्या के सीम्पार्थित प्रकार क्ष्मण गर्थे। स्वार्थित प्रविद्या के सीम्पार्थित प्रकार क्ष्मण्य स्वार्थित क्ष्मण क्ष्मण्य स्वार्थित क्ष्मण क्ष्मण्य स्वार्थित क्ष्मणे स्वर्य स्वार्थित क्ष्मणे स्वार्थित क्ष्मणे स्वार्थित क्ष्मणे स्वार्थ करनेपर ही बताबः हो पत्ता । उसे इस उत्तरर को बेनसे कता करते देश एउट काम अपने गीनक क्रकोंने रोकने समे । विश्व हास्से दिक्काविकी पतिमें कोई अन्तर नहीं कहा । उसने बाह्याका होकर इसकों एक अकोकों क्रिय-निक्त कर दिका ।

शीयरोन वह सेकर पेयल ही जवाजनी और दोई। उन्हें अपनी और को नेगले आते हेन प्रवादने पर्या की नीने साम हरेड़कर सब ओसी नायल कर दिया। किंतु चीनसेनने उन्हों कुछ भी परक नहीं की। में और भी कोनने पर नने और उन्होंने किन्युसनके केड़ेको कर समा । यह देखकर अपनार हुंद किन्युसनके केड़ेको कर समा । यह देखकर अपनार हुंद किन्युसनके केड़िको कर समा । यह देखकर और हुंद्र कीन्युसने की नायकर गए बुचले हुंद्र अस्पा हुंदे। पीनसी का व्यवस्थाने काल अपनी क्षेत्रकर की विकास का भीत हुंद्र हुंद्रों स्थानस काल गया। अस गंद्रोंने किन्युनके स्थार गिरकर और सामि और केड़िके स्थान पुर-पूर कर दिया। इस्टेडोंने किन्युनको स्थान नेप्सा किन्युनके को अपने स्थान कहा किया।

क्रम प्रकार क्रम संपास बहुत की होने सन्य से जीवानी राजा सुविधितके प्राप्तने अस्ते । सर प्राप्त परमानपक्रके सक बीर करिने क्रमें और उन्हें देख करून हुआ करें उन पुरिक्षित कुलुके दुवर्ग पहल है जातो है। इसर स्थानन मुधिहिर यो स्वास-स्वतंत्रके सर्वत भीन्त्रतीयर हा यहे। क्योंने भीकानीयर सहस्रों कांश होतकर उन्हें विरामुख क्या हिना। बिहा पीकाओं का सकतो स्वाबन आये नियेकों है। कानो व्यवसायकानो युविहिएको अञ्चय कर हिया। एका स्वितिरने क्षेत्रमें भारत धीयनीयर नगाय सम्ब स्रोह, पा विकासको सीमहीये जसे मारका गुनिशिएके मोडे भी गार इस्ते। सर्वक्र मुविद्दिर तुरंत ही नकुरुके एकर का नवे। धीवाजीने सामने आनेपर नवाल और स्ववेशको भी वालोसे भारकारित कर दिया। एवं राजा कृषिक्ति चौचानीच्या क्य करनेके लिये बहुत विकार करने लगे। उन्होंने अपने पहले क्षण राजाओं और सुक्षतेंसे बढ़ा कि तब खेन निजयन धीनविद्यो यहे । यह सुनकर सब छवाओंने चीनवीको घेर हिन्दा। सिंतु परेचानी सब उठेरते किर नानेपर भी जपने

बनुष्यो अनेको प्राथमिकोको परावाची करते हुए क्रीस कार्य करे।

का बह बनकेर कुद्र बहुत है सवानक है पना से दोनों ही ओराब्दे सेनाओंने बड़ी शरफार्स पर्या। खेनो ओराब्दे बहुरक्त कु पूर्व । अने समय विकृष्णी को नेगरी विकासके सामने आया। सिंह चीचानी उसके पूर्व सीत्यका विकार करके बराबी और कुछ भी वकर न है सुक्रम बीरोकी जोर करे गये। चीवाको जपने सामने देशकर वे सम कड़े क्षेत्रे विकास और प्रश्नामी बाले लगे। अन पगवान् क्तार प्रक्रिक्टी ओर सुरक्त सुके थे । इस समय पुरूने ऐसा क्यासन का बत्तक फिना कि बेनो ओस्के हमी और क्यारेडी १६:-१३रोने जिल को । पाहरत्याकपुरमा बाराध और मानवी प्राथित वर्षेत्र और क्षेत्रप्रदिको वर्षा भरते। क्षीरकोची संस्कृत पीतित करने रहते। इसमें आपके के अपने में का इक्कार होने लगा : इनका आसीता, सुनकर अवस्थितीय किन् और अनुक्रिय बहुदाओं सामने आये। का क्षेत्रीने अलोड घोड़ोन्हें पारकर को बालोन्डी नर्नाहे विकास कर दिया। परवासकत्त्वा होत है अपने रेवारे कारत सामाजिके धावर यह करा । तम बहारण पुणिहेर बडी कार्र लेन लेकर हम बेनो करकमार्थित हर पर्डे । इस्टै इक्टर आवश्य कु कुर्वेक्ट की पूर्व तैयारिके साथ विन्द और अविश्वासे केरवार करा है गया।

अश्व कृतीय अज्ञान्यको विकारण प्रतृत्वार प्रणानि है
थे थे। इसर कृतपूर्णिये स्वार्थी पीयन भरी व्याने लगी वी
स्वार स्वार्थीर एकसर, विकास एवं अन्य पांसकारी जीव देखने तमे थे। इसी समय अर्थुनने सुरुवां आहे राजाओको प्रत्या कर अपने विकारको क्षण किया। धीरे-धीर राजि होने एको। व्यान्था पृथिद्वार और चीयसेन की सेनाके सहित अपने जिलाको लीटे। इसर दुर्वोचन, जीवन, होप्यानार्थ, अवश्वारम, कृत्याकार्थ, जन्म और कृत्यामां आहे कोरथ धीर थी अपनी-अपनी सेनाके सहित अपने-अपने हेपेया वर्ते को। इस जवार एक होनेसर कौरक और प्रवास कोर्य कोर्य प्रश्नेति और व्या-दुर्वाकी श्वारतियोगे वर्ता आसे। वर्षा होनों प्रश्नोंके और व्या-दुर्वाकी श्वारतियोगे वर्ता आसे। वर्षा होनों प्रश्नोंके और व्या-दुर्वाकी श्वारतियोगे वर्ता आसे। वर्षा होनों प्रश्नोंके कार्य क्राराह्मी क्षण निकारकार तक्त-त्रमुखे बल्पोंसे कार्य किया तका पहल देनके दिन्नों विध्यावत् चीयोग्राहोंको नियुक्त

## सातमें दिनका युद्ध और भृतराष्ट्रके आठ पुत्रोंका वध

शक्षण अह—वर्तिये सुरूपूर्वक विकास करके सकेत | होनेवर कौरव और पाण्यक्यको राज्यकोग पुनः पुत्रके रिजे कार-वेसे बाहर निकले । का केनो सेनाई प्रकृपनिकी जोन वर्ती जा सबव पहासागरको गर्भीर वर्जनके अधान महन् कोश्लाहर होने सन्ता । सहनगर हार्वेशन, विश्लोन, विश्लिकी, भीम और हेण्यापनि एका होपार यह साम्से महेरकरेनाक बद्धा निर्माण किया। यह सहस्रहा सामर्थक समान का, हाबी-संदे आदि बहार ही सम्बंध सरहत्वालई वे। समझ रोनाके अगो-आने पॉलाओ बले: इनके साथ सामान हाकिया पारत तथा उर्जनके बोट्ट के । इनके बेक्के क्रांसन्त, मान, सुरक्ष तथा मानकोशीय बीरोके तथा अवसर्व केल हो। होताके पीन्ने पाच और क्वान्य आहे हेजोके बीद्धाओंको स्वयं तेवल राजा परमत को । उनके कर राज क्ष्मान का, जानेद साथ विकास तथा कुमनिन्द आहे हेरानिद बोद्धां थे। कुछुकोः योके विकासित करा रहा था। उनके पीके अक्रमाना वा और प्रत्ये कर केव केवाओं करन भारतीतील इर्पायम था और सबसे पीछे कृपायलीके चार th ât

बहुराज ! आरक्षे बीद्धालीका का बहुत्वक रेजका भूक्ष्मणे सुरक्षण जनके बहुआँ रक्षण की। यह देखनेने आरमा धनायक और सर्था कार्या का कार्यकार का इसके होने नहाके महत्त्वर पीयके तथा क्रमाहि विक कुर । इनके साथ बाई हमार रच, बोड़े और बैहान्डेकी केक बी। इर ब्रेजेके मध्यमें अर्जन, मुश्रिष्टिर, स्कूल और स्कूल है। इनके कर दूसी नुसी पहाद बनुधी एकओंने अपनी भेगाओके लाग का स्वप्नको पूर्ण किरवा। उनके पीछे आधियन्त, यहारची विराष्ट्र, हर्प्यहेके पूर्व और प्रहेरकम अस्ट्रे से। इस प्रकार कहा-निर्माण कर प्राप्तक की विकासकी अधिलानामे चुद्ध करकेके निर्म हर नने । रचनेचे कर उड़ी, श्रह्मनाद होने लगा। सलकारने, नास तीकने और बोर-भोरमें पुरुषकोकी जानाज जाने सकी। इस सुपूर जाहरे मारी विकार देश उठी। कीच और पानक केनी कालेक चेदा परायर शता प्रकारके अन-अलोक्ट प्रकार कर एक-दूसरेकी वचल्येक धेजने लगे। इस्नेक्की अन्ते रक्की पत्पाहरमे दिशाओंको पृत्रमे और करूको स्थान सोगोको पूर्वित करने हुए धीकानी ३० वहेंने । वह देश बुह्यप्र आदि न्यारमी भी पैरमनट करते हर उसका समया कानेको सेह । रिज से देनों सेनाओंने भर्दका संज्ञा केह गया । फेरफ्से फेरफ, फेरफे क्रेड, रक्से का और हाकेंसे कृतके स्थित वर्षे ।

वैसे तसने हुए सूर्यंची और देखना धुरिकत होता है. वसी प्रवाद कर कर कराने भीकाओं हुन्द होतार अपना प्रताद प्रवाद करने समें से प्रत्यानीका उनकी और देखना करिन ही भवा। भीकाओं सोनक, सुद्धा और प्रदास प्रतादीकों सामोले सम्पूर्विने निराम स्टेश। में भी मुख्या अस केंद्रकर सीवात है हुए पहे। भीकाने बड़ी सीवाताओं उस महत्त्वी कीवात सुनाई कर प्रतादी, सिर उद्धा दिने और रविनोंको सामो निर्मा किया। कोद्रोकाले सुद्धानारोके काला कर्यपृत्ति सम्प्रा को दिकानी हैने समे। जा सम्बंध प्रतादा सम्पूर्विने देखा क्रमानकार कोई भी और भीकाके सामने नहीं होते सम्बंध में केंद्रा कीवाते हैं प्रताद सर्वाता अपने की होते सम्बंध और भीवाते में पुत्र हैने सामा सम्पूर्ण केंद्राओंने क्रमा केंद्रा करने (वर्ग)।

क्रिल सम्बन्ध प्रकृ या-संस्तृत क्रमा हुआ था, तुर्वोचन अपने व्यक्रमेके साथ चीव्यक्रेको रक्षके हिन्दे आ प्रदेश । अस्ते नक्रांची क्षीर्क जीवाकी सार्वक्रके बार क्रांच । सार्वक्रिके निर्म है केंद्रे रह नेवार भाग गये : सीधरेण रमध्यिये सब और विचारने रहते। अचीने क्या गीवन बाजने आयके पुर स्थापक जिए कर देवा । इतका उनके बाइबोंकी शाह, के वर्ध करीका है, अवस्थे पर गये और चीपरेगर क्रम हर यहे ( व्यक्तिर में, आदिक्कोन्ड्रमे सत्तर, बहुत्सीने प्रीय, कुम्बाकाने नको, विकास्मध्ये योथ, एव्यिनकाने हीन और अवगाविनने अनेको बाज भारकर महत्वाची सीमको प्राचान कर विकार प्रमुखेकी का कोट चीमरेन नहीं सह सके। ज्होंने बार्ट हाक्से बनुस्को तुबाकर एक तीने बाजसे क्रमाजिलका सुन्त नतक कार क्रम्य। इसी बागसे कुम्बकारको समारोक केव दिवा । एक बारा परिकासके क्रमर क्रोक्स, जो इसका प्राप्त नेकर पृथ्वीचे सम्ब गया । दिस क्षेत्र बार्गोसे विकाससङ्ख्या करूक कार गिराचा एक कर: न्होन्स्की क्रापिने नारा । क्रापी कर गयी और का प्राप्तक्षक होकर वर्णानगर निर पहा। हमके कह एक बालहे अर्थक्षिकेत्वी करा कारकर दूसरेले उसका दिस भी उद् दिका। किन कोक्नें को हुए कीपने बहुएशीको धी पालकेकामा अभिनित्र कालक ।

क्ट्रस्तर आपके अन्य पुत्र श्वाधृतियो धाल पार्ट । इनके कार्वे व्या धाव लगा च्या कि धीधमेनने जो सभागे कीरवीको मुरनेकी प्रतिका को बी, जो अपने ही पूर्व कर क्षरेग्य। प्रकृतिके प्रत्नेते दुर्जीकरको बाह्र हेला हरता। असने अपने हैं किया है कि 'तन क्षेत्र विस्कृत का चौत्रक पार कालो ।' इस अवशर अधने बन्धुओची मृत्यु देखावार मारके कृतेके रिकृत्येकी सही कर कर आ नवी। वे मत-ही-का सोक्ते अने—'किट्रको को कुदिवान् और हैम्बर्ज़ी हैं: उन्होंने हमारे दिल्की श्रीतने के पुरु कहा क थेंड इस समय करन है थेंड है।"

इसके कह दुर्वोचन भीजवितालको पाल आणा और को दासके साथ प्रद-पुरुषार रोगे लगा। बोस्त- की पाई बड़ी तत्पातके साथ तह से थे, उन्हें भीवनेतने यह इस्त तका दूसरे योज्याओंका भी का संदार का रहा है। आल से मध्याच करे बेटे हैं और इक्लोगोंकी क्रावर अंग्रेस धारी मा रहे हैं। देशियों, मेरा आरब्स कितना महेदा है ! अवस्था में बाँड हो सलेका आ गया । अवधि क्योकलको अने करोर भी, से भी उन्हें सुनकर चीव्यतीकी जीवांमें जीवू वर आये। वे करने समे— 'बेटा । मेरे, अन्यानं होताने, विदरने सना हुन्तारी काल कार्निको सम्बारीने भी मा परिचार सुराया का। किन् का समय तुम नहीं सम्बंध । मेरे का भी बद्धा क कि मुझे और जानार्थ होपान्ये पुत्रमें न स्थाना, पर सूचने कार को दिया। अब मैं त्यारे का सबी कर करे के है। क्यरस्थाते पुर्वापेले विका-विकासी जीवलेन उपने सन्तुक देवीगा, अवस्य नार क्रमेग्य । इस संध्यनका स्थान कार क्रार्थको प्राप्ति ही मानका मैकर प्याप्ते बहु करे । प्रत्युक्तीको ते हम आहे देवता और असर भी भी बीत समस्ते।"

मुन्दार्क कुल-स्तुव्य ! अनोको चीनकोन्द्रों की बहुत-से धुर्वेको पर हाल-पर देशकर पील, हेरकवर्ष और कुम्बन्नानी क्या किया ? इस १ वेरी, बोक्स्ने क्या विद्याने भी रूपोंकाको बहुत गत किया; गाम्करिने पी बहुत क्रमहात्याः गगर का पूर्वने बोहबद्ध एक न मन्दै । क्राव्या फल भार पोगमा पढ का है।

सक्ताने बक्त-नक्तामा ! जापने भी इस सन्त विद्वार्थीको बाल नहीं मानी थो। हिनीवयोने करकार केनो संस्थानेका संदार करी था।

बक्क-'अपने पुर्वेको कुला केन्प्रेसे गेकिये, पानावींने बेह २ वर्डिको (" किन् आप कुछ भी सुनना नहीं ब्याहे से । वैदे पर्नेकाले सन्वकारे तक लेना क्य क्यान है, बैसे ही कारको वे करों अर्था नहीं रुगीं। यही करका है कि जान की खेंक विकास के पार है। अच्छा, जन सामनान क्रेमत पुरुषा शक्तका शुनिते । का दिन केप्युरके प्रमय पर्नका संकार क्रियाः क्रम् कार्ते जन-संक्रम् प्रशाः वर्णगुज पश्चितिरकी आक्रमे उनकी साथै सेना संस्था पानत पीनके कार यह असी। बुरुक्ता, शिक्तप्ती, सामन्ति, जनक श्रीपक बोद्धाओं के साथ राज पुरुष और विचार केव्यमस्त्रकुमार, बुश्चेद और कृतिकोजने एक साथ जीनगर ही बहाई कर है। अर्थन, क्रेक्टिके क्षेत्र पुत्र क्या क्षेत्रियम —ये क्र्योक्सके केर्व कु राजाओका जानना करने तमे तथा अधिमन्त्र, क्टेन्सक और श्रीयरेनने कीरकोश कावा किया । इस प्रकार बीव भागोंने विभाग क्षेत्रर वात्राव्यनेत क्षेत्रन-नेत्राका संद्रार बार्च सर्च । इसी प्रवास कोरवॉर्च भी अपने सहओका बिरमधी अंतरकं बार विधा ।

हेनावार्थने हृद्ध हेका सेवक और प्रह्मवेका आसमन किया और उन्हें कालोक चेनने लगे। उह समय पुरुषोपे क्षाप्रकार पत्र क्यां। इसरी और महामानी पीनसेनी व्योगकोक्य संक्रम आरम्भ विद्या । क्षेत्रो औरक्षे वैतिक पूर्व-हतोंको भारते और भरते (ले)। जुनकी भरी 🗪 पत्नी। 🙉 क्षेत्र संकल क्लानेककी पृद्धि का यह का धीमरेन हाकीसवारोकी सेवले पहुँचकर उन्हें कुनुकी मेर का रहे से । नकुल और स्थापेत अवस्थित बहुस्तवारीयर देश पढ़े से । अस्थेत को पुर संबद्धां-कुराती बोद्धोकी आहरोते कालूनि यह गयी। अर्थको भी बहुत-से एमाओको नार गिएमा बा. स्तर्थ बारण बहुरियो पानि बाई पर्यक्त रहेना बहुरी थी। निवा सम्ब चीन, हेन, कुछ, अकुमाना और कुतवर्षा आहि होको सरकर बढ़ करने समते है से पासकी सेनकर संक्रा होने लगता था और पत्थावंकि कृतित होनेपर आपके पहलाने जीतीका विकास अवस्था हो जाता था। हार प्रकार

### शकृतिके भाइयोका तथा इतवान्का वस

---

बारनेकारा कर वर्गकर संक्रम का द्वा का उन्हरिये क्षाच क्षत्रवर्णा भी व्या पुरस्कार क्षत्रवेको निन्दे । उसके मीनर युग गर्न तो प्रगायन्ते अपने मोद्धाओंको

स्तुक्ते का—विस सम्ब को-को बीरोका विकास | अर्थुनका पुत्र इरकान् अरका । इरकान्कर कम नामानाके क्की हरत था। यह बहुत ही बलावन् या। यह इकुनि तथा पान्यकोरर क्या किया। उसके साथ ही बहुत कही संग्रके | नामार देसके अन्यत्य कीर पान्यकारेग्यक नहा होहकर क्क्रा → बीरो ! ऐसी चुकिले काल खे, जिससे ने कीला योज्य काम करने स्थापक और महनोर्स्डन कर करे कर्त ।' इरकार्डेड केनिक 'बहुत सम्बद्ध' कहकर कोरवीकी कृतंत्र सेनावर कुर पढ़े और अस्ति चेन्द्रकोच्छे चल-मारका रिहाने तथे । अवनी सेनाव्य यह विकास सुवानके दुर्शने स्वी भ्रम क्या । अपूर्वेन व्यवस्था प्राप्तन्त्रको साथै औरहो के विकास और समय मीनो क्रमोचा उद्धार करने तर्ग । इराजन्हे करीरधर आने-चेक्के अनेकों पाल को गर्ने, सन्द करन स्केहरे भीग गया। यह अनेत्या व्याचीर व्यापे कार करी कोरहे कारोंकी पार पढ़ की भी के भी र से यह अभीर कुछ और न कार्यों जानुसा है। जाने अपने तीने कार्यों सम्बंध वीधकर मुर्जिन कर दिया। बिर अपने प्रचीरने केले हुए प्रकोको जीवका निकास और अपने प्रकार-पूर्वपर को बेगले प्रदार किया। इसके कह उसने अपने हाथने पानकारे हाँ तरावार और बाल सी तथा सुन्ताने पुरोको पार कार्यको क्रमानो का पैतार ही आगे कहा । इसके उनकी शुक्रां हर ही गर्नी और वे प्रदेशमें फाकर प्रातान्तर दह यहे। साथ से वे को बैद करनेका क्लेन करने छने। वरंतु को है से निकट आहे, हरवान्त्रे सरकारका ऐसा हान करा कि उनके प्रारंके इसके-इक्के से गर्ने । क्या-कर्म, बाद भ्या अन्य अपूर्णि कर कानेसे से जानाईन क्षेत्रार शिश यह । इस्तेसे केवार कान पामकं राजक्षमार है मीचित क्या।

इन सकते गित देख द्वीयको यह सीव दुआ और यह अर्जन्य मानार प्रमानके क्या ग्रीका । वह राजन वेकनेने क्षा प्रवासी और नामची या तथा कारणुग्धा कर कालेके कारण जीवसेनारे के बाजा था। अपने क्योंकाने कहा भीरकर ! हेको, च्या अर्थनका पुत्र प्रत्यान् च्या व्यवस्थान् स्था मानाची है; देश बहेई इसम माने, जिससे का नेरी सेनाक इंदार न कर सके। कुर इक्क्युम्बर कई बादे का सकते है. मानासमें भी प्रवीम हो। तथः नेमे को, प्रस हरफक्को सन कार्य कर असे ।'

क्ष पर्यक्त राक्षत 'जाून अन्तर' अञ्चल सिंक्डे सन्तर मरकता कुमा इसकानुके थात आन्य और उसे मारकेंद्र तीनो आगे कहा । हरावान्ते भी का करनेकी कुछाने आने बककर को रोकर । असे अपनी और जाते हेल एकसने नामान प्रयोग आरम्प किया । उसने पाणांचे थे प्रमार कोई उत्पन्न किने जना इस्पर फलाके हैं समार बिटाने ( वे समार भी राज्या के और क्षाचीमें सूत्र तथा पहिल रियो हुए है । का मानावय राज्यतीका प्राथमको सेमके साथ पह होने राज्य और केमें कोरके क्षेत्रक परत्यर प्रकार कर एक-न्यरंको कक्षकेश केलने रहते । सेरके को अनेकर होने स्कोपक की इन्हाद करने

हते । एक्षम इरकार्ग अञ्चलक करन के और व्य अस्त कर कहा बाता हा। एक की का रक्ता कहा निवार मा एका को इरायाको अनके बहुत और पानेको साट श्रमक । तम क प्रत्यानको सकते कालो बोहत-का करता हरत अवस्थाने वह पना। या देश प्राप्तान् वी अन्तरिक्षाने नह और स्थालको अपने कारारे पोईए का मन्द्रे अहाँको बार्कों सीको स्था । महत्त्व । कनोसे बारमस बाठनेस को पह राज्या नहींनकाने प्रकट हो जाता और नैजवान है क्या कृत को; क्योंकि चक्रुसोने नाम कामाध्य है होती है और क्रमक्क कर भी करके इन्द्रस्तुस्तर हुन्छ करना है। पूर्व प्रकार कांग्रह को जो अब प्रकार था, भई पुरः कांग्रह हो कार का । इसकान् की सर्वकने कर हुवन का, अतः का उसका करतेरी कारकार अकर कर रहा वर। उससे किमोके कारण अस्त्रमान्के वर्गान्ते बहुत एक बहुते त्यार और बहु धीर चीतकर कार्र गया। जातुको इस जनवा जनत होने देख अवस्थाने होकारी शीक न खी। जाने प्रहारवानक का क्ष्मार श्रामारको पहालेका उत्तर किया। यह प्रश्नी कारको देवका प्राप्तक्षे भी व्यवस्था प्रचेल विस्ता । इस्टेमे हरकारकी जातके कुरस्का एक गांग कहा-से बंगीको जाब रेकर को आ जीना और इरावान्त्रों सब ओरडे बेरावर कार्य क्षा करने सन्तः। इस्तान्ते केवतानके सन्तान विकास कारत करके अनेको जाति का शक्का का किया। एक अस्तव्यून परवादात कर करने करने कर पाणीको इतने रहता । असने इटनान्ते व्यनुकृतने एक गानोको अक्षार कर विका और को अवनी पायको पोहित करके अस्मारका कर विका । प्राप्तन्त्वा क्यूनाके सन्तर्भ सुद्धा नतन्त्र काकर कृतीयर का निया। इस प्रकार कर अरक्युको सर वीर अर्थुन्युन्यस्थो का क्षाता हो समक्ष क्रमाओं स्था क्षीरूनेची वर्त अस्तरत हो।

अवंत्रको अपने एव प्राप्तान्ति अलेको सम्बर नहीं सी, से चीकारी एक कार्नकार समाओका संदार कर खे वे स्था चैनात्री भी वर्गनेही कालोरी सम्बद्धनेक स्वारक्षियोग्हे कारेशा करते हुए उनके प्राप्त है जो थे। हसी प्रमार चीनसेन, मूल्युक और संस्थिति भी वह स्थानक मुद्र किया था। क्षेत्रकार्यका प्रशासन देशका तो पाञ्चलोके नवने बहुत थय सक्त पर्या में बारने लगे, 'जलेले जेपायार्ग ही सम्पूर्ण **बं**डिक्केंबरे कर इसल्वेकी स्थाप रकते हैं, दिए कर इसके एक प्रकार प्रतिद्व प्राचीर भी है से प्रकार विकास दिय क्या बहुन्य है ?' का कृतम संस्थाने केनी ओरके सैनिक एक-सुरसेका ज़र्का नहीं तह सके और आविष्ट-से होका नहीं करोसको कर सकी स्थेत

#### घटोत्कषका युद्ध

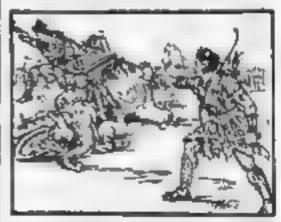
महारकी पाञ्चवाने का बुद्धारे क्या किया ?

अक्षरने बळ-राजन् ! इराजन् यस करा, का देश भीकोलों का प्रशंकाको वर्डा विकास करेना की। कामी काराज्यं समूद, वर्षत और वनोचे साथ साथै कृष्णे श्रापमाने रागी। आकार और विकाद मूंब करी। का पर्यकर पानको सुरकार आपके सैन्किके पीरेने कात पार भव्य, से बर-बर व्यक्ति रहते और उनके अङ्गोले परवेल कुटने रुप्त । सम्बेकी दला अरुप्त एक्पीय हे पूर्व की । बटोबाय क्रोबके गारे प्रान्तकार्यन कररावके समान हे उठा । सामाँ आयुर्ति वही पर्यवार हे गयी। सतके हवारे बाला हुआ क्रियुक का तथा सामने क्यू-तरफ़्के इक्किलोधे हैक राक्रमांक्ये सेन्स कार रहे थी। द्वांध्यने देखा कावार प्रशास शा का है और नेने जेना सरके बाते नीक है सरकार भाग रही 🕯 से को बढ़ा कोम हुआ। यस, क्रमणे एक विश्वास अपूर के जारकार सिंहरत करते हुए काले क्टांबक्यक काल form : mile this que part galleibalt ibm frair मेनारका राजा सहायाओं हैं से बाद । अपने पुन्ते हानियोगी रोपाने कथ अर्थ हैक प्रदेशका की बहुत कुमित हाता। विता से राज्योंको और क्रूनेकाओ सेन्द्रओने र्चेन्सक्रमती युद्ध होने साम । प्रकार काम, प्राप्त और ऋहि आवित्रे भौजाओका संदार कार्य गर्ने ।

शब्दे दुर्वोक्तम् भी अपने जल्लेका कल क्रोड्रकर राज्ञलेका कृष पद्म और प्रचंद क्रमर डीक्स कार्यांक्री कर्या करने सम्ब इसके इकते प्रकान-सवाम राह्मल को उसने हमें । इसमें कर कार्योसे पहाचेग, पहारीह, विद्युचिद्ध और प्रवासी—इन का राज्यांको मार क्रमा । सम्बाल् मा पुरः राज्यानेका क्रम वारताने तथा। जानके प्रकार का परावान केवावर क्येत्रक



कुरारा<sup>क्</sup> कहा—सञ्जन : इरामान्त्रो परा पूजा देशकर | क्रोक्से जल हुटा और बड़े बेगसे दुर्गेयनके पास प्र्युक्तर कोको कार-नाम आहे किये कही सम्ब-'ओ पृत्रेस है किये हुम्मे वैर्वकारकाक बनोमें मठकाया है, उन पाल-विकाले पालसे आज हुई। माप्ता उन्हरा होईगा।' हेक बहुकर प्रदेशकाने दोतीसे और इसकार अपने विद्याल क्ट्रको क्रानेको वर्ग करके तुर्वोधनको एक विधा। तब क्ष्मीभागी भी व्यक्ति काम बारबार उस राक्षास्त्रो पाधान बिरक । एक्काने पर्वतीको मी विद्योगं करनेकारी एक व्यक्तिक प्राप्ते लेकर आयके पुरुषो बार प्राप्तनेका विकार बिरक । यह देख बंगालके रुपाने वर्ध आधारिक हाथ अवन्त पूर्णा अस्ति असे वक्त दिया । द्वीवनका स्था प्रजीके औरमें हे तथा और बहुतका यार्ग शब्द गया। अससे अस्तरक कृतिक क्षेत्रक वर्धनकाने इत्त्रीया क्षेत्र स्टीतका उद्धार विरुद्ध । अर्थें रुपये हैं हभी भूमियर दिया और यह गया तहत केन्स्रोच्छ राजा अस्परको सुक्षार पृथ्वीयर आ गया ।



क्रमी नर और हेना चार करो —वह देश दुर्वीवनको क्ष्म क्ष्म: किंतु इतियक्षणेका एकाल करके व्यापिके नहीं हुए, अवनी कन्युपर पर्यक्तके समान निवरणान्त्री सहा व्हा । विश्व अस्ते राज्यसम्ब कार्लाक्षके समान तीव्हा कार्यादा अक्रम किया । किंदू का को क्या क्या और पुरः वहीं क्यकर नर्जन करके सम्पूर्ण सेन्त्रको इसने सन्त । उसका चैरतन्त्र सुरका जैनारिकाको अन्य पहारवियोको इसँधनकी स्कृष्णके देनो मेता। डोम, सोम्बर, बहुम्ब, नवक्ष, कृष्णकार्यं, सुविक्या, साम्य, स्थीनके राजकुमार, वृश्वक्रम, अक्टमाना, विकर्ण, विकरित, विविद्यति और इनके खेळे कार्यकारे वर्ष इकार रवी--वे सार क्वीवनकी रक्षके रिखे क पहेंचे : बटोकम भी येनक पर्यतको भौति निर्भीक स्वय का, सन्ते पर्य बन्दु अस्त्री कह कर के थे। किर केवे शासे रोपासकारी संसाव कृत हुता। क्टेंक्कवरे अर्थ-करावस्थ तार हो इकर हे जावार्यका स्पूत कर दिया, कृत सावारे सोपासकी कर्या कृतिका कर है और तीर क्यांने बाहीसकी कर्यों के असी। किर कृत्यकर्यको एक और विकासिक क्यांने हैं स्थानित करा, विकास कृत्य स्थान विकासिक क्यांने हैं स्थानित क्यां, विकास कृत्य स्थानकार्य है कर स्थान दिवस प्राप्त क्यांने क्यांने कृत्य कर क्यांने कृत क्यां। इसके क्यां अस्ता क्यांने क्यांने क्यांने क्यांने क्यांने सार्थिकीयर क्यांने क्यांने अवस्थान और क्रिक्टिकीक सार्थिकीयर क्यांने क्यांने क्यांने क्यांने क्यांने क्यांने सार्थित क्यांने क्य

और को बाल गरबार राजा कावजो औ और अंग्य ।

इस प्रकार कोरणपक्षि साथै जीरोको किनुस करके वा पूर्विकारी अंदर कहा । यह देश करक और भी अंदर्क पार्वको प्रकारी आने कहे । कोरकारक साथे ओरके पार्वको प्रकारो आने क्यों । का यह कहा है कान्य और पीक्षित है गया से गरकारी भीते अवकास में का प्रकार का अवनी वैश्वासको अन्यति कुल्का पुनिक्कि केन्स्यों किन्द्रिको का एका । अन्यति अववास सुलका पुनिक्कि केन्स्यों का पार्वित आहा पारकार पीक्सेंग अन्ये विकारको प्रकार केन्द्रित प्रवित्ति अहार पारकार पीक्सेंग अन्ये विकारको प्रकार केन्द्रित प्रवित्ति अहार पारकार पीक्सेंग अन्ये विकारको प्रकार केन्द्रित प्रवित्ति अहितान्, प्रसुद्धार, कान्यकार कुल अन्यान्ति, श्रीविति, अधिकार, प्रसुद्धार, कान्यकार कुल अन्यान्त्र, श्रीविति, अधिकार, प्रसुद्धार, कान्यकार कुल अन्यान्त्र, श्रीविति, अधिकार, प्रसुद्धार, कान्यकार कुल अन्यान्त्र, स्वान्यको प्राप्ति अन्यान्त्र प्रवाद कार्यकार क्यान्यकार कुल स्वान्यकार क्यान्यकार क्या

इनके आनेका कोरच्या पुरुष्ट गीक्सेक्ट गर्मी गीरा इतिकारका पुरु उद्यार हे गया। वे बर्श्यक्त्यो होइक्ट रीके इति पदे। पित होनी ओरबी संस्थापेने केर पुत्र होने गण और पुत्र ही हेरने कोरबीकी स्थान गर्मी ग्रेग जानः गर्म इत्या हो। या देश कुर्मिक स्थान पुरुष्ट होन पुत्र और प्रियमेनके सम्पुक जावन उत्तरे एक अर्थक्यक्तार स्थान अन्य कुन् कार दिया। किर बड़ी पुत्रीक संस्थ इन्यो इत्योग होनेड कारक उन्हें अपनी व्यवस्था स्वास स्थान पुत्र और अर्थित होनेड कारक उन्हें अपनी व्यवस्था स्वास स्थान पुत्र । उन्हों वह द्वार वेड्ड ब्यंत्रका कोमसे जान उत्तर और तम क्षेत्राकारी कौरक-प्रकृष्ट व्यापियोसे बद्धा-'गीरी ! 'तास कुर्वेदन संबद्धेत समुद्धे कृत था है, बीध सम्बद सम्बद्धी को बारे !'

अञ्चर्यको पात पुरुषा कृतकर्ष, भृतिसमा, कृत्य, auguste, feffigle, feethe, floori, west, water त्या अवस्थिते सम्बद्धान्यर—ने सभी क्वीकरको वेश्वर साहे हे को : क्षेत्रकारी असना पहल करन बहाबर चीनरेनको क्रमीत कर करे, जिर क्रमोकी हाई स्थानर जो अप्रकृतिक पर दिया। तथ भीगरेको भी आयाचेको जानी क्यातेकर का काम करें। इनकी करारी केट पहनेसे नमीवन अकर्ष स्थान केलेस क्षेत्रर सकते विक्रमे व्यापने सुवाद को । यह देख कृषीका और अवस्थान क्षेत्री स्टेक्ने भएकर चीवाडी ओर होते । उन्हें आहे हैंका जीवारेन भी प्राथमें कारकाले क्या ना नेकर राजे कर परे और स केन्द्रेका सामग्र करनेको एकं हो गर्ने । स्थान्तर, स्रीरम कारको चीवको प्रत कारनेको इन्छाने क्रमाँ प्रार्थिय गारा अधारके अधा-कार्यको वर्ष करने अने । एवं अधिराज्य अबी प्राचन प्राचन के बीचनी राज्ये हिन्दे पीधरका मेन क्षेत्रकर केंद्रे । अनुब्देशका राजा बील बीवरोनका क्षेत्र कि हा, उसने अनुस्थानाथ एक साम क्रीडा। यह मान क्रके प्रशेषों के गान, जाते कर अने राज और को नहीं केश हुई। यह अवस्थानको की हुन्द्र होकर कैशके करों केवेंच्ये का इस्त, क्या कारकर निया है और एक कार जनके कारते अनकी कारी केंद्र प्राप्ती । जनकी केंद्रणारी क्षेत्रेस क्षेत्रर गोल अपने रक्ष्में निवास जागरे या बैठा। अल्डी का एक देवका क्लेक्टबरे अन्ये कई-समुजीके राज्य अवस्थानार जाना किया। उसे उसते देश अश्वसामा को बीक्सलो आगे कहा। ब्यूतरो सकत करोडककी काने-जाने का में थे, अञ्चलकारे इन सकतो पार करन। केन्द्रपारके कालोने एक्जोबने यसे देख क्लोक्टने कांकर काम अबद की। असने अचनकामा में मेरित है प्रकार क्षेत्रकारों सभी केटा मामके स्थानले **प**र क्षेत्रकार जांचने ताने। उन्हें देशा क्षेत्रसार का कि 'मेरे निस्ता सची रेकिक इन्होंने क्रिय-दिया के जुल्में को हुए पृथ्वीया करारा से हैं। हेरककर्त, स्टोधन, प्रत्य, अकाराना जाने, कार कर्तर, प्रकार-प्रकार कौरव तथा अन्य समालेग भी को का को है एक हमारे केंद्रे और प्रकारक बरासकी है तो है।' का एक देखकर सामग्री सेना अवस्थिती और मालने लगे। कानि का सम्ब हम और चीमानी पी प्रवास-पुरस्कार कह के से, 'सीसे । युद्ध करो, पानी मतः नह से

बातपर विकास न कर प्रते । क्ष्मुकी केनाको कामार्थ देखा । व्यक्ति समावृति मूँच प्रते । इस कामार कुर्वाच क्रेसे-क्रेसे कियाँ। प्राच्या क्रोतकको साथ विद्याद काने रागे । कार्ते । प्राच्या क्रोतकारै सारको केवाले कार्ते और पना विका।

रक्षांचे भाषा है, इसका विकास न करें से भी ने इसले केसी | और प्रश्नाकी हैने सभी । कुर्युंच करों । इस सम्बर्ध सुक्

# द्योंधन और भीष्मकी बातबीत तबा भगदनका पाण्डवाँसे युद्ध

करा गया और बडी विश्वको सभा उन्हें प्रधान करके उन्हें पार्टिकारको विकास और अपनी पार्टिकारक सम्बद्धाः (शारा । वित कहा 'विकास: ) सम्बन्धि केर्ड क्रीयुक्तका सक्या किया है, उसी अवहर इसकोओर उपन्या असन नेवार प्रकारोंके राज्य और पंदर तरना है। मेरे ताल न्याप अवस्थित केराई क्या अल्पार अवस्था कार्य कर्यों किये किया साथे हैं। में भी जान स्टोनकारी स्थापन शासर पाणकोंने सूते पुराने हार विकार हुए अन्यानको आरों में कर का है और प्रकार है आरकी सहस्रत नेकर क्षा अंध्ये राष्ट्रसंबर्ध सम्बं ही यह सम्बंध स्थान साम कृत भारतेर केरे प्रस्त प्रचीतकारे वर्ग क्रोसिको ।

त्व श्रीतानीने कहा--'रावर् ! पूर्व राज्यवंका क्रायतः मनो राज पुरिश्विको अध्या भीत, अर्थुन मा न्यान-मानेको साथ है दह बहुत कार्क, क्योंके एकको राजाने साथ ही पुद्ध करण जीना है। और होनोड़े स्वानेते रिल्वे से इससेन है हो। ये, होन्स्टबर्ग, कुटबर्जन, शकारण, कुलार्थ, क्रम्य, जुरेसचा स्था निकर्ण, क्ष्मामा अभी प्रचारे पाई-में का तुमारे हैंनों का भारतारे राधानी यह गरेंगे। जनमा जा सके क्रम स्वारोंके विन्ते में इसके साध्य प्रशासनी प्रता प्रमाण करे करोर' का बहुबर चैनकी एक चनको छोरे-'बहुरार ! अस्त ही स्थान प्रदेशकात पुरासात Married Co.

सेनापरिको आहा पाकर गुजा परकार विकास करते हर बहे बेगरी प्रवासीकी और करें। जो बाते देश वन्त्रकें पहाची चीपऐन, अधिनन, क्येनक, ब्रेजिने पुत्र, राजवति, रक्षके, चेदिएन, बसुदान और दक्षणंतान स्टेबर्प भारता अनोह स्थापने आ गये । प्रत्यापने की स्थापिक संबर्धिक ज्ञाक्य हो उन एक प्रारम्भियोग क्षात्र विकाश सामग्रह. मानुबोक्त मानुबक्त सक प्रमंतन युद्ध क्रिय गया। महन् बनुर्वेश धनाताने बीवसेन्यर बच्चा किया और उनके कार प्राचीको वर्षा आरम्प कर है। पीमानेको पी प्रतेको परकर मनारको हार्योके पैरोकी पहर कार्यकारे केले भी अधिक

स्त्राची बहा—बह व्यवस्थानमें साथ कृतिका चौचानीके | चौचेको चार काल । इन काल्याने अपने इस प्रवत्त्राच्यो चीनकेनके रक्षणी और महत्ता। यह देख पान्यनीके वर्ष बहुत्विक्तेने बहुनेको पूर्व करते हुए एक हार्याको जाएँ औरते के निका । जिल्ल कान्यकार्ध इतके सनिक की कार नहीं हुए। इसने क्रम्बेट्संक अपने प्रचीको पुत्रः मानेकी मोर पालका। अध्यक्ष और अंगुरेका इकारा पाकर कर भग नकाम का सका प्रत्यकातीन व्यक्ति स्थान प्रयासक से का । अने क्रोको भरकर अनेको खो, प्राणिनो और केरोको प्रस्ते क्यारीस्कृत हैद साम । वैकाई-प्रवाही विकारिको स्थान विकार मा देख पाता प्रातेनाको स्थापन होतार का इन्तीको पार करनेके हिन्दे एक कनकारत होत क्षित्र करान्। जिल्ला करान्ये काले अर्थकारका कराने को पार दिया और अधिविद्याने प्रथम प्रमाणि एक प्राथमिक व्योत्स्वकोर अन्य केलो । अन्ये यह प्रति सामाना है से कि प्रतेताओं सामान को सामी नगर रिक्त और केनी व्हानेके चीचने बताबर तोड कार। यह एक अर्थुक कार हो। अवकारने को पूर् केला, मनार्थ और पुरियोको भी यह देशस्था सह आधारी हाता। क्रमानोत्र को प्राणकों के हुए राजपृत्ति अपनी क्रमानि कैरको करे। करकारे का नहीं यह नवा। असे अधन कार परिचार पाणा पहारतियोगर काम प्रशासना आर्थन तिक क्या चीवलेक्यो एक. परोत्राक्यो में, अभिकायुकी तेर और केळवरकपुरस्थेको परि सामेने सीप द्वारत। किन कुले कारले कार्यक्रकी क्वीली और काट करने, गाँच कारोने क्रेंपरीके बीची प्रतिको प्राप्ता किया क्या जीवलेको क्षेत्रेको कर निरुष्त, काम कार से और सार्वकारे की क्यानेक पेक हिमा । इसके बाद मीमसेनको भी बीच हारा । काने विक्रित केवर वे बाद देखक रक्के विक्रते भागमें कैंड का गरे। मिर कारने गढ़ तेकर बेनक्वंक स्थाने कर की। जरे नक रिप्ते आहे देश पर्वतन सैनिकोको बद्धा पर हमा । इस्तेक्षीने अर्थुन की प्रमुखीयन संकार करते हुए वर्षों का पहिले और कोरलेस करनेकी वर्ग करने रागे। इसी समन चैन्योको चनवार् औद्यान और अर्चुनको हरानान्छे अवका सम्बद्धाः स्थापः ।

## इराबान्की मृत्युपर अर्जुनका शोक तथा भीयसेन्द्वारा कुछ धृतराष्ट्रपुत्रोका वय

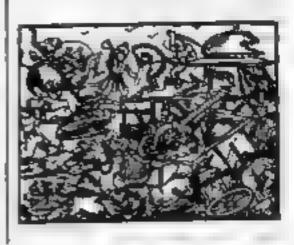
हाराचार पायर अर्थुनको बहा सेद हमा और वे देवी-देवी प्राप्ते प्रत्ये तमे। का अक्षेत्रे अध्यक्तते बहा, 'बहार्यक विद्रालांको तो यह कौरव और प्रान्तकोचे धीवण संहारको बाद ब्यूले हैं अलूब है क्यों थे। इससे उन्हेंने एक कारक्रको रोका भी का। मनुसूरत । इस भूको सौरावेक हाबड़े हमते और भी बहुत-से बीर को क चुके है उस्त हमते की कीरकोचे कई बीरोंको वह कर दिया है। यह सम कुळार्न क्षा बनके दिनों ही दो बार नहें हैं। विकार है देने बनकी, विसके रिन्दे इस प्रकार कन्-शामनोका विरुद्ध विस्त क क्षा है । भाग, नहीं एकतिल हुए अपने नाहमीओ नानका हने मिलेगा भी क्या ? इन्य १ आहा कृतिकाके अकराम और प्रमुक्ति तथा बार्याद कुलाको है यह वृत्तिकोका विकास है का है। मनुसूर्य । मुझे के अपने सम्मन्तिकोधेः साम कुद्ध करना अच्छा नहीं जनता, गांतु ने इक्टिन्सोंन नुहे कुन्नी जारको सन्द्रीते। इस्तिनो स्टेस 🛊 जन्ने केर्द कोरपोधी सेनावी और वक्को, तब किन्छ प्रतिका अधारत भूति है।"

अर्थ्यको ऐसा प्रकृति ही हरिकृत्यको से हसाले साल करानेवाले कोई जाने कहाये. यह देशकार अञ्चय सेनाने बाह्र ब्रॉल्साहर होने लगा । हांस हो बीचर, कुर, करवण और एकप् अर्जुनके कारणे जा रहे। कुल्बर्स और स्थापन प्राथमिका सामगा किया एक एका सम्बद्ध अभिन्यक्री जाने जाकर का गया। इनके दिला अन्य न्यानधी कृति मोद्धाओं में कि गये। यह, अब अलग चीवन युद्ध कि एक । भीवनेको चुन्नुहेर्को आको पुळेको देशा को कोवस क्रमा अङ्गासक जाने सन्त । इसर बाल्ये चुनेने भी बांगोकी वर्ग करके उन्हें किन्धुरूर क्षक दिला। इससे उनका रीय और भी प्रक्रम उठा और ने सिक्के सम्बन अपने ओठ क्रमने सने । तुरंत है एक सीमें मानसे उन्होंने म्यूबेरकाम बार किया और यह दासाल नियान होयन गिर नवा ६ एक हारो तीक्षे तीनके उन्होंने कुन्क्रलेको वराक्षणी का दिना। फिर क्योंने अनेकों पैने चान किये और कोई बढ़ी केमीले **३००के कृतेवर क्रोड़ने लगे : पीमसेनके क्रोब्व कर्न्सरे क्रुटे हुए** वे बाज आपके पहारची पुत्रेको उसले बीचे नियने लये। क्ष्मायूर्वे, कुन्यथेरी, बेगर, टीवंस्त्रेचन, रीवंस्त्र, सुरस्

स्त्राको कहा—सकर् । अपने पुर कृतकार्क करे कानेका तकार पाकर अर्जुनको कहा स्टेस हुआ और वे देवी-देवी है सहने सने। तक अर्थेने बीकुम्पते कहा, 'जहानके कहाना कि नदे हैं। अपने हेन पुर सीम्परेको कालके (स्त्रीको तो यह सीहम और पुरक्कोंके धीनम संहारको ।



विका काला भी लहेन आवश्चे पुलेका नाम करनेमें उसने हुए थे, जसी काला केलावार्थ करनर तक और से काल वरसा को थे। इस अवस्थार भी अनेन्द्रे का बढ़ा है। अनुपूत कार्थ विका कि एक और केलावार्थ और सामोद्रे रेकते हुए भी अनुदें आवश्चे का पुलेकों का सामा। इसी समय भीना, कार्य्य और कृतावारी अनुनेत्रको रेका। किंदु असिएयी अनुनेत अवसे अन्योद्धे का समये अवोच्छे कार्य कार्य कार्य अन्योद्धे कार्य अन्याद्धारे राह्मेंन कर दिया। तब असे राह्में कृतावार्थ कार्य प्रमुखे कार्य कार विका। अन्याद्धे अन्याद्धे राज्य कार्य प्रमुखे कार्य कार विका और पूर्णिय कृतावार्थि राज्य सह प्रमुखे कार्य कार विका और पूर्णिय कृतावार्थि राज्य सह प्रमुखे कार्य कार वका दिया। वह देखात हार्य होन्द्रों कार्य ! बहू !' का इस्सू होने सम्या। इसी अवसर कृतावार्थि कृतरे प्रमुखे पी सामार्थी सेनाले संख्या कर हो थे सभा आपने सेनाने पायावार्थियां मेनाने निक्ते हुए थे। अन राज्य आयसमें पार-कार करते हुए होनों ही पहाँके मेरिका नाम प्रतेनकान है जा का। केनों औरके पर्वादि कीन आयसमें नेना नकाका, जना और होतेने कारकार तथा नाम और पुँग्लेने जान करके युद्ध कर हो थे। अवस्ता निकलिय से काम्या, जनामा और प्रोक्तिकोची कोटने की अपने जीवविष्योची कारकार कर होत हैते है। निक्त पुंचर और पुत्र निकार कर कर का का, बीटोर्ड अपू-अपून्ये जोवका करें हुई भी। इस जवार कह है बाततार पुद्ध है जा वा। अवनाने कोट केन्सी कार को और अनेकों बातवारों हो गये। इस्लोकों कोट्यो कार को और अनेकों बातवारों हो गये। इस्लोकों कोट्यो होने स्वर्थ । तथ वीट्य प्रवादकार होनोहीने अवनी-अवनी केन्सोको स्वेतका और प्रवादकार होनोहीने अवनी-अवनी केन्सोको स्वेतका



## दुर्योधनकी प्रार्थनासे भीकजीका पाण्डवीकी सेनाके संहारके किये प्रतिहा करना

सङ्ग्राचे कार--काराम । विश्वितने च्युक्तार एक पुर्वोका, क्ष्मुचि, दुन्ताराम और वार्ग सरकारे निवास



विवाह कार्य कर्ने कि पाणाविकों क्रांक व्यक्तिकों अधिव विवाह प्रकार कीरा करा। एका कुर्वेकनी कहा, वेन्यकर्न, पीना, कुरावार्न, कुरा और पुरिताक कामानेकी प्रणािकों केवा नहीं थे हैं। इसका नया करण है, कुछ कामाने नहीं कामा। इस प्रकार पाणानेका से पन हो नहीं काम, जिल्ल के पेरी क्षेत्रकों सहस-नरम् किने के हैं। 'कर्म । इसके नेके केना और पाणोर्ने कहा कर्मी हो जन्म है। इस प्रमाद पाणाकार हो के कहा संदेह होने साम है कि में किए प्रधार इसके पहल करों। ' वाली वाल-प्राम्भेष्ट | विच्या न व्यक्तिये, ये आपका काल कार्यला: अब कीव्यक्तियो प्राप्त है इस संवालने इस काल कार्योगे । भारे के बुद्धाने इस वाले और अपने प्राप्त गांत है से में कीव्यक्तिय स्थानों है प्राप्तानियों समाव प्राप्त वीरोक्त व्यक्ति द्वा कार हैगा-च्या सम्बद्धी समाव कार्यन व्यक्ति है। भीवाली के प्राप्तानियों की प्राप्तानियों स्थानियों के वीर्यन्ति में और अपने इस स्वानावियोंको संवालयों जीवालीके हेरेवर सामुखे और अपने अस्त अस्त आस्त स्थान की पीन्यनीके हेरेवर सामुखे और अस्त अस्त अस्त सामा सीमावी

ुक्क कंश—सङ्ग्राम् । मैं अभी भीवानीसे प्रार्थना करके तुम्को कार काल है। भीवानीके इट वार्थक किर तुम है कुद करका।

इसके कर हुनीया अपने व्यक्तिक स्वीत सीमा सीमानीके कार करते । कुनावानी को एक मोदेना व्यक्ता । वीमानीके हीना व्यक्तिक व्यक्ति कार वहां और उनके करमोने इसका कर एक प्रकारने सुक्त एक सोनेके निहासनगर केंद्र एका । किन जाने नेकी असेतु कर एक जोड़का व्यक्ति इसको सहित उनको है जानका जाका पासर से हम इसके सहित उनको किस और क्या-वाक्योंके सिहा हन कार्योंकी के क्या है क्या है ? इस्कीरने अस आवको मेरे उनस कुना करनी कार्योंने । अस्य वाक्योंको और सोनक बीरोको कारका अपने वाक्योंको साम की्योंको और परि मन्द्रपानस्ते आनं पान्क्रजोकी रक्षा कर रहे हो से अको स्थानसर वर्णको चुद्ध करनेकी अग्रह ईमिने । व्या अकार ही भान्क्रजोकी अनके सुक्ष्य और कन्यू-नान्यजोके स्वत्रेत कराय कर देवा।' भीन्यजीसे हत्त्वा न्यक्रकर दुर्जोकर बीन हो कथा।'

महापना श्रीवरकी सरकोट पुरुषे कान्याओर विद्यु होकर महर ही व्यक्ति हर, बिन्ह स्क्रोंने उत्तरों कोई कहनी कर न्हों मनी । मे नहीं देखक सम्बेन्समें बास सेते हो । असे बाह रुपोंने क्रोबरो औरी बहरूकर दुर्जेक्ट्रको सम्बद्धते हुद् बहुर, बिट क्वींपन ! ऐसे कानाओरी तुम की प्रकार करें हैंको हो ? में तो अधनी सभी क्षकि समाचन युद्ध कर यह है और सुन्दारा हिन काम प्राप्ता है। सुन्दारा क्षेत्र कानेके रिजे में कानो प्राचनक हो पनेको केवल है। वेको, इस बीर अर्थनने प्रकार भी परास करने सामानानने आंतिको सर विका क्षा—वर्षे क्षमधी अनेकालक पूर प्रथम 🛊 । विक समय गुजर्जलोग तुन्ते बरागर सकत्त्वार से गुजे थे, जा जनन भी थे इसीने तुन्हें बुद्धाना वा । वन तुन्दारे ने बुरबीर नहां और कर्न हो जैदन क्षेत्रकर भाग गये हैं। यह बना जानके अज्ञा श्रामिकार परिवारका नहीं है । विराहतगरमें इस अवंतनेने ही हम राजके को। क्या दिये से राज उठी और प्रेरमायानिको की परामा करके प्रेजानोके एक और निर्म है। इसे उसल अवस्थान, क्याचार्य और अस्त्रे प्रशासीकी होंग होयाने वाले कर्णको की नीमा विकासन ज्याच्यो उनके क्या दिए हो। यह भी जानते बीत्ताबद यह उपान है। यहर विस्ते रक्ष्य जगहबी रहा करनेकरे प्रक्र-का-न्यूकरी शीकामानाम है जब अर्थनको संस्थानो ब्रोन नीत समाता है । वे शीवस्त्रेयस्थान अनलक्षति है; संसारको ज्यानि, स्थिति और अपन करनेकाले हैं, सबके ईबार हैं, वेक्स्सानोंके की पूजा है और क्ष्मं सराहर परमाना है। यह बाद नावाह स्वार्ध कई वार

हुनसे कह मुक्ते हैं। सिंतू तुम मेहनसा मुक्त सम्प्रता हो नहीं हो। देखों, एक विक्त्यांकों कोहनस में और तब सोपक समा पहाला पीरोको सम्मिता। जब या हो में ही उनके हरकों मारा अर्थना या उन्हें है संस्थानों प्रत्यता हुनों प्रस्ता करोता। यह तिक्त्यां एका हुनाके कार्ने कीन की-नाओं ही अश्वा हुआ या, पीरो पार्च प्रत्यांकों यह पूजा हो नाम है। इस्तिन सेवी पूछिने हो यह विक्तिकती जी ही है। अशः हस्तार तो मेरे प्रत्योग का कोनी हो भी मैं हाथ नहीं कार्किया। अस हुन सम्मित्ते कारा प्रकार कार्न करों। वाल मेरा यह पीनम संस्था होता। उस पुद्धारी सोग कार्याक कर्ना करेंगे, प्रयत्यता कि यह पूजी सोवी।

एकन् ! जीनाबीके इस जावर क्रक्नेयर कुर्वेकन्वे जर्ने तिर क्षाकर प्रमान किया । किर मह अपने हेरेपर पान आमा और को गया । कुले हिन उनके उससे हैं। जाने इस एकाओंको अपना में कि 'आयारोग अपनी-अपनी तेला रेवत करें, आय क्षेत्रको स्थान होकर खेवक बेरोक संसर करेंगे।' किर क्ष्मानको पहल है का ब्रोड है चीनवीको स्थाप दिले बर्ड रवा तैयार करो । अस्य अन्तरी क्यूरेने हेर्नाओं क्रमही रक्षणंड विको अवस्था है थे । किस प्रकार आदिता विकार कोई dien un mu, m ein ichtet mer pie feierable क्षणो का भीरतकेवा का नहीं होने हैंगे। जान सुक्रांग, कर, क्रमानं, क्रेमानरं और विविद्यां का पानपानीके बीकर्ता एक की। क्लेकि अने पूर्वति स्टोस इससे अवस्थ कर होग्छै।' इस्तेवस्थी को बात सुनवार सब बोद्धाकोंने अनेको प्रकेश पीव्यवीको सब ओरहे के विस्ता । क्रिकार्यको अनेको स्थाने विरा देशका अर्थनी बहुबहुको कहा, 'काम हार भीनाजीके सामने परवर्गित विकासीको रको । जनकी राज में करोगा है

## भीवजीका पाण्डव शीरोंके साथ धोर युद्ध तथा श्रीकृष्णका बाबुक लेकर भीवजीपर दौइना

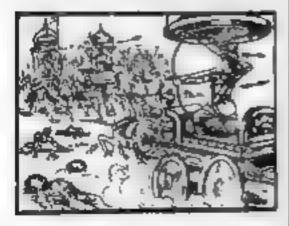
स्तापने वदा—राजप् । अस भीताओं अपनी निवास साहिती विकार करें और उन्होंने अस्तात एसंसोन्स प्रमान मृद्ध सतावा । पुरस्तवार्थ, कृतवार्थ, ग्रीम्प, क्रमुनि, जन्मात, सुर्वद्विमा और अस्पन्त सभी पुत्र पोम्पनीचे एक्स नावे केन्स्रोत असी नाई हुए । होप्यामार्थ, पुत्रिक्ता, क्रम्य और प्रमान स्मृति नादियों और यो । जनसम्बद्ध, स्टेम्यूक और होन्से सम्मित्यसम्बद्धान असनी विकास सेन्स्रोत स्मृति नावी और एक्ट्रे हुए । विमानिक्षिते विकाद हुन्स क्रमा दुर्वोचन स्मृत्ये

क्यान्यको स्था स्था न्यास्त्री अस्त्युव और स्थापु सारी न्यान्य सेनके पीते सन् सूर्। इस अकार आपकी सेनके सन्दे की न्यास्त्रकाकी पीतिले सन्दे हेका पुत्रके निने तैका हो को।

कृत्यों ओर राजा चुनिहर, पीमसेन, नकुर और सारोग-- वे सारी सेनाके ज्युको मुहानेपर काहे हुए राजा कृतका, मिराट, इक्टबींक, सिरामकी, अर्थुर, कटोनका, केंक्सिन, कुनिस्कोग, अधिकायु, हुन्स, युकामयु और -

देशकारकारम् — वे इस वेन भी सीरवेके पुरस्कारक अवनी रोजाका बद्धा प्रत्यक्षत गांधे से पर्व र तथ अपने प्राप्ते और धीकानीको अपने प्रत्ये प्राप्तानीको जोर पहे। करी प्रभव भीभारेन आदि पालाब बोक्ट भी संस्थाने निवार मनेकी सरकारों भीकारीके साथ युद्ध करनेके किने करने अपने। यस, दोनों आंरहे योर युद्ध होने सन्ता। दोनों ओरफे मीन हमा-दुसरेकी और दोक्कर महान माने राजे । जा भीवत कारको पुत्रदी प्रथमपाने सन्ते । जुलके कारण वेदीनकान वृत्ते की प्रमार्थन मानून पहले रकत। अहे प्रथम भारी भारती कुमन देश हुआ बहा राज्या पान चर्चने राज्य । पीर्वाहरे बाह्य कर्मकृत कीत्वार करने सनी । इससे ऐस्ट कर बहुत क माने बाद नारी नंबारकारः समेव ३६ पन है। कुने इस्तु-मर्क्को सम्ब बनके हेरे रूपे । आवश्यके जस्मी खुं क्रमार्थं पूर्णांकी और गिरने क्ली। इक असूच सुर्हाने जावज करो हो हाथी, पीड़ों और उक्तओंने एक उन केने रेनाओंका क्रम्ब बढ़ है भनेका है जा।

लंको पहेर महत्त्वी अधिकानुते हुन्नेकाको सेनाका आहत्त्वा विता । विता समय यह सा अन्य सेनाकानुते पुराने तथा, अवन्ति पहेन्यहे और भी को रोग र समे । अन्ति क्षेत्रे हुए कार्योगे अनेको हारिय पीरोको कार्योग्य नेक दिशा यह अनेक्ष्रीया परसम्बद्धी समय पर्यक्त प्रमान परसामा अनेको १४, १४०, ग्रेड), गुरूकका एका हार्यो और गुजारोहियोको विश्वेण वार्ये समा । अधिकानुका देशा अन्ति प्रमान परसाम देशावा पास्त्रोग सामा होनार सम्बद्धी सर्वका वार्ये १९०१ । हम सामा यह कृत्यार्थ, होनावार्थ, अन्यकार्थ,



मृह्या और प्रवास जाते कैरोको के कालने उत्तर हुन बड़ी सकर्द और प्रीक्ताके उत्तर राष्ट्रिकों निवर द्वा था। इसे जको जानसे इजुलोको सादा करने देशका अनिव बीरोको ऐसा कल पहल का सन्ते इस लेकने है अर्जुन

ज्ञाद हो को है। इस ज्ञाहर अधिकानुने जानकी विकास व्यक्तिके के ज्यान क्षि और महे-महे कारकियों व्यक्तिक कर दिला। इससे उसके सुम्लेको क्यी जनका हुई। ज्ञाहिक कुछ कारकी हुई ज्ञाहकी होना अलगा असूर होकर क्राहरी करों।

अवनी पोरावार का चौर अलांगाद शुरूका राजा वृत्तींकारी राजार अस्तर्वको काल, 'नावकाले । वृत्तासूरि पैसे देवसाओको प्रेमको लिया-निकार कर दिया था, उसी प्रकार का अर्थुनका कुम्बारी सेन्सको चन्त्र का है। संस्थाने इसे पेक्सनेकार पुत्रो कृत्यारे लिया और कोई दिस्ताको नहीं केन्द्र कोर्कि हुए का विशासओं चांगा हो। इस्तिको जब हुए प्रोम हो कावार स्थाना काम स्थान कर है। इस स्थान इस कोर्क-नोजादि कोड़ा अर्थुनका कम करेंगे।

क्ष्मेंकको हेला सहनेतर यह पहलानी प्रहानकथ वर्षा-क्षानेन केलंड सनार यहन् पर्यंत करता हुता अधिन पूर्वी और केला। आचा पोलन प्रम्म सुनवार प्राथ्वनीकी क्षा केवले कारावाचे का नहीं। इस सनन वर्ष केव्ह से इस्ते को अने को कार्य हम से के। अधिका हांत है क्यून-पान रेकर करके स्तर्भे का गया है जा राक्षाओं अधिकानुके कहा पहिल्ला उससे क्षेत्री ही सुरीयर सही हुई हानहीं प्रेमको पान देखा। यह एक साम क्षाकोको विकास कविनीन हर पहा और उस प्रकारि प्राप्ति का रेक्ने कह भीवन सेहर होने स्टब । दिन यह रक्षण प्रति क्रेक्ट्रिक्टें क्षित्र अवता। का प्रतिके प्री क्रोको परकर इसकर को बेक्से कवा किया। प्रतिक्किन वीक्रे-बोक्रे दीर क्रोक्स अने कामन कर दिया। माजीबी बीकराने क्रमेंद्र कारकोर भी हमाई वह गर्ने । अब वह पीमी प्रकारि को बीचन करना किया। का प्रकार असना कारणीयम् क्रेनेने को मुख्यों के नारी । वित्यु औदी ही देशों केर होनेवर क्रोक्के कारण हानी दूरा बान का गया। उसने सूर्फ ही इसके बच्च, काम और व्यवस्थीको माट प्राप्त । जिल काने पुरुक्तको हुई एक-एकके प्रीय-प्रीय बाल मारे तथा करके स्वार्टिक कोर कोक्नेको भी मार कारण। इस अन्यार स्कृति करने 20 दक्षाने का अल्लेकी इकासे कारर को केमने अध्यासन निरम । उने कहने पक्र देसका हांत ही अधिकार काली और वैद्या का वेलेका हुए और कुलकुरके स्थान वहा चीवन संघाप हुआ। दोनों ही कोवले त्यानकार आवामी पिद्र को और एक-द्रमारेकी और असमानिक समान वाले राजे ।

अधिकाम् महत्ते सीन और जित भीत मानोंने अलग्नुकार्य

चींच विका । इससे प्रोधनी भरवार आरम्पने अधिकानुकी कारों में बाज परे। काले कर उसने इवाले क्या केंद्रका अधियमको रंग कर देया। उस अधियमके करित क्षेत्रर मी बालोंने काली प्रातिको प्रेट विचा। ने उसके प्रातिको रोक्का मर्गास्त्रजोंने कर गये। इस प्रधार अपने करते कर भाषर का कारणे रक्तेकों को सन्तरी क्या फैसकी र असे सब बेजाओंड अने अनवार क पर । जो न से अधिकाम् ही विकासी देश का और न अपने का समुद्रेत सहसे मीर से रीमते थे। जा भीतर अध्यक्तको देशका अधियानने धारतर नामका प्रयास तथा होता । जाने की ओर अवस्त हे गया। इसे उच्चर करने और भी पर्व प्रकारको ज्ञानारोका प्रकेश किया, सित् अधिकपूरे का संभीको पर पर विदान पालका पात्र हेनेस कर पा आधिकार्य पायोगे यह व्यक्ति होने तथा से सर्वात की कार्य रक्षां कार्यक्ष्में हैं होकार धार कर । का मानवूद करनेवाले राजासको प्रत प्राचन पराना वर्गने अधिकान् अक्टबरी केंग्राको कामाने राजा ।

सक अपनी रोगाओं भागते देखकर चीनाची और अनेकी क्षीरम कारावी कर अनेको बारकाओ करो होरते नेरकर क्रमोरे प्रेमे स्टे। हिंदू मेर मन्त्रिय का और पराह्मको अन्तरे विका अर्थान और पाना सीवामको समान क और अपने प्रत्याचिने का केवीब के क्यान परावस दिकारका । इसनेहीचे चीरकर प्रार्थन अपने पुरार्थी पहली रिको अपनेत वेरिकोचा संबद बारी चीनवरिके पार चौध गर्ने । इसी राज्य आयोह मिला भीत्वादी भी राजपूर्विको अर्थानोह कारणे जायार हर गये। तथ जायके पूर्व रख, हाथी और भोक्षेद्र प्रया सन कोरसे केन्द्रर प्रोक्तानिके रहा करने उन्हें । इसी अध्या पांच्याचेत्र भी अर्थान्ये साल-पात प्राप्त चीपण पंतानके किने तैयार हो गते। अब सबसे पहले क्रायामांचीने अर्थनपर प्रवीत कान क्षेत्रे । प्राप्ते उपाने प्राथिति असे कावर अपने की कामेंचे प्रकानकी कारण कर किया। किर आने को क्षेत्रका अवस्थानक आक्रमण विद्या । इतरार स्वयुक्तमाने सम्बद्धिके बनुको से Ball कर दिने और फिर को भी मालोंने कींच किया। सामाधिने पूर्वत ही कुरना अपूर्व लेकार अक्टब्स्वायाची पूर्वी और प्रकाशीयें कार क्रम मारे। उससे अस्मय क्रमण और व्यक्ति होरेसे करें कुछरें का नहीं और वे अपनी व्यक्ति प्रोडेका स्वारत लेखर एक्के विकास प्राप्त बैठ गर्ने । पान डेले बेल क्षेत्रेयर प्रदानी अन्यसम्बन्धे करित क्षेत्रीर क्षांत्रीकार एक नाराच क्रोडा । का उसे कासर करके प्राचीने कर कथा । जिस

एक हुनों सामग्रे क्योंने सामग्रे काम कार इस्ते और स्क्री वर्धन कारो लगे। इसके मान् ये सामग्रे को उपन्य कार्योकी वर्ध कारो लगे। सामग्रीको की उस सारे इस्तानुक्रके कार साम और तृथ्य ही अनेक प्रकारके बाग जनसम्बर सामग्रीको सामग्रीक कर विशा।

क्ष बहुतको हेकको पूजी साथै हैने सार्वाधे कार्य आये और अबने गाँचे कार्योगे को कार्यी कर दिया। प्राामिको भी अनुस्थानाची क्रोक्सर गीस मानोसे अवस्थिते बीच विच्या हती क्या यस सकती अस्तिने क्षेत्रमें परवार केव्यव्यवंतीयर क्या किया। उन्हेंने सीन क्या क्रोक्स क्रेम्प्सर्थनीयो पामक वित्रा और दिन कारोबी कर्न करों, उने इस दिया। इससे सामार्थकी क्षेत्रक रक्षण करा को और अपेने कान्ही-कार्य अर्थको सामेरे इर दिया। तम क्षेपको सुसर्गको संस्थाने केन्द्रावर्तकोती सहस्था परनेकी जाता है। हारिये विकासको से अन्य बकु बहुता अर्थुन्छे रोहेची चेंचाको करोडी शत्क्रतीय पर दिना । पर अर्थको भी भीतक विकास वाले समापी और उतके प्राची अपने वारतेले और दिवा करत के क्षेत्रों और परवेचा निक्रम करके जनस हर यहे और उनके राज्या बालोब्दी वर्गा करने (तो ) अर्थनं का वालकांको अर्थनं वालोते वेक विका क्रमा देख प्रकारकार देखाओं देखा। और दाना भी स्थार है गये। फिर अर्थुओं कुनित होबार बरैस्कोरकोंद असमाराने एके हुए क्रिनर्स-बोरोका काम्याच्या क्रीका। उससे शास्त्रसाने कारता के करते हुत का उपन कर उत्तर हुत, विवर्तेत कारण क्रमेको पुत्र क्लाइका गिर गर्ने तथा बहुत-से कीर कार्यालयों के याने । अब क्षेत्राचार्यालयों गैलवान क्षेत्र ( काने बाद बाद गर्वी और संध दिशाई संबद्ध है गर्नी। इस उन्हार पायक्त अनेको क्रियर-शियोधा प्रसार देख का दिया और उन्हें बन्द्रामधीन वालों प्रकोर नैवासी सम्बद्ध हैंग्स्य ।

एकर्! इस प्रधान युद्ध होते-होते जब मध्याह है गया से पहरणका श्रीवारी अपने की मानोसे वाकानकों सेवाई-इक्कों सैनियांचा संहार करने रागे। तब पुरसूत, विकासी: विराट और हुन्य श्रीवारीके सामने आकर अगर कारोबी वर्ष करने रागे। श्रीवारीके सामने आकर अगर सेन कारोहे विश्वासी सामन किया और एक बान राजा हुन्यर होता। इस प्रधान श्रीवारीके हुन्यरे वाका होतार के बनुद्धा और यह प्रतिवर्ग पर गये। इस्क्रीने विश्वस्थीने विवासकों सींग दिया। नित्तु असे सी सम्बादर ज्योंने सारार चार नहीं किया। किर भूत्रसूतने अन्यते साली और मूनाओं में तीन साम चारे तथी हुंदरों प्रयोग, किरायरे एवं और विचायोंने पर्योग सामोशे कई चानार जम दिया। पीवाओंने तीन सामोशे तीनों मेंशोको चींच दिया और एक मामारे हुंदरात बनुष कार सामा १ उन्होंने सम्बद्ध कुन्ता बनुष मेंबार पांच वाचोशे सीमानोंको और तीनसे उनके सार्यकको चींच विचा। जाव हुंद्याको पहल चानोंके विन्ते चीनारेन, प्रीयतिके पांच पूत्र, केमानोतीय पांच चाई, सार्वाक, कमा मूनिविद और पूत्रपुत्र पीनावीको ओर वेहे। इस्ते प्रवास सारायी ओरके उन्हा चीर पी चीनावीको स्वास्त्र किये पांचाकोंकी सेमारार हुंद्र ची। जार सार्वको और पांचाकोंके पीनाविद्योगी क्षेत्र प्रवास पुत्र हुंद्र पो। जार सारायोगी पी आपवाले विवास को उन्हा पीनावीको और अनुवादी भी आपवाले विवासर एक-मूनारेको कारायको कर बेनके सन्हे।

पूसरी और अर्जुन्ये अपने संख्ये कालोसे सुस्त्रमध्य काली राजाशीओ नगरमको का केन सिंगा। तम सुरायो भी अपने बालोसे अर्जुन्यो कायक करने राजा। जरूने सारर कालोसे बीन्द्रमध्य और नीते अर्जुन्यर कर किया। जिल्ल अर्जुन्यर उन्हें सारने कालोसे रिक्तमार सुप्रामणि वर्ष बीनोओ कर अरला। इस जनार कालाप्त्रमध्यी कालो स्वाप्त्र अर्जुन्यरी मारो कालोद होत्यर के सहारकी विद्या क्रोड्सम कालो राजे। अनेकि कोई कोड़ोको, बर्जु प्रामेश्वी और कोई इस्लियोको क्रीइकर अर्जुन्या पान पर्ने। जिन्नियंत्र सुक्रमाँ राजा कुले शासकोते कुई रोक्तनेका बहुन जनका किया, परंतु किय मुद्दानेको अर्जुन्या पर वृत्ते को। सेनाको इस सम्बाद कालो विस्तार आपना पूत्र कृतेको साथे। सेनाको क्रान्य क्रिके स्वारी सेनाको स्वीत पीक्तमीको आर्थ कर्नुन्या प्रामेश क्रिके सुरी सेनाको स्वार पान्द्रस्त्रमेश को अर्जुन्या प्रामेश क्रिके सुरी सेनाको स्वार पान्द्रस्त्रमेश और करें।

अन परिवार्गी अपने साथोंने वाक्योंकी होनाको आकाशित करना आएक विचा : हुएरी और से कार्योको वर्ष करते हुए पुत्रों उरकर कड़ा है गया। इसी अवार एक हुम्मी अपने की सीरोही होनावार्थको बीवकर किर सरार कार्य अवार और पर्वत उनके सारविकर होड़े। कीर्यार अवार परवाब हाता बाहीसको बायार करके कहा नीवक सिक्तक सरारी एने। अधिकानुको कहारि विकारेको कहा-हो बायोही कारत कर दिया का, हो भी का कहारी वान्योको वर्षा करता हुआ पुत्रोके नैदानके इस ग्रंट। उसने सीर कार्योको कार्यो कहाने करो

] बोड्रोको पारवार को जोसी सिंहराद किया।

क्या अन्यानं होत्यने राज्य हुन्द्रको सीवका अनके क्राविको भी कंपल कर दिया। इस प्रकार अत्यन्त व्यक्तित क्षेत्रेते ने संव्यवस्थिते अलग यसे यथे। धीयसेनने वार-की-वागरे सारी संबर्ध सावने हैं द्या वादीकके थे है. सार्थि और रक्को न्छ कर दिया। इसकिये में तरंत हैं। रम्बनके रक्त का को। किर सामकि अनेको पागीसे क्रमानंको रोकका विकास बीचके सामने आया और ज़रने जनने विकास बनुस्तो पात तीनो बाग छोड़कर उन्हें क्रमण कर विकार कर विकासके उसके क्रमण एक लोहेकी कृषिक केन्द्री । कर कारको स्थान करतर कृषिकारे आसी देशर काने बड़ी कुरोति जानका बार बच्च दिया, इसल्पि बढ़ कृति। स्थानीकामा व प्रदेशका पृथ्वीपर गिर गयी । अस सामाधिने अवने सांस योजनीयर क्षेत्री । योजनीये भी हे की बालोसे अलो से उनते का दिने और कह भी पृत्तीपर का पड़ी। इस ज्ञान प्रक्रिको प्रक्रार भीवातीने में बालीने सामस्त्रिकी क्रमीयर कहार किया । तक रख, अभी और चोडोंकी चेनाके रतीय कर कामानेने सामानिकारी रक्षा करते के लिये चीव्यक्रिके वारों ओरसे पेर रिप्ता । बस, अब बीरव और पानकोरी पड़ है क्यांसर और देखाइकारी पड़ केंगे समान

वह देखकर राम कृषेंकाने हु-झारनारे कहा 'वीरवर' |
इस काम प्रवासोंने किरायकों कार्य क्षेत्रके वेर विश्वा है,
इस्तिके तुन्हें उनकी रहा कार्य कार्यके (' कृषोधनका ऐसा
अलेक प्रवास कारका पूर दु-कारका अपनी किरायत महिनीते वीन्यकीयों केरकार रूपए हे गया। एसुप्ति एक व्यक्त सुविधित पुरस्तारोंको रोकार उन्हर, सहदेव और राजा पृथिविका पुरस्तारोंको रोकार उन्हर, सहदेव और राजा पृथिविका पुरस्तारोंको रोकार उन्हर, सहदेव और राजा पृथिविका ऐकार राजा पुरस्तारोंको एक पुन्मुक पेत्री क्षा राजा पृथिदित और उन्हरक-सहदेव कही पुर्शित पुरस्तारोंको केर रेकार कारकार तिर्थ कार्योंको कार्योंने उनके किर कार्य एको कार्य गिर यो हैं। इस प्रचार कार पहास्त्रकारों अपने पहारोंको पंतार कार पारकारकोच उत्ता और पेरिपोंके कार अरुने असे।

स्वत्वी सेनामते पराजित देशकर तुर्वोधन बहुत स्वतः दृश्य । तथ साने महराजसे बद्धः 'राज्य् । देशिये, ज्युत्व-स्वतंत्रको स्वतित वे जोड्ड परसुद्धा जायकी सेनामते प्रकार होते हैं; जाय हुन्हें रेक्क्नोब्दी कृत्या करें । आपके बस्त और पराक्रमध्ये हर कोई स्वान जहि कर सकता ।' कृतिवन्तात

च्या बात सुरुवार भारत्य ज्याच रचलेना लेकर क्या समितिको स्टबने असे। प्रच्यी सारी निवास स्वविधे एक साथ श्रुविद्वितके कार व्हा पहि। तिलू वर्गकारे वह र्शन्यक्रमध्ये तरंत रोग दिन और यह बाल राग सम्बद्धी कारीमें नारे। इसी अधार नक्टल और सक्लेक्ने भी उनके क्षा-सार वाण वरे। महरावने भी इस्तेरे अनेक्के तीय-तीन बाज घरे। किर क्षण बाजोंने एका कृतिहरूको बायल किया और है-से बाव मार्डक्रोक की होते। बार होनों ओरसे बक्र ही चोर और कक्षर बुद्ध होने हन्या।

अन सुनीय पश्चिमको और साने हमें हैं। अस: आहे निता भीनानीने असना कृतिस क्षेत्रर को बीचे प्राचीते मानाम और अन्तरी सेनावर कर विकास अनूनि बारा सर्वासे धीयको, नीते सालकिको, तीन्ते प्रकृतको, साल्ये सर्वाच्या और बाधारे एक पुनिश्चित्रके वक्षानुस्ताको बीवका कहा विकास किया। तम उन्हें बर्जाने सहस्रो मारा, जानकिने तीन, सुरक्षाने सत्ता, भीनकेनो सम्ब और पुनिवेदने वाद्य व्यवति स्टब्स क्रिया । इसी साल होजाबार्कि प्रीय-पाँच सामांने स्थानीह और सीवर्कनार भीर जी तथा भीन और स्थानिकों भी उनक संग-संग मान्य कोचे ।

इसके कर राज्योंने किर विकासको है के हैकार मित् कार्र विकार भी अनेच योक कार्न रहते औं सार्का सपार अपने रेक्से सहस्रोको सरको से। उन्हेंने अनेको रक, इसी और मोहोको अनुस्कृत कर क्रिका उसकी मत्त्रकाची मिनलीकी बद्धकों सकत बहुत कुरवा तथ अंगी करि को और अनेक अनेक जान करने सने। भीकार्गके बनुवसे हुई हुए बाल केउद्यानीके कार्याने की रुपते थे, वे शीचे उनके प्रतिस्थे च्येतवर निकार कर्त थे। मेरि, काली और करून देसके बीव्ह हवार नकरके, जे संबाधने अन्य हेनेको रिवार और कसी पीछे के वर्ती रक्तनेवाले थे. शॉव्यनीके स्वयने सामान अपने क्वारी, केंद्रे और राजेके सकित ना क्षेत्रक पराजेकरे करे गये।

अब पायकोच्या सेच इस मीचक पर-१८४से वार्तना काली चापने समी। के बेसकर संबद्धमाने अपना सा रोककर अर्थुको कहा, "कुम्बोन्स्व ! हुन विस्ताही प्रतीकार्षे थे, वह समय अब आ गया है। इस समय बाँद श्रम मोक्ष्मक नहीं हो से जीव्यकीयर कर करो । हुवने स्टिक्टननारे राजाओंके एकतित होनेया सहक्रके प्रापने जो कहा वा कि 'सुक्ते संज्ञामसूमिये पीच-होणकी को गी कुरतको सैनिक मुद्ध करेंगे, उन समीको में उनके अनुवानियोधीक कर

कर्तन', का बालों तन राम करके दिशा से : हम कारकार्यका विकास करके मेकाओ यूक्त करे।" प्रस्तार अर्थको प्रक केमारो सहा, 'अरका, विकार प्रीकारो है, उसर चेदोको होत हैकिके: मैं आच्यी महात्वा पारत क्रांका और अनेन पोन्परीयो पुत्रीयर दिया हैया है इस ब्रोह्माईरे अर्थुनके सकेद बोव्येको कीव्यकीको और वृक्ति । अर्थुनको बहुके विन्ने भीनके सामने उसते हेना पुरिस्टिएकी विकास पर्याची किए और असी ।

चीनकीने हांत है सर्गायी गर्ग बर्ग्ड अर्थुन्के रचके कर्मा और चेज़ेंचे प्रशिव क्या विकार करती प्रस्तेत क्षानांके काम कार्य केंग्स विस्तात के से पत्र : विक् जीवाम प्राप्त सनिवा को बढ़ी काराने, में धीवासीके कानोंके मिने पूर् कोड़ोजो सम्बन्ध होको रहे। तम अर्थुको क्षण दिना अपूर्व प्रदेशका कार्य की बाजोंने श्रीकार्यका क्यून ब्राज्यार निया दिया। जीवानीचे एक कुराने ही दूसरा वक् रेकर कारक। जिल्लु अर्जुटरे प्रोक्तों नरकर उसे की कार कृत्य । अर्थुनको इस पुत्रविको स्रोक्तवो यो सङ्ग्रह्म बार्छ तमें और काले जमें, 'बाद ) न्यूनायू अर्थून, प्रस्टाप ( कुमोनेर चीर पुत्र कानाव ।।' ऐसा बक्रकर क्रमूंने एक स्तात क्यून तिरम और अर्थुकार पामीकी हाई। क्या है। इस क्षा केरोकी बहुतका पासके भीवानीके बारतेको सहर्थ कार्य क्रीकुमाने क्षेत्रे क्रीकनेकी कावारी अरुप अरुप क्षीतार शामित विकास किया पह वह वह रेगी अर्थानकी विभिन्ना और केन्स्सीयो सुविधितको सेनामे पुरुष-मुख्य मेरीका संक्रम करके अन्तर-सी प्रवासे देवतकर उन्हें सकर नहीं हुरत । वे इस्ट क्षेत्रोची राज क्षेत्रकर कुद को और सिक्से क्रमान नरको हुए देवल ही क्रमान क्षेत्रन जीवानीको और केंद्रे। उनके पैटीकी क्याबारे पाने पानी पाठने अली और कोक्से आंब्रे स्थल हो गयी। वह प्रथम आपनी ओसी बीरोके काम से सक-ने हो गर्न और सब और बड़ी फोलाकर होने राज्य कि 'श्रीकारी को ।'

क्षेत्रम्य रेक्टी बीतामा बारम स्थिते हे । अस्ते प्रत्या क्षेत्रकारिको सम्बन्ध स्थानसून्दर सरीत विश्वास्थानो सुनोत्रिका रमाम्बेक्के सम्बन मान पहला था। सिंह किस प्रमार प्राथीक हाता है, उसी प्रधान से नरकते हुए बड़े बेगही बोब्बलीकी कोर केंद्रे । कालान्यन चलकान् कुळाको अधनी और जाते देशका विकास अन्य विकास बहुत सहस्य और समिक भी न करारों हुए असे व्याने समे, 'कामारचेकन ! अक्रके: हेव 🛙 आपको कनावार है ै जड़केह 🖟 अनाव साथ संशासमें नेत क्य ब्रॉकिने । बुद्धाकारों आपके सकते पारे कानेते केत

सार प्रकार कान्यां है होता । गोलन ! जान अपने पुत्रक्षेत्रमें जारोरें में तीनों लोगांचे सन्तान्त्र हो नक है। आप इक्कानुसार मेंरे कार जात मोनियों, में तो लागांच रात है।' इसी समय कार्नुतरे पीकेंसे जावल कान्यन्त्रों कान्ये पुत्राकोंने का निया ! जिल्लू इस्तार की वे अर्जुनको कार्यकों हर नहीं तेन्द्रीरे जाते ही को क्रेस गर्ने ! ज्या अर्जुनने कीने की हर्ने दस्तों कार्यकार रोककर होनों कान्य कार्यु विशे और को प्रेमों वीचलपूर्वक कहा, ''कार्यकों ! स्वेतिये; जात के पहले कह कुले हैं कि 'में कुछ की कार्यका,' जो किया न व्यक्तिये ! यह जारा क्रेस कोने ही कार्य आवकों विश्वकारों कोने ! यह जारा कर मेरे ही क्षार कोने वेतियों, के विस्तास्त्रका यह कार्यका । यह कार्य में हाकार्यों, सरवार्य और पुत्रकार क्षार कार्यकार हो।'

अर्थुस्को करा सुरका सीकृष्ण कुछ यो न करकर स्रोधने यो पूर् है सिर रक्तव की गर्ने। सामनुष्या

वीकावी किर इन होनी पुरुषोद्योग कामार्थ करने अभे।
अहोंने किर अन्यान वोद्यासोंके प्राण हेने आरम्य कर दिये।
वहरे किए प्रवास वोद्यासोंके सेना पान पहें थी, वहरे अक्षर
क्षण कामों विद्यार पीत्यानी पायक्रांके हान्ये पर्वाद इस्त
है। उस अध्य पायक्रपदाके और संवादों और इक्षणोंकी
संख्याने परे वह हो थे। में हेने निरस्ताह हो गये थे कि
वाव्याद्याद्यानीन कृषी कामन केवाली पीत्यानीकी मोर प्राण वी वहीं सवाले थे। वाव्याद्यानेन पीत्यान से होन्यर पीन्यवीका
वह अव्यान्तीन परावाद हेन्दि साथे। उस स्वान क्षणानी वीती हो पायक्षे प्राणान केवाले हो पायक्रपत्राची अपना
वीती हो पायक्ष्य क्षणान वीति क्षणा होने साथ प्राणान पी वीत हाल प्राणान वीति व्याप्त होने अस्त होने स्त्रों, इस्तिको वित्र क्षणाने प्राणान वालक्ष्य होने अस्त होने स्त्रों, इस्तिको वित्र क्षणाने प्राणान वालक्ष्य होने अस्त होने स्त्रों वालक्ष्य पत्र

#### पाण्डवॉका भीकावीसे मिलकर उनके वर्षका उपाय जानना

सङ्घनने नेवा—होतों सेनाजरेंगे जानी मूत है है या वा वित सुर्वतंत्र अस्तानस्वतंत्र ना पहिते। संवानके सम्बंध प्रदर्श मेर है गारी। पोक्की बालोकी यार प्राच्या वान्यकोना जनमें सम्बंधर है हिनवार केंग्रावर परन वान्ये। इकर कीनवी होताने भरतार बहारनियोका संहार करते है या यो वे तथा सीवार श्रीत्त हारवार अपना कावड़ को की के—वह नार्ट देश और सीवायन राजा पुनिश्चितने सेनाको पीछे स्वेदा नेनेवा विवार किया और पूज वंद करनेवी अस्ता है थी। इनके बाद आपनी होना यो स्वेदा की नवी। श्रीवादे वालोको वीदित हुए पाव्यक प्राच करते परव्यक्ति वालाको वी क्षाव क्षेत्र या व्यक्ति की निरादी वी। चीनवाडी वी क्षाव क्षेत्र पाव्यक्ति की सिरादी वी। चीनवाडी वी क्षाव क्षेत्र पाव्यक्ति की स्वार बीरवाडी कुमाने अपनी प्रशंका कुमी हुए विवारों करते गये।

स्तिकं प्रथम आपने पायका, नृतिक और पुराक्तियी एक वैद्यक हुई। उसमें प्रथा स्तिम प्राप्त मानसे प्रशा वाद्यवा विकार कामे को कि अब क्या करनेसे अपना मान होगा। महुत हेलावा स्तैबने-विकारनेके बाद क्या मुक्तिहरने प्रम्यवन् श्रीपुरमाकी और देशकार कहा—'अनुकार । आप प्राप्ता भीवाबीका पर्वकार पराक्रम देशते हैं न ? जैसे हाणी मानुस्तिक क्षत्रको मेंद्र क्षत्रका है, उसी प्रकार ने हमाछि देशाको कुक्तर भी है। क्षत्रकारी हुई आनके सम्बन्ध हम



हेता। हतेवने को हुए काराज, कारायी हुन, पात्रशारी क्या और नदावारी कुनेत्वों की बुद्धों जीवा का सकता है; वरेषू कुनेता हुए कोवापर निजय पाना असत्वव जान पहला है। ऐसी निवसिये अपनी कृतिकों दुर्वानाकों कारण कीवातीके साथ बुद्ध काराध्य में शोकाके समुद्राने हुन पहा है। कुन्या! अब नेश विकास है, कार्ये काल नाडि। वहाँ जानेने ही अवन्य कार्याक दिखानी केस है। युद्धाने तो निरामुक्त कुन्या नहीं है; कार्येक चीवा निवसर हमारी रोजाका संदार कर के है। जैसे जावती कुं अवन्यत्र कोर सीक्ष्मेशक परंप पुरस्के ही मुक्तमें जावत है, उसी अकार चीवाके पास कर्याप कर्यान कार है, प्रवरे आई वायोधी बोटने बेहर यह या यो है. अत्योकों है असमा इंपरें साथ ने भी प्रमाने आ हुए, इन्हें भी वन-पन प्रश्नात प्रश्न तथा हमारे ही कारण हैंप्योंने भी अह कोगा। महरहार । मैं जीवनको बहुत मुख्यान् प्रभाव हूँ और नहीं इस कारण दुर्लग हो का है। इस्लेको व्यक्त है, जब विद्यापित जिल्लो हिन कार्य हैं कार्य कार्यको ज्ञान इस्लावन करी। बेदका । भी, ज्ञान हम्मोनोको ज्ञान इस्लावन सर्वत है से देख नोई क्या कार्यको, किस्ले अस्ता कि हो और वर्तन भी सामा र असे।

सुधिवित्तारे का वाकसामध्ये का सम्बद्ध मनकार् वीक्स्पने को सरकत के हर बढ़ा, "करिया। अन विषय न महे। अपने पत्ने को ही ब्रास्टेर, क्रांच और प्राप्तकोचा पाल करनेकाने हैं। अर्थन और चीन से बायू क्या अस्तिके प्राप्तन रेजनी है। न्यूक-स्कूके की को न्यूक्ती है। भारत पर्यों तो सुद्धे की बुद्धने सकत है, अनको बोबाने के भी भीवारो पुत्र कर सवात है। यहन, जानके ब्रह्मेंके हैं पहले क्या नहीं का काला ? और अवंत्रको ह्या नहीं है, हो में क्रायं भीव्यको सरकारकार कोरवोके देवले-देवले कर क्राप्ट्रिया । भीष्यके मारे जानेवर क्षे पति अस्तरके अन्तर्वे विकास दिवाची केरी है, तो में अवेओ के उन्हें पार अवास है। इसके सरिवार भी अंग्रेड नहीं कि को प्रत्यक्षतेका कर है, यह केंग्र की परम ही है। को अगरको है, से की है और को की है, से अगरको भी है। अध्येक पर्ध अर्थन मेरे स्वया, अध्यक्षी वक्त क्रिया है: आवक्तकार हो से में इस्के मैंजो अपने अधिरका चांत ची ब्हारकर ने क्याना है और में भी मेरे निजे प्रान्त करन क्याने 🕯। इमलोगॉर्प प्रतिका की है कि 'तृष्ठ-दूसरेको संस्थाओ क्ष्मायेंगे (' जल: आप आध्य हैरिक्ने, जानमे में की कर कार्यमा । अर्जुनने प्रमुख्यमें को सक्त लोगोंके नामने कह प्रतिका की भी कि "मैं चीनमध्य कर कर्मना," करका नहें हर सरहते वालन करना 🖢 । तिल कारको लिके अर्जुनकी स्टाइ हो, ब्लू मुझे अकाव एवं बराग चाहिये। अवक जैन्यको मारज कौर को का है? अर्जुनके लिये से का कार क्षणक काम है। राजर ! पदि अर्थर नेपार के कमें से असम्बद्ध कार्य भी कर सकते हैं। देख और हानकेंक्र साथ सम्पर्ण केवत भी बढ़ काने आ कर्न तो अर्थन अर्थ भी बर मनले हैं: बिर परेवाकी से बिस्तर ही क्या है ? "

वृध्ित्तं का—सामव ! अस्य को माहो है, मह एक रीक है। कौरकपश्चोद्धे सभी केन्द्र निकास की आपका केन नहीं का सकते। किसके प्राप्तने आप-कैसे स्वायक केन्द्र हैं. उसके प्रनेत्व पूर्व होन्द्रों का संद्रा है ? गोकिन्द्र ! का आप व्यक्ति विस्ते विकार है तो में इन्द्र आणि देखानश्रीको सी मीत स्वाता है मीकामी तो नाम ही क्या है? जिन्नु अपने संस्तानी व्यक्ति विस्ते में आपको अपना क्यान विकार कालेक दिनो नहीं का सम्ता। अपन अपनी पूर्व अस्तिको भी मेरे साथ पूर्व काले हैं कि 'में दुखार विस्ते पुद्ध हो नहीं कालेक, पर दुनों दिकारी आपहा दिना कालेका।' से पूर्व दो नहीं कालेका, पर दुनों दिकारी आपहा दिना कालेका।' से पूर्व दो नहीं कालेका उपनय पूर्व है की अस्ति काल पाँच और उपनित्रे हम प्रम् प्रेम आपको काल मीकामीके पान पाँच और उपनित्रे अस्ति काला अस्तर पूर्व है। से अस्तर में इन्ते की स्वार कालेका काला काला अस्ति है। से अस्तर मेरे और इन स्वेत की बार कहें सहस्ता काला अस्ति है। विकार है स्वित्योको देशी पुरित्यो है। विकार की

ज्ञानका, बारवान् श्रीकृताने युधिश्वरते कहा— 'बाहारव | आपको राज पुत्रे पारंद है। असमे विनासक् कृताक बड़े है पुण्याता है। वे केन्स्र पृष्टिकामो सम्बद्धे मान कर कालो है। आर- क्रको बाह्य प्रकार कराव पुत्रनेत रिस्टे असम्बद्धा कराव कालिये। विशेषतः आपको पुत्रनेतर वे सबी है कार कालोपे। करावी कीती क्रांत्रीत होगी, असिके असुसार क्रांत्रीय बुद्ध कोंगे।'

हम प्रकार करना करके परवास और करवान् श्रीकृतन् भीकते दिन्दाने गये। यह समय प्रदासीनी अपने अक-तता और कावस अपर दिने के बढ़ी महैनकर प्रकारोंने पीनवीके करलीय प्रकार (समार प्रजाप किया) और कहा कि 'इस कावसी हारण है।' तह पीनवीने इस समयों नेत्रकर कहा 'बाहुनेन ! में आपका स्वाप्त करता है। वर्षस्त्र, कनहम्म, चीम, न्यून्त और सहवेक्कर भी सम्मत है। में पुगरोगोंका कीन-सा कार्य करी, जिससे हुनों अस्ता हो ? यह करेड़ करिन-से-करिन क्या हो से भी कराओ, में और सर्वक पूर्ण करनेका का करीना !'

गोकाओ प्रशासको साथ यह कारणार हुए प्रवार प्रदाने रागे, तो राजा मुनिर्देशने केनसमूर्यक बद्धा—'प्रायो ! विश्व स्थानो पह प्रशासन प्रदान पेट हो गाय, यह प्रशासी । अस्य साथे हैं होने अपने यावका उत्तय बता दीनिये । वीरवा ! हुए पुद्धों असरका पेट प्रशासित केंसे सह शब्दरे हैं ? हुने के प्रशासन प्रशासन केंद्र कर्मुबर्गिका निजात करने साथों हैं, उस स्थान कोंन प्रमुख अस्पित विश्वाय पानेका सुद्धान पर स्थाना है ? क्कानी । इसारी बहुत बड़ी सेना नह है नकी। अब बारताहरे, बैसे हर जानको चीत समते हैं ? और किस प्रकार जनना राज्य वा समते हैं ?'

तम चंदरकोर कहा—कुनीक्यर । वै अही बात कहात है; बातरका में जीवित है, तुन्हारी विश्वन किसी एक नहीं है सब्बारी । मेरे पठता होनेवर है तुन्हारेग विश्वनी होगे । अतः पहि बातकमें जीतनेकी इच्छा है, तो बितानी कार्ड हो तके मुझे बार करने । वै अपने क्यर प्रहार करनेकी अस्ता हेण हैं। हरते तुनों पुरुष होगा । मेरे वर कार्यपर सब्बारे कप कुश्त है। समझो; हरतिको जारे मुझे हैं बारनेका अहोग करे।

वृत्तिहर गेरो-सकती । वन जान है का असन बाराहरे, निस्ते जानको हमानेम जीत सके। मुद्धों सन अस्य कोम करते हैं, तो स्वकति कारावके स्वार कर कही है। हुन, काम और कमाते भी नीता का समझ है; क अस्यकों से हुन आदि केता गया असूर भी नहीं तीत स्वकते।

वीयने तक-पानुस्था ! सुनाय ब्याम सम है; या क्षा में विकास रक्ष है, इस समय सुनारे महारकी नहीं नार कारों है। को प्रतिकार प्राप्त है, मिर जान, समाप जारर है, क्रमा मेची कर है. याम जान, कर हो, 'में अरुपार हैं पा शहकार प्रस्कारे आ जान, की हो का बीचें समान निरम्बा भूग हो, जो ब्याकुल हो, जिल्लारे एक ही पूर्व हो और से सोकरी निर्मित हो -- ऐसे खोगोंके साथ में यह नहीं करना बाइत । इन्हारी सेमाने के सिक्तमी है, जा पहले संनेद इसमें अवत हुआ ना, पीछे पुरूष हुआ है—इस कारणो तुमारोग भी जानते हो । बीर अर्थन कियान्योको अर्थन करके महाया बाबोक्य अधा करें; बहु तब मेरे साबने योगा से मै बन्ध रिध्ये स्तरेकर भी प्रदार नहीं कर्मना । यूहो मारवेके रिध्ये करी एक दिन है। इस मीचेले स्वाम अवस्त अर्जन सीलापूर्वेस पुढे बलोले बन्धा का है। संसामें कन्यान् श्रीकृत्य और अर्जुनके रिच्य कुरता कोई देता नहीं दिकानी केत. यो मुझे सम्बद्धान राजे थन क्यां (इसस्पेने क्रिकाकी-केरी फिसी पुरुषको आने करके अर्थन पुत्रो पार रियाचें) देख करनेसे निक्षय है तुन्हरी कियन हेगी। जैस की बताया है बैसा है बाते, तभी कुलतहरू समस्य पूर्वको मार सम्बंधेने ह

इस जनार जीनानीके मुनाने उनके मरणना उनाय सामार गणानी उन्हें जनाय किया और उपने दिलियको सीट गर्थ। पीनानीको बास परावान् अस्तुन्याने कोले— 'पानाम | पीनानी कुनमंत्राके पृत्य पुराव है, गुण है और इसारे राहा है, इनके जान में कैसे पृत्य क्षार स्वाप्ता । क्यापनों में इसारे जेलने पोना था। अपने कुनम्हारित करीरते में माने किसाने का इसके करीराको पीना कर मुका है। असान में इसारे निताके किसा है, से भी इसके अञ्चले बेटकार में इसीको मिला' सहकार पुनायता था। जार समय में सम्मानों किसा । है सुनार नहीं, सुनारे मिलावर पिता है।' किनोने इसने कामाने कामा, उन्होंका क्षार में केसे कर सम्मान है? ये माने ही मेरी सेनाका नाम कर कारे, मेरी किसा हो कर विचाह; किसाने आवार कार कार मुद्द नहीं कारेगा । असार, मुन्या |

अंक्षणं का—अर्थुय । यहते यून योगकं कामी
प्रतिप्त कर कृष्टे के, किर क्षतियमनंत्रे निकर अर्थे हुए अब
प्रते की प्रत्येकी क्षश्न केले का रहे है ? येरी तो कही
प्रत्येकी है, उन्हें रक्षणे कर निरम्भो; ऐसा निर्मे किया तुन्हारी
क्षित्रक अस्तव्यव है। केल्पाओंकी वृद्धिने का क्षण प्रत्येको है
अब कृष्टे है, चीववांकी परस्येक-रायसका भ्रमण निकट है।
निकतिका कियान वृद्ध होका ही होता, इसमें उत्तर-केर नहीं
हो सक्तव्यः। वेटी एक बात सूनो —कोई अपनेत्रे वहा हो, पूर्व हो और अनेको गुनारें जन्मक हो; सो भी यदि यह अस्तवायी क्रमण प्रात्येके निर्मे अन्त गृह हो हो को अनक्त्य पार प्रत्यान व्यक्ति । पून्ह, अस्तवाद काम जीर क्षणका अनुहान—यह अञ्चलेका सन्तवन वर्ग है।

अर्जुन्ने कह—सीकृत्यः १ व्या निश्चम जान पहला है कि
किरावाँ भीवन्त्री कृत्युक्त कारण होगाः वर्णीक स्ते देखते

के क्षेत्रको सूनके स्ते र स्वेट जाते हैं। अतः विकार्याको
असो स्वाने कारके ही इस्तांग अर्थ र व्यापुतियों तिरा स्वोन्ये।

मैं दूसरे अनुवानियोको बार्णीने पास्तर रोक रखेगा।
भीवन्त्री सहस्ताने दिन्ने किसीको आने न हैगा और
विकारणी उससे युद्ध करेगा। ऐसा निश्चम करके पायानस्तेन
करवान् सीकृत्यके स्थव प्रस्तानापूर्वक अपने रिकिंगमें गये।

#### दसवें दिनके युद्धका प्रारम

कृत्यहरे पूर्ण-स्ताम ! हिस्त्यहेरे विका अध्यक्ष चेन्यवीया सामना विका तथा चेन्यतीने विका अध्यक्ष पान्यवीके स्था बुद्ध विका ?

अपने कार—जन कुनेंदन हुना भीत, मुन्तुं और नगरे कार्य तर्ग, वारों ओर स्मुक्ति हुने सनी, जन सम्ब क्रमा सन्त्रम किस्त्यांको जाने नारके बुद्धके तन्ते क्रिक्त । सेनावर बहु निर्माण करके विकासी समके अले क्रिक्त । सेनावर बहु निर्माण करके विकासी समके विकासी कार्य रगरे । उसके विकास वालकी स्मुक्त तिथे विकासी हुई और अधिकम् इस्ते हुई । इनके क्रिक्ट कार्यक वेक्सा वृद्धपुत्र का । अन्ते पीने महार-स्मूक्त क्रमा प्राप्त विकास के । इनके क्रम हुन्द केमान-राजकुकर और बुद्धकेतु के । के अपन सामक्राने क्रमा-राजकुकर और बुद्धकेतु के । के अपन सामक्राने क्रमा करके राजकुकी जनने बीकामार केह क्रमान आवार केमा सामक्रक विकास ।

इसी जनार जीरन की सहारणी कीवाले आने करके पावानोंकी ओर को। पीकेरी अपनेत पुत्र अवती दक्ष करते है। इसके पीके होगा और अवस्थान है। इस होटोके को इसिनोंकी केवती जान तथा पावाद करता था। कुरवाल और कुरवार्था भरतानके पीके बात रहे है। इसके अपनार कार्योगरां कुरविक, संग्वाद अपनेत, कुरवार तथा सुसर्या आहे बनुर्येट है। है अपनेत जेताके पावायालकी रक्षा करते है। भीकारी अनेता दिन अपना स्वृह कहानी रहते हैं, में कभी असुरोंकी और बाबी विद्याकोंकी रितिसे बहुवार विर्माण करते है।

राजन् ! तदान्तर आजवारे और वाच्यानेको क्षेत्रकोरों कुछ वित्र गया । तोनों पहले पोद्धा एक-पुसरेवर प्राप्त करने लगे । अर्जुन जादि वाच्या शिक्त्यांचि आगे करके क्ष्यांकी वर्ष करते हुए भीवनों सामने जा हो । न्यून्तर ! इस इनका आयो सैनिक पीपसेनके आगोसे अञ्चल हो स्वापी कराने व्यापन परावेककी बाग करने लगे । न्यून्त, व्यापन और प्यापनी सामकि भी अपने परावककी आवारी केनाको व्याप प्रमुखाने लगे । आपके भोदी वारकर मान व्यापेक करता पाच्या म्यापनी जावकी सेनाको करताब जास कमने लगे, के व्यापन सिमानोकी और मान करने । उसे कोई श्राप्त क्ष्युक्तीके क्षयं अध्यो केन्द्रका यह सेहर मीनाजीसे यही रहा गया। वे क्षयोगा सोच क्षेत्रका गावान, परहार और पृक्षणेगा वाण्याचे करने रुगे। उन्होंने प्राच्यानेक पॉव अवार महर्रावणीयो अस्ते क्ष्मेंसे देखे दिना और इस्त्रों हावी क्या चंद्रोंको कर उत्तर। पुद्धार क्षाणी दिन वाल दहा वो : केने द्वाच्यांने क्ष्मूर्ण चंद्रको जान क्ष्मार है, जुदै इंकार क्षेत्रको विकायोगी होनाको परसात् करने रुगे। तब विकायोग क्षाच्यांको होनाको परसात् करने रुगे। तब विकायोग अध्यक्ष हुने को भी दिन्ह्याचीय साथ पुद क्षाणेको इत्या व होनेक कारका में अस्ते हैस्से हुए क्षेत्रके—'भेरी क्षेत्री इन्हा है, भूकार क्षाणेका अहार कर



क क कर: चांतू में तुक्तों किसी ताह मुख भारे कारेता। विकासने तुमें किस भी-सरीएने केह किया है, जान भी भारे तेल सरीर है; इस्तीले में तुझे दिस्मीकरी हो मानता है।'

जनमाँ वह कार सुनवार विकायों स्रोवारे मुर्वित होकर कोरव—'वहन्यों । वे तुवारा प्रकार नानता है से भी प्रवासनेका दिव करनेके दिनों आज तुवसे बुध कारेगा। वे स्वासी कार्य सावत वहना है, विकाय है दुवारा क्या कर्मिता। वेरी वह बात सुनवार हुन को अधित सम्बर्ध, करों : हुआएँ केली इक्ष्म हो, बारवेका प्रकार करों वह र करों; वर वे तुन्हें जीवित वह सोद सम्बर्ध। जीवनको अधित कार्यों एक बार इस संस्थाको अध्यो सन्द देवा हो।'

हेसा बहण्य शिक्तकोने भीकाशीओ कीव बागोंसे बीच काम : अर्जुनने भी शिक्तकोको को सुनी और क्यों अवसर है, देख संस्थान अर्जुने को स्टेडिंग किया : वे बोले, 'बीलार ! तुम भीकाशीओ साथ बुद्ध करो : मैं सी सहशोको काका बुद्ध बरागर सुन्दर साथ सम्बन्धर स्ट्रीय : बाद भीकाश क्य किये जिला ही रवेटोगे, तो त्येय कुकरी और येथी थी हैती करेगे : अर: पूरा जयत करके विकासको कर अर्थे, विक्रमें कुम्मोगोको हैती न होने क्यो ('

कृतरहरी पूजा-विकासीने भीनविक सैने समा किया ? पान्कसीनके सीन-सीन सहारमी अन्यति एक साले से ? तसा एको दिनके बुद्धों धीनवीने समाने और सहारोके साम किस अवस्य पुद्ध किया का ?

स्कार वहा-१९२० । चंदनी औरिएको पाँठ सर दिन भी पुत्रमें समुख्येका प्रंतन कर को के। जनमें अधिकांद्र क्षपुरात क्योंने पापकांको केपाका विकास आर्थन विकास का राज्य प्राथम और प्राथम विकास के उनका के नहीं रोक सके। रीकारे और इसारे क्यांकी वर्ण करके उन्हेंने का-मेराको कार-कार कर कार। प्रापेने वर्ष अर्थर आ पहिले, उन्हें देवती है क्षीरक्षतेत्रके स्त्री जनसे वर्ष हो। अर्थन बोर-बोरते जन्म संबंधने हुए करन्यर विकास का नी के और कारोबी क्यें करते हुए स्टब्लिको कारको स्थान विवासी थे। येसे सिंहकी स्वयंक्त पुरवार दिश्य करने है. क्षति प्रचार अर्थन्त्री विकासीयके प्राथक के अवस्था प्रेराके चेन्हा फार करे। यह हेक कुर्वेचारे काले सामुक क्षेत्रर चीनानीते वाक-"क्ष्मानी । यह संस्कृतका अर्थन मेरी क्षेत्रको पाल कर का है। विकास म, राजी केवा प्रात-अवर पाग रहे हैं। पीयके कारण भी हेनाने प्रमात मधी पूर्व है। स्तरपंकि, वेरिकाल, स्वापन, स्वापन, अधिकाल, धारक और ध्योरवर्ग—ये सभी मेरे सैनियारेको प्रत्ये। यो है। जब आओ रिका कोई हुने स्वाप केन्स्रम नहीं है। अस्य के इस केंद्रियोग्डी आकारक क्रोडिको (\*

शायोः पुत्ती ऐसा वहांगा गीमानीने बोड़ी देशका संग्राहर कर-ही-का कुछ निक्षण किया। इसके बाद उसे आधारत हैं। हुए बाह—''कुनेंगर ! कैंदे कुमते अधिक की है कि 'वहा इशार बहुमारी क्रियोधा संदूर करके हैं। स्थाने संदेश ) यह पेठ अनिवित्ता काम होता।' इसको अध्यक्त नियता असा है और असा भी वह स्वान् कर्म पूर्व कर्मना क साम वा से में हैं। परवार समयुग्धि कृपन कर्मना क परवारोंको है बाद क्रानुंगा।''

या स्थानर भीवाओं शायान-नेवाके वाल पहुंचे और अपने पाणोंसे इंडियोकों नियमें तारे। उस दिन प्राच्यात्केर रेवाने ही वह गये, परंतु भीवायोंने अपनी अञ्चय प्रतिकार परिकार के हुए एक त्यास चौद्धाओंका संदार कर प्रत्या। पाद्धानमेंने जो होड़ स्थारमी थे, उन सम्बद्धा देन हम तिवा। मुख्य दूस हमार प्राणी और सम्बद्धानाहित दूस हमार खेड़ों जना को के काक पैसल सैनियोगर विनास करके ने कुरपीय आहेके स्वयन बेरीक्यान हो यो ने। उस दिन मौन्यमी अस्टालको कुनेबी नहीं। उस को ने, प्राच्या उनकी और आहेक इस्तास हैका की नहीं सके।

स्वयन्तर विकासके का पराक्षमध्ये देशका अर्जुनने विकासकेने सहा — जार कुन भीनानीका सामना सते, उनसे बन्दि के अनेकी कारत जो है, में प्राप्त है, कारोते चारकर अने रकते नीचे निरा हैया।' अर्जनकी बात कुनकर हिल्लाईने प्रीमानीयर बाज निरम । साम हो बाह्यत और अधिकारों भी करता सहाई की। जिस विराह, हुन, कुरितमोस, पहुल, सहोद, पुलिक्ष १४० उनकी रोजांत क्षमा चेद्राओंने चीचकीया अवस्था किया : स्था जायोह र्वित्यः भी हर पहार्थक्योका पुतासका कर्मको आने को । रिकामी मेंगी क्रॉक और समाह या, क्राफे अनुसार क्योंने अवंत अरिक्रको पुर रिक्स । विज्ञादेन वेशिक्सानके या विद्या । व्यवस्थाने कृतकारि रेख रेखा । भीवरेनको पुरिश्वाने सहयात्राः । विकारी क्युन्तारं पुरस्कात विका । प्रश्लेषकी कृत्यकारि नेवा। इसी प्रवार वक्तकावो दर्वकरे. merbeni piivot, afforqui qu'irri, yapal अक्रमानं, प्रविद्याची प्रेशायकी तथा विकास और कर्मको कुलाको रेख है।या। इस्के अस्टिक अर्थक अन्य योज्यानी भी भीचनी और प्रयोगको www.chinini.com

क्रमेरे केवल बहाची बहुदूर ही अपने विपर्धान्ते काला आने कहा और वैनिकोंने कुछार-पुरार कर महर्र रामा-'प्रीते । क्या देखते हो: वे पाण्यमका आर्थन भीनागर काल कर दो है, तुमानेप भी इसके राज्य करे । इसे मत् भीन क्यान कर भी नहीं विकाद सबते । इस भी अर्थनका कुरायक नहीं कर समाते, दिन भीवाकों हो बात ही क्या है ?" प्रेमानिके में बचन सुनवार मान्युओंक नहारवी को जननान्त्रे राज्य भीनके रचकी और बढ़े। यह देश विकासको जीवनको दक्षको विको द्वारालनने अपने प्राथनिक कर बंद्रकर अर्जुन्यर कक किया और उसे तेन वाजोते क्षांत करेंद्र जीवरणके क्षार कीय क्षात्रिक जार विस्त्य । त्व अर्थुको इ:कारकार स्त्री कार कोई, वे अस्त्व कारक चेदकर स्टीरका रक कीने रूपे। इससे दःशासनको कात ब्रोप प्रश्न और उसने अर्थन्ये समाद्ये तीन बाज धारे। अर्थ्स आका बनुव कारकर तीन बाजोंसे १४ तीव दिख और फिर सीचे क्रमोंने को भी बीच क्रमंत। क्रजायनने करा कुन तेकर नवील क्योंने कर्मकी प्रकारों और

इस्तीयर आहर किया। का अर्जुन क्रोकों कर गर्ने और [ क्रायर रचकार कीने किने हुए अनेकों काम सामने, के देशालके अन् राम्कृति स्थान करेगर कालेका अन्त करने हमी । उस समय दुःसारमध्ये अञ्चार नरकाम वेदसम्ब । अर्थको जाग अर्थके पास प्र्यापने भी नहीं पाने कि बह क्षे बारुका निर्म केव का हान्य हो नहीं, असे बेदल बाज क्षेत्रकर अर्जुनको भी बाचन कर दिया। तब अर्जुनने

इन्हरूको हरीयो केन को। इससे उसको क्यो पीइर र्क्स और यह अर्थनात स्थानन क्षेत्रकर भीनके एको पीछे किंग पान । इतकान अर्थनकरी अध्यय पहालास्ये का पर था, भीनाओं उसके रिको क्रेकेंद्र समान जासक-

### इसवें दिनके युद्धका वृत्तान

वते देख अलगुर राक्ष्मने देखा । यह देख सामध्ये 🕮 हैकर को में बाल गरे। इस राक्षण की क्रोक्ने कर कर और तो बाज जारबर जाने जहें को रीक्ष जीवाने । बिर हो शांतिको प्रोक्की में तीन प की, जाने जा रक्कार कार्यसम्बद्धियो वर्षा जारम्य कर दी । एव उन्हरंत भी विद्याल क्षारम् हुआ मीएन वालीने सम्बन्धिको बीचने रज्य । ज्या है राका पान्रको की करूप तीको क्रम बरताने असमा कर हिये ( इतंतर सामाधिने जनन्युक्को क्षेत्रकर बन्युक्को हो अपने माजोका निवास करना । कार्याने सावनिकता करू कार देशा, मिश्रू का पूर: शूला कहा लेका वर्ष केले कामों में भी भी राजा । यह बेकाबर पान्ताओं प्राथनिकार कुछ पर्यक्त प्रक्रिया प्रकृत विकास वित्र स्वापियो कार पर्यक्त एक शरीकोर से समये कर दिये।

क्रानेने पहरको राजा विराह और हुन्द्र सीरव-निर्माणी पीडे इस्से हर् चीनावीचे ज्ञार वह असे । हमाने अवस्था आने बहुबार उन होगोंसे बुद्ध साथे १०० । विरातने जा। और हुम्मी तीन बार जनकर होज्युम्बाओ बार्क कर दिया। अञ्चलकाने भी इन होजोनर कहा-ते काल करनाते, परंतु कहीं हर केचे कुर्वेने अनुबार परवारन विकास । अनुवासको भर्तकर कालोको इन्होंने प्रातेक कर रोखे रहेटा दिया । एक रतेर सहरोजके साथ कृतावार्ण निर्दे हुए थे । उन्होंने सहरोजकी सन्तर क्रमा मारे । तम स्कूरेको उनका अनुस स्वर क्रिक और नी बाजोसे उन्हें बीच इतल । कुलकार्यने कृतव जन्म लेकर स्थानको प्रतीये का कन को। स्थानने ये क्रमानांको क्रतीने प्राणीका उद्धार किया । उस उद्धार उर केनेने पर्वकर र्वेक्स हे का छ।

इसके जनकर, डेज्जूबर्व स्कृत बन्न देखे सम्बद्धेकी केरामें बारकार उसे कारों और कारने समे ( उन्होंने करा अञ्चलक्ष निवित्त देखका अपने कुन्ते कहा, किया ! अस है मा दिन है, जब कि अर्थन धीनाओं पर अस्तेओं

रहार कार्य है—स्वरूपर, सार्वाकको चौद्यवीको और है जिसे अवसे एई प्रति रूपर केया; क्योंकि की बाल सारा है है, करन पहला सामा है, अब अवने-जान करनाने संयुक्त हो कारे हैं और मेरे भारते कर मार्च करनेका संस्थाप हो रहा है। कारक और सुर्वीत करों और वेश कार्ने रूपा है। यह geleite wier fregelt gurt bieren fit preb किया केवें है केवाओं प्रक्रमण सहकी करि और प्राचीन प्रमुख्यों द्वार सुराजी पहली है। इससे पर निवास कर पहल है कि आप अर्जुन समात चोद्धाओं के कैंद्र हात्रका भीनतम्ब ग्रीव जानकः पीन्त और अर्जुनीः stumm frein beit die fit fift und fr um E afre कुरुवा अवद अव रहत है । देवता है, विकासीको असी करते अर्थन चीनके साथ पुत्र करनेको काल कार जा छ। है। परिक्रियक स्रोप, पीना और अर्थनका संबर्ध तक वेदा क्या क्रीक्रमेका अक्रोप--में डीमों वाते प्रसाद विभे राज्यकारी प्राप्त केरेवारी है। अर्थन मध्यो, प्राप्तान, हर, अध्यक्तियाचे प्रयोग, प्रोक्ताओ परवाम विकानेकारा, grown Russ duburg sur genge fifteileb कानेकार है। इसावित समूजे देवता भी हो। युक्ते जो नीय सम्बंध मेर । इस अर्थनका राज्य क्रोडकर बॉक हैं। चीनवीची रक्षके हिने काले ( देशते हो न, हर कसन्त संबद्धाने केला पहार संबद पता हुआ है। अर्थओं कीले क्यांने एकानेक काम क्रियानिक के हो है। काम, चारक, केल, बर्च और इक्तिकेंक्रे सुक्के-सुक्के किये ज के हैं। पुल्लोग भीवाजीके आसवार्थ पुरवार जीविका करकी क्यार संसद आया है, आ: हम विकास और पहाली प्राहित्वे दिन्ने कालो । प्राह्मकोके प्रति चरित, इन्द्रियरीक्य, क्य और सदस्या आहे सहयूक केवल मुचित्रिएने ही दिसाकी के हैं, वर्षी से इन्हें अर्जुन, चीप, क्यून और स्क्रोब-वैसे भई मिने है। मनकर सहांको अपनी सहावदारी इसें स्थान किया है। स्वीत क्योंकन्पर को प्रतिक्रित्वा कोच हरत है, को समान पाकको उन्हरूदे क्या बार पा है। हेको,

कारकन् बीकृत्याकी अन्तर्भ सुनेकाल कर्जुन कीन्स्रोकी | करे । तम चीनने एक तेव बाजारे सेपरके दुवाने दुवाने कर केनाओं चीरता हुआ पूजर ही उस पहा है। में पर्ववरित्रके स्वयने या रहा है, ज्याने उसके बहुको पीतर पुरस्य प्रमुख्ये जेता प्रवेच करनेके प्रत्यन कदिन है: क्योंकि चुनिश्चनके चारों और शांतिरवी केवह कड़े हैं। स्वावीद, आँकवन्, सहस्र, चीवसेन और नकुरू-सब्देश करूपी रक्षा का खे हैं : का देखी, अधिकन्य दूसरे अर्थनके प्रकार रोजके आने-आने कार सा है। तम अपने जाम अन्तेको भारत पने और बाबस तक भीनरोगो यह यहने वाओ। अपने बारे कामा सा 🕸 मीना कर कर की कात, से भे का उन्ह इतियम्बर्गक कृत्यान काचे हुन्हें अध्येक्षे अस्य करता है।"

सक्रमने महा-इस संपन्न सन्तर, क्रमानुनं, क्रमा, şaranî, fire, argîne, weşu, fembr, girin sûr विवार्त-ने का चेद्रा चैत्रतंत्रके साथ बुद्ध कर से है। धीरहेत्या प्रत्यने जे. कुरावकी क्षेत्र, कुळवाकी के उक्त दिवरोग, विकार्ग और अवस्थित तक का अंग्लीकर प्रकार Rect : 104 El Wagon der, Requestionen win eine संबंध कुर्वनंत्रणे जीवा बार्ग्योधी ज्यो बालात बार दिया । बीवप्रेटको भी हर राव महाविद्योगी अलग-अलग अन्ते प्राचीते सीव कारत । अनुरेते पारणको साथ और कुलकर्मको उत्ताह कार्यको बीधका कृतवार्थित अकृतको बीचने कार किया; इतके कार and west worthis service flows o floor flow pairs and formula भीव-भीव, पूर्ववंत्रको बीच, विकासको प्रीय, विकासको सर तथा जन्मकारे पाँच करा जारे। क्षतस्मानी क्षत्रा चतुन रेका भीगर्राज्यर का बरवोंके खेर की। तब बीजरेजी कोममें परकर जनर बहुत-से क्रानोधी कर्त कर इस्ते। रिका सम्बद्धानी संपत्ति और बोटोबो कीर बालोंने बनावेच भेग दिया। इसके बाद से जानोंसे उसका परूप काट दिया। त्रव बद्ध अपने रकते कुटकर विकासिको रक्षण व्य केंद्र। ।

तरमचा, नदारवी पनस्तमे चीवकेमार एक प्रक्रिका प्रदार किया, जनहरूने पश्चिम और ग्रेमर बरवले, कुम्बलकी स्वानिक अधेन किया तथा जनको एक सम्ब क्या । इनके तिया कृतरे क्यूबर कोर्तने भी भीमसंज्ञको प्रीय-प्रीय काल

विथे, मेन क्वांनेसे पश्चिकको विरुद्धे बंदरको समान कार कता. में कम करकर इसके सेव करने तथा इसके बात और पन्यस्का प्रतिको भी फाट विचा। एवस है हतरे केंद्राओं क्रांके भी कुक्ते-कुक्ते कर करे और उन रकाको क्षेत्र-कील कार्लोके कार्यात कर दिवस । इसनेहीने बहुई अर्थुन को सा चाँके । चीम और अर्थुन ब्रेनोको चाई एक्टील केवा आर्थेक चेकाओची विकासको अस्ता नहीं रहे । सह इन्टेंबर पुरुष्टे बहु, 'सा करते हेलके साथ होत काल जीकोन और कर्युंग्या पत्र पार्ट (\* पद्र सुनका कुल्ली इसरी र्यक्नीको साथ है उन क्षेत्रो प्राथकोको पार्थ ओर्ल के रिवार का देख अर्थनरे पहले एक प्रत्यको अपने सामाने इस दिया। इसके बाद सुसारी और कृष्णकर्वको जीव-तीव अस्तीने तीव विचा । विर प्रवदस्त, क्यान, विकरेन, विकार्ग, प्रान्तवर्ग, कुर्वनेन, विन्यू और अनुबन्द-इन पहलियोगेरे अनेक्को दीव-दीव कर wit arms fertirek reve flut er, son arel कार्योंने अर्थन और चीन होनीको कामार मिला। प्राप्य और क्षराज्याची भी अर्थनपर मधीनी बरगोवा प्रदार विस्ता स्था विकास आहे कोरानेने की होनों सामध्येको प्रीय-क्रिक साम मारे । एक प्रकार अवस्त से नेपार भी से बोची पार्वका फिल्लीकी केरावा स्थान काने समे । एव कुलपनि में बालोरो अर्जनको पीकिन कर को ओरले सिहमान किया। जनकी सेनाके हतरे रबी भी इन होने प्रतुलोको क्षीरने सने। इस समय श्रीप और कार्युन होनोंने सेकड़ों बोरोके बनुष और प्रकास सारधार क्ये राजवृतिके सुक्त दिया । अर्थन अपने बाजोते बोद्धाओंकी गति चेन्द्रको का इसले थे। उत्तव यह प्रावहम् अव्यक्त का । पहले कुमानार्थ, कुमानार्थ, अस्तुव्य तथा निय-अन्तीराय मार्थि और चीम और अर्जुनका प्रत्यार मुकामरा का रहे थे, ते के इन क्षेत्रेने कोरणेकी बहुतेन्त्रने धारश्च प्रकारी । तब कौरमधेनके राज्यकोने अर्थनपर अनोक्य बाणोकी वर्ष ज्यारम्य की, जिल्हा अर्जुनने हम सम्बद्धी अपने बार्गोरी रोकाका क्रमुके मुख्ये चौका दिया :

#### धीक्रजीका तह

कोरबोने उसमें दिन चान्कारेके एक किस प्रकार प्रद मिना ? पर महामुद्धाः प्रथ विकास सुरे सुन्। १० ।

रका कुमारने कुल-सक्रम ! जनसङ्ख्यम भीवा और | और बाह्यल-बीगेके प्रवित अर्जुन आपसमें युद्ध करने लगे ने कोई भी पह निक्रम नहीं कर समस्य का कि उसमें धीन जीतंत्र्य । उस उसमें दिन के इन दोनोंका समागन होनेपर कहर संक्रमने करा-राजन् ! जब कॉस्टोक स्वीत कीम | है संज-संद्रार हुआ । पीन्यजीने द्वार संवापने हुजारी बीर्गाकी वारकारी कर दिन्छ । जर्मन्य चीन्न इस दिन्यक कन्यकेशी हैनाओं अंतर्ध कर अब अपने चीन्नमें अपने हो नये । अपने कुछ करते हुई अन्यवान करनेकी इकासे जा निकर विका कि अब में जान विदेशों नहीं कार्यन और कार ही कर्म हुए एका मुक्तिहारों कहा, 'केट मुनिद्दित ! मैं कुम्ले एक कर्मानुकून करा कहाता है, कुने । मैंका ! हर क्रिसों में कुम्ले एक कर्मान हो नक्ता है । इस संस्थानों कहा-से क्रियोंका संबर करने कालों के ए समय बीक है । इसकिये क्रिय हम केर दिन करने कालों हो से असून और कक्ता समा कुम्लानियां आहे क्षांक में स्वापक अस्ता करों !'

भीनवीका हैल आएक सम्बद्धार सम्बद्धाँ बुनिहेत्तरे सुद्धावीरोको साथ सेवार अवश् आकारण विका और अवनी सेवाको साहा है 'जाने कहे, बुद्धाँ इट सन्ते: अवक सहस्रोदार विकाय साह करनेकारे की अर्जुनी बुटिहार होन्यर भीनवीको परस्य कर है। चान्य करूके केवाकी बुक्कुक और भीनकी की अवस्थ कुक्ती रक्षा करेंगे। बुक्काने । अस्य हुए भीनकीसे सीवा भी यह कावस्त, इस मिक्कानीको अस्ते करके अने अस्त्य परस्य कर हेंगे।'

कर, अब इस केटा क्षेत्रता हैका स्वकृति कहा बद्धने तने और विकासी तथा अर्थनार्धे अभे रशस्त धींकाबीको बराकाची बालेका कर। प्रचल करने रूने । प्रवर आयोर प्राची आजाते देश-देशके राजा, क्षेत्रकार्य, अवस्थान तथा अन्ते अब मानुनोध स्थान क्षानार क्षात-सी सेना लेकर भीव्यमीकी रक्षा करने लगे । अर प्रकार गोवरवीको जागे रक्तकर जानके अनेकों बीर विकासी आहि पान्यानिक केन्द्राओंने स्थाने सर्गे। वेदी और मानारमीरीके सकेट अर्थन विकामध्येको जाने रकावन मीन्यातीके सर्थमे आने । इसी उत्पार स्वरूपि अक्रमान्यारे, ध्यकेत चैरवसे, अधिमन् तुर्वेचन और जल्हे धनियोते, होनाके, संक्रित विराह करहकारे, राजा स्थितिर राजा क्रम्पारे और भीमसेन जायकी गुजारोडी सेनाले संख्या करने रहते । अवनेद कुत और अनेकों एका अर्जुन और सँगसम्बद्धको मारोके तिथे हर यहे। इस काराम प्रत्येको केने केंग्राओंके प्रवर-कार केंग्रेनों पूर्वी क्रावरणने रूपी और क्रमा भीवन क्रमा प्रमा तहेर मैंको समा। रही सीम्बोने रुक्ते रुपे, युक्ताबार युक्ताबारीय रुट पहे, नकारेकी राजारोतिकोसे विद्ध को और पैतान पैताकोरो स्वेता केरे समे । क्षेत्रों के पक्ष विकास किये जायते के से से, उस एक-वर्गाको स्वाप-कार करनेने निन्ने अन्ती नहीं करनी कुलेक्स ।

स्ववन् ! अस्य महानरहात्मी अभिन्यम् सेनके सर्वतः अस्तोः पुत्र शुर्वीकारं राज्य पुत्र कारे रूपतः । पुत्रीकारे कोको प्रस्का से सामांत्री अधिमानुकी कारोजर चार विका और वित्र सामार तीन सामां कोई । तम अधिमानुने को वैक्से सामार पुत्र प्रमंत्रर स्वित्रका कार विक्ता । अने आसी देखकार अस्ति कृते एक रेज सामार्थ स्वाके के दुवाई कार विते । यह देखकार अधिमानुने सामार्थ कारो और पुत्रामोने गीन मान करे । इसके बाद आने दस सामार्थ किर सामार्थ कारोपर चार विका । यह मुखेका और अधिमानुका पुत्र कहा है सर्वका और विकास हुआ । उसे देखका क्या श्रम सन्तरी बहाई कारो को

अवस्थानमें सामित्र में भाग होत्या सिर् शीर् क्रमंत्रेते कार्यो कार्ये और पुषाओंनो मानार मार निजा। का का अवन्य कार्याच्य क्षेत्र प्रसानी सार्वीकरे अक्टब्राम्बरण सेन और ओहे। महारको पौरवने बनुबौर व्हारेतुको क्योंने अन्यामित कर शहर है क्यार कर दिवा क्या ब्यूकेसूने क्रीत नीची तीतीके चीनकारे बीच दिया। जिल क्षेत्री क्षेत्रके क्या कर क्रमें और एक-तुराके बोद्धेंकी करकर केनों है रच्छीन होकर सरकारोंसे बद्ध करने रखें। केन्द्रिके प्रदर्भको क्रम और क्यापमाने हाँ सरमारे से नी कहा एक कुरोड़े सामने आकर शता-शराओं मेरी बदाओ हर पहले हिन्दे सरस्वारने रूपने। पीरवर्ष बडे रीमरे क्षाकेन्द्रे सरमञ्ज जार किया तथा बहुकेतुने अपनी तीसी क्रमानो पीरकार्ध है।स्पेपर कोट की। इस इकार क्य-कुरोधे केलो अध्यात क्षेत्रन से पृत्तीयर ओटने रहते । क्रमें क्रमा अस्ता पर क्यानेन भीताओं और पार्टनपर ब्रह्मेंच ब्रह्मेन्ट्रको रक्तमे प्रान्तका बुद्धहोत्रको बाहर हे गर्छ ।

कृति और जेन्समार्थनीने वृह्युक्ता प्रमुख पारमा करे प्रमुख केन्सर अध्यार्थने देखते-देखते पान्नेकी हुन्ही स्था है। प्रमुख केन्सर अध्यार्थने देखते-देखते पान्नेकी हुन्ही स्था है। प्रमुख केन्सर अध्यार्थने अपने जानोधी चौक्षारों उन्हें प्रश्नाम वृह्युक्तार परिव तीर करेड़े। यह वृह्युक्ते प्रमेसने पर्वास वाम कोक्सा चौजाने थिए दिखा। यह देखकर वृह्युक्ते एक परिव केन्स्री। उसे जेन्समार्थने में जानोधे कार कार्य और पिर संस्थान्त्रीयों वृह्युक्ता यह ही चौजन और कार्याम यह केन्स्री

इसर अर्थुन चीमानीके स्वयने साम्बर उसी अपने तीही सामोते माधित काने लगे। या देशकर उसा धगरता अपने महामाने क्रमीयर मैठमार उनके कामने आ गर्ने : उन्होंने शयनी पाणवर्गसे अर्थनको गाँउ हेना थे। का अर्थन्ने अपने तीयो तोरोसे पगताको प्राचीको कामार कर विका और रिस्तान्द्रीयो आदेश दिया कि 'आने वर्षे, अपने वर्षे: चीनकोंके पार पहुँचकर करका राज्य कर के 🖹 देश करका सर्वन किराव्यक्तिको आने स्थापन वर्षे केरको चीववरीकी ओर यते । यस, सेनी ओस्ते यह यो। यह सेने रुप्य । सर्वेद क्षाणीर कोरसहरू करते हुए कही केवोचे अर्जुनकी ओर केहें। वित् अर्थन्ते आपको का विभिन्न कविनोको कार-को-कार्ने क्षांत्र करण । विकासी क्रमांत्र सीमानिकारको राजने माना और यहे सामाने इत्तर क्षान बराने एना। प्रीत्यक्षेत्रे यो अनेको लिल जन्म क्षेत्रकर सङ्ख्येको परन करन अलग्न कर दिया । उन्होंने अर्थुनके अनुकारी अनेकी को कहा चीरोंको नार करता और कनकारेको कर केकको आले कारेचे रोज दिया। कार-की-कारने करेची रच, क्रमी और क्षेत्रे, किया समारोधेंद्र हो गये । इस समय चीनस्तीका एक ची कारा प्रकार भाई पाला था। से विकासकी सामग्रेड सम्बंद से में में। अर्थ: अपनी क्लेटमें आवार चेति, बारवी और कारत हेकते. चीचा स्थार और अध्ये कची, क्षेत्रे और प्रतीक अहैत एकोली धरासानी है उसे। जोक्कोनेने देख वस भी महत्त्वी महे था, यो उस अपन संस्थानहींने सीनाहीते प्राचने अध्यक्त अर्थने मीचनकी आता रचना है। इस्तीको कारे पुरत्यांगर पारंची किसीची भी केना नहीं होती भी । भार, फेल्स भीरताली अर्जुन और अनुनिध केरली विकास है है अने असे दिल्लेक स्वाह राजों से ।

विकासीने पीकार्गको सामने आकार उसकी सालोंने तथ वाला खोर। मिनू पीकार्गने उसके सीलवा मिनार करके कारण कर नहीं किया। पर विकासी इस कारणे नहीं तथक स्वार। तम उससे अर्थुनने बाहा, 'बीर । इसका अर्थन वहकार पीकार्गका क्या करों। कर-बार सुक्रते व्यक्तानेको कथा अर्थाका क्या करों। कर-बार सुक्रते व्यक्तानेको कथा अर्थाका क्या है, वृत्रिहिसको सेनाने पुत्रे हुन्तरे विका और ऐसा कोई और विकासी नहीं हेडा को संवारणे पीकार्थको सामें कहर सके।' अर्थुनके हेस्स बहुनेकर विकासीने श्रुवेस है कार्यु-कार्यके सीरोसे जिलानकार कीन विचा। परंतु कर्युने कर बालोकी कुछ भी परवान कर सकने कार्यके अर्थुनको केळ दिखा। इसी अन्यर कर्युने कार्यको विकास हम्मी ओरसे पाकार्यको भी परवान केया क्यांको विकास कर हम्मी ओरसे पाकार्यको भी अर्थन सीरोसे विकासकार विकास कर हम्मी ओरसे

इस स्वय-काने जानके पुत्र दु:शासनका बाह्र आहुत

पराज्ञम देशा : व्या एक ओर से अर्थुनो साथ युद्ध कर स्था वा और तसरें और विद्यालको स्था करनेरें भी तसर वा । का प्रेमको सस्र अनेको प्रीकोको सम्बोत पर दिया एका अनेको अवस्था और नवारोडी अलंड पेरे वालीते करकर पुर्व्यापर स्पेटने सने । वहाँ पहीं, बहुतारे हानी भी साले मानोंने मानित क्षेत्रर प्राप्त-स्था पान निवासे । प्रत समय श्वासम्बंधी में को पर आहे. क्यारे व्यवेदार विसी पी न्यारमंत्रके राज्यस नहीं दूशत । बेहनार अर्जुर हो अरबे रहमने का सके । उन्होंने को प्रतास करते किन चीनाजीवर ही करत किया । इस विकासी से अपने पहलूम बाजोरी निहानसूचर जान कर है का का र किए उसने आपने विकासीको कहा की बाह नहीं कर पहला का ! वे रूपे हैंतरों हुए होता को वे ! तब क्राफोर एको अपने क्रमात चेजाओसे कारा —'बीधे I कुमानेन अर्थन्तर कार्ये ओको कारा करो । हरो मार, कर्तानर चीनको पर का मोचेकी रहा कोचे। वह सन्दर्भ क्रिक के एका होकर अभे के के केलारे करने नहीं दिया हकते, विका पान्यक्रीओं को विकास के क्या है । इस्त्रीको अर्थकारे स्वरूपे असे देश पीढ़े र पाने, मैं क्रमें स्थापनीय क्रमा कारण करिए । अपनेत भी अपनामात्राकोड पेटे सक्तमार करें।'

अपने प्राची क्षेत्रपर्व क्षेत्र हम्म चेत्र underet un mit ; post flein, metrus, eritest, fleme, thát, tribut, set, selve, steet, artifest, teries, ficht, worth, more, mer, ferrel, army afte dance अभी देशोंके राज्य थे। ये स्था-के-सम्ब एक स्था है अर्थनपर क्ष प्रदे । एक अर्थनने किया कालोका कारण करके बनुकार क्रमा संभार किया और मेर्न अपि मांगीको परत अस्ती है जही जनात में इन राज्यजारेको भाग करने सने। महाराज । अंद्र कार्य अर्थुओं कार्यों कार्यक हो कर प्रकारी व्यक्तके करू रही, भूकतारोधे साथ भोड़े और क्रमीराक्ष्मीक क्रम क्रमी निगरे तारे। साथी पूर्णी बाध्योते क्क गर्क । आक्की सेना कार्ये और ध्वनने स्वती । इस प्रकार केराको जनकर अर्थुन्ते स्टब्स्टकके स्था स्था करना दक किया, उनके काम द:प्रायमके प्रशेषको केवला प्रकीचे समा को थे। कोडी देलों उन्होंने उनके कोडी और सर्गाकरों मार निरुष । किर बीच बाब माठवर विविधानिके १७४३ तेम काम और प्रीप कार्योंने को भी बावल किया। तापतात कुमानार्ग, विकार्ग और सामग्रे भी भीधारा उने राजीत कर दिया। का से ने सभी पदार्थी पर्राक्त केवर पान वरे। केवानी कर-करे का सर येक्कांको कासर अर्जून चूपरहित अधिको समान वेदीनानान होने तमे । अस्तर । विस्तरों संग्युको तपानेकाले सूर्वकी प्रति में अपने नानोंसे अन्यान प्रश्नाको पी अप हेने हमें। शानकोची कर्नते स्थान प्रश्नाकोची प्रति प्रश्ना स्थानियोंको प्रशासन राज्योंने संग्रापने व्यान-प्रश्नाको कीय रहताते एक प्रमुप वर्क नकी प्रश्ना थी। इतनेहीरों अपने दिव्य अस्तोच्या प्रतीन करते हुए प्रीवन्ती अर्थने अस्ति अस्ति स्थान स्

कारता साम, कृताबार्य, विस्तेत, कृताबार और किनाती, वेहीच्यामा रचीयर चेहनार चान्यानेगर वह आने और क्रमार्थी सेमान्त्रे क्रेमाने एतो । इत सूरवीरोके स्थानने कारी नार्क हाँ यह रोग एक ओर जानने सनी ( हवा, निवानक भीना भी क्ष्मण क्षेत्रस्य मानक्ष्मोके कर्नन अध्यक्ष सारवे साने । साने प्रकार अर्थनो आपनी रेलांक ब्यूल-ते द्राविन्तेको पर रियामा । अन्तेर व्यापोधी काले इतारी मनुष्योची ताली िनती विकासी देती थीं, यो.स.ओमेर कुम्बानेसहित वक्तको रशामुधि आकारित है गयी थी। यह बीरविनाक्षा संकार्त भीव्य और अर्जून होनों ही अक्या पराहरू दिया हो है । प्रार्ध धीयमें जन्मनेका सेनामी भागती करून को अन्तर अपने हैरिकांचे बेटल, 'सोमको । हमलेन सुहारोको साथ रेका जीवार क्षाव करे । वेदानीकी अस्त क्षावर क्षेत्रका और सुक्रपर्वाची असिन कालवार्यंत्रे नीड़ित क्षेत्रेन्त औ भीनाजीयर पद अस्ते। समार् ! जब आपके निया अस्ते धारों है जान बायल हो गये से बड़े अनकी परकर सुरूपोंके साम पुत्र कार्न तमे। इनेकालने काइरावनीने के उन्हें इंप्युवंद्वारिकी अवस्थित विकासी ही, उतका उपयोग दानों: घोष्पर्याने एक्सेनाका संसार आरम्प विकार से प्रतिनित् पालकोके का इकार चोद्धाओका संक्रम करते थे। इस सम्बं बिर भी भीकारीने अनेले ही करण और पहला देखके असंक्य प्राथी-बोट्टे पार क्रमे तथा क्रमें क्रम पहार्शकरोच्छे ममलोक भेग दिया। प्रश्नी बाद उन्होंने चीव प्रसार रचिनीका संकार किया: किर जेटड इसार पैटल, एक इसार साथी और दस हमार क्षेत्रे पर असे । अब असर समझ एकानोसी मेनाका संबार करके जीवाजीने विराटके वर्ष करानीकाओ यार गिरामा । इसके बाद श्रंथ इबार और एकाओको मृत्युका प्राप्त बनावा : पाव्यवसेनाके जो-जो वीर अर्जनके पीके नवे है, ने सभी भीनके सामने कने ही समानेकके असिनि सन गर्व । भीकाओं यह महान परास्त्रम करके सक्ष्ये कार क्षिप्रे

कोची सेव्यवस्थित सीवानी स्वाहे हो, गर्च । जान सम्बन्ध कोई संबन्ध कामध्ये अंगर अर्थित करास्त्रार देवरनेवार भी स्वाहार न कर सम्बन्ध ।

चीनारोके इस पराक्रमको देशका प्रमान् जीवानारे क्रम्बर्स क्रम्—'अर्थर ! देखो, ये प्रारम्भावन बीवाबी केचे हेन्यओंके बीचने एके हैं; जब तुर कोर राजावार प्रस्का का करें। वर्ष दुष्परी विका होती। यहाँ वे सेनावा संस्कर कर हो है, वहाँ पहुंचकर कर्मानी इसकी गरी बेक हो। इन्हर्न हैन्स इसट बोर्ड कर देशा नहीं है, को पीनको क्रमीका जानाव एक सके हैं जनकारकी जेनकारी अर्थुकी का काम कानी धानकार्थ की तैन भीनार्थ एए, प्रथम और चेक्कें साथ उसमें जान्यतील हो गर्ने । पांतु विकासको अपने क्षान क्षेत्रका अर्थनेक पालोक हार्य-दुव्ये पर विने । तक विकासी अपने जान अक्ष-एकोची लेकर को नेपने भीनाही और बैंक, का स्थान अर्थन इसकी पता पत से के। भीनके बेर्क बलनेवाले जिल्हें केन्द्र के, इस सकते सर्वको कर निरुक्त और क्रमें भी भीनवर बस्त किया। pole mer proche, diferent, appp. form, per, पहल, सहरेत. अधिकम् और हैप्समेर पाँच पुत्र भी है। ये का संदर्भ एक साथ जीवनीयर पानीकी पूर्व करने सर्ग । मिलू प्रत्ये करें तरिक भी करताहर नहीं हुई। कर्मान केंद्राज्येके कालीको कीई लीडकर के प्राच्छा-केराये प्राप को और क्यों होता कर हो है, इस प्रकार उनके अव-क्यांक उनेद कर्ण तहे। विस्त्योके बी-प्राक्त करने करके वे बारकार क्रमाराकर स्व आहे, जरूर बाह्य न्हीं करने है । जब उन्होंने इस्तानी सेनाके नात कार विधीको कर क्राफ, तक रजपूरियों स्थान बंदेस्ताहर होने स्था । इसी प्रकार अर्थन विकासीको अर्थ प्रत्येत गीमको निराट परिव यको ।

कृत अवता विकासीको आहे रहासर सभी प्रकारि भीनाओं करो औरसे के दिन्स और उन्हें कार्योंने बीचना आस्था कर दिया। जानाते, प्रतित, करता, मुन्दर, मुस्तर, अल, कल, स्वति, लेकर कार्यर, नाराम, कस्तरत और पुनुत्वी आहे अक-राव्योंका अहन होने राजा। और सम्बंध पीका से अकेटरे के और उन्हें सार्य-कार्योंकी संस्था सहूत हो। इससे उनका कार्या क्रिक-निज्ञ के गया। उन्हें किसेन कहा पूर्वा तथा उनके वर्षाव्यानीयें गहरी चीट समी; तो भी से क्रिकेटर नहीं हुए। के एक ही क्राओं राव्यां। पीत सेक्सर बहुर निकार आहे और पुनः सेन्सके प्रधारें प्रतेश कर सभी के। हुएर और बुट्य-सूची कुछ भी परवा न करके में प्रवादकार नमें वहां आवे और अभी मेरे क्षाओं भीनारेंन, दाराविः, अर्थुर, दुन्त, विराध और वृह्युक्त—हर कः महारिक्षेत्रों वीकरे एटं। इन वहारिक्षेत्रें की उनके बार्गाका निवारण करके पृथ्यु-१०क् दुल-इस कालोड़े बीक्सेक्से श्रीच दिया। यहारिक की साह नहीं हुन्स। उनके अहार विराध, किंदु उनके उन्हें संस्था की साह नहीं हुन्स। उनके सनुवार कालत कीक व्यापनिकोड़े नहीं उन्हें पान प्रका: उस समय आवार्ष होता, प्रशासनी, वच्छान, प्रशासन, करा, प्रशास क्या प्रमास—ने उस्ता की क्रोबर्ग अवहर क्ष्युक्तक दूर को और अपने किंद्य अवविद्या कोचल दिवाने हुए उन्हें बारोंसे आवार्षित करने को स्मानुकार काला का सम्मेक्स इस कोरव कीसे महान् कोस्वारण प्रकाश । उस अन्या अवके सक्ते पान, "सरो, वहाँ प्रधाने, पानकों, केंद्र अस्ते, दुक्ते-दुसाई वार केंद्र आधियों आवार्ष प्रकाश हो। उस अस्ते,

व्या आवाण कुकार कामानीत जारको भी अर्थनां रहाते दिने ग्रेष्ट्रे । सामानित, वीनानेन, कुकाह, विराट, हुन्द, करेनका और अधिकायु—में साम और अन्ति-अर्थने विभिन्न कर्या विके प्रदेशकों भी हुन्द कीरकोंक सामने आ थी। विशे से केनी क्लोने वेच्याकारणे तृत्या कुछ किए गया। कामी विभाग और सम्बन्धाने विकासीने अपी हुन्द कामाने कीय दिना। विशे अवकाने विकासीने अपी हुन्दर कर्या कुछाने विचार विशे कर्याने अपी काम विकासीने हुन्दर कर्या कुछाने विचार, विशे अर्थाने को भी काम विकास हुन्दा अध्या प्राप्ता कर्याने अनेको कर्या विभाग अर्थने क्लानी कामी गर्मे । कामाना कर्या कर्या विशे परिचारको एक स्थान कर्या कृष्टि अर्थानके प्रवास क्रिकी कर्याकारी एक स्थान कर्या क्रिका अर्थानके प्रवास क्रिकी कर्याकारी एक स्थान क्रिका क्ला प्रवास कर्याकार कर्याकार क्रिकी क्रिकी क्रिकी कर्याकार कर्याकार क्रिकी क्

जब जनका भी जनकर का गया है।"

क्षेत्रकोदे हर निकास अस्तानने विकासिका और व्या केवल कार करे । उन्होंने मीकाबीको सन्बोधित करके बाह—'कार रे पुत्रने को निवार विका है, का हरलोगीओ की महार दिन है। यह, अब को करे, पुत्रकी ओरहे किरमी कर से !' क्या कर की केरे से बीतक कर-कुरू कर्न करने सर्ग, करको बुक्ते क्यों सर्गा; क्षेत्रकांची स्वीवर्ध का जी और चीनवीस परवेशी वर्ष होने राजी र व्यक्तियोगी यह बाद कारे विराधियो नहीं सुनाची वर्षा, केलार चीवाली सुर उन्हें और प्रशासनिके प्रभावते की भी कुर दिल्ला । जनुर्वोकी कर्त्युक बाद सुरकार रिकामी जाने कार सैक्ट मानेची वर्ष क्षेत्री खेनर थी अनुंतर हुन यह प्रश्ना । का प्रयंत्र विकासीने पुरित केवर केवरकी कार्ताने में मान मारे, सिंह के सरिका भी विकासिक नहीं हुए। का अर्थन्त्रे प्रत्यक्रात्वर विकासकें अर्थर व्यक्ते प्राप्तित कार को जिस क्षीत्रसमूचेक सी कारोंसे उसके को उन्हों क्या कर्नकारोको कींच दल्ल । इसी प्रकार संस्टे एक के बेक्कर सहस्रों सर्वोक्त आर करने रूने । बेक्की थे जन्मे बनोर्ध क एकओं क्रवॉक निवास का औ बीको रहते । सन्दक्षम् अर्जुरने एवः चीध्यतीके चनुरुको सहस विका और भी कालोंने उन्हें बॉक्कर एकसे उनके रककी करता क्या है, किन का बाल प्रतक्त अनेह सार्टीको वीक्रित विकार : अब भीनाओं देवता कहा दिल्ला हो अर्थन है जर्म भी कार दिया । क्या-क्या क्रमणे के कहा प्रकार और अर्जून औ कर से थे। इस प्रधान कर बहुत-में अन्य कर गये से चीनातीने सार्वनके साथ पुद्ध केंद्र कर दिया। तक अर्थनने क्रिक्क्युरेको अल्ने करके विकासको पुनः वर्षास बाज गरे । क्रमी अस्तान जातत श्रीवन नितानको कुनावनसे यस — देखे, या यहनकी अर्थन अन्य हरोको परवार गर्ध इसरों क्यांने की क्या है। इसके बाल की क्यांको केवार करोरने का नाते हैं और प्रशास्त्र प्रमान चोट करने है। वे जिल्लाकोंके धाल नहीं हैं। जनके सन्तन हम बालीका रवर्ष होने ही प्ररोहने विज्ञाने की खेड जाते हैं। ये सहस्रकांट प्रचान कर्पवा और वालों, प्रचान क्रांच है हवा मेरे मर्गनकारेको निकीर्ण विक्रमे करको है। अनीर्गन सिका और बिसीचे बाग मुझे प्रतनी पीछ रही दे सकते।"

्रेस बहुकर भीकाती, माने पाणकोंको प्राप्त कर अनेने, इस जावर सर्वेकने पर यहे और अर्थुनके क्रवर कहोंने पुरः एक क्रकि कोडी; बिहु अर्थुन्ने जाको सैन सुकते कर दिने। तम भीकाती कार और सरावार क्रवने नेकर रकते

हिन्दरस्थारी पूर्ण सीन्द्रहरमोच्छे तथा यह सामून हु: कि प्रीरणोके निवास भीमा पृथ्वीश्य निरावर भी अन्त्री प्राण्येख्ये भागते हुए उत्तरस्थानी यह जोवते हैं, को उन्होंने स्कृतियोख्ये हिनके करने उनके पात केया। उन्होंने अञ्चल प्रश्नास्थान को हुए भीमानीक्य एसेंड करके उनकी आदिवस की। जिल

अपने प्रामोका ज्यार नहीं किया, होता-स्थार सेवा रका र

को सभा को सम्बद्धी का देख बच्चे प्रचये है.

'महारात भीवरणी तो सन्दर्भ काव्यवेगाओं के हैं, उन्हेंने

इस इक्रियानाचे अवसे पूज् को शीकार धरे?' क

कुलका विवासको इसर विच्य-'में अली जीविक है ("

करकर सकते तको 'प्रोक्तको से सहै सहस्ता हैं हु से वृद्धिकार में परण, सकत कहैं। को सहर, 'ब्रेड्स ! आपने कर से माने को दो प्रीक्तकोर उनमें सहर, 'ब्रेड्स ! आपने क्षण सहस्त है, में प्रक्रिकार में के आप माने माने माने आरामा ब्रेडिंग हैं अपने मानको मान मानेगा—मा मेरे कामें पहले हैं हैं कि हैं। जिल्हों प्राक्षकों मृत् मेरे आपीत है इस्मीरने निका सम्मानक साम माना बारने मृत्रों विशेष प्रक्रियों भी होगी।

मा मामान से मूर्जनम् एव-प्रमाणार स्टेमे रहे और हंसनथा करे मने। इस समय महिला प्रोत्तमे मुस्लित है पूरे थे। प्रमाणार्थ और पूर्णेयन अस्ति आह मार-मामार से पूरे थे। विकारोधी विकारित मारे सेहेची हर नारी थी, उनकी हुरिहर्ग मामार है नारी थी। कुछ स्टेम माहि विकारि हुए थे। पूजारे विकारित में या नहीं समय था। बोर्ड भी प्रमाणित समाव काम न कर समा, माने विक्री मान्य कार्ड असे असे देर समाव किने हो। इस समय कार्ड सेंग महिला कार्ड माना समावे थे, अस

प्रमाण विकास हुए हो, अस्य इनके सार्थ इस्तुनास होने रूपा : कृष्टा और सोराम खुरानेक मारे पुरस्त को ह गोन्स देखारे रूपा रोगाने हुए विकास काराय खुराने एगे । कोला देखारे कुछ सोग नेक्षण में और कुछ पुर-पुरस्तार से को है। विकास है प्रमाण प्रशासनकार किर को से । कुछ सोग क्षानिकार्यकी रूपा पारते से और कुछ जीनातीकी सर्वता । प्रीप्तानी इस्तिन्योंने स्थानी हुई जोगमारकारका सामान के प्रमानका कुष्ट सरायकारकार स्थानिक सुरो हुए।

#### भीव्यश्रीके पास बाकर सब राजाओंका तथा कर्णका मिलना

कृत्याने कार—स्कृता | जीवरणी पहालस्यी और केलाके । कारण में, उन्होंने अपने वितासे किये अपनेवन प्रााणनेका कारण किया था। यह कारण स्वभूतिने अपके किर अपने इन्हें चौद्धारोंनी कहा गति हुई होती ? जीवर्याने अपनी कारणांके कारण जम विराणकीयर कार्योक्षा आहर नहीं कारणांके कारण जम विराणकीयर कार्योक्षा आहर नहीं कारणांकि हामसे कीरण अन्यान करे जार्यने। हाम | मेरे दिल्ले इससे का्यार दुःस्वाधी कार क्या होती, जो अस्य अपने विराणि करणांका सम्बद्धार सुन क्या है | कांसाकने पेस हरण कांग्या क्या हुआ है, तथी तो अस्य श्रीकार्यकी कृत्युकी कांग्य सुनावर भी इसके संख्या दुवाई नहीं हो जाते। स्थाप ! कुरानेश श्रीकारी किए क्यांग्य करे गते, सार्यक वह नहीं उन्होंने

कुर किया है से व्यापी को काशी।

देशने हुई अवनी केनाको मुद्धारे केक दिया। कामकः सम केनाके तमेर कानेवर कता अवने-अवने समय और अव-कृता अतरकर वॉन्कॉन्के करा कहेंगे। कौता और वन्त्रक केनो ही पक्षके तीन जीनाबीको जनाम करने वहाँ कने हो सत्ते। का समय नवांका बीनाबीने अनने कामने कहे



हुए समाश्रीको सम्बोधिक सरके कहा—'न्यूबर् कीयान्य-काली महारिक्त | वै श्राप्तकेनोका सामा सरका है। देखेका वीरो | इस सामा शामा रहांको सुने कहा प्रकार हुमा है।' इस साह समाध्या सम्बाध का वै, सामानित हुन्दः सहा—'मेरा महाना जीने सामा का वै, सामानित हुन्दः सिने कोई गॉलावा सा हैंसिके।' यह सुनवार समाप्ति पहांच सिने कोई गॉलावा सा हैंसिके।' यह सुनवार समाप्ति पहांच सोमा स्त्री साने। अपूर्ण हैंस्का स्था—'रावाओ | वे सर्वा स्त्री साने। अपूर्ण हैंस्का स्था—'रावाओ | वे सर्वा सा है, इसके सिने बीस ही पर स्थितिको सनुका एक सर्वा सा है। तुम समा बनुवरिये की और परिचारत है, अस्त सुनी बहिनावर्गका साथ है और सुन्दारी बुद्धि निर्मा है, अस्त सुनी बहुन्य साथ सुन्द समाने हो।'

अर्थुन्ने भी 'बहुत अवत' वहकर इस व्यक्तयो सीकार विका और चौकारीको अनुविध से अपन व्यक्ति वनुव वहत्त्व । उद्धार क्षेत्र अधिमनिता वालोको स्वाचन उन्हेंने उन्हें

मानार मीनवीयर प्राप्त केन घर देश 'नेर अध्याप अर्थ्यको सन्दाने जा गर्वा'—बह सोबकर भीशमी को अवस हुए। उनके दिने हुए इस पीर्वाचित समितनेको परकर चीनकोने अर्जुनकी आस्त्र करते पूर् कहा---'पान्कनका र् हुन्ने हुए क्ष्मको धोल श्रीक्या समा विवा । यदि हेसा न क्रमें से मैं सरेकों अध्यर दुने प्राप रे देश। महमाहे । अपने कांग्रे किया प्रानेकाने व्यक्तिकारे संस्थरपुरिये वृत्ती प्रकार इत-क्रमाया क्रमा करन करन महिने। अर्जुनते मो कामार कीवानीने अन्य राज्य और राज्यामारोसे करा-दिल्ले कारलेप, अनुंतरे केता प्रक्रिया तकिया तथा हिया । उस्त पे, क्यानक पूर्व क्यानकार्य नहीं असी, स्थानक इस प्राच्याच्या पहुंच महिला। उस प्राचन को श्रोध मेरे पहल अवनेत, से नेरी परानेका-बाल केल सकेती। मेरे अस-कारको भूतिने साई सुक्ता ऐसे व्यक्ति । इन सैकड्री कारोरे विक हुआ है में कुर्यकारी जाताना करेंगा। चनाओं ! अपने मेरी प्रार्थन यह है कि आध्योग अब अवस्थान के प्रोक्षकर युद्ध केंद्र यह सीवियों है

व्यवस्थार, प्रतीको पाण निवासको पुरस्य सुविधित वैश्व व्यव राज-शायको स्था कोलसंख्ये निवासको निवे व्यव निवास पूर्व को देशका जीलसंख्ये आयो पुरस् व्यव — 'पूर्वेक्य । इस निवासकोची का केस शायको प्रता विश्व पार है । इस निवासको प्रते व्यवेश नव सुदे विश्वेत का पान है । इस नवस्थान प्रते प्रतीक गति है, व्य वृत्ते आत पूर्व है, प्रताककार श्वान कालि प्रशाह अस निवास करान है। वर्ष नहीं है । इस कालेंद्र साथ ही देश प्रताकत करान है। प्रताकता है। इस कालेंद्र साथ ही देश प्रताकता करान हैना प्रतिके हैं

िसाम्बाकी कार पूर्णार पूर्णावरणे वैश्वोको कर आहिते सम्बाधित करके विद्या कर दिना । नाम देशोके राजा कार्य पूरे पूर् थे, से प्रोक्ताकीयी नाइ कर्न-विद्या और प्रमान देशकार बहुत विशिष्ण पूर्व । इसके कार गरित्य और प्राप्तकोने सम्बाधितक सेचे पूर्व परिवर्णाको तीन कर स्वतिकार करके क्ये प्रमान विकास और उनकी दक्षाका प्रमान करके में उस्त कोच अपने-अपने विश्वोदनों और आहे ।

महाराधी प्रमाण अन्तरी हातानीने जाना होकार बैठे थे, इसी जाना मनकार श्रीकृष्णने आवार पुब्सिहरों महा— 'एकर् ! बड़े हो प्राप्तानको कहा है, जो आपनी जीत हो छी है। क्या प्रमार, को भीकाती करे भने। ये महारखी हायूनों इस्त्रीके मारगानी थे। अनुनोंदें से वे अवस्थ थे ही, हेक्स भी हुने जो जीन समाने थे। सिंह्यु आपने हेक्से में इस्त हो नहें। पुनिहों ने बहा—'कृष्ण ! जिस्स हो जानकी कृताका पहल है। आप पालेका पर कृ कालेकाले हैं और इसकेन आपकी हो उरलाने को हैं। जिसकी एक जान करते हैं, उनकी पहि जिस्स हे जिसने कर्वन जानका अन्यम तिर्म केश से ऐसा विश्वास है, जिसने सर्वन जानका अन्यम तिरम है उसके दिनों कोई भी कर आधार्यकान नहीं है।' अनेक हैशा कहारार परावार पुरस्कात हुए केले—'बहारान ! यह पहला जानके हैं अनुस्ता है।'

त्रज्ञानने नका—राजन् ! तम रात सीतरे स्वीप समेग्र हुन्य, तो कीत्र और पायक विसानक भीत्रके निवाद अवस्था हुन्। उन्होंने बीर-क्षणायर सोने हुन् विचानको जनाम नित्य और सानी अस्के पास सादे हो गर्ने । क्षणारे कन्यश्रीने वर्षे आका बीनको सरीवार कन्यन, तेत्री, जीता और पुरस्को कार्यन्ते बहुन्यर कन्यने पूजा भी । सर्वविषे भी, बूडे, व्याच्या, जेला बी। प्राची नहीं सञ्ज्ञाने कन्यन दुर्वन कार्य अस्मे के । व्याच्या श्रीप वालके भी मून्न की कार्य अस्मी-असमी अस्मानके कार्यने विशासको पास केरे थे ।

वागोंके पानसे गीन्वशीका शरीर जार का कर वैक्सी इन्हें पूर्वा का जारी थी; उन्होंने वहीं करिनाईसे राजकोनी और विकार कहा 'करी करिये।' कुमी है वरिनानेन को और वारों ऑपने जानेतान गोन्वन्तर सम्बंध का की जारते को हुए को स्वकर अनेने भीन्वनीको अर्थन किये। का होता गोन्वती बोले—'क्स में काले भोगे हुए किसी प्रान्तिक पोस्तदे संकार नहीं करिया; क्योंकि क्या में प्रान्तिकों अर्थन होतार गोन्यक्तानर स्थान कर हा है।' यह कहार के राजकोंकी बुद्धिकी निका करते हुए बोले—'इस समय अर्थनको हेकन क्योंक है।'

यह पुनवार अर्थुन तुन्ता जाने निवार पहुँचे और जनान कार्या होनों हाम जोड़े हुए बिनीत चंचको नही होकर बोले—'श्रक्षजी ! भेरे निवां क्या आहा है?' अर्थुक्को सामने कड़े देख बर्माला जीवाने त्रवात होचार कड़ा—'केट ! सुन्हारे बाओसे केरा हार्यर जान रहा है। जनावानकेने चड़ी चेड़ा हो रही है। मुंह पूना पाना है। मुझे बानी हो। तुम समर्थ हो. सुन्हीं मुझे विशिवान कम विस्ता समाने हो।'

अर्जुनने 'सङ्गा अस्ता' सदस्य विवासकर्य आजा स्थितन की और अपने राजर बैटकर उन्होंने पान्तीय सन्ता स्थान । अस सनुवादी ट्यूनर कुनकर सभी जानी वर्ष को और राजाओसो भी सहा पन हुन्छ। अर्जुनने राज्ये कुन से

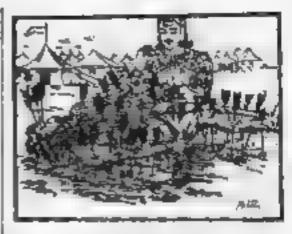
विकारताची परिकार वर्ष और एक क्ष्मता हुना भाग विकारत, किर पन प्रकार को पार्थन-अश्वसे संबोधित किया। इसके कहा सम्बंध देखते-देखते उन्होंने भीच्यी अनुस्त्रकारी सर्वानकर का प्रकार गए। प्रकोट समते ही पूर्णीसे अनुस्त्रके सम्बंध पश्च क्षम क्षम और विश्व रससे मुख



होताल बारको निर्मात भारत निर्मालने स्त्री । उससे अर्जुनने किर को करवेजारे जिलक योजको सुर किया । अर्थुरका का अलोकिक कर्न देखका नहीं बेदे कुर समाओको बाह्य विकास हुआ। में सम्बन्धि-क्रम समझे मुर्देपने रुगे। उस समय करों ओर कहा और क्युनियोकी सुमूत करि गूँव अही । धीनवर्तने दूस होकर सम्बंद सामने अर्थुनकी प्रशंसा काते हुए 🚃 — 'महावाली । शुक्री देश पश्चाम होना जाहार्यकी कर नहीं है। यह कारपारेंने पहलेंने ही बना दिया है कि तुन पुरस्य वहीं का हो और इस जनसम् नारायसकी सहस्रकी को-को कार्य करेंगे. जिले इन्हें आदि देखा भी करनेका सदार जी कर सकते । हुन इस पूजकाओं एकरात सर्वनेद्व क्षत्रकी हो । इस बुद्धारों देशनोके तिन्ते मेंने तथा निवृत्, हेमानमं, प्रावृत्तनं, भगवान् श्रीकृत्य और सहयदे भी कर-कर वक्ष: मित्रु तृजेंकाने वैजनेकी वहीं सुन्ने। प्रत्यकी मृद्धि क्रियरित हो पनी है; यह बेहेल-सा रहता है, क्रिसीकी क्षावर विकास है की बतात । अब जानके प्रतिकृत उपनाम बारां। है। और, इसका पता इसे निकेगाः केनोन्हें कासे अपयोग्त होका का यत वाजा और स्वयोद्ध रिको स्थापनियो को छोटा (

श्रीव्यक्षीको यह काम सुनवात कृषेश्यका कर स्कृत दुन्ही हो क्या 1 जने देशकर विराध्यने कहा— 'राकन् ! होता होड़ हो और मेरी कावन काल है। या हो हुक्ते देशा न, जर्मुनने किस तरह दरीवार, कहर एवं सुगन्तित जरूकी शास प्रकट हों है ? ऐसा परकाम करनेकारत हम जनाएँ दुसरा कोई नहीं है। आयेव, कारण, हीना, कारण, केरण, हेन, कार्या, प्राप्त, पार्यक्षा, प्रधानात, श्राप्त, स्थान, स्थाना और संवासक प्राथमित अवसेच्छे प्रार संस्ताने अर्थन क भवकार जीवन्य है जानों है। सैमल बोर्ड भी इनका उनक मही है। कार अर्थुनको विक्री प्रचार की मुद्दाने जीवन असम्बद्ध है, इनके सची कर्त अस्त्रीकिक है। इस्तरिके केरी क्का नहीं है कि हम इसके काम कीए है कीन कर रहे। प्रकार भगवन् श्रीकृष्य कोन की करते, कारण कीर, शर्मन, काल और स्थान एकरी रोजना सर्वतक नहीं कर प्रान्ते, प्रत्ये पहले ही दुष्पात कामानेक साथ निर्माण है बारत में आबार क्रम्बारत है। सात । मेरे मरनेके साम ही होत पहली समाप्ति कर हे, क्षाप हे सक्ते । नेत यह पाने, इसीमें तुन्हारा और तुन्हारे कुरनक बळकार है। कर्कुनी से पराक्रम दिसाना है, यह तुन्तें सनेत करनेके देशों काली है। अब तुमलोगोंने परवार जेमाना को और कने-सूत्रे एक्ज़ोंके संबद्धार दक्ष है। याक्योंके आया राज्य ने से और प्रिवृद्धिर प्रयक्तरम (बिहरती) को पाने वार्थ । सभी राजा प्रेयकृतेक एक-कृतिके जिले । तिल पुत्रते, सामा च्यानेते भीर पार्ट भागिर साथ निस्तार से । वर्ष मोहनस स पूर्वताने जाएन तुम नेरी हुए एनचेन्द्रिय करान्य कार प केंगे से अन्तमें प्रकारत परेप, सम्बद पात है कारण — या तुमले सभी बात बाद रहा है।"

भीनाजी सुक्र्याको का का काबार पुत्र हो गये। सिर क्योंने शतना का पर्याप्तको समाधा। कृतेकाको का कर दीवा जारी तथा करेन नहीं साची, वैसे गरनेकाले समुख्यको इसा पीना अच्छा नहीं समस्य।



क्रमीके का है। एको जिल जीतन नहीं, सूर्व है--यह क्षा को बारामी और बारामीने इस हो है। यह बिलाइस क्रको बारा है, इसको अभिका की संदेश नहीं है। तरह । मैं सक mark है, तुआरे पेश सरिका को हेन नहीं है, तुम अकारण ही पान्यक्रोपः आक्षेत्र करते थे, अतः तुन्त्रमा दृःसात्रम दृः बारनेके प्रियो हो में बाडोर काल बढ़ता था। नीच प्रशोधा इक्क करनेले तुम्हारी शृद्धि मुख्यानोसे भी देव करने लगी है। क्रम कारतारे हे कारतीयों सभावें की तुन्हें अनेकों बार क्कान्यर पुनाने है। में कानता है, पुत्रमें तुन्तारा परावान क्षत्रमोदे विके अन्यक्ष है । तुन प्राह्ममोदे नक के, ब्रासीर हे और करने तुन्हरी बड़ी निहा है। यनुनोपे तुन्हरे सपान पुरस्कान् कोर्स नहीं है। काल भारतेने, अन्तोत्रा संभात क्षरकेते. क्षत्रकारी पूर्णाचे और अञ्चलको श्रेष अर्जून और क्षेत्रकांके समाय हो। तुम कैनके साम युद्ध करते हो, तेन और बलने देवलके सुन्य हो। पुरुषे सुन्धरा परकाय वनुकोर्स अधिक है। पूर्वकारणे तुम्हरे प्रति को नेप क्रोध (III) को मैंने दर कर किया है + अब पुछे निक्रम के गया है कि पुरुवार्थको देशके विकासको नहीं भाग्या पर समस्ता । पाण्यम इन्हरे सहोवर नहीं हैं; की दूज मेरा क्रिय सारग साहे, से उनके काम केर कर हो। मेरे ही साम इस बैंका। जन्म ही बार और पुरुष्क्रको सभी गुजा आवने सुली हो।"

कर्मी कर्म-पहालाहे ! आवने को कहा कि मैं सुरपूर नहीं, कुन्योंका पूछ हूँ—यह मुझे पी मत्यूम है : सित् कुन्योंने को कुड़े आव दिया और सुनने मेरा पास्त्र-पोक्स किया है ! अक्टब्स कुनेंक्यको ऐश्वर्ष योगता दहा है, अब उसे इराम कुरनेका स्वाह्म मुझमें नहीं है ! मैसे संस्टेक्टन्टन श्रीकृष्ण पास्त्रकोंको स्वाह्मकाने कुड़ है, उसी प्रकार मैंने भी दुर्वोक्तनके रित्मे अपने क्रार्टर, बन, चीं, पूत्र और प्रकार निकार नहीं पर दिया है ! को बार अन्दर्भ होनेकानी है, अन्त्रों परन्दा नहीं पर स्वाता । पुरमार्थने वैपके विकासको स्वीत के स्वाता है ? आपको भी से पुण्योंके जकाको स्वाता होनाने अरकपुन सार दूर है, निन्ने आपने सम्बन्ध कारका सा । मैं की पालको और परावान् सीकृत्यका प्रथान कारका है, से अनुनांके दिने अनेन हैं। से भी भी कारों का विकास है कि मैं परावालेको स्वाने भीत तृत्य । या नैर स्वात कर राजा है, अस इस्ताता कुरता करिन है, इस्तीको मैं अपने कर्मने दिन्स स्वात प्रशासापूर्वक अर्जुन्तरे पुन्न कर्मना । युन्न करनेके दिन्से की निकास कर दिन्स है, अस जान अस्ता है। अस्तात अस्ता नेकर है युन्न करनेका मेरा जिल्हा है। अस्तात्व अस्ता प्रशासाय अस्तात्व मैंने को कुछ स्वसूत्वन कहा है का प्रतिकास आस्ता मिला हो, उसे अस्त अस्ता करें।

प्रेमर्ग नेते—कर्त । पदि भ्य कृत्य की कि पूर्वेकके पता प्राप्त गया।

न्हीं जनस्य के मैं हुने पुत्रके सिने आहा देश हैं। हुन जनकी कारणारे हैं पुत्र करों। जोच और कह कोड़का अपनी वृद्धि और कारणारे अनुसार रचने पहालम विकासों। जह जरपुरनोंके जानरायका चारण करो। अपने पुत्र करों हुन क्रियकारी आह होनेकारे सोसीने जाओं । अबंकार जानकर अपने कर और पहालम्बार परिसा रक्कर पुत्र करों। हानिकों रिने अनेपुक पुत्रके कारणा हारण कोई कारणायका सकत नहीं है। करों। मैंने प्रतिकृति निने कहन अपने किया है, बितु इसने समस्य मुझे कार। या हुनने क्रम कह रहा है।

प्रसन् । चीन्तवीने यस ऐसा बाह्य से कानि उन्हें प्रसान किया और उनकी आहा से प्रवर्ध बैठकर आवसे पुत कुर्वेकको पास बाब गया।

धीववर्ष संग्रह

# संक्षिप्त महाभारत द्रोणपर्व

कर्णका युद्धके लिये तैयार होना तथा ह्रोणाचार्यका सेनापतिके पदपर अभिषेक

नतायमं नमस्त्रत्व नरं केव नरोत्तमम् देवीं सरकारों क्यानं उसे क्यम्दीरपेत् ॥

अनुवामी नारायणसक्य जनवान् सेक्ट्रण, उनके नित्र वच्च स्तावका स्ताव अर्थुन, असी लेख प्रस्ट सरोबली पनवती सरक्ती और अन्दे क्या नहीं नेहन्सरको गमकार करके आसूरी क्रमतियोग निकर-प्राप्तिपूर्वक अन्तःकरमधी सुद्ध वार्तमाले महामारत प्रन्यका याह करना कार्डिये।

रक कार्यक्षेत्र कृत-सहस् ! विवास भीवानो पाहास्तासकृतार विकासीके क्रमते मारा गया सुनकर एक प्रत्यक्ष तक उनके पुर क्रोंपाने एक किया ? या तम प्रतंत ज्ञार मुद्रो सुमाहरे ।

रीतन्त्रकारी सेरो-तन्त्र । सेम्पर्कसी मृत्या समाचार सुरक्षर राजा कृत्यह स्वक्ष्म निया और क्रोकरें इस नवें। उनकी सारी प्राप्ति नक है नवीं। एक-दिन उन्हें क्ष्याचीया विचार रहते सन्तर। इतनेक्षेत्रे अनके कस विद्यास्य सहय अत्या । यह यहैरवेकी सम्पर्धने राज्यों इसिनापुर ध्येषा था। इससे धीमानीची पृत्या विवरण सुनकर राजा काराहको बढ़ा है सेट् हुआ। वे आहर होकर हैने हमें और किर चुक्र, 'तात ! म्हाला चौन्पनीके रिजे अस्तर प्रोक्कार क्षेत्रर किर कौरकेंने क्या किया ? कीर पायकोब्धे विज्ञान और विक्यिनी वाहिनी के बीने खेकाेने अस्यम् यस स्टब्स कर समाते है। सम भएत, हार्येकरकी क्षेत्रमें ऐस्त कौन सहरको है, विस्तको कारिकाले ऐसा सहन् पन सामने अनेका भी चेरोचा मैने कर से (

भूतोने क्या-क्या किया, यह शाप कान देखर सुनिने । उनका



निवन हेरेकर चौरव और याच्यन दोनों है जलन निवार कारे लगे। उन्होंने हामकर्पकों निम्ह करते हुए स्थानक चीनारीको प्रचान किया, दिल इनकी शासक प्रवय सर अस्पराये उन्होंकी चर्चा करते हो । स्ट्रान्सर वितायक्रकी अक्षा होनेका इनकी अधिका करने वे बिर आयरापे युद्ध करनेके हैंनो कम करका कर दिये। बोद्धी ही देखें हुएहैं और वेरियोकी व्यक्ति साथ आपके पुत्रोकी और भाषकोत्ती सेनारे बुद्ध करनेके लिने निकल पार्टि।

राजन् ! जानके कुत्र और आध्यक्षे जारम्यानिक कारण हता चौच्यतीका क्या है जानेते अब कौरव और उनके पश्चांत सा एक पृत्ये स्पाप आ चौते हैं। पीनानीयो सोवार तर सर्थको बढ़ा होक पूछा है। उनके न खनेसे कौरवोंकी सेना ची अन्तव-सी हो गयी है। बिस प्रकार कोई आपनी था सहको नदा—एकर् ! श्रीव्यवीके यहे क्लेपर कारके | पहलेसर कारने क्यूबर्ट कद आने एक्सी है, क्री प्रकार अह कोरवर्गरोका बार करोबी ओर नवा; क्योंके क्

भीकानीके समान ही गुजनान् समा समान सक्तानियोंने हेंह और अप्रिमें समान रेमानी या। माने दो दिवानेके मधाना था, किंतु भीकानीने बानवान् और पराहानी रविवांकरे कामा करते सभा और अर्थरची द्वारामा था। इस्तिने इस विनायक, समानक कि विवादको पुद्ध किया, महामानको सन्ति संपादकृषिये पैर क्याँ रहत था। जब सन्ताविद्य भीकानीके सराहानी होनेकर जानके दुवाने कार्यको पाद किया और थे 'उस सुकार स्वानेकर समय वह कार्य हैं केंद्र स्वानार 'कार्य | बार्य | पुनारके करो।



त्रंव पहारची कर्ण सम्बद्धी हाली हुं गीवनों समान सारचे पूजरी होना है जोरखों बास साथा और उनसे कहने समा, 'गीवनकी-ये केर्य, बुद्धि, परकार, लोग, साथ, स्वर्धि आदि सभी जेगोजिस गुज थे। उनके समा अनेको दिव्य अच्च की थे। साथ ही नवाय, सन्दर, मनूर पायण और सरावनायी की उनके सभी नहीं थी। वे कुलोंक अन्यारोको चल एक्लेकाके और निर्माहिक्कोके निर्माणी थे। उनके पारण हो प्यानेने से पूर्ण एक परिच्या अन्य हुआ-सा ही विकाली केस है।' ऐसा सहस्वर एका पहास्त्रपणि कीकावीके निर्माण और प्रतिकाली पराक्षणा किसार सनके कर्मको पढ़ा है। सेद हुआ और पह अस्टिमें अधि, भश्यर हायो-राज्ये स्तीत तेले हत्या ! प्रात्मीत ने प्रचल सुरुवार आपके पुर और हैन्कि लोग भी सामसने सोक प्रकर करने हमें और असन्त आहर होकर आंखोसे आंध् बहते हर बाह मारकर रेने को । का रवियोगे नेष्ट्र करने अन्य महारवियोगा समाह काले हर कहा, 'कीमानोके किर धानेसे बोर्ड सेनाकी न क्षांके कारण बीरबोकी रोग बहुत बकरणी हा है, प्रश्नुओंने हते जिल्लाम और मनाम कर दिना है। किंदु अब मैं भोजनोबरे तथ है इसको एक करिया ( मैं अनुस्य करता है कि अब ब्हु राज्य बात मेरे बाल ही है। में राजपूर्णिने कुर-कुरका अपने कालेले कालांको कारायके पर चेत हैया और कारे संसारने अध्या महान् पक्ष प्रचट करके रहेगा क्रकक प्राप्तकोके क्रको नवका पृथ्वीयर प्राप्त करीला । विश अपने प्रारम्भिने बहुत, 'सूत्र । यू पूछ्ने प्राप्ता और वीर्पकान बहुक क्या और है मेरे रचको स्टेश्क तरकरा, दिन्न बहुब, करकर, प्रतिक, न्या और स्ता असी सभी सम्मिनोसे सम्बद्धार चोर्च, जोवचार है। जा है

स्त्रण संस्त्र है—राजप् ! ऐसा संस्थार कर्म युक्की सामाने को हुए, जान-सामानाओं सुनोरित एक सुन्द राजप काकर विकार जात करनेत हैंको साम और सामो कर्म प्रशासकार की हुए असुरित तेककी बहारा। दीनाओं का प्रमुख । उसे देशकार कर्म प्रशास है करा। इसमें राजने जातकर प्राम चोक्कार कीनानीको जनाम किया और किर केर्नि कार करवार सरकारती क्यान्से कहा, 'अस्त्रोत्त ! मैं कर्म है। आकार करवार हो, आर सम्बंध कीट वृद्धिने नेरी और विद्यानि और अपने प्रमुख्यान प्राम्धीने



मुक्ते अनुपूर्णय परिवित्ते । पूर्ण वनसंख्य, प्रकार, व्यूक्तका और प्रवर्ति प्रकार परिवर्ति और कोई विश्वाची नहीं हैं। अपने दिल्ला केर कोर कीर की अई मिल्राओं साथ लेका के एके । पर्छ-वर्त्त पुर्विक्तकों की स्वर्ति । पर्छ-वर्त्त पुर्विक्तकों की प्रवर्ति का स्वर्ति हैं। पर्छ-वर्ति व्यूक्तकों की प्रवर्ति प्रवर्ति की प्रवर्ति का स्वर्ति की स्वर्ति का प्रवर्ति की स्वर्ति का प्रवर्ति की स्वर्ति का प्रवर्ति की स्वर्ति का प्रवर्ति की स्वर्ति की स्वर्ति प्रवर्ति की स्वर्ति प्रवर्ति की स्वर्ति की स्वरत्ति की स्वर्ति की स्वरत्ति की स्वर्ति की स्वर्ति की स्वरत्ति की स्वर्ति की स्वर्ति की स्वर्ति की स्वरत्ति की स्वर्ति की स्वरत्ति की स्वर्ति की स्वर्ति की स्वर्ति की स्वर्ति की स्वर्ति की स्वर्ति की स्वरत्ति की स्वरत्ति की स्वर्ति की स्वरत्ति की स्वरत्ति की स्वर्ति की स्वर्ति की स्वर्ति की स्वर्ति की स्वरत्ति क



प्रभाव हो जा नेता हुए प्रमान कालेवर कुम्बुद्ध विकासकों प्रभाव हो जान नेता और कालकों अनुसार कहा, 'कार्य 1 दूस सहारोगिया जान कहेंद करनेवालों और विश्वीपाद अस्तर कालेवालों है को । कालान्य किया और केलाकोंके अस्तर करें। कुमेंकामधी काला है, उसी प्रमान हुए कीरवोंके आपका करें। कुमेंकामधी काला है, उसी प्रमान किया का। हमारे विश्वा काली नेताके काला और कालीका काली नेताके की की की काला का। की 1 देखी, जीने कुमेंका हमा की को की की हमारे की काला है। असी प्रमान हुए की स्वा अस्तर केला की काला है। असी प्रमान हुए की स्वा अस्तर केला केला की काला की की काला की की काला की काला की काला की की है, की से सुवान की है। '

भीनाजीको क्यू बारा सुनकार कार्नन उनके करवाँने उनकार

विकार और फिर का सेनाकी और कार गांवा और जो सामहित किया। सामंद्री एक सेनाके आगे असा देखकर कुर्वेकादि सामा करियोको भी जाए हुई हुआ। ये ताल सेनाकर, जान-सामकार, लिएका साम्ये और ताल-पाहरी बहुत्वेकी रंजार कर्मक सामंद्रा सामी समे रागे। फिर सारो कुर्वेकाने जाह, 'कर्म | जा तुम हमारी सेनाके प्रका हो, हमारियो में हुई समाम सम्प्राता है। तुम इस मानका निर्मात करो कि क्या करनेसे हमाया दिश है समाता है।'

कारी क्या—राजन् । जान के बढ़े बुदियान् हैं, शास अवना निवार कड़िने; वजेंदि कर्न राजा कर्तन्तका चैसा

प्रीय-प्रीय निर्मण का सकते हैं, केल कोई सुनय पुत्रम की का समझ । इत्योगों इन अवन्यी हैं। यह सुनव वाले हैं।

पूर्णं कर्म-व्यक्ते अल्युः वान और विवाद व्यक्ति क्रम केन्द्राज्ञेन्ते साथ रक्ते हुए व्यक्तिक केन्द्रर क्रिया और पीवन पुन्न करते हुए एक दिकाक हमारी रहा करे। अने वे से कर्मकारकी संपानि हैं, जनः करके क्रमण्य हुए। विवाद किसी सेमार्थि कमारा अधिन हुए। विवाद किसी सेमार्थि कमारा अधिन हुए। विवाद किसी सेमार्थि कमारा पुर्न की वहीं तक रक्ति। तिसं अवाद विवा कर्मकार्थी वीवाद और किसा सारिक्षा रच वाहे विवाद कार्य हुएनी हैं, जरी प्रकार किया केन्द्रर क्रिया करने हुएनी हैं, जरी प्रकार किया केन्द्रर क्रिया सेन्द्र

केवाम् हो कारी है। इसमेको में। पक्षके उन्न पोरोपन हाहि इसमार पुर का निश्चम करने कि भी-नामीके नाम गर्मन उपमुख लेकानी होता। इस पहले निन्ते हुन निन्ते कहोंगे, इसको इन स्कृत अन्यत्व संस्थानी करानेगे।

वर्ण केल—वर्ष किलने राजालेश क्लिका है, वे सर्थे को कानुकार है और निःशीड इस परांत केला है। ये सर्था इस्तीन, नहींने वर्षात्रकारों, पुद्धानकारों कुलार तथा नक, कार्यात और पृद्धिने कार्या है: तथी कार्यात, पुद्धिमान् और पुद्धारे पीठ म रिकानेकारे हैं। सिंहु एक साथ संपीकों से केलाक्या कार्या की या सबता । इस्तिये किस एकों कार्यों अधिक पुत्र हों, जरीकों इस प्रदान निवृत्त कार्या कार्यों हो सेनावीं। कार्या कार्याविकों के अव्यक्ति सेनावीं हो सेनावीं। कार्या क्रिया है। क्योंका में सर्था केलावों ही सेनावीं। कार्या क्रिया क्योंकृत भी है। ये प्रदास कुलाकार्य और कुलावीं केंस समान है स्था हमें कोई प्रदास की नहीं कर सकता। कार इनके सुधे और और इसारा सेनायति हो सन्तवा है? आवन्ते के मुन्तेव राजी सेनानायकार्थे, सभी इस्तवारिकोर्थे और सभी कृतियानोने केन्न है! इस्तरिये जिस प्रकार देवसाउसेने कार्यिकारीकारीका असना सेनावाश कनावा था, उसी प्रकार आप इन्हें अवना सेनावति जनाइये।

कारोची पढ का। कुमार दुर्वेकने सैनाके बीवने स्थ् कृर मानार्व हेराके पास नावार कहा, 'परानन् ! वर्ण, कृता,



अवशि, विका, उरम्, पृथि, परासम, पुराकोक्ता, अभेगान, अर्थज्ञान, नीति, विभाग, तपास्य और कृतक्ता असी साथे गुगोर्ने आप तसके को-को हैं। अस्यो क्रमान राज्यओंने की कृतस सोई श्राम नहीं हैं। अस्य कृत विका अस्या कृतसभीकी श्राम करते हैं, असे अस्या अस्य कृतनी श्राम मीनिये। कृत आपके नेतृत्यों की कृत्योंका विभाग करता कालो हैं। उसा ज्याप कृतरे से-साथी करनेकी कृत्य करें। की साथ क्रमोर से-साथीं को जानेते, यो कृत अस्यान की क्रमा मुनिश्चितको असोर अनुवानी और क्रमु-क्रमाकोतकेल जीत सेरो।'

कृतिकाके इस प्रकार कार्नेकर को हाँक करते हुए सब क्याओंने केलावार्थका जन-कारकार किया। ये सब केलावार्थका कार्या कहने राने। सब कार्याची पूर्वोकारो कहा, 'राजर् । ये कहीं अपूर्णक केंद्र अनुवीका कहा हुआ अर्थकाल, कार्याच्या कार्याची है। हुआ कियाब्यो अधितायारो प्रकारके अस्त-सुख कार्याची । हुआ कियाब्यो अधितायारो पुराने को-को पूर्ण कार्याची है। इस सामीको निधाना हुआ में कार्याचीके साथ संध्या कार्यान। सिन्दु में हुम्बद्धा भूक्षान का वय किसी प्रकार नहीं कर सर्वानः क्योंक कार्या कार्यात से केंद्री कार्या किये हुई है।'



करन् । इस प्रधान आकार्यको अनुगति विस्तिपर आयोः पुत पुर्वेकनो उन्हें विशिष्ट्रकेक संस्थानिक स्मृतर अभिनेका विस्ता । उस राज्य कार्योके चौच और प्रश्लोकी कार्योने स्मा सोन्योंने इसे प्रकट किया क्या पुरुषक्षणायन, स्वतिकासन, स्मा और वाण्योंके सुर्वित्तन और प्रदानोंके क्य-सबकारी अञ्चलका सम्बान किया गया । क्षेत्रके सेन्यकी होनेने सब सोच क्या स्वयूपने हमें कि अब सुमने प्राव्यूपीको बीट रिम्मा ।

## होणाचार्यकी प्रतिऋ तथा उनका पहले दिनका युद्ध

श्कारने वक-रावर ! रोजननिका अधिकार प्राप्त । काके पहरवी होता असी केवादी पहरवा का अस्ते। पार्विक स्थान प्रदर्शनको करे । उन्मर्ट सुद्धियी और विस्त्रस्थ कार्यात, करिनानंत्र और आपका पूर्व विकार कर से से र मन्त्री प्राप्ते हैंने नवानेक्सी कुलवर लेकी बहुत क्रमारि असे की या। वाली और क्रमानी, बुक्तानी, finige, feftigen alle genera unt alle ib a ment राज्या कर सामित असी कालेस्पीतेस था। असी राज करें और काम-केम भी कर स्त्री थी। यह डीनर्स, अन्यत्र, मालक, विलेट, सुरहेक, सह, मानद, स्केबीर, विकास तथा पूर्वी, पश्चिमी, जारी और श्रीशमी देखोंके राज्ये मेहा अनुबंध कुरोबे स्थीत सुबंधन और कार्यंत्र की ने के अल के में 1 के पान अपनी-समाने केन्द्रशीके कर और अध्यानो करते भारे थे। सम्बद्ध मोजाओं के बार्ग सेवने प्रतिपार भीनार स्टब्स ५०० सन्ते अले यह सह सा अल्प कर्नके रेक्टर किसीओ पीध्यक्ति असल भी जी सरमा या। राज्ये पेहरर पहें का वी है। क्रांत करोड़ों बॉनरे हेड़नार पाणकरोग राज्येक्ये नहीं कहा शकेते। असी ! कर्ण से केलाओंके स्थान कर्ष प्रकार की बीच संबंधे हैं, फिर प्रश क्षर-मालवर्षन प्रकारको से का है का है? केल्स भी से तो बहुत परावानी, परंतु से परावानीको समाने पहले हैं। की जान कर्ज करें जपने तीनो वानोंने स्वात-व्यास कर हेने हैं

राज्य ? इस जारार में कर सिंग्स कारोबी वर्गम जाते और वान-वी-तय और अन्तर के बात भी थे। उपयोजने पहुँचकर आधानी जानमें हेनावा प्रम्थान्त प्राच्या । इस प्राच्या प्राच्यान्य पुन्तांचा श्रीवान्त और अर्थन कर्म पूर् अपनी प्राप्तां विद्वारणी कारा कर्म भी थे। इस अन्तरी वित्य-पुरांचा कर्म कर्म क्रां आता और अर्थन क्रेमें क्रे एक-पुरांचा क्रिया पानेंद्र सिंग जानकों हो हो थे और होनें हैं एक-पुरांचा जानेंद्र सिंग जानकों हो हो थे और होनें हैं एक-पुरांचा जानकों कर्म हो। इसी जान प्रशास पुरा-पुरांचा अस्तरी कर्म हो थी। इसी जान प्रशास पुरां पुरां कर्म क्रेमें क्रेम क्रिया है। होने प्राप्तां अस्तरे आता पुरां पुरां करारे को अस्तर हो। हाने प्राप्तां कर्म क्रिया अनुकार कार हेव प्राप्ता है। क्रिया है, क्रेमें के पुण्ड करारे करी ? हुवारी की इस्तर हो, क्रुक्त पूर्ण क्री कर और सो !'

हरायर राजा पूर्वीकाने कार्य और कृतासनाहिते सराव कार्य आसामेशे कहा, 'बार आप सूत्रे पर देव प्रवृद्धे हैं, में प्यानको पृथितिरको जीता हुआ प्रशासित भी पास है।
आहमें।' या सुन्धार आवानी बाह, 'हुन पुन्धीनसन
पृथितिरको केंद्र प्रान्थ है पहले हैं, उनका का कारोनेत
हैंनो हुओ का नहीं परितः हासीनो ने सन्ध है। सिंहु
पृथितः। हुने उनको मरना प्रशासित है क्या है। सिंहु
पृथितः। हुने उनको मरना प्रशासित है क्या नने नहीं है?
प्रशासिक हुन अवस्थ मेंद्राई से हिसाना नहीं पहले ?
क्योगकर हुन अवस्थ मेंद्राई से हिसाना नहीं पहले ?
क्योगकर हुन्दरा सेंह है, इसनेनो में अवस्थ पहें
प्रशासित है।

दानन् । अक्टबर्नेंद्र ऐसा चालो ही आपनेंद्र पुत्रचे हायानें भी चार कहा करा दाला का, यह सहना सहर तमार है करा । यह अला होचार यह उत्तर, 'अरवार्यच्या । सुनिहिरोंद्र को जाने नेती विश्वय नहीं है सवार्तः; वर्णोंद्र चीत हाने हों बार भी हाता भी हंग चायान अवहान ही हमें नह चार होंदे । अस्य चायानोंको को हेगता भी नहीं बार सवारे; इतरित्ये अन्द्रातिक पुनिहिर मेंद्र सामूने अर गर्ने हो में हमें निर्द पृत्रों और हैना और यह समझे अनुवानी वास्त्रमारोग की तिर पानों को आपनी । हम तहा चाह ही बहुत हिनीच विश्व हैंदी बीत है आपनी । इसीचे में सर्वत्रमान क्षम किसी की सरकारों नहीं बीतां चाहता ।'

श्रेणस्थार्थ कर्ष स्थानकारक्रमान थे। ये पुर्योणस्था पृत्र अधिकार कार भर्गे, इस्तिन्ते उन्होंने क्री एक इसके साम पर तेते हुए कहा—'वर्षि चीर अर्जुनने क्रीमिहित्यों एक प वर्षि ही इस क्रीमिहत्यों अर्जने कार्योग साहार की इसके प्रतित इसका और असून भी भूदी चार सम्बद्धे । इस्तिन्ते का कार्य देंदे समाप्त भी नहीं है। इसमें क्षीम नहीं कि क्या मेरा दिल्य है और उसने पुल्लाके अर्थाक्या सीन्त्री है, संचारि का कुछ हैं और कुम्महील भी है। मेरे कार का इस्त और कार्य भी अर्थ कार अंग कुछ है और हुम्मने अन्त अस्त्रा क्षीम भी है ही। इस्तिन्ते अस्त्री क्यांक्तिने में क्या कार्य वहीं कर प्रतिना। अतः तैसे कने, की है हम उसे मुद्दानेक्स हर से अस्त्रा। अर्थने कार्य हो क्यांक्त स्थान कर्म क्षांत्र की कर्मका एक पुरूष्ट महे सामने हरे पहें हो में विश्वीद करें अस्त्री कर्मका एक पुरूष्ट महें में सामने हरे पहें हो मैं विश्वीद करें अस्त्री करने कार्यों कर होना।'

राजन् । होन्याचानींक इस प्रध्यत स्वर्धि क्षत्र प्रतिहा करनेना भी असमेक पूर्ण मुक्ति मुनिहिसको सेन्ट विकास [M: है रूपार : क्रॉब्म का कामा का कि होताकर्त | जो करो के : इस प्रवार कावलीको सेपाको सुर्विक-सी प्रत्यक्रीयर प्रेम १६०वे हैं, इस्त्रीको जनकी जाँदानको जनकी धनानेके दिनो जाने यह बाद संचाके प्राची पान्यानेने योजिक करा है। देशियोंने कर सुद्ध कि अकारी एक पुरिक्षितको

होनाने सरे। अपने विद्यासका कुलाओ क्षेत्रको इत अनेकाका स्थापन करन कर्पराज पुरिश्वरने क्रम प्रकृतीको और कारे रामाओको भी मुसल्य । वित अर्थुनके पद्मा, 'पानसिंह ! अरपार्थ को बाब करना पाने है. का सुपने कुछ ? अंध किसी हेक चेरिकी प्राप्त को, बिहर्पर जनका निवाद समान मु हो । अनुदेने कुंक करांके, बाक प्रतिक्रम की है और उस एर्लका सम्बन्ध हन्हींने हैं। सन: हुए की राज राज्य से पुद्र करों, जिससे कि क्षेत्रके क्षा क्ष्में क्ष्मों क्ष्मा पूर्व र है। प्रवेत (

अर्थुन्ने क्या-स्थल् । विकासका रायांका का पर्वे करत सकत, जो प्रमार आरमी सा होनेको भी मेरी उनका महे hi the medt up & sid upp unmed

अपने प्रान्तेने हाथ चौना यो । चारे ही यहकारीत संस्थान fire tall afte quality agent-graph all med, grante till भौतित को राज प्रस्की स्कृतक प्राप्त के अन्याने अपन्ते बैद को कर समाने । इस्तीओ समावद के इसीओ प्रक है, राज्यक साथ केलारे राज्यक भी न को । मैं कुलेके राज्य बहुता है, मेरी यह प्रतिक्रा तक नहीं समातो । नहीं का यह स्वतन है मैंने कभी हुठ नहीं बोरच, नहीं पराचन प्रश्न नहीं की और व मानी मोर्च प्रतिक्ष सत्त्रे को लेक है है।

महाराज । जिन पांच्यानेक दिर्गालने प्रञ्नः नेते, पृष्ट और नगरोबर क्या होने रागा; प्रायक्तिन विकास करने को तथा करवी प्रस्ताकोका केवल और व्यक्तिकेवा प्रस अस्थारमं गुन्ने राजा । यह देशका आवधी संवर्ध भी करे क्षणने (पर्ने । पित प्रमुक्तकानो प्रथमि ह्याँ केनो सेनाई और-और असने व्यक्तर आन्तरने बुद्ध करने रागी। सुक्रमान्तरी अल्बार्यको सेराको न्यु-ध्यु करनेका ब्युव प्रयक्त विकार विन्यू उनसे रहित्य होनेके कारण में मैसर कर न अके ( gulf प्रवार दुर्वेकके महत्त्वी केंद्रा की अर्थको सुरक्षित कान्त्रवी सेनापर बाब्यु न का सके । होन्याच्यानीत होते हुए धर्मधार काल पान्यमोन्ही सेवाब्द्रे संस्तृ चारते हुए सूच और स्टब्स्य हो है । इस समय उनमेरे विश्ती भी चीलाई दृष्टि आवार्यस सहर

करके के अपने पैने कामोर्स मुख्यान्यों संस्ताने कुमारने क्षेत्र) उनके क्षेत्रे क्ष्रु काम अनेको क्षेत्रके, प्रक्रकारी, मन्त्रदेशियों और पैतालेका स्वयंत्र कर को थे। प्रस्थे केंद्र करनेकी प्रतिहत की है से में विकास करते हुए करता | प्रश्नुकोच्छे बहुत कर होने हरण । अवसानी क्या-क्याहर



केनको बक्रमार्थ छल दिया और उनके बनको चौपुरा छन् विकार इस समय प्रज्ञुपूरियो स्थापने चौपन को बहुने इसी, को सेवाड़ों परिचयों कम्प्रानकोंट का के का रही की और निर्देश Queen marchie for mor use it ;

अक अध्यानं क्षेत्रपर यह औरते चुनिहित्तरि महत्त्वरे छ। यहे। परण अन्यक्त परमान्य प्रोतिन वर्षे धारी आहेती हेर रित्या का, कहा है रेगाइकारी पुत्र किए गर्थ। नक्रमानको क्रमुनिये क्रमुक्तिन काम निरुद्ध और सहरहे हैंने क्यांने क्यां सार्थाः क्या और स्थाने बीच दिया। इसस राहोको साराय कृतित होका कहानिके रकती काम और बहुनको पाट सरम रूपा साथे सार्गन और बेहोको सह कर्में कर कर्मां को मीन दिया। का प्रभूति पर होका अपने रकते कुद का और अपने स्वाधिको सार्वाच्ये रकते केवे निष्ट दिया। इस अवदेश सम्बद्धित हो बालेवर से होनों और इन्याने न्याप्त्री लेखार श्रृद्धको बैद्धानने स्वीदानती कार्य तर्ग ।

होताने कता हुन्याने का मान गारे। इनका नकार उन्होंने अनेको पाणीने विकार प्राप्तर आकारी इत्तर इससे भी व्यक्तिक काम क्षेत्रे । चीन्यरेगने विश्वविद्यार्थिय चीत्र मानोक्त कर किया, जिस् इससे का और उससे परा भी न इसा र का देशकर सचीको बद्धा अञ्चले दुवत । किर असरे बन्द्रकन

प्रीतरोकोर कोटे पार असे तक उनके रकती काम और धनुसको भी काट दिया। इससे सभी सेना 'सब्द-बाह्' करने सनी। श्रीपरीन समुख्य हेरत परायन सहन न कर सके। प्रातिको उन्होंने अपनी पराने सको एक बोटे पर दाने । कृत्यें स्टेट प्रत्यने हैरते हुए अपने पार्ट पार्ट्स स्कूतको बीक्स आरम्प किया। प्राची स्कूरणे बाद-बी-बारणे इसके चेंदे, इन, क्ला, हुए और क्लूको जा का उत्त और प्रेरा शराना प्रकु क्याचा । पहलेखने कृताकार्यके क्षेत्रं हुए तक्ष-अरहके बाजांको बालकर एका कनोचे उन् और क्तिया और तीन तीरोंसे प्रत्यों काव्य कार कार्य । एक कृतावाकी कही बाजनवं करके शृहकेतृको रोका और और अस्तर क्रमा का दिया। क्रमांदन असे तीले तीले कृतकार्यकी कार्याचर बार जिला और दिवर हेरले-हेरले स्थल बालोंने भ्रते बायल का दिया : इत्यर बुक्तकरीर बढ़ी कुरीके सामुक्त बाज क्रोड़े। बिट्ट करने बाजन क्रेकर भी सामाहित पर्वतिके समान क्रमान करा था।

राजा हुन्द वरावालो विद्या गर्ने । उनका कहा है अव्यान कुन हुन्छ । कामलने राजा हुन्दरको अनक सार्वाको स्थित सीच सारत सच्चा कर्क राज और उसकी अन्तरमें की साल सीर । इसरी और पृत्रिकार और विकासी काम चीनले पुत्र कर रहे थे : कामली पृत्रिकार साम्याकी काम चीनले पुत्र कर रहे थे : कामली पृत्रिकार साम्याकी काम चीनल पुत्र कर्मा है थे : कामली अनक राज वामले पृत्रिकारको उनकी कामले दिला किया । सुरकार्य सामले कामलेका और अल्लाह सीले है सेकारी असारकी सामले कामलेका के और सामिकारी होनेले कामल एक-पृत्रकी में कामलेन होना पुत्र सुर थे । ये सामकी आसर्वकीका माने उनकार्य होना पुत्र सुरसे हाने । इसी असार केवियाल और अनुविध्याल काम सामीक और सामकारका पी संस्था होने काम ।

इसी समय चैता गर्नम करता हुन्छ अधिवन्त्रुकी उत्तेर हैंड्र : वेलेका का चीर कुट केंद्र करा । चैरवरे बालेकी बर्वासे अधिवन्त्रुको मिरावृत्ता क्या दिव्य । यह अधिवन्त्रुवे इसके कार्या, इस और कृत कारकार पृत्तीका निरा विते । दिल सात कार्योटे इसने चैरकको और चौकी उसके सार्थि हथा धोड़ोको स्वयस्त कर विव्य । इसके कर का इसल-सारवार नेकार चैरवके रक्को बूएसर कुट क्या और बालि साले बाल पकड़ दिखे; किर क्या स्वयस्त कार्यको रक्के निरा दिवा और सरकारने क्या क्या की तथा चैरकको बाल पकड़कर इसकेरने स्था । वस्त्रुक्की चैरवको का सुदेश

नहीं देशी नहीं। इस्तिने व्य कार-सरकार रेका अने रकते हुद का। कवाकते आहे देशका अधिनापुरे प्रेरकते होते दिया और कवादी क्ष्म हुद्ध है रकते सरकार अनी कार्य आ क्या। कवादमे अपन अस् रहित अधिनापुरे ३३ सकते करकारो है कह हरता और अस्ति कार्यक्षों अस्ति कार्यों करकारो है कह हरता और अस्ति कार्यक्षों अस्ति क्याने, द्यार्थी क्ष्मे स्वा कार्य ही। अस्ति कार्यार्थी कार्यों की्रोडी पूर्वी ऐसले स्वक्ष हो। अस्ति कार्यार्थी कार्यों की्रोडी पूर्वी कार पहला हा। होन्छे है और भीता और कार्यों और धूर्मी हुद सुक्री अस्तुत कार्य दिवस हो थे। इस्तिनी अधिनाम्बुकी कार्यों स्वक्षार कार्यक्षी सरकार हुद्ध नहीं इस्तिनों का्राम्य कार्यों सरकार कार्यक्षी करवार हुद्ध नहीं इस्ति क्ष्में का सुध्य है

व्यानकार्यो १७वर वया देशकर वर्धश्रामकार्ये सम राज्योप विकास को का निकार असः असे कार्यकार्य प्रोक्षण क्रमा केमाओं पंत्री कार्य आपना निका। इसी सभा क्रमा क्रमा केमाओं पंत्री कार्यकार को बीमहोने व्याद क्रमा और असे वर्षिकार क्रमा क्रमान के बीमहोने व्याद क्रमा और असे वर्षिकार क्रमानिको कार्यक रचने और बोदा। कार्य क्रमा क्रमान क्रमानिको कार्यक रचने और विद्या क्रिया। या वेदावर क्रमा निका, हुन्द, पृष्टिन्द, पृथितित, क्रमानिक, क्रमानकार्यकार्या, भीवर्यक, वृक्षक्, व्यादिक, क्रमानकार्यकार क्रमानिक क्रमानिकार्यकार व्यादिक क्रमानिकार्यकार क्रमानिकार क्रमानिकार्यकार क्रमानिकार क्रमान

स्वर्शकारे ज्या कृत्य वेशकार शका सम्मने लोकी होता गाह सारणे और स्थेको नर्जन करते हुए वे शाहे कृत पहें। उन्हें व्यक्तन कर्णामके समय अधिवन्तुको और ह्राव्यते देख गूरंत ही धीआंत अपनी धारी गहा रिको इनके साधने आ गवे। शंकाको धीकांत्रको गहाका ज्ञार महराजको सोइकर और कोई सहन गाँ धिर असता सा ताम गाराजको गयाके बेगको सहनेकाम भी धीम्मोनको दिखा और कोई नहीं था। वे देनों ही और गता पुमतो हुए क्यानकाम स्वार मारने एने। सेनोका समानकामो हुद्ध हो या था, धोई भी सर-व्यक्ता नहीं जान ध्यक्त था। आदित, भीमसेनवी बोटोने जनको पारी क्याके कुछ-दुक्त हो गवे गया अस्तके ज्ञानोंसे आनाको विभागांचि क्यानती हुई पीमकेनकी यह व्यक्तिकामी प्रशीधनोंसे हिरे हुए पुक्ति समान हिसाबी हो समी ! इस बादार में दोनो ही गाहरी

कारमाने हवारावार बार-बार कान प्रवक कर केते थीं। केनो 🕽 कहा हिने हवा कन्य न्यूप्रियोको कारकारको अध्यानिक भौरीयर महाओंके अनेकों प्रहार हुए, किए केने है साले गर न हरू । अन्तमें बहुत बावल हो कनेके बारण ने हेनों ही बुद्ध-धुरिये हिर गर्ने । क्रम्प अस्तव ब्लाह्मस क्रेक्ट राज्ये साम्र् सर्वित है हो है। अने कुछ हो महारको कुछवर्ग अनने रहने इत्तरहर हे गया। यहन्यू चीम्लेक्को की बोदी देली के हैं।

गया और से एके होबार फिर हाकों गाउँ गिले प्रकार पैदानमें विकासी हैने समे :

नाराज्यो पुरुषे नेक्स वस गय देशकर आपके पुत्र अपनी चतुर्गहरूनी सेचके सर्वत वर्ष के तक विकरी प्राच्छाने नेविक क्षेत्रर अवसे प्रार-स्वार चान को । इस प्रकार सीरवोको जीतका प्राच्यानोच प्रवंते प्रस्कर बार-बार सिकाह और झाँबारे करने सने एका नरीतो, कृतकु और नगरे आहे क्याने क्षेत्र का क्षेत्रकारि देखा के प्राहरीके प्राप्तरे अवस्य पेटिक होनेके करण चौरतोसी विकास वाकिनीचे पर क्यान गर्न है, से इन्होंने प्रधास्तर कह-- 'दरसंबे । बैदाओं करे मत ।' किर में क्येको परकर प्रवक्तीकी केराने का पूर्व और राज्य पुनिश्चेरक सामने

आमे । पुरिवद्वितने अपने तीको वान्त्रेके अहे कामार कर हिन्छ । क्रिक्ट अन्यादी काहे जुन्हों स्थापन कहे नेतीने जन्मका निवा । अस्य ने वर्गरावाले प्रवास पाले के इसरियों को रोक्नोर्ड नियों को को बोद्धा समयों अर्थ, क्यूनियों उन्होंने प्रदार करके कुळ कर किया। उन्होंने कन्न जालीने हिराबोको, बीमने अलोकको, बीको गुरुको, सालो रक्ष्यंक्यो, बारको पुचित्रियको, श्रीन-सीनमे क्रेक्टेचेट पुलेको, पांच्ये भागमित्रो और वाले भागरतः विराम्ये वाच्या का हिया । इसनेहीमें मुक्तवारने काली कति केवा है । यह अववारने राम पुरिश्वेरको और भी शक्त करते हम भारते बुगम्बरको रक्ते नेचे गिल क्षित्र । इसी समय वर्णसम्बद्धे क्यानेके देखें राज्य विराट, प्रस्त, केम्ब्यरम्बद्धार, सामग्रि, लिकि, व्यावस्त और सिंहमेन---इन तक कीरोने वहत-के काल बरस्या आकर्षक तथा केन्द्र विचा प्रवासीतीय नेताबरतने प्रवास बाग भागात होगाओ संगात कर विचा प्रसारे कोपॉर्ने बद्ध कोस्ताल होने रूप । सिंहलेको ची सामार्थको कामोदो सीम हिना और का एक नक्रार्थकोको मचर्मात करके रूपं इसी उसुसार करने रूपा। सिंह हेपालासी होक्से भरकर से बाजोरी इन केनी बीरॉके हिए

कर मुख्ये समान क्षत्रिक्षिके सामने बाकर का नने। स्वापानंत्रा हेता परमान देशकर राज सैनिया गाँउ पहले राजे केंद्र 'से पुरति सारण चुनिक्षितको क्यानुसार हमारे सहराजको स्रीय देशे हैं

निया समय आगोर लेनिक इस स्थान गर्या का छे थे.



कर्त समय अर्थन कर्ता रेगोले समय राज्ये प्रमाहत राज Remarkal Bend pe auf so soft : aufd upple famelt शुरूको को बढ़ा है, फिल्में का फैल्को समान जान कही है ज्ञा के प्राचीरोधी इंद्रिकोर्ड भरी हुई, इकाम विकारोधी का है जनेवारी, वामान्युका केंग्रे आह तथ प्रसारत पक्षांत्रकोदे करें। 📷 भी । उस नहींको चार कर उन्होंने सौनय-बोरोको पुरुष्टे पैकारो जन दिया और दिन सपनी पनपोर कारकारी प्रदर्शको अनंग करते हुए वे सहस्र क्रेमामार्थकी केराके सामे आ गो। जन्मपत्री पानवर्गी करान देशको, अन्तरिक्ष, आकार और एको-कुछ में दिवानी ज्ञी केल कर श्रम कारायाओं कार बज़ों थे।

इतनेहीने कुर्व जात हो क्या और अञ्चलत बैनको तथा । इस्तीको हुन्, विज,विज्ञीका भी क्या स्कन्त कदिन हो एक । म्ब देशका क्षेत्राचार्य और तृष्टेंबनने अपनी सेनाको युद्ध बंद करनेकी आहा से उसा अर्थनने भी अपनी संजयते सिमितकी कोर कोश । पुर अकार प्रमुक्तीके दौर पर्यू कर से श्रीकृत्यके एक को अन्यको आरी हेनके की। अपनी क्राक्तीयरे और कारे । इस राज्या पाञ्चलक और शुक्रावकीर अल्बी जरी अब्बार प्रशंका कर के के, जैसे कविरकेय सर्वकी कृति करते हैं।

## कर्जुनके वधके रिन्ने संसम्बद्ध वीरॉकी प्रतिज्ञा और अर्जुनका उनके साम युद्ध

स्तुलने बद्ध--प्रवर् । इर देनों च्छोबी लेक्जॉने अपने-अपने विक्रियों का अपनी-अपनी चेन्यता और र्वनारियालीः असूरार आराम विरादः। सेन्याचे स्वेटानेके प्राप्त अव्यर्ग होग्ये अलग्न फिल होग्यर गई संग्रोको कुरोक्ताकी और देखते हुए सहर, 'मैंने का नाले है सहर क कि अर्जुनकी अर्जनकिने चुनिहितको केम्बारकेन की केद नहीं मार प्रवाते । आज पुराने क्रमतेनोके प्रवास करनेकर की अर्थुको का का काके दिया है । वै को प्रक करता है, अपने संबद्ध पर करना। ये कृत्य और अर्जुर से अनेन हैं। पति तुन विक्री ज्यानने अर्थुनको हर है का क्रको से बहुरतक मुविद्वित हुन्तुने कार्यों जा सकते हैं। कोई बीर को बहुके रिजे रसम्बद्धरकर हुएरी और है जान हो यह को पदारा किने जिया कर्या नहीं स्पेरेना । इस बीकर्ष अर्थनके न क्रमेकर क्षे में बुद्धपुर्वेद सरको है जारी सेमाओ इटावार कृतिहासको पर्या हैया। अर्थनके य स्त्रेयर पनि पश्चित को अवने और अतरे देशकर पुरुषर मैदन क्षेत्रकर पान न गर्न से उसे पथ्या है संपत्ने (

जाबार्वको या बात सर्वका विनरीतक और उसके प्राह्मेंने बाह, 'राजर । अर्जुन हमें हतेया नीवा दिसाबा का है। वर बारोको का करके का रात-दिन बोधको ब्यापको करत करते हैं। इमें धराने जीवतक की अतरी। इस्तरिके और शीधान्त्रवात का हमारे बायने ३७ तथा हो हम हो आपन हे बाधर कर करेंने । कर अपने सबी जीता करके बजरे हैं कि 'सब प्रकार के अने में नी चेन के राज है नहीं होने। हरते इस सम्बन्धे कोई केर-कर नहीं है क्षाता (" राजन् । समस्य, सम्बद्धी, सम्बद्ध, सामेषु और सामकर्या—ने पांची भाई देशी प्रतिक्षा की का प्रसार रही हैरिक्टेंबो रोबार बहुति कर देवे। इसी वस्तु केस क्रमर रबोके सकिए 'मारबा और सुन्धिकेर चीर तथा कर कुमार रखी और व्यवेतरम्ब, समेवन वर्ग महानारिको हेका अपने माहकोके सर्वेत जिल्लीकीय प्राथनेका सुक्षार्थ की रगक्षेत्रको कार । इसके कह विकारिक देवीके का इकार सूने हुए १वी भी जनक सरनेके रिप्ते उसने अपने। उन्होंने अति प्राथिता कर यह करनेका निवम दिवस और किन का शक्तिको साथी करके वह निश्चनपूर्वक प्रतिक्ष को : उन्होंने सम लोगोंको सुनाते हुए वह स्थले कहा, 'बारे हर पंचारणीयो अर्थनको न जरकर अस्त्रे इनको पीक्षित होनेकर पीठ विकासर सीट अभी को बाखीन, सहसारी, नारर. प्राथित प्रेशने करनेवाले, अञ्चलका कर प्रायंक्ते,

राजाक आह इत्तेकारे, काकात्वाकी हरेड़ां कार्यकारे, काव्यकर प्राप्त कार्यकारे, वार्य काम हमानेवारे, पंजाबरे, अवव्यक्त, वर्वप्रकारे क्या व्यक्तितं, प्रतिहा कार्यकारे, आव्यक्ति, वर्वप्रकारे क्या व्यक्तितं, प्रतिहा व्यक्तितं कार्यकारे, वर्वप्रका, कार्य-विका और अधियोक्ते व्यक्तिकारे क्या अनेक प्रवादके पान कार्यकारे पुरुषोक्ते के लेक विकर्ष है, में है हमें की प्राप्त हो और पदि हम पंजाब-वृक्ति अध्यक्ति कार्यका हुक्तर कर्म कर है हो दि:संक्षित क्यांक्ति कार्यकार हुक्तर कर्म कर है हो दि:संक्षित क्यांक्ति कार्यकारी हुए स्थितकारी और क्षार हिये।

जन मोरोके पुकारनेवर अर्जूनने असे सनय वर्गराज पुनिवृत्ति कहा, 'कारान | नेट का नियम है कि पुनारे बानेवर में बीके कहान नहीं प्रतास और इस समय संस्थान कहान कुछे पुजारे निर्म स्थानकर को है। देशियों, अपने व्यानोंके समीत का सुनार्थ कुछे पुजारे दिनों पूर्वती से उहा है। हालीको जान पुछो सेनाके समीत हराका संस्था करनेका अलोक संभिन्ते। में हमकी इस पूर्वतीको सह की सकता। अला सक व्यक्ति, से इस मारोक्तिको हैं।'

पुण्योतनं कहा—सेवा । होजने को प्रतिदात को है, कह तुम कुछ ही युक्ते हो । जात तुम यही उत्तरत कारे, जिससे कह पूरी य होने पत्ती । होजावार्ता अस्त्यान् और बूस्वीर है, के क्वानिकारों भी पत्तेच्या है वहर मुद्धानें परिकारको हो में कुछ की नहीं सन्तर्ताते । उन्होंने युक्ते कारहनेकी प्रतिदात की है ।

हरून अर्जुन्ने कहा—राजन् । अस्य यह इस्स्रीतन् वेकान्ने अन्यत्वी यह करेता । इस महात्तरराज्युनारके सुने कान्यत्वे अस्त्य क्रवेरस पूर्ण नहीं कर स्त्रीते । यह पूज्यसिंह बुद्धार्थ कान्य क्रव को और सब वीरोके असरपाद स्वनेपर की आप संस्थानुनियें विस्ती प्रकार न दिये ।

त्या महत्त्व कृतिहितरे अन्तृत्यके व्यतेषी आहा है, इन्हें यो स्थाना और केंद्रवरी दृष्ट्यिने देखकर आहीर्वाद विद्या । इस ज्ञान उनले विद्या होकर अर्जुन निगरोंकी और वर्ते । अर्जुनके वर्त्त कानेले तुर्वोक्तकी संस्थाके व्याह हाई हुआ और म्याब्यो उत्त्वाको प्रहारम मुख्यित्तको प्रकारनेका स्थान करने अर्थ । विद्या के होती सेक्शन वर्षकारको अपनी हुई स्थान-व्यक्तको सम्बन्ध कई केंग्सी अन्यकार निद्या वर्षी ।

संज्ञान्त्रमें एक कीए कैंद्रममें अपने रखेंको कहात्वार एक करके केवी जनावा ( का उन्होंने अर्जुनको अपनी ओर आहे देखा, से वे इपि सरका को देवे जासे कोराकुल

कारे रहे । व्या काम सम्पूर्ण दिसा-विविद्या और सामस्यापे फैल क्या। उन्हें अनका अञ्चलित देखकर अर्जुनने कुछ पुरावराकर श्रीकृष्णको कहा, दिलकोन्स्का है जान प्रश मरवाहत विकासक्ष्मको से देवने, वे हेनेके समय सुत्री मनमें को है।' बीकुम्बरो इतना बढ़कर महत्त्वह अर्थुन निगर्नोकी ब्युक्तद्व सेनके समीप पहेंगा वहाँ पहिचकर क्यूनि अपना केवला प्रश्न बधायतः इतके सम्बंध प्रवाही हतती विशासनिको ग्रेश दिया। स्त सम्बद्धे समामेत क्षेत्रा र्शनसम्बदेशी सेना प्रमासकी तत्त्व निर्धात हो नाते। उनके चोड़ोबी ऑसे पर क्यां, बार और बेख एवं हे करे, के पुत्र हो गये तथा ने बहुत-सा सून क्रायने और यूह क्रायने करी। बोद्धी देखें कहें के हुआ को कहाने हेक्का संस्थानक एक साम है अर्थुनक बहुत-में बाल होते। किंदू अर्थकों अपने इस-पांच आयोशे है का हमारों सम्मोको सोस्कृते काट इसका। फिर अचीने अर्थनगर कार-वास वाल बोर्ड और अर्थुको अन्येते अनेकाको होत-होत स्वत्येते स्वत्यः क्रिका । प्राची पक्षात् प्रयोगे अर्थनको प्रीच-प्राच क्रमोहे बीक और परकारी अर्जुनने अर्ड हो-हो बाजोड़े बीवकर काल हिंचा।

अब सुमार्थ गीस बागोंसे अर्थुनके मुद्धारण बाद किया। इसपर अर्थुनन एक बागाने सुनार्क एकानेको बाद दिया और सिर बागोन्से क्यां करके उसे माने निरम्पुत्र कक दिया। तब सुनार्थ, सुन्य, सुन्यां, सुन्या और कुम्बूने रूपए क्य-एक कार्योगे कोट की उन कार्योको उन्हेंको रूपण-अन्तर्ग कार उत्तर तथा पुन्यते बाराओको की कारकार गिरा दिया। किर रुप्तेन सुन्याको क्युक्को कारकार रूपके कोड्रेको भी नार गिराया तथा अन्यत्न सर्विताय- सुर्वाणित किर भी मारामार महाने असल कर दिया। मीर सुध्याके भारे मानेने असके क्या अनुष्यानी हर समें और आपना मान्यीय होकर कुर्वेण्याकी मेरामां और भागते हों। सर्जून अपने पैने सामांने सिगारीको न्यू कर यो थे। इस्तियं ने मुनोब्दी वाद्य प्रस्कर मार्ड-के-साई असेन हो उसने थे। इस डिगार्वेण्याने संख्यों भागतर अपने मारामिकोने कहा, 'मुन्तिये! मान, भागता केंद्र करें, उसे पता। हुम्पे साथै संस्था सामांने मार्चार प्रतिवाद की है। अस पतान, वृत्तीपनाठी केंग्रिक सामांने मार्चार प्रतिवाद की है। अस पतान, वृत्तीपनाठी केंग्रिक सामांने मार्चार प्रतिवाद की है। अस पतान, वृत्तीपनाठी केंग्रिक सामांने मार्चार होती मुक्ताने क्या कार्योगे ? स्थापनी ऐसी सामांने सीथों, इस कम विस्तान अपनी व्यक्तिक अनुस्वाद पतान करें।' स्थापन होता मार्चनपतान करारे समें। जिस में संस्थापन और नारामाणात्राक गोप पत्तेयर भी पीचे न प्रतिवाद विश्वण करें। सीवायने आ गये।

संस्थानकोच्यो किए एकँट हुआ देखनार आहेचने चरानाम् कृष्णको च्या, 'कृष्णिका ! योद्धोच्यो किए संस्थानकोच्यो और हो व्यक्ति । नात्त्व होता है, ये स्टिंग्यें डाल खेले बुद्धान मैद्धार वहीं क्षेत्रोये । आध्य काम मेद्य अन्यान और चनुन राजा पुज्यओवन परावास देखिये : चनावान् इंग्यार केले डाविय्योका संस्था चरते हैं, उसी अन्यार आध्य में इन्हें चराकायी सर हैए। !'

क्षा नाध्यक्षीलेको वीर्थने कावस हुन्य होका अर्जुनको कार्ये कोरके कालकारको का विधा और एक क्षणने ही वीर्युक्तको प्रक्रित अर्जुक्तको अनुस्थ-सा का विचा (हरासे अर्जुनकी कोकार्थि प्रकृत गर्था । उन्होंने नाम्बर्धि प्रमुख वीर्युक्तका स्टूबर्सने को और दिस उत्तर विश्वकर्षाक्र

क्षेत्र । उससे अर्जून और बीकृत्यके अस्तर-अलग इससे कर अन्यत्वे क्ष्मेंची देशकर नगरकारित्यके जो बड़े कक्ष्मिं को और एक-दूशनेको अर्जून सम्बन्धक काक्ष्में है सार-का करने सने । इस अक्षार हम किस्स अक्ष्मिं व्यक्ति केस्त्यत्व में आकार हम किस्स अस्त्यत्व व्यक्ति केस्त्यत्व में आकार कर करवे व्यक्ति व्यक्ति करके कोई हुए हमारी व्यक्तिकों कार करके को अस का सर्वकों क्ष्मोंकों कार करके का अस का सर्वकों क्ष्मोंकों कार करके का अस का सर्वकों

अन अर्जुनी हैंग्लार असी धार्मोसे स्वीरात, पार्चा, मानेस्साद और तिगरी-चौरीको पीवीय करना आराम विस्ता । तब



वस्ताको वेश्याने वन इतिय क्षेत्रेन की अन्त्रेकर अनेक प्रकारके वाल होते। उनकी प्रीक्त व्यक्तकोरे वित्रकृत व्या वानेके वाला वाहीन अन्त्रेन दिखानी हो ने और न प्रव पा जीकृत्व ही होक रहे थे। इस प्रवार कावल स्वान किन्द्र हुआ समझकर के बीट को क्षेत्रे व्याने सन्ते कि कृत्य और



अर्थुन करे को क्या इकारों केंग्ने, कुछु और सङ्घ क्यांकर केंग्न सिंहकर के कार एकं। इसे अनव सीक्रमणे इक्ष्मकर कहा, 'अर्थुन ! हुन कर्म है ! कुछे दिवाकों नहीं है को हो।' अंक्ष्मकर्मा का काम्य स्टूनकर अर्थुन्ते कही इसीने काम्याका कोंग्न । अर्थों अर्थां काम्याक्ष केंग्ने, इसी और १९वेटेंं- स्ट्रीम हुने परिषेद करान अंक्ष के गये। इस स्टून्टर करके अर्थेंग इसार्थ संस्थानकों अर्था केंग्ने काम्या केंग्ने काम्या कंग्निके कर काम्या । अर्थाक्षकारों कीं प्रचनात् काम्या कंग्निके कर काम्या । अर्थाक्षकारों कीं प्रचान काम्या कंग्निके कर काम्या । अर्थाक्षकारों कीं प्रचान काम्या क्रिक्ट केंग्ने अर्थुन का्या है क्यांक्ष और क्षेत्रक क्यांक्ष काम्या कर रहे थे। अर्थुनको काल्यें क्यांक्षका क्षेत्रक क्षेत्रका का्या कर रहे केंग्ने का्युंक्षी अर्थें केंग्ने के और क्षित्र क्षेत्रका क्यांक्ष केंग्ने का्युंक्षी अर्थें केंग्ने के और क्षित्र क्षेत्रका क्यांक्षित होंगे केंग्ने

## द्रोणाचार्यद्वारा पाण्यवोका पराचव तथा वृक, सत्यभित्, हातानीक, वसुरान और क्षत्रदेव आदिका तथ

मुक्तको क्षान-रामान् । इस अबार सेमानकोचे साम एक्केंग्रेड रिक्से अर्थान्येह चले पालेका आचार्य होना अन्तरी क्षेत्रको ज्युरक्य कर पुरिक्षित्को अवस्थित विभागो मुख्येत्रको ओर पारे। महाराज मुक्तियो अन्यानीको केनावा गरवान्य वेकास अनेत मुक्तान्तेने स्थानसंख्या बनावा । जीरवोके यसक्युक्ते मुकलानमा ब्यासी होन है। हिस्तानमें जालोके सहैव एक कुर्वेका क, नेताकार्यने कृतकर्थ और कृतकार्य है। जीवाकार्यन चुरत्रमां, क्षेप्रसमं, करकाश तथा करिन, विद्यान, पूर्वीक, बूट, आयीर, इंडेस्थ, क्ष्म, क्यन मान्येन, इंस्टब्स शुरसैन, तरह, पह और केवान आहे देखेंके की इनिपारिके हैल होजर हाथी, जेडे, रस और प्रातिसेक्के स्थाने अहे थे। त्रापी और अभौतियों सेन्यके समित पुरिचयां, प्राप्त, भोपटल और बाडीक में । वासीं और क्लिकिनरेड किया और अञ्चीवन एवं सम्बोधनरेत्र स्ट्रांश्चन थे। इनके पीछे डोजपूर अधुक्षाय हुटे हुए थे। पृष्ठस्थानमें करिन, अन्यह, काल, मीमा, नेत, प्रमार, प्रमान, पुनिस, क्वेरीय प्रदेश और संसक्ति आदि देखेंके भीर में र पैक्सी मन्द्र अपने पुत्र तथा

वालि और कुटुक्को स्थेनोके स्टील निक-चित्र देवोकी रेज तिथे वार्च पर्या का तथा इस्त-अंशनो क्याप्त, सन्ताति, जारच, वय, कुम्झाय, पृथ, क्राप्त और निवरणा बहुत बड़ी केंग्रवे साथ करे थे। इस ज्यान कासि, जाराचेड़ी, नकारोड़ी और राजिकाले आवार्च होगाया काम्या हुआ का गरमान्द्र वाक्षेत्र प्रधारोगेरे जाराने हुए समुद्रके काम्य काम प्रकार के इसके क्याचार्यों हाथीना की हुए समुद्रके काम्य वास्त प्रकार का

का अनेव और अतिवानुन व्याप्ति देसका राजा वृत्तिहरूने वृह्युक्तो वक्त, 'बीर ! अक पूर्व ऐसा प्रवस करें, जिस्सो है हेक्सक्ति हाकों र वहीं।'

कुरपुरने का काराज ? जेनावार्य विकास है जना वर्ष, वे काराबो अपने कार्यूने नहीं कर सकेंगे। जान करें और कार्य अनुवाधिकोची में रोगूंजा। मेरे वीवित यहां आप विक्ती जनावार्य कियां व करें। हेक्कार्य संवापमें चुड़े विक्ती जनाव नहीं जीत सकते।

देश काका पहलारी बृहसुप्र कारोकी वर्ग कास हुआ कर्ष है डेक्ककर्वी कुळारोजें का गया। यह अध्यक्षश्र<sup>4</sup> हैताकर आवार्त कुछ दिना हो गर्ने । वस आनके पुत्र दूर्नुको बृह्युक्रको होता । वस, होनो कैरोने बढ़ा गर्नकर पुत्र होने हाना । विस्त समय ये होनो कुढ़ने संस्था थे, होनावार्कन अपने कामोसे मुधिशिस्को सेनाको अनेक प्रकारते किया-पिता कर हिन्छ । इससे बढ़ि-कहोंचे पाणानीका बढ़ा कुछ नवा । कम बढ़ा बुढ़ पागलोके स्थान मगोश्रहीन हो नवा । इस समय आवसने अपने-पर्योक्त भी बढ़ा बढ़ी समस्य था। इस समय आवसने ही पाणामन और धर्मकर बुढ़ बढ़ा ग्राह बा, आवार्यने कब बोरोको बढ़ाएंचे सरस्यार वृक्तिहरून साहस्यन किया ।

राजा पुरिष्ठिए आसार्थको अपने सार्थय प्रांत वेदाना निर्वकारों कान बरसावे हुए उनका सामन करने रहते । इसी प्रमान महामानी संस्तरिक्त इन्हें बावानेके रिपटे आधार्मकी ओर बद्धा ( अस्मे अस्म अव्यवस्थितः हिन्तो हर एक वीची शेकको करने अवस्थि क्या कर देख। मेर यह वाण पान्हर उन्हें स्टानिको पूर्विक क्रिया, का सन्तेने बोक्रेको पानम कर देखा, सर-वृत्त कलोने क्रेके पार्था अवस्थित है जो किया और अन्याने कालो काला की बाद प्राणी । तम क्रेमने का क्रमेनेट बाजोने सामित्वी क्रमा बारों अने अन्य-क्रम के बार अने । मार्गामाने होत के कृतना बनुत रेमान आवार्यपर तील वार्योके बार विकास । प्राप क्यार होताको सामितको अन्तरे का देश स्थानतेतीन कुकारे भी उत्तर भी वालीकी कोट की बढ़ देखका क्षाकारोग इर्वनह सतने लगे । इसी समय काले अवस्त क्षोधमें करकर क्षेत्रकों क्लोबें सात वाल करे। क आवादी सत्यांकर् और कुलके धनुसंबद्धे कारकर केवार छ: बाजोंसे बकारों, करने सारवि और पोडोने स्वीत पर करन । इसपर समयिक्ते दूसरा बनुव लेकर क्रेक्टकर्वकीको अन्तेर जारचि और बोड्नेंब सहित चल्या का दिया तथा अपने करा भी बाद प्राणी । यह सार्वादिको प्राप्ती अपने अपनार्थ **बाहर पीड़ित होने रहने हो उन्हें सहन न हुआ और अहोने औ** मारनेके लिये बाबोकी इसी लगा है। उन्होंने उसके फेडे, बांका, बन्द, युठ, सार्यंत्र और हेन्से वर्णसङ्ख्योग प्रवासे बाग क्रोडे । किन्नु सर्वाजित् बार-बार अनुव बाट जानेपर बी अल्बासीके सामने बटा ही का नदस्यिमने उत्तरत देखा बनाव देशका आवार्यने एक अर्जुक्कान्यन वाजसे सामा दिए क विचा। का प्रकार महारचीके और अमेरर वर्गएक श्रेणानार्वके यक्तो अपने घोडोको बात तेकोने वैद्यानार प्रकोर मैकाओ जाग गरे।

अस आचार्यक स्वयंने मत्त्रपण निरुद्धा होता पहें |

क्रांत्रणीय आया । क्ष्म क्षः तीक्षे कार्यमे स्वारंत और बोहोंके स्वीत होणाई सीववार कहे गर्मम कारे लगा । किर जाने उत्तर और भी क्षेत्रमें कांत्र कोई । तब को स्वार मरको हैवा अक्षानि वही कृतीसे एक कुरा कांग अस्तर उसका कुर्वान्यीका पराक कांद्र कांत्र । वह देशका महत्वेशका स्वारंत्र पराक कांद्र कांत्र । वह देशका महत्वेशका साम बीग कांगी करें । इस अवदार पराकरीरोको बीतवार होन्याकी केंद्रि, कांत्रम, केंद्रिम, प्रशास, सुक्रम और कांत्रको साम कांगी है, उसी अवदार स्वारंत्र की हुई आकर्षको साम कांगी है, उसी अवदार सब सुक्रम बीर

क्य चुनिक्ति आदिने देखा कि आवार्य हमारे संगाओको जान ज़िले अपने हैं से में उपना जारों ओरहे कर परे। जिर अनेले विकासीने धीय, अञ्चयोंने बीस, बसुरानने पीय, क्राचेवाने और, क्रावेवने साह, प्राथिको सी, कुंबसन्तुने अहर, चरितद्विपने बान्द्र, चत्रनुत्रमें वृत्त और वेकिसानमें सीव बानोंने उत्तर बोट थी। यह प्रेमने प्रमारे चुने वृत्तांनको करावारी किया। किर में बालोंने राजा क्षेत्रको सारात बिरम्द । कारो का कामन राज्ये नीचे गिर नाम । कारो प्रशास उन्होंने काक कालोरों क्रिकाकीको और सीमरी अवस्थिताओ क्षात क्रिया क्षा एक प्राप्त-वागरी वसुद्वाको प्रमानको कर केस दिया। जिस असी बाजोंने सम्बद्धीय और क्रमीतमे सुद्धिकार का किया तथा देश प्रकारो अलंकको रकते नेचे गिरा दिया । सारकार मीस्ट बागोसे कुरान्यको और जीतने सहरकियो बीकार वे क्याँके वर्गाता विश्वविक्षेत्र सामने आ गये। यह देशकर प्रविद्वीत अपने क्षेत्रोंको रेजीने वैकासकर बढातेको नाग गर्न और क्षा अन्यानिक सामने एक प्राथमध्यस्थात आसर हा क्या । अन्यानी चौरन है जलका बनुष कार दिया तथा न्यारीय और चोडोमें प्रक्रित अस्पन्न भी काय हमाय कर दिन्ह । का राज्यात्रको को जनेन सेनावे चारी ओरसे 'बेचको करें, क्रेक्को क्ये हिंस क्रेक्कि क्रेने शाह । सिंह देर अरक्त कोवाहर प्रकार, परन, केवन, सक्रम और प्रकारविरोक्ते हेरामार्थने काराहरूने कर दिया। उन्हेंने क्षेत्रकेसे सरकित क्षेत्रत स्थलकि, क्षेत्रिकन, स्थलप किसाओ, पुरुषेत्र और विवसेनके पुत्र, सेनावित्र और सरको - इन बच्चे और और कारे प्रशासकोंको प्रदर्भ परास का किया तथा कारके पहले तमरे चेन्छ भी तस महस्तमार्थे विकार प्रकार कर और प्राच्यापक्षके वीरोक्ट कवरने समे ।

#### ब्रेणाचार्यको रक्षाके लिये कौरव और पाण्डव वीरोंका बुन्द्युद्ध

रिवाले लोटबार प्रोकाको केर लिखा और उनके पैरीने उसी वर्ड क्तने अपन्यी सेन्यको आकारीत कर दिया। पर अकार ऑक्रॉमे ओक्रस हे जानेक कारण हमने प्रमुख कि आकर्ष मारे नवे । का क्योंकाने अपनी संस्कारे आहा से कि 'रेबे क्षने केरे पाण्यक्रीकी सेन्सको सेक्ये ।" वह सुनकर अस्तका पुर क्रिकेन बीधरोनको देखकर उनके प्रत्योका करना होकर करन बुरस्ता इक्षा असे आने अस्ता। जाने असने बानोंसे शीयरेक्ट्रो कर दिया और शीयरेक्ट्रो को क्वाउँचे करूर कर दिया । इस प्रकार दोनोका चीवक पढ होने कना । स्कर्मकी अपूर्व भावन व्यानकारको सभी वृद्धियन और प्रत्येत केंद्र अपने राज्य और प्राप्त कानेका जब क्षेत्रकार प्रदर्शके सामने आबार क्रद्र गर्ने । क्रस् क्रमण क्रामीर मामनिक क्रेमान्यानीयो प्राथमिक रिली आ प्राप्त था: उसे ब्राम्मणी रेजा । अञ्चली भी अरकार्यको और ही यह यह मा; को उत्कारने अपने तीयो कार्योके केन्द्र दिया। प्रतरार श्रम्यकाने कृतिय क्रेमार सम्बद्धकार बन्द और कंपाओं कार क्षता और वह पराचीने अलें वर्गानानेक जावत किया । इतक क्याने क्रांच कर रेका धाराचीर क्योंको बीवर मारल का है।

पक्षाची पुष्पुत् भी होनावार्तनीके कहा पहेकोके ही प्रकार था। को कुल्हों केवर। सिंख कुल्हों से कुल क्रमोरे पुराप्ता हेने पूर्वा कर कृती। क्रांक्रम विविधानी गति प्रात्तन प्राप्तने हेना है । क्रांतको प्राप्तक अनेको कर्पकेष काम क्षेत्रे तथा कार्यक्रमे की उर्व कीवड क्षानीने प्राप्ता करते. वर्षः पर्यापः भी । तथ प्रतिहरते से मिलोरो इंग्लेर करूर और कारायो शब्द हत्या । हारी उत्तान काली सेनाके प्रतिस राज्य हुन्य भी होनाकी और ही यह से में। इन्हें एका प्रश्नीचा और अन्तरी हेनाने काम कार्याकर हेना किया। का क्षेत्री कक कुनावरेका और क्रमारी लेकानेका कहा मनासम् पुत् इसा। समीचनेत किए और सन्धियो अन्तरी होना लेकर नरकाराज विराह और उपक्षी सेकार कथा किया । अन्यरं भी वेकस्ट-रोक्सके अन्यर यह केर युद्ध इसा । इसी प्रकार पहल चौरोकी केक्सकोरोके साथ ची करारी पुरुषेक हा, विकास अनुवरेती, पालपंत्री अर्थन रबी---समी नियंक्तमे तम से है।

एक और सहरका पुर क्यानीक भी मान्वेकी वर्ग करन हुज़ा आवार्यकी ओर कह रहा था। ओ प्रश्नवन्त्री केयर । सब रातनीयने अपने गढ़ राज्यत वहने हर की धनोते भूतकार्यके रितः और मञ्जूजीको काट कारत । चीपरोजका कुर

स्क्रापने कहा---व्यापान ! फिर केवी हो देखे पान्यकोची ( सुनकोच बानोबी हाड़ी रूपका बेजावार्यपर ही जाकपण कृत्य काल था। को विवित्तरिये तेका। कित सल्सोसने रतेने निकानेक स्वानेकाले कार्योंने अपने कार्याको गाँध हाला और कर्ष निकार राज्य रहा । इसी समय मीमरको कः पैने क्रमोरे कार्यको अस्ते स्वर्ग्य और घेडोस्टीन वसराजे कर केंग्र किया । साम्बर्ध्य भी रखमें फाका दोजकी उतेर ही कर 🝅 📭 । जो विकसंग्ये पुत्रने ऐक दिया । आपके से होनी पीत क्य-क्रांत्यो नारनेकी इच्छाने बड़ा चेर युद्ध करने रूने । इसी समय अवस्थानाथे देशत कि राजा नविद्वित्तक का प्रतिवित्तक क्रेमके सामने पर्वेश क्षार है से उन्होंने को बीचमें आकर रोक क्षिक । इसका कृतिक क्षेत्रक अभिक्रिकाने अपने पैने बाजोसे क्रमान्यको क्रमा का देश अब ब्रेडरीके सभी प्रा कानोकी कर्पके अकमायाको आकारित करने एने। अर्थको पा श्रामीनिको ए-पासनके पाने ग्रेणको और क्रावेचे देखा । किंगु बहु अपने विलावेद संजान ही पीर बा; काले तीन तीको बारवेंसे करके बनुष, बंदना और स्टरवियदे बीच दिया और सार्थ होयाने साराने या पहिला।

> करन् । प्राप्तर स्थाननार क्षेत्र करनेकारम क्ष्म और हैनी है केवाओं बहुत काम बाता या १ जो त्यूनपर्न देवर । असे (क्ष्मको) बहुत और भागाओं बाह्यक सामा गरी सामान्ये को । प्रकारत विकासीको महत्त्वीत विकासी रोका । तस क्रिक्रमधीने व्यानीका मारा-मार पैरसकार को रोगा दिया । सित क्राओं और पूर्ण को मोरन कार-पृष्ट क्रांस । कार्यका करावर अरुवार्वकी और कहता के पढ़ था। अंगे अंतर्क केवा । वर क्षानीक्षेत्रा के क्यानार का हुआ, को वेककर प्राची हैरिया स्थानसङ् करने राग्ये । महत्त्व अपूर्वत क्ष्मीक्षाने क्षांक्ष्ये आवर्षके और क्षांने वेदा । इतका पुत्रांक्र्री क्रमा भीतेक संस्थे साम महा। क्योंने प्रीय केमान प्रकृतिको देखा। उन्होंने को कोचने नरका सर्गम नाम करहाने जागन कर किये काली भी उन्हें कई बार अपने धानकारको विकासक अस्त्राहित कर विचा । इस अकार कर्य की केवनदेवीय पीचों एक्क्सर आवशकी राज्यकों क्रिय जानेके बारण अपने फेडे, सार्यक, बाजा और रहाँके क्रीत रोसने भी बंद हो को । आओ रोन पूर दर्गन, विजय और अपने नीए, कराच और अध्योतको ब्यानेंगे रोका १ हुउरी अकार क्रेमचाँ और कहा—हर क्षेत्रों प्रकृती होताई और कारे कु राज्यीकारे अवने सेव्हें रोगेंसे कावल कर दिया। का क्षेत्रीके कथ स्थापीयका यहा अर्थन रोजन दक्षा । एका सन्दर्भ अनेत्व ही स्वचनकी युद्ध करना वातत था। उसे

विद्यानने वाजीको वर्ग करके केवा दिवा का कान्युने इक अभिन्येदिनी प्रश्नकारी विदेशनको कान्या कर दिवा। वृत्तिकंतीय पुत्रकंत्रकार पुत्र कहे लोको करकर का खा था। इसे अववर्ण कृतने अपने कोटे-कोट कार्योगे देख दिवा। वे दोनों ही और अनेक प्रकारकार पुद्ध करनेने कुमल थे। उस साथ वित्र लोगोंने इनके इन्य देखें, वे ऐसे उत्पन्न के नने की इन्हें और किसी बातका होए ही वहीं छा। कोन्यको पुत्र पुरिस्काने प्रोत्तको और आतं हुए राजा व्यक्तिकार पुत्रकारक किया। परिस्माने कही पुरसिंगे पुरिक्ताको कंत्रुव, उत्पन्न, क्या, सार्शि और बक्यो काटकर एको नीचे निया हिला। सब पुरिस्काने अपने राजने कुमल कहा और स्ववद्धी साम्यक्ति क्या। किर यह अपने राजने कहा नवा और सुत्रम कन्नुव लेकर क्या हो कोहोको इन्तिया हुआ स्वक्ताको केराको कुमलने हमा। इसी साम पुत्रक वीर यावकोको केराको कुमलने हमा। इसी साम पुत्रक वीर यावकोको केराको कुमलने

व्यापती नृत्यांको अपने सामाँकी सीहारक्षे रोक दिया।

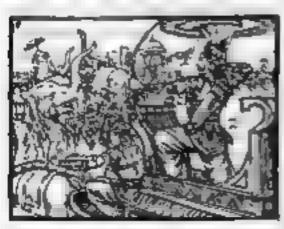
स्वती समय क्रेक्सवर्यकर बाव्य करनेके विचारसे क्रांत्सव महा, मर्तिक, सरकार, पश्चिम, स्वेहरूब, प्रमार, सारी, पृक्षकी, जारा, क्रेकर, काव्य, मुस्ता, मुद्दार, सक्त, विक्रिक्तर, कराय, श्रुप, कानु, अति, क्षर, धरम, केले, पुत्र और क्ष्मक्रिये सारी संनक्ष्मे काव्य और यह करात सवा इक्ट-कार क्षाच्या आने अवया : अस्पर राष्ट्रसाराज अस्पन्युपने कानु-काव्यक इतिवारिके कार क्रिया । का प्रश्नस्वीरोक्य कहा और पद्ध केने सन्ता ।

इस प्रकार आवनी और पर्यानेकी सेनके रखे, स्वारंकी, अवस्था और प्यानि सैनिकोकी सैकड़ों जोटे केंद्र रखी। इस समय प्रेणको गरनेसे बचानेके सिंगे जैसा युद्ध हुआ, केंद्रा इससे पहले प से देखा वा और ने सुना ही जा : राजन्। वहाँ कहाँ-सहाँ अनेको पुद्ध हो से थे; सामें कोई और था, जोड़ों प्रकारक था और चोड़ों बड़ा विश्वित था।

#### भगदतकी वीरता, अर्जुनद्वारा संशप्तकोंका नाश तथा भगदतका वथ

कृत्यपूर्ण पूरा-स्थान । यस कामानोप इस प्रधार प्रतिस्थार बुद्धके मेरचे आगत-अगन क्षेत्र यथे को बेर कुलेंगे और नगरने किस प्रधार पदा किया ?

उपन्ने क्या-न्यान् । यस तम तोग तंत्राको तिथे प्रथम तिथा हो गर्ग, तो अन्तो कृत कुर्नेकार्थ भगारोदिकोदी केचा नेवार चीनकोची स्वय साम विश्वत । मिन्दु युक्कुसार चीनने कोडी ही वेरने तम नकतेनार्थ प्रमुखी सोड़ होना । उसके बानोंने हानियोका साम वह सह नव



अर्थर के मुंद्र केवाकर मानाने तालें 3 इसी बाद्य मीनानेलों जात तार्थ सेवाको कुमान द्वारत । यह नेपान्तर पूर्णिकाम्य प्रतेष मानान तार और यह मीनानेको सामने मानार उन्हें कारने देने सामने क्षिणों साम । सिद्ध कुमा कुमाने ही दोमानेलो साम कर्मान्तर उन्हें कायार का निवा सका हो काम होत्रकर अस्मी सामर पूर्णिकामो पीचित होने देख अंग्लेकमां साम इसीमा सामर पूर्णिकामो पीचित होने देख अंग्लेकमां सामा इसीमा सामर पूर्णिकामां पीचित होने देख अंग्लेकमां सामा इसीमा कोर उनते देखाला भीनानेको आस्मी अस्मी वर्ष काराव्य प्रतिक्र सामनान मिर प्रमा । हानीको सामने दुस्तीन भीनानेको हमा सामने सामना मिर सह निवा । यह देखाने ही अस्मी होना

इसके बाद देशकाके बंदाने ज्ञाना हुद एक विद्यालकान काराकार कहा जनके विकारिक परावृत्तने पीनकोन्दर सामानक विकार । उनके वृत्तीने कोवाने परावृत्त अपने आवेके के वैर और दीवृत्ते भीनकोनके पत्र और बोद्याले एकदन कुमार क्रान । पीनकोन अवस्थितकोगा पानते में । इस्परिध

<sup>् ।</sup> हाक्षेत्रं पेटमर एक स्थानीयांक्यां कृष्यां करणका अञ्चारिकंत कारणक है। यह सर्वायों अध्या करता है और विर महामरोके ह्यानेसर भी यह आगे नहीं कहता। ऐसा करके भीगतेनों आगे करता विग्यं हुए अन्दर्शके हस्त्रीयों आगे कालों कर दिखा।

ये पने नहीं, व्यक्ति सेक्टन इस्तीन चेटके नीने किय को स्वीर व्यक्तियार उसे व्यवकाने उसरे। उस अवकानों दस इस्तर इस्तियोक समान कर सा और का चीनसेनकों पार व्यक्तियार पुरस हुआ वा, इसरियों कहीं तैमीसे कुम्बनके पानकों समान व्यक्तर समाने समा। उस चीनसेन नीकेसे विकासकर अलो सामने अर करे। इस्तीने अर्थे मुंदुसे निराधार कुटनोरे करसम्बन



कारण किया। इस मीमलेको अपने स्वतिरको मुख्यसर करणी हैतुको निकास रिग्धा और में किन इसके स्वतिरके मैंचे किम रुके। कुछ देशों ने असरे बहुद आवार को केको कम गये। यह देशकार साही सेनाने बड़ा कोलकार होने उन्छ। मान्यनोकी प्रेन्स उस स्वतिने बहुद इस गयी और नहीं शीमसेन करों में, नहीं अहेब गयी।

त्व बहुत्तक पुनिद्वाने सहार्व्यानीयो हाथ नेवार एक पंत्रहरूचे सब औरसे के लिख और कारर संबद्धे-क्वारें संबंधि कर मिया। वितृ धन्याने प्रकारकीरोके उस प्रारकी अपने अंकुएसे हैं व्यवं कर दिवा और वित अपने हावीसे हैं प्राप्तान और प्राव्यानीयोगो ऐसी लों। संसद्ध्योगो पान्तवका व्यावकृति अस्पूर्ण प्रवास्त्र था। इसके बाद दस्त्रविद्वार एका हावीयर बकुत्तर कार्याने संस्ते आवा। अब वेगों स्वित्योगा व्याव प्रवंता पृद्ध विद व्याव। व्यादको हावीने पीचे स्वाद्ध कर्यानी हर वर्षो। वह स्वार प्राप्ती क्षा स्वार्थ क्षा क्षा क्षा क्षा होंगे हून कोन्योंने इस्तीन्त की हून स्वाधितकको पार करन । अस कृतिहिन्दे कही कारी स्वयोग लेकर परमाकको बाएँ ओस्ट्रे केर दिला। भाषु अस्मोन्तिकोर्ड्सने अपने इस्तीनो कारकक स्वाधिको राज्यर होड़ विच्य । इस्तीने कार्क राज्यों स्वयंद्र को केन्द्रों हुर केन्द्र दिखा। विन्तु स्वाधिक राज्योंने इन्ह्यून कार्य पाना। इस इस्तीन्त्र पुत्र स्विच्यां परमानके

> सामने अरखा। यह एक रखपर समार मा र सामने सामको समान व्यक्तिको वर्ण कारणी स्वाह्म व्यव हो। किंगु प्रगाहको एक ही व्यक्ति को व्यवस्थाने कर पेथ हिया। वीर स्वीवस्थानि को व्यवस्थाने कर पेथ हिया। वीर स्वीवस्थानि को व्यक्तिम् और सुदृत्सु साहि केंग्रा जगदनके स्थानको रंग कारणे एक)। सामक साम समाम कारनेके नियो क्यूनि साम प्रमानको को एसी, अंकृत्व और मीगृहिते पूरम्यानि संस्थान से ब्या हैंद्र वैत्यकार सथा साम और नेताको नियर कारणे समुद्रातीको सोग कारण। अस्ति पुत्रमुक्ति बोद्रोको वैर्तने व्यवस्थान सम्बद्ध स्थानिको मान सर्वाह । स्था

कुकुकु तुरेत ही राजने कुकूबर जान नया।

अब अधिकानुने काय, जुनुनुने का तथा प्रीयतिक प्रविद्यो पुत्र उत्तर वृह्यकेन्द्रने तीन-तीन कार मास्तर उसे प्रायत श्रव वृद्धा । सञ्ज्ञांकी कारकानि उसे महत्त ही पीड़ा पहुँचायी। महत्त्वती उसे प्रित्यक्षक कहाना : इससे कृषित होकर महत्त्वतीको उस-उदस्कार अपने हमो-नाये पेन्स्तरे तथा। इससे सभी पीरोको मध्यो हमा विच्या । स्थापेही, अकारोही, वर्षी और सभा सधी उसका प्रायते तथे। उस समय उसके कोरकान्यो कहा भीवन इन्छा होने समा। सन्दु बढ़े होगले महत्त्व का, इस्तिको अनकाहा और समस्य सैन्स्ति बुल्से कह प्रकृत

इस प्रकार प्रमानके अनेको प्रशास दिसानेपर जा अर्थुंकी आधारको द्वार काली देखी और इस्तीकी विकार सुनी से उन्होंने सीकृत्याने कहा, 'मजुसूर | मजून होता है, आप्योतिकारेड क्यारा आप इस्तीपर क्यूबन इसारे सेनापर दूर पड़े हैं। नित्तीह का विकार क्यूबिक इस्तीवर्ध है। मेरा से ऐसा विकार है कि ने कुट्टो इसारे कम नहीं हैं स्कृते नवारोडियोमें पृत्तीपार्थ समसे हेड चाँछ जा समझा है। अपन में अमेले ही पायानोची कारी सेनाची नह कर हैने। इस बोनोंके तिता इसकी महिल्डो देखनेने और खोई समर्थ नहीं है। इसकिये जब वस्ती ही सम्बंध और प्रतिमे।

अर्थुनके ऐसा बहानेकर कावान् कृत्यर उनके श्वाके आहे. और से माने, निवार कावाक कावाकोवर्ध केवाका संदार कर को थे। उन्हें उससे देशकार कोवा कृत्यर संवाहक, वस कृत्यर वितारी और वार कृत्यर कावाको सेन्द्रके और वीकोव कृत्यरो वार्गे। अब अर्थुनका कृत्य कृतिकारों का क्या कृतिक्षितके काव कार्के? इस क्षेत्रोंकों कोच बहुन करना वित्रोंक कृत्यका कार्के? इस क्षेत्रोंकों कोच बहुन करना वित्रोंक कृत्यक्त कृति हैं अर्थिक विवाद कृत्यता क्षा करनेके कार्यों क्षेत्र अर्थका विवाद क्षेत्रका केव कार्यके क्षेत्र को।

संदर्भ वहर्गियोंने एक साथ हमारे कम सर्वृत्यः होई। जारे किश्वार कर कारेड पराम अर्थन, कुम्म क्या इतके योई और १स सभी दीवाने क्या है गरे। का अर्थने मार्ग-मी-नामये क्यें स्वारमाने यह कर विका। किर करके मार्गाने संसम्पूर्णि अर्थनों व्यवस्, केर्ने, सार्थन, हमी और बहुक्त बद्ध-करकर गिर गरे; अर्थनों केर्नेची मुम्मन, मिन्ने मही, जन, स्वान्य, क्यान्य कुर्य और कर्ते स्वाने मारि सर्ग हुए थे, करका हमा-क्या केर गर्नी क्या कर्ते क्या क्यें-नहीं सुक्तने क्ये अर्थने हमा और ये कर्ते क्ये, पार्थ । अस्य मुक्त के क्या क्या है। वेरे क्याने क्या हम, कर और कुनेनों की होना करिन है। की मुक्ते प्रका ही सैक्यों-इनारों संस्थान क्याक्रियोंको एक स्वय निर्मे हैसा है।

इस जनार वहाँ से संस्कृत येर सैन्द्र से, उनमेंसे अधिकारेशको भारतार असुंत्रों औक्ष्मको कहा — 'अस भगवाको जोर करियो ' एक सीम्यको कहे पुगरिरे पोड़ोको सेमान्यकंडी सेमानी और खेड़ मिना। यह नेसावत पुगर्गी अपने प्रमुखेको साथ सेमा उनका बीमा जिला। एक अर्थुन्ने बीम्हरूको पुन्न, 'अस्तुत ! हेसिय, इस्त से अपने प्रमुखेके प्रमुखे पुन्न, 'अस्तुत ! हेसिय, इस्त से अपने प्रमुखेके प्रमुखे पुन्न पुन्न हैसिये सम्बद्धा क्ष है और उत्तर उत्तर दिवामें इस्तरी सेमाना संसर से यह है। समाइये, इसमेरे क्षेत्र काम करना इससे रिपटे अस्तिक

विकार होता ?' यह यूनवार अनुमाने विवरित्य पुरार्थाओं और रच मोड़ दिया । अर्जुनने तुरंत हो एक प्रार्थोंने पुरार्थाओं वीववार हो कामोरों उसके पहुंच और व्यापको कार कांगा। विद्या हाः वामोरों अर्था पर्वाची स्वरंगि और पोड़ोंसदिव कारावारे कहा मेन दिया । यह सुमारोंने स्वाचार अर्जुन्यर एक एक्क्रेकी प्रार्थित और बीक्स्मान्यर हम सेम्बर होड़ान अर्जुनने प्रीन-दीन मानोंनी कांग्र और सेमर बोनोईको कार सामा और दिन वामोनी कांग्रेसे पुरार्थाओं पृथ्वित का बेमकी और संदेश को ।

क्यूंगे अवसे सम्मानंते संग्यांची तेताची सा दिया और जिए में पान्त्यों सामने अञ्चल सह पते। भारता देखें समान प्रमानकों सामंत्र को सूर् थे। क्यूंगे अञ्चल सम्माने को अर्थुंगे सामंत्र पान्त्यों कह समा। इसपा पान्त्यों को अर्थुंगे सामंत्रे वैक्तान सेकूल और स्थार पान्त्यों के आत्या सी। सा अर्थुंगों स्था प्रमान का साम। स्थानकों को पान्तर निया तीन पान्त्यों का साम चेल-सा कार्ये पूर् पूर्व करों स्था। पान्त्यों स्था विथे। दिल स्थाने पान्त्यों सामंत्र कार्ये से से कुट्ये का विथे। दिल स्थाने पान्त्यों सामंत्र पान्य कार समा। तह पान्त्यों कीक्षणपर एक सोवंश प्रमान की है, विद्य स्थाने प्रमान से दूस वार्योंने साम पान्त्यों का और मानायों सामंत्र स्था।।

इस इक्टन अर्जुनके बारगोड़े सिवे हुए भगवानो भी ब्रोडमें पतकर उनके महाकारर कई बाल गरे। इससे उनका पुकुठ कुछ वेस हो पता। युक्तरको सीमा करते हुए अर्जुनरे पत्कारको कुछ—"राजर्। अस्त हुन इस संस्थानको जी



मस्कर देख को ।" यह कुरवार अन्यूत क्रोबर्वे पर को और अर्जुन तथा श्रीकृष्णपर कार्योकी कर्य करने (लो । यह हेक कर्तुको नहीं पुर्तीसे उनके बहुत और इसकारोधी काट जनस राध्य ब्यूनर कारोंसे उनके वर्गस्थानेको गाँव दिया। इससे अस्य परित होका पंतरतने वैकाककार स्वयंत्र विका कीर कारो अंकुलको अधियनिक करके को अर्थकाँ। क्रातिपर बरावत । जनसम्बद्धाः वदः अवव संबद्धाः नाम करने-मारन था, अतः वीकृत्यने अर्थुनको ओटमे कृत्ये औ अपनी ही कार्रायर होता रिल्या । इससे आईग्रेड विकास कह हेक पहेंचा और उन्होंने बीकुम्बारे पाहर, 'बनकर ! आपरे तो प्रतिका की है कि 'मैं कह न करके केवल सार्वकार कार कर्मनाः विश्व जन त्यार जनने प्रतिक्रमा करन नहीं कर से है। यदि में संस्थाने यह बाता या अस्तात नेपारत कारेने असमर्थ हे पाल, का समय अन्यक्त देख पाला होता. हैंगा । आपको हो यह भी काहून है कि भी। वेरे हामने बहुत और बाल हो तो में हेम्पत, असूर और मान्योत्वीत राज्यां लेकोको जीतनेने स्वयं है।

म्ब सुनकर बन्धान् त्रीकृष्यने अर्थुन्ते वे स्वतन्त्रने स्थान को, 'सुनोक्त्य । सुने; मैं हुने कुत जुद का कारता है, को पूर्वकारणे परित्र हो सुन्धी है। ये बार अस्त्य बारण कर स्त्र सन्दर्भ स्वेकोची रहाने काल रहात है। अस्त्रेको ही अनेको करोचे विश्वत करके संस्ताका है। करत है। ('नागयम' सभने प्रसिद्ध) नेरी एक चूर्त हा स्थानकार राक्त वयसा करती है। कृत्ये जुलै काल्के हुपाहुच क्षमीयर इक्षि रकती है। तीसरी व्यूचलोकने अवकर नाम प्रकारके कर्न करती है और बीची वह है, से पुरांद करेंकड़ कारों क्रम करते हैं। का मेर चौचा किया का हका वर्गी पहार् सकतो अता है, का समय वर प्रतेशोध कही गध्य भवि-न्यूर्विजेको जान क्यान हेल है। एक कर, यस कि नहीं समय जार का, प्रजीतेनीने सकत बुक्तरें का प्रस्तुन मीपा कि 'पेरा पुर (शरकासुर) केवल एक अनुरोधे अववंद हें और उसके पास बैक्सकता हो।' पृथ्वीकी वह पायक सुनकर मैंने काले पुराको अयोध बैनावाला हिमा और उससे सह—'पृथ्वी । यह असेच कैमानाच नरकातुरकी दहाने क्रिके उसके पास खेला, जब इसे कोई भूती पार सकेता है पृथ्वीकी मन:कामना पूर्व व्हां और वह 'ऐसा है है' काकर भारी गर्ना रुपा व्या नरकासुर भी दुर्जन होका स्थुओको संताय देरे तथा। सर्वृत । बढ़ी बेरा वैभावता नरकासत्ते

वन्यक्रके अस् हुना का। इन्द्र और सा कादि वेबताओस्त्रीत अनुनं खेन्क्षेत्रे कोई की ऐसा नहीं है. को इस अवसी नहा न सा उन्हें। कातः कुनाएँ अन्यस्त्रके किने ही मैंने इस अन्यस्त्री कोट कर्न कहा की और इसे व्यवं कर दिया है। अब क्यान्त्रके कात का विका अना नहीं का, अतः इस पहान् अस्त्रको इस कर्न।

व्याप्त संकृतनके ऐसा वस्तेयर अर्थुन्ने स्वस्त सीवन सन्तेयी वर्ष करके कार्युक्ते इस दिना और उनके इस्तेत होनी कुम्पावरके बीवने मान गारः। वह क्रम प्रैवसिंग इस्तिन भी इस्ती अने व वह स्वक और आहंत्रहें विकास हुए अने अन स्वान दिने : एवं शीक्तार आहंत्रहें विकास हुए अने अन स्वान दिने : एवं शीक्तार के अर्थुन्ते विकास क्रम स्वेत हो गते हैं। यसके अस्त व स्टेनेक क्रमण इस्त्री अने अन्त से वही हैं, इस स्वय इसने अविकोधी सूनी स्वानेक विने वार्युकी स्ट्रीसे प्रवानीको एएकाने बाँव रक्ता है।"

वनसन्ते व्यक्ति अर्थने वाम प्रशंतर शंगताके विश्व पूर्व कर है, उनके करते हैं कार्यभावि अभि के हैं नवी। वश्वान्य एक अर्थनकारा वाम बारशर अर्थुनरे एक कार्यकार्थ करते केंद्र हैं। उनका हुएवं एक गृद्ध, उनकार्यक का ग्ले और हक्ती क्यून-कर्या हुएकर निर्दे हैं। पूर्व उनके बस्तकों विश्वकार करही निर्दे, दिन ने इस्ते की बुक्तिन निरं पत्रे। हम प्रकार अर्थुकों का बुक्ते हुन्हों



तना क्या क्यात्मक का किया और बौरवपश्लेक अन्यत्म केश्वानीका भी संकृत का अस्त ।

#### वृषक, अचल और नील आदिका क्या; सकुनि और कर्णकी पराजव

और पूने। उपरारे गन्वारतन सुनलके के पुत्र कुल्क और अवल आ पहुँचे तथा देनों आई बुद्धों अध्नको पीतित करने लगे । एक से अर्थरके स्तमने क्या है तथा और इसस् पीहे: पित दीनों एक इतथ ही से बाजोंने कई बीचने रूने। एक

सहराने कहा—परमहत्त्वों सारकर अर्जुन हरिएक विकासी [ शूरा, शारीक, कारहार अधिकांकि, कार, वाण और प्रसं मादि मान-प्रकोची कर्ष होने सभी । माहे, दीर, पीरे, सिंह, क्यार, चीते, रीक, कुते, निर्द, बंतर, साँप तथा नाना ज़करके राज्य और पक्षी कृते तथा क्रोधमें भरे हुए सब मोसो अर्थुनको और दृह को।



अर्जून के दिल्ह अन्योंके इतता ने हैं, रक्षम बाजोबरे वृद्धि कको हुए का बीबोबरे याने रूने । अर्जुनके सुद्ध सत्त्रकोश्ये भार वक्नेसे ने सामी आणी चोर-बोरसे बीस्कार कर्त हर व्य है और क्रोबीने कर्तुको कार अवेश का नवा। अलंके बढ़ी कुर करते पूजने के उन्हें। यह उन्हेंके 'प्लेकिन' पानक अस्तर जान अस्तरक प्रयोग काके का गर्नकर अञ्चलका क्या का दिया। अवेश पूर क्षेत्रे के पार्ट व्यक्तक कार्यकारी विश्वी करों । प्रथ अस्ट्रेस्पे 'अधिनामा' का प्रयोग काके का करा कर कुरत दिया। इस प्रकार संकृतिने अवैश्वी प्रधारको कालाई स्था, विश्व अर्जुको

अर्जुरने अपने पैने माजोले कुरवाके सार्गात, कर्जूर, सार, क्या, रस और केंद्रोकी बरिवर्ग इस है तथा क्या इकालेड अची और वालकातुरेले बीचवर गमारोहरीय बोद्धातीको स्वयुक्त बार इत्था । साम ही क्रोकरे करकर उन्होंने चीड ही गान्वारवीरोक्ते कमरकेक फेक दिया।

हैंगों-हैंगों अर्थ अक्काओं ३० एकका पास का दिया। का उन्तर्भ कवावा कवा है गया और स्कृति अर्थुस्के कारोरी विशेष राज्या है पता, तम का प्राचीत हैकर रमधुनिते चान रखा।

क्ष्मको राज्ये कोई यो ना कुछ थे, प्रातीन्त्रे प्राती बुदकर का अपने पाई अवस्थि राज्या का बैठा और उसने कुरत बहुत हमारे से लिख । अब से वे कुन्छ और समाद होनों पाई बाजोबर्ड कर्य काके अर्थनको क्रीको लगे। वे होनों स्थाप एक इससे मुख्यर केंद्रे है, उसी अवस्थाने अर्जुनने एक ही बाजसे केन्द्रेको मार छला र केन्द्रे एक स्वरू ही रकते क्षेत्रे गिर यहे । सकत् । अवने क्षेत्रों कलाओको कर देश आपके कुत आंधु बहुने रूने। अञ्चलको कुनुके बुनुको गड़ देख संबद्धों प्रकारकी धाला बाजनेकाहे छक्तिने श्रीकृष्ण और अर्जुकको चोहमें इस्तानेके दिखे परावर्त स्वतः की । अर संपन्न समात विकालों और व्यक्तिसक्तेने अर्जनवर रोबेके चेले, प्रवार, छन्छी, छन्छि, न्या, बन्धि, तसकार, शुरु, पूर्वार, पश्चित, व्हरि, नक्ष, यूसल, कराब, हुत,

कारका अर्थुन वर्धान-वेपाका कियंत कार्ने तमे। से कारोपी क्यां करते हुए जाने अपने करते का यो है, बिहर कोई के क्यूक्त की उन्हें देख न सकता अर्थ्यको आहे वैद्या हे अलगे सेन इक्ट-कर चलने सन्है। यह सन्ह ज्ञारक्टके कारण आफ्ने बहुत-से सैनिकॉर्न आर्थ है पहले चेत्रातीया रोहर का इसा। अर्थुन हाची, चेहे और प्राचीम का राज्य हता कर की बोहरे में, एक हैं कारते अव्यक्त होका से अल्लीन हो बराहाओं हो बाते छै। को को प्रमुख, इसी और केंद्रोको लाहोसे की हाँ अह रमपूर्विको अस्पुत होता हो रही थी। सभी बेद्ध सन्तर्वेशी करने काकुल हो से से, उस समय बाप बेरेको और बेटा करमधे क्षेत्रकर कर देश था। निय-नियको पार जो करा। मा। लोग अपनी सवारी भी क्षेत्रकर चान करे से।

इक, हेक्कर्व अपने र्वतन बाजोसे क्वाक्सेनाको

क्षित्र-वित्र करने लगे। अद्भुष परकारों होण किस प्रमण तर सोद्धालोंको कुकल हो थे, सेन्यारि मुह्युको वर्ण आकर होणके बारों और पेस द्वार दिसा। किर से होण्याकार्ग और पृह्युकों अर्थुत युद्ध होने सन्ता। हुस्सी और अधिके स्वापन रेक्सी स्था भीता अपने बार्गासे कौरकारेनाको परण करने एगा। औ हुस् अध्या संहार करने देस अध्यानको हैस्कर कहा—'नीस्त ! तुम अपनी बार्गाहरों हुर सनेक कैद्धालों-को बनो परण कर से हो, साहत हो से केवल के साथ स्था विता। एक साने भी तीन वाल मारकर नीसके कहा, व्यास सीर कुक्सो कार समझ । यह देस नीस हमाने क्षान-सर्वार से राजों कुर यहा और अध्यानको विरक्षों कुक्सरमहित बरस्कारों कार विराक्त । नीस पृज्योग किर कुक्सरमहित बरस्कारों कार विराक्त । नीस पृज्योग किर प्रमारमहित बरस्कारों कार विराक्त । नीस पृज्योग किर प्रमारमहित बरस्कारों कार विराक्त । नीस पृज्योग किर प्रमारमहित बरस्कारों कार विराक्त । नीस पृज्योग किर

इतनेहीये अर्जुन बहुत-से संस्त्रात्कोको बीतकार, नहीं हेरात्मनं पाक्कोनस्या संदार कर रहे थे, वहाँ सा गाँधे और औरव चें-अओओ अपने क्योंको आगर्ने कराने रागे। इनके स्टब्से बाजोते पेरित क्रेबर विजने है क्रकेसका, बक्रसवार और पैक्स सैनिया पुनियर गिरने समे । विजने ही अर्लाकार्य करवारे लगे । विकारीने निको ही प्राप्त जान विचे । अपेरे से करो-गिर्ज चाफी तमें, का चेकाओंको कर्मनी पुरक्षाकामी नियमका सारम करके नहीं करा। कनते हर् कौरव 'हा कर्ज . हा कर्ज !' ऐसे पुकारने स्लो। इत्रवहर्षियोका व्या करून सन्वर-'नीते ! इदे मा' ऐसा कहकर कर्ण अर्जुनका सामना करने करा । कर्ण अस-वेदाओं में बेड था. असे बर समय आहेक्स प्रचट किया: परेश संस्कृतने को जान्य कर हिया । इसी जनार कर्णने भी अर्थुनके तेवाची वाजीका अपने अन्तरो निकाल कर विक और प्रायोगी क्यों करते हुए सिक्स विकास स्थ सुरुपुर, पीय और स्टामीट की कई पहेनकर कर्मको अपने क्रामोधे बीक्ने हमें। क्रमीन भी बीच क्रामोसे उन दीनों प्रेरोके पहल कार इस्ते । सब उन्होंने कर्णवर प्रतिनोध्या | सीट स्थी ।

आहर करके रिक्रोंक समान गर्मना को । कर्य भी हीर-शीम कर्मात हुआ गर्मन समा । क्यू देश अर्जुनने सात कर्मात करमात हुआ गर्मन समा । क्यू देश अर्जुनने सात कर्माते कर्मात क्षेत्रकर अर्थ्य होटे पर्युक्ते पार करना, पिर अर्थ्य हुसरे कर्म क्ष्मा क्षात करका मिपाटके की मस्तकार्ध करमा और कर्म किए हिया इस अन्या औरवेलेंड इसले-इसले कर्मक सम्यन्त है अर्थ्य होने काम्योको अर्जुनने अर्थेको हो कर करमा।

अहरवार, धीयमेन वी अपने रक्तो कृत पड़े और लक्कारों कर्णपक्रके चंद्र वीरोको मान्यन किर अपने रक्ता क्य अपने । इसके कर दूसरा बनुव लेकर उन्होंने कर्णको इस तक उनके सारित और केर्यको पांच कार्योसे बींच आला । इसी जकर कृत्रदूष्ट की अपने रक्तो अगरकर कल्य-नारवार तिने आने क्या और कन्द्रवर्ग स्वाः निवध्येत्रके एका कृत्रवासको स्वत्यन पुनः रक्षार आ क्या । किर तुसरा बनुव इसके से अपने विकास करते हुए विकास वालोसे सार्यको वींच दिवा । इसके बाद सार्यकिने ची दूसरा बनुव स्टार्य और कींच्य करते हैं करते वींक्यर विकेश सम्बन्ध पर्यक्त की। किर को कार्योसे अर्थको सींक्यर विकेश सम्बन पर्यक्त की। किर को कार्योसे अर्थको सर्वका बनुव करते किया।

कर्ण स्वाविकायो समुद्रियं हुए रहा था; उस समय दुर्गेकन, होण्यामां और जवहक्ये आसार असके प्राण कार्या। फिर के आपको सेनके सैन्स्को फैरन, रवी और, क्राविकार योद्धा कर्णाकी रहाके लिये छैड़ पहे। दूसरी और, बुर्ग्सुस, जीयसेन, अधिपन्यु, नकुमा और लाखेक स्वाविकायी रहा करने लगे। इस प्रकार वहाँ समस्त कर्गानियोग्धा नाम करनेके लिये न्याप्यमानक संप्राण किन् गणा। आपके और जानक्यक्यके वीरोपे प्राणीनम क्षेत्र क्षेत्रका युद्ध होने लगा। इसनेमें सूर्य अस्ताकलको जा प्रमुखा। एवं होने अपन्या क्यो-पादी एवं लोहलुहान हुं सेन्स्से क्या-दूसरोको वेससी हुई भीरे-और अपने विविकासे और नहीं।

## चक्रव्यक्त-निर्माण और अभिमन्यकी प्रतिज्ञा

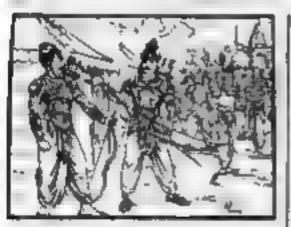
हमारी सेन्त्रको परास्त्रत कर चुनिहितको पहः को और | सके। उन्होंने पुरुष्टा समूर्य दिवस पुत्रहो छक कुरहोते कार्य प्रेम्प्यानेका क्षेत्रक किन्तु नहीं होने विकार कृतेकर विकार है। कर्मांका अन्यूर्व देशका अस्त और मुक्ति हो का वा । 📗 होनके ऐस करते है संबद्धकोंने अर्जुनको पुनः पुरुके कुरों दिन समेरे हैं। उसने कर केंद्राओंके कुमले केन और | हिम्में सरकारत और में क्यें ब्रियन दिखानी और कर से

अधिकार्वक होज्याको सहा, 'हैकस | निक्षय ही इनलोग आपके प्रमुखेंगेले हैं, बाबी वो बाल आपने कृषिहितको निकट आ अपनेका भी नहीं मेर किया। सह आपनी जॉसोबे शापने जा जाय और जाय को स्वादक करें तो समार्थ केलाओंको साथ तेकर थी पाणकानोग आपने अस्ती एक नहीं का समार्थ । आधने प्रमण होका पहले पुत्रे ककान हो दें दिया, किन्तु पीछे को पूर्व नहीं किया (\*

क्वीयनके देशा ब्यूनेवर आवार्थ क्रेसवे सम्ब दिनम क्रिया प्रदाः, 'रामन् । शुन्दे देना न्द्री सन्दरना वाहिये । में तो सदा कुमारा देख कारनेकी ही लेखा करता है। जिल्हा करन करने ? अर्थन निरमकी पश्च करने हो, उसे केन्स,

स्तर करते हैं---रावर ! वस दिन अधिन केवाची अधीरने | ऐसी नहीं है, जो उन्होंनको हरत र हो अधवा है औ धार प

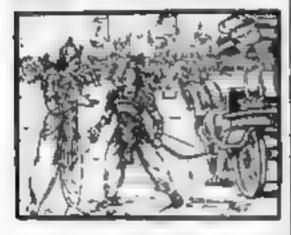




असूर गन्धर्व, धर्व, राज्यस तथा सम्पूर्ण लोक भी नहीं जीन सकते । यहाँ विक्रविकास प्रमानन् श्रीकृष्ण और अर्थन् हैं, नहीं चेकाके मिना और किलबा बात बाय हे लबाद है ? सार रे इस समय तुम्मी साथ कदल हैं, यह कारी अन्यक भी हे सकत-अन प्रकारको किसे एक के पहारबीका नाम कर्मना । आज व्या व्या व्यक्तीया, विशे देनात भी नहीं तोड़ सकते । लेकिन अर्जुनको कुन किसी पडे ज्यानने व्हरिते हुए हुए हो । बुद्धके जिन्हकों कोई की करन

नवे । यह समय अर्थनात प्रदुर्जने प्राप्त देशा और सुद्ध कुरत, रीमा पहले न हो साथी हेल्ल गया और न सुना ही गया धा । न्यायाम 🗈 एकर, आरक्ष्यं क्षेत्राने नवालकुका निर्माण किया, इसमें उन्होंने इसके प्रचार परकारी राजाशीको सम्बद्धित किया और ३० व्यूको अरोके स्थान्यर सुर्वके कुष वेजको राजकुमारोको कहा किया। राज व्योधन इनके कवानानमें कहा हुआ। अतके ताथ बहारवी कर्ग, इस्तानमं और कुकालन से । अञ्चले अवभागमें होनहकार्य और अन्यान रुपे हुए। जन्मको बगरामे अन्यानामो सार अनके तील हुन, ककुन्ति, साम्य और मुस्तिया साहे थें। तहरूम औरमें और सम्पन्ति मृत्यूओ है विकास मानवर वेपक्रकारी तुम्रल पुत्र क्रिक मना।

क्रेक्क्कंत्रय सुरक्षित इस पुर्वर म्यूपर भीवरेनको अने करके पायकोंने अवस्था विश्वा शासकि; केंब्रिटार, प्रमुक्त, कुन्तियोग, हुन्य, अधिनम्, कृत्रार्थ, क्षात्रक, बेरियान, ब्रह्मकेश, स्कूतन, स्कूतेन, क्योत्सव, कुळक्यु, विकासी, आर्थेन्स, विकट, प्रेयटेके पूर, विराह्यसम्बद्धाः पुत्रः, केन्द्रभारत्यकुम्बरः अदैर इवाहे सहस्वतंत्री इतिक-ने तथा और भी बहुत-से राजेपार चेना पुनारी व्यासं सहसा हेम्सावाकी कार हर यहे। उन्हें अपने निकट । पूजा देसका पी अववान होना निर्माण की हर, उन्होंने पाणीकी वर्ष करते कर हम गीनेको जाने पहलेले केन निका। यह उनका इंग्सानेकी केन्सा कुमानेका अस्तुत्र प्राथम देखा कि पानुस्त और स्वाप क्रिय एक स्था दिसका भी करवा सम्पन्न र कर शब्दे। हेम्सावाकी प्रोक्षमें परकर आने पहले देख पुनिहरने अने केन्साके विकाम बहुत विचान किया। होम्सावाकमा पान्य कुमानेक विकाम पहले विचान किया। होम्सावाकमा पान्य प्राप्तिक विकाम प्राप्तिक सम्पन्नकर अन्तेने इस पुन्तर प्राप्तिक विकाम करिय सम्पन्नकर अन्तेने इस पुन्तर प्राप्तिक विका अर्थुनसे पान परकामी नहीं था, यह अस्त्रात्व केन्साव स्वार समुद्राक्षके पीरोक्स संस्तर प्राप्तिकाल था। पुनिहरने स्वारी कहा—'वेट अधिकान्य प्राप्तिकाल केन्साव कान्स्त स्वारी कहा—'वेट अधिकान्य प्राप्तिकाल केन्साव कान्स्त्र स्वारी कहा—'वेट अधिकान्य प्राप्तिकाल केन्स्त्र कान्स्त्र केन्स्त्र अस्त्र स्वारी कहा—'वेट अधिकान्य प्राप्तिकाल केन्स्त्र केन्स्त्र अस्त्र अस्त्र क्षान्य क्षान



कामको नहीं कर सकता। अनः तुम अखा नेकर प्रीप्त ई

क्रेक्के इस स्कूको केंद्र इस्ते, नहीं से मुद्दारे स्पेटनेपर अर्जुन इसकेनेको साथ हेने।'

अभिन्तुने वहा—उत्तवार्ग होजावी को शेन कारी। सामा सुद्ध और प्रकंपन है, स्वारि में अपने विद्यार्थकी विश्ववार्ध रिको इस महाने अपने प्रवेच करता है। विद्यार्थने बहुत्वों संस्थेता उत्तव को भूते कहा दिया है, पर निकरणा नहीं क्याचा है। यहि में बहुते किसी विश्वति केस गया तो विवदर नहीं प्रकृत्य।

वृध्यार करो—वीरवर । तुन इस सेवाको भेदकर इसरोपोके तिने क्षर के बनाओ । दिन किस पानी तुन आओरे, कुकरे पीके-वीके इसरोप भी करोगे और सम ओरो कुकरी तहा करेंगे।

केनो बहा—में, बूह्यूड, सामकि एका पहारत. पास्त्, प्रकार और केमन देशके केहा—के इस हुको साथ कोनो । एक का नहीं तुको बहु गड़ किया, व्यक्ति को-बहे बीटोको बाज्यर हमसोग बहुका विकास कर डालेंगे।

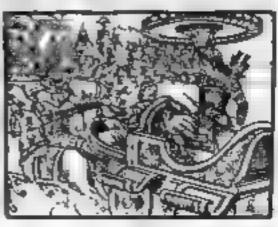
अध्यक्षे का — अका, से अब में हेणकी इस दुईरों केवने उनेक करता है। उठक का कालय कर दिकारिया, किसने मेरे काम और किया होगेंकी कुल्येका दिल होगा। असने काम भी उत्तव होगें और जिलावी थी। प्रवादि में कालक है, से भी कायूनों इसनी देखेंगे कि में किया तरह आंख अनेतर है उन्होंनकों कालकर काम कराता है। यदि जैसे-की कुन्दों पेरे सामने जातार कोई जीवित क्या जाय से मे अनुकार पुत्र की और यक्षा दुकानों स्पूर्ण मेरा क्या जा की अनुकार पुत्र की और यक्षा दुकानों स्पूर्ण मेरा क्या

प्रविदेश का—सुवास्त्रका । तुम जेनकी दुर्ही हेनको केड्रीका स्वया दिया हो हो, इसरियो हैसी बीस्तावर्ड कर्न कमें हुए तुमारा करा सब महार हो।

## अभिमन्युका व्यूक्तमे प्रवेश और पराक्रम

सङ्गर कारो है—वर्षराय वृषिश्चितकी क्या सुनकर अधिवानको इसाविको होगाकी सेवाके कहा १४ से कारोको क्या । क्या कारावार कारोको अध्या से से आरमिने असमे क्या—'आपूर्वार् । कार्यानी आकार का व्यूच क्या भार रहा दिवा है: आय कोड़ी के इसावर कियार कर सिनिको, किन चुन कीकिनेया । अस्वार्थ होना कहे विद्यान् हैं, अहोने उत्तम असमित्वार्थ कहा परिवास किया है। हास असम कहे सुन्ना और आरम्बर्थ क्या परिवास किया है। हास असम निवास की नहीं हैं।'

आर्थिको साथ भूतका आधिकानुने उससे ईसकर कहा,



'सूर | यह क्षेत्र अवका कृतिक-सन्दाय क्या है ? वर्ष सावान हम देवराओं के साथ जा कर्ष अवका पुरावकों के साथ लेकर प्रकृत जार आगे के मैं उनसे की यून कर सबका है। यह सन्दर्भ अनुसंग्र मेरी सोरवार्की कामके करना की नहीं है। और को नवा, निवानिकारी काम अनुस्था और विका अनुस्था की अवने विव्यक्तों कामर पुत्रो कर नहीं होता।' इस समार सार्वकिया जानकों अनुसंग्र करने अधिकान्द्रे को सींच ही सेनवार संस्था काम करने क्या की सोरवार्कों काम सुन्धार सार्विक करने क्या कामन के नहीं हुआ, पांसु को होता सार्व नेवार्कों और स्वयुक्त हो स्वयुक्त की अधिकान्द्रेड पीर्क-पीर्क करने। सार्वा अस्त कामना कार्यके किनो कर नहीं।

अर्थुनका दुव अर्थुनको की क्यूकन पराक्रको का। यह दुश्वकी हुआतो होना आदि प्रश्नानिकोके कामने इस ज्यान का हार, जैसे हुविकोके अपने विद्यक्त कहा हो। अर्थनक्यु आके ब्यूक्ति और बीहा ही कहा कहा का कि बीहन केन्द्र अर्थनका हारत पहले कोन्द्राओं को संस्था होने स्थान करनेकाले हारत पहले कोन्द्राओं को संस्था होने स्थान। जा कर्यकर हुन्यों होनाके देखले-देखते बहु केन्द्रान अधिकानु अर्थन बीहर हुल नवा। वहाँ अर्थनर सन्त्रो कारत ब्यूक-के कोन्द्रान हुन्यों को परंद्र बीह अधिकानु अन्य क्यूबनें पुर्विका का। को-के बीह कारते सामने अर्थन, स्थानो अपने वर्णनेंद्री व्याचीने स्थान किन्न वर्णकानी हो स्था। यह हुन् वीहोन्द्री कारते और अर्थने हुन्योंने व्यक्ति पूर्णि क्या स्था। बनुन, क्यान, क्यान, कारता,

अंकुण, तेमर आहे जुल-में सार्थ और आयुक्तोंसे युवा इसारों वीरोकी कुळालेको अधिनकुरे कार साथ साथ स्वेचों तेष अस्तर। असे अकेसे ही जनवान् विकास। सावर। उस समय असके कुत और असके प्रत्ये केसा वसी विवासोधी और देखते हुए साननेती यह हुन्ने तरे। उनके मुँह सूख गये थे, नेत जक्तर हो हो ने स्वास प्रतीय खा संत था, येएँ कुछे हो गये थे। वे क्रमुको प्रतानेका सामस को कि के असर कुछ उसक या से कासी निकार सामनेका। मरे हुए पूत, पिता, वहाँ, कुन्नु उनका सम्बन्धियोगों केम्बर सरस्य प्राण जन्मनेका हुन्कसों कोई र्मार प्रतिकोको प्रतासकोके प्रत्य प्रोताने पुर सब सोय

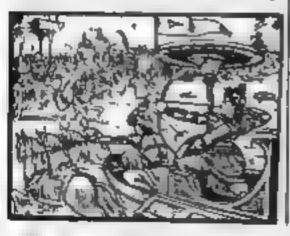
अभित रेक्की अभिवन्त्रों इस अवसे सेमाओ इस अवसे तैया-तिया होते देख कुर्वेचन अस्त्रमा प्रोक्षों जा। दूसर काले सामने आया । केमान्यर्गको आहारों और भी सहुत-ते चेखा वहाँ आ व्यूचे और कुर्वेचनको चारी औरसे केमार अस्त्री वहां काले राजे । इसे समय क्रेम, अस्त्रामात, कुरसमात, सामी, कुरसमाते, कुन्दीन मुख्यात, काल, जूरी भूरिशया, हार; बीरव और कुरसेमने सुम्बर्गकारण तीनो चालीको वर्षा काले। इसे आवासीहर कन दिया । इस प्रमास समितन्त्रको मेरीन करके क्योंने कुर्वोचनको कहा रिला ।

मेरे मुक्ता जार किन जान, उसी अवार क्योंपनाई निकास जार अभिनाको नहीं सहा गया। जाने बड़ी मारी वारावार्ध कर्मा केंद्रे और मार्ग्यानोस्त्रीत जर अभी महार्ग्यामेंद्रे अन् गण्या तमा निकार करण पर्वता की। क्षेत्र आहे प्रकार मेर्ग्यत जाना निकास पढ़ि जा पर्वत । में रचीने करको मेर्ग्यत कर्माल्वीको वर्षा करने तमे, निक् अभिनाकु उन एक कर्माल्वीको वर्षा करने तमे, निक् अभिनाकु उन एक कर्माल करको कींग क्रमा का। जाना का रणका अस्तुत का। जा कर्मा कींग क्रमा का। जाना का रणका अस्तुत का। जा कर्मा कर्मा की । बोई की पूजाने विस्ता नहीं क्षेता का। का केंग संकार्थ कुलान में काम क्रमा अस्तुत अस्तिक्ता कींग विका। किन कुलान के करा, कृत्यामां का, पुकार के आहे, स्वास्त्रामां कार, पुरिवाको कींन, क्रमाने का प्रवास कींने की और एक कुलेकोने केंन करना मार्गे।



महाराज । जा समय जानी अधिकानु वैसे पान रहा हो, हर जनार तम और कुर-कुमार तम जारीक्सेको तीन तीन वाजोरों बेक्स साथ था। फिर, आयोह पुर्हेने मिलकर जब को पन विश्वास कारण किया से वर्गकान् कोमने कर का और जन्मे जवस्तिकार पहुन् कर विकाने भग । इलोने अरम्बन्धरोक्तके पुत्रने नहीं बेनीसे वहीं अपन्य अधिपन्युको रोचा और द्वा चान भागार जानो भीव शरक । तम अधिकानुने कुरकार्को हुन् औ वृत काम नही और कारो कार्क केंद्रों, स्थानि, व्यव्य, वपुर, पुण्यते क्रम महत्त्वको काटका पृथ्वीनर निरा दिखा।

अभिन्युके प्रामी अस्माराज्युकाके वर्ष करेना सारी-तेया विवरित्व क्षेत्रर व्यक्ते समीत एक वार्य, कृत्यवर्ष, प्रेमायार्ष, अनुस्थात, प्रमुक्ते, प्राप, प्रस्य, धुनिकात, साथ, संप्यात, विशिष्टी, कृत्योप, सुनेता, grand, unfe, purce, etter, une, décèse और पूर्वेक्ट-पूर साथे क्रोक्ट प्रकार अधिकारूत वानवर्ग अस्ता वर्ष । इर वर्ष-को बनुवरियोक्त सर्वको का अभिन्यु सहर राजा हो गया, से साथे कार और प्रातिको हेन क्राल्येमान एक सीवा बात बन्दीह हाए कारत । का नाम कर्मका काम हेरहार को बेनते उसके क्रोरोरे पुरस् और जो भी बेकार क्राफेरे सब क्या । जा 2.10) अप्रतार अर्थको नहीं जन्म क्यां और <del>यह कालुका होना</del>र क्स रजपुरिने कवि बदा । इसी क्यूटर अरेकने को कुट्



अभिन्नकुरे तीन जानीसे सुनेन, वैजेलेका और कुम्बनेकेको भी करा।

का कभी वर्णम, अकुमानने बीहर और वृत्रवर्णने सार काम कारकर अधिकानुको कारक किया। असके सन्तर्भ क्रांग्ले क्रम क्रिये हुए थे, फिर भी बढ़ पासवारी क्रमानके प्रमान रजपुनिते क्रिया ग्रा 🗷 । प्रामको अभी क्य है सक देश अधिकपुरे क्योंकी करीने उने क्य दिया और अवस्थी संख्या जाते हुए जाने चीवन नर्मक को। अन्ते कर्मकेट मान्येर पावल हुए एक एएक १४के रिक्रने यागर्ने या वैके और मुस्ति के १थे। सरकारी च्या अवका देख सम्पूर्ण संख आवार्ष होगाने देखते देखते क्य करो : का क्या वेका, वितर, चारण, सिंद, पह क्षा ज्यूक अधिककुका कार्रेगान करते हुए आसी नार्रात का के थे।

करणका एक बोटा गाई का। जाने सुना कि शांधिकपुरे के कई कारकार्ध राजपूरियों मुखित कर दिया है तो सीकरें करकर कारकर्थ करता हुआ जा उनके यात आहा । जाते ही क्रा कर करकर करने आफिक्युओं चोड़े और नारकिसहैत करण कर वैका, फिर को भोरते करेंग जो। तब अर्चुरकुमारचे कार्यमें अन्ते केंद्रे, इस, कवा, सार्राव, कुरत, बैक्स, प्रकृता, सूरी, काशा, शहर, अस्त्रा, प्रतासा, चीनोर्व पहल हर्न रक्ती हरू सामावेको सच्छ-क्रम् करके जल्के कुछ, पैर, गरण और महाक भी कार गिराये। का से अल्डे अनुवार सरावा प्रवर्धीत है कर दिलाओंचे कार गर्ने । अधिकानुके का कार्युत पशकानको देशका पत र्त्वेन को सामाप्ती हैने रहते। इस समय बद्ध दिव्य अव्योगे क्यु-केनका लेहर करता हुक करों दिलाओं वे विकासी है क्य वा अलके इस अल्बेसिक कर्यको हेस आयोह हैनिक करिये (तो । इसी समय अवस्था पुत्र पु:कासन कई जोरहे नरक और क्रोको परका क्षणीकी वर्ष करता हुआ कुष्याकुष्याच्या वद् अस्ता। उस्ते ही इससी अधिकानुते क्रमांस कम भारे। अधिकम् और ए-साराम केने है मा-विकार कुरूर थे। ये क्षरे-क्षर्थ विकास समाजातात चिनने चल्को हुए चुद्ध करने सने।

## दु-शासन और कर्णकी यराज्य तथा जयद्रथका पराक्रम

कुसाराओं हैसकर बहा—'कुरि ! तुने की नितृकर्गका करन हर निष्या है, उसके बहरण प्रया सेने स्वेच्च, अक्रम, होड़ और

सङ्गण करते 🕮 राज्य । अत्र राज्य अधिकान्त्री कृतकारके कारण महत्व वालव सुरूपर अस्तरा कृतित 🕏 ज़रीने अन्य तुन्ने व्यः देश देशका च्या है। आज उन पायका वर्षका शतः तु क्षेत्र । क्षेत्रयमें घरी हां माशा होक्सीकी तक

प्रवाप रेलेको दिया चीन्योनकी प्रवा पूर्व करके साथ है राके मानते रूपन हो करून । नहें ह यह होहबार का नहीं एक से मेरे इसके चीका नहीं कर सकता ("यह सहकर मानिकालो क्रमानाच्या वार्ताने अस्तर्गात्रके कार्यन क्रेमानी मान पार। या पान कालो सार्यने तथा और गरेको हैतारी हेक्कर निकार गया। इतके कर बहुनको सामान भीकार पुरः शले ६ वाकाची प्रवीत क्रम गरे। इससे अबी तह करन होता या जनके को उनके विकर्त चारमें जा बैदा और बेहेना है, क्या : यह देख सामीर होत को रमसे कार से पन । का नवा पुनिक्त उसी प्रकार, findir in. medt, Afran, gegr, frank, केवन, क्यूनेत तथा मान, पाक्रम और क्यून मेर को प्राचनके क्षत्र केवादी संख्यों जु बरनेकी ह्याने आहे को । दिन को कीएको और सम्बन्धिको केनाने न्यून्य पूर्व होने राना : इस्त वार्ण सामग्र प्रोक्षे परकर श्रीकरकृते करा रोक्न मानोची को करने तथा और प्रस्का करका प्रश हुए आनोर अञ्चलकेनों भी चान्त्रीते बीचने तन्त्र । अधिनकार्त भी दुरंग हो को विहास कामोंने बीच कान । का समान भागी गी। मेर्च जी केंद्र प्रथा। सारका, कारी अपने जान अब-निवास अर्थन करते हुए तैनको सन्तेते अधिककुको बीच काल। काल्डि क्या पेवेल केवर वी भुष्यास्त्रकार निर्माण नहीं हता; ताले केन जालेके क्षाबीरोके बनुष कारकर कर्मको के कुर कारक किया। साथ ही अलो हम, बाबा, जातीर और बोड़ोको पी हैंगों-डेंगों बीच क्राच । फिर कमरे भी को बर्क काम महे. किंतु अरिक्यपुरे अभिकार पायरो प्रमुखे होता विन्यु और मुहर्गमार्थे एक हो सामने काले करून और सन्तरको कारकर प्रभवित निव क्रिया। इस प्रकार कर्मको संस्कृते



पीता देशका कावा होता गर्ने सुरू कुर से अधिकामुक

क्षणना करनेको जा पणा । उसने आते ही इस वाल प्रस्कार अभिनक्षणो का, काल, सार्यन और कोहोसहित चींच जातः। यह देश कालके पुत्र बहुत असत्र हुए । उस अभिनक्षणे पुत्रकरकार कृष्ट ही कालहे अस्त्व अस्तव वेस्ट निरास ।

क्यर् । व्यक्ति यस देश कर्न व्यक्त द्वानी हुना । इसर कृष्णकृत्याने कर्माको विनुधा अन्तरे कृत्ये जनुर्वतीयर क्या किया। क्रोको परकर का क्रमी, क्रेडे, रच और फैलोले कुछ जन विकास केवाबा संक्रुप करने सन्तर । कर्म के अपनेत कानोर्ध कहा नेदिहा हो सुन्दा था, इस्तीओ अपने प्रीतन्तानी केंद्रेको होजका राजपृत्तिको पान नक। इससे बहु हुए पन । जा सबस दिक्ति या कालो कारश्रीके सबस अभिन्यपूर्व कारोते आवाद आकारीक हे कारेके कारण कुछ पहल गाँवि पंत्रांत था। विरम्पतान प्रमानको विन्ता प्रताप कोई तमें वहाँ विकास सकता। अधिवन्तु अपने व्यवसि इक्केक्को एक करना इस्त न्यूको विकाये हत्या। सा, धोड्रे, क्रमी और प्रकृतिक एक्षा क्षेत्रे एका। कुमीबर क्रिया परमधी रहते कि गरी। भीतन्त्रेस अधिवस्त्रेत कामोंके इक-विद्युक्त हो प्राप्त कामोंके रिक्ते व्यापने राजे । उस समय से प्राप्ते कहे हुए अपने ही हरनो; सीमीयो मारका अल्पे कह को के और अधिकान कर रोजको काहेर-काहेरकार कर का का। जाको कीन रेजाबी अधिकानु देखा होना पहला का, जैसे विश्वकोधे केम्पे प्रव्यक्तित स्वति (

कृष्यकृते कृष्य-नक्षम ! अधियानुते विश्व संस्था प्रदूती प्रतेष्ठ विष्या, अस्त्रेष क्षमा पृथिविष्यक्षे सेनावस प्रोही और सी और क्षमा वा व्यक्ति ?

कारणे कार—स्वाराज । कृषिहित, बीमलेन, हिस्ताही, सारवर्षित, स्कृष्ण, स्वारंग, कृष्णुत, विराद, कृष्ण, केवाब, कृष्णेयु और नंतन साथि केवा स्वाराज्यात्र संगठित होका साध्यासूची रहाके तिनो अस्ते साथ-वास को। उन्हें कार्य कार्य हेला आपके कैनिया सामने साथ शासकों कार्याहर क्षणांची हिला अस्तेयां असेन कार्य राज्यानोंको से-प्रस्तित केवा किया !

प्राचानी करा---स्थान ! में से सम्बद्धा ( वास्तुक्ते अन्य न्या बहुत कहा नार का कहा, को सम्बद्धते होनेसर की जरूने होतानी की कूट राज्यानीको रोका। पाल, जन्मकर्ष कौन-सा ऐसा नहान् हम किया का किससे पाळ्यानीको रोक्टोने हमार्थ ही हमार ?

व्यक्ते व¥—कवाको करने क्रेमीका सन्दर्भ किया व, जा समय चीनसेमरे को कावा क्रेस व्यक्तका सन्दर्भ कृषी क्रेसर करें भगवन् प्रंतनकी सारका करों हुए गरी करोर राजा थी। जनगरार जनाहरे सारर का भी और स्थाने होंगे केर कहा—'जना। में हुआर जरा है, इक्स्पुलार का और है।' वह जनान करते केश—'मैं कहता है असेले हैं। करना जनकोची पूछी

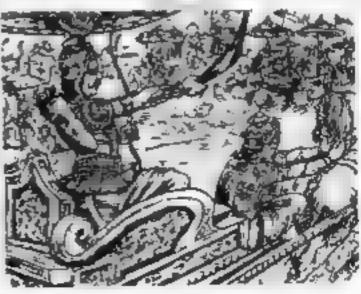


बीत सक्षे (" सरकाको काम—"सीमा ! शुर अर्थुनको कोछ क्षेत्र कार परकारीको युक्ती मीत सकोने (" अन्तर, ऐसा ही हो"—यह सक्षो-सक्षो अन्तरी नीह रहः गर्ना ( सर नगराना

वीर विकासको सानते हैं सम्मूको असेले हैंग्यर की सम्मूक्तिनको असे वह स्थान विका। अस्ति व्यवस्थानी कंकर होते हैं सम्मूक्तिया कह हमें हुआ। यह सम्भूकता रिक्तियो कह हमें हुआ। यह सम्भूकता कार कक्कर है बार कह देश असके हिंगान हुट पहें। अधिकन्द्री बहुके दिस स्थान हुट पहें। अधिकन्द्री बहुके दिस स्थानको सेव व्यवस्था हम, उसे सम्बूको कर्म को तीन, कीमरोजको अस, स्थानुक्रको कर्म होगाने पति, विकासको अस, स्थानुक्रको कर्म हमानो पति, विकासकी हम स्थान करे। इसे क्यान हमानो पति, विकासकी हम स्थान करे।



व्यक्ति व्यक्त क्रांच । साथ ही कृतो विद्यानीको भी मानीको व्यक्ति व्यक्ति पोर्क हुए दिना । स्थापन व्यक्ति प्राप्त अनुसारी हुआ । उप एका शृतिकोशने हैंको हैंको एक गोद्दान वानको क्रायानको संपूर्व व्यक्त क्षाप्त । व्यक्तिको प्राप्त साथो ही कृत्य क्षाप्त विवार वृतिकोशको हाम और अन्य चोद्धानीको सील-तीक वानोको वीच विवार । साथो हामको कृती हेंकका चीक्तिको तीन वानोको हुको बहुद, क्यारा और अनको क्षाप्त वाहका ।



[ 039 ] में० व० ( खण्ड—एक ) २४

भीवके क्ष्म्य, क्षमा और बेहोंका संहार का क्षात । बेहोंके मर कानेपर भीगानेन इस रकते बुद्धार स्थलकिके रक्का क बैठे। प्रस्तवका का कार्क्स देश आयो जिल्हा प्रस्त क्षेत्रर करे समाची देने रहते। इस्तेलें अधिककृते अक विभागी जोर पुर कर्मणां इन्धंसक्तरेजे नामहर

चन्यांचे रिन्दे को दिसाय, सिंदू करावने उसे भी केव रिन्य । महार, पर्यापः, वेजाय और पर्यापनीर्धने बहुद क्षेत्रिक की, पर में कार्यकारे क्रा र क्षेत्र अनुको क्यूजोनेसे के की क्रेक-संभावत बहु बीक्रोको प्रका करता. जो जन्मन प्रकारके प्रभावते ऐक देश का।

# अभिमन्युके हारा कौरव-सेनाके कई प्रमुख वीरोका संहार

राजय करते हैं—सहयकार इन्हेर्य और अधिकान्द्रने प्राप फेनके पोत्तर सुरस्थार कुछ प्रकार सहस्था। बळाचा, बेले पह मारी मन्त्र समूहने शुरुवन पैदा कर केट है। उत्तवकी केनाके प्रमान मीरोम रवोले अधिनन्तुको वेर रका का से वी जाने पृथ्योनके सर्वाचको भारतस्य अस्ति बनुषको भी वस्त अस्त । करवान् कृत्येन भी अवने वान्त्रेते अधिकनुष्टे क्रिकेक् मींको समा । केने १व किने हुए काने क्या हो गर्न । यह क्रिक अर पाईनेसे नाएकि एकको पूर हात से नचा । बोद्धी ही देखें स्तुओंको रीको हुए अधिकानुको हुए: असे देख कारतीको तुरित उपका सामना विरुक्त । उसने अधिकानुको एक कालोहे कार्यक कर इसक । यह अधिनश्यूने वस्तरीयको कारीने एक ही भाग गाय, जिससे यह अल्बॉन होयर पृथ्वेयर गिर यह र मह रेक अस्तरी सेनाके को-को श्रामिकी प्रोक्ती परवार अभिनानुको नार कालोको इन्हरते केर प्रैरक र अस्ते साम रामा मह पर्वतर पुत्र हुन। स्थितनपूर्व पुर्वता हे उन्हे

मोर वेड्रा और जाकी कती एक इन्टि-वाची पुअलोने शैन-बीट काम सारवार पानि ताम । वस अधिनापुने कामा क्यून कर दिन और और है उसकी होगें पुनाकों तका प्रकारको भी साधार पृथ्वीपर शिव हिना । राज्याच्या सम्मानके वर्ध निव थे, थे भी राज्ये उपक होतार अवस्थित है। अहीने अपने महत्व, अनुस सहस्वत कार्यको प्रयोगे अधिकानुको छक विभा । यह देख दुर्गीकानुको ब्ला हर्ने हुआ; जाने नहीं राजात कि बंधा, अब से अधिकत् क्षाचेक्यों जीव गया। सिंह अधिवन्त्रे का सबस

क्वानीयका प्रयोग किया। यह अस्य संभोदी होते कसी

हरत पुरुषे कथी एवं, कथी सी और कमी हजाबी

र्क्क केन्सको जानकार देश हुआ बोला—'बीरो ! उसे गर ।

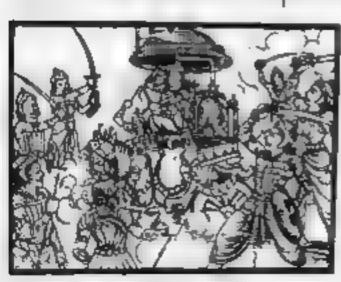
मेरे पाने इस अधिकानुबारे कोई इसी नहीं है। प्रवेश प करो,

में इसे बीते-भी पान्यु होता (\* यह बहुबर यह आधिवयुक्ते

संस्थाने हेशाओं हेस वह । अधिकादुने रक्तांकारकारी काल और प्रकारकारी कार्यों का राजकृत्यारीको नेविट करके उनके स्वीतिक सेनाई दूसके का करें। विकासिंह करूर, कारा, प्रदेशे, स्थापित, भूजारे तथा नक्षण बाट हाते। द्वार अधिकक्षे हुए हुने राजपूर्वको भाग गया देश इसीवन भागपीत हो गाना। रही, हाची, केंद्रों और फैलोको रजपुनिये गिरो देख क कोको का हुन अधिकपुरे पार आखा। का सेनोपे युद्ध किय गया। अभी क्षणधा धी एक नहीं होने पाना कि बैकड़ों बाजोंसे आहत हेम्बर क्वीभर भाग गया।

> कृतका<del>री करू — कृत । कैला कि तुस कहा</del> यो हे, अनेते अधियन्त्रा बहानी चेत्रामांचे राज शंका हु तथा साने

हेक । करावरे सुव्यापुर्वाच्या व्यापनाम अञ्चलकार है। मिनु निम सोगोध्य धर्मपर चरोता है, उनके रिजे बह



सन्त्र और वार्षोंके दुवाने दुवाने करके कुम्बार और विकास भी उसीकी हुई—स्वाध हम कावार विवास नहीं मालाओं से मिका महाक भी कहा क्रांते ।

संस्कृत् महरमका मरस्यन् कुर स्कारक आका और हती

मोर्ड अस्तुत पात नहीं है। सहाय है पात पुर्नेकर पान पात और सेमाड़ों राजपुर्वार पारे गये, तर सामा की पुर्वेत अधिकामुद्धे हैंको पात अवन विस्था ?

श्रीवरं वदा—न्याराम । तम तमन अवन्ते चेन्यामंति वृष्ट सुन्त गर्ने में, अस्ति कतार हो ची भी, प्रशेरणे नेपाल हो अस्ता चा और कार्नि पू रहे थे। प्रमुख्ये मीठनेपा अस्ता नहीं रह गावा था, क्रम प्राप्तवेची तैवारोंने ने। परे हुए वर्डा, निजा, पून, सुन्ना, सम्बन्धी तमा मानु-आन्त्रवेची सोक् बोद्यान सान्ने सुनी-बोदोंनी जानी-पानी सीन्ती हुए मानुनित्ते हुए निवास परे। वर्षे इस अस्तर हात्रवाच होपार प्राप्ती हैया हैया, अस्त्रवाच, पून्तक, कृत्वकार्य, पून्तकार, कर्ण, कृत्वकार्य और स्वयुक्ति—ने पान सोचाने परे हुए सम्बन्धिना व्यक्तिसमून्ती और सेदे। जिल्हा स्वीक्त्यपुने हुन्हें वितर अनेपारे



वार राजारे किनुता विका । केवल राज्यल ही जानी कार राज । पुत्रके केवले कार्य पर्वे पुर्वेचल भी तर्वेद जाना; विज कृतिस्तरीय गीड़े जाना व्यास्त्रमा भी तर्वेद पर्वे । अस सामने विकास अधिराज्यल वाल करहाना जारान्य विका । केवू अधिराज्यले जानेको ही जा ताल व्यास्टियको प्रकार जान विका और राज्यकाने जाराने व्यास्त्र विका । किर राज्यकाने व्यास 'गाई ! एक बार इस संस्त्राच्यो अच्यते त्या वेश त्ये; वालोक अभी तुन्ते परावेकको प्रकार कार्यो है । जान पुत्रके व्यास व्यास पुत्रक्ति नेतारे तुन्ते प्रकारेक क्षेत्र व्या है ।' व्या व्यास व्यास पुत्रक व्यासका, प्रवेदन पुत्रके त्या है कार्यकाने व्यास राज्यको पुत्रदे व्यासका प्रकारको कार्य अपन कर विचा । कुमार राज्यकाले पार देश रचेनोर्ने इक्टब्यक कर व्यास ।

भूते । इसने समक्त श्रुटीमोसे मुख्यस्था सङ्घ—'कर करते ।

इते हैं तथ होया, कृत, कर्ती, अध्यक्तमा, वृद्धान राज्य कुरुवर्त-भूभ कः पहारोक्तीने अधिकन्तुको सारी ओरले केर विरुद्ध । किंद्र अर्थुनकृत्याने अपने बीची वालोंने प्राप्ता क्रमंड का समझे पुरः पना हिमा और महे नेपसे मनावनी रोकवी और क्रम विमा। यह देश करेन्द्र और शिवन-करोचे साथ कावपूर्ण जानार क्रावियोची सेनासे अधिकानुष्या पार्न केश दिला। बिन्द को उनके स्तक बद्धा चळकः पुर हात। अधिककृते का नव-सेराका संदार कर हिल । जनगर, साथ अर्थुन्युन्तरका साथ-समुद्रीकी वर्ष करने रूपा । इतनेने भागे हुए होण आहे पहराबी भी सीहे और अपने क्युक्की केवल करते हुए अधिनक्युवर कर आहे । वित्र अपने अन्तरे कार्योगे का एक श्रहणकियोगो सेन्यवर क्राम्यको भूगोभारि पेरिस विका । किर असंबंध सम्बोधी क्यां व्यक्ते आने अंतर, काम, केन्द्र, बाह्, पुसुद्ध तथा क्रमानों भी कार कार्य । सभ ही आके का, नागी, कारीत और चेडांच्ये भी स्वाहरियों निय दिया। कार्यने



वित्ती है तेनके अधिकांक केन्द्र विद्युक्त क्षेकर कारणे स्त्री । का क्षेत्र आदि कः स्त्रार्थकांने कृतः अधिकानुको सेरा । का देख अधिकानुकै होनको कारण, सुद्धारको पीछ, कृतकांको स्त्रात्ती, कृतकार्यको स्टार और अध्यात्त्रकांने एस कार्यको स्त्रात्ता । क्ष्युक्तार, अस्त्रे कोर्यको वर्षि स्तृते-कार्य और कृत्वकांको आवते दुरोके देखते ने स्त्रो नार कारण । का अधिकानुको अस्त्रात्त दुरोके देखते ने स्त्रो नार कारण । का अधिकानुको अस्त्रात होत्रको प्रत्यकां कीर कृतकार्यने स्त्रात्त कार्य करे । इस अध्यार अनेत्र हारा स्त्रा ओरसे पीछित होते हुए वी सुरक्तानुकारणे स्त्र कोरसन्त्रे की स्त्राते कोरो, कार्या, कर्त्व क्ष्य कार्य करा । अधिकानुके की स्त्राते कोरो, कार्या, कर्त्व और संत्राधिको कारकार प्रकार निस्त वित्रा । स्त्राते हीर्य अभिक्ष्युके कुम्बारपुर्क प्रकारपार्क कार नेनेका निकर | राजस्तीका की का कर दिया, को इस्ते-एके अध्यासकृतका मित्रक: प्रानेद्वीये अधिकानुने अस्त्रों क्रमांने काम पान । अलो: बार्ने निकाल मुं. थे । इस प्रवास मुख्यानका बार्गोकी कार्यों हरते है कोसाराज्य हुए कर गय और वे का रूप-भूतिने । अनके चेकाओकी गति रोकावर राजपूति कियाने करा ।

क्षेत्रर कोसान्तरेकने <del>कार सम्बद्धर कुलने से सी और | पिर पने | साम ही आधिकानुने कहाँ का दूर हक्तर प्रकारि</del>

#### अभिमन्युके हारा कौरववीरोंका संहार और इः महारवियोंके प्रयत्नसे उसका वस

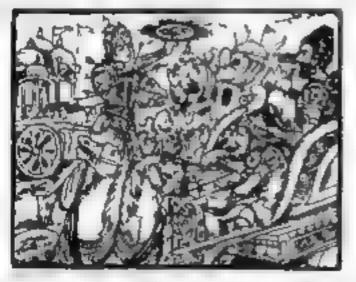
रहार करते हैं--अवस्थार, कार्य और अधिकानु होते परतार पुर करते हुए लोहलुहान हो गर्ने । इसके बाद कानीह D: पनी संस्थे असे। ये सभी विवेश स्थाली पुत बारनेवारी थे। विश्व अधिनम्पूर्ण वर्षे कोडे उद्देश मार्गायो समित ग्रह का विकासका हारे बहुवारियोंको की का-का बाद पासर बीद क्राव । अल्ला का कर्प अक्षान मा दूरत । प्राप्ते कह जाने मानगाओं दूरतो छः बारोरी पृत्युके पुजाने सेवावर कोई और सार्वकार्युक शर्वकेत्वके के कर रेराका। किर सरिकारक केल्क राज चेनके हुए। पान्य मानने केन्द्रे कर सारकर कारकर करते हुए विश्वास विकार हानेचे कुकाराओं पूर्ण सकार बार धालोंने पार बोडोंको, एकते सार्रांक्को और पानी सरिवन्त्रको भी पीन विकास सरिवन्त्रको भी एक कानोंने इ-इरकानो पुरस्ते कावत कार्यः कक्-'जरे ! हेत मिता से परचलती भीति यह क्षेत्रकर भाग गया, अस प इंदर्ज परंग है ? सीपानको बाद है कि हु भी सहय पानत है, निजु आप क्षुरे परिका की होईका।' का बहारत अले general gert per then unt meren, fing अवस्थान अन्ते तीन कालोरी को पास विकार कर जीवनको जन्ममानको जन्म प्रकार केर करके परकारे मेरित विकार प्रकार मेर आयो प्राप्ति से प्रका मारे । अधिकानुने कारणारी सामा स्थानकर उनके पार्चरकार भी। प्रारमिको भी नार सरवा, दिन का बाजोरो सरवाले भी मीना । राज्य का रको जानकर कुले रकवर का की । इसके का सुकाकुमारो प्रमुक्ता, कालेलू, नेकोन, सुकर्त और कृतियास-अन्य प्रति राजाजीको कर करके क्वानिको स्री क्रमोडे प्राप्त किया। क्रमुमिरे की तीर सम्बोडे सरिवाणुको वीववार एवंकिस्ते बद्धा—पेको, बह बालेके एक-एक करके इस्लोगोको कर का है, अब इन का लोग मिरायार प्रशासी पार क्रती :

सम्बद्ध करने क्षेत्रकार्यते बद्धा--'अन्तिकपु कारेके ही हम पन स्थेपीको कुमल रहा है: जन हमके मनका बोर्ड अस्य हुने प्रोत ब्याक्षणे ।" का महत्य कर्नार क्रेसने प्रात लोगोंने क्या-'का राज्यस्यकारी कर्ती से देखे. क्योंको क्या और प्रोडो स्वय का रक्यांने केना हरना वन्त्रकार कर है दिलानों पहले हैं, या सर्व कई है, इसका पार भारी कारता ! सुन्यानगर अपने कारोंसे पुत्रो का-विकास कर पता है, भेरे जान महिंदा है को है, सो भी क्रमण परकार देशकर पूर्व को की केता है। अपने क्रमोन्स् कृतिक स्थान का समझ विकाशोंने समोको को सर तह है। इस समय अर्थनों तथा इसमें कोई अन्तर की विकासी देव ।' यह कुरकर कारी व्यक्तिकाके कार्योपे आका क्षेत्रर पुरः केन्स्री बाह्न, 'सामार्थ । श्रीपनम् मुक्ते बाह्न कहा है हतः ो । को स्थानपूर्वन एक एक शावि—को प्रोक्ता अनीवक एक है। इस देवारी कमानी सीचे बाज मेरे सरको भीर सको है।

वार्गनी का पुरसा जानमें हेन है। यह और व्हिंदी केले—'एक से का काल सम्बद्धानाः क्षत्रं से होत नेपालन विकारिकार है, कारे प्रत्या करूप वर्षक है। प्रापेत रिका अर्थनको को की कारक-बारवाकी जिला विकासी की. विकास की पान पानानी विकासके पढ़ा भी स्वानका है। अंका पानी इसमा कहा और अवहार कभी का रहते, बागातेर सारकार केंद्रे, कई प्रकृत और सार्वित गए हिंदे का सकें, से काव का सकता है। एकान्यन । हम को बनुबंद हो; नहि कर सन्ते को पढ़ी बढ़ें। इस उच्छाको अरक्षण करते हो रहाते पणको और पैकेले बहुत करें । यदि इसके हावने बहुत सह ये देवता और असर भी को जो भीर सबसे (

अक्टोबी का सरका करी करोड़े अधिकाही बर्जनो बाद प्राप्त । प्रश्नमंत्रि इतके चेत्रोंको और कृतकारी कर्नक्रक तक सर्वक्रेको गर क्रमा । को वन्त और राज्ये की देख काढी कारवीरकेन को प्रीकारो जानर पाण काराने रागे । एक और हः 'बहरूबी थे, कारी और अवस्था अभिनामु: यो भी में निर्देशी कर अवेती कारकार कमार्थ कर रहे थे। क्या कर गया, राजने हरा केना पहर हो भी उसने उपने कांगा पातन विज्ञा । हाथने क्या-सर्थार रेकन का नेकनी कारण अन्यासने उपल पहा । अपनी सर्विया-इस्तिने अभी का प्रकारी भीते उपर महारा ही या था, स्वयंत्रा होनावानी 'कुर्या ज्यान कारणे कारणी स्वयंत्राचे हुक्ते-हुक्ते कर हिने और कारी कार क्रिया-रिक्ष कर है ।

त्रण आने इसमें कानात भी न हो, उत्तरे अंगोधे कान मैरो हुए थे; जारे स्थाने का अन्यत्रको अध्य और कोमने भागार च्या इसमें तिने केनावार्गन इस्ता । का इसमा का सक्तारी पराकर, निम्मुकी भीति कोमानवार हो का या। को देशकर राजातीन कहा कर गर्थ और सबसे निम्मार अधी कानो इसमें-इसमें कर विने। का सहस्ती



अभिन्नको सङ्ग सही तक प्रसमें तो और अक्षतानात सर्वाचे। सको पूर्व कान्ते समान तक नक्षत्वे आते हैवा



अंधानक रकते आरक्षर तीन कदम प्रोडे हुट गया। गदाबर्ड कोटले अस्ते कोई, पर्युरक्षक और सर्राव मारे गये। इसके बाद अधिराम्को सुन्नको हुए कारिकेकको छन्। उसके अनुकर स्वकृतर गर्मकारोको सीनके कर उत्तरा। किर इस काराव कार्यकोको कम अस्त केक्स महार्थिकोका संहर कर इस प्राचिकोको कम अस्त । उत्तरक्षात् दुःकासन्यकुतारके वर और कोड्रोको कमारे कुर्व कर अस्त । इससे दुःकासनके पुल्लो कहा होत्र दुक्त और वह को गहा उद्यासनके पुल्लो कार्य होत्र दुक्त और वह को गहा उद्यासनके प्राचने क्यान अस्त कारी हत्त्र होत्रोको अस्त्रामको कुर्वा कार्य अस्त कारी हत्त्र होत्र को हुःकालक कुरवर कारो क्या और अधिराम्यू अस्त्री हत्त्र हो दह का कि

> प्रकार आवारणे वेतारा अधिवानु पुनः वेद्रोत हेन्सर गिर यहा। न्यापना । इस प्रकार ग्रह इक जारणाओं जहार गिरो हुए व्यापनी भीति का हुरवीरको रजपूरिये गिरा देश अवारिश्रवे को हुए जानी भी स्वाच्यार काने को । सबसे इक जारने कहा, 'होना और वार्ग-नेते हा उन्हार व्यापनियोगे जिल्लार इस अनेते। वार्म-वार्ग की जिल्ला इस अनेते। वार्म-वार्ग की जिल्ला इस अनेते। वार्म-वार्ग की जिल्ला हुन अनेते। वार्म-वार्ग की जिल्ला हुन का नियम वार्म-वार्ग हुन जवार यहा हैन आवार वार्म-वार्ग वीक्र-जीको जहा हुन हुना और यायकोते। इसमें कही बीक्रा हुने। राज्य ! अधिवानु

उसरे करके बरस्कायर गाउ मारी। उसके

नावी मात्रक था, पुनवस्थाने सम्बद्ध कार्यक की हुआ हा। इस कीरके गरी ही पुनिश्चितके देवले-देवले संस्कृत साम्बद्धानेय काम करी। यह देख पुनिश्चित का मीरीहे



महा—'मेरो ! युद्धने मृत्युवन अवस्तर आनंतर भी अधिमन्तुने पीठ नहीं हिलानों है। तुन मो अनेन्द्रे भरीत भीता रको, उसे पता। इमलोग निश्चम ही प्रमुख्येगर विकार पापेंगे।' ऐसा बद्धकर धर्मछक्तने अपने दुःती हैंडिक्कोच्य फोक तूर विका। शकर ! अधिमन्तु शीक्तमा और अर्जुल्धे। समान परकानी या, यह दस हमार राजकुत्वारों और बहुत्वी। मौतन्यको सरकार नहां है। इसमें निष्का भी सीह नहीं कि वह पुरस्तानोंके अहम लोकोंने तथा है, अवः वह कोन्ड करने बोन्य नहीं है। महरूप ! इस जमार इसलेग राम्हरोते इस हेट्ट मीरहरे गरकर और उसके सामीने पीड़ित एवं स्पेट्ट्यूमा है सामेकार अवनी क्ष्मिनीयें को जाने शिक्षिकों जा हो है। जा समय हेट्ट मोद्राजीने राज्यों की कहा ही की, को गरकों कारन मकंकर और दूसर की। सामूचिके मध्यों मार्ग को की जीवित और मुख्य समयों अपने प्रमाने मार्ग का ही भी। सनेकों बढ़ मार्ग नमा हो थे; साम्ब्रस्ता है होनेने कर सामूच होता था।

#### युधिष्ठिरका विरूपि तथा व्यासजीके द्वारा मृत्युकी उत्पक्तिका वर्णन

सक्रम करते हैं-व्यासक ! महाचीर अधिराज्यके आहे व्यक्ति व्यक्ति सभी पायक-केन्द्र रच होत्, सहस्र कार और क्यून रेम्बक्ट राज्य पृथिदिनके चारों और की एके एक अधिनम्पूर्को सन-ही-का बाद बरले हुए उसके पुरुष्ठा कारण करने रूने । भार्त्वा 🖎 अधियन्त्र-वेता और करा एक, 🖦 भीजनार शना युधिहिर ज्यून दृ:बी हो को और विश्वाप करने संगे—'मेरे गौरवित होली विश्वक कर्य क्रोफ कर क्रम रूनी जनार को केवल नेश किय करनेकी इसको क्षेत्रके क्षेत्रं पद्भवे था कृता बुद्धवे विकास सामने अस्तर सहे-सहे धनुर्वर और असमिकाचे कुल्ल और वो पाप को, विस्ते इमारे बहुर इन्हु इ:सालाको अपने कार्यके होता 🛍 कर मनाम क, यह और अधिकन्यु होन्सोनाक्नी बहुसहन्तके पार क्रेकर भी व:कासन्त्रकारके पास जा कृत्को जात हुन्छ ( धुन्याकृष्यकं को सानेने बाद अन में उन्हेंन शतका सुमानको कैसे पुर विकार्यना ? इन्य । यह वेदाने अक अपने चार्ने बेरेको नहीं हेक सबेटी । अध्यान और अर्चनको पह कुरूब समाचार केने सुराकेश ? जब ! मैं फिल्म निर्वेषी है, जिस सुकुषार कारणाओं चोकन और क्रवन करने, स्वारीक करने तथा कुरक-वक कानने अते रक्तक भागिये था, उसे मैंने बुद्धमें आगे कर दिशा । अधी से बह तरुप कुमार युक्ती करमणे पूर प्रधीन भी नहीं हरत का. बिर केमें सुकल्पे लौटन ? अर्जून सुद्धिपार, विस्तेष, इंग्रेक्सील, समामन्, करकार, सरकार, क्र्रोको साम क्षेत्रको, चीर और समयरकार्य है, क्रिक्ट कार्यको वेक्तारचेग भी उन्हेंक करने हैं. के अञ्च कहानेवाले कहाने भी अधन क्षत्र होते हैं, उन्होंके करकड़न् युवको भी इसलोग रक्षा न कर प्रके । कर और पुरवाधेंद्रे में अवता करी की रस्ता वा, वर अर्जुनकुमानको करा एक देशका अर

विकास से पूर्व अस्तात व क्षेत्री; अस्त्रे क्षिप्त पृथ्वीका राज्य, जनाम असमा केलाओंचे सोक्ष्या शक्तिकार से पूर् रिजे विक्री कारणा नहीं है।'

वृत्यां स्वयं वृतिहित क्षेत्र इस प्रकार विलाय कर हो है, जरी करण व्यक्ति केक्सालाओं वहाँ का रहेते। श्रीविहिते उनका व्यक्तिक साधार विश्वा और क्ष्म के आसापार विश्वास्त्रण हुए हो आधिवान्त्रुकी मृत्युके सोकारे अंताह होता उनमें क्ष्म — 'मृतिवार ! सुन्यात्रात्रण अधिवान्त्र बुद्ध कर हुए या, जर सम्बन को अधिकों अस्त्री नेपारिकारे केरकर कर करण है। की अस्त्री कहा था, 'हमानेग्रीके किसे बुद्धारे मृत्यात्रक क्ष्मात्रा करा हो।' जर्मने केरत ही क्षिया। जल कर्म भीता बुद्ध करण काहिते किसू स्वार्थनेत्र के क्षमित साथ करणात्र करणा काहिते; किसू स्वार्थनेत्र के अस्ति साथ करणात्र करणा है, यह निराम अनुविध है। इसी संप्रका मेरे इसमें क्ष्म कंपाल हे रह है। धार-कार आधिके वित्राह होने सन्तर्भ है, मनिका भी साथित नहीं क्षितात्री'।



व्यास्त्रमें कह-मुधिशित | तुम को व्याम् बुद्धिकान् और समस्य कार्योके हता। है । युक्तरे-जैसे पुरुष संबद कार्यवर मेरित नहीं होते । अधिकान् बुद्धाने क्यून-से बीटीको कारकर प्रीत पोद्धानोंके समान परकार्य दिस्तका कार्यवेकमें गक है। व्यास । जिन्नाको विकानको कोई द्वार नहीं स्वाप्ता । मृत्यु तो बेक्स, मन्दर्य और द्वारकोंके पी साम से नेती है; बिर क्यूनोकी से बात है क्या है ?

नुर्विद्यारं कार—पूर्ण | ये सूर्यार राजकुरार प्रयुक्तिंत सहत्वे प्रकृत किराहके मुख्ये को जो । कही है, ये वर गर्म: सिंह्यु जुझे प्रवेद्य होता है कि इन्हें 'बर गर्म' देश कर्म कहा सरहा है। तृत्यु किराबी होती है ? कर्म होती है ? और पा बिराह अंकार प्रकार स्वार करही है ? तथा केरो यह कीन्यों प्रशासकों से नाती है ? विकास | ये इस बारों मुझे कार्याने ।

व्यानार्थने व्या—राज्यं | कार्यक्रास्त्रीत हुत विकास वृक्ष वार्णीत इतिहासका कृत्रात विकास कर्ता है । इसके सुरकार दूस विकासकों कारण हैनेक्सो हु-क्स्टे कृत कार्योगं । यह व्याक्षण राज्या कर्योग्डे यह कार्येक्सन, उन्तर् क्यूने-कारा, वीकानार्थन, असन्य व्यूक्तकारी वधा वेदान्यकारे इस्तर क्षित्र है । सामुकार्य कृत, राज्य और स्थानी क्यूने-कारे क्षित्रेको प्रतिदित कार-कारत हुत अवकारका क्यून कारत क्षात्रिके ।

प्राचीन कारावारी सात है। सारावृत्तने कृत अन्यानन पानके राजा में। उनकर समुजीरे जातान्यन किया। एउनके कृत पुर का, जिल्ला यात था हरि। या कराने जाराव्यके जातान का क्षीर पुत्रने इसके सारावः। उस पुत्रने कृतार वरकान विस्तावर अन्याने यह समुजीके सारावे कारा व्यक्त । इसके राजाको कहा केया हुआ। अनके पुत्र-केवाच्या स्वयंत्रका सारावे वैद्याने पद्धान्त अनके। राजाने करावा व्यवंत्रिय पुत्रन सारावे वैद्याने पद्धान्त अनके बाह्य—"अनवाद । नेथ पुत्र इस करित विष्युक्ते समान कार्यकानम् एवं म्हानावी था। अनको सहानके सार्वादेने विद्यालय पुत्रने मारावाद है। अस में बाह क्ष्या-के सार्वाद और सुरुव कारात है कि 'यह पुत्र कथ है ? इसला कीर्य, यस और प्रेस्त केवा है ?"

राजार्थं वह बात सुरक्त नार्वारे बाह—हाक्य् । आहिलें सृष्टिके स्थान वितास्त्र इत्यानीने जन कार्यून प्रशासी हुई। की तो जनका संदार होता न देश आसी दिखे से विकार कार्य रागे। सोको-सोको जन कुछ सन्दारों न अवस तो उन्हें कोच क्षर गया। अन्ते जन प्रशासी कारण जान्याद्वयों नहीं प्रकार हुई और बह सन्दार्ग दिस्तानोंने केंद्र नवी। जनकार अग्राने क्षरी अग्निसे पृथ्वी, आकारण एवं सन्दार्ग करकर कन्यूको



आवन्य आग्न्य वित्या । व्यादेश स्वयंत्रस स्वयंत्रीय प्रत्याने गर्म : इंक्स्पानिक आगेत्रर प्रमाने विश्वेद स्थिते स्वयंत्रीले क्या—'केट ! तुन अगन्ये प्रकारो अन्य हुए हो और पुत्रारे अन्येद्व क्या चारे केन्य हो । क्याओ, तुन्हारी गरीय-प्री स्थानन पूर्ण करते ? तुन्हें को भी अपनेत्र होगा, उसे गुर्व कर्माना ।'

कारे वहा—अभी । आवने कम प्रकारके प्रतिन्दियों कृषि की है, किन्तु के सभी अबन आवनी कोच्यामिते हक के को है। उनकी नक देशकार मुझे क्या आती है। भगवन्, ! अब से उनका प्रतार क्षेत्रके।

अप्रयोग नहा—पृथ्वेदेशी सम्मुके भारते पीड़ित हो भी भी, इस्तेने चुके संद्राके निन्ने प्रेरित किया। इस विकास कहा निकार कार्यकर भी क्या कोई उधाव व द्वारा से भूते कहा क्रोम मह सम्मा।

साने वदा—भागान् १ संद्वारके विश्वे आप कोश न करें १ जन्मपर जला हों। जानके स्रोवसी जबाट हुई आग पर्यंत, यूश, नदी, कावजान, हम, प्रांत आदि समूर्ण शामार-जन्मपान कावजाने काव गरि है। अब अववाद स्रोत सामा हो जान—बाहे काटन पूरी देशिये। जनाके दिलके दिने कोई देश राज्य सोविको, विस्तो हम प्राण्यांकी बाग वर्ष।

करानी कालं में—संस्थानीकी बात सुनकर उद्यासीने प्रशंकी कालाल करनेके लिये का अधिको पुन: अपनेते

सीव कर विका । को और कसी समय करको सब इन्हिकेट क्य को प्रमाद क्षाँ : अल्बा रंग का बातल, त्यल और दीख : इतकी निक्षा, मुक्त और नेज भी साल थे। अक्रवांने को 'मृत्यु' अञ्चलत पुरवारा उर्वेर बताया कि 'वैने स्वेक्टेका संस्कर



करनेकी इकार्य क्षेत्र किया का, अधेने तुन्हारी अधीर हां है: आ: तुन नेरी आवाले इस सम्पूर्ण कराबर कनक्षा अव क्षते । इस्पेसे तुष्क्रमा कल्यान क्षेता ह

संक्राजीकी ऐसी आक्र सुरकर का की जरकत सेकते यह गयी, मिरा कुर-कुरकार केले सामें। सामग्री अधिकेले जो असि इस यहे थे, करे इस्तानीने स्वयंत्रें से रिश्व और को भी सन्तरना थै। तब मृत्यूने बद्धा-'बनावन् । आयो भूतो ऐसी जी क्यों बनाय ? क्या में कर-बुक्कर का महिनकारक करोर सर्व करे ? में भी करते उसने हैं। पेरे समाने हुए लोग रोवेगे; जा दुःविक्योके अन्तुकांसे जुड़े कह धन है का है, इसीरियो में आवनी सरको जानी है। यह बर रीविये, में जानसे बेनुकासको जाकर जायको 🛊 माराजनामें संस्ता हो शीह जनका करोगी। ऐसे-किसको रवेगोके जान सेनेका काम सुकसे नहीं हो सकेता। जुड़े इस पपारे प्रचलने ।'

व्यक्तभी का:--पूर्ण ! प्रकारत संकृत कार्यके विश्ले ही तुकारी सहि सुं है। बाजो, तब प्रकास कर करते सं । अतमें कुछ निवार करनेकी आवश्यकता नहीं है। देश हैं | ब्रोधको स्वत्यकर अन्यस्क्रपाको आनियोका अन्यस्क्र

क्रेंच, इसमें क्रमी क्रीक्ट्न नहीं हो सकता। तम मेरी न्यास्थर पास्त्र करे । इसमें शुक्रण निव्न की होती ह

व्यानीके देख व्यानेता का कथा प्रकार प्रशासी प्रतिहरू विक्रो किया ही वन करनेकी हकारों केनुकाशकों आहे. क्यो । व्यक्ति कुमार, केवार्ग, देशिक अर्डेर प्रस्थावार अर्जाह क्षेत्री क-कार जयनी क्षेत्रके अनुसूत्र करोर निवर्षेका ध्यान्य करती हुई करित सुख्यने करी। 🛶 अन्तवस्थाने केवल ब्यूजर्मने है सुद्ध भरित रसती थी। अस्ते अपने professoria Personalia statu des Persona

एव ब्रह्मानीने प्रतक्ष धनके अतमे ब्रह्मा—'पृत्के रे बलाओ से बड़ी, विकारिने वह अरुप करोर तर कर रही हो ?' कुतु केर्स-'जने ! मैं आको नहीं कर बाश्री है है। Parties कर र करें। युवे अवर्थने बड़ा पर हे का है. इतिराजे काचे सभी है। चनवन् । सुद्ध यावचीत अवस्ताको तार अध्यक्त है। मैं एक विश्वास की है, जान दुःस या को है अपने कृपाओं भीच प्रतिने हैं, जुड़े हरण केरिके (" प्रकृतिको पाहर, "कान्यानी ! इस प्रधानार्वक विकास करनेको सूची पान गाउँ सर्गन्छ । वेदी बाल विकास सर्वा विकास नहीं हो सामारी । इस्तियों दूस पान अध्यासके प्राथाना मान वाले. समायमध्ये भूनो धरिक बनावे प्रयोगा । स्रोक्सवास, का तथा तथा-तराकी भाकिनों कुन्तरी सहाविका होती। किन देवलाकेन तथा बै—सभी तुन्हें बस्तुम हैने।"

क सुनवार पृत्ये सहाराजि कालोवे प्रश्नक होन्छार जन्मन किया और इस बोहबर बढ़ा, 'अमे ! परि यह कर्म मेरे किया नहीं के समझ्या से आपकी आक्रा विरोधकों है। अब एक बात बाहरी है, उसे सुनिये। स्पेय, ब्रोब, अनुष्य, ईम्बी, डोड, मोब, निर्शनका गुळ परस्या बहुब्रुवार केरण — के नाम प्रकारके केर के अधिकीकी केरण नाथ करें (" सक्रामीने कहा—"मुख्ये ! ऐसा ही होगां। तुन्हारे जीवुओंकी ही, किन्दें की इसमें से रिन्स का माबि क्षांका पालपु व्यक्तियोक्त नात क्षांची। तुम्बे याय भूती लनेन्य । अतः हरी पत " तुप कायना और व्येषक्य साम करके राज्यों क्रिकेट अधीका अधारत करो । ऐसा करनेसे तुन्दे अक्षण धर्मधी आहि होती । जो निकाले आवाजारे हते हर है, वन क्षेत्रोंको जनमं हो फोना। अधानको ही आसी क्षानेको साम्युक्ते हुनते हैं।'

कर वें करते हैं—का कृत्युक्त करियों कीने इक्काओं उन्देक्त क्या निवेद्यः उनके आपके च्यते 'बहुत अका' मक्कार अस्की जाता सीकार कर सी । तबसे यह बदाय और कारिका होनेवर करके प्राणीको हर हैवाँ है। यह प्राणिकीको मृत्यु है, इसीसे व्याधियोगी जनीत हाँ है। व्याधि कहते हैं रोपको, निकार प्रीय रूप हे जाता है। अन्तवात स्टोपर सभी प्रारंभवेकी पुन होती है, इसरिजे कनर् । तुर मार्च भोकः र वरो । अस्तरे प्रमुद्ध सभी प्राची नस्सेक्टमें जाते 🛊 और क्योंने प्रित्यों तथा क्रियोंक क्रम के नहीं रवेट आहे 🕏 : हेक्सा भी परस्थेकारे जाने कार्नियोग पूर्व कार्यंत्र किर हार मार्वकेको कम होते हैं। इस्तरिके हुन्हें अपने पुर्वक वैको क्षेत्र नहीं करण कविने। यह कीनेको प्राप्त होने कोना रमणीय क्षेत्रोमें प्रहेमकर वहाँ क्षार्थिक आरम्बाक इसकेय बारता है। अक्रमणीने प्रायुक्ती प्रधानका संख्या बारनेके मिन्ने सार्थ ही करना निरम्ब है: अतः ना नाम आनेतर समझ संबाद करती ही है। यह जानकर और पूरव परे हुए क्रानिकोंके हैंको क्षेत्रक नहीं करते। न्या स्टार्ट कृष्टि निकालको करानी हुई है,

वे क्षेत्रकानुस्तर प्रस्ता कार्यक्षा करते 🖟 इसलिये तुम अपने को हर पुरुषा जोक जीत ही त्वन से।

कारणे वहतं है—नातार्वाकी यह अर्थपरी वात सुनकर क्क अक्रमाने काले बद्धा-'भगवन् ! नेश लोख दूर gar, अब में अला है। आयके मुलसे यह इतिहास सुरकार वै कुळाई हे क्या, अवस्था अन्तर है।' राज्यकी ऐसी संक्षेत्रको सामी भूतकर देवनि कादमी होत कदनकारो क्यो को । एको कृषिक्षिर । अन्य अवस्थानको सुनने-युनानेको पुरुष, पञ्च, अनुष्, कर सक्त कार्यको प्राप्ति होती है। बहारबी मानिकम् मुक्तने बकुर, सरकार, गदा तका प्रक्रिको अपूर करना हुआ कुनुको उत्तर हुआ है। यह क्यान्सका निर्मात पुत्र का और पुनः ककारों हैं। स्थेन हुआ है । इसरियों तुम कैवें करण करे और प्रचार सामका पाइकेको साथ है होता ही पुरुष्टि विन्ते विका के मान्ये ।

## व्यासजीके द्वारा सुञ्जय-पुत्र, मस्त, सुहोत्र, दिन्नि और रामके परल्प्रेकगमनका वर्णन

कृषिक्षीरने कहा—मृतिकर । प्राचीन कारानेत कृष्याना, कारणाई एवं गीरवासको स्वार्थिकोत कार्वेक वर्णन कर्त हुए पुनः अपने प्रधानी प्रकारोत्ते जुले सामान्य होनियो ।

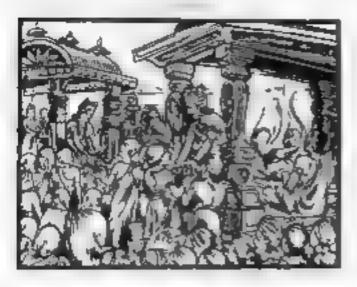
मध्यक्ष क्षेत्रे—पूर्वकाले एक क्षेत्र प्रकार राज्य है, क्रिके क्रमा श्रम वा सम्बद्धा का समुद्धा का हुना ते क्षमती हेपपि जाना और पर्यय-न्ये व्यक्तिके निवास है राती। एक सामग्री कर है, ने क्षेत्रों खाँव राजा बुक्रमारे Breifeit fied meit ur auch uneb wem feften; आनिक-कामर विका और ने भी को अन्यानी राज श्वकदर्शक सर्थ रहते उस्ते ।

श्रुक्तको कृत्वी अधिकाम थी, उसने उसकी प्रक्रिके अनुसार प्रायुक्तिकी नहीं सेवर वर्ष । ये सम्बन्ध केंद्र-केंद्रपुर्वेद अता को तम और काव्यापने हमें कुनेवाले थे। क्यापी सुन्ताने अस्त हेक्त का स्थानोंने कर्तनीने सह-'भगमन् । आप तथा सुसुषको उसको हुन्हको अनुस्तर 😘 प्रदान को र नाव्यक्षेत्रे 'तकता' सक्रवर शहरको सहस्त 'राजमें । प्रभावनारोग आधार प्रमुख है और आवको पुत्र हेना बाहों है। अतः जायका कायाना हो, जाय केव पुत्र बाहरे हों, असके दिखे कर जीन से हैं

माराजीके देशा सङ्गेयर समाने प्रथा जोक्कर कहा, 'माप्यन् ! में ऐसा पुत्र बहुता है जो स्वयनों, नेजनके और क्युओको कानेकारा है तथा किसके पर, पूर, कुछ और मसीनं भी सुकर्णनम हो (' राजानते देशा ही दूस हुआ । आकार

क्षम प्रकृत्युक्तके । अस्य काम्युक्ति राजाने कर निरम्प अन करें रूपर। अधीर अपने पहल, प्रधानिकार, विशेष प्रमुक्तिके पर, पर्तन, विक्रीने, यह और चोजनका आहे। क्रमी आवश्यक सम्परिकोको होनेका क्रमा रिमा। कुछ कारके पहल राजके कारके हुँहें को और राजकुरार शुक्रमेक्क्रीनीच्के कार्यक्रक प्रथमिक संभागों से गये। सुवर्ण करेका जान से अहे जार नहीं का, इश्तरियों का जुलाने राजकुम्बरको नाम कुरना । निवर कुरका कुरीर पारकुर केला, नियु कुछ भी बन नहीं निरम । यह दहके बारा नियान गर्ने में बहु कर जात करानेशाक बच्चन भी नह से गया। केनकुर अकु तर अञ्चल एककुमारको मारकर कर्प भी अपनाने स्था-विकास ना है गर्न अनाने के पानी असमान सम्बद्ध परवर्तने परे ।

राज्य अपने को हुए पुरुषो देशका चहुत दुःशी हुआ और क्यी करणांके ज़ाब किलान करने लगा । बहु समाबार पायत केली कमाने व्या दर्शन क्षेत्रा और वाह-"सहस्य ( अपनी अपूर्ण करपानरे दिखे तुम भी तो एक दिन बरोगे, फिर करनेके निर्म इतना कोक कमें ? औरोकी से नात है कम है, अभिक्रिक्ट कुर राज्य परद भी बीचित नहीं कु इसंत। क्लान्सीको स्वापक्षीर क्षेत्रेके कारण संस्तीन राज्य मस्सते पत्र कराना 🛍 । चनमान् इंकान्ये राजनि मरावसो सवर्गका एक निर्मित्वका अञ्चल किया था । इनकी बहुत्वकाने कुछ आहि देख्या, बुक्रपति साम समस्य प्रमापनिषयः विरामधार है।



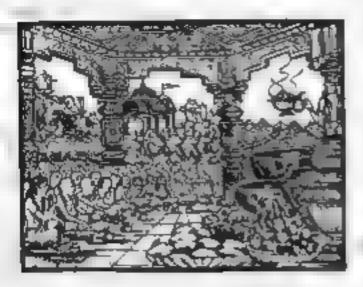
सनमें सोनेके जगर और महारिक्ष रहते थीं। मेंच हार्योष वस्तुकोगी वर्ण करते थे। रहम-में एक-एक सोसकी त्यानी-वीड़ी शास्त्रियों भी, इसमें की सुकर्णन्य मगर और कहा है। इस सबसे देखकर समायों नहता है। मा अवार सुकर्णन्य इसमें यह दिखा और मा अवार सुकर्णन्य इसमें यह दिखा और सा अवार सुकर्णन्य इसमें यह दिखा और है। समाय स्थापने एक इसार अवार्षक, की स्थापना क्या मूल-से सीक्षणा महोत्रा स्थापना किया था। प्रस्ता । में सुक्रेय की मुक्ते और तुम्बर सुक्ते सर्वा थेड़ थे, सिद् मुक्ते और तुम्बर सुक्ते सर्वा थेड़ थे, सिद् मुक्ते और तुम्बर सुक्ते सर्वा थेड़ थे, सिद्

बहुत्वा सारा कायान क्रोनेका बन्त हुआ का। इनके बहुति प्राप्तकोश्यो क्या. सहै, भी, मन्, प्रक्रिका प्रश्नकोश्य तथा प्रकारमार क्या और जायुग्य भी दिने जाने है। स्थानी बार्च करा (पान) केवत रावेद क्येक्नक करन वाले के और विश्वेदेश प्राथमात्र थे । अपूर्ण देखना, स्त्रीव और विश्लोको इकिन्द्र, बाज् क्या लाखानके क्रम तुत्र किना कं र प्रत्या. अतरम, करमान तथा सुकर्णगरित-यह समार वन अपूरि क्राह्मनोको क्रेक्सनो यन का दिना था। इन्ह भी उनका भाग सकते थे, इनके एउकने प्रमान्ये देग-नवर्षः नहीं स्वाती थी। में बड़े प्रकार में और सुरकारोंने जीते हुए अकृत पुरुवरोध्योको प्राप्त हुए थे । राजा काराने शराकारकाने कारार प्रमा, कर्मी, वर्गकरी, पुत्र और व्यक्तिके जान एक क्यार क्ष्मंत्रक राज्यकासन किया का। सुक्रम । ऐसे प्रशास राज्य भी, जो तुमरे और तुम्हों काले बहुत बढ़-बढ़बर थे, बाँद पुन्तों की का एके से हुन्हें की अपने पुत्रके रीजो होना औ करना कारिये।

ज्ञानांने पुरः वदा—एका सुद्रोतको भी मृत्यू सूनी नकी

है। मे अपने सप्यक्त अद्वितिक मीर है, देशान भी अपनी और
अदिव अध्यक्त नहीं देश कवाते थें। में प्रधानक प्रत्यन, वर्ण,
हान, जल और समुजीयर किया कामा—न्यून समयो
करणाव्यकारी सप्यक्ती थे। वर्णोंने देशताओकी अध्यक्तन करते, वांगोंने समुजीयर विवयं पाते और ज्ञाने पृत्योंने समजा क्यांको ज्ञान रवाने थे। वर्णोंने प्रतेषक और सुदेरीका नाम करके इस सम्पूर्ण पृथ्लेका सन्य विवयं का। उनकी अस्ताराको निर्णे बादानोने अनेको स्वयंत्रक उनके राज्यों सुदार्गांकी वर्णा की थी। वर्णों सुवार्गांको प्रतियों काली थी।

करायी किर व्यापे सर्भ-एकप् हे क्रिपूर्वि सम्पूर्व प्रभोको करहेको पति स्थेट सिया छ, वे असेररकु राजा रित्ये। भी वर्ष से । अनुष्ये सन्पूर्ण पृत्योन्हों प्रीतकार अनेको अवनेत पा किने में ( अपूर्ण का अपन अवस्थित द्वार की थी। स्थव ही हानी, खेडे, यह, यान्य, यून, मी क्यारे, येड जारिके स्वीत अनेकी भूरत्य प्रमुखीर अवीप विसे थे। बरातो हुए केवले किरानी चाराई गिरती हैं, आवश्याने किराने नका दिवानों के हैं, न्यूनके कियारे नितने बालके करन हैं, नेकार्यकार निवाद विकासकोचेंद्र पुरुष्के हैं और प्रमूखें निवादे क पूर्व जानका जीवा है, कानी गाँध क्रिकिने प्राधानीको सन्तर्वे औ । असल्योंने भी दिलीके समान महान् कार्यभाष्के क्षा करनेकार कोई दूसरा महत्त्व पूर, गरिम और वर्तकाने को जी देखा। उन्होंने कई का किने, किनमें अधियोकी कृत्यूनी कामराई पूर्व की बाती की। इन बहोने प्राथम, अक्षा, मूट, प्राथमियारी और प्राप्ती इरकम—पे सब बस्तुर्द सुक्लेकी बनी भी। पहके माहेरें हर-क्षेत्रे को-को कुन्द को रही से तथा गतिने बहती कुरी थी। युद्ध अवके कोतीके एकन देर राजे दही थे। यहाँ कार्क देनों केनल की कही की कि 'सकने ! सार करे और विसादी जैसी पनि हो, जाने कनुसार जाएकन लेकर कार्य, मेंओ (' कार्यान् हिको एका हिस्कोंट पुरूकार्यहे जरता होकर का वर दिया का—"एकर् ! सहा दान करते खनेका भी क्ष्मात कर और नहीं होगा । इसी प्रकार सुन्हारी अक्ष, मुख्य और कुल्याने अक्षम होने । तुस्तरे महनेके अनुसार ही सभी प्रान्टी सुमारे प्रेम करेंने और अन्तर्में तुन्ते काम खेळाडी आहे। होगी।



हुन जनम नरेंको जास करके राजा किन्ति श्रमण आर्थन दिव्य सोकाको करे गये। में दुन्तो और तुक्तो कुन्ते की सद्दार पुरवाला थे। का वे भी पृत्को की का राजे से तुन्ते सामे पुरुषे रिन्ने सोक नहीं करना कविने।

स्वार । यो जनागर पुर्णा प्रमाण केन रंगली थे, वे स्वारण्यका राज भी गरमकालको करे गये। ये जनाय किस्सी से और उनमें अलंकम गुल थे। जनमें विकासी सामाने उन्होंने वर्णकों जीवा और गर्ज रव्यानको प्रमा सीद्या वर्णका वर्णकार किया था। वर्णकानो राज्य करावी सुनियोगी राज्ये किये उन्होंने कीवा क्यार व्यानकेक क्या विद्या। वहाँ एसे समय है स्वारणकातीय राज्यो कीवो सामान राज्या सामय राज्याने उन्होंने वर्ण क्यायका है। तिद्या। वहाँच राज्य रेजना और देजोरो भी अवस्था था, किय की साम है उन्होंने सीचार कीवी कीवे वर्णकाता था, विद्या सुनी राज्ये स्वारणकात्रीय क्या सामा । केवावांने अवसी सुनी की, राजे संस्थाने उन्होंने विद्यान सामान्य सामान सामुनी प्राणिकीयर राज्य की । वर्णकृतिक प्रभावार प्रमाण सामान सामुनी प्राणिकीयर राज्य की । वर्णकृतिक प्रभावार प्रमाण सामान सामुनी प्राणिकीयर राज्य की । वर्णकृतिक प्रभावार प्रमाण सामान सुनुनी प्राणिकीयर राज्य की । वर्णकृतिक प्रभावार प्रमाण

सीरमञ्ज्ञानि पूरा और कासको जीत दिन्या वा। सम्पूर्ण देशवारिकोके केयोको न्यू कर दिना वा। वे सारपालका गुलोसे सम्पन्न वे और स्था अपने केयरो प्रकारक कार को थे। सम प्रतिकारोसे अधिक केयावी थे। कारके सारपालकारको इस पूर्णीयर वेकार, व्यक्ति और मनुष्य एक सम्ब रहते थे। उनके राज्याने व्यक्तियोके कार, जावन और समान सारि कार वीना नहीं होते थे। का समान समानी जानू कही होती भी। कोई कैंबकार नहीं गरण था। देवता और मैंबर गेट्रेकी निधियोरे जात होका हुक-कल्कारे जान करों थे। रामके कलाने हुक-कल्कारेका राम नहीं था। वाहरित लॉप पह है कुछ थे। न कोई पानेचे हुक्का गरण था और न अस्त्रवर्ण आग है किसीको कक्कारे थी। उस सम्बन्ध होग अवविदे की रहानेकारे, लोको और मूर्व अहिकान और अपने वाहर्णकार पासन करनेकारे थे।

करकारने एक्स्टेंने को पितरी और क्रेक्सओबी एक ग्रह कर वे बी, जो क्यानन् एको एक्सोको कारकर पुरः प्रवासिक क्रिका। जा समय एक-एक

व्यूक्तके हमान-इक्टर संपर्ध होती भी और उसकी जायू भी एक-एक पंत्रत वर्षकी हुआ करती थी। कहाँको अपनेके क्रेटोका बाद्य जी करना श्रास था। अगवान् रामकी स्थाप-कृता श्रीक, रामक अवस्था और हुक अस्त्याई निकी निकास जीवी थीं। चुनाई सुन्दर जवा क्रुटनेतक रुपनी भी। सिक्टे



सम्बन केने थे। जनकी हाँकी सभी चीनोचन मन मेंक्नेवारी थी। जन्मेंने न्यान्त कुमन कर्मनक सभा मिना वर। उस अपतर्ने अपने और महानोके अंतरका है-हे चुंडेके प्राप्त करत । इसले और तुम्हारे दूसले कर्मक केंद्र हे राम भी कहि नहीं प्रकारके राजनंत्रको एकपा करके उन्हेंने कार्च कार्केश । यह सके के दूध करने पूर्व ईराने क्यों सोख करते से 7

सम्बद्धे (नेपोक्टे क्यानसर केवल एक्टर ही जम का। | प्रमाद्धे स्तव से स्तेष्ठ परप्रवासको एक्ट किया। सुनुष |

महत्त्व महत्त्वरूप

# घगीरब, दिलीय, भान्याता, ययाति, अम्बरीब और सशकिन्दुकी मृत्युका दुष्टान्त

होनेकी सत सुनी गर्ना है। उन्होंने का कार्य अनर न्यूनके | हर्नक कोन्को थे : कर वे भी बहाँ नहीं सा हरेत हो सीहेकी

कराकीरे पुरः कार—सुक्रम । एका प्रणीतकारी की मृत्यु | आवलेकार्या जात हुन् । स्वतान ! वे तुम्बरे और तुम्बरे पुत्रके चेनों मिनारोपर संनेन्द्री ईटोके फर करवाने ने कक सोनंद्र। हो कम 🛊 कम 🛊 ? क्रामिने तुन्हें अपने पुत्रके दिनों स्रोक र्जी करना पाणि ।

इप्रिक्तिक का राजा दिल्पेंग भी गरे थे, कियो में यूनेने लागो तत्कारी को व्यक्तिक स्थापन निवृत्त हुए थे । उन्होंने यह करते समय पन-कामसे समय मा साहै पूर्ण स्थानेको सन कर के थे। एस विश्लेषके प्रश्लेषे स्टेनेकी समुद्रे कवाची वर्षा वीं । इस अर्थर देवक क्ये वर्गर प्रमान काका असे दाने करते है। अस्त पुर्वांक समावक सह वेद्रीयका शहर ना। नहीं सामी मीलो बहुती भी, सहके प्याप तमी हर से । सोनेक को इए इसली पूर के। वहाँ राज्यवेदान विकासम् वही अस्तारा-के साथ मीला कवाते थे। तती प्राणी क अभवादी राजाका सम्बन्ध प्राप्ते ै। एक

मामुक्तोरे निधुन्ति का भाग कवाई प्रकृतीको कर की । भी। सभी क्रमाई स्वॉने बेट्टे की, सभी रहते कर-कर

का उन्हें को कार्य अनुका थी, से अन्य प्रकारोंके पूर्व नहीं है—राज्य क्रियेश प्रत्य करते क्रियं क्रियं की बाते के

क्षेट्रे क्रे में। अनेक राज्ये क्षेत्रे स्री-मी हती है सुवर्णकी परवर्ष को करते है। एक-एक शर्मीके क्षेत्रे हमार-कृत्या क्षेत्रे, अनेवा क्षेत्रेके साम क्री-सी और और गीओंक पीक्षे कवारी और चेव्रेके ब्रेड थे। का प्रकार उन्हेंने बाल-सी प्रक्रिया है हो। यहाओं प्रेक् माहरे क्यारकर 'मेरी शहा करें' सहसे हा मगीरकारी गोदमें का बैटीं। इससे के उनकी पूर्व को और उसका नाम मान्येरको पहा। गहारेवीने भी अने दिवा संस्कार पुरत्या का विश क्रमाने का का विश्व-विश्व अपीत बरहाकी इच्छा की, विलेक्सि एउटने असलतापूर्वक मन-वह कहा को कार्यात । अर्थन की । राजा पानीरम ब्रह्मानोको कुल्को 📆



उनके रक्के ध्वीने वहीं सून्यों से। इन सरकारी प्रधा कार नेरेक्का को दर्जन कर रेते से, में धी अनेश्वेकको अधिकारी हो नाते थे। सन्दर्भन (दिलीन) के कर वे बॉक प्रधानके प्रका कामी कंद नहीं होते थे—नाध्याकारी अञ्चल, अनुवाधी बहुएर और अवैदिक्किके दिले 'कान्यों, पीओ क्या विश्वा प्रमुप असे — इन डीन मानगोकी केवका। सूक्ष्ण ! से एका पूजरी और नुवारे पुनले बहुत कह-कहकर थे, बिद्ध थे थी कीवित नहीं हा सके। किर हुन अपने दुसके दिले क्यों कोवक करते हो ?

पुणनामकं पूर कामानामां भी मृत्यू सुनी भागे हैं। वे वैतान, असूर और समूच—मीनों लोकोने विवाद संसने गये। सार कामा केहा क्या गया और उन्ने भी बहुत काम हत्ये। सार कामा केहा क्या गया और उन्ने भी बहुत काम हत्ये। हारेने उन्ने दुर्ग कुर्ज दिकानी पहर, उत्तेनके त्यान करवे ने पहारकामने का पहुँच। वहाँ कृत कामों कुर्जनीका काम एका हुआ का; साराने उसे की विच्या। पेटने कारे ही व्या कामहा काम सारानामंद्र उसमें परिच्या है ज्या। हमारे किसे वैद्यानियोगीय अधिनीकुमार कुर्जने गये। उन्होंने उस मानेते कामानामें विद्यालय कुर्जने नामें। उन्होंने उस मानेते कामानामें विद्यालय कुर्जने नाम केहते देश क्रेस्टान हमाने साराने कहा—'मां विद्यालय कुर्जनेता हम विद्यालय हमाने साराने कहा—'मां विद्यालय कुर्जनेता हम विद्यालय हमाने साराने

अभी समय इससी मेंगुनिमारि से और धूमको धार कारे सभी। पूँचा इसमें समयशीपूर होकर 'माँ कार्य कहा का, इसमिने समया नाम मान्यका का नाम। इसके इसके थी और दूसको पीकर का अधिदित कहते हमा ! कार्य हैनेनों ही यह आसम माना मर्चका-दा है सम्ह । राज्य होनेनों ही सम्बादमी समूर्य पूर्वकों एक है दिन्नों जीव विन्ता था । वे समीका, सैनेकम, चीर, सरकारिक और विनेत्रिय थे । इस्केंगे सन्तेकन, सुक्तमा, मन, मूह, ब्रुक्तम, अधित और गृहकों भी जीत विस्ता था । जूने का्रिये स्त्य होने थे और पहर्ट कार्य-सम्बाद होने से, मा सम-का-दान क्षेत्र पूर्णकार पूर्ण सन्तकार राज्य कार्यकार था ।

मान्यताने सौ साववेच और सौ राजपूच श्रेष्ट किये है। ज्योंने सौ पीववेंके विकारका मानकेए साववेचों है दिया था। उनके जाने प्रमु तथा हुए सानेवाकी जीतवें असके पर्वतीको पाएँ औरते केवार सावी थीं। अर बॉलबेंक पीतव

विके कई कुम्ब में 1 महि उससे फेल-सा दिकानी देता था। पुल्ला पर ही उससा नार था। यह एकांके महन्दे नेवता, अपूर, प्रमुख, यह, नामर्थ, सर्थ, प्रभूदे, मुद्दि स्था केंद्र व्यक्तम कार्य थे। पूर्ण से वहीं एक भी पहिं था। उस्होंने वर्ष-कार्य सम्बद्ध समुद्धान्यकों पूच्छे व्यक्तमंत्री असीन शर से भी और किर कुम्ब आनेवा थे स्वयं भी पूत्र लेकांचे अस्त है यसे थे। कार्यून दिवाओं असना सुवक्त कैस्तवात से पुल्लाकोंके सोकाने पहुंच पर्थ । पुल्ला | से भी ह्यारे और सुवक्त पुल्ला कर्मक सेह थे। यह थे भी मृत्यूने वहीं क्या हाते: से कुम्ब कर्मक नाम है। अस्त हुनों क्यारे पुल्ले दिनों होता नहीं करना कर्मके।

क्यूबरफा प्रकारिको भी पूर्व हुनी पत्री है। उन्होंने ही राज्युर, औ अक्रमेद, इस्टर मुख्योक चरा, सी कार्याप या, इकार अविशास काम क्या कालुबांक और साहित्रीय कारी, पान प्रकारके का निर्म से और प्रमाने प्रकारनीको कार क्षीतम्बं के वी । प्राथमीय सरकती गरीने, संपूर्वने तथा midrelin armen refranciff wa tachest worked भी और हुए जान किया था। याचा ज्यानेह पहोते परमानक पूजा करके उन्होंने पूजीके बाद पान दिये और क्षे व्यक्तिक, अवन्तुं, होता सवा अगुरक्त-- इन पाऐको बोर विचा । निवा केन्याची और प्रानिवारी जाना संदाने स्टब्स की । का चेनोर्न को प्राप्ति की विश्व से विश्ववित सकता मान्याः अनीने अनने वर्गनानिः साम वान्यान असापने उनेक निरमा । था। पाका हुए जवान है—'इस पानीवर जिसके यो कर, जी, कुमर्च, कह और को आहे, फेन्स कहते हैं, है तक एक व्यानको भी संबंध करावेके हिन्दे पर्याप्त नहीं है—हेल कियारका बरको साथ करना प्राप्तिये।"

हर ज्यार एका क्यानि कैनीह साथ कारनाओंका जान किया और जाने पुर कृत्यों कारिक्षणपुर किराबंद के कार्य करें गये। कृत्या ! में भी तुम्तों और तुम्हरें पुन्तें महे-वहें थे। का के भी जर को हो हुई भी जाने भी हुए पुन्ते किने क्रोबा नहीं करना कार्यों।

कृत है, जन्मनके दूध राजा कामारिय की पृत्युकी जात हुए में। उन्होंने अमेले ही का जाना चोडाओं तुन्न विश्व का। एक कामानी कर है, एकके क्युकोंने उन्हें बुद्धों जीवनेकी क्यारी कामर करों औरते मेर दिन्छ। से क्या-के-तम अक्युक्तके जाना में और एकके जीत अपून कामोधा

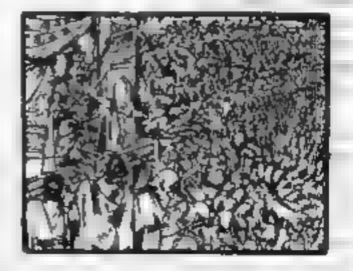


करेंगे।' सुक्रम । ने इससे और सुम्हते मुक्ते म्यूत महत्त्वमुक्तर के जब ने भी पृत्युक्त महत्त्वे महत्त्वे महत्त्वे अपने मरे हुए सुक्तेंद्र किने क्रोक महिं महत्त्व महिले।

पूर्ण है, जिल्होंने काम प्रकारके यह विको थे, में राखा प्रकार की पर परें। उनके एक साल कियों में और प्रकार की नंदी एक-एक इकार अंतरें जरता हुई थें। वाले राज्युक्त पराक्राओं, नेदोंके विद्यान् और उदान कहा काल करनेकार थे। राजने अवकोष यह किये थे। राज्य प्रात्तिन्तुरे अपने उन कुन्यरीको अवकोष प्रकी प्रदान्तीको है हैना का। जर्मक राज्युको पीके सुनर्गापुरित सी-सी कामाई थीं, एक-एक कामाक पीके सी-सी क्षायी, प्रभेक प्रभीके पीके सी-मी १४, का एक राजके साथ, प्री-मी बीड़े, प्रात्तेक कोईके पीके क्यार-कुन्यार गीई समा प्राप्त गीके पीके प्रवास-कुन्यान की वी। यह प्रचार काम राज्य प्रकृतिकृति अपने व्यानकान प्रात्तिके सामान अनुनक्त केर राज्ये थे। राज्यावा अवकोष यह पूर्ण के जानेका अनुनक्त केर राज्ये यह तथा पर्य थे।

स्थान कर है में। तम अन्यतियों अपने स्थानकर, अव्यवका, इक्तरांवव और कुस्तानकर्ती विकार्या इस्ता प्रदुजांके कर, जावुब, जाना और रचांचे इक्को-इन्से कर इस्ते। किरा से से अपने अन्य क्यानेके किये प्रार्थना करने समें और 'इस आवसी क्रमांचे हैं ऐसा व्यक्ते हुए अन्ये स्थानका संभावित क्रमांचे प्रवास विकास स्थानका करके सम्पूर्ण पृच्छीपर विकास स्थानका अनुक्रम किया । उन प्रार्थने क्षेत्र स्थानका सम्बद्धिय लेगा करके आवस्य स्थान स्थान करका अन्य प्रोत्तन करके आवस्य स्थान

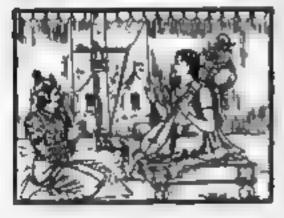
किया था। साथ ही उन्होंने बहुत अधिक माजार्थ दक्षिणा है। वी ! अभेकों पूर्वापितिका एकारकों और हैकड़ों काई विद्या नहीं राज्युम्पारीको एका तथा कोनसाहित उन्होंने सहायोंके अन्योन स्वर विश्व था। पहिंदियेण हंगार अस्ता होका बढ़ाने से कि 'असोरक दक्षिणा हेनेकारे एका अन्यार्थन नैसा पह करते हैं, वैसा न से पहारेके राज्यारोंने किया और न अस्ते बोहं। करना व्यक्ति ।



इसके राज्यकारणे इस पृष्णिया इस-पुत्र मनुष्य रहते थे, वहाँ वर्ष्ट विक्र वहाँ वर, वर्ष्ट्रों रोग नहीं वा। वर्ष्ट्रा इसकारण राज्यका रायाचेर कार्ये अन्यों के विकारणेकाओं प्राप्त हुए। सुक्रम । ये दूपरों और पृष्णि दूसरों बहुत वर्ष-सक्तार थे; सम ये भी नहीं पर कर्क की हुन्हें अन्यों पुत्रों निर्म क्षेत्र वहीं कारण कार्षिणे।

## राजा गय, रन्तिदेव, भरत और पृथुकी कथा और युधिष्टिरकी शोक-निवृत्ति

सुनी नवी है। उन्होंने सी वर्णनक ऑस्क्रोध फिन्स वा और प्रतिदित क्षेत्रमसिक्त सामक ही में मोजन मिना करने थे। इत्तरे अधिकेने अन्य होका राजको का जीनके दिले कार । तम नवने यह बन्दान मांगा—'मै तप, अक्रमार्ग, सा, मैका और मुख्यकेची कृष्यों केईका प्राप्त कर करन शक्तर है। कृतरेको यह पहेंचले दिन अन्ते नहींह अनुसर Springt gegen und und under fin militer augenbab ge-है और प्रस पार्थने येथे अधिकारिक बद्धा वहे। अपने सर्गको कत्याने पेरा विकास हो, जह गाँकाल हो और मार्थके गर्नाहे मेरे कुत सामा हो । अस्ताहनमें नेते श्रद्धा गई कहा कार्न ही का स्था हो। भेरे वर्णकार्यने क्षेत्री बोर्च निहार अस्ते ।"



'हेल है हैक' या काकर अधिक अस्तर्भव हे एवं। राजा प्रकार करवी सभी जनीव बसाई जार भी और अधेने मनी है सहसोधा विकास करे। सी क्षेत्रक गरी शरूके साथ रहां, वैश्वेतरा, आपना क्या क्यानंत आहे कर प्रवासके पात विले और अभे अपूर प्रविचा है। वे अतिदिन जाराज्यात उठकर क्छ उत्तक्त पाठ हमार थे. का इनार केवे तक एक साम असम्बन्धं दल करते थे। उन्होंने सम्बोध प्रापं भूतियम रेडवाली क्रेपेकी पानी बनकर सक्तानोंको छन की नी। समूद्ध, नदी, नद, बन, हैए, कार, पह, आवाक तथा क्रांने के राज प्रधाने अभी पूर्व हैं, वे एक का पहली संगतिये द्या होकर करते थे-'द्या गयके समान

नांदर्भ कहते हैं—नावा अध्यूतिस्थेक पूर्व कथाओं भी कृत्यू है दूसरे विकासका पह नहीं हुआ है।' उन्हेंने इस्तेय खेकर सम्बी और दौर पोजन पोड़ी बोबीस सुबर्गमधी बेरियाँ बनवानी वी । वे कुर्वले पश्चित्रके अवसे धनी वी । वेदियोगर फेरी और हीरे किंक हुए थे। ये सब बचा और आयुवानोंके साथ **ब्रह्मभोको क्षत्र को नवीं। यहके अन्तरों फोजको को हर्** अक्षेत्र १५ वर्गत क्षेत्र पर गर्ने से । यहाँ उसकी नरियाँ बहुती वीं । कहीं क्योंके के रूप को वे के बाही आधुमानेके । शुरान्तित क्क्रवॉक्ट राहि भी देवर करते थी। जर बहके प्रभावने शब्द का सैनो लेकोमे असित् हो को । साम ही पुरस्को असक क्रानेकाथ अकुकार का परिव सीवे बहुकर वी उनके कारण विकास के एने ( सहस्य । वे राजा गय पुनारे और हुन्तरे कुले सर्वक कह-बहुकर के: कर वे भी जीवित रहीं स सर्वेद को पूर्ण की पुरुष्ट सिक्षे क्रोब्ड न करों ।

कुम है, संबुद्धीओर दूर प्रतिदेश की जीविश नहीं हो । उनके व्यक्ति के समझ रातेल्ये में, को सरपर अल्पे पूर् असिकि अञ्चलको कुलके सन्दर्भ गोरी, कवी और प्यति रहेर्न र्केन्द्रर करती. विकास से । एका रनिस्तेत प्रक्रेम प्रश्नमें सुवर्गके काम इकारों केल कुम करते थे। एक-एक कैनके आध क्षे-के नोर्ड क्रेक्ट की। साम क्षेत्र आठ-आठ सी सर्वान्यूटर्ड के जारी भी । इस्ते साथ यह और अभिनेत्रके सामान भी क्षेत्रे थे। यह नियम क्लोने ही क्लीब्स धारावा था। ये क्षानिको करणानु, बहे, बटलोई, बिटर, सन्छ, आसन, कवारी, महत्त, मकान, बुध रामा अज-बन विचा बतते से ( में पार पार्ट्स रहेरेकी हैं क्षेत्री ही। श्रीतक्ष्मकी सह



असीविक समृद्धि देशका मुस्तकोत्राधीने हुए अकार करवा पहोत्तक सम्बद्ध है—'इस्से कुनेस्के धरोने की उत्तिकोत्रे स्थान धनका घट-पूर प्रकार नहीं देशक, किर कुन्चोंके वहाँ हो हो कैसे कबार ?' उनके पहीं को कुछ का, सब स्टेनेका ही था। उने भी उन्होंने कहने उत्ताकोत्रो हम जस हिया। अस्के दिने हुए हमा और कानको नेवार करा जिल असी पहले हमी है। इस्हानोकी सब कानको नेवार करा वहां पूर्ण होती थी। पुस्तक ! से मी कुनो और सुन्दारे पुन्तो नेहा



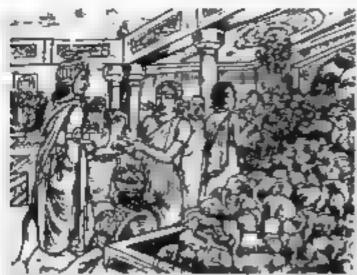
है; का उनकी भी मृत्यु हो नहीं तो तुन्ने अपने पुत्रके रिले होक नहीं करना काहिले (

सुना है, दुक्तमांक पून मरत भी मृत्युको जान हुए थे। सरताने कराने गुकर कक्तमाने हैं देना पराक्रम मिलाका था, मो दूसरोके निर्म कठित है। वे क्या जाते थे, कई-बड़े सिंहोंको बेगमें दक्तकर कॉन रेके और उन्हें करीटरे एके थे। अजगरीके दौन तोड़ मेंने और प्याप्ते दूप हानिकोड़े की प्रकारकर उन्हें अपने कहाने कर मेंने थे। सी-वी सिंहोंको एक साथ प्रकारकरा करीटरे थे। उन्हें एक जीवोका इस क्यार दक्त काने देस प्रश्नाकोने इनका नाम 'सबोदकर' एक हिंदा। प्रका परतने कपुरा-तराज सी, सरकारीके कुलपर तीन ती और प्युक्ति कियारे बार सी अवस्था का किये थे। कारकर उन्होंने पुन्तः एक हवार अवस्था और सी रावसून का किये, जिसने उच्च प्रक्रिया है नहीं थी। दिल अधिक्षेप, अस्तिक और विश्वविद्य का काके का उसका कारकेय कारका अनुहान किया। स्वयुक्तकप्यान्ते हर सब कांग्रेंने कारकारों क्यून-तम का केवर संसूत्र किया। स्वयुव्ध ने साम की पुन्तां और हुन्दी कुन्दी सर्वाच केव थे। का वी भी पर करे, को हुन्दी अपने पुन्ती रिन्दी संसाद क्यां करून कांग्रिने।

न्यूर्विकोने राजसूच बहाये किन्ते 'सारार्' सहसर समितिक किया था. में बहराम पूच् भी पुरुषो जाह हुए। उन्होंने बहे कारो इस पुष्पीको चेलोके चीन्य क्याकर प्रवित्त (प्रसिद्ध) मिलन, हार्गीको हरका राज 'कृष्' हो क्या। कृष्के हैकी यह पुर्वे कारकेंद्र कर गयी थी, प्रतक्त विना मोते ही फेर्नी होती थी । उस समय सभी भीई सामनेतुके समय थी । पर्न-पर्नाहे प्रमुखी कर्ण होती भी। कुछ कुल्कंस्य होते थे, साथ ही बुक्तर और कोमार भी । इस्तिओ प्रया उनके ही मन्न सुनवार चुन्ती और उन्होंन कुल्प की करनी की। मुहोंके करन अमुर्गेक सम्बन्ध वसूर और स्वासिक्त होते हैं । प्रथा उनका ही अंबार कर्ता । बोर्च को चुका नहीं दहन का । सभी मेरोग हे, समझे ह्यार्ट पूर्ण हेनी भी और निस्तीको कहिने भी था भूति था। इसलिये सोच अपनी चर्चिक अनुसार वैद्योक र्विके का भूकाओं निवास करते थे। या प्रमय यही और पारतीका विश्वास वर्षी था। एकी भट्टमा सुनी, जेला और अस्ति हो।

टंडम पूर्व क्या समुद्रमें बाध बाधों से मार्थ का बाता वा और वर्षा को बार्ग देने में 1 जाते रक्षणे काम कभी नहीं सूरी। एक धार कमके कम कम्प्रणी, वर्षा, देशता, असूर, कनुम, सर्व, प्रमुचि, बाइ, प्रमुच, अन्यस्त तथा विस्तिरे आकर कहा—'न्याराम | जान ही हमारे स्वाद, है, जान ही हमें बहुसे क्यानेकारे हैं तथा आंग ही हमारे राजा, पंत्रक और निवा है। अस्य इसे अर्थाह क्यान है, विस्ति इस्तिर अस्य कारकार इसि और सुरक्षा अनुष्य करे।' कह सुरकार कमने कहा—'ऐसा ही होगा।'

कदरका राजा पृथ्वे क्या प्रकारके या किये और वर्तकांका योगोंके इस समस प्रतियोकी कामगाई पूर्वका उन्हें इस किया। पूर्वकार यो कुछ यी महार्थ हैं,



अने ही अन्यारके सुवर्णके पहले करवायर एका अनुकेत परार्थ अर्थ साहायांको हान विका । अर्थने सम्बद्ध हवार सोनेके हाको कामानार साहानोध्ये हार निर्म से । क्रेनेको पृथ्वी पी मनवार्ष और उसे शिव्योंने निर्मुप्त करके कर कर देखा। पुराय । में हालो और हम्परे पूजी तेह में; मिलू कर में की मृत्यों भी पर सके से हुई भी अपने पुत्रके दिन्हें क्रीया बड़ी मारमा शामिने ।

माराजी कार्य है—पुणिश्चित | इस राजाओंका प्रधानन सुरकार सुरक्ष कुछ भी नहीं बोरक, बीन वह गर्था । जो इस जिस्स पुरुषान की देख नामानीने बढ़ा, 'एकर ! की को कुछ करा, जो कुछ म ? कुछ सम्बन्धे अवश क भूति ? जैहे **ब्रह्म वारियारे सोरते सम्बन्ध रक्षणेवाले प्रश्लाकाले करावा हुआ** साञ्च-कोकन गृह हो राज्य है, साथै प्रवास ग्रेष्ट यह साथ ग्रह्म कार्य से नहीं हे सका ?' उसके ऐसा कड़नेयर सहायाने हका कोइन्छ क्या—'को । जबीन उपनियोक का अन अपरमान सुनकर पेरा ऋगूर्ण क्रीक हुए हो एक । आब मेरे इत्याने समिना भी व्यापा नहीं है। बालहरे, जब में जलनही किया जाताच्या प्रत्या करे ?"

नरदर्जने कहा—यहै सीधान्यकी सात है कि कुमान स्टेक हा है गक; अब हुनाये के इक्त हो, ब्यूक्ते बॉन हो |

**ल्ह्नको बह्न—अस मुहत्यर प्रस्ता 🗞** क्षानेने ही युक्ते पुरा संस्तेत है । जिसपर आप अल्ल हो, अल्के लेके इस कराही कोई क्यू कृषेय मही है।

न्यस्थिते कहा-स्टेरेने हुन्सने पुत्रको क्यूपरे भीते मार्थ है का कृत्य है, यह काराये का का पास के अर में जो नकते निवासकर सुन्ते पुरः करण है यह 🛊 ह

क्यान्त्रीने सहा-मुत्तना सम्बो ही, सह अञ्चा कारिकाल कुलका पुर का 2002 हो २०६। असरे विस्ताहर राजाको व्यक्षे प्रसारक हुई। पृक्षकार पुर अपने क्षमीर फारन्युक्त कृताने नहीं हुआ वा, काने बक्ते कार्र प्राप्त-साम किया था:

इल्लीको जन्मधीने हो पुनः पोलिस बार दिया । परंतु अधियनपु तो जुल्हीर और कृतार्थ कर उसने राजपूर्णने इक्षारी सहस्रोक्ते नीतने पाद करावार सरका करते हुए प्रकारता किया 🛊 : योगी, निव्यान कारणे का संशोधारे और एक्सी कुल किर ज्ञान नरीको पत्ने हैं, हुन्तरे कुले भी बढ़ी अञ्चन गरी जात को है। अभिन्यम् बनायको बनायको प्रश्न हुआ है, यह और अनमी अनुस्थानी विज्ञानोंने अक्टाक्रमान हो रहा है; अलो रिस्ट्रे भीना करना अधिक नहीं है। इस प्रवास सोम-संस्कृतिर हुन केंग्री कारण करते । फोक्स कारनेते में १:५० ही कारण है: इसरिवर्ध बुद्धिमन् पुरुषके माहिते कि यह शोकका परिवास करके अपने कम्पालके दिन्ने प्रकार को । पुन्ने भूगपुनी अपनि और अन्यति अनुस्य कारकायो कार सुनी हो है । पुरस्के रिप्ते सम अभी एक-वे हैं। ऐसर्व कक्का है। या बाद पुस्तकों पुरते वरण और पुरुवकीयरकी कामने स्टब्र हो नाती है। प्रतरिको रंका कुरियोग । जब हुए हरेक र करे ।

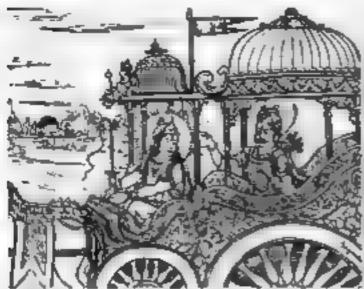
व्यक्त व्यवस्थान् व्यास स्थाति अवस्थान हो गर्ने। कारकर, एक मुख्यित्वे प्रचीव एकानोची बहुदार्थात सुनकर <del>पर हो प</del>र करकी जलंका की और लेक लाग विकार किर का बोक्कर कि 'अधुंच्ये में क्या कांग्रह ?' कियाने यह गरे।

## अर्जुनका विवाद और जयहश्वको मारनेकी प्रतिज्ञ

अजा के नर्ग, जानियोच्य कर संक्रूर वंद हुआ तथा सची रीनिक अपनी-अरबनी क्रावर्गाको जाने हरते, उसी कार्य अर्थन भी अपने विम्य अव्योगे संवासकोचा कर कार्य शकर के विविक्यों ओर को । कर्ज-वाले हैं ये अन्तरम् क्रीकृत्यके मोले—'मेलक । र कारे क्वे आज वेरा क्रम बहुक क्व है, 🖟

सक्रम करते है—व्यापक 🕽 जा दिन जम कुर्व-सर्वक 🛊 तारा करीर विर्विद्ध हो रहा 🖥 । मोई अन्तिह अवस्थ हुआ है, क्य कर इक्को निवतको 🛊 स्त्री। प्रकीपर तक सम्पूर्ण विकासोने होनेवाले कर्वका उत्पात मुझे इस रहे हैं। कर्वको, मेरे पृत्य पाता सना पुनिदेश अर्थः जॉनकोशहित सकुतान तो

ार्गुण्यने कल्प-कोच्य न करो, जीवबोरकीय सुनाते



भागेका से काम्बाम ही होता। इस अव्याक्तानके अनुसार मोर्ट कृतस ही अभिन्न हुम्म होता :

निवार पेने गेरी संबोक्ताय को और कि राजर वैद्यार पून्-सम्बंध को कर्त हुए आने को। जा इत्तरीके यह पूर्व से को क्रान्यरहित और लेकि देखा। इस में विधित होकर केंद्रामाने कहने को का को है। व इच्छितक निवार है, व बहुकों कारे । अस्य केंवा को को इच्छीतक निवार है, व बहुकों कारे । अस्य केंवा को को कारों, स्वारणीत को क्रांच करे । अस्य केंद्रा कर को है। व का । में देखिल को देखका नेंद्रा है। कि का को है। इस स्वारणीके कानुक देखका केंद्रा हक्का करका को निवार । अस्य अस्तिकार केंद्रा हक्का कर का को स्वारण का अस्तिकार है। स्वारण केंद्रा का का को स्वारण का अस्तिकार है।

इस ज्यार वाले करते हुए केलेंने विकास विद्यान देखा कि संस्थान सरावार व्याप्तान और इस्तेयावा के हो है। व्याप्ती क्षण पुलेको इस जानसभागे देखा और इस्तानकार सरितानको वहीं न संस्था अनुस व्याप्ता हिस्सानी दे की है। इसर, में अधिरायुक्ते की देखात और सरावारेण सुसरी अस्तानापूर्वक चोरले नहीं; इसका क्या कराव है? मैंने सुस या, सरवार्थ होंचले व्याप्ताहायी रहना की थी, आवसी चोनेने वाराय सरितानको दिया कुरार कोई सह व्याप्ता कि स्थानकोंक कर समस्य था। अधिरायुक्तों भी की सह स्थाने विकास नेवा कर समस्य था। अधिरायुक्तों भी की सह स्थाने विकास नेवा अन्यक्षेत्री का करणको हाहो गुर्हो तेन विद्या है? सुन्दानका का न्युको अनेको कर तेककर युक्ते मारा से नहीं नका? का सुन्दा और वीकृत्यका कुछए का; कालो से करलो कालें का हुआ ऐसा कीन है, जिसने काका का किया है। हा । का कैसे हैस-इंस्का गाउँ करता का और एक कहेंकी अवस्थे रहता का। कारपाने की अनो पराक्रकी कही हुन्स नहीं थी। कियमे कारी-कारी कही हुन्स नहीं थी। कियमे कारी-कारी कही हुन्स नहीं थी। कारपा को से हु नहीं पता का। का कारप् कारपा की से। अन्यदे कुमाई क्ष्मी-कार्य और

कांचे कामानोः प्राचन विद्यालः को । अपने केवादोवर सामग्री बढ़ी एक भी, कभी नेज पुरुषेकी संबंधि नहीं बच्छा था। क कुरू, उसी और संबोधकों कुरूर का पुत्रों पीड़े के की प्रकार कर पुरुष्ट से का अभिनक करता का, क्या जो देखते ही प्रभावीत हो करते हैं । यह अहारीय सरीका क्षित करवेकाल और विद्यार्थकी किया व्यक्तियास था। कार करे क्ये के कर करत व और दर्ज का विन्तित पुरत था। प्रविन्तिकी मनना होते सनन विन्ते बक्राची निवा पर्या था, इस बीर अधिवस्तुका पुरा हेने किया का में भूगको का कामि निरंती ? अपनेते अधिक कृषा के कुप्ताके मेंने के एक है, यह बेसारी बेटेकी कृत् सुन्ते ही प्रोधाने पीड़िन होतार जन्म स्थान देगी । अधिनक्यांको न देशकर सुच्छा और प्रीफी पुत्रको क्या प्रदेशी ? उन बेन्पेको में क्या क्यान हैता ? प्रावसूत केरा हुएन पहाचा करा हता है, वर्गी से पुरसम् आठवे हेने-विस्त्यानेका सहय असी है इसके इसके इसके भई है असे है

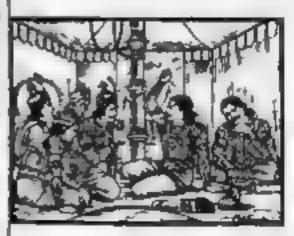
 मार्थ है और स्थुके जायरे हो कुकर बोरोंके दिनो कावानीय पृत्यु मारा की है। हुन्हें जोक करने देश में हुन्हों नहीं और जिस मानिक दु:शों हो जो हैं। इसे सामकारणी कारोते शासासन हो। हुन हो काननेचेंग्य मानको कान कुछ हो; हुन्हें होना नहीं करना काहिये।'

पनवार कुलाके इस जातर समझानेतर अर्जुको अलो कहा— में अधिकनुत्यी मृतुष्टा नृत्यात अस्ताको है सुनन बाहत है। जान तथ लोग साहनिद्धारों कुछता है, हानोंने तथ लिये वहाँ तहे है। हैरो समझों वह नहे हको की पूज करता है जो की नहीं करा जान बाहिने; किस अपने रहते कैसे असमी पृत्य हुई? गाँव में समझा कि पाला और पाहास में केरेकी रहा करनेने सामझों है है सर्व है अवस्थित होंकर समझी पहल कुला। "

हान बनकर कर्नुर पूर्व हो गर्ने। का प्रत्य पृथ्वित अवना लेक्स्परे दिना, प्रस्त बोर्ड में उनकी और केले था मेलनेका सकत नहीं कर क्या। प्रतिकेश महा-- 'बहुम्बहों । का तुन तंत्रहाओंकी सेको तहने को गर्ने, उसी ज्ञान क्षेत्रास्थानि पूर्व क्याप्रनेका क्षेत्र प्रवक्त नित्यं, वे रवोकी रोकाम पद्म बनावर वारत्वर क्योग करे के और इसमेग महामारमें संगतिक हो उसके आक्रमसके कर्ष कर हो है। विश्व होसावार्य अपने क्रीके कार्योरे हते सहा प्रेम के तो । मा नवर पहु-नेवा काम से हरती वाल है, इस उसकी और ऑक उद्याद देश की की अबसे में। ऐसी रिवरि का मानेकर इस सकते आकित्यको महा- 'मेरा । हम महामी सेन् इस्ते ।' इसरे सहरेशे ही जाने इस अपन्य भारतो भी बहुन करना स्थितार विरास और पुरुति में क्रं किवानों अनुस्तर नह नक्ष लेक्टर जाने एत शना । इस भी काले कराने इस मार्गले ब्यूपों इलेड कालेको यन प्रेक्टे-रोड़े को से क्षेत्र क्ष्माको संस्करोके दिने हुए मस्यानके करती हमें रोक विन्ता । तहनकर होगा, करा, कर्जा, अकारामा, पुरस्ता और कृतमधी—इन इन प्रक्राविकांने को भाग ओरसे वेर हिन्या। जिरे होनेसर की अंध कारकाने अपनी प्रतिनेक सनुसार उन्हें जीतनेका कृते अध्यत विद्या, विद्यु कर समने निरम्बर को रखीन कर रिपर। यह का कांग्रस और अस्तुम्य हो गया से कुलासम्बे कुले संबद्धाना अस्तुसने को गार शासा । जाने पहले एक हाकर हानी, कोई, रखी और मनुष्योको करा। किर अस्त इसार राज्ये और से स्रो इमिनोबर संहर विकाद करहाता है इसके उनक्रमारी हरक क्षण भक्षभी जाता प्रीतेको मास्तर एका सुक्राओ भी कारिकेकक अतिर्धि बनाया । हरके बाद यह कर्ष परा है

और वही इनलेनॉके रिन्ने सबसे बहुबर मोजनी बात वहीं है।'

कर्गात्रसम्बद्धी यह कार सुनका अर्जून 'हा पूर !' कहते हुए कारण हाइन्याह हैने तमें और अल्याह स्ववाहों पैदित होकर पृत्यीपर मिर गई। यह कारण समके पुरुष्ट निवाद हा गया, सभी अर्जुनको केवान गैठ गये और निर्मित नैतेशे इस्स, उस में क्रोबर्ग सरकार बोरो— में आपनेगोंके आसमें महा अर्थ अर्जुनको करता है कि गई प्रयास बहेरानेका आसम क्रोबर्कर मान गई गया या हमस्योगोंकी, प्रणासन् सेम्बर्कत कार गई गया या हमस्योगोंकी, प्रणासन् सेम्बर्कत कार गई गया या हमस्योगोंकी, प्रणासन् सेम्बर्कत कार गई अस्पन प्राप्तिको हारवार्थ गई अर्थ गया से पास गई अस्पन पार झानूनत । बहिस्सोका हैस्स साम्बर्धक अर्थ कारण ही यह कारणा से पार सामित । अस्प



कार को न करें से प्रसा-विवासी हुए। कानेकारे, पुरसीनारी, कुमरनीर, श्रामुनियक, स्वारंपर कारफू राजनेकारे, वर्षप्रको हुए। सेनेवारे और विश्वासकती पुण्योगी के गीर होती है जो मेरी मी है भी केप्रवापन कानेकारे काम स्वारंगीया क्या पड़े-बूड़ों, सायुओं और पुण्योगी कर्षा पंची है और करनी पर-पुर मा शुरू अस्ते हैं, वर्ष के पुणि सार होती है क्या कर क्याप्यकों न कानेकर मेरे की हो। मेने क्यानेकारे, व्यक्तिक्यों निर्मा कानेकर मेरे की हो। मेने क्यानेकारे, व्यक्तिक्यों निर्मा कानेकर है की एक्यों क्या प्रशासकती है किया कानेकर है किया क्यानेकारे स्वारंगिय को पुणि पोन्सी काने हैं, की क्याप्यक्त का म करनेवर मेरे की हो। को इस्तान करने हुएक साम करना है तथा कहनेके अनुसार बार्गिको स्थान पुरुषा करूर-बेक्स वर्षे बाता. ≱रकरीची निया कता है, प्रक्रेसरें स्टेक्के प्रकेप व्यक्तिको बद्धाका दान न देवार अन्येन्य व्यक्तिकोचो हेता है और यह वारियों सीने रूपाय रहनेकारेको सञ्चात विपाता है तथा को कराती, पर्याक पढ़ करनेकार, कृष्क और लामेका निक्य है, का पुरुष्कों के हरीरे होती है कई क्यात्रको न मार्केटर नेरी भी हो। यो कर्ने हम्बर्ध केवन बारते. मोदने रककर बाते, पाणकके प्रतेश बैटके और वेहादी कहन बाते हैं, निम्हेंने वर्गका तथन विका है, के असारवार सोने हैं, अवहरू क्षेत्रर प्रीतने और क्षरिय क्षेत्रर पुरुषे हरते हैं, पायबरी निष्य करते हैं, दिलों नीर लेने क फेब्रुन करते हैं, करने अपन रचको, अधिकोश और असिक्सिक्स एवं विकास रहते काल गाँउनेके पानी चीनेने विकास कालो है, को रकारकारों संदर्भ करते हैं, बर्टिक सेकर कारान्ये केली है, बहुत लोगोधी प्रोहिती करते हैं, प्रकार होतार बुरावृतिनो जीविका कराने हैं, जना को अञ्चलको शनक संसाप करने दिए हो प्रमुख माँ थेरे. उन प्रमुखी में क्ष कार्याचनी गति होती है, बढ़ी क्षणहरूको र कार्यना मेरी भी है। कार दिन पारियोगा पूज की रिक्तम है क्या विस्तार नेन वह निकास है, जनके से हुन्ति वहा होती है जह नेरी
तो हो—वहि कर कर्याकरत कर न कर सहै। अस मेरी
वह हुन्दी प्रतिक्ष भी सुन्ति—मीर कर हुन अस होनेके
वहार करी क्यार नहीं करा नका से मैं उसे ही अस्ती हुने असमें क्यो क्यार नहीं करा नका से मैं उसे ही अस्ती हुने असमें क्येश कर कर्यना। केया, असूर, प्रमुख, पही, कर, निकर, कहार, अहार्थि, हेर्निं, वह कार्यर करता हुन्या इसके को को कुछ है, कह ची—के इस विश्वकर की भी असमें कहा को कर सकते। वह क्यार क्यार अस्तिक्षणे, क्यार कार्य आसे आमें कह व्याप क्यार क्यार अस्तिक्षणे, क्यार कार्य हैर्निंग क्यार क्यार क्यार क्यार क्यार हैर्निंग हो की वी कार कार्य हैर्निंग क्यारों अधिकालों का क्यार क्यार क्यार हैर्ने

व्या क्यापन अर्थुनने व्यापीध धनुवादे स्पूर की, उनकी वानि अञ्चानने पूंच उति। अर्थुनको व्या प्रतिया पुन्धार धनवान् बोक्नाने अरब्द व्यापना स्पूत्र व्यापा और कृतित बूद अर्थुनने वंश्वाद वाध्या स्पूत्रपट श्याप वेश्वरपति। व्या स्पूत्रपत् सुन्यार जानात्रक-पानावस्तित सम्पूर्ण वागर् करि स्था । अर्थ समय विशित्त्र सुद्धांत वाने वाद को और पान्याव विश्वन्य करने सर्गे।

## भयभीत हुए जयद्रवको होणका आग्रासन तथा श्रीकृष्ण और अर्जुनकी बातचीत

स्थान करते हैं—ब्हुलाय ! कुर्ति आकर कव्यक्षि अर्जुल्यी प्रतिस का सुकरी। सुन्ते हैं कव्यक क्षेत्रले विद्वार हे गया। बहुर ओक-निकारकर का समाजीकी समापे गया और वहाँ देने-किराइके क्ष्म — एकाओ ! साव्यक्षिय हर्वकार सुक्त क्ष्म क्या है का है। साव्यक्षिय हर्वकार सुक्त क्ष्म क्या है का है। साव्यक्षिय हर्वकार सुक्त क्ष्म क्या है। का है। साव्यक्षिय हर्वकार सिकार हर्व क्या है। वहाँ हैं, क्ष्म है। स्था हर्वकार स्था क्ष्म क्या है। स्था हर्वकार हर्वकार क्ष्म क्या है। साथ है। का है। का है। का है। साथ है। साथ है। साथ है। का है। साथ है। साथ है। साथ है। साथ क्ष्म क्



जार, कार्य, प्रयोग, पुरुष्ता, जार, खेल, स्वडिण, सरकार, विकार, हुर्नुस, दुःस्तान, सुनांचु, व्यक्तिपुराण, विन्द, अनुविन्द, डेण, अकाराया, समुनि—ने एका और भी ब्यूट-हे स्वारतेथ अगरी-अगरी सेनाके स्वय हुम्यूरी राहरके विन्ने करेने। हुन व्यक्ते पनादी विन्ना दूर कर है। विस्तृतक ! हुन कर्ण भी हो सेह स्वारती हो, सुरुषीर हो; किर पाणकारे हस्ते क्यों हो ? मेरी स्वरी सेना सुन्दारी रहाके दिने सामकार खेली, हुन करना नव विकार हो।" राजन् ? जानके पुतने जब इस प्रकार आहासन दिया तथ जमान उसको साथ लेकर राजिये होककार्यके प्राप्त गता । आसार्यके करकोचे प्रयास करके काने मुझा—'कनकन् ! हुरका त्याब केंक्नेमें, इसकी पुत्तीने उसक हुए निकास करनेने कोन बढ़ा है—में का अर्जुन ?'

होजावनि करः—ाता । वहारि हुक्तो और अर्जुको हम क्ष्म है आवार्य हैं, तवारि अववास और हेव स्वनेके कारण अर्जुन मुक्ते को को हैं। ये वी तुने उससे इस्ता की कार्यों कोवित में तुनार स्वकार हैं। येरी नुवारे किसकी एक कार्यों हो, असर नेवकारोक की चोर की कार्य कारण। में क्ष्म बहु बनाईना, जिसमें अर्जुन पहुंच ही की कोरों। इसलिये हमें ता, कृत कारकों कुड़ को। तुन्हों-जैसे बीनकों के मृत्युका कर होना ही की कार्यों। स्वोधित स्वकारकोत्र स्व कार्येगर किस सोकारकों पाते हैं, इस्तिबक्तंका अस्ताव सेनेवासे चीर मुख्य को अस्वास पर बाते हैं।

इस अवश्रा आवासर निरम्भेयर ववासका कर कु दृश्य और जाने मुद्ध करनेका निश्वा किया। अरु समय अस्त्रही सेनाने भी इस-कार्य होने स्टारी।

अर्थुको का कार्य-कार्या अर्थात का ती, प्रत्ये का मामान् श्रीकृष्यने अर्थन्ते बद्धाः— क्षत्रकः ! इत्ये र से भाइयोक्ट शब्दांट ली और न मुक्तों हो सरबह बही, पिल के स्वेगोको सुनाबार जनहरूको पाउनेको प्रतिक धार कारी-बह तुम्बरा कुलाका है । क्या इससे एक लोग इसरी हैंसी नहीं अपनीये ? मेरे वर्धरवीयरे कामानि अपने मुख्यर केले हे, के क्षेत्रमी सामार महीका प्रधानार कर गये हैं। तक क्षेत्रने क्षेत्रक राजके बकारी प्रतिका की बी, इस समय कई राजभेरी बजी बी और विकास किया गया था। कामो आयान चौरवंगे प्रनी क्षे तुन्हारी प्रतिहा सालून हो नवी । इससे क्ष्मेंकानो पन्नी ब्यास और जनमीत हो गये। जन्मन भी बहुत हु-हो हुआ और पंजसमाने जावन क्वॉकरते बेला— 'रावन् । अर्थुन पुत्रे हैं अपने पुत्रका कामा कामा है, इस्तिने इसने अपने रोतले बीच कर्य होकर क्यों कर दासनेकी प्रतिक्र की है। मह परवताचीकी प्रतिक्र है: इसे बेबता, नवर्ण, असर, चल और सकत भी अन्यक्ष भूते का सकते । तुन्हरी हेन्समें पूछे ऐसा कोई बनुपर नहीं विकासी देता, जो महस्तुक्रमें अपने कारोंने अर्थुनके अवसेका निवारण धार एकं । वेस से देख विकास है कि अव्यानकी स्थानक प्राप्त अर्थन केन्द्राओं-सकि तीयों रहेकोंको रह कर सकता है। इस्तरिये में कालि करे जनेकी जाता कहता है। अकब करे तुथ ठीक कन्द्रवे के अनुसार और क्षेत्रकार्यर येथे जाना अनुसार



विकाल । का कृतिकार कर्ण काला क्षेत्रकारों कृत प्राचेत को है। क्षेत्रकारी द्वासा पूर प्रकल कर तिया गया है, रव को सक देने गये हैं। करको पूजरे कर्ल, पूरितका, अक्ष्मक, कृतिन, कृत्रकार्थ और क्ष्मक—में के प्रक्राची अमें दोने। क्षेत्रकारी देख व्यक्त काला है, जिसका अगस्त सक्ता कर क्षमकों अवकारका है और विकास करकों कर्मा । करकानुकों करकों क्षित्रकों कींच दूसी-व्यक्ति कर्मा दक्षणें दोने। में करन करने क्षमी और वारों ओर्ड़ो कर्मा दक्षणें दोने। में करन करने कुद के क्षमधी कृत, कर्मा, करकार और क्षारीतिक क्षमी कुदाह है। इनमेरी दक्ष-क्षमी करकारकार विकास करने होता है। क्षम साम होते, का करना क्षमक क्षम क्षम क्षी होगा। क्षम अपने क्षित्रकार क्षमक क्षमक क्षमी विकास करने क्षमी होगा। क्षम अपने क्षित्रकार क्षमक क्षमक क्षमी विकास करने क्षमी होगा।

अपूर्ण का प्रमुद्धा ! कीरबंधि सिम प्रवृत्तिकों को अस्य कार्यों अधिक भागते हैं. ज्याद पराक्षम में अपनेते अस्य मी नहीं सम्पारण श्री साम्य, स्ता, स्तु, अधिनेत्र्यार, इस, कन्, विश्वेद, शबर्च, वितर, गरद, समूद, का कृत्यों, दिस्तरें, दिक्यार, गरेवोंके लोग, बंगती बीच बच्च अन्तुने करावर प्राणी विम्युराजको रक्ताके विश्वे आ कार्य से मी में साम और अध्युक्तिको प्रपक्ष शाकार करावा है कार आप क्यारकको में बाजोंने परा प्रशा देखेंगे। की का, कुनेर, प्रस्त, इस और कारे में प्रस्ता नक महा किये हैं, उन्हें कारके पुत्रमें लेग देहोंने। स्वापको कार मो-यो जात कोहेंगे, उन्हें में लामको कार निर्माण। केइम । कार इस पृथ्वीयर मेरे कारोशे को हुए स्वापकोंके महाना किइ कारोगे, को आग केहेंगे हैं। इसीकेस । मानक्षित-केहर दिन्स कहा है, में बेटझ हैं और अबर कारोप है, यह इस होते हुए में किसे नहीं और कारका? मनवन्। आंखी कृष्णे इस युक्षे हुई कर तुर्वय है? आप से करते है है कि कर नेश केन की यह सकते से की को हुई लोका कर से हैं? अक्टानों साथ, सब्दुओंने काता और क्योंने स्थानिका होना जैसे निर्देशन है, जरी अवसर कहीं क्यानका हो कई विकास की निर्देश है। करा क्लेस होने ही केट रूप विवार हो कान, हेल अक्टा कर लिकिने; क्लोंकि इससेकोनर क्या करी कान जा कहा है।

## अक्रिकाका आधासन, सुध्छका विलाप तवा वरुकसे श्रीकृष्णका वार्तालाप

रहान नहीं है—सहस्यर अर्जुनी सीहानाते कहा, 'मानवर्। अस आर पुत्रक्त और अस्ताको सम्बद्ध सम्बद्धाने; वैदे भी हो, उनका कोच्छ हा स्टेमिने।' अस सीहाना बहुत उहार होन्यर अर्जुनी विकास नामाने हते।



उन्होंने कहा—'पहिन ! तुम और वह उपल—केवों है क्षेण र करों । कारको हारा सम अभिनेकों एक दिर जो निर्वात होतों है : तुन्हारा पुन उस मंत्रमें उरका, बीर, बीर और व्यक्तिय का; जह पुन्नु अन्ते पोश्च है हुई है, इस्टीनने क्षेण उन्हार हो । देखों ! बहे-बहे संस पुन्न करता, स्वापनं, उन्हारन और सन्द्राद्विके हारा निस निर्वाते असु करना जाते हैं, जो निर्वा वृत्तारे पुत्रको को विश्वी है। तुव कोरमाता, वीरक्षी, कंतवान्य कम वीरकी कीर है। तुव सकते दिनों कोच ने करी। कहा जान की जार हाँ है, तुव सकते दिनों कोच ने करी। कावार किये को की जब अर्थुनोंद इसको अरुका पुरस्तार काँ है सब्बार उपलब्धानों काहर का निरा है। क्ष्मीर अधिवान्त्रों अधिकार्यका पारक करते. सामुक्तोंकी विश्व कांगी है, विशे इसकोंग अवा कुलों कांगाती क्ष्मित्र की पान कांगी है। पानी अहिन । किया होन्दी और क्ष्मी वीरक वैभागों । अर्थुनों की जिला होन्दी और क्ष्मी वीरक वैभागों । अर्थुनों की जिला । वृत्तारे कांगी की कुछ करना कांगी है, वह नियास की होता । वहि क्ष्मण, वान, विश्वास, राह्मस, वही, विका और अस्तुत की कुछों कांगाकारी सहस्तात करें हो की कां कांग अस्तुत की कुछों कांगाकारी सहस्तात करें हो की कांगा कांगी की कांगा की अस्तुत की कांगा कांगी कांगा कांगा की कांगा कांगा कर की कांगा कांगा है।

सीवृत्यको यात सुन्यतः सुन्यत्यः कृततेय ज्ञाद पहं और यह स्मृत दुन्ती होचा निकार सामे लगी—'हा पूर । तुन्तरं किया जान में क्याविकी हो गयी। सेटा ! तुन से अपने निकारं ज्ञादः पराक्षती थे, किर युक्ते ज्ञादा को कहे को ? क्याव, कृतिकांती लग्न अनुस्तारिक जीते-जी तुन्हें किसने अन्यवको भीति का अनुस्तारिक क्यावे निकार है ! अपने के पहुच-कारकको और वृत्यि ज्ञादा प्रकारा-वीरोक मध्यावको को विकार है ! केम्बन, सेट, मसन और सुक्रवोको को कारकहा निकार है ! केम्बन, सेट, मसन और सुक्रवोको को कारकहा निकार है । केम्बन, सेट, मसन और सुक्रवोको को कारकहा निकार है को में मुद्दारे क्यावेश हिसानी होती है। मेरी मोन्यवहार आहे अनिस्तानुको होती है, पर वेस नहीं पत्री। हाम ! औक्तावको प्रकार कारको और

पने हो, में कैसे तुन्हें देश समीनी ? केटा ! कहाँ हो ? सहते. मेरी नोहने बेले; तुन्हारी जन्मनिनी माता तुन्हें देवलेको संस्थ रही है। प्राचीर ! तुन सर्पनेकी सम्पनिक प्रमान दर्शन हेकर कार्र किय गये ? अहो ! यह प्रमुख्याचिक कार्रावेह मुख्यानेहेंह समान विजना प्रमुख है। येदा ? तुम असमावने हैं पाने करे; सुदारी म्यू सकती पत्नी शोकाने हुवी हुई है, इसे कैसे वीरव बैक्कीयों ? विकास ही, प्रारंपनी महिल्लों सामान विकासीत रिन्ने भी पारित है, तथी से ओक्स-बेर्स स्कूपकरे व्यक्तिन्त्री तुम अनावकी पर्वति करे को । बक्ता । वक्त और क्ष करनेवाले आव्याची व्याप्त, अक्रूबरी, पुरव्योगीने कान करनेकारे, कृतक, आन, नुस्केक्ट क्या स्कूको चेत्रार करनेवारे निस नरियों अस होने हैं, वहाँ तुन्हें की विसे । प्रतिकता औ, स्वामार्थ राज्य, ई-संबर क्या करनेकारे, कुरालीको जनगर सहरेकाले, धर्मक्रीका, प्राणी अवेच सरिवि-सरकार करनेवाले ह्येन्डेको यो गुर्त विहल्ले है, को क्षेत्रें भी जार है । केंद्र है जानति और संख्यके कृत्य भी जे Belgebu derbah Armir tah B. Day wan-Passah day भारते हैं और अपनी ही भीने संदुष्ट चार्न है, काफी को नक्ती केरी है, नहीं इन्हारी भी से । यो मालनेसे प्रीत से सब प्राणियोक्ते सारक्ष्मपूर्व इक्ति देखते हैं, क्षमप्रका रक्ता है, विस्तीको चोद व्हेचारेपाली कार गाँँ वहले, जे वह, वांस, मा, क्या और मिधारी पूर को है, कुछोड़ों कह जी महैको, जिस्सा समाप संबोधी है, से समूर्व सामोद क्रमा, सरावनको परिवृत्त और विशेषक है, वर स्था पुरानोक्य को पति होगी है, बढ़ी हुन्छारी भी हो।"

इस सकत क्रोजाने कृति एवं क्षेत्रकालों विकास करती हाँ सुम्बाने कर होगाने और उपरा को उस कृती : अन क्षेत्र करते दुःशाकी सीमा म रही : उस कृत-मुख्यात होने कर्ती और उपराचनी करा पृथ्वीपर निरामर केलेक क्षेत्र को प्रति कर्ती क्षेत्रकों करते केल प्रत्यान् सीम्बाल क्ष्म्य दुःश्री हुए और उसी क्षेत्रकों करते किथा और करा- 'तुन्ती | अस पुत्रके क्षित्र क्ष्म्य म करते । जीवती | सून उपराचने कीच्या केलावी | अधिकानुको क्ष्मी जनम गति जार हाँ है । इस सो व्या कालो है कि इसरे बंदाने को अह पुत्रव है, के सम क्ष्मानी अधिकानुको हो नहीं कार करते । तुन्दार स्वारकी कुको अधीरों को काल कर विस्तान है, क्ष्मी हम और इसरे सम स्वाह की करें।

सुच्या, विपय्ने और काराव्ये इस अधार आक्रासन हेवर चामान् कृष्या पुरः अर्जुन्धे करा को और नुसकत्ये हुए केटि—'अर्जुन ? तुमारा स्वत्यान हो, अस साक्षर से को ।



में भी माता है।' मह महाभा रुपोने अर्जनके शिवित्यर हारमानेको साक्षा मिन्या और वर्त प्रकामधी शुक्त सेवल कर किये । किर के सम्बद्धको सामा है अपनी कुलकोर्ने गर्न और म्बून-से कारोपि विकास किया करते हुए समापार होत गर्ने । अस्ती राज्ये समय ही जनहीं मींच दृह गर्नी; तब मे अर्थुनकी अधिकार जात्व करके देशको केले-'एर-क्षेत्रको व्यक्ति होनेके कारण अर्थुन्ने यह प्रतिहा कर कार्य है कि 'में कार अवस्थात का कारेगा ।' विश्व क्षेत्रकी प्रकार क्रमें पुरुष्के हम के नहीं जर सकते । इसमिने कर से हैंसी व्यवस्था बारीनाः विवासे अर्जून सूर्व असा हेनेके पहले ही नम्बन्धा नार करते । सरका ! मेरे दिले सी, मेल असाह वर्ष-कच्-कोई भी कृतीनका अर्थुनने कहतर द्वीर नहीं है। इस पंतारको अर्थुको किया में एक क्षम की नहीं देख सम्बद्धाः हेला हो ही नहीं समारतः। अस्त्रेकोः रिस्ते में कर्ता, कृतिका जादि साथै पहारिक्तेको उनके पाँचे उर्कर क्रिकेस्प्रित कर अस्ति। । अस्य सारी कृतिक इस बाराका चरिक्य वा कामची कि मैं अर्जुनका किए हैं। को करते हेव स्त्रक है, का मुक्ते की स्त्रक है; को उनके अनुकृत है, कह मेंने भी अनुसूरत है। शून अपनी सुद्रियों इस सालका निक्रय कर स्थे कि अर्जुन मेह जाका शरीर है। स्लोब होते ही पेरा रेक राज्यका केवल कर देन । उसमें कुराईप कहा, कीमोठाई च्छा, किया प्रतिक और प्रार्ट बनुवारे समय ही समी

आव्यक्षक सामग्री रहा लेना। केंद्रे चेतकर प्रतीका करण; कों है मेरे पश्चकन्यकी शब्द है, को बेंगले की कर रण में आना। मैं जाता करण है—अर्जुन किय-किय बेंग्ले स्थाक प्रकार करेंगे, नहीं-कई उनकी अवस्थ किया होती।' ्यक्तरे काः—पृथ्वेषयः । आप विश्वेष स्वापि है आकी विकास को निर्देश हैं, प्राप्तक हो ही कैसे अकती है? अर्जुक्को विकालो किसे आप पूरों को कुछ करवेशी अहार है को है, जो समेद होते हैं के पूर्व करवेगा।

## अर्जुनका स्वप्न, ब्रीकृष्णका युधिष्ठिरको आश्वासन तथा सबका युद्धके रिज्ये प्रस्थान

त्रक्षण काते हैं—राजर् । अर्जुन क्याने प्रतिप्राची सामें विकार में हैं हुए से गये । उन्हें दिन्या करते कार स्थाने ही प्रगासन् अंकृत्यने नहींग विचा । चन्त्रान्त्यों केंग्रं ही अर्जुन को और उन्हें बैटनेच्छे सरकार दे साथं चुन्याय कड़े हो । हीकृत्यने अन्तर विद्याप सामाहर साह—'वन्ह्यन !



हुन्हें क्षेत्र किसरियों हो का है ? चुन्हियान् पुरस्कारे सोच नहीं करना चाहिये, इससे काम मिगड़ नाता है। यो करनेयोग्य कार्य जा पड़े, उसे पूर्ण करों ! अहोग्यूनि क्यून्स्बर सोच्य है कार्य रियो क्यून्स कार्य केंग्र है।'

घरामान्दे ऐसा बहुनेकर कर्नुन्ने बहा- केलाव ! वैने घटा अन्ते पुरुषे बातक सम्बद्धको बार इस्टनेकी करी प्रतिक्षा कर इसरे हैं; सित् जोनक हूं कि केंद्र प्रतिक्षा केंद्र-केंद्र रित्ये वर्तेस्व निक्षण ही अवस्थाको हकके भीते उत्तक करेते । सभी महारची उसकी रहा करेते । नास्त उन्हों दिनों सेन्हनेसे मी सोग प्रत्नेसे बाद नये हैं, उन समसे विद्या हुआ मन्द्रक

केले पुत्रो दिकानी देना ? यदि नहीं होता से अधिआकों भारत नहीं हो सकेना और असिता पह होनेनर पुत्र-केंस अनुस्य केले खीवन-मारण पर सकता है ? अस तो सारा स्थान केलार कुना केलाता है, इससिये मेरी आहा निराहाने करने परिचा हो रही है। इससे दिखा आस्थार पूर्व मान्छ हो अस होता है। इसी सब पारपीरी में हैस प्राह्म है।'

अर्थुको क्रेक्स वारम सुरगर श्रीकृष्णने बद्धा-'कर्म ! क्रंकरमोके पास 'प्राप्तुका' सम्बद्ध एक दिन्य क्रमान्य अस्य है, निमाने क्रक्नेने पूर्वपानको सम्बूर्ण देशोचा संदूर्ण क्रिक्स चा । वही तुन्हें कर अक्तव्या प्राप्त हो से अन्यन्य ही पास अक्तव्या कर वह सम्बद्धां । वही अन्यद्धा हान प हो से पार-ही-बार प्रमुख्य क्रंबरम्बा च्यान क्रंबर्ग होना क्रारमेश क्रमार्थ क्रमाने हुए कर बहुत्य क्रक्रमों पा व्यानीने।'

भगवान् डोक्स्पाकी बात सुरक्त अर्थन आयवन करके spiret anne finner de rie alle pern freit क्षेत्रस्थीका ज्ञान करने रूपे । तक्ष्मार ध्वानावस्थाने स्था स्कृतकृतिक समाप अर्थुको अविकृतको साम क्षेत्र समाप्ति कारकारे असे देवत । जर समय करकी मानुके समान गति थी। जनका कुम्म इनकी शक्ति की पत्नदे बार हो थे। जार दिलाने जाने बहुबार जातिने द्वीरात्रकोर पायन जोस और परिवार कोत देखा, जारे दिया जोती दिवस औं भी और रिव्ह क्या चारमान निका से के वार्तने अनुपूर क्रवोको देशको हुए जब के आगे बहे, हो क्रेस्टर्गर दिसाबी दिखा। करा 🛊 कुनेरका निवास्त्रण का, उसके सरोकरोने क्रमार दिल्ले इन्हें थे। बोड़ी है सुपर अनाम करनो परी हाँ न्यून त्यात जी थी। अस्ते अञ्चन प्रतिनोधे परित्र अस्तान में । अस्ते: अने कल्यकरके स्वयीय प्रदेश दक्षिकेट हर, वर्ष विकारिक संबंधको कर-सक्ती सुनत्वी देती भी। इस प्रकार अनेको दिन्न स्थानीको पर करनेके बाद उन्होंने एक क्या प्रवासकार कर्मत देखा; अल्बे जिल्लाक भारतान् इंकार कित्रपान थे. जो इनायें सुपंकि समान देखेंक्यान हो के बै । उनके क्षापने किसूक का, नातकारन बहत्त्वर जोपन पा गुर बा ( और सरीएवर व्याप्यतः और वृत्यवर्षेष्यः क्या तार्वेटे संकारम् पूर्वराच पर्यंतीयेत्रीके साथ कैते वे । केवसी पूर्वरणं क्रम्बर्ध सेवामें उपनिवार वे । स्थानवर्षः व्यक्ति विस्थ स्थोत्रीके क्रमध्ये सुनि कर को थे ।

करोर पास प्र्तिकार भागान्य कृष्ण और अर्जुनी कृष्णियर सरावा केळावर कर्ने जनाम किया। का दीनों नर और नेमायवाको जावा देश भागान्य दिना वहे जाता हुए और हैस्से हुए मोले—'बीरवये। दूस दीनोंका कामत है; उसे, क्रियाय करो और पाँच कामओ सुमारी क्या कृष्ण है। तुम विस्ता कामके दिनों अर्थ हो, उसे में अस्ताव पूर्ण करेगा।



भगवार विकास का बात सुनकर क्षेत्रका और अर्थुट सेनों क्रम जोड़े करे हो गये और उनकी सुन्दि करने सरो—'कामन् ! आप ही यम, कर्म, यह, क्या, क्यूबर्ग, यह, क्षेत्रमीं, क्यूबर्ग, भीम, क्ष्मका, क्ष्मिय और ईस्तम आहे नामेंसे प्रसिद्ध हैं: आपको हम कारकार कारकार करने हैं। आप कारोपा दक्ष करनेकारे हैं, प्रमो ? इक्स पनेरक निद्ध विकिये।'

ित्रक्षणाः अर्थुन्ते मन-ही-मन जनकान् तिया और श्रीकृत्रमका पूजन विस्ता तथा संबदनीसे कहा—'जनकान् ! है दिव्य अक्षा कक्षा है। या सुनकार जनकान् श्रीका मुस्कारणे और कहारे तथी—'श्रीह पुरुषों ! है दुन होगीका सामस कारता है। तुन्हारी अधिकाक मानुन हुई, तुन विसन्दे

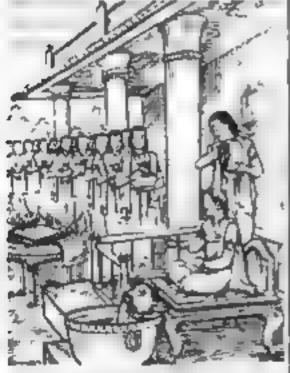
पिने आने हो, यह कर्यु आने देश है। व्यक्ति निकट ही एक अनुसन्दर दिन्न करेशन है, अरोपे की अपने दिन्न सनुव और कार एक दिने हैं; वहाँ सकत् सकारहित सनुव से अपने ।'

'सून सका' कहनर होने वीर विकासि पार्न्टिंग साथ सा सरेवारम गर्ने। महीं सामर सहींने से नाम हेते. इक हुनेवादाओं: सामन सम्बद्धायन सा और दूरता हमार स्वाक्त्राय सा, साथे: मुक्ते आवादी करते विकास ही वी। वीदाल कीर साईर होने का परेवारों पाला अवकार करते का नामेंचे पाल क्रिकेट हुए और हाथ केवार विकासियों प्रसान करते हुए सामग्रीकार पास करते हुए और अर विकासिय पहुंच-मानाचे हैं कर संमानीके पास कुए और अर विकासिय पहुंच-मानाचे हैं कर संमानीके पास काने। सहाँ अववर अहीर ने असा संस्थानीको अर्थन करने।



तिने । तम मनमान् गंबरसी प्रसानिमेरे एक सहावारी निकास । उसने वीरमानसे वैद्यान उस बनुषको उस सिवा और अस्ता विविध्य केल बन्धान औ भीता। अर्थुन व्य सम्बद्धान देशना का और आ प्रमान विश्वयोगे के एक व्या, उसे की उसने व्यार कर दिला। तब उस सहावारीने उन बनुष-शामको कुन: सरोवारों मेन्स दिला। तस्प्रहास् इंग्रास्थीने अस्ता होकर अस्या वस्तुत्व अस्ता क्षेत्र अस्ता अर्थुनको हे दिला। उसे प्रमार अर्थुनके हर्विस होना न की, मार्थ्य एके। विश्व बीख्यान और अर्थ्य छेनीने जनवान् रियमो प्रयास क्रिक और राज्यी करण से वे अपने विक्रीको प्रके आहे। (यह एक प्रक्र अर्थुन) क्यांने ही देखा वा ध

रहाच कारो है—हमर श्रीकृष्ण और सुरक्ष करें करने हैं। र्यो, इतकेरें रात बोल क्यी । इतमें ओर राज्य कुमिन्नित की कर गर्ने । से अस्तर कान-गृहको और गर्ने । वहाँ कार करके सेन यक पहरे एक रहे आर कुछ जातन अल्पो को हुए कोनेके को रियो को थे। एपिटिर एक महिन पता पहल्कर सेंड आराज्यर केंद्र गरी और अर मच्चक्र करने करने राजे ।



ये मान-पूजन जादिले निवृत्त होका बैठे ही वे कि हारकाने आवार कावर हो—'बहाराज । चनकान् स्टेक्टम प्रकार के है।' एकाने क्या—'इन्हें जापनपूर्वक के आओं।' नकरणा चनवन् श्रीकृत्वाको एक सुद्धा आसन्तर विरामनन कर राता पृथिहिरने उसका विविधन् पूजन विकार इसके बाह अन्य करवारी लोगोंके उल्लेकी कुल्या निर्मात राज्यकी अञ्चाले प्रस्तात्व उन्हें को कीतन के आवा। किएट, कीतलेन, गुरुपा , सामग्रीत, चेवियम सुर्वेश, हन्द्र, निरुप्ते महार्ग, शहरेत, चेमितान, केमानराज्याका, मुख्य, कार्यना, कुरायक, सुरुष् और श्रीक्रीके पीची कुर-अं रूपा अन्य बहुत-से प्रतिक स्थानक पुनिर्देशको केवाने

इसके स्रारंग्ये रेमान्य हो आया । अन्य से अपनेको सुरक्षात्र | अमीतक हो अन्य अध्यानेका विरायमान हुए । औसून्या और कार्लाह एक है जासकार कैंद्र में 1 का ज़बा पश्चिमियों जा १४७६ पुन्ते पूर् सीकृत्यते यहा—'नक्त्रमात्रम ! वैते केवत इन्हों कारानी को है, जो उच्चा इन्होंन काराई है



क्रामने समार बुद्धने क्रिया और साथी सुन काले हैं। सर्वेक्स ! इन्या सुक्त और इसरे जनोकी रहा--स्थ अपनोर है आसीन है; जान देखें कुछा क्रीकिये, विलाने हुमारी का आपने रूपा हो और अर्जुनको को हुई प्रतिका साम हो । इस कुक्तवरी बहुस्तागरों जाय 🛊 इमारा सहार करें। कुर्व्यालय । आरम्बो हमारा कारणार प्रमान है। देवर्षि क्यांकीने अवस्थे पुरसम् स्त्री नारायम कारतय है, आप है करक्ष किया है का पानको जान का पर्या विकास ।'

कारण क्रिक्त क्षेत्रे—अर्थुन कार्यान, अवस्थितको प्राप्त, परप्रधाने, पुजाने चतुर और केमरमे हैं; में अस्तान ही सारके सहस्रोक्त संक्रम करेंचे। मैं भी देख प्रचय सर्वेगर निरामी अर्थ्य कारहके कृतिकी सेनाको उसी प्रकार नाव क्रांक्टे, जैसे जान ईक्टबर्के । अधिकन्युकी क्रमा करानेवाले करी करावादी अर्जून अपने कालीसे मारकर साथ ऐसी जन्म येव हेने, व्यां बानेयर मनुष्यका पुर: व्यां हर्सन नहीं होता । पदि इन्होंद्र साथ राज्यूर्ण देवता भी कारणी पहाचे रिजे कर करों, से भी काम बुद्धों प्राण ज्यान कर उसे प्राणी

राजवानीने जाना फोट्य । राजन् ! अर्जुन आज जन्मक्रको जनका ही आपके निकट कारिका होने, इस्तिने होक और किया दूर कीरिके ।

हम स्वेगोमें इस प्रकार काराबीत कर ही शी की कि अबूंग अपने निर्मेंके दान शराबार वर्गर करनेके दिन्ने वर्ग आ पहुँचे। बीतर अवकार मुकिश्वरको जनस्य बारके ने सामने साई हो गये। उन्हें देशको ही मुकिश्वरको अस्तर प्रकारको हुए कहा—'अबूंग | आस सुन्दारे मुस्तको नेती प्रकार कार्यक है तथा परावान् वीकृतक मेरी प्रसाद है, आसे उस्त केवा है पुत्रने हुन्दारी विजय निर्मित है।' अबूंगरे कहा, 'मैका | राता मेरी केवरकार कृतको हम बहुन्द अध्यो क्रिकिनको उस्त हैता मार' यह महामार अबूंगरे असने क्रिकिनको स्वाधानको निर्मे का सम्माद अवूंगरे असने क्रिकिनको स्वाधानको निर्मे का सम्माद का सुन्दान स्वाधानको निर्मे का सम्माद का स्वाधानको निर्मे का साम प्रकार का स्वाधानको निर्मे का साम प्रकार की स्वाधानको निर्मे का स्वाधानको क्रिका साम प्रकार की स्वाधानको निर्मे का स्वाधानको क्रिका साम प्रकार की साम स्वाधानको निर्मे का स्वाधानको क्रिका की साम स्वाधानको साम स्वधानको साम स्वाधानको साम साम साम स्वाधानको साम साम स्वाधानको साम साम साम स्वाधानको साम साम साम साम

स्वान्तर तथ कोन वर्गतककी जाता है, काक आहिते पुरिचित के बड़ी सीमानके साथ बुद्धके किये विकास बड़े व संस्कृत करने हुने था, जातक था। त्यानकि, वीकृतक उर्वत अर्थुन भी पुनिद्धियारी जनान कर जातासमूर्णक बुद्धके

। रिक्ने अनोः जितिरारे प्रमुप्त निकारे । सारवीय और श्रीयत्था क्य है रक्पर वैद्यार अर्जुनकी कामनेचें गये। वहाँ व्यवस श्रीकृष्णने सार्गनकी चाँति अर्जुनके श्रावके ५०६ सार्वकेनोसे स्थापार केवार विकास हानेने अर्थन भी अपना हैनिक वहाँ पर करके बन्ध-बाग रिजे बहुर निकार और स्थानी चीकमा करके अपन समार हो गये। विश् कामकि और **बीकुरण अर्थुंगके वा**ले का बैदे । श्रीकुरणने योद्धोची बालद्वीर क्रमणे हे हो । अर्थुन का क्षेत्रोंके साथ प्रक्रको पहर हिये । अर समय नियमको सुकता देनेशको कर। जनगरके साम सन्दर्भ होने रागे । वर्धश्योची सेवापे अवस्थान हुए । सुर समुन्तेयां देशकर अर्जुन साम्बन्धिने बोले---'बुबुबान । वैसे वे निवित्त दिसानी है से हैं, उससे जान पहला है जान पहले निवाद ही नेरी कियम क्रेमी १ अवः जान में यहां बाजेगा, यहां सबहश्च मेरे पर्यक्रमको प्रतिका कर रहा है। इस समय राजा मुस्तिहरको कारण कर तकारे कार है। इस संस्थरने कोई की पेस्त बीट न्हीं है, को उन्हें पुरुषे इस सके; तब स्वक्रात श्रीकृष्णके सक्ष्य हो । इक्कर का प्रवास्थार ही केंद्र आविश्य क्योक्स राजा है । जेती किया क्षेत्रका स्था वसको समानी हो रखाये साथ । यहाँ पराचन, वासुनेव है और में हैं, वहाँ किसी विश्वतिक्री सम्बद्धाः महि है।" अर्थुओं ऐसा स्थानेक सामनीत 'सहत अवार अवार वर्ष एवा विश्वीर थे, वर्ष पास गरा।

### पृतराष्ट्रका विषय तथा सञ्जयका उपालम्य

कृत्यानी करा—सहाय ! अधिकानुके कर्त करेते हु जन्मोकारे हुई हुए साम्बर्धने क्रमेरा होनेवर क्या किया ? सथा मेरे पहाराको चौद्धानीयेके विधानकियाने पुद्ध विध्या ? सर्जुनेके परावस्त्रको जानके हुए भी अनुनि करवार अपराव विध्या, ऐसी हामाने के निर्माण करनेके सिन्धे करिन-व्यावकोने सिन्धान एक प्राणिकीयर एक करनेके सिन्धे करिन-व्यावकोने सिन्धान एक प्राणिकीयर एक करनेके सिन्धे करानानुकार स्वायान सीन कर रहे । यह अस्ता बीचार एक अस्ता है, पूर्णीकर ! एसे टाली का । वीकृत्या सुन्दारे विश्वकी करा करने है, अस्ते ही स्थिके सिन्धे प्राणीन करने है; यह इस्तारी करा व मानोगी, को सुन्दारे सुन्दारी कियार अस्तावन है।'

मीकृत्यने सर्व धी अनुस्तर्भ वर्त गर्हा, परंतु आने अस्तिकार कर ही। अन्यासका अक्षात संनेके कारण इकरी कर्त को ठीक नहीं जैसी। या पुंतिक कारके क्वीचूर का, इसीरियो असी मेरी अस्त्रोधना करके केवल कर्व और

कु कारानके 🛊 पराच्या अनुसारत विका । धो जुजा हीरत गुका कार्य देनों भी मेरी प्रका नहीं ही। निवृत, भीनाती, कारण, जुनियान, जुनिया, साथ, अन्युक्ताया, क्रूप और होना-पी लोग भी कुला होने हेना नहीं बाहते हो। यदि येहा कुर हम स्थापी क्रम रेक्स करवा से अपने पाति-पाई, दिल-लाइ—सम्बंध प्राप्त विकासमाध्य सुरस्पूर्वक जीवर कारित बहुता। मैंने का भी बात वा~'पाका सरस क्रमण, महत्त्वची, वर्त-बन्दका द्विष कार्यकारे, क्रारीन, आवृत्त्वीय और बुद्धियम् हैं इसरियरे को अवहन तक प्रिलेक । वर्षका पारम कलेकारा पतुष्प क्रम और सर्वत स्क पता है। वर्गवर को कल्बान को कानको प्राप्ति होती है। सामुद्ध पृथ्वीका राज्य भीतनेके बोन्य है, उसे प्रतः करनेकी क्रकि की रखते हैं। प्राच्छाने नैशा क्रकु व्यवना, केल ही करेंगे। में इस्त क्ष्मियानेवर स्थित खेंगे। प्रस्था, क्षेत्रक, भीना, जेल, क्षित्रक, नाईक, कुर तथा अन को-को रचेन जो तुनारे वितको बात करोंने, उसे पाणक

अनव्य पान तेने। श्रीकृष्य कथी शर्मको होए भूषि शकते और पानक श्रीकृष्यके ही अनुवाली है। मैं भी चहि शर्मपुरु नेवन कड्टिए से वे साम नहीं सकेने; क्वेंकि पानक पार्यक्य है।'

स्त्राच । इस प्रकार पुत्रके सामने निवृत्तिकार की स्त्रुव कुछ सहा, किंदु कर पूर्णने मेरी एक न सुन्ते । किंद्र पहले वीकृत्या-मेरी सार्गन और अनुंत-सरीवों केन्द्र है, कार्याः पराज्य हे है नहीं कार्यों । का यहा सार्व, कुरोका और पेने-सिर्व्यानेकी और विश्वकृत्य कार्य नहीं केल । अव्याद, अब आगेकी कार सुन्याते । कुरोका, कार्य, हुन्यान और क्यूनि---इन समने निर्व्यात क्या सार्व्या की 7 पूर्ण क्यूनि---इन समने निर्व्यात क्या सार्व्या की 7 पूर्ण क्यूनि-सा कार्य किंवा ? कोची, प्रचानुद्धि, कोची, राज्य इन्द्रपोक्तरे क्याचार और कार्या कुर्णनाने अन्यात कार्याः न्याद में कुछ की किंवा है, सन कार्याः

श्रापने वहा—न्यासभ्य ( मेंने सम कुळ आवळ देवत है। आपको प्रवेशियर व्यवस्था, विवत क्षेत्रम कुण्ये ( इस विकास आपका भी सम्बाग कम पहीं है। पहोत्रस कमी कुछ व्यक्ति पुत्र विकास समाप अब आपका पह देना-केमा कर्य है। इस्तरियों होता न परिचित्रे। तक पुद्धका अवकर अस्तर, असे समय पदि अस्तरे असरे पुत्रेको केस दिस होता अस्तर कौरबोको पर अपन है होती कि ' इस अपन क्योंकरको कैद कर हो," का उन्ने जिसके कर्तनका पासन करते हुए पुत्रको प्राचानी कार्यन किया होता. हो जान अन्यर यह होनड कर्मा को जान । आप इस कारते यह बुद्धियन संस्के को है से में बाराज्यमंत्रों दिलाइकि केदर अध्ये क्षांचन, कर्म और कुद्धनिको हो-मे-हो निरम हो । हर उनक को अन्तर्भ का विश्वाप-अञ्चल पुरस्का है, का पान कार्य और लोको जानो होनेके सारण है। जिन मिलाने हुए समुद्राती चर्ति यह सरको चीरा हेनेका यो सबसे चीरत प्रतास सहस है। पानवाप श्रीकृष्यने काले कर लिया कि शाद राजवारी पार के गये हैं, कारों के आगने प्रति अवार-वर्डिक गाँँ रखते व अवनंद पुर्वेन कव्यक्षेत्रो स्तरिनां सुकर्त और आक्ने क्रों केवा जी। पुलेको एमा दिलकेवा स्टेप आस्त्रो ही सन्त्रो जरिया था; जरिया से अब फल फिर छा है ! यहने आपने कर्णाः भाग-राज्येका राज्य क्षेत्र विच्याः अस्य राज्याः सर्थ क्याने एको जीव तेथे हैं, से अन्य प्राच्या प्राप्तेत क्रीनिकेना । इस सकत कर कर है, जो आह क्षांक अनेको क्षेत्र बक्रकर प्रस्ती निष्क करने कैहे हैं। अब रे को संबंध की भी। सेंद्र को देविये हा बातेओ। पंचालेंद्र राज भौरवीका को अवस्थार प्रश्न हाता. सामा रीक-दीक कुलक सुनिते।

# ग्रेणाचार्यजीका शकटब्युह और कई वीरोंका संहार करते हुए अर्जुनका उसमें प्रवेश

स्थानने कहा—जह एस बीमनेवर सरकार्य होको सकते सम सेनाको इन्सरमञ्जूने कहा किया। सम सन्य थे पश्च सन्तर्त हुए नही सेनीसे इक्त-अवर पून को थे। उस वह सारी सेना पुत्रके रिज्ये असावित होकर वही हो नवी को अस्त्राची क्ष्माको कहा, 'तुन, पुरिसका, कर्म, अवस्माक, इस्तर, वृंग्योग और कृत्याचार्य एक स्वत्र सुक्ताचार, कहा इक्तर रही, चौरा हुनार गामारोही और इक्टिंग हमार वैद्या होचा होकर हमारे हा: कोस बीके रहे। नहीं इस्त्राहि केवल भी सुक्तरा पूक नहीं सिवाह सर्वत्री, रिजर चावकोची सो कात ही तका है ? नहीं इस नेक्टने रहता।'

श्रेणावाकी इस सवार कहा वैवानेस सिक्सन क्याध गान्यर महार्थिको और कुझानारीके स्था करा। वे इस इनार सिन्युटेबीय कोई को इस और प्रीमी कहाने वारनेमारे वे। इसके कट अवके कुछ दु-शाना और विकर्ण विन्युरामको कार्यास्तिको तिन्ये हेनको असन्यक्तो सावार इट गये। ब्रेणावासीतिका कस्या इस वह बहर-श्रवटका

प्रतिक वर्षेश सन्तर और प्रतिक्षी और दार कोरताव पैरण हरू था। उसके पीछे प्राप्त नामक अपेश पहा था और उस प्राप्त प्रतिकृत प्रत्या एवं पुर पहा करात प्रता था। इस अपना इस मान्युकी एक्टा भरके आवार्य अपने अपने को हुए। सुबीनकुके मुस्तानकर स्वार् क्यूके कृत्यांकों निवृत्व किया गया। उसके पीछे व्याप्तिकरोड़ और अपनाम एका उनके पीछे कृतिकर और वार्य वर्षे छै। साम्यानुके अपनामानी स्वार्थ किये एक इसके पीछे निवार किये गये थे। इस क्याके पीछे वृत्तीक्षके वर्षा मा। सेन्यानुके अपने इसके स्वीत साम प्रमास करात था। सेन्यानुके अपने इस साम्यानुक्यो देशकर साम कृतिकर वाल असम इसल ।

इस प्रकार जा चौरकोजारी स्ट्राटका हो नहीं क्या पेरी और कृद्युनेका कर एवं कीरोका चौरकार होने क्या, यो रीवजुर्को रकाङ्ग्यमें चीरकर अर्जुन दिकानी हिने। इसर ज्युनके द्वा करानीया क्या कृत्युनने पारकारोजारी- क्ष्मुश्यान की थी। इसी प्राप्त पुरित्त काल और नामर इसके प्राप्त रेताओं, सरकीय और सम्बंध प्रतिक्रकों पूरी करनेवाले, पराप्तकानुकानी अनुशी चीरवर सम्बंधों काले हिम्स रक्षार प्रमुख्य प्राप्तिय चंत्रकी खुलर करते हुए पुद्धपृथिये प्राप्तिय विका। अनुति सम्बंध क्षेत्रकों वाक्ष्मकों को होकर प्रदूष्णिंगे थी। उनके खब्म है सीक्ष्मकानकों भी सम्बंध पाक्षका पद्ध प्राप्ता ( का केनेके प्रदूष्णकों आवेद सीकारोके रोगटे साहे हो गर्ग, प्रतिर करेको समे और वे साहेश-रो हो गर्ग रक्षा करवे मो हार्या, केर्स मारि प्राप्ता थे.



वे मान-पुत क्रोड्ने स्टो । इस जनार जनावी सारी केक ब्यापुत हो सवी । तम जनाव जनाव क्यूनेके रेस्टे फिर सङ्ख्य, पेटी, कृत्यु और कारी आदि काने (क्रो )

वाण कार्युनने कारणा हरिया होत्यर श्रीकृतकारे पाहा, 'हुनीरेख | आप क्षेत्रुंग्यो कुर्विकारी और सहस्रमें । मैं कारणी हरियारेनाको पेराकर प्रापुक्त कार्यो असेश कारिया।' यह सुनकार श्रीकृतकारे कुर्विकारी और राम हरिया। कार, जाव होनों ओस्से कार्य तुपुक संस्थान क्षित्र गाम । आवक्ती ओसोः सापी पत्री श्रीकृतका और अन्तुनकर आक्रोबों कार्य करने स्वेते । तम सहस्राह सर्वुनने भी क्षोकारे परावार अपने कार्योसे उनके। तिर स्वाने साराम्य कर दिने । कार्य-की-कार्यों स्वापी साराम्यों हरियारेकों स्वापीरेके का गामी । मही नहीं, क्षेत्रुंग्ये सिर और हरियारेकों सुद्धें भी सर्वान पद्धी दिसार्यों होरे स्वापी । जानको तैनिकानेको इस और अर्जून है विकासी देश था। ये कार-वार 'अर्जून कह है!' 'अर्जुन कहाँ है?' 'अर्जून का कहा हुआ है!' हुआ अक्टर विकास रहते में। इस अर्ज्य प्रकृत उनमेरे कोर्जु-कोर्ड में आवरलें और मोर्ड अर्ज्यर है जार कर बैस्ती थे! उस अर्ज्य करनके अर्जाधून होकर में मारे बेस्तारको अर्जुनका है देशने रूपों मेदनके करण मेहेस हो कर बरकारता हो गये थे, कोर्ड न्यूडी मेदनके करण मेहेस हो से से और कोर्ड बहे-को अपने अर्ड-कम्ब्रोको पुकार कर के से

इस जनार अर्थुन्ने अपने बार्गांने वृत्तेषेणको पालोगाया इक्ष्ण पर अस्य । इससे आपके पुत्रको मार्गा पाला मार् स्वयंत्री और पुत्र केम्बर केम भी नहीं सबसी थी । इस अवस्य सभी और वैद्यार केम्बर क्ष्म भी । इस सर्वाया अस्य मार् हो पाला । उस अपनी सेमाओ इस असर क्षित्र-निम्ह होते देशकर अस्या पुत्र हु-आसम् वाहे पारी गामरेगा होता अर्थुन्ने आसरे आपा और उन्ने बारों औरसे के दिस्स । इस सम्बन्ध इससे अस्या और उन्ने बारों औरसे के दिस्स । इस सम्बन्ध इससे असरे आपा और उन्ने बारों हो अस्था अस्य सम्बन्ध होता प्रथमित क्ष्मित्र अर्थुन्ने बार्ड मी अस्था अस्य समे । के हाती पालांग-समुक्तों हुई हुए इसरों तीनो पालांने समान होतार प्रथमित क्षमोत्र सारों पुत्र इसरों गी-पर प्रथमित विश्वे समे । क्ष्मी क्षमोत्रर भी पुत्रम विश्वे थी, अस्मी पालांक भी



सर्जुनने सामने वाणोंसे जाए हिंगे : जाए सामन अन्तुनारी पूर्णी देशनेकोर थी। ये कार आश्र पानने हैं, बाद प्रमुख्यी होती परिवार है, बाव जान कोइटे हैं और पान सरकारकोरे नवा बादा निकारको है—जाइ जान ही नहीं पाना था। ये सम्बद्धशास्त्रार प्रमुख्ये प्राप्तित कृत-मा कार्य जार पाने थे। हार समार अर्जुनके हामसे प्राप्तित होनार पुरस्तानको सेना अपने नामकोर सरीहर पान जारी और पानी देखीने होनारकार्यों स्वापित होनेको आकास्तारों स्वाप्तानको सुन्त पानी।

जन पहारणे अर्जून कुलासमधी होनावा ग्रीहर वर क्यानके स्तार स्कृतिके विकारणे होनावार्वकी होनावर कृत यो। आवार्व बहुके हारण गर्ज थे। जर्जूनो उनके सम्मर प्रमुख्यार सीमुक्ताची सम्मरिके हाथ जोक्यर बहु, 'कहन् ! अस्य मेरे तिथे व्यानाव्यक्ताचना व्यक्तिके। मेरे तिथे अस्य जितके समान है। विका तरह अनुक्राक्तिकी दक्षा भरता अस्यका वर्ताच्य है, जहीं प्रकार अस्यको वेटे थी यह करनी माहिने। आम आयारी कृतको में विम्युटान व्यक्तिको वारक प्रसुत्ता है। आम मेरे अस्तिकारी यहा करें।'

अर्थुन्से हेर प्रकार बाह्येण सामान्ये मुस्कारकार बाह,
'अर्थुन | मुझे परावा सिये क्रिल हुए सरकारको धाँ जीत सबोरो | इत्या बद्धार अर्थुन हैर्म-हैर्म अर्थुन्से इस्टेंड रम, योड्, कामा और सारकिक सर्वेष के क्रेन्डिक्ट आकारित कर दिया। तब से अर्थुन्से को क्रेन्डिक्ट आगोको रेम्स्यार अर्थ्य सम्बद्ध काम बाद करे और अर्थुन हैर्माहित स्थान ध्यवको हुए क्यांचे क्रेन्डिक्ट और अर्थुन हेर्मोहित कोट बी। इस्टर बन्दान स्थाने क्यां अर्थुन हेर्मोहित कोट बी। इस्टर बन्दान स्थाने क्यां क्रेन्डिक्ट आवार्यको संस्था स्थान करो स्था । अर्थे क्यांचे सर्थे। अस्य क्रेन्डि पीम सर्थोने सीक्टनको और विकास सर्थे । अस्य क्रेन्डि पीम सर्थोने सीक्टनको और विकास सर्थे विकास कर क्यांचे क्यां क्यांचे के स्थाने विकास सर्थोनको बीक दिवा। दिन द्वार क्यांचे के स्थानेकी वर्षे सर्थों अर्थुनको अर्थुन कर हिया।

प्रेण और असुंन्छे युक्को इस प्रक्रम काम हैस बीक्नमं इस दिन्छे प्रकार करनेका विकार दिन्य और सर्जुत्तरे कहा, 'अर्जुर ! 'अर्जुन ! हेस्से, हमें कहें काम कह रहीं करना वाहिये। आज हमें कहा कहा काम करना है। इस्तिये प्रेणावार्णको क्रेड्सर नागे कहन कहिये।' उन्होंने कहा, 'आवार्ण जैसी हका हो, कहें क्षितिये।' उस उन्होंने सामार्थको प्रविद्या कर काम क्षेत्रते हुए जाये कहते राजे। इस्तर होनाने कहा, ' वार्ण ! हुए कहाँ वा हो हो ? संसायने हरूको नराज किने किंग हो हुए बानी नहीं हरते थे।' कर्मुको बहा, 'जान की कुछु नहीं, गुरु हैं। ये की आपका विका और कुछो सकान है। संस्थाने ऐसा कोई मुझ्न नहीं है, को कुछों अन्तरको पराचा कर सके।' इस जबार कहते बाहते कर्मुक अन्यानके कर्मके दिन्ने उत्सुक्त होकर बाही हैनीही करियोकी संस्थाने हुए नमें। अन्तर्क बीहो-नीहें उनके कारदाक कडाननामहत्त्वर मुख्यनम् और हारतीका भी करे मने।

तम चय, कृत्यार्थं, काम्योकनोक् और सुरायुने उन्हें कर्ण कानेने रोका। उन विकासित्यार्थं वीरोक्षे साथ अर्थुच्या और संसाथ क्षेत्रे स्था। कृत्यानाने अर्थुच्यो का बाव को। अर्थुच्ये उत्योद एक सी सीन काम वारकर उन्ने अर्थेश-सा कर विका। वेच उत्योद वैस्पार सीकृत्या और अर्थुच् क्षेत्रीयर प्रवीक-पर्वोक्त काम क्षेत्रे। इसपर अर्थुच्ये उत्याद वन्न कारका। जो विधार वाम्योक्षे काम्या कर्त्या हा विचा। कृत्यार्थित होते क्षेत्र कृतार क्ष्युच्यां अर्थुच्ये का्न, 'पार्थं ! वृत्य कृत्यार्थंत्व क्षा का कर्त्ये। इस उत्याद क्ष्याप्त्याः विचार क्षेत्रकर काम्यु इसे पार क्षाय्ये। इस उत्याद क्ष्युच्यो वास्त्रोत्वे कृत्यार्थंत्वे अर्थेश कर क्ष्यार्थेत्वे। जेन्यार्थं अर्थेश वास्त्रोत्वे

अर्थनको प्रस्त प्रभाव करते देशका मानगावानी राजा

हाराया अवन्। विकास अन्य प्रसास को हरेकरे उनके सामने आया। असने अर्थानके तीन और अीनुस्ताके सुबर कम मारे तथा हुए हैंक क्षांजी अंबर्ध कमारा पार किया । सर्वाने होत हो उसका बनुष कारका सरकारके भी हमार्थ-हमार्थ कर दिने । तक उसने कुरता करून लेका अर्थ्यकी करी और प्रकारोंने से कल गरे। इसपर अर्थनो क्यारी क्या क्रेक्सर सुराष्ट्रकारे तेन कर करत और उसके सार्राक्ष को धोडोंको भी भार प्राप्त । तक न्यून्यती सुरात्क रकते कारकर क्रम्में एक से सर्वनको सोर बैक । यह प्रकारक पुर का। बहुनकी क्योंका इसकी करता की। उसने अपने पानेंद्र स्टेक्टर्ड करनाने कहा का कि 'नेस पत्र संसारमें क्षुक्रोंके रिप्ते कारण हो ।" इसकर कारणे प्रस्ता होकर कहा क, 'में उसे का बर देता है और साथ है का दिन्स अब की केन है। इसके कारण हैस कुर करूब से जावगा। परंत संगापे प्रमुख्या अपर होना किसी प्रकार सम्बद्ध नहीं है। जो जनम हुआ है। जो अनस्य भरता होना ।' ऐसा प्रकार कारणे सुरायुक्को एक मधियांका गढ़ है और कहा, 'क का तुन्दें किसी देसे व्यक्तियर नहीं क्रेक्टी व्यक्ति, जो युक् न कर का है। देशा करनेयर का तुमपर ही मिनेनी है जिल

कार्यको पर देशका क्षेत्रकोती सारी केन और आहे. गामकोके को के उसके गये। हुआँ समय साम्बोक्यकेस्टा सुर्मात पुर सुर्मात्य अर्थन्ते साम्ये सामा । अर्थन्ते अर्थाः कार तार काम क्षेत्रे । में का मीनको कामा कामे पृथ्वीने पूरा गर्ने । तम स्वाधित्यने तीन सन्तेचे जीवनाओं वीवका पीय पान अर्थन्तर प्रोते । सर्वानी सामग्र पहुच पराचन धाना भी पान जाने और वे आगन की बालेसे को भी साधार कर दिया। तथा प्राथितको अञ्चय सुनैक सेवार बन्द्रमध्ये कर एक पर्वतर श्रीव क्षेत्री। जा उन्हें करक क्षकी विकासिकी को साथ क्रांक के जा जो। प्रसिक्ती चोटसे अर्चुनको न्यूटी चूकाँ ३० नकी। चेन क्रेनेक्ट क्योंने कंपनामाने कीन् कन्येने सुर्वातनके एक साथे भेदे, सर्था, जार और सार्थिको के स्थान का क्रिया रिय और भी बहुतनो साथ होहसर साथे साथे हराहे-कुर्व्य कर दिने । इंग्लेंड पंजान एक जीवर्ग करवाने कालो क्योंने सुरक्षित्रको कर्ता कर करने । इससे अस्त्र करक का गया, अरू किल-विका के गये और मुख्य गया अक्टारी मायस्य ज्ञान्त्रकः विकार को। दिन एक कर्मी कर्क मानके अक्षेत्र को भी मरावाको कर दिखा।

प्रमण्ड | इस जन्मार गीर सुरायुध और सुविधनके गोर मानेनर सारके सैनिया धीयमें मारवार सर्व्याप हुए को उसा सर्वायप, प्रश्नेन, विश्व और महाती मानिके और जन्म मानेनी क्यां वारने रहते | अर्जुन्ने अर्थो सार्वादे इस्तेने कर इसार मोन्द्रालीमा स्थापना पार विद्या | इसा अनुने सार्वे सोर शने, दीने ही स्मृति अपने प्राच्यांथ स्मृतने पूरे हुए मानोंने इसके दिर और पुन्तालीको स्मृत विद्या प्रश्नेत सार्वे हुए सिरोसे बाधी स्थाप्ति पर कर्या | विद्या समय बीर अन्याप समया इस अवार संस्था कर दो थे, प्रश्नाली सुवाद और अस्तुताम् उसके सामने अस्तान पुन्न पारने सार्वे । उस दोनों सीरोने इसकी सामी और सामी ओरसे साम परवाद अस्ता किया और इक्टों क्या केंद्रकर उन्हें कियुक्त क्या दिया।

इसी प्रमान क्षाणुने अस्तरत कोश्वरी भएतार अर्थनका को बोर्फ टोनरक चार किया । साम्रे प्रचार होका थे प्रस्त्य अनेत हो गये । इतनेहीये सम्बातको उनके उत्तर एक आकरा र्वेदम्य क्रिकुर केवा । अन्तर्व चोरने अर्थनके पानपर प्रश्यक्य **व्या** किया और ये बहुत कारत हो पानेके बहरण अपने राज्यी कार्याद क्षीया सहारा तेवल की स्तु गर्ने। प्रत अर्जुनको क्या हुआ सन्तानक अल्पनी लागै सेनामें बहा कोरमका क्षेत्रे राजा। अर्थुनको अनेव देशका बीकुका क्षे विभिन्न हुए और अपनी चचुर बाजीसे उन्हें सबेत करने लगे ( कारों का कार से की-और केवले अने करे। इस कारा क्यमें अनक का एक क्या है हुआ। इस्त्रीने हेका कि हरिस्टर और रूपका रच सम्बंधे को हुए है तथा होगों रखू सामने को कृत हैं । बार, कर्ज़ने होता है देखान समाप्त विकास । आसे हालते कार निकार करें। क्योंने कर केने नीतेवर कर किया और रुपे केर्द्र हुए परण भी अर्थुओं कारोते किहेर्न होसा स्वयाको अने हरो । का-बी-कार्य क्यंद्र मानोसे प्रस्ता और पुराने कर करेके कारण है केन्द्रे अध्यक्त अस्तानों के पने । इस प्रकार क्षेत्रके और क्षात्रक्रमा का दशा देखकर कर्म संपोधी यह स्वार्थ हुन । प्रत्ये पहार् अर्थ करो अपूर्ण पर्या प्रतिकेशे सरका और भी अस्ते-अस्ते क्षेत्रेक प्राप्त करने क्षेत्रकोची केरावी और को र

कुरम् और अञ्चलका एवं हुआ हेलका प्रकट दुव निकास और केलीय कोंधने करकर करनेकी कर्य करने अर्थन्ते वान्ते असे। क्षित् अर्थन्ते आरम् कृतिः क्षेत्रः अपने बारतेने एक पूर्वने ही उन्हें कारावरंड राज मेर दिया। क्रमी निवा क्रमा क्रमान्यको देश क्रमान है, उसी प्रकार न्यानीर अर्थन चौरवीची रिक्को कुम्बर को थे। अर समय कोर्ड की अभिकारित जाने केना जाते पाए पर । अनेकोर्ड गम्बोनके लीव अवदेशीय, पूर्वीय, व्यक्तिमान और करिक्टेबीन प्रथानेने क्वेंबनकी मात्राके उत्तर आसावा विका । विका अर्थुको नाम्बीयरो कोई हुए साम्बीके साम्बार ही क्ले कि और कुमाओंको का दिया। इस बहुई अनेको प्रमारेडी मोच्या प्रमाणके सम्बोधे विकास प्रशासनी से को । अर्थको अपने बालबारको सारी सेनाको आकारित कर क्षेत्र और पुष्का, कर्मपुष्का, कामारी हमं सुर्वाकारे अवस्थान मोमहोस्के अपने प्रमाननेपारने पार-पुट देशन ह उनके बाजोदे विकास में संबद्धे फांग्सेन मेट्स परायीत क्षेत्रम संकारपुरिते काम होते। इस प्रकार मोहे, हामी और रवॉक स्वीद अनेको केलेका संबार करते हुए और बन्धाब

रमध्यिमें जिला के थे।

श्रम रामा सम्बद्धने उनकी महिल्लो रोका। सर्मुनने सही पुनर्ति अपने रीको कान्येहे सम्बद्ध कोडोनो पर कहा और बहुनको भी स्थार निराम । सम्बद्ध कृत पारी नाह लेकर कर-कर अर्जुन और बीकृष्णका केर करने जगान तब अर्जुन्ने के काकेरे कहके स्वीत करकी होने पुनाई कर इस्ती और एक कन्मरे अस्ता करका की वह दिखा। पूर्व कर्मा का करकर कंपको पुनीरर का पहा।

## दुर्योधनके बलाइना देनेपर द्वेणासार्यका उसे अभेद्य कवस पहनाकर अर्जुनके साम युद्ध करनेके लिये मेजना

सहरने कह-नावन् ! इस प्रवार का सर्वृत क्रिक्टन प्रयासका कर कार्रेको असार्थ होत्याको और स्वरूपाँको रेशाओको चीरकर महाते कुर गये क्या करते कुळके सुर्वाचन और क्षणकुरा कर के गया, में अपनी केवाओ भागती देखकर सरम्बा कुर दुवीका अनेवार ही अपने राज्य यहा हुआ नहीं कृतिने हेन्यवानीत कर आवा और वहने रत्य, आमार्थ । पुरुषीक्ष अर्थन प्रचारी प्रशा निकास वादिनोक्के कुम्बनकार भीतर कुछ नका है : अक आम विकार करें कि की अर्था मध्ये किये का करत प्राधि । औं के अल्बीका करते करवर भरेना है। जन किया प्रकर पाल-पालको पाल करनी है, को प्रधार अर्थन करने केराका संबंध कर का है। इस समय कवाकरी पह क्रांनेवाले को संदेशों का को है। इससे काले समाव सामानोको पूर्व विकास का विद्र अर्थन कीते-की अन्त्रको सर्वकार केवले न्हीं बस संबेगत। पांतु में देशता है बई सामके राजने ही महामें कर गया है। साथ को अवनी हारी रोज निवास और निम्बन्ती कर कहीं है। कियुरान से अपने करते का से थे। यदि आर मुझे यह सर व हेरे कि में अर्थकारे रोक सेन्त से में अने बानी न तेवारा : की मुख्याने जानकी पहले विकार करके निम्हानको भी काक-मूला विका केव रिकास है कि प्रमुख प्रमुखकी क्रुकेंदे पहलार करे हैं कह मान, जिल्ल राजपुरियो अर्थुनके प्राथमे अस्तर कराइको अस निभी प्रचार नहीं तक संस्को । तकः तक तक कोई हेल ज्ञान संस्थिते, जिससे मिन्युराजकी स्वार हो सके। मैंने प्रवासको एक अनुभित्त पत्र दिखा है, के उससे बुटिस र क्षेत्रर साथ विस्ती प्रकार प्रश्ने कालके ।"

होक्कारी यह—१८६६ है ते कुछति कारको पूर की करता। मेरे तिले हुए क्काक्को समार हो। किंदु यो सबी करता है, यह मैं हुम्मे कहात हैं। क्या वेकर सुने ह अर्थुओ सार्थि कीकृत्य हैं और उसके पोड़े के को देस हैं। इस्तिको सोकृत्य राज्य मिलनेवर की वे समझार कुछ असे हैं। मैंदी

वाची कर्न्स्टेंक सामने कृषिद्विताओं कार्न्स्टेंबर्ड प्रतिद्वार की भी। इस सामन अर्जून करके बात नहीं है और वे अध्यति सैन्यके आने काई कूट हैं। इस्तरिन्ते अब मैं कहाके हाएकों स्रोक्तान अर्जुनके प्रवास है से मौद इस पृथ्वित कार्यों हैं। इस्तरिक् अपने स्वास्त्रकों सेन्यर कृषीं अर्थकों अर्जुनते पूज् करने विकास सामका कर का मानी।

वृत्येक्टरे व्यक्त-अस्थानिक्या । यो आस्त्यो की स्त्रीय क्या, जा अर्थुक्यों में कैसे केस स्त्रीया । यह से सार्थ क्याकारिक्टे व्यक्त-व्यक्त हैं । येरे विकासी संस्थाने व्यक्त इच्यों कीर केस से आस्त्रा हैं, जिलू अर्थुक्ते पार कार काम भूषि है । किस्से कुल्यकों और अस्त्रातों की करका कर किस, सुक्रमुक, सुक्रीयत, अन्या, सुनायु और अव्यक्तियों व्यक्त कर कार और स्वकृति केस्प्रीयर संस्था कर दिया, उस कार्युक्त पूर्वत कीर अर्थुक्त कुलायकों में कैसे कुल कर क्रमुक्त ?

प्रियमित सेरे—कुकाम । कुन देशा सकते हो, अर्जून सम्मय कुर्य है: सिन्धु में एक देशा कराय किये हेता है, सिन्से हुए अर्ज्यों ताल होना स्वयोगे । साम प्रीयुक्ताने साम सभी और केरेने । में हुन्दरे इस दुक्तांक कार्यात हरः सम्मर कीर हैन कि सिन्सो पान पर हुतरे स्वयोग स्वयोग स्वयोग हरः सुन्दरे उत्तर मोर्च स्वयान नहीं होना । यदि प्रमुख्योंक स्वयोग कुन्दरे उत्तर मोर्च स्वयान नहीं होना । यदि प्रमुख्योंक स्वयोग कुन्दर करनेके दिन्से स्वयंगे अर्थाने, से भी हुन्दें पोर्च पान पहिं होना । इस्मेंको इस प्रमुख्योंने साम प्रमुख्य प्रमुख्य हुन कर्य ही होन्या। इस्मेंको इस प्रमुख्य पान प्रमुख्य स्वयोग ।

हेल कहकर आकारी हुने। ही आकार कर प्राथ-विभिन्ने पर्काणाम करते हुए पुरीवनको वह कार्यपान। हुआ कार्य कार्य क्षेत्र और पढ़ा, 'परपान, प्रह्म और उन्हान पुक्त कार्यन करें।' इसके बाद ने किर कहते क्रमें, 'अस्तान् संकरने का प्रथा और समय हमाने दिया | मैं हमारे क्रियों प्रकृति दिने मनोकारमपूर्णक हुन् का, इसोनो क्योंने संस्थानी कुलस्त्रका कर किया था। किर इसरे वह प्रकार काम अहिरातीयरे विवा । अहिराने इसे क्षणे पर प्राथमिको और प्राथमिको अभिनेत्रको पारच । अधिकेरपारी यह करण पूर्व दिन यह से अस

पालाम है।"

जावार्व क्रेक्के क्राफो इस जवार पुत्रके नित् रैका से एक क्वेंक प्रेम्प्रीको कारो स्वी और अनेको अन्य पह-र्वकारेको प्राप्त से काने-पानेके साथ अर्चनार्थ और पान ।

## ब्रेजन्वार्यके साथ यहच्या और सात्यकिका घोर युद्ध

राज्यभे का-राज्य । जब सर्वन और सोक्रम कीरवोक्षी सेवाने कार नवे और उनके बैंके क्वॉक्स भी पान गया, ती पान्कार्यने सोनाव बीतीको साथ हो यह कोरावार करते हुए होम्लकर्नक शक्त केल दिन । कह, होन्हें ओखे मही प्रधानन एकई केंद्र गरी । का सम्ब केंद्र पद हुए। मैसर करने ज को बाजी देखा है और न कुछ ही है। प्रकारित क्षात्र और प्रवासोय कर-कर अन्तर्नेत्र जार का है में: और जिस प्रकार आयार्थ अपनर मामीकी कर्य करों थे । करी समार महादुशने को कालोकी हुआ राज्य के की। होना पायानीकी विकासित एक-केसबर बाज क्रोको है, अही-क्रांची ओरते पाप बरसायर प्राप्त करें था केव पा र पा प्रकार बहुर प्रका करनेकर भी बहुत्वुको भावना हेनेकर प्रकार हेराके तीन चार हो रचे । चन्छलेकी काले बन्दरका कह मोद्रा में कुलक्षांकी रोगाने का लिले, क्रम कालकार्य और क्यो गर्ने और कुछ होजाकार्वजीके कुछ ही हो। बहारवी होन भी जपनी रोजको संबक्ति बरनेका प्रका करते थे. जिल बहुबहुत को बहुबर कुमार का या। कराने अवस्था केंद्र अधे प्रकार क्रिया-चित्र के नवीं मैंसे कु राजाका देश श्रृतिक, महायती और सुरेशेचे कारण उन्ह करता है।

हार प्रकार कर करवारोकी करते सेनके तीन करने हैं उसे से अपने क्रोको कावर अने कार्यो प्रकारको प्रकार करने रूने । इस समय करूर जन्म उत्पन्तिय जनकारिके सनाम प्राचनक के गाव । अवकारीक कार्याने हंग्सा क्रेका पहरताओं होना पानसे तमें र्ख-तो होपान हमा-कार श्रास्त्रे रूपी । इस ज्ञार केवायार्व और बुक्कुओ बागोंचे जातिक क्रेनेके बारण केने ओरके और प्राणीकी अवक्र क्रेक्स क ओर पूर्व वर्षित सम्बद्धाः यह यहने समे :

इसी प्रमय प्रमीनकृत बीमलेनको निवित्तति, विकास और विकर्ण-पर सेनो पहलोंने के प्रिया । विक्रिके का रामा मोबाबको एक इसर चेन्द्राओको सरको हेकर पाक्षिएक अभिकृते कुत स्टाइन्टब्डे केंद्र हैका। बहुत्व पानं प्राप्ते पाराय चीन्हेला सामा विमा । श्रापत [ 839 ] सं० व० ( खरड—इक ) २५

कोवने परकर सामित्रक रह पक्ष। मैंने कपनी पार सी क्षेत्रेची केन रेक्ट वेकिसल्की प्रगति रोक है। एक्टिने रात को प्रधानकोगि चेद्राकोचे राज प्रमुख्या पुनावका विकार । कार्यानोतील किन्दु और सञ्चित् गास्तराम विराहके कालो कावार का गर्ने । माराज प्राप्तिको निवास्क्रीको केवा । अवस्थितीय प्रमान और वी वीरोको पान नेवार कुरुकार साम्य क्रिया क्या कुरवार्य एक्स प्रदेशकार अरमपूर्ण कार्य कर से ।

नकराज । इस समय विस्तृतन करावा सारी सेनाके पीछे क और कुरुवानं अनी, न्यून्, बनुर्वर कार्यी रहाके प्रेरवे केवल के र जानती कहिनों और अनुस्ताना और वाली और वाले के तथा परिवास असी असी पारवाद है। इसके सिया कृत्यार्थ, कुर्योग, पान और प्राप्त साहि समेखी राज्योंकी बीर की इसीबरी खाओं प्रेली कुछ पार पी थे।

व्यक्ति पुरुषेत्र एक क्षेत्रीका हुन्युद्ध होने राजा । प्रातीपुर नक्षण और स्कोपने कारवेंकी कर्व करते; अपने हरी; वैरवाय रक्षरेको प्रकृतिका सकते का बार विकास का समय को कुछ भी रूपण न सुरू बहुत था, यह तारा परावान को बैदा an e जब करनेकी कोठारे का जाता हो देग का गया के कही केरीले अपने चोड़ोंचरे च्याचन होन्यच्यांनीकी सेनाने पा निका का प्राप्त प्रमुख्ये क्राप रहते हुए पहास्तरी क्रेस्ट्राज्यों के के प्राप्तान की, जा बड़ी है अपनेते कारनेकारी की । क्रेक्ट और सहस्त्रहा क्षेत्रीकें अनेकी सीरीक्र मिल क्या विने । जन महामुखने देखा कि आवार्य बहुत हार्याय का नहें हैं, के कारी बनुत रकावत क्रावरें काल-कारवार के रिक्रो और रूपमा का करनेके दिनों का रूपने उनके बुरसे उनके प्रकार कर पात । अनुसारी भी साथ भारतर अनुसी करनकी और का बन्नेसे काची सरकाको बार-कट प्रसा। रिज कोगड करोंचे कके बेडोक बाम तराय कर दिया तथा है कारोरे क्या और प्रम कारकर साथे पर्याप्तयोगी थी परास्त्री कर दिया। इसके पहला उन्हेंने बनायो कारहरू that there is notice up that the

प्रस्तिने भीता तीने वालोंसे उसे बीकामें कर प्रस्ता और नवनार्थके मंत्रुकों मैसे पूर पृष्ठपुरको क्या तिया। इस प्रकार कर केमके पृष्ठाकोगर स्थलकि आ तथा से प्रकार कीर पृष्ठपुरको राज्ये कामकर हुन्ता हो पूर से को।

का जानारी राजांको जार क्या स्टब्स् अराज बिया। सामन्त्रिके कोई के बाई कुर्वीने हेक्के प्रार्थ कारक का गर्ने । का वे केने का महत्त्व कार्य का क्रेक्ट हर केंद्र यह असे स्टो का बेजेने आकारणे सर्वेका पाल-वा फैस दिना और को विवासीको कुनोने पाल कर किया। क्यांच्या काम किया करेंचे पता और केर अन्यवंत का पना तथा शुर्वका प्रवास और प्राप्ता परस्य भी मेंद्र हो गया । क्षेत्रोंके प्रारीत सहस्ये सम्बन्ध हो गर्थ । उनके इस और जनाई सरकर मेर नहीं। वे होने हे अन्यापक बानोंका अनेन कर से थे। जा सबब इनले और सक पुरिक्षेत्रके मध्ये और प्रधे-गर्ड क्षेत्र और प्रातिका रामान देश रहे थे। विभागोनर यहे हुए हहा। और प्रयुक्त शादि वेच्या एक विद्यु, मारण, विद्यापर और फण्या थी का पुरुषोहोंके जाने कही, की इसे क्या अफ़-क्यांके एक्सरेक्सरमध्ये क्षेत्रसम्बद्धे देशकार को अञ्चली को हुए थे : पुर अध्या से देशों और अधी-कांग्रे स्वयंत्री सम्बद्धी विकास हुए एक-मुलोको पालोसे जीन को थे। ह्यांकीने क्रालांकरे अपने सुद्ध सनोधे आवानीत क्यून-क्रम कर हते। क्षणकारिने होजने पूजरा समुख सक्षण । विश्व स्थानीयने हो मी मार करत । (भी अवार क्षेत्र मो-के बहुत बहुते परे), रामकि करेको समय गया। जा रख कर्ष उस्ते के

वक् बार को । यह बान हरनी सामहित हुआ कि आवारों बान बहुन पहले हैं कार सामग्री बाव को बार हरता। है—यह विक्रियों कार ही रही पहल का । सामग्रीकार मह सर्वेत्वपुत बार्न देशकर होकों का-ही-का विकर विक्रों कि वो अवकार परंतुराम, वार्तावीर्त, अर्जुन और चीक्नों है बहुं सामग्रीकों भी है ।

इसके कर बेक्ककारी एक एक बहुर रिका और असर नाई अन्य प्रदाने । सिंदू सामनियों अपने अन्य-कौतानों उन का अवोको पाद क्रमा और शासकेर तीची बालोबी वर्षे आरम्प सर सी । इसारे प्राचीको महा आहर्ष हुआ । अन्यों अन्यानी आरम्ब पूर्वत होता वातनिकार संदर्भ कारोबंद रिस्पे दिव्य अवशेष्यक क्रोड्स । यह देशकार सामग्रीकी क्रिय प्राप्तकार प्रचेत्र क्रिया। अन्य क्रिये केरोके दिना अभीका अभेग करते देवाचा यहा हाहावात होने क्या । व्यक्तिक कि सामाजारें परिच्येका स्वरूप की बंद हो पर्य । यह राज्य प्रतिकृत, जीवारेच, महात और प्रहोब प्रत ओको कार्याकारे पहा क्यों को प्रश्न प्रमुखारिक साथ क्रम विकास और केन्य्राप्तरेक स्थाप और प्राप्तकेतीय केपानीको नेपार क्षेत्रके पानने आधार क्षा गर्ने । क्षाचे और कृत्यानके नेतृत्वे इसार्ट रामहत्त्वा हेनाते प्रकृतिने विश्व देखकर जनकी कुल्याको क्रिके का गुरे । करा, होनी ओर्सक क्षेत्रेने कहा हुनुस कुद्ध केंद्र गया । यह समय बहीर और कारीको अपीद कारण कुछ को दिसानी को देख का प्रातिको पद पद्म वर्णास्त्रीय हे पद्म-आने अपने का पत्नी Name of the off the

## विन्द, अनुविन्दका वय तथा कौरवसेनाके बीचमें श्रीकृष्णकी अञ्चयां

सहायने वहर—रासन् ! अस सुर्ववरंत्रका कर कुछ थे। गौरकारको बोद्धारोनेसे कोई तो कुछके मैदानमें को हुए थे, गोर्ड स्वैद साने वे और मोर्ड मीदा मिदानार कान को थे। इस प्रकार वॉर-वॉर का दिन बीदा का का ! मिद्धा अर्थुर स्वेद गोर्ड्स्ट वरावर करावकार स्वेद की का को थे। अर्थुर साने गार्टिंग राक्ष कानेकाल करा करा करा हो। थे और सीक्ष्म स्वीते कार्र करे या थे थे। सान्। अर्थुकार एकं स्वित-निम्न और नाता का, अरी-जार्ड और सानकी रोजाने स्वार पक्ष नाती थी। जनके कींग और सोबंधे काल सनेको सानुओंका मेदार कार्यो हुए उनका राज्यान कर हो थे। थे रावसे एक कोस्ताकार्क सानुओंका स्वारका कर हो। थे। रावसे एक कोस्ताकार्क सानुओंका स्वारका कर हो। थे।

हुन, व्या और कुनेत्वे रखेंको भी पता कर दिया हा।

निया प्रत्या का एक एकिकोडी पीनके बीमने पहुँचा, अन्तर कोई भूक-काराने कामुला हो को और कही करिन्छाने एवं वर्षियों समें। उन्हें पर्यंत्रके स्थान स्ववस्त पार्टी पूर सबी, कोई, अनुका और प्रवेकि उत्तर होनार अवस्त पार्टी विकारण अवस्त का। इसी सामा अवस्थितको होनी प्राव्याप्त अवसी सेनके समीत अनुनको खासने उहा हो। उन्होंने को अस्तारणे प्राव्या अनुनको खेरल, बीक्टमानो साम और बोकोको भी कार्योंने सामा कर दिया। उहा अनुनके कृतित होकर भी बाजोंने सामा कर दिया। उहा अनुनके कृतित होकर भी बाजोंने सामा अनुनके अस्तारोको भी कार्य साम। वे सुनने चनुन सेनार अस्तार क्रोकपूर्वक अर्जुनस स्थार वरशाने वर्ण । अर्थुनचे तृत्ता है किर उनके बहुर चार सारे तथा और नाम केंद्रकर उनके खेड़े, वार्थन, वर्णदक्षक और वर्ष सामियोंको पार सामा । किर उन्होंने एक शूद्रक सामसे बढ़े नाई नियका सिर माठ सामा और ना मरका पृथ्वितर सा पाए । विन्युको करा देशकर नामको अनुविद्य हामने गढ़ लेकर रचने हुद पाए और अपने वर्णको मृत्यूका इसमा करते हुद उससे अन्युक्तको सरकार बोट सी । किंद्र सीयुक्ता उससे परिवर मी विकासका र हुद् । अर्थुनने तृत्व हो हाः सामीसे अनके हुन्य, मैर, हिस और गरवान करत साने और बहु पर्यक्तिकारके समान पृथ्वितर मिर कथा ।

निया और अनुविक्या कर देवनार उनके सानी आक्या पुनित होतार सामी क्या करनाते अनुनवी और हैंदे। अनुनित की पुतिते अपने कार्यक्रम उनका साम करना कर दिया और ये जाने को। जिस उन्होंने की-की कीक्या कर करा, 'पंदे बानमें कहा कार्यक हैं में हैं और बहुत कर को है। कराव की आसी हुए है। ऐसी नियति हार समय अस्ताते क्या करना अस्ता का पहता है? मेरे क्यिएसे के कार दीना बान पहती है, जा में कार्य है सुनिये। अस मनेते केंद्रोको सेन्द्र कीक्यों और प्रको कार्य निवास गिरिये।' अनुनेक इस समार कार्यना कीक्याने कार, 'पार्च ! तुम बेस्ट कार्य हो, मेरा की क्या क्रिकार है।' अनुने



पहल, 'बेकान । मैं कोस्लॉको साथै सेनाको तेके योगा । इस बीकरें आन नकारत् सब कान बह है ।' ऐहर बहुबर अर्जुन राज्ये कार पढ़े और नहीं सामानारीसे बना लेकर वर्षतांके क्रमा अनिका क्रमो हाई है को। इस प्रमा विकासीयरंकी अभिन को पृत्तीयर कहा रेकानर 'अब अस्ता भीवा है' इस प्रचार विकासी हुए अस्ती और कैंद्रे । क्योंने बढ़ी करी रक्तोनाके हुना अकेले अर्चुनको के लिया और अपने प्रमुख पहाला प्रश्न-समृक्षेत्र प्रश्न और कालीवें उन्हें कर किया। बिहा और अर्थनने अपने आधीरी उनके आधीर्थ राम ओरार्ड रोम्प्यार का सम्बन्धि आनेम्ब्रे मार्गाले आस्क्रातिल कर दिया। कौरमोकी असंस्थ केना अन्यर प्रमुखे छनान वी । काने वान्यका वर्षो और कारताम मेरने यह रहे भी, इजीवम क्या के में में, पहारित्य प्रश्नीतमें कारतेल कर रहे भी तथा प्रश्न और पुष्टियरोको साथि सामी गर्मन सी । अन्तिक रक्ताके काली अन्य प्रयुक्तात हो, रगदियाँ काहर से, एक और पालवार्ग केम से और प्राणिकोंक प्राणित माने जिलाई भी । अर्थुनो सरमान क्षेत्रक को अपने बान्येके रेक्ट रक्त का

क्षण्डले पूर्ण — बद्धान । जन आहेन और औरकाम पृथ्वी-यर बड़े हुए थे, तो ऐसा अवसर व्यवस भी व्यक्तियांचेन अर्थुनको कमें नहीं यह सके ?

रहाको नहा-नामन् । विस्त प्रचार स्रोप असेता हो क्ष्मे पुरुषेको रोज केल है, उसी प्रकार सर्वानो पृथ्वीयर एके क्षेत्रेका की रखीवर कई हुए समझा एक्सओको रोक्स रहा। वह । हती सरव श्रीकृष्णने कारावार अपने क्रिक्सका अर्थुको क्क, 'अर्थुन । को रलपुरिने कोई अर्था करवार नहीं है । हुन्तरे केंद्रे करी केंद्र की नहीं हुई। है।' हमारा अर्थुन्ये हुई। अवस्थान क्ष्मिको कोस्कर कोहोके यानी पीनेयोच्य एक कुम्दर सरोवन क्या दिखा। यह सरोवर स्था विभाव और . न्छ अस्ते भा हुन्द क। एक क्याने ही तैयार किये हुन् ता प्रतेषस्को हेकनेके स्थि वह राष्ट्र सुनि भी प्रकार । क्रमें अर्थन कर्न करनेवारे अर्थनरे एक नामोक पर बना विषय, निरामें सम्बें, बर्जन और कर सम्बोधिके थे। उसे क जीकृत्य हैते और चेले 'जून बनाया ।' इसके कह वे दुख है रको मूद व्हें और उन्होंने क्रमोड़े सिंहे हुए बेक्को स्रोतः विद्याः अर्जुनका वह अरकुतपूर्व पराह्मय देशका रिख्, फरण और वैनिकालेश 'बाई ! कहा !' की



अभी जारों हमें। सालों कहकर अध्यानंत्री जार यह हूं हैं। महे-बड़े अहरानी भी फैल अर्जुनरे युद्ध करनेतर की उन्हें पीछे म हम शबे। अस्तानकार वीकृत्य, जाने कियोंके बीचमें नाई हीं, इस प्रकार मुख्यारों हुए केहेंग्रेकों अर्जुनके बनावे हुए बागोंके करने से गर्ने और व्यवके हक कैंग्रेकोंड सामने ही निर्मय होचार उन्हें स्थाने कोहोंके अब, नाती, अस्य और वानोंकों हुए कर दिवा तथा अपने कारकारोंके उनके बाल निकासका, जानिक करके और कुळाल विस्तार उन्हें कर विस्ता करके और कुळाल विस्तार उन्हें कर विस्ता करके और कुळाल विस्ता इसके बाद के अर्जुनके साथ किन उन्हें किर एको केल दिया। इसके बाद के अर्जुनके साथ किन उन्हें स्वार कार्य कार्य किरा हमारे करने

इस समय जानके पहले ग्रेख बढ़ने समे, 'जाहे | श्रीकृष्ण और अर्जुन हमारे रहते विकास पने और इस उनका कुछ भी न निमाह सके। हमें विकास है | विकास है | व्यक्ता कैसे विस्त्रीनेकी पर्ण्य नहीं करता, जाहे प्रकार में एक हैं। भी नहीं कहे थे।

रकने जान्यर इन्यते सेनाओ पुष्क भी न समझकर अतने जर् गर्ने।' उनका ऐसा अद्भुष्ठ परकाम देखकर उनमेरे नेर्द्ध-कोई राज जाने समे, 'अनेको पुर्वोचनके अपरावसे ही सारी सेना, राज ब्रावस्थ और सम्पूर्ण पूर्वास्थ नासकी और जा को है। किंगू राज ब्रावस्थ्यी समझमें जह बात अधीतक नहीं केटती।'



व्येत्वरक्षे की का इस जवार करें कर हो थे, स्वीतरक्ष जवाककी और कर हो थे। इसीने अर्थुन वहाँ देवीरे क्षातकी और कर हो थे। कोई थी कोड़ उन्हें देवा की फार था। जहाँने सारी सेनाके हैर उन्हाद हिये थे। बीकृत्य सेनाको हैदरे हुए बड़ी तेजीरे बोड़ोको होट हो थे और अपने पाइक्क स्वाब्धी काने करते करे थे। यह रेक्कर पाइक्के त्यी बहुत उस्हा हो गये। सूनके कारण इस समय सूचीय भी बहुत कर गये थे एका कार्योरे कार्यात होनेटे कारण सैन्सिटरोग सीकृत्य और अर्थुनकी ठरेर देवा पी नहीं करे थे।

## अर्जुनका दुर्योघन तब अञ्चलामा आदि आठ महारवियोसे संप्राम

स्क्रकने वाल-नामन् ! जान शीकृत्या गाँउ वर्ष्य निर्मय होकार आवश्यो स्वयक्ष्यका एक करनेकी मारा काले राते । जाई सुरकार अनु क्ष्मा भवनीत हो गाँच । ये होनी आवले क्ष्मा रहे थे, 'क्ष्यक्ष्यको छः क्ष्मारची जीवनीचे अवले क्षेत्रको क्षार मिला है; सिन्दु एक कार आवर पृष्टि का करो, तो का हैगारे हाकारे कुटकार नहीं का स्वयंत्र । यदि क्षेत्रकारों के स्वयंत्र स्वयं हम पी काव्यो एक करेंगे, तो भी हम जो व्यवकार ही होदीये।' जा समय जा केनोने कुलको क्ष्मीय देशकार सामके प्रकृति की क्ष्मी क्ष्माने सामे जि. में अवकृत्य क्षायकार क्ष्म कर होंगे।

क्रों करू श्रीकृषा और अर्थनो विन्युप्तको देशकर पूर्व हो पर्यात थी। उन्हें बच्चे देखका उपलब्ध पूर कृतीयन व्यवस्थानी रहानेत दिनो हत्ये अले हेन्सर विवास गया। आसार्व होण उसके समय बॉट पूर्क थे। आहे जा अकेश्वर हो १०वर पहला संस्थापुरियो श्रा पुरत । विक भागमं आवका कु अर्थुनको श्लेककर अले वक्, अरमको सारी सेनामें पहलेसे काने काने हत्ते। तम अंकूताने बाह्य, 'अर्थन | देखो, आल इस्तेयन इसके भी जाने यह गण है। मुझे पढ़ गरी सर्पन पत सन पत्नी है। पत्न हेरा है इसके समान कोई कारा रही भूते हैं। आ अध्वात्त्वार अल्पे राज पह करते में जीना है इन्यान्त है। तान पह क्षित्रहों संबंध कर है—इसे हम अपनी प्रचारक से प्रचारे महीं हो यह राज्यका होची हुन्हारे काल संज्ञल करके परवेके रिन्ने बनों आह ? जान सैपानको हो पर तुन्हरे पानीका कियम पात है, इसरियों तुम ऐसा पाते, विकासे यह और ही क्रपने ज्ञान कान है। वार्च । तुन्तारा सामना से देखार, असा और म्लूबॉक सहित तीचें लेखा भी नहीं कर सकते: किर क्षा अनेको क्रोकिको से पार है का है?' या कारत शर्मनो कहा, 'ठीक है: चाँद हर समय गूडे गा काम करण ही प्राप्तिने, हो अवन और तम पहल प्रोप्तान क्येंचनकी और ही परिको ।

इस जवार कायसमें वारे करते हुए सीकृत्य और अर्थुको जवार होगर कथा पूर्वेक्तके चार व्यक्तिके दिन्ने अन्ते। प्रतेश क्षेत्रे कहाते। इस व्यक्तिकको सम्बन्ध में दुर्वेक्त हरा नहीं, अस्ते को अपने सामने उक्तेयर हेक विकार व्यक्ति कार्ये हराये हामित अस्ति व्यक्ति कार्ये एको एकार्यो इस्थानपूर्विते हान्हों देशकार अस्त्रको सामी हेन्छने व्यक्त क्षेत्रसम्बन्ध होने सम्बन्ध हान्हों अर्थुक्ता अनेत्र व्यक्त व्यक्त प्रमा। वस हुगोंकाने हिस्से हुए को पुनुके सिन्ने स्वक्तार । सीकृत्य

और अबूंच में जनसमये मरकर गरवने और अध्ये स्कू बच्चे रूने। अहें जाता देवकर रखी करेक दुवेंकनो जेकको क्रिक्टो किरक है तमें और असना मनमीत हेकर बच्चे रूने, 'हम ! महाराज मीतके पंकेरें का पड़े, हम ! महाराज बीतके पंकेरें का पड़े।' उनका कोरनहरू सुनकर पूर्वेकनो कहा, 'उसे भार, मैं अभी मृज्य और अबूंचको पूर्वेक पार केरे केर हैं।'

हेका सम्बद्धन जरने तीन तीची प्रीरोधे अर्जुनगर वाद किया और कर कारोंने करते कारों क्षेत्रोंको बीच दिया। जिर कर क्षण क्षेत्रकाची क्रतीये परि और एक प्यास्ते असे. कोंक्रेक्से ब्याटका पृथ्वीका निया हिया । इसका अर्थनमें बारी क्राक्र केरे अपन्य कीना बाग होते; मिल में उसके प्रत्यको उक्ताबार पुत्रविक निर गर्व । उन्हें निकार हुआ वेदन्यर अवेदि बीवा कर बिर होते, जिलु ने वी रूपोंकरके करकरे प्रमाहर क्योंकार का भी । भा देशका श्रीकृत्यने अर्थुको कता, 'काम से मैं बढ़ अभेज़ी बात देश पत है। देखें, इन्हों बाय हिलावर केंद्रे हुए तीरोंके सराय हुन्छ भी सार की कर हो है। कर्ज । इन्हों कम से महानाके प्रधान क्षांबर और बज़के करीतों कर वार्यकारे केरे के पांच कर केली विकल्पना है, अपन इससे प्रक्र भी मान नहीं है रहा है।" अर्थको पहल, 'बीक्सका । मालुक क्रेसा है, क्नोंधमको ऐसी स्तरिक अञ्चार्त सेपाने से हैं । इसके स्वरूप चारण परनेपर पो delt ft, me ift somitte find uft solde ft i gente mennet होन्हें रहेक्ट्रोबर्ट प्राप्ति संस्थाने वर्ड है । इसे प्रयासन आधार्य ही कालों है का करको कथाने पक्षे करका जान है। कर करकाओ क्लोकर किसी अध्य नहीं के पर स्वरूप । यह नहीं, अपने कारतार कर्म क्या भी हते नहीं कार संबंधी। क्रमा | का कर करने को कार की है, दिन इस प्रवार का कर्मा पूर्व मोहने क्यां इत्तरों है ? सीनी लोफोर्ने को पूर्व हो कार है, जो लेश है और को लेश-का मधी आपकी विक्रिप्त है। अपनेद समान प्रत का करोको जननेवारण कोई नहीं है। यह होना है, क्योंका अन्यानीके पहलाने हुए क्ष्मको काम करके इस समय निर्मेश हमा सक् है। किंद्र अक अपन मेरे बनुक और चुनाओंके पराक्रामको भी देखें । मेरे करकते सरीका क्षेत्रेण भी अग्रह इसे पराना कर हैए।"

हेरत करकर अर्थुनो कावको सेदनेवाले गानवाहाले आविकारित करके अनेको काव वहाने । बिट्ट अवस्थानाने का अवस्थि अर्थोको कट हेरेवाले कार्योशे उन्हें प्रमुखें करा है कर दिया। यह हेरा अर्थुको कह साहार्य हुआ और क्टोने श्रीकृष्णसे बाह, बनर्सन ] प्रस अवस्था में इसक प्रयोग नहीं बार सम्बद्धाः क्योंकि देख करनेवर मा अब नेत और मेरी सेमाबा ही संकार कर क्रानेग्ट (" क्रानेकीने क्योंकरी मी-में बाजोंसे अनंद और ऑक्स्बब्धे करना कर दिया उपा क्रमा और भी अनेको क्रमोधी वर्ग करने लगा। कादी भीनन बारावर्ग देसका सारके पहके दीर को साल हर और करोबी करि करो हुए शिक्स करो हरे। उस अर्थानने अवने बालके समान बातक और तीनो बालोगे क्ष्मीयनके योधे और केरी पार्वकारको पार काम। जिल आने मन्त्र और स्थान्येको भी काट विचा । प्रश्न प्रकार औ रक्षांत्र वर्षात्र से कारोंने अन्तर इसेरेन्सेस्ते सेंच्य तथा काने नवरेने चीनरी मांसको केवार को देख कानुक का हिमा कि का कार्यकों सेवा करने सन्त । क्रांकिनको इस प्रकार आयोगि पहा देशका अनेको कर्ना की अल्बी रक्षाके तिले केंद्र पहें। उन्होंने अर्थनको पहरे ओरां केर विभाग करणाहुको विद्यालये और क्रीका करणाहुकी बारण कर करन न से अर्थन से दिखानी की में और न बीकामा हो । पहरित्य कि स्थाना एक भी आंगोले ओकार हे क्या का

तम अर्थुन्ने पार्ण्यांच म्युन सीमात चीमा द्वार की और चारी वामानां करते स्मुओका संक्रा करना अतमा कर दिना। वीपूज्य का स्टाले कावकार स्ट्रा कराने छने। जा प्रमुक्त कर और मार्चानकी जुलारे कार्यात क्रेका कारमान् और पूर्वन कर्मा पृथ्वेंचर कोटने सने उस्त करते.

सम्बद्ध, होय और प्रशासनों सहित साथ पूर्वी ग्रैय रही। अपनी ओरहे अनेकों चीर श्रीकृत्य और अनेनको सारनेके हिमें बड़े फरीरे केंद्र आने । परिक्रम, सह, सर्ग, पन्तेन, क्यात, कुरुवार्ग, काम और अधुकारम--- हम आह मोर्टर एक साम ही उत्पार आसमान किया । उन राजने साम राजा क्रुवेंकरने क्याबकों स्थापे बोहकों हुई करों ओरते पेर प्रेरण । अनुस्थानको विकास सामग्रेल बीचुनकार्य और बीचले अर्थन्य का किया क्या पाँच क्यांमें स्वामी क्या और केंद्रोकर भी केंद्र की । इसका सर्वृतने असका कृषित होकर अवस्थानकर कः भी काम क्षेत्रे अना का सामोप्ते कार्य और नीनके क्योनको बीकार एक स्टब्के करमातिः स्वक्को कार कार । अन्यने पूर्व ही दूसरा बनुत सेकर अर्जुनको क्षणा कर दिना । जिस् को भूतिकारने तीन, कार्यने करीत, वृत्रकेनी संस्त, क्यांको तिवस, क्रांसक्ती का और पहरायने का बायोजे बीम कार । प्राप्त अर्थेट क्षेत्र और अपने क्षणकी सम्बद्ध क्षणाते कुर अनेते कर्णकर क्या और क्यांनवर और बाब क्रेक्सर क्रमके बानसील धनुरुको सार कुरू । वित आक सार्वोसे अस्तानामको, पर्यक्तो क्रमान्त्रेको और होते स्वत्रक्तो क्रमा का क्षिण । इसके बाद उन्होंने अकलायपर प्रतार काम और पी होते । एक पुरिचयाने पुर्वता होता औक्ताना प्रोटेश सहा gent aft befant figet meitit uit floor i perut अव्योग्ने को बान्योंनी का तथा प्राप्तानेको अपने बाक्येनी des fires s

## सकटच्यूहके मुहानेपर कौरव और परच्छवपक्षके वीरोका संप्राप तथा कौरवपक्षके कई वीरोका वध

एक वृत्रपत्नी पूक—समूच ? का सर्वृत कवाकारी ओर करन गवा, तो आवार्य होन्साच रोके पूर् कवाका वीटेंबे सर्वेश्वोके साथ विस्त प्रकार पदा किया ?

स्त्रापने कार—राजन् ! उस दिन बेप्सानेक बाद गाँउन और प्राह्मानेने को वेपाह्मावारी मुद्द हुआ, सालो अध्यान एक्षा आवार्ष होना हो थे। सभी प्राह्मान और प्राह्मान और होगके राजके पास प्रमुखना करवारी केमाको क्षिण-निवा करनेक दिन्ये को-को अस्त प्राप्तान हुआ आवार्यके सामने आया। आवार पुन्तानाम सैनाई पान गरसको हुए क्षेप्रशृतिने विश्या। निर्द परिशास जूनकेतु आवार्यकर हुआ पहा। जसका सामना परिशासने विश्या। इसी जन्मार व्यक्तिकार्थे कुर्वकाने, कारणीयको ब्लाह्यकारे, हीरप्रदेशे पुरुषेको स्टेश्यकारे पुरुषे और स्टेश्यकेयको स्टब्स्स अलाखुकी देखा। वर्षो स्टब्स स्टब्स करियोच्यो सेन्स्यकार्थेक अस्ते स्टब्स केरे.

इसी प्रमाय क्या पुनिर्देशने प्रेयासकीय नाम वाल कोई। इस जाकारी कर्राव और चेड़ोर्ड एसील उत्तर क्योंक क्याने कर किया। यह वर्षरामने क्याने क्याकी मुताँ क्षित्रों हुए उन तम क्यानेजे जम्मी व्यावकारी तेक दिया। इसके क्षेत्रका कोब व्याव क्या क्या। उन्होंने क्याने पुनिर्देशका कृत कार क्या और वही पुनीरी क्याने क्या वारकारत उन्हें तम ओसी कह दिया। इससे जावना विश्व क्षेत्रत कर्षराकी का दूस हुआ कृत केस दिया त्या एक कृत्य ज्याका कृत तेकर आकारीत कोड़े हुए सहसी वारकोड़ कार क्या। किर उन्होंने क्षेत्रके इसर एक साकार



मध्यक यह केही और अस्तर्भ परभा पर्यंच करने करें। गहरके अस्त्री और असे देख आकर्षी ह्यूक्त प्रका किया। जा नक्को परम करने राजा पुनिश्चिक राज्यो और काम। तम कर्माको महारकते हैं को हरण कर दिन्य एक एक समित्रे आ हुए हुआ अपूर केवाकर कर्म्य पुनिश्चित्रक का होगमें आ हुए हुआ अपूर केवाकर कर्म्य पुनिश्चित्रक का होगमें आ हुए हुआ अपूर केवाकर कर्म्य पुनिश्चित्रक का होगमें का क्या हुआ अपूर केवाकर कर्म्य पुनिश्चित्रक का स्टाबर करवारी। में पार्च सामान्त्र कारा करीं, उनसे किस्तारियाँ निवसको असी और किर में पुन्तिकर का क्या । अस्त होगावानेका क्या क्या हुआ है अपू गया। अहीने कार केते क्या होगावानेका क्या कारा क्या और तीन क्याने क्या व्या क्या की क्या पार्मित कर हिला। क्यानेक क्या क्यान्त्र पुनिश्चिर कार्म क्यानेक स्थान पुनिश्चिर कार्म क्यानित स्थान हुए की और स्थानको स्थान क्या क्यान्त्र क्यानेका केतीनो क्याकर क्याने क्यान क्यानेक करना

दूसरी और व्यापनावानी केवानां का बुक्तावानी उसते हैं का क्षेप्रशृतिन वाल्यों प्रश्नात कार्यों कार्यों की की। का क्ष्मावानी वही पुनीते केवाहिंकी उसते काल करे। इसतर क्षेप्रशृति एक की पालको केवानां कार्या कहा बाद कार्या और सार्थ उसे पी क्ष्मा कार्यों कार्या कर किया। केवानां की की कार्यों कहा केवाह केवाने केवा कार्या का के जारने अने कुमानाया प्रश्नाके वहते अस्य का निवा। इसके बाद व्यापकोंके देखी विने अकस्तर आकर्ष सेवार कु बढ़ा।

वेतिस्य मुद्धेनुस्ये वीरकवाने रोका मा। ये होनी वीर श्रमकाने निकृतर सहाते कामोरी एक-पुर्ताको सावस कर हो हो। या वीरकवाने कृतिस होकर एक व्यवस्तो सुम्बेतुके सनुको हो हुन्छे कर विते। वैतिस्वाने और वैत्यक्तर एक सोवंकी कृति कामी और जो होनी कृती वेदकारार वेता। अस्को वर्तकर केटले वीरकवानो इस्ती कर गर्थे और वह रकते कृत्येवर निर गया।

वृत्ती और हुनुंबर स्थानकर क्षात कर कोई और वहीं करों नकी को। इसमा स्थानक हैना-देनों अन्यों अंगा करें। की कारों की करा । हुनुंबर करों के बाद घरों। यह के करोंने एक करा है हुनुंबरों करा कर करों, यह के करों को को को कर हैने और एक अन्या बोधे होंगी क्षात कहा कर हमा। इसमें कर क्षात कारों को कारों सारवाल हैत के का हिला कर करों करों को कारों को कारों हिएकों करा का हुनुंब अपने कारोंने क्षात केवा है सारवाल हैत के का हुनुंब अपने कारोंने क्षात केवा हम परावल हैत कारों केवा । इससा हमार्थ कारोंने केवा हमा कारों हिएकार क्षात किया। इससा हिएकों क्षात कुर्वा करिएकों पर हेता कारों कारों की किए पात । परावल हैने स्वाप । इसे साम हमार्थ कारों कारों का का की कि जाता है साम । इसे

संस्थां कृति व्यापी श्रामात् अस्ये वीसी मानीसे स्वापीसको अस्यापीत कर एक मा। सामाविते अस्ये इत्यपी सम्बद्धि ज स्वयपी रोग विवा तथा अस्ये क्रामीक्ष्य काल, सार्वि और मोड्रोके स्वीत स्वापीतको भी क्षात्वकी कर विवा। इत स्वयपायकुम्बरका कर होनेस स्वापीतके अनेको की स्वयपी काल, जेकर, विविधात, अस, पुस्स और कृत्य आदि क्रामीका कर सारी हुए साम्यीको आध कृत्य क्षात्रे स्वयं (विद्यु क्षाव्यक्ति) हैतरो-हितो अनावास ही का सम्बद्धि केन्द्रर स्वयं हुई आवकी सेवामेरे विद्योग्या भी सम्बद्धि कार्य कार्य क्षात्रे स्वयं हुई आवकी सेवामेरे विद्योग्या भी सम्बद्धि कार्य कार्य क्षात्रे हुई। आवकी सेवामेरे विद्योग्या भी सम्बद्धि कार्य कार्य क्षात्रे हुई। अति में स्वयं ही सामाद क्षात्रकार्यकीयो क्षा क्षात्र हुई। स्वरं में स्वयं ही सामाद क्षात्रकार्यकीयो क्षा क्षात्र हुई। स्वरं में स्वयं ही सामाद

इसर करने श्रीवाधिक पुत्रोमेंसे मरकेवनो पहले प्रीय-पाँच और किर सतत-सता काणोसे बींच दिया। इससे उन्हें बड़ी है पीड़ा हुई, वे काइटर्ने पड़ गये और अपने कर्तानके जिनको कुछ निवार नहीं कर समे। कुर्न्दिने स्कूतनो कृत स्वार्त्तिको के कामोर्स क्रान्त्वो विकार कही गरी गर्ना की। इसे ज्ञार जन क्षेत्रीकुम्सरोने को संस्थान क्षित्रनीय को कामर किया। तब क्रान्ते उसकेले क्रान्तिय क्ष्यांना केर काम कोई और एक-एक कामोर्स ज्ञानको क्ष्यांना केर की। इसका अर्थुनो कुनो जार कामोर्स कामं केरे का कारे, कीमरोनके कुनो उसका कहा कामान को कोस्से गर्ना की। कुनिहिटकुम्परी कामोर काम कामकर निवा है, ग्राह्मिक पुत्री सर्वाधिको रकते क्षेत्री निवा क्षित्र क्ष्यां सर्वाधिक क्ष्यां कामान क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां कर किया। ज्ञानस किर क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां क्ष्यां

एक और महस्तारे भीनकेनके साथ साम्युक्ता पुत्र हे क्य भा : गीनरोजने भी कानोते का प्रकृतको कानक क्र कता। तम व्या नवासक राक्ष्म भीवन गर्नन करता हुआ प्रीयतेलारी और वीहा : अल्पे क्ये बीच सकोने वीच्यार क्ला रेसके तेन से राज्येक बंदर कर देखा। हैत सह से मेरोबो और भी करवार एक करती चीवलेको सुनार कर किया। जा मानते पहासारे पोल्के गाउँ केंद्र उसके और में स्त्रोन होचर राज्ये भीतर ही दिर गर्ने । कह देर कर कों केर हुआ में ने अपना संस्थार करना सकता करने औरते आञ्चलको पाणीको प्रीको तमे । इस सन्ध्र को पान कामा कि चीमहोत्त्री ही इसके पूर्व बक्रको क्या सार अक्षः अने भगरक कर करक करके उस्ते बक्त, 🍟 की। 🖰 को जिस समय की पहलारी बाई बाबको कर का उस उस में बढ़ी अमेरन की या; साम दू सामा कर कर के हैं देश बहुतर का सनावीर हो गया छन्। केन्द्रोको हास बड़ी करी बालकों करने रूप। केंग्रोकों की हारें अन्याक्त्यो करोसे व्यास कर दिया। उन्हें वेदिन क्षेत्रर का राज्य अपने प्रयक्त का बैठा, किन पृथ्वीपन काल और केंद्र-शा का करन करके शासको स्त्र नक। स क्षा-वामने देवे-तेवे, अनु-वहर तक स्वाप-सूत्रन विशेषा प्रकारके कुछ बारस कर होता का राज्य नेकके कुर्वान सरकारे कालां था। उसने जानाको प्रकार वृक्ति, कुन्त्य, प्रवा, कुर, पहेल, केन्द्र, स्ताडी, चरित्र, चिन्द्रकरा, परस् वितंत, प्रस्ता, युव, ऋषे और वह असे अनेकों राज-प्रजोकी वर्ण की। इससे चीमतेनके अनेको वैक्तिक नह हो गर्ने । इसकर चीमसेनने फुल्सि होकर निकृत्वर्वक क्रीका असी सब और अनेक्ष्री क्षण प्रकट के नवे। उससे पीरित होवार अध्यक्त रेनिकॉर्पे वही समझ बह नहीं। का क्रिकिट

नको स्थानको साथै व्यवको श्री करके को यो बहुत श्रीकृत व्यक्ति । इस उद्याश श्रीकारेन्द्रात व्यक्त चेदित होनेकर स्था उन्हें क्रोक्टर क्रेन्सकार्यकोची केन्द्रमें करक आधा । इस व्यक्तिको स्थानको क्रीतकर स्थानकोचा सिंहनाइ करके स्था विवासोको मुंबने रहते ।

अन दिक्रमणे पुत्र महोताको आरम्पुक्ते प्राप्ते अपन्त को तेने मानोने मीक्स अवस्था विकार प्राप्ते अपन्युक्ता कोश स्थार कर कोची प्रश्नानिक कहा भीवन पंजान किया एक उत्पार कर कोची प्रश्नानिक कहा भीवन पंजान किया गया। महोत्रकारी अस्थानुकारी क्रार्टी मीत मान महस्य का-ना विक्री अस्थान गर्नदा को स्था अस्थानुको स्थानकोत्त गर्ने किया। केने हैं कियाने अस्थानको स्वाप्ति स्थानकारो ग्रीवा किया। केने ही कियाने अस्थानको स्वाप्ति स्थानकारो ग्रीवा किया। केने साम हो है। मानापुक्ते पुस्ता होनेके स्थान अस्था अनेने सामित स्थानक विचार का पुक्ते कोशकार्य को अनेने सामित का मानोने अस्थानकार स्थान विचा। इससे ग्रीवारेन आसि वर्ष ग्राप्तिकोत्ता स्थान व्याप्ति स्था अस्था और है भी अस्थानुकार सुद्ध है।

जन्मपुर्ण जनक वसके समाव प्रकार कृत प्रदूष्णाः वीकोनक भ्रमीत, क्रांतकावन गाँव, युविद्वित्तां सीत, व्यक्तिक साम, न्यूकार सिक्ता और हीक्ट्रीयुवीयर प्रीक्ष-वीव क्रम होते तथा बड़ा बीका सिक्तार क्रिया । प्रस्ता क्री



कोर होपार्थक प्रांधे पांच-वांच प्राचीमें और दिया स्था क्टोलको सारार प्रकार कम क्रीका किन सार कालेक बार करते हुए बड़ी गर्मना की। जर भीकन सिंहकारी करीर, का, का और बस्तावरोंके स्तीत सरी एकी अन्यको क्रमी । तम सरम्बुको अन्येते अनेक केलर प्रीय-प्रीय क्रमोरे बोट की। इतला बंधेन्यम और सम्बर्धने सामग्र अवेतिक क्षेत्रम अस्या व्यापे कोरते वीची-वीची कीचेवट वर्षा भी। क्रिक्टी प्राथमोची काले सम्बद्ध से सांग्रे का

धीमसेवने भी, स्वकंतरे चौच, चुनिहितने सी, बचुताने चीसठ । इकाम विकारीन्यीवपुर हो कथा। जानी ऐसी विकार बुद्धानंत् प्रदेशकाने स्थापत को प्रत्येका विकार किया । यह क्षाने काले कारणुपके समय कुद पता और को स्केप हिल्ला । फिर हारे इन्होंने उत्तर उठावन वार-वार कृतका और क्रमीयर पटक विकार का देशकर काली सारी देखा का केर है नहीं । की महेताओं आहरों असमूको प्रम अह पट भो और जाकी हर्युकों कू-कूर के नहीं। इस जनक मुक्तानी आरम्बाको परा वेतावर परवाशकेन हरीरे सिंहका करने राने कहा आजबी केकी बकावर केने तरह :

## सात्यकि और प्रेणका युद्ध तथा राजा युधिष्ठिरका सात्यकिको अर्जुनके पास फेजना

" क्रिक्टि क्रि-स्कार । अस हर पुत्रे वह देखक हीक्-बीच कुराओं कि संस्थापुरिये हेप्सपार्वनीयो सारकीयरे केसे तेच्या कर।

शानने का—रावत् । का सामानी देखा कि महाराज्यभी सामन्ति इनहीं सेनाने कुमर का है, से मे क्षत्रे ही जातेंद्र सामने आवार का गर्ने । वर्षे महाम अवने क्षेत्रको आक्षा हेराकर सामाजिने कावर प्रतीक काम क्षेत्रे । क्य आवानी को कुछी को तथ सेचे वालोंने कीन दिवार में काफ कारकारे फोड़कर किर पुनर्शवर का यहै। कारों प्रास्तिको स्थान केवल केवलो प्रकार कन्नेने काल कर दिया तथा आकारी भी अनेको सामीके को बीच क्रमा । इस समय सामानीकी चोटोरे का ऐसा मानुसा के भवा कि जो सरना कर्मक भी भी सुकत का। सनक बैक्का कार गया । यह देशलार आरमें कुर और वैनिक जनस क्षेत्रप नार-नार सिक्न्य करने समे । उनका चीनक नार कुरकार और सामाधिको संबद्धने देशका क्या कृतिहाने मुक्कुमरी पहल 'पून्तकृत । यून मीनतेन नाही साथी जीरोको साम रेकार सामग्रीको स्थानी और सामो । हुन्हरे गीते में भी कुछ सैनिकोको सेमार जाता है। इस समय सामाधिको क्षेत्रक मत करो, ज्या भ्रातनक जनमें पहेंच कुछा है।"

हेल बहुबार एका गुलिहर स्वत्यक्रियों एकचे हैंजी सारी हैना रंकर हेप्यकर्गर का सन्ते। सिंह अकर्ग अन्ते अवस्थाति का सभी महानियोको पीवित करने समे । का समय प्राच्या और पूछन पीरोधी अवन परेई भी पान हिसाबी नहीं हेता वह। क्षेत्राकार्थ परकार और पानकोबी धेक्के प्रधान-प्रधान मेरोका प्रधान कर जो थे। उन्होंने र्मकारे-कारो प्रकार, सहय, पराव और केवार पेरोको

क्या कर दिल । उनके क्षणीते जिन्ने हुए चोद्धालीका नहा आर्थका के पता था। का करने देखता, गुनाने और निवारिके पुराने भी ने ही हमा निवास रहे से कि 'देखें, में पाधास और प्राचन पासको अपने वैत्यापेट प्रतित पाने का

जिला समाप का बीरोका कीवन बंदन है था था, उसी कार एक प्रविद्यांके कारोने कारण सहस्त्री जाने भी। कारे है कहा हैका विकास रहे, जिस समार जा पाक्रमान्त्रयी साथि हो रही है और सौरक्लोन हमी भारतर कर-बार कोरकात करते हैं, अन्ते करून केता है कि कर्मकर धोर्ट अवस्थि का पत्री है।" प्रथा विकारोंद्र कारेने उनका कुछ नाजुरू हो का और उन्होंने प्रकृतकार होका कार्याको पक्ष, पेत्रीनक ! पूर्वकार्य समुख्येने संगठके were former als and Pages Store 2, an error and विकारिका अकार आ गया है। में सब चेदाओंकी ओर देखकर विकार करना है, से तुमले कामर सुझे अपना कोई कि दिलायी नहीं देश और पेरा देश विकार है कि संवादके क्रमा करिये आन्य रेग्स पाडिने, जो जन्मेरे प्रीति एक्सा हो और सर्वेश करने अनुसूर की पाता हो। हुन बीवुरमाने सम्बद्ध परकार्य हो और उन्होंको तहा परकार्यके अध्यक्ष भी हे । का: मैं इंको इस एक पर रक्तन कहता है, उसे हुए प्रकृत करें । इस समय द्वाहरे कर्या, समूच और युक्त समीनगर शंबार है: हम संस्थापनियें उनके पास व्यवस सहस्ता करों : जो पूजा अपने निक्रके केले जुल्ला दूशा प्रत्य लाग देख है और को अञ्चलनेको पृथ्वीदान भारता है, वे दोनो सम्बन्द हो हैं। वंशी रहियों विरहेकों आपना हेरेनाती एक हो कीक्षण हैं और क्रमें हुए हो । ने भी जिलोंके मेरने जनने प्राण प्राप्तीय कर

क्ष्मने हैं। देखे, कर एक परक्रमी और निकालेकी विकेकर संस्थापुरिने निर्मात क्षेत्रर विकरे । पैक ! देखे, स्तरमासे संपारमें कुन्ने सनक है के बीर पुरू है अपनी स्क्रमता कर क्यात है, जन्द सावारण पुरुषेका के कान नहीं है। अतः ऐसे धीनम पुद्धारे अर्थुनकी रक्षा करनेव्यान एको विका और कोर्ड नहीं है। अर्थकों की इन्हर्स केवाई मरोबी प्रशंत बसे हर कुले को बर कर के के 'स्थानकि मेरा कि। और हिल्म है। में को किन है और बहु सकी जारा है। मेरे साथ स्वयून बड़ी औरबोबा संहार कोन्छ। काने समान मेर सहायक कोई दासा की है सकता।' किस समय में दीर्पाटन करना हुआ क्रमक महैक का, वह समय भी भी अर्थनके प्रति प्रचारा स्वयुक्त परिवासन देखा छ । इस प्राप्त होगरी कावन वेजवाका कृतिका अर्क्तकी और एका है। दूसरे कई महत्त्वी के कई बढ़रे ही बढ़ेंचे हुए है। इसरिको तुनों बहुद बाल बाला काहिने। पीनकोन और इस सब और। रैनियांके सहित केंबर यह है। यह हेन्सवार्थने हत्याय प्रेक विका से एक अने नहीं होना होने । देखे । एकपै रेना संज्ञानपरियो पानने जनी है। एसे, सामकार और पेसा र्मनामे इतर-ज्या नारानेसे सम और सुर वह स्त्री है। यहपूर plett & antiponis Remarkhille figuite uftelft der fterer fi i de Ten susperie Red med year friest fram & pulled pri परासा किये जिला सम्बन्धकों भी नहीं बीचा का समेत्य : आस महत्वपु अर्थको सुन्तेत्वके स्टब्ट ऑस्ट्रोकी सेवले अनेत किया था। जब देन कर का है। यह नहीं, सम्बद्ध मा नीवित भी है या जो । मीकोची रेज समाहे स्थान अध्या है, संवासने एकाएकी देखालोग भी प्रत्ये कार्य जी दिया समाने । प्रताने जानेको सामेको सी प्रतास विकास है । उसकी किराबे कारण अभा पुरू बारके नेरी पूर्वि कह की काम नहीं कर रही है। सामगति क्षेत्रका से कुरतेवी भी रहत क्षरवेचारे हैं। इसरिये काबी मुझे कोई रिया औं है। मैं कुमरो सम कहना है, पनि होंगे लोक विलयन की बीक्सकों राक्ष्में आने के क्यूं भी ने संस्थाने और समाते हैं: विर क्रू क्राराहरूको अस्पन कार्यान केरावी से कर है कर है ? मित् रार्थुमरे वह चार नहीं है। उसे चीर व्यूक्तने चेद्धानीने निरम्बर पीक्ष प्रोबामी से यह से अब्द क्षेत्र देख। अतः निया पार्टिन अर्थन पता है, अर्थनो तुम भी बहुत बाद अर्थन यात काओ : जानकार वृत्तिकांकी क्षेत्रोंने हुए और पहला प्रदुष--ये हैं स्तिरची सम्बो नाते हे । हुन अवसंख्यानी सामात नरावामके सराव, बार्च औवसरावामके स्थान और परकारणे कर्न अर्चन्के सम्बन हो : अहः मैं हमों जे

अर्थन रुपाय पुरु है और ओक्स्म रुपारे और असून केनोकि पुर है। इस कारकों की मैं पूर्वे कनेका आदेश है का है। इस मेरे कमनको राज मा। देश: क्योंकि में भी सुन्हते पुरुष्ट पुरु है और हात्में सीकृत्यात, अस्तिका और पेर क्षा है का है। प्रातिने हुए नेर्रे अहार कानकर अञ्चेत्री का को (

कांठको प्रत प्रेमपुक, कहा, सम्बोधित और मुक्तिपुक कारमध्ये सुरक्तर कार्यक्रने कहा, 'एकर् । असर्व अर्थनक्री व्यानको तिने पूजो यो नावपुर बात वर्ड है, यह मैंने कृति । वैता करनेसे बेटा यक ही महेना । अर्थुनके दिन्ने युक्ते अपने प्राचीको क्यानेका सांस्था की लोध की है और अन्यती अला होनेका हो इस संस्थापूर्णिनों देता सीच साल है, को मैं न करें। इस कुर्वन केराओं के बात है करा। आको महरेता हो में देखा, अपूर और म्यूनोंके स्वीत हीनों रहेकोचे एकान कर प्रत्यात है। मैं कारने रूप प्रकार हैं, जान प्रत क्वींकरनी सेनारे में सबी और पुत्र करेंगा और हुने परास का ऐसा। में कुश्तरपूर्वक अर्थुन्ते पात नोध कारिना और क्यानकार क्या होनेवर निम आकोर पहर तीर कारीया । विद्यु महिनार, कर्जुन और ओक्सने मुक्ते में कर का रही है, का में में अगवी ऐसाने अमरूप निवेदन कर देना प्रकार है। अर्जुनने साथै सेनाके बीवाने क्षेत्रकों सामें है जुलों बहुत मेर देवर मह मा कि 'more il meneral rever anti, more per tali सामान्येने न्याराजवी पत्र करना । में तुन्दर का न्याराबी अञ्चल है पहचनके प्रत्या का बोकर निवित्ताले क्यानके कर का कारत है। इस केमको बारते हैं है । के प्रोत्तवकारे सभी क्षेत्रेने केंद्र है। उन्होंने क्रान्तिकारे कारकोची प्रवेदान कर रखी है, कहा में इसी सामने हैं और को प्रवादनिक करने प्रतिक को है। यह यह रहता, बहि विन्धे ज्यान एकामध्ये पुनिश्चेर काके क्षामने यह उसे हो हार समाने अन्यन है पुरः वस्ते क्या क्षेत्रा । इसलिने शस्त का निकार, बोटी और पेटी प्रकारको निके संस्थापनिये व्यापनार्थी थेश क्यो सुन्त (' स्वस्तू | इस प्रवार क्रम्माची वाली होनावालीहे सर्वह स्वांक स्वोके करण साथ अन्यत्री प्रकार का को क्षेत्र का को भी संवयक्तिये क्या प्राप्त करनेकात अधुनके दिया और कोई दिसानी नों देत । नींद अन्य नहीं कुम्मकुमार अञ्चलने होते, हो मैं जो जानमें राज्या कर सीव देश और में सर्वनंदे समार कार और देत हैं, जो पर करें। इस समय अलोको परमा 🏗 सामग्री रहा कर हेते: बिंद अब पहे में बाद कार्रिय

सी आपको राज कौर करेगा ? और अर्जुनकी ओरहे ती आर बोर्ड किया न करें। वे बोर्ड की कर अपने कार लेकर प्रित् करते कथी नहीं करतते। अपने दिन संगीर, रिस्क्रेडीय, जारीय और कृष्ट्रियाल चेन्द्रालेकी यह नहीं है तथा किन कर्य आहे. रिक्टेक्ट राज हिन्स है, से सब से रक्षपुराने पुरित हुए अर्थुनके प्रोत्साने अंक्के पराना भी भूति है। भूति वृश्योभागों केवल, अपूर, करूब, स्थाप, कियर और राग आदि चरावर बॉब सर्वने यह करनेको रैयार हो सार्थ, हो से हम पी उनके राज्यों नहीं दहर हमते । का सब बताँक विवाद करने आकर्ष कर्पनंद कियाने कोई आलेक नहीं करनी कहिने । नहीं महत्त्वकारी बीजार बोक्स और अर्जून है, जह परनमें निर्मा उपलब्ध अक्षत नहीं का कारते। आप अपने पहाँको विके हाहि, क्रमानुसारका, चेन, स्कृतकीरका, कृतका और क्रमार कान केंद्रियों और का में उसके कर बात सर्वेष्ट के जा राज्य क्षेत्रामार्थ वित्र विविध्य अक्षोब्ध प्रयोग करेने, उनके विकास की विकास कर स्थिति । एउन्हें । अन्यों अधिकारी प्रापेत किये आपार्थ आपार्थ प्रदर्शको बहुद अनुस है। अतः आन् अपने व्यवस्था ज्ञान प्रतः लेकिने । यह योध क्षेत्रिको कि भी कानेवर आपन्ती एक स्ट्रीन कोना । स्ट्री का कारक मुझे एक परोज़ा हो साथ हो में अर्थु-के कह क यक्ता है।'

पुरियोग जोते—सामान्य । हुन जेला कहते हो, सीमा ही है। सिद्ध प्रथा में अपनी एक्सके रिप्से तुनों रहतरे और अर्जुनकी महाभारते हिन्दे नेकोंके किनको विकार कथा है हो जुड़े हुमारा नाम है जनिक राम्बर मातून होता है। उत्तः उत्त दुस अर्थनके पार भीवनेका प्रथा करे। मेरी रहा हो भीवसेन कर होने। इनके रिका प्रकृतके सहित स्वयूक्त, अनेको प्राथमके राजालेक, ईक्टके पूर, चीव केळक-राज्युकार, राज्यस्य प्रदेशका, जिराह, हुना, ज्युत्तवी रिकारो, ब्यूमारी प्रकेष, प्रतिकोष, स्वाप, स्वोप तक बहार और सुहुव की वो सक्यानोंसे नेट यह करेंगे। अने कारण अपनी सेनाने सहित क्रेम और कारणार्थ मेरे प्रसारक प्रोपने का मुझे केट कारेजे समर्थ और होने। विकास जैसे एकुको येथे यहा है, वेसे से कुरुकुत शास्त्रको ऐक देश। इसने कल्प, कप, सक्, वक् और आपूर्व बाल किये होनका नक करनेके लिये हैं क्षण शिवा है। इस्तियों हुए इसके कार कृत परेसा रक्षकर को बाओ, किसी अंधरकी किया यह करे।

सार्थने यह-नार्दे आयो विकासे आयमी पहाचा जन्म हे नक है से मैं अर्थनके पर अन्तर पार्टना और अन्तर्भ अञ्चलक पत्तन कर्मण । में सन कहत है—रॉनों सोव्योंने हेवर कोई काहिर की है, को गाहे अर्थनके अधिक क्षेत्र हे कह की हैंजे निरुत उनका क्यान यान है. उससे ची अभिन्न अपन्ती अस्त विशेषार्थ है। स्रीकृत्य और अर्थेन—मे क्षेत्रेर वर्षा आयोऽ दिल्लो तायर वर्ता है और मुझे उक्त करेड किनातकार्वे सारा क्यक्रिये । मैं अभी इस इपेंट केराको क्षेत्रकर पुरुषस्थि पार्थक कहा पार्थक। विस म्हान्तर उन्हें प्रवासित होका बच्छाय अपनी धेनाके स्टीत अहाआण, इस और क्रमंत्री रहाने एक है तक पर्य उसके का करनेके हैंको पने हुए हैं. को मैं ब्लॉमे डीन केवर कू क्रमान 🕻 के भी मुझे कुछ परोक्त 🛊 कि में क्रमानका पर हेरेले चाले ही उनके पास चहुँच वार्तन्त । चन जान जाहर दे को है के कुछ-एरीका स्वीत पूजन है, को कुछ न करेगा ? रकर, ! किस स्थानन पुत्री माना है, आबस पुत्री सन्तरी लेख um \$1 4 gp., uffe, up, mu, me, meen, neuer, uch, केरा, ताम ज्या जन्मान अध-प्रको भी हुए हुए freihalt beite mittelle

पुरुषे प्रकृष् पहाराम पुनिश्चेत्रको आहाते सामन्ति अर्थुको निपन्नेके रिनो आपन्यी होताने पुरः गया।



### सात्पकिका कौरवसेनामें प्रवेश

समापने वहर-एकर् ! क्य सामग्री६ युद्ध करनेके हैंग्वे अपनी सेकों पर ते अपने सेनके सीव माराज मुनिहिले सार्विका येक करते का क्षेत्रकार्वकीको रोक्षनेके क्रिके उनके राज्य अस्तावन क्रिका। जा सामा रमेचन कुकु और एस बहुदाने बन्द्रावेशी सेन्स्रो पुकारकर कहा, 'जरे ! कारते, जात्वे, जानी क्रेंडे । पुरुश्मियर बोट सहे, विकार कि सम्बन्धि बहुकारी अने मा करे। देशो, अनेको स्थानी इन्हें परास कानेका प्रका कर रहे हैं / देख कहते हुए अनेकों बहुतवी बड़े केकी हुकी ज़रर हुद्र पढ़े तथा उन्हें नोके इसनेके विकास करने की उनकर कारण किया। प्रति काल सामानिके स्थापी और सा कोल्पाल होने रूपता। इस महारचीके कार्योकी बीकरीके arrain would threat though goods all with after on रितार-विवार को क्राय-कार पागने समी। काले क्रिक-विवा होते ही सारविक्ते संख्येत पुरानेकर कहे हुए साम बीटीओ पर जारण। जानी माथ और भी जानेको प्रधानीको जाने अतिराम्क पाणीने प्रमाणके पर वेच विका पा एक कामने रीमाओं भीरोंको और मैकाओं भागीये एक-एक बीरको बीच केर का : निर्म प्रकार पश्चिम पश्चानिक स्थान करते हैं. क्यों अवहर का सर्वोत्तवर और सर्विकेको. प्रकार और बीडोबो क्या सार्थ और बोडोबे स्थीत रबोको चौपर बार द्वा था। इस प्रकार कुमीने सामान्त्री सारांच्ये इन्हें रामा से थी, यह सन्त अन्तरे रेतिन्होंनेहे किर्मान्ते यो उलके सक्ते कानेका सक्ता नहीं होता था। क्समी व्यानकारीने बरफर होकर के केने हर गंगे कि को देकते ही पैदान कोहमार पालने तने । सामाधिके हेकते ने हैने ब्यानने पर भने कि तम अनेत्रेनको से अनेक सम्बेने रेकने सरो । ये नियम नाते थे, ज्या ही उन्हें सामान्ति नियानी ber en i

इस प्रकार आको बहुत-में हैंदिकोको नारकर और रोगको अस्तन्य किस-निता करके बढ़ हसमें चुर करा। मिन सिस मार्गरी असून गये थे, असमें करमें भी वालेका विचार मिला। मिसु इसनेतीने होन्सने उसे आने बढ़नेसे केवर और पाँच मार्गरीही वालोही कावस कर हिचा। इसकर स्वस्थितने भी आवार्यस्ट साल दीनो वालोही जोट की। तम होन्सने स्वर्गी और बोदोके सहित ब्राज्यमिका कर बान होंदे। आवार्यका व्यापसाल सारविक वह न सका। उसने भीता

विकास करने पूर कर्षे कंगाहः यहा, के और बाद कार्योगे कारण कर दिन्छ। इसके का इस काम और होने तथा एकारे करके कार्रकार कार्यकार कीर होने तथा एकारे करके कार्रकार के कार्यकार कीर दिवार दिवार के कार्यकार कीर दिवार के कार्यकार की दिवार के कार्यकार के कार्यकार कार्यकार के कार्यकार कार्यकार के कार्यकार

राज्य । देख बहुबर सामाद होगानानेजीको होहूबर हांत ही पहले पर दिया। उसे पत्नी देख अन्यानीचे पहले कोच हरत और ने अनेको चन्न कोहरे हर अस्ते पीछे हैंहै । विद्य सामाहित पीके ए स्वेद्ध । यह अपने पैने सामाहित समीब्दी विकास व्यक्तिको बीवकर कोरबोकी असार रोगार्ने कर गर्मा । वाच क्रेम क्रांप-कार भागमें क्यों और सामग्रीह करते चीतर पास गाम के कारणामी औ बेट । उसे सामने आधा देख रक्षणीको सार क्षणोर्ने अस्ते क्षणो क्षेत्रोको क्षणाः कर विक और किर फोरक बाजोंके अरकी क्रतीयर बार किया । क्रवार क्राव्यक्ति करिय होका सामाजिक्ती क्रातीने संसदात नामका क्य क्रम करा। या अस्त्रे क्रमम और प्रशेरको क्रेकार जुनमें राजपात हो प्रकारि चल गांध । फिर कारे अनेकों क्रमोरे कारक्षिके बनुव और बाज भी बाट करें । सार्वकिने होत है पूरा बहुत पहला और असी सहसी नाम क्षेत्रकर कुरावणी और अस्के रक्षणों विराम्हर कर दिया। जिर एक नकरको उलके सारक्षिका हिस्स भी कहा दिया । सारकि न खनेसे केंद्रे पान के । इससे करवार्य में कारहरों यह गया । सिन् केडी ही देखें प्राथकन क्षेत्रर उसने साथ ही केडोंकी मानकोर हैन्यल को और निर्वनसमूर्वक सुद्धशेष्ट्रे संबद्ध करने करत्। इटनेडीमें स्टालीक कुरावर्गको सेन्त्रसे निकारकार का**न्ये**य-संस्था और का परा। को ये अनेको दौरीने को आगे

### कौरवसेनाके पराभवके विषयमें राजा पुतराष्ट्र और सञ्जयका संवाद तवा कृतवर्माके पराक्रमका वर्णन

क्रमार्के पुरुषेते स्टब्स और सुव्यवस्थित है। स्टब्सी स्पूरकत में निविद्ध की करते हैं। इस सर्वत सरक अपनी तरह प्रस्कार करने को है क्या कारण भी करने और बद्धा अवहा पान है। जाने कोई अधिक वृक्ष पर नातन, अधिक कुरस पा मोदा जनक बीना पूछा पी नहीं है। सभी कृतात और काम करियाओं हैं। कुक्ते विकासियों की पुरासका, उपकार करते अथवा सम्बन्धे वारण नहीं नहीं किया। इसमें देशा को बोर्ट की है, को किया सकते अवसा नेपाले प्रकार सत्य पन है। इस्ते सनेपरे महार्थी केंद्रकारको पुर-कृतक है वर्गी किया है उस क्रमेंसे विल्हीको प्रकारोज्य केल केवर और विल्हीको डिल पारक पार्त्य प्रेस्त किया है। इससे सेनाने देसा केसा एक भी नहीं है, जिसे खेळ बेटन विश्वास है अन्यन्त नेपन निरामा ही हु हो । हीर, की पहले एक क्रमी करू-कर्णाने सामेका कुन, बार और जासकारिते प्रकार विका है। विज्ञु किर की श्रीकृष्ण और अर्थुन सही-स्ताध्या इसके संस्थी पूज को. कोर्ट प्रस्ता कर भी क्षेत्र भी कर रहते। भारत है माराधिके की उन्हें कुमार साथ । उसने बहुनके रिका और विको होन दिना जान ?

अका, यह पूर्वेक्टो अर्थुको क्वाओ सामी यह देशा और सामध्याने निर्मणको अन्तर्ग क्रमने पूर्ण पान, ही आसे कर सरकार अपन क्या कर्तमः विक्रय विराण ? मे को पढ़ी सरकारा है कि कर्जून और सामनिको अन्तर्भ रोज शांको और कीरम-चेन्द्राओंको चुनुस्ताओं कानो देखका की पूर बढ़ी विकास पर परे होते। इस समय सामाधिक सहित क्षेत्रका और अर्चुओं अन्त्री केलने क्षेत्रकी कर सुरका में को बढ़ी करवाओं का एक है। अकर, का हेनावादी पाक्रमोंको बहुके प्रत्य केंद्र रित्य से वर्ड क्के साथ किस जनार कुढ़ १००—या पूर्व कुकाने और मा के बारके कि अर्थने रिल्यूक क्यान्य का करने केंद्रों कहा करना किया ।

क्षाको कहा-राष्ट्र । यह साथै विक्री आर्क संप्राणके हैं साची है इस्तीले अन्य प्राणात्व पुरानेके समय कर करते हैंने किया न परें। यहाँ का अपने कृतिकर सार किए गार्कि वह वा कि अन कवानेको एक्से का न हों, हे अपने उन्हों काल की कान नह हिन । यो पुरुष अस्ते वितेषी स्क्रोची स्वास्त स्वार जी

क्या पुरुष्ट्रते शक्त-सम्बर्ध ! इमारी केमा अनेक | देश, यह यारी आपतिये प्रकृतर आयोधी तथा विन्तर विजय क्षाता है। क्षेत्रकाने की एकिके दिनों अवनी बहुत प्रार्कत को को; किए अवसे उनका भी पनेशक हैंग्स नहीं हुआ। पूर्ण अवन्ये गुल्लिक, मुलेंक अते कायत, वर्षक अभिनात, प्राथमोधे सीर परात और धुडील पान जानगर क्या अवने बहारे बहा-से बेजरीकी-से को सुरवर है क्रांक्षिक्त क्षेत्रको क्षेत्र-क्रकोने व्ह जरी वृद्ध करा विकार है। यह कोवार संक्रार अवन्ति हो अवस्थानमें हो रहा है। कुते के आले-बंके वर पवाले की आववर कोई एकपूरत कियानी नहीं केंद्र । मेरे विकास में इस वस्त्रधनकी बढ़ आप है है। आ: अब प्राप्तका क्षेत्रर दिश प्रवास का चीवन ricery gird its, van gefrië i

का कारणकारों सामनेत अवन्ते सेवाने पूरा पना से बीनांग आहे पाणा मीर नी जारके हैरियांगर का परे। उन्हें को कोचने क्या करते हैव भूतरकी कृतवर्गने अनेतरे ही अने कारेने केन दिया। इस समय इसने क्रान्यांका का है अर्जुत परवान देशा । तमे पान्तव विश्वास औ ब्रह्मने को जेना प दिला एके । एवं महत्त्वाह भीवने नीय, स्कृतिको प्रतित, कर्मरावाने स्तीत, ज्यूपराने स्ती, स्थानुहाने सीत और प्रैक्टिके कृति सार-सारा वालोंने को बनार विजा क्या निर्मात कृत्य और विरामकोरी परिच-वर्षित प्राप्त परस्पार वित चीत कानोंने उत्तरर और भी चल विकार । कानमंत्रि इन प्राची वीरोको चीव-बाँच वालोरो चीवकर चीवलेल्या श्राप क्या होते हवा उनके बहुत और कामको धारकर एको केंग्रे निया क्षेत्रा । इसके क्या कार्य स्रोक्ते परंतर सही हेतीने सतर कलोक्स उसकी क्रमीनर फिर चीड की। क्राव्यक्ति कामेने असम्ब काम्य हो कामेने वे व्यक्ति हार्ने क्या अनोध-में हो गयें: बोड़ी देर बाद बाब होते हुआ सी भीकोको जानो क्रांपि पणि क्रान को । क्राने क्रावपिट तम कह लोहलुका है को। तम उसने स्रोकने भरवार सैन कारोते सीमोक्स पर जिल्हा हमा राज राज पहराविचीको वी होन-होन कालोड़े बॉब हैका। इतका का कारे भी काला कार कार्य केंद्रे । प्रत्यक्ती एक इस्स केलने विकासीका अपूर्व बाट विचा इससे कुनिय होगार हिक्कोंने क्रान-सरकार का सी तक सरकारको पुत्रकर कारणकी रक्षा देखा। या आके बन्त और यानको क्रम्बद्धा पृथ्वीका का नहीं। कृतकारीने तुरंत से उसरा करन हेक्स अलेक प्राच्याको चीन-सीन प्राच्येले चीच विका सचा

रिसम्बोको साह क्योंसे काला का साथ । क्रिक्टीने भी इक्षा बनुव सेवर अपने सेसे वाजोरे कृतवयांको रेक क्रिक । इसके क्रोकों प्रभार वह विकासीके सार छूट यह । इस समय अपने की बालोंने एक-सूत्राको माधिक करते हुए ने पहारची आवनकार्यन क्यांकि सम्बन कम कहे है। कृतकार्यने महारक्षी किवास्त्रीयर विकास कार्योसे कर कार्यक हिन को प्रता बालोहार स्वयत कर काल। इस्से म्य मुखित है गया और काके हमाने कन्न-साथ मेर गये। मह हेराका अस्ता सार्थि कहे कुलैने रकको रसकुलके | क्रोक्क कर गये।

बाहर है पहला

विकासीयो राज्ये निकार भागमें अनेत पहा देखकर सन्य पाणक भीरोंने क्रान्यमंत्री काले श्लोने केर रिन्य; विद्या प्रतःस्थान कृतकार्यने व्यक्त हो सदस्यत परावतम विस्तानी । कारे अंकेले ही उन एक चीटोब्टे उनकी सेनाके सर्वत परास्त का क्रिया। परकारोको जीवका आने प्रश्लास, प्रक्रम और केवल प्राप्तिक भी पति काही का दिने । अन्तरी कृतकार्यकी क्रमनर्गाचे मानित होकर में जाती महारची मुख्या मैदान

### सात्यिकका कृतवर्माके साथ युद्ध, जलसन्धका दश तथा झेण और दुर्योधनादि धृतराष्ट्र-पुत्रोसे धोर संभाम

सहको बहा--रामर् ! अन साको यो वात पूरी थी, या पुरिये । यह कुलावी सम्मानी नेपाने पत्र दिन से सामाधि वही कुरीने अलंड राजने आ गया। कृतकारी क्राप्त होचे नामीची क्यें क्राप्त कर है। शुरूर कार्यके बाहे कुर्तीये अस्पर एक जरूर और जर क्षेत्र क्षेत्रे । व्यव्हें इसके कोई रह हो गये हका मारखें कहा बार गया। किन माने अधेवार की पानको प्रतासकी पुरावार और क्रारिको भी पालक कर किया। क्रार प्रकार को राजीन सामो मुहाबीर स्थापिको अपने केरे मानांको समार्थ नेपाली समार्थ क्त कर किया। यह वान्यसमीने पीविश क्रेयर कुरावणीयी सेना हितार-मेदार हो गयी। सब प्राथमिक आने कहा और साम्प्रेसी क्यों करता हुआ प्रमारेशके राज पुद्ध करने राजा।

बीरवर फ़ाराधिके होड़े हुए महाकुण मान्येने नार्वक होता स्थाने प्रथी पुरुषा मैदन संस्था जल्मे समे। इनके हीत दूर गये, चरीर स्केट्स्क्रम हो भवा, करावा और मन्द्रकार पट गर्न कर कार, मूह और हैंड केन-निया है को । अन्ते बहाबत रह हो पने, परकारों बहाबर निर नहीं, कर्रात्मक क्रिक एके, बंदे कुमार मिर गमे, समार्थ क्रू गमी, समार बुद्धमें काम का गर्ने तथा अंधारियों निर गर्ने । श्रक्तीको नागव, बताहन, जाना, असूरीनक, बुरा और शर्मक्य प्रथम बालोसे अने स्थान है पायल का दिया। इससे ने कियाओं, जून करतने और मरा-मूत होएं। इस-उमा चनने स्मे।

इसी समय एक इंधीयर सकत हुना पहलारी कायरक कारण प्रमुखं पुजारो प्राथमिका पह कारण। सामग्रिके अस्ते हार्याको अंकरमह अस्त्राज्य करते देश अवरे वार्योगे



कर विकार कारणीय जान क्षेत्रन हो जाना जा जि बंहराओं हुए कराको सामा बहुर बाट सरव तथा पीने कामोरो को भी पाएक कर देखा। योगु महत्त्वमु सामान्ति कार-में कामोने कामर हो बागेनर भी दल-से-बस न हुआ। अभी हुन्त ही दूसरा बनुव दिन्य और सार बार्गोंसे कारास्थ्ये विकास पेक्-स्थान्य कर किया। अन काराको कर और लाका उत्तरी दक उतनास्थे कुरकार राजनिको उत्तर पेका। वह १८के अनुवर्ध केट दिया । प्रस्तपर जलसम्बने वालोक्कर प्राथनिकारै क्राहेकर 🖟 बारकार पृथ्वीपर मा पहुँ । एक सामिक्ते सूचरा प्रापृष्ट सामिक् और जाको संबाद करके एक पेने कामने जानाश्यक्ती चींच दिया। सित के कुछ कामोंने जाने जानाश्यकी पुजारे कार कामी तथा सीमोर कुछाने जानका स्थापन का दिया।

क्रमाध्यक्षे यस देशकर अन्तर्थ केन्द्रे क्या सक्तात प्रशासका आयो होता होता है से स्वरूप का नहीं का नेपा इस्स करने एने । इस्तेश्वेषे इस्तावरियोने क्षेत्र अन्याने हेन अन्ते केहेको वैद्यापर सामानिके कारने आ गरे। यह देशका इधान-प्रकार कोरव की जाधानीके राज ही सारत क्ष को । अब स्थानिकार होयाने साहता, होर्थको साह, क्ष्माने कर, क्रिकारी सेंस, क्ष्माने पत, क्ष्मानने अस और निकारों से नाम होते। राज क्रॉनन कम सम महारक्षिकी यो योगम सम्बद्धी करके को बेरिक सम्ब आरम केना: वित् सम्माने सम्म-सम्म क प्रश्लेक बाजोंका बनाव हिंदा। जाने हेक्के सेंद, कुळके थें, Regolde unter, Revitalt um, guidente urus. Arfüreifrig aus, mermeit ift alle farmie me mer को । दिए का क्षेत्रिकार छ पछ और अस्त कारोधी गडी गहरी बोड करने शरा । बेनोमें हुआर बुद्ध किए गया और बेनोइंटे अपने-सपने पहल सेपालका वाणोपी वर्ग करते प्रद एक-कृतिको अहान यह दिया। कृतिकांक सामानि सालकियों कहा है क्यान का दिना एक स्टानीओं की काले वाजीते कारके पुत्रको कीच काल। कारके कृते कृति की आनेक्ष्में करका प्रत्यक्रिया कन्नेकी इसी तन्त्र ही जिल असे हानेक्य पत्ने पॉक-पॉक कल क्रेक्कर मिर सार-मात बार्गाने कर विका और किन मही कर्मिने कार्ड बालोहरा हुनोबस्स चोट थी। इसने बहुल उसने उसके करूर और व्यवस्था के कारकर गिरा किया। फिर कर की है कारोंने वारी बीडीको मरकर एक कराने सार्यका भी माम नमाम कर किया। तथा इंग्रॉफ्स्के केर समझ नमे। यह भागकर विवासेनोह रक्षण चंद्र गया। इस इक्स अपने राजको प्रात्मीकारा पीतित केर्न देख राज और स्थानकर होने लगा।

इस बोरेन्स्स्टाचे सुनका नहीं पुत्रांचे व्यारणी कृतकार्य सारविक्तं सामने जाना। उसने इन्स्टांस नान्योंने इसनोकारों, पॉनसे उसके सारविक्तं और कारते करों बोड्डिको बानम कर कुरतः। इसका सारविक्तं कही देनीले सारवर नवहीं करा होते। उसकी बोटसे अस्त्रम कारत होकर कृतकार्य करेंद्र उस्ता इसके बाद नारविक्तं विकास कार्योंने इसके करों बोडोको और सारवर्ष सारविक्तं नीच इसका।

वित एक आवा देताके क्या कृतकर्मान क्षेत्र ( मा उसके कारकारो प्रोड्कार भूतने समयम हुना मृत्वीयर गिर गया। आवाँ कोटले कृतकर्मात्व क्षीर लोहपुरान के गया, उसके कृतके कृत-कार्य गिर पत्रे और यह अस्पत्र पीड़ित क्षेत्रर कृतके कर समयों मेटकारे गिर गया।

का उद्यार कुरूपर्यको परास्त करते सामकि जाने बढ़ा । का क्षेत्रपूर्ण कार्य प्राप्ते अवस्य प्राणीयी वर्ण पाने को । इसोने हीन कानों हे एकर्सको शतराहपर कोट की हवा और भी अनेकों कालोंके कावर बार किया । पांट सामाजिने केनो काल मारकर हुन समीको कार निया। इत्यार आकारी क्रिक्ट कारे बीच और जिन क्यान बाल कोई र काले सामग्रिका क्षेत्र प्रक्रम करा : सन्ते में की मानोंसे केवार कर किया क्या उनके प्राप्ते से भी बागोंसे उनके करोट और कामची भी बीच प्रत्य । सार्यांकची ऐसी पूर्वी केवाकः अवकारी काल कालोने अस्ति सार्वकारे जीवान होंको अर्था बोहोरा बोट भी । दिल एक बालारे स्थापी क्या काकार कृतेने ज्ञान करून वाद क्रांच । प्राप्त कार्यांकने एक चारी गया काश्रात होगांचे स्थान क्रोडी जो स्थात अपने जना आहे देख सामानी बीचाईमें अनेको कारोंके कारकर निर्म दिया । किर जाने दासा बन्द है उसके **ब्या-में साथ प्रातायत होतावी वदिनी पुर्शाको पायल कर** किया। पूराने को नहीं नीहा हाँ और अहोंने एक अर्थनात्र कुरूको प्राथमिक्या स्मृत कारका एक प्रतिको उत्तरे कारियको पृथ्वित कर दिया । इस काम सामानिने यहा है अविकास कर्न किया। या सेकावारीरे पूर्व करता रहा और साम ही क्षेत्रीकी समाम की रीमाले छा। किर जाने एक कारणे केलके सार्वकाने प्रचीतर गिरामार उनके चोडोको कार्यक्रम इसर-कार कारण कारण किया । वे अन्ते राज्यो लेकर राज्युक्ती प्रतारी कार काठने लगे। ३४ समय सची राजा और राजकमार कोस्तरात नवाने रूने। जिल् करवीरने क्रांचेने स्वतित क्रेका वे स्वर भी बैदान क्रेकार न्त्रण गर्थे। इससे अल्पार्थी रोगा वित् अन्यवस्थित और क्रियर-क्रिका होने राजी। स्तानांक्रके व्यक्तील बीवित होकर अन्यानीह कोडे कर्ता के वर्ग और उन्होंने किए उन्हें बहुके क्षरका हो सरकर जाहा कर दिया। आकारी पाणक और प्रक्रमांके प्रथाने अपने ब्युक्ते हुए दूसा देशका वित सम्बद्धिकी और क्षत्रेका विचार क्षेत्र दिना और वे पान्कम और कामालोको आगे कानेले वेकामा व्यापने ही रहा

#### सात्यकिके द्वारा राजकुमार सुदर्शनका वस, काम्बोज और यवन आदि अनार्य योद्धाओंसे घोर संप्राम तथा सृतराष्ट्रपुत्रोंकी पराजय

स्तुमने स्वर—सम्बर् ! इस प्रमार क्षेत्रकार्य क्रम बारकर्य आदि आपके वीरोको परान्त कर सारक्षिणे अपने सार्वाको पहल 'कुर ! इन्हरे क्युओको से संबुक्त और अनुरे पाले ही पान कर को है। इस से इसके परावकों Ber felberem 2 alt gemäg aufeit mit pe मोक्कानोंको ही पार के हैं।' सार्वाचने ऐक बक्का क विभिन्नवाद्यान पान और वालोको नदां करता अपने प्रकृती-पर १८ पत्र । को बक्त देश एक्कुबर सुर्द्धान कोशने बन्दार पानने जाना और मानद को देखने गरा। असे प्राचीकर कियों क्षण होते। यांतु जले को अपने कर बहुकोर्स भारते ही कार जाना। इसी उत्तार सामाधिने सुरक्षीनर से बारा और उस्ते असे की है-हैं, डीव-डीर ट्रूड्डे कर देते। मिन साले बनुसको सामान्य सम्बद्ध सँग अन्त क्षेत्रे, हे सामानिको पानपानो पोद्यार अस्ति वृत्रीरमें पूरा गर्न । सहस है बार मानोसे अपने सामाधिको बोद्धोयर की बार विकास ( सा धारमध्येन वहाँ क्योंचे अन्ते होतो होरोक्ट सुरहोनके करों योगोची मारबार बड़ा शिक्षण किया। किर क्या कारको क्षानिक नार्षिका हैस कारकर एक क्षान्तार सरका क्रमानमध्यम् प्रकारः यो भागे अस्ति कर दिना ( इस प्रकार एक क्वोभनके के सुरक्षका संदार करोर सामीको सह हर्ष हुआ । जिस वह जारको सेकको जनमे करकेको सौक्राहेसे इटकर सबसे जिल्ला इसका हुआ आईनकी और पान । मार्गि काचे साम्ने में १५ अमा या, करेको यह शामित समान अपने बाजांने होत्र केरा था। उसके इस उसका पराक्रमकी अनेको अन्ते-वन्त्रे चीर प्रत्येत कर के है ।

अब जाने अधने सारवित्ते बहा, 'कानून होता है बहाबीर अनुन वहाँ वहाँ पता है है बचोंक उनके पाणीय अनुनवा कार सुनानी ने पता है। युत्ते जैसे-जैसे समुन हो से हैं, उनके बहाँ दिश्वय होता है कि ने पुनांताने पहले हैं जनकारका का कर हैंगे। अब हुए बोही देर प्रोडोको आतान कर होने हैं। दिश विस्त जोर कहुआंकी सेन्द्र है तथा निवार दुर्वोक्ताही राजा एवं बराबोज, कान, कार, बिरास, देख, कार्य, सारविद्यास तथा अनेकी परेखा कार्य हुए हैं, उनर ही राज है बसाना । वे साथ मेरे साथ ही युद्ध बरानेकी देखारीने हैं। कथ रता, हावी और प्रोडोंके साहित हम सम्बद्ध सहार हो जाए, सभी हुए सम्बद्धना कि हमने हस सुसार बहुक्को कर विकास है।'

समिने का—बानोंव । यदि कोवने वरे हुए स्थान परसुपमनी भी सामके सामने जा कर्ष से पूर्व कोई कारकर नहीं होगी; इस कैंके जुरके सकर कुछ संस्थाकी के कार हो क्या है। कड़िये, अस किए राहोशे में सारको अर्थुको कार से कड़े ?

कारणीने जाए—अस्य मुद्दे का पुन्तकोगीका संदार कारण है। इसलिये हुए मुद्दे कारणोगीको ओर हो हे कार्य । पुन्तर सर्वृत्तके मेंने को सम्बन्धिका सीहरी है, आस मैं कारणा सीवाल दिखानिया। जब मैं सोधाने अरबाद सूने-सूने केन्द्राओगा कम कार्यण को दुर्गीयनको गाँ। इस होगा कि इस कार्यों के अर्थन है। गाइना पान्तकोशी प्रति हैनी सैसी सीव और कार्य है, को इन समाआंधि सामने असनो नीरोका कार कार्यों में समाद कार्यण। आक् प्रतिकोशों मेरे सामनीन और कारणाव्या का इस बावना।

पालानिको क्षेत्र साहतेका सार्वाको साही नेपाँची बोद्योको प्रोक्त और प्रांत ही को कानोहें कर पहिला हैया। यह क्योंने सार्व्यक्यों अन्यों सेक्टें स्तीय आया हैका से से वर्त सर्वात करोबी को प्रत्ये को । विस् शास्त्रीकी राज्ये क्षेत्री कालोची प्राप्ति काला वर्ग स्थापन अस्त्रीको क्षेत्रकोंने बात दिन और वे उसके प्रस्तक परम भी व नके । इसके बार का कार्योची कर्त करके उनके हैं।र और कुम्बनीको ब्राइटे १९४१ । वे ब्यान कर्नाह रहेते और व्यक्तिह कारणीयो अंदेशकर क्रीरोको केको हुए पूर्वापर गिरने उस्ते । इस उच्चा की इसकीओं को हुए कियाँ केवा अवहीन हेन्द्रर पुरुषेश्य निर गर्ने । यह प्रत्यको बहुरहाक प्रतिकार से क्षाल कोक्स का, उनसे इस-एक कारों ही पीच-क्षेत्र, De-Gr., रेस्स-पास और आग्र-आग्र कानीका साथ प्रयास कर किंव का । होने जनपर उसने हजारों करणोज, सक, सबर, निकास और वर्षांतेको करावाची करके रकावृत्तिको क्षेत्र और रक्षते संकार क्या अयम-से वर दिया। सामिके क्लोरे को हुए इन बीरोसे लाउँ पूर्व्य वर गरी। उनकेरे के केंद्रे-के केंद्रा करे. वे अक्सांकरमें कार्यात होसर रक्ताकारे क्रम को।

एकम् १ इस जनसर कान्योग, नाम और स्थापित पूर्वय रोजायो जनसर कार्योक आपके पुर्वाची हेन्छ्ये युद्ध गाव और उन्हें भी पराश करके सार्याचारे सा बहुनेका असेश मित्रा। उने कार्युंग्ये सम्पेप पहुँका देशकार वार्योक सैनिक और जाराज्योग कहा जनसर कार्य समे। इस्लेक्ट्रिय कार्यक पुर हुव्यंचन, निकारंग, तुःसास्तर, निविश्वति, प्रश्नुति, दुःस्ता, सूर्यांग्य और सम्बन्धे को पीक्ट्रिय भागार के दिल्ला। पुरास्तिह शहरकियाँ प्रसमे सन्दिर भी पण न हुआ और यह अर्जुनसे भी काका कुलाना देशका हुआ उनके साथ युद्ध करने हता। अब राजा हवाँकरने हीन बल्लोसे करके सुर और बारमें बारी बोडोको बीककर सामकियर बाले तीन और हिर आहे बाजोरी बार विका तक कुपालनरे सेनाह, क्षकृतिने महीस, विवयंको पाँच और १,४६३ पेडा कान्येरे अरपर चोट की । इसपर कार्याक्षणे कुरवागरे हर कर समीको तीन-तीन वाजोरे सींच दिया। फिर क्यूनिके बन्तको काटकर तीन वाणोसे क्येंक्क्सी इस्तीयर कर किया उस विवारेनको स्त्रै, कुरुक्को कर और कुरुस्तको कीन कालीले कामार कर दिया। इसके मार उसने प्राचेक मीके वॉक-पॉक क्षण और भी पूर्व तथा एक पालने क्रांबनके क्रांबिक प्रदार विरुद्ध । प्राप्ते यह प्राप्तान क्रेकर क्वाकेर निर एका । सारविके करे जानेकर केंद्रे इसको करी करने रूपी और असके रक्षको स्थापन्त्रीयसे बहार से गर्ने । यह देसावर असमेंद्र अस्य पूर और कारे विकेक भी मैदन क्षेत्रका भाग गर्ने। इस प्रकार आवको कर पेनाको प्रिल-निवा करके का किन अव्यक्ति शक्ति और ही करता

वित्यू पह पुष्ट ही जाने कहा का विद्यू विकास अपने । कार्य संस्थानकोर स्थित में सम प्रेट्स किए स्थित अपने । कार्य कृतिका जानेर आणे का । जाने काम बीच क्षार पुरानार स्थार सक, करणोज, पाइन्सि, प्रकार, परंद, पुरीनम, स्थूमर, शास्त्र, मैस्सर, पार्ट और पांतीम प्रेट्स क्षारोने माना संभार को अरेशने सार्थाकारी और वैदे । कुलानाने 'को सार क्रानो' ऐसा व्यक्तार संभावी अस्ति। क्षार जाना क्षार सार्थिका पार्ट औरसी मेरे सिन्स । क्षार जाना क्षार सार्थिका पहा के अस्तुत परकार देसा । क्षार स्थान की वैद्यानों का स्थानेर साथ सीमान कर पहा का क्या स्थानेना,

व्यक्तिय और युक्तावारोंके स्थित का सभी अन्यविध्य सेवार करण जाता था। या ये पार सावार मागने समी, हो काले कुतावाको व्यक्त—'और ! यागते वर्षो हो ? सुरानेग तो व्यवस्था व्यक्तिय है। इस्तरियो तुम मान्य प्रश्नावका इसे भार कर्मो ।' या सुम्बार में किर साराधिका हुट पहें और हाणीके क्रित्रो सम्बाध व्यक्तियों तिको गोध्यतियों सेव्यर सावने आये। वर्षो को यार साराधीको तिको गोध्यतियों सेव्यर सावने आये। वर्षो के वर्षा साराधीको नाम गरकाय आरब्ध करनेची हकाले क्राणी को वर्षाम प्रमाणकार्य थी, को साराधिन अपने व्यक्तियों सेवा गरने समी और साराधीक होने सेवाने क्राणी के व्यक्तियां कर विया। सार प्रकारित होने क्राणी के साराधीको स्थान कर विया। सार प्रकारित होने क्राणीको सेवा गरने समी और साराधीक स्थान हास्त्रार होने क्राणाओं कर मानेने साराधीन होना प्रकारित तीर अपनी क्राणाओं कर मानेने साराधीन होना प्रकारित तिर गये।

अब अवेची मालपुण, जनोइसा, मुन्यूया, याद, तहुण, सहर, तन्याद और वृत्यीन्य चेट्टा सामनिया पानते माने साने उन्ने ! जिल्लू मुख्युत्तार सामनिय वालोकी बीकारो असे पानते की हुम्यु-पुन्नो कर सिने ! अवटी मानोकी कोट पोनीह सेक्ट्रेस सामन बान पहली थी । असटे मीदित केसर प्रमुख, सुन्यों और पोड़े राम्यायुरिनो किस न स्ते ! यो सुनी माने बचे थे, से पुरुषे सामना से गये स्था असे पानवादित हिन्दी हु गयी । इस्तियों से भी असेक्ट्रेस सामनियों स्थान प्रोत्यास संस्थापुरिनो सांग गये । आयो को युव सामनियों समूर्य असे थे, से भी उसकी मारहे सामनिय सेक्ट्रेस हुम्बरूपने काम विका पर, से सम्ब भी सामनिय सेक्ट्रेसर सुन्यास्त्राने प्रमुख विका पर, से सम्ब भी

---

### आचार्यके धरा दुःशासनका तिरस्कार, वीरकेतु आदि पाञ्चाल कुमारोका वय तथा उनका चृष्ट्युत्र आदि पाञ्चालोके एवं सात्यकिका दुःशासन और त्रिगत्तीके साथ घोर संप्राम

तक्षणने कहा—राजन् । तम सामाणी पुरावसको समाधे अपने प्रसा पाए देशा को वे सामे बाहने तमे, 'पुरावसन ! वे समाप्ती पान को है ? राज दुर्गोकन को कुरतानरे है ? तथा कार्या अपने मौसित है न ? तुम तो राजकुरतार हो, कर्म पानाके पाई हो और तुम्हीको पुरावस्त्र आह दूशा है : पित तुम मुद्दारे कैसे पान यो हो ? तुमने को पाने होन्दीने कहा मा कि 'मू इसरी मूहने जीती हाँ दसरी है। जमा मू

नेकामारिकी होनार इसरे जेह प्राता महाराज हुवेंसको एका स्थान दिना बार। अन तेश कोई पति नहीं है, ये एन से कैन्द्रीय किसके प्रमान स्वादीन हो भने हैं।' हेकी-हेसी बारें बनाकर जब दूम पुत्रूमें पीठ बनों दिसा रहे हो ? हुमने प्रमुक्त और प्रमानकोंक स्थान स्थान ही देश बॉक, पिर आज एक प्रमानकिके सामने आकर ही तुम कैसे हर गये ? पहारें कमरहानने पासे प्रमाने समय दूमने यह नहीं समझा ना कि

एक दिन में पाने हैं कारत साम है कारेने ? सम्राजन ! हर ऐनाके नक्क और अवस्था है; वहि तुनी असार पानरे लगेने से संकारपंतिये और बाँग आहेत्। आग नहि अमेले है बहुती हर सामक्रिके सामनेते हम पानन पाने हो तो रपायराने सर्वन, चीम वा नकार-सहोत्रको देशकार क्या करोगे 7 हो हो हम बड़े पर्ट ! काओ, इक्ट्स गुम्कारेके पेटने पुत्र करो । पृथ्वीक चनका करेते से कहीं थे राचारे जोजनको राह्य नहीं हो समोन्दे । नहीं कुई स्थानक ही स्क्रारा है, तो शानिको साथ ही राजा व्यक्तिरको पूर्णी सीव है । मीकामीने से पहले ही हराहों कहें हर्मीकाने कहा का कि 'पाणकारोग एकाभने असेन हैं, हुए उनके साथ संबंध कर को । यगर का प्रथमिने काकी बाद वर्षे करो । की से सुरा है, चीनमेन इन्हाद भी सुर निर्मेश । अववर यह विकार प्रमा से होना और देश से होकर खेला। क्या स्थ भीमरेनका पराक्रम नहीं कालो, यो हमने कावानेसे के और रिप्य और आज मैहन क्षेत्रकर फारने रूमे ? जब कही सामन्ति है, नहीं सीए हैं अपना हव से मध्यो; नहीं हो सकते किया का सारी सेना काम कामगी। कालो, संकारने और भागवित्ते पित्र कालो ।'

आवार्णके पूरा प्रकार कहनेपर कुकाराओं सुद्ध भी तक गर्री विचा । का तक क्षत्रीको सुक्तै-सन्दर्भ-सी कानेत काले पीश न केरनेवाले कवनोंको नावै तेना तेनार सामाधिकी और करन गया और बढ़ी सम्बद्धनीने करके प्राप्त संस्था मारने तरह। प्रक्रियोंने क्षेत्र प्रेमामार्ग की स्टेमने परकर कवान गरिनो पाकारा और कवानोची नेकार क्ष को और रिकारों-इवारी कोन्द्राजांको संवरकुरियो समाने सने। उस रायव कामार्थ अक्त पान कुछ-सुराधी भारत्य, भारता और मान्य बीरोबंड चोर संदार कर जो थे। किस समय में हत प्रकार सेनाओंको पराचा कर रहे थे. उनके सामने परानोकश्री पत्कारराजकुमार वीरकेत् आया । अस्ते गाँव सीके कार्यके होणको, एकसे कामको और सरासे उनके सर्गकको क्रीव दिया । इस समय पह यह आक्ष्मचंद्री पात औं कि अपनार्थ का नेपाल पाकारराज्यकारको कार्य औ का उने। र्ममापर्ने क्रेमली गति क्यो देखकर बहुत्तव क्षितिसकी कियर पार्क्नमारी पार्क्रक बीरोंने उन्हें करों ओरते बेर रिया। तब-के-सब विराद्धर उत्पर बाग, दोका तबा रया-रायके अफ-सबोकी सर्व कार्र तमे। सर अस्वाकी बीरवेलके रककी और एक बढ़ा है प्रशंकर बाल क्षेत्र । का को पायम करके प्रकार या यह और अन्यों केटने प्राथवीन होकर वह पालक्षक्रश्रीलक रक्ष्में की विर तक :

वस महान् वनुर्वार राजकुरवानों भारे वालेवर प्रस्कात वीरोंने सही कुरीले आकर्षको सम जोरते वेर दिला । विकलेल, हुक्का, विकासी कौर किरत्य—में सभी राजकुर्वार अपने महंकी मृत्युके व्यक्ति होकर होगके साथ राजक कार्यके दिल्ले उनके सामने जा गये और वर्षकाहीन नेवोंके स्थान कार्योको वर्ष करने हाने । इससे विकास होश अस्य ओक्टे वर वर्ष और उन्होंने उनवर वार्योका कारह-हा वेग्य दिला । इससे ने इस राजकुरवार कार्याकर विकासिक-विम्नु के गये । उस आकर्षने ईससे-ईससे उनके कोड़े, सार्राव और राजेको यह कर दिया एका अस्यात होने कार्योको स्थानकार उन्हों राजकुर्वका यह करके आकर्ष अस्ति कार्यो वनुक्यो स्थानकार प्रसार्वको में

न्य देशका बुह्यक्रको न्या जीन हथा। अल्के नेतीने क्षा निरूपे तथा और वह सारामा मुस्ति होमार होमारे स्वार क पक्ष । का बहुकुके क्रमोते क्रेमको गति वर्धा देशका क्षांत्रपुरित्रे कहा हाक्यार होने उत्ता अले छोपते क्रिकेटकार अव्यक्तिक क्रातंत्र पूर्ण स्वकेते क्रेन की। प्राची में रक्षणी नहींका बेटवार मुखित के नमें। शहरहरू बंद्ध रक्तार इस तेव तरकार काली और अपने रकते कुकर कीरन ही अस्थानिक रचनर कर गर्था । यह उसका रेल कार्यक्रिकार का कि बेजावी गुर्का का गुर्के। प्रक अवेरि देवर कि बहुबा अच्छा ग्राम स्थान प्रत्येश रिप्टे रिकार 20 रूप है, जो से पानते ही चीट करनेवाने दिवस जनके कल केंद्रने रूपे। इस पानोसे सुबद्धाना सराह भट्ट हो पना और वह शंक ही उनके रखते करकर उनमें रखपर क कहा। कर ने केनों है एक-कुरोको कामोरो बॉबर्ग करें। वेनोक्षेत्रे सन्दर्भ आवतात्व, विद्या और पृथ्वीको वागरेंके छ। विकार करके का अवस्था पहलारे सभी प्राणी प्रश्रंका करने राने। अब बेजने बढ़ी पुनीते बहुबहुको सार्पको दिस्को व्यवकार थिए किए। इससे उसके केंद्रे रसप्तिमंत्रे चान गर्छ। का अन्यानी पाद्धार और सुद्धान मेरोके साथ गुरू पार्ट करो क्या को परमा चरके किर अपने क्याने काकर करे

इसर पुणापान बसाते हुए बाहाओं संपान कालोकी वर्षा करता कालकिये स्वापने आता। जो आता देश तात्राकि अस्ती और कैंक और उसे अपने बाजोसे इकदम कर दिया। जब दु-इस्तन और उसके साथी बाजोसे विश्वपुत्त कह गये से वे अन्य रिज्योंके सम्पने हैं जनवीत होका पुन्नावासी काल जने। दु-इसस्तको सेकदी बाजोसे विश्व वेशकार राजा हुर्गोकरने निवर्ष मेरोको साम्बन्धिक रक्की ओर केक। उन तीन सहस्र एमें केक्कमोंने युक्का पान निश्चय का सामिको पार्च ओरसे रक्कीकी पान्नो कर किथा। विश्व सामिको अपने पान्नोकी पीनाको प्राप्तको कर विष्य। अपनायरे केक्कारोको पान-पी-पान्नो परामाची वर विष्य। तम स्वे-स्कृतीर अपने प्रचलित प्रकृत होप्यकर्पकीक रक्की ओर स्वेट ग्रुपे।

हार प्रकार जिएलें बीरोंका संदार करने चौर प्राथित वीरे-वीर सर्वृत्ते रक्ता और स्कृते स्था । इस समय अस्ति कृत दुःवासमने प्रस्यर जिस नी कालीसे कार विक्या । उस सम्बद्धिने अस्पर क्षेत्र काम कोड़े और अस्ति स्वृत्तकों की कार इस्ता । इस प्रकार सम्बद्धी विक्याने इस्ताहर का किर अर्जुन्ती रक्तारी और क्ष्मी रस्ता । इससे दुःवासम्बद्धा कोड क्ष्मा कर एक सोहसी असर सामाध्यास का अस्ते के विकासी कारत एक सोहसी इति होती । सिंदू स्वस्थिति अपने पैने वाणोसे अस्यो मैन्स्नी दुव्यो कर विथे । उस दुन्तस्थनी दुस्ता बनुव सेवार असे कालोरी कीत अस्य और विश्वी स्थान नर्मन की । इससे सम्बर्धिका क्रीय प्याप करा और जर्म दुन्तस्थकी क्रमीयो कीर वाणोसे सम्बर्ध करा एक परस्तरे समये बनुवको और क्षेत्रे क्रमी स्थान कर्म होनो क्रमीरक्षयोगो कर क्रमा । पिर वर्म क्षेत्रे क्षमा क्षेत्रकर क्षमी होनो क्षमीरक्षयोगो कर क्षमा । परस्तिन क्षम नेक्स क्षमा क्षेत्रक क्षमी क्षमीरक्षयोगो कर क्षमा । सम्बर्धिन क्षम नेक्स क्षमा क्षेत्रक क्षमी क्षमा क्षिमा । क्षित्र विराह्म क्ष क्षमीरक्षी क्षीत्रक क्षमा क्षा पानी, क्षमीरको क्षमी दुन्तास्थका क्षम क्ष्मी क्षिमा । स्थान विवाह क्षमीरको क्षमीर क्षमी दुन्तास्थका क्षमा क्ष्मी क्षमा । स्थान व्याप क्षी । क्ष्मा को संवापभूतियो क्षमा क्षम क्ष्मी क्षमा अस्तिकी अस्तिका क्षमी क्षमा ।

### ग्रेणाचार्यद्वारा वृहत्सत्र, वृष्टकेतु और क्षेत्रमर्माका वस तथा चेकितान आदि अनेको वीरोकी पराजय

रहाको बार-पान्य । इसर केन्याचे बाद आसार्थ श्रीमाना सोमवर्गने साम दिए चीर चंतान क्षेत्रे समा । इस प्रतय में चेदा गरन से ने, जन्म नेवने प्रथम धनीर सम हो रहा था। परमस्ति होगने अपने स्टल रंभके बोहोजारे रक्या काकर भवान गतिने धनानीम बात विका और अपने तीको बाक्तोधे कथे क्षे-क्षे बीरोपर काल काक हो हो. इस अध्यय प्राप्ती कोल-रक करने करे । इस्तेवीने परिव केनेक एक कुनारों मेरे राज-पूर्वर न्यारवी प्रक्रमा असी प्राप्त असा और पैने-की पालीकी कर्च करते. जो बेरिक करने रूप : प्रेमने कुमैन होका जाका पंछ क्या होते. बिह्न अर्थ जो अपने पाँच मानोले ही बाद श्रमत । जनकी देखी पूर्वी देखका काषार्थ हैरे और फिर कायर कात बल्केने कर दिया। बह देशका व्यक्तान को उठने ही पैने बाल क्षेत्रका नक कर दिना । पुरुक्तान्या देख कुमार कर्न देखकर अल्पात सेनाओ **बहुः आहर्ष कृतः। यह क्षेत्रने अस्तरः तुर्वन सहस्य उत्तरः** किया। को केवन रजकुमारो ब्रह्माको है तह कर हैक तमा अस्मार्थेश साठ वाओंके चोट की । प्रस्का विकास क्रेकरे उसपर एक नराव बेंद्रा। वह अन्तेर व्यवकारे कोरकर पुर्वाने सूत्र भगा । इससे वृह्यक्रमात्र स्रोम पहुन वह गया उसा इसने सत्तर बालोंसे होजब्बो और प्रकार इनके स्वर्णकर्य शायन कर भारत । उस जानाची उत्पन्न काववर्षने आहरती बुक्कानम् राज्यमे इत कर दिया और अलो करों केड़ोका

भी भाग १९४५ कर इसका। किन एक बाजारे सुराको और होती काम एक समझे कारकार राजने नीचे गिरा दिया। इसके बाद एक काम समझार सुक्तकारी कारीचे बारा। इसके साह कारी कर नाम और का सम्बोधा का गिरा।

हम जन्म केना-नार्यं मृत्युं हैं नाम्यक् मारे मानेतर तिरह्मानाम पुत्र महत्त्वती मृत्युं हैं नाम्यक्ति कार दूट प्रमा । जाने जन्म ( तम होगरे एक श्रुप्त मानारी कारधा मनुद मार काम । यह महत्त्वती पृत्यु मनुद लेका अर्थे भागीये मीनने तम्म । होगरे मार मानांत्रे कार्ये मारे मोहोच्यो मार् काल और निर हैं तते-हैंग्यो अर्थे सार्यांच्या सिर महत्ते अरल मारे नियः । इसमे कम महीन माना मृहकेत्या होते । जन्म माने पानी सुमान मानार्थिए एक गद्या होते । को आरो केन अपूर्व हमारो मानार्थं समाने दुक्ते-हुमाई मार दुल्ले । इसमें सीहामा मृहकेत्वते होतापर एक तोच्या और हातिनो मार् किया । जानार्थी परित-योग मानार्थे तम वोनोको नह सर् हैया । किर अपूर्णे हात्या यह कारोके निर्म एक तेन मान होता । यह अरले काला और हात्यको पराहका प्राथी मूल

इस ज्ञान केंद्रिएकके यहे जानेगर असके अवस्थित-विकास पुण्यों ग्रह केंप हुआ और यह आवे स्थानवर असकर कर ज्ञा । सिनु केंपने हैंसते केंग्रेस असे व्ये क्यानके ह्याले बर दिया। तम जगरायका महत्रती का उनके सामने भाषा : उत्तरे अपने बाकोब्द्री बीकारोहे एक्ट्रायाने होनाको अपूरम कर दिया। अल्बी हेली पूर्वी हेलावर सामानी यो पैक्यों-स्वारों क्रम कासने जासन किने । इस उक्तर जा महरणीयो रक्ते है गायोंने आकारित कर उन्हेंने क्या पनुर्वाके स्वयने पार काल।

अन्य प्रकार, चेरी, सक्रम, करबी और खेरसर--प्रत सभी देशोंके नहारची यहे असावते यह वहनेवंड रिक्ने हेनके क्रम रह पहे। उन्होंने अरक्षांको कारानोह कर बेसकेह रियो अपनी सारी चर्चित समा है। परंतु अरकारी अपने क्रेके बाजोसे अधियो वनस्त्रको स्थाने यह दिया। सेनको ऐसे कर्म देशका प्रकारने क्षेत्रका उसके प्राप्त आका और एक अर्थनम् मामते अस्या भूत कार कारा । अर अन्तरनी एक कृतरा करून सेवार जरनर एक बीजा कान कहा और कानक परिकार होता। अस्ते होजवर्गका हता कर गया और यह। संस्थानुकिं संस्था वर्गत बहुत्वती सरस्य विवार से थे।

करने रकते प्रकार का बाद । इस प्रकार का बाह्य-कमारके पारे अनेका सम संनाई कांच उठी। अस अवसर्वका पालको पेकिस्टाने शासना वित्य । असे होनाने वस क्षण्येते क्षण्या करते अस्त्री असीवर चोट की स्था बार कार्नेने एको प्रारमिको और पास्ते बार्डे पेहोको बीव कार । का अकारी की घरांसे आही करी और क्ष्मकोस का किया। किर तक बालोंसे कवा कारकार केंचे बार्टिको बार करन । बार्टिको परे नारंग्रे पेहे रकतो लेकर चार वर्षे ।

प्रत प्रमार चेन्द्रसामें राज्यो सार्वाक्षीय देशकार क्षेत्र नाई एकतिक हुए सेके, प्राप्तान और प्राप्तान सीरोको सिता-निवार करने तर्ने । प्राप्त समय में बाई ही सोन्यायमान जान बहते में। उनके केना नानोक्तर पना सुदे से और अपन महाती करिक राज्यान के कुमर्थ थी। इसने क्योनुद्ध क्षेत्रेयर थी से

# महाराज युधिष्ठिरका घवराकर भीभसेनको अर्जुनके पास भेजना तथा भीमका अनेको पुतराष्ट्रपुत्रोंको भारकर अर्जनके पास पहैंचना

क्षा अवन्य नहीं नहींने होंदों को से बहुता, होक्स और पान्यम और नहींने हर जान नहें। अब बनेतन पुनिश्चितको अपना कोई सहायक दिलायी नहीं केंद्र का र अवृत्ति अर्थुनको देशनेके निजे तक और निगम बीजवी, किंग करें न में अर्थन विकासी निषे और न प्रात्मकि हो । इस प्रकार बहुत देशनेक भी जब उन्हें नागेश अर्जन विकासी व विशे और व उनके पाणीन सनुवारी देखर हो सुवारी पाई हो उससे हरियाँ एकाम सम्बद्धार हो उठीं। ये कुम्बद्धा क्रोक्स्में इस पूर्व और भीभरोतको सुरमका उनमें सकते हतो, 'मैचा भीव । विस्तते रमपर महमान अमेरते हैं हैंग्लर, पचर्च और कारतेंच्ये परास कर दिया था, आम शुक्रोरे का होते वर्षा अर्थनका यहाँ कोई विक विश्वनी नहीं है जह है।" वर्गप्रकारों इस उच्छा कराओ देशका चीपरोत्तरे कहा, 'राजन् । अववादी देशी करायार से मैंने पहले कार्य न देखी है और न सुबी हो है । पहले का कार्य इमलोग इ:समी अधीर हो कारे है, वो जान है हमें दिनसह क्रिय करते थे। पहाराज ! इस संसारमें देख कोई काथ जी है, जिसे मैं न कर सब्दे अवका अस्तरका प्रान्तान और है , आव मुझे आजा वैकिये और अन्में बिक्से उपलब्धे विकास करियमें।' 18 वृधिविषये नेतामें जार मरकर होयें हैं: कार रेकर कहा, 'पैपा ! देखो, श्रीकृष्णहरा रोक्युकंड ककाने

को हुए बाह्यभाग शहाना कार सुधानी है रहा है। इससे पुढ़ी निकास क्षेत्रा है कि सुन्दान पाई अर्जुन अर्थात कुल्लानकार पाई कुरत है और उसके भी कार्यर अध्यक्त संवाध कर से हैं। वर्षी की प्रोत्यक्ता कारण है। अर्थन और सामानित्रकी विकास नेरी क्षेत्रज्ञानिको स्था-कार पहुला हेटी है। हेको, उनका सुहे कोर्च भी निवा नहीं केसा एक है। इससे बढ़ी अनुवास होता है कि रूप क्षेत्रोके को करेगर है जीवन्त्र पुत् कर से है। केवा । मैं सुन्द्राय कहा नर्द्ध है, बहि तुम मेरा बाह्य पानी हो विकार अर्थन और सामग्रीह गये हैं, उसर ही तुम की काओ । हुए सामाधिका बाल अर्थुमो भी बहुबार एकम् । यह मेरा क्रिय करनेके रिष्के वर्षण और पर्यक्रम प्रसारीय सेनाको लिका अर्थनकी जोर एक है। क्ये-फोर मोज से प्रश विकास कार्यनोके पास भी नहीं बटक सकते। बढ़े सुने श्रीकृत्या, अर्जून और कारवीत श्राह्मश्राल किल कार्य से शिक्षणा करके पूर्व वृद्धित कर केल।" चौजीको कहा, "काराज । किरा रक्षार पहले हुद्धा, न्यादेश, इन्हु और पदक स्वारी कर चुके है, उसीपर बैठकर औद्धाल और अर्थन गये हैं। इसल्ये मार्की उनके विश्वकों कोई एक्टोबड़ी बाद नहीं है से की वै अवन्ये अवन विशेषणं यस्त्रे जा द्या है। अरू किसे अकारकी किया न करें । मैं इन पुरवसिद्धोरे निसमार आपको क्ष्मण हैना (\*

वर्षस्थाने ऐसा सहका सहिते सारते साथ पालाने पीतसेनो पृष्टुपतं नहा, 'नहामहो ! नहानी होन निक प्रकार सारी पुण्डा स्मान्य वर्षसम्बद्धे काक्नेयर तुते हुए है, यह सुने पालून ही है। प्रवर्णने की दिने निकार आवानक वहाँ सामार पहाराजकी रहा करना है, जाना सार्व्य पास वाना नहीं है। यहां यह अर्थूनरे की पुलते सहीं भी ! किंतु अस में महाराजकी अद्धाने समाने पुळ नहीं पढ़ समारा। महाँ मरणास्त्र काक्ष्य है, वहीं पुले काना होता। वर्ष्यावसी जावा पुले किन्त निक्ती प्रव्यावसी सार्वाव वित्र समारा होती। में भी अर्थुन और सार्वाक किना सर्वावे गये हैं। अर्थुन सार्व्या मुक्ते कान हम सार्व्या प्रवर्थ मानेसमारी होती। में भी अर्थुन और सार्व्या किना सर्वावे

तम बृह्युप्तने चीयसेन्से बद्धा, 'सर्व । अस्य निर्द्धाण द्वीवार आहुने। ये अनवसे ह्यास्ट्रुप्तर ही एक बद्धन समिन । होगायार्थ संस्थाने बृह्युक्ता क्या किये किस निर्मा कार्य क्षारीत्रकारे किए नहीं कर करेंगे।'

का सुनकर महस्तारी केयरोन अपने को मानिको अन्तर बार और उन्हें बृह्युक्रको ऐक-रेक्स्में केश्वर अर्थुक्को लेखका और उनका दिर देवा। पीक्सेक्के कालो समय मिन राज्यक्रकार केर कार्य हो। त्रिक्केक्सिको क्वानीर कार्यकारी का अर्थकर स्थानके कुलकर सर्वपानने किए बाहा, 'वेक्से ! बीक्सकार करावा हुआ वह कहा पृथ्वी और अञ्चलको गुंवा एवं है। विश्वय है अर्थुक्कर कार्य संबद क्वानेकर सीक्सकार करावा है अर्थुक्कर कार्य संबद कार्यकर भीवा है। सुद्ध कार्य है अर्थको पहर कार्यो ।'

अब पीयमेंच प्रमुजीय अपनी पर्यवस्ता प्रवाद करते पूर् प्राप्त दिये। ये अपने प्रमुखी होरी प्रीक्ष्यर कार्यमंत्री वर्ण करते दूर वीरक्तेनाके अपनामको कुम्बन्ने रहते। उनके पीछे-पीछे पूर्वर प्रश्नास और सेम्ब्स और की कहने रहते। तम उनके स्तापने दुन्तास, विकारेन, कुम्बन्नेची, विधिवाति दुर्गुक्त, दुन्ता, विकार्ग, प्रशा, किन्द, अनुक्ति, सुनुक्त, केम्ब्स्स, स्वापन, कुमारका, खुमार, शुक्ता, कुर्वरा, विकारका, अपना, दैशकार्म, सुनार्ग और सुर्वियोग्यन सादि आवके पुत्र अनेका सैनिक और प्रशासिकोंको सेम्बर अपने और उन्ने पाने ओस्से वैशने स्त्रों। विद्यु भीनसेन बही केमिसे हने पीछे कोन्नार बेस्सर कार्योगी हम्मी साम वीर कार्यकान मोनने नार्यन्ती-कार्यन कार्योगी हम्मी साम वीर कार्यकान मोनने नार्यन्ती-कार्यन कार्योगी हम्मी साम वीर कार्यकान कार्यन कार्यन कार्यन

ो के क्रम क्रमी वर्गकर विश्वार करते हुए इक्स-अधर व्यक्तरे रूपे।

इसके बाद उन्होंने किन को नेहिंस होजानार्यको सेनायर करण किया। अवस्थानी उन्हें आगे बहनेसे रोका उचा कुरकारते इह एक सम्बद्धना उनके सरकारर मोट की । फिर वे कोई, 'कॅम्बरेन ! यहे की दिना अधनी प्रतिकास तुप क्रमारी सेनाचे प्रवेश नहीं कर सम्बोने । तत्कारा पर्छ अर्थन से मेरी अनुवर्णिको ही पुत्र पत्रा था: बिस्टु तुथ सुहत्ते पार होकार इसमें नहीं पूर्व सम्बोरें ।' युरुपोर यह बात सुरकार जीधरोजकी आहें क्लेक्स साम है गर्नी और उन्होंने निर्मय होकर कहा, 'सम्बद्धाः ! अर्थन्ते सामग्री अनुपतिने स्वाधुनावे प्रकेश विकास हो — ऐसी बात नहीं है; बाद को ऐसा दुर्वर्ग है कि इन्ह्रकी केन्द्रमें की पूर्व सकता है : मह आपका महा अगर काता है, हेला बारचे उसने आवका बार ही अक्रमा है। मैं श्वाल अर्जुर नहीं हैं, है के अलबार क्षत्र कीन हैं।' देशा अञ्चलर जीपसेंतरे अवनी कारकाको सकार मनंकर गरा हतायी और उसे क्रमाहर क्षेत्रकार्ययर केमा । क्षेत्र तुरंत ही अपने रकसे हुन को और का गाउने कीहे, सार्राण और ध्वानके सहित का रक्षको प्र-पुर कर काम तथा और भी क्यों वीरोक्ट करन कुलक कर दिना।

अब आवार्य सूची रक्षण क्ष्मकर ब्युक्ते श्वरंपर आ गर्ने और ध्रतके रिले विका सेकर को से रूपे। पहापराक्षणी बोलांक कोवर्ष सरका अपने साथने क्यी हा रक्तेनायर क्रमोदी वर्ग करने हुने । हम सेमर्थ को आपके महारथी प्र थे, से बीबसेओं: शांबोंसे ब्यू होने हुए पी उनपा विकय प्राप्त करनेकी स्वलसासे करावर युद्ध करने यो : अब कुशासनने कोक्ने परवार वीक्नोनका काम तथाम कर देनेके विकासी उनका एक अस्तर सीवन लोहनवी १४४मील फेसी। मित चीनलेको क्रीक्टीमें उस महाजातानेह हो दलके कर विधे। वित क्यूरेंने तीन तीको जागोंको कुम्बकेटी, सुवेण और **हर्वक्षेत्रम**्डम तीन प्रवृत्त्वीको पहर कुरून । आपके गीर क्षा प्रस्तव भी सक्षते ही रहे। इसनेहीमें उन्होंने महामानी कुरस्य एक अधन, रोहकमां और इर्विकेशनको भी काम क्रयार कर दिया। एवं आपके पुत्रेने उन्हें बार्टे जोरले थेर Bom और क्यार क्यानेको प्राप्ती रूप थे। श्रीयसेनने केरते-केरते अपने पत्र विन्य, जनविन्य और सवर्गाको क्याप्रकोत कर मेन किया। किर उन्होंने आपके शार्वित दुस सुद्रश्रीनको बाकल किया। यह प्रजीवर निर पक्ष और मर नका। का प्रकार धीमोर्न्स सम ओर लक-तामकर कोडी ही देखें अपने तेन करनेते का रक्तेमको नष्ट कर करन ।

जिर से विकास कार कुरूर कैसे पुरा चारने रूपने हैं, सही प्रकार अनेद शरकी परशाहर कुरवार आर्थ्य पूर हात और मार्गने सर्गे । धीनांत्रमें आरक्ते पूर्वेकी सामती क्रां केनावा भी पीक्ष किया और वे एक और कीस्वीका संक्रार करने रूने। इस रख बहुत कर पहुनेतर ने जीकोनको क्रोडका भागी केहोंको देशते हर समयुग्धि पान गर्ने। प्राप्तारी भीन संकर्ण कर क्यारे पराव करते को बोको पराने समे।

अब में प्रमोत्तरके सोम्बर अने बहे। यह केल्कर हैकामारि को देवलेंद्रे हिने क्यांको कई आला का है क्या अन्तरे पूर्वेची अन्यते कई चन्त्रे अन्तरोते नो उन्हें वारों ओरसे नेर रिन्छ । इह चीन्सेन्ने सिंहहे स्वयन वर्णन बारों हर एक पर्यक्ष का जाका को बेको उत्तर हैकी। अपने आसो। वर्ष वैशियोगा याम क्यार यह दिया। कीओओं पानों है जाओं राज संविधीन भी पान मिना । इससे में प्राथित होवार इस उत्पार पानने रहते, कैरे विकारी राज पासर मन पार करे है।

क्य कारणे चौकान का क्यार सीखांक संबर करने ति से सेमामार्थ अनेत साथ्ये अन्तेत अनेत अनेत मानोको क्षेत्रारोसे पीनसंत्रको अने बढरेसे हेन्द्र विका अब इन दोनों मीरोका कहा चोर युद्ध होने राज्य । जीकोर अपने रकते करका होगाई सर्वाची पर सहते हुए इनके रक्षे कर पहित्र को और सरका दक्षा क्रकार को स केल दिला। होता एक इसने रक्तर कालत दिन स्वार्थ्य हारक भा को। अको निवसाहित पुरुषो इस प्रधार किर अको सामने जाया हेक प्रीक्तेन दिन को बेनले उनके करा तथे और बुरेको क्याक्या का राज्यों भी दूर काम दिया। इसी तरह चीमरोनरे असच्छल ही क्षेत्राचार्नके उत्तर स्व केमा-पेशवार मा बर दिने । अपने चेटा मा तद चौराव बड़े विकासभी नेजोंने देवले यो ।

अब, अधि की क्वोंको नह कर देते हैं, वरी प्रकार संज्ञापने इक्षिपीका गाउ करते हर योगसेन जाने करे । कह बूर व्यक्तिर कर्षे कृतकार्यक्षे सुरक्षित प्रोकारेना निर्दा, विद्यु के

को भी उन्त-रक्षे रह-प्रद कान्द्रे आने का प्ले। दिए बान्योकरीय तथा अनेको और बुक्कुशाल पोन्होंको पार कारेकर उन्हें पुद्ध करता हुआ सारवीद विश्वानी किया। प्रथ में ने अनुसार केलनेकी इक्षाओं अपने प्राप्तात कर्य क्षानको वेचीचे साथ अने सहते सने। अन्ते अनेसी विकालोको स्टोपकर के उन्हें हो कुछ आने गये कि उन्हेंने व्यक्तका का करनेते हिन्दै सर्वाच्यो पुत्र करो देख । यह वेककर के कर्जकरकेव नेकके सकत को ओरसे बहुदने एने। चैन्योक्य का विकास क्षेत्रक और अनुनके कारोपे की पहा । का में क्षेत्रों उन्हें देखनेके रिक्ने पर्यन्त करते कर उससे सा निते । पहाराम १ इन्द्र भीवधेन और अर्थनात विद्वार कुरबार वर्णकुर कुरिवीशको बढ़ी जारावा 💋 । जनका १०० क्षेत्र हर हे पर और उन्हें अर्थुन्धी कियान्त्री से पूरी आहर है कहें । भीनवेनके विकास कारेगर है परावसकर पर-क्रे-पर काले रूपे, 'फीन ) हरने क्षत एकत है, हरने अपने को पाईका काम करते. हिन्स दिना । वैना । विनाहे क्ष के कर्म है, कंपनों अलगे क्रिक करने नहीं है प्रकारी। पत्र पेश बार्स प्रीप्याचा है कि गुले संस्कृत और सर्वन्दे विकास प्राप्त भी प्राप्ती है का है। अही | ियाने प्रमुखे जीवका प्रमुख्याच्या अधिको हुत विकास en å vyrå francussisk da fire. Rement नेक्टनके दिन्ने जिल्लार अस्ते हुए तक व्योग्योधी कृतना Sava sår gifterni ggride firt tradica fançanji नेपा दिसाना क्या बीवामा विरामी सार्वत है और वो पूर्व राज ही जान दिन है, यह अर्थन अभी जीवित है—यह देखे अवस्थानी करत है । एक स्टेब्ट्स्ट्यारी स्वामे सूर्याक्षणे प्रकृत ही अपनी सर्वकारको पूरी करके त्येट हुए असूनसे पेरी भेट हो सकेनी ? अर्थनके अपने जन्मकारों और पीयके सकते कानी पहालोको परा हाता हेकावर करा प्रपक्तीह हुनोंकर कर्न-सूने बोरोकी प्रशास दिन्हें इससे की क्रोड़कर संवित करण कोण ?" हर अधार एक ओर से न्याराम सुविद्वित करणम् क्षेत्रर साध-राधारी क्षेत्रपुर्व्य क्ष्मे हर वे और कृति और हुकुर संस्था है का मा।

### भीमसेनके हाथसे कर्णकी पराजय, ब्रेणके साथ द्योंचनकी सलाह तथा युधायन्य और उत्तमीजाके साथ उसका युद्ध

पुरुक्त ने नक — स्थान ! जुड़े बीनों जोन्दोनें ऐसा से । परक देश है और प्राचीयर प्राचीयो स्टायन है परका है उसके मोई भी भीर विसाधी नहीं देख, को सम्बन्धनों कोलते करें। आने और हो चौर, तावात इन्ह भी कैसे बाह्य रह प्रकास हुए जीनके सामने दिन्ह सके। पत्ता, जो कांगर एवं बदासर | है ? सुते पोपाते जैसा पत्र है जैसा प अर्जुनते हैं, क्

स्रीकृष्यके, य स्थार्यको और न शृक्षुत्रमे है है। सहय ! भा से बाहजो, यह मीनसम्प्रत्यस्य सम्बद्ध में दुखेको पहर सहये समा से मिल-बिल मीजेने को सेव्य ?

खान कार्न हरी—समय ! जिस समय चीकोन हर प्रकार करन को थे, का समय महत्त्वारी कर्म भी बहुर बोजन विकार क्या हात यह करनेत किने अनेत काने आया : यन नीपरोक्तों को सबसे कालों कहा हैया. के में इसका क्षेत्रके समान्य को और अवन की कालेको कर्न करने क्ष्में : क्रांपि भी बढ़ोनें क्षाब बसलों हुए उन्हें पुरावसे स्कृत we from any years wheelpools where filinger waters अनेची केंद्राजीके प्रमुख पृथ्वीपर गिर गये, बहुतंबेंद्र प्राथांते इंक्सिर पुट गरे, बिटाई-विटाईसे प्राप को विकास को क्रा क्रमंत्र को प्राची-क्षेत्रे आदि काल थे, ये क्यानीय और निर्मात होवर पर-पूर सालो करें। का देखार सामे भीगरेग्यर बीच बाग होदे क्या योग कालेशे उनके सार्यक्रमे नीय दिया। प्राप्त जीवलेको प्राप्त करूर सार प्रस्त और का कारोंने जो भी काला कर किया। फिर क्रांनि बंदे केन्स्रे तीन मान्य सम्बद्ध सार्गाने वर्ष । इस न्यारी चोको कर्मको प्रक निवसित कर दिया। विदे दिन सह सन्तर्भा सम्माना प्रीतनात गीनकेन्यर पान करवाने राज्य । या भीमरोजने एक श्रुष्ट कालो अलो अनुसारी होती पान **ं** तथा एक पाएको सर्गाचको राज्ये केचे विश्वास अस्के चारों केंग्रेको बरावाची यह दिया। इससे प्राचीत क्रेकर मार्थ तुरंत ही अपने रकते सुनका कुर्यानके रकता कह गया ।

क्षा प्रकार संजापने कर्णको प्रकार करते चौकांक केलो: क्रमान बड़े सेन्से मन्त्रने स्त्री। उस विकासको सुनकर वर्गाल राज्या गर्ने कि चौमलेको प्रानंतो करता वह हिना है। इससे में को अस्य हुए। इसर कर उत्तरने कुर कुरोकरने देशा कि इमारी सेना तिलर-मिवट हो दहें है कहा अर्थन, सारकीर और मीवर्गन क्याप्रको कर गईव मुक्ते हैं से यह बार्ड रेजीये हेंश्वधानीह पास जाना और उस्से बाहरे हत्या. 'आवार्यवाम । अर्थुन, चीवनेन और स्थानीह—में क्षेत्र मकायी इसके इस विकास वाहिनीको बराना करके वेरेक-रोक रिम्युराजो सार्थन ग्रहेव गर्न है। ये कीने ही विसंकि कार्य नहीं अने हैं और वहाँ भी हनते से ब्राह्म संबंध कर के हैं। जुल्मी । सरलब्द और बॉल किस अवस आपनो नरस करके निकत नर्न ? व्या कर से समुद्रात पुरुष क्रानोके प्रचान संस्कृतो अध्यानी क्रानोकारी है। क्य में तीनों पहारबी आपको लोकदर निकार को, से पहे निक्रम होता है कि इस संक्रममें अपनी इस्तेमका पान

सनरमन्त्रमें हैं। कैर, यो होना या से के हो नया; शह अपेंक्रे निये नियारिये और विश्वप्रथानी रहाये: किये हों के कुछ करन नाहिये, सामा निहास मार्थ्य केता ही उसक अप

वारी पार रेका अपने अपनाविक्षेत्र सहित पूर्वत है व्यक्ति का कि। कि क्या अर्थने चौरववेनले अ्वेस विका या. या प्रथम कार्यमंत्रे उनके कारका जानीका और क्याक्षाओं जीता औं वाने विशे था। अब वे प्रायर-गी-कार कार बीमनेते हेलाने कुलाए अर्थनोह पान पहुंच गर्थ । यह देशकार कुम्यान इत्योगन बढी देनीहरे उनके पात क्या और सेनी प्रमुखीके साथ ब्राह्मार पुरा करने सन्। । ५० कुळालंकुने सील ब्यानीसे ह्योक्स्पर, बीससे उसके सार्शकार और करते करों केंद्रोक्ट केंद्र की। इसीक्टमें एक कमाई क्षाक्रमी क्षाप्त और एको जाका क्रम कर उत्ता। दिन एक मामने काने सारविन्हें १५को गीचे निया हिना और काने करों क्षेत्रोको कीव साथ । प्रतयर मुनामन्त्री क्षेत्रको चनकर कैस बाजीसे कुर्वेचनके बढ़ा:स्थानवर वार किया तथा अन्येको अस्ते सर्वाको क्रमोर्व बीकार कारावो क नेव किया। एक इन्हेंबनने काहारस्टरसम्बद्धाः सार्वेकानेः कार्वे केंद्रोको और केंद्रों अन्तर-कन्द्रको सार्विकोको पार करत । केंद्रे और सर्राज्योके को जनेमा जार्यका बढ़ी फर्तीसे अपने वर्ष प्रकारपांचे स्थान कर प्रदाः नहीते असी क्वींकर्ण केहीस व्यक्तरे क्रम काराचे। उसरे वे अरहार पूर्णिया दिल को । जिन जाने बड़ी पूर्णीसे बूर्गीसको बनुस और उरकार भी कार करें। एवं पूर्वीकर रकते कुद पक् और क्रमणे पक्ष लेकर सेनी प्रकारिको और बीच। जो जाते देशकर कुळवन् और अवनीता भी रावसे कह यहे । हमें असे कोवने परवर कानी पताने सार्था, क्या और बोडोके

सर्वत उनके रकको क्र-कृर कर दिन्त । इसके कर का शृंक ही कता इकको रकतर कह करा । ३४९ सेन्टें प्रकारक-रामकृत्यर भी दूतरे रकोतर क्वकर अर्जुनके पन्न पहुँच को ।

एकप्! इस समय मीनसेन की कारीर अपना रिका इएकार अध्यान और अर्थुनके कार आनेके सिने ही अपूर्ध में। जिलू कर ने का ओर कराने समें से कारी मोंकोंने वालार करार करा कराने आएक कर दिने और नई सामानकर एक्ट्रिं, 'गींच! जान अर्थुनको देखनेके लिये जानको होतार एक्ट्रिंग पूर्ण के मार्थ है। करा मेंर सामने इटका इस्तिक प्रांचि क्षेत्र से मार्थ है। करा मेंर सामने इटका इस्तिक प्रांचि क्षेत्र से मार्थ है। करा मेंर सामने इटका इस्तिक प्रांचि की मार्थ और सामा रच स्वैदाकर अर्था साम पूर्व करने रची। अर्थने कार्याची कर्त करने प्रांचे से साम अर्थ अनुवाधिकांको समझ विकास और किर कर्त अर्था की अन्य करनेक विन्ते सोचने अन्यत् क्ष्य-राज्यो कर्ता कराने स्त्री। अर्थने इस्तिक क्षेत्र सोचना करनेक क्ष्ये स्त्रीक वित्र दिन। क्ष्यों की व्यक्ति क्ष्या सेका स्त्रीकर करनेक क्ष्ये क्ष्ये

केंद्रोको कावार कर दिया। किर कोट्टी ही देशों कर्मीक बनुषरी कुट दूर कार्योगे शीमसेन तथा उसके तथ, कावा और समिति—सभी सरकारित हो गये। असमे वीद्राट कार्योगे कीरमेनका सुदृद कावार काट इतका काट असदा अनेको वर्णोग्डी कार्योगो कोट की। उस कावा कार्यी कार्योगी ऐसी इसी सम्बन्धी कि उसके कार्योगे विचा हुआ चीनसेनका सुदिर सेंद्राटी कार्याकार्योगों हेंद्रों सम्बन्ध आहिए होने सम्बन्ध।

वीन्यांन कार्यके हुए वर्तावको स्था न क्रके : उपको अधि कोन्यो स्थान हो नवी और अधिन क्ष्मित पर्याप स्थान कोई। इसके बाद उन्होंने असन्य चौद्धा वान्योगे और भी चौठ की। किन क्ष्म वान्यो अस्ता कन्य कार क्षमा और वहीं कृतीये स्थानि कृते वाले कोन्योग्न स्थानक क्ष्म अभैन्द्री वान्यवाले हुए कार अस्ता क्ष्मीचे मते। वे को पान्यत वालके कृतीयर का को। वार्यको अस्ते पुन्यार्थका वद्धा अभिनाय वर। विद्यु कृत सम्य स्थान वन्नुय वाद कुष्म वा, इस्तिको व्यक्ति को स्थानकार व्यक्ता । अन्यत्रे व्यक्त कृति स्थान व्यक्ति रिक्ते वीद्ध स्था।

# भीमसेनके हाबसे कर्णकी पराजय तथा धृतराष्ट्रके सात पुत्रोंका वय

प्राच्याचे नहा-स्थाप । सामी के साहात् महर्गकारित विकास परवृत्तानारों सम्बन्धिया सीती को और सामे मिनको सभी पुता निकालन थे। किर को फोलोको इस अधार सेल्युचि कैसे पीता दिला ? मेरे कुछ को सकते अधिका कर्मका है गरेशन रहतो थे। हार समय को फीलो सामनेले भागात देशका पूर्वोकाने कुछ कहा ? और प्राच्याचे पीको हरतो कहा किस अधार पुता किया क्या करनी औ संस्थापुरिये अधिक सन्तर प्राप्त निका करने के देशका कुछ किया ?

श्रामणे श्राम—राजन् । जान कुनरे राजार सक्तार सार्व भीगतेनकी और जान । जार साम कार्यको कुनित देशकार जामके पुत्र से मही सरकाने सामे कि असे मीमलेन जामकी स्वाहेंने निर्देशीयाल है। कारी कनुमकी गर्वकार देखान और सरित्योंका सम्बाह्म करते हुए पीकोन्यन सामा विक्राः। कार, सेनों और से कुनित विदेशिक समान क्षारको हुए से सम्बोधिक समान काल कोशमी पने हुए से स्वरूपोंके समान परस्पत मुद्ध करते राजों। स्वाह्म | कुन्सा जोहरूने, कार्य साम करते और विकारणगरने आसामास करते के समान परस्पता कार्य क्रिया करते पदे हैं। असमें पुत्रोंकी समामको आर भी उन्हें

निरमार प्राप्त-पायको क्रिय के यो के आपने प्रतेके प्रतित वित्रप्रवित्री क्ष्मीओं त्यक्षण्यानी संख्य करनेका विचार किया था: आयोह क्ष पुराने प्रापाने जीवने प्रीपतीको वया-नवाले र्वन विकास काः क्षत्रावालने अस्त्रेत केशा वस्त्रावालः परिचे और अपने जाते का चारोर कार कही है। 'जाब के लोक की पति नहीं है, हु कोई तुरस्य पति सून है (\* इन सभी क्षानीका इस राज्य भीगतेत्रको स्वरण हो शाका । क्रातिको के अपने जानोका केन् क्षेत्रकर बनुवर्धी देखार करते धर्मावर टर पढे । उन्होंने अपने वालोंके बालके काली राज्यर प्रार्थकी विकासीका प्राप्त केंद्र कर विचा : तब कराने अपने तीके कारोंने कर कारको बाह्य और के बालोंने बीवसेन्यर की चेट की। असे क्यांकी चीवनेनने दिन कर्मको सर्वाने अक्टानिक कर दिया। वन केनोंका राजकेत कर समय क्यानेकके समान सर्वका और इंटर्न है का बार इसी नकरकी से उस संख्याकों नहें विस्तानों साथ देख हो थे। देनों है बोरोने क्य-क्रारंक क्षणीकी धर्म करते-करते करी अध्यक्षके जनमञ्जू कर किया था। उन बाजोको जनको जाने कार्यकार-ती होने साथे थे ! देनों ही चीतेश कारोब्दी कारी कारसे खेते. प्रश्नी और प्रमुख या-प्राचार परतीयर स्वेट-खेट हो को हो । स्वत् | आ ध्रमक आपके चुरोके अनेको केन्द्रा पारे गर्क: उन्लेशे कोई के बाल्कीन क्रेक्ट गिर खे के और कोई गिर कुके के 1 इस अधार कार-वरी-कारणे बहु सारी राजपुनि क्रकी, केन्ने और समुख्योकी स्केशोने क्टनकी 1

द्रावन् | जाव प्रतेषाने परे पूर् कार्यने परिचार तील पाणांते प्रोट पर्छ । पीणां तील सामांत्रे जानक प्रमुप कार काल और प्रक प्राप्तां आपंद सारविध्यो एकते तीले निय दिया । एक प्रयु वैते व्यापत आहर करते हैं, करी अधार पाणांत्रे एक पाणांत्रि को प्राप्तां आपरात्राच्या प्रोप्तां । विद्यु परिचां प्रथा पाणांत्रे को प्राप्तां कार्य आहमा पाणां पाणांत्र प्रमुप्तां कार्य कार्योत् को पाणांत्री पार्च आहमा पाल है । पाणांत्र अपने विद्याल प्रमुप्त प्राप्तां की जाना प्रोदे । उन्हें प्रीप्तांत्रिय के प्राप्तांत्रे हैं कार्य पाणांत्री प्राप्तांत्रे प्राप्तांत्र प्रमुप्तां भी कार्य द्रिया प्रथा अपने पाणांत्री प्रीप्तांत्रे प्राप्तां प्रोद्रोधी प्रस्तार प्राप्तांत्रको प्रथा प्राप्तां विद्याले प्राप्तां प्रोद्रोधी प्रस्तार प्राप्तांत्रको प्रथा

व्यक्तिको इस अवतर आयस्ति प्राप्त देवन्यर एका पुन्नेवन्ते अवते अर्थ पूर्ववर्ध वद्या, 'जरे ! यू पीत वी इस निवृत्तिक पीतव्यो नाएकर वार्यको स्वाप्ता कर।' एक पूर्वव 'के आहा' ऐस क्यापर वार्यको कर्ण करता हुव्य पीत्रकेश्यी और कार। कर्ण में कार्य सीमकेश्यी और अर्थ कर्म मोद्दीरत क्रेड्रे क्या क्ष्मी क्या एक्सी पीन्नोनका सीच व्यक्ति क्याप क्ष्म क्याप सीच विच्या। इस्त्री पीन्नोनका सीच क्यापाली क्यापर कर्म क्यापि और पीन्नोने अर्थ क्यापाली क्यापर क्यापाली क्याप क्ष्मी क्यापाली क्यापाली क्यापाली क्यापाली क्यापाल क्यापाली क्य

इस अवार प्रवाहित और कृष्ट कारिया होनेकर की कार्य कृष इसे एकार कहका दिस वीक्सेनके प्रवाहे 30 नका और उन्हें बारकोंने वींसने करता । बीक्सेनके आवर क्या कार्य कोइकर किन इसर बाजोंने कोट की । यह कार्यन में बारकोंने कीन्सके की इसरी केंद्रकर एकसे उनकी बाजा कर कारी । किर उसने सारे इस्ति केंद्रकर एकसे उनकी बाजा करके पूर्णाकों कीन्स कुमा कीन्न वृद्ध नका । तब कीन्सेनके एक बातके कुमा करोर, बार इस्त कार्या । तब कीन्सेनके एक बातके कुमा करोर, बार इस्त कार्या । तब कीन्सेनके एक बातके कार्यन करोर, बार इस्त कार्या । तब कीन्सेनके एक बातके कार्यों कार्या कार्यकर सर्वाक्यों की मार कार्या । क्या कर्या कार्यकर कार्यक कार्य बारकार सर्वाक्यों की मार कार्य । व्या कर्या कार्यकर कार्यक कार्यकर बारकार सर्वाक्यों की मार कार्य हो एका । वह स्वाहित होनेकर की पीक्सेनकों कोचे ही द्या । का कुर्वेक्यने कुर्वेक्से कहा, 'जैसा कुर्वेक्स । ऐस्से, जीक्सेनके कार्यकों स्वाहित कर किया है इसारिये तुम असके पास एवं पहुँचा थे।' मा सुनवार कुईस पीयमेनवर मानोबी वर्ण कारत बाहे देवीले कर्मकी और बाहा। दुर्वृत्तको संवासपूर्णिये कर्मकी श्वापता करते देक पीयमेन बाहे असन हुए और धर्मको असने वालोहे रोकसर असेकी और असका राज है। एके। बाहे पहुँचार उन्होंने असे बाहा भी बालोहे और समस्थानके पर भेज दिवा।

अब क्रमेरे शृक्ष भी आया-रीक्ष न करके भीवा वाणोंसे भीवलेक्स क्रम क्रिया । में बान करकी दार्थी पूजाको जायल करके पूजीके क्रम गये । तक भीवलेक्से तीन वालोंसे कर्मको और वालसे करके क्रमों क्रमिको जीव करना । वन वालोकी घोटले कर्म व्यक्त म्यापुरूर के गया और आयमे भोवोंसे सेवीले क्रमां व्यक्त म्यापुरूर के गया और आयमे भोवोंसे सेवीले क्रमां प्रमुख्योंको करक गया । सिन्तु अतिस्थी भीवलेन अब भी अक्स मुख्योंको करक गया । सिन्तु अतिस्थी भीवलेन अब



ज़तरह काने छने—स्थान । कुलावेंको विकास है, यह से कार्य ही है; मैं से कैको ही पुरान स्वाहता है। देको, कार्य ऐसी स्वाहकारीओ पूर्व कर का का, किर भी मीमको कार्य नहीं कर स्वाह । कुर्वें कोई कुलो दीन कई कर सुना का कि कार्य क्षाकार है, कुरवीर है, कह बनुर्वर है और परिवासको कुछ भी वहीं स्वाहका है। इसकी स्वाहका क्षान्य से देकता भी पूछे संस्थान नहीं जीत सकेतो, किन प्रत्यक्रोंकी को बात है क्या है ? का करियां कुर्वें करने भीमके हावसे प्रसास होका युक्ते सामने देसा हो कहा कहा ? सहाय है परता, भीमके हावसे प्रसास होका युक्ते

विकालेका साहर करेन बार श्रमका है ? यह से सम्बन्ध है कि मोई पुरुष करराको रहते और आहे, बिहर कीमरोको समावे मान्यर कोई पीड़े नहीं फिर सम्बद्ध । को पूर्व मोहके क्योंपह होका क्रोसमें को हुए बीओड़ प्राप्त करे, वे हो करने पतिगोने समान आगमें ही का गई। भीनतेको हमारी सम्बन्धे सारे स्वीत्योके सामने मेरे पुत्रोके बन्दारी प्रतिका पठी को र को मान् करके कर्णको पराचित केल्पेयर क्वॉक्ट और कुकारक ते दर्श्व पारं अल्डे आगेते जान गर्न होंगे । वर्जको स्वर्धन और भीशके प्राथमें पराधित देखकर अवस्थ ही कुर्वेचनके मीकृष्णका अववान कारोबे रीजे बहुतका हुआ हेन्छ। पुरुषे पीमलेको हामने सक्ते प्रात्नोका कर हेना देशका को अपने अन्याकके रिन्हे सम्बाद ही बहा संस्था हुआ होगा । परा, अपने पीकरणी रहर प्रकृतिकार ऐसा स्टेन प्राणी हेक को साक्षाल कारको लगान कहे हुए जीनकोच्छे आने काराय । नेता हो जब निक्रम है कि सहस्रात्माओं स्थानकोंने सहस्र भर्त ही कोई क्या बाज, जिल्ह जीक्लेक्के स्वको क्योवर कोई प्रीमिश नहीं बंध संख्या । इस्तरिको केवा । ३०० को केरे पूर्णका चीचन संख्याने के हैं।

राजनो गरा—कुमान । इस न्यानको स्थिता हेरेनर । शार निया करने जो हैं। मिद्रु इसने कोई अंध्रे की कि

रंगानके इस भीवन स्वारको यह उत्तर है है। अपने पुरोबी कारोरें आकर कारहीने का पहलू मेर कोता है। आपने कहा कुछ कहा भी करा। कियु सरकारक कुछ मेरे दिश्याको औरक जान नहीं करात, जारी त्यार उत्तरने भी विज्ञानिक कुछ न कुने। एकन् है आपने जाने ही का दुनर कारहाट किय दिशा है, इस्टरिनो अब अपन ही इससार सारा पता भोतिन।

#### भीमसेन और कर्णका भीवण संप्राप, जौदह बृतराष्ट्र-पुत्रोंका संहार तथा कर्णके हारा भीवका पराभव

सजर्प वहा—राज्य | जारपी कर्ण आयो पुर्वेको वर्ण देश वहा ही शुर्वेत पूजा; उसे अपना केवन की पारी-सा मार्ट्य होने राजा । जारके देशती-वेदाने कीवसंज्ये अववसं पुर्वेको घर अस्त, हारमे का अपनेको अपाहरी-सा अवदाने रूपत । हार्लेहीये जीवसंग कुर्वेत होन्द्रर सार्वेदा तीनो सावसंखी वर्ण कर्ण राजो । तब कर्मने पुरावताका कीवसंज्यो कार्यो कीवसं पांचा और किर सारा वार्योने पुरावताका कर दिया । हार्यो धानां की कार्या कार्यो कार्यो कार्यो कार्या कर दिया । हार्यो कार्या कीवस्त कार्या तीवस्त कार्या कर्म कार्या कार्यो कार्या का

बीबर्सने नाजेसे रेक दिया। व्यवस्थान करने जीवसेनस क्वीस क्वा क्षेट्रे और वीको से

कानोने उनकर जनाव दिया। वे बात कानीक कानवारो को काल जानारे क्षणी भूजाने समे और बिंक्ट पृथ्वीपर जा को र क्रम प्रकार परिकारको बाजोबे निरमा अन्यक्रीत बेबार कर्ण किन बुद्धारे पीछे इटने समा । यह देखनार राजा इच्छेनारे अध्ये प्राप्ताने कहा, 'अरे ! तक औरते संख्यान स्वयन तरेत है। कर्मकी और कहे ( पाईकी का बात सुरक्त अंतर्के की निक, कारित, विवाद, प्रारंकित, इतासर, विवादक और विकास कारोबी कर्ग करो भीनकेवर स्ट को। जिल चीवनेनने उन्हें आहे देश एक-एक वालने ही काहरावी कर क्षिण । आरक्षे महारकी पुत्रोक्ये इस जवनर मार्ग जाने हैसाबार क्षणिक केरोने कार कर जाना और और विदानीके नकन कर अभी लंगे । मांजू कोड़ी ही देवनें का तुसरे रक्तर कहकर किर बीक्लेक्के सम्पर्ने का क्या और उत्पर-बालोक्ट सर्व करने रूप। कर्नके बन्नमें हुदे हुए कालोगे में एक्ट्रम इन्ह रावे और उनसे उनका उत्तीर कावल से गंक । इस समय कर्न कार्न केको कर्म क्रेंक् का व्य कि उसके बहुब, व्यवा,उपस्थर, स्था, इंग्लिक और पहले की कारोको क्यां-सी बेटी कर पहली

वी। आने इस प्रमार नेगरे साथ शामान कामेरी का गया। विद्यु विश्व प्रमार कामी भीग्रोतको कामोरी इसी एका थे। इस स्थान संस्थान चीम्मोनका अनुभूत पर्याप देखका अवन्ये चोद्धा भी अन्यो आंख काने समे। चुलिका, इस्तानम्, अक्तानम्, कान, मन्यान, सन्तेका, गुलानम्, सामग्रीद, अनुभा और अनुन—ने चीका और वान्यानकुदे इस स्थारती सामु-सामु कामार महे नोरते सिंक्टा करने

ति अपने पूर्व एक पूर्वेक्टर अपने पहले एक, रासकृतार और विक्रेण: अपने प्रकृतिके पान, 'बहुनेने र हैको, चौपरोनके बनुसर्व हुई हुए बाल कर्मको यह करे, उसके पहले ही तुल को बचानेका जनत करे हैं दर्जनकी अद्या पासर काने था। धर्म कोच्ये चरका चीन्नोन्स स प्रो और अने वाले ओरने के दिला। ये भीनकेनक वान्येकी पर्य करके उन्हें बहुत चीवित करने हतो। इस बहुकारी चीवने क्रमार सुर्वेकी किरकोडे सम्बन क्यक्नमे हर सात क्रम होतो । वो अन्तेर बुद्धानो चौरकार अन्त्रह एक चीत्रह पह निवाह गर्ने । इस इच्छर उस्ते सर्वकार किन सर्वेड स्टरम से सर्वे भाई जब्दी रबोमी पूर्वीपर हैं। हमें । हमपूर्व इस उन्द भीनरोज्ये हाक्ते आको राज पुर समुहार, समृत्यु, विक् विकास्त्र, हुई, विकास और विकास को को । उपको प्राप्त हुए पुलेनेसे पान्कुम्बन चीम अंतर्न जाने जाई विकासिक विन्ते तो बहुत ही बोक करने हन्ते । ये केले, 'बैक विकर्ष । वेर्ड चंद्र प्रतिकृत को को कि में कृतकार्क तहरे कुलेको कार्यन्य, इसीहो तुम भी नारे करें। ऐसा करके मैंने अपने जीवकारी ही एका भी है। पैना । तुम को निवरंगाः एका मुध्यक्तिर और हमारे ही दिवाने तरपर रहते थे । इस्प 🕽 पुत्र बद्धा ही पार्टात धर्म है ।'

इसके वह वे वह जेरते स्थितन वसने सने। वीवकेतका वह भीवन प्रस्त शुनकर वर्गतकको वही करतका हुँ। इसर अपके इस्तीय पुरोधो केत वो देशकर पूर्वकरको विद्यानीके क्या वह अने सने। वह वन-के-कर कहने सक. 'निद्यानीने वो हमारे दिलके विके कहा का, वह सम सबने आ नवा 1' वहा विवार करवेकर को उसे इस सन्तकका वोहें समाधान ने किसा। समन् ! सुव्यक्तिको सन्तव श्रीव्यक्ति समाधान ने किसा। समन् ! सुव्यक्तिको सन्तव श्रीव्यक्ति समाधान ने किसा। समन् ! सुव्यक्तिको सन्तव श्रीव्यक्ति समाधान ने किसा। समन् ! सुव्यक्तिको सन्ति के वहा क कि 'कुम्मे ! पावकरकेन सो अस्त नह हैकर स्थाकि सिके दुर्गितने वह गये हैं, मू कोई नुस्ता विद्यक्तिक प्रस्त करते की प्रस्त सामने आ एक है। विद्यानीने बहुत विद्यक्तिक प्रस्त केरिके। सिक्षा। अस्त अस्त और स्वीक्त स्थाकितका प्रस्त केरिके। वसूत: व्यू पारी अवस्थ आवस्य ही है।

कृत्युन्ने नक्ष—कृत्युन्त ! इसमें विश्लेषतः येश हैं अध्यक्ष स्वतिक है, से अध्य अस्त्य चार मेरे स्वयने अर चार है—ब्यू बात चूले सोचाके साथ स्वेचार मतनी पहली है। किंतु पो होना था, से ये हो नया; अब इस विश्वाने क्या किया पान ? असा, मेरे सम्बानने इसके अपने वीगोबत संदार विश्व प्रकार हुआ, से मुझे सुनवाते।

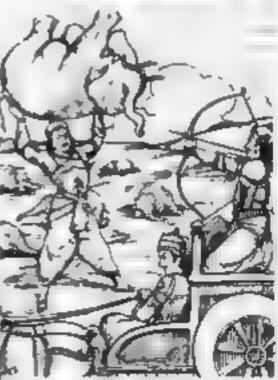


एकप् । अस कार्यने चौक्सेक्टर तीन कार्योसे बार कार्येस अनेक्टो विक-विक्रिय कार्योक्टी कार्य अस्टब्स कर ही । इस

भीमतेको एक जावन संकृत कर्जी समझ करती करिक मान्यर प्रदार किया। इतये जाना कुम्बान्यन्ति नाम महरका पृथ्वीका निर कहा । इसके कहा भीनकेनो एक कनके असमी क्रमीयर कर करके इस कम और भी केंद्रे । में उसके रकारको प्रोह्मा पुरा को। इस उच्चर समाप कारत है सारेसे कर्मको एकाँ आ गरी और उसने एको कुमाना स्वारा लेकर के देह दिन्हें। बोड़ी देहने कर के हुआ से बह मुद्रेशमें भरकर बड़े बेगसे औनसंनके श्वाबी और केंक्र और इनपर औं करा होते । तक चीनकेश्वे ५६६ हुए। बाजले उसके क्षुकारे कारकर की गर्बक सी ( कामि कृत्य क्षूत दिन्त), किंतु सीमरोजने को भी कर क्षमा। (सी उपल उन्हेंने इस-एक करके करके सहाय करूप कर उसे। कारी देशर कि बीकरेको विक्यु-संबोध और व्योक्तिक अनेवर्ध मोद्धा बार वाले है तथा करने बारे कुर क्रमी, मोड़ों उर्कर मनुष्योंसे जारी राजधूनि करे 😹 है, से को कह की सीच हुआ और यह भीववर बड़े लेखें-लेखे बालेबरे क्यां बाले सन्तः वित् जीकोलो करनेते अनेकको पीर-सँग सम्ब परका कार काल और भारत धीरण कारणो असमा कर है।

ज्ञा करी रूपो जनकीकरते अन्ते कर होत्या भीगरेको सरवार, अनुब, अन्या एवं धोड़ोबी राव और योगीको कार कारत गया रूपके खेड़ोको कारकर बीच कार्यके सार्यको भी वापल कर दिया । यह सार्यक तथा है कुमार कुर्धानमध्ये रक्षण सा वैद्य । कार्नर हेक्से-हेक्से चीनकेन्स्रे रक्षकी सम्बद्ध और जनकारों भी यह ही। इस प्रकार करूर प स्कोपर बहाबाह मीयने एक इस्के उठायी और जो कोयने भारतर क्रमंत्रेर रक्षणर क्षेत्र । क्रमंत्रि क्रम मान्य क्षेत्रकर क्षे वीच्छीचे पाट पुरस्त । अब जीवरोशने प्राथमें दान-सरकार से भी और तलबारको कुशनार सर्वके रक्षण केवा । स्थ प्रत्यक्षासम्बद्धाः व्यक्तिः व्यक्तव्यः व्यक्तव्यः वृत्योवनः सा पद्धी । स्थ कर्म दूसरा बनुत लेकर पीमको यह इस्लेके विकास उसर मार्थोको क्यां काने रच्या । कानिक कालोसे व्यक्ति क्षेत्रर भीमसेन आकासमें उसके । उनका यह अहरता कर्न देशकर कर्ण बक्त प्रवरम्य और उसने रवपे क्रियकर अपनेको पीम्मोनके बारते एक लिया। पीयने वस देखा कि कर्ण प्रमारकार रक्षके निवाले जागमें क्षिपा हुआ है, को वे अस्की माना परत्यार गाउँ हे गर्ने और गाउँ की सर्वादे प्रीचे, उसी अध्या कर्मको रक्तरे बाहर क्षेत्रिकेट उत्ता करने सने । एक कार्यन उपना कई केयरी काळ किया। भीगरीजेंड एक प्रमात हो चुके थे; इसरियों से सम्बंधि रचके सामेले क्यानेके क्रिके अर्जुनके मारे हम् हाकियोको लोकोने क्रिय पने । किन क्सपर कार बारनेके लिये क्योंने एक इस्मीको लोग हठा हो । राजके महिने का क्ये —को कीव जिल्लामी ही, उसीको उठाकर





विज् कर्मी अपने वायोगे आके दुव्ही-दुवदे कर दिने । तब भीवतंत्रके अर द्वारक्षेत्रों ही केवाना शुरू किया हवा और भी

कार्यवर केंग्सने हमें : वर्षपु ने को चीन फेनले ने, कर्ण करियों नकर करनता ना :

का भीपरेनने देश राज्यर अधेरे वर्णक कार स्थान करना चन्द्र । योष्ट्र वित अर्थनको प्रतिक का का कानेते अभेरे, समर्थ क्षेत्रेयर थी, जो यह सहस्रेयर विकार क्षेत्र हिया । इस साम्य कार्यन कर-कार अन्ये केने कार्योकी व्यक्ते चीवको पुरिक्तनार कर दिया। विद्य पुरत्येको साम पार मार्थ का क्यांन अवसारे जाने के उनका कर की किया । किर काले पास काकर काके इसीएने अपने करूपकी केंद्र स्थापी। संबंध कर्ष हेते हैं चौजलेन्स धोच पहल प्रदा और उन्होंने का शन्त औनगर करनेंद्र प्रकारत है करा । पीनसेनकी चंद्र काकर कर्मकी आंसे क्रोफो तक के नहीं और का अन्तरे कहने स्थान, 'आरे नियक्तिये । और पूर्वा अने मेर । तमे अन्य-पाच प्रेयालनेका प्रधार में है पाँ, परंद पाट मार्गेको सहस्रका प्राप्त है कि गैरे बाब विक्रवेको संस्थाना कर केवल है। जरे जुदिहा नहीं अध-तक्ष्मी बहुर-त कारे-रायेको पीचे हो, को से का का कारिये; बहुने को मानी पुर नहीं विकास कार्यने । यु पास, कुल और पूछ आहे पाने तथा हर-रिका आदिया काल करनेने अवस्थ कुरान ि विश् प्रम मारच व नहीं बान्ता । पान, वहाँ वर्नेन्द्रवि और कहाँ पुरु । नेना । को पुरु करनेका करन नहीं है, द से बनमें रहकर है जनक स सबका है। इस्टीनों स् बन्ने हैं were or ofte gain stope of the all qual extends from कारिये, मेरे-वेसे वीरोके सामने सामा हाने क्षेत्रण नहीं केता। मेरे-जेश्तेमे विकास्तर हो पेसी का प्रस्ते की बक्का सुनीति होती है। अब द पा से सम्ब और अर्थनोर पता पता या, में नेपे पक्ष कर हैने, या अपने का पता था। यक ! यह कार्य क्य लेख ?'

कालें हैंने कहेर कार पुरावर पीनकेंने इस बेह्मजेंके अपने देखार बहा, 'र कु ! मैंने हुए वह बार बरास किया है, ह अपने मुंहरे को हानी होती कार पह है ? इसरे प्राचीन पूर्व भी का-नाका से प्राची भी देखाँ अप हैं। रे अकुलेंन ! अप भी हु की साथ प्राप्ताहर करते हैंस है। रे अकुलेंन ! अप भी हु की साथ प्राप्ताहर करते हैंस है। जैसे की पहलाने और महानोगी कीवकाने प्राप्ता का, उसरे प्राप्ता हम हमा प्राप्तानोंक समने हुई भी बारके इसके बार हैंस ?'

ब्रह्मिक्ट कर्ज बीमहोनके इन क्रम्बोरे उनका श्राप्तान ताह पता और सब बनुबंधेंसे स्टब्से ही बुद्धारे हर गया। चीननेकती राज्यीर वारके का कार्यन बीम्हरू और अर्जुनके कारों है देखें न कारेनेच बते बड़ी से, जीवरणबी हेरनाचे अर्थने अन्य वर्ध कर होते । हे प्राचीय क्यूनहें होरे कुट ब्रांज कर्जाके प्रशीपने पार गारे । उससे पीडिय होत्यर यह त्रीत ही वहीं हेनीले चीनकोनके स्वापनेके बाल गांव । तन बोकांन प्राथमिके रचना प्राप्त प्रेका अपने पर्छ अर्थनके कर अने । इसे कार अर्जुन्ये की प्रतिसे कर्नाने संस् कार्क एक कार्यक समाप करता काम क्रोडा । मिन् को अक्टालको क्षेत्रहरू कर, करन । क्रम्प अर्थको क्रमित क्षेत्रर अवस्थानको कीला कारोंने कारण यह दिया और विकास कर कार कार की जो, भागों पर र विश्व अर्थ और क्रमोरे व्यक्ति केवर अक्रमान रहेंगे परी क्र मतवारे प्राणिकोची केवले एक प्रथा। कार्युक्ते कारणे बालोंके का हेन्यको व्यक्ति करते हुए कुछ कु अलब्द पीहर भी किया । प्रार्थंड काम ये अनेकारे प्रार्थी, खेदों और पर्यूप्योपने निर्दार्थ कतो हुए उस सेन्यका संक्रम करने समे ।

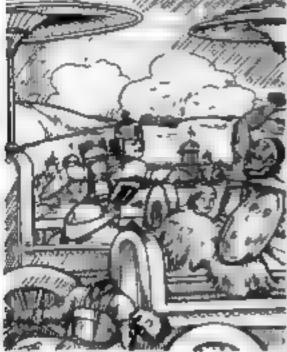
#### सात्यकिका राजा अलम्बुव तथा जिग्हाँ और शुरसेन देशके वीरोको परास्त करके अर्जुनके पास पहुँचना तथा अर्जुनका धर्मराजके लिये चित्तित होना

रंगं कारह नाने तने—स्थान ( मेरा केंग्रेजना पा विमेरित कर जान का पा है, मेरे अनेकों केंग्रा करे को है। इसे में अकी सम्बद्ध कर ही स्वयूक्त हैं। अब पूछे नहीं अनुवान होता है कि अव्यूक्त केंग्रिल नहीं है। अब्बर, का पुद कैसे-मेरे दूसा अव्यूक्त कर्मन करें। को उस विकास माहिनीको अनेका ही परित्र करके चीतर कुछ क्या का, का सामाधिकों पुस्तान तुस क्यानत् कर्मन करों।

अपना अपन्य | स्वाचीय जनमें क्षेत्र कोज़ोंने कुछे हुए स्वचर बैठका क्ष्मी गर्मना करता हुव्य का रहा का । उत्तचके देखा पहारची निरुक्तर भी उसे केकनेने करता न हुए। हुछ। जनमें आरम्बुको कारों कोज़ोंनो भार हारण समा एक

असन प्रचा आव्यान जाने सामने जाना और जो रेकनेन्य अब्बा करने जाना। बहाएन । का होनों कीरोन्य जैसा संप्रम पूछा, जेला से कोई की पूर्व हुआ। का समय होनों ओरके कोड़ा अविका पूर्व देखने एनो । आव्यान में सार्वकार पूर्व कोरते एक कार्याहार आहर किया, किंतु कार्यामने अने कीरती कार कार्य । किर कार्य बनुवको प्रात्तक परिचकर सार्वकार कीर तीने काल होते, हे अव्यास कार्य प्रकार इत्तरने पूछा गते । किर पार कार्यासे आव्यान कार्य पर्याप्त प्रोहेंको की पाराप कर विचा। तम सार्वकार पार प्रच भारती उठके सार्विका हैए सारवार आरम्बुको कुम्बरम्पवार महाकारो यो काले आरम का क्रिया।

इस जवार अस्त्रमुख्या कान कान वार वा आस्त्री शैनाओं में क्षा हुआ अर्जुन्यों और क्ष्मे एक । जाने केंग्रे है का अकर रोज्यानुहरे त्रवेष विकासि अनेवाँ कियाँ कीर जाना कु को और को कारों कोरणे बेस्कर कारोबों क्याँ कारो को । कियु साम्बन्धि कारों केंग्रेग कुम्बर अनेवां है प्रकार कानुव्यापियों प्रकार कर दिया । जा समय का न्यान् बूस्वीर मुख-सा कर कु का और अनेवार होनेवा को का



रिकांके स्थान कार्य पूर्व, कार्य ग्रिका, कार्य कार और कार्य दक्षिण दिसाने दिसानी के स्थान मा। साम्य का अव्युक्त पराक्षण देसकार निगर्न और से क्यानकार काल मुखे। अब सुरक्षेण देसके केन्द्रा सालोकी कर्य कार्य कार्य कार्य कार्यकृतियोग कर्यों का क्या कार्य कार्य कार्य क्रिय कार्यकृतियोग कर्यों का अर्थुक्त क्या व्यूका। किए अव्यय साम्ये देशनेकाल कर्यूक स्थानक व्यूकार सुरक्षण स्थान है। अर्थ अव्यय अर्थुक्तो देसकार पुरुवित्र स्वयक्तिको स्था

उसे आसे देखकर धीकृत्यने आर्जुको बहुद, 'अर्जुन | देखे, तुकारे मेंडे सामकि आ का है। का कारमात्रने सेर तुकार विका और सकत है। जाने साम केन्द्राओं के विकास समान सम्बाधन परसा कर है। है। का तुन्हें स्वालेते के



नारा है: इस समय जा जीका केंद्राओंका वर्षभर श्रीहर कर्ताः नहीं पहेंचा है। इसने अध्ये बालोंने क्षेत्रवार्ध और केंबर्वकी कुलकर्ताकों भी जीना दिया दिया है तथा शुद्धे केंबर्वकों दिन्दे का अवैद्धों अध्ये-नाके केंद्राओंकों वाशकर नहीं नाकः है। इसे वर्षशब्दी सुक्ती संनाकों किहीलें करके वहाँ कुल है।

मा अर्थुनने कुछ उदाल होनार श्वाह, न्यानाहो । सामस्ति भी भाग जा देव है—इससे मुझे उसाला नहीं है। अब मुझे प्रश् निक्रम नहीं है कि इससे नहीं जमें आनंदर करेदान नीतित भी होने मा नहीं। इसे से उन्होंनी प्रश्न कानी मान्नि औ । इस सम्बंध मान्नि के कुछी विकरिते हैं और इसर प्रम्हानका भी सब नहीं हुआ है। इससा की मान्नि होता सामस्तित्वी और मान्नि है। अस मुखे कर मुख्य है और हुओ क्यानका का अन्यान सत्त्व है। इसर सामस्ति क्या हुता है तथा इसके सार्थि और कोई भी जिस्का हो मुझे हैं। किंद्र पुनित्रका आनी कोई क्यान नहीं है और इसके अनेको सहस्त्व में बीवह है। ऐसी निवरित्र क्या का भूकिकाने साम निव्यक्त मुख्यकों स्व कोला ? कर्नकाने सेकारी मुख्ये हैं स्वाहता है। में निरम्दर अने कार्यकों सम्बंध मान्नि है, सो क्या इस समय पहारता मुख्यकों कोर ?"

#### सात्यकि और पूरिज्ञवाका भीषण युद्ध तथा सात्यकिद्वारा पूरिज्ञवाका वध

सक्तर कार्त है—राजर् | राज्युर्वेद सामाजिको जाते हेल मुस्तिया प्रत्येष मरावर जान्यो और राँग प्रणा कारते वाक्षी समा, 'आह | आव कर संस्थान्तुरियो केरी जाूव विजेको हम्मा पूरी हुई। साम गरि हुए मैदान कोजकर न नाले जै मीरिवा गर्दी क्या सम्बोदे।' इसकर जानकिने केरवार वाक्ष, | 'मुस्तुता | मुझे पुत्रमें सुनवी सरिवा भी प्रण गर्दी है। केरवार सारी कारवर भूकाने कोई गर्दी इस सम्बत्ता। क्रान्तिने मार्थ कार्याक्तो क्या स्थान है ? वार्त कार्य सार्थ्य विकारते। बीरवर | हुन्तारी गर्वना सुनवर से मुझे हैंसी सार्थी है। मेरा मन से हुन्तारी साथ के हाम कार्यको बहुत ही सारवास है का

हर प्रचार एक-कृतिको करी-कोटी सुरक्ता से होनो चेन क्षीको जाकर कुछ कार्य एने। शुर्वकार्य स्वार्यकारे कारने बाजोसे आकारित करके अस्ता कार काल करनेके विकास को के क क्योंने करने किया और कि अनेको सीको सीरोधरी प्रश्नी रागा हो। सिंह्य स्थानसिको अन्यने शासकीतान्त्री उन्हें बीचहींने बाद करना हानी बाद वे आपराने तरह-नरहते संबोधी वर्ष करने राने। केरोक्री देशोंके कोद्रोको बार करन और समुख्या कर दिया। इस प्रधार केरो ही राजींग हो गई एक इस्त-बर्ग्यन सेवार शायराचे पेतरे बाहाने राने । ये बाहाती और प्राप्त, अपूक्ता, शास्त्रिक, बाह्मा, कृत, सन्त्रत और सन्दर्भ साहि अनेको प्रकारकी गरिवर्ड विकासे क्षेत्रा कवा कुछ-कुरोका है सलवारोके कार करने लगे । क्षेत्रों ही अवनी किछा, कुर्ती, क्रफर्त और क्राहरपाला परिचय हेकर एक-इसरेको जैका दिवाना पाने थे। तत्तमें बेनोब्रीने लामारोब्री फेटोरी क्य-दूरतेची वर्ता कर करी और फिर आधलों संबुद्ध काने समें । होने ही काल्युक्षमें निकास थे, काली क्रांतियाँ चौदी और मुजाई राजी थीं। जा: वे जपनी खेदवाको समान स्टब्ड पुजाओं से सामसमें मूल गर्ने । कारमहाने क्षेत्रीकर विश्वा क्षेत्र क्षेत्र के और केने हे पूर्व बारमान्यम है। इसरियो क्यां साथ होन्द्रने, रखेद रूपपने और हाथ प्रवाहनेके कौजारको देखकर चौद्धार्थनेको वर्ष अस्ताना होती भी । का समय संजानपूरिको स्थि हुए उन देखे बीरोक्त कर और पर्वतको स्थानकुरके सन्दर्भ यह केर सुन्द हो का वा। अपेरे पुरस्कान्ये संन्यूकर, सिस्से सिर अक्रमार, पैर क्षिप्रमार, होपार, अंग्रह्मा और सामान नायके मेंच विकासन फेटमें पुटना ठेकावन, पृथ्वीपन पृथ्वावन, आगे-पैके इटकर, पास देकर, निशंकर और अपर अल्लाक

च्यून ही चुद्ध किया। भारत्युद्धांत के कार्यन होत्र हैं, उन राजेंग्डो दिसारे हुए क्यूनि बटकर कुठनी परि।

अन्यनं सिंह जैसे हामीन्यो करोहरा है, वसी प्रकार कुरानेह पूरिकामने कार्याधिको पृत्योगर करोहरो हुए एकदार उठावार कार्या दिया। किर कार्याने कार्य गायार असे वास प्रकार दियो और न्यानंत्रो करावार निकारने। स्था वह सामाधिके हुन्याकर्यका कार्याको कार्याको संपादिके वा सक् कार्याक क्षेत्रक कार्याको कुरानेत्री स्थितिक पुरास कीर्य हेनेरे कार्य कुराता है जरी स्थान केर्योको क्यानंत्रात्री पुरासको। हार्योके कर्याक अस्ते कार्याकाची कुरा यह का, कि इसी समय क्षेत्रकारी अस्तेत्री कार्याक्यों कुरा यह का, कि इसी समय क्षेत्रकारी अस्तेत्री कार्याक्यों कुरा यह का, कि इसी समय



व्यवस्थित है। सम्बद्ध पृत्तिकार वेजूनमें पैस शक है वह वर्जुविकार सुन्तर कर नहीं है। जान वहि पृत्तिका सरकारकार करावितों का जात है, तो उसका विकास अवकार करा कावार र वीज्यकों ऐस कानेगर व्यवसात अर्जुनी भग-ही-का पृत्तिकार्क करकारकी वर्णसा की और किर वीक्तुवेकनकार्स कहा, 'सामग ! इस समय नेति दृष्टि जव्यकार लगी हुई है, इसरिन्ते में साराधिकों नहीं देश प्रा है। तो भी इस बहुनेहकों स्वाके मिन्ते में एक वृक्तर कर्म कराव है।' ऐसा करकार बीजुन्याकी वास मानते हुए अर्जुने कर्कान कर्जुकर एक पैना बाग सक्तना और उसरी भूगितकार्ध का मुखानो कार काल, निसमें गा सामार रिम्ने कूर् था।

क देशका राजी प्राणियोंको बदा कुछ हार। ( पुरिस्का राजनिको प्रोडका असन सहा हे नय और अर्थनकी निका करने लगा। असने कहा, 'अर्थन , वे सरोसे कहा सारनेमें स्त्या हुआ था, कुछारी और से मेरी टॉट ही नहीं थी। देशी स्थितिये येव दाव कार्यकर सूचने बक्क ही कर कर्य शिक्ष है। यस कर्मक एका क्रिकेर खोंगे, में क्या तम इतसे बढ़ी बड़ोगे कि 'मैंन संप्राप्यांगये सामाधिके साथ कुद्ध करनेवें अने हुए पुण्डियाको गार करन है ? तुन्दे का अवानीति पाताल इन्हरें हिरवाची है का महर्गमणी अंधवत होपालाकी ? तम से संसारने अव्यक्ती अन्ते को हाना करे करे हैं। किर सरव, कुरोके कर पुत्र करों राज्य सुबने पुस्तर वर्षे प्रकार विरुग ? कार्योत्वेच गालको, को हुए, एकहेन, सम्बोधी विका गरिनेको फ कृष्णमें यहे पूर्व पुरुषार कारी कर अहीं सजी : बिर तुमने यह नीय पुरुषेको चीच्य जनका कुमार शायकार कर्न किया ? प्राप्तान के ऐसा कानी नहीं बाती । सामृत्यांके विन्ने से उनी कार्योक्ट काम आरम्भ क्षांत्रम भग है, मिल्डे भर्म आएमी विकार करते हैं: इसके बहुद्विता निर्दे कार्यकारे बहुत होने हो कारित ही है। प्रमुख बहा-जहाँ विश्व-विश्व कोगोबी संगरिते र्वहरू है, अध्या अवस्थित रेल बहुत करन बाद कर करन है। बहुत बात कुर्कों भी देशी वाली है। हम एकबंदाने और निक्रेपक करकरमें करन हर हो, जाद ही सरकारी भी हो फिर भी हार प्रथम शामकारी केसे दिए को ? अकान ही उन्हें का बाव बोक्काको सम्पतिरे किया क्रेफ; से तुन्हें देश करन रुपित नहीं को ।"

अर्थुनने बदा—राज्यू | स्वयुक्त बुद्धै होनेके एउक अनुवाकी बुद्धि भी बुक्तिया जाती है। इसीने अवनने वे सब विना निर-पैरकी सभी बदी है। अन्य सीकृष्णको अवकी तरह पानते हैं, निर भी जाती और समझ बायकोंने वर्षत हैं क्या में भी बोर्च अपने नहीं कर समझा—म्बा बात जनकर भी आप ऐसी कामदे-बावकी बाते वर्षों कर यहे है ? इसियाकोंन अपने पार्च, निर्मा, पुन, सम्बाक्ती हमें बन्धु-कामकोंके स्वीत हो सबुकोंके साथ संसाथ किया करते हैं। ऐसी निर्माणने में अपने दिव्या अर्थेर सम्बन्धी सामानिक्ती पान करते ने करता ? यह हो भेरे दाने हासके समान है और अपने सामानिकों की परवा न वारके हमारे निर्म जाताने; वरिक निर्माण निर्माण को से नक् एक है, जो उसकी रक्षाका करन की करान रहाने कर्मिन । उसकी रक्षा होनेसे संस्थाने एनामी है रक्षा होती है। करि में संस्थानकृषिये कारणियों अपने सामने मतो देखा को पूर्व पाप स्थात; इसीसे मैंने अपने रक्षा की है। उसम को पा कर्मित मेरी निष्य करते हैं कि पूर्वरिके साम पूर्वित कर्म होनेकर मेंने आपको जेसा दिया है, सो पा अवस्था मृद्धिकर ही है। जिस समय अपने और पराचे पहले एका को एक हो है और आप सामनियों पिड़ गर्म में, उसमें समय को मैंने पा कार्य किया है। धरण, इस रीम्प्रामुक्ते एक को स्थान एक्सोंके प्राप्त संस्था होना है में एक्सी है ? अवस्था मेरानी है पहल नहीं कर समाने से आपने क्यांकिक कर आप अपनी है पहल नहीं कर समाने से आपने क्यांकिक कर आप अपनी है पहल नहीं कर समाने से अपने

अर्थुनके हेरा कालेवर पुरिकालने सालाविको क्रीकृतर परमार्थन कारण परनेका निवस से रिन्म । कार्ने वार्थे प्रथमे क्राप्त विकास कारनेको जानेको प्रकारी प्राणीको करूरे, किको पूर्वी और पत्रयो प्रका सार्वे हेन दिवा का कोर्पान्यक्रिय क्रिका बाद करो है। केल्स क्षेत्रक अनोने पर्नेत्रका व्यक्त कर विरुग्त । इस समय सेनाके का स्थेत बोक्स और असंस्था दिन्दा पाने तने, जिल् अपूर्वित प्रकृतिने कोई कक्ष्मी कर नहीं कही । स्थापि अर्थुनको जनकी और परिजयानी बज़ी सकर य औ। उन्होंने किसी अक्रांत्व क्षेत्र अक्ट न करते हुए कहा, 'मेरे इस असकी वर्षा अने एकानेन कर्ना है कि बहे जोई हमारे पश्चका बनक मेरे जामको प्रोक्तक जंदर होता, से कोई एक जो कार नहीं सकेत्व । पुरिक्रवाजी । मेरे इस निवासर विचार क्रमंड आवको मेरी निका नहीं करनी माहिने। वर्णका सर्व केन्द्र समझे किसी इस्टेक्टी निन्दा करना अन्तर्भ वात नहीं है। की अल्बारी प्रकृति पुरानो कारफार कोई अवने नहीं किन्ह है। कारक अधियनको पास से बोर्ड की विकास नहीं क और अलोड राव और कामच की दुर चुनेत है, जिस भी कारकोगोरे को निरामा भार करता। इस सामेरो कौर क्यांका एक अन्यत करेगा ?" अर्थनकी का कार सुरक्तर चुरिक्षकाने अकता तिर पृष्टीसे समाचा और मुक्त नीवा किये क्षकार केंद्र पूर्व ।

त्य अर्जुनने कहा—येश को श्रेम धर्मराम, महामानी भीनतेन और महाम-नावोकके प्रति है, को मानने मी है। मैं और महामा कृष्ण आगको आजा हेते हैं कि आग स्वीतनके पुत्र विश्विक समान पुन्यसंग्रीको प्राप्त हो।

अंकृष्यनं वक्त-राजन्। हुप निरम्पर अधिक्षेत्र

क्रमेक्ट है। यो लेक वर्गह उक्तक्यार है क्या आही. हैमाम भी निनके प्रेमे स्मार्थिक खरे हैं, कमें हुए मेरे हैं समार महक्त महका अस्ते (

इसी समय सामधि उठा और साने निर्मेष पुरिस्तावास सिर पारदेने सिने जनकर स्टानी। उसे सीकृत्य, अर्थुन, पीनसेन, गुक्रमण्, अरावेका, अवस्थान, पुन्तवान, कर्न, कृतेन और काइम—समीने रोका। सिन् सबके जिल्ला पुनेनर भी अर्थ अनक्त-आशादी पुरिक्रमका प्रकार बाट प्राणा। सिर अर्थ अनक्त निर्मा करकेको बोल्कोको सारकारकर कहा, और भनिकृतका होग रक्तेको पारको ! हुन के वर्कार कुले केकर पुन्तो कह हो के कि पुने पुरिक्रमको नहीं पारना कािने का, के सिन समय पुनर्केगोने सुभावके पुन प्रकारित कालक अध्यक्तपुक्त प्रका बी की सर समय पुन्ता कर्त कहाँ काम नवा का। नेरी से वह प्रसिद्ध है कि क्यी कर्ता पुन्त संस्थान के सिन्ध पारका क्या क्रिस पुनिक्रम करके क्षेत्र क्या व केंद्र काव, वर्ग में स्वापन कर क्रिया।

राज्यू । स्टारमेको देख कहाँगर वित काँग्योगेके किसीये कुछ मूर्व कहा । यदंह मुन्तियोके समान सम्बासी महाकी मुक्तिमाला इस समार कर करक किसीको अन्तर मही लगा । पुरित्रमाने अपने मोकाचे सक्कोचा इस विका क्ष और अस्तर कई कर करका अस्ते अभिनेत पूजा का। अरः का के स्वराज्य अस्ते परंप कुलके तेवसे संपूर्ण कृती और अस्तरको अस्त्रेतिक करण अर्थानेकोर्ने करन नवा।



#### अर्जनका अनेको महार्राथयोसे भीषण संप्राप तथा जयद्रथका सिर काटना

्रायः कृत्युर्वे कृतः--व्यापः । कृतिसमाधः यारे वालेवरः चित्रं किस प्रवारः सार्थे पुत्रः कृताः, व्या पुत्रो सुकाले ।

व्यक्त व्यक्त न्यास्त्र । वृत्तिकाके प्रत्नेवाके प्रत्यान कर्मकर ग्राम्य अर्थुनी अंकृतको वद्या, 'काम । अस्य विवार पाना अव्यक्त है, उत्तर ही जोड़ेको व्यक्ति । अस्य क्ष्माको अर्थ तीन परित्र है—की का पुत्रो स्वाने स्वाने करा पाना ती सम्बद्ध कर्म आह करेगा; की, बीट विद्यालय पानो हात्र की बालका विकार हो एक से प्रदानों पोना और बहि क्षाप पान, से अन्यक्तामा क्ष्मी होना । अस्य पूर्व वाही विवीत अव्यक्तानको और क्ष्म पह है । हार्यको अस्यको केरी प्रतिक्त स्वान्त करानेका प्रका कराने क्ष्मी । क्ष्मा वीहानों ऐसी संस्तार और मैं जन्यकाको कर सही ।'

त्त जवन्तिते पुरस्त परवार् कृत्यो सेहेको प्रमानके रचनी और होबर। सर्वुनको जवानका पर करनेते हिन्ते कहते हेना राजा पूर्वोजनने कार्यने कहते, जीरवा | अस्य क्षेत्र ही दिए यह असा है। आस अन्यो कार्यने द्वार प्रदूष्ण प्रदूष्ण कार्य को विदेश क्षित्र होगी। क्षेत्रीक हिन्द बीत पात को किर विद्वार हमारी हो निवास होगी। क्षेत्रीक कुर्वात्रक जन्मकार एक हो जानेतर अनुंत्रकी प्रतिसा हुती हो जावनी और का कार्य ही जावने प्रत्ये कर जावना । किर अनुंत्रके न क्ष्मेंकर को हसके पाई और अनुवाजीरनेग एक मुद्दां की जीवित नहीं का स्थानेंगे । इस प्रवास हम निवास्त्रक होकर पुर्वात्रक राजा नहीं और हसरे प्रोवह्मकोंको की स्थान सेकर कार्युंग्ये साथ पूरी क्षमित्रो संवास करें। !

वृत्तेंकाकी जा बात पुनकर कानि कहा, 'प्रकार प्रहार अरोकारे, जाम् वर्षार, बीरवा जीको आने बालोहे मेरे करोको बहुत है जवस्ति का दिया है। वो भी 'मुद्दारें क्रा है कार कहिने' हर निकार बारण में जा कहा हुआहै।

[ 039 ] संव में व ( सामह—एक ) १६

**हिलेक्ट** 

गीयके निकास क्रमीसे क्यांचा होनेके कारण मेरे अहीने हिस्से-क्रस्टेकी मी प्राप्त पार्ट है। सम्बाध कर्युन क्रमायके न मार सके-इस क्रोड़क्ट में क्रमायकि युद्ध कर्माया; क्रमोंकि मेरा क्रीकन के अध्यक्षि तिसे है।

बिस समय कर्ण और हुनेंबर इस प्रवार करें कर के थे, अर्थन अपने पैने बालोंसे अस्पन्धे सेन्स्ट्रम संहर करने लगे । मनेको हाची, बोडे, ब्लब, क्य, ब्लूब, बेंबर और परेक्सोके तिर उनके बानोले कर-करका एक और विक्रो एने । अपने किस प्रचार काल-कारको काल अल्बी है, उसी प्रकार अर्थने बार-मी-मार्ग आरमी केरावा स्थान कर करता। इस प्रधार का अधिकांक केना करे गये, से के काले-काले कार्याको। याम गाँक गाँव । शाईकार का कार्याक आयोर पक्षके बीच न तम् अवेद अतः प्रणालको प्रकार रियो इपोधन, कर्ण, क्यांत, साथ, अकारण, क्रान्याचं और वर्ष क्याबने भी उने कार्र ओसो के रिम्म । ने कर महाची क्याज्यों असे पीड़े एकार बीक्स और अर्थुनका जब कालेको इच्छाने निर्मन होकर हनके करो और पूर्व को । धूर्व स्थल हो सूच्य था; से प्रथ प्रत्ये फिक्केसी बाद जोड़ हो से और अर्जुन्यर नेक्कों तीनो वीरोकी कर्रा करते कर्त थे। विक् रलोकर अर्जुद प्रको बाजीके हे-हे, शीन-शीन और आयु-आब्द कुम्ब्रे करके वर प्रत्ये परिवर्तको पीचे करते है।

अस अपर अध्यक्षणाने वर्षाक, क्रमोनने सार, क्रोजने बीस तक कर्म और सरकरे तीन-तीम बाजोसे कर किया । पूर्वी प्रकार कर लेभ भनेकर गर्मन करते हुए रुपे कर-आर बीको शरो। दिस अन्त्री ही शुर्वक हो काव-इस अभिरतपारे क्येने अपने रचीची सरावार कवायकार कवा कर दिया और इस उच्च वार्च ओस्से उनक क्रमीओ वर्ज काने लगे। किंतु इसका भी कुर्वि और वनक्रम कामकी रोन्तके अनेको बीरोको बराकाची कर रिम्ब्रुएकको अहर काले गये। तम कार्न अपने बेगनक बच्चोरे उनकी गरिन्हों रोकनेका प्रथम करने सन्त । असे उत्तर प्रथम कार्केचे कर किया। इसका अर्थुले अल्बा कहन बारावार में बाल्वेरी क्राम्बरी क्रामीकर चोट की । जातकी कार्मने मुक्त ही दूसए चनुन महान्य और आह तथार काम क्षेत्रका कृतका अर्थुनको कह विया। अर्थुनने भी अपने प्राथको स्टब्क् विसाने हुए सम चेद्राओं हेलो रेसले को सम्बंधे अपनीत कर दिया। इस प्रकार बाजोंके सम्बन्धे किय व्यक्तिय की वे एक-बुक्तेयर प्रकार करते रहे । इस समय ने नहीं ही पूर्वी और सम्बर्धने कुँद कर गाँ से तथा वहाँ **गाँ हर तम गाँ**श अने कर

आर्जुत रोज्याको देश को थे। इस्तेवीने अर्जुन्ने कनुकती करनाक सीवकर कर कालीने कर्लके बोड़ोको स्टर दासर क्या एक कालाने सर्वाको रकते नीचे निया दिया।



वार्णको रचारित वेदावार अवस्थामने उसे अपने रास्पर कार वेच्या और किस का अर्जुको किइ गांधा। इसी समय कार्यने तील कार्यने अर्जुका कर किया, कृताकारी कीस कार्यने सीव्याकार्क और कार्यने अर्जुक्यो सीवा तथा कियुरावरी कार्यन कर दिव्य। इसी प्रचार अर्जुक्यो कीया और अर्जुक्यो कार्यन कर दिव्य। इसी प्रचार अर्जुको की बीसर्थ कार्यने अध्यक्षकार, सीचे हार्यकर, वाले अर्थकार, तीनके कृत्यकार और बीसस्ते कृत्यावार्यपर कोट की। किर में का व्यावकी अर्थुक्यो अतिक यह करनेक विचारने पूक्त काम विकास का्यर कुट वहे। क्यूंने वारी-वारी गांधाने, लोग्नेक वार्यो, प्रवासी क्या और भी साम-साम्येक स्वामित का्या कृत्य का्या कोट की। विकास क्यूंन इस स्वापर वारायका का्यी कृत कार्यक्रमेनाको वेदावार हिने और आर्थक

राजन् । जिस समय अर्जून असने बनुकारी होरी जीकी थे, इस प्रमण उससे कुनके बनुबाने स्थापक व्यक्ति होती थी। उसे सुनकार आपकार सेना कामानेके समान कहारने यह कारी थी। ये कुनने पुनासे काम होता थे कि इसे बड़ी नहीं कम कहार का कि थे कहा कम होते हैं, कम उसे बनुकार मकरो है, यान जन्मकी होती स्त्रीको है और क्या की कोहते है। अब रुद्धेने कृतिय होकर दुर्जन देखाकक प्रचेत किया। कारो हैकाने-समारों किया बाब्द प्रकट से उसे । वर्ड स्केंट की सकोची वर्णमें जानरहरें अन्यवस्था वर दिया वा। हो। अपने दिवसकोके पनदेशे अधियांच्या सम्बोधन अर्जुको जह कर दिया। इस इत्या दूरवीन्यका इस भरवेकते आयके बो-बे बॉर अके सावने आवे. वे सर्वे अलब्दी लगरून निधनेकाले परिचार्के प्रमान नह है गये : इस प्रमार अनेकारे मुखीरोके जीवन और सुबसको न्यू करते हर वे बुद्धस्थानी पूर्तियान् पुरुषे सपान विकर सो से। अर्थान्ये सा काम ओ अति कुतार अख्यासम्य किया काले अनेको अन्ते-अन्ते कीर कृष नवे । रेरर कटे हुए सरोरी, प्राश्लीन निकार, हमाहीन पुजाओ, किया अंगुरिकारेके प्राची, देश बारे हुए क्रारिकारे, क्ष्मीन मताहो, बायल मीयायके केवी, हुरे-पूटे एके तथा जिनकी असि, येर या दूसरे जोड़ कर राजे हैं, हेले निश्चेद और राइको हुए संबद्धे-इतार्थे चीरोके बारण का विकास पुत्रपुरि पीर पुरुषेक रिये जागरा प्रथमक हे की की अस्तिका ऐसा पूर्विकन् कारणे कारण अनुसद्धे बराहरू देशका सोरवोंने वही समान्ये केल भगे। इस उन्हार है प्रधानक कर्महात अगनी चीवन्याको क्रम सम्बद्धा ने क्षके-बाई महारकियोंको स्थितकर आने क्रम क्ष्मे ।

अर्थुनको जन्मकर्या और व्यत्ते देशका चौत्त बोद्धा ज्याके जीवनके निराध क्षेत्रक संवादक्तिको स्केटने स्केत । प्रत राज्य आर्थ्य प्रकृत्या की बीर अर्जुन्ये सामने आरा या, इसीके प्रतिपर जनका प्राथमस्य क्रम निश्च थ । महरकी अर्जुनने अवस्थी साथै सेनाको कक्योंसे व्याप्त कर दिया। इस प्रकार अस्पन्नी क्युर्स्नुको सेनाको लालुका करोड वे क्यानके सामने जाये : उन्हेंने अक्टानकारे कारत. इयमेरको तीन, प्रध्यक्षाचेको थी, प्रश्यको स्टेस्स, प्रशंको वित्रीत और जनहरूको कैस्ट कर्लोसे बीक्कर कहा विकृत्य किया। उपकार अर्जन्ते कार र हते को। या अंक्र कार्य हुए हाबीके समान जानक क्रोकने कर क्या । जतः अरने तीन बानोसे बीक्साओं और इत्ते अर्थन्त्रे बीक्सर आह समोदे उनके कोड़ोको बावल कर द्वारा तथा हक बाग रनको कारायर होता । किंतु अर्जरने अस्के होते हर कार्योको व्यर्थ करके एक ही सम्ब दो बाज नास्का उसके सारविके सिर और व्यवस्था कार करना। इसी सम्बद्ध वर्षकी वही तेवीले अलावलके समीय वसे देश श्रीवायने बात. 'पार्च ! इस समय क्यात्मको वः व्यारविक्षेत्रे अवने बीचने कर रहा है। अंतः संप्रापमें इन इक्क्षेक्षे पछन्त किये किय

वर्षाकारों जातन सम्बद्ध नहीं है। इसस्तिने इस समय में कुर्वकों क्रियांकों दिनों एक ऐसा उपाय कर्मणा, जिससे कर्षाकारों साफ-एकंट नहीं कातुन होगा कि सुर्व अन्त हो नवा। इससे का इसिंग होनार पूर्वे मार्गकेंट सिंगो बाहर निवस्त असोगा और अन्ति दक्षकें सिंगो क्रियां क्रियांका प्रवश्च नहीं करेगा। इस कर्षाकार क्रियांका नहार करना, पूर्व अन्ता हो नवा है—वह सम्बद्धका क्रियां नव करना।' इसपर अर्जुर्गने कहा, 'अस्म क्रियां कहाते हैं, नहीं क्रियां कावना।'

तम चेनीवर श्रीकृष्णने चेनवृत्त होयर पूर्वको बसनेके रिको अन्यवार शरत कर दिया। अन्यवार फैरको हो आरके चेन्क या सम्बन्धर कि पूर्व असा हो गया है अर्जुनके



व्यवसी सम्बद्धमानी वही क्योंने वर गये। स्थानिक मारे अने कुर्वसी और देवलेका भी म्बान नहीं दुस ( इसी समय रामा सम्बद्ध मिर केंद्रा करके दुर्वकी और देवले समा। सम कीकृत्यने अर्जुको किन महा, 'जीन । देवले, सिन्धुएस कुरूरा पन कोकृत्यन सुर्वकी और देश रहा है। इस हुक्को पारनेका पत्ती समसे अपना समसर है। पर्तरन ही इसका नित्त सम्बद्ध समसे अरिद्धा पूर्ण करते।' श्रीकृत्वासने पद्ध जान सुनकर अराजी पार्कुक्यून सपने प्रकार मार्गोसे आपकी सेनाका संस्था करने सन्ते । अर्जुने कर्म और वृत्तानेक कर्मुन समस्य इस प्रकार प्रकार सामक्षा दोनों ही मार्गा-धानसोंको

म्बूट व्हन्त्वर कर करण । इस प्रकार कारके सब न्यूटरिक्केके करन्य ब्याकुर कर उन्होंने एक विश्वकारें व्यक्तिपतित उन्ह मन्त्र और पुनारिते पूजित इसके महके सन्तर अवस्त्र कार निकास । जो निकिस् व्यासको स्थितनिक का वर्ज पुर्वति पार्याक्यर पदाया । इस समय जीवनाचे पहले करनेका संकेत करते हुए फिर कहा, 'करहर'। पूर्व असामान्यर प्रोक्षेत्रकात है, यु क्यानका सिर कौरन कार प्राप्ते । वेको, प्राप्ते काफे विकासे में कुढे एक सक भूनमा है। इसका विद्या काश्रमितह स्था कुटुकुक का। उसे अवृद्धा सहर अविद्धा पान चीत कारेका व्हा कुर आह हुआ बा । इसके निवयने राजा कुळ्याच्यो व्या जानावातानी हुई मि 'रामन् । आवनात का पुर कुता, सील और का आहे पुर्वाते सूर्व और बन्तरिकोके समार क्रेमा क्र क्षातिकारकारका क्षेत्रको सुरवीरकोच प्रकंक साध्या करेचे । सिंतु संसारने पुद्र करने राज्य कृत इक्षेत्रकेट अवस्था इतका तिर कार वारंगा।' या कुमार विश्वास वृद्धान मकृत नेपाना सोधवा रहा, वित्र कार्य पुरस्केक नारी पूर होतार अपने जानिककुरोसे बहा—'से कुल की कुल्हा जिल पुर्व्यापर निराजेगर, जनके प्रशासको भी अवस्थ है हो उससे है जायेंगे।' ऐसा स्थापर यह अन्यासमा एउनाधिकेश सा काओं क्या पना और नहीं का तरकत करने शाम । इस समय बढ़ जनसम्बद्धक क्षेत्रके कहा कही होत त्याद कर पह है। इसमिने इस विकासको प्राच्या है।इ स्टब्स्टर स्टब्स्टरसी



चेदमें निरा हो । वर्षि दुवने इसे मृत्वीयर निराव्य से निःसंदेष्ट्र कुछने मिल्के भी सी दुवाई हो जायेने ।'

क्षेत्रकारों का कार सुंकार अर्जुनों का साजुना आज कोड़ किया। या सिन्युरानके सरकारके कारकार को वासकी उन्ह तेकार आकारकों का और सामग्रदकार क्षेत्रके काहर हो क्या। इस सामग्रदके कानकी एका कृद्धार संकोधात्तर कर हो थे। या कानके का किए उनकी मोहने क्षार किया और को इसका परायक न कार। यक कृद्धार कर काकी कोड़ हो का सिन उनकी मोन्से पृथ्वीपर निर कार और आके निर्ह्त हैं। उनके सामके की ही दुख्ये हो गरे।

प्रथम् १ इत ज्ञार ज्ञा अर्थुन्ने क्याध्यक्षे नार द्वारत् हो क्षेत्रकारे वह अञ्चल्यार हुर कर दिया। अस्य आपके पुर्वेको क्याद्र दूश्य कि वह तम हो जीवृत्त्रकारी रही हुई काम हो थी। इस क्ष्यार अर्थुन्ने काठ अर्थुन्तिको केनाव्य प्रदार करवेर क्ष्यके द्वारत क्षयानका कथ किया। व्यवस्थाने तस वेहस्वर आपके द्वार कुरुक्ते अस्ति व्यक्ते तसे और अपनी



विकास विकास विकास हो को । इसर जायहरकार वस होनेसर कींकृत्या, अर्थुन, बीमसेन, श्रास्त्रिक, पुणासम्बु और अपनेन्यने अवने-अपने सङ्गु कवाने । उस स्वस्त् श्रुकुत्रस्को सुरकार कर्युत कुरिसीरको विकास हो क्या कि अर्थुन्ते सिन्युटनको का काल है । उस उन्होंने वाले कवानामा अपने केंद्रानोको हर्गित किया एक संस्थानो हेक्या सुन्नोको मुद्द करनेके दिनो उनका जायहरूव किया । अस सुन्नोको बास

होक्कोंके रहता अवकर्षका बढ़ा रोक्सक्यारी पुद्ध होने | एने : हमर बीरका अर्जुन भी अरबी अधिहा पूरी करके एक क्रमा । वे एक प्रोक्को अन्तर्वेत प्रकृष क्षेत्रर अन्तर साथ स्वरं । ओस्से आको कोक्कानेका प्रकृष करने रान्ते ।

### कपाचार्यकी मुर्खा और सात्यकि तथा कर्णका युद्ध

कुराहरे पुरा—सञ्जय ! का अर्थुनो सम्बन्धो कर । कार्यन सम कार्या है।" प्राप्त, का सफा के प्राप्तको चेकानेने क्या किया ?

रक्षको सह—पद्मा । विकासको पुरूषे अस्तिके हाको मात्र गया देश क्षेत्रकारी सोको भागर उत्तर भई मार्च बान्यको आरम्ब को। कृत्ये ओरले अक्टब्लको की अक्रमण विकास किया होती के ओरसे अर्जुनक जीके सामोधी वर्ण पाने रागे । इतने अर्थनको नही नगर हो । क्रमानार्थं पूर्व से और अनुस्थाना पूजपूर, असे: अपूर कर होनोके अल नहीं रंग्य पास्ते के; प्रतिसकों के वीरे-बीरे अवदर बाल क्रोड़ के थे, के भी इसके क्रोड़े हुए बाल उन्हें निर्माद चेट प्र्युक्ति है। अधिक कम उपनेक कारण पर क्रेमेको नही केवल हो। कुरमानां से एको विकास भारतों के पने और उने कुळाँ आ गरी। यह देख सार्तन को रसकृति कहा से गया। उनके क्रवे के अवस्थाना भी महर्तने मान गया। कृतकार्यको अन्त्रे बाजोको पीएको सुवित देख अर्थकारे बढ़ी एक अपने; उनकी अधिकों अधिकोंको बाद बहुने रागी, में बहुत कीन होमार रामपर मीठ-क्री-मीठ हंग अमारा विकास कार्य सर्ग-'पानी हुनोंकाने क्या तेले ही पक्रभुद्रिकम् विद्वारोते एक कार्याले का या कि 'क भागक अपने बेहाका पात करनेवाला 🖢 हमें मूनके हकते. बार दिया जान, तानी कुमार है । इससे कुम्मीकों अनुसा महारियोची बहुत पर जह होता।' का सामग्री महाराज्ये कहे हुई बार अपन अस्त्र दिशानों है की है। प्रांधिकों ही बदला आस में अवरे मुख्ये बालानकार सोने देख का है। इतियोके ऐसे सरका और कार-केरनको िकार है। मेरे-नेसा कौन पनुष क्रक्रण-अक्रानंत्रे केंद्र करेना ? इन्य । इन्छन् क्रुनिने कु, वेरे अन्यानं और होजके परम सनत ने कृप अपन मेरे ही बल्लोरी पीर्वात होकर रक्की बैठकमें महे हैं। इक्ट न क्यों इस भी मैंने इन्हें कान्वेंसे महा पानल कर दिना। जन इन्हें दृश्य करे देश मेरे अन्तेको नक्ष प्रमु हो पह है। पहलेको पर है, एक दिन अवस्थितको रिका के हर अधार्य कार्य पुत्रके पहार क—'कुरक्त्य ! किन्नको नुकरा किसी गया जार नहीं करना व्यक्ति है उन राज, प्राप्ता को सरकारीय इस सादेखका मैंने साथ पडाने

पालन नहीं मिला। नोविन्द ! मुझे विकार है कि इनवर ची

अर्थुन इस प्रकार निरमन कर ही रहे में कि शकानका कर्न किन्दुरुवको कर एक देश करना का साम । का देश वाह्यसर्थको हेन्द्रे कृते और साम्बन्धने सहस्य कर्मनर करा किया । महारामी अर्थुनने यात यार्गाको अस्ते वेदना स्त्रे क्षेत्रकार क्तान केवरियको बहा-'कर्का । स्व देशिये, कर्म सामानिक रचनी और पहा पा छा है। पहारे सामानिक के धुनिकारों कर कार है, यह साले की सक्र पाता । सार बर्ज कर्न के के हैं, बर्ज अरू में केईके इंक्स है व्यक्ति।' अर्थकोः देशा वश्चनेयर भगवान् श्रीमृत्याने यह क्रमकेरिक परा सही—'पास्कृतकृत ! क्रमके रिन्दे क्रास्त्रीय अवेदात है काको है जिए यह पहालरायके से पूर की अन्तर पान है, जब से बहुना हो पना है ? इस समय बार्गिक साथ राजार बाद होना बीच नहीं है, क्वोंकि अले असे इक्की में हां करिंड मैंजूर है; तुन्हें नारनेके रिन्ने ही वह महे बालों को रक्ता है और पराधा आधी पूछा बारता है। अतः कर्मको केले-केले प्रकारिकोह की पाल पाने की। में अस क्रामको अन्यवस्थाने जनसः 🗓 समय कानेपर नसकैना, किर कुछ अपने कामोरों को इस पुलागर पार निराओं है।

कृत्याने पूर्ण-एक्स । युनिवास और सम्बद्धके मारे क्रानेपर का कर्मके जान जारतीयका चुन् हुमा, का समय कार्याद्रके कर से कोई त्य का है नहीं: फिर का फिसके YOUR BOOK 190 ?

सहरूने नहा-शक्तरण ! परश्चाद श्रीक्रम्य प्रम और व्यक्तिकां के कानों है उनके सकी का बात कारेनों ही आ पनी की कि पुरिसमा सामाधिको इस देया । अतः उन्हेंने अपने सारकि क्लाको अवता है ही भी कि 'तन समेरे ही पैरा राव कोरावार वैकार रकाया।" राजम् । देवता, गावार्व,वाव. सर्व, एकस समय मनय-कोई यो डॉक्स्प और अर्थुनको नहीं बीच एकते । इत्या आहि वेचता और हिन्दू पुरुष हुन क्षेत्रोके अनुकार प्रचानको आयो है। अस पहला क्षणकार सुनिने । सामाधिको रक्षीन और क्षणंको स्मापर क्या करते हेंस करवार स्टेक्टबर्न अपने बहुत सह पाक्रम-पाक्षे प्रतास-सारो समाया । सङ्गातः सुनते है स्थान क्यान्त्राद्ध संदेश सम्बद्ध यह और रह उनके यह है अस्त ।

बिर सरविक प्रत्यान्त्री अञ्चले आवर स केर । यह एक विपानके समार केरीनामान था, सारवंकि उत्पार समार हो मानोको ह्या सन्तरा हुआ कर्मको और क्रेब्र । अह सन्तर अर्थनके च्यारकाव प्रमाणक और उसमीया की कार्यवर दर प्रदेश करने भी वाजवर्ष करते क्ष्म क्रोक्ने परकर सालकिये अन्तर काम किया। इन बोकोंने केल कुछ हाना मा, बैसा इस एकोपर या देवलोको देखा, कथारे, उत्तर, मार्ग और एक्सोबा भी युद्ध नहीं सुख नवा । म्यून्स्य ? हर बेनेके अरफा पालमको देश तथे चेन्न पुत्र का कर उन्हों केनोके अलीकिक अंतानको मुख्य क्षेत्रर देखने हने । कालका सार्थन-वर्ग में अस्पूत का या कर्ष अस्ते शाने काला, कर्या पीड़े हत्या, कर्या स्थानकारने करो ओर सुराले लगता और कभी बहुत अपने बहुका सहस्र स्टेट आया था। अस्के रक्षतंत्रकारमधी काम देश कामकाने एके पूर् देवता, गमार्च और समय को जिल्ला-निरम्भ हो वो के: राणी बढ़ी सामधानीने कर्ण और स्वापनित्रक बढ़ हैना के में। ने दोनों नीर एक-कुलेवर सामोकी हुई। सन्य यो थे। सामित असे सम्बद्धीयी केलो कर्नको कुछ क्रमा किया। वार्ण भी चुप्तिया और वरणान्यवी कृतुने मीक्षा हुआ या, यह मामानिकारे अध्यक्षे हुईहरी संधानक सामग्र हुआ कारमार कई बेगले क्या करता क; जिल्ह साम्बंध को कृतिया हेला अन्तरी बाजनावर्षित द्वार बरावर बीचवा है का। रंगांचे ३० क्षेत्रोंनेर परामध्यक्षरै कहीं तुल्ला नहीं औ, क्षेत्रों 🕏 केनोके अपनास्था केंद्र रहे थे। बोर्ड ही देग्ये साम्बीधने क्षत्रके प्रमूर्ण प्रारंगमें पान कर दिया और एक पान्स मारकर करके क्रारंभको भी रक्षको कैवको केवे शिव हिमा । इतना ही नहीं, अपने तीयों ग्रीटेले अपने खानीड पाते बेत बोडे की बार डाले । किर भाषा प्रत्यक्षर इसके रकते की

र्गनको कुमके कर सिने । इस प्रकार सामाधिने आयोह कुम्बेह देशके-देशके कार्यको स्थापित कर दिया ।

तम कार्यका कुमरेन, बहरान क्रम्य और ब्रेक्सन्बर अनुसारको अस्तान साम्बन्धिको छन्। ओरले हेर विका । उत्तर कार्गित राज्यीन हो जानेसे सम्पूर्ण सेनामें इक्कारत पान गाउँ । कर्ण क्रोकोक्कमा सीधक हुआ हुति ही क्रोक्को रक्तर क बैठा । स्थानीक कर्ण तका उत्तरके पूर्वको पारनेमें समर्थ क तो को उसने अर्जन और भीवसेनको अधिक रहानेके हैंको उनके जन नहीं निन्दे । केनार को बाजन और बालुका करके हैं और दिखा। जिस काम विक्रा बार कुआ केल क्या वर, सभी प्रकार चीन्सरेको आयोह पुरोको और अर्जुको कर्मको पर कार्यको प्रतिक को थी। कर्म अस्टि प्रकार-क्रमा बोरोने साम्मीकारे यह करनेका पुत्र प्रच्या क्रिया, मिलु के सम्बद्ध न हो सके । अध्यक्तान्य, कुलबर्ध तथा अन्य केंग्रही क्षतिन न्यूनिकोको स्वार्तको एक हे वनुको परान कर दिया। यह अस्तुम्ब और अस्तुन्त्रे समान पराक्रमी था, असमें अक्टबरी एक्यूमी रोजाको ईसके-ईस्तो बील रिव्या ह नारक्षण क्रमाना क्षेत्र गर्व एक सुना रत सनाता स्थानकिया पात्र है अन्य : स्तीपर समार हो सामाजिने प्राः अल्बरी केवार वाना किया। वित क्रमा क्रमानुसार बीकुम्पाके पान कार्य शब्द । इसर क्रीरम भी कार्यके हिंको क्य प्रकार रच से आहे. जिसमें बढ़े नेपवान आप मोड़े को हुए से । और रेक्कर क्षेत्र रेक्का का, बताका प्रजातनी की, जाना ज़बराके क्रम रहे हुए में और क्रम्ब सारकि सुधेन्य 🖦 । का १६वर केंद्रकर करने भी क्यूबरेटर आकृतका मिटका। राज्य ! तम बुद्धारे चीनसंख्ये आवने इचारील कुरोबरे धार कार । का ज्वार आवको अनेतिके कारन हो यह सर्वका

#### अर्जुनका कर्णको फटकारना, भुषिष्ठिरका अर्जुन आदिसे मिलना और घगवानका स्तवन करना

सहायने कहा—बहाएक ! इस तो पीनसेनका एवं हुए गया बा, तृतरे कार्यने कहे अपने बान्यानोंने सून पीड़िय किया; इसके वे क्रोकके बसीपूर क्रेकर अर्थुनमें कोले— 'करहाय ! सुनते के न ? तृत्कों सामने हैं धर्म पुत्रमें कार्यन ! है कि 'अरे अर्थुनक, यूड, पेटू, गैकर, वार्यक और कायर ! यू त्याना कोड़ है।' मेरे विषयमें देशी कार गुहरो निकालनेवाला प्रमुख मेरा कक है; इसलिये दूस इसका कब कारनेके दिन्ये मेरी कार कहा रहते और ऐसा अहोन करो, निकालनेकों की मेरी कार कहा रहते और ऐसा अहोन करो, निकास मेरा क्यान किया है हो !'

भीयरोज्यों बाद सुरकार अर्जून आने को और कानीक

निकार केवर केले—'यावी कर्म । यू आप ही अवनी तार्पक विकार करने हैं - संज्ञावश्रीयों के हुए शुरवीरोकों से ही वरिकाम जान केले हैं—जीन का हार। अस्य युद्धमें सम्बन्धिने हुझे रक्कीन कर दिया का; तेरी इन्हिमों विकास ही वहीं की, यू बीकों निकार पहुंच युक्त का; तो भी तेरी मृत्यू की इकसे होनेकारी है—वह सोकका ही साम्बन्धिने हुझे बीकित कोड़ दिया है। वैक्योगमें दूने भी प्याक्ति मीम्मोनकों किसी तथा रक्कीन किया है। मित्रु ऐस्स करके को दूने उसके असे कहारी करने कही है, जा प्यान्त पत्र है। यह बाल नीक मुल्लोका है। जानित हु सुनका है तो पुत्र कहार, तेरी समझ वैक्योबी-वी वर्षे व हो ? जानरामनी गोन्सेनके प्रति हो वो अक्षेत्र करो सुनारी है, वे स्वार करने बोक नहीं है। इस्ती तेना ऐक पर्टी की, हमारी और वीकृत्यकी को उत्तर हो हुई। वो का कि आर्थ पीमने हुई। अनेकों कार रक्ष्मित किया था। परंदु अहीने हेरे विन्ते एक पार पर्टी कही काम नहीं निवासी । इसमेगर भी को हुने अहें कहा-दी जह प्रक्त पुराके हैं। प्रवा पेरी अनुसरिवतिये हुन सकते निवासर को सुप्रकारका है। प्रता पेरी अनुसरिवतिये हुन सकते निवासर को सुप्रकारका के विकास की किया है, जह सम्बाधका क्ष्म हुई पीछ है। परंग विकास । जब में हुई रेपे सेक्स, पुत्र और क्ष्मुसरिवास क्ष्म बारोग । जुन्मों पेरे रोक्स-नेश्वार है। पुत्र मुक्तिकार का क्ष्मित हो। जिस कार में अपने बारोग को सम्बंध मी पंत्रत कर सामूना—बहु का में अपने बारोगों को सम्बंध माजार कहात है।

इस प्रधार का अपूरित काली पुरस्त कर करोनी प्रतिकृति की, प्रभा क्ष्मा रहिन्द्रोंने न्यून्त् सुनुस्ताद विक्या । का अस्तर क्षेत्रर संबाद अभी तर हो दह का, हारेने हुई क्षात्रमानकर पहिल गये । अर्थुनको प्रतिका पूरी हो पहली सी, साः पापान् श्रीकृत्यने ३वं कर्माने समावा व्याप-'विकास है अने सीमान्यको नात है कि पूर्ण असकी बहुत कही प्रतिहार पूर्ण कर सी। यह भी यहा अवहर हुआ हैंड करी कुरुप्तर अपने कुल्के क्रम नाय गया। मामा ! महेश्य-रोजने मुख्यमरेजे साम्बर केम्बरओवड का वी पटक है समारत है, इसमें परिच्य की संबंध नहीं है। अर्जून | मैं से सीनी लोकोंने तुन्तरे मेरवा किसी दूतरे पुरुवको ऐसा नहीं देखान, को इस लेगके जान स्टेड से लोड । तुन्हार कर और मराधान का, इन्द्र और काराओं प्रतान है। आप अवेतरे हुमने जैसा पुरुवाने जिला है, ऐसर कोई भी नहीं कर सकता। इसी क्यार क्या इस अभू-काध्योसींक कर्मको पर असोने हो पुरः तुन्दे क्याई हैगर।'

अपूर्ण कर—'मामा | मा में सुमारी हैं क्या है, विश्वार में मिना पूर्ण मी। तुम विश्वक सामी हो—रहमा है, करवी विश्वम होनी आक्षण ही क्या है?' अपूर्ण हें तुम माना है, करवी विश्वम होनी आक्षण ही क्या है?' अपूर्ण हें तूर माना माना होनी अपूर्ण हों को है माने हों में मोना माना हों में माना है। में माना साम स्वार्ण कार्य माना है। में माना है। में माना हों है से भी माना हमारे माना हमारे माना है। में माना हों है से भी माना हमारे हमारा ह



कार है इसके कार अंकारों अस्त-कार तथा जाता गई पहें हुए हैं, किसो का समझीर का नहीं है।'

इस अवार संवारक्षिका रहीर करते हुए करतार. कुमाने सकारेके स्थव अधन प्राकृतन प्रकृत कराया । दिहर अन्यासक्ष रामा चरित्रीको पास का उन्हें प्रसाद काने का—'नारक । सेवानको नात है कि अवका शह नारा गया: इसके रियो आवनो स्थाई है। आवके होते कानि सबनी प्रतिक पूर्व की-व्या को पूर्वका किया है।" का सुरकार राजा मुक्तिहर राजने कुद पढ़े और बीक्सा राजा कर्मनको पने समाचार जिले । उस समय वे आरम्पूर्क उपक्री हर अस्तिओं भीत हो थे। ये केले—'कालनवन अंक्रिया । आयोः मुक्तां यह जिन समायार सुनवार धेरै आरक्षी होना जी है। वातवमें अर्जुनने वह अञ्चल काम फिला है। सीमानको सात है कि आप मैं आप खेतें म्बार्गानकोस्रो अस्तिकोऽ भारते एक देश रहा है। यह सार क्या हुन। कि पाने कहान बरा गया। हुन्या । आयो क्रम सरकित होका कार्यी को जनस्वत्रका क्रम किया है, इससे मुक्ते वर्षी ज्ञातक र्ख है। अन्य से एक एक प्रवासी हरते दिन और दिलके शतकारों हो तने करते हैं। जनहोत् । को काम रेमकारोमे की की हो सकता था, उसे अर्जुनी आवता है कृति, वस और परस्कारने सम्बद्ध किया है। का चरवा क्यत् अध्यक्षे हे कुमाने क्यते स्टब्ने क्यांश्रकेतिक काचि



रिश्त हो सब-होशादि कार्योपे प्रमुख हाता है। यहके यह सहत इस-इच्छ इक्टबंको निवय-अञ्चलका छ, आयो अनुष्कृते का पुनः कनल्ये काले काल हुआ है । अस्य सम्पूर्ण खेक्टेकी सुद्ध कार्यकाले अधिनाकी परवेश्वर 🗓 अन्त 🦸 इन्हिपोनेंद्र अधिद्वारत है; जो अन्यवद दर्शन क बस्ते हैं, उसे कभी चीह नहीं होता ! जाय पुरस्त-पुरस्त हैं, काम के हैं: देवताओंके भी देवता, गुरू हुई सनावन है; के लेन अलबारे प्रस्थायें माने हैं, ये साथी ओहमें नहीं बढ़ते । हसीकेस १ आप आदि-अन्तरे रहेत, विवृत्तिवासा और अधिकारी देवता है; को आपके करत हैं; वे को-को संबद्धेंसे पार हो करते हैं। साथ परव पुरानन पुरुष है, परते भी पर है, साथ परवेशकार प्रश्य सेनेकारे असको पुनित साह होती है। कारों के विकास पंक्र पान करते 🗓 जो सभी बेटोमें करने बतते 👢 इस न्यूक्ता श्रीकृष्णकी प्रत्य रेकर में अनुस्य कार्याय ऋत करिय ह पुरुषोत्तम ? आप परमेकर हैं, ईक्क्केंब्रे ईक्क हैं: पक्-पढ़ी तक मनुष्योके भी हंबर है। अधिक क्या कों-से काके हंबर है, अनके भी अपर हो ईक्टर है; मैं आपको नामकार सारा है। मायद ! अस ही सकती हत्ती और मानके पारत है: सक्ये अस्य है। अस्या अनुसर हो। अस क्यानके

नित, हिंतु और सहक हैं; कायब्दी सरवारें चानेले वसुवासी सुवादर्वक असी होतो है। मन्त्रम् । अचीन महर्गि कर्पन्यंत्रमा अवन्यं परितेषां जननेवारं हैं; उन्होंने कुछ हित बहुते अध्यक्षेत्र प्रमुख्य और प्रायमका मर्गन किया सर । क्षीता, हेकर, पहल्को कहा और मेरे विश्वयह म्यस्मीने भी अनुबंध महिनावा गुल्य किया है। आप निव:स्वरूप, पराक्षा, साथ, साथ तथ, कारणनम्ब तथा समाहे आहे. कारण है। आयोगे इस स्टायर-व्यानस्थ नगर्यो सुद्धे की है। बन्द्रोश्वर । यह प्रत्यकाल व्यक्तित होता है, वस समय यह कार्य-कराने सीत आध परवेक्त्यें ही सीथ हो पाता है। केंद्रेके विक्रम् अध्यक्षे काता, अवस्था, अस्मार, पूराहर्स, व्यापन, करना क्या क्रियतेपुरू । आहे नानेसे पुकारते हैं। अक्टा पूज पूर है, अस समये आहे बतान और इस सामाहोद काली है। अस्य ही परण देश मारावान, परपासन और हेक्ट है। प्रान्तकार बीवरि और मुद्रश्वकोंके अध्ययक्त मानवान् मिन्यु भी जान ही है। आन्नेर क्यानो देखार भी नहीं काने । हेरे कांनुस्तानक साथ परवासको पूर्ण सामा सका करावा है।"

पुनिश्चितक इस जातार व्यक्तिय जनकर सिकृत्य केने---'वर्णश्च ? आपनी इस व्यक्ति, साम वर्ग, सामृता इस्य सराव्यके ही क्षणी अन्यत्व कार्ग भंगा है। सीमार्ग इस्यापन, व्यक्ति, केने, कीमता सन्य क्षणीय वृद्धिनें कार्ग कोर्ग की अनुनिध समाय नहीं है। इसीने अन्यत्व कोर्ग कार्ग सम्मृतिने इस्योगाका संस्था कार्ग्य विश्वश्वासका समाया कार्य कार्य है।'

व्या सुनकर वृतिद्विरने अर्जुनको गते क्याचा और उनके व्याचन क्रम केलका क्रम्यानी होते हुए क्या—'अर्जुन । तिये क्रम्यांक क्रमूर्ण केलक की नहीं कर क्रमते थे, व्या क्रम आज पूरे कर विकास है। सोपानका किल्म है कि इस समय हुन्तरे विकास पार कार नका, जन्मकाने पारकर कृते अपनी प्रतिक्र पूरे की।' स्वाच्यार, ब्रुप्तीर पीपाने और क्रमानिने भी कार्यक्रको प्रवास किया, उनके हुन्त व्याचन्द्रेतीय सम्बन्ध्यार भी थे। अन होनों पीरोको क्रम नेक्सर कर्ने हुए देख कृतिहिरने क्रम्या अधिकान विकास ने केल—'अस्म कड़े स्वाच्यांकी क्या है। हुन होनों कुळी विश्वयों हुंए। हुन्हरे मुख्यमोनों अस्पर होनावर्ग और करांचर्या परावर के वर्षे । अनेको क्रवानके क्रवांचे क्राने कर्मको पूराबा और एका प्रकारो भी भेर भनावा। अस सन्दें सक्ताल देखकर पूछे नहीं जनतात हो की है। कुमलेन मेरी बाक्सवा पहल करते और मेरे बाँत चौरवके क्यानों वैते चुते हो। संसम्पर्ध तुन्हारी कथी हर नहीं हेगी, हुण | बद्दे सामकृदे साम पुद्धमें पर समाचा।

[ क्षेत्रो विलक्षण वेरे बक्षणेक समुख्य हो । सीयान्यरी ही अन्य तमें की करते देश का है।

बोलसेन और रक्तानिसे देशा बहुधार धर्मस्वये उन्हें सिर यहं क्रमा और आन्मकें और महने रूने । राज्यू ! सा सार्व पांच्यानेकी सम्पूर्ण केंच आरम्पना हो गयी, फिर असी

# तुर्योधन और झेणाचार्यकी अपर्वपूर्ण बातबीत तथा कर्ण-दुर्योधन-संवाद

का क्योंका श्रीप सहने सार, जानी दक्त की वर्गनेत है गरी: अब ब्राडोन दिनव प्रतेता कावर करा साथ कारत रहा । अस्तिन, भीवनोत्र अपेर सामानिने कोरनानेनका महा भागे लेकर कर करने है—यह देखनार जाना लेकर महास के गया, आंके पर आर्थे । यह सोयने सरा—'का पूर्व्यापर अर्थाओं सरका कोई केन्द्र को है। यक अर्थाकों क्रोस कर असा है, का बचन क्लो स्वरूप होनावार्य, कर्न, अक्रमान् और कृष्यवर्ण के वह वह यह । आक्रो प्रकृते उन्होंने इतरे हानी सहस्रीयोध्ये इतवार निन्धराज्या वर किया, विता परेडी भी उन्हें रोगा ने सामा । समा । समाधी हरानी क्यों सेनाको पान्कनोने इर शराओं नह कर करन । निराने घरोरो कारे प्रक्रंप रेजो अस-सक्तेची हेनारी बी, किस्से परक्रमध्य शासन से संविद्या प्रचल करनेवाले संन्यानको रिनकेके सपन सपना, वह बलेबो के अर्थने बुद्धों पराता कर दिखा।

भूतान । होरे चपत्कर अवतन करनेवाल आवक पुर हर्षोंका का हत ज़कर सोको-सोको कर-वी-का कह कामुक हो गया तो आवार्ष होलहा रहीर बारोके हैं ले क्लो पर गय और अने धीरणोनचे बान नेपना सारा तथावार सुन्तवा । उसने बहु भी बताया कि संसु विकास हो को है और औरत अवस्थित क्यूज़ों का ये हैं। दिन कहरे हमा—'अवार्ग | अर्जुन्दे हमारी स्था अर्थादिको सेनास राज करके आपके तित्व सक्ताका भी का का कार। और । प्रिकॉर्प को विभाग विद्यानिक क्रांत्राते अपने प्राप्त प्राप्तार पारतेकारी पा ती, जा जनारी कार्रेस प्राप्त pu कैसे कुछ सकेंने । यो पूजरा इनले तिने इस प्रतिको पीतन बहुदे थे, वे सर्व कुरकारका ऐकाँ उन्तरका

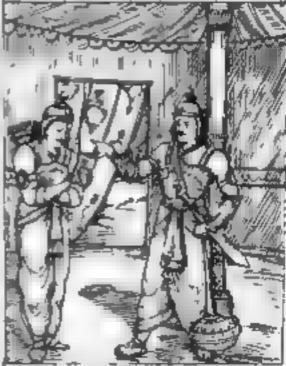
स्तान बहुते हैं—राजर । क्याबके मारे कांग्यर कावकर । जुनियर को थी है र प्रथ प्रकार कार्यक नियो नियोका संहार क्रमें अब में हेकर कर अध्येत का करे हो भी अपनेको चील की का समान । में जानागात एवं कील है, अपने सने-कार्यकारी की होत किया है । उसे ! सुवानवेते प्रकारके केंद्र क्रिके पूजी पार क्यों नहीं गयी, विकास में क्यों में सम्ब अता । के विकास लेक्स्पुटन होता सामसन्धान को है से बदाने को को, का मैं अनकी दक्षा न कर सकत। बाजीकरण, आरम्बर तथा समान्य सुद्धीको नरा वेशना ची अब जीवित स्थेते को एक साम है ? प्रमाणीयों में के अवर्त । वे अपने पत्र-भाषारे क्या कार्त-नामसे करको असे प्रथमधीयो, जासमधी तथा फोसी संगर्ध प्राच्या सरकोर सरको रहते अविका बारक है कि अन में क्षाकांके साथ सन्दर्भ पासका एकाओंको नाएका है कारिक कार्राल्ड, अस्तर्क को लिए मेरे निर्म कुछ कार्रा न्यानी अर्थको प्रकार अच्ये अन्य को कृषे हैं, अन्ते से सोवाने क्ता कर्डमा । इस संस्था की स्कायक भी मेरी पर्वा करना न्हीं करते। औरोधी से सात करे हैंपिये, कर्न जार इसले मोद्यो क्रीया प्रत्ये हैं। अर्थन अस्त्या भारत दिल्ल है थ, इस्टेनिको ऐसा पुत्रत है। इस समय को मैं केवल कर्णकी 🛢 देता देवता है. जो सन्ने दिल्ली मेरी निकय बाहरा है। जो वर्ध विकास डोक-डोक प्राथमें किया है उसे विकास कायपर राम्य केर है, अस्तर की कार केंग्न है होता है। नपहन, चरिक्का, अर्थनात, जिलि और कारति आदि नोल मेरे लिये बहुने को भूते। उनके किन अब पूर्व इस जीवनसे कोई लाम जो है: जर: ये भी जोई करा है, यह वे प्रश्नेत कारे हैं। अन से केमन क्यानेंद्रे अकरों हैं, जा हमें अनेको अस्य संस्थितः

उक्तू । कारके पुरुष्ठे कही हुई सारे मुख्या आसार्थ

होग मन-ही-का ब्यून दु:सी हुए। में ब्रोड़ी देखक क्यबन कुछ सोपारे रहे, फिर अवन्त्र मानिक होन्हर नोले-'हुनोंका । तु क्यों इस प्रकार अपने कान्याओर कुते होद तह है : मैं को राज ही हुतारों बद्धात आपते हैं कि अर्जुनको बुद्धाने मीतना असम्बद्ध है। बिन चीन्यनियान्युब्धे समावेत विपुरुषका सर्वतेष्ठ और प्रत्यक्षते थे, ये भी तथ करे करे के औरोने क्या आहा १वें ? हुने का बूजा केरण जात्य मिन्य था, का समय स्थितने बाह्य वा-- 'बेहा क्वेंबर ! pa कौरव-समाने समुनि को वे रासे बेक्ट रहा है. इन्हें पतान न रान्तुले; ये एक दिन तीयो बाज का कार्यने । ये ही करो तक अर्थुनके क्रमते वाल करका हुने का के है। का है। मितृतकी बात तेरी सम्बद्धने नहीं अतनी । मितृतकी बीत है, महाना पुरुष है, अनुदेने हेरे वारणालके हिन्से अन्तर्भ वाले बाई भी, मिलू हुने विजयके अल्लासने अल्लुटी का ही। आस औ मह प्रमंतर लेहर मता हुआ है, वह अने वक्तनीर अशहास्त्र है परंग है। में यूनों अपने दिनिये निरोके स्थापन क्षकारी अमोरका करने कामान वर्तन काथ है, वह बोर्ड ही समयमें होजनीय इसकते जात है जाता है। बहे नहीं, हो एक और पदा मारी अन्याम किया कि इसलेगोंके सामने क्षेपरीको सभावे सुराधार अवदायित विद्या । वह आ सुरावे क्रमा हां है, जब प्रकारके करोंका प्रतन्त करती है; जा इस स्वयानके केना नहीं हो। प्राथमीकवा । इस कार्या है पद बहुन करन प्राप्त हुआ है। और पढ़ों पढ़ बहुन जी निकास में परलेकने तुने इसने भी अभिन्य एक चोपन बहुत । पायान मेरे पुरसे शामान है, से ताब बर्नवार अवस्तर करते राते हैं। मेरे किया कुरारा कॉन मनुष्य है, को प्रस्तूक स्वयुक्तकर भी उससे बेह करें ? क्वेंबन । ए के नहीं कर पता कर करां, कुमानार्थ, इसके और अकुम्बाब्य—ने तुल से ब्रोडिय है: फिन फिन्युएककी पृत्यु कर्षे हुई ? तुम सकते विश्वकार को मनो नहीं सका रिन्या ? राज्य सम्बद्धा विश्वेषाः पुरस्का और सुप्रपर ही अवनी जीवन-पहाला नरेसा दिने केस का से भी जब अर्जुनके हामसे उसकी रहा न की का सकी हो 🐋 राम रापने नोमनको शहाका भी कोई स्थान जो विकासी हेता । सही बर्ध-बर्ध प्रदार्शकांके बीच दिव्युक्त करहत और धूरिकका मारे गये, बड़ी ह किसके क्यानेकी अल्डा करक है ? जिन्हें इन्युरादेश सन्पूर्ण देवता की नहीं कर शबके में उन घोषातीको अवले कृतुके नुसर्वे पह देखा है, तकसे बही रोधना है कि अब यह पूजा तेरी नहीं का सकती। जा देखे, पांचनी और सुक्रमोकी सेनाएँ १६६ आप निरम्बर महाना सही जा भूरी हैं । क्योंकर ! अब में प्रशास एक जोको करे

विका अवन करण नहीं उसलेना। आज युद्धों कहे कर्न कर्मण, जिससे तेय हैंस है। मेरे पुत अवक्रमधारों कामर क्षण कि का पुद्धों अपने गीवनकी रहा करते हुए वैसे की है सोवकोचा संहार करें, उन्हें जीवित न कोड़े। स्था, हर, स्था और स्थानका आहे, कापुन्तेमें स्थित रहें, वर्गतकार कर्मिक है काप्यार अनुहान करें। कापुन्तेमें संदूष्ट रहें। अवनी वर्षिक अनुहान अन्या स्थान करें, अवकार कारी न करें, वर्गीक से अधिको स्थान्ते करता हैंवा की हैं। राज्य ! अब मैं बहारीकारके दिले कापुनेमों प्रवेश करता है। कुले प्रवेश क्षण पुंचानीका आज प्रतिनें भी पुत्र होता! वेस क्षण अस्ति है से सेनाको एक करता; क्ष्मोंके कोको को हुए की से क्षण पुत्रानीका आज प्रतिनें भी पुत्र होता! हेस क्षणार आवार्ष होना प्राच्या तक सुक्षपोंसे पुत्र करनेके सिले कार हिने।

आक्रकंडी नेतना पासर क्योंकाने भी कुछ करनेता है। विकास किया। उसने कार्यके बद्धा—पेत्रके, डोक्स्थाकी सहस्ताको अर्जुस्य होम्साकर्वका मुद्द वेशका स्तर केळालोके प्राप्तने ही हिन्दुसावका नय क्रिया है। वेशी



अभिकारिक संस्थ अर्थुनके हानों पह हो गयी, सब कोही-सी ही कथी है। यदि इस चुक्कों आवार्य होन सम्बंद्रिकों ऐक्कोब्सी पूर्ण कोशितक बतारे तो वे सावक प्रथम करनेपर भी अर्थ कुंचेह व्यक्ति नहीं तोड़ सम्बंद्री थे। किंतु तो हो होनको परम दिन है, वर्षी को आवार्यन क्वाइकको सम्बद्धन हेकर भी अर्थुनको व्यक्तमें पुरानेका मार्ग है जिया; वर्ध उन्होंने पहले हैं हिन्दुरुवकों पर जानेकी जाता है ही होती से अवस्थ है अनुवर्णेका कृत्य पढ़ा संदार वहीं होने बाता। विद्या | व्यक्तक अवसी पीकारकारें जिने पर जानेको तैयार या; विश्व पुरा अवसने ही होगाड़े अन्तय पायर जो रोक विस्ता। जानके पुराने विश्वपेत जादि मेरे पढ़ा भी प्रश्लोगोंके देशके-देखते सीमरोनके हामसे मार्ग गर्थ।

कारी वहा—वाई ! हुव काव्यक्ति तिया न करे; ने से अपने कर, प्रति और काव्यके अनुवार अवस्थे की परवा म करके कुद करते ही है। अर्जुन क्रेक्ट करदान करके सैनाने पुरा नने ने, इसलिने इसने करका कोई क्षेत्र में नहीं देशाह। मैंने भी अह राज्युक्त क्षान करवा कहा वहा

ज्ञान किया, ज्ञानि विस्तृतक वास नकः इस्तिन्ते इस्ते ज्ञानको ही ज्ञान संस्कृते । वनुष्यको ज्ञांगसील क्षेत्रर ज्ञान विश्वपृष्टको ज्ञाने वर्तकार प्रस्ता वस्ता प्रातिने, विदेश में देखते ही ज्ञानि है। इस्तेगोने व्यय्त करके प्रात्मानेको काम, उन्हें भरनेको किय दिया, स्टब्सानुस्ते कामक, सूर्वे इत्या और एक्नीलिका स्वारा देखत उन्हें करवे के केशा। इस ज्ञान ज्ञान वस्ते इसने उनके ज्ञांस्त्ररूष के कुछ विका, जो अध्याने क्ष्मां कर किया। विरू की क्षमा विर्याण करकार वृत्व ज्ञानकार कुछ ही करते हते । स्वत्र । इस ज्ञान वर्षा और कुर्वेक्न व्यूत-सी करो कर के वे, इसनेको राजपूरियों को प्रायामेको सम्ब विद्याणी ही । विरू को अध्यक्त पूर्वेका करकार करवा क्ष्मा क्ष्मानेक सुद्ध विद्याणी ही ।

#### युधिष्ठिरके द्वारा दुर्योधनकी पराजय, होणके इत्थसे दिक्षिका वध तथा भीमके द्वारा कलिक्न, भूच, जयरात, दुर्मद और दुव्कर्णका वध राज्य को है—सक्ता । सकत और बीच कीटे | काम प्रोधिक की दूर काम क्षिक्रक वर्गकानीके

सञ्जन करते हैं-नकाराम । परक्रमा और कीरव बीटेरे परापर बाब क्षेत्रे करा । सभी बोजा एक-इस्तेको करा, सीमा और वासियोवे बीमका प्रमानेक केल्ने रूपे। केडी ही देशने पुरस्का कार क्षेत्र भागेकार हो गया, एकाकी गरी का कारी। उस समय सामके बनुबंद पुत कृतिकाके बीचे बागोकी नार सामार पाकार और इमर-उमर सामने सने। काने प्राथमोंने निक्रित है अन्यवसीनियां करावानी हेने रुगे । देश रूपक आयके पूज्ये केसा परकाम किया, केस क्षीरक-पश्चके जिस्सी भी कारे भीरने नहीं किया। क्रॉक्सके प्रंग भाष्यकोगाको यह होते देश प्रकार कीर श्रीवरोगको आगे करके आरह रह प्रो। असे मीनसेनको सा. मकुर-सक्तेषको सीच-सीन, विराद्य और कुल्को क:-क:, विरक्षभविको स्वै, शृहसुरुको स्थार, चुनिश्चरको स्थार और केमाय तथा चेत्रै देशके चौजानोच्ये जनेव्ये तीने व्यव्येशे बीच क्रमा। फिर, सामधिको चीच, क्रेफोके प्रतेको र्धीभ-तीम और पाटेसामध्ये च्यून-ते चलोहम पीचार विकास किया। इसके अध्यक्षे भी रीक्यों केदाओं और इन्हें हिंगियों कार निराम: वह शब्दानेकी सेवा रमध्यिको धाराने लगी। यह देश एका मुनिश्चित प्रतेकने मरकर आपके पुरुको पार करनेको इन्हारो उसकी और यहे। एवं कर्ने तीन धानोते धर्मकको सार्वको धाना कारों एक कानमें उनके कर्मको कर दिया। एक पुरिस्तिने चील ही बुसरा बन्त लेकर से पालामें त्यांबनके की बनको तीन दुख्दे कर दिये। बिन दस तीहरे कायकोचे को बीच

केवकर पृथ्विते सथा वर्ष । व्यानमार वर्गयको दृशीवनया १६० और वर्गकर काम करवाना; अस्ति चोठले पुर्वापनको पृथ्वी का वर्ग और व्यानको कैवनयर शुक्क गया । कोई देखें का क्षेत्र पृथ्य से अस्ते पुर: सुद्रम् वर्ग्य क्षाप्ते रिच्य । इस्ते विकासिक्को पाइकर वीर तृति कृतिको पास सा व्यान को असे देख अस्तान क्षेत्रमे कृतिकारी रक्षाचे स्थि क्षेत्रमे है येक रिच्य । किर से आवसी और बाहुसोबी संकारोने बहुन् संसाम होने सम्ब ।

ता समयं सर्जुन, सामानित, युधिहिर, चीनसेन, मेहला, स्वक्रेम, नेनासीता मृहयुत, राजा निराट, बेक्स्य, मस्त, इस्त्रम तथा राजा हुआरों भी होमामार्थिय बाजा निरमा। डैक्ट्रिके संख्ये युव और एक्स्स कारेक्स्य भी अपनी सेना सामार्थे राज्ये प्रवासीने भी विकासीको आगे राज्यार डेक्स्य ही अस्त्रमण निरमा। इस स्वक्रार पाच्याम-प्रकृते हुओ-कुसे व्यापनी भी एक ही साम आधार्य होमानि और स्वेट पहे। जिस समय से सुरसीर बुद्धोर रिस्ने पहुँचे, पर्वकर स्व अस्त्रमण हो नवी थी। उस समय क्षेत्रमणार्थ और सुद्धानोंने अस्त्रम व्यापक बुद्ध होने समा। हार्र संस्त्रपण अस्त्रप्तर हा क्लेन क्यापन नहीं हो चली थी। उस प्रदेशकों देश स्व अस्त्रमणे सम्ब स्वेन क्यापन हो हो थे थे। स्वश्रीवारी धून राज्यो क्यापन स्वापन केंद्र नवी थी। राविकारको उस और पहले व्यापन और प्राण कोवने नाकर एक रहन है अवार्थ हैनवर पूर पहे; बिंदु आवार्थि सम्बन्ध को-वो अवन व्यापकी उसने, उनमेरे कुक्को से उन्होंने कनकेक केव दिवा और वार्की सम्बन्धे पार प्रशास । होन्से अवेत्रो है इक्टों इसी, इस इसार एक, कार्कों केवर और अस्त्रो पुरस्तान कार कोते । पूरपुत्रके पुत्ते तथा केवरनोको की होक्टकों अस्त्राह कर देसकों। प्राण्ड कर डेसलोक पहेंगा किया।

इस अकार जेजाकर्यको छन्-नेयाका संस्थ करते देख अन्तर्य याना छिति सरावस स्रोक्त को हुए इनके पुरस्करिने शा उटे। पाण्यवस्थाके पहार्थको अन्तर्य देखा जेजा ने व्या माण धारकार उन्हें पाण्य वित्याः राज्य वित्येन को तुरंत प्रसान वित्या, उन्होंने तीस बाजोंसे होणको पाण्यव करके एक जानको अनके सार्विको को पार विरावा । जा होणने उनके कोडो और सार्विको बार उत्तर नका निर्मिक पुनुद्धनिक्त विरावदे भी बाहरे असार का दिया । इतनेहीने पुणीकरने होणके वित्ये होल हास्य सार्वी नेका । उतने अस्तर्य का बोडोकी सार्वांतर हामने सी तो होणने पुन: प्रावृक्षनेवर काका विक्या ।

इतर करियूनाकका पुत्र अपनी सेनावे राज चीकरेक्स क्रा इत्या पद्म । भीवसेनने पहले उत्या दिना करियूनाकको क्रा इत्या था, इत्या उत्यो उत्या अस्त राज्युनाकको क्रोध च्यून वहा हुआ था। उत्यो भीकको च्यूने परिव वालांने व्याव कर्मी दिना क्रांस वालोंने नीच अस्त । इत्यो च्यून उनके अस्ति विद्योकको ची तीन क्रांस नारक्त व्याव स्थान उत्यो राज्यी क्रांस कर इत्या। तम से चीनसेनको क्रोधकी स्थान म रही, ने अपने रचने क्रुक्त असिके राज्य च्यून स्थान हिन्दा। यायुन्यक भीव अस्त्या करने थे, उनके क्रुक्ति कर्म क्रांस अस्ति हान राज्युन्यक भीव अस्त्या करने थे, उनके क्रुक्ति कर्म क्रांस अस्ति व्याव सामे पहिल्ला स्थान प्राप्त । उत्याव क्रुक्ति कर्म क्रांस क्रांस व्याव सामे पहिल्ला स्थान क्रुक्त स्थान क्रिक्ट । उत्याव सीमसेन अस्ति राज्यो क्रिक्ट सुनके राज्य क्रांस क्रांस । इत्याव सीमसेन अस्ति राज्यो क्रिक्ट सुनके राज्य क्रांस क्रांस । इत्याव

भी निरुत्तर करकी और जान पान रहा या: प्रहानमी भीको सरको भी जोतो कर अस्त । येन वे वधारतके रक्षपर को और मिक्कर करके उसे कर्ने हाको एक चौठा समाजा। इस अकर कर्मक सम्में ही उन्होंने को भी मार अला । स्थ काने चैकांका एक सुवर्णको स्थिता उदार विश्व, बिद्ध चौचने हैंतने-हैंतने जो कुथमें प्रकार किया और हैतर जर्मको कर्मक है करा। कर्मको और जाती को उस प्रविक्रको अनुविक्तं कारणी कार निरामतः। इस प्रवास साहधून परवाली पोल्ले पुरुषे का बहार पुरुषायें बरके पृतः अधी पान्य आरम्ब हो आवनी सेनावर भागा विकार होनेको परे हर कारकार चीन चीनको असे हेल आएके पुत्रोने पाय माधार अले कानेले केन्द्र किया और मानावर्गने अहे अवकारित कर दिया। यह देखा चीवने अपने बाजोते दुर्वहोत सार्गांव और केहोको जनसंख्य पहुंच। दिव्य । कुनंद दुव्यागीक रक्षण का कहा । अन्य द्वार ही राजपर की हुए बोको पहाहबीने भीकर कथा विश्व और उन्हें बीचे बागोंसे वीयरे रहते । सब वीकोको कर्न, अवस्थान, क्रॉक्ट, क्र्याकर्स, क्रोक्ट और म्यूरियांच देनले-देशने कृदंद और हम्बानीह राज्यो व्यक्तमें कारकर कुळांचे केवा किया। मित आयोह का होती पुर्वेको पुरेको कर-कारकर कवुकर निकास आस और को केरते गर्वक की। का सकत औरक्सेकर्ने इंद्राब्दार क्रक नवा । श्रीवर्णी ओर देशका राजस्त्रीय कक्को थे-'वे प्रदेश भी, भीगके कामे सम्बाद जनवान का है, को बर्राकोधे परा कर को है। जालाम ! को कहाकर तथ एका भागने हरते। समये केल का गर्न थे, सभी अपनी क्रमारियोक्ट रेक्ट्रके चनाचे रिप्ते वाले थे। उस समय हो आहारी एक साथ नहीं र्वको थे, एक सबेको ही पान को थे।

इस तथा जन क्योगनाज्याने भीनने चौरवसेनामा पासी-चरित संक्रम किया। इसके अनुस्त, स्वाहेब, हुन्स, क्रिस्ट, केव्यम और राजा मुक्तिहरको बड़ी क्रमास्ता हुई। से चीननेनको क्रांसर करने समे।

## आचार्य होणका आक्रमण, बटोत्कच और अश्वत्वामाका घोर युद्ध

स्ताप रक्ते हैं—जातकिये अति एका सोन्यक्ता स्तोध बहुत सहा दुशा था; इसका सारण या था कि उसने उनके पूर पृत्रितवारों, काकि या अन्यान ३६ वास्त्र करके वैद्य हुना या, गार करन था। सेन्यूटने में बाल म्हरूत सार्वित्यों मींन प्रस्ता। किर सार्वितने भी उन्हें में सार्वोंने पासर किया। सारवित करवान् वा और उसका स्नूच भी जून नकतुत कः उत्तः उत्तकी पास्ते सेम्ब्स नेतात प्राचन हो नवे और रक्ता चैत्रको पृथित होता गिर पहें। यह देश उन्तक करनि उन्हें रमपृथिते हुर हुए से प्रचा : तब सामित्रक कर करनेती हकतो जावार्व होन जाकी और इन्हें। उन्हें जाने देश पृथितिर साहि चैर सामित्रको प्रकृति निन्दे उसे नेत्रकर कहे हो पने। तदस्यर, होज्यक सम्बद्धनिक साथ युद्ध आरम्य युवा । वेनने सम्बाननेकारे कानेले अस्थादित कर दिया और मुस्स्तिको की सूम सम्बाद विज्ञा । किर स्टब्सिको इस, शृह्युक्तारे मीत, पीन्स्तेनको मी, ज्युक्तारो शीव, स्वादेकको आर्थ, विज्ञानो कर, सुक्तारे स्वर, पुन्तवन्युको तीन और सार्वकार्यो क: साल सम्बाद सीव दिया । इसके कार्य अन्य चेन्द्राक्तीको को सामाद करोड में मुसिद्धिको और को । उनके सम्बादी चेन्द्रो आकंश्य करोड में मुसिद्धिको और को । उनके सम्बादी चेन्द्रो आकंश्य करोड के स्वरूप्तिकार सामाद का विक्रावी मान्यो स्वर्ण । जो-को चीर अस्यावींक सामने का समाद समाद मानक चारावा करावार करोड़ सामा पुन्तीचे सामा करों से । इस अकार क्षेत्रके सामोशे आहार सूर्व पानाकोन्स कर्युनके देवती-नेकारे कानकी प्राच्या सामाद

यह देशकर अर्जुको औक्रमको सहः—'नोकिए ! अन आप अन्यानीत रक्षणी और प्रतिनो । यह सन्यान्ते भोडीको होयके राज्यी और होता । चीवकेनो भी अपने सार्गय विक्रोकाको अञ्चल हो कि 'जुले होकोट प्रकृत कर है। पार्त (" जन्मी जाहा पाप्प निर्माणने भी अर्थन्य मेंके क्षणना एक कहाना। अन क्षेत्री प्रमुखीको सैन्द्रर होका होगरोनाची और उस्तो देश प्राह्मण, प्राह्मण, प्राह्म, पेरी, महाराज, महेराना और केमान महार्थिकोने अन्तर जान हैना । महाराज : स्थानका कहाँ रोग्डे कहे कर देनेवाका होर संस्था हिन्द्र गाजा। अर्थन और चीनमें अन्तरे प्रत्य रविन्योंके पार्च सन्दर्भा लेकर आपकी सेनाके दक्षिण और उत्तर प्रापने केंद्र क्रम दिया। वन देनों पीरोको कई अवस्थित देश स्थानीह और पहुच्छा भी जा नने । जुन्तिवाके करते उत्कारण बहुत विका क्रमा था, जाने सालविक्तमें अपने देश को चार करनेका निश्चय करके जायर क्षेत्र किया। वा देख भीगरेनके दुत्र क्षत्रेकको क्षेत्रमें परवार जनरे प्रमुखे रोबा । क्योरक्का एक लोका बना दुश्य का, उसमें आठ पहिने के यह बहुत यह और पर्वकर का, अर्थने कैनकर यह समारमानाद्री और परत । एक अर्ज्योतिनो सहस्रो सेन्द्र इसे बारी औरहे के इद थी। किसीके क्रूबर्व जिल्हर या ते किसीके हाजने मुग्यतः कोई पत्काकी ज्यान हाथमें केले 🚥 और बोर्ड वृक्ष । पटोन्कव असम्बन्धको स्थानकी नगरकारी पारि जन कहर था। सम्बे हाक्यें स्टाने हा पहार कर्यको देशकर राज्यस्मेग चयसे व्याद्धल हो उसे थे। यह व्याद्धाव रामस कर्मनके समान केला था, नही-नहीं क्रांत्रेंसे कारण आका पुर विकास तथा प्रमेशन दिलावी पहल छ । कार क्रिके समान, क्षेत्री बात बारे, बात असली ओर उसे हर.

अपेरे प्रचारची, प्रेमार श्रमक, पेट मेरा दूशा—भूते अस्मी क्षरिया थी। परंत्रक केर ऐसा या, याने कोई सहा यहा गुरू। है। रिक्ने कर कुछा के हर थे। क कु नकर सह हुए क्यर करें सकत राजूने प्रतियोक्ते सह पहेल यह सह क्षा को देखने की जनकरन की बाते थे। राजकरान पटेक्सक्को सक्ने बन्द्र क्रिके उस्ते देख इबीवनकी सेन्द्रमें प्राच्या का गरी, सर-के-सम काले मानूत है को । सा रुवाकोः विकृतको अस्यत् भवन्ति हो सन्ती पुरस्का आसी ्राप्ते । समुख्येको काम होने राजी । दिन हो **का** बाहे ओसी प्रभावेको क्यां आरम्य हो युक्ते। युक्ति होनेसे उस सक्य एक्ट्रोका कर कहर कहा हुआ था। उनके क्ट्रेन हुए स्वेड्रेक का, पुरुषो, प्राप्त, योग्य, प्राप्त, प्राप्ता और परिस आहे, अव-प्रक को करा हो है; यह है पर्वका स्थान हैज़ का। जो देशका क्षीपर-वर्धके प्रधानों, अविके कृते तथा कर्मको भी बहुत बहु हुन्छ और ये सब दिस्तानीकी और काले तमे । का स्थान कुकाल आधियानी और अधारताना **है विश्वविद्या न क्रेबर अपनी संस्कृत क्षा एक। क्षारे** क्टोलककी सबै हाँ क्या अपने कराने ग्रा का है। कारका कह होनेक बर्धाकाको प्रदेशको लीक र रहे.

अपने कर्पवा वालोबा अपने किया। से उनके बरस क्रमान्त्रके प्रधिनों पूरा गये : वह अवस्थानों की स्टेशनें बागार बडोमानको का बागोने सीत झाल । इसमें उसके क्लिक्टोने को चेट च्यूनी। आक्ट चेदिए हेकर इसरे लाक अनोवाल एक चाह हमाने हैंग्या, जिसके किलावेडी और होरे तमें हर के यह पात अवस्थानको तक्षा सरके अपने कार्यका, पांचु अकारकामने बारत कार्यका कार्यके इक्को-रुक्को कर विने : यह नवर्ष क्षेत्रण पृथ्वीपर गैम पहा ( या देश वर्शकानी अपने बार्गाकी वर्गाते अध्यायाको अन्यानित का दिन । इत्येक्टरे क्योग्यनका कुर अञ्चलको मार्थे ३६ महीरा । अल्ले अन्त्रामान्यको ऐसे रोग्ड विच्या, वीसे अभिने नेपाने पर्वत रोग देश है। तम अवस्थानाने एक कारते अञ्चलकांकी कारता. होसे १७के हेगी स्टार्टन, सीमरे विमेनुमा, स्थाने अनुव और करने करों क्षेत्रे नार गित्रवे । रक्कीन हे जनेपर करने लाकार बठावी, किंतु श्रेषकुमारने रोगो तीरते अल्ब्हे भी से दुवाई का दिने : का अञ्चनकानि नव पुरस्कर काराची, किंतु क्षेत्रकारणे उसे भी बारतीसे भागकर निर्मा क्षित्र । निर्मा हो यह प्रत्यकारहीन केवके समाव नर्जन करन हुन्छ कुक्टर आकाराचे करन गया और क्लीरे क्योंकी वर्ष करने तथा। या देश अक्यापा जा व्यक्तवीयों व्यक्ति वीवने तथा । तम वह नीवे आरवत पुनः

कुरते रक्षपर या पैठा । इसी समय सकत्वापाने सक्षानकाँको । मार शहरा ।

अपने व्यास्ताने पुरस्तो अनुसारको इसके करा क्या देश पटेन्सन प्रतेनसं जरा करा सौर सकानको करा सामर सेरा—'केराकुम्बर ! मैं कर प्रत्यकेश पुत्र है, के मुद्दारे कभी पीछे पैर नहीं इसते । स्वत्रकेश एका है और राज्यके समान पेरा कर है । सू इस रकाकुको करा से ख़ मीति-जी नहीं जाने पायेगा । जाना मैं तेश मुद्दा कानेका हीसरा पिता हूँगा !' हैसा काकार प्रतेनते स्वत्य-कार अपने/ वित्रों का महावानी राज्या अस्त्रकार कोनो स्वत्य-कार अपने/ वित्रों का महावानी राज्या अस्त्रकार कोने को को से कि अस्त्रकार को कार निराता था । इस स्वत्य स्वर्ण को से कि अस्त्रकार इस इसरा है सेकाम कर का कर । उस कैने ओरके कार इसरा है सेकाम कर का कर । उस कैने ओरके कार इसराओं से कारो कियागार्थनों कुटने स्वर्णों, को

रमाधियामी अक्षासायके द्वार अवनी वाला जा हुई केल प्रशेष्ट्राचा पूरः आकारणे द्वार जान और दूसरी वाला रचने रूपा। जा एक शेला प्रती का गया; सन्ते सनेकों विश्वार थे, भी कुरोरों पर दूस थे। जैसे प्रकारणे प्रत्ये निको हैं, अर्थ प्रकार का प्रकारों भी पूरा, जाता, सन्तान और प्रतान आवित प्रती पूजा। अर्थ केलो-देखों का प्रकार विश्वासाधा जाता किया। अर्थ क्यां हेले ही वह निरित्ता सहस्य विलीय है गया। इसके क्यां हेले ही वह निरित्ता सहस्य विलीय है गया। इसके क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां सहस्य विलीय है गया। इसके क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां सहस्य विलीय है गया। इसके क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां सार्व्या प्रवास प्रवास क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां सार्व्या अ्वकंशिकों क्यां क्यां

स्त्यमान स्रोधमें परे हुए घटेत्सको सम्बद्धकार द्वित स्त्रां । उनसे आहा होधर अध्यक्षमा धर्म रहा । इसनेक्षिये घटेत्सको आहातिक नामक पाण पानका स्तर्क बनुवको भी पाट स्तर्थ । तब अध्यक्षमाने दूसमा सम्बद्ध धनुव हावये तिथा और प्रदेशकारण सीने प्रकारिको सर्व आस्थ सर हो । अप से घटेत्सको डोकाको सीना नहीं हो. इसने पर्यक्त कर्म प्रतनेको सुक्तरोको सेनाको जहात सी कि 'वीरो ! इस होकके बेटेको शर क्रोडो । अहा को है में वर्षकर एक्स अपि स्वरू-सार किये, पूँच आये अनेक्ट अप सेकर अधुरक्षपत्ती कार्नके रिप्ये हैंदूँ। में अहअस्ताके प्रशासन सकि, सन्ती, परिच, का, सून, पहिंच, करवार, का, विनित्तार, मूसर, प्रस्त, अस, सेक, काल, कावर और मुक्त आदे केर स्तुतासक अख-क्र्योची कर्ष करने स्टे!

क्रेम्ब्यूबर्क कार्यकर प्रकारित बीक्रत होती हैक आयोह भोदा शहा दुःसी हुए, पांतु का सम्बं तरिक भी विवरिक नहीं हुआ। क्यांके सन्तन वीको स्वक्कोंसे उस और संबंध-क्वीवर विश्वास करता रहा। किर करने अपने तीहन क्रमंत्रेके विक-क्योंने अधिवनिता करके राजसीकी केन्द्रका केंद्रार असम्ब किया । अस्मेंद्र वामोंने नायस क्षेत्रकर रक्षांका समुद्रम कान्त्रम है का। अध्यासमा पर व्यक्ति से तथ-से-तथ प्रोक्ते जनका अलो करा दृह यहे। का राज्य अक्रमानाने देता स्ट्राप्ट परास्थ देशाया, जे कुररोके किये नहीं है अवसा का। जाने राहसराज क्योक्काके देवले-देवले अपने प्रामाणिक कार्योरी कार्यार केराओं कारताम् कर दिया। ततः प्रतेशने को ह्यू प्रदेशकाने क्षेत्रोक्षे अपन्य जाँद प्रधायन सामी सक्षयी और सिक्ष्यक कार्य अन्य परियोगानी एक प्रमानक अवनि अकारामाने क्षमा होती । सिंह उसने कुकार यह शहरीन क्रममें पनवं सी और पुर: को च्योगाव्या है बना है। प्रतेशक र



रक्षके अस्तर हो गया और यह पर्णवर अवस्थि कर्णा चेहे, सार्थन, जना रचा रचको धरा करते पृथ्वीने क्रम गर्थन ।

अकारणात्र का प्राप्तन देश तथ चेटा काली जांगा कारों तारों । जपना पत्र पत्र हो जानेते प्रदेशक सामानेत रकार या बैठा और एक प्रकारक बहुत क्रमणे है कवानामानी क्रतीयर सेंचे कामोरे प्रकृत करने सात । हुनी प्रकार पहुंच्या भी निर्मीय होयर होणकुर्वे क्रांको सेहे बार्गामे पोट प्रोपाने राजा। इसको अञ्चलका भी उत्तर प्रमानी बालीकी पर्या काले राज्य और वे केले आको अक्षोके कारे क्यांको काठी होते। इस प्रकार करने बढ़ी नेकीके राज अलग करावस युद्ध केल हमा वा । जर सकर अध्यक्षिको वर्षे असम्ब अस्ति परिवास असरे वित्या, यो कुरवेके देखें पर्यका असलक का। जाने पालक पत्ते हैं मोडे, सार्थन, रम और समिनोसीस प्रकृतियों एक मधीरियो रेपाका क्याक कर क्रमा । वीकांप, क्रांक्रक, पहरूप, पहरू, सहोत, सुनिक्षित, अर्थुन और बोक्स्म की देशके ही या गये। सार्थ्य क्षण्येची चोट सरकर हत्यो तहसीत चर्नाके राज्या पृथ्वीपर च्यान पहले से । उसने सामी

कारोरं प्रकारके मेंकार हरहाक सरकते पर क्रमा। मिर पुरुषे पोटे कई समुक्रका कार सकर विका । प्राप्ते कह वर्गानीय, स्थानीय और क्यानुके प्राप्त विके: किर सम्बद्धको करकेड मेन दिया। संरक्तर हीर कानेने हेनकार्य, एका और प्रश्लोगका यस किया। सम्बद्ध कृतिकारे का कृतियों की का बालोगे प्राचेत्रक अधिन करका हरते का जुले प्राचके क्रमार क्षेत्र काल अनुकार कालक और महोत्सकारी कारीने कार किया। यह महाम् सामा अलग्नी कारो केवहर प्राथीने क्रम प्रमा, स्टोनकम मुर्चित क्रेमर पुनिस्त गिर प्रमा। जो परकर निय क्रमा क्रमान्यर प्रकृत अवस्थानके पराने अन्य रम पर हा। है नया। यूनिविस्त्री संख्ये प्रसार्थन का को। केलर अक्रमान क्षमानेको गाउस कर विको समार गर्वक करने समा। इस समा अन्य कर कोन्बेरे कथा अनुबंध पुजेने भी क्षेत्रकृत्याच्या विश्वेत सम्बाह flow : flog, word, firms, we, word, flow, with रंगते. पर. जपार तथ देवसमेर में अपनावनी अर्थका करने करे।

### बाद्वीक और धृतराष्ट्रके दस पुत्रोंका वस, युधिहिरका पराक्रम, कर्ण तथा कृपमें विवाद और अञ्चलापाका कोप

स्तार करे हिन्तास्थ । अनुस्थान स्ता कृषियोको का क्रो एक कार्य उक्काक संहर कर दिया-यह देशका पुनिद्वेष, ग्रीकोट, सहस्र और संस्थिते हुन: बुद्धों ही यह समाया । संबंधने कार्योक्त र्दोंद्र पक्षों ही संभारत एक अध्यक्ताल हो गये । उन्हेंने बही पर्ये पानवर्ष करते जनकियो जनकीत पर विचा किर दोगों पहाँमें बढ़ा पर्वकर कह होने रूपा। सोनाएको विकास कारणा केवा सामाजिककी प्राप्तकी कीवने प्रतिपतिकों प्रति का कम नारकर प्रचल कर देखा। खेलहारे में अने से साजोंने बीच बाल । यह देश स्वतानि प्रतेयाने यर पर्य और काने समान तीरण का वालोडे सेवाक्सी कन्द्र विकार कारणा भीगोनने सामाध्या पर तेवार क्षेत्रकारे मतावापर एक पर्ववार वरिकास प्राप्त किया, साथ है सामिने में अधिके समान केवरी कर अभी स्तरिक मात । परिप और सन्द केवों एक ही रहन सोन्यक्को हत्वे. इसमें ने मुर्चित होन्दर निर को।

पुत्रके पृथित हेनेज वहाँको तथा किया, है । वर्णकारीन वेथ्या समान कालोको वर्ण करने रहते । चीरते

पुष्ट स्थानिका पह अपन विका और में शानीरी सद्भित्रको सींच सामा। एक स्तीपनकाने कृतित क्षेत्रर जीनकी सामित्र जात किया। अस्ती कोशो जीनकी स्वीप सो और बेक्ट्रेस के गर्ने। किर बोदी ही देखें के क्षेत्रण सामुख्या जीको अस्तर पद्म कोही। इसके अस्तरकी सञ्जीकान विच कही आरम हो गया। में सहसे अस्तर कृत कांकारी जाति कुसीर निरं को।

कहिकके नहें जानेवर जानके नागरा, इंदरण, जानक, जन्मेपुन, इट, खुरण, निरम, जानकी, का और कपुणारी—ने इस पुत्र जाने जानोरों मीन्योनको मेहिल जाने राने। उन्हें देवती ही जीननेन कोकने जान हुटे और एक-एकके वर्वरणानों जान जाने राने। जनकी करारी जीतो जानके पुर्शेक जान-प्रकेश वह पने और वे हेकड़ीन होकर रामेरी पृथ्वीवर निर पहे। इसके जाद वीरवर चीपने आपने प्राथित क्रमा म्यूरिनोजी पार कारण और नामकी प्राथित क्रमा म्यूरिनोजी पार कारण और नामकी प्राथित क्रमा म्यूरिनोजी पार कारण और मारा नाम नेक क्रमुनिनो पाई माराज, हरण, निष्कु, युश्वर और प्राप्ता—ने बीच स्थापनो होते साथे और बीचारेनार मार्गाको वर्ष करने सने । उनसे पेडिया हेक्स कीमसेनने कीम मारा कारणे और उन परिसेको भर उनका। उन कीरोको प्रमुखे मुक्तमे परा देख कीस्कारकोर एका विकासिक हो गये। इसर पुनिश्चित होकर जन्मा, माराव, विकास और अन्तरम विकास मेहाओं के कारवेका कीम विकास हात्य ही नहीं, उनका पुनिश्चित अधीका, इससेन, साहिका अस्क कार्या कीरोका की कार कारों इस पुनिश्चों क्यांनी कारवी परिचा कार्य विकास असीन अपने कार्यों कार्योंनी मोहानोका की वैकारोकाया असिक्ष अन्यता ।

तम अवस्थि पुरने आवार्ष द्वेषको पुनिद्वित्वती कोर जेति।
विज्ञा । अध्यानी अक्षण प्रतेषको जनक प्रत्यक्षणका
प्रयोग विज्ञा, विज्ञु वर्गरावने को की है दिना अध्याने व्यवः
दिया । एवं से होनको प्रोचनी प्रीचा प पहि । प्रयोग पुनिद्वित्त्वर वारत्वर, काना, अस्तेष्ठ, अध्यु और सामित असी अध्योगा प्रयोग विज्ञाः विज्ञु से इससे समित क्यानी अध्योगी दिव्य अस्तेष्ठ अध्योगा प्रयोग पर का सभी अध्योगी विज्ञास कर दिया । तम प्रोची देख और सामान्य अध्योगी इसस्य विज्ञा । यह देख पुनिद्वितने व्योग्य-अध्य प्रयक्ष करके का सम्बोग्य साम कर दिया ।

क्रा प्रकार का डेजावाचेंक अन्य समाप्तर का क्षेत्रे समे हो अक्षेत्रे सुविद्य होचार सुविद्यालक तथ कार्नेक हैंग्ले प्रक्रमान्य प्रयोग किया । इस समय कार्य और और अन्यावार हा गया का। सहस्रकों, काले सम्पर्ध हानी को हो है। उस || | क्रिक्रमधी प्रस्ति हुआ हेत् प्रतिकृति (क्रुक्ता) ही और कार्य कर दिया। तम क्षेत्राचार्य वर्गकारको स्रोकार क्षेत्रको स्थान अर्थिते किये करे गये और काम्यन्ताने प्रत्याने प्रेतानक र्राहार कार्ने लगे । उनके चयने पहारकोत्रीय और चाम करे । इसी प्राप्य अर्थन और भीनतेन स्थियोची नहीं नहीं केना रेकर हेमके पान अने । अर्थने श्रीक्षणी ओसी और भीमने उत्तरको ओएसे होगावी सेनासर वेस कार किया: बिन वे हेर्ने पहें अपर क्योंकी बेकर करने रहे र के का केमन, सुरूप, प्रशास, पान और सम्मा धीर भी सा परिचे । अधीरने सौरक्षीनका संबाद आरम्प किया । एक से प्रोर अध्यक्षारमें कुछ सुक्रात नहीं का, कुले संबंधी की करा सी थी: इसरियो जायको बाब्रिनीचा बेहवा विकास होने एका। इस समय आयार्थ क्षेत्र और अवनेक कुले पायक गोदाओंको रोपनेको बक्त कोशिश की, मिन्दू वे स्थान व क्षे सके।

तब दुर्वेक्से कारि बद्धा-पित ! अब हुन्। इत

पृक्षी प्रमाण न्यारणी जेक्काओली स्था नार्त : ये प्रमाण क्षेत्रण, नाम और प्रमाण व्यारणियों कि गये हैं।' कर्ण प्रेम्स—'पाना ! वैर्थ प्रमाण क्ष्मी : ये तुम्मी स्थी प्रीप्त प्रमाण है कि साम पुक्री परि इस मी पान क्ष्मीय शिक्ष अध्या है कि साम पुक्री परि इस मी पान क्ष्मीय ! सामाण है में पानामी सोन क्ष्मामीय क्ष्मीय ! सामाणी सम्बद्धी अध्या क्ष्मीय क्ष्मीय क्ष्मीय ! सामाणी क्ष्मी क्ष्मीय क्ष्मीय क्ष्मीय ! सामाणी क्ष्मीय क्ष्मी

का वर्ण का उस्ता का का या, उसी साथ सरावार्ण हैनकर केले—'कुछ ! कुछ । कर्ल । कुछ बड़े बहुदर हो । बाँद पाल क्यानेने ही कहन हो भाग, तम यो तनों पानार कुरतार समान है गयें। हम इस्तेर यहा बहुत बहु-बहुबर कर्त किया करते थे: जिल्ह न कर्ती तुन्हास नरासान ही देवत कक है और व सलक मोर्ट कर है समये उससे है। संस्थानी पान्यकोंने कुन्तरी अनेकों बार पुरुषेद को है, बिहर सर्वात प्रथमे क्राप की प्रशामी है। मार्ग ! मार्ग है कि नहीं ? पान नकर्व क्योंक्सको मध्यक्तार विश्वे का रहे के का समय कारी क्षेत्र से बार बार को की और अनेके कर के सबसे बाते भागे हैं। विश्वतास्त्रमें भी सन्तर्ग स्रोपन प्रमाहे हुए में, सही सर्वाने अनेत्रे हैं सर्वाचे स्टाप्ट था। तुन भी अपने कार्योके साथ परका हुए थे। स्थाने अर्थुनार सम्पर्ध करनेकी से जुन्ने प्रति हो नहीं है, बिर अंकुन्यसंक्रित रुपूर्व प्राथमिको सीवनेका राजुर केले करते हो ? भाई | कुरवार पुत्र करे, कुर सींग सहय हरियों हो । जिला नहीं ही परमान विश्वपा कार—की सायुक्तीका प्रत है। घरना अर्थुनके काम कुछारे कार नहीं यह रहे हैं, तमीतक नरम रहे हें: जब इनके कन्मेरे कन्म हे कोचे से सारी धर्मन पूरा कारणे । क्षतिय काक्ष्मणे कर होते हैं; प्राव्यम कारीये द्वर हेरे हैं, अर्थन करूर कारतेने कुर है, सिंतु कर्ण से मनकूरे बोबमेरे ही पर है। मिन्हेरे अन्ते मराठमा बन्नाम इंकाओं संख्य किया है का कर्युनको भाग, सीन पार 1000 t 71

कृत्यवर्तनी का वात सुनकर कारी मेर्ट्स होकर कहा— 'कर्ववर्तनके केले समान कुरवीर सदा ही गर्वना करते रही है और पृथ्वीने कोने हुए नीवाकी पति ने श्रीक है करा की ऐते हैं। नामानी ! महि मैं परनता हूँ तो स्वानक करा पुरताल होता है ? देखिनेना मेरी नामिका करा, जब कि ने कृष्ण और सामिकों साथ समूर्ण प्रकारिक का करके पृथ्वीका अवस्थार राज्य कृष्णिनाकों है डाईसा।"

कृतवार्ग गेले—सुरुप्ता । मुझे सुन्तरे प्रत कराएंगे वर्षिये और सर्वारम प्रत्येगर विवारत गरी है। हुम सो विकृत्या, अर्थुन और सर्वारम सुनिश्चिरको स्था ही कोसके वर्ष है। परंतु विक्रण करी प्रत्येगी विश्वित है, वर्षी पुत्र-कुथता और अर्थुन है। यदि केस्ता, नकर्ष, यदा, स्मृत्य, सर्व, प्रवृत्य भी प्रत्येग वारण परंदे पुद्ध करने आगे सो कर केरोंगो नहीं जीत स्थाने। वर्णपुत्र पुत्रिक्त स्थानायक, अस्थानी, विशेतिक, पुत्र और देवसाओंका सम्याग करनेवाले, स्वयु वर्षशासन, अन्नविद्याने विश्लेष कुमल, वर्षण्यान, और कुम्हा



है। इनके पाई भी करकान् है और अवाधिकारों वरिक्षम किये हुए हैं। में सभी चुन्हिमन, वर्णाता और कारकों है जब उनके सम्बन्धी भी इनके सम्बन्ध परावाणी और उनके और प्रेम एक्ट्रोजाते हैं। अतः पानकोच्य वाभी नाम महि हो सम्बन्ध। मीमसेन एका अर्जुन वहि बाई से अपने अवाध्ययने केवार, असूर, मनुष्य, बाब, एकार, जुन और कागानोंसे चुक समूर्ण संपक्षक विनास कर सम्बन्धे है। मुनिहिर भी भी: रोजपरी इहिंगे-देशों के इस मूलकाको करा कर समस्ते हैं। विनके बसकी कोई संख्या नहीं है ने घरणार् श्रीकृत्या थी विनके तिले कवार धरण करके तैयार है, का क्ष्मुओंको बीकोका स्थाप हुए किसे कर को है 7

क्ष सुनका काली हैतका कहा--काला ! तूनने पानकोके जिनकों को प्रक स्वय है, जा तक तक है। इसने है जो और यो बहुत-से पुज पामानों में है। यह भी ठीक है कि कों प्रत अहे देखा, देख, पक्ष, नवर्ष, रिवार, जन और द्वारा भी नहीं भीत समाते, से भी में स्वयंत किया पार्कमा । मुझे इसूने एक अच्छेन सामित है रसी है, उसके हाए में पुत्रमें अर्थनको का क्रमेशा : उनके मानेवर उनके स्कोशर वर्ष किसी प्रश्न कुर्व्यका एउन नहीं चीन प्रकते । का समक्रा का हे करेग समुस्ताहर का हारी पूर्व अनायात है कुरुराज्ये करने हे कावनी । तुन से क्ये की होनेक कारण बुद्ध करनेने अस्त्यमं हो, साथ हो पाळानेचा सुद्धात खेद है: इसीरिको योहका केत अवश्वत कर रहे हो । विस्तु यात रखें, वर्षि की विकास किए कोई आहित बात मुख्ये निकारकोंने से क्ष्मारके सुन्दरी क्षेत्र कार सुन्ता। सुन्दिक प्रकार । दुव औरलोको अतरेके रिन्धे पांच्यानेकी सुन्ति करना साहते हो ? में के परकरोका कोई किसेन प्रमान नहीं देखता; सेनी है पक्षकी हेन्यओका समाय काली संदार हो रहा है। हिमाबान | भिन्ने कुर विशेष करवान् सन्त्राते हो, उनके साथ मैं पूरी प्रतिक सरकारम् पञ्च कार्यन्य । विकास क्षेत्र प्रतिकारीक अस्तित है ।

शुक्तुं कर्मको अपने मानाके जी कर्मार भारत करते हैन अक्षानक इसमें पालार से को नेगरे कर्मकी और इस्ता । इसेंक्को हैको-देवले वह कर्मके पाल आ पहुँका और अस्ता कोको परवार केया—'आरे केया । मेरे नामा इस्तार है और ने अस्ताके क्यो गूर्णावा कीर्यर कर मो है, जो की सु अर्जुनो हैन होगेके करून इसका तिरावार कर मेरे सु है ! मू अपनी ही कुरावती कींग होका करता है; मिनू जब इसे इसका अर्जुनो केरे देवले-देवले जवहकार कर मिरा, अर समय कर्जु का तेस परवार ? और वार्ड गते से देव अक्षा-क्या ? निवारी पुजारे सामान, नालेक्जीको संस्ता किस्त है, इसे बीकनेको सु सबसे ही अन्ताके क्षेता करता है। सीकृत्यके समय करी अर्जुनको इस आदि सेका और अस्ता है। सीकृत्यके समय करी अर्जुनको इस आदि सेका और अस्ता है। साम का, अन्ती हेस किर करते जाता करता है।

वह बदाबत वह जो चेपसे कर्मकी और बद्धः जिल्हा सर्थ रुवा पुर्वोचन और इन्सव्यक्ति उसे प्रवादकर वेचा रिका। कर्म कहरे रुवा—'वह पुर्वोद्धा नीच क्राह्मण अपनेश्वेट कहर कुर और रक्षमका सम्बादक है। कुसराव ! हुम सेको पंत, कोड़ हो; करा इसे अपने परास्त्रभवार की कमा करता है।'
अध्यक्षको करा—पूर्ण सुरापुत । केरा का अध्यक्ष इस तो सहे लेते हैं, जिल्हा अर्थुन केरे इस को कूद कांग्रस्त अवद्य कार अरेगा।

दुर्जेनन नोरम-अन्तर्भ अक्षासम्बार्धः प्रमाण हो कालो । पुत्रः यो तूसरोको सम्बान देनेनाले हो, इस अक्षायको इस्य करो । तुनो कार्वर किसी वस्तु होता नहीं करण काहिने । विकास ।

की तो तुम्पर और कर्ण, कृष, त्रोध, त्रम्य तथा त्रकुरियर ही इस महान् कर्मका चल दे एक है।

इस उच्चर राजांके क्यानेहे अवस्थानात हों व हाता है। क्या । इत्यानांका कारक भी कह कोवान का, वे होंडा है। तत्य हेका बोले—'कृत्या । इस हो ही अवस्थाने इस्ट का देते हैं, भांतु होरे कई हुए वन्ताका अर्जून अवस्थाना करेका।'

# अर्जुनके हारा कर्णकी पराजय और अञ्चलामाकः दुर्वोधनके साथ संवाद तथा पाञ्चालोके साथ घोर युद्ध

सहरकार बाज्यम और पश्चास और क्रमीकी निष्य करहे | हुए जारों ओरहे एक जान वहाँ जा वहुँके र का कार्यपर काशी हों। भड़ी तो ने का कारो गर्नक करते हुए बोले—'व्ह पञ्चलंका स्त्रुप कृतन 🐍 सक्का पत्री 🛊 । मही सारे अनगीकी यह है; क्योंकि यह इंटॉकरब्दी ही-वे-वे फिलामा करता है। मार इंग्ले इसे हैं देख कहते हुए इसी अभिन और कार्यका कथ बारनेके किने अनके अन्य का की और वाजोधी बडी बारी बर्च करके को क्राव्यक्ति करने क्षणे अन प्रमा पहार्शनयोग्यो अपने क्षमर काला करते हेवा महानारी कारी सावकीकी बाजो सावककेकको आने क्यांते रेक देवा। इस समय हम अब स्वेगीने क्रानंकी अर्थन पूर्वी देवी। महत्त्वी कारी प्रमानके मानश्राक्षीका निवारण करके करके रही और वैद्योक्ट अववे मामवाले वालोबर जार विकार काले व्यक्ता होचार है पुरान-क्या काराने राजे । सामिक सामकारेवी आहता होतार होंड-के होड के हैं, सभी और रची बच्चे डिस्तावी हेते से ।

वार्थको जा कृतिको नवकारी अर्जुन नहीं तक सके।
ज्योगे असके जनर तीन सी तीने वाल मही। तिन उसके क्षणे
हम्माँ एक गामारे मींच जारत। हससे उसके हम्माँ कृत हम्माँ एक गामारे मींच जारत। हससे उसके हम्माँ कृति कृत कृत उसा तिया और अर्जुनको वालकानुदेशे इस दिखा। वित्तु सर्जुनने हिस्से-हिस्से जस कामाण्यांका संवार कर जारत। वे बेनों एक-कृतिके विद्यार मरसार सम्मानेती नृष्टि कार्य समें। इसनेहमें अर्जुनके कार्यका परवारम देखावर कृति दिस्साने उसके कनुकते केव्योगे कार्यका क्षण हिमा। इसके क्या स्वराधिका भी तिर उसके दिखा। उसकान्य क्षण हिमा। इसके क्या स्वराधिका भी तिर उसके दिखा। उसकान्य कार्यको कार्यको क्षणे कृतानार्वेक रथपर वक् नवा : उस समय अस्ते सा असूर्ति बाग की हुए है, इससे वह वास्त्रवर्धने पर्छ हुई साईके सम्बन्ध वान पहल वा : वार्त्रवर्ध परावा हुआ देख आक्रो बेट्डा वान्याको वार्त्राचे क्षत-विक्षण है इस दिवाओंचे वान बारे :

अने जानमे देश कृतिका कार्यका है। पूर (वैदाने सना। अस्ते आह — पूर्वति ! शुक्तिय केंद्र सांत्रव है, तुक्ति किंद्र जान केंद्र सांत्रव है, तुक्ति किंद्र जान केंद्र सांत्रव है, तुक्ति किंद्र जान केंद्र सांत्रव है। यह देखों, में कार्य अनुंत्रका का कर्तिके किंद्र जान ही वार्यका। देशा क्रमार कोंद्रवी कार्य है। वार्यका । वेंद्र कुन्तकारी अवस्थानके वार आवार कोंद्र कहा। यह देशा कुन्तकारी अवस्थानके वार आवार कींद्र कहा। यह देशा कुन्तकारी अवस्थानके वार आवार कींद्र क

ज्याने कामके इस ज्ञास बहानेवर अध्यक्षाधा बुवोंकको प्राप्त ज्ञास केरा—"नामाधित्यका । मैं तुम्बर दिनियों है, वेरे अधि-मी केरी अध्यक्षित्र करके हुन्हें अधेरते बुद्ध नहीं करना व्यक्ति । कृत अर्जुनको बीतनेके विकास संदेश र करें। कृतकार कर्ष को, मैं जनार अर्जुनको देशता है।"

प्रभाग के अर्थुं को कार्यका परकारम ऐस्तार वाह्नी प्रभाग के अर्थुं के कार्यों के कार्यों कार कार्या (किन कार प्रभाग परकार उसके कार्यों के के के कार्यों कार कार्यों कार कार्यों कार कार्यों कार कार्यों कार्यों कार्यों कार कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार कार्यों कार्यो सौर एकेक्कोंको उनके अनुकरोस्त्रीत कर करते। इनके बाद को बावती का कार्यन, उन्ने दुक्तरे संस्कृतने क्वान्त में उनके कीरको काट आवित्य। कार्यने काक्त्राने, खेनकों और कैक्सरोंको जाकर रोको; क्वोंकि ने सोग अर्जुन्तो सुरक्ति होकर मेटै सेनाका क्वान्त किये अन्ते हैं। कार्य कर्त क पीछे, का काम पुकारे किये हैं हो सबका है। जाट माझारनेको हुम करके सेक्सरेन्द्रीय कार अन्ते । हुन इस कार्यको पश्चारनद्वीत कर होने—देख सिन्द्र कुल्वेने काल है। यह बात कार्य पिका करि हो सकते। हजान्योव केव्या भी सुकारे बाजोका प्रवार नहीं हव सकते; किर पाकारों और माझारनेको हो कार्य है है कोरकर ! नेको, का नेते सेना अर्जुनके कार्योने पीछित होकर कार्य हो है, अतः बीवा ही कार्यों, आओं ! नेर नहीं होनी वास्तिने।

वृत्तीयनके देश कर्यन्त अवस्थानके इस प्रकार उत्तर दिया—'न्यानकी । दुन्ते को प्रक कहा है, तक ठीन है, मुद्दे और मेरे दिशानको प्राथम कई नार है तक वे भी हम है भीरा देन रकते हैं। विश्व का कार कुन्ते कान कार की की होती । उस प्रमय को इसलेग प्रकार को की निवा है कार मूरी प्रतिको कुन्न करते हैं। विश्व हम को म्हान् रहे भी और करते हैं, प्रवाद की करनेका दुन्हार प्राथम है का इसलेगीया हमारो विश्वता नहीं होता। वीर, मैं को अब अला है हमारे हित्रों निवा प्रीयकार लोग होएकर प्रधान्तिक प्रमुक्तें मून करता मूना और उनके मुक्त-पुरूष चौरीको सुन-मुख्यार मार्गना। स्वापनी और कोनकोवा कमारो अलेगे, को यी प्रस्तोव केंग्र हैना। मेरी मुख्यानको मुक्ति भीता मार्गन ही, उन्हें कम हैना। मेरी मुख्यानको मुक्ति भीता मार्गन ही, उन्हें कम हैना। मेरी मुख्यानकी मुक्ति भीता

इस जकर आवर्ष पुत्रों क्यूकर अक्सक्त स्वाक प्रमुक्तियों बनाता हुआ युद्ध कार्यके हैं को उद्धानके सम्बन्ध वा इस ! असे केक्स और ब्यूक्त राज्यकोंने मुक्तास्कर कड़—'व्यारकियों ! तुन सब स्वेन एक साथ मुक्तपर प्राप्त करें !' वह सुरक्तर के सभी गीर अक्सक्तकर साम-कार्यकों पूर्ण करने रागे ! अवस्थान उनके अक्सेक्स निवास्त करके पायाची और ब्यूक्तिके स्वयंने ही अन्तेने

वह बेटिको कर निराण । अवस्थानाथी कर पहुनेसे प्रश्नात और सोपक कृतिय कारी इस्तर इसर-कार स्था विज्ञा और कोपक कृतिय कारी इस्तर इसर-कार स्था विज्ञा और कार्य स्था कार्य और वाक्ष्म कार्य केरिक कार्य होनेसे अवस्थान कोपने का क्या और इस्तर बाक्स होनेसे अवस्थान कोपने का क्या और इस्तर बाक्स होनेसे अवस्थान कोपने का क्या और इस्तर और स्थाना कार्य के, जाने कोपी नेसे हुने जीके वाक्ष्मी वाक्ष्म कार्य कार्य के, जाने कोपी नेसे हुने जीके वाक्ष्मी वाक्ष्मी अवस्थानित कर किया का वाक्ष्म कर्म कार्य कुने केर्य कार्य केर्य कार्य कार्य कार्य केर्य कार्य केर्य कार्य केर्य कार्य कार्य कार्य केर्य कार्य केर्य कार्य केर्य केर्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य केर्य केर्य केर्य कार्य का

कुरुक्तके को हुए हुए कठोर क्यानको सुरकार अस्त्रमाध्य प्राच्या बोरको सह क्या और 'पदा छ ! पदा छ ! ऐसा काते हर जाने कालीकी वर्णाने औ का विद्या । अवसी चावटा में अनुस्थानक क्या उच्चातंत्र क्योंका उत्तर कारे करा । क केन्द्रेकी कलकाति आवनक और विकाद पर गयी, केर अन्यवस्त्र का भवतः अतः से एक-कृतिकी दृष्टिते औद्वर होतार ही रकाने रहते । क्षेत्रवेता ही पहास्त्र संग बाहा अस्तुपार रहता संपत्त था, केनोब्री पूर्वी देशने ही योग्य थी। का समय राजपूरियें करें हर हमारों केश रूप केमोबी प्रशंस कर पड़े से । जा बहर्ष अक्षातानमें बहुबाके बन्द, जना तथा का बहर करते और चर्चान्स्य, स्वरति सम्ब चारों चेड्डोको भी मार निराधा । क्रमेंद्र कर अभी तीचे सभीते जाका उसने सैक्टों और क्यारों प्रकारनेको भाग किया । इसके इस पराक्रमको देशकर क्ष्मानेन मनिन हो रही। उसने की क्षारोंसे सी प्रकारिक पार काके की वीचे कर क्षेत्रकर दीर क्षेत्र नकरिन्मेंके जान से दिन्ने। किर बहुदार और कार्यनके हेरले-देखी कई क्ये हर कार्रक्रक प्रशासीका संदार कर अस्य। उनके स्थ और व्यवाद क्र-क्र हे गयी। जब से सक्रम और प्रमुक्तिमें धगरह यह गरी। इस प्रमार पहारची अक्रमाण संभापने सहयोको जीतका करे बोरसे गर्जना करने रूपता । इस समय कीस्तोंने इसकी क्रम उर्जस्त की ।

#### कौरव-सेनाका संद्वार, सोमदत्तका वस, युधिद्विरका पराक्रम और दोनी सेनाओंमें दीपकका प्रकास

स्त्रण सहते हैं—जहरणर कन्द्रश्चन पुनिहेर और पीनहेंनने अवस्थानकों के लिया। इसमेंने क्या कृतेका विभागकों साथ प्रकारिय का स्वयं, किर उसे क्यार पूर्व होने हाथ। उस स्था पीनहों के प्रति क्षेत्र केवा, पाला, वंद्या, विकि त्या विन्तं केवो मोरोको क्यानेक मेंग दिशा। किर अभीत्य, सुरहेन ह्या अन्यान स्थोचक विभागकों का विका हुति ओको अनुनेने के यह, कावक स्थापकों का विचा। हुति ओको अनुनेने के यह, कावक स्थापकों का स्थाप। हुति ओको अनुनेने के यह, कावक स्थापकों कर साथ; इयर होक्यान की स्थाप क्याने परसे पीनित होका स्थापन की स्थाप करने स्थे। स्थाप हो साथने स्थाप क्यान की स्थाप स्थाप होका क्याने ही साथने स्थाप स्थापन की सेने व्यव स्थाप होन्य को स्थाप ही साथने स्थाप स्थापन की स्थाप स्थापन करने स्थाप होन्य की स्थाप ही साथने सेन्यर कही सही सरस्यकों साथे स्थाप होन्य की ही सी



हेनोबर सहकतार्थ आ व्यृष्टे । इसी ज्ञार कारके पुत्रके महत्त्वी चेद्धा थी च्यून कही होनके हत्त्व डोन्सकारि तके यार आ नवे । कोरको-कार पुरः अर्थुकारी यार सहो

सताय नारते हैं—व्यानकर कानुभावत भूतिवीर और परिन्ने अवस्थानको के लिया। इसकेट कमा कृतिका प्राचनिक साम प्राचनिक कानु सामा, किर उसने कांग्यर होते लगा। उस समय परियोगने कृतिय होतार अन्या, विते लगा। उस समय परियोगने कृतिय होतार अन्या,

कारी और यह सामाधिने देशा कि सोपाय अवन नहरू जन्म बहुत को है से अपने सार्यक्तरे बद्धा-'सूर । बहुते प्रोक्तको का है कर । अयो काकर का सेन्यको नरे निया अस में पुत्रको नहीं सीट्रेंगा (\* यह सुनवार सार्यको बोड्रे व्याने और कार्यक्रियों मोजानके पात पहिला हैया । स्रो अने देश लेक्ट्र की अस्ता समय वर्षको आगे कहे। क्योंने कार्याक्रमी क्रमीने साठ बाल प्रश्यन को बावक कर किया: किर अवस्थिते भी संक्ष्य अवस्थिते सीम्बलको सीम क्रमा । क्षेत्रों के केलेके सामोधे क्रानिकत एवं जोश्तकत हो निर्मा हुए देख्के चुक्के समान क्रोचा पाने रागे ( इसनेहीपे नकाची होन्यको सर्वेजकामार वाच चारका सामाविकी महत्व करूको बाट दिया। किर को क्वीस वालोंसे पायल करके बीकारपूर्वक पूर काल और बारे । सबसक कालनिर्दे कुरत करून केवल हरत है स्वेत्यक्तको प्रीय वाजोदे बींच क्रमा । निर कार्ने पुरस्काने हुए एक प्राप्त पारवार क्रमारी संदेशी कथा कर है। सा सोयहरूने पुर: सामहिन्हों क्योल काम करे । इससे कारबंध पूर्वन के बार और असे क्य बीची श्रुटको सेम्बरका अनुन कर प्राप्त । नदारबी क्षेत्रकारों भी कुला कपूर तेवार क्षाप्तकीकी कर्ताते राज्यक्रिको आकृतिह कर दिया । उप सामक्रिकी ओस्ते चैनकेनो ची होन्यहरूर का बागोका प्रकार किया और सोनवारने भी भीनको तीको बाजोसे बाजल किया। इसके कर केलोको प्रोक्तको स्तानि एक परिचक्त कर क्रिका, मित्रु ओब्बरको हैतते हुए अलो हो दुसके कर आने। स्वतंत्रस कार्यको कर करा चारतर उनके करों केड़ीको जेलाकके क्रमीय केन दिव्य । किन एक काराओ सार्वाकार सिर कक्को अस्य कर देखा । इसके पश्चाद सारविको प्रवासिक आधिके क्या एक पर्वका कम होए; का सेमहरको हारोने कह नवा और वे सकते निरम्भर कर करे ।

क्षेत्रकाओं भाग गया हेट कोरा गहरवी बार्केटी केवर करते हुए कार्व्यकार हुट को। या देवकार श्रव पुर्विहर क्या अन्य कार्यक प्रथमक मेरिनेट हाथ बहुत कहें केव किने जेक्कावर्गक क्षेत्रकी और वह आने। उन्होंने क्षावर्गक देवरे-इंसले हायकांकी पारते कार्यकी हेवाको

पना विचा। यह देश जानाई क्रोको लाह असि दिले चवितिसम्बद्धाः यहे और उनकी प्रतीयर उन्होंने सक्ष कान मारे। एक बुविद्याने की परि कालोगे होन्यकार्यको सीव क्राम । हान्ये कर आकर्षन पुरिक्षेत्रको कथा और क्युक्को कार विका । प्रतिक्रिएने कारण करना क्रमणे विका और पेक्टे. सार्थित क्या एवं रक्तकेट स्थापने सेव्यन स्थापन का हमार कर्नोची नर्ज थी। या एक अनुष्ठ कर हुई। उनके मानोने आन्याचे पेपित को नावित क्षेत्रा अन्याने से पहिल्ला राजको बैठकमें सुनिक्षेत्र पानते पूर्व को तीन जार होता हुआ से को छोको सकत उन्होंने चुनिहरूर भागनकाता अरोग निवा । सितु पुनिर्देश प्राप्ते वरिवा भी निवरित की हर । उन्होंने अपने अवने आवने आवनीर अवनो क्षाण का देशा और उनके अनुकत्ते भी बाद क्षाप । हेको कृतत करून कारण, विश्व पुनिर्देशने एक तीवन पान मासार को भी कर दिया।

क्री बीको करवान् अञ्चलके पुरिक्षेत्रते क्या-'नक्षमके ! में आरमी को पूक्त बद्धक है, जो स्थिते । प्रेमाकार्यके सुद्ध व क्षेत्रिये। वे क्ष्मार्थ क्षा आवको कार/भेगा व्योग कार्य हैं, तमा उनके साथ आपका पुत्र होता में अधिक नहीं सरकारत । को इसका नाम कारोबंद किसे है जरत हुन है, या पुरुष्ट है हुन्या पर परेच । सार गुरुने कुछ करण क्षेत्र कहाँ क्षत्र कुलेकर है, वहाँ कहते। क्याओं क्याचे रूप ही स्वर्ध करनी मालि। असः अस हाथी, बोर्ड और संस्थी सेन्स नेवार वर्षा है सकते, कई नेटे स्कृत्यवासे प्रीकरेन और अर्जून ब्रोक्सेने युक्त कर के हैं।" भागकानुसी काल सुरावार कांग्रावने कोडी हेवाबा कर-के-सन विकार किया; जिस हुए। ही वे पहले परेक्सेट के, उपस्को पहल हिने । इसर होन्द भी इस रहाने चल्याने और ब्याहरनेको सेनावा लेकर करने सने ।

पुरस्कृते पूर्ण—सङ्ग्रह्म । वान्युकोरी वाध प्रवासी सेनावा

कमान कर प्राप्त, प्राप्ती हैनिकोंके हेव क्रीन कर विचे उद्देश क्क लोग का चोर कम्बकरमें कुत रहे है, इस समय तुव-को मेंने कथा सोच्या ? होनों सेन्करकेको प्रकास कैसे बिरण ?

रक्षको कहा—बहाराव ! कृतिकाने हेनायरिकीको अहह केवर को केन नरनेने कब ननी थी, को न्यूसकारने सबी करवाथ। काने काने काने ये होना और मीधे ये कान, अक्रमान, क्रमानो क्रम राष्ट्रीत और सर्व राज क्रोंबर करों और बसकर का स्तिमें बेनाको स्था कर स्ता था। उसमें पैकार हैनिक्कोंको अल्पा के कि 'पुनर्केन प्रक्रिकार एक के और अपने क्रवोर्थ अल्ली हो भएती कहा हो (' सैनिकोर्थ अस्त्राम्पूर्वक पूरा अस्त्राम्य पारत्य विका । ग्रीस्थीने प्रत्येक नको पाट चीव, इर एक इसीचे बात होन और शुरू-शुरू केंग्रेंक कर एक एक जान एक । बैका विनाई करने केन और पहला नेपार क्षेत्रकोची परलवा परतो से 1 प्रस प्रकार क्रमानाने ही अवस्थी साथै सेनाने बनाता हो गया। इनारी केराओं इस प्रधार क्षेत्रकोंके प्रधानकों धरानगरी

देश कमानेरे के अन्ते केल ब्रेटिन्सेस्ते हरेत के केंद्र जननंत्री अक्षा है। अहींने अनेव्ह रक्षेत्र आने इस-वृक्त और प्रतिक क्षणीके सामने साम-मात्र कैपकोचा प्रकार विश्वत । हे केंग्स चेजेमी चेठार, से बाहारों, इस राज्यों सरहार और से राज्ये विकास भारते समाने को से। पूर्व प्रवास कर्न हेक्ट अने-देवे और समान्यसमें तथा संय-बीको की बेवल मैरिका कारणे हाई स्वापी हरको लेकर पुरते को थे। या समय केनी ही संस्थानेने वह । होनी आहेती केंग्योक प्रयास पानी, शास्त्रक और प्रमाने विकासीये वैतर रखा। सर्वत्वयः केले हुए इस स्थान् आयोगमें बुद्धार्थी कुरू कार केरत, कार्य, यह, सिंह और अवस्त्री भी वर्षा क पहिले । इसर पुरुषे को इस बीर सीथे कर्नकी ओर का यो थे। इस प्रकार क्षानीसरिक्षोंके आने-जानेसे बढ रमधूनि देशनोकके समान जान पहले थी।

#### दुर्योधनका सैनिकोंको प्रोत्साहन, कृतवर्षाका परस्क्रम, सात्यकिद्वारा चूरिका वध और घटोत्स्वके साम अश्रुवामाका युद्

अध्यक्तरते जानक हे का या, वह शैक्कोंके उन्हारते सार्थितित हे उठा। काशीय संदेशी क्रेस्ट्रीय सुम्बन्ध रेक्स को हुए इक्कों केंक्स करमना को से। जैसे अर्थक्त नक्षारेंसे अञ्चल सुबोरिक होता है, उसी अबार उस बैयमहरूओंने का राजपृत्तिकों कोचा हो की बी। कर

सहाय बार्व है—महाराज । जो एकन बाले सुर और ( साम इस्पीतकर इजीतकरों) और पुरस्कार सुरस्कारों) विका गर्थे । एक्सिका एक्सिके साथ मुख्याला होने स्ताह । केन्या पर्वका संक्रा शास्त्र हो एक। अर्थन बढी क्वीदे साथ रुपाओचा वस करते हा कोरकोन्सात विनास करने समे । क्ष्यको पू<del>ष्ट प्रदा</del>न । यस अर्थुन स्रोपमें परकर कृतींनरकी सेनानें मुद्दे, उस सामा उसने क्या करनेका नियान किया ? याँन-याँन और अर्थुनका सामान करनेके दिने अर्थ को ? आयार्ष होता क्या पुद्ध कर को थे, जा सामा क्षीन-याँन क्षणे पूहणायकी यह करने थे ? याँन उनके सामे थे ? और याँन क्षणे-माने पहिलोकी स्वामी निष्क थे ? ये साम कारों को स्वास्त्रों।

स्वापने पर्य-महत्त्व । उस रही कुर्वेशको अध्यपने प्रेंगची तरबा नेकर बज़ने महाचे क्या कर्ग, क्यांत, भारत्य करण, दुईरी, रीजेम्ब्यू प्रच्य कर सम्बंद अनुवर्तको कहा-- दुन तम सोग पूर्व तमका सुका प्रशास करते पूर्व में के स्वारत अवसाने क्षेत्रको श्राप्त बाते । ब्राध्यको स्वीतन महिनेको और काम जारकारे पहिनेकी छुत करें।' हकके मार् रिक्तिएको पहरची मीडिकेंड को मरकेंड क्ये हुए थे, उर राजको अपनेर पूर्ण आयरपीर आने प्रतेशी आहा हो और क्या—'सीर्वे । आकर्ष होन क्या सम्बद्धिक साथ पह कर के हैं। प्राच्या भी नहीं सामातांचे तथा हमात सामा करते हैं। उत्तः अन कुल्लेन वानवान कुळा अक्करेकी न्दारको बहुबहुको रक्षा करे । परक्रकोकी केलने बहुबहुको रिका और कोई केवा को देख की विकास केत. के क्रेमचे सोहा से सके। असः इस समय अक्कानंत्री दक्षा है हमारे विभी सकते बक्कर काम है। सरवित क्रमेकर आवार्य अवस्य ही पाणाने, स्वाची और संपन्नोता पात का क्षारेंगे; फिर अकारपा पृह्यक्रको जा कर हैता, कर्न अर्थनको परामा करेगा और पद्मारी कैवा लेकर वै भीवनेत्रक विकास पर्याता । प्रमोद महनेतर सामी कार्या हेम्बीन हे क्योंने, जिस हो हमें की सभी बेटक पर पर समाते हैं । इस प्रमान सुद्धेयं पालसकतेः सिन्ने नेरी विकासकी सम्बादन प्रदानी दिसानी के पति है।"

मह महामा कृतें करने सेनाको पुत करनेकी अद्या है।
किर तो परस्य मिनन परनेकी इन्कार हैनों सेनाकोने केर
संधाप होने स्था। जा स्थाप अर्थुन औरकोनको सीर
कीरा अर्थुनको परिन-परितंत अन्य-सकोने पीता हैरे रहते।
परिता मह पुत इतना मनानक का कि मैना अर्थे महोते न
सभी देशा गया और न पुत्र ही गया का। अर्थे प्रकार में
मुनिश्चिती पानकों, परकार्यों और सोपकोको साझा है कि
'तुन सब स्थेग होणका का करनेके दिनो अन्यर स्वकारणे
कृत्या हो।' सन्याधि आद्या काम से महामा और सुक्रम अर्थाः
सुनिश्चित वैश्व-नद करने हुए होग्यर का साथे। उत्त काम
सुनिश्चित वृत्या करने हुए होग्यर का साथे। उत्त काम
सुनिश्चित वृत्या करने हुए होग्यर का साथे।

कृतिने जुलस्के आने कृते वेकः। कृतस्का कृतस्कि और अधिन्यस्क कृतस्काने जुलस्का क्रिया। सैक्ष्में जनस्कि साथ कालेको एक्स क्रियस्का जनस्काने केकः। इसे जनस् कृतस्का प्रदानेत हैं के तसे कृत्यस्क कृतस्क कृतस्य कृतस्य क्रिया। प्रतास कृतस्य विकास कृतस्य कृतस्य स्वास्ति क्रिया। प्रतास क्रिया। और कृत का पह सा, जो विकासि साम सामार क्रिया। ज्यासी अर्थुन्यर एक्स्स्य अस्तुन्य अस्तुन्य वृत्यस्वा क्रिया।

कारपुर सामार्थ क्षेत्रके सहसेनाका संक्रम आरम्ब किया, निव् प्रकारपाल्याः स्वत्यारे को क्षेत्रका साथ प्रतिकार को कथा पान्कारोगी ओरही को शुर्त नहरी अक्रूतकी रक्तेको अने, जर्ब अपने पहरतियोंने अन्ते पराहरूको केम दिया। कारणारि कर परिवृत्तिको देखा हो उन्होंने औ चाले क्षेत्र, किन बीधा सामांक्षे मारवार बीध दिया। इससे क्षांचर्य क्षेत्रमें भर गण और एक काम करकर आने करिएका कर कर हैया, किर का करोड़े को प्राप्त किया। पुनिवृत्ति हत्तरा वन्त्र प्रथमे केवत बक्तवर्गाको पंचारती एका क्षतीनी कर काम मारे । उनकी कोरतो का करी का और नेक्ने परकर जाने प्राप्त पानोंसे उने पूज प्राप्त किया । जब परिवरित्ते जाके पहल और क्याने कार निर्देश विता सामें क्रमा और कीचे अल्लोमें कहर किया । से प्रस्त रंगमा स्कृतान काम हेत्या प्रातिने स्ता गर्ने । कामार्थि पानक वारते ही हराय जन्म हातमें निम्म और पान्तमधा व्यविकार का तथा अन्ते आविको नी क्रमोरे बीज ज्ञान । यह देख व्यविद्याने जाने जार शरीर क्षेत्री । यह क्रकि कुल्मानंकी कहिने मोह केंद्रकर बस्तीयें सक नहीं। तम कुलावरि अस्ते हैं निवेश्ने पुरिश्विको प्रोही और सरविको सरका को उन्होंन कर हैया। जब कार्ने कर और करवार क्रममें ही, जिस करवारी को भी कर निरामा। मिर असे भी क्या मारकर उनके करणको क्रिक-बिन्ने कर करक । इस प्रकार कर बनुस करा, एवं केवार हो जना, समय की क्रिया-चित्र हुआ हो आसे कालीह अक्रम के केरिक होकर पश्चित अहिते परण गर्ने । एवं करवार्य हेन्यकरीः सके पहिलेकी पता बस्ते समा।

नकरण । जुनि नकरणी कारविक्या कारता विका । इससे सारविनो कोणने नरका चीच तीहल कार्योगे सामी इस्तीने कार कर विका, जारो सामी करा कार्ने साथि। वस भूगिरे की सामविक्यी केनो पुन्तकोचे कीम सा कार्य करे। यह देश कारविनो केनो-इससे के पुरिष्ठ कर्मको कार हिना, चिर उसकी कारोमें के क्या पास्तर उसे कारत कर करत । कृति को भूतरा अनुध सेकर कृत कारत विका, उसमें तीन कारोसे सामाधिकों कारत करके एक कार कारत सामा करूव को बाट दिया। अब से सामाधिक कोरवाने सीमा र स्त्री, उसमें एक अवद्य केन्यानी करियों पूर-भूतिकी कारीवर उसर किया। उस क्रकिने उसके अञ्चलों बीर इससे और यह अवद्योंने होयर स्थाने जीवे दिस बढ़ा।

व्या नारा गास देश महस्त्री व्यवकारणे कहे नेवले सामिक्षण काम विका और अलो काम काम काम हुन्छ समा हो। यह देश महस्त्री बद्धेनका कीर सर्वन काम हुन्छ सामकारणो कास कु पहा और सम्बंध कृत्ये स्थान सहस् मानोकी वृद्धि कामें स्था। अलोकां, मानक, विक्येनुक, मेरीकारण काम, श्रुटा, अर्थकां, मानक, विक्येनुक, कारणार्मी, नार्मीक और विकर्ण जादि असंभित्रे हुए। स्थाप में ! यह देश अवस्थापने दिव्याचीने अधिमानित मिले हुए जाम करका जर केर अवस्थिती हांसा कर विचा और उद्यान अधि अवस्थापने केर युद्ध होने लगा; जर सम्भ रहेगा अवस्थार वृच करा है कुक्त का। वारेसकारे अध्याकार्म जाति का का मारे, उसकी केरारे आवा साथ करेर का । कोई देशों का को होता हुआ से असे कार्यकारे सम्भा कोई देशों का को होता हुआ से असे कार्यकारे सम्भा कोई देशों का को होता हुआ से असे कार्यकारे सम्भा का पर्वतर का कोई हुआ से असे कार्यकार क्षाची हाता सम्भा करकारे हुए। स्था और कार्यका कृतिय होता सम्भा केराओं कि यह। असे कोई क्षाच्या

## भीमसेनके द्वारा दुर्थोधनकी, कर्णके द्वारा सहदेवकी, शल्यके द्वारा विराटकी और शतानीकके द्वारा विज्ञसेनकी पराजय

शक्य नवते हैं--नीकोन युद्ध वाते इर बेकावाकी रकारी और यह हो है, हमस्य इनोंधाने जो सामोंने बीच अलग । यह देख भीमने भी जो का बालोसे बाला विकास तम द्वारोपनने एक जीवा पाना चारकर उन्हें कींच द्वारत । चींक्रोनमें इस क्षाणीने इसके बनुव और काम कुट विचे, विम क्ली बांग मारकर की जून कावल किया। बोट कावर क्रोंपन को बसे पान का और दूसरा अनुन लेकर अपने क्रीवं बागोंने भीनको अच्छी वटा पीतित किया। किर प्रस्को कारत बनुष बारवार पुरः वह सामोते को बारत कर दिया। पीयने कुराए क्यून दिल्या, विज्ञु कुरोधनने उसे की कार प्रत्य । इसी प्रकार सीसवा, चौचा और प्रीवर्ध करन की बार गया। यो-से कहा बीच प्रथमें तेने का-काओ अक्टबर पुत्र कर गिरामा था। तम भीवने इसेंबनके करा इस सकि पेन्डी, किंदु उसने अस्के भी तीन शुक्के बार हिने। इसके बाद बीपने कहा कही नह हक्त्में भी और को बेन्से कुरुकर श्रूपोधनके राज्यर फेस्टी । तम नहाने जानके काके मोही और सर्वाच्या क्यूनर निकासकर राज्यों की क्यान्य कर देवा। इसेंध्य भीवके इस्ते कारे है सामग्रह मन्द्रश्ये रक्षण यह गया था। इस समय क्रीमरेन क्रीस्केट विराकार काले हर को जोसो सिंहरत कर के वे और सामके विनिकार्य क्षाप्रकार गांवा कृत्य का ह

कुरती और ब्रेनका सम्बन्ध करनेको इकसरे स्वरंग कहा भा रहा वा, उसे कार्नर रोका । स्वरंगर कार्नको नी सम्बोधे

करकर बर्मेड किर इस काम और भारे। तब कानी भी प्रकृतिकारी की बाजीकी कींकबार तुरंत कारण प्रकारण और कारों को इन् वनुष्यों भी सार क्षारा । यहरीकदानी हमार् धरून लेकर पर: बार्मको बीस काल गरी । बार्मने असीर केन्द्रेको चारकर सार्वाधको भी बधलोबर केन दिवा । राज्यीर है अनेल स्वतंत्रने क्रांश-सरकार क्रूबर्ने स्वे, विज कर्णने होने पान बारकर काके की दुकरे-दुकरे कर विकेश तक क्रोंकने परका सक्केक्ने प्रक बक्रा पारी पर्यक्रा परा काली। रक्का केंग्री, पांद्र कानी वालोते सारवार को भी रिया विचा । यह देश जाने प्रतिस्था प्रहार किया, विज कर्मने उसे भी बाद दिया । जन स्कोप रकते मैंचे बाद पड़ा और रहका परित्य क्रमने नेकर उसे कर्णपर है भारा। उस स्थाभद्रे अपना अपने कार असे देश सुरुक्षने कारते कारा महका उसके वी कुम्बे-कुम्बे कर सहै। तब महीकुमर ईवाइक, दश, मरे इस प्राणियोक्ते अकृ तका मरे इस प्रोड़ी और महत्त्रीकी रखीं का-सभार कर्मको गारने राग्य, का करने सबको अपने बाजोंसे फाट निराम । फिर से स्कूपेन अपनेको क्यांनेन जन्मान्यर युद्ध जागबर कर दिना, कारी कार्य के प्रकार हैने हर बहा—'नो पहल । सामसे र अपनेते को रविक्षेत्र साथ बुद्ध न करना।"

हर अक्टर क्षय देका कर्य पाक्को और पाक्रानेती संग्रही और क्षम अंग । का समय स्वतंत्र पुत्रुके निकट पहुँच कुका का, कर्य कहता से को बार कारता। सिन् कुर्माको हिने हुन् स्थानको यह यह उसने स्थानका कर नहीं किया। इसनेकार कर यहा व्यास हो क्या का; यह कार्यक दानोंके को पीर्वित जा ही, उसके वान्याकोंके की अंतर्क दिल्लो कार्य केंद्र व्यूंची की। इसलिये उसे मोक्यते विकास हो कथा। यह यही जेतीको दाना सन्तर व्यक्तर स्थानकार व्यक्तरसम्बद्धार सम्बंधको स्थाप कींद्र कथा।

पूर्ती अवदेश क्षेत्रको पुकारकार करनेके तैन्ये क्या विराट भी जानी रोजने प्राय जा थे थे, उन्हें बोचने हैं केनकर महराम इसकी वास्त्रपादी कहा किया। उन्हेंने कहे पुत्रिके साम राजा विराटको हो बाम मारे। या ऐसा विराटने भी होत कहा विराट हों बाम मारे। या ऐसा विराद महरामों कर सी मान पानकर करनाको मानक कर दिया। किर महरामों सामा को मारे मारों बोदोको सामार के बामोंने सारीय और मानाको भी बाद गिराया। तम उपन विराद राजने कुद महे और बनुम सहस्त्रपाद मोने सामोंने सर्च करने उन्हें। असने पाईको राजनि नेचा सामानीक इस सेकर करनी सहस्त्रपाने सा पहुँचा। वर्ष आते हेवा सहस्त्रपाद स्वाप्त के सामा संस्थार पानको की स्वाप्त हिंदा।

अन्य बीर बन्धां नारे वानेसर न्यारको निराट हुना है।

अन्य बीर बन्धां नारे वानेसर न्यारको निराट हुना है।

अन्य रामने वीर गये और अनेसरी अनेसे कार्यका है।

बागानार्थ नारो वाने, निरादो सान्यका रथ अनकारित है।

पान । तम नारायने मेंनायति निरादानी कार्यने बई मोरते वानेसर कार्यका कर माने कोर नार्थ निराद हुन अ

साना मारा । वे अनकार कोर नार्थ निराद कार्यका कर्यका कर्यका कर्यका कर्यका कर्यका कर्यका कर्यका कर्यका कर्यका क्षार क्षार कार्यका कर्यका क्षार क्षार क्षार क्षार क्षार क्षार कार्यका कर्यका क्षार क्ष

वरत्वकर विश्वतको सेनाका स्थार करने समे, इससे वर् माइनी जा शरिकालने काले समी। जो वालो हैस कालाद सेव्या और अस्त, काई श्रा करना थे, अस्त है का यो; सितु स्थार अस्त्यूनने कर सेवो वाल कालार और वीव जान। का जारकून कार्यात होकर मान गया। और करना कर अन्त होता होकके निकार धूनि और पैहर, इस्तिनकर क्या कुलकारोगर कार्यान्यूनिय यूपि कार्य गर्म। उनकी मानो कीरवा-सेनिक सोवीचे समाहे हुए पृथ्वी चर्मा संहर आक्न किया से आक्रा पुश्ची समूर्त सेवाचे करना संहर आक्न किया से आक्रा पुश्ची समूर्त सेवाचे करना कर गरी।

इस ओरसे ज्यारजून स्वातीय सबनी स्वाधिने प्रतिन्त सेनाको जान करण हुआ आ द्वा दा, उहे आको दुस विकासि देखा। इसारोको विकासिको गाँव काल पूर्ण। विकासिको थी इसारीयको वह वाले सांचार स्वात पुनाव। वह ज्यारजुको विकासिको स्वातीय अलग वीचे से बाल सारका सार्थ स्वीतास व्यवक कर निराव। हिन्द अनेको वैक्षा सार्थाको स्वाती व्यवक कर निराव। हिन्द अनेको वीवा अलग। विकासिको सुराय वन्तुन इसारी सेवार स्वातीयको से व्यवका नार्थ। व्यवकारी स्वातीयको यो सार्थ करो बोदो और सार्थिको व्यव स्वाता। वित्र दुक्त अर्ववक्राव्यार बाल मार्थ अलो प्रार्थिको कर्मुक्यो सी वार्य विवा। सन्तुन कर प्रत्य, कोई और सार्थिको स्वरूपको सी वार्य विवा। सन्तुन कर प्रत्य, कोई और सार्थिक स्वरूपको सी वार्य विवा। सन्तुन कर प्रत्य,

# हुपद-थृषसेन, प्रतिविज्य-दुः सरसन, नकुल-शकुनि और शिलपदी-कृपाचार्यका युद्ध तथा मृष्टद्वुप्त, सात्पकि एवं अर्जुनका पराक्रम

व्याप करते हैं—-वेष्णकार्यका कुळावार करतेके वैश्वे राजा दूसर अवसी हेमाके काम कहे का को से। जा काम कुमेंग संस्कृत करतेकी कर्य करता हुआ उनके सामने अवसा। यह देश हुम्पने कर्यकारकी मुख्यतो और कार्यने काम काम गारे। कुमोन को की वर कार और जाने कामर की दूर राजा हुमानी कर्याये अनेको वीको काम करे। इस प्रकार केरीने बेनोके गारियों काम कर दिने के, केनोंके ही अपूर्ण काम केरी दिसानी हों में। को में सूच्यों स्वापना हो को के। इसी कीको राजा हुमाने एक काम प्रस्कर कुमोनके क्ष्मुकार काम विचा। कुमोनने दूसरा सुदृष्ठ कुमा क्ष्मणों विचा और उसकर संजान करके हुमानों ओरको स्वाप कर एक प्रस्क होता। च्या चारत प्रश्निको प्राणी वैकार पृथ्वीने अन्य अन्य और साही अन्य पृत् स्वाचने पृथ्वी जा गयी। च्या देख प्रश्निक अपने व्यक्तिकार विकार करते उन्हें सहीते पूर प्रदा से गया। दिए हो उस वर्षकर राजिये प्रश्निको सेच स्वाधूनिको प्रश्निक व्यक्ति। वृज्योगके अन्ये सेचका वृज्ञिक भी च्या जाते स्वास प्रश्निको प्रशास करते. इसान सोचकार्थेक अन्योग स्वाचीन न्यार्थकार्थेको प्रशास करते.

कृति जोर अंतिकिका क्रोक्ते परका क्रीत्यतेवकी हवा कर रहा था, जस्का सम्बद्ध करनेको जावकर पुत्र स्कूरकी कुशासन खुँका। जस्ते अंतिकिकाके स्टलाटमें तीन करन करकर को अन्तरी प्रसू काका किया। अंतिकिकाने भी शहरे ती वाल पारवार विश ज्ञाव कालोसे दु-वाराजको वीच वारत।
तम दु-वाराजने अरले तम भाषकोले प्रतिनिक्तको कोहोको
पारवार एक पारवारी अरले प्रतिक्रिको भी काललेक
पहिला । इसके वाद अरले राजके भी दुक्तके-दुक्तको कर
विशे। विश एक श्रुपको अस्तार कन्न भी वाद काल।
प्रतिनिक्त कुरालेको राज्या काला क्षेत्र और इसको कन्न के
शाको पुत्रको वाचोसे वीकने काल। वादन्यर आपको कोहा
कही भारी होनको साथ आकर आपको पुत्रको साम सोरले
सेरकार पुत्र करने स्त्रो। यह साथव होनो संस्थानो व्यान
इंद्यास्त्रारी पुत्र हुस्स।

क्षती प्रकार एक और नक्षत भी आरकी केन्या संबंध बार रहे भी । अस्ता सामन करनेके मैंनो क्रोकने कर हरत प्रकृति का पहुँचा। में केंगी हो आधनमें मेर रकते से और केनो कुरबीर के; होनों हो एक-कुमरेके कवाडी हमाओ नरकर बार्कोका आवार करने हुने । सैसे नकुत बार्केकी हाती रूप क्षा का, करी प्रकार संस्कृति की। अरीको काम नेते केनेके कारण ने होगों कीति पहाँकी समय दिवाली की थे। क्रवेदिने इत्यूटिने प्रमुख्यते क्रतीने एक कर्नी जनक क्रम भारत । अस्त्री बरवरी घोठते स्थानको सूर्व्या आ नन्दे और मह रक्के विकरं भागमें के नवा । बिर होक्के आनेकर काने अस्तरिको साठ साम मारे । इसके बाद समग्री इस्तरेने सी न्तराबोक्त क्या किया और अस्ते बाल काले हुए बहुकारे ची भीकरे ही कार कारत । सर्व्यान्त कांक बारकार करीश्वर निया हो और एक पेने जानसे करना होनों कहानारेको और क्षात । इस बोक्से क्ष्मिन नहीं संस्थान क्रमा और नेकेक होकर रक्की बैदकने करते लिए यह । तब सार्थं को रमधुनिये बाह्य हार से नवा और नक्काबर सार्टन सनने रक्षको अञ्चल क्षेत्रके पास से एक ।

कृति और कृत्यानि विकासीय क्षा विकास । अने निम्नद सार्थ देव विकासीय में बार्लोंने क्षाप थर दिन । कृतावानि भी पहले पाँच मानोंने मानवर किर मीस कालेंने स्वार क्षाप किया। किर हो हा होगोंने महामर्कार काले कृतावानि अनुस्कों कार दिया। यह देव अनेकों क्षा कृतावानि अनुस्कों कार दिया। यह देव अनेको क्षा प्राप्त का कृतिको दुक्ते-दुक्ते कर दिने। वस कृत्यानि कृता क्ष्म सेकर विकासीको दीनो कालेंने स्वार्थानि कर विचा। इससे विकास केकर यह स्वके विकास कालें केर गया। उसे उस अवस्थाने देश कृत्यानों स्वार सम्बद्ध स्वार काल और लोक्स और को करों और लेकिर कोई है गये। इसी प्रकार आपके कुन की जून कही सेवक साथ इस्तावाकी कार्ड और क्ष्य नवे। किर होनों क्लोगे और संस्था होने साथ। का समय कोई अवनेकों की नहीं प्रकान करें थे। मेहक्स किस पुरुषों और कुन विकास कर दो थे। किर-वित्तवे उत्तर के दों थे। प्रकार पानकोंकर और पानकों संस्थानर प्रकार करते थे। होनों ही पक्षके स्टेट सामनोंकर की हुन साथ कर दो थे। स्टिकों का बनका पुढ़ाने कोई नियम नहीं, कोई मर्चाय नहीं दह नकी थी।

बढ़ कर्मकर पुद्ध कर है का का कि शृहसूहने की होकार स्थाननं किया। यह मारमार कृत श्रृताता दुआ हेजकी और कार्ने राजा । जो असे देश पायम और पासान मेज काको पार्च जोरते केवार करे हो गर्ने। को इस उचार सर्वता वेकावर सामके पत्र भी कर्त सामकानेके साथ सरकारीको रक्षा करने एने । इसी बीचने बहुस्कृते होनाची क्राओरे क्षेत्र काल कार्यन विकास क्रिया । सहरकार क्षेत्रका क्ष है कुनी हा, जनकारों क्षेत्र, रहे हैकों रहा, काको हत, ६:कारको और, क्वेंकको भीत और समुन्ति क्षेत्र पाल करवार बहुबहुक्को बीच झाल। मितु बहु इस्सी शरिका को विकासिक नहीं हुआ। अर्थ का इससे महार्थकोधी प्रामीते प्रामत कर दिया। हिन्द क्रेम, क्रकारण, कर्म और अस्केर पुरुषो सीय-तीन वार्गोने मीन कात । का कामेरे एक-एक न्यानीने पृष्टपुरको पूर योध-श्रीप काम मारे । जिस कुलोनमें कृतिन क्षेत्रार नहरे एक कारतो, इतनो क्षेत्र सीच मानवारेचे बहुबहुतको व्यवत वित्या । बहुबुक्ते भी को तीन काम गाँ, फिर एक फल्लो काफे रिलको धक्ते अस्य बर दिया।

व्यान्तर असने उस न्यारशी को द्वाओंको भी वाजोंसे अवार विका । जिस न्यार वारवार कार्यवा अनुव कार दिया । असी कुत्य कन्य हेन्सर कृतकुत्रमां कार्योंको देशों असने रूपा । इसे क्रकार कर्मको क्रोंबनों भरा देश केन कर व्यानकियोंने बृह्युक्ता कर करनेकी हकाले होता है कर मेर विका । इसी कार्य वृह्युक्ताने दूरभानोंके कंगुक्यों पीता देशों रूपार्थक कर्मको हाई रूपार्थक हुआ वहाँ जा पहुँचा । उस व्यान कर्मको देशते ही कर्मने अस्पर कर करण वारे । रूपार्थको यो उस वोगोंक हेसले-देशले कर्मको हा कर्मोंसे विकार करना । उस बृह्यों क्राप्टे पुत्र तथा कर्मकारी कर्म की क्रार्थिका इस असेरते पीने वार्योका उत्तर करने के ।

विज्ञ असे अपने असोते शब्दे बालोका निवास्य करके एक बागरी क्योरको छाडी हेवू सली। एट बोटरे मुर्बाह होका कुरतेन अनुव होड रहका मेंस प्रश्ना किर तो कर्ज सारपंत्रिको अपने सायकोसे पौद्धित करने समा। इसी उकस शारपणि की करकार कर्यको बॉकने इन्छ। इक्ट आनके योद्धा सल्पिको पर सम्मेकी प्रवासे जाया होने व्यक्तियाँ पृक्ति करने राजे। यह देखा करने व्या कालोड़ो रक्षुओंके पीच करने आरम्भ किने। यह का अपने **पीरोका वय करने रूपा, का समय करना प्रकान-क्रम्**न वेतोकी चीत्कारके सरका सुनाको पहला का वस आहे बोराग्राम्के सारी रजपूरि गूँव को बी, बिससे बहु रस 🛲 हरावनी मासून होती थी। इचोंचन्मे देखा सरस्यको सम्बोहे मीकित क्षेत्रार मेरी सन्पूर्ण सेवा प्रकर-कार भाग रही है। अस्ते को जोरसे आर्थनार भी सूच । तक स्वर्गानसे सहा-'बाई मा भोतवात हे रह है, नहीं नेत रह से बार है काई क्षाक मत्ते हे सार्वको योद्रोको सार्वकिक रक्षकी और होड दिया भ्यो है ह्योंका नियद ज्ञेता, स्वातीको साम् मारानेने को बीच करन। क्योंनको भी कृतिन क्रेक्ट कार्याक्षिको इत वालोहे बाजा क्रिया । इव स्थानीको आगमे पुरुषे क्रतीने असी क्रम को, किर असे केन्नेक पंतरतेष पठाया । साध्यात, तरंत हो सार्यकारे भी बार निरामा । इतके बाद एक भारत जारका जाके करूको भी भार करन । रम और बनुवसे हीन हो स्कोबर कुटेका होत 🕏 कुरुवर्गके रकार 🖚 एकः। हरः प्रवास 🖚 कुर्वेकारे परमत क्षेत्रन पीठ दिया थे. को सारबंधि उद्यक्षे बालवें अपने **ब्रा**णीमें पुनः आवनी सेनाको क्रदेवने सन्द्र ।

दूसरी और सक्ति एको रखे, इनीसका और सुस्सवारोकी सेनसे अर्जुनके बारों और पेरा इक दिया और उनम्ह नमा प्रकारके अन्य-स्वांकी वर्ण आत्म्ह ध्वर है। वे सभी कृतिय पोद्धा कालकी प्रैरकासे पद्धान् सक्त कृत्योधी पृष्टि करते हुए अर्जुनके साथ पुद्ध करने लो। अर्जुनने स्वान् मंहार पणाने हुए उन इकारों रख, इसी और धोड़ोकी सेनको आगे क्लेनसे रोक दिया वस क्लानिने हिस्से हैस्से अर्जुनको सीले बाजोंसे बीच काल और स्त्रै बालोंसे उनके प्यान् रककी प्रमति भी रोक दी अर्जुन्ते भी इन्कृतिको बीस क्ला अन्य महाराजियोंको तीन-सीन बाज आरे। किर क्लानिका कन्न कारकार काले जारों बोहोंको बंगाबेक केन विदा। तन वह अर रंगो उत्तरकर अनुकार स्वारंत का कहा। एक ही रकार बैठे हुए ने ऐसी पहारची दिख-पुत्र अर्थुन्तर कालोकी इस्ही रुकान एने। अर्थुन की इन दोनोको तीहो नाजोही पालत कर रैकाई और इन्नार्थ स्वारंतिको पारहे आपको होनाओ एकेइने रुने। जा उत्तर स्वारंतिक तिहर-विश्वर होनार कार्ये रिकामोर्थ धानने स्वारंतिक कार्य कर्म पुत्र अस्ति हो होनार विकार कार्य क्षेत्रका और अर्थुन कहा प्रसाद हो क्ष्म क्ष्मने रुने।



अस ब्रह्मुक्ते यीन कामोरी जानार्थ होगानी सी आहा और उनके बनुषको प्रत्यक्षा काट है। होगाने सा अनुषको रहा देखा और दूसरा हाथमें तेकर ब्रह्मुक्तको सात तका अस्मे सार्याकको पाँच बाल मारे। किन्तु ब्रह्मुक्तने अपने बाजोरी उन प्रता जनकोका निवासन कर दिला और कौरको कर्या संहार करने तमा। देखते-देखने राजपृथियों जनिरको नदी जाने सार्या। इस प्रकार आयकी सेनाकी प्रशास करके ब्रह्मुक्त शंचा तिसाकीने आपने-अपने उन्न बनावे।

#### ख्रेण और कर्णके द्वारा पाण्डवसेनाका संहार तथा प्रवधीत हुए बुधिहिरकी बातसे श्रीकृष्णका घटोत्कचको कर्णसे बुद्ध करनेके लिये भेजना

सतान कार्य है—न्यायय | यम पूर्वेषाने ऐसा कि प्राच्या नेते सेतावर विकास कर से है और यह कार्य या हो है तो उसे बाद क्षोप हुआ। यह स्थास क्षेत्रावार्य और कार्येक प्राप्त वर्ष्य और अपनी परकार कहते स्टब्स—"इस क्रम्ब प्राप्त कीरों केता केरी काहितीक्षर किस्मेस कर सी है और आप दोनों जो जीतनेने समय होवार के अस्तवकीय व्यक्ति समावा केसते हैं, यह कार मुझे कार्य केया व व्यक्ति हो से कार की असरे केम्ब कारकार करके बाद क्षींकों।"

यह उपलब्ध पुरुषर वे हेनों की क्याबेस सावक कारोके लिये को। इसी प्रकार कावक की अवनी सेनाके शांध नारच्या गर्मन करते हुए इन क्षेत्रेश्त कु: बढ़े। अह इपय क्रेंपावाची क्रोक्ने परवर का बालोगे कालीक्को भीव करना। स्थय के पानी का, अन्तरे कुले पात, क्यांन्स् का और इन्हरिते सात काम को। का क्षेणानाचेको पान्कारोजना संका बाते हेन क्षेत्रक अधिक हरण नहीं पहिले और तक ओरडी ब्रेम्बन्धर्नकर बान्य करताने सरो । आयार्थ होता भी पार्चे और व्यक्तियों हमी हत्यकर क्रिकेट प्राप्त केने राने । उसके सात्रों निर्देश के प्राप्तान घोटा एक करोबी और देशबार आई बोलार क्या हो है -कोई रिकाले क्षेत्रकर चार्गे, कोई कुलेको । विक्रापिको अकरे सने वर्ता, जाना और धानलेकी की सुध ने की। दिल, शंक्यों और क्य-क्यक्रेको क्रेड-क्रेक्टर उस क्रेप विविदे स्वया पान करे । सम्बद्धी अपने-अपने प्राणीकी स्वर्थी हां मी जीवरण, अन्तर, चीवनेय, मुनिर्दार एका महारा-पानेन देवते है या गाँ और अवही रीच होनते. प्रकृतसे पीड़ित है करती हाँ इससे करते केन्द्र-केन्द्रकर की रेस्टी पान करी। एक और असकारका एक का। कुछ भी का की बात का केवल बीमानेकड़े केनकड़े प्रधानको एक मान्ये दिलानी की थे। महरको होन और कर्ज जातती हाँ संस्थाते भी पीक्षेत्रे करा बरसावार पार रहे थे।

भा तम रेशकर पणवार् सीकृताने कहा—'अर्जुर | होग और कानी मृहकु और कार्यक्रियों कहा अपूर्ण पाहाल फोडाओंकों की अपने मामोलें अस्तर कार्या कर हाल है। इसकी कार्याकोंसे हुको महत्त्विकोंसे कैर उसक् राते हैं: अस होना बेक्टोसे भी नहीं कार्यों।' अर्जुन्से इस असार कार्यकेंसे पाहाल पणवार् कृत्य और अर्जुन केटोरे सैनिकोंसे कहा—'पाणकारेनको स्वाति ! हुक पणवांस

स्तार्ण करते हैं---व्यापन । जब कुर्वेकारे देखा कि | होका वाले वा। ववको अपने हरको निकार हो। इस नेते संताबत विकास कर हो है और बहु काले वा हो। इसकेन अपने वहुत संवार होना और कर्मके अपने करते हैं।

> क्षेत्रका और अर्थुट हुए प्रकार क्ष्म कर है से से कि क्षम कर्म करनेकार परिश्ति अध्ये हैनाओं सीवकर जीत के क्ष्में का क्ष्में। उन्हें जाने देश कराईको हुए: अर्थुको क्षम—'क्षमुक्त्या। का देखो, प्रोक्क और क्षमार परिश्वकोची साथ दिन्दे चीतकर को केनो होग और कार्यक्षे और को का से हैं। अन संस्कृत केने सैन्द्रोके हिन्दे हुए की हुन्दे साथ होकर बुद्ध करें।'

> व्यवस्य व्यक्ति और विद्याल क्षेत्र और वालंके पता व्यक्त रेमके सम्मानने कहे है को । दिन पुनिश्चित्रकों कहे कहे हेना को लेह अपने । हेना और कालंके दून: इस्तांका केहर आपना विद्या । हेन्से ओरकों सेंकालेंने कालंकर पुन्न हेने क्ष्मा । इस कालंक आपके सेनिका भी इस्तांके पहालें कालंकर उपनक्ति पति कालंकिर साम पुन्न कर है की । वीते कालंकर उपनक्ति अपन काल कोलंकर परिचय की है, अर्थे अपन कहे बहुत करने-कर्त का कार्याकर अपनक्त दिवासी हेता, कार्य-वहीं स्वकृत केरिका कार्याकर स्वीत हुई पहले के । इस अपनक्त पुन्न करने-कर्त का कार्याकर अपनक्तर कहा कर्या है पर्या।

> अवसाय अनी बुद्धानी प्राप्ति का नार्वि वालीका जार किया। वृद्धान में कर्नको सा नार्वि गीवका होत है जारत पृथ्वा । इस ज्याः ने हेनी एक-पूर्तिको सामकोत जीवन सने। केन्ने है हैंर्प कर्नी बुद्धानके केन्नेको मान्यर असी सामिक्यो प्राप्त किया, विर गीवी सामके साम्य प्रमुख करकार एक क्रांको सामिक्यो की नार विराद्धा। एक बुद्धाने एक प्रवेकर परिवर्क उद्धारके कर्नके केन्नेको केन्न इस्ता। किर केन्न है बुनिश्चित्यो रोन्सो स्वकर प्रमुक्ति शक्ता। किर केन्न है बुनिश्चित्यो रोन्सो स्वकर प्रमुक्ति शक्ता। किर केन्न है बुनिश्चानी रोन्सो स्वकर प्रमुक्ति स्वप्ता केन्ने केन्न हिन। सम्य कर्ना पुरा क्रांकि स्वयो एक्नी को केन्ने कान्नो प्राप्त साथी। स्वय स्वया क्रांकि स्वयं प्रमुक्ति हो स्वयं का मान्यो हो सम्य प्राप्त हो संस्थान की प्राप्त साम स्वयं स्वयं करेन हो स्वयं क्रांका क्रां

अस्पी संसाधे काली हैक क्या मुख्यीन की कालान कालेका निवार करते अनुंत्रों मेरे—'अवस्था । दुनी किलो क्या एवं स्थानक हो, उन इसरे किलोका का आरंत्रह निरंत्रर सुनारी है या है ने काली कालोके केलिए हो है है। अब इस साम कर्मका का करनेके सम्बन्धों को एक भी कर्मक हो, जो करें।' का सुनकर अनुंत्रों क्षीतृत्वारी कहा—'स्मृत्यूदर । जान क्या कृषितिर कर्मका परमाम हेलकर कार्यात हो भने हैं। एक ओन होन्यकार्य इसरे क्षित्रकोंके असल कर के हैं, इसरे और कर्मका करा इसरा पूथा है; इसरेकों के काल हो है, उन्हें कहाँ कार्यकों कार की किला । मैं देशका है, जर्म कार्य कर्म कर्म है कही करियो, अन्य ऐसेसे एक कार हो कार, क्या में अने कर इसरे का ना महों।'

परकर् अंदूरण पोरो—अर्थून ? हुमको और प्रकृष मरोजानको क्रेक्टर सुरार पोर्ट्स देश मार्टि से मार्टिस सोग्र में स्थान किन्तु करके साथ हुम्बरा युद्ध हो, इसके रिले जानी करण नहीं जाना है। कारण, जरके क्षात इन्तरी हो हुई एक केरोजावन करित है, यो जाने केवल हुम्बरो रिले हो रहा घोड़ी है मेरे विचारने इस सामा मानकी प्रदेशका हो दर्शका सामा करने साथ। जाने पान दिन्स, प्रकृत



और आसूर---वीचें प्रधानों अब है। सार यह समस्य है। संस्थाने पार्नेस विकर्त होता।

श्रीकृत्यके ऐस्र बहुनेस अर्थुन्ने प्रदेशायको कृत्यका । का कारण, बंदुन, कार और संस्थार आहिते मुहानित होतार उनके साफो प्रवरिक्त कुल और सीकृत्य राजा अर्थुनको प्रमाण करके ओक्स्पाकी और देखते हुए केला- 'वे सेमाने उर्दातक 🖢 सदल क्रीनिये, क्रीय-मा काम कारे ?" परकारी हिल्हा कहा—'बेट प्रदेशका । मैं को बहुता है, कृते—साम प्रसुरि गर्थक्षण प्रिकृतिका प्राप्त शास है। यह कान क्रांचेंड किने नहीं हो समया; क्लेकि तुन्हरे पास कई अक्रमेंद्र अब है, एक्सी पाप से है है । देविकानका है देखने हो प. मेरो परपाहा चैन्होंको होकना है उसी प्रपास कर्न क्षा व्यक्तिको सोह क्षा है। व्यक्ति स्थान-प्रयान अभिनोत्तरे गारे अरका है। अरके नालोंने पीकित होकार इन्बरे हेरिक कहीं कुछ नहीं यहे । बैदानके बाने कहे हैं । इस जनार कर्ण संक्रामें क्यूट हुना है। इसे येकनेवास शुद्धारे विकास स्थाप कोई नहीं दिसानी नेता। इस समय दुव्यास कर अलीन है और इन्हरी पाना दक्ता; बनोकि शक्ति समय राश्रमीका कर बहुत कर पान है, उनके परायनको बोर्ड सीन्य नहीं पहली । सन्द्र बन्दें नक्ष नहीं समझे । इस आयी स्तामें हुन अपने क्या केरलका कहन बहुर्या कर्मको पर बारो, दिन बहुबार कारी और होम्मक भी बाद कर करोंने।

पर्यक्ति सात समझ होनेसा अर्थुयने भी प्रदेशकारी सक्त—'सेटा । मैं तुम्बत्ते, सर्वाक्तियों एका मैंना ग्रेमनेनको है। अपने संस्ताने समान भीर परस्का है। इस राज्यें तुम कानीर साथ हैएक पुद्ध करों। महत्त्वीर स्वस्तांक चीनेसे तुम्बती सह करेंगे। सामाधिकों स्वस्तात सेकर तुम श्वाबीर कर्मकों मान करों।

वटोलार बोराय—वाद्य ! में अवेदन ही कर्त, होया, प्रशा अन्य श्रीतर प्रोकेंट मिले क्ष्मणी हूं। अन्य दानों में सुत्यूकोंट राज्य देख कुछ कर्तन्य, विस्तादी वार्ता व्यास्थ्य वह कृष्णी रहेची जातक लोग कर्ता होंगे। अस्य में स्वास्थ्यकीय जातम लेकर राज्यूनों कीरणारेनाका संस्था कर्तन्य, विस्तिकों सीता नहीं क्षेत्रेग्य।

हेल काकर जाता भोतान प्रश्नाचे संभवते कार्यात काम हुआ कर्मती और कहा। कर्मरे भी हैलो-हैको जाना जानत निका। तिर से मर्मन कर्मा हुए अर देगी: भीतेने केर संभाग किंदु गया।

# ंबदोत्ककके हाबसे अलम्बुन (द्वितीन) का वब तबा कर्ण और बदोत्कनका बोर युद्ध

स्थान सहते हैं—न्याराण | कुर्रोजनरे जम देशा कि स्टोरक्ज कर्मांक पर करनेकी इस्ताने अनेक रककी और क्यां जा का है, तो दुःस्तानने क्यां—'अर्थ ! संसानने कर्मांको करावार करते देश का एक्स जाना कई केन्से क्यां कर का है। तुर कही मारी सेनके साम कई कनार इसे ऐको और कर्मकी एस करे। ' कुर्गेनन का कह है का क्यां कि नारमुख्या का काल करने क्या अवका क्रेस--- 'कुर्गेनन ! की तुन अस्ता से से में तुन्तरे औरत्व क्यां के अनुनारियोग्सीय कर करना क्यां है। वेर सिक्ता क्या का सदस्ता । के स्वाम स्टालोके नेता से । अर्था कुछ है दिन हुए, इन क्या क्यां की का कर करना के । वेर प्रकार करना कुकान के साम है। हुन इस कालके किये पहले अस्ता के ।'

च्या सुनवार कृतिकारों कही जातावा हुई, जाने बाह्य — 'अस्त्रपुर । बाह्यनेको बोलके जिले को होना और बाह्य आसीत साथ में है बहुत हूँ। तुम तह नेते आहातो हुए कहार अस्त्रपुरने करेश्याको दुहते हैंन्से करवार कर है। इससे हमर क्या अवस्था है आहातुम, कर्म और क्षेत्रकीयो हसस सेन्यको हिन्दे साथ। उसकी मानवार कर देशकार सारमुक्ते करोसाकार ताल सामानो सामानामुक्ति हाई स्था है और अपने वालोगे क्या-नेका कर कराया। हसी अवस करोसाकार वालोगे क्या-नेका कर कराया।

प्रकृति शतानुको क्रोको भरतर क्राटेक्कको है। कार्य में प्रकृति कार्य क्राटे में प्रकृति कार्य करते हुए साम्ब्युको केर्य सीर सार्यको परकार सान्य सार्य क्राटे में प्रकृति क्राटे सार्यको परकार सान्य सार्य क्राटे क्र

वाकः । इसी प्रकार कामी मेन और आंधी, कामी पर्वत और वाक काम कामी इसी और दिंगू मनकर प्रकार होते थे 1 एक पूर्वकर काम कामा के दूसरा यह कामार असमी असने आ काम । इस तक क्षा-पूर्वाओं का इसलेकी इकारों होते हैं। विकार का थे परिच, गया, जाता, मुगबर, पहिचा, मुस्ता और वर्णाविकारोंने सरस्ता जाता कामी थे। उसकी मानकारि बहुत कही थी, इसलिये में कामी से पुस्तवम्यार कामार सम्बंध के कामी के इन्योगनारोंने कामी मुद्दा कामे थे। कामी के विकारोंने समये ही असी देशे वामी थे।

वर्ष क्षेत्रमे अलग्नुनको का झलनेको हकाले कटेरकक असमो जाना और क्षात्रको पति झपरकर आने आल्युनको पत्रम् क्षेत्रकः। विर औ अपलो झानार पुणिसर क्षात्र हिला और क्षात्रकर विकासकर असे स्मेक्ट स्वात्रको कार जाता। जुनमे भी हुए जर स्वात्रको हैले



परोत्तान कुर्वेजनके पास नवा और उसे उसके रचने वेजाबार केला—'बा है तेय स्वाचक बन्तु, इसे मैंने घर करना। देहर विकार न इसका करकान ? अब तू अधनी तथा कानंत्री ची बढ़ी दस्त देखेंगा।' बह बहुकर करोलाव तीके धानंकी वर्ष करवा हुआ कानंबी और करना। उस समय प्रमुख और प्रकानों आपन्य अवेकर और आक्रमेंबनक कुछ होने सम्मा। पुरुष्ट्रिये पूर्ण स्वास्त्र ! आसी करके क्रमण का कर्म और क्योतकारका सामना कुमा, उस समय उन ग्रेनोने विका अमार पुत्र कुमा ? आ राजस्तका क्या केसा था ? आहे एवं, योदे और अक-क्या केसे वे ?

स्वापने कह— बडेरकामा हरीर बहुत कह का, हरका पुँड समि-नेता और आंधे सुन्दें राज्ये की। येट केंक हुन, सिरके कार कराकों और औ हुन, कड़ी-देश कारणे, कार मूटी-नेते, ठोड़ी कहे और पुँचक केंद्र कारणा केंग्र हुन का। उन्हें तीकी और विकारता की। कींच और ओड ठीड़े-मैंसे स्थर-श्वाप और राज्ये के। नीई कहे-बड़ो, उच्च केंद्री, सरिरका रंग कारण, करड स्थाप और के कार्य-नेती कर्यका की। मुखाई विकारता की, स्थापका केंद्र कहा का। स्थापके सामृती केंद्रीस की, प्रतिका कारण कारण का



भाग केवार जह हुआ प्रोताम विश्व था, जावर बात आहे को है। सरकी नामि कियी हुई और निरम्बाद भाग मेटा बा। मुजानोपे मुकांद जाति जामूक्य कोचा पति है। प्राताम सोनेका करकारता हुआ कुद्ध, कारोपे कुमार और गरेवों सुकांसकी काल थी। जाने कारोबा कवा करवाता हुआ करका पहण रक्षा था। उसका रक्ष कुछ बहा था, जावर कारों कोच्छे रीक्षण करका पहण हुआ हा, उसकी संबाई और कीवाई कर सी हुआ थी। सची प्रवासके वैद्य अस्तुत अस्तर एके हुए थे। उसके उसस करना बद्धानी वी। जान प्रतिनोते यह वन परमा मा, जानी परवरहर पेटनी प्रानी शर्मकारे में पता करती थी। जा रवमें जी मोड़े को दूर थे, में को ही सर्वकर, हकानुसार का बनानेकारे तथा परमाहे केरते पारनेवारे थे। विकास जनक एका जाना जारी था, निस्ते पुता और पुत्रकारें सीह करता की थी। यह प्रेम्पिटी साम्बोर प्रान्ककर जो कान्त्रे रक्ता था।



हैंने जापन सामार महोसामाओं आहे देना मानी सहं अधिकामां साम अपने महामा हुंगा है जो रोगा। जिल् होनीने अस्तान नेपहारते बहुत अंगार हम-पूरांची माना माने हुए कामोने आकारित कर दिया। होनों ही होनीको साम और प्रभावनेने माना करने अमे। यह राजितुन हमनी रेताक कामा हा, अभी एक वर्ष बीच गया हो। इस्तेतिके सामी दिया अम्बोको अगाउ दिया---यह हेना महोतानको सामी माना पैतानको अगाउ दिया---यह हेना महोतानको सामी माना पैतानको एकाने हुए या हो किसीको हमाने पुगलर। किसीने दिवसमा महाने हे हही भी और विस्तिने मूनार। किसीने दिवसमा महाने हे हही भी और विस्तिने साम को को देशान सम्हान नेपह मानित हो उठे। हसी सम्बंद पर्ने को देशान सम्हान दिवस, उसे सुनवर हानी इसके याने पेहाम करने एके। महानोको से मही प्रभा हुई ६ साले समय राहरतेया जार यह हुन्य यह उनने होते हुए सोहेंके यह, मुख्यी, हाकि, होन्य, हुन, हम्मी और पहिल आदि अस-हार्कोको पूर्व हो यह थी। महस्त्रम । उस असमा का और पर्कार हुन्नको देखकर आओ हुन और वितार जानित होकर समयुक्ति यह को । केवक अधिकाने कर्न हो नहीं उस सह, जो सम्बद्ध में काव नहीं हुई। उसने असने कारोसे कोवकमार्थ रही हुई कावका महार कर हासा।

पार गांध रह है को से प्रतेशक को अनंने पासर भीर बागोंका उद्धार काने सन्त । वे कार कर्मका करीर केवबर प्रकोरों क्या गये। का कारी का काव सरकर महोत्त्वकारों कींग करता। उससे अपने करोकारोको नहीं कोट पहिल्हें और पुरिक्त क्षेत्रक सहने एक दिला कर क्षणी दिला क्या को कार्यक कार है यात। यह कार्यक कार्यक क्रमेन्ट्रबरे क्रेमर मा पन परचारके संस्थानके परि प्राचन पूर्व मेना ही यह हो गया। तम से परीत्यक्ते प्रोपका दिवास न युर, जाने वालोबी कर्ष करके करके क्षा दिया । कुल्कुले भी अपने कामधीले तुरंत ही पारेस्वाओं प्राच्ये अवकारित का दिन्छ। वह क्रोतकार्य कर्मना एक गद्य क्ष्माबार केवी, सिंह बाली को बालोंने बाद नियम । का रेज प्रतेत्वन उक्का अत्याक्ष्में कन गण और प्रति क्रांगर बहांकी कर्त कारे रूप । कर्म के वैकंते है करा क्षेत्रकर का मानाचे राक्ष्मको स्रीको सन्त । अस्ते क्ष्मको कृषी क्षेत्रोंको पारवार काले राज्ये भी संवर्धी काले पार क्रोंगे। इस संबंध प्रधेतालके प्रधेतों के अंतुल की देख इंकर नहीं करा था, पहले करन न रहना से । उसने अपने क्रिक कारते पार्टक विमानांको पाद प्रता और अलो प्राप मानापूर्वक बुद्ध करते सन्त ।

व्या आकारणं अवृत्य होकर कथा क्षेत्र व्या वर्ग । अस्के कथा भी विकाली जार के) में । वर्ग नामारे सामके को पर्यक्त करता हुआ विकाल समान कीर वामके ही काले को पर्यक्त एवं उत्पूष्ट मुँह कराकर काली होना अस्त विनाल गया । दिन व्या वैन्द्रीन एवं कालाक्ष्मकाना होकर संवाकों हुआहोंने केंद्राल गिरवा जिलाकों होने समार । इससे उसे प्रम्य हुआ सन्तालक कौरवोंके अनुका कीर नामेंचा करने गर्म । इससे की प्रम्य का वर्ष नमे—नमें सारेर साराम कर साथी विज्ञानकोंने होना काने गर्मा । वेसके-ही-वेसके आका संवाकों प्रस्ता कर्मा-का बैचके राज्य । कोई ही देशने आका कांका की कारका कर्मा-का हो गयी । किर समुद्राल जाता संवाकों प्रक्रित कराका हो गयी। किर समुद्राल जाता संवाकत की क्षा कमी कार और कमी क्रम-कार होने समा । ऐस ही कमी इसी प्रकार प्रमित्र क्रम कार और पुतः कर जायर अन्यत दिसानी पहल था। इसके बाद आकारों कारकर क्ष पुतः अपने सुवनेत्रीया प्रकार सा वैद्य। फिर मानको है प्रकारों पृत्यों, जायात्र और विक्रमोंने पूनकर प्रकारों सुराजित है कमीद रकते पात जायर चेरच—'पूतपुत ! इसा पहल, अब वृ मुक्ते पोनित बनकर वार्ट पानगा? असा मै इस कमाजुनमें हैरा मुख्या होना पूर कर हैता।'

हैल बक्कर का राज्य पुरः सामाजने का राज्य और कर्मके कार रक्के दरेके क्रमन रका कार्यको वर्ग करने लगा । जनमी पालकांको हासे ही कर्मी कर निरामा । इस प्रकार अपनी मानावों पह हो हैना प्रदेशका पुर: अक्षय केवन कुल क्यांच्या बढ़ी करने रूपता। एक ही क्षणमें बढ़ एक बहुत केवा पर्यंत पन नाम और अपने कारोके प्रारंकी चीन कुछ, प्राप्त, सारका और पूरात आहे अव्य-स्वांकी कुछ होने राजी। जिल्हा कार्यको दुससे स्तित्व को यह पूर्वी हुआ । कार्य मुख्याराते हुट किया अन्त अन्तर विज्ञा । देश अक्टबर राजी होते ही इस पर्वतराज्या जान-विकार की नहीं के पना : इस्केटिने का प्रकार इन्नाव्यकारित मेर बनावर क्रमा आचा और खल्हाबर प्रावतिकी क्रमी कामे लगा: सिंहर क्रमी सामान्यकार संबंध करते क्षा काले नेवारो वर्षात 🕮 विकार प्रत्ये ही भूती, उसने स्वयवसम्बद्धीने स्त्यत विकासीको आवासीहर पानके प्रदेशनको पानके हर सन्दर्भ अव्योग्ध पर पर प्राप्त ।

या पीन्संत्रके पुत्रते व्यक्ति सान्यो न्यापाल अवस्त वहे । व्यक्ति वेत्रतं, व्यक्तिया एवल वैद्या जा एत है । सरके साथ प्राप्तकेशी कहा कही संत्र है । एउन्सोने कुछ इत्योपर हैं, कुछ प्राप्त है और पुष्ट कोड़ीना सम्बद्ध हैं। उनके पास नाना स्वाप्ति अवस्त्रक और व्यक्त दिसानी ऐसे हैं । प्रदोत्तकने निवाद आते ही व्यक्तियो चीच वाल नारका चीच साल और कार सम्बद्धीयों नान्यीय करता हुन्ता संस्त्र कारते गर्मत्य करने सन्ता । मैंना साले अञ्चलिक सावक वालक प्राप्ति करने सन्ता । मैंना साले अञ्चलिक सावक वालक प्राप्ति करने सन्ता बन्न वाट साला । अर वाले सुनार कुल इत्यक्ति हानका बन्न वाट साला । अर वाल नारने सन्ता । इत्यक्ति हानका व्यक्ति हानको मोर साल हानिक स्वीव कार्यक्ति हानको स्वीव कोई साली स्वाप्ति स्वाप्त कारतार देश भी नहीं

ब्लोक्ट क्रोबरो कर रहा, सामी श्रीक्रोरो किरावरिशी

पूर्ण सर्वे । जाने हु<del>ध-प्रे-कृत पान्कर ओठको वृक्षि-क्र</del>े रूपमा और पुर: कनके जाते हारे रक्का निर्मात किया ।



अपने हामीके समाय मेरे-माने उचा निवानों-केरे महासाते गर्धों कोते गर्वे । जा एक्स बैठकर का कार्बींद्र सामने एक मीर कार्य, जार आने एक अनेवार अवस्थित जार सिवा । मार्गी अन्ता क्ष्म भागा रक देश और कुल्ला क्ष अवनियों क्रमने प्रसद रिया । विस् अपने अने प्रतेतकपूर ही फान दिया। यदेशका से रक्ते शुक्रका हुए का स्वा इसा बिंगू का अवस्थित हैको गयो, सार्थि संस कामानीत उत्तक रच कार्यार थार हे चना वित क अवनि पुर्वाने प्राप्त करो । फर्माना का प्रतासन केलात केला के अध्वर्ध करने प्रत्ये असून्ये अनिवर्धने कार्या ज्ञांसा को । एकोड़ राज्यान करके कर्म अवने राजन का केंद्र और पुरः राज्यानेकार काम क्रमाने राज्य । क्रम कोक्स नको-नरके इत्या ५० अक्स है का और पानारी कर्मींक विभावनिक्ष पान करने राज्य को की कारी अन्य की भी जोना । का एकाके साथ पुरू कही e swer fi

कारका अरेको को पूर कोरकारो सर्वे अरेको सहस करते और भीरत पहर्रावयेको प्रवर्धन कर विका क्यांक्रम् सिंह, व्यापः, रम्बाहरणे, अन्तरे स्थान स्थानकारे हुई चीचवारे और और स्थेतन भीचवारे वहीं का विकारोंने क्षेत्र-नेक्यर कुर को। क्ष्रोक्यर से कार्यक्र कारोंने कारत क्षेत्रर अनुस्ति हो गया पांतु अवस्था निर्माण, प्रकृत, पातुषाम, पूर्व और पर्यक्त मुलाबी नेविको तत्त्व अनेरको प्रस्तात क्षेत्रकर सम्मानको अनेर क्षार प्रस्तात सेवे कर्त को एवं करिने क्या सुनते हैंने हुए कर्वकर क्या-क्या रेकर करोर कर्ष कुक्ते हुए को करने तरे।

कारी क्रमेंने क्रमेवाके कई-वर्ड बार अरवार बीज क्रम और विका सकते का प्रकृति गायका जात करते. परेकालंड चेहाँको की कालेक्ड केन दिया। इस प्रकार पुर: अवने कारका जात है जारेल 'अन्ये तहे चौतके कुराने भेजन हैं देश कारी बाबर परेसाय है। सकार्यन से कहा।

## भीमसेनके साथ अरुायुक्का युद्ध तथा घटोत्कवके हाथसे अरुायुक्का वथ

स्ताप करते है—राजपूर इस प्रकार कर्य और कोशकार पुरु हो हो यह या कि अन्तपुर जानकार एक रावार पूर्ववासीन वैकार जनक करके अस्ती कहे नाते भेगके साथ कुर्वेकको चार जावा और पुत्रवी सारकारी बोरस—'रहाराय । आरब्धे के कार्य के क्रेक कि बीक्तेओ ह्यारे पानक दिवेगा, यह और विश्वीवहर का कर करना है। इसलिये अस्य पुर जर्म क्री पर्देशकरका पह करेंने राजा सीकृष्ण और पाणकोची अनुसरोत्सीहर पारवार का जायेने । अस्य अस्त्ये संस्थाते चीते क्रार श्रीकिते । अस्य पानकोचे साथ हर दहरतेना है युद्ध होता।"

क्षणे क्युकोंके सक है जाते यहा—'नहीं ! तुने हैं। तुक्तरी सेनामहित आने रहीने और साथ स्कूबर इब सार्च भी क्यूओंके काथ रचेंगे। मेरे केव्यओके क्रथने केव्यी जान का को है, ने बेको कीने की ।

'जन्म देता है है' न्हें न्यूनर स्कृतराव जनस्व व्यक्तिको साम स्थान को आवारीके साम पुरुषे तिथे चान। वर्तत्वकांव करा जैता हेवली त्व का, वैशा ही असम्बन्धे पत्त भी या। उसकी भी परप्रशत्तुह अनुस्य भी, अस्पर भी रोजका करना कहा हात या। संबाई-सीहाई भी को कर रहे हकती थी। की है हकी है एकी है सकता मेरेसाये ही "काम्बी आतं सुरका तुर्वेकमधी कहि जाती हुई। उसने । कोई को हुए थें। उसका करून भी बहुत कह का, विस्तारी प्रस्तान सुबुद्ध भी। उसके काल भी शबके सुनेक कालन मेटे और उनके थे। यह भी कैस ही और यह, केसा स्टोज्यम; जिल्हा जनमें यह सहोज्यानकी उनकेश सुनार था।

स्वाराय है सरवपुर्वा आवेशे वीश्वेत्ये वही सरवा हैं। ताने समुद्रों कुने हुन्तों कहन किर राम है। उन्होंने सरवा करें कर हुन्ता समझा। का काम कर्न और महोतावाने आवेशिया पूर्व का को का हैन, अध्यावक और कुरावाने आदि कोस्काने पुन्तानोंसे देखकर को के का। दारी केम कर्नते कीश्वेत किर्मा है कुने के। हाँकिने देख कि कर्न की विश्वेत किर्मा है कुने के। सरवावकों कुरावर की/—"या क्रां कोस्माक है से कर्न स्वाराय स्वारा है। सेश्वर ! कीर कुने क्रां क्रां वर विश्व कर है। सेश्वर ! कीर कुने क्रां क्रां वर विश्व कर है। सेश्वर ! कीर कुने क्रां क्रां कर वर विश्व कर है अस कुन कुनाव करक क्रां कर को। वर्ष कर्म सामे सामानावार असना क्रांचा क्रां है कार्य क्रांचेसे कर म सामे—क्रांचा क्रांका स्वारा !"

पूर्णिकारी देश स्वानेतर सामानुस्ते 'स्कृत समा' स्वाना प्रवेशकार समा विका । सीमांग्रेड पुत्रे अर्थ अर्थ स्थाने सामां अर्थ देशक से सामां सेव निया और प्रश्नित सामांक सामां विद्या सामां समा । तिन केर्य प्रश्ना सोक्ष्में प्रस्ता इस-प्रानेते निया पर्ये । मीमांग्रेड देश कि स्वोत्त्रक अर्थापुत्रके संपूर्ण केरा पर्य है से वे अर्थ केराओ प्रस्ता केरे सामांकि सभी हुए महाँ का मूर्थ । इस देश अर्थापुत्रके स्वोत्त्रकार्य होस्ता क्रिकेट अस्तान्त्र देशकारण और अर्थ कार्य क्रिकेट की अर्थ केर्यन्त अस्तान्त्र देशकारण सेवा सीमांग्रेजन हो हुए गई।

वास महानारी राजास मारावेरी मीचने हरने की पहाराकी पीराने भी अनेकाले पर्य-चीच मीनो काम कामान समाने संग्रह कर दिया। पीरावेर साथ पुद्र कामेकारे पुर प्रत्ये हराती पारते पीरीय हो पर्यक्षर पीरावर कामो हुए कर्ने दिखानोंने पारते राजे। यह वेस माराव्युक पीरावेशकी और पढ़े नेकारे होड़ क्रीर समार कामोची पृद्धि कामे समा। मार्गे पीरावेंकों हो हामने पारत्य दिखा। पीरावे पुर: समाने समार साथ सरसाथे, विश्व साले अपने सीनो सामानोंने पारावर वर्षे भी पुर: पार्च कर साथ। दिन साथे पीरावेर सहायों भी हुमाने-पूछाई कर हिये, पोड़ों और सार्यांकात भी काम समार केही और क्रानिके का कोना पीमोन्ने रक्ते सतका कर्का कर्कक की और जा सकारत कही भारी पेटक क्रान किया। जाकपूर्व भी कामो ही जा कार्क आ



निकार : जर चीको कुमी नक कुमो को और उस राज्यको सक जनका जुड़ा पुद्ध होने सना ! जन सनव एक-पुसरेशो अपने अध्यक्ष को चर्चकर सन्द होता था, जाने पुष्की वर्ष अध्यक्ष को चर्चकर सन्द होता था, जाने पुष्की सूर सको असे ! असे पुष्कीय अध्यक्ष मेने पुरे मार्च स्कूपानेकी-को अस्ताय होतो थी : इस बच्च पुद्ध गरते-वाले होतो अस्ताय कोको या वर्ष और उसके पहिले, सूच, को स्कूपान सम्बद्धकोनेहे को थी विकार दिस्तायों हेन था, जो ही सहा-सहस्तार ज्ञान-पुरसेको जानो समी ! बीकोड प्रयोगी सहस्ती सारा यह बड़ी थी !

पनारम् और्मानने जा जा आस्ता देशी हो उन्होंने वीगरेनकी पान्ये किन्ने प्रतेतकाले कहा—'न्यानको । देखे, हुन्यरे सामरे ही तम केनके देशने-देशते अरमपुत्रने वीगरो अपने अंतुराने वीगर विश्व है। इस्तीन्ने महर्थ राह्यस्थान अरमपुत्रका हो जा बावे, किर वर्गको मरसा। वीग्रामको बात पुत्रका बरोजान पार्चको छोड़ अरमपुत्रते है या विहा। किर हो हा एकिंद्र स्थान का होने राह्यांने सुद्ध पुद्ध होने रूपा। असमपुत्र प्रतेतकाके मरस्यार हे पार। कासे पर्यक्रमणको स्तीत्व पूर्णान्ती जा गयी, निश्च त्रव सरकारो अपनेको हैंप्यस रित्य और स्वास्त्रपके स्तर एक पहुर गढ़ी गया जरवादी। केगडे पैक्सी हुई यह गड़ने अस्तरपुरके पोड़े, सारवि और राज्य पूरत क्या सरक।

सरसमुत्र राज्यों नामका शंकार के अन्याक अवस्ताने सह गया। उसके उसर वाले हैं सुन्तरी वर्ण हैंने दल्ले। साधारकों नेनोसी सारणे कर कर नहीं, किससी कन्याने सती, बदानेसी नामको संस्था नामका होने कना। जर सहस्रायाने वहें धोरको क्रमुकादक कैस वर्ण। जरावी नाम देसका महोकार की नामकाने का गया और कुनी क्या राज्या को अस्तानुकारी कामका नाम कर दिया। या देख सारामुख कोस्तानके सार पार्टीकी क्या करने साम। विद् करोगायने असने कामेकी केस्ताने का कारोको ग्रा का करते सने। प्रदेशे परित्र, क्या, नाम, कुनी, कुनी, विकार, सरकार, जेनर, जात, कामा, जाता, माना, नाम, बाइ, परसार, रोक्नेकी नोबेन्सी, निर्मानकार, गोर्डार्स और अनुसार आहे अध्य-कामोरी एका पृष्टिते स्वाप्ते हुए प्रार्थ, कामा, प्रार्थ, पीना और सेमर आदि प्रो-पादे पृष्टीचे के प्राप्त आहे पार्थ माने हैं अपना प्राप्ताने कामोरीन विकार कामा भी में एक नुस्तियों मानो से । यह सेनी प्राप्तानीय पृष्ट पृष्टिकारीय कामराम्य पार्टी और स्वीति प्राप्तान काम की की प्राप्ताने मानो हुए-पुरस्तान के पर्य । इसी समय प्राप्ताने सामानुकारी कामानुकीय कामा विकार और पार्ट केमरे पृष्टिकार कामीनकार है जाता । किए आहे प्राप्तानीय कामानुकी कामान

जारमुक्को कह एक ऐस हुनैकर अपनी सेपके साम ही असम्ब काहरू हो जा।

#### यदोत्कवका पराक्रम और कर्णकी अयोध इक्तिसे उसका वर्ष

साम कार्त है-नारात । एका आक्रमात का कारेंद्र क्रोलक पर-वी-पर पता जाता हुआ और सामग्री रेक्के बाजे कहा है सिंहक करने रूप । सन्दर्ध गर्वक कुलार आरथे चेद्धानीको कह यह हात। हार कर्नार mair um were breeft ft aft ter debrite mit अक-राखीका पात करता पाता का और उसने पानके स्थान शानोंने प्रतानीका नेकर जातंत्र विकास अर्था सम्बद्धीते विजने ही मोरोके अब विक-विज हो नवे । विज्ववित सरावि मारे गर्न और किलीन कोई का है गर्न । धनकि सामी किसी तथा अवन कवान न देखकर ने केना परिनीतकी रोगार्ने भाग गर्व । अपने केस्कानेको काली प्रक पर्याक हेकर बाजी हैक बटोस्क्यको यह छोप हरत और यह ज़ान रखने बैठकर विको ज़बन बहुबर हुना बलेक सामना करनेके सँग्ये का महैना । ताले ही करने नव-सरीते बालोंसे करोको सीच करवा। मिर केनो ही एक-करोल कर्ण, नराव, विक्रीयुक, नत्येक, क्या, जवनि, जवन्त्र, बारक्षकर्त, विचार, तक्ष क्ष्म क्ष्माची वर्ष बस्ते स्त्रे। रुपारी समापार्वाचे आवश्य का प्रमा ।

अक्षाप्त । यह कर्म मुद्दाने किसी तथा पटेन्क्सने यह न सका से सारे जारना पर्यवार कथा तथार किया और साले सारे १६, योड़े और सारक्षिक कथा कर साल । विक्रिया-करार सारीन केरे की अन्तर्वात से क्षा । उसे अक्षण केरे देख कोटर केटर कियान-विभागवार बढ़ने रही—'परवारे द्धा करनेकार का राज्य कर दुसमें सर्व की दिसानी है।। के कर्मको की की का करून ?' लाकीने करने प्रकारोंके करको स्थान विकासीको अध्याकि कर दिया । का पान्य प्राप्तिके सरकारकों अनेत का भारत का के भी बोर्ड क्रमी कराचे पाकर गिरा वर्षि । क्रमी कर उन्होंनीये अन्यदिक्षणे का राज्याची जर्मका कथा देवी । जारे का समा रेनके प्रात्मकेके प्रकार प्रकारिक औ, निरु बारवी को आगानी त्यको प्रमुप क्रोकर दिवानी के राजी। तामकार जाते कियारी अबाद हो, संस्थानमा होने राजा और हमारी क्ट्रिकारें क्येंग्रेट प्रकार क्येंग्र अलाव क्रेरे राजी। इसके का कर, प्रति, भूके, जल, मुसर, करता, सरका, ब्रीफ, केक, परिच, यह, प्राप्त और फाड़िलोबी पृष्टि होने रूपी । प्रकारीकी संस्थानी प्रकारीकी बाई-बाई पहाने निर्देश तमी । स्थापना होने समा । सामके समार प्रमाणि पास हिल्ले एको । कार्नि कार्नोरी सा अवस्थानोयो रेकानेका पार प्रका दिन्छ, पर को समान्य नहीं निर्मा । पानोंने अतुन होबार क्षेत्रे निर्दे रूपे। क्योंकी कारते हानी नरासाकी होने तने और जन चकुन्ते जन्मेके उपासी च्योभी महारक्षिकेल संबंध होने राजा। विस्ते समय प्राच्या महान् उन्होंना करें और कैन का या। यदेनकों क्षेत्रे हुए गांध प्रधाने क्वेंबर अञ्चनकोरे जाता हेकर हर्नेकाके

रीनेक बढ़ी प्रमाणको साम प्रमान्त्रमर चान हो थे। सम् | औ। महराम ? चा चही क्रकि ची, जिसे न चाने जिससे भोर अधकार क्या का : प्राथी तोल विकासक और कार्यात । क्योंने कार्यन कर्मको कारोडे रिले सुरक्षित रहा का । क्य हो गये थे। का समय कारके पुरुषी रोशकर शर्मकर केह शर का या। विकर ही सुरवीरोची नहीं किया गाँव की, उसके महाक कर गये थे और सारे अह किय-चित्र हो यो थे। हम हार्थ है रमनुषिये यहे हुए है । उन्हा-उन्हा बहुर है है कुछते हुए कोड़े और हुएकी दिल्लानी देतें कें; तथ कंक-कहन है। जने थे।

का समय कारणी जैस्सके इक्टिबंबर विकास है का या। सन्तर चौरत चौद्ध काला हेकर काले हर विकास-विकासकर बाद को थे- 'कोरबो ! चानो, बाद केस नहीं है। इस आहे देवता प्राथमीका पढ़ लेकर हाराव जहां बार को हैं (\* इस प्रकार कर औरच किसीओ अक्षाकारणे हुए। में थे, का प्रथम मुहदूर करने हैं हैंग करना रूपने पह की। यह सारी कुछ-कर्मको अरुनी क्रानीयर क्रेसका हुआ अनोक्त्य ही नैदानमें हार गुरू । इतनेईमें प्रदोक्ताओं कार्तीह भारी बोक्नेको स्थान करके एक कराती करवानी। अन्के अहारके चोड़ोंने बल्डीवर चूकों केक दिये, करके चूंच निर नर्प, अभिने और परिषे कहर निकास अभ्यों । निवर में निपानन होतार गिर प्रदे।

बोड़ोंके पर करेपर कर्न अपने रकते उसर पढ़ और मन-हो-का कुछ सोको सन्त । यह सुरूप कोरव बोद्ध कर रों थे, रक्षती राजाने साथे विभावनेका चक् है पक क हो भी कर्न कारण जी। यह तक्नोन्स क्रांक्ट रिका कारे राजा। इसी समय इस पर्वकार कामका प्रकार देख भागमा कोरपोने निरम्बर सार्गते स्थान—'स्वई ! सार पुन इस राम्यका सूरंत वस क्यें, जी से ने सबी चौरव सबी 🕬 🕮 न्या कृत जाते हैं। चीमसेन और अर्थन कुमान क्या कर रोने ? इस समय अपनी राजने इस राक्ष्यका प्रतान बहुत कहा हुआ है, अल: प्रस्का है भक्त करों ( प्रकारेपीनेने को इस पर्वकर प्रीक्रमसे बुरमारा य जनगा, की क्रेम्सब्रिय प्राथकोसे बुद्ध मतेना। इतरिन्ने दून इन्हम्में से व्हें प्रतिने इस नगरत राज्यात्रक लेकर कर क्रमते। कर्म ! सभी वर्षभ्य प्रमुक्ते प्रथम कावान् है कही देश न हो कि इस प्रतिकृति में सब-के-तब अपने सैनिकोसील परे असे।"

निर्देशका समय क, प्रभूत कर्मका विरस्त प्रका क रहा या, सबसे सेनावर असका आवाह साथा हवा या; हका कील केरानो करह से वे । वह का देख-सुन्का कर्नर राजसके द्वारा चर्कि कोडनेका विकास विकास अन्य उससे रंगायों प्रत्या आवार की तहा गया, अले का इक्कर करी स्त्र 'देवनचे' करवारी अस्त्र प्रदेश हकी

ett



त्र अस्त्री एक केवा बात सार प्रकृति एकं बहेर अवन रूपरानी क्षेत्र करानी विक्रमें प्रमान का प्रतिप



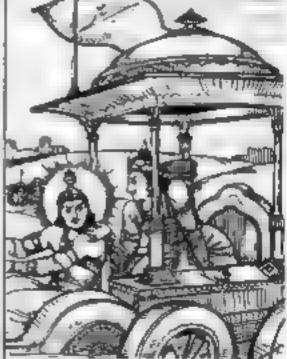
स्वर्णने व्योगसम्बद्धे कार व्याच हो। इसे देखते ही राज्या स्वर्णिय हो गांव और विकासकार्य स्वयान विकास हारी बारणकर वहाँसे पासा। स्वर्णने प्रव्यक्ति होती हुई का स्वर्णने स्वयस्त्री सारी पासा पास करके कार्या क्रांत्री गांति बोट की और को विकास करके कार म्यूबलपाइलों सारा गांती। परोज्याम पैस्ट-पाद व्यासा हुआ कार्य पारे प्राप्ति हाम को बैटर। का समय व्यक्तिक प्राप्ति कार्ये सर्गरका विद्येण हो गांते हे हो की इत्युक्तिका क्या कार्येड रिप्ते कार्य आधार्यकार का कार्या विकास अस्त्रा हारेर वर्णन्ते समान करा निन्छ। इसके कर का जैसे निर्छ। व्यक्ति नर नमा का हो की अपने अपने वर्णक्रकार झरीनसे कीन्य-नेन्यके एक व्यवका मंद्रम कर इसका। असकी केन्ने मैंने एक अर्थादिनों सेना क्वकर मा गयी। इस प्रकार परी-नमी की जाने क्वकरोंका हिल्लाका किया। परवा का कुं और उसका करा नवा—का देखकर कीरव केन्ना इस्तान करने समें: साथ ही पहुर, केरी, केल और नगरे की सम जो। कार्यकी अंशन्स होने समी और कुर्वेकरके रकते केन्ना

## घटोत्कवकी मृत्युसे भगवान्की प्रसन्नता तथा पाण्डवहितेषी भगवान्के छरा कर्णका बुद्धियोह

रहम अते हैं—कोसाओं को वाने हाना क्यां प्रेमंगर है गये। समसे आंधारे अंदुओं के क्यां को स्त्री। किंदु म्यूनेक्यम अंदुक्तकों को सुझे थी, में अवन्यने ह्या थी थे। उन्होंने को जेरते सिक्स किया और हमी ह्यांकर काने हने। किंद्र सर्वृत्यों को स्वास्त्रक समसे पीत कोनी और सरमार गर्नार थी। क्यांक्ति हमा उसस पार अर्थुन कोरे—'म्यून्त ! क्या शुक्कों सेनीचे झारी सुझी क्यों हो थी है? क्यांक्तिकों मारे काने हमारे सिन्दे सोक्सा अन्यार कानिता हुत्या है, सब्दे केल किंदुक होकर मारों या की है। इस्लोंन की क्या कार्य की है से की अप अर्थ है। इस्लोंन कोई कोरा-कोरा कार्य की है स्वत्रका। कार्यन है। इस्लोंन को का कहा है है। अस्त्रकारों ? की क्या किंदानेकों कार व है हो अन्यान क्या कीराने । तेन क्या किंदानेकों कार व है हो अन्यान क्या कीराने । तेन की क्या का हा है।

नगरम् श्रीमृत्य चेते—स्वस्थ । वेरे केले सम्बुध है को नामका अवसर अवस है। वसक सुन्य वसके है ? युरो । तुम कानो है कानी बरेसाकार सरा है कर में बस्ता है कि इसकी से हुई सर्वको निरुद्ध करते (इस क्याएं) अंदेशकारे है कर्मको नर सरम है। अब दुम कर्मको मरा हुमा है समझे । संस्थान कहा कुम्बार को होते, तम से यह समझे पान स्थान कहा कुम्बार को होते, तम से यह समझो हत, कुमेर, कहा समझ करता की पुरुषे समझ सामक नहीं कर समझे में। इस और दुम स्वर्ण समझा सामक नहीं कर समझे में। इस और दुम स्वर्ण समझा सामक नहीं कर समझे में। इस और दुम

राज्य कार्य है—क्योसामके करे कानेसे सभक्त कावत | हे जाते। हुन्यत ही देश करनेक दिन्ने इन्हरे क्लारे करे प्रमान हो गर्ने। सम्बर्ध आंकोंने अनुस्थानी कार्य कार्य | कुन्यत और कार्यको होन दल हैना। उनके कार्यने कार्य



पूर्व है, जो कर्नात हानने प्रति क्रिक्ट कान्ये कान्ये रहर सकता और बड़े अस्ते पान कान्य क्याद की होते, सन से जा देखाओं स्वेत केन्द्रे की जीव सकता था। वर अवस्थाने इन्द्र, कुनेट, कान्य अस्त्या कराय के दूध पुन्ने सकता सम्बन्ध की कर सकते थे। इन और दूध सुन्ने सकता सम्बन्ध केन्द्र की के कीनोपे अस्त्रार्थ सुन्ने सकता सम्बन्ध की कर सकते थे। इन और दूध सुन्ने सकता सम्बन्ध केन्द्र की के कीनोपे अस्त्रार्थ सुन्ने सकता सम्बन्ध की कर सकते थे। इन और दूध

सामोब्दी वर्षा को और केन सामर गांध और रहा सामों है। भी से को नीत नहीं समने । समन, कुम्बान तम इसकी है र्धा प्रक्रिये पहिल् है अपेट बारन आह कर्न सहारत मनुष्य-ता हो गया है, तो भी को प्रतनेका पूर्व है अवन है। का जाकी कोई करकेरी दिख्यों है, यह जानकार है और स्थान परिचा क्या अनेते संवतने पदा हो, ऐसे सनवने में। रेबेरवर म्यून केरर सामकरोके साम को पर आरम । एकरे क्रिकंड मिले हो की कामान-विक्रुवात आहेको इक-एक करके पहल क्षात्र है तक देखिए, किसीर, कह, अस्तरक आदि प्रकारिकों भी मेंने ही सरक्रक है। सरक्रक और विश्वयक्त आहे. यह चाले हो नहीं बारे को होने के हत रायम बढ़े पर्यका तिहा होते। एवँकर अपने पहासाओ रियो जाते अस्तुम्य ही प्राचीत काला और के हमते जाईह हेर रक्तिके कारण कौरवीका पक्र रेले हो । हवॉकरका स्वास रोक्टर में सन्दर्भ प्रकाशकों जीता हेंग्से । जिल प्रकारिये की प्रश्ने मा किया है, जनके सुने। एक सम्पन्नी बता है—पुद्धने केंद्रियोग्यक व्यक्तिकोने व्यवस्थात क्रियात क्रिया । काले क्रोको गरवर असे प्रान्तेनोक्के प्रान्तेत विन्ते क्रातिक्रीओ महत्त्वा अक्ट मिना । का नक्त्वो अपने अन्य असे देश केव करायको जाना यह बारोडे डीवी स्थानको समझ अवस्था प्राप्तेण विकास । का अनुनोह केनो प्रतिक्रण क्षेत्रण पह महा पंचीपर गिर की, गिली ही बताने हतर यह को और पर्यंत हिंता को । जिस स्थानार नक निर्दे, बढ़ों पक्ष प्रकार इस प्रसंदर राहती सुती थी। महन्दे अध्यक्तो बहु अपने पत्र और कामजोस्तीत यारी पत्नी।

वरात्राचा अस्तर-अस्ता से हुव्यांके कालों केत हुव्या का; रंग तुक्योंको इसी जरा नामकाणी एक्सोंने ओहकर जीवित किया का, इसीसे उसका नाम करावन्त्र हुआ। उसके से ही प्रधार स्कृत के—राम और करा। इस केनेले का होन हो प्रधा का, इसीसे भीनानेन हुन्तरे सामने उसका नाम कर संबंध इसी अन्तर सुन्तरा दिया व केनेले दिन ही एक्सान्यका कैन्द्रार अस्ता करावा दिया। वेदिसा विश्वासम्बद्धी हुन्तरे सामने ही यह इस्ता । उसे में केन्स क्या असुर संबद्धानों कई बीत समाने में। जानका रामा अस्य केन्सेकेन्स्ता जाव करानेले दिन्ते ही मेरा अन्तरार हुन्ता है। विश्वासम्बद्धा, कर्या करानेले हिन्ते ही मेरा अन्तरार हुन्ता है। विश्वसम्बद्धा, कर्या करानेले प्रशासना करावा इसी अन्तर करोजनाने हुन्तने भीनानेला परवा अस्त । इसी अन्तर करोजनाने हुन्तने नासम्बद्धान नाम करावा और कार्यों हुन्ता क्रांट आहे. इस करावार प्रदेशनानका भी काल रामन विराद । नहीं इस न्यासम्बद्धे कर्ण अपनी वर्तको क्षत्र बद्धेनामको नहीं मार क्रान्य से को प्रस्ता का करना पहला। इसके हुए। क्यांग्लेक देश कर्न करन था, प्रतिकेते की पाने हैं। क्रमान कर भी किया। अनेकार प्रमुखीयर हेरी और क्षांका राज करनेकार का । वह प्राप्तान वर्गका रहेर का का था. इसेंग्रे कर उच्चर प्रस्ता विस्तव करवाय है। के वर्णका लोग कारेकारे हैं, वे प्रणी की कक है। की क्य marrais fieb aften un et fie unf im, me, we, परिवार, वर्ग, राज्य, वर्ष, केर्प और क्षणका करा है, पार्ट में तक है। क्रीक किया करता है। यह बात में सामग्री प्रथम क्रमार काम है। अस हुई क्रमंतर पाह बार्टरेंट विकास विकार को करना करिये। में का प्रकार कराईका, बिकारे कुर कर्मको और चीन्सेन हुनीकरको जल स्वेतने । इस समय को कारी और म्यान देनेको सामानकता है। तुमारी सेना करों और भाग को है और बोरक-सेनेक सक-जकर पार क्षेत्रीत

कृत्याने पुक-स्थान । यदि मार्गको हाति एक है वीरक क्य कार्क निजया है कारकार्य की तो जाने इकके केक्कर अनुंग्यर है कारका जान को यहि विश्व ? अर्थुंग्ये गारे कार्कर कारका पाला और कृत्य अर्थ-कार या हो मार्ग । यदि कही अर्थुंग कुल्युंग्ये स्थाने गाँ अर्थ से को कर्य है जाकी करवा करवी कार्युंग्ये की । अर्थुंग्यों से का जीवा है कि 'युक्ते दिन्दे स्थानकारनेयर पीठे के गाँ हर सम्बद्ध ।'

स्त्रापने सहा—-वहाराम ! जनवान् श्रीकृत्वाकी वृद्धि इसकेच्छे वहाँ है। ये काको वे कि कर्न अवती सर्वित्ते अर्जुनको चारण व्यापन है। इसेरिके उन्होंने वर्तके साथ इंग्य-पृद्धां एक्काराम प्रदेशकाको निकृत किया। ऐसे-ऐसे अर्ज्यां उसलेखे वर्तकान् अर्जुनकी शुर्व काले का हो हैं। विशेष्ण: वर्तकी वर्तक प्रतिस्ते उन्होंने ही अर्जुनकी रहां की है, नहीं से वह अवस्थ ही उनका का का हास्सो।

नुष्ठान्ते पूक्त-स्थान ! कर्ण भी तो बद्धा कृद्धिकर् है, संग्ले कर्ष है अर्जुन्तर अवस्था का क्रांतिका प्रकृत वर्षे नहीं किया ? हम भी तो को सम्बन्धन हो, तुमने ही कर्मको पह बात कर्षे नहीं सुद्धा हो ?

क्ष्मको श्राम—नहाराण ! प्रतिदेश राजिने कृषीका, स्कृति, मैं और दुःस्थान—ने सम सोग समिते प्रश्नेत करो में कि 'साई! कान्ये पुरुषे हुए सादे संगच्छे होइकर पहले अर्जुनको हो तम इसका। किर से हम्मकेग परवाली और प्रश्नुकोन्द दस्तको पाँठि सामा सनेगे। गर्द हेसा नही भी दूध कीवृत्यको है जार करने; वर्णोंक ने है कुन्यकोंक बार हैं, ने ही रहक है और ने है करके सहारे हैं।'

राजर् । वहि वार्ण श्रीकृष्णको कर आरका से निर्वाहे अस्य कारी पूर्ण अस्ति कार्ण हो कारी । अस्ते भी उत्तर एसि-महाराका विचार विचार काः वर कुक्को जनका् अस्तुम्पने निर्वाट नार्त ही अस्तर हेला को हा जाता कि व्या कार पूर्ण नार्ती थी। अन्तर्ग करकार् अस्त हो को-को स्वारिक्ताने स्वर्ण स्थानेक रिर्वा क्षेत्र के, वे विनाद हारी विवाहने स्वर्ण स्थानेक रिर्वा क्षेत्र के, वे विनाद हारी विवाहने स्थान के कि केशे कर्मकी हार्याको कार्य कर है। स्वाराय । यो कर्मी अर्थुक्ती हार प्रवाह रहा करते थे, वे अस्ति एक कर्मी की करते ? तीनों संब्रांने कोर्न में केश पूर्ण नहीं है, को क्यानंत्रर विवाह का क्रांत ।

कोलाको यो मानेस सार्वाको यो मानान् कुमारे यह उस मिला का कि 'पनान् | यक कर्मने का अनेस इति अर्जुनर के कोक्नेका निक्रम किया का से अवस्था अन्य कोडी को नहीं ?'

परवान् अंकृत्य ग्रेटे—कृतिया, पुन्तवान, प्रमुक्ति और प्रमुक्त—में इस निरम्भर पढ़ी मरामा तिया करती से कि 'करते | तुन अर्जुन्तेर निरमा कुरते किसीनर प्रतिकार असेन प्र करता | असे भारे असेन्द्र प्राच्या और प्रकृत पत्र के का ही वादिये।' पुनुष्पान | वार्त पर असरे देखा ही वार्तन्ते असे असिका पर पूज्य था, करते प्राच्या कहा अर्जुन्ते कर परस्था निरमा रहा पर प्राच्या था, वस्तु में है को खेलों प्रस्त केश था। यही कारण है, निरमों असी अर्जुन्तर प्रतिकार असर गड़ी निरमा। प्राच्या हो करते नीह नहीं हिनो मुक्तान है—यह सोच-सोकारर गुड़े करते नीह नहीं अवसे की। अस का स्टेस्स्यानन पहिलों नहीं है नहीं—बह रेसका में ऐसा स्वाप्ता है कि अर्जुन मैंडके नुससे हुए नमें। में ऐसी अर्जुनकी यहा करना विवन सावस्था रूपाओं है असे किए, जब्द, पुल्नेके पहिलों और अर्जे अलोकी के एक काम्याक नहीं करना। सीनें सोकोंके एनकी कोड़ा की पदि पतें पूर्वन पहा हो से को की में सर्जुनके किए की पहाला। इसीकि साथ अर्जुन पत्ने काम अर्जुन पत्ने रूपा की के है, ऐसा स्वाप्तान पुत्रे काम आर्ज्य हो दहा है। की काम है कि इस स्वीप्ते की राह्याओं हो साले। सहनेंद्र सिने केम कर अर्जेट दिला हुएए कोई सालंको नहीं हमा

महरूप ! अमृंस्या द्वीप और दिस पार्टमें निरुपर हार्ग पुरंपारे मनवान् अंगुम्मने सामाध्ये पुरनेता गरी उस विकास

कृतिका तथा क्षण । इसमें कार्ग, पूर्वीकर और इस्कृतिका तथा क्षण स्वापन सुकार अन्यान है। हुए सब कोन्येको कार्ग का कि का कवित केवल इस मीरको चार राजनी है, इस नाति केवल को सबसो केव नास्त्रक को बार सबसे । से की कार्गी को सोमुख्य सरका सर्वुकार को बार्ग क्षेत्र ? (कुल्लेन कुझोर सका क्यों की का विस्त्रों के 2)

जान नोरो—स्थाना । इनलेंग के वेच ही राजनें उसे ऐस्ट कारोबरी सम्बद्ध के थे, कर अव्यास्त्रका होने ही देववक् कारोबरी क्या कृतने को क्यानोकी की कृति कारी कारी की। इन्कों इन्दिन्दें करों हुए की को उसने सीक्षका-क अर्थुनकों उत्तरने नहीं करत, इसने में देवको ही जनान कारक कार्युनकों उत्तरने नहीं करत, इसने में देवको ही जनान कारक

#### युभिष्ठिरका विवाद और भगवान् कृष्ण तथा ब्यासजीके द्वारा उसका निवारण

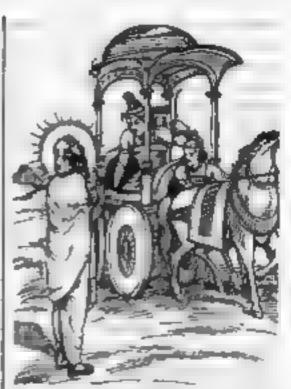
पृत्रकृते पुरा-स्थाप । तस आगेकी कार कारको । करोरकको मारे जानेपर खौरक-पाकानोने किस प्रवास सुद्ध हुना ?

स्त्रापने कार—न्यासम्य । कार्नीव द्वारा उस राज्ञानों कारे गानेगर आपने सैनिक को उससा हुए । ये की कारते सर्वात करने सर्ग और यहे रोगले इक्टर-कार सैन्नवे सन्ते । उसर इस मोर सम्बद्धारमणी स्वानीनें कान्यानोंकाय सेन्नर हो स्वा था, इससे एका श्रीविद्धिता का कहा कोटा हो नका। ये शीवलेकार केले—'कान्यानों ! क्यरकृत्यी सेनाको सेन्नो; से यो कोलाको नरनेसे कहा कारा नका है, कुससे पुत्रा नहीं हो समझा ।' या कान्यार से अपने राज्यर मेंड गर्थ । अध्यक्ति स्त्रीत् स्त्रूपे रागे । अञ्चलका पारणे रागा । अर पानव प्राथितः परमान्य देशस्य ये अस्तरण अस्त्रीर क्षेत्र भने ।

जनमें इस अन्यक्षणे देश जनमान् सीकृतको सहा— 'कुनीनका ! जार केद न मिरिके, अन्यके सिके का मानुस्ता कोचा नहीं हैती ! यह तो असानी मनुष्योका काल है । अस्ति और युद्ध करिके ! इस मानुष्याक्षण गुक्तर कर रिव्यक्ति ! अस्य ही जनमा जानेने, तम से विकास दिस्तिये सिंद ही सीका !' सीकृत्यकी बात सुन्यार कृतिहित्ये अस्ति चीको हुए काल—'च्याकको ! युक्त करियो मिरि मानुस है । को मनुष्य किसीके सिन्ने हुए अस्तानीको नहीं मानशा, करे मानुष्यका कर सन्यक्त है । क्याके ! मानुष्यकालको

बारम्ब बाः से भी काने मह मानकर कि कर्मुर अस्तर्कारके । रिन्ने तर बाले को है, क्यों इसकेनोबी नहीं सहस्था की सी । इसी प्रकार इस व्यवसम्पर्धे भी अपने इसारे लिये बाह कारिन परात्रम निमा है। यह पेट पाड पर, पहले हेन करता का करन नेता भी जागर कहा होता हर । इस्तितिको अस्ति पुरुष्टे रे कोकारंका के पत्र है, <del>या पानर मूक्तां के का की है।</del> जनवन् । वेनिसर्व, जीएन विका समार इनाडे सेनाको कांध से 🖁 । यहा प्यारची होण और वर्ण विक्रो सामकार विकासी है को है। विकास पर्या प्रवेशक बार को है ? बारवाँत ! आयोह और क्यारे मीते-वी प्रदेशका कर्मींद्र प्रकृत क्योकर पार पक ? अर्थुनके ऐएके-ऐएके अस्त्री जुन्दु हुई है। बीरवर | जात है पूर्व है क्रांच्ये क्रावेद्रे रियो क्रांट्रेस है में क्राइस क्राव बहार बहुर बहुरतो हुंद् में बड़ी स्टान्सकेंट स्था कर हिने।

या देशका जातान् कृतने अर्थुन्ते यह-- ये एक मुनिश्चिर करांको मारनेके लिये को का रहे हैं। इस समय इसे अधिते होत्र देश दोन्य भूति होता है यह बहुबार हाहीने बही प्रोतालके पूर्व क्षेत्रोको क्षेत्र और कु बहुने हुए सम्बन्धे पेकड़ रिम्बा । इस्पेक्षेपे सम्बद्ध बाह्यमी उनके सर्वाय प्रकट हेका केरे—'कुर्वानका । यह यह स्वेक्टकार कर है कि बार्गके पाय कई बार मुख्येत होनेक भी अर्जुन क्रेरिक प्रक गर्ने हैं। इसने अर्थुअसे हो मारनेनी इन्हरते इन्हर्सी से हुई सनिक पान्न रची भी। हैरण-युक्तो जलका राज्या करनेके रिने अर्थुन नहीं गरे—यह यहर अवस हुन्छ। यह सक्ते के जान कर्न प्रथम है का प्रतित्व प्रकृत बारा, ऐसे द्वारने पूर्व और पर्नेकर विकासि सेल करें। कुल्कुके इन्स्ते परोध्यक्तका है नाग कना अच्छा हुता । जनाने है इन्हरूरी वर्गिको अस्ता जन्न निमा है---ऐसा सन्ताका हुन्है कोच



और क्षेत्र नहीं करण पाहिले ( कृतिहित ) शत्री अस्तिवीकी एक दिन पढ़ी जी। होनी है। इसलिये इस निप्ता क्रीडकर अपने बानी पहलोबों साथ है बोरबोस्त सामय बारे ( आकोर भीकरे हैं। इस प्रकीपर शुपान अधिनक्षर से कारक । एक वर्गका ही विकास करते रहे । इस्त, हम, हान, क्ष्म और क्षम काहै समुख्येक प्रसासायुर्वक पासन करों : विकार कर्न होता है, उसी पश्चारे विकास होती है।' यह व्यक्ता व्यक्तमी व्यक्ति असर्थन हे गर्थ।

## अर्जुनकी आज्ञासे खेनों सेनाओंका रणधूषिमें शयन तथा दुर्योधन और ब्रेफकी रोषपूर्ण बातबीत

वर्गराथ शुरिवित्तवे प्रापं तो कर्मको सारनेका विकार क्रेस दिया, जिल्ला प्रकारको स्थान-'सीरवर ! तुन होन्याकोदा ग्रापना करो; क्योंकि काका ही जिल्हा करनेके हिले हुन बहुत-साथ, कारत और शतालों साथ असिने प्रयूप हुए है । पूर्व अस्तको साथ जेनात बाल करे । तुन्हें हो उसरे किसी प्रकार पर होता है जह पाहिले । जनसंबर, है। कुली, क्लोकर, नकुरू, सहदेव, बीवरीके दूर, प्रकारमध्य, हुन्द, विकट, सामाधि, केम्प्रमानसम्बद्धाः और अर्थर---ने सक्त-के-

सहय अपने हैं—जाताबीके इस अवार सम्बातिक ( का ब्रेमको पर बारनेके तेले करो औरते अवायक को ) इन्हें प्रकार क्रमें रवी, क्रमीसवार, युक्तावा और वैदार केंद्रा भी महत्तको होगाओ रक्ष्में पार निरानेका प्रकार करें।" क्युक्त्यन कुर्विदेशको ऐसी अग्रह होनेका सभी शैनिक सामार्थ क्षेत्रका का करनेके हैंगों अस्त कर को। करें

स्कृत्य असे देख क्षेत्रकार्यने अधनी पूरी प्रस्ति स्वकार आगे कारेंगे केन किया का एक क्वांकरने भी सामानेंद्री बीवन-सामें जिले क्यानेस क्या किया ! किर से होनी मोनोर चेन्द्रकोने चुद्र क्रिय नवः। सा समय अने-बारे प्रशासी भी नीहते अंगे हे हो थे। जनावाले उपका कार कृत-पूर है हा था। उसकी सम्माने कुछ भी वहीं जाता था कि क्या क्रम्प साहिते। यह प्रकास अलंडिंग निक्षा है कि के। इसका प्रशास-मी जान पहली थी। किसीने भी स्कृतिक क्रम्प नहीं हा प्रका था, तर किनित पूर्व है। हो हो थे। आयो एना समुशीके भी रिनिकोंने क्या व कोई अपा हा गांध था, न नाम। से भी इजिन्कांका प्रकास क्रमी में सेनाका परिलाम नहीं कर प्रके हैं। कुछ में नीहते हानिकोंग, कुछ स्थापर और पुछ स्थेप धोड़ीनर हैं। हानिकोंग, कुछ स्थापर और पुछ स्थेप धोड़ीनर हैं। हानिकों होने सने। चोर अंक्याएने गीवने मेंच की है करें थे हो भी सुरगोर अपने समुचकके बंगीनक संभार कर रहे थे। हुछ हो नीहते हाने बेहन हो हो थे कि क्या वर्ष भार थे थे और सम्बोध का नहीं साला था।

हिरियांची यह अवस्था देश अर्जुन सम्बद्ध विद्यानंती विवासित सरते हुए सेली आस्वानने चोरो—'मेंड्सओ ! इस समय तुमारे आहा करा गर्थ है, तुम्लोन भी जीको अने हैं मूं। हें। इस्तरियो महि तुम्बे परिवार से में चोड़ी देशों किये शहाई सह कर से और वहीं से मानो ! किय प्रात्नेन होनेन सब मीदवा मेरा मान हो और महत्वाद हुए हैं अन्य से देखें इस्तरेंस होरा पुरा, पुदा केंग्रेरे! !

सर्वारंत्र अर्थुनवी वाल सकते कार की और वैसी वक्षणी ऐसाई युद्ध वंद कर निराम रेने उन्हों। अर्थुन्ते अर अस्तवनी केरत और व्यक्तिने की सरक्रम की। निर्मान दिल कार्यु आरोह स्थितकंत्रके की कहा कुछ हुआ। वे अर्थुन्त्री अर्था करते हुए सहने हमी —'म्बान्यमू अर्थुन ! दूसरों केंद्र अर्था, बुद्धि परक्रम और वर्ग —स्व कुछ है। दूस वीवोधर दूसर करने कारते हैं। दूसरे हमें को आराम दिला है हसने करते हम की मनकार्य समी मनोरव द्वीत है पूर्ण कार्याम हो। धीरवर ! तुम्हार सभी मनोरव द्वीत है

इस बचार पर्याची प्रशंसा करते-करते ने नीको कार्तन्त्र ही हो गर्न । कोई कोईकी कीवार होते में से कोई नककी कैठकों ही सुक्क गये थे। कुछ लोग हार्याके कंप्योपर होते में और कुछ करीकार ही यह भने है। करा प्रकार कर्याय, गहा, सरकार, फला, जाहर और कारण करना किसे हुए ही होन अस्त्य-अहमा पड़े हुए से। संकर् ! का कारण अस्त्या कोड हुए हार्यी, कोई और सैनिक—सभी मुद्धारे विसास पाकर गाड़ी मेंदिने को गये से।

तहरका से बाविक का पूर्व दिवाने सराजीके तेनकी

क्षील करते हुए जनसन् जन्नोकक अन्य हुआ। इन्त्याचे हैं क्षण करत् अकाक्ष्मन हो नवा। अक्षकारक नाम-निहान भी न खा। क्षणितकोके सुकोपल स्वाही सारी सेना नाम क्षी। किर जान सोन्दोनों करेकी इक्षा स्कृतेशने होनों कुलो केक्प्रानीने सोक्स-संकातको संकाम आरम्ब हो नवा।

जा करन कृषेकर होन्यकर्गके का भग और उसके काम उसके केमको जोजना केमेंद्र विन्ते कोमने परकर केसा—'आकर्ष | इस समय उस्तु चक्कार विभाग के छे



है, जानमा को वैठ हैं और विशेषकः इसमें सीमने देश गये हैं; ऐसी इजाने भी मुद्धारे उनकर किसी तकाकी रिवायत नहीं होती व्यक्ति : अलकाक इस ऐसे मीकोपर आपको जाना रहानेके दिन्हें इस तकात को होनेकर भी अधिक कालका होते को है। अहाता उनकि जिसने भी दिला क्या हैं, में अब-के-बार गरि विस्ती इकके कहा है हो में अध्य ही हैं। एंकरमें मानाम मा इसकोप---कोई भी मनुनीर पुन्नों अध्यक्ति स्वायका को कर सकते : हिम्मद ! इसमें तनिक भी सीह को कि आप अपने हिम्म क्यांति देखाइ, अपन अपन मानामित दीनों सोकोच्या संस्तर कर सकते हैं। इसमें इस्तायकर अध्यक्ति की उनम प्रत्यानोंको अपना हिम्मद सम्बायकर अध्यक्ति मेरे दुर्थायको मानाम उनको हाना है करते

क्रोंकाको च्हे कर सुरक्त जानार्थ हेन कुन्दि हेन्द 'बोरे-'पूर्वोक्त । नै श्रुप्त हे नक से ची संज्ञानों करनी प्रक्रियर सक्तेकी बेहा करता है। यह कर बहुत है, हुई कियम हिलानेके क्रिये अस पूर्व मीन कर्न भी करना प्रोच्य । चे तक सोल का अ**सोको जो बालो और** मैं करना है, प्रतिनों में उसी असीचा उन्हेंन करने उने का **वर्त-**ातमे कावर कांध काम और नम हो समाम है ? हरा वा महत्र के भी बाव हुन कराना चाहे, हुन्हरे कहनेरे है का राम कुछ कार्यनाः अन्तर्भ अपनी हाताने से अन्यत्र कर्ष मुक्तो नहीं क्षेत्र । समक पश्चक क्रमानोच्छ संबद करों प्रजी पराक्रम दिसानेके बाद ही अंग काल क्षात्रकेता । प्रश्नेत रिक्ते में अपने हमियार क्षुपन कारणी प्राप्त कारता है। परंतु तुल को यह कार्याने के कि अर्थुन पुरुषे कार गये हैं, का तुम्हरी पूरु है। अर्थुक्या सवा बरावन में सुकत है, सुद्ये । सम्बद्धानीके सुरीत होतेल केला, नवर्ग, का और एक्स को उन्हें नहीं जीत एकते । कान्यम-करने उन्होंने Profe संबंधा निका और अपने क्यांने क्यांने क्यां केंद्र है सवा बलके धर्माने पूले हुए वक्ष, यान और क्रिकेको करावा Bern : um & fic mit, absennet mer ein finele आदि गणानं तुन्ते जीवकार मिन्ने जाते थे, उक्त समय अर्थानी ही ब्रह्मात दिलका वा ? देवताओंके वंद निवासकाय मायार केलेको, निर्म कर्च केला यो नहीं का सके है, अर्थनमें ही पराधा जिल्हा । हिरम्बपुरने सुनेनाने इसार्थ कुन्योंको जिल्होंने जीत किया था, उन कुल्पीक् अर्थुनको बन्ध बैसी का सकत है ? का तकते बेहा बारोवा की क्वोंने हत्वारी हेनाका सलानाह कर काव, व्य कर से हुन रोग अवनी कविते रेजने हो (

यहाराज । इस स्थार यह क्षेत्रकार्य अर्थनार्थ अर्थना करने हतो हो जानके कुले कुरित होकर कहा—'जान पै, क्षासन, कर्ण और बाध क्रकृति कर विस्तार कीत-हैनाओं से मानोमें बरिकर से कन्य बोबोंकी बरेने और | हुना ।

बुद्धाँ अर्थुनको चार करेंने ।' यह सुनकर जानार्थ मुसलराते ह्य केंग्रे—'शब्दा कार्य, बस्थान है कुत्रक करें। कार्य, कोन हेला अतिन है यो पान्यीवकारी अर्थुनका नाम कर सके ? क्वीका । बनुकारी के बात है का है—इन, क्का, का, कुछे कक्ष असुर, कम और कक्का की सामा कर बंदा जो कर रूक्ते । हर से एक व्या में हे, ऐसी को वर्ष किया करते हैं। पत्त, संस्थार्थ अर्थुन्से स्तेत रेक्टर बढेन कुछरम्पूर्वक कर स्वैट सम्बद्धा है ? तुम से निर्दर्श हो और कालों ही तुन्हारा कर करता है, अमेरियो तुन्हारा प्रकार केंद्र बात है करत को ओप तुम्हों हित-सामार्थ (सर्द है. उनके और की कुछ ओर-संद बजो बका दीना करने हो । तुन को को कानकारी करिया है। साओ न, अपने सिमे सहर ही अर्थनो पाने और क्यें पार अर्थे। इन सम निरमान विकासिकोची कर करों बरवाना सबसे है ? तुनी इस के-विकेश्वे पूर कारण है; इसलिये कर्न है जावर अर्थनक प्राप्त करें और सबदे कर हुनाए का नागा, के कराने दान केलोने वक्ष कहा है। या वई दुआरी, विकार कुररेको कोच्या हेनेने हे अपनी ब्रुटिका परिचय दिवस है, इन्हें राज्यकोर्ड कियन दिल्लोगा ? हम भी श्वारदाओ पुत्र-पुरुवार कर्ना एक बड़ी स्थाने बड़ा करते है, फिल्मी ! पे. कर्म और इ:सम्बन-नानों निरम्ब क्ष्मानेको जीव होने। इन्हरा थ्या और माला मेंने संभवी बढ़ी बार सुन है। जान क्ष्में क्षम लेकर प्रतिका पूर्व करे, क्यों हुं कर तल काके विसाओं। यह देखें, हुका का अर्थ निर्धाय क्षेत्रर सामने ही साह है: श्रुतिकार्यका कार्यात् कार्येः युद्ध करो । अर्थुनके हाससे हुन्त्रारा कारा काना चीत क्षेत्रेके कही अन्तर्थ है। जाओ, निवर होत्तर सही (

का बाह्यत आसार्थ होया जिला सह परहे थे, ज्यार ही कर देवे । किर सेनाको से भागोपे गठिकर सुद्ध आरम्ब

# होनी इलॉका इन्द्रयुद्ध: किराट, सपौत्र हुन्द्र और केकयादिका वध: दुर्योधन और दु:शासनकी पराजय; भीम-कर्ण तथा अर्जुन-ब्रेणका युद्ध

गर्वे और एक ही पान जेव रह नवा, का क्रमन कॉला BM पायकोपे को उसको सम युद्ध होने रूप । केही के बाद क्षत्रमधी प्रथा परियो पह गयी और पूर्वके अन्यताने सार्व

सहाय रहते हैं—बहराब ! का रहिन्दे होन यान बंध | योद्धा अपनी-अपनी सवाये क्षेत्रका संबद्ध-वन्त्रके सिये कर को और सुर्वके समुख कर करते हुए हुआ केंद्र काई हो असे ।

क्रमें, कर बोला-रेज सेंद्र के नागेंने विकल हो पत्री भेगत हुआ अस्त्रोदन ६३६ । इस सम्ब होनी सेनाओंके | और क्षेत्राव्यक्ती दुर्वेशनको साथ लेकर सोपक, पाणक तमा प्रमास मेहाओपर साम्यय किया। गौरवसेनाचे हे भागोर्थ विश्वक देखका श्रीकृतको अर्थुन्स साम— 'क्याप ! एतुओको मार्थी और करके सामार्थ होवलो ग्राहित रको।' अर्थुन्स प्रमान्त्वी सामा ग्राह्मार ग्राह्म को साम है किया। प्रमान्त्वा स्थिताय प्राह्मान सम्बद्ध को सीर मोर्छ—'अर्थुन! अर्थुन! येरी साम पूर्व । इतिय-प्रश्ना किया सामके हैंको पुरस्को स्था देखे है, सो सा विश्वानेको यह स्थानर सा गया है। इत्तरिको अस प्रमान सामें साम, लक्ष्मी, वर्ष और प्रमान क्याप्य करे। इस सम्बद्ध साम, लक्ष्मी, वर्ष और प्रमान क्याप्य करे। इस

सम अर्जुनने कर्मा और क्षेत्रको स्थिक्तर कृतुमीके करों आरोप मेरा अस्य दिवा । ये सेनाके मुक्तियर करों के वहे नहें शामियोंको अपनी सरामित्रों एक करने लगे, सिंह क्ष्में और भी आरो क्यूनेसे गेक र सकत । इसनेहिटें एवंदिक, कर्मा और समुनिने अर्जुन्यर बाज करसाना आराव्य क्रिक्त; परंशु अर्जुने अपने अवामेरे अनके अव्योक्त निकाण करके अलेकको इस-दास बाजोरे मीन अस्य । अर संस्थ करव्यकृतिके साम ही बुक्ता भी कर्मा होने समी : वारों और वोर अवकार हा गया, जिससे हास्त्रेग एक-पूजोंको व्याक्तर नहीं को थे। गाम क्यानेसे ही वोद्या परस्वर मुद्ध काले थे। विकाम ही प्रकार एक यो थे। विकाम ही वर्ष हुए कोड़ों और हार्यिकोयर सार्ट हुए बाल को केरे थे।

इस समय होजावार्य संपायने जार दिसावी और सामार को दूर। अने देखने ही पायाय-सेना वर्ग उठी। किल्मोक अस्मूह का गया, कुछ जान कर्त और कुछ सोग पन उठन किमे कहे हो। किल्मे इसेस्ट्राड हो पने। किल्मे ही अध्ययंत्रकित होकर देखने स्था। उनमें को दिसंग है, वे ब्रोस और अपूर्व पर गये। हुछ औरत्यों वीर अस्मीके क्या न करके हेजावार्यनर दूर पहे। कहारत एकाओंकर होकावार्यके सम्बद्धी में हुए है।

हरनेहीमें शका निराह और ह्याने हेवाक सहाई की। हरको तीन मौतों और बेट्ट्डिशिय मोद्धानोंने की हराया सहा दिया। यह देश हैं मानानी तीन तीनो सामोसे हराये तीनों मौतीय शाम के किये। इसके बाद उन्होंने की, केवाब, सुहाय तथा मत्त्रदेशीय महार्थावधीकों की प्रशास किया। तथा राजा हुन्य और निराद क्षोकों परकार होजबर सामोकों वृद्धि काने दाने। होगाने उनको सामानी नेका दी और अपने सामकोंसे उन होनोंको आसाविश कर हिंगा। अस उन देन्वेक कोणकी सीमा म स्त्री, वे भी होणकी व्यक्ति विका राजे । यह केस होमने होता और अवस्थि परकार में अस्त्रात सीमें भारतीरे उन केन्द्रिक कनून कार दिने। यनून कर जानेक विचाने इस सोमर भारती और इपराने पर्वकर प्राचिका अहर विका। होणने भी शीको ध्यासीसे उन दसी केम्प्रोको कारकार सरकारोते हुस्ताकी हास्ता भी कार निरामों। किर हो मार्गोरे विदार और हुम्द केन्द्रिक महाम क्यान कर विका।

इस अध्यय विशव, हुन्य, केस्त्रण, चेर्डि, प्रस्त, प्रश्नाकं और कीनों हुन्द-चीनोंके जारे जानेपर होंगका प्रशासन देख पुरस्तानों काम स्तिन हुन्या हिन्दा भी। असने प्रशासनोंके सीकरों का सरका दिखाने कि 'आज की सेन्याने जीवित सोद्यान कीटे का सैन्याने अपनातित होंगार परमान न है, जा का -कानादि सरने तथा कुन्यों, जानकी परमाने जाविते पुरस्ताने को वैदे; सरका कुन्यित औपने ऐसी प्रमान जा से जान।' सन्दर्ग कनुवित्रोंके सीकर्म ऐसी प्रमान काम और पाहाल दन्य ओरले होगाय सामाना सरने क्या हिन्दा अपनी सेनाके साथ होगायर सम् अपना हिन्दा है। योग हुन्योंका, कार्य और समुद्रित आहि प्रमान कीट सम्बद्ध सम्बद्ध कुन्योंका, कार्य और समुद्रित आहि प्रमान कीट सम्बद्ध समाने कार्यका पूर्व प्रमान विवाद हिन्दा के सन्दर्भ और अपना संस्तान हो। प्रमान विवाद हिन्दु के सन्दर्भ और अपना संस्तान हो। यो न समें।

तर समय पीधनेन प्रोक्ते भावत अपने वालोंके आपकी नाहिनीमें भागद क्याने हुए होलाई सेनावे बुस नये उत्तब है पहच्छ भी होजके पास ना पहेंगा - विश से ध्यासान पुद केरे रहत । यह प्रीतन रोहर कहा । र्राज्योंके होत-के-होत एक-पूजाने सम्बद्ध स्थेत होने होने होने होना विश्वस होकर च्याचे, उसकी चीठपर और बगरको कर च्याची बी। इस कारत के कारावार पुत्र कर रहा था, जानेमें वृश्तिकाओ पूर्वपरमान्ता क्या हे एक। का सथव धेनों ओरके र्वनिकाने काला पाने हुए सूर्वोपकान किया। वित पूर्ववर् पुर होने रूपा। सुर्धेरणके पहले को विश्वेद साथ अबसे से, रुका रुक्ति बान पुरः इस्तुद्ध केंद्र भवा। हेनी पहले केता बहुत समीवने सरकार मुख्यानाच का छे के; इसलिये क्रमण, तेयर और फरसोबी मासे अहेका द्वार बहा नकरूव है गक का। इसी और खेड़ोकी कटी को लाहोंसे रतन्त्री गर्ध व्य की थे। पहरान ! उस प्रथम ग्रेनाकर्ष और अर्थुनको छोड़कर कामी समक्त सेना विद्यास, भराकुरस, पनपीत वर्ष आहर है को थे। हेश और अर्थन है अपने-अन्ने पहले रहक और कारावे हुए सोगोके आधार

में १ सह्व्यक्षेत्र स्थेश असी क्षेत्रोके सामने अस्तर करायेक्स्सी राम सेते में । कीरण और काह्यसोकी सेन्स्मी अस्त्रा अहित है। वर्ग की साँ। एक सो साँ। सेना कृत्यस्तुत्व हो सी भी, कुले सूल उद्द-स्कूतर सामने कर महासंस्था कर्न, होना, अर्जुन, वृत्यिहर, जीवसेट, स्कूत-स्कूत, बृह्यहर, स्वत्यित, दृ:सासन, अवस्थाया, कृत्येकर, क्ष्मीन, कृत, काम, क्ष्मीन, कृत, काम, क्ष्मीन, कृत, काम, क्ष्मीन, कृत, काम, क्ष्मीन, क्ष्मीन

का प्रमय पूर्वेषण और दुःशासन स्कूल-स्कूनेको स्वयं रित्ते हुए में। वार्ण पंत्रसंत्रते स्वयं या और अर्जून प्रेमायानंते स्वेष्ठा से यह में। इन यह सामायानंत पहारत्वियांका आलेकिक संत्रय कारने अन्यः। में विशेष परियोगे अपने रक्षेष्ठा संस्थान करने में। यह पूजा प्रमय परियोगे अपने रक्षेष्ठा संस्थान करने में। यह पूजा प्रमय प्रियेश और साक्ष्येयनक का कि प्राची स्वी करने आवके पुस्तो क्याने का विचा और अन्यर संस्थान स्वान्त्रमें इन्द्री रूपनो क्याने का विचा और अन्यर संस्थान स्वान्त्रमें इन्द्री रूपना की। किर से यह बच्चा कोन्यान करने स्वयं, कार रूपनाओ क्यानित और स्वान्त्रमा अपने सम्यानको प्रीत्रित कर स्वान्त्रमें अन्यर दिया।

दूसरी और कोक्ये को हुए हु:वास्तरने स्कोक्स कका विश्व था। उसके असे ही महोन्यको एक कार वास्तर इसके सरकिया प्रसार इस विथा। या कार हु:वी असीने हुआ कि किसी रीतिक या कर्च कु:वास-कारको कार व कस। का कारकोर सैक्स-नेवस्ता न होनेसे कोई स्वकृत्य होका चारने रागे, तब कु:स्वस-को चाल्स हु:क कि केश सारकि माद्य गया है, जाने इन्धे कोईकी सस सी और रामपूर्विमें युद्ध करने असा। स्कोक्ट इन कोईकी दी है। चारोंसे माद्या जारक किया। स्कोक्ट इन कोईकी दी है। चारोंसे माद्या जारक किया। सारकोरी भारते पीतित हुए कोई हमा-जार मारने स्वर्ग। इन्होंस कार केशा को कार केश हो कुंग एक सेवा और कार प्रमुक्ते कार केशा को कार सा। या देश कार्य असकी स्वरूक्त तिले कीक्टो कुट पड़ा। एन पीपरोन पी स्वयक्त हो को और ने सीन कारकोर्स कर्मको पुन्तको स्था इसीने क्या करके गर्मत करने हारे। कर्मने भी क्षेत्रे क्यांकी वर्षा करते हुए भीमहेनको तेक दैका। शिम उन होनोने हुमुख संस्था होने स्था। जीमसेनने व्या क्यांकर कर्मके स्थान कृषर तोड़ क्ष्मम, इसके सैकड़ों दुम्तके हो गर्म। कर्मने श्रीमधी ही गाह क्ष्मा में और उसे क्यांकी लेड़ करना क्यांका। सिंगू भीमने हुआर गहांको लीटा होती, वरंदू अरने क्यांको क्यांका एक बहुत आरी गाह होती, वरंदू अरने क्यांको क्यांका ही स्थाप निर्देश क्यांको क्यांको क्यांका क्यांका क्यांको क्यांको क्यांका कोच क्यांका क्यांको क्यांका क्यांका क्यांको क्यांकी श्रीमहेनका कोच क्यांका क्यांको क्यांका क्यांका क्यांका क्यांका क्यांको कर हाता।

रक्षीन हो सनेवर चीवरोन नकुरको रक्षार या हैते। इसी उत्पार न्यारकी होना तथा अर्थन की विशेष प्रकारके बुद्ध करने एने। से सेनके बीच विकास परियोगे स्वयस बंग्यरन करते हुए एक-कृतिको क्षत्री और स्ववेद्धाः ह्यास कर में थे। का समय सभी मोद्धा का छेनोबा शरासम देशकार परिवार हो यो थे। अर्जुनको वीतनेन रिजी आवार्य क्रेल निक-निका कारणको कारणे एको थे, अर्जून झाले हुए जन-जनका तुरंश जारीकार कर हेते में। तम होणहवार्यने क्षणकः ऐस, धालपतं, तमाह, मानव्य और साराम अस्तरहे उचर फिया; फिन् अर्थ्स्य क्रेजके बन्तके बस्ते ही उस अलोको विकासकार साम कर विकार का देश होगारे नन-बी-पन अर्चनकी प्रशंसा की और इस्के-जैसे शिष्यको कार अपनेको सभी सक्केताओंसे के सन्तर । उद केंच्या पह देवलेंद्रे रिले जाकामधे हवारों देवता, गर्था, अभि और विद्विषेत्र राष्ट्र एककिए थे। होण और अर्थनही ज्ञांकरे वर्ध हां अवने बारे के सुनावी हेरी वी।

व्यवस्था होष्णकारी खुएका उत्तर किया, का अर्जून तथा जन्म व्यक्तिको संवाध हेने लगा। का काक्रके प्रकर होते ही काँड, कर और क्क्रेसिंग करते संक्ष्में लगी। संपूर्ते सुकान का क्या । सेनो ओरकी सेनाई क्याधित हो गर्वी। संपूर्त कर्जून इससे व्यक्ति की विकासित नहीं हुए। उन्होंने बहारकसे ही वस असक्ता नाह कर तिथा। किन सारे क्यांच साम् हो गर्वे। इसके बाद होना और अर्जुनमें बोर कुड़ होने समा।

# सात्यकि और दुर्घोधनका युद्ध, ब्रेणका धोर कर्म, ऋषियोंका ब्रेणको अस त्यागनेका आदेश तथा असत्वामको मृत्यु सुनकर ब्रेणका जीवनसे निरास होना

स्त्रण अस्ते हैं—स्वारण ! जर करने हु-कारन मृत्युक्तके राज पुद्ध जरने करना । उसने मृत्युक्तको अस्ते मानांसे जून मीदिश किया । उस यह यो क्रोकने पर प्रका और सामके पुन्तो केहोयर मानावर्ग करने राज्य । एक है कुन्तों उसने मानांकी हुन्ति राज्य के पाने कि हु-सामना रच जन्ते क्राक्तर काम और सामंग्रिति अनुस्य हो गया । यून्युक्तने सामकोते दु-सामनको मही चैदा होने राजों । हमस्ति या जान जनके सामने जून प काथ—पीट हिसाबार पान गया । इस ज्यान दु-सामनको विश्वस करके बुक्कुत हमारों मानांको पृक्ष करना हुआ होनाव्यक्ति साम मा प्रविधा ।

ज्ञा प्रमय को पूज् हो प्रांत ना, ज्य सर्वका कर्णमूक्त का। कोई निवासित बार नहीं काला था, जब पुज्जो सर्थी, पारवेका, विकास श्रुवका हुआ बाब, व्यक्तिक, सुकी, स्रारित, भी या इस्तीकी स्ट्रीका क्या हुआ काल, से पारवलात अपनित्र ना देश-नेहा क्या हुआ काल—इस सर्वका प्राप्त नहीं विकास सर्वा था। एक मोनोने श्रुव, और सीचे-काले अकोको ही वारण कर एक बा। कवी कर्वका संस्था सरवेद स्थान स्टोक और सुका प्राप्त करना व्यक्ती से।

इस्तेही द्वीवन तथा सामाधिने पुरानेह हूं। ये येनी निर्मीत होवार स्कृते स्त्री। तथा है कल्याकी मीनी हूं सामाधी यह यह परस्य प्रेम्पूर्णक देवले हुद सरस्था हैन्से प्रमूपी थे। पात दुर्वोचन स्त्रूपी क्याहरणी निर्मा कर्या हुन्स सारे पित सामाधिनी गीता—'क्राहे! क्योब, स्त्रेण, सीड, सार्थ और इतिय-अवस्थानी निर्माद है, विस्तेह स्वरूप सारा पुर सुन्नार और मैं तुम्पर प्राप्त कर रहा है। पुर मेरे प्राप्तीसे भी सम्बद्ध क्या है और पुन्नार भी सुन्नार देख है। प्रेम का। पर सामाहम स्वयंतिनों हम सम्बद्धा पुन्न करें हैं।

पूर्वोक्ष्यके ऐसा क्यानेका भारतिको कहा—'एकन्' । श्रीविक्षेत्रा कावक्षर ही ऐसा है : वे अपने गुक्ते भी सकते हैं। गरि तुम मुझे किय परन्ती हो तो कावी का इसके, निरम्प ने करो । तुम्हरे कारण में पुरस्कानके सेकाने कार्यका । अस मैं बीतिल प्रकार अपने निर्मेश पड़ी हुई अपनिय नहीं देखका बाहता । इस अववर्ष स्था जार है साम्बर्धि कार्य अपनेवी करवा न करके पूर्व दुर्वोक्षणके सामस्य करने आ पण । उस बुर्वोक्षणने सामस्याक्षर साम कार्य परि; वास्त्रिको भी उसके कार्य सम्बद्धः प्रकार, सेंच और यह कार्योको कर्य की । बुर्वोक्षणने पुनः इससे-हस्तो दीस कार्योको स्थानकियो क्याँ की ।

क्रमा तथा क्षुताने जाने जनुनको भी भार दिया। जानस्थिने भी कृतक बनुव से इस्केंबरे कृती दिकाते हुए आपने पुत्रपत धार्थको प्राप्ते सन्त थै। कृतिकने अपने सत्तकोसे अन कारोंके द्वारो-द्वारों कर करे और सामकियाँ निकार बारी मानका काल्या का जैया । किन कर यह अनुकार बाल नहीं का का, इसी बाज एडमॉबर्न साथे बनुष्यों कार शता और अनेको स्टब्कोर्ड अन्यो कारण भी कर दिया। पूर्वोकन केक्को करावा प्राप्त धारी श्वापर का बैठा । बोदी हेर बाद का कहा कुछ कुर हुई से स्टानिके स्वया कर बारता gas पर पुनः आने सक् उसी तथा सम्बन्धि भी धूर्योधनके रक्षार कालोको कर्च करने राजा । जिस केलोमे पर्यका सूत्र किंद्र गर्ना । कर्षे सामग्रिको हो प्रकल होने देश कर्न अन्तर्क पुरुषी रहानोः रिन्ते इति। ही ३६ पर्यूच्य । नहानको योगलेको का नहीं तक भवा। में भी वाजीकी वृद्धि करते हुए तूर्वत वर्ड़ी अ कुर्णेश करति कैसी-केसी तीनो बाच जारकर चीवकेरका करूर कथा कार कार हिंदा और अस्ते अस्तिकारे के पर अस्त । का सेक्सेक्ट्रे सोक्सी हीया ने पी: क्यूंने शक्ष रेक्टर प्रमुख्य करूप, कारहा, दाराचि और शक्ष्ये पश्चितेका का का अन्य । कर्ण पूरा करन्ये नहीं एवं उत्पर, व्य तथा-क्याहे अर्था और सम्बंध अ्योग करके भीगाँद साथ स्थाने ल्ला । इसी रुख चीवलेश की सुविध होचर वार्गले यह कारी हमें । इसी और हेप्सकर्य पहुंचा आदि प्रवास्थिके पीड़ा क्षेत्र करे । यह अस्मानीह सेराप्रतितनक प्रीकर्त दिन या । मे क्षेत्रमें भी वृद् से और प्रमुक्त बीरोका नकर संकर गर से ते : क्यू की बड़े कैवेकन् से । में इनमें पुद्ध करते हुए तनिक की अक्रवीत को होने थे। पासूचन बीरोक्ट मध्ये और हेराज्यानंत्रों अन्य होते देश पाणानेत्रों यह यम हुआ। उन्होंने विकासी जाता होड़ हो। उन्हें सीत होने लगा—से कार अवनेता अवर्थ करी हम क्ष्म लेगोका नाम से नहीं कर कारेंगे ?

कुन्तेकं पूर्वको समयोग देश समयान् अध्यक्ष प्रकृते १९९— 'अपवाची ! क्षेत्रकार्य स्तुवानियोगे सर्वकेष्ठ है, इसके इसके स्वृत्य क्षेत्रर इस आहे. देखा की इन्हें नहीं जीव सम्बद्धे । उस के इतिकार क्षार है, उसी कोई बनुव्य इसका क्षा कर सम्बद्धा है । मैं इत्युक्त है, अक्षाकार्यके मारे जानेवर के युद्ध नहीं कोंगे; उस: कोई काका इन्हें अक्षाकार्यों मृज्यूका सम्बद्धार सुनाते ।'

व्यापान ! अर्थुनको व्यापात किरव्युप्त वर्गेश वर्गे अर्था,

विद्यु और सब लोगोधों जैया गयी। केमान क्या मुनिहेंसी बढ़ी कठिनहोंदे यह जार वर्षेत्रार गरी। मानवादे क्या इन्ह्रामधि करा एक इसी था, विस्तार क्या वर महामाना। अपनी है केनके जा इसीचों चीमकेनो महाने मार क्या और हामकेनाओं होमानाबिंद हामने खबर मेर-नोस्त्रे इहार अस्ते हमें—'अक्ष्रामा क्या नका' क्यों का हामीका क्यान करते भीगों का रिस्स बार जा है।



उस अधिन कम्माने सुन्तार आवार्त केन स्वास सुन गते। उसका साथ करीर जिल्लिस से गता। वरंतु में अपरे पुल्के कारको जातो में, अतः सीख पुल्ल कि वह नात सुनी है। किर से नैपेरे निवसित न सेवार अपने पृत्वपुल्लार कारक किया और अस्ति असर एक इसार कारकोडी वर्ता की। वह किया मीस इसार व्यक्ति प्राप्त कराने की कारकोडी इसी स्थान्य सेवाकर्यको क्रंक किया। सेवाने उसके कारकेट वाल करके रंगका भी संसर करने किये स्वास असर किया। वह जाता सामानकेट मराव्य और पुलाई कारकारकार गिराने कथा। पृत्वपार वर्त हुए वीरोकी सर्वा कारकार कर करता। किर वस्तुकारक सिर क्यून असर कर करवा । इसके कर बीच के महर्ता, के इसर कुरू कर करता। इसर इसके कर बीच के महर्ता, के इसर कर करने कर क्या देश अधिकारे अने करते विश्वविद्य, स्टब्सीर, परहाय, मोवन, काँग्रा, कान्या और अधि अभि अभे ब्रह्मसंबद्धने के बहुनेके दिनों बढ़ी प्रवादे । जन्म ही विकास, पृति, वर्ग, बार्ल्यक्रम, पृष्टु और सहिए आहि भी थे। वे क्ष्मी श्राप्तक करन किने हुए है। यहविंगीने हेनामार्थहें un-'प्रेम । इनियार एक वे और वर्ष एके हर इंग्लोकोची और देशो । अध्यक्त तुमने अध्यक्ते बुद्ध विज्ञा है। अब इन्हरी पुरसूक्त समय अस्या है। अवसे की इस कारण क्षरकर्म कार्यक स्थान करे। हम केंद्र और केद्रबुरेके विद्वार हो । जान और अभी साधा रहनेकारे हो । समाने बढ़ी बात का है कि इस प्राह्मण हो । तुकारे रिस्ने का करन कोच्या नहीं देता । अपने क्यारन नवंदे विका के पहले । हुन्तर हर करूक-रहेकने स्वतंत्रत साम पूर हो कुछ है। को रोग स्थान को सके थे, जो भी तुमने स्थासने एक जिल्ला के प्रमुख्य पद पाल आहत नहीं हुआ। केला हो से अक्र-कृष्ण, अब दिन देश कांचर्न न करें।'

तान्वाची व्यक्तिकोची की क्षेत्र हुनी। चीपरीनके वायनपर की विकार किया और वृक्ष्युक्तको वायने देखा; इन तब वारन्कोने में बहुत अपना हो गर्न । अब अने अध्यक्तामाने वारनेका कींग्र हुआ। में व्यक्तिया होका सुनिहिटों पूर्वन कों---'काव्यकों मेच कुत कार गर्म का नहीं ? होन्यके कार्य का विकास का कि कुनिहित कीनो स्वेक्टोबर राज्य प्रतिके विको की विकास करा क्षाह नहीं कोनेने। क्ष्यकारों की अस्ती



सवाही बाक्यर्वका विकास का।

इसर मुगबान् संकृत्यने यह संख्या कि आवार्य होना अक कृत्यीया प्राथमांका राम-निकान भी वहीं युने हेंगे, से उन्होंने सर्गएकसे यहा—'बारे होना ब्रोडकों बरुबार साथे दिन और युद्ध करों यो से मैं इस ब्यूक्त हैं तुन्हारी सेनावन सर्वनाता है जावना । अतः तुम सेनाने इस्कोगोंको क्यानो । कृतनेकी हुएन स्वार्थ विश्व पति वासनित् ब्यूका कोनना पहे हो उन्होंने बोसनेकारोंको पत्तवा नहीं स्वयात ।'

में ग्रेनों इस प्रमार माने मान के हो ने कि भीआंतर मोल जो—'नहाराम | ग्रेनमें सम्बद्धा प्रमान हुन्यार मेंने सारमाँ) ग्रेनमें निमानेमाले मारमानेहा इस्तानकी सामनामा नाममा हामीमो मार हाता है। जाने मार होन्यों मामन माहा है—'अश्वसामा मारा नामा।' अहोने मेंडे मामन विशास महिना, हार्गिनों अलगे मुक्ते हैं। सहः कार सीकृत्याची कार पात्रकर प्रोत्तमे कह दीनिये कि 'क्षाक्रका कार तका।' सामके कहनेही किर वे युद्ध नहीं करेंगे; वर्षोकि अन्य सामको है—ज्या क्या रीनी सोकीवे प्रसिद्ध है।'

न्याराम ! जीवको क्या पुरसर और सीमुकाको हेराओं कृतिहिर केल कालेको क्या हो को । वे आहाको क्या होते हुए वे दो की विकाको अस्तरित होतेको कारण होत्याकोरी 'अनुस्थान करा कथा' को काल का सरसे महामार मेरिसे कोरो 'सिंदु हानी !' हातके काले कृतिहिरका एव पृथ्वीको कार अनुसर केला द्या कारण था, जर दिन का अस्तर्य कुँछरे विकाको ही एव करोन्सो कर कथा । कारणी होता कृतिहिरके पुरस्तो का काल पुरस्ता कुरसोकाने पीड़िय हो बोकाको स्थान हो करे हका क्यांनियोदी कालक हुएए अस्तरेको साम्बन्धीका

#### आचार्य ग्रेणका वस

रकर बार्र ≸—नक्रमाम । राज पुन्तो बहुः सक् क पर्रोट प्रजनिक अंतिके विद्यार्थ क्षेत्रका जात्र प्रजनेके दिन्हे प्राप्त किया का का पहुन्तुको कर देखा कि सामार्थ केया गई ही बहित हैं और जनक निता सोचासून हो दह है से उसने का अधारको साथ उठानेके तेन्ये क्रमार वाचा कर विचा। बुद्धाने एक नियम विक्लियत पुत्र बहुद हुन्हों है क्राचर असीको सम्बन्ध नेकाची काम रहत । यह देख हो करे क्रो रोकनेके हिन्दे जादिएस नामक बनुस और अञ्चलको समान सर्वेको क्रांस प्रथमे देखे । किर क्रा कलोबी क्यांसे क्रांसे स्टब्स्अपे एक देशा, उसे वायम भी का काम काम काके बाग, मनुष और कवाची बारकर वार्तिको भी कर निरामा । एक ब्रह्मपुरने क्रिस्तान सुरस्त करूर उद्यास और रतमार्थकी कर्तामें एक तेम विकार हरत क्रम करा । उसकी कराये चोटमे उने बकार ३३ एवा । तथ उन्होंने इक दोसी धारतास्य पास्य रिया और इससे क्लंड बनुबाडे कुट बाट इतर । क्राना ही नहीं, इसके आधर्म भी अस्के पास विकर बनुत से, कर सम्बद्धी कर दिना। वेजार पह और राजनाको सुने दिया। इसके बाद उन्होंने श्राप्तकारे में बागीले बीध करम। तम का नकरबोने कामने चेद्रोको होगांके रचके चेहीके साथ निवस हैना और ह्यानंत क्षेत्रनेका निकार किया। इतनेक्षेत्रे होताने काले होता, जा और रक्का क्यार काट किया। यहुर, व्यास और सार्टक गत से पाने हैं हे पूचा वह । इस बारे नियमिने पैतावर

पूर्वानि पार आसी, सिंदू आकारी वीत्री सामगोसे वाले मी दूसरे-कुम्मे कर दिने । अब कार्य कामग्री कुर्व सामग्री इसमें ही और अपने एक्ट्रे डोमामानी एक्टर प्रदेशका उसमी करोने का कार्य पोच्च देखा विकार किया। यह देखा डोमाने प्रतिक स्टानी और उसमी क्षेत्र एक-एक करके बृह्युक्ते करों केड्रोको कर कार्य । महारि होनेस केड्रे



मेदोनो बना दिन्या। उनको जा कराए बुल्युक्ते जी उसे कर्ता। जा जेकको और इतरकर सामारके अनेको इस दिसाने स्था। इसे बॉक्टो इस इस्तर 'बेसरिका' करक बाग मनकर शामानी उसको सार-साधानके करक-साध कर उसे। उन्तुंक बाग निकाले हुद करकेने इसकेनी होते हैं तथा निर्माणके होनेके करका हो बेसरिका बहुतार है। हैंगा, इस, अर्जुन, कर्म, उसूर, सामानि उस अधिकपूर्वः विका और विक्रांके यहां के साथ की हो।

सरकार कर देनेके बाद अवशानी अपने विका कृतकृत्वा सब करनेकी इंबानों एक उसने बात अनुसर एका । सामांकि कर देश रहा का । अस्ते का सीचे बात आवाद कार्य और कृतिनकी सामरे अंग्लाने जा सिवा । का सबन सामांकि क्षेत्र, कर्म और कृतकों क्या विका । का सबन सामांकि क्षेत्र, कर्म और कृतकार्यक और अंग्लेग कृत का का था । आवाद कृतकार देश शीकृत्य और अंग्लेग क्षांका करते कृत् क्षांका के स्तो । अर्थुंग संकृतकों काले स्तो — 'स्वस्ते । क्षेत्रके से स्तो, आवस्तिक क्षांक काई कृत् कृतक व्यावनिकांके क्षींक सामांकि कोल-सा करता कृता विकार देत हैं, अरे देशकार मुत्ते कही सरकार है पूर्व हैं । ब्रेटी ओस्के सैनिक काल सान्ते क्रांकानकी कृतकारकों सरकार कर रहे हैं।'

यान सामाधिने ज्ञेणायार्गको व्यक्त प्राप्त को कुर्मियन आहि महार्याणनेको व्यक्त प्रतेष पुता । कुरमार्था, मार्ग स्था आपको पुत्र कार्या निकार प्रतिकार वही पुत्रविद्व सामाधित है। यह देश राज्य पुत्रिक्ति, महारा-साहोब और भीनकेन वही जा गर्य क्या सार्विक्ति वार्ग और मार्न हो जानार्थिक साहोब सामाधित हो साराम्याचिक सामाधित हो साहोब साहोब सामाधित हो साहोबी साहो

जार सभय कर्नगर पुनिर्देशने समने वसके इतिया मेन्द्राजीने कहा— 'नद्वार्याको ! क्या देखते हो, पूर्व इतिया समाप्तर हिनावार्यनर कामा करो ! वीराम बुह्ह्या अवेदता ही सेनाने स्वेद्धा के एहा है और अपनी श्राव्याप्तर उनके कहाती वेदाने समझ है ! आसा है, जा जाना उन्हें पता निरावेग्द्ध ! अब हुनावेग भी एक साथ ही उनकर पूर पहें !' कुनिर्देशकी अव्या पाने ही स्वाप म्हारची होनाको का काम्बेकी कुनावे अपने को ! जाने हेस होनाकार्य का निराम करके कि 'जाक ही मरना ही है, बड़े नेगरों उनकी और हम्पी । अह एकन वृत्ता कार्य करा ! अन्यानक हान सन्य । हान्यकी वृत्ता आवा आहा और वार्थी पूर्वा कदावारे सनी । हान्यकी वृत्ताहर्माकी सेवार कर्निक विश्वे पुरः सहावा अध्या । आ स्थान पृष्ट्या किया सबके ही कहा था, असके आनुध भी न्यू हो सुके थे । असको हम अन्यानके देश कीमाने सीत ही असके पास गये और असने रचने विकासर बोर्ड—'बीरवर । बून्हरे निया हमरा कोई केवा देशा नहीं है, यो आकार्यने एनेहा केनेवार साहार कोई केवा देशा नहीं है, यो आकार्यने एनेहा केनेवार

वीनसंस्थ्यों कर शुरुवार वृत्रवृत्तने एक सुन् कुन हावने तिना और प्रेन्सको रीके इटानेकी प्रकार करार वार्याकी वर्ष आरम्भ कर थे। तिन केरों ही क्रोकर घरमार एक-कृतियर व्याप्तक आर्थि विन्तं अवक्रेमा प्रदार करते हते। वृत्रवृत्तने व्यो-व्यो अवक्रेसे हेन्यवार्यको आव्यापित वर दिया और अव्याप्तको कुन् रूपी अवक्रेस आराम कराय हत्यों हता कानेकार करती, विक्ति, व्याप्तिक और वरित्र केर्याको की क्याप्तको कर दिया। एक होन्यने अस्ता अनुव कार हत्या और कार्यकोने अन्ये क्याप्तकोची भी भीध दिया। प्राप्त वृत्रवृत्तको क्याप्तिक हो।

नाम गोंक्सेनके गूर्व पूर्व गया। वे आसार्वके प्रकार पार ना जनते सरकार कीर-और कील-'गाँद सक्षाक अपना कर्ज सेक्सर पुत्र क करने के क्षतिकोच्छा गोंक्स संदूष्ट व होता। स्मिन्नेन्से किया व काला—स्म स्था मनोपे के सामान्य नाम है, अस्पति कहे है संदूष्ट्य और आप को उन प्राह्मणोंने की समन्ते अस्प केश्वेचा है। प्राह्मण होता की की, पुत्र और करने लियाने आपने व्यावस्थानि गाँदि परेखों प्रधा अस्प काला, किलाव है। हेसकार की के है, ज्या अध्यानका से अध्यान महत्त्व प्रदा पहा है। इसकी आपने सामान्य से आपनी क्षित्रकी मजरी है। क्या मुनियियके कहत्त्व भी आपनी क्षित्रका नहीं पूर्वा र उनकी बतावर को संदे नहीं करना क्षत्रिये।'

भीवका कथा सुनकर बेगायाओं सुक नीचे क्षण दिवा और अपने पक्षके खेळाओंसे पुकारकर खार-'कर्ल | कृत्यकर्ष और कृतिया | अस दूध संग शर्म ही पुजारे तियो जन्म करो--बाई दूससे मेश बारकार खाना है। अस में असोका काम करता है। यह खाका जन्में 'असावामा' का कम से-लेकर पुकारा। किर शरे अस-सर्वोंको पेकाकर है रक्के रिक्के जातमें बैठ गये और सम्पूर्ण अभियोक्के सम्बद्धान देखर आवस्था है गये हैं

पृष्ठपुरको ग्हा एक मौका इन्य समा। असे क्यून और साम तो रहा दिया और संस्थार इन्यमें है हों। फिर कुकार यह सहसा डोकडे निकट वर्डुय गया। ईस्सम्बर्ध से चेन्टीस



वे और कृत्युत को बारन काला क---व्य रेककर सब लोग इस्त्रकार करने लगे । सबने क्या करने को विकास १

इसर आवार्ष प्रत्य आगक्कर परव्यानसम्बद्धने निकत है।
गये और योगधारणांके द्वारा घर-ही-यन पुरावपुत्रव निव्युक्त
स्थान करने सारे अवृति पुंच्यो पुत्र असर अभ्या और
सीनेको आगेवी और सारकार निकर किया, निकर निवृद्ध सन्तर्थ निक्षत है। इदक्कमलमें एकाइस क्या-अवस्थानी धारणा करके देखतेनेकर अभिनाकी परमात्मका विकास किया इसके बाद करीर सारकार के उस उत्तर गाँउको क्या हुए, जो क्यो-व्यो संतर्थने दिन्ते भी दुर्वन है। जब ने सुर्वक समान तेयाची सामानों कर्माको जो दो ने, कर समाव

सारा आकारकावार दिन्य जोतिसे सारोपित हो उठा सा। इस प्रकार सावार्ण बहुत्योध पते गये और मृहद्वा मोहस्त हेका वहाँ कृतवार साह सा। यहारात । योगपुत सहस्य हेकावार्ण दिन हमन करकावार्थ या यो थे, उस सम्ब कृतिहिर—में है पांच उनका दर्शन कर सके थे। और क्रिकीय उनकी क्षित्रका हान मुझे सका।

इसके कर बुहकुने क्रेक्क इस्ति हाथ स्थाप । अर इसक कर क्राफ को विकार के थे : होनके हारिये केल्थ की थी, से कुछ केल की रहे थे । इस अकानों शृक्षुक्र कार्याते अवस्थ करा रिका और कहा स्थाप क्रियों कार्यात का करावते कुछक हुआ विहास करने स्था । जानांकि हारिया का स्थाप का, अवसी आयु प्रवासी करेगी हैं कुशी थी, अससे किस कार्याक्य कार स्थेद है पूर्व में; हो थी आरके हिनके रिको से स्थापने सोस्य करेगी उहामारे स्थापी वीति विकास है।

कुणीन्त्रमा अर्थुन पुन्तस्थान व्यक्ति हो हा पर्य कि देशकाश्वार । आक्रमेंक्य का न करों, जो जीते-तो हो करा हे आओ (' पर अपने नहीं पुन्त । आपके पीनिक भी 'न करों, व वारों भी पर समाने हैं पर गये ( अर्जुन से करवाने परकर भूतवुक्ते की-तीने पीई भी, वर कुछ करन न हुआ । एक स्वेच पुन्तसों ही हा गये, जिल्लू अर्थ क्लार कर कर ही करवा । सूनसे कीनी हूं अस्मार्थकी स्वार से स्वारे कीने विश की और हन्के करवानको पृत्तकुर्ण आपके पुनोके सामने केव दीवा । वह पुन्नी अस्मार्थकी स्वार में सामने के हैं। अस्मार्थ अनुवासी संस्था भी कर्म नहीं ही । होगके पाते हैं। अस्मार्थ क्लार स्वीकी-सी हो गयी । हमारे पहले रामारोंने लेको कुछक करिसको कहा स्वीका; पर मही हमनी सामने किसी भी कि से हमें हसा न कर सके।

त्रवनका भीषमेन और बृह्युप्त एक-दूसरेसे गरे विकास सेमके बीधने सुरक्षि मारे काले लगे चीधने कहा— 'कहातराजकुरका ! का कर्ण और तुह दुवीवन मारे जायेंगे, जस सम्बद्ध किर कुन्हें इसी प्रकार क्षतीसे सगाउँगा।'

## कौरवाँका भयभीत होकर भागना, पिताकी मृत्यु सुनकर अश्वस्थामका कोप और उसके द्वारा नारायणास्त्रका प्रयोग

कार कॉम्बोको कहा क्षेत्र हुआ। उनकी अधिकोरे अधि कह पारे । सहनेका प्राप्त कारण का । वे आर्थकाने विकास कारी हुए आपके पुत्रको केरकर केंद्र गर्ने । शुक्रेकरते अब बर्ध कर की क का, क सकर रूक का का का आयोः सैनिया पाल-माराने विकास ने। ने ऐसे उत्तरा दिसाली के थे, जाने सुन्दी स्मादने हात्रस नने हो : होनाओ मुख्ते सकत पर क रूप था, इस्तेले का का को। गमाराम इसुनि, सुरका कर्म, महरक इक्न, अवकर्ष कृत और कालार्य भी अवनी-अवनी सेनाके साथ पान करे। देशास्त्र भी अवस्थिते पूर्व सुरक्तर कारा एक का. आ: म्बर भी अधिकारेकी रोज रोजार जान निकास । वसे इस र्मजाकोको साथ हे सुकर्ण में कराका का गया। कोई हार्थीवर व्यवस्था पाना, बोर्ड रक्यर । मुख्य स्थेत केंद्रीकी रमाधुनिये ही क्षेत्रका जान कर्ड हुए। कोई निकार कार्य मारानेको पक्षो थे, कोई प्राप्तनीरो । कोई पाना और निश्रोको क्रोबिक कार्य क्य पान छ। वे ।

इस प्रकार का आपनी सेवा क्यमेंग एवं अवक क्रेकर वागी क हो हो, जा सका अनुसाधने हुनोकको ५०० मानार पुत्र--मारात । हुन्ताची मह शेमा अस होचार अस मनो को है? तुन इसे रोचनेका प्रथा करों जो करते? महत्त्वा भक्ति तुमारा का राज काम नहीं विकास के। भर्ने जारे में मार्च भी छह को ! और हैन में महस्क पुत्र पूर्व है, यर सेनाकी देशी पहर कभी नहीं हुई । ककार्य हो, मितर महारमीची कुछ हा है जिससे कुछारी सेना हरा अवस्थानो भूष गर्वा ?"

हेम्प्युरूप या प्रश्न सुरकर भी क्षेत्रन उस चौर उद्योग सम्बद्धारको चुँहरे नहीं निवास सम्बद्धा । वेजना कान्यी और रेसकर महित्र काय रहा। इसके कर अने कुनकारी कह-'अब है सेनके प्रत्येक क्रांस का हैकि।'

रूप कृष्णानी बारमार विवासम् क्षेत्रर अवस्थानी बेचके परे करेका समकर सबने रूपे। उन्होंने क्या—'तता ! इसमेग अन्यार्थ होनाहो आने रहतार पाकार राजालोसे संतान कर के थे। उस प्रकृते का बहुत से कौरब-बोद्धा बार इस्ते को हो हुन्हरे निकने सुनिह होना प्रकास प्रयट दिया और फेल क्याद सर्वोरे प्रवती प्रमुखेन्द्र स्टब्स्य कर प्राप्त । अंत समय कारणके प्रेरणके पान्यम, केम्बर, भरूप और विशेषा: पान्यम वीरोपेशे

सक्तर कारों हैं—म्बाराय । आवार्य बेक्के को सानेके । के के बेक्के रक्के समये आहे, वे सक रह के रहे । किर के परकार केन्द्र भाग करे हुए। जनका बार और परकार धारने निता कथा। ये समझ को बैठे और सर्वत-ने हो करे। जो क्षेत्रके वाचोरे वैद्धित हेन प्रवासीकी निजय कारेको अकारे का-पे आकर्ष हेन मनुष्टि क्षणी नहीं नहें का सकते; औरतेकी से करा है करा है, हम को हुन्दे करका नहीं कर सम्बद्धे । मेरा देखा निवृत्त्व है है। अध्यक्तकार परे कार्यक वे उद्यूष्ट वहीं कर सकते; हरतिये कोई जनर हुने जनसम्बन्धि मृत्युकी हुत्ये समार सुन्त है।" या नात और सबने से बान हो, बेस्सर अर्थुनको परंद नहीं रूपी। परिवेशने भी नहीं करिनहोंने हुने स्वेत्वार किया। व्यक्तिको सम्बद्धे-स्वयते पुत्रको विकास सामने सामन क्क — 'अनुवास कर करा:' का अपेने हारक विश्वास भी किया । इसी बीचपे चीपलेको माल्याके राजा इन्ह्यानीक नकमन्त्र पानव इसीयो या करा । हो सुविद्वारो भी देशा। क्षेत्रपरे सची बालका पात सलानेके दिन्के राज्य क्रिकेसो का— अक्रमान कर गया क भी ?' निका व्यवको विकास क्षेत्र है, यह साओ पूर् को बुनिहित्तो सह हिना 'अक्टब्स्प 'बारा राजा। परि, सभी।' असिय मानव उन्होंने बंदिने बाहा, किसे सुन्हारे दिया पुत्र नहीं हते। अब उन्हें कुरूरी पर्यक्ता विकास हो पना । ये संस्थानो पीदिस हो पने । भा पाने करेका-स साह र १६०। जोने विमानीका परिवाल कर किया और समादि लगावार केंद्र गर्ने । का समय बहुकुर्ण कर ककर करें हाकरे उनके केश पक्ष रिन्धे और क्या किर बढ़ते करूर कर दिया। इस बेट्स पुरुष-पुकारकर का से बे—'न मारे, न मारे।' अर्थन से १७के आरका कार्यः पेक्षे केंद्र को और की उद्यापन करणार करने रूपे—'सम्बर्धको परिवत ही क्या स्थानो, नाचे मत्।' इस ज्ञान सब लोग कर करते ही क नवे, पांतु इस नुसंसवे दक्को निवास्त्रे पर हे इत्या जनके मारे स्वरंगर हमाए सामा के साम रहा, इसेरिके भाग रहे हैं।"

कृत्याने कृत-स्थान ! आसार्थ होजनते पानव, बाहरा, अन्तेष, प्रकार, देख और नरायब-प्रकार भी क्रम श: वे कर्नि रिका क्रोकारे थे; से भी सहस्राधे करें अवनंत्रवंत ना करत । वे एक-विकासे परकुरमधी और पुरूषे हमसी सन्तरमा पर्या है। उनका परकाम धार्मनीकी समान और मुद्रि महत्त्रात्मे सुन्य भी। वै पर्यक्ते समान रेंबर और अविके स्थान तेवारी थे। प्रकारणों सम्बद्धी भी सह

मात क्या सुकार अकारायने क्या बद्धा ?

तहर बढ़ते हैं-याची शूल्याने मेरे विद्याची करको पार बाता है—यह सुरका अवस्थान पहले से वे पड़ा, अस्पर्ध आवितोंने असि बहारे लगे; यगर बिट ब्या केवले पर प्रवाह, काका सार वर्रेट कोचसे तम्हमा दका। वारकार आँकोसे असि पोक्रमा इसा यह दुर्गोक्समे कोरब—'एकर् ! जेरे भिनाने प्रविद्यार प्राप्त दिया या तो भी इन नीओंने उने बस्का क्षात्र । (म वर्षकविषोद्धा किया हाल प्राप्त अन्य मुक्ते पालून हो गया । जुनिहिरने भी जो नीकारपूर्व हुए कर्न किया है, उसे भी सून हैला। मेरे दिला रंगमें कुलुको जन्न होकर अवस्थ ही मीरोबे लोकमें गर्न हैं. अतः उनके निर्म नहीं क्रोब नहीं है। किंद्र अपेरे अपन स्वनंतर भी यो जनका नेता प्रमान यया. सब सैनिकोके सामने क्या अवसान किया करा 🗝 मही मेरे वर्गस्थानोच्ये केंद्रे द्वारमा है। युक्त-जैसे पुरुष्ट्रे जीविक पत्ने भी उन्हें पद हिंत हेमाना पद्म । हरान्य बहुतहाने केन अपनान करके के व्ह व्हान् पात्र किया है, इसका वर्णकर परिणाय को कलों हो धोनना पहेला । सुधिहिए भी विकास क्षिता है। जाने बहुत बहुत अन्याय करने बारने मेरे निकास इतियार प्रत्या दिना है। आतः आया च्या दूसनी अस वर्गकाः बहुतानेवालेका रहायान करेगी। उनन मैं अपने साम क्रक प्रसादने कारोंकी स्थान सामार स्थान है कि सन्दर्भ परवाल्पेका संदार किये किया में बतायि गोवित नहीं दीना ह क्ष तरको अन्योपे प्रभूतनोके प्रकृतक कृतक अन्या कोपल वा कटोर कर्न करके वी पायी बहुबुक्ता राज कर प्रार्टना । पाश्चरतीया सर्वनात विध्ये किया में सार्टन नहीं क सक्षेण । संस्थरके स्रोत पुरुषी बाह इस्टेरिको करते हैं कि बह प्रकृतिक तथा वस्त्रोक्ष्ये व्यान् काले विकासी द्वार कोना । पांतु में जीवित ही है और मेरे विस्ताबी पुराईनबड़े-से बुद्धा पूर्व है। शिक्षार है गेरे दिन्स अध्योगो, विकार है गेरी हन शुक्राओं और परात्रपक्षे, यो कि की-जैसे पुरुष्के पायर की मेरे निरामक केन्द्र सरिवा गण्ड । अन्य में देशा बाल्य कर्तन्त्र, कित्रमें परायेककारी विकास सामग्रे क्यान के कार्य। के मुख्यको अपनी प्रशंसा कथी नहीं कारी व्यक्तिः एकारि कपने विरामा पय मुक्तरे यहा नहीं काय, इसलिये क्रयन पीएन महाबार सुरक्षा है। आब क्षेत्रस्थ और पालान नेत पराजन देशे. उनकी राज्यां केवाको विद्वारे विस्ताक प्रत्यका कृत्य अविका का हैना। ५७वें कैटका एंकानपुरियों परियोगर जान पूर्व देवता, पन्चर्य, जारा, नाम और राजार भी नहीं और इसते । संस्थानें मुत्रके का अर्थको सामार

कारे थे। ऐसे वर्षिष्ट निरम्बी बुक्कुको इस जबर्पपूर्वक | कुस्स कोई अञ्चलेक नहीं है। मैं एक ऐसा अञ्च करता है निसे न अंकृष्ण कालो है, न अर्जुन । चीपसेन, कृषिहिर, नकर, सब्देन, बहुबहा, किकाबी हवा मार्क्सको भी ब्हुब्बा क्रान नहीं है। पूर्वकारकार बात है, मेरे विशाने करवान् करकानके कानका काके उनकी विकियर पूजा की बी । पनकानो उत्पन्न पुत्रन लोकार किया और पर पॉननेको कुछ । किराने उनसे सर्वोचन न्याक्नासको प्रकार की । सब क्लान् केले—'मैं का अस तुने देता है, अब युद्धने तुनारा पुक्रमात्व कानेकार कोई की छ जानन । किन् सहाज । पुरस्का स्कूम प्रयोग नहीं करना साहित्रे; क्योंकि व्य अस क्रमुक्त करा किये किया नहीं स्वेटक । अवस्थात भी पन का क्रमात है। इसकी अन्य करनेके क्रमार में हैं—क्रम अपना रण क्षेत्रकर जार कार, हथियार गीले कार है और हाथ मोजना क्रांची करवारे वाल बाध। और विक्री उपाधी क्रमा निवारण नहीं होता है जह महस्तर उन्होंने अब दिया और में जिल्लों और बहुत करके नहीं भी विश्वा केंग्रा की परामार्थ क्रम क्रे समय पह भी बाह का कि 'हम इस अवले अनेको अवलके दिलाकोका नक कर सकोने और र्वजन्में को देवली दिवानी क्षेत्रे । ऐसा बहुबार प्राप्तान अपने परम बाकको कर्त पर्व । यह महाचलक सूत्रे अपने विकार दिन है। इसके क्या में पुत्रने बाचन, प्रकृत, नाम और केवरकेको नाम नगारीया । पान्ककेको असमानिक



और गुजरे होई बारनेवारी प्रकारकारकारक बाह्यको औ अवय चीवीलां नहीं चोदीना ।'

सीर पहें। सभी महर्गामधेने को-को पह ककते हुए। ने आवनन करके दिन नरावनाकको प्रकट दिन्छ ।

मरके अपने समूर्व एक्ओवर विकास कर कर्मुन । क्रमुन | क्रिये । येडे का करि, क्रमूरी नमारे केंद्र कार्य सने । अर नाजेकी पुनुत व्यक्ति अववत्य और पृथ्वी हैन अहै । पेक्की नार्मीर पर्यक्षेत्रे अवश् का हुन्छ बनको सम्बद प्रस्का अश्वत्याच्या वर्षा पुरस्तर कोरवंकी जानते हुई केर - बहुरको एका है परम्बा करने रहते । इसी बीवले सरकाराय-

## अर्जुनके द्वारा युधिहिरको उत्प्रहुना, भीमका क्षोध, धृष्टद्वारका ग्रेणके विषयमें आक्षेप और सात्यकिके साथ उसका विकास

स्तार करो है—सहारत । जरायकाओ: sax: होते है ( नेक्सरित करनोर प्राचीरे सहने होगे । किया कारावेके ही पर्वाप हेने सरी, पृथ्वी केंग और, संसूत्ते सूचन का पन और बड़ी-बड़ी नहिमीकी क्षत अच्छी हैताकी और काने राजी। पर्वतिमें विका क-रामा निर्मे को। या के अवको देशकर केला, कृत्य और नवसंबर वारो आहरू हा तक: the real part of the

पुरारको पुरा-स्थान । यह प्रत्या धान्यको सहस्रात्रको tank find um finne fant 7

राक्षणे सक-बीरक-भेजनक इंग्लंड कर कुरवार क्रीसीट अर्थमो केले—'प्रयक्षण । बहुबहुको प्रश्न आवार्ग केलक भारे कानेकर स्रोत्तक बहुत उदान हो विकासकी अवहार होओ सुनेह में और अपनी-अपनी पान क्यानेंद्र रिध्ये जाने का हो है। रूप देवती है हो पूर: प्रस्ती सेच स्ट्रेडी का सी है, दिसमें को मीराना है, प्रामे निवयमें हुन्हें कुछ ध्या से से सावस्ते । हैना क्रम कार है, प्रेरको को कोने बोरबोबा का तेवर संभाग और संद्र करने जा से है। करवर कैस्व-पद कुरवार इन्हरें रबी कारणे इस है, सबके रोग्डे एक्ट्रे हो गये हैं। बहु मीन जानमाँ है, को संख्या पुत्रके क्षेत्र केल का है ?"

अर्थुर कोर्फ---विका स्वेटने साथ होते ही अहै असलेंड सरकार हिरान आरम्प किमा था, किसे सम्बद का पानी हिल उडी अवैर कीनों कोचा चरनि एको थे, उस अस्त्याकको सुरुक्तर विश्वति अद्याध रहनेवाले प्राचीने विस्तास नाम 'अनुसामा' रहा हिना मा, प्रांत्र महे पुरुषेर अपूर्णमा है। यह विश्वास कर पह है। प्राथमिक स्थाप अवस्थित स्थाप विकास केल प्राथमिक मार करन का, मह अधीवा पक्ष नेवार उसके कर कार्या काम रेमेंके रिक्ते काया है। साथने भी एकके खेकते का भीतकर गुरुको क्षेत्रस दिखा। कांग्रेसे कार्य हुए भी बहु बहुन् का किया । स्वाः अन्यास्त्रवेद कार्यक्षः एव कानेके कारण श्रीतमनक्ष्मेंको जैसे अस्था निरम, उसी प्रकार सारके विकास की हात केराकर मुख्ये परवा हारनेका

कानी कान्यु सीचे खेळांने फेल कान्यु । आधानी पा सम्बद्धाः वा कि 'वान्युरम्याः पुनिश्चितः प्रश्न क्रांतिः प्रतातः है, मेरे किया है, वे बाबी हुए बड़ी बोलेरे !' इसी करोसे उन्होंने अवन्तर विकास भार विकास परंह आरचे सामग्री शरह सेम्बर करावर प्रद्र कहा। 'हाची कर क' इस्तिये अक्षाताकका नंदर्भ कर दिया । किन से इतियान आत्मार असेत है पाने; अस समय उन्हें निवासी मानुस्तात हुई थी, को अंटरने भी देवते ही की : पुरुष्टे क्रिक्टे प्रोध्यमक क्षेत्रम की राजने विश्वक को पहेंद थे, ऐसे पुरुषो असमें समाप्त धर्मधर्म सम्बोरमा चानो कार्य कार्य कार्य । अवस्थान वितासी कुल्ले कृतित है. कार्यक्रमे स्थाप कर कार्यका मान मनाव प्रशास है। विश्वती पूर्वा सम्बद्धांक बरवाकर तक आर अपने अधिकाँके तान अकाकश्रम सामा कार्य प्रत्ये, प्रति हे ते वाकारकी पात क्षेत्रिये । मैं से संस्कृतत 🗓, इन एस स्पेत निरम्बर की पहलाको जी क्या प्रकरे । मैं बर-बार मन कार का के भी किया क्षेत्रर काने पुरुषी क्षण कर कारी । प्रतानी कान्य पड है कि तान प्रधानेतीको अवस्था अधिका लंब बीब पता. बोबा ही क्षेत्र रह गया है: इसीसे हजारा वरिक्या सरक हे गया, हमने यह महत्त् पाप कर सरव । से नदा निवासी भौति प्रमानीनीयर क्षेत्र रकते थे, वर्मद्रशिक्षे थी को इन्हों किए है थे, उन मुख्येकको इस हजारहर एकको करक हमने करण दिया । कुसराहने कीना और होताहरे प्रशिक्ष साम है जात राज्य और दिया था। वे प्रमा रूपनी सेवामें हरी रहाँ से र निरमार सम्बद्धाः निरमा पराने से । से भी सामार्थ पूछे ही अलंगे पूजारे भी व्यक्तर मानते थे । और । पैने प्रकृत सहा और व्यवस का किया, जो राज-सुवादे सोधने प्रकृत नुस्की कृष्य करानी। मेरे नुस्केतको का विकास का कि अर्थन कें रिके किया, बार्ड, ब्रेस, पुत्र और प्रक्रोचन की लाग कर सम्बद्धा है। बिह्नु में बिक्क एकब्रह्म खेत्री निकरण । वे दारे क के में और मैं करकार हैराया रहा। इस से में प्रकार, अले यह और बीगरे जावार्य थे: प्रत्यार भी उन्होंने अपना क्रम

नीचे इस्त विकास जीर महाम् मुनिवृत्तिको नीते हुए से । इस अध्यमाने राज्यके रिको उनको इस्ता करावार अस में जीनेकी सनोका जर जाना ही सरका राज्यका है।

त्राप करे हैं--पाक । अर्जुकी का सुका को बिताने न्यारकी बैठे से कब पान का गर्व: बिजाने कह का भाग पुरु भी जो बढ़ा। तम महत्त्वक भीकोर होको भारता चेरे—'वर्ष । बरवारी कृति अवस राज प्रका पारम कानेवारे प्रधानकी चीरे दम की कारेका काने की है । यो संवादमें सबनी तथा क्रालेकी दक्षा करता है. र्मकारने स्तुओंको इसी प्रतुक्तन किल्ली बेरिकार है, को कियों और संस्कृतकोगर श्रमानाम रकता है, यह अभिन प्रोत प्री शर्म, नव राज स्थारेको सार कामा है। स्रोधको सन्दर्श प्रत्यांको पुरा होते हुए आम शुलीबी-ही वाले काना हुन्हें क्षेत्र को के। तह । इक्स का कोर्र कर इस है, बच्चों भीतर क्या है—यह बद्धा सर्वात क्या है। कियु करेंने प्रकृत रहनेवर की हुन्हाय राज्य अध्ययंत्रकेंद्र कीन विकार गया, काओंने क्रेंपरीको अभागे अंगार काला केना क्रीमा और क्षा भी होंग करवार बारण कर केन्द्र करेंद्र हैंजी हज़ी रिकास दिये गये । क्या इसरे आक मही कर्तन जीवा का ? में राज वारो प्रकृत करने केल नहीं औ, फिर भी पूर्ण का भी । करने को कुछ मिन्स है, यह इतिस्कारी निवार सुबार ही विका है। क्यूओंके का अधर्मको पाद कर ताल में कुकुदे सहायात्री वर्षे अन्ते सहायात्रीत्त्रीय पार असेना । मैं क्षेत्रीय माना हर पुर्वाको विकेष का क्यान है। वर्वकेको श्रीय-कोइकर विशेष सम्बद्धा है। अवसी करी नाहकी कोडारे महे-बड़े क्वेतीय इस्तेम्बरे तीड सर्तुगर । इस समी केवल, राक्षण, असर, चन और मनुष्य भी बड़ी एक है सब हकते शा जार्प तो क्यें बाजोसे जातक अन्य देखा। अपने पहले हैते पराक्रमध्ये कान्ते हर भी तुने अक्रमकाले कर नई काम जबिने। समया दून एक महानेके क्रम नहीं कर्ष को. में अनेतम हैं गई हरूने लेकर करातेओ परास्त्र कर्तन्तः।'

भीगते में देव कारेस मुद्दा केय—'अर्थ ! केरोको पहरा और पदान, यह कान और करान एक इन देन और अरिया सीकार कान्य—ने हैं का कर्न स्वाचीके विने अरिया हैं। इन्मेर्स सिंग कर्मका पतान हेकावार्य करते में ? अपने वर्गते प्रमुख्य अर्थे क्षित्रकर्य कीर्या से कुछ केरे का। ऐसी समस्ताने और मेरे स्ववन कर किया से कुछ केरे निन्दा क्यों करते हैं ? जो प्रमुख्य स्वकानकर भी कुछोंके असे मेनाका असेंग करता है जो गीर कोई काक्यों है कर क्रमें के इसमें अनुभित्र क्या है ? दूस करते है, बैरी अन्ति हती करफंड देखें हुई थी; फिर भी पूछे पुरस्तकार क्यों कार्ड है ? ये प्रोक्षेत्र नहीं पूर्व है उद्धारत प व्यवस्थातीयों औ महत्त्वमं श्रेष्ट काम है, को सची क्याने उपानोते को य पार कता कर ? क्योंने सुरकेंद्र नहीं, भी ही शहकीका संबर विकास का अतः अन्ते काले अनुसार महत्व काट सेनेवर की मेर जोग क्रम्य नहीं इस्त है। क्या प्रमास तुमारे विश्लेड निवा में: क्ये पारवार मेंसे तुपने अवले नहीं किया, क्यो प्रमान की की कांध्रे ही प्रमान कर निरुद्ध है। का पूर अपने विकासको को सकते जलकर कर्मका चलका सकते हो हो भी को पानी प्रमुख्य संदार विस्ता, उसे अधर्म क्यों सहस्रो है ? नहीन होनदी और अल्डे प्लोबर सचारत करके ही मैं कुमारी करोर करों को लेका है; इसमें और कोई बरास नहीं है। जर्जून ! न से पुण्यते कई भाई असम्बन्ध है और न में कर्ण । क्षेत्रकार्य अध्ये ही अन्यक्ति वहरण यहे गर्ध है: भा: फाल्कर यह करे।'

कृतपुर केरी—ज्ञान | किर ज्ञानारे अपूर्णतीत सन्दर्भ केरीका अध्यक्त किया था, विक्रमें साहार अपूर्णेंद्र अंतरिक था, का आवार्त होनारी यह केरा, पृष्टी एर्ट पृथ्यानी पृष्टका निष्म करण यह और विक्रमें हरियाने सरकर सोग गाँ किया ? विकास है इस इतिकानको | वसाओ, यह अपूर्णि कम पुरस्ता प्रत्यान एका सुतरे बनुभी एन्साओंने पृष्टकारों कम कहा ?

तानो का-नावा । का सन्य अर्थुने हम-कुम्मानी और विस्ती नगरने देखा और अदि काले हर ज्यान्य केवर कार-'विकार है 1 किवार ()' अर समय चीचीर, मीरावेर, यहार-स्क्रोत क्या श्रीकृष्य आहे एक त्रेण प्रक्रीकार पर हो गरे। केवल सामस्ति भारी रह नक, व्य केर का—'को । यह वहाँ ऐस कोई की पहुल नों है, ये अध्यक्तमधी कर करनेकरे पर पाने सामानो प्रीत है का करे ? से नेय ! जेह कुलेसी कहारीने कैन्यन ऐसी कोची वार्त वारते सुध १४०० वर्षी जाती ? तेवे में पांचे रोपाने करते करें की से पाते 7 तेप प्रसाद करें कों का भाग ? पूर्वा निया करने सम्बन्ध ह सरकारों को नी पान नाम ? सर्व देख रीच कर्न करके उनके सकता. है वेक्टेक्ट करत है ? को से पर है जाना शाहिते। क्रमणर भी तेने जीविक स्वनिते संबद्धकार कोई क्रम नहीं है ।-न्त्रका ! वेरे सेवल कुरव कीम देल केंद्र करूब है, को नर्वाच पुरुष केन प्यानका जाका कर कारेको छैना। हेना ? हो बीवी रूपा अस्ते हेनेपाली अस्त्री सात-सात-

भौतिनोंको नरमाने पूर्ण दिया। अस धाँद पुरः के प्रमीप हेती करा पुँको निकालेना के कालो सम्बाद पहा नारकर केता दिए जा कुँछ। वू प्रान्तय है, हुने स्वक्रमानक कर प्राप्त है; इसलिने सोन हुने देशकर अम्बद्धिको दिले सुर्वेक्स्प्रकाल वर्तन करते है। कहा था, केरी नक्क्षी कुछ बोट सह हो; वै की देरी महत्वी अनेको कोई सहेक।'

इस जवार का सामधिने हुराधुन्यका बेराहर वैहस, ते जाने के क्रोको करून जाकी नर्कत जाने हर क्या—'का की, कुर की हैये बाद; और इसके कीने कुटे क्षण भी करता है। हैरे-मेर्स स्थेप स्थेप्स सामुक्तीय सार्वेण करनेवा प्रश्नात हो होता है। प्राथि संस्थाने हानावी बार्ड ज्यांका करे कभी है, तकारि चर्मके और क्षण जा करनी पार्थिने वर्गीय यह इस्त करनेकांन्से पर्यास सम्बद्धा है। ह प्रेराचे पैकास इस्वारी, जेल और करे हैं: रूने निकार योग होवर के कुरोबी निक करन कहा। है। पुरिस्ताका प्राप कर गया था, वह प्राप्तान अस्तानका तत रोकर बैठा था: का समय हो करके एक करकेत थी को मानदा मानदा कार हैत्या, हात्ये कहता कर और का है क्यान है ? जो राज देश कार करे, यह कुरदेशों कह महोता ? तु बड़ा क्यांच्य एका था हो कर पुरितास हुते एक भार क्योंकार कामकर क्योंको रूपा, उस स्थल है हुने क्यों न जरका क्य किया ? एकं पानी क्षेत्रर खुवसे क्यों करोर मते का का है ? अने पूर क, फिर कोई ऐसी का पूर्व म निकारको। भूति हो कालीसे प्रत्यत आधी हाते कालीबा भेग हैता। कुरवार कहा कर, औरलेंके साथ से जेसलेकरें पानेका ज्याच र का ('

शृह्युक्ते ऐसे करोर क्या पुनवर सामित क्रेकने व्हीर मार, क्याकी जोतें साल हे नवीं, इन्बरे व्हा के कारवार या इस्त्युक्तां स्थान का पहुँक और सेता—'अब है सेई कही कर र कारण देवार हुने कर प्रत्युक्त स्थित हूं इसीके के वा है।' इस अकर कावती स्थानिकों प्रत्युक्त का हुने देश पर्वार्त्त इसाके इसाके क्षेत्र के अपना कुनाके इसाके क्षेत्र को और अवनी होने कािने कार्याक्त कर का का्युक्त अने का गावा। उस का्युक्त कर का का्युक्त अने का गावा। उस का्युक्त कर का्युक्त कार्य का्युक्त के स्थान होते हैं। का्युक्त कार्य का्युक्त कार्य के का्युक्त का्युक्त का्युक्त होते हैं। का्युक्त क्

क्य रक्षेत्र सार्थिको प्राप्त कर रहे थे, सर सार्य कृत्युको वैकार क्या-"कियाँन ! क्षेत्र थे, क्षेत्र थे कार्योकको । या बुद्धि कांत्रमें मार्थात्म हो रहा है। असी मीनो कार्योके इसका सार्थ क्षेत्र स्वार केत्र है और पुत्रकी क्षेत्रक-सीवा की संस्था क्षित्रे सरकार है।"

जानी का हुनका कार्यक संदर्भ समझ पुरस्कारता हुन कीर्यको भुगानोंने कुटनेका उद्योग कार्य रहता । केर्न कीर सम्बंध-सन्तरी समझ्यार स्रोहिन स्थान भरता हुई थे। कार्यक कार्यका सीकृत्य और अर्थुत हुए। ही कीर्यो आ पहे और बाहे कार्यो उन्होंने इन केर्योको कार्या किया। इस कार्या कीर्या अर्थित राम किये उन होगो समुर्थर वीरोबो आयामी राम्येको केक्ट्यर कार्यक-पहले स्रामित कोर्या समुश्रीका सामक कार्यके रिलो जा हुई:

# नारायणात्राका प्रभाव देल युधिष्ठिरका विचाद तका भगवान् कृष्णके बताये हुए उपायसे उसका निवारण; अञ्चलामाके साथ भृष्टग्रुप्त, सात्यकि तथा भीमसेनका घोर बुद्ध

सहार नहीं है—सक्त् ! जारका सकारको हुनेकको पुनः अपनी अभिन्ना कह पुन्नती—'कांका केला क्यो हुन् सुन्तिपुन सुनिहित्ते पुन्न कर्ना हुन् सकार्यने कराजूनी बात कहकर उन्हें सभा सन्त्रकेत क्षित्रो क्रमा क्रिक्त है. इस्तिओं आब उनके देवते-देवते उनकी रोजको कर भगाउँका और बृह्युक्तको भी कर सामुंख। क्यों राजपूर्वियो मेरे सामने पुन्न करते रहे को मैं इस सभी प्रकार पहारक्षिकोवा कर कर कर्नुका। जा नेरी सभी अस्ति है. अस्त क्रम

| सेनको लेकका से करो ।'

जनकी बात सुनकर आपके पुत्रने सेनाको पीके हर्मदावा और पात जाणकर को जोतते सिंद्रका किया। मिर कीएक ' और पात्रकारिने पुद्ध आरम्भ हुआ। इसकी प्रष्णु और चेरियां' पान कर्मि । इसी समय अक्रमायाने पात्रकों स्था पाद्धारवेश्वी नेनाको स्थान करके पात्रकारकार प्रयोग वित्य का। इसके इसकी पान निकासका अक्रमायां का गते, इन समके आरक्षण प्रमाशित के के में। अन्तरे अन्तरिक्ष और दिसावे आकार्यत हो गयी। किर स्केटेंक गोरी, ब्युक्तार, दिनार, इसारी, गया और निसंधे कार्य और हुए सने हुए थे, ऐसे सूर्वप्रकारकार गांध प्रकट हुए। इस प्रकार नाम प्रकारके इसोंगे शाकारको जाता हैश बन्दार, ब्युक्ता और हुक्ता कारा गो। प्राच्चा महत्त्वी कोंन्स्से मुद्द करों, जोंन्सी का शाकार थोर बहुत बाता था। असी प्रच्याकीय कम होने सारी। यह इंदार देश बनंदाकको बहुत कम हुआ। अहेंने



क्ष्मा — मेरी सेना अनेता-सी होकर जान जी है और अनून स्थान—मेरी सेना अनेता-सी होकर जान जी है और अनून स्थान—'नृह्यात ! परक्षान्त्रेकी सेनाके स्थान कुप जान साओ । सामके ! तुम भी वृत्तित और अन्याकोक स्थान जले हो । अब बन्दीन्त हीकुन्यासे को कुछ हो नकेन्द्र, करेंगे : वे सारे जन्मुके सरमाध्यक रूपोस की है, से अन्या क्यों नहीं सारे ! में समूर्ण सीनकोरी कहा जा है, बोई भी कुछ व सरो ! मानूर्योंको साम सेनार में समिने स्थान कर करतेना । अन्त्रेनार मेरे स्था जो करवान है, जा बीच ही वृत्ते हो जाने सार्वाचेंका सेरे स्था जो करवान है । अन्या सामक्रम करनेकार सामार्थका मेरे क्या करवाना है । अन्या सामक्रम करनेकार सामार्थका मेरे क्या करवाना है । अन्या सामार्थका मेरे की भी भी सामुख्येसाहित कर नार्वेन्छ !'

क्य कृतिहिर इस जातर कह रहे थे, जब समय बनकर इरिकृत्यने केने पुजारे जानार समयो केका और इस जातर महा—'केकाओं | अपने इतिकार सीव है जैसे कार से और समस्तिते कर काले; नारम्बस्तान्त्री स्थिति भी जाव काला नग है। जुनिया को हुए स्थिते सोमोची का जाव नहीं भारता। इसके सिम्पीत, जो-ही-जो केना इस जाके समये पुन्न करेंगे जो-ही-जो करेंगा करिया कारवान् होते कारेंगे। को इस अवका सामय करनेके सिमे पनमें विकार की करेंगे, वे स्थातानों कारे कार्य से की का कार करें करें किया नहीं होतेगा।'

जनवान् कृत्यानी कर्ने सुनकर यस चौत्राओंने हाचारे और क्या के क्या जान हेन्द्र विचार कर दिन्या। स्वापी जाव कान्योंक विको जात देश परिमानने कहा—चीरो डे बोर्ड में असा न फेलाना। में अनने वानोंने अस्तामानेत अस्ता करण कर्नना। इस चारी नदावे कानों अस्तामानेत अस्तामाने के अस्ता कान्य भी कान्यों प्रति अस्ता कर्नना। चौर इस करणकारका कृत्यानक करनेते देशने समावक बोर्ड चौत्रा क्यां वहीं दूशन, वो आस चौरक-राज्यानीत देशने देशने में कान्य सामा क्यांना। सर्वृत । सर्वृत पुर अर्थ प्रव्यानकार क्यांना क्यांना। सर्वृत । सर्वृत पुर अर्थ प्रव्यानकार क्यांना, तो हुन्यरी निर्माणकार नह भर देश। ।

अर्थुन जेले---वेबा १ जरावकास, भी और साहकोंके सकते अर्थ अस्त्रों भीचे हात देखे केत सर है।

अर्थको रेज सहनेपर भीयमेन अंग्रेटरे है पेक्के समान गर्नन करने हुए अवस्थानके सामने पने और उसपर बालककोची क्ये करने तले । अवस्थाने भी उनने वित्यार का की और उनक अवक्रमानारे अधिननिका बालोकी इसी राज है। महाराज ! भीमतेन कर का करके सामने कार मानने रागे, क्षेत्र सामन कैसे क्षानांत सामने पावार कारग जनमेंच्य हो काटी है जारे जमार कर अक्टबा केंप काटे रामा । को कहाँ देश भीनके रिला गान्यत हेराके सभी हीरिक्ट अवस्थित हो अने । एक मोग अपने दिन्द अन्तरीको नीचे कारण्यर एक, कची और कोडे आदि कहनोंसे कार एवं १ अब पर पालको अस एक औरसे प्रस्तर चीको प्रसासका न्य पता । उसके रेजने जान्याचित क्षेत्रर चीपसेन असाय हे को । इससे राची आणी और विशेषतः प्रध्यवसीय इक्कार कार्य करें। भीनावेनो साथ ही उनके एक, बोदे और शार्यक: भी जनसम्बद्धि जनसे जनस्मित हो जनके पीतर वर-यहे। की अनक्ष्यक्रमें संबंध अपि प्रमूचे परावर बनाइको जान करके कामानाके मुहामें उरोड़ कर काड़ी है. रूपी प्रकार का अवन्ये पीयरोजको एक करनेके दिन्ने उन्हें करों ओसरे केर दिवा । जाका केंब कीमरोनोंद्र जीवर अविक

हो पर्या । यह देश अर्जुन और सीकृत्या होनी और हुन्ता ही रमये कृत पढ़े और पीनकी ओर होते । यह स्कृत्यार होनी उस अस्त्राची आपने पुत्र गये, सिंह् अस्त्र अस्त्र हेनेके बद्धाक यह आप हुने करता न रमये । महायावासको सामिके दिन्ते होने होनों ही भीवसेनको तथा अनके सम्पूर्ण अस-कृत्योको और समायर स्थित सन्ते । उनके स्थितिक प्रोपसेट और बोर्स्त गर्मन करने सन्ते । उनके स्थानक अस्त्र और की उसका सारण करने सन्ते ।

तम भगवान् श्रीकृत्यने भीवने कहा— 'वाकुत्यनः ! यह वना बता है ? जना करनेवर भी तुम बुद्ध वंद वनो जी करते ? मदि इस समय भूदने ही कोरच जीवे जा समले के इस तथा के तभी तथा बुद्ध ही करते । वहीं इसने काम वहीं मतेना । तुम्हरे मध्येष सभी बोद्धा रकते कर कुने हैं, तुन की कीर कार कामो !' यह कहावर जीवृत्यनी उन्ने रकते सेवे भीव विच्या । नीवे जारकार कोड़ी कामा कहा सम्मीवर काम, नो ही नारकारका कामा हो २४० ।



इस जमार कर दूशक तेकड काम हो कार्यकर सम्पूर्ण विसाद सम्य हो गयी, देवी हमा मानने समी तक पशु-पित्रपैका कोरकार संद हो गया। हाथी और प्रोड़े अब्दि काम भी पुरुष हो गये। सम्बादीकों को तेन कारेके मान गयी थी, यह जाम जासके पुलेखा तक करनेके तिथे पुनः हमी भर गयी। उस समय दुर्जेकनों होजपूर्णने व्यक्त—'अवस्थानम् । एक व्यव किर पृत्त अवस्था प्रयोगं करे; नेकं, जा व्यक्तानेकी सेना विश्ववाधी प्रवासे पृत्ते संवासकृति अस्वत व्यः नामे हैं।' असके पृत्ये हेला काले-वर अवस्था है स्वास्त्र ज्यानार सेकर केल्य—'राजन् । इस अवस्था कृत्या प्रयोग नाहें हो कालत है। शृक्ति प्रयोग वर्त्तेकर वह अपने ही कारर आवार पहला है। श्रीकृत्यने हुसे काम करनेका काल काल विवा, नहीं की अस्य कालूगं वर्त्त्योगा का हो ही वाला।' कुर्वेकाने वही का असका को बार प्रयोग नहीं हो स्वास्त्रा को अस्य असको ही हमार संदार करे; वर्षोक के साथी पुष्तेक क्षेत्रको हमारे हैं। सुकार पहल करे; वर्षोक के साथी पुष्तेक क्षेत्रको हमारे हैं। सुकार पहल की हमारे के हमारे वर्षा हमारे के स्वास्त्र करें।

विकासी पूर्व कह जा करने अक्रमाया पुरः स्रोक्ये वस्कर बहुकुम्बो और सैंहा । विकट महैकबर इसने पहले बीच और बिर पाँच बार्गाले औं बाबाद विद्या । बाह्यपुर्न भी चीतक साम नारकर अञ्चलकारों और उत्तर तथा बीत क्यांदे सार्थको और काले वार्ट बोधेको क्यान का क्षिण । पुरस्का सरकारको परकार बीधवा पृथ्वीको क्षान्यक्षर का काम इस्त गानी स्थात अध्यक्षायाने भी कृतिक है प्रमुख्या का बात करे, फिन के ब्रुटेने जाओ कार और कुर बाद हैने । पूर्ण बाद अन्य बहुरनी कारणीवर्ग मुख्याओं क्षेत्रिक विका और क्षेत्रे क्षेत्र जारिको काकर को स्थान कर दिया। साधान, अली विकारिको की कार करावा । यह देखकार सारवाहि अपने रकारो अन्यानामध्ये कार है गवा। वहाँ पहुँचकर आरे अध्यक्तकारों काले उन्हा, बिरा बील कार्योंने बीच विदा: पुरुषे बाद सार्था तथा बोहोको पाएए किया । सिर् सार्था करूप और कामाओ कामका रकको भी तीम कामा । तदश्यार अस्त्री इन्तेने तीम कल गरे।

ता समय कुर्वेकन्ते वीतः, कृत्यकार्थने तीतः, कृतकार्यने ततः, कार्यने प्रवासः, दुःशास्त्रमें भी तथा कृतसेयने सात वातः कारकत सामाधिकों वाचल किया तथा सामाधिको एक ही कुन्ने का भाषी न्यारिकारेको प्रवाहीन करके सम्मूर्णमारे स्था वैत्या । कुन्नेने अकुरकारम कृतने रक्तरर सम्बाद होकत आस्त और सैकाई साम्बाद्धित पृष्टि करता हुन्छ सामाधिको छेकते सम्बाद कार्यकाने का समें साते देखा, तो पुनः अस्ति रक्षति कुन्ने करके तरे पर कारका। सामाधिका का पर्यास्त्र देखा कुन्ने करके तरे पर कारका। सामाधिका कार्यकाने हमाने हसे । इस इवार महारिक्षेका, कृत्याकि पेह इकर हाक्किक तक संस्कृतिक प्रवास हमार केर्नुका संस्कृत कर उत्तर । इसे बीक्ष्में अक्किमा हुन: दूसरे रक्कर आवा है स्वार्वक्रय का करतेके किने क्रोक्ष्में महा हुन्य अक्का । स्वार्वक पुन: जो किने बाजोंसे जीक्ष्में क्या प्रवास पिता हैकर अक्किमाने हैसरे-हैसरे कहा— राजक ! हुन अक्किमाने मार्क्साने हैसरे-हैसरे कहा— राजक ! हुन अक्किमाने मार्क्साने हैसरे-हैसरे कहा— राजक ! हुन अक्किमाने मार्क्साने हैसरे-हैसरे कहा का पुने हो, किसी क्या अक् बाक्स नहीं या कक्को । मुक्का ! में अपने क्या और मार्क्साने हिसरे की स्वार्वक है, स्वार्व प्रवास कर और सिमरों भी सेना हो सकतो एक्सिम कर को; से भी में सीमकोक्स संसर कर ही स्वार्व प्रवास कर को; से भी में सीमकोक्स संसर कर ही उस्तुता ;

या सहका अक्रमान्त्रने प्रातन्त्रियर एक बात होना बाज पारा । अस्ये साराविकार बावन क्षेत्रकर को अस्य बोट प्रोतापी। कारव क्रिश-पित हो करा, आके क्रमते सहार और बाध मिर गये, यहनी समस्य हो वह राजेंड विक्रों भागों स देश। या देश सामि को अवकारके ग्रापनेसे अन्यत्र ह्या से नवा। स्थानतर अन्तेन, चीनारेन, काशा, वेरिएनकमा, सुर्तान-ने चीव कारची आ पश्चि और काले बावें ओसी अनुस्थलको के दिला। अचेने बीस पर वर राजार अध्यासको पौजनांच जान पारे। अकतामाने भी इस से ताथ क्योल बाल जाकर इनके एक बाजोंको कार दिया। इसके यह असी बुक्काको मात, सर्व्यक्ते तीन, अर्थनको एक और भीमनेनको क बागोसे बीच इस्तर। तम बेहिदेशके क्यानको बीस. कर्जनने साथ और अन्य प्रम लोगोंने क्रीन-वीन कालोंसे अवस्थापको प्रथम कर दिया। इतके वस अवस्थापने अर्थनको छ: श्रीकमानो छर, पीयरोनको योग, चेदिपुरातको कार और सुदर्शन तक सुरक्षकको छे-से बाज आरे ! फिर चीमलेनके जरकिको कः वालोशे काला बार हो बाजोंसे उसकी बाजा और बनुब बाट उस्ते। संस्कृत रापने सावकोची काहि काईनको भी मीकार जाने स्थिके क्यान वर्णन की। दिन जीन वालोंने उसने अपने रवके पाछं है साड़े हुए सुराईनकी होनी पुजाएँ और व्यवक क्या दिये, रवालीको जीवा कुल्काको पार दारच तथा जातिये सम्बन्ध केमानी वालोंने वेदिहेलके कुल्काको सार्थन और केहिंस्सीय कारोंक मैंस दिया।

क देशकर चीनसेनके कोचकी सीमा न रही, उन्होंने वैकारो सीचे कामोरो अवस्थानको एक दिया। परंत अवस्थानने अपने कामधीरी अपने बागवर्षाच्य नाज कर किया और अदेशमें चास्त्र अने भी कामन किया। तम धीकोनने कल्लाको समान क्यंबर द्वार तराव कराये, वे अवस्थानको गारेको हैसारी हेसार चीवर सुर गये। इस केटने अस्तव केवित के अले जॉने क्या कर की और कारका प्रमुख लेका केंद्र क्या । बोदी देखें का दोस दूसा, ते जरने पीयरोचको भी पान बरे । यह जबार बेन्ने ही क्वीकरणे केले. साम एक-वरतेया कारोबी वर्ष करवे रूपे । महरराय ! इस युद्धारे इसलेग्येको भीवरोनके अञ्चल परकार, अञ्चल कर, अञ्चल कीरता, अञ्चल प्रेपीय तथा अक्षा सम्बाधका परिचय जिला । असेने होगालका वर्ष करनेकी प्रकारों कालोकी कही बर्वकर पृत्ति की। पूजर जनवान भी कह भरी अवनेत था, हाने अवोधी पायाने कार्या पारमध्ये होता है और क्रमत प्रकृत कार प्रत्या, विर क्षेत्रमें परका अनेको बाजोसे हमें घायत हिला। चन्न कर क्रानेवर चीनने पर्वकर रक्षाति क्रूबर्वे सी और को बढ़े नेगरे क्रमान अक्रमानके रक्षत प्रत्यकाः विश्व अस्ते हेम मान पास्कर कान्द्रे इसके दूसने कर बाले । इसी बीचये चीपसेनी एक सरक बन्दा हाकने रिच्या और बहत-से बागोबर प्रश्ना कर अक्रमान्यको बीध सत्य । तम अक्रमानाने एक बाद्य प्रत्यात धीनकेके वर्गाका सम्बद्ध और दिया, उद प्रदूरने सार्थित मुर्जित हे पर । असे हाओ खेडोकी बगहोर पूर नहीं। क्राफिके बेब्रेज होते 🛢 जीयसेनके बेब्रे सम बनुवरियोंके देवले-देवले चाग बले । निजनी अनुस्थाना इनेमें भक्तर सङ्ख बजाने लगा और पंजार चेजा सबा धीमसेन अवधीत क्षेत्रर इसर-उसर भाग निकरो ।

### अञ्चलामाके द्वारा आद्रेयासका प्रयोग और व्यासमीका उसे बीकृष्ण और अर्जुनकी महिमा सुनाना

थाग की है, तो होजनुसको जीतनंत्री इसको उन्हें अने बक्कर को चेका। किर ने सेक्क इक करत सरकारीके साथ कौरलीको ओए होटे। वर्जुको अनुस्कानके पाल पक्षिकार क्या- 'मुन्हरे अंदर विवनी प्रक्रि, विवन्त विद्यान, बिदनी बीक्ता और बिदना जानान हो, ब्हेंग्लेक विकस देव और क्यानेगोर्स जिल्हा है। यह एक अन्य क्यानेश है हिता स्ते । बृह्युस्था क डीनुस्थानीत मेर् प्रान्थ करने शा बाओ; तुन अवकार पहुत सहबा हो पने हो, सरव वै सुक्ता सारा वर्गड कुर कर ऐसा।"

रावर्। अवस्थानने चेत्रिकेट कृत्या, पुन्ता मुस्ता और सुर्शनको पार द्वारा ठक पुरुष्ट, पार्काड हर्ष भीनकेनको भी पद्मीका कर विका सा—हर वर्ष मार्गिने विका क्षेत्रर अर्थुन्ने आकर्तको ने अर्थन करन को थे। उस्ते तीये एवं मर्पकी बक्तीको पुरस्क असमान्य श्रीकृष्ण क्या अर्थुच्या कृष्यित हो उठाः सह शाक्यांन श्रेष्टर रक्तर वैद्धा और आकार काले उनने आहेगाम स्टामा । किए को मन्त्रेचे आफिन्सिस साथे प्राथक का अवस्था किया भी क्षेत्र है, इन समाने क्ष

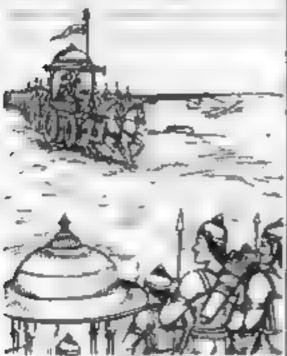


स्थान नार्य हैं—न्यापन । अर्जुरने देशत कि पेरी सेन | देशनमान हे रहा वा। आने क्टो है आवाहसे कारोदी करवोर पृष्ठि होने अनी । धारी जोर फैस्बे हां जानको सम्ब अर्थुन्यर हो जा पहे। का समय राहमा और विशास एकरिय होका वर्तन काने लगे। इस परा हो गर्क। कृतेका केन परिच्या व्या पान और वाक्तरेते शहरते कर्ता होते हर्मी । हीनों रहेक्ष प्रमान के बड़े । एक अन्याने रेक्से व्यवक्राणेके गांच के व्यक्ति कारण करके जीतर व्यक्तिकी बीज बारने क्या करवडाने राने। दिवाओं, विदेशाओं, अवस्था और पृथ्वे—एक ओहो सम्मार्थ है भी थी। क्षाके प्रमान केमाओं इन सामोके स्थानो पह पूजा क्षेत्रत अरिको सरक्ये पूर् प्रश्लेकी पाति निर रहे से ! बहे-बहे हाची करों ओर विश्वामी हुए हुएल-हुएलका कावार्य है से में। कुछ जनभंत होकर चन से से। जाजनको हतन क्रमंत्र व्यवस्था अन्य सेने अन्तुनी प्राणिकीयो वरणकर पान कर जानी है, जो जबार परकारिये केंग्र जा



कारेक्क रूप हो सी थी। या देश आपके पुत्र निवक्ती क्लेंजो क्लानिक हे स्थित्वर कारे हने। इससे प्रकारे क्ये करते जने हरे।

का रुपय हरना चेर अन्यकार क्षा का का कि अर्थन और उनकी एक अधीरिकी रोकाको कोई देश नहीं पता था। विकास में अपने पालर का कार मेरे कार्या प्राप्त किया था, वैदार हमने पहले न से कारी देखा था और न तुन्त ही था। उदान्यर अर्जुनरे अस्तामानके हम्पूर्ण अस्त्रोधा कार सरनेके देखे इस्ताधान क्रमेण विकार किए से इस्तापरों हैं साथ अस्त्रीय नहां हो गया। ईसी-दंखे इस कार्यने स्पर्त, स्पत्ता बाद विश्वाची ही। प्राप्तकीको इस अस्त्रीदेखे केन का अस्त्रीय तेमरे इस अध्याद दक्ता है ज्यों भी कि इस्ताध वान-विकारण कि ज्या था, परणू अस्त्राण और अर्जुनके सरीराय अभिनय नहीं उसके की। प्राप्तको कुम होन्स सर्वाद संभाव नहीं उसके की। प्राप्तको कुम क्रमेण सर्वाद संभाव पाने हमा। अर्जुनोंने सुर्वाची वाल प्राप्त इस्ता, परंतु प्राप्तकोंने इसेनी सील प्राप्ति। से प्राप्ता, परंतु प्राप्तकोंने इसेनी सील प्राप्ति। से प्राप्ता, विकार स्पत्ति स्पत्ति होना अर्जुनों की प्राप्ता, विकार स्पत्ति स्पत्ति होना और अर्जुनों की प्राप्ता, विकार।



वन होनो पहापुर्वनिक्षे अध्येष्यकाके मुख देश अवस्थान पुत्री और इसा-व्याप-ता होकर कोई देशक स्वेषण रहा कि 'यह बया बता हूर्ड ? दिन अपने झबका बनुव केंककर बह रकते कृद पहा और 'विकार है | व्याप है .! बह रख कृत हुआ है ! ऐसा बवता हुआ बह स्वापुर्विको साम बहुत । इस्त्रेविने उसे ब्यासनी सन्दे दिवानो कि । उन्हें स्वापने प्रधान सन्ते प्रधान किया और अस्वना हैनकी बहित स्ट्राइ क्ष्यहरो क्क्-'अन्तर् । इसे जाता कई वा ईसकी हवा ? सेरी क्याने की अक्ट-मा इस क्या है दा है। यह कार हुटा कैसे हुवा ? पुत्रसे कीन-सी गरवी है गयी है ? अक्टा मा कंसरके किसी कार-केरकी सूचना है, विशस्त्रे बीकृत्स और अर्थुन केरिया कर को हैं ? मेरे मानने हुए इस सामग्रे अंतुन, 'मान', विरुक्त, प्रकार, सर्व, यह तथा मनुष्य किसी



अबार अन्यक्त नहीं कर समझे थे; से भी वह केवल एक अझेड़िकी सेन्यको हो जनकार फाना हो गया। सेव्हामा और अर्जुन भी से नामानार्ग पहुना ही हैं, इन हॅम्बेबा कह क्यें नहीं हुआ ? अवन मेरे अक्षका सीक-सीमा इसर हैसिये, में बह क्या सुनना माहता है।

व्यासर्व केले— वृ जिसके सम्बन्धे आहर्षके हाथ प्रकृत कर रहा है, यह यह महत्वपूर्ण विभव है। अपने नगको एका करके हुन। एक स्वयंक्यी कर है, हमारे पूर्वजीके थे पूर्वज किल्किकार पर्वजार जातको विशेष कर्यक्षक कर्यक पुरुष्ठ क्रिके प्रवास कर्यक क्रिके प्रवास कर्यक क्रिके प्रवास कर्यक क्रिके प्रवास कर्यक क्रिके प्रवास कर्य अपने नगरिको सुना साम । इसके यह थे ज्याने इसके हुने वर्षातक पुनः क्रिके स्वास कर्य जातक होत्यर पर्वजार प्रवास कर्य क्रिके क्रिके क्रिके प्रवास क्रिके क्र

काने सके-'काविके । किनोने इस प्रकार समावत सामके परातन सर्गको थात को को राजा को उस विकासी भी एक पाने हैं, वे प्रापृत्व जरितकेयी पूर्व कार्यकारे जवानी भी आपने ही प्रकट हुए है। देवता, अञ्चर, नाग, राहता, विद्याल, पहुल, पश्ची, पनार्थ हता पह उसी, विविध प्राणिकोंड को सब्दान है, इन सब्बद्धी सब्बेंच अवको से सर् है। इस, चय, जरून और कुमेरवा यह, निवरोका कोन्ड क्या विकासकीयो सुन्दर विकासका उपनित्र आवित्रके भी आपने ही दूधर है। क्रमा और अवस्था, क्रमा और क्या, क्रम और तेया, रहा और पहा क्या क्या और पृथ्वीको आधानि सर्वति 🚅 है। कारण, सहर, बेट, सहस्य क्या यह सन्दर्भ मध्यप मन्त् अवनो है उत्तर हुआ है। मैसे नालो अन्त होनेवारे बांच कारो निम दिलानी के है परंह का हैनेना कर मान्त्रे है साथ इसीयुत हे बारे हैं, उसे उसता यह सम्बद्ध निका अन्यते ही प्रकार केवार आपने ही जीन होता है। प्रक बर्फ को अवस्था समूच्ये भूगोवी सम्बंध और प्राप्तक अधिकार वारते हैं, ये विकार पूरू असके कार्यकार्ध करा

वी अधिक मरिक् हो काओंगे।' इस प्रकार सीकृष्यने पहले ही पालका अंकरते अनेको पालन पा तिले है। में ही क्त्रकर करावा कालो हत संसारको मेकिन करते हर इनके काले किया से हैं। जरूपकों हो उपसे पहल्दी नर 902 हर्, अर्जुनको उन्होंकर अवस्था समझ । इसका प्रथान भी करणानके की समार है। में केंगी आणि मंत्रारकों वर्गनविक्षा रक्तांके रिक्ते अलेक कुछी कालार होते हैं। अवस्था । हो पी पूर्वपाने फायन् शंकरको अस करनेके रिले करोर नियमोका पानन करते हुए अधी वरीरको कुनैन कर करन का, इससे प्रसन्न क्रेकर मगनान्दे हुने बहुत-से क्योकांकिया क्यान हिंसे हैं। की प्रमुख कारण क्षेत्रको प्रयोग प्रभावको साम्बद्ध विद्यालये क्रमा पूजा करवा है, को सनकर सामग्राम क्रमा कारकारको साहै। होती है। यह विकासिकार पूर्वपूर्णन पानकार प्राप्तक अर्थन करता है, जागर प्रश्नान क्षेत्राओं ent war det to वेक्स्पानको वे वाले सुरावत अक्स्पानाने मान-ही-कर

संवारणीयो जनान विका और शीकुमाने जनाने महस्य-मृद्धि है 'नवी । जाने वेश्वाधिक प्रतिते महर्षि स्वारको जनान विका और सेनाकी और सेवाका को प्रारमीये सीक्ष्येची अपन है। व्यानकर चरित्र और प्राप्त होगे महस्यी संगर्ध जन्मे-जाने शिक्षिरको चार हैं। इस अवटर केहेंके प्रत्यापी सामने केना चीक हिनोनक प्राप्तकोत्तका संग्रह करके ज्ञाननेकार कोर गर्थ।

#### व्यासजीके द्वारा अर्जुनके प्रति भगवान् संकरकी महिमाका वर्णन

मृत्यपूर्ण पूजा—सङ्घन । पृत्यपूर्णके क्षरा अभिरकी चीर ग्रीमाखानीत चारे वार्तमार चीर पूजी कथा पाञ्चलीने अपने स्त्रीय-मा कार्य किया ?

स्त्रापने कहा—स्वाराण ! जल दिनका पुत सकत है वानेपर पहिंचे नेवानासमी संख्यात सर्वुदने पुत — 'कार्च ! अर्जुनके पास मा पर्च ! उन्हें देशकार सर्जुदने पुत्र — 'कार्च ! जब में सपने नापोसे कहानेनाका संस्तर कर रहा था, जब समय हेका कि एक आधिक समान संस्तरी पहुन्तन में अर्ज-आपे फल पहें हैं। वे ही पर स्वपूज्येका कर करते थे, सिंदु स्वेण समझते थे मैं कर पहा है। मैं से केवल करके पेड़े-मीड़े करता था। करमान् ! स्वताहने, से महापूज्य कीए से ? करता हावार सिंदुरूप था, से सुन्ति सम्बन तेजन्ती थे,

क्षमने पैरोसे प्रच्येका सर्व नहीं करते थे। विज्ञानका उद्यार

व्यक्ते हुए भी के उने हम्बने कभी महें हमेड़ों से । इसके देखते इस एक ही जिल्लाने हमारों नमे-नमें जिल्ला जबाद हो जाते ।' जबारमी केले—अर्जून ! तूमने भगवान् इंकारका दर्शन विकार है । से देखेंचन अन्तर्भागी जन्द सम्पूर्ण जगरहरे इंकार

है। सम्बद्ध कारका तथा जरकता हैं। तुम कर घराबार् पुण्नेकारकी करण काओ। ये बहुन् के हैं, अन्वय हुस्य विकास है। सर्वत कारक होते हुर् भी ये कराबारी विनेत्रका कारण करते हैं। उसकी 'का' संता है। उसकी सुआई कही हैं। उसके कराकारर जिल्हा तथा सरीतपर कारकार कहा सोचा हैए। है। ये सम्बद्ध संवारक होकार की निर्विकार है। किसीसे करावित न होनेकार और सम्बद्ध सक देनेकार हैं। सम्बद्ध

स्वर्धा, कन्यूको अपनिके कारण, जगरके सहरे, विश्वके

ज्ञान, विवासिकार और विवास है। वे है अप क्रमेंक्रि



अभिक्रास-वाओवा का होनाते है। समझ बाजान क्षरनेवाले और स्वयन्त् हैं। प्रत्यूनों यूगोके ब्रांग्से क्षर पूर्व मनिक और गर्नकार्क कारण भी ये हैं है। वे हे बोन है, में ही क्षेत्रेशन है। से ही सर्व है और से ही सर्वक्रेक्ट्र : स्टब्से मेंह, सर्वे मन्तर्हे केह, बेहतम परनेही की वे ही है। के ही तीनों लोकोके अक्षा और विच्यानके स्विद्धालक विद्धार परमाना है। परमान् यह नक्षक होकर भी परमान्त मुकुरम्परे धारम करते हैं। वे सम्बद्ध पर्यकृत सक्त मार्गाचरोके की ईवर हैं। में उनके हैं; क्या, कुछु और कर आहि निकार उन्हें कू भी नहीं समाते । ये ज़ानानाम, ज़ानाना संख् ज्ञानमें सबसे लेख है। क्यारेशर कुछ करके को मनेवान्तित वर दिवा करते हैं। यगकान् संवान्ते हिन्द कर्वर त्रान जनाएक क्योगे विकासी की है। से सब महारेजरीकी प्रस है पूज विका करते हैं। सह । वे सक्तर, ननकर, प्रस्का है का वेजाबी पुरुष हैं, जो कृता करके हुन्हारे आगे-आये चला कतो है का चेर रोपककारी संख्या अक्सामा, कुमानार्थ और कर्य-जेसे बहुत कर्पर विक सेवाकी यह करते हैं, उसे नानकावारी मनकन् महेकाके सिमा कुररा भौन नष्ट कर समझा है ? और जब मे ही कार्न आकर एके हो नार्थ, तो उनके साधने सहस्रेका भी बहेन पाइस बर समता है ? तीनों सोबोंने कोई देख प्राची जो

कुरिया होनेका अन्तरी समावे की वह बेहोका होका करिय राजा है और अवचरे होबार पिर जाने हैं। धी भार पहुच कह अञ्चलको उपन्य बनका कियाँ। उपस्य कर 👢 ने इस लोकर्प शुक्त कारण क्षापाने परमायको आह होते 🛊 हार्याको क्रमीकान । हम भी गीधे रिको अनुसार क क्रमाना कार्यन् प्रकारको उद्या प्रस्तार विद्या सरो 'यो कीन्यत्रक, प्रात्तवामा और असमा देशकी है कंतर-स्मृत्यो करनेवारे प्रमुद्ध वीर्व 👢 प्रमृत्या 🛊 केन्सओके के केन्स, जनस सम्बाध, इसाठे केनेनके औ कान्यकोची पूर्व करवेवाले हैं, वरवहारत और सबसे कारक है, का कारका, फुल्लाको सह प्रमान है।' कार्क क्षावरों कराया, इसारों केन, हमारों चुनाई और इक्षारों चरव है। कुलोनका । कुत कर बरक्रका पुत्रनेकर बनका विकास क्रमणे कालो । ये निर्विकार पायके प्रयादा प्राप्त कर्त है, उस्ते मसकार करकुर सुरोधित होता है। वे कांकाम और कांक्रि कार्नी है। कोई-कोर्ड स्थानकेल कारण कार्रेके कारण उनका कर और पूर्वत विद्याल है। है व्यापन क्षेत्र कर्त है। अक्रोतित कृत रहतेक्षे औ pagestift fin fie flerit graft fieger, unt, reten और विकास अवदि कुछ क्षेत्र्य पाने हैं, उन क्षरकारास्त्रात क्लान्य केव्यको सरकारे काल है।" इस प्रधार क्रांकी सरक क्षण करने कहिने। यो देखाओंके कानी और कुनेतरे राजा है, जा भगवान् किसको प्रणाम है। से सुनाः असक कारन करते और कुदा करूप बाल्य करते हैं, जो समुद्रेक्ते अल्या है, अ वा आयुक्तारे देखोड़ पातान् सहसे जनमार है। जिन्हें अनेकों एक है, अनेको बनुत है, जो कारण पूर्व करावी है, इस चनवान् शिवको प्रकार है। के गरमानि, मारमानि, महागति बचा शहर और हेमसाओंके परि है. विकास कर्न की और क्लाबके बाल सुकार्क, स्थान कारिकान् है. उन जनकर् प्रेकारको नामकार् है।

अस में व्यानेक्श्रीके मिल कारोंको जाने इस्त और इंजिक अनुसार करा छ। है। यदि ने कृष्णि है वार्च से रेन्स अर्थ अर्थ और सक्त प्रशासने क्रिय कोरद भी कैसे की छने पते। एक सम्बद्धी कर है १४८ने क्लाइन केस्त्रकी जाकोरना की; इससे उनके कारों महत्त् उपास सम्बद्धी अर्था केस्ताओर सम छा स्था। जब अने अन्या पाप अर्थन किसा मण, उभी शुक्ता छा पूर्व है। प्रवास अर्थने केस्ता और भी सह उससे प्रवासेत सुते है। पूर्वकारकी कार है, हीर करकान् असुरोंने आकासमें

है, जो उनकी बरावरी कर सके। संकारने धनकन् इंकाले । अपने उनस् बरा रहे हैं। वे नस्र क्रियानों स्वापने धनकन् इंकाले विकार करते थे। उस तीन कारते देख त्येत्वा, दूसरा परिवार करेर तीनार स्टेन्स कर था। से सेनेका कर या काला कार्य का कालास्ता। परिवेश करे दूर पुरने करकाल पूरा या स्था कोर्ड्स कारते विद्यासम्बद्ध निकार था। कुले स्थ पुरेका चेत्र करनेक तिये कार्य कार्य कार्योक्ष प्रयोग निका, पर वे कुलवार्य म है कर्य । का इन्द्रांत साथ केरता यु:सी होयन करवान् संकारकी कार्यो पर्य । व्या पहुँचकर कार्टि कार्य—'पर्यान् ! इन विप्रतिकारी केरवेश प्रशासित वस्तान दे गया है, कारके कार्यान प्रस्तान के सर्वकर किया दूसरा कोर्ड कार्या नाम करनेने सम्बं नार्य है। कार ही इस विवोधियोग कर विविध्ये।'

केम्बाओके देशा न्यानेवर प्रत्यक्त संस्थाने स्वयस वित्रसामान करनेके कियो 'तथाका' कका और गण्यमान सका किम्बायल—इन हे प्रांतीको सको स्वयो क्या करावा । प्रस्तु और करेंद्रे अहेत सम्पूर्ण पृथ्वे है स्व हाँ । यहराव प्रेरको रकती करेंके सारमें रका रूप । करूप और सर्व--वे दोनो पहिचे वर्ने : सरकाके काको और क्यानाको कृतको जीते क्याचाः साधाकाश्च पुत्रत काला पराः र्मकृष्ट प्राप्ते कुल काँकोकी रक्षांच्या काम विष्ट । प्राप्ति मनवार् संवार्त समूर्व प्रतिकानो बोहोनी बामहोत्ते समितिस क्रिया। करों के राज्ये बार क्षेत्रे करावे को । अनेच स्थान को। गामने और स्वतितीका पत्ता करा। अभाग कार्य इस्त और अक्रमी प्राप्ति । करावसाओ मान्द्रीय धनुस्था क्या दिया गया और सास्त्रीय 'समसे अससे क्रमहान्य प्राप दिन्हा गुरू । चंगनान् क्रिक्ट हुए उत्तन क्रम और मधियको जाका कार धनावी गया । जाएको कारकी पीक और सैकारत कारको ऐक बनावा नवा र विकास का भागकी कर हाँ। रेक्से अंकर करत करता एक। इस प्रकार प्राथविकान रिव्य राज तैयार बार अन्यान क्रेसर सावार भाग्य हुए। का सम्ब समूर्ण केता क्यारी स्तरि करने सरो । भगवान् संकर इस रक्ष्में ५० क्यार क्रवंतक के र क्य वीनों पुर आकारकों एककित हुए, से उन्होंने सीन गाँठ तथा तीन करण्याले बागारी का तीनों पूरोबंधे लेड हारण । शुन्का उनकी और जीवा उठावार देखा थी व सबेदा बहुत्वर्गीको समान बाबारो निस्स समय हे तीनों त्येकोच्छे पहर कर हो हे. का काम पार्वती हेवी भी देखनेके दिनों कई कार्य । कन्नी योठीमें एक सरस्य क. जिसके दिशमें श्रीक शिकार्य औं पार्वतीने देवताओं से पान-'चा कौर है ?' का प्रथमें करते इरको असुनाको जाग जल उठी और उन्होंने जर सलकारा

नतका प्रकृत करन कहा; सिंदू का बारकाने हैतकर को इतन्त्री कर केंच। काची प्रशासित की हुई गई को-को-को सुनर्गा।

अपने केने से बाँद हिंगों एक केन्याओंके साम कार्यको प्रताने को एक अन्ते अन्य करते केले-'प्रवाद ! कार्राविकी येको एक अपूर्व बारका का, इसने उसे नहीं पहलाय । उसने किया पुत्र किये जीतानियें प्रकारिको जीव रिका । अवः आयते पुरते 🕻 या गाँउ का ?" कार्यों कार कुनकर प्रधानीने का अस्ति देवकी वारकारण ब्यान किया और प्राप्त केला कन्यत केलाओं से का-'का कामके कार्रे कावर नवाचे नामी मानार, कंपर थे, जाने केंद्र पोर्ट केला नहीं है। इस्तीय अब तुर वेरे काम कामार अधियो साम रहे।' जा समय कामानिक क्रम क्रमूम् हेवल जनवान् बोहारोः यस एवं । अक्रमीने कों है कर केरताओं है। धनकर उन्तर किया और हर अकर साथ की—'पानवर ! तन ही पह है, तुनी इस निकार जाते हैं और तुर्वी समयो परण देनेवारे हैं। सम्बद्धे प्रत्ये करनेवाले पहलेक राजी हो। परमधान पा करनार प्रकार से कारत है। इस्ते इस समूजे बरावर क्यानको काछ बार रका है। यह और परिच्योह सामी बन्नवेका ! के इन्त तुम्बरी क्येवके पीर्वात है, इत्या क्षण करें।'

ब्यान्तिको कार सुरकार बहेश्वर प्रश्नक है गये, देखाउआँपर क्षा कालें रिने में में उठावर कि परे। कि से वेकाओंने वर्कनीरकीत न्यानेकर्याको प्रस्ता विका । सिक्के कोपने के इसकी बाँड एत है भगी थी, का टीफ है नहीं। में भागमान् संबाद ही था, किया, अति, सर्वत, इंग्र, बाय और अधि-विकास है। वे ही विकास और नेम हैं। सूर्व कार्या, क्यान, कारत, पुत्र, कम, रात, विकार, कारत, पहा, कहा, क्रेमरात, लेका, कर्ता, क्रियाचा क्रियारमा और विश्वकर्या जी में हैं है। के निरामार होकर भी समूर्ण केलाओंके आसूर करान करते हैं। सब देवता उनकी सुनि करते खते हैं। बै एक, अनेक, जो, इकार और स्वक्त है। बेट्ट ब्रह्मण उनके के करीर महाते हैं—जिल और और । वे केनों अस्टर-आशा है। इन क्षेत्रोंके भी कई भैद के बाते हैं। इसका भीर सरीर नक्षि और पूर्व वाहिके कामें उत्पाद है तथा सीधा जरीर बार, नक्क एवं सञ्चानके कार्य । बेट, बेलाइ, अविषय, पुराण तथा अध्यानकासोमें से परा साथ है, वह सम्बाद म्बंबर ही है : अर्थुन ! च्या है महादेशनीयाँ महिना । इसनी ही की. के अलग पहल तथा अनन है। मैं एक प्रकार करेंगक

कहता हुँ, तो भी उनके गुजोकर कर नहीं का सकता।

भी होग स्व प्रकारकी मह-कवाओंसे पेड़ित है और सब प्रकारके प्रयोगे क्ये हुए है, वे भी बहि उनकी शरकने आ करे ते वे अरह द्वेकर क्यूँ पाय-सामसे मुक्त कर देते हैं तक करतू. आरोग्न, ऐसर्व, कर और प्रकृत चेना-सम्बद्धी प्रदान करते हैं। कृषित होनेपर वे सक्का संहार कर करनते हैं। महत्त्वलोके ईकर होनेके सारण करों महेचर सहते हैं। केदोने भी हमाडी सरस्तीय और अञ्चलकेन नामको जनसन करूपी नही है। धनकन् इंबर हिम्म और मानक सभी योगोंके जानी है। सन्पूर्ण विकास काल करनेके कारण से हैं। विकास कर है। विका लिक्सी पूजा करनेले धारावान् तिल बहुत प्रात्ता होते हैं। बहुनि काके राज और देत है, स्थापि एक विल्लाम अधिका नेट अलम भी है, जो सदा प्रभावित कहा है। वे सब लोकोंने काहा है नेके कारण सर्व कदलते हैं। वे सबके क्रार्टीने सब प्रकारके अर्थ हिन्दू करते हैं। तथा समूर्य प्रमुखोक्त करफान कहते हैं, इसरिये जो दिस बहें हैं। यहार विश्वास प्रदेश करेंगे महारेत, विवासिके हेतु होनेसे आग्यु और सबके अनुसब होनेके मारम यम महराते हैं। स्वीर शब है बेहुका और दून कर्वका मानव है; से धर्म और बेह केनो हैं, इसरियो उन्हें क्यावरी बाहरे हैं। अपूर्वेरे अपूर्व हो केरोब्से बेहबून बरवायू सरस्टार्व तीसरा नेत्र अपन विस्था, इस्राध्ये से दिन्छ कई कते हैं।

अर्जुन | जो गुण्हारे प्रश्नुआंका एकार करते हुए देखे जबे थे, जे निनाकारणी म्हादेवजी है हैं। स्वाह्मकाकी प्रतिप्त बारनेपर श्रीकृष्णने स्वाह्में निरित्तक विभावको जिस्तरस हुन्हें विनका दर्शन करामा क, वे हैं। म्हादान् इंग्ला नहीं हुन्हों आगे-आगे करको हैं किन्होंने हैं के अक दिने, विनसे हुन्हें इनकोका संदार किया है। वह प्रगासन् इंग्लाका प्रस्तित्व स्वाह्मकार तुन्हें सुनाबा गया है। वह प्रन, वहा स्ट्रेट अपूर्णी वृद्धि कारनेवाहम है, पर्श्व प्रतिष्ठ तथा बेटके सम्पन है। सग्धान् एंकारका का परित्र संख्यामें विजय दिलानेकाय है। इस इसक्तिय क्याक्यानको जो सदा प्रस्ता और सुनता है द्या



वे जनकर् इंकरका चया है, वह करूम सभी जार कारणकोच्छे जात करता है। अर्थुन | वाओ, कुद्ध करो, कुद्धरी करावय नहीं हो समाती; क्योंकि दुन्हरे घनी, रहक और पार्वकर्ती करवान् जीकृत्य है।

सहाय वन्ते हैं—स्वाधान ! परकारनपुर स्वासनी सर्वुनसे का प्रमुख्य मैंसे अले थे, बेसे ही बले गये।

नेट्ने कामानारे ने कल मिलत है, नहें इस प्रति कर और सम्माने भी मिलत है। इसमें मेर इटिनोर्ड महन् बतका नर्कर किया गया है। मे निस इसे पहला और सुनता है, वह सभी क्योंसे पुरत हो जाता है। इसके पाठसे बस्तमानो कामा क्रम मिलता है, इसिनको संजापमें सुनतानी अहि होती है तथा सेन ने नर्मोंको भी पुत-पीत आहे अधीर कलूएँ उसलक होती है।

# संक्षिप्त महाभारत

# कर्णपर्व

कर्णके सेनापतित्वमें युद्धका आरम्य और भीमके द्वारा क्षेमभूर्तिका तम हिंद करति सेजवरि क्षेत्रेके कर चर्चनना कर्ण किया।

चैव न्येक्स्। नरायमे नमकृत सं देशी सरस्ती अवसे उसे क्यून्टरकेह

क्रांचीचे पात्रवास्त्रक प्रत्यात् क्षेत्रक, उसे विकास कारका स-क अर्थ, उन्हें बील प्रकट करनेवाली कावती अस्ताती और सन्ते काव नहीं वेदनासको नगरका काके आहुरी सन्तरिक्त विका-सहित्यंत अक्षात्रकाते हत् वर्त्तेको म्बर्भास प्रथम पर करन परिचे।

रीतन्त्रकार्यं सहते है—राजप् ! होन्यकार्यः को बारेसे हुर्नेका आदि रामा बहुत करत नदे, क्रेक्से क्रमा काम या है गया। वे हेमके दिने सारच क्षणाम करते हुए अकुमानको करा अस्तर की और कुछ देशक प्राचीन पुक्रियोंने को अस्थाल की थे: दिन अप्रेक्ट सम्ब अयो-अयो दिवित्वे को गर्न । कर्ण, पुरस्तर और समुन्ति क्रॉक्के है दिक्ति बहु एक बारोज की : सोने राज्य में करों ही कवानोंको

हिने हुए द्वेरतीयर विचार करते थे। फायकोस्टे जूरने के पह भोजने पढ़े वे क्या प्रैपक्षेको को नदी सम्बन्धे क्रावेदकर स्वक गया वा-ने तम वातें यह करते उने वह शहरात्र हुन्द, क्ला किर कहा सवास है करा।

राध्यात् का स्वेश हथा से सकी प्राचीन विनिधे अनुसार अपन-अपन निम्मार्ग पूरा वित्यः; वित पाण्यस मरोसा करके वैर्वकरमञ्जूषेक उन्होंने सेराको वैकर होनेकी आहा से और पुत्रके रिमे निवल को। कुरोबले कर्मक फ्रेनायरिके प्रापर अभिनेक किया और खी. थी. असा. कर्म-पुत्र, मी, सोचा सथा बहुबुध्य क्योब्रास काल प्रकारोपी पूरा करके उसके आसीर्वाद प्राप्त किये । विस सुर, पराय राज कंदीकरोंने का-कावार विराय। हारी प्रकार पाध्यम भी प्रवास्त्रक कृत्यम कर बुद्धका निश्चय करके किमिरसे बाह्य निकले।



ख्यूनो ख्या-न्यास्य । क्यूनी समित बान्यर कुर्वेचको राजनेचै बावालचे और सेवाको वैचार हो जानेची अक्षा है। का कृष्य को को नकरातों, रूपों, समय वीक्षेत्राते क्यूबों क्या मेहोबा बहेत्युत बढ़ने तथा। विको है केंद्र उत्तर्क हे-हेकर एक-सूत्रेको पुकारने को। इन सक्की निक्षे हुई देखी आवाको आसमान पूज का । इसी समय सेमायति कर्ण एक क्रकते इस् रक्यर कैता विकाली प्रकार असके राजका केत प्रताबत प्रकार पूरी की । बोर्ड ची स्टेंबर थे। ब्यापार्थे स्टबंबर बिद्ध बना हुआ वह। रजके भीवर रीयावें तरकता, यह, कारण, क्यारी, किन्द्रियी, कृति, कुर, केनर और बहुर रहे हुए है । कर्मी हुङ्ग बसाय और जन्मी कामन सुनते हैं केन्द्र सामले क्षेत्रर रोड़े। इस प्रकार कौरतोची सहा को संसको उसने विशिक्ष कहर निकास क्या प्राथमोच्ये औरनेव्ये इकारे अस्त्रा मन्तके आकारका कुरुरहरे पुत्र---राह्मम ! अस्य तुम युक्ते नेद करावते । एक नकू बनावार राजपूरिको ओर कुळ किया। यह प्रकार- महाके पुरस्के स्वारमें सर्थ कर्ण उनस्कित कृता। केनी
नेत्रोकी जगा क्रुवीर कक्ष्मी और उन्द्रक रखे हुए।
स्वाय-स्वर्ण अध्यक्षमा एका क्रुव्येको कुर्णकर्क सर्था
पाई थे। क्ष्मके प्रवाधानो क्ष्म कर्म हेक्स विश्व हुव्य
पाना कुर्गेशन वा। क्षार्थ वरस्को स्वाप्त्रण क्ष्म हुक्स,
स्वरंग साथ रखेच्या कार्यकी क्ष्मकर्थ क्ष्मकर्थ क्षम हुक्स,
स्वरंग साथ रखेच्या कार्यकी क्ष्मकर्थ क्ष्म क्ष्मर थे थे।
स्वरंग करस्को क्ष्मक कृत्यकर्थ थे, उनके क्षम क्षमर अपूर्णर
हिन्दों और सामित्रास्थित सेव थे। क्षम क्ष्मकर क्षम क्षम कर्म
सूर्ण साथि क्ष्मकर्थ के स्वरंग क्षम क्षम क्षम क्षम कृता रहिन्दों और नीन के क्षमित्रांको तथा थे। क्ष्मक्ष क्षमर रहिन्दों और नीन के क्षमित्रांको तथा थे। क्ष्मक्षी

इस प्रवार बड्डा क्रमधर करोंने उस रकानुष्यको और इस किया से बसंदान चुनिर्दाल अनुस्ता देखकर बड़ा—'पार्च ! देखरे से बड़ी, कराने कोरच-सेन्स्सी किस एस प्रोचेंक्स की है और जासभी मेर कैसे इसकी दक्ष कर से इस अधः भारे का चुके हैं, अब कीदे ही जा को है। असः में से इसे सिल्केक समान सम्यान्त है। इस केसमें मूल्यून करों है इस प्रवार कर्युर और है, जिसे केसम मी जार सामने । स्वारात्त्वी | अब उस क्ष्मेंको जा इस्तानेर है दुख्रारी किसस होती और मेर झावकर करोड़ की विकास सामा। इस्तीको तुन इकारपुर्वा अवकी सेन्स्सी म्हारवान करों।'

पाईकी नाम पुन्तार अर्थन्य प्रदूक्तिक मुक्तानेने अपने ऐताका अर्थन्य कार वृद्ध क्याने । अर्था क्या प्रापि गीनतेन, पाईने कारने पृद्धा क्या गामने एका पुनिश्चित और अर्थन कर्ड हुए । प्रमुख और प्रदुक्ति कर्ड के के वि पुनिश्चित में के थे । प्रदूक्तिकी पुज्यान और प्रदुक्ति पिन्ने क्या करने करें । केन कीरोक्ति क्या अर्थनके पिन्नेकी प्रश्न करने करें । केन कीरोक्ति क्या स्मूची नहीं क्यान दिला, से क्या प्रदूक्ति नहीं क्याकर किर पुन्ती पर क्यान्य । केने क्यांने क्या क्याकर किर पुन्ती पर क्यान्य । केने क्यांने क्या विकास प्रदूक्ति वाने क्या उठे । विकासिकारणी स्ट्योरीका विकास प्रकार केरे क्या । स्मूच पुन्तीर क्यांने व्यक्ति क्यान क्यान

सहनतर कर्ण तथा अर्थुन आयने-सकते आकर सहै इस् और दोनों एक-कृतिको देखते ही छोजने पर गये। उनके

र्वतिक भी कनाते-मुख्ये हुए परान्त वा निर्देश किर से क्यानक पुद्ध किंकु नक; हाती, चेदे और खोंके समार क्या बैद्धार चेद्धा एक-इसरेयर प्रकार करने तारो । वे अर्थनात, भारत, बूटर, सरकार, पहिन्न और फलोंसे अपने जीत्यीत्थीक क्याक काटने रूने । मरे हुद और हाजी, खेड़ों कथा रखेंसे लिए-गिरका बरासकी क्षेत्रे समें । सैनिकॉके क्रम, वैद और इक्सिक्ट सभी करने सने; उस्से इस नहीं महत् इंदल आरम्प हे नवा। इस अध्या उस सेनाका विकास के का था, उसी सका पीमलेंग आहि पायक इसलेनोवर पह अने । बीम्सीन इस्तीवर बैठे हुए से । उन्हें कुछों ही अबने केना एका क्षेत्रपुर्तिने, जो उनने भी हासीवर कवा था, पुरुषे रिने सरकता और करार भाग कर किया। पहले का केलीके प्रतिकारों के प्रता जातन gan । यह इसी सहारे-स्थाने अध्यक्तने सद पर्व तो वे केनी की केनोंके एक-कृतियर केवार प्रधार करने रूपे। किर बनुव प्रक्रावर केनोंने केनोंको बीचना जारण किया । बोक्री है देशों क्योंने एक-सूर्याच्या बहुद फारवार विकास किया और परस्क समित पूर्व क्षेत्ररोकी प्राही रूगा है। इसी क्षीको क्षेत्रवृतिने कहे केलने एक सेमाला प्रदार कर चीवलेक्टी क्याँ केंद्र करने, दिन नरको कुर जाने क: स्रोपर और मारे।

क्षेत्रकेकं की क्षेत्र उठावा और माजोकी क्योंने सहके इस्कोच्छे ब्यून कीदेश किया; इसमें वह माम क्या,



रेक्नेसे भी नहीं क्या। क्रेक्नुमेंने बिहरी तहा इस्केंच्ये कुत्रकर सेने का पना और सरकार कायार सीमहेनची काबूमें बिल्या और कोयमें परवार पीमलेनको बानोंसे बीच। और कैस । यह देश भीमने कायर महाले चीर की। करता। साथ ही उनके प्राचीके की मर्गत्वानोर्गे कोट उसके साध्यक्षे केमवर्शिक प्राच-नरोक का पर्न और पहिल्ली । इस्मी दर आवारको न एक सम्बन्ध का क्रम का करकारके एक है इस्मीके पार निर पहा । महाराज ( कारकार प्रकारित गिर पहा : चीन्सोन काले निरनेसे चाने केल्यूर्व कुन्तु नेक्या नक्यों राजा का, को नारा ही कुरकर बसीनम अर को और अपनी कहते उहारते. कब देश आपको ग्रेम व्यक्ति होनर स्वयूपियो प्राप्ते. सहस्रे इंग्लीको भी उन्होंने नार रिस्तक । होन्स्क्री भी इत्योधे 📟

# विन्द-अनुविन्द और चित्रसेन तथा चित्रका वध, अश्वत्यामा और धीमसेनका वर्षकर पुद

अक्षर नहरे हैं—राज्यू । सरकार् कार् कपूर्ण कारी । वीकार को कोशी पर्वत की। विस अस्त्री क्रांत और शको तीने वालोसे कावल-सेवाक संसद असला विकार करके माराओची मारते पीचित केवर श्रीव-केन्द्रित कार्य विकास का राज और कार्य तर्ने। यह देश सामा कार्यपर पहुल्ले काम किया । पूल्पी और अञ्चलक कुला पर्वाचन दिया पर पर, जाना सीनोन्ने जानम विवार franklig fre oft stylings greater faces QUARTE PRODUCT SPRING ROLL PRODU प्रतिक्रियो रेख रिखा। पूर्वेका एक पुनिक्किले क्षि प्रस और स्रोधने भी हुए संस्कृतकोन्द सर्वाने सामा निवात पूछ्य क्रांचानिक और विकासी क्रांचानिक प्राप्त राहरे per | greiffen greit ma sit teileur steit पुर क्रमासम्बद्धे सम्बद्धाः होने सम्बतः

on some on propale from the first after अगरिक सामिक्षेत्र करा हेकारी करतेची वर्ष करने राने । पह देश सामाधिने भी उन होनोंको उनने कानकोरी armfin ur fine freiericht en ge-रमार्थीककी करतीने चोट च्यूंकाची को उसने उन क्रेनोके करूर मान दिने और सीची वानोंने मानान गई अने प्रकृति केस हिंस। यह क्योंने सुतरे कहत प्रकारे दिन्ने और खालांकाओ प्रजीते प्रकार अन्यवस्य का गणा। विश् का रोधों न्यूम्सीयोने एक-यूरोके बहुद बार करे। अब से सामाधिके कोचको होना न खे. काने हुए ही हरए जुल रेजन अन्ती जनका जाली और र्थंत सामय तीवा कुछ पाताबर अनुविकास प्रकार का क्रिया ।

अपने प्रश्तीर धार्यको यात् एक केल म्हारको विन्तने भी देसरा बहुब उठावा और सालविको साठ बावोसे



पुष्पक्ष्में के क्यारे करते हैं बावल किया। क्रानेस्ट औ सारमीयका चेवर चरिता नहीं हुआ, उसने ईसते-ईसते प्रशीस क्या व्यवक्त विकास कार दिया। इसके का दोनों महारोपयोंने एक-कुररेकर बनुस करकार सार्वीय और केंद्रे पार करों । इस अवार कर के स्थानित हो गये हो करा और सरवार इनमें से अपरामें रुपने रूमे। होने ही तक-तकके पैतरे बक्तो और एक-कृतिका यह करनेके सिने पूर्व प्रका करते थे। इस्पेटिन सामाधिने विजयते करनेत से समादे कर दिये। हिए किन् भी प्रात्निकों द्वार बारका बीनी उल्लाह है स्वारमकार पैस्टे के लगा। इसी बीकों मौका पावन स्वारकिने बड़ी पुत्री दिसावी। जाने सरकारका एक ऐसा इस गए कि काकाश्मीत विश्वेत प्रतिकों से हुकों हे गये। किंद्र आर्ग्यान होकर पूर्वोत्तर शिर कहा और सावकि को सरका हुता ही पुश्चानुके स्वार कह नकः। इसके बाद एक हुता रच विविद्योक स्वार्थ्य क्रम क्या। सरकी अस्पर समार हुआ और पुरः अस्पे सावकों से क्या-रोजका संहार करने हत्य। अस्पो का सावक केकावों के क्या माना म सबी। यह अपने असर एक्या सावक करवा केंद्र सम हिलाओं में यान गयी।

विवास क्षांचानि क्षेण्ये गरकर प्रवास कार्यसे एका
विवास कार्यस विवास अधिकार योग प्राप्यसेने अस्तेः
सार्यकारे की पीतिक विवास विवास व्याप्यस्ति व्यापे
सार्यकारे की पीतिक विवास अप क्षांचानि विवास की विवास वि

वृत्तरी और जीतिक्याने विकास क्या क्यांके क्यांके तीन सावकोंने जाके सार्वकों नीम दिवा और एक क्यां मार्वक तीन सावकोंने जाकी क्यां कर एकों। क्या विकार जाकी क्यांके सार्वकों ने व्या विकार जाकी क्यांके करें। क्या देश अधिकेश्यों कार्यक कर्या क्यांके जो की क्यांक क्यांके जो की क्यांक क्यांके कर क्यांके क्या

व्याने । इसने अधिनिकाको प्रमुख्येल हुआ, उसने विस्ताने पार सहस्तेनको कृत्यको सोचनका प्रमुख विस्ता । यह सोनर



जन्मी क्रमी और सम्बद्ध हैश्वत हुआ प्रयोगमें पुत्र नदा तक क्रमा किंग जनमें भी फैस्सेकर मुस्लिर वह पहा ।

विकासी करा नाम देश आरथे सैनियोंने अरिनियानर को केनो कर्या किया, वर्गतु अर्थ अर्थ सामक सन्द्रांची कर्य कर्या हम सक्यो पीछे वर्ग विक। इस काम, का कि करिय-रोकके समझ केन्द्र कार्य मां को थे; केन्स अक्रमान ही प्रकृतनी चीनसेन्स सामन मारनेके किये अर्थ कहा। किर का क्षेत्रोंने कोर संज्ञान होने सन्द्राः

अवस्थान पहले एक वाल पंत्यार पीयसंग्यों वीच दिया। वित नामें वालोंने उनके वर्णमानोंने आवात विस्ता। वह पीनांत्रणे भी एक हवार वालोंने होण्युत्यों आवात्वांत्र करके सिंधोंद समान पर्वाण की। विद्या अवस्थानाने अपने सावकोंने पीयसंग्ये वालोंको ऐक विद्या और पुरावादाते हुए उसने पीयसंग्यास्ताने एक नाराय मारान वह केल पीयने भी बीच करवाोंने अवस्थानको समानानों वीच वात्वा। वस बेल्युत्यारने सी बाल मान्यार पीयसंग्यको वीदित विस्ता, विद्या इससे पीय सन्ति भी विकासित नहीं हुए। इसी प्रवार पीयने भी अवस्थानकों सेव विद्यों हुए सी वाला वारं, वांसु का वित्य समान और पीयसंग को नामें माने शक्त-युद्ध क्रिय गया। उस समय चीमसेन और अक्रमानके होडे हर सम आपस्ये उद्धरादार आपन्ये सेनाके सार्वे और सम्पूर्ण विशासीमें प्रकास फैरन रहे से । स्वरूपोंने अन्यूनिक हुआ आवरत बढ़ा क्वंबर हिलाओं देश का। कालोबे इक्कानेंसे अवन पैदा क्रेकर दोनों सेनाओंको एक कर ची थी। जा होनों बीहोका जहपुत एवं अधिका परकार देख हिरम् और चरणीये सन्दर्भाको कहा विरुद्ध हो रहा था। बेलता, रिट्ड तथा बड़े-बड़े खाँच उन केन्द्रेको सामाची है

अपनेते अपने महत्र करने अने । इस करह का देनोंने पर्यकर | यो यो । ये दोनों पहारणी नेवांड समान पान पहते थे; ये क्यांकर्ष करनो धारत है से प्रकारण विकासको प्रमास ज्ञानित हो रहे ने और वालोकी बीजासी एक-एसरेको क्के क्षेत्र से । क्षेत्रीने क्षेत्रीक्षी व्यवस काटकर सार्राव और कोड़ोकी बीच जाल, किर एक-दर्शनेको सम्मेशे सम्बद्ध करने छने । बढे केन्से किने हुए करायस्थे आजातसे जब ने जानना बाचर हो वर्षे हो अवने-अपने रचके विक्रतं चानमें निर परे । अवस्थाना-का रक्षाकि को मुर्विक स्थानकर अवश्रुपियो हुए हुए से गया। क्रिके स्वर्टको को उन्हें अकेद कारकर ऐसा है किया।

#### संशाप्तकों और अग्रत्थामाके साथ अर्जुनका बोर संप्राम, अर्जुनके हाथसे हण्डभार और 🚃

कृतरहरे पुल-सङ्ग्य ! अर्थुनका संस्तरको स्था | angements was floor mare use gar ?

सक्तरी सक्त-प्रदाशन । सुनिये । संबद्धान्त्रोधी प्रेम प्रमुखे स्थान कृतियां थी, वो भी अर्थुन्ने कार्ये प्रवेष का तुकार-ता कहा कर दिया। वे तेन निर्म हर बाजोंने वीरकवीरोंके बक्तक बाल-बालका मिनाने राजे। केई है देने बहुक स्तर का नहें और बहु को हर britiebt vonn fint sterft meir-fift ftreift bit सरो : इक्सो नालोकी क्यों करके क्योंने एवी, इस्केंसे और केंद्रोंको इनके स्थारी-स्थीत कार्यान्य केंद्र विकार कीर्य शाम भार-मारकर कनुमोके प्रारक्ति, काळ, कनुव, काल सवा कामरित मुक्तिकार्त कुरोतिक क्रमोच्छे की बाह गिराना । यह देश को-को क्षेत्रा स्टीकेंड स्टब्स ईकाको इन क्षर्यन्तर का पढ़े और होने तीरोसे क्यें काला करने समें। कर समय अर्जुन और का चेन्द्राओंने केवानुकारी संसाद शास्त्रम हो एवा । अर्जुनस्य स्था औरसे अव्योगी कर्या हो खी बी, हो भी ने अपने अखोंने अस्ता निवास बाले वस्तोते मार-वारका इक्शांकि जन होने रूपे। वैसे इक काशोधी क्रिक-पित बार केरी है, उसी प्रकार में क्रियोक्सेंचे रजीवी व्यक्ति का है थे।

का समय अर्थन अर्थने क्षेत्रेण भी एक इसार महार्थिकोंके समान परासम दिया को वेश उनका का पुरुवार्थ देका देकता, सिद्ध, ऋषि और चारण भी उनकी प्रशंसा बारने सन्ते । वेजवाओंने क्युपि बनायी और अर्थुन क्ष्म जीवरणपर पुरसेको कर्ष को। जिस कई इस उक्स अवस्थात्व्यको व्हा परिन्तेने स्थापको स्थापित अधिको में ही में ऑक्ट्रम और अर्थन रक्षपुरियों विश्वास रहे हैं। एक रचना की हुए ने केनी भीर सहस्र राजा इंग्यरहारे अभि अधेन हैं। ये समूर्ण ज्ञानियोंने बेह पर और wood \$11

इस अक्षानीचा कृतानाची देश और कृतकर पी अक्रमाने पुरुष्टे रिजे असीअति रिवार के बीक्षण तथा अर्थुरक कवा किया। उसने औक्षणको साठ स्था अर्थनको क्षेत्र करा गरे। एक अर्थनने कोशने परवार रोज जानोंसे जानक बनुत कर दिला। भा देश असे दसरा असम्ब अनंबार बहुत प्रवाने दिल्या और सीवान्यवर और सी कथा सर्व्यक्त एक कृषार धान्येका अक्षर विश्वत । कृतना ही चाँ, अक्रमानने अर्थुनको सानै बढ़नेते रोककर उसके कंपर इक्करें, रक्षमें और अस्त्रों क्रम कशाने । यह समय देल कर पहल का कार्ने अल्बे शकत, बहुब, प्रावहा, रक, काम कम कारको और बोह, क्रम, कारी, पुँह, ताम, करण, अरेश कक अरुक आहे आहे एवं रोप-रोपसे बाज कट को है। इस अवनर अपने सावकतामुहोब्दी बीकारसे उसने जीवामा और अर्थनको भीच क्रमा और अर्थन प्रस्ता होत्रह म्हानेकके सन्दर कर्मकर कर्मना की।

अवस्थानको नर्जन सुन्तार अर्जुनो काके परमने हुए अनेक स्थानके सीन-सीन शुक्को कर उस्ते । इसके कर उन्होंने संवारकोचे रच, हजी, केंद्रे, सर्वाच, बचा और पैठल विश्वविक्रोंको धर्मकर कलोही यारत अवस्य किन्छ। चन्द्रीयसे बुटे हुए जन्म अवतरके बाव हीन मौतपर करे हर हुन्यों और महन्त्रेयों की बार निराते थे। उस समय कर्मुको अनुकोंके ब्यूट-से सबे-सम्बन्धे युक्तवारी और दिहि, बायुक्त कर और सुर्वका प्रकार करन किया है, , वेदल सैनिकोका सरमक कर इस्ता। इस्तुओंपेसे जो होत रमाने पीठ दिवाका काम नहीं गये, बदावर सामने को छो, इसके धनुन, बाज, सरकार, प्रमाण, ग्राम, मीद, प्रमाण इतिवार, बाज, जाया, जोड़े, राजधी ईचा, काम, कामक और मारावाको अर्जुनने काट कास्त्र । कामी बाजनेचे प्रमास रथा, चोड़े और इतिवारिक स्थान कामी समार की नावाकी हो गये।

मा रेक अड्ड, यह, कांग्यू और नियम वेहांने मेर अर्थुंग्यो अप कांग्यो हमानो हम्मानेन स्वार हे व्यां मह आहे। विश्व अर्थुंग्ये अपी हम्मानेंस मान्य, पर्नवान, है।, यहमान, क्या और प्राच्या आहियो पाट करता। हससे वे हानी नामी अकतासाने अपने प्रमुक्त का मान्य मानो और गांचे एक है क्या क्षेत्र के, इस अवता अप सर्वाची एक है साथ क्षेत्र हिया। क्योंने पीच क्यांने के अर्थुंग्यो वामार क्यांने क्षेत्र स्थान स्थानको हम-विश्व मान हिया। अर क्षेत्रीके क्षांत्री सून्यो क्या वामे अपी। अस्मा इस अवतर प्राप्त देशका साथे पड़ी माना कि सथे मे मारे गये।

वस समय प्रमान् सीकृतने कहा—'वार्ष ! विवर्ण को सर हो हो; जये हो । मेरे विशेषात न कार्यन केन सहसर महाकृत्य है जाता है, उसे अक्षार साम्यक्षी करनेरे यह यह भी असार होकर महन् दुःक्तनी है साम्यक्ष ।' 'कृत असार' सहकर अर्थने सम्यक्ताओं नही, इस्ती, तिर और साम्यक्ष होकर उन्होंने सम्यक्ताओं नही, इस्ती, तिर और सहस्कों क्रांची हेन हाता किर मेर्नेची सारावेर कार्यन उन्हें स्थानेसे हीवम् अस्ता विव्या । केंद्रे कार्यनर मार्ग और अक्षानस्था राज्योंने हुर हवा कें गर्द । अक्षानाम अर्थनेक क्षाने कार्यन हो कृता का कि किर सीव्यान उन्हों स्थानेक कार्यों कार्यन की कृता का कि किर सीव्यान करते स्थानेक कार्य कार्य कार्य की क्षान और किर सर्वाय सेन्त्रों स्थेत कर मना । स्थानकर सीकृत्य और

इसी समय उत्तरकी जोर परमाणांग्यमें को श्रोतका अर्तानम् सुनावी पहा । वह रावामार परमाणांग्य पर्यान्तिकी संश्राका संहार कर रहा था । वह रेवा धनावान् कृष्णां २०वाधे सौटाकर जार ही कृप दिया और अर्गुनंग्रो कहा—'मगश्रोद्धका राजा कृष्णांतर कहा पराक्रमी है, वह सहीं भी अपना सानी नहीं रसावा । इसके प्यान प्रमुलीका संहार करनेकाल एक पहान् गमराज है, इसे कुलावी उत्तर विकार निरंगी है और अब को समसे अधिक है हो । इनमेसे किन्ति को दुवितरे भार काम पनास्ताने काम नहीं है। पहले हुम इस्तेया संवार कर काले, जिन संस्थानको माना।' इतन व्यापार सनावादी अर्थुनको क्यापानके निकट पहुँचा हैया। यह काले अनेके काममा पाने हुए पुस्तवारों और पैदल किन्द्रोंको अपने प्रदेशका नगरमको हुए। पिरावार पुन्तकार यह वह। यह पहुँचा है लोकुनको बाद्य और अर्थुनको सोन्यु काम पान्यार सन्त्रवार है उनके प्रदेशको भी सीन-नीन पान्यों। पान्या विकास हिन्द्रों यह यह वह वार्त्यार हैसने और पान्ये सन्तर।

व्या अर्थुनने कारणेते उत्तरंत वनुष-वारम, अरवक्रा और कारणो कार दिया। इससे कृतित के दक्षणाते अधिक्रमा और अर्थुनको कारणात्मे इसस्तेको इक्षणे अधने क्रिक्सा कारणाव्यो उत्तरी और कारणाय्ये स्वादी की बूर कारणार कारणो केले कुणाओं और कारणाय्ये स्वादी कारण वार उत्तर, इससे कार उत्तरं इस्तेको भी की बाल गारे। उत्तरी कीरणे वीदित होचार इस्ती चोर-चोरणे वित्याहरे कारण और कारण कारणा कहा स्वादकार कृत्या इस्ते-कार्य वार्थि करणा। अर्थाने कीचार कारणा वह महावसके साम ही दिया और कारणा।



पुरुषे रूक्काली जो वानेक् सम्बद्ध कई **रूप** क्रीकृत्य और अर्कृत्या का करनेके रिजे का आया। अधी क्री वह सीकृत्यको सीन और अर्जुनको तेन किन्दे हुए मीव

क्रेमर मास्कर भीवन नर्जना करने राज्य । सन सर्जुनने आश्री वीनो वृद्धि कट इसमें और उसके नक्तकार एवं अर्चन्यकार बाज मारा । सम्बद्धी खेटते रूपकार मास्त्री कटकर इस्वीनको बागोनगर जा पहा । इसके पहा उन्होंने रूपको इस्तियो भी बाजोंने विद्योग कर इसका उसकी खेटते अरुक आर्थक

होकर वह इस्ती विश्वादक हुआ निकार पर नगा। क्रम्बार कृते-दूतरे केन्द्र भी जान इस्तिकेश सवार होकर विश्वयक्ती इक्तारे वह उत्तर किया। किए के क्रमुकी व्यक्ति जर्दे भी केन्द्रे वह उत्तर किया। किए के क्रमुकी व्यक्त वही तेना जान कर्म क्री और अर्जुन केन्द्राक्तिका संहार करनेके रिक्ट कर दिने।

# अर्जुनके द्वारा संस्थानकोंका तथा अश्वत्यामाके हाससे राजा पाणकाका यथ

श्चाय कारो हि—स्वारस्य | कार्युक्ते ब्यूक्त पास्ती पर्वित बात और अधिकार परिस्ते पास्त्रीत बंदुक्तकार संवादकीया बीहर पार कारो | अनेको बेक्त, पुरस्कार, रार्थ और इस्ती कार्युक्ते पास्तीओं पार्थ अस्त पर्व और ब्यूक-मे निरम्बर पर पर्व । बाहोंने पास्त, हुर, अनेकार समा सामान्य कारी अमारेट अपने बाहुअंके कोड़े, प्रारंथि, सम्बद्ध, बाहुर, पार्थ, इस्त, प्रारंथ इतिवार, पुनारी और पास्त्रा पास्त निर्मां । इसी



बीक्ष्में अस्त्रुवके पुत्रने और क्षणीये अर्थुनको चीव विद्या । यह देख अर्थुनने उत्त्वस वित्र काले अस्त्व कर विद्या । इस इस्त्य सम्बद्धको समझ वित्य कोळले वत्त्वर अर्थुन-यह पाना अक्षरके अस-स्वर्णको वर्षा करने रूले । यहंतु सर्गुनने असने असोसे क्ष्युकोको अन्यवर्ण केळ वै और सम्बद्धोको प्राप्त सम्बद्धक व्यूकोनो अनुकोका क्या बार करना ।

को क्या भगवार् बोक्सने का— अर्जुन ! तुर विकास को का हो है ? इन संस्थानीया अन्त करके अब कर्मका कर करके दिन्ते जीत तैयार के वाओ ।" 'अखा, ऐसा है काम हैं —क सहकार अर्थुको होन संस्थानकोका संस्था अस्तरमा विकास । अर्थुन पूर्णाने प्रतिकारको पान्न स्थानने हेरो, अंतराज करों और क्रोकी से कि स्कृत सरकार्यकों देखनेकारे भी उनकी हर क्रम करनेको हेन्द्र गाँँ यसे है । अर्थु-स्टा क्रमस्त्रक हेन्द्र कर्त अनुसार सोस्ताल भी आक्षणि यह गरे । उन्होंने अर्जुन्से कार- 'कर्च । इस वृथ्यीचा वृत्रीकरो कारण राजाओका का म्बान्सम्बद्धाः संबद्धाः हो। या है। जाना तुनमे को पराक्राम सिन्या है केल क्रमंत्रे केवल इससे है जिला या ।' इस प्रकार करों करते हुए ही कुम्मा और अर्थुन परने का रहे थे, इसनेही में अर्थे पूर्वी मनकी सेवाके बात प्राप्त, कृतीय, मेरी और वसम आहि सम्बोधी आवाम कुलको है। कह स्वेकुम्मने केहरिको सकृत्र। और सहर् पहिल्ला हेलां कि राज पान्यकोर हात पूर्वीकारको सेनाका विकास किर्माण हाता है। पह देश को शक्त विकास हुआ। राजा क्षाकृत सम्बन्धित जना अनुनिवाने जनान से । उन्होंने अनेको अक्षानो बान करका सन् रामुक्ताना कर कर कर ना । प्रकारिक प्रधान-प्रधान सीरोंने जनवर की-मो शबा छोड़े थे, उन समयो सन्तरे सामग्रीने बाउदार वे इन वीरोम्बे कार्याचा वेस कुके थे।

कृतसून्ते बाह-न्यक्रमः । अंद तुन सुप्रशे राजा पाणकारेः परमान, अस्तरीताः, प्रचान और धानक वर्णन करे ।

व्यापने वद्या-व्याप्तमः । साम जिल्ले क्षेत्र स्वापनी कानते है, इन सम्बद्धी स्वाप व्यापक अपने प्रशासनके स्वापने सुक्त निन्ती थे। अपने स्वाप वर्षिक और श्रेणकी समानका जातका भी अपं व्यापना नहीं श्रेण व्या। वर्षिकृत्वा और अर्थुन्तरे किसी भी वालये ये अपनेको साम वहीं सम्बद्धारे थे। इस प्रकार पाणको समान स्वापने साम वहीं अपनाम रिवर्ष में श्रेणकों से निक-विया कर विवा, व्यापनों और उनके समारोक्ये जातका, जनक और अपनेते होता करके पादरक्रकों स्वीत पार क्षापन। पुनिन्त, सास, व्याप्ति, निवाह, असना, कुनारक, स्विवयस्य और

क्योंने मीतके कर बतार दिया। इस प्रकार उन्हें कीरकेकी करके हेजनुक्के क्या एक आवन्त हेकारी होन्सका प्रहार कतुरद्विणी सेनका नास कसो देश अवस्थान उसका सामन्य किया। होनस्की चोटले अवस्थानके सिरका सुवर्णस्य करनेके रिप्ये आया। असने राज्य व्यवस्थाके अपस पहले प्रकार । सुकार प्रशन्तर होबार प्रशन्तनाता क्षेत्रा वर्गीनपर वा गिरा। फिना, तम अपूर्ण एक कर्यों अवक बाल करकर । जन से क्रोमके वसे क्रेमकुमारके बारूमें आप रूप गयी, अवस्थानको बीध इस्ता: इसके बाद अवस्थानके जाने स्त्यूची बीदा देनेवाले वस्त्याके समान पर्वतार बीदा यर्गावानीको विरोधि कर क्रेनेकाले आक्रम कर्कत कर्क प्राथमें तिये और राज्य पान्यक्रमें कार वैतरे-तिले उनका प्रकृत किया । तरपक्षत् उत्तने तेथ की व्हां शतकले कई तेथे नाराण बढावे और परम्पापर प्रत्यक्ष कुरावी चलिले प्रयोग बिया। परंतु पायक्रमे सै तीसे बाल फरकर उन ऋत्यांको काट हारच और उसके पहिलोकी एक करनेकरने प्रोत्सकारको भी मार करना।

अपने इत्युक्ती या पुत्री देशका अवस्थानने बनुवाही मण्डलकार क्या रिया और धर्मांबी बौक्त करने रूप । आह-आद बैलोरे सीचे बानेसारे अब साम्बंधे किये बाज रहे थे, का सकते अध्यक्तयने जावे पहर्य है समझ बार हैपा । उस समय अल्बा सक्त क्रोको परे हर पगरायके समान हो पह था। तिन लोगोंने को देखा, वे अनः होत-इनास को बैठे। अन्यत्वामको बनवने हुए उन सभी बाजोंको पायक्राने कान्याक्रमे का विचा और रक्तराचे गर्मण की।

का हेपकुमारने उनकी काल बडरकर करों केहें और सारविको बनलोक येज दिया तथा अर्थकन्त्रकार कामरे बहुत बहुद्धार राज्ये के बहुताई का हैं। का उन्नव कारि महारबी पावक रकते कुन्द हो को थे, हो भी अक्रमध्याने उन्हें जारा नहीं। उनके साथ युद्ध करनेकी अनकी हुका अनी बनी ही हुई थी। इसी समय एक प्याप्तानी प्रवराज बड़े केन्सी बैक्ता हुआ नहीं जा पहिंचा, जान्या राज्या करा का कुळा बा। एक प्रस्कृत हाबीके युक्ते को नियुन थे। उस पर्यक्ते े समान केंबे नवरावको देखते हैं ने उसकी पैठकर वा बैठे। | प्रस्ताकके सभा असने असका आगत-सरकार किया।

भोजदेशीय मुखीरोको सम्बद्धीन स्था करणकृष करके अन्तेने इत्योको अंकुन करकर आने बहाया और सिक्तस क्या इक्ये किये। उनमेरे पाँच क्योरे से अने सबीको



पैरोले लेकर ऐक्सक बीच काल, डीवसे राजाकी केनों पुराक्षों और मत्तवाको काट गिरामा तथा क्षेत्र छः बागोंसे क्याको अनुवादी हः व्यासियोंको पंपलोक पराया।

प्रकार व्यावस्थे क्यानको गरका जब अक्टब्स्याने अपन कर्तन पूर का दिन से बलका पुत दुर्वोचन अपने निजेके साथ उसके पास आया और बड़ी

<sup>&</sup>quot;दश्रमी मतिसे पाए हुआ सम महत्त्वको सहसे अस्य कर देश है।

#### अङ्गराजका वश्च, सहदेवके छरा दुःशासनकी तथा कर्णके छरा नकुरूकी पराजय और कर्णछरा परश्चालोका संहार

स्तुन्य वहरे हैं—सहाराय | आनके पुत्रवर्ध अद्यक्ती स्को-महे हार्थरसार हार्थियोके स्ताय है सरेवर्ग जनकर मृह्युहाको सर कार्यन्ति हमारते अस्त्वी और जो । पूर्व और हरिया हैसके प्रतेयको प्रमुक्ति कुकार को प्रधान-समान और में, में कार्य क्यांत्रिका में । इसके दिवा शहू, यह, पुत्रवू, प्रथम, पेकस, प्रोत्यार, यह, समार्थ, विका और कार्यकृतिका पोन्ह की, पो इत्याद्वाने निमुख में, यह शार्थ । में साम लोग प्रशासकीकी सेकार साम, जेवल और पार्श्वाने सर्थ । में साम होग प्रशासकीकी सेकार साम, जेवल और पार्श्वाने सर्थ । मां सक्ते हुए अस्ति स्त्रों ।

वर्षे नाते देश कृत्युत्र करके इस्तिकंग कराकेकी वर्ष सहने प्रमा। अनेक इसीको सकी दहन्य, स-क: और सार-बाद संग्वीते बरवार कामा कर दिया। सर समय कृत्युत्रको इसिक्टेकी संगत्ने दिय गास देश कामा और प्रमुक्त केन्द्र तेस वित्ते हुए अक-कृत्य नेकर गर्नेक सती हुए कर्ष्ट्र का पहुँच और का इस्तिकंगर कामोको कैनल सती हुए कर्ष का पहुँचा, संग्वीकं कृत, सम्बद्ध, सामार्थ, हिन्दुन्त्री कन्न संग्वीकाल—ने साथी और कार्य जोरके सम्बद्धी इन्ह्य संगतिकाल—ने साथी और कार्य जोरके



स्य प्लेक्ट्रॉन अपने इस्तियोंको क्यूनोकी और उत्ति दिया। वे इसी अलग कोक्ट्रे परे हुए वे; इस्तिये रखें, [513]संo मo (खण्ड—सो ) २१ क्षेत्रों और बहुव्योको सुद्देश स्त्रिक्यर काम हेते और फैरोरी क्षाका कुम्पर कारते थे । विकार ही पोत्काओं के कहींने सीवेंकी नेवाने और कुरूप और विकासिको कुनो समोक्षण करा सेवा दिया। क्रीकेले कुमाने कूर को स्तेन क्रमीकार निस्ते के, क्रमकी कुछ बड़ी मकरक है बाते थे। इसे समय अनुस्तरके क्रुप्रेक प्रकारिको प्रकार ६४० । प्रतर्कीको पर्वकर नेकाले क्ताको प्रथित वर्गनाचेको स्थित करण। स्था नेपाले मुर्जित क्षेत्रका निर पहा । अनुसाम कारबी ओटमें अपने सरीरको क्रिको केल था, जब यह क्रमीने प्रश्निक क्रिकेश का कि क्षात्रवीको जानके क्षातीयर की नाराको प्रकार किया । कोराको म क्षेत्रक स्वाप्तेक कारण का भी पृथ्वीना निर का । इसके का मुक्ताने कामानुद्धे प्राथम क्षेत्र कराव कुलाई हिन्दे और उन्हें जारते अपूर्णको पीवित करके किए को कार्नेते करके क्रमीको को सामार विकास एक अञ्चलको स्कूतनार वृक्त हो। ताह बोक्टोबा प्रकृत वित्रक, विश्व बाले प्रकृत सेवर्टक क्षेत्र-केर हुन्हे कर कुले और एक अर्थन्यक्रमार काम मारकी क्राके सक्ताको भी कार दिला। दिन हो भी मोन्कराध क्रमीद्रे क्रम के चुनिल कि बहुत।

इस समार अनुवेशीय राज्युक्तारंग्रं जो व्यांगर व्यांगि प्राथ्य ग्रंगियों वर वर्ग और स्थित्यों स्थित व्याप्तर वर्ग असे । साथ साथ ही वेशार, समार्ग, समित्रू, विश्वा स्था स्थानित्य साथ देशीय ग्रंगु की व्याप्तर को वर्ग साथ समार्गियों कीर संप्तरीयों क्या कार्य राज्य , प्रायास और संप्तय क्रिया को सोवाने कार्य कार्य की चौरो । किर से प्रायाशिय क्रिया को सोवाने कार्य कार्य की चौरा चुने । किर से प्रायाशिय क्रिया की स्थान के सीव स्थान की मान्युल के स्थान कार किया । स्थान क्रिया क्रिया का स्थानित्यों साथ कीर पुत्र होने साथ । स्थानि क्रिया क्रिया क्रिया स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान क्रिया । स्थान स्थान स्थान क्रिया क्रिया स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान । स्थान स्

खाराज ! सक्केष क्या सर्वकरें परकर जानकी सेनाको परकार कर का का , असे संबंध दुःशासन असके मुकाबरेलें का पंचा । आने ही करने स्वदेवकी क्यांने तीन काम गारे । तम सक्केपने सदार कराजेंसे दुःकासनको क्या तीनसे असके सारविको कीम अस्ता । यह देश दुःकासनने स्वदेशका करूप कारका सराबी क्यां और पुनाओंने विकास क्या पारे । अस के स्वदेवके कोमकी सीमा न की, उसने नहीं पुर्वसि हुन्तरमध्ये जनस्य कालान्या का विज्ञा। जा जनकर्त प्रश्नासम्भित काले जनुन्यो कालार नवीनस्य मिर वही। किर स्कोरणे कृत्य जन्न रोजर दु-कासनस्य कालान्यर्थे क्रम क्रोड़, वित्तु काले तीन्त्री वार्वस्थी कालान्त्रे आसे प्रश्निकों भी मी काल मारे। इसमें स्कोन्य्या कोल व्यूक वह वक्त और काले वारत्ये स्वयत्त विकासम्य काल कुन्यर्थे रोजर को उत्तयो कुनस्य काल दिया। यह जाल दु-कालान्या काला केवार कारत्या पुत्र सेवीन्त्र केवार हुन्य कालेल्ये कृत काल। इससे अस्तरक्षा पुत्र सेवीन्त्र केवा। यह देश स्वरत्ये वीन्त्रे कालोकी कार स्वात्ता हुआ असने स्वयत्त्रो स्वयुक्तिके कृत प्रात्त से नवा।

इस जनार पुरस्तानको पत्रक करके स्क्रोको हुनैकार्या सैनावर पृष्टि सार्थ और जनका इस जोग्ये संहर अस्ता कर दिशा। दुन्ती जोर अपून्य की कोक्य-लेक्को की क्या का का मा देश कर्य कोको पत्र हुन्य कई जन्म और स्वाप्ता केक्सर कार्या करने समा । जाने अपून्य कुन कुन कुन सेनार कार्या कार्य की जाते कार्याको की कुन कुन सेनार कार्या कार्य और असे कार्याको की कार्य करे। दिल एक सुराने कार्यक स्वाप्ता कार्यको हुन्य को अस्ता केरे देश सभी स्थितको स्वाप्त कार्या हुन्य; केसा के असमा किरोका हो गये।

सहारात करी दूसके कहा अंक्षा और सहारके गांधकी **बै**रम्बीका चीच पान गर्ने । एवं न्यूप्रतने भी एक सन्तेते कर्मको बीनकर साथे बहुबब्ध कुछ निरम्भ बळ निरम्भ । क्षाणी पुर: काम बहुत विका और महत्वों करों ओरबी हिलाई बानोने अञ्चलके बार है। विद्य पहरणे नहताने मार्गिक क्षेत्रे हुए का एउटी बाग्योंको कुछ कुछ । का प्राप्त सक्तमपुरेने का हुआ अवश्य ऐस कर कात व करे असमें विशिष्य का रही हो। उस होनोन्डे सम्बोधे अध्यक्तकार वार्य क्रम गया था. अन्तरिक्रमी कोई थी यहा जा समय कर्कनक महीं पहली भी। इन होनों सहारतिकोचे दिया क्यांचे का होनों ओरबी सेनर ना होने रूपी हो सभी चेना उनके कार्यके गिरनेके स्थानके हर इस नने और क्रांबरोधी नहीं बड़े केवर बमास्त्र देखने समे । जब सब जोन बढ़ीरे दूर हो को तो वे हेन्दें महारची परस्पर कार्योची जीहारही इन्छ-इसरेको कोट प्रीकारे शरो । कारी देशते देशने का बढ़ाये वालोका साल-सर देशव दिया, अस्ये सैकाई और इजारें कालोका प्रकृत किया। कैसे करतेंच्ये कर किर जानेस जावी कामने अन्यवस्था है सता है, देने ही कर्नड़े क्लोने जैनेए-स क नवा। इसके कर करी सहरूक बसुर कर दिया और परस्कारों हर अन्ते क्रार्टको भी स्वते मह निवास। विश् हेन जिले हुए कर सन्तेते काले कहाँ केंद्रोको हुईत वसलेक सेन दिया। सन्दाल, अन्ते अन्तेती चहसे उसने न्युरुके दिन्न रक्के क्रिके सन्तर दूसदे करके उसकी पनिवाँ उहा ही। पहिलोके क्रान्टको सन्तर काल, नक्का, नक्, सहस्तर, अह हक अन्य प्रारम्भियोची भी नह कर दिया।

त्या, मोदे और कामाने त्यांत है कानेना नाइन्ते हुंक मानाम वर्षेण कामा, तितु कामी वीनो कामोने काने की हुंको-हुंबाई का करों। जा माना कामो हरियाँ मानुत है नहीं और का काम बीना विका और कामे नांने अपना नाइन् काम विका। किए का कामे कामा—'कामुक्ता! अस मानाभी काम पूर्व कामेबा काम र करना। को हुंबाने काम है, जाने विकास हैनान कामा माहिते। कामे काम कि रहे अन्या कही सीहाना हमा साईन है, कामे कामा कि रहे अन्या कही सीहाना हमा साईन है, क्यों कामो !'

क्ष क्षावर करी न्यूनको होत् दिन। नार्ति हर राज्य करीत रिने पहरूको काम स्था का, हो की पुत्रको दिने हुए करान्यो का करोड हारो हो क्षेत्रक है होत् दिना; वर्तीय कर्न करीता हाता का। मुख्यतो हर पराचको कहा हुना हुन्छ। का उत्तकार रिज हुना सरमा संकोचके हाता कामर पुनिक्षेत्रके राज्य केंद्र महा।

क्रमें क्रमें अवस्थि अवस्थित व्याप्ताने जा को। इस कुक्टीने कुल्का कर्ण कर्ण और सक्तक समाप कुल्का हुआ प्रकारिक स्थान कर्न तथा। प्रकारिक स्था हर गर्ने, सम्बन्धान्य कर गरी, क्षेत्रे और साथि को को तथा व्यक्तिक राज्ये वह साविक हो गते। यह है हैते क्रमुक्तरानिको उसी कारते हेवे गये । प्रतिकोचे प्राप्ति प्राप्ति सम्बद्ध हो को । वे इत्यत्नकी संस्ति इवर-कार पानने समें । रेज कर पहल का, करने ने किसी को करी संगतमें बासर क्रमानने रूप हो नने हैं। उस सम्ब हुने क्रम ओर क्रमीड वनुक्ते हुटे हुए कान्वेले को अनेको हिन्द, पुन्ना और जेवाई विश्वन्त हेरी थी। संकारपुरियों सुद्धान औरोपर कार्यकी को बीवन कर का जी थी. तो भी करत मेरी आहिए। 22 पाले है, जरी प्रकार के कार्यकों उकेर ही बच्चे का रहे थे। पहारबी कर्न वर्ज-रहाँ कका-सेकारोध्ये क्या कर शह का अस वरियानेन को प्रत्यक्रमीन अधिके समार सम्बद्धार करते क्रानेते जनने सने । प्रकारकी होनेते की को कोडर उसके हते थे. में क्या किया बोजबर कर को ।

#### उलूक-युयुत्स्, शुतकर्मा-ऋतानीक, सकुनि-सुतसोम और झिलाबी-कृतवर्मामें इन्ह्रयुद्ध; अर्जुनके द्वारा अनेकों वीरोंका संहार तथा दोनों ओरकी सेनाओंमें यमासान युद्ध

कृती और अस्तो पुर कृत्यानी कालीताने एवं, रात्ती और मेहोंको जा कर दिया। का काली कालीको क्रीकी करका का अवृति रकते हैं अवको कृत्य एक महानेता। भा भागे एक, सार्थि और क्रिकेको क्या करके पृत्तीस का नहीं। इस अवहर ने केनी हैं और स्वकृत क्रेका एक-दूर्वाची और देसते हुए स्वाह्मको विश्वक न्ते।

विशे परंग्य प्रमुचिने सरक्या की पालंको पुरस्केयको स्वास्त्र पर दिया। विरम् इससे या प्रमुखी इसकी देशका जी हुआ। जाले अपने विराक पर विष्य। विरम् प्रमुखी इसकी देशका जो इससी प्राणीति आधानित कर विष्य। विरम् प्रमुखी कुले कर्म क्रोक्स सरके राजी तीरोको पत्र जाता। इसके पद् अपने सुस्रसेमको प्राणीत, क्या और पोक्नेको भी दिल-दिक सरके जात इससी। एक सुस्रसेम अपना होतु प्रमुख सेवा एक्से शुक्कर पृथ्वीपर सरका हो पत्रा और सम्बोधी वर्षा सरके आपके सारको राज्यो आधानित पत्री सम्बाधी वर्षा सरके आपके सारको राज्यो आधानित पत्री स्वासी युक्त स्वासी अपने वार्णोकी सीकारो उस स्वा क्रान्योको प्रमुख अवैर सरकारोंको भी कार करना।

अन सुरसीय इंक तालार लेकर काच, अर्थान्त, आकि.इ. आयुन, युन, एत, सन्याद और समुदीनं आहे. बीचा गतियोरे की राम और धुनने सन्छ। इस सम्ब कावत को बाज कोड़ा जाता था, उसे ही व्या तलकारते काद कावत था। इसका उन्होंने कावन कृषित होकर उसका सम्बोध

अन्यन विकेष कार्यको वर्ष आयम कर हो। यांचु शुरुरोपने अन्य अस्वर्वकार और वहारान्त्रों कर समयो अस्य अस्य । इसी अन्य कुनुनिये एक वेरे वायके आयो सार्यकारे हो इसके कर किने। कुन्तरेयन अस्य कुन्यों तो हुए अस्यातके असे व्यापको हो व्यापनिय अस्या प्राप्त । यह सान्ये व्याप और व्यापको कोरीको जातकर पृत्योगर या पहा। इसके मान् व्यापनिय कुन्तरेय अस्या का क्या स्था स्थापने भी एक हुन्स स्थापक अनुन विकार अस्या कहिल्लीका संसार करता हुन्स हुन्से अस्यार क्यापनियो सेनुको साथ संसार कुन्तरे स्थाप।

कृतनी और विकासी कृतकारों। निया हुआ था। अली कारको कैंगलेने कीय बीदान बान करे। दुस्तर बहारती कृतकारी कोचने कारक असर कार बात होदे और दिए कैंगते-कैंगते एक केंगले अस्ता करून कार आसा। पहास्तरी विकासीने हरेंग हैं पूर्णा करून के विकास और आसे कृतकार्यन अस्ता डीइन कर्या बात केंद्रे। वे इसके कारको स्थानकर कीने निर गर्ने। तमं असी एक की बातको कृतकार्यक करून कार इस्ता तथा अस्ता करती और पुष्पालेंग असी कार होंद्रे। इससे असी साम अहीरों और कुत्र तथा है असी क्षान होंद्रे। इससे असी असी असी वीचे कारको नियानकर्ति क्षान करते स्थानुहार हो हो के क्या केंगों की एक-कुरोको कारक करते स्थानुहार हो हो के

हमी राज्य कृतकारी विशेषकीया जानामा कार्यके विनो एक पर्यक्त पान क्षेत्र । उसकी चोठारे का सकता पूर्वित के पान और विद्वार क्षेत्रक अवनी कार्यके क्षेत्रेक सकते के पान । का नेपालर असका सार्वित को पूर्वत क्षेत्र संस्कृतिको हटा के पान । इससे परावक्तेको सेनाके वैर उनका को और यह इसर-कार कार्यन समी ।

व्यापक । इस समय कर्जुन आवनी सेनाका संदार कर ग्रे के ! कारकी कोरसे निर्मा, जिलि, क्रीरक, इसका, संवासक और नारकार्थ सेनाक कीर कार्स कर के यो के । सामान्य अर्थर नारकार्थ सेनाक कीर कार्यक, सीमृति, विरासंग्र, निवासकों और व्यापकोंसे किया हुआ तिपर्ताएक —के सामी गीर संवासकृतिये अर्थुनगर राक्-व्याके कारसम्ब्रोजी वर्षा कार को थे । गोजारकोंस अर्थुनसे सीमानों और इसाएंकी सीमानों सामर सेनार सुन्न हो जाते थे । इसी समय समस्

सामसेनने तीन, मिल्लेको विरसाठ, प्रमालेको साम, मिलकमीन " सुक्रमांकी ईसरकैयर फोट की । इसकर सारे संस्तृतक कीर ठाउँ विकार, स्वेजूनिने सात, क्यूक्रको बीस और स्टब्स्टी जे बान क्षेत्रे। इस अकार संस्थाधुनिये सनेको चोद्धान्त्रेके सामोरी विकार अर्थुनो बहुतेने का सभी एकश्वेत्री काला कर दिया। ज्योने पात काओर प्रीकृतिको, ग्रीपने सम्बर्धनको, भीरसं प्रमुक्तमको, आएके प्रश्लोकको, सीचे निर्माणको, मीनने सुरसोनको, नीठो विस्तवर्वको और अंकाले सुरुपंद्रों भीकार अनेकों सेके सम्बंधे प्रदूष्णको पर कारत, संवेश्वतिका दिए बाहरे अरुन कर विका, हकांड का प्रौरन है बाजोकको सबने कानोरो कारतको वर केन हैना महीर जिल पश्चि-पश्चि बालोड़ों कुल्टे सहार्शनकोंको उससे क्युनेसे रोक दिया।

हार्व कार्य कारतेनने क्षेत्रमें परका बीकुमान्द्र एक बिकास सेवर वेंग्या और बड़ी चीवल करेना थी। यह क्षेत्रर क्ष्मी राजी पुराचके कारण करके दश्कीर का बहु । हह प्रमान सीमृत्याच्ये बायल १४८ देश महत्त्वी अर्थने अर्थने बीजे मानोपे समझेलते गाँव पंचायर बिर समय कुन्यूस-मन्त्रित निराम नतम कहे असन कर देखा। इस्के पह अवंति अपने पेने वानोसे निकार्तान सहायन विकार का एव तीने मत्त्रहरूरे अन्ते सर्वका बोट बी । विश महत्त्वती अर्थनंते सैकडों क्यांने संवसकोयर कर किया और उनमेरे मैकड़े-इवार्ट वीरोको सरकान्द्रे का देखा। क्योंने एक शुरूरों निर्माणक नगर का रिया और



चारों औरसे बेरकर एक-एक्के क्योंसे पेकिट करने रूपे ।

क्रम च्यानकी अर्थुनने ऐन्स्टब्स प्रवाद किया। उसमेरी श्रममें काम निकारने सरो, विस्तारी खेटारे अनेको कमकुमार, इसिम बीर और हाथी-बोड़े पृथ्वीपर सोट-बेट हो को। इस प्रकार कम बहुऔर बन्ह्यन संस्कृतकोका संक्रार करने तमे के उनके पैर उसके गये। इस्टीने समिकांस और चैंद्र विकास कार को। इस प्रकार गीएका अर्जुनी इन्हें रमाञ्चले स्थाप का देखा।

कर्मा । कृत्ये और महत्त्व मुक्तिर बालेको वर्ष का ये थे। उसका सम्भय कर्ण एक पूर्वेक्टरे किया। क्ष्मियने जो देखते हैं चल्चेने चीच क्राला। इसक कृतिकारे के बाजीने पुनिश्चार और एक पारती करते जार्गकर चेट की। इस से क्वंतको कुर्वेशकार तेलु क्रक क्षेत्रे : प्रभोते कार्य कार्य क्षेत्रेको चारवर प्रोक्तेत्रे मार्गिनका सिर कहा दिया, इन्हेंसे इसकी वरका कार आहे. क्ष्माने जुनके इसदे का विने, आठनेते सरमार कारका कृष्योक किए हैं और होने पीट सब्देश कर्त क्रीयानकी वैद्यान कर करना। साम सारकार पुत्र कर सम्बर्धन रचने पूत् यह : ह्वांकाचे इस प्रकार विश्वति दहा देशका कर्त, मकारण और कुरायार्थ आहे योज आयी स्थापे रिनो आ नवे। इसी सनवे संब पान्यकानेन भी प्रकारन पुनिश्चित्वो बेरका संसाद-पुनिने कहे हुने। वह, अब केंगे ओरते कुछ संकम होने तन्त्र । बेगों ही पहले और क्षीतकांक अनुसार एक-पुरतेका पहार करते थे। यो वर्धा बीट विकास का, उसमा कोई कोट नहीं करता का। स्तान् । इस सन्त्व क्षेत्रकारेंने वही पुत्रत-पुत्रते और प्राप्त-पाई र्छ । वे एक-कृतिके केन क्वाइकर श्रीको लगे। बुद्धांत जोर महोत्रक महा कि अपने-सर्थमक अन भी सुत हो गया। इस प्रकार का क्याला पुत्र होने राज्य हो बोद्धानीय क्य-त्याके क्रमोरी अनेक प्रधानो एक-शूररेके प्रान होने स्मे । रमपुषिये सैक्से-इक्से कम्ब को हो गरे । इन्हे क्रम और क्रम्म सुरूगे रूक्त्व से ग्रे है। इस समय चेदाओंको महरि अपने-सरवंका क्रम नहीं का का बे भी ने पुज्रुको जनन कर्तन सम्बद्धार विजयको स्वरूपाने करावर स्था से थे। उनके सामने अपना व्य पराधा—से भी कारण, असीवा वे सपान्या कर कारणे वे। संवासकृति देशों कोरके कीरोसे समस्वास-स्त्री रही की तथा हुटे हुए रह और करे हुए इसी, बंदे हमें खेळाओंके कारण अगुन्द-सी हे मन्द्रे थी। वहाँ इसमें स्टब्से नदी बाने समर्थ

कौरम तथा नवारोडी सेनामा संबाद बार को थे। इस प्रचार - बंबार बारक का।

थी। कर्म प्रकारनेका, अर्थुन विकारिका और कीर्योग और प्रकार का मौत्र और प्राप्य-संदर्भीका पीत्रक

# दुर्वोषन और कर्णका राजा युधिष्ठिर, अर्जुन एवं सात्यकिके साथ संप्राप

क्ष्य मुख्यूने पुरा—स्तान ! कुले पात कि पुनिक्केरो बहरकी हर्गेजनको रखीन कर दिया का, से उसके कह हर बेल्पेका किस समार पुत्र हुआ ? इसके मेरक बीहरे पहला केन्द्रश्रामारी पुरू भी कैसे कैसे इस्त ? यह इस एकन्य हुन सकी कुलाओ ।

कारने का-कार्य कर केर्ने खेलके केक्ट्र आजारे कि नहीं से अन्यत कु एक कुते रक्षी पहला संवारपुरिये आचा। जाने अन्त्रे प्रतरिको बहा, 'का ! मार्थ, पार पार्थिने; पार्ट राज्य प्रतिकृति है, अही पूर्व प्रति है कर ।' तब सर्गांव त्रांच है का रचको होकका कर्मकको सामने हे गया। इनोंक्स प्रोटन हो एक की धनाई इंस्क्र सन्त कार प्रत्य । प्रत्यं महत्त्वन पुनिर्देशी प्रत्य प्रमुख केवार क्ष्मेंकाके कहा और कामके कुछ्ये चंद दिये । क्रम कृतींकाने भी हतरा करूप रेवार उन्हें प्रत्यात कर प्रत्य । 🕬 अवार में होनों ही चीर आल्य क्रोचनें भरवार एक-कुरोकर प्रश्लोची कर्न करने हुने, क्षेत्रों क्षेत्र क्य-क्लोक कर करनेका मीना हेक्से हते, केरी ही कन्त्रेची मोटोर्ड प्रमान हो नवे तथा केंगे ही बार-बार सिक्के समार गाविक और प्रशासनी बार्च सने । राजा चुनिक्किने सीन नामेंद्र समान केन्द्रान् और कुर्वर्ष वाजीते वृत्रीकाच्या कृतीका चोट भूति । कृत्येह व्यक्ति आरके पूर्ण को बीच तीवन करतेले कावन कर हिंदा । प्रतिक कर्ष अस्ते असर एक अस्ति सेक्स स्टेक्सी प्रतिक क्षेत्री । को जाने देश राख पुनिक्षित्में तीन की बार्गाने जाते: क्रमं-क्रमं कर हैने रूप चीर क्रमंत्रं कृतिकारों ची कारण कर करा ।

अस धुर्वोक्त गद्ध उठावर वहे बेनले वर्नठकती ओर भैका। यह देखका उन्होंने आपके प्रकार एक साराय वेरीनामा साथ क्षेत्री। जाने जाके कानको क्षेत्रका क्रांतिक चोट व्योक्ताचे । इससे यह सामग्र म्यापूर्ण होपार मिर पदा और सूचित हो क्या । इसी लक्ष्य चीपलेको अवसी प्रतिक कर करके कर्गतको कहा, 'बहुतक ! को साथ र मारे ।' यह सम्बद वर्गराज व्यक्ति हा एवं :

अन्य अन्योत पानोत पोन्हा पानीको उपने पानोत प्राचन केम्बर हर पढ़े और उनके स्त्रह कुछ करने समे। कार्यी अनेको करकारो हा राज स्थापिका क्रोडे। इसका कामांको भीत्र ही को तथा अलो रच, सार्वि और केंद्रोको अनेको सेको सेरोले पर दिया। कर्मको हुए प्रकार सामीको प्रकोते स्थाप एक अन्तरे प्रकोत अनेको जारितकी प्राची, कोई, रखी और विद्या क्रेक्ट्रे लेकर हैंदे। क्या सम्बन्ध हुनको पुर अस्ति अनेको बोर्टने विज्ञा । प्रस्के नाई क्रमी, बेटो, एक और वैशियोच्या यह पार्ट संहर

इस्के सम्बद्ध पुरस्कार जीवान्य और अर्जुन अर्जुन Personal Property and Milespeic Myself Service कृष्ण कर पुरुष्टेली साथे। अर्थुको पार्थास स्पृत स्थानार und figur-follegenitalt melbit einer uie fien, ungeführ अनेको १४, अन्युर, व्यव्य और सारमियोको नष्ट्र कर क्रम क्या पहुल-से क्षाची, पहल्ला, प्रकारतर, जोवे और वैक्सोंको व्याप्तको पर वेच विचा । यह देखका राध्य क्षरीवय असेत्स है करोबो को कथा अर्थुन्त कु रहा। अर्थुने सार कारोंने अपने करूर, सारवि, सका और चोड़ोंनी यह कार्येंड एक करनी अन्तर कर पास करता। इसके बाद को है उन्होंने क्वोंकाल क्ष वर्ध अस्थातक क्षण क्षेत्र कि लक्ष्मानाने कीन्युनि अस्ति सात्र पुष्टके कर दिये। इसपा अर्थनो अर्थ कार्यने अवस्थानक वन्त्, रच और चौद्रोको क का देन का क्यानोंदे उत्तर बोहबर्स के हम-कृष का कार । इसके कह वे कृतवादिः बहुव, कार और केंद्रोंको ग्रा करके तथा इ.पासरचा भी वर्ष काठका कर्नीके प्राप्तने अस्ते । सार्म भी परीएर ही प्राप्तनिकारे को स्वार अर्थन्ते सामने साम्य और उन्हें बीन प्रथा औष्ट्रालाको सीत कारोंने काम कर कर-कर बालोबी वर्ण करने एस ।

क्रमेक्ट सामीद की सा पता। कार्य क्रमीन्द्र पहले िन्याओं और किर सी खलोरी चोट वर्ड। इसके मार क्षात्रको अन्यन केन्द्र में कर्मस कर करने सने। कुम्बन्दु, विकासी, प्रैयतिके पुर, प्रथाना वीर, अस्त्रीता, पुत्रम, स्कूल-सबोद, प्रमुख, बेरी, सराव, पराव और केवन देवने और एक केविनान और वर्गएक पुणिक्ति--- इन सभी पूरपोरोपे बहुत-सी बसमही सेना लेकर को क्या कोरते केर प्रियम तथा अस्पर तथा-सर्वके अप-कार्योची वर्ण करने समे। पांत काली अपने केरे

कर-वी-कार्म कर्मकी अक्राफिने असान्य हेन्द्रर पान्क्रमेंकी रोगा क्रकडीन और क्रमान क्रेकर चानने राजी । अर्थनो केले-केले अपने अस्तिने कर्नके अस्तिको स्थ करके समूर्ण दिशाओं, आकास और पृथ्वीको सम्पेते क्षापा कर किया। उसके काम परका और परियोधे समान निर हों से क्या कोई क्यारी और कार्नित सम्बन कार पढ़ते थे :

क्रा प्रकार आयो और प्रमुखेंद्र प्रकृत केंद्र

माओंसे का हारी क्रमानुक्रियों किस-विश्व कर करना। जिनमानी स्थानको पुत्रमें मुटे हुए ने कि इसी समय सुनीन असामाओं विकास क पहिले । साम और अन्यवार पैतनरे तमा क्या को-को बहुर्वर अपने-अपने चोद्याजीके सहित क्रमानिको जोर काले उसी । कोरबोको नाते हेस विनयी क्रमा भी अपने विकितेको यस तिने। सम नीर माने-मानेके साथ विकास और कर्मन करते तथा अपने क्युओबी हैती पूर्व सीवृत्य और सर्वृत्यते सूति वस्ते याते थे। इस जन्म क्योंने कामोर्थे कावर करभर विवास किया।

# कर्णके प्रसाव और दुर्योधनके अध्यहसे सल्यका आनाकानीके बाद कर्णका सारबि बनना स्वीकार करना

रक कृत्याने पूर्ण संस्था । इतके कर कुरोकरने कर किया ? यह प्राथमीर के सार्वाद साहत साहर सामानेको प्रमुद्ध पूर्व और बीकुरमांद्र स्वीत परावा धरनेका का पराव धा । तिलु को ही पोलबी कर है कि कर्म अपने नवालको होतायने पान्कोंसे पार नहीं 🗷 समा । निःशीत सन-नराजन हैकारोन हो है। यहान होता है, अब पूर्वा परिचान समीन ही शा गया है। हार । इस कुर्वेश्वरके स्थाल सुते स्वरिते स्थान शनेको सीमार क्षा सक्षे कोने । मैं निकारी सब्बे पुलेके 🛊 मारे थाने और काला क्षेत्रेयरे कर कुछा का है। कर पान्यकोच्ये रोकनेकाम समाप्त संगाने कोई भी भीर नहीं है ? सहको बहा—करण् । यो पुरुष कीती हो करके सिने

क्रीकें ओक-रिकार करता है, जाना का बाल के नहीं करता, हों, किया को अवस्थ कारी रहती है। अब आवर्षो का स्वर्णने सकारत निवानी को बड़े मुख्यी बाद है; क्योंकि बहुके भाग-पुरस्का भी आपने इसके औरियान-अभी विकास कियानी विकार नहीं किया। महाराज । कान्युकोंने को सामने कर-बार क्या वर कि एक्टों का ठानिये, किंतु सामने मोहक्त सूत्र हैं। मही। आर्थने कथानीके करने महेन्यने सुन्य किने हैं। इस सक्य भी अग्रदरीके सारक को समाध्येका कोर संग्रद से का है। परंतु को बार बीत गयी, उसके विकास उसके विकास करें। अब किए प्रकार का पर्नकर संहर हुआ, का सुनिने।

क एत बीतनेवर कर्ज एक क्वॉक्नके चल अन्य और कस्से कक्ने सना, 'राजन् । आज मेरी अर्जुनके सन्ध कुरुके हेती: आमें या हो में का बीतका बान शबान कर देना का बा मुहे भार क्रलेमा । मैं इसकी दी हुई शक्ति को मैठा 🔓 इसकिने अस्य अर्जुन अवस्य मेरे राजर बाला कोन्य । अस जो नामकी कार है या सुनियो। मेरे और अर्थनके दिना अक्टोबर प्रयान को समान ही है, किंद्र इसके बराहरूको

क्ष्मानेते, प्राथको प्रकारि, पुरुषेताले और सक्त-संभावनों अर्थुन मेरे क्रमान नहीं है। इसके रित्य बार. केर्ट, विद्वार, प्रदासन और निवास सामनेपे भी वह नेरी करावरी नहीं बार सहस्रात । वेच को नह जिनक अल्पना अपूर्ण है. को विश्वकारी प्राप्ते वैस्ते काला था। इसके हार इसके क्रिकेस विकार प्राप्त की की । इससे क्षेत्र केंद्र अनुस सरहराजनीको हिला का और उन्होंने कुछे हिन्छ । यह परस्काननीया दिना हुआ प्रकार बहुत पर्याको भी स्थान है। इसके हरी परकृतपानीने प्राप्तित पार पृथ्वीको परिवा का । प्राप्तिते अर्थुनके क्या और से प्राप क्रेमे। काम संस्थापूर्वियों विकासी बीत अर्थनको पद्मानके करके में आपको और मानके पन्छ-प्राथकोको अन्तरीया सार्थन्य । विकासकार वर्गने पूर्व अनुसार रक्षतेको संबर्ध पुरस्का कार्यो समान्य गांध प्राथमिक है ्रे कारे प्रवास देला कोई साथ नहीं है जिसे में सामके रिन्ते क कर सके। पांचु विका करने में सर्वुत्तरे कम है, व्या भी खुने अवस्य क्या हेनी पाहिले । असके अनुवादी होती विषय है, तरकत अञ्चल है कथा करके पार अधियोगका दिया हुउन दिल्य एवं है. वे किसी के शेरो सेश की ज सकत । इसके दिया उसके बंदो मनोड समान बेक्सान् हैं, अब्बा की दिला और सैहिससी है क्षा करना पह है विकास क्रान्टियाल एक मना बैटा प्रश्नी है। इससे भी काका का कार है कि बगरूबी स्थान करनेकारे तार्थ (वेक्स्प्राप्त प्रत्येत सार्थात और स्कृष्य है । प्रान साथ बार्लीकी मेरे कर करते हैं, के भी में अवंग्ये साम मुद्र करना महाल है। हको पहले पहलब साम अन्यम श्रीकृत्यकी बरमार्थ कर उनको है। बहि से मेरे कार्यन कर कार्य से निक्रम है आपकी विकास हो समझी है। आर: साथ छाई नेस सारक्षा करनेके रिजे केवार कर लेकिये। इसके सिमा वर्ड कबडे मेरे सिमे मान नेकर करें तक वरिष्य केहोंसे खुते हुए कई उतन-साल रख मेरे वीके नीके बारे जिससे कि अध्यानकार केनेकर में हुन्त हुन्त इक्ष साहत साई। महाराम कान्य श्रीकृत्वके सम्बन्ध है अध्यानकारे नाईह हैं। बारे ने मेर स्वर्ग है जाने से नेता स्व बीकृत्वके राजने भी पड़ काना। किर वो इसके साईक केलाओंका भी मेरे सामने कानेका स्वाप्त नहीं होना। कार, वी आपसे इसना प्रकार करांच प्रवास हैं। किर में संशासपूर्णिये वो साम बारके दिलाकीया, का अपन देखेंने हैं। अभी। किर हो को भी प्राच्या और संस्थाने सेरे सानने अभीने, उन्हें में सर्वास प्रशास करांचे ही होईना।'

स्थानने कहा—जा कार्यने सामके पूजने हुन जाना पात्र से कारने जाना निवास कारकी उपनंता कारते हुए पान्न, 'पार्च' । सुद्धारा जीता विकास है, मैं बेला है कार्यना । पान्नके दुवारे बाज नेजार वालेने साम हम तथा सामकोग सुद्धाने जीवे-नीवे बालेने ।' राजार । कार्यने ऐसा बाजार अंग्याम पुत्र कोंग्रे नीवे विकास सहस्त्री सामको पान्न कार्य कार्यन कार्यन केंग्रा कार्यन और बाह्यन सामको आस्त्राम है। मैं तिल बुक्तकर सामक विकास हाला आसने बाह्य प्राचीन कारते हैं। अस्य अस्तुनोह पान



और मेरे हितके हिन्ने केन्द्रय प्रेयके है कर्त कर्मक स्थान सरम स्थितर कर गरियने। सामके सम्बंध का क्षान्य प्राप्तपुत कर्त मेरे प्रमुखीको प्राप्ता कर तेना। सम्बंध निवा सामके क्षेत्रोंकी यस कड़ाने केन्द्र कोई कृत्य व्यक्ति नहीं है। साम संप्राप्ती साक्षान् सीकृत्यके समस्य है। साम निवा

प्रकार रिपुर-पुरुषे समय स्थाननी भगवान् प्रकारकी सक्रमा को यो एक केरे जीवृत्य समूर्व आयोग्योपे अर्थनार्थ रहा करते हैं, जरी प्रचार अन्य कर्मकी रहा बर्टिको । आल्यने ही एकुओस्टी सैन्यसरित कम हेनेपर भी क्योंने इसारी बहुत-सी सेनाओं नक् कर सरम का, बिर इस संबंधकी के कहा है क्या है? इस्तरियों अब अस्य ऐसा कार प्रतिको, विस्तो पान्काकेन मेरी प्री-स्त्री सेनामा र्वक्रम न कर सके र पहले संकलभूमिये अर्जुन इस प्रकार प्रदुर्शको संप्रत नहीं कर समझा थी, बिंह अन औदानावा कार है करेंगे है जाती हारी इकि का नमें है। सन क्ष्मकोची संस्के आयोः और कर्तके देशोगा है मान स एक है, को अप कार्यों प्राप्त निरम्बत अस्त एक साम ग्रह कर हैरिको । अस्य कोई ऐसी चृतिः कीकिने, जिससे पासाल और पुरुषिके सर्वत पुरुषिक पुरु प्रीत है यह है पार्च । कुर्ण रहिन्केंने केन्न है और अस्य प्रातिकोंने सर्वोत्तव है। आर क्षेत्रेक-स्व संबंध संसारों न करी हुआ है न हैगा है। फिर प्रकार सीकृष्ण कर अवस्थाओं में क्यूंगरी रक्ष करते हैं, कर्त प्रकार कार कर्मको पक्ष परिचने । असनेत क्षांचे कर करेवर के कर्ज इस और समझ देवलाओंके हैंकों भी अनेन हैं जानता, बिट पान्कोंकी से बात है ter \$2"

कृतेकाची व्या सार सुरक्त कांच एकान स्टेशमें भा को । उनकी चौदोंने कर यह गये कहा ग्राम कर-कर स्त्रीको क्ष्मे ( क्ष्में अको कुल, ऐक्ष्में, विका और मलमा महा पर्न का प्रात्तीको उन्होंने क्षोको अपि लाल करके कहा, 'क्वोंकर | अवस्थ ही तुन का तो मेठ अपकर कर यो हो का तुन्हें की जारे संकेष्ठ है। इसीके तुन पूछे सार्गनका फान करनेकी करता है को है। कुर कर्मको इसाहे अनेका भी केंद्र राज्याच्या प्रस्ता प्रशंत करते हो। सिन्तु में उसे इंकालो अपने समान भी सम्बादा। तुम में बाई-से-बाह बीर हो, उसे मेरे फ़िलोरों कर हो; मैं उसे फ़ीकारमें जीतकर अपने पर पाल जाडेगा। जावल आप में अनेतन ही पुद करोजा । तम कुप प्रमुखीका संक्रम करोर समय मेरा पराक्रम हेवा केना। जहां मेरी इन बहके समान केटी और गैठीली मुक्ताओं से देखे तथा मेरे विकित बनुव, सब्दे स्वयुक्त कार और सुरक्षेत्रको मही हाँ गदाया से हुई अस्ते। मैं अपने केवले ज़री मुख्येको पतेह सकता है, पर्वतीको क्रिक-रिका कर सकता है और समुद्रेको सुना सकता है। का क्रमा सम्बद्धिका रूपन करनेने पूर्वतना समर्थ होनेपर ची तुम चुड़ो इस मीच सुरुद्रश्रेद सारश्यका काम करनेकी अद्या कैसे हे तो हो ? मैं इस मीमधी अपेक्षा सभी प्रकार शेष्ठ है, इसलिये उसका स्वस्त्व करनेको कथी तैकार नहीं हो सकता : के पुरुष प्रेमका अपने आसित हुए किसी बेह जातिको नीच पुरुषके अवीन कर देवा है, उसे उकको नीच और नीचको उस करनेका पाप लगता है। अक्ष्मने अहालोको अपने पुरुषो, इतिकांको पुराओसे, बेहकोको संस्ताओसे तथा पुरुषेको पैरोसे अपन्न किया है—ऐसा वृतिका मत है। इसमें वृत्तिकारि इस क्योंको रहा करनेकारी, समसे कर केनेकारी और क्षम देनेकारी है। इक्ष्मणोका काल पह कराना, पहाना और विस्तृत क्षम तेने है। कृति, गोपालन और पर्यापुस्तर दान केन क्ष्मणोका कर्ण है तथा पुरुषोग अहाल, कृतिय और क्षमणोको होतको करने निमुक्त किये नये हैं। यह वाल से मैंने किराकुल नहीं पुन्हें कि कृतिय पुरुषों सेका थरें। मी राजकियोंको संदर्श करा दिवा



है, मेरे बस्तकार काळानुसार राज्यभिषेक किया क्या है, लोग पुत्रो बहुतवी कहते हैं और क्टीजन मेरी सुति किया करते हैं। ऐस्त होकर भी मैं सुतपुत्रका सारका करूँ — यह मेरे करकी बात नहीं है। इस प्रकार अपमानित होकर तो मैं किसी प्रकार युद्ध नहीं कर सकुंगा। इसरिक्ये अब मैं अपने का क्रानेके निज्ये हुनसे आहा गाँगता है।"

कुलारिक प्राप्त देशा कड़कर रह सहे हर और वहाँ जो एका बैठे थे, क्रोधपूर्वक उनके बीधसे जाने लगे ! तब अपने कुले को प्रेम और पानसे उन्हें वेका और बड़े पीठे क्रान्टेने ज्ये तन्त्रको ह्यू श्रहने तन्त्र, 'राजन् । आप अधने कियमने जैसा सम्बात है, नि:संदेश यह बात ऐसी है है। परंतु मेरे कथनका को आधिकार है, कर को भी सुन्तेकी कृत श्रदे । आवके पूर्वपूर्ण सर्वत सराधायन है सारो से हैं, मैं क्रम्बूच्या है, इसीसे आप 'आर्तायनि<sup>5</sup>' महत्त्रती है। तथा अन्य अपने क्युओके रिन्ने क्यून (कटि) के समान है, इसीने पृथ्वीनरूपे 'इस्प' मानने विकास है। आप वर्गत है और वज़ने पेच डिम बारनेका मध्य है कुके हैं; अत: अब क्रपने ज्ञती बचनका कारन करनेकी कृत्या क्रीतिये । आपकी अपेक्षा न के कर्ना करणान् है और न मैं है है से भी अवशिकाके सर्ववेद अता होनेके कारण में आपसे ऐसी प्रार्थन कर का है। कर्न समस्त्रियाने अर्थुन्से क्षेत्र है और आग अश्वनिकार्य औक्तान्त्रे व्यक्तान्त्रकार है।"

इसका तथा जरूमने कहा—'नुपॉक्स | तुम सथ सेनाके सामने पुत्रो अविकाससे भी कहकार कता रहे हो, इससे में तुम्हारे कपर जस्ता है। अच्छा त्ये, में कार्यका स्वरक्षा करना खोकार किये होता है। किंतु कर्यके साथ मेरी एक कर्त खोगी। यह यह कि बुद्धके समय में उससे बढ़े जैसी बात कह समूना; उसमें वह किसी जन्मारकी जारति न करे।' इसपर कर्म और आपके पुत्रने 'बहुत अच्छा' ऐसा कहकार सरमानी हार्य खीकार कर ती।

१ ऋतु जिसका अयन (आश्रम) हो, उसे 'ऋतापन' कहते हैं। उसके कंशमें उत्पन्न हुआ 'आर्तायनि' कहा जाता है।

#### त्रिपरोंकी क्यति और उनके नासका प्रसङ्ख

मार्ककेको की विद्यालीने एक कारकार पहल वा । यह पान कवा में सामके कुमता है। को चुनिते और की को जर्मक på å, mak fireri fard pracem firer o ubleb :

क्षारे सरकायन कामा एक पंतान हमा है। साने केरदाओं के किये पराच कर विचा का कार्य कार्य केरके सराह, कारताल और विक्रमारी करके केर पूर है। उन्हेंने कहोर विकास काम कर्क हर की है कैयन group all afr met urbital fleren gen fen : क्रमें संस्थ, एवं, रियम और संस्थीनो निवाल प्रकारी क्रांत के गये और क्ये का देनेंद्र मेंनी पतारे ? का की beith verbibieren alterereleit weren feren alle web man, "Record I age gil ben we dilieft für ger der मनोवें बैठका पर करी पूर्णन अस्तावनाने नियमे रहे। इस प्रमान एक प्रमान को बीकोगर हम एक प्रमा विके। का प्रथम पान पानों सेनी पूर विशवक एक हो पानी हो का करन के देखा जो एक है करने पर का गर्फ, बड़ी इसरी पुरुषा बारम है।" इसरा बीरहाओं 'ऐसा है है' का बहुकर करने संकारों की गरे।

married from the private in the talk terms and क्रोंने आवारों साम्यु कर्मंद्र नेम्ब्रांनके पात्र करत केर क्षा कार्रेको सङ्घ । परिवाद सबने अन्त्रे अन्त्रे अन्त्रे हीन पर वैनार दिले । अने एक फेनेकर, एक नांक्रिक और कृत मोदेवा वा । प्रेरेवा कर करी, वरिवा अवस्थित और लोडेका प्रकार कार में बीचे हैं मनर प्रकारनार fe-fit bath-bart theater titre i fe fant m-na बोक्स को । पूर्ण आयरणे को पूर्व को नहें करन और पूर्ण हुई सहके भी तथा अनेको सरको और प्रवाहनेके इनकी करी क्रोतर के रही की। इस नगरीके अलग-अलग करा थे। मुक्तिका रूप सारकाकात हा, एकाप्य क्रांसाकृता और शोक्तर नियुक्तरीया। इर सेनी क्रिकें अन्ते क्रमानो होनों कोन्द्रीको अपने कानूने कर रिन्ता । इन कैनेने कर वर्त नहीरे करेवें कुछ केल साम समार एक्टिव हो गरे। पुर होनों परोने सुनेकाल को एका केंग्री प्रका काता, जानारे का कारणको स्थापुर अस्ते स्थाने अर्थ करू पूर्व का der und

सरकाशके हरि जनका एक सहस्रके कुर का। जाने बड़ी करोर तपस्य की। इससे बहुतनी जनम जनम हो पने। कों संबद्ध देशकर होने का वर कीय कि 'कारे कारने एक

हर्वेशको सहस्र नकारक प्रान्त । पूर्वजारको पहर्ति हेर्ना स्वयको पर साथ कि विकासे सारकेण समाने संस्था हर् चेता और में अधिक सरकार है करें।' इस उत्पार सहामी-है का कहर करवाओं का होंसे अन्ने नगरों एक पुर्वेची बोरिक कर देशेकारी कान्युरे करवाची । देशकोग सिंहा कर और विका केवरें जाते से उस समझीनें असरेगर से सारी करा, क्रमें केली बोरिक क्रेकर विकार साथे में। इस जनार ना क्रमांको कुछर वे पूर्ण संबद्धको बाह केने रागे उच्च अरबी केंद्र क्रमाओं सिद्धि कार से देखाओं के कार्या क्रांट करने सने । पुरुषे करता किसी भी काल कर नहीं है सरका था। क्षा से ने क्षेत्र और बोकों अने हैका कुलन कामाने हैं को। अनेने सरकतो एक और एक किया और एक और m:-कर करों उसे । क्राइनके सभी पर क्रेकर में अन्यmore sal-sal basisles were stand front रहते । जन प्रकारकृतिन कुछ स्तुन्तानि देशकालीके देशन जवान और कुरियोर्ड कीय असम्बेको ग्यु-प्रदू की उत्तर ।

का प्रकार कर कर सोक पेतिल होने नमें में पर प्राचने कार केवल केवल इन्हों कार्य का ये और का पार्टिस के क्रम और प्रमु-पहार करने सने । सिंह सब में बहुतनीके गरी। हर्माओं का अनेता एक्टीओं बोजोने समर्थ न हुए के समर्थात होबार अर्थवाँ केम्बाओयों पान के महत्त्वीके करा को और उद्दे हैं, केंद्रेर कारण विवयंकारे अपने बाहोंको पहानी सुरावी । का प्रवार करे कर क्यार उन्हेंने उत्तर करें स्वारकी क्षे काल कार कार है जिल्लाकी स्व को कुरका क्लाक्त प्राप्तको कहा, 'जो देन हमानेगीको हः स वे दह है, क्षा हो केर अकरण करोने की नहीं कुमता । इसमें संबेद नहीं, d par autholite fieb uner fie wig der fran f fie अवस्थित से का है काम कहेंगे । इसके सेले उन तीनों क्रमें एक है कामी त्रोहत होता। सिंहु इस स्थापनी कारोरे बोक्सोलपोड़ रिला और पोर्ट सर्ला भी है। प्राचीको पुन हरा प्रयोध पाल सामान पद पर परिये । में अन्यान क विकेश का करेंगे हैं

प्राचीची व्ह का कुमार हमारे का देखा अधि देखाओं औरक्षांसमीची करानी गरे। पनवान् संबद असी इस्तानोंके पक्षे साथ अवस्था करोबते और साथे **अक्टानार हैं। उनके पान पायर में राम उनकी सूर्ति परने** हरने । इस इन्हें केकोर्पीत कार्यनियों। क्षेत्रकोर्पानीका दहीन हुआ । क्षांने प्रकार केर रक्षार को प्रकार किया और प्रकोरतीने सामिर्वकार सम्बद्ध करके सम्बद्धे कार्या । विर वे मुक्कारी हर बढ़ने रुने, 'बढ़ो, बढ़ो, एकारी पन रुका है ?'

मगवानकी अवस पावन केन्द्रानेन करवनिय होगार भारते रहते, दिव्यक्तिय | अस्त्राची कारावार है। प्रधानकी पी समयो कुछ करते हैं और उसने की अलब्दी करि की है: कार समीची सारिके पान है और सभी सामग्री साथ पाने है। पाने । इन अपने प्रत्यान वाले है। अन काले कारपायान और संबोध्य संबाद करनेवाले है। वेसे अक्रमाना आवनो इन प्रकार करते है। कर सर्वते अधीवर और निक्ता है क्या करायति, मनुष्य, में और क्योंके और है। इस सामग्री मनवार करते हैं। हेर । हर मन, सामी और वार्गीने अननेह अरुकात है, अने अन्त क्रम स्वीतिने (

रूप भागवान कंपाने जाता क्षेत्रर जनका सम्बद्ध-सामान मनो पर महत्र, पेक्स्स । पान्यो होतीने और साहते, में कारका क्या कर करे ?"

an arm on waterit him, and win निकारको सारकार किए से सामाने प्राप्त स्थान क्षाचे संस्थाचे क्रिके क्षित्रे कहा, 'सर्वेद्धर । जानकी कुनाने का प्रभाविक पान प्रतिक केवर की बालोची कर मान का है किए का अनेद काना अनेने का अध्यक्ती wells the if he are anoth from your afteroid of पेक्षा नहीं कर सकता । केवाकोण कारको करणी कारक मही आर्थन कर के हैं, के जान इक्स करा बोरिको ("

का व्यक्तिको वह, देवताते । वे वयु-कार बारम करके रूपने समार हो संकारपुरिने दुखने प्रदानका संद्रात करिया। अबः हत मेरे हिन्दे एक देख रूप और पत्त-क्षम काल को, किये हर में का पर्यक्री प्रकारित गिरा सबी।'

विकास स्थानी अवकेलकीके किये केवल किया। अनीने हं वी स्वार बेटबार बोडोबर्ड पार संवाधिये हैं बिन्ह, पहुच और स्तीन्द्रों क्या करण क्या को-यो काचा रच बना दिया। इन्ह, बराब, का और कुमेर आहे, फ़ंबर बुद्ध करेंगे, में अवहा करने धोड़े हरिना। सोकपरतीको क्षेत्रे कन्नव एर्न पनको आव्या-पूर्ण क्या । एव हेन्याओंने समूर्य स्पेक्टिक स्ता पनकन्

निवृत्त हुए अवर्थ और अधिन जनेर प्राप्तक की क्रमेद राज्योद और समझ पूराण कर राज्ये आने कारोकारे केन्द्र प्रश्न प्रतिकार और वसूचि पुरश्नक करेत एक विकास और जिसमें पर्यादक गरी। स्टेन रूपा. कार्यकार और अंक्रुप्त राजेंड असम्बन्धे सुन्तेरिक हुन्। न्होंने वहाँ महानोते सुसोन्य संस्थानो अन्य बनुन क्या का अन्ते कार्यो बहुत्यो सहस्य अस्त्राहे कारको रका ।

हर अच्छर राज्यो कैयर देख ने काम और गहर करन का रिन्यू, क्रेन और अधिने को पूर दिन करातो रेजर कार्य कि केल हो को। यह केलाओं करनक mond and first par united from forms on कारेको साम प्रक्रामाने कुलीका हो प्रकेशन कर्मानार क्यो स्वयः स्वयः हुर् । को को हुन्। राज्यंतः हेब्स और स्टब्स्टमंदि संदुष्ट रूपनी सुनि करने संगे। इस-प्राप्त प्राप्ता केल पहल, बाद और बहुद बहुद करें क्यों है कोचा क के थे। क्योंने हैतकर करा, 'नेस सर्रात. चीन करेना 7 केवानकी बात, 'केवेवर | अवन विक्रे अहार हेरे. यह अन्यक कारीर का कारक—साने आर स्टीवर भी होता न को है का प्रशासनों कहा, 'हम करने ही विकार करों को पुत्रने केंद्र हो, जो नेत्र प्रत्येश कर हो है

क कुरका वेकाओंने रिवान्ड स्थानीके पार पाकर को प्राप्त करोड बहा, 'प्यापन । अपने क्रश्री पाने ही क्क क कि मैं इक्स कि करेना, से सक्त क बना पर मोरियो । केर । क्रमी को एवं बेचर विका है, का बार थी, कुर्वर्ग हैं: मानवार संबंध संबंध मोता नियुक्त किये गये हैं, परिवेद प्रदेश पूर्ण है का है कहा महत्त्वारत है जाता. went fie forge street and under fremet mit ber te सार्वेद प्रत सम्बद्धी अवेद्धा यह-वाद्यार क्षेत्र व्यक्तिने; वादेविहः रेक्टाओंने कहा—दिवेदन । इस सीचें स्वेतकोदे कालोको । एक को अधिक अधीन कहा है । इसकी कृति अपनेह शिक्षा मार्ग-मार्ग प्रकार करके सकते हैंने एक रेकेम्प रह । और कोई भी प्राच्य सार्थि करोकेम्प नहीं है। अप रीवार करेंगे।' ऐसा कहकर उन्होंने निक्कानींद रचे हुए कुछ । सर्वजुलसम्बद्ध और सूख वेकारनीने सेह है। सार: साथ सहद

मानी पर-केकारो । सा को कुछ पत्रों हो, कारोसे परी हो कांच, का और होकेंने काल कारकारको है " उसमें कोई बात हाड नहीं है। उससे विस्त समय परावार

किया। इस प्रयास का का केंद्र रूप कैया हो एक हो । सहाकीयो क्षेत्रक्रेक्टीया सर्वाच कार्यक । विस्त स्थाप के महारोक्त्रीने उसमें अपने असूध रही। असूहर, बालाहरू, | अह विकास स्थान हैते, इसके बोर्टने क्वारित हिस तेवकर स्वरूप और न्यर—ने सब ओर पुरु किने का राज्यी रहायें ! को प्रमान किया । कस देखारी मनवान हहाने स्वरूप

शीमहायेकमीसे बद्धा-'देकांड ! रकार समार हेडाने ।' तब भारतान् संकर, विष्णु, सोय और अप्रिये करना हुआ कान किर जाने पनुसरे एनुओको कन्यानका करते रकत को। का जन्म नहीं, पन्नों, हेमरमू और अपनाओं क्ष्मिती स्तृति स्त्री। मनस्तर क्षित्र एक्पर बैठकर अपने तेजले रीयों खेळांको देवीचमान करने समे। उन्होंने उन्हारी वेक्सओंसे बढ़ा, 'तुमलोग हेल संदेह का करना कि क भन हा पुरोबो रह रही कर स्थेत्य; आ हम इस समार् 🔁 बसुरोका सन्त इस्त 🕏 सब्बो (

वेक्ताओंने बहा, 'जारका कका विरस्तात क्रीक है। क्षम इस देखोंचा अन्य इश्व ही सम्याना चाहिने । आपका मेचन मिली जनतर निष्णा नहीं हो समाता है इस अधार विच्या करने केन्स्रसोग को अस्त हुए। अने कह केवांविके बीन्यकेको जा नियास रक्षण प्रकार प्रक देशतानोंके जान परे । उन्हें इस अध्या क्रम बहरेगर शहर प्रसार और केमाओन उस्ता है गर्ने। ध्रुनिका अनेही मोतीचे जन्मी साथ साथे वर्ग और करोड़ों क्यानेक प्रयानकार्यके कर्य कर्या समे। अस संस्थाद कंपाने मुरुवरावर बहा, 'प्रसारते । परिन्दे: विका वे बैहरपूर है. क्ष्मर ही परेहे कहाने।' जब ह्यान्तीने अपने नम और सम्बद्धेः समान केन्यान घोडोंको देश और कालोते ठीवत कर केने मुर्वेकी कोर क्वाचा ।

इस समय रूपीकरने बड़ी भारी गर्भन की, जिससे कारी विकार पूर करी। काला थ्या चीवन का प्रस्कार क्रास्कासुरके अनेकों देख यह हो गये। उनके रिचा जो हेव स्ते, वे पुत्रके रिन्वे इनके स्तानने उस नवे । तक विश्वास्त्रकी भगवान् इंकाने क्रोडमें परकर रूपने बनुस्पर रीत बनुस और जन्म बान पहलार को प्राचनकारों एक किया। बिन से बीनों पुरेषा इकट्टे होनेका विश्वन करने राते । इस प्रकार जार ने पतुन चहायार तैयार हो जो को करी समय की में नगर मिलका एक हो गये। यह देशका देशकारेन सही इर्पमान करने रूने रूस हैरद और महर्निकेंद्र स्वीत करती है स्ति कसे हा का-काकार करने सने।

इस प्रचार का अस्त्रातेकती चल्कार इंदार असूरेका । जी है।

करपर केरोकी यस और कोड़ संस्थात और संबार करनेवी देखने का हो है, उनके साको होनों पूर क्वांका क्रेकर प्रकट हुए। अक्रेंने तुरंत ही अवदा दिख करूर व्यक्तिका उत्तर वह विसोक्तिका स्टापून क्रम क्रेस । अर क्षकंड करते हैं कैयें पुर वह होकर दिर नवे । उस समय क्या है अर्थान्य पूजा । यहारेक्टीने उन असुरोक्षी शहर करके परिवा समुद्रमें इस्त दिया। इस उक्तर निर्वेक्ष्मिकारी करकर क्रिके क्रिके क्षेत्रर का क्रिक्स क्य किया और हैलोको निर्मृत कर दिया। किर शकी क्षेत्रके सरक वर्ष अस्तिको देखकर अन्ति क्षत्र, 'व क्रिकेटीको पाल प्राप्त ।"

> का प्रकार क्रिकेट कहा है स्क्रीयर स्वाप्त हैश्रात, सूचि और लोख अपूर्वत्व हो को उन्हां को बेह कालोरी भागका कंकरकी स्क्री करने रागे । किर जनसङ्ख्यी अञ्चल प्रस्तर मानी सभी हेकाम समात्वानोस्थ होता अली-अली कानीको कर को। इस सरह श्रीपक्रवेशवीने अनुसा लेकोचा करवल दिन्दा था। जा तन्त्र दिन्दा प्रवार क्याचर्च क्याच्या प्राथमें स्थाप स्थाप विकास का उसी प्रकार अवर भी चीलार पालीक अन्तीका संवासन परिवर्त । कर्प । इसमें संके भी कि सार सीवाम, कर्प और अर्थको भी केंद्र है। कर्म यह बरनेमें श्रीवालेक्ट्रीके प्रयान है को ज्ञान एक प्रोकानेने संस्कृत्य स्थाननीके सन्तान है। असः अग केरी निरमक मेरे पहलोंको वह केरोड़े समय के क्का का सको है। कारक l जब जब है<sub>से</sub> इसक क्रीनिये किस्सी साथ कर्ण राजानपुरिये अर्थनक क्य कर रावेद । पार्माकी, प्राप्ति और प्राप्ति कामावी विश्वति अस अञ्चलिक कार निर्मार है। इसाधी विकास भी आयगर ही अन्तर्भिक्त है। जा: जार कर्नके क्षेत्रीका निकास ublied :

> व्यापन ! कर्मको सन् औररकुरावर्गने अनुविद्या त्रिरकारी है। नहि इसमें कोई क्षेत्र क्षेत्रा से ने इसे कामी किम अना न होते। मैं से फर्मको अस्टिक्सओ अस्त हुआ कोई रेक्ट्रन हो सम्बादा है। यह कुमक और कुम्बर को जस्त इस है का विकास है भी महस्ती है इसीने इसका क्य सरकामें क्षेत्र विसी प्रकार प्रस्ता

# शल्यको सारवि बनाकर कर्णका युद्धके रिज्वे प्रयाण

रम दुर्वोक्तने कहा—चीत्रवर । कार्यात हो स्वीक्षे भी कहवार होना काहिये । इस्मीरेने अध्य श्रीकानपूरियों कार्योंक कोहोंका निकारण कीतियों । जिस्स प्रकार हिन्द्रोंको कार्योक्त रिमें केस्ताओंने कोशिया करके स्वावनीको कार्यकान् प्रकारका शार्यात कार्यात कार्यकार हुए कार्यों भी होड़ सार्यको सार्यात कार्यात कार्यकों हैं।

तरको नवा--राजन् ! विवा जवार व्यावकोर व्यावकोवा स्थाप विका वा और विवा प्रवार एक है बावमें संपूर्ण कैंग्रेया संवर हुआ वा वा जब कुई कारून है। यह जवार अंग्रेयका की विका है है। वे पूर, मिलाएस स्था कारोको पूरी संवर्ध कारो है। यह इस बावार है अभेरे अर्थुनार वाराम वाम विका है। यह विजय कारो कारो अर्थुनार वाराम को को वस वेवका सीमृत्या कर्ष युद्ध वारो सरोगे और क्या से कोम वारेंग हो पूर्वारी सेनाका कोई मी समा बहुआंग्री सेनाका जानम नहीं बार संस्था।

स्त्रापने बद्धा--शाक्त् । जब नातान क्रापने हेला बहु ती नुर्वोचन कहते रूपा, 'महाराज ! आव कर्मका अस्तराज श करें । यह राजना क्षावारियोंने केंद्र और सम्बर्ध अवस्थिताने पारंगत है। यह पार अल्प ही है कि का एडिनों ब्योक्सपने सैकडो कार्या रखे थी, तब को करने है करा का हर विगोर्ने अर्थन की इस्के नारे ककी इसका करांके सकते बात नहीं हुआ है। पहलारी पीताओं को काली बहुवती चेवाहे कुर्जात रिन्ने कोर्निया जिल्ला का और को 'को कहा। को चेठमारः ।' ऐसा न्यापार सम्बोधन विका था । उसने नावीपा क्राचीर अकुलको भी संकल्पे प्रदश्त कर दिख का और विक्रमी किसेन कारणसे ही को नहीं नाय का सामी ही इभिक्तिकार सामाध्ये पुरुषे पराव विका के और क्रमें करणा, रक्षीन कर शिक्ष था। अतने पहल्लाकी कुछन चीरोको तो संप्राणक्षिम्मे केतो-केतो कई कर जैका है साम बा। मत्य, ऐसे व्यारची कर्मको क्वकारकेन कैसे करक कर सकते हैं। कर्म से कुपित होनेपर बक्रवर इन्हरू भी कर सकता है। साथ भी राजूनों अखोंके प्राप्त और समझ विकारोंने परंतर है। कुळीने आवके सबल विजीवत के महारू जो है। आर सहजोंके रिले कारके कका है, इसीसे आव 'क्रम्ब' जन्मे अस्तिह है। सारे बहुनंही विलयत मी आपके बक्रमार्थ प्रक्रेयर आसे बटकार औं क सम्बो। स्थन् ! कुल क्या अस्त्रेड व्यक्तरते भी काले

न्ये-क्ये हैं ? विश्व जनकर सर्वृत्ये को सानेपर धीकुमा, पान्यकोत्त्रको प्रमु कोने उसी जनक की वार्त पास गया हो जनको एकडे निकास कड़िनीकी प्रमु करनी होगी। पान्यका । मैं से जनके कालो ही अपने पराची और समसा सम्मानेक प्राप्ती कुछ होना पान्यता है।

कारी नवा—काराज ! जिस जवार सहायो प्रणयान् पंचानके और अंकृष्ण अर्थुनके सार्गय कावार प्रणया है॥ कावे में है, जो जवार नाम सर्वत प्रथमें क्रियो तारह हो ।

इस्त नेते—अवसी व दूरतेकी तिवा अध्या शृहि करण तेव पुरुषेका काम वहीं है से वी तुपारे विवासके तिने में अपने विकास से उदासकी करों कहन है वह सुने। मैं सामकारित केहीको इस्ति, उनके गुल-दोगोको कारो क्या करकी विकास अस्त्रेने इसके सार्गाव कारिको हामान है। असः इन विकास करते। अर्जुनके साम मुद्द करते हास्य मैं सुकार उस इस्तिम।

ुक्षेत्रको सहा-न्यानी। सहारात इतक अधिकारही भी गई सार्वात है। अस में हुम्बात शारका पार्टिंग। संसारित मेंने हुम्बोर राजनी इतिहार है, उसी प्रचार में हुम्बोर राजने बोक्केको इतिहारे। अस हुम विश्लोह प्रचारोच्यो गीचा

कार ! जन कारी प्रका क्षेत्रर अपने सर्रावासे का—'का ! कुन कीरत मेश १४ तीवार कार्य स्थाने !' सार्थिने कार्या क्षित्रमें राज्यो विशेषम् स्थान्यः 'कार्यकार्य कार्यः है !' ऐसा कहार निर्माण किया । कार्यः कार्यकार्यः कार्यः हृत्येगार्थः हृति की । किर्त सम्मे पास है तम् हुन कार्यको कहा, 'शान्त् ! राज्यः मैतिते !' कार्यकार्यः कार्यः स्थाने साम्यान्तरः मेते । इसके कार्यः कार्यं की साम्या स्थाने साम्यान्तरः मेते । इसके कार्यः कीर्यका कृतियान हो का का । कार्यक क्षान्यने कोर्यकी कीर्यका कृतियान हो का का । कार्यक क्षान्यने कोर्यकी कर्ते सामा ।

अन पूर्वोक्तने कार्यः का—'औरका ! ये समझात वा कि न्यारको कीन और होन अर्जून और कीन्सेनको दार कार्यः। किन्तु वे इस कार्यको नहीं कर सके। अन दून वा वो कार्यक्रको केंद्र कर तो, या अर्जून, कीनसेन और न्युटन-स्कोतको कर करते। अन्यत, दूस युद्धके हिन्ने



इस्तान करे। हुन्तरी पन हे, कानान पान्य-पार्विकी साथै सेनाको पान कर से ।"

कर्मी दुवेंकाची यह स्थीतर करके एक जायते कार-'प्यापको । फंडोको प्रमुखे, जिससे कि मैं आईन, भीत, प्रकार-१७देश और मुनिश्चिरको पर साहै। आग पायकों के कहा और हुवीकाओं विकास दिये में हवारों र्वेने क्या कंद्रेश (

अन्य नोते - कुरुपा । तुन श्रम्कानेका अनुवान कर्षे कर्मा से ? वे से समझ चार्योंके परनानी, प्रक्रम कर्नार, रक्षें केंद्र न दिक्तनेकारे, असेन और असन्त परक्रमी हैं। ने सरकृत् इसको भी भागभीत कर समाते हैं - विस समय दूस प्राचीन करूरको पहले करार चीरण स्थार सुनेने उस समय इस प्रकार कार कारण पूरा कारोने । विस समय चीवारेन क्षेत्र प्रकार नामक स्थाप संदर्भ करेगा कर समय कुर इस प्रकार करों ने क्या प्रकार । विका समय क्रम कर्मराम मुनिश्चित और मकुल-सहोबको अपने पैने . सन्त्रोहे क्ष्मुओका संक्रार करते देवतेचे कर राज्य देवी कोई कर भी कर संबंधि।

सक्ताने कक् राज्य । जन श्वरात्मकी इन सम क्रवेची केश्व कर्ष करी उसे बढ़ा, 'अक, सर स क्षानां (

# शाल्यके सारभ्यमें कर्णका युद्धपूर्यिके रिज्ये प्रस्वान और दोनोंका कटु-सम्भाषण

सामने बार-वाराय ! धाः महत् वपूर्वर वर्ण प्रमुक्ते रिज्ये तैयार हो पया को करे वेकावार समझा बर्धेरणबीर इनेजनि कार्य राजे । कार्यक प्रयास कर्ता है सामके पहले सम बीरोने भी पुरस्का अन झेड़कर बुन्हींय और वेरिनोके क्षरकों साथ पुरुष्योंको लिये कुछ विस्ता । उस समय स्वयं पृथ्वी इनकारने सभी तथा कार्यक कोई मुक्कीपर मिर को। क्रीरवोंके विकासि मुक्त केंग्सी वह हैने हैं और की मनेको करतर हुए। बिट्स केम्बार क्रमधी बुद्धिकर ऐसा मोहरात हा गया कि उन्होंने उनकी पुरू भी परका नहीं की। कारीह क्षेत्र कारोगर एक स्वयंत्रोंने नवयोग विकार का कारी रामा सरकतो सम्बोधन काके कहा, 'इस समय में अस-स्टब्स पारल किसे रकते बैठा है, जब मुझे क्रोकने भरे कुर जावार इससे भी यह नहीं है। इन मीमाईर चेताओंको पहलें धेने देशका केत स्थान बहुत का का है। बाजाबर्गे अर्थुनका पुकाबाद रमपूर्विने के दिना और कोई नहीं कर सकता । यह साक्षाद कारण मृत्युके ही सन्तर । इस्तीयने प्राप्तर । अतर प्रीत ही रकापुनिसे पाहरूर, पाणव है। आबार्य क्षेत्रमें समारंपालनारे कुछलात, यह, वैर्ग । और सुक्षम बोरोबर्ड और रच हे पहिने। मैं उनके साथ पार

सौर किया कारि सभी गुरा थे, क्यों प्रश्न को मो अव-क्या भी थे, बार में ही बताओं गतानें करे गये से और सकतो भी में कारकेर हो समझता है। असा, बार, बरासान, क्रिक, बीरे और स्रोप्त-स्रोप्त प्रक्रिक की म्युक्तके सुक पहिल्लोंने सर्वा औं है। देखे, युक्त होनावार्त हम संस कारोके रहते हुए भी प्रमुक्तिक झामसे पारे गये । मे साथि सीर कुर्वीद सम्बन्ध केवलाते, विच्या और प्रमुद्ध सम्बन्ध परवास्त्री, पहारती और पहाने प्रयास मेरिक्स्स और यह है रून्छ थे; में भी कुछ करकी पह नहीं कर समे । इस समय क्वेंबरका पुरवार्थ केला पर क्या है; ऐसी रिवरिये में अधक कर्मना जन्मी क्या संस्थाना है। अस आप एक्सोस्टी सेनाकी ओर रच कहाने। वहीं सरकारिक राजा पुणिहिए केंद्र: है, वह बीयरेन, अर्जुर, श्रीकृष्ण, सत्त्रकि, सुक्रम बीर और अपूर्ण-स्थाप चुक्के मैकनमें बटे हुए हैं, वर्ध मेरे रित्या और चीन चेना इन सब चीरोंसे स्वार से सवाता है ?

क्षत्र करके था से अविधी का क्षत्रिक क सकर्त होनके मार्गते स्वरं है स्वरंगते यह यह सहस्र । वृत्राहरका क्रोंकर सर्वत ही भी करभावत हैंगे उस्ता करते से हैं। कार्क रिक्टे में अपने दिन जोन और स्टानन प्राचीको भी निकास कर प्रकार है। जुले ना क्षेत्र का कानाए परमुराजनीने दिना का इसकी शुरे करा की क्रम नहीं करती। इसमें तरा-राखें बहुर, बाब, न्या, क्या, स्थ और क्लेको परिचानक्षिक इतिकार रचे कुछ है। विका प्रथम बहु बसाता है, इसके बहुनाओं कारण की ना करवरका क्षेत्रे समार्थ है। इसमें समेद बोडे को वह है अब अच्छे-अच्छे सरकस स्टोरिंग है। इस सेह स्क्री केवल में अवस्य हो अर्जुनको बार कर्तुरतः। चर्च, सर्व करतः ची अनुरुष्टे सतान सहेता से मैं को भी पह कर कर्तृत अथवा चीनके समान सर्व है क्यानेक कार कार्यका। अधिक करा कई, गरे जानो धार्य विने का, कान, कुनेर और पूर्व भी असने अनुसाविकोस्तीय एक साम विरुद्धार पुरुष्युचिने अल्पेने को मैं को वन सम्बंद वर्धान पराद्य कर ऐना ।'

यान मुख्योत जोताने गरे हुए कार्नन देखे कार्त कहीं हो वर्षे सुरकार भारतम हिर्दे और अध्या विश्वकार कार्यक बीच्योते केवाकर माले उन्हें, 'कार्न | कार, जान पूर रही । हुए कोवाने अञ्चल महा मही-मही कार्ने का गये हो । माले, बाह्य गर्थके अर्थन और बाह्य गरावन हुए । यह तो नकारो,



वर्ष्युंच्ये वित्य और देश याँच है से अक्षार् वित्युंच्यान्ते पुरविश्व कर्ष्यों स्वयंच्याचे करत् तीयां विश्वकार वर्ष पुरवेश्य अव्युक्तां केसे विश्वका इरवं कर उन्हें क्या कीने लेकोंके अवीदारोके भी हैकर सम्बार् कंपारको पुन्ने रिक्ते सरकार को। या विराट-नगर्षे वेशस्त्रके उत्तर पुरवांचा अर्थुंग्ये सुद्धे सरी सेना और केपायार्थ, अक्षात्रामा एवं चीयांचे सर्वित करात्र विश्व था, उस समय दुवने उसे क्यों नहीं चीत विश्वा ? अव क्या हुवारे पायों रिक्ते ही या सुरता पुन्न अर्थिका दुवा है। वर्षि हुव सन्ने पायों साम म नदे से क्यांच्य हैं को पारोंचे।'

व्यादानीं इसे प्रकार कहुंचानम कारोगर वर्षेत्रमन् रेगानी कर्म समान स्टेम्पे पर कम और उसने कहीं राम, 'यहरे हो, यहरे हो इस प्रकार कर्म सहस्कृते हो, अस हो केन और अधुंकार युद्ध होनेहीकारम है। यहि वह संस्थानी मुझे कारम कर है से हुन्यारी ही कार सम अधीं करेगी ।' इसकर कारमाने 'हैस्स ही हो' इनमा अध्यार और कोई प्रकार की दिया। यह कार्यने सुद्धांत केने सहस्य होनार उसने कहा 'करम । एक कारमें।'

पुत्रके रिक्ते कुछ करके काली अपनी सेनाकी **अपन्ति करवेदे रिजे पान्कोंके एक-एक बीरते निसर्वेश** au, 'अब पुरुषेते को कोई कुछे क्रेस्कान अर्जुनके भिरतनेत्र को मैं क्लेक कर देता। वहि आनेसे भी असकी पूर्वे। य 📷 को को कोशे बांग हुना एक क्यान और हैन । की इसमें की पंछीय में इसी की को इस्तीके संपन कारकार् कः बैरकेरे सूता हुआ एक स्वेतेका रच हैगा। पहि हरनेको भी जनत म हुआ को को सी हरनी, सी गीन, सी कुल्यांका रह, सी कुरिसीमा और प्रान्ता सेंहे सवा कुलांके को पूर सीकेवलके कर की कुला गीएँ हैंगा। बहै हर सबको पाकर भी का प्रस्ता न हरत हो को बीज का कर्न रेक कांग्य की को हैता। मेरे पता पुत्र, को तथा कुररे को भी भीगोंके शतक है यह सुध सथा और ची मिल क्युची व्य इका करेगा वही उसे हुँगा। को पुरुष जुड़े बीकुन्स और अर्थुनका पता बतायेगा, उन होनोको नारकर कनका रकत कर मैं करीको है कार्तुना (' कुक्केजमें एके हुए कर्णने ऐसी ही अनेको करो कहाँ तका अपना बेह पुष्ट क्याना । इन्हें सुरक्तर एवीकर तथा उसके अनुकारी को जान है। तम और दुर्शन और मुद्रश्लेका कार क्षेत्रे हता उचा कोद्धारकेन सिंहके समाम नरको समे।

ं जब चाराव काचने ईंगकर कहा, 'स्तुगुत । तुई

प्राचीके सरका कारकार् कः बैशोले युव्य कृतव स्वेतेच्य स्व देनेकी आकारकारण नहीं है; अर्जुन तुन्हें कर्ण है केस कारण । तम प्रसंतको हो क्षेत्रको छक् पन स्टान्स प्रकृते हे, अस अर्ज्जा से एर दिन का किने है के लेने। कृत को कृतिहीन कुल्लेके कृतान जनत साठ कर देनेको रिकार हुए हो, इससे मार्क्य होना है कि अस्तानों कर देरेने को स्तेन है जनका हुने पता नहीं है। इस को अनकर पन केंग कारों हो जाले से पहादि करें । हुन मेहनक दूस ही हत्य और अर्थनको जानेकी प्रका कर्ण हो। इनने वह वक से क्रमी नहीं सभी कि किसी मीड़ाने पहलो सिंहको पर विक हो । तुन्हें करनेकोच्य और य करनेकेच्य स्टापके विकास कुछ भी क्रिकेट नहीं है। नि:पाँछ पुत्रात बाल का ग्रीक है। कोई की चौतिता स्थानकात पुरूष काल ऐसी स्वापनंत साथे कैसे **बा**द समात है ? हम जो बाल करना न्याने के व्या ऐसा है वैशे कोई अपने पुजाओंट करने राष्ट्रा का करन को अवना पहान्यी केटीने कुरून पर्छ । यह सम्मानकी अर्जुन अपना दिला बहुत रेकन होनाको चौदित बारता हुआ हुनों की बानोंसे पेहित कोंगा का समय तुने पहला है कोंग। दिश प्रकार कोई मालकी मेक्ने क्षेत्र हुन्य करन्य क्षात्रको प्रवाहरा पाने, उसी प्रवास द्वार अञ्चलको ही रचने को हुए केवानी अर्जुरको रकता बर्जनकी बात स्टेन्से है । किस ज़कर कोई काके कीए केर हात कुछ जाने रहतेयाते विकास और पैथे, अनी अवस हुए पुरवसिंग काईनके रिन्ते बक्तक को हो। कर्म । करने करनोक्रीके साथ पुरेशाल गीवा को बकाव शिक्से जो रेकन सकाय अपनेको सिंह है सन्दान्त कुछ है। इसी जनार प्रकार कुर रक्षर को हुए श्रीकृष्य और अर्थुनको की देखते हो संपरितक अपनेको सिंह सम्बद्ध में हो। विका सम्बद तुषारी होते अर्थुन्यर योगी, दूध कारण ही मीदा कर बाओंगे। विश्व तथा अपनी-अपनी चोन्यक्ये अनुसार रवेकमें पहर और विकरी, कुछा और साथ, मीवह और सिंह, परानेक और हानी, विकार और राज बना किन और अनुस प्रसिद्ध है जारे प्रकार तथ लोग पूर्व और अर्थुनको औ सम्बद्धा है।

क्षणको इस प्रकार विश्वास करनेनर इनके प्रकारहरूक बावनीय विशास करके कर्मन अलगा कृष्णि होन्द्र नवा, 'क्रम्य ? गून्यवानोके गूनोंको हो गूनीनन ही प्रस्त स्थाने हैं, गूनहीनोंको उसका क्षण जहीं तम स्थाना । गूनने कोई गून से है जहीं; इसकिने तुन्हें गुन्तसुननक क्षण को क्षणक है ? अभी । अर्जुनके बहे-बहे असा, कोण, परसाम, बनुन, क्षण और बीरामको केल में मानता है, मैल पूर नहीं सम्बन् सब्दो । येश यह पर्यक्त काम मनुष्य, योदे और हानियोगा होक्स करनेवारण, कारण चीवन और कारण पूर्व अधिकारियों को परेश कारनेकारत है। मैं रेक्नी भारतेका प्रास्ते वर्तकार केवले को सेह सबसा है। किया अर्थन और क्रीकृत्यको क्रोक्कर में विक्री अन्य पुरस्कर प्रत्यक प्रचेत क्षा को करेगा; क्षांतिः स्त्यूनं वृध्यवेतियोधी स्त्यूनी abquests unites & silv gross wegelich ferreur अध्यार अर्जुन है । मेरे रिवण और ऐसर बर्जन है जो हम बेन्जेंसे पुरासका होनेका हुएँ संस्थाने पैसे हुए सके। सर्वुनके पास मान्त्रीय कर्न है और ओक्नाने पात सुराने बंध । विन् मे चीवपुरत्योको ही कार्यकारी चीत्रो है, चुने वो इनसे वर्ग ही होता है। इस के पहलावान, पूर्व और वही-नहीं स्वयूपनेने अभीका है। इस समय पानते पीईश हो और इसके प्राप्त है बहुत-हो सन्तर्भक्ष को प्रकारों है । अरे बारी देहने सरक कु अधिवयुक्तकांच्य पूर्वीय करन ! मैं इन केनेको मारकर कार वर्ष-क्यानेक स्वीत रूपात भी वाल प्रवास कर



हैना। इस इसने क्यू क्रेकर भी सुक्रा-से बनकर मुझे बीक्स्स और अर्जुनसे क्या के हो सो मैंने का कार काले की सुन रसी है कि प्रक्रोककर असमी कुटिंगर, असरवाद्यां और कुटिश हैन्स है क्या उस देशके सोग बस्ते क्रस्तक कुट्या नहीं कोड़ते। वे असरवादोग परिशासन करके हैस्से और विश्वासे सुते हैं, अस्मादोग मीत पाते हैं, अन्यक्ता अस्मारण करते हैं और आक्रममें अपलिए वारों किया जाती हैं। उसमें पास वर्ग कैसे यह समस्ता है? ये लोग अपने वर्ग्य और मैच क्रमेंच दिने अस्ति हैं। इसरिये इस्के साथ की या निवास वाणी खी करनी वाहिये। इसमें खेद जानकी से कोई बीच है है जी । जब किसी मनुवाको निवा कारका है से मुखी लोग आक्र विव आरमेंचे किये यह पास पहा कार्य है—'जरे किया है किस अवार व्यानेक्षेत्र सोगोंसे विशास नहीं है सबस्ते असे असरि अवा तेश किये का ने वाही अमेचिय की अवार्यक्षेत्र कारों आवी वालि कर है है।' से यह का डीक है का पहली है। व्यानेक्ष्म की कियों भी वही सेक्स्यारियों होती है। आत: अमेचिय पाने क्या तेस्तर हुय सर्वेकी वाल केसे बाद संस्ती हैं। ?

'में मिनकर सहराज कुर्वेश्वनका देश कि है। मेरे क्रम और सारी सम्पत्ति अर्थेश लिखे हैं। जिलू कर्यून हेन्स है कि एक्टें पान्कवेंने अपनी और सेंड्र विनार है। इसीडे कुर कर्यों साम क्रम प्रकार एस्ट्रांड-का मार्थेन कर यो है। का कर्

इसके कह करने किर वेजकृत क्षेत्रर कहा, 'कारे, रख काओ ।'

# राजा भल्पका कर्णको एक इंस और कौएका व्याख्यान सुनाना

इतको जो एक कुल्य सुनने हर यह--कुलकांच्य मर्ज । मै हुन्हें एक ब्रह्मण सुनता है। बड़ते हैं, सपुत्रके मध्या विसी धर्मप्रयान एउवके एउवचे एक बनवान्यसम्बद्ध बैहर दाल था। यह दल-मानाई फानेकार, क्रांड, श्रमातील, अपने अन्तेति रिका, परिवाला और राजस भौतीयर तथा कानेवारण जा। इसके कई साम्यवस्था पूर है। वे एक स्टेएको अन्य करा करा, की, एक और कीर आदि दे विका करते थे। उस अधिकृष्यो का-फाकर बढ़ जून 📆-पुरु हो गया और धर्महर्ने भरकर रूपने सम्बन्धन और अपनेसे होड्र पविक्रोंका रायमान करने लगा। एक कर उस सम्बद्धारम्य गरुक्के समान लंबी-संबी अपने मस्तेवाले मानारोपस्थानी इंस अले। तम अस क्येडी क्रीएने क्रे सबसे मेड कार कता वा उस इससे कहा, 'आओ, अपन इमारी-तुष्क्रमी स्क्रम हो साथ।' यह सुमकर वर्षी साथे हर सभी इंस ईस पढ़े और उस बातूनी कौल्ले बढ़ने लगे, 'इन मान-सरोवरमे सुनेकाले हार है और हार सारी प्रकीपर उन्हों किय करते हैं। इसार्य लंबी उद्यानके कारण सभी पक्षी इम्सर्ग सम्पान करने हैं। पैका है हुए से इन्ह को 🛊 🛊 न ? फिर किसी बल्कि ईसको उद्यनके दिने क्यों

मक्ष्मने कहा—राधन् । कर्नांद ने क्या सुनका राजाः पूर्वांती हो। हो ? बरावंते से इसी, हुए हमारै इसस



बैसे व्य सम्बोगे ?"

इंसकी व्य कर सुनकर कीएने को बार-बार कुछार और सर्व कुद्र जारिका होनेके कारण करनी काई करते हुए अञ्चने तथा, मै एक स्त्रे एक प्रकारको जाने व्य सकता 🜓 अन्येके मार्चक कहन सी-से फेनाकड होती 🛊 और में राजी मही माहत और मिति-धारिकों होती है। करनेहे मुख्य प्रकृतिके नाम इस प्रकार है—व्यक्ति (बीका स्वाप); अमधेर (नीवा सहस्र), ऋति (कारों ओर सहस्र), धेन (सम्बद्धा क्या), निर्मात (मीरे-मीरे पहल), संबीर (स्मीका मतिसे बहुना), रिप्पेग्हॉन (शिव्हा बहुना), विक्रीप (सुररोक्ट कारको उक्का करते हुए कुक), परिक्रेप (सब ओर अप्रता), परार्थन (पीक्षेणी और अप्रता), सुर्धान (जर्मकी ओर ज्ञान), सर्मितीन (ज्ञानमेवी ओर ज्ञान), महार्थन (शहर केमते प्रहात), निर्मात (परोक्तो हिलाने मैप है ज्या), असिदीन (जनकारो ज्या), संबोध बीम-बीम (सुनार गरीको कारण करके हैंकर पक्षर कामधार शीवेची अोप कामा), संक्रीयोहीन्यक्रिय (सुन्दा गरियो आरम्ब काके किर कार कार्या केस क्या), वीपनिर्द्धन (एक प्रधारको अञ्चले कृत्त्रे बद्धान विकास), सम्बद्धाः (क्रमण्यः क्रुप्यास्तरे अकृतर विज पेश पंजनकार), रामुद्रीय (वापी कारची और और करेर नीचेनी ओर कृता), महीरिक्क (केंब्री काल्का संबद्ध काफे बहुत), गतापत (किसी स्थापक अकर किर सीट अतमा) और प्रतिनात (पनदा कामा) हामादि। वै हुन्हारे सामने में एक गरियाँ विकारीया; तम तुम्हें बेटी प्रतिकार पता रुगेगा। इनमेरे फिसी भी गतिले में अध्यक्तने ज्य सम्बदा 🐧 तुन जैला अधिन सम्बन्धे बच्चे और बातओ 🛍 मैं फिल परिले को 21

काँएके इस प्रकार कालेका एक ईक्ले ईक्कर कहा, 'काम । इस अवस्थ एक हो एक प्रकारको उदाने आर्क होगे; और ३०६ पड़ी से एक प्रकारको उदान है साले हैं। मैं भी एक प्रकारको नरिसे हैं उर्जुण। उस्प किसी गरिका सुत्रे हान नहीं है। तुन्हें को उद्धान परंद हो स्मीसे उसे।'

च्च सुनकर व्या को कुछो कीए के वे हैंस पहें और कहने रूगे, 'पाल पह हैस एक ही स्कूमले सी ज्यानकी स्कूमोंको कैसे पीत सकेटर ?' अब च्च कोडक और हुंस हैए क्यूकर को। कीडमा सी ज्ञानकी अ्कूमोंसे इसंबंधियां क्यूमित चारने रूगा तथा हैस अवनी एक ही ज्यारकी मृतुष्ट गतिसे दह पह ना। कीएकी अनेडस सरावी गति च्यून बंद वी। यह देशका कांच् इंश्वेका विश्वार करते हुए इस ज्ञान कांचे रूपे, 'यह इस कहा हो सही, किंदु कांग्ले सामने इसकी गाँड के इसनी भेद है।' यह सुप्रकार इंडर उन्हार केंग कहाते हुए पश्चिमकी और सम्झाने ज्ञार उन्हार स्थानी। इस व्यापने कांच्या हुने-दानी क्या प्रमा। उने विश्वार संगोत सिने कही कोई रामू वा कुन विश्वारी नहीं देश का। इसके उसे बड़ा क्या हुना और यह सोकारे स्था कि 'ने क्यान्यर कही इस समुद्रारे ही ही व गिर कांग्य ?'

अन्तर्भे यह अस्तर्भ अनिश हैकर हैको प्रस्न आया। अस्त्री देशी शिरी अध्यक्ष देक्यर हंको स्वपुरुषेत्र आया स्वरंभ करते हुए को स्वय संतर्भ विचारते श्रम्, 'कर्म सी । हुको अस्त्री अनेस अध्यक्षी इस्त्रीचा बचान विचय, परंतु स्वरंभ करते व्यरंभ सम्बद्ध अस्त्री इंस गुद्ध गतिका अस्त्रेम वही विच्या। श्रम्भ, इस सम्बद्ध तुम विका स्वरंभी रह से है, से व्यर-कर सुन्दारी कोच और जैने जानसे तुम बाते है।'

कर्म ) जब जल कौएने इंसले कहा, 'कई इंस । इस की कीए हैं, कर्म कर्म-काम मिला करते हैं। मैं अपने जाल इसे क्षेत्रमा है, इस पूर्ण किसी जनता इस करते सीतका से करते।' ऐसा जाकार यह अपनी चीच और दैनोंसे



करान्यों स्वर्ज करते हुए समुद्राने गिर गया। यह देखकर हंतने करा, 'काक ! तुम जो कही दोली क्यारते हुए कह रहे थे कि मैं एक हो एक क्यारको उद्दाने जानता है। फिन इस संस्थ इस ज्यार व्यवस्य करों निर से हे ?' इसका चौद्री कुत्सों में दिश होकर कहा, 'ईस ! में कुत्त का-सकत देख करेडी हो गया था कि अवलेको साहाद व्यवस्थ प्राप्त समझने समा था। इसीसे मेंने करेको चौजों और कुले पिहरोका थी कहा अवला किया था। किंदु अब में हुक्ति करण है, दूस पुत्ते किसी समूख करना पहुँचा थे। मैचा। करि में पीक-समास किर अपने देखने पहुँच गया थे। विस्तीका निराद्य की करीना। उस्त किसी क्रवार दूस पुत्ते कर अस्तीको करना से !'

इस अकार दीन कथन सक्कार का अवेश-ता क्रेक्ट विस्ताप करने राजा। जो कांग-कांग करते और अनुमने हुको देसका इसको कथ का गाँध और कांगे औ पंजीने प्रकारण सिरों कांगी पंजाप कहा रिच्या। किर का गाँध स्थापकर का करा, आहीर कि जार्थ स्थापकर में कांगे औ थे। कहाँ क्ष्मिक्टर करने कांग्यों मेंने प्रसारकर कहा कथा मैक्सा और किर इस्तानुसार किसी हर देशको करन करा।

वार्त । इस जातर पूछारे पूर हुआ वह बीका सकते पार और वीकेश कर्षा पूरावार प्राप्त हुआ। की पूर्ववारणी यह बीआ वैरगोचा पूछा पारत वा, जाते जातर हुएँ थी। बुररकृति पुत्रोपे अपनी पूछा विरात-विरायकार पारत है। इसीचे हुए अपने सरकाह और अपनी अपेश और पूर्ववेचा भी अरवार वारते हैं। विरात-वारतों की होनावार्त, अपनात, पूरावार्त, चीन वास और पार बीका भी हुएसी रक्षा कर रहे के; यह सम्ब हुम्मे अनेको अपूर्ववा

कान क्यान वर्षों नहीं कर काल ? का समय सुद्धारा पत्रक्रम कहाँ काल काल का? जब संसामध्यामें अर्थनने तन्त्री पहुंचा का किया था, जा समय समय चौरव चेदाओंचे कारने सबसे बाले के हुन्हीं बाले थे। इसी प्रकार क्रियनमें प्राथमिक अस्तरपार पारतेगर भी सारे चौरवीको क्रोडकर चाने दुर्चने चैठ विचाने थी। का समय ची काईसे ही विकासिक प्राथमिक पूजन परास परके प्रतिपत और कार्य संस्थेको स्थाप या परवसमानि समानोबी क्रमाने क्रीकृत्य और अर्थुनक क्री पुरतक प्रथम स्था क ब्द के एको एक है वा : अन्ते दिना भीना और होन भी क्याओं अने इन क्षेत्रेयी अवस्थात्व वर्णन वरते सुते वे। कार्यों करें के दूर कर-बर पूर्ण है से है। मैं पूर्व देशों कोन-कोन-में को कादी निर्दे देशने हुए अर्जुर कुमारी अनेका कर्ती वक्-अनुबार है। अने कुर परित ही व्यक्तिकार अंक्रिक और प्रातीपुर्वार अर्थुनको अर्था श्रेष्ट रकार केंद्र इस देखों है। असः किस अवदर कीएने सुद्धिमानीसे हेलको पुरस्त से सी भी उसी प्रस्तर हुए भी सीकृत्य और अर्थनार अवस्था से स्ते । विश्व सम्बद्ध पुत्र कुछ की प्रधार को हुए स्रोकृत्य और अर्जुरको पुत्रूपे पराक्रम दिवारी देखोंने. क क्रम देशी को की का सकते हैं, की कुछ सूर्व और प्रकारक विरक्तार करे उसी प्रकार हुन मुख्यासे उनका अक्टान का करे । जातन बीकुक्त और अर्जून कुलोपे शेष्ट है. इस कावा रित्याल न मने और इस प्रवार बंध-बंधार को प्रकट और से ।

# कर्ण और अल्बका कटुसम्माक्य और दुर्योधनका उन्हें समझाना

सामने नाम-अप्रतात । शांत्रकों में आणि यां पुरुष्ट करी कह--क्या । अप्रैन्स उस होप्टेन्सरे पुरुष्ट करी कहिन्दि विश्वासीका मैता पुत्रे पता है पैसा हुए उने नहीं कर समाने । तीन विश्वास पर्युप्ट करी पूर्व के साम करीना । तिन्दु विश्वास पर्युप्ट कर या है। पूर्व को साम दिना है, असा या पुत्रे बहुद संस्था कर या है। पूर्व कर गुरुष्ट की यह या । उस प्रान्य अप्टेन्स कि साम करी कर यह यह है। पूर्व कर गुरुष्ट में में पूर्व हो में बसमें तिन साम का । एक कर गुरुष्ट मेरे जॉक्स सिन रही हो दो है, उस समय अप्टे पूर्व के से जॉक्स करों करा । असके कोरते कारनेके कारण मेरे सामने में स्वान्य करा नामें त्वती । विंद्यू कुम्बीवरी विद्या प सूर वान इस जनसे में तरिका भी न दिला-कुम । जननेवर उन्होंने का सब बठना देवी । मुझे ऐसा बैकंकन् देखकर उन्होंने कहा, 'अरे ! यू व्यापन से हैं नहीं, ठीक-ठीक कहा किस कि 'में कुह हूं।' मेरी नात सुनवर व्यापनकी परकूपमधी प्रतेनमें कर गये और मुझे हान दिवा कि 'सूर ! हुने प्रकारकात के बनकर ना प्रकार जाए किसा है, प्रतिनेत्र काम पहलेगर दुझे इसका उन्हान न भीका।' प्रतिने हुन अरवन्त मर्थकर चोर संज्ञानके समय में जो पूल गया है। चान ! शहरतंत्रमें अरवह कुमें का अनुस नाह है परकारों, चीनन और समका संहर करनेवास है। नाह हो परकारों, चीनन और समका संहर करनेवास है। कार्युनके साथ में कायरण मेकन कारेगा और जो मृत्युके पुरुषे इत्यान क्षेत्रियः। जुले एक कृत्य अन्य भी निवन हुआ है, प्रतीले में रोजानभूमिने असूनित केनकी अर्जुनको क्रास्त्रवी कर्वत्र । क्रम्य । मैं संज्ञासकृतिने अर्थन्ते सम बार का प्रश्निकों हो सामने रहाका सुद्ध करीया । मेरे सिमा और देशा कोई और नहीं है जो इसके सम्बन सरकार्य कार्यक्र साथ अकेरन रकारक होत्यर युद्ध कर रुके । दुध के शिरे पूर्व और कृतीक हो। इन हुई अर्जुन्हे बार-जातानकी जाते क्या सुनारे हैं ? अब मैं अर्थ है संस्थापुरिको अस्ते बराधानको अस्य क्षेत्रम कृतिकोची संचानें क्रामा सर्थंद धर्मना । से चुका अरोग, निवृद, बुद, आक्रेप करनेवाल और कुलाबीलनेवा शिल्कार करनेवाल होता है, अलंद की रीमहोंग्यों को में निवृत्ति निवल हेल हैं बिह्न आम केवल सननकी और वेसका में सुने अन्य कर का है। वेश को तुम्हारे साथ बढ़ी जरामाता कर्तन है, जिल् हुए हेड़ी-देड़ी बनों बाते हैं। हुए को है निकांड़ी है। विकार से पास पन साथ खनेते हे बार्स है। या पार ही भक्तेर समय का जना है। शास कुर्मेशन समझीनने का नवे ti 4 milet ferbend unt mer fie fiet ge अर्जुनकी है गुजनका नाने करे है, का कि करावनें काचे और अन्या अद्ध प्रेमान्यम भी मूर्व है। अस विवास प्राप्त करनेके लिये में अर्थुतक अन्यत आलेव और मंत्रेय प्रकृता प्रोहेता। इस दिला अध्यक्त प्रध्यको से क्ष्माणि का, प्रान्तका काल, न्यावर कुनेर और क्रमंत्रांति प्रमुशे तथा किसी अन्य अस्तराची क्रमुशे भी नहीं हरता है जा: युक्ते श्रीकृष्ण और कर्जुन्ते भी किसी प्रवासका पन नहीं है।

वरंतु पुत्रो एक वन अवतन है—एक करनी कर है,

मैं विकास जोरमों असा मानेने रिन्ने पून का था। उस
समक अनेनों भीना कार्याको करनोना अकार
करते-करते मेंने पुरुषो एक होम्मोनुके कार्याको करन मर
विचा। वेवार कार्या निर्मार कार्यो कर तह था। यह नेकार
उसमें सानी आहणने कहा, मैंकि तुम्मे इस निरम्धाव
होम्मोनुके क्येको मरा है, इसरिन्ने संकाममें सम्मो-सम्मो
सुन्तरे रक्या पहिता महोनों कीर कार्या और तुन क्ये
सामिनों कीर वार्योगे। आहणके उस कार्या कार्यो पुत्रो
कार भी कर कर्या हुना है। उस क्यानको की इसर मोह
सीर हा सी केर हैने करो, पांतु में को करना म कर साम पुरु

इतिय प्रेरिको प्रात्त का क्रोरेग्य। यो भी सम्बर्धाता यर और खेनसम्बर्धिको स्वीत स्वती सम्बर्धि देनी पाड़ी,



वित् जाने जो रोना चौकार न वित्य । इस प्रकार का मैं अध्यापूर्ण अस्या अस्याय क्या कराने राग जो जा अध्यापूर्ण अस्या अस्याय क्या कराने राग जो उस मूर्ग स्वारी । विश्वास्त्रपण प्रकार गांव करनेवास्त्र होता है। यह मैं जाने कार्यको निश्च कर दूंग से मुझे पान समेता । उस्कः कर्मको प्रकार दिन्ते मैं सुद्ध यो कोन नहीं स्वाराम । मुझसे सुद्ध कुरुवाकर दून नेरी जाही परिच्या जांव न करो । स्वेयाने कोई भी नेरी कराको निव्या मूर्ग कर स्वाराम । असः अस इस प्रकार हो जानो ।'

'इस अवस्य वहारि कुन्ने नेस सिलावर किया है से वी की वीवसंग्या हुने का उसंग सुना विवा है। अब तुन कुन को और अलेकी कारांग कारां है। तुन की साथी, केही और जिल हो। इन कीन कारांगोंसे ही अवस्था जीवित करें कुर हो। इस अवन्य में सामने राजा हुवीकारक बड़ा मारी कार्य है और अवन्य मिनोवारी की मेरे ही साथ है। मैं शुकार करोर कार्योंको क्षण करनेकी प्रतिव्य कर सुका है। क्युओवर किया से सुध-बीर हवारों सामोंकी स्वायानके किया भी में का सक्या है। कियु निकार हो। करना कहा पाप है, इस्त्रों हुन अवस्था करें हुए हो।'

ज्ञानने कहा-कर्ज ! हुए अपने उत्पुजीके विश्ववधे सी

मुख क्या रहे हो का सम को तुमाद स्वकार ही है। मैं समझे कर्मोंकी सहायतके किस भी पुढ़ने क्यूओंको जीव समझ है।

महराज्ये इस प्रधान बढ़ोंगर वर्ण उत्तरे हो कट्टाना महाने लगा । मह कोल्ब, 'महरूप' । वै को बात महान है को कर कार देकर सुने। इस सामग्री कर्न 🗱 स्वास्त कृतराहुके फार सुनी थी। एक कर उसके प्राप्तने कई स्थान अनेको अञ्चल देखों और प्राचीन कुल्पनीका कर्पन कर से में। वहीं एक पूर्व प्रकारण प्रश्नोध और प्रश्लेखनी निवा कते हूर यह या—'से हैनलन, यह, सरवर्त, स्पृत और सुरक्षेत्रमें स्वरूप तथा तिन्यु और सम्बर्ध की सहस्वत महियोंके बीचमें रिवर है का महीक देश वर्गका और अपन्ति है। जाने सर्वेत्र हा सून्य पानिते। मैं एक पुर मार्ग्यस प्रक मेन बढ़ीय देखों यह मा। सर सर्थ 👫 क्रमेंड आसार-विकारों, किराओं बहुत-भी बारे जार भी भी। कर्त प्रत्यात पानक कार और आरम्प पानकी नहें है नहीं परिका पानी पानेक को है। उनका क्षेत्र पह निकास क्रेसा है। ऐसा बॉल क्टिक्स क्रेस में ३४ क्वारेंस. फेल्क्स्पेन और पूराना सामिनोंके तथा मुहाँचर की साम मान्य प्रतेता।' का प्राकृतने व्यक्तियोग्ये ऐक पुरावती क्याचा का । करने वर्ग केले का समाज है ? व्यक्ति हैकरेंद्र मोग प्रमान आहे संस्थातेले रहित होनेके कारण बरिक सरको सके हैं। उनकी दिल्ली करने कैकरोने नेपून करकर को करत करते है। हे क्लेक्ट क्या पहले सरिकारों परिवार होते हैं। इन्हें जल कारफोरो उनके दिने हुए हमा, कार और कुरको केन्द्र, मिल क्या स्वकृतकोन नहीं क्रीनार करो-व्य का सेपोर्न का प्रीव्य है। एक निकर अध्याने से पहलेख यह या हैंड 'वाईकारेन बाद और विहोत्ती वर्गी क्रू कृष्टिकोंने खेळा वर्गी है। उन्ने कृत्य शिक्या स्थान है, कुत्ते का वर्तनीको चामके स्थाने है, से भी करने क्रमें समय को तरिक भी प्रमा की होती। में मेद, सैठमें और प्रमुखि का पैते हैं एका कर दूकते की, जनकर और कुछ आहे भी माने-की है। कुल के जी, वे कर्तता पंचार करत करनेवारे और दुवकार होते हैं। युक् अपूर्वा विकार क्षेत्रका राज करवाल अस एक रेखे है। क्रालिके विद्वानीको पारिके कि 'आरव्य' नागरे जरिना का वार्ताकोका संपर्ध स्थल है।

'इसी जनार कारकार, नवीकर, करियु, केना, कार्योदक, वीरक और दुर्वर्थ जनक देखोका की त्यान करन जीता है। जनार, यह, मध्यार, अस्तु, कार, कार्यो, निरमू

क्या चौचीर देख प्रमा: निर्मिता और सम्मीता भागे गये हैं। कारण देशके होन नेहीया सामान करते हैं, पुरू देशके निवारी वर्णक आध्य रेसे है। पाल वेतके खेन प्रत्यक्री और प्राप्तेन्त्रीकारी का कलेकरे होते हैं। कुलके स्टेन पुरावृत्ति क्रांते हैं, प्रवृत्ति स्वेतीका कार्रित सुर्वेति स्वात होता है। महर्तेष्ठ होन चोर स्था सीराष्ट्र निकारी नर्परिका क्षेत्रे हैं। एक केल्क पहल क्रालेंसे ही बात समझ रेले मोसामधी प्रथा इतिक प्रकेशको प्रमानती है, कुछ और पहलाओं होन अपी बार यह देनेनर पूरी बात समझ and it was some bank found with the market Ø को प्रत्यूक करते हैं। विश्लिकको उत्तर कार्य क्षेत्रेको उद्य पूर्व हेत्री है। यक स्वेप स्व वालेको gewent de wege for afre fieben: weder piet E. मोला कार्रिके होन अपने संबेतके अनुसार कार्यन कार्य है। अने सबी लोग पूरी बात बाई किन्द्र उने पूर्व समूच को। क्योप और या केले महत्व से पूरे नेवर होते हैं, ने मिल्ली राजिक पुरस्कार गाँँ कर स्थाने। काम । तुन को हेरी हो हो । पूजरे अपन होन्सी की कोन्सता नहीं है । मै if bitel ibr mit f-m be golde eren beiten का है। ऐसा सन्यासन हुए अधनी सतान मेर् करो, नेरा विशेष व करे; वहीं से व्याने पुत्रात है कर करके केहे क्षेत्रम और सर्वन्त्रो सर्वन्त्र ।

अपने क्या-पार्य । एवं किस देशके राज्य वर्षे कैंडे है, का अपनेवर्ग का प्रेस है ? अकी ही सरेककर्ती कर केन्द्रों केंद्रित हो को है से उल्लाहरूप कर दिया कात है। अपनी हो को और क्योंको पहिंद सोग सरे क्यार बेको है। का देश रही और अतिविध्योधी प्रमान करते समय चीवाचीने पुरस्ते को पुरस्त कहा था, अपने इस केनोपर स्थान वे और क्रोस क्रीक्कर काम हो काओ । सभी देवीने सक्का है, सर्वत अधिक, बैदक और यह है तथा तथा कथा सुपर कार्य कार करकेरने सब सामे किये में है। सब केलोने अपने-अपने वर्षका पारत वास्तेवाले राजालोग 🐍 को रहोच्छे एक हो है। इस्ते प्रकार वार्तिक पहुल औ mir gib fit fiech beite with fontelt wir if with हो—बह बात क्रीब नहीं है, उसी देखनें हेंसे-हेसे सम्बरित और प्रकारके नकुल भी होते हैं, जिल्ली सरावधे देखा भी नहीं कर सकते । कर्म । इसरोके क्षेत्र करानेमें सभी स्त्रेग को प्रमाण होते हैं, सिंह कई अपने दोनोचा पना भई दाता। समाज अपने दोन करते हुए भी है ऐसे फोले को पाने हैं, क्षेत्र के का का है रहे।

देश एवा दुवेंकले का केवेंको केव?। असे कर्मको 🍕 इनुओको ओर अस्त पुट्ट फेर रिच्य। सम एवा-विकास संस्थान क्या सम्बद्ध सामने क्या कोक्स निवार अभिने क्रिक्ट अन्यक्षे पुनः ता असे क्यानेकी प्राचेतः की। अरके करा करनेले कर्ण कर क्या और अस्ता थे।

इस अवार कर्ण और प्रत्यको परस्वर विवाद करो | उसने जानकी कावार कोई कवल नहीं दिया। प्रत्यने

# कौरव-व्यूहनिर्माण, कर्ण और ऋत्यकी बातचीत, अर्जुन्द्वारा संस्माकोंका, कर्णहारा पाञ्चालोका तथा भीमद्वारा भानुसेनका संहार और सात्यकिसे वृत्रसेनकी पराज्य

त्वार करो है—अक्रशंत । सहस्थार कारी पायकोचा अनुस्य व्या देखा, यो प्रमुलेकाक संस्थानन इक्रोने सर्वक समर्थ का । कुरुहा कर म्यूनि शह कर भूत था। जो हेवा कर्ण सिक्के क्रमान गर्मन करता हुआ आने बढ़ा। अपनी बुद्ध-बातुरीका परिचय की हुए असी पाक्रमोके मुकारको बीधा-संख्या गाह रकत को और पान्का-रिकांका स्वार करते हुए कर्गी एक कुम्बीरकी क्षपने वर्षने चलमें कर विजा।

कृत्यूने पूक्त-सञ्जय । शकान्यून काली काल्यों तक बृह्युत्र आहे. यहन् बनुवंदीका सत्त्वत करके हैंन्ये केल बहु बनना था? बहुके हेने क्याने का आस-पास सोध-काँन कर एको से 7 प्रान्कारी की बेरे पुरोबे पुरावरोगे केता बहु १क था? किर केवे क्षेत्रओक्ष अस्तर कृता पुत्र केले करण हुना ? का प्रमार अर्थन कहाँ थे, को कारी कुनिहरून नक्ष्में कर Er alt mife freit fin it gleben um mir प्रकार करा ?

स्वापने बहर-न्याहरूय । सामग्री सेन्यास म्यापिनीय विसं प्रकार कृता था, उसे सुनिये । कृत्यकर्ष, जनसंदर्क केंक्स और कारवर्ध—ने प्रकृष्ट राहिने पार्वर्धे केंग्रह से। क्रके पक्षपंत्रक से पहल्ली क्रमुनि और उनका पुर क्लूस । ये होनी सम्बन्धने वाले सैन्ये हुए नन्त्रानेतीय ब्रह्माकरी तथा पर्वतीय मेळाओंके स्वयं आपकी सेनाका संरक्षण कर के थे। इसी जकार संकारमें कुला क्षीतीय इकार संस्ताध्य अञ्चले वायपक्षाची प्रकृषे स्वतं से। इनके पक्षपोचक से कान्योग, इन्ह और क्या । ने त्येन रच, जेवे और पैरलंकी सेनने युक्त है। बीतमें कर्ण कहा था, के रोगके मुहानेकी रहा कर का था। कर्मके पुत्र कर्मकी एक्षाचे काहे थे; और पीटने ऑक्टेंबाला वु:कासन क्रमीनर सबार हो जनेकों सेपाओंसे बिया हुआ न्यूको पूरपानचे कुछ था। उसके पीडे था सर्व गुष्ट दुवॉकर, विशव्ही रहाके हिने इसके पहालते वहाँ का और केवन नेरोकी

केंग्र रेक्टर करविक थे। स्वास्तास, वरेरवेके प्रधान कारको, कारको प्रमाण और सुपति स्टेक-ने पुर्वे करावी १४१-हेर को मेर्ड पहल रहे थे। इस प्रमान अनेकी पुरुवारों, रवें और समावे हुए इशियोरे कर हुआ मह नक केवल और असरोंने नक्को समय कोची पा का थी।

सरकार् सेकडे जुड़नेक कर्मको अस्तिक देश राजा पुनिक्षीर कामावाने कहरे रूपे-'असून । देखे से स्वी.



संबद्धमाने कार्यने विश्वास विद्याल बहु बाना रहा है ? पक्ष और प्रपक्तोंसे कुछ बढ़ जनुसेना कैसी मुलोपित हो एउँ है 1 इसे देखकर इमें ऐसी नीवि वर्तनी बाहिये, जिससे **इत्रअंको व्ह प्रकृतिन इमलोगोंको परास्त र कर सके** र

क्ष्मके ऐसा बहुनेक अर्जुनने हान जेवकर नहा-'अक्ष्मे केवी आहा की है, वैसा ही फिका कारण ।' सुविहित बोले—'हुए कार्यके साथ, भीत्योग कुर्वेशको शाय, ज्युक्त क्योंनके साथ और स्कृति ऋधिके साथ युद्ध करें। क्षानीकाता दुश्वस्तारो, स्वतंत्रिका कृत्यमंत्री, पृहकुत्रका स्वतंत्रात्रस्ति तथा नेता कृत्यकार्थि साथ युद्ध कृत्य । श्रेपरीके सभी कृत विद्यानीको साथ रेक्टर कृत्यको सभा कुलेके साथ युद्ध नरें । इस प्रकार कृतरे पक्षके प्रधान-प्रधान क्षेत्र कृत्योके वीरोका संकृत करें ।'

कर्मराज्ये ऐसा व्यक्तिय जन्मान्ये 'तथाव्य' स्थाप काकी अरहा स्थेप्यर की और सैनियांको बैसा है करनेवा बारेज रेकर ये जर्म केक्के पहलेल क्के। स्वर्ता अर्थनको अर्थ देश प्राचने स्थेत्वर व्यक्ति पुरः प्राप्त प्राचन महा-'कर्ग । कर निर्मे कांकर कुले थे, वे कुलीनका अर्जुन आ पहिले । करके रकता पूछक कर पुरस्की ने पहा है । इसर बढ़ अरवद्यन होने रूपा। बढ़ देखें, रोपरे बच्चे बस हेरेगाल अस्तर गर्नाम काव्यांत केंद्र करत प्र प्रचंत्रकारको बेरकर कहा है। तत्करी करू किए की है, कोडे बर-वर करेगो है। यहाँ हो हम अनक्कानेने ऐसा बार पहला है कि अरम सैनाहों और हमारों क्या नरकर राजपूरियों प्रापन करेंने : विश्ले हार्योंने सहा, च्या, नदा और प्रश्लेकनुर भीना पाते हैं तथा का:स्थानों कोतान जीन केरेनानन सुती है, में करवान् सीकृत्य प्रवाने करें कार्यकारे स्पेत क्रीहरेको प्रोक्षते हुए इतर ही भा रहे है। यह देखो, प्राचीन बनुवर्की केवल होने लगी। अर्थुनके होते हुए गीची वान शहरतेके जन्म से यो हैं। बहुने की हुए बीर रामाओंके बराबोर्स राज्यीय पारते का रही है। कर अनमें लेकबी ओर से दृष्टि करते, के अर्थुनको बारते आरण्ड स्वकृत है स्त्री है । में पान्कामीर केंद्र-बैद्धार सुम्पूरे स्थाने कामओसा संदार करते हैं और हाची, सेहे, रखी करन वैकारेके सरहाता बाक का रहे हैं। यह देखें, अब यहकारी अर्थन संबद्धायांच्ये रामकार सुरकार कार ही का को है और उर सभी कहतीका संबद कर खे हैं।'

व्यक्तार करणार्थ हैंदी करें कुम्बर कर्नी कोणों परवार कहा—'करण ! तून भी देश तो संवसक मेंदिने कोकों परवार अर्जुन्स करों ओस्ते क्या किया है। उस काल नहीं साम्य इन्हों, हे स्थ-सनुसी हम कुट है।

ज्ञान्य वज्ञान्य । यो केचे पुष्पकोसे पृष्पियो का है, होता अनेपा समूची प्रथमो नव का कारनेपी क्रांड रक्षता के और देवलागोंको कर्मने नीचे निय स्थे, व्यक्त अर्जुन्यर विजय पर सम्बद्ध है। येकरे संवासकोचे हतनी सावास कर्ज़ है?

कृत्यूने पूज-स्थान । का सेनाओपी मेर्नानची हे गर्ची, उसके बाद अर्जुनो संस्कृतकोवर और कानी पाणकोवर

बैद्धो काम विका—(साव्य कर्तन विकारके साथ करे।

क्ष्मणे पद्ध-पद्धारम । तम समय सहसेनाओ व्यानकारों को देश अर्थुओं की आके पुरस्कारों महानीर्यात विकास महाके पुरानेता बुरुद्वा करा क, के लेकबी क्षेत्र कर या था। यह पृतिधन करले समा देशको पहल का बेचकेट का पार्च स्रोतसे जाकी पता कर से थे। जनसर, गृह का करेगर अर्थन संबद्धानोंको देशका कोयने यर गये और गायीन बहुर रंकको पुर काली जोर हैदे। संस्कृत भी मृत्यूनीय क्ष करे क्रांक विका करें, गर्म विकास अधिताय रेका अर्थुनक पन कार्यके दिने क्रमा हा यहे तक क्रमा का ओस्त्रे पेवित करने रूले। इस्ते अर्जुनका from marite une den ment un un b. क्ष्मानोंके कर केंद्र हता का पूर्व संतान की केंद्र 🛊 क्काब्द वा। अर्थुले इक्कांके बहुर, कर, शहरार, च्छा, करते. इंकिकरोसकेत कथा की हाँ भूगाई तथा नाम प्रकार अपन्या पार करे और क्यारे सेरोड पक्रमांची कर्त असन कर देखा। उन्होंने करने पूर्व दिसानें mit pe meine un meit für um femmeilen संक्रम विकास प्रान्धि कर व्यक्तिम और महिल्लोन सैनियोक्ड कारण किया। केरे प्रत्य-कारणे का प्रत्या प्रतिनीका संक्रम करते हैं, करी उत्तार जोकों को कुद सर्वाने इन्द्रातेको सेकक विकास का करता

क्रम सक्य पहला, बेटि और सहस्य देखी औरीका mode directly and move more than these कुरावार्त, कुरावर्त और कुक्ती धोरता, सार्ती, मत्ता, करण, केकन क्या प्रत्येनकेतीय प्रत्योगोके साथ सहा करने राजे । का चहारे असंस्था वीरोच्या विवास हो पह का । कृत्ये और पूर्वीयन अपने प्रकृतेको साथ विन्ने पहेलीन, व्यानीको एक प्रयान-प्रयान कीरकवीरोने सुरक्षित सुकर चन्द्रम, पर्याप और वेदिहेडीय बोजाओं एवं सामधिसे सकते हुए कर्मकी रहा कर का था। उस समय कर्मने होसे-क्योंने क्यानेकी विकास केवका पहार संकर विका, और बड़े-बड़े रविष्येको रीको हुए आने युविश्वरको अधिक बीस बोबाबे । उन्हों कहरोंके प्राप्त देखें। इसके बार क्षा स्थाप स्थापन होते प्रथमित स्थापन के केरोका सम्बन्ध कर क्रिक । किर मकीस आमोसे पंचीस कारण केरोका एक का कार तथा केराई और इसार्थ, वेदिहेतीय क्षेत्रकारेको सामग्रेके निवाले क्षतान प्रमानेक, चौक्रमा। का समय चौक-के-चौक चक्रमा रवियोंने कावन

कर्मको करो ओसो पेर शिमा। तम करनी क्षेत्र कुरक् कर क्षेत्रकर कानुके, विज्ञान, क्षेत्रकिन्द्र, तपर कक्ष क्षरोन—इन क्षेत्र प्राहालको पार काम। इन कुलोओक को उत्तीय स्वकृत्य-रोजनी क्ष्रक्रकार का मना। क्ष्राप्तिके क्ष्म रिवियोर्न कर्मको पेर विज्ञान का क्षेत्र करने अपने क्षापीके उन्हें हुना कर विज्ञान का क्षेत्र करने अपने क्षापीके उन्हें हुना कर विज्ञान का क्ष्म कुलेन और सावकेन अपनेका मोद कोइकर कुन कर को थे। कर्मका कोई कुन क्षापेट करने अपने क्षित्र क्षमा कुलानकी दक्ष

व्यवसार बृह्युज, सारवित, क्रेंग्योके कोने पृत, क्रीमरोग, क्यांग्य, हिरावती, प्रवान-प्रवास प्रवास, केर्ड, क्रेंग्य, ब्रह्मान तथा व्यवसंत्रीय वीर और स्कृत-स्वांग्य— है क्षाक आहिते तुरुविता हो कार्यको पार क्रायंग्यी हकार्य कार्यी और होंदे। पार जाते ही अहींने कार्यका कार्यको हादी स्था थे। कार्यक पुत्रो क्या आर्थक कार्यक स्था केंद्रिकोने अस्त सामार कीर्यको कार्य कार्यक कार्य और साम बारावीने कर्यक हायाँ का्य करके को ओरडे वर्यक की । तथा से बीयसंत्रीय हाया क्षाय क्षाये वित्य और क्षायी कारका कहारी कार्यक हाया कार्यक होता हाया है कीरवी कारका कहारी कार्यक हाया कार्यको कींव कार्या। हाया है जी,



और इस क्योरी कान्द्रे पुत्र पानुसंस्क्ये क्षेत्रे एक सार्शन उपादिसम्बद्ध चन्त्रकेक चेत्र विचा । साम्बद्धार भीमने अस्पनी केवाचे पेदिव करने अस्था विकार कोने कृतवार्य और क्रमानीके कहा बाह्यार पर क्षेत्रेको जुल सामा विद्या । क्ष्मारको क्षेत्र और प्रयुक्तिको हः सम्बंधे गीम करके अनुब्द और प्राप्ती केनोको स्वर्धन कर करना। इसके कर् पुरेको क बहुकर कि 'से, अन क्रो की यह करता है' उन्होंने एक सम्बद्ध अपने हाथमें लिया; परंतु कर्यने उसे कार किया और भीनको भी कीन पालीको असता विकास अस भीको कृत्य बहुत है। सन्द हाथने रिच्या और उसे सुनेपाओ लाम करके होड़ दिया; बिहु कानी उसके की दूसहे-दूसहे का दिने और भीन्सेनको बार क्रालेको हकारो काने कान विकृतर वाग्येका पहार विरुग्ध । इतर, मुलंबने अवन्य वनुष रेकार नकारकी केने पुजाओं क्या हमीने परि बाल परे। का पहुनने की बील करवेले सुवेशको कावल किया और चीवल सिक्का करके कर्मको भी मननीत कर करन । यह देश सुरेशके कोनकी सीवा र छी, अपने महरूको साह क्या स्कृतेकको साथ कार्योते मानाः कर विचा । इसरी ओर कार्योक और क्योनने युद्ध किया हुआ या। सामानिने तीन क्षाओं कुरते के मार्गक बारवार एक मार्गने जाना क्या बार प्राप्त । वित्र पता पारतेले प्राप्त केंद्रोबर करण क्यानकर एक बागने नाम बाद है और तीन सावधीने कुर्णानको कुर्णाने पास विरक्ष । अस अक्षरणे कुर्णानका स्तरा क्रपीर सुन हो गया । एक हम्मानक बेहोन पहलेके कर कह उठा और प्राची कर-सरका है सार्वित्वी भार क्रान्तेवी इकाने जानी और इन्द्रा । क्योन जभी करवार जा है का का कि सम्बद्धिने दल जागोंने उसकी दाल-तलकाचे हमाने-हमाने का दिने ।

इसी समय उचा पुन्तासम्बर्ध हुई पड़ी; उसने वृष्योगको रण और इच्चले हीन वृष्य हुईत ही अपने रचपर विदा रिच्छा और तुर से जावान उसे दूसने रचपर प्रदास । इसके बाद प्रदानको वृष्योगने वहाँ आवान श्रीपद्धिक पुनीको विद्यार, साल्यकिको वर्षा, प्रीयस्त्रेनको प्रीराह, स्वालेकको प्रथा, त्रकुत्रको तीन, इत्यानीकाको सात, दिश्यक्षीको इस, सर्वेदका है स्वाल अन्य प्रीरोको पर्ने अनेको प्राण्यामित विद्या किन्छ । साल्यकिन नवे वने हुए लोईको चौ बाजोसे पुनासम्बर्ध साल्यक, प्रोडे स्वाल रचको न्ह्य करके उसके स्वालको सैन जाव पर्ने । त्या दुन्हासस्य हुस्से रचपर स्वाल हो सालके उत्तरहा एवं परायो स्वालक हुस्स पाण्यानीके साथ दुन्ह सहनार, कर्णको मृहसूत्रने कर, हैन्सके पुत्रेने सेवार, सहलिको सार, चीयसेनने चीसर, स्वारंको स्वा, अनुस्तरे हीस, सल्लिको स्वा, विकायोने सर, वर्णस्को ही स्वा अन्य चीरोने भी कहुंद-वे बाल चारे । स्व क्येगोने स्ट्युक्को सस्योगोरि गीवित किया । तब कर्णने भी उपनेसे अनेकाको सस्यास्त्र सामोसे चींच करता । उनके चोड़े, सार्थि और गय प्राय क्योंके कार्योशे आवश्येका हो गये से उपनेने विकाय होकर क्योंको अन्ये क्येनेक विको वार्थ है विका । अन्ये वायोकी वैकारते का सकत् अनुविशेषा पानसर्ग करता हुमा कर्म इतियोकी सेवाने केरोक-टोक दूस गया। किर वेदिवरिके दीस एकियोका संस्थाक करके अपने राजा कृषिहित्या वाया किया। उस समय दिवाकी, सारविक तथा पानुक लोग राजाको सब औरसे बेरकर उनकी रहा करने राजे । इसी प्रकार आयके पहचारे सुरुक्त मोन्हा भी इटकर कर्मकी स्वां करने लगे। उस समय चुनिहित आहे पानका और कार्य कार्य इतारे स्थानेय निर्धन क्षेत्रर पुनुष्टे रूप गर्ने :

# कर्ण और युधिष्ठिरका संत्राम, कर्णकी मूर्त्छां, कर्णद्वारा युधिष्ठिरका पराभव तथा भीमके द्वारा कर्णका परास्त होना

अपन करते हैं—स्वाराम ! कर्मने अस मेनलो मेरकर धर्मराज्ञार नामा विकास अस समय कहानेने असन कर्म असरने इसके अस-क्ष्म कराने, विज् असने अन सम्बंध इसने इसने कर इसने । इसना ही नार्त, असने क्ष्मका क्ष्मोंने इसने इस्ति क्षमाने क्षमान की कर क्षमा । उनके क्ष्माने, कुमाओं तक अधारतीयो क्षमा किस क्षमा । कर्मके कार्योंने कर्मका है सावार क्ष्मा-ने कर्म करावस्त्री है को । क्ष्मोंके स्मूच्या है उसे, असः ने कुम कर्मकार क्षमा करें । उस क्षमा कर्म स्थारी कोन्नाओंकी स्थार्च क्षिम क्ष्मी । अस क्षमा कर्म सावार क्षमा अस्ति करावस्त्री क्षमा क्ष्मी । अस क्षमा कर्म सावार क्षमा अस्ति करावस्त्री क्षमा क्षमा क्षमा क्षमा क्षमा करावस्त्री

त्रश्यार व्यवंद्ये अपने पास है वर्ष देश पुनिविच्ये

शीचे क्रोपसे साल हे पाने, उन्होंने अपने बहा—'पुन्दुन !

ह पुन्नों साह अर्थुनसे स्थान-बाँद रक्ता है और पुणेन-को हो-ते कि साह अर्थुनसे स्थान-बाँद रक्ता है और पुणेन-को हो-ते कि साह को बहा सह विच्या अपने है।

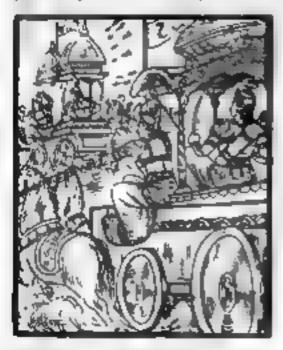
शाम द्वारों को बात और क्राव्या हो का सब विच्या, अपने बहा वालोसे वीच अरब । श्रुप्तुन कर्णने की इसले-वेसले उन्हें

हस बालोसे बावल करके हुन्दि करात कुकावा । तब पुणिदिन्ने पर्वारों की विद्यान करने को इसले-वेसले उन्हें

हस बालोसे बावल करके हुन्दि करात कुकावा । तब पुणिदिन्ने पर्वारों की विद्यान करने व्यवंद्या अर्थे करने व्यवंद्या को होता कि हस्त करने व्यवंद्या अर्थे का व्यवंद्या को हम्म व्यवंद्या को को हस्त विद्यान करके व्यवंद्या करके व्यवं

निरा । काने क्राण निरातः गये हो, ऐसा निशेष और असेत होतार कार्न कार्यके सामने ही निर पहा । राजा मुनिहिस्ते अर्जुनका हित कार्यकी हकारो कार्यपर पुरः अहर गई क्रिका । कार्यको इस अन्यानों हेकारार कौरवसेनाने इसकार पण गया ।

क्षेत्री है देखें का कर्मकी मूर्का दूर हाँ से उसने विश्वपश्चामा अवन्य पहुन्। सन्य अनक्षर विश्व विश्वे हुन् वार्योसे व्यक्तिरको प्रगति रोख से । का समय से पास्त्रकारपञ्चनार वृतिकीरके क्षित्रोची रहा कर यो थे, इनके गाम थे क्षात्रेन क्या कुळ्ळा १ क्रांकी का क्षेत्रीको स्टोके समान काकारकारी है सामोरो का काल । यह देश पुणिक्षित्ने कर्णको पुनः सीहर काओं अन्यत कर दिया। स्वश्न ही सुनेम और सामान्त्रको औ क्री-क्रिय क्रम पूर्व । क्रिट पूर्व क्रमोने क्रमाने और विकारते बुक्काबो कींग करण क्या करकी था। करनेवासे के अपने के के किन्द्रीय क्राजेंसे प्राचन किया। एवं कार्नी बैकार्टर अक्ना बन्द देवाचा और एक बाल्ड तक साठ बालोसे व्यक्तिएको अञ्चल करके कोरसे नवांना को । विन्त सो प्रस्कर-पहलें केना को अवर्थनें परकर केंद्रे और चुनिहिस्की रहाके र्केक कर्मको क्रामोसे पीडिंग करने लगे । सारविद, चेनिस्तर, कुछ प्रकार, प्रस्का, विकासी, बैसरीके पुन, प्रधान, म्बुल-स्थेत, धीमरीन, बृहकेतु तथा श्रदण, मरण, केनाम, काजी और कोसल देशके केंद्रा—ने सम-के-सम कर्णपर क्षाचेका प्रकृत करने रूने । पाक्रस्तदेशीय अनवेका की उसे लाक्योरे बीकी रूपा। पाणकातीर कर्मान सम ओरसे करमुकार्य, जराव, नार्रावर, वाल, करावन्त, विकट संधा क्षरप्र आदि काम प्रकारके अस-सकोकी वर्षा करने लगे । यह



कर्मने पीका करके युध्विहरके केनेपर क्षण रका और उन्हें करमूर्वक पकड़ रोगा पाक: इस्तेडीमें उसे कुन्तिकों दिने हुए क्षणनका स्मरण के आन्य। इन्हर क्षण्य भी बोर्थ करे— 'कर्मा! महाराज युधिहिसको क्षण न समाओ, मुझे थवा है कि कहीं पकड़ते ही ये शुद्धे करकार पत्न न कर करो।'

यह सुनकर कर्ण हैश पढ़ा और शब्दुनका बुविद्वितका उपहास करते दूए कहने रूपा—"बुविद्विर ! विशवा उप कुरले जन्म हुआ है, जो अधिकारोंने रिका है, का मार्गात है वर जन्म मार्गाने रिले कुद्ध होन्द्रार चान कैसे स्थान है ? नेत से ऐसा विचास है, तुम अधिकारोंक साराना और राज़ोंने ही एसे ऐसे हो । कुलीनपर ! आकारे स्थानिय और आजा, स्पारित्या सामका न करना सका उनके रिले पुँहरी अधिक करों की न विकासना ! इसने कई समारों से कभी कानेकर जान न रेना । यह मुद्दाने हम-जैसे सोसीसे कुछा कहा किला ! सामने अध्या हमसे भी कठोर कार जिला ! सामने अध्या हमसे भी कठोर कार जिला ! सामने इसकी जानों आओ अध्या सेक्ट करने कुलाई कोई दिका और पानकारीनामा सेक्ट करने क्षेत्रा।

एक वृष्टित ब्यून त्यांका होकर हुत्त वहाँने हुट गये और शुक्तितिक रक्षण वैद्याद कर्मका पराक्षण हेकने लगे। अन्य सेक्यों करेड़ी करी हुई देक कर्मताओं क्रिक होकर ब्यून और | क्यों कृत केंद्र है, कर्म क्रिकांकों। क्यांकी अस्त पर्दे हैं चीमसेन आहे क्यांक-न्यारको अस्त्रों कुर्वेकर हुद बहै। अस सम्बर्ध एए, इस्से और बोहोगर समार हुद बोह्याओं तथा इस्स्रेक्ट कर्मकर बन्ध होने रुक्त और उसी, वार्य, आगे बड़ी, क्योंक से-न्या असार बड़ी हुद् से आयसी वारकाह करने हमी।



का आक्रमणकारियोके प्रकृष सेनको एक्ट करवेकी अपनेते एकि न देखकर आपके कुरोबी विशाद सेवा कानने करते।

यह देश वृत्तीयन्त्रे अपने खेळाओंको स्वय अहेली वैक्तेयन प्रयास किया, मरंतु यह पुष्परात्त है या गया, केन पीछे न किये। वार्णकी यी दृष्टी अवर यही, अल्टे कोरय-सैनिकोंको मारिकोंके स्वय व्याच्यो देश बहुदान प्राच्याने सदा—'अस कृष पीचके रचके यहा वाले।' प्रयास अपने खेड़ोको पीठको ओर बहुवा।

कर्मको आहे देश कीयांत्र सोकने पर गर्न । उन्होंने सुरपुरको पर इस्टोका विकार करके कीयार सामकि कथा भूतपुरको कहा—'अन पुनरकेन कां क्यून कहे हंगाओं कांत्र कर्म पुरस्कार निरम है। कुरस्का कर्मने पुनरकांको जसक करमेंद्र रिप्ते केंद्र सामने हैं। कुरस्का कर्मने पुनरकांको जसक करमेंद्र रिप्ते केंद्र सामने हैं। इससे गुड़े क्यून पुन्त कुरस है। सम मैं सामका करमा पुनरकांत्र । सम्म चेर संसाम करके या से मैं है नार्मको कर इस्टुन का कहे हैए क्या करेगा—मा मैं तकी बात बात रहा है। तकाओं में तुन्हें करेड़को करने देश हैं उनकी स्थाने निने साथ प्रकारते कह करना।'

वो सन्तार स्वाचार् वीयरोग अपने व्यान् विक्राहरी
राज्यूनी विकारणोधी प्रविकारित करते हुए कर्मकी और वहें।
उन्हें व्याच्या उत्तर देख करने होंगर्म परकर जन्मी हातों परकर
केंगर कीन्ने भी को कार्नेत कर दिया और तेम वित्ये हुए
वे कार्न वर्मकर उत्तर्ध व्याच्या कर इत्तर। तम क्रांति
केंग्रंथ वर्मकर उत्तर्ध व्याच्या कर इत्तर। तम क्रांति
केंग्रंथ वर्मक के हुक्त्रों कर दिये। चीन्तरे हुराह अपूत्र
उत्तर्ध और क्रांति वर्मकार्नेको वीन्तर वहें जोरते पर्याः।
वर्ध । किन हुज्युक्ता कर करनेके विशे अपूरि वर्मतीको भी
विदेश कर कार्नेन्तरम्भ हुक्त कर्मक स्वान्य वेग्नस्त वीर उत्तर
कार्या और क्रांत्र वित्या। उत्त व्याच्या समान वेग्नसारी वाध्ये
कुज्युको क्रांत्रको केंद्र करना। क्रेन्यको समान वेग्नसारी वाध्ये
कुज्युको क्रांत्रको केंद्र करना। क्रेन्यको समान वेग्नसारी वाध्ये
कुज्युको क्रांत्रको हैद्र करना। क्रेन्यको समान वेग्नसारी वाध्ये
क्रांत्रको क्रांत्रको हुर क्रांत्र के क्रेन । हुरा प्रवार क्रांत्रको
क्रांत्रको क्रांत्रको हुर क्रांत्र के क्रेन । हुरा प्रवार क्रांत्रको
क्रांत्रको क्रांत्रको हुर क्रांत्र के क्रेन । हुरा प्रवार क्रांत्रको

# भीमसेनके द्वारा बृतराष्ट्रके कई पुत्रों तथा कौरक्योद्धाओंका भीवण संहार

कृत्यह मोरो-सहाय । योक्शोनने को कर्मको एकही बैठकारे गिरा निया—मह तो उन्होंने यह कृत्यर करन किया। क्सीके परोसे पुर्वोचन मुझले कर-बार कहा करना का कि 'अनेतरे कर्म ही धन्यकों और सुझकोको मुझले कर क्सोन्स।' अस धीनके इस्तो कर्मको पराजित देश के पुर हरोगनो क्या किया ?

स्तानने बहा—पहारता है का पहासंतानमें सर्वाके पुंती विपुत्त होते देख दुर्वोचनने अपने पहानोते बहा—'तुम सोग प्रीष्ठ कावत कार्यकी दक्षा करें। यह भीमसेनके सर्वाक कारण अन्तात संवाद-समुद्राने कुछ दक्ष है।' राजाकी कारण प्रकार के क्रोबाने पर गये और विस्त प्रकार परिग आगर्की कोर सैक्टो हैं, अभी प्रकार चीमसेनको पार करनेकी इकारों अन्यर दूर पहे। कुळा, दुर्वर, काव, विविस्त , विकट, सब, नियंगी, कारणी, पाडी, नन, कानण, प्रभावनं, सुन्यतु , वारतंत्रा, सुन्यतं, व्युप्तांत्र, दुर्गतं, वारतस्त्रा, कार और स्था—न्ये स्थेत रविवारंते विते दूव वैदे और वीवारंत्राक्षेत्र स्थानं विवारं के वर्ष । वित्र क्षेत्र वीवारंत्रक्षेत्र स्थानं व्याप्तांत्र कार्योत्र क्ष्यांत्र स्थानं की । व्याप्तांत्र वीवारंत्र कार्योत्र विवारं क्ष्यांत्र की भी उन्होंने अववंत्र पूर्णतंत्र व्याप्तांत्र विवारं कार्योत्र विवारं कार्योत्र की भी रवास्त्र विवारं कार्योत्र कार्योत्र कार्योत्त कार्योत्र कार्योत्त कार्योत्त कार्योत्त कार्योत्त क्ष्यांत्र कार्योत्त क्ष्यांत्र कार्योत्त कार्योत्



संबंध करके पोर्टी पन् और बन्नमुक्ती को पीनके कर आरा । अन्य से आपके कुर पानके बारत रहे । वे पीन्नोनको इस्त्रकारीय व्यापनको स्थान भागक आगार सहीते गान गरे । आरक्षे इसने कुत को को-क्यू देश कर्मका का बहुत उक्त हो नवा । उसकी अद्याने व्यक्तने कु: बोई कहने । में मोर्ड को मेनले आकर जीवलेओ उससे निव्ह नमें ( मिन में एक-कृतेका कर कक्त्रेत्रकों कर्न और कैन्सेको कारि-सुधीनको पानि करेका युद्ध होने रूपर । कार्नी अपने सुरू बहुकारे स्टब्स्ट क्षेत्रक केर कार्यने केलोरको बीच इत्तर । क्योंने भी एक भनेशर साम इन्तमें रेस्कर को क्रारीयर करवादा । इस जानाने क्रारीका कावल काव्यान इसके इतिरको क्षेत्र विधा। जस प्रकार प्रकारने सार्वको अञ्ची अन्त हा, यह ब्यायुक्त होयार करेंग्ने कवा। स्थानक केन और अपूर्वि परकर असरे चीनसेनको प्रयोग कल करे। जिल अनेको सापकोका ऋार करके एक क्रमां उनकी कना बाद प्राती। इसके बाद एक करनते करकर उनके मार्शिको की कैनके कर जार दिया। सने इस करूर के काट प्रस्य: फिर एक है पुरूरि ईस्ले-ईस्ले उसने भीपसेनको रक्षान कर दिशा।

रमके द्वारों ही महावाह भीमसेन नदा हाकों दिनके हैससे-हैससे कृत पढ़ें। जिन केमसे खल्लार के अववडी केनकों कृत गर्मे और गदा गार-जनकर समझ सैनिकोंका संक्रम करने रूने। पैदार होने हुए ही कहाने अवनी नदासे साठ की इत्रीक्ष्मेको इनके क्यारों, क्याओं और अक्-क्योतिक न्यु कर इत्या । इसके यह क्युनिके सारण क्याक्त् कार क्योकोच्छे यह निराण क्या एक सीधे अभिन्य रचें और सैन्यूने वैक्तिक जीवर यह अस्य।



कारते कृतिय ज्ञा में से और साम्ये भीमांग संताय है में है; इसमें सम्या मोद्धा मीमांद उसमें मैदान कोइमार मान विकार । इस्तेवीने कृती ओपने पांच मी एकिमेंने आकर मीमांद कार्य अंपने मानाम कारतेक पहा दिया। साथ है कार्य कार्य-स्थाना और आपुनिक मी दूसने-दुसने कर इसमें । सामान्य समुद्रिकों मेंने हुए की इसमा मुक्तमारोंने इसमें । सामान्य समुद्रिकों मेंने हुए की इसमा मुक्तमारोंने इसमें क्रांप, माने और साम नेकम मीमांत्रमा मुक्तमारोंने इसमा । मोमांत्रमें माने नेमांत्र आमा महस्ते दूस अन्तेने उस इसमा महस्ते भार अस्त । इसमें कार्य भीमांत्रम दूसने स्थार समान हुए और कोराने मस्यार कार्यका सामान्य करनेके दिलों महिता गर्य ।

का रूपमा कर्ण और वृतिद्वित्ये युद्ध कर (ह) था। कर्णन क्रम्ये क्रम्येने वृत्विद्वितको आकार्यका कर दिया और उसके सार्यक्यो भी कार गिराया। सार्यक्ये न होनेने बोड़े कार करें : उसके रक्यों परस्थान करते देश पहारची कर्ण कर्णको भीकार करता हुआ उसका पीका करने रूपा। कर्णको क्रमेंट्यका पीका करने देश पीन्सेन होत्यने करन नवे । क्यूंने अपने क्यांसे पृथ्वी और अवस्थानों करों . ते । तब ओर फंस-केवी क्यूजोंका वीरकर हे पूर था । ओरसे कह दिया । इसके बाद कर्मपर भी भीवन बायकर्प की। कर्ण तीर पड़ा। करने भी सब ओसी डीओ बाजोब्डी कर्ष करके पीएको सामाजित कर दिया। कर्ष और चैन केनों है बनुवरिये केंद्र के। इस प्रमान एक-एन्टरेनर विविक-विविध बार्कोका प्रकार करते हुए उन होन्जेंने अन्तरिक्षमें वाजीका करा-सा कुत दिखा। नाजी का कार मध्यक्रम सर्वे का एवं का तो भी का हेकेंद्रे सावकारकोरे का वानेके कारण आबी उत्तर प्रक नीके नहीं आने चर्चा हो। इस इसन इस्कृति, इतकार्य, अक्टाबारा, वर्ण और क्याबार्य—ने चीप बीर पाण्यानेताले लोडा ले यो थे। काम्ब्रो इटे हुए देख भागनेवाले कीरवालेखा औ पीछे हमेर प्यो । मिन को केनों पक्षकी सेनाएँ एक-कुसरीसे जून नवीं। उस कुखरीने नेएड भवेषार पुत्र ३३०, वैसा की व से कची देखा का और प पुरा है था। एक ओरके सैन्सिया हुंब कुली ओरके होतरे प्रकृत का निर्मा । चीवन व्यवस्था का नवी । कुटो हिं बाल-श्रमुधिको आवाचे बहुत बुलावर सुवाची हेने राजी। क्य समय महान् सुवह बाहनेवाले केवी बहाडे बोद्धाओंकी विद्यार्थक एक अनके किये की बंद वहीं होती की। हेकें क्षांने क्षारा मध्यक पुत्र हमा कि क्षानी नोपों क करों । किस्ते हैं श्रीन करने कुम्बर कमलेख बहेब करें जान प्रमुखने हुई हुई चैकाने समान है पूरे थी।

कीए, निज् और उक्त आदि वजी पहल हो थे। उस प्रतंत्रत



संस्थाने स्वीरकरेक बहुत कह याने साती। इस समय इसकी

# अर्जुनद्वारा संशक्षकोका संहार

स्तुप करते ई—बहारक ! किस स्तुप हान्त्रिक र्शवार करनेवारत वह प्रवासक युद्ध कर वह का, उसी समय तुमरी ओर बढ़े चोर-बोरमें सच्चीत बनुवकी रंखर सुनवी केरी थी। वहाँ कर्जुन संबद्धकोग्य कथा नारावणी सेन्यवा संदार कर से थे। कारणी सुप्तकी अर्जुनक क्रमोची बोहर की तथा एंड्स्ट्राओंने भी उन्हें अपने सैरोका निवास बनावा । सरस्कात् सुक्रमनि अर्जुनको द्वार कालोसे वीकास श्रीकृष्णकी दक्षिती भूकार्थे थी तीन काल करे । किर एक भारत मारकर उसने अर्थुनकी काम केंद्र कार्य । कामपर आपात रूपते हैं। असके बार बैठे हुए विद्यार बाराने को चौरहे गर्जन करके समझे मनमीत कर दिया। इसका भवेकर कर सुरुवार आयकी सेना वर्स उठी। इसके चारे कोई दिल-पुललक न स्त्या । बोदी देखें तक उन्हें होस अल्ब

को सक्त-के-सब अर्थन्यर क्रणोदी बीकार करने लगे। क्रिय काली निरम्बर अर्जुनके विकास राजको बेर दिन्हा । सहिद क्लान की के कालोबरी जान पढ़ रही की, तो भी वे रजको क्यक्रम बोर-बोरसे किल्सने रूपे। किन्हींने सोहोक्से क्या, किन्ति प्रक्रियोची। कुछ स्रोगॉने स्वस्त्री ईना प्रवाहनेका उद्योग किया। इस प्रवाह हवारों चोद्धा रवको जनस्त्री कडकर सिक्टर करने सने। कुछ सोगोने नवन्त्र त्रीकृत्यको केवी को पक्त ही; वर्ड केन्द्रश्रीने रकार कहार अर्जुनको यो कहा लिखा। श्रीकृष्णने अधनी को इसकार का खेचोको करीन्यर पिरा दिया तथा कर्नुन्ते भी करने रक्पर कहे हुए मिलने हैं पैरलोको कहे केवर नीचे निरामाः फिर अस्त्यास काई हुए संज्ञानक केंद्राजीको निकटसे कुट करनेमें उपकोशी बाज सारकर बक



विवा । तदनवार, अर्जुनने देखान तथा ब्रीकृत्यने प्रश्नावाय नामक प्रश्न कर्माण अन्यते व्यक्ति पृथ्वी और अस्वत्रक गूँगचे-से एको । प्रश्नोत्रते अस्वत्रम सुरक्षा संस्तात्रकोची केन्य प्रथमे सिवा उटी । पिर अर्जुनने अस्ताव्यक्त प्रचीन करके क्य समावे पर वांच विचे । पर बंध व्यक्ति निश्चेष्ट होच्या के च्यवस्के पुतरो-नैसी दिखानी हेने रूगे । उसी अस्वव्यक्तने अर्जुनने उत्त्यक्त संदार आरम्य निर्मा । यह बार पहले स्थान सी से उन्होंने एव कोड़ दिया और आपने समात अन्त-एकोको अर्थुकार कोड़नेका प्रकार किया; परंतु पैर वैके द्वेनेके कारण से हिस भी न सके। अर्जुन अस्ता क्या काले एले।

इसी समय सुरूपनि गालकाकका प्रयोग किया। उसके म्ब्यूनको नगर प्रचार हो-होकर क्षतीको साले तरो। उन भवनें भी देश सर्वपन त्यपना हो गये । इस प्रकार नागपाससे कुरमार को हुए केन्द्र अर्जुनके रक्षतर स्वयको अन्। सन्त अस-क्योंकी कर्य करने त्यो। तय अर्जुनने वायोकी बोकारते उनकी अख-वर्गका निवारण करके बोजाओंका मेक्षार आरम्य विकास । कुलनेचे सुक्तमानि अर्जुनाकी कुरतीये हील बाब बारे : प्राप्ते अर्जुनको गहरी कोट रूपी और वे कावित क्रेंबर रकके विकार पालमें बैठ गये । बोडी ही देरमें उन्हें बेठ कुरत, मिन्द तो उन्होंने सुरंत ही देनहत्त्वको अबाद किया । इससी इक्तरों काम निवास-निवासका बारी दिसाओं में का गये और सामग्री रोग्य प्रथा मोदे-दानियोका विवास काले रहते । इस क्रमार सेनावा संदार क्षेत्र देश संदारको तथा नाप्रपत्नी मेकके प्यालेको वहा भग हुआ। इस समय नहीं एक भी पुरुष केल नहीं का, जो अर्थुनका स्थापना कर करे। स्था बीरोके देवाने-देवारे आवनी केन चंट हो हो। यह स्वयं निकेंद्र है नहीं भी, उससे पराहरू काते नहीं हरता था। या क्रम मेरी श्रांजी-वेजी घटना है। अर्जुनने बहाँ क्रम क्रमार केंद्धान्त्रेको कर प्रस्त था। संस्थानोधेले को क्षेत्र श्रेष गर्न है उन्होंने वर कने के बिक्न पानेका निक्रम करके किएके अर्जुनको केर विच्या । विन्त को बढ़ों अर्जुनके साथ अरुकोर सैनिकोच्या कहा कारी संस्था हुआ।

## कृपाचार्यके द्वारा दिखण्डीकी पराजय, सुकेतुका वय, पृष्टद्वप्रके द्वारा कृतवर्या और दुर्योघनका परास्त होना तथा कर्णद्वारा पश्चाल आदि महारश्चियोंका संहार

सङ्ग्र कार्य हैं—शक्त् । इस प्रकार कॉस्क-लेकको कर्तृत्वी चरणे पीदित होती देश इतकार्य, कृतकार्य, अक्तापा, उत्का, कक्ति, तुर्वेशन तथा कार्य प्रकारि सरकार कार्या । उस समय कुछ बेरतका कही के शिकुलेके स्थाद तथ कार्योसे इत्तरी (पाइक्ले) की सारी सेव अस्वारित हो पर्यो । यह देश विकारको कई कोमये शस्त्रत समय सामना करनेके लिये गया और उनके उत्तर कार्य औरने वाजकार्य करने लगा । जिन् कृतकार्य कार्यकारके म्बन् परिवार है। उन्हेंने विकासीकी बायावर्ग बान करके उसे इस कालोंने बीच इस्त्य। किर तीको बायोके प्रदानों अलो स्वरति और पोपोको की वसलोक पदा विचा। तब किरानकी स्वरता इस रक्ष्मी कृद पदा और बायोको करा-उसलार लेकर कृप्यकार्यन कृप्या। उसे अपने स्वरूप अल्क्ष्मिल करते देश कृपाकार्यी अनेको बाल क्ष्मकार इस किया। विकासीने की वार्थन अल्बार कुमकार कृप्यकार्यिक क्ष्मोंको काट इस्ता। वस कृप्यकार्यी अपने सावकोंने प्रतिकार्युर्वक विकासीको कार काट है। अब वह सिर्फ



सरकार रेकर ही जन्मी और वैद्धा । कुळावार्ष सरके कालोसे अमे आर-नार पीड़ा के लगे । उसकी या अवस्था देख किस्मेद-नावर सुकेतु तुरंत व्या अस पहुँचा और वाचा कुणावार्थयर वाणोधी हाड़ी रानाने रागा । विद्यालाने देखा कि इक्कान-रेकना जब पुकेतुके साथ अन्यो दूर है, तो वा बीका वाचार तुरंत आग निकरण । उद्यानार पुकेतुने कुणावार्थको पहले में बाजोसे बीजकर किर तिवार तीरोसे वाधार किया । इसके वाच उनके वाजानीय अनुवालो कारकार सरविके पर्याकारोजें भी वाचा विद्या ।

मा देश कृत्यामानी तील साथीने सुकेतुके समूर्ण ; मार्गशानीमें कोट पर्युक्तानी । इससे सुकेतुका सारा प्रतीन मार्गि उठा, मह महून स्थानुका हो नाम । इसी सामस्याने कृत्यामानी एक सुराग सारकर उसके आज्ञानी सेनिका पर्यापति हो इस विद्याशीमें अन्य गर्ने ।

दूसरी जोर प्राप्त और कृतवर्ग त्या रहे थे। भूत्युको कोमने मस्यन कृतवर्गाची क्रांतिने से बाय यह तथा उसके क्रमर सायकोसी क्ष्मकर जीवार की। कृतकारि सी हजारी बाज मारकर उस प्राप्तकार्यको दाना कर विक, का देख पूर्युक्त कृतवर्गाके जिल्हा प्रमुख्यर उसे आने क्षमेशे केस दिया और तुरंत ही उसके स्वर्गावको की बीचे क्षांतिने क्षांत्यर क्षांत्रका अतिथि क्षांत्र । इस प्रवास प्राप्तको कृतकुरो अपने कल्कान् प्रमुको जीवका साथकोकी दर्वार क्षांत्रक रोजका कहन केन्द्र तिया। तम आको सीन्द्र सिक्स करके कुरकुरम कुर को, किन कमसान कुत्र होने सना।

त्या दिन वर्ष्युन संवाहकोरी, पीयहोन कौरवोधे और वार्य क्ष्मणांचे मुस्कर वृत्तिकोका संवाद कर हो है। एक और कुर्वेकन न्युन्त-स्वतंको पिद्य हुन्या वा । उसने वर्ष्या परवार वो कार्यार न्युन्तको और कार सामकोरो अस्ते केर्याची वीच अस्ता दिन एक कुरावार कार्या अस्ते क्ष्मेंको वीच अस्ता कार्या कर है। न्युन्तने भी कृषित वेक्ष्म सामके पुत्रको प्रात्ति काल मारे तक स्वतंको पूर्व कार्याची अस्ता वाचार किला। अस तो सामका पुत्र प्रतिको सामकाल्या वो नका, असने अर केर्नी कार्याची वाची क्ष्मीये प्रतिक्रम करें। इसके कार्य महे प्रतिक्र वाचीरो दावार विद्या ।।

तान प्रस्तुको पूर्णानका क्षेत्र वाल कोई। वे कार राज्य कार्य हैरते हुए पृत्तीये समा गये। इससे पूर्णानको क्ष्म कोट हुआ। उसने एक कार्य कार्य प्रमुद्धका अंध्रुव कार कार्य। किए कहे शिक्तको शांध उसकी पुत्रुदियोके क्षेत्रचे अस्ते वह कार्य गरे। कुछुको को अपना करा हुआ कर्य केर्यका दूसरा कन्य और सोस्क् कार्य अस्ते हाक्ष्मी किये। उससे क्षेत्र कार्योक इस उसका क्ष्मुव कार हिया और सार्यकार्य कार्यको इससे उसका क्ष्मुव कार हिया और सार्यकार्य कार्यको नह कर्य कार्या ह्याँका क्ष्मीय हो क्ष्मा, उसके कार्य और अध्रुव भी नह हो को—का देश उसके वर्षा उसकी प्रकृत भी हा हो को—का देश उसके वर्षा उसकी प्रकृत कार्यका।

कारतर करी सूच्यार यात्र विकार के केले महान् पुद्र किंद्र गया। यस समय प्राच्यानेका या हको स्थान्य कोई में केन्द्र केंद्रे के नई स्टाल का। पहला देशके स्वाप्त और विजयको अधिकारको नही पुरवित साम क्रांक्ट दूर पूरे । जो इस अध्या निकारे विने जना करो देश कर्ण अने अवस्था वीरोध्ये बाम्बेचे करने राज्य। कारो व्यक्तोत्, सुकर्त, वित्त, सामुख, क्ष्म, श्रह, क्षेत्रमान प्रया सिक्सेनको जन्मे कन्त्रेकः निवास करकः। कार्युक्त मेरिने की रजेते कर्मको केर विकास कर्म का कारी हा, करने अपने साथ पुद्र करते हुए का आर्थी दौरीको आह तीये क्रव्येने मत्त्वर जुल क्यार कर दिया। हिर को ह्यार केन्द्रजोध्य समय का कृता । सन्द्राव



Dang, Sparte, was near, from Pennyar, 167, Physics, केळाल और कुल्पाचे क्या विदेहीय पहार्थिकोको पी र्यंतके यह कार । इस दुवने कर्मने वंतर पराधान मिन्स, बैखा न को चीकाने, न क्षेत्राने और न कुरते चोद्धावाँने ही वाची विकास । उसने प्राची, चेदो, एवं और वैदान—इन समस्त महत्त्व संक्रम किया । कर्मका यह परक्रम देश की मनमें देश विकास होने प्रत्य कि और एक भी महात चेन्ह्य नेतिस भी क्षेत्र ।

का बहुरांच्याने कर्मको पाह्यसरोजका संहर करी हेता एक भूतिहरू को कोवने बरका जानो और हैहे। कार है पहलूर, ईन्स्कें कु अब अन रेक्ट्रों नीतेरे च्हेंबकर कर्वको चार्चे औरसे केर निरम । क्रिकाची, स्क्रोब, जुल, क्लंकर, सामांड तम बहुत से प्रचल मेह कुरुके आने केवा कर्नल अक-क्योंके पृष्टि सत्ते क्ये । वैसे परम् क्येक्स क्षेत्रर भी बहुत-से सर्वेक्ष क्षेत्र रेक है.को उच्चर को अंतर से केंद्र, प्रकृत और Securities are as as as

का कर्न सम्बाधि प्रथम दश्य था, जरी समय चीवकेन राज्ये क्रम और विकास अपने संबद्धकोर संबद्ध क्रमेरे कहेद, केकर, क्रमारेन, म्ह तम रिल्ह्रोड़ीन केंद्राजीका संक्रा पर को थे। बीचके प्राचीने को रहे र्राज्ये, क्रुक्तारों, सार्राज्ये, पैक्ट पोद्धानी प्रणा इस्के-बेड्रोकी राज्योंने करीन यह नकी भी। राजी सेना भीकोको प्रथमे अस्त्र को देवी थी। विज्ञीने कुछ करते नहीं बनात था। प्राथम हैना हत रहा था। वर्ण प्राप्यक्तिकारी क्या दह का और बीच कौरमवादिनीयों कोड़ दहे थे---इस प्रकार राजधीरने निवासे हुए का होती मौतेवरी अस्पूर स्रोत्त के को के।

## अर्जुनके द्वारा संशप्तकोका संहार और अञ्चलामकी पराज्य

रहा का और दूसरी ओर अर्जून इंड्स्ट्राक-सेन्ट्राक क्रिक्ट कर को थे। सहस्रोको जीवकर विकास अर्थुको भगवान, विकार कुछ है, हेरिसचे म, हरवारी प्रताबत दिसानी हेरी है। बीकुम्बरी कहा—'क्नाईन । वे संस्ताब के अब बुद्धने के क्षणोकी कोट न सह सक्तेके कारण कुंक के कुंक को इसरे कोई स्कारण को बुद्धने नहीं जीत सकते । यह हमारी

सकर बहुते हैं—एक और से पह प्रमेशन संख्या कर जा से हैं। इसके और सुक्रमोकी बहुत बहे सेना भी निर्देर्ण हो को है। जार कर्ज को आरमके साथ प्रसाओकी संबर्ध जान के जानों हो है, कर्ण कितना जलवान, और पराक्रमी है।

सेनाको स्टेड् छ। है, इस्तिन्ते अब उत्तर ही परिन्ते । पहाँकी राष्ट्रम् चंद्र करके पहारची कर्नके कस नामक पाहिते : नेरी सो पहाँ राज है, आगे आरको नेसी हुन्छ।'

या सुनवर परमान् हैको हुए केंग्रे— 'काबुक्यक ! काम हुम सीत ही कीरलेका नाम करें हैक कड़कर गैनियने कोईको हॉक दिया। वे इंतके समान सकेर रैस्कार कोई कीकृत्य और अर्जुनको तिये हुए कावकी विद्याल सेनाने सुस गये। उनके ब्यूको ही आपको सेक कारों और प्यानो सुनी। अर्जुनको अपनी सेनाके पीतर विवास देख दुर्वीकने संवस्तकोको हुन: उनसे स्कृतको अपना है। वे संवस्तक कीना एक कारर एक, तीन की इन्ती, जीवा इक्त कोई सभा हो स्वरूप पैदार सेना सेकार अर्जुनका पा कहे। वे स्वरूपी सामानकी अर्जुनको आयानका करते हुए कई बेनकर पर्दे हो गये।

क्य सर्वाने पान हमाने विको करावाडी चीडि करण पर्यक्त कर प्रकट किया । वे संस्थानकेका संक्रट करने सने । क्स प्रमान करवारे क्रांची हेसमें की चीन्त की। क्रांची विवासीके समान बानकीने बानोंसे व्यक्ति समावे सावस्थाओं क्या हिना, सरिवा भी कारने नहीं रकत। उनके महत्त्वकी काश्रामी अत्याद सुरक्त ऐसा कर कहा करे पृथ्वे, अंग्राम्स, वितारी, संस्कृतका वर्तत —से साम-के-साम पाटे क से हैं। बोडी ही देखें अर्थनने कर क्यार केडाओबर सकता बार प्रस्ता । विता से बाई पुरस्ति बाल का अस्तासके शहराके इक्तिसरस्तित इक, भूकरे, कहा और मस्त्रक काले रहे। इस उत्पार अर्जुर संवाहकोची पहरहिली हेराका गढ़ कर है से वे के सुरक्षिणक होता कई की पश्चिम्बर कर्नी कर पालेची चैकर वाले समा । का गुल्क शर्माने से अर्थनकुरुता बाजोते कासी परिप्रोह सम्बन मेरी मुताई कर इसी तथा शुरते मरकर असे पूर्व चन्द्रमाने समान मनोहर पराचको भी बढ़ते उत्तर कर दिया । यह त्येहलुहर क्षेत्रर क्योक्टर मिर यह । उसके निर्दे है कहा पर्वतार संसार किए गया। त्यानेकारे चेंद्राओंकी सना प्रकारते खंडा होने रूपी। कर्यन्ते इन्द्र-इन्द्र सामसे कामोजों, महनों तथा शरावेके केहोका संहम कर हत्या, वे क्रमोज आदि सर्व भी सुनते सक्या हो भवे। उनके कविरते सारी राजपूरि स्थल हो गर्फ । रही, सार्राज. जुज़स्कार, हामीसमार और महम्बद्ध सम मारे गये । इस प्रकार वहीं कवानक नर-संक्रार हुआ ।

व्यवस्ताः, अवस्थाना अर्थुनका सामन करनेके स्थि क्ष् व्यवः। जार स्थवः वह प्रतेकने धरे हुए वस्तके समान धान पत्रवः वः। रचना वेटे हुए औक्तन्तर दृष्टि क्षते हैं जरने पत्रेकत अवा-क्षत्रोची पृष्टि अरम्य कर है। अवस्ताव्यके होते हुए व्यवः करों आंगों अवकर वीकृत्य और अर्थुनगर पत्रवे स्थि। वे केरी १४वर वेटे-ही-वेटे क्षतः गये। प्रतानी अवस्थानो जा केरोको निर्देश कर दिया, उत्तरे कुळ ची वस्ते वही वस्ता था। उत्तरी वह अवस्था देश समस्य वस्तार वस्त्वती वस्ता था। उत्तरी वह अवस्था देश समस्य वस्तार वस्त्रवादी करने क्षत्र पत्रवादानों को परस्था दिशाना, वैता हसके वहां विकास अर्थुनको कहा वारो मेह-वह हो वस्तार कर विकास है।

मा देश क्षेत्रमाने देशनिक्षित सोचांद साथ श्राह— 'मार्च | हुम्मने निकानों से आज में बड़ी अस्पूर्ण बात देश एवं हूँ। असा क्षेत्रमुखार हुन्तों स्मृत सम्भावत करामध्य दिवा या है। असा हुन्तों काल्या अस्ता से बड़ी है गया है ? हुन्तारी सेन्सीय है म ? मा सम्म इस्तीन्ते पुरस्ता है, कि आसा सेन्स्मुखार संकानमें सुन्तों कहता दिवानों देश है। 'भी पुरस्ता पुत्र है' या सेन्स्मूप संस्ती स्पेत्रा म करो। यह स्पेत्रा वहनेवार सम्मानी है।'

अनुवालों देख व्यानेक्ट अर्थुनने चौचा कारण हांभवें तिले और असी अवस्थानके चंतुर, आवा, इस, प्रतास्त, इस, इसी और नवाओं जा कर हारम । तिर 'परस्वत' जन्म काओंने असी गरीबारी हैसारीने हाने चोरते अहर दिना कि तरे पूर्वा जा गयी । वह व्यानका देश वासका देश गया । जो बेहेच देखकर स्ताति अर्थुनने असकी दशा करनेते दिनो वायपुरिते बाहर हार है गया । इस प्रवास अर्थुनने संवाहकोंका, भीमने चौरता-बोद्धानोंका तथा कार्यने व्याहननेकार हुए ही क्षणपे विनाहा कर हारस । बड़े-बड़े चीरोका संवार करनेवाले कर मर्थकर संवाहनों असंवाहों स्वा उठ-उठकर सेंद्र स्त्रे थे ।

#### अश्वत्वामाकी प्रतिज्ञा, पृष्टद्युप्त और कर्णका युद्ध, अश्वत्यामाके द्वारा घृष्टद्युप्तकी और अर्जुनके द्वारा अश्वत्वामाकी पराजय

सहाय कहते हैं—सहाराज ! कारणा, दुर्गोकको सामीत कास कामर कहा—'राकानका । का युद्ध कार्यका सुरक हुत्रक सरकात है, को हमें कार आहा है क्या है। सीमान्यसम्बद्ध इतियोकों ही देख युद्ध निवस कार्या है। की हुमसोगोने युद्धने सामान्योको कार्य को कर-सामाने समाव पूजने जान करोगे और कहि सहशोके स्वथने सुन्ही करे को सी पीर पुरुगोको जान होने कीन्य पुरुग-संख्य कार्यने।'

दुर्गोगमधी यात सुरवार होत् क्षांत्रकोरे प्रवंकार यहै।
दिन सब और कामे बक्को समें। उस समय अवस्थानको वर्ड़ी
पहुँचाई आवारे पोद्धानोको दुर्गित करते हुए कहा—'उस्प प्रवा सोगोर्न को ऐका हो का कि मेरे किया जात आवार करते किया हो गये थे, यो भी जाते कुछानुको बारा। इसके पारण से जुड़े अवर्ष है है, किया कुछानुको बारा। इसके पारण से जुड़े अवर्ष है है, किया कुछीकाको हिए भी करवा है। इसकिये श्रीत्रेयों। में आवारे करवा का अवस्था गर्दी आवारों। यह सेरी अध्या हुआ हो थे जुड़े बार्ग म सिर्म । स्वाइपी अधून या चीनकंग को भी सेक सामना करने आयोगे, उन समानो कुणान वार्गुगा—इस्पी धरिका भी सीह जाते है।'

अक्टबनके ऐसा कहनेपर कीरबोकी सेन्स्ने एक हात होकर पास्कोगर कथा किया। सन्य ही पास्कोका भी ज्ञापर आस्त्रमण हुआ। क्षेत्री स्ट्रोने चोर संस्थान हुन्दे स्मा । अनुष्योक्ता भीतम संदार जवा; अस्तवकारका सुरव अस्था है गया। अर समय कन्योंके महर्गे मुक्तिकार और इसरे क्लो क्लोबी प्रधानक थी। जुल कोको मार-काट र्ह्न । सूनकी बारा यह करने । अंज्ञानकोनेले अन कोड़े ही यम गर्ने में। इसरियों पूछ्या तथा पान्त्रक-महारक्षियोंने स्तर राजाओंको सत्त्र रंग्यून क्रार्थक 🛊 क्षता किया। किंदु करनि अवेन्ट्रे 🗗 हा समझ क्यान हेक विना । युक्कुको कर्णको एक बाज मारकर कक्*-*ंअरे ! स्था रह, स्था रह, वर्ज माना नाता है ?' यह सुनका क्षम् कोषये घर तथा और प्रश्नुसम्बद्ध अनुव कारह्या काने अस्थे में बाल करे। सुरक्षाका कार्य कर गया। इसके बाद अरने भी दूसरा चनुन लिखा और कर्मको स्तुर मार्गोसे पायल किया। अस हो कर्मको कहा कोप हुन्छ, इसने मृहसूप्रपर मृत्युरफाके समान धर्मकर क्रमावा अहर किया। उस माजको युद्धपुतको और आहे देख

> व्य देश काले कालेकी कर्य काले सामिको करी औरने के रिच्य और उस कालोरो को बीच इस्ता। सामिको की कालेका की इस किया। तिर उन दोलेंके विकार क्यानों कोर पुत्र हुआ, किसे देशने और सुननेसे की का केवा का। इसी बीचने वृत्रदूक्तर अवस्थानके कहाँ भी। उसने आने की प्रदेशने कालर कहा—'ओ उनकारों! असम में दुने बीचने मुंगों केवा हुंगा। आगर अनुनरे जेते दक्त की बी, वरि यू स्वाद्धी कर रह गवा और सामन कोइकर काम नहीं, से आप हुने देर फावाद का असमा निर्मात, वृ कुक्तनों नहीं दा सकेगा।'

> अर्थे हेल कानेन बृह्युत केल — हैरी कावत जार मेरी का कावार ही नेनी, सो हैरे विशासी संस्थान पुत्रीय कावा है कार्य है।' से कावार संस्थाति बृह्युतने अवर्थे करकर अवस्थानकार्य एवं डीवी कार्यन वींच कर्या। इसने अवस्थानकार्य कह होता हुआ। उसने हुआ कर्योची कर्य की किसने बृह्युतने कारों औरसी विशास कर करीं। इसी कावार बृह्युतने की कर्योंने हेक्से-देक्से



केनकुरमस्यते अपने सामग्रोसे आश्वादित कर दिवा वका

[ 511 ] र्सं० म० ( खण्डा—को ) ३०

करमा बनुष भी कार करा। अवशासने व्य बनुष केन्द्र विषय और कुसरा बनुष-बाज हाकने लेकर उससे बहुकुछके धनुन, क्रसित, गहा, बान्या, बोडे, स्वर्गांत क्रमा रक्षको पानक मारते-मारते यह कर दिया । तब शृहक्कमे द्वार और क्लावर । यह दिखा । **इनमें सी, किंदु महारबी अवस्थानने पाल्येरे मारबार असे** ( भी दुक्ते-दुक्ते कर उत्ते। साथ है जाने अनेकी कालेते मृहसूरको पहुन समान कर दिना । यह सम करनेपर भी का मह पुरुष्टाप्रका नाम न कर सका से बहुत केंद्राका भृष्ट्यात्रको पकाइनेके निन्ने होहा :

इसी मीचये औद्यानस्थाने हुद्दि हमार पार्थे । उन्होंने अर्थानसे क्क-'पार्व ! यह देखे, अध्यक्षण बहुत्कुको सल्लेड रिन्ने बद्धा पारी उद्योग कर रहा है। इसमें संबंध नहीं कि बह क्षे जा स्थान है। बृह्दुत अन कालो प्रकर अञ्चलायाच्या जास क्या ही बाहता है, इस्टिम्बे तुम इसे और कुराओं ।" ऐसा कामार पहालतानी चलवान् स्रोकृतको, मही अवस्तामा या, उसर है अपने खेड़े जानो । हीकृत्य और अर्जुनको आते ऐसा काने बहुद्दारको नार्जका निर्देश अप्रेंग किया। अर्थुन्ने का देखा 👫 अवस्थान हुम्बकुमारको काहि हा है, से अल्बे इसर कहा-के कव मारे । गाय्यीको पूरे हुए में क्या, नेले साँव अवसी जलनेकके अवन रक्ये हार संस्थानकी और यस दिये ।

वर्षिये पुसर्व है, उसी प्रकार अध्यक्षमाके सरीतमें वैस नवे । उसरे पीर्वित क्रेकर लेकपुत्रने मृहयुक्तको से क्रोड दिया और अपने रचने बैठकर बनुष कृषाने से अर्जुनको बीवना आरम

इतनेचे स्वकृतने बहुद्धानको अपने स्थयर बिटायार व्यक्ति सन्तर हटा विका। अर्जुनने भी क्षेत्रकुमारको कार्योने बीचना आरम्भ किन्छ । इतसे अख्यासमामा क्रोम स्कृत सङ् नगा । जले जर्मुनको मुकाओ तथा कारोपे भी बाग पारे। स्व अर्थुनने अध्यक्षणके कल देवीय काम्यक्षके स्थान हतः सराव परमात्र । यह अस्के कंबेयर राजा । सन्ते ही अवस्था विद्वार होकर रकती बैठकरों बैठ गया। उस सक्त अने बढ़ी केवल र्ह्ड । उसकी बढ़ अवस्था देश सार्वत वर्ड पुर्विक साम जरे रामाङ्गणसे बाहर हे नवा ह

नकरण । इस कारत प्रश्नुक्रको संबद्धमे पुरा और अक्टबन्सको पीडित देख पासका बीरोने को ओरसे पर्यना न्यी । इसारो मिला व्यक्ते क्या रहे । सम स्वेग शिक्षमध् करने क्ते। क्यूनक, सर्वेत क्यूनक, श्रीकृतको क्षेत्रे—'स्व र्मसम्बद्धिको और करिन्छे, इनका संदार करना इस सबक की रिको जन्मन करन है (" उनकी बात सुरकार भगभार क्रांसी बाते

# भगवान् श्रीकृष्णद्वारा अर्जुनसे कौरवोंके आक्रमण तथा धीमके पराक्रमका वर्णन

रहाम करते ई--महाराज । करते करता रहारे श्रीकृष्यने अर्थुनने चुधिशाच्ये दिवाने हुए कहा-'पाणुक्तम् । वे 🖟 तुमारे पाई वृधिक्षिर। देखे. इनों पारनेके रिन्ने अरमण बारबान् और पहान् अनुबंध सीरव-मोद्धा वही हेमीके ज्ञान इनका पीठा का थे है। साथ ही रूपकी रहान्त्रे दिन्ने प्राह्मसन्देशीय बीर भी उनके पैके-पैके जा से हैं। वह एक दुवेंचन भी एकियोकी सेनाले मिरकार एका चुविद्विरका कामा कर रहा है। ५००० भी होतक बाहे है कि युविहिसको बार हाले । इस कार्यमें इसके पाई की साम है को है। वे क्रमीसमार, पुक्रसमार, रखी और कैएल-सभी उन्हें पकड़नेके लिये का से है। जब देखे. सामकि और पीधने महैकार कादि हुने बेको है हैन दिया है, तो भी ये संस्थाने अधिक होनेके कारण राजाकी और वर्ष ही चले जाते हैं। उत्पुच्छे संसाय देनेवाले राज्य मुधिहर भी पहलि बढ़े बलवान् हैं, युद्धकों करवाने नियस है, म्मका हाम भी कुर्गीसे मलता है, तकावि कुपनि उन्हें रजसे मिनुल कर दिया है। क्वाइन्डे का प्रस्तीर हैं, उन्हों



शहाबता मिल कानेपर कर्ज अवद्य ही हुन्हरे पहाराजको कह पहुँचा सकता है। इसके तथा और भी बहुत-से जुल्हीरोके साम ने युद्ध कर यो ने : इन सम पहरुकियोंने विरस्का उन्हें क्षाक्ष किया है। एका मुक्तिए उपनास करनेके कारण न्यूट कुर्वल हो गये हैं। ये अधियक्तर ब्रह्मायल (स्थान) में से रियत यहे हैं, शास्त्रल (निहात) में महि; कारो कार्क सब इनकी निर्मात क्रुं है, तकते ने कड़े संवाहमें यह उने हैं। कर्ज कारमुके न्यारची पुरोसे न्य कह सह है कि 'हन्योन कामुद्रा गुनिविश्यो नार काले (' कर्न ! ने सभी म्हार्स स्वाकर्ण, इकाल तथा चलुका नक्य अध-क्योते राजको आकारित कर हो है। वे आहर हो गर्ने हैं, इस समय क्षे विशेष रोवाकी अवस्थातम है। अब इतिक करनेका प्राप्य है—यह कानकर पाहाल हजा राज्यत और बड़ी हेजीले करोड़ पीड़े बैज़ी हैं। जो यह आहा और विश्वास है कि परि महाराज पुनिविद पातालने भी हुन्ये होने हो हम उन्हें भारत्वीक निकास सार्वेने । यह देखों, अन कर्ण असन्त क्रोभमें परवार कहालांकी और हैंद्र रहा है। अलेंद्र स्थावी काना पहुचानके रककी और कारी दिवसकी हे गुरी है। कार्य 🛚 इस भागव में हुनों कुछ परने क्षेत्र सम्मानत सुना एक है कि राजा मुसिव्हेर वीक्षित है। अबर के महत्वमू चीववीन है, जो सुद्धपीकी वाहिनी तथा जानाविको साथ स्वेतका अवकी मैनकी पुरुषेश को है। कहारू चेन्ह्र तथा चीनलेन जन्मे तेव वान्येने अब व्यक्तियर अहर कर के हैं। देखें, ; नहीं तहर सके : मनगीत होनार तब दिहाओं में मन गये :

चौरव-सेना पान पत्थे। सैनिकोके क्योंने सुनवी गास करी है। जनमी बड़ी दक्षनीय देशा दिखानी देशी है। अब देखे, चीपसेन प्रमुखीब्दी सेनाको प्रदेशने लगे। उनकी कम्बारे कौरव-वाहिनी कहे संबद्धनें यह नवी है। वे रबी लोग कीनके क्यारे वर्श बड़े हैं। इस्की उनके नारकोंकी मास्से विश्वर्थ के केकर क्योतपर दिए रहे हैं। बड़े-बड़े पत्रपत्र भीनके बाजोंने कावल होवार अपनी ही सेनाको विक्रो-कुलानो हुए भागे या ये हैं। अर्जुर । सहसार त्ये, संस्कृतिकारी प्रीत्रम भीवसंस्कृत हो यह कुरहा निवृत्तह सुनानी केल है। का लो, अनुने कर बाल पाएकर निकारको प्राची भी मीती पार सत्ता दिया। अस कोरबोको केलले के हो नहीं है, यहले-जेसी करकी गर्यक वह कुम्मी देही। पीनलेवरे पूर्वेषनकी तीर अवस्थिती सेन्द्रआंखी आणे वहनेते रेक्टबर गार काल है जिनकी जीवों कारजोर है से केरे छेन्याओं भूतीयी और नहीं देश सकते, वेंसे ही ये मौरामध्यके राजा लोग मौगरेनकी और अधित इक्टबर देख नहीं पत्ने । उनके बार्गोकी मारसे अपनीत हर प्रदर्शको कहीं भी के नहीं निरमत है

पान्यम् बीकामके मुक्तते ने बाते सुरखर अर्थानी चीनसेनके कुकर परकायमा सुद्धियस किया । जिस् अधने क्यी-सूचे प्रमुक्तीको तीनो सालोहे ज्याना आरम्प किया । संस्कृत चेन्द्र कारि को कार्यान् से से की से अर्थुकार्य जाती शुक्री

# दोनों पक्षके योद्धाओंका इन्द्रयुद्ध तथा भीमसेनका पराक्रम

कुरुकुने पुरा—सञ्जय ! प्राच्याचे और पाञ्चरचेकी कर कानेते जब इपारी सेना द:की होबार भागने लगी, इस समय क्ष्मेरबोने क्या किया ?

सङ्ग्यने बहा-च्याराव ! इस समय महत्त्वह चीपसेनसर कर्णकी वृष्टि पहें । उन्हें देखते ही उसकी और क्रिकरे स्थल हो गर्मी और बढ़ जनार का अपना ! अलो बीमलेको करले मानो हाँ अस्त्री सेनाओं बढ़ी कोहिए करके रेका और इसे व्यवस्थापूर्वक सही करके चन्क्योची और वक्त । वह देख पञ्चवीके प्रकारणे पीयसेन, स्वासीक, विक्रमणी, कार्यका, प्रकार क्या प्रपत्नक आहे भी क्रोपने परवार आकरी सेन्सका संद्वान करनेके दिन्ने जरकर कारों ओसरे दह पते । उस पुरुषे जिलाकीने कर्मका सामग्र विका और बुक्काने कहा मझै सेनासे हिरे हुए दुःशासम्बद्धा पुरस्तवस्य व्हिन्तः। नकुलने कुम्मेनक और धुविद्वित्ने वित्तवेनक बावा विज्ञा । सहदेव क्लूकरो विद्व गवा। सारावितका सकुनिया और प्रीपदीके पुळेक कोरकोरर अक्रमण दुव्य । अर्थुनका सामना पहारकी अकृत्वापाने विकाः। कृत्यवार्थका बुकामन्तुसे और कुनवर्गाका उत्तर्भेकारे पुत्र हुआ। धीमरोतने अकेहरे ही सम्बद्ध बर्ध स्था तथा उनकी सेन्द्रआंख्य केंग रोक्स ।

मकराज ! शिकामधीने समस्यामें निर्मात विकास हव कर्मको अपने कल्पेका विश्लान करूवा और उसे आने बढ़नेसे हेक दिया। कथा करत केव्छे को सर्वाह ओह पहाले तमे। उसने हिन्सम्बोद्धी केन्द्रे मोहोके बीच बीच बाज यारे । उनसे अरकत काइत केवर शिकाबीने की कुलंको सेव किये हर क्यां क्या पारे । तम पहारको कराँने हीन अल्डोसे विकासीके सार्था और बोड़ोंको पार कार्या। इससे



हिन्दाक्षीको बद्धा क्रोज हुआ। असने आपने राज्यो कुनकर कर्मके इत्यर स्थितका आहर कित्यः। कर्मने और क्षेत्रकोरे इत्य स्थानको पुन्तको कर अस्ते और में सीको बाल मारकर अने की बीच इत्या। क्षित्रकोर्क स्थानके बहुत बाव के गर्न की इस्तिको का कर्मके कुनको हुटे हुए कार्मका कार क्ष्माना हुआ तुरेत कार्य निकास । अस कर्मा पाक्षक-सैन्किलेको अपने आस्तेने सरकार विद्योग असर।

कृति और जानके कु इ-शासको वृह्युक्रको कुल पीवित किना। तम शृहदुक्ति दुःशासका इस्तोर्थ तीन बाल मारे। जिर पुःशासको भी इक तीनो प्राच्छा बृह्युक्रकी वार्ल जुनाको बीध इस्ता, अन्ते वृह्युक्त करेको मर नवा और एक तीना बृहद कारकर कार्ने दुःशासका प्रमुख बाट दिया। यह देश परवाल कोन्छ उस कारते नर्जन करने हाने। अस आवके पुन्ने दूसरा बनुव इससे दिखा और हैस्तो-हैस्ते जानकेची इस्ती व्यावका बृह्युक्रको करों सोरते के दिखा। तदकार, प्रशास-वेदीच शिनकोरे भी संपने हेमापरिको क्यानेके विन्ते उसको पुन्नर केरा कार दिवा। किर हो आपके कोन्छओंका ब्रह्मुओंक साथ धेर संपाय होने हना।

इसी मीमने अपने विकाद पक्ष करे हुए कुमरोजने

रकुरमध्ये पहले जीव और दिन आठ वाण मारे तब दूरवीर रकुरमे भी हैस्से-हैस्से एक तीले न्यरमध्ये कुश्रेनकी क्षारी केंद्र कार्ये । इस चोटमें कुश्रेन कहुत वाचक हो गया । पिर हो में केंगों कीर कुळारों वाच्येकी चौकारते एक-दूररेको कुळने राजे । हालेने ही कौरक-सेन्डमें भन्नक प्रमु नयी। कर्म पीके सीटकार जो सेक्से राजा। असके स्पेट वानेगर मकुराने कोरकोचे जारा चालों की। कर्मपूर्व कुश्रेन भी मकुराना कारक करना कोड़ अपने निवाने पश्चिमोकी ही रक्षारी

इसी प्रकार कोकरें को हुए अनुकाको संबाधने सहवेकने केवर, उसने अनुकाके कारी केंद्रीको माध्यत उसके इसरिको की कार्यका सेव दिया। अनुका रक्तो कृदकर कार्य और मृश्य जिल्लाकी सेवाने का बुसा :

वृक्ष और जानकि और प्रमुक्तिये सद्यु के पूर्व थी।

जानकिने के निर्म पूर्व वीच वाकोर प्रमुक्तियो प्रायस कर

क्षित्र और एक जान प्रायम प्रायम जाने जार प्रायम कर क्षित्र और एक जान प्रायम प्रायम जाने जार के जार प्रायम प्रार्थ प्रमुक्तियो प्रमुक्तियो पी पुरुष्ठे-सुमाई कर हिये। प्रार्थित प्रमुक्तियो पुरः वीच वाकोरो प्रायम विकास होते । तीव क्षे जान प्रायम प्रायमिको भी पारे। प्रस्के वाद समेको वाल वास्त्रार अपने प्रमुक्तियो क्षेत्र प्रायम क्षेत्र दिवा। विश् के प्रमुक्ति स्थान स्थाने कुछ पद्म और स्टूक्ति स्थान केरावार प्रायम प्रायम हो। प्रथा। अस्य प्रायमित स्थानकि सेनावन वाल करानो स्था। स्थान प्रायमित प्रोप्त अस्त्र हो। सावके सैनिक पार्थ और प्रस्तने एन।। स्थुनो अपने प्रायम क्षेत्रस स्वस्तुविने ही पिर सने।

कृतरी अतेर, आपके पुत्र वृत्येकनो पीपसेनको सेका।
किंद्र किमने हरंत ही उसके कोई और सार्रावको प्रार्ट काव। किन रच और कावाबी भी समिवाँ उद्या है। इसके प्रवाद-पद्यके केन्द्र कहा सरक हुए। इस प्रवार परास केकर दुर्वेकन भीको स्वयनेते कम गव्य। इसर पुनापन्ते कृत्यकर्वको सावत करके हुरंद ही उनका बन्नुव भी काट हिवा। यह सक्तवतिकोचे केंद्र आकार्य कृपने दूसरा बन्नुव कार्य के काल करकर पुनायन्तुके रककी काल, स्तरिव और कार्यो कीचे रिस्स दिखा। यह से पहारकी कुनासन्तु कार्य ही रच इत्यन्ता हुआ कार गया।

कृती जन्मर एक मोर जनमैजने बागोकी हाड़ी

रुपाबर करकरांको क्रम क्षित्र। किर कर बेनोने अस्तर । ५ औ। ४औंने दिलासोक्ट प्रयोग करते हुए हारिनोहे प्रधानक पुत्र किर गया। कुल्यमनि सार्वेजाको 🗍 क्रतीये केट की, व्या मुख्ति क्षेत्रर रचकी बैठकने के गरा। अस्मी का अवस्था हैक सार्था को रक्षधीको कुर कुछ के कथा। कर्यकार, बर्रेक्टोबर्ट स्तरी केन्द्र भी-कोश्वर हर पर्छ। कुरूसमा प्रथम सक्रमिने प्रार्थकोच्छे बहुत बहुते सेनारे बीवसेनको बेस्कर उत्तर क्रम करव उत्तर विका । प्रतिकारिकी रोगा देशते ही पीमारेग्डें प्रतेककी वीवा । पाठा था ।

है इन्वियोग्य संहर सारम किया। सपने वागीसे क्रिक्टेंके इसर्वे क्रांबेश स्टब्स्य कर क्रांक । जा सक्त विकारिको बहुम्बाइको समान गीमके बहुमारी छेकार सुनका कुनी बह-यूत्र स्थानो हुए को बेनने पान के है। महत्त्व । चीमसेनका का परक्रम सन्दर्भ व्यक्तिका संकर करनेवाले सके समान

# कर्णसे पराजित और घायल होकर युधिहिरका अपनी डावनीमें विभागके लिये जाना

स्वाप काने हैं--राजप् ! क्रारी और युविधिएको आहे. देखा आपका पुत वृत्रोंकर कोकरे कर नक। करने अकरे आशी सेना साथ से सहसा निवाद जावार करें का ओसी धेर रिच्या और विकास क्षाप्त प्रस्कार करको कीय क्षाप्त ह कुरशीरकार पुरिवीरने भी सरेकने सरका सार्का कुन्धरे तुरंत ही तीस पारत यारे। यह केम उन्ने पारकनेके हैंन्से क्षीरमञ्जूष्ये केन्द्र हर यहे। जा सक्य प्रकृतिके कारे विकार जानकर पहारची नकुरू, स्थोब तक बहुबाई एक शक्षीयेणी सेनाके साथ खुंबदिनके जस का बनके। खुं पहेंको हो प्रकृति यह पुर्शित स्वय रूपोपनको सेन सम मारे । प्रतनमें धार्म यमिक्रिश्वी संगाधा संकार करने रूपा । उसके बाजोंसे पीकिन क्षेत्रर का रोग सकता कर सबी हुई। तब राजा चुकियुरको बाह्र समेब हुन्छ। उन्होंने हेन मिले हुए प्रकास मानोसे कर्मको बीच करत । क्यूरपार, उर होनोंने पर्यकर बुद्ध विकार करिएक करनार सकतार केन बिरवे हुए प्रसिन्पतिनेंड साथी, कारतें, प्रक्रि, प्राईट क्या मस्त्रपेसे बारूको सेनाका संबद करने सने। वह सनक आपके केन्द्राओं वे प्रकार क्या क्या । क्यांका क्यांका नहीं-नहीं हुई इस्तरे से, नहीं-नहींद्र वेनिकोचा प्रयास से सता था। या देश कर्ण असना वर्गित होका स्वितीत्तार नारम, अर्थमञ्जू तका मस्त्रम्य अर्थमञ्जू अर्थन सन्ते सन्त । प्रतिक्षिति भी तेल किये हुए क्षणीक्षे कार्यको कार्यक कर शास्त्र । फिर कार्यने ईसते ईसते देन किने इह कार्यों तथा रीन धरलोरे पृथितिरकी सकी के साथै। प्राप्ते प्रयोक्ताको कही पीड़ा हुई। वे २७% विकले ध्वापने केंद्र करे और सारविको व्यक्ति कर देनेकी साम की। उन्हें करे देन पूर्वोचनसहित सभी कीरव 'इसे पकके-कार्ड 'काकर | इस है। इपलेक्के देखते-देखते ने उसे यह न इस्तें--

रिकारको हुए इनके पीछे की पर्देश प्रार्थिको प्राप्तार केंद्राओंके प्राण सब्द से केवल नीरोने सरकर सीरवॉको अपने कारोंने केंद्र दिया।

का काम क्षेत्र गुनिक्कि बालोंके आहरते बहुत प्राथम है जो थे। वे स्थान एक स्क्रोन्ड प्रीयमें हेन्द्रर चीरे-वीरे कारनेको और मा छे थे, उनका होस किसाने नहीं था। his second of soft griteric Street purch चौचीरका पीक्र मिला और भी तीन तीने बाजोते बीम क्रम । व्यविद्वारने भी कर्मकी क्रतीये क्रम पारका करन क्यान्य । प्रत्ये कर रोग क्यांने प्रत्ये सार्वाच्ये और करते करों केंद्रिकों बीच द्वारत । किर नकत और सक्तेतने ची बडे प्रकारके राज कर्मपर बागरेकी बर्च की। इसी प्रकार सुरुक्त करने भी तीनी बारवाने के परस्तोंसे नकरा और सहोकको कामल कर दिया। जिन मुखिलिको मोहोको करका एक भारती उनके नामको शेवको नीचे दिश हिंच । इसी वाद नकुराके भी चोड़ोंको चीरके साट सारकार असे रचकी ईच और बनको भी कार राज । रस रह क्रांगर हे हेनों पाणकार आपना क्रमत होका साहेओं प्राथम का की र

का क्षेत्रोंको राष्ट्रीय देश काले मान्य न्याएक सरकाले को एक अली। उन्होंने सुरस्कारे कहा—'कर्ज । हुने से जान जर्जुनो युद्ध करना है, जिर जानना क्रोबरों परवार कांग्रवसे फिलारिये तह से हो ? इसे मारोसे तुनों क्या करका हेना ? हमा देखे, अर्जुन रवियोधी सेनका संहार कर के हैं। अपने कालोकी क्यांसे इवादी समूर्ज सेनाको बालका कर कर के हैं। उसर, बीमरोन तुर्वेकको त्योचे इसके दिन्ने प्रयास करना चादिने । इन प्राव्धिके पुनी अवस्था राजा सुधिद्वितको मारनेसे क्या ज्ञान होना ? पुनीकनका प्राप्त संस्थाने पहा है, जो सलकार क्याओं !'

वापनि एत्यवदी वह बात सुनी और देखा कि दुवंबन वीमरोनके बंगुरूमें पीस सुन्ध है, से बुविद्युत और नकुरू-सब्देशको सहाँ है क्षेत्रका अचले पुत्रको स्वापनेके क्रिये वह वैद कहा। उसके वाले वानंपर वृधिद्वित सब्देशको तथ कारणेयाके बोद्दोश्वरा कहीरे विस्तक कथे। राजाको रापनी परानपाने कारण कही राज्य से बो थी। नकुरू और शक्तेकके साथ अपने कारण हरीरके कार्याकर पहुँचका वे शासे कार्य और एक सुन्यर कारणात के गये। अस समय उनके देहरी बाल निकास करने को थी। हरूपने बायसे उन्हें कड़ी पीझ होने तली। उन्हेंने होगी पाई मार्याक दुवंबी बादा—'वीमकेन केक्के हरूपने इसरे राज्यर समार दूजा। स्वकेको कारण सिन्ध हरारे राज्यर समार दूजा। स्वकेको कारण ही रख वा है। होनी पाई अपने शीक्तान केवे

इतिकार भीवलेलको लेनामें का पहुँचे।



---

### अर्जुनद्वारा अञ्चलामाकी पराजय, कर्णद्वारा धार्गवासका प्रयोग, श्रीकृष्ण और अर्जुनका युधिष्ठिरसे भिलनेके लिये बावनीपर जाना तथा युधिष्ठिरका उनसे कर्णके भारे जानेका समाचार पृथना

समय कार्य हैं—व्यागाल ! इसी वक्क अध्यक्षक रियोकी बहुत बड़ी होना सका लेखा, कहाँ अर्थुव कार्डु थे, यहाँ ही स्थाना आ कार्यका। जो अर्थ्य देखा अर्थुव्ये एककारची कार्यक कहाव रोखा हिंखा। अस्तरास्त्र इस्तरा रेखा, यह वार्योकी व्यवसे सीकृत्या और अर्थुव्यो आवादित कार्य समा। यह देखा अर्थुव्ये हैंस्से-इंस्तरे हिल्मकामा अर्थाण किया, कियु अस्तरास्त्रमें इस्तरा विवासी कार्य दिया। वस्ते अस्तरा आहर किया, उन सम्बद्धी अंग्रह्मनारने काट इस्ता। उसने अपने वार्योको हिल्मओं तथा अर्थिताओंको कार्यका अस्तरे अपने वार्योको हिल्मओं तथा सारि। तथा अर्थुनने उसके बोद्धेको घायल कर्यो संस्थान स्तरा नहीं नहीं कहा है। अर्थेने अस्तरास्त्रमा व्यवस्तर समान वर्यकर सारा। यह देखा कान्ये अर्थुन्यर करावे समान वर्यकर वरिक्यम ज्ञान किया। किंदू अर्जुनने उसे ईसरे-हैस्से कार कारा। अब अवस्थानका छोत्र और बढ़ गरा। इसने ऐ-व्यक्तम ज्ञान किया, वरंदू अर्जुनने मोन्द्राक्तने हसे हारण कर दिया। सम्बद्धी अवस्थानस्थाने भी अपने वागोसे बक विया। छेन्युक्तसने अपने सायकोसे उन वागोसो कार निराम और सी कानोरी सीकृत्यको तथा तीन सीसे अर्जुनको कींग छात्म। तथा अर्जुनने भी अश्वस्थामके व्यक्तकोने सी कांग को और उसके सारक्तिम हमा अन्यक्ताने स्था ही केंग्रोकी वागहोर स्थान्तर अर्थन अन्यक्तान क्यां ही केंग्रोकी वागहोर स्थान्तर कींग्रा अन्यक इस पराक्तमको सामी मोन्द्र प्रश्नेस कार हो थे। इसी कींग्रो अर्थुको हैस्से-हैस्से अन्यके कोंग्रेस वागोदी गरंसी बुरुनेसे दुरंग कार इस्ता। अस्त ने सोई बाजोकी गरंसी करन्त्र पीतित होकर कान करे। उस सन्त्र कवान विकास कार करों और तीसे कार्योकी वर्ष करो हुए आपकी सेनाको कोड़ने स्पेश क्योंने कौत्त-निकाको इसनी पीड़ा प्र्यूचानी कि वे आपके कुर्वेके केवलेवर की न कहा सके।

क्षान्तर तृतीयाने को केल्पे सक कर्पने बक्क-'बहुमाई । देशो, पान्कोने इन्हरी इक विद्यास केनावे बार क्या प्रोधान है, सुधारे वाले हर यह पानके कारण भागी का जी है। का कारण से जीवा कुखते, करें। पान्यतीके समेरे हुए इन्बरे हवारों केन्द्र जब हुने हैं सहन्यतमे हैन्दे पुरुष से है।' हुवेंबनकी यह बाद सुरका कानी हैस्से-हैस्से अपने बनुष्या पार्नब्यवास संवार किया । मिन को कामो स्वामों, करोड़ों और अस्त्रों काम प्रकट इत्, जो अधिके समान प्रज्यतिका हो छे थे। उन प्रजेकर माजोरे क्रमार पाण्यन-रोग आकाशित हे गर्थ । का समय कुछ भी रहा नहीं पहल या। या पहले मानंपालके माने इसरी हानी, केंद्रे, रची और वैदार प्राम्हीत होवार नितरे सने । कुन्में कांच करी । कान्यनंत्री सन्तृत्वे केन्द्र नास्कृत हो क्यो । कर्महास करे वाते हुए प्रमुक्त और वेदिहेडीय केन्द्र संबंध और भागने और विकासने सने। साथ ही सनकार श्रीपुर्वत और कर्पुरुपी पुष्पार पार्ट राजे ।

कर्मके कालो जो क्लो हुए पुक्रमेका सामित कुरकर कुर्तीनका अर्थुन्ने कारका, कार्युक्तो कक्-'महानको श्रीकृष्ण । जान इस पार्गकारको करावानको से देशिये। युवने मिली तरह भी हतका यक की किया क इस्तार । जन कर्ण अन्ते चेत्रेको कहक दृश्य काका नेरी और देश पर है; इस समय अस्ते स्वयंत्रों कर अन्य वी मैं तीना नहीं संस्कृतत (' क्षेत्रुश्यमें कहा—'कर्ष | क्यारि क्षमा युधिश्वितको बहुत धानक धार दिना है। इस समय उनसे फिल्म्बर और धीरम देवर किर कर्मका का कान्त्र है जु क्यापन जनार्थन वृत्रिक्तिसो निस्त्रोके सन्त्रे आने गई। उत्तरा क्षेत्रय पढ वा कि जनतक सर्वार वर्गतकरो निवेत्रो, तनतक कर्ण पुर करो-करो कुन कर करना। प्राथमधी माराजे अनुसार अर्थुन अर्थने चलक हुए व्यक्ति देशके रिम्मे रामसा मैठे-मैठे पात हिमे। पारते-पारते अनुमे अपनी सेनामें सब ओर हुई इस्ती; वर्ष्यु बड़ी भी अपने महे पर्याच्ये नहीं देशा। तथ ये बडी देशीके साथ भीमसेनके पास चौचका उससे केले—'राज्य कृषिहित **48**(12)

भीगरे सहा-वर्गएक चुचित्रेर कासि कावस्था

कारे गये। कार्यक कार्यमेरे कार्यक होनेके कारण उनके



करितने जाने केवर के की की। कामक है, जिस्से संख्या क्रिकिट हो।

नपूर योगे—नहि हैती बात है से आप प्रोप्त है जनका सम्मान तेने पहले। कर्नड बानोरी आपना कान्य है जानेड कारण समाप्त है है हालांबर्ड और को गर्न है। जन्मी क्या प्रमान है? यह कारनेके दिन्हें साथ प्रीप्त करें बाहते। मैं बाई कहा है सहनोंको रोके प्रीप्त।

कोरने कहा—अर्जुन १ वर्षि में काश कार्यमा हो सञ्जूपको की पढ़ी कोचे कि 'मीनारेट हर गरे' | इस्तरिन्दे भूगी कारण महाराजकी सरका हते।

अर्जुर केले—वेरे चतु संकारक सामने चाड़े हैं, आज इन्हें जाने किना में को चहुति नहीं का सकता।

्येनो क्या—कद्मान। ये अपने पराह्मको वेदारकोचा समय करिया। हुन निक्रिय होका सम्बोध

वीक्सेनकी बात सुनकर अर्थुको श्रीकृत्यारे कहा— 'हुनीकेस । अस में राज्य कुविद्वितका वृद्धित करना कहारा है, जान जीज ही कोई हॉकिने।' उस प्रन्यान् करहके उन्यान देश जान्नेवाले कोईको हॉकिकर बहुत होडा कमा कुविद्वितके करन बहुन गये। किर दोन्टेंन रक्षरे आरक्षर वर्गायको जान्नोंने प्रमास किया और उन्हें समुद्राहर हैशा



में को प्रस्त हुए। उसलार, राज्य पुणिहरने सीकृत्य श्वीर अर्थनका अधिनका किया । का समय वर्धरको वह सम्बद्ध रिया कि कर्ण पारा गया, इससे उन्हें क्यी उसला हूं। और वे हर्पनदगद सामीसे सेले-- देवकोनन्त्र सुन्तात सामा 🛊 । बनक्रम - तुन्द्रशा भी सामत 🛊 ! इस समय तुम होनोको देशका युक्ते बढ़ी अस्तरका 😸 है; क्लोकि कुछ लोगोंने सर्व सकुरता रहकर पहारको कार्यको नार प्रत्य है। 👊 सब प्रकारको संबंधिकाने निरम तक कोरबेका अवश्य का पासुरामतीने अवशिक्षा विकासर को बहान् प्रतिकाली बना दिया था। युवने अस्तर कियन पान करिन का। क विवर्णिक्या महात्वी और संसारका सर्वतेल की वार क्योंपनका हित-सामन करता और इपलोगोको १-११ हेनेके लिये ही तैयार द्वारा चा। हमारे निवर्षके क्रिये से बह कारके समान वा। ऐसे सहकारी कर्मको तुम केनेने बद्धमें का क्रम्य—म्ब् वर्षे अन्तरको तम हाँ। पैरा श्रीपुर्म्य और अर्थुन आप कर्णने मेरे साथ पर्यक्त युद्ध दिल्ला हा। उसने में तेनों कारकारों तथा सामिको सर इस्ता, बोइन्डे कारनेक करावा और मेरे पहले क्यून-से सेन्द्रआंको केरकर कुछे के फराक कर दिया। इस्ता ही नहीं, साने मेरा अगमान करके पुत्रे क्यून-से क्यूनका भी सुनाने। करावा ! जॉक्ट क्या कर्डू, इस समय को में जीवत है—या भीयसेनका इभाव है। पुत्रसे को यह अपनान सहा नहीं क्या। कर्मने कुछे इस्ता कारक और अपनान सहा नहीं क्या। क्याने कुछे इस्ता कारक और अपनान सहा नहीं के अब मेरे जीनेसे क्या साथ ? अब में राज्य लेकर मी क्या कर्मना। क्याने कार्यो मीना, क्या और कुमावानीसे भी पुत्रे के अपनान नहीं किया का आज स्वयुक्त कार हुआ है। इस्तरियो अर्जुन ! मैं तुससे पृथ्वा है कि किस प्रकार सकुरस्य क्यार कुछे कर्मका का किया है है कि कार प्रमाण स्वयुक्त क्या



है नवा तो अस्ता का करनेते हिम्मे मैंने तुन्हात ही समान किया था, इस समान कर्णका तक करते तुमने मेरे उस सरकारो समार करा दिया न ? बहाओं तो सुलकुकारे तुमने किया तक करा ?"

#### अर्जुनकी बातसे कर्णके जीवित रहनेका पता पाकर युधिहिरका उन्हें भिक्तारना तथा युधिहिरका वस करनेके लिये उद्धत हुए अर्जुनको भगवानुद्वारा धर्मका तत्व समझाया जाना

इत्याप नवते है—श्वाराय ! संगीतन एकः पुनिश्वितनी मा बार्च सुरुक्तर अधिरकी और अर्जुन इस अध्यर मोरी—'रावन्! अध्य क्या में संवासकीके क्या पुद्ध कर क्या का, वस स्त्राप अध्यक्तमा कार्योकी वर्ष करतर हुआ स्वारत मेरे सामने आ वसका। मेरा एवं देखके से कार्यो कार्य सेना मेरे साथ पुद्ध करनेके दिल्वे कार्यों से नवी। उस मैं उस रेनाके पाँच सी वीरोको सरकार अध्यक्तकारक सा कहा।



अंक्ष्माच्या अपने तीको जानांचे सुते और जनकर् अक्ष्माच्याचे पेदा देने लगा। वेरे साथ सहते स्वया साले पेढ़े आठ सी आठ वेल जानांच्या नोझा हो हो हो, उसने हे साथी जाग मुद्रापर चलाने; जित्तु पेने अपने स्वयाच्यांने इन सावाचे नष्ट बार अला। तत्त्वसानं आको तांचर की बावां सामा दिखाने बाना गरें। जाने दिखानों होने ताया। किर हो अपने सामछ सावानं स्वयान विकायों होने ताया। किर हो अपने सामछ सावानं स्वयान विकायों होने ताया। किर हो अपने सामछ सावानं स्वयान की सामा असको दूसने प्रधान-अन्या को हा भी सूनसे लावाना हो दिसानी यहे। तहन्त्वर, बोटलांकाचे प्रधान रविच्यांको साम लेकर नहीं तेनीके सामा मेरी और क्षाता की अन्देर कैरिक्टोका के संदार कर कुरत; कर कारोंको वहाँ ही होराकर आपका रहाँन करनेके रिप्ते नाग्ये वर्ष कर आका। की सुन कि करी बढ़ने आपको काल कारत कर किया है। कर्ण बढ़ा कर है, उसके सामनेते कारका पहुँ पाल कारा क्युपित नहीं है। मैं सन्तुका है, का पानव पुत्रहें हर आनेवार ही वा र पुत्रवें अपने सापने है की कर्ना अपने अपने अकते देखा है। पाहरतेने कोई भी हेला भीर नहीं है, भी अला कर्मका केन सब सके। व्याप्यम । सामान्य और बहुत्युक्त मेरे पहिलोकी एक्षा करें । राज्यात पुजारम् तथा उत्तरीका—वे मेरे पृष्टानागर्की पक्रमें को। किर में इस संकारने नदारवी कानेक साथ बुद्ध कर्मण्य । आवको भी प्रका हो से आपूर्व और देशिये, क्र क्षेत्री विक अवल एक-कृतिको बीरनेका अवल करते है। यदि में आप मान्त्रांक कार्यक्षे आहे वस्त्रावस्त्री-समित न पर अने से अदिक सरके समझ पारत न करनेक्ट्रवेको को कड़का गाँउ फिल्मी है, यह जुले पी विके । जब में जाको पहले वानेके देखे जाता पाता है। अस्तिकोर केरिको, विकास राज्ये मेरी विकास हो। राज्य | में पुराकृत कर्ण, जानते होता करत समूर्ण सहजोदन

कृष्यीर करने करनेकी चोटने बहुत बहु या यो थे, कर्मुन्यं मुक्तरे का रुप्तेने कर्मके जीवत स्थापन समस्तर कुम के उन्हें कहा क्षेत्र हुआ। वे कम्हको इस उत्पन्न केले—'का । तुकारी केवा कहाओं रे तिरस्तात होकर रवासे कार नहीं है और हुए का करोको नहीं पहर सके हो काकीत क्रेकर बीलको अनेतरे ही क्रोड़ वहाँ धान आये, च्य करने सूत्र केंद्र निकास ! सेरमाता करतेले वर्धने करा लेकर का सका कार नहीं किया। क्रियनमें हुओ का सबी अनिक को वो कि 'मैं क्येनरे हैं कर्मको यह इस्ट्रेग्ड', बिल को बीते-थी है होक्कर तुम वहाँ वैसे करे आये ? अर्जुन । जन कुन जन्म लेकर सक्त दिनके ही हुए थे, उस रूप समाज्ञातानीने कुलीचे कहा क—'क्षा वासक इनके समान पराक्रमी होगा। समझ इत्यानेया विकास क्षेत्र । वह साव्यवस्थे सम्पूर्ण देशकारों तथा सब अभिनोधो बीत रेजा। राजासंबे बीम का भर, करियू, केकन तक कोस्त वीरोक्ष्य संदार करेगा। संसारमें इसके व्यक्त कोई भी बद्धार नहीं होता। कोई भी प्राणी कथी



बहारों हते प्रतास भई बार अवेद्या । यह सम्पूर्ण विद्यालीका प्राता तथा निलेखिन होतर। इन्हरू भागों ही यह सलस प्राणिकोको अपने अधीन धार रेग्य । पायानके प्रमान प्रसाधी कारित होगी और वस्तुके समान केन । जा निकासमें केंच और क्षणारी पृथ्वीके सम्बन होता । कुर्वके समान केनावी, कुलेको सवाब क्यो, इन्हों समान पासक्यी और पनकान् विष्णुके समान बरम्बान् होना । कुनी । वैसे अदिनिके नमेरी प्रकृता विकृते क्या किया वा, उसी प्रकार कुवार वा महारता पुत्र भी तुम्हारे गर्भले जनत हुआ है। जनने पहनी क्रिक्य तथा शतुपक्षका संदार कानेमें हरवारे क्वारि होगी। इससे 🔮 वंश्वयस्थानका विकास होया।' इस जनम इतभूष्ट्रपर्वतंत्रे अस्य व्या आवारकायी र्ह्ना, विसे अनेको सर्वाक्रवोंने सुरा। बिहु का साथ औं हो। न्धिय है सब केता भी हुठ केलने लगे हैं। सदा ही दुक्तरी जानेस करनेवाले बड़े-बड़े ऋषियोंके युक्तसे भी मैंने ऐसी करें सुनी है, इस्तेरिको पुढ्रो पुर्वोधनको कारिके निकाम कथी भी विश्वास नहीं हुआ तथा आकारक मुझे इस कारका भी पत नहीं का कि कुर करनेके जनसे इस्ते हो । ऐसी परिविधाने अक **पै क्या कर समाता है ? आज कौरवों, अपने विमो तथा अन्य** सम्पूर्ण बोद्धाओंके सामने मुझे स्वयुक्तके कार्ने हेना महि, इसरिजे मेरे जीवनको विकार है। पार्थ र नदि तुकार पुत

महत्त्वी अधिकम् इत्य व्यक्ति होता से वह समुख्ये सामूर्व न्यूनर्वक्रवेक्य नाह कर करना । अस्के रहते युक्ते मुझे हेला अवसान कामी नहीं उठाना पहला। बदि कटोहरूक अधिक केन्द्र के भी मुझे मुद्दारे नियुक्त नहीं होना पहला। किंदू मैं अपने अच्यानकं रिजे बचा कहे, जान चहता है, मेरे पूर्वज्ञाने कर को है जात है, तभी से दुवसा करने तुन्हें हिनकेके सकान भी न निजवत की साथ यह व्यवहार किया, के किसी क्यूड़िन इसे असमर्थ मनुष्यके साथ मिला जाता है। को पूजर आयरिने यहे हरूके अल्पे बुक्ता है, यहे सना क्यू और सुब्रू ई—ऐसा प्रचीन मुन्तिका क्रथन है तथा सामुक्तांने भी इस वर्गका सदा है धारान नित्या है। यरेतु कुर्वर नहीं किया । सुन्ती कहा विकासनीया करका हुआ स्थ है, बिहानेट बूरेफो बाजी जानाम नहीं होती तथा निपानी अकार कार विरायका है। यह नहीं, तुक्री कारी मान्योव-देश बहुत है तथा चनवाद सीकृत्य हुन्यात सा इंग्डिं है। इन सबके होते हुए भी तुन मार्गने सरका थाए केले अले ? चर्च कुर्ज़ अला कर्मक मुख्यमा कार्यकी श्रीक नहीं रहते से जो राज तुनने अधा-मरमें बड़ा हो औ क्री अन्त्रम पान्त्रीय प्रमुख है से । निवास है सुन्हारे इसे क्रम्बीवर्धे । विकार है तुमारी मुनाजीके बराकमकी तथा निकार है पुरुष्टे इस कर्मकर बार्गोको ।। आस्कि हिसे हुई इस रच और व्यवस्था से विकार है ।"

वृतिहारके ऐस्त कहनेवर अव्युक्ति वहा स्त्रेष हुना । इन्होंने वर्गरावाधी वार करनेवरी हकामी हमाने उससार उस सी । अन्यान अवृत्या को सबके हमानी वार नाननेवासे ही उसरे, इन्होंने अर्जुनका खोच देसने ही उनकी चेहा ताई सी और कहा—'अर्जुन ! वह करना हो—ऐसा हो नहीं रिकारी देसा । में किसी ऐसे मनुष्यांचे की नहीं देसरा, जो हमारा बाल हो । किस कहर करों करना काले हो ? कुसरा सबके हो नहीं समार हो नहीं ? मैं मुक्ता है, कराओ, हस समय का करनेका दिवार है ?'

क्षीकृत्यको सुन्नेनर स्रोत्यमें गरे हुए सर्चुनने मृतिहिस्ती और देखते हुए सहा—'नोकिय ! मैंने नुप्रकारों यह प्रतिक्र की है कि 'जो कोई मुक्तरें ऐसा कह देना कि दूप अपना प्राचीन दुसरेको है करके, अस्त्रा में हिए कार देना में हमा नहीं अस्त्रों स्थानने ही मुक्तरे ऐसी नात कही है, जार में हमा नहीं का स्थाना । साथ इस्त्रा को करके अपनी प्रतिक्र पूरी करोगा। इस्तिनिने मैंने सरकार कार्यों है।



इस अवसरपर आयं क्या करना जीवत सम्बत्ती है ? आर है इस कान्युरे पून और चीववाओ व्यवते हैं; आर केसे अहा है बैसा है कर्मना (\*

us gran alquest say—'faget \$ | faget है।।' वित्र के अर्जुनने चोले—यार्ज । आप को काहर हुआ कि तुल्ले कार्य कुछ पुरुलेको रोज वहीं को है, अर्थ में तुर्दे वेर्लंक स्रोप सर पता। क्यूका। यो वर्णक निमानको जानता है, जा कभी देशा भई कर सकता। इस प्रमण नहीं हुक्त्रे जैसा कर्तन विस्ता है, उससे एन्झर्ड क्रांभीत्रत तथा अप्रवास पाट पासा है। यो भी करो घोला काम करता है तक करने केला नहीं करता, वह करूक शाय है। को सर्व धर्मका अवस्था करते विकासन क्रमाना मिल्टे पानेकर करों पर्नका क्रमोता केरे हैं: वर्नक संक्षेप और विकासको जानोपाले का मुख्याकेक हुए विकास कर निर्मय है 7 हुने हुन भूड़ी जाती । इस निर्मयको नहीं जानोबारत प्रमुख कर्तना और सामर्गकांक निवासने तुषारी ही तरह जरमर्ज एवं मोहित हो जाता है। वस करवा करीये और क्या नहीं ? इसे कर सेना काय की है। इसका ज्ञान होता है प्रत्यको और जनकर सुन्ने परा ही नहीं है। अज्ञानक अवनेको कारिया गानकर को तुन करियो रहा करने को है, असे जीवीसका कर है—या का रुपारे-केने पार्थिककी सम्बागे नहीं अवसे। Mis | वेर विकारसे अभियोंकी हैंसा न करना है सबसे कहा को है।

विम्मीकी अवध्यक्षक रिल्ने क्षुद्र बोलक को से बोल है, परंतु अस्पर्धे क्रिश न होने हैं। मरण,तुन्हारे-केस होत पुरुष अस्प क्रमान पर्वादे समान अपने पर्वत गई एवं ब्रह्माती क्याच्ये मारनेक मिन्ने कैसे वैचार क्रेमा ? व्यवस ! वो पहर न करण हो, प्रमुख न रक्ता हो, रूपने दिल्ला होकर परण क का है, प्रत्यमें अना है, हम मोडमर कह है असम कारण्यान हो, होने पहुलका का कावा केंद्र पुरुष अवहर न्हीं राज्याचे ! कुमारे बाहे महाने प्राप: अवर्षक सुन्धी करों है। हुमा कार्यक कार्यक्रक व्यव पहले प्रतिक्र कर की की, इत्योगे पुर्वकार कर्मपुर कार्य करनेके देवर के गये है। कर्ष । बातके से बात, वर्गंद्र कुर्वेग क्षे सूत्रव नरम्पर अची रहा दिवस किये हैं किये असे योह कारण कर करोगों की कैंद्र महे ? पाकुरका ! अब मैं हुने बनेक कुछ बन का कु है। विस्तव क्रीय, सर्क वृत्रिक्षेत्र, विकृतको अनवास पाहरीकाने कुन्तो हेती सुन्दी पानीह निया बन्नावा उन्हेंक का कवाते हैं, कान्ये में होना-दोना का का है , सुने । उस्त केलन बहुत अका बाल है, सारहे कारत कुछ भी भी है, फिर भी सारपारीको है सभी-कारी कार्यक स्थापना बीच-बीच क्रम होना करिन है नाम है। देखे सामग्रा अनुहार केने होता है ? बही सामग्रा वरिवाप असार् और असारका परिवास तर् होता है, वहाँ 200 में कोरफार असाम केरफा 🗗 क्रीका है। क्रिका-वारणे, वी-सांग्ये स्थय, विसंधि प्रश्लेख संस्ट क्रानेगर, वर्णसम्बद्ध अन्तराम होते समय एका सहस्राच्या कार्याके रिमो अवस्थानका हो से असल बोल है। इस पांच अवसरीयर क्रुट कोलनेकर बाब नहीं होता। क्रुप विस्तीकर रार्थक क्षेत्र का पह हो हो को स्थानेके हिन्हें हुए चेहरू कर्मन है। को असल हो सल और सल हो असल हो अब्ब है। को वहाँ भी साथ ही यह देश है ऐसे स्ट्रापको होग पूर्व रूपाने है। यहने साथ और असरावाद जायते संद्रा निर्मय करके को परिमानने साथ हो करका प्रकार करे। केमार अनुक्रमध्ये इदिले उत्तरकाम सामग्रा पावन गाउँ कारक काविये । को ऐसा कारक है, वही काविशा है । विस्तारी मुद्धि निकास 🗓 च्या प्रमुख अंधे प्रमुख्ये पारनेवाले बरसाब जनक बालको वर्ति अल्ब करोर कर्न करके भी वरि नकर कुन्य अस कर से से क्या आहर्य है ? इसी तक को **ार्-कारकारी हमा तो रसमा है, पर है पूर्व और पैदार; बह** व्यक्तिक संगमन करे हर स्वीतिक मुख्यी मंति की नकारपुर्वेद वर्ष करके भी स्कृत सरका पाने हे जान है क्या अध्यानं है ?"

अर्थुन्ने ब्या—चनकर् । सत्तवः और घोडीकः युनिवाः बागा जुले सुन्याने, निराते में इस निरमको अर्थाः स्वयः सन्दर्भ सुं।

अंक्रमने क्य−नाता । एक ब्यान का, विराद्य कर वा परसदा। यह अपनी की और पुरोधी बीमस्थानों सेले पुनेको गार करता था, कारण च साराधिके स्थीपुर होकर नहीं। एदे पाल-विक तथा अन्य आदिव प्रनेपा पाल-पेका किया करता था। यह अन्ये वर्ती तना रका, सम केरल और विस्तियों निष्यु मूर्व करता कर क्य कि व्य प्रापेको मरका सार्थके सेन्ने करने राजः विद्य ब्रोतिक करनेका को उसे उस दिन मोई कुन नहीं किया। क्रानेने जान्यों होई पानी भीते हुए एक क्रियारी व्यवसाय पहें, को अंबर का, बढ़ करते हैंगकर है जोराना बान रियाला कुछ। या। यद्यी वैशे कारणको ब्यानो व्हाने कार्य की देशा था, से भी उसने को कर करता। अनेके यतो है जानावाने परनेनी नहें हेरे एने। स्थानके है करोबी किये करोबी एक सुन्तर विकास कर सामा, विकास श्राप्ताओं के कार्यक क्षेत्र क्ष्य है साथ। सा मा थे कि जा बच्चो पूर्वकर्त का कार्य अपूर्व peferitus siger uit merbit fielt er um fiett in. प्रतिनित्ते प्रधानीते को संख्य प्रधानिक प्रधानक प्राची कारण बीचोवा अने वार देनेवा निवास किये हुए वा, अवं: को मारकर जान सर्पने पना। इस प्रकार वर्गके सरकार्थ सम्बद्धान बाह्य बाहिन है।

इसी तरह वरितृत्व नावका एक वनामें अव्यान का, को बहुत पहा-तिनक नहीं था। यह गोधारे हुए वरित्रोंक लंगायें बीच का कारत था। उसमें का इस के तिनक था कि 'में सक तात कोर्तृत्व।'इससे का 'स्तानकार्ड 'कारते तिनकार हो गया। एक तिनकी कार्य है, कुछ स्तेन सुटेटोंक जाते क्रियोंके विने अतके असामको कार्यों कार्य कुट गये। सूटे की कार्युर्वक असका कार कार्य को थे। वे सामानकी क्रियोंक पहा असका कोरो—'कारता है कहा नावें कार कुछे है, महि असन कारते हो को कार क्षित्रों है जाते कार कुछे है, महि असन कारते हो को कार क्षित्रों है जाते कर कुछे स्तान कीर्युर्वा स्तान कार्युर्व कार्य है।' कार सम् कुछ स्तान कीर्युर्व इस्तियों है, असन हो से कार्य है।' कार सम् कार्य का निर्वेश कार्युर्वोंने साम स्तेनोंको प्रयोक्त कर कार्य होती विकारती है।

इस प्रकार कालीका कुल्पकोन कारनेके कारण प्रकारको । जन्म हो सन्याने हो ?

भारत कर तथा और यह कराई कराई की किया है g: सर्वाचे सम्बन्धे इस सामी पड़े; क्वेंकि वह कवि सुस्र कारको किल्क्स नहीं बानता था। इसी तथा विसने जाव मारा कर पक्ष है, को नैकर है, करिंद विकानको ठीक-ठीक भी करता, का बहुक की बढ़ पुर्जाते अपने संक्षेत्र नहीं पुरुष के को पहलू राजका-का बद्ध करना पहला है। असे क्षारे रिक्ने संक्षेत्रके वर्गको प्रकार बताची बती है। वितरी है पर्य 'परवार' स्न कांद्रों कांद्रे कर कारोबा प्रमान करते हैं, किंदू बहुत स्तेन देशा करते हैं कि नेटोंसे ही कर्मका कर केवा है। मैंने के बाद करीर सरस्वार्ध महत्त्व की है. बह करना प्राणियोधे स्थानको ही रहिने रकावर की है। कहि कुलाओं ऐसा निक्षण है कि मो अहिरात्या है. und und fie Mermitrale Grande Burble Rode unball im राज्या को नहीं है। वर्ग है उसको बारम करता है और बारम करनेके कारम है जो वर्ग कहते हैं, ज़ारिये से प्राप्तरकारे एक हे — विकाय विकार की मीनवार विकास की कारी हो, बहुई वर्ग है—बहुई क्लिक्जीबर हिन्दुल है। हो रोन क्रम अन्यानपूर्वक का क्षेत्र हेरोची क्रमा रकते हुए क्रातेने प्राप्त-पायम प्राप्त पायो है, बर्ज पनि की प्राप्त क्रमाना जिल्ला बान को बेरब को बारे, जिल्ली बाख कोले की नहीं। किया की कोलना अनिवार्त के अन्द और न बोलनेसे रहेरोंको स्त्रेष्ट क्षेत्रे प्रणे के यहाँ अस्तर योगमा है सेना है। प्रतिको किया कियाने स्थाप सम्बद्धी । को जनना किस्सी कराओर किने अभिन्न कर्मा अस्ता अस्तान्त्रत्ते काल करता है, को कामा पार जो निरस्त—हेरा कांची विक्रमेका कथा है। अन्यविक्रमें, विनाहरें, स्वयंत कुटुनियोंके प्राचनाम् साम क्वीवर क्षेत्रेय म डेवी-बीहाराने स्वी अपन केल पर है से वह असन भी पन पता। with the workers first the security from केलकेने कर वहीं करते । वहाँ स्टेरोके बंगुलमें केल सानेवर हुई। इस्त रहनेले पुरस्तारा निरसा हो, बड़ी हुठ बोलना ही बीचा है, इसीचों जिन्ह कियारे साम सन्दर्भ । पहाँचक पह को इन स्टेरोको कर नहीं केन करिये; क्योंकि करियोको क्षित हुआ कर कुलको कुछ देश है। अतः काकि रिप्पे हुठ केलनेसर भी प्रमुखको प्रकृतक क्षेत्र नहीं समातः। अर्थर । मे इन्हर के ब्यूक है, इस्टेरिये स्वयंते वृद्धि तक वर्गके अन्ता की संक्षेत्रों सुद्धें का कर्मका लक्षण करना है। इसे इक्ने सन्त, अन बकाओ, बच्च इस समय भी पुविश्वतिको

# धगवान् कृष्णका अर्जुनको प्रतिज्ञासङ्ग, प्राप्तवच तथा आत्मधातसे बचाना और युधिष्ठिरको वन जानेसे रोकना

अर्जुन केले--सोकृत्य ! कोई ब्यून वक् विकान, और कृतिकान् यनुष्य जीता अनोत है समाया है तथा विश्वके अनुसार जानात्म करनेसे इसकेन्सेका कार्यक होना सम्बन है, वेदी हो बार जाको सामग्री है। अस्य हम्मवेग्वेके मारा-दिवाके कुछ है, जार हो वरण गति है, इस्केंटरे आको बहुत उत्तम पान करायी है। कीने लोकीने बाह्य कोई की देखे मात नहीं है, जो आरको निर्मित न हो। मानः अध्य ही कार कांको कुर्गकाने तथा दीन-रोफ नामो है। अब मैं राजा बुविद्वितको मारने बोध्य नहीं सम्बद्धात । केरी इस प्रतिकार्क राज्यको आर है सन्दर्भ करके कुछ ऐसे कर कराने, दिवानो प्रत्यक्ष पास्तर भी हो जान और प्रत्यक्ष क्या की प होंने पाने । भगवान् । अस्य को पान्यों हो है कि नेप का पान है ? प्रमुखीरों को कोई भी पह पात है कि 'हुए अपन गाळीन प्रमुख पूरते निरमी मीरपारे में प्राप्ते, जो अन्य-निवा और पराक्रमणे तुल्हो क्लूकर हो (' के में इक्टर, अल्बी कर है हैं। इसी तरह पीलरेक्सो कोई 'एकरक' (निमा ब्रैक्स का अधिका प्रानंतरमा) बाह है, तो में स्कूका औ भार कारी। को राजाने जानके स्थानने ही स्थाने बढ़ा है कि 'तुन जनन



बन्न तुसरेको दे इतके। ऐसी दखने बारे में इसे मार उत्ते से इसके बिना एक क्रमके दिनों भी में इस संस्तरने नहीं क

सर्भुक्ता और नाँद इसका का न करे से दिन प्रतिप्राच्याके करते केले कुछ होकिश ? क्या करे ? गेरी सुदि सुक काम नहीं होती : कुम्म ! इंस्सरके सोमोक्ता समझमें मेरी प्रतिप्राच को सबी हो और राज्य कुनिहरका राज्य नेस मीवन भी सुरक्षित को—देखी ही कोई सरका कैंगिने।"

अंकुलने क्यू-जोरवर ! सुने । एक पुनिहर अब जरे हैं और बहुत दुःसी है। कार्यन अपने तीनो मानोसे इनें संस्थानों अधिक सम्बन्ध का शहर है। इतन हो नहीं, में बन बुद्ध वहीं बार को थे, उस समय भी जाने इसके अपर क्रमंद्रा प्रकृत विकार क्रांतिको कुन्त और देवने मस्कर इन्होंने हुन्हें न स्कूने फेल्ट करा कर के है। में काओ है कि पानी कार्यको वितर्क पुराष्ट्री कर समाते हो; और सर्वक नारे वर्गकर चौरकोको प्रीत ही भीत रिश्य का स्थात है। इसी विकारके प्रयोगे में बारी कह सार्थ हैं; इसरियो हमारा सार करन जीवर को है। अर्थर । तुन्दें अपनी प्रदेशका पासन करका है के जिल जरावते में जीवित रहते हुए जीके समाव हे बार्व को बाला है, हुने। यह उसन हुन्तरे अनुसन होक। प्रमाननीय पुरुष प्रेरताओं कारण सम्बन पाता है, क्याच्या है जावा केविया पूरा माना करा है, जिसे दिन लाको ब्यून बड़ा अवकार हो बाग, इस समय वह पीमे-बी 'कर' सम्बद्धा जान है। हरते, शीमनेतरो, ज्युतन-सम्बद्धाने om अन्य पुत्र पुत्रको एवं कुरबीटोवे सना पुनिश्चिरका एक है सम्बन्ध दिया है। साथ दूर इतका अंतर: अपनार कते। कामै बुविद्वीर पून्य हेनेके कारण 'जार' कहने क्षेत्र है प्रकार इसे 'ह' कह है। मुख्याको 'ह' कह देश अवस क्या कर देगेड़े ही समान नामा कार्य है। निस्तेत हेक्क अवर्ध और अहिए हैं, ऐसे एक सर्वेतन सुनि कार्यी कारी है। अनन पान पाइनेपालोको किना विचारे ही प्राप्ते अनुसार सर्वात करना पाहिले । उस सुविका पान का है—'मुख्यो 'बू' कर देव को किया गरे ही बार क्रमण है।' अवस्थि केल मेरे बताबा, उसीके अनुसार हुए कांशको हिन्ने 'ह्' कृतका प्रयोग करो । तुक्तरे पुरस्ते अपने रिको 'त' का प्रचेन सुनकर वर्गरान स्ते अवन का है सन्दर्भे । इसके कार तुन इनके करनोर्ने उनका बरुंद्र सामान रेज और अन्ये क्यों हां अनुनिव काले दिने क्षा गाँव सेना ! कुद्दारे पाई रामा चुनिहिर सम्बद्धात है, वे बनेका समात करके भी कुरूप स्रोप नहीं मारेंगे ३ इस प्रकार तुन विच्यान्त्रका और ध्रमुकको जन्मे सूरकर प्रसारतपूर्वक सुरस्ता कर्मका का करना ।

अपने सक्षा चनवार् औकृष्णका व्या क्वन सुनवत अर्जुनने उसकी वर्ध प्रसंसा की. कित वे इट्यूबंध वर्गयको प्रति ऐसे बादुवकन काले तनी, वैसे व्याने कभी नहीं को है। वे कोले—'सु चुन दा, न कोल, सु को चुन ही स्कृतीर



गोगका एवं प्रदेश हुं। जा वैदा है, दू वर्ण क्रव्यून हैगा? हाँ, गीमसेनको मेरी निष्ण करनेका स्थित्वार है: स्थापित ने समझ संसारके अनुका परिश्वे काम का दो है। सनुशोको पीक्ष पहुँका रहे है। सर्वा्य प्रत्यीरों. अनेको एकाओं, एकियों, पुरस्कारों अन्य इकारों इन्वियोंको मीरके पांड स्थापकर स्थापकेंगों और पर्वतीय केन्द्राओंको इस साह यह कर रहे हैं, पीसे सिंह प्रयोगकों। ह स्थाप करोर क्यानोंके पांचुकते अब युद्धे व चार, मेरे कोनको निरु य कहा।

अर्थुन वर्षभीत थे, ये वृक्षिक्षित्यों ऐसी कटोर करों सुनाकर सहग जास हो गये। या जानकर कि 'सुक्ते कोई सहग बड़ा पाप कर नका' उनके किलने वहा कोई हुआ। बारेशन उद्याधार स्थिति हुए अर्थेने विक्ते कारकर उटा सी। या देखकर सीकृतको कहा—'अर्थुन ! यह उचा ? सुन किन क्यों तरकार उटा यो हो ? मुझे क्यान कडाईन्य।'

पुरुषेत्रमके देख कहारेश अर्जुन कुन्ही होका बेले-

'क्कान् | वैने किहमें आकर पहाँका सरमानका महत्त् कर इस्तृत ।' अर्जुनको करा सुनकर परावान्ते कर इस्तृत ।' अर्जुनको करा सुनकर परावान्ते कहा—'पार्थ ! रामा कृषिहिसको 'हु' मात्र सहकर हुन इसने कोर दुःसको करो हुन नवे ? उस । इसीके हिन्छे अस्त्रकार करना कहते हो ? अर्जुन । हेस पुरानीने करी ऐसा करान नहीं किसा है। वर्तका सामान पुरान है और अस्त्रका सरकार करिन । सहानिकोके दिन्ने नो और भी कृषिकार है। वहीं को कर्तका है, उसे में कराता है, सुनोन वर्तका कर करने निका करकारी प्राप्ति होती है, उससे भी क्रमा अस्त्र हो है के अपने कृष्णका कराना करते, ऐसा करने कहे स्वयूत्त करवार कि पुणी अस्त्रे ही हाथों अस्त्रों कहे स्वयूत्त करवार कि पुणी अस्त्रे ही हाथों अस्त्रों कह सिका।'

क पुरस्क अर्थुनरे सेक्स्प्रस्ट बालेका अधिकाल विकार और 'प्रकार' व्याप्तर सनुस्तरे वनते हुए हे platen unt-mur! aus ift gebind glieb-विकास के व्यवस्था क्षेत्रका के क्षेत्रका स्थान कोई भी के समान बार्का गाँ है मेरी बीरकाया उन्होंने भी अनुस्तेत्व विका है। यह कई से इस बरावर बनल्को एक हो श्रामने me me guffen i fib meidib em afte mmeit flig fil मुक्त-बैक्त और बाँद पुत्रमें वर्षण साथ हो उसे परेड़ों भी शही की। समाज । ३०५, रहिन्य, पूर्व और पश्चिम-३० सप्टै विकासीके राजनीका की लेकर विकाद है।" 'कुम्म । सार्व इन क्षेत्री विकासकारी प्रकार बैठकर सुरक्ष कार्रास कर् करनेके विको प्रीप की बाद है। अवक शास वृद्धिय अवस्थ हो, मैं कर्मको अस्त्रे बाजोसे यह का क्रमूना ।' सो पहासर कर्जुन पुरः शृषिक्षितमे श्रोले— जान या हो कार्यकी पाता पुर्वान क्षेत्री का काम कुली क्षेत्रपुरते क्षेत्र के पायती। मै रक्षा काइटा है, अन्यने कान्येक़े कार्यको भारे किया जान कार्य जी आहेर ।'

व्या व्यापार आर्थेको हांस अपने इकियार और वर्ष नीचे इस विचे, सरकार व्यापों रहा है, किए समित होकर अहींने पुनिश्चित्ते पंत्रोंने दिन हुकामा और हाथ ओड़कर कहा— 'सहरान ? मैंने जो पुना कहा है, उसे दाना करियों और गुजरा अस्त्र हो कहाने। मैं उसकारे असाम करता हैं। अस मैं तथ सकते असा करके सीमसंग्रको पुन्तो पुन्तो और सुरुपुत कर्मका क्या करनेके दिनों जा रहा है। राजन् ! मेरा कीवन अस्त्रका दिन करनेके दिनों का रहा है। राजन् ! मेरा कीवन अस्त्रका दिन करनेके दिनों कर सोचा स्पर्ध किया और किर से राजपूरियों ओर कानेको स्वाह हो गते। क्षरंशक कुचितिर अर्थुक्के कठोर क्यानेको सुनकर काले प्रतंत्रपर सहो हो को, इस प्रतय उनका किए बहुत बुन्ती हो गवा था। वे बहुत सले—'कर्य ! मैंने अर्थु कड़व



भाँ किसे हैं, इस्तिने कुसलेगोंगर जोर हंगार आ पह है। मेरी बुदि गारी गयी है, में आसली और इस्तेश्व है, इस्तिने आय कामें काम काम है। मेरे न खनेगर तुम सुससे छुटा। खाला चीमसेंग ही राजा होनेके बोला है, में तो समेगी और कामर है। आप मुहाये तुम्हारी ने कसोर कामें सहन करनेगर साम नहीं है। इस्ता अपन्यत हो कामेगर मेरे बीजिन रहनेगरे भी कोई अस्तरकाता नहीं है।'—बह न्यक्रम चे स्कार पर्यगरी कृद को और कामें वानेकी व्यक्त हो गर्ने ।

व्या देश प्रश्नात् अनुस्ताते अन्ते प्रश्नात प्रदेश व्यान—'राज्य ! अस्त्राते तो सर्वारत्य अर्थुनको प्रद अस्त्रा अस्त्रात है है के को कोई उन्हें गावकीय प्रश्न प्रसोको हैनेके सिने कहा हैगा, यह अस्त्रात क्या होगा। किर भी अस्त्रात उन्हें केली कात कहा है। इससे अर्थुको अस्त्रात किया है। पुरस्तात्वा अपवान है अस्त्रात वहा वहास्त्रात है। इससीको की गाव अर्थुको को सर्वार्थ प्रश्नाको सृष्टिये रहत्वात अस्त्रात की गाव अर्थुको को सर्वार्थ प्रश्नाको सृष्टिये रहत्वात अस्त्रात की गाव अर्थुको को अस्त्रात क्षाव्या अस्त्र है। वेशं भी अवराव है, इसके सिन्हे आर्थ्य प्रश्नात करे है। वेशं भागावी चीना चीन्त्रात है। आप मुझे भी हामा कर है। आप वहा पृथ्वी चार्च कार्यका है, अस्त्र पुत्रकृत्वाते परा हुआ ही सान अस्त्रात करके व्याना है, अस्त्र पुत्रकृत्वाते परा हुआ ही सान अस्त्रात करके व्याना है, अस्त्र पुत्रकृत्वाते परा हुआ ही सान

व्यवस्थाने वह कह सुनकर सुनिद्धियों सहस्स कहें अपने व्यवस्थान कराव और इस्त बोइकर वहा— 'नेकिया । अपने की कुछ कहते हैं, जिल्लुस्त कीया है, राज्युक ही मुक्तों वह पूरा हो गयी है। व्यवस्थ ! आपने वह कार करावा मुक्तार कही कृपन की, सुन्तेने बचा तिया । अस्य अध्यो इस्त्योगीकी पर्ववस्त विपत्तिके दक्षा की । आस-केने व्यवस्था व्यवस्त्र है इस केने संबद्धके प्रवासक समुद्दित वह हो गये। इस्त्योग अध्यक्षक भोतिन हो को थे, जायबी ही कृपित्स केवाल्य स्वस्त्र है अपने संविधीतहित कोवनसम्बद्धियान हुए हैं। अपनुत । इस अध्यत्ने ही सन्ताब है।'

## अर्जुनका युधिष्ठिरसे क्षमा माँगना, युधिष्ठिरका अर्जुनको आशीर्वाद देना, अर्जुनकी रणयात्रा और भगवान् कृष्णद्वारा अर्जुनके पराक्रमका वर्णन

सहाय करते हैं—पहाराज ! धर्मराजके पुरासे का प्रेमपुक्त क्यान सुम्बार प्रमान् हरिकृत्वाने अर्थुनको की कामना । इतर अर्थुनने धरावान्के कामनपुरास को चुकिशिसका प्रतिवाद किया था, उससे 'कोई क्या का क्या' हेस्स समझकर में पुन: क्या त्यास हो गये थे। तब प्रमानन् तीकृत्वाने हैस्से-हैसने कहा—'अर्थुन । क्या कृष्णिहरको 'ह्र' व्या देनेपात्रसे जब तुम इस तता श्रोधाने द्वा पत्ने हो तो राजाता जब कर देनेपर सुद्धारी क्या दशा होती ? सम्बद्धा वर्गका करून व्याप्त व्याप्त करिन है, विनकी मुद्धि जद है, उनके दिखे को जानक जानका और भी मुस्कित्य है। तुम वर्गभीय होनेके कारण जाने को वर्गका वय करके दिख्य ही चोर अन्यवारणे पहले, वर्गकर नसकरें गिरते। जब मेरी राज व्या है कि तुम



कुरबोड़ युनिहित्यों है जल्ब करे, जब है जलन है भागे से इसलेग सीम है सुरकुर कर्नने स्कृतेये रिले करें।'

तम अर्थुन बहुत स्थित होन्यर एकके केलकेरें कह गये और केले 'एकन् | वर्णनारको कार्यको जनमंत्र होन्यर की के कुछ का इस्ता है, जो हमा केलिये और मुस्तार करता होड़वे (' वर्णायने देखा कर्युन वैधेवर को हुए से मूं हैं, तो अनूनि अपने कारे पाएंको उठावार को सेके साथ गरे स्थाना और स्वर्थ भी पुत-मुख्यार केने स्थे । होनी मार्च बड़ी देखाना सेने मो, किम होनोब्ध अब्ब मूळ-बूलपेके प्रति सुन्त हो क्या, होनों ही तेन और प्रस्तानसरे महामधी।

उद्गाना, वृत्रिविदने हुन: अर्थुनको कई जेनसे को स्थान्य और उनका मसाक प्रैंगकर अस्त्रण प्रसासको साथ कहा—'न्युक्तको । ये सुदूरों पूर्ण जनको साथ साथ सा जा, बिद्ध कारीने समझा सैनिकोंके साथने पेश कारण, रक्षको साथा, बनुष, कारण, कर्षक और खेड़े न्यू कर करे। साओ उस कर्मको यह करके में दुन्सों क्षेत्रित से का है, अस जीना उनका नहीं स्थाना। करि अन्य कुट्टमें उस मीरको नहीं सार करनेनो से निक्षण ही में अन्यो अन्योको स्वय हैया।



करके हैला सहनेतर सर्जुनने सक्य—'राजप्। मैं न्युप्त-स्ववंध रूपा कीमानेत्रयी सीनंत्र सामा हूँ और अपने इतिकारीची कृतर सामग्री कृत्य करके स्वता हूँ कि आप का भी मैं कामंत्री चार सर्जुना चा कर्ष है सरकार साम्ब्रुविने कृत्य करिया (' राजाते में नाइकार अर्जुन वीकृत्याने करेने—'नाव्या ! जान कृत्यों मैं अस्तान कर्माची वार्तना; आराजी कृत्योंक करनो है जा दूरामान्या कर्मा

वह बुनकर श्रीकृष्ण कोले— अर्जून | दूप प्रकृतिकी कर्मका क्या करनेने सर्ग समर्थ हैं। मेरी के स्वा है वह इक्का क्या है कि पुर किसी स्वा कर्मको करते।' अर्जुनसे व्या क्यांकि क्यांकी क्या क्षीक्षित के गये हैं—व्या सुनकर मैं और अर्जुन—केने सारको देशने अर्ज के। सीधाध्यकी व्या है कि साथ न को वह समये हमें विश्वपक्त किसे हो वहें। साथ अर्जुनको काल करके हमें विश्वपक्त दिल्ले आहोग्लंद क्षीक्तां।'

कुष्णिर केरे—रीमा कर्नुत ! आमो, आमो, निर मेरी इस्टोमे कन जानो । तुमने कहने मोन्य और दिवसी ही जल बड़ी है क्या मैंने करके लिये क्रमा भी कर ही । यसक्रप [ मैं तुमें अद्या देश हैं। जाओ, कर्मका जास करें। मा सुरका अर्जुनो हुन: अयो को स्कृति करण स्वाम् रिने और उत्पर सिर रसका उत्यम किया। राज्यो उन्हें बरस्का पुत: क्षणीले स्थापन और उत्तम स्थाप क्षेत्रका कार्य-"कार्या । रुपने केश ब्यून सम्यान किया है, अवः में अर्थीकीर देता है कि सर्वत सुन्तको प्रकृत को और तुनो स्थापन किया सह हो।"

अर्जुनने वज्ञ-स्वारत्य । विस्तते आवको सानीको पैतित किया है, अन सर्गयो आव अपने वादीका प्रकार करा निरोध्य । जान को मारकर ही आवका दर्जन सामिता । इस सबी प्रतिदानके साथ है आवको सर्ग्येका प्रकृति बाला है।

वर्ष सुरक्तर युविद्यारक क्षित कहा प्रशास हुन्छ । क्युंने अर्युंगरे निरं कहा—'रार्थ । हुन्दे तहा है अक्षम कहा, कूने अर्थु, मरोकाकित कान्यर, कियन उन्त कान्यर आहे हैं। सुकारे निर्म में जो कुछ काहता है, जा तन हुन्दे किसे । अस साओ और बीच है कार्यका नाम करे।'

इस अधार वर्षसम्बद्धी सरस्य बारनेके अन्यार आईओ क्षीपुरुको बहा—'गोरिय । अस वैश एव वैवार हो। असमें जाम कोड़े कोने माने और सह प्रकारक अक-कवा क्षताबार एक दिने काचै जिए कुल्कुनका कर करनेके विन्ते अर्थ प्रीत है करत करें।' अर्थुक्त हैल क्यूक्त बीकुमाने क्षणाने कहा—'तुन पानेके क्रमानुसार साथै रिवारी करो (" सरावान्सी असूब को है कुरूको १६को रूप सामीरवीसे सुराजित वालो आने बोदे जेत हिये और वरे अर्थुनके करा सामा कहा का किया। अर्थुको देखा, बुरक रच जोतकर है आया, हो उन्होंने वर्गराको उद्या सी और प्रश्नानोक्षय स्वयंत्रकात्र कार्यकर के अपने महरूपन रक्षपर विश्वचनन हुन्। इस समय वर्गछत मुनिश्चित्तरे अर्थुकारे जातीर्वाद हिने। प्रत्यक्षात् अर्थुक कार्यके रक्षकी जोर करू दिने । कुछ दूर जानेवर करके करने बड़ी किया हुई। वे सोबने समे—'मैंने बार्यको बारनेकी प्रतिका को नहीं है, जिल्हा वह किस तक पूर्ण होगी?" मर्चुनको विभिन्न हेल अध्यान, मन्त्रकृतको सङ्ग — 'गानक्षित्रवारी अर्जुन । कुन्ने अपने कनुत्रहे किन-वित मीरोपर विकास पानी है, उन्हें जीतनेकारण इस संस्करने तुष्यारे मिला कोई पनुष्य नहीं है। तो हुपूले-कैरे बीर नहीं हैं, अन्येंसे कौन-सा ऐस्त चुका है, को होज, चीजा, भगवत, अवनीके राजकुतार जिल् अनुविद, कालोकराज

कृतिका, सुराषु क्या अन्युक्तकुथ्य प्राप्तम करके कुलाको



च क्रमम मा ? हुमारे का दिलाक है, दुवरे कुती है, मार है, पुरुष साथ हार्च प्रशास की होती, हाई अक-कार्यक पूर्व अन्य है। स्थानको सेको अर्थर नियमेको काम करून है। निकास मान्ते सम्ब तुक्ता निय एका पान है। हुए बाहे से स्थानें और वेक्कान्त्रेत्रकेत राज्यां करकर कन्त्रका गाह कर सकते के ? इस कुल्बारन तुको समान फेळ है ही नहीं। कारतीने प्रकारी वृद्धि करनेके प्रकृत का बहुत् सामीन क्युकर्क की रकता की की, निकार कुछ कुछ करते हो, इस्तीको भूजारी करावरी करनेकरण कोई नहीं है। से बी हुन्हरे देख्ये देखे एक बता बता देख अवस्थ्य है। हुन कर्मको अन्तेने क्रीत रूप्याचार उत्तवी सम्बोतन व करन । मैं से नक़रबी कर्मको कुछारे सबाव का दूसरो भी नक्षा सन्तकः 🐧 इस्मीने पूरा प्रवास करके दुन्हे उसका क्य करन वाहिने । वह अधिके समान रेजस्वी और बायुक्ते समान केवलान् है, क्रोब झेनेधर कारको समान हो जाता है। अस्के प्ररास्त्री यहन सिहके समान 🖢 व्या बहुत बसराम् है। कारको देखाई आठ सीर<sup>1</sup>(एक स्त्रे अक्सठ अंगुल) है। मुक्तरे को-को और सती कीई है। आको बीतक

महर महिन है। यह महान् पूरकीर और अभिनानी है। जाने मोद्धाश्मेष सभी गुण है। यह अपने दिन मौरानोची अभव हेम्बारण और माम्बारित हाई है। रहानेकार है। येत के हैस्स काश्रम है कि दिन्दी हुन्हीं को भर सम्बद्ध है। बीर मिन्नोचे रिन्ने असका पारण हैसी परिर हैं। इसलिने असन है का हुरस्थ, हुए और पानी मार्नच्छे मारबार अनन मनेरस पूर्ण मारो।

1,000

'अर्जुन । मैं तुम्बारे जब वरणानको पानक है, विकास मारण करना नेवल और असूरोके रिन्वे की कठिन है। वैके सिंह मानाने प्रजीको चर काला है, उसे प्रकार हुन की अपने बार और पराधानों शुरमीर क्ष्मीक संहार करे-प्रश्नेक दिल्ले में जुन्हें आहार देखा है। कुछ प्रमुखनेके देखने हुन्हेंने हे, हुन्हरे हे जानके कुछर वे प्रकार और प्रकार रहते को हुए है। हुन्हते क्षण सुरक्षिक हुए इस सम्बद्ध, स्वकृतर, une, were nur üfligefre elich meine menber स्थार कर काम है। हुन्तरे प्रत्यूकनो बुद्ध करनेकारे पांच्या-महारोजनीके रिल्स दूरच करेन है, को संस्थानी कौरवाँको परामा कर करे। इन से देखा, असूर और बनुष्योत्तरीत तीनों सोब्योच्यो पुरूषे चीत सब्बो हो, हिस क्यां राज्येनावर्धी हो जिलाहा ही क्या है ? कोई प्रचले सरावर भी परावानी क्यों न हो, हन्हरे हैंग्या और एका जनस्कतो भीत सकता का? अर्थादिको केनके सकते एक प्रश्नो क्षाची चीक्षे पैर म क्षात्रेकारे क्षेत्र, क्षेत्र, कृत्यावर्गं, कर्ग, अध्यक्षाच, भूरिकार, कृतकर्ग, जन्मन, क्रम एक कुर्वोचन-वैसे व्यागतिकोत्तर कृत्वे क्रोक्टर कृत्य स्तीत कियम पा सकता 🛊 🤊 कर्मकर पराक्रम दिकानेकाले हुव्या, कार, कहा, हामरिक्शर, हाई, क्रेस, कारर, स्कूमर, सामा, पुरित्य, विराय, परेश्व, वर्जनीय तथा समुद्रों सहस र्मियाले केन्द्र प्रतेको माका कृषेकाची सहकाके रियं जाये हैं, इसे तुमारे निरम कृतव मोई सह भौत स्वकृत ।

स्वी पूर्व श्रांक न होते तो स्कूबनारने साई हुई कौरवोसी विकास सेन्यर कीन कर्मा का सकता का? कुमरी है सहस्थासे पाकामधाने महे वर्गाम के, उन्होंने केंद्रे, मार्गी, पाकास, मान्य, क्या तथा केक्स्मोदीय कीनेको स्वामी आकारित करके नार हत्या का। वे जब एक कर कुमरी यूट प्रकारी में हतारों रिक्योका समस्य कर कुमरी यूट प्रकारी में हतारों रिक्योका समस्य कर कुमरी थे। उनके हता स्वामी प्रमुखी और हरियमेका संहार हुमर। इस दिनोंक कुकी सुक्ती क्या-री तेनका विकास कर्तक उन्होंने विकाने 🕸 रख सूने कर दिये । संवासने परवान् क और विकास समान समान गर्नकर का प्रकट करके बेरे, पर्याप और केवल परिवार संस्तु करने पर स्त्रीरे रवों, केही और इन्विकेश नहीं हुई परवाल-सेराका विकास कर करन । इस उक्तर चीनानी अद्वितीय मीर थे, परंतु इन्हें मी विकासीने हुम्मी संश्रामने स्थान अपने सामोध्य निकास क्याचा । आज ने काल-काव्यापर यहे हुए हैं । पार्ने ! क्यानका का बाले सक्त पुत्रों हुनने बैसा परासम किया क, बैसा हुम्मे लिक कृत्य कीर का सकत है? कारोप क्षित्रको काले हुन्छ सहर्वका प्रकार क्यों है कर में हैजा की स्थानकः क्योंकि तुन्हारे कीते भीरते देख कर होना कोई अध्यक्ति नात की है। नेत के देख निवास है कि बड़े तरा अधिनात्मक द्वार्थन हैं कर कुमार कारण करने का बाद से पह एक है ज़िलों भा से कारण और मेरे विचारने ही नहीं हुन्हों केना प्रकार होता ।

'अर्थुत । मेला समय भीना और होलावार्थ को स्पे, वर्धने कीरवीकी इस पर्धका केनावा वाने सर्वत तुव क्या । इसके उत्पन-क्यान चीवा ग्या है नवे, इसमें मोही, रवी और समिनीका अचल हे नदा। इस समय का सैक पूर्व, कारण और काउनेसे पीत आकारको पति बोईन विकास है की है। इसके प्रमुख बीरोनेने और तक हो जो को, केवल अञ्चलक, कुरावर्ग, वार्ग, क्रांप स्था क्रमानर्ग — वे हो गाँव महत्त्वी बाजी स्व भने हैं, इन प्रतिवेदी करका हम क्यांन हे काले और एक श्रीतीसको होन, कर, सन्तर, करेंद्र, क्येन्स्ट्रे कर तथा अस्तरात और पर्यालकीय समझ पूर्वी अर्थन कर हो। यह अर्थन गुरु ज्ञानमं क्षेत्रका सम्बद्ध करेने करण हुन असे पुर अक्टबर्क कुराही रहते है अक्ट आवर्तक मेरव प्रकृति हैं के क्रमान्त्र सुदे रूप अभी है, परि मताबे क्यूक्रकोंके और सम्बर-बृद्धि होनेसे तुम कुलकर्मको सामने कर में कालेक जो केवन कार्त का गता माहे जा भारत प्रकारों भी स्थापन माना की बच्छे हो न सही. निव्य प्राथमोंके प्रति असम्य नीववानूनो वर्ताय करनेवाले इस कर्ण कर्मको से जान तीसे क्रमोगे गर ही ठाले। यह कुन्तरे विको कुन्यका काम होता । मैं तुन्तें अवता देता 🕏 कर्मका कर करनेये कोई क्षेत्र नहीं है।

'नुनोबनने चीचों पुलेखीत थाता चुन्तीको आसी रातके स्थान को साक्षानकाने करातेची कोत्रिय की तका पुनरवेगी-के साथ को वह बुजा-चेतनेने जन्त बुजा, उन सब

व्यक्तिक पुर करन व्य कुरू वर्ग है वा। हर्ने कर्म प्रक्रों है का विद्यार का कि कर्ष पेने यह करेगा, प्रतिनिधे क्क स्क्रोशमें परकर पूछे भी केंद्र करनेको ईकर हो नक छ । बहरे हुमलेगोंके सहय जो-यो पुरवार्य की है, उन समने इस परास्त्र करोची हो अस्तरात है। विकार कृतिकारेंद्र का निर्देश महार्थियोने निरम्बर को प्रथानुस्थानको कर सी की, उस भवेकर संस्थाने इस कानि है अधिक पुत्री करूप स्थित थी। कर्महार करने कर करेला केन बीच महार्थकोंने, से प्रशासकारों को उसीन थे, धानोबी बीवनके को पत -कार । यह बीरके इस एक को बलेक अन्द्र करावे दे स हुमा, केवार में युद्ध कर्ण और पूर्णकर ही की परकर हैते से । क्राय ही नहीं, इसने की/बोको नही सन्तर्ने हैन्सीको इस प्रवास सहयका सुराने ने-'कुर्ल । कच्छा के या होका सरके प्रेलं नामने यह को है जार हु कुरा की कार का में। आको दू कृत्यकृषी क्यों हुई अतः क्याकुर्ण कार्य अपना बाल सेपाल । अब पाबार हुन्हरे काली जूरि हो : वे मेरे रिक्ट कुछ पर की क्यों सकते । यू क्रातेकी को है और सर्वे भी सनी है।"

'कृत क्या कृत करीने क्यून-से करों क्याँ, को हुन्ये की पूर्णी की इ कृति अस्तरे की कृति पुरानोगोंक साथ अन्यान करों को-वो कर किने हैं अन नामको तथा इसके प्रीक्तनकों भी तुन्तरे काम प्रदू करें। अस्त कुराना कर्ता अस्ते क्रिके प्रदूष्ण पान्तीय क्यून्तरे कृते हुए सर्ववाद क्रांगोंकी कोट नामा हुन्य अस्तार्थ होना क्या मीनको स्थान कर करे। हुन्यूने स्थानकोंने पितित हुन् एक्यानेंग अस्ता क्षेत्र और निम्मानुक होन्यत हाइकार मानते हुन् सर्वाची नामोंने निम्मा हैनें। एका स्थान भी नाम दुन्तरे सेंकड़ी क्यानेंने विक-निम्म हुन् गर्गी और अवले फीट रमको क्षेत्र प्रमान क्षेत्रर पान करे। कार्य ! कीं। हम सुरापुत्र कार्नीड देखते-देखते अपनी प्रतिकार्तिक रित्रे असके पुरुष्के यार आस्त्रे से यह चीन, क्षेत्र और विश्वत्यी करांको कर करे। सुकार पुरुष क्यु कुर्वेकर पुरुष्टे कृत्यते कर्वको न्यस करा देश जान अवने जीवन क्या राज्यों निर्म हे जान। जन पहला है, पश्चमनोत्रीय बीर, प्रीयदेशे पुत, मूल्युत, विकासी, क्रमुक्ते का, क्रानीय, मकुल-स्कृत, सूर्वेश, कलेकर, पुश्चा एक सामहि---ने मानीह पहारे पह गरे है। क्यार चीर आवंबद शुक्तनी चहुता है। यो अपने निर्माद हैं अन्ते अन्ते के प्रश्न न अने इतक उठक तह है है, उन रेक्ट्रों क्यूका केरेको कर्न करतेब केर का है। वे वार्तको अन्यद पहलानार्थे सम्बद्धे किन 🕸 हो है, अब हुन्हें ही चैवा करवर करवा उद्धार करना चाहिने : करनी वक्षेत्री क्रमायकारोते को अन्य प्रधा किया की, करिया अक्ट पर्वतर प्रम जान तथा हुआ है। यह मोर अस अपने नेवले प्रत्यतिक है तुन्दारी रोजाको सब जोरले नेरबार संस्था है का है। यह देखें, और कुछन-सेखाओं मेरी हुए है और अस्तर कोन्से परवर वर्णने स्कृते हुए असे की क्षान्त्रेने संदेश है के हैं। में मुनिहित्सी संगर्ने सुमूर्त रिका और किसी चीरको ऐसा भूति देशता, यो पानीने लोड़ रेगाए क्षाल्यकोर का और असे । इसीओ पुर अवनी प्रतिकोर क्रमुक्तर तेल फिर्म पूर्व पालीले काल कार्नको पालाम क्रम्या नांधी प्राप्त करें । बीत्यर । मैं तम क्रमूत है, एक कृषी कर्मातीम कौरवीको युक्तो और समाने हो, सुरार कोई नहीं। अतः महत्त्वी कर्मको मात्रका क्रूप अपन्य मनोरक कारण करे ।"

### अर्जुनके वीरोखित उद्गार, दोनों पक्षकी सेनाओं में इन्ह्युन्त, सुवेणका वध, धीमसेनका पराक्रम तथा अर्जुनके आनेसे उनकी प्रसन्नता

स्वाप करते हैं—खारान ! सनकान् सेकृतकात सामग सुरकार अर्जुर एक है समये क्रोकरतीय एवं पान अराह है गये। बिर अन्यहा सुनारकार अन्यति क्रमुकती देवता करते हुए अर्जुने क्रेन्डवर्ग क्रमु—'चेकिन्द ! क्रमु अस्य मेरे मान्यी एवं प्रेन्डवर्ग हैं से पेरी विकार निर्देशन है। संसारके पूर्व और प्रविकास निर्माण अन्यति हमार्ग है। सिरायर अर्थ अस्ता है, ज्यादी विकारी क्रम स्मेह है ? सुना ! सार्गकी से बात ही क्रमा है? अन्यती सहायान

जिल्लेकर को मैं अपने कार्य अपने हुए तीयों रहेकोसी पर्यापकार परिवार करा स्वास्त है। कार्य | मैं देश पा है कि कर्ण राजपुरियों निर्मय-स्व विकास है। उस अपनित्त पर्यापकारी और भी मेरी दूरी है, जिसे कार्य प्रकार किया है। विकास है, यह यह संस्था है, यह बार्य पर्यापकार समझ समान और समझक यह पूर्णी करवन दोनी, समझक समझ अपने इस पराची कर्मा करें। असम मेरे गावकी सनुसरे



कृषे हुए काल कर्लाओं जीतके बाद कारीने। कुला । नै आपने सबी करा कर देत हैं, अला करके को करेने कृतीयन अपने राज्य और जीवन-वेनोरी निरास है कारात । वेरे कार्योंने कार्यक दूसने-दूसने हुए देश आग राका कृतीका कारके का कमनोको एराम को, मेन्द्रे अपने असको प्रत्यक्रीय किये बाह्य साथ महिन्सेकी सम्बन्धे पानक्षोची रिन्हा करते हुए कर्तने जैन्दीने में करोर करें कहीं थी, उनके रिन्धे जान को चून बद्धानान होना । जान करोंके को क्षानेपर ब्रास्तकों सभी कुछ क्षा बुग्नेक्सी साम इस तरा क्यापीत होचा चारीने, जैसे मैक्के करे पूर् कृप प्राप्ते हैं। करके पुत्र और निलंकों भी अपन सैनित भव्नी सुने हैंगा। सुल्युकारी और देशका सका क्ष्मीका जान अपने दिन्ते विन्ता करें। सत्तव राज्य कृतकार्थी उनके पुत्र-वीत, क्यी तथा सेवयोसमूत क्याची अंतरे निराह बार देंगा। जान में अंशेरण है स्वीरणे तथा सद्धीयाँको सेन्द्रसीय महसूर अस्ते क्रानेती व्यवस्ते कर असून । मेरे एक इसमें कामकी तक कुलेने कामलोग निक कनुनको रेक्टर है, पैरोने की रच और कवाने विद्या है। मेरे-बेरे महत्त्वेशने बेडाब्टे कोई भी पुरूषे की र्जीत समस्त ।'

परावान्त्रो ऐसा क्यूकर अखितिक कीर अर्जून क्रोकसे सास अधि किसे रकाणुर्विने का प्रमुखे। का समय उनके कार्ये हो संस्तान से—मोग्सोनको संस्टाने कुनून्य और

कर्मके परम्बको बढ़ते अलग कर देना।

प्रश्याः पृक्षा—स्तातः ! मेरे पृष्टे तथा कथान सुद्धानीने कार्यस्ते क्षेत्रकारमंकर संस्थान क्षिक पृत्या का । किर तथ अर्जून कार्टे आ पहुँचे के पृत्रका स्वस्था कैस्स क्षेत्रका ?

क्ष्मणे क्ष्म--एअन् ! जस समय जार्नुन योदे और सार्टानस्त्रीय एवं, जायस्त्रीय स्थितो और योदें, पैठलें एवं संबद्धने प्रश्नुओखो अपने वाल-समूजेंकी मास्से मृत्युके अवीन कर्य सते । सन्ते प्रश्नुकेंक प्रकृते कृतावार्थ और विश्वासी एक-पूर्तरेवे तिन्हें थे । स्ताववित्रने पूर्वोधनयर वाला किया सर, सुरास्त्राच्या अवश्यातारों और पुतासन्त्राच्या विश्वासे साथ युद्ध से एवं था । जानीकारे वालीत पुत

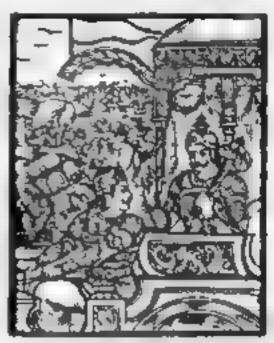


सुनेकार और सहोदने कहानिया साम्याव किया था।
व्यानकार करानीक और कर्णपुत क्योनमें पुक्रमात है
या था। नकुरने कृतकार्यन और वृहसुप्तने सेनास्त्रीत
कर्णक कर्ज़ की थी। पुरक्रमान संस्थानकों सेना लेकर
क्रेस्त्रेनका बाध किया था। यह संज्ञान आसीवाने
कर्णपुत सुनेकची अपने कार्यामा निकास क्याद असमा
क्रिक्त करा निकास। सुनेकक सिर पुक्रीका प्रमु केस कर्ण कर्मुक हो क्या। कार्य क्रिक्त असन असमीवाने को्मेको
वार क्याद और केने कार्यास असमा असमा तथा राज्यों पी
क्रिक्त उहा ही। उत्तरीका भी असने सीको कार्यों तथा
क्यादार हो तस्त्रात क्यादार क्यादार पी मत्त्रार विद्यालयोगं स्थार का प्रकृत कार प्रकृत की पूर् वित्रालयोगं कृतवार्वको स्वर्धन देव उत्तर प्रकृत कारेका वित्रार कोड् दिया। क्रून्यर, अवस्थाको आणे अस्यत कृतवार्वक स्वर्ध अस्त्री कोई वित्रा दिया और अस्त्रा कृतवार्वक स्वरूप वित्रात कुली और मीन्सेट अस्त्री के बालोकी नास्त्री आरके पुलेकी केन्स्यो अस्त्रात केवल केंद्र स्त्रीत

मा क्यांक पुराने बहुन से प्रमुखेश की हर भीनांत अने सर्गाको सेले—'स्वरचे । वृ केहेको हेव क्षेत्रकर पुत्रो कीम कृत्यकृति कुछेने करा के कर, अन्य क समयो में बनारेक ब्युंबाने देश है।' अदह को है हार्यक्रे बोहोची बात हेव की और हुए ही स्व हिन्दे सरकें पुरोची सेनाने का पहुँचा। कोएल-पहुँचा केन्द्रा की जब कोरते हुन्दी, चोहे, एवं और वैद्यानेको क्रम के अन्ये सह अपने । जीवनंत रक्षण कारों जोरहो कारोंकी जीवहर होने रहती और और का सम्बंध करने पालेंगे पाले करे। क्यूंपे क्युओंट होड़े हुए अर्थन प्राप्त हो-हे, बोर-बीर हुस्हे कर करें। सर्वत्य, करें हम को नहें हमी , बेहे, रह और वैका प्राथमिक प्रीकार पुरुषे हेरे राज्य । प्रीकारक कारोपी जाते राजशोध अब निर्मण है के थे, से बी कार्ने कारर पात ओसी साथ का बीच । का चीची अवस प्रमाण केन अबाद निरम्त, निर्देश कर केन्द्र न प्रनेत । महत्त्व भीतके क्रय चल होते हाँ सरकी तेन कार्यत हो स्की भाग करों । यह देश कीन प्रतार होतार कुछ जाने प्रतारिको बोरो--'पून ! ये को सम्मानीतरीत पहुन-से रच हुए और बाक़ों बारे अब रहे हैं में अपने हैं पर बाहतीके 7 प्राच्यों पहलान कर तेना। यह करते साम को अन्ते-परावेक प्राप्त नहीं पहला। बच्ची देशा पाने कि अपनी ही केनाने बागोंसे आकृतिक कर कहे। विकोध । एक पुनिहर कारतेके अहारते बहुत काराने हुए हैं : इसर, अर्थुत कर्ने देखने गर्ने ने, स्ते अपीतक नहीं और । पता नहीं, एका अपाय मीरित है क की ? अर्थुकर की सलकर की वितर। इसमें पूर्व बड़ा सेट हे पर है के भी में इस्कोबी अवस सेनावर संकार कार्यन्त । हु की रक्तक एके हुए सबी सरकारोब्दी सांच बार हो, जब इनमें बिहरो क्रम कर्यों क्र मने हैं। विका-विका सर्वादे क्या को है और उनकी संकार विकासी है ? यह साम सम्बद्धार बाहा (

निर्माणी क्या—मेरवार ! अब्द क्याने पास साथ प्रवार मार्गाण है, बार-वर क्यार बुद और पास है, वे प्रवार अव्यक्त को है तथा चीन क्यार अहर है। अब्दे क्याने अव्यक्ति व्यक्ती का गर्ने हैं कि का मैतीने कुछ हुआ क्रमाह की उन्हें की स्थित क्रमाह । काले क्रमा कालारे हाशरोकी अंश्वाने को है। जार, कुरूर, कांक और केंगर की बहुत हैं। क्रमा हरके कार्ने न को कि हको अक्ष-क्रमा कार्य सम्बद्ध के कार्ने ।

क्षेत्रकेत क्षेत्रे—कुत्र ) जान जनेतरे में ही सपदा कौरनेन्द्रों कर निराजिय का में ही जुड़े मेंसित करेने। इस



प्रमान केवा में के पूर्ण है आज विश्व कर है, जैसे अपने जानवान करते हैं इन्ह आ क्ष्मिते हैं, उसी प्रवास असून की को जा करते। विश्वोध है इस किय-निवा होती हुए कोन्य-नेकाओं और के पूर्ण करत, वे राजारोग क्यों कार में है? जुले के उन्हां कार कार्या है कि नरारेष्ट्र असून को जा क्ष्में, वे हैं। अने कार्योश कार्या है। इस्ते को जानके का कार्य है। प्रवास कार्यकर प्रमा है। इस्ते को जोरोसे कार्यक्ष हो है।

विशेषा का—कृतार सीमरोन । कोमर्थ को पूर् अर्थुको प्राप कोचे कानेवारे कालीव धनुवारी परंपर रेवार क्या हुएँ नहीं कुन्मी होते ? व्यक्तिकार ! स्ते, कुन्नारी सार्थ कालकर्ष पूर्व हुई, जार देखों, प्रतिकोधों रोजारें अर्थुकों स्थानी कालक काल दिसानी होता है। यह स्थानों सार्थ कालत क्यानेवारे कालीव काला दूबक धारों ओर देखा हा है। मैं अर्थ की जो देखाना हर का है। अर्थुनका का विशेषा मुक्त, विस्ते स्पेक समान सम्बाधि प्रांत कर्म हुँ है. विस्ता स्पार है? उसके बनायों देवता सम्बाध है। पहुं है। इसी प्रकार पनवान् सोक्रमचे पार्टी स्पेक समान प्राणियन् पार है, से उनका पढ़ पार्टिक्स है। प्रापंति स्ता बनायी पूजा विस्ता करते हैं। बीक्रमचे पास उनका पाहायन पी है, से पन्नाचे समान सन्वाध है। देखे, सन्वाधि प्रोण पार्टी हैं? विक्रम है स्वाप्त्य पेक्सचे पास हैसी प्रोच्य पार्टी हैं? विक्रम है स्वाप्त्य पोस्पत है। हैको है और सहारथी अर्जून सहसोकी संस्ताधे स्वेक्ट हुए इसर हैं। भा से हैं। यह देखें, अर्जुन्ट अपने पार्थों मेंने और सार्यक्तिक्षेत्र कार स्त्री रिक्निको यार काल, सात स्त्री क्षित्रकेता सामक किया और इवारों कुल्स्वारी स्था कैल्किको कैलिक काट उत्तर दिया है। इस अकार कौरक-कोन्क्राकेका संक्षा करते हुए क्षावरण अर्थुन अब कुक्तरे हैं कार का रहे हैं। तुकारा प्रनेत्य सामक हो क्या।

चीनलंग केले—विजोक ! पूजने कहा देख शक्कार कृतक, इससे मुझे कहा सुसी हुई है, इस सुस-संकाले सिने मैं हुई कीक्स जीकेकी कारीर हुँगा । साथ ही सी दासिक राज कीस रच की हुई करियोजिकको कार्य जिलेने।

# अर्जुन और भीमसेनके द्वारा कौरव-सेनाका संहार, भीमके हाथसे शकुनिका मूर्श्वित होना

रक्षम करते हैं—स्कारक ! की देवतक हमने करने क्का रेकर अन्यभूरको मारनेक रिप्ते कका जो थे, उसी प्रकार अर्थनने भी रक्षमें बैठकर विकास विशे बात सी। क्ष्मी आते देख वर्धरव-पक्षके परवीर स्रोक्ष्मी पंजाब स्थ, कोडे, अभी और पैक्लोको एक्ट से अर्जुनके सामने पह अवने । प्रित से विश्वेनवैका राज्य वानेके क्रिके जैसे अनुरोके हाथ केलाओं और कमान् कियुका युद्ध हुआ, सर्वे उपल क्न योद्धाओंके साथ अर्जुनकः श्रीक्रम होने शन्त । यह संस्था केंद्र, प्राचा और पायोक्य नत्त्व कारनेवाल्य 🖛 । उस सम्ब कोरक्वीरोपे क्रेडे-वड़े जिल्ले अक्टेबर प्रचेप विका, उर सकते हुर, राजेवयु क्या तीने प्यानीने अर्थुको अनोते ही बार प्रस्त । प्रान्त ही नहीं, क्योंने क्रमंद्र सराव्य और पृथ्याई कारकर कर, करेर, राजा, योड्, रस, रेक्ट राज प्राची आदियों भी नह यह दिया। ये तय विशंत हो-होबार कुश्रीयर निर को । इस प्रकार बन्द्राम अपने काले प्रत्यन बाजोरी सबुजोंके केने, हाथी और रक आविकी बर्जियाँ बहाकर कार्यको पार अस्टोबधै इन्ह्यारी हुरेत अस्टें कर क भीते। उने महाँ देश आर्थ्ड मैनिक त्यी, मुहरावर, प्रजीसकार वच्च कैट्टोकी होना जान सेवार पुर: उनकर हुट पढ़े और एक साथ होकर करें देने कालेंग़े बींकने राजे । तक अनंतरे भी अपने बाज उठाने और उनकी कारते इकारों रक्ति, इजीसवारों तक बुध्यवारोको कालेक केन दिख। इस प्रकार जब कौरक पहारतियोगर कर्यु के सम्बेधी कर पड़ी हो में शरपीत हैकर इनर-उनर कियने हमें। हो भी क्योंने अन्तेने कार रहे बहुरनियोको सैनो काम करकर पार्थकमा अभिने कह है हैन। उन्हेन्सको सेने

विशेषी केंद्र कायर वे वेर्व को वैट और अर्थुनको क्रोइकार का और कान निकास । इस अवार का सेवाको प्रदेशकर अर्थुनने सामुकारी सेवानर काया किया । इसी सम्ब अस्ति वीर्युनने सामुकारी क्रियानका क्रावास सुरू । किर सो वे अर्थुन अर्थुनके सुकानकामा क्रावास सुरू । किर सो वे अर्थुन अर्थुनके क्री परवा न करके आविश्वक क्राव्यो देश क्रीर्युनने क्रियानके क्रिया क्राव्य करके आविश्वक क्राव्यो देश क्रीरय-



तम प्रमा दुर्वोकाने अपने महान् कर्नुपर श्रोद्धाओंको आदेश दिवा— 'क्रीते ! मार करने मीमसेनको, इसके मारे

वानेपर में पाण्यानेकी सम्पूर्ण सेनाको पर्य हुई है पानवा है।' सावानोने अपने पुरावी आहा सीकार की और भीगोनको बार्ड ओरसे पेरकर अन्यर सालोको पर्य आरम कर है। यह भीगो की सालोको हुई सम्पूर्ण और उस महानेको दूसर बनावर से केरेसे मध्य निकल आने। अस्थान अहीन का ह्यार हाथियों, से सावा से सी पैदलों, पर्य हमार केरों और एक सी रावेका संदार करके मुनावी नहीं बहा है। महारको भीग हाहुओंको सेनाने विस्त और हुए बारे, असर ही सावते बोद्धओंका सावाचा कर करनो थे। स्वयंक पद परवान देख हुगोंकाने समुनीसे कहा—'कावाचे! जान महानावें भीगाते परावा केरियों, इसको बीच संनेकर में कावाचेंको विस्तास सेनाको भी जीती हुई ही सम्बूचन है।'

च्या सुरकार क्युनिये नहार संसार कारवेते विन्ते वैकार है असमें आविकार में साथ रिच्या और बीनलेकोर कार चूँक-बार अर्थे आवे कहतेरों रोक विचा। अस चौकतेन क्युनियों और पुढ़े। क्युनिये कारकी कार्यों कार्य विकास कारवा केवार सीने माश्योंने आहर विश्वा। के बीनवा कारवा केवार प्रतिस्के चीनर कीर गये । कार्य आस्त्र कारवा होका चीनवे कई रोचके साथ क्युनियर एक कार्य कारवाई विद्यु क्युनिये क्युने साथ क्युनियर एक कार्य कारवाई विद्यु क्युनिये क्युने साथ क्युनियर एक कार्य कारवाई कारविवाों और साथसे साथ क्युनिय कारवा। क्युने कार एक चारवाई कार्य और होये साथ कार दिया। जिस कार क्युने सीयके कार्य चेक्नेच्ये भी कारण कर दिया।

का चीपसेनको यह कोन हुआ। उन्होंने सुनल-पुनरर रवेदेको कर्न व्हां एक प्रश्निक करानी । पास आते ही प्रकृतिने का परित्यों प्रथति पद्म निया और उसे फिर चीपार है क्या क्या। केवकी क्षती धुस्तवर केट काती क्री क् क्रकि क्योनक का नहीं। अब मीनने प्राजीकी कावा न कर्षे अपने क्योंसे क्यांकी सेनाको स्वकृति कर दिया। दिन इसके करी केडो तक सर्गाकको सरकर स्थ भारतो अन्द्रे १६४६ व्यक्त भी बाद अली। सब्दिन तरंत है रको कुरकर एक और पद्म है राख और बनुत देखारक इका चीनल वार्ते ओसी वालोची वृद्धि करने लगा। यह केवा प्रकारी कीरने कई केनरे करपर मानार किया, किन जनका बनुद बाठकर जो तीयो बाजोंसे बीच प्रसा। कार्यन् प्रमुक्ते आकारणे अरुपा कारण क्रेकर प्रमुक्ति पुर्वापर निर पहा को भूषित पानवर आवार प्रा क्वींकर सामा और को अपने रक्या किराकर राजपृतिको दर हर, से पान । जन से औरव-केट प्रचर्मत हेकर पार्टे दिसाओं में मानदे राते और पीकांत ईमाड़ी सामीकी सर्व क्रमें क्रू को बेन्से क्या बैन करने लगे। क्रमी पासी पैक्षित हो में का-मे-तर मेटा मर्गाडी प्रतार्थ करें। पहराम ! का समय कर्ण है उनका रहक हुआ।

#### कर्णकी मारसे पाण्डवसेनाका पलायन, श्रीकृष्ण और अर्जुनको आते देख शल्य और कर्णकी बातचीत तथा अर्जुनद्वारा कौरव-सेनाका विष्यंस

कृतस्यों पूजा—सङ्गात ! प्रीकरेनो तथ बहैल प्रोज्ञानों किल-किल कर दिया, कर सम्ब कुर्वेचन, ककृति, कर्म, कृतावार्थ, कृतकर्था, अक्टरक्य अवक यु:सासनो क्या कड़ा ? स्टब्स्ट्राने कीन-स्व करावार किया ? वे मेरे कुले तथा अन्य दुर्जुने स्वतावारिक क्या कार किया ? वे मारी वार्ते कटाओं ।

सहायने बहा—व्यागत ? का दिन कीसरे पहरने प्रवादी स्थापिने देन किये हुए कीस वालोगे क स्थापुत्रने धीमरोतके देवले नेएको समझा सोमयोग्य संदार कर हिस्सीने प्रवाद किया। फिर दिश्यप्रीने पूर्वी काम त्या पीमरोतके की कौरकोची सरक्य कामको सेन्या । इस्तीने प्रवाद कामें चीसर, सहोदने साथ की विकास कर दिया। सरक्षात् काने क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त का प्रवाद कामें काम प्रवाद कामें वाल प्रवाद कामें काम प्रवाद को वाल प्रवाद कामें काम प्रवाद को वाल प्रवाद कामें काम प्रवाद कामें वाल प्रव

व्यास्त्रकाने अपने कोड्रोको चोड्, प्रकारत समा करूनदेशीय कीरोकी ओर बढ़ाना। कार्यका रव देखते ही परवास और व्यास्त्र और वर्ष को। व्यास्त्रार कोर्ग अपने रीकड़ों कार्योंने व्यास्त्र परवास-सेनाके सी-सी तबा हुवार-हुवार वीरोको विद्यान कार्यको कार्य औरसी मेर दिखा। इस समय स्वास्त्रिको देख किये हुए बीच बार्योंने कार्यके गरेकी हैस्साने क्यार किया। किर शिश्तकीने प्रवीस, पृष्ट्युक्ते कार, हीव्योंके पुर्वेन चीसड, स्वदेवने स्वयं और नकुटने सी कार्य परवास कार्यको कार्यस कर हारास हुसी प्रकार वीरासेनो कार्यको हिस्सीवर कही बाक मारे। स्वरणार, सुन्युक्ते हिस्सर अपने व्युक्ती अंधर पी और तेत्र मिले हुए वालीका ज्ञास्त्रर का सब फोड़कोची



बींग करन । उसने सामाधिका करून और क्षेत्री संस्था अक्षयी क्रातीये में सामीका उद्धार किया। किर क्रोकने करकर मीमको भी शील कामोरो कपल किया। एक माराने सहोताको कामा मारावर तीन मारानेते उत्तके सार्थिको भी कार करण क्षेत्रा सैन्छिके पुर्वाची राज्यीन कर विचा। का सारा काम क्लक नास्ते-मास्ते हो क्ला। देशनेकालोके दिल्ये का कड़े आधार्यकी करा क्षां। स्वारकी कार्गने मेरि तथा मसर देखके बोज्याओंको भी जनने तीयो तीरोका निवास करवा। करकी कर साधार वे ध्ययक्त होकर पान वसे । कर्णका व्या सर्व्यत वरतान 🕮 अपनी अस्ति हेता था। देशे नेतिया पश्चनेको कार्यात करके भग देश है, उसी प्रकार कानी पालक-प्रोह्मको आतील करके करेड दिया। पान्क्योची सेनाकी नागती देश कौरवदशके अनुबंद केन्द्र बैरव-कर्नम करते हुए सायनेकी जोर का जावे। धवा दुवंधर अञ्चन अनन्दर्भ भरकर तरा-तराके कने सम्बन्धने लग्द । कार्येकी सम्बन सुनकर पास्तरत-महारकी मरनेकी परका न करके को और आये। कार्यने क्यमेंसे ब्यूटोके योग क्यूबड़ दिने। प्रशास्त्रेशके बीस र्गांको एक वेरिटेकके सेकडो केक्कानेको भी अपने स्वयक्तीते क्याकेक पहुँक निया। इस प्रकार फाव्यक्तको बहुत-से केक्कानेका नाहा हो गया और व्यक्तित भीवके सामने युक्त करनेसे आपके भी बहुत-से चीर कोर नहें।

इसर, अर्जून वर्षरकोची चतुर्राष्ट्रभी सेनाको निर्माण करके जब आगे वहं तो कोचने सर्व हुए सुरापुत्रकर उनकी हुई। वहं, जब अनुने जनवान, बासुरेनसे कहा— 'अन्तर्वा । वह देवियो, राजने धूरापुत्रको अस्या दिकादी है हुई है जब में चीनकोच आहि केन्द्रा करके पान्ये वहं है। इसर, बन्द्राल बोन्डा करके पान्ये पान्ये कर्ण हो है। इसर, बन्द्राल बोन्डा करके पान्ये पान्ये कर्ण है। इसर कर्णके प्रशासनो दक्षण क्रमाणां, बुरावार्थ क्या अनुनक्षण राज्य मुग्नेश्वरको दक्षण कर हो है। वहं इस्त्रों कोने हुने चार नहीं से के स्वेनकार्यक संस्था कर दानि । वहं क्या: नेट विकार का है कि असर बन्द्रपत्र कार्यक पान्ये पान्ये है। के कोई, अस में संकारणे वार्यका क्या विके दिना नोड़े गई।

स्य प्रमुख्य सीकृत्यने अर्थुन्ते साथ हिथा पुर् क्षार्टके रिक्टे आवनी केनाने कर्मकी ओर अकना रच कारण । में राजप कैंड-के-केंड करों और एक्के क्षे प्राच्या-नेपाको बीरम मैंगाने माने थे। बीरमर अर्जुन क्रमण्डी सेन्यको परस्त करने हुए आगे **व्या रहे थे। क्रे**स केंद्रेमारे रक्कर बैठकर अपने सार्थि क्यान् कुरमके लाव सर्वाच्या साते हेल पातक प्रत्ये समीते बद्धा-'सर्व । इन हारे लोगोसे जिन्हार एक पूछते किस्ते है, वे कुन्तीनस्त अर्थुन अरम्ब गामध्य अपूर्व शिथे हुए सामने एते हैं, यह उनका रच आ रक्ष है। यह जान उन्हें कर करनेने से इन्स्केन्टेका करा होता । अर्थुको सनुवती प्रमाहार्थे सन्दर्भ हाँ कराजेंकि विद्व है, कन्मी ब्यामी विकास गर्नकर कार दिवलनी पहला है, जो आरों और ताब-ताबकर बीरोक्त भी क्या बढ़ा रहा है। ये अर्जुनके रक्यर बैहकार सोड़े होंको हुए भगवान् बोक्समके सङ्ग, सक, नदा तथा सर्हा-बहुद होता हो है। यह मालीय देखार रहा है तथा अर्जुनके होते हुए तीको और इन्हुओंके प्राप्त के दो है। अस्य यह रमपूर्ण एकाओंके कटे हुए महत्कोंसे परी बा रही है। पुष्प क्षेत्र क्षेत्रेयर क्षानी विस्तेवाले आणिबीकी तरह ये नाना देखेंके गरेज करने स्क्रोंने निस्कर बरायायों हे खे हैं। जैसे सिंह इन्यरो इनिजेके इंडक्को कारखटमें कर देता है, उसी



प्रधार अर्जुन्ने अर्ज्न सहभोत्री हेनाको कान्य स्वयूका कर कारत है। अर्श्वय प्रतिकान्त्री देशों स्थूबाकाक कृतुओका अन्य का के है, इसीरेने उन्हें करते वह बोरक-केंग्र करते कोरने विकाशिक हो पति है। यह देखी, अर्जुन तक सैनाओंको क्रोक्सर हुन्दारे यात वर्ड्डकोबी कारी कर हो है। भीगरोजको पीड़ित हेक् वे स्रोक्त कराना के है, इस्रॉस्क मान तुन्हरे किया और विकासि युद्ध बारोके देनो नहीं कह स्केले । तुमने वर्मराज्यारे १५६३न करके उन्हें बहुत करात कर कार है, विकासी, सुरक्षा, जैनकेंद्रे पुर, सक्तीर, असमीया, जनुरू तथा सर्ववययो की शुन्हारे इस्त्रों बहुत कोट पहुँची है; यह सब देखकर अधुंच्या अभि क्रोकर स्वस् क्रे सभी है, से समझ राजाओंका संक्षर करनेकी इकाले अवेजने ही तुष्पाने कार को आ को है। कर्ज अब दूज की हत्ता<sub>र</sub> सामक करनेके रिजे जागे क्यो, क्योंकि शुक्रारे विका, दसरा कोई बनुर्धर ऐसा नहीं है, जो अर्जुनसे लोख से सके । केवल तुमी पुक्षमें बीकृष्ण और अर्जुनको पराका करनेकी स्रीक रकते है, नुकते है करत का कर एक क्या है अह बन्तुपका मुख्यस्य क्यो । तुम औषा, श्रेष, अस्त्रसम्ब तम्ब कृपाकार्वके समान कर्य हो, इस अञ्चलकार्ने आने कहते हर अर्थुनको रोको। देखो, वे कौरव-सेनको स्कारको सर्जुनके मध्यो आगे जाते हैं, सुरुक्तन ? तुन्हारे दिखा दूसरा कोई ऐसा बीर नहीं है, जो इनका पन दर करे। वे सकत

करिया हुन्हें धीनके समान अपना स्थाद सामार हुन्हों ही पान आ रहे हैं और दुस्सो करन बनेब्द्र आहा रक्तकर बड़ी बादे हुए है।'

कंगी का—कृत्य ! अस दूम स्कूषर आमे हो और मुक्तने कान्य कर पाने हो । महत्त्वहो ! अर्जुन्ते कह न कते । मान मेरी इन पुन्तशो और विश्वाका कर देवला । मैं मनेतन हो वाकानेकी विद्यार नेंगा कहा औकृत्य और मर्जुन्ता नव कर्नना । यह कुत्तो हवी कहा कहा रहा है । इन होने केरोको मारे किन मान में किसी कहा पीड़े पैर नहीं इस्टोना । केमेरो एक कान्य करके कुरार्ज होर्जगा—क से अहे कर्मना का कर्न कर वाड़िया ।

इस्पर्ध काम-कार्य ? बहारको सोग अर्जुनको उन्हेले इंभिन्स की पुत्रमे जीतान अस्तरभा कार्य है, मित क्या के अीक्स्पर्क पुरस्का हो, का जो ब्याना ही क्या है ? ऐसी कार्य को जो जीतनेका सदस चीन का सकता है ?

कारी सक्-में पर्मात हैं, अर्जुन-मेला सहरची हत संबंधने कभी हुआ है नहीं। असे इस अस्तुतके विद्वते अधिया है, करने व काची वसीया अवक है और व के करिये है है। अर्थुनक क्यून की बस्तक है। वे वह वहर्वपुत्रक और प्रोतासकृतिक प्रथा प्रात्तनेवाले हैं। प्राप्तकृतक अर्थुरके समय कृत्य क्षेत्र वर्त है से महि क्षेत्र सम है बीरामध्ये विकास कारोने क्याँ कुमते दिल अस्ते-जैहा केंद्र इस कुर्कार कीन हो समाद्र है ? अमेरवी और अर्थुरने केवल बीव्याच्या स्थापकारे प्राच्या-कार्ने ज्योग्नेक्यो हा किया था, धर्म महत्त्वत श्रीकृत्वत्वो या जिला और सम्बन्धानो सम्बन्ध बहुर, हेत सेहोते कुछ हुआ रच, काची सामने न होनेवाले हो तरकता सका प्यात-से निकास जात हुए। ये राजी संस्कृष्ट अधियेको चेट सी भी। इसी प्रकार क्यूंनि इन्हरनेकर्ने बाक्तर असंबंध कारकेरकेका संकर किया था, वर्ज को केवल नामक क्युम्बी अधि हों। जनः इस पुरस्कार्य जाते बहुका केंद्र कीन होना? जिन कानुवाली अपनी सुन्हर पुरुक्तान्त्रे हरा स्वकृत् व्यक्तिकीओ अस्य किया और इनमें असम्ब प्रमंदन क्यूक्तवायक म्हन्त् अस प्राप्त विस्ता, में जिल्लाका संद्रार कारोने समर्थ है। जिल्ले समर्थ लेककारोने आरब-असन आवेको अनुसम हिलाका प्रदान किये हैं जब जिल्होंने विराहतगरने अलेले ही हम सब न्यारिक्योंको जीतकार साथ भीवन क्रीन रित्या और महार्थिकोके कहा भी बहार मिने, ऐसे पराहत्य और मुखोसे रम्पन सर्वुनको, जिल्के शाद औकृत्य भी मौजूर है,

बातको मैं भी अची तरह सन्दारक हैं। इसके सिमा, सनदा प्रशार पिराकर जिनके कुटोको दश हकर क्लेंटि की नहीं रिन सकता, जो सङ्ख, बक्त और स्कृ सत्त्व करनेवाले 🐍 है अन्तरशरकारी साधार प्रकार करावन है सर्वन्त्री रक्षा कर खे हैं ! सीकृष्ण और अर्थुनको एक रकार बैठे देस मुझे प्रय कारो है, इस्प कांग काल है। अर्जून सम्बद्ध बनुर्धारेगीसे वक्षार है एक चारपुर्व करावक-स्थान बीक्रमाना श्रम्भाव करनेकरा भी कोई नहीं है। वे केने बोर हेरे परावानी है। हैनातन अपने स्वानो हा साथ, पर बीक्षण और अर्थुर नहीं विकास है सकते। ये केने महारवी, पुरसीर और काम निकाले निकार है, केन्सेंड हैं शक-राज राज्य है। सहय । सारश्ये के राज्ये, ऐसे परावार्ये, शीक्षण और अर्थनका पुकासक मेरे दिन्हा बुरारा कीन कर सकता है ? आज ऐसा बढ़ होगा, जेला बाले बाके जो pag en । या को मैं हो हम क्षेत्रोको पान निराजीन का के ही मेना सब कर करनेने ।

्ता वदावर प्राष्ट्रणा कार्यन केलो जागा गर्मण की । वितर का आरमो पुत्र कुर्णेकाको विश्वा गया । वृत्तीकार्य प्रस्तात साधिकादा वितर और क्राणि स्थापना । तम कार्यने कुरताया वृत्तीकार, कुरतायार्थ, कुरतायार्थ, भावानेत्रका कार्यन्ति, स्थापनामा और अपने कोटे व्यक्ति क्या क्राण्येत्रकार, प्रमुखार वृत्ते वेवाद वीत्रिकोरो कान्य—"राज्यको । जागार्थन क्षीत्रका और सर्वुत्तवर वाचा कर्यों क्या क्या कर्यों । स्थापने क्षा वाच में कृत क्या हो वाची से हो है जा क्षेत्रको

बुद्धके हिन्ने तरकारस्य बहुत कई दुस्तहरस्या कार है—इस बुचकारों का सम्हेना।' 'बहुत अच्छा' करकर अर्तुस्कों बातकों मैं भी अच्छी तरह सम्बद्धक हूँ। इसके सिचा, सबका चारनेकी इच्छारे के सभी चीर उत्पर दूर पड़े और अपने संसार विस्तार मिनके कुछोकों दस हकार कर्वेरें भी चूँ चालका प्राप्त करने समें।

का सहस्तिकोके अलावे हुए सम्बोको अर्जुनने हैसले-हैंगते कर द्वारा और आपको सेमको परन करना आरम्भ किया। यह देश क्रमंत्रार्ग, कृतवर्ग, ह्योका क्या अक्टालमा अर्थनमध्ये और देंद्रे और उनके करा बालोकी वर्ष करने रहते। कर्णने अपने स्वयक्तेसे उसके बाणोंके त्वयो-राज्ये कर अले और यही पुरश्चि साथ क्योंने प्रकेष पहारकेको करीये हीन-सेन बाग परे। हम सक्ताम्यने क्षा कामंसे बनक्रमको, तीमसे श्रीक्रमको और चाने उनके चारों केक्नेको बीच करन, फिर उनकी भागापर के हा समाने जाने अनेको सानो तथा पराजीका रिकाम प्रमाण । यह देश सर्वनने प्रेन सालोधे अध्यक्षामध्ये बन्नको, इंदरो सार्थको अल्डाको, बार सामकोरी उसके करें केंद्रेके क्या क्षेत्रों उनकी काराको काराक रकते केंद्रे निया किया। इसके बाद क्योंने क्यान्यांके की पालक्ष्मित बहुर, स्थाप, सामाप, सेवे क्रम सार्वपाने का कर किया। दिन अर्थ की क्याचे सामोध्ये बेच्ये केंद्र कर पेन्स । सन्दान, अर्जुले बहुरको हुए हुर्जीयको सम्बद्ध और सपुत कार दिये, कुरुवानीके बोक्केबी बार क्रमा एक इस्ते रचनी साथ में समित कर है। तिर मही क्षाविक साथ अनुरेते जानको सेनाके भोड़ों, सारविकों, प्रत्याले, व्यवस्थी, प्रतिन्त्री और रहीच्या प्रत्याना कर क्षा । का क्षा आपने निवास सेन क्षित-निव क्षेत्री इका-कार विकार गती ।

# अर्जुन और भीमसेनके द्वारा कौरववीरोंका संहार तथा कर्णका पराक्रम

सहार करते हैं—स्वाराज है दूसरी और बौरकोंके प्रधान-प्रधान में रेने कीयसेन्स काम किया था। प्रधानका पीय बौरक-समूत्रों कुन्छ है स्वारे के कि अर्जुन उन्हें ज्यारनेकी कुन्मत औरबोरर स्वार्ड की और स्वार्जियों सम्बोध कोइका औरबोरर स्वार्ड की और स्वार्जियों सम्बोध पेकड आरम्म कर दिया। अर्जुनके सेने हुए बाम आकाशने पहुँचकर पैसे हुए स्वारके सम्बन्ध हिंसाकी देते हैं। नहीं पश्चिकोंके सूंह जहा करते थे, उस आकाशको सामोरों मानु कर करताब कोरटोंके काल कर

को। वे कार्त्स, सुरसे तथा रूपकर नगरीसे स्मुओरे अह-अह हेर सस्ते और पसाय कार रंते थे। रायपूर्ण विशे हुए और विस्ते हुए केन्द्राशोधी स्थानी रक्त गरी थी। अर्थुनके कार्योरी किश-विश्व हुए रस, सभी और कोर्ड़ोंके कार्य कहिंदी करीय-बैशस्त्री नहींके सम्बन्ध कार्य से पर्यी थी, उसे देसकर बड़ा पर कर्त्य हेसा था, उसर देसना करित हो रस था। उस समय सुर पहायरोंकी प्रेरणाने कर से इस्की कह उसने, विशे सर्वुनने कार्योरो पहा विश्व । वैसे समुद्रमें दूसनाके आसारसे सहाय रूट-पूर नाम है, उसी प्रचार करके सामकोची चरसे चौरव-सेना े किर नान प्रचारके कामेंसे हामियोको करके सकरोसकित क्रिक-पिता हो गयी । पाण्डीक बनुवारे हुटे हुए कब प्रधानके बाल कियानीकी चाँति आपकी सेनाको एक करने रूपे। निया प्रकार बहुत नहें संपाली क्यानिये परे हुए पूर इसर-स्वर मानो है बैसे ही रजपूर्णि सर्वृत्ये सामोने अञ्चल व्हें कौरम-सेना कारी ओन पान करी। यह सनक चौरव बुद्धारे विज्ञुक्त हो को तो विकास अर्थुको चीन्होंको पार प्रमुक्ता कोही हेर निराम निराह किया कीहत, पीराई निश्चार अमेरे कुछ सरवा की और वह शतक कि 'सवा वृतिद्विरके करीको क्रम निकास हिने को है: तथा इस सक्त में अच्छी तत्त्वते हैं।" इस प्रकार कुश्तर-जून स्थान भीमसेनकी अञ्चल के अर्जून कर्जकी केनकी ओर कर विके। पूर्व स्थान अवनंत्र वह बीतेने अर्जुनको के रिन्य और को मानोंके पीर्वत करना कारण किया। परंतु करनार, श्रीकृत्यने २४ व्यक्तार जो अन्ते ५६के साल्ये वर विकार कर्जुनके रजनो कारी ओर मते देख ने पुन: करना हा गई। हार अपूर्णि इनके १६वरी बाक, बहुए और सावकोओ कराओं क्या अर्थकांक्षेत्रे तुरंत कर निराम, किन कृतरे क्या म्बलीने जन्दे महत्त्व रहा वेशे। हर जना क क् मीरवीको पीरको कार सारकार अर्जुन आने हाई।

क्षे वार्त देश काँग्य-पक्षके संबद्धक चेन्क्र, विश्वती संस्था नको भी । बुद्धके सिनो अनसर हुए । ब्यूनेने का करन रेक्टर कि 'वर्षि पीके हों हो हमें प्रकारकों उसस गारि न मिले' अर्थुनको सम् ओरसे के प्रेरक । बरावान् ओक्साने इनकी मरका म करनेर इसके तेव करनेकाने कोड्रोको कार्नके रकती और होंक दिया। यह देख संस्कृतीर उत्पर कनोची मृष्टि करते हुए मीहर किया । एक अर्थुको की करतेले उनके सार्राच, बनुव और व्यवस्था ज्यू करके वर्षे की कारतेल पहुँचा विचा । उसके मारे कानेपर कीरक-बह्वारविकोने का, इसी तथा घोड़ोको सेना लेकर अर्जुन्यर काक विकास कर समय अलो प्रयो तनिका भी पत्र नहीं का । क्योंने पास सार्थ है प्रति, स्ट्री, जेपन, सदा, यह, तरकार एक कान्येते अर्थुनको एक दिया। उनकी सरकार्य जानकार्य करो और का गयी, जिल्लू अर्थुनने साम प्राप्तात को मुश्त ही वह का क्रमा । इसके बाद आपके पुत्र दुर्जेकाको अञ्चल कावत तेवह सी मतकाले इकियोगर केंद्रे हुए कोव्हाकारिके केंद्रा अर्क्तकी क्षेत्रे बारको क्षेष्ठ करने रूपे। वे व्हर्जि, सरक्षि, सरक्ष, सेमर, प्राप्त, सुक्ति, मुस्स्त और विकित्यलोची करने कर्वकी पीड़ा देने लगे । तब अर्जुनने तीको प्यानमें अहैर अर्जनसम्बद्धार बाजोंसे फोक्सेप्टरा की हाँ इस्त्राव्यको प्रान्त कर दिया।



का कृत्य । का अधिकांत्र लेक का है गयी से क्ये-सूचे लोग ब्लाइस क्षेत्रर कर करे। देश प्रमय बीमसेन अर्जुन्नेंट कर कर कहेंचे और करेंने क्ये पूर् पुरुषकारेंची अवनी नदानी व्यू: फार्न राने । उन्होंने बहुत-ते प्रतियों और वैक्रावेक्ट भी उस कर्मकर गताका प्रदार विज्ञा। उसके आपानो चेळाओक सिर पूर्व, इतिमाँ दृष्टी और योद उसद नवे प्रथा है जातीयह करते कुर पुत्रकेशर मित गये। क्रा प्रकार का हवार कैल्पेका सकाक करके क्रोबर्ग को हुए बीच क्रको एक रिले इसर-कर विकले रहते। पहारक है इस समय आयोः वैभिक्तेने महाकारी चीमको देखका च्यी रस्यात कि सामान् काराज 🛊 कारक्या सिन्ने वर्षी आ पहेले है। अब बीवने प्रविश्वीकी सेनामें प्रदेश निका और अपनी बड़ी करी कह लेकर एक ही कुलने सबको बसलेक पहुँक विका । प्रकारमध्या संवारकत ब्याज्याची श्रीय एतः अधने रकार आ केंद्रे और अर्जुनके पैके-पीके चरको लगे (

व्यक्तर, कीरवीने को बोरसे कर्तनव होने समा। क्षाची, पोदे एका पैक्सोके प्राप्त नेनेकाने अर्जनके कालोकी करने एक खेन इक्रमार यक हो है, सकर सरका पर का रूपा का, राजी एक-यूसरेकी आकृते कियन कहते है। इस बद्ध आरम्बी समूर्ण सेना इस समय अस्तातकाको सकान कुप रही औ। उस बुद्धमें कोई भी रबी, सवार, केहा या इस्के ऐसा भी क्या या जो अर्जुनके बागोरी पायत व्यक्ति हुआ हो। उनका का पराक्रण देश सभी कौरण कर्मित बीवनसे निरात हो गये। समरे गाव्यक्रियारीके ज्यारको अपने रिजे अस्ता सम्बाह और उससे पराता होकर सब की इट नये। सामकोपे सिंग जानेके कारक से ध्याचीय हो स्था-धूरियो कर्मको असेनक ही होशकर कृत को। सिन्दु स्थानको रिजे सुनद्धा कर्मको है पुकरको है।

महाराज । इसके कह आको दुध धारकर कारी। रक्ते पास गरे । ये संबदके सराज्य समुत्रों कुर जो से, का समय कर्त है है हो अपने अपने कार्य कार्य करते हैं। बीम पुरुष्ते प्रत्या जैसे बर्वकी कृत्य होते हैं, उसी अध्या आपके कुत भी अर्थानो समामेत हो पानंबी हरूको पहेंदे है। बज़ी हेवा, वे कुन्ते सम्बद्ध है हो है, वहे संबद्धी हो है और वालोकी घोटने न्याप्तर है, से जाने उसने कता—'वेरे पास आ काले, करे का ।' इसके बाद काली me plurftunge und ein aufeit unm Pape Parer : affe unit fruit-freit und committee annente विकास । यह देखा पायाल-राज्यक्रीची क्षीची झीचले साल हो गरी, में कर्मपर समोकी पृष्टि करने रखे। तम कर्मी भी कृतारों काल कारकर प्राकृतनेको भीतके गुजले केन किया। अस बहु पहारक्षेत्रीय एकपुराचेका जान करने सन्छ । साले 'सक्तीका' नामक मान करकर क्रांतेकको सार्वको सेवं रिया विका और अलोह कोओबोर की पता अलाह । विका कारतीय तथा सामकेक्स मानतेवी वृद्धि करके वर केन्वेके बन्द कर हिने। कः पान्तेने पुत्रपुरको वीचा और असी क्षेत्रीया भी कार जान दिया। इसी क्या सामीकंड बोक्नेको यह बरके पुलुक्ते केकालासमुख्या विकोधका वी बार कर करना प्रकारणको को आनेवर केवानोगाकी इंश्वामि कर्मन साथ क्रिया। उसने अपने पर्णका केनकारे वालोंने कर्तक का तीक । का कर्तने तीन अर्थकमध्या कर्तने स्वयन्त्रंकी केने कुनते और प्रकार कार असे। व्या अन्योग सेवर नगीन्तर व पहा । उत्तर क्षा कर्णने सामाधिके बोदे चार क्राने के उत्तके पुत्र प्रकेशी तेल विस्ते हुए साम्बद्धीने साल्यीनको स्टब्स विस्त इसके बाद सामाधिके कार्यका निवास कारण का आहे थी कारानी हो नवा।

पुत्रके मारे बानेनर शामीक इसकी खोजकी साम जान इसी, उसने मालकियर एक प्रमुख्यास्त्रकारी जान कोड़ा और इस्सू 'ईनिय ! अस तु मारा गया।' किंदू कर्मके उस मानको विकासीने सारा दिया और उसे भी तीन मानको बीच इसस ।

का कानि से ब्रेटेसे हिमाबीकी बावा और बनुत कार दिने क्या कः बार्केसे उसे भी कीच दिया। इसके बाद करने क्रमाने राज्य है। बारे सत्य कर देख और रूप रीकर क्रम करकर स्थानेक्से भी वाकर कर सरग। कर्मान् कुल्टुको सोन्क्ष्रोच्या संक्रत करते कुरू व्यक्त पारी रांकान केवा र उनके स्कूत से कोई, एवं और प्रत्येकीका पास कर्क जाने प्रमूपने विकाशीको जानीसे आकारित कर विकार कर उसकेया, जनकेवन, कृशकन्त्र, विवस्त्री सर्वा कारत —में सबी पर्वत क्षत्रों कु स्रोपये प्रत्या कर्नक खन्ते साथे और प्रस्त कालेकी कई करने सरो। इन वोबोर्ड क्रावंदर केवार प्रमात विकास विकास विकास कर निराम्बर भी को राज्ये विशायिके प्रायम न हो सके। कार्यने अनके कपूर, क्षा, बोडे, सार्वि और फाला आवियो कारकर पाँच क्रमोंने का प्रोमोर्कों भी और करन हिंग समय ना क्रमेरे प्रकृतिक प्रारं कर का था, जा समय अली अनुस्को देखर सुरुपर है।व कर कहा वर कि अब कांत और क्योतकीय एवंचे पूजी यह पहलती । असने विकासीओ कर्मा, प्रकारिकाको प: और कुलावन, परानेका स्था बारकारको प्रीतनकेन काल वर्ष । इस प्रकार कृतकुर काली का प्रोची सहराविकोची परास्त कर विच्या में कार्यकरी समुखे पुरुष हो पहले से कि होनहीते पुलेने पाई पहेलार क्षे रक्तामधीने क्षे क्ष् क्षेत्रे किराय और का प्रकार ज्ञाने भागानीका संस्थाने ज्ञान निरम ।

क्रप्रात् स्थापितं सर्वदे सेदे ह्य ज्ञानने सर्वाको अपने होतो होरोने फाट अरब । हिस्स कर्मको भी मानल कर क्रा सामेने सामे पुत्र क्षीमानो वीव साम : सा कृतकार्य, कृतकार्य, कुर्वेका स्था कर्य-चे करो निरम्बर ब्राम्बोद्धार तीवल सावकोधी वर्ण करने समे। जैसे पार विकास के का अंदर्भ के विकास विकास विकास विकास कर हुआ m, असे अकार इन करों केलेके साथ व्यक्तासूका भारतीयो अनेत्रे ही लोड़ रिन्स। हरनेहीने उन्ह क्ष्माल-स्थारची कामा परित तूसरे रखोधर बैठकर मही तर चौचे और साराधिको सह करने समें । उस समय समुजीको आरके सैनिकोर्क साथ चेर पुत्र हुआ। बिस्तरे ही रखे, क्रमीतवार, कुलकर और वैका केंद्र राज प्रकारके अधा-प्रकारे जनकारित हो इवर-कार पटकरों स्मी। वे परकाके हैं कोनी तक्षकायर निर करे और अर्तकारी बोलार कक्षाने रूपते थे। बहुतेर सैनिक प्राणीने क्रम क्षेत्रर त्वपूर्णिये को के थे।

#### भीमद्वारा दुःशासनका रक्त-पान और उसका वध, युधायन्युद्वारा चित्रसेनका वध तथा भीमका हवाँद्गार

स्तुम्प करते हैं—सहाराज ! जब वह प्रयंक्त संज्ञान कर रहा था, उसी समय राजा पुर्वोक्तका कोटा माई अन्यका कृत दु:एक्सन निर्धन ही प्राथिकी वर्षा करता हुआ प्रीयकेन्स कृत अन्या । जो देवले ही प्रीयसेन भी रहें। और निर्धा मध्यन 'कह' स्थाप विद्व संज्ञानक करता है, वैसे हो वे उसके निवाट का पहुँचे । किर तो सम्बद्धानुर और इनके सम्यन कोचने को हुए का होनों वीटिमें कहा भवकर कुछ विद्व प्रया, केनों ही प्रायोकी बाजी समावार स्थाप समे । इसी बीचने प्रीयक्तिन सम्बद्धी पूर्णी विद्याले हुए हो बुटेसे अन्यके पूर्णी सनुव और बहुताको कार करता, एक बायले सनके सम्बद्ध स्थाप



साथ किया और दूसरेसे उत्तरे जारकिया कारक भी वहने अस्तर कर दिया। तम दु-सासको भी दूसरा कनुव उदावर भीगाचे वाद्य सामोदो कींग आस्त और साथ है कोड़ोंको सामूचे रामने हुए आसे पुन: उनके अन्त सामोदी इसी साथ ही। इसको कार दु-सासको भीगरोजकर एक भवेकर कार्य सामा उद्दार का। उदाने भीगरोजका उत्तरे किय गया, वे सहार दिवित हो गये और आस्त्री-स्वी उद्दा वहि कैताकर स्वार सुक्रक गये। कोड़ी ही देखें का होदा हुन्य से वे पुन: सिंहने समान सहारों रूपे। वार सम्बद्ध हुन्युक्त कुन्न करते हुन् दु-इस्तरमने हेस्स पराक्रम हैर्स्स्था, जो कुलाएंसे होना करिन का। उसने एक मानारी कंप्स्तेनका बन्नुव कार्ट्स्सर साथ कार्योसे करके सार्वाक्रमी भी कींस कार्या। इसके कार्ट्स अर्था-अर्था कार्योसे का्स कार्या आपने कुलार करने एक्स। का सीयसंत्रको करेकों सारकार आपने कुलार क्ष्मां दुन्यों दूस बाजोंसे कार इसका। अर्था इस्त कुलार कार्योसे हेस्स कार्यो सीनक इसमें पराक्रम उसकी स्वतंत्र कुलार कार्योसे हेस्स कार्यो सीनक इसमें पराक्रम उसकी स्वतंत्र कुलार कार्योसे हेस्स कार्यो सीनक आपनाक्रम केवार कार्यो क्ष्मां कार्यों कोंस केवारी इतिने हेस्स आपनाक्रम केवार कार्यो कर्यों किया, वित्त अर्थ हुन्यों नेरी प्रकार अर्थका स्वतंत्र कार्यों क्ष्मां कार्यों हिंसे और वित्त कक्सा-"हुरावान् ! आज इस सीनकारों में तेरा सक-कार कर्यामा।"

भीनके ऐसा बाती है बुनानको उनके अन एक भवेकर हाक करवार हवारों बोचने के अवने कानक पत्र हवारत केवति। या गया हुनानकारी सन्तिको रूक-ह्या करवी हुई उनके कानकों वा रुगी। गराके आवारते हुन्यानकार रच तंत्र कंत्रूव पीछे हर गया अर्था अरोतका के ब्यूच अंदर को बोची भी, कावत दूर गया, आयुक्त और हम विकार करे, कराई कर गये तथा का सरका केरकों काव्यूक हो कावराने रुगा और वर्धानक हुआ अभीनका निर पद्ध। इस्ता है गई, का गयाने बुनानकों प्रदेश को गये और उसके समयों भी बर्धनार्थ वह गयी। हुआकारकों इस अवस्थानों देश प्राथक और प्रस्तात-चेदा कावया अस्ता होकर सिंहाकों करने समी।

इस प्रकार अवनके पुत्रको निरात्वर शीमसेन इसी पर को और समूर्व दिसाओको प्रतिक्रानित करते हुए कोर-कोरते गर्जन करने रुगे । व्या वैदय-कद पुन्नकर अध्य-क्या करे हुए केन्स पृथ्वित होकर गिर गरे । वस समय वीवसंनको विकास बाते करा हो आर्थी 'देवी होपडी रक्तकर की, उसने कोई क्यापक भी नहीं किया का, से भी अपने केन्द्र स्वीके को और भी सभाने क्या आह गर्ज ।' इसके सम्ब ही कीरवोद्धार सिंके हुए और भी सहा-से दु:कोंका सरक करके भीमतेन कोको करा को सक कह समे पूर कर्ण, तुर्वेकन, कुमाबार्ग, अवस्थान और : कुमाबार्गने करने अने—'केक्काने | वै वार्थ कुमाबार्गने अन्द्रे जो कामक है, कुम प्राम लोग विश्वार को क्या सम्बों के समाध्ये।'

यो नवामन श्रीनरोन रकते हुन गई और कुमारको यर मारतेनी इकाने मैसी हुन आसे मार मा गईते। फिर सिंह मैसे महा को सार्वाची स्थेत सेमा है सरी अधार महीने मार्ग और कुमेंकको स्थाने है कुमारको सा सारत। इसने मार कामी और आंधी पहाला देखते हुए श्रीनी सारता हतानी और एक मैसी सामा पास हम मिस। यह सारत हुनाता कर-नर मार्ग मा था। अस मारती और देख श्रीनरोंद मोरी—'दुनाता । मार्ग है व मा हिए, जा कि हो मार्ग और हुनोक्सो साम मो हुनी सार्वाचारको भीता हुए पहाली होन्सीय केमोन्सी हुने किस हान्सी भीता था? यह, अस्य सेम्सीर हुन्नी हुने किस हान्सी भीता था? यह, अस्य सेम्सीर हुन्नी

मीनको यह पर्नका क्या कुन्यर हु:काराने क्यारे और देवा। का काम कामी और जार नहीं, या कोको यह का और यह आवेकने कामर केसर—'या है यह क्या, यो क्याने कुन्य-राजके राज्या जीवा है, विसर्व समूजों गैंओचा क्षम क्या किसने हैं क्षान्य-मोरोब्स संकृत निव्य है। मीनकेंग्र कर कामर यह कि अवान-प्रकृत



कीरक, अन्यान्य संपासन् तथा हुए सोग भी बैठे-बैठे देस खे के, मैंने इसी सहिते हमारे हीपडीवेंट केल वहीके थे |'

दु-वासनकी का कांगरी कर सुनकर धीमके अस्की कार्यस का मैठे और अपने होनों इक्षोंसे अस्की हादिनी की कार्यकर कई धीगते खाइने रूने। निर समूर्ण केंद्राओंको सुनकर बोले—'मैं दु-इस्तवकी की उरस्ते रूप है, अब का आव स्वापना ही कार्यन है। विस्ते सम्बद्ध है का अस्कर इसको मेरे प्रकार कक्ष ते।' इस अक्षर कार्या वीरोपर आक्रेप करके प्रकारी की मेरे सोवने परकर सम्बद्ध की उरस्ता भी। इ-कार्यक्षी का पुन्य कार्यक समय कर्मा की, बीमनेव असीने एक बीरोके सामने क्रमको पीठने स्में। इसके कह इ-कार्यक्षी कर्मी परवाद में असका



मरम-गरम एक मीने करो। कारणार, उन्होंने सरस्यार उतासी और जनको मरम्या बहुते जनना बार दिया। इस 2000 अपने प्रतिक्ष कार बार दियानेके दिन्ने भीमने दु:इसलेक्स मरम-गरम एक-गरम किया। वे उसका कार रोका बहुते कने—भीने प्रत्यके द्वालात, पहुद और वीका तथा दिया स्त्राम भी जानकान किया है, दूस और दृष्टि विस्तेने हुए याने प्रत्यका भी त्याव किया है। इनके जानको भी संस्तरमें बहुत-से पान करनेकोमा पदार्थ है, विस्तेने अपनको समान पहुर तथा है, परंतु मेरे क्यूके इस रक्षणा साम से उन समाने विस्ताम है, इसमें समाने अधिक पर है!

को बहुबार में बर्गवार आके एकका आसाहर करते

और अञ्चल इसी भरकर कालने-कुटने लगते थे। उस सम्बन्ध विन्होंने उनकी और देखा, में घयसे काकुल हो पृष्णीकर किर यहे। को घवराचे नहीं, उनके इक्तोंसे मी इक्तिकर से किर ही यहा। किलने ही घटके घर असी केद करके चीक्रने-विश्लाने समे। उस पीते समय उनका उस कहा पर्यकर कार प्रकृत था। अस इसमा कहा-से बेट्डा अवस्था



होकर 'अरे | यह प्रमुख नहीं गावक है' हैरन करते हुए वितासेनके साथ जानने रूपे। वितासेनको ध्वरणे देख पुश्रामणुने अवनी सेनको साथ सामस्य पीवा वितास और तेन वित्ये हुए पात साथ बारकार हो बीध हाला। वितासेको धी पुश्रामणुको तीन और समझे सार्थिको हः धान करे। एक पुश्रामणुको सान और समझे सार्थिकार एक वीता नाम परमाया और विवासेनका परमाक बहुसे अरूप कर दिखा। समझे पाइकि परनेसे वार्थ सोमये पर गया और सपना परमाय विरुक्त हुआ पायका-सेनको स्थान सरमा। सा समय अरूपा वैतासी स्मुक्त साथ स्थान सरमा।

इसर, पीपसंग दुःशासनके स्वाच्ये अवनी अवस्थिते रोजर विकट नर्जना कस्ते हुए स्वा क्षेत्रेको सुकाल बोरो---'नीय दुःशासन १ वह देख, मैं सेने नरोका पून के स्वा है। अस वितर सानवाने क्या दुआ दू कुछे 'बेरा-बेल' व्यक्तर मुख्येर से स्वी। इस दिन क्येस्ट-स्थाने को स्वेश सूत्रों 'जैल-बेल' काकर सूत्रीके मारे तथा उठते थे, उन सक्को आज करेवार 'जैल' कनता हुआ मैं स्वयं नावता है। पूर्वे किय विस्तवकर नहींने काल दिया गया, वहाँ जाले स्वेशि कैसा। किन इनलोगोको स्वाहतपूत्रमें चललेका व्यक्ति कुछ और जूलों स्वयं राज्य कीनकर हुने कंगलों सूत्रेको प्रवाह किया गया। स्वाहे चोर पुरुष मो इस बालकर है कि वर्ध स्थाने हैंवर्धका केश प्रतिश गया। युक्ते हमें कुण्यका कालोको का स्वाहत प्रतिश गया। युक्ते हमें कुण नहीं किसा। स्वाह विराहत कालमें को हेख कोनका वह-को के अलग है। समुद्धि, तुर्वोकर और कारोको सामानो हमें को-को कह सहने यहे, उन सथका मूल कारण ह है का।

वों बहुबार अस्तरण सर्वेषमें गरे हुए स्वैपक्षेत्र श्रीकृत्या और अर्थुको पास गरे । जन समय अनका सरीर सुन्तो स्थापन हो यह सा । वे पुरस्कातने हुए संतरे—'संते ) वैने पुजारें



दु-कारतनके निवसमें को प्रतिक्त की औ, उसे आज पूर्ण कर दिया । जब इस रक्षणाने दुव्यंक्तकारी यहपशुका क्य करके कूसरी जक्षि कर्तुमा और इस कोरकोकी जाँकोके सामने ही क्य कर दुरावकार किर मैरोसे दुकारकर कुळल कर्तुमा, सभी भूते क्रान्ति निरोधी ।' ऐसा कक्षणा से करवने समें ।

### धृतराष्ट्रके दस पुत्रोंका वध, कर्णका भय और शस्यका समझाना, नकुल और वृषसेनका युद्ध, अर्जुनक्करा वृषसेनका वध तथा कर्णके विषयमें श्रीकृष्ण-अर्जुनकी बातचीत

करते करते ही कोरवीकी तेना चीनके हरते पहल सामे । कर्ण देशता है यह नवा । सहस्रव । हमाबा बाह क्षानेवाले कलावनंद्र सञ्चय क्षेत्रका का शराहर देखाउ क्रांचें मनमें भी बद्धा भारी का तक नक। उन्त क्रान काका अध्या देवका चैवका गाव एका गर्ने। इंड श्योंने करोते का समयोगित का कही — 'श्यासका ! कर न करो। इन्हों-की बीरको का होका की केट। है क्रमालोग मीनके कामे काराका जाने का हो है, हर्केका भी पाईकी कुल्ते क्षारी होकर विवासीकारिया हो कहा है। भीवरोग क्या द्वारास्थ्यात रक्त की रहे थे, तथीसे कृत्याकर्त आहि भीर तथा परनेते क्ये हुए ग्रीटक क्रूडेकरको कार्रे मोलो बेरकर करे हैं। सभी सोकते नावक है, सबबी भेरत तुल-से हे यो है। ऐसे अवस्थाने तुन पुरुवसंद्ध वरोस्य रहते और क्रीनकर्मको सामने रहत्वर अर्चनका मुख्यान्त करो । हुवीयन्ते सारा चार तुन्हरे ही अन्त एक है । हुम अपने बल और इतिको अनुसार उत्तका बहुन करो । बहै विकास को से कहन कही मोर्सि फैस्टेमी और क्लाब्स केनेकर श्राप वर्गको प्राप्ति निवित्त है।"

क्षणको का सुन्तर सार्थने अपने इतको पुरुके विके अवस्था काम (असक्-अधर्ष माहिको) जनावा। इतर, म्यान् सीर तक्षणमे क्षणेकार चढ़ाई की और रोको अस्था अपने जनुको चाणोसे पीड़ित करना अस्था किया। जसने क्षणे जनुको चाणोसे पीड़ित करना अस्था किया। जसने क्षणेको जनुको कास इतक। यह क्षणिक पुन्ते दुसरा बनुव सैका नकुराओ कासर कर दिया। यह अवस्थिताका हाता की, इसरियो पाडीकुमारस दियाओको कर्या करने साथ। कार्य कार आक्रीके ज्ञाससे न्यूक्तके स्टेस्ट् रंगकारे कार्य केर्नुको कर कार्य । केर्नुके व्यर्थ कार्यपर स्मुक्त क्रमोने कार-कार्यपर हे रचने कुद पद्म और कारका-कृत्या हुआ रच्यानियों विकार राज्य । कार्य क्रम्-बई रवियों, कुद्रस्तारों और क्रमीनवारोंको करकारके कह कार्य तथा अकेर्ड ही के कार्य केर्नुको कार्यपर कर कार्य । किर क्रमोनको पी वार्यपर किया और किसने ही पैदर्श, बेट्डो क्या क्रमियोंको केर्नुके क्याने केन्द्र हिम्स ।

त्रण कर्णके पुतने नकुराओं अकारी वाजोंसे वीचवार त्रणके कार वीचे सम्बद्धियों हाई। स्था थे। नकुरा भी वसके सम्बद्धी जीवारओं वार्च करता हुआ और पुत्रके अनेतरी अस्थ्रिय पेगरेन्से नकुराओं कार्यक हुआई-सुबाई कर हासे। तार कर वार्यक कार्य सम्बद्धियों क्षय ने सुबाई कार्य करें। तार कर वार्यक कार्य सम्बद्धीं कार्य महत्त्वाती कर्मारें वीच कर्म-पूजने कः व्यापीति कार्य महत्त्वाती कर्मारें वीच कर्म कर्मण करवार क्षयक्ती क्षये महत्त्वाती क्षया हुई और वीच कार्य कर्मण करवार क्षयक्ती क्षयि स्थाप कर वैदां। अस्य एक क्षेत्र कर्मण करवार क्षयक्ती क्षय स्थाप कर वैदां। अस्य क्षय क्षयक्ती क्षयों क्षय क्षया क्षया क्षय क्षय वीच्याक्ती क्षयों क्षया क्षया क्षया हुई और प्राप्त क्षित्वार स्थाप केष्ट क्षयक्तीय क्षया कार्यान स्थापी

इसी समय बहु सानकार कि 'स्कुटर कुम्सेनके वाजोंसे कीता है, असकी सरकार सम्ब कृत बहुर गये हैं और बहु रक्कीन हो कृता है।' हुसके कीते कृत, सांस्कीत राम डीक्डीके कीतों कृत नरससे हुए बढ़ी जा खूंके और अपने कालोंसे जानकी संक्रके रच, हाती इसे बोहोका संदार करने रूने। बहु देखा, आयके प्रकार नहारची कृतामार्थ, कृतमार्थ, अस्त्रामार्थ, कृत्येका, उत्पृक्ष, तृष्ण, काल और वेदासूका आयोग कालोंसे सेका सिका।

क्य नवीन मेकके समान कारो और वर्षत-शिकारके समान क्रेने एवं भवेका केनातरे प्रतिकोके साथ कुरिन्दरेको सेनाने अन्तर्के पहारिक्षेतर काम क्रिया। कुरिन्दरकके पुत्रने स्वेतेके दश काम अनकर स्वरंगि और चोड़ोंसदित कृत्यकर्वको कृत काम क्रिया, मिन्यू अन्तर्ने कृत्यकर्वके सामकोको पार सामार का इस्तीमिक समीतन निय और का गया। कुरिन्द्राककुम्मस्था कोटा पाई सम्बादको इन् कुम्मिरे निया था, वह पूर्वको किलाके समान करवाने इन् सेपरोसे नामाराजके रचकी बिकार्य कुम्मर करे बोरसे कुर्याकको कुर्मार कुम्मर केरे क्षारे क्षार सामा किर कहा इस्तीकको इस्तीर कुम्मर कुमरे क्षेट्र पाईन सम्बाद प्राप्त सामारी सम्बाद वीधका सम्बाद कुम्मर केरा कुम्मर करवान किर पाए। साम कुरिन्द्राकार दूसरा कुम्मर कुम्मर कुम्मर किर पाए। साम कुरिन्द्राकार दूसरा कुम्मर कुम्मर कुम्मर कुम्मर साम कुमिन्द्राकार दूसरा कुम्मर कुम्मर कुम्मर। किन् कोरो के देसरे क्षारको कुम्मपान कुम्मर कु

इसके बाद हार्याच्या है केंद्रे पूर क्रम कांगीय उपाने क्रमानका सक्रमने किया। असे अपने वानोधे क्रमके होते. स्ताबि, क्या तथा बनुवारे जा करके को भी पर रिक्षा । उस कुमले उस पहली समानो काल, काम किन्छन क्राक्टन बाधर कर दिया। योट सामार राज्यक का निर्माण नेवाएक कुल्पर प्राप्त और अपने वारों करणेले उसने उब और योद्योगिक कुळळा कन्यर निकास हाता अनाने केमानक-कुमारके कार्योने अन्तर केमार राजनकीत का गमराम भी कारण्या पास का गया । हमर, देवन्य-कृत्या भी प्रकृत-एक्के बालीसे नीवित क्षेत्रम शिश और का पना। इसके बार दूसरा कुरिक्य-केन्द्र इत्योवर काल हे सक्टीको मारनेके रिश्वे आगे कहा और उसे कार्योंने पीकित करने रूपता। का हैक पाम्बास्यकने कामध्य भी जिस कार निम्बा । सुनरी ओर महारा-दा क्यानीय जानकी केनके बढ़े-को मजाजी, क्षोड़ों, रक्षियों और वैक्लोक्ट संदार करने तरह । उस समय क्रारिक्ष्माओक एक इसरे पूर्ण करका सामन किया। असरे हिस्ते-देश्ते बहुत-है डीवे बाग बरकर इसलेक्स्बे करना कर दिया । तम कारानीको क्रोक्ये करका कुरावार काराने धरिकारकारका प्रत्य कर करा।

इसी बीचमें कर्यकृत्यर क्योगने स्थानीकार अक्रमण वित्या। उसने नकुरू-पुत्रको सीच क्योगो कंपल क्यो सर्चुक्को सीन, जीवकेरको बीच, क्यूनरको साथ और बीकुरमाओ वास्तु वार्तोसे बीच प्रस्थ। स्थान क्यूनर्गिकक परस्थम देखा समझ करिय इसी जरकर सामग्री अस्तर करने रूपो। अर्जुनने देखा कि कर्यापुरस्था नकुरुको केंद्रे पर कार्य ग्रो है और सामे बीकुरुको की ब्यून क्याना कर सिंख है, से से कार्योक स्थानों क्यो हुए सामो पुत्रकी और रहेदे। उसे साहारण करते हेना श्रम्भूष्याने अर्थुनको एक बातसे असूत करके को जोसो गर्जन को। दिस्स करकी वार्थी पुनाके कुरकारणे कामे कई कांकर कम मते। इसन ही नहीं, उसने पुन: स्टेक्टकारों ने और अर्थुनको सर कारोंसे नीय हारस।

हेला व्याप्तर अर्जुनने मनुषयी संगर की और कुमरेनगर निकास साम्याद सीमा विकार, गुरंत ही उसके काले अंत्रपति का पान कोई। उससे कुमरेनके मनेकानोने फोट पहिली कुमरे बाद अर्जुनने कर्तकुमराका बनुव और अस्तरी केनों कुमरी काट कारों। किर बार शुरोने अस्तर



मारक इस दिया । यहाक और मुकरी कर कारेयर कुस्तेन रमसे सुरुवार वर्गन्यर का यह । पुत्रके प्रवसे कार्यको बाह्य हु:स हुत्या, यह रोपने परवार सहस्य आहरण और अर्जुनकी ओर चैज ।

महाराज ! कर समय कार्नको अन्ते देख जनकार् बीकुमाने अर्थुनसे इंसकर कहा—'काह्यन ! आठ उन्हें निसके साथ त्येश तेन्द्र है, वह महारथी कर्न आ छा है, अब सैयल जाओं। देखों यह है अस्तर रक्: अस्ते स्टेस्ट मोदे सुरे हर है। श्लीके स्थानक क्यां स्थानका कर्म विस्तरभाव है। स्थाप धारि-धारिको कालाई कहाती है सवा असमें होटी-होटी च्यून-ही चंटियाँ होना पर हो है। अंध अस्की काम से देखों, इसमें सर्वका विद्व करा प्रथा है। कर्ष कालोकी बीक्रम करना कुना कहा जा रहा है। उसे बैक्स्बर वे नाक्सन-पहारणी चयके नारे अपनी सेनाके साथ भागे का यो है। इसस्ति कुलीकदर ! तुन्हें अवनी प्राप्ते कृतिः रुपायाः पूल्युक्या का करना वाहिने। रुपने हुन केवल, असूर, गाउन सभा स्थापर-जेनमकार रोजो स्वेक्टोको बीतनेमें समर्थ हो । इस बालको में बालक हैं। विश्वती भूषि क्क्री ही का एवं अभ्यार है, विज्ञाने तीन जांचे हैं, जे मलकार ज्यादर बारण करते हैं, इर जनकर बहुदेवजीको कृतरे लोग देश भी नहीं सकते, फिर इन्हें त्राव युद्ध कारोबर्व के बाद हो बाई है? परंतु हुएने सन्दर्श बीकोका सरमान करनेवारे उन्हें पनवार दिवको बजां प्राप्त आरामक की है। देवलाओंने की दुनों कावान क्षिते हैं। इसरियते हुन क्षित्रहरूवारी देखोग जनवाद इंकारकी कृत्यसे कर्मका उसी प्रकार कर करो, जैसे इन्हरे न्यूनिका शिक्स था। मैं जासीबाँद केल है—बुद्धने कुलारी क्षित्रच हो ।'

अर्थन बेले—पद्युद्ध ! सम्पूर्ण लोकोंके युद्ध, आव पुष्ठापर प्रस्ता है, से वेरी विकार निर्देश्व है: इसमें स्टिक्ट भी

संशिक्षेत्र मिन्ने पुँजनका नहीं है। इसीकेज ! कोड़े हरिकार रकको कर्मके पास से बारियो । अब अर्थुन कर्मको पारे



किया क्षेत्रे नहीं और समजा। आस आप मेरे प्राप्तेहें हमाने हमादे हुए कार्यको देशियो, या भूती ही कार्यके कार्योते करा पूरत ऐक्तिकेया । अस्य शीनी स्वेक्ट्रोक्ट्रो मोहर्ने कुलकेवास्य मा वर्गका पुद्र कारिया कुछ। है। क्याका पूजी कार्का होगी. स्वतंत्र संस्थाने स्तेत इस पुजुली वर्षा करेंगे।

मगण्य बोक्स्परते ऐसा बहुकर अर्जुर सही श्रीवताले अपने अने। वे भाष्यो-वस्तो कहने सरो—'हरीकेक र क्षेत्रीको नेव कावहचे, वार्गाने राहनेका समय बीख जा का 👫 अर्थनके देख कहतेवर जनवान्ते विजयकः बाल्यन हे करका सम्बद्ध मिन्य और चेन्द्रोन्डे इंग्डिन एक है। इसमें अर्जुनका रच कर्मके स्थापे बावत सहा हो गया।

# इन्हादि देवताओंकी प्रार्थनासे बहुत और शिवजीका अर्जुनकी विजय घोषित करना तथा कर्णका ऋत्यसे और अर्जुनका बीकृष्णसे वार्तालाप

क्योंन भार क्या से उसे बढ़ा दू स हुआ: बहु देनों केले अभि व्याने लगा जिन सोवसे त्यतः अवि व्याने, कर्ण मर्चुनको पुत्रके लिये ललकारका इतक आने सहा । इस सनव विभूवनपर विजय प्रतिके तिथे व्यक्त हुए हुद्र और

सक्तर करते हैं—स्वारस्य । अवर क्रम करनी हेनल कि | वरियक्ते व्यक्ति का दीवी बीचीको एक-पूर्णरेसे पित्रुपेके दिखे ैकर देश सम्पूर्ण प्राधिकोची अध्याने होने समा। बहैस्य और पाणक केन्द्रे क्योंके स्केन कहा और वेरी करूने त्योंन इसमेर अपनी पुजारे टोम्पने और सिंहताद करने रूपे। उन सम्बद्धी तुमुख आवान चार्चे और वृजने लगी।

में क्षेत्रों और तम एक-यूगरेका सामना कार्यके तियों कींद्रे, इस समय कारण और कारको समान प्रतीत होते में



स्था इन्ह्र एवं वृक्षासुरके समान क्रोकों को पूर् थे। वे का और कंटमें देवनाओंके द्वान थे, उन्हें देवकर देवर कन स्थान का माने एवं और कदाना देवकाने इक्क के नमे ही। दीनों पहानकी पुत्रके क्षित्र नाम अधारके क्षण कारक क्रिके पूर् थे। उन्हें आक्षणे-सामी उन्हें देवर आपके क्षेत्रकोंको क्षणे अस्ताता कुर्व। अर दोनोंने विकासी विकास होती, इस विकास समानोंको संबंध होने समा।

महाराज । कर्ण और अर्थुनवट युद्ध हेकानेक रिले हैनरा, हानव, क्यार्थ, नाग, कहा, प्रश्नी, नेवकंक नहीं, आद्यासकोची पितर तथा सथ, विद्या पूर्व ओवस्विकोके अधिद्यामा देवता नाना स्वाराध क्या धारण वित्ये अन्तरिक्षणे हाई थे। यहाँ उनका कोल्लान सुनावी पहारा था। सहावित्यें और अवायतियोंके स्वया सहावी तथा सगम्बन् इंबार की विश्व विकारों में देवकर वहाँ युद्ध देवने आने थे। केवताओंने इसावीसे पूला—'प्रगणन् ! बटेरव और प्राव्याप्यक्षके इन में अवाय वीरोमें बटेव विकारी होगा ? देव ! इस को पहारे है—इसकी द्वार नहीं ही विकास हो । कर्ण और अर्थुनके विकार सामा संसार संदेशने पढ़ा हुआ है अर्थ ! अर्थ क्यां

यह प्रश्न सुनवार हुन्हों देखविदेश विशाधको अन्यय विज्ञा और व्यक्त—'शराबन् । आप प्रकृते क्षा कुते हैं कि

ा विकृत्य और सर्वृत्यों है विकार निवित्त है। आपकी यह यह सभी होनी पर्वापे। इस्ते । ये आपके परतोपे उत्तय करण है, मुक्तर असा हेहने।'

इन्नाची कर्मन सुनगर प्रमा और पंचारवीने सहा— देवरात : महत्त्व अर्थ्यन्त्री है विका मिहित है। उन्होंने सम्बद्धनारमें अधिकेको हुत किया है, सामि अन्यर हुनों भी स्थानक महिनाचे है। अर्थुन साम और प्रमी अस्त स्थानको है; हार्सिने क्यार्ट विका अक्षत होती, हुनों



अनेक भी संखे वहीं है। संस्थाने साथी स्वयून्त प्राचान् वरायलने उनका सार्यत होना सीवार किया है। वे करवी करवान, प्राचीर, अस्तिकाके प्राचा और वप्रशाके क्षेत्री है। उन्होंने कन्नेकाल पूर्ण अस्त्रका किया है। इस अध्या अन्त्री किया विकास स्वयून्त स्वपून्त स्वयून्ति तुम्त है; इसके अस्त्राचे, उनकी विकास स्वयून्ति हो हो कार्य है आर्थ व कर्मुन प्रमुक्ति से अस्त असारे हैं। वो अस्त्री पश्चिमाने देखते विकासको भी अस्त असारे हैं। वेद ऐसा हुआ से निश्च ही सम्पूर्ण त्येकोम्बर असा हो स्वयून्त । अध्यान क्षत्र अर्थुनके सोच कर्यन्य पह संस्था कहीं नहीं दिख संस्थातः। ये ही सोचों संस्थाकी सुद्धि करते हैं। वेदलेक सा सनुक्तवेकारों इन दोनोकी बरावरी उनके हैं। वेक्सकेक सा सनुक्तवेकारों इन दोनोकी बरावरी करनेकारक कोई नहीं है। वेक्स, क्षत्री और सार्याके स्वयून्त कीयों त्येक एवं सम्पूर्ण सूत्र कार्य सारा विश्ववृक्षका

🕏 इनके सामानमें 🖢 इनको 🕏 जरिवनो सर्थ स्थेप सपने-अपने क्योंने प्रयुत्त है. खे हैं । अतः विकार से सीकृत्य और अर्थनकी ही होगी। यहने बसओं अवन्य प्रकारेके क्षेत्रमें समार ।'

ब्रह्म और प्रेक्टवीके ऐस्य बक्तेम इन्हों कपूर्ण प्राणियोको प्रशास रूपके असत स्थाने । वे केले—'कुलो पूजा प्रमुखीने संसारके क्रिकं किने के कुछ कड़ा है. जो इच्हों मेरे सुना है होगा। यह बैसे है होगा, उसके किसीत होत्र असम्बद्ध है। अर्थ: अन्य निर्देश्य हो न्याओ । इन्यादी मात सुरकार समझ प्राची विकित्त हो गये और हुवेंने परकार बीक्रम और अर्जन्द्री उत्तरन करते हुए करना सुनन्द्रिया क्रतीकी वर्षा करने लगे । देवलानीन भई प्रशुक्त दिना करने काले सर्वे ।

प्राप्तान् होयुक्ता और अर्थुरचे तथा प्राप्त और प्राप्ति अस्ति-अस्त्य अयो-अयो सङ्घ कव्यो। सः स्था अ रीनोंचे काचरोको हरानेकाल यह भारत्य हुआ। केनोके रबोपर निर्मात कवाएँ होन्स या श्री व्हें । कर्मकी जनस्थ प्रेस राज्या करा हात था, कारण संबोधी सीवरण्या विदे था। अर्थात्वी समापा एक होतु कार केंद्रों था, के बसारको समाप के बावे क्रिक्ष था। या अपनी स्वांके प्रतिकृते हरावा बारशा था, अवसी और देखना की कठिए या :

चनवान् ब्रीकृत्यने सरक्यी और अभिनेधी औरी मार्का हेका, माने उसे नेक्क्सी बालोसे बीच हो हो र कार्यन भी कार्या और जारे स्थापी हों। दाली ( जिल् करने निका क्षेत्रमध्यो है हो, सरमधी परके हेर नवी। इसी प्रकार कुचीनका कामुक्ते भी दृष्टिका कर्मको पत्तत किया।

क्षान्तर-वार्च सामाने वैताका क्षेत्रक—'काम ३ महि बद्धानिक इस संवासने अर्जुन पुत्रो यह बाले वो तुम सन्ध क्तेने ? जब बताना ।" कानने सहा—"कर्ग ! यदि ने अपन हुने पान क्रानेने हो मैं श्रीकृतन तथा असून ऐनोमते ही मोरके कर सार्थना ।"

इसी राष्ट्र अर्थनमें भी औदान्यारी पूछा; तम वे हैसका वक्षाने सर्व-"पार्व ! क्या बढ़ भी सब हो सबसा है? क्रमानिक सर्व अपने स्वापसे गिर बाब, सन्त्र सन्त अन्य और काम अपन्तं अध्यापथाम होरहकार चीतारच्या स्रीमार कर हे--- वे साथी करों सम्बद्ध है आहे. बिज्य करों शुचे थार हरते, मा करावि सम्बद्ध नहीं है। यदि किसी तक ऐसा हो जाय ते रंग्सर क्राइ कावना। ये अपनी भूजाओं से कर्य उक्त क्रमच्चे मस्त प्रतिय (

सम्बद्धमूकी बाद सुरुवार आर्थन हैस यहे और मोले --'जनाईन । ये प्रस्ता और कार्य से मेरे ही दिख्य कारणी नहीं हैं। अस्य अस्य देशियोगा में प्रमा, मामम, प्रेरीस, मंत्रूप साम्री, १४, बोड़े ३० राज प्राच्ये सहित वर्णको अपने वालोसे क्राचे-क्राचे कर अलेख । जान सुन्युक्ती क्रियोंके विश्वास केन्द्रात स्टब्स कर चर्चा है। ये अवस्य विकास कोगी। इस अहरूकों मूर्जने प्रेपकेनके सच्चने असी देख नांचार अस्पर अञ्चेष क्रिक्त और इमलोगोकी यो क्लिलर्य उद्धर्य थी। अरः ज्ञान प्राप्यो जनान ही है। प्रार्तना (

# अग्रत्यामाका दुर्योगनसे संधिके लिये प्रस्ताव, दुर्योधनद्वारा उसकी अस्वीकृति तथा कर्ण और अर्जुनके युद्धमें भीम और श्रीकृष्णका अर्जुनको क्तेजित करना

सञ्जय कहते हैं—पद्माराज । तहनजर इच्छेपन, कुलवर्षा, इक्ति, कुराबार्य और धर्म—दे पांच बहरवी सीकृष्य और वर्षुत्रपर प्रस्थानस्थानी भागोचा प्रकार करने समे । यह देश बन्द्रायने उनके करूर, काम, सरकार, कोई, इन्ही, १४ और स्वरंति आदिको अपने मागरेने नक कर करकः साम क्रे कर प्रदर्शन्त यन-पर्दन करके स्तरत करेको सन्द बागोस्त निसाय पनवा। इत्तेवीचे वर्ष संबद्धे रही, सैकड़ो हार्टीस्टार और एक, तुनार, बना तक काम्बेट देसके बहुतेरे पुरुषकार अर्जुनको पार करकनको इन्छम्पे देखे आहे. परन्तु अर्थ्नरे अपने बाजो तथा श्रुरोको पारसे उर 🗐 हे, जिल्हु इस चुटुने यारे वर्ष : बही दशा पीना आहि

सक्ते इतन-अतन असी तथा वस्त्रकोधी कार निराम । उनके पोर्टी, क्रांक्यों और रवोच्ये भी कार करूर ।

बह देख आकाराने देखताओंकी तुनुभी कर उठी, सभी अर्थुनको सामुख्य हैने लगे । साथ ही बर्धा कुरसेकी वर्षा थी क्षेत्रे राजी । इस समय क्षेत्रकुमार अवस्थाना कुर्वेकाके पास क्या और उसका द्वार अपने द्वारामें लेकर सान्तना देता हुआ केरच---'क्टॉकन ! अब असत्र होकर पाक्कवोसे संबि कर तो, निरोक्तो कोई रहण नहीं है। आपसके इस सम्पर्कको विकास है। तुन्होर पुरुदेश अन्ता-विकासे महान् पन्तित

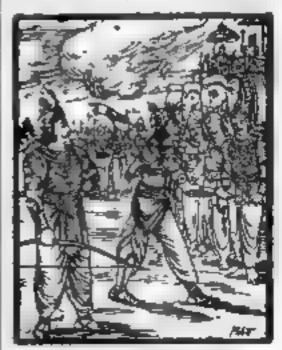


महारकियोंकी भी र्ह्म । ये और माना मुख्यकों से जनका है, इसलिने अन्याना क्ये हुए है। अनः अस हुन चन्यानेने विकास किरमानामा एका-शासक साथे । वेरे क्या सार्थके अर्थन सामा हे जार्थने। बीक्षण भी विरोध नहीं पहले। विविद्या हो सभी प्राणियोंके क्रिक्षे के लगे खते हैं, अब- के भी मान होंगे । बाबरी यह भीमसेन और नकुल-सब्बेब; हो बे भी भारतमंद्र अभीत है, काली इसलंद्र निरुद्ध कुछ नहीं करेंगे। तुन्हारे साथ पान्यजोको सीच हो जानेकर कारी प्रसादा क्रम्पास होता। जिन पुन्तरी अनुपति लेखर मे राजाल्येण भी सपने-अपने देसको लौट कार्च और सनक पैनिकांको प्रजाने ब्रह्मारा मिल बाब । प्रवाद ! ब्रीह केरी यह बात नहीं सुनोने तो निश्चन ही ऋड़ओंके हाकरे की काओंगे और उस सरक दुन्हें बहुत पद्धान्ताय होता। आव हुपने और सारे संसारने यह देश रिल्स कि अधेनो अर्जुनने यो परावाम किया है उसे हम, बमसम, बस्म और बुओर भी नहीं कर समले । अर्जुन गुजोंने मुहले ब्युबर है, के भी चुके पूर्ण विकास है कि के मेरी करा नहीं राहेने। नहीं नहीं, के सक् तुम्हारे अनुकृत बर्ताच की करेंगे । इसलिये सक्त् ! हुन प्रसारतापूर्वक संवि कर रहे । अपनी वनिशु विकासके कारण ही मैं तुन्मों पद प्रसाम कर यह है। यह दूस इसे प्रेस्पूर्णक स्वीकार कर त्येंगे तो मैं कर्मको भी बुद्धते केव हैंगा। विद्वान्त्रमेय बार प्रध्यपके विद्वा बंदलते 🛊 । एक स्कूब विद्व

होते हैं, विकाद मेरी स्थाधारिक होती है। दूसरे हैं सीव करके बनाने हुए दिल। तीसरे ने हैं, जो बन देकर अपनाये को है। किसीका प्रकल प्रकार देसकर को स्वतः करमोके निकट आ नाते हैं—करकागत हो जाते हैं, ने चीचे प्रकारके किस है। पर्यक्रमोके साथ दुखारी सभी प्रकारकी निजता सम्बद्ध है। बीएवर ! महि हुन प्रसारतापूर्वक पायक्रमोसे विकास स्वीकार कर सोने से दुखारे हारा संसारका बहुत बहा बारकाम होना।'

इस अवनर जब अखानाम्यने दुव्यंक्यते कियाँ वात नाई वो कामे नग-ही-पर किया है कर कहा— 'मित | तुम वो कुछ कामे हो, जा सम ठीक है; कियु इसके सम्बन्धने कुछ नेते जात भी द्वान हो। इस कुहुंदि शीमसेन्ने कुछानामको कर इस्तमेने पश्चाद को करा कही थी, जह अस तो नेते हरकते पूर नहीं होती। देखी रक्ताने कैसे प्राप्ति विशे ? क्योक्स शिंव हो ? कुछ्या | इस समय तुन्दे नामोंके पूर्व कर कर देखेली कहा की की कहाती काहिये; क्योंकि असून कहा कहा की है, उसा अस कार्य ग्रम् करव्यंक्त गर

अक्रकारको यो सङ्ग्रहर पुर्वेचको अनुसर-विजयके प्राय जो प्रत्य कर रिका, जिस अपने मेनिकोसे सङ्ग्रा----



'जरे ! पूजालेन हाजोरी जान हिन्दे सूच बच्चे बैठ गये ? इन्द्रशोधन बच्चा काके उन्हें यह हाले हे इसी बीचमें क्षेत्र के होंगारि कार्य कार्य कार्यून मुख्यों क्रिके कार्य्य-साम्यों भारतर इट सर्थ । होनोंने एक-इसरेकर कार्य कार्यका कार्य भारत्य किया । होनोंके ही संतरिक स्वेर के से कार्य कार्यों सिंध सर्थ । कुनवरी नारी कार्य कार्या : वे कार्य कार्यों समान कार्योंके इन्ह और क्यासुरकी चर्चित एक-कुरोपर कार कर को वे । कर समय इन्द्री, कीर्, रक्ष और किस्तेसे पूक्त होनों ओरकी केक्षी अवके कार्य हों भीं । इसरेही में कार्य प्रवचारित हार्योंकों चार्ति कार्युनकों कार्यकारि कहा--'अर्थुन । अस किस्ता करना व्यर्थ है । कर्य सम्यत्य है, इसे केंद्र कर्यो; इसका प्रवचन कार्य है । कर्य सम्यत्य हमारे का्ने कर्यों होता भी कर्योंके कार्ये कर्ये क्यांने अर्थे ।

हम पहले काणी का स्वी-वहे बारतेले अर्थुनको सीय हैका। दिन अर्थुनने तो तेश की कुं बारताले का सामकोते कार्याकी सांकर्त हैक्से-इंक्के प्रकृत किया। सब केथे एक-हुतरेको सान्न-अर्था कार्याका पितान कार्या रूपे और हर्वते धारताल कार्याकामां आकारण कार्य तथे। अर्थुन्ये कार्याक क्यूबारी प्राचक कुंचारका कार्या कार्याक, पार्थक, बारतालां वृद्दे, अ्यूबिया और प्रचंचाद साहित कार्याकी हुनी कार्य है। विद्यु अर्थुन जो-को काल कार्या केन्द्री थे, कर्ता-कार्याको यह सान्ये सामकोते यह कर प्रचंचा था। सहस्यात कर्युने आवेन्यकाक प्रकृत किया। इससे पृच्छीते हैका अकारणाचा आवारी कारण केन्द्रा एको विकास कीर क्रिका कार्याको सामकोत्वा कारणे हुन्द्रस्थी अर्थाका क्रिका है, ज्ञारी तथा अस्त्रकी कारणे कुन्द्रस्थी कुर्द्र वैशिष्ट्रोका क्रिका है, ज्ञारी तथा अस्त्रकी कारणे कुन्द्रस्थी हुद्द वैशिष्ट्रोका क्रिका है, ज्ञारी तथा अस्त्रकी कारणे कुन्द्रस्थी हुद्द वैशिष्ट्रोका क्रिका क्रिका क्रिका होने क्रिका।

आयोधनावादे व्यक्त देश को साम करनेके निने वाली बाइनासका प्रयोग किया । उससे वह कान कुछ वर्ष । का समय मेवोकी करा किर आवी और वारों विकासोने सेनेक का गया । एक और पानी-की-कानी नका काने रूप्य । का अर्थुंनो वायावादाने कार्यक कोड़े हुए कार्यकायो कार्य कर दिया; वादानोकी वह कहा क्रिक-धिम हो गयी । कार्यकार, क्रांटी पानकि कर्यु, उससी अन्यक्त क्या कार्यको अधिमानित करके अरवात वायावादात्त्री हेन्द्रसा करायो प्रयाद विजय । कार्य कृत्य, अस्त्रदिन्य, अर्थकार, अर्थकार, माराम और कार्यकार्य अस्ति संस्थाने

हरने रूपे। उन सम्बोसे काली सारे अह, येथे, बनुव, दोनों कोंके और कारती किंद्र करी। उस समय कर्मका छुटेर क्रवॉसे आकृषित हेका सुनसे तकान हे रहा या, हरेक्के को करकी आणि कका गर्धी। अतः वसने भी समाखे क्यार पर्यंत्र करनेवाले भागेताकारे प्रकट विश्व और अर्थनके कोकाको जब्द हुए बालोके दुवाने-दुवाने बार कारे : इस प्रकार अपने अवाधे सहके अवाधी व्यापार क्षानि कामून-रोक्यो रची, इस्टीनमार और वैक्सोबा संदर्भ आरम्प विकार प्रारंभावको प्रथमिक स्व का पासानो और केन्यांको की पीतिल सार्थ तन्त्र से वे की स्रोपमें परवार ज्यानर कर को और कार्ये ओस्त्रो तीवी काम प्रतका जो बीको अने। सिंगु कुल्कुले पाहारतेके रखे, इस्वीसमार और कुलकारोंके सनुकर्णकों अन्त्रों सामोले विद्यानों कर कार: वे बोहरो-विकासी हुए जन सामका करशानी है को । का सबस आयोर वैतिया करोबी विकास सम्बद्धाना विकास करने और साली पीटने रहते।

भू देख चीनकेन क्रांचार्थ व्यवस्था अर्थुनके कोर्य-'विकार ! अर्थकी अन्यदेशका कार्यकारं का पानी कार्यक्ष कार्य कुन्नी कार्यके के कार्यक्षित प्रकार-अध्या चीरोको देखे बार कार्य ? हुन्हें के कार्यक्षित वालक क्षत्रम भी जी कुन्नी हैं, किर की का कुन्युक्ते हुन्हें कार्य हैं। वाल कार्यका देखे बीच कार्य ? हुन्हों कार्यने हुए कार्याको क्षरने नह कर्य देखे कार्य कुने पुत्रों एक अर्थकेकी कार पासून हो गति है। और ! कार्यों कीर्यक्रियों को कहा विशे गये हैं, कर्यों कार्य कार्य श्रीकी और कार्यार कार्य कुन्यती, कई भी कार्यका कर्य । इस कार्य कार्यकों कार्यने रक्तकर सीच ही कार्यका नार्य मर कार्य । हुन क्षानी रक्तकराई कर्यों कर्य से हो ? अर्थ स्वायकार्यका समय कर्यों है।'

कारणार सीकृत्याने भी अर्जुन्तो कहा—'शीरवर । भा वस जात है? हुन्तो मिलने कार जात किये, कारणी जानेक कार शुन्तो अवको न्या कर विचा। आस तुम्पर केश केइ का रक है? कान वहीं की ? ये तुम्परे कृत कोरण किसने कृति परस्यर नगर रहे हैं। किस कैसी हुन्ते आहेक कुनने कर्मकर रक्तरोंको नाहा और तुम्बेद्धान काक अहरोंका विचान किया है, जारी कैसी आस कर्मको भी नक करे।'

#### कर्ण और अर्जुनका युद्ध

राजनं कारो है—ज्याराय ! चीनलेन तथा जीवृत्ताके इस प्रकार कारोपर अपोने सुरावाके कारात विकार किया । साथ ही, पूर्विपर आनेके जावेकनावर कार केंद्रर उन्होंने श्रीवृत्ताले कहा—'परावर्! अस में संस्थान कारावाक और सुरावृत्ताल क्या कारोके दिनो प्रकार कारावाक अस्तर आप अस्तर कार आ है। इसके विने अस्त, ज्ञानकी, चंकानकी, जनका केंद्रस राजा सम्पूर्ण प्रकारक पूत्री काराव है।' परावाको ऐसा व्यक्तर सम्पाराणीने जातानीको कारावाको अस्तर किया । परिवृ कारोर अपने वाकोकी जीवारको सा अवकात वह कर कारा ।

वह ऐसा वीकांग स्रोधने सक्तमा हो, उन्होंने स्टब्स-प्रसिद्ध अर्जुनसे बहुद--'स्वकारिय | यह संग्य कार्य कार्य है कि तुम प्रश्न स्टब्स इस्कूम्बर्ग प्रश्न है, इस्तेग्वे अन्य और विस्ती सक्तमा संग्यन करो !' यह सुन्यार अर्थुन्ते पूर्ण श्रावकों व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति क्रावकों क्रावेश सर्वा होते करते, जिससे वार्ट विस्ता सम्बद्ध स्टब्स के व्यक्ति क्राव-कोश वर नवा ! सेत्यार वाच्य ही उन्हें; उनके वर्षयार विद्यान वर्षा, व्यक्त और वर्षाय आहे अन्य की वैद्यानिय संग्यान विस्तावक सिर व्यवका निर्मा है कोई की ही क्षावे करें स्था ! किर्मान क्रावेश की क्षावकों मुख्य-मुख्य केन्द्रानीक क्षावे । इस्ते स्था ! किर्मान क्रावेश क्षावेश क्षावकों मुख्य-मुख्य केन्द्रानीका संग्रह विस्तावकों अर्थुन्ते क्षावकों मुख्य-मुख्य केन्द्रानीका संग्रह वर प्रस्ता !

इसरी ओरसे कर्मने की अर्जुन्स इकसे क्रम्मेशी कर्म की। मिर भीनकेन, अन्तिक्य और अर्जुन्से कीन-बीम केम्पोरो कीकार उसमें को ओरसे गर्जन की। का अर्जुन्मे पून: अरम्बद नाम कर्मने; उनसेने एक क्रम्मके इस उन्होंने कर्मकी काना के क्रमी, बार क्रमोरी राज क्रमाको और क्रमोरी काना के क्रमी, बार क्रमोरी राज क्रमाको और क्रमोर क्रमाकी पालत किया, केम क्रम क्रमाको क्रमा कीर क्रमा क्रमाकी पालते केमें और स्वर्धन कर्म को, किर केसे उनकी केमें पूजाई कर्दी और स्वर्धन क्रमा क्रमा क्रमा क्या। इस ज्यार पृत्यको जार क्रमान क्रमा क्रमा क्रमा। क्रम क्या। इस ज्यार पृत्यको जार अर्जुन्से पुरः और, अस्त, के, क्या, और एस क्रमोरो क्रमांको कीम क्रमा। क्रिय स्वार क्रमानारों तथा साठ क्रमार केम्प सिरामीकोमे नीयके बाट जार दिया। क्यों क्या, अर्जुने क्रमोरो कर्मको अलो कारीं। १४, कोई और व्यवस्थित कर दिया; अब यह दिखाने जी व्यान था। स्थान्तर, उन्होंने कौरवोंको अपने सामोका निवास कराया। उनकी भार सामार औरव विश्वस्थे हुए कर्मके करा आने और बहुने स्टो—'कर्म । तुन सीत है धाओंकी वर्षा करके व्यानुकृत अनुनको कर करते। नहीं से वह कारे कीरनोंको है। समझ कर केर बाहता है।'

अन्यों अन्यानं कानि पूरी प्रांत लगावार स्थातार पहुन्ते कानोवी वर्ष की, इसमें कानम और समुद्र होने ही प्रांतन्तिक कहा होने लगा। कर्म और अनुन होने ही अव्य-निवाले इस्ता थे, इस्तिनो की-व्या संदार करने लगे। क्रानेति एका पुनिविद क्या एका ओविनोकी वरणो पूर्व करना होन्दर कर्म और अर्जुनका पूत्र देवलेने विनो वर्ष कर्म। देविनी वैश्वीत अन्ये क्योरते वरण निकारकार प्राप्त अन्या कर विना का। वर्णरामको संवाल-पूर्णिन क्योन्या देवा सन्या कर विना का। वर्णरामको संवाल-पूर्णिन क्योन्या देवा सन्याने वर्ण जनामा हो।

वा प्रचय कृतपुत काली अर्थुनको शुरक परावाले थी बाल वर्ग, बिर बीकृत्यको प्रस्त बायोशे बीकवार अर्थुनको वी उत्तर बार्योगे बायार विश्वत । प्रध्य ही, वीश्मीकार वी वाले इसारो कालीका उहार विश्वत । सब बावाय और सोचक बीर बार्यको देख विश्व हुए बार्योगे आवालीहा बारो संगे । विश्व इसारे अर्थको बाया वालाहर अर बोद्धाओंको अर्थे बारोगे केवा विश्व और अपने अर्थोगे उत्तरे अर्थोगो प्रश्न बारोगे रोग विश्व अर्थ साम्बादर कि बार्यको विश्वय हो पर्यो, बारों बीटमे और विश्वस्त बारों सर्थे।

इसी सम्बंध अर्थुको हैंग्से-ईस्से इस कारोसे संबंध अरबाद कार्याचे वीच कारत, बिर माझ तथा सार माख आरबार कार्याचे वी कारण कर हिया। कार्यंद इसिसे ब्यूनो का है नमें, का कुरते सम्बंध हो गया। अर्थुन्याचे व्यूनोधी इकारो को अर्थुको तीम कार्य प्राचने। ने माल अर्थुन्याचे कार्याचे हेर्ग्या पृत्यीपर कार्यो। का देश अर्थुन क्रियो कार्याचे हेर्ग्या पृत्यीपर कार्यो। का देश अर्थुन क्रियो कार्याचे केर्युन प्राचीपर कार्यो हुए का्य प्राच्या कर्यों कार्याच्यो कींग कार्या। इस्से कर्याचे क्या प्रीव हुई, क्या क्रियोच्य ही का्य; किर्यु किसी क्या क्रियं क्या कर्याच्या कार्युनी कार्याचा। क्याव्य सर्वुनी क्याचेका ऐसा कार्य कार्याच्या कि क्रियाई, कोरी, क्यांची प्राप्त क्या कर्याच्या कार्याच्या क्रियाई, कोरी, क्यांची प्राप्त क्या कर्याच्या

अने बल्नेवारे और पीठे खबर रख बरनेवारे करत रेरिकोस कर-की-काले एकाच का कृता । क्रान है नहीं; क्रूनोंधन किरका बढ़ा आदर करता था, वर से इकर कौरक बोरोंको भी उन्होंने रस, बोदे और क्रारोक्सके बोक्के जुनले पहुँचा दिया। अस क्षे जानके को हर पुत्र कर्मका आवत

कर्मने पहिनोको रक्षा करनेकारे, परकोको थ्वा करनेकारे, 🛘 होहकर पान करे । सौरव केन्द्र को ह्यू अवस्य कारत होकर चीराते-विरुपते हुए काय-बेटोंब्रो भी होतुबार परवयन कर को । उस सम्बाद्धकोर सम्बादो और वर्षः करने हो उसे एक सम है विकासी पहर पराचीत होतार भागे हुए सीएपीने उसे अकेरम है क्षेत्र दिन क; बिद्ध हासे अस्त्रो स्टिन्ड भी नगरहर खी र्क्ष । उसने पूर्व क्साबके साथ अर्थुन्थर धावा विन्या ।

#### भगवानुद्वारा अर्जुनकी सर्पमुख बाणसे रक्षा तथा अश्वसेन नागका वध

स्ताप स्थारे हैं—कार्! क्यापा माने हर कौरव-विभिन्न सहस्रों केन्द्र हुआ क्या स्कूबिक स्कूबिक है, कानी श्रीनर अन्यार पाने हो नमें। महर्ति उन्होंने देशा कि अर्थनका जन्म चारों और विकासिक समान चनका पह है। दिए या की देखांके आप कि कर्त अंबर मानंबर कालेले क्लोड अञ्चलो नह मिले प्रतास है। अस अर्थन प्रयास पन बारन कर चौरनोंको परन करने राने। व्य केन करने भाषांत्र अक्षा प्रवेश क्रिक । वह प्रत्यक्त अक्ष औ परमुक्तानीते असु दूसा वा । स्थाने इस्ट वाली अन्तेनो अक्टबरे करन कर दिया और उने भी देख दिनों हुए सावकोंने बीच कार्य । ३३। कार्य कर्य और कर्यन्ते आर्थ मान-वर्ष भी कि सार अवस्था हमा गया, अभी औरतः भी परम् पाली नहीं या नवी। बीरवों और प्रोतकोंको करो कोर धानोना जारा-वा फैरन हुत्ता दिवानी हेरे रूपा। चेर अंक्यार का करा, क्रांनेंके नेत्रक और कुछ नहीं बहुत्ता कर र वर्ष पुरु करते संबद केंग्स, सच-संवालन, कार्यका रूप पुरुषकी क्यो सुरुद्धा कर्ण का राज क्या है। क्यो अर्थुन । क्षेत्री एक-कुलेका क्षेत्र देशके हुए गर्नकर प्रकार कर से है; यह देशकर सरक केन्द्रातीको पह अदल्पी है क्षा था। उस समय अधिकने को हुए जाने कर्न और शर्माच्या असंसा करने रूपे—'कह रे कर्य ! सामग्र सर्जुन ।' बढ़ी बात आरक्तकों एक और युक्को बढ़ते हो ।

इसी शनव पातासकोको क्रोबाल सक्सेन कक्क नाग, जो सर्जुनसे कैर बानवा था, कर्ण तथा अञ्चलक युद्ध होता कान को नेगले जालकर कहाँ का चौका और अर्चनरो बदार हेनेका नहीं उनकुक समय 🗓 देख क्षेत्र सामका एक करकर का काफि राकसने क्षत्र पता। का पूजने का कर्ण किसी तथा अर्थुनसे कहका कार्याय न दिखा समार,

का को अपने सर्वपृत्त सामग्री पाद कार्यो । यह साम पह where on, about more givin more than वेदीनकार रहक का। कारी अर्थुनको ही मारनेके रिले को को कारो और कहा दिनोरों पुरक्षित रहा था। यह निर्म काची एक काम और होनेके सरकार्य प्रचले पूर्णके अन्तर को रहात था। अने बानको अने बन्धर, बहारा। और अर्जुक्ती और प्रकार निवास होना निवा । एते का कर्मांड बोक्री अक्रोन नामक पन है बनुसार कर कुल सा—पर देश प्रतिक्री स्टेक्सल 'प्रता | प्रता |' काले वर्ण ।

जा समय पहला क्रमचे का जा मनंदर बानाओं अपूर्ण का इस देश से क्या-'वर्ग । त्यान क क्षण प्रत्ये करूने जो समेगा: यस लेक-विकासकर किसो निक्रण क्रीक करे, विक्रों का कारक कर स्वीत (\*

पद पुरुष्या कर्तवी अभि होको उद्या से वर्त । पद कारो काने रूप-'बाहर । कर्ष हे का विहास नहीं कारण । भी-केरे और परवादर्शन पाह भई करते ।"

क काक करी किरको काँग्रे एक को हो, जा कारको प्रमुखी और और देखा और उनका रिस्कार करते हर का करते कहा—'कर्तुन । अन र बार गया।'

कर्मके बनुष्ये कुछ हुआ यह साम अनारेश्वरे पहिलो ही प्राथमिक को कहा । जो बढ़े बेगमें जाते देख भगवान् क्षेत्रकाने फेल-का करते हुए अपने रक्को तुस्त पैसने क्या क्रिक, भार पढ़नेसे सकते पहिले कुछ-पुछ वारीकरें वैस को। साथ ही स्वेनेके कार्यारे सभी हुए कोई की पृथ्वीपर कुटने बेक्टिंग करा-क प्रकार को। धनवानका का कौतार देश कावादाने काको प्रशंसको परी हुई शिल-साबी सुरावी देने राज्ये । कुरवेकी कर्षा होने सभी । कर्मका क्रोका हमा बह



बाज रच नीया है जानेके बारक अर्थनके करहने न सम्बद्ध मुक्तमे सना। यह परस्कते मेथे या यह । सर्वृत्या यह मुहाद प्रश्नी, अन्तरिक्ष, सार्ग और प्रयासकेकार्ग की निकास बार पूर्व, बन्द्रक और अधिको अन्तर्थ हत्का अन्तर्थ काल भी । साम्राज् प्रमुखीने कहे जनक और उनकारी करनारे प्रस्ताह रियो रिवार निजा जा। अस्तो नही गीडी कुरून पैकारी पहले बी । शर्मुको देखेको मार्गको प्रकार का राज-साथ की भी, का समय हुन्नो प्रकार क्रेकर को समने क्रमके का पुस्त क्षाना था। यह कुछ कर्नेड कर पुरू कर्ने सन्त सुर्वको विभागिको सीमी-प्रीमी होच्या चलका हुन्छ वर्गालक का रिया । इससे अर्थ-को वनिक भी करायुक की छई, के कारने सिरावेट व्यालोगर सरोग प्राच्या वर्षणका वैन्दैपूर्वक को हो । यह समय ने चीनके कुमते को के; बनोटिंड सर्वपुरत कारके कार्य अर्थुको स्थव के स्थानेकान स्थानक पुर बा । बिरीटमर जानात करके वह पुरः तरकरमें कुलन्द 🛊 बाइत या बिद्ध कर्मने को देश रिम्ब १ कर्मके प्रानेपर मह क्याने सरार—'कार्य । तसने अस्त्री करा स्वेक-विकासकर कान नहीं होता था, इस्तिनेने में अर्थुनका महत्त्व न उन्ह क्रांत: अब करा निकास स्वत्यात प्राप्तको, विश् में अपने और हुन्हरे इस प्रदूष्य दिन अभी कार प्रतास है।'

करी हुए-हुए कीन है ? स्टाने कर दिय-'मै का है। अर्थुको कान्यम कार्ने नेरी मालका क्य करके बहुत बाह अक्टान किया है, इसके बारण नेरी उससे पुरुषी हैं क्यों है। बहि क्ये कहनार्थ हुए अन्यों शुरू कार्य आहे, से भी को सम्हानके कर काल पहेला।' कर्न केला— 'सन [ आय कर्ण कृतिके कारण असम नेकर मैनक पान नहीं Main: । की इन्हार अंकार करनेते में संख्यों अर्जुनीको पार सर्थः, वें भी में एक कामको के कार लेकन नहीं कर समारत । की पास प्रानेशन है, कान क्रमा है और मन्त्रे केन की है। इस सम्बंध प्राप्त में कर्ण है कर्णुनको मार कर्णुना, सुन अस्तानमूर्वक स्वेट काले (

कांको का यह प्रत्यानके की बढ़ी नहीं, का अने ही अर्थुनक कर करवेद रिजे अनव कर्वकर वन प्रवाद करोड करती और हैक । यह ऐस कीम्पाने अर्थुको सह—'यह पहल् को हुनका हुनका है, हमें बार करने हैं अर्थुकी का—'क बोर है ?' कारानो कह—'सामन करें का कुर अधिकेको हुए कर गई थे, इस समय इसकी मार्सने group gert benfelt Bob gir fferm firet ett क्र प्रमाण गर्नेड बेटरें सपने प्रशीसके क्रियाकर क्रम क्रम अपने प्राप्त है अवकारने का पूर था, उसी समय हमरे केनेको एकान्य पानका केवल प्राची पानको गर प्राच को रेखो कर करके जान का दुकरों और अ with:

का अर्थनो बावकाने विश्वति गरिले स्थाने हुए सह नामको देन किये हुए हा बाल करे ! कारोंके जहारसे जाने। क्रारेक्ट क्रारो-क्रार्ड के गये और यह करीनगर निर पहा। इतके को करेके कर भनवाले दुर्शाने देने हुए स्थानी अवन्त्रे क्षेत्रो कुमाओसे कार निकारत । इस प्राप्त कारी अञ्चलको कान् का अर्थुनको उन्ने बालेसे पायस कर हिन्छ। जिल एक प्रचंकर कामते अर्थनको गाँव करके मह ब्बंद्र बोरहे गानि और हैले रहना ।

# अर्जुनके प्रहारसे कर्णकी भूकां, पृथ्वीमें वैसे हुए पहिंचेको निकारुते समय कर्णका षर्मकी दुहाई देना और भगवान्का उसे फटकारना

प्रशासन अबक्र की थी, यह अर्थुनने नहीं वहीं नकी । उन्होंने - कार्यक्रमुके सम्बद नको सामकोसे असको पामक विजय । इन

स्कार बहुते हैं—बहुराज ? बार्जन हैराकर के अपनी - सैकड़ों काम बारवर अर्थ्य वर्गकारोको बीच द्वारत । किर

प्रकारोंके कारण कर्मके करीयों ब्यूत-से बाव हो को और को बढ़ी नेदन होने कमी । उतने पराध्यक एक सुन्दर पुसुट शा मिसमें जान-काम माँग, हीरे और सूचने बड़े हुए थे। कारोपे सुन्त कमाल क्षेत्र य तो थे। अर्थनके बालोबी केंट भारत कर्मक या मुख्य कुम्परवेंके क्रम है कर्मक्त बा पदाः सने जे करण पहर रसा वा, व्या की वह क्षीयती और क्यबोला का । का क्यब्यो करोगरेने बहुत दिनोमें करावा था, परंतु अर्जुको एक है इसमें कथ परस्कर माने दूसके दूसके कर हाले । प्रात्मे कर तेन किने हर कर मान जारकर रुखेने करें और भी भावत कर दिया। वैके बार, विश्व और सम्बंध अलोको क्रेनेकले करियल-काले रीगीको रिप्तेन व्यक्त होती है, बैसे हे क्रमुका वर्गकर प्रकृत हेको कांको वह देश हाँ। अनुने कर्न-कुकान्य, क्योग और यस सभी पूछा था; इश्वें स्थाने से अपने कर्यके केत विक्रो हुए माओको पर्य मान्ये मान्ये गान्यकोको केचरे प्रणे। किए उन्होंने कामके क्रार्टाने कम्मानको प्रणान मैं बाल गरे। यह उच्चर मेंक-पर-मेंद्र सन्धन कर्य अरुक्त अरुक्त है करा, अरुक्त मुद्रे सुरू करे, बहुक और प्रस्कार गिर पढ़े और का रकता है गिरवर वेंक्नेड के स्था।

सर्वन होता में और होता पुरुषोधे ताला पारण बारी में; उन्होंने तथा वार्णको संबदने वात देश भागवान् संविद्या स्वास कोल उठे-- 'वाव्युक्तान | व्या स्वयंत्रवादी कैसी? वृद्धिसन् पुरुष संवदने को हुए वार्णको वार्यको की शिर वहां ताह अस्ते हैं। शुरू की हसका वार्यकारण के सिवान को निर्म पुरुष संवदने के हां का प्रतिवास हो के वार्यकारण के वार्यका के निर्म पुरुष संवद्यका वार्यका ।' तथा अर्जुनने 'वार्यका वार्यका प्रत्यका वार्यका संवद्यका संवदने वार्यका वार्यका स्वास्त्र हो का वार्यका वार्यका स्वास्त्र हो वार्यका वार्यका हो का वार्यका वार

सदरकार, वार्णको जब केत हुआ हो उहारे वैर्थ कारण करके अर्जुनको इस और जीवृत्रकारो हाः वार्कारे जीव कारण : अब अर्जुनने कार्णपर एक पर्वकर वार्ण कोड्नेका कियार किया : इधर, उसके बच्चा समय भी जा पहुंचा की। उसर समय कारणे जाइना स्त्रकार कार्णको स्वाहनको कोपनस दिये हुए स्वयमी कह दिला दी और उसके कवारो सुक्का के पूर् कहा 'जब पृत्वी सुन्हरे पश्चिको नियाना है बाहती है।' इसी समय कायुरावजीके सन्त मिले दूर हाहा' अवस्थी कह जनके करने कही ही। उत्तर, पृथ्वी स्टामको



कारके अञ्चल कारके कार्व पहिन्छों निगरण गर्गी। रच कारक हुआ और एक पहिन्छ समीतमें मेंस गर्गा।

इस जनार कर पहिना पैना, परसुपारणेका हैया हुआ अस कृत क्या और सेट सर्वपुत्त कार की कहा क्या, का कर्म कृत क्याचा। का इन्हें साथ कर्म संस्करीको न कह स्थानेके कारण विवाहरें कृत नका और इस क्रिया-विशासन कर्मको निया करने क्या—'कर्मकेत लॉग तक क्या करते से कि कर्म अन्यत्व है प्रमुखकी रहा। करता है। मैं भी क्याको नैसा सुना क्या है और नेसी अपनी इस्ति है, अस्ति अनुसार कर्मकारको दिन्ने क्या है ज्या करता हह है। क्यित आज कर भी पुत्ते कर है हमा करता हह है। क्याको केरी समझमें से की क्या अपनी है कि कर्म भी अपने क्यानेकी स्था पहा की क्या अपनी है कि कर्म भी अपने क्यानेकी स्था पहा

क्य कर्ण वे वार्ते कड़ का का, उस समय उसके पोड़े और सार्त्वि सक्तका दो वे 1 का सर्व की आईनके वाणोठी करने विकास हो उठा का। वर्धकानोंचे कीट समनेके यह विकास हो नवा था, काय करनेकी इस्ति नहीं दा गयी थी। असे कि-सक्ति कर्मकी विकास का इसके बाद करने कुन्यके हमार्गे दीन और अर्जुनके सार क्यंका

क्या मते। ता अर्जुनने भी कर्मना नाके समान भर्मका राज्य जन्मोका जात किया, वे साथे प्रचेरको हेको हव कुश्रीपर का पहे। उस अपनी कर्न कर कर, किस बलपूर्वक अपने इरीरको दिवर रहाकर अपने इक्का उन्हर किया। यह देश कर्जुरने भी अपने बालोबों आंकर्जबा करके कर्णस उनकी वर्षा आरम्भ कर है। किन्द्र महत्त्वी कर्णी सामने अले है अर्जुनके सामोको ज्ञा कर कृत्य । स्थ भगवान बीकनाने बळ-'पार्च ! राजनका कर्व इन्हरे मानोको नह किने सरका है। उस: अब दून किसी उसन असमा प्रयोग करे ।' यह भूनवार अर्थुन सम्बद्धन हो नहे, क्योंने समा प्रकृतर काले अनुसर बहुकाओ काला और क्षणीरे स्थल दिलाओंको अध्यक्ति करके करेको करक आरम्प किया। तम कार्नि तेम किये पूर् कार्नोते उनके सनुवर्गी होरी कर थे। अर्थुको सुनते होते कार्या, सिक् कानी को भी कार देश। इस प्रवार बीसरे, चीबी, चोवनी, कडी, सक्तरी, मारुवी, कवी, वस्त्री, और नारक्रवी बार सहस्ये हुई केरोको भी महने बाद विन्तः। परंदू अर्थुनके चन से बेरियों मैक्ट की, इस बताबे कर्न की बताब मा। क्योंने निर क्ये केरी काली और को अधिकरित बारके परर्गरर वायोगी हमी राजा है। इस समय क्रमें अन्ते अवंति अर्जुनके अयोको पारकर पुर: उन्हें वीव कृतक बा। इस जनार करने अर्थुन्ती संदेश समार पंतास विभागा ।

इयर अीक्सने का अर्थुको कार्ने कर्तने वेदीन देशा थे। कक्ष-'कर्ज़न ( क्या क्याको और निकासी प्राप्त करे ।' तब उन्होंने क्या क्यार वैद्यालके क्युक्त क्यान और सो कर्मक क्रोक्रोक्ट क्रियार क्रिया। प्रश्नी क्राक्टि रंथका परिवा पुरुषेये अधिक वेश गया; व्ह देश वह हांव रकते कार पदा और होनों पुताओं ने पहिलेको प्राक्ष्मार करन इसलेका क्योग करने रूपा। अस्ते सात क्रेबेकाले इक मुलीको मर्थव और करातीय चार अंजूक कार का विचा, मगर पैसा हुआ परिष्य नहीं निवास सवार । सरकी सर्विकोरी शांतु बहुने तन्त्रे और बहु अर्थुनको ओर देशका केला-'कुर्जनम्बर ! हम को बनुक्त हो; जनसद में अपन क कैंसा हुआ प्रदेश करन निकास न है, कारण क्षमध्यके रियं ३६९ व्यक्ते । तुन् नीव पुरुषेके वर्गवर नहीं सामक काहिने । तुन्हारे मिल्ने को सेंह अध्यारण ही अध्या है । जिससे प्रित्के बार विकार नने हों. से पीठ दिस्तावर बाना करा है, उद्यान है, इन बोद पर हे, चरनमें अन्य हे और प्राण-स्वाके रिजे प्रार्थना कर रहा हो, किसने कपने हविकार रक जिले हो, निरान्धे यस काम व हो, निरान्धा कामा कट



वन्ता है, अवस्थान किर को वा हुए को हो, ऐसे केंद्राकर ताल ताला अवस्थान करकेंद्राने प्रतिर प्रकार मूटि करकी। पूर-वर्णकों करकों हो। पूर्ण करिक्तोंके प्रश्न हान्ती हानकों स्वार्थ है। पूर्ण किलाकोंके हान्ता और कार हानकों स्वार्थ है। पूर्ण किलाकोंके हान्ता और कार हानकों है। पुत्रुचे कर्णकोंकों भी गांत करते है। व्यापकों है। पुत्रुचे कर्णकोंकों भी गांत करते है। व्यापकों है व्यापक में हार कीने हुए क्लोकों जान क्ला गांतु क्लाक क्ला करते। पूर्ण स्वार्थ है और मैं करण जात करका है मैं क्ला क्लाका हुआ है, इस्तरिकों मेरे करण जात करका

वर्णको कर सुनकर रकर मेरे हुए काकर वीहरकारे उसने कहा—'राक्षणका । सीधानकी वात है कि इस करत हुने वर्णको कर आ रही है। प्राय: ऐसा रेक्सोर्थ असर है कि नीत पत्रक विश्वी कीसनेवर प्रारक्षकी हैं क्लिक करते हैं. अपने किने दूव कुक्कोंकी नहीं। कर्मा! क्लिक करते हैं. अपने किने दूव कुक्कोंकी नहीं। कर्मा! क्लिक करते हैं. अपने किने दूव कुक्कोंकी नहीं। कर्मा! क्लिक करते हैं. अपने किना, उस समय हुन्हारा कर्म कर्मा करता करा का? हुन्हारी है करता सेकर करा राजा दूवींकरने कीससेनको नहर जिल्लामा हुआ क्लिक करावा और अहें क्लिको डैस्टब्ला, उस समय हुन्हारा वर्ण कर्म क्लिका करायों हुन्हारा वर्ण कारानका करायों इक्कावरकों कीसर सोचे हुन्हारा वर्ण



व्यक्त वा ? यदी सामान्त अंदर पुन्तावरणे ववाने वाले व्यक्त स्थानमा विवर्तिको साम्य वालो व्यक्त वाल कुनी अन्यत्त विवर, उस समय दुव्यन्त वर्ग बढ़ाँ वाल गान वा ? व्यक्त व व ? तुनी विवरिते व्यक्त वा—'कुनी ) व्यक्त व्यक्त

हे गर्ने, रहके दिने राक्ष्में यह पने; अब हु किसी सुरी चीन्य करन कर है।' यह कहका तक दूध अल्डी और औरों काइ-काइकर देखने रूपे दे, इस समय तुकार करें वर्षा गया था ? जिन सम्बद्धे त्येष्यते इसने सम्बन्धि सत्त्रह तेका का कामोंको तुवस पूर्व रिन्टे कुलाक, उस लगर तुम्बर को बाई कर कर बा? अधिका बाहक का और अधेरम भी; से भी तुल अनेक महारमिनीने कर ब्बर्ट जोस्त्रे केरकन इसे मान करन का, का समय तुनाय को बड़ों एक का? बोदे का सका बढ़ को बड़ी का, के कार भी कांची कुई देवर अधिक स्वयंत्र कारोरे एक राज है ? इस काम वर्ज विकास है वर्ज क्यों र वह अली, अन कोले-में हुनाय सुरुवार की है सम्बर्ग । पुन्तरने क्या नामां कुले बोट रिल्म क, मितु उन्होंने अपने 🛊 परमानको कुछ असक करन को बाबा और करा की। इसी क्या निर्ताची पानक भी अनमें भूगाओं के बाले प्रमुखीका बंदार करके कि। अक्य कम कहा मारे तथा हर Approach much if greetlig geben wer in Straight I'

क्यान् जानुदेवके देशा कहरेका कार्नी राजासे अपना तिर हुन्छ रिन्य असी कोई जेवान ही नहीं क्या ।

# कर्णका वय और शल्पका दुर्वोद्यनको सान्त्वना देना

स्त्रमं सहते हैं—सहारत | अहम्मर सर्ग स्तृत्व इताकर को नेपसे अर्जुमके साम युद्ध करने समा। उस समय डीक्नाने अर्जुमके सदा—'दूस कर्मको विकासको है कारत करके कर गिराओ।' कामान्ति है का क्रिकेश अर्जुमको कर्मके आधावारीका सरका है अस्ता। किर तो स्त्रमारियाँ कुट्ने लगीं—का एक अर्जुन करा हूं। का देश करने अर्जुम्बर सहासकार प्रकेश किया। अर्जुमने की अहमकरो है उसके असको क्या दिखा। इस्तो कर्म उन्होंने कर्मको स्थाप करके आको क्या दिखा। इस्तो कर्म उन्होंने कर्मको स्थाप करके आको क्या केस, जो उसको तेमसे प्रकारित हो स्था। किंदु कर्मने स्रो मास्त्राक्तो हान्त कर दिया; साथ है असकारणें कादसीकी करा तिए आयी, सम्बूर्ण दिखानेने नैकिस हा क्या। परंग्न कर्मण इससे निकारक नहीं हम, उन्होंने

कर्मकि हेसले-देसले बाज्यसम्बद्धे अन् कार्यलेको सम्बद्धाः

जन कुरपूर्ण अर्जुनका कर करनेक दिन्ने सलती हुई आरको इनकर एवं पर्यक्तर साम हानमें दिन्ता और न्यों हो जरे कुन्यर कहाक पर्यंत, यह और कार्यमितित सादि एको उनक्याने रूपी। कर्णन अरे केंद्र दिन्दा; उस कुन सर्वेत्ते क्याने अर्जुनकी करते केंद्र दार्थः। यहरी चोट सम्बंधे उन्हें क्यार आ पन्यः। हान क्षेत्र क्या गया गायदीय कुन दिनकाने स्वया और अन्या स्वरंग हारीर क्या उद्या हारी कीचने पीचन पायन कर्ण परिचा निकारनोके दिन्ने रूपने हुद कहा। अरने दोनों हानोसे प्रकारकर पहिलेको उपर अपनेक्ये कुन क्योतिक की, विद्यु देवचल जह अपने प्रसामें सरका यहां स्वया।

इक्टरेने अर्जुनको खेर हुआ और अधूनि मध्यानके समान

समान प्रकारक कर इसमें स्टाप्त । इसी समय औदानाने बाह्न— 'बार्ग काशका १४२२ जाहे कह करता, तालाक है इसका मराव्य कट इस्ते ।" 'बहुत अवह' कहकर अर्थुको भगवास्की सदात जीवार की और कर्मकी व्यवस्थ सुकते हिं कारका जार किया । बाबा द्वा करी और सरवे निरनेके राज ही मोरनोंके पह, कांद्र, मिनव, बरोवानिक धारमध्ये तथा प्रत्यका भी भाग हो गया । यह समय को चौरमे इद्यापार गया । अस अर्जुन कर्मको भारतेके मैनके बढ़ी फ़ीकर करने लगे। कहाँने अपने कानेबे इसके पह और करायके रूपके समान एक अञ्चलिक मानव कर विकासकर स्थाने सेन्सर कान्ये सेन्स्न सारम्य पर्व कुनकी भी। कारों क: पर राने हुए थे; इस्सेंको यह यहा बीज गरिने पान्या था। यह वान का कोर वेजरे हा मामानिके समान कीर प्रका निकास और सुरक्षी पार्का समय परंपर था। अर्जुनो का अवको पर्याप प्रकृत व्यक्ता और अरे पीवकर कहा—'बर्ड, मेंने एवं किया है, पुरुवानोको सेमाने प्रथम एका हो, यह विलय हो और देतिके नियोकी नहीं जान केवर सुन्ते हो के इस कार्यक उच्चाको यह बाल की प्रकार प्रमु कर्मका नाम कर करे ।' ऐसा कहकर अनेने यह प्रकार काम करोबा का कार्येक अंदर्श मतनी और केंद्र दिया। उनके क्रमते चूळो हो पर पूर्वीह समान देखानी कारणे संगत दिखाओं और सामानारे प्रधान नेपाल सोसरा पार और रहा वर : असे



अर्थुनने जा कान्ये कर्मका मासक पाट साथ। अव्यक्तिनको कटा हुना वा मासक पृत्यीका निर गार, इसके मार अस्ता गाए की प्रत्यों कात्र वास्ता हुना गरासकी है क्या। जा समय कर्मके सार्टरों एक ऐसे नियस्तार अस्ताकार्य केंग्र क्या और किन सूर्यकाराओं निर्माण है क्या। इस अर्थुन दुस्ताओं नहीं सने हुए सब स्वेगीने अपनी अपने देखा था।

सर्वृत्ते कर्मको पर निराधा—का वेक पाकानकको नोडा वह बोर-कोरके पशु सभाने तमे। शीकुन्य, सर्वृत क्षण स्कूल-स्कूलेको ची क्षमे चरकर अपने-अपने पशु क्षणते। सोन्कॉने केन्यस्थित सिंक्स, विराधः कुले बोड्डऑने ची आक्षण क्ष्मक क्षेत्रत काला क्ष्मक सारम्य कर विष्यः। विराधे क्षेत्रका आक्रम अर्जुनको गरे। विरोधः। किन्नो क्षेत्र-सुर्यारको परि स्टालकर नामने स्टोधः

कारण करना है हुन स्थापन है पृथ्वेपर पह देक कारण करन का हुई हुन स्थापनार एकं हार है कारे कर को : कार्यको मृत्यु देक कोरक्याको साथ कोद्धा की कर्मांत होकर करन करे । इस समय हुनेंक्यको आंशोले अहि कर आने । यह कार्यका अनुसार हैने हम्मा हैने प्रकृत कोद्या कार्यको स्थाप हैने प्रकृत कीद्या कार्यको स्थाप हैन्सिक हैने को केरकर को है को । कोई अस्पा का, कोई अवस्थित है किसीके केरकर विकास कार्य की को कोई अक्टोरी है हुन



हुआ का । स्तर्राक्त कह कि किनकी जैसी अपूर्ण थी, हे जहीं कारकर कैने करन करों ।' प्रकार हुई या सोकने यह हो के थे।

कारीत परनेपर भीपने पर्नकर विकास करके पूर्णी और आकाकमध्ये केया दिया । ये कुरसङ्के पुरोकी करते हुए क्रल ठोककर अवने-बुद्धे राने । खेकक, सुद्धान क्रक कुले श्रीत भी अरुपा होने परवार हवा-कुरोको इस्तीमें सम्बद्धे इत् इञ्चलदे करने रुगे। इत् समय म्बराय क्रायका निर्म क्रिश्चने नहीं का, से ह्योंपनके पास पहैचकर जांचु व्यक्ते हुए माने पुरसकी पान सोले—'तमान्। तुनारी रोजाके श्राची-क्षेत्रे, राम और केन्द्रा न्यू-प्रक्र हो नवे, धाने उनगर कुमारकार आविकार हो एवा है। साथ क्यों और अर्थुओं बैसा पुद्ध हुआ है, बैसा वहले साथी नहीं हुआ पर। काली कहाँ कर्ता तीहरू, अर्जुन एक अन्य क्र्युओको प्रनः कार्पे का रिवा का वित् कुछ पता नहीं हुआ। विक्रम है देश प्रत्युगों के अपीन होकर काल का का है। यह अन्तर्ध हो रहा करना है और ध्याय गांछ। को करना है कि तुक्ते statut falligit first men unbent mel uit ungelite क्रमके बरम्बर्धक पारे गये । सुपारी संस्थेत अपूर्ण केना हम, का और हमेरों क्यान प्रमानकार्य से । क्ये नरकार, सीचे, वस, रेक स्था और में बहु-ने जान पूज केया ने र वे एक प्रकारों अवस्थ के से भी भी प्राचनकेन्द्राओं है रसमें बार कुरत । उस्ता कारत । तुन क्षेत्र न करे । यह सक प्रारामका केल है। सकतो सब हो निन्देश नहीं निरस्ती, देख

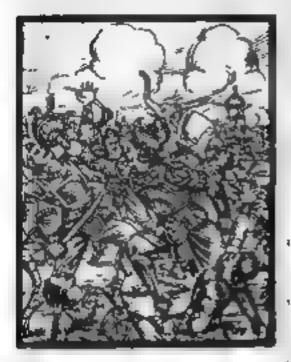


महत्त्वची में क्षेत्री सुरक्ता और मान्दी-वर अपने अन्यानीका भी सरम करके हुनीवन महा कार है एक। जानी पृद्धि पुरु भी पान नहीं केर्ड भी । क्ष्मको असम्ब पीवित क्षेत्रर था। वारंपार संबो अक्षाँ चाने समा।

### भीम और अर्जुन आदिके भयसे दुर्घोधनके रोकनेपर भी कौरव-सेनाका भागना तथा दोनों ओरकी सेनाओंका शिविरमें जाना

सक्रम कार्ट है—स्वातक । उस समय कौरक-विना पीयोपके भवते मानून होकर कान खे ने १ उनकी ख अवस्था देख दुर्वोगन इञ्चन्द्रर करके उठा और अपने समित बोरा—'सुत ! तुन बीरे-बीरे बोड़ोबो आने क्याओं । तम प्रथमें बनुव लेकर में शरकी समूर्ण सेन्यके भेके रुक्त स्ट्रीगा, उस समय अर्थुन मुक्ते बरास्त नहीं का सकते। वरि वे पुत्रसे स्वयं अत्वेते ता विकानोह अर्दे पा इस्ट्रेगा। अस्य ये अर्जन, स्टेक्टम तथा वर्धके प्रोपकेरको क्षे-सुने अन्य प्रमुखेके साथ मेराके पाट उपलब्द कर्नके ऋगमें एक हेउँगर।

क्वींकाकी जा बुरबीरोके केथा बात सुनकर सारकिने कोड़ोंको और-वीरे आने कहना । आवको ओरहे बृद्धके रिप्ये पर्वास प्रकार वैवार पर्छ थे, अहे भौगसेन और बृहस्कुले अपनी क्युरविको संन्यसे घेर रिका और क्योंसे मारना आरम्प किया। वे भी भीग और कुलुप्रसा कुटका क्षाकरण करने रूपे। उस समय भीनसेन क्रोबर्गे भएकर क्रांच्ये कहा क्रिके एक्से उहन यहें और इन सम्बंधे साथ यह करने समे। क्रीमसेन पुरुषमंत्रत पालन करनेवाले थे. इस्मेरिको साथे राजपा बैठकर उन्होंने उन पैक्कोंके साथ युद्ध नहीं किन्छ। अने अपने बाह्यसम्बद्ध पूरा परोस्य बार गरा हामने तिये सन्यक्षी तता निकासे हुए महामार्थ भीमने आपके पर्वतिर हमार चोद्धानतिको मार निरामा। एक सोरसे सर्वृतने स्थियोची सेनावर नामा चित्रमा। कृत्यी जोर



भक्तात, स्वरंग तक समयित—ये तीनों निरम्बर पूर्णेश्वाती प्रेनावध संद्वार करते हुए शक्तिकों कार का को । प्रमुचिके प्राप्तानी सुद्धस्थानेको अपने तीको स्वरंगित प्राप्तान के प्रस्ता । अपने अर्थुंगको आने देश आपके मोन्स प्रकंत को सामने समे । प्रमुचिके एक कृष्ट को, स्कूलनो सामकोची मारहे आरम्य पायस हो को; इस अपन्य अर्थुंगके की प्राप्ती माने सामन क्वीस हमार केन्द्र क्याको प्रस्ता स्वरंगके

हतर, वृह्यपुत्रके इस्से आपके सैनिकोने करका का सती। वेकितान, विकासी और हैन्सोके पुत्र अन्यकी कहें मानी सेनाका संक्रद करके सङ्खा कर्मने उसे। उन्होंने अन्यके भागते हुए सिनकोका को गीवा किया। इसके कर अर्जुको पुत: स्व-सेनावर कड़ाई की और अपने विकास सम्बद्ध मानीत कर दिया। पुन्तीसे कुछ को और कर्म केस क्या आनोते कर दिया। पुन्तीसे कुछ की सुह नहीं क्या था। उस समय कीया-सेनामें निस्से क्याइ कहीं—या देस आपके दूत तृष्टेंबरने स्त्रुओपर बाक विश्व और क्षणकोंको पुत्रके रिले ससकात। पाक्क-सेना हुर्गेयनपर कृ पक्ष। आने को सोकने परकर रीकड़ों और हमारों केन्द्रकोंको करावेच पड़ दिखा। का पुत्रूबे इसकेगोंने पुलेकरका अञ्चल पुरुवार्थ देखा, यह सबेरण होनेपर भी समाह काक्क-सेनारों सुद्ध कर वह था।

क्रूबेंकर्ण का अपनी सेरापर हृष्ट्रियात दिखा से सकती पुर्वी भारत का काने सकता काला काले हुए कहा— 'संदर्ध हो । में सामा है तुम पनते गरिंप से हो; स्रोतु मेरे देखनेये देख बोर्ड की देख नहीं है, नहीं हमलोग मानकर काने और वह कन्यांने हुन्हरी कर वस कर। देती कुलने नामांने क्या स्थम है? जब स्तुओंके पार बोई-में रेस प्र को है, बोइक और अपूर भी सूर कारत है कुछ है, अरब मैं इस का सोगोओ बार क़ार्ट्या। इसकेनोको निकर निर्देश है। बिसने कृतिय पढ़ी उपनिता है, इस बाल देखर कुन से-जन और प्रश्नीर और कार्यर , क्रेकेको ही करती है से वेरे-केल वृत्तिपालका परला करनेकाल होकर भी कौन हैता पूर्व होना, भी सुद्ध नहीं करेचा ? इसाठ एतु चीयांत्र अरेवाने पश कुला है; धरि चानेने से उसके चाने पहला हुई प्रानीने इस केना पहेचा। इस्तीन्ते पार-कारोधे आधारम किसे हुए इतिय-वर्णका जान न करे। इतियके तिले युक्ते पीठ विकास कालेने कहता हाता ओई पार जी है तथा बुद्धानके पालको स्थान सर्वका साथ कोई कर्न नहीं है। संस्थानने कर हुआ केना हुता जान त्येक प्राप्त wan 17

अवन्या कुत इस अवतर कारकान केत है रहं गया, वित् कारक हैनिकारियों किसीने कारकी संसंधर कार नहीं दिया। सक-के-सब कारों और मांग गये। इस समय काराज कारको सुर्वोक्तसो कहा—'राजन्। धरा इस रण-वृत्तिकी ओर से पृष्टि अस्ते, किसी मनुष्टी और केत्रिकी सार्वे किसी हुई है, पर्वताकार नकारण कार्योशे किस-विश्व होकर को पहे हैं और वे सुर्वतर सैनिक नाम अवस्थि कोन, ककान्यका, मनोरम सुस्त तका हारीरको थीं सम्बद्धा कांग्री परावद्धाना करना करते हुए अपने कारके स्वाय ही सम्पर्टि सोकोने पहुँच गये हैं। दुस्तीयन। अस के सुर्वत्व ! अरहाकारको काम ही कारते हैं, हुन की



कुरसरीची और स्टेंड करते।'



राजा करण इतना कहानर कुछ हो गने। उनका कित क्रोकरों काकुल हो रहा था। उसर दुर्जकनकी की बड़ी क्ष्मीय अवस्था जी, बढ़ अर्ल होकर 'हा कर्ज ! हा कर्ज ! !' पुकार रहा था। उसकी ऑक्सेंस अस्मुओंकी कार व्या वर्षे वर्षे । अध्यक्षका कथा कुल्रे-कुले एकालेल अवस्त को वर्षकर वीरण वैवादे और राज्ये पीनी क्रूडे राजपूरिको देखते हुए कावनीकी और सीट वाले वे । इसका वर्षेष्ठ कुल्युओं कथारे कुली थे, अलः 'क्ष वाले ! क्षा कर्ते !!' पुक्तती हुए वही वेजीके काल दिविसकी और सीट गये।' देखा और व्याप के अपनी-अपनी जीतके अनुसार आधाना और व्यापका बीच अपनी-अपनी बीनके अनुसार आधाना और व्यापक कर्या क्षांच्या देखावर आक्षणनंत्रत के केनीकी प्राचक कर्या हुए वर्षे।

व्यापात है जान व्यापातिक जीगोगर जिल्लो एसी पांडी पांडी कि 'में हैंगा', 'मेरे पार नहीं हैं' ऐसी पार विस्तेत हैंहरी पांडी निवस्ते हैं नहीं, ऐसा स्वयुक्त कर्ण हैंगा पुन्नों अन्तिन का, क्राप्ते का गया। विस्ताद स्वयुक्त कर्ण हैंगी सामानानी नहीं पांडा था, जो पांडा क्राप्ते और पांडाओं था, जाई कर्ण अस्त आगो पुनेची विक्ताची आहा, जार्मी और एक स्वर्ध आयं क्राप्ते क्राप्ते पुनेची विकाली आहा, जार्मी स्वरं सामे पांडी हुए, पूर्व असा हो गया से नेगार क्या तुम पांडामीने सीहा हुए, पूर्व असा हो गया से नेगार क्या तुम पांडामीने सीहा हुए, पूर्व असा हो गया से नेगार क्या तुम पांडामीने सीहा हुए, पूर्व पूर्व हम पांडा क्या हुन्ती सुमान सेमानी क्या सामानानी क्रिका प्रमुख स्वरं क्या सुमान हमाना होने रूना स्वरं आवश हुए। अस्त क्या पूर्वी पांडा सहित हमाना होने रूना स्वरं सामानानी क्या हम्में क्या सहस्त हमानार क्या क्या सामानानी

इस अक्षान कार्यको व्यानको प्रश्नात करावताले को हुए अविकास कार्य अवेदारे कोनेकी कार्यको सदे हुए केत स्टूड़ इस्कोरो सेकार को अंदारेसे समाध्य अंदर एक ही साथ कार्यका अस्ता किया। अस्त्री अस्त्राच्या और वेद्यानके गायीर कोनो पूर्वी, अस्त्राच क्या विसाई पूँच कर्ती। यह प्रश्नाता पुर्वो ही सम्बद्ध अंदर्श नीताब कार्य कार्य कार्य स्था पुर्वे कार्या अंदर्श नीताब कार्य कार्य कार्य कार्य स्था पुर्वे अस्त्री कार्युक्ति ही कोन्नार कार्य को। अस सम्बद्ध स्था प्रश्ने अस्त्री क्या होता अस्त्रिक्त कार्य को। अस सम्बद्ध स्था के केचे अस्त्री हुए कुई और कार्यकारी पश्चि क्षोप्त भारति वे। असे अस्त्री क्या हुए कुई और कार्यकारी पश्चि क्षोप्त भारति वाल निवारकार विकानकारीको किर्द हुए असन्दर्शक अपनी कार्यको कार्यके। कार्य कर्ता करा क्या का क्या समाव केवा, प्रश्नी मृत्य, कार्यक, पहिंदी, यह तथा सम्तिने विकास एवं अस्त्राक्ति हुए कार्यक, पहिंदी, यह तथा सम्तिने विकास एवं अस्त्राक्ति हुए कार्यक, पहिंदी, यह तथा सम्तिने विकास पूजा गरे । सम्बन्धे सम्बन्धे गुज्येकी प्रश्नंता नहे ।

कर्मकी मृत्युके प्रकृत जब कौरव-पक्षके हवारों केश कामीत होकर माग गये हो आपके पुत्रने क्या कामकी सलक मानकर युद्ध के करवेकी आहा दी और सेनको एक्टील कर पेड़े सीटावा । मरनेसे मणी कुर्व जन्मनार्थ सेनाके साथ कुलवर्ग, इन्हरों प्रत्यानोंके साथ कब्रुकी क्षेत्र हाकियोकी सेनाके साथ क्रमानार्थ की विकास और सीटे। अवस्थान भी पामानीको कियन वेराका कर्यकर अक्टार रेवा इक्ष क्रमीयो और है यह देख। वर्षे हर राज्यसम्बासक्त स्वार्थ और हारे बालाओ राज्ये साथ राजा करून भी करते एवं समझते हुए करणनेवारी जोर यते । कर्मकी मृत्यु देशकर समझ क्षेत्रक क्षेत्रके व्यवपुरस होबार करि थे थे, उस्ते प्रशिक्ते कुम्बर्ध करा वह रहे थी। अरः सन्धिनसः सीत्र होत्रा चन नवे। अन जो अपने बोवन और राज्यकी अरक्षा व रही। इसेंबन इ.स. और प्रोक्रमें कुर एक का, यह को भारते प्रकार एका काके अध्योगे के अन्त । राजनी अबह पन जर्म प्रेरिकोने स्थिति आधार विवास विकास का सन्त

सम्बद्धा केहत पर्वथा यह गया सा



## कर्णवशके समावारसे असत्र हुए युधिष्ठिरद्वारा श्रीकृष्ण और अर्जुनकी प्रदोसा, राजा यूनराष्ट्र और गान्यारीका श्रोक तथा कर्णपर्वके श्रवणका माहास्थ

सहाय वहारे हि—राज्यू है इस अध्यार क्या कर्म करा गया और वीरण-केन प्राम करहे हुई से सम्बद्ध अंकुल्यने अर्जुनको क्रातीसे समावार कहे हुई से सम्बद्ध — "कर्म ह इस्ते कृतापुरको पाता था और हुक्तो कर्मको करा विराम है। आवसे संस्तरके सोग कृतापुर-क्याची एक कर्म-क्या कराना वाहते थे, अपन व्या अर्थोह पूरा हुआ; अरहः कर्मसकारे यह हुप समावार नदाब्दर हुप अरसे अव्या हो बालो । हुपमें और कर्ममें क्या महस्त्रधम किन्न हुआ का, अर समय से भी पुद्ध देक्तोचे रिज्ये अर्थ थे; क्या व्याव समिक क्याना होनेके करान देखा वहाँ अर्थि पात व्याव क्यांत्रिये।"

अर्थुनरे 'क्यून अध्यत' स्वयंत्रत आहर स्थेपतर की;

वित वर्णाको जनना रहा जार ही योड दिया। कामगैररं पहुंच्यार के अर्थुनको साथ के राजा पुविद्यितो विते। राजा अर्थुनने जनकारपूर्णक जनके करणोर्ने जनमा वित्या। श्रम क्षेत्रोकी जानकार केन्न कर्णाको जनमा वित्या। श्रम केर्युको जानकार केन्न कर्णाको जाँद क्याने रागे। यित जन केर्युको कर्णामी सम्माकर मिले और वार्तकार पुद्धका समावार पुन्ने कर्णे। यस समावार मीक्स्मने स्थापुर्वित्ये के पुन्न करण करित हुई थी, सम कह सुनानी; अस्पर्वे कर्णि सर्वेक्य की कहा कर्णाने। इसके क्यां प्रमाणक पुन्न-हुक्य स्थापकारी की कहा कर्णाने। इसके क्यां प्रमाणक पुन्न-हुक्य स्थापकारी कर्णा के कि अस्पर, भीमसेन, अर्जुन स्था न्युक्त-स्वारंग भी कुक्तको है। यहारणी कर्ण अर्थुन स्था और अस्पर्यक्ष विकास राजा अध्यक्षित्र हो स्था है--यह भी महे आर्क्क मार है। अस्य स्वयूक्क सारे क्रांतर कार पूर्व हुए है और का पुरस्कार कहा हुआ है; इस अवस्थाने आप अपने प्रतुको करकार देखिने। सहस्थाहे | अब कार पुरस्कार अवस्थाह सम्ब केलिने।"

प्रश्नान् सीयुर्व्यका वक्का प्रश्नात सर्वत्य व्यक्त प्रश्ना पूर् और बोरो— देव्यक्तिन्दन ! यह व्यक्ते अवस्था वाल हाँ । जाप सार्वात थे, तथी अर्जुन कर्मको चार सके हैं । यह भारतकी मुद्दित्य ही प्रस्ता है, इसमें अवस्थित कोई क्या पत्र हों । किर देनोंसे क्या—'रास्त्रकीने पुत्रे कारता का कि अर्जुन और श्रीकृत्य पुरस्ता चर-माराव्य कालि हैं । स्वयानी सीवासकोने की कई बार दूस अवस्थी कर्म की वी । कृत्य । अस्त्रकी ही कुनस्ते ने क्याकुन्यन अर्जुन सार्वने पुत्रके अर्जुनका सार्वत होत्य क्या कर्म है । किस हिन् वारतके पुत्रके अर्जुनका सार्वत होत्य क्यांकर विकल को होत्य, क्यानक पूर्ण । क्या का का हात्र प्रस्ता हिन्दक हो होत्ये, क्यानक पूर्ण । क्या काला, होना क्या कर्म-जेले और अन्तरकी कृतिको को या भूते हैं से बावने स्वेत्रकी, जो अनुके सन्त्रकी हैं, में मो हुन्ते स्थान ही क्याना है।'

मी ब्यूबर कम पुनिश्चिर क्षेत्रेने क्ष्मके हुए एकार मैदका श्रीकृष्य तथा अर्थुरचे साथ एसपुनि देसलेखे भारे । वर्ष व्यक्तिक अनुमें देशा कि करका कर्त हैकाई कारोसे किया हुआ पृथ्वीयर यहा है। इस समय कुर्याकर केलने भरतार हजारों सोनेके दिवक करको नवे । अविके अकासमें सक स्वेजीने कर्मक इसीरक अहिन्यत विकास क्रांका करून दिन्द्र-चित्र हो क्या वा और प्राप्टेर क्रांकेरे मिर्वार्ग के मुख्य था। कर्मको पुरस्कित नंग हुआ देश एक पुचितिर पुनः शीकृष्ण और सर्वृत्यदे प्राप्ता करते हर , महने तमे—'चेनिन् । जार बीर और विद्वार होनेके साव 🜓 मेरे कामी 🖫 आवने सुरक्षित सुखर आस सम्बन्ध 🛊 में अनुवीसकेत राज्य हो गया। राज्यनका कार्यको अन्य गया भूकार तुरस्या द्वांकर अब स्था और जीवर केलेले निवद हो जनगर। पुरसेका । अल्बी कृतादे हमानेन कृतकों हो गये। यही सुरतिकी बता है कि साम्बोदकारी अग्रेशकी विजय क्वां।"

इस अकार राजा चुकिहिले बीकृष्ण और अर्जुल्धी प्रसंसा की। उस समय नकुरत, सहोत, बीकहेब, साराजि, कृतका और किरान्धने क्या पन्तक, महारू और सुक्रव



के कार्यने विकास का नाम है। ऐसा का कार पुरेषी जान कारण किया। किर की क्षाता की शहर की कार्यना पुरुष्ण कर्म हुए के नहीं अस्ताता के अध्यक्ष है। और कार्य गर्म। एक क्षाता । असके हैं। अध्यक्ष है अध्यक्ष है। के कार्यना के की एक हुआ है। अस्य कर्म वार्तवार होया कर भी है ?

वैज्ञानकार कार्य है—धार्यका ! या आपित सम्बद्धा सुन्दे ही राजा धृतराह मुख्या हेन्द्रर सहसे करे हुए इक्को अपित क्षांकार गिर यहे : इसी तरह दुरहक संक्षांकार पर्वारी देवी भी पहाड़ साधार गिरी और बहुर सिन्द्रर कार्या है कार्यकी मृत्युक्त संकारों हुए नहीं ! उस सम्बद्धानकी विद्यानी और पर्वारों सहस्मे संवारत ! सीर सम्बद्धानकी विन्देंगे आकर मान्यारिको स्टारण ! समझी को काला हुई, उनकी विशेककारित नह हो गर्था, से विद्या और सोकार्य हुए को ! सोहक्ष्मण हो वार्यके सारक अहे विन्दी भी कार्यके हुए न सी ! विद्युर और स्वकारों सहस्म अस्त्रान केर्यक प्रस्ता और अधिक्रकताको ही प्रशास कार्यका से क्षांकार केरे सा को !

के मनुष्य कर्ण और अर्थुनके इस कुन्न-व्याका क्रम्बान करण है समग्र इसे सुनता है, उसे विधिका



किने हुए बहाबा पात प्रदान होता है ! समापन भगवान किन्तु - बहाबारम है, आहे, बन्दु, जन्मव और सूर्व भी पहले ही का है। अब: वो पहुन्त केर-इहिन्दा त्यन करके इस पुरुष्पाक करेर सुरक्ष च व्यक्त 🖢 व्य स्थात क्षेप्टेरें पहुँच स्थानेवाल और सुनी हेवा है बस उसके कार कामान् निन्तु, बहुत एक इंचरकी संबुध होते है। इस वर्गक सम्मानने प्रमानको केन्द्रनातका परस मिला है, क्रिकेचे मह क्या पुत्रों विकासी प्रहि क्षेत्री है, वेहकेका कर कहा है और बहु मीरोन एवं स्वरूपालक होते हैं। इसमें समझन मनकन् निम्हारी जीवका कर हुआ है, इसीने इसके पाठने स्थुकती कारको पूर्व केरों है और यह सुपते होता है। सराबार एक कांक्स सामोजिस करियर मीओबर सुन बरनेसे के पास विकास है, जा कार्याओंक एक बार प्रत्येगाओं जात के t war be

।। कर्मको सम्बद्धः ।।

# संक्षिप्त महाभारत

शल्यपर्व

धृतराष्ट्रका विषादः कृपाचार्यका दुर्योधनको संधिके लिये समझाना, किन्तु दुर्योधनका युद्धके लिये ही निश्चय करना

नारमं समस्कृत्व नां चैव नरोत्तमम्। देवी सरस्वती म्यासं ततो स्वसुदौरवेत्॥

अन्तरांची नरायनसम्बर यनवार स्रोकृत, उनके निर्माणा नरस्त्रक नराय अपूर्ण, उनके स्रोत अब्दर करनेवाली यनवर्षी सरस्त्री और उनके क्या व्यक्ति वेद्यवस्थानों नगन्त्रार करके आयुरी स्वर्शकोन्छ । विजयस्थित अभा:करनको सुद्ध करनेवाले व्यक्तिकार कर्मका पाठ करना वालिने।

मृत्युनी पूक्त-स्थाद ! कोरव-संश्वास वंकारन कर्तनाते सुरुपुत्रके यस कानंतर की पुत्रीने क्या किया ? क्या कारण है कि मेरे पुत्र विस्त-विस्तास सेनायी करता है ? क्या सोगोंने देसते-देसते जीन करे नते, बेनायी भी की क्या हूं और सम समर्थी कर्न भी काम रहा। कानम विदुरने पुत्रसे काले है कह दिया का कि 'तुर्वेशनके अपराधसे सकाका काल के कालना।' क्योंने के कुछ कहा, कह जो-का-नो आज सत्य है वाकाश।' क्योंने के कुछ कहा, कह जो-का-नो आज सत्य है पह है। का क्या सरकाका भेरी शुन्दि कारी नवी की, इस्तिनिये की क्यांक कालंका भत्तका पुत्रः कर्नन करो। कर्नक करे कानंतर कीन नेरी संस्तास प्रधान करा ? किया पहरकीरे वीन्नाम क्या अर्जुनका सामना वित्या ?

सङ्गयने कहा--वहाराज ! कोरण और प्राच्यानेके आयसमें विकृति जो वहार जनसहर हुआ, अस्की कवा स्वयान होकर सुनिये । जीकासे कार्यर करनेवाले व्याप्तरी वैसे अगाय कराने नाम दूर वानेकर कारा वाते हैं, उसी प्रवास कौरतों के आवश्यमूत करांके पारे वानेकर असके सैनिक वर्ष करें । ते अनावकी पाँति रक्षक हुँको समे । संस्थाके सम्बन अर्थनसे पराक्ष होकर का हमलोग कावनीये लीटे, उस समय



कर्नकी मृत्यूनी इसका कार्यों सभी पुत भाग हो है। उनके कार्य जा हो को वे । किस दिलानें कार्य है, इसका भी उनें क्या नहीं जा; वे सूच-यूव को कैठे वे। वे अस्परायें क्या-दूसरेको ही यार्य रूपे। क्यून-से महारबी मधके कारण कोड़ों, इस्तियों और रकोपर सकार होकर इसर-उसर भागने उन्ने। उस क्यंकन संख्यानें इस्तियोंने रूपे कोड़ उसरे, कार्यकारों कुस्सवारोंको चार उसस तका रक्यांनियों कार्यकारों वैद्रालेको कोड़ोंने कुकर उसन।

क्षत्र समय कृषणार्वजे आकर दुर्वोक्स बोले— 'कम् ! मै कुम्से कुछ काना चत्रुवा है, उसे जान देकर सुने और अखन रूने से उसके अनुसार काम कने । विकास पीना, आकार्य होता, स्वारती धर्मा जन्मसा, हुन्हमें स्कूट-से यहाँ और तुन्हारा पुत्र सक्ष्मण—ने सन तो यहे सा कुने;



अंच वर्षेत्र क्या गया है, विस्तका हम आक्षण क्या करें ? जिन वरिरोधर पुरुषका चार रक्तकर क्षत एका व्यवेची सामा कारों थे, ने से शरीर क्षेत्रकार नेक्ष्मेनाओंकी गरीनके प्राप्त क्षे गये। इंपने बहुत-में शताओंको नरवाबर असने मुख्यान् नहारविधोको को दिया है। उनके किना अब इन अनेको स् गये है, हेसी दक्षाये इमें कैन्सायून्यं कर्तन करना पहेला। का सब रकेंग वीकित थे, तब भी अर्जुन किलीके प्राय नरामा नहीं हुए। कुम्बा-जैसे सार्याधके होते हुए कई केवल भी नहीं जीव क्षकते । उनकी सामाधी विद्वारको साथा बेक्कम हमारी विकास सेना वर्ष उठते है। धीमनेका विकास, पाञ्चलको पर्वतर अन्यत और गान्हेन बनुक्के हंकर सुनका कुमलेगोका दिल केंद्र कहा है। अर्थुको इस्को श्रीराज्य हुन्या सुधार्यको अस्ति पहुन्य पहुन् पहन्ते विकासकेने हार प्रकार दिसावी देता है, वैसे नेकबी बटाकोंने किकवे । विस प्रकार कानुस्ती प्रेरमाने कान्य नको चित्रते हैं, कैने ही प्राप्ताद श्रीकृत्वप्राय इकि हुए योदे, यो युवाले प्रायोधे स्था खडे हैं, अनुंत्रको समारीने केंग्रे हैं। अर्जुन अवस्थितने मुक्त हैं, उन्होंने हुनावें सेनाओं उसी प्रधार गार विस्ता है. वैसे पर्वका अन्य कारको हेटको जान क्रान्ती है। वे

अनुवादी रंकारते इसरे बोद्धाओंको उसी प्रकार पार्चीत करते हैं, कैसे विश्व क्योंको । अस्य इक वर्षकर संसायको प्रसम्ब हुए सब्ब दिन बीत को । महस्सागरमें हमाके करेड़े कारत प्राप्तको हो नैकाको एक आपको सेनाको अर्जुन्ने केया जला है। आ दिन जनाधको अर्जुन्के कानोका निकास करते देशकर भी तुमारा कर्ण कहाँ करन का या ? अपने अनुवाधियोधे साथ अस्तार्थ होता. ये, तुम, कुरुवर्ध क्या व्यवसंसद्धित द सारम-व लोग बर्जी को थे ? तम महीं तो थे, यर अर्जुकर विस्तीया चोर क्ता ? हुन्होरे सम्बन्धियों, प्रकृषों, सहस्रकों सम्ब चन्याओची उन्होंने अपने परव्यापने गीत रिण्य और तुन्हारे देखां-देखां राजके तिरावर के राजका कार्यकारे का करण । अन्य इन विश्लास भगेला करें ? वर्डी सीन ऐसा कुछ है, जो अर्जुन्यर विकास का स्थित ? उनके पास भाषा जकरके किन जन्म है। उनके मान्यीयकी देवार सुरका इसलेपोब्स केर्य हुए बाता है। बैधे बन्धमके बिना राहि अञ्चलका विकास केते हैं, जाते ज्ञान हमारी का सेना क्रेक्स्प्रीचेंद्र करे करेले अधिन के तर्वे है। सभी धोटा क्याचे हर है। उसर सारमीय और चीमरोनका को केन हैं, था सन्तर पर्वतीयो क्रिके वर भवता है, समुद्रेको सुसा सकता है। राजर् । यह-सम्बन्धे बीयरोजने जो जान कही हो, को क्योंने साम करके हिस्स दिया; आने भी ने ऐसा है करिने व पानक स्थान है, बिद्ध कुमलेनोंने कनके साथ अकारण ही बहुत-से अनुचित ब्यवहार विके; उन्होंका अब कर जिल का है। दूसरे का करके सारे करनके स्वेगीको अपने दक्षके रिले क्यांति किया था, बिहा तुवारा ही चीवन संदेशने पढ़ा हुआ है। पूर्वीवन | अब हुम अपनेको क्याओं । कुरमिनीयो बतायो ह्याँ यह नीति है कि 'यन अवन का कर अथक बतार कर यो तो प्रमुख सब रांगि कर रोगी कारिये। स्वार्ट से उस कर डेवर्ग कारिये, जब अपने कृषि कहते वह बद्धान हो है वल और सकिये इस 🚃 चार हो गये 🐍 अर: मेरी राज्ये हो अब उससे संभि कर लेख हो जीका है। यो एक अपने परसांकों कर नहीं सारक और शेष्ट्र पुरुषेका अवगान निरम करता है, स्व चीन ही राजको पहा है जाना है; आका पता की नहीं होता ह बादै राज्य ब्राविक्षितके सामने हामानेसे हमाचेन राज्य का कार्य से प्रतिने अन्तरी कराई है। पूर्वताक प्रत् करेने कोई रक्षभ नहीं है । स्वक्ष बहरायु और भरतवान् औन्तरवाके सक्षतेही कृतिकीर द्वारों करन दे समाने है। अध्यान, सुनिविद,

भीन और अर्थुसरे को कुछ बढ़ोने इसे में सब स्टेम अन होंगे—समें तरिष्ठ भी संदेह नहीं है। केरा विकास है कि श्रीकृष्ण क्रारकृष्टी क्या नहीं डालेने और खुंबर्श्वर श्रीकामार्थः असमेद विकादः वही करेते । प्रातीको मैं संवि करनेने हैं कुरात देशक है, पान्कोंके साथ त्यांने कोई स्थान नहीं है। इस बंद न संस्थान कि वै बहुनसम्बद्ध क प्राप्त क्यानेके विक्ते हेती बात कह का है। मैं के हुकते है परेन्द्र मेले कहता है। बहै इस समय केंग्र पहला की क्षारोगे से बस्ते क्षार पूर्व नेते को का अवनेते (

इस्तवार्थंड इस प्रकार कार्यका क्वीका बोर-बोरबे मान जानि परिचय हुना कुछ देखात सुरक्षार बैटा स्ता। मिर बोड़ी देशमा योगने-निमारकोंद्र पाह जाने महा-'विकास ! एक विशेषके को एक स्वाप पार्टने, भी राज आको प्या पुरस्ता। यह पर्वे, प्रकार के क्रीकृतन पुरू बनने का सामने नेनी मानाबि हैंको कर पा विस्ता है। प्राथित विराधिताय क्षेत्रिके स्त्री अध्यो की प्रापेके रिले है पर पर सार्थ है, इस में पर पूर्व गई पह शामी--डीमा प्रती नक्ष, मेरो मरनेवाले केनीओ क्षा अन्तरी भी राजा। एक परिवेद खाद को थे, की को पूर्व भीतवार दर-दरका विकास करना और स्थानी कार Penner Ren; aus it sprec fich Deper unte ? 40 कर्तीया को क्लोबर क्लार होता ? हरिक्रम के वहाँ क क्रमंतर जाने थे, फिल मेरे उनके पास क्रोधक किया: 30r के भी मेरी बात केले करेने ? सभावें कारण सभी क्षेत्र हो बीचीने भी निरम्प निर्मा का तथा प्रत्यानीका को एमा प्रीम दिला मना पर, साथे देन्ये जीवृत्ताको अस्तरक अर्थ्य क्रम प्रमा है। बीकुम्म और अर्थुन के प्रतीर, एक प्रथम है, में केने एक-इसोके जनारू है। पहले हे यह बात की केवल तुन्हें बी, जींद्र तथ को प्रत्य देश का है। बाले अनेने अपने मानमें अभिमन्त्रक बरण हुन है, जाने वे हुनावी की भी नेती । इसलीय अन्ते अन्तराची हैं, दिन में क्यें क्रम बैठने कर सकते हैं ? महावादी चीनसेन्यत सामान भी बहुत करोर है. अपने बाहे पर्यवर प्रतिक्ष की है। क्यों बाहाओं क्या का क यते है सार, कुछ नहीं सकता अबल और स्वयंत कारामके राज्य अनंबर है, से बेनों भी जातों के बानों है। ब्रह्मपुत्र और विजयक्षीयत की मेरे साथ की है, जिए के की हिनके रिन्ने क्यों कर करेंने ? हीवडी एवं कहा काने हुए थी. . होवा है : केवारावेची सकते से बढ़े अन्तानकी बहिसे देखे रकारण थी, का अवस्थानें क्ष्र प्रथमों अभी जों। जो है। देखा क्ष्म संख्यानें पीट जी दिवानेकारे प्राचीर कुरसारानी प्राचीक स्थापने अने हेक प्रीचाया । अनके कामक + विचा पार्नाने काले हैं, आहेते में भी पार्टका : विजे, पार्टको कार्य नाम-कार्य यह सैनवरम प्रमाणेको । और कार्योको प्रसापन करि मैं अपने प्राचीको एक समे

अंध भी पर है। जब भी पुरुषे देखा नहीं ना स्वाहत । काने केवरियां केव दिया गया, तथीरी वह मेरे विशासका रंग्यन रेक्टर निर्माणी वेटीयर खेला करती है। काराया वेक्स पुर पहल न पुत्रा रिल्स करा, स्थानको रिल्से आने का का है रका है। इस अबार बैस्की जान प्रशंकको अन्तरिक के अर्थ है, जब यह दिवसे करा बार को सबसी । अधिकार्या कहा बारवेडे बाद अर्थको आव केन सेहर बेहरे हे रूपा है? का है स्कूरनेय पूर्णका एक्का प्रमा केवल कारण एवं सम्बोग कर कुछ है से इस समय क्याचेक करावा बाबर केले राज कर अर्थना ? per provides fierete glate per until uffe कुरिक्रियोः प्रिकेन्सिके केले पार्ट्या ? क्षेत्रपूर्वक प्रोचक क्येक्ट क्योंक क्रमेन्ड ? में अन्तर्भ सर्वोच्छ क्रम्बन क विरामन गाँ करण; मनेति असमे केवना में दिनोह के किये के बारे कही है। में हो केवल उनका निवार प्रकृत पर का है। में करने को आए है कि अब संविधा अवतर पर्वे भार । इस प्रमुप संभिन्दी पार्च प्रमुप दिल्ली प्रमुप स्थित को कर कर । को उस दूसों से कुछ बीरे दिवानी है की है। यह समय मनावेश होनार सामगढ विद्यानेका मही, तारको कर पुर करनेक है। मैं कन्कोरे अली केन्यापूर्व पान नहीं का सरका । संस्थाने कीई भी पूर्व का क्षेत्रक भी है, दिन पत्र और एक में देशे प क्रमा है 7 वर्ज से मानिया है क्याने सरल साहिते और मोनी पुरुषे विच्या कारे किसी कराओं भूति निवा सकती । परने पात्रका क्षेत्रक काम श्रीतको तिले संहत सह पात्र है। को को-को का करके करने क लंकाओं प्राप्ति स्वान करता L. and represent man gives the Research supplies become करित कर्तन हो पंचा हो, चेन चीहा है रहा हो, परिवारोंह स्टेन कार-पान बैहार के हैं, का समझाने केमानुष्ट पान बेलकर जिल्ला करो-कर्य जल जलनेवाल श्रीत 'स्ट्रे बहुतने केना भी है : अतः क्रियोने जन अहरते: होनोक्ट चरित्रक करके ज्ञांन की प्रश्न की है, इस समय बडाईड क्रम में कर्मा ही रावेकों साहित्य र विराद्धि आवश्या केंद्र है, के संख्यारे केंद्र जो दिशानिको, शुर्जीर, सरकारिक तथ कर प्रधाने के बरोकों हैं, कियेंने प्रकार नार्में सरपुर (पहला) कर किया है, उसके सामि विकास

तो विकास की प्राप्त प्रेरंकर मेरी निन्दा बहेना। बाल, विनों 'तामी कारणी बरावनका क्रोब्ड क्षेत्रकर पर-क्री-सर और प्राथमेंसे होन होका पाणाओंके कैरोक पहोंसे यो कमा परवाम करनेकी राज हो । युद्ध करनेके विश्वमें समस्य विरोगा, का मेरे रिक्टे किस बावका क्षेत्र ? इस्सीरने कम ् एक विक्रम क्षेत्र कर का व समझ बावमें काल पर कमा । वै अपने तत्त्व बुद्ध वार्तवः कर्मको ही प्रश्न कार्मका, इसके विश्वकृत्त्व का बोद्धाओंने अपने-अपने वाहनेको विश्वक हिमा पुत्रे कुछ नहीं चाहिये।"

ा दे अबद बदेससे कुछ कम तुरीवर व्यक्तर देश करने। देखीं दुर्वोक्तमी मा बाट सुनकर सम क्रीन्वेंने । स्त्री क्रिकार कृतरे दिन कालमी डेरकारे ने पुनः कारको प्रकृति की और को बहुत बन्यकर विचार राजनुनिको और स्वेटेन

# राजा शल्पका सेनापतिके पदपर अभिषेक और घगवान् श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको शल्यसे लडनेके लिये आदेश

महार कहते है—ब्युसाय 1 हिम्सानको अरही अतः आग आहा करे, हम किसे अरात सेनापति कराते ? विकास पार्टको साला सभी प्रथम समार चेळ एक प्रकार प्रकारी हुए : प्राप्त, विकारित, श्रादुरीत, अस्त्राच्या, कृताबार्व, कृतवार्व, सुरेश, अस्तिरोग, कृत्येत अस क्षात्रीय आहे राजाओंने के कई की विकास के। हत हर सोनोरे एकका होका का कार्य कर केट हुए पूर्वाच्यक जिल्लाम् पूरण जिला और पुस्के रिन्धे अनुस्तरील क्षेत्रार स्क्रम—"तसन् । तुन विकासिके हेरायी। क्यांसर प्रश्नातीचे प्राथ पुत्र करे; क्योंकि रीमायरिके संस्कृतिये क्या है। इस अपने वैरियोगर नियन मा जनमें है।"

क्ष्म प्राप्ता क्ष्मीचन २७४५ स्थान हो स्थारणी राष्ट्रमायके पास गया। अवस्थान पदार्थ राज्यां क्रमाओका क्रवा था, प्रमानने तो वह क्रमानक समान जान पहला था। सुर्थक सम्बन तेवल्डी और जुल्लाकर्तक समान बुद्धिमान् वा : उसमें सभी अध्यापे पुण सक्षम थे, बा प्रसंक कर्मने नियुक्त और वैदिक उपनक समुद्र का। क्षत्रओको केन्स्रे जीवनेवाला और क्रवं क्रवंत्र का। बनुबंदके (जत, प्राप्ति, पृति, पृति, सुदि, क्षेत्र, अरिपेकर, विविद्यां, अहेचन और कृष्टि-कृत) वह अहोच्ये स्था (बीका, विज्ञा, आसरका और इसका सम्बन-कृत) कर पार्वेको ठीक-ठीक सामस्य था। इः अनुमेनवित कार्य केन्द्रे सवा इतिहास-पुरालकम पश्चम केरावा भी उसे पूर्ण प्राप का । का पहारपत्नीने करोर हतीया फरान करके को पासी शंकरजीकी आरावनाको हो। उसके परक्रम और कपकी कही भी तुरस्ता नहीं भी। यह सम्पूर्ण विद्यालीका करणानी, गुणोका समूह तथा सबकी अर्थसम्बद्ध पात्र वा ।

अस्त्रे कार पहेलार एवंबनने बद्धा-'अस्य हमारे गुरुके पुत्र हैं, इस इस लोगोंको अस्पन्न है भरेगा है:



अक्रकाने का -- इस्लोगोर्वे एक इस्प है अब ऐसे 👢 जो जाय कुरा, पराज्ञम, केन, बदा, राज्ञमी तक समजा सहयाओं सम्बन्ध है। ने ही हमारे कैनायति होने चीन्द है। एकर् । इन्हेंको सेनाव्यक्त करावार इस सबुओपर विकय पा सकते है।

क्रेयक्याके देख बहुनेवर प्रधी चेदा एक सहयहो बेसकर बाढे के नवे और उनकी जय-जयकार करने रूपे। जब उन्होंने बड़े आवेज़में घरका चुड़का निश्चन किया। क्या क्रम होण क्या पीम्पके समान परक्रमी थे, वे इस काय रक्पर बैठे हुए वे । तुर्वोचन रक्पी कारकर उनके सामने भूमियर कहा है गया और इन्द्र जेक्का केला— कर है, कुन विस्त्रीची रहे और सामने आमे हुए समस्त



निकारका । अन प्राचीर है इसरिजी इनारी सेनाके श्राच्या परिचे ।'

रेज प्रत्ये का-कृतक। यो का को सैनामतिका सम्बन्ध है रहे हो, से मैं तुन्हरे कम्बन्युसार सब कुक करोगा । मेरे अभ, राज्य और वन सब कुक तुन्हारा रीज करनेके लिये ही है।

रूपोपन केल-में आवची अवन इंग्लंफी सीवार करता है। केरे साथी कार्रिकेको पुत्रूपे केरलानेकी पहर की बी, उसी जकार आम भी हमाठे रहह करिन्दे।

प्रत्यने कहा—ह्योंकन । वेशे बात सुखे—१७४१ के हुए किन श्रीकृत्य और अर्थुनको तुम महारक्तिने हेन् रामको हो, वे शेथों बाह्यसम्बे बिन्सी तक नेरी सम्बन्धा नहीं कर सकते। यदि देवता, असूर और पनुष्योसदेश जात चुनवार है मेरे निपक्षमें बरकार का क्या से में अवेरत है संबंधे कुद्ध कर सकता है, जिन प्राच्छानेकी से चल ही उच्छ 🛊 ? निःसन्तेष्ठ में तृष्यारी सेनाव्य संवालक अनेना और ऐसा क्यु बन्दरिया, जिसे सब नहीं लॉप सबते ।

सदरका, राजा दुर्वोचनने साम्रोप विकिन्ने अनुस्तर करपदा सेनापरिके पहलर अधिकेक विज्ञा। उनका अभिनेक होते ही अपनदी सेन्तमें महत्त्व सिक्क्ट होने रूप ( रुष-३ एके बाबे का उठे और महोत्रके महारवी को इसी मरका एक सम्बद्धी सूर्ति काने समे—'ठका ! तकारी



क्युओच्या संक्रम करो । तुम से वेकतः, असूर और **ब्युट्य — सम्बद्धे पुराने पराम कर सम्बद्धे हो। इन बरमाधर्मे** क्षेत्रकों और सक्षयोगी से जल ही क्या है?"

हम जबार समान पाका पहरूब कुछ पुले शही क्रमाने । अनुने पूर्वीकाने क्रमा—'एमान् । आस मे व्यक्तिरहेत स्थल प्राकृतीका संदूर कर इतिया अवन्य कर्ष 🛊 नत्त्वत कर्यत्वेकको करा वार्वेण । आस् सम्पूर्ण पान्का, अन्तिका, सामानि, प्रीपरीके पुत्र, कुरुक्ता, विकासी तथा पामाल, सेवे, एवं प्रस्तुक केन्द्र मेरे परकारपर इंडिपात करे, मेरे अनुस्का व्हान् का देशें। आज मैं पान्कव-सेनाको चारों जोर चना कुम । कुमारा क्रिय करनेके हिन्दे, ब्रेजनकर्त, भीवा सवा कर्मने भी जोकेक पराक्रम दिकारत हुआ रवासुपिये विकासिका ।"

महाराज ! जब उक्ताबा सेनायतिके प्रस्तुर अधिकेक हो क्या वस समय सभी सैनिक कर्मके मानेका केन्न पुरस्कर अस्परित हे परे। अध्यक्षी सेनाका हर्गनार सुनकर राजा कुर्विद्वितने तक कृष्टिकेंक स्तपने है परावान् औक्रमाने क्का—'व्यवन ! दुर्वोधनने म्युराज ऋत्यको सेनायति कर्मक है और एक सेनाओंके बीच उनका दिशेष समझन किना है। यह जानकर जाम जो उत्तित समझिते, काशिते, क्योंक आय है मेरे नेक और स्थक हैं।'

क सुरक्त औरून्य केले—'भारत । मैं आर्यायरके पुत



क्रानको बात अची तह सामा है। ये असन क्यानी

और म्हान् रेकामी हैं, युद्ध करनेके विशेष-मिरिक र्यंत उन्हें कारम है। मेरा हो देख करात्र है कि कीम, बेग और करी केले करेका से दिए ही महरान काल भी हैं। चुनुमें उनके बोक्का इसरा केना मुझे आपके निता कीई नहीं दिसावी केंग्र । इस सूनकाकी कौन कई, देखलेकर्ने भी जापके सिना कुरुए कोई ऐसा बीर नहीं है, को कोकों भरे हुए मारस्व क्रम्बद्धो बुद्धाने पार राज्ये । पुर्वोकाने किन्नार प्रस्कार निरम है, वे प्रत्य क्रवेन की है, उनके मारे मानेवर जाव सौरवीकी विकास क्षेत्रको भी गरी क्ष्रं हो समझित्रे । मेरी क्षत्र मन्त्रका श्राप इस समय प्रमारकी सरकार कार्य क्रीमिने । जागा क्रम्बाद्धा करता एवं करतेकी सारास्थ्यत स्त्री है. क्रारिय-पर्वको सावने रक्तवार करें यार हो क्रारियो । असमके संस्थाने अन्य अन्य स्थेतन और श्रामक श्रीवाहने। बहारती क्रमध्ये अवस्य कर प्रतिने।'

क्ष कावर पनवार बीक्रम पावनीसे सम्बन्ति है विश्वासके प्रेरंगे प्रापने दिवसियों करें गये। अन्तर कानेके कर क्या चुनिश्चारी तम महत्ती, पाकरते और सोमयोग्डो भी विकासिका। हिट सको अपने-अपने दिवसियों सोचार un feurd :

# शस्त्रके सेनापतित्वमें युद्धका आरम्प और नकुलद्वारा कर्णके शेष तीनों पुत्रोंका वर्ष

सहार्थ करते हैं—अक्टारक ! यह पान बीच सार्थका औं। इस्ते प्रायु प्रत्यक्ष भी सेनावट करते करावान पुरुषी क्योंकाने आपके रूप हैनिकोको अध्य वी-'अब स्थ महारक्षी रिवार हो जाये।" राजाकी कहन परकर सारी सेना क्षत्रक आदिने सुरायित हो गयी। वाले करने सने। बोद्धाओंका सिंहनाद होने कना । इस समय परवेले को ह्य आपके केविक पीतवरि परणा न करके रमचुनिकी ओर कुन करते दिखायी हेने लगे। यहत्तव शक्का सेम्बस सम्बद्ध क्रमावार ब्यारकियोंने समूर्ण सेनाके वर्ष विभाग किये और सबको पुरुष्पिने बवास्थान एका किया । विर कृताकर्त्न, कृतकर्या, अकृतक्षया, सुरूष, सुकृति तका अन्य सम्प्रजेति मिलकर पंत्र जनम सी कि 'इयमेंने बोर्ड मी अफेल होन्सर पाणकोंसे न लड़े, को अकेरन ही उनसे स्क्रेन जनना के किसी लड़ते हुए गोद्धाको अकेला होड़ देखा, उसे पाँच महाराजक और पाँच उपमानक लगेने। इसलिये सब एक-द्वारेकी रक्षा करते हुए साथ स्वकर बुद्ध करे।"

हरू प्रकार ऋष्य रेकर समझ प्रारंभियोंने कारानको आमे किया और बढ़ी इंडिमाके साथ उन्हमोपर बदाई कर

हरे कौरकोपर का आये। उसकी सेना शुक्षा हुए समुद्धानी

क्षण प्राण्यांने भी मोधांन्य यह रखी थी। उन्होंने अपनी संख्यां होन प्रान्ति बांध था; पर सैनोंने सम्बद्ध मै—वृह्यूह, विद्यार्थ और सम्बद्धि । हुंद सौनोंने सम्बद्धाः सेनावा बावा विद्या । साधांत्रम् हाना पृथित्व भी सम्बद्धाः सम्बद्धाः ह्यारार्थ अपनी सेनावे साथ उन्होंना थी । सीनावेग और अस्तिने वृह्यार्था और संस्कृतकोश ब्यूनां थी । सीनावेग और सिम्बानिक कृत्यावानंतर माना हुन्य । स्कृत-स्वानेन कृत्यां स्वा स्वयुक्तार शासांत्रमा विद्या । इसी सम्बद्धा सामों प्राप्ति

कृतस्यूने पूका—स्त्रुव्य १ जीवा, त्रेच नवा कर्मके नारे वानेके पश्चार, मेरे पुत्रोके तथा अन्यूनके व्यस विस्तृत-विस्तृत तेना वस नवी वी ?

स्वापने कहा—न्यासात । क्रान्यके सेन्यानीतान्ने कथ इस्त्रांत्रण पुरुष्के लिये क्रान्यक हुए थे, कर समय क्रान्ये आस स्वास्त्र क्रान्य वेदान से और प्राच्यानीके पान कर क्रान्य गर्म, इस हमार हाथी, तस हमार गर्मेंद्र तथा एक करेड़ केल केन्द्र थे। यस, इसनी ही सेन्य कथा गर्मेंद्र तथा क्रान्य पुरुष्के मेंच्ये क्रान्थित भी। जात:कारन सूर्वोचन होते ही धेनों ओरके केन्द्र एक-दूसरेको बार क्रान्यनी क्रान्यसे असरे कहे। बिट को होन्द्रे हस्तेने आवन्य क्रान्यस सुर्वोचन होता हो हमरें क्रान्यसे केन्द्रे हस्तेने आवन्य क्रान्यस सुर्वेचन स्वापन क्रान्यस हमरों पुरुष्क-पूसरेने हिन्द्र स्था तरीर क्रान्यसम्बद्ध क्रान्यम हिन्द्राने हुए एक-पूसरेने हिन्द्र स्था तरीर क्रान्यसम्बद्ध क्रान्यम हिन्द्राने हुए एक-पूसरेने

महाएव । सम्बाधिकी पार महतेसे जानकी हैना मही-मी-मही केहेज है-होकर मिरने समी। पीम्बॉन और सर्चुनो आरके सैनिकोको पृथ्वित करके प्रमु कवाचे और सिंहनाइ करने सने। इसी समय शृहसुत तमा विस्त्याने

वर्गरावाको आणे काले वरणपर व्याप कर दिया। प्रातिकुत्वर स्कृतर और स्वापंत्र भी जानकी सेनापर दूर पहे। किर व्याप्तामें कीरण-मेनाको अपने कालोगे स्कृत स्वयस्त वर दिया। आप कीरण-माहिनी अपने पुश्चेक देशसे-देशसे व्याप्ते और व्याप्ते सम्बंध अपनी-अपनी जार क्याप्तेकी विश्वा वह पानी। त्याप्ते अपने व्याप्त पुत्तों और व्याप्त्रवेकी कीड़ दिया; विद्यास्त्रों और नाम्यक्तीकी वरणा र वर्ष, व्याप्त्रवे त्या अपने स्वाप्तिकोच्या भी समास नहीं विश्वा। एवा अपने कोड़ों और हावियोंको वरणी-अपनी हरियों हर व्याप्त वर्षों हुए।

केवाओं प्रश्न करह जागती देशर जावरी पहराजने अपने सार्राक्ति व्यक्त—'सेर जेड्डिको सीमासपूर्वक आणे सक्ताने



और आई वे राजा पृथिहित कहे हैं, वही मुझे से करते । आज संकारने के की स्वापने उद्दर नहीं सकते ।' हेशवरिकी अस्तारों सार्टकने अनके राजा पृथिहितके यास पहुँचा हिंका । वहीं पहुँचकत कई केमरी आसम्बन करती हुई सामानोकी विराजन सेनाको प्राप्तने अनेतने ही रोज दिया। अस समय बहारकको समस्यूपिने करे हुए देश भागनेकारे कीसा-केसा भी पुरस्कृति सामा न करके स्वेट आये।

इसी बीकरें ज्युक्तने विज्ञानेनक बाबा किया। वे बेकें केख एक-कूलेक बावोकी वर्ष करने रूपे। होनों ही अव्यक्तिके बावा, क्लब्दन् और रबहारा पुन् क्रानेने प्रक्रीण में। केने एक-कूलोका कर करनेके रिने प्रधानहीं के हैं कि कारार अपने करनेका समाप्त हैंदू के थे। इसनेही में विकासके एक कारा काराक क्यूक्टका कुछ कार हैया। किर हीन वालों से अपने समाप्तको बीकार सकेकों केन हिस्से हुए बाजों से उसके के होको कारानेक की मेंद्रा ।

क्ष करून कटा और रच दुह क्या के केरन न्यून केरन-तम्बार रोकर क्यों कर क्या : अब अने केर के विवर्ध-तर अक्षयन किया : का राज्य विवर्ध करके कर बाजोंको बीकर करने राजा : जिल्लु क्यूनर विविध अध्यक्ष बुद्ध बरनेकाल का, असे विवर्धनके बाजोंको कारनर है



वैकाका महका दिया तथा सम्पूर्ण सेनाके कामने ही विकासेनके एक्का क्यांका उसमें उसके कुम्बार और मुक्का सुसोपित महाकाको कामो अस्तर कर दिया। विकासेनका सराका रकके पीक्षे मानमें निर्देशका।

इसको नता हुआ देश याण्या-नवारणी स्थिताद करने एने। सितु कर्णके पहारणी पुत्र सुनेश और सम्बद्धन सैनी शाणोंकी सर्व करते हुए नकुरूपन दूर पहे। उनके क्यापेने मंतुरूपत साथ शरीर विश्व गया. से भी वह नवा कनुव लेकर हुसरे शंक्यर स्थार हो क्योवमें को हुए कमरावाची धारि समरमें इट गया। अब ये दोनों शर्ज नकुरूपने हरने हुम्बो-टूकड़े कर करनोवधी बेहाने समे। वह देश नकुरूपने हैस्से-हैस्से बार वाणोंने सरस्तेत्रके करतें क्येड्रपते घर निराख। जिन एक नाराब मारकर उसका क्यूब भी कार करता। उन सरकारने

कुरत बनुव और कुरत सबसेकर काको ध्यक्ति साथ है न्युरुवर काम वित्या और वाकोची हुनी सरवधर को सब ओरते का वित्या। न्युरुवरे भी उनके वाकोची रोककर है-से वाकोसे केमेची कहन-असरव सीव काल। दिन कर होन्देरे भी तकुरवरी वाका किया और सीवी सरवदीरों उसके स्तर्गावकों भी वीव काम। जाव काकोचने पृथक-पृथक से वाक सरवार न्युरुवर कुल और उसके स्वया क्षेत्री कारत कास । सब न्युरुवरे स्वयाधि कामी भी और बहुत की उत्साद सरवदेनार है करी।



और का प्रान्तीन होका करीनपर का पहा।

व्यक्ति पर देश पुरेश क्षेत्रमें घर गया और म्युरेशके कर व्यक्ति वृद्धि करने स्थान अस्त्रे कर सामग्रेसे म्युरेशके करों केहेंको कर सरम, मीको स्थानी श्रम्भ करट है और हीओ सार्थकों भी यसलेक पदा दिया। म्युरेशकों स्वाह्म सरके स्वपर कर गया और दूसरा सन्त्र लेकर सुवेगमें पुरे करने समा। स्टुन्सर, सुवेशने स्थानको तीन और सुवस्त्रेयको सरकी पुनाओं तथा कर्यांने वीस नाग मारे। स्थाने क्यां क्षेत्रकों स्थान क्ष्मोंकी मारते सुवेशको सम् औरसे क्या क्षित्र और एक सर्वक्रकार कार्योंने स्थान करात कर क्रिया और एक सर्वक्रकार कार्योंने स्थान करात कर क्रिया और एक सर्वक्रकार कार्योंने हेकर करात कर क्रिया क्षेत्र स्थान

# ऋत्यका युधिष्ठिर और भीमसेनके साथ युद्ध, दुर्योधनद्वारा चेकितानका तथा युधिष्ठिरद्वारा हुम्सेनका वध

समय वाले हैं—प्यासक ! यह समय केवाओं कामने बारवरी परनारे हुई केवाओं अपने विकार और पर्वचर विकार क्या मनुष्यी तंत्रार करते हुए के प्रश्नुकांका सम्बन्ध बारवेचे दिनों कर पत्ते । एका धरणके सुरक्षिण केवार बारवर्गके दिनों कर पत्ते । एका धरणके सुरक्षिण केवार बारवर्गके विकास है अपने बार्च केवा कामने समे । अवसी सामकि, पीनसेंश और अपने सार वाले काम कामने समे प्राप्ता सुनिविद्यां अपने बारके यह सामें और बोर-बोरने विकार बारवे हरों हरों ।

गक्तमा, अर्थुन्ते भी संस्थानकेका संक्रम करके क्षीत्व-नेतृत्वर वाना विक्या । इसी प्रवास मृहसूत नावै, की भी तीये सामग्रीकी कर्त करते हुए अस्तर्क सेक्टर का आये। कार्य का पहले स्टेंग्स सैनिक मुर्जित हो गर्ने। क्षे दिवा और विदेशाओंका की जान न का। कावाजेंक मानोरी करिय-रीजके मुक्त-नुरुध और वर्ष वर्ष । हेने ही अवनों क्योंने भी पानकावानों संबन्धे और इसारें नीरोका संक्रम कर करत : कर करन अल्पन्यी पासे केने ओरबी सेनाई जानना प्रेरत को नकक्ष है और पह करनेवारे क्रीरेक्ट भारते तथे, हावी विश्वाद करने तथे। वैका विकास करको और विकास समे। समस सारित्येका ध्योक्तर संकार होने लगा । पान्कम करणान, थे, से यम प्रकार बारों से उनका निजाना कभी काली नहीं करन का इसरिंग्ये औरव-सेन्स बहुद बहु यूने सन्त्री । अन्त्राधी सेन्स्राधी हेकरें गढ़ी हेल रामा ऋत्य अस्ता अहार करनेके रिन्ने अस्ते बद्दे। पाञ्चल की महराजके पास प्रोक्तर उन्हें होनो सामोरो बीक्ने लगे।

त्व व्यापाली महर्ताको मुनिश्चितं सम्बद्धे है कैयाहै तिसे बाज सरका सम्बद्ध-सेनामा संदार असल किया। इस समय प्रति-प्रतिके अव्यापुत्त होने रूपे। व्यक्तिस्तिक पृथ्वी होसने रूपो। विरि-विरे मुक्ता का वह वर्णकर हे वया। व्यापति कृत्यने द्वीपदीके सम पुत्रोको, उपुरु-सहर्ताको और पृष्ठपुत्त, विकासी क्ष्म स्वर्ताको सीव सरम। उप्योग कृत्यने प्रतिके सही सम्बद्ध व्याप करे। सरम। उप्योग कृत्यने प्रत्योगी हस्ती रूपा दी। किर से प्रयक्त तथा सोपक कृत्यन कृतानेकी इंग्लामी निस्ते हैंदवानी हेने सने। उनके सामकोची कोट साकर कियते है हाथी, योहे, वैद्यार और एकी कीड़ा कराइक्की है गये। विस्तोंको पूर्वा आ गर्का और ब्यूनेरे कीडमे-बिक्सने समे। उस सम्बन्ध ब्यूक्टनी प्रकारक सिंहके समान खाड़ हो थे।

प्रस्तां सामांने राहित हुई सम्बान-तेना रहातं हिन्ने सहाराम पूर्वितितं सार जान गयी। इस अकार सेनाको पुण्याकार से पुणितितको गीहा देने रहने। या देश गुणितितने सेना सामांनी सर्च साने प्रत्याची उतने सानेते हेना सिया। उस प्राप्तने उत्तरर एक प्रत्याची उतने सानेते हेना स्वा हुत्या यह सान पुणितित्वते सामा स्वाप्त सरके पूर्वित्व सा सामा सामांनी सीमा स्वाप्त । उन्होंने सामांनी सीम सामा सामांनी उन्हें सामार जिल्ला। सैन्दिके पुणीन भी सो सेनाने सामा सामांनी गृहि सी।

प्राचको साल-क्योंने प्रीक्षित होते हेक कुलवर्षी, कृतकार्य, अपूर्व, प्रयुक्ति, अध्यक्षण तथा आर्थ्य पुर---वे क्षक क्षत्रका क्षेत्रक क्षत्रको रक्षा करने रुगे । क्षत्रकानि सीन क्रमोने प्रेमरेनको सीव प्रत्य। दिन क्रमोन्धे बीकास्ते बहुकारों काश्रा कर दिया। इस्कृतिने क्रेक्ट्रिके पुर्वासा क्ष्मा अध्यक्तवाने स्कूतरहाक्षेत्रका सामगा विका। कृतीका क्षीकृष्ण और अर्जुनके पुष्तामांको प्रकृ पूजा और अको कालोही का क्षेत्रको बीधने सना। इस प्रकार जानके पक्षके केंद्राओं और प्रमुखेंचे संबद्धी हत-पुत्र क्यू । सभी मर्चकर और निर्मित में। सहस्पाद मादाम सरपरे स्थानेकोर केंद्रोको मह क्रमक । तथ सक्कोमने भी तलमार उठायी और क्रमणके कुलका रिल कहारे करून कर दिया। उसर सकारको किथिए पुरुवस्थान सैक्टीके पुर्शाओं अनेकके का-का कम को और कुरुवर्गने गीमसेनके केंद्रोको कारतेक का शिका केंद्रोके सरनेपर श्रीमसेन राजने उक्तर पढ़े और हामने माराज्यको सम्बन्ध ग्रह्म हेन्कर क्योंने कुरकारकि क्षेत्रहें तथा एक्क्ट बहुमार्ग दक्त ही। कुरुवर्षा हर स्वयं कुरुवर कार पर्या।

हमर, क्रम्ब भी स्तेपक और पाणक चौद्धानीका संद्वार करते-करते डीले क्षम्पेक्षे पुणितिस्को पीव्य देने रागे . यह देश भीमतेन काके समान गहा सिये क्रम्पार टूट पढ़े और







भीनसेनको क्रतीने सेवाचे अहर विश्व । इससे उनका करना बाद गया और क्षेत्रको ध्रमते देख् गयी । सिंह्यू चीन्होन हत्त्रो प्रतिक भी विकरित नहीं हुए। उन्होंने नहीं होना अलगे क्रांतीसे निकारण्यार प्यासमाध्ये सार्याच्या प्रासीवर वे अस्त । इसके प्रवासी सारमिका को निक्षेण हो कथा और कह रख-वयन कला हुआ राजके सकते हैं गिर पह । महराव पत्र क्षेत्रकार शुर इंद पने और लेकेकी नक क्रमने रेस्कर अभिकल व्यवसे कहे हो गये। चीपरोप की बहुत कही पछ रेक्ट करुपार दह यहै। महाराज ! इंक्टरने च्यापन करन अथवा ज्युरका बलरावतीके दिला दूसरा कोई ऐसा चेन्ड महीं है, को प्रवासी जीवका केंग सह रखेर। इसी स्वह क्ष्मको प्रकार केन भी भीमानेको प्रिया द्वार कोई नहीं सह सकता था। उन खेनोमें बुद्ध किंद्र गया। व्यागवने अपनी मदासे भीमसेनकी गहाका का खेट की से बंद प्रकारित-ही है बडी, बासे आगबी रूपटे निकरने रूपी। इसी प्रकार पीयानेनवी काके सायाताने प्रत्यकी का भी अपने बस्साने लगी--क देश समझे वहा आश्रूमं दूसर । महस्ती मानसे इस ही क्ष्यमें खेनोके ज़रीर क्षम्यन हो नवे, केनों ही लोहलुक्तन हो उठे । यहश्यक्ती नक्तो क्रमें और क्रमें स्वयं अकी तस सेट सानेक भी व्यक्तव् पीनसेन विकरित जॉ हुए। पर्वतके सम्बन्ध दिवर मानते कते हो। इसी तता भीपको परावा करेवार आवार हेनेवर वी हरावारे

ज्ञान करते थे, का समय कारी विकाओं ने बहुद्याओं संमान अभवता कुरायी हेती थी। इन क्षेत्रीच्या परमान्य अरलेक्सिक में शक्ते-स्था अब कदा असे का आने और रुकेके देवे करावार एक-पुरारेको बाल्ने रुप्ते। उस सबस परका प्रकृत करते हुए क्षेत्री चीर मण्डलकार विश्वाप और अन्य-अपन निर्मेष कौताल प्रदर्शित करते थे । इसके कार के पुनः नकाई क्लाकर परस्कर प्रकार करने रहने। इस क्या स्वाने-स्वाने जन अच्छी तथा बाबल हो गये से होती एक है साम रमायुरिये निर यहे। यह समय क्षेत्री पहली केमओं बहाकार का गना। चीम और करम-- होनोंके वर्षकाचेने गारी चोटे लगी थीं, इसरियो केनी ही आयश **स्थापन से परे थे।** 

इक्क्ष्रीमें कुमानार्थ आने और प्रश्नाको अपने रहाये किरमार हुने रक्षपृथिने बहुर है गये , इसर भीमतेन करण करते-पाले क्षेत्रमें सम्बन् रठ सके हुए और एक इंडमें से प्राप्तकों बुद्धके दिने लक्कार्त लगे। उन कारके सैनिक नाम प्रकारके अन्य-एक होनार पाण्यमसेनायर ट्रट यहे । आध्यक्षी सेनाकी आने कहती देख क्यक-बोद्धा के विकास करते हुए तुर्वेका आहि ब्देश्लोक का आहे। अर समय आपके पुत्रने एक प्राप्त भारकर केविकारकी हाती और डाली, यह सुनहों नह कहा और जन्मीन होबार रचकी बैठकों गिर पहान



क्ष हैल पंचार न्याओं अञ्चल रेक्स सक-वर्ग बारो हमें हवा कृतकर्म, कृतकर्म और क्ष्मुर्गर—ये बारावयों आगे कसे वर्गरम गुविद्याले कुद करने हमें। क्रांचन कृष्णिहरूको पार क्रांचनेको इकासे उन्ने सेसे काणोंने बीध क्रांस । उन कृष्णिहरूने प्री क्रांस्कराने हुए बीधा कराव इक्षणे त्रियो और कासी सामको करिकानेको गाँध क्रांस । अब क्रांच क्रांचने पर थते । क्यूंने राजा कृष्णिहरूको क्रांस केळ वी और क्रांचने क्रांचने कर्षे पाला कर विका, कृष्णिहरूने भी तेज क्रिये हुए सामकोसे सामको क्रांस क्रिया; किए क्रांसेनको स्वाईस और क्रांचे क्रांसिको ने क्रांचेचे प्राथत क्रांचे क्रुप्सेनको चौहर क्रांचिको ने क्रांचेचे प्राथत क्रांचे क्रुप्सेनको चौहर क्रांचेने क्रांच्या।

वारत्यक्रके को क्रानेत सामी प्रवीत वेदि-केद्वानेक स्वाची का स्वतः, तिर सम्बन्धिक प्रवीतः, बीनकेव्यो प्रीव क्या क्षुत्र-स्कृतिको से व्यवति प्राप्तः कर स्वतः। स्वा स्वयं का इस स्वतः राजपुरितो विका से वे, सा सम्बन्धाः स्वयं कृतिहित्ते अनेको तीवन कार्योका स्वान विका; स्वयं ही अनी स्वयं व्यापा की बाद है। स्वान विते हुई देख सम्बन्धे क्या सोन पूजा और वे स्वयुक्तित स्वयंत्री बीक्तर करने स्वते। स्वयंत्री साराधि, संग, स्वयुक्त और स्वयंत्र-स्वयंत्री हा स्वयंत्री स्वर्तान्य स्वयंत्रात्र स्वयंत्र कर दिला। किर सुनिविक्ति कर्तान्य स्वयंत्रात्र स्वयंत्रम्य किरान्यतः अन्ते सूत्र पीदिश विका।

### राजा शत्यका पराक्रम, अर्जुन-अधस्थामाका पुद्ध तथा राजा सुरधका वध

संतर अक्षते हि—बहुताम । साराम काम सम मुक्तिहरूको योद्ध केरे तारी, तम समय सारामीत, भीमतीन, नकुत्र और सम्बोधने अस्तर प्राण्यको केर विका और तार्थ प्रीयस्थ अस्तरम्य कर दिया । भीमलेशने प्राण्यको पहले एक और दिस्स साराम कर्ताने कामा । सारामीको कई सी प्राच्या सारामा दिस्सी सम्बाग कर्तान की । स्कूतनो परिच और सम्बोधने सारा प्राण्येने प्राण्यको विकास धुनः त्यार स्थानकोसे प्राप्त किस्सा ।

इन पहारिक्योरे प्रिकृत होकर की प्रत्योर अन्य रकते इटे रहे : उन्होंने सामाधिको पहीस कीवानको विकार और महामको साम बाजोरो कीव दिवा : इसके बाद स्वादेशके बाजसाहित सनुवको कारकर उसे हातीस सामाधिको बावल किया : स्वादेशने भी तुसाद बनुव लेका कारकीको बांध बाज भारे : किर एक बाजनो उनके सार्थकाने बावल किया, इसके बाद युन: चीन बाब पास्कर कारकाने प्रिकृत कर विका। कारणार, योगसेन्से सत्तर, सम्बक्ति में स्था कर्नराज्ये सारा नाम मारे। मिन करपने भी समेकनी चीव-चीव काम भारकर गीव करसा।

त्य सामाधिने कोवने नरकर सामार सोगरका प्रकार विकार, भीकोनने सर्वक समान नाराम करवा, ज्युक्तने सर्वक होड़ी और स्थानेको नक्ष स्था बर्गरकने स्वाधिका बार विकार। इस उन्या पाँच बीटिंग करान्ये हुए गाँच अन्य एक ही सामा करवानी और सुदे, किंगू सम्बन्धे अपने स्थानेसे करवार उन समाधी पीढ़े हुए दिना और सिंको समान वर्णन की।

इनुब्धे ब्ह् गर्जन सप्तवकारे वहीं सही सभी। उन्होंने है बाजोरे बहरानको और हीनमें उनके सार्रकरचे बींस इसका। तर क्रांचने स्टेक्ट मस्बार पान्कप्रकृष्टे इन सभी बहुरशियोंको दस-दस बाग गरे। इस प्रकार उनको इस बन्धा प्रकार ने बहुराबी अब उनके समयो नहीं तहर सके। महराजका का परवास देशकर कुर्वेजनने सन्ता तिका कि अब पत्थाय, पासास क्या सुराय-वीर परे कुर्य है समान हैं।

स्वत्यस्य, क्षरीय युविहित्ते एक कुराके ह्या करको कार्यकृतको यार काल। यह देश कर रे क्षण्येनी हुन् स्वाक्त पान्तक-नैतिकाको आकारित कर विका का स्वाक्त पान्तको कही हुई (पान्तको कर क्षण्येकी) वास वैश्री पूर्ण कर सकता हूँ 7 कहीं देश न हो कि कारक कोको सरकर नेते साथ संस्थान ही स्वाप कर हान्ये 7' ने इस अकर विवार कर ही हो से कि केने, हानी कल रविश्रीकी सेनको साथ पान्तक-नैतिक वहाँ आ पहुँचे और स्वारकालो सब औरसे पीड़ित करने रूने।

विद्य स्वरूप कारणे पांचालेहर की हुई अवर-कार्यके सामा कर दिया। इसके कर इक्कोलेंने क्या इक्को बाराबृद्धि देवी। उसके वाल आस्त्रकारों निर्मा हुई विद्युक्ति इस्तुन जान पहले थे। इस समय अस्त्रकार इस अनेके कारण भए भया था तथा जमा अन्यवस्य इस अनेके कारण सामानोकों या इसरे पहली पोर्टी भी क्या बुझ भी वाले थी। बार्शकारी वाल-कार्य पांचाल-नेपालों निर्माण होनी देवा समयों वाल आक्षा हुआ। वृत्तिहर क्या चीनकेन अली सहस्त्री पंचारि बहुत कारण हो बुके थे, से भी में उस पुदर्श इस्त्रकार क्रोड्यन न सा सके। उसने स्वाने ही स्ते।

दूसरी जोर, अवस्थाना क्या अली की कालेकारे जैनमें देशके महाविधाने कहा-ने नाम मान्यर अर्थनको संस्थान कर दिया। तम मानुसाने तीन कालेसे होन्युक्तारको और हो-हो अलोसे अन्य महाविधानेको जीव काला। तारहात् अहोने पुनः मान्य मानुसाने जाराम विकास। इससे अस्पति प्रकृते कोन्छ कहा प्राचन हो पति। इससे का अहोने की इससे दान-नर्ग की कि अर्मुनो समयी बैठक कोनी है देसों सर गयी। श्रीकृत्या और अर्मुनो सारे अह कालेसे किस समे—मह देस आयो सीनकोची कहा हो हुआ।

व्यासास । उस समय जानके बोद्धानांने अर्जुनकी को यूना करि, कैसी म तो पहले कभी देखी नकी और न सुनी है। एकी की। उनके रक्षणे सब्द और लिक्कि पंत्रवेशको काम केले हुए में । उत्तरपार, अर्जुन की जानकी सेन्सर काम-वर्ण करने रूपो । अनके प्रभावनोंने अर्जुन व्यानकेकी कर एकते हुए कौरन सैनिकॉको राम कुळ अर्जुनस्य ही असित होने सम्म।

अर्जुनसकी जान जानके केंद्रालगी हैमानेको यहे बेगरे अस्म काने राजी। एउक्कोकी फोटरो क्यानेके दिन्ये किनार लोकेंके जानराम पढ़े हुए थे, ऐसे-ऐसे से इनार राजेका अर्जुनने किनोब कर इसमा। मैसे जरणकारकीर अधि इस सरावार कनाएको सम्म कारके धुनादिश होकार सम्माने राजती है, जाने जानरा कार्य की प्रमुख्येका संदार कारके देशीनानाम है। सो हो।

व्यक्तवालां को वरावाल देवा अवस्थानाने सामने अध्यर उन्हें अपने कहनेते रेका। किर से वल केनेने पीवाल बाव-वर्ज होने काने और बहुत देशका एक-१४ में दुन, बावा हा। किर अवस्थानाने बाद्य वालोगे अर्जुकतो और वाले अंक्षानानो जीन कान्य। का अर्जुको पी देशकर बावोलानी सामर की और बावोले गुल्युकारी पूका करके अलो सामर कहा हो एक लेकेका पूजर रेका करे अर्जुकर दे बाव, विल्यु अर्जुको खाला अर्ज साम दूकने वार करि। बाव देवा सेक्सुकारने कृतिन हो अर्जुक्त एक प्रसंबर परिवास बाल किया; परंतु वर्जने बीच बाल मारकर अर्जन भी कुळने-कुळे कर कारे। कार्ज ही सिन अपनोले केक्सुकारानो कुल कारका किया।

अर्थको आपने असन्य अस्त है पानेपर ची क्षेत्रकृत्याच्ये काराहर नहीं हां, यह अध्ये पृथ्यक्षेत्र यतेल करके शर्म का रहा और यहाल देतक पहारची कुरकर क्रमोची पर्य करने राजा। मुरम भी अवस्थानानी और वैक्ष और उसके कार चलोबी बीकार बाले छना। बहु हेकू अकुरसम्बद्धी यह प्रोप हुआ, करवी पीड़ोंने बीर क्या कर या गर्न । अन असने कनुकर कारन्यको स्थान क्षेत्रर महाव क्षेत्रमा और की मुख्यों स्था करके क्षेत्र विचार यह जरूब सुरमधी करते क्षेत्रपर मीतर बुस क्या और हरण प्रकारित क्रेकर पृथ्वीपर मिर पक्ष । क्षेत्रक सुरक्को भारे कानेवर अवस्थान स्टीके रक्षवर ना वैका और प्रेमानकोची सेना साथ लेकर अर्जुनसे पुत्र करने रूपता प्रकारिका केले का, उस समय अर्थनका इंक्ष्रानेके एवंच भक्कान् संस्था हुआ, जो समलोकाकी अव्यक्षे बढ़नेवाला था। वहीं बौरव-बोज्जरनेवा परस्वम देसकर रूपा उनके साथ को कार्य अफेले ही हात कर वो थे, इसको स्थान करके इमसोनीको यह आहर्य हो

### शल्यका पराक्रम तथा शल्यके साथ युधिष्ठिरका युद्ध

सहाय करते हिं—बहुत्तन है एक और बुनेंगर और बहुतुत्तनें महत् संख्या विद्या था, किसने काणों और बहित्तनेंग्रह ही व्यक्ति अहर हो रहा था। येथे ही जोरते सारक्ष्येको सहजों बाराई करत रही थी। याले बुनेंग्यने ही बृहुतुत्तको यांच साम कारे, तम बृहुतुतने भी स्वर मान्य सारक्ष्य बुनेंग्यनको विश्लेग पीड़ा पहुँचानी। यह देश अली सारक्ष्योंने स्वृत बड़ी सेनाचे साम अल्बर बृहुतुत्तको कारें ओरती येर रिका। विर सानेगर भी यह अला-बंबानानी अपने हाओगी पुत्री दिकाना हुआ बुन्नों निर्माण विका

तूसरी और विश्वासी अपने प्रमा प्रच्यानीकी कैन रैन्सर कुरावार्य और कुरावमीसे कुछ कर या था। मार्ट के प्राणीकी वाची रूनाकर अर्थकर संस्थार है या या। इन्हें, राजा कुछा सामोकी हुन्हें सन्तन्तर स्वानीय क्या भीयरेजावीय समझ क्यानोको पीवित कर यो थे। सम्ब ही से मुद्धार और समझेको सी विदे हुए थे। या करण सम्ब क्यारेड पायास-महारोजनोको असून कर यो थे, कर समझ हमें कोई सन्तर १०% वही विश्वासी केत था।

इसी समय ब्रावीर क्युटाने अपने नामा (पाना) पर बड़े बेगरो शका किया और सप्योगी वर्णने नहें अन्यानीत बार दिया। फिर ईस्तो-ईस्तो इसने दश क्योंने क्रुक्यी क्यी



हेट इस्ती। अपने पानकोके ह्नार पीड़िय होकर प्रत्य भी और तीनो कारोका निहाना कराने समें। यह देख एक युनिहिर, बीमसेन, स्वत्यकि और कार्डन्नरून स्वरोग प्रत्यमर दूर पहें। सेनाकी कार्यने दूरंत है उन सकता सामना किया। उन्होंने मुनिहिरको दीन, पीकोनको पीच, सामक्रिको सौ और स्वालेको कीन कार्यासे बीच उत्तय।

इसके वाद खाराको श्रुप्त मारकर क्युरको अनुवासे वाद विचा। वय क्युरको होत ही श्रुप्त कन्य रोकर इसको रावको कारोने घर दिया। साथ ही, पुविद्धिर और स्थानेन कार और सामाधिने का सामाधिने को बायक कर विचा। अस बाराको कोको प्रश्नार सामाधिको पहेरे वो और विस् कार्य कारोने बीच साथ। इसके बाद स्थाने बनुवाने वाराकर रावके कोईको भी बीचके बाद साथ विचा। सामाध्य रावके केर्यको भी बीचके बाद साथ व्यक्तियो भी वार वारोने सामाध्य विचा। इस प्राप्त संस्थाने की वारावको सामाध्य विचा। वा स्थान के प्रश्नानिक समाध्य केर्यकोंके साथ पुद्ध बार की प्रश्नानिक समाध्य केर्यकोंके साथ पुद्ध बार की प्रश्नानिक समाध्य केर्यकोंके साथ पुद्ध बार

सहरका से प्रतिक्रियों बहुत निवाद जा गये और उन्हें अको सामांसे वीदिन करके पुतः भीतवर दूर पहे। जा प्रत्य राज प्रत्यकी पूर्वी राज शक-संवासमधी कुक्ता देशका अवके एक सहयक्षेत्र केन्द्राओंने उनकी बहुत प्रदेश की। सरको कालोरी अलग कारत सेवट का पालक-केन्द्र कहा कह पत्ने तने तो पुणियोगके पुरूरणे और यह करनेवर भी में युक्तक मैदन होहकर माग कारे ( इससे कर्नारकारे यहा अपने दूआ, क्योंने निक्रय कर रिका कि 'मेटे किया हो का मृत्यू, युद्ध अस्तर क्रारेका । दिल हो से अपने कुलाईका परीसा करके प्राचको क्रांगोरे पीडिश करने समे सम सम्बाद बीक्स कोर अपने सब महत्वोको मुलकर केले—में अपने कार्यों कर कारत है। भेरे भी विकेश रक्षा करनेवाले मार्ककृत्यर स्कूल और स्कूल अब श्राम्पवर्गको साम्ने रक्ता अपने प्राचारी अपने तस्तु त्यो; जान वा से इतन मुद्रो बार करोंगे का मैं ही रूपना बन करोगा। मेरी इस कारको सम्बोध सत्य सम्बोध । इस समय परियोकी स्वाप्त वार सामाध्य और प्रमुख्यानर ग्राः। सामाध्य क्षत्रे पश्चित्रेकी एक करें और भूक्षपुत्र वायेकी। अर्जुर पुरुपानकी रहानें में और पीनतेन मेरे आने-उठने कते। अक्रमक, कुनावर्ष और कुनावर्ष आपके पुत्रको कवानेके



हैती क्यामा है जर्मपर में इस व्यास्तरमें क्रापने अधिक प्रथम है अधीन: ("

श्वामी असा पासर सकी वैसा है किया, कोलेंड सभी असा दिय करनेवाले थे। जिर से पासक-सेवलें कहा उत्तरह सा गया। पाहस्ता, सोवल और पास्त्रोहित बीर असाम हुनें पर गये। मुखिश्वेले 'निकट असाम मृत्यु'की असिता करके सहरास्त्रण कर्न्यु की। इस अस्त्र करते हुए सहरास्त्रण कृट करे। करेंगु असमेंड पुर हुनोंचन तथा सहरास सरकों को आने क्यूनेरे ऐक दिया। अस समय मुखिश्वेरण बारावेंकी बीकर करने समे। कृतिक की सामकोंकी कर्ना करता हुआ असनी अस-विकास परिचय केने समा।

का समय मीमसेन तुर्वेकनो विद्व गर्थ । बृह्युत्र, स्थानिद, नकुरू और स्वदेवने समुदेन अवदि बीरोका स्थाना किया । किन तो प्रमासन युद्ध होने स्थार । कुर्वेकनो पीनसेनकी काल काट थे। कन्छे कुन्को हुक्को-कुको सर सर्छ । तब भीमसेनने स्थित्वा अवद करके कुर्वेकनकी स्थानी केद करते । यह मुर्वित्य केवट रचकी बेटको निर पहा । दुर्वोकनके मोहकान हो जनेतर कीनो सुद्धाने स्थान सारमिका सिर ध्वाने जनान कर विवा । सार्थिकं माने हो स्थान कोई कोरसे सारे, स्थानमा हुक्कार प्रमानका



fint dit :

अवर, चुनिवीत तेन नित्ने हुए चारतीते ह्वादो चौराव चौक्रानीच्य संक्रत करने स्त्री। चै विश्व होतानी और वाले अतियो चारतीले चार निर्मात थै। चोड्रे, स्वर्थात, ज्यान और रचके सर्वत राजिनीच्या, कुल्लागरेस्कीय चोड्रोच्या रचन हजारी वैक्रानेच्या अहीने संन्याना चार अल्ला। जिल चारी और चारतीची हुनी अनाते हुए चै सहराम क्रान्यची और वीड़े।

भूनिदिनका देख परकाम तेका आयके क्यों हैनिक क्यों तो। केवार कामने उनकर मामन किया। वे क्षेत्रें कोवने मन्यान कहा कामने और एक-इसोको स्वरकारते तथा हरते हुए जारा तम नवे। किर सम्बन्धे अपने शास्त्रोकी कीवारते पूर्विकेशको काम दिवा तथा भूनिहिरके की सम्बन्धर बाततेकी हमी स्था की। उसी समय का क्षेत्रों वीरोको देखावर समझ सैनिक इस माजका निक्षण नहीं कर सके कि 'इसोको किसाकी निक्षण होती।'

हारी बीकने क्रांचने चुनिहित्तको सी काम गारे और उनका कर्म भी काम विचा । एक चुनिहित्तने दुश्या कर्म लेकर क्रांचको भीन गर्छ काम्बेसे भीन क्रांस्म और सुरात मास्कर उनके अनुस्को भी सर्विका कर दिया । दिल् से कामोसे उनके व्यक्तिका एक स्मर्थिको भीतके बाद उत्तरकर एक व्यक्ति उनके रचको कामा भी कार क्रांसी। यह देशका

[ 511 ] सं० म० ( सापन्न — दो ) ३२

हुर्गोधनको सेन्वये पणदा पद गर्गा। पहल्लाको इस विशिष्ट्रकं समाने हुए हुन्ते स्वाप्ट बैठकर पुनः उनकर पुरवस्थामें पहे देश सम्बन्धान्य क्रीय जाना और उन्हें अपने पालक करने का नवे। उत्तरके रक्क निज्ञाना बेक्केवाली रक्षमें मिराधर नहीं रेज्येक साथ धान नवा। यह समय अवहर भी भी, निसे देशते ही ब्रह्मांके रोगरे कई है ममितिर सिंहके समान गर्मना करने लगे और प्राप्त करन । बादे थे ।

सक्रम बहरे हैं—सहरक्तर, महराज करन नेपांड समान बागोकी वर्ष करने रूपे। वे स्ट्रानीकको दश, प्रीयनेकको तीन तक सब्देकको भी तीन कर्कोंने बाका करके युवितीहरको मीविक करने रूपे : १००२ धर्मराज्या इत्तरेने सूर्व और अधिके समार रेमजी मानका प्रदार किया। का युविकेले भी सरकातीके साथ बाल अन्यर व्यासकते बीच करन। करनी चेट सरकर ने गुर्फित हो पने। मिल बोदी है देर पान पान उन्हें बेत हुआ के उन्होंने जुनियी जाते औ बारा मारे। अब वृधिद्वितने भी में सरकारेंसे करकती करते हेब हाली और हः बास मारहर अल्ला केवल की बाद दिया। यह देख महराज प्रस्कार हो सामकोसे सुनिहिएके uneit if ged un fint i m ufufget geet weber बहुत हामने रिन्स और सरुपको रूप ओरसे गाँव द्वारत । प्रत्यने भी में क्षण मारका वृतिहित और भीवदेखी सक्य बाट दिने और काको पुनाओंको भी किएने कर काल मित स्वयंत्रे एक श्वरावार करनते वृधिहरका बनुव कह

करत और कुरावामी करके सार्वाच्या चगरनेक मेन विका प्रत्य है जी, क्रमने उनके पार्थ बेडोको पी चैनके कर कार दिया। सम्बाह् उन्होंने युधिहरके Affreiber eiger agene figne :

एक पुषिक्षितको ऐसी अवस्था देख गीमतोस्ये कहे केन्द्रों काम मात्रकर कान्यका मनून मात्र काल और वे क्रमकोसे कर्प करें भी निसेष चेट प्रहेकची। फिर एक कारणे प्रकृत कार्यकाल हैता बढ़ते अलग कार्क बाढ़े क्षेत्रोध्ये की कमावेक व्यक्ति देवा। जा सक्त प्रतास क्रम क्रमी क्रम-सरमार रेजी राजी कुर को और नकुरुके रककी हैन (इसरा) कारकर राज्य पुनिश्चिरकी अंतर हैंदें। एक क्रमको कृषिक्षिको स्थार सामा करते देख भारता, हैपरोपे का, दिसाकी तथा सामन्ति सहसा अपल क्षा को ।

स्वान्तर, जीवलंको में क्राणोरी क्राणकी कारके इसके-इसके कर दिने और एक फाल बारका उनकी सम्बद्धाः भी बाह्य प्राप्ते । निवर आवन्त्र अभि परवार आवन्त्री नेकने किवारी क्यू से बीए-बोरड़े सिंहमाद काने सरो। क्रमधी पर्वका गर्वक सुरकार सुरक्षे त्रकाव हाँ आपनी केन जुन्जिन-सी हो पनी, उसे दिशासोंका भी मान

कारकार काम अभिनित्ता और वहें और बुविधित इक्कार्य ओर । पुविद्वित्वे चनवान् श्रीकृष्यके कारनानुसार क्त हो का करवंदे क्याचा दिश्वय दिया और सामहित सुकर्णनम् दक्षमार्थः एक स्रांक स्थापे सी । किर क्रोसरी कराती वह अपने कारकर क्यूंपेरे यहारासकी और हेका । उस समय माराज अस्य क्षांत्रक कृतिक्षात्रकी तृति कहनेसे सस्त नहीं हो को-को सबसे को सरक्षांकी कर करून हां। कदमकर, मुनिव्हिरने का कामधी हां भर्तवार अस्तिको पार्थको अस को बेचने कारक; कोरो पेक्टेके कारक उससे अध्यक्षी किमानीर्था कुटने समी। प्राथकोरे करान, नान और उत्तम कासन माहिने हारा सक है इस सकित्यो पूजा की जी, जा प्रस्कानसभैन अफ्रिके समान प्रजारित सका जनमं अप्रियक्ता स्थल की हाँ कुलाहे समार धर्मधर

वी । उसमें बरनार, बरनार तथा वन्नार बीजोड़ों भी बर्ज्युनेंक न्यू करनेकी इस्ति थी । विकासकी स्वापनांदि निक्सोका पारन करने अन्तार निर्माण किया था, जा उद्यु-होत्रियोंका निर्मा करनेकारी और स्वाप केवनेरे अनुव थी । बार और प्रकारों इस अन्तार केन जून कर नवा था । वृत्तिहिरने उसे धर्मकर बन्नोरों अधिवर्णिया करके को वाल है। साथ अपने प्रमु न्यारकार कोड़ा था । एक थी का पूरा का स्नामर होड़ी भेगी थी, दूसरे उसकी वाधिकों केवा सिर्माचे रिप्ते भी सारमान था, से भी स्थापी चीट इक्कोर रिप्ते वहरूव क्या गरम उसे । सिर्मु वह वाधि अन्तार्थ काले केशी हुई सरीरके पर्यस्थानोंकों विश्वी वह पुंचीने काल गर्मी और समावा विवास यह भी अन्तार काल है होड़ी

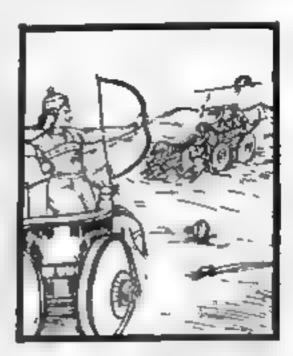


गयी। अन्यस् सारा अङ्ग क्रिया-चित्रा हो नवा और वे सोब्दुकृत होकर व्याप्त पृथ्वीका आतिहान काले हुए-वे गिर पड़े।

क्षराचार, राजा मुनिहित्ते बनुव इसका और देव हिन्ने हुए सारकोरो एक ही अनमें ब्यून-से सहस्रोका जह कर हारम । उनके बागोंसे आवारदित होनेके कराव अनको सैनिकोने आंगे भीच तो और आपसमें ही एक-पुरस्को स्रायत करके से ब्यून कह पाने रूपे । इस समय इसके हरीगोसे स्मूलकी बरहाई का रही की और से अपने अन्य-एक कोकन शीवनसे भी हाथ को सो हो ।

महाराज्य एक होटा पाई वा, जे जारी कायुवक छ.

व्या सभी मुखेनें अपने वर्ताकी करावरी करता का। इत्याहें। को कानेश का क्ष्यानका कुथितिरपर का आवा और कही वीक्ष्यको क्षम कहे नराकोका निरात्त कराने स्वार। सब वर्गणको को कः कानेशे बीच काल और के बुरस्कार कानकोरे असके करून कवा कानको भी कार गिरावा।



वित्र एक वैत्र वित्रे हुए कारको हारा ह्याँने उसका मासक कार निवा: । वस सुनने रिम हुआ कारका वह रकते नीचे गिर कहा । वह देशकार कोरक-नेनाने वासक पर रचने । उस समय सम्माक व्याने हुए कोरकोचा भी वाला वरसाने समा, सिंख कुम्माकी वहाँ क्षिकार उसे जाने महनेसे रोख रिम्स । अस वे ही केने एक-कुम्मेकर कारोकी बीहतर असने हने । कुम्माकी कार का हिया; किर एक बाल मासका उसके बाहुका कार कर हिया; किर एक बाल मासका उसके बाहुका कार करना । सामकिने उसे केनकर दूसरा बहुर कुम्मा और कुम्माकी इसलेने इस काल मारे; किर अनेकी कारके मासके असके राज और कुम्मी ईनाको कार इसके । वहीं नहीं, उसके कोड़ों, मार्चारहको तथा सारकिनों भी सीको कार कार हिया।

कुरावर्थको राजीन देश कुरावार्थने अहे अपने राजार विका निष्य और कु हटा है को । अब कुर्वेक्सकी सेना फिर कामने करी । पर्याकारों नेगरे असी और अपनी सेनाओं धारती देश कुर्वेक्सने अफेले ही समझ परवार्थकों से सेना । मा शायर मेटे हुए पाणुपुतीयर, मृहसूहत्वर और अवन्ती हेराके शरावधर धायोधी धर्म करने रूपा। वैसे परवसर्वा मनुष्य अवनी मौतको नहीं दल्क स्थाने, उसी जवार वे पाणाम महारवी हुर्वोचनको नहीं रुपेंच सके।

इसी बीचमें कृतवर्षा थी कूसरे रक्यर बैतकर वर्ष का प्रोक्त । तब पुधिव्रियो कर कार्योगे कृतकारिक करों केलेको यमलोक प्रोक्त दिखा और तेन किने पूर् कः कार्योगे

कृष्णकार्यको भी कावार किया। योदे मारे आनेसे कृतवर्धा रखाँग हो कवा—व्या देश अञ्चलका उसे अपने रश्चार विकासर वृध्यिक्ति हुर हुत के गवा। महाप्रवा! जान और आपके पुत्रके अञ्चलको इस प्रकार ऐन पुद्ध हुआ बा। पृथ्यिक्तिको हुन्य कावाके करे जानेपा सम पाण्यक प्रसान हो एक्ष कवाने उने। स्थाने पत्रा नृष्टिक्तिको भूटि-भूटि प्रसंस्त वर्ष। महत्र प्रकारके कावे कवाने गये, किससे कारों जोसकी पुत्रके मूंच प्रसी।

# मद्रराजके अनुवरीका वध, कौरव-सेनाका प्रश्रायन, भीमद्वारा भूकीस हजार पैदलोका संहार और दुर्योधनका अपनी सेनाको उत्साहित करना

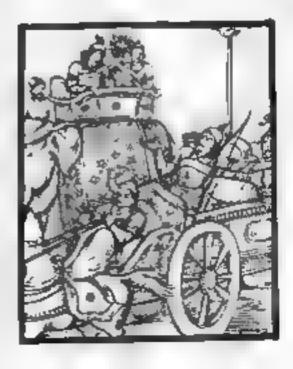
सञ्जय करते हैं—सारकोर करें आनेकर उनके अनुसावी स्तरत सी रवी युविद्विरसे स्वकृतेके रिक्वे आगे कहे ! कर समय एका दुविकाने इस महोद्वीय मीतेके कहा—'इस समय



पाण्यक्ष-सेनावर्दि और न काओ, न काओ ।' विज् काओ कार्रवार मना करनेवर की ने वृत्तिद्वितको नार कार्यनेकी इकामो उनकी सेनामें कुम गये। वहाँ प्रदेशकार उन्होंने कनुकड़ी देखार की और पाण्यकोंने स्टब्स मुद्ध जारण कर दिया।

रुवर, सर्जुरने सुमा कि 'कल्य मले को और उनका दिल सरनेवाले महारेतीय महारची वर्गस्तकको पीवित कर स्टे हैं': हो से पान्योककी देखार करते हुए वहाँ का पहुँचे। कर समय अर्जून, पीन, नमुम्ब, स्वयंत्र, सारवित, ब्रीप्टोके पीनो पुत, शृहकुत, विकायी तथा पाहारत और संस्था पीटी पुनितिस्की रहार करनेके निन्धे कहें कारों ओसरे पेरकर करे हो गये

इन्देशी कारेसीय केड कई सिल्सकर कार्य एने— औ ! का राजा पुनिद्दिर कार्य है ? उसके क्रवीर साई भी नहीं दिकारी हैते। वृहक्ता साम्पकि, बैच्छीके पुन,हिन्दाको का अन्यान पासस कार्यो कार्य है ? इस



तया वक्तान कार्यवाने का ग्रास्त्रकों अनुसरीको क्रैंगरीको सहरको पुत्रीने पारचा आराम कर दिया। तर समय कुर्वेकको अन्त्र नहीं पानी। तथ सन्दर्भने पुर्वेकको कहा—'काम ! सुनारे रहने-नाले ऐसा होना कार्यान क्रिका नहीं है कि महारमको सेना मारी जान और इस कर्य-नाई सम्बन्ध देखके चूँ। यह समय स्वी का मुख्यों है कि इस साम स्वेन एक साम पहलार रहते; ऐसी इसाने सहस्रोंको अन्त्री केंग्रांस क्षेत्र करते देखकर की दूस सर्वी स्वान क्रिके का को हो ?'

दुवांका कोच—मैं कहा करों ? व्यांकार करा करनेकर भी इन्होंने मेरी जावा नहीं करते हैं, तथ क्या कार्य पायान-सेनामें कुछ गये हैं।

त्युप्तिनं कहा—संख्याने अस्ते हुए सैनिक कर कोको गर जाते हैं, तो वे जानीकी भी जावा अही कानो; आक इसके कार कोच नहीं वारण काहेने; का इसकी कोका सरनेका समय नहीं है। इस तक लोग एक तका होका करे और सक्यूपीक महताकों हिन्दिकोची यहा कों।

स्वयुनिके ऐसा व्यानेवर राजा पूर्वीचन व्यान वाहे लेखा साथ से अपने सिंहनवारों पूर्वीची कान्याव्यान-सा कामा हुआ काम । उस दराने में की था । उचर पानवार्ती और न्यायाकों वैतिकोंने पूर्व किया हुआ था । उनके एक जुई की वहीं बीतने पाना था कि काहेशीय कोड़ा धानकोंने हावार्थाई कासे जीतके मुंदरे या पहे । इनके पहुंची-वह कहे दिवार्थी होते है । अन्न संस्था पानवा हुन्दी मानार विश्ववार्तीं का को है ते । अन्न संस्था पानवा हुन्दी मानार विश्ववार्तीं का को हाइप्यानिके साथ बानांची सन-सम्बाद केनाते हुन इनकर हुट महें । वे विश्वपेतनार से सुद्धानिय हो हो है, उनकी बार पहानेते हुन्दीकारी सेना पुनः समानात होवार वहने और सानने साथीं।

राज्य । अन्यके करे कांग्रे सभी कौरव क्रांसल है को थे। उस समय जिस्से भी केंद्रावर्ध न से सेना इकाद्यी करनेकी हवार होती की और न पराक्रम दिख्यनेकी। भीना, क्रेंग्र और कांग्रेड परनेश्य जैसा दुःश और नम हुमा था, वहीं मय इम्स्येगीयर निर्द समार हो कथा। विश्ववाधी औरसे पूर्व निरास्त हो गयी। कौरवोंके प्रयान-प्रवान सीर को सा खुके है; इम्स्टियों को सेव से से मी मीजो बाजोंसे प्रवाद होकर पासने समे। हुक सीम कोंग्रेस प्रवास पाने और कुछ स्वेम हावियोंपर। महोरे रखोंने ही बैठकर स्कृतकार हो स्वे। सेसारे पेक्ष बोन्ह प्रयोध को सो बोरसे प्रवास कर हो थे।

उन सम्बद्धे उसक्य स्केचन भागते वेस विकाशितनरी क्याची और ब्यामनेने हरका क्याच पीक्र विकास कर चौरोके बाजोची सनसमाहर, रूपसा शिक्षो समान सुन्धान और प्रक्र कर्मन यह पर्यक्त मन पहल का। मा प्रम हेल-कुरूप बॉएस कैन्सि वर्त उठते हैं। उन्हें इस अवस्थाने देशका करून और कहात केन अध्याने सहने लने—'अपन सम्बन्धे राज पुनिष्ठेर सहस्रोक विजय पा को और एवंबन अपने देहीनवान राज्यस्थाने पह हो प्रवार आज अपने पुरानो नव ६४० सुनवर राज्य श्रास अस्तर जानुक हो वृत्योगर प्रसद सत्त्वन निर्दे और दु:स धोने । आह अवसे सम्बन्धे का समया कि कुमीनका सब कर्मारोने केंद्र है। तक में जी परकर जनने ही निका करते हुए विकृतकोचे काम और दिलकारी कमनोच्छे कह करें। अन्तर्य हे भी क्रांस्थी वर्ति परिवर्गने सुबार अनुभव को दि पान्युकोने विकास कहा सहन्या था ? अन्य अन्यति तरहे कार से कि लोक्स्पारी केली पहिला है ? और अर्जुस्के uppell dazt fazelt miest § ? web artif mer क्याओं विकास बार है ? जानों भी से पूर्व परिचित्र है करे। अब क्षांक्षक को स्कंतर बहुत्या बीवरेन्स्रेर कांकर कारका भी उन्हें हान हो कांचना । जिनकी और पह क्रानेको कक्षान, सामान्ति, चीनरोन, बहुबहा, श्रीकरिके चीव कुत, स्कूल-स्कूबेर, विकासी तथा एकं राजा बुविब्रीत-नेत्रे चीर है, क्यांके किया बैठ्ये म क्रे ? सम्पूर्ण कारों कार्य कारान् तीनुस्य विनों सुर्थ है, तिनों क्षेत्र अनुस्य अनु है, इनकी विकार करों न होगी ?"

इस करावार वाले करते हुए कृत्या और अस्या इवेंचे गरवार आयो ऐतिकांका ग्रेम वार वो थे। इसे समय सर्वृत्यो रवालेकार काम किया। ग्युट, स्वर्तेय और कार्यायो कृत्योग कार्य थे। इसर, अपने शिलकोंको कार्यायो क्या वार्यो देश दुर्गोश्यमे भारतियो स्वा—'स्वा ' या देश, पायाम किस सन्द्र मेरी सेनाको सर्वेद यो है ? यदि सम्पूर्ण सेनाके पीई में सर्व कीन्द्र स्ट्रैं, के अर्थुय मुझे स्वीकार आये कार्यका समझा गाँ। कार स्वायो । इस्तिको यू मेरे कोन्नोको पीरे-वीर इक्तिका सेनाको विकास कार्यो रहा करता हुआ से कार । मेरे स्वतिको कार स्वायोग्य का्या कार कार्यम, सब सामगी हुई सेना वितर सीट आवन्यों रो

पुर्वेशका पुर्वारोधे घेण वका शुक्का सार्थाने केवेंको वेरि-वेरि क्याना। उस समय वहीं हावीसचार, कुसका और रोक्वेंका पता नहीं वा, केवल हारीस हकत पैक्स को क्षा अने को को को क्षा के कुछ है जिसे अकार कर | किया अकार के हैं | तूम पाणाने के अकार हो पान है पूर्व मने । किर के कृति को हुए का चोद्धारों और पाणाने के प्रेर प्रधान कह होने का । अन समय चौजाने कहा किया

रने। उन्हेंदे पीमसेनको केर का तेनेको भी कोशिक को। या रेस पीमसेनको कहा होना हुन्छ, वे रकते कुर को और इसमें कहा कही यह से पॉन-करो ही उन्हांतरी

रेज जाय रेक्टर जा पॅरोक्ट सम्बद्ध किया। ये भी गॉक्टर ही कु प्ये और जो भारों औक्त्रों केव्यर व्यवस्था जान करने



स्थानकारी थानि आरके सैनिकोका ब्रोहर काने को । अवृति अपनी नकाने का इस्तेयों इक्तर चौक्राओंको कर निराण । पैरानेकी का परी हुई सेन कही नर्नका मैंदानों केहे थी । इसी सम्य श्रीवीदर काहिने आरके कुछ पुर्वेशकार काल किया । सिद्ध ने उसके पासलका व ध्वीच सके । वहाँ इक्त कोगोंने आरके मुख्य माहता देखा । समझ कालक एक साथ होचार भी सकेले दुर्वोगनको नहीं पराहा कर सके । उस समय पुर्वेशको देखा कि नेरी सेन व्यापनेका निराम करके अभी थोड़ी ही दूसका कर्म है, वस उसने सिम्बर्डिको पुन्तस्थार कहा—'अरे । इस तथा भावनेते वस समय है ? अन्य तो स्वयुत्ता की बहुत काला हो बुक्ते हैं ऐसी दक्ता महिन्नका और अर्जून की बहुत काला हो बुक्ते हैं ऐसी दक्ता महिन्नका और अर्जून की बहुत काला हो बुक्ते हैं, ऐसी

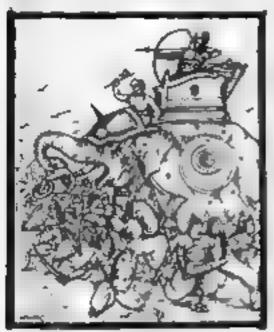


है, जोर विलंग-विलय होनार जानेंगे, हो गांदाव मीता जानेंग हुए जाएर जा पर प्राप्त करेंगे हुए जाएर जा पर प्राप्त जाना हुए जाएर जा पर प्राप्त जानावाली है, से पुत्रमें भागेंगे ही इसलोगोंना जानाल है। जा पुत्रमेंर और जायर जाना है जीव यह उहली है, से संकित जाएकार में पुत्रमें हैं। से संकित जाएकार में पुत्रमें हैं। से संकित जाएकार माने नहीं पि पुत्रमें हुए में हो जान से या परिवारणों हुए के संकार को है। पुत्रमें हुए पुत्रमें पर पार गोंद वह पुत्रमें पीत जाय से माने ही है एक चौनात है और पार गोंद वह पुत्रमें पीत जाय से माने ही है। साथ से पार्ट पुत्रमें हिंगे पुत्रमें कराय है। साथ से पार्ट पुत्रमें प्राप्त करें पुत्रमें कराय है। साथ से प्राप्त प्राप्त प्राप्त करें है। साथ से प्राप्त है। साथ प्राप्त करें पुत्रमें कराय प्राप्त प्राप्त करेंदि पार्ट नहीं है।'

कृतेकान्त्री कम सुनकर क्रमान्त्री अस्त्री प्रश्नेत्र की और पुर: क्षमानीवर क्षमा कर दिन । क्षमा क्षम सम्बद्धा कर्द के और अपूर करनेको प्रश्नेत्रो ही विकार से । व्रतिक विकारिको काने देश के छोकने कर क्षमे और इनका सामगा करनेके दिन्ने जाने कहे । अनुन अपने विकारिककर नाव्यीव बहुत्वारी दिवान करते हुए स्वयंत बैठकर आपकी सेनावर हुए को । न्यून्ट, स्वयंत्र और सास्त्रीकने हुन्द्राविवर काम किया । इस अक्षर के सम सोच कामने क्षमा अस्त्रात्री सेनावरी

# शास्त्रका वक्ष, सात्यकि और कृतवर्णका युद्ध तथा दुर्पोधनका पराक्रम

, सहर बहुते हिन्सान्तर मोन्होच्य क्या प्राप्त होको सका पाका-रेका था करा। या देकाको समान एक पर्वताकार गानवाकार केला हुआ वा । उसने



प्रत्यक्रके समय अस्तर पर्यक्त सामीने प्राथमिके क्षीकरा अस्तर विक्या । स्तरंड साम होहारे और वैशियोग्डे कारकेक जीवानेने किरानी हेर राजनी है, इसे कॉरफ स प्राच्या गोर्ट भी जी जन रहे । नोच्यान्य व्याहरी महानि अनेतान ही राजपुनिये कियर रहा था, से भी प्रमाण, सुद्धान और स्टेक्ट को इक्तरेकी संस्कृत देखते थे, एक क्षेत्र मही पर गरन आस का। पर सहसोची सेनाची पाउँ कोर थानो शाह । योज असना वनवीत हे सानेके करान क्रम प्रमरपुरिये दक्षर गढ़ी सके। अवसाने ही बके सम्बन क्रमारे माने समे । प्राथित बेनमों न नव समाने सारम प्रकारको का विकास काहिनी तीलर-विका से कार्र रिकाओंचे पाग नवी।

या देश अवने प्रयानकार येख गोन्यगन्त्री प्रक्रिय करते हुए गर्की और कहा कर्माने रूपे। उनका सञ्चलक रोजनति बहुबुक्तने स्त्री एक जन्म। स्त्र स्त्री कारकारीके साम क्रमीनारे और कहा । को असे देख प्रक्रमते | विकास और वस वर्गतावार क्रमीके उत्तर महाकी चोट करके हारा-पुरस्त पर करनेचे रिनो सुनीको अनेको और जो बहु सम्बद कर दिया। उस अकारहे हसीका दौराया । तम बहुद्धाने तीन प्रसंबत पराजेंसे इस्केंचे बहुन्यकर पर प्रधा और व्याधिनकर कर पुरस्ते एक करन

चीव करत: दिन, अलो शुभ्याधारको स्थान करके असी बोच भी नारम और मारे । इस्के रूप महारोगे कामर होकर बेक्टेंग्डे ओर पाय, बिंह करको स्वसा को लीतकर **राष्ट्रको १४मी ओर यह दिया। जनसम्बर्ध पुनः अस्ती** ओर अंधा देश खाला नगरे कारा यन और हामने यह हे को केको कब रकते कुर यह। इतको हाथीने रक्के पाल प्रदेशकर बोदों और संस्थितों कुमल दारत; सिर चीर-चीरते गर्मच करते हर साने राज्यों देशने व्यवका कोरस पात दिया।

का समय प्रकारस्य ज्ञानस्य प्राप्तके हामीसे गीविन हेन बोकोन, हिनाबर्ध और सामित स्वास करने पास हैई अली । अली ही उन्होंने अपने चानोंने हामीका बेग रोक हिन्द । इन पहराविक्तेके प्राप्त अपनी उनति कर व्यक्ते सुनी विकास हो जार हारे प्रभा तथा कारणे कराये करे स्थान कर थे। जनके सामग्रीकी यह सामग्री पायक राजी प्रकारकार पान्ने राने । प्रात्मका पर परावन केने पश्चिमने और सुक्रमंत्रे हक्कार कार्य हुए साथ्य नकावको मार्थे ओली के विभाग कारणा, बहुबहुतने बादे सेगारे सामा



करतः हुआ करावानी है नाम। इस्तेडीमें स्वरतीयने एक प्रीतृत्व चारपरे फ़ारचाता सिर बढ़से जानन कर दिया। स्व यह मोन्युराज अस नागरकाचे प्राथ ही कस्तीवर निर चड़ा।

मानकं पारे जानेपर मानकी संग्या गृह हुट गृहा—मान हैनिक तिसर-विकार हो गये। यह देश व्यानकी मुस्तवयनि आगे क्यूकर इन्हुआंकी सेनायो केवा विका। को राजपुनिते कार दूजा देश आपके जाने हुए सैनिका भी गर्था आगे। जह समय आपनेकी भी करवा न करके सीटे हुए बौरागोंका पारकांकी साथ बोर पुन्न होने रचना। पुन्नवर्णकी मुनुबद्ध आधार्मकाथ थी। अधारम होनेपर भी जाने समया पारका-सेनायो आने कहनेते केवा विका। बौरण हार्थि मरकार सिंहणाइ करने स्थान है स्थानिक सुन्नार प्रमुख्या बोद्ध वारों जो। इक्नेने स्थानह सारविक वहाँ जा पहिला। आसे ही जान्यी राज्य होनापूर्णित पुरुष्के हुई। सारविकर साथ बाल पारकार करहे सावास करानेको स्थान हिन्दा।

मा देश कृतमानी महे केन्द्री प्रत्यविकार माना किया ।

किन होनी महाराती एक-कृतरेते निया गर्थ । केंद्री ही देशी आ
पुद्धां कहा भर्मकर कर कारणाविका । अस क्याक और कहाल मेद्रा पूर वाने होकर इस्तिकारी कांत्र सम्बद्धाः केंद्री को केंद्र इत्त्रवानी कर तीको कार्योग्धे कहा सोध्य दुश्य, कार्य को अस प्रत्यानी कर तीको कार्योग्धे कहा सोध्य दुश्य, कार्य को अस प्रत्यानीति कृतकार्यको कारणा कर विचा । अस कृतकारी प्रत्यानिकारे तीन कार्योग्धे सामा सामके एक कार्यो सामा कर्युव कार दिया । सामाधिन करे हुए क्यूनको केंद्रावान कृतक कारणा करेंद्र प्रत्यानिकार कार विचार किया कार्योग्धे सामा कार्योग्धे कार्योग्धे कार्य प्रत्यानिकार कारणा कारणा किया न रही, जाने सामाधिकारे पार क्षाक्योग्धे हकारों कारणा क्षाक्यों कार्या कारणा किया; किया कारणा । अस्त कृतकार्योग्धे कार्योग्धे जान कृतकार कारणा ।

कृतवार्यांको इस इताने पढ़ा देश कृत्यवार्थ छोड़े जाने और उसे अपने रखने जिलावार रामधुनियों दूर कुछ से करे। सामानित राममें उता पढ़ा और कृतवार्थ राम्हीन हो रामा—व्या देश दुर्वोकान्तरी संस्कों विस्तों अगादक पढ़ी। परंतु उस समान इताने कृत वह जी की कि कुछ दिसानी नहीं निर्देश हो इस्तरियों आपके सैनिकोंका पागना प्रमुखनेकों नहीं निर्देश हो समार। समाके व्यापनेपर भी दुर्वोका बादी बाद रहा र बाद बड़े सेगसे क्यूओंचर दूर पढ़ा और अकेत्या होनेपर की समान सामान-को हानोंको असने आसे कहतेरी केस किया। बही

न्हीं, जाने विकालों, हैपरीके पुत, केकान, संस्था तथा
स्वान—प्रश्न का केड्डाओंको अपने तीनो नाजोंका निवाना
बनावा। सनुपद्धका एक भी केड्डा, हाजी, त्य चा प्यूच्य ऐसा
नहीं था, को पूर्वकारों सालोंने असूता सवा हो। वैसे सूतरों सारी लेख कार्य हुई थी, की ही उसके बाजोंसे भी कार्य दिलावी हेडी थी। का सलव पूर्वकाने सारी पूर्णाकों सालावी क्षा दिसा था। आयों या सनुपद्धके हमारों केड्डाओंचे का एक ही वर्ष था। जा पुत्रने जापके पुण्या अनुस्त कराइन देखा क्या—स्वाह साला एक साथ विकाल भी को बीहे जो हम सके। साल पुर्वि कार्य मीतर, प्रावकारों पान, संस्थान के बीह नहां साथ साथ साराम असी सालोंने साथा कर दिया। साथ ही, इस पाना प्राप्ता असी साथोंका प्रमुख भी कार साथ।

प्रकृतिको का बाद्य हुआ अपूर्व केवा विचा और दूसका विकास कर्न प्राप्त सेवार कुर्वेकनक बावा विका। सर्वे का बाव भारतार कुर्वेकनको बीध प्राप्त। स्वक्षार स्कूतको के, बावाविको द्वा, प्रेज्योके कुर्वेन विकास, वर्वरात्तने प्राप्त और बीवसंत्रने अवती बाव करवार को कुल पीक्ष प्रकृताती। इस प्रवास वार्य कोराने कालोक्ष्य बीवस होनेवर भी दुर्वोक्षको वोक्ष केर बड़ी हाट्या। इस समय सावदी कुर्ती, सावदी कराई क्या सरवारे बीसवा सब सीमानीय विकासी पहारे की।

इसी सम्बद्ध क्रमुक्तिने धुनिश्चित्तके बारों बीहोंको मार इस्ता और उन्हें की बामोंके मेहित किया। तम स्मृत्य समावधे अपने सम्बद निकायर रमणुनिसे पुर इस संग्या। मोदी ही देखें इसरे रमार समझ होयान चुनिश्चिर गुनः आ प्रदेश और उन्होंने समुज्ञिको माले में बाज मारबार सिट प्रांच बामोंने बीब-साव। इसके बाव में बड़े जोरसे गर्जन करने सने।

कार, जनूक करों और कालेकी बीकर करता हुन।
न्यूनकार का पक्ष । तम न्यूनकों की वालेकी नहीं वारी वर्ण
की और क्यूनियुत जनूककों कारों औरते वक दिया। दूसरी
और, कृष्यकारी कोकों काकर कालेकी महारे हीयाओं पूजेको काकर कर दिया। उस वे की कृष्यकार्यको अपने सरकारों विद्या करने तमे। इस प्रकार उनमें विद्यात पुढ़ होने तन्ता । का समय क्षती कृषिणोंने, कोई बोड्नेने और रवी राज्योंने किए को। वैदारोका वैदारोंके साथ पुन्नकार होने सन्ता। किर वो कहा ही मानंबार और क्यासान पुढ़ विद्या गया। इक-दूसनेका समन्य करते हुए सभी बोद्धा महकों और क्यांना प्रकार करने सने।

### दोनों सेनाओंका घोर संप्राप और शकुनिका कूट-युद्ध

स्त्रण कार्य है—सहराज ! इस जवार का बोर शंकान कार है का वा कि प्रायमोंने अन्त्री होनारें समझ जार है। उस समय आपका पुरु कुर्वेचन कही कोडिक्स अन्त्री हैंपिकोंको रोककर प्रायम-सेनाई पुरु करने समा। इसर, राजा पुनिक्किये हीन वार्लोसे कुराव्यकंको बॉक्कर कार्स कुराव्यक्ति कोईको कर कार्य । उस कुराव्यकंको के अवस्थानने अपने रक्पर विद्यादर सम्बद्ध कुर्य हिन्स; विद्यु कुराव्यकं कार्या सामन करते हो। अनुनि पुनिक्कियो साह मार्गोसे वीच दिया।

स्वयार, हुनोंगाने स्वय की रिक्नोकी राजा मुनिविस्का जामना कारनेके निक्ने सेजा। जा रिक्नोके मुनिविस्का जामना कारनेके निक्ने सेजा। जा रिक्नोके मुनिविस्ता पार्टी आरमे जानी वाया-कार्य की ति के अनुस्व की गये। जे अपने-अपने प्रक्रोण की स्वार कुरिविस्की रहा के निक्ने कार्य अस पहुँचे। तिप तो वर्धाय क्या प्रव्यक्त की प्रक्रोपे अर्थनर युवा किए गया, कन्मोकी वर्धा कुर नहाम माने समा, कन्मोकारी अर्थायकी कुर्म सम्बंध । अस उत्तर पालानों और प्राव्यक्ती अर्थन केले हुए अर सात की प्रविभोको की स्वार कारन विचा। कार्यकार, कार्यकों साथ आपके पुनरे कहार कुर्व केले, बैका कार्य कार्य सेक्स स्वर्ध के रहे थी। वेलों ओको केन्स केल्स सारों से वेला एका और क सुन्य ही स्वार का । कार्य और सारों सोक्सर स्वर्ध के रही थी। वेलों ओको केन्स केल्स सारे या हो थे।

इस समय क्युनिने कीरण-गोद्धाओं के क्या—'गीरी ! पुण्लीय सामनेशे युद्ध करो और मैं पीक्षेत्रे प्राव्यक्रिक संकार करना है।' इस स्तरमुक्त अनुसार तक क्षणकेय गीक्षेत्री और क्ये से स्वारंत्रके केन्द्र अवका प्रस्ता क्षेत्रक विकासकरियां करने तने। इसनेकीने पर्याप जिस् कृत्यों सामने जाने और बच्च टंकारते हुए इसरोगोंगर क्षण करसाने तने। क्षेत्री है देखें प्रारंत्रकारी सेना प्रारंग गाँधे—व्या देख कृत्येंकनकी क्षेत्र किर पीठ विकासक्ष जानने करने। तथा प्रसूतिने क्या—'गानिकों! दुक्तरे व्यापनेसे क्या क्षेत्रा? खंडका पूर्ण करो।'

कर समय समृतिके पास का इकार पुरुसकारोकी होना सीन्द्र थी। असीनो लेकर वह समय-रेसके विक्रते सामकी और नवा और सम विस्ताल कारोबी वर्ष करने रूपे। इस आक्रमणारे पान्कारोबी विद्याल सेनाका घोर्चा दूर नवा, वह जैसर-विद्या हो गयी। राज्य श्रीकृतिने जनारे

सेनाकी बढ़ अन्यक्ष देश स्थापिको बढ़ा—'सैवा ! जरा इस कृषी कहानिको सी हेलो, वह पीकेकी ओरही द्वार इसके कामा-सेनाका संक्रम कर रहा है। अब तुस बीकाकि दुर्गोको कथा सेवार कामी और एक्सिको बार इसके। स्थापिक प्रेस पाइकालेके साथ स्थापन कीरवीकी स्था-सेनाको काम कमा है।'

क्रांक्यको अद्धार क्रमा सात् की हमीसवार, पाँच क्रमार कुलस्मार, बीन क्रमार वैद्यान, क्रीयांग्रेस प्रतिशे क्रम स्था क्षांकरी स्थान-इन सक्ते संयुक्तियर श्रास विजा। उस जन क्यून पोडेची खेरते अञ्चल करके पायक-विभिन्नोका संदार कर का वा। इन बोद्धानीने प्रोक्कर क्ष्मुरिको केरके स्कूर-वे सुराजरोको का साम । अन क्यानि कोडी ही देखाना सामना सरके गरनेते को हुए हा इका बुद्रस्थातीके साथ पान गया। बहुत्या, साम्राध-केंग भी अन्ते को हुए स्वारोके साथ सीट बसी। केनकेट कुछ नामको स्थानकोती सेना केवर शाक्तको का का पूर्व । केन बोद्धा की बन इश्रर-कार केंद्र पूर्व वे समुन्दे प्रमुख्यों सेनके पर्युचनमें आवा वासन्त करने रूपा । फिर से आयोह और समुखोंके सैनिक प्राणीका क्षेत्र क्षेत्रकार कोर पान करने सरो । इंडे-सी, अवार-कुमार चेना एक साथ रमध्मिने गिही हमी। सरावारीके को हुए कारण कर बलांबर दिस्से से से समुद्रेत करनेके िरनेकी-की करावेक्टी आधाव होती भी। को हर करीहे. अन्युक्तिकीय पुरास्त्रों और संवासीके निर्मान्त्र प्रोट प्रस्त कुरुपे पहल सा।

इस पुनाम केन का कुछ का हुआ तो बोई-में सके कु पुनस्कानेक स्वय अनुनि पुनः प्राथम-सेन्यान हु पहा । काश्रामेंने की पुनी दिसानी और नेवल, पुनस्कार तथा काश्रामें स्वया सेन्यार अस्तर काम कर दिया । पात्राम कियाओं के दिसा और उसे वालोसे बीवना आहम कर किया । या देख आवधी सेन्यांने पुनस्कार, प्राथमिता, रेशी और केवल भी पात्रामांकी ओर होई । यह संवय किन्ये स्वया कील हो को थे, ऐसे बहुत-से बेदल बोन्या सालो और दुसिसे का अध्यान सेन्यांने कार कर करना से प्रमुख केन साल सी पुनस्कारोंने समय से दुस्त धुनीकावनी सेनाने पहिला और व्यवस्थाने सुनने सन्ता— 'प्राया कहाँ है ? बोन्यासीने इतर दिया 'यहाँमे यह नेकारी गर्जनके समान तुमून आवाव का गी है, नहीं कुरुवन को है, अप पीतरापूर्वक नाई क्यों से मिल जानेने ।'

इनके ऐसा बहुनेपर समुनि, नहीं बीरोसे किया हुआ हुनोंबर एक क, की एक। एक्निके बीको एक क्योंकरको देशकर उसे बढ़ी जातका क्यूं और बढ़ सम प्रेनिक्योका पूर्व कहारा हुआः कुर्वोकाको कहाने साम-'रावर् ! की पावक-पक्षके बुद्धावारीको परास कर दिया, अब तुम भी इस एक्सेनका संदार कर काने: क्योंकि प्राण-स्था किये किया चुनिश्चित इस्तरे कराने पहीं भा समर्थ । इसके इस सुरक्षित स्थाननका जन्म है बानेनर इस द्वावियों और वैद्यानेक भी शतका कर अलोगे ।"

प्रकृतिको कर सुरक्तर आयके सैनिक पुर: पानक क्रेश्वर हर गरे। साने अन्य काना और तरकावेका है क्रोल दिया। सुक्र ही देखें सूच्योजेंद्र विकृत्यके साम 🛊 उनके बहुरोको पर्यकर अंकरे सुराध्य के समी।



#### अर्जुनद्वारा श्रीकृष्णसे दुर्योधनकी अनीतिका कुपरिणाम बताया जाना तथा कौरवोंकी रचसेना और गजसेनाका संहार

रहाप कहा है--स्वरूपन, कौरमधीरोको को केसने धनुष स्तापे देश अर्थुओ कावान् श्रीकृष्णने प्रक्रू--''क्कार्रेग । अन्य कोड्रोको इतिको और इस सैन्य-कानको प्रवेश कीविये । जान में सेवो कार्योर्ग ब्यूजीकर जना कर क्रांपुरत । क्रम संतानके आतम क्रूप श्राम असरक दिए क्रे मचे। करियोके करा स्थान-केले अध्या रोग की, स्थे इमलोगोके पास जाकर शब मानके जुरबी-सी हो नकी। मुझे अला भी कि विराम्य चीनके मारे मानेपर क्लेंबन संविध कर रोगा, किन्तु उस यूपनि ऐसा नहीं किना। धीनाचीने सबी और हिल्कर कल क्लमी थी, किंदु बुद्धि नारी कानेके कारण उसने को भी नहीं जीकार किया। विन कारण: आसार्य होता, कर्न और विकाय आदिके पाने क्रानेपर सहा बोड़ी-सी सेना वन की है, तो भी युद्ध की नहीं हुआ। पुरिश्रमा, प्रत्या, प्रात्म तथा शक्तके उपकृतार को गये, फिर भी इस मार-कारका अन्त न हो समा । कमान, बाहीक, राहस अरबपुर, सोयात, चीरवर मन्दर, कामोजराज नवा दुःशासक्की मृत्यु हो जानेकर की वह संद्वार न प्रकार (प्रकार ) प्रैया भीवनोत्रको हुन्यको अनेको अहाँकियोवति भारे करें--- का देखकर भी लोग का मेहके कारण त्यार्थ केंद्र नहीं हुई । रिकामों अपने दिलाहितका हुतन है, को मूर्ज नहीं है; देख कीन पुरुष होना को सनुको चुन, बस और सीरवाने अपनेले अधिक बानका भी उससे स्थेक रेन्नेका सकत करेका ? आपने भी पाणवांको संवि करनेके विकास करते क्षित्रकारक कवन कहा था, किंतु वह इसके मनमें नहीं बैशा। जब अस्तरको ही बालपर बहु ब्यान न दे सबस को हुस्तेकी बैसी सुर जवक था ? विसने संविके क्रिकों बहुनेयर शीवा, क्रेज और बिब्रस्की भी बाद ठारू ही, उसे राहफर स्थानेके शिये अब और बॉन-सी तब है ? जिसने मुखंताबब अपने को विश्वकी कह रहीं करी, देतको कह बतारेवाली पाताका अक्टबर किया, उसे और विस्तियों बात कैसे राजी लगेनी ? निश्चन ही तुर्वोचनका जन्म इस मुलका शत करनेके रिजे हुआ है। महत्वा विदुरने मुहसो बहुत बार वहा 🞟 कि 'दुवाँकर अपने बीचे-बी हम स्वेगोको राज्यका धारा नहीं देख : तथा ही कुदारी बुरई किया करेगा । उसकी युक्के विका और किसी प्रकार जीतना सहानात है। असा में कारी बारी तक जान पहली हैं। जिल पुत्ती नककार पंत्रप्राधकोंक पुत्रपरे कवार्क और दिलान कथा सुरक्त की सकती अन्दोरना कर है, जा से निवान है विकासके पुत्रपरे विका है। पुर्वेशनके जात केसे हैं ज्यूनेरे निवा पुत्रपरे वक्षा का कि 'इस पुरत्रपरे जातन हो जो है। क्योंकि पुर्वेशनके दिनों हैं कहीं कर्मका प्रवाशिक पंत्रपर हुन्त है। उत्तर असा में क्या में महीं कर्मका प्रवाशिक पंत्रपर हुन्त है। उत्तर असा में क्या में सेनाने के परिचर, जिल्लो अस्ता और प्रकार है क्याने से कालों में

मोद्रीको बल्डोर प्रको रेले कावन् क्रिक्को पर अर्जुनो प्रमुख कर क्यों से उन्होंने बोड़े कह दिने और निर्मय क्षेत्रार अनुश्रीको सेनाने प्रकेत विकार का सकत अर्थुनके स्टेंबर चोड़े बारों और शिकाओ बढ़ते हैं। बिहर, बेहरे **बार्**क करीको क्या बरसाल है, जर्म प्रकार कर्क करतेको बीकार करने रागे । कन्के होई हुए काम चेद्धाओंके काम प्रमुखर नक्ष्ये समान चीद करते हुए करतेनर निर सक्षे थे। कारे प्रच विक्रमें ही मनुष्यी, मोदों और प्रविक्रमेंको आयोहे हाथ केश यह । अर्थुन्के बानोनर काळा का सहस्र हुआ बा, रूपने जानने हुए देशे बाजीने करते सारा बाह्य आकारित हो गया। मैंसे संबंधती हाँ आन पहलाई देखेले करन करनते हैं, जाने अध्यार अर्जुन की चारू सैनिकांको कार बार्ग सर्ग । वे जनुष्य, योक्स क्रमण क्रमीयर क्रमध सांस नहीं केंग्रेने में, उनके एक ही कारते समझा बाज (कार हो कारत धा । जनेवर्धे जवारके सरक्यांची वर्षे धरके उन्होंने उन्होते ही जानके पुरुषी रोगामा संक्षर कर अस्त ।

वसाय सौरक-केंद्रक्ष रक्षणे कीठ नहीं विकानेकारे सुरकीर मैं और पूर्व करित रुगानार रुद्ध हो है, से भी अर्जुन्य अपने मान्यांनारे उनके विजयके संस्थानको उनके सन विचा के सम्मानके नाम अपने समाम अन्या और अन्याद रेजनी के; सन्यो त्यार पहले आपनी केन्द्र स्थान करें। जा समाम सोई विचानके देवारे-देवारे रुपानुमारे पान करें। जा समाम सोई विचानके पुन्तर है के, कोई समामकोको । कुछ स्थेन अपने वाई-वानू और सम्मानकोको नाई-के-वाई स्थानार भाग गर्थ। बहुत-से सहरको पानीक स्थाने केन्द्रिय अपना है जोनेक कारण पुण्डित हो रजपूरियों हो पहे-पड़े उन्यूक्ता है को ने 3 उनको दूसरे रुपेन स्थान कारणेको नेसे ही होसकर आपने पुन्ती आहानक पारत्य करते हुए पुन्नके रिने कार को थे। क्यूरेर केन्द्र कर पानी पैका सेन्नेकी में कारण हुर करों, काने का कान्य प्राच्या साने को थे। हुक सेन काने कानी, कृति सामा विस्तानोंको सीरण दे उन् कारणीर्थ की सोकार कुन्नोर रिल्वे विकास पानी थे। सोने-कोई अपने राज्यों राज-सामानि स्वाच्या प्राच्या-केन्द्री कोड करते थे।

इस जनार सीरकारको चीताओं राज्य-देशका जनमें कार्य प्रमुक्ति जान पूर्व के दिया। जारते पृष्ट्व, विकाल और कार्यका—में तीन आवादी एक्सेनामा जाना कार्य को। का राज्य पृष्टुक्त्वी वहां जोड़ हुआ। जा अन्यो विकार केर्यक जान आवोद सीरकोच्या हुआ। जा अन्यो विकार केर्यका जार आवोद प्रतिकारी कार्यका जाना जानामें कार्यकी हुआ जारते पृष्टे अनेक आर जारा, अनेकाल और जाराना आहे श्रीवनामी कार्यका कुर्वेक्यकी पुष्टाओं और जारीनर जार विचा। पृष्टुक अन्योद कुर्वत जारती वहते कहा वाचल हो पूर्वर था, इस्तियो कार्य प्रतिकार वीनका आवोद कार्य वाचल कार्यका जारीन्य कार्य कार्य क्रिया कार्य कार्य वाचल कार्यका वाचीनका कार्य की कार्य कार्य कार्य क्रिया। अस्त हुर्वेका क्रियो की्र्यो की्रया कार्यका क्रिया। क्रिया। अस्त हुर्वेका

हरू अकार कर रक्तेत्रका संदार हे गया, इस अवस इक्ट प्रकृष की इक्ट इक्टिस्सारी आक्षर रहिते क्ष्मकोको करों ओस्त्रे के लिखा। क्यान्य क्षेत्रकर क्रिके



प्रारंशि हैं; से अर्जून वर्णकावार महराजांसे विस्तार करें अपने वीले नाराजांका निर्माण कराने सने 1 वहाँ इकने देखा, उनके इस ही मानसे निर्माण क्षेत्रकर बढ़े-बढ़े मजराम बराइमणे हैं रहे हैं। दूसरी ओरसे न्याकरणे पीन्योन की अपने रकते कुटे और बहुत बढ़ी नहा हाजने लेकन त्याकर्षी करावकारी करिंद इन हावियोपर हुंट पड़े। उन्हें नहा हाजने रिश्वे देखा आपके सैनिक वर्षा ठडे, उनका मान-पूत्र निकास पड़ा और सम्बद्ध होगा हम नया। पीमकी नदाके आवासने हावियोधेंट कुम्मालक पुट काने और वे पूर्वों जो दूब हाजा-कार कान्ये देखे जाते थे। किसने ही हाजी नदाक्यी फोटसे अवहा है विगयह कर गिर पड़ने से एक्सेनाओं को स्वारंग सेक्ट आपके सारे सैनिक कान्ये कींय हो। इसी अवहर पुविद्योग और अनुस्व-स्त्राहेश भी आवाद हाजीसकारोक्ये कारकेस केंग कीं अनुस्व-स्त्राहेश भी आवाद हाजीसकारोक्ये कारकेस केंग कीं से र

इस्ते समय अनुस्थान, कृतावार्थ और कृतकारी रमसेवार्ग पुर्वे करको हुन, जब व्या वहीं विका, से राष्ट्रीय वहीं कहे हुए क्रिकेटने पुन्न—'एका कुलेकर बाह्य वर्ष ? उसर पित्य—'क्रारिकेट वर्ष कानेका में पाश्चासरसभ्यो पूर्वें केनावा स्थापना करना क्षेत्र प्रकृतिकेट पास करने रागे हैं।'

का ने केने की परकारकारकारों का दर्ज़ने सेनाका मह केंग्रकर एकुनिके प्यार का महिले हनके परी कानेपर क्षक्रकार केल आपके सैनिकोचा संसर करते हुए उनका का आने। जो अक्रमान करते देश इसरे पहके बहा-से बेजा बीवनसे नियस से न्ये। उनका बेहरा परिका पड क्या। अन्तर असा-समा समा हो गये है और वे सारी अरेरसे किर भी पने थे। उनकी बढ़ दला देश में अन्य बार महारिक्षेको साथ लेकर प्राणीको पाना न करके पाक्रमोको सेमारे यह करने सना। किन्तु कर्न्यके बाजोसे वैद्वार के करेंद्र बारन नहींने इन प्रीतेक्ट जारता पहा। का केमार्गाक बहुकुक्तके साथ क्ष्मारी पुरुषेक्र हाई: सिन्द् हरमहत्त्वाने इन प्रमा स्वेत्येको पराधा कर दिया। महर्मेर भागभार का इस इसरें और आये के पहारची सारवीड दिसानी पक्ष । यह मिलकुल पास जा गना ना । युद्धे देखते हे अर्थ कर से राज्योंके स्था क्या कर हैया। प्रमुक्ति कंपूरको जिल्ली बद्ध निकास हो सारविवादी सेनामे अह dich s mich freier mit auf weben feine gent मानकिने नेटे सार्वे पुत्र-सामग्रे पत्र बार ही और मुझे पी the first print should up all argicle नारकोने वर्ष करी नक्तेतकः संक्रम हे नवा।

### भीमद्वारा धृतराष्ट्रके बारह पुत्रोंका वस, झीकृष्ण और अर्जुनकी बातचीत तका अर्जुनद्वारा त्रिगतींका संहार

स्तान करते हैं—नद्यागंथ | हावियोधे समुख्याया नाता हो जानेपर पीमसेन श्रावादी श्रम्य सेनाशंखा संहार करने रूगे | हो हावेयों पर्ने हुए इन्ह्र्णानी वनगावादी पांति हुल्यों न्या रिस्मे राजपृथिये विवाद से हैं । उस सम्बर्ग हुल्येन मी प्रिय दुर्योचन्त्रस कही पता न हना हो परनेसे जबे हुए अपनेते पुत्र पीमसेनपर हुट पहे । हुर्येन्स, सुनीयोचन, नुव्यवनी तथा सुन्तानी सामा करने पीनको सामें ओरसे के हिन्छ । तथा पीमसेन पुनः अपने राजपा आ होटे और आवके पुत्रमेंद्र पर्मायसेन पुनः अपने राजपा आ होटे और आवके पुत्रमेंद्र पर्मायसोंने तीनो बाजोब्द आहर करने रूने । उन्होंने एक मूल्याने हुर्यं स्थानका अन्य कर दिखा । तम्बद्धार् हुर्यं नुर्वेद स्थानका अन्य कर दिखा । तम्बद्धार् हुर्यं नुर्वेद स्थानेन्दर नारायाही आहर किया और जो रावादी नैक्सी स्थानेन्दर नारायाही हाना । विस्ते ही उसके आया निवास गर्मे । व्य देश सूच्यां कृषित है उठा और उसने पीपस्ये में साम वारे। अस वीमसेनक क्रोब और थी वह गया। उन्होंने वीड, पूरिक्त और रिक—इन तीनोंको अपने तीसे कालेका निवास करवा। कालोकों कोड इसकर है तीनों स्वारणी अल्कांन हो रकते मेंसे गिर पड़े। इसके बाद बीमने एक क्षेत्रों करायमें पूर्विकेचनको चीतके बाद जारा दिया। किस पूर्वार्थ और सूचामको छै-छै काम धरवार सम्बद्ध केम तिया। यह देश पुर्विका घीटरर वह अस्या, जो असे देश चीवने असके इसर भारतका प्रदार किया, उससे अव्या होका यह समके देशको-देशको रकते गिरा और

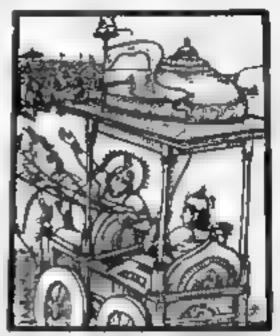
कुरणीर जा देखा कि चीमरोनने अकेटरे ही मेरे स्कूक-से चकुनोंका काम अन्य द्वार हाता हो अवर्थने चरकार चनुकारी देखार चनका हूमा चढ़ उत्तरर दूर पढ़ा और उन्हें अपने सम्बोद्धा निहतन कन्मों रूपा। उसने चीमरोनके बनुकारी महत्त्वर उन्हें भी और सन्तेने सन्त्रन कर करन। उन | वने वे, उनकी भी हैनक दूर नकी थी। महारबी पीयने दूसरा कतन बडाना और अपनेत पुनवर मानोकी वर्ष अवस्थ कर है। सम्बन्धि से कृतित क्षेत्रत भीमकी पुजाओं और इस्तेनें बाल मारे । इससे धीव बहुर मायल हो गर्ने । क्लॉने कारण केरने मरकर सुलबक्ति सार्टन और चारों केंद्रोको क्याकेक मेन दिया । रब्हीन हो सानेक



क्षामाँ करु और स्तुनार सेने सन्त—इतनेक्षे में मौकी शुरा व्यवस्य अस्था प्रकृत बहुते अस्त्य कर दिवा । अस्ते वर्त ही आवके सैनिक जवारे विद्वार हो गये और पुजारी हकाने भीगतेनकी जोर दीहे। पीकारेर भी काळा सामक कानेके रिष्ये जागे को । शीमके पास ध्यीतका का बीरोने कई कार्र क्रोरसे मेर रिज्य । एक भीपसेन अपने हीको कन्होंसे उन्हें पीड़ा देते क्लो उन्होंने करकते सुत्तरिका बांच श्री महारक्षितीका काम समाग करके सता औ प्रतिकोधी सेनाका सकाया का करू। जिल् आहं भी कारकारों और का क्या पैरलोको मोतके कर उसल्या से विकासकेरे सहोगित होने लगे।

निस समय भीवरोन आपके कुरोका संक्रुप कर रहे थे. क्स सभ्य आयो सैनिकोबा करवी और और आहर देशनेका भी सक्स नहीं होता का ( उन्होंने सक्क कौश्वीं और अके अनुवर्गको मार भगना; पित साथ होकका इतकी विकार आमानसे वे को-को नगराओंको करकी। करने रुगे । उस रुद्धानि आपके बहुत-से कियाही बहुन करने । जे

महाराज । कुर्वेश्वर अपैर शुक्तीय-चे ही से सामके कुर क्ये हुए थे। ये क्ये कुल्लार्टिक बीच कहे थे। कुर्वेश्वमध्ये वर्षा क्रम देश देशकीत्रका परवार अध्यान म्बर्-'वर्ज्य । जब क्युओंचे स्रवितांत्र चेन्ना गरे स कुके हैं। यह देखें, स्तावांत स्कूपको केर काके लिये आ



🕸 है। जन, कुमार्गा, कुमार्गा और अध्यान्य—हे केने राज क्रोंकरको अलग क्रोक्कर साथे क्रेड पूर है। इनर, प्रत्याक्षेत्रहेश पूर्वोक्ष्मकी सेनावा संवार कर्ने कहालगरकृत्या शृहकुत कपनी सुन्द कार्निसे क्षेत्रकार हे का है। और वह है हुरोका, जो अपनी केनाम जुड़ बनावर राजने बाह्य है। अर्जुन । ब्रौरकपक्षीर चेन्द्र पूर्व अने देश कारक कर की सते, असे करे है दुसेंकरको कर करते। इसकी सेथ बहुत कर गयी है, तराः इस समय अध्ययम करनेते यह पार्यी प्रदासन का नहीं

अकृष्णके का सुरका अर्थुनो कहा—'सहस्र ( कुरुक्के सभी पुत्र भीवसेनके इत्यस बारे का चुके हैं, ये हो, के अभी को कु है, ने भी का नहीं सामेंगे। सकुरिस्की सेनामें भी उस्त पाँच सी कुरस्थार, हो सी रही, सीसे कुछ अधिक कृष्णे और बीन कृष्णर ही पैक्क क्या गर्ने हैं । तुर्वोचनको सेनामें असम्बद्ध, कृत्यकर्ष, बिगरीराज, उत्तक, क्रमुनि, कृतवर्धा अबदै कुछ है केन्द्र करे हैं, कार्यो सब नहीं गये। अब इस्का

भी कार जा है जूंबा है। जान के मेरे साले अवह कार पार्ट मार्पने, में एका है क्यें न हैं, का कबके बार हस्तुन । आम सार प्राप्त समझ है व्यवसा । पूर्वका की बड़े बैदन क्रेंक्टर पान की गया से आप अल्डी ग्रहेड़ प्रभावकी क्या अनोचे हाथ के किया । अन्य कीई बकारों, में काओ शनी भी क्ला है।'

अर्थनो देश ब्यूनेन्ट परायको पुर्वेतनको संस्थाने और मेड़े पहले, भीनतेन और सहोकों भी अर्चुन्या प्राप क्षित्र। तीनी न्यूरणी पूर्वीचरको चर कारोबो प्रकृते विकास कर्त हुए आने को । यह करन आनोह कुर सुन्होंको भीन्तेत्वा साम्य विकार पुरानी और अपूर्ण अर्थुनी स्कृते सन्ते । पूर्वोचन जेदोलर करात हो स्कृतिको का रिवर्ड । कारी कही पुरांकि कार स्थानको स्थानकार कुछ प्रकार प्रकृत निरमा । एकोल पर योग्डी युचिक क्रेयर एकोर निर्मा पर्यान बैंद पना, समय प्राप्त वर्षीर बहुतो पर हो पन्छ । देश बोडी ही देखें, बात होक हुआ, ही यह स्तेवलें बंदाल हुवीक्यल द्रीके नाजांको केंकर करने सन्त ।

रता, अर्थुन की कोड़ोबर्ड बीवाल की पुर कोड़ाजरिक मानक सार-पारमार नियमे तर्गे । उन्होंने बहुत-के सार मारकर कारी नेनाका संक्रम कर क्रमं । क्रम्पार, वैन्तर्वेकी रक्तेत्रक बाक विका । अहे अने देश तारे विना स्वारती एव ताम क्रेक्ट संकृत्य एक अर्थुन्त करनेत्री कर्न करने रेली । तम अर्जुलो सामकार्यको एक कुरानो साधानक अल्डे प्रमात कृता (हैया) फाट कारा, मेल कुले कुटाले कारान मारक भी बढ़ते जाना का दिया। इसके का उन्हेंने एक चेन्द्रअभेत सामने ही उन्लेख्यो प्रवाहतर कर हतत। बर्पकार, प्रयास देलके अधिनकी सुकर्मको और पास्त्रीते मीनकर नहीं एकतित हुए समझ रवियोको अन्ते प्रत्योक्त निवास बनाय । दिन, कुल्योची हो बाल बरवार करते केरोको भी पालन किया, प्रतके कार उन्होंने हैंगते-हैंगते कुलबेल कुल्कुके स्टब्स एक प्रवेदन वाल पासवा। अससे अस्की करते किए नहीं और वह जानदीन होकर जिल्लान एक सी है नहीं।

क्ष्मीनः निर पहा। इस उत्तान सुरुपीयो प्रत्याः अर्थुनी



कार्य वैकारिक पुत्रीको भी भीकोर पाट शहर हिया। हिरा कार्यः सम्बद्धः अनुस्तरिक्षयेको बन्तानेक नेकारः कार्रिन सर्वति वर्षा हुई चौरप-केवने उनेह विका

und abr eftenbeb finb-finb mebalt und कर्ता क्राजेको कर दिया, उस या दिवासी वहीं प्रशा या। जार करो-करो क्यूंटे एक डीवे अपसे पुरानेपक परमक बढ़ते अलग कर दिया। यह देश आहे. अनुकारि भीनको भारते जोरते बेरकर उत्पर वालीको वर्षा करण का है।

का भीनतेनों हेन किने हुए बानोंकी वर्ष करके उन्हें का ओसी मानवीत का दिया और एक ही कुली शक्ता संक्रम का काथ। यह समय सरकार सक्रम कार्य कर केनों क्लेंड चेक्कोने कोई अन्तर भी या गया, बेनो रोनाई

#### शकुनि और उलुकका वध

सार कार्र है—स्वादक ! कार्युक्त संस्था का अवस्था | बलकेरे बीच कार्य । साथ है क्यूनिये भी चीवरोतको होत हुमा, का समय क्षतुर्मिने स्वकेत्वर काम विका । स्वकेतने वालनेने वालन करके स्वकेतवर कने कामेकी वर्श की । उस चै सुमारकार क्रमंकी वर्ष अर्थन कर है। क्रमुनिक | स्वय केर्च ओस्के खेळालेक्स की क्रां क्रमंकी बैकारी साथ जनक पुत्र अपूर्व भी का, जाने भीमरोतको दश राजूर्व दिलाई आकृतको हो नहीं। हरेकने परे हर पीत और सहरेव दोनों और संख्यानों घर्णका संहार कवाते हुए विचार को थे। उनके सैकड़ों बालोरो इन्हों हुई अवन्यते सेना अन्यकारपूर्ण जाकारणों पाँकी विशाली पहली थी।

इस प्रवार रक्ते-रुक्ते क्या गौरवीके क्या ब्यूब केई ऐसा रह गयी तो क्याब केडा होने अरबार कई अरब्ब्ल कई कारकेड क्याब होने हुने इनक क्युविन स्वकंक प्रवासन प्रवास प्रदार किया और प्रवास मुख्य नव क्रुविन का क्रेक्ट प्रवास मेराको केडा प्रवाह करवी कह अरबार देखा प्रवास केडा प्रवास केडा प्रवास क्याब क्याब क्याब अर्थ कर्य क्याब केडिक प्रवाह कर अरब । इसके नाम अ्योग को क्याब क्याब केडिक क्या कर अरबा । इसके नाम अ्योग को क्याब केडिक क्या हाने क्याब क्याब अरबार क्याब क्याब केडिक पर्य की इसके नाम में प्रवास क्याब केडिक क्या क्याब केया ? को बीच क्याबी क्याब केडिक क्या क्याब केया ? को बीच क्याबी क्याब केडिक क्या क्याब केया ? को बीच क्याबी क्याब केडिक क्या क्याब केया है जह संसारने क्याब क्याब है और क्याब्य केया क्याब क्याब केया है।

े जारके ऐसा प्रकृतिय स्वकृतिये दिखाई स्थान क्षात स् प्राप्त पुरः भारत्वतीय कृत को । या तेक प्राप्त केन्द्र की क्षात स्वकृतियों कृत कार्यों की इतन और दीन प्राप्ति क्षात स्वकृतियों कृत कार्यों की इतन और दीन प्राप्ति क्षात हैंगा । प्रकृतिये कृत्य क्षात हैंगो-ईस्से क्षात्व कृत की क्षात हैंगा । प्रकृतिये कृत्य कृत तेकर प्राप्तियों कार्य और क्षात हैंगा । प्रकृतिये कृत्य क्षात्र प्राप्तियों कार्य की की क्षात और एक्सेक्सों स्वत्य क्षात्रोंने क्षात्र कर कर । क्षात्र । क्षा क्षात और एक्सेक्सों स्वत्य क्षात्रोंने क्षात्र कर कर । क्षात्र । क्षात्र की को तेन किये कृत सावक्सोंने की क्षात्र और क्षात्रीयों की वीक्स वाल क्षात्रम क्षात्रे कार्य-रक्ष्योंने क्षात्रीयों की वीक्स वाल क्षात्रम क्षात्रे क्षात्र रक्ष्यांने

भीयके नाराजीने जाता हुए केन्द्र क्रोक्ट क्रांक्ट स्वाहें कर वाराजीको खेलार करने एले। एक स्वाहें कर वाराजीको खेलार करने एले। एक स्वाहें कर वाराज्य प्रस्त करने स्वाहें जाते हुए उत्पादका प्रस्ता कर उत्पाद । उत्पाद स्वाहें कर्म कर्म । उत्पाद स्वाहें कर्म कर्म । उत्पाद स्वाहें कर्म कर्म । उत्पाद स्वाहें कर्म क्रांक्ट क्रांक्ट क्रांक्ट क्रांक्ट क्रांक्ट क्रांक्ट क्रांक्ट सामने खाला क्रांक्ट क्रांक्ट सामने खाला क्रांक्ट क्रांक्ट सामने खाला क्रांक्ट क्रांक्ट क्रांक्ट क्रांक्ट सामने खाला क्रांक्ट क्रा

कारणी, वर सन्द्रा धार कारणी धरध थया, व्या वर्गानगर वा व्या : इसमें कारण उसेन बहुत वह क्या और उसमें एक वर्गकर कृष्टि स्कृतेकोड कार क्षेत्री; नित्तु स्कृतेको व्याव कारका असोड की जीन हुकई का कृति।

इस जकर कर सर्वत भी कर हो की और सकति क्वाचीय हो क्या हो अवस्थे सैनियाँगर की आहंग्र का नहा । वे तत्त्व-वे:-तत्त्व प्रमुप्तिके स्तर पान पाने । उस स्तरम पानुस बोर-बोरने विकास करने रहते। अनः राजी कीरत कोडा रनके पीठ विकासर पान को। प्रायुनिको की विस्तासता देश सकोवने सोचा 'यह चेता विश्वत सम्बद्धी रह गया ी—शिक्षा क्या क्षेत्रे करन है।' का विकास स्वया न्यार पहुर संबाधे हुए साले साहतिका पीठा विजा और हेम किने हुए काम मारकर करे आगन्त मानक कर दिया और बद्धने सन्त, 'पूर्व क्यूडी । धू इतिकालीये तिया होकर पुद्ध कर, बराइन देशाका एक्सका परिवय है। कर दिव तको कर देखो कर से रू क्या एवं है का ब, ज्ञानक प्रका अवन अवनी अधिनो हेवत । किन पुरस्ताओंके थाने इन्तर्वेगीया स्थात वित्या था, वे स्था मारे या सुके हैं, केवल कुरसङ्गत क्योंकर और असका काम है कामी रह गया है। अंतर देश कारण कारण कार कार्नुगर।'

च्या सम्बन्ध स्थानिको सम्बन्धि इस और सामीः चोड्रोपको च्या सम्बन्धि, विता सम्बन्ध इस, स्थान और सपूर्व स्थानकर स्थानि विकृति सम्बन्ध स्थानिक स्थानिक स्थानिक



इसमें एक्टियों यह स्मेथ प्रशास यह सहोग्यों यह करनेकी इकाधे देनों इन्तेने जल रेकर मान्डे कर कु पहा स्वयंत्रने इन्हरिके जाने हुए जलको उन्ह को प्रकारपार्थ जानी केचे नोस्पार पुष्पकोची होन भारत नारवर एक ही साथ बाद शतय। किर को चोरते मर्गत की। स्वरूपर, कुछ सम्बद्धानिक प्राप्त एक मनक् होतेका थाल बनुस्ता बक्ता और उसके आरखे इक्टीना हित कहरे अलग वार हिना। सामग्रे प्रकारकीय प्राप्त समीनवर कि पड़ी।

अक्षर करके अन्ते वर्गस्थानोको सीत अस्तः। क्षान्य को की। उनका कुँ सुक् गया, केवन करी रहे। और वे नकार्यक क्षेत्रक अध्यो-अपने क्रीवार क्षेत्रे पाउँ दिसाओं ने पालों रहते । मान्यीकारी सेवल सुनकर में अकारी हे से ने, किसीबा रह दूस का, बिसीके बोडे मर रूपे ने और किन्त्रीके क्षार्थ के मौतके मुख्ये का चुके थे। में स्वय होन की-कार्य के बान के थे। इस अधार प्रमुक्ति मारे क्रमेरे परकर् औकृष्णके साथ 🛊 समझ परका गई प्रसार हर । वे अपने चेन्द्रओव्य हर्न और अस्त्र महते हर हन्न कार्य रागे । इस्ते स्टेप प्रक्रांक्ट इस कर्मकी उसेसा करो हर कहते हती, 'बीरवर | दूस ने इस कामी रही दूरातम कुपुरिन्दी का दूसा हैक अवनेत नेद्रप्त करने को अन्तर | कुपुरिन्दी पुरस्तीय कर करत, का नद्रा है अन्तर हुआ (

# हुर्योद्यनका सरोवरमें प्रवेश और युवुत्सुका हरितनापुर जाना

राजन कारो है—सहराम 🗈 स्थानकर, क्यूप्रीनके अनुका क्रीमर्ग पर पर्न और अलॉबर मेड क्रेडकर क्योंने मान्यानेको पार्चे अोरके के प्रिन्य। निव्यु अर्जुन और भी भरेचने कार्यी जाति होना है। से स्वेत सर्वत, सही और प्राप्त प्राप्ती रेजार पश्चिमको पार असमेको असमे का यहे है, परंतु अर्जुनने नाम्बोलके हुना उनका संस्थान मार्च कर हिया। क्योंने पहल पाल्या का बोद्धान्त्रेयी आवृत्तेत्रीय क्षणाओं तथा संस्थानियों बात द्वारत और उनके केंद्रीकों भी भौतके यह जार देखा।

इस तथा अपनी नेपाला संद्वार देखावर क्या कुर्वेचनको बाह्य प्रदेश पूजा। अल्पे वरतेले क्यो हुए तथा क्षेत्रप्रकोको प्रकारित किया, उनमें भी तो रची में और मानी कुछ हाती-सचार, बहुसत्वार और वेहल थे। सम्बंध हावजूरे हो सानेका पूर्वीकाने काले बाह्य-'नीते ! हानकेन पान्कवीको करके निर्मेशकि पार करके, राज्य ही सेन्यरकीत बहुद्यक्रम भी संदार कर डालो । इसके कर बीच मेरे पास क्षेट अग्रह ।'

हुर्वोधनकी अक्षा मिरोक्षन का ने श्लेचन की पाणकोकी ओर कैंद्रे। उन्हें अने देल पाणक भी जानोकी बैद्धार करने सने। युक्त 🕏 इन्लोमें 🔫 सेन चन्क्लेंडे हाक्से भारी गयी, इसे कोई भी क्वानेकरत न निरम । यह सुद्धके रिज्ये प्ररिक्त को हुई, मगर नक्को नारे हकुर नहीं सबी । पाण्डम-कुन्ने बहुत-से सैनिकॉने निरम्बर आरने उर मोद्धाओंका कुछ ही क्षणीये सकाम कर कुरत । उनमेरे एक भी रियाची नहीं कहा।

न्यून्तव । आयो पुर्ण न्याद्ध अर्थविनो ऐना हवाही को थी, जिल्हा प्राप्ता और सुक्रमेंने समझ राजा कर कृता । आपनी ओरसे सक्नेपाने कृतरों चलाओं वेपना एक कुरोबन है उस समय कीनेस विकासी पड़ा, यह भी बहुत क्या है कुछ ना। जले अने नहीं और हृहिया किया, बिह्न सारी एको सूची विकासी पही । शूर्वीकाने बाद अपनेको



म चेन्द्रामोरी सीत समेरम पत्ता और पाणवॉको रूपरुप्यनेतम रूपं प्रसन्न ऐसा हो हो बड़ा जीना हुता।

अतके पास न सेना जी न समाये, इस्तिन्ये वह पान पानेकर | विकार करने समा।

शृतराष्ट्रणे पूक-प्रश्लाच । जब मेरे सब सैनिया जार काले याने और सारी कालके सूनी हो गानी, जा सबय कालाओंके मास कितनी सेना क्या गानी थी ? अलोका हो कालेकर मेरे मूर्ज पुत्र यूजोंकाने बचा किया ?

रक्षको बद्ध-व्यापन ! आ सम्ब प्राथमोके कर हो हमार त्यी, सात सी हामोसम्बर, चीन हमार बुहसमार और का क्यार पैक्स के। जनके क्या केन अभी क्या ही भी। राजा कुर्वोचन चल अनेतल हो नजा और को समाधुनिने कोई भी अञ्च स्थानक नहीं हैएकमें पड़ है कारने गरे हुए बोड़ोको नहीं बोड़कर बढ़ पूर्व शिक्रको ओर पैरल ही पान । को एक दिन न्यान्द्र अक्षेत्रिको हेनला महरिक्त का नहीं हुनोंकर तथ यह रेक्स फैला है सर्वेतरको और भाग का का वा। अभी केई है हा एक के कि जो बगोज किट्टबीकी कई हूं की कर जारे कृती । असे क्षेत्रा—'अओ | कृत्रया और कुन श्रातिकाया को का नहार, तहार हुना है, इसे सहसूद्धियन, विकृतीने कारे ही बान दिन्स का है इस प्रकारकों को स्टेन्स हुआ बढ़ मरोजरमें प्रवेश करनेके देन्ये बक्त करा गण । जर करन अध्यमे केलावा संकार देशाचार प्रत्यक अवद स्टेप्पने संबद्ध क्षे 東 報 !

राजन् ! पुर्नीकरकी हेनाने कई सामा बीर थे, सिन्दू का



स्तान सकारतान्त्र, कृतानार्थं स्ता कृतानानित तिथा कोई भी सीता नहीं दिक्कारे पहल का। पुत्ते कैतने पद्म देश कृत्युको स्तानितरे हैंस्तार कहा— 'हारको कैद करके बना करना है, इसके जीवित कोसे सपना कोई साम तो है ही नहीं।' सरकी जार पुरस्कर स्तानकिने मेरा का करनेके दिनो सीती करनार उसकी, किंदु सीनेक्सानानीने स्वास कही अबद होकार कहा—'स्थापको कीवित क्रोड़ है, इसे किसी क्या करना नहीं।'

व्यवस्था मेरे अपने केंद्र होते व्यवस्थाती कुरम्ये जैमे-जी कुकार करेका कराका का सुरावा। सुरावर केंद्र जेदी देखक कुछ संभात का, इसके कर उसने अपने व्यवसे और सेनाका करा पूछा। मेरे की जो कुछ स्वित्ती देखा का, का सब करा दिका और कहा—'रावन्। सुदारे



संक्रिक महत्त्वस

मार्च करे गये और सारी सेनाका संक्रम क्षेत्र का का प्रसान क्षेत्र कामो समय कासकीने सुपने कहा का कि शुक्ते पहार्थे तीन ही व्यारको कम गये हैं।'

यह सुनवार इसने वद्या—'स्मुव ! हुव अलवाहु महार्शनारे जावार कहना कि 'आवाहा पून हुवोंकन का महार्शनारों जीवित बावार प्रान्ति को संख्या कुवोंकने का सरोवाने प्रवेश किया और प्राप्ति कावा पानी बीच हिया । इसके बाद कुवावार्ग, अध्यक्षण और कुवावर्ग भी कार है का निवाले; इन सेनों ब्यारविकोंके कोई सहुर कह पूने हैं। मेरे पास आवार कहाने बाहा—'स्मुव ! स्वेत्साव्यको बाव है कि दूस जीवित हैं । 'विर से स्वेश आवाह बुवाब स्वावका कुते हुए जोते—'स्मुव ! क्या इसके स्वाव हुवीका अधित है ?'



तम मैंने उन सोन्प्रेंसे दुर्वोकनका कुस्सनसम्बद्धार कवाना तमा दुर्वोक्पने मुझे को संदेश दिया जा मह मी नक सुकता और मह मिश्र सरोवरमें पुस्त का उसे भी दिखा दिखा।

मेरी मात सुनवार से महारची कोड़ी देखक वहाँ विकास करते रहे, किंदू साव्यक्षिको रूपमें साहे देख वहाँसे आग करें। उन्होंने मुझे भी कृत्यकार्यका रक्षार विकास दिखा। किंद सब सोग सरकारिय जा नवे। सूर्यका निवास का, क्षणानि व्यवेदार कारांचे हुए थे; आयोः दुर्गका व्यव पुत्रका थे तथ एक साथ से पहें। उदस्या, विश्वोधी व्यापे निमुख हुए कृद पुरानीने सम्बद्धानीको साथ विद्यार नगरको और अस्थान करनेका विद्यार किया। वेद्यारी समिश्ची व्योगोधे मरणका सम्बद्धार सुनका कुरतिके अन्तर्थ विस्तर करने समी। थे हाम! हाम। कस्मी हुई हामोरी मिर और कारी पीटने समी। उसका क्षत्रमानकुर बारों और कैस मना।

शक्कारी मामुक्त हो जो, उसका गता था आधा; वै सन्तिकोचे साथ रेका मारकी और प्रतिका हुए सावते



व्या करनेके तिले क्रकृत्यर तिरवाई भी से । पक्षा करनेवाले विश्वादी प्रकार केंद्रकर क्रवसी-अपनी विश्वादिये हाथ लें बनावादी ओर का को से । राजव्यक्रमणे स्वत्रियर विश्व स्वतियोखी हुई भी नहीं देश पत्ती से । अने ही बनारको जाते समझ सम्बारण स्वेत्र भी देश को से । अने समझ मारहे और सेंद्र मरानेवालेक्स मीमसेनको हरते नगरवादी और साम हो से ।

तत मगदको समय मुक्तु प्रोक्सो मूर्जित है। मन-ही-मन सोको रूप-'अर्थकर मरस्त्रम करनेवाले कन्क्रजो कास अर्थाहिको सेनाके भागी एक हुनोबनको कराता कर दिका, उसके सब माहबोको मार झाला और मीका इसे होगा-जैसे कीरव कीर की मीतके बाट उसर सबे। मान्यवस्य केवार में बार मना है। कुर्वेचनके सबी स्थितिको साथ रोकर कारको और करे का यो है। अब अध्या बड़ी होगा कि मैं की जुकियुर सका मॉनसेन्सी पुत्रकर कर्ता राज नगरने कान करों।' का सोकार करने जुकियुर और मॉनसेन्से अपन्य स्थोताय सबस विका। राजा मुनियूर



में देवालु हैं, युक्तलुकी नात सुनका के बाहत अलक हुए और को कसीके लगावत उन्होंने आनेकी अदब है हैं।

तम मुमुन्ते अपने रथने वैश्वार केवेको कहे रेडके साम वृद्धा और राजधानियोको भी राज्य केवार उन्तरने क्रोक विश्वा । उस समय सुर्वात हो रहा का । उन्तरने प्रकृति ही स्थान मान पर साथा, आंकोसे आंकुशीको काम कर करी । इसी अवस्थाने को विश्वानी किए गये, को देखते ही विद्वानीके नेतेले की अवुश्वाक काम हो मजा : वे निर्वात मानते साथने करते हुए पुनुसूसे केवे—चेवा | इस कुश्वेतका संहार हो जानेपर भी तुप अभी वीवित हो—बह कई स्त्रीमाध्यानी वात है ? विश्व ग्राम्य पुनिवितको उन्तरने प्रकृत करनेने पहले ही तुम कहाँ केसे जा गये । इसका कारक विद्यास्त्रकेन करानेने ही तुम कहाँ केसे जा गये । इसका कारक

दुष्तुन्तुने कह—समा । अपने बाठि, बाई और पूछके साथ कर माना सकृति गारे गये, आ श्वयत एका पूर्वोकन रक्षणोंने रहित हो नानके कारण अपने गरे हुए खेड़ोको बही कोड़ करोड गरे पूर्व विकासी और पाप गर्थ। उसके सामी ही कम्पनिक तम स्वेप उसका भागने समे। जिर विक्वीचे स्वाद्ध भी एका और उसके प्याप्नेकी एनिकेको क्यारियर विकासर पाप कोर। क्या में भी स्वार मुखिहिर और समाज्य सीक्षणको शुक्रकर भागते हुए सोगोकी स्वादे रिके इतिकामुख्यक का नका।

पुरुक्ति कर कुरकर निवृत्ते सेवा, 'इसने कहे काल किया है, जो ऐसे अकस्तरत स्वीता था।' शता में स्कृत



मस्ता हुए और अस्तर्ध आंसर काले हुए बोले—बेटा | का ठीक है हुआ है। अस्तु होनेके कारण दूसने अपने कुरण्यांकी रहणारे है। जा संदारकारी संस्थाने अस्त दुन्हें राजुनार स्वेट देशकार कृते कहा आस्त्र दिस्स है। अपने असे विकास पुनी रास्ट्रीके स्वारों हो। विपत्तियें कुरबार कुछ का कर्ते हुए राज्य कुराह्मकों देशे हेनेके रिस्से केस्सर हुन्हीं क्षेतिल हो। अस्त्र नहीं कुमार विशवन करो, कुस स्वोरे ही युनिहिस्के कार करे कुमा।

व्यक्त विद्वारणी अस्ति व्यक्ति हुए करे। उन्होंने वृद्दरमुको राजनावनमें मेनका सार्व भी प्रतेश किया। जन समय वर्षा नगर और प्राचके रहेग एकतित होकर वर्ष दुन्तमे ह्वाच्यार कर हो थे। व्यावस्ति आहा अस्तरशा और सीहीन दिसायी देश का। एकपहरवही व्या अस्तरशा देश विद्वारणीयों सहा कहा हुआ। वे प्रान्दी-प्रा

विकास के और-और अवकास रेके क्यू व्यक्ति सीटकर अपनेत हो। नगरमें बर्क गये । बुबुत्सूने 🖏 एवं अपने 🛍 वसमें सुम्बद

## व्यायोंसे दुर्वोधनका पता पाकर युधिष्ठिरका सेनासहित सरोवरधर जाना और कृपाचार्य आदिका दूर हट जाना

इमारी सारी सेनाका संदार कर करत, उस सका क्षेत्रे हुए ! महत्त्वी कृतवर्गा, कृतवार्ग तथा अध्ययकारे क्या विका ? और मूर्ज क्योंबरने चौन-सा बान विका ?

स्क्रापने सह—न्यापन । यस राजरानियाँ नगरपी और चार ही और रिरम्पिक दूसरे होग भी काववन कर करें, उस क्षणं सारी क्रमणी सूनी देखकर उन जीनो सहारविकोच्छे सह के में हमा । सम का स्थानक पर न तना; इस्तीओं के भी सरोजरकी ओर ही चल हिंचे।

कार, बर्गान्य श्रीवित सन्त्रे माहबोच्छे स्वत रेकर क्रोकका एवं करनेत रेले इस्ट-कर विकर सने, किंतु बहुत ईवनेपर भी वे उत्तरक पता र पा सके। इंबर, क्लो बाहर बहुत बाह को थे, इस्तरिके प्रत्यक्त प्रत्यक अपनी करवानि सामार विनिद्धारकोता विकास काने लगे।

सहरकार कृपाकार्य, अकुमान्य और कृपाकार्य का सरोजरबर भने । व्यक्ति हुवोंकन स्त्री रहा व्यक्त स्त्री प्रश्नेकार से असी बोले—'रावर ! क्ये और क्रमनेनोको साथ सेवार मुनिविक्तो कुद करे का हो किनदी होकर कुलीका राज धोरते या रागमें प्राप्त देखर कर्ण प्राप्त करते । सम्बद्धानिकी औ सारी रोगाका तुमने संदार कर रिक्त है, जो वैनिक क्या वर्ष है, में भी बहुत सरकर हो चुके हैं। अब ने तुम्हात केन शही स्क रूकने । इस सर्वमा क्यारी रखा करेंने : इस्तिने सन पुत्रके रिन्ने रैप्पर हो नाओ ।

दुवेंकर बेला—वहीं क्रमा बदा नानंद्रात हुमा है, थानि आक्लेगोंको क्वकर अने देश पूछे नहीं प्रस्ताता हे ही है। अवस्य ही हमस्येग क्युओस विका क्षाचेंगे; किंदू का रूपी हो समाता है, जब कुछ सम्बद्धक विशास करके अपनी कवाका दूर कर है। सामाधेन औ महत शम्य गये हैं और मैं पी निर्देश बायर हो मुख्य है। उसर पान्धनंभा बरू और बस्प्रह बड़ा इत्त है। इसलिये इस

प्रकार के प्राप्त के प्रकार के प्रकार के प्रकार के प्रकार के प्रकार के प्रकार की प्रकार की है। अब प्रकार एक व्या निवास करके कर आयरोगोको सक होन्दर स्कृतीने यह करेना।

> ज्ञान कार्य है—क्टोंकरके देशा कार्यभर अवस्थानाने क्या—'क्यम् 🕆 हुन्तरा सम्मान हो । स्टो, हुन्हमेन अवस्थ अपने प्रमुखीको क्रीवेने। वै अपने प्रमुखना, हान, सार,



क्या का आहे, पुरस्कारोंकी सीगन साकर बहुता हैं, आब वै लोपकोको सम्बद्ध पार कार्तुगा । यदि इसी राज्ये मैं अपने क्यातीका संकार न कर कही हो सरहालोको पिरानेकोचा बाब्द कर पूर्व न निर्हे ।'

इस अकर जब के बातें कर रहे थे, उसी समय पासके बेह्नसे बके हर पुत्र कार्य पानी पीनेके रिप्ते जनस्मात् वहाँ आ पहिले। उनकी चीमसेनके प्रति कही पति की।

मार्ग करे हेका मानोंने का लेगोका एकला-मार्गतक है सुर देखा। अने दुर्गेशनको कर्क भी सुकर्य है। इस देख-सुनका क्योंने बान विश्व कि 'राज कुर्वेकन करनें दिखाई, करका युद्ध करनेका पन नहीं है, से भी वे महारखें करने कास्त से हैं।'

भव ने सारसमें सरका करने रूपे—'का तो सक जाहिर हो गया कि दुर्गोंकन चोकरेके क्यांने सा बैठा है।



आतः योगसेनसे सराबार बहुता काहिये कि 'हुवेंनस बनीये सो का है।' इससे उन्हें यही सुनी होनी और हुने बहुत-सा का शिक्ष कायक। इस सूचे बोलको क्षेत्रस अन्त हेक कारोसे क्या प्राथक है?'

यह निक्षण करके थे को प्रस्ता हुए, उन्ने बनका सोध को था। प्रांतका केड़ा स्थित्य अपन्य और इस्तानिकी ओर कर दिये। उत्तर, मान्यानि भी पूर्वेकन्त्रम यहा स्थानके सिथे चारों और जासूस स्वाने किये थे: किंद् स्वाने स्वैद्यार की बन्धण कि 'का कहीं कान करा, उत्तका कुछ पता नहीं बस्ता ।' जासूसोकी करा सुनका उन्तकों बड़ी किन्ता हों।

अव्या पता न रूपनेसे समझ पाण्या स्थान होका

वैदे जे, इतनेने ही जाने वहाँ का पहुँचे। उन्होंने वीक्सेनके पास कावर को कुछ वहाँ देशत-सुना था, सब यह सुकात। कर पीक्सेनचे उन्हें ब्यूत-सा थर देवर विद्या विकास और वर्गरावसे कावन वाहा—'ब्यायता । विकास विकास कोर वर्गरावसे पहुँ है, जह दुवीकावर कार व्यायोद्धार



तम प्रवाद को स्वासी कर्नी व्यवका धेक्तेयें से रहा है।' का तिय सकावार सुरका कहकोसील यूपिहिर कृत जनक पूर् और भगवान् सीकृत्वाको जागे करके हांच लोगाकी और कार तिये। उसके साथ सोमक अधिय भी थे। कर्त समय उनके रवोंकी वरवरहार वही सुरक्त सुनको केरी की। उस समय अर्जुन, बीस, नकुल, स्वदेव, पृत्रको केरी की। उस समय अर्जुन, बीस, नकुल, स्वदेव, पृत्रकार, तिरस्तकों, अंतर्वका, पुकारण्यु, स्वर्वकि, क्रेयकिंट पुत्र तंत्रकों पैदलोके साथ पुरिवहिर्ग्य पीछे-पीछे नवे। तदनन्तर, महाराज यूपिहिर सकके साथ उस अरमया वर्षकार क्रियान बीचक सरोवरके पास. वहाँ दुर्गेकन क्रिया वर्ग, जा पहिंदे।

कृषिहिनको केनाने सात प्रस्तान किया था, उसी समय जनका महान् कोरकारत सुनकर कृतकर्मा, कृपाबार्य और अक्रकारको कुमेंकासे कहा—'गकन् । विजयोगसास्त्रो मुलेपिक पान्यम जनगण आकार्य प्रश्नात हुन्य है जा है। यदि जाय जाएन है से इस्तेय हुन्य केनो हिनो हुट वार्थ ।' जनके वार सुनकर कुनैकाने कहा—'अबार, अस्त्र मोग कार्य । जनके देशर कहान्य का सरोवको जीवर कार्य गया और गायती कार्या केनार होताना है कार्य हुन्य कर गया है कार्य कहा हुन्य हुन्य कर गया है कार्य कहा हुन्य हुन्य कर गया हुन्य कर गया हुन्य हुन्य हुन्य कर गया हुन्य कर गया हुन्य ह



# युधिष्ठिर और दुर्योधनका संवाद, सुधिष्ठिरके कन्ननेसे दुर्योधनका किसी एक पाण्डवसे गदायुक्के किये तैयार होना

स्थानं करते हैं---न्याराज ! जर सर्वेक्ट्सर महैन्यर | मृतिदिरने नगवान् जीकृत्यसे कहा--'नगवा | केंद्रेस्कं सो नहीं कुर्वेक्यने करको सीतर केंद्रों मध्यक्षा ज्योग विश्वा है ? यह नार्वेक्य केंद्रावर क्याँ सी कहा है। यह सामाने कहा नियुक्त है। विद्यु की सर्वाद्रावर हमें क्या इससी नहामान करने जाने, से भी अस्त्र प्रस्ता हमें क्या हसा ही देखेला।'

अंकुलने कहा—माता | इस अवार्वकी सामाध्ये कार मानामे हैं नह कर हारियो; जार की जाने बावाया प्रयोग करके इसका वस अधिको । स्वरू | कहेन ही स्वरूप अधिक करवान् हैं; और कुछ भूषि। कहेन और अमरोरों ही बहे-कहे देख, कुनव, स्कूल वक्त स्वक्त करे कहे हैं: इसरियो आप की कहेगा बहितको ।

करवान्ते हेसा कहनेपर पृथितिले ईस्ते-हैस्ते कर्नारे किने हुए जापके पुत्रते कहा—'सुवोकर ! हुपने कार्क फीतर किसरित्ते कह अनुद्वान जास्त्व किया है? हास्त्व धनियों तथा अन्ते कुरकार संहार करावार अन्त अपनी कार् कार्यनेते रित्ते पोरारेंगे का पुत्रे हो? हुपाण का पहलेका दर्ग और अस्मिनान कहाँ काल नक्ष थो इस्ते परे कर्न जनकर क्रिके के ? सम्बन्धी सके स्वेग पूर्णों कुए जाता करते हैं,
किंद्र जन पून करीने कृते के से में हुन्दार जह सीने जाता
है सम्बन्धा है। को जीएक-बंधनों कम रेनेने करका सबसे
कर्मी कर्मक किया करना का, नहीं कुतारे उरका कारी
केने किया केंद्र है ? जानी पुत्रका अना से हुआ नहीं, दिएर
पूर्णे जीवित जानेकी इक्त केने हैं गार्थ ? इस स्वाहीं पुत्र,
नहीं, सम्बन्धी, नित्र, नाम स्था कम्मक-मारोको करवाकर
अब हुन क्षेत्रनेने कर्मे से यो है ? कहीं नाम हुन्दारा
केंका, नाई नाम हुन्दारा जानिकान और कहीं गांधी सुन्दारी
करवानि-सी मार्थन ? हुन सी अन्यविद्यानेत कहें हाता थै,
नाई नाम का स्था अन्य ? जान सारावाने केने नींद्र अन्य की है ? क्षारा ! उसने जीव क्षाराम सहके पुत्रका राज्य कर्म अन्य करो ! इसनोगोंको कान्द्र सहके दिन्दे राजपुत्रिये सो कान्द्रों !'

वर्गराज्ये हैसा बालेग आच्ये पुत्रने पानीमेरे ही जनम विज—'बाएन | किसी भी प्रामीको सब होता जन्मनंकी कर नहीं है, किसू में प्रामीके प्रवर्श महाँ नहीं अन्य हैं। मेरे पास न रख है, न कावा। सर्वारहका और सहरति भी पारे का चुके हैं। सेवा नह से गर्मा और मैं



अंकेल या गया; इस कार्य मुझे कुछ वेकार विकार सरवेकी कुछ हूई। कार्य ! मैं अवोकी पहले सेंग्ये क और किसी कार्य कार्यके देखे अवका कार्य किस्स होनेके सारत पार्थि शूर्व पूर्व हैं, दिन्के कह आनेके कारत देख किया है। तुम भी कुछ देखक सुरता हो, कुछवे अनुवानी भी विशास का मैं; किर मैं सामार हुए कह संगोधि कुछ सोस मुंगा।

कृषिक्षानं कहा—सूच्येकर ! इन सब त्येन सूच्छा कृषे हैं और बहुत देशो हुन्हें कोच रहे हैं, इस्तरिये हुन अभी उद्यक्त पुद्ध करों । संस्थाने समझा पान्क्षाओं अल्बार समृद्धिकारी पानक्या कार्यान करों अन्यका इनले इन्यमें परकर पीनोक्षो विश्लोन्येन्य पुरक्तनेकोनें करों कार्यो :

दुर्वोक्त कोरल—राजन् । जिनके लिये में राज्य काहत बा, वे पेरे सभी भाई करे का कुछ है। पृथ्वीके सम्बद्ध कुछन-रवी और इस्तिन्युंग्वोक्त विन्तव को क्या है; अब ब्रह्म धूमि विकास कीके समान सीक्षित को कुछी है; अब: १एके कपयोगके रिन्ने मेरे करने तनिक की करावा नहीं है। हो अब की पायकों तथा काहत्वेक्त स्टब्स मेन करके हुने बीतनेकी साहर रकता है। जिन्नु कम क्रेम और कर्म स्वयन्त हो गये, विसामा भीकर मार काले को, वो अब देरी दृष्टियें इस पुन्नकी कोई आवस्त्रकता नहीं रही। सामारे का सारी पृथ्वी हुन्हारी ही रहे, में इसे नहीं काहता। मेरे प्रकृत सची बीर वह है को; अर: अब राजने मेरी रांच नहीं रहे। मैं से मुख्याला बानम करने आवाने धनमें ही समान स्ट्रेंग । मेरे आपने को कानेवाले जब कोई भी समुख परिवार की है, हो में सम्बंधी मेरिया रहना नहीं काइता। अब हुए काने और निश्चा राज्य मात नक, केंद्रा नह है को तक किलो सा शीच हो कुछे है, उस पृज्यीका अनन्य-पूर्वक अन्योग करे; क्लेकि तुक्तरी आयोजिया कीनी जा कुछी है।

कृष्णिसे बहा—सत् । हम जानों बैठे-बैठे प्रसार न करें। में इस समूर्ण कुमोको सुन्हरे कुमके करमें नहीं केन पहला। में से हुई चुक्को मीतका है हाला क्रानेक करोगा। अस से कुन कर्ण ही पृथ्विक एक नहीं के, फिर इस्का कर कैसे करना जाते के? का इन्स्तेपॉने अपने कुरूने वान्ति कायद रक्तनेके रिव्ये सर्वतः क्षापन को थी, जारे समय दूपने हमें १४वे वर्षों नहीं है के । एक कर करकार औक्रमाओं कोरा कराव देवर इस क्रमा राज्य हेना काहते हो ? यह कैसी पानरावासी बात है। अब र से हुए फ्ली विस्तीको ने सकते हो और न क्रीर के अपने हैं, रिज़ केंग्सी इनक वर्ग हाँ ? पहले से र्खांको चेक बसल की करीन नहीं देव बाहते से और अरक स्वयं पृथ्वी देख्यों रिका हो गये । क्या का है ? कद है थ, तुनने इन्तर्वेगीको करननेकी कोशिए की बी, बीवको निव फिल्मकर करीने कुराक और विश्वतर ग्रांगोडे क्षेत्रकात । इसका ही नहीं, तुसने कारा राज्य हरिकार हुने क्या क्याक्तालक क्रिकार क्याचा । पुष्परे ही आदेशसे बैफ्टिके केना और एक सीचे गये और सार्व तुमने को करियाँ सुनार्थे । क्याँ । इन सम्ब कारवारेने तुन्तारा जीवन न्य-म हे पुरूष है। जब को और युद्ध करे, इसीने पुष्पर्व पार्च्या है।

कृत्यहर्ने कृतः—स्कृतः । येव पुत्र कुर्वेश्वर शाक्तवाः सोधी चा, चन वृत्विद्वरेने उसे इस स्टब्स् स्टब्स्स से अन्तर्भ कर कृतः हुई। स्वतः होनेके कारण वह स्वक्ते अन्तर्भा चार चा, इसलिये कृति पर्यवद संस्को क्षेत्री वृत्ति सुनवी चूने ची। वित्यू अर दिन उसको होट स्वयूनी चूने और वह भी अपने सह पान्युनोको। स्वयून्य | ब्याउने, उनको वे क्यूनी वाते सुनवद दुर्वोद्यन्ते क्या व्यावते दिन्न ?

स्कार कार्य है—स्कारत्य । यानीके चीतर बैटे हुए कुनेंकरको च्याकोसक्षित कुनिहित्ते का इस वस्त प्रस्कार से उनकी कहती करें सुनकर का स्वोधसे होनो हात हिस्सी

सना और पर-हो-पन बुद्धका निक्षण करके राज परिवेशसे बोरत—'तुन अभी पायक अपने विर्तनो विशेषो साथ लेकर आने हे, तुमारे राम और सहस भी मीजून है। तुमारे कहा महा-से अवा-कवा होने और मैं निहत्स है, हुन स्ववर बैटोने और मैं मैदल के नहीं नहीं, इन्हारी संस्था बात है और में वर्षा अनेत्व—ऐसी रहाये में हुन्हरे सब केसे बढ़ कर समाता है ? बुविद्वित ! तुम अपने पक्षके एक-एक स्टेन्डे कार पुरे शरी-वारीले स्थानते। एकको पहुलेके पान पुरुषे रिले सम्बद्ध करून सीमा नहीं है। एकप् ! मैं हुनहें का कीमने कर की कई हरता। औक्रम, महीन हक माञ्चलकेका भी सुन्ने कम नहीं है। क्यूनर, उन्होंन कक समानिको भी मै क्या गढ़ी करण, इनके अवेतरेक भी सुनारे कर के रेनिक है, अरबी भी में कुछ नहीं सम्बद्धात । में अनेता है समयो पराश कर देख । जान व्यक्तीतहैंब मुखारा यस करके में बाह्येक, होता, भीना, कर्ता, क्यांक, भग्नत, साम, मुस्लिमा और प्रमुखिके तथा अपने पूर्वे. नियो, विनेतियों एवं वायु-वायायोधे प्राप्तों स्थान है पार्थिका ।"

मह स्वाचन हुनेयन पूर है करा। अन सुनिक्षण महा- 'हुनेयन। यह स्वच्छा सुनी श्रुं कि हुए सामी सुनिक्षण है निवार रहती है। यदि तुम्हरी हुन्ती हुन्ती हिन्ता है करें। यदि तुम्हरी हुन्ती है। यदि तुम्हरी हुन्ती है। यदि तुम्हरी हुन्ती श्रेष्ठ । यदि स्वाची स्

दुवीयनो करा—की एकते ही सक्त है तो वे युद्धाः रिमे एक्कारता है। किसी भी क्रूबिस्को केर सक्त्रम करनेके सिमे हे हो। दुवारे क्रकान्त्रकर में अनुकोरे एक्कान गराको है कांद्र करात है। दुवारेसे कोई थी एक भीर, को मुझे जीतनेकी क्रिक रकता हो, यह लेकर कैला है मा कव और मेरे साथ युद्ध करे। पृथितित ! इस कहारे में दुवारों, तुवारे ध्वन्नोंको, क्ष्मको और स्वानंको अध्य दुवारे अन्य सैन्डिको भी परावा कर सक्त्रमा है। इस तो सुते हन्यों भी नहीं स्वयान, किर कुस्से क्षा पन करोगा ? पुण्डित केले—कथारीनका ! को से सहै, एक-एकके साथ ही पहायुद्ध करके अपने पुल्लाका वरिका हो। सामने, मेरे ही साथ रखी। यह इस भी तुन्हारी पहारका करें के भी अका तुन कीका नहीं क सबसे।

म्बारमा । मुनिशित्ते हर कारको दुर्गाना मुद्दी हर समा । यह केमेर स्टेनी मुद्दा समाद मेंने हुए साम्ब्री मीरम हुना माह नियास समाद । यह समाद स्था प्रतिकृति को समामादी मारको समाद ही समझा । को पानीसे साह अस्य देश मारको समा प्रावास सहा प्रसार हुए और एक-दुर्गाने समाद साही मीरने स्ले ।

वृत्येक्टरे हुने अक्य काइल संस्तृत, प्रवेशने अस्त्री व्यक्तियाँ कह कर्या। मोहोने होन क्या अस यह उसे और यह कर्य क्रमणे क्या कर दर्शना, इस क्यार व्यक्तियालीय क्रमणेयी और देखता हुआ बोला--'क्याची ! इस क्याराव्या क्या हुनी बोलार क्षेत्रा। हुन के स्वयंत्र कर क्यार हुन प्रवासनेत्र काम प्रीत है। क्यानेक्टरे क्यूंजेने।'

में महामार मान का हामारे कहा है भी हात हुआ, उस समय माना को सोमी को हुए सारामांक समय मानो समें। उसने मेंब्रो समय गरमपार अपनी गाह मेंब्रा हुए सम्पूर्ण पानमांको हुआ कि सम्बद्धार समय जीन महा समय— 'मुनिद्दिर ! सुनानेग एक-एक समये पूजा हमा महानेने समया मानावी बात शहे है। अपर सम सोम मेंद साथ समया है बाते हो भी में मेंदिसर हैं, कांतु पह साथ अपना है का अमुक्ति ? यह को तुनों पासून ही होगा !"

वृत्तिक केरे—कृतिकर । जिल्ह समय अपूर-से महर्गिकों- जिल्हार अधिते अधिक कृत महर्ग सा, जर समय हुएँ यह न्याव-अध्यासकी मार्ग कर्षों नहीं हुती ? यह कृतार वर्ण यह कहता है कि स्कूत-से केन्न स्कूत-से महर्गिकों अधिक कृता है कि स्कूत-से केन्न स्कूत-से महर्गिकों अधिक कृता सर्वे क्षेत्र मार्ग किसर सहरे सम्बद्धे यह केन क्षेत्र स्वी क्षेत्र मार्ग किसर सहरे सम्बद्धे यह केन के हम बातोंको । स्वयं पहले और विका याँच सो स्था और यो मान्यस्थ साधान हुन्यूने यह न हो, या मुक्तरे से से । इसके मिया, मैसा कि पहले यह मुक्त है, एवं एक बस्त्रम और सेमा है—तुम यांचे सम्बद्धेने विकास स्था मुद्ध सरना साथे, सके, यह समयो यह सम्बंधे से स्था दुन्यार से होना और यह सुद्ध को यो से सुन्यार सिन्ने साथ से है ही। इसके अतिरिक्त भी बक्ताओं, इर हुमार कोन-सा लेकन सामने का कार्य।" क्रिकार्य करें ? बीकार्या निवा क्रेक्टर के बावे की संघते हैं।

रक्षा करते हैं—स्वयंतर, कृतीकारे सोनेक्ट करण और धुनकर। रोप—ने के पीने गाँव तो और उने करने भी कर रिवा । दिन क्षांचे पदा लेकर केल-'एकर । क्षांने महाबोगेरे कोई भी एक अवका मुक्ती महापुद करे। सहरेव, भीम, नकुल, असून असमा तुल—कोई भी करें य हो, मैं सरके साथ पूजे कर्मण और को जीव भी कुता। येव देख विकास है कि नवसूत्रों की समान कोई है है जरी, गरावें मैं दूस प्रम स्वेत्रोंको का स्थान है। की मानाः पुर हे हे हारोशे होई भी मेर सम्बन महीं कर राज्या । मुझे सार्थ अपने सिन्ने रेली नर्गन्ती मार नहीं बढ़नी वाहिने, संबर्धर व्यान वहा है। अनव व्यानेकी क्या बात 🖢 में तुन्हारे तानने ही तन कुछ तान करने दिशा हैता। को मेरे सका पुद्ध करना नाइना हो, ना न्या



### श्रीकृष्णका पुचिद्विरको उलाइना, भीमकी प्रशंसा तथा भीम और दुर्योधनमें बाग्युद्ध, फिर बलसमजीका आगमन और उनका खागत

क्रांबार गर्नेत करने रागा, उस राग्य मन्त्राम् सीकृत्य कुरिश होकर सुविद्यारने योले---राजर् । लाग्ने यह कैसी बुरस्कार्यने बार का क्रांत कि 'तुन इसमेरे एकको है मारकार कौरवोंके एका हो करते (' अगर कृतिका अर्जुन, महरू, सहोत सकता मानको ही बुद्धके दिनो पुर है, का क्या क्षेपा ? मैं जायरपेगोंने इतनी परित नहीं देशता कि महाबुद्धमें कुर्वेकामा पुकासाय कर उन्हें। इस्ते धीयरेनका वस करनेके हिन्दे उनकी सोकेकी चुनिक साथ हेरह वर्गीतक गरावहरूक अध्यात किया है। हर्गीयनका सामना करनेकारत इस समय भीवनेतने दिन्य दूसर कोई नहीं है, आपने फिर क्यांचीके राज्यन कुछा सेराना कुर कर दिया ! आपका यह कुआ समुशिके कुलरे कहीं अधिक धर्मका है। याना कि पीमलेन कामान् और समर्थ है, परंतु राजा कृतिकाने अध्यास असिक किया है। एक ओर मल्यान हो और दूसरी और पुत्रका अध्यक्त से उसी वापास कानेवाला ही बड़ा क्षेत्र करा है। अब: महाराज ! अवयो अस्ते बहुतो समान मार्गका त्व दिवा



करिताई बद्ध है। कार कीन देख केक, से तब प्रमुखेकों वीत हेनेके शह तब इस है कासी का जब और का भी संस्कृतों पड़ा है से अपने हश्यों आका हुआ एक चौकर समझत हर जान, एकके स्वत बुद्ध करनेकी हमें समझत रहाून पसंद करें। वहि इस स्वापने पुद्ध करें से भीनसेककी किन्नमें भी संदेश हैं। कोचिंड हुनोंकनमा आकास इससे अधिक है। से भी आपने कह का दिना कि 'इसमेंने एकको' भी सहर हमानेकर हुन एका है जानोंने।'

स्व पुनवार चीवसेनने सद्धा— 'कवृत्यूर | जान किया न स्वीतिके | साम पुनुने कृतिननको में अनवन बार सर्वृत्य | इसमें प्रतिक भी संबंध नहीं है | जुने के निक्षण ही वर्णराजकी क्रिया दिशानी होते है | मेरी नहा दुर्जेकनको नहने केन्द्रमें सारी है | मैं इस गहासे दुर्जेकनके साम विद्युनेका ही समा रक्ता है | आव स्था सोग तकाता देशिके, पुर्जेकनकी से विसार ही स्था है, मैं देखकानोसहित सीगे स्लेकोके साम पुन्न बार सकात है |

उद्याप करते हैं—सीयरोजने अब देखें करा काहे के सरकार कई जाता हुए और उसकी प्रकंक करते हुए बीरि—'पहासकों । इसने सीमक की सीद की कि करत सुनिश्चित्ते सुन्दारे ही परोसे अपने सब्दानों कर कुछ हुन्दारे हैं करते सार सबसे साह की है। क्वर्यकृत कर कुछ हुन्दारे हैं करते सार कर आने का कुछ हैं। करियु, सरक, साम, कन्दार और कुछोकते राज्यसोंका भी कुछने बंदार किया है। इसी प्रकार साथ दुर्वोक्तकों भी वास्तार हुन समुक्ताकि न्य सारी पूर्वी सर्वायकों क्वारों-कर है। हुन्ते किहनेतर करते हुन्दीकर अवस्था करा कावरता। देखे, हुन इन्त्वती केनी कीन सोदकर करती प्रतिक्रका करता करता।

त्राह्मणार, सरवानिको परिवृत्ताना गोंभावी प्रश्नीत की। परिवृत्ती तथा प्रश्नालको की उनके जी सम्बन्धका पांच प्रतिति किया। इसके कह जीको कृतिहिको सङ्गा—'सैवा! में श्ली पुर्वोकाके स्वय स्थान प्रवृत्ता है, सङ्ग पांची पुत्रो कंग्राचि नहीं पर्यक्त कर सम्बन्धः। मेरे इसको इसके प्रश्नी सहित दिनोसे कोच कथा है यह है, उसे सम्बन्ध इसके अगर कोईगा और न्यासे इसका विभाग करके अवके इसका कोश निकास हैया, अग नाम समय होन्ये। अग स्थानिकी सरवाहरों किये हुए अपने अञ्चल कर्मको कर करेगे।'

यो सहकर चीमने गाए उठानी और इन्हों नैसे

करिनाई बदा है। पास कीन देख क्रेप, जो वस प्रमुश्तेको | कृतसूरको पुरुषक वा, क्रेसे ही हुवीकरको पुरुषे सैन्वे



ह्माबाहर । क्वींबर अन्ती सरकार न स्व सका, व्ह हुरंत ही चीपका सामन कारकेंद्र जैल्ले कारिका हो गया । उस लाव क्वोंक्रके भवने न कार्यक थी न पन, न समित भी व प्राच्या: बह्न सिक्केट सम्बाग निर्धान प्राप्ता था। उसे देखाबार क्रीकरे कह-'दुरमञ् ! हुने तक राजा कृतसहरे इसके के वर्ष के का कार कार में के और पारणायतने कें हम्बरे कर हमा। अकि किया गया, वर समये कर की के। की राजने हुने स्वानात प्रीयतिको हैन पर्देशाया, प्राथमिको सरम्य रोका राजा स्थितिराको कपटन्त्रंक जुल्ले क्रमा क्या निरम्पाम पान्यकोपर विजये-विजने अत्याचार हुने किये, का प्रकार महार कल जान अवनी औरते देख है । हेरे 🏚 प्रारम इक्लोनोके विद्यापत जीवाडी आज पर-प्राप्त-क को हुए है। प्रेक्सकर्व, कर्ज, सक्य एक वैक्स आहि का प्राथमि — में साथ बारे गये हैं। वेरे बाई, पुत्र, में बा तथ विकारों की और कृतिय पीठके चाट कार चुंचे; अल हुस वेसका का बारनेकारा निर्म ए है एक बाकी रह गया है। अपन इस महाने ताने भी भार करहेगा—इसमें तमिक भी संदेश गरी है र कार हेरा सम्ब पूर्ण कर हैगा और राजके लिये बड़ी हाँ स्वास्तव भी निक्र हैया।"

्रांक चेता — पुन्नोदर ! सहा वाते वनानेसे वना होता, मेरे तक सद को स्त्री, जान पुत्रका तेरा स्तरा हीसस्त पुरा कर हैंगा। धारी ! देखता नहीं; मैं बिनासमके सिसाके समान भारी गड़ लेकर मुख्के लिये सङ्ग हुआ है मेरे क्ष्मचे हैं है—इसीडियो हकर आया है। गदा होनेपर कीन क्षेत्र मुझे जीतनेका समझ कर सकता है। भागमतः पुत्र हो तो हम् भी पुत्रे परास्त नहीं कर सकते । भुजीनका ! वर्ष कर्तना न कर, तुस्रमें क्रिक्त कल हे को आक बुद्धपे दिला।

स्त्रच कहते हैं—सहाराज ! घीपसेन और दुर्वोकन्ये महाभवेकर संज्ञाम क्रिक्नेशीवालय वर कि अपने होनो क्रिक्योंके युद्धका समाचार पाकर करनामगी वहीं आ पहुँचे । रुदें देखका लोकुम्य तथा प्रथमिको कही प्रस्तकता हुई।



क्ट्रोंने निकट जाकर अन्तर करण-साई किया और विकिट्स उनकी पूरा की। इसके बाद बलरामधी बीकुका, पाक्की तमा गढ़कारी दुर्वोचनको देलकर बहुने लगे—'मानव | मुझे वकामें निकले आब क्यानीस दिन हो गदे। पूज नक्षत्रमें चला वा और अवन नक्षत्रमें वादस आवा हूँ। इस समय मैं अपने खेनों हिस्सोका गडायुद्ध देखना बाह्या

करनकर, राज्य बुविद्यितने कलगणवंत्रको गलेसे लगाकर उनकी कुशल पूडी, श्रीकृष्ण और अर्जुन की प्रधान करके कारों करे किने। क्युल-स्कृतेन तथा बैपदीके दुर्जीने भी कर्ने जन्मम किया । किर भीमसेन और दुर्वोचनने गढ़ा ठेवी करके करके प्रति सम्बद्ध कंकट किया हुन प्रकार सवासे सम्बद्धील हेकर करनमधीने सुहुब-राष्ट्रणेको गरेहो हागया तथा तम राजाओंसे कुलल-समाचार पूछा।

इसके बाद अवृत्ते श्रीकृष्ण और सारावितको प्रार्थीसे ल्क्कर उनके पराच्य सूचे किर उर क्षेत्रोंने भी बक्के प्रेमसे उनका पुनान किया । तम कारंशन मुसिद्धिरने अल्लेकबीसे सद्धा—'श्रेषा जनश्य । अस तुन इन होती प्रात्मीका यहन् युद्ध ऐसी (' उनके हेला क्यूनेवर करवामती जागविकोसे सम्बन्धित हुवे प्रसन्त



हेकर रामओंके सम्बंध का बैठे । फिर हो प्रीम और हुवॉबनमें वैस्का अन्त करनेवास्य रोपासुकारी संग्राप होने लगा।

#### बलरामजीको तीर्श्वयात्रा तथा प्रभास-क्षेत्रका प्रभाव

कारनेकारे क्या—पूर्ण ! यह स्थानका-पूज् आरख होनेने पहले ही वार्यकारी पानवार श्रीकृतकारी सम्बद्ध तेका अन्य क्यानीसरोके साथ सीर्यकारके दिन्ने कार्य एके और मारो-नारी यह यह गये कि 'मैं र को कुर्वेजनकी स्थानका सारोगा, म पानकारिकी, यह किन उस समय वहाँ उनका सुपानका केरी हुआ ? यह सम्बद्धार आप हुते विकालके साथ सन्ताले ?

मैत्रान्यक्रमधी नोले---सम्बन् । प्रित्न हिन्हें प्राच्यात प्रमुख्य बायक स्थापने कारणी जारबार रहते पूर थे, उन्हें विशेषी बात है, प्राथानीने राज आणियोचे दिख्ये तियो जनसङ् श्रीकृत्याओं द्वाराकृष्टे पाल पेक । उन्हें वेकनेवर जोत्रन वह का कि करेश-राज्यों प्राप्त करें से जरूब र है। भगवान् इतिरागपुर जाकार भूगशानुको निर्देश और अस्ते अस्ते। रिन्ने दिलकार एवं कथाओं आते कहीं । किन् उन्होंने करकानुका क्रमंत्र भूति भाग । यथ मही संबंध क्राएनेने स्वयन्त्र व क्षेत्र सके से भगवान क्यानामें है और आने और सम्बद्धिये मोले-- 'बोरव अन बालके काले है है हातीओं केर क्रमुना नहीं मानते । पान्काचे । अस्य शुक्तकेन नेरे स्थाप पूजा महाभी पुरुष रीओ निवाल पहें )' इसके बाद कर केवाता बैटबाय होने लगा तो क्यांकरीने सीक्रमको स्था-"मन्सरम् । इप कौरावेकी भी स्वाध्या करूता।" यांत श्रीकृष्णने जनका यह प्रकार नहीं सीवार वित्यः, हमसे वे कर नये और पूजा बक्राओं खामे सीर्वकाओं दिन्हें निवास प्रदे । राजेमें उन्होंने सेक्कोको आजा है कि तुनकोन अस्त बाकर तीर्थवाताये उपनेती शबी आवश्यक स्थापन सामो । माप ही जीकोतकी अधि और यह करानेवारे हक्काकेको थी जन्दरपूर्वक से अन्य । सोना, वांद्र, मी, क्या, मीडे, इस्मी, राम, परवार और ब्रीट भी साने काहिने ।

इस अवदार आहेता हेकर वे इस्तवादी अहंके विजार-विजारे उनके प्रवाहकी ओर तीर्ववाद्यके विके सक म्यो; उनके साथ अहंकन, सुद्धर, बेह स्वह्मण, १४, इस्ती, मोई, सेक्स, र्कट, ब्रह्मर और दुव्होंका सम्बद्धर कार्नके विके सम्बद्ध-वरहरूपे हेने योग्य कार्नुए नेपार करा एकी थीं र पून्तोंका मोजन करानेके रिक्से सर्वव अलका अल्बा करायां नवा था। जिस किसी देवसे मों कोई भी स्वहाण का मोजनकी हुक्स प्रकट करता था, उसको असे स्वान्यर स्ववाहर पोजन दिवा साला था। फिल-पिक तीर्वोम स्वान्यर स्ववाहर पोजन दिवा रेक्क सक्ते-पीनेके पदावंकि के राज्य रहारी थे। स्वयुक्तिके सम्बद्धकर्य व्यक्तिया कथा, परंज्य और स्वितिने तैयार शहरे थे। इस प्राचने सब स्टेंग आरम्पने प्रतने और विवास करते थे। स्वयुक्त व्यक्तियाचे गी, इन्द्रम हो हो कर्ने समारियों भी विकास व्यक्तियाचे पानी विरुक्त वाहा और पूर्वको सम्बद्ध जा दिना काल था।

वर व्यक्तिका राज्य को सुकारे में होता था। सकती कर्मि आन्य निक्ता था। सभी उन्हा ही अन्य नहीं थे। कन्मे क्रिकेट-केंक्सी क्रिक्टांक वाचार भी करता था। क्षात्र्य क्रिकेटो-केंक्सी क्रिकेट सम्बद्धि कार्य रक्षात्र पुण्य-केंक्सी सक्तिकों क्षात्र-मा वन हान किया, यह करके उन्हें विकास ही हमारे हुए हेन्काले गीएं हान की : उन सीओके बीचने केंका नक का और उन्हें सुबार क्या ओहाने गते थे। क्षित्र-निका देशकेंद्र केंद्र क्या किये करें। तरह-तरहकी क्षात्रिक, रोक्स, का, प्रोत्ते, व्यक्ति, बूंगा क्षेत्रा, व्यक्ति तक लोई और व्यक्ति कर्मन भी क्षात्रभोंकों हिन्दे गये। इस प्रकार क्षात्रकीकेंद्र क्षात्र भी क्षात्रभोंकों हिन्दे गये। इस प्रकार क्षात्रकीकेंद्र क्षात्र भी क्षात्रभोंकों हिन्दे गये। इस प्रकार

कर्मकर्ण कहा—सहस् । अस आर भुड़े सरकारिक स्थानी नीचींक पुन-प्रभाव और अपरिवाद क्या सुनाहते । अर वीचींने स्थानक प्रस्त क्या है ? और वासावी सिद्धि कैसे होती है ? एक निका समने वास्त्रसमीने कारावी थी, यह साथ भी वास्त्रमें, मुझे यह साथ सुननेके रिक्ट बड़ा वर्धसूत्रस्त हो सुन है।

वैज्ञानकार्य केले — राजन् । सरकारी उठके तीथींका विकार, करका प्रभाव कथा काकी अंचितकी परित्र करका में सुन का है, सुने । वाकानका कारकार्य प्राप्ता की ताहारों ताल व्याप्ता के साथ काको पहले प्रभावनी कावने पुरुकारा विकार कथा अवन्य कोचा हुआ तेन की प्राप्त हुआ, जिससे ने कारे कारकार्य प्रकारित करते हैं। वानुसाओ प्रभावित कानेके कारण है वह प्रभान तीथं पृज्यीवर 'प्रधान' नामसे विकार हुआ।

कर्मकाने पूक्त-मुनियर । यगवान् स्टेयको बहुन वैस्ते हो गवा ? और उन्होंने इस सीवीये विद्या शरह काम किया बच्च उसमें हुवाडी लगानेसे में रोगमुख हो पुष्ट किस प्रकार हुए ? वे सारी कार्ते आप मुहस्ते विकारके साथ बताहते ?

वैज्ञानको अह-- एकर् ! दक्कानकरिको संतानोचे

अधिकांक कन्याएँ हुई थीं, अन्येशे सामारंस कन्याओका प्राह उन्नी सम्बन्धे साथ का दिया। उस सामार्थे "स्वार्थ संत्रा थी। कन्यान्थे साथ को महानंबर कोन होता है, अन्योध महानाथे दिने से सम्बन्धि कारोसे प्राटट हुई थीं। है सम-बर्ध-स्था अनुवार पुरुष्टी थीं। किंदू उन्ने भी तेहिन्येकर सीन्यां अन्ये क्वान्य पुरुष्टी थीं। किंदू उन्ने भी तेहिन्येकर सीन्यां अन्ये क्वान्य हुआ। वाही उन्नये हुस्कानस्था हुई : हे सिए कारो ही सम्बन्धि रहते को। अन्योध्या | पूर्वकारमें कन्या रोहिन्येनहरूको प्रसानंते अधिका कारकार कुछ करो है; हस्तीन्ये पहल जानवारी दूसरी किन्योको बाहे हेन्यो हुई, हे कुस्ति प्रेम्बर अपने विशा क्वान्यांत्रिक कार कार्य करीं और हो पास रोगी और विश्वतित आहार क्रान्थे स्थानको है। हो पास रोगी और विश्वतित आहार क्रान्थे स्थानको साम

करकी करों सुनकर बहुने खेनको कुमानर अक्षा—'हुन अपनी सब कियोगें समागाका काव रखे, सबके सब एक-पर कर्मात करों। ऐसा करनेते ही हुन करने बस स्वारंगे।'

लदनसर, दक्षणे अपनी सन्धानीने सहा—'तुन सन रेगेन जनताने करा साओ, अस से मेरी अपने अनुसर तुम समने नाथ जनान जना रहोने।' विलाध विद्य कार्यकर में पुन: जनके बस्ये करी नहीं। सिन्तु संख्ये कार्यकों कोर्ड अन्तर नहीं पहा। उनका रोगिनोके प्रति अधिकारिक हैन सन्दर्भ गंधा और से इस्त असेके पान दक्षी करे। जन हैन सन्दर्भ गंधा और से इस्त असेके पान दक्षी करे। जन हैन सन्दर्भ पुन: एक साम होन्द्र जिल्लों कार पानी और सहरे सन्दर्भ (तिलाधी) सोमाने आवादी अस्ता नहीं साथ, जना से इस आवादी ही सेनावें सोगी।' व्या सुनवार हान्ये हिस्स संगान कर्मान करों नहीं से में प्राप दे हैंगा।' वर्ष्य सन्दर्भने उनकी करनका अनुसर करने देखिलोंके ही सुनवा निवास क्रिया।

जन दक्षणी पूनः इतका सरावार निरम से इन्होंने इतेयमें भरवार सेपके लिये पहलाकी कृषि परि, बहुन कन्नमाक न्हीरमें पुस नवा। श्रवरोगले पीक्षण हो जानेके कारण कन्नमा प्रतिदिन होंग होने असे। इन्होंने उससे हुटनेका का भी किया, नान प्रकारको का आदि किये, बिन्दु दक्षके हामसे हुटकारा न निरम, वे प्रतिदिन होंगा है होने नवे। जा कन्नमकी प्रभान्त हो गयी, से जन्म आदि ओवनियोका पैछ होता भी बंद हो नवा। से वैद्य भी होती उससे न बोद्ध स्वाह हैंक, य सर ( उनकी प्रक्रि की नष्ट है आती ) इस प्रकार सप्त व्यक्ति न होनेसे सब प्राधियोंका नक्त होने स्वता ? सारी प्रका कुला हो क्ली :

का केवताओंने कन्याके यहा आकर कहा—'यह आपका का केवत हे तक ? शरूमें प्रकार को नहीं होता ? इन्तर्वाचेले तारा अवस्य कारहते, आपसे पूरा हाल सुनका किर इस इसके रिश्वे कोई क्याब करेंने।'

उनके इस जेकर पुरानेश करावारे उने अपनेको इस विकास कारण कारण और उस इकाके इसमें कारणार्थी कीवारी होनेका झार भी कहा सुनाम । ऐक्सा और अवारी जार सुनाश कारों साथ गये और बोले— 'अवार । उसमा इस होनेले प्रकार की झार हो पह है । इस, राजा, केले, ओवरियों तथा कार प्रकारके बील— के साथ यह है से हैं। इसके म स्वांत्रे इसारा की नाम है हा कारणा । जिस इसके विस्ता संस्तार कैसे रह सकता है ? इस कारणा कार देवार अस्त्रको अस्त्रक कुरत करावी कार्तिके।'

विकासीके ऐसा वहानेगर प्राथपित बीरे--'मेरी बसा जन्मी जो जा सकती, एक सर्वन अस्ता प्रसाद करा है रूपा है, वर्ष क्यान अस्ती सक विवासि साथ प्रशास जर्मन को से सरकती नहीने ज्ञान गीडी बात करावर कील होंगे और केब्र विनोत्तक कहते रहेंगे। मेरी का बाद सबी माने। विका-स्कूतके स्वयर, जहाँ सरस्ता की स्वयंत्र विस्ता है, सरकर ने क्याकर संकरकी आरम्बन करें, इससे इन्हें इसकी कोची हुई कारीन किस सम्बन्ता।'

इस जनार जनावनिक्य आदा होनेसे स्त्रेम सरकातिके जना तीर्थ अध्यस-होत्रमें भये। वहाँ अध्यस्याको अहीने जना निका, इससे उनकी जना वह गर्थी, किर हे इस्स्त्र संस्तरको जनाविके वास नवे। उन्होंने हेक्साओको स्त्रे लग्न नेकर जनाविके वास नवे। उन्होंने हेक्साओको स्त्रे निक कर क्रिया और चन्नामसे कहा—'वेटा। आवसे उन्होंने विक्रिकेश तका अध्यस्त्रका कथी अध्यस्त्र म करना। वास्त्रे, स्वक्रकारिके स्त्राम मेरी आद्याका कस्त्र कस्त्रे सुन्ता।

व्या कर्मार प्रमाणिने अहें बानेकी आहा है हैं। बनाम अपने स्वेक्षणे क्षेत्र और सम्पूर्ण प्रमा कृतेक्स् अस्त्र क्षेत्र समी। सम्बेक्षण | बन्द्रस्थको जिस प्रकार साथ जिल्ला का, बहु सारा प्रसंग मैंने सुनी सुना हिना, स्वास ही सम्बाधिकोंने असन प्रावस-रोजिक प्रमान की बना हिना। उस रीकीर गये, यहाँ विकित्त कान करके उन्होंने नान्द प्रकारके | जान है। इस बीओं सरसारी नहीका वस वर्गानके मीतर क्षम मिरवे और एक रात नहीं निकार की मिनवा। कुररे दिन | क्रिका क्षम है।

रीविंगे कार करनेके पश्चात् कारामध्ये कमसोनोह कारक | आकर तीवींने को, नहीं कार करनेसे पर्युचका कार्याल हो

#### उदपान तीर्थकी उत्पत्ति—त्रित मुनिका उपास्थान

रीतप्रकारों कार्त है—'बहुतान । स्ट्रपन सेकी है पर्वेषकर करादेवजीने अवच्या विका और ध्वाकि प्राप्तकोची पूजा करके उन्हें स्कृत-सा प्रमा करने विका । सही कानेसे उनको मध्ये प्रसादता हो। यह बीवीने पहले केन गृहि क्य बाले थे, से बड़े सरको और वर्नवराज्य से। उन्हेंने बाई कुऐंने एकर ही सेकाल किया था। उनके के नाई के को उन्हें कुएँमें कोइकर यह वर्त गरे थे, इससे उन्होंने केने भक्तनेको प्राप है दिया छ।

इक क्लोक्से पुरस-स्कृतिकर ! व्या क्लाकी (वुक्ती) सीर्च केने कुमा ? तथा में महत्वनकी मुनि जाने कि क्यों ? केनी प्राप्ताने क्यार परिवार की किया ? वे को कुईने क्रीकृतर क्यों करे गये ? वहाँ कुमर क्योंने वह केसे किया और सोम्प्रेन किस रच किया ? यह रूप कथा यह स्थाने ।

रेहम्पाननम् कारो है—एकर् । आने कुरबंधे कर है, तीन सहोदा पर्या थे, को पुनि-वृत्तिको का करने थे, उनके मान के इक्ता, क्षेत्र और विश्व के तथ नेक्ष्मेल के और रामानो इसलोक्यो सान या सुके थे। उनके वर्णान पिताका नाम गीतम था। गीतमको अपने पुत्रोके तथ, निवस सीर इतिस्थितिकारे उन्दर बहुत प्रस्त को से । कुछ कारके बाद कर गीतम परस्थेकवाली हो गये हो उनके समयान कोग अने फोका है अवर-सरकार करने उसे । असे भी हैता पनि अपने सुध कर्म और नेवास्थनके इस निवासे समान 🛊 सम्मन्ति 🙀 ।

एक दिल्ली बात है, केनों नहीं एका और दिए पर और धन्ते रिमे मिला करने राने। उन्होंने सोचा—'इमलोग किलारे साथ लेका कामानोका का कराने और रहिमाने कार्य कहा-ने वह जह करे । जिस का करके प्रस्तातापूर्वक सोम्पान करेंगे (\* हेला निपान बरके के बेचों बर्ज करमानेके चल को और उन्हों विधिएर्वक का करकार क्योंने स्वारे यह जार ब्रियो । उन समझो हेन्यत से पूर्व दिलाओं ओर यते । जैन मुनि से इन्यें को कृद् आगे-असने करने से और एकत उस हित पीक्षे पहलर प्रसुक्तिको हॉक्से कर्त है।

पञ्चलोका का महत् संग्रह देशका एकत और वित्रके बनों का किया समाची कि 'कौन-क अधन है, जिससे में चीरें किलाते न विराम्बर सम इससे ही पास रह जाने।' जिन वे परस्ता पहले समे— प्रेस से मिन्नन है, इसे और भी बहुने हैं जिल्ह आये हैं। इन की अरेकों के इस के हो है। निवरवार अन्या होय से फो और दिल्को अल्प का है। जानी को प्रका है, कर कर ।'

इस प्रकार सरबद्ध करते हुए के मार्ग ते कर हो थे। राजिक स्थान का, राजीने एक भेड़िक कहा था। कस है सरक्षांके कार एक गहा वह कुंगा था। कि गुनिकी होंदे कर नेदिलेश बढ़ों, को देखते हो में समार्थित होसार क्यों और केंक्ने-केंक्ने अर्थ कुर्दने का गई। नीतरने क्योंने आर्थका किया, उनके खेले भारतीने को सुख थी, परंतु को विकासकेकी बेहा नहीं को । बेहिनेका कर से धा है, लोको को उन्हें अध्ये कंपूरलें केमा रका या; इसरिने क्षिणको पहिले की प्रोत्रकार के ब्यानी पर्ने । जब कुर्दिन क्षत्रिक कर नहीं का, सिन्दे बालू कर हुआ का, कर अंदर कार और सकाई बढ़ यांची बी, जिस्से उसका उनरी भाग का का वा

अवनेको कुऐरे निरा देख किसके मृत्युक्त कर हुआ। क्रमार्थ क्षेत्रकारको इत्या अन्ये निवत नहीं श्रृत की। बर्देशका हो से से ही, संबंधने तनो, 'इसमें सुम्बर में सोमपान क्रें कर सबका है 7' इसकें कुएके पीतर पेटरी क्रू एक सराया अवसे ट्रॉर पहे: फिर अहोंने कलुपने श्रुपमें सलकी कारण करके संकारकार आजिको स्थापना करे। विश अपनेते होत्रसम्बद्धे और उस संस्थाने सोमनी मानना करके पन-ही-अन चानु, बानु: और सामका किला किया। इसके क्या कंट्यांटेने विशासकी सामन्य करते हुए अस्पर स्थितकर हाताने सोमास निवास्त । बिर पानीने पीका संकाप करके क्योंने केम्ब्राओंके प्रत्य निषय किये और सोपरस सैनार क्रमें केंद्रमधीका मुस्ताम किया। पहाला क्रिमें स्थ वेहकानि सर्गतन्त्र मृत्य वटी ।

रेक्ट्रोक्ट क्ट्र्यरिकीको यो यह सुनायी पड़ी। उसे सुनका उन्होंने सब देखकारोंसे कहा—'तित मुनिका यह हो रहे हैं, वहीं इससे मेंको करना कहिये। वे कहे उपसी हैं, महि नहीं करने तो कोशमें आका दूसरे देखता एक एक हो। असे नहीं करने तो कोशमें आका दूसर राज देखता एक एक हो नहीं जिस श्रुतिका कहा हो रहा था, नहीं गये। कहें पहुँचकर उन्होंने जर कुमको देसा और कहने देखिल हुए किए पुनिका भी दर्शन किया। वे कहें नेकार्ड दिसालों हे रहे थे। देस्ताओंने कहा—'हम अन्या कम होने आसे हैं।' क्रिको कहा—'देस्ताओं । देखों, में किस इक्को कह हुआ है।' कह कहानर उन्होंने मंत्र पहले हुए विकित्योंक देखताओंको इसके साम अर्थन' हिलों।

इससे वेजासोग व्यूत जनत हुन और जुडिले बोरि—'आव इकान्सार का व्यूतिने (' कुनिने व्यूतः—'इस सुर्एने मेरी रक्षा करो तका को प्रमुख इसमें अवस्थान आहे, जो सोनपान वारनेवसंख्यी गति जान हो। राजन् ! कींत कुनिके इसमा नाको हो सुर्एने तरंगनास्थानों से सुन्ते का सरकारी वहीं विश्व नहीं, जसके जरने साथ ही उद्यार के कुन्ते वाहर

निकार आये । देवताओं के 'तवातु' बहबार उनके बीरे हुए करहानक अनुकेश किया; सरकार में अपने-अर्का व्यवको को वर्षे ।

तित मुनि की प्रशासकार्यक अपने वर आये। यहाँ अपने केनों कार्यकों वेशकर उन्हें कहा कोच हुआ; इसरियो उन्होंने कहा करोर कार्य कुलका उर सेनोंको हाथ किया — 'तुसरोग पश्चे स्वाक्यमें पहकर जो पूर्ण कुर्दने ही कोड़कर कार्य को है, वह सहाद पाय किया है, इसके कार्य कुल केनों पर्वकर चेदिके हो कराने और अपनी-की-की जने सिनो हमर-जना कराको दिखें। तुससे गावत, कि और कार्य आसे पश्चेनोंकी स्वासनों हिस्सों देने सने।

वारकेवनीने नहेके चौतर स्थित अववाद सीर्वका सूर्यक करके अवको कड़ी प्रकारत की, वित अरके काको आवादत करके काकि अवक्रवांकी कुछ की और उन्हें पाना प्रवाहके कर्ण किये। सारकार से जिल्हान सीर्वार गुर्व।

# विनशन आदि तीथाँका वर्णन, नैमिबीय तथा सप्तसारस्वत तीथाँका विशेष वृत्तास

सहाय परते हैं—'कारान ! वहाँ सरकतों को जर्मनके मीतर अनुष्य करने बहुते हैं। क्रम्नेक्की वहाँ आववन करके मिनकन तीर्थ, कहाँ हैं। क्रम्नेक्की वहाँ आववन करके आने को और सरकाति कान गरपर सुधुनिक श्रम्थाने तीर्थाने का पृथि। वहाँ उन्हें क्यून-से प्रवर्ण और अवकाते विकासी पहीं। यह परिवा मीत्रोंने कान तथा कर करने के स्थानीकी पहीं। यह परिवा मीत्रोंने कान तथा कर वे हैं। यह स्थान-क्यान गर्मा गरान, क्याना तथा नृत्य कर दो है। यह तीर्थान करके करनेक्सीने स्थानांको सोन्य-काह अन्ति करने विकास महाज्ञीकर कर करनेक्सीने स्थानोंको सोन्य-काह करनेक स्थान करकर काहमूल्य कराई है करनी सामनार पूर्ण करें।

सल्याल् वे गर्गकोत सम्बद्ध सैवंगे एवं। वहाँ वृद्ध गरिने तपस्त करके अपने अपरः सरवादों प्रतित विक्रम का सवा करतका क्षत्र, करतकी पति, त्रवादों और खोकी गरिका अपर-पेन, पर्यका अपने और सुन्न कुकून अपी ज्योति:-सासके विक्रमेकी पूर्व करवारी क्षत्र की वीं। स्ट्रीके नामस यह तीवें 'गर्गकोत' कहा जाने तन्य। व्यक्ति करवेकपीने स्वाचीको विक्रमूर्वक कर दान किस्स और नाम प्रकारके पदार्थ पोजन कराकर प्रश्नुतीकों प्रदर्शन विक्रम।

व्यक्ति अनुरेते नेपनितीके सम्बन्ध एक व्यक्ति सैका सङ्घ देखा। जो अनेको स्क्रीनकेले सुनेतिक या । वहीं सरकारिके स्वयंत कृत नका नक का का, नहीं इसरोबी संक्लाने नक्ष, विद्याधा, राजक, विकास कथा मैदन सहते से ( में साथ आहे हतान सहते। त्रा और निकलेका कारत करते हुए सक्क-समझ्या इस कृतका कर है साम करते हैं। कई करनेक्की सहारहेकी पुरू करके उन्हें जारेंग और क्षण कुन किसे । इसके बाद से पूर्य व्यक्ति क्षेत्रकारी आने । इस कारों स्ट्रांग्याने ऋषि-युनियोग्य स्त्रीन करके अनुनेने सहर्थित सीर्थ-सर्वार्थे कुमानी स्त्रीत व्यक्तिको पुरस करके उन्हें विशिष प्रकारके चोन्वपदार्थ हुन बिक्ते । फिर बहुरि करकार ने सरकारिक दक्षिणपागरे केही हे रूपर निवर नामध्या सेवंगे गते, जहाँ निज क्षेत्र हवार वानि केवर पाने हैं। उसी स्थानक देखाओंने वास्तिको क्वेंबर राजा बनाकर अधिषेक किया का। वहाँ किसीको की स्पेयोके प्रस्तेका कर की सामा बाल्येकारि वहाँ भी जावानोंको देर-के-केर सा सार वित्ते । फिर वे पूर्व दिसाकी कोर चन दिने, वहाँ पन-पनपर साम्रो तीर्व प्रकट हुए हैं। उन सक सीवॉर्ने इन्होंने गोवे लगाने और ऋषियोंके बहाये अनुसार **38-विकासीका पासन किया । फिर सब प्रकारके दान करते** 

में अपने अपीक्ष पर्मको अहेर पान दिने । साते-साते पाई पहुँगेः पाई पश्चिमको अहेर बार्नमानी सरकार्य गई वैदिक्तरण्याती पुनिकोचे दर्शनको प्रकारने पुनः पूर्व दिख्यको और स्वेट पाई है । अहे प्रोक्षेत्री और सीटी हेस पानोक्योको पाइ अद्युर्ण हुआ ।

क्षणेत्रको दुक्र--क्षण्यः । क्षणानी नदी पूर्वकी ओर करो तरेदी ? क्षण्यक्षकोचे अञ्चलका की कोई कारण होता काहिते । अर नदीके इस प्रकार की सीकोर्ने क्या हेतु है ?

र्वजन्त्रकारोते क्य−कार ! सामकृत्यो का दे. वैविकारमध्ये प्रकार प्रतिकोरे जिल्ला साम् कार्रे समाप्त हेरेनास एक पहले एक आएक विका, उसमें सर्वितीय होनेके रिक्ते कहा ने पार्टि काले थे। यह का कारत हात, का समय भी रोजीर कारण को स्थान से प्रति-स्थितिक कुमानक हुआ। काली संक्षा झाली अस्ति हो गाँव कि बरकारीके दक्षिण विज्ञानेक कीर्य करतेके प्राचन कर्याके मर गर्ने । गर्दिके मीरवर विकासकार्य सेवार साम्यास्त्राप्तान स्वति-युनि शहरे हुए से । में स्वतं पत्त-सेन्स्ट्री संतर्न तमें, सन्ते क्षारा क्यारिक केंद्र-सम्बोधिः नान्यीर कोन्स्रो सन्दर्भ विकारी केंद्र करी। महत्त्वार । जन पहुंच्यांचे कुळीच्यू कालीकाण, आरमपूर्, <sup>१</sup> एसोसूनस्ती <sup>२</sup> और प्रशंतका <sup>३</sup> के । योर् इस पीकर पहल था कोई करी। बहुने अन्ती अने प्रकार सुते हैं। सब कोप रिकृति वेदीयर ओते और परण प्रधानके विकारों रे जो राते थे । के बार पार्टि सरकारीके निवाद शास्त्र कारों क्षेत्र वसने हते, बिल वर्ड डीवीमुनिने उन्हें क्ष्मेंकी मन्त्रु नहीं दिखानी से । इससे से निरास एवं निर्माण हो नते । इनकी गढ़ समस्त्र देश सरकाति समस्त्र को स्त्रीर दिया। बहु अनेको कुलोब्स निर्माण करती हुई पीछे और पड़ी और क्राविकोचेंद्र हैंको सीको-पूरित क्राव्यार किन पश्चिमाओं और गुद्ध गुर्वी । इस बहुमाईने स्क्रियोके सार्यकार्थे समान क्रायोग्स विक्रम कर विका कर उस्तीतिको न्या आवना अस्तुत कर्मा का दिलाय। सरकारिक करक कृत वह निवृक्तीया सम्बद्धाः ही 'देशियोग' पान्यो निकास हुआ। व्यक्ति सनेवर्गे कती तथा बीके सीटी को सरवारी चरियो देखका क्षारोक्षणीको पहर विकास हाता । वहाँ भी राष्ट्रीने विकास भाषाम हो कर दिया और प्रकृतियों विकिन्तियों च्येत्व-प्रदूर्ण तथा स्थान द्वान करके ने प्रशासकत करके रीक्षीं करे गये; व्यक्ति वायु, करा, करा अवस्था पास समावत

क्षरेताले क्ष्म-से श्रास्थ से । उससे काकारका क्ष्मीर केर अब ओर देंग रहा था । वहीं अदिलक क्ष्में वर्णस्थायन मनुष्य दिवस करते से ।

क्षणंक्रको पूक्त-पुरिकार ने सामसारकार सीर्थ कैसे उत्पट इसर ने में इसका कृषणा निर्मित्तिक सुनन काली है।

वैज्ञानकार्य कार्ट है—स्वरू ! प्रारमती-नामसे प्रतिस्तु कार जीवर्ग है, के करे प्रकार देवने को है। इसके निर्माण का है-काम, काक्सकी, विकास, मनेरम, ओक्की, सुरेश केट विकासिका । प्रतिकासी व्याग्यकारी विकासिक hald you on proping sough first \$1 70 क्रमार्थ का है, पुनानोती स्वातीय एक स्वरू सा है का था, पहलाओं किंद्र प्रकृत विरायनम् से । कृत्या-केर हो एक या, एक ओर वेद-क्योची जारे केल प्रो थी, करक केला प्रा-कारी समें हुए थे, समें स्थानिके पहली केंद्रा की थी। उनके पह जाते जान सबसे कारत हमार्थ पूर्व हे पूर्व थी। वर्ष और समेरे कुतार गर्मा परने किए ज्यूचा विकार करने थे, नहीं उन्हें क्षा हे अर्थ थे। वर स्वयं व्यक्ति विकास व्यक्ति 'क का अविका गुर्जिने सम्बद्ध नहीं विकासी हेता; स्टोकि सर्वाच्या वर्ष सरिवासीये सेव सरवारीया है प्रमुखंस वर्षे क्षात है का कुरवार अञ्चलीने प्रशासीका करना किया । इस्के स्थापन कर्ष के 'कृतक' नामानी तरसकी पुनार क्षेत्रदे प्रकट के नहीं। विकासके सम्मानवें नहीं सरस्ती नहेको प्रकार देश जुनियोर का प्राची को अनेता की।

पूर्व क्या विकारकार को वेवक साम्वाको रूपे प्रतेषको पूर्वकोचे सरकारेका अस्ताक विकार, अस्ते विकार करते हो वहाँ 'क्रम्यूनको कारकारी सरकारों नहीं उस्तर हो नहीं। हेरे ही, क्या क्या नम वहा कर दी है, जा समय उसीं वहाँ की सरकारिका अस्ताक विकार गया था। वहाँ विकार कारकारी सरकारिका कार्यक्रिय हुआ। उसकी वहां वहां के हैं। वह देस्तरकारी सारोसे निकार्य हुए का कर हो है, उन्होंने की सरकारिका करना विकार हुए का करना का नहीं उस केर्नों की अस्तर हुई, विकास पुर्विश्व कुरिनोंने वहां उसका असने सम्में ही इससा विकार हा?

८ परकारो प्रोडे हुए करन्या चोका करनेकते ।

२ होत्से हे ओक्सकेस कार केनेसके अर्थात् ओक्सकेने कृटकर नहीं, दशिये हे कार्यन कार्यके ।

इ.कि इह कर समेक्टे

क्यो समय वर्ष सरकारी प्रकट हाँ । महत्त्वासी यह करते 🛚 समय दह प्रकारको का सरकारिक करना प्रिया 🙃 🕏 महीं भी शुोल है अबट हों। इसी अवस्य महत्त्वत परिवासी सरकारीका जानाहर किया; अनेद आवाहको 'अहेकावी'बट 🖟 🧋 🛊 🛚

'सुरेनु' नाथकारी सरकारी करिया प्रमुखीय प्राप्त | प्रापुर्वत पुरत । सहाजीने एक बार हिमासकार्यस्या थी यह हिंग्में हुआ। जिस सबब राज्य कुर कुरक्षेत्रमें का कर को थे, बिक्स कर, बहाँ जब उन्होंने सरसरीका सारण विद्या हो 'किन्सकेक्क' प्रकार क्रं। इन स्ताती सरसारियोका करा नहीं कुरत हुआ है, और स्तुतासका कहते हैं। इस जनार की दूसरे साथ सामाजियोंके क्या और कराया भी एक बार कुमक्षेत्रमें यह कर दो थे, न्यूरिन कहाँने । स्वामे । इन्होंने परनपरित्र सहसारस्था सीशंकी अरितीह

#### रुक्कुके आग्रमपर आर्ष्ट्रियण आदि तथा विश्वामित्रकी तपस्या, थायाततीर्वकी महिमा और अरुणामें सान करनेसे इन्हका उद्धार

वीरान्यकरची सहते हैं—शांकर् । काराज्यकीने इस कीवीरे | आधारमासी व्यक्तिको द्वार करनेके प्रकृत एक राज निकास मिना। क्योंने प्रधानीको यह विने और प्रशं को भागत राजपार प्रमाणन निवास । कुलरे जिल आत:पालन सामान रीक्षि जाने कर किया और एक अधि-मुन्तिको अद्या रेकार में ऑफ़्स्स डीचेंमें का पहिले जो क्रम्यान्त्रेकर कीय भी नाहों है। पूर्ववासने भगवाद राज्ये कई एक राज्याको मिरकर सरका है।र हर केवत था, यह हैरर (अक्स) आहेत मुन्तियो परियो जा सरह यह। यहील उस सुनित प्रति प्रती भी तथा वहीं कुळवानीतीने इस विकास का, विकास अबोह इत्यमें सम्पूर्ण गीति-निवार अपूर्णत ह्याँ थी। काम्यानकी का तीर्वते प्रोक्तार सहाजीको विकेत्रकेल कराहर सार **P**ireu i

सन्दक्षात् वे प्रयाने अवस्था गये, वर्षा अर्थिकारे चीर सरकाची थी। रुख्य युग्नि वहीं अपने देहका प्रयूप विका मा। जानी क्षात्र इस जनार है—क्ष्यू एक कुरे प्रकृत है, ने सका तपलाने ही लगे वर्ता में। एक हिए सहर क्षेत्र-विवारकर उन्होंने अपना के स्थानकेक विकास किया है का समय ज्योंने अपने सम पुत्रेको सुलका बद्धा—'पुत्रे पुष्पुत्रक तीर्वार्ध के कार्य (" उनके पूर्व की को प्रकार से, से अपने वितासी अत्यक्त कृद्ध सम्बद्ध सम्बद्धी नहीके पृष्टक सीर्वपर के गये। यहाँ जीवकार कामूने सेवकि आवरे विशेषकार कान किया और अपने कुलेचो नकता कि 'सरकारी नहीके अतर विकारियर को यह पुष्कुक डीवें है, इसमें सकर सहस्के गानती आदिका का करते हुए के पूरत क्रमानका करेगा. क्षेत्र पुनः अन्य-वरणका कह नहीं क्षेत्रन कहेका<sup>।</sup> बरमामबीने उस परित तीर्वये कार करके प्रकारतेको द्यन विचे । इसके बाद उस तकारण प्रदर्भन विद्या न्यां सोन्यनिकाम् स्थानकेने स्टेक्टेक्टी कृति सरामा पूर्व की राज्य पढ़ी आदिना, तिल्ह्लीय, वेळारे और क्रिकृतिक अन्ति एकविकोने बहुत्त् प्रत व्याचे अञ्चलक प्रत Barrier et a

कार्यकारे पुश्च-वृत्रिका । जार्विकारे किस अंबर पहल कर विकार है जिल्लाहेंग, देशकि सबा विदा-निक्ते को केले प्रकारक आहे किया ? का रख बाते मुझे

केल्प्यकार्थने कल्पान्यकम् । सारमुगानी सार है, एस अर्थिक कामके प्रकार में, के गुरुं साथे सका कहा वेटीके अध्ययकार्थ समें रहते थे । यदानि उन्होंने बहुत अभिन्य प्रमाणक पुरस्कारों कियान किया तथायि न से कारते विका रत्यात् हाई और व उन्हें केंग्रेक ही पूरा अन्यास कुछ । इससे ने मन-प्री-पन बहुत कुपति हुए और करोप संग्रहामें संग न्त्री । का नक्के प्रशासने कहें केहेंका कान शाम आह हुआ । अंध से निवार होनेके साम ही सिद्ध हो गये। क्योंने का बीचंचे बीच चल्लान विके—'कावले को प्रमुख सरकारी नहींचे इस डीमंत्रे हुस्की स्थानेच, इसे अक्टोब बहस्क एए-पूर कर किलेश, वहीं सर्वेका कर नहीं खेगा तथा सेहे रूपकार भी इस सैसंबर सेवन करवेसे पहल प्रत्यारी प्राप्ति विकेश हैं।

इस अवस्य क्यान्के साधावन 🛊 शाहिका पुरिक्ते तिक्षेत्र क्षत्र क्षाँ को। फिर क्षत्री समाधित एवं देनापिने का करके क्रकारात जात फिला का तथा प्रक कर्म सने प्रतेकले विकारिककीको भी की अञ्चलक प्राप्त हरू था। इसकी कथा में है—पुर्कापर एक 'गृहि' नामसे विकास महान् स्था राज्य करते से । विद्यारित क्रांकि एत थे। बाहते हैं, समा नामि बड़े बोगी थे, अपूर्वि अपने

[ \$11 ] सं + म + ( खण्ड — हो ) ३३

पुत्र विश्वानिसम्बर्धे काम केवन सम्बर्धे क्षेत्र सम्बर्धि विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र कित्याः । इत्य क्ष्मान्य अस्त्र मन्त्रेन कामान्ये अस्त्राम् विश्वास्य कामान्ये न साह्योत्, इत्यारी महत्त्र व्यवस्ति क्ष्मान् विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्

प्रकारे ऐसा बढ़नेवर जाविने बद्धा—'वेरा पुत्र समूर्व करम्बद्धी रक्षा करनेकरण होता।' में कड़कर उन्होंने विद्यानिकारे एन्वरिक्षरमण्ड विद्या विद्या और कार्य करेर सान कर सर्गेकी रह सी। विद्यारित राजा हो हुए, बिज् बहुत कर करनेपर भी से पुरुषेक्षी पूर्णक: यहा व कर सके ( इक दिन क्योंने तुना कि जवापर राज्यतेका महान् पन कहा हमा 🖢 सकः वे चतुरद्विणी क्षेत्र तस्य नेवार राजवानीक्षे निवास पढ़े। बहुत इसाब राजा है कर लेके पहलू है सरिष्ट युनिके अवस्थान गाँचे । वहाँ जनके सैनिकोने पान अवारके जलावार विवे : जारेने करित पूरे अध्ययक आये । क्योंने देशा कि या महार का तथ ओरते काल किया मा रहा है, से अपने कामनेतृ तीने कहा—'नू प्रतेकर भीरवीकी अन्यत कर ।" महर्गिकी आक्रा कावट केन्द्रे प्रकंबर क्यूकोन्डे एकट मिना, रिप्डेने विश्ववित्रको हेक्कर कक करके जो पारों और भन्न किया। विकारिको कर दूस दि मेरी सेना धान नहीं हो इन्होंने त्याकाको ही सकते बढ़कर बहुक और मन-बी-पन राव पारनेका निक्षण किया ।

स्थानम् वे स्वस्थाने स्वर्त्ता सीवंते हे अतं और विभागो क्यां करके सर और नियमोका पासन करते हुए सरीरको सुकाने रूपे। कुछ कारताब जार बीकर हो, बिट मासूच्य अक्षार करने रूपे, हरके कह पर्व कारवार को सर्थ। इस्ता हो नहीं, वे सुन्दे मैकनने कार्यन्तर कोने कक्ष और भी बाहा-से नियमोका पासन करने रूपे।

तदनगर, देगताओंने अनेद इतने निवा सारण आहान वित्या, निवा किसी राम करवार सन न वित्य सवार । ये स्कूक अन्या सरके अनेवारे प्रधारके तम करने तमे । उन्हें देती करोर सम्बंधि करान केसकी विकाली होने करों । उन्हें देती करोर सम्बंधि करान केसकी विकाली होने करों कर खोरानेके दिले सदा । विचारिकने यही वर गांगा कि 'मैं स्कूलत हो बादी ।' अक्टरानि 'तालाबु' कर्मान करकी सर्वास स्वीवसर कर सी । इस अवसर पहालासकी विचारित करवेर स्ववसर्थ करा

उस नीवाँचे पहुंचकर करावास्त्रीने होता प्रवासीकी पूजा करके वर्षे कहा-सा कर, तूस केनेवाली गोरी, बक्का, विक्रोने, कक्ष, अरुक्ता तथा करने-पीनेकी सुन्दर करहुई दार करें। इसके बाद के कर और दाराज गुनिके आवस्त्री गये, जहाँ वैदानकोची अपि गूँकी क्यों है। यह यहैक्कर उन्हेंने उन्होंकों रव, हैरे, मन्तिक एक अप-वन आदि हार किये। यहेंने कावाद-दीकी नवे : यह दाना क्यातिक वहारे करवादी नदीने को और कुम्बी क्या वहारी थी। सही यह करवे क्यातिक कुरको स्वेकीने करन किया का। सरस्वतिने क्या क्यातिक कुरको स्वेकीने करन किया का। सरस्वतिने क्या क्यातिक अपने हुए अध्यानीकी सारी क्षात्मक पूर्ण की थी। एकाक स्वानेका क्या अपने हुए अध्यानीकी सारी क्षात्मक पूर्ण की काम अध्यानके कुम करके क्यात्मको होता था। अस दीवीने की काम अध्यानके कुम करके क्यात्मको होता था। अस दीवीने को काम अध्यानके कुम करके क्यात्मको होता का। अस दीवीने को काम अध्यानके कुम करके क्यात्मको क्षात्मको क्यात्मक क्यात्मक की की काम कहाँ क्यात्मकों कामिकी काम क्षात्मके क्यात्मक कुमको अध्यानको क्यात्मक क्षात्मका क्षात्मक स्वानेक क्षात्मको क्षात्मक्षात्मको क्षात्मको क्षात्मको क्षात्मको क्षात्मक्षात्मको क्षात्मको क्षात्मका क्षात्मक्षात्मको

कनोजनने पूज-महत्त् । इन्हर्क अध्यानाका पाप कैसे सन्ता ? क्या पूज सीर्थने कार कार्य उन्हें कार्य कुरुकार विकास कुत निराम ?

र्वजन्त्रकारो का—राज्यु । प्रचीन कारानी वार है, न्तुनि हुन्तुने पन्ती इतका कुर्वारी किरलीमें स्था राज का। का अपने अससे निकास कर हो। और यह प्रतिका की कि 'में न को तुनों भीने इंक्लिएको बर्लाना, व स्ट्रांसे; न हिल्हें करिया, य प्रत्ये : यह सात में स्थानी जीवना सामार विकास है।" इस इस्वारको प्रतिहा कर लेनेकर एक दिन क्या कि करों और कुकरत का यह बा, क्रको पानीके केंको न्युक्तिका तिर कार रिच्य । यह कार। इता परावह इस्ती की की पर और बोल-'फिसी कर समेतारे करी । कहाँ कारा है?' इस प्रकार कर उस पराजने कांच्या रोका से इस अवत रहे। उन्होंने स्वाहनीके कर क्रमा व्याप्त सम्बन्धाः सुनामा । सुनामः प्रद्यानीने क्य — इन्ह । तुल असमा नहीके बटार बाओ । पूर्वसारको असमानि पुरस्काने स्थान असमान्त्रे अपने बलारे पूर्व किया था, अतः यह अवस्त्र तथा सरस्रतीया परित्र संत्रव है। वहाँ सामार का और दान करें। अध्ये भेला समावेसे प्रस वर्गकर करते एक है कालेने।'

व्यक्तिको हेला ब्यक्तिय इन्ह सरवातीके ठटवर्ती निवृत्याने को और वर्षा का करके उन्होंने अस्तानो हुव्यक्षे सम्बद्धाः हेला बरनेसे के व्यक्तियाके पायसे मुक्त हो गये और अस्तर अस्ता होकर इन्होंने बस्त गये। न्यूनिवस वह हैएर भी अस्तानों नोजा समाचार अञ्चल सोकोचे वा पहुँचा।

बस्यक्रकीने जा रीवींने कार करके क्रम प्रकारके कर

सोयने बड़ों राजसूब का किया था, जिसमें अक्री पुनि होटा को थे। का पहली सम्बद्धि हो प्रापेत्र पूरवा, बैज क्या राजसीका देवताओंके स्तव वर्गकर बुद्ध हुन्छ, निसे सारक-योगान करते हैं. उसमें पार्ट कार्निकार कारकासुरको मार का। उसी रीजीने कार्टिकेक्सी केल्लेक्से | कस्के उन्हें बड़ी अस्तक क्री।

बिले और बहेरे सोम सैर्पकी और बाल की। पूर्वकारणें | सेनाकी बनावे को उन्न सकते दिने उन्होंने बही करना निवास करा सिन्धाः वहीं नक्त्याः भी कराने राज्यार अभिनेक हुन्य या । करनेक्सीने इस सीवेने कान करके कार्य वार्तिकाचा एका किया और प्रक्राचीको समर्थ, का क्या आधुरू कर किने। किर एक एत को निवस

#### सोपतीर्थ, अग्नितीर्थ और बदरपाचनतीर्थकी पहिमा

बारोक्को पुरस—पुरिवर । केवाउनीर कोवाईची क्रमचा किस रहा अधिनेक किया ? प्रत्यी कथा पत्रे समाने ।

र्वतप्रकारकोरे सहस्य एकम् । यहारे सारायुक्तको सहस् है, प्रमक्त केवल प्रकारके पास प्राचन केले—'प्रमान । देवराज इन्हें की राज इसकेओबी अबसे रक्ष करते हैं, उसी प्रकार आप भी एक सरिताओवा काल क्रोनिने । सक्को आपन्य निर्मात होता और समूह एक आधोर अधीर केना । मनुसाने करो-करोबे साथ है आरबी के हरि और 糖 种门

कराने 'एकस्ट्र' कहार देखाओंकी आवेत सीकार कर नहें । दिन सबने एका क्षेत्रर क्रमके बरसक क्षम कार्य-कीर जनका अधिनेका करके पूजर जिल्ला। सरकात, वे अपने-अपने बावको पाने गर्ने । वितः प्रमू वीने केन्स्रकोची रक्त करते हैं, जरी प्रकार करना भी नहीं, नह, सरोकर क्रक सप्तिकी रक्षा करने उसे ।

इस नीचंने पहुँचका कानामधीने कान किया और प्राप्तानोच्ये दान देवार व्यक्ति ये अधितीचेने को । वहीं प्रान्तिक भीता किए वानेके कारण अधिके कैसीको विकास नहीं बहों से। का रूपन का संस्थात प्रथम का है अस है एक देवता ज्ञाराजीके पास अवस्थित हुए और केले—'इको ! कावार आसिय की दिश्यनी धारो, प्रत्या का कारण 🛊 े नहीं ऐसा न हो कि आंत्रिके जन्मकों सम्पूर्ण ज्ञानिकोका मध है नाम। असः अस्य अधिकेको प्रयाद करियते (

कार्यकरे पुरा-समूर्ण कमान्त्रो सका करवेगाते मगवान आहि अक्तर वर्षे हे को है ? और देखकोंने क्षाचा पता विस तथा समावा ? बहु सब पत्ने ठीवा-डीवा यहस्यो ।

वैक्तप्रकारोने कह—सम्बद् ! पहाँचे पुगुरे कार्तिकारो

चील दिन को । उनके असून्य हो जानेका हुए आहे समूर्ण केव्यानी सरम्ब इ.ची क्षेत्रर काची क्षेत्र आरम्ब वी। कोनको-कोनको आधिवर्तिको आसार अस्तिने आधिकेसको प्रार्थिक चीवर क्रिये हैका। उन्हें चकर समयो यही प्रसादा हो। ये केले अपने थे, केले के और गर्ने । अधिकेल भी स्थानकरी कुलें कार्ये समुक्ता सर्वेचकी हो पर्य । बिल उसी सीर्वीने कार करनेने उन्हें स्थानको आहे। हुई। पूर्वकारने स्थानको of the bostolik ties self-deld good tered of क्या वर्ष नियानीया देवताओंके सीवीया स्थानन Moral at a

परायमधी वर्ज कार-कृत करके कीनेर सीवीरे गये, वर्ज को करी करका करके स्थान करके सामी हुए थे। को कर करके कारावचीने प्रक्रमांको वर दल किया. इंग्लंड बंद कुलेन्याचे कायार ३१ रकावका कुलै किया, पहाँ कुमेरने उन किया था। यहारातने वहाँ बहुत-से बरदान प्राप्त विको से । सरका प्रयास, संसारतीके साम विकास, केवल, लोकामाना और सम्बन्धा-नैका पुत-न्या प्रम कुछ सुनेती चर्डी तमका करके पत्त्व था। वहीं मकरगणोंने एकतित होकर कृतेला लोकाकाची कारा अधिकेंद्र क्रिक और जो व्यक्तिका राज्य राजा है।गेसे जुडा हुआ पुरस्कविपान प्रदान किया। वालोक्सीने वहाँ की कार करके सहा कुछ कुन किया। हान्ये बाद के बहुत्याकर जानक सीवीरें गये। बहुरी कृष्यालने कर्याकार्ध अनुसन कारणी कन्य सुरामानि क्याची अपना पति कनानेके तिनो सा तपस्य की हो। उसने व्यापनंदर करान करते हुए बहुत-छै अओर निकारीका प्रतान किया था। उसका सरावार, उन और मंकि देखका इन्ह अर्थे अरा अराव हो गये तथा को प्रदेश वर्तन देखर तथीने क्क-'बारे ! मैं क्कारे क्या, निकासका और व्यक्तिके कार तरहा है, जारीको समाद्य करोरच पूर्व होचा और का साम दे दिखा था, इससे अरुप्त अवश्रीक होका से क्रमीके | करीर साम कर दूस मेरे साम कर्मसोकमें निवास करेगी।

महाचारो । इस परित्र रॉक्टिये अवस्थतीरबीत सहस्री 🐲 करते 🖥 में। एक दिन ने अरुक्तीको वहाँ अकेली क्षेत्रकर उन्हें वीतिकानियांको विन्ये कल-युक्त स्वनेको क्रियानकार व्यक्ते गये। वहाँ का क्रम्प करत करते होतो कर्त कह नहीं थे। कर करियोंको वहाँ कुछ भी नहीं निरम से ने असरा बनाबर को छो। इसर, बरुवाची अस्त्राती निरुक्त रुपसामें संसार हो नहीं । जो कठोर निकास करन करते देश करहारक धनवान् संबद जानन जाना हे उन्हानक कर बरायार वर्षा आये और योले--'फारवाची, में विश्वा बाहता है।' अक्नवरोंने बाहा---'विशवर ! अब से तबाह हो क्या है, सिर्फ मोहे-से बेर रही हैं, इसे का लेकिने।" महारोजनीने सहा-'सुने । ६४ वस्तीको जानवर पद्मा हो ।' यह सनका अरुकती प्रकार-वेजनका क्षेत्र करवेडे हैंजे पालेको प्रत्यतिल अधिनर रचकर प्रकले सन्ति । आ प्रक को परम परित्र, क्योहर हमें दिया सभाई सुराधी हेरे राजी। मह बिना कार्य ही बेर प्रकासी और सब्ध सुनती हुई, प्रायेधे बाह्य क्योंकी का भवेकर जरावदि समझ हो गयी। या क्रांच्या समय को एक विन्तेत समान ही प्राप्ति हुआ । सहस्वार, सार्गि भी फल लेकर नहीं जा पहिने । तक कामान्ते प्रता होकर कहा-'वर्णको साम्पेयाची हेवी, अब पून बहुनेवृद्धे ही भौति इन स्वर्थियोची सेवा करें। तन्त्रस्य का और निवार वेजकर युवे बढी जसकत क्षे है।

'या कहार पायान् इंकाने अवना स्थान प्रका विका और अभियोगे अस्ति महस्तूर्ण आकरणका वर्णन कार्त हुए कहा—'गुनियो ! तुनने हिम्मानका कार्टने एकत विका सम्बाद करार्जन किया है और इस अक्टबर्णने कही तुका को तम किया है, इस बोनोर्ग कोई समानका नहीं है। अवस्थानक ही कर तेष्ठ हैं। इसने कावा करोतक किया केवन किये केर कराने हुए हुक्तर तरका अनुहान किया है।" इसके कर उन्होंने पून: अक्त्यतीये कहा—"करवाणि ! तुन्हारे अन्य को अधिकाल हो, बरदान गाँग को !" तब कह कोली— 'क्यान् ! वहि अधि अस्त है हो का कार्य 'क्यावाल' करक कीर्य हो कार्य और निक्हों गांव देववियोंको यह बहुत किय कार्य को । को कनुका हस संबंधी परिवारामुख्य तीन गति निकास तका उनकास करे, उसे बादा क्योंतक तीर्थसेयन एवं उनकास करनेका करा आहे हो !"

भगवान् इंध्यते 'एकनश्नु' व्यावतः अस्तेः वरवाः अनुव्येषम् विकाः। विक स्वार्तियोद्याः वर्ते हुई सुनि सुनवार वे अस्ते व्यावते वर्ते नवे । अस्त्यती इतने वर्तेत्वः सूक्त-व्यासः अववतः वर्षे न को वर्तते और न अस्ते वर्तन्तर ब्राह्मी हो हाती । अस्त्यो हुन अवस्थाने देश व्यक्तियोको ब्रह्म अस्तुर्व हुआ।।

कृत ज्यान सम्मानि वह बात सिद्धि प्राप्त की है, कृत्यों की मेरे तियो सम्मानित है क्योंने उत्तर प्रत्यत कराना विका है। में कृत्यते निकासे संसूष्ट क्रेंबर इस सीकींत सम्माने कृत निकेष कराइन क्रेस है—की समुख्य इस सीकींत क्या क्यांने क्यांनित हो एक राज की वहीं विवास करेगा, वह के स्थानके बातन कृतिय सोकींने वाचना।'

केंग्राचनके कहते हैं—यांका परिश्वास सुतावती है ऐसा बद्धार इस सर्वाचे करे भरे। इस्ते जाते है कहाँ पुरावित क्या करने स्वति। इस्ताओंकी कुट्राने का उसी। पुरावित क्या करने स्वति। उसी समय झुतावती भी सरीर स्वत्य कर सर्व करने स्वति और बहाँ हुमूकी करिके कार्य करे सनी। अस्त्याची इस व्यवस्थानतीकों स्वत्य करके अक्रानोको कर क्ष्याद हुम्झीकों कर्त गरे।

## इन्द्रतीर्थं और आदित्यतीर्थंकी महिमा, देवल-जैगीक्च मुनि तथा वृद्धकन्याक्षेत्रकी कथा

वैरात्मावनको काने हैं—बाही जाकर कारतावजीने विविधन, जान किया और प्राह्मणोको वन कथा का दान दिये। इन्द्रतीकों देवराजने को कहा किये थे, जिल्ले बृहस्पतिजीको कहा-मा कर दिवा ज्या का। अनेको प्रकारको दक्षिणाएँ वर्डि गयी थीं । इस प्रकार को कह पूर्व करनेके कारक इन्द्र 'इस्टबल्' के नामसे विवधक हुए और क्योंके नामपर कह करव पवित्र, अस्त्रात्मकारी कुने सम्बद्धन तीर्ष 'इन्द्रतीक्ष' कहाराने सन्ता। कहीं काल-कुन करनेके प्रकार करवानों रामसीकी पहिले, नहीं परस्रात्मनीने अनेको कर इतिकोक संदार करके इस पृथ्वीयर विजय क्वी और करका मुनिको आवार्त बनाकर करकेव रखा ही अवशेष का दिने। उन्होंने समुद्रातिक सम्पूर्ण कृती ही दक्षिणको करने है ही भी तक और भी नाम प्रकारके दान नेकर से करने करे को से। इस पासन तीकी सुनिकार पुनिकोको स्वाह प्रकान करके करनामती समुन्ततीकी आहे, वहाँ करको राजसून का विजय सा। वहाँ प्रक्रियोको पूर्ण करके उन्होंने समस्त्रो संसूष्ट किया तथा दूसरे काकारोको भी उनके इकानुस्तर दान दिया। इसके बाद से आहिस्सतिकी गर्ने, बर्क जनवान् सूची परकातका करून करके । कोरियोका आविधान क्या अनुका प्रकार प्रश्न किया था। इनके दिखा, इन्ह अब्दि समूच्ये केवल, विश्वेष, परकातन, मनवर्ग, अपस्ता, द्वितवन कास, कुतके स्वय कृत्ये अनेवधे बोगसिद्ध स्वास्थाओंने ची सरवातीके का चीना क्षेत्री हैंब्दि प्रश्न की है।

पूर्वभारको वहाँ देवल मुद्दि गुहका-कर्वका आसाव हेवल पाते थे। ये बढ़े कर्मका तथा क्वाची थे। यर, काणी क्या क्रियासे भी समझा जीवोचे। जीर एक्या आम श्वादे थे। स्रोध सो उन्हें कू नहीं गया था। उनकी मोर्नु विका करे था सुनि, ये समझी समझ अन्यान में एक-सी ही दावी थी। ये वर्वकानो प्रश्नित प्रेमित प्रमान क्या होता हुए। ये वर्वकाने क्या पूर्व समझा समझी थे। येवल, जातिय तथा स्वाद्यांकी स्था पूर्व विका करते और जीविय स्वाद्यांकी स्था करते हुए क्यांबारको केला सुने थे।

एक दिन कैनीका जुनि उस की के अपने और अवनी केन्य्रिको विश्वकार के कामार देशको आमन्त्र पूर्व इसे । व्यक्ति कैनीका विश्वकार केन्य्रिको के और उस्स केन्य्रिको के उसकी विश्वित दानी की । कामि कैनीकार केन्य्रिको अध्यक्त की स्वारे के, से की देशक पूर्ति को दिशासार केन्य्र्यका जुनि करते के । इस सरह केंग्येको का दाने हुए ब्यूक सम्बद की कमा ।

सारकार, कुछ कारकाय ऐसा हुआ कि सैनीक्या कृति इसा नहीं दिलानी होते से । इस समय हेक्स अन्तर है देकाने आक्रमण असीवत होते से । इस समय हेक्स अन्तर छातिके अनुसार सामीय निर्माण करवा कृत्य हुई आविश्व-साधार इस्ते से । यह निश्च भी च्यून क्योतक करवा । एक दिन हैगोक्स कृतियों देसकार हेकाने करने वही विश्वा हूई । अन्दोंने सोचा 'इनकी पूना करते-करते विश्वा ही वर्ष बीध करे; सगर ने विश्व आनसका मुक्तो एक बाल की नहीं कोते ।

व्या संस्था हुए ये कारण क्रमणे से सामारकारांकी सम्प्रातास्त्री उत्तर पत्न दिये। बढ़ी सामार देखा से विक् महोरण पहलेले ही समुद्धारकार मीकृत से। बढ़ा सो उन्हें विकास सम्पन्नी-साथ अध्यार्थ की हुआ। सोको समे — ये बढ़ते ही कैसे का पहुँचे ? इन्होंने से बढ़ता भी समाप्त कर रिका है।' कर्मणार, पहिंचे देखाने भी विकास समझ हो पत्र मानकी-मानका कर दिखा। जब नित्त-निवस समझ हो पत्र से वे पूल: असमपत्री और चले। वहां बहुता हो। हो वह बैन्दिक्स पूनि कैठे दिखानी पहें। अस देखा पूनि पुटः विकास पह गये— 'की तो इन्हें समुद्धारकार देखा है, वे अध्यानक कार और मैंडो आ नने ।'

न्य सोकार उनके धनमें वैशीनावाले हीया-दीवा नारनेकी हवार हुई, विश् यो वे उस आसमसे आवारतायी और यो। उसर नाकार उन्हें बहुत-से अन्यरिक्षणारी सिद्धोंका हार्य हुआ, उसरा ही, उन विद्धांके हारा हुई बाते हुई नेन्येकमा पुनि भी दिसावी पहे। इसके बाद हेजाने उन्हें कार्यकोच्या ताले देवार, नाहीरे विद्यानेकारे, विद्यानेकारे कार्यकोच्या, नाहीरे वाद्यानेकार्य स्था बन्द्रानेकारो ह्यानार्थ वह कार्यकारे अधिकोचिकार्यके उसर क्यानेकी उन्हें कारा करते देवार। इसी बाद वहां-वीकारण वास कार्यकारांके क्यानेके अस अस्य बहुतेरे क्यानेकार क्या बहुते वाले गये।

वन्यान, वे गरिसवाओं संवोधे वावर अनावंग है को। किर देवल कृष को व देव सके। का क्लेपे केवेन्सके स्वत्य, का और कनुष्य चेन्सिहोर विकास विकास करे हुए सिद्धोंने कुछ—'अब कृषे कहन् देवली केवेन्स की दिवानी हैं। आयोग क्लार वह बहा कार्ये।' विद्योंने कहा—'हेवल। वैनीचल सहस्त्रेकरों सने को, को सुन्दि की की है।'

विद्वीकी क्रम सुनकर देवल वृति क्रमकः मैकेके स्वेकोरे होने हुए कृतिका उत्तरने जने । जब उत्तरने जातकार पहुँचे तो वहाँ कारंगे ही की हुए नैनीककार उत्तरो हुई पहि । वे उनके उस और केरोको उत्तरक देश कृते है, इससिने उत्तरने कर्मकृत कृत कृतिको कृतको जने और बोले—'क्यकर ! मै मोहशब्दिका उत्तरक रोका कार्यक है।' उत्तरी बात सुनकर और संस्वास लेनेका विकार कार्यक मैनीकक्यने उन्हें प्रातंत्रकेत किया; कृतक है केरोकी विकार कार्यक अनुसार कर्मक-अवर्तका कार्यक मोहल विकार

पुनिया केमाने की गृहत्व-मार्थका परिवास कार्यंत के के मार्थें और स्थानी और यहा निर्देश एवं पर्स केमाके जान किया । एका करमंत्रक ! जैरोपका और केमा की दीवें कर पता । क्रम्यकार्यंत का ती वैने आक्रमन करके महायोगो राज किया और अन्य कार्यंक कार्यं क्रमण करके ने साहिते क्रमण स्मानका दीविन पहुँचें, जाई पूर्वकाराने क्ष्म कार्यं क्ष्मीत कर्यां की हुई की, का समय सरकारी-पुत्र सारकार पुनिने जाह्यमंत्रके के प्रकार कार्यं के प्रकार कार्यं के प्रकार कार्यं का करके क्ष्मा स्थान कार्यं करनेकारे पूक्त-पूर्व | पूर्वकारको कुमारीने विका स्रोहरको तब किया चा और उस उपने किन विकासका प्रस्त किया गणा का ? विका उत्तार का तनकाने अपूर हुई, उसका सारा युवाना सुरकारो :

वैरान्यपनवीर कार—राजार है आवीन कारणे एक

'कुनियार्ग नामक कान महत्वी आवे है गर्न है उन्होंने का

प्रमान कारणे अपने मनसे है एक सुन्दरी काना आवा की ह

क्रिको देशकार मुन्तियो नाई आवा हो ( कुछ कारणे की ह

अध्यान में इस करीरका आन कारणे कारी वाहे गये ह आव

अध्यान मार का कारणांचे हो सबर आ वहा । का कहा हैया

करावार जा सरकारने पंतरत हुई और नियम्त करवाल कार्यो हुई जिससे एक स्थान की क्या । का कुछ और कुमले हे ज्यो ।

सब असने परलेकों कार्या मार कहा हुई और कुमले हे ज्यो ।

सब असने परलेकों कार्या कियार कियार किया । अस्यो कुमले हे

क्या देश नारवानीने आवार कहा हुई आ । स्थान है ह हुक्य हो

अधी संस्थार (कियाह) है जहां हुआ है, जिर हुन्दे अस्य

स्थेय की मिल सकते हैं ? यह कार की केमलेकों हुन्ते है ह

हुन्ते समस्या में बहुत कही की, यर हुन्दे काम स्थेकोंका अधिकार स्थिकार की साम हो सकता।

गारको जल कुनकर का अभिनोकी समावें काका बोसी—'को कोई नेस प्रतिकाल करेगा, जो मैं अपने सम्बंधको जावा जाग दे हुँगी।' अपने ऐसा कालेका गारकके पुत्र न्यूकल्ले का—'कालकर्त ! मैं इस इसंबर सुम्पार प्रतिकाल करीना कि विकाद के क्रमेरन पुत्र क्या का मेरे साथ निवास करों।'

क्क कुमारिने 'ही' कहतर सरमा हाथ पुनिके (see)

दे विचा । पारकारकारी कार्योग निर्मित अनुसार क्रान अली करके जरका करियक्क संस्कार किया। राहिके रूपन व्या सुन्दरी उपनी करकर मुस्कि पास गयी। अंश समय अले करियर क्रिया क्या और आधुरूत क्रीया पा पो थे। विचा कर क्या किया अनुस्त्रवेशी सुराय केल पति थी। अलकी क्षियो कारी और प्रकार-सा हो रहा था। उसे देसकर प्रमुखान प्रक्रियों क्या प्रस्तात हों। उन्होंने एक एक अलके स्था क्षियान क्रिया। समेपा होते ही यह मुन्दि क्षेत्री— क्षित्रवर ! आपने यो क्या यो थी, उसके अनुसार थे अवलके स्था क्ष क्ष्मी, अन्य आसा होनियों, में व्यापी है।'

व्या व्यापार का कारि कार है। वाले-आरे अपने दिए व्याप- को अपने विश्वको एका। वेट हैम्साओको पूर्व कर्मा हम बीकी एक प्रार निवास करेगा, उसे अहुवान वर्माय आवर्ष के व्यापार करेगे करी करी और पुनि अपने विश्व कर्मा किया करते हुए बहुत दुःवी है को। अपने अधिको अनुवार असे बन्धा आवा नाग से विश्व और असे अपनेको दिहा बनावर किर असेको गरिवा अनुवार विश्व । स्वाप् । यही बुद्धकारका परिवा है, को हुई कुछ विश्व । क्यापारकोने इसे बीकी आनेक क्रमको कुछा कुछ कर्म विश्व । स्वापारकोने इसे बीकी आनेक क्रमको विश्व कुछ कर्म विश्व । स्वापारकोने असे बीको सेकावा क्रम हुछ। विश्व कुछ कर्म विश्व । स्वापारकोने अस क्षेत्रके सेकावा क्रम हुछ। विश्व कुछ कर्म व्यापारकोने अस क्षेत्रके सेकावा क्रम हुछ।

#### समन्तपञ्चकतीर्ष (कुरुक्षेत्र) की महिमा तथा नास्दर्भीके कहनेसे बलदेवजीका भीम और दुर्योधनका युद्ध देखने जाना

क्लायशीने पूछा—पुनिवर्ते । प्रकृति कृति हत होतारे हरू वर्त्तो कलावा ?

व्यक्तिमें कहा—अस्त्रमधी ! पूर्वकारमें राज्य कृत कम वर्षा प्रतिदित काका इस करवात करते थे, अही दिवेदी कार है. इनमें कार्यने कार्यन कुम्मो इसका कार्यक कुम—'कार्य! कार्य इसना कहा प्रशास कर्यों कर रहे हैं? कार्यकी कर्यन जोतनेसे आवका क्या अधिकाय है ?' कुम्मो कार्य—'इन्द्र! को स्थेन इस क्षेत्रमें मोने के पुरुषकारोध स्थेनमें कार्यने!'

व्य क्यान सुनकर इसको हैंसी आ गयी। ये कुन्हाप कर्न तीट को। इससे राजॉर्व कुनका उत्ताद कर जाँ हुआ, वे व्यांकी करीन जोठनेमें तमे ही व्य को। इसने कई बार सम्बद्ध तम किया, किंतु वही कार पासर से इर बार सीट मये । कुराने भी करोर राजारके स्वाद हरा खेलन जाराना | विस्ता । तब इन्द्रने उनका मनोपान देवताओं से वह सुनावा । सुनवार देवता खेले— अगर सम्बन्ध हो दो राजविंद्यों नरहान हेकर राजी कर सरिवाते । नहीं तो नदि वे अपने अवकारे सरास हो वर्ष और मनुष्य का विके किन्द्र ही सार्वेगे उद्यों हरों को इन्द्रसीयोंका व्याध्वार वह हो साम्बन्ध ।'

• तम इसने कुलके कार सामार कार—'राम्प् ! जम आप कह न उठाएंगे, मेरी बात मानिये; में बावान देता है कि को मनुष्य अध्या वह वहाँ निराम्धर कार्यर या मुख्ये को सामार प्रतीर साम करेंगे, में कार्यक अध्यान की और कृतने 'सहार अव्यान' का्या इसकी आक्र कीव्यार की और इस्त की रामाची अञ्चली के माराव्यापूर्णक आर्थकों सारे गये।

करनायती । इस प्रकार सूच जोत्यते समर्थे कृतने इस क्षेत्रको जोता जा। पृथ्वीपर हरको कहळा बोह्री पर्वित रकत मही है। को प्रत्य वहाँ तर करेंने, ने क्रिक्टरके प्रक्रात इक्कालंकने कार्यने । को शुरू करेंचे करका दिना दूसर हाता मुना होकर करू देखा। यो सक वर्डा निकास करेने, उन्हें प्रमराजके राज्यमें नहीं जाना पहेला। नहीं राजा लोग नहीं आधार बहे-बड़े यह वहाँ हो सबस्य यह दस्ती बड़का होचे समानके रेजे को कार्ने स्टोब्ट संचाप तह होया। प्राप्तान हुन्तरे भी प्रत्योतको निभवने यह इपूर प्राप्त केला 🕯—'कुरबोकको कुन ची यदि इसलो स्कूबर किसी चलीके क्रवर पढ़ साथ हो वह उसे उसके सोकारे पहुँचती है। वहाँ बड़े-बड़े बेक्स, उत्तर अहरण क्या नूग आहे. गरेस की बड़ करके जान चरिन्द्रों कार के व्हों है। सरपूर्व्य रेजर कारनुकाम तथा रायक्रमे अस्य करके व्यवक्रकाके बीवका को स्वान है कही कुरुक्षेत्र एवं समयायक्षक दीवें है। इसे प्रमाणीयों कार नेदी भी महते हैं। यह क्षेत्र महत है पश्चित्र इसे करपालकारी है, हेक्कजोंने भी इलका सन्वान किया है। यह सभी सक्तोंसे सन्पन्न है; तक: वहाँ परे कू क्या श्राप्तिक अञ्चल वर्तिको जल होने ।" इस जन्दर सञ्चल इंग्रहे का का कही और जात, किया उसा जिल आहे. देवकाओंने इसका समर्थन किया वा ।

वैरात्यकानं कार्य है—शहरपर, कुरावेकका हार्य और नहीं कहा-सा दान करके नरस्तामधी एक सिम्ब अनामके निकट नदे। वहीं पहुँचकर उन्होंने कुमिनोसे पुल—'मा सुन्दर आसाम किसाबा है?' यह उन्होंने कहा— 'बरासाधी। पहले तो वहीं नगका किया तमस्त कर मुके हैं, जिस अक्षय करा देनेताले कहीं वह भी इस अक्षयकर हुए है। कारकारको है आवर्षका पासन करनेकारी एक सिद्ध अक्टबी की पार्ट संस्कृत कर कुठी है। यह शास्त्रिक सुनिकी पार्ट की है

व्यक्तिकोची वाच सुनवार वास्त्रात्वीने उन्हें प्रणाम विजया और दिवारसको समीप निवार का असाममें गये। व्यक्ति ज्ञान वीर्वका क्ष्मा। इसके व्यक्त कार्यकान सीर्वमें सावार उन्हेंने व्यक्ति स्वकः, जीवरत इसं परिवा वास्त्रों क्ष्मारे रूपायी वाच देववराओं और निरादेश्वर सर्वक वास्त्रों आधुरोंको कृत दिवा। वित एक उस नहीं निवास कार्यक वास्त्रात्वों और संन्यानिकोचे स्थाप विकासकार्यक परिवा आधारपर गये। व्यक्तिकार वास्त्रात्वे स्वयं क्ष्मारे वास्त्रात्वे स्थाप स्थाप वास्त्रात्वे स्थाप विकासकार्यक परिवा आधारपर शासर इस्त्रात्वाची वास्त्रा वास्त्रा वास्त्रात्वा वास्त्रात्वा वास्त्रा वास्त्रात्वा वास्त्रा वास्त्रात्वा वास्त्रा वास्त्रा वास्त्रात्वा वास्त्रा वास्त्रात्वा वास्त्रा वास्त्रा वास्त्रात्वा वास्त्रा वास्त्रात्वा वास्त्रात्वा

क्रमे समय देवर्गि नासको द्रम्य, समयक्ष्यु और मनोहर स्रोत्या क्षेत्र्य स्कृति अर्थ स्थाने देश स्वस्टानशी



बानका नाहे हो गये और उनका विकित्तर पूरान करके उनसे कौरखेंका सम्बन्धन पूजने लगे। जारवर्तने, जिस जकार कौरखेंका स्वानकार पूजने लगे। जारवर्तने, जिस जकार कौरखेंका स्वानकार पूजा जा, यह स्वान जो-का-स्वे सुरा कैया। एक करणकारोंने दुःस जकट करते हुए कहा---'क्योपन! उस केवको क्या अवस्था है स्था वहां आवे हुए सम्बन्धिको क्या दका हुई है ? यह सम संक्षेत्रके साथ मैं पहले

कररकोने बाह----धीकाबी हो पहले हो गारे गये। इनके बाद क्षेत्राचार्य, क्यून्स, कर्ण और उसके पूर भी परस्केत पहुँच क्ये । भूरिकार, सत्य तथा तृतरे महामार्ग राजधानेती की नहीं रहा हुई है। वे सब राजा और राजकुमार दुर्वेकनकी विकार्य हैंने कार्र प्राणेची वर्ति है पूर्व है। का चे मरनेरी वर्ष हैं, उनके ताल सुनिये। कुर्वेक्क्की केकरे कुम्बनार्व, कुल्बर्मा और अधुस्ताया—ने 🛊 और प्रवाद बीर क्षे हुए हैं। निजु कर काम भारे गये हो से को इस्ते को परमध्य कर गये । इस समय कुरोक्त कहा दुःसी हुव्य और भागकर हैगावन सरोवामें वा क्रिक । समावे सर्वेशलक करी स्रोधका का अस्ति गीवर से तह 🙉 (स्रोपे क्यास्त्रोप भगवान् श्रीकृष्णके साथ वहाँ का वहेंचे और उसे कहवी वहें सुनाबर बाह्य पहुँबाने रागे । बाह्य भी बरावान् ही सहस्र, प्रजेड राने क्यों रखता ? इस्कों एक रेक्ट का पक्र और धीनकेको **प्रत** मर्गमेन रिम्ने उनके पास पास्तर सक्त है पार । अब उन क्षेत्रेने करंगर युद्ध विकासात है, भी जान भी देशरेको

क्यूक में से भीत काले, मिल्ला न कीरिये । अपने होतें दिल्लोका कुट हेरियो ।

वैत्यवनस्थं वहते हि—नार्वविद्यं क्षत सुनकर कारण्याने उत्यो साथ अपने हुए साहार्योगी पूजा परके जो निक पर दिया और हंग्यानेको हारका परने पानेकी आहा है। किर थे, वहाँ शरकारीका स्रोत निकास हुआ है, उह जेह वर्णाविकारों सीथे जारे और तीर्वका महान् परस सुनकर क्षाण्योंके साथिर उत्ताको पहिलाका हुए जातर वर्णा करने क्षाण्या कार्या क्षाण्या निकास करने को हुए है, वालाय है, वह अपना वर्षा निकास समाव है? उत्तरों को पूज है, के और कार्य है? उत्तरश्रीका तेवन करने स्वीतंत्रमें पहित्रे हुए स्वीतंत्रमें परिवा है, वह संवारका कार्याक करनेवारों है। स्वारक्षीको कारण पहित्र हमानेका और वत्तर्वकारों पारोंके किने कोचा नहीं करते।'

कारणार, व्यांकार सरकारीकी और वेदारों हुए कारणपत्नी सुन्दर रक्तर स्थान हुए और सिम्बोका युद्ध देवानेक सिन्दे हैक कारणे कारकर हैकारण सरोवरके कारए का पहुँचे।

## बलरामजीकी सलाइसे सबका समन्तपञ्चकमें जाना तथा वहाँ भीम और दुर्योद्यनमें गदायुद्धका आरम्भ

वैशासकार्य करते हैं—सामा कार्यका । इस उत्तार होनेकारे का तुपुत कुसकी जा सुरकार वृत्तात्वों का हु:स हुआ और उन्होंने सहाकारे पुत्र —'सूह ! पतानुकारें सामा कार्यकारियों उत्तीवार देश मेरे पुत्र पीकारेजों सामा किस उत्तार पद्ध विस्ता ?'

मध्येते निताकी कृत्यु होती, का शतका ही कार्यकोकारे कारका?

'जाून अन्या' कामार मुकिद्विरने वारानायांची अञ्चल जीवार भी और में सम्बल्धकार क्षेत्रकों और कर दिये। जात कृष्टिया भी इसके जाून कही कहा से सम्बल्धिक साथ किन ही जान । उस समय सङ्गाला होने स्थार, नेरियों करा जर्म और स्ट्रामिटिक विकासके समूर्त दिसाई पर कर्या। उत्तरकार में इस्त लोग कुम्बोनकों सीमार्थ अन्ते, दिस्त पर्दाकारी और आगे क्षामार सरकारिक प्रदेशन किमारेसर विका क्षाम अन्य सीमीर्थ सुचै । वहीं कृष्टम अन्ते युद्धके दिस्ते कांद्र समया।

िन से पोनसेन समय महन्यत हमानें बड़ी नेस्ताहरी गात है पुर्श्वेत दिन्ते हैं जार है जरे। युवेंबन पी हिरमर टोप रणाने सेनेका फावम बॉर्फ पीनके सामने इट गया। दिन सेने वर्ष प्रतेयमें सरका एक-कुरोको हेलों सने। युवेंबनकी अपि साम हो पड़ि थी। जाने गीनसेनकी और देशका समये गया सेनाको और उन्हें स्वक्रमता। गीयने थी मान कैंगी करके कुर्वे करको स्थानकाश । केंग्रे ही प्रक्रेकों परे में। केनोको पहारे कररको हाते भी और केनों हो पर्यकर



पास्त्रम विकारिकारे थे। या समय से राज-राज्य और भारि-सुबैक्के सन्तन बान पक्षे है।

सहरता, प्रतिकारी केवार, सुक्रम और सञ्चारी क्या मीकुम्ब, सारवन को अपने प्रकृतिके क्रांत पढ़े हुए चुनिक्केरले कहा — 'नेरा चीनलेको स्तव को पुद्ध हक्त हुना है. कारके अन्य पान श्रेम पास ही बैठकर देशिये।' कुनेनामाहे इस राज्यों सबने परंद किया। किर क्या सोन के गये। बार्वे और एकसोब्री कवाने वेदी और बोबर्न कावन अस्तामकी विरायमान हुए; क्योंकि एक क्षेत्र करका सम्बद्ध कारों हैं।

रीतन्त्रकार्थं कार्रे हैं—यह अर्थन सुरकार कारकार्ध बार पुत्र हुन्द, रुपेने रहायते बहा—'हा । विराहत परिवास प्रथम प्रथम क्षेत्र है. जर काल-कालो निवास है । मेरा पर नगर असेडियो सेनावा पर्वाच्या वर, असे सम रामाओंका कृत्य करात्रक, स्वरी पृथ्वीच्य अधेके इत्रकेत बिका, बिद्ध अन्तर्ने का इस्तर हो कि नह इक्त्रों तेवार उसे केरत है युद्धने कान कहा होते प्रत्यको तिका और एक war or town \$ 7"

स्त्रको क्या-पहाराज ! सामके पुत्रने केनके सामन गर्थम करके यह पीमको युक्के रिजे सरकार, जा समय अनेको पर्यकर उत्तर होने रुपे। विकासको पहराहको

साथ अपेवी पारणे रागी। पारची पार्च पुरु हो गयी और चार्चे दिकालोंने क्रमंत्रार का नवा। कावाससे ेक्को सम्बन्धे का-कावर मिरने समी। मिना अध्ययकारे है सुर्वात पहल तम नवा। एक्ष्रे तक क्येके साथ कारी जेको सभी। पर्वतीके विकार का-स्टब्स समीनवर पड़ते तने । पुत्रवेदे करेने कर आ गरी । विलोक्त प्रदेश भी विकासी केल को भी केल्यारीकी की काराने स्ताबी

हर कर अवक्रकुरोंको देशकर चीमतेनरे कांत्रक कुरिक्कियों कहा—'चैका ! आयके हरूमों को करिए कारकार पुरा है, उसे अन्य निवास केंग्रेस । इस पारीको नक्को नारका इतके प्रारंके इक्के-कुक्के कर कर्तुना । सम क पुरः इतिनामुक्ते नहीं उनेक करने पानेना । इस दूसने मेरे विक्रीनेवर सांव प्रोत्स, योजनमें किय विकरता, स्थानायोग्रिये हे कारत पूर्व करीने रिल्क्स, अञ्चानकाने सामनेका ज्या किया, संपर्ध हैंसी आपी, हमसेनीका सर्वत होना क्या इसीके कारण हो क्यान हो अहात्यांत्र करे केंग्स को । साथ समया कराव कराकर में का द्वारोते क्षेत्रकार्थः व व्यक्तियाः इते व्यक्ति अस्ते अस्तिकारः स्थान कुमारीया । इस कुमारी मन्द्र पूरी ही गानी है। असे इसे कार-विकास कृति की नहीं विरोत्ता । अस्य का कुलकर्तक अपने पाना, सामी क्या आयोगे साथ क्षेत्रण सामोद निर्दे प्रमोक्ता हो अनुस् ("

या बाह्या नावराज्या श्रीकरेन गढा हे पुत्रके रिये क नवे और पूर्वाचनको पुस्ताने समे। तुर्वाचन्त्रे भी गह केंग्री की, यह देश जीमांग पूरा प्रोक्षर प्रस्ता केरे—'कुनेंकर । कारकारलें कार करवाने और हुने को का किने थे, जो अब का का से। हो परी सपारी रकारक क्रेक्सिकों को हेका पर्वेचाका, जानेत समय हुने और क्युनिने जिल्हार को एक चुनिहरके स्वय बस्तुना की—इन सम्बद्धा बहुत पुरस्तीया । सुर्ह्हीयो साथ है कि आर्थ है सामने विकासी है एक है। हैरे ही सारण विसास सीका, अव्यर्ज होता, कर्ण क्या करूप-वैसे कीर मारे करें। देरे पाई तथा और भी बहुत-से समित करलेक पहुँच गये। सबसे पहले बेरकी जान जनमनेबारत क्रमुनि और ब्रेप्सीको र:क केन्यात्व प्रातिकारों भी कर करत, अब हु है रह गया है. इस्तीयों हुई की इस कहते थेंगई कर आहेगा-इस्तें तरिक को स्वेद नहीं है।"

समय । भीकोको से व्यक्तें बढ़े जोरसे बढ़ी औ, इन्हें सुनकर अपने: पुत्रने केव्यूका क्यान दिवा-'पुत्रकेटर !

इतनी मेनी जनारनेसे जना होना ? जुन्कम स्थार्थ कर, आज तेस बुद्धका सारा हैसला मिटाने देश हैं। बुक्तेंननको तृ दूसरे साधारण स्वेगोके सम्यान पत सन्दार, जा हेरे-वैसे किसी भी अनुकारी सम्प्रदेशी नहीं इस्ता। में के इसे सीचान्य समझता है, मेरे मनने ज्ञान दिनेसे यह इच्छा की कि हेरे साथ पद्धवृद्ध होना, को आय देखाकारोंने उसे पूर्ण कर विच्या। अय महूद बहुबद्धनेसे कोई साथ नहीं है, पराक्षणके हुन्य अपनी साथीको साथ करके दिनार; विक्रम में कार !

कुर्वेषमध्ये का सुनकर प्रको अस्त्यी असंबर को और । स्टाकर कारतने पुद्ध करने सने ।

वीनमेन नहा ब्रांसर को बेन्से उसकी मोर हैं। वृत्तेंकारे की वर्तन करते हुए आने कहका उनका समना निजा। फिर् केंसे है इस्केंक्ट उन्ह एक-दूसोसे फिड़ नमें। नाहर-पर-जार होने रूपा। उस सनव नहानी कोर पहनेपर नाहर्यनाहै इसका करेकर आवास होती थी। दोनों सूनसे नहा उदे! उनके रकरहिता हार्यर किसे हुए समके पुनी-मेरी निश्तानी है। एके। १९६६-२०६६ होनों ही अब्द गरे, फिर दोनोने पहीचर विकास निजा। इसके बाद होनों ही करनी-समन्दी कहारी उतकार अस्ताने पुद्ध करने रुपे।

## भीम और दुर्वोचनका भर्यकर गदायुद्ध

स्त्राय कार्य हि—व्यास्त्रा ! ज्ञा केची व्यापनेने कर पृतः विर्मुत हुई तो दोनो-दी-दोनोके प्रकारका जनकर देखते हुए दैतरे कारणे रणे । दोनोकी गढ़ाई बनवक और कारके सम्बन्ध पर्मुक्त दिखानी देती थीं । चीनकेन तक सम्बन्ध प्रदानो पुत्राकत प्रदार करते, तक सम्बन्ध सम्बन्ध वर्णकर कारकी प्रदान पुत्राका गुंजाने पाती थीं । चा देखकर पूर्णकरको सहा विरम्भ होता था । चन्ना प्रकारके वैद्यो दिकाकर चारो और चन्नार समाने हुए पीन्यतेनकी तक सम्बन समूर्व कोन्य हो ची थीं ।

वेती क्य-कृतरेसे विकास अपनी-अपनी व्यावकार प्रथा करते थे। उद्य-सर्वके कीने व्यापना, व्याप केंद्र, स्कृतर अद्वार करना, करने आत्मको स्थापन को केंद्रमा अद्वार करना, उरने प्रथाको निकास कर देना, सरक्यानिक्षक एक क्याप्तर प्रथाको निकास कर देना, सरक्यानिक्षक एक क्याप्तर प्रथा होगा, प्राप्ते आते ही प्रकृते युद्ध केंद्रमा, आत्मके विको वारों और पूपना, प्रश्नाते पूपनेसे केंद्रमा, कीनेने क्याप्तर प्रश्ना का नवान, विकी पतिसे आवश्यार आत्मने क्याप, प्रस्ता का नवान, विकी पतिसे आवश्यार आत्मने क्याप, प्रस्ता क्याप और हा क्याप क्याफे क्याप केनेकी कें। केनों ही अद्वार करते कृत एक-वृत्तको क्याप केनेकी कें। केनों ही अद्वार करते कृत एक-वृत्तको क्याप केनेकी कोतिका करते थे। पुनाका केंग्स दिवाले कृत स्थान ग्राह्मकोकी कोट कर कैन्द्रों थे। इस अव्यार अस्ते हुन स्थान क्यानुस्तरे सर्वित सर्वकार पुना करते क्या का। दोनों ही अपने-अपने प्रस्तान करते थे। इस स्थानन क्यापन क्यापन का

और वाकेने पीनरोन । जब कन्य दुर्वीचनरे सीमोनसी सामोने गाह वारी, परंतु बीकोनने उसके आत्रको कुछ पी व निनाम पान्तको समान भवंकर गाह दुर्वाची और सर्र कुर्वेचनवर ने बारा । यह देख पुर्वेचनने भी अपनी पर्यवर गाह आधार पुन: चीकोनका अहर किया । गाह प्रहार करते सन्त्य की बीचका कुछ होना और आवन्ती कियागरियों कुटने

कृतिका को अपने कृत-व्योक्तका परिकार केर हुआ व्योक्तिको साधिक कोचा को संगा। वीमारेन की को केरते का कृतके एते। इस्त्रेडिये अवका कृत कृतिकर पुत्रके कई कैरी विश्वका हुआ कोचक कृत का। वीमो को कोचने कासर सामी नक्तर है अवका किया। केर्ने न्याओं कारानेसे क्यानक आसीन हुई, किर्माणि हुन्ने क्यों। वीमोनोर्ग को केरते नक्त केरते की, का को है कीचे निये, वहाँकी करते कहें। अते। का देश कुर्वेकाने कीमोनोर्ग मस्त्रकार नक्तक आहा किया किया कीयोग सन्तिक की क्याने नहीं—का एक अस्त्रक कार की।

उत्पक्षात् योगसेन्ने भी आवको पुष्पर अपनी बड़ी भागी बढ़ करवारी, सिन् कुर्वेचन पुन्तिने इनर-कार होकर तस आहरको बच्च चन्छ। इनसे खेगोंको बढ़ा अश्वार्य हुआ। अस अस्ने योगसेनको कार्यपर चन्न पारी, अस्त्री चोरसे मीमको मूर्का आ पन्नी और एक क्षणात्क तम् अस्ने वार्यव्यक्ष इस्त्राक्ष म बढ़। सिन् बोड़ी ही ऐसी उन्होंने अपनेको



सैनार विश्व और हुर्गानाओं कार्यों को बोस्ते गहा गारी। यह आहरों कानुस्त है सारवार कुर कर्नानार हुटरे देशवार के गण। जो इस अन्यानों देशकर सुक्रपेंगे इर्गानीर जी। एक हुर्गाना कोच्यों कार इस और पहल्च सर्वेकी पांचि कुंबार करने करने कार कर मीमरेगानी और इस देख देखा, बानो कर्ने कार कर करोगा। कार्यों फोसड़ी हुन्यार क्रान्यों किये जा हुन्यों पह रिले करायी और क्रेड़ा। कहा पहुँच्यार करने पीनके करायार कहाना कार्या किया। किनु पांच पर्वेको इस्ता अविकास भागते करने हो, इस आहरका कार्य कोई अवस्था

त्रहरूपर, उन्होंने भी हुनोंकाके असर अपनी सोहाकों गरामा उद्धार मिला। असकी चोरने असको पुल्पी नल-नल बीरने हो गर्ना। या व्योचन हुआ पृज्यीयर का पहा। यह देश गरामा श्रूषेंने भरवार सिंहनाद करने लगे। हुआ हो देशों कर बुगोंकाको होता हुआ तो यह सामाध्य दक्षा हो गर्मा और एक सुनिक्षिण कोजाबी पानि सम्मुचिने निवानने समा। पूसरे-पूसरे मौका प्रमार असने साहे हुए चीरपरेनकों गरासे पारा। उसकी चोट सामार उसको सारा इस्टि दिनिस्ट हो नाम और वे करती चूमने लगे। चीरपको निरामान दुनोंका साहने समा। उसकी नामों आवादसे चीरपको परिनाह दुनोंका विक्कों वह गर्न थे। उनकी ऐसी शत्सता देश पाणानीकों तक पान हुन्छ। जिल्ल एक ही बुदूरिने चीनको चेतान पुरः और उनकी। उन्होंने चूनले चीने हुद उनके युवाको चेतान और तैने चारण चरके जीनी कोसी। तेस वास्त्रूचेक कारोको केन्यास्त्रका से पाई हो गुरे।

ज्य केन्स्रेड पुत्रको सहस्य देश अञ्चले भगवान् अंक्ष्मको स्था—'क्ष्मांद । इन केन्द्रं संदोने अन्त क्ष्मको स्था—'क्ष्मांद । इन केन्द्रं संदोने अन्त स्थानी स्थाने ।' क्षमक्ष संदोन—'दित्सा से इन सेन्स्रेड स्थानी स्थिते हैं, सिंगू सोन्संत सहन्त शिक्षा है और सम्बद्ध स्थान स्थाने होंका सहन्त है। यो सीन्स्रेत सर्वा का अन्ति सो सी बात सम्बद्ध हरोने सुद्धे स्थान का अन्ति सो है के 'में पुत्रते तक माराहर हुनीक्त्मती स्थि तोन् अर्जुला।' साथ में का सीद्यास्त



कारण करें। अर्थुन | वै किर की कह को किया नहीं क सकता कि वर्गछनके कारण इसकोगोरा पुन: अब आ म्यूब्स है। म्यूछ अकत करके कीम आदि कौरव-वीरोको करकर हो किया और करवरी प्राप्ति कुई बी, सिट्स वृत्तिक्षिण का विकासको किरते संदेशों कार दिवा है। एकारी है कर-बीतसे सबकी हार-मीतकों कुई समाबार इस्तेने की इस मर्कवर बुद्धकों पूर्वका और बना हारा, का इस्ती नहीं

भारी पूर्वता है। दुर्वोक्त बुद्धावी करन कारत है, चीर है और | पहें, काके सामने इन्ह की नहीं ठहर सकते।' दुर्वोकावी सेक एक निक्रमार बटा हुआ है। इस निकामें सुक्रान्यनीका कहा ै करें। क्ये कर्या थी, न्यू पराधा हो जन। वा और अन राज्य विश्वनकर पहुँचे हुए होते हैं। (तम समन में पुन्तुते भी नहीं | है कि 'कही कुर्वेशन हमलोगोंके बीते हुए राजको किर न इस्ते) को जीवजब्दी आरब प्रोदेशका स्वाहरमूर्वक पुरुषे चार | व्रतिना से ।'

क्षात एक प्रतिक सुर्वाने आहा है, किएने नैतिका क्या करा , विश्वतेकी आधा न होनेके कारण यह करने कार है, ये उसका भागार्थ तुन्दे सुना रहा है—'बुक्ने करनेसे क्ये | काम जबका का, इसीरिक्ने कामकर केहारेने किया था।' हुए प्रश्न गरी प्राप्त सकानेके सिने पान कर्ण और किर पुर्वके | हेड़े प्राप्त प्रमुख्ये फॉन सुदिव्यन, प्राप्त पुरव्के सिन्ने रीओ लीरें तो उनसे उस्ते खुना चाहिके; क्योंकि में एक जानगिता करेगा ? ताव हो पूछे चह भी संदेह होने लगा

### भीपके प्रहारसे दुर्योगनकी जंघाओंकर टूटना, भीपद्वारा दुर्योगनका तिरस्कार और युधिहिरका विलाप

राज्य बढ़ते हैं—सम्बद्ध श्रीकृत्यकी यह बाद कुरकर अर्थन चौपरंतके देवले-देवले अच्छी वाणी वंदा होवले राने । भीमने प्रमात प्रवेश समझ तिमा । मिन वे माह सैन्ने अनेको प्रकारके वैद्यो कारते हुए राजपुरिन्ने निकरने राजे। De gree triged warm blite fieb it gell-mit eine मानगिरो एत ये है। इसी तद आवना कु। ये मेनको मार इस्लेची इक्से को कृतिंद तथ एक रक्षा को विकारक था। हेनों है कहर और अवस्ते प्रचित्र हो अपने मनेका गार्थ कुरते हुए आधानो बैचक शाय का क्रास्क भाको थे। यस अस्त्री महादे हतराओं से सामग्री सम्त्री विकास स्थाप थी। और उस्ते प्राथमध्ये समय पर्वकः भागमा होती थी। त्याने-त्याने कर कर पाने में होने ही क्कीचर विकास करते और जिल नहा उठावान क्या-कारेले विकास करते थे ।

गराके प्रवंकर प्रकारते खेनोंके हारीर कर्वर हो खे थे, केनो हो सुनये सभावत थे। अहे देशका देख कन पहल वा वाले विमालकर क्रकते से कुछ कुले कुए हो। अर्जुली भीगको से इसारा विका, जो इसेंशन भी कुछ-पुरू सन्दर वर्षा था: इसलिये वह सहसा उनके पाससे दर हट गया। जब का निवाद का, उसी तकन चीनने को केन्स्रे अल्प पड़ भरवादी: किंद्र का अपने स्थानमें प्रकारक हट पना, प्रात्तीको कह उसे न सरावार सर्वोत्तवा का पहिं। इस उद्यान असे अहारको बच्चका दुर्वोकको भीतवर उस्ते बद्धका कर किया । चीमसेनको गहरी चोट लग्डे । उनके सरीरसे सुनकी करा बह कारी और वे पृथ्विक-से हो क्ये । किंतु रूकेंकमधे उन्हरी मुर्खाका पता न करा: क्येंकि चीम सरका बेदन सहकर क्रम चीन्मोन प्रकार करेंगे, इसीसिन्से कार्य क्रमें क्रमर पुर: प्राप्त को विका, वह अपने क्यानको विकाले वह गया।

बोदी ही देशमें क्या मीन्सोन पूरी तत्व दीनार रावे तो उन्होंने पूर्वोक्तक को केको अकायक विकार जो कोयबे परवार आने हैक क्वींकाने पुर: इनके आहत्ती जार्थ करनेका निवार किया और अवस्थान गामक द्वीर केल चीनको बोचेने इसलेके रिन्टे क्रम काल पाना पाछ । बीकोन उसका सरोपान तह को थे; इसकिये सिक्के प्रयान नर्वाच काले. अले. कार पूर गर्दे । अन बह कृतन ही काहत का कि चीवने अल्बी जीवॉपर बड़े बेगले गढ़ा जारी। इस यक्र-सर्राप्त प्रकृषे अवस्थे कुम्बर्ग क्षेत्रों स्त्री सेड् इस्सें और बंद अर्थकर करून द्वारा क्यीनवर दिन पहरे।

के एक दिन सन्दर्भ राजाओंका राजा था, का जीरवर क्वोंकाके निस्ते हैं को कोरकी जीवी करते, कियारी क्वेंको लगी । कुम्बदी कर्या कुरू हो गमी तथा बहाँ और पर्वतोसहित कारी पुरुषी पानि कही। श्रुपके साथ रक्तवरी भी बर्चा होने सनी। अन्यत्रको पत्नी, राजसी तथा विश्वाचीकः कोरसकर कुल्पी के रूप। बहुत-ने इन्द-वैशेषके प्रवेषर कराय नक्षने रूने। कुनों और करवजीने सुर उपनाने लगा। श्रीरची अपने अनुसम्बद्धी और बहुने असी। विकासि पुरस्तीका और पुरुषेने क्रिकेका-सा भाग आ गया। इस तस्तु नाना प्रवासके अनुभूष जल्या दिलाओं केने सने। देखता, क्यार्थ, आवार्थ, सिन्दु तथा चारण त्येग आवके दोनों पर्रोके अर्फुर संख्याची कर्ता करते हुए नहींसे आने वे नहीं करे को ।

रहर करते है—सहारात । आपके पुत्रको इस प्रकार भी अपने प्रतिस्को हेम्बले हुए थे। रूपोंबनने बही संस्कृत कि । पुण्यित पहा हेस पाण्याचे तथा सोपकोको बही प्रतासता हुं। तरान्तर, जाये वीवसेन तुर्वेक्तके कह ककर केले— 'आं पूर्व ! काले भरी समाने हुने वो एकतका जैन्द्रीकी हैरी द्वाची थी और इक्तकेगोको केल कहकर अवकारत किया या, जा अस्तासका कल जाव चेच से।' वो काकर असेने क्ये पैरसे तुर्वोक्तक पुकुटको दुक्ता दिवा और आके सिरस्के भी पैरसे क्षाका राध्य क्षाय । इसके क्षाद को कुछ कहा, वह की सुनिके—'इसलोगोने प्रमुखेको क्षानेके सिर्व इस-कारते काम नहीं सिका, आगमे क्षानेकी केलिक नहीं की, व कुल सेरस, व और कोई कोका-कही की; केला अपने काक्तकों भरेसे कुमनोको कास्ता है।'

देश काकर पीननेन जून हैने; किर जुनिहर, बीकृत्य, अर्जुन, स्मृत्य, स्वकंग तक सुक्रकरियोर विदे-विदे बोर्ड— 'आयरोग देशके हैं मा? को स्वकंश-अवकंशने श्रीवरिको स्थानोद पीनर करोट स्थाने हैं और विद्वारित को कंधी बारनेको अवस किया था, के कृत्यकृत सभी कुर प्रवक्तिके बारने मारे गर्ने : यह बुक्कुआरोकी क्षयक्त्रका करा है : विश्वरित होरे केच्छीन क्षराके सम्बद्ध करावित हमें जुनेकर कहा सा, जर सम्बद्धी रोजको उत्तर सम्बद्धिकारिक केचोद कर सार विश्व गर्ना !'

प्रतिक बाद चीरले हरीकर्यक कंत्रेयर रखी क्रूब रखा है। ही और को क्यूटी ब्यूबर कु: अलं प्रकारके करने बले पैरते कृतना । सिंह उनके इस कर्मकारे क्यांच्या क्रीकारेने प्राप्त नहीं मिल्या। इस समय धर्मराज चुनिक्किने भी करते कहा-'मैवा चीम । तुल्ले अपने मैचक बहान से रेन्स, सुभागी प्रतिका भी पूरी हो गयी: जब तो करन हो करने । हुवीयनके नासकको पैरसे न हुकराओ, वर्गका करवान न करो । एक विश् व्या नगरह अर्जुबीको हेन्स्य कानी चा, कौरवॉका राज क और सम्मा कुटुकी यह है; अतः पैरते इसका रुखी नहीं करना काहिये। इसके धर्म और रूपी नारे गबे, सेना भी नष्ट हो नवी और क्रमं भी बुद्धमें माठ क्या; अतः यह राव प्रकारके फ्रेक्निय है, क्षानक पता है, हुननही **ई**सी नहीं उदानी चाहिये। सोको तो, इसकी संवाने नह हो गर्मी; अब इसे विष्यु देनेताला भी कोई न स्ता । प्रत्येत विका अपना भाई ही दो है, क्या इसके सम्ब का कर्तन अंकर का ? इसे पैरोसे हकातकर तुमने नाम नहीं किया है। भीपसेन । तुन्हें हो लोग व्यक्तिक बतादे हैं, बिर हुए क्यो राजका अपनान करते हे ?"

भीमरोनसे हेस बद्धार युविद्विर तुर्वोक्तके निवट को

और बहुत दुन्त प्रकट करते हुए गर्दन कान्त्रसे



केरो-'शार । तुन प्रमानेपोज सरेव न करना, अपने हिन्दे ची क्रोक न करना; क्लेंकि सब प्राणिनोक्को अपने पूर्वजन्तरे किने हुए कार्येका है। पर्वकर मीनका मोनना पहला है। हुनने अपने ही अपराचने हात्या कहा संबद्ध मोल रिम्बा है। त्येत्र, ब्द, और नृतंत्रके कारण मित्रो, साम्बे, कामाओ, कुर्वे तक चैत्रोको मरकाकर असमें तुम प्रारं भी मौतके मुक्तमें स महें। पुन्तरे ही अन्तरको हमें तुन्तरे महरकी महर्चे सम अन्य कुटन्स्टिका कर करना पहा 🕯 । वास्तवमे प्रस्काको कोई द्यार नहीं समाता। पैना १ तुन्हें अपने आत्माहे कामानके विकास होया नहीं बारत स्वद्येते, पुन्हरी पृत्र् इसमी करन 📷 है, जिल्ली कुले स्वेन इच्छा करते हैं। इस रत्या से इस ही रवेग सब तरहरी हरेकके बोग्य हो गये; क्वोंकि अब इमें अपने चारे चन्द्रओंके विकेशने को दुःसके साम जीवन विकास होता । यह ध्वतूची, पुत्रों और पीत्रोकी निकल कियाँ कोकने हुनी हुई इसारे स्वयने अज़रेगी, उस समय इस कैसे कमडी और देश समेजे ? रावन् । दुधने से अनेको सर्गाची रहा हो है, निकाय ही तुन्हें सर्गये स्थान निक्षेत्रम् । '

च्या कड़कर वर्णपुत्र चुनिश्चिर क्षेत्रको आसूर हो गये और राजी-राजी प्रांसें मस्ते हुए देशक जिल्हाय कस्ते स्ते १

# क्रोधमें घरे हुए बलरायको श्रीकृष्णका समझाना और युधिहिरके साथ श्रीकृष्णकी राषा भीमसेनकी बातबीत

मरा परा, का भाग सरकारीने वस कह ? वे से गरापुर्वा निर्माण है. यह अन्याप देशका सुध र भी होते; अतः क्यूंने यदि कुछ किया है में समाने ।

क्ष्मणे सह-व्याचन । भीवतेली जानके पूछली मेनिने जारे विक—च्यु देश व्यावती वाराजवीयो वह स्रोम दुशा। उन्होंने सम राजाओंको बीच अनन सुध उन्ह क्राबर वर्गकर आरोगम् करो हुए बाह—''बीकोन । हुने विकास है। निवास है।। यह अन्यत्तेत्रको कर है कि इस सुन्ते भी गरिको गोवेच अपूर्ण प्रकृत उत्तर केना पना। आब चीपने बेला अन्याय किया है, यह मध्युक्षने पहले कानी नहीं देशा गया। प्राथमें न्यू निर्मय कर दिया है कि 'मध्युद्धमें नामिते सेथे नहीं आहर करना चाहेने (' किन्तु मह तो पूर्व है, फावको विल्कुल को बारवा, प्रतिकिर कामान्य कार्रिय कारता है।"

इसके पाए उन्होंने दुर्जननाथी और बुद्देगार विका, अरबी हता देश क्यारी अर्थि क्रोमचे साल क्रे कर्ती; ने फिर सहवे समे—'कृत्य | कुर्वेचन केरे प्रमान कान्त्रम् है.



कुरराहरे हुमा—सङ्ग्रस्य । याव राजा हुनोयन अरकांकृतिक | इसको क्रायानक करनेकारत कोई खेळा नहीं है। आस अन्यान प्रत्येक केवल प्रतिवन के नहीं निराधा पंचा है, मेरा भी अन्यान विकार एक है। क्रारमानाओं कुर्वनात देखका करण देनेकारेका जैराजार किया या यह है।' यह प्रश्नवर में जनव प्रत कारको कार्य पीन्होनको और वैदे। यह देख श्रीकृत्यने यहे कियते और यहे प्रकार्य साथ अपने हेनी कुमाओं सरकार्यांको प्रवाह दिल्या और उर्वे हाला करो। क्ष कार-"मैंस ! अपने कारि कः जनगरकी हैती \$—अपनी पृद्धि और प्रमुखी स्राप्ति, अपने निकासी पृद्धि और प्रमुखे निकासी प्राप्ति कथा अपने निकाद निकासी पृथ्वि और wait finds final wit : with in final un finals क्या का केरते हैं, के काने कालि होती है हैं। जान कानोl'une probble services for & 4 four पुरावर्तक करेना राज्येको है, पुरावक समूच होनेते कारण पुर प्रस्तारे अन्ते हैं। सनुआंधे काकपूर्ण कर्तक करके को हुई वहा यह पहुँचया है। अवस्थाने पीको यह प्रदेश को से कि 'रे क्यारे पहले हर्गे क्यारे की सेव क्राफ़ेश ।' प्रतिका-सामा श्रामिकोर त्रिको वर्ग है और प्रीपने जीका पाल किया है। यहर्गि मीको यी ह्रोबनको यह कार किया का कि 'श्रीन अन्तरी शक्तों हेरी यदि तोड क्रांतन्त्र ।' इस प्रकार नहीं क्षेत्रकार की, मैं भीनन्त्रा इसमें मोर्ड केर को देशका । कुलोरचे अस्य अस्या प्रदेश काम क्रीवियो । कुल और व्यक्ति जो पावजीय प्राप इससेगीया चीन सम्बन्ध भी है। विकासी में है हो। अतः प्रस्की स्वतिमें हो इन्स्योनोधी भी उस्ती है। इस्तीनो साथ ऋत्य न परिवर्ष ।"

> ऑक्ट्रामकी कर सुरक्तर वर्षको नारनेवाले बलकेवरीने का—'सर्वकारि वर्णका अच्छी तत्त्व आवरण क्रिया है. किंद्र यह अर्थ और काय-इन से प्रश्लाभेंसे संकृतित हो जाता है। अरुपन्त एके भीचा। अर्थ और अधिनक अरुपनिक रक्तरेवालेका कार-में क्षेत्रों है सर्वको हाने चूंसले हैं। से प्रतुष कारणे वर्ष और अनेको, अनेसे वर्ष और कापको तथा कांते काम और अर्थको हानि न पर्देशकर करें, अर्थ तथा कार-इन केनोका सेवर करता है, बड़ी अरवल शुलका मानी होता है। पीन्सोरने तो वर्गको हाने पहुँचाकर इन रनको निका कर करन है।

क्षेत्रणने कहा-नेवा । संसारके सब त्येन आयव्ये

क्रोधरद्वित और क्रथांका सम्बाते हैं; इसरिजे प्राप्त हो बहुने, क्रोध न बोलिजे। समझ रिजिजे कि करुपुत जा गणा। बीनकी प्रतिक्राओं भी पुरुष न दैनिजे। प्राप्तानंकों वेर और प्रतिक्राओं बहुनसे मुक्त होने दीजिजे।

प्रविद्यारं वक्ष-पूरण ! शीमतेनने क्रोवर्ध करकर जे इसके पक्षकारे पैरोके हकरावा है, व्या मुझे वी अवस वही समा है। अपने कुराबा संक्षा के कारेने में शुक्र वहीं हैं। नियु क्या कर्त । क्याहके कुमेंने सक ही हमें अपने क्या-कारका क्यार क्याब, बट्ट क्या सुनाने और कारका दिखा; बीमने-के क्याकों इन इस कारोके दिनों कहा दु-का का, बड़ी संक्रकार की उनके इस कारकार क्रोड़ा की है।

वर्गरामां ऐसा व्यक्तिर सीमानाने यह व्यक्ति व्यक्ति नेवार, ऐसा ही सही।' समार्थ प्राप्ति पुत्रपति व्यक्ति क्षेत्रपति व्यक्ति क्ष्रपति व्यक्ति प्राप्ति क्ष्रपति व्यक्ति व्यक्ति क्ष्रियोत व्यक्ति क्ष्रपति क्

पुष्पियों गांग-र्शियाच्याचे दात है जि हाता दुर्गोत्तक बारा गांध और आवस्तके केच्या जना है गया। शीवृत्याची सरकार्ध स्मृतस्य काच्यार हात्मे पुष्पियर निवाद कार्यो । जन्म हुना के तुम कार्यक कार्यस्य कार्य हो गर्थ और अपन्य क्रोच भी हुन्ये कार्य कर रिमा । क्रमु गरा और सुनारी निवाद हुई, यह विकार साम्यक्ती सात है ।

---

## पाण्डवीका दुर्वोधनके शिविरमें आकर उसपर अधिकार करना, अर्जुनके रचका दाह

कृतरकृते पूक्त-स्थान ! कृतीकनको सीमारेनके उत्तर मारा तथा देश पान्यको और सुदार्थीन कमा किया ?

स्वानने कहा—-वहारान । आको पुत्रके को क्रिकेट स्वानने कहा—-वहारान । आको पुत्रके को क्रिकेट स्वानन हुं। वे अपने कुछ क्राल-क्रालकर सिक्रम करने समे किसीने बन्न टेकरा से कोई हुङ्क कको रूपा। किसी-किसीने किकेश गीरमा हुङ किया। क्यूनेर से ईसने और संस्कृत कमे । कुछ स्कृत सीमानेस्त कांकार के क्यूने समे—'तुर्वोकरने महाकुद्धने कहा परिश्रम किया का, काको सारकर आपने कुछ कार पराक्रम कर हिस्सा । क्यून सारकर आपने कुछ कार पराक्रम कर हिस्सा । क्यून परिवास करते हुए सुरवीर कुर्वोकनको क्यूनको स्वानको स्वान करते दुर्वोकनका क्या करवेक करना हुए कुर्वोकर स्वान करके दुर्वोकनका क्या करवेक करना हुए कुर्वोकर स्वान करके दुर्वोकनका क्या करवेक करना हुए कुर्वोकर

इस प्रकार कार्न-वर्ष हुए असन्ये इकाहे हेका वीकांग्या प्रशंस कर है थे। 'स्वास्त और प्राचन के प्रश्न होयर उनके सम्बन्धे असीविक बार्त पूरा के थे। उस समय वाकार श्रीकृत्यते कहा—'रासाओ । यो हुए क्यूबो नामी कठोर करतेते किर मारत अध्या की है। या करी के उसी समय मार पुत्रत का, जब सम्बन्धे विस्ताहरित है सोको बंधा और करियोधी स्वाच्या स्थान विस्ताहरित है सोको बंधा और करियोधी स्वाच्या स्थान विद्या स्थानको, कृत्याको, पीचा और स्वाचीने अनेको वर अनुवेश किया; के की इसने प्राच्याचेको अस्ति देवा वर्षा क्यूबी है। अस्ति के स्थान वह है। इसे समस्याधी वर्षा क्यूबी है। करिये सम्बन्ध के है। इसे समस्याधी वर्षा क्यूबी के कोई सम्बन्ध की हम स्थान स्थाप है। वर्षा क्यूबी के कोई समस्य की है। सम्बन्धि स्थाप है।

ऑक्ट्रम्म का स्वयंत स्व गरेत अपने-अपने एड्रा

क्याते हर क्रिकिरकी और चार किये। आने-आने पानका के, 1 बार जन्म ? नहीं की सुनने चीना हो तो इसका कारण काके पीवे सामन्ति, पहुच्छा, विकायो, वैनवेके पुर स्था क्राने-कारे बहुबर केना कर को ने। एक क्रेस काने क्रुवेंचनकी क्रावनीयें क्ले, को स्टब्के न क्रेनेसे लेकीन हिशानी दे भी भी। वहाँ कुछ को नकी और वेशने के पूर् है। बाब्दे होन स्थितिक प्राप्त स्थापनी करे को है। धारानेके प्रोतनेस जानी देवने हुवेंकके सेवक हम कोड़े मेरे करड़े पहने उपरिक्षा हुए : चन्क्रक भी हुर्गीकरकी क्रमानि पायर अपने-अपने स्वीते कर गर्ने। अपने शीक्षणाने अर्जुनके सक्क-'पूज कर्ण व्यवस्थार अर्थने अञ्चल रारकार और बहुरकों भी रचने कार ती, इसके कर में कार्यन्त । ऐसा कार्यने हें हुन्हारी नान्ध्रं है।"

अर्थुले मेता है फिला। फिर परमान्ते केहोजी बागबोर क्षेत्र में और क्षत्रे में रक्ष्में मार ब्हे। रतक



ज्ञाणियोंके ईक्ट श्रीकृष्णके उत्तरते हैं। उस रक्षण केल हुआ दिव्य करि अनार्यन से एक: पिर व्य विकास रह, के येणावार्य और कर्मके विकासोंसे दन्त-सा 🛊 🛊 कुछ 🖝 विना साग लगाने ही प्रन्यतित है का : काले कारे क्रमारण, जुआ, जुरी, सगाम और खेंद्रे—स्ट क्लकर काक हो गर्ने । यह राजकी देरी होका क्लीवर विकार कवा । मह रेस पाणवीको सह अहत्वर्ग हुआ। अर्थको हुन बोइकर प्रवानके परणोमें प्रवास करके पुत्र-'श्रेकिए ! मह पन आहर्पनाय पटन हे गये ? एकाएद २७ वर्षे

कारको ।'

अनुमाने क<del>ा अर्था</del>न । स्वाहीने पाना जवारके अवोंके अन्यक्ती पह रव से पहले हैं यक कुछ ना, निर्फ मेरे बेटे खोनेक कारण भाग नहीं हुआ था। का तुन्हारा साथ कार पूर्व हे एक है, का अधी-अधी हम सबसे मैंने होड़ा है: इस्टेरिको पह अब अपर दुश्त है। यो से प्रदासके रेपाने पर बहरे हैं एक है हमा है।

इसके कर कावानी क्रिक्ट पुरुवस्तार राजा वृतिवृत्ति प्राप्ते समाय और प्रमु—'कृषीनका | तारके प्रदू पठवा हुए और तारको निवन हां-या को क्षेप्राच्यके कार है। अर्जुन, चीन, न्यूकर, स्क्रुवेव राज्य कर्ष अस्य इस विशाहकारी संख्याचे कुक्तम्यूर्वक क्या गरी--व्य और भी सुरक्षियों बात है। अब आवको आने क्या करना है, हराया प्रीत निर्मात प्रतिनित्ते । अञ्चलको सम्ब में अर्जुनके क्षाव आपके कार आया था, उस समय आपने युक्ते मधुरके हेका पाए पा—'कृष्य । अर्थुन तुम्हारा पाई और नित्र है, हते हर एक अरकती कमन है का देन मेरे 'ही काओ अन्तरको अञ्चल कोच्यार को थी। आनके अन्न अर्जुकको मेर्न हर क्याने एक को है, यह भाउनीतरित निकारी होबार इस केम्बक्रकरी संस्थाने पुरस्कात या गया।"

श्रीकृष्णकी बाद सुरुक्त धर्मतक पुचित्रितको रोजास से अल्ब, के ब्यूने रुगे--'क्याईव । होता और कार्नेन सिल स्थानका प्रयोग किया था. को जायके रिम्ब करत सीव त्व स्थात वा 7 कावारी हुए भी जाना सामन नहीं कर लकते थे। उपन्यति ही कुमाने संवाहक परान्त हुए हैं। अर्थनो इस व्यानमध्ये क्षणे योह वही विकासी—बंद धी जानके ही अनुष्यका पता है। आपके हारा अनेकी बार इच्छे कार्य हैदा हुए हैं। इन्द्राक्यों महर्ति कारले मुहस्से पहले है कह या-व्या को है, व्या शक्त है, और सह singurer (), mill former () (\*

क्यान्त्रम्, उन राजी औरोने आपको कृत्याने कृतका क्रमान, क्रांबी हेरी तथा चंद्रत-करपर अधिकार कर निका । क्रीडी, सोना, मोती, गन्दि, अस्त्रे-अस्त्रे आधून्य, अविक कन्यत, मृतकां तथा राज्यके बहुत-से सामान उसके हर रूपे। सब है आरंग्ड इस-इसियोको भी उन्होंने क्यो क्यीन किया। महाराज । उस समय अस्पेत अक्षय बनका चेवन ककर गायक सुत्रीके गरे उक्त पहे, विजन्त्यारियाँ करने लगे। इसके बाद अपने बह्वनौकी कोरमार ने नहीं विश्वय करने तथे। विश्वयक्षे समय

महा—'सम्बर्ध राज्ये हम्प्रेगोधो । स्वय अपने पहुलके तिले सामग्रीके महार है पूर्व माहिते।' 'सहर अवहा' स्वकृत कामन क्षेत्रमा जिल्हा काले सह—'पानन (एक का प्रोपने भरी 🗃 और राजाविको राज्य अवन्येते पाल निवास को। पानाचे वेकोचो पान पारोडे रिजे सारची प्रीतनाहर क्योंने पर्य परिवा कोक्सी नहेंचे किस्ते का का पान करिये, को तरिश कर पहल है।"

का सम्ब एक मुनिहिले स्वयोधित वर्तमका

#### भगवान् कृष्णका इस्तिनापुर जाना और धृतराष्ट्र तथा गान्धारीको सान्त्वना देकर वापस आना

मनवान श्रीकृत्यको मन्त्राचिक कर करे केल ? यह पहले में लिए करानेके प्रेल क्रीतांके पाल नमें में, अह प्रथम के अन्त्री हका पूर्व हो जो, निर्माद करण पर पुर इक्ता अब का सारे केन्द्र बारे गये, क्रॉक्स निर पक सीर पाणान सञ्चीन हो गर्ने, तम देशी वर्षा आवर्षकार का पढ़ी, निराने दिने परावान् कुलाओं किन पढ़ी पाय पक्षा । मुझे के देशर पान पहला है, इसमें बोर्ड बोर्ड-मोक मारम नहीं होगा।

रीलकार्यने का—एका । तुन्ने के उक्त विका है, मा क्रीमा ही है; में इसकी क्याने कारण करना है, क्यों र धीपतेली गरायुक्ते नियमका सरावान करके महत्तारी कृतिकाले जात का—व्य देशका बालक कृतिकाले बंध भर हुन। श्लेने सेचा 'हरोनची ताव परवाई मही तर्गालों हैं, उन्होंने स्रोक्तमर केर करका की है। के बार्वे से रॉमी लोकोको परन का एकडी है, इस्तीनो समर्थ कारे को हो साम करना माहिने। अन्यक उन्हरी रोके प्रक का है असे पुरस्त अवास्त्रुकेत कर कृति से हरेकी भीरकर अपने मनते अति प्रकट करके को कम कर क्रतेगी।' या सर सोच-विवास्त्रस् सर्वत्रस्थे श्रीकृत्यसे क्का-'भोतिन्द ! अन्यवी ही क्यामे हमने सन्दर्शक राज्य पाया है, अपने पुरुषार्थमें हो इस उसे पानेकी बाब भी नहीं सोच सकते थे। आरमे ही सर्वाध क्षम्बर इन्यरी सहायह और रहा की है। यह अन्य इस चुक्रों अर्जुनके कर्नकर व होते, से व प्रयम-केरी बोरक-सेक्को जीतका उसके पार कैसे पहेंच पाते? इसकोगॉके रिको आपने सीन कीन-सा कह नहीं उदाया? पहाओंके Spr. परिकेंकी बार, सक्ति, पिक्सिक, सेयर और करसोकी बोटे सही तथा एकुऑबर्ड करोर करें भी सुनी। बिह द्योंकाके परे स्टेंसे क्ष्य क्रक्त हो क्या हा प्रकार

बरनेवरने पूज-विकास । वर्गचन प्रविद्यार । अंदिक प्रूपेने प्रूप का है। ज्यान । वर, अन राजारीके क्षेत्रक से कवल कीविके के तिल कठोर स्थानमें र्वाच्या क्षेत्रीक व्यापन पूर्वक हो पार्च है, अपने पुत्र-वैजीवक का काकर निक्रम है हो पान कर करेगी। उत्तरिये आ कृतक अने अल्ला करना अवस्तवक है। पुरुषेत्रम । जन से पुर्णक कोवाने नीवित के सर्वकार स्थापन स्थाप अपिते पार्यक देवोचे, का काम अपने दिया कृत्य और उनकी और भी कालेका पाइक करेगा ? अतः को पाना करनेके रिल्ने कुछ पता अस्तरका पढ़ी पारत अस्ति पारतून केता है। अव्यक्ति प्रत पाल्या अनुस्ति होता है और आल्हेने जाना। जार जान ही पंजाने पालकोंने पांच पालकेरिया का काम राजधेनो होता हाथ का कोंगे। साता राज्यों से क्षेत्र होते। अल्पारे पान्युओंक हिल्ली ब्रीते हा एवं ज्यान करते पान्यरीका क्षेत्र वाच कर be whè i'

कारामधी कर कुरबर कावान कुम्मी कुरबक्ते mom abr uit en bart mebalt auge ib : Doubt बड़ी पुर्वीसे रच समाचा और को जोतकर सम्बान्ती लेक्को सा कक्क किन्छ। बनकन् अस्य समार हे तुर्वत अभिन्याद्वती का विने और रच्या वरवरक्टरे पंगवती पुँचने हुए वहाँ क वहने। नगरमें प्रनेत करके रकते करे और करपायों अन्ते आनेकी सुमय देवर करते पक्षकों नवे । जारे ही ज्याराजीका कृति हुआ, को प्रानेसे ही नहीं कारे हुए थे। क्षेत्रकारे कारावी कात एका कुराहरी करण पुत्र और परमाठेको की प्रमान निरम । मिर से क्लाकुच्या क्रम अपने क्रममें से कुट-कुटबर रोने सने। क्योंने से व्यक्तिक क्षेत्रके कांग्र व्यक्ते । दिन वहनी जीतें चेवर विविद् आवयर दिख और कुराहरी एक-'कार । अन वह है। हारीओ बसके हार जो कह र्समित हरन और हो रहा है, यह आपसे क्रिफ नहीं है। वक्षपि इन्त्येगोंकी विजय क्षाँ है, स्वयपि जन्में इसक विष् चानक स्टारे हैं आवडे इक्स्पुरान कर्तत करते हैं।

क्टोंने बहुत बाह्य कि किसी तरह हमारे कुलका नहा र है। [ में सर्वाण निर्देश थे; से भी क्यें क्यरपूर्वक जूनों इतकर बन्नास दिवा गया। सन प्रकारके के बनावर उन्हेंने अक्षातासम्बद्धाः च्या योग्यः। इतके अध्यये औ उर्वे अवस्थे पुरुषोंकी तथा ब्यूक्ट-से हेल सकते गरे। उस कर विक्रोंका अवसर जाना, से में सर्व अल्ब्सी सेवारे अमरिका हुना और यह प्रमाहा निकानेके हैंग्से की सक स्वेगोंके सामने अपन्ते केवल पाँच गाँव गाँव है। विक्र मालको बेरमाने कल यो लोको येत को और केरी प्रभाग हुकत से नगी। इस बरह मैंस्से अल्लेड सनस्त्रको सन्दर्भ वृत्तियोग्य संदार पूज्य है। भीतर, स्टेन्स्य, ब्यूडिस, कुन, जेन, अधनाया और नियुत्ती यो आको सह plick fint mehr und the fing about further मक्ष नहीं नाना । तथा है, बिलनेंह प्रमूक बालका प्रकार par f. un might up fr min fie um gand burt. श्चर हाँ, का संपंध कारकों भी सुद्धि करी नहीं । इसे कारणा प्रधान का प्रधानके हैंगा और एक का क समता है? जनमंदि पर जीवन प्राचनों हो अनीन है। व्यापन । आनं पायानेका ग्रेसकेका न व्यक्तिका, का बेक्सरोका सरिव्य की अध्यक्त को है। के व प्राची कारी गिरे हैं, य मानसें। स्थापी क्री क्रमा क्री भी कम नहीं हुआ है और अब को आपको क्या गुजारी केरीको पान्कांसे है रिन्द्र-पानी विकल्पकार है। क्वींचे जापका वंद क्वेगा। कुले जिल्लेकाच स्वय पाल अक्ष प्राथकोरे हैं किरिया इस्तीने आपसेन मान्यभेकि प्रति जनमें बैस्त व शरों, उसकी बुरई व सोवें। अन्तर ही अपराध या पूर्व राज्याचा स्थाप सामान मनावें, क्रमार्थ रहा करें । महाराख ! आम श्री साम्बे ही है. करीरक वृत्रिविषको अस्त्रोह करलोगे जिल्ली अक्टि है। विताना व्याप्तविक पोट है । अपूर्ण अपनी कुर्ज करनेकारे सारशेक्षा भी संसर किया है: से भी ने सक्ते क्रोक्स क्रिन-प्रत फलते यहाँ हैं, उन्हें शनियां भी चैन नहीं किसता ! बार और राज्याधिक रिज्ये हो में महा होन्य करते 🗓 उनके इत्यों शक्ति नहीं है। समझ्डे यह जो आयंद्र स्वयो अभिकी कियत नहीं पक्षके।"

ताना नृत्यामुने इस प्रकार बाह्यर श्रीकृत्य क्रोब्यरे हुनैत हुई गान्यरी केवीरे खेले—'काव्यको है है हुन्से की को कह यह हैं, उसे स्थान केवर सुन्ते । अपन संस्करने सुकारी-जैसी तपश्चिमी की कूसने कोई नहीं है। तुन्दें बाद होगा, उस दिन सम्बन्धें मेरे सम्बन्धे ही शुक्ते होनों पहोच्या है। करनेकारत वर्ष और अर्थपुक्त कार बद्ध का, विद्यु तुम्हरे पुनि उसे नहीं करा। पूर्वेकर विकासका अधिकारों का, अरले दुस्ते कराइकि साथ कहा—'ओ पूर्त ! विकास वर्ष होता है, उसी कहाकी जीत होती है।' एककुमारी। तुम्हारी वहीं कर अरब साथ हुई है, ऐसा समझका मनने जोका व करे। दुस्तों अस्ताका कहा कहा कर है, दूस आपनी कोकपारी दृष्टिने कराका समझकों भाग कर करनेकी हाति रखाने हैं; के की हुई सम्बानोंक नासका विकार कार्य करने नहीं स्थान काहिने।'

अंकुम्मकी बाव कुनकर गावारीने कहा—'बेहार ! कुकार्ड बाव मिल्कुल होन्द है। अबसाद मेरे मनमें बड़ी



प्रमा भी, मैं विश्वासी आगमें कल ग्री भी; इस्तिओं मेरी वृद्धि विश्वास हो नहीं भी—मैं प्राच्यतेंके अनिष्ट्यते बात लोग भी भी। सिंहु अब तुमारी क्यां सुननेसे मेरी चृद्धि विश्वा हो नवी—सोकका आनेत्र काता ग्रा। जनाईन । वे तथा अंगे हैं, कृते हैं और इनके मुख्य मारे गरे हैं—इसके कारण क्रोकसे पीड़िक भी हैं; अब बीस्वर चाक्रतोंके स्ताय द्वारी इनको स्कार सेनेवाले हो।

इतन कहते-कहते मानारी अञ्चलने पूर्व बर्गकत पुर-पुरुष्कर केवे लगी। पुत्रोके ब्रोकते को बड़ा संलय होने लगा। जा रूपन ब्रीकृष्णने कितने ही कारण बताअस विकर्त ही पुण्डियों देवल गान्धरीको साल्यना ही—सीरश कैकामा। पुरुष्कृ तथा गान्धरीको बास्त्रसन हेनेके प्रशास भगवानो अवस्थानके भीवन संवापका करवास किया, 🗀 👊 सुरक्तर करवा और गण्यानि वक्स—'वनर्यन 🕽 फिर हो है होते करे हैं। एने और सम्बन्धिक करणोर्ने नरामा । यह है। है कर है, के करके कोर पाणानीकी पहा क्षणाबार राज्य काराहरे केले—'महाराज ! अब मैं महीरे | क्ये । इन किर तुन्ती होता है जिलेने ।' सहस्वर, भगवान् कानेकी आहा बहुता है, जार होना न करें। इस समय - औकृष्ण कुरुवके साथ होत कर दिने। उनके अनेके बाद अवकारकोर काले परस्को विकार पातात् हुआ है, इस्तिये । यहका स्वास्त्रो कृतस्त्राचे आवासन देने सर्व । वासनीके स्थान कर पह है। करने सामग्री सामें प्राथमीयों कर । यस प्रीयकर श्रीकृत्य प्राप्यमीने निते और प्रीवशपुरधा कुरलेका विश्वा किया है।'

क्रव अक्रका ज्ये वह सुराग।

#### दुर्वोधनका विलाप तथा अश्वरवामाका विचाद, प्रतिज्ञा और सेनापतिके पदपर अभिवेक

भूतरपूर्व पूक्त-स्थाप । वेश पुत्र स्था सोधी सः, | धान्यकों से र रहने के बारण अस्तर बद्धा नार्ध संबद्ध का पहा । काश्रते, कर करि कु कोने का पृथ्वेनर निया और भीक्रोओं काके विशव के रक्त, जन्मे का जाने का मारा ?

अपूर्ण वर्ग-महरूपा । यदि क्र वर्णण का कुर्वेदान बंकरियर निर्मा से बहुन्ने इस्त शर्मा । निर्मा किक्ते हुए बारतेंको समेवता हुआ वह क्यों दिवसमेकी ओर देवने हता। सम्बद्ध को क्षेत्रिको विश्वी वर्ष कालेके बॉबबर करने अस्तिको नेजेंने नेती जोत हेका जीत अपनी केचे पुजाओंको बस्तीका स्वकृत उक्कार हेते हर कहा—'ओर् । सामगुरुका भीना, वर्ता, कुलकार्य, शकृति, होनावार्य, अक्टबान्य, क्रस्य और क्रान्यर्थ-बीरे बीर मेरे स्थान के के भी में इस कारको सा पर्वाच । निश्चम ही कार्यका कोई भी अन्यकृत नहीं का सकता। को दक दिन नाया अझोदिनी सेनावर काली का, जन्मी आत का अवस्था ! सहाव ! वेरे वक्षके केन्द्राओं जे सोग जीवित हो, इनसे बहुना कि 'भीवसेनने गरा-मुहुके नियमको लेडकर क्येंकरको जरा है। हर कर्न करनेकरने पायकोरे भीवा, होया, भूधितक और कार्यको कारान्तिक मारनेके पहार मेरे साथ कल करके एक और कर्यक्रक क्रीका समा शिया। पुढ़ो विकास है, उन्हें पर कुमानीड कारण सरपुरुषिक सम्बन्धने प्रान्तक प्रदेश । पर्वत हेला विद्यान होगा. यो पर्याद्याका यंत्र करनेकारे व्यवकार अपि सम्बाद प्रश्नाद करेगा ? आस पार्च चौपकेन चैचा श्राप्त के रहा है, अक्टमेरे किया कोनर सूत्रा कीन मुखिमान पुरुष ऐसी सामी मनाकेना ? मेरी बॉर्च टर क्यों है; ऐसी दक्षायें बीयने को की सिरको पैरोसे दक्षका है.

प्राची पहलार आधार्यको पात और एक प्रोची ? मेरे माता-विका सहार दु: को होने , जनते सह संदेश सहारा---वेंगे पहा किये; थे कर-वेक करने केन के उनका करन किन और सनुवर्णना पृथ्वीपर अच्छी तथा बासन किया । सनु मेरिका थे, में भी अब्देर भारतकार पेर रक्ता और स्रतिश्रंत अनुसार विस्तिका क्रिय क्रिया। अस्ये क्रम्यु-वाक्योका आहर तथा पहारी क्रुवेक्स्प्रेयर सरकार किया ( धर्र, अर्थ तथा क्रुवेक्स् संबद विकार, बुर्रेर राष्ट्रीयर आक्रमण करके उन्हें जीता और कुसबी पति। राजशोधा कुल कारक। यो अपने क्रिय करिय थे, क्रमी क्रम है पत्ती की। किर चुक्ते अच्चा अस विवस्त हुआ होगा ? विविध्यत् वेद्येका साम्बाय विम्ता, नाम प्रकारके क्रम दिने और अस्पूर्णाने हुई कार्य रोग गाँ हुआ ! मैंने अपने कांने रचेकोक किया कारी है क्या कारिय कृति केरी मृत्यू काहे हैं, की गुत्रे कहा हो नहीं। इससे अच्छा अन्य निस्तका होना ? पंचीकको जल है कि मै पीठ विकासन माना नहीं, मेरे कर्ने कोई दुविकार नहीं सरका हुआ। हो भी पैसे लोगे अनक क्षान्तर हुन् क्षुत्रमध्ये बहुन हेकर यार झाला जान, उसी तरह उस कारीने पुरुषांका सरस्यान करके मेरा का किया है।'

क्त्यक्रम् आपके पुत्रने संदेशमहकोसे कहा-'अवस्थान, कुनवर्ग और कुपाबार्यसे येरी बात कह देश—अनेको बार पुरुषे निवसको संग करके पापने अवत हुए हुन कव्यक्तेका अवपत्त्रेण कथी थी विश्वास न क्षेत्रिकेता : मैं भीमके हात कावर्मपूर्वक मारा एक है। को की ही लिये करोंने नवे हैं उन कावार्य होया, कार्य. इक्षा, क्वारेंग, इन्हरि, साधान, धनदश, प्रतिकार, क्का रक राजस्य आदि परायोके एक लक्का. शुक्रमण्डमा और अन्य इसारों सम्बद्धी<del>के मैं</del> अब मैं भी सर्गसेषये करन जाउँगा। किया नहीं है कि अपने प्रत्यों और परियों मृत्युका सम्वयाद सुनकर मेरी दु:हिली महिल पु:शरसकी वया दला होगी। पुर और पीमोसी किरन्तनी हुई अपूर्णिक साथ मेरे पाना-किस किस अवस्थानों पहुँचेंगे। केरे और परिवर्ध मृत्यू सुनकर बेचारी राध्याकार्ध माता की तुरंत प्राप्त है हेगी। व्यापकार देशेंगे सुनक्ता और संन्यासकेंद्र केवले कार्य और मृतने-किरनेवाले कार्याकार्ध यदि मेरी हास्तर कार्यूव हो बावनी से सम्बन्ध ही ये मेरे बैरका कार्य्य होने। मैं से सिपुनवर्गे प्रतिस्ता हुए। प्रत्योंका तीर्थ सम्बन्धकारों प्राप्त कार्य कर हुई, इत्सीको मुझे अञ्चय सोकोच्छे प्राप्त कर्या कर हुई, इत्सीको मुझे अञ्चय सोकोच्छे

राजन् ! अवने पुरस्का मह निरास्य कुनसर कृतारे सनुनोती ऑसोनें जांसू घर जाने । ये मानुका क्षेत्रर महिरी इत्यर-अवर इट गये । शूर्वेने अवका अनुक्रमानारे परायुक्तमी कारी वाले तथा राजाको अन्याकपूर्वक निरासे मानेका स्थापार की कह सुराखा । इसके बाब महि कोड़ी वैरासक विचार करनेका महान् से आहेंने आने है, कहीं सीट गये ।

संवेशनकारों पुरासे वृत्योगनके को अनेका समाधार सुरक्षार असे हुए सीएक सहरकी सकाराना, कुरवाराने सका कुरवार्या—को सन्ते की तीको सामा, गए, कोवार और सरिवारोके व्यापने विकोध सामान हो चुने के—केव सामानाको कोहीने जुने हुए रक्षार समाप हो चुने कुछापुरियो गये। नहीं पश्चिमत देशा कि दुनोंकन करतीयर निर्ध हुआ कुछापा एक है और सामान स्वाप कुछीर सुरासे चीना हुआ है। कोबके नहरे सामाने चीने तारी और सांको कुछे कुछि की, सह सामानी गए दिकानी केवा हा।

अपने राजाओं इस अवस्थाने यहा देश कृष्यार्थां आदियों यहा मोड हुआ। में रजोसे जारकर कृष्यंचनके जात है वर्षानपर केंद्र करें। इस सम्बंध अवने समा—"एकन्! अहि घर आमे, यह दिसम्बद्धा हुआ बढ़ने समा—"एकन्! निश्च ही इस मनुष्यरनेवाने कुछ भी समा नहीं है, जहीं हुन्हरे-कैस्स राजा कुछमें स्केट रहा है। अन्यस्थ को एक हिन समस्त पूरावरस्था सामी था, जिसने सम्बद्ध हुआ करावा, वहीं सम्बद्ध हम निर्मय करमें स्केट्स कैसे एक हुआ है। आम सुने पुन्तरस्थ नहीं दिसाको देख, व्यापनी वर्ष्य हका सम्बूर्ण हिनेकी स्थितिका की हर्षान नहीं होना—बह वया जाता है? कारावाने कारावाने मंतियों जानना नहां करिन्द है। जात संस्थानका उत्तर-तेर से क्लि. हुन मूर्थिनिया एउटाओंके आप्तमान होकर भी आस विकासियोंना सुपानें स्वेद से हो | नहारावा | तुपाना वह सेत कर कहाँ है? केंकर कहाँ है? और यह विद्यास तेन कहाँ कारी करी? किस कारावाने कोन-सा कहा होता, हारावों संस्थान कहा मुन्दिक्त है; क्लिंगित हुन स्वयस प्रवाद सामानी प्रवाद की नामा होत्सल एसाने महीत को हुन से हमाने की विद्यानका होत्सल एसाने के का हुनका की वह विकास की मनुष्यकी सम्मति विद्या वह को स्वाता है कि किसी की मनुष्यकी सम्मति विद्या

अस्ति पुरानी क्षा अध्यासमानी बात सुरुवार क्वीकरको अस्तिये क्वेकके श्रीत उनद आये। अस्ते क्वेती क्रमोर्क रेडीको केल और स्थापनी आहिते का सम्प्रोतिक काल काल- 'मैंजो ! इस पर्यायोककार ऐसा ही रियम है, व्या निकासका कराया कृता को है; इस्तीओ करत-कारो एक-व-वृद्ध कि अन्त्रत प्रतियोग्ध परत होता है। वही अन्य पुत्रे भी जह पूजा है, जिसे आयाचेन अवर्षे आंको देश को है। एक हिए में इस प्रमुख्याना and union on a six see se seemal व्योग हरत है। यो भी मुझे इस बसाबी सुनी है कि बुद्धारें वक्र-सं-वर्ध विवति आनेक भी में कभी पीछे नहीं हुछ। व्यक्तिने को यह में हे इससे। में बुद्धने यह है कृत्या दिल्ला है और अपने कन्यु-सामानोंके पारे क्रमेक्ट रूपों भी चुक्रों 🛍 प्राप्त-साम कर यह 🐮 पूर्वत पुर्व विश्लेष असेष है। अध्यानको करा है कि अल्यानेनोको इस नगावासी युक्त हैए यह है। साथ ही अवस्थित सङ्ग्रहरू एवं कुछ करनेतें समर्थ है—का मेरे रिको को जलकारको बात है। सायरवेगीका सुराधर सम्बद्धिक केंद्र है, इस्तीरने केरे करनेसे कुन्से हो यो है; विका किया करनेकी कोई बात नहीं है। बहि के क्रमानक है, से मैंने अक्रमानेकोपर अधिकार प्राप्त किया 🖢 इस्तरिये में बरहरि दोसके बोप्प नहीं 🗓। अपन्तेनोंने अपने स्वापनों अनुस्त्र परस्त्रम दिसाया और त्त्वा ही पुत्रो कियन वित्यनेका प्रवत किया है: सिंह हैक्के विकास की जलहा का स्वात है ?"

नकराथ ! कृतन कहते-कहते दुर्गोशनकी आँसोयं वित्ते अस्ति क्रम्य काचे क्ष्मा वह प्रतिस्की पीकृते सी अस्तर कामुक्त हो नका; इस्तिको क्षम वाने कुछ न दोल

सम्बर्ध, भूप हो रहा। स्टब्स्की यह एहर देश अक्टब्स्म्यकी श्रांतें पर अश्री, को बढ़ा दुःस हुता। साथ है एकुओंबर अपने पी हुआ। यह छोवसे आगनपूर्य है उठा और हजले इस स्थाता इस्त कहने तथः—'इस्स् । इर धरियोरे इस्कर्ण करके हैं मेरे विशालों भी मारा या; बिह्न करका मुके काना मंत्राच नहीं है, निकास आज हुन्द्रारी देशा देशावार हो रहा है। अका, जब मेरी कर हमे—'मैंने को का किने, भू है-तालब आदि बनवाबे तथा और यो कुन, वर्ष हो कुन किने हैं, इन संबंधी तथा शालकों भी कृतक कृतकर बहुकर Ηआम में श्रीकृत्यके देखते-देखते हर एक उपको कार हैमार प्रमुख पास्त्रकार्थ्यो कालोव्ह क्षेत्र हैया। प्राव्हे विशे रिएके तुल अवदा वे के।"

अश्रमान्त्री नात पुरुषत कुर्तेयन का-है-कर प्राप्त हुआ और कुमकार्यसे बोध्य—'अन्वर्य । जार क्रीत है भारते भरा हमा करना हे अक्टो (' कृष्णकरि हेर) 🛊 किया। यन करन्त्र सेमार ने राजाने निकट आने, हो इसने क्या-- 'विश्वत । यह अस्य मेरा तिय करना बहते हैं, से हेणक्यात्वा हेनायीकं पहल अधिकेंद्र का राजिके आरका परा होगा।' राजाकी आक्रमे कथकाकी अवस्थापका अभिनेक विन्ता। इसके बाद क्यू कृषेकको 🛮 हुन: दुशा राज्या वहीं परा रहा। मुद्रपृथिने हुर वाक्त वे इत्यारे समावार सम्पूर्ण विकालांची सिंहानको तीची बहावी आनेके बार्वकाच्या विकार काने हुने।



प्रतिकारित करता हुन्य व्यक्ति कर दिया। हुनोक्त क्यूओ

श्रुत्यपर्व समाप्त

# संक्षिप्त महाभारत

# सौप्तिकपर्व

तीनों महारिथयोंका एक वनमें विज्ञाम करना और वहाँ अश्वत्यामाका पाण्डवोंको

# कपटपूर्वक भारनेका निश्चय करके कृपाचार्य और कृतवर्गासे सलाह लेना

न्यानं नम्पूरं में वैव श्रीत्याः । देवी सरमती व्यापं तते स्वनुद्धेरवेत् । स्वापंति रायवानंत्रका धनवान् श्रीकृतः, अत्रेः नित्याका वरशक्ता शरण सर्वन, स्वापी तीता प्रवार करवे-वार्त्य कावती सरकती और स्वत्ये क्या व्याप्ति वेद्यासकते मन्त्रकार करवे अस्त्री स्वापीत्योगः निकार प्राप्तिकृतेक सन्तरकारमध्ये कृत् करवेताले स्वापात्रक स्वत्या कर करवः साहिते ।

तक अक्रमाना, कृत्यवार्ण और कृत्यवा—ये कीने वीर इतित्यको ओर वार्ग और सूर्यक्रके समय विशेषके यह व्यूक्ष गर्म ( क्रान्डीमें इन्हें विकासीयालये व्यवकारिया व्यंक्त नार् सूमार्थी विचा; अतः उनको क्यूनीको अवस्थाने ये व्यवकार होत्यर पूर्वको ओर वार्ग तक कुछ हुर कावर उन्होंने क्रूनीवर विभाग क्रिया :

एकं कृतरपूर्ण कहा—सहाय भी पृत्र पुर्वोक्षतमें सार इत्तर इविशेषा वर था। जो गीम्मीको भार खरा--इस बातपर एकपएकी विश्वास नहीं होता। मेरे पुत्रका इतीर वश्रके समान करोर था। जो भी प्राण्यकोंने संप्रत्रमृतिमें न्यू कर दिया। इससे मिश्रण होता है कि प्रार्थकों भर प्रश्न किसी प्रमार सम्बंध गृति है। पैथा सहाय। मेरा इस्त क्रवाय ही फौरवर्क्स क्या हुआ है जो अपने सी पुत्रोकी मृत्युका संख्य पुत्रवार भी इसके हुआते टुकड़े नहीं हुए। पत्रम्म, अब पुत्रकीय है भार इस शूड़े-चुक्सा कैसे जीविता एते ? में एक प्रवादम किसने अकेले ही मेरे हो-के-सी पुत्रोका क्या कर काम और मेरी जिल्लीके आविती दिन दु-समय कर दिये, उस पीमसेनकी वालोकों में कैसे सुन सस्ट्रिया ? अखा, स्थाय ! यह तो बताओं कि इस प्रकार केटा दुव्येक्सके अध्योप्तंत्र

महे करेवर कुरवंगी, कुरवार्ग और अध्यामले

स्वापने सक्त-राजन् ! आपने पक्षके में तीनों मीर बोड़ी ही पूर भने से कि इन्होंने राया-रायके यूक्त और सकाओं ने पर हुआ एक प्रचंत्रर का देखा। नहीं बोड़ी हैर निवास करके उन्होंने बोड़ोको पानी विलास और बकास्ट कु हो जानेका उस सकत करने उसेक किया। बढ़ों बारो ओर हुई क्रालंका को एक निवास बद्धाव दिसायी दिया, किसकी इक्सरें सामादै सक ओर पैसमें हां बी। इस बटके कर प्रकृषकर के महारबी अपने रक्षोंसे जार यहे और सामादि करके संभावना करने रूपे। इतनेहीने धगवान् भारकर अक्राबलके विकास स्त्रीय को और सन्पूर्ण संसारमें निवार्कनीयाः आविषायः हो गया । सम्र और क्रिटोर हुए सह, कहा और करोले सुक्लेपित गानमण्यक दर्शनीय विवासके समान होभा याने समा । अभी राजिका आरम्बनात ही का । कृतवर्षा, कृपाकर्ष और अकुतामा ए क और होक्यें हुवे हुए उस बटबुक्के निकट फस-ब्री-मान बैठ रहे और कीरक त्या पञ्चवोके विगत स्वारके निम्ने होक हवाट करने लगे । अलग क्के होनेके कारण नीहने उन्हें का त्याचा इससे आचार्य कृप और कृतवर्ण सो गये। क्छपि वे प्रश्नपुत्रय कांनोपर खेनेवाले, सब प्रकारकी सुक्रसामप्रियोगे सध्यत और कुलके अनश्याती है, तो भी क्षणावीकी तथा पूर्णीयर है पर को।

विन्तु अक्षासम्य इस समय अस्तन्त स्रोध और देवने चर दूज्य था। इस्तिन्त्रे उसे जीट वहीं आदी। उसने वारों ओर बनमें दृष्टि इसने से उसे उस कठवृक्षकर बहुत-से औए दिकाकी दिने। उस एक इक्यों कौओंने उस वृक्षकर बसेग विकास वा और वे आनन्द्रसे अस्तग-अस्तर धोसलोमें सोचे हुए थे। इसी समय उसे एक प्रवासक उसकु उस और असा दिसायी दिवा : यह वीरे-वीरे पुरस्कात परवी एक । संख्य करनेकी बुविका उन्हेंह किया है । यह समय भी इसीके प्राकृत्यर कृत्य और उत्तयर सोवी इस् अनेको कौओको करने स्वतः। उत्तरे अधने पंजीके विद्वती ब्राह्में का जेवा इत्तरे, बिरुप्रिक रिस्र काट रिक्ने और बिरुप्रिक पैर सोग् क्रिके। प्रस प्रकार अपनी आंसोके सामने आने हुए अनेको कीओको काने कल-वरी-काराचे कर करत । कुलो का करा करावा कौओंके सुपैर और अंगानकोरे पर पना।

रातिके समय अस्तुका का कारापूर्ण कार्यार देशका अवस्थान भी केर है करनेता क्षेत्रण किया। सर



एकान्य देशमें वह विकारने तगर, 'इस पक्षीने अवस्य ही कुरे

केन्स है। पान्तुकारोग विका पाका को तेकती, करावार और जाता है हो हो है । इस समय कारनी फ़रिस्से को मैं उन्हें कार नहीं लावा और राज क्वेंबनके आने उनका क्या करनेकी में प्रविद्या कर कुरत है। अब की; मैं कावानुसार कुट कर्तना से निःश्लेष्ट सुद्धे अपने प्राणीले इध बोज पहेला। ही, कपरले अवस्य अकारण हो समझी है और इन्तुओवर भी जून संदार हो सकत है। राज्यकोरे यो तो यह-शहर अनेकी निवासिक और कृतिक कर्म किने 🛊 । युक्के अनुवनी लोगोका ऐसा कवन भी है कि को केना आबी राजके समय गीएनें बेहोरा हो, जिसका क्या का है पूर्वा है, निरादे मोहा दियानिक है गये हैं और विकर्ते महानेद वैद्य हो कहा हो, कामर भी सहस्तो प्रदार बारम काहिते।' इस प्रकार कियार करके क्रेक्स्ट्राने सहिके तका सेवे हुए कवान और प्रकृतन-वीरीको गुरू करनेका निक्रण किया । फिर काले कुल्याचर्च और कुल्यामीको बगायार अक्ट दिश्वक सुराया । ये क्षेत्री बहाबीर अक्टबारावरी बाह सुनकर को त्वीकर पूर् और उन्हें उत्तक कोई उत्तर न सुन्ना। त्रक अनुस्तानको ऐक पुरुवेतक विश्वार करवे असुरास्त्रक द्वीकर बहा, 'बहराज कुर्वेजन जान्य अधीकेली सेलावे कामी है। क्षे अनेको 📺 केन्द्राजीने विशवह भीको को हामसे गरक दिया । याचे भीवने एक युद्धनित्रविक समाहोत महासारा सारा करी—बढ़ कावा कियम कोरा काम वा । इस ! पाक्रवीने मोरपोका केल पोक्न संहार दिया है कि आप इस पहल् संबद्धार है हम और ही बच्च पाने हैं । मैं तो प्रस सम्बद्धार समयका पेत ही प्रम्यान्त है। बढ़ी प्रोक्षण आप दोनोको बुद्धि पर नहीं हुई है से इस योग संबद्धके समय इकारा क्या कर्माना है, यह करानेवरी क्य को ।'

#### कृपाचार्य और अग्रत्वामाका संवाद

मैंने सुन हरी; अब कुछ मेरी बाद भी सुन रहे । हामी बहुध है। अपैश पुरुवार्थ —को प्रकारके कर्नोरे केने कुर हैं र इन केने निरक्त और कुक नहीं है। अनेको देव का पुरुषानंके कार्गीकांद्र नहीं होती । समस्त्राचे निन्ने होनोका स्कूचेन जानस्वक है । इन दीनोंमें देव ही परभक्त निक्षण करके स्वयं उसे बेनेके विश्वे प्रवृत्त होता है, से भी बुद्धिमन् लोन कुरसमानुसंख पुरुक्तमें हमें सहते हैं। पनुष्योंके सम्पूर्ण कर्मा और प्रकेशन इन्हें

हम कुरुवानी कह—पहलाहो ! तूमने को बात बाही, का ! दोनोंने निरंह होते हैं। उनके बिजी हुए पुराशांकी दिन्हि भी कैको है जबीन है और देवकी सनुक्रतासे है उन्हें परस्की करीर होती है । कार्य कुक्ता प्रयुक्त केलो अनुकूरत में होनेपर ची कार्य इक्ष्यों हेते हैं, कहर स्वयंक्रमी है करनेवर भी तसका कोई कम नहीं होता। इसके विपरीत को सोन अस्तारी और अपनाने होते हैं, उन्हें के मिली कामाने आरम्प करना ही अका नहीं समात । सिन् बुद्धियानीको का बात नहीं राजती: क्वेंकि संसारमें कोई भी कर्म प्राय: निष्यक नहीं देखा जाता,

न करनेपर भी देखकेगले ही संध प्रकारके पता प्राप्त कर रेखे है अवक निन्दें चेक्र बालेश की कोई कह जी निरम्बा—देशे कोग से बिल्ले ही होने हैं। एकारि सरकार्यक कर्मने सने हुए प्रमुख अनन्त्रके सोवन कर्मात कर सकते हैं और अलगीन्त्रेको क्रापी पूक्त नहीं जिल्हा ( 🌬 चीवलेको अनः क्लकके कर कर्न कार्नको 🛊 अवन देवसावन करते हेते वाते हैं। यदि उने वार्ग साराम मरनेस में कोई का नहीं निवास के उनके किसे उपलब्धे निष्य नहीं की का संख्या । परंतु को निष्य करा निर्देश है करा पा रेगा है, जरबी रोवारें रिच्य होते है और प्रप: होन अपने हेर करने सम्मे हैं। इस अक्त को पूर्व के और पुरुवर्ग केनीचे सक्योगको प मानकर केवल कि पा पुरुष केंद्र हैं। बरोजे पहा स्वाप है, यह सर्वन अनर्ज है सहस के--- नहीं सहितालीका विश्वास है।

वर्ष कर स्थोग कलेश की के कर जो निरस्त, उसके पुरुवार्थको पहुरता और हैव-भे हे स्वारत है। यह सुरवार्थ म करनेपर में बंधेई कर्त रिप्त के के नहीं सरकता। अब: के पुरू बुद्धेकी सेवा परता है, उससे अपने व्यापालक स्वयन कुछ है और उन्हें काले हुए हिल्लारी करनोव्ह फारत मारात है, जानत पह आकरन होना पान करते हैं। फार्नका आरम् बार वेपेनर क्यानगीवात सम्बन्धि कालेले कार-का कारक रोगी चार्याचे । कार्यकी सम्बन्धार्म से बरन बारक करे कते हैं तक रिस्ट्रि अवधि साहित बड़ी करते हैं। के एक इक्केंची कर पुरस्का कर्ता असम्ब कारत है, जो उन्हों भार्यका कर बात कर साथ है जात है। जिल्ल के प्रश्न राग, क्रोब, क्य क लोको किसी करवेरे प्रकृत क्रेस है का कार्ने सफरणा पानेने असलवे रहता है और तुरेश ही हेक्की भ्रम् हे बाता है। क्वोंधन भी लोगी और ओडी मुद्रिकर पूर्व मा । उसने शरावर्ष हेनेका भी मुख्याके बारक किया किया किये अपने हैरीपियोका सम्बद्ध कारके खानानेकी प्रात्तको यह काम जाराम किया था। काम्यानोम पुनोने हाले को-को थे, श्वामि कहा केवलेयर भी जाने करते के कान । मह पहलेसे है बहा कुलामणा क, इसीले सेवर सत्त न कर सका और व उसने अपने मिलोकी है कहा सुर्थ। इसीसे अपने प्रयासने विकास क्षेत्रण को पंजाबात करना महः । इपल्केगोने इस पारीका पक्ष किया का, इसलिये हमें भी मा महान् अनर्व घोगल पढ़ा । वै बहुः लोकक 🐌 वकति इस कहारे संतार होनेके कारण पेठी वशिषको तो आज भी कोई हिल्मी बात नहीं स्टारती : मन्त्र का रूपं हिल्मीकहा

मरेत कर्न न करनेपर से कुना है दिसानी है। से उनक ( कियार करनेने अस्तरने है जान से उसे अपने सुद्धारें। इसस लेनी पार्विने । वहीं इसे इदिह और विन्यवदी प्राप्ति से सकती है और भूडी इसे सरने दिवया सत्त्वन भी देंगर सवाता है। कारेका के रहेना केंद्री प्रत्या है, बड़ी इसे करण काहिये। काः इक्लोन रामा प्रतरह, गामाधै और महामति विहरतीचे विकास प्रतास से और इसमें प्रातेश केंद्रा में को साहै कर करें — नेरी कृदि से को निश्चन करते हैं । यह सार से निश्चित है है कि बार्च आरम किये किया संश्राला बाची नहीं विकास क्या किरमा काम स्थोग करनेवर की दिख नहीं केया. उनका ù pen à the part afté : कार कर्त है—राज्य । सामाने क्रमको का धर्म और

> अनंत्रक क्षत्र अन्यति सुनका अध्यक्षण सोक्से क्षत्रती हो जीने प्रचन पतने राज । किर प्रजे मनके बड़ा करते क्षा और कुलको क्षेत्रेचे कक्ष-'अनेक करवारे के करी-कुछ कृदि क्रेमी है, अरोबों के संद्रह पहले हैं। एक स्तेन अवनंत्रों ही विश्वेत सुद्धितन अल्झों हैं। सकते अवनी ही राज्या अच्छी चार पराते हैं। ये बार-बार क्रारोबी सुद्धिकी रिन्यु और अनमें युद्धियों महर्च करते हैं। यह किसी कारणक किन्द्रिक विचार बहुत-के बहुआंके किए कात है वो वे क्य-कारने संगुर्क सूते हैं और मार-का क्य-कुरतेसा सरकार करते हैं। किंदू सरकांद्र केरहे किंद रही जुन्होंची बुद्रिको क्रिकोर क्रेकर एक-कुरोबे क्रिक्ट के जाती है। मनुष्योके निक प्रत्यः विकानिका प्रकारके केरे हैं: कां: कांके विकार विकास परिवासकारक विकारिक प्रवासकी सुद्धियाँ वैद्य होती है। एक पहुन्त कुरायकाने एक प्रदारको कृतिहो क्ष-क हो जाता है, कारण सकतार्थे आवर सुती प्रकारकी पटि एका केरी है और प्रक्रमानों को अन्य है जातासी क्षीद सामी राजने राजनी है। यह मनुस्तर कहा वारी संबद अस्य है का कर जो नकर बैन्सकी अधि केरी है से अस्वी चीको निकार का नाम है। इस प्रकार एक ही स्थूपनों समय-समयक विक-चित्र श्रुद्धियों होती खती है और उस राज्य जान्यों जपने पहली पृद्धि अस्तिकार हो बाती है। किंदु को जन्म कारी कृतिके अनुसार निश्चन काले नित मानको अपने प्रत्यक्ता है वैसा है अपना पान पन रेका है, असीबी बाँच उद्योगने स्थानक होती है। एक सोग अपनी ही मुद्धि और सम्बन्धि आंश्रम रेक्स एक्-समुची केली करते हैं और उन्होंने अपना क्षेत्र मानते हैं। अपन अवस्थिते पर्यान मुझे को सुदि केंद्र कुई है, यह वै अन्यको सुरक्ता है। इससे अन्यन्य है मेरे फ्रोस्टका नाह है। कारण । प्रमाणी प्रकारोंको उत्ता करके वर्ते काहे विशे

क्रमेक रिका करत है और उसेक क्लेक्ट एक-एक रिकेट युक्त देश है। यह प्रायुक्तको सर्वोचन केर-विका, प्रतिनको क्रम देन, बैरनको जानर-बौक्त और कान्ने करण क्योंके अनुकृत क्योकी केलात केल है। संस्कृत प्रकार मूरा है, रेपोव्दिन व्यक्ति निकास है, अनुस्थान नेपा निकारित है और अन्य कार्नोंक अस्तिहरू आवश्य कार्नेकाल क्यू शत्य है। में से प्राप्तनोंके अस्तर कुर्तान कर कुरने क्रमत हुआ है। कन्द्रकन होनेले ही इस क्रमानीक अञ्चल कर पूर्व है। यह क्राजनेके प्रत्यक में में प्रकृतकारी और रेकर का पहल करेंको र को से देश का आवरन पालुक्योच्यो अस्ता नहीं समेन्द्र । में रम्योक्नों दिवा करून और विक प्रका करण करण है। ऐसी विकास विकास कुछने मार्थ पना देशकर तथ में फिल नेहते सकने केट्रिक ? बात: आम में क्षानवर्षका सामन रेक्टर अपने निवा और THE PHANK & SPIRE APPROX TABLE IN विकासिके वेदीनातार पाहारा-बीट को वर्गत करना क्षातका केवाओं से के केने। असः अस्त करिने का सेवे कारीपर ही में पाना करीना और मीनो केरेक को हुए उन क्रमुओंको विक्रिको भीतन हो सहस-स्वात कर कर्मुन्त । वसी कुरे के दोना। दुर्गाका, कर्म, केन और प्रकारों के हुनि कर्न काल है जाते जान में सहक्रमेंके के केवकर होदेगा । आक राजिने हो में बसुके समझ कारण कारण कारण ब्रह्मका किर कुम्बर अस्ति । साथ प्रतिने हे मैं अपने बीकी सरकारने क्षेत्रे हर कहाता और कव्यवनीरोके नित का देश कर कर पूर्व प्रदेश है में क्षेत्र हो प्राप्त कार्यकार मा करके सूची और सकत्मनोरम हेर्दन्त (

कृत्यार्थ केरे—मैदा | पून अपने केवले दार्शनारे मूर्व है | अभ पान्यारें प्रस्त हैनेंगे हिंगे पुन्त देख मितार दूसा है, में जीना ही है : चार समेच होनेंगर इस फेनें भी तुन्तर सम चारेंगे | असा तुन बहुत देखाव चारों से है, इसरियो सम्बन्धी पात के तो सो | इससे हुन्दें पुन्न विकास मित सम्बन्ध, हुन्दार्थ जीव पूरी हो जान्यी और हुन्दान विकास भी रिकानेंगर आ चार्या | इससे बाद बाद शुन कार्यों । सामन चारेंगे से अस्त्य ही उत्तार क्या कर सम्बन्धि । का बीतनेंगर इस चार्यांका संहार करेंगे | किर बो भी प्रमु इसस्य सामन चारेंगे, उन्हें इस डीजो जिसकार चारेंगे | अस सामन प्रतिनेंग की सामन इस ची हमाने पत्तान्यको सहस्य मही चार समेगह । कीम ! मुद्रामार्थ और मैं चार्यानेंची पुत्तारें मही चार समेगह । कीम ! मुद्रामार्थ और मैं चार्यानेंची पुतारें परका किने किन कभी चीते चीत नहीं उसेने। या हो हम संस्थापुर्विने प्रमानिक स्थित स्रोताहर प्रमानकेन संदर्भ स्थापे ही स्टैटिने या नहीं प्राम्पेकी महिन्द कर्न अस् स्रोति ही हम्मी इस पहला है, करत इस हो उसोको संस्थानी हमारी उसावता स्टोति।

कार क्रमानांकीके इस प्रकार क्रिकी कर कहीता अवस्थाने क्रोको अधि सात करके कहा, 'क्रो पुरु इसी है, क्रोकों पर। हमा है, किसी अर्थंत विकासे राज हात है अन्यत्र विक्री चार्निस्त्रिकी क्षेत्र-कुले चला है, को और फैले भा सकती है। अपन निवार मॉलिने, जान ने बार्ड को को के हर है। की केलो से केलो है कुछन कर दिना है। इस पारिचेरे निक समार मेरे Annabas on fore & up on to-fee 40 persis परावर्ग करते हैं। उसके परावर को मनिक भी कैर की है। कारों के पह एक कारह है देशा था। बाले का परन भेरे परिवारित केंद्र होते क्षेत्र है। इस 1 मेर-केंद्र सर्वत इस कोचने एक पूर्व भी किस असर भी पर है। की क्यानोर्क कुलो 'हेम को नरे' का इन्द्र कुछ था। क्रानिके तम में प्राथमको यहे दिना प्रीतिक क्षी प क्रमा । एक पुरोक्तको संबर्ध हा गर्म । क्रमी से हरायां को कुछा हैता और स्थोतीय है, जिल्ही अधिकोंको अनेत पार्टी विकासि ? की मीरिया पार्ट केरी विकारकारियों हेती कृति हो, इसमें नेप क्षेत्र पहल है का पना है। साम-बार नेता पन इसमार होका इसी कोई-कुरने १००० पहला है । ऐसी स्थितिने पुढ़ो और पैस्से का सपाती है ? और सुख भी फैसे निस्त प्रमान है ? बिस्त प्रमान क्रांमें को निर्माण स्थाप और पत्थानेकी विजयस संसद कुलक का उन्हें कुलक के दुशकों आग-को तथा गयी थी। इस्तरिको में को करना ही सोने इस प्रमुक्तोंका संक्रम करके विकास हैया और एके निव्हेंग्य क्षेत्रर केंद्रिय है

कृतकारी शह--अनुसक्तमा । येश विचार है कि विका कृतकारी मुद्दि शिक नहीं है और इत्तिकोर विस्तान करना भूति है, जा अर्थ और अर्थको पूरी उपले नहीं जान समझा । इसी जाता नेकारी होनेल भी विस्तो किया नहीं सीखी, जह भी वर्ग और अर्थका निर्मय कुछ नहीं समझा समझा । पूर्व चौडा बहुत करवाल परिकारियो सेवाने शुर्वेण भी वर्गका जाता नहीं जान समझा, विस्त जाता करवी समझा जात को कुछ समझी; विस्तु की चीच करवाल करवा मूर्त भी वर्गकारों कुछ समझी; विस्तु की चीच करवाल करवा मूर्त भी वर्गकारों कुछ स्वाप्त करवाल करवारे पहचार रेसा है। जो पुरुष वर्षश्रवणको इकावासर, बुद्धिकर, और संबर्धनिक होता है 🕮 सब इत्योंको सम्बद्ध लेखा है। परंदु को दुरावन और रापी पनुष्य बतलाने हुए अन्ते कामन्त्रे क्रोड़कर कुरवास पार देनेवाले कार्येको निक्य करता है, उसे निकार प्रकार इस कर्नसे नहीं रोका जा सकता : वो सन्तव होता 🗓 आको सहदरण हेरे कर्म करनेसे छेका कर्मा है। पर असके अस्तरमें और सुक्त मिलना होता है से ब्या उस कारेंसे एक कारत है, नहीं से नहीं। किस प्रकार विकासिय पुरुषको मला-बूस बद्धकर कार्यने किया जाता है, उसे प्रधान सुद्धारम भी समझा-मुक्ताभर और इंट-इक्कार को कड़ने बार सकते हैं: नहीं तो बह कराने नहीं का सकता और को क्षा है काना पहल है। सब । तुन भी कानो कान्ते करके उसे वरमानवाकामें सवाओं और वेरी पता करते. विससे तुन्हें बढ़ाताय न करना गई। में सेन्दे हुए हो, विन्होंने क्रमा रक्त दिये हो, रक्ष और बोड़े क्लेस दिये हो, को 'मैं शायका है है' ऐसा कह रहे हों, जो कारकाल हो, किस्के बाल कुरे हुए हो और निक्क बहुत यह हो को हो, खेकने इस होगोधा क्षेत्र कार्य करेत: अका नहीं सम्बंध कार्य । इस समय राजि सब पाइस्कोर निविध्यक्तकोड क्रम क्तारकर निश्चमें अवेश यह होते । यो युक्त करते इस विक्रिने हैं। कोगा, के अवस्थ है दिना नैकाके अध्यय करवाने हत जानमा १ लोकमे तुम रूपका कुळावारियोंने शेष्ट को असे हो । अधीतक संसारने तृत्यारा कोई छोड़े-ले-छोड़ा खेच औ देसलेने

न्हीं आन्य । दूध स्पष्टि समान देवसी हो । अतः चार जन सूर्व अस्ति हो सो सब अधिनचेके स्थापने अपने इस्तुओंको संज्ञानने परस्य करना ।

अक्षपान केल—मानाने ! आप नेता कहते हैं, निःसम्बेद्धः बद्धः स्टीकः ही है । परंतु इद्धः वर्णमधीद्यके तो मान्कवीने चाले ही संबद्धी दुवाई बार डाले हैं । बहुबहाने प्रत्यक्ष ही आपने और स्थाप स्थापनेके सामने के समावित विस्तानीका कर विका का । एकियोंने केंद्र कर्मको क्या उनका परिचा पैसर गया 🞟 और ने वहे संबद्ध्ये पढ़ को ने, उसी समय अर्जुनने चार कृत्य का व भीनाविक्यमूको भी विकासीकी और लेका अर्थको असे अवन बादा का, का उन्होंने एका अस दिये में और वे सर्वक निरामुक के पने के। चीरवर भूरिसम्ब के रसकेवरें अवक्रम-अस संबंधर केंद्र गये थे; यहंद्र सालांकिने सब एकाओंके विकास क्षेत्र भी इसी विश्वतिमें उन्हें बार कामा। महाराज इमेंकर को क्षेत्रसंस्के राज्य राष्ट्रपुत्रने विकास एक एकाओ-के रहरूने अव्यर्थकुर्वक ही गिराचे गये हैं। इसलिये पाने ही मुझे चीर-वर्गनेकी चेतिने कात यहे, मैं भी अपने विश्वासीका कर करनेकारं इन परकारनेको एलमें स्वेतं कुर् 🛊 मार करहेगा । सैने यो कार करनेका विचार किया है, जाने प्रेरवे पूर्व गाई इस्ताननी हो रही है। इस अस्तानातीये युद्धे नींद्र कैसे का सम्बद्धी है और केन की केसे यह सकता है ? संस्तरमें न से कोई देस्त कुछ अपन है और व क्योग है, को पाहरतीके करके हैंजे मिल्ने हुए मेंने इस विश्वासको सङ्ग्रह राजे ।

#### अश्वत्थामाका श्रीमहादेवजीपर प्रहार, उसका पराभव और फिर आत्मसमर्पण करके उनसे लड्ग प्राप्त करना

सत्तव करते हैं—बहाराज ! कृताकार्यक्षीये ऐसा सहकार होणपुत अधेला हो अपने प्रोड़ोंको योगका प्रस्तुओपर कराई करवेकी तैयारी करने रूपा। तम अपने कृतकार्य और कृतवर्याने पूछा, 'तृम रक विध्यतिको तैथार कर रहे हो, तृष्यक क्या करवेका जिवार है ? इस की को तृष्यते साथ हो है और सूल-दु:समें तृष्यते साथ ही स्वेते।' यह सुनकार कहाकार्यको सो कुछ यह करवा बहाता का, उसे साथ-साथ सुना दिया। यह कोरण, 'पृष्ट्यूपने मेरे विस्तानीको अस विश्वतिने करते का मा उन्होंने अपने सुखा रक्ष विशे हो। जहार जान उस पानी पाकारापुरको में भी उसी कहा पानकार्य करके कामकार्यन असरकार्य मार्थना। मेना नहीं विद्यार है कि उसे प्रकारोंन

इस जान होनेकाले तसेक नहीं निस्तने वाहिये। शहर होनों भी जानों ही कावक करण कर हैं, सहस तथा कर्य रोकल तैयार हो कावे और मेरे साथा समस्य सकारकों प्रतीक्षा करें हैं

ऐस्स कहकर सकामाना रकार सवार हुआ और इक्क्निकी और कर किया। इसके पीक्रे-पीक्रे कृपावार्ग और कृत्यमं भी करे। यह राजिने ही, तम कि सब सोग सोवे हुए हैं, व्यक्कोंके विकारने पहुँचा और सम्बंध सरका केससी रका हो कथा। वहाँ उसने कन्ना और स्पृथ्व सपान केससी एक विकारकार पुरस्को दस्याकेपर स्वक्नं देसक। उस पानपुरस्को देशकार इस्टीनों रोपाइ हो जस्स वा। वह कामकर्ग करना किने वा, कारसे मुगसर्ग अंग्रे था तथा



क्योंका कोक्जीत को हुए का। सामी विवास गुजाकोंने स्था-साईट एक सुनेतिया के, वाक्नोंके कारणे को-को सर्व मेंचे हुए में एक सर्वट गुजाने स्वाधिती ज्यालाई निकास की थी। सामे पूजा, नामा, काम और इक्कों केको भी काई-कई साई निकास रही थीं। सर्वट केकडी किन्छोंने साह, कार और एक धारण कार्यकांने सैकड़ो-इक्कों किन्छु स्थार हो नार्य थे।

इसका लोकोको जनगीर करनेकार उठ अञ्चर पूरवको देखका भी अध्यासना काराका थाँ, करिक अस्तर अनेको दिव्य अकोको नर्ग-सी करने एका। व्य के अध्यासनाको होते हुए समका क्रमांको निकार करा। व्य देखकार असने एक आसिको एकाम वेदीन्यका रक्षकि होती। पांतु व्या भी कारने स्वारतकार दुर करी। व्या अध्यासनाने अस्तर क्या वसकारती हुई समकार करनकी। व्या भी असके इस्तर क्या वसकारती हुई समकार करनकी। व्या भी असके इस्तर क्या वसकारती हुई समकार करनकी। व्या भी असके इस्तर क्या वसकारती हुई समकार करनकी। व्या भी असके

इस जकार जब अवस्थामाने सब सबा समझ हो गये से उसने इसर-कार हुई। इसरे । इस सबय उसने देखा कि करा अवस्था कियुआंसे वर्ग हुआ है। उपयोग अवस्थाम का असमा अञ्चल तूम देखावर बड़ा हो दु: वर्ड दुश्व और आवार्य कुएके नवन कर करके बड़ने समझ जो पुरुष अदिन कियु हिस्सी बात कड़नेयाने अपने सुक्रतेयों सीमा नहीं कुरवा, बढ़ मेरी ही यहां जायसिमें पहालर जोक करवा 🛊 । को पूर्व क्रमा कानोबालोकी बातका विरकार बनके बुद्धों अनुब क्रेस है, यह अवेशांसे इह क्रेसर कुमानि कारें कार्ट कुंब्ले कार्ट है। प्यूत्वको मी, प्रकार, क्या, ब्रॉ. विक. क्या, युव, क्वंत, मुर्वा, अंबे, स्वेचे हुए, करे हुए, मीको क्षेत्र हुए, अस्त्रको, स्पन्न और अस्त्रकार पुरुक्तेवर प्रक्रिकार नहीं काकन काकिये । मुख्य-वेने महरेकीसे क्रम कुरावेको देखी विकास है एसी है। बिल्यू में जब कारबैंद क्रमान कर्मक करमून करके सके प्रतिते करने सम 👊 । पुर्वासे प्रश्न चोर अवस्थिते च्या गर्क 🛊 । का मनुष्य विस्ती ब्यानको असाम करके चनके करान उसे बीचडीने केड़ देश है के चुद्धितम् क्षेत्र इसे कारके पूर्णक है सकते है। इस सकत इस सालको करते हुए की आने भी ऐसा ही कर क्रमीया है पन है। में से बेल्क्स फिली अंकल पुजरे मेरे इक्ष्मेक्सर मही है। बरंब यह यहायह से मेरे आगे विकासके क्यांके समान सामान प्रांता है। ये पहल स्वेपनेकर की हते कुछ सरका रही साथ है। निकार है मेरी सूदि से अवनंत्रं क्यूनिय हो नवी है, कारण क्या कार्नेत रियो ही का मार्थको परिवार स्थापे आवा है। विश्वीत पूर्व स्थाप कुछे को पुत्रहों हरना कर कहा है, जब देवना है निकार है। पानपुर केन्स्री अनुस्तानको नित्त आरम्प नित्ता हुआ न्युक्तक कोई भी काम स्थान गर्ड हो क्यान । शाः शम ने करवार कंपरांधी करण रोगा है की कारकुमारी, केकाओंके की क्रकांक, क्रकांत, सर्ववायावारी और Augus wirer weitund & it fit jer rewen fell fie graft न्या सर्वेगे ।"

हैसा भोजनार होन्यपुत अवस्थान रागरे सार पहा और हेम्मीकोट जीन्यक्रेसाओं अस्तानात होनार हम प्रचार सूची करने रुगा, 'आव जा है, अनार है, प्रारंत्यत है, वर्त है, इसे है, अनार विकालोंके असीवार है, पर्वापर है, वर्ताया करनेवार है, अनावित है, वेरायाव है, सामान है, प्रचार है, प्रवापत क्रियान करनेवार है, वर्ताया है, प्रचार है, प्रवापत क्रियान करनेवार है, प्रवाप है, क्राया विवास करनेवार है, प्रचार है, सामान प्रधायक है, प्रारंत है, वर्त्यक (क्राया क्या) वारण करनेवार है। अव प्रशापन प्रचार है, आर्थ प्रशासन क्या क्रायान है, अस्त क्याया है, और निवृत्यस्थान क्या क्रायान है। वे अस्त्य क्या है क्यायों अस्त्यस्थान क्या क्याया क्या क्याया क्या है। प्रचीन अस्त्यत्व क्याया है। अस्य प्रस्तिक समा

संबादनेको पूर्व करनेवाले है, नवक्रको वर्गले सुलेगित है, रसम्बर्ध है, नीरबीच है, अस्त्रा है, ब्रह्मओंचे निले कुर्वन है, एक और प्रमुख्ये भी राज्य कालेको है, कक्ष्म परवा है. सरकारी है, जबेरिया है, जनक है, स्वतीरकोचे अध्यय है, क्षानेवार कार है, गरकाती है, किनका है, अपने पार्वदीयों देश है, abar f. gulit gereine f. unbfiebt miter f. parlingsfriede finn & stauet & george & Room है। आरक्षा केन बाह्य हो का है; आम वार्कतिकोची निवृत्ति मार्गाने सारा है, स्थानिये केंद्र हैं, क्यानर है जब अवके केंद्र कोई नहीं है। जान काम कहा बारण करनेवाले हैं, प्रापृत्ती विद्याक्षीकी अभिन्य सीम्य है, क्रम ब्रेड्डिंग दक्षण है, कुल्लेका भारत क्षाप कार्नेवाले हैं, आपका कार्य दिना है क्या अस अपने बसायाना आयुरानके सान्ते चानुसारको काल करने बाहें हैं, में आवन्त समावित होबार सामग्री क्रमन केला है। बाहि काम में इस इसर अधितके का है क्या से सरका कुछिक इंद्रातका इस प्रतिको और देवर आया कार कार्य है।

क्षा प्रकार अक्रमानामा कृत निर्माण देवकार वाली प्रकार एक तुम्लोक्स केई जब्द हो । यह केईने अर्ड जन्मीय हे भन्ते । अस्ते ब्यूल-में कर अवद हुए । अन्ते कुल और के केरिजमान थे; में अनेकी मिल मैर और प्रामीकारे थे; जनकी मुख्यांचे तथ्-तथ्येः नाम्यतः नाम्यतः सुक्रेप्ति से तथाये इंपरकी और हमा कार्य हुए थे। उनके प्राप्त और कर्वनीके इत्यान विकास थे, से सूर्व, सन्त्रमा, यह और न्यूटनेके प्रदेश इंग्यूनी शुररेकारके सरकारणी कारनेवारी करीब रंपनी के उत्तव अपने बरायुन, संख्या, स्थेवन और प्रक्रिय-वार्ते प्रवासी प्राणिकोचा संदार करनेको कृषित थी। उन्हें विक्री प्रधारका पाव नहीं था, से इच्छानुस्तर आकरण करनेवाले से उस्त तीनों कोकोंके इंपरोंके भी इंपर थे। ये सर्वत आरम्पन को थे, क्षारोके अवीवर ये, कारतीय में क्या देवने कारत भी उन्हें अधिनान नहीं वा । इनके अञ्चल कार्मेंसे सर्वेद कारणान् होवार थी समित को वे ज्ञा ने पन, करी और कनेंश्वय सर्वह क्ट्रीकी जारायांथ करते थे। इससे मनमान् प्रेयत भी समीव अपने औरस पुरोके समान कमारी रहा बनते थे र

में एक मून बड़े ही पर्वचर थे। इसको देवलेसे की वे सोख समगीत हो एक्से में। तकारी महत्त्वली अफल्यन इन्हें देवल्यन इस नहीं। अन इसने एक्से अपने-आपको ही महित्यकारे एवर्षित करना चक्का। इस कर्मको सम्बद्ध करनेके वित्रों इसने कनुषको एक्सिक, क्षाणीओ दर्भ और अपने इसीरको ही इसि बनाक। इसने सीम्सेक्सका पत्र महारू

स्वति स्वति स्वयुति देती नाही । यस समय वह देव सेक्टर वनकार सामी इस अकार सुधि करने रूगा, 'विकास ( इस आयोजि समय सामके प्रति अवका धीक-वाको में समाहित होकर का बेट समर्थन करता हूँ। भाग इसे इसेक्टर स्वतिको । समझ कुछ सामने विका है, आप सम्पूर्ण कुछेने विका है तथा आयहीने पुरव-गुक्त गुलोकी एकता होती है। विको । साम प्रत्यक कुछेके आअन है, वहि इस समुखोका करावता मेंने इस वहीं हो प्रकार की आय हरिकासको स्वर्णन विके हुए इस क्रिको स्वीकार करिको।'

हेन्यका अवस्थान हेना केंद्र उस असिसे देहीयावान वेर्त्यम व्या क्या और अपने जानोका मोद कोइयर जागके बंग्यने आसन स्थायत केंद्र गंथा। जो इनिकासे जानंत्रमु केंग्यन विशेष की देखावार जानान इंग्यन हैन्यार कर्या, 'प्रीकृत्यने कार, बीध, संस्थात, ज्यान, सरका, नियम, क्या, ब्रीस, केंद्र, ब्रुटिइ और वालीके इस्त मेरी प्रशोधित जाराव्या की है। इस्तीरने जाने व्याप्त सुने कोई भी तिथ वहीं है। व्याप्तनेकी एक करके भी की व्यक्ति सम्बद्ध विश्व है; विश्व व्यवस्था जान में निस्तेष हो भी है, अन



हत्त्वा जीवन होन जाँ है। देशा कहकर पनवान् होकरने अक्टब्स्टब्स्ट एक देश सरकार ही और अपने-आपको उसके इतिरचे तीन कर दिया। इस अव्यत असी आसिष्ट होकर अक्टब्स्टन आकर्त्य देशकी हो गया।

#### अश्वत्यामाके द्वारा पाण्डम और पाझाल वीरोंका संहार

स्तानं करते हि—एकर् | अस होन्युक अक्तमानने हिसिसी होता दिया तथा कृतमानं और कृतमानं इस्तानेया कर्दे से गये। उन्हें समय साथ देगेंद्र हिस्से केवर देशकर अक्तमानको यही हस्ताना हुई और उसने करते वीरिते कहा, 'आप होतो यह देशकर हो वाले से इस्ता विश्वनेया संस्था कर साथते हैं, किर निस्नों यह इस्ता असे-सुने पोद्धाओंकी से बात ही गया है ? में हिसिस्ते पीतर कार्टित और कारान्य साथन कर-कार मार्ट हैता। आवसोन हेता करें, विस्तों योहं भी आपने इस्तोते विश्वन कारान र का सर्वे ।'

हैता बद्दार हेण्यून चन्यानेंद्र का विकास विकास हारों न बावर बीन्हींसे पूरा पता। को अपने स्था पूर्वालेंद्र संयुक्त पता था, इस्वीले का कुरमान को पूर्ण पता। वहीं उसने देशा कि उस बोद्धा पुत्रमें का जानेंद्र कुरसा अनेत होचार संयो पदे हैं। उनके पता ही एक रेक्स कुरसार को पूर्वाल सोता विकासी किया। वह अवस्थान देशे देशी दुक्तावर कारणा। वैर स्थाने ही प्लेक्स पुरुष्ट्रा का पद्म और प्यापनी अवस्थानको उसना नेव को है पद प्रांगाने उसने सगर कि उस बीरने अन्यो करना कुरुप्त



पुर्व्यापर परक दिया। इस समय मृहकुड भव और निप्तसे क्या हुआ था, साथ ही अध्यक्षणाने जो खोरबी पटक भी हरवर्षे की; इसरियों यह निकास है गया। अध्यक्षायने कान्द्री करते और गरेगर क्षेत्रों पूठने टेक दिने। मूहसूत बहोरा बिल्लामा और बटायामा, बि.सू अक्सामा को क्ष्मुको सम् चंद्रका रहा । अन्तर्ने साले अवल्यानको नमोले क्योको हुए त्यासकाती क्यानमे यहा, 'आवार्यपुत ! कार्य हेरी पात करें, पुत्रे इनियाओं और करते ।' सहने कृतन सद् ही का कि अध्यक्षणाने को चोरसे कृतना और करनी शरकों कार्य सुरक्तर कहा, ने कुलवालंक । अपने आवार्यको कृत्य कानेकारोको कुन्यरकेक नहीं विस्त सन्तरी। इसरिन्ये पुर्हे क्रमा करना जीवा पार्ट 🛊 🖹 हेला ब्यायर जाने सुर्वित क्रेक्टर अपने कैरोको चौरोमे पृष्टशुक्ति वर्गस्थानीयर मान किया : इस समय बुह्यपुरुषी निस्ताहरने मस्बी विकार्य और राजवारी भी कर गर्दे । उन्होंने एक असीविक राज्यकाले पुरस्को पृष्ठपुरस्य जान करते देशका भी कोई कुर सन्दात । इस्तरियो भागके कारण कारेले कोई पी

व्यवस्थान वृद्धकार इसी अवस पहुंची सह वैद-वीक्षण कर काम । इसके यह व्या का रेस्ट्री पहर आवा और रक्षण पहुंचा सरी क्षणनीने पहार स्थान स्थान । पहांचार क्षणकुत्र क्षेत्रर निरम्य करने समे । उनके कोरकामने अवस-वालके क्षणिय क्षर क्षणकार कहने सने । 'क्षण हुआ ? क्या हुआ ?' तम क्षिप्रोंने कही दीन कामी है व्या हुआ ? क्या हुआ ?' तम क्षिप्रोंने कही दीन कामी है व्या , 'अरे ? कामी दीके । व्याची तीके । इसारी तो सम्बामी व्या आवा का कोई स्थान है का समुख है। देखे, इसने व्यावस्थानको कर हाला और उस्त समार क्षणकर हमार-स्था वृत्य की है।' का सुनका अने समार माले ही स्थानामाने अवस्थानकान केर सिन्छ । विद्यु कास आते ही स्थानामाने अवस्थानकान केर सिन्छ । विद्यु कास आते ही स्थानामाने

इसके बाद असने बराजनके तंतूने कार्याजाको परंगधर होते देखा । असके ची कार्य और कार्याको असने पैरोसे दवा रिक्स । असनीया विकासने साथ, किंदू अध्याधाने उसे ची प्रमुखी कहा पीट-पीटकर सार कार्य । पुच्चमानुने राज्या कि असमीयाको किसी राधानने वारा है। इससिन्दे वर्ष गात रोकर दोका और असने असमायाननी कार्याप कोट की । अध्यक्षणाने सरकार को प्रकार रिका और फिर पृथ्वीपर | पटक दिया। पुकारन्त्री सूटनेके निम्ने ब्यूटेरे सम्बन्धि पटके, सिंहा अध्यक्षमाने को भी प्रसुक्त कर बार सन्ता।

इसी अध्या उसने नीहते यहे हुए जन न्यून्यिकोण में शास्त्रमण मिला। में सब करते करिने उनने, निव् अध्यानमने का स्थीको संस्थानो मीतवेद कर उसर विचा। विक्रितंद मिथिय कालेने उसने मानाम केलेके कैन्सिकोणो मी निव्दाने केहेस देखा और उन सम्बद्ध भी एक क्याने ही सरकारमें स्थान-पहल कर करना। इसी तथा अनेको केखा, मोहे और इसिनोको जा सरकारको मेंद्र क्या किया। इसके आवार उसरा करोर सूचनें स्थानक हो गया और यह स्थान कालके स्थान विचालों केले स्था। उस समय विन्त केंद्राओं मी मीह हुआ। भी, में ही अध्यानसम्बद्ध कर्या हुन्यान भी हो। इस प्रकार वर्गकर क्या करना क्या करते यह सभी इसकीनें काल स्था हो था।

का ईपरोक्षे कृति बहुबुक्ते को करेका सकता सन्। ही वे निर्मय क्षेत्रक अध्यानान्यक वाच्य करावने अने । अवस्थात अपनी विका तत्त्वार लेका उत्तर वह पह और कानो प्रतिकित्याची कोचा पान्य प्रत्ये । प्रत्ये यह अन्तरीय क्रेकर फुलोवर निर पद्ध । शुरुतिको पहले क्रे अलले पोट भेरे । फिर पढ भी सरमार केवल क्रेम्ब्यूमधी और बाल । अक्रमानाने देशमारके महित जानी या गुम्म कन्द्र कंगी और दिस कार्यो परासीयर जार किया । इससे हान पर कानेके कारण यह पृथ्वीयर मिर गया । इसी समय नक्ताओ कुर क्रामनीयाने एक रक्तां शक्तिय जानकर नदे जोरते अध्यापन्दी क्रतीयर मारा । अक्टब्ल्ब्ले भी तुन्त है उसक बोट की । इससे का कावार हेकर पूर्वीपर मिर पड़ा । फिर अवस्थापने काका मेर कब कर्ण । अब सुरक्रमी परिव लेकर अक्रमाधानी और पाल और उसके कर्ने जनना केंद्र की । किंगू अवस्थानको अपनी तीकी तत्त्वको करके पैक्रम हेक्ट बार किया कि जिससे जलका चेवक विनय गया और का नेहोस होका पुरस्कार का पता । कामा क्रम सुरका पहारको सुरुकोसी अवस्थानको सामने आचा और अस्तर बाजोबी क्ये करने राजा। विद्य अवस्थानने जानके बाजवर्षाको बारकार छेन्द्र तिस्था और उसके विस्को पडले करून को दिया।

इसके बाद अभी स्था-तसके इस्तोमे दिसकी और इसक्त वीरोको मारत अस्त्य विकास असे एक जनमे हिस्स्वीकी कुट्टीबोंके बीकमें केट की और किर कस

वाकर सरकारके एक है इसको उसके से दुसके कर दिने। इस प्रकार विकासीको परकार यह अस्त्रम कोनमें पर गया और को केन्द्री प्रमानकोर दुर पड़ा। एका विकासी को कुछ रोज कर्या थी, जो असे इकाम कुमार कारत एक एका कुम्बोर पुत्र, चीर और सम्बन्धिकों कोच-कोककर चैतके बाद कार विका

अवस्थानक विकास कुरूप कार्याची रोगार्ने र्वकारो-स्थारी चीर जान गरे। जाने कामेरे विकासि कर, farthab mit aft fantral meiten une mell : an प्रचंको पहा अधिक प्रचल दिव एक ब, इसरे वे स्थानका प्रतिकार कर को थे। इसी उसकर कोड़े और प्रतिकारिक किन्द्र सारेको भी अनेको बोद्धा दिला गर्ने हो। पर कारते होताने सही रसकृति पर भवी भी । प्राप्ता भीर 'मह क्या है? और है? विकास क्या है? का कर कर कार ?' इस प्रमार फिरस में से। कारे रिले सकारण अन्यक्ता कार्यक स्थान है को था। कार्यन और कुरून बोरोंने को प्रकार और प्रकारित रहित के और विन्हेंने प्रकार क्षान कर हैंको है, इन सन्वेदों अध्यक्तको कारोब केव किया : को कोल जीको पालक अने और अनेत-से हो पटे थे. ने काले क्रमारे क्रीकार कार यहे, जिल्ला कर कारीन केवल कार्र-कार्र किया गर्ने । इसके गर्ने अन्तर्ध कियों केव गर्ने और के क्या-कारेंड़े विश्वकार केंद्र गर्य ।

क्रमेंद्र कर अनुसामा निया अपने रचनर प्रचार हैना और प्राथमें अपूर नेपार वृत्तरे चेत्क्रालीको क्रमायके इसाले करने रूपा। दिन का क्राफो क्रांस-क्रमबार रेप्यन कर कारी कुरवरीचे बहुत राजाने राजा । अञ्चलकारका विकास सुनंबर चेद्राचेन चीव देशे हैं, जिल्ल निव्न और प्रचले आहेत हेरेके करक अनेव-ने होकर हमर-स्थर याग मते है। कारेले कोई बुरी कहा जिल्लाने कालो से और कोई अनेकों ब्रह्मद्रीय क्रारे करने सम्बंध थे। उनके बाल विकरे हुए थे। क्रानिने आपाने एक दुरोको पहला की नहीं पते है। कोई प्रकर-कार कारोपे कारमत मिर गये थे। मिन्द्रीको कार अर का वा। विक्रीक पत-पूर्व निवास गया वा। क्षणी और क्षेत्रे रखे दुक्तकर सम और गड़कड़ी बाले कैंड से है। बोर्स हरके पारे प्रशीपर पहकर किए वही में; मिन् अधी-कोई उन्हें फैरोले बीह अलने थे। इस अकार बड़ी ही पहलाही कार्य हाँ थी । लोगोंके इसर-कार दौड़नेसे बढ़ी शून क्र गर्के, जिससे का ग्रांकके समय दिवित्ये दूरा अन्यकार हे कहा। वह समय दिहा फ्रोफो और पाई पहलेको नहीं पालन करे थे। इसी इतियोग और मिन समस्ये बेडे चेद्रोपर टूट पढ़े तका एक-शुरतंत्रर चोटें करते वाकर होकर पृथ्वीपर लोटने रूगे। बहुत-से लोग निग्रमें अवेद पढ़े थे, वे कैमेरेमें करकर आवसमें ही आवता करके एक-सुरतेकों निराने रूगे। ईसका उनकी चुन्हि नह हो क्यों की। वे 'हा करते है हा पुत्र !' इस अच्चार किरस्को हुए अवने कच्च-वान्यवीको क्रोडकर इकर-स्थार भागने रूने। चहुत-में हो हुन ! हुन ! करते पृथ्वीपर गिर नहे।

अनेको चीर चन्न और सक्योंके किया है जिलिसी बाहर जाना जाहते थे। उनके जात सुरते हुए थे और ये हुन पोड़े कामे अर-वर कवि से थे; से जी कुमावार्य और कृतकारीने विशेषारे बाहर निकालनेवर विद्यालको और्वक आ क्षेत्र । इन वेनॉने अखनायाची जात करनेके हैंनो रिविषके तीन और आन तना है। इसमें बारी कार्यकी क्वारण हो क्या और सम्बद्धी स्वाच्याने स्वास्थ्य हावने तलबार लेकर शब और कुले लगा। इस सक्य असे अकी सामने आनेवाले और पीठ दिशाबार चाननेवाले केन्द्रे ही प्रकारके पोद्धाओंको तलकारके कर उत्तर हिंगा। किनी-किन्नियों उसने जिल्ले गोधेक क्रमान बीच्होंसे के करके निरा देवा। इसी प्रकार असरे विक्वीके कुळालीक पुनव्यक्ति, विज्ञिके विलेको, विज्ञीको अंकालेको, किन्होंके पैरोको, किन्हीको पीठको और किन्हीको पस्तियोंको उल्लाहरे इस दिया। इसी प्रकार उसने किरतेका कुँद केर दिख, किरतेको कर्गहोर कर करण, किन्दिके केलेपर चोट करके अनक तील प्रारंति कुमेड दिया इस प्रकार का अनेको बीरोका संबाद करता किविएते पूपने लगा।

त्स समय अन्यकारके बारण पत कही प्रकाशनी है दही वी इकारों घरे और अधारों प्रनुष्योंसे तथा अनेकों हावी-मोड़ोंसे पटी हुई पृत्तीको देशकार हरम काँच उठता था। तहेश इन्हानार करते हुए आपसमें कहा रहे थे, 'कई ! अपन पान्यवाँके पास न तकेसे ही इमारी कहा दुर्गति हुई है। अर्जुनको से असूर, गर्मार्ग, पहा और राज्ञस-कोई पर वहीं बीत सकता; क्योंकि साक्षाल हान्य है गथा। सारी चूनि स्तुनसे तर हो नयी वी इसलिये एक हानमें ही बहु प्रकारक कृत स्थ नकी। अक्टब्स्याने क्रोक्ये परकर ऐसे हुआरों वीरोक्ये कर करन, को किसी प्रकार प्रश्न नकानेके प्रकारों रागे हुए थे, एकदम कराने हुए थे और किसने तनिक भी उत्तरह नहीं था। को एक-कृतरेसे किपटकर पड़ गये थे, जिसिर कोइकर पाग छै थे, किसे हुए थे अक्टबा किसी प्रकार राज छे थे, उनमेंसे भी किसीको असने जीवित नहीं कोड़ा को लोग आगये हुन्ति वाले थे और को जायसमें ही मार-काट कर यो थे, उन्हें भी उतने बमरावर्ध हवाले कर दिया। स्वस्त् ! इस प्रकार अस आवोरको सम्बन्ध केप्यूपरे सम्बन्धोंकी का विकास सेनाको का-की-कालमें बमरावेक पहुंचा दिखा।

वै करते है अक्तानामरे शिवित्से बहुर आनेका विकार किया । उस समय मारकाने सनकर व्या दलकार इस प्रकार करते हाओ विकार नवी वी कि धाने व्या उत्तीका एक अहा है। इस क्ष्मार अपनी प्रतिक्राके अनुसार वह करतेर कर्म करके अध्यापन विकास क्षमरे पुरत होकर निश्चिमा हुआ। व्या क्ष्मानीसे वहर आवा और हुन्यकार्ग एनं कृतकार्ग है निरुक्तर कर्ने क्ष्मारकान्त्रंक अपनी जारी करता सुनाकर कार्मिक किया। वे भी अध्याक्षमान्त्र है प्रिय करतेने हते हुए वे। असः अहारे भी क्षा सुनाकर कि हमने वहाँ एकत हमारो क्षात्रांक और सुनाक वीरोक्तर संदार किया है, उसे

क्य कृत्य पूर्ण िस्तार ! अवस्थात तो मेरे पुरुष विकास है कार करे हुए वा । किर आने ऐसा मान् कर्य क्यों को जी किया ?

स्त्रको क्या—एका | अनुस्तामको पाक्य, सीकृत्य और स्वाकिको सरका खल या। इसीसे अन्यक ख ऐस वर्षे कर सका। इस समय उनके पास न सुनेसे ही असने बढ़ कर्म कर करन।

इसके बाद अश्वतायाने आवार्य कृप और कृतवर्णको को सम्बन्ध और उन्होंने उसका अधिनश्चन किया। फिर काने इसे घरका कहा, 'मैंने प्रमस्त पाद्यालोको, प्रेपदीके पाँचों कुलेको और संवायसे बावे हुए सभी यहंच एवं प्रोप्तक बीरोको न्यू कर इसका है। जब इसारा क्ष्म पूरा हो गया। इसस्तिने वहाँ सना कुर्यका है, वहाँ सरका बाहिरे। यह ने बीरिया हो से उन्हें की न्यू समावार सुना दिना नाथ।

#### अश्वत्थामादिका दुर्योधनको सब समाचार सुनाना तथा दुर्योधनको मृत्यु

प्रकारभीरों और क्रेपदेके पुलेको मारकर नहीं राजा पूर्वेचन परकारक अवस्थाने पक्ष का, इस स्थानवर आने। उन्होंने बाबर देखा हो इस समय अस्में कुछ ही जन्म केन या। यह बैसे-रैसे अपने प्राय कवाने हुए का। जतके मुख्यो शानक करन केल का रका को करों ओरी अनेकों बेविने और इसरे दिन जीन की हुए थे। वे भग को कर कर कर करन बै और का बढ़ी करिन्तासे उने देख का मार का समय को मार्थ हो नेवल हो स्त्री की।

हर्वेक्को आ प्रधार अनुविद्य रेतिको पृथ्वीका को हेक्टर का सीनों बीरोको असका कहा हुन्य और है कट-फुटबर देने तने। इन्होंने अपने इन्होंने क्वांपनक पिछा कर बोल और सिर होन हेकर बिलाव करने रहते ह

कुरवार्थी सह—हार ! विकासके विने कोई वी कार महिल रही है। अन्य पहला समीतिनी सेराका कानी शक क्षेत्रिक हार प्रधार पहली संध्यक प्रधा पृथ्वीया पक्र है। महत्तेथे किस प्रकार महाराजी प्रकर करती थीं, उसी प्रकर यह सोनंके बतासे नहीं हाँ नहां बीर हवाँकरके ततन सोची nd है। बारमधी कृतिस्था से देखें—में क्रानुबर समय, बिजी सभर पद्धाविक्ति राजाओंके आने-आने प्रतास का, जान नहीं चुनिनें पक्ष का करेंक एक है। निराने जाने रीकड़ों पाना स्वेग सबसे दिए हाकते थे, बढ़ी आप बीरसम्बद्धार यहा हुआ है, जाने निसे अनेकी हाहाम अर्चात्राहिको किये चेरे छाते थे, करीयते आज मांसको स्रोपको मोसवारी प्राविकॉमें के रखा है।

अभावक बेल-एकोड्ड । आक्टो एकस कर्नरोधे बेह्न बद्धा पाता का। आप साक्षात मनवार संवर्तनके जिला कौर पुरुषे कुकेके सम्बन के तो भी भीन्योजको किय प्रकार आयम प्रधान कालेका अवसर विकासका ? अस्य स्था श्रमीको नारनेवाले हैं 🚌 और पत्नी जीमलेनने फिल प्रकार अल्पको घोणेसे बायल कर दिवा? जनस्य हो स्थानको गतिये पर पान वहा करिन है। भीवनेनने आपको बर्गप्रको सिन्ने कुलका था, सित् किर अकांपूर्वक पटारे आपकी जॉर्व होर्स । इस प्रकार जर्कमंसे मारकर जब भीपसेनने कापको ठुकराचा, तक भी कमा और खेंच्छिरने उस शासे कुछ नहीं कहा ! विकास है उन्हें ! चीपने आपको क्रमदर्श निरामा है। इसकिये क्रमान्द्र प्राणिकीकी विवर्ति रोगी, उसराह चेकारोग आसी निया है सरेवे। व्यक्तियेंने

स्थापने क्रम-एकप् ! वे तीनों और सम्पूर्ण | वृत्तिकोंके हैंग्ले के उत्थम पति करायी है, पुद्धमें मारे बानेके कारण आको यह प्राप्त कर हो है। राजन् ! आपके रिल् को किया नहीं है, को से अध्ये कि और पाता क्वारीके किने ही और है, जिनके सभी पत कराके पारकी कारे करे हैं। क्रम ! अब में निकारी मनकर दर-दर महकेंगे और कुर समय कर्ने पुलेका कोन्य सराया खेला। बुन्नियोही कुम्ब और पुरुष्के अर्थनको विकास है, सिम्पेने 🚥 वर्गे वर्ग्यक्तमा अधियन रक्तमा मी मीनसेनके करते सकत कोई रोक-रोक भी की। वे निर्माण पानक की किस जकर करेंगे कि इसने ऐसे-ऐसे दुर्वोचनको मारा क्ष । क्षमारिकान । अस्य क्षमा है, को बुद्धनें कीरपतिको क्रम हर । ब्यारची क्रमजार्ग करवार्ग और पुत्रे विकास है, में अल-बेबे महत्त्वके लाग धर्म भूगे विधान के हैं। हम में अन्यक्त अनुसाय को का ये हैं—इससे की कर प्रका है कि एक दिन जानके सुक्रमोका सरम करने-करते हम को ही कर कार्यने, कर्न का कार्य-इनपेक्षे कोई हमारे इन्य नहीं रुनेता। व साने इनारा ऐसा स्वेत-मा सर्व है, यो **ा आपका साथ हेरेते देख रह है जा से नि-संदेह हमें** को द:सको इस प्रमानर अपने दिन फाउने प्रोगे। एउन् । अलबंद न रहनेवर को कारित और शुक्र बैजी निर्म सबसे है? अन्य कर्न विकार को है। कई एक महारमियोंके अल्बारी मेंट होती ही। वन प्रकारी खेळता और होडलके अनुसार आप मेरी ओसी पुजा करें। यहाँ आप अधान क्यों होते. कारकार अध्यानेत्रीका पूजन करें और उसे कृत्य है कि अन्य अक्रमानने बहुबुक्तों का क्राल है। किर पहरान नाहीन, महारबी जमान, होनका, परिवाद तक और वी थे-वी 🔤 फले क्याँ चीन पूर्व है, जावा नेते ओसी आहिएत को और उनमें ब्रुक्त पहें।

क्रमत् ! यदि कायमे कुछ प्राणकृतिः मौकृत हो भी मेरी एवं कर सुनिये। इसमें अन्यों सामोको बाह्य आनन्द विशेष्य । अस पाण्यमोके पश्चर्य ने पाँची पाई, जीवरूप और सत्विक-ने सार बीर को है और हमारी ओर मैं, कुक्कमां और अध्यानं कुछ— ये तीन नागरे 🗗 हैपारिके राव पुत्र, पुरुष्क्रके को क्या समझ प्रकार और बुद्धसे क्ये हर करवर्गावेका सकाव कर दिया नवा है। पान्कानेको के बक्रम पुरस्का पता है, उसका बार देशिये । अब अने भी बने पार हिये वर्ष है। अब उनके शिविएने मितने योद्धा और प्रणी-भोड़े थे, उन संचीको की प्रधार-प्रधार | कर दिन्य है। जान पानी सुरक्षाको भी की पहली हन भैद-पीटकर यस शस्य है।

हुवोंकाने तक अनुवादमधी यह प्रश्रेष्ठ चारी तन्ते-बाली कर रही से भी कुछ केर से एक और का बाते



रूप, 'पाई ! आप क्रांचर्न कुर और कुद्रवर्गके सहित के काम तुमने विक्ता है कह हो चीना, कर्म और तुक्तरे पिताओ भी नहीं कर एके। इस्से विश्वनाधिक सहित सेनपति पुरस्काको कर करन, इसके जान निक्रम हो में अपनेको इनके सम्बद्ध सम्बद्धाः है। तुम्बत्य पास है, अन करने है इन्कर्ण-कुन्कर्ण केंद्र क्षेत्र्य ।' देशा बहुबार मनवर्ष हुवीबन सूर हे एक और अपने सहस्रेको सुनामें होहकर अभी अपने क्रम भाग दिने। साने कार्य पुरुषका सर्गसोकार्य प्रवेश फिला और जानम करीर पुर्मानर पहा यह । राजन् ! क्रस प्रकार अन्तरे पुत्र पूर्वे करकी मृत्यु हुई । यह रजाकृतरे स्तरको कार क्या क और सकते की सहस्रोहत बाह्य तथा। अर्थको च्यारे कुर्वेकाने बीनो चौरीचो गरे समाचा और क्याँने भी रूपमा सारिक्षण किया। अध्ययनको पुर्वा पह mercere ber grat i water ber fer निकारको ही नगरने मान्य अस्त्या । इस प्रभाव अस्त्यहेच्छी स्रोदी राज्यको पह स्रोतन और पान्धनीका चीनान सेवार हुआ है। सामके पुरस्क पर्याचन होन्हें में अस्ता क्रीकार्त हो पन् है। तम कारानीको कुराने प्राप्त भूते मेरी हिलाही का के करी है।

केल्प्यकार्थ कार्थ है—स्वरू ) महाराज कृतरहा हुत ल्यार पुरुषी कृत्या संबद्ध सुरका रहावर विवासे हुए गर्न afte philosoph and man this part o

#### राजा युधिष्ठिर और ग्रैपदीका मृत पुत्रोंके लिये शोक तथा ग्रैपदीकी प्रेरणासे भीमसेनका अध्यक्षापाको भारनेके लिये जाना

र्वजन्तवर्थ करते है—या एवं क्रेडनेस कुलुक्के सार्गाने राजा जुणिहरको विभिन्ने सेचे हुए बीरोके पंकारकी सुरूत थे। साने बहा, 'बहारक । कहा हराके फ़्रांके सकत रूप सैक्टीक सिमिरने निर्देश क्रेकर मेक्स ओने हुए थे। वे सभी पार कारे पर्ने । आप प्रक्रिने इर क्रमार्थ, क्रमार्थ्य और पान अवस्थापने अवस्थे सारे विकासी का का इतल है। इस्तेने प्रका, सांस और करतीसे इसरी केन्द्र क्या इजी-बोड्रेको कारकर उनकी मेराका संक्रम कर करन है। कुलबर्ध कुछ कालीक बहु इसरिको सारी सेनामेरे एक है है किही क्यार क्याकर निकल जाना है।'

पुनिर्दीत पुरस्केकरे कामुक्त क्षेत्रर पृष्टीपर गिर पर्दे । अर समय सामाधि, भीवनेत, अर्जुन और ज्युत्त-सहोको करें रीन्यरम । येव होनेका से बिरकार करते हुए सहने रहते, 'हरब । इन से क्युओंको जीव चुके थे, सिन्दू तका इन्होंने हमें जीत रिव्य । इसने पाई, सर्ववकार, दिख, पुत्र, देख, कसू, स्वती और पीक्रोबर्ट हरवा चरके के कर अंध बर्ट, बिल इस अवहर बीवकर भी काम हम बीच तिसे बने। सभी-कामी अनर्थ अर्थ-स्य प्यार पहल है राज्य अर्थ-से दिखानी बेनेव्यरी बहा अवस्थित कार्ज मरिकार हो जाती है। इसी प्रस्तार हमारी पह जिनम करानम-सी हो नवी है और समुख्येकी करानक धी विकास हो हो पन्ने। इस प्रमुखनेको अवदर्श स्कूतर सारिक्ती पर अन्यास कार्य सुन्तार कुलीक्यन समुख्या कोई और युगु को है। प्रसाद समुख्या

[ 511 ] सं० म० ( खपड़ — वो ) ३४

अर्थ हक अक्षार हकर के है तथा जो अवर्थ हक ओहो के केहे हैं। यह सिराइ, तथ, वैच्या और गए किसी अव्यार यहां गहिं यह सबता। मिस ज्यार यहें व्यापारियोचा केहा समुद्राको पार करके किसी होटी-सी नहीं हुए उत्यानोंके पुत-याँग सहवाहीनें पारे को हैं। अपूर्णोंने अपर्यंत्रय किसे स्थार हुए है यार प्रमान है ये ये नित्तांत्र कर्ण दिस्तार को है। पहिंतु सुते से हिंग्सीकी विकार है, क्योंकि नित्त सम्मा यह कारों सम्बद्धे, पुत्ते और यूने किस प्रमान करके होन्यानींना पुत्रुओवा सम्बद्धार पुत्ते के प्रमान करके होन्यानींना कुलानी कैसे सन् प्रकेशी ? अनके हमानों से आग-मी सम्बद्धार ।'

इस प्रकार अस्तर क्षेत्रको निरुपर पारो-पानो ने बहुताने बहुदे हुने—'बेबा | हुन साओ और वर्षधानिके प्रैक्ट्रेको उत्तरे पाट्रपहची निर्मातकेत का रिन्स त्यन्ते ।' क्षरेराताची अञ्चल कावन राह्या राज्या समार हे का देखी ओर एक, वहाँ कहाराहरूको महिलाई और महत्त्ववे हिंगई भी । नकुरमध्ये चेनका महाराज पुनिवेश क्रोकाकुरः सुद्धांके स्रोत रेते-केरे का स्थापन गये, न्या क्लेक कुर में को थे। इस भीवन सामने व्यंच्या करोने अन्ते कुले सम्बद्धा सुद्ध और सम्बद्धांच्ये पृत्तीकर को देवत । उनके अपू-प्राच्या करे हुए से और व्यूपोर्क मिर भी बाद मिले की में। इन्हें देशकार न्यारमा चुनिन्दित च्यून ही दिला हुए और कुर-कुरकर रोने लगे। अपने पुत, पीत और विलोधो इतिहासी परे देशका थे आरख द्वारता है गये। श्रमको आहितोचे अहितानि प्राप्त-को ३६ भगो, प्राप्ति करियरे साम और कर-बार कुर्जा जाने समी। का उनके सहरून असना उकत होनार को गीरन बैनाने स्ते। इसी समय क्षेत्राकुल प्रेच्छेको राज्ये लेकर वर्ष स्कूल पहुँच। या प्रदान नामा स्वानों नमें हुई थी। विस क्रमा जाने अपने तथ कुलेको यह क्रमेका आगा अञ्चन संगानत सुना, यह तो यहत है दु:बी हाँ। उतका पुरस कोबारो जिल्लाहर परिवार पढ़ क्या और यह तथा मुनिहरके यान् व्यक्तिकर पृथ्वीयर विर ज्ही ।

श्रेपरीको निरते देश सहायराश्चामी चीमसेन्से सरकारार सपनी होनों चुनाओंने परका विकास और को सकस विकास । ह्या यह रो-रोकर राजा बुव्यहित्से कहने सभी 'राजन् ! अपने चीर चुनोको श्रामानको अनुसार पारा क्या सुनवार आप के स्पूर्ण नगरमें मेरे साथ सहवार कह भी नहीं करेंगे। परंतु पार्च अवस्थानाने अने होते हुए ही बार श्रामा—न्या सुनवार

अर्थ हम अधार त्यार के है तथा जो अर्थ तम ओसो केर | जूड़े के उनका क्षेत्र तमन्त्री तद्य नाम पा है। परि केरे हैं। यह निवार, तम, बैचन और नव किसी अधार क्षात मूर्ति कर सबता। विस्त जनार कोई कामारिजेका नेवा समुद्राको पर करके किसी कोटी-सी नाईमें हुन नाम, जार्थ जार जाना कारों अन्यारी ही में इनके काम समाजीके | कर देने। "

> हेल बक्कार बस्तिकते हैंपरी बहुराज वृधिहिस्के कर्मन है बैठ नवी। इन वर्गराजने अपनी तिवाको पास ही



वैते देशका बाहा, 'क्ष्मी ! हुनारे पुत्र और बाई वार्यपूर्वक पुद्ध करके जीरमनिको जार हुए हैं। तुन्ने उनके रित्ये कोक बाहि करक काहिने। अक्तकाना को बाहिने जाता तुर दुर्गक करने करता गक है। उसे बार भी अनत पांच से तुन्ने यह बार कैसे काहता होती ?'

प्रेरटने वक्-'लंबन् । येन सुना है कि अध्वाधार्थें रिसमें जनके साथ है जनक हुई एक पणि है। से संजानने का वर्षाया जब बनके इस वर्षिकों से आना वाहिये। वैश की विकार है कि को आको सिरपर धारण करकार है में जीवन करका वर्षानी।' वर्षस्त्रकों ऐसा बस्त्रका फिर कैपट्टी बीक्केनके कहा आवार कहा, 'पीक्सेंग! जाप कार्यमंत्रकों कोर देखकर मेरी रहा। करें। इन्हों की क्रिक्टम्सकों कोर देखकर मेरी रहा। करें। इन्हों की क्रिक्टम्सकों पान का, उसी प्रकार आप उस वर्षाया पश करें। वहीं अध्योग स्थान परश्चानी और कोई पूरव नहीं है। धारणाव्या भगाने का प्राथ्वानेंस्स बहा संबाद आ पहा का, तब अध्योगें इन्हें सहारा दिवा था। विद्रिक्टासुर्खी कता पहनेतर भी अपन ही इसके रहक हुए थे। विस्तानको का कीकाने पुड़ो कहा रंग किया था, का भी आयोग आ दुःससे मेरा उद्धार किया था। आयो किया अवतर ने को-को काम किये हैं, उसी अवतर इस लेक्युमको मास्कर भी असह होत्रों।'

मैपरीका का रख-रखका निवास और कीवल दुःस 🛭 हुए नहीं देवीले उसका बीहा किया है

वेशकार चीमलेन एक न सके। वे अवस्थायको जानेका विक्रम कर एक सुन्दर बनुन लेकर रक्यर एका है गर्न एक न्यूनमा अक्स कार्यत करका। कहेंने जान पहासर बनुन्दी टेक्स की और कीत है सेहोको हैक्स दिखा। कर्मणी निकासकर कर्षेने अवस्थायको रक्षम विद्या हैक्स हुए नहीं केमोरे उसमा पेका किया।

#### श्रीकृष्णका अश्वत्थामाके विषयमें एक पूर्वप्रसंग सुनाना

र्वजन्तराज्यं सहते है—कामेका ! चीनकेको प्रते | क्रोतर क्युंब्र अभ्याद कृतने वर्गतको ब्या, 'ब्रक्त् र आगोर पाई भीगतेन पुरसोकते काल अक्टब्स्याने बंबाममें पार्रके रिक्वे अमेररे ही का थे हैं। वे अन्वको अपने क्षम प्राप्तिके अधिक द्वाप है। किर पूर्व क्राहिराईके सक्य अवर अच्छी अञ्चलका उद्योग क्ये नहीं करते ? आकर्ष होजने अपने पुरस्तो जिल सहस्त्राच्या दिखा है है, व्या आहे पूर्णाको भी भाग कर सकता है। भूती परप्रका उन्होंने प्रकार होत्रर अर्जुच्यो भी दिना है। जन्मतान्य यह अर्ज्यनहीतः है। अपने को अनेको अपने-आपको ही हारे पिरवालेकी अर्थना भी भी। आसार्न इतन्त्री सन्तर्भत त्यह ग्ले से और अपोने इसे व्या आनेता विकास कि 'सेवा । स्वाह बड़ी अवस्तिमें के वानेकर भी हुए इसका प्रयोग का करवा। विशेषाः पर्यापेश से हुए इसे क्रोड़न ही पा; क्लेकि वै देशता है हुए अनुस्तीके वार्गवर विवर व्यवेकारे भारति हो।

नियाने में सारिय नकत सुत्यात कुरावा अवस्थात स्था अवस्थि कुरावी आहा कोक्सा को कोकसे पृथ्वीयर विवादने साथा पृथ्व बाद विश्व समय आस्त्रकेन करते थे, यह अस्त्रात्ते आवार पृथ्वितियोंके साथ रहा वा और उन्होंने इस्त्या कहा स्त्रवाद विका था। पृथ्व विव इसने क्यान्याने मेरे मास कोले ही आवार कहा, 'कृत्य । मेरे विवादीने वही पीचम तपाय करके व्यापनार्थीने के खहाबा कहा विका है। से पहाले । अस्य सुसरों का विका अस रोकर अस्त है। से पहाले । अस्य सुसरों का विका अस रोकर अस्त व्यापनार्था पहाले हो दे दीनिये।'

तम मैंने सक्, दिसों ! ये मेरे बनुष, प्राचि, साह और गढ़ पड़े हैं। इन इनमेरे जो-जो तमा सेटर साहे, सही में तुन्हें हैता हैं। तुन निसे तस सम्बों और विद्यास युद्धने प्रयोग कर सम्बो, नहीं अस से सो और मुझे जो जात देश साहते हैं। न्या की कर है। ' कर इसमें मेरे साथ स्थानं दक्ते हुए एक हमार अरोकान और नक्तानी नामिकान केंद्र स्केश्व कार केंद्र काछ। मैंने काछ—'पेट को।' इसमें कारकार कार्य हमारे को अस्टेक्स काल किया। सिंह कर सामारे को



क्या-से-क्या भी वहीं कर सकता। फिर उसे सुने हाजसे उससेकी केल करने रूपता। फिर्मु पूरा-पूरा क्या करनेपता भी जब वह को उसमें का कामने संस्था न हुआ से अस्ताल सहस होकर हर क्या। क्या करने ओहनमें अस्ताल हेकार कर निरास हो क्या और इसे कहुए कोट हुआ से की क्या कुरवकर कहा, किसकी कामने कानस्था फिर्मु सुनोधिया है वह क्याकिकारी अनुने बेक्स और मनुष्य—सभीये सम्मानित है। उसने हुन्युक्ष बेक्स और मनुष्य—सभीये सम्मानित है। उसने हुन्युक्ष बेक्स की एक्स क्यापत समारति कानाम् कोई मी पुरूष प्रिय नहीं है। जिलू मैसा तुम कह यो हो, पैसी करा तो कभी उसने भी पुँक्ते नहीं निकासी। मैंने कथा कांत्रक करोर सहकर्ष-सामार पारन करते हुए हिन्साकरों भीवन तपता करके या अबा पाय था। स्वश्नाद सम्बद्ध-मस्त्री ही अपुरूषकरों नेती सहवर्षिकी स्विक्तकोंके गर्पत स्वयून हुए हैं। जिलू विस्त कारको तुम कौन थे हो, उसे तो कभी उन्हेंने भी नहीं भीता। व्यूक्तको स्वयून यो हिन्स था। पूर और साम्यून मी इसे लेनेको इच्छा कभी प्रवाद नहीं की। पूर्व पारतबंदाके आवार्य होनको पूर्व हो और सब्दे क्यान हुन्याय सम्बद्ध करना वालो हो ?

मैंने इस प्रकार कहा तो अध्यक्तन कहने रूपा, 'कृष्ण । मैं आपका पूजन करते दिन सामके हैं साम पूज

कर्मणा। वात्रवर् ! मैं साथ बहुता है, विने आपके इस देवता और देवतोरों पूरित बक्ताओं इसेरियों प्रीता है किससे कि मैं अनेवा हो जाते। किया अब में अपनी कुर्वम कामराकों पूर्व किने किन ही व्यक्ति कार कारणा, आप केवल हात्रव वह दैतियों कि 'तेरा वारणाय हो।' इस वर्वकर बहुत्वों गीर-विरोत्तीय आपहीने वारण कर रहा। है। इसके हाथान संस्थारों कोई दूसरा बक्त नहीं है और इसे वारण वारणार्थ संस्थारों कोई दूसरा बक्त नहीं है और इसे वारण वारणार्थ संस्थारों कोई दूसरा बक्त और किसीने जी है।' ऐसा बहुवार अवस्थान सुझसे राज्ये जेतने केवा कोई और वहां-कहांके का तैन्कर करन प्रयाद वहां का वाह कोंगी, वह, कहार और हुए व्यवस्थान है। इस इसे ह्यांका करना वहां आवश्यान है।

#### अश्वत्थामा और अर्जुनका एक-दूसरेपर ब्रह्माझ छोड़ना तथा नारद और व्यासजीका कहें ज्ञान करा देना

वैज्ञानकारों करते हैं—समन् ? हेला कहकत औदन्त प्रसारके अन्य-सन्तेने प्रसम्बद एक नेष्ट्र रकतर वर्षे । क्रा रक्षका रंग क्राय होते हुए सुर्वके समाम समन्त का । काले शाहिने श्रुरेमें रीव्य और व्यवसे सुवीय नानका बोधा नात हुआ क्षा तथा होते अगान-संगानने मेक्ट्राट और कारक्रक जनके मोडे लीको वे उस रक्या क्रिक्नांक करूव इस क और धातुओंने विश्ववित व्यवस्था हेवा उसी हाँ व्यवके समान अपन पहला था। तस्त्रकी कान्यपर पहिलास नगढ़ विशासकार है। इस अञ्चल रक्षण घराकार औदाना केंद्र को और अन्ते बैठनेपर अर्जुन नवा राजा चुनिश्चिर क्रान्यर संदर्भ हो गये। इनके यह जानेपर श्रीकृत्यने अपने नेव क्षेत्रनेको कानुकारे प्रोका । बोदे कही नेजीले औरमोनके बीके कल विधे और तरंत ही इनके पास पहिल् गये। इस समय बीमलेन कोबातुर होकर प्रत्या संहार करनेके दिन्ने तुले हुए है , प्रस्तिको प्रम पहारविक्योंके रोक्यनेवर की वे कोड नहीं । वे इन्होंड देशते-वेशते अपने पांडे केंद्रले औन्द्रसमीके तटार प्राप्त गये, वहाँ उन्होंने अनुसम्बन्धा बैदा सुन्न था। किंदु का स्थानका प्रश्नेकका उन्होंने महत्त्रकीकी व्यवके पास ही परम कारणी काराजीको अनेको स्त्रिकोके साथ बैठे देवत । उनके पास है करकर्मा अकत्वान भी मौजूद का। उसने जपने प्ररोशों का रूप रहा वा और वह कुसके क्या पढ़ने हर ।

वा । कुन्योनका कंग्यांन इसे देवारों ही 'आरं । कहा तो रह' इस अवार विकासने हुए कर्य-नाम सेकार असकी ओर दीहे। हेन्स्य अवारमध्य कर देवाबार कि क्यूबंट मीन तथा इसके रीते एसा कृषिक्षा और अर्थन पी मेरी ओर आ रहे हैं, महुत इस नका और असमें निवास किया कि अब अध्यावकी अवाया किया किया और अपने वाचे हाथसे एक सीवा अवाया किया किया और अपने वाचे हाथसे एक सीवा उनका तथे कोचा परवाद समुद्ध लोकोंको मोहने करानेके किये का प्रवास अवाय कोड़ दिवा । इससे अस सीवाने आर्थ की को पानी और यह अस्मावस्थान साहिक समान माने की लोकोंको अवाय करने स्था।

श्रीकृत्या सक्तवाकाची चेता देशका ही साके पाके कावके सह गये थे। उन्होंने असूंतरे बदा, 'अर्जून है सर्वृत ! अवकां होलका मिलाका हुआ दिला अस्त में हुन्होंने हुन्कों विकासन है, अब स्तके प्रयोगका समय जा गया है। अवसे और अपने 'कावजेंकी एकाके दिले तुन भी हम समय सरीका प्रयोग करो; क्वोंकि सद्धानको उद्धानको हम हो वेका का सम्बद्ध है।' श्रीकृत्वाके हम प्रकार कहते हैं। अर्जून कावकांकुक्त सहुत हों। और किर 'सेस और मेरे प्रदर्शका प्रमुख हो' ऐसा व्यवस्य ऐक्स और पुक्रमीको क्यान्यर विकार इसके कह 'इस व्यवस्थ प्रमुख स्वेक्टिक व्यवस्थ व्यव' ऐसा संवस्य करके अध्युक्त सोकोक व्यवस्थ क्यान्यसे अस्या प्रदानक होत्र दिया । वर व्या अर्जुरका केस क्यान्यसे प्रवासिक हो उद्ध । इसी क्यान व्यवस्थक अवस्थानस्था कहा भी देखेल्यकारो विकार अवस्थि केम कर्म होते स्वास स्वास हो देखेल्यकारो विकार अवस्थि केम कर्म होते स्वास स्वास हो क्यानी विकार स्वास्थ केम प्रतिक्रोको व्यवस्थ क्या स्वास्थ क्यानी विकार स्वास्थ होते स्वास और स्वास अधिकार व्यवस्थ केम क्या । अन्य स्वास कीर स्वास अधिकार स्वास क्या ।

प्रस्त प्रधार का होगी अवसेके तेण समस्य स्वेचनेको सेन्स्र बारने भगे। यह नेक्कर अर्जुन और अवस्थानको इस्य बारनेके निधी वहाँ देखीं राज्य और वहाँ ज्यानो इस्य ही स्ताध शर्मन दिया। रोगो सुनिश्चेह नेक्कर और प्रमुक्तिक प्रथाप और अस्याप प्रजानो है। ये सम्पूर्ण कोक्कि हिस्सी प्रधानको कर होगो अन्तोचके क्रम्य करानेके दिस्सी प्रधानको कर होगो अन्तोचके क्रम्य करानेके



'पूर्वकालयं जो तात्त-सर्ग्यके प्रजीको जाननेकाले स्वारणी हो गये हैं, उन्होंने इन कालोका प्रजीन प्रमुखीनर काणी आहे किया। किर पीते ! तुम होजॉने ही यह महान् कान्तिकारी सर्ग्यस नवी किया है ?'

का अधिके समाप केवाची न्यूर्निनोको देशते है अर्जुन को पूर्वोसे करण किय करा स्टेटने समा। फिर उसने इस मोजान बहुद, 'प्यापन ! की हो हाई होत्तरने पर अस क्षेत्र क कि इसके हुए क्लूका क्षेत्र हुआ उद्यास कार्य है क्षा । का पर कामों स्केट सेनेपर के पाने अवस्थान क्रमार है जाने कहते जनको इन सकते पस का केन्द्र : प्रार्थको इस सम्बद्ध केन्द्र कारोको प्रधास और सन्द क्षेत्रतेका है। हो, अधिक रिल्मे अपन हमें परपाह है।' हैसा कामर कर्मनो का प्रमुखको कथा और रिग्य । को हरेड़ा रोगा से देशकातीके दिलों भी बादिन वा । संवापमें एक बार क्रोड केरेकर को स्वीतनोने क्री अर्थानके निव्या सार्थ प्राप्त पी med will we my son probably state gard the क्रांक्रके पुरुष की क्षेत्र के सम्बद्ध का; मित् को सीवारेका सारको प्रमुख्यकोके विकास और विकास नहीं का। परि कोई ह्यान्त्रेतिन पूर्वत औ एवं वेश क्षेत्रकर वितर सीरानेका प्रकार काम के व्या कर ब्रद्धभावीत का व्यक्तिक है जिए कार रेका था। अर्थुन अञ्चलको और वसी यह अरने हुनान्य क्षेत्रेकर की कह परकार आह कर रिश्व का। परंदू नहीं पार्ट fault uphic flow aft facil mer up press print व्यक्ति करका का ३ अर्थुन कारकारी, प्रत्यीर, अञ्चली और पुरुषी अञ्चलक पारंच पारंचकार को । पुरुषी में साले जिल भी को भीक रिस्ता।

अवस्थान में का देव अभिनोधों अपने अवने आलो को देश से जो और नेवरनेवा का अवसे किया, कियु का बैंगा कर न काता। तम का नामों अन्या मानुस्त होतार सीम्बानकों कारी स्थान, 'मूने | मैं भीनकों के कारी का जाून कही अन्यतियों का गया था, तम अन्यते अन्योंको जायोगों दिनों ही मैंने का अन्य केंद्रा है। सीमानेवां कुर्वेकनार का कारोके ओहराते इंसावपृथियें विकासियाद अन्यास्त्र कार्य कार्य किया था। इसीमें सीमानेवाद अन्यास्त्र कार्य की है। मेंदे अधियासों सीमानेवाद करते का दुर्वन किया कार्य पायानीवाद अस्त्रामें को मैं सम्बं की है। मेंदे अधियासों सामानेवाद करते का दुर्वन किया क्या पायानीवाद सामानेवाद करते के सेन्य। इस अवस्त्र सोकों भरतार पायानोवाद करते किया कार्य कोन्याद अवस्थ ही मैंदे कार्य कार्य किया है।'

न्यव्यक्तिं प्रमा—सैका । प्रशासकाय प्राप्त को अर्थुनको भी है। सिंह्यु काले स्रवेकमें भरकार या सुन्हें आरलेके सिन्हें उसे नहीं क्षेत्रक है। उसने को अपने प्रमानको सुन्हारे स्थानको ज्ञान करनेके दिने ही उसका प्रयोग किया है और स्था उसे सोटा की दिना है। सहकाको काल भी दुन्हों रितामीका करोड़ा सनकर सहका अर्थुन इक्क-करोड़े विवरित नहीं हुना है। यह ऐसा मीर, कर, रज्यु और एक क्रमान्त्रे अन्य-वालोको कालोकरक है किर भी हुनें हुने प्रमानेके सामित कार कालोकरी कुन्होंद्र करों हुई है? देखे, किस ऐसी एक सहकाको कुनेर अन्यकाने क्या विवा काल है, वहाँ बादद करोगक कर्य भूति होती। इसीने प्रयावन है। इसीने साम दूस हुन सिंग अन्यको क्या करने ही कालो । इसीने का दूस हुन सिंग अन्यको खीन करने हैं स्थान क्यो वालिये। इसीने कुनियार किसीको अन्यन्ति चीनक क्यो वालिये। इसीने कुनियार किसीको अन्यन्ति चीनक क्यो क्याने। इसीने दिनमें को सामि है, यह दूस हुने हैं है की और को लेका क्या समझ सोन करने हैं है।

अस्तावन वंदम—वाकांने वोद्यांका विकास कर और वो-वो उस जात वित्ये हैं, वेटे वह जीन का एकते अधिक वोदाती है। इसे जीन सेनेवर इक्क-व्याधि का कुमते अवक नेवार, कुमत, कार, प्रकृत का कोरोड़े हैंनेवरण वित्यों की जावस्था कर वहीं कुछ। इस अधिकार देख अजुत क्रमार है, इसलिये कुछे इसका एकम के वित्यों की जावा की करण वाहिये। से भी अवकों को कुछ अस्तेक हुओं विका है वह सो हुओ करना ही होना। विन्यू केन कोड़ हुआ वह विका अज व्यर्थ से हो जी समस्ता। इसे इक्क व्यर्थ होंक्स किर सीवानेकी कुछे समस्ता की है। इसलिये अस मैं इस सम्बन्धे जावांचे पर्यंत्र होन्सा है। अवकार अध्यक्ष मैं कार्य करनून न करना; परंतु क्या कार, हुछे स्वेटना की मेरे समस्त्री वात नहीं है।

म्बासमी मेले—अच्छा, ऐसा ही आये; विकास और किसी प्रधारका विभार गा रखे, इस सम्बद्धी प्रम्थानीके गर्धवर क्षेत्रकार सामा के जारते।

वैज्ञानकार्यं कार्त है—राज्यः । तथ अवस्थाको व्यः सवा कारावे गर्भवर क्षेत्र विद्याः व्यः देशकार वनकार् कृत्यः व्यो अस्त दूर् और उन्होंने अवस्थाकसे कहा, 'बुक्त दिन कृत् विस्तानुकी अस्तरमें, जब व्या उन्होंना नगरमें औ, एक वयसी प्राह्मको कहा वा कि सौरवोका परिश्रम होनेवर केरे गर्भसे एक कारक होगा। जर प्राप्तामका यह प्रयम् सम्बं होना। यह गर्दिश्च ही इन प्राप्तामेंके बंशको प्रस्तनेवास जानक होगा।

श्रीकृत्यके हैंता कहनेवर सकतावान कोयमें बंगकर कहा, 'केशब ! हुन सकामोंका वह लेकर को बंग कह से हो, का कभी नहीं हो उन्होंने। मेरा तावब हुन नहीं होता । मेरा कह ककानक अस अकान ही उत्तके वर्णकर निरोग ।'

श्रीनरकारों नक-का दिल अवस्था कर से अवस्थ अन्तेष ही होया। फिन्यु बहु वर्ग जार हुना अल्बर होनेपर की किर देवंबीवन जात करेगा। हाँ, तुन्हें अवस्य सबी सम्बाद्धाः क्षानी और प्रत्या ही क्ष्युको है। क्ष्मोदिर हुन कर-कर कर ही क्टोस्ट हो और करकोबरी हरस करते हो ! इस्तीरचे हुन्हें इस करका कर बोकन है कोना। इस हीर हमार वर्षतक इस प्रकार प्रकार खोगे और किसी भी जनह विजये पुरुषो साथ सुन्धारी सालबंध नहीं हो सकेनी। सुन्हारे करिरमेंने मैंस और स्वेहकी गया निवारोगी। इसरियो हुन क्युक्तीके बीकने नहीं स्व सन्तरेगे । बूर्गय क्रमीयें ही रहे रहेगे । परिवित् के कैमीन जान करके बेक्कर काम करेगा और बिहर जानमं कृत्यो का अवताचे जान-कृतीका हार प्रहा करेगा। इस प्रकार स्टब्स-साथ अवस्थित हार प्रशा करके वह इक्कानीक अनुसार करते हुए साठ करेका पुर्वाच्या राज्य करेया। कुरारान् ! देवाना, वह परीक्रिय व्यवका राजा पुष्परी जीनोंके सामने ही कुर्जनाकी गहीपर केंद्रेग । व्य तुम्हारे इत्याची न्यातारे सार अवद्य सामग्र, परंदु में को पुर: जीवित कर हैना। मरायम । उस सम्बर्ध क्ष्म मेरे कर और सरकार प्रकार देख हैता।

न्यसर्थं करने तमें—क्षेत्रपुष ! तुमने मेरी थी बात प कनकर ऐसा कुर कर्ण विषय है और अंत्रप्त क्षेत्रर भी पुष्पा अकारण ऐसा कोटा है इसरियो देवकीनका अंदिकारों को करा करी है, वह सम्बद्ध टीवा होगी; क्योंकि इस सम्बद्ध दूपने स्वकृतिको क्षेत्रकर शासकों स्वीकार का रस्त्र दूपने स्वकृतिको क्षेत्रकर शासकों स्वीकार का रस्त्र दूपने स्वकृतिको क्षेत्रकर शासकों स्वीकार का रस्त्र है।

अवस्था केल—इक्टन् । यनकन् कृष्यश्री कर ठीक हे । अब मैं मनुष्योमें केवल आक्टे ही साथ प्रृत्य ।

#### पाण्डवॉका द्रौपदीके पास आकर उसे मणि देना तथा श्रीकृष्णका राजा युधिष्ठिरको अञ्चलामाके अद्भुत पराक्रमका रहस्य बताना

वैदान्यकार्यं काले हैं—राजात् ! इसके बाद अञ्चलका पाण्यमीयो स्र्वित हेका उन सम्बद्धे स्थाने हैं उद्यूष्ट प्रकां बनमें बाता गया। इतार पाण्यम की सीकृत्य, नावद और काराजीयो आगे काले बादी देवीसे कालेक्सी होजांक्ट प्रका



अगर्थ, जो इस समय अग्र जान किये केही थी। आई वे इस अमे जारों ओरसे प्रेरकर केह गये। किर एक पुनिश्चितकों आज़ासे गीमसेनने प्रैरकीको का दिवा गाँव है और उससे कहा, 'ग्हें। तो का मणि है, तुमारे पुनिके कथ करनेवालेको इसमे बीत दिवा है। जब उठो और कोक स्वानकर झालकर्मका विचार करें। किए समय झीवृत्यक्त संविके दिवो कौरतीके पास वा हो है, उस समय कुने इसमें कहा का कि 'केसब। आज काव्यक्तरेग मेरे अपनानकी कहा कुनकर सहजोंके साथ मेरा करना कहां है। इससे में समझती है कि मेरे न हो पति है, न पुत्र है और न माई ही है तक न दूप है मेरे हो।' हो साथ अपने उन शरिय-क्योंकित काव्यक्ते पह करें। पत्री हुनीसन मास गया, मैंने क्याने हुए दुन्हास्त्रकार स्काराव थी कर दिन्या तथा हेजपुरको से इसने जीत सिना; त्रहाज और कुकुर समझका है। जरे जीता क्षेत्र दिना है। जरका साध कह सिट्टीनें सिस कुका है। इसने जरकी पनि क्षेत्र स्पेट अस कुकीयर कुका दिन्ये है।

क पुनका हैन्द्रने का:—'गुक्कृत से मेरे रिक्ने मुखिके सकत है, मैं के केवल कसरे अपने अनिहका काल है सेना पहारी के 1 अब इस मीनको पहाराज अपने पहाराज काल मेरें।'

ठंव राजा पुनिश्चित्ते इस गणिको गुरुवीका स्नाद सम्बादन क्रेंब्स्टेंके कहनेते उसी समय अपने मस्तदानर बारण कर तिथा। इसके कद पुनालेकसूरा क्रेंबस्टे ब्रह्मार अपने इक्टनार कर्ता गर्ना।

राजन् । जान बहाराज चुनिहित्ते, रातके समय जो और गरे नवे थे, उनके दिनो होचातुर होकार सीकृत्यसे कहा, 'कृष्ण । जाहत्वामा तो प्राथिकारमें विशेष कुशार भी नहीं या; किर जाने मेरे सभी महारथी पुत्र और हमारो को हाओं के साथ अपोले ही स्थेष केनेकारे प्राथिकारिकारम् इन्तर्योको की मार इत्या / जाने ऐस्स कीन पुण्यासर्व विश्व था, विश्वक प्राथानो जाने अपोले ही इसारे सम सैनिकोको नह बार दिया ?'

लेक्नमं का -असमामनं अवस्य है हैयाँके हैंदर है कि विवाद अधिकारी समयान् विकादी साम राज्य । महर्मकर्या से अधिके है अनेवारे के क्षानंकी मार राज्य । महर्मकर्या से के है, जिससे इनायों भी नह किया या समया है। सरकोह । महर्मकर्यों में नह किया या समया है। संस्कृत क्षानंकी प्राचीन कर्य है, उन्हें भी में जानता है। से सम्पूर्ण क्षानेक साहि, मान और अन्त है। यह साम समय उन्होंके स्थापने सेहर कर हा है। से महान् पीर्यसाली स्थापके महारकी कुलेकों और पाहालग्राकोंके अनेवारे अपने महारकी कुलेकों और पाहालग्राकोंक अनेवारे अनुकारिकारों क्यासायों कर दिया। अस आय उसके विकास करेंगे के स्थापना में स्थापना में स्थापना माने के स्थापक स्थापने कुलेकों है किया है। साथ से सब सामें से स्थाप करना है, सरे वीजिये।

सौद्रिकर्ज सम्बद्ध

# संक्षिप्त महाभारत

#### स्रीपर्व

## शोकाकुल वृतराष्ट्रको सञ्जय और विदुरका समझाना

न्याययं समझूक्त तरं क्षेत्र नरेक्यम्।
देवी सरकारी व्यापं तथे वनपुरीरकेत्॥
अनुवारिते नारायक्यकायः क्ष्यकाम् अनुवारः, उनके।
विकासका नरकायः नरका अनुन, उनकी क्षित्र प्रकार
करनेवासी क्ष्यकारे सरकारी और अनके क्ष्या व्याप्ति
केद्यवासको समझ्यार करके जासूरी सम्याक्षिकोरः
विकासकोर्द्यक्षित अनाःकरकको सुद्ध करनेवाले व्याप्तिका
प्रकार कर करका व्याप्ति

एक बनवेजनो पूक्क- मुनिवर ! कुर्वेजन और सम्बो बारी सेनाका संबार के कानेपर इस समाकारको सुनवत एक बूतराहुने क्या किया ? इसी जकर कुळाल युविवेश और बूतराबार्ज आहे रीजों महारोजनोंने की इसके कह क्या किया ?

वैज्ञानसभी मोरो—राजर् । अपने सी पुर्वाच्या संकार है मानेसे स्वाराण कृतरम् बढ़े दुः वर्ष हुए, कुराक्षेणके अस्ता स्वार कराने राज्य और वे शिलानों कुम नने । जर सम्बर स्थादने अस्ते करा बासार कहा, 'स्वाराण । अस्त विच्या सभी करते हैं ? सोकको सोई केंद्र से सम्बरा नहीं । राजन् ! इस युक्ते अस्ताम् असीदिनी सेन्य करी ननी, ज्या पृथ्वी निर्वाद होक्यर सूनी-दी हो गयी है। अस अस्त सम्बर्धः असने साम्बर-नाट, बेटो-पोलों, सम्बर्धकरों-सून्त्रों और मुख्यन्त्रेची निर्वादना कराहने।'

शक्ष्यकी का दुःशासी कार्य सुनकर कक कृतक्ष् केट-पोरोके सबसे काकुल होका पृत्तीका मिर कहे। किर श्रामान होनेकर के मोरो, 'मेरे पुत, नामी और सकी शुरुकत पर कुछ हैं। अस तो इस पृत्तीका कार्य-कार्यकर मेरे तिरहे हुन्छ ही बद्धारा कार्या स्व नवा है। ऐसी विद्यासि भारा, पुत्रो क्या तस्य है? मेरा राज्य नह हो नका, कर्य-कन्यु सब मुद्धारी कार्य का नवे और अस्ति के प्यान्तिको नहीं है। कृष | मेरे अपने दिसेकी परश्चासकी, नास्त्रको और कार्यकर कुटाईकाननकी भी नार्य नहीं सुनी। श्रीकृत्यने स्वरी स्थाने

वीक्ष्में केरे क्षांके दिन्ने कहा का कि 'राजन् ! कार्य वैर मह जीवे, अपने केरेको रेको !' किन्नु में ऐसा मूर्ज है कि मेंने उनको क्षा नहीं कार्य ! इसी तथा की बोधानीकी कर्यपुर्व कार्या की नहीं हुनी ! इसीने अपन मुरी तथा कराया का दी है ! स्थान ! इस क्षांके किया हुना कोई ऐसा कर शाय कर के नहीं आता, किसके कारण मूटे का कर कोनक वाहिये का ! अपने की अपनु कर कुनो के क्षां अपने अपना हुना है ! इसीने किवानों मुझे इन दु-बासन कर्मीन निमुक्त कर हिया ! अप मेरी अपनु कर कुनो है, सब धार्न-कम्नु समाप है कुने है और किया मेरे हिन्दी और निर्माण भी काल है कुना है ! कार्य, अपने क्षांसरों मुझने क्षांसर है की और कीन होता ! आ: पाकास्त्रेन कुने आप है आपनेक के सुने हुए वार्यन कार्य हैते !'

इस इकार राज श्वराष्ट्रचे असमा प्रोप्ट उत्तर संस्ते हुए अनेको को कहाँ । जा स्थापने एकके शोनको सन्त बारकेंद्रे रिवरे के प्राव्य बढ़े, राकर् । आरका पुत्र कुर्वेशन बड़ी 🖟 कोटी कृतिकारक को । कुलासन, कार्य, सकुनि, विकासिय और प्राप्त कियोंने सारे संभारको कारणाधीर्ग कर दिये वे—दे सब कारके सरमाकार थे। अरे ! कारने वितासक चीन, पाता पानारी, चाना निवृत, गुरु ग्रेम, शानार्थ कृत और महस्यते 'बस्पनीयों भी बात रहीं सुनी। स्वतंत्रक कि जाने बूतरे-कूटरे चानि और अतुरिध्य तेवाली व्यासकीया भी कह जी किया। उसे एवं चुक्की है लगर लगी गी। इसके कारण असे कची असरपूर्वक वर्षानुसार की नहीं फिला और न कभी वृतियोके ही फिली वर्गका आहर विका । उसने के कर्ज है इक्षियोंका संहार कराया । आपने इन्द्र अध्यक्ती सामर्था थी, तकापि इस विकास आपने भी पुरु नहीं बहु। जायबी बात बोर्न टाई नहीं सकता थी, क्ष्मापि आपने क्षिपम् क्षेत्रर केनी ओरके बोक्नेको तराजुरर व्हाँ कैला। प्रमुखको बकारकि पहले है ऐसा काम करना

कारिये, विराणे अपने विकासे कार्निक रियो को प्राच्या न भो । आहों से पुरक्षेत्रों पैतरकर सर्वका दिन परना नहा. क्रोंचे का कार्यों प्रकार कर पर पा है। अर आहे रियो पोर्ट्स प्रोप पहीं करना पाहिने । प्रोप्त कानेबे न के बन विकास है, या पान प्राप्त केला है, या देखने निवारंत है और अ मरमाजनको हो जाहि होती है। यो पूरण साथे जाति केह कारोह को बार्योंने सरोवकर बतने सरका है और फिर प्रकारत कर्त केवर है, वह ब्रह्मिक की बढ़ के करता। हर प्रत्य अपने पूर्व और अपने हे प्राप्तास्य अधियो अपने कारणा बाहुते सुरूपण था और को क्रेपणा का क्षेत्रकर प्रान्तीया विकास था। यह बंद अन्य करण उसी से अपने अवनंद्र पुर पराहोची राष्ट्र मिली तमें और उसकी सामान मात्रकोर्ने प्रत्यार पान हो गर्ने । बांद्र (बान्सी क्रमें। तिमें प्रोच्य नहीं चरण नाहेने । इस करण महानाने कारत अन्तर पूर अन्य प्रतिन हे पर है। प्रायहीते हैश्वर केला अरका भारत है और सम्बद्धान रहेल हुने अरका भी क्षीं करते । के कोकांद्र अनेत अस्तारे विस्तारिकोंद्र समान क्रमारेको प्राप्त करते है। यह 100 प्रतिके हुए प्राप्ते सामान करके मोना और रेंगको क्षेत्र केंग्निके।

र्वजन्मन को है-का उत्तर बहुना सहको एक कृतकृत्ये केर्न केरावा । प्रात्ते का विकृत्ये अन्ते अनुनो रातून नोड़े कान्योरी को कारण होते हुए साले राते. 'राज्य | जान प्रत्योगर क्यों पड़े हैं, अन्यत के प्राप्त और Bearrolly week severe within there's the बोक्केक्ट कराने को से परि होते हैं। फिल्टे सहक है, क्षात पर्वतान क्ष्मों है होता; साथै मेरिन्ट साविनोटा अन्य भारती है होता है। यह संबंध विश्वेतनों है समझ होनेको है। इसे उच्छा चीवना राज्य की महनते हैं होन है। जब बसलब प्राचीर और प्रत्येक क्षेत्रीहेको अल्पी ओर सीवते हैं, तम से चीर समित पता बच्चे न करते । करता । प्रकार आनेपर कोई नहीं का सकता। को युद्ध नहीं करता, का भी मता है है और क्यो-क्यों यह क्योकार के का ही कहा है। कर अनेकर से बोर्ड की के कवता। निकर प्राची है उलावारों से नहीं से और अपने की नहीं सेने, केसल बीचमें ही दिवासी केंद्र हैं। इस्तीओं उनके दिनों क्रोक क्रमेको क्या अकावका है। क्षेत्र करकेरे पराव र क्षे मरनेवालेके राज्य का समझा है और न का ही समझा है। प्रश प्रकार का रहेकारों को सामानियाँ निर्मा है से उत्तर बिद्रार्शियों क्षेत्रह अपने हैं ?

'इसके रिका राजन् । बुद्धाने यारे कार्यकारे मीरोके रिको

के सामने क्षेत्र करने हैं की काईने। और काम होया है हो जा सुनोने कावनी। कही है। इस पुत्रने मरनेकरें सभी कर सम्बद्धकोड़ और सहस्रहे के 640 के सबी साथे क्षाको हो: कुछन कोलातिको छातु हुए है । इस्सीओ उनके सैको केवान अवार है कार्ड ? क्यारे पूर्व ने करी होन अवार में और क्रम दिन अग्राम हो नने हैं। यहाँ में उपकोर में य जान है करते हैं। दिन हुएने प्रोचा कानेका क्या करण है ? बडारें हो को समुख्य पहलू पहला है, उसे नहमें निरादा है और को प्राप्त है, को बोर्डि निल्हों है। इस अवन्य इनती व्हिले से केने हैं अपन पार पार्च साथ है, पहले नियमका से है है भी औ बहुम स्ट्रीक्टब्रुक पह और करवाने भी जारी कुरश्याचे सार्थ 👊 भूर्त कर सकते केते कि पूजा गरे मानेवर पूर्वपत्तीय अन्य का रेके हैं। इस अवतर क्रीएके रिन्मे के इस स्टेकरें कर्नव्यक्ती बंबका और बोर्च सरक नहीं है। अरह आर अर्फ कानो प्रत्य करों, क्षेत्र क्षेत्रिये । इस प्रत्याः क्षेत्रप्रकृत केवर अपने अने प्रतिका सन भी वर है। प्राप्ति । अंक्रमें क्रा-का पन रेक्ट जार स्वारों पक्र-रिया और को-कार्माका एक का को है। जोत बाकाओं विकास से हुई और विकास कुर । प्रोच्योर क्राएरे काल है और प्राप्त भी केवाई साम है। सिंह प्रमान सर्वत पूर्व प्रार्थनर के प्रमान पाल है, प्रक्रिक्केश और

'कारोत । कारका से ५ कोई किया है व अधिक और प विकास की अल्पा कार्यन्त्रमा है है। यह से सर्वाने कारों और भीववर से पान है। बात है अनियोको पान कर्मा है और करने हैं और का बार देश है। यह साथ चीच के को है, का करन भी करन करना रहता है। नितर्केश कारों का कर का से बहित है। बैका, कर बेकर, कारत होता. अन्येना और देवसम्बेक स्वाता-ने प्रती अभिन्त है। पश्चिम्बर् यूक्को इसमें बेसला नहीं माहिते। यह द्वा के को है देको समाध एका है। इसके रिप्ने आर लकेले क्रोक न करें। कारि हिन्दरनेका संपन्न हेरीयर क्ष्म क्षमा है है। स्थापि क्षेत्र करनेने का वर नहीं केता: क्वेंबिट कियान करनेवर रूप्त कथी नहीं बटता, इससे से बट और भी यह साम है। को रहेन कोड़ी स्टिक्सरें होते हैं, में है अधिकारी प्राप्ति और प्रकृता विभोग होनेस पानीसर क्ष्माने क्षम करते हैं। क्षोक करवेते जनम कर्तव-विद्या है। क्या है एक अर्थ, वर्ग और कामकर विवर्गमें भी पश्चित बारा है। विक-विक कार्रिक विकासकोंने पहनेपर कार्यकोची कुछ से कार को है, किया जिलाबानेको सभी amenantit mite war for

कारिक क्यूको ओवन्तिरोते कु करे । इसे ही विकासका लेखा है । सनुन्य अस्य ही अपना सन्तु है, जार *ही* कर बक्रो है। जो गुर्जीकानत व्यवक्रर नहीं करन व्यक्ति । क्रुक्तका पूर्वकृत कर्य असके संनेका के जाता है, उठनेका है। यह चून कर्यते सुन चया है और चयारे दुन्त चोनाह का बैठता है और देवनेपर की साथ रूप कहा है। यह है। इस प्रवास पर्मव किये हुए क्वांबा है परह पितवा है, विहा-किहा अवस्थाने कैहा-केहा की जुल का अञ्चल कर्त है किया विशेषक नहीं है

मनुष्यको पार्शिये कि पार्थिक कुराको विकाले और | 1600 है, उसी-उसी अगरवाये उसका कर भी पर कारण क्या है और आप है अपने पाय-पुरुषका साक्षी

#### विदुरजीका महाराज धृतराष्ट्रके प्रति संसारके स्वस्थ, उसकी भवंकरता और उससे सुटनेके ज्यायका वर्णन करना

हता भूतरपूर्व बहा—बाब मुद्रियान् विकृत्यो । हुन्हरे | क्रमानेका साम्या कर्ता है, अन यह वैके-वैसे महते समान श्चर प्रान्तकाची संस्थार नेता क्रोक श्वा है पक्ष है। अधी मैं तुम्हारी स्वरमध्येत कर्ते और भी सुनव प्रकार 📳

मिहरवी धोरी-प्यान्तवा । विचार धानेवा चा महा पराह अन्ति है पर पहल है। या केले केले क्रमा सार्धन है, इसमें प्रस पुरू की नहीं है। सहस कीरे नदे या पूछने बच्चाचे जातकर द्वारा बच्च पहल हैता है, असे अवस्त कह नने-नने प्राप्ति भी करना करता सारा है। योग जनने पूर्वकर्मीक अनुसार अन्य होते हैं और रिय पर भी से मारे हैं। इस उपार पर लेक्स जान मध्यको है आरमानाचे (अले-ललेकान) है से आर विकासिये होत्य बारो है। इस संस्थाने को सोना बृद्धिकर, processed was, went the amount of attention स्यागमध्ये कर्मपुतार कार्यकारे है, वे हे परमानि उद कारते हैं।

राज प्रारामे पूरा-विद्राली ! संस्थाना कामर बहा महार 🕯 । अतः ये का सुरात पाइना 🛊 कि इसे विका प्रकार बाना का सबस्त है। सो तुप क्रांक्ट कर्नन करे।

विद्रावी केले-पहुताक । यक नयांक्रको सेले और रक्षका संयोग होता है, तथीरो जीयोची डिल्कर्र दीएने सल्बी 🖁 । जारामानें कीय कारियत (कीर्य और एक्के संयोग) में कहा है। फिर कुछ दिन जब पोक्सी महीना बीतनेकर का बैतन्यकारो प्रकट क्षेत्रत रिच्को निवास करने रूपक है। इसके बाद का गर्मतः निष्यु सर्वापूर्ण हे जात है। इस समय को मांस और व्यक्तिसे भरे हुए कारण कार्यक मर्मासम्भे क्रम बहुत है। दिए बायुके बेनले अलो के करराची ओर से कते हैं और दिन नीकेंची ओर। इस रिवतिमें बोनिहरके समीप का जानेते को को रूप सक्ते पहले हैं। फिर यह योगियानी पीड़िए होयर असी बाह्य क्षा जाता है और संसारमें क्षण्यर अन्यान प्रधारके है, वैके-वैके को नवी-नवी व्यानिकों की बेरने रागती हैं। क्रस प्रकार अपने कार्येके पेरिक क्रेकर पर जीवन व्यक्ति करता कुछा है। विकास अक्सरीय होनेसे ही परस्परि प्रतिक्रि होती है, के किया को की बाते हैं एक उनके बारण यह इतिहास पार्कोंने पैका पारत है। ऐसी रिवरियों इसे संदर्भ क्यांके क्यांन के होते हैं ह कारों की क्रमेवर हो इसे पूर्वित ही नहीं होती। का प्रमान महे-हरे कर्म करनेपर को उनका कर ज्ञान नहीं होता। केवार धारतीय पूरण ही अन्ते नितानो क्रमाने केलके क्या सकते है। स्टब्स्स क्षेत्र से क्यानेको प्रश्न जीवार मी को भी प्रथम प्रश्ना इतनेदीने काल इसे मुन्दुके मुक्तमें काल देता है और प्रमाह बाउँको सक्तर सामित हेंचे। हैं। इसे खेलनेकी सामित नहीं पानी । अर राज्य प्रस्का के प्रक पन क पुरूष विका होता है, कह क्रमणे ज्यान है। सिंह् बेह्नमधानों देश भारेगर गड़ रिज अनी इक्कारका प्रथान नहीं करता। प्रथा ! स्वीधके पैकेने पीराकर संस्तर कर्ण है उन्ह क यह है। यह लोग, हरेब और सबसे क्षमत क्षेत्रर करनी सुनि हो नहीं रेज । परि पद कुलीन होना है को अनुसरिनोच्छे हेन्द्रहिएँ देवता हुआ अपनी उस कुलीनकर्ने ही भवा रहता है और वारी होनेपर बनके सर्वहरों नाका निर्वेशेकी निष्य करता है। यह इसरोंकों के मुख कारत है, किया अपनी और कारी नहीं देशता। इसी तरह इसरोके क्षेत्रोको के निन्दा करता जात है, किन्तु अपनेको कार्ये रक्षेत्रक कर्णे विकार भी नहीं करता। यह बुद्धिमार् और पूर्व, क्षमी और निर्वय, कुलीन और अधूलीन छवा प्रतिक्षित और अप्रतिक्षित—अपी प्रमहत्वपृथ्वि व्यक्त वक्कोन अवस्थाने पक्षे हैं, एवं किसी भी व्यक्तिको इसमें कोर्ड देशर अच्छर विकासी नहीं देता, जिससे में उनके कुल क काको विशेषकाका पता राजा सकें। जब मानेके बहुता सभी और प्रभाव भारती पृथ्वीकी चेंदर्ग खेते हैं तो से पूर्व एक-

कुरियो क्षेत्रा कर्ते के हैं ? इस नक्यार सोकर्ते के कुछ इस नेकेक रुपोलको साहाद का विश्वके क्या कुनकर कारते ही गर्नका आवश्य कथा है, यह अव्यक्त करवारि अस कर रोगा है।

क्य कृत्युने का-नितृत | कार्वेद प्रश्न पुत्र प्राथका इसने युनितों की को सकता है। उसके तुम की अपने विकारपूर्वन पुत्र कृतिकार्यनों कहे।

मिट्टवी वर्ण सर्गे—सम्बर्ध अनेवर्ध सर्वपूर्व ममन्त्रार करेंद्र में इस संस्थरक नाहर वर्ग्य का कारणका कर्तन काल है विलाय विकास स्कृतिकी विका है। कुछ Hart दियाँ विकास करने का वह का का कह कुछ हुनेर कारने क जीन । जो विदे, काल, इन्से और केंद्र साहै। कर्मकर कर्पुश्रोते कर देशका संस्था प्राप बहुर 🛊 करत काः को रोगान है सामा और माने बहे अश्रेर-पुराद होने इन्सें । यह अन्तें इत्तर-कार कैंडकर जाने बहुत हैंहर कि कही भीई सुरक्षित स्थल निवा स्थल। यह स से प्रमुखे निवारका पूर ही का सम्ब और न का बेनाई क्रीकेंड प्राय 🛊 च सका। इत्तेष्ट्रिये अले हेला कि वह चीरण कर कर और पासने क्रिये हमा है। एक समस्य पर्याप्य प्रति औ अपनी पुजारोंने के रिवा है तक कारों एका की पीव मिल्लाने पान की उसे तक ओरड़े की हुए हैं। उस करते बीचमें इक्क्-इंक्सकेंसे भए धूमा एक गाउँ कुर्कों का। का क्राइन्स ३४९-वर्ग महत्रम स्टीने निर नवा। क्रिय क्रमानाराने पीतवार यह स्वयंत्वों के और वीकेंको हिल किये बीप्योपे स्टब्स गया।

इस्मेरीने पूर्णें जीतर जो एक यह साथ वर्ग विकास हैना और कारणी और उससे विकास एक विकास हानी दीएता। असे प्रतिस्ता (न स्तेत्र और जातर का एक इससे का गुरू और जादा कर है। यह बीर-वीर उस पूर्णेंं और है जा दक था। पूर्णें विकास के एक यह उससे सरकारों पर उससे व्युक्ती वर्षों कार्से तिर वह बीर। अनु से सरकारों में स्वार सेनोंनो क्रिय है। असे वह पूर्णें का्या हुआ पूर्ण एक प्रमुखी का्राओंची है पीक पूर्ण का उस हुआ संस्था की स्वार सेनोंनो क्रिय है। असे वह पूर्णें का्या हुआ पूर्ण एक प्रमुखी का्राओंची है पीक पूर्ण का्रा की हुआ संस्था का मान की कों पीने-वीरो का्या दक्ता का्रा की हुआ। किल सेंस न उसे अपने हैं। वीक्शा क्रिया है हुआ। किल स्थान क्यों कार दो में। इस अवन्त इस विकास का्रा किल क्यानों क्या दो मेर रहा था। बनबी सीनको क्या बिसक क्यानोंने और अन्तक अन्तक बालें क्या कां, कुर्लेंड केंग्रे करते और कार इसोते आहतून की, प्रोडकों पर पूर्विक कार देनेसर वृक्तने निरमेका का और इस्त पर प्रमुक्ते लेकों कारण अनुविकालोंने भी था। इस असार संप्रत-अपाने पहला भी पत्र पूर्विका दूश्य का एका संप्रश्नी संप्रत करी प्रोडों को कारों नेपान की नहीं हैना का।

महत्व। मेश्रामको निहाली भा एक सूत्रत च्या है। इसे सम्बन्धार वर्णना जानस्य सरनेते प्रदेश क्यानेकार्ने कुछा था सरकात है। यह को निवास्त का बाह्य ग्रेस है, यह यह निराहत संस्था हो है। इसमें को दुर्गन संस्था कारण है, यह इस संस्थानको हो ब्यूनात है । इसमें को सहे-कहे हिल की बार्क की है, में राजनावादी जानियों है क्या पुरुषी पीनान्त को को डील-बोलवारी को है का क्कान्य है, को क्यूक्के क्य-रेक्के सिम्ब हैते है। का बनने को कार्य है, का स्थानोह है। जाते संबंधी और को कार केंद्र कुछ है, कह उनमें कारत हो है। कह समय क्षित्रारिकेको पहु कर विकास और उस्के सर्वकाने सुद व्यक्तिकार है। कुर्वेद जीवर को एका है, विश्तवेद शस्तुओर्ने का कहार राजक हुआ है, का हाली बीकाओं आहा है क्या जनको और को का पुंत्राल हुन्हें है का संस्तार है। का महार्थ करने पुत्र है क्या करह महीरे पैर है। अर कारणे को को कार के हैं, अने एक देन कहा क्या है। एक क्यूक्टी के एक्-स्थानी कारवाई है, के म्मूननिकार्य है। मनिकारोधेंद्र क्रमेशे को मनूबंदि बाताई पू को है, अर्थ कोगोंसे प्राप्त होनेकाले पर समझो, कियमें हिंह अधिकांक ज्युक्त हुने को है। सुद्धिकर स्थेन संसार-सहायो च्यांच्या हैता ही सम्बद्धारे हैं। बची ने बेरान्यस्था दसवारने प्राची पापीची पानो है।

प्राच्याने कार-सिद्धा | तुन को सरकार्ती हो । तुनने पूर्व कार क्षण्यान सुनामा है । हुन्छने अस्तुतस्य स्वच्येको सुनाम पूर्व कार हो होता है ।

अपन्यों को कार्यका विकास हुन्या है, विसे सुन्यार कृष्टिकार खेल संस्थान कुन्या है, विसे सुन्यार कृष्टिकार खेल संस्थान कुन्यार कुष्टिकार खेल संस्थान कुन्यार कर्यकार कुन्या का कार्यार कर्यकार कुन्या का कार्यार क्षेत्र किसी क्षेत्र कर्यकार कर्यकार कुन्य क्षा कर्यकार अस्था केंग्र-बीकार क्षित्र कर संस्था कर केंग्र है, उसी प्रवार अस्था क्षेत्र क्षेत्र क्षा संस्था कर संस्था कुन्य की क्षेत्रकी क्षा क्षा कर केंग्र के क्षा कर किसी कुन्य की क्षेत्रकी क्षा कुन्य की कि क्षा कुन्य की क्षा कुन्य की क्षा कुन्य की क्षा कुन्य की किसी की क्षा कुन्य की किसी की क्षा किसी की क्षा किसी की किसी क

चरतार अस्तिकेका संस्थातका है। विकेची पुजरको उसने मासक नहीं होना चाहिने । मनुष्योची को प्रत्यह और परेख क्षांत्रिक तथा कारीमा न्यांका है, ज्यांको बुद्धकारेने किस बीच जाता है। प्रदानि पूत्र इन प्रातिनोते प्रस्क-सर्वाके हेन्द्र और शायरिकों उद्योगन की संसारते किरा नहीं होते। यदि वितरी उत्पार पर्यूच इन व्यक्तियोके पंत्रेते निवार की बाब हो अपने हुई बुद्धानक से के हैं है होती है। इसीनो पह तरह-उपक्रे कम, स्वर्ध, का, रस और मध्येते विरवार काम और मोस्स्य क्षीवाहरे को हुए अक्रमानि क्रिकर गोर्ने पर करते है। वर्ग, पाय, पर और विश्वकारी संविधी—ने प्रमातः अस्ये पन और सामुख्य पात्र विका करते हैं। में एक कारके हैं प्रतिनिधि है, इस कारके पह पुरुष नहीं चानवे ।

विश मित्रानेका कारण है कि प्रानिकोचा करेर रहते समान है, साथ (सर्वन्त्राध्यान वृद्धि) क्रानी है, प्रमेशवी मोदे हैं और मन समान है। जो पूछा सेन्यापूर्वक केंग्रो हर कर कोडोर्ड की रूप कुछ है, का के इस संकरकार्य ufficie wen wen unt fr fles ib glegen wit अपने कार्यने कर रोक्ष है, उसे इस संस्थाने नहीं आक marry see: affigure quests storach Replica de प्रचल करण कहिये। इस ओसी स्वयन्त्राई नहीं करने पार्टिये । को पूरत इतिकारियों सकते एकता है, ब्रोल और | अलु बार लेते हैं ।

न्वेपसे करा प्रांत है तथा शेखा और साम्पारी है, यह साचि का करण है। मनुष्यको चाहिने कि अपने पनको कान्ते काके स्वाकतस्य महीयनि प्राप्त करे और उसके प्राप्त इस रिवाद: स्थान व्याचेनको न्यू का है। इस ६-१०ने शंबार्थ विकोद क्रम केल कुरमात निक स्थान है केल परस्का. क, कि व वेद-विजीको के सहकारे की कि प्रमाण । प्रातिको कर्मकाले अस्तान्यको निर्मा प्रमाण भीता प्रमा करण कार्युचे। एन, उसन और असमाह-न्ये तीन परकारको कार्य से कोन्को केई है। से पूर्व ब्रीतका रूपन्यको प्रवासका इन कोबोंने सूरो हुए प्रमान्य राज्यन समार कुल है, का कुनुके करते कुरूकर स्थानोकारे काल है। स्टे मादि समान प्राणिको अध्यक्षन करता है, यह ध्यासन विष्युके विशिवार परम्याको प्रदा होता है। सम्बद्धानाने राज्यों से कर का केन के का कारों का और ियक्की उपलब्ध करनेते भी मूर्व जिल सम्बद्ध । यह स्था निर्विकात् है कि प्रानिक्षेत्रों अपने आवतारे अधिक दिल सोर्व क्या नहीं है; क्योंकि परण क्रियोकों को हुए नहीं है । इसरियो वृद्धिक्य कुलको सभी कीलीस क्या करनी व्यक्ति। को वृद्धित कुछ प्रकृतस्त्रके काम-नेतृते केले हुए है और रिन्हें बुद्धिके काले क्रीए एक है, के शिक्ष-पिक क्रेडिजोरी पानको पाने हैं। परावादी पहारक से प्रतास सहयो है

#### शोकमञ्ज राजा धृतराष्ट्रको महर्षि व्यासका समझाना

**वर्गिकपालयों करते हैं—शबन् ! बिहारेंद्र के करत |** सुरका गता कृतवा कृतकेको नाकुर हे गुढ़ी स्थान कुलीयर निर को । उन्हें इस प्रकार सबोत होकर निर्म देश शीकारानी, किर, सक्षय, स्वाप्त्य और यो विकासका क्षरंक्रम के, के प्रीक्रम कार्यक्र प्रीते केवन स्टब्रके पेन्डीरे क्रम मारने लगे और बच्चे करीरका क्रम केमरे सन्ने। इस क्रकार काके बहुत देशाया अस्तान पारनेका प्रतालको पेत हुआ और मह पुरस्तोकरो स्थापुरा होकर विकास करने राने, 'सन्त्रकारको विकास है। इसमें भी विकासी करके परिवार बहान से को हो शुक्रको कर है। इसके बारम बार-बार रख-सक्के कुल पैक् होते हैं। पुत्र, कर, सुद्ध और सम्बन्धियोगा नाम होनेपर विष और अधिके **दि**को सम्बन बढ़ा ही दश्त भोगना पहल है। उस दश्तरो प्रशिप्तें जलन होने लगती है और बढ़ि नक हो जाती है। देखें आपरिने पैसनेपर से पनुष्पको स्टेडिड सनेको अधेक र्यंत

है राजी पाएम होती है। इस्तीनो साम मैं भी अपने mebah sare die c'

पाला कारकीरो देश बहुकर राज कारह आकर प्रोच्यादान हो को और अपने कृतिह ही क्रियानों प्राध्वा से केर का पूर्व : का परवार काराने उससे कहा, 'काराह | इसने सब काक सुने हैं। तुम कुक्रियन हो ! तता वर्ग और अंबंधि स्थानने श्राप्तर हो । अनुस्तिका जीवन एका राजेवारक नहीं है--ब्बर से दूस नि:सन्देश जानते ही हो । यह पार्वलोक अधिक है, परमपूर विरा है और बीवनका पर्यक्रका परकारे है केल है—बह राज करकर भी तुम क्रोब क्यों करते हे ? इस केरबा अनुभाव को कुन्हरे स्थापने ही कार। वह र क्को प्राची काल क्यान करने ही हरे अंकृतित किया था। एकर । यह मौरवीया विकास से ब्रेज ही था। बित हुए का चुरवीरोंके सिने क्यों झोक करते हो ? कर सकते से परावर्ति प्रका कर सी है। एसने सरकारी बात है.



क्या चार में इसकी सम्बंध गया था। वहाँ की तम क्रेक्सओं के इसके पर अपनी और उसने पत्त विशेष स्पोध्यक्त पूर्ण करके पर अपनी और उसने पत्त विशेष स्पोध्यक्त पूर्ण करके पर अपनी और उसने पत्ति हैं पूर्ण कर के लिए स्वाप्ति के स्पाप्ति के प्राप्ति के पूर्ण कर के लिए हैं पूर्ण कर के लिए हैं प्राप्ति के समझे पत्ति पत्ति के प्राप्ति के समझे पत्ति प्राप्ति हैं, यह तैरा प्राप्त करेगा। इसके विभिन्निते अपनी पत्ति कुरुक्त में अपने समझे पत्ति पत्ति पत्ति अपनी हैं पत्ति करके हैं। इस अपनी क्षा कुत्ति के समझे पत्ति पत्ति करके स्पाप्ति करके हैं। इस अपनी क्षा कुत्ति के समझे करके स्पाप्ति कर स्पाप्ति करके स्पाप्ति स्पाप्ति करके स्पाप्ति करके स्पाप्ति करके स्पाप्ति करके स्पाप्ति

" 'राजन् ! दुन्तरा पुत्र को कुरोंकन का, जानके कालों करिनके अंदाने ही गान्धार्यको गर्थसे जन्म रिवा का र इसीने का ऐसा अस्तानदर्शित, कहारत, सर्वकी और कुटलींगरो काल स्पेनेनास्त्र था। दैनकोनको जानके वाई को ऐसे ही काला हुए और मान्य प्रकृति तथा परंप दिन कर्क की ऐसे ही एक साथ गर्भ। में साथ पुत्रनिक्ता कार जानकोड़ सिन्दे ही एक साथ जनक हुए थे। जैस्य राजा होता है, मैसी ही असकी प्रकार की कार्यिक का कार्त हैं से कार्यों कार्यिक हो जो अन्वर्थी सेकक की कार्यिक का कार्त हैं से कार्यों कार्यिक हो जो अन्वर्थी सेकक की कार्यिक होती है—इसमें संदेश नहीं। राजन् ! दुह एककार संसर्थ होती है—इसमें संदेश नहीं। राजन् ! दुह एककार संसर्थ होती है सुनारे और पुत्र की बारे गये। हार काराको हेकार चन्द्र करते हैं। अस्ते पुत्र अपने हैं अपराक्तों पारे क्ले है। इस अनेद दिन्ने क्षोफ बार करो; क्योंकि इस सन्वयनी कोक करनेका कोई कारण नहीं है। परकारोंने दुखारा करा में अस्तर की फिना है। महानमें से तुम्हों कुर ही कु थे, न्त्रीने इस रेक्का का करावा है। यहरे प्रमान काने स्तर देवर्ग नाहरे एक पुरिश्तेस्को स्थापे बद्ध क है। 'राजर ! हुन्दें को कुछ करना हो, मह कर सो । इन्हें समय हेता अनेना कि को बीत्त-नावत अल्पने पुत्र करते च्या हो व्यक्ति (" कार्यानीकी च्या बात कुरवार का समय क्ष्मकोची का होया हुआ था। इस उद्धार की तुन्ने पह केमरकाय कुरामा पुरा कुरामा सुकता है। इसे सुकारेने केस बढ़ी जोरन है कि किसी प्रधार रूपाय क्रीक हा है जान क्या हम पुरुषो देखे चेन्या सम्बन्धार हम प्रायुक्तीयर बोह कार्र (एक) । वर्षी कार्र की एकप्ताने पृथितियों की सही थी । हरिते रहीने कौरतीये साथ युद्ध केवलेका हत्य प्रया किया था। पांचु है। यह असर है। इस पान्हों परावर क्रांग्लेड राज कारका के समय है, को कोई शह नहीं सन्दर्भ । स्थान् ! कुर हो बड़े बनोमा और बुद्धिमार् हो, हुन्हें प्रतिकारिक वाच-मानके स्थानक भी पता है। जिस मोहने क्यों केलों है ? एक चुकिहिएकों की करून है जा कि तुन असन्य क्रोपालु हो और बार-बार क्यांबर असेत हो 🖚 है से वे अन्य साल देने। बोरवर चुनिर्देश से सर्वद्र पक्-महिलोका भी क्रम करते हैं, जिल से शुक्रते अति क्रान्यक कर्ने नहीं रखेने । अनः मेरी आहा व्यवका और विकास कियान कर वहीं सकता—देशा संपन्निक संप अध्यानिक कारक काके तुम अपने ज्ञान कारक करो । ऐसी कर्मक करनेते संस्थापे सुन्द्रारी क्षीति होती, क्षत्रे और अर्थकी करि होती और वैजेक्सीच्य करनाव्य करा विशेषा : क्ष्में यो प्रजानिक अधिके स्थान पुत्रकेच क्रमा हुआ है, को विकासम्ब अस्मी सर्वक सत्ता करते रहे ।"

रीज्यकार्य करते हैं—अपूरिता त्यावी कारायोक के संस्थ सुरक्त कमा कृतराहों कुछ के निवार किया, इसके सन्द ने सेते, 'दिस्सा ! कुछे न्यान् सोकासारने तम ओरसे सम्बद्ध त्या है, केरी कुछि कियाने नहीं है और सार-सार कुछों-तो का सार्थ है। अब अस्तारा का उपरेश सुरक्ता में जन सार्थ करता हुआ वश्वासम्बद्ध सोका न सार्थेका प्रकार करिया ('

उन्य कृतस्कृषे ने कार सुरका सम्माधिनका भागान्। सम्मान्त्री अन्यर्थन से ग्ले।

#### विदुरजीके समझानेसे राजा धृतराष्ट्रका कुरुकुलकी सियोंके साथ कुरुक्षेत्रकी और जाना तथा शसेमें कृपाचार्य आदिसे उनकी भेंट होना

वैसन्त्रकार्य ग्रेले—एकर् ! जब कुर्वेश्वर काथ जब और सारी रोजका जब हो गक को सक्कार्य दिन कुछ के बाती हों। और वह रावा शृतदक्षी कल जाकर कहते तन्त्र, 'व्हाराम ! ऐस-ऐससे अनेक्ट रावा अववार सार्थ्य दुर्गेके का विद्वरोकको अस्त्रम कर गर्थ । शृत्योग्ये अस्त्र आले अपने दुर्ग-चैत्र और प्राचा-राज आहे सम्बन्धा अन्त्रः क्रेस-वार्ग कराइये ।'

सहायको पर् कुन्नको साथी सुरक्तर एक कृत्यु आधारित-से होचार पृथ्वीयर किर करे। वह सक्य विहरतीने अपने कहा, 'पासलेख । ब्रॉडने, इस अवार कर्य को को है ? क्षेत्रः न बोरिन्दे । संसारने तम जीवोची जनाने को पाँउ होंगी है। जानी न से क्याने काने हेंने हैं और न अन्तने ही रको है, केवल बीकों हो उसकी जाति। होती है: हवालि इसके रिम्मे क्या होना विका बाग ? तथा इस बुदारें को हर किन एकाओंके किये जान चोचा करते 👢 ये चे बस्तुत: सोको बेन है से पहि स्वीत का सके सर्वकेट बह विका है। कुरबीरोको जंबारको प्रदेश स्थानको पेको क्रावेत्रीत होती है, देही के बड़ी-बड़ी व्हेंक्कानेकारे का करनेसे, तरावासे और विवास्थासके भी नहीं हो सकती। इन्होंने कुड़में प्रमुओका सामना करते हुए आल सामे 🗓 इसरियो इनके रियो क्या कोच किया जान ? चनन् ! यह बात से मैंने पहले भी आरही कही भी कि व्यक्तिक हैंनो च्यारे वक्तर इस होकमें कर्ग-जारका कोई और सक्त महीं है । इसरियों आज अपने मनको बैर्च वैवाहके और छोज करना छोडिये ।"

विदुत्तीकी यह बात सुनकर रामा कृतकृते रव भौतनेकी साहा देकर बाह, 'गान्यारीको और परतनेहकी साह वियोग्ये साही ही है। 20ओ तथा वयु कुन्तीको साथ लेकर बाई को तूसरी विवर्ष हो, उन्हें भी कृत्व हो।' अन्दे। विदुत्त्वीसे देख बाहकर वे स्थाप स्थाप हुए। इस समय भी क्षेत्रके बारण ने संहासून्य-से हो को ने। नान्यारीका भी पुत्रकोत्तके बारण बुट हाल बा। परिश्वी अञ्चा कहत बह

ब्युंक्कर के एक असना क्रोकातुर क्रेकर एक-स्टारेंसे विक लेकर पढ़ी अपनी और यह जोरहे जिस्सय करने लगी। इस आर्थनको विक्रमीको पक्षि उस्तो पी अधिक क्रोप्याकुर बर विक क, से की उन्होंने उन्हें बीरक बैकाक और सब क्रिकेट रक्त क्यूका नगरते कहा आहे। अब से कुर्जिकियों राज्ये गरीये मोतलात यह गया दशा बहेरी लेकर कलकरक सभी क्रोकस्कृत हो गर्ने । प्रिन् विकीयर चाले काची केवलाओंकी भी दृष्टि नहीं यही थी, अब परियोक्ते वर्ग करेनर ने सामान्य पुरुषोक्षेत्र भी सामने आ गर्नी। उन्होंने कार कोल दिने थे, आयुक्त उत्तर करने से तथा नेत्रात एक लडी चले में अनामानी होचर रचकुरियों ओर का रही वी। चाने निर्मे करनी सरित्मोंके आने भी एक साही च्युरकर रिकारनेने प्रकार होता था, इस समय है ही आहे साम-सामुधिक सामने इस क्षेत्र केवले कार पत्ने की। ऐसी इन्तरी कियोंने कार कार्य हुए राजा कृतरहाओं के रहार का । प्राची पान आगन्त न्यानुस्य होनार से राजहोताकी और करें।

इस ज्ञान ने इतितानुत्ते एक ही कंतनकी दूरीया पहिले होने कि उन्हें कृत्वकर्ण, कृतकर्ण और अश्वतकरा---



ने तीनों महाराजी मिले र राजा शुरूरकुरको नेहको 🛊 उनका 🖡 इस्प पर आवा और वे आंक्टेंगे और परवार क्रेकेन्स्को सीमें लेते हुए बढ़ने तमे, 'मरलबेड । कुर्वेकमध्ये केवारे केवल हम तीन है क्ये हैं। कादी अववदी सारी रंज का हे समी।' पुरुषे बाद कुरावाची फायरीके बक्क, 'कुश्वरी ! कुमारे पुर्वोर्न निर्मय क्षेत्रर युक्त विकार है और अनेको शहरतीको समानुनित्ते सुरक्षक 🛊। इस प्रकार अनेको मेरोपित कर्म करते हुए ही वे संस्थाने काम अवने हैं। अव से तेलोक्य सरीर वारण करके सर्गये हेस्साओके स्थान शिक्षम करते हैं। तुकारे कुरबीर कुलेमेश्रे केल कोई की नहीं था, को युक्ते मेर दिएको इह कर कर है। इन्से अमीन कवियोंने संस्थाने सकते जात कहा हरियोंके दिन्ते करमनतिका कारण कराक है। इसरिन्दे कुछ उनके विके क्रोक का करे। एक बात और है, कांक क्रमु पाण्डासकेन चैनले यो हो—ऐसी नात को नहीं है। अनुस्थान कार्य, हम र्शन न्यारमियोंने जो साथ विका है, स्त्रु औ सुर हो । विस क्रमण हमने जुना कि भीनतेको अवर्णपूर्वक हुन्हते कु कुर्वोधनको नाम है से इस सम्बद्धके पीएने केईस हर मिनिस्में कुछ गये और यहाँ चीवन बार-बाळ गया है। इस प्रकार इसने प्रश्नपुत्राचे सभी प्रमुक्तांको तथा हुन। और श्रीपदीके पुरोको बार इस्ता है। इस यदा हुन्हरे पुर्श्व

व्यक्तिक संबार करके हम पाने जा रहे हैं, क्योंकि हम तीन हैं। क्षणांकी समर्थ संवासमें नहीं ठहर सकेने । पानक कहें इस्कीर और पहाल कर्ज़र हैं। इस समय अपने कुनेकी मृत्युका क्षणांक कारक कुळानेके रिक्ते कही नेजीके इकारा पीड़ा करेंगे। अन समका संवार करके अब इसारी यह दिल्ला तहीं है कि क्षणांकीक सामना कर हके। इसारिके राती । दूप हमें कारी करेंगी आहा से और अपने मनको कोकानुस्य मह करें। स्वार्थ महास्था कर हके। इसारिके राती । दूप हमें कारी करेंगी आहा से और अपने मनको कोकानुस्य मह करें। स्वार्थ महास्था अपने हमें कारेगी आहा हीजिये और इस्तार्थन विकार करके अपने तहा वैसे वारण करियारे ।

त्या शृतकार ऐसा व्यापत कृष्यार्थ, कृतवार्थ और व्याप्तान — गोर्गने वही देवीले पहार्थीकी और अपने कोई व्याप्ते । कुछ पूर निकार जानेका के तीवी अहारकी आवसमें प्रत्या करके अनान-असका एकाँकी कर्त गये । कृष्यार्थार्थ प्रत्यानपुरको कर्म किने, कृतकार्थ अपने देखकी और कहा प्रकार क्षाप्तान्यने व्यापतान्यकी यह ती । इस प्रवार प्रकार क्षाप्तान्यने आस्तान्यकी यह ती । इस प्रवार के तीनों और एक-कृष्टियों और देवती हुए विश्व-विश्व प्राप्तान्यकों कर्ष करे । इसके कुछ ही देर क्षाप्त प्रत्यान्ति अवस्थानकों करे करे । इसके कुछ ही देर क्षाप्त प्रत्यान्ति स्थानकों करे करे । इसके कुछ ही देर क्षाप्तान्यकों स्थानकों

\_\_\_

#### पाण्डवीका राजा प्तराष्ट्र और गान्धारीसे मिलना, गान्धारीका घीषसेनपर क्रोध तथा व्यासजी और भीषसेनका उसे फ्रान्त करना

विकासकार्य करते हैं—सकर् । इसर महत्तव पुणितियों सुन कि इसरे कुने सकर्य इंग्लावने को हुए बीरोक्ट अपनेष्टि कर्न करानेके क्षेत्रं इतितादुरसे कर हिले हैं। तस से दोकाकुर कृतराहके क्या अपने करानोको लेकर करें। इस समय औक्ष्मा, सारबंध और कुनुत् यो उनके साम हो लिने क्या प्रशासन्त्रिकारोंने साम ईंग्लीने भी उनका अनुसरम किया। स्मान्त्रकार पहुँचकर राज्य कुनिहिस्ते कुररीकी तदा कियान करती हुई कियोके अनेकों कुन हेले। मार्च इस उदस्कर आसंस्तरने केती हुई इक्यों कियोने उने करते ओरसे केर लिया। से काले करी, 'राज्य ! अस्त अस्तर्भ वर्गक्त और एकस्तुता कर्ज करने समे के इस उन्ह असमें बामा, तरक, मार्च, मुठ, पुत्र और विक्रोको की पहर

कारण । इन सम्बन्धे और अधिकाणु तक सैप्योंके पुत्रोको ची कोचार अस्य अस्य इत राज्यको रोकार क्या वारंगे ?'

इस अकार ऐसी हुई का सम विकास पर करते। बाराव्य पुनिश्चित अपने जोड़ शिक्षण राजा प्रतास्कृते कार पहुँचे और करके बरागोर्ने असाम विरुद्ध । इसके बाद करके अपने अपने दाम दिखें । बारावा पुरारोक्तो अस्वक बादक अपने अपने दाम दिखें । बारावा पुरारोक्तो अस्वक बादक से । कहीने उद्यास विरास बुधिशिरको यहे क्यांचा । किर करका बिछ क्ष्यंचा कठोर हो नवा और से अधिके समान पीमको परंद कर बारानेका विवास करने समें । अधिकृष्ण बादने ही करका अधिकान सक् गये से । इससिने कहीने पीमकोनको हानोसे प्रकादका रोक दिला और



वीववरी एक सोनेकी वृति असे का कै। क्या क्रांस्तु करे करी थे। क्योंने सोनेक सीनको ही तक वीवकेत क्यानकार अस्ती पुरास्त्रीते क्योंकका केंद्र करता। कृतकृति का क्यान क्रांस्त्रीका कर कः क्यानेक क्योंने सोनेके वीवको केंद्र से क्यान, परंतु इसके क्याने क्यानेत्र व्यक्त क्यान क्योंने क्यान क्रिक्ट क्यांकर मिर परं । क्या क्यान क्यानो क्यों क्यानकर क्यान क्यान । सोच क्यान केर्ने के के अस्तरूप सोचलुस्त हुए और क्यानीता ! क्यान क्यान क्यान रोने करते।

सव अविकार के देश कि जा इसका कोय उसर करा है और जीनोत्तक कर कर करनेकी अवस्थान से खुक कर्मान के दो है से उन्होंने कहा, राजर 1 अपने कोय न करें 1 अपने इसके भीनोत्तकर का नहीं दूसा है। या के उसकी सोहेकी मूर्ति है है, इसको अपने कुकर करता है। आपने जोशने कहिएत के एकर की मीनोत्तको उसको पास बानेसे केन दिन्या का किस अपने कारत असनो का पूर्वाचर कोई जीता नहीं का सकता, वहीं कारत असनो कुसरोपेंद्र वीकों पहचर किसीने असन नहीं का सबसे। कही सोकार असने पुत्रने कीमोनकों को सोहेकी वृद्धि करवा रही की कही की असनो असने कर है की। कुसरोपानी असने आपने सामके प्रकार करनेकी हवा हुई की।

वित् सामोद्र हैले का जीवा को है कि आर मीमाद्र का करें। अनः प्रमाने कार्यक्ष कार्यन एकपिश करनेके क्रोडकरी को क्षा किया है सामा साथ भी सन्तरोदन करें, पनको बाई क्षेत्रकार न करें। कान् । आपने के और सभी कार्योधा अवकार विका है कथा पुरुष और तक प्रकारके राजकाँ की क्ते हैं। ऐसे विक्रम् और मुख्यितम् क्षेत्रम की अपन अपने क्षे अवस्थारे हेनेकारे हम कुट्रमानकारे देशका हाने कृतिक क्यों होते है। मैरे को आको पहले ही निकेश फिया था और चैन, क्रेम, निहर एवं स्थापने भी बहुत पुरू समझता सह बिहु का समय से अपने इसमें का करी नहीं। को पूछा देशको कर प्रमाणित में अपने वितरित्यों की परक नाम, यह सन्यानका सामन रेनेसे सार्वीपनेकि सानेका क्षेत्र है करत है। इस अवस्थित से आप अपने हैं अन्याको को है, किर भीनकेश्वर स्रोध कर्व प्रत्ये है। इन्टेंक्स ईन्डेक्ट डेक्टेक्ट समावे पुरस्ताव सा: सा केरका कारण रेलेके रिल्वे ही से चीवनेको उसे बारा है। आह अपने और अपने क्षा पूजीर जनराजीकी और से देखिने ह अन्यक्षेत्रे के निर्देश कावानीको राजको निर्दराजाना का।"

प्रमण् | इस प्रचार सीकृत्यने का इस्तर-प्रमण साथ आहें वहाँ में प्रचा कृत्यन करते हैं। यह सरका के पूरत कि कृत्ये देख के में में माने मेरी पुन्तानीय सीकने भूडि आरता। अस में माने हैं, मेरा अनेन प्रमण के गान है और में पायुक्त पुरावीर सामन पुनाने देखना मानता है। मेरे प्रमण पुन और प्रचार-प्रचार पायानीय के माने गाने। अस से मेरी प्राणि और मीनिके सामन में मानुद्धा की है।' देख मानाम माने मीन-मानून और मुझा-मानेन—संगोधी रोते-पेले मारे सामना और 'हुम्हारा मानंका है' देख मानाम आहें सामना और 'हुम्हारा मानंका है' देख मानाम

इसके बाद करकी आहा हैकर सब पायुक्त श्रीकृष्णके सब क्यानिक पान आये। व्यवक्रिके और पानातिक पाने पान है—इस बातको पानि काम पहले है ताम पर्ने थे। इसकिये के बाद केन्सि वाई पूर्वि। वे दिना पृष्टिते और अपने करकी क्याकारों संभी अधिकोंका आसारिक सब समझ रेखे थे। इसकिये कामानिक पास कामर करते काम समझ रेखे थे। इसकिये कामानिक पास कामर करते कामें समें, 'कामानि हैं। इस कामुक्त मुखिक्तिया सोध पत करें, काम हो कामो। इस को बाद पूँगते निकासन पाइती हो, उसे केम को और मेरी कामपर काम है। यह अठसद हिसेने दुवान विकासिकारों हम निरंत ही कुसते पह अधीन करके का कि 'मैं अनुसारिक साथ संसाम करनेके



विश्वे का द्या है जानाओं ( मेरे कार्य्यकार विश्वे आप क्यों आपियांद एंगिये )' अस्त्रो इस प्रकार आर्थन कार्यकर पुत हर बार यही कवारी की कि 'क्यों को है, व्यां विश्वय है।' इस प्रकार पहले कुमरे दीकों को इस्त्री कार्य विश्वयक्ती की, यह पुत्रो कार्य आर्थ है। वो यो दूव प्रका आर्थियोक दिन कार्यकारों हो। इस प्रकार कार्यकार कार्यकारी विश्वय प्राची है और इस्त्रों संख्या की कि पुनिविद ही अधिक कार्यका की है। इस तो स्त्रामी ही वही ब्राम्यकारी हो, विश्व इस साम्यकार हो से प्रकार को की कि 'क्यों कर्य करिए हुए साम्यक्त है में प्रकार को में कि 'क्यों कर्य है, वहीं विश्वय है।' अस्त्रा दूस अपने को क्यां क्यां कर्य है, वहीं विश्वय है।' अस्त्रा दूस अपने को क्यां क्यां कर्य है। सहार प्राच्या कर्यकार ही से प्रकार कर्य के क्यां क्यां कर्य है। सहार प्राप्त कर्यकार क्यां क्यां है। हुन्दाच देखा अध्यास्त्र वहीं होना कार्यिये हैं

गानानि वहा--नगमन् ! पानानीके जी केरा कोई
दुर्भक नहीं है और न मैं इनका यहा ही वाकते हैं। किंदु
पुरस्तोकके कारण नेता पन जवस्त्रकी पानुस-ता हो का है।
इस कुमोपूर्वोकी रहा करना जैसा कुम्सीका कर्तक है, बैसा
है नेता भी है और बैसा वह नेवा कर्तक है, बैसा है
पहाराकार सी है। यह कौरखेंका संकार से दुर्खेंका, उन्तर्भन,
कर्ता और पुरस्तानके सकारकों है हुन्या है। इसने अर्थन,
भीन, न्यून्त, स्ववंत वा पुनिद्धितका कोई भी सेव नहीं है।
कौरखेंने अधियानमें भरकार युद्ध किया और ने अपने दुसरे

व्यक्तिकोकं स्तीत जान्यकोर्थे एक गरे। विश्व स्थानी भीयने वृत्तेष्वकार्थे परायुक्तिकं रिक्षे मुख्यकर दिन्द सीकृत्यके सामने है जानके व्यक्ति पीने न्याको पोट की— इस अनुविध कार्यने है मेरे क्षेत्रकार्थे प्रकृति है। वर्ष्य म्यानुकार्नेन विश्ते 'वर्ष' पाए है, को वया पूर्त्याद कार्य आगोकं सोमाने वी स्वापुनियों कोड सामने हैं?

अवश्रीको का का मुनकर चीनमंत्रने बहुत हरो-दारों सारों किन्यपूर्वक कहा, 'चारावी | यह कर्न है अवला अवर्ज, मैंने को करकर अपनी रहानेक क्रिके ही ऐसा विक्रम का, को अब आप इस्ता करें। अवर्क कर चहुनती पुत्रकों अर्थपुत्रकों को कोई भी वहीं जब सकता वह। विक्रम प्राणे अपने भी तो अपनी ही राजा पुत्रिक्तियों पोत्रक का और हुने कर-वार क्षंत्र किया का। इस साम्य की पुत्रों कर का कि वहीं पुत्रोंकर प्रमुद्धारों चुने बार म करों, इसके की वह काम कर हम्मा। ऐसी, आपने पुत्रके के इसक वहन ही अर्थन किया का। काने परी सम्बर्ध को कर कामम कामि कर विकार का। काने को करी समस्य को कर कामम कामि का विकार का का का का किया और प्राण्या की रहे। की काने केंग्रके बहुत ही कह दिया और को स्था करन ही सार ही पुत्रक केरा रहा। इसोरी पुत्रके भी ऐसा करन ही सार ही पुत्रक केरा रहा। इसोरी पुत्रके

क्रमाई क्रमा—नैका ? हुन मेरे पुन्ती ऐसी मारेस कर के हो, इस्तरिय का के असका कर नहीं कहा का असता । वर्ष्ट्र हुन्से के संस्थाप्रियों दु:इसस्त्रका कुन विका, उस कारकों से साथ सरपुर्व विका करेंगे, ऐसा काम आर्यपुर्व के क्रमी नहीं करने । हुन्दे का कहा ही हुन कर्म किया, ऐस कुरक अस्ति कहीं का

वीनलेन कोरे—स्वासकी है आप विकास करने र स्तृ सूर पेरे और और ओरोपे आसे जी नका है इस बालको कर्न सामक का। मैंने को अपने इस है सूरमें उसन दिन्ने में। क्या मूलकीक्रके समय हु-१०शामने हैंन्द्रीक केया मान्यों में, उसी सामक कोमाने महत्त्वर में ऐसी अविद्या कर मुख्य था। पनि में उसे पूरा न करना से अनना मानेत्रक क्षात्रमानी परित सम्बद्धा कार। इसीसे मैंने म्यू काल किया था।

क्रमारि बार-भीत ! हम अस कृते हो गये हैं, हमारा बाम भी तुमने हॉन दिला । ऐसी स्थितिने हम होनों कंपोंके बारोबों रिली स्थाइनिके सम्बन हमने एक भी पुत्रको मीतित भागे नहीं कोड़ा ? भदि कृत मेरे एक पुत्रकों भी होड़ देते हो बुक्तरे बारण में इतना कृता न पानी, पार्ट समझा रोजी कि बुक्ते अपने बार्यका पासन किया है। भीमसंत्रते हेल बबावर अपने कुर-बीओंके खडारे पीड़िया मान्यारी कोचले मान्यर बोली—'राज चुंबिहार कहाँ है ?' जा सुनते ही वर्गराव भागो कांगो हुए हाव ओड़े अलो सामने आये और वहाँ मीजी कांगोने बोले, 'रेसि । अलोह



कुर्वेका संदार करानेवास्त में इस्थानों कुर्वित् सावने हरहा है। वृज्यीनकों राजध्योधा शहा करानेवें में हैं हैं, है, इसरिये कारके केना हैं जान पूर्व काम दिवित्ते। में जारे सुध्येका कह हैं। जार ऐसे-ऐसे कामुजीवर संदार कराकर जान पूर्व जीवन, काम वा कर—विक्तांकों की इसके महीं है।'

म्बारमां चुनिहिर नामारीके बात इस्ते हुए वे तान वाले मह गये। सिन्दु उसके हुआ कोई बात न निवारण । मह मार-कर संगी-नंबी शीने लेती रही। वे मुख्यम सबके मरणोपे निरमा ही कवते वे कि होनंदिति सम्बद्धीयो हुई। प्रतिभेते होकर उनके नकीपर पड़ी। इसके इनके सुवार नम उसी समय काले पढ़ गये। मह देवते ही अर्जुद से सीमुख्यके पीने विस्तव गये तथा और वहाँ की हम्पर-कार हैंकते हमे। उन्हें इस अकार कासमस्तते सेकबर नामारीका कोग तंबा पड़ गया और उसने असमी सत्ता कुनीके कास गये। मुलीके अपने पुलेको महुत हिरोधर देखा था, इसकिने उनके कहाँका रनस्य करके अध्यक्ष ह्वाद पर आवा और व्या अञ्चलको मुक्त वीकाम अपीत व्याने राजी। असके साथ पावक्रवेकी स्वीतोने की अपीत का को। असने अनेक पुत्रके अञ्चलित वार-वार हाथ केमकर देखा। स्वयंकि क्रिंग अक्रोकी बोटोंसे व्यापन हो दो थे। कुळीच जीवर्यको देखकर को उसे व्यान ही अनुसार हुआ। असने देखा कि व्याक्रसम्बद्धार पुरुषीयर पानि-पानी से सी है।

डॉक्ट कर वह बी—कार्ने ! सामित्रकृते सहित आस सामके सभी बीत कहाँ करे गये । अब यस मेरे क्ये ही नहीं करे से मैं राजको सेवार कहा करोड़ी ?

वन कुन्तिने उसे वैस् वैक्या। इसके बाद का केन्यहरण कैन्यहर्गा कामन जन्मे साथ से गरनारीके पास अन्ये। उसके राज्य की साथ परावाल की नहीं पहुँचे। तस कान्यीने वह होन्सी और महानिती कुन्तिने कहा, वेटी। इस मनार केन्यहरून का हो, वेटी और सो हंस, सुप्रधार केन्स पुरस्ता काल कुट पह है। में सो इस सोकाशकार्थ



सम्बन्धे जाट-केस्से हुम्म ही समझती है। यह रोमश्रकारी व्यक्त होना है था, इसीसे हुमा है। मितुस्तीने को बात कही थी, था जॉ-की-को सम्बन्धे था गयी। वैसी हु है, वैसी ही मैं भी है। यह कीन किसको बीरव बेंबाने ? बासकों इस नेब कुमन्या संक्षर के भी ही जनसमसे हुआ है।'

#### युद्धभूमिमें पर्दुषकर क्रियोंका विलाप करना और गान्मारीका श्रीकृष्णसे उनकी दशाका वर्णन करना

सीरित्याकार्थं कार्य है—करवेकन ! याकारी वही है । परितार, पर्याकारी और स्वयंक्ति थी। या कर्मह सम्बद्धाल है करती थी। यहीं व्यासके करते को हिला हैहि जिस है जबी थी। कार्य ज्ञाबको को दूर्वाले व्यारकोची संहारपूर्धि दिखानों है हो थी। जो देखकार यह स्वयंक्ति संहारपूर्धि दिखानों है हो थी। जो देखकार यह स्वयंक्ति पर्यादिक्ति वार्य प्रशास का व्यादक है सेन्याकारी यह हुई, केड़ और कार्यि कर्म हुआ था। जाने युक्ती वार्य यह ही थीं; तम और सहस्तें सेन्ये पढ़ी थीं तथा पूर्ण सम्बद्ध हार्य, मेन्ने, रच और चेक्सओंक नवावकार हरी हरीर एनं हरीस्त्रीन मक्का रहे हुए थे।

अस भगवान् काराव्ये आद्या चावर राजा पुरिवीतः सानि तता पायान बहाराम कृतरह और सीकृत्यको असे बार कृतकृत्यको इस विकास विकास भगवोकारी और पारे। कृतकोपने पर्श्विकार कर विकास विकास कृतको परे हुए अपने बार्ड, पुत्र, विद्या और पति असीवार्क रेखा। इस वीका बंदाराश्मीतको ऐसकार में साम्बाहित्यको पीतावर करती हुं अपने बहुतका प्रमोशे किर पहिं। इस अध्यादको कृतको विकास वेकामर से दुःससे असाम ब्याह्मक हो नहीं जनको विकासित के बारिर पुरास कर्म और पत्रे पुत्रकेर प्रमान क्यार हमाने असे। से बारिर पुरास कर्म और पत्रे पुत्रकेर प्रमान क्यार कुन्यकार्य के बारिर पुरास कर्म और असाम हो सुवार क्यार क्यार कुन्यकार्य किसोनेंद्र क्या क्या हो सरकारात्रको प्रसान क्यार कुन्यकार्य क्यारोंनेंद्र क्या क्या हो सरकारात्रको प्रसान क्यार

जन हु कियी अवस्थानोंके जार्तनाकों का जीवन पृत् कारमें वहा कुक्तन कक देश वर्णक गुल्यादीने सेक्नाओं कुरमार कहा, 'नामम ! देशों रहे मेरी मे विश्वक कहाँ जार मिन्नेरे कुररियोध्य समाम विश्वक कार शही है। में जन बाराकुरम्भूनमोंको कहा कर-करके रास्ता-रास्ता रास्त्री कुन, मार्च, विशा और परियोधी और सैक्नार सभी है। बीरमर ! इस हैने बुद्धकारको देशकार से में क्रोकारे कार्य कार्त है। सम्बुद्धम ! इन प्रसास्त्र और बीरमर्गि भूगोको है। बान हो नमा। मना कोई पुस्त ऐसी स्थापन भी कर समाम का कि इस बुद्धमें समाम, कर्म, क्रेम, चीन और सिम्ब इस्तो केर मेर भी प्रमाह हो नामेंने ? हाम ! मेरे मिन्ने इस्तो स्थापन और समा दुन्हा होना । अवस्था ही चाले कन्नोने सुप्ताने कोई प्रथकार्य हो गना है। इस्तोरं मुझे कारनी जांकों

जनने पुत्र, याँग और नदानोची पृत्य देशनी पही है। पुत्रकोच्यापुत्रक चान्यारीने इसी जन्यर सैन्सापूर्वक मिस्सर करते हुए सीमुन्ताले वहाँ करी वाही, इसनेहीने उसकी हुछ अपने कृत्य पुत्र हुनोचनना पही।

क्षेत्रको पर प्रथा देवते है क्षेत्रकृत पानारी बार्ट हुए केलेके सरका राह्मा कृष्णियर निर पही । होता आनेपर का अपने कृतीकारको पहुनने सामान्य हुए पृथ्वीया यह देशा में व्या अन्तर्व वेश्वाचार 'क्र कुत । क्ष कुत ।' वेला सक्तर देने रुपे। फिर को रूपने जीतुओं से सीवती क्रूर्व औक्षणां बारे रहते, 'कार्नेट | यह या ब्यूओक क्रिकेट करनेकार संबंध हम गया है ज़ूबेंकाने हाम बोहका जुतारे बाह्य था, 'बाह्यकी । पुत्रो आयोग्यांत के तित हुए बुद्धारे नेरी विकास हो ।" कर मैंने बड़ी कहा का कि 'कर की सही रहती है, बार्ड वर्ग एका है, किया बारे हम बाद करनेने स्वारत्ये बार्ड के हुन्हें केन्द्राओंके सरका कुछोत्रे गरनेवर प्राप्त होनेनाहे क्रेंच अवदर निर्मेशे ।" इस अवदर मेरे के पहले ही बुर्वोजनके हैती कर कर है थे। इस्तिने हुई इसके दिने होक की 🕯 । पूछे के पहारहकोंद्र मिल्ने किया है, कियोद सभी सम्बन्धी र्वेक्ट के का ना है। यह काले क्ट-केरको हो देको । यो पूर्वीकर पुर्वाधिका एकाओक आगे-आगे कार्य थे, जान की क्रीओं यह हुना है। जान क जीरकारकार कहाने सामने हैं। सिन्ने पहा है, इसरिन्ने इसे कोई सरकार गाँव गाँव किसी होगी। ओह ! को न्यास अमेरिकी हेनाको हेकार पुरुषे नैदानों स्टरा कर, स्ट कुर्वेकर अपने अन्यानके ही आब मारा गया । यह अध्यापा क्क पूर्व का। क्रमें अपने किए और विकृत्यी-केरे कुछ पुरुषेका अध्यान विका, इसीने आज बारको गामने बरस क्या । जिसमे केन्द्र करेक्य कृष्णिका निकारका राज्य किन्तु, भूके नेय कुत आस नरकर पृत्तीयर सो दह है। श्रीकृत्वा है हुन सुवर्णको वेदीके सम्बन्ध केवलियो सद्यवनको स्थानको हो देखों । अन्य करके भी बाल विश्वते हुए हैं । मेरी यह पुरुष ह को अंदर प्रदर्भनी है। यह नहीं प्रस्तानी निर्मात कैसी है। मा अपने परिषे हिन्दे क्षेत्रप्रकृत है या कुल्के हिन्दे ? कर्षा यह परिचा और देखती है से कभी पुरारी और देखने लक्ती है। किंतु कुछ भी हो, बाँद केंद्र और छाख सबे हैं से हुवेंकर्ग कवाच है अपने व्यक्तरके प्राप्ता अधिनाही रनेक जात किने होंगे।

'मानव | देखे, ह्या केरे स्वै पुत्र पढ़े हुए हैं। इन सम्बर्ध गीमरोनने हैं। अवनी नवारे चुटाँग प्राप्त हैं। चुने से इन्हेंने अधि-होटी पुत्रववृद्दे वाल कोले अभ्युप्तमें किन की हैं। हाथ | यो आभी पेरोमें आध्युष्ट पहने राव्यव्यव्यक्ति किन्न मूनियर विकासी थीं, से ही आज आपत्ति पञ्चव्य इन सुन्मों सम्बर्ध कर्तार राजाह्यामें दूस की है। इस सुकुमारी राजाया कर्तार राजाह्यामें दूस की है। इस सुकुमारी राजाया कर्तार राजाह्यामें वृत्त की है। इस सुकुमारी राजाया कर्तार राजाह्यामें वृत्त की केरे प्राप्त विकास प्राप्त काह्य नहीं कैयता। देखें, इस व्यक्तिमोंने कोई प्राप्त उत्तरी सुनारी प्राप्त काह्य काल्य को की है। वहीं नहीं, इस श्रम्म संदार्थ अपने सम्बर्धकों विकास भी कार राजायी प्राप्त भीर वृत्त अवक्रमानी विकास भी कार राजायी प्राप्त ।

"इवार देखें, या दु-संस्था पढ़ा हुआ है। सनुस्ता सहावीर पीतने इसे पुन्नों प्रम्कान्तर इसके सरीरका पूर्व रिया है। हाथ । सैनारेंस बढ़ारेंसे और बुएके सन्ता रहे हुए हु-सोको बाद सरके भीतने के इस पुन्नों कैसी हुनींत की है। कुन्ना ! मैंने से हुन सन्दानिक स्वक्ष कोई है। अपने इस मुन्नीह व्यवकों सू पूरा करन्यतिक सम्बंध । सू इसे अपने सामकर पायकोंके साथ संवि धार है। पूर्व । क्या हू जी सामकर पायकोंके साथ संवि धार है। पूर्व । क्या हू जी सामकर पीतारेंन कैसा अस्त्रश्रास्त्र है, से इन्योको सम्बन्ध सामकी संवी-संबंध पुन्नों संवीन्त प्रमुख हुना दु-सामक सामकी संबी-संबंध पुन्नाओंको फैरकने पुन्नोंकर के पह है। होनी बीमने दु-सारस्त्रको पुन्नों मारकार हानका सून निका यह से उसका यहा है भीका बाद सा

'माकव ! रेस्से, वह नेपा पुत्र निकर्ण पहा हुता है। इसकी तो सभी बुद्धिकर प्रसंस्य करते है। मीमने इसे भी सैकड़ों दुबड़े करके पर इसका है। कमी, क्लीक और नाराज मानिके बाजोसे काणि इसके सर्वत्वान कैंक-निका है एने हैं, तो भी इसकी काणि मानिकक कर्यी हुई है। वह सबुआंका संदार करनेवाला कुईस स्वेच्च हुआ है। समरक्र प्रीमने अपनी प्रतिमानव प्रसंभ करते हुए इसे भी कर करता है। बीक्कज़ ! इसके सामने तो संसामने कोई भी नहीं दिख सकता था। इसे सबुआंने कैसे पार करना। इकर देखे, भा मृतराहुक्यन किसोन प्रस्त पहा है। वह से अनुवंधिके **=** 401

केला । पर अध्यानमध्ये से यस और प्रीर्पने अर्थुन एका तुम्बरी अधेक्षा भी लेहा महा माता था, इसने से अनेतरे ही मेरे पुरस्के अनेता बहुत्यों केंद्र इस्ता था। से देखी, यह भी अनेकारेको परश्चार सर्थ परा पढ़ा है। बिहर वे देखती है कि या क्रानेपर की अनुस्थित तैकारी आंक्रिक्युका केन परिवार नहीं पढ़ा है। हेरते, पह विराज्युकी अभिनिता क्षेत्रा अपने चीर और सार्यन्यक परितर्ध केलकर केला क्रोक कर को है। का बार-बार अपने परिके क्षक अंतरण अपने प्राथमें असके संरोधक रूपी को पूरा इसक को है। कुछ ? यह अध्यान्तु से कर, चीर्च, रेम और कर्म बहुद पुक्र हुम्हरे हैं समान है। कियु हार । क्रुओब्स क्रिक्स क्रेबर अन्य यह भी पृथ्वीयर यह दूजी है। देखे, इक समय जात काले जुन्मी सने हुए बारनेकी क्रमते संस्कृत की है और गोकी जाना हिए रसमार करने क बोर्कित हो, इस उत्पात पूछ पति है कि 'आप से सामात् हिन्द्रमधी पानमें और गामधिकारी अर्थुन्ने पुत्र है है अवको चेकारकीको ज्ञा न्यारविकेत केले यार अस्य । इस्तुओं कुरावार्थ, कर्म, कराव रूप होने और अवस्थानको विकार है, निर्मान सुद्रे विकास कर विका पुरुषे क्रमेको बोह्याओंने जिल्लार कारफो पर हत्या, व्य देखका भी आयोह दिया सम्बंध की भी यो है।

'अव्यक्त । अवने असोते किए पुरुषलेकीयर क्रिक्ट कर्म है, वहीं में भी अपने कर्न तथा इन्हेंन निव्यक्षेत्र अस्पर जीव का यह 📞 जान नेरी माठ क्षेत्रके ! सन्त्रका: मृत्युकाल आवे जिला किसीका मरण बहु करिन होता है, तभी से मैं जन्मगिनी आपकी गरा हेक्कर भी अवस्था भी रही है। बीर । इस स्लेकर्य से अन्तरे प्रथ मेर हः स्त्रीनेका ही स्थापन कर सा। कार्य बढ़ीने है जान परायेख सिधार गर्ने।' जाराको हा प्रकार किरका करते देशकर मालगानके कुरनकी दूसरी विचाँ को सीमकर अन्या है वा यो है। सिंह क्या निराहको यह हुआ देखकर वे सर्व भी विरास कर की है। कुन, आक्रम और परिवारके कारण इन समीके प्रेड कर को है और सर्टर झरनो-से हो को है। इबर के रतन्त्रीयके अञ्चलको है जार, कान्येशकुमार, सुरक्षिण और तक्षण आदि कई को में यो है। प्रधान ! जरा इस्पर भी से हुई सरने।'

#### गान्धारीका अन्य मरे हुए वीतेको देखकर विलाप करना और श्रीकृष्णको साप देना

गम्पति विर का-बीहरण ! हेले, का अनेको महारिकोको साहाची पाने जुल्ले स्थान हुन पाने रमानुष्यों पह इस है। या पह है अस्तुर्योग, पहर, क्रोची, जनक बहुर्वर और यह बली क। सिंह जन शर्कुरके प्रचले कर कावर का कृष्णिया सेवा हरत है। वेरे महार्थी दुर में क्यानेके बनते इसे है अने करके दुर कारों से 1 अनेतर मुख्यित इससे पाए के बाराने पाने से, इंग्ली ओसी विविध सुरेके सारत केन्द्र कर्कन को पुराई मीर भी भूती जानी । यह प्रत्यकारीयक करियक प्रयान केवली और विकासको समान निकास का और नहीं कुर्वेकरका प्रकार क्रमान्य था। जिस् देखे, साथ या व्यक्तात क्रमाई हर कुर्तार प्रमान पृथ्वीपर पहा है। प्राप्ती बाते कुर्पात्रको स्थान मुखीयां पढ़ी है और पंत्र-क्यूने मिलक क्याँ पढ़ा है भारतमञ्जू कर पूर्व है। कुछ । यह प्रोक्तमें कर है। यह स्था क्षानीको राजपुरियो अनेत यहा देखावर सुरोकको साहा आराप बाहर क्रेकर कुर्वित के गार्थ है। देखें पूछ क्रेक क्रेकर क्राज्यार पद्म निवर कृष्णीयर निरम्पानी है और पूर्णी प्रथाने अस्पनी अस्तुत क्षेत्रात प्रकृत ही विकास पार की है।

इसर देखी, जा चीनकेनक जन ह्या सम्बन्धित सह है। अरुकी गुनियाँ भी मारों अंदेशों मेरवार अस्त्री सार-विकासने राज्ये हुई है। बीकुन्स । महत्त्वर अविनोह कु महारेष यहे सकती और क्यूनेर है। ये वी व्यतिको खेळां भाषा रमभूषिने सोने हुए हैं। या धर्मनर पर हुन्से मुख्यूरी मानि कीची जो को है। उत्तर, क्या क्यान का हात है। इसे को अर्थाने अपनी अभिन्न पूरी करनेके विन्ने पास्त मर्जाकियों सेनाको पार करके जारा का। इसकी अनुस्थानको मील्य जारे ओसी इतकी रोप्कर कर की है। कर्कर ! निया समय बढ़ करनेले क्रिकीची इस्तार से क्या था, मान्यक्रमंत्र से इसे तथी कर करने; का सरव केनल र-पारताची ओर देखकर की क्योंने को ओर किया था। क्रमा क्ष कर किर क्योंने इ.कस्तका पान क्यों की रहत ? देखे. मेरी बची द्वाची क्षेत्रर केला मिलन कर हो है। कुछ है बहाओं, मेरे रिम्ने इससे बकुबन कुरस कहा होना कि हेरी अल्प्यकार पूर्व विकास हो गयी और बहुआंके बाँध पर गर्थ । इन्य ! सनिक मेरी दुःशस्त्रको और सो देखे । चरिका विरा म निरम्भेके कारण पह जोन्द्र और पहले स्क्रिक-के क्रेकर को इसर-कार बैस्टी फिर को है।

क्रम के अध्यक्ति स्थान एक स्थान करे पढ़े हैं। हुई कांक्रो कालेक्को का कांक्को है संकारों कर का। इनकी पुरुषे तान सकते रुग्ने यही भी। बुक्कालों कर्मक करना करने साथ ने क्यानीको किया दिलानेके रिक्ने आरका देन क्षीम करते हैं से । देखें, को करे ओसी करती सन्तिने के स्वर है। अस है पर्वतिक प्रथम प्रथम प्रथमि क्षात्रिक अंतुका दिनो पृथ्वीका को को है। इनके काम उन्होंनक नक है जनक, वेक्स्प्रकार्य और भीवन पुत्र हुआ का। एक बंद से इनके द्वार्थकरको देशका अर्थन भी देन द्वा गया था, विक् अन्याने के अधिके प्रध्यक्ते कार्र गये । हेक्के, विकास प्रथम प्रथम और पराहरूने संस्थापनी कोई नहीं था, ये ही चीचव वर्ग करोमाने बोक्पी इस कावनाय क्रम कर खे है। केवल । इस उसकी पर-पूर्णी क्षूत्राचिके अपने इसोटे क्यारे हुएक इस्त का इस । अस का अस केन ब्याप्त है। अन्य क्षेत्रीक क्राइन्कार को हुए इस जक्तम प्रकृतको सीनकोके कृति में करे। ये आजनक अपने बारते जुई दिने । परवान् सानिकारिकेय सेके प्राथमिक प्रमुख पुरोगीय पूर्व के उसे उस्ता के पानि, पानिया और पंताब वालिके बलोपी होय विकास कोचे हुए हैं। अर्थुको प्रकोर विरक्षेत्र कीचे और बाल मारवार इन्हें किय है काँका सरिवा दिया है। अपने विद्यार्थी आहा पाएट करनेके दिनों में अचान्य सहनारी हो, निवाने हन्दें नहीं भारी कोर्ति विक्रो । युक्रो प्रवर्ध करावरी करनेकार कोई जी या । ने को है अर्थन और स्थीत है तक प्रमुख होनेपर पी कार्यक्रमें उत्पादने केव्यानीके समान प्राप्त करण विश्वे हुए है। उसम्बाद्धाः बीवानी की प्रामीके स्थान सम्बाद राज्योवने को हर है के चुने नहीं निहान होता है कि बारताने न कोई प्रकारक है, व परकारों है और न विकृत है। विकास नितरे कीवाओं सम्बन्धा दे केन हैं, अभिन्ने रहेण लेख बहुने समारे हैं। पानम ! जा ने केन्द्रान प्रेमानी सर्वको है।धार धार्नेने हो कुरकृतको स्रोत वर्गीत विवयमें अवना संक्षेत्र विकासे चुति ?

हमर देखें, ने कॉन्कोंके जाननेव जावार्य होन पहे हूर है। कर जावाने जानेका हान नेता कुछाते हैं, बैसा का हो नरहानन्त्रीकों है का जावार्य होनकों का। विनादी कुछाते जार्युकों जानेकों कुछार कार्य दिन्हें, ते ही होना आहा को पहे हैं; इनकी स्थानिका की हमें नहीं क्या सब्दी ! इनके बिन मन्तर्गय करणेका मैकड़ों किया पूजा किया करते थे, देगरे | जान क्यूंग्वो पीड़ा वर्षण यहें हैं। इसके मरनाई म्यासे कृति अवेत-सी हो नवी है और सरमा हैन-सी होकर इसके फार मैठी है। देशों को सही, करके क्या किएले हुए हैं और कह नीका मुक्त किये पूज-पूजार के की है। इसके दिवानि कियानों अधि स्वाधित करके को एक सोरसे प्रजारित कर विकाद हुए से यो है। देखों, अब के पूजीको आने स्वाध्या कियानी प्रदक्षित करके प्रमुखीकों और का रहे हैं।

माना ! मार है को हुए हर श्रीकालके ओर से रियो । पुरस्की परिवर्ण को हुए अपने करियों की कही है और राय-रायाने क्रीमा कर रही है। क्रीमके क्रेमरे इन्हें बहुत ही क्रम गर दिना है और ने उर्जानको विकास करते कर-कर पानद सामार मुख्येगर निर सामी है। प्रान्ती हैती सम्बोध बता वेक्सर वित्तमें बंधा है दश्या होता है। देखों, ये बहा सी \$—'सामाविका का स्थल कहा है सामाविक और अध्येतिकर हुना है।' एक चीने प्रतिकी पुजाबी नोहरे रहा मेला है। यह ऐसावृत्ति निरम्प करते हाँ यह स्त्री है—'यह यह क्षण है जिसमें करेकी कुर-बोरीका संक्रत विका सा, अपने विजेत्यो अपन्यक्रम दिया या और स्वयूनी औई क्रम की भी। किस अध्यक कुरारेके प्रत्य प्रोक्तम कारकेने प्रत्ये होनेके पून असरवार के, या साम बीक्रमको प्राप्ति ही अर्थुओ हमें बाद इतन का ' इस अध्या अनेतारी निवा बालेंड का सुन्दरी कुर के गमी है। जाने साथ ही कामी क्रांचे कीने भी कोकाने क्यों वर्ड है।

मा सहवेगका जारा हुन्स गामारता मानावी कहुरि।

है। असा थ्यू भी संकृति रेकाने सोमा हुन्स है। यह यह
मानावी मा। इसको सैकाई-कृतारे क्रवारों क्रवारों क्रवा कर्म सकते हो

है। क्रियु आप प्रमाणिक प्रमाणि अवसी समाके प्रमाणि
है गुनिहित्क विशास स्थानक जीत है। इसमा गामारते हैं। वृत्ति क्रिया विशास क्रवारों क्रवार गा, किन् आप
प्रमा जीवन भी हर बैटा। कृत्य ! रेको, व्यू दुर्वर्ष क्रिया क्रवार क्रवर्ण क्रवर क्र

नीर पुत्र पहें हैं और अवर आधार्त्वकि निराधे हुए पाझसाराज हुन्य स्थेते हुए हैं। वे बूढ़े पाझाराधाराचारी दुःशियी सिक्तें और ब्यूई अन्यत अधिसंस्थार कर बार्वी ओएडे अद्दिक्त करके जा की है।

वेशने, इकर क्षेणके मारे हुए मेरिराम बुह्येत्वा स्वाधी का ।
विकार के मा की है। यह सक्त ही क्ष्मीर और म्हार्थ का ।
वासरी क्षमुश्लेमा संक्षम करनेके कहा ही या मारा गया है।
इसमी तुम्परी मार्गाए होने मेले उसका किया कर को है।
वार सेन्यीया मींगा हुआ क्षमा का पहा है। मेरे पुत क्षमा अनुस्था किया है। ऐसी, में सम्मित्सा किया और
अनुस्था को महे हैं। में इस सम्बा की अपने क्षार्थों कहा मार्गा की महे हैं। में इस सम्बा की अपने क्षार्थों कहा मार्ग और काहा काले हुए है। कृष्ण । मोर्ग प्रथा और कुल से अस्मा हो। क्षार्थ होन, भीगा, कर्म, कुल, कुलेंगा, अवस्थान, काला, कोन्यह, विकार्य और
कुलेंगा, अवस्थान, काला, कोन्यह, विकार्य और

व्यापन । विश्वास की विश्वासकों हैं को मोहें बहार बहा करणा निर्देश व्यक्ति भूते हैं। देकों न, इतियोंने हैं इस बूरवीए इतियोक्त व्याप्त-की-स्वापने संहार वार दक्तर । मेरे दुखेशा शाह को उसी दिए हैं कृष्ण बा, बात हुए अपने संविक्ते प्रस्तानें अस्त्राप्त होत्या अनुस्थानी और तोई में । महामति बीच और विद्यापीये मुक्तों उसी कामा बहा दिया बा कि अस्त अपने कृतेकी मोह-सम्बाध होए हो। इसकी बहा हुटि तिस्ता



कैसे के सकती थी। जन्म झाँग्से झानी बादी मेरे पुत्र | मरुनेपूत के नवे।

जाने कमु-कामाजीका कर करोगे। आको इसीसरों वर्ष हुए की कमु-कामाव, सभी और पुलेका मान हो कानेतर एक सामाना कारणारे अनामाकी उन्हा मारे काओगे। अहम मैसे वे कारणांक्षकी कियाँ जिसान कर वही है, जारे प्रकार तुमारे सुद्धकारी कियाँ भी जाने कमु-कामाजोंक करे कानेतर हैंस कारकार केनेनी ('

चन्यारोके ये कांग्रेर कांग्य पुरस्कर स्कूमका श्रीकृत्यने कुळ मुस्तकराते हुए कहा, 'मैं के सानता का कि यह बात हमी प्रस्कार होती है। कुम्मे को कुक्त होना था, असेके दिखे प्राप्त दिया है। इसमें संदेह नहीं, वृष्णिर्वतियोग्य चास देवी कोंग्यों ही होन्य : इनका नाम करनेचे जो मेरे दिखा और जोई समर्थ नहीं है। चनुना तो चन्य, केंग्रा का स्मृत्य की इनका संस्कृत नहीं कर सम्बत्ते। इस्तियों से च्यूनंत्री आवसके करवाले ही वह होने।'

स्तिकारके हेला पहलेका प्रत्यानोको यहा यस हुआ। वे सामन्य प्रात्तुत्त हो गये और उन्हें अपने पीयनको यो आहा नहीं हो।

#### राजा मृतराष्ट्र और युधिहिरकी बत्तबीत तथा मरे हुए योद्धाओंका दाहकर्म

स्रीपुरम्म सहने रूपो—गान्धारी । उस्ते, उसी, कर्मी होन्छ मान परते । इन व्यरेखनेक्ष्य लंकर तो तुन्दारे ही अन्यवस्त्रो हुन्छ । है। दूस अपने पुष्ट पुरस्को की स्त्रूस सामु साम्ब्राली की। यो मान ही सिद्धर, व्यर्थ कर व्यवस्थान और व्यक्तिकृति । आसाम्बर्ध की व्यवस्थान कर्मणाला था, उसी कुर्वेक्सको हुन्से सिरायर क्ष्म रक्षा का। जिस अपने किसे हुन् अन्यवस्थाने दुल मेरे मानो कर्मी क्यारी हो ?

रीतन्यकार्य कार्य हैं--शिक्षणके वे अधिक क्यान सुनकर कार्याचे कुद का अभी। किर कर्मको कार्यकारे एकर्षि कुतरापूर्व अपने अञ्चलकारिक घोड़को क्याकर कर्मका पुचितिरसे पूछा, 'बृधिद्वित ! इस पुक्रमें को सेना कर्च कर्म है, उसके परिमाणका तुन्वे पता को तो हमें कार्यको।'

पुषितिरने कल-स्वाराम ? इस कुट्याँ इक अस्त, इन्हरू करेड्, बीस इवार बीर मारे मने हैं। इसके सिका कीवा इकार कीवा सालता है और वस इवार एक से वैसर मीरोका और भी पता नहीं है।

कृतरपूर्व पूर्ण—यक्षणको । मै तुनों सर्वता मननता है। इसरिन्ये यह तो सराअये, अर सम्बन्धी कथा गाँव कुई है ?

कृषिक्षिर कोरो-प्यासमा ! वित्र सम्वे कीरोंने इस युक्कप्रिये अपने सरीरोको इर्लपूर्वक सेवा है, में सो सम्बद्ध

प्रभाव ही कुन्यानेक्येको अप्त हुए है; को यह मोकक्षा कि
'एक दिन सरका तो है ही, इस्तिको स्कूकर ही पर जातो!
इस्तिन इस्ताने त्याने-स्कूके यह गये है, वे नक्कांकि प्राय का
किसे हैं और को संस्थापृत्ति रहते हुए की अकांकी विका स्वेतने को है। किसू किन स्वापुत्त्योको सहुशीने गिरा विका का, किनके कार युद्ध करनेका कोई सामन की नहीं रहा था, को इस्तानिन हो को से और खून स्वक्ति होनेका की सिन्दीने स्वुजीके सामने पीठ की दिस्तावी—इस प्रकार सामकर्यका सरम करने हुए को पीको इस्ताने किस-नित्त हो गये थे, वे को स्वापनेक्यों हो को है—इस विकास मुझे तानक की सीव नहीं है। इनके दिन्हा को कीम किसी में प्रकार इस पुद्ध होने।

कुठ्यूने पूक्त-केटा । तूनो हेस्स व्योत-सा प्रातकत प्राप्त है, विकारों इन करनेंको तून विद्योके समान देस यो हो ? व्योद मेरे सुनने कोन्य हो तो मुझे कहासो ।

पुण्डीर केले—स्थिते दिनोने आपकी आदानी बनने विकास समय का मैं तीर्वकात कर रहा का, इस समय पुढ़ो देवर्षि सोमाननीके दर्शन हुए के। उन्होंने पुढ़ी भा प्रभावसे पुढ़ो दिला दृद्धि जात हो पनी भी।

कुरुपूर्व क्या-पुषितिर । वर्ष्व यो अनेको अस्य और कृत्या चेद्धा भी पढ़े हैं, क्या कांध्रे इंग्रेलेस कुर विशिव्या क्या करा केने 7 इनमें अनेकों ऐसे होने को न से अधिकेंद्री हो होने और न जनक संस्थार करनेवाल है कोई होगा : पैक । यह से क्वोंक अलेक्कि अलेक्कि करे Sept. Street and 1

रामा काराइके हेता स्थानेक प्राचीनका पुनिविक्ते बर्रेशनेक पुरोक्ति सुमर्च और अपने पुरोक्ति कैन्यको समा स्थान, निकुर, पुत्रस्य, इस्तरेन शर्मी केमक और सन इस्तियोको अञ्चा है कि 'अवस्तिय निविद्धांक इन सर्वके जिल्लाने प्रतानके, विकास कोई की करीर अञ्चलकी कहा पह म हो ।' करेराकारी अलाह पाने ही में एक रवेण करार, अन्य, कता, भी, देशा, सुराधित क्रम और रेक्टमें क्या आहे। संस बारती कारोपे तम गये। उन्होंने क्री-क्री का और बयु-तर्युक्ते क्यांके के राज दिये। किर नहीं सरकारी विकार वैभार का कारर पूर्वन-पुरुष स्वतनकेले का रहाकर

कपुरति प्राप्त वर्ष की और करते भी पहले अपनेत्रके | कालोवा विकिने करवा स्वयूपने कराय । एक दुर्गोपनं, उसके निम्बारने पाई, रामा करण, इंटर, श्रुरिशमा, जन्महरू, अभिन्तु, कुतासको पुर, स्थान, बृह्वेतु, श्रूतर, खेनक, रीवज़े सुक्रकीर, राज क्षेत्रक्ष्या, विराद, पून्य, विकास, सामुद्र, पुराराष्ट्र, कार्याय, घोरासाय, हैक्क्रेंड पुत्र, प्रमुक्ति, सरकार, प्रमुख, प्रमुख, कर्म, परनीड पुर, केवल्या, प्रेमर्कातव, व्यवस्था, अरम्पून और बारतम् – इत प्रकार तथा और भी इतारे क्याओवा क्योंने पूज्यों व्यक्तकोंने प्रव्यक्ति हुई आर्थि वह कराय । विक्रों-दिल्कींट रिक्टे सम्बादन की बनावे गये, विक्रीवेट रियो कारणा करावा गया और विश्ववित रियो करते क्यांक्रिकेको बहुत क्रेक की हुआ। उस प्रतिमें सामक्रकती स्त्री और क्रिकेट करने सभी मेनेको सह यह हुआ। पूर्वक बाद बढ़ी अनेको देवोले आने हुए जो अनाम लोग बर्प को थे, इन प्रकार इकावें देनियों करावार कई विद्रालीने कीने नीनी पूर्व प्राथमिको बर्जात विकास इस प्रधार प्रथ क्यानीया स्वापने कर्ता कुरूप श्रीकीर महराय कृत्यकुर्वे रेक्ट प्यून्नीकी ओर पर्छ ।

#### सब क्रियोंका अपने सम्बन्धियोंको अल्प्रहाति देना तथा कुन्तीके मुखसे कर्णके जन्मका रहत्य खुलनेपर भाइयोंके सहित राजा युधिहिरका शोकाकुल होना

वैहरणकार्य कहाँ हैं—राज्यू । जब सोग प्राकृतकोशिया | तिथे प्रोध्यतकुर होगार महे जाता पुरवरोता भागीरपीके समार भूति। वहाँ उन्होंने अन्ते आभूगम और पूर्ण कार हिने। फिर सुराह्मान्यी हिन्तीरे अस्तर प्रतित होकर रेते-केंद्रे करने पुत्र और परियोक्ड प्रत्यक्राति हो तथा वर्गीयिक्यो व्यक्तेयको पुरुषेने भी सक्ते सुद्धारेको पारस्का विका । विकासमा वे पीरवर्तिको सारकार कर पूर्व भी, प्रोक्तकुरम कुर्ताने वेते-वेते सम्बन्ध स्वेने कारों बाहा, 'पुत्रों ! किसे अर्थुन्ते संस्थानों कारत किया है, वो बीरोंके सभी सक्षणोंसे सन्दर्भ कर, किसे दून कव्यकी कोकारे कारत हुआ सुरुकुर मान्त्रे हो, जिसने बुसॉबनकी साथै सेनाका निकारण विज्ञा हा, कराहरूको विश्लेद सरका पृथ्वीचे कोई की एक गृहि था और से हिम्म करन एवं कुम्बार करन किने का, बहु पुर्वके रूपका केवली कर्ण सुप्तक का पाई छ । यह भागवान् सुर्वके प्राप्त मेरे कारते सामग्र हुआ था। सामके निर्मे क्रम बलावारिः से ।'

माताके के अञ्चल कान सुनका सभी पाणान कर्नक

पुणितियों संबो-सेवी सीसे तेते हुए मानासे पूछा, 'कावावी ! कर्म हो साझाल समुझे समान गामीन में, उनकी वाणावर्गके सामने अर्जुनके सिका और कोई बीन नहीं दिक समाज का, उन्होंने किस प्रकार देशपुत्र होका आपने नामी क्या दिका का . वैसे कोई आगको कार्योसे की है, उसी प्रकार आपने इस वासको अवस्था कैसे किया रहा का ? इस की अर्जुनके सामुक्तका परोसी रहाते हैं, उसी प्रकार की अर्जुनके सामुक्तका परोसी का। ओह ! इस स्वकारों कियावर के आपने इसास सामाजा है कर दिका। आज कर्वकी पृत्युने इस सभी व्यावनांकों कहा हु सा हो का है । अर्था किसीन पुत्र के, असरे स्वैपना कर्वकी कुरुसे हो का है। अर्था से पुत्रे कर्वका ही स्वेच है, अर्था में हो बाद का है अर्था किसीन आग करा। है हो। वहि हमें यह बात प्रसूच होनी के इन्से किये पृथ्विको से क्या, सर्वकी भी कोई क्यु अप्रथा वहीं खरी। किर से वह कुरुकुरच्या उच्चेद करनेवारत जीवज इंदार भी र होता।"

इस जवार वक्-व्यारे जान्य विस्त्र कार्य वर्गम कृषिहिसे रेते-के कर्मयो प्रसाहित है। उस समय शह स्वरूप अर्थ सिम्ब से पहिं। इसके कर कुलाव कृषिहिसे कर्मिका सम्बद्धी सम किमोंको वहाँ कृष्यम और उसके साथ रेक्टर सम्बद्धियो कर्मया क्रियम किमा। किर वे बाहे स्त्री, 'वे बहु पार्च है, कि व कर्मके कारण है जाने को पार्चि व बार दिया। अवः उसकी परिचलित सम्बद्धी के जी बाहे क्रिया हुआ है। है से बहु हुए है जाना वाहिये।' ऐसा क्यूबर वे क्रियम किमा कुर्योग मार निवासे और अपने सम व्यान्तिक स्त्रीह सराम आने।

---

क्रीको समाप्त

## संक्षिप्त महाभारत शान्तिपर्व

स्रोकाकुल युधिष्ठिरको सान्त्वना देते हुए देवर्षि नारदका उन्हें कर्णका पूर्वचरित्र सुनाना नारकं सम्बद्ध से कैर नतेलका स्वालको क्या वस कीर और वर्तको बससे मैंने सम्पूर्ण

नागवर्ण सम्बन्धा नरं वेद नवेदन्त्।
देशी सरस्तरी कार्य करो कप्युदीरचेद्।
अस्तर्यामी नागव्यवस्त्रकाय सम्बन्धन् वीकृष्ण, उनके
नित्सस्ता नरस्त्रकाय नरस्त्र अस्तुन, उनकी तरित्य प्रकट करनेवारण भगवती सम्बन्धी और अस्ते करूप व्यूची वैद्यासको नमस्त्रम करके आसूदी अध्यक्तिकेयर विकासको नमस्त्रम करके आसूदी अध्यक्तिकेयर विकासको सम्बन्धन करके आसूदी अध्यक्तिकेयर विकासको सम्बन्धन करके सुद्ध करनेवारी व्याप्तस्त्र प्रभवास पात करना वार्षिये।

वैश्वासम्बर्ध करते हिन्समे समात सुहरेको समाताहित देखे प्रकाद सकत, विद्यूत, वृद्धान् क्रमा समाताहित देखे प्रकाद सकत, विद्यूत, वृद्धान् क्रमा समाताहित सम्बर्ध समाताहित समाताहित समाताहित समाताहित प्रकाद महाराज्य समाताहित प्रकाद स्थान समाताहित प्रकाद समाताहित समाता

सबसे पहले नास्त्रीने बसस आहे पुनियोरे कर्यन्त्रय साफे दया पुणिहितके और इस प्रकार कहा— 'श्यन् ! आपने अपने बाहुबार तका प्रशासन् सीकृत्यको कृत्यसे इस सम्पूर्ण पृथ्वीपर पर्यपूर्वक विकय पानी है। सीपान्यकी कर है कि आप इस पर्यवस संज्ञानसे जीते-जागते क्या पने। अस श्रीत्रवयमंके पालनमें तस्तर सूने हुए साम प्रस्त्र से हैंन ? इस प्रान्यक्त्यूनीको पाका आपको कोई होक को नहीं समस्त्र ?

वृद्धित्ते स्व:--पुनिवतः । यनवान् **तीकृष्णके अन्तर**न्,



वृत्तीयर विश्वय से चा ती; परंतु मेरे इत्यानें प्रतिदिन यह एक पहन् दू: व बन खुरा है कि मैंने को प्रयान अपने कुरावय संहार करा दिया। सुम्बद्धकृत्यार अधियन्तु और अध्यक्षिके जारे पुलोको परायकर अस का विश्वय भी परायक सी है जान पहली है। औपने सद्य इपरानेगोकर प्रिय तथा दिन करनेमें लगी पती है, इस बेकारीके पुल और माई सब मारे गये; जब इसकी और देखता है तो पुले बहुत कह होता है। नारदार्थ ! यह सब दु:वा वो चा ही, एक दूसरी बात और बता रहा है, मेरी माना कुन्होंने करकी क्यानता तहस्य विभावर पुले और भी दु:वानें हास दिया है। जिनमें दस हमार इत्यावीका बरू बा, संस्तरमें किनकी समानता करनेकारन कोई भी महारवी

नहीं क, जो बुद्धियन, एक, क्वानु और अल्बा कार कानेवाले से, कियों क्षीपंका पूरा क्षानिकार का, जो पुजीसे मच परानेपारे तथा विशिध प्रधारते पुत्र पारनेपारे थे, विनक्त पराक्रम अञ्चल का, इन विद्वार कार्यको जात कुन्केने हैं दुस्तानो क्य देवा का वे इससेगोके भई से। कास्तुत करते संपन कुनीने का दास करका कि से प्रवास सुर्वित अंक्रते करना हुए थे। पूर्वकालकी कर है कर कुर्बाई करोड़े सर्वेतृत्रसम्बद्ध कर्जकः क्रमुक्तंत्र हुता, उस समय कार्यने औ पेटीमें रक्तकर पहल्की कराने कहा दिन्ह का। किन्हें करा संस्तर राजावा कुत सम्बन्धा था, में कनीके और का और अस्त्रोगोके सहोत्र व्यां से पैने अन्यानने सम्बद्धे लोकते अपने पाईको है करना इस्त—ब्द सरक करके से बहुओं आग-सी लग करते हैं। इस प्रीकोनेसे कोई की उन्हें अपने भावि कार्य नहीं कानत था, बितु वे इनलोगीको जानो के। सुन्त है, जेरी काल कुन्ती हुन्तनेगोले संति बारानेके दिन्ने अन्ते धारा गयी औ; क्रुप्रेने बारावा 'बेटा । तुम समाचे नहीं, मेरे पूर हो ।' सिंह्य कार्यने हुमार्क अधिनकत नहीं पूरी भी-ने संविधे देनों नहीं सहका हुए। उन्होंने नही कार दिया--'र्ज ! वै राज्य कृतेकाको क्रोकृत्वे अस्तवर्थ है। महि तुम्हारी बान मानका चुनिहित्तो संति कर लेका है से मीन, पुर्शन और कुरहा सन्तान कार्यन । लोग पही कोर्न कि कर्म अर्जुनके वर जना । इस्तरियो प्रमारने कोव्यानस्थान अर्थुनको जीव हेर्नके पहला में बर्धनका व्यक्तिको संविद्य कर्मारतः।"

मा सुरक्तर कुर्याने सहा, अवही का है, हुए अर्थुस्ते पुद्ध करते, सिंतु क्षेत्र पार प्रकृतीको अध्यक्ष-कृत है है : इतन बहुबर मता परिने लगी, इनकी वह अपन्य देख मुद्भित्तम् सर्गने कहा—'ऐति । तुम्हते कर कुः वेरे कंतुकरें क्रीस अपेरी, क्षे भी क्षेत्र अस्ते नहीं प्रतीन्त । बहै में सह गमा तो अर्जुन खेंगे, अर्जुन मरे तो मैं सीन्छ; इस प्रकार तुम्हाने पीच पुत्र को इर इस्तानों जीवित होने।' इनके मोर्सी—'बेटा । अपने ध्यानोदा सामान करका' हिए से कर करने अल्पी । इस स्वरूपके न से कुनीने प्रकट किया, न कर्मी; इसीरिये पार्वि इससे स्वोद्ध प्राचित का हुआ—अर्थुको चौरका कर्मको यह काल। इसको के क्रानको नहीं जन्म हो औं है। कर्म और अर्जुनको स्कृतक माकर को वै इसको को जीव सकता था। शृहकालो दुवाल पुर जब सथाने जीवदीको जेल दे को के और कर्मकी करोर क्यों कुकवी देशों औ, उस समय पूछे स्वास्त रोप पाद अस्त मिन् कर्णके चरणेयर दृष्टि करते हैं। काल हो जात का । कुते कर्मक केने के पान कुनोने करको-नैसे ही मानून होने थे। सिद्ध ज्ञूब स्तेमनेस की मैं इसका काम नहीं कम पान का। कमन्द्र। कर्मक व्यक्तिको पूर्णी कर्ते विकार कर्षा। के व्यक्ति हैल कम कर्षे अस हुआ ? व्यक्ति क्रिक्ति मान सर्वत है, कुत-व्यक्तिको सारी क्रिक्त कर्षे है।

वैराज्यकार्थं नार्थं है—्नाव्यू ! युविद्वित्ये इस प्रकार पूर्णंक नाय यूनि कार्यंको तील नाय प्राप्त प्रदा पूर्ण था, यह सार्थं कथा कार्यं गर्म—''वारतः' यह देवकाओकी गुप्त कार्यं कथा कार्यं गर्मं पत्र यह है। एस सार्थ पत्र देवकार्यंत्रं तियान किया कि स्रीय-मान्यं प्रयोगे अस्तारंत्रं प्रव्या होत्या कर्मं तिरापंत्रं । यह स्रोवकार क्यूनि स्टिप्ट्यंत्रं पुर्वाचे कुर्योके नार्थंत्रं एवा केरावी कांत्रक सावत स्टार्श्य । यह कर्म हुत्या । जार्थे आकर्ष होत्रको स्टूनेस्ट्रंट अस्तारंत्रं कार्यंत्रं पुर्वाचे नार्थंत्रं क्यूनेस्ट्रंट स्टूनेस्ट्रंट अस्तारंत्रं कार्यंत्रं पुर्वाचे अस्तारं होत्रको स्टूनेस्ट्रंट प्रदान स्टूनेस्ट्रंट अस्तारं स्टार्श्यं क्या अस्तारंत्रं विराद्धं प्रकार यह विराद्धं द्वारंत्रं कृत्यं कर्मा क्यांका क्रियान क्राप्तंत्रं व्यवस्थान्त्रं ही गर्भा कृत्यको निवादं कर स्थाने

'बन्द्राच्या वर्ष्ट्रीवाचे अधिक पराक्रम देशवार एक मेल कारी क्षेत्रकारी क्ष्मानी कहा—'पुर्वत । वे व्यानकार्य क्षेत्रके और स्पैटानेको विका बावका बावका है।" कार्यकी अर्थनके साथ को साल-और भी, उसे प्रेयानार्थ कालों में: उसकी श्राप्तानें भी में उस्तरिवत भूतें थे। क्रांतिको जान्यी जार्चन सुरक्त अपूर्ण पदा- कर्मा ! कारोक विकित अनुसार स्थापनीयलेक पासन क्रानेवाक क्षांत्रक अन्यत्र स्ट्रील ही सहाय श्रीक्षेत्रत अधिकारी है, हरूरा नहीं हैं उनके ऐसा बहानेवर बाजी 'बहुत-अब्बार' करकार रूपका संस्थान किया । दिल उनकी उसका लेका कह स्थान काले कर किया। नारे-सर्व कोकार्यात्वर गाँका और व्यक्तामधीके निकट का प्रमुक्ती जाहरूके कार्य अवन परिचय है जाने मुख्युद्धिये उन्हें दिन क्षुकारत प्रयास विका और शिव्यक्तारों का उनकी सत्वमें गता। परमुख्याचीने भी मोत आहे मुख्यार और विकास समर्थे स्थेश्वर किया और यहा 'यता ! तुपाल सामत है, हुव अस्त्रकार्यक वर्ष स्त्रे ।'

"कर्व केशर्मान्य क्या विविद्धं प्रशासका

सम्बास करने तन्य । उस समय वहाँ को भवाई, तक्या, यह सबा देवताओंसे निरानेका अवसर जान होता द्वारा था। इस्तीरने इन संबंध तथा जावक वहाँ जेन हैं। यान। वृक्ष दिल्की नात है, यह जाकरके पता है राष्ट्रको विश्वरे किया द्वारा दक्ष सा। अवेदाव या और इस्त्रोने कामार क्या पहुर हैले हुए था। जाते जाका दक्ष केंद्रकारियों से अबर अ निवासी। युनि अधिकोत्तों तमे हुए थे। वाली अनवाकों को कोई दिस और उपलब्ध करने हुए थे। वाली अनवाकों को कार्त अपने असलवाक किये हुए अन्योकको स्वारत करने कार्य केंद्रा—'भगवान् ) की अस्त्राकों आवाकों यह नाम कर्य कार्त है, इस्तीरने साथ पुहायर कृत्य करके यह अन्योग क्रम क्रम केंद्राने।'

"अकृत विश्वद्र जार और जाओ इंडिस हुआ केल— "कृतकारी ! जू पार जानने केना है। वेंद्र इस करवार कर



भीत । अन्य स्थानमें पृथ्वी के रखोद ग्रिकेको निनार बाधारी; यह स्थान, क्या हू कारावा होना अनी अन्यक्षणे, प्रश्नु तेश महत्तक बाट झारेगा ।' यह स्थान सुनार कारीर बहुत-को गीएँ, कर शक्त का है इस्यानको जाल करनेको बेह्र पूर्व । तम जाने किर बाह्य—'स्थान हंगार वित्तकर की बेरी साट झुटी नहीं कर सम्बद्धा !' अनके ऐसा बाहनेकर स्थानको सहा पत्र हुआ । दीनशाने अन्यक्षा हुई नौकेकी और सुना गता । किर मानहीं-मा इस बुर्गठनाको कह करना हुआ व्य परपुरावर्गके करा और अस्य ।

''कर्मको पुरस्कोधा स्टब्स् पुरुषे प्रति सामा प्रेय, प्रांत्रकारका समा होवाच्या देशकार पराव्यकारी कारण स्वयु के**ड्रा** हुए। अपूर्ण अपेश और असंस्थासकीय सम्पूर्ण स्थापक-विकास को विशिवपूर्वक शिल्या हो। सहस्रक्तर, एक दिन परपुर्वनार्ध कार्योद्ध स्थव अपने आक्रमके पास हैं कृत के थे। अध्यक्ष कारोडे कारण अध्यक्ष कृति कृति है क्या था, अर: स्थापर आ कानेचे उन्हें तीर सराने सनी । क्रमीड कार कारक पूर्व विश्वास एवं क्षेत्र का, इस्तरियों में अर्थको केवने किर रक्षकर से गरे। इवनेने सार, कसा, बंध और रक्षमा अक्षार करनेकरा एक क्लंबर क्रीकृ, क्रे का बेमा हेट क्या क, कार्क का आप और आपी बोक्यर पर पत्न । योक्ये क्रम करके पर करका राज्यान करने राज्य : इस प्रकार की हेर्नेट कार्यनों उसे कार्या होती रही; मिन् कारे वैनेकृतिक को सहय विकार और पुरुषेर जाग क्रानेके करने चरित्रको कुर नहीं क्रारामा, बरिन्क करनकी ओरसे क्षेत्रम पर से र

"कार्यक केलो निकाले कुर रकार्य कराते का परवारण्यांका प्रारंत क्रीन्दे स्था से वे सहसा जाग कं और प्रेरिका क्रेकर चोले—'और । धू तो असूत्र हे नवा । यह बच्च का रहा है ? यह क्षेत्रका टीक-टीब का।' इस कारी उन्हें बोईके बाटनेकी कर बंता है। ज्यों ही उन्होंने कर करिया और वृद्धिपान विज्ञा, तानों प्रात्मानोप क्षा पर्वे; यह एक अञ्चल क्षमा 🛒। इक्कें एक कोवत राहर आकार्क एक दिवादी दिया। क्ष क्षेत्रे इस केइका परद्वापनीहे केला—'प्रकार । कारने पुत्रो हुए जरफके बहुते पुरुवारा दिला दिया, क नेत कहा किन कर्ज हुआ। मैं आनको अन्तर कता है और अब अपने जाना था, नहीं वा दह है।" क्रमुख्याने पूजा 'जरे ! यु कीन है और बैसो इस सरकारें का का ?" इसने प्रतर केवा—"तार | सम्बद्धान्तर बात है, मैं देश नामक असूर था। एक दिन मैंने पृत्युनिकी जनाकारी व्यक्तिक व्यक्तिक अध्यक्ति विकाः प्रात्ते प्रतिवर्धे अस्तर न्यांनि स्व प्राप दिशा—'यापी ! तु वर्षक्ष क्षेत्रर मरक्षापे कोमा।' क्या कैने अर्थ अर्थन क्ष्मी 'प्रकृत स्था जनका जन्म भी होना सकिते।' उन्होंने कहा 'मेरे बंबर्ग क्यत पूर् परवृत्यको हुई यहको इत सम्बद्ध अन्त क्रेम ।' इस अवार में इस बुद्धाओं कहा हुआ वा और अन्य अन्यत्र स्थापन क्षेत्रेसे बेठ इस प्राथ्वेत्रिके बहुत हुआ है।' यह बाह्यकर यह पहलून असूर परसूरामधीयो प्रकास करके करने भवा ।



' अस परप्रशासकीये हो करें सरकार वार्गाते व्यक्त-'मूर्क' । तुने इस वर्गाके कारानेको को वर्गकार वीक् कार्गका भी है, इसे प्रदान कान्ये नहीं तह स्वतात । तेता कैने के व्यक्तियके समान अन्य पहला है । सन्य-सन्य व्यक्त, तू न्योन है ?' जनका जात सुनवार वार्ण कारके घारते हा गया और अर्थे अर्था करनेकी चेहा कारत कुछ खेला—"श्रभन्। में अक्षण और क्रियरो जिल सुर जातियें जाता हुआ हूँ। तोण जुड़े राजका पुत्र वार्ण कहते हैं। उद्यासके लोको मेंने कुछ परिचय विचा का, गुड़ारा कुछ बोडियो। मिला अरुन सरवेवाल पुरु निर्मान जिलाके ही समान है, इस्तिको मेंने आको निवार कारना सार्थकानोत

"का काकर कर्ण हैन-पानते हाव मोहकर काके सामने पृथ्वीयर का गया और वरकर काँको सामा। यह देख परहरणकाँने हैंन्से हुन्नी कहा—'पूर्वी हों हुन्नी कहा—'पूर्वी हों हुन्नी कहा—'पूर्वी हों हान करक किया है, इस्तीनों का हू संक्राणों अपने साम करक किया है, इस्तीनों का हू संक्राणों अपने साम केंद्राणे हुन्न करका और वेरी मृत्यु विकार का कार्यों होंगा। अस हू व्यक्ति काल का, विश्वासकार करका नहीं होगा। अस हू व्यक्ति काल का, विश्वासकारों हैनों कई बाई की स्वीत्त होंगे साम कहा की कार्यों की साम कार्यों की साम कार्यों की साम कार्यों को साम कार्यों को साम कार्यों कार्यों की साम कार्यों कार्यों की साम कार्यों कार्यों कार्यों की साम कार्यों की साम कार्यों कार्यों की साम कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों की साम कार्यों कार्य

### युधिष्ठिरका घर छोड़कर बनमें आनेका विचार और अर्जुनद्वारा इसका विरोध

साराजीने कहा—सामर् ! एक कर कार्यकों अस्तराजांके साम भी मुठावेड़ हुई थी, उसमें परासा होचार सरावाचांवे कार्यकों अपना निया बार्य दिवस अब्द देशका एका था, किंगू इसके बाद का तुर्वोक्तरात्री अनुमतिसे कार्या (साम्बानः) में भी राज्य करने समा। इसी प्रकार एक कार्य इसके आसमी धरणाई करनेके दिनो कार्यसे कार्यक और कुम्बारवेकी बीको साम ही सराम हुए थे; तो भी करने इन्हाले ये होतो ससूरी का कर थीं । इसीरियो अर्जून श्रीकृत्यकों स्वानों को मत्तरेने समस्य हो सके । एकं थी उसे अभिवानकों सामने उसे मत्तरेने समस्य हो सके । एकं थी उसे आस्त्रों अस्त्राच तथा महाराम परस्तुरामने साम वे विका कां, तुसरे असने साम व्यक्ति महाराम से वीकों मत्तरेना । इसके सिना महाराजियोकी कार्यक करने साम वीक्यों कार्यकों 'अर्थरवी' बहुकर अववादित किया था, इसमें का कार्यने भी अरका देश पट्ट किया और प्रमुक्त कुळाने नैतियों काम दिखा। इसमें को से वार्यके विपरीत हुई और अर्थुनको स्थ, इस, कर, बराब, हुन्छेर, होश समा इस्त्राव्यक्ती दिखान कार्य हुए थे, विश्वका कार्यम करके उन्होंने कार्यका कर किया है। किर भी यह बुद्धों पारा गया है, इस्त्रीओं कोक्से कोचा नहीं है।

वैतन्त्रकार्थं कार्त हैं—हात्व कहकर हैवार्थं जास् कृत हो गये और एका कुचिहिर एकेकाड हो वित्ताने कृत गये। जनकी का जनकार ऐस कुन्ती कोकारे विद्वाल हे नदी और पन्द्र कार्यापें अर्थापरे कथन कहने समी—'सेश ! कर्मके रिन्ने एकेक न करो। किया होड़ो और गेरी जात सुने। मैंने और मगवान् सूचने कार्य कर्मको कह जातनेकी कोविता की की कि सुनिहर कार्य सुनारे सही हैं। हक हिर्तिनी सुहर्याको जो कुक व्यक्तन व्यक्तिने, स्ट्यिको सह सात्र | सन्द्र | अनुनेत तर्रे स्थानों तथा मेरे सामने जी व्यक्त सम्बद्धाया | परंतु हमलोग आपने प्रयक्ति सम्बद्धान न हो सम्बे | यह बीकोड सद्योश्या होमार कहाया सेनेको सैनार था, हकरिको मेरे जी सामग्री परंतुत कर की |

यताची का पुरस्त कांत्रको नेताने आहे का असे । में क्षेत्रको मानुका होना नहीं हते। भी । हतो क स्वाधनको कात किया रक्ती औ, इस्तेरिको अध्य मुद्धे बहु भोजन पहल है।" जिन कहीने द:बी हेन्यर संस्थरकी क्रम वियोको साथ दे विया—'आको कोई भी भी गुर कर कियाकर नहीं एक समेती ।' इसके बाद में को दूर पुर-बीह, सम्बन्धी तथा सुरावेच्ये पाए काथ्य स्थान विश्वास हो तथे और अर्थनार्धे और देवलार अज्ञेन एले—'क्यून ! यह इसावेन कृष्यिकोती तथा अन्यकानेची अधिकोचे करतेने सम्बद रिकारे राज्य पीयर-निर्माट का लेते से काथ अपने स्ट्रमको रिशंप सरके हो या रुपि नहीं लेकने सहती। कृतिकोः मानार और काले चल, चैंका क्या अन्तरंको नो मिकार है, निरमेंड कारण हम हम किसीओं यह को । हम्ब इन, श्रीय, वैशन्त, सरसर्वका सच्चन, स्वविध और साव मीरमा—ये मनगरियोधि कर्न है सेह है। किन्नु इसकेश से सोप और मोल्डे कारण प्रश्न करेगी इक्सो इस और मानका अल्प से इस कुर्वानों फैस नवे हैं। इस सक्य बोचों सोकोचा एक देवर की बोर्ड हो अस्त की का कहता ! कृत ! इसमें इस पूर्वांकर अधिकार करेने हिन्ने अवक राजाओंकी की हाल की और उस अपने क्यू-ब्राव्डोंके बिना हम अर्थपहरूको मानि प्रीका कार्यात कर को है । ओह ! किन सामानीका हरने कर किया है उनों से सारी पृथ्वी, सुकारिक केर और सहा-के पाय-केंग्रे आविकी उसीर होनेपर भी हमें नहीं भएक काहिने कर सिंह हमने उन्हें नार ही साल। का कोक हमें कैर नहीं होने हैता । बनहान ? सुन्त है कर्शनका किया हुआ पण सुरक्षानेक आपरवर्त, इसरेको पहाल सुननेते, पक्रवान्ते अंधा कर, तन, प्रान, रोचेकत क्रां बुति-स्पृतिक्वेका पाठ करनेरे भी न्यू क्रेक है। बुतिने कहा है कि लगी पुरुष्ये सन्धनसम्बद्धे प्रति नहीं होती—बह अपुरतको प्राप्त होता है। " इसके अनुसार केय-कर्नको प्राप्त करके जब मुद्दि विका हो साथी है, उस समय जन्म मत्वारधारको जात हो जात है। यह खेकहर मैं मी क्रीय-रूप जादि हुए-क्पोंसे स्ट्रेट हो, क्रुन्युपेसे सुकर

क्रमेकर्नर करण व्यक्त है। इस्तीले मेरे आए संबद्ध सन्दर्भ क्रम क्षम सुरू-कोग आस्त्रों कान देनेका सिक्षम क्रिया है। अन में काम और कोकरी पीत हो सब प्रवासके क्षमोंने क्ष्रकर कही चेनाले काम कार्रेगा, सुने तका अक्षम कोनोंने कोई महत्त्वा की है।'

मा महिक्य की करीएक कुर हो गये ही सर्जुर कोले-'महत्त्वम ! मह महे अक्सोलकी महा है और इस्तरीकी महत्त्वमा है, से आप अमीनिक परकार करके सह सी हुई इस उसम राम्य-स्मृतिको दुक्तर देशेके हिम्मे उद्यार हुए हैं।



वर्ष त्यान है केन का तो जायने कोकों अवका हार्यके दिखे रूपाय राज्यओं की क्षण कर्ष कार्यों है अपने समृद्धिसारी रूपाय परिचान करते की इसमें क्षणा क्षित जाय वर-कर भीका मंत्रते किरोते, जब संभव संसार क्या कहेगा ? क्या कारण है कि एक अवस्तों सुन कर्मोंका समुद्धारों सेन्स्य अध्या को अधिकान करवान जान नेवार समुद्धारों क्षण केवा रूपाय प्रचान करते हैं। इस उत्तर राज्योंकों क्षण केवा रूपाय प्रचान कर करवीन करते आ ओ है! का मूर्ताय नहीं में क्या है? जब अपन है हुएन एसे बहु-क्याओं कर्मोंको जान हैने से हुएरे अध्यान पुरुष अध्यान है क्याई रूपाने राज्यार क्यांका अध्या क्षणा है हुएन स्थानका है

<sup>\* &#</sup>x27;स्थानेनेक अपन्तकानस्यः।

कुलमें इसका सारा पाप जायको अनेका। सर्वक स्थानकर 🍴 🛊 । केवल श्रुप्तेशको 🛊 कुर्वस्रकारे कोई कुर्वस्र नहीं कहा जाता । कांकित्यान हो जाना, दूसरे दिएके क्रिके एंग्यू न करके प्रतिक्रित मॉनका सामा-व्य प्रतिकोचा वर्ग है, एकालेका वर्ग-क्रशार्यका पालन के बन्से हैं होता है। पहलाब बनसे बर्न भी होता है, लेकिस सम्बद्ध की पूर्व होती हैं और सम्बद्ध स्रामनपुर का भी सम्बन्ध होता है; बड़ी बहें, बनोंद्र किया है संसारको जैविका है जो यह सकते। किले कर क होता है, करीके बहुत-से मित्र तथा कन्तु-बान्यक होते हैं बड़ी मर्द प्रस्कृत पाता है और भारे परिवा क्या करा है। निर्वन मनुष्य क्या कर पहला है तो उसे अर्थाट कदि। ब्याहिन हो स्थावी है: मगर परवास्त्रा कर बहुत रहता है। केले कंपकों एक प्रभोके पीक्रे सहा-ने हावी चले अले हैं, उसी प्रकस पर ही क्यांत्रे प्रतिक इतात है। क्यांत्रे कर्वक क्यान, ब्राजनाकी पर्ति, वर्गाको प्राप्ति, अवन्य तथा प्रश्लोका अध्यक्त—के सब कुछ समाब है। बन्ते बंकबी नवीद कारी है और धारते धर्मकी भी पाँच होती है. नियंत्रको हो न हम स्वेपाने सूक्त है, व पालकाने । क्लेकि अनोट क्रिक क्यून कार्निक कुरबोक्त विभिन्न अनुहान नहीं कर समझ । निरमके सम धानकी बढ़ती है, जीओ और लेक्कोंका अन्यत्व है, जिनके यहाँ अतिविधीया आया-व्याप नहीं होता, नहीं पहला हर्नल

एकाको हा तरहते करावि संस्था भारत साहिते और उसके हाए कार्यक ब्याविका अनुसर भी करते सारा पाहिने । बही सन्वतन्त्रस्तरसे केट्रेको भी जाता है। कमो ही मनुष्य पत क्रके और करते हैं, पहने-पहनेका कार्य की बनसे ही सम्बद्ध हेळ है। राजानेन कुररोको चुक्रो जीतकर को उनका पन ले को है, सर्वते ने सम्पूर्ण पूर्व क्रमेंका अनुस्था करते हैं। बिहरी की समाबंद करा प्रत है। देश कर नहीं देशते, को दूसरोके बहरेरे न आवा हो । प्राचीनकारकों को स्टबॉर्ड हो गये हैं और क्रम समय कर्नने निवास करते हैं, उन्होंने भी एक्समंत्री ऐसी है काइक को है। राज्य र यहरे का पृथ्वी राज्य दिलीयके अधिकारचे की; किंग सम्बद्धः इसका नृग, न्यूब, अव्यक्ति और कार्यक्रका आविकार हुआ । यही आज जानके अधीन हुई है । M: अर्थ रामाओची पाँत जापके रिम्बे पी, जिसमें सम कु बोधवार्क करने कुर कर देख बात है, हेरो सर्वकारिक नामक प्रकारक बहु करनेकर समय श्रीप्त हुआ है । जिनकर शसा हों। कार्युक्त अवलेख पहा कारत है, वे राजी प्रवाद रहा पहले अपने अपनुष्य-साथ करके परित्र होती है। अतः शाम समझ व्यक्तिके कामानार्थ का गरियने । श्रीरामेके विने गरी क्रमान कर्न है, जो अभावकार पश्च है।"

#### युधिष्ठिरका बनवासी, मृति एवं संन्यासी होनेका विचार तथा भीम और अर्जुनद्वारा उसका विरोध

कृषिहरी वहा-अर्जुन । बोड्री बेराव्य मन्त्री एकाव चारके मेरी बात शुने और उतकर विकास करो; किन तुम की मेरे क्षा नवस अनुसोदन करोगे । स्टब्स् सुन्दारे क्षाइनेसे मैं इस मार्नान न चले, जिसपर बेह पुरुष स्वा ही चलते अपने हैं ? बही, खुकी पद न क्षेपा: में से सांस्तरिक सुरुपेयर रूप्त करकर अवस्थ उसी धार्मकर चलेगा और करने फल-पून कामत कठोर उसका क्रुकेमा । समेरे तथा साधेकारच्ये कान करके निविचन, अधिने शहति क्रलेना और प्रशिखर मनकाम क्या कन्यल-क्या धारण कर असमायर कटा रहेगा। सही गर्मी, इस उसा धूक-प्राथक कह सहर करोगा और प्राथक विधिये तथ करके अपने प्रशेषको सुरता क्रहीना । हकान्त्रने स्कूबर सामक विकार किया सर्वेगा और कथा-प्रता—कैस्त की पार विश भारता, आंख्ये सामन जीवन-निर्माह कर्मना ( इस प्रकार क्ष्मार्थ वृत्तियोके कठोर-से-कठोर निकासका पासन करके इस प्राप्तिकी अल् सन्दर्भ होनेकी बाद देवाता स्थित। अञ्चन कुन-कुरियो रहता हुन्य बस्ताब ब्रैक्स स्ट्रैग और एक-एक किन क्या-क्या ब्रह्मसे विका गाँगका केवले तुर्वत कर क्रातेगा । क्षिण और अधिकार विकार होहकर पेड़के ही नीचे निवास क्रातिक । विकासिक विरवे व प्रतेशक धारीना न हुएँ । निन्हा तथा सुरियते समान सम्बोद्धाः । जाता और पंपतानते धी-सहस्रा विर्देश हो कार्यन्त । कांधी किसी भी कानुका संबद्ध न कर्यन्त । अवस्था है रचन करत हुआ प्रदा प्रमान गईफ । दूसरोंके सान क्रमी कोई जार नहीं करीना सक्त अंबों, गूँचों और सहरोक्षी तक विकास स्ट्रेंग । का और सकरकार्य को कर उक्तरके केंद्र हैं, उनमेरे मिलीकों भी विस्त नहीं बलेगा। सब अभिन्योगर येटी समान बुद्धि क्षेत्री, न सो विस्तीयो हैसी उद्धारीमा, न विराशियो हेकावन चौंहें देही कमेंगा। बेहनेवर सह प्रसारक काची रहेगी, एक इन्त्रिगोको पूर्वश्रमसे कहार्थे रहेगा । कोई भी एड कड़कर अने काल ग्रेप, किसीने भी उसा नहीं पहेंगा। फिली सबस केंद्र का दिसाने करेकी हवार न रबेंगा। पाताबा कोई निर्देश ओवर न होन्य; न वालेकी असुमाता होगी, न पीछे फिल्का देवीूना । मिलमें मोर्स सिमात यही रहेगा, अन्यराज्यसम्बद्धी रहेगा और ब्रेडियमनो स्टीम हे कडेटा । विश्वत केहे निर्मा क स्वार्धन—हरसा निर्मार मही करीता। एक परते निका न निकी के दूरने परते मंग्रिक, बढ़ी भी न विस्ततेका डीको करते। इक ज्वान न मिलनेको स्टब्से एक प्रकेशक महिला, साराजेश नहीं बाईगा। यह काँमें सूत्रों नेवालन के हे गया है, कुल-रक क्रिया करा हो, अंगले चुल को हो, तम लोग पर-में चुके हें, परेशी हूं क्लेको इस-न्या के क्लेक का समा हो गुला हो, रिवक्तनेने विकार सेवार स्पेट पने हो, ऐसे सामाने मैं एक है का विक्रके रिले मान करिए। उस मोरले प्रोक्का करून रोक्कर पृथ्वेकर निकास क्षेत्र । य जीवन्त्रे राग होगा, न मुख्यों हेव। यदि एक क्यूब नेरी एक की प्रमुक्तिके बतावता हो और सुनय कृतये ब्लीकर कवान कहाना हो से में का क्षेत्रीयर समान जान से परीक्षा व एकाक स्कूल भाईता न पूर्वाका अन्यक्रम श्रीत-निर्माको विन्ते प्रत्यपेषु क्रोहले-जीवने तथा क्राने-मीने आदिया कर्न कारीमा, परंतु इसमें भी अवस्थित गाँ रर्गुष्य । सम्पूर्ण प्राथमिक जामारोते उसका क्षेत्रत कर्मा कंप्यानको अपने अधीन रहेगा। सुद्धिके सरका धरिकारी करने सर Baurell आश्रीलयोके युक्त व्हेंगा । इस प्रकार बीतरान होका विकारोते जुले अक्षय प्राप्ति विकेशी । प्रत संस्थरने क्षा, पूर्व, प्रश्न, कावि और वेदकशीया आक्रमन क्षेत्र है रहता है; इसके कारण कहींका सीवन कार्य सरक नहीं कुछ । इस अधार-सा संसारका जे स्थाननेने ही सुका है। असन स्थूप हिलोड़े बाद जुड़े विसुद्ध विजेकामध्ये अनुस कहा हुए। है; हनके इस वे अक्ष्य, अविकारी हमें सरावर स्वरूपने उदा करण बाह्यत है। सहः प्रश्नेष वारणके हारा निरमार निरमान हुना मैं जन्म, मृत्यू, बात, स्थापि और वेद्यताओं में हुए इस प्रतिका अन्य करके निर्मय व्यक्ते जह हो अधिन ।

सह पुरसर पीमलेंग बोरो—राजप् । क्या अन्यने राजवर्णकी निष्य करते आस्त्रसमूर्ण जीवन कातीर कालेका ही निक्षण कर रक्षा था से बेकार की स्वती ही कालून हो बचा राज्य का ? जासका का विकार की स्वती ही कालून हो नवा होता हो हमस्त्रीम न इकियर काती, न किसीका कथ करते । आधारिकी तरह प्रतिर स्वामनेका संस्थान सेकार हम की बीका ही जीएते । हेसा कालेसे राज्यानेके स्थान कह

क्षेत्रहर संस्कृत को नहीं होता । शुनिहमान् पुरुषोने इतिकोचा नो बा का प्रक्रम है कि वे राज्यस अधिकार नमाने और नहि जाने बक्र रहेर काल अस्तित करें से अहें यर करें। ख क्षांत्व की इन्हरे देखे एक-अद्भिने बावक ने, इसीरियरे कारे उनका कर किया है: अब आप वर्णपूर्वक इस पृथ्वीका क्षाचेन वर्धको । जनका इध्योगोका साथ प्रवस कर्ण हो क्षापक: वैशे कोई क्यूक करने किसी सर्वाकी आका रसकार बहुत बड़ी अंशिक है को और बड़ी पहुँचनेवर को निराद र्गाट्य को, को कर इस्लोगोको भी होगी। आग निमा कंप्यालको बार क्षेत्रके हैं, करका पह समय गाँ है। विनादी विकास करते हैं, वे बुद्धिकर पूजा देते अस्तरपर अपन्यों अवंत्र भी करो; वे से इसमें समर्पका क्रास्त्रण प्राच्याचे हैं। को यूक-वीजेके बारानी अस्तानी हें, देखा, बहुद हुई देखतेला तर्गन व कर सके और अर्थनिक्षांको क्रेक्स केवल केवल आहे. प एक्सा हो ऐसा प्रमुख वंश्ववेदें कवर कैयरे अवेदन बीवन वर्तन कर सकत है। इसकोर्ध प्रतिकारणे प्राचीका का बाल को है। सकानो के कर्म के करण काहिये; के कार्रीको क्रोड बैठात है, जो mai firft all foreit i

त्यकात् अर्थुन्ते काइ--न्यातासः । इसी विश्वये एक कर्य प्रयोक्तिके साथ प्रमाण संस्तर् द्वारा का, क्षेत्र अधीय प्रतिकृति में स्वयक्ते सुंशतः है। एक सम्बन्धी करा है, कुछ कृतके साहाल-कारक--को अभी नहा नाहत थे,



करें अमे, संन्यारी सर पने । इसीओं धर्न जनकर वे उसस के। पाई-क्यू और मी-कार्यी रोजरे कुँद स्टेक्स प्रकृषकी परान करने राने। एक दिन कारर इस्तेनकी कृता हुई । में सुमर्गनर पश्लीका का करन करके उनके कह गये और रुद्रे सुराकर बढ़ने हमें—'काहित आह केवन बारोकारे महाराओंने के कर्न किया है का दूसरे बनुकोरी होना करिन है। इनका यह कर्न यहा प्रतिव और जीवर यहा करम है। क्ला मचेरम समस्य हुआ और वे बर्धान्य पूजा कार गरिको प्रदा हुए है।'

क्ष्मिनों का-नात ! यह पढ़ी सामित्र कर योजन कारीकारोकी बर्जना करता 🗓 पत्र से इन्यवंत्रीकी 🛊 अर्थन हो; क्योंकि इसलेग ही कारीक जब योजन करते हैं !

क्श्नी कह—अरो । ये सुकारी क्लांक नहीं करता । सुन तो पुरा कानेवाले और पूर्व हो, कब-कक्ष्में केहे हुए हो। महारिष्ट अस कानेमाने से कुले हैं होते हैं।

मारिको का-नहीं ! या यह संस्थानकारी सकत् | है—ऐसा सप्रकार है का इस वर्गका अवस्था केने के 🕯 । अस तुम्हारी मात सुरक्तर सुम्बर सुमारी अञ्च 🖼 🗞 आ: में अतन्त कामान करनेवाल सभा हो, बड़ी हमें बाउने ।

पानि का-न्यों, तुषाय प्राप्त विकास है से में कवार्य वात काला है, सुने । बोवानोमें की, बाहुओं में क्षेत्र, कारोपे स्थान आहे राज और बचुनोने अक्रम सेत्र है। | अक्रमके रिके कारकारीर संस्थार कारकारिक है: अक्रम क्षतंत्रक नीमिन हो, समय-समयमा उसका संस्थार होता याना चाहिये : मरनेके पक्षात् भी कालत एक्कानभूतिने अन्त्येष्ठि-संस्थान तथा वरका सद्ध आदि वेद-विकित अनुसार

कियें मुँक्क वर्ष आके की—कर-कर क्रोक्कर जंबाओं | क्रेन जीका है । क्रेन्क वह-कागरि कर्त है उसके दिये हार्गमें म्बुक्यनेकाले उत्तम पार्न हैं। वैशिक्ष कर्म ही शिक्षिका क्षेत्र है राजी अपनी इसकी इच्छा रकते हैं । बाई इन बार्नोका विधिवत् रूप्यान होता है, यह पुरस्क-सामा ही राजारे बड़ा आसम है। को क्षत्रेको विन्तु करते हैं, उन्हें कुम्बर्गकारी सरकारा व्यक्ति । ज्ये वहा कर रूका है । देखार, विराधा और अक्रमा-ने ही बीच सनतन पार्न है। को पूर्व हुनका क्षेत्रका कर्मा और विवर्ध कारी कारी है, से केल्पिट्स कामा अक्षा सेनेवाले है। इनलेंड इस देवताओंको, पर्याच्याच्या व्यक्तियो और साम्राह्म निर्मानो सुप्त करक—बहु करातन वर्ष है; इसका पालन करते हुए जुल्लानेको रोजा करना ही करोर रूप है। इस क्यार स्थानको कर्ने है केन्सरोंने बहुत नहीं निर्मात पाने हैं। विस्त्री वित्रकीचेंद्र अभे ईवर्ज नहीं है, को सक प्रकारके हुन्होंसे रहित है, देने साहत्व हरायो एवं पत्नों हैं। संसार में आयो ही तर कारो है, किया का इसकी अनेवार प्रकार केलीका है। को बर्जिक कर केका करते हैं, उन्हें अधिकारी पहली प्राहि होती है। हेक्काओं, मैकरों, अतिक्यों राजा परिवास्त्रे अन्य कोनोको जब देवन को कर्प सकते पीछ पाने हैं, से ही न्यानिक जार नोजन करनेवारे को गये हैं। अपने कांग्र कान्य क्षेत्रक सुन्दर प्रमान करून और साथ-कान्य काले हर के इस प्रभावीर पात संभावी वार्त है।

अपूरे करो है—पहराज । वे अञ्चल-कुमार जीवन्त्रकारी इन्हरू को और अर्थपुत्र को सुरक्षर इस विकास प्रदेश कि 'कुल्योग किस विवाले हैं, यह जिल्हार नहीं है।' इस्मीको के करकार कोइकर कर लीड गये और पुरुष-कर्मका करून करने रूपे । जुरु: जाय भी वैसे शास्त्र काले सम्पूर्ण मुख्यक्रमका अवस्था सम्ब कीरियो (

#### युधिष्ठिरको नकुल, सहदेव तथा श्रेपदीका समझाना

अर्थुनकी बात समाप्त होनेपर नकुताने भी उन्होंका ! अनुयोक्त करते हुए राज्य वृतिद्वितसे कहा-'राजन्। मिशासक्य नामका क्षेत्रमें सम्पूर्ण केव्यवलोक्कस की वर्ष अप्रिस्थापनाके सिद्ध प्रीकृत हैं; इससे अध्यक्षे यह सम्बद्धान कारिये कि रेक्स भी वैद्या कर्यों और उनके परवेसे किस्तर करते हैं। यो बेहोकी आक्षाके विकास करते हैं, उन्हें से महान् नारितक मानना साहिते। वैदिक क्योंका परिवान

करके कोई भी कर्नने नहीं का स्तरात । नेतनेता विद्वान् वसूरे ी—क पुरुवासन एक जनकोरी केन्न है। श्रीतिक व्यक्तिको राज भी हम स्वीतिको—'को वर्गपूर्वक स्वातीत विने हुए बनका चानदे कर्मीने उपयोग करता है, न्य कुळान प्रमुख हो सारो है।' विस्ता कोई पर-कर नहीं, जो इशर-अगर विवासे और मीन स्वयंत वक्षके नीचे स्ते खाते हैं, को कभी सरोई नहीं बनाते और यन

क्या इन्हिकेंको बसने रक्तो है, ऐसे उद्यागकेंको निवा (रांग्यामी) करते हैं। में उद्याप क्रोम और हर्न नहीं करत, विस्तिको पुरारो नहीं अन्तर तक प्रतिकेत केवेका सामान करता है, यह अगर्ने प्रकारता है। एक समय अवस्थिते क्यों मामनीको निकेचके तराक्या संस्त: होन अक्षा क्या कोर ने और अनेतन गुहरशक्त बूतरी ओर। विद्यु का विचारते का सीनोधी अधेवह म्यूनकर्म विकास प्रभा । काले क्योंने निश्चन किया कि वही पुरिचोक्त वर्ण है, वही स्वेक्कोनाओकी गति है। यो देशी कामन रहाक है, यह की कारी है। यर प्रोक्टर बेशलने कर करेले है कोई उन्हों नहीं होता । संभानों भागार भी जिसके हुएको सहस्त्र पहला होती है, जाने गरेने कराव मौतका क्या कर हो है: हम, क्षेत्र, केवं, साथ, क्रीया, सरस्ता, यह कारणा तथा कर्न-कृत सबका है शिका काल प्रतियोधे हैंगे बावक कहा है। बिलते, वेज्यानी शब्द अतिनिय्योक्त खेवल के पुरुक्तकारों की होता है । केव्यन प्रति अवश्यने वर्ग, अर्थ और प्यान—ने बीन परमानी प्रिज्य होते हैं। यहाँ सहका केवीनीहर विशिक्त बारन करनेवारे भागेका क्यो दिलक की क्षेत्र-क बारलेरिका प्रतरिके वाली महिल नहीं होता। कुछ सहीर क्ष्मानीका सामानाम का बारोको हो। 🕻 🚥 अन्त्रपूर्ण तत्तर यहे हैं और यह लोग मनों है सहस्रम महार पान्या मिलार करते हैं । विकास प्रत्यान करवाना जे साधन—नार्ग है, काना जातन रेनेनामा हैले प्रकृतन है माना है, देवता भी काले दर्शनों रिन्ते क्रमुख दाते हैं। विसाध कुटुक्का भार हो, का स्थाने केले गा-सामा विवास नहीं देशनेने अस्त । को तो क्रमपुन, अध्येत, क्रवंगेय का और कोई प्राचीन क्षेत्र करके अपने करका कर करना पार्विये। राजके जन्मको लुटी प्रमान क्षेत्रर प्रसानो सूटने सराते हैं, इस अवस्थाने की, राजाने इकाओ इसक पड़ी 🗳 से जो करियुगवा जुनियन् सरक 🛊 अन्यूज्य कर्युये । को सन नहीं केते, परामानकोची पत्न नहीं करते, वे राज पारके जानी होते हैं, उन्हें क्ष्मानी-राज्य कोयन काल है, शुक्त के कभी करीब नहीं होता। भीतर और बहार के बहा भी मन्त्रते पैसानेवाली चीजे हैं इन्हें क्रोड़नेसे बनुष्ण आयी मनता है, दिवर्त कर कोड़ देनेसे त्यानको निद्धि नहीं केवी ह को इंग्लीन विकारने तरा रूप सुरा है, अल्बी कर्य क्रांत जी होती । महाराज । पूर्वकार्ट समाउनेके विराम्हा होवल हिंदूक है क्स राजपंपे रिश्व राज्यर प्रापुत्रोपर कियम पानेके प्राप्त भारत, आरके देखा स्थल कीन छोड़ कोना ?"

तरन्तर सहरेको बद्ध-'भारत । केवार बहुत्ये

पद्मार्थिक उत्तम करनेसे सिदिह नहीं विस्ताह । प्रारीसे सम्बन्ध रसनेवाली प्रमुखीको क्रोड हेन्से की सिद्धि किसती है वा नहीं, इसमें संदेश है। ब्यारी प्रदर्भीका त्यान करके देखिक एक-भोचोर्ने कालक स्क्रोकांको यो का या पुन प्राप्त होता है, यह से इससे कड़ानोच्ये हो। जिल्हू देविक स्वार्थने अनेकारी क्युओको कथा श्रीकार अनास्य प्राथमे १ मीटा संभावतार कानेकारेको विस को अनक सुसकी अपीर होती है, यह हमारे हिर्देशी निर्माणों निर्मे । हो अध्योक्त 'कर' (यह केर है--ऐसा यान) मृत्यू है और बीच अञ्चरीका 'न पर्न' (मा नेट नहीं है—हैस पर्मा) अपूर-सरकार सह है। महत्त्व ! यदि कीन निरंग है, इसका अभिनाती क्षेत्र निर्देश है, के जारियोंके प्रशिष्क का कार्नेकाले शासकों रूपने दिला नहीं होगी । इसके किसीत की सर्रात्के साथ ही जीवारी अपने क्यां अल्डे का होनेडे साथ से जीवार भी का का का, का से का बैदिय सर्ववर्त है कर्ज दिए केल : प्रतिन्धे विद्वा कुलको एकावर्षे प्रतेका विकार क्षेत्रका पूर्वपूर्णाने किए पार्थका रोवन किया है, क्षाीका अवन तेन काहिने। एकत्। वर्तने सुधार काहित पान-पूर्णके जीविया पालत दुव्य भी को प्राचीने प्रमान रक्तम है, का बीतके ही मुख्यों हैं ( प्राप्तिकीका माह्य करूत कुछ और होता है और अस्पतिक सरका कुछ और अवद जनपर और विभिन्ने । मो समग्रे चीतर विराजनांत जानकारी केवले हैं, में की पहला अवने कुटकरंग पाने हैं। आप मेरे निवह, कार, वर्ष क्या कुल्लाका कुछ है। में अर्थ है इस्तीको कु कर्ने व उपने कहा-कहा प्रसान का कहा है। अन्य प्रते हमा करें। मेरे पूर्ण-तक के कर के कर है, का आओ कानोने नहीं होतेहे बारात ही बाह्य है।

विज्ञाणकार्य करते हिं—हम अकार अपने साहायेके पुरस्ते केलके शिद्धाल्यों को सुन्यान भी तक सुविहित कुछ हो रह गर्य के कांको आन्त्रेकाली क्रीवादी उत्तरी ओर देशकार अन् अपने कांको सामाव्या हो सहते स्वती—''महाराजा ! अपने के माई आव्या संकार सुन्यात सुन्या गये हैं, वर्गोंको साह का स्वता हो हैं। दिन की आय अपनी सालोंके इन्हें अस्ता नहीं मातो ! कां ? में प्राह्म आवके सिक्षे पुनस्तर अपनीत्या कांचे हैं? असा को इन्हें उत्तित साले पुनस्तर अपनीत्या कांचे कांचे हैं? असा को इन्हें उत्तित साले पुनस्तर अपनीत्या कांचे कांचे हैं असा को इन्हें उत्तित साले पुनस्तर अपनीत्या कांचे कांचे हैं ! अस होतों आपने हमें कीं साला-पानीका कहा स्वीत हो से हमा सालों कुछी दुर्गों कांच्ये साला- इन्हें कुणां कांच्या कांचे कांचे कांचे ! इस साला



को-को का करके वर्णत कर-दक्षिका जीवी कोले हुन्छ। क्रांतरक या इस पुरुष काने क्षांत्र है करना है कर्परात । पहि बढ़ी करण था, जो उस प्रकर आओ कैसी कते को को ? यह रहा उन्हेंद्र को कहत ईसार कारण, से जन करी जान इन्योगीया दिए मेड के हैं ? कारको १०६ अभिके प्राप्त इस पृथ्वीका फारून करक कार्रिके वर्गानि एक न हेरेकारे इतिकारी क्षेत्रक भी होती, इस्ट ५ हेरेकांस एका इस क्योचा अकोन नहीं कर सकत क्या ज्यानी प्रजाको भी सुक नहीं निरुद्धा । शब्दश्रीका करन क्ष्मी हो भूति है कि वे शुरोको एक है, सामुक्तोका सारान करें और पुत्रूने कभी भीत न विकासे ।

'क्षे अञ्चल देखकर हमा भी करता है और हरेन भी, क्षान हेला और कर रोवत है, क्षूत्रमोध्ये पण दिवसका और इरकारतीको निर्मय कराया है सम्ब चुलेको एक देश और हैनोपर सनुबद्ध करना है, व्या राजा बनोब्ब बहानक है। अस्त्रको पह पूर्णी न को प्रत्य सुन्तरेले निस्की है, य स्वत्रहे,

न जारने विक्रीको सन्तान-पुरावर प्रते हुए। विना है, य काने प्राप्त किया है और न भीता स्वित्तर ही तारा है। सार्क के प्रमुक्तिको अक्ता होनाका प्राप्त करके इस्तार निराम पानी 🗓 प्रतरिको उत्तव प्रश्त पृथ्वीका स्थापीन वर्धनियो । म्यून्सम् 🛭 कोची हेहोंसे कुछ समूर्व क्यूड्रीयस आको का सम्बद्ध; क्याक्रिके सामा है में नेपरितिक पश्चिम स्टेसकेंप है. क्रमा अधिका प्राप्त, नेको पूर्व विकार क्रीवृद्धीओ सरकर ही के कामहीन है, इसका भी बार हमान्य उस्त पेडसे कर और से प्रान्तक्षेत्रके परावर के प्राप्तकीय है, अल्बे क्रमा भी क्रमान विभाव है। इसके अमितिया भी भी स्कूत-मे देशोंके सारायक्षा क्षेत्र और सम्बद्धीर है, सनुह स्वीवका इस्त् भी आको अधिकार प्रत् विका। बहुबोब्दी व्यापकारों हेते अनुसर परावात करके द्विवसीओहरू क्रमानिक क्षेत्रक की उत्तर प्रसाद करने कई क्षेत्र ? मेरे अनुकेवारे अपने इन प्रकृतीका अधिकार परिवर्त ।

''बहुतक ! पेरी ताल कभी हुए नहीं बेली, में सन्देह है और तार कुछ जनके होंग्से समये है । उन्होंने सुपने महर 📾 'ब्युक्तरराज्यकारो । एका चुनिक्केट महे पराहरणे 🛊, वे कारों क्याओक संक्ष्य करने हुने को सुससे रचेंगे।" विका अन्य अन्यक्ता चेद्र देखकर रूपको कर भी कर्ष होती। विकार के देन है। यह वेदन पाई स्पर्क हो पाला है, से होरे भी अभिन्न अनुसरम करने रागते हैं। आओर उभावते सम संस्कृत भी अन्य है गर्न है। यो अनुस्ताका काम सरसा है, कारत क्रमी पान भी होता; इन्हर्गते पानीकारेकी से एक करने करिने । में है संस्थानी समक्ष नैजीने नीय है, के बेटोड को करेगर को वीरिक स्तुत प्रकृति हैं। में एक स्रोप सम्बद्धानेका प्रकार कर को है, जिस की ताल करने नहीं। मैं तव बढ़ते हैं, जान राजूने पृत्वीका प्राप्त प्रोड़का अपने केले अने विचार कुल से हैं। उत्पर् । जान मान्यता और अन्यतिको समान केवाबी है। सन्दर्भ प्रयास्त्र सर्वपूर्वक काल करते हुए कांद्र, यह क्या क्षेत्रोसक्रित इस पृथ्येका क्रास्त वर्धिको । स्कृत २ हेपुने । सन्त प्रकारके का करके कारकोच्ये कर संविध्ये ।"

### अर्जुनद्वारा दण्डनीतिका समर्थन और भीमका युधिहिरको राज्यकी ओर आकृष्ट करनेका प्रयास

कता चुनिश्चितको अस्ता है। अर्जुन जिल कहते | कुल है; इस्तरियो निक्रमोंने सम्बंधी करावा समै बताना है।

र्वहरूपान करते हैं - हुम्बहुम्बरीची करते सुरकर | हरकी एक करता है, सम्बंद से मार्नेपर भी एक करता हरते—"तक्तर् । दक्त ही समक्त प्रकारनेका कारण और | दक्तरे ही वर्ग, अर्थ और कामकी पक्त होती है, इसरिन्ने क्षय

Beri बहरराम है। दश्य हो कर और कल्पकी रसराता करता है, इसरिन्ने अपन कुछ बारण व्यक्तिने । संसारकी और ¥िरमे—कियने ही पानी क्याके ही पानते पान वहीं करते; रुको है सही व्यवस्था ठीव-ठीव बारती है। बहा-है मनुष्य क्रमाने करते ही एक-क्रूरोका सर्वज्ञक नहीं करते। मदि क्षम समग्री रक्षा न मनात हो संस्कृते प्राणी केर भागकारने कुर जाते । यह उसकुरत सनुष्योध्य केरद सम्बद्ध और खोंको एक रेता है, उसेरिजे विकास पूछा उसे 'उसा' महारे हैं। भी प्रयुक्त करावा को से को सामाने क्षापानित क्षान्य ही जानार एक है. क्षांत्रको खेनागराके मिले केल केवर रोगा रोगा कामा एक है: केवमा क्या कामे पूर्णना करून करना है। जिल्ल स्कूट विके सेक्टर अतिरिक कुररा कोई एक नहीं है, जाने कुनके काली की काम ही रिच्या काता है। मनुष्योको प्रथमित स्थाने और करके मनगर रक्षा करनेक रिन्ने को एक प्रमांक कांकी गाउँ है, करिको एक कहते हैं। अक्रकारी, गुल्ला, कारास्थ्य और क्षेत्राची-ने तम क्ष्मेर है जाते अवने-अपने व्यवंत रिका मुते हैं। किया पानके न मोर्ट पड़ा कुरता है, न कर केट 🕯 और न प्रतिहा-पारन्यक से सुर प्राप्त प्राप्ता 🛊 🛭

"का, मार्टिकेस, इस, अहि, क्वम, कर, वंज्ञा, करू, मृत्यु, कुमोर, रामि, कहु, सार्थ्य कका बैन्हेंबेक—मे प्राप्त केवल क्ष्म देनेमाने हैं: अर्थ: इन्हें अंत्रकों: सामने माना देनाहर क्य सोग इसे अध्यय करते हैं, सभी इसकी एक करते हैं। मैं संस्थानों विक्राविको ऐसा नहीं देवतता. जो अधिनको जीविका कराता हो: (क्योंकि अनेक क्रिको क्या-१-५७ है।सका सम्बन्ध हो ही जाता है।] को विकासका विकास है, इसके बिहार पुरुषके केंद्र नहीं होता। बहारक | जिस करीकें आपका जन्म हुआ है, जाकि अनुस्तर अस्त्रको वर्तान करक कारिये । फरीजें बहुतेरे जीवा है, पुत्रतीवर तथा वृक्षके कलोजें भी जार-से जीदे होते हैं: कोई की मनुष्य देखा क्षी है, को **इन्लिंग विसासे सर्वक बका करा हो। परंतु हो** मीमन-निर्माहके रिच्या और गंध्य प्रक्रा का सम्बद्धा है ? विहाने ऐसे सुरम कीरायु होने हैं, कियार अनुस्थाने ही पता समा है। पनुव्यक्ति पत्तक गिरानेगामने उनके कंबे दुर साते है। असः ऐसे कीयोकी किसारो व्यक्तिका कवाव के शकता है ? "

"क्यमे जनले क्यानेनिका प्रचर इश्व है, व्यने सम्पूर्ण अभियोंके सभी कार्य सुकल्कानों होने को है। संसारमें प्रते-मुरेका जिल्ला करनेवाला कहा बाँदे न होता हो सम बगड़ अंबेर प्रका सुता, बिसीको कुछ पी छा। नहीं

जरिएक मनुष्य हैं, वे भी देवे प्यानेका जल्दी रक्षका जा जाते हैं। इनियाने सर्वका पुद्ध मनूना विकास करिन है, सब इंप्को रिका क्रेंबर ही टीक राजेनर रहते हैं। इसके सबसे ही लेन्डेकी कर्षाकु-करूको अपृति होती है। बारों कार्तिक स्त्रेग अल्प्यो स्ट्रें, रूपने अची नीतिका वर्ताव हे और पृथ्वीवर को क्या अर्थको रक्षा खे-इस ब्लेक्स्से ही विश्वासने क्षांका विकास किया है। यदि पक्षी तथा हिराम और प्रमुक्ते क्यों न होते तो ने पशुओं, पन्थों तका शुक्रके रिन्धे एके हुए इतिकारिको भी एक सकते। भारते अतेर कर्मकार्मेका एकेन क्षे कता और भारी क्लीवर्ड देव जाती। प्रत्य ही नहीं, जिनमें विभिन्नांक को-को राजनाएँ से वाले हैं, ने संबद्धा-का भी बेक्टके नहीं होने करे। सरस्य-वर्णका ठीक-ठीक करण नहीं होता और कोई भी निवा नहीं पढ़ परंत । होई महत्त्रेचा का न होता से रक्षेत्रे जुते हुए केंद्र, बैस, क्षेत्रे, सहार क्या पर्या क्षेत्र व्यक्ति हो नहीं। सेक्या अपने सामीवय तथा कारण करा-नेताका बहुन नहीं करते और करती सी अपने सरीवर्णना विका नहीं रहती। इरकार ही सारी प्रकारिको हो है, एको हो का होता है, वर्तनीहर क्रानेच और परानेच एकम है प्रतिकृत है। वहीं एक देनेकर सुन्दर विभाग है, वहाँ ६४०, कर और उसी नहीं हेकारेचे अली। इसमें संके की कि मनकड़े कर कार्य क्षणीय अभीत है, परंतु का कुछाड़े अपनेत है। देविको, हक्कडी Reach willer \$1

"रवेक-मान्या निर्मात करनेके रिर्म धर्मका प्रतिदाहर मिन्स नाम है। योद्यं भी कहा ऐसी नहीं है, सिहतों क्थ-के-क्थ पूज ही हो अकत को सर्वता पुरोसे परिश्व ही है। प्रत्येक कर्मने अन्तर्भ और बर्क केने ही देसनेने अली है। इन तथ करोका कियार करके आप भी प्रार्थित करेका कारत स्टेरिको । यह स्टेरिको, द्वान देनिको तथा हवा हवे निकासी एक कोरियो ।"

अर्थनको का भवत क्षेत्रेयर गीमसेन कहरे लगे--"कम्प् ! अस्य कर वर्षीय क्रांत है, आयरे कुछ भी बढ़तेशी अवस्थान को है। की कई कर मन्त्रे निक्रम किया कि व कोरी, व कोरी: ' कमा अभिका द:स होनेके कारण कोरूपा ही पहल है। आयका पह अल्प केंद्र देशकर पुसर्शन विकास और निर्मात के यो है। आप संसारको गति और अन्यत केन्द्रे कानते हैं, चरित्रण और वर्तमानमें भी आधी कुक किया औं है। ऐसी विवरियों भी आपको राजके प्रति अवकृत करनेका जो कारण है, बारे बता रहा है और बेकर पहल । में वर्षकी वर्षात वह करके बेदोकी किए करनेवाले , हुने । प्रमुखको से अवस्था कावियाँ होती है। एक प्रकारके अवजीते कभी बुद्धकार की निवका।

संक्रियों ]

कुम्भ का, अही अवहर अपने मचके साथ की सामग्री स्थान । देशिये । इस साथ स्थेप आपके बार है।"

**बारिन्य और दूसरी मानस्थित हान दोनोब्दी जनति । बाहिरे । काल्या काल्य अब आ गया है । इस बुद्धी न** अन्योत्पारिता है। क्याके विना कुररीका क्षेत्र सम्बन नहीं 🛭 बालोका कार है, न विना और अनुयोकी सहस्रातका। है। क्यो सरीरिक कामिसे कामिस कामि होती है, क्यों 🖟 अवेले अववर्त सहता है। यनको नीटे मिना आपनी का माननिक स्वतिको सारोतिक स्वति । यो सनुभ सीते हर | एका होती, मै यह वह सामाना । हाँ, को बीतकर आप इतरीरिक अवका मानरिक कुनाके विन्हें क्रीक करता है, यह । अवस्य कुतार्य क्री कार्यने । प्राणिकेके आवारमन्यर विवार एक बु:स्परें बु:से बु:सको कहा क्रेक कहा है। को होनें | अनके अपनी कुदिको दिना करियो और बान-कुटोका साम कारको । सौमानको का है कि पानी मुर्गोकन सेक्कोसिंहत "इसलिये जैसे भीवा और होमके साथ जानका मुद्र । यस पक्ष; अब जान अगुनेश का करके विकिन्निक एतिया

#### युषिष्ठिरद्वारा भीमको फटकार और मुनिवृत्तिकी प्रशंसा तथा अर्जुनका राजा जनकके दुष्टान्तसे उन्हें समझाना

र्गराज्यको सहते हैं—धेन्योकार्य कर सुनका राज पुणिक्रित चोले-"चीम । कालोच, लब्ब, व्य, चन, समानि, पार, मेबू, अधिकार कार ज्ञेष—इर प्रधान कार्यने हुन्दारे क्याने कार्यकृत कर विच्या है; इसंग्रिको हुन्हें राज्यकी हुमार होती है। यहाँ । योगीयो अस्तरीय होत्हे और सम्बन्ध प्रेंबर पाल को सुबी हो नाओं। जान विक्रमें ही बच्चकी बनों न हो; जामें ईसल न काल परन हो पर अपने-अपन सामा है जाती है। इसी प्रकार हुए भी अपनर साहार कर करके पेंडकी अन्य प्रत्या पार्च, यह आवस्थान बहुत वह पार्ची है । पहले अपने नेवको चौठो; जिर देशा श्रमका कावन कि इस कीती हाँ कुम्मीके द्वारा तुमने परम्यानार विकास सभी है । प्रीयकेन । कुम प्रमुखोके कामधीन तक ऐक्विकी प्रशंक करते हैं: सिंह जे फोगॉमे रक्ति और तुक्ती अनेक ब्यून तुर्वल है, वे ब्यूक-बुन 🛊 सर्वोत्तम पहले प्राप्त करते 🛊 १९के स्त्रोत एवं प्रकार 🗓 प्राप्तर-पर पीरनकर या दांतीसे ही जवाकर करते हैं. अकवा पानी का हवा पीधार ही रह जाते हैं, उन तजरिवजेंने ही नावायर विजय करते 🕯 ( (महाँ तुन्धरे-वैसे पीरोबी पीरक नहीं करन रेडी ।) एक और सन्दर्ग प्रजीवत सासन करनेवास्त रूमा है और इसरी और पत्कर और सेनेको एक सम्बन्धित्व पूर्ण १ इन क्रेनोने मृति ही कृतार्ज है, राजा नहीं । अपने मन्त्रेरकोंक पीके को-को कार्नेका अवस्था न करे । अस्ता स्था पणता न रहते । प्रस्ते स्टि अलोक और परलेकरें भी सोकादित स्थान उद्या होता । मिन्होंने चोनोकी आसीत क्षेत्र के हैं, वे कथी क्षेत्र नहीं करते । फिर तम क्यों भोगोंकी किया कर के हे ? वर्ष सम्पर्ण बोगोध्य परिलाग कर है से विश्वकरही हुए

काओंने। प्रत्येकके के कर्ण प्रतिद्ध है—शिवुका और केन्द्रमा । सम्बन्ध पदा करनेवाले निर्मालके वाले 🛊 और नेक्के अधिकारी देवकाले । न्यूपिन्य प्रथ, ब्यूक्वे प्रथा स्वाच्याको सरस्य हेते राज्यों स्ट्रीय मते हैं, जहाँ पुरस्का प्रकेश भूति है । स्थल कन्या सम्बद्ध हुन्होंसे रहित और बीकपूरत पुरुष है, जो बोक्सरक सामाना सक्षावार है गया छ। पूर्वकारणे अनुरेते को उत्तर प्रकट मिला का, उसे लोग जा क्रमार कामो है-- 'क्सरोकी होंड्वे मेरे पास अलग कर है. निवन केरा काले कुछ की कहीं है। सारी निविद्धा करा काव हो के येत कुछ नहीं जरेग्य ।' जो कर्ष ज्वारक्यों स्वयंत्र हम क्षण-अपक्रमें देशन है, भी अस्तिकाल और भी पृत्यान है। जाता राज्येका प्राप्त को सम्बद्ध कोच (Page) करनेकारी मृतिको बुद्धि स्कृते है। यस यहक विश्व-विश्व ज्यक्तिको एक है परमात्रामें रिक्त देशता है तथा उसीसे समाद्र विकार दृश्य काला है, का समय वह ब्रह्मकार है च्या है। वृद्धिकर् और क्यमी है उस उत्तम गतिको ताम होते है। जो जब और सहारी हैं, जिसमें सुद्ध सुद्धि तथा संबंधा अक्षय है, हेरे खेलोबी बढ़ी बहैब नहीं होती। बास्तवमें सब कुछ बुद्धिये हैं सिवत है।"

में बहुबर राक चुनिहर पूर हो को, तब अर्जुनने फिर क्या 'ब्युराज । जानकार स्तेग राजा जनक और उनकी सी-का संवादका एक प्राचीन (शिक्स कहा करते हैं। सुना क्रकने भी राजका परिवाग करके पीका प्रीपतेका निश्चय किया का उस समय उसकी राजीने दुःशी होका को कुछ कर क. को अपने सम का है।

का, संतान, पूर्व, पान प्रकारके का उन्हें अधिकेत्रक की मान करके निवासकी तरह पुरोपर पूज इस्त को सरका क्ष्मे रूपे । जामीको इस अवस्थाने देख करीको प्रकारिक इक्ट, में एकामने उनके कर ककर केरी—'राज्य ! आपको निश्चकरी नहीं। मुहोबर कुछ हुआ की सुनक क्ता शील जो है। अवन्ये का जीवन और केन प्रा राजधनिक किन्द्र है। यह न्यान क्रम क्रेस्टर कर स्था कोंग्रे-में अपनी प्रतिप पानों है से प्राप्ते-से अस्ति, केवस, मानि और रिसरीया परण-प्रेपण केने विका का समात है ? में से संप्यारी 🛊 आवस्त्र यह साथ परिवार कर्या है। कारने क्षानीको समारा है। इस्तरियो देखान, अमिति और विकासि अवस्था भी परिस्थान कर दिया है। अन्तर्येद रहते ही अन्तर्या मता अन्यते पुत्रकृत हाँ और यह अव्यक्ति स्वेतक्य थे परियोग्य । भाग, बडीचे हो—मे कन जारके कहा कहा आकृत्य क्रीहमार जान विकासिके संन्यानी हो हो है ? क्यों रिव्यान चीवन व्याप्ति वासे हैं ? आप सन्तर्ग व्याप्ति प्रिये मार्क्स प्रथम थे, सभी आयो को अस्पी कर बार्क आते थे। इसी तथा एक सम्म देखा का, का अन्य कार्यने भी हर दक्की भीति तथ जीनोची पूचा निकास करते हैं: ( किया अन्य मुहीनार अपनेद रिप्ते कार्य के कार्योंक स्वापने कथ बैलाबेरे । यस प्रम प्रक क्रेक्स भी अन्य भूतिना जीवेर रिन्में कुररोबर्ड कुछ चाहते हैं, को इस उपलब्ध और कुछ कारनेने अच्चर ही क्या रहा ? केनों एक-से ही हो है, फिर करी क्या का से हैं ? महीपर जीको आवश्यकत करे हैं क गयी हो सर्वत्यक्त्यों प्रतिक बार्च हो ?

'महाराज : क्यी मुहन्स उत्तरको कृत्य हो हो हल पृथ्वीयाः परण्य करियो और एउन्याहर, हान्या, हान्याये, क्या राजा आकृत्योको उत्तरोगमें स्टाने । को क्याबर कृत्योको हान्य रेगा है तथा यो निरमार कर्य ही हान्य व्यस्त स्टान है, उत्त होगोंने क्या अचार है ? उत्तरे काँग-सा क्षेत्र है ? इसे आव सम्मानिये । संस्थाने साम्यु-संस्थाने अचा हेनेवाले क्याबारी अववारकाया है; वहि हान व्यस्तेवारण क्या न हो हो खेला मान्नेवारो पहालाओंका जीवन-निर्वाह केले हो ? साम्यो हो अववारी पृथ्व होती है, हरसियो काम हेनेवाला आवारका होता है । पृथ्व-अववारणे अस्त्य होता भी अववारिक लोग सुक्ताकोंक ही स्वारं जीवन वारण करते हैं । यो अववारिक होता स्थान प्रवार स्थान है, व्य किस्ते भी बालायों स्थान पृथ्व ही है। व्याप-से स्थान है, व्य किस्ते भी बालायों स्थान पृथ्व ही है। व्याप-से स्थान हो इस रोजे का पेट प्रस्थानेक सिर्म पृंह सुक्रावर नेक्स

प्रकार है, एक दिन राजा जनकार पूजा सका हुई । वे संतान, जी, जन्म प्रकारके का क्या आणिकेया भी करके निवृत्तकी कहा पुरीपर पूजा दूका को सकता रूपे । सामिके इस अवस्थाने देश एमीको वहा प्रम , वे एकापाने उनके करा काकर कोर्स—'रावर ! को निश्चाको करके करा काकर कोर्स—'रावर ! को निश्चाको करके करा काकर कोर्स—'रावर ! को निश्चाको अपनी कीरिया कराने हैं कि सर्वका कोर्स को निश्चाको करा के प्रतास कोर्स के स्थाप करते हैं । को काम्य काक कोर्सकर करि साम में अपनी प्रतीय कराने हैं से इसने-से अस्थि, हेक्स, और निरुपेका करा-नेक्स के किसा का स्थाप है ?

> "(इस वर्ष समित सम्बानिको वर्षाने संभावता विभाग कोड़ दिया।) एका वर्ग्य संसारने सम्बंताके समर्थे अस्ति हैं, निक् उन्हें को कोड़ हैं क्या था। उन्होंको मंति अस्त को कोड़ों न कड़िये। की इन्होंक सर्वेद्ध द्वार और त्यारें स्वयं प्राप्त अस्ति सर्वेद्धा अनुसरमा कार्ये, इसा आहि पुल्ले क्यार क्या होते, वाल-कोचारि केचेको साल होते सभा अस्ति क्यारे क्या होते हुए उपलब्धकों स्त्री दोने हो गुरू और प्राप्तकोंको केचा कार्य हुए हम अस्ति अस्ति स्त्रेक स्वयं कार्य केचे। इसी अस्ता का्याक्तिकोंको और सारकारी होत्या हैका, अस्तिके और सारका आन्तिकोंको विकित्या होता करते करते स्त्रीति

> er after un-fen i ft gefen aftener पारनेवाले और पर बच्च जरूर अनुबाद विश्वनदा धारनेवाले केने प्रकारक प्राप्तको सारक है एक यूने प्राप्तिकृत और क्षत्रीयान केवीच्या प्रतिस्थान करनेवाले के स्थानीवा भी जन है। इसके किया पासन किया अर्थका अतिकास करनेकारे कार्यका भी की वृधिवृत्तेत कियार दिला है और म करवेक के कार्य है, को भी में विविधा बारता है। कर के केवल क्रम्बनिकांदे ही जनमार है और चीरोब्द कर्न प्यापन करने हो। हरासके प्रकार्ध नर्गको तुप किसने प्रकार न्हीं सन्द्रा सकते। को स्वेत प्रातको सूत्रा सुरक्षको सान्त्रो है और वर्णका निवास करनेने कुसार है, तुमारी कहा से बे भी पुत्रो उन्हेंस् नहीं वे समझे । उधारि आह्योहरू तुमने को कुछ बड़ा है, यह न्यानांत्रत और इतित ही है, उससे पुत्रे भी कुमरे और जासका ही हुई है। युद्धांट करोंचे और रंकन करनेकी कुकारतार्थ के तुमारे समान सैनी स्वेकोर्थ भी कोर्र की है। किए किए व्यानुवाकोव्ये कृति परमार्थने तमी हाँ है, अस्ता विचार है कि का और ताम क्षेत्रें है कारवर एक-कारेसे केंद्र हैं। सर्वन ! एवं को देख कारकों हो कि बनमें सम्बद बोर्ड बीच है जो है, से डीक की है.

सारायां करवा कोई प्राप्त नहीं है, का कात किया कहा संस्थाने आ नक को तुन्दे कात हत है। इस संकाने तम और सारायायं अने हुए की अनेको करिया पुरुष हिरावतों हो। है। से स्वाप्त करवान करते हुए करियोग स्वाप्त करवाती है, को करवे सारायायं करते हुए करियोग स्वाप्त कर सेके है। कोई कायुक्त इतियोधी अनेक विकासी नेकार अधिकेकार्यांक सहायां क्षेत्र के को विकासी नेकार अधिकेकार्यांक सहायां है। की को को कारायां का करते कुम्मकेकोंका सार सेते हैं। कियु योकारायां पुरुषोधी गी। को अनिकंकार्यंक सारा को है। कियु योकारायां पुरुषोधी गी। को अनिकंकार्यंक सारा को है। कियु योकारायां पुरुषोधी गी। को अनिकंकार्यंक है। कार को है स्वाप्त सारायां प्राप्त करते हैं।

स्थान स्थान कारण कारण का कि है। विद्वार्तिंग सार-असार स्थान विदेश करनेकी एकारो निराद प्रशासन विद्यार स्थाने को है और में अपने सरकारों दिया हुए कहें मुख है। जाते हैं। या आवारण आवार सुद्धा है, नेतारे उसे देश की या सरकार और कार्यारे कहा नहीं या स्थान। को को पुनिकृत्यार विद्यार है, में भी इस आवारण के विद्यारे कारणे पह बाते हैं, सामारण की बोतों से बात ही बचा है? इसी अवसर कहे-कहे युद्धिरान, ओलिए और प्रशासोंके निर्म भी यह आवार सुनिक्षित है। किंतु असूर्य । स्थानांग से तप, हान और सामारे का निर्म पहल् सुन्ताकी

## महर्षि देवस्थान और अर्जुनका राजा युधिष्ठिरको समझाना

नैतन्त्रकार्यं कार्यं है—राजप् । युविद्वितवी कार पूरी क्षेत्रेयर वहाँ वैदे हुए क्षेत्रकार पानके कुछ बनावेरे के मुक्तियुक्त मक्तन सङ्गते आरम्भ निर्मे, 'अवासप्रको 🗄 अवने बर्गनुसार यह स्थरी पूर्वा क्रोबी है। इसे सामको कर्ना है मही साथ देश भारिये ( कार्य ? प्रक्रमर्थ, मुक्त, मानास और संचान-ने नाएँ सभाव साम्बं प्राप्त सरवेशी पार श्रीविमाँ है और प्रमान मेहने प्रतिपादन निरम नमा है। जल: बारको इन्हें बारको ही पार करना पाकिने। उत्तर अनी बद्दी-बद्दी प्रवित्तरजीवाले पत्र बदेशिये । सम्बद्धान पत्र क्षे प्रतिरूपेण किया करते हैं और बोर्ल-बोर्ल प्रान्तक को करते 🕯 । नक्तम को पहले लिये ही सन्दर्भ बनका संख्या करते हैं । में परि अपने प्रारंत अधका किसी अधोप्य कार्योह ऐस्से कारका मुख्योग करते 🛊 जे पुरुक्तक जैसे केको साथ करते हैं। इस्ताने पानेत हैंकों ही करती रक्षण की है और यत्रके रिप्ने ही पुरस्को जस्का रहक निकृत विका है। असः बाके लिये सार का कर्ज का देव काहिने। उसके का चीम ही कामनाकी रिविट् हो जाती है। राजन् ! अमिरीहर्णंड का राजा मकाने बढ़ी हम-बामसे हनका बजर किया का क्रिके बार्ग स्वर्गदेवी सक प्रवास भी और उनके सभी पत्रपत्र सुवर्गके थे। राज इरिक्रप्रका कर भी असने सुक 🕏 होगा । अनुरेने भी बहा का पूर्व करके प्रत्यक्त करूर विकास था, उससे वे पुरुषेके सारी हुए और सोकाक्षित हे गये। इस्रकिये साठ यन वज्रमें 🕏 छना देश स्वर्धने ।

'राजन् १ मनुष्यके अनये संयोग होना कर्णने भी प्रकृतन है। संयोग ही समस्य जहा सुरत है। संयोगने प्रकृतन संस्ताने कोई बाग नहीं है। अनकी टीम्स-टीम्स स्विति तानी होती है जह कर्म ब्याज्य की अपने अपने क्रिक्ट रिलाड़ रेला है, अर्थ क्रिक्ट अन्ते का व्यावकानेको एवं और्ग समेद रेला है। तर क्रिक्ट हुरेंद है जावानोति:क्रिक्ट परमाधावा अपने अन्य:क्रिक्ट है जावा अनुभव हो बाता है। का कर्म्य क्रिक्ट की क्रिक्ट और क्रिक्ट की दिस्तिको संग्रेड कर भी क्रिक्ट । यह क्रिक्ट और हेन्स्मे की रेला है तथा अन्यस्था सर्वाच्या कर रेला है।

'कोई स्थेण तो प्रतासकी अवंदस करते हैं और कीई कोलके पूज जाते हैं। कोई इनके प्रकारको है अवहां काले हैं और कोई एक सरक ही केलेको। कोई प्रत्यको हैं। अवहां काले हैं, कोई संन्यासको और कोई हालको। कोई तम कुछ कोइकर पुरसाम जन्मान्ते आत्मों को को हैं। और कोई राज्य काकर अवलक प्रतास करके मुद्दिमानीने को की निक्षण किया है कि किसीसे हेंह न कारता, सरव जनक करना, का देना, सम्बद्ध हवा रक्षण, इन्द्रियोको स्थान करना, अवली ही बीसे पुलेशकी कारवा कहा मुद्दा, सरवा और अवकारका—के ही अवहां कर्ष हैं। अवस्थान पहले की कहा है।

'राजन् । आप की प्रकारपृष्टि इसी क्षर्यका पासन करें । पूर्णातका का कर्ष है कि इनिएकोको सर्वाद अपने आधीन रही, किया और अधिकने सम्प्रान को, पासनुद्वानसे को सबे असी जानका सेवन करें, सामान्दे कालको जाने, दुष्टोंका दूसन करवा को, सामुओको रक्षा करें, प्रकारको पार्माननंपर से कालत असके साथ कर्यानुस्तर कालदार करें और असमें पुरुको कालक्ष्मी सीवकर करने करन जान । नहीं भी सनके पाल-मुलाहिते निर्माह करता हुआ अवल्या सामावा प्रामीक सार्गिका ही विधिन्निक आवल्या करे । जो एका इस प्रवास सारित करता है, वही वर्गको पाननेवाला है। इस प्रवास को अर्थका सोंग परलेका होनों ही सुबार जाते हैं। इस प्रवास को अर्थका सनुसरक करते थे, साथ, हान और सामों सामे हुई थे, क्या साहि पुणोहरे साथक थे, साथ-स्केतादि क्षेत्रोहों हुए रहते थे, सामेह प्रसादकारों तावर रहते थे, साथ कर्मका आवल्या करते थे और भी एवं प्रावहणींकी रहान्ये विश्व पुता तान्ये थे, ऐसे अर्थको राजा काल गति प्राप्त कर पुत्रे हैं। इसी प्रवास कर, यह, आदित्य, साथा और अर्थको राजाविनोंने भी इसी सर्गका आवल्य कराने कर्म प्राप्त कराने प्राप्त क्षित्र कर ।

रैक्क्यकार्थं कार्य है—एकप्। इस जावर का रैक्क्याय पुनिया भाषण जातात हुआ से अर्जुको अर्था को माई महाराज चुनिहिरसे, को अनीतक बहुत उक्तर से, किर माई, 'कारप्। आग कर्यत है, आजी इसिक-कर्यंत अपूर्ण कार, 'कारप्। आग कर्यत है, आजी इसिक-कर्यंत अपूर्ण कार, 'कारप्। आग कर्यत है, आजी इसिक-कर्यंत अपूर्ण

है का कृष्य राज्य प्रस्त किया है। पित आप हाने दु:शी हवी है? यहाराव! अस्य इस्त-वर्गका विश्वाद शिक्षिते। श्रीत्रको विन्ने के वर्णपुत्रने का क्या अनेको वहाँसे की क्या करें की करवा का कृष्यका को नहीं है। श्राप्त के स्था करेंको कालो है, वर्णप्रसा है, श्रीत्रुवाद है, कर्णपुत्रका है और संस्थाने आने-विश्वेको स्था वालोपर हुई। स्थानको के क्या आपने इस्त-वर्णक स्था वालोपर हुई। स्थानको का निकारका स्था प्राप्त किया है। असः अस करवो नवले स्थानक अस का-वालोका अनुहार क्षेत्रिको । वेश्यो, इस क्याक व्यावका दुव की, विश्वा वालो क्यांसे का श्रीत्र है। अस का हु असे स्थानको क्यांसे इस क्यांसे अधिकोको के विश्वा का। स्थानको स्थान हु क्यांसे प्राप्त क्यांस व व्यावका हु की क्यांसे हुई। क्यांसे प्राप्त क्यांस व व्यावका हु क्यांसे क्यांसे हुई। क्यांसे प्राप्त क्यांसे को क्यांस क्या है। असः की पुत्र है क्यांसे क्यांसे को क्यांस क्यांसे। है स्था की स्थान हुई।

## महर्षि म्यासका सङ्क्र-शिवित और राजा इयप्रीवके दृष्टाना देकर युधिश्विरको प्रजापालनके लिये उत्साहित ====

र्वसम्बद्धनार्थं कार्त है—सालेका ! अर्थुओ हार प्रवास सम्बद्धनेयर कुनीकार जुविक्षियों कोई कार नहीं दिया । सर



न्दर्भि कार। बहुने सर्थ---'ग्रीक ! अर्थुकार सावन बहुत क्षेत्र है। जुल्ल-कर्न कहा काल है और प्राचीने काला सर्गर विकास प्राप्त है । सार्वहर है कुछ प्रत्यक्षपुरतार श्राप्तार्वका ही अल्पाएक करे । बुक्तरे रिन्हे कर क्रोड़कर करने क्रानेका विकास नहीं है । देखों, केवल, निकर, असिकि और सेवक इन सबका निर्वाह पुरस्को प्राप्त है होता है। अतः पूत्र पूत्र स्थापक प्राप्त पार्थ । क्यू-वर्डी और संबक्त जिल्लीका केंद्र की गुहुत्वोंके कारण ही परवा है, इस्तीमंत्रे पुत्रक ही सबसे केंद्र है। तुन्हें बेदका परा क्रम है और हुमने समस्य भी जान बड़ी की है। इस्तरिये असी इस बैद्युक्त राज्यका चार उदानेमें भूग सब प्रकार समर्थ हो। क्कर् । तम, व्या, विका, निर्मा, इन्हियोका संबंध, ध्वान, इक्टरपरेका, संबोध और इक्टप्राय—वे सब करें हो व्यक्तनेको सिद्धि देनेकारचै है। श्रानिकोक्ते धर्म कहानि तुम व्यक्ते है है से भी मैं उन्हें सुनाता है--बड़ा, विद्याध्याल, त्रकुर्वोचर करतं करन, राजस्थांकी प्राप्तिसे कची संत्रह न केन, टब्द देना, कावण रक्तम, प्रमानत प्रस्तन करना, स्थास केरोबर इस्त-प्राप्त करना, तथ, सद्भावार, इत्योपार्थन और सुप्ताबक्ते कर देवा—इक्रिएके वे सब कर्म उसे इस्लेक और परन्येक केन्द्रिमि सफलक देनेकके हैं। इनमें भी दब्द परका बारय जाका एको जाका वर्ष है। इतके तिले कार्ने प्रार्थक बार द्वार व्यक्ति; वर्षोकि क्ष्यतिकार कार्के इस है है बारता है। एकर्। इतियोकों के इस्ते कार्कि इस तिहि जाहा हो सकती है। इसने कुछ है कि दावर्ष पुसूत्रके बारकारकों इस है कार तिहिट जाह बार को हो। इस विकारों पर जातिन इतिहास जाति है; हुए बार केंग्रर सुने।

'स्त्यू और निर्माण प्रान्ता के नाई से 1 में वई ही समझी से 1 संबूध नाईके गीरार समझे सारान-सारान सारान से, के मो ही राजनेन और समझे प्रार-पुन्तानिते गई क्यों से 1 इस मार निर्माण प्रमुख आस्त्रान्त आने 1 ईक्क्स जा समझ प्रमुख सारा गये हुए से 1 निर्माणने प्रान्ति अनुन्तित्तीनों प्रमुख प्रश्निते प्रमुख में 1 निर्माणने प्रमुख किये और से पड़े प्रान्ति विस्तार जाने राजे 1 इस्तेवीने प्रमुख पार्ट उस गये 1 प्रमुखि निर्माणने पारा गांते नेत्रावर प्राप्त, 'सेवा 1 हुनों से प्राप्त प्राप्ति निर्मा !' प्रारम्प निर्माणने असने पार्ट प्राप्ति प्रमुख प्रमुख प्रमुख सारों हैंग्से-ईस्से प्रमुख, 'से से की हुस प्राप्तनीकारे



मुक्ति ही तेते हैं।' इस्तर संजुने संख्, 'हुन्ये जुक्तो किन्त मुद्रे उसमें ही पास प्रोड़कर में पोरी परि है, इस्तिने हुन रामाने पास साओ और को अन्य एक पार्थ सुम्बार पाने कि 'राम्य ! किन्न हिने दूस्तीयों पीत संघर की प्रोड़क अपरास किना है, इस्तिने पह राम जन्यर साथ अपन्य सर्वेत्रस्य परिवर्ध और हुन्य है जुने पह स्वाद कैनिने के प्रोड़कों दिया पहला है। 'तम पहाँची असूत हिस्सर मारमधार विशेषा राज्य कुटुको पात गर्ने और उस्से चेलें, 'राज्य है की विशा आहा विशे अमरे को पाति पात पत वेले हैं, इसरियो अस्य सुते इन्ह केलिने हैं

'सुबुक्त पहा, 'विकास | भी, तार इस्त हेरेने समाधी प्रथम करते है से इस्त करनेका भी जायो अधिकार है है । तार: में आपने क्षम करता है। इसके क्षित मेरे केना कोई और केम हो से जाके किने मुझे अस्त परिचने। में को

'नेपू राजांद सहार आर्थाय कारोगर भी निर्मितारे एकांद्र मिनो ही आर्थ्य किया। आर्थ्य निर्मा और विद्यारे अस्तरावी कार अपूर्ण गोलाए जहीं गी। एक प्रमाने चौरीवार एका की हुए अन्तर कीनों हमा प्रमान निर्मा। इस अस्तर एका कारोग की कि 'मुझे एका आहा हो पत्रा है, अस असर पुहा कारोगर की कि 'मुझे एका आहा हो पत्रा है, अस असर पुहा कार्यार की कि 'मुझे एका आहा हो पत्रा है, अस असर पुहा

'समुने पाह, 'जैया | मैं हुनसर हुनेका नहीं है। हुन है। वर्णकों कार्यकारे हैं। हुन्से वर्णका करन्यून है परत का। वर्णका दुनों पाछ निरम है। तान हुन परित ही पाहूक पर्वके कर्मर पाछन निर्मित्स, देवका और विकरोबा हर्गन करें।

'बहुन्यो 🕮 पुनवर निरित्ताने बहुक्ये पुरीत पानी कर किया और किर के भी 🛊 स्त्रीन करनेको हैकर हुए कि रूपी पुजर्मोंने कार्य प्रयान है हुए प्रया है की : हरते को पह है जातुर्व हुन और क्यूंने अपने नाईको कर्मा में इस विकार । उन्ने कहा, 'नाई । तुम प्रकृत प करे । हैंने अपने करके अवस्था में इस्त करना कर हिने हैं ( इतका विकास पूर्व, मिलवा ! वहि उसको सरका है।। प्रभव है के अपने चलते ही नेरी सुद्धि करों नहीं कर है ?" क्या कोने, 'ब्या सीक है, करेंगू तुन्दे एका देनेका अधिकार पुत्रो न्हें है, जा से राजका है जान है। इससे राजकों भी सुद्धि हो है और निवारिक सहित हुए भी परिवा है भने हो।' इसी उपकर प्रवेकनोर्ड कु कुने के उस्त रिवेड उस्त को जी। प्रकारकेक पारत करत-नहीं क्रांग्लेक मुख्य वर्ष है। इस्तीको प्रकृत : अस्य प्रोच्य स्थापिते । अस्य पाई अर्थुक्यो द्वित्यक्षरिकी पात्रका काल क्षेत्रिके । श्रातिकाल प्रधान वर्तका में पांच करण भाग्य है है, कुंद्र पुरुष उत्तवा पांच नहीं है।

'का । कमें को समय हुन्दरे बीर-वीर सक्नोंने के नकेना किये के उन्हें जब सकत होने के। हुन ज्यूनहर नक्कीके समान कुनक्का करान करे। अपने शहर्वके साम

सर्व, अर्थ और ध्रम्भका भोग करो। पीडे जरजातसे बनमें बले जन्म । पहले अशिवियों, पितरों और देवताओंड शुक्कों करन हो खे. इसके बाद का सब करना। अभी के सर्वनेक और अनुमेच पहाँका अनुहान करो। वदि हुन अपने भारतीके स्तम बही-बही इहिल्क्जोबके यह करेने से तुने असुरिक पर प्राप्त केया। समन् ! मैं तुमने से बाद बहुता 🛊 अरुपर ध्यान हो। बैश्व करनेत्रो तुम्य अपने करंते जी गिरोने । देखो, जो एका करका कठा पान सेकर भी रहाओ रक्षा नहीं करता वह अधने प्रवादे करूबीय प्रशास पानी बनता है। यदि राज्य वर्गहासाम्बा क्रमहान करता है से प्रतिक है जन है और धर्म करना अनुसरन करना चना है थे निर्मय रहता है। यदि कार-क्रोवको होहकर का वितके सम्बन सारी प्रथमें जीन सम्बद्धी रखे को इस क्राच्छेक सुद्धिका आवाच रेलेके करे किसी प्रचार वाक्या संवर्ष जी क्रेम । क्षत्रओको अपने हेम और मृद्धिके कामो कामूने रक्षण करिये । पारियोंके साथ कथी येल की करक करिये स्था अपने राज्यमें पुरुषकर्मीका अनुदान कराना पार्दिके । शुर्जार, होत, सरकर्म करनेवाले सिक्षण, वेदलही, अक्रम और धनवानीकी विशेष रहा करनी पाहिले । को सहस्रा हो को वर्गक्रमोने निवृत्त करना वाहिने एक इक सनीको, बाहे वह कैसा ही गुजवान् हो, कामी विकास नहीं बतक माहिने। यो राजा प्रकारी रहा नहीं करत, किरकोर है, माने है, भारत पुरुषोका सावार नहीं करना और पुरुषे के केम्ब्री करता है, यह करते हो काम है और लोकने की

वृत्यं (कृर) च्या जात है। वर्ड बार प्रवा सोग सो स्वाची ओसी पुरक्षित न होनेके काल कन्यपृष्टि आदि हैवी कार्यावनेसे नष्ट हो जाते हैं तथा चोरोके उपस्थादिले हुन्स चारे हैं, इसमें एका हो केच्या भागी होता है। बिल् सूरे-पूरे किच्या और नैतिके साथ या इच्यार प्रया करनेयर भी चाँदे स्वाच्या न विले से उस अवस्थाने राजाको चोड़े च्या नहीं होता।

'राजन् । इस कियममें मैं तुन्हें इसकीयका प्रशंग सुनाता है । यह बद्धा प्रत्योर और परित्र कर्म करनेवाला का। उसने रंकान्ये अपने प्रयुक्तेको परास्त कर दिया या। परस् पीक्षे नि:सक्रम के मानेवर कहाओंने को इटकर गर हाता। स्क हर्मानीका निर्मा और प्रस्कृत प्रस्क करनेने बद्धा है कुसल का। प्राप्ते को नहीं कीर्षि की विश्ले की र अपने किया (पूर्वक् म्बानके अनुसार अपने संस्थात पासन वित्या, अईकारको चल नहीं आने दिया और अनेको बहोबर अनुहार दिया है इस जवार सन्दर्भ स्वेक्टेको अपने सुवक्को ब्याप्त करके का महत्त्व सर्वते सुक्त धेरा का है। उसने कारिके अन्वानसे केवी और एक्ट्रोरियों कार्यों सिर्देश प्राप्त की वी सवा वर्णनावाके अनुसार प्रमान्य कारण किया का र वह बहा निकार, सामी, अञ्चल और कृत्या था। इस लोको इसके अनेको कुन्यको विन्ते और दिए के लागमा का कुल्यानेकोको लाह किया को बहे-बहे बेधावी, विद्वार, व्यक्तीय और प्रकलादि सीर्वहत्वानीयें प्रतीत क्रीवनेपहत्वेची Republik i

## व्यासजीका युधिष्ठिरसे कालकी महिमा कहना तथा युधिष्ठिरका अर्जुनके प्रति पुनः अपना शोक प्रकट करना

वैशयास्त्रको कहते हैं—स्टबर् : कासकीकी कहत सुरकार राजा वृत्तिहितने कहा, 'सराकर् । इस एक्कीके राज्य और तस्त्र-तरको घोगोंसे केरे कराको कारकात नहीं है, युक्ते तो कह सोका कार्य का रहा है। जिनके पति और कुछ जा हो करे हैं, ऐसी इन अवटाअकेटा विराग्य सुरकार युक्ते वरिका की केर कार्य है।

क्या कृष्टिहित्के इस प्रकार कालेकर केइ-काशुस सीव्यसनीने कहा—'राजन्। यो लोग याने गर्थ हैं के से अस किसी भी कर्म ना कालिसे क्लिट नहीं सबसे और न कोई ऐसा पूरूप ही है जो उन्हें सरकार दे हैं। कृद्धि या साव्याध्यस्तिके प्रस्त अस्त्रमण ही किसी किसेल कालुको या तेन मनुष्यके बहायी बात नहीं है। क्षणी-क्षणी हो पूर्ण बहुवनकों भी काम बहुवती प्रश्नि हो जाती है। बातायने बहायमी तिर्द्धिने कामद्वीयती प्रधानता है। क्षिण, यहां और ओपिक्षणी भी हुर्पाणकों समयं काम नहीं देती। समयकों अनुकृतका होनेपर तथ सीम्बायका काम होता है हो से ही सम्बद्धिक और बृद्धिकी निर्मल बन नहीं है। समय आनेपर ही क्षण काम बहुवनी निर्मल बन नहीं है। समय आनेपर ही क्षण काम बस्तकों है, बिना समयकों दुव्होंने क्षण-पूरण पी वहीं तमने क्षण कामक अनुकृत्य समय नहीं अस्त तबक्षक पाने, सर्व, मृत हानी और हरियोगों कामोच्याद नहीं जाता, बिच्चों वर्ण कामम नहीं कामही; नहां, गार्च और नवां अनुहै नहीं आहीं। विस्तीनका नाम वा परण नहीं होता, कामक राज्य । इस विकास राज्य होन्सीनहीं को पुत्र बहा का का अभीन करोड़ में सुने कुनाव है।

'रागमे कहा स—'या पुरस् काल्या समी महुनीतर अवना अनाव जाता है। पुनीके बाबे पहले समय समेनर चीर्च होचर का हो को है। कर, की, कु अवन निर्मान या है करेन पुरु 'हुन ! केस हुन है' हेल सेक्स है जिन का दुवानी निवृत्तिक करन करन है। लिंह इस पूर्ण जनकर क्षेत्र क्यों करते हो ? यो क्षेत्रका है ने उसे दिने क्षेत्र का बन्त । हको दुक मार्गाचे के कुशोब्द और यह व्यवके व्यवेद वृद्धि है क्षेत्री । म सी बाब फरीर मेरा है और न सार्थ कुम्मी क्रे बेरी है । पार केली नेती है केले के उर्जंद प्रकारण को है। ऐसी ब्रोह प्रकारण बीच बची बेहने की पैतात । क्षेत्रके इससे प्रकार है और gift if finit some fit fin mar bur burbe क्रोंपर के कार है, विकास को संसार के केवा हुन है है, तुक से है है नहीं; इस्तरिने स्टेनोको हुन्तवी हैं जनमेर हेरी है। यह सुसरे की दूध और दूसके पीके तुका समा ही पांता है। जुकारा अना में कुकारे ही होता है। क्रमी-क्रमी द्रावले भी स्टब्सी जारे से नार्थ है। इस्तरिने रिते रिल-युक्तवी इक्त के व्या युक-दु-क हैनोहीको जात है। हुए या दुःए अवका देश पा जातिन के इक अरु हे को इक्नों अन्तव्य न स्वयन प्रकारको सहन मेरे । मार्च । अपने ची और फुलेके प्रीत अनुसूक्त अवसरको मेड़ी-सी भी बनी का है, फिर हुई करून है करक कि माँग किस हेतुने विकास विका प्रधार संस्थाधे है।

कृषिक्षित । यह स्था-द्राव्यों कांग्रे वारोवाले बारकार्येक प्रक्रमाति सेन्नियहका स्वयंत्र है। सिक्ट पुरस्कों को कुल सता का है जाने बानी प्रान्ति निरानेकारी नहीं है। कुर्विका अन्य कभी नहीं अला। एकके नेक्षे कुरू कुन्य के होता है। देशन है। सुरू-दु:सा, क्याँच-त्रवा, स्वय-कार्ट और पॉक्क-मरम— में क्रमक: आने की पाते हैं। अत: बीर कुरवेदी इन्हें कारन हो स शेक की काल करिये। एकाओंका क्षेत्र में बुद्धारी केंद्रा रेटर, बुद्ध करना, दम्बर्गितिका होवा-होवा व्यवहार करना तथा वहले व्यवस्थ कौर बन राज रेज हो है। इन्होंने उनको स्वीत होनी है। से राज्य कुरियानीसे न्यानपूर्वक कन्यकारन करण है. अईकार

मेलना सारण नहीं करता, पर्यक्तर चैका नहीं साथ और | सामका पहासूक्तन करता है, इस प्रकाशियों करिए अनुसार कोचा हुआ बोच अंकृतिक नहीं होता। इसी प्रचल कृतिक त्यार । जानका है, जुड़ाने विकास चावल रहानी रहा करता है, और नंदी, पंजनके पृद्धि और इस क्या समुद्धि केवकन करते हुए प्रकार करना के हुई पुरुष् कार-व्याप भी किया अनुकार कार्य कार्य को की होते। इन्हरियान कार्य है, केर-कार्याका अन्ती क्या अव्याप कार है और करें कार्रेस अपने अपने की रीका राजा है, यह प्राथमिक होन्स अपनी प्रार्थ-पुरूष सीमात है क्य वर्गाम हे प्यतेनर भी विश्वके सामानाची पुरवारी, वेहमानी और क्यों-स्तेन प्रसंख करते हैं, उसी स्वासी केह क्षाक्षा करिये हैं

व्यानावीके इस अवसर व्यानेकर राज्य सुविधीरने अर्थुनके का—'र्नेट ! पूर के क्याने हे कि बनने काल कोई कह नहीं है कहा निर्माणने प्रत्येष्ट्रण और अर्थकी भी जाहि न्त्री है क्याने—व्य क्षेत्र न्त्री है । अनेवने पुरिताने सरकाने (में कुछा है सरकार स्थेनोंको सह नेतन है। के वर्धकर पूरा अपूर्ण-स्थाने कृता वेक्स्प्यून अध्येके क्रमान-रामारको पात सको पुत्रो है, हेराना उन्हें है 'क्यून' कर्क है। के सेन क्रान्सकीय, क्रानीय क ज्योंक है अधीर्य का स्त्रीर सम्बद्ध । साराम्योधे स्वर्धने से हों का का कहा हो है कि उनके तर कर के प्राचीकोचे ही हाथने रहे । अस, पृति, मैनसर, असर और केंद्र करने व्यक्तिकारी से सामानके हता है करों ताह पर रिक्य का ( कर, अव्यवस, क्यू और निक्यु--- में सबी कर्न महार स्थापन है। इस वेदोन्हा सम्बोधन क्षात्रक रोगार स्थाप इक्रिक्टक्कानी सर्वाचेकी करे हैं सिंह को विकास सनुसार कारणनंतर कुछ रकता है, को चौरियोच्छे जात होनेकारे सम्बन्ध सोमानिकी कारतीय होती है। प्राचीन व्यानके विद्वान क्रा क्षेत्रीनेते प्रतत्ववर्तको हो प्रताहत करते हैं। क्रांकर्ण संबोध ही समारे कहा कर्ण है, संबोध ही समारे कहा कुम है। पंजेको कामर कोई कीम नहीं है। मिल कुमोबे प्रदेश और इनेको अच्छी क्या कहने का रिल्स है, उन्हरिको का जन रेकी, जन होती है। इस जर्मनने एका क्यारिकी नकी को नद नामा प्रसिद्ध है, जिसमा नाम हेमी पूजा, बाहुमा मेर्च जनने महोत्रों मित्योद तेला है जरी प्रचार जनमें का पासनाओं से संदेश के हैं

'क्या क्यारिने कहा या—'का यह पुरुष विज्ञीसे नहीं काल और इसमें की विज्ञानके क्या नहीं कुल करत हारे किसी नक्षये हमा या विज्ञाने हेर भी वह बात, अर समय पह कार्य का है का है। का क करें, यर और बजीते क्ष्मी बीवॉके की पूर्वजनसम्बद्धा एका कर हैता है से इसे अक्रमी असि के मारी है। मिसके बार और मेड एव

गये हैं और विसने बहुत पुरुषेका तक कारण कोड़ विश्व है. इस कारका पहलाके रिजे मोज पुरुष हो जाता है।'

'अर्जून | मैं के साथ देखात है कि जो स्कूल करके रहेंदे यह हुआ है उसके हुख जान्य कर्मका कुरत जा है करिन है। स्वकुष की उसके मिने कुर्वन है है। पोन्द और धनमें पीट्टा हैनेकर की से कुछ स्वकुकारों किया हुआ है, उसे धनमें पोट्टा-से तृष्ट्या भी है से यह सुराति ऐसा कर साथ तेना है कि हरे पान्यों भी कीई काम नहीं हैगी। पान्यों से पहले दिने ही अर पान्य किया है और सावधी दक्षके किये है जुनकार रचन की है। इसकेने कर साथ अन्य क्षेत्र है। इसके से लेका पान्यों । उसे पोन्ने स्वकुष अपना क्षेत्र है। इसके से लेका पान्यों है। क्षा कर कोई कियों स्वक्ष पान्य वाहित । यो कर किये को कुछ हुक कामी है। उसका काम एका काहित । एक से कुछाने यह कम कींव काम कीं इसरे सुपान्यों में कियार।

'तार्त्त | एक कुट्ने असमा आध्यान्तु, सैन्स्केट पुत्र, बुद्रसूत्र, सामा विरात, हुन्द, कुन्तेत, कुन्नेत्तु साम विरात-विरात देशोची अनेतार्ते कुन्तित्तम सामा उस पाने हैं। इस

को क्युप्रकारी का मैं है है। हम ! मैं यह है राज्यतीत्त्व और श्वर है। की अपने कुटुनका भी क्लेक्ट कर करा। हारिते पेट क्रोक करा भी दूर नहीं होता है, मैं आरम्ब अहर हे का है। मैं केस मूर्व और नुकोड़ी है ? परत, पह रामा विकार कि विकारियांक के इस्तीय स्वेचने पहचर की अपने क्या चीनाचीको पी गरम करन । जरे । उन्होंने के धूने क्ल-बेहबार बबेरे यह किया था। पुरूष होन्यकर्गको वेरी सामवर्गकाचे विकास था, उसीसे प्रचीने पुरानी अपने पुत्रके नगढे नियमने पूछा था। जिल्ल मेरे प्रामीकी आह रेक्टर हाड केल डिमा। ऐसा पार्ट पान करके नान, मेरी किया रहेको स्था होतो ? प्राप ! प्राप्ते स्था और स्थीत करी केम ? मेरे के अपने यहे नहीं कर्मकों भी मनय क्रांत । क्रिक् राज्योद को भारे की भी नामक अधिकानुको क्षीरकोची सेवली प्रकेष क्षित्र। क्याने के सुद्धारी और नेवी अभि हो नहीं उठती । बेकारी दर्शकारी होपकेंद्र पांची पूर गरे न्हें। प्रत्या प्रोचा की पुत्रे करावर संस्था पूर्ता है। जार से हुन पूर्व प्राचेननेवृत्वे प्रेरंने ही बैठा हुन्छ सन्तुने । मै पहीं केरे-केरे अच्छा प्राधेर सूच्या प्राप्तिता। इस पहालका। ही में अवने क्रमोको यह का हैया। अबर प्रमा सोग मुझे प्रश professie fieb aus effet :

\_\_\_

## श्रीव्यासजीका राजा युधिष्ठिरको अक्ष्मा युनिका कहा हुआ धर्योपदेश सुनाना

वैहान्यकार्थं वहते हैं—कालेकार । वायुक्त कोह पूर एकं युक्तिहरको अपने हार्लाककोड होकारे अंका होकर अस्त मालकेड सिक्ते केवर देख डॉक्साइको अपना योग हुर करनेके रिक्ते कोले—वृतिहिर । इस विकर्ण सरका प्रदारणा जाए हुना एक अपने इतिहास है। इसकर जान हो। एक वार विदेशका करवाने हुना और होकांड नवीचुत होकर जातकी विद्यार सरकारे पूर्ण या कि 'अपना करवान प्राह्मेकारे पुरावते केतर कार्यन सरम प्राह्में ?'

माना अनुमाने कहा—'राजार् । यह कुमा जैसे जगा रिता है अनके साथ ही कुमा और पूना अनके मीने तम करते हैं। में इसके सामको करते कार्य का को है, जैसे कार्य मानानेको किल-पिता कर देवा है। इसके पहुंचको प्रकृतको कार्य 'में कुसीन है, निवा है, कोई सामाना अनुमा की हैं ये सीन करते युस कैस्ती हैं। इसके कोने माना का कार्य मान-कारोने आहा हो कुमोने सहसार का कार्य

अंत किर कुलोके जनसर कर से जाता है। जो सर्वाक्षण कोई क्रमार की सुन्न । यह अनुन्ना क्रमारेंसे कर पुराने रूपको है। यह देशकर क्रमारोंन को क्षम की है। इस्तियों कुलको अनर सुन्न का कुन्न की कुक्त भा पहे को पहना है व्यक्ति, क्षमोंक को कु करनेका कोई क्रमा भी को पहि है। अधिकोंका संख्येत, अनियोंका क्षमोंन, पूर, अपिष्ट और कुक्त-पु-क-- इनकी आहि आकारमुस्तर है होती है। इसी अधार जन्म-काल और पुनि-स्थान की वैवार्गन है है। विक्रांकों भी नेनी होने देशा जाता है, क्रमान पी कनी-कार्य विक्रांकों भी नेनी होने देशा जाता है, क्रमान पी कनी-कार्य विक्रांकों को कार्य-कार कार है अनुन है। अके कुल्मे कार, पुन्नकों, अलोन्य, कार, हि को क्षमा और देशों कार्य है, क्ष्में के कार्य है। को क्षमा है और कार्य है। की ही, क्षमा को कार्य-कार्य पुरु है आते हैं और की स्थान है, क्ष्में क्ष्में की करिय नहीं होता; विक्रांकार करने कही ही विक्रित है। केन, असि, जार, उसा, पुरुश-कार, आपित, निय, करने

मृत्यु और देवी निर्वासने गिरमा—के राज खेनके कनके | अधार कृतुको से भी कर नहीं कर करे। वो स्तावनीके समय है निक्षित है जाते हैं। जाते निकाले सनुसार हते हन विवतिकोपे कारा पक्रत है। आकार न से कोई इससे हर सम्बर्ध है और न अस हुए क्षांका है। इस प्रकार कारकेंद्र प्रभावने क्य बीजोवा हुए और अन्ति क्यूबॉर्फ स्वय सम्बन्ध होता है। सन्, अल्बाक, अति, कन्द्रव, वर्ग, विन, राव, नक्षण, नहीं और पर्यतीको भी बातको सिच्य और चीन मंत्रात और रीवर रक्ता है ? कहें, नवीं और कांध्र का 📽 करवांचे केमी करना है। यह वह महत्वंदे सुरा-शुक्तके विकासें की है। सकत् । तक कर्मकर पृत्रु क मुद्दानरकारी कहाई होती है से ओचीन, करा, होत और क्र कोई भी को कक नहीं सकते । किस प्रकार समूत्वें के स्वाद मानी निराप्ते और पानी निराद बावे हैं, इसी उपल नहीं मीर्थानम् प्रभावम् होया है। इस संस्तरने इन्हरे काल-विक और रीवाई की, यूर हे मुके हैं। यह सेची से साहाती में निवाके हुए और इन जन्मेची विश्वना को 7 पर चीवका न से काफी कोई सम्बन्धी पुत्रा है। और न होन्छ ही। रासोपे काली हुए क्योंक्रिनोके स्तर्भन ही हजार की, कन्न और सुक्रूपणाने समापन के प्रकार है। असः विकेशी प्रकारको अपने नवने प्रतिया विचार करना चारीने कि-मी चार्ड है ? कर्म मार्गमा ? चर्चन है? चर्च निव्य व्यास्माने अन्य है और मिया रिपो विकास क्षेत्र करी ? यह लेकर करिया है और कामे जनन कुमा कुछ है। इसी का-ba, भाई और मिलेका समापन शकीने निले हुए क्लेकिकेंद्र स्थान भी है।

मान्यानकामे पुरुष्यो स्थीने मि सम्बद्धान्त सरमान न करके उसमें बच्छ रहे, विसरीका बाद और हेम्साओंका पुरान करे, महोका अनुक्रम करे एका वर्ग, अर्थ और व्यवस्था सेवन करे। प्रथ । यह सारा संस्थर अन्यक मार्गनरामुहरे जुला हुआ है। जाने अरा-पृत्यु-बैरो विकास पह भी दूर हैं, मिन्नु इसे कुछ होता है नहीं है। बैंक्स्पेन भी बहे में को नकते कहे और तक नकते का पैने को हैं से औ संसुद्ध मेरे अपने सटका अरुक्त नहीं मनत, उसी करनेकारे के एक-एको एसपनिक प्रकेश रोजन कतो रहते हैं, किय उनों भी क्लपेसे जर्बर होते देशा ही जाता है। इसी प्रकार कासी, स्वाच्यान-बॉस्ट, क्रनी और बड़े-बड़े का करनेकरे थी वरु और मृत्युको यह नहीं कर सकते। क्य केनेवाले सभी जीवोके हिर-एत, पास-वर्ष और एक एक कर बीवकर किर कभी नहीं औरते। पुरस्का का श्रीका रांच्या संभी बीच्येच्ये राज करना प्रसार है। शरा: ऐसा मोर्स ची करकार्य करूम नहीं है, जिसे कार के बार्व पूर्व होनार इन्नेने निकारण न परे । इस वार्गने को आदिके प्राप्त के सम्बन्ध होता है, यह रहानेशेष्ट समय प्रकृति हमीबर है इन्हेंने विश्ववेद की साथ क्यूक्का नित्व प्रक्रवास नहीं है। सम्बद्ध । यह अपने प्रतिमंद्र साथ है इसका बहुत दिनोत्रक समान जी साम से इसने सम्बन्धिकोंके साम तो स्तु ही कैसे सब्दान है ? राजन् । आम तुन्हते बाय-सहे बाद्धी गये ? अस न की कुछ ही उन्हें देखते ही और न के ही लुन्हें देखते हैं। कार्र और प्राथमके के महत्व हम देवीओ देश नहीं हम्हत्व । उने देशानिक रित्रों को सरपूर्वन प्रात्मानवी नेपांसे की प्राप्त रोते हैं। ताः पुत्र प्रत्यके सनुसार ही सामान्य वारे ।

क्षानको पाने सहकारिक पान पान पानि । अंग्डे क्या का पुरस्कान जीवार बार्क रिश्त और homebit med gut fried fiet eineitener allt कन्यान को। हो। द्वानको प्रकारो अन्ते अल्ला होता स्थानका क्षात्रेक, क्षात्रेकेक समाव परमानाकी काराज्य करनी कहिने। से रास क्रमानुसर कर्यका कारण और हाम-संबद्ध करता है कारण समूर्य प्रश्नात लोको सुरक देश करा है।

कारची कारो है—क्विक्टिर । असमा सुनिसे इस प्रकार कांका कुछ जनका कुछ जनकारी बुद्धि कुछ हो गरी, अस्या सब क्लेश्व कुछ हो गया और यह सोमाहीन हो पुनिसे जाता रेक्टर अपने कानमाते साम गया । इसी अध्यर सूध पी क्रीय सम्बद्धा करे है करते। यक्को असर करो और क्रमानके समुक्तर जीते हुए इस पुत्रवेशे सम्बद्धी भोगी।

# श्रीकृष्णका नारदजीद्वारा सुझयके प्रति कहे हुए अनेको राजाओंके दुष्टान्त सुनाकर राजा युधिष्ठिरको समझाना

सुनकर एक वृत्तिहरने कुछ भी नहीं बद्धा । उन्हें पूर्व देशका सर्वस्ते बीकुल्लो कहा, 'पायब । वर्णस्य विश्वित

ं कैंक्स्परार्थं केले....करार् । काराधीका का करोड़ा | कन्द्रलेके कोचले अलग्द पीदिल है, वे जोकसापारी हुने जा के हैं। अपन करें सकत वैकालने 1'

अर्थुनके इस प्रकार कहनेपर कथलनक बीकुका राजा

मुनिद्विरके यहां जावर मैठ गये। वर्गवन स्रीकृत्यकी वात सहस्र गढ़ी राज्यों के; क्लॉक्ट कारमारे ही स्रीकृत्यके प्रति



क्रमाति अर्थुंग्ये भी सम्मान प्रीति भी । गंग वीरण्यान्त्रां क्रमात प्रथा प्रमानकार गर्थे अपने मान्योंने मान्य मान्यों पूर् सद्धः—'शंश्मा | अस्य आय प्रतेष मान्योंने मान्य मान्यों पूर्व सदि।—'शंश्मा | अस्य आय प्रतेष मान्यांने मान्यों के गर्थे हैं, क्रमात निर्माण की अस्य प्रथा के गर्थे । विका मान्या बार्योंक्त आपने प्रात्म में मान्यों मान्या कर्यों के गर्थे हैं, अस्य प्रयाद प्रधा मान्यों के मान्यों परिचा कर्ये को मान्या कर्यों हैं। अस्य प्रयोद परिचें प्रथा मान्या के गर्थे हैं। अस्य प्रयोद परिचें प्रयोद मान्या के गर्थे । क्रमात्म क्रमात्म मान्या मान्या क्रमात्म मान्या क्रमात्म क्रमात्

एक कर उसा एक्सम पुराकोकार्ने को हुए थे। उस समय असी औनसानीने कक्स— एक्सम । सुरा-पुराको को है, हुए और साठे उसानेसे कोई भी कुछ पुराक नहीं है; इसरियो इसके मिले क्सम डोक्स किया काम। तुम अपने इतेकारे उसने को और मैं को बात कामा है उसका काम हो। का आबीद उसकारिका क्यम करेगर आने है। इसे सुरोसे हुए कोबार उसना होना है और आनुरादे गृहिह

de fei

प्रमान क्षेत्र के हैं कि एक सुक्रेंत मर गया।
यह यह है अधिनोधी था। इसी एक सम्बद्ध करेंद्र इसमें इसमेंद्री वर्ष की थी। असी प्रम्मानमें दुर्भावत व्यान दुर्मा है जाता था। इसी उसी बहुद, कैस्ट्रों, को, जार और विद्यानोधी थी सेनेवा का दिया था। उस दुर्मा के यह को सुम्मेद्री पुरम्मान देवते इस्ट्रान करूव और एक भरी प्रमान असीवा कार्य को व्यान्ति हुन्मा अस्ति के या और हुन्मा प्रमान सेनेव सर्मानी है विद्या प्रमान ! यह नहीं, वर्ष, वर्षा, वर्षा, सर्मानी हुन्मा अस्ति के या और हुन्मा प्रमान की गया।

'कृत्य । ज्ञानको पुत्र दिनिके प्रक्रिको साथ की इंग्से पूर्व है है। ज्ञानको प्रकृति को सम्बद्ध कर देवलको ज्ञाद सकर दिली पूर्ण पुत्र का कर्नी एकाको जाँ अन्त्रको थे। पुत्रका पुत्र को व वहिल्य देवलका का और व व्या करवेलाव। पुत्रकी क्या दुवले पुत्रको अन्त्रका को का अर्थ, वर्ग, व्यान और केश वादो जानेने वक्-अक्सर था। विश्व का की का हो क्या; प्रतानके हुव अर्थ पुत्रके निके कोच न करे।

्याचारे कुर पासने इसार अवलेश और से रासहस का मिले थे। यह को इसारे और एको कुलो अवलेंद्र पार्ट पार्टिने कुल-का का। सिंह का की बारको कालों काल ही गया: इसलेंको द्वार अपने स्थानेको सिनो कोक का करे।

'कृत्य | पूज पात है कि सुरक्षण्यम सम प्रमाणे अपनी संस्कृतंत समान पालं थे | उसके राज्यों सोई भी वी किया पा प्रमाण भी थी, नेव सम्बन्धर वर्ण करते थे, सम्बन्धर तम प्रमाण थी और शर्मक सुन्धान पहला था । इस सम्बन्ध कोई सीम पानंते सुन्धान नहीं सन्दा था, किर्माणो प्रमाण पात वालं पहलां प्रमाण करते सेन्या भी, कोई पात नहीं पार की और पुज्योंकी सम्बन्धी वर्णकी आयु होती थी, विकास से विकास वर्णने समार दानों थी और सम सोन्य संदूष्ट, पूर्णकान, विकास स्वीते समार दानों थी और सम सोन्य एवं स्वावकों से १ व्याचन स्वीते साम विकास, पूछ सर्वक पात-पुज्योंने सदे थी और नीई सेन्यी प्रस्थार पूछ होती सी । उन्होंने व्याचन द्वित्याकोंकाले एक अनुसंध पात विकास होते थी । महामातृ राम निरम्मार्थनगढान्तरे, एकावार्यः, स्वानान्तर्यः, आस्त्रनुत्रम्, सुन्दर मुक्ताको और सिंग्नेड समान कंग्नेकारे वे। अमेने न्याद्य हमार मच्चेत्रक अन्येत्रकात सन्त्र विका मा । जम ने थी परस्थेक विकारणने के हुन्तरे मुख्यी से नाह ही नाम है ? हुन अन्तरे सिन्ते कोक न नाते।

इस सुनते हैं, राजा घर्मरण भी जा छा। जाने घरानुद्वान करते समय सुनर्गके आपूर्णनेने सकी हाँ इस राजक बन्दाएँ विद्यानों दान घर ही थीं। उन्होंने उन्हेंक बाजा राजों मैटी हुई थीं, उन्हेंक राजों पार-बार खेड़े से और उन्हेंक पीछे सुनर्ग तथा धानरावी चानस्त्रोंके निवृत्तित सी-मी हाथी थें, एक-एक इन्होंने पीछे इस्तर-इस्तर चीड़े और उन्हेंक पीछे साथ एक-एक दोकों पीछे इस्तर-इस्तर चीड़े और उन्हेंक पीछे साथ एक-एक इस्तर के और अक्तरियों थीं। सीनों सोकोंने उन्होंकि होनेकारी महाकी उन्होंने पूर्व होनार समय ही थीं। इसीने ने चार्नारथी चानसभी। किन्नु हैसों, ये पी घर ही गये : इसिन्नों अपने पुत्रके दिन्ने हुए होना नव वारों।

'स्कृत । सूना जाता है, प्रजा विल्लेग की जीवन नहीं रहे। उनके पहला कर्मिका से हाइक्लानेन अवस्था कर्मान करते हैं। उन्होंने जम बहान्यूहन किया का के इच्छी नेवनाओंने प्रचान होकर करने कल नियम था। उनके पहला जीव पूर्व की सोनेकों से तथा उनके पहलेखाने के इक्टर नेवना और भन्नवीन सानों सर्वोक्ष अनुसार कृत किया था। किन स्वेन्नेने उन सरकारती पहला विल्लेखान दहीन किया था। के मी सर्वोक्ष अभिकारी हो गंगे थे। उनके प्रचानकोंने केदलानि, अनुसारी प्रसादानारी देवार और प्रचानकोंने केदलानि, अनुसारी प्रसादानारी देवार और प्रमादानेका कोरकारम् ने नीन प्रचा कथी वंद नहीं होने थे। कियु मृत्यूने उन्हें की नहीं होन्हा, इस्तिको हुन अपने पूजके दिन्ने कोक भी वार्षे ।

'पुण्यासके पुण राजा मान्याता की वर ही सवे। उनके रैसाने पूलसे काका अधिकविका कर पी निका जा। इससे क्योंने निकाके कासी ही जान दिला। ने को ही वैकारकारी और तिलोककिननी थे। उनका क्या स्थानकार केवानकोठे समान जा। उन्हें क्या कुरक्तकारी कोएमें सेट देखकार केवानमोने अस्माने कर्या होने सनी कि वह कामक कितकार कानकान करेगा? तक इन्होंने क्या 'में काव' (मेट कूम विभा)। ऐसा काकार उन्होंने उसका नाम 'मान्याता' रास विभा। इसी समय इन्होंक हामसे दूककी काम निकानने अली और उसे उन्होंने उस वास्तकको कुमने होन्छ। उसे पीनेसे वह एक ही दिनमें की यह कह गया और कास दिनमें ही काम। वर्षक सा कार कार समा। यह बारक सहा है वर्षाक, बुरबीर और बुद्धमें इसके समान काळारी हुआ।) इसने राजा अहार, परण, पण, अह और बुद्धकारों भी परास कर दिक था। सुर्विक अवस्थानों सेकर असा हैनेके इसनाव्य सार रेख काम काळायों है अधिकारमें था। उन्होंने सौ अहारेश और सौ राजपुत यह बिस्ने में राजा दस कोजन संसे और कुक कोजन सेने सोनेके प्रका वननावार साहानोंको दान किने थे। विज्यु असा का परायाकारी काळाताका भी कहीं दान वितास नहीं है। किन हुए अपने कुनके सिन्ने क्यों होना करते हो।?

'कृतन ! जानाने पुर राजा अव्यक्ति अस नहीं रहे है—जा कर की मुखे है जाती है। उन्होंने बड़ा करी बड़ा करने उन्होंनेसा देश सावार निया सा कि से उनकी कराइन करने हुए की काले से कि 'देश बड़ा न से पहले किसोने किया है और न शरिकाने हैं कोई करेगा।' उन्हों कराने किया कर से के क्षेत्रकार्य किया था, से उन्हों उन्होंने काला कर के लेके किया कराने उन्हें भी मूर्ट हैराकार के के दूर सावार कराने हमें भी मूर्ट क्षेत्रकार के की दूर सावार काल के ।

'कनर ? इस मुनो है कि विकासका पुत्र संतानित्यु सी नर नक। अने एक स्वास समियों थीं। उसने उसने इस रकता पुत्र अपना पूर् थे। उसनेक कन्युम्पारको सी-सी कन्याई विवासी थीं। उसनेक कन्युम्पारको सी-सी क्रमी थे और एक-एक इस्मीने साम सी-सी रख से। एक-एक रकते पीछे सी-सी थोड़े से और एक-एक बोड़ेने पीछे सी-सी थीई थीं। इसी अन्यों एक-एक पीड़ेन पीछे सी-सी वेड़ें कोचने निसर्व भीं। किया व्यापान प्रसानित्यों एक नक्यों का क्रमी की किया व्यापान प्रसानित्यों एक नक्यों का क्रमी असे, कर्म, क्रम, मोझ आरों वासोनी क्रम-क्रम का। क्रम भी प्रमुखे सुकारे साम ही गक; इस्मिन्ये दूस का पुत्रकोक स्वाप से।

'स्क्रण ! अनुसंस्थाके युव नवसी मृत्युके विश्वसमें भी इन सून्यों है है। एक जार बहारें अधिकेंग अन्तरें अस्तरें इन् और उनने कर जीन्नेंग्री कहा। एक नवने कहा हैंड अधिकेंग ! अध्यादी कृत्याने मेरे पास सहस्य कर हो, वर्गरें नेरी कहा यो और सत्याने पास्त्रा अनुस्था हो।' इस जन्में कृत्या वर्गरेंग्य अन्तरें स्था मनोरम पूर्ण हो गये। उन्होंने कृत्या वर्गरेंग्य पूर्णिया, अध्यायसा और बातुर्धासमें क्ष्मेंने कृत्या वर्गरेंग्य बहोस्स अनुस्था किया और इसार वर्गरेंग्य ही नित्यारि कार:कहर स्थान स्था-एक स्थान गीर्ट् और स्था-मी एकर प्रकारोंग्ये हान किये। सिन्यु अन्तरें कराने ज्ये भी नहीं होता, इस्तरिये तुम जपने पुरुषा क्रोक । पुरुषे साथ मेरा समायम हो साथ। लाग चे ।

'राबन् ! इश्लाकुके बंधमें करता हुए राजा रूपा आप संसामें की है—या इन कुछे हैं हैं। इनके तार इसल पुत्र में, को उनके पीछे-पीछे परको में। अपने कहूनरको क्योंने इस पृथ्वीपर क्याचन राज्य स्वाधित विका का और इकर अक्रमेग का करके देवलओको तुत्र विकास । अ कोमें उन्होंने अक्रमीको सेनेक पहल कर विने है। कांगे समुहर्गन सारी पृथ्वी सुनुषा कावे वी कवा असे मानके अनुसार ही सनुसार 'साना' नाम पढ़ है। वर्ष् अन्तर्मे में भी पर ही गये; इस्तीओं हुए अपने पुल्के हैं।ये श्रोधा न करो।

'स्क्रम ! वेनके पुत्र क्या पृष्टुका हे। भी आप नहीं है। महर्षियोने महत् करके बीचने कृतका राज्यां क्लेक किया मा और यह सोकवर कि वे एवं होन्होंने वर्तनी पत्नीक प्रक्रित (स्थापित) करेंगे, रूपका कल 'पृष्' रका का। रूपे देशका सभी प्रयत्ने एक जाते यह वा कि इन इस्ते उत्तर 🕯 । इस प्रचार प्रकार पहल बारनेके बारण ही में 'ठमा' बाहरूने । जिल जनव ने राज्य करते थे, पृथ्वी किया ओरे में सम्ब अस्त करते ही, ओपनियोक्ट पुर-पुटने स्त 👊 और श्रंभी भीएँ होत्री घरका कुत केरी भी। प्रमुख जीवेप, पूर्वकाम और निर्मन है। ये इक्कानुसार होती चा करोगे क्ही है। जिस रूपन राज संयुक्ति पता करे थे, कावा कर निकर के जाता था और जीनों ब्यूना केंद्र कर देती भी । इन्होंने एक अपनेत महत्त्वा करके कार्य प्रशासीको सोनेके ह्यांस पर्यंत द्वार किये थे। विज् अन्तर्ने वर्षे भी कालका साल बरन पहा, इसलिये हुन अपने चुनका फ्रोक क्रोड़ से ।' इस अकार अन्देश देकर राखनीने पूज 'रामन् । हम पुरसान बना सेच ये हे ! क्या मेरी बतोपर हुम्मे कुछ थी व्यन नहीं दिया ? की को कुछ कहा है का कर्य है जो है।"

शुक्रको बहा—महर्षे १ जायका उन्हेल बार्च नहीं हुआ है। आनका दर्शन करके मेरा प्राप्त क्षेत्र हा हे पता है। आपकी बातें सुननेकी पेरी लकता आची क्रान्त व्हीं 🥫 🐍 अपूतपानके समान उसके दिन्ने मेरी सकाना। वर्षे ही 🥳 है। फिन भी मेरी ऐसी प्रथम है कि एक बार अध्यक्ती कुछारे | बार लोने ("

कराची केले—राकर् ! महर्षि कांतने तुचे सुवर्गाहीकी जनका कुत्र विक वा ! व्या से अब नह से कुता। इसके ज्ञानकर में तुने इकार कर्वतक जीवित क्रनेवारव हिरम्बनाम जनक दूसर कु केत है।

**ांकुम्मको यह या**त समाप्त होनेका नास्त्र्याने भी उन्हें कारणा अनुवेदा किया और राज पुरिश्चित्रको सुवर्णक्रेकेका साथ परित्र सुराजार कहा कि 'राजन् । यह हक्षण अपने पृत्रकृतको जीवत कानेके रिन्ने बहुत आवह बिल्य से पी को सबीव कर दिया। इससे सरके जात-विकास स्क्री जातात हो। सारकताओं विवास सर्गवाह होनेकर हमलेहीनोने न्यास हो क्लेडब प्रशीपर राज्य विका । इसके कह कह सर्ग रिकास । वर्गराव । अस हम के अपने प्राप्ता संभव के का है और श्रीकृत्य को



व्यानानोके कथामनुस्तर अपने पैतृष्य क्यसिंहसन्तर बैठकर इस्तमका कर रीधाले । यह सब करते हुए वरि तुम कहे-कहे क्षांका अनुक्रम करेने से अपने अपीत् होक प्रश्न

## श्रीव्यासपीका राजा युधिष्ठिरको राजधर्मका उपदेश देना

रीतपानरची कार्च हिन्दामा । पानामीकी आहे | मुक्कर राज्य वृतिहिर कुर है औ । का समय को क्रेक्सक देशकर एक प्रकारके अनेका श्वास वायनेवाले नहीं नवाले का, 'ब्रिकेट | राजभोध्य को से उसभोध्य कार करना ही है। इस्तरियों तुम अवन्य वैतृष्ट राजरिक्कार जीवार करो । केदोने राजको सो प्रावहणोग्या हो जिला वर्ण प्रवास है । क्षतिय से सम प्रचारके वर्षकी एक बरनेकाल ही है। को मनुष विश्वासक क्षेत्रर अमेरिकिक अस्तुन करता है, बार लोकारपांद्रका विकास है, इतिकारे अपने स्कूताओ कार्य कार कारा पाति। से माति मेक्स पाय-प्रमाणको र गाने का अनव सेवक है, कुर है, उराबे है क्ष्मक मोर्ट की क्यों न हो, का क्योंका कर प्रकट कर करें और को यह बार है। को राजा इसके किसीय काफाल फरता है, उसे पाप सन्तात है। भी राजा नह होने इस अनेकी रक्ष भूगी करता, यह बर्गका चना करनेताला है। कुनो के acturbeiteller an unt-enfreiter d um fein f. इसरियों हम से अपने वर्गमें ही विश्व हो, बिट होना करें करते है ? एकाका से वहीं वर्त है कि यूरोका कर करे, सुपानोको क्रम वे और प्रचली एक करे।'

रक वृथियेत्रे क्या--अवेका ! जार क्यी कर्याने विशेषित है। जारके निर्ण को स्थित अवक है। अवके क्याने पूर्व क्षिक को संख्य की है जिसू क्यान् ! इस एक्योर दिने की अनेको अवक पूर्णका का कए क्या है, मेरे में है कर्य को जान से हैं।

नवारणे चेते—एकर् । बहुत पुत्रतेको क्ष्म केत के एकाका कर्तन है है। इसी निवसके अनुसार हुनने कौरबोको पास है। इसीराने अन तुम पनको कोनाका न करो। सरोप संस्कृत कोनेपर भी अपने वर्गका करान करते हुए तुम्हें इस अकारकी असा-नवार्ग कोना नहीं केते। इसहोये को कारकार्गक असा-नवार्ग कोना नहीं केते। इसहोये को कारकार्गक असा-नवार्ग केनेपर को ने भी नहीं इसीरकारी ही कर सकता है, करीर होय केनेपर को ने भी नहीं किये का सकते। असः सन्तन् ! नहीं तुम क्रीका कोने के अपने पायका प्राथित कर सकतेगे। अवश्वित किने किना है वर्ष सरीर हुट गक्त से तुन्हरे हाम केनार पहाचान है। समेवा।

पुष्पतिले कार—कार्याः । की शालके लोको अपने पुत्र, पीत्र, धार्य, कार्या, सन्दर, अनेको धीर

ब्रॉल, एकके, सुद्ध, स्टब्यास, घरके, ब्राह्मकई और विद्यानिक देहोंके अने हुए स्थानीक यन करा करा है। इसका बढ़ों कक इन्द्र मिलेना ? इस विन्तारों में रात-दिन कर-कर करका रहत है। यह मैं पृत्तीको रूप सीमानक नुकारेहोंने सुनी देखका है और इस अवायक वातिका तथा इसमें बारे को बैकडों सहरकके कीयें और करोकों इसरे लोनोकी कर करता है से को का है पश्चालय होता है। अब ! आब को अवस्कर् अपने पुत्र, चीर और प्राप्तनोते क्षण है कर्ष है, इसकी कहा कहा होगी ? ये उनका कहा करनेकारे इन कर्यन और पाननेको कोस की होगी और असम्ब केन क्रेकर क्रमीनर कार्य का की ब्रोगी । विश्वार । कर विकासिका करने पूरा प्रान्यनिकारिक होते केरत होना है, कराते न्हों में बड़ी निहन होता है कि वे राज निःसन्तेह प्राप्त लाग केरी । अनंदर्भ गाँध गाँध ग्रह्म है, अरक इस प्रधार हमें प्रोक्तका है कर लोग्य : अपने सुद्धोंको मारका हमने सह करी कर किया है, इस्तीओं अब इसे दिए क्षेत्र किये नावने है लिए क्षेत्र । अतः अब इम क्षेत्रन प्रथमा कर्षे अपने प्रारंतको साम देने। आपनी प्रीरंते स्वयनके चेन्य कोई कान मनेवन है से फालेकी कुछ बते।

व्यक्तकी का- एवर । इस व्यक्तिमें समाध्य है । पूर्ण अने वनी अपूर्ण है का शरीरवेचे गए है. इस्टरिको हुन झोन्द्र व करो । ये सब से अपने ही अक्टाससे को को है। हुन, चीन, अर्थन क सहस्र-सहोद को मारोकारे की है। इसका प्रेक्षा से माराने ही किया है। करका से न सोई करत है न दिया, का किसीपर हवा की न्हीं करता, न्हा से असने क्योंका सर्वोगत है। तुमारा बुद्ध हो आने, रिन्ने केवल निरित्तमात था। मा इसी प्रकार एक जानीसे दूसरेकी हांच करात थान है। इस संदूसकर्गक रिको का एक अन्यवस्था है सरका है। इतके रिका, उन्हें व्यान्ताके विकासकारी कर्गीय भी साम देश काहिने, विनके कारण और बक्रली पहली साथ पत्र है। विश प्रवार लोहारका करावा हुआ कहा अपना साथ करनेये इसके अर्थन क्या है, जो ज्यान का सन्त नगत कासारीन कर्मको अस्थारे अनुत हो रहा है। फिर की तुन्हारे सितामें से हत सम्बद्धे बरकनेते कर्ज संताय हो तह है. उसके खेकरे क्टनेके तिने हम अवक्रित कर से । राजर ! का बात समी 🕏 वाली है कि पूर्वकारणें राजाव्यानिक रिज्ये ही देवता और

असुरोमें वाल इसार क्लेंडिक कुनू हुमा वर। उसमें देवताओंने देखांका संक्रद करके कर्न और प्रश्नीका काविपता प्राप्त विद्या था। यो होग वर्गका नक करना बाहते हैं और अधर्मको फैलानेकारे हैं, उसे घर है जलन चाहिये । इसीने देखलाओंने उस चुक्के अध्यक्षी हमार कारमञ्जूक नामके देखोंको भी मार कार 🕮। की कुछ मुक्तको भारत्वर कुरुवको क्षेत्र काक्षितकोच्छे सुन्। विके अस्ता एक कटकका सकावा करनेसे देखने स्थान सर्वात है से क्से नष्ट कारनेने कोई दोध नहीं है। एकन् ! विहास समय अपने विकासी देनेवारक कर्म है कर्म हे जात है और कर्न विकासी देनेकारम अक्षयं कर जाता है। इस प्रकार सुद्रिकार मुख्यको वर्ग और अधर्मका स्वास अच्छी तरह सम्बद्ध केन माहिये अर्थराज ! मुक्ते सामा समय किया है, इस्तीको पार्शक्तके क्रिक्यमें असती सुद्धि विकार रक्ते। देखे, कृषेकारमधे बेक्साओका जो कर्यकर्त का, क्रीका तुमने के अनुसरम किया है। तुम क्रेंसे क्रवेशन पूजा क्रांसे नरफक श्चर नहीं देवले । इस्तीको तुम अपने प्राप्तमोची और सुद्-सम्बन्धियोको वैर्थ हो । को पुरूष हुएको शक्की अध्यक् रक्तकर जिल्ली कुमार्थमें प्रकृत होता है और उसे करतें: ची किसी सभार लेकित जी होता, स्तीओ पायबर पानी होता पहला है—ऐसा प्रात्मका कथन है। ऐसे कथार व कोई प्राथक्षित है और न कभी नाज है होता है। तुम्हार हरू से क्षत था। युक्तमे हका न होनेपर भी समुक्त अन्यक्ती कारण तुन्ने युद्ध करना यहा और अब इस सर्वको करके

व्यक्तमा भी कर रहे हैं। इसके रिले अञ्चलेन पह बड़ा जन्म प्रचित्र है। उसका जन्मन करे तुस निवास हो कार्यने । इस्ते भी अवस्थित स्वाचनारी सपने प्रमुखेली परास करके एकके सद एक—इस प्रकार सी अनुवेश रहा विक्रवे के । इसमि के 'सामान्य' नामारे प्रसिद्ध हुन् । इस अवसर अनेक आविकत जात करके उन्होंने क्योंसे प्रटकार प्रका शार्मकेकरे देवक और पूर्वि भी उल्ली उगलप करवे 🕯 । तुम्मे भी इस बसुन्यराको अपने परकारको प्राप्त सिया ै कोर अपने प्रकृतको है इसने समाओको प्रसात किया है। जब कुर अपने विक्रोंके स्थाध उनके देश और एजवानियोधे कार इन्हें कई, कु क पीत्रोंको अपने-अपने राज्यस आविक्षिक वाले । किन राजाओंके जाराधिकारी अपी नर्वाने है, उसमे जनको सन्ता-गुलकर सनकर है। हम जन्मर सन्ते प्रजाना क्लेरहर काले हुए पृथ्वीका पारत बार्व । जिल राजाओंके कुर नहीं हैं, उनकी गरीवर पूर्वका ही अधिकेक कर है। भारतके । इस वस्तु सारे राज्यमें क्राफि रवाणिक कर तुम अशुर्शिकको इसके समाम अध्योधकाराता कारकारका करन करें। सकत् । इस युक्तें से कृतिय मारे को है, अनके दिन्ने तुन्हें बोन्स नहीं करना काहिये। में तो कारको प्रक्रियो मेहित होका अपने ही कुक्योंकि कारक र्वको कुलने को है। इसे कुलकार्यके प्राप्तनका पूरा धार कार हुआ है। पूर्वे का निकायरक राज्य किया है। प्रस्ताद कारन करने हुए तुम कर्मकी रहा करो । परनेवर फल्याज करनेवाली वर्ष बीच है।

## पाप और उनके प्रायक्षितोंका वर्णन

कृषिहिरने पृक्ष-विकारम् । कृषा सरके वह वहाइवे ।

कि किन कार्यको करनेले कृष्ण प्राविक्तान धार्मी कारत है ।

कौर हैसी विश्विम क्या करनेले वह प्राविक्ता कार्यो कारत है ।

कारतीने कहा—को कृष्ण हार्विक्ति कार्योक्षः ।

शाक्षण व करके निकेद कर्म कर पैठता है, वहे हैख विव्यक्ति जावाच करनेले प्राविक्ति कार्यो क्या पहला है ।

को क्ष्मणानी स्थानिक का स्थानिक कार्यो क्या कार्यो कार्या कार्यो है ।

को क्ष्मणानी स्थानिक कारतीन हों कर्म कार्यो कार्या कार्यो कार्या कार्यो है ।

कार्यो : इसके सिवा क्ये प्राविक अधिवादित रक्षो हुए किया।

कार्योगित कार्या कार्यो कार्योक्ष कार्या कार्योग्या कार्योग्य कार्योग्या कार्योग्या कार्योग्या कार्या कार्या कार्योग्या कार्या कार्या

कोटी व्यक्तिमें विवाद करवेकाता, विस्तका प्रत तह हो तथा हो वह व्यक्ति। दिनकी हत्य करवेवाता, अपावको दान वेतेकाता, सुक्तको दान न देनेकाता, सार्ग प्रापको तह करवेकाता यांच वेकनेकाता, जान रूपानेवाता, वेदन लेका वेद प्रदानेकाता गुरु और साँका वह क्षरनेवाता, सुसरोका वर क्षरानेकाता गुरु और साँका वह क्षरनेवाता, सुसरोका वर क्षरानेकाता. ह्या क्षरकार पेट पारानेवाता, गुरुका जनवान और पाराकावती पर्यादाका क्षराकृत करवेवाता— वे सभी पार्था माने वाले हैं, हन्हें प्राथकित करवा ब्राहिये।

इनके सिका, वो लोक और वेदसे किस्सू दूसरे न करने केम्ब कर्न है, इनों भी बनाता है, पुत्र एकश्वितसे सुने। अपने वर्धको त्यागना, दूसोंके वर्धका आवरण करना, यह करनेके अन्तिकारीये यह कराना, अपन्य धहान करना,

<sup>ं</sup> क्योंक सम्बंधने नु कुमनी मूनक इक्स्पदासकः हम स्कृति अनुसर वे तृष्टकार्य क्रमक सृष्टकी सेने कानेवाले और इस्सी होते हैं।

ware I sh gas from the peop was to पुर-वर्षिक साथ समायम करता है और अञ्चलक हेरेका अपने बोचे राज सहस्रत नहीं करत, या वर्गवर स्थल करनेवारम है। इस प्रमार संबोध और विकासी अस से कर्न बड़े गर्व हैं, इसमेरी किन्द्रीको करनेवर और किन्द्रीको न बारनेपर मनुष्य प्राथक्षितवा प्राणी होता है। जब, विजनिवन कारजोरी इन कर्मीको करनेवर औ प्रमुखको पान नहीं सम्बद बह रागे। यदि बहुतवाली कोई वेद-वेदायोगा मानाजी क्राप्टम की प्रथमें हमियार रेक्टर मारोके रीजी आने से कार्य क्ष करोड़े अध्यास्य पर व्हें राजा। यान् ! प्रश्न विकास सेव्हार क्या भी है। मैं तुमले नहीं कर कह का 🛊 को केइ-वाक्यके अनुसार को पानी गर्नी है। यह कोई पुरूष अध्ये वर्षके देले हुए आसान्ये साहानको नार हाले के असमें की बढ़ अध्यानाय की होता. अल्याको अवक प्राणसंबद्धे समय भी पहि गरिश पन कर से से सार्थे क्यांत्राओंको इत्याके अनुसार इत्या पुरः संस्थार क्षेत्र काहिने । इसी प्रकार काम एक अम्बद्धा-प्रकृतिके विश्वनी भी सन्दर्भन पाहिने । की कभी ऐसी कोई पूर्व हो कप के प्राथक्कित्तमें ही करवरी चृद्धि होती है।

मोरी सर्वदा निविद्ध ही है, किंदु सामानिक समय की मुख्ये दिनों कोरी की बाम तो उसमें देव नहीं है। की कोरी कामों में कामों है। की कोरी कामों में किसी अकामकी काममा न हो. उसमें अस हुई वातुकी कर्य म कीरा तम तक अवस्थानकों अकुमके दिन्दा किसी अफ्या को में दिन्दा काम की की कीरीका कम मही असा। असमें का बिस्सी हुस्तेचे अकामों प्रकृष्ट दिन्दी कुसी हुस्ते किसी कामों का मही हुस्ते किसी कामों कामों हुस्ते कीरों स्था अकाम विश्वकृत कराइकी हुस्ते हुद्द कोराने से पी काम की हुस्ते कामों कामो

केल, किंदू इसके रिने उसे अमारित श्रांतिने प्राणी स्वकृतियाँ क्षेत्रका अम्बद्धिय करून माहिने। महि नद्दा माद्री महिता है साम या संन्यान के से से कोट माहिनो विकाद करूनेने भी सेम नहीं है। अद्यानस्थ विक्ती असात स्वकृतियों को कोई सेम नहीं कर्मण । मादिनारियों सीमा विकाद करूनेने भी मोद्री सेम नहीं है। देख करूनेने से असात हैं। होने हैं और समझा भरभ-योगम करूने-सात से नहीं होता। में सेमाम साम-माद्रिय करूनेने असात है, उसे अस्त्रनेने में सेम महीं साम माद्रा। एक्ट्। से प्राप से निने से साम सामने निन्हें कर्मने मोद्री सेम नहीं होता। अस मैं विकादमुर्वक अमाद्रियोग्य मार्गन साम है।

१७०५ । कुन्क-सम्बद्धनानी सन, आंख्रिकारि कर्न और करके हुए। जुल्ब तथी अपने पानले हुए सकता है, सब बहु बिहर पहली प्रमुख मा हो । बाहि बिहरीने प्रसुद्धाना की हो हो का िवार प्रोत्सार कुछ समय गोवन स्त्री, अध्या स्त्रा साथ सर्व है को, क्रमी काल और करवाड़ (बारमां प्रथा) रहे. निक बहुम्पर्वत्रको हो, विद्वा वॉगनेके हत्त्व सर्वत क्रम यें, विकास इंग्लं न करें, प्रामीवर क्रयन करे और लेकने अपने कर्मको प्रकट करे। यह प्रकार काछ वर्गनक करनेसे अलबी पुरिद्र हो बाले है। अरबवा अवनी प्रकारो निर्मा क्रमधारे विक्रम्बा विकास का साम का समती हो जाएने निरं अस्तर नीचेको रिस किमे किसी की बेक्का बात करते हुए क्षेत्र कर स्रोतनी चोजनकी बास को या किसी नेपा pagental gram grafen gerafen unt & aparen fingeft क्रिक्ट के निर्मात के उनके इसना कर का तथ कामानसे परा इश्य पर क्राकुणको सुन को । इस प्रकार मी और प्रकानीकी राहा करनेवाले पुरुषको सहस्रकारी मुन्ति हो सकती है। पहि कुरुक्तानेक अनुसार कोजन करे के का कारि, सारितक कृत्युक्तलोः अनुस्तर चोजन करनेसे तीन क्लॉमे और इक-इक कालों भोधानकातक परिवर्तन करते हुए अरुपत सीव क्रमानके असका अब प्राप्त को से एक काँगे साहस्तारी बराबार से सरका है।'\* इसमें समिक्ष भी सीक्ष नहीं करना

<sup>ै</sup> तीन दिन बदा बात. तीन दिन सम्बद्धान और बीन दिन बिन्ह मूर्ण के नित्त कर बद्ध के तेन तथा तीन दिन उपकास बदना—इस प्रकार बदर दिनक कृष्णात केल हैं। इसे कम्मों के कांद्रक एकंसे बदावान कृद स्वाती है। बढ़ी क्रम मदि दीन तीन दिनमें परिवर्तित न लेका सम बसोमें एक वह माहामें और बिक्स बसोमें आठ-आट दिनमें कदलते हुए एक वह प्रकार कृष्णातके अनुसार बात ते तीन कमेंने दृद्धि से बादमों और बीद एक बाद बात एक प्रमा मार्थकार और एक प्रसा अवधित प्रोक्त तथा एक प्रमा उपकास—इस बात बार बार बार कुष्णातके अनुसार को तो एक से कमें बारायकार बार वृद्ध सदल है :— [जेरकायी]

चाहिने । इसी जन्मर नहि उनकास ही किया जान दी और भी | जारी सुनि से समाने हैं। इसके सिका अनुनेत बाले भी नि:संबेह यह पान कुट सम्बद्धा है। इतिका कका है कि जो प्रस प्रकारके सोग अवज्ञा (पताना) जान करते हैं वे अब्दे शह प्रकारके पापोसे पुत्त है जाते हैं। को पूजन प्रवासके किये प्राप्ते प्राप्त है केता है, का भी सक्कालको कर जाता है। प्रदानगा। हेनेक भी को सुका प्रदानोंको एक साथ मेरी कन केल है जरके से सभी कर जा हो जर्म है जो बदल इन देनेकाली प्रवीस इसार श्रापिता और सुराजीको द्वार करक है. 🞟 भी सब पानोंसे कुट जाता है। बरनेके सबब करिए और सार्युक्तांको कार्युकारी एक इत्यान कुलक नीई केन्द्रे जी मनुष्य इस पापले कुछ हो सरका है। वो एका सकत विकालोंको कान्योज देशमें करता हुए औं क्षेत्रे कर करता है, मा भी महारामांक करते हुए जात है। यो सर्वक वितर्ने हुए पुरुषको सरका मनोरक पूर्ण होने कोना हान केल है और हैता मिनोमें आने जानी निक्र की काल का भी कालक है पाला है।

वस्थित देशमें कांत्रों गिरकर और आंत्रों प्रवेक करके अवसा खारावाचकी विभिन्ने क्षेत्रसम्बर्ध सरकार अन्य दे देनेसे स्मृत्य क्ष्य पायंत्रों कुद करता है। जी विभन्ने अवसी कुदि को जाते हैं। एक बार का बीनेवर जो विकास पायंत्रों भूभिन्न करता है और किर कभी क्षात्र की कुछ का के कुद हो करता है।

जो पूज्य गुक्तवांके हाथ क्रमान करता है वह स से सराती हुई रहेंद्रेकी विराधक पढ़ काम स अपनी कृतिकाको करातान करायी और देखाद हुआ एरावा काम का । इसके तिया, अपना इतिर साथ देनी भी वह इस प्रको इस स्थाता है। अपना यो पहालाका (कृष कृतिकाद कार भी न पीनेसे नियमका) करान करता है, ह्यालांको अपना सर्वाम दे तेस है का पुरुषे दिनो कृत्यो अपना क्षेत्र केस है वह भी इस पासले पुष्ट से नासा है। हुए कोशवाद सामीविया परसानेकाल अथक पुरुषा अवनाय करनेकाल पुरुष पुरुषीयो सम्बद्धी वस्तु केसर प्रस्ता कर होनेसे अस कामो इस माना है। निस्ताव अध्यक्ष कृत्या क्षावाद के गया हो, उसे मानावाद है। निस्ताव अध्यक्ष हमा प्राविधा करना सामिने। अववाद का मानिताक क्षावाद क्षावाद कामा अभिने। अववाद का मानिताक क्षावाद क्षावाद क्षावाद कामा

वर्षि कोई पनुष्य किसीका कर कुछ से हो किसी-स-किसी अवपने उसे काल ही वर सीटा देनेसे बहु अस कानो मुख हो सकता है। यह बाहीद अधिवादित रहते हर मिनक करनेकाल होटा पर्श और सरका बढ़ा पाई है केने संकार्तक कदा दिल्या कृत्यूना करनेरे परित्र हो कते हैं। प्रापंद शिका, चारे यह प्रोटा वर्ज पढ़े पहिंद विकास का रेनेपर अगरी विकासित क्रीके साथ किर विश्वकृतंत्रकार करा से से इससे भी उक्र क्षेत्र निवृत्त हो जात। है और अलो निमारीका भी उद्धार होनेचें सक्ताता फिल्ही है क्या केला करनेले जीको को कोई केंच नहीं होता। परि अपने बीके और किसी प्रकासके करावस्था प्रका है है एर: रकामा क्रेकर कर करनेतक उसका अधावन र को । करको नैसे काँव प्राप्त हो करे हैं, इसी ज़कर रख:क्रिके की श्रुप्त है अभी है। यह श्रीक्षणेका यह करनेवाला तक त्रक-क्यूने ब्यून-से देहोंको इत्रत्नेकाल पूक्त तीन हिलाब व्यवस्था को और लोगोंचे साम्ने अपन कराने उत्तर का थे। प्रत्ये कर पहर से काम है। को पूका किसी ज्ञासकी हिंसा पढ़ी करता, राग-देश एवं पानकारको सुन्द है, विशेष प्रकार नहीं करता और विवाहत करते हुए परित और एकांच देतारे कवर पायरीका कर करता है, का क्रम क्योंने कुछ हो काल है। अन्य तथ अध्यक्ते पार्योकी स्थित किये की अञ्चलनि अनोकांके निर्माणे प्रमाणका क्रमानेक क्रमानो मही निर्मा निर्मात की है। को पुरस हिन्हों आकाष्ट्रची और हों। रशना है, रहिने सूते निहार्य जेता है. क्षेत्र कर दिन्हें और तीन बार राहिने क्योराहित करने पुरस्कर काम करता है और इस क्रमक पालन करते समय बी. पुर और परिवारे कार को करता का अग्रानका विके हर तम क्योंने पुरू हो जान है। महामधी अर्थ विहे हर कुल का अञ्चल कार्यका कार मरनेके बाद चोगान पहला है। इन्में निवादी अधिकार होते हैं, अधिक पान को विकास है। क्रमीओ सन, उन और सुम समेकि क्रम पुरुवती है। क्षेत्र करने साहिते, जिल्लो का सन्त्रते क्षावार कर्व बद अके। सर्वत पून क्योंका जानत्व को, व्यवकांके स स्टे और सुराज्यों कर कर करे हैंसा करनेते ज्यूच करने एक के क्या है।

समन् ! इसी जमार विशेषी पुरुषे हैंने पहंच और अपनय, पाण और अपनाम समा पान-सुप्तार और किया को किये हुए करोंने भी समझित बताने हैं। को पान सम्बद्धार किया जाता है यह बड़ा होता है और अनकारों किया हुआ पाप होता पान पाता है। उसर नहीं हुई विशित्ते पानमी निवृत्ति हो समझी है। को आदिया और सम्बद्ध है, उसने निवते यह विश्व कही गयी है। प्रतिकार उपयोग नहीं है। जो पुरुष मसकर सुना म्हेकन स्वाहत है, उसे | कुटने ही कारणसे इस प्रपत्ते सर्वना मुख्य हो नाओं ने। दिन मेंद्र पुरुषोक्षेत्र आवरण और कर्मका रोवन करण काहिते । यो की तुन्हें कुछ प्रक्रावान है से अवशिक्ष करो । इस प्रकार राज्य । हुमने अपने प्राणीकी राज़के किमे अधान कार्यका । जनार्थ पुरुषोधी वस्तु रेवमें सरकर अधान नात करे ।

कारकासु और दाम पूर्व देखावान पूरवंके दिनो इसका कोई | पालन करनेके सिनो ही इनका क्रथ विका है; इसरिनो तुम सो

# प्रायश्चित्तयोग्य कर्म, अञ्चकी अञ्चिद्ध और दानके अनिधकारीके विषयमें खायम्ब मनुका प्रसंग

बाराओं केले—राज्य । इस क्रिक्टमें एक कुरून इतिहास प्रतिद्ध है। एक यह स्थानने क्याने स्थित एक्टीक क्रेंबर कारकार पहले करा को और उस्ते करेबा करना पूछी हुए बोर्ड, 'हान, अस्तरण, का, कार्न और असले प्रमुख्य क्या कार्यन है ?"

क्रमंद्र इस प्रकार पुर्वनार करूपीने कहा-न्यी राहेप और विकारते धर्मक क्यार्व स्थान काला है, अन नाम केवर सुरे । बाक्से दिन पारोधे प्राथ्वीतावा अनेना नहीं है. क्राची निवृतिके दिन्ने समान्यत, होन और कामन करे, कारपाल प्राप्त करे, परिवा अधिकेरे काम करे और नहीं प्राथित करनेकारे लोग को हो वर जानेने थे। इर पुरुकारोंसे, प्रधानित आदि परिवा कांत्रीयर क्लेके, सुकर्त प्रकृत करनेसे, जिनमें का हो उन महिनों का सरोवरोने कान क्रमेरी, देवरकारोंने करेते और पुरुषर करकेरे अन्तर है पनुस्तरों सलाम सुद्धि हो जाते हैं। अनुस्तरों क्यों को जी करण पाहिने और नहें केर्रायुक्त हुन्छ है से प्रात्कृतकृतकारी विभिन्ने कीन विकास वर्ग कुन, कुन और अलका रोकर करना पाकिये।

हैता है हूं। बच्चों न हेना, दान, सरकार और दाने इत्तर कृत, अहित, राज, असोन और यह—ने सा क्रांके राक्षण है। एक ही क्रिया केंद्र और कारणेंद्र केंद्रके कर्न या शवर्ग के कारी है। चोरी करक, झूठ केलव, देख करण आहे. अवर्ग भी सक्तकतिकेच्ये वर्ग माने उस्ते हैं। विकेशी लोग बालों है कि वर्ग और अवने में केने ही देखकारको विकासी अधर्म और वर्ष केनी के समझे है। कोबा और केटरें करीर से केट है-अमृतिकार और विवृत्तिकार्य । इसमें निवृत्तिकार्यका फल क्षेत्रकार अनुसार है और प्रवृतिकर्मका कार कम-मरण है : अञ्चल कर्मने अञ्चल फूर पिरस्त है और सुन करोड़े कुछ। क्लोबी मुक्तमुक्ताके कारण है इन हो उकारके करोंको जुन क असूम काले हैं।

ची। सन-मूलकर कोई अञ्चय कर्न हे जान से अनेद हैंको अन्तरे अपविद्यास निवाद किया है। एक पहि क्रकृतिन पुरुषको स्था व है से उसे उसकी सुद्धिके रिप्ते एक दिन-रामका करणात कारण काहिने और पदि पुरिदेश क्रमको अमेरिकेस न पारे को जानकी सुन्दि और दिन जनगान क्षाने हेर्ज है। किंदू के पूज अपने वाति, आसर का पुरुष्ट करेको प्राप्त के हैं, प्राप्ती सुदि विजाते अवद्यालने वर्ष के सकते । वहि क्लेंबिक्ट कोई किया के तो केंद्र और करिक्काको सार्गनाले का या तीन सामानीको सुरस्कार जनते जसका निर्माय कराने और में कैस कारे बेका करे।

ann armir formit fourt meit &: finit fellen क्षण हुआ अर. वृतिकासः अत का दिन्से पूर्व नहीं साम कार्रेके, इसी अध्यर कार्य क्वं गीका देव की का मिलाक प केरे । क्याचा तम केरको व्य करण है, बारक अस हार्यक्रमा अध्यक्ष है एका स्टब्स और चीर वा पुत्रकेत सीवा arn sergen gur nicht & 1 meranten ben feinfe क्ष्मा है और वेदसमा सीवीद क्रमान द सायर, नामिकेटी, कर्ता, कोची, व्यक्तिकारिको ची. कोची, बैक्ट और बीवपेकर हर समग्र करा भी काने केन्द्र नहीं है। किने समान ना चीवने केची सकामा हो, जो गर्नवर्धने हारा अपनी पीतिका कारते हो और विन्होंने अपने यह भाविक अधिवादित सहे क्षु अवन्य विवाद कर देखा हे, काका तक क्योंकर और कारिकोक्त अब की सकाय है। से कार्य हामसे सका गण हें, जो कारी है, जिससर महाके और यह गये हैं, जो जुड़ा हे और किसे कटकारे क्षिपकर अपने निम्ने रक्ता है गई अस स्तरेकेन्द्र जी क्रेस । इसे प्रकार से पदार्थ जारे, ईस, क्राव्ह का देखको निमाहकर कमने गने हो से भी नहीं साने कार्यने । तत्, जेन्द्री क्रीते और क्रीने क्लि हुए सब्ह ये अधिक देखें हे अनेक स्थानेनोय नहीं रहते। स्टेर, शिक्षी और मारपूर परि देखाके जेएवरी व कराये बार्व से जो जारे करिये, जारव पुरूष केवड, जारे, अतिथि, वितर और कुरस्यातओंको नेवेब समर्थक करनेके बार हो प्रोचन पर स्थान है। हो परने भी संभारतिह सपन अवस्ता-भागते ही सूच्य पार्किने ह के अन्ती बनकर बीके राज का कार करें कर है, क कांक परा फल जार कर लेला है।

हरांत्व पुरुषो साहिते कि नाले होताहे, पनके बारल अवना अन्यत अन्यत् कानेवालेको सुन व है। के मामने-गानेवाले, हिरी-मामक करनेवाले (माँव कार्यः), महारत, क्रमत, चोर, मैन्यु करनेवारे, पूरी, वेकेक्टेंग, अपूर्वन, चीरे, सु, कुरुक्षेत्र वर संस्थारकृत हो, स्रो भी रूप न है। सिहते वेक्श्यक न दिना है उस प्रकृतको क्षत्र केन्द्र प्रतिक नहीं है। विशेषकि क्षत्र केन्द्र का तक तेन्द्र क्षेत्रों ही रीक नहीं है। ऐसा करनेसे क्षत्र वेरेनासे और सन रेनेकारे बेनोईकी प्रति हेवी है। किए प्रकर कीरकी शबदी वा पाधरको दिलाका आतन तेवार सन्द्र कर करोपास गाँउ पोस्कोरे इस पास है, जो उत्तर हैते कता और पृक्षेता केनों ही बरकने हको है। विका प्रकार सकते नीतो क्षेत्रेय अति अन्योक्त नहीं केती, उसे ज्यान रिक्र कुर रेलेमानेमें का, कान्याय और सक्तात्का सम्बद्ध । सुरूप प्राप्ति ।

हेता है पद अच्छा नहीं बार पहला। निस प्रकार मनुष्यकी होंग्योंने कर हुआ जह और कुरेकी एउसमें भर हुआ दुव कार्यक अञ्चलके केरणे अवस्थित के बाते हैं, जारी प्रधार कुरुक्र केंद्र केंद्र केंद्र के क्षेत्र के क्षेत्र है। के प्रवास केवलि और सवास्था होते हुए भी संबोधी और कारेके पुलोगे केव न वेकनेवारय है, उसे हवा करके ही दान हेक व्यक्ति। जो देख विद्वालय कावार है अनव देख करेंगे कुछ होता है—या संस्थान को कुछ नहीं दिया का कारण, क्योंकि की सम्बद्धिक प्रश्नी और पानक plea à spreach di dit à sel son fer पह दूसर प्राप्तक की केवल मानक ही है। है। तिहा प्रकार कालीन कुछी और एको किया हुना इसर कार्य हेबा है, उसे उच्चर पूर्वको दिया हुआ कुन भी नियम है। कर रेनेकार गुर्ज के कुछाबा प्रमु है, यह सामा का प्रत्य करता है और देशता एवं निवरोंके प्रता-सम्बद्ध पान पाना है। को क्रम हैनेनाल पूरूप स्वेचीओ जाह को पर सम्बन्ध। पुरिनोदर । इस्ते को प्रता मा असी अनुसार की संक्षेत्रमें मानगड़न पहुंचा का पूरा उसीन सुनी केल । यह पहारकारी जांग सर्थ सामानकारियोंको

# व्यासची और भगवान् श्रीकृष्णकी सरग्रहसे महाराज युधिष्टिरका हस्तिनापुरमें आना

बारी क्लेकि क्लेक्ट विकास सुरूप करून है। कुरूप सताहरे कि आपरिके समय हुने किस मेरिसे करन सेना शाहिये। आको प्राथ्येतानेके विकासे मुझे को प्रक्र प्राप्तक है, अससे पड़ों बढ़ा वर्ग के पड़ है।

ध्यास्त्री क्षेत्रे—वृधिद्वित । यदि तुम वर्णका पुरा-पूरा क्षम सुनन पाले है से कुरुद्ध निवस्त क्षेत्रके कर बाओ । ने पहुण्योके कुत सर्वत और सम प्रकारके वर्गका पर्य अन्तेशाले हैं: इस्तेश्ये क्वीद विकार हुन्हरे कार्य जितनी सहार्य हो, इन समीका वे सम्बद्धन कर देवे। जिस वर्गसामको सुकरवार्ग और देवनुक कुल्लीको जन्हे है. स्तीको कुरबंध प्रीयामीने स्कारकार्य और कावामीले क्रे विकासको साथ प्राप्त विका है। असेने सहक्रांकानी देश शेकर वरित्रकोरी अञ्चेपाइसक्ति वेदोंका अवस्था किन्छ है, मदाबीके जोद्र का परकोजकी समझक्तरतीले अध्यासमिक्त पायो है, क्राईस्क्रेक्टीसे पूर्वतक क्रिकर्प सीला है तक परवरामणी और इन्हों अवश्विक कर्न

हक अभिक्रेले पूर्व-मुन्दिर | मैं श्रासकोके और | है। अनुवांने अवत हैकर में वृत्यके उन्हेंने इकके उन्हेंन कर केवल है। व्यक्तिकारित इक्तरियन करते स्थानन थे। कर करने अन्यक्त होते में के उनने ऐसी कोई कर नहीं होती बी, विको ये न पानके को हो । ये वर्ण और अर्थका सुहय क्रम करते हैं, में के लाई वर्गका करोड़ा करेंगे। अब कुछ ही राज्याने में प्राप्त क्रोड्रमेवारी हैं। अर्थ: पूर्व उनके ज्ञानगरित्वागके पहले हो उनके पास पहुँच पारते।

> **इधित केले—बनकर् । मैंने तो अपने बन्ध-बान्यवीका** का केला और देशक्यारी संबद किया है। मैं प्राप्त क्षेत्ररेका अवस्था और पृथ्विका क्रकारक क्षरकेवारत हैं। को नहीं, ने प्रस्ता है निकास्त्रपासको कुछ कारी के हैं, सिन्ह वैने कराते उनका संक्रद करावा है। ऐसी स्वितिने के किस अबार जो अन्य के दिया सबस है?

र्वज्ञानकार्थ करते हैं—एक पुनिश्चेतको पह करत सुरनेपर च्युक्तेष्ठ अधिकारने कार्य कार्यक क्रिक्की कापनासे उन्में कहा, 'नुकांड ! जब जान क्लेकको ही न मकड़े रहें। पनकार कास कैसा कह से हैं, कैसा के करें : वे अनरिज केमसी और आपके पुरुषे सम्बन है इनकी असा कानका | आप सक्कानेका, अपने शुक्र इन्यकेनोका, डीवईका और सम्पूर्ण स्वेकोका हित करें।'

मीन्त्रणको इस प्रकार कहोता खानना महस्त्रण सुनिहिर स्था लेकोचे दिवके रिको सपने सारान्त्र को । वे केट, उपनिक्य, वीमांसा और गीति कादि प्रपत्ने प्रकारित पार्थमा थे। इस समय अपना कर्मण निक्षण वारके उन्हें कई प्राणि निर्मा। उन्होंने महस्त्राम मृत्याकुको आने किया और शीकुम्म आदि सम कन्तु-कामकोके साथ इस्तिनापुरमें आये। अस्तरमें प्रवेश करते समय उन्होंने देशाओंका तथा इसार्थ क्रांत्रस्था पूका विकार हुए। क्या रिको सीम्बा केलोसे जुते हुए एक नवीन रक्षणे स्थार हुए। क्या राम उन्हों क्या और क्रांत्रसे सेवह हुआ वा क्या केल



सर्वक्षः वा इस समय प्रक्रमास्त्रमी कुन्तिकवन बीचने बैलोकी बामकोर सैन्यरमी, अर्जुनने काल्कियन् केन कुन्न हिंग्सा सच्चा महीनन्दन न्यूनर और स्मान्य बीचर और चंद्रसा कुन्नने रूगे। इस प्रकार क्या पीची पर्यू सम्बन्धकों साथ स्वत्यर सच्चार हुए तो ऐसे पारपूप होते के बानो पीची पूछ ही मूर्तिकव् बैन्यर इकट्डे हो वर्ष हैं। स्मान्य कुनिहिस्के पीछे एक प्रकार सुपूरम् सामा। इन कोरच और सामान्येके बाद सैन्य और सुपीय नामके पोड़ोसे पूर्व हुए एक सुवर्णस्य रसक्त क्यान्यर सन्त्यिकों सहित करवान् औद्राव्य का रहे थे। वर्षस्यकों नाने एक कारणीतें उनके जेहा विश्वण जाराज प्रश्न कारणीते कार का रहे थे। इन सबके पीके कुन्ती और हैन्सी अपने अपने कुरुकृत्वकी निवर्ण जानने-अपने घोण्यताके जनुसार सम्मानिकार कहका कर रही थीं। इसकी रेस कार ही थे। उनके पीके कर रहे थे। उनके पीके कर उनके पीके कर रहे थे। उनके पीके कर जान कारणी के सम्मानिकार अपने के सम्मानिकार कारणीत कारणीत इस प्रकार कारणीत कारण

विकास समय इक्षिकपुर्व वर्गरावकी सवारी विकास, व्यक्ति जानस्थिते सारे नगर और राजपार्गीको कुछ सवाका वा। अवकोचर स्थेद रंगके पूरा विका हुए थे, अनेकी काम-वालकाई समाची गयी थी तका उन्हें सब्बी राष्ट्रसे सब्द करके कुमरे सुचनिका किया गया था। एउपहासको सुगनिका सब्बोके कुमरे, तरह-राष्ट्रके पुगोसे और पुजीबी कामकारोले का विका गया था। गराके हारपर पास्त्रो से हुए नवीन करका गये हुए थे क्या सही-वहाँ केंस करके पुगोर्के पुक्ते स्थान गये थे। इस अंगरी सुमनेहा सुनि-काम सुनावी पढ़ से थे। इस प्रवास अपने सुनावेत साथ व्यवसास कुमिनीयने सुना सनी-कर्न होनासपुर्व प्रतेश किया।

क्षणकों पुरस्काके भाग सहयो पुरसाध उन् रेकनेक मिन्ने इकट्ठे है को। इस समय अनेको पुरसाधि की कार्यको प्रसंख कर दही थी। में सम्बद्ध और दहि कार्य समी, 'कार्यकाकुमारी । तुन कन्द हो, जो तुन्हें इस पुरसाधिकों सेकावन पुरस्कार आह हुआ है। तुन्होरे सभी पुरस्कार्य और कार समस्य है।' उनके हैने असंस्थ कार्यकों और सामसक्ते प्रेमस्थानों का समय हारा सार हैन का था।

इस जनसर बहाराम पृथिहित और-और राजधारीमें निकारका बहारके हारचा आये। अब राज इस्ताही, नगर-निकारी और देशके स्थेन उनके सामने आये और प्रकास करके अंक-राज्याने कारोंको अबहे स्थानंकारचे करा है कि आपने वर्ग में कोरों, ब्यायाम ! को सौन्यान्यकी करा है कि आपने वर्ग और बनके प्रधारमें पून: अपना कोचा हुआ राज्य पा रिजा है। अब्ब सौ वर्णनक इसारे राजा रहें और वर्णपूर्वक प्रजाका कारा करें। इस प्रकार राज्यान्यर पामुन्तिक कवारोंने उनका सम्बंने सरकार किया तथा ब्राह्मणोंने सौ आसीवांद दिने। अन समझो कवारोन्य स्वीवाह कर सहाराज स्थाने आरं और नित्र समयमान्ये प्रकारे । व्यानके व्यानके भागाने वाकर अमूरि कुरलेक्याओंका दर्जन किया और श्रद, कार्यन क्या माना आदिने अस्त्री कुर्या की । इसके कार के फिर व्यानके वाकर आने और वार्च कुर्योगे प्रकारिक इसके रित्रे को हुए स्थानोंके कर्यन किये । त्रक व्यानकों पुर्व बीम्य और एका व्यानकों अस्त्री स्थानकर अस्त्री पुर्व, मेनव, सा, सुनर्ग, में और सम्बादिने विश्वमा पूजा की । सेववारकोग आहमारिने व्यापक पुर्व की अस्त्री क्या पुर्वा है, कई अस्त्री व्यान के की थे । इसके का पुर्वा क्यानका क्षेत्र हुआ । अस्त्री काम आरंग कामी की कारा । सह सुन्नोंके निने अस्त्राहरूका, यान क्या और कामी की कारा सुन्न के स्था ।

कृतिये हाद्यानके केन्ये दिने हुए तक्का कार्यानने कार्क, 'युनिद्धित | इस कारत में इन कार साह्यानेकी जोतने केल का है। एन्ट्रें विकास है। इस को दुव स्था है ! इसने अन्ये कार्य-नाम्यानेकी इस्ता की है। अन्यो मुक्तानेको अस्थानक के अस सुन्दार। यह जाना है अन्यात है। इस अस्थानक केल्य किस कार्याका ?' जानारे जा का सुनका कम कुनिश्चर करे है सनित और जनकुर हुए। जीवारको सम्में उनके मुक्तरे एक की कब्द न निकरण। उन्होंने कहा, "विश्वना | मैं जानना किनीत क्रेका आपसे जार्चन कर जा है। जाय मुक्तर असका केहने क्रार समय की काम कई आपति है, देसे समय आपका मुक्ते विकासना जीवा नहीं है।"

पुणिक्विको या जब द्वाकर सम सक्रम मोर प्रदे, 'राहराम ! यह इक्की याम जहाँ यह द्वा है। इन से अवस्थानंद के हैं कि आपकी राजस्माने साह करी दो।' किर का व्याक्तानंते इस्त्राहियों को प्राचान रिवा और द्वारा प्राचीत्वे वह, 'या पुणिकाका दिव पार्थक जाएका है। उससे प्राची अपन संन्यानेका के क्याकर समझ है। प्राची शहर की इससे स्वानीका व्यापाय है।' दास्त्र | कार्य प्राचीत की स्वानीत अपनीत प्रश्नात हैंगर वाले हुए सा दाहराओं पर समझ । उनके तेनारे यह पान होवार गिर भाग । दासने का समझी दूस की । है समझ अधिकाक करते हुए व्यक्ति किए हुए। इससे नेवाराम पुणिक्वित और साथ सम्बन्धिकों की यह समझा है।

## महाराज युधिष्ठिरका अभिवेक, उनकी राज्यव्यवस्था तथा उनके द्वारा सम्बन्धियोंके शास्

वैद्यानस्त्री काते हैं—एकम् । जा महराव कृषिक्षेत्र रैम और संतारते मुख होकर पूर्वको और मुक करके सुकाकि तुन्दर सिंहासम्बद विद्यानस्त्र हुद्। उन्हेंको और पुत्र करके एक करवानते हुद् होन्को सिंहासम्बद सामाधि और श्रीकृष्ट केंद्र तथा व्यारक्तको क्षेत्रो और हो क्षित्रक पीठिएर भीवतीन और जानुंत सुक्रोणित हुद्। एक और सुकानारित इक्षोद्यीतके असानस्य नकृत्य और स्कृष्टको सहित व्यार कृष्टी कैठीं। इसी असार कौरवीके पुरोक्षित सुक्रमां, विदुर, बीच्य और कुक्रमाय कृत्यक् भी अस्त्रा-अस्त्रम सुन्दर सिंहासम्बद्ध विद्यानस्त्रम हुद्। वर्षा व्यारका कृत्यक्ष के असर ही मुक्तु, स्वस्त्रम और कुक्स्त्रम क्षारका

म्बारास सुनिनित्ते विकासनार केंद्रकर हेव पूर्ण, महार, पूर्णि, सुवर्ण, राजा और पशिष्योको सार्व किया। विकासको पास पृशिष्य, सुवर्ण, तथा-तवाके का, सर्गीयमसे पुरा अधिकेकके पान, करनो वर्ष हुए तथा, करि, और मिनुकि बरतन, पुषा, साथा, बार, गोरस, उपने, भैगार और परमाची स्थिताई, सबू, कृत, मूस्तात सूचा और प्रमु—म्यू तम सामाधि एकतिल स्थि गर्नी । वित् सीकृत्याची सामाने पुरेशित सीमाने पूर्व और उत्तरी प्रोताने दीने स्थान्यर प्राचीक विभिन्ने मेही कामाधी । पृत्तके साद सर्वकेश्वर अन्तरमार प्राचीक पृतिद्वित और प्रीवित्ती मैहतावर उन्तरी मेहते मन्त्रोंक्षर विविद्यंत इतन प्राचाया । अस सम्बद्ध सीकृत्या एक्षे पूर्व और उन्होंने स्थानमार सुदूषी सहावत समाधि मृत्याह एका तम स्थानियोंने भी प्राचनमाने साद की उन्तरी मृत्याह एका तम स्थानियोंने भी प्राचनमाने

अभिनेक होते ही जातारों और नश्मीरकोका सब्द होने सब्द : वहराजने वर्जानुसार क्रमको सब घंटे स्थानार की और जो व्यूक्त-से पुरस्कार देशन सम्पानित किया। इसके बाद उन्होंने अञ्चलते स्थानकान करावार उन्हें हकारों पुतरें वीक्तकों हैं। व्याकति अस्त होकर उन्हें 'पहल हो, का है' ऐसा व्याकत अस्त्रीयाँच दिया। फिर उन्होंने पहाराजकी प्रशंसा करते हुए कहा, 'राजन्। यह साम्यकी बात है मानको किया प्राप्त हुई। अस्य अस्ये नावानको वर्णको यहा | यहावा नाव परित्र नाव। प्राप्तने विश्व-विश्व सौनोंको करनेमें समर्थ हुए। यह प्रमाणा लेक्कन है 🗷 🏗 🖦 १, चीमरोग, अर्थन और नकुल-रहतेल जननक संध्यान थे। अब आप प्रीत है क्यों कर्मकरको असे हमारे हैं। प्रकृति कर सम्बन्ध सकतेने कांत्रम पुणिक्षेत्रक सामन विकार और अपोर्ग अपने सामाजितांके बहुत्येच्यां का निवास सामानका पार अपने दावोंने से वैनक।

ज्याने अधिनकृतक जार के हर कारण पुरिन्दैनरे कहा, "काराज ब्रुग्राष्ट्र मेरे निका है । इसमें मेले में इस्केलेंड साराम है। यो प्रवेण पैरा किन साराव करें, उन्हें इनकी आहाने कर पहिने और हाई में कुछ नका तरी, की करन करिये। येव भी प्रचल कर्मन सर्गत स्थान स्थानमध्ये प्रचले केम करन है है। यह अस्तरेन मेरे कर कोई क्रम करन पार्क है से में बढ़ी रिवार को रात है कि इसके और व्यानिके समान समानमा परंग रही । मेरे, सारके और राजी प्रकीत कारी में है है। यह बाद पह और व्यवसारेन हमीरे हैं। कार तम स्थेप नेरी को अर्थन प्रकार स्थेप कर

इसके कर कुरुएन पुरिन्दीको सभी पुरवानी और हेस-पारित्येको निक्ष निक्ष क्षत्र पीरानेकारे कृत्यान करना। महान्त्री विकृत्यीओ राज्यान-जन्मनी सारम् देवेना, विकृत medican man piffin, farmit, priestry, fronte, annure after feltwe-pr us until freir untut affent सीय । एक कान करना है और एक की करन-अपका Brust und ausermant flege ablie under staffe सर्वपुर्ण-सम्बद्ध सम्बद्ध स्थापको निवृद्ध विच्या । सेन्यकी Name and, of their old the but was sont कारको हेक-साल करन अलेने सहस्त्रों किये किया। प्रमुक्ते देशान पहाई करने एक स्ट्रोफो एक करनेके बारावर arginal firgler utt soger alle beneatte some क्या पुरेशियोके कारी कान्येकर न्यूनी बीचा निवृद्ध हुए। स्कृतेनको अपने साथ एका। क्रमते सब क्रमण प्रकारी हो सबके करन क्रमा पहले है।

विक-विक करणो योग समझा, उन-करणो स्ती-स्ती कार्यवर निवास विकास स्थापित निवास स्थाप और पुणस्सी कार-'अप को स्रोत सक सम्बद्ध स्थार प्रतिदेश मेरे इन कुट निक्त एक कुरश्रामी होता करें। इनका जो भी कान हो, उसे डोव्य-डीव्य कर करना पानिये। इस नमा और अवने कोवारे सेनोट भी ये कुछ वर्त हो, की की प्राचनको अञ्चल होन्य पूर्व करण पाहिले (\*

र्वजन्मनर्थ कर्त है—कारण एक चुनिहारे पुरूषे को हुए अपने कुटुनिकोके सराम-सराम सन्द्र बरवाने। कृत्यकृषे अपने पुर्वेषे स्वयूने सक, का, गीएँ तक स्वयून क कर किये। कर राम पुरिन्दिन्ने प्रेरकोची साथ रेकर the, and, seems, affered, wherea, first wife for क्रमाने क्या पूर्व को बैक्ट्रिक्टरेक राज्य किया। अंक्रेक्ट जेरको उन्हेंने पूजरो प्रमुखेको जाना-जान कर, पार, भी एवं कर देखा रहता विकास । प्रभीत दिल्ला किन प्रकारिक कोई पर सबी सम्बन्धी केरिया की थे, प्रवास की बाद प्रमाण विकास अपने देनेची प्राम्योगनोर्थः प्रोपनी इन्हेंने अनेको कांग्रासारी, प्राच्यार क्या चेत्रोर करवाने : हत प्रमुक्त स्थाने औरवीदिक्षिक संस्थार कारों, से उनके स्थानीकी मुख हुए और पर्वपूर्वक प्रवादी करने करने हुए timelines are und ref e quest, remit, fegt क्षा क्षा कार्यक क्षेत्रके में प्राप्त के पति केन क्या और केंद्र प्रत्येका की प्रत्यान किया पार्टी है। विकाद की और का रजवाँको पारे को थे, कुर्वकारी इन प्रमुख दिक्कों से को प्रमानक साथ रकते और कात् सामा हेरेके काल इनके मान-वेपनका सब क्रमात रकते थे। क्षेत्र-पूर्णकर्षे, संबंदे तथा अन्तर्वाके क्रोड़े हिन्हें पर बनको और रहें बोबन वर्ग नक्सी पी स्क्रमा है है। सबके सन क्षेत्रसम्बद्ध कर्तन करते हुए

## च्यिद्विरद्वरा श्रीकृष्णकी स्तृति, भाइयो और कुट्टिष्योंका संस्कार तथा नाना प्रकारके दान

\_\_\_

र्वराज्यस्य कार्य है—मुनिक्किया राज्यक्तिक है | अकावस्थाक्ते प्रवास आरबी आरेवी राजेक्का सुनि क्रानेकर के परमान् अध्यानके क्रम क्षेत्रकर केले— फिक्स करते हैं। यह सम्पूर्ण क्रिय अनवी सीता है, आवर्षके 'मनवन् । आरबो हो कुछ, नेति, नार, बृद्धि और प्रधानको । हानदी अपने हुई है और जान है इसके अनदा है; अनवो मुद्रे अपने कर-करोबा का कमा प्रता हुआ है। अपन कमारा है। अन सर्वत कारक होनेके बारव निष्यु कुम्परकोश्वर । में अवस्था कर्मकर प्रस्तान करता है। परिवर | और विकास क्षेत्रों 'निस्तु' कारता है। हरे । असर ही और हर-अहर पुरुषे जान पुरुषेत्वर है। जान पुरुषपुरु परमान्त्रने ही साथ बार अधिकिक गर्मते सन्तर विन्य है।\* आप ही पुरित्यक्ति श्रमको अधिहा है। विहास स्थेन होने क्षेत्रीते प्रसार होनेके साराम जायको रिव्यून बहुते हैं। सारामी मोर्ति वही परित है, जान इतिहाँके देशक और सारास्थ्य है। आर हंत (युद्ध समय) बद्धालों है। वीर वेंग्लेक्से मानार संबद और जार एक है है। अन है नियु करन क्रमंत्रर है। चरह, जहि, क्रह्यक्, (सूर्व), क्यम (वर्व), गरहामन, अनीकरात् (क्यूकेनका केन स्थ सक्तकाते), प्राप (अपार्वाचे), विभिन्नेत्र, प्रापृति और उपान (बायन) आहे सामुक्ति मान है। अन्य समये केंद्र और प्रात्तेत्वर्ति है। सारायका, अवस्था क्या बंक्नी कार्तिका भी अहम हो है। आप कर्ष रहतो कभी भी विश्वतिमा न होकर क्राइतीको रोहे ह्वानेकारे है। विकेट संकारोते पुरू हैक और संस्थारकृत दिनेतर पहुल भी अध्यक्ति राजन है। कार है कार्यवानीकी वर्ष कार्यवाने कुछ (वर्ष) है। कुलवर्ग (बहरकार), क्यां (इंडक को कर बारोकारे) और क्वाकरि (वरिन्हर) भी शाम है है। सार क्री रिस्ट (प्रमुद्द), निर्मुण प्रमुख्य क्रम सुर्ग, यह सुर्ग शाहित्या दिवित्व हेन हैं, करर, कींचे और क्या-में बीन विकार की अरम ही है। अपने अपने वैकुन्यधानो अरमा pp quiter arant men firm & 1 and 10mt, firet, काराह और देवराम इन्ह है। यह प्रेराम अन्यक्षिते उत्ताह कुरव है। अपने पूर्वत व्यापक, दिश्य सरकार और विकास परमान्य है। आप है कृष्ण (समझे सम्मै ओर प्रीक्रमेकारे) और पुरम्पार्का (शर्तर) है। साम्ब्रीको स्रेप अपीत सामक, अधिनीकृतारोके रिवा, करिया गुर्नि, मानन, पता, सुन, पच्छ तथा पतानेन वाले है । आन मोरपेक्स्यारी और जनिक्सेच्ये न्यूनाने सीवनेनाने है। आप ही राज्यां सावपालको स्थात कालेकारे कोशा और पुरसंस् मक्षत्र है। सुबाबु (अस्तवा रिह्नालवर्ग), प्रवानका, सुवेज, इस्थि, गचरितनेति (कारण्याः), जीवन, कृष्यर, कृष्यरी अथ, विश्व अस्तर सहय और सहवारी—का पानेसे अववाद है कीर्नन विज्ञा करते है। आप है कार्ननिव संस्कृ प्रदार, परिता जान समा सामके प्राप्त है। केवल I निवान प्रस्त अपनाने ही हिरम्बनमें तथा सम्बन्ध, प्रसाह आहे जानेले

सविद्यानकारका अंकृत्या, विद्यानकारके अधिको वैद्यान । कुरान है ! कृत्या ! जान है इस कारके आदि कारण है। अस है इस है कार है और आधारिके सार्थ कारके हैं। अस है इसकी सुद्ध करते हैं और आधारिके सार्थ कारके हैं। अस है । किहान कोर हैं। कहा और यह कारक कारके हैं। असकी हैं। कहा होने कारक कारके हैं। असकी हैं। असकी केर कारक कारके हैं। केरक कारक कारके हैं। असकी हैं। असकी

वृत्त अवस्य वर्षत्वाने ज्ञा स्थाने स्थानम् विकृत्याकी वृत्ति वर्षे के उन्होंने की अवस्य प्रस्ता होनार राजा मुनिएसका अधिकत्वत किया। कर्नमार राजाने क्यारमें अपने हुए प्रवासकोची किया कर दिया। के स्था मोग उन्मार व्यापनी अवसे-अपने का कार्य गर्म। इसके बाद मुनिएसने सीमरोग, अर्जुन, स्वाप्त कार्य कर्मानको स्वापना के हुए स्वाप—'तिय व्यापको । यह स्वापना क्यानको स्वापना के हुए स्वाप-'तिय वृत्ति । इससे हुन अपून कर्म के क्षेत्र विकृत बाद उस मुक्ते हैं। अरहः अरह स्वापन सामानको स्था अस्यान करों। विश्वासके अस्यान का मुन्यास किय करना है ज्यानके, से दिन करना में तुत्र सोपनेते निर्मुन्त ।'

प्रवाहत् एका कारावारी अवस्ति पुरिवर्तिन क्रोंकर-वार पहल पीनलेक्से अनंग विद्या । सामें पहली स्टूबीनकों क्रेक है की थी, बढ़ी सरेका कवार नरा वा और व्यूत-सं कुल-क्रांतियाँ लेकके दिन्ये प्रसूत थीं : व्यूतवाह गीम कर बहुतने करे नवे ! कुर्वेकनका राजवहरू बेला सना हुआ an, वेतर क्षेत्र क्षेत्र पुरस्कारकार की का 6 अपने की अस्तवकारकी क्षेत्र व रहे भी । यह मध्य सेनेकी बंदनवारोंने समान्य नव a. वर-क्रम और दास-क्रांसिकोंने सामूर का। संसाधी क्याने का कारण अर्थुनको पिता । तुर्वनेत्रका पहल से इ-प्राप्तको भी सुन्दर था । यह सोने और मनियोंसे सब्ब होनेके कुरात कुरेरके क्यानकारके भी नात करना का। उसे कर्नका पुणियोग्ने न्युरस्को विकाः वृत्त्रेसका सर्गवर्षका स्वरूत सी का सुपर नहीं था, व्या स्कोक्सो दिना गया । मृतुस्यु, सिंदुर, सहाय, सुकर्ता और बीमा—ये स्तेम अपने-अपने पहलेसे ही एक नोचे सामार विशासनाम हुए ( पनवान् श्रीकृतन शासक्तिको कार संबंद अञ्चेनके पहलने बारे गये। इस जकार सब क्रमानीरे अपने-अपने स्थानक जान-पान बनके बड़ी अस्ताताचे काम राह व्यक्ति की और फिर समेरे बहकर सम एक कुर्विक्षित्वी सेवाने अस्तिक हो गये ।

कानेकारे पूछ-विकास ! एका नुविद्याले साम

<sup>&</sup>quot; आदिता और कारनों। सामे से बार सामान् अधितंत्रं गर्पतं और पृत्तानर्ग, प्राञ्चान, जोवम, बरायन और औन्तानों। इन्हों प्रीप बार उनके सामान्यांत पृति आदि अना कारोंचे पर्यंत पर्यंत्रकालं प्राप्तानको बाद करी गर्प है।

पानेके प्रक्रम् और जो-जो कार्य किने हो, हम्दें कार्याने । साथ ही तिपुत्रनगुरः प्रकान् औकृष्यके परिशेका भी कर्तन स्थानन

वैसम्प्रकार्णने कार—एकर् । कुर्णानका पृथ्वितार्थं एम्ब प्राप्त करनेके बाद सकते प्राप्त वाले क्योंको कोन्याको सनुसार अपने-अपने कार्यक्रम् (त्या क्रिया । किर प्राप्ति सामक प्राप्तानीमी प्रत्यक्रम् अनुने एक-एक प्रया-सर्गानुहाई कुन थीं । प्रत्ये दिन्य, क्रियार्थं क्या सहित्यक्रोंको स्थानुहार कहाँ केवर संसुष्ट किया । गरीवो और क्यान वस्तेवारवेची की कामगर् कृष्टं वर्ष । अपने पुरोबेह कीम पुनिकों उन्होंने इक्कों और, वर, सुकर्ण, पादी तथा जाना अवस्था क्या का किये। कुलवार्यका गुरुकों औरि पूजन किया और विदुश्लीका पुनवकों पाति सम्मान किया। दिए अपने असीरवेचों काने-दोलेबी बसुई, कम अवस्था कहा, कथा क्या अस्था देकर असा विद्या। इसी अवस्थ उन्होंके कथा पुरावकु और उनके पुन मुस्सूका भी विद्यान अस्थ करा क्या है विद्या करके मुक्तिहर कहे विद्यान और स्वार्थ हो नहें।

# युधिष्ठिरका भगवान् श्रीकृष्णकी आज्ञासे उनके साथ भीव्यजीके पास जानेका विचार

विशासकार वहाँ है—इस अवस समूर्ण स्थापने स्थापने संद्रुष्ट करने में परकार सोदानको का उसे और साथ प्रोद्धार करने से उसे अपने नेवार करावार को का स्थापनार करने प्रोरानेको स्थापन सुकोचित से की है, स्थापनार करने प्रोरानेको स्थापन सुकोचित से की है, स्थापने तेय करन का है और उसके अप-अपने किन्न आपूर्ण सोपन या से हैं। अवसा प्रोप्तायकार करने विश्व कर्णवरित जीवकोचे स्थापन अपने हैं। इस क्येक्ट स्थापनेको तीची लोकोचे सही की अपना अपने हैं। इसकोच स्थापन अपनाएके निवाद स्थापन एका मुनियान प्रशासको हुए सोरो—'करावपन्न अपनी स्थापने इसने राज्य प्रमा है, स्थापनियों स्थापने इस विश्वती स्थापने इसने राज्य प्रमा है,

इस प्रकार एकाने कई वाले काई, यर वनकान् प्रकार कुक की जार नहीं दिखा। इस समय के सामवात हो जो है। इसको इस निवतिये देवनार वृधिहितने कहा—'कावान्। यह का, जान किसीका कान कर को है? कह से को सामविती कर है! माला। अनमोर ऐगरे कोई हो जो है, करीर करा की हिस्सा नहीं, जुनि कुछा का की तीका है। आवका कह निप्ता काठ, एँकार और मालस्की कहा निर्माण है यह है, दिल-इस नहीं का है। कई हमा जो है, उस स्थानमें कैसे एँकार की करियों नहीं, स्वायान करानी कहा है। में एड अप भी निवर है, मानो क्यावनारी मूर्ति हो। वहि में सुन्तेका अनिकारी होतें और का मुक्तर कियानों कराने में सुन्तेका अनिकारी होतें और का मुक्तर कियानों कराने सावार वर्गवार कारण करता है। पुरुषेतार । आर ही हता



कन्त्रमें कराने और विगायनेवाले हैं, आप ही श्रूष और अवहर पुरूप हैं, अक्त्या न आदि है न अन्त । आप समके अब्दि करान है। वै अक्त्या करनागा पक्ष है और पावा केव्यार आयो करनोर्ने अन्त्रम करना हैं जाप मुझे इस बाराका साम क्या हैंदिये।'

पुण्यित्तको प्रश्नेत सुनकर मन, बुद्धि तथा इन्हिप्तेको अपने-अपने स्थानक स्थापित करके समझान् औद्राव्ध पुरस्कानो हुए केले—'सेवा! सम्बद्धानाम् महे हुए

धीधारी इस समय मेरा बाल बन रहे हैं, इस्मेरिये मेरा भी यद अने तम गम है। किन्तेने देईत दिलाई परकुरायमीके साम शुद्ध किया तो भी उससे पठवा न हो सके, वे ही भीकरी संध्राने प्रतिकारियों क्लिकोंको एकान का सुनिके प्रार परको भी अपने अभीन करके मेरी जलको का गर्ने से । इसीरिको मेरा भी यह उनमें सन नवा । मनवारी गाउने किये विक्रिक्त अपने गर्थने कारण विका, विक्रोंने मार्नि प्रतिक्रमीचे विका पत्ती, से सन्तर्ग विकासों क्या अझेसडित वारों केटेके इतक हैं, क्यूबी निवासीके आवार है, ब्रह्म, प्रविद्या और पर्वपान किनाबी दृष्ट्रिके स्थाने है, उन क्षयंत्राओं हें योगमंदि यह आ कर्म में यनके या पहेंच गुरा का। पर्शांक प्रोत्यानीके सर्गवारी हो कारेना गा पुर्वा अनावसामध्ये प्रकार समान स्वेतीन क्रे माननी। कारीको जाप रक्तकको बीचारीके पात मान्यार उनके कालोरी प्रचान की किने और आपके करने निकने कीट हो। कर सम्बद्धे कारो पुरिन्दे । वर्ग, अर्थ, स्वरूप और मोश-का पार्टे फारावेंद्रि स्टब्स्को होता. सरावा, सहा और अन्तर्गरी क्रमा राज्याने प्रमाद क्रमेंको एक पार्च जानमें और शुकाओंके समझ धनेतिके आप करते पुरिन्ते । वर्षेत्वकंत्रका चार रीयात्रयोगाहे चीववाडी शूर्व विश्व समय असा हे व्यक्ते, का राज्य का प्रधाने क्रानेको प्रधान ग्रह है साम्प्रः क्रारेतिको में आएको कहाँ करानेके विको स्वास है।"

भारतम् अविकृत्यास् स्थानं कार्ते सुरकार पुरिन्हेशस्य चित्रका कार्य स्थाने इस कार्याः इतिस्य प्री ।

मान पर आवा, ये नेवोसे साँधु मान्ये हुए मान्ये स्थे— 'पानवा ! आप पीन्यवीका वैश्व प्रधान कारत रहे हैं, यह सम ठीक हैं; जानें श्रीक्षी सिन्ये मुंबदास नहीं हैं। मुझे यी कावा प्रधान कार्युत्त है। कार्ये महान् सीमान्य और प्रधानके विकास मेंने वर्ष न्युत्रमा प्रदाननेकी कार्ये सुनी हैं। आप से सम्बंध निवास करनेकी आधानकार नहीं हैं। सम्बंध ! अर्थ अपना पुरानार अनुवाद करना कहते हैं। सम्बंध है अर्थ कार्ये प्रधानेन मीन्यवीके पास प्रश्लेख विकास करते हैं। कुलींद कार्यानन होते ही ये देवलोकने करने सार्थित हार्यों का कहीं भी आपका हार्यन निरान्य है।

वर्गत्वकार्ध प्राप्त प्रमुक्ति कर है के हुए स्वार्थिको प्रमुक्ति एक रिवार कराओ।' अध्या प्रकार स्वार्थिक दिल्ला प्रमुक्ति और द्वार्थिको करि— प्रमुक्ति क्रम्यो एक कोलार रिवार विका । मण्डाप्ति स्वार्थिक स्वार्थिक प्रमुक्त परिवर्धि प्राप्त कराव । मण्डाप्ति स्वार्थिक स्वार्थिक अध्या स्वार्थिक गर्मा कराव । सूर्विकी विकालेके प्रमुक्त स्वार्थिक स्वार्थिक गर्मा के गर्भिकी स्वार्थिक स्वार्य स्वार्थिक स्वार्थिक स्वार्य स्वार्य स्वार्थिक स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थिक स्वार्थिक स्वार्य स्व

## भीष्यद्वारा भगवान्की स्तुति

एक रूपरेजने पूज-मुन्दिर ! कामध्यापर को हुए ! विसाय: पीकरोंने किस प्रवार अपने करीरका कीरका विकार ? जा समय क्योंने किस बोजबी बारक की ?

वैद्यानकारी कहा—राज्यू ! हुन परित्र सामारे एकार्यका एवं सारवाल होका सामार स्थान है। उस महिकारण स्थान हुआ और सुर्व इतर-मार्थर मा पर्व, का समय पीकारीने सामार्थ होका समयो परमालामें समाया । उसके सास-पास मानेको साम इत्यान तिराधालम थे । पेढ़ोंके सामा सास, देवाँगे साम, देवरवान, सारव, असमा, सुमानू, वैद्यानि, केन, पर्वाचाल, देवरवान, सारव, व्याचान, सुमानू, वैद्यानि, केन, पर्वाचाल, सोसल, मोनेन, सरिद्या, कोरिन्स (निश्वाचित्र), हारीय, सोसल, वालानेन, कुक्तांत, सुन्न, संस्थान, सरसुर्वान, सारित्र, वालानेन, सुन्नुत, कुल, घोर्थ्यान, सरसुर्वान, सारित्र, सारवीत, सुन्नुत, कुल, घोर्थ्यान, सरसुर्वान, सारवित्र, सिद्यान, कान, संस्थान, पुत्रुत, कान, सरस्थान, पुन्तम, सन्, यस, मरासर, मर्टाक, अद्विमा, कारम, गीतम, कारम, बीतम, कारम, बीतम, कारम, बीतम, कारम, बीतम, कारम, बीतम, कारम, बीतम, कारम, कारम कार्य, कारम, कारम,

पोणार्थं केले—में श्रीकृष्णके साराध्यकी इच्चारी किस क्योच्य प्रचेण करना पहला है, यह विस्तृत हो या संवित्त, जो सुनका के पुरुषेत्वम सुनवर अस्ता हो। यो स्वतः

कर है, किमारे प्रतिका कर्न के सर्वक कुछ है, जो समये | विकास करणान इस और कबूरे बहुत कहका है, बिक्के Arren ferrent i als smaller uns mebuch मानेवी है, का मानावाची में करन तेवा है। कपूर्ण कार्यको बारन करनेकरे संबंधि पर्यक्ष करकार है, उसके र अबी है में साथ । उन्हें ने देखार कहा को हैं ने सहि । एकावार है माराज्य है समयो सन्तरे है। सराज्या है और उत्तर हुए है, सिद्धों और बो-को मानेका को अहीने अनुर्वाद हुआ है। केवल और देवर्ति को उनके विकास पूजा हो पहली है कि वे अभिनाको परमाना है। सिंह के धनवार गाउनक काँव है, कार्यने अन्ते हैं—इन कार्यका अवस्थित हैन, कुरत, कार्य, मध्, राज्या और प्रावेशित विश्वविद्या गाउँ है। उन्होंने स्वपूर्ण अभी रिका होते हैं और अहीने उनका एक होता है। वैशे होतेने प्रकार विशेष होते हैं, जारी प्रधार पर पूर्वपूर परपाताने सन्दर्ग ते गुलकारक पूरा निरोधे हुए है। अनवान् साथी पह उ हेनेक्से एक को हुए सम्बं कुछ सकत है करने का बार्च-बारसम्ब करा, उसे प्रकार पूँचा कृत है, जैसे कुले मारत । प्रानुपर्व विद्या अपूर्वित आधारपर विद्या कृता है, यह क्रमीची रचना है। का बीहरिके इवारों नक्तक, हुकारें के क्षण क्षणते नेत हैं, इसके मुख्याओं, इकते मुख्यों क्या इसके मुंगोरो में देवीच्यान रहते हैं। में ही इस जंगाहर परण आधार है, व्यक्ति नारान्य वाले है। वे कुराने के कुल और महत्त्रों भी त्यून हैं, मारी-से-भारी और काल-से भी काल है। बाब्द और अनुस्थानीये (जन्म और प्रस्तुवनीये) क्रमा सर्व और ब्रह्मार प्रतिपाल करनेवाले कार्याने विकास स्वापक प्रतिवादन वित्या गया है, यह सरकार्य बन्धान् बन्होन ही है: में ही 'साम' संक्रम जामाओंचे परवार्थ तथा है। विस्तार अन्तः वरणार्थे क्रम्बा दिल निर्मात (स्वयूनकार) होता है, वे अपने मकोका राह्य पारण करते पूर्व है। अध्यक्ष, करन्यू, अगुर वर्ष अभिन्यु-पन कर सकरोगे में ही संबद होते हैं और पत्तका का बार दिन जारोगे क्वीची एक दिन कारों है। मगवान् कर्युवेनकी है उल्लाबको देखे निवर कर (नैरिक्स कर्म) का अनुहार किया काल है, वे 🛊 सकते मीतर विशासमान है। वे सक्के सामग्र, समग्री कालेकारे, सर्वात्मका एवं समझो अन्य करनेवाले हैं। वैसे अरबी अहै। प्रश्नेद काली है, उसी प्रधार केवली देवीने इस पूजवालक फनेवाले प्रक्राणों, बेट्रो और वसंबंधी स्कूबंद स्वें किन्द्रे वसुरेको स्थापनो प्रकट विका था, समूर्व कामसावेका त्या कर अनवासको स्थित सुनेवस्य सायक बेक्के मोत्रमते अपने विद्युत् अन्यत्यालमे वित्र प्रश्न-पुत्र

हेक्के सकते कुर्वाची कोई इसी नहीं है और विकास कारणक पहुंचके का, सुदि क्या हिंदिको वहंच सहि है करो, उन प्रधानक प्रानेकाको में कृतन होता है।

पुरानोने विश्वक 'पुरान' कामो कर्नन किया गया है, के कुरोते जाराको 'स्मृत' और पुजराते साम 'संस्थित' स्ते को 👢 का उपलब्धिय परमेश्वरको में उपलब्ध करता 🧗 मो एक क्षेत्रण की अनेक कारेने प्रकट हुए है, सरका क्षा में स्थाप है स्थाप करोंने हुए क्रमण पड विन संस्थानक क्या करते हैं, किये संस्थानक मोक्का मही है, दिनमें के संदर्भ प्रकार दिया है, क्राईसे कर विनेक्ते कर-पश्चिकी वस विनेत्र है करा का क्यूनी क्याची नेहारी हो को है, को परवार्थ सामानक और क्ष्मका का (अन्त) है, बाद और समाहो किल्लान है, रिकास अमेर, पान और राज्य नहीं है, सिनों म केरता रोक-द्रीय करते हैं न मही, असी का और इत्रिक्तेको कारिया करोर क्रमूर्ण केवा, असूर, क्रमूर्ग, विद्यु, सार्थ क्या करनम किरमी एक पूज किया करते हैं, जे केवरवारी पुरारते प्रकृतिक विको पानले सही जोतानि है, जो जन-कान्त्री को प्राचन को प्रमाल देवता है तथा को इस नेवों और बृद्धिकों स्कूरिके अंतर है, इस समाजा नाराध्यक्ती में करण रेवत है। मी इस विकास विधास और क्रमा क्रमांक कार्या है, किन्दे संस्तरका सामी राज अधिकारी परावस काही है, उन परासामान्यों में करण सक्त करता 🟗

के कुल्मीर सम्बन कारियारों और देखोंके संक्रमा है. क्य होनेल की रिलों अधिने वेदीने अपने पानी बादा अविकारित कार्य जाता किया, का सुर्वातका परवेशस्त्री न्त्राच्या है। यो अपनी अपूर्णानी कलाओंने सुप्रमाने केवलाओंको और कुल्कादको वितरीको शुप्त करते हैं तथा जो क्लून देखेंके एक है, उन कहातके कार्य प्रकट हुए परमामको जनम है। यो आनवन पहान् अभावासी परे और उस्ताबेकने अस्पत्र प्रकारित होनेवाले आत्या है, जिलें क्षण हेनेका सनुष्क चीराके चंतुकारे कुट जाता है, इस हेपकार कामेक्सको जनसङ्ग है। उसम जायक कुट, बहको समय, अञ्चलकारो स्था महासम्बे अञ्चलका विस्ता आहे। कारो साथन करते हैं, इन बेदावनकात्त्वो नगरकार है। अन्वेद, क्यूके क्या सम्बंद विलवे अस्त है, पाँच प्रवासक इंकिंग किरावर करण है, चया अगोर स्वत क्या ही विस्तेत आरमास्य शेक्टिका जन्दिको साम्राज्यस् काम्रा है. जन वर्ष है, जन कान्द्रे कार्ये प्रकट हुए परमास्य-

को प्रमान है। बार, 'बार, ' के? चीन " और वें ' अश्वतिवाले प्रचासि क्रिके इंग्लिंग अर्थन क्रिक च्या है, 🖘 बेक्सका प्रत्येक्ता अस्तर है। में 'पदः' का करन क्रानेक्ट्रे केल्पी पूज है, क्या कर्क कर विन्हें per-fr ant, seven f. up & front room & un 'रवनर' और 'कुल्' नरक सन है किन्दी सरकवन्ते कर्ती है, जा कोरानों करकारों असने है। ये हसर करोरे कुर्व हैरेकले प्रकारीओंक करों संटेक्ट बॉलकले क्रिके कालो प्रयद्ध हुए थे, उन क्षेत्रकारको पानेकारको प्रकार है। पहेंचे राष्ट्र विकोर अपूर् है, स्थीर विकोर प्रकेशनी क्षेत्र है, एक और प्यापन विरुक्त किये आयुक्तका करन के है तथा दिन्हें दिल अकृत पहले हैं, का वरनेकाओ सामीके कृतमें स्थापन है। किन्तुंति होनों रहेक्ट्रोका हैल कुरवेर्ड केर्स क्षान प्रकृत साम करने करने इस कुर्वाचे सामाने कार काम क, इर केर्काम परावस्त्रे उत्तर है। के अवर्ध चेनवामामा समय तेवा केनानो हमा क्षेत्र को हुए कांग्यर क्रमा करते हैं, या निकासका नामकानो मनाबार है। जिल्ला राजा बनाबार बेम्बर बनीर है जिले है, क्र बहुत को हुई हरिएकोड हुए को बोह्यदे सम्बद्धा bles anith use bur teint mi-milge best क्रांत्रे हैं, वर प्राथमा सरकारको प्राथमा है। के fore-firm unifer source until sever-more point पुरतेको प्रकारको है, हेने दूका दूका क्लेंक प्रकारित स्थारित क्या करते हैं, का कांग्य करवानुस्ते असन है। निस्त अन्यक्षी हेरवाले समून्तं अञ्चलके प्रतिन्त्रोक्त कन होता है. विवासी समाना और जनक हो उससे हैं, उस बानको बनने प्रकार हुए परमेहरको समाधार है। जो सहस अन्यक्ते अवस्थानको विकास है, यह यह पूर्व विकास सम्बद्ध अनुरोधन करते रहते हैं, को समूर्ण होताने होताको सामी बैठा दूसा है, का क्षेत्रकरी परामानको प्रत्यन है । यो बाग्य, क्या और सुन्ति कारकाओंके नेवले विकास करेंच होते हैं. मुजोके कार्यकृत कोल्य विकारोते आकृत क्षेत्रेकर भी अपने स्कारणे ही विका है, सांस्थापनके अनुसानी किन्हें उस खेला विकारोंके बाजी और उससे निर्देश स्वकृष्ट तथा (पुरूष) सानते हैं, इन शांकारका परवासामाने नगरकार है। को जैसको जीतकर प्रकॉपर कियब का चुके हैं और इन्जिनेको अपने बहार्ने बहर्षे हुन सर्वने दिवा हो रूपे हैं, वे निरसर भोगाच्यासमें रूने हुए योगीयन समझिने विशवेद जोतिनय स्थानका साधारकार करते हैं, उन बेगस्य परमानको

प्रमाण है। यह और कृत्या इस हे मानेदर पुत्रवेगके समये हुए हुए प्रारमिक संन्यारी निर्मे प्रश्न करते हैं, उन मेहन्या मानेवारको जनस्या है। सुदिने एक समर पुत्र मेहन्या प्रारम् व्यापनीयो पुत्र मानवारको अतिया स्था साम प्रारम के समूर्य अतियोक्त संदा करते हैं, उन मानवारको सामायको प्रमाण है। इस प्रमाण कर देते हैं और प्रार्थ सामायक प्रमाणको सामायक कर देते हैं और प्रार्थ सामायक प्रमाणको सामायको निर्माण प्रमाणका है। उन मानवारक प्रस्ता हुए स्था सामायकार है। किसार पह तिथा निर्मा हुआ है, यह सामायकारण निर्माणकारको सामायको सामायकार है। प्रमाणकारको सामायको सामायको सामायको।

विकार प्राप्ति काला है, को अन्तर्वातीकारो सम्बंध र्वात विकास है, विकास सरका विक्रो सोमारी जानह and & all mad projekt finnels marrie if meber केवीयामा सामन रेका प्रका करते हैं, का केवीयामा प्रत्यानुको प्रकार है। विन्द्रं प्रत्यके प्रत्येको सन्द केन है, प्रशेलके ब्रोक्किन स्ट्रील है और अपने वारी सन्द्र E. pr mout wenneth were \$1 4th aft meene man freie fiert neu dit f afer fereit d sterte me den & an europen unbereit werent & : 1 wed of 40 this & site Rook were multiper from को है जार को उस्ता हो सबके जाने कोची देखते होते हैं, उन ब्रह्मकर्ती परमाञ्चलो प्रभाग है। निन्हें कोई भी करन करनेते स्थानक नहीं होती, को वर्गका काम करनेको सर्वात स्थान को है का को वैकुक्तरायके स्थान है, का बार्यकर क्यानुस्त्रों क्यान्तर है। सिन्द्रोंने क्यांच्या क्रेसर भी क्रोसने क्रका करि मोरक्टा अल्डान करनेको इतिन-स्थानका क्ष्मी प्राप्ति कर संबंध किया, कठोरताक अधिनय क्रमेकारे का भागान् वरक्तापको प्रकार है। से प्रसंद इरोनके चीवर कन्यूकरणे रिका हो अपनेको जान-अधार अभी और सम्बद्धीने विश्वक करके सम्बद्धी प्राणियोग्ये क्रिकारील कर्या है, का कायुक्त कार्यकाओं नामकार है। को अलेक कुमने योजनावाके करनो अञ्चल धारण करते हैं और फार, क्या, अवन तथा वर्गीय क्रम सुद्दि और प्रसम करों रहे हैं, का बालका परमानको बनाय है। ब्रह्मन जिनके क्या है, सन्दर्भ स्थित-वाति कुछ है, नैसन जेना इसे का है और पूर विनेक परनोंके अधित है, का पार्ट्समंद्रम परवेदारको जनस्वार है। अति जिल्हा मुस है, कर्ग महत्त्व है, जावरत राजि है, पृथ्वी के है, पूर्व के है | वहते हैं, इन कावनवारी जनवाद केवरको अवस्थ है। वो और दिहाएँ बार है, उन स्वेकराज करवाताको जावन है। | कावूर्व जानियोंके सावत और उनके काव-मृत्युके कारण है,

में बजाने को है, जाने की को है और कोने की असल को है, जो सन्दर्भ निवाके आहे हैं, बिन्तु विकास आहे कोई भी नहीं है। या विश्वास अलेक्सो अलाहत है। वैदेशिक इसीनमें बताये हुए करा, रहा असी मुख्येंके हुए। असहह हो को रवेग निकरोचे रोकाने अपूर के के हैं, उनकी उन विकासि अस्तिमें में एक करनेको है, का एकका परमानको प्रयान है। यो अध-मारानो ईनाओ पायर भूतीरके भीतर रहा और अल-मुजीवको बहुतो करा हरपूर्व अभिनोधी बाल क्ये है का अन्यव स्टेन्स्से नगरकार है। प्राणीकी रक्षाके हैंकों को प्राप्त, फोल्ब, फोल्ब, रेखा-पार प्रचारचे सर्वाचा गोप रणको 🛢 और कर्न क्रे पेटके पीतर अधिरामने विश्व कोवरणो राजने हैं. उन पाळाल वर्णकृतको अलाग है। विकास वर्णकृतक **एक्स्पा क्रिक्टकरिएका अन्य क्रावेकार का उस कार** रिक्के के और केंग्रे कर नीरे दिवानी को थे. बर्ज-नहीं को और रक्त है किये अल्ल है, क क्षरेक्यवादी ज्ञानात कारिक्यो प्रकार है। किये व केव्या, व गावती, में देश और न समा हो केन्द्र-स्टेब्ट क्रम पते हैं, क्रम सहाराज्यम परमाञ्चलको परमाञ्चल है। जो सर्वाच्याच्या चनवार् शीवार् अन्यवस्था क्षेत्रसन्ते काले सामान्ते गुन्दर सन्दर्भ साहतो अस्ते नक्षण्यर अस्त कर्न है, ज क्षीर्यक्ष्य परवेक्ताको अलाग है। यो इस प्रक्रि-साम्बराकी रक्षके रिजे सन्दर्भ अभिन्योको बोह्नकर्न बोह्नकर सेव्हरे क्रते रक्ते हैं, वर बोक्स्य प्राप्तानको समस्यत है। अक्रमादि चीव कोचेरे विका अस्मातम अस्माता प्राप होनेके पहार, विकास क्षेत्रके हता विहार पूरत किये जह करते हैं का सम्बद्धका प्रशासको जाना है।

विश्वा करम किसी प्रयानका निका नहीं है, जिनके मृद्धियों नेत सम और जाड़ा हो थे हैं जब किसी जीवर अन्य कियोध्य स्थानेश है, अर विष्णात परनेश्वाची मनवार है। यो यह और जब करन कमे हैं, स्थानेश मिरवार है तम जिनका कमकार है तुलीका कस केत है, का महानोचे स्थाने कमकारको प्रयान है। यो विद्यार मानव करनेकरे और केताओंचे स्थाने हैं, विश्वेत कैरतेत है, को स्थान हैं तथा कियोंने सभी हतिका विश्वेत स्थान रसी है, अर केतान परनेश्वाको कमकार है। कियो मसावार गर्ववासका मुख्य और करियर सर्वका कोत्यांत होता है सह है, को अपने हमाने विश्वाद और विद्यार कारा

क्सो है, का सामानारी जनवान् क्षेत्रस्त्रो अन्तर्थ है। वो क्ष्मुर्व अस्तिनोंके सामा और उनके क्षा-पृत्युके कारण है, विन्नो प्रोण, पोड़ और चेवाच्य सर्वका अन्तर्थ है, का क्षम्यका कार्वकृत्यो अवकार है। विन्नो जीतर सम कुक क्षम है, विन्नो का अन्या क्षेत्र है, यो कर्म क्षे सर्वकृत्य है, सम और म्यान्य क्षेत्र है और शरीन्य है, का सर्वाध्यक्षे अन्तर है।

का विकास रचना करनेवाले कार्यका ! आकारे प्रकार in flouis anne afte frend multius amreje क्यार्टक्ट 1 अवस्था क्यारका है। अवस्थानि भूतीने परे हैं और क्रमूर्व क्रमिन्वेक क्षेत्र मोक्रम्बार क्रम् है। सेवे क्षेत्रोंने ब्याह हर साम्बो नन्त्रसा है, विकुल्से पी क्रमेकारे सामको प्रमान है, सन्दर्भ दिवाओं ने नामक साप प्रथमों स्थापन है। आर एक प्रश्नोंने पूर्व नेवार है। Stands and universit adversit weeks, forg I क्रमको सम्बद्धार है। प्रतिकेश है जान सम्बद्ध सम्बद्धार और नंबरपार्थ है। जान विकास पर्याप्त पूर्व होते। मैं रीनी रोकोने आके देख राज-कर्मक कर की कर परा: है में क्लाओं आवार के लगान का है, जाति और स्था रक्ता है। समीकेस सामें मध्यको, पृथ्वीकी आयके पैरोंके और प्रीचे क्षेत्र अवनंद्र और परोधे प्रयास है, सार रुक्त पूर्व है। दिलाई आरखी चुनाई, पूर्व आरके के और अवस्थि प्रकारमध्ये आरक्षेत्र गीर्थ है; आरमे ही आरस्य वेकारी क्यूनो काली काली लागी लोकीको नाहा कर पहा है। प्रित्नहीं कार्रंक कार्लाके क्यानी प्रमु स्रोक्ती है, करिएए पीताबार क्रोबा केता है, क्षेत्र अपने बारवारी पार्च का भी होते. इन भगवार सेनियाने के होन समावत करों है, उने कभी पर पड़ी होता। परवान हीकुमाओ एक कर भी जनान किया कर से का का अवसेत करेके अन्तर्भे विको नवे स्थानके प्रस्ता करत हैनेवारत होता है। हर्मा क्रिक प्रचानी एक विशेषक है—यह अनुवेद क्रमेक्टोक्ट के पुर: इस संस्थापे क्या क्रेस है, किंद्र बीक्रमको प्रथम करनेकाम मनुष्य किए प्रथ-क्रमाने नहीं पर्वत । विन्होंने स्वेकृष्ण-कमान्य है का से रका है, जे क्षेत्रभाव विरक्ष काम करते हुए है राजके होते हैं और न्त्रीक्ष करन कर्त हुए सर्वर क्षत्रे हैं, वे बीक्रमास्त्रा होबार उसमें का करा मिल करते हैं, जैसे पत्ता प्रदासर क्रमन किया इसा भी अधिने निस्त जाता है।

में सम्बन्धे काले क्यानेके दिने रक्षा-गृहका निर्माण कालेकाले और संस्थलको कृतिसमी केवली कर आस्त्रेके रिन्दे कारको नावके समान है, कर पनकर निव्युक्तो नगरकार है। को प्राधानोंके देनी तथा भी और स्थानके क्षिप्रस्ती है, जिससे समजा विश्वका कामान होना है. उन स्विद्धक्तकाम् धरमान् गोकिकाते उत्तम है। 'हर्र' ने के अबर होन पूर्व संबद्धके समय प्राचीके विन्ने एक सम्बद्धि सम्बन्ध है, संस्तरकारी चेनाले कुळकारा विकालनेक विजे भीवनके तरप है तक रस अधारके दुःश-क्रोकरी नकर करनेवारे हैं। वैसे साथ किन्तुवन है, वैसे क्राप संसार विज्ञान है, जिसे प्रचार एक कुछ विज्ञान है, जा प्रचार इस सम्बंध प्रच्यवसे मेरे सारे कर जा है जाने : केक्सकोरे हेब्र कामानावर कामान् क्षीकृत्व ! मै आवाद क्राव्यात भक्त है और असीह गरिकों जह करना सहना है, जिसमें येत भारताल हो, जा आप ही प्रोतिने । जो निवा और सम्बे मन्यास्थान है, जिनको सुरता कोई जन्म केनेवरन नहीं है, हम भागवान् विभागवा की इस प्रवास बस्तीका बहुके कुरूर विश्व है। इससे ने चगवान् अध्योग मुहत्यर प्रस्ता हो। जगवान ही प्रस्तात है, जरायन ही परन का है, प्रशासन ही सनते की देवता है और परावान जरायन ही सब सन कुछ है।

वीरकारको अपने हिन्सीकारका कर करवान्। और वे को आरोका करते पूर् की का रहे थे।

श्रीकृत्याने हमा दृत्या या, उन्होंने क्रमर बतायी हुई हुति क्रम्नेक ब्रह्मम् 'नवः कृत्यान' कहनार उन्हें प्रशास किया। श्रीकार की अपने केन्यानको श्रीकारीको व्यक्तिको जानकर स्वाक्तिका कोचा करानेकाचा हिम्म प्रार केवन होट गये। कर कीन्यांका कोचा करानेकाचा वह हो यक हो नहीं केठे हुए स्वाक्ति क्रमिंकोंने आहेगोंने आहे। प्रशास कराने की क्रमिंकी प्रशास करने हमें।

श्वार पुरुषोत्तव श्रीकृष्ण पीध्यशीका प्रतिप्रमान देखकर स्वारत गर्छ और हुन्छ श्वाप का ग्रेष्ठे । श्रीकृष्ण और स्वापिक कृष्ण श्वाप को । कृष्णे स्थाप प्रकृष्ण पुनिहित और स्वर्ण का हो थे । श्रीवर्णर जीव, नकुरू तक स्वर्णे —ये तीनों वर्ष्णे स्वाप थे । कृष्णकर्ष, पुनुत्व और सक्रण भी श्रीको-वर्ष्णे श्वाप प्रविधार पीक्षणोंके पता प्रते । सर स्वर्ण व्यूष्ट-से स्वाप्य पार्टी पुरुषोत्तव कार्यान् श्रीकृष्णकी स्वृति कर हो थे और कार्यान् सरसावानुकेक स्वर्णे सुनते का हो थे । कृष्ण लोग सुन्य जोड़कर भाषान्त्रके प्रश्वीने स्वर्ण करते थे और थे अने स्वर्णकर करते कर कर्ण का हो थे।

\_\_\_

#### परशुरामजीका खरित्र

रैजन्यकार्यं कार्य है—स्वानस्य कार्यम् सेवृत्यः, द्रारा पुनिद्धिर सेव पाव्यम् तथा कृत्यवार्यं अस्ति स्था लोग् अस्ति गारावार्यः विश्वस्य रचीत्रे कृत्योगार्थः और वदि । शासीयं कार्य-कार्यः कार्यम् सेवृत्यः स्था पुनिद्धिरको प्रस्कृतस्यीयस्य स्थाप्तम् सुनाने स्था—'राज्यः' वे को पर्वेष प्रस्कार दिकार्या स्थापं है, 'क्रम्कृत' के साम्यो अस्ति हैं। प्रस्कृतस्यीये कृत्येस्य कार इस सून्यकार्यः क्ष्मिनीका संकृत्य करातेः इन कृत्योगारे उनके कृत्यों भग्न था।

वृद्धिक्षारी पूजा—बहुनाया । जान परस्कृतसमीने पूर्वकारणी इस पृथ्विको इस्तील कार वृद्धिकोरी सूची कर दिवा को विका क्षत्रवी इस्तीत कैसे हुई ? उन्होंने अधिकोका संक्षार कर्ने विकास ? पैरे इस संक्षेत्रको जान पूर व्यक्तिको; क्योंकि केर-कृत्वा भी जानसे क्षत्रकर नहीं है :

वैज्ञानसभी कार्य हि—स्वन् । क्या पृथितिसके इस प्रकार पूक्तियर श्रीकृत्वने का सम कटन जैसे प्रक्षि हुई थी, सम जो का सुनायी।

स्रोकृत्य <del>जेले कुटीमका । येने प्यार्थियोके कुलले</del> परञ्जावधर्मीके प्रधान, परासन क्या जनकी कथा किस ज्यार सुने है, यह सब अस्त्यते सुनात है; तुनिये । प्राचीन कारसें इक बहु क्या राज है को है; उसके कुछा नाम का अब । अससे कारकाकृत्या अन्य कृता और कारकाकृति पुरस्य पान कृतिस्य हरू । व्यक्तिक को धर्मा थे, उन्होंने पुत-आहिक रिन्धे करते । क्यारा की: इससे साक्षात् हुन्। ही उनके पड़ी पुत्रकारों अवसीनों हु() इसका कर कह कमि। सना गामिके इस पुने हुई, किराबार जान का सामक्षी । एकाने प्रमुख्यन व्यक्तीक सुनिके साम करने का कन्मका बाह का दिया। सामकी बंदे अक्टार-विकासी रहती थी, कामधे शुक्रण देशकर श्रामेक मृति कड़े प्रस्ता हुए। अब्रोने काववतीको तका राजा गाविको पुन देनेके फिने यह देवार किया और अपनी तर मारिको सुरासर क्का—'कम्पानी ! यह के करहारा यह है, इसमेंने यह तो तुम क्रकं का रोजा और बह दूसरा जयनी याँको शिला देना । इससे रुक्तरी कराके गर्वते इक रेकावी पुत्र रूपत्र होगा, वो बढ़े-बढ़े अधिकोका संकार करेगा और कोई की शरीय उसे पुजुने नहीं और समेदना । इसी दरह दुन्हारे रिज्ये को चल तैनार किया है, हानको सानेको तुम एक नेष्ट्र अञ्चलकाराक अपन करोगी, जो करपर काम् एक्नेकारा, त्रपाची तका वैर्ववान् होगाः।

प्रतिको इस जकार सम्बाधित करकारों एको खुनेकारे सर्वोक सुनि करने वर्त्त गर्ने। इसी सम्ब वीर्वेक्टको निके निकारे हुए राजा गानि अपनी बीके करने अधीकको आजप्यत जाने। सरकारी इस समय क्षेत्रों वह इसके लेकर बड़ी आजरीके सम्ब पालके पास पहुँची और उसके बीने में कुछ कड़ा था. था कर जनकार्युक्त अपने अपने प्रतिके सुना विका। उसकी महाने कुछने अपन कर तो क्राक्तकोको है निका और कर्म सरका का विका।

स्वतंत्रण सरकारीने वृद्धिकोवा विकास क्रानेकाल गर्थ सारम विजा। अस्ती अक्टूब्स देख खुर्वीक कुरिने कहा— 'क्रान्यमी । मैंने तुन्दारे कानो व्यक्तनका प्रकृत केन कारित किया का और तुन्दारी कानों कानों वृद्धिकोवा सन्तृतं केन रस विचा का विस्तु अस कानोंके व्यक्त करेते हैती का वह वेगी : तुन्दारी मानका कुत के प्रकृत्य क्षेत्र और बुन्दाक कुत व्यक्ति । यह सुन्दान सन्त्रणी कार्य करें, उसने विन्ते कानोंकर कार्या रसकार कार्य—'न्यान्य । अस देखी कार्य स व्यक्ति । सुने अक्टूब्यन्ये सीत कुत करेंगर सामोजांद र क्षेत्रि । सुने अक्टूब्यन्ये सीत कुत करेंगर सामोजांद र क्षेत्रियं ।'

अर्थाको कार--कार्याको । वैदे वह अध्यय भूति किया का मिर तुन्हारे गर्नारे ऐसा कुत हो, वह अर्थावर कर्ने करकेश्वर कारक से का कारा करके कारत ही तुन्हारे गर्मारे अरब होगा ।

सरकार मेर्च-शृतिका । जान के हका करते हैं समूर्ण लोकोसी सुधि का करते हैं, दिन एक पुत्र जनत कारण कीन बड़ी नाग है ? चुने के बढ़ी पून कैनिकों को करता है जनम हो । मेरा पीत बने हैं कारणकारका हो जान, सिद्ध कुत हो में साफ ही कारणी है।

क्षणीयने सहर—पते ! अच्छी करा है; कुरने जो कहा है, कैसर ही होगा।

लिया करते हैं—सहस्यर साम्यानि क्याडिम्हिन्ते क्या दिन को बड़े मनती, साम और निम्मीका काम करनेवारी थे। अबर कृतिकानका गामिने निम्मीकाको सम्या क्रिया, को अपूर्ण क्यानोधित पुग्तेरी सम्या थे और ब्रह्मांकी पद्मांको शाह हुए। क्याडिने किस क्यानकाता पुग्तो करता किया, क्या परसुरावको थे; वे स्टब्स् क्यानो स्था कर्नेको प्रश्रमा निम्नन् हुए। वे ही क्यांन कुम्बा स्थार करनेकरो स्था सम्यासित अधिक स्थान वेक्सी हुए। अनेको दिन्य अस्य स्था सरका वेक्सी परसू सहा विज्ञा। संसारने इनकी समानात करनेकाल कोई जी सा।

उन्हें दिनेको कर 💃 एक कुरावेकी एक अर्थन नाम आरम्य देवली पुर हुआ, में ईस्पनंत्री हरिगोद्य कार्य का। इसने राजनेकार्यको क्रावसे हमार वर्षे आह की थी। का पहल रेक्सी कामतें एक या। उसने अवनेव कामें का कबूर्ण पूर्वते, किसे अपने व्यक्तरासे जीता था, माहानोको सन कर है थी। एक बार अधिको उससे पिछा चौनी और काने सचनी हजारों प्रमाशीके प्रशासका अदेशा करके करें निका है। जनके वालोके अनगामारे प्रकट होकर अनिये अनेको चौचे, पगरे, हेलो एक फेरलप्रश्लेको करनकर मान कर करन । क्रमान्य स्कृत्य पास्तर अधिनक प्रकार केन पहला साथ था और हे हैंकुनावाको साथ तेवार र्जनको और वर्जनोको पहल हो थे : उन्होंने सहक्रक आपक चीकं को असरकार भी मान दिया। इससे आवको केसने क्तार अर्थुको इस प्रकार कार दिया—'तुक्ते की इस क्षात्रको भी सरको विश्व नहीं क्षेत्र, इसरेको प्रवाहरू पुष्पति हम भूगाओंको परमुख्यको कह हारेले।"

अर्थनो का प्रत्यन जान नहीं दिया। काले पूर सहर करी है। वे करेड़े और दूर भी है। प्रत्यक्ष के है अपरे निवाके कार्ये कारण को । एक देन के समहीतारे गायके व्यक्ति पुरा है को । कार्निकों अर्थु को इसका पुरा भी का भी था। जन कार्नेक रोजे कोर पुत्र हुआ। जार्निन परकृतनाविषे केली साधार अर्थनावे प्रकारतीको प्राप्त कारण । विकर प्रकारी को संपाद की अपनी अध्यानकर पहिल्लाओं । अर्थनके का भी पूर्व थे, वे सथ विराधर बनहीं के समानक पर्ने । इस समय काञ्चानती समित्रा और कुस लानेके क्षेत्री अलाव्यों कहर को पूर् थे। अर्थुको पुत्रीने केंद्र करूर करेरो क्यांक्रिक बसक बाट गिएवा। अरब्रामधी का अरबमार आहे से विहास बाते की बाह अवर्ग इश्व, उन्हें क्षोक्की सीमा न ग्री । उन्होंने पृथ्वीको क्षान्त्रमें हैन का देखते जीक काके इकियर क्लावा और प्रकार पहले क्रिकेंबर ही धावा विरुख । परशुरामधीने पराक्रम करके कार्यवर्गिक समक्ष पूर्वे और पीत्रीका अन्य कर दिया और हजारों ईक्टबंबी अधियोका सकाम कर कृतन । किर पृथ्वीको इक्वियोसे सुनी करके उन्होंने इसे स्ववसे नीती कर दिखा। का समय सैकड़ों हारिय परनेसे क्या गये थे: वे हे वीरे-वीरे क्वान न्यापरसानी चुक्तर हुए। तब वरपुरवानीने विकास अल्ला उत्तर अधियोक्ते करकोज्याको कर छला। अन क्रमानिकोके गर्मने ही क्षे या नवे के, का उनमेरी भी जो क्या लेता, अवका बता लगाकर वे वस कर करते थे। उस समय कुछ ही अधिय-जारियों अपने गर्मको बचा सम्मी । इस जवार इसीस बार स्रामिनेका । संदार करके उन्होंने अवस्था यह किया और यह पृथ्वी । सरकारीको सम्मी दे है । उस होन स्रमिनोकी जीवन-श्वाके रिपो सरकारानि कासुरावर्गाले स्था—'राम ! हुए स्थित संस्कृति कितारे करे सालो, जब मेरे राज्यों कर्या विकास न सरका।'

पह सुनवार परसुरामधी को नमें। सनुको करके विने प्रगह काली कर है, जो बुर्जरण नेकंक जमाने प्रशिद्ध दृश्कः मूर्त अपरायः-पृथ्धि भी कहा है। कानकारीने वरबुरायको है हुई पृथ्वी स्विधार करके को क्रक्कानोंने सुनुई कर दिना और कर्म भी कन्में को गने। का क्रक्कानोंई कानका रहका न होनेके कारण सन और असम्बद्धान केल नवी। वाले पूर्वरांको स्वाने सने । क्रक्कानोंने किसीकी अपूक्त कानका र रही। कानकाराने प्राण्यांका अपना कहा और पृज्वी शाह काने करी। कानकाराने पीवित हो यह क्रक्का स्वान्य केला हारे केला, इस्तिने यह 'हानी' कहानाने सनी। जन इस पृथ्वीने अपनी रक्षाने वह 'हानी' कहानाने सनी। जन इस पृथ्वीने अपनी रक्षाने किया पर्या है, हो मेरी रक्षा करें। इनके दिन्य पृथ्वीकी विद्यानका भी एक पुत्र नीवित है, निको सक्षानाम् करनान

वैक्षेंने मारकार बड़ा नित्या है। इसी प्रद्य नहर्षि परास्त्रों एकावा राजा स्वेदसके पुत्रोको कर नामधी है। राजा विक्षाक पत्र स्वेदसके पुत्रोको कर नामधी है। राजा विक्षाक पत्र के के लोग पूर्व है, निरम्भ नाम है जोगी। इसे प्रकार पत्र किया है। राजा प्रकार पत्र के केलिय है, किसे पौत्रात्वमें व्याहोंने व्याप है। पत्र के कार्य पूर्वा मार्थि पौत्रात्व ग्रे महान्य किया है। पत्र के कार्य पूर्व कार्य है। पत्र के स्वाह प्रवास है तथा प्रवास है। वो राजपूर-व्याप किया प्रकार के लोग कार्योग स्वाह है। वो राजपूर-व्याप किया प्राहमीय प्रवास है। इसे के सी पत्र को वे विकार पत्र प्रवास है। इसे के कार्योग पत्र कार्योग से पत्र है। वे राजपूर-व्याप किया प्रवास प्रवास है। इसे के सी पत्र को व्याप प्रवास है। इसे के कार्योग प्रवास के व्याप प्रवास है। इसे कार्योग प्रवास के कार्योग कार्योग कार्योग के है। वे व्याप प्रवास कार्योग कार्योग के है। वे व्याप प्रवास कार्योग कार्य कार्योग कार्यो

पृत्योचके जानेता सुरकार कारकार्यने जार काराने हुए राज्युक्तरोचके निया-निया स्थानेकं एकाहित किया और अहै पृत्योके विभिन्न देखोंके राज्यपर अधिनिया कर दिया। शास कियो जेवा कारका है, के अविके पुत्र-पीतोनेकं हैं। राज्य | अवर्थ जाके अनुसार का जानेता हतिहास मेंने सुना दिया। इस्ते जाका ने कही हुई थीं।

## श्रीकृष्णद्वारा भीव्यकी प्रशंसा, भीव्यद्वारा श्रीकृष्णकी स्तुति और श्रीकृष्णका भीव्यसे वर्मोप्रदेशके लिये कहना

विस्तानसभी करते हैं—राजल् । इस अक्रम कर्ने करते

हुए कीकृत्मा और चुनिहित, जहाँ चीन्यती कार्यानसभा संस्ते

हुए थे, तम स्वान्यर जा पहुँचे । जह पायन जरेहा औपनती

महीके करमर का । तृरसे ही चीन्यतीयो हैस्तान अविद्याल,

सका चुनिहित, अन्य सारों पायाम और कृत्यवार्थ असी संख स्रोत अपने-अपने रकते तहर पहे और वर्ड व्यक्तिकोदी मजारी वैदी थी, वर्ड अपने । इन सब स्वेनोने पहले कारत आदि पहलिंगोंको जनाम किया, दिन ने चीन्यतीयो सेवाले आदिया हुए और उन्हें चारों ऑस्से केरवार केट चले। क्रिक्ट हैं, इससे आपने द्वारीयो चीट स्वानेवार को कहा उद्याविक मानसिक यु:स्तरे सारोरिक दु:सा अधिक जनत होता है— क्रिक्ट वस्ताहत करना धुरिकटल हो कार्या है। अधिको एक

कोटा-एवं भी करित सुन जान के वह नहां कर देत है, वितर के कारकेंद्र स्वकृत्य है से यह है, इस आपके सरीवकी पीइको विकाय के कहना है क्या है? तो भी आपके अवन्य है—कारिकोंद्र जान और काल होते है खते है-जाः इस कहना देवका विकाय सम्बद्धार आप प्रवर्ता न होते। आप को देवकाओंको भी अवदेश देनेकी हांक रहते है; आपका हान सकते था। है। भूत, भनिक और प्रवंत्त्व सुन होता है, वर्मका करा परंग है और काल उसका अप होता है है ने सारी करें आपको हाल है जोता का वसका अप होता है है ने सारी करें आपको हाल है; वर्मकि आप कारि भन्नार है। अपने एक क्यूंद्रिकारी राज्यों अविकासी भी। आपके करीरमें न के कोई कारी की, म किसी सर्वात रोम वा; आप पूर्ण कारक में और हमारी क्यांनेंक सीमर्थ रहते हैं।

से यी में आपनो उभरिता (असम्बद्ध सहकारी सम्बद्ध) है देशता है। मैंने तीनों सोम्होचे सत्त्ववाहे, कांकरावार, प्रास्त्रीत तथा पहल्यामधी प्रान्तक्ष्यन औरमंत्रे तिथा वसरे विस्तीयो पेसा नहीं सन है, जो शल्डोकी जन्मान खेकर अपने त्रयोग्यासी प्रशितके विश्वे व्यथमधीरम् मृत्युको छेक केमेने संपत्न हो सन्तर हो। तता । तता, रूप, रूप और प्रक्रोड आकरणमें, केंद्र, बल्बेंद्र एक नीतिकासके अपने और क्रोमस्ताका कर्तव, कहा-धीतकी कृति, वर और इन्हिकेका एकन रूपा सम्पूर्ण प्राणिकेका क्रिसाकन करनेने मैंने आपके अन्यन दूसरे विक्ती महत्त्वीको नहीं देखा है। आय सम्पूर्ण देखता, कार्या, जलूर, यह और पहलीको अमेले ही जीव समाते हैं: इसमें सरिवा भी संदेह नहीं है। मानको । आर भूजीने बहुआंको स्टेब्स को कम नहीं है, इसनिये प्रदान कोन अन्तको नका कर कको है। अस पुरुरोरे केष्ट हैं और अवनी सर्वका देखकारोने की प्रतिद्ध हैं। हित मुख्यीपर अलको समान मुख्येनो कुछ कर्क व हो की करी देखा है और न सुन्द ही है। जान अपने सन्दर्भ पूजीके मारण केलाओंने की वयु-व्यक्तार है और सकती राज्याते परामंत्र सोमारेची सुद्धि करवेचे समर्थ हैं; इस्तीओ आमरे एक निवेश के-वे प्राथमका प्रतिहेट अपने प्रद्रावको और सरी-सम्बन्धियोगा कथ होकी बहुत हुआ हो हो है। अस की भी है, इसका क्षेत्र का व्यक्तिये । पारकोर्ने कार्ये कार्ने और करों जानांगिक सो-सो वर्ग कराये गये हैं. से स्था आरको विक्रित है। पार्चे विकासीचे दिन कार्रेक प्रतिकास किया गया है, कर प्रकारके केवाओंके के कर्मन है उक योग और सांस्थाने को समाराम धर्मका कर्मन है, का सब श्राप व्यापनास्तरित जानते हैं । देश, वालि और कुलके करेंग्रे भी अन्य परिचेत हैं। केरोंने बाह्य हुआ वर्ग और विद्य पुरुषोक्त कराव्य हुआ स्वयुक्त भी अस्तो असूत नहीं है। इतिहास और पुरायोधे अर्थ अध्यक्षे क्रारंकको उत्त है। धर्मकामा तो सदा आपके प्रदूषने विश्व को हैं : संस्थाने से संदेशक विशेष हैं, अवार सम्बद्धान करवेगाता अस्पेड विशेष कुसरा कोई नहीं है। इसरियो एकद : व्यक्तिसके साववें को फोन्स रमाइ रहा है, उसे अरूप अच्छी बुद्धिने जाना बोर्टिक्टे (\*

सीम् अभिन्न स्वारं क्षेत्रक स

\_

उत्ता करनेकारे और अन् है सबके रेक्टकार्व है। आप विक्रोरे परमा नहीं होते। यह विका आपकी हो स्वान है, आप ही इसके समान और साथ ही इसकी क्वांतिके स्वान है। अस पीची पुरोसे मेरे और ऋषियोगेंड रिजी चौक्रासकर है। अल्ब्लो नवस्थार है। सैंचे खेकोने स्थार हर आप क्रकेबको क्रकार है और टीनों लोकोसे यो निरास्तान अन्य प्रभूको प्रभाव है। योगीयर । साम ही समयो प्रस्य क्षेत्रको है. आवको प्रमुखार है। प्रुक्तेत्रम् । आको मेरे राज्याने के बाते बड़ी है, उनके ही प्रभावने हुए समय मैं क्षेत्रे सोच्डेने वर्तपान आपके देखा पालोको हेवा राष्ट्र है और आको का समाप शतकार भी मुझे प्रावृतकार होने रूपा है। अन्तर्भ क्षेत्र अन्तर्भ केनामी व्यव्हेत काले अन्तर्भ साती क्षेत्रकें कार्य कर रखा है। सामान आयोर महत्त्वसे और प्रथमिक अध्येष वैदेने स्वाह है। सम्बद्ध हिलाई आवर्की पुनारे, पूर्व के एक पुनायार्थ क्षेत्र है। आकार जानतीहे कुर्लंड समार स्थान निष्यु बेलावर प्राप्त छने। किवारी-महित नेवते. समान पान पहला है। बानारके समान नेवो-को देखेल क्षेत्रक । मैं जानका सरवागत कर है और अर्थाष्ट्र गाँव क्या कहता है । विस्तरे सेरा कारवाण हो, क उसम अस ही संदिये।

क्षेत्रको का—पुरस्केषु । युवरे आवनी यह अस्ति है, इस्टेरिको मैंने आरक्तो अपने हिन्स सरकाता हर्तन सराया है। जाना । जार भेरे जार से है है, आरखा असान ची नक्ष प्रस्त है, साथ है आन विलेगान, तपसी, सरकारी, क्रमी क्या परत परित्र है। इस्तीलो आप अपनी संपन्नको बारने केर कार्र करेके अधिकारी है। अध्यक्ष केराके रिके ने विकालेक प्रमुख है, बढ़ी बाकर किर इस सोकर्ष नहीं ज्ञान कहा । जन आर्था जीवनोः क्या क्रमा हिर के हैं। इसके कर तरन इस सरीतका जाए करके अपने सुध कार्षिक कारणाव्या काल सोकोरी कार्यने । बेहिस्से, ये बेह्सा और वस्तु विकासमें बैठकर आवश्यामें अकुशबस्यके एते हुए करायम सर्व होनेका आपके आपेकी बाट खेली हैं। जाने पका किन कोकोंने अकर किर इस संसाध्ये वहीं आते. आप भी वहीं बाह्यनेपात बीरवर ! इस सोवारी अपने, बाहे कनेका स्वते झान नहां हैं। आधीगे; कतः ये सक स्रोग कर्यका विवेचन करानेके विवे आयके यात आये हैं। इसरिजे अब कार पुनिक्तिसको वर्ग, अर्थ और मोनको पुकार्य बाते

### भीष्यका अपनी असमर्थता प्रकट करना और भगवान्कर उन्हें बस्दान देकर जाना तथा दूसरे दिन पुन॰ सबके साथ वहाँ उपस्थित होना

रीजनानार्था करते हैं—क्षेत्रकारक यह वर्ष और अवंसे । युक्त क्यार सुरक्तर प्राप्तानुरुपन भीताने केनी क्रम जोक्सर क्ष्या-'जनश्चर । आपनी मदी को है, करफारकारे नाएक्य । आय अपनी व्यक्तिसे कथी च्या नहीं होते । अस आवारी बात सुरका में अवस्तों का हे का है। बाल, में शायके समीप क्या यह समीप क्या कि व्यक्तिया से क्या भी विकार है, यह एक जानको बेक्सन कनकेने विकार है। जो मनुष्य केवरान इन्होंत निष्या केवलेकाचा कृताच करानेका Henry are talk, will attalk most sail, and, was after में कार्य क्षण कर अवतर है। अनुस्तर ? इन सामोदे गहाँको भी बाह हो रहा है; अरहे भी करने बाहे बेहना है; सार प्रतिर बीडाके मारे विकास के नका है। बाँद कार की केरी : अब मुख्यों कुछ को महानेको जनिका नहीं है। विक और आपके इस्तर ने काम पूछे निरस्तर पीठा है रहे हैं। कर कम होता क Dr. fre mei Gegenbeit geweit fir ift fie weraftige कारन बीच तालूने का जनी है; देशी दक्षाने में कैने जेल समाता है। परस्य ! अस्य मुक्तान प्रस्ता सेवाने। समा मोलिने, मैं कुछ बोल नहीं सकता। आयोह पता करीन्द्रेक माने समय पुरुवतिको भी क्रिक्ट हो सकती है, बेरी के विकास ही क्या है ? पहों न विकासीका प्रान है, न अन्यत्स और प्राथिक ही पहल हो रहा है। केवल अन्तर्यो प्रतिको जी रहा है। इसरिक्ये आप हो जिसमें क्येशकका हिन हो: बह करा कताको; क्योंकि आव प्रत्योके की प्राप्त है। औक्रका । आय जानको कर्ना और समान्य कुछ है, आयोह सहे मी-मैस कोई भी पर्यं केने उनके बार स्वाह है ? का मुक्के होते हुए किन्य उन्हेल देनेका अध्यक्तरी है ?"

है, यह सर्ववा आरके योग्य है, वर्गीय अन्य स्व विषयीके जाता है। इसके दिन्या व्यवसित अन्य स्व व्यवसे विषयों को कहा है, उसके दिन्यों मैं जाता होका कारको वर देता है को जीकार गरिनये। अन्यों अन्यको न न्यार होगी न कुकी, व दक्ष होन्य थ देन। पूक और व्यवस्था कहा थी जाता दिगा शामको अन्यक्षानों सब प्रवस्था जान पारित्य होगे। अन्यकी अन्यक्षानों सब विषयों कुण्यान होगे। अन्यकी चुँदि विस्ती की विषयों कुण्यान सेंग सम्बन्धा असर न होगा। असर विक् विस्ता कर्म की स्वाप्त केंगा क्ष्मित क्ष्मित अस्य होन्य । विस्ता वर्ष वा अर्थपुक विषयका क्षित्य करेंगे, अस्में अन्यको कुण्या होन्य होन्य असर न होगा। असर विक्

काम विकार पृष्टि प्राचार प्रवेदन, अन्यास, अदिश्य और अन्यापुरू—हार पार्टे अध्यानोः अभिनीयो देश समेते और अन्यो क्रान्ट्रिके संसारकाचनमें पहलेखके सीमीया भी साह्यास्थान पार प्रवेदने।

र्वजन्मको कार्य रि-न्यवनका जास आहे सम्पूर्ण कारिकी अन, यह और सम्बंधि मनोते भगवन क्षेत्रकारक पूर्वन विकास अवस्थात्त्रों कृत्येच्ये वर्ग 📈 । तार प्रधारके क्यों का के । प्रार्थकी सुर्वीय पश्चिमी अस क्षेत्रे विकासी केरे रूने । जा प्रस्य तथ पहार्थे काबार करे हे को और ओक्स, बीम बना पुनिश्चित्ते वारेके रिके क्षाने रणे । तक पाणकोशकेक प्रणान औदाव्य, सामानि, प्रकृत क्या कुरुवाली का संख्यों जाता किया। इसके कार के कार्यका पहले इस स्वेतोक्कार सम्बन्धित है 'कार दिस किरोने' केल ब्याचन तरंत अपने-अपने स्वानको बारे गये। क्रमान् अभिन्त और प्राच्यांने के भीवानीसे प्रापेश्वी mar el afe me-it-me med gege enter munt fi को । किर पत्रप्रिकी केनके साथ वे त्येन प्रक्रिकायको और पार दिने । पान्यम-न्यारनियोके आगे और पीके होनी और लेख बार की थी। बोदी के बाद पूर्व दिसाने क्ष्मिकता अन्य कृतः। जीतीका प्रकार कार्या कार्या-रोजको बाह्य हर्ष हुन्छ । एकं प्रथमसम्ब स्थीरव-राजकारी इंक्लियुक्ते क चौचे और अपने-अपने चीच चल्लीने -

कार्यान् श्रीकृष्ण अर्था धरंतपर स्त्रे यो थे। अर्थ क्रमा का यो वीतमेची कार्या शु भवी, तो वे नाग होंडे और अर्था समारण सक्तमकार्या कार्य करने स्त्री। इस्त्रेणी युवि और पुरायोधे जाता बनुस्त नहीं आकर कर्या स्त्री। करने स्त्री। सङ्ग और प्रश्नेची श्राम होंगे रूपी। बीमा और वीस्त्रीका मनोरथ कर सुनायों हैने स्त्रा। क्या पुनिवेत्त्वे नाममें भी मानुस्त्रिक सन्ने-बनाने होंने स्त्री। इसर क्यान् स्त्रिकृष्णने क्रमाने क्रमार जातः सात्र विस्त्रा, किर गुड़ क्यानी-सम्बद्धर कर करके मधिके प्रस वैरुक्त क्या क्रिया। स्त्राकृत् वारों वेत्रोके सन्नेनाते एक इसर मानुन्योधी क्रमान स्त्रुक्तमा क्रमुन्योधी कर्या करके सम्बद्धाना अल्ला स्त्री—"मुनुक्तर ! स्त्राव्यक्तने क्रमार प्रश्न क्रमारको, क्या स्त्रा पुनिवेद्धर बीक्तनोके स्त्रुन्योधी क्रमार्थी सर्वनेको तैकर हो ग्रो ?" शीवृत्वाको अस्य पाकर स्वताकि होत राजके कर्म गये और वाक्षे राजे—'राजन् | गर्यकान् सीकृत्व कोवाकोक मिनार करनेके रिक्टे विवार हो गये हैं, केवल सावकी कर कोड़ों हैं। अस अस्य को बरिक्य सावके, करें।' का सुवकर कृषिहिलों अर्जुनको काल—'काला | नेक श्रम कोवाका सैवार कारको । अस्य सेना साव नहीं कावको, तिर्वं इस्तकेनोंको ही करना है। साने कावनेकाले सोनोको की साव केवा किर काहिये। सावको सीनाकी कावि कुर सहस्योका सामेश करेंगे; अस्त किनकी को सुवकेर्ग क्रिक्य हार है, ऐसे सोनोकी कीइ मैं नहीं कुटाना काहिया।'

युविद्विराची आह्य मानवार अर्जुनो वेचा है जवना | मुनिद्वेरने चीवनकेका वर्तन विज्ञात

विका । ज्योंने जनकर सुक्ता है 'यहरावास एवं हैतार है।'
व्या चुनिहिर, चीन, अर्जुन, ज्युत्त और स्वहेत एक एक
रक्तर सकत है सीकृष्णके घवनमा नवे। उनके प्रहेतनार
सावकि-सीव सीकृष्ण भी रक्तर सकत हुए। रक्तर
कैट-है-बैट सकते एक-कुनेसे कुल—'एल कुन्तरसे बीती है
र ?' किए भारत अर्जात्वर करते हुए सक-के-एक
कुन्नदेशको और कर दिने और कही बीचनी बीचनी वालस्थातर
कर को और अपने कुनेसे हुन उठकर अधिनोके असि
सम्बद्ध को और अपने कुनेसे हुन उठकर अधिनोके असि
सम्बद्ध को सीव करने एके। नक्तनार, सबके साथ एक
कुनिहेरने बीचनकेक कुनेस किया।

## भीकृष्ण और भीव्यकी बातचीत तथा भीव्यका आधासन पाकर युधिष्ठिरका प्रश्न करनेके स्त्रिये तैयार होना

करनेवरने कुल—स्थानुते । यह शासक सामग्राज्यकर प्रतेषे कुत् पीनानीकी केवाने क्यांच्या कुत, वय समय सम्बन्धा कर्ते कुति ? सम सुते सामुने ।

वैसम्प्रकारको चड़ा—एकप् । तस समय चड्डी मास अपी, पड़ार्थ तथा कहन है सिद्ध भी पताने थे। महाभारतपुढ़ारें में मरोसे वय गये थे, वे कृषिहिर अपी, पाना तथा क्रारह, कृष्ण, भीष, अपूर, स्कूबर और सब्बेध पीनानीके चला पाधर तथेश काने समे। तथा मास्त्रीने वेदि वेशक कुछ सोच-विचारकर वहाँ उत्तरिका हुए वयाओं तथा पाणानोंसे कहा—'महानुस्तर्था । चीणावी पाध्यात् सूर्वती चर्चि अप अस्त होनातरे हैं, अब्द वह समय हमसे कुछ पुत्रानेका है; वर्षावि चारों वर्णाके में वाच प्रवासके वर्ष है, जन सम्बद्धों के पूर्वकारते जानो है। वे बुद्ध हो गये हैं और सरना करिर कोन्नार जान कोन्नोचे मानेवाले हैं; इस्तिको कारतोग इससे अपने मानवी कहारी हो।'

नस्त्रीके ऐसा क्ष्मिक सम स्वासकेन प्रीक्तरीके निवट भा गर्वः वित्रु वित्रुवित स्वासे कुछ कुर्णका स्वास न हुआ। सम एक-पूर्णका पुष्ट कर्यने स्वतः। सम क्ष्मुक्त्र पुणिहित्ने अक्ष्मिको क्ष्मि— 'अपूर्ण्यः ! कारके सिवा दूसरा कोई ऐसा नहीं है, को विवासको क्षम कर सकेंद्र सकः अस्य है क्षारे अस्त्रकीत सूक वर्षिको । सक् ! इस्त्रकेनीने को अस्य है स्वासे कहे कर्यन हैं।' मुक्तियोत्त को क्षम्भेत्र अस्त्रका सीकृत्यने चीव्यनीके चुक्त—'राजेग्रः । आकारी राम सुसारे चीवी है प ? अन्य के अन्यनी सुद्धिका विकेश सावत् हो गवा होगा । सब जनारके इतन गानित हो रहे हैं व ? अब आपके हरूकों हु:सा के बार्ड है ? बनको समस्यट हुए हो नवी न ?'

क्षेत्रको का-कालोव । मेरे प्रशेरको करन, सनका मेंब, क्यांबर, विकासत, सोच्ह और रोग-ने सब आपनी कृत्यने सम्बार हा हो गर्ने थे। अब वै कृत्यन रहे हुए पाल्ची पति पूर, जीवन और सर्वयन—संग्रें सरस्की को स्व देश का है। केंग्रेंने को वर्ग कराने गये है तका नेतासकत कियाने कन गया है, इन सब बर्गीको वै आयोर वास्त्राओं जनानो जन्म 🐌 जनांत ! विद्यु पुरुषेने विद्यु धर्मका करोड़ जिल्हा है, यह भी भेरे इस्तार्थ है। मैं देश, भारत और कुलके क्योंने भी अवस्थित नहीं है। बारों अलावेंने करोंने वो तथा है, व्या भी मेरे मनमें स्कृतित हो व्या है; इस समब सम्पूर्ण राज्यकारिको भी मैं सामक 🛊 । विका विकास को सक भी बारेन्ट्रेन्ट् करते है का सकता में कर्तन कर्तना। आपकी कुमाने अस मेरे करने करवालगणे जुद्धिका प्रवेश हुआ है। अरुके कारते मेर कर जाना का गया है कि क्रब में अवल-सा हो पना है। अनके प्रसादने मुक्त्ये जब कल्पालकारी उनके देनेकी कृषित हो नवी है, से भी मैं पुरुष्त है कि उत्तर सर्व है अधिक्रिश्यो करफाजकर उनदेश करो नहीं हेते ?

*जीवनो कर-पीचनो* ! यह और शेवकी यह

मैं ही है। संस्करमें को भी सब्द-समय पहली 🐍 वे सब पुत्रतं 🛊 जनम हुए है। जतः मैं के कहने परिपूर्ण हैं 🕸। अन अलके पक्को काल है, इसीवियो मेरे आको उत्तर बाँड अवन की है। राज्य | काराव्य का पूजी काराय केनी. कारण समूर्ण रहेकोने आवशे अञ्चल कीर्ति केली रहेती । मुभिद्विरके श्वानेकर जान को कुछ भी जानेह करेंने, यह बैदिक विद्यालको धीति हत पुरस्काने पाल क्षेत्र । से शानके उन्हेंक्को जनस सनकर को करने केंक्को कारेन, व्य पृथ्वे कर तम प्रवान्ते पुरुषेक कर प्रव करेगा। संसारने अन्त्रों सुरक्षण अधिकारिक विकास कैरें हे, या सेकार है की अलब्दे दिल पूर्व प्राप्त की है। सम्बर् ! ये महनेसे क्ये हुए भूकत जानके कहा करेकी विकास में के हैं आप उन्हें अर्थक बोर्टन है। सामग्री कारणा पानो पाने हैं, अपने प्राथित अन्यान और सक्तारक करन किया है, क्रम है क्रमणे क्रम क्रम मार्गित भी विश्वेषक है। सम्बद्धे रेक्टर अध्यक्त विश्ववेत से मार्क्त कोई केन की देखा है। एक एक इस बारको स्रोकार माने हैं कि आप कर्ज़ करोड़ क्रांस है। अपने क्रा केरवाओं और स्वरियोकी अध्ययन की है, प्रातीको अध्यक्ते अन्यस्य क्षेत्र वर्णका करोता व्यक्ति । अने वे क्ष्मोंने का को जाना है कि निवृत्त्वों का उस किया कर के अल्बो इतिया है कि सुरनेकी प्रकारको सोन्डेसे कर्मका उन्हेल करे । को उन्ह करनेवर को उनकेव नहीं केल, उसको नहा होन सन्तर्भ 🖢 नवः विकासभावते प्रातंत्रतः आत् इत संस्थेको अन्तर्थः क्री क्लोक करें (

रेसन्तरको सहरे है--एकर् । सेक्स्पर्क स्था सुरका व्यक्तेनको बीचको केले-'वेकिए। अनके असामते इस सरम्ब मेरा पर निवर है और कार्योंने की बार अर गया है। अस कार्यका चुनिहिर कुछते वर्गीनकक अह करें; इससे मुझे जनाता क्षेत्री और मैं संस्कृत करीका कारेस कर सर्वेगा । विगये सेर्ग, इत्रिम्मीत्रक, प्रकृषर्ग, अन्य, वर्ग, कोच और देन पद पर्रायन पत्रे हैं, को सन्तरिकों, अतिथियो, रोपपो तथा प्रत्यानातीका तक राज्यत कर्या है. सत्त, क्षम, तत्व, क्षता, क्षामि, क्षता क्षत विकास अवी कारत संस्था कियाँ तक मौजूद एते हैं, को बारवारों, क्षेत्रके, चनके, जनक किसी व्यक्ति खेलते भी क्राची अधर्म नहीं करते. २६, वेक्क्प्यन और वर्गने किस्ती सह अभि देशों है, निपूर्ण प्रात्मेक दक्त करन किया है क्या को दिन करना दुने हैं, के धनकुरका पुनिवेश की काले उस्त करें हैं

श्रीकरणने कहा—रासन् । वर्णतक भूतिहिरको आरकेट निवाद अवनेचे संबद्धेया के पता है, से अवनेच्छे अवसाती कारकर करवीत है। यो कुछ थे, अश्लोह कह थे, विस्तही इन्हें और में एक में कुमार, प्रमानी, क्षेत्र-कारक को सार्थ प्रतेषोप्य थे, का समयो प्रमुद्धे कामोद्दे सिक्टा है। इसी करते अपनोह चाल नहीं आते हैं।

चेनचे केले-बोक्स्स ! वेले कर, अध्यक्त और रन-यह प्रकृतिक वर्ष है, जो उत्तर पुरूषे रिन्तारिक करिनाके बार निराम की क्षतिनीके रिक्त करें हैं है। कर, पान, मान, नहीं, पुर, समानी तथा कर्-क्रमण-कोर्ड में क्यें न हे, चीर का असाके सर्वत कर का है में पहले को बार करना वर्ग है है। यह भी भी, रहे को की केवला पालका साथ हैता है और अपने निवार सम्बन्धा सारा बार पूर्वत है से को को बो बहुने मार करवार है, यह क्रमिन वर्गत है है। यो सोपनक क्रमेंब्रे क्रमान वर्णकर हो। यह रक्ता, अस्ते कुले कर्मको इतिको परी है स्थान परिचे। पूर्व कुरमी नहें बढ़ देरेकान क्षांत्र सदेत हैं जान बाता है। प्रेमानो प्रमुक्ते राजवाननेपर प्रतिकार विशे राज्या शरिवार्य it was \$1 wet was \$ for was allerte first क्षीय केवा, वर्ग प्राप्त करोवाल और लेक्ट्रों पर Arrelance & c

चीनके देश कार्यक वर्षण्या प्रतिकृत क्यी विकास साम अनो पास पने और अनहीं दृष्टिके सहस्ये पने हो गते। किर करके करकोरी करावा हुआ दिया। पीटाने भी अरकारण केवल कर्षे प्रसात विकास और उनका बसाबा क्षेत्रकार क्या-'मेरा ! वैद माओ, इदे मा; संबदेश क्षीकार को पर कम है, को ।'

## युधिष्ठिएके पुछनेपर भीव्यका उनसे राजोवित शिक्षचारका वर्णन

र्वेतन्त्रकार्यं कार्यं ई—स्वरूपतः कृषिक्षेत्रवे क्रीकृष्यः | और भीचको प्रमान करके समक्ष पुरातनेकी ज्यान सेकर | काले है कि एजाका वर्ग तेतु है; अब: अबर पूर्व प्रसाननेको DEC FROM I

कृष्णिर के<del>टे विकास</del> । वर्गक सामनेशाले देसा विकारके साथ बाह्यमें। एकाके पर्योपे वर्ग, अर्थ, काम

रक्षानेंद्र रिप्ये समान और प्रश्नीको सामें बस्तेन्द्र हैंप्ये अंक्स है, उसी अकर क्षेत्रक संस्थाने वर्णको परित रक्षकेंद्र किये एकपर्न स्त्रीया यात्र केस है। अर्थन रवाविनोने निसम्बर्ध सेवन विकार है, उस राज्यपने बाँद राज्य बोजनत जनत बार की तो संस्तरको बानसा है पहला है। बारी है और का लोग नावार हो बाते हैं, जैसे कुकीर कार होते ही अन्यवस्था नाम कर होते हैं, उन्हें उत्पाद स्थापनी पर्वाची अवप परिवा निवरण क्या है। अरः सकी पहले की रेल्वे राजकरीया है निकास ब्रोडिये; क्योंकि कार सन्तर्भ वर्णानकोपै के है। एवं पर रोजीको सामाधि प्राचीका पर्य प्राप्त अस हो समार है। परावर बीक्रम की बुद्धिने अल्बन्ने सम्बंध करते है।

death as—I may obly, features बीक्रमाको और समूर्ण प्रकारोको उपकार करके सन्तरन समेक्ति मर्गन कर पत्र है। पुनिर्द्धित । अन पून एकन क्रेक्ट की जाने हुए राजधारियों क्या और यो पूछ सुनव पहले है, जाको भी पूर्वजन्तो क्ये । क्रमोह । एकके हैंने मनो पने प्रमुख पान करन-को प्रमुख रहान surveys & 1 park first up homelier feitung wer-और इस्त्रानीका कृति सम्मान करे; क्लोकि केन्याची और प्रकारिक पुरस्को यह समेक सहस्को पुरस होता है और साथै प्रकार कार्या आहर कार्यो है। वेटा | इस नियमके हैरने सक treed and tree; questir for dear fuel राजनीया पान नहीं रिट्ट होता । यहारि वार्तको निर्देशो के और पुरार्थ केने कामरण पारम है, उन्होंने में इस्केरे पुरुतार्थको हो केन्नु पानका है। पारे अन्यत्म विकास कुछ पान मातव में बाब से प्रत्ये किये कार्ते द्वारा न करता. क्यांको एक प्रकारों है स्थाने रकत्र-वर्ध क्याओकी प्रधान नीति है।

सारके तिया इससे कोई भी चीच एकाजेको तिथी। प्रकार करनेवाली नहीं है, सरकररायक एक इस खेकने और परानेको भी सुक करा है। स्वतिकोद तिने भी सन ही प्रत्य कर है। इसी अक्षर राजाओंके रिप्टे भी करको रिप्ता क्रमां कोर्न सामन विकास क्रियनेकाल जो है। जो समा mount, phones, were any squires, where mentager, spinowe, faither, sprager air age देनेवास्य है, यह सूची एस्य-स्थापीने प्रश्न सहिं होता। क्रमनका । सङ् कोमल वर्तान करनेवाले समाव्ये जार कोई महिन्दा और सह बहोस्तरमं बात बलेकोरे थे

और मोक—सम्बद्ध समानेत है। मैसे कोडोको कार्यो । एक लोग जीव हो उठदे हैं; इसरिये दुखें समयानुसार कोपाला और क्योग्स केलेक्ट आक्षा तेल साहिते। केट ! इन प्राथमोको कभी रूप न देन। इस विनयों न्युकीने के प्रत्येक को है, उनका नाम इन्हें अपने इत्याने क्ष करण किये द्वारा कविये। अति सहसे, अप्रेम व्यक्तियों और रहेक यससी उत्तर हुआ 🖢 इन सम्बद्ध केंद्र कारी प्रयु पान देश है, रूपर अपनेतो रूपा धारेगारी कारको काल काल हो बाल है। यह रहेड बारका कर कार है, अन्य प्राचेतर राज्यों कही है और अदिय प्राच्याने में करने तरक है से से के से के होत का करे—हुन कारों है। यह सोमान कुछै साहानीको यह मनातार है करण करीने । वर्धान देशी का है, क्यानि परि साहान औ क्षेत्र रहेकोचो प्राप्त बहेको रहे हो उनको वी बहुएएसी come mote may his mint pel call \$1 per front? कारकारी के राजेक बताने 🗓 राज्या सरिवाद बाग केवर क्ये 'साम्य वेक्का निकृत हो क्ये न हो, यह का क्या कारत प्रश्नों समय कानेंद्र तैसे शह का है है वर्गगहरू करनेकारे एकाको को कामान्युरस्य अवस्य केंद्र करना माहिले । उसके प्राय ग्या होते हुए बर्मकी में पाल करता है, को वर्षा है: आक्रमनीको परनेले का वर्षान गरावा गाउँ पन्य पन्न । प्रोक्षी भी पूर् अलक्ष्मीको हो स्टब्स प्रोप में का करन है। जान अनाम नाम प्रात्नेकी कर है कि प्राचन अन्यक को को को देवनिकारिक हो एक देव व्यक्ति, को प्राथित क्या देनेका विकास नहीं है। कैसे पारक प्रदास सर्व न से अधिक देशक परिवास है और न कर्त का है करता है, उसे उसस एकाओं की न सहर abur pie telbe, i sebes tede i Begt, atten, जनकर और अस्ता-इन पार प्रमानीके प्रश्न संयो-पर्याची कारण कार्य कार्यने। हम तम जनान्ते काल्केक परिवास कर देख; क्योंकि स्थानमें असरक हुए प्रकृतका संस्थाने अन्तरन क्षेत्र है। प्रकृति साथ राजावा कर्तन वर्षिकी क्षेत्रे सम्बन् क्षेत्र वाहिने । वैसे वर्षिकी क्षे अपने पान्यों अपने जननेताने केवत आदिया जान वासे: केवार पर्नेता वारणको विराध कान रकती है, असे अवस कांक्य एकाको भी अपनी भारतांका समास न करके निवर्त का लेगोका है। हो, बहे कम करन पाहिले ।

क्षानक । तम केवंद्रा को सभी त्यान न साम । को अवस्थितीको स्था हेरेने संबोध भी करता और सह वैर्च रकता है, उस राजाको कभी भव नहीं होता। नौकरोंके साथ अधिक हैती समाद नहीं करना काहिले. इसमें से कराई है, इसे सुने। वैकालेन अधिक प्रेक्षने है कोसे मारिकास अवस्थ कर केले हैं, अपने प्रसंदान बहुबन पहीं यहें और सारीकी अञ्चल्या अस्तुन करने राज्ये हैं। बढ़ी जी, वे राजपर भी ह्यून बलाने सकते हैं और विका रेकर जलमाची करते राजकार्यने कित करा करते है। बनावरी अञ्चलक निवासकार समाचे सारे समाच्ये पूस सेवे है। रेक्पालके पहेन्द्रारोते जिल्लाह अन्त-पूर्ण काने सालो है और रामाने समान वेष-पूरा बकावे किसी है। व्यक्तिया कि कार्यके निकट निर्वाचनका कार्यात करते और अस्त्री पत क्तों भी प्रचार कर के हैं। ऐसी-क्वाब करनेकरे और बोमल समामको स्थानो शका पुरस्क सामी अन्देशना करने रूपते हैं और अस्त्री कवारोवें खनेकारे हानी, मोदे तथा रक्पर भी अमेरत बहुबर कुले है। आग इत्याचे बैठका हेक्सेकी तथ परावरीका कर्मन कर्म हर

अवस्था का कर्जन कुछ है।' राजाको कुरिया होते देख हैत देते हैं और उससे सम्बाधित होन्दर भी विज्ञेन प्रसार नहीं होते । कार्यांच मुद्र बाजे क्या समाके क्षेत्रोको दुसरोपर प्रकट कर के हैं और अस्की अक्सको अन्योतनापूर्वक दिल्लाक करते हर पूरी बाले है। कर है पंका होका राजा सुरता रहता है और के निर्मंप होनार जाने। जापूरण पहली, सापे, नहारे और करना रूपने कार्निकी दिल्लानी अञ्चय करते हैं। उनके अभिन्यानों को काम झीव कम होता है, अल्लो के पुरा काले और कोड की के हैं: उन्हें फिल्मी सरकाह की बाती है, उसनेसे रांकेच नहीं क्षेत्रा । कैसे रातेच क्षेत्रमें नीवी क्रूई सिद्धिकाके साथ होता है, अने तरह में भी राजा है उसे प्रतान पहले हैं और राज्यात्म रचेन्ट्रोने सकते निरुद्धे हैं कि 'राज्य को हजारे से इन्में है, उत्पार इनाय है हमा चलता है।' पुनिश्चिर । सुन्न का परिकारकोल और सोधार धारमध्ये हो पाता है, से कारते हैं 'रुपार्'। आनंते इस कारपका होना कारिय हैं, विकासको हुए एक दूसरे की बहुत-से होन प्रकट हो कारे हैं।

#### राजाके नीतिपूर्ण बर्ताकका क्यांन

भीवारी करते हैं—पुनिर्देश । शत्याको उद्योगी होता भारिये। यो प्रीकी याँति केवार वैद्या पहल है, अर राजावी प्रतिसा पूर्व होती । इस विकाल पुरस्कारकेका कहा हुएए एक क्लेक है, किस्ता पान इस प्रकार है। की बाँव किस्तो श्वानेकाले पहुलेको लिएका काता है, अभी प्रधान कुलो सम्बद्धानेको सबाई न करनेवारें द्या और घर न क्षेत्रनेवारे अक्टब---पुन क्षेत्रीको कृष्णी निरमन पात्री है। अर्थात् के पुरुषको-सरकन मिले मिना ही गर जाते हैं। को संधि करनेके कोना हो। उसके संकि करो; को क्रियेकके पक्ष हो, उनसे विश्वेष करो । सन्तर्क सत अनु है—राजा, मची, बिल, क्वाच, देश, बिला और रोज । इनमेके किसीके भी किमील की, कोई आयरण करें से मा तुर हो या निया, भर करनेके से बेला है। महाराज मध्यका कहा हता एक पुरुष हरोड है, को पहल्लीके मानुसार राजाके अधिकारकर प्रकार करवा है। आहा भाग को है—वर्धकों भएकर कां<del>च-अकांच्यक सा</del>त क रसनेवारत और कुमार्नपर स्वानेकारक प्रमुख पदि सकत पुढ हो तो भी उसको रूप शेवन समयन विचान है। उसा समस्य से नगरके खेगोंका किन करनेकी इकास अपने बोह पुत्रका

भी राज्य कर देवा था। सामा पान का असमकार'। अह पुरवारिकोचे बाराबीको स्वयुक्तर सात् नहीर्ने ह्या हिचा कारत था, प्रांतिओ असके विकान को बाते निकास दिया। अर्थः अभावनंत्रते जला रकता ही राजका सनका कर्न है। सामग्री रक्षा और माध्यक्षाचे क्रस्तान की राजेतित कर्तना है। कुररिका पर कीया न करे; जिसको जो कुछ देना है, क्रमण्या केरेवी क्रमण्या करे। यसकारी, संस्थानी और इन्सरील क्या हो। देश स्थानेवाला राज्य कर्या सत्यानीहे भक्त वर्षी केंद्रा ।

मो मनन अधिकार रकता है, किसने क्रोकको जीत रिल्म है, जिसे कामले वास्तर्वका निक्रम है, को वर्ग, अर्थ, बन्द और नोक्के प्रकारों तना क्रम 🛊 और अपने ग्रह विकार कुरसेंकर प्रकार नहीं होने देता, नहीं राजा होने योग्य है। उक्का करे क्लेंक क्लेंक्र स्मांक्री रहा करने कहिए। संसारको वर्गरांकरतामे बच्चना अलाह समावनवर्ग है। तथा किसीयर वी विश्वमा न करे. विश्वमानिय व्यक्तिका भी अस्त्रम विकास व करे। स्वयमितिके कः<sup>र</sup> गुज क्षेत्रे 🖫 संवि, विकार, पान, आसार, वैधीपाय और समझार: प्रत संग्ले गुल-येगोरर एक हुई रही। करकार इकार माध्यमती हो और कुनेस्थे सहुत करका पंतर इकारत करे। स्थार, वृद्धि तथा क्ष्में हेतुमूत रहकागीका ने इका प्रांत हो। विस्ते परक-येक्सका प्रकार र हो, हरका पेक्स करे। साहिये। इन्होंकी संग्ला करे। सालक और सोक्को स्थान है। साहिये। इन्होंकी संग्ला करे। सालक और सोक्को स्थान है। साहियों काकारों में स्थानक, संदूष्ट होनेकोच हरकार करवे रहें। सेहनुस्तीका कर र कीरे। हुहोंसे कर संग्ला सहस्तीको कुन करे। सर्ग इका और कर है क्या कुरोको भी दोन है, सरको सकरे रही। कुनकार कुन को और इक्स सन्दे सक्कारी हो।

को मुख्यीर और जन्म हो, मिली कुंग्ला कोन्न व सके, के क्रानित, अंकेन और हिंदु हो उस्त दिन्हें पुरुषेते सन्तरण रहते है. अपने समानक रहका है, कुररीका अनकार न करने हैं, क्रांक्स्प्रमा, साथु और वर्गतीय संसाध स्थान क्रांच्या है, कारोंके विक्रम् , रोक-कार्याचे क्राप्त और प्रकारिको मति-विविधार हरि रक्तनेवाले ही—ऐसे खेलीको ही सहस्था बनाये । कर्षे अपने समान ही सुन्त-मोगाओ सुविधा है । हिस्से राजेत्या इस-वास्त्र और ह्यून्स बस्य-इन्हें से संस्थेक अधिकार अपने पास असी अधिका रहे। जानने असका परेक्षमें उनके अति एक-एक ही सर्वाय करें। ऐसा करनेकारे राजाको क्रमी कह नहीं उठाल पहला। के सकल संक्र करात और सबके बनका अध्यास करात है, या होची और कुरित एवा एक है। अपने ही लोगोंके हाथ गए। बाल है। में क्यान सहा-पीतको हुन सुका तकके हरको अपनानेका प्रथम करता है, यह स्थानकेका स्थानका होनेका भी उनके महामें नहीं पहला। यदि कहीं पराका हुना, को भी पेट वर्ष विश्व के क्षेत्र स्वाप्तां पूर्वत् स्वय स्वाप्त प्रस् कर रेखा है। यो क्षेत्र वर्षे करण, किसी कारतमें नहीं फैरता, स्वयंत्र कर राज्या और इत्यानिय प्राप्त रहता है, व्याप्त स्वाप्तिक विद्यालया कर वाता है। यो इत्याप्त, व्याप्त स्वाप्तिक कारवेशी संबंधि में प्रयोग, वार्षे वर्षेत्रीय व्याप-अध्यापको कारवेशाय, स्वाप्तिक क्षेत्रम क्षरीयस्य, क्षेत्रको कीरवेशाय, व्याप्तिक, व्याप्तिक क्षरीयस्यक्त, व्याप करवेगे संबंध और अस्तरमांत्राती हु प्रयोगाय है, व्याप्त करवेगे संबंध कीर अस्तरमांत्राती हु प्रयोगाया है,

निरामे राजने क्रोनाते बगरिक मान-अन्यानके सम्बार्क हो, निरामेंह देखांक कोना अपने धर्म-कर्मणि संस्था, करियो अवस्थित म रक्षानेकारे, विशेषिक, यक्षाने क्रमेकारे, अवस्थानक, कामको हा प्रतिकार और क्षेत्री प्रति रक्षांच्यां हो, वह व्यक्तांने एक है। फिर एक्से एक्से क्या, क्या, क्षरमेत्री, पावा और मातार्वका सर्वता अधाव हे, अभिन प्रमान वर्गका निर्माद होता है। को विद्यार्थका ताल करता और प्राचीन आर्थेंद्र विचन तथा परेश्वयती कारोंने राज्य पूजा है, को सायुक्तांके कार्यक करता और क्य किया करता है, कह विश्वके गुप्त विकारीको न कर कों, काशुर्वको र काशान सके, भूते राजा राज्य क्रमानेकेन सम्बद्ध बाता है। एन्य ब्रह्मेसके एकाओंके रेले ज्यानीकी प्रकार वक्का और कोई सरातन को नहीं है। करने राज्यकोबा बर्जन करते हुए हे एलोबा बड़े हैं, िरमात पान इस उत्पार है। वेशे एन्ड्राईट परवारे की क्षे केवल्या सारा कर दिया काता है, क्रेरी प्रकार अलेक कर्मको काहिने कि व्या उन्हेंस न हेरेवाले आवार्य,

समान मेरा है से राम्यों करें रक्षण मिनाई है। और इस्तु दुर्गत से से उस अवस्थाने उसके दुर्ग आहेरार से अवस्थान किया माना है, उसे 'मान' करते हैं। अगर अपने उसका इस्तुओं ओरने अवस्थान से और उसुमा एक सबस्य जान पड़े से उस समान अपनेको दुर्ग आदिने कियाने रक्षणा में अध्यापक की कार्य है, यह अस्थान करता है। यह वहाँ करनेवाला प्रमु अध्याप मेणीवा से से पिता कार्य के मीर पीता कुछ और एक रक्षण करता है। वैसे अपने सेना दुर्गने रक्षणा अस्था करना और आवीसो नेकाल प्रदुर्गने अस्थ आदि समानीवार करना करना अपने कार्य है मीर कार्य सेना उसके साथ राम्यों कार्य के पीता कार्य के पीता है। अध्यानकार्य की पीता होनेवार किया सामान की सेना है। अध्यानकार्य पीता होनेवार किया करना समान की सेना किया करना की सेना की सेना की सेना करना है। अध्यानकार्य पीता है। अध्यानकार्य पीता होनेवार किया सेना सेना की सेना किया की सेना सेना सेना की सेना की सेना सेना सेना सेना सेना सेना सेन

२. मनी, यह, दुर्ग (किटा), कवान और दक्क---ने वॉच 'अवृति' करे पने हैं। वे हैं अपने और अनुपक्षके मिलकर 'दलकर' कवटरां हैं। यद दंगोंके पाणी आदि समान हों वे ने सकता हेतु होते हैं आर्थत् दंगों पक्षकी दिवाद काथा खाड़ी हैं। आपर अपने पहने हमारी अधिकता हो वे वे वृद्धिके सकता होते हैं और कार्य हो वे समादे प्रत्य करते हैं।

मारे राजा, बहु कार बेसनेवाली की, जेवरे क्रांग्यी व्यं—इन इन्स्टे त्यान है।

मेर-मक्त्या उद्यास्य न करोजाने व्यक्तिक, यह न करो- | ह्यास्थले व्यक्ते और अंगलने व्यक्त पांद करोजाने

राज्यशासनके कुछ साधनोंका वर्णन

-

पीमानी कोले—बुधिहित । यह प्रकारका समस्त | बर्वेका सार है। धनकर बहुरवीओं भी इस न्याधनुद्धार सर्वेकी प्रसंसा करते हैं। उनके दिखा कामान् विकासका, स्पन्ती सुन्धानार्थं, इस्, श्रह, भपू, संश्वाधं, युनिवार सीरविता और राज्यानेकी राज्या करनेकाने अन्यत्य नेक्स्महिकोने भी प्रमाणकार्यों है प्रसंस्त की है। कर में कुई कमाओंके कुछ सन्तर सुराता है—चुत्रक (कायुस) रकत, हारे खोने अवस अतिनिव (राजका) निवृक्त करना, सारका केल और पात देख, पृतिकोंद्र हाना पार रोजा, अन्याको प्रधानी म कुल्या, सर्वकोड़े केल करता, बीचा, वर्णकुक्ता, क्रम, प्रथमक देशक्रिक्ट, स्वयंत्रकोची न स्वयंत्र, सुरक्षेत्र म्ह्यांको पार रक्ता, संस्कृतेन स्वयंक्रिये क्या स्टब्स् सुद्धियारोको अस्य सहस्य कारण, केराको अस्तरीह करक, प्रमान्त्री कर्न हेक्स-प्राप्त करना, बान करनेने बहुन्ता अनुसम म कारण, कोचको वृद्धि करना, अने करनकी पक्षाबर पूरा प्रकल्प करना, इस विकाल इसरोके विद्यालयर न पुना, क्वारियोंने कोई गुरू बना रिन्स है हो उसमें पुर इत्त्रवा देता, सह, दिस और प्रधारकोपर क्योपित हो। रकार, सेवकॉर्ने गुटबंदी न क्षेत्रे देना, अपने-साथ नकावा निरीक्षण करना, नीतिकर्मको पासन करना और स्टोको देशमें बाहर निकास देश-ने तक वारें तकार्यकी कुर है।

क्लाबन् पुरुषको अपने वृर्वल इत्तुको भी होटा न समझता काहिले । जान कोड़ी-भी हो तो भी जाना क्रानती है और विश बात कम्मानाने हे से भी मा हाता है। से राजा हर होते हैं वे अपने विकास राजवारे कानूने नहीं एक सबसी और को बहुत कोन्सर प्रकृतिके होते हैं के इस उस प्रकृत कर जो संभाग सम्बोध स्थानिके राजाने स्थान और क्षेत्ररक क्षेत्रकेक केर करा स्वर्धने । पुश्चित । यह पैने हर्षे क्षेत्र-स एकार्थ सुरक्ष है। अब क्ष्में किस कार्थ nite in mer mit

र्वज्ञानको ६३३ है—सम्बर् । योगाबीका सहस्र कुरकर परवान् काल, केन्द्रवर, अरून, वासुनेन, कुर, कार्योक और प्रमुख को जाना हुए और 'बहुत अवार, बहुत अन्या' व्याप्तर जनकी प्रदेश करने सने। निरः शुक्तांह मुच्छित्र नेतेचे कह भाषा असे कहा हुने और बहा, 'कुल्बी । अब वर्ष अध्य क्रेनेकाल है, प्रतरिन्धे में कुल कारके कारक सेंग्रेस पूर्वणा (

इसके कर बीक्षण, कुरावर्ग और बुधिहिसके क्याने प्रकृतिको नगराहर कर भीकानेको परिक्रमा की और फिन रामेंक सकत हो इक्ह्रते नहीके नीरपर आये ( कहाँ कार, क्षेत्र, संक्ष्मेयलस्य और क्यादिने विश्वत हो से इतिकारमध्ये करे असे।

## ब्रह्मजीके नीतिशस्त्र तथा राजा पृथुके प्रसंगका वर्णन

वैद्यानसम्बद्धाः बहुते है—अन्येशव ! इसरे दिव प्रातः काल ही पाञ्चल और काइक्लोग निरम्बार्यने निर्मा हुए और निरं रवीयर काकर कुरबोककी ओर कर दिने। वहाँ चीन्यजीके पास व्यूंबकर उन्होंने बारताई व्यूर्विकेको प्रकार किया और उससे आसीबांद पा वे भीकाबीके बारी ओर बैठ गये । किर परमोजस्थे एक सुधितिले धीवन्येका क्याचेन्य सरकार करते हुए इतथ जोड़कर युक्त, 'विशालक ! स्केकने जो मह 'राजा एतर प्रसिद्ध है, इसकी सरकी कैसे हुई-बहु मुझे बतानेकी कृत्य बारें । विशे इस "कबा" बबले हैं बह भी एक ! मनुष्य ही है। अरके जरीर और जन्म भी अन्य पुरुषोदे | इससे उनका विशेष नह हो गया और विशेषका नहा होनेसे

सम्बन है है तक जन्म-मरण जाति सब गुजोंने भी का दूसरे यनुष्योकी क्या है है। किन भी भूतवीर और सरहरवोंसे पूर्ण इस सारी पृथ्विका का अकेला है क्यों पासन करता है ? को इतका स्थार्थ कारण जानोको अधिराज्य है, अतः आप १००६ एत एक बतानेकी कृष करें।'

बेकर्स बेले—एकर् । सम्बन्धके अरम्परे राज्य स राज करको कोई बीज नहीं को । इस समय न बोई हुन्द का और न क्या देनेकरण। सम प्रया अवसमें क्रमित नते ही एक-इसोबी रहा करती थी। पीडे समस्येग मोहमें यह करे.

यो बस्तर किस्से पता की थी, को प्रतेष दिले सारामित को रही। क्रनेक्की कम करना इस हारो क्रेको वर्षे वर कारण । फिर कारको अचीन वेकावर कारण रागरे भी अस्ता आविष्यत स्था हैना। इस असर राग्ये अभीन क्षेत्रर ये कांन्यकांन्यके पूर न्ये। इतियो गुन-अगम्य, शाम-अगम्य, महत-अगहत और हेन-अकेन कोई भी बात उसकी होंगों स्थान न हो। इस जवार वाका-समावने वर्गीयप्रव हे कानेते के वी सहा क्षेत्रे क्रमा और बेहबर स्केट क्षेत्रेसे बर्गकर्यक क्षे मह हो नवी। इससे देखाओंको बद्ध सम इस्त और वै अक्रमीयो करमने गये। अक्रमीये क्यूने क्रम क्षेत्रका कहा, 'नगवन् ! ज्युनस्तेकने क्षेत्रसम्बद्ध का कारते लेप-मेद आहे होता पानीने यह कर हता है. इस्ते हो का पर है सा है। प्रत्या के कहा कर होनेसे वर्ग भी मह हो नना है। महन्तेने यह-सम्बद्धि क्षणी श्रूपनार्थ क्रोड क्षित्रे हैं। इसमिन्ने इस नहें जंकानी पह मने हैं। आम इसरे रिन्ते को दिल्ला हो देख बोई काय मोरिको (\*

क्षत्र सम्बन्ध भागवान् अञ्चाने कारी बाह्य, 'वेक्सानो । को गा, वे तुक्त कार्यका कोई सका लेका है। इसके कर उन्होंने उनमी बद्धिये एक लगा अन्यानीका एक मेरिकाम स्था । अले जर्च, धर्न फल-इन क्रिकांबर मनीन था। यह कम 'तिनने' सरको निकास हशा। बीधा भर्ग बोध है, अलोह पता और पूछ हुओ पूछ्य है। चुनिक्कित । इस प्रत्याचे, साथ, साथ, साथ, बेब, और और क्षेत्रा-पन पाँची क्याचीचा प्रशन्त कर्मन है। कर्म, इतकर और वनसे की समेवाली अभव: हीन, मुख्या और काम संविधीया, पर्वा बारनेके पार प्रधारके अववरतेका क्रमा कर्न, वर्ग और परन्नेद किसारवर भी प्राने असी काह निकास किया गया है। इसके सिम्ब इसमें उपाद और गुप्त सेमाओंका भी क्रिकेट हुआ है: इसमें प्रकट सेन्ड आड प्रकारको है और मुहरेड अनेको भेर है। स्थ प्रजी, केंद्रे, पैसल, बेगारमें पनाई हुए सोग, कैंबर, का और पुत्र-सम्बनी आमानक बातीका उन्हेंत्र कानेकारे-ने उत्तर सेनाके आठ आह है। यही नहीं, इसमें मानिक पूक, वहीं के गुल, रस, प्रथी, स्वस्तान और पैक्स सेवको पुर स्टानेड अनेको स्थान, तदा-तदाकी व्यवस्थात, अनेको प्रधानो क्रम-क्रीहरू, यह करनेकी और उससे निकल जाननेकी

कर्मकृष्टि की जाती रही। एक लोकने केंद्र को और | देशियाँ एक क्योंकी स्थाने काम की बताने को है। क्रमा वर्गान्ते क्रेनेनाली चहुन्द्री मृद्धि, क्रमु, निम और ब्लाबेड विभाग, कार्यानीके यक और अंगरेश, प्रतान-राजनी करेको सूहर कार्य, काराबीक और क्रम संस्थानको विकित्ती, विक्ते भरत-प्रेयनका कोई प्रकल न हो उनका चारम और उनकी हेक-रेक, सुराजको क्रम हेना, करनोते बक्ता, समाचे पूज, सेनाबर्डके सम्राज, अर्थ, वर्ग और कार्यक कारण क्या क्रमी गुज-बोर, कार्य अमेरोको आमेरिकाका विकार, सक्के और सर्वक करा, जनको करूर, यो वस्तु नित्ये न हो को पाना और जा बन्दानों कृष्टि करना, नहीं हुई बन्द्र सुरातीको दून करण, कांचे रिन्ने का स्टारच तक चीर और हुःक् निवृतियों भी धनका अन्योग कामा—इन सब बातीका इस कुरवाने कर्नन पुरस्त है। बहुन और प्रोत्तरमें क्रेनेवाले दूस इस कारनेका के इसमें करेका है। मेरि-कारके आवारीने करण, बार, मानाम और संध्यान—में बार सरकारित क्य मानोची बहुत, कारा, बर-बेट, प्रधेरको केन् बर रेक, अन् केन और अधिक हाने पहेंचाना-के क nitud gibunt unm mob fit trep-ungir ben afre करवी क्रिकारोक, प्रतिक स्टूको पीवित सर्वका प्रका ज़ल्बी रोक्यर केंद्र करने और अन्तेः निवासस्वानीको नह करनेका भी इस समाने करनेका है। मुख्यी हजारते और व्यक्तिको अंक करका, केटी-कारीको विश्वित सेनाकी सामाने. कार-वारत और ध्वांचारि क्यांचारी वैत्री —वे उस करें इस कारको कारको नहीं हैं । केरह, कारके, सक्त और क्यूजि उन्हों राज्यकोको कवाना, जीन, यस, पुर्की, कवा, क्षा-क्ष्मी और सुवर्ण-इन कः भग्नवीको जात् भारता सक्। इक्क्रकेकी कुन कः चीन्नेका नाम करना, नवे जीते हुए प्राचने प्राणित प्रधानित पारणा, सायुक्तवेचा प्रस्तार, विद्यानेके साथ केल-जेल कहाना, तान और होकारी विक्रि, चेक्नको कामक, सर्वत आदिकारोह रक्ता, अकेले क्षेत्रेयर की काने-बैठनेको रीति, सामक, प्रमुख्याम स्था कारण और सम्बन आदिके अवसरकर होनेकारण करेल को —इन संपोध्य इस साध्यों निवासन हुआ है। देश, बाहि और कुलके वर्ण, अर्थ, काम, मोझ-इन चारो पश्चमेकि रखान और ज़र्वे क्रांत करनेके ज्यान तक किन सरवनोसे यनुष्पात आर्थवर्गसे पान न हो, उन सचीका इसमें कर्पन है। इस नेविकासको रक्तम हो कनेपर स्थानीको पक्ष हो हठा और उन्होंने प्रसादि देवलाओं से सहर ।

कारणी कोले—बह इत्यानीक जनसे विकास विशा सीनों लोकों में विद्यान है। बाताबर्धे इव्यान है। बहु कार्याक कार्या है। बहु कार्याकी कर कुलों से बहु है। बहु कार्याकों कार्याक अस्तिक होता। इस सावाने वर्ण, अर्थ, बहुन, मोह्य—समीका विवास है।

तम संबसे महते प्रकार इंकरने उस मैनिकावारों महान मिना। उन्होंने जीकोबी साथु प्रदर्श देश का प्रवासों मंदिए किया। यह पन्य 'वैद्यालक्ष' सहाराखा। इसे इसने महाने किया। इसने कुछ इस इसन अवास्त्र थे। विर भागान इसने भी इसे संदित्त किया और इसने केवल बीच इसर अवास्त्र यह नके, जन यह क्या 'वाद्यावक' कार्या कार्यासी इसके मान् वृद्यातिकोंने इसे बीन सहस्त्र अवासीमें संबुधित कर विया। यह सन्य 'वाद्यावक' कार्या महान इसर अववासोंने नका। इस प्रवास महानेकोंने कन्यांकों कार्यास इसर होते देशकार लोकक्षितकों दृष्टिसे इस प्रवासकों महान संविद्या कर दिया।

इस मेरिसाकारी एकनाके यह कृतुकी कारती पुत्री युनीनारी राजा अंगके हरा केवळ क्या हुळा। यह रागहेको असीन होका जनाने अवर्गका एकर करने लगा। यह नेक्स केवानी मुन्तिनोंने को अधिवर्गता कृतकारोंने मार करन। दिन देशमें अस्तानका कैली देशकर क्योंने कैनके एक्टिने इनका मन्त्रन किया। जनने एक इनके समान



क्लाक्यम् पुरुष अध्य2 हुआ । उसके क्षरीरपर करण सुनोधित वा, कारपे साम्बार स्टब्क की जी तथा कंत्रेपर बनुष-वाक वे। या नेत-नेत्राहोत्वा आस और पनुर्विद्याने पारंचा का अ तथ केन्द्राने इन्ध कोक्कर अधिनांसे कहा, 'सुनिराल । पुने वर्ण और अर्थका निर्मय करने वाहिते—च्या डीक-डीक-व्याको हैं। पुने क्या करना चाहिते—च्या डीक-डीक-व्याको हैं केन्द्रा और प्रमुखिने कहा, 'दिना कारपे हुनो कारकी विवास करना व करके एक जीनोंके प्रति सामा व्याप पहले। कान, स्त्रीम, स्त्रीम और नामाने हुनो ही व्यापका कर है। सर्वहा कर्नेन्द्र हुनि रखो और को समुख्य करने विवासित होता दिकाची है उसका अपने बाह्याको कार करो है नेन्द्राने कहा, 'कारपुन्थको ! आहाना को मेरे विवास सर्वहा क्यानीय हैं, उन्हें में हवा न है सक्कार।' मुनियोने कहा, 'डीक है।'

तान नेहिंगीय जगवान् सुव्यकार्थं इसके पुरेषित वर्षे और वालपिक्तकोने जनीयां वाल्यं स्थारतः। यह येन्सुत पृष्टु विज्यापनकार्यः साठवाँ प्रिकृतः वाः सुन्ते हैं पृष्टुकं सम्बद्धः पृष्टी व्यूतः केन्द्रे-नीयो थीः। उन्होंने ही कार्यः स्थानकार हुते सम्बद्धाः कित्यः है। व्यूतः है, प्रशासन् विज्यु, हुन्त, हेकारतः, सम्बद्धाः, व्यूति और व्यक्तन—हत्र कार्यः विश्वकार पृष्टुकाः अधिनेवाः विक्यः थाः। उन्हर्षः पृष्टिती यी प्रशीकतः वेदः सेवार स्थानी सेवाने स्थानिकाः हुई थीः। सन्दुरः, विकारण और हुन्तरे स्थाने अध्यक्त क्षत्र दिवा वा सवा वक्त और प्रश्वनोद्धाः स्थानी भगवान् कुनेरने भी बहुतः सन्ताहित्र वेदः वर्षे थीः।

वृतिहित । राजा पृत्युक्त संकारण करते ही करोहों हाती, राज, जोड़े और वैद्यार प्रकार हो गये । उनके राजाने कुछ्या, कुळाल, जानि-व्याचि सभा सर्थ, और या अस्तारमें एक-कुर्मिने किसी प्रधालका था नहीं था । मिस समय से स्पृत्ये हेंथर करते ने उसका जरूर रिवा हो जाता था सवा वर्षण उने राजा है सी थे । अनुने इस स्वेवाने धर्मकी वृद्धि की वी और ससी प्रकार पूजा दिस्सा था, इसरियो व्याच्या जानो निकारण हुन्म । प्रशासकीया हासिसे प्रधा करनेके कारण वह 'स्वित्य' हुआ तथा असने कर्मकुतार पूजी यह राजा । सर्थ अन्तारम् विच्युने उनके विकास सहस् पूजी यह राजा । सर्थ अन्तारम् विच्युने उनके विकास हुन्सी कर्मक करत्वान नाम अन्तारम् विच्युने उनके विकास हुन्सी कर्मक कारणान नाम अन्तारम् विच्युने उनके विकास हुन्सी हेमा' हवा पृथ्के इसेंस्ये सर्व चनकर किन्तुका करेत क, इसीसे सार्य संसार वर्षे देवताकी तक काकर उसके समये सुकता था।

ा राजन् हे इस्तरिको गुहाबरोके प्राप जनावती नांतरिकेयर दृष्टि रसस्वर तुन्ते सर्वत जसका बच्चनीतिके अनुसार कारन करना सर्वति। ऐसा न हो अस्त्रेत साथ विश्वकर कोई प्राप्त विवास परिके रिके हो होता है। असके विरोत्त्रकोद निवास और नेस्य क्या कारण हो स्थापत है, जिससे साथ हैए एक स्वतिके सर्वास हो। स्थापत है, जिससे साथ है। तो भी यह सारा सोबा अस क्याकी ही असको क्या रहा है। सामके स्थापत कहा स्थापत है। साथिक कारण सारे रहाने मेरी

और न्याक्यर सरकरण होता है।

वृतिहिर ! ज्ञानवीके इस नीतिवासमें पुरागीते वर्णानांव, व्यक्तिवीकी स्वति, तीवंकि वंस, नवानोंके बंस, वरते ज्ञानम, व्यन प्रकारके होतवाने, वारों वर्ण, वार प्रकारकी विका, इतिहास, वेंस, न्याय, तथ, इतन, अधिका, साम और जासाय, वृज्याकोची सेवा, यान, सीव, सामका और व्यक्त-पुन सामी विकालका कर्णन है। अभिक क्या, को पुक्क पूस पुनर्वाचर है और को इसके मीने हैं, ज्ञा सामीवार पुस

करकोड़ ! इस अच्छर सवाओवा को कुछ पहल है, यह रूप मेरे हुने सुना दिया। सब पताओ और पद वर्ष ?

# राजा युधिद्विरके प्रश्न करनेपर भीवाजीका चारों वर्ण और चारों आक्रमोंके धर्म सुनाना

- वीज्ञाणकार्यं कारो है—कारनेका ? या राज्य कृतिहैहरो वितासक भीवनमां प्रमान कर उसने द्वार संक्रात्त कुछ, 'वितासक ! कारों कर्ण, कारों अध्यान अदेर राज्यकोते: क्षीय-वर्धय-से कर्ष सारे एते हैं। इसका सरम्ब-आवन कर्षत क्षीयको । ऐसे कीम कार्य है वितास राज्यको क्षीय क्षीय केरों केरों किम क्षार्थित क्षरवेले राजा, पुरक्तती कार्य सम्बद्धकारिका अस्त्रात्त होता है। राज्यको विता प्रकारको कोम, वन्द, तुर्ण, स्वायका, कारों, प्रतिवक्त, पुचेवित और अस्त्रात्ते क्षीयको ज्ञान देश कारों । सामानिकासक अस्तेवर वितार प्रकारको स्वीयकी विवास करना कारोंगे और विता स्वीयोत्ते सम्बद्धि क्षीयकी पूर्ण-पूर्ण क्षीयको श्वालो कारोंगे ?

वीनावी बोरी—वर्गवरी पहिना बहान् है; अल- मैं कार्वकों वर्गवर करके सन्तरन वर्गोंका वर्णन करका है। अवहोंक, सरकारका, करको वॉटकर चोनान, क्षण, अवनी वर्गित संवार अवार करक, वर्गेंग, अहोत, सरकार और अपने मारंगीय कार्यकोंका पासन करना—में मैं वर्ग कर्गों मारंगीय कार्यकोंका पासन करना—में मैं वर्ग क्षणी मारंगीय राज्य है। असे अवारोंका पुरानत वर्ग है। इसके रिमा कार्यकामा अध्यास की अवार प्रधान कर्ग है। क्षणि इसीरों अने स्था कर्गोंकी पृति हो अवति है। वर्ग अपने कर्गित इसीरों अने स्था कर्गोंकी पृति हो अवति है। वर्ग अपने कर्गित स्थारके असरकार्गका अध्यास किया क्षणी है। वर्ग करने करित्र स्थारके असरकार्गका अस्तर्य क्षित्र क्षित्र ही कर करने हैं। स्थारके असरकार्गका अस्तर्य क्षित्र क्षण हो कर करने हैं। वन वर्गतकर ही कारका जानोन सरणा पाहिने—हैवा निहानोका नत है। प्रकृत केरला एकश्वानों ही कुल-कृतन हो नता है, हतो कर्ग का करे अवन्य न करे। इसली प्रकृतका होनेके सरणा का सक सीधोका निश्न कहा कहा है।

प्रजन् । तान क्षणिको वर्ग एने । व्रतिपानो दान वारण वार्तिने, नित्तु वर्णण नहीं वार्तिने । इसे प्रधान वह दारण वार्तिने, नित्तु वरण्य नहीं, प्रणावन पारण करे तथा एटेरोको वार्तिने वर्णण पहले नहीं, प्रणावन पारण करे तथा एटेरोको वार्तिने वर्णण प्रहान एरापृत्तिने पर्णाप विद्याले । को राजा काव्या और पहे-को वार्तिने वरणण विद्याले हैं और वो पूजा विजय प्राप्त करते हैं, वे ही पूज्यरनेप्रतेको प्राप्त क्षेते हैं । वित्रा प्रवास कुन, व्यवस्थान और वह राज्यालेके वारणानों राज्याल है, उसी प्रधार पुद्ध की उनके नित्रे नि:क्षण्यास वारण कहिये । उसे अवस्थि एक प्रवास वर्णण अवस्थि कारणे कहिये । वार्य प्रवास है उसमें राज प्रवासके वर्णण्या कार लेखा है, दूसरा-कोई कर्य वह प्रयोद अवस्था न वर्ष । असमें वर्शकी प्रधानता है, इसरियो वह प्रवास हुए वद्या कार्य है।

इसके बाद में बैदसका सनागन वर्ष सुनास है। दून, अव्ययन, यह और वर्षित स्वयनोरी का रीव्ह करवा—वे उसके प्रचार कर्मन्य हैं। इसके विच्छ, उसे सामयानीसे सब अवस्त्रके पञ्चलेका पालन करना चाहिये। यदि यह विस्ती कामविक्द कर्मका आवश्य करता है से उसे विकास बढ़ा बाता है। पद्धांका पारन करनेते बैरवको बढ़ कुन बिस्ता है, इस्तरिने उसे ऐसा विचार कके जी करवा काहिन कि मैं पद्धारण जी बावेश :

अस हुन्हें सुर्वेद वर्ण बताता है। इस्टूजनेने सुनेको सैन क्षेत्रित स्थापके रीजे एक है, इसीजे को कार्या प्रेमास्त्रकार्वे सर्वे रहता चार्युने । प्रत्यो प्रेसा करनेते ही उन्हें भेदे-से-बार प्रश्न निक समझ है। बाहके बनावन करी मार्थे करन पार्टिने; क्लेकि वर प्रकार मह कार्ने अपूर है माता है और कारोते को अञ्चलकारीको अपने अधीव रकते रुगता है। को कोई सार्थित कुछ करक हो से स्वापनी भारता पायर केला यह प्रधान है। अने में उत्तरी प्रतिपद कर्नन करता है, विस्तरों अल्पी अवनेनिकारक निर्मा है इस्कार है। सीनों कर्नोको स्टब्स काल-केरण अवस्य सारक बाहिने। काली नेलांबे बहुते को काली राज्ये हुए हुछे, बाहर, बड़े और देशे के अहिते। के को-पूर्ण क्या अके महत्त्रेचेन्य र रहे में सहस्त्रे ही है हैने साहिते; क्लीब्रेट करेंड: में अनेको जनति है। सेकारतका कुर किल-किलो देवके कत कान, ज्योंको जान्यो आयोजिकाका प्रकार कर कुंच मारिये-देशा वर्षा पुरुषेता स्तुत है। सुरक्षे पी सक्ते स्वर्गाचा किसी उक्तरके आयोजकाने के ताल की काव भारीचे । महि जापी संसामग्रीन हो से को है निवादन सरम कार्युंचे और पूछ का कृति हो से इसका करक-बेचन की भाग गाउँने। इस कार्यने करका गांव से से भी को क्रांस्क्री स्वर्गिक भागा-वेकाले ही हत्वे क्वां व्यक्ति; मंत्रीके बद्धाः व्ह वर कुछा अन्तर वहीं पात करा, ; कायर से जाने जानेका है अधिकार केस है।

प्रामिते तीनो वर्णीय देश्ये व्याप्त विवाद विवाद गांव है तथा प्रमुख देश्ये क्याप्ति प्रश्नात स्थित है। व्याप्तात, प्रश्नात और गया—इस्ते प्रमुख स्थित प्राप्तात औं है। उस प्रमुख सैन व्याप्ती देशा न लेकर केवल प्राप्तात की को है। तीन वर्ण के यह करते है स्थात पान प्राप्ती की निरम्त है, क्योंकि सन्द्राच्या ही इस प्याप्ति प्रमान है। यह सरनेक्यलेका भी परम्पीय सन्द्रा ही है और स्थापन प्राप्ति प्रमान है। यह अपनी सन्द्राचे परमो प्राप्त सम्बंध स्थापनाहित किले हुए प्राप्ति परमान अधिकारी हो जाता है। प्राप्ती प्रमुख, उस्प और प्रमुखेवना अधिकारी हो जाता है। प्राप्ती प्रमुख, उस्प जनावति है। इस जनार मानदिन्य पालेका आन्वार स्वर्थन क्रमंत्री है। मुक्त को इत्तिक्षेत्री परिचार आर:कार और क्रमंत्रालये अञ्चलका इत्तर करता है, आने भी अन्तर क्रमंत्रालये अञ्चलका इत्तर परिचा आव्यालये क्रिक्टियायके अञ्चल क्रमंत्री परिचा आव्यालये के पाले क्रमंत्रालये है। परिचार्य करते का आव्यालये के पाले क्रमंत्र क्रमंत्र क्रमंत्र करते का आव्यालये के पाले क्रमंत्र है। परिचार पाले होना है कि श्रम करते के प्रतिक्र क्रमंत्र क्रमंत्र क्रमंत्र क्रमंत्र है। इत्तरिक्ष प्रमुख्य है क्रमंत्री क्रमंत्र क्रमंत्र क्रमंत्र व्यक्ति है। इत्तरिक्ष प्रमुख्य होनां होनां हो क्रमंत्र अन्तरी प्रतिक्री अनुसार अञ्चलका प्रवेश प्रमुख्य क्रमंत्री क्रमंत्र क्रमंत्री।

पृथिति । अस पुत करो असरोधे पून और इस्ते पूने, स्कार्य , प्राच्यान, सन्ताव और इंग्यान—में पार स्वा्न हैं। पूर्ण पाईन्सको प्रदेश दिल्ल है। स्वा्याने स्वा्नाम और अन्याद-संस्करकृष हैं साथ अस्ते पर्देश केव्याद और अन्याद संस्कार हैं साथ असरोधे पूर्ण हैं पर इंग्यानिस संप्ता पर प्रति एति अस्याद को केव्याद सामान्य असरावे अस्ते करें। पूर्ण अस्ताने असरावद सामान्य असरावे अस्ते करें। पूर्ण अस्ताने असरावद सामान्य असरावे अस्ते स्वार्थ विकानसम्बद्धी योगीर विरक्त है जाय । स्वार्थ है केव्यादानी सामान्ये रिन्ने सामान्येस रास्त्र कराई है।

वंश्यातीको काहिये कि यह और इत्याविक वंशय की, वह देशीय के वह उपन अपन किसी बसूबती हका न करे, अपने देशों कोई कुट व कावाद और को कुछ विश्व काय अपने दिखीं कर है। सब तकारी कामनाओंका तथा कर है, सबके अपन स्वान्याय रखे, जेगोंसे कु रहे और इद्यों किसी अवस्था कियार न आने है। इन सब वर्गीय कावा का असल साहाद केवाब कार्याद कार्यावाक हथार है। इसमें पहुँच्या पूरण अधिनाती परसावको साथ इस्तिकारों कार है। कार्य है।

स्था पुरस्कारमध्ये वर्ग सुनाता है। यो पुरुष वेद्वेवर अञ्चलन कर सब प्रकारके कर्म करते हुए संसान सम्बद्ध

१. पूर्णकामा परिवार इस प्रधार है—अबट मुझे जावनो जिल्हात्' बढ़ते हैं, जाट विश्वित्ता एक 'पुनवत' इंस्त है और चर पुन्करमान एक 'पुर्णका' होता है। इस प्रधार दो सो समय मुझेबा एक पुणेवन होता है।

अर आक्रमके पुनिकनेचित कहोर वर्षीका पासन करता 🛊 यह भी इनिर्द्धिय भोगोंसे किन्छ हो जात है। जुहराको चाहिने कि अपनी ही बीने सन्ता रहे जानुकालने बी-समानम को, सम्बद्धान्य चलन करे, प्रतता और कपटरो दूर हो, परिनिक्त अकार करे, केवलाओंकी असावनाने रायर यो, दूसरोंके करकारोंको कद रहो, सक और यूट भारत करे, एवा और क्षमतो एक खे, प्रतिसंबद संबद करे, पुत्र एवं परकोची जाता माने, केवल और विवरीकी तुर्गिके लिये इम्प-सम्म देश थे, अञ्चलीको निरम्पर । करन कार्कि । ये हो सब सहस्वांशको धर्म है ।

अच्छन करे, यत्सारी हर खे, अन्य तथ कामयोक्स मेकन को और समेद ब्युअन्यदिमें लगा खे।

व्यापनीको एकमान सम्बन्धिको ही सेवामें उत्पर सुना व्यक्ति, इन्द्रिकोच्ये काम्प्री रक्तकर अपने इतका प्रस्तन करन व्यक्ति, वेद्येक सामान करते हुए निरुक्तवीका अनुहान करना काहिने, निजाती मुख्यीको प्रशास करना क्योंने क्या कर, संबाद, कर, श्रेम, साध्याय और अधिकपुरूष-पूर्व कः क्योंका विकासभावसे आकरण

# सर्वसाधारणके धर्म, राजधर्मकी यहता और उसके विषयमें इन्द्रवेषधारी भगवान् विका और राजा मान्यातरके संवादका वर्णन

रूप विश्वीत वह-विकास ! अब अल हेरो वर्गीका कर्तन कीरियरे को सब प्रवार कार्यानकारक, मुख्यार, परंथ पुण्यात, हिसाहीय और एक सोकोमें काशीय हो उस किनका सुरावाको पारमा हो अहे ।

धीमधी मेरो-परात्तेषु । उक्त चार जातान प्रात्त्वाचीन रिमो ही बार्व गये हैं। अन्य होन वर्ष ज्ञावा अनुवर्धन पार्टि कारते। उसी प्रकार को प्रकार अग्रिय, बैरव का क्लेके कारोंका रोजन कारत है, अर जन्मतीनारे इस स्टेक और मारतेशामें निन्धा होती है तक मरनेपर का नतकों काल है। के अवस्य के: करोने तसर कात है, बारों अध्यक्षेत्रे अके सह क्षणेक आवरण करता है एक सकती, निरुदेश और बहुत है, बसे अक्षम लोगा प्राप्त होते हैं र यो पूरत किया प्रधानका वर्ण माला है, अवसे उसमें बैस्त ही गुज अर कारा है :

शक्त् । धनुषकी क्षेत्री कॉकना, क्रमुक्ते क्कना, क्षेत्री, कापार वा बसुपारल करना अवन्य क्रमके दिन्ने कुररोसी सेवा करना—ये हाहायके रिप्ते कावन्त अवर्तक है। परीकी महाना गरि पहला हो से उसके लिये बदलर्थ ही सेवार करनेयोध्य है और कुलकुल होनेयर उसके देखें बन्ने रहक ही अच्छा नाना गया है। प्राह्मणको राजनेश्वा ऐसीके छन्, कारतस्त्री आयोजिका, कृतिसमा, वरहीनका और कास—इनमें सर्वेष्ठ दा रहना बाहिये । जो ब्रह्मक क्षान्ति, बर्महोन, कुलस्त्रका स्वापी, कुलरखेर, नलनेकरक, रेक्सेक्स अवना कोई और विकर्ण करनेकार होता है, बह अस्पन्त अन्य है, उसे के कुत ही सम्बद्धे और इसे कुछेब्दे वैक्तिमें विदासन ही भोजन सहस्य वाहिने। हेर्स हाहासोस्टो देवपूजन आदि कार्जीने हुए रसना काहिने। जी आहमा क्योक्कान, अवस्थित, क्षत सम्बद्धालात, विस्तासक और क्षांने कर्मको सामाना करमेनारा हो, उसे हना, कार्य अक्का कुररे क्षण केन न केनेके बराबर ही है। इक्का से करीयो सम्बान वाहिये में विसेन्द्रिय स्पेपनान करनेवाता, सहावारी, कृपाल, स्वानातील, निरमेक, सरल, यह और क्षांक्रम् हे, इसके किसीय को पापपस्थल है और क्या महाम सम्बद्धाः मान ?

करू । प्रशिक्तों से वादिने कि पहले कर्रानुसार प्रकार काल करे, राजसूध, अक्रमेव नक इसरे क्योंका अनुक्रम को, क्रामको अञ्चलके अस्तार प्राव्यकोको स्थिति है, संस्थापने कियान प्राप्त करें, बिर प्रमानके स्थापेद रिजी राज्यमा अपने कृतका आधिष्यक को और वर्दि का योजा न ते से किसी कन्य व्यक्तिमहामारको गोद नेकर राज्यका अधिकारी बनावे । इस प्रकार विद्यानोके द्वारा वितरीका सवा पाल्यान और पेट्रामकाने देवता और स्थितीका असी रक्ष पूजन कर को इतिक उत्तर समस्यार अन्य आसामी उनेक करण पाने व्या कमारः उन्हें सीमार करके मोक्ष प्राप्त का सकता है। जुल्लाकरोंका त्याप कर देनेपर भी कृतिकड़ी संन्यास्थानेका पारन करते हुए धीवनस्थाके रिप्टे ही विश्वास अवस्थ रेजा पाहिले, अपनी रोगा कराउँके रिक्टे देश करण दोक नहीं है। प्राप्तकके रिका अन्य तीन दर्जाके रिके बतो जनामोके करोंका पासन करना अनिवार्य नही है। व्यक्तिको सिन्ने से स्थायकोती ही प्रवानता है। यो भी रक्का को स्था क्योंने प्रकार है। इसके द्वरा स्था क्लोंका परका होता 🛊 ) एजपनींचे सब प्रकारके दानीका स्थानेत हो बात है और समस्ते हैं सबसे प्रधान और पुरातन क्षयं बाह्य वाता है। यदि राष्ट्राव्य न हो के ब्रह्मांग्रास्त्र नाह हो जान और उसके यह होनेपर को सारे मसीवा है लोग हो जान। इस प्रकार पुरातन स्वकार्यको ज्ञान केले जानी आसारोके बर्मोंको देस पहुँच सम्बद्धी है। राजकारी वाली अवस्त्राह्मा विश्वासीका सम्बर्धक है और कारी विवास क्षया समझ संबद्ध भी राजकार्यक ही अधीन है, इसरियो क्षयानके विको के एककार्य ही समसे केंद्र है।

पृथितिर । यह जात में पाने हैं यह मुख्य है कि इक्कानोंने इक्कानों, कारतार और संन्यान—इन सेने आसमीन नर्नेका गुरुवाने कारोंने अन्तर्भव है जात है क्या श्रीताने सर्व तीने कारोंने अवस्थ है वारोंकि कारता सेना और प्राथमां कार्या कार्या है है। इस विकाल है अर्थ और अर्थाय किया कार्या एक राजा का। अर्थ आदि-अन्तर्भ कार्या प्राथमां कार्या का राजा का। अर्थ आदि-अन्तर्भ कार्या प्राथमां कार्यों का कार्य कार्य कार्य कार्योंके विका अर्थ कार्यान्त्र कार्यों का कार्य का कार्य का कार्योंके विका अर्थन की। का कार्यों कार्या का कार्य का सामान्योंके स्थित अर्थन की। कार्यान्त्र केर्या का कार्य क्रिया कार्यानोंके स्थित अर्थन कार्यान का्यान क्रिया कार्या क्रिय

हत्रने कहा—राजर्। तुम सभी बहुकोंके राजा थे. इसरियो तुम्हरे कार्य खे-यो सामगार्द हैं इस समझो में पूरी



करेंगा । तुम सरकादी, वर्गपराक्त, किलिक और कुलीर

हे । तुम्हरी सुद्धि, व्यक्ति और सुदृष् अद्भवेत कारण केव्याओकी दुस्तर सहि प्रति है: इसरिको तुम्हरी को इच्छा हो बड़ी का हेन्के रिको में बैच्या हूँ।

क्रमानं का भागमा | वै आजने सिर प्रांगास ( और अवन्ये आया करके आदित क्रमान् विज्ञाने वहाँ करन काम () अन्य नेते इका रूप अकारके मेरोको काम का कर्म क्रमाने हैं क्रमीक क्रमाने सभी साधुक अवने इसी कर्मका अनुसरण करते हैं की बातवर्गने हारा विक्रमेकारे कुमानेकोको से आह कर दिया है और संस्थाने अपने क्रमी की क्रमीय कर है है, विज्ञा के मानित्व क्रीयानुकारकारों अनुस हुआ है, अस्या अस्यस्य कामा वै कृत अस्या।

(%) का -- अस्तिव सनवार् विन्तुने ही पहले क्यानों है क्यूब हुआ है, सुतों बर्ग से कार्निक अबू हैं और अले कर है जक्द हुए है। इस वर्गीक अस्तर्भव क्रान्त्रमंत्रे के के पान है, क्रानिये क्रांच्ये राज्ये के का का है। कार्यन्ते श्रामनोत्रे प्रश्न है प्रश्नुनीका कुल करके केवल और व्यक्तिकोधी रक्त भी भी। पहि से अस्ति अवस्य का वृष्टीको व बीतो से अस्पिनेका का है कोने को को और को आपके हनी कर्मका नाम के बाता। इन सन्तरन कर्मका सैक्को नार क्या है पूर्व के सिंह असमारी हुई पुरू स्थितित बार केला है। कुल-कुलने प्रतीके बारका स्थापन बार्वेका बद्धार हरू 🗓 इस्तीको पनुष्योगे इसी बर्गको सबसे अच्छा क्षक करत है। कुछी क्रांस्की आही केन, समझ प्रातिकोका कुळ क्षेत्रक , त्येक-स्थाद्यात्का हान प्राप्त कार्या, क्ताचीर प्रकारी रक्त करना और पुत्ती खेनोको पुत्तारो कुक्रम—ने एक को समाओं असमाने हैं पानी करी है। को रहेन काम-कोकों की हुए है और वर्गाहरों जो कर करते. वे समके असे ही कर जो कर पारे क्या को तक प्रकारके कार्रेका चारत करनेवाले तिहा पुरस 🗓 वे सहस्रकार सेवन करते हुए सञ्चलका कारेल कर रूपते हैं। एक अपने बक्का पुत्रेकी तरह परान करता है, अब: इसमें संदेश नहीं, कारबी देश-देशमें प्रथ प्राची लोको निर्भव क्रेका कियतो है। यह क्रका संस्थाते क्रमार्थ ही रायते हेत्, समाता, नित्त, अविनापी और तान जीवोच्या उपकार जारनेवाता 🖢 प्रसंका पर्यवसाय केंद्रमें से केंद्र है।

राजन् ! हुम-जैसे खेळाडिनी पुरुषेको इस इटावर्यका है परान करन काहिने । वटि इसका परान व विद्या कारण से जल नह हो नावनी। यो राज का
प्रतिन्योगर क्यानी रकता है, उसे इसीयो अन्य जनान वर्ग
क्यानी वादिन। यह वृश्तिका संस्थान करावे, एक्युवअवनेवादि कामें अववृश्य-काम करे, विश्वास आवान न
है, प्रवास पारण करे और संस्थाने इसीराव्य करे। विश्व करावें और वसे सुरवित स्थानेक कारण क्याव्यक्ती है के
वास वासा है और इसीमें आरे करें सम्बद्ध हम् है।
क्या-वासाई कराज तथा पाने में करें अनाम को नवे है।
क्या-वासाई कराज तथा पाने में करें अनाम को नवे है।
क्या-वासाई कराज नमें वही है। वो विद्य इसका वासन न करे,
को क्यां समान क्यां कर क्याव्यक्त करीय है।
क्यां क्यां अपन है वा समानकर कर वहीये। से प्रवास क्यांने अपन है वा समानकर का वहीं है स्वास्त, उसका
क्यांने अपन है वा समानकर का वहीं है स्वास्त, उसका
क्यांने क्यांने है वा समानकर का वहीं है स्वास्त, उसका

श्रान्त्रामें सहा—क्रिया ( वेर्ट प्राचने के साम, विरास, नामार, चीन, प्रमार, कर्च, क्रम, क्रम, सहू, प्राच, श्राम, का, पीन्द्र, पुरिन्द, राज्य और मान्योच कारी, प्राचित्री संस्था है, उन्हें श्रापने-श्राणे कार्नेका विका प्रमार प्रसान क्रम्य वाहिने ? इनके दिन्दा, को सीच सुर-नाम प्रसान क्रम्य वाहिने ? इनके दिन्दा, को सीच सुर-नाम प्रसान क्रम्य वाहिने ?

हर्न का —राजर् | को स्वेद सूर-का करते हैं कारण निर्वाद करते हैं, उनके करने नका-निक्क, स्वकर्ण, गूल, आसनवासी और राजकोकी केवा कराने कदिने, मेक्क वर्ण-कर्म और रियुवाद्य कराने कदिने, कुरी, कीलरे और आसम करवाने वाहिने तथा क्यारणन सकुन्येको कर दिल्लो राजा वाहिने। असिना, कार, आक्रेस, और, अकेद, व्या-व्यानाहि कारवाके अव्याननेत्री इतिया हिरानी व्यक्ति और व्यो-को ज्यानोन कारवाने वाहिते। राज्य । उध्यपति व्यानने इसी अवस्य क्या प्याननेक व्यान्य प्याने हैं निर्धित कर हिते हैं। उनका अहे क्यानाम् कारण करना व्यक्ति।

क्ष्मको सह—केरास । कारणस्थानमें हसु तो सची को और इस्के 200कोरी को मारे हैं। वे केरल विसर्गतन्त्र विद्वारों की को हैं।

हुए केले—श्रम् । का क्यानित नह हे चाले है और प्रमानकी लेका हैंने स्थान है में एकी सार्थ करेका केवादी से नामे हैं। इस सामपुरामी समानि हेनेना अनेको केवादी संस्थान अंगर हो सार्थने और ताम लागानोंने देश-दार हो सामपा : लोगोंने साम और सोमपति लागानी होती, इसरित्रे से पूराम और मानेको करामपीतार साम प देशने अन्ये एकोड़ो पार्थ लोगों : यह सहस्रका रामानोंन क्यानीतिक सामपान करेका हुएए नहीं होता । एका सार्थ लोगोंके सामपान करेका हुएए नहीं होता । एका सार्थ लोगोंके सामपान करे हैं। से पूर्ण सामपा अवस्था साम है, सार्थ स्थानति, सामपा, केवाना मी सोमित सेमित स्थान स्थान होता है मी पूर्ण सामग्री पुरस्को म्युविकानेको स्थानक विचार सामा है, मी पूर्ण सामग्री पुरस्को म्युविकानेको स्थानक विचार सामा है, मी पूर्ण सामग्री पुरस्को म्युविकानेको स्थानक विचार सामा है, मी सामपान केवादी सामपान और पूर्ण साम्यान है।

क्षेत्रकं कार्य है—कृष्यित ! मानासको इस समार उनके केवर इनकारकारी भगवान किया अभी कार्यका और अभिन्यको कार्यको को गये। इस स्था पहले नगवान् किया है पार्वकर्णको अभीवत किया का।और अपके-अपके सामुक्त इसका सम्बद्धा करते हो है। असः हुन भी अपने कृष्यकोक्षय जीवृत्त इस क्षात्रकर्णका है आगरण करो।

### राजवर्ममें चारों आजमोंके प्रमौका समावेश

रका नुविक्तिले का—जिलानाः । सामने मनुवर्गेक कार आसम् बताये हैं, सो साथ साथ विश्वासी करका कर्णन कीविये।

योगार्थ गेले—युधिक्षितः । यो को सम्मान कार्येका जैसा इकर मुद्रो है जैसा तुमको को है है, क्यांकि हुए गुहरते कुछ है। तो सुने । सक्षावरणे अवृत्य होकर कार्य अवनकोंके कार्यका पहला करनेवाले लोगोंको किन करनेकी अहि। होती है, से ही स्पन-हेन को इकर एक्टनेतिके अनुस्तर कार्यक असनेकाने

प्रमान्यों भी अस्त होते हैं। यदि एका सम आणियोगर समान हुटि रक्तनेकाल हो तो उसे प्रान्तिकादी अस्त होनेकाली गाँउ मिलवी हैं। जो पाना जासस्तानको जानक है और निसे एका और निहुत्ताको क्योंकित प्रयोगका की क्या है, उसे गुहत्वासायिकोको प्राप्त होनेकाले लोकोको आदि होती हैं। हस्ते अस्तर जो स्टब्सनानि पुरुष्टेको अस्त्री अधीश क्यूंचे हेक्टर सम्मानित करता है, उसे अपने व्यक्तिको आदि होतीवाली गाँउ जिल्ली है और सो अपने

समारीय, सम्बन्धी और सुब्दोबर वियक्ति उद्धार करता है, रुपे कनप्रस्थान्त्रे प्राप्त होनेवाले लोक प्राप्त होते ै । जो प्रस्था जवार-ज़बान पुरुषों और सामाधिकोचा सम्बाद करता 🖫 निरुप्तति विस्ताद, पुरस्क, अधिविसेच और देवपुर्वाः करता सुरा है तथा को एउनुस्कोंके स्थानके तैनके प्रयुक्तिके सहीका दरान करता है, का राजाओं काराजानेके लोकोकी अपि होती है। समझ अभियोका तथा अपने रहता बसन, निरुप्तरि वेदोवा अव्ययन, क्षमा, आवार्यका एउन और गुरुरेगा—ये इक्षरप्रेकाकी आहेल्क साधन है। कुनूने प्राणीको प्राथीकः अन्यस् आवेदर किर एकाका देख निक्रम स्थात है कि 'का हो पर कार्यन्त का देखकी रक्षा करके स्थाप को भी सहस्रोध है प्राप्त होता है। के एक सब प्रार्थ-वीके प्रति निकारत और हारत काळार स्थान है का जी र्मभारित्येक लेक है कर करता है। वो एक करता और नेदावीके हाता प्राञ्चलोची च्यून-का वन देश है, उसे बागप्रस्थीको प्राप्त क्षेत्रेयाले लोज विस्तते हैं। यो कारक, च्या और समस्य प्रामित्योके और इन्स करना 🗓 का राजाको सन्ते प्रकारके पुरुषलोक्त जात के सकते हैं।

परि कोई अत्याकारने कतात्वार अवन्ये कार्यने असे से काशी रहा कारोकारे प्रशास गुहुसावकी होकीओ आहि होती है। इसी प्रकार को सब प्रकार करावर अधिकांको रक्षा और पूजा करता है तथा जो पूजनीय और आबाद प्रत्याचेका पाला करता है, अरे भी गुरुवोको निर्द्याकरे पुरुवलोक्त ही मिलते हैं। की पूछा विकासके को हुए कांचे बकार्य रेतिसे स्थित है, यह सभी मानवीके प्राप्त केनेवाले कुरकारको या लेवा है। पर्युक्तको सभी बालपोर्ने सुने हुए रबन, कुल, और आयुक्त मन रहना चाहिये। से बहुत क्रमणी और अव्यापिक क्षां व्यक्तिकोच्च संस्कार काला है क्ष्म राजी अञ्चलकोर्ने वर्ष्यपर दृष्टि रसना है, बह राजा राची अन्यानेका कार बार कर लेता है। किस राजाके राजाने सर्वेद्धय रहकर वर्गकुकर पूर्व अपने वर्षका आधारम काले है, जो उनके पुरस्का अंद जार होता है। यो एका धर्मीन्ह पुरुषेको एक भी करते, अने अर पुरुषेके प्रत्यक्ष है। आगी क्षेत्र कुल है। को स्वेद वार्तिक प्रश्नोकी रका कार्तमें क्याची स्कूचना करते हैं, उन्हें दूसरोके वर्गका अंस विस्ता है। चरित्रीत । यह साथ सर्वेश्वर करते हैं कि इसलेग विसर्जे विका है, का पुरस्कानन जन्म सभी उत्तरनोते केन है। यो क्ल क्या और हांस्कारे लाग कर समस प्राणिकोंको अपने ही सम्बन सम्बन्धा है, यह इस लोफने और मानेके बाद वररकेको सुक्त करत है। अब चोको सूचने संसारके किसी भी भोगके और असरीय नहीं रहती से यह सरवरें दिवत हो करत है और उसी सकत को परश्चानी प्राप्ति से पानी है।

man | the galactic to be designed अञ्चलकेकी तका अन्य क्रम स्वेग्येकी रक्षाच्या अनंत करते। देखे, कर्नी और विभिन्न असम्बोधे सुबार लोग जिसमा वर्ष करते हैं, जनके पहर करनेते राजाके अपने सीवृत्ता पून्य होता है। 🎒 तुन्ते का कई प्रकारका राजवर्ग सुनाया है। का कारण प्राचीन और सरागर है, तुम इसीया अनुहार वाते । नहें हुए उसके फलन्ये गरन रहेने से करों आहार और करों क्लेकि स्मिक्सका कर जार कर खेगे।

# प्रजाके अध्युदयके लिये राजाकी आक्ष्यकताका निरूपण तथा इस विषयमें बृहस्पति और राजा वसुमनाके संवादका उल्लेख

और पारी वर्णीके धर्म महे । अब जान पूर्व स्थान प्रधान कर्मका सुनकृते ।

प्रेमचे बेले—एकका अधिके करत 📚 राष्ट्रका प्रधान कर्तन्त है; क्योंकि स्वामी और सेनासे द्वान सम्बद्धी लुटेरे यह कर देते हैं। किस देसमें कोई एका नहीं होता उसके वर्षकी भी रिवरि नहीं दाती। वहाँ लोग आयसमें एक-दूररेको जाने लगते हैं। ऐसी एक्कीन विकास विकास

एक वृष्टिको कहा—विकास ! अवने कहाँ अस्ता | सन्दाना । की सन्दर कोई राज्यत्वेतुन प्रवत हारू साहातक कर है, तो की अच्छा है कि आने प्रकार उसका सामा किया जान; क्लोकि लोकने अग्रवकताले क्रम्पन दरेई भी बाद नहीं है। जातः मिल्ने स्वातिकी हुन्छ। हो उन्हें पर्यास जायने देखपर बोर्ड राजा जनावे रखना चाहिने। निमा देखमें कोई रुवा नहीं होता बालि सोन धन या बीका भी संस नहीं बोग समाते। ऐसी रिवरियों पानियोंको भी कैन नहीं मिलना: क्वेंब्रिंड एक पुरुषात कर हो और लेते हैं हो हरते अनेक्ट्रों है। अरवन्त देशने कन में किसीके रिने अच्छा नहीं हैंसरकर उन क्रेनेका सर्वज तुर तेरे हैं। वहाँ के कुस नहीं होता को भी क्षत बना रिष्ण बात है, क्षिपोचो कासह होन । क्षेत्र रिष्म विकास रिप्मे निवार । कामी पहलाको देसका रिया क्या है। इसीसे देवकादीने प्रमान्य करन करनेकारे क्रमान्त्री कृष्टि की है। की पुत्रवेगे कोई क्रमान्त्री क्रमा म हे से परमें मधरिनोंके सम्बद्ध कारण, होन क्रांनोंके क्रियान जाने ।

सुको है कि एकारे इंग होनेके कारण पूर्वकार्य बहुत-सी प्रका नह हो गयी थी। का बह कुरिए होकर अञ्चलिक कार करी और उन्हें अबके उन्हें, 'बन्कर | क्रमाने निवा से इसलेप यह हो वार्यने, साथ हमें कोई क्रमा कैंग्ले।' कर सहानीरे महत्त्वो सरका है, निवा



महुने राज्यका भार होना स्तीकार नहीं किया। वे कहने लने, 🏓 पारके बहुत शरता है, शरू बारक बहुर बहिन बहुन है : विरोक्तः प्रमुखीने तो व्या और भी करिल हो कात है: क्योंकि उत्तर आवरण सर्वत आसंबद्धां होता है।' तब ब्रह्माओं केले, 'तून इस बताबे का इसे, कर से करनेवालेको ही लगेगा । एव यहे बलकान् और प्रक्राणी राजा होने, कोई भी तुने तब न सकेन्य और तुन्हरे बारण हर सब्बेको सुरू आह होना । कुन्से सुर्धाका सुन्धन अना जो वर्ग करेपी आका चतुर्वात तुन्हें निरोगा। उस वर्गके प्रचानारे पूर्व इकारा की पोक्स कर सकते हैं। तक दूर शिक्सके हैंको निकाले और संज्ञानेका यानगर्दन करो, तुन्ते सर्वात विकास प्राप्त 🗎 ह

सभी सोन दंग व्ह को और कॉ-कबंदे पर समाने लगे। इस प्रकार प्रकृतिने सर्वत क्य-क्यार प्रतिवीचा कार विका और जनाको कारने कार्नेने नियुक्त कर दिया। उताः निस न्युक्तको देवनंकी प्रका हो जो सको पहले प्रकार अनुबद करनेके विको कोई एका निवृक्त करना चाडिये और उसे िवक्रमी बढ़ी जीवने जनकार करना माहिने। इस खेकरें विकास अपने स्थेन आहा कारो है को हतरे त्येन भी पानते है और विकास कार्योंके हाच विकास हैता है का कुररोसी अक्रिये भी निर पाक है। राजाका सुरशेके 200 विश्ववर क्रेम सनीके रिक्षे कुल्कावर्ष है, इस्तीओ प्रवासी पार्टिये कि सी हर, कर, अन्यूनम, अस, यम, वस्ता, अस्ता, अस्ता और स्था आहे. प्रथ्मे प्रचारको स्थानो बेट को । हुए प्रवार केवन कारत का कृतिय हो कारत है और उसमें प्रकारी रक्षा कानेवरी पार्वक आ जाती है।

रूप पुष्टिको पूर्ण--क्यूको । प्रकारतीय स्थानी हेरान को बच्चे हैं ? इस बन्धे को लाग कर arrest i

वीवार्थी केले-वृत्रिविष्ट । वही काल राजा वसुवनाने कुरवरियोगे पूजी भी। एवं पूजरवरियोगे उससे पहा, "राज्य | कोकों जो का देशा थक है, कावा पुत कारम क्या है है। क्यारे इस्कें कारन है क्या आपसने एक-पूर्णको नहीं कारी। क्या प्रका नर्कातको होहने स्थारी है और स्वेक्के क्वीकृत है जाती है से कवा ही बर्वके हारा करने कारित ज्यानिक करता है। नहि एत्या य के तो केंद्रे बाले क्रोबरण बहरियों और क्राने क्रोबर्ट महिनोंके समान प्राप्त भी जानवामें १९६-क्रायक्रका कार-क्री-क्रायमें पह हे कर। वर हे करकार लेप निर्माणकी स्कृतिनिर्माकी बीन में और बड़ी से सीचे-लीचे न हैं हो उनके प्राणीके महाक कर जाने । यनुकारिक पास जो महान, सका, अलेकार और उस्त-सर्वाद्धे का हो, को करीलोग तुर है । बहि एका क्षा न करे से कर्मान्यस्थिको लग्न-संग्रहक सन्त्रकार स्वाम पहे, अवर्गका ही अवार होने तमे, वारीरबेग मता, हैसा, बुब, अल्बार्च, अतिथि और कुरओको भी तृत्क हेरे सने; करकारेको चीत और क्यानका हेटा चीतवा पहे; बोर्ड ची वर्ष किसी अञ्चल अन्य करा न का सके। स्त्रेत अवकरने ही वासको करनी जाने हती; देखने दुरपुओकी है अवस्था हो करा; संबी गुरु हो जाय; जागार मिहीमें निक जन: नीरि और कर्मकाकाम लोग के जान: नही-प्रदानीकी क्या आहा प्रभार कर्नु क्याराव नहीं करी। कही हिंदिलाओं करें क्या देखनेकों की य फिले और प

निका मा समाजका ही कोई संगठन हो । वर्षि एका उत्तका पारन न बरे तो सारे संसारने जन केर बाब, सबके बाब शिक्कोर हो गाउँ, सम ओर प्रक्रकार गढ कव और क्या क्षणों ही इस सारे संस्तरका नाम हो नान; मेर से इक्षणा करनेवाल यो केंगरे इतिलोक पुरू केंग्स के, कर हार्थे-इन्य प्रमानी पीचे का से करे, वर्गकी सारी प्रकार द्वर व्यव, लोग प्रवर्तात होयर इसर-कार शतने हते. बाराहो अन्यान पैरा भाग, प्रमा कर्णसंबर हो साथ और देशमें दर्भिय प्याने राने । उपलो सरवित स्रानेकर है खेल निर्मन क्रेकर काका इरकाश सुरक्ष क्रेक के हैं और क्रमको मीर सोते हैं। चरि कारिया राज्य कुम्मीकी शहर य करते थे सोगोको सरवेके जुले कोई काकी करा सुरुत के सनक म होता, विकासिकी पार स्थानेकी से पान ही पान है ? महि राजाकी हेल-रेक राजी है से कियाँ उसेने कर प्रवासी आयुर्वोरे विपृत्ति क्रेकर निमा निर्मी पुरूको साथ रिन्हे । प्रकार सम्बाधका सर्व वाले ही प्रकृतके साथ संवाहों का बेक्टरें करने जाती है, जोन कर्ववर ही आकरण करते हैं, आयमने किरीओ कह नहीं प्रीयाने, तीनो वर्ण क्या-क्याके प्रतिका अनुहान करते हैं और कान हेकर विकासका करते है। इस जनसङ्घा चेनल क्षेत्री-कार्ड और स्थाधन्त्री है केना । है और इसका जानार का-बानाहे है; वे सक की तकी क्रीय-रीय निपते हैं, यह एक वर्षके रहा करता है।

"राजके न स्वतेतर का प्रकारते प्रतिकोधा की जात होने लगात है, जानेर क्लेश ही कानदी रहार होती है। ऐसी विभक्ति परम राज्यका सम्बन्ध बर्धन व सर्वन्य ? को प्रकार राजाका क्षिप और हिल फाला है, जाके प्रक्रिक और पराजेक बेजों ही कर जाते हैं और को करते की एकावा अवैद्य भारता है, उसे नहीं भी बारू होता है और महनेवर भी नरवाक हार देवान पहल है। 'यह मनुष्य है' हैले सम्बद्धार समावा क्षणी अपनान नहीं करना साहिते। स्वरूपने हो सह मनुष्यक्रममें कोई महत्त्, देवना ही विरुक्तमा है। राजा सम्बन्धम्यया अति, हुर्ग, मृत्यु, कुनेर और का-इन चीत केन्द्रभोगा क्य बारक कुरक है। जिल्ल स्टब्स का क्रक्रोप बारण करके प्रकारों कह पहिल्लेको रह पुरुषेको हारने 🏖 रोजसे द्वा करता है, उस समय अतिराम हो करता है: बह व्य गुप्तभर्मी नेत्रोके हारा सम प्रमान्त्री उन्तरिको देखता है। और उसके करणायक प्रका करता है से सर्व हे जाता है. का का क्षेत्रमें परसर सेकड़ों क्यी प्रश्लेको उनके दूर-केड और सरमानारोंके सहित करने तगता है से वह मूलके

सम्बन्ध है जात है। यह सहोर तृष्ट देखर अवधिकेदा हुए। करण है और वायंग्यकोचे प्रति स्वापान उद्धित करता है, जा समय स्थाप प्रमाण हो जान पहला है और जिस सहस का सम्बाधिकोची कर और की आदि देवार संस्था करता है व्या अन्यतः करनेवालेके एक-स्थाके सा श्रीनने सन्ता है के सार्व क्रमेरके सामान जान पहला है। को पूछा कार्यक्राताः, पुरस्कारों और ईम्बंब्रुय हो उका को भनेकी वृद्धि पहला हो क्षे क्रमको निष्य कर्ष नहीं करने पाहिले । एकाके निरुद्ध करकर कोई की प्रस नहीं का सकता, जाने ही का शुक्रावह पुत्र, नहीं, सम्बन्धक अन्तर सम्बन्ध है को न है। सन्तरे प्रमाणि हाँ आप भी सद्यक्ति सोई बद्ध पान किने निन क्षेत्र है, गांव राजाने सामान्य यह सानेवर कुछ भी बाकी नहीं कर करना । एकची पद्मानोते से मेरके क्रमन स्ट प्रका कार्यने । एक जैसे पराकारकाओं को की वर माता है, उसी ं अर्थ है, इस्मेन्ने बुद्धियम् पुरस्को स्थानी बसुची अपने है कैकर्त पर पर बल्वे कहिने।

"अतः से पुरुष उसति पाइतः हो, संपन्नी हो, विहेरीहर हो, केवाबी हो, विकासक्रीय रक्षण हो और पहुर हो उसे सर्वह रुवादे ही पहले सुना धाहिले। एकाको भी देशे समीवा सम्बद्ध सरकार करना काहिये को कृता, कृतिहास, स्थापन, सुद्ध पढि रक्षेत्रस्था, निर्मागुर, क्षांग्यु और सर्वतं वेजिताः अनुसरक करनेवास्य हो । यो अपने इति छह अनुसान रक्तवा हो, बुद्धिकार हो, धर्मत हो, संपत्नेक्टिय, क्रमीर और अवर हो सक्त और सकतो रोकबार अवेदन कार ही तक काम कारोबो दैवार हो देशा पुरूष एकाओ अकार अन्ये पात रकता पाहिने। जिस प्रकार सुदि मनुष्यको निःशंकोण कर हेती है, वसी प्रकार यक्त को मिनवी बना सकता है को एकती निरुद्ध है, उसे सुख कैसे िक सकता है, राज्य से अपने प्रत्यानसभी ही सुशी करता है। एक प्रकार केरकार्य हुए है इस भी सामी महिन प्रतिक्र और अधन सुरत है। को लोग सरकार अधन्य रेके हैं हे की उन्हों इसकेंक और वसकेक्को अपने अर्थन कर लेटे हैं । एका भी कुपर, साथ और सीकाईसे प्रश्रीका सामन करता है क्या महे-वहें स्त्रोधा अञ्चान करके शंभावन सर्वेश्यन जार कर लेखा है।" खारपीरवीचे इस प्रकार अंदेश हेरेवर कोस्तरसम्ब कसूनम् प्र**कार्यकः अवने प्रस**ास कतन करने तने।

### राजाके प्रधान कर्तव्योका तथा युगनिर्माणमें दण्डनीतिकी प्रधानताका वर्णन

तना वृष्णिरने पूक्त-रिताब्द । राजाब्द प्रकार कर्नण बना है ? जो देखकी रक्षा किस प्रकार करनी वादिने ? धारुओंको किस प्रकार जीतना वादिने ? दुनोको निवृद्धि किस सम्मर्ग करनी वादिने तथा वारों वर्ण और अपने सेव्यक, बी एवं दुनोब्दो किस प्रकार अपना विश्वास विकास वादिने ?

क्षेत्रको खेले--राजन् । इत सामकान क्षेत्रक राजके आवरणोद्र विकासे सुन्ते। सम्ब तक आन्ते प्रतिनितिको शास्त्रमें पन करन चार्कने ? से मैं इन्हें सुनक है। रामाओं कारे से अपने बनको बीतन पाहिले, उसके पह काशीको भी पराक करनेक प्रका काम कर्को । क्यां इतियोको कार्यो रक्ता को सरका निवन है। से प्रका finisher & mit mignibut of your mit want & wit किलोर्ने, राज्यकी होनावर एका गगर और गरिको क्रमीकोर्ने हेना निवस करनी बाहिने। इस्ते उत्तर सन्ते बहुबोक्ट, भीव और नंगरेके पीतर क्या महत्त्वे अला-कार भी केड़ीmen menn cerm mer nebel fr fier ebritalt araft सर्वेद परीवार कर की वो और को देखनेने चर्चा, जेने और सहरे-में पान पड़ते हो तथा पुरू-पाल और परिश्न सहरेगी संस्थानी रक्षते हों, उन्हें गुरुवर क्षात्रक काहिने । इन गुरुवरीको मधी, जिल और कुरेके कार की निकार करना करीने : प्रारं प्रमान भारत, हेल और सामानीके राज्याने भी हमों हेरते चुनिको नियुक्त करे, जिससे से आकारों की क्या-कुलोकों न बहुकान क्रवेर अपने गारवरोके क्रम सम्बद्धी कानार्ते, विक्रते, समायों, संवारियों, क्षत्रेकों, विकासि स्वार्थे, अन्ते, चौराहों, समस्यामी और वर्गकावजीने खनेकारे कर्न मुप्रकारेका पता समाने साम काहिने। यदि सका प्रकार क्रोंका पहले ही पता लगा नेवा है तो उसने अन्या यहा हैव भोरत है।

वर्ष राजाको अपना पक्ष निर्माण कान पहे वो व्या अवनी कामकोरीका पता सम्मोर्स पहले ही प्रमुख साथ संस्थि कर से। करि इसमें कुछ भी साथ दिसाकी वे से संस्थि करनेयें देने न करें। सो राजा मुख्यान्, उत्साही, वर्षक और प्रमुख्यारी ही उनके साथ अगावा कर्मानुस्तर करना करनेवाले न्यांतिको अगरूम मेल कर सेना व्यक्ति। यदि राजाको अपनी विवक्ति संस्थानुमाँ दिसाकी है से जिन सक्तांतिकोचो पहले कोई सिंवा हो और जिनसे जनता हैय कानती हो, उन सोगोको सर्वका मा

अवकारको सम्बन्ध न हे और वो सर्व मो सिर उठानेकी सम्बन्ध न रहरत हो जा पुरुष्की जोड़ा धरे। किए एकामें समुद्धे दकानेकी सामर्थ्य हो और विस्त्रकी सेना मन्त्रत हो वह जाकी राज्यक्तीके प्रकाशकी मान्यता करके सिर समय समु दूसरेके राज्य पुद्धमें संस्त्रत, समानवान समया पूर्वत हो, जाकी संख्यके जावर अवकारण सर्वेकी अद्या है है। यहि समु अवनेसे मान्यत्त्र हो से मी सर्वत उठाके सामित म रहे। वृत्ता होनेकर की पुरुष्करने जाकी मान्यता नह मार्वका अवक समय हो तथा आके नकी और प्रीतियाद पूर्वाने केंद्र समय है।

के तक रहाक है। को भी सर्वत प्रश्नी है की सम कुम पार्किने । कुल्परियनि साम, क्रम और चेय-क्रम तीन अन्त्रेते हे अर्थनी कहि कालाई है। एकाबे अवानी सामक करा पान समाने प्रत्येत हैंनों है बराजरों हैना करिये । एकाव्ये अवनी जातार का-नीतीके समात केंद्र रक्षण करीने, विज् नामके समय प्रेमका पहारत नहीं करण करीने । त्यार करते समय करते और प्रतिकारीकी कर्ते सुननेके रिक्ते एक विक्योंको स्टब्स्ट्रेयाले विद्वानीको निएक काम करिने; क्योंकि मानकी सुद्धि ही राजका कामार है। कान, नगम, चूंगीका, नामके घाट और plenique fon felie foi arai fegrere afe क्रिमीनका पुरसेको क्यो कराकर नियुक्त करना साहिये ह को राज्य तीन्य-तीन्य प्रथानो न्यान बाला है, अने ही बर्वनी अभैर क्षेत्री है। राज्यका न्यानरेख क्षेत्र से प्रचान वर्ष है। इसके रिका, को बेद-वेक्क्कोक अला अवेनिक, बनाहीस और ब्यूर-कारपायक की क्षेत्र वाहिये । राजामें में सब गुक जिल्ला विकासको स्त्रो स्वर्धिने ।

नहें निवार कृतिक राज्यकों कोई नरकार हुए दुवाने सने से इसीने कृतिकारी है कि वह किरोकों भीतर करन क्या और अपने विश्वेष काम विस्तार साथ, यह वा सुद्धांद विश्वयकों साथक करे। यदि युद्ध करनेकर में निक्रय हो से प्रयुक्तरप्रश्लेकों करमेरो उठाकर मार्गोपर से आदे और प्रयोकों उठाकर करनोने दिस्स है। वनी और सेनाके उचान-उच्चा अधिकारियोकों कर-नार वीरव देवर ऐसे स्वायोक पहुँका है को बहुत गुरु और हुनैय हो तथा सन्पत्तर साथ असने कामूने कर से। नदीके पुरांकों हुइला है, जिन किरोने प्रयुक्तिके क्रियकेकों सम्मादक हो उन्हें साथ ओरते हुइला करो, देवरानोंके पृश्वेकों होइकर और स्था

कोरे-जेट पेड़ोंको उल्लाहत है, जो वृद्ध बहुत केल पर्न ( क्ष्मची करियाँ करून है। स्थारक करों और परक्रीक करवाने, जारर हर्गधानोची निवृद्ध को उस उसके करों क्षेत्रको वर्णायो जानो भरता है और अल्पे पने। और मगर-मक भी हत्या है। नगरमें इक आनेड सैको और कार्गीको समय पाननेके तिन्ते करकोटेने प्रारंको सहस्रके और इस्तानोंके समान उन्नरे केंकरीका की पूर-पूर प्रकश करने । इन इरोकॉक्ट वर्ग-थारी प्रश्नम्य और सेवें स्वय है और अपर अच्छा अधिकार रही । विक्रोनेट चीवर सहर-क \$बर स्थाप कर से एक को को काराने और से की पहलेले को हर हो उनकी समझे कर है। तीन करेके उनर करण हो कई मितुरेसे विकास है और वैकासाओं आल न सन बान इस आस्तुरसे फेंगोबी बार स्थापन है। हैनके सन्द अधिकोत्रके विच्या और विच्यी पारकारे अल्प प पायने वे प्रका सुक्रांकी नहीं और सुविकानुकों की बहुत सामकारोंके अपन परामाने । नगरकी रहाने जैसे विकेश निकास है कि को प्रका विवर्षे आप कार्यमा को भागे कार केल अल्पा । वेर्ते समय विद्यारियोको, क्रिक्ट्रीको, चन्नलोको और गरीको । मार्ग करा निकास है, क्यानीयों क्षेत्र कर है क्या चनोच्छ रोतेले वीलामें और समानेती कारणा सार्थ : अस्ते प्रचार, क्वानार, चेत्राओर्ड साथे, अक्टानारे, गमरामार्थ, सेमाको अवस्थित, स्वकृत और क्रक्नुसर, संगीचे ऐसी मुसिली तैयार कराने मिलने कोई कुला इन्हें हेक न करें। ऐसी विकासि एकाओं कामानेकी केवाके दिन्हें हैस. पुर, क्यू और राज प्रधारको ओर्गावयोगा भी संख्य प्रस्क काहिने ( इसके रिना अंगारे, कुछ, कुछ, कुछ, कार, रेप्पाय, बारा और विश्वने कुछे हुए कालोका भी संबद्ध करे एका एक ज्ञारके एक, परित गर्दी, तथा और क्ष्मव, क्ष्म-क्ष और बार ज्यारके केंद्र की तैयार रहे । देशे अन्यारक राजाको किन सेवाड, मनाहै, परवासी वा सावसीकी ओरते संक्षेत्र हो, उन्हें अपने कालूने कर है। क्रम विक्री कार्यने रायरका विसे से अपने स्थानक देवेनाओंक बहुत-से पर. क्योंकित प्रश्नार और मीडे क्यानेंसे सम्बद्ध करें।

अपना सरीर, कारी, कोन, सेना, विस, तक् और कार—इन सातको 'राज्य' कहते हैं। सनाको प्रकार्तको इनकी रहा करनी वाहिने। यो स्तक इ: कुन, डीन कर्न और सीन परमवर्ग—इन्हें अध्यक है, व्या इस पृथ्वीको जोन सवास ई।इनमें निन्दें इ: तुम कहा कारा है व्या सुने—संबि करके सानिसो कैंद्र जाना, व्याई करना, कहते कुद्र सन्तक, आसन्तको हारा स्कूको दराका बैठ जाना, सुनुशोधे जेह कृत्या देश क्या विक्री का विक्री कुले एकावत साराव हेला। क्षेत्र वर्ष वे हैं—कुल, रिकीर और वृद्धि, एका कर्व, वर्ष और काल-न्ये और परभवर्ष हैं। इस साराक क्षास्त्रक सेकर करें। अहिराके पुत्र केवर्ष कृत्योका कथा है कि 'तथा अवस्थि कांग्योको पूर्व कर्वते कृत्योका अधी तथा पाराव कार्य और अध्यादी क्षा कर्वते स्थाप परम्येकारों सुक अस्थ क्षात्र है। क्षित्र एकाले अस्त्यी स्थापता अधी तथा पाराव क्षित्र है, और क्षात्र का पहाड़ि कर्वत्यो क्षा अवस्थितात्र है 2 जा के सभी क्षात्रोको कार्यकाल है।'

कृष्णितरे हुळ—निवास्त्र ! श्वासीते और राजा ने केरों विका अक्यर कर्यानमें आनेकर क्रम्यका आह कर सकते है—जा सुत्ते क्याको ।

केन्द्र केरे-चल् ! क्युकेरिके ह्वा एक और प्रकार के पहलान सेंदर होता है, शब्दा में बुरिय-सूत्र प्राचीने कर्मन कामा है, के इन उन्हें । बहि एक एक्टीरिया क्षेत्र-बीक ज्योग करता है से यह बारों बर्जीको उनके बर्जीके किया रक्ती है और उन्हें अन्तर्वकों और कारेंग्रे रेक्सी है। हुन् प्रकार पर पर्यक्रक पह भी हेल और सहस्रा रहेके करण प्रकार की काम भी पता से रीने को क्रमानुबार करावारी विकार होनेके प्रियो प्रयास पारते हैं और हर्तने जन्मकरिया एक निर्देश है। इसे का लेख से हेस हो पूर्वी पार्टिने कि एकाची निवति क्रमको अवीत है का 1990 क्यांके अवीच है, क्योंकि कामानी कृत्य है एकाके अधीव 🛊 विका समय कथा कुम्बनीतिका पूज-पूरा प्रचीन करता है तक प्राचीका पूर्वत्वा प्रत्यपुर पर्वतः है। जा प्रत्यपुर्वते को थे-को सब है, अववेदन मही नावीनारत के दिसावी न्त्रों केत तथा दिवसे को क्लोको अक्लोबे क्ली को को होती। जर समय प्रमाद योग-क्षेत्र स्थापको ही किन्द्र होते रहते हैं तथा अर्थत वैभिन्न पूर्णोच्य किरात हो जात है। सभी पहरी सब और स्थानकारी बाँद करती है, स्वेगोंके यन प्रसार के उस्ते है, नक्ष्मोची अन्य अस्य नहीं होती, कोई की विकास नहीं होती और न कोई कुरून ही दिखानी केट है। दुर्जीये दिख केने-केने ही अस होने राज्या है, ओवरियर सरस्य हो जाती है क्ष्म क्ष्मर, पा, पाल और पालेंने का जा जाता है। वे सब सम्बद्धाने को है।

हानके बाद जब राजा स्वानीतिके बहुई अंसको स्नेप्सर उसके कीन अंस्केटो वर्तन समात है के सेवचुन उसस्य हो बादा है। उस समान कर्यक तीन अंश्लेक एक जकर्मका भी एक अंक करि समात है और मुख्येसे चोसने-कोनेपर ही जब और ओचीकार्ज जन्म होती है। दिन जब राजा नीतिका

MM पान स्थानकर केवल आने प्यानक ही अनुसरक करता है से अपरमून का कात है। कर समय अवस्थि है अंक वर्गके दो अंत्रीका अनुवर्णन करने करते हैं और क्वांको फोलने-कोनेपर ही आचा फल प्राप्त होता है। अन्तमें का क्रकरीतिको एकाइन क्रोड्कर राजा जनाव्यो कुळ हेरे राजात है हो पृथ्वीयर करिन्तुग फैल जाता है। क्योंनव्यूने अधर्मकी है प्रशासन होती है, वर्ष बड़ी देखनेको भी नहीं मिलान t सभी क्योंका पर अपने वर्धने शुरु है कक्षा है। श्रृहतेन निक्ष मीरकर और प्रकार रोज करके करनी कार्यानक बाराते हैं, चेंगक्रेयक जात हो क्या है, वर्ण-संकरक देश मार्थी है, वैदिन कर्न विकाद समाप्त न होनेने कारण गुनकीन के बाते हैं, बहुई सुसब्दारी नहीं कहाँ, वे सब रोगका है कारण हे जाते हैं, मनुष्योके कर, वर्ष और मन मारिक हो जाते हैं, सर्वत तरह-सर्वाह रोज फैरर करते हैं, श्रोध असम्बद्धीने गरने राज्यों है, देखने विकासकीची अधिकास है। बाली है, जबा कर के फार्फ है, क्यों की कई-कहीं के केती है और पेटी की सर्वव नहीं बकती। इस प्रवार

कारकुर, त्रेज, क्रयर और करिश्वम इनकी रचना करनेकसा क्रम में है।

वर्त राज्य सरवपुरवर्ध सृष्टि करता है से उसे अध्यय कर्मवर्ध आहे। होती है, नेताकी रचना करनेपर जो अवस्य पूर्ण की विश्वता; ह्यासकी सृष्टि करता है से अपने पूर्णके कनुस्पर केवार पूक्क सरवपताय कार्गि राज्य है और पदि वह करिया को बहुत सरवपताय नामा प्रोप्ता है। उसके करवा को बहुत सरवपताय नामा प्रोप्ता पहला है। साथ अवस्थे पाण्ये हुमकर अध्यय और पाण्या पानी सनव व्याप है। अव: श्रीतपत्यो स्वकृतिका हान अस् करके अभिने अनुसार अवस्था करना पाहिते। वहि प्रश्ना दिक्क की अवस्थे विश्व पाण्य से यह सत्ता-विवास समान संस्था व्यापका करना वाहिते। वहि प्रश्ना होता अपने स्वापकित आवस्था कर्म कर्म हुं है और एक्किसिस पुन्त है। सुन होता हो प्रश्नात पाण्य वर्ष है। प्रश्नात प्राप्त करते। प्राप्त हुन संस्थित होतार वर्ष्णकुत्तर प्रश्नात प्रस्था वरते। प्राप्त हुन इन्त स्वापका पाण्य वर्ष है। प्रश्नात प्राप्त करते। प्राप्त हुन इन्त स्वापका पाण्य वर्ष है। प्रश्नात प्राप्त करते। प्राप्त हुन

# राजाको इहरनेक और परलोकमें सुलकी प्राप्ति करानेवाले छत्तीस गुणोंका वर्णन्

क्षण पृष्ठिते पूर्ण-जिल्ला । विश्व प्रकारका ज्ञानाच्य कारोने राज्य इस धोवा और परावेकने सुक क्षेत्राते पक्षणीको प्ररातनासे प्राप्त कर सम्बद्धा है ?

क्षेत्रको क्षेत्री—एकर् ! ऐसे क्षत्रील गुज है, क्षी ज्यारे सम्बन होकर राजा आकरण करें तो जल्में का बात आ भगनी है। तस में क्रमतः काक वर्णन करक है— (१) वर्गमा अत्यास को, मित् ग्रह्म र असे है। (२) आस्त्रिया यहते हुए कुमलेन्ड स्थव डेनब्बा सर्वंत न ब्रोडे । (१) कुरतामा आसम निभी किया ही अर्थात्रक सते। (४) वर्षात्रका अभिकारत व काने कुर ही किएकोच्छे चोने : (५) कैंग्स न रात्ते हुए ही जिन पानान करें। (६) जूरपीर सने, मिन्नु कर-करकर वारों न कराये । (७) रहन दे, शांत अपनको नहीं। (८) एक व्यक्तन करे, पर फलेस्त व साने है। (१) छुटेक साथ नेवर न करे। (१०) कक्कोरो करन्य न ठाने । (११) जो राजधन्य न हो ऐसे कुस्से बहुत न से (१२) मितियो कह योजने किन ही जपन कार्य मरे। (१६) क्लेंचे जन्मी बाद न करे। (१४) अध्ये मुक्तेवर कर्मन व करे। (१५) सायुओका वन न होने। (१६) भीषांका वातप न ले। (१७) अच्छी तरह जीव है

मिले किया क्या न देश (१८) गुरू क्यान्याको प्रकार २ हारे । (१९) स्वेथिनीको वय गये। (१०) मिल्होने कसी अस्त्रहर मिला हो जाने विकास मध्यरे । (११) मिलीसे होयाँ प करे और फियोंकी पहर करें। (२२) शुद्ध को और फिसीसे एका व करे। (२३) विन्तीका चतुन सचिवा प्रेयम न करे। (२४) कारिया क्षेत्रेयर भी को अधिकवार क्षेत्र को न काम ( (१६) निरम्बियान क्रेक्ट माननीधीका कावर करे । (१६) पुरुको विश्ववादसम्बद्धे होना सरे। (१५) सम्बद्धीत क्रेयर केन्द्रभव की। (१८) अनिवित क्रमयसे स्थानी ज्ञा करनेकी इच्छा रहे। (२९) होहरूकि बहोसी सेवा को । (३०) कार्यकुक्त हो, किन्दु अवस्थात विकार एहे । (११) केवल रिव्य कुढ़ानेके रिव्ये विश्वादे किवारी-क्यारी कर्ते न करे। (३१) किसीयर कृत्य करते समय आक्षेप न बरें। (३३) किया करो किसीवर प्रवार न करें। (३४) क्षत्रामेको सम्बन्ध क्षेत्रः न करे १ (३५) अवस्थात् क्षोप न को। (५६) विक्षोंने अपना अपनार किया हो. उन्हें प्रति कोमलकका कर्तक न करे । शकर ! यदि कमन कि ब्याने हो तो राज्यम स्थित क्रमार इसी प्रकार ब्याहर करें। करें दूस देशा नहीं करोने से कड़ी आयंतिमें कह मारतेने। यो एवा इन सम पुर्वोच्या सपुतर्वन कथा है, यह | इस सोकमें युक्त पाता है और यत्तेपर समेवे कम्बान्ति होता है।

र्वतन्त्रकार्यं कार्वे है—जनमेकन ! वितासक गीमाका का उन्हेंक सुरका कार्यकारेक स्थापन गुणिक्षिये उन्हें प्राप्तर किया।

# राजयर्मका वर्णन, राजाके लिये विद्वन् पुरोहितकी आवश्यकता तथा दोनोंमें पेख रहनेसे लाम

पुरिवरिते पूरा---विकास । विकास का प्रकार काल मारोबातक राजा विकास क्या स्थात है और व्याप संस्केत पूरा नहीं होने देश ?

नेनकी क्य-क्या । यह निकाल क्या प्राथमिक करि करि, या से सुनी करक अन्य से प हैगा। इसरियो पंक्षेपके ही काईना । ध्या करकर संस्थित हास करिंद्र सहाम नगरे, का क्रम्म कई देखों है कई हेन्स करना प्राप्त करो, बैक्टेबर्स अनुस्त थे, क्रमार्ट विक्रिया कृता बार्का नार्यार्थे प्रचान करें, इसके बाद कुरेशियकी कारामुक्ते और एक प्रस्कान कार्य विकास करे । कार्यक और मानुर्वेश्य कार्योची पूर्व कर्ता प्रकृतिने प्रातिकारण माराने और अपने सम्बद्धि निर्देश पूर्व नियम्बंद दिन्ते क्रमें मुक्ते आसीर्वंद से। एक्स्के क्रांजे कि क Presentate glant die von uffeit wird worde beteilt. है। और बंधन-प्रोत्तमा परिवार कर है। में राज्य करा और क्षेत्रक समान रेमार का कि कार प्राप्त है, या पूर्व कर्मको हो होद ही बेक्स है, यह की अलोब हात की अलाब र कोषी और यूर्व स्मूच्येको हुए सर्व-संस्कृत करनी प सन्तरा। को कृदिकान् और निर्मोध हो, उन्हें हो तम साथ क्षेत्रक व्यक्ति । पूर्वको अधिकार हे क्षेत्रक वह वाले वाला हों डीव-डीव बन्ता गर्डी, इस्तीओ कान और कोक्के महीपूर होकर अनुभित्र राजवीरी प्रयाची बाह ब्लेक्स है। प्रसादे हैंस किने हुए असन्य क्या चान 'कर'दे उनने रेकर, प्राथके अनुसार अन्तरिक्वेको एक केल और क्षपने संस्क्रणमें रहनेवाले व्याप्यतिक्षेत्रे देवता सेव्यन व्यासंबद्ध मारत पाहिले । उत्तरको कर्णकुरूर पार होता पाहिले और शायोक रेतिये का रेक्ट साम्बन्धे तथा असे सम्बन्धे प्रकार योगक्रेमधी काराय करने पाहिने। यो सारास क्षेत्रकर, राम-देशने जीव से तब इसाबी दक्क करता. राम केंद्र और निरक्त न्यायवस्था स्था है, का राजके जी प्रकाश विजेन प्रेम होता है। इस खेलवा अवसी का के करोबी क्यो इका न करन: नवेदि अनुवा रेडिहे |

है। के कार को के पानें के महर्ति है। के कार हो के करा नोकार प्रकार क्षेत्रकारिया अधिक वह रेगार को बाह चुंनात है, यह सबसे है हम्बे सबस पाए काला है। मैसे हुन्ते रहेन्त्रो पानमा वर कार निर्मालके हुए सूर्व विकास, उसी प्रधार अन्यानपूर्वक प्रस्ताने पूर्णने पहली कारी नहीं होती। के जरकर चैचन पतान करता है, करीको केंद्र कुछ निराद्ध है, इस्ते प्रयद्ध प्रवित अनामते राष्ट्रपटि रक्षा क्रानेक्श प्रकार है जाने साथ कामा है। वैसे पाल पार्च क्षा क्षेत्र से कारकारों क्षेत्र पूर रिजनों है, जो उन्हों कारते पुरस्का हेनेक हैं का पृथ्वी हकानुसार अब और कुर्ज हैते हैं। येरे कारी दुर्जानों और-शीकार करता है. जरी प्रकार हुन्हें भी जनाको उस्तीन्तील बनाना पाहिने । पहि हेव बर्जन करेंगे से विश्वकारमध्य राजनी रहा करो हुए हुए कार्त हुन का कार्तन । यह । हुन असन केनार वर्गे न हो जाओ, दिन भी सहस्त्रको कन्यान् देश साले का रेनेची प्रका प करता। प्रकारको परावर्गित कर और अध्यास के एक जानी दक्षा क्रमेर्ड के एवं जान होता सार कर क्योंने ।

क्षा अवस्था वर्षामुक्ता वर्षाय वर्षा पूर् कृष अवस्था वरण करे, इसमें कृषे कथी पक्षावार महि होता। अवस्था एक करना करावा परंग वर्ष है। समूर्ण अभिनोंकर हवा और उनकी एक करनेने स्वाप्तर कोई वर्ष महि है। राजा एक्षावार्थने निवृद्ध क्षेत्रर सम्बद्ध क्षा करता है, इस्मिने वर्षा पुण्येकी कृष्टि का क्षाये वहा कर्माय है। अवस्था कर्मा पुण्येकी कृष्टि का क्षाये कहा कर्माय परंग करने का है, तो अर व्यथ्या करू को कृष्ट हमार क्ष्मेंक्ष भीगान क्षाये का है, तो अर व्यथ्या करू को कृष्ट हमार क्ष्मेंक्ष भीगान क्ष्मेंक्ष है, तो अर व्यथ्या करू को कृष्ट हमार क्ष्मेंक्ष भीगान क्ष्मेंक्ष है, तो अर व्यथ्या कर्मा क्ष्में क्ष्मेंक्ष अस्था परंग क्ष्मेंक्ष भीगान क्ष्मेंक्ष है तोर क्ष्म हिन भी क्ष्मेंक्ष अस्था है। अर्थका परंग क्ष्मेंक्षेत्र क्ष्मेंक्ष्मेंक्षेत्र क्ष्मेंक्षेत्र क्ष्मेंक्य क्ष्मेंक्षेत्र क्ष्मेंक्षेत्र क्ष्मेंक्षेत्र क्ष्मेंक्षेत्र क्ष्मेंक्षेत्र क्ष्मेंक्षेत्र क्ष्मेंक्षेत्र क्ष्मेंक्षेत्र क्ष्मेक्षेत्र क्ष्मेंक्षेत्र क्ष्मेंक्षेत्र क्ष्मेंक्षेत्र क्ष्मेंक्षेत हुम जना करके में। कक्षण्युतार वर्षका पासन करे। इसमें हुई पुरस्का कर निरोण और कुछरे करने करी कोई किया की होती।

पृथिवित । वर्ष और अर्थको श्रीक-रोख स्वकृत्य करिन है, या संस्थार राजाको व्यक्ति कि उसेक प्रार्थि सरसामग्रं देनेके रिने एक ब्युत विद्वारको पुरोद्धित कावार रखे । यहाँ राजा और प्रार्थित केनो है वार्यका प्रमा रखनीतित पुरु विवारोधी जारनेवाले होते हैं, उस प्राप्तको स्थाना सब औरते पान होता है। यह होने वर्षत अवला स्थानवारे और प्रमान्ताको विवारस्था हैं, अन्य अवला और स्थान दिली हैं, वेनोके हाल—केनोके विवार एक-रो हो से वे अन्यो प्रमाणी कार्यक्रीय प्रमान केरेंट रेखाओं तथा विरार्थित से सुत्र वार्ये हैं। यह अवला (पुरोद्धित) और हरिय (राजा) होनोचे प्रसार स्थान होना वो प्रमाण सुन्न विवार है और हेनोचे वेव्यक्त होना अर्थ वार्ये व्यक्तिका है साथ है। एक विवार वार्ये व्यक्ति होना और वार्ये व्यक्ति वार्यकाम इंग्लाक एक व्यक्ति इतिहास है, को सुन्ते।

रच पुरस्को हुए जा प्रसूच और स्थीत



योगें एक-दूसरेका परिवास कर है तो दूसरे काकि कोन किसको प्रवास समझे और प्रवा किसका पक्ष है ?

करवरने नहा—राजन् ! अर्थ प्रमाण क्रमियरे विरोध करता है, वहाँ श्रीत्यका राज्य नह हो जाता है। क्रम क्रीत्य

महाराज्ये प्राप्त के हैं से उनका बेक्स्प्राप्त करा पाता है, उनके कुलेकी वृद्धि नहीं होती, अनके करने न स्थितनकर होता है, न यह एक उन्हें करक नेहकार वहीं का गई। व्यक्तिक परिवार करनेवारे क्रांत्रिके वर बनकी क्रूती न्हीं होती, रूपकी संस्था न पहले हैं, म पह सबसी है। मे कृतिक सक्ते काले आ होकर प्राकुलोकी जीते सूट-पाट करने राज्ये हैं। इस्तरियो खेनोको विसम्बर राजा बाहिये। निर्म क्षेत्रर केनी एक क्रमेंबी स्थाने कार्य क्षेत्रे हैं। proposal author anne gebre fine & afic gefreit. अञ्चलका अस्यार प्रकृतनः होती वातियाँ का एक-कुरोर्क अधीर कुरी है से प्रस्ता निर्मेश केल कुछ। है और भी, रूपनी प्राचीन स्थानने सानी जाती हुई रीवी हुए कर्ष है, से तर पूर्व भा से बात है। बारो कर्नेक् अन्तर केंद्र के कार है, को अन्तर करेंक भी सुरक्षा । उनमें यह यह होने राजनी है। प्रशासकती यह गाँद स्वीतात में में यह हम और कुरनेत्रों को समा है और पहि जानी था की की की से जाने मिलार कुछ और कार्या पृथ्व होती है। यह सहस्वते प्राप्तन सुदेशेके रूपाने विका हे बेहरी प्रत्याचे प्रत्याको प्रदेश होत और मानोर केंग्ने अपनी एक पाक्रम है (फिर भी कोई भाग न होनेके सारात साध्ये पहर सहस्था हो सारी है), का देवने करों की अंशास और सहवारी तक हुनिह अपने कुल्य क्यान यह जाने है।

तैने कुली समाविक्षीय प्रत्य विनये होनेरे चीन्छे समाविक्षी भी जार सार्थ है, असी यहा प्रारंजिये समाविक्षी प्रदेशों वर्णान्य मेंनी प्रत्ये समान कुल भीनाम प्रकृत है। इस्मीनों परियोग्या संग प्रार्थ जहीं कुलाती साथ और अनुस्त्रों केन्द्र होने हैं। जहां पीनेर जिस्ता प्रत्यों है। उन्हें कुलाती समान अवस्त्र केन्द्र प्रवाद है। यहां न पृत्यूका अनेत है, न कुलावानामा। उन्हें विक्षीयों कोई हुन्स भी भी होता। अहमानी स्तेन पृत्युक्त ब्यान्त उन्हें स्तेनीये कामर अस्त्राच्या अनुष्या प्रत्ये हैं। प्रतियोग्या सोग्य है नम्म, जहां स्था अन्या प्रत्ये कुल होने हैं। प्रारंजिन अन्या प्रत्ये कुल कुल कुल होना है। प्रारंजिन प्रत्ये कुल कुल होने हैं। प्रारंजिन हैं। उन्हें अन्यों किनो प्रमूप कोन्य होना है।

व्यापन-समित्रने कारण कैननाइ होनेस प्रमास्टे दुःस्क दुःस नकता यहार है। इन सब सालेको समझ-सुक्रका कनाको एक स्थाप पुरेसित कता ही लेना स्वाहिते। सारण राजातिकोड होनेके पहले ही पुर्वेदिकका करना कर रोजा | अधिकारी है। जाः भारतान् होनेका भी राजाका पह पर्यान क्षीका है; क्योंकि करींके अनुसार प्राक्षण राजारे केंद्र है। है कि कर्यनुसार राजी राज्य कर्युएँ ज्यों प्राक्षणको निकेत बेहरोगा विद्वारीका बद्धान है कि समसे पहले साहाज करता | करे : सहाज-मार्टर अधिकारो अवितर्कत बनाती है और हर हैं; इस्तरियों से एक क्योंने जोड़, राज्यस्थित कथा | कृतिन प्रकृतको स्वतिमें करना होते हैं। इस्तरियों राज्यसे मूनरीय है। यह नहीं, में प्रत्येक क्यूमी वहते कोनरेके आह है स्थानक विकेत सम्बद्ध करना माहिते।

# ब्राह्मण और क्षत्रियकी सम्मिरिक इक्तिका प्रभाव तथा राजाके धर्मानुकुल व्यवद्वारोका वर्णन

चौनार्थं कार्त है—मुनिवित । राज्यको मृदिह और एक रावाचे असीर है और राजका अनुसर क्या संस्थान पूर्विकिते । वर्षे प्रकृत अन्ये केन्द्रे प्रकार नमूह पर कृ मता है और एवा अन्ते बाह्यको अन्दे प्राप्त जनक निवारक करता है, जर राज्यों कुछ और कार्रेक करते हैं। हा। हैक्समें सोन क्या कुनुक्रम और कुनेस्के केन्यस्थ हरू प्राचीन प्रतिकासका अञ्चलक केला बारते हैं । कुछ बार नकारण मुस्तुम्पूरे सारी पृथ्वीपर किया महार अन्ते सामग्री परिवा क्षात्रेके हिन्दे असम्बारकी कुनेत्तर पहलू कर है। या देशकर कुनेरने काका सामग्र करनेके डिप्ने राज्यांची रोज भेगी । एक्सोने पुरुक्तको सेनका संक्रा अन्त विशेष । घर देश मुक्कृप अर्थ विद्यार प्रदेशन व्यवसायीको कोल्ले सरो। का बरिहानीने अपने का राज्ये प्राथमाने कर क्रमुक्तिका जन्म कर दिना।

क्ष क्ष्मेचे एक पुजुक्तो कर सावर क्या-'राकर् । पहले भी हुन्हते सभाव बारवान् राज्य हे कुके है और उन्हें भी पुरोदियोची सहायता जाह भी; परंतु की साम का बैसा पर्यंद कर थे हो पैसा बिस्सेने नहीं बिन्स, विसीवा पुरुष जासका वह देश । वहका । वह हुन्तरी पुन्तओंने कुछ बार हो से को बैकाओ । प्रक्रामंत्र करूपर कर्जे इतन इतन रहे से ?"

कुनेत्वी का संबंध मुख्यूको कर वैच-'शास्त्राची । प्राप्तन और प्रतिन केवेंको स्थानीने हैं क्ष्म किया है। वेनोबा यून एवं है। स्वान्नोने क्षर और प्रकास कर होता है और वृक्षियोंने अब क्षर चुनाओका । उसका चल और जन्म असम-असम है जन को वे प्रेरतारकी एक नहीं कर सकते। तकः केनेको एक साथ प्रकार ही प्रकारक प्रकार करना पाहिले। में भी इस नीतिके अनुसार कार्य कर का है, किर आप क्ये कुल्स असक्षेप कारते हैं 74

का कुकेले मुसुक्तां बाह-नामप् : मैं प से प्रकारको साम केम है और व क्लेका राज्य प्रनिका ही है, को भी अबब हुन्हें सन्दर्ग पुन्नीका राज्य वे सह है। हुन क्रमका क्रांचीय करो।' काले ऐसा व्यक्तिय पुस्कृत्यो का—'कारत है में अन्तर क्षेत्र पूर्व पन औ प्रमुख : मैं से अपने काह्याओं जीते हुए राज्यका है उनकेन पानीमा (

केन्द्रों करे हैं—पुनुक्रकों इस प्रधार क्रीलावर्तरे अस्तर देख कुलेरको स्था क्रियन पुत्रत प्रतिक सन्द राजा रक्षक्रम् अवने एककानि सीट आने और क्षात्रपर्यका कारन करते हुए अपनी मुख्यओके बरनरे जात हुई पृथ्वीका क्षा करने समे । यो वर्गम समा इस प्रकार पहले स्वाच्याच्या स्थापने रोधान सामग्री स्वाचनारो राज्य-कार्योने प्रकृत होता है, यह वित्य चीती हों पृथ्वीको भी मीतकार कुल कुला करी हेता है। प्राप्तकारे एक संबंध-करण, वर्षेत्र आदि अपने अर्थने संस्का स्थान माहिये; इसी प्रकार क्षित्रको को सक प्रकारिकाम अन्यत्त कामा पाहिये। संस्थाने को सह है, यह सब इच्छी दोनोंके अधीन है। कुर्विक्षेत्रे पूर्व - विकास । राजाका काम्बुर केला

कर्ष की कुल्याकेकोयर अधिकार प्राप्त करे ? र्वनकी का कुलेन्द्र । राजको सब है सन्। का, अवसा और सम्बद्ध आहे, सुध धर्मीका अनुद्वार करते हर् कर्पकृष्टि प्रसादा पारन करते सूत्र कहिये। धीर क्षानिक पूर्व करवर जा करी से कहा क्रेकर करका सागत और बन कार्द देवन सरकार चेरे; क्योंकि का राज्य कर्मका कार करता है से देशने भी सर्वत सरका जाता होंगा है। कमा कैसा काम करना है, जना भी बैसा हो करना परंद कार्त है। एकाव्ये कार्तिने कि वह इस्तुओंको समस्त्रकारी चर्चित क्या देनेके प्रियं स्त्य देवार यो और क्रकारीको

क्षेत्र कार्क्षेत्, विरासी कह प्रकारों अधीरशील कराने और

शन ओरते प्रवासका घर है। सेंद्र क स्वर्णका किसी सुद्धे अपराधको क्षम न करे। क्सके हरू भागेचीते रक्षित होचर जन को कुछ वर्ष, स्वकार, क्षा, इसन और पूक्त साथ बार्ग बार्ज है, जाना इस क्षेत्राई कर एकको निरुक्त है। यह बढ़ बढ़ उनकी रहा नहीं करना से जा स्ताने आने कनके भीवर को पुछ भव होता है. उसका चौबाई यह भी हते ही चोबार पहल 🛊 । कुछ लोगोका पर 🛊 कि का अध्यक्षणे कुमार्क उसके को पानका धन्मी क्षेत्र पत्रत है और विश्वविद्व करने असमो आधा पाप रूपता है। देख राजा हुए और निव्यासकी Richard Marie & 1

क्ष्म इस इस उपापका करीर करते हैं, विकास उपापके ऐरी जानोसे बुटबारा निया संख्या है। नहीं बोर्टेने बिडाडेबा का पूर्व निरम है और राज अस्ता का अस्ता और सारोपे अध्यान हो हो जानो सामानेके जाना का अवस्था है है। अनर पर भी न हो सके से निकारके उत्तर-उत्तर कर्मकरिकेंग्रे कंक् लेकर है। इक्काई करान ही कार्य मानों भी पह करन कर क्लीक क्लेक है। के अवस्थानिक बच्चा प्रतिकार हो, जो अन्त्री एक्को मर्ग पूर्व देश शादित। प्रायुग्नेको पूज्य होत्रेले रामा कुनार्थ के माना है। जैसे तथ अन्तर केलोड अर्थर tell quite met also-finite met & det al me मनुष्य राजाके असीता हो जीवन बसाय पानो है। जी रामा कामी, श्वर और लेकी होता है, वह प्रकार काल मही का शतका ।

पुण्यितने व्या-मिताबद्ध । मै अपने सुकारे तिसे एक क्षण भी राज्यको हका नहीं करता । युक्ते के सर्वके ही सेक्के प्राप्त भी वर्गन था, कार इसमें वर्ग नहीं है। ऐसी बहानें रान्य रेगार पना करना है? अब से में वर्ग करनेकी इक्की करने हैं जातेल और व्यक्ति क्रीक हार्यक्रिके क्षार वर्गकी आराज्य करोगा । सम्बद्धका सर्वक स्थान निर्मात करते हैं।

का हैन और निरोधिय हो पुनिकी भवि करा-मुख्या ज्ञान करके जीवन विवादिया।

क्षेत्रको क्यू—वै कारक है तुक्ती बुद्धिने खोमलक अधिक है, बनर राजके दिले यह गुल वहीं है। निरे क्रोपक संभवना पर्वे अन्यत्र साम्य नहीं का सकता। क्रो अञ्च क्रांनिक, कोपल और द्याल देवन्तर होन कावर अन्योगे, हक्ते और समाधे महत्त्वकृति की होगी। करने कर-करोके कावारको अवनाओ । तुस विश क्रेगरे क्या नको है, का रेख क्या नहीं को। इस प्रकार विकास और प्रोपलकात आस्य रेक्ट कुर जनायरकार क्षेत्रेक्टरे क्षाकि करूको नहीं क सकते । तुन्हरी दिशा पाळ कुन्तरे रेज्ये कुरवा, बार और संस्कृत ही बावना विस्त करने हैं; कुन्मी की वहीं अल्लेश करती भी कि तुन्हारी काम और कारण थ्ये। कर, वेहासपर, यह और उच्चकार - इन्हें करोंको करोने हिन्दे हुन्हर क्या हजा to Complete print good sport strike annere Restfielt क्षण्ये. विकासिको करको और विकासिको पश्चर पार्थीको अपने पर्या कर तेवा है।

कृष्णिने एक-नात । वर्ण क्लेका काम सावन wa \$ ?

क्रीनकी क्या-काले का क्या प्रमुख विरादे कर करन एक इस भी करित स तथे, को सर्वक सम्बंद कहा आविकारी है। इसलिये तुम अस्तातानुर्वक कुर्णको कथा को और सामुख्योची था। एक सुरोका र्वका करके कर्गान अधिकार आहे करो । वैसे क्रम अल्ली केलोड और वजी क्ष्मके स्टारे प्रोचन-रियांत कतो है जर्म अच्छर सुद्धा और प्रस्ता पुरूष हुन्तारे स्मान्य क्षेत्रक चीविका चलावें। में राज्य क्षा, चूर, प्रकार बारनेकाल, कुमानु, विकेशिया, प्रधाना क्रेड कारनेवारस और करी होता है, जरीचा अध्यय रोबार सनुष्य जीवर-

# क्तम-अधम ब्राह्मणोंके साथ राजाका बर्ताव और केकबराजका उपाख्यान

कुष्पिते पू<del>रा वितास्त् । युक्त स्थापन स</del>्थाने । क्योंकित करोंने तमें खड़े हैं और कुछ करने क्योंके हैं, कियादी सर्वत समान दृष्टि है, ऐसे हकाम सहाजीके विवरीय कर्म करते हैं, उसमें क्या अन्तर के व्या चुके (सम्बन करने को है। यो बाग, क्या और सामनेत्रका अध्ययन बक्काचे ।

वीनावीने बद्धाः—को विद्वान् और उत्तव सङ्क्रजोसे सम्बद्ध बरके अपने कर्योंने हत्वे तुले हैं, वे इस्त्राजोंने देखताके समान समझे वाते हैं। विन्होंने अपने कार्डन कार्डियो कोड दिया है तथा को कुरियत करोंने उन्हर केकर कारणांको भा हो पाँच है ने सामन पाने राज है। इसी वक्ष कियोंने के नहीं को, को आविक नहीं करते. वे भी पहले ताच है। इन समने वार्निक एकको कर और वैभार केनेका अधिकार है। जानसम्बन्धे भागितुसरेको पुष्पारनेका कम करनेवाले, बैकन लेकर हैय-प्रस्तित एक करनेवाले, ज्योतियी, गाँउके पुरोदीक और राजेका देवन करून करनेकले—ने पाँच प्रकारके प्राप्तम प्राप्तको समान है। प्रतिबंद, राजपुरेदित, करों, राज्युत और वास्तवार कान वैकारनेवारे जायन श्राविकोर सुन्य जाने गये हैं। सुद्वास्तार, स्वयोगस्थर, रखी और पैदार विराद्धीका काम कानेवाले प्राधानीको वैजनके सन्तन सम्बद्ध जाता है। यदि चनाने, सम्बन्धे कमी हो से उननेक Begrift us un it ware to born an august. को सदा। और केन्द्राओके सन्तर करने नने 🗓 कर नहीं हैना पाहिने। एक प्रदानके दिन्य अन्य वानी क्लेंकि क्षमान स्वापी होता है एका जो अन्ते वर्णकरीह विपर्देश मर्थ वर्ता है, का प्रकारोंके की करने प्रकार है अधिकार है। एका कर्मका प्रकारको निर्मा तथा हुन। न बरे, करिक वर्गरर जनका करनेके रिन्ते जो क्या केवर बार्याच्य प्राच्यानीची क्षेत्रीचे कारण कर है। वेवनेना शासक की जीविकामा कोई सक्ता व क्षेत्रिक करना केरी कराने जाने को राजाका कर्मका है कि उसके करक-योकास्ता प्रथम को। श्रीविका विस्त जानेकर की बाँद कर कोरी कान न होते तो उसे कुटुक्सक्रित राज्यसे ब्यूट निकार वेना जातिये ।

पुणिक्षेत्रने पूक्त-विकासकः । विकासिकः पञ्चलेके सन्पर राजाका अभिकार होता है और राज्यको केवा कर्णन सरम्ब काहिये ?

भीकार्थने कहा-एका सहारको दिया क्रम प्राची वर्णीय बनका सामी होता है तथा को अपने कार्यने प्रमुख है। बूटे हैं, उन सहार्थनेय भी अनवर स्वतंत्रत ही अधिकार है। उसे कार्यक प्रमुखनियों ओरसे सामस्वाही नहीं करनी प्राहिते। उन्हें दखा देकर सहार सामा समायांका वर्ण है। बूटी समाये सहारा कोरी करे से यह समाया ही कारता समायां समझा जाता है, उसका पाप बनायों ही समझा है। इस सिकाये हुए अकीन इस्तिकारका ब्रह्मान दिया कारता है। सने । अधीनकारको सह है, केककान करने संबर गर और सम्बाद किए करते थे। एक दिन औं एक प्रवंकर क्याने क्या किया या देश एकने का स्थासी बक्क-'मेरे कमाने एक भी चोर, दरावारी और महिल क्षेत्रकार को है। अधिकेत और यह न करनेनास को कोर्च को है। फिर की सरीको भीतर तथारा प्रकेष कैसे हे एक ? की देखने एक की हकान ऐसर की है, को विकार और प्रपत्नी न हो । वेरै राज्योंड सोय पर्याप्त सहित्या किने किना पार जो फरते। सामारण किने किना कोई के को प्रकार सामानोप अधावर, अधावर, प्रका, प्रका और क्रम क्रम अंग्रेस्ट-- क्रम कः क्रमेंने सने सकर है। वेतिका बतारे है। सभी प्रकृत मृहरामधान, सतनाहै, अपने बर्गका पारन करनेकारे तथा मेरे सम्मानका है: राजको सम्बंधी पृथि विस्तारी है। मेरे सम्बंध स्थित विकारित प्राचन आहें पहले. उसने कर देते हैं। में प्राचनकी और कार्मिक है। के पहले हैं, पहले पूर्वी: यह करते है, भारते गाँ । प्राप्तनोपी रक्षा 📟 है और संसानने कर्म कीए नहीं दिवाते। मेरे नहींद्र केला भी अपने कर्मी है को को है। वे बल-कर बोहबर केर्ड. भेरता और स्थानको जीविका घटनो है। प्रश्नादे सह जी विकार, कहा कारने ही रही को है। जान स्लोक कार और सलकार करते हैं। अन्यानीको वेक्टर und it was made throug over real if a physician और प्रतिकास काची नहीं क्रोक्ते । मेरे राज्यों पूर भी अपने कर्मकारे विश्वक की होते; वे इक्कारादि तीओं with their effect week & six fexted free यों क्यो।

भी भी क्षेत्र-कु:सी, असाय, युद्ध, वृतंत्र, अस्तुर साथ विकासी साथ-क्ष्म केल पहल है। अपने कुल्सार्थ, देशभावी तथा सारित्रांकी परम्पराचन काली सोच नहीं होने केल । अपने प्रभावी साथिकांकी की राष्ट्र ही पूर्वा और रक्षा की है, उन्हें सरकारपूर्वक साथानक मस्तुर्ग कुन की है। मैं वेक्सा, निक्त कथा अस्तिक आदिकों उनका थाने आदेश किसे किसा करते लोकन नहीं करता, पराची वरित्रों और कुद्धि नहीं सामता। क्या साथा देश सोदा है, उस समस्त्र भी मैं असावी रक्षाके रित्रों कानता साला है। मेरे पुरोहित कान्यानी, कथाने और नाथ करते हैं। में का-दान देकर विकास मानेकी हवान रसाय है, सरकारका तथा साहाजीकी च्या करके पुरुषकोकोवर अधिकार करा व्यास है और ! सेम्बार पुरुषकोको समुद्दार रकता है। वेरे सम्बद्ध विकास को नहीं है और अच्छा, भूगे, कोर, अलोकावरियोगे में। करानेवाले तथा पायरतावश स्थानकार भी अध्या है; इसरियो मुट्टो स्थानोसे तथिक भी पाय औं है।

क्यानो वदा—केमावास । आर सम अवस्थानोर्ने मर्नेमर ही दृष्टि शतने हैं। इसलिये अवस्था क्या हो, जाने पर मार्गि। ही भी अवस्था केमावर सीट काम हूँ। यो चै, स्थान तथा तथानी रक्ष करते हैं, उन सम्बद्धीयो स्थानोर्मे भग नहीं होता।

सीरको कार्य है—सक्त् है इस्तरिके इक्कानोकी स्था रक्षा करनी आहेंगे। सुरक्षिण क्षानेक से की राज्यानोकी स्था करते हैं। डीक-डीक कर्माक करनेकारे राज्यानोको प्रकारिका आसीर्वाद आहे केवा है। असर अहें कर्माद प्रकारित किकान रक्षार कार्यने, कहें राज्या अवस्थ अनुव्य है। को राज्य अवसे कार्य और राज्या असर्थ तक इस अवसर सर्वपूर्ण कार्यन करता है, यह इस लेक्यों सुरू भोजकर अन्तरों सर्गालेक्यों इसके सम्बद्ध स्थानक है।



# आपत्कालमें ब्राह्मण आदि वर्णीके कर्तव्य तथा ऋत्विजोके लक्षण

 पृथ्विते पूरा—शास ( प्रमुख्या गर्म अपने कंकेर गुगर व हो सके से वह सामनिकारको वैद्यावकी अनुसार गोलिका कार स्वास्त्र है का नहीं ?

भीवनाने कहा—सहाम अवने जीवका जा होनेकर सैकाके समय की अधिकारको भी नीका-निर्माह करकेरे असमयों हो साथ को बैहरकारको अनुसार कोडी करके और मीने पारामार मुखा कर सकता है।

वृषितिर्ग पूक्त-भरतकृतकृषकः । यह यो वर्तक्षे, प्रशास वर्ति वैश्वकर्षते सीविष्या व्यवके स्वयं व्यवक्तः वी वर्ते तो नित-नित वस्तुकांको स्वरीत-निर्मा व्यवके व्यव सर्व-सोकको प्राप्तिक अधिकारते वर्तक नहीं होना ?

भीनवीर नक्ष-पृथितिर । स्वयुक्तको महिन, वांस. १९८६, नपण, तिस्त, प्रकास १९४ कहा, क्षेत्र, तैस्त, त्यव, १९८८, तेव् और पैस आदि वयु—इन क्युओका के इन इत्तरपे जान कर देना काहिये; क्योंकि इन्यां केपनेसे उसे नस्कर्म कान पड़ल है। कहारा आहि, चेड्र करून, क्षेत्र सूर्व, पृथ्वी विराद तथा में यह एवं कोमका स्वस्त्र है; इन्हें-किसी तरह नहीं केपना चाहिने। कहा उसा देवर प्रकास कृता तक तैनेने अवर्ग नहीं होता। इस विश्वने समावन कारणे काम काम दूसा वर्ग कास देस हैं, सुने। 'मैं अवरको अनुक कहा हैता है, इसके काले आप पुत्रे अनुक कहा कैनिये जा कामार केनेको प्रकार तहीं काम हुआ कहा कर्ग काम जाता है। कामहाती कामा नहीं काम प्राहिते। इस कामा क्रियों तक अन्य समुक्तांके कामहार प्राहिते। कामार क्रियों तक अन्य समुक्तांके कामहार प्राहीत कामार क्रियों तक अन्य समुक्तांके कामहार प्राहीत

कृष्णियने पूका—स्काशक ! वदि सारी प्रका कहा बारक कर के और अक्का कर्ष कोड़ कैटे, इस समय कृष्णिकारी प्रकृत के क्षित्र के कालेकी; किर कह राष्ट्रकी शक्ष कैसे कर समसा है ? विश्य करा समझे प्रकार है स्थान है ?

वीनकी बहा— ऐसे सम्बन्धे किनो केर-हाखोका बहर हो, ने उद्यान कर अंतरो उठकर राजाकी राक्ष्य बहावे। विस्तर प्रति होना हो यो हो, उस सम्बन्धे उद्यानके बरुका अन्तर रेक्टर ही अवनी आति करनी बाहिने। क्षा करू और सुटेर प्रकार कर्माकाल फैस्स यो हो और उनके हार वर्ग-सर्वादका अन्तरहन हो का हो, उस समय इस अस्तरकारको बेक्टनेके विस्ते वर्षि सब वासिके होग गी इक्रियार उठाने के कोई खेन नहीं हेका।

पुणियों तो पूका—बहि समित्र-असि भी सम ओस्से प्रायाणोंके साथ पुर्णवास करने शर्मे, उस समय प्रायाण अभावा वेदावी रहा कौन करें ? ऐसे अवस्तरपर विकास क्या कर्तका है ? यह किसकी प्रस्काने कांच ?

इविवासे, क्लो, स्ट्रूच्यासे स्वयं करते-बैसे भी हे, असे तथा कृतिय-वातियों कृतनेया जना करे; क्वींकि का अधिय ही प्रकार कार, जाने की विशेषाः अवस्थित साथ अस्तावार करने रूने से उसे स्थान में 🕮 राकता के कारण पढ़ कि अधिन अकुननों ही जनते हुए हैं। करवी अहिन्दी, प्राथमां अप्रेचकी और पानाचे स्वेवेकी क्रमति हुई है; इनका प्रभाव सम जगह से क्रम करता है, क्यर अवनेको स्था अनेवाले पुर पारको मुख्याल क्लेक शाना है जाता है। यह स्वेहा पास नामता है, सरी। जाने बाल कार्री है और श्राप्तिक प्रकारको हेर करने राजक है से ने रीनों जा है जाते हैं। बहाय श्रांककर तेक और कर उनक प्रया सबीय होते हैं, हो भी प्राह्मको मुख्यमका होनेका मेर यह भारते हैं। यहि क्यांकित् प्रकारको क्रांकि कर हो नवी हो और श्राविक्याति भी वर्णन का गरी हो, उस समय का सम कर्णीक सीप प्राप्तरांनिक साथ आवारता करने हो से भी स्टेन प्राप्तकोची, वर्धको तक अपनी रक्षके विके अन्तेकी परवा न कर्तर सुरोके साथ क्रोजपूर्वक स्थाने हैं, जन करानी पुरानोकी पुरुवलेकोको जाहि होती है। अक्रकारी १६७के विने सम्बद्धे कृत्य प्रकृत कारनेका कारिकार है। यह, वेक्कारण, कारक और निरामर कर करनेवाले ओगोबो किन करन संभ्योची आहि होती है, इस्ते की कार रहेक इस्तुमके देन्ने जन देनेवाले प्रत्योगोंको प्राप्त क्षेत्रे हैं। प्रमुक्त की की सीर्थ बजीकी रकाके रिजे कहा काल करे हो जो क्षेत्र नहीं सनता। को त्येण प्राध्यानेते हेव करनेकाने पुराकारिकोको क्यानेके मैनने बक्की कारवर्ग अपने प्रतीसको अस्तात है जाते हैं, का बीरोंको बम्बक्स है। बदुबीने ब्लाह है कि देशे सोनोंको इक्टरेक्स प्रति हेरी है। तैने सक्येक्सके सक्ये अवशृक्ष-मान करनेवाले पनुष्य पारस्क्रित क्रेयर परित्र हो आहे है, जह इकार बढ़ायें इसोड़ान पारे गये और भी परित्र हो जावे है। शब्दे सुध केविका सम्बद्धार करनेवाले वर्षान्य पर्देश की देश-कारणी परिविद्धिके अनावर सारोकी रक्षके रियो

करोस्तापूर्व वर्तव—विसासम् कम करते हैं, तो भी शर्दे तराव नांत हो जात होती है। अपनी दहानो सिने, अन्य वर्णीम कर कोई कुराई आ रही हो तो जाको रोकनेके सिने तथा हुएको एक देनेके सिने—इन कीन जनसरोपन जाहान भी कुछ जहन को तो जो केन नहीं स्टब्सा।

वृत्तिक्षेत्रं पूर्ण-निवासकः यस सुदेरे अकता सिर् बद्धाः, व्यक्ति निर्मार हो, सम कर्मक स्मेर प्रकारणे प्रकार विक्रमेशे प्राय कर्मसम्बद्धाः करने समे और ज्यानके प्रकार बदेई ज्यान न पूर्णः, तम जनकाने करि कोई कर्मान् व्यक्ति, वैद्या जनका पूर्ण कर्मको स्थाने सिन्ने द्या नारम करने ज्यानके सुदेगीने हम्मरो क्याने से यह राजा हो सम्बदा है या नहीं, राज्यानं कर सम्बद्धा है या नहीं ?

पुष्पित्रे पूर्ण-सिताना । यान्य व्यक्ति की होते व्यक्ति ?

वीनपाने का —केट ! यो वाव, साम और वस्तेत्वे प्राण, वीनांसके विद्वार और राजके रिक्वे सालि-पृष्टि वार्थे वार्थ करनेवारे हो, वे ही अधिक्य होने केन्छ हैं। वे सब एक प्राचेक विश्वरकते, एक-पुरारेके विरोधे, सर्वात सकत हुई राजनेवारे स्वापु, सावकादे, काल व संनेवारो सवा सरक सावकादे होने काहिते। इसी वाच यो निक्कर सेव और अधिमान्स संस्थात, स्वाप्त काल-पन नार्थि पुनोसे पुन, वृद्धियान, सावकादे, वीर, अधिकाद, राग-हेक्से पून, वृद्धियान, सावकादे, वीर, अधिकादी है। साथ । वे सावी प्राचीय प्राप्त संस्थातके केन्य है।

### मित्र और अभित्रोकी पहचान

वृतिहरने पूरा-विकास ! होते-से-होटा काम थी। अनेतरे विस्तीको स्कानताके विका करन कठिन हो साम है। फिर राजाका कार्य से पूर्णको स्कानका विकी किया हो है। बैसों समस्य है ? इसलिने जनीका होना आकारका है। उस आनं कार्यने, समस्या कर्या कैस्स होना कहिने ? उसका समस्य और आवश्य विका स्थान हो, कैसे स्वीकार विकास विका अन्य और कैसेवर नहीं ?

चीनकी का-राजाके बार प्रधानके कि केरे है—स्वार्थ, प्रवसार, स्वार और क्वील" । प्रोक्स है। मंगीना होता है, यह विश्ती एकका पहलती नहीं होता और म मेंची पक्षीने केवन लेकर कार्यपूर्वक क्षेत्रीका ही विक क्रम स्ता है। विश्वर अर्थका प्रत्य प्रकार सूत्र है, अर्थ प्रकार मा अवन पहल करता है अवना से एक कोने दिया है। है, नहीं को अवनी और प्रतिक नेका है। कार्नुक विकोशी परमान और सहक क्षेत्र समझे जाते हैं, क्षेत्र क्षेत्री ओसी हो क्या सम्बद्ध राज्य भाविते । यासायते तो अपने श्रात्येको हरिये THE THE STREET, BRICK IS STREET, WIN WHICH I राजाको रियोको रक्षा करनेने काली सरकारकारी नहीं करही मार्थितः क्योपि असल्यान एक्ट्या एवं ओन क्रिस्तार मारते हैं। अनुस्तात जिल कहार होता है, कहा कहा हुए और बुरा काम हो जाना बारता है, इस निम और विश्व प्रात भर्ग जाता है; अत: फिल्पर कीन विकास करे ? इस्तीओ मुक्त-पुरूष कार्योको कुरारोपर न क्रोक्टर अपने स्थाने 🕸 कारक वादिये । विकासिक भी क्य-दश विकास कर वेथेले क्षर्य और अर्थ केनेका चक्र होता है। क्रारंकर कृति तक निकास करण अध्यक्त पुरस्को और। केन्द्र है: aculturitat ferbil upe uper to up faren विश्वास करता है, उसीकी प्रकारर अस्त्य और विर्यंद स्थार 🕯 । इसलिये राजाको कुछ औरतेयर किन्नात की कुरूत काहिने और उनकी ओरहे एकंड भी क्रम स्थिते है की सम्बद्ध राषा-रिके है।

अपने अपायने निस्त धनुष्यका गुरुवार कृत्य है सकता हो उससे सक्ष धीवना सुन्त वाहिने; क्वेटि रिप्ता

कुर्विते करावी प्रदुशीने काला की है। को पहुल हसाक्षा मानुदान देश अलब्धे और भी मधिना अली कर्ने और अवन्ति हेनेका बहुत इ.सी हो जान, बहुँ जान मैश है। अपने न क्षेत्रर विद्या कांग्रिको विद्येष कृति ब्युंकोकी सम्प्रकार है, अलग निवासे रस्तान विश्वास करना वाहिने और यस अपने क्का पृद्धि होते हैं से क्कालीह सरको में समृद्धिकाली करून करिये। को कर्मक बारोजें की राजाओं नकस्ताओं क्यानेक कार रकता है, जानदी हुती है एकर विसानों का क्षेत्र है, को ही काम विक भागती । मुकसान पाक्रीवासे तो प्रस् है काले को है। के मिलकी कारी देखकर मरला की और विकास देशकार कारण जाता है, यह बिल अबने अलगाने समान है। विकास का-रेन प्राप्त और कर मीठा है, भी क्रमाओस. केंग्लीनीक, अभिक्रिक क्षेत्र पुरसित हो, कामारे सेन्द्री पूर्वीक रिकारे भी कावार है। विभागी कृदि अवसे और सरशासीक वीच हो. में कर्ज सामनेचे कुसल और संभावत: हवाल हो, वाची भार का अकारत हो जानेवर विकास इसको हार्यात गुर्ही क्या हैता पहल और स्थानिक, अन्याने अन्यत असन्य राज्यनित निता है से को हुन अपने वाचे पत्नी बनावर रख कारते हो: का कुक्तरे कियेग आवश्या पात है। असको राजकीय पुर विकारो क्या वर्ग और सर्वको अनुसीको धीरेकित रक्षान् । क्लो करन कुछना विशासे अंधन कियान क्षेत्रा पाहिने। एक कारण एक हो स्वक्रिको निवृक्त करण, से वा सीवको नहीं; क्लेडि क्ले करूर कर्ल हे क्लेडी समावस रहते है। भारत कि एक कार्यन निवृक्त पूर् अनेक व्यक्तियोधे प्राय: न्यानेट बेका के हैं।

के क्षीतिको जानामा देश और व्यवस्थि पीतर व्यवस्थ एक है, जनिकारणे पुरुषोर्ध हैंग और अन्य नहीं करता, काराज, तथा, सोध अवध्य कोचारे भी को वर्गवर स्थान सही काराज, निराणे कार्यपुरस्तरात तथा अस्वस्थावाको अनुकर कार्यक संस्थेकी पूरी कोचारा है, हों हुए अस्त प्रवास क्षी काराज। को कुर्यन, श्रीताक्षण, स्वासीत, हींग न कार्यकारे, पुरुषोर, अर्थ, विद्यान तक वार्यक-अवस्थाको सम्बाभी कुळा है, हुई समासके प्रदार विश्वन पूर्ण

<sup>&</sup>quot; महार्थ मिन उनके बहते हैं, वो किसी उर्तम एक-दूसरेकी सहावकोंद्र रिम्मे निम्ना बहते हैं। उस्कृत उनुसाहम दोने मिल्लार बहर्स करें, विजय होनेका दोने उसके राज्यको आका-अरका बाँट होनें — इसकोंद्र करें 'कार्य' विशेष होती हैं। विनक्षे साथ पुरतिश्वी निम्ना हो, वे असमान' बारकारे हैं। विनक्षे नकदोकों रिजंपारी हो, उन्हें 'कार्य' किए बहते हैं और वन आदि देखा असमाने हूए होना 'कृतिश' मित कहरकों हैं।

सरवारपूर्वक सुन्ह और सुविधा देता। ये कुपारे अस्त्रे । व्यक्तिकारेके अध्ययकार्ध व्या अपना है अपवान सन्तरेगा। सक्तवक रिज्ञ होंगे और एक उसके कामोची देश-कार क्रमें है ।

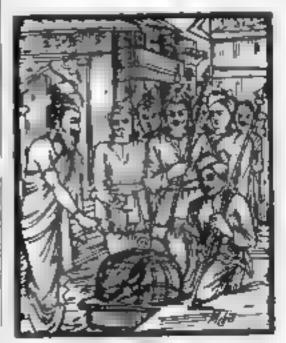
बुविद्वित ! तुस असमे बुद्धनिक्योंको मृत्युके सम्बन सम्बद्धार असे स्टब्स् इसे कुछ। नैसे पहेली राज अपने पासके राजकी करी नहीं का सकता, उसे प्रकार एक बुद्धमाँ इसरे बुद्धमीका अन्युक्त मही देश सम्बद्ध । विसर्क कुरूमी या सने-सम्बन्धे नहीं है, जाको भी कुछ नहीं फिल्ला; इसरिये कुटुर्वायकोची सम्बेक्टर गाँ करने पादिने । पापु-मान्यको हीन अनुसादी हुगरे लोग स्थाने सही है। क्रारंकि क्यानेवर अपने वर्त्त-कम् हो सक्तव के हैं। नह र्वर आहरी अपने सरीमानेका अक्कर कर का है, के प्रसारीय केन्द्र औ। वस्थी कवाहर नहीं कर समझा । अपने 🖟 व्यवहार करता है, सरका कुम्ब किरवासक्ता कर रहता है।

इस प्रकार कुटुम्बोक्योके स्कोर्ने गुल भी है और असगुल भी । कुटुक्का व्यक्ति न अनुवा करता है, न नगरवार करता है। उनमें भाषां-मुखां केने वेकारेने आवी है। समान्य क्रांग्य है कि का आपने कारीय कम् आंका गांगी और क्रिकारे सम्बार करें। यह है उनकी भरूर्य करना से, कभी कोई कुर्खा न क्षेत्रे है। उत्पर विश्वास से म करे किया विश्वास करनेकारेकी भारत है उनके साथ महाँच करे। उनमें केंच 🛊 पा पूर्व -- प्राप्तकी कर्मा न करे । की सूक्त हमा सामाधान सुधार ऐसा कर्मन करता है, करके यह भी जरता होकर अनके दान विकास कार्य कार्य राज्ये हैं। यो कुटुची, सरी-सामानी, हैक, इस कार कारकेर व्यक्तिकोटे साथ इस मेरिके अनुसार

### मन्त्रीकी जाँच--कालकवृक्षीय मुनिका व्याख्यान

राजनेतिकी पहली वृति है, अब हुतनी सुने । यो भी कहन कुरानी आर्थिक जाते गरे, जानी राजाने गए पह करने वादिये। पदि ननी कारानेने अन्यो संबंध सामा हे और कोई रोकक या उद्यक्त न्यूच्य इस बनावी कृतना है। आते से करवी पता एकरवर्ग सुरुत वाहिने और नाहिले करकी रहा करनी काहिते; क्लॉन्ड का ह्यूपनेकारे करहे अवसर ऐसे कोगीको पार करनी हैं । क्रमान सुरुवेनको स्थेन क्षापट होचा जाने पहचको यह के हैं, नी राजनी आहेरने अलब्दी राहाच्या प्रकार नहीं हुआ हो पह नेपारा नेपीय मारा जाता है। इस विकास कारधानुश्रीय गुन्दि और मोराज्यसम्बद्धे संबद्धाय प्राचीन इतिहासम्बद्ध कोण उद्यापक हिना करते है। सुन है कि एक कर कोसल देशके कन क्षेत्रहरिक वर्ष एक कारकादक्षीय सम्बंध गुनि कराने । वे बंध विज्ञहेरी एक बौजा दिये राज्यका सम्पन्न कार्यके रियो उस रामान्द्र राज्यमें बड़ों कर बक्तर सन्य कुछ है। क्ष्मदे समय से लोगोंसे कारी से-'समये । तुसलेग सी कीएकी किया सीको; मैंने सीसी है, इस्लेक्ने कोए मुझे पुत और परिष्यको बाते बता दिना करते हैं।' इस प्रकार केवना करते हुए वे बहुत स्त्रेगोंके साथ गण्यमें कुश्ते किने। अत समय उन्होंने राजकार्यये नियत क्रिके हुए कर्मकरियोकी म्बहुत-सी अनुषित कार्रवाहवी देखी। गहके सपी क्यानाचीयर अन्तिने दृष्टि इस्त्री और उसकी अस्तरिकाला पता लगाया । को तबाके बनका अव्यान्त करते हे, उनकी

भीकार्य कार्य है—साम को साल्यों कर्या है, यह ) भी बान दिला । इसके बाद ने मौजूनो साम देखार शकते



रिलमें अने और बोले 'मैं इस राज्यकी सारी बाते सारता. है।' सबसे पहले के राजधनीये जायर केले-'मेर कीशा कहत है दुसने अपूक स्थानक अपूक काम किया है, राजाके इस्कानेले खोड़ी भी की है, इस बातको अपूक-अपूक व्यक्ति जानते हैं। इसलिये जीत ही राजस्थे पास चलकर अपास्थ स्वीकार करे।' इसी एक उन्होंने और कई आदिनयोंसे कता, उन लोगोने भी सम्बन्धेत कोरी को वो । वे सबसे बहुते | वे, 'मेरे कौएकी कोई की कर कारकार करी की करे मनी ( दुवसोन अन्तर्भ अवस्थी है (

का अकर का कुँने एककर्गकरिकेंक विस्तान किया से सबसे निराधन जुनिके को बालेकर सालों उनके कीएको मरक काम । एवंदे कानेना कव क्योंने देखा कि पैश मोध्य विन्हेंने कारचे विकास एक एक है. के रामा क्षेत्रपर्विक करा कावर बद्धा- 'काव ! आप प्रकारे अन्य और वन्त्रे कार्य है, वे अन्यो अन्यवर्ध प्राप्त करण है, परि सहस है से मैं अपने दिल्की पर कार्य ( कार्य कार्—'शिक्स | में अन्य केर कार्य E selft som til Spreit ift man amplemen it, best रेक्टर कर को भी करेन? में औरत करत है कि आपने को करान कर्त कांगा: अब से का काइना काहते हो, केएएके को है

मुनिरे व्या-व्यापात । असम्बंद वर्णकारिकोचे क्रीन अन्तरभी है और सीन निरस्तान—इस प्राप्त की एन्स्कूर क्या आवत्त हेन्स्रोडी होस्ते पर आनेकार है—बह कारका केर्युर्वेक कारका साथ सामाना बावके हैंजे annie um sein bie filber gebien men fi fie विकास राजांके साथ अञ्चलकिया क्षेत्र है, जानक विकेत करिनेक साथ स्थानक प्रमाण प्राप्ति । प्रमाण प्राप्ति । मार्ग क्यूनें मित है, वर्ष क्यून-हे कुरूर की होते है। स्वार्थः पार्चनतिनोची पर अपने पन केन्द्र है। सर्व प्रकार के क्षे क्य-क्यमें सामा कर्त है। जो अस्त कार करता है, को रामाने कर कर्ज उन्ह भी करन करेंगे। की करती हो आपके बार करूप सबेर होका कका है, हते क्य विभिन्न पुरस्को राजाके कर सारकारीके क्रांत क्रांत कारिते । एक प्राप्त और का—क्षेत्रोच्या सामग्रे हैं, पह का क्रोप करता है से विरस्त स्वीतोह समान पर्वश्रद से साल है। जन: रोजकोको अपनी क्रम हवेदनेका रोक्टर को काले समानी रोग कानी साहिते । श्रेष्टरे मोई सुरी बात व शिवास मान, कहा रहते, काने, बैठने, चलते और हुसार काने समय मोर्ड बेशको न हे कर एक क्रांत्से कोई कुनेहर म प्रमाट हो जान—इन राज कारोंके दिनों हाह सार्वाः सुन्ध कारिये। समाची भीदे जाना बार रिच्या क्षाप को बार केम्प्राची पाति सम्पूर्ण प्रचेतक हैस्यू बार देख है और पहि कृतित हे ज्या है आजारे चीते वह सामादित पान कर अल्ला 🛊 (

है। करन् ! सरको का जों, नेत का बीका जानके हैं। कार्नि कर एक है। सिंह इसके दिने में आवने और आनोः वेरियोको केन नहीं है समस्य; आन सूत्र अपने हित और अधिकारे पहणानिये, सार्थ राजातिक सार्थनिये देशियो, कुरतेची देख-न्यारकः विकास न महिन्दे । को स्वेश अपनेत है करने क्षावर सारका करान सुद्धों है, वे प्रकारी कराई कार्यकारे नहीं है, जन्दी स्टेन्सेंट के प्राप्त मेर स्टीप है। में अगन्त दिनक करते का राजको कहा नेहर कहता है. या प्राप्ते हिन्दे अपःत्राची कर्त-वार्तवाले स्वेतारोसे विस्तास कोई कारक कर्मको विकास है। देख के करोते अस्तर कार करेक, अध्यक्ष नहीं । यह: स्वत्यको प्रत्यका हो कार पार्थिते । मैं पोर्ट स्थानन लेकर पार्च पार्ट आप या, के शी महत्त्वकारिकेने कार कार्यकी हकाई के कीवार महत्त्व करानेक क्षेत्र दिया। यह बार मुझे अस्ते हुनोबराही प्रतान हा है : केरे देखालको सन्दर्भ हैंड, कार और कोरे हेरे है. जाने भीतर सिंह और मनानेक निवास केंग्र है और पूर्व त्ता कारणेले अपने अर्थन करना प्रमा कहा गरीव है पाता है, उसे प्रकार क्षा अधिकारियोंने प्रतरह इस एकार्ड की विकासिक पहल पुरिचार है। इस प्रकारत स्वरेने पास्त्री सूर्वे है, वर्षा अन्ते और दुरेनी हरूनों गी है। क्रमें और परमाना (अन्यादी और निरमाना) ग्रेनोन्ड ही गरे पानेका offer \$1 were: it which was from mith aft. कुरमारामा पुरु को गाँ। विकास करेको । कर इस सावते रेस की होता, अरः को कुछ होया की है। स्थापन न्युक्तको को कान्ये ही बहुति विकास कान्य करिये। श्रीता जानकी कर नहीं है, जिसमें कर ही कुछ बाती है, ऐसी ही meit mital medit al fre met ift die mereble भी प्रानंत्री आकृत है। मैं से इसे समझे गा प्रानंत्राओ एक जनारको बनेते हे सन्तरत है।

राज्य । असमें ही दिनों करते मराव्य, आपने ही विराम्य करण किया, वे आयरे के विराम्यर आयोह दिवस का करन करने है। है उसके साथ स्ट्रीको अविकारिकेक प्रीत-कराव कारण कारण कर, इसरिके न्यून करण कुल सम्मानको साथ रहा है—हीक सही हता की बोर्ड सीनको स्वानमें खात है। इस देशके राजा विभेगिक है का भूती ? इस्तेह ओहर व्हरेकारे सेवाद इस्तेह कार्य के है? जनक प्रमान केन से है? अवस राज अपनी अवको केन करते हैं य ? में ही एक बार्ट जारनेको इन्यानो में नहीं अन्य का। वैसे पुरोको भोजन अनुस समस मेरे-बेस्त मन्त्री आवरिकामणे वृद्धिया स्थापक केल 🐍 उसी अधार आवामे देसका से पुत्रे क्याँ अस्तरत हो:

किन अध्येक पन्ती अन्ते भूति सान पहले । मैं आवन्ती पराई करनेवारत है—वही इन त्येनॉने मुहाने सबसे बड़ा क्षेत्र करा है। क्यापि में इन लोगोसे केंद्र नहीं करता, हो भी पूछे होती सन्दान्तर में नुप्रथर केंपड़ीह रखने हमें हैं। निसमी बीत खेड है नहीं हो, जा सीओ समान हह प्रस्काने कहते सक हते राना पारिने। इसीरिने सन में नहीं कर नहीं पहला।

शक्तने स्था-सम्बद्धानकेत्र । साथ धेरे पहल्ले रहिते, मैं आपको बसी क्रियाचन और सम्बन्धने रखेला ( क्रे अल्बन्धे नहीं को देना करेंगे, में सुर ही नहीं को कोने ( इसके कर इन रवेगोंके साथ केंग्रा काव्यून किया व्यन, इसके जान ही सोविने। पगवन्। जिस वस्तु राज्युकारे में अपने कर बारम कर रखे और मेरेकर असे है करने होते से, यह रख सोकका आप पुत्रे काचानके मार्गपर समाहते।

मुनि बह-राजर् । यहते से ब्रीएको करनेका के श्रमात्व है, इसको जनद किये किया है एक-एक प्रचीकों अस्तर अधिकार प्रेनिकर कृति कर अधिने । प्रस्के कर अवराज्येक कारणका युग-यून यहा स्थानका सामकः इच-एक जातिको सैक्के यह उत्तर वैक्कि। एक-एक कारों प्राप्तिको हार्राएके बहुता 🛊 कि बहुत-है रहेशीयर का इन्द्र ही तरहन्ता क्षेत्र समाच्या जाता है, तो वे सम निरम्बर एक हो बाते हैं: उस दवाने ने बहे-नदे बंदनोंको भी काल रे प्रश्न का ही।

क्रांच्ये हैं। अर्थ: यह गृह विकार कही दूसरोपर प्रकट न हो साथ, इसी भारते ने बाते करा रहा है।

क्यन ! जब मैं बाज्यों अपन परिचन देश है—येश आयोः साथ पुरान सम्बन्ध है, मैं अक्के विस्तार आहरणीय तिल है, मेरा पान है काराक्यकीय पुनि। यस जानके राज्यन संबद्ध कान्य और आपने विकास सर्गनात हो गया. का करन को कानकारोंका जान करके में तरस्य करने पाल पाल । असमें असर विशेष और होनेके कारण ही मैं पुर: वहाँ सामा है और शतको में नहीं नहां वह है; इसका जोजन अहे है कि आप किर किसीके च्यारायें न गई। अर्थने बाब और द्वार केनें ही देशे हैं, यह राज्य मानको देवेकारो क्रम प्रभा है। से भी आप इसे वन्तियोग क्रोहकर क्यों चल बल से हैं ?

कारक, विकास कारकाश्चीको पुरः शा कारेसे राज-वरिकालों प्रमुख्याक होने राज्य । पुरोक्तिको संसामे भी हार् करण करे एक। करकावतीय पुरिते अपनी सुदिहे कानी कोशाननेकारे पृत्तीका एएका सामर् का दिना। प्रापंड कर उन्होंने कई उपन यह किये। वर्तकपरायने पी पुरोक्षेत्रके किन्यारी काल सूने और जनकी आहानके अनुसार का कर्ग किया, जासे क्योंने प्रगता प्रत्यक्तार निवय

# समासद आदिके लक्षण तथा गुप्त सलाइ सुननेके अधिकारी

कृषिक्षेत्रने पूरा-पिताम्ब ! एकाके शंभागत्, स्वापंकः, सुक्त, परिचार, (सेनापति आहि) तथा मनते पैत्रो होने कारिये ?

प्रेमकोरे क्य-बेटा ! यो सम्बन्धन, विवेशिक, सावनादी, सरात और बिस्टी विकास अच्छी प्रस्त चेल स्कानेकारे ही, अहिंको हुए सभारक कारण । असी, कुरबीट, बिहुन, प्रह्मण, अधिक संदोधी एक कार्यने विकेच उत्तक दिक्षनेवाले जनुजोको हो स्वापक क्यानेकी हुन्छ करना। को कुलीन हो, रूपनी वक्तिको क्रियात र हो, स्टबर्प, कुर**क्ष्में, सीमारीमें असला सम्बद्ध होने**वर भी सभी संबद्ध न होरान हें, की रहर काने चेना है। ये जरने हैं हेलने भीर सब्बे कुरुने जनत हुए हो, गुरुकार, रूपकार, बहुत, निर्मय तथा प्रेम रहनेकले हो, वे ही कुकरे चरिक्क

क्रीराम्बर् इस्ते स्ट्राइनेसरो, इतालु, देश-सारको विकासको प्रस्कृतिकारे और कार्याका देश बाहुनेवारे व्यूक्तीको इस सब करवीने अपने पत्नी क्षारहः वर्धेनिक विक्रम्, सरकादी, सक्रमारी, ज्ञाम प्राप्ता परान करनेवाले और तक राज देनेवाले नकत पत्न तार्च कथी जान नहीं कबडे। से कामको, कमो, क्रोमो अक्क लेको की कांका जान न का सके, को अधियानगील, सरकारी, काच, काको जीवनेकरम, इसरोसे सम्मानित तथा प्रत्येक अवस्थाने जीवा-बुक्त हुआ प्रमुख हो, असीको तुन्हें बुद्र सम्बद्धान्य करून काहिने। निनने साथ कोई-न-कोई सम्बन्ध हे, यो अच्छे कुराने अवह विश्वसमात, स्वेदेतीय, लोभ दिस्तकर प्रोडे न का राजनेवादे तथा व्यक्तिवाद-क्षेत्रसे रवित हो, जिनकी कार्रि काम हो, जो बैदिक प्रकार करारे (मैकाफी आदि) होनेकोचा है। अन्ते कुलमें अवह, और पुन्द-दर-पुन्तते राज्यद्वी जेकरी करते आ रहे हो तथा

किन्में कर्मकरा नाम न हो, ऐसे सोनोको ही क्या क्रमा । काहिने। जिसमें किरमपुक्त मुद्रि, कुरूर अध्यय, देश, मीला, क्या, पन्तिता, प्रेम और शिक्ता हो, उनके इन गुजीकी परीक्षा करके नहे से एकक्की कर्मकारको रिमालके और एक विकास दिन्ह हो हो उन्हें करते बनान काहिने । ऐसे पाँच प्रशिवाँकी आवश्यकता होती है । वे स्थ-के-सम कोरनेने कुक्त, पुर और प्रमेख कारको ठीवा-ठीवा समझनेचे निरूप होने काहिने। जो पूर्व और क्षांचि है, उसको रिग्बे कान क्रमाने से हेनेसे ही आके निकेर परिणयका जान नहीं होता । विसा सचीका रामके जी। अनुराम न हो, काचा विकास करण तीवा नहीं; कार्याको काके समझ पुर विवारोको नहीं उच्छ धरना व्यक्ति । बह मनदी राजी गी। युह निवादेको जान से हो जन्म परिवासेको मिलाबर राजावा इस अवार नाम बार देश है, सेने आर Post भी हुए हेन्द्रेने कुरुकर सन्तर्भ कुलको पान कर क्रान्तर्भ है। विस्तान सरस्य सस्त नहीं है, वह अनुस्क हो, हृदिहरू है जना अन्य सारे पुरानेने एक है तो भी पार सरका हरनेका अधिकारी स्वी है।

निसम्बद्ध प्रसुक्तिके साथ सम्बन्ध है स्था जनके सनुक्तिके जी निस्तानी सम्बन्ध-मृद्धि र है, समझे सुद्ध और सम्बन्ध पातिने; जह तरे स्तृ ही है, उसे तुस समझ सुन्नेका अधिकार नहीं है। पूर्व, जनकीय, जह, सुन्नोक्क, कर्त सम्बन्धितान, क्षोची और कोशी प्रमुख भी सुद्ध है है। समझ पुर क्या नहीं जनके करना पातिने। कोई सम्बन्धका प्रत्य, बहुत क्या निहान् और तेनी ही क्यों य हो, की नक समझ हुआ है, तो यह भी गुन क्याच्या सुन्नेका अधिकारों नहीं है। किसका निता अपने सम्बन्धकों हुए पहले अध्यानपूर्वक नियाने मिकस्स गया हो और इसका यह पुत्र सम्बन्धकों क्या नहीं करान निद्युक्त कर रिन्या गया हो, उसे भी गुन समझ नहीं करानी माहिने।

निसमी हुदि सुद्ध और वारणायकि प्रमार हो, वो स्वदेशमें ही अन्य, सुद्ध आवरणवाल और विद्युत् हे जव स्व उपके कर्मोर्स परिवा करनेवर ईगानदार सर्वक हुआ है, वह गुप्त सरमा सुननेका अधिकारी है। वो प्रान-विद्यानमें सन्या, अपने यह तथा क्ष्मुस्कृत सोगोकी प्रकृतिको सरकानेवाल तथा स्वक्या अपना अधिक सुद्ध है, व्या की सुप्त सरमा सुन समता है। वो सम्बद्धी, वीरणान, कार्यन, समावान् और कोमार साधानकार है तथा पुरस-वर-पुरसरें समावान् और कोमार साधानकार है तथा पुरस-वर-पुरसरें समावा सेनामें कार्य आवा हो, वह भी कार्या सुननेका

मन्त्रिकारी है। संदोनी, सायुक्तवेद्वाद सम्बद्धीत, सत्त्रकारी, बहुर, करते कृष करनेकात, स्टब्टीन क्याराको प्रमानेकात, राज्यको प्राथम रक्षनेकात, और प्रसीर बहुक की इसका कुर्मकोच्या पाना क्या है। जो उसा किरमारकार क्या वारण किने सुनेकी इस्ता रक्ता हो, जो करने द्वा सरक का आवर्षको बतानी कविने, को सर्व नन्त्वो सन्दर-मुस्तान अपने पहार्थे वह हेनेकी हरिः रक्ता है। कार और देसके होन विस्तव बर्नेट: विद्वार कर्ष हो, भी मेरिका विकृत् हो, यह पुत्र कराया सुरनेका अधिकारते हैं। इस्तरियों को अवर्षक सन्ते मुलोसे सम्बन्ध और लेकोची अवशिको परकांकाले हो, देखे पूर्वाको ही सम्बन्ध्येक स्थानेक व्यक्त निवृक्त करण व्यक्ति। सभी कम-से-कम सैन होने भारिते । वर्षणकोको माहिते कि रखा, अन्तर, रेजन्यम् अस्ति अपूर्णियोचे तथा प्रदुशीके औ विक्रोपर निरम्भ रहें। क्लोबिट स्थाबेट स्थाबकी बहु है वरिक्रमेची केंद्र सरम्ब । असेने आसारपर राज्यका आसारप होता है। की स्थापन अपने प्रथ अपनेको समेरे पाता है, असे तक राज्यमें की अपने गुह विवासिको विश्वमे रकता करिये । को बन्धी राजके पुरा करूबी कियाने रहते हैं, वे क्षतिकार है। क्यों से कामत काम है, क्षेत्र आहे से strant i

राज्युत राज्यपी ज्या है और गुह क्यापा अलाह कर है। और क्ली कर, सोच, यह और ईस्ट्री सामग्रह सुनाया सन्तरण करते हैं, तो वे सुन्ती होते हैं। जो पाँच प्रकारके क्रमने पीन हो, ऐसे मणियोंके साथ गुप्त परायही करण कारिये। एका व्याने डीजों मंत्रिकोची कृषण्-कृषण् सरस्य जनका उत्पर निकार करे, किर अपना को निकार को उत्पन्ने और कुरगेके विकासको कर्ग, अर्थ तथा करमके तरकाते प्रभावेकले प्रोक्ति प्रमानमे निवेदर करके आकी राज को। का समय बद को कुछ निर्मन है, जावर की सब स्वेग क्याना से जाने से का विश्वासको कार्यक्रमाने परिचल करे । ननक निकार करते हैं—स्तर इसी तत्त्व क्याना करे और के नियम प्रकार करने अनुस्त करनेने अधिक प्रकार कर महे, उसे कारणे है । वहाँ पुत्र विकार किया जाता है . वहाँ या असके असर-पाल चीने, कुम्मो, कुमरे, सैगाहे, अंथे, यहाँ, ची और दिवहें न असे क्वें। पहलके क्यों पेक्लिए क्लार सकता सूर्व हर्ष कुछ हर वैद्यानी, बहु कु<del>त कमा का का वह हा</del> न हो, ऐसी का**ड बैटक**र रुपक सम्बद्धे का शामत्रं करना व्यक्ति ।

#### राजाकी व्यावहारिक नीति और उसके निवासवोच्य नगरका वर्णन

कृषिहरने पूज-पितास्य । एका विका कहा क्यास्य । पारान को, जिससे का अर्थानुसार खेलेका केन और कहान कीर्ति कहा कर सके ?

भीकार्यने श्राम्यको राजा जारण जान सुद्ध राजका विकास करकाराते प्रकार पारकार्य राज्य साह है, वह शर्म और वर्धिने प्राप्त करना है तथा उसके लोक-करलेक केवें सुधर जाते हैं।

पुणितिने पूजा—स्थानका । या वो कान्त्रों, राजाके जन्दार केने हों और का बिज लोगोंको सका नेपार व्यवसार को 7 वेश तो ऐसा विश्वास है कि आतमे जाते बिज गुणोंका वर्गन किया है, वे किसी की एक पुण्यते नहीं मिल सकते।

क्षेत्रकी का-केर ! तुमार काम क्षेत्र है। कारको ज्ञा सभी स्वपूर्णमें कुछ बोई कुछ कुछ विस्ता कार्डिन है। इसलियो एका विद्या तरह और बैंडने खेलीका मनियमका बनाने, इस बामध्ये में अंग्रेजरे स्थला है। जो बेबनियाने निवृत्, सतान, बतुर-बीतरते कुछ वर्ष निवीक हो हेरे बार अकृत्य, क्रांटिंग बरलान् अस क्रम्मीकृत्ये पालोबारे अस स्थाप, यो स्थारे समय स्थाप वेहर. विनयसील तथा परित्र अगवार-विकासको सँग 📆 अहः मुनोहे युक्त और पुरान-निकाको साम्मेकान एक कृत मेरिया मुख-म स्व सेपीय एक विकास बनावे । इस मध्यान्ये प्रापेश सदस्त्रात्री आधु वकाल करीड सरामग होनी धारीके; भारा प्रकार निर्माण, विस्तिकी निर्मा म कानेवासा, अधिकारके अनुसार श्रीत-ल्लीकोका विक्रम, विनायतील, सम्बद्धी, बाग्रे-प्रतिवादीके सम्बन्धिक विकास करनेमें समर्थ, स्थेमरहित तथा सत्त क्रिकारके कुर्वकरोड़े दूर स्वनेवारच होना व्यक्ति । इनमेरी आठ हथान व्यक्तिका चुनाव करके एक उनके साथ भूत समझ-भन्नविध विका करे। इन समझी राज्यों को बात निश्चित हो, कान्हों देखते प्रमासित को और प्रत्येक रहावासीको उसका अन्य कत है।

र्जुज्योत ! इसी सम्बद्धानो तुन्हें सद्य प्रजावर्गकी केल-नेक रकनी कार्किने । जो राजा प्रजानेक साथ अन्याय**्न** कर्मन करना है, करेंद्र: असका करना नहीं करता, असके क्रमणे का का रहत है तथा आका परलेक भी विश्व क्का है। एकका करते है के राजकुरण जान ही जिसकी बाद है, जर न्यायासन्तर वैतकर की का कर्नवृत्तीस प्रकारी रक भी करन एक एकके इसरे अधिकरी भी अगर जनकर्गके साथ अनुविक वर्णक बारते हैं तो राजाके साथ ही रूपे भी नकारों निरमा पहला है। जब बरम्बानोंके अस्ताकारहे चैक्कि के<del>न इ.ची और कुल्द पहुन्न आर्त कुदार महाते हुए</del> प्रत्यमें आहे, का प्रथम एकाने हैं का जनवीना मुख (२६७६) होना पाहिले । पारिक्रोको उनके जपराचके जनसार इन्द्र देख कड़िये। अलेके जो कर्न हो, इन्द्रां हो सम्पर्ताती व्यक्तित कर देख परदिषे; और को गरीब हो, उन्हें केलकानेयें केंद्र करक करीने और में बहुत हुए हो, उन्हें पीटकर राहकर रक्ता करिये ।

को राज्यका जुल करनेकी कोशिक की, वाले आध लगाने, जोचे करे अभवा वर्णतंका संदान वैद्य करे—देशे क्यूकाओं अनेकों अध्यक्ता करोर इन्द्र केन काहिये। बहि राज राम-केको स्क्रैत एवं सम्बन्धानमे पूज है और सन्तरको अनुस्य इतित रीतिने प्रयानो हवा हेता है, से हरती क्रमको कर नहीं (जनत: वर्गिक करने अप) लक्क-क्वेदर करून होता है। बांतु जो पूर्व प्रमान हुन् केल है, का इस सोकार्य से काश्मीकत क्षेत्रा के हैं: परनेकेंट बाब को रूकाने भी जाना पहला है। इसरोंके क्रिकावन करने-माले है किसीको कुछ व है, सरराकका प्रतीमित निश्चय करके में रूप दे सकत दियां करे। एक किसी की अवसीयों क्यों न हो, कुम्हा कर न करें। कुम्ही हरू करनेकाल राजा जपने व्यक्तियोक साथ नरवार्थे पहला है। कुले सात पुर्व होने काहिले—क अब्बे कुरूमें ज्यात हो. अस्य कृत्य यह है, अमें खेलनेकी प्रक्ति हे, क कर्मकृत्यन, क्रिय कोलनेकाच, सरकार्त तथा सरग-

<sup>्</sup> सेना करनेको संध् नैकर प्रान्त, बढ़ी कुँ कर व्यापने पुत्रक, उसे ठीक-डीक सम्बान, कर रखना, किस करकेब कैस पहिचान होगा--इसपर उर्थ करना, बंदै अपूर्क ककरते कर्ष मिद्ध र दूरन उस कर करना व्यक्ति ?--इस उस्स किस्ते करना किस्त और करनारकी जनकारी रखना और समस्य कंच कंच---ये आठ पुत्र चैशकिक भूतों और व्यक्ति ।

२ फिक्स, वृज्य, परबी-अर्थन और मंदरका—ने का कामजीत देश और मान्य, जानी करना तथा दूसीकी क्षेत्र कराव का देश—ने की ओवर्जना देव मिनका साथ दुर्णमार को नवे हैं।

मितिरश्वास्त्रे वी ये ही जुल होने व्यक्ति। स्वक्ती
संधि-विकासन जनसर जननेताल, वर्गजासका स्वयद,
मृद्धिसन, वीर, सन्तालर, कारकार जुल रक्तनेवालर,
मृद्धिसन, वीर, सन्तालर, कारकार जुल रक्तनेवालर,
मृद्धिसन, वीर, सन्तालर, कारकार हो से उपन है।
सेनायसिये भी ऐसे ही गुल होने व्यक्ति। इसके विका, वह
स्थेतियेहै, क्या व्यवस्त्र और राज्य स्वयस्त्रे हुतरे ज्वालेका
स्रोति सीर वर्षाके व्यक्ति वर्षे एकास्त्रे हे, सर्वी, वर्षी,
स्राणी सीर वर्षाके व्यक्ति वर्षे एकास्त्रे हे स्वालेका
स्थानि सीर वर्षाके व्यक्ति वर्षे हर्षे स्वालेका
स्थानि सीर वर्षोक व्यक्ति वर्षे वर्षे स्वालक स्वालेका
स्थानिक वर्षे स्थानिक स्वालक हो। राज्य मुत्राचेका ज्वाले कार्य
कारके रिक्ते सार्वे पूर्ण वर्षे कार्य कार्य स्वालक स

कृषिरित्रे कृत—रिकाला । याता वार्थ केने कारणे निकास करे, कारोने काने क्षूडं कारणानीने का तथा उत्तर कारणान हो ?

भीनको सह—वर्ष सम प्रकारको सन्तरे प्रकृ मामाने परी क्षा है, ऐसे का प्रधारक हुगी (विवास)का शासन रोवार गये गगर बसमें चारीने । पहला है बन्धार्थ । बिरानी क्षारी और दरसक निर्मात प्रदेश (रेनिराहर) थे. का वियोग्यो बन्धपूर्ण सहते हैं। इतक चहिन्।(सम्बद्धाः स्थानके ster um part finen in comme) ft, allere fielbert (पहाइकी कोटीयर करा दूजा किएक), क्रीका सर्व्याली (पाँची वित्रम्), प्रीवर्धा पुरिवासूर्व (रेलोर क्रेने क्रिकेस बेरा) और इस पन्तृत (बारमीओ आहिके को जेनसका कैश) है। जिस कालें इनमेरे कोई-व-कोई हुई हो, जह का और अध-एकोची अधिकार थे, जिसके पार्ट ओर मनवत दीवार (प्रकारदेवारी) और पारी क्या वीडी कार्य करी हो, कहाँ हाती, कोई और रखेकी कार्य न हो, मिक्रम और कारीगर करे हो, साम्बन्ध कराओंसे को बाई पंचार हो, वार्तिक तथा कार्यक्षा बरुखेका निकार हो, भौरते और नामार जिल्ली क्रोध कहा के ही, के क्यानारके रित्ये प्रसिद्ध स्थान हो, नहीं पूर्ण काणि हो, कारिये पर आनेकी सम्बादन न हे, विसर्वे को-को शुर्मीर और बन्नक रहते हो, बेद-म्प्केंकी व्यक्ति पैक्की कती है तथा वर्ज रख है सम्पर्केक असक और बैक्यूननका सार करना राता हो—केसे उनस्के चौका अपने बत्तमें क्रोबले मध्यमें तथा सेनके तथा तसकी क्रम निकस करन स्वक्रिये ।

श्रमका कर्तन है कि या जा नगरे प्राप्तने, रोग क्या व्यापारको वक्सके, निजीकी संस्था की अधिक करे। कार एक प्रापके सब प्रकारके क्षेत्रको हर को । अपनेकर क्या अध-स्थादे बंगल्ये बार्ल्ड बंगता हो। सब अक्टांकी क्याओंक संस्थानमांको भी क्याने, महीन हक्त क्य-क्योंके कारकार्गीकी साति वरे। बाठ, स्वेह, मानको पूरते, कोमाल, बांस, हेल-पी, प्रक्रा, औपन, सन, करावत, काम, अस-ग्रम, काम, काम, वेंग प्रधा पूर्व और सामाना रही आहे सामाना का रहे। चीतरी, कुली, अधिक क्षणेयाने बतायाचे तथा इसकते कृतिकी प्रकृतका करें। आवार्य, महीनव, पुरेष्ठित, महान् बहुर्वर, क्यां (कार्यका), क्येतिक और वैशोद्धा म्ह्यूर्वद्ध क्रमान को । विकास, बहिराना, विनेत्रिया, वार्यक्रमास, हर, बहुत तथा सहारी महत्योंको है तथ कारोने समार्थ । word west afficient near the sky करियोको एन्द्र हेच काहिये। सभी काहियो अपने-अपने क्रमंत्रि रूपान व्यक्ति । वासुरतिके प्रशा नगर और देखके कार्य क्या कीर्य सम्बद्धारोधी असी तरह पानवर दिए इतके अनुसार काम काम कहिने । कासुरोसे हैस्टने, मुद्र परान्त्रं करने, सामनेत्री यांच-बद्धारा परने तथा निर्फेन्छः अन्तर्वाकोको एक देवेट कर्म कार्यके असे हार्य रक्षण करिने; क्लेकि इसीन राजका सरिवन कार्यन है। पुरुवासकी नेजोंके क्रांट साथ क्रम बाह्यार की रही कि मेरे प्रयु, जिस अवका स्थाप माहित मार का अपनी कहा क्या काम कहा है। अन्त्री चेतुनी कर लेनेके पहार राज्यानीके राज्य क्रमान सरिवार करे । बालेका क्राइर करे और है। रक्तनेवालांको फैक्टी प्राप्त है।

विश्व वाच प्रधानके यह करें, विश्वीको वाच व पहुँकारें हुए कर है। प्रधानकोची रहा को उत्तर कोई थी काम ऐसा न होने है, विश्वार कार्य काम आती हो। दीन, अन्वय, वृद्ध क्या विश्वपाली व्यक्तियाला प्रवान करें, उनके केन-केन्स्य सामान रहे। जाने राजारों को सामान हों, उन्हें जाने करोगा सामान हों, कार्य राजारों को सामान हों, उन्हें जाने करोगा कार्य को और अन्ते सामाने प्रदा विनीयपालों को। विश्वने अपने सामान सामान हों। विश्वने अपने सामान सामान हों। विश्वने कार्य सामान सामान को है, ऐसे कुर्तिन क्या बहुत क्यानीया को सामा, आहम और केमा देखा सामान प्रदाित करार कार्य कार्योग विश्वने भी आपालिया सामान कर्यों के हो, राजायों कार्यांगर विश्वस विश्वन प्रदा्व क्याने हों। व्यव-हो-कार्य क्यानि क्यान क्

कारोरो एक अपने कनाने, एक प्रमुखे कनाने, एक । क्रमान करण स्वर्डिने;क्योंकि किसी अवस्थित समय कर संभागे और एक अने सार्वादे करते हिन्दात होत भारिने । का समानो काहर और सम्बन्धे काल आवश्यक हों। है : व्यक्तिर ! एको प्रक्रिके अकार समानो सेवे महार्थ के करी पादिने। अपने कर्मके अमीनमोधी जारने निवास करने व्यक्ति, जाना १००० की संबोधने से पति प्रत्ये राज्ये क्रोसले क्योन्सेका को पता है।

क्या क्रमकार्थ होकर सामा है से वे जो इक्सपुरसर 2000

#### -राष्ट्रकी रक्षा तथा वृद्धिके ज्याय और प्रजासे कर लेनेका इंग

🕻 कि राष्ट्रको एक और मुद्धि किस क्रमार करने साहिते ? गंगको का-शिक्षा एक गाँका, का मंत्रिका, बीच गाँवीका, को गाँवीका तक कुछर गाँवीका एक-एक अभिन्नी जनन नाहिते। जीवके सामीका क कर्मन के कि यह गोवकारोंके कार्यकेक क्या का गाँकों मो अगराय होते हो, उन सम्बद्धा पना सम्बद्धे और उनकी पूरी रियोर्ट का गाँगोंके कारिएको राज केने । प्राप्त कन्न का मोजेनात होता गोनवारेके पता, बीच प्रोकेतात हो गीववारेके पात एक में गोबेक्स प्रका मोकारे श्रीवकारोके पास अपने पविषेक्ष रिफोर्ट केका को । (But पुरार गोरोका महीना को स्थाने को कहर असे कह आभी क्षां रिपोर्ट पेल करे () गरिनेचे को उसल हो, पह परिवर्तर पारिन्दरिक्त के अधिकारण क्रमी कार्यके । के लोज बैतानों इसमें इसमेरी विकार अंक्रात प्राचीन कर साहते है। अपनी आवारीये वे पत चीन्छ अनिवरिन्तेको हर क्षेत्र करें। यह गाँवके अधिकारियोको क्षेत्र गाँवके व्यक्तिकोचे किये कर केव कार्यने । वे स्टेन असेले अवस भारत-योक्त करें। जो जी गाँगोवड व्यक्तिक हो, इसके मान्दि रिप्ते एक जीवको अध्यक्ती हेवी व्यक्तिः यह गाँव महा सहै वसोवास और कृत्या हेना करेंगे क्या आहर क्रिक्ट कई गरिकाकी सुर्वाचित्रे क्रम प्रक्रिके। (ब्रोट रिर्ण उत्तेषे अधीर कर दिन कर से लेकाब असे हरा प्रमाणे सार्थ संस्था का है।) इसी तक एक हमार गरिनेके मारिकाके क्रिके एक क्रात्वेकी अवस्था केर्क वारिये। इन मारिकारेंद्र विक्ये पुरस्कान्यों क्या जीकेंद्र अन्यसमानी से कर्ज सीने को हो, उसके दिनस-केंद्र रिने एक पनी (गर्मार) निवृद्ध करना कड़िये, को वर्गको जननेकला और अनलक्ष्मीत हो। अनक प्रकेट महेन्स्रो नगर (मिले) ने एक-एक कवाड (कामार) रिकृत शरना पादिने, जो महर्षि सभी कामोब्री देश-भार करे और उनके दिने कोई अवही स्थापक रहेके। यह

पुर्वित्ते (क-मानोह । अन् ने वह करन कहा । अनी-अनी क्यूनोह हारी क्रम्याओं को सा-साहर क्लंद्र क्लोंको कोव-स्थान करत हो। आहेक रगतन्त्रक्षके यस गुरुषर क्षेत्र व्यक्ति । यो प्रवासे साथ giband managibit unfabalt gron ferr utt. कृषिक क्षेत्रके को सोन प्रकार कुरमंत्रको, पानी, क्षानीके का प्रकारिकारे और कहा जाति हो, हैने अभिनातिकोते का अन्यको एक को।

> कमाओ बारामार्थ कार्राय-निवारी, राजीवार्ध हरी, करते वैक्रोच्या पार्च-पार्च और जान्यी शास्त्र एक प्रमास विभाग सम्बेद की साम्बर्धियोगर किया सम्बन्ध पातिये। प्रती रख पराच्ये देवारे, जाको क्रमा तथा कारेगरेको कारक-साथ आहे वेरिक्वेका किया रक्तो हुए दिला वृत्ते विश्वकारीयर कर समाना व्यक्ति । इतना अधिक वैद्या प rend fie bemeint fein me it. wen une fer कुलका देखवार ही तक कुछ करें। अधिक रहेक्के कारण कर्ण काराया कार क्या अवश्रीके वीवनका केनी-करी आहियो केंग्स न बार कुने । तुन्त्रको रोककर प्रमाण केन कह करे; क्योंकि अधिक क्सनेवाले सुनावे राजी जान है। करने राजाते हैं। देखें स्थाने जाता साम्बन्ध की हो सम्बद्ध है ? विकास प्रधाननिक हेन कुट पाता है, को कोई कारण वहीं पहिला। बुद्धियार राजको साहिते कि व्य व्यक्ति नय यहते ताम काने। वैसे पाएक अभिक काराज्य पूर्व इस बीचन कारावन् होनेके यह ही पाने पान कारंगे समर्थ होता है और पीओ अधिक का लेको एव न निरम्भेके कारण जब यह कमारेर हो जाता है, में कर नहीं है कहा, इसी अबल राजका की अधिक केंद्रन करनेने करवी जना वरित हो बाती है, फिर काले कोई कहा काम नहीं हो सकता। सो कहा अपने सहपर अनुस्य कार्क जानी पुर कारत है और अस्त्री जीवर सामानिते अन्त्री चीनिका पाला है, उसे महत साथ होता है। (अपने पार्ट रेकर हुए काराबों बेकनेके रिश्वे कार् वेजनेते में उपन होती है, उसे निर्मात कहते हैं।) सम्बन्धे

विक्रिके राज्य काम आनेके रिपरे आपने देशमें निर्माणक है कहतर विकास काम दूसरा नहीं है। का बदाना चाहिये और अपने राह्मको करने रसा हुन्य क्षणान सम्बद्धन परिते ।

का कोई संबद्ध अने और उस करन करती आध्यकता है से देशकी प्रकारों राष्ट्रकर आनेको काका प्रम कराना वाकिने। जाने काना व्यक्ति—'सामने ! अपने देशका महार नहीं आर्चीय आ गाँची है, व्यक्तीके आक्रमणका पाठै सवत है, की कुका बहुत में सुरेशेको प्रथम होगार हुए देखाओं प्रधानी प्रभाव प्रधाने हैं। इस पीर जानकि और सूचन गर्ना समय में सामानेनोसी प्रात्ते तिये का बहुता है। का संबद का करना, का सन्व आपना तारा का नायन चर हैन। भी चन्नु आ को छे आपना तारा का करनाची तुर से करेंने और किर चनत मही हैंने । इसके विच्या प्रच्ये आनेने आपके प्रचन-प्रयोगी विवार भी कारेने पर कवारी है। वाल-क्योबी है साले रियो प्रस्ता संस्थु किया जाता है। यह यह अवस्थी स्कृतका प्राप्त हो से में इन सकते पह बन्दे अन्तरे मानीका कर्मन्त्र। जन्मी क्रकियर राज्यो और आपलोगीको पदा न होने देना। जैसे कान्यान केर समय Market with abor Mater E. such State per Realists street आक्रोनीको भी कुछ भार स्थान ही प्रार्थने हैं

सम्बद्धी गति-विकियो वाल्लेक्को राज्ययो हती ज्यात मयुर वाणीसे समझा-ब्राह्मकर प्रमाने वर रेग्स पाक्षेत्रे । 'मलबी रक्षके तिले बहुत्राचिक्य कारानी है, लेकबीबा परस-योगन करण है, पहले मचले समान है उस समझे बीय-बेनकी विराह करते हैं। इन सब क्रांत्रेकी सरकारकार विकासन व्यापारिकोण कर स्थान प्राप्तिके। को राजा मार्गाचीके प्रतिनात्वारी ओसी स्वत्वार केवर औ सतान है, से राज्यको क्रोक्सर करने करते हैं, संजानेने क्रो क्ष्मते हैं, प्रतिने उनके साथ कडोन्सका जी, कोन्सकाका बर्ताच करन पार्तिने। जायर क्रमेन्समेनो सारकत है, कार्यो रहा बरे, को कार्या सहस्रक है, कार्या विश्वतिको कारण परनेता प्रका को तथा को अध्यक्त करती है। स्का उनका किर कार्य को । कार्यान्त्रोको उनके बरियनका पक राज की राज पार्टिन: क्योंकि ने वी पार्टि कावित्रक सम्बद्धान तथा होती-क्षारीकी काकि करते हैं। कहः श्रीदेगाम् एका स्था रुपम हेग रहे । स्वक्कानी रक्षकर उनके साथ क्यालताचा चर्ताच चरे। उनका प्रत्या देवस समावे और ऐसा प्रमान करे, जिससे ने कुक्तानुर्वक देखने एक सन्द निवरण कर राजे। जुनिहर । राजके रीले इससे

कृष्णितरे पुरत-काराणे ! एवा किसी प्रकटमें म हेर्नेकर की कोई करवाज सकता पत्नों हो जो जिस हराया अप कामें सार प्रति ?

चेकचेने बह्न-कांची हुन्त रहानेवाले राजाची देश और कारवादी परिवेचनिका कान रकते हुए अपनी कृदि और कानो अनुसार प्रकारे ईक्सकारणे संस्था सुना और सह क्रमा चलर करते क्रम क्रांति। विसर्वे प्रमार्थ और अपने भी भारतों कर को, उसी कार्यका का सारे कार्ये क्ष्मार करें । केंद्रे और बॉरि-बॉर्न क्षान्त्र्य रहा रेखा है, कार्येद्र कारणे कारण जॉ. की परण सक्तेको पद र देकर की-बीर पालक कुछ कुछ है, सबके बरोको कुमत भी क्रमात क्रक केने जोचा वीर-वीरे ही प्रतिपत्त एक प्राती है, ज्ञाी प्रकार राज्य की कोचनराओं प्रत्य ही राष्ट्रने कर करून बारे : केरो काविन अपने मचेको दौराई प्रकारत हमा-उपर के बार्क है, पांचु को बीक वहीं पहेलों हेती, इसी राय क्षेत्रक प्रचारिक के राज्य अपने स्तुष्ट केंद्रन करे-की-की का जीक को। जीक करवार चेना करके हैं के क्या के क्या न्यान के किरोग कर पहल करना milit, mittelt auf aufter melle fieb mit promper pholosis, dont, pyfest, drawith क्रमण, प्रशासी प्रथम देने ही वरे केंद्रे कार्यकार और भी विकार स्थेप हो, में राज्ये रहाको स्वकारको केर्यायाने होते हैं, ा राजनो एक देवन कार्य स्थाप पारिने; अन्यक्ष सामने कुमा के पारे को केवेको राज्य करते रहते हैं। पदार्थने ज्यानेकोने प्रकार प्राणिकोचे रिको एक निवल क्या दिया है जि अवस्थितारको क्षेत्रकर कावी प्रथमने बोर्ड विकासि क्रक भी न मंत्रि । भी, देखी सम्बद्धा न होती, हो संग खोग भीता मीनका है निर्मात करते, कोई भी कुछनों का न समाहरू---केरी दक्षणे राज्य संसार नह से बाता। एका ही सकते निकारे भीता रहानेते सामाँ होता है। यो राजा प्रकारो नर्वको नेवर की रसल को प्रकार के प्रकार के स कार कर कोनना काल है। यह सामग्रे मर्गाहके जीवर रहे वे व्ह उचके पहला पुरस्का वर्गी हेता है। इस्तीने कारते औरत है कि का तथ परियोध्ये करा देवर औं प्रश निवक्ताने रखे।

द्वार मार्ग्न क्यू महिकान एक नेहकान आहे. मानोका रोक समा देवी पाहिले; वर्गीकि इनके कारण मनुष्यों असरिक कार्त है। आसीओ कार्यपूर हमा पहुच मांस कारा, महित मील और परवर क्या परश्रीका अध्यक्त

करता है। सर्व तो करता हो है, दूसरोको भी भई संस करनेका उपरेख तेल हैं। मिन संबोधि पास कुछ संख्या जी है, में नहीं विपिन्ति समय ही पायना करें तो उन्हें वर्व समझकर और एक करके ही देश काहिने, किसी गय था इवायने पायन नहीं। तुम्हरे राज्यों विश्वाने और सुदेरे व हो; क्योंकि में सिर्फ प्रसाद करका अन्यान्य करते हैं, उसकी कादि नहीं करते। यो पीनोंगर अनुवाद करते और प्रसाद व्यक्ति नहीं करते। यो पीनोंगर अनुवाद करते और प्रसाद व्यक्ति माहिने। यो पीनोंगर अनुवाद करते और प्रसाद व्यक्ति पार्टिने के पार्टिने। यो अन्यान्य प्रमादिन स्वाद समान सद्दार करते हों, उन्हें क्या केन पार्टिन स्वाद करता कर की है प्रसादी पांच्या नित्त प्रसाद विद्याद विद्याद व्यक्ति

रोठी, जोरका, जानिया कथा हुए संस्कृते समा जनसम्बद्धे अनिक आदिनांच्ये स्वयन वाहिये। उक्क जनसम्बद्धानं सोनांच्ये का संस्कृते स्वा जानियांच्ये जान नेवर क्याने और उत्तव व्यक्तिय स्वयन कर्ना कहें 'अवक्षेत्र में स्वाच्या क्षेत्रर स्वापर क्यान्त्री रहें।' जनैत्येत्र में स्वाच्या क्षेत्रर स्वापर क्यान्त्री रहें।' जनैत्येत्र स्वाच्ये क्या स्वयन अन् ज्या स्वयूनी स्वतियोक्ते स्वयति क्यान्त्री एका कृतियान् स्वयून क्षेत्रसम्बद्धी रहत करते है। कृत्योत्ये कृतियोहः। हुन क्या सानियोक्ते केर पहले और स्वय, सरस्या, क्या वया क्या आदि सन्वयतिक सहस्य स्वते । ऐस्य सानोते हुन्दे स्वयून्यस्थानी कृत्यत, स्वयाना, विश्व क्या स्वयन्त्री की सानि होते।

# राजाके नीतिपूर्ण बर्ताव और उसके द्वारा धर्मपालनकी आवश्यकता

कार करते हैं, जनके हुन्हरें करूने कोई आक्रो र माने-प्रतास धारा १६०० । मूल और पार वर्षा: प्रमुखांड धन जाने को है, इसीनों भी इनको सदस्य होना जो है। महि प्राप्तान अपने रिन्ने चीरिनात्का प्रमुख न होनेसे कृति है मान और सर राज्यको कोशका शतक को जने के समाव कर्तन्त है कि परिवासनीत कर अध्यानके विन्ते क्रीकिकाकी अन्य गरे । हेरत करवेले का निकारोह और सरक्या; गरी प्रस्थ करनेवर भी का कहा कोले नहीं को प्रार्थन करनी करीने---'पनवर् । मेरे पूर्व अन्याक्यर होहे व क्रानिने, को पाल वैतिये ।' इस तथा विकारकोड करको काट करवा काळक समाजन वर्ग है । योगी, यह-व्याप्त और व्यक्तियः— ये हो हर सोकको है आयोजिका है जिल् होनों के उत्पर्धेद ओकोने की राज बातो है। यो लोग जा बेडिबाओं जन्मनारों या पा-मानानि वैभिक्त कार्नेनि रोडे अठकते हैं, ये इर्कत हैं; इसका कर करनेके रीतरे ही इक्कार्टन इंडिजोको सरका विका है। मुविदित । तुम प्रमुजीको जीतो, प्रमानी दशा करे, साथ प्रकारके यह करते को और संक्रमने जीवलपर्वक रहते. कर्या पीठ न दिलाओ ।

राजाको सम्पूर्ण कोवानेकी सरवादिक कोरवाने साथ है। मुज़के रिज्ये सैवार काम कार्याचे और स्ट्रुट्टेक्ट शरी-विक्रिया पता समानेके सिच्ये श्रम और पुरावर सैनाव कर हैने साधिये। को स्थेप अपने अकार्यु का स्थानीय हैं, उससे कार्यों स्टेन्सेक्ट एक करो और साधि स्थेपोने अन्यस्य कांग्रिकोक्ट साधाने।

निवासी नामें हैं—मुनिहिर ! निवासकों कार कार्य । जाते हैं, जातो हुम्हरे कार्य कोई आठ न —हरका बान श्रम्म । मून और कार कर्य: म्यूनिहें नामें मते हैं, हरतीयों भी जातों श्रम्म क्रिय और नामिह हैं। वाहर अपने दिने मीनिवासका जान्य म होनेले हुमाँद हैं। बीर कर राज्यको होत्रका अन्या कर्य क्रिये के कार्यका म है कि परिवारतीय कर साहानके दिने के कार्यका । यह । ऐसा करके का निवासेंद्र और साम्या; मी हुमाय कर । ऐसा करके का निवासेंद्र और साम्या; मी हुमाय कर । मेरे पूर्व अन्याकार हुन्दे व जाति । कार्य कार्य कार्य क्रिये क्रिया कर्य क्रिये क्रिया कर्य क्रिये क्रिया क्रिये क्रिये क्रिया क्रिये क्रिया क्रिये क्रिये क्रिये क्रिये क्रिया क्रिये क्रिये क्रिया क्रिये क्रिये क्रिये क्रिये क्रिये क्रिये क्रिये क्रियो क्रिये क्रिये क्रिये क्रिये क्रियो क्रिये क्रिय क्रिये क्रि

> यान कृषितीत ! यो वर्षा, वैशेषात् और संवायसे वाधी वेद व विश्ववेषाते कृतवीर हैं, यो राज्यमें रहवार सीविषा वायते हैं, सामय क्योद आतित रहवार कीरे हैं तथा यो अवाय और अवाय क्योद स्थान कार्यिक व्योप किरोधा करें वा निष्म, तुनों सम्बद्ध सम्बद्ध है वाराय कार्यिक क्योद किरोधा वोदों की व्याप सर्वाय सम्बद्ध सम्बद्ध है समी—देख इस्ताय वीदों है। उपने आधिकोंद्र स्था, निय और प्रधास होते हैं। व्याप ! यान करियोचारे कार्यारी सुन्तारे सम्बद्ध होते हैं। व्याप ! यान करियोचारे कार्यारी सुन्तारे सम्बद्ध अधिक विस्ताय कार्य स्थान सिंग्ले कार्योचा को स्थान कार्य व्याप स्थान राज्य स्थान है है है स्थान केर्योचा की व्यापन नोक्य करते हैं। इसकि विशे हुए आपरे वेद्यां, विदार, सन्त्यां, सर्व, स्थार और यह-व्यक्ति—स्थानी जैनिया करती है।

मा भैरे राष्ट्रिय साथ किने कर्तवारे राखके वर्धकार मर्थन किया, इसीसे राखओको रक्षा हेर्स है। इसी विश्वकारे केवार सामेची बार की करा का है। इसमेचा 2000 प्राधिन प्रस्ता होकर कुकाकोड कुर क्याराजारे के उन्हेंस दिखा था, मह सम हार्डे सुना का है, सुने---

कानने वक अन्याद ! एका क्लेकी रहा और रिवारके रिक्ते होता है, विका-सुन्तीका अवनेन करनेके दिन्ते माँ। हुएँ पर सामा शरीने कि एक समूर्व मन्त्रक पाल है। भी यह वर्गायरम बहुता है से देखा होता है और बर्वका स्थल करता है से परवाने पहला है। बर्नक है जनर क्रान्तर्ग पुरतिको विवर्तत है और वर्ग राजाने अक्रान्त्रके सुरत है। क्या बनामा हो जीवन्यत द्वार वर्गमा साहाद साहा महत्त्वत है, परि पर गर्नक काल की कका से देखा शनके निष्य पाने हैं और यह पानकी पूर्वि काहत पान है। यो राज्ये वर्गने प्रयुव रहते हैं, प्राप्त ही अर्थाहरूरी हिर्दीह बेकी बाती है, साथ संस्था कर कहरराज्य कर्मका है अनुसरम कता है। यह राज करने की देखा है से देखों करिए कर्तानक अनेन है जात है और एक और पहल अपने पेस मता है। निवले प्रमानो हिल्ला पर क्या स्वार है। 'का मेरी अक्ष है, का नेरी नहीं हैं" देला स्वाप्त करिल हो सरक है : राजुरकोची करावे हाँ कोई मी वार्थिक स्वयूक्त करे जो पानी। क्या धारमा जल का नाता है से क्यूनांके विके कारती और अपने पह और अपने चेंद्र का बनका क्रिकाय मही सहस्र । वेज्यानोन्द्री एना नंद हो साले है, निवरोक्त करा: we war it, arithmeter some oil dur, floride प्रतासका-(प्रकृषकीयसक-) पूर्वक वेद्यालक वर्षी करो। प्रकृत का की करे। को बन्दरोंकी एक प्रकृतेक क क्यास्त्रज्ञे पत्र क्या है।

प्राचेश और परानंत्र होनोपर हुई रकारत व्यक्तिने पूर्ण है राज्यति पृष्ठि थी। उन्होंने सोवा—'राज्य प्रम प्राचित्रपेरे स्वान् होर वर्षण साहार विष्णु होना।' साह विसान वर्षण है कि यह समंद्रार कार्यण होट है और सावित स्वानेरे सम्बूर्ण अधिनवेशा सम्बूर्ण होट है और सावित स्वानेरे सम्बूर्ण अधिनवेशा सम्बूर्ण होटा है और सावित स्वानेरे सम्बूर्ण अधिनवेशा सम्बूर्ण होटा है और सावित स्वानेरे सम्बूर्ण होता है, इस्तीयने वर्णणा होटा है वर्णकी स्वीत की है, इस्तीयने अपने देशने वर्णका प्रमान वर्ण है। इस्तीयने दूल पी कार और स्टेक्नो स्थानकर वर्गकी है पह करे। वर्ग है उन्दर्शके दिने प्रवर्श कहकर बहुक्का बहुनेताल है।

क्षेत्र का है स्थान: स्तरिये कालोब्र सद है सम्बद्ध करण व्यक्ति । इत्युक्तिकी इत्यू पूर्ण न करनेक्रे एकाके काम जब जाता है। एका । क्रम्यदेका पूर्व है वर्ग, यो अवस्थित अंतरते प्रथम कुछा है। जाने बहुत-में केन्सओं, अपूर्वे और राजनियोक्त क्रियाद कर करण है। क्रमको से बीच रेसा है, बड़ी रुख होना है, वर्गने पराधित हो बानेकर में पढ़ कर है पहलता है। यह इस विस्तानक प्रवर्तिकारक विकास कर बादे हैं से देश वर्तन करे, फिल्मे कुछरे क्रय को और अवनंत्रों फ्रेसब्बन न विने : मामार्थे, अवस्थात्त्व, स्वतंत्र्य तथा मानुरुवेते क्यो, अने कीवाने भी हा को और की ने एक ताब सकर हैक करन करें है उनकी कैसते के सर्वत है को रहे है जारे करा निरामको एक चार केन्द्र निराम क्षेत्र का मुख्येले, पराची निज्योंने, केले-नेले वर्ग पूर्णय पहालों और प्राप्ते, केले स्था क्ष्मेंचे क्याप्त के। क्षाप्तक, अधिकार, दुन्त दुन्ता होतेकार कांक परिवर्ण करे। क्याजां, बेहवाओं, परिवर्क और क्यारी कन्यानीके तथा उत्तरमा न को । यह श्रमा करीकी कोची कारणकर युवा है से उसन प्रतीने करिनेकर पर्वादेश अंको क्या और एका क्या है। प्रशास कर्त, केन्द्रे, सुने, की क्या कृतिहरू बारावर्तकी स्वती केरी है। प्राणिने असके दिल्हा कारण करके रामाही विकेशकारे वर्गक आकरण करना पाति ।

विकासीय प्रमान और वी मुक्ती को-को केन प्रमान कोडे हैं। वर्णनंत्रातीयों काम केवार प्राप्ति कर्म कुछ कारी है। वर्ण कुछ का प्रश्न है, कर्म अधिक वर्ण केती है। प्रमाने वर्ण-स्थान केया किया को है। अववादकों कुछोड़ आदि जो कर्मा है, अवंकर का निवालों होते हैं तथा राजांक विकालकी सुवन केवारों काम प्रमानके स्वतार दृष्टिगोलर होते हैं। को क्या अपनी प्रमान्त्री करता, वह प्रमानते की प्रमान्त्री कर समान । प्रमान के असकी प्रमान्त्र क्या होता है, उसके बाद कह कर्म भी पह से प्रमान है। प्रमाने विकालम एकती करता कीन तेते हैं और कहा-में विकाल सेवों सुरते हैं क्या कुछारी करवाओंकर करताकार होने समान कारत है। एका कर्म कोवकर काम प्रमान हो करता है से कोई की सनुष्य अपने करवाओंकर कर प्रमान हो कहा है से कोई की सनुष्य अपने करवाओं अध्या नहीं कह समाना।

#### बर्माचरणसे लाघ तथा राजाके बर्म

क्षण करते हैं—राजर ! जब एक वर्गका अध्यस मरे और पायवंदर क्यों हो हो अहरे के बन-बानही अवस्ति होंगी है, अर्थ्य क्षेत्र प्रकारत यह आनवारे पारण-चेचन होता है। समयून, बेता, प्रथर और करियून—ने स<del>म के स</del>म शुक्रके आकारपार्थे रिका है: राजा ही पुरस्का प्रकारक क्षेत्रके कारज कुर बद्धाराता 🛊 वार्ते वर्ज, वार्ते बेद और कार्ते आश्रय—मे सम राजांद्र अव्यक्ते का है जाते हैं। का एका वर्षकी ओरसे असावकान के जाता है के पर्वाचन, आकृतनेय और एक्रिजापि---ने तीन अति, प्राप्त, क्रम और क्यू—ये तीन येद और दक्षिणाओंके स्थय प्रमूर्ण क्या थी विकास को आसे है। पाना ही जारियोंको क्या केरेकाल और राज्य है। हरका पास करनेवाल है। वर्णाव्य हेनेवर बह पीमनक्ता है और क्यों हेनेज किवानकरी। क्यांट प्रमाणका हो बानेपर करकी औ, कुर, करकर क्या हैता कर मिलकर बोक्स करते हैं। अलंद क्षणी, चेदे, में, केंद्र, कहा और गद्धे आहे वस दश को है। विकासरे स्टेन प्राणिभोची प्रशंक तिथे ही बरसायक स्थानी अपने परे 🛊 । निर्माण प्राधिकोच्या महान् प्रमुख्य राजाने 🛊 काल दिनाः हुआ है। राजन् । यूर्वन अनुन्त, भूमि और अनुनेत अधिनेती कृतिको में बढ़ा दुरस्य प्रमाणक है, प्रामीको पुर कृतिकोडी क्यों व सताना । वे जिस क्लाबों अनवी ब्रोवर्गीको अन्य करनी है, जाने दिन कोई अंकर नहीं समझ, यह बाद-प्राथमित काम हो कामा है। इसनियो आपने प्राप्ते अवेकारमें अकार निर्वत मनुष्योंको चुरानेका प्रवत न करना; क्योंकि पूर्व कर है, जैसे अल अली आवश्यूह करहवी करन देती है, इसी जनवर हुर्जरवेकी दृष्टि तुन्हें करन न कर हाले । हाडे अपराम समाने स्वतेयर क्या द्वीप-इंडील महत्व रीपे-बिलएने राजो है, का राज्य क्यारी जॉकोरे जो अहि गिरते हैं, वे कराड़ समानेक्सेके यूरी और पञ्चलेका जब कर अलने हैं। मैसे पुजीने केवा बूजा मीन तुन्त कर नहीं हेता, उसी प्रकार विस्ता हुआ पान भी अध्यक्त पहल नहीं केल (समय आनेगर ही उसका फल मिलवा है) ( वहाँ निर्वेट मनूज मारा जाता है और उसे बोई शक्क नहीं निरस्ता, वहीं इस स्थानेकाले पार्यको केवकी ओरसे पर्वकर रूक अक्ष भोला है।

अब देसके कोग समूह बराबर भीवा वांग्ये किसी है, तो एक दिन वे उत्पाद्धा विनात कर क्रमते हैं। वहि सबा काम या स्पेध्यत किसी गरीबबी सीनतामरी प्राचंकार्ध वृत्यस्थात करके करको अन्याधपूर्वक होन से से संपादना कर्मने अस्ता बहन् विनाद निवाद है। यह राज्यकी प्रवा स्वापक पूजान करती हुँ करेकी अस्तान तथा वैदिक संस्थारिका विशिष्ण अनुहान करती है, यह समय राजा पूजाक कर्मी होता है और बड़ी प्रता का वर्धक स्थापको न सम्बाधन अवस्थि प्रमुख हो नाती है से समायो पापका कर्मी होना प्याप है। कहा पानी पानूका अस्तरस्थाने अस्ताका कर्मी हुए विवादी है, सामुख्योंकी दृष्टिये जस सम्बन्ध मीता कर्मी कुछ विवादी है, सामुख्योंकी दृष्टिये जस सम्बन्ध मीता कर्मी वृत्य क्षा से से असके समायो सर्वा अस्तुद्ध होने सम्बन्ध है।

अपने आवित्रोको चाँठका कृत्य, चन्त्रियोका अनुस् न करना और करके कर्यांने वर स्तरेवारनेका करन करना क्याच्या वर्ग है। यह, बाली और प्रारंगों समय प्रकारी रहा करना प्रका अपरास करनेपर कुछतो भी क्षण न करने। क्याच्या को बहु एक है। सहन्ये १६४, सुटेरोका वृत्त्वेत्रीय और संक्रमने कियम—रामाके देखे वर्ध पान गया है। अरुप क्रिको भी क्रिय मानि वर्ण र हो, पदि वह क्रिया हरा अकल कमीने भी कर को से राजाका कर्मका है कि बहु को क्रम न करके क्रम है है। इस्त्रान्तीका क्रमी चीरि करन को और कर्मकी क्लंब पंग न होने है। जिस कार छन्दर्भ रहनेकारे त्येश शुग-केवार साथ करके सद्भारतंत्र यह को और आर्थे अपूर एक्टिया है, का समय क्रमके क्रम क्रमेश्वर क्रमा सम्बद्ध बाता है। धैन-व:सी. कुत क्या अनुवासि और पोक्रकर उन्हें प्रस्ता करना, निर्माणी कहान, प्रदानीका संदार करना, साथ प्रकारिक कुरून, सरकार पालन, जुनिकान, अतिविध्योका पालार और पुरतेका चेपन करण स्थापन वर्ग है। जिसमें निका और सनुष्य क्षेत्रों प्रतिकृत है—से खोंको रूप केत और अस्टब्रेमेचर कुमा रक्ता है, इस राजाको इस स्रोकने और परलेकर्ने की सुक्त मिलका है। राखा दुलेको इन्छ हेनेके कारण का और धार्मिकोपर अनुवार करनेसे उनके रिप्ये पानेक्सके सम्बन है। का यह अधनी इन्हियोंको संदनमें एक है, के राजानसम्भे समर्थ केता है और तब उनकी नको नहीं रकता से अपनी पर्याक्रमें नीचे निरता है। व्यक्तिका, पूर्वविक और आवार्यका संस्थार को, अस्त्र अन्तरत न होने दे क्या उनके साथ उचित वर्ताय वहरे -- प्र सम्बद्धा वर्ग है। कैसे बमराज सभी प्राणियोगर सथान सम्बद्ध

रात । राज्यको स्था हो बढ़ी कर सम्बद्ध 🐍 को बुद्धिकन् और प्रस्कीर होनेके साथ ही क्या वेरेका इंग नानपा हो। जो राज देनेसे विकास है का पूर्व और कारण करून मच रामको रक्षा करेगा ? तुन्ते कुन्त, कुलीन, स्थानक एवं यह प्रतिनोधी तथ होतर अञ्चलको स्वीत्वे तमा कारे सोगॉकी भी मुक्किक मरीक करने करिये। इसके कुरमो सन्दर्भ कुरोचे परमानंक क्रम हे कान्य, हैत क्येसमें को या पर्तेशमें, कहीं भी तुन्हार वर्ण का नहीं होगा । इस तरह निवार करनेसे वर्ण ही अर्थ और कारने केट सिद्ध होता है। कर्माना पुरूष इस होकाने क्या पारकेकारे । क्यांस कारण बातो हर इस पार्टीको पहर बाते ।

भी सुरा उठावा है। महि पनुष्योको सम्मान दिया जान हो। में राज्यासम्बद्धे दिल्के रिजे अपने यूनी और विश्वीपने भी निकास कर केरे हैं। अधिरकेको अपने प्रकारे निरसके रकार. उन्हें कुछ देन, चीड़ी मोली बोलना, प्रमाहका ज्ञान करन और परिव स्वय—में अवस्था देखने बच्चनेके पहल सामग्री : मान्यात ! हम इन सम् बातोकी ओसी वाची क्रोबा प रक्षण । इस, बक्रम, बन सक्स प्राप्तनी रुवर्षिकोने ऐसा के कर्ताव विकास है, इसीका सुर भी पान करें। ये एक क्येंक अक्त करता है, असे कुनकारों केवल, पार्टि, निवार और मनको सहा गाउँ को है।

बेक्स करे हैं—काम सुरिके इस उत्तर सर्वत केरन राज्याको निर्वीच होचर हात्या चरान विन्यु और निया क्रिकेटी स्थानतांक स्थानं पृथ्वीयर अधिपात चया निका। क्या श्रीकीर । इस भी परवाताकी ही मंत्रि

# राजाके आचरणके विषयमें वामदेवजीके उपदेशका उल्लेख

\_\_\_\_\_

क्य प्रविदेश पूर्ण-विकास ! जो वर्गीना राजा ( अपने करीं निका परण गाहे, जो निका प्रचार वर्ताक भारता चारीचे है

प्रेमको केले—शबन् १ हरा विकास सरकारी सहस्र क्षांनेक्ष्योका क्रमेलका एक इतिहास प्रसिद्ध है। सहक्रम मानके इस विकासील, वैजेशाली और बरिवरिक सकते एक बार पान क्रमती मुनिकर करबोकतीले क्रम क्र. 'पनवन् । जान मुझे ऐसा उन्हेंच दीनिने निसन्दे अनुसार कामान करनेते में अपने क्षमी क्षमी व निर्वेश क्रम महारोजनी उचेरिक भगवान कार्यकारी कहारे हमे--''राक्ष्य ! तम वर्षका ही अन्तरम करो, कांगे कहतर कोई भी बीज नहीं है। जो राजा समेंने दिला चुने हैं, से इस स्वरी पुश्नीको अपने पञ्चने कर हेते है। जिल्ली सीचे मधीरदिक्ती अपेक्षा भी वर्णका विश्लेष प्रकृत है और से क्सीको बदानेका निकार करता है, वर्गोंड कारण अल्बी नहीं कोशा होती है। इसके किपरित को एका अक्केंच्या हेकर करना सीका अकरण करता है. वर्ष वर्ष और अर्थ बात-बाँ-बातमें झेड़कर चले करे है। को वह अपने पायी बनाव्ही स्क्रापताचे क्यांकी स्त्री करता है, सर अपने परिकारके सकेत प्रयासन कम्म हो करत के उसका सर्वनक क्षेत्रेमें देशे नहीं लगती। सिन्दु जो द्वितमानी संशोधने सहस्र

कारोबारक, ईव्यांकृष, निर्देशिय और बुद्धिकन् क्षेत्र है, कर दरवानी पूर्व अवहर यूदि होती है वैसे महिनोर्फ अन्याने सन्द्राची । एकाची पाहिने कि वर्ग, अर्थ, प्रदर, चुदि और मिलेने समाद क्षेत्रेयर भी अपनेको कार्या पूर्ण व सन्तो। ये प्रचीर से एककी सोवनात्रके आगर है। प्राप्ति हाए को पन्न, मोर्सि, मैनन और हवाकी प्राप्ति क्षेत्री है। किंदु को राजा कुमल, क्षेत्रकुण, कुमके क्षर जनको शत्म देनेकाच और विश्वतिन होता है तथा विशे अवस्थिको भी पहला भूति होती. अस्थि स्टेक्टर अवकोर्ति होती है और नावेश परकरों कान पहल है तका वो कारोका कर करनेकाल, करी, सवरमाती, कार्यक विकासे पुरुषी सम्पन्धि करनेकारण, अपने अर्थको सर्व सम्बद्धिकार और दर्शकों ही सकते बहु साथ महन्तेत्रहरू हेन है, व्य एक बार दिनेतक सस मेगत है।

"जिल राज्यों अपने पतके पर्यक्रो एका वर्षलीया अन्यापन करने लगता है, वहाँ अन्ये अनुवादी भी इसी अवस्थि अंक्टरमधी अपनी जीविकासा साहत कर हेते है। ने लेन से का पन्ने स्वाप्त है अवस्था करते हैं। इसमें स्वेगोर्थ अल्बंध फैल कनेते बाल बल्द ही यह शास का है जाता है।

"राजको वाहिये कि वरि किसीका अधिक रिजा है।

में फिर असका जिल भी करे। इस उत्पार चरि अधिन पूरण भी दिन करने समझ है से ओड़े दी समझने का दिन हो जात t : निश्चा भागत न करे; क्षिण करे ही सुरारोका क्रिय करे; किसी कामनारे, क्रोपने सामार समाप देवना पर्वका नाम म को, कोई कुछ को हो जाना उत्तर देशेने संकोश न को, विक विकार कोई की बात बैहरों न निकाले, विक्री काकरें मारकामी न को और किसीने भी क्षेत्र-रक्षि न को। हेले आकरमधे का भी अपने काले हे बात है। बहि अपन हैन हो पान हो पहल अहर न हो और अधिन हो पान हो पानवरे मही। की आपरनीयें करी का कार के 2-की न हो। उस समय भी प्रवासे ही दिवस विकार करे। यो यहे-को मान हो, कारा वितेतिहर, कारण करूरत, चौरकार, सावकारत वृत्रं असिका कृत्येको निवृत्त करे । इसी प्रकार किसमें में राज पूरा हों और को मकाको उत्तर की रख राजक हे तथा स्वर्धान्य कान करनेने तस कानकर कहा है, को बारवी काशकाना काम तीरे । यो राजा पूर्वा, इतिहरतेतुर, सोपी, हरकरी, खु, कार्य, हिल्ल, सुमुद्, अनेक्टर् अनुसार, मधारी, शुकारी, व्यक्तिमध्य और आहेटडिल पुरस्को मानवृत्तं वार्योपः निवृक्तः अर्थतः है, अस्की राज्यावाचे ज्या हे पार्टी है। को तथा अपने प्रतेसकी पत्र और अपने रहनीयोंकी पहाका बीच प्रकार करता है, जानी प्रकारी पदि होती है और रहे असल ही न्यूस प्रका होती है।

"रासर् | इस कनाएं सभी पहार्थ सक्तान् है, योई भी सह मिशान नहीं है इसरिनो सम्बद्धी वर्णवर विकार सुद्धान सर्मापुरस है प्रमान पालन बन्धा करिने । हुनंदी रहार्थ सामन, युवारी सामने, न्यानकी स्वायक, वर्णवर्थके सर्पासमं और प्रमान्त्री स्वायकम्य सुद्धा प्र्यूचन इन सीव सामें राज्यकी उसरे होती हैं। इस ही पुरस्त इन साम सामेंपर सर्वता स्थान नहीं रखा स्वायक; इसरिनो इन्हें खेला अधिकारियोंको और होती राज्य स्वाय दिनोक्त साम कोय सम्बद्धा है। जो पुरस सुन्तारील, पुरुष्तानक्ता, स्वीयकारिय और दु:सके समय अपने आदिकारीको न स्वोद्धनेत्रस्थ होता है, अधिको सोन राज्य सन्ता है। विज्य जो सनके प्रतिकृत्य होनेके कारण अपने हिर्दिकारी साम नहीं सुन्ता, सर्वक

व्यवस्थान का दावा है और वृद्धिमानोंके आकरगोंका अनुसरण की करता, यह शामधारी परित है जाता है। वो प्रवान वर्षणकीया ज्याप करते निर्माणींके सोगोंको अपना दिया करता है, हेरावार अपने स्त्युणी सम्वन्तियोचा भी सम्बार की करता सभा वो मान्यर करते है। असमपाने करते का न समाने; अदिवर हो मान्यर वाणी हुन्ती न हो; दिया होनेपर हांनी पुस्त न कान; तक हुन्यस्थीने सभा दो; इस बातवा समान को कि बोन पाना पुस्तरे केन रसते हैं, बोन केनार भागों असमान दिनों हुए है और कीन इसने नीमकी-सी विभाग करते असमान दिनों हुए है और कीन इसने नीमकी-सी विभाग है तथा वरणान् हो मान्यर भी असने निर्माण का हांने का स्वार्थ सानी विभाग पानों । बो एकेन पानपुद्धि होते हैं, वे अपने सर्वपुन्यसम्बद्धि और विभागनी सान्यीये भी होड़ करनेने नहीं पूर्वाने, इस्तरिनों ऐसे स्वेन्नेवार कानी विभाग न बारे।

"बाँ, क्याची का मकता न हो से एकको अनिकार देवीयर अधिकार संस्थेती हवा नहीं धरपी पाहिने; क्वोंकि विकास पुराने हैं पूर्वरका है, का एकाको इस प्रकारक स्वरू क्रेक क्रमा नहीं है। जिल्ल किस राजाब देश प्रकृत, वर-वाको पूर्व, राजपन्ड और संतुर्ह हो तथा विसम्हे पची स्केंच हो और वैनिक संख्या स्वितिक एवं सहओको क्रोहरेने सम्बं हो, का क्रोड़ी-से रोगारों भी विकास प्राप्त कर सकता है। किस राजांद्र प्राथाती और देखवानी बीवॉपर क्या बारनेकारे और बनगन्ता होते 🗓 सामग्री का नामग्र बर्ध करों है। विस्ताद देखा दिल्लीक का का है, के सब जनियोग का रकता है, कार कारेने कुरील है और जनने प्रारंतिको स्थानक बाल रसता हो, इस राजांत सम्बद्धी ज्यकेत वृद्धि होती है। कृतिमान् एवाको ऐसा काम कृपी भूषि करन कार्यने मिले को आदमी कुछ सन्ताते हो, हरो हेते कारणे है कर रूपका चाहिने विससे सम्बद्धा हैता है । को रुख इस प्रधासक बर्जन करना है, का इस स्पेक और परकेट केनोको सुवास्कर निवय प्राप्त करता है।"

वीयानी बहरे हैं—काम्बेशनीके इस प्रकार बहुनेवर सबा क्युपनाने राग बड़क इसी रेतियों किने। बहि दूप की देसा ही सावत्त्व करोने से नि:सन्देह सबने सेचों लोख कन होते।

# युद्धनीतिका वर्णन

राज नुष्यित्ते पूक्त—विशायक् ! वसे कोई इसीय एका दूसरे इसिय राजापर चवाई कर दे तो तमे इसके साथ विशा प्रकार पुत्र करना चाहिले ?

भीनामी ओले—प्रतिपद्धिर । यदि यद्य समय सहते हुए व है ते कार्क पान पुर नहें करन पाईने, हो, कारत करन करके अभे से सर्व भी रैकर हो बाब और एक पुरुषे साम अनेतम हो यह करें। नहें यह संग रेका काम हो हो क्रमं भी सेनासक्रि क्रमार उसे सरकारे । गाँद क्षा क्रमाओ चुन की से जान की करायुक्त को और कांग्रह को से उन्हें भी वर्धनुसार है जनक सामन करे। की कुछु किसी इंकटमें पढ़ करने ही करनर उद्धार न को उन्छ हो हुए और पासन प्रमुपर भी बार न बारे । को अल्बीन हो जिसका कु कर क्या है, विसके इस न्या है भी है, जे किरीले क गंध है, निरावे कर्मा हैरी दुः गरी हे अवस विराद मान मा है गया है, समय सभी प्रधान को। ऐसे पुरस अपने सिमिएने शा जान से जानारे निर्मालक कराने अध्यक्त क्राने पर परित है—नहीं सन्तरण वर्ग है। अतः वर्धानुसर 🗗 पुरु करण करिने । यह बात सामानुब करने थी काहे 🛊 । साम्ध्योपे सकते सभागेका है वर्ष छ। है। सामे विका चानर को ग्रह न गरे। यो अपने वर्गदको अवस्थि प्रय विकार कार करता है, का राजी है और करते हैं अपना नात भारत है। इस प्रधार अवनंहे किया यान से सह पुरुषेक्ष भाग है, सार्क्षको से अवलेंको की वर्गते ही बीदन चारिये। वर्गपूर्वक को कर जाना भी अच्छा है और काओ श्री किया पाने भी अच्छी नहीं है। हाँ, वह अवस्था है कि अधर्मका परन समास नहीं निस्तवा । जिल्ल का का और शासा केन्द्रिको परनकर का लेख है। क्रमें एक फिसी पारकृति जनको का पादा वहा अस्ता होता है और का सम्बन्धर कि वर्ग है है जों, परिवादन पुरुषेकी हैरी करक है। इस जकर का पाने काके हुए कानेके कारण असूने पापने ही पीस बाता है। उसकी करने कुछ नहीं रहती और अभागे यह विनासके ही पुराये पहला है। किस प्रकार अहेके सहपर अक्ष इमा यह नक्सीत उस्तकर नहेंगें वह बाज है. अर्थे प्रकार का भी प्रमूत नह हो जाता है। प्रकार काहे हुए कोंके स्वयन अलो ठा-ठूक हो जाते हैं और सभी होन उसकी निन्हा करते हैं: जल: राजाको कर्ववर्वक है का और विकास प्राप्त करनेको इच्छा करनी कार्किते ।

क्रमन् ? जनमंद्रि क्रय पृष्टीपर विजय प्राप्त करनेकी हका क्याचे कमे जो कली कहिने। अवसी किस पावन कौन एका सुक्त का सकता है ? अवपंसे पानी हाँ कियन से अस्तानी और कर्नते गिरानेवाली होती है। यह क्या और राज केनेंद्रीको यह यर देश है। विस्र चेत्राका करण कु रूप हो, को 'मैं आध्या है हैं ऐसा यह पह हो. में क्रम मेरे कहा है सा जिसमें हविकार एक हिने हो जो बैद कर है, को औं। एक सलतक बैठमें रानेके कर जनका रूप क्या होता है और यह फिसमी राजाके पुत्रके सम्बन्ध के नात है; इसीनों साराचर यह को छोड़ देश व्यक्ति । यदि अस्ते परमानको विक्री सन्यान्ये प्रस्कर साथे वो एक समाराज जानो कोई अब न धारे । कुरुके कह भी पहि बढ़ पहलेका जिल्ली क्लोको बरनेकी प्रका असट करे हो उसे नेद है। इसी प्रचार कर पर स्था-दानी की बढ़ा अपने परकारने जीतकर साथे, जो भी एक इतसाब, अपने प्रश्न रक्तकर किर कालेंद्र कालीको सीच है। यहि कोर आही अवस्त्रीक्षेत्रा कर कीम हो हो हो भी अपने पात र रहे. सर्वाचनिक बारगोर्ने रूमा है और यह मी बीमका राज्य है। में अध्यानकों से है।

केचे अंग्ला संच्यांके फिट जानेक बरी उनके बीचारे अंकि करावेकी इकाले (ब्रह्मूल का बांध हो उसी समय ब्रह्म नंद कर देख कहिने । एकै होनोंनेले कोई भी पक सहाजका विरम्बार करता है से का सम्बन्ध धरावती पर्यादाको तोहता है: देने व्यक्तिकारे साहित्रे बहुद कर देख काहिये और उसे वरियोची राजाने स्थान नहीं देख पाहिले, क्योंकि यह असम है। जिस राज्यको विजयको हका हो उसे हेले आवरणका अनुसरक नहीं करना चाहिये। को विस्तय सम्बद्धारे जार होती है अन्ते काकर कोई इसरा साथ नहीं है। आकारण करनेकारे राज्यको कियम करनेके कह उस देशके जिन्हे हुए सोनोको सन्दर-बहुतका और परितेषिक देवल प्रसार पर लेन्य व्यक्ति । वही राज्यानीकी प्रवास मेरि है। वहि हेका व करके उनके साथ कदाईसे क्लीब किया जाता है तो वे इ.सी. क्षेत्रर अपने देशसे करे जाते है और अनुआंके साथ विस्कार विकास करावारे विवरित्ते समावद्यो क्षत हेक्नो हक्तो है। क्रम आपरिका समय साता है से वे सहशोधी स्टामता हेकर वर्षण है उसे का उनारे हैं।

निया राजाबा देश विष्युत्त, बन-बान्यसम्बद्ध और

है, ज्योची यह परस्तुत कही बाती है। यो राज व्यक्तिह, । वैकानों बृद्धियों प्रका है उसे सब प्रवार पुरुषोद्धारसे है पुरेक्षित, आनार्य तमा अन्यान कुम्बानेका सम्बार करता है, | विकार प्रश्न करनेकी हम्मा रहार्थ पाहिले, करार मा एनके मही त्येक-गरिको जाननेकाल कहा करत है। गहे अधीन | हारा गहें :

राजमक होता है तथा विसके सेवक और क्यी लेक्ट खते | कारके कर्मा समानेका वर्ग है। जिस स्थाको अपने

### युद्धमें होनेकाली हिसाके प्राथश्चित और वीर तथा कायरोंको प्राप्त होनेकाले लोकोंका वर्णन

रका अधिकारे दूधा—दूधाओं । क्रांस्करी बहुका | प्राप्ता से कोई भी वर्ष भी है: क्वेरिट एक से क्या करने और पुद्ध करनेके समय बहुत-से बनुव्योकी हत्या कर हारावा है। से क्रम करके पर बन्तकों कि देख की को है किराके क्षा को पुरुक्तेकोची जाहि के क्रवारी है ?

मेनवी केले—राज्य । पारिकोको स्था और सार्क्षको अस्तर है जो उस्त बहुतकुर और क्रम करनेते राजारोग सम प्रधारके केनोने कुछार कुछ हो जो है। यह क्रीय है कि विकास हिंदी स्वानुस्ते बाते से सुवालेन भीनोची बहु है पहुंचते हैं, जिल्ह कियन बहु का रेनेल रियर के क्षेत्र प्रभावकी कार्ति की की बालों है। के बाल, बाह और सर्वे प्रथमि असे को का का का कारों है, किर हो क्लोर पुरस्कार की पृथ्वि क्रेली है। विस्त प्रकार पोती विवानेनास पुरुष केवादी सकर्त करनेके विन्ते कार-कुलको क्लाइ क्लाब है, जिल्लु काले का फोडीवर कर भी औ निगडमा, उसी जनना जो एक चलका सङ्ग- उन्होंने केवाओ संबद्ध कर पत्र है, उस एकाई इस क्रमेंडा पूर्व एठ-एठ प्राथमित है कि किर पुजारे को इस लोगोंकी क्वारी होने सन्तरी है। यो एका प्रकारों बनकुष, प्रकारक और कुन्होंने क्ष्माता है तथा सुदेवेंसे अस्के प्रान्तेची रहा करना है, यह पनवषक और सकाद याना कहा है। से निर्धय हेकर क्षपुर्शियर नाम्मको करता 🚉 अल्ले क्यूका हेवल होन संस्थापे और किरवेको नहीं सन्दर्भे। अल्बे क्रक सेव्यपपृथिने कारणी स्वचानो निहाने स्थानीका हेना है. जो सब जकारको कामराओको वृत्ते कानेकारे काने 🕏 अविनासी लोक बार होते हैं। अलो प्ररीमरे वो युद्धसाओं भूत ब्यून है जाकि बारन यह सारे पायेसे युक्त है कक है। वर्षत पुरुष देशा मानते हैं कि अहीन युद्ध कार्यने जो संग्र-तराके द्वार स्थान है, अन्ते काम्य का है काम है। निवर्धी जीवेसे अवनी एक चक्रनेकारे इत्योख पूरव से मीठेके पीके रहा करते हैं, जो उनकी रहा करते हैं से 🕏 पुरुषके पानी होते हैं। बीर पुरुष प्रमुश्नीका सावना करता है.

इस्तीओ या अन्ति एकेक वको सन्ता है तथा कावर अयो क्रांकिकोच्छे संबद्धने करावत वैकान क्रोक्यर बाग बाहा है। को अधीन देखा पुर्वाचन आवश्य को उसे लाही और देलोंने का करे. अन्य कुरेंकी क्या आफो अला है या प्रकृतीकी क्या पीठ-मीडवार पार कारे । राजपु ! क्रांतकार प्रश्ने पीतर परंच अच्या को सम्बद्ध करा। निर्मे पुरस्का अधिका give weigh, small we galoom assorbed selfy Respix केन है। के अपन केन्स्रकार पहला ग्रीर पूर्वजरूर्व क्षेत्रम 'कृत । यह दू:स है, यह पीक है, वे यह und if yet ware appears & site and authorisis thought at his ft, us freely if he ten इतिन्युत्रका से अपने वादि-वाद्योंके साथ स्थानीका नंतर करे व्य करे के क्योंने किए-फिट होना है मान बहुत है। यह बन्दी चुड़ारे बंद नहीं देखाल और जनने जन्मेंकी परवा र करके पूर्व प्रक्रिये ब्रह्मश्रीका सारक करन है। इससे को इससेकार्ड प्रदीत होती है। हेंगा इतके, यह केन्स्रको यस नहीं काको देश से क्यून्टेरे निरंपर कर्डी के चार बाब, अक्रम सोक्टेको है अस्य करण है।

रूप वृष्णिको पुरा—विकास । यो पुरावीर पहाने पीठ नहीं दिसको और रच्यानमें ही अपने प्रान सारहे हैं उने वित्र कोच्योची अञ्च होती है--यह मार्लवरी सुन्य को ।

क्षेत्रको केले—स्तरू । इस विकास यह पुरात्तर अभिकास अभिन्त है, जिसमें एका प्रतांत और शिक्तिका क्याको पुरुषा अलेका है। का समय का प्रधानके ताबोबो जननेवाले विकित्यविकतिने अपने बोज्यक्षीको कर्प और नरक दिशाको हुए इस प्रकार बाह्य था, 'बीसे । देखे, ने वेकोपन रचेक संकारने निर्मन क्षेत्रा नक्षनेकालेको जिल्लो है। ये सकी प्रधानको धानकओंको पूर्व करनेवाले हैं और देखों, में नस्य दिसानी है को है। को खोग प्रकार प्रापंत है. उनकी का लोकमें सहके रिने अवकीति होती है और अन्तर्ने इन्होंने बाजा बढ़ता है। इन्हें देखनेके बाद अब अब प्राणिका मेद क्षेत्रकर स्तुत्वीको करता करे, कुछी केट

विस्ताकर निरामार नरकों न पहे । भूरवीरोको सर्वका सुक्र इस से अपोच्या केंद्र स्थाननेते है जिल्ला है।'

एका सनकते इस अकार सक्तेशर वैशित पीटेरे एकुमीको पराद्य करके अपने सम्बन्धि अस्त विका । अकः भीर पुरुषको सर्वद्य संस्थाने आसे प्रमा काहिते । गमारोदिकोके सीधने स्थितिको निषुक करे, स्थितिके कहः स्थापेदिकोको रहे और उसके बीकरें प्रमाहिते पुरुष्टिक प्रमाहितीको सेन कही करें। को राजा अपनी सेनाका इस अवार पहु बनाता है, या सर्वद्य अपनी सेनाका इस्ते अवार करात है। इसलिये हुएँ की सर्वाद्य अपनी सेनाका इस्ते अवार

वंगान करना साहिते। यो क्षेत्रं राजपृतिसे स्वाहम परंग साहे हैं, वेरपुर्ण करार प्राहर करना नहीं पहले। इसिंग्से पानो पूर्व केंद्रावर्णिक स्वृत्त रहेते न गई। स्वाहर पहार्थ पानोवारे सोगोर्क क्षा है, किन प्राहरेक साही सुवाहरोक आ है। सार पानोवार क्षा है और वानार पुरूष सुर्वारोक आ है। इसिंग्से कानवीं क्षा है। या प्राह्म कोचा मारावार्क कामर प्रान्तिकों पुन्पकीयर दिया हुआ है। इसिंग्से कोचुकाक रहा है कान होना वालिक। सोनीन कामर सीगों लोगाने कोई बाहू जी है। शुरुवेश हो सामाह प्राह्म पारता है और साहेक असीका यह स्वाह काम है।

# सैन्यसंचालनकी विधि, योद्धाओंके लक्षण और विजयके विश्लोका वर्णन

प्रण पुष्टिमें पूळ-नकतेता । विकासीसामधी राजा विका अवार कामदेश्यो अवादीक कामेश्वे क्रिके वर्णका बीक्ष-का अमानून करके भी अवादी सेकारों के कामे हैं, बार सुक्ते नाराकों ।

चीनार्थ सेर्ट--राज्य ! क्रिक्टीका पर है कि कर सामहे विका कृशा है--बोर्ट कार्य है--क्रावर सामार मुक्तिमा है. वित्यक्ति गराने संस्थानीका अध्यास से सामा आगार है कौर मोर्च को प्रधानकीय सामी है। संभाने सामानामाध रियो सरल और प्रतिम के अध्यक्ती कृतिकोंने पहल रिया बाल है। राजको इन सेनोईका इस्त प्राप्त करना पार्टिने। मार्थनक सन्तम हो साल-स्कारक स्वतील स्वतिको स्थान न हे, बिया गरि कर कर अले हों को सलो कर जो करका आसम्बा कर है। यह क्यूपर कर्य करने है से लेहेची मार्टि, मानव, मान, वैकाने कर करा, पीते और स्वार रेनके मानव, रेप-निरंपी शास-पामानी, महि, क्रेमर, प्राप्तार, करते, याने और कार—इन्ने जून जूडे संस्थाने डेका करने, नहें एक रैकर हो और केन्द्र भी प्रहुतर विशव मानेकर तुले इस हो तो केंद्र का मानंदरिकी ब्राहिको करता बारना अच्छा होता है: क्योंकि उस समय केही कहा करती है. पुरुषिक्त कारपंदी प्रकारता होती है और बहुत की न आविकः तंत्री होती है, य अधिक पूर्व । इस्तीओं उसी सक्य कर्ता को अवदा जिस समय एवं अवस्थिते जान को उस समय आवर अवकारत कर है। काले कालेके लिये हैं ही अवकार अच्छे माने गये हैं। सेमाने कमने हिंगों का राख्य अच्छा केंन्स है को चौरक हो और विसमें कहा और कारका स्टूबस हो । कार्ने विकामेवाले क्योंको उसका का का का के। अधीको

विकास विकास के विकास विकास करोड़े कहींको विकास करोड़े कहींको व्यक्ति करोड़ करोड़ करोड़ करोड़ करोड़ करोड़ करोड़ विकास करोड़े हैं। के कोड़ करने कुरवेग और प्रक्रियाओं के क्रांकोची कुटड़ी रहे।

प्रमुक्ते क्रमान करनेके हैंको निराम हैता होना वाहिये विवास करों और काको करी हुई कर्ड है उसेर क्रमा परकोश है। इसमें क्ष्माओंक काकारकार रहा है सकती है। पुरक् कुश्ताओंन काकी कारकेंड हैंको वहाँ कारोको हैकते हुए बैक्शाओं अनेका केमारको सामा कामारा है। क्षार्थ क्षेत्र है क्षित्रों केमारा क्षमा क्षमा का समझा है। इसके निर्मा क्ष्मी क्षमीनोंको हिन्द्योगा, क्षमुक्त सामान्य क्षमोत्त्र और क्षित्रीको सम्बद्ध की क्षमोत्त्र क्षमा है।

वीक्षणांको व्यक्ति कि सहस्थितिको पीक रहातर वर्णनो सम्बद्ध अधिकारमामाले पुन वर्ष । सेमानो इस अवहर सभी को निमले पूर्व , जानू और पुन अपने पीकेकी और में । यदि ने सम्ब एक और न पहले हो , से इस्में पूर्व-पूर्व और है, यो ही अपने पीके पूर्व । अध्यारोको संमाने दिन्ते पुन-विवाधिकारवर्षि यह नैतान अध्या करावा है किसमें प्रान-विवाधिकारवर्षि यह नैतान अध्या करावा है किसमें पर्व-विवाधिकारवर्षि यह नैतान के हैं; वहाँ परिवाध और सब्दे में में यह पूर्वि स्वाधेनको दिन्ते अध्यो होती हैं वहाँ कैने-कैने पूर्व स्वाध नात हो यह स्वाध क्यारोविनोंके दिन्ते तीक होता है और यो पूर्वि हुपैन, कैनी-नीची, जीस और सीस तीक स्वाध कराव मान्ये हैं । विवास सेमाने स्वाधिकार कोर पोहोंकी व्यक्तिया हो समके दिन्ने पुक्तको दिन अपने पहले हैं और विवास सेमा प्रान्ति और वैदानोंकी प्रमुख्य हो उसके दिन्ने वर्णकार सीक स्वाध है । इन सम पुन्तेको व्यक्तनो स्वासने रहाकर हैत और कारके अनुसार क्यापन करें । से एक इन स्था। को से इन्हें सुकीपुत्र कारक यह कारक करिने और हान मातोवर विकारका सुन तिथि और श्वामी काई काल है | काकर इस प्रवार बोरकार करना माहिने— देखें, हेरते, मा अभी केलक होना संस्थान करते हुए किया प्राप्त है की कर में है। इसके विकास का नर्ज है, बेहाओ काल है।

\$45-366 भाग के हैं जनत और न करे। क्रम और कारण कार हैके बाद प्रकारको को उन्ह, को की प्रका चोचन करते समय भी विवर्तको न चरे। हती उत्तर में बहुत सम्पन्ने हर हैं, करना है को है करना हैं, पूर्वन हो गये हो, सरसायात हो, कारे विस्ती पहली हते है, पहर एके हैं, क्रम्पीकी और पाप हो हो, अपन की अक्ट म सरे।

में बहुती रेजनी रिजनिया कर कको है और अपनीको संगतिक करनेको करित रकते हो, उनको अन्ते प्राथ केवल करून करिये और साम है रक्तन करिये कर कुरून केरन देश काहिने। प्रेस्पने कुछ स्नेन्टेको हो का-का विरिक्तीका पालक कराने और पूछाको क्षेत्रक छन। किर पूछ इसर बीरोका अव्यक्त निर्देश करे। उत्तर-अव्यक्त पीतीको अन्तर करने पर जीवा पहले है। पर केवलो रियम क्षा करोड़े हैंसे अस्ताद एक क्षांको भूते क्रोडेंगे। क्ये पर भी क्यान है कि पर्यंत केवली भारतेने वर्ड जवरके केन हैं। इससे अपने इच्छेक्कड़ी हारें। मानो प्रमुप प्रमुप्ते प्रमुप्ते एक और अल्ब्यू से होते हैं हैं. योगोरे देवले तरा-स्थानी अहैल और इन्यानियों सहे भी सुरुरी प्राणी है। को लोग प्राणों की विकास है से के मानके ही महत्त्व है। से केवल केव्ह्यकीओ संकट कहानेको हैं है, अने इसकेद क परस्थेकरें कई भी कुछ नहीं विस्तात । अमीनो निवास मारो कि इस उत्तरिक सामानो संस्थानी सबने क्रम क्षेत्र होते। क्रम, या वे निवस क्रम करेने क कुट्टों करका सहपति कोंगे। यो होन पर प्रकार करन करके जानीका जोड़ कान की है में निर्मन होकर क्षतुनी सेनाचे पर जाते हैं।

कंडची महरका करते तथा तथते अने कर-हरमार-वारी पुरुषेची कुछी रहे, चेहेमी और एवियोक्ट क्या करे और मैक्से परिवरको ओलोको रहाँ । प्रकृतिक अक्रमण करनेके रिम्में को पराने सैनिक हो से उहने जो और अन्ते पीते पानेपाले पद्यतिनोचा उत्ताह पहले। अहे प्रकार्यक रावेकोको भी उत्पत्ति करण पार्विने । अस्ता रचे केवल हेनका विशेष समूद्रण विलागेड रिले हे साथ

केंद्र किमें करते । इस प्रकार भीवत क्रम करते हर को रहेन को यो हो, जाते हो, कर को ही अवका । सहस्रों साथ प्रमुख सहर करें। को होन केनके मुहनेका हो क्ये पर्यन्तवंत और विश्ववित्ता क्रम पत्ने हर संस्था, करिये, गेरी, कुछ और बोल साथ साथे क्यानी व्यक्ति ।

> क्य पृथ्वित्ते का-विकास ! युद्ध कारेचे केटे करका, फेटे अकार और केंद्रे प्रश्नात बेटा होता हुई। है क्या क्लेड क्यान और प्रकास की कैये होने माहिले ?

केलवे केले--एकर । एक और बहुत हो केन्द्राओंके वेश और पुराने अनुस्ता हो होने भारति राजा जानी क्रान्यको अनुसार है वे पुरुष्यको एक हुआ बारो है। प्राचन और विस्कृतियोंने केलेंड बोट्स क्रीनेपारे प्राचने पुर करते हैं। के को निवार और कारकार होते हैं। उपनित्रहेलके की जाने अवलोब कन्द्रेने कुनल और बढ़े बारवाहने केंद्रे है। क्यें केन करवारे सांस्क होते हैं, वे क्यान्द्र करव कुर करते है। करन, करबंध और न्यूराबी ओर्स्ट केस कारण्यां की होते हैं और प्रतिकों और सामान कारण अवार करते हैं। हिए क्षेत्रकारिक करते और के विकास कर्मानी करण हो, से बड़े स्थानेंद्र होते हैं। विकास सार्थ वेक्के सन्तर, पुरा कोनपुर, प्रदेश कैकी एक और सब क्या कीम केहे हो, के बहुत हरका क्रिकेशने और मुस्तिते इंक्ट्रान निरम्भ क्रीक्रिकारे क्षेत्रे हैं। क्रिक्ट करेर विस्ववासी क्या औरत और देखें पाल और पाल पाने होते हैं, से बड़े चीवन्त्रची, चयुर और व्यक्तित्रको कार्य गानेको होते हैं। किन्छे करीर महीरेंद्र कार्य मोडो और अप्र-प्राम्य सुर्वास केरे हैं, में मीर पुरुष्का भीता कुरते के क्रोधने पर बाते हैं क्या करें पह करवेंने ही अन्यन काता है। किस्से नेत निर्देश सरकार केले और मैंक्बेड और पाले केले हैं. सिलाई कुमाओल पहाडा और अंगुरियोग्स पार्क्स विद्व होता है क्या विकास नार्रियाँ दिशानी हेती है से पहले आरमाने ही को केवले प्रमुख्ये होनाने पुस जाते हैं तथा परावाले हाविकार्थ राजन को कृति होते हैं। किनोड कालीड आलाग की और किनाने हर, पारीका, होने और पेंड की तथा करे हैंने केंचे हैं, मन्त्रम पोटी और विकास कारी केंग्री है सका दिल फोल और कर करोर होता है, ये वहें होती होते हैं और बुद्धारें क्रांकर स्थापन दुः बढो हैं। कियों बर्मका क्रम की होता, को रहों। परि चोड़े सैनियोंको बहारेके स्था बुद्ध करना अधिकानी, का तथा देशनेने प्रसंबद होते हैं, देशे प्रस्था त्रावः गीव व्यक्ति दृत्या करते हैं, वे भी वीने-सरोबरी वस्त्र क्रोड़कर युद्ध करते हैं, कार्य गीड़ वेर नहीं इस्त्रो। वने केवले सब्द आने रहाज व्यक्ति। वे स्वाध्तवे कार प्रमुखीकी कोट सब्दी और उन्हर भी जार करते हैं। वह जावर्ती पुरुषेकों सर्वादराज्यात कावर नहीं बुल, वे कार्य-कार्य अवहरूव ही स्वाधा भी निषद्ध करते हैं, अतः वने बीदी वालेले सम्बाध-मुक्तावर ही बालूने रहाज वाहिते।

पुष्पीरते हुल—विकास 1 सेवाची विकास पूर्व विकास कीर-कोर-से हैं ? में उन्हें कारण प्रकास हैं।

चैनको का-वृतिहर कर पुत्र स्थानेको देशका हेरको विकासिको होनेका अनुस्थान विकास स्थार है, म्) कारत है, सुने—देशके अध्येतके है प्रमुखेनर कारवते जैनमा होती है। इस बताओं जन्मी झन्ददियों बनवार निहार सीप जावर प्राथमित करते है। यह क्षेत्र आहे व्यक्तीया कर्मेक अनुस्थ करके की उन्हारको स्थाप कर के है। मित्र केल्फ बाहर और वैनिक उत्तव पूर्व अवक्रमुक Rend & and free over sid \$1 of treat रमकार्य साम रोक्से के-से इस करे. जनमे इप्रशासक कर है, का निवारों है, बोड़ी-बोड़े देखें कारनेकी क्रमा केरी के एक मेळ, मिन्न और और स्तुत्वर दिवाने का बार्य के निवन निवनेने सेंब की पुरा । निया पूरेची कर कार्य हां अल्प्से नेकार करात रुक्ति और वसी हां सन्त्रोक विद्याने देख एक होन्सी प्रीत तुरुवार अस्य-ने पाने विकास पुत्र विद्या है। क्योंकी नामीर मारि, रामवेदीकी क्रेसी असला और मोद्धानीका अनुपूर्ण क्या की करियाने होनेकारी विकास हम सक्ष्म है। हैनके कुछ करो समय पुन्ते हैं हुंबार की धा पानी ओर विचानी देश पता प्रज्ञाताने स्क्रिने पता मनून है, किन्तु सामनेकी और दिखानी केन अवस नहीं है। हेत. स्टेंग, सारक और नेतायान अभी पढ़ी पहलाहरू कृत्य करते हो और सैनिक सरका-राज्या हुने सरस दिवाजी है से वर्षा विकास अस्ता हेस है। विकास हैस राज-राजके कहा, कहा, बारण कहा समाध्योंने अलेकिन है, जिनके सहनेवाले सामानेक बेहरेशर प्रतासकती हातक हो तथा दायनीको विश्वदी कौरको और देखनेका भी साहक म जेता हो, ये निक्रण ही उपने प्रतासेको पराव करते है। मिलोर रेरिया सामीकी रोजाने उत्पक्त रहानेकारे, अवंतारकीत, जायरमें एक-पूरतेका क्षेत्र व्यक्तिकारे तथा सरावास्का पारन करनेवारे हो, अन्त्री हेनेकारी विकास महे पूप तक्षण है। का चेत्राओंके मनको शिव स्वयंकारे

कार, राज जा कृतक जा हो और काम भीतर सैनंबा संभार हे यह हो से हमें निकायक हार सम्बाग वाहिने। यह कौना पुत्रमें जांच करते काम वाहिने भागमें और संबद्ध है सानेके का कामकाने कहा करता हुआ आ जान से हुय है। मीलंबी और होनंसे की का कामकी हिन्दी काम है, जिल्ला कामे होनंबर निकायों काम जानका है। पुनिश्चिर। वाहिनाओं केम इसही कर सेनेके कह की हुई कामे सामानित हम कहारे सीचे कानेबा है जान करता वाहिने। यूक्त का-बाद कानेके कर की विकाय निरात है, वह जान नहीं कामी कामे। यह की अन्यानक मा हैनेकारों है जह होने है—जानका कानेके कोई दिवस नहीं करता।

इसके दिला कही है जाने पान बनाइड यह बाती है से उसे केवान करिन है क्या है। वैसे कृष्टि प्रकृषि प्रकृषि भागोंना कर चर्चा रूपी है, को दश को नेवादी थे केवी है। कार्ने विकले के पारवाल और क्यों न के, कक सोच का के है-कार है किया का कार्य करते हैं। बारि को धार्मक बारम प्रदुष भी भूत है। किंदु कर्क करते अन्तर, अनुबर संभीक कुर्व सम्बद्धार सम्बद्धीर कुर् गाँव-कः के के की माने-वालेक दिवन करते हुआ के से से à papier from 10 mit \$1 man afe fried सम्बद्धाः हे स्वत्यः पुत्र जी देवत पार्वितः प्रकृते कार्यांका समान केला प्रकारिक स्वारोक्त प्रकार को, जानो काम व को के नेव्यंतिक अनुसार जाने पूछ क्रालंको क्रेसिक को, इसमें की सम्बद्धा र निहे हो क्रमीरेक प्रयोग की-का केवर प्रयोग सक्तवारीको काने करनेका जनात करे. का किसी एक युद्ध रोकांने कारतार्थं न हो के अपने पुत्र करन करिये।

कुन्येनका | एक्युक्नेको ही कुन्य करना सत्ता है, कुनेको नहीं । इन्या करने और न करनेका प्रयोकन नताता है, इने कन्यते । नो कना क्युक्नेको की ऐनेको का उनके अन्यत्व हाना कर के हैं, काश्या कह कहार है । एसु भी अन्यति ही नहीं। अन्यते एक्यते हैं। एक्याको नाहिने कि ना पुन्ति ही नहीं। अन्यते एक्यते की किन स्त्रीय किने ही कहाने को, अन्यता निन्दा के को । चुनिहिन | पत्ता करि अन्यत्वकार होता है जो एक प्रान्ती उससो हैन करने एक्यते हैं और कोन्यत हुना को साथ अस्त्री सम्बद्धित करते हैं, इससिन्ने उसे अन्यत्वकारम् पुन्तर काला और कोन्यता होनोरो करते एक्या की असने मीटे क्यान कोने । प्राप्तको अस्त्र भी प्रत्ये क्रमा की असने मीटे क्यान कोने । प्राप्तको अस्त्र भी सुनकार कहे—'ओह ! इस कुतुन्दे मेरे हिरामीकोने जो इसने बीरीको मार प्रश्न है, जा पुत्रो अच्छा नहीं कवा—पुत्रस्ते में प्रशास नहीं है। मैंने वारंकार कहा किया, तो जी इन्होंने के कहानेपर ज्ञान नहीं दिया। उसा ! ने बीर तो किसी कहा मारने-योग्य नहीं थे। इन्होंने संज्ञासने कभी पीके के नहीं इटाने; ऐसे सस्पुल्य इस संसारने कुर्वथ है। मेरे किन वीर्त्यकोने इस सुरविरोक्त कम नित्या है, कर्ना इस्स मेरा कहा असिव कार्य हुआ है।'

सन्दर्भके जने दूर नीरोके सामने इस प्रकार केंद्र 9462 सनके एकारपर्ने जानेपर अपने नदापुर सैनिकोची प्रकार सने । निकोने समुनीरोका का किया हो, जन्मा विकेष | जने और पुरुवासकी सब औरसे एक्ट को ।

सर्वान करें। इसी तरह इसुको पारनेवाले अपने पहाले कैटोमेरे के बावल हैं अववा मारे गये हों, उनकी हरिये रिके दु:क बावत करते हुए किस्स्य करें। उसका हाथ कांक्रकर कैये हैं। ऐसा करनेसे सब सोगोकी सहानुमृति प्राप्त होती है। इस प्रकार के सब अवस्थाओं में साम आहि मैतिकोरे काम देखा है, यह वर्षह राजा सरका दिन होता है, उसकी विस्तिये था। नहीं तहता; सभा अपनी सरका विवास काने समारे हैं। विश्वासका हो कांक्रिय वह इच्छानुसार राष्ट्रका अपनेय कर सम्बद्ध है। अस्तु को पुर्वाकर राज्य चौपना व्यक्त हो, उस समायों काहिये कि सम्बद्ध विश्वास व्यक्त वर्ष और मुख्यासकी सब अवेरते रक्ष को।

## कालकवृक्षीय मुनिका उपदेश—राज्य, खजाना और सेना आदिसे वंचित हुए असहाय राजाका कर्तव्य

मुनिरिरने पूजा—निवासका । यदि तत्त्वा क्रम्बीस्य हो और क्रमीन करते रहनेपर मी क्षण न पर सके, जर अन्यत्वाने प्रवरी क्रमें बाद देने रहने और करतके प्यस्त करतक क्षण होना भी प यह पाप मो सुक्त पाहनेकारी जर राजाको क्षण करता क्षाहिने ?

भीगानीने कार—मुधिद्विश ! शुन्तारे इस असके झारते में राज्यकुमार केमाइनिक इनेकालको कुरावा है, इस इसे कार देकर सुनो : असीन कारताती कार्य है, एक कार कोसरामानकुमार केमाइनिको बड़ी कार्डिन निर्मालक सामक कारामानकुमार केमाइनिको बड़ी कार्डिन निर्मालक सामक कारामानुशीय सुनिको कार्य नाम और अस्के काराको प्रकार कारतानुशीय सुनिको कुरावारा सामेका इसार सुन्ता ।

राज्यार का — जान् । सन्ता वनका कार्यान सम्बद्ध का है। जिल्लू मेरे-नेस पुरुष वास्तार कार्यण करनेपर भी महि ग्राम न पा सके मे उसे क्या कार्या वास्ति ? आकारत कारता, दीनका दिसाना, सूमरोजी सरको जाना कथा इसी तरहके और भी सोटे काम कारत के में बेंगान नहीं, इसके समितिक क्या उसका कारत कारत कार्यों में बेंगान नहीं, इसके समितिक क्या उसका कार्यों कार्यों ? मेरे पास क्या का मेरे सम्बद्धी सम्बद्धित तरह नह से मना। मेरी सम्बद्धी की कार्यों कार्

जनमाँ कुते मुख और सान्ति स्त्रीय है, जनता पुत्रे क्रमेश ऍनिये :

क्षेत्रां राजपुरूष के इस अवश पुरुष र स्वानेकरी वृत्तित करत्ववद्योको उद्दे वो उत्तर दिवा—'राजकुमार ह कुर निवस निवसी प्रमुख्ये देवत मानते हो कि 'यह है' कराबंदे पहलें है समझ को कि भई है। यो बद्धियन ऐसी समझ रकात है, को व्यक्ति-मे-व्यक्ति कार्योग्य प्रद्रोपर भी होच भी होता । यो अनु नहते बहुत को समुख्यके अधिकारमें क क्यों है तका जो एकके कर दूसरेकी होती आजे है; वह क्रम-बर्ग-क्रम तुम्बरी की नहीं क्रे--इस सरकारे आधी तरह राज्य सेनेका किराबों किया क्षेत्री ? विवस्ती उत्पत्ति होती है, प्रमाध नाह भी होता है; जो उत्पन्न हो सुनी है, यह नाह न्तु भी होती हो। क्वेकमें इसनी क्वित नहीं है कि वह उसे व्य क्रेमेरे बच्च से. देखी स्क्रामें जोवा करना व्यर्थ है। सम्बद्धमा ! नक्तओं से सही, सुदारे दिना आज कहाँ है ? तुष्क्रमे विकास अस बाई बले को ? आब हो न तुम उने देखते हो, न चे लुटे देख पाते हैं। यह ज़रीर अभिन्न है, इस बारको तुम की सम्बार्ध हो, बिन क्यों उन लोगोंके दिये क्रेंब करते हो ? वनिक क्युंसरे काम रेकर सोकों हो, इक दिन दुस भी नहीं खोगे। मैं, तुम, तुम्हारे पित्र और सन्—इनमेरे कोई भी स्वनेतात्व नहीं है, एक दिन सकदा अन्य क्षेत्र निक्षेत्र है। अस्य विजयों का चीस और तीस क्लिके हैं, वे एक आनेकारे सी अनेकि पहले ही इस दनिकारे वह कार्यने। ऐसी इसस्ये भी मनुष्य बादि बहुत

बड़ी सम्बन्धि होट न स्त्रों हो हम-ने-बन साही! मनताबर से साथ का है। 'का चीन नेरी की है' हैता सन्त्रकार अन्य कारान से करे। में कह महिन्दी मिलनेक्सी हे, को नहीं करें कि 'का वेरी वहाँ है' कक के बिरम्बर नह हो क्यों हो, अलो निकारों भी बड़ी बाल रहे कि 'का मेरी नहीं को ।' जनका की सबसे जनत है, को केन है और बड़ी हीन रेखा है, ऐसी बाला स्कृतकरे बहुन ही विक्रम् है, जनक ही समुख्योंने एकन है।"

रुकुम्बर्ग का—मैं के चड़े सन्तरक है कि सार कम मुझे करामार से विकास प्राप्त से मन मा और उस महामानी कारते का राज-का-राज कीन शिक्ष है। प्रार्थिको ert tof it ye for tor t, with 4 over Mart-Profe are to \$1

पुरिते पाल-राज्यास्य । प्रतानं राज्याः विद्वार से बानेना गान्य मेली भी वालो मेले पूर और भरिनको रेकर क्रेक जी करता। हुने भी देख है करक कहेरे। क्या तुम केवाल को कार निता पान अपने अने ही आनको। साय का बच्चोंने, बैसा बढ़ते हुई थे 7 अल्ब क्रम्बान्डीने चौत्रत हेनेनर को एक हुन हुन्हु हुएको होनाहा चीत्रहरू कर होते ? पूर्वजन्मी किने हुए कार्नीक कारकार का क्यूकाकी पोश-तासती क्रिय साली है से अपने स्ट्रिके भारम को विकासको कोरले समात है और सक: आह हुए परिनित प्रधानींके को संकोष नहीं होता। संकारके प्रमुख आना होना और सहसारसे भरे होते हैं. बिज तम हो ऐसे नहीं 🛊 ? शहरा। सररोकी प्रत्यति देख हुन्हारे करने ऋह से नहीं प्रेमी ? मोगवर्गको मान्तेवाले क्यांका क्यं और बहुक अपनी राज्याकृति तथा युक्त-वैक्तेसा की सर्व है साल बार है। है। प्रकृति भार पराय दुर्वना है क्यानि पह जानिया है, ऐसा सम्बन्धार साधारण मनन भी प्रतब्द वरिवान कर की है। कांत्र द्वार को समझमार हो, दुनों पालुक है कि औन सम्बन्धे शर्वान और अरिक्ट है, तो भी नहीं वर्त्वने चेन्य विक्कोचो बाहो है और उन्हें पैने अलग केवा देखते हुए होन्ड कर रहे हो। येका 1 इन कम्पनाओं को हो और उस बुद्धियो करनेका प्रया करे, जिल्ली बीचका सन्तर्भ होता है। से एवं असीव सामें अर्थत से से हैं, ने सक-के-सब अनर्थ ही है। कुछ अवस्थित अनर्थकर हो सन्दर्भ । इस पोप- विकास हो विकास घोषा परि है।

पहलेकि के किया है से मोनोका साथ कर वह है जाता है। कारें कोन भोनवरित सरुको अक्षय पानकर करके ही दिन्हें क्या इक्स करते हैं। बिस्ते से महत्व कर-सन्तरियें इस क्ष मा बारे है कि जो जाने बक्कर समाध्य प्राप्त और कुछ कर है भी बात। बिह्न को बहुते क्यान हुआ जन्म का अनेह का चीर नह है कहा है से उनके क्रमानक स्था केला है का करा है। जा समय को पासी केरामा होता है : पूछा ही मनुम्म ऐसे हैं, यो अधना सारामिक कारण बाले हैं और मारोकों हुए कोची हुआसे मीकिक चेन्पेरे मिरक हो वर्गकी हरन रेते हैं। हुक से हेते 🛴 को बचके खोजनें पहचर रूपने अन्यक्त पैदा हैते ै: ने पाने प्रैरण जीवनका कृत्य कोई अरेप है नहीं संस्कृती : क्रमी क्षेत्रक और मुख्या के देखें, भी इस अधिक चीवनके रिनी चोलपा पानों है पहि नालों को है। संस्थात साथ from & obvious area were & after problem are वियोग है--या पालबार की चौत हुआ। अरुपा पा रुवारक ? राज्य । यह समुख बनको क्रोडला है या बन नकुरूको होता है। एक-१-एक दिन देशा अध्यक्त होता ी—इस बारको पाननेपाल और-सा परम है, यो बन्धेः Deb Rese sales 2

यक अन्तरीत मिनके सुन्दारे की सम्बर गड़ी आची है, बूसरोजेर भी पर और निव पह होते हैं—देश पासका अस्ते पर, कर्म और इन्हिलेस कहा रहते—काठाने का १ हुए हो का करते चीवा है, इन्हों-सेर्स मध्यों होय गाँ कार व्यक्ति। हुन्तरी हुन्त बहुत केही है। हुन्तरी पहलाका के को है, इसके इस क्रेसा और क्रेंड एक िक्रमण को क्रोमारी है एक दूप वितेष्ट्रिय और प्रक्रमणी हे; हको-बेल पहल होता को करता। हुने करती भी हाँ और प्राथके विश्वत वृतिका जातन नहीं हेना पाहिले। कराव्या भी जान करना साहिते। में नहीं ही हरिया और कार्य प्रतिनों है, कायर करून हो इसका जातन सेते हैं। हुन को कार-कुरने हैं जैनिका करनो हुए अनेतरे कार्ये नियस्ते रहे । यानीका संयव करके यनको नसमें रखे और रुपूर्व अधिकाँके विरुश्यकार्थ सम काले । सकार बना करें। बेजबे का-मुजेरे है संदूष हेकर कंपसीने सकेते

# कालकवृक्षीय मुनिका कूटनीति बतलाना और क्षेपदर्शिका राजा जनकसे मेल करा देना

मुन्ति का — एक्कुमार ! अन मै तुन्हे एक्कक्षे प्रदिन्हे [ रिये एक नीति बात रहा है, यदि प्रस्के अनुसार कार्य करेने से तुन्हें पुरः महान् राज्य प्राप्त हो सबका है। काम, होया, हर्ग, पन और इस क्षेत्रकर इसुकी भी होना करे, उहके सामने इन्ध अंक्रकर मातक हाकाओं । क्रम्प क्या निवास काबहारसे उसका विश्वास-पता करे । विदेशसम् उनका पहारि कुरारे सह है नकारि पदि तुम उन्हें अराव कर सके से दाने महत-पा का देने; क्योंकि में पालाहित है। बहि ऐसा हरत में हरको बहुत-से सुद्ध हरकातरे, कुर्वस्तरेशे रहित स्था प्रशामि स्थापक विक सर्वते । से वन्त्र प्राथमे अनुवान भाषाम कला क्या अपने पर और इंडियोकी काने एक्स 🛊, मह अपना से बहुत करता है 🗓 प्रमान्धे भी प्रसान कर मेता है। एका करक को चीर और औरसम्बद्ध है, बाद वे कुषाय सत्कार करेने के मध्ये लोग कुथवा किन्द्रक करने रूपेंगे। निम इस रिजोको सेचा इन्बद्धी करना और अची-अची पश्चिमीरी राज्यत् तेना ( इसके कर प्रात्के प्रात्के मिराकर सम्बोध्यक्ता क्रिक्ट करा द्वारात ।

अवना अत्यन्त कृषेत्र ज्ञान बहावों, विन्ते, ओक्ट्रे-विकानेक सुन्दर कर्ता, जन्मे-अन्त्रे वर्तन, अस्तन और समाप्ति, बहुम धन कर्ष कर्ता करवाने हुए महाने, तरह-तरहते रसो, सुनानक पहावों और क्याने क्रमुको अस्तक कर्ता तथा असमें प्रति-प्रतिन्धे बहुओं और विकासिको पालनेका भी सौक पैहा करो; विसासे इन करानोंने अस्तिक बर सर्व करनेके कारण क्रमुकी आर्थिक इस्ति न्छ हो करवा।

वृद्धियानोंके विकास-भागन सनकर इत्कृष्ट राज्यों भ्रमण करों और कुले, ब्रिय्त तथा कौओकी तथा सौकते सुकार विजयर्गका वालन करों।" इत्कृषे इतने को कहें कर्ष प्रारम्भ कराओं विनकत पूरा झेना कहा करिन हो। बेस्त्रमानोंके साथ उसका विशेष करा हो। को-को क्यांके स्वृप्त्रम परंग, विक्षीने तथा फोग-विस्त्रसको उस्म काओं सूर्ण कराकन सारा क्यांना काली करा हो। इत्कृषा कोच श्रीण होने ही या पतार्थ का बाता है। हो सबे दो वैरीको विश्वनिक कार्य किराकार अस्ते हारा रहिताकार्थ सर्वत्त्वा कर करण हो। इससे दुखार क्योरक सिद्ध होगा। फिर विश्वनै केन्द्र-कर्मके हारा पुरस्को मुख्यकर हानुके समझ कुछ देख अस्ते कराको सरका हारीर वीरोग हो तो सिद्ध श्रीवकार प्रयोग कर्मके कराको मरका क्योर वीरोग हो तो सिद्ध श्रीवकार प्रयोग कर्मके कराको मरका क्योर केराके कार सार हो। हो साथ श्रीव की क्यान स्वादा है।

वन्तुन्याने नवा—सहान् । वै साराः और द्रश्यक्तः अस्तवन रोगान पहिला पुन्त नहीं प्राप्ता । सम्बद्धी पुन्ने सहाः वहीं सम्बद्धि विकासी हो, से भी मैं अन्तदी हम्बद्धा नहीं बहरता । इस दुर्गुल्मेका सो दिने प्रमुक्ति हो स्वाप बार विका है, विवदहें विकासिक पुन्नार संबंध न हो और नेती तथा सम्बद्धी प्राप्ता हो । हारसाम्बर्ध कर्तन वालों भूते हार अन्तद्धी जीविश पहिलाही हमा नहीं है । जातः मैं अन्तर्वक आवारण नहीं बार सम्बद्धा और अन्तर्वकों भी ऐसा बननेके दिनो मुझे अस्तेह नहीं हेवा प्राह्मित्रे ।

पृति का—राज्यावा । तुव वंदा वद्यो है, वैसे हैं
पृत्येन वृद्ध भी है । स्वावान है हुए वर्गास्त है और
वृद्धिक हरा तुने बहुत करोका हान है । इसस्मि तुन्दि और
राज्य करकार करकारके स्थि अस मैं सार है यह करोगा ।
सामा तुन केनोपे ऐसा समाज करा हैगा से साधाविक
और विरत्यान हैगा । तृत्यारा जन्म का कुलमें हुआ है, तुप
विद्यार, कान्यु संध्य राज्यांकारकारी करवारे निर्म्म है, हुप
विद्यार, कान्यु संध्य राज्यांकारकारी करवारे निर्म्म है, हुप
विद्यार कान्यु संध्य राज्यांकारकारी करवारे निर्म्म है, स्था है, से विद्यार कार्य है और दूप बहुत बड़ी
विद्यार कार्य है, से भी तुपने हुरताको नहीं अपनाया,
राज्युक कर्यकरे हैं जीवन विद्यार वालो हो । इसलिये क्य
विद्यारम कार्य मेरे आक्ष्यपर आयेगे, इस समय करों जो
कार्य हैगा, उसे ने निसंदेह पूर्ण करेगे :

<sup>&</sup>quot;मैंसे कुले बहुत जाती है, उसे उन्ह प्रमुखी गीत-विकित्तो देखनेके दिन्ने क्यान जारत हो। विस प्रवार हिटा बहुत जीवते होते हैं, बच भी भगवी अपसूत होते हैं भाग करे हैं, उसी उन्ह इर समय सम्बद्धन हो, यब अवनेके पहले ही कहींने विसक्त अब तथा मैंसे कीए मनुष्यकों बेहा देखते छाते हैं, किसोबते हम्य उठते देख दुरंत उद्द करे हैं, इसी प्रवार सह्युकी बेहानर सहा दृष्टि रहें।

हर अधार शाक्तरम वेचन मुनिने करा विदेशको शक्ते मही बुरुवाया और कहा—'राकर् । यह राजकुका उस



र्मकर्षे जनक कुमा है। इसमये जनसङ्ख्यालेसे की मैं परिविक्त Er preut mie befrit wurd mit aft men fo इराकासीर वचनके स्वतः क्यान्त है। 👫 इर उसके इराको परिवा कर हो है, इराके चीतर दुर्जाकाका कर जी है। इसरिन्ने तुम इसके साथ संधि कर सो और मुक्रमर कैस विश्वास करते हो पैसा ही इसकर की करें । कोई की राज्य मनीके विना सैन दिन भी नहीं ब्यायवा जा सबका और पनी क्षुतरित एवं बृद्धिमान् पुरस्को ही कराना काहिने। धर्माना राजाओंके निन्ने जगतुर्थे कार्निक विस्ता इसरा कोई सद्वारा नहीं है। यह राजकुमार महत्त्वा है, इसने सर्युक्तीके मार्गका आतम रिका है। महि तुम समेको साक्षी देवल इसे सम्बद्धांक अध्यक्ष्योंने से का तुकारे सब सहयोंको अपने अबीन का होता। मेरी बाद बानकर तुत्र पुत्र किमे मिना ही हारे वसने कते, नकी बचकर हानके हितरतकारों राजे को । विक्रीको भी का चा बराका सहा की खडी; इसरियो केंद्रे कुल्टोची सम्बद्धि क्रीनका स्वर्थ ध्येतके हो, देशे क्री बुलरोको को अकबी प्राथमि योगनेका अकसर देश काहिये। को प्रतारेका संकार करते हैं, उन्हें अपने संकार क्रेनेका भी का में का का का का है।

मुनिके इस प्रकार व्यक्तियर राजा करकारे राज्या पूर्व क्रमान किया और क्रमार्थ कार्या अनुनेतन करते हुए व्या- जुनेवर । अन्य व्यान् मुखिनान् है, आरमे अनेवर्ते प्राथमिक प्राप्त क्रिक है करते क्षेत्र स्वयं प्राप्तिकार करवान बढ़ते को है; शह: आरबी में आहा है, हते रक्षेत्राम करनेने इस केन्द्रेयी है भरवई है। येरे रिक्षे के के आज़ हुई है, यह कर पूर्व करेना। यह से मेरे पत्न कान्यानको क्या है, इसमें अन्यका विचार करनेकी कोई अवस्थानका है की है।'

स्कृतकार विकास मेरिका के अर्थ के अर्थ का अर्थ के प्राप्त क्रमान बहु-'चन् । की को और गेरिका साम्ब लेकर सम्पूर्ण जनस्था क्रिक्स सारी है। जनर अल्पने अपने चुनोंसे आम चुड़े भी जीत रिन्या ( अत: मैं आपका इत्पक्ते रकारत करका है। जान मेरे का प्रकारें हैं इसके कह क्षेत्रीने चुनिवर्ध भूमा भी और मित साम हो पर गरे। निर्देशने क्षेत्रस्थाको अस्ते पहल्ले हे बासर पाछ, अर्था, अल्याकोच एक मकूर्याने अस्या विभिन्न पूजन किया और उसके साथ अपनी पुरीबंध बंधह कर दिया। क्रेजिने क्या प्रधारके का भी केंद्र किये । वही राजाओंका करन वर्ष है। उन्हें परस्प नेत करके ही क्या कार्यचे।

#### मता, पिता और गुरुकी सेवाका उपदेश, सत्य-असत्यकी पहचान तथा व्यावहारिक वर्णन

पर्यवद फल या सबीया।

कुमिहरने पुत्र—भाषा ! कर्मका सकत कहा कहा है ! भीगाओंने नहा—पुनिश्चित ! मैं से पाता, पिता संशा और इसकी अनेको साकारी है; इनमेरे किस कर्वको अन्य - पुरुवनीकी पुरुवने ही सबसे लेख कर्य सन्दाना है। इसका सबसे प्रवास एवं विहोनकारो जावरकारे स्वनेकोच्य सम्बक्ती । कावन करनेकारक प्रमुख पुरूपकोकोदेश हो विकास पाता ही 🗜 किरमार अनुसार करके में इक्टोबर और परस्थेकों भी 🎉 इस संस्थानें भी जो म्यान् सुनव प्राप्त होता है। भारत, निया और मुरुवन किस बायके रिजे आक्रा है, ब्या वर्षके अनुकृत्य हो या विष्या, उत्तया पाएन काना है पाहिने। कृतरा कोई कार्य करिक अनुकृत हो तो भी उत्तयी आहा न निवानेकर को नहीं कारण पाहिने। जिस कारको निने उत्तयी आहा हो, यह वर्ष हो है; हेसा निक्षण रहाना पाहिने।

माना, विता और युक्त-ने ही नीनों लेखा है, वे ही तीनों असमय है, वे ही तीनों जेद हैं और वे ही बीनों अर्थि है। विका वर्ण्यन अर्थि, पत्था दक्षिणाणि और पुर आह्याचीचारि हैं। स्वैतिक अरियोशे पाना-विवा आदि पूरा व कोणे के हुए बीचों स्वेतिक है। इन तीनोंकी सेवाचे और पूरा व कोणे के हुए बीचों स्वेतिकों और लोगे। विभावी सेवाचे का च्यावकों, मानावी सेवासे परावेताकों और पूजारे सेवाचे का च्यावकों कर साओंचे; इसरियो तुम इनके साथ वाह अर्था कार्या कर्या । हैसा करनेसे हुन्हें उत्तम वाह, पत्स आव्याक और पहन्तु पत्स हैसाले कर्यकों आदि होती।

इन सीनोकी आद्रावा साथी साराहर न करे। इनकी भीजन अराहेके पहले कर्म केवल न करे, इनका कोई होगारोकन न करे और उस्त इक्की संकले इंग्लंड को—अही स्वारं इसन पुन्य है। इस्तिके सांकरवारे हुन बर्टिंड, वरिता कक्क समा उसने जानो सन्दर्भ जनस्वा अवका कर विका और किसी उसने जानो सन्दर्भ जनस्वा अवका कर विका और किसी है। विकान इन सीनो पुक्तनोका सन्वान भी विका, हमते दिन न कर लेक है न परानेका। न इस कोकाने का विकास है न करनोकने सुन्य। मैं तो सब सराके हमकानोका अनुदान करके इस गुरुवानोको है अर्थन कर केव कर इसके इन करवेका पुन्य की मुक्त और इकारकुर का कका है तका इसका पहला है कि आज मैंनी लेका मेरी दुनिके सन्दर्भ है।

द्वा श्रीवियोधे सहवार है आकर्ष (कुलवृत का बैदावृत) देश आवारोंसे कहा है जगकाय (विकानृत)। इस ग्रामायोसे अधिक प्रकृत रहता है विवा और क्षा विकारोंसे भी अधिक परित है करकाय : कार को सारी पृष्ठांसे की सहवार है। उसके समान गोरक किसीका नहीं है। कार केर विवास ऐसा है कि गुरु (आवार्ष) का वर्ष क्षा क्षा विकार की विवास ऐसा है कि गुरु (आवार्ष) का वर्ष स्था क्षा की है, विज्ञ अस्तानकार अवेदा देनेकार आवार्ष क्षा को क्षा आस केस है, जा दिन्त है, अवार-अवार है। च्या-विका पहि कोई अवस्थ को से परिकार कार्य हम नहीं केरान चाहिये। जो सोग विका पड़का कुरुका अवहर नहीं करहे, विकार खते हर भी मन, बाजी अवक क्रिकारे कुम्बी रोक नहीं करों, उन्हें नर्पत्त वालकार्य प्रमान्य क्या लगता है। क्षरकार्थ अनके कार्यका पानी कारण कोई है ही नहीं। कैसे पुरामोका कर्मक है जिल्होंको आक्रोत्रानिके प्रकार पहुँचारा, जर्व प्रधार विकास धर्म है—नुकलेकी सेक करना । बनुक विक क्षांने दिलको जल्म करता है, उसके बरा प्रवासीत स्थानकी की जारता होते हैं तुम्बा जिस कर्ताकरे का माताको जसक का लेखा है, अलंद क्षारा सम्पूर्ण पुश्चिकी पूजा हो आती है। परंतु निवा प्रवासाओं दिल्ला अपने प्रवासे प्रसार कर लेखा है, अस्तेह क्रम परवाद परवादको एक समय होती है; इस्तीको सुद्ध पाक-रिकाफ़े भी सहस्रत पूर्व है। गुरुशोधी पूराक़े देखा, व्यक्ति और विवारीओं भी जारकता क्षेत्री है, इसरिव्ये गुरु परव पुजर्वन है : पास, विका और गुरु मधी भी अवसाओं सेन्स नहीं हैं, करने, किसी भी बार्कारी विश्व नहीं बार में प्रतिये । पुरुवन्तिक ही सरकारको देवका और बहुविं जीकार करते हैं। के लेन करने अथवा दिल्कों हुए हराबाय, विशे और कारी होई करते हैं एक को दिन-पतानेई प्रयु अपन कारन-केवल कराका को क्षेत्रिय उनका पारत-केवल शर्मी करते अने पर्यक्रमानक पान सराता है। करातने अन्ते प्रकार कोई क्यो भी है। निकोड़ी, कुम्बा, कीव्यवस और गुरुवा का करनेकार हा कर प्रकारक वर्डिनोका दक्का करनेके रिल्में इसने कोई जलबिएत को सुन्य है। जल: माना दिया और क्रमी केम है बरुक्त रिने क्रमी यह वर्ष है, यह कारकारका साधार है; इससे कहतर कोई कार्य नहीं है

पृथिकिन पूरा-स्थारत । जो प्रमुख वर्गके लागेंगे विश्वत काम प्रमुख हो जो केला करांच करना चारिके ? स्था और अक्टबर्क प्रमुख क्या है ? काम काम कोएन्स चाहिके और काम कामक ? साम कर्मका क्या एक्टबर है ?

गंगानि वक्-रावर् ! साथ वीशया है एवस है, सामसे व्याप्त पूर्ण भी नहीं है । गर्गर संस्ताके सनुष्य साम-असरावको तीय-दीव्य सामझ वहीं पति, इसस्ति वहीं वस्त रहा है , वहीं असरावक गरियाम काम और सावका परिवास असराव होता है वहाँ साथ म केरवान असराव ही केरवान असित है । ऐसे अवसरपा यो साम केरवान असराव ही केरवान असित है । ऐसे अवसरपा यो साम केरवान है, वह पूर्व पाट सामा है । असः परिवासके हुए। साम-असरावका निवास करके जो साम केरवान है, वहीं मर्पत्र है । यो असराव है, विस्तावी मुद्दि पूद्ध नहीं जो असराव करतेर सामका है, वह मनुष्य भी कामी असे प्रदूष्ण मास करनेरा है ।" अभिन्देके मानुस्य और कामानके रिन्ने है कांची मानवा ( समय, विवाहोंद्र क्षमास्यर और वार सवा दूसरोहेंद्र वार्वदी की गर्ज है, जिससे इस जोइककी सिटिंह होती है, बही कर्न है। वर्गका नय 'कर्प' इस्तरिये पक्ष है कि का काओ करन करण है—अधोगतियें करेशे बच्चा और जीवनकी राज करण के बनेरे ही सन्दर्भ प्रका जीवन करण कर की के कतः विस करीरे प्राधिनोचे चौनन्त्री यह है, यह वर्ग है--देश निक्षण रक्ता पार्थिते । जीवोच्यी हिला न हो, इसके रिने हे वर्गक करेड़ किया गया है, उस्त को करें महिराले एक हो, वही वर्ग है।

वरि कोर किसी करीका कर सुटनेकी हकाने सकता पता पूर्वत हो और न बातनेहों वह ब्लीबर बच्चन हो बच्च हे से एक भी रहा भी देन प्रतिने । विश्व और पाँ कारनेवर कोरोंके राजने संबंध होता हो और हारके विश्वे मुक्त-प-पुक्र महत्त्व आवश्यक हो साथ शक्ष प्रमध् प्रश्नेती मी परिनोदे कुम्मी पुरुषात निर्मात है है वह सम्बद्ध अनेश्वा अस्तर बोरम्य है अच्छा है। ऐसे सम्तरके सन्दे मानवारीने बढ़े विकार किया है। अन्ये कीट को परियोको वर नहीं देश पाहिने; क्लेकि प्रधानकोची हिंदा हुआ भार कृताको ही पहले जलता है। यो वर्णकरको अपने अर्थन करके-जाते कारित्य केवा करकर कर बहुत करन पहल है, उसके इनेको है वह स्थान बारनेके रिक्ते पनि प्राप्त होन्डोको स्थलको हेवी को और में राज्य करने जेना तता कारके किया से के में प्रथा-के-पान विकासको होने हैं। विज्ञ प्रमानकोई जनकार पारे :

रक्षके रिने जानस्थान पर्करर जसल जेता या सकत है। कोई मेक पर्यूक की कोई सुरावेकी कार्वसिक्तिको उन्हरू-से वर्गेंद्र मिन्ने पीका प्रतिनो अपने तो उसे देनेकी प्रतिका करके अवस्य है कर देख काहिये। को कोई पहल शार्मिक अध्यानो प्रष्टु हो पानकावित जातान हो, हरी श्रवहन क्या देश व्यक्ति । यो पुर वर्गनार्गते इत्यार साह सासुरी प्रवृत्तिने रूप चुरा है और वर्ष अपन्यर पारते जीविका चराना ब्रह्म 🐧 वर्ग करते करानको 💉 एक शाको अर क्रमन्द्र व्यक्तिः क्लीक क्रमी प्रतिक्रीका क्री सिवाल क्रेस है कि केरे भी से क्यान संख्य करना कार्रावे। ऐसे स्रोग क्रातेको अस्ता कर हो है। क्रान-क्रात्यो पन्तियो है निवास करते है। उन्हें न देशलेक प्रश्न होता है न क्यून्यकेक । प्रेरोकी को गाँउ होती है, बही रूपकी की होती है। को का न करते हैं, हरकार्य हर रहते हैं, ऐसे करकेक का इस कारि र कार ।

व्यक्तिक के नहीं निवास होता है कि वर्ग कोई चीव न्हीं है। ऐसे स्वेपीयों जो पार करते, को पाप नहीं समाता। क्रमणे क्षेत्रिक क्रमणेयारे प्रमुख ब्रीड् और विद्वीरे समान केने हैं। परनेके बाद के अनी क्रेडीन्सेने क्षण होते हैं। को अनुधा विकास साथ बीता बार्जन करें, जब भी करके राज्य पैरा ही कर्मन करे-पात वर्ग (पात) है। कारोंद्र सार कार और कारातिके प्रथ सकारक

#### दु:खोंसे भुटनेका उपाय और यनुष्यके खमावकी पहचानके रिव्ये व्याह तथा सियारकी कथा

पुणितिने कहा-विकास । सामुक्ते सीम विका-निक्त पानोको होना जना प्रधानके बाव करा के हैं. कार जिस कारको हार। इन दु:सोसे हरकाय हो सके, को कारनेकी क्रम कीविने।

पोपानी कर-एकर । यो दिव अपने करको करने करके सामोक पार्च जाकरोंने को इर रुखे अनुसार रीय-रीक कर्मन करने हैं, ने दु:सोके कर हो जाते हैं। जो क्य नहीं करते. विनको गीविका निर्माण है, के विपर्वेकी ओर काती हाँ उच्चाको केवते हैं, शूलांके कारावान सुनका भी उन्हें कार नहीं हेहे. यह कुछार भी किसीको पहले नहीं, रूप को है पर कारोंसे परिश्वे नहीं, अदिक्रियोक्ट सक आक्रम देते हैं. कपी विज्ञीको निष्य नहीं करते, निज

विकार्तिक प्रवासक करते 🗓 वर्गको बारते 🗓 पाल-मिलाबी सेवाये लगे यहाँ है हवा दिनमें होते नहीं, वे श्राप्तिके सरकारत का कार्र है।

को कर, काली और कार्यने कार्य पार नहीं करते, किसी ची जीवको बाह नहीं पहुँचारो, एका होवल लोचका प्रकारत कर नहीं हैते और देखकों सक ओरसे रक्षा करते हैं, उन्हें कथी क्ष नहीं उद्यान पहला। जो अपनी ही जीके साथ वर्षान्त्रास सम्बन्ध करते हैं क्या को चुक्तों मृत्युका पान क्रोडकर कर्पर्यंक विकास पान्ड प्राप्तुते हैं, वे दः सीते पान हो करते हैं। सी लेन प्राप जानेके अवसर आनेपर की बाद की बोहरते, उनकर सम्पर्न क्रिकेच विकास केट है और वे क्यी हन्स नहीं क्टारे । विकंड शुरुवार्ग दिशाओड़ रिको नहीं होते, को सहा

मेरि क्यान घोराते हैं, विकास का व्यक्ति प्रस्तानें स्वयत है, से दूसर विवित्तिये भी पार हो जाते हैं। जो राजवानें सने द्वारे हैं, व्यवस्थानें हो प्रहानकीय पारान करते हैं और केंद्र, विकास प्रव्य प्रस्ति विकास प्रति विकास होते हैं, विकास प्रवास हो माने हैं, विकास प्रवास हो माने हैं, विकास प्रवास प्रवास प्रति प्रति प्रति क्षित्र हैं, विकास प्रवास है, वे क्षित्र की-वार्टिज विवासिक्त भी पार हो कार्य हैं।

पराची सम्पन्नि देशस्था किनके पाने पाना नहीं होती, यो सहका है और साम विका-चेन्स्रेसे हर यूर्व है, को हत केम्बर्गायो प्रमान करो एक सर वर्गीयो करो है, किसे क्षा और व्यक्ति निकार है, यो कर्त कार की पढ़ते और बारोबा आहा वाले हैं, विन्हें अभी होनको हैन हेरेकी क्रिक है, को कुरनेका की ओब बाब कर की है और ककी बिसीयर चोप गाँ करों, वे सब उच्छाने १: होने पर हे करे है। को क्यानारको है यह जार और मीरावर होका जाँ बारी, को प्राप्तके मेले की बोक्कडी दक्तके मिले बोबल बारते हैं, विकार-कारणांकी श्रीतुक्ते क्रिके नहीं संस्थानकी प्रकारते रिकुर्गी अपूर्व होते हैं, जो साल पाट सालगेंद्र रिल्वे क्षे बोकांत्रे हैं और प्राप्तां प्राप्तिकेंद्र असेव्य प्राप्ताः प्राप्तानानी प्रीप बारों है, में कुतर कुनोंने भी यह हो मने हैं। यहप्यकर्त करण नेर्नेकारे करा दृ:सोरी कुछ है करे हैं-हरने स्वेत्रोह रिले फेल्क्स नहीं है। और से सक, यह प्रत्यू (अन्यान) मी g कोले प्रारोकारक है, को लोग हुने बढ़ों का स्थानकेले पुरूते कुले हैं, से कुश्मेर कर जाते हैं। इस प्रस्तर नहीं उद्योगी मन्त्रोंके हैंको यह वर्णना सहस्य गया है, विरक्षों से इस स्केकने और परलेकों भी विपरिष्ठं सम्बन्धे पुरस्कार या आहे हैं।

वृष्णियों पूर्ण—नाम । स्थानने सकोर प्रायमकारी समूख कारती नोपता और प्राप्त को गुते हैं उस्त कोचल सम्बद्धारों कोण करोर विकाली की हैं ऐसे समूखांकी विकालीय सम्बद्धार किसे के ?

चैनाकी कहा—वृतिहिए | इस किनाने इस पुरान इतिहास, जो नाम और सिमारके संमारके कानों हैं, तुन्हें हुन या है, सुने—कृतंबसमाधि कार है, पुरिचा जनकी इस करते की, भी जबूर कर-नामसे सम्बार की। उसने पीरिक जनका एक तथा प्रमा करता का। यह कहा है हुए और नीम का। स्वा दूसरे आणिनोकी हिसाने कना रहता का। बीर-बीरे कानके आनु सम्बार हुई। नरनेके जार अपने पूर्व कानोंक कारका असका सिमारकी केनिये कम हुआ। किन्तु उसे पूर्वजनका की स्वरण कमा रहा, इसलिये तस असम कोनिये पूर्व वैश्वमकी कह

तानेके रित्याच्यों गए चेद और वैराण हुना। सब उसने वेकोची हिंदा करने होत् हैं, हम बोलनेका नियम रिता और बंद सबने जनका हुन्यपूर्णय पारण करने रणा। हैर-राज्ये एक कर निर्देश समयका बोलन करता और बंद की बेहोने अपने-आव निर्दे हुए कालेका। सारो एनसार-पुनि-ये ही क्या कार दिन्य; क्योंकि बंदी जावा क्या हुआ का। सम्बद्धिके बोहो किसी हारे समया अध्य कर की नका था।

विकासका हुए कहा चरित्र मानवार-विकासके खुना प्रसंके वार्ध-न्यानेको अन्तार न स्था, उनके हैंग्ये व्या करहाइनके व्यानकी कार के सभी । इस्तियो में देंग्य और विश्वपानी नार्ते कुण्यान सम्यो मुद्धियो प्रसर्वनात्र प्रस्ते स्था । इस्ति व्यान-सुनिते ह्यात 'वार्ड विकास ! कु कांग्यानी सीच है और स्थानन-सुनिते ह्यात है, वितर को परिवा अस्थान-विकास हमा प्रमुख है, व्या देंग्य साथी सम्यानक परिवास है। केंग्य । इस्तरे ही स्थापन होग्या हत् हो किये कोचल इस्तिया हमानवा हमा विका स्थाप। देंग्य इतियासका साथेन होग्यान हमानवा हमा विका स्थाप। देंग्ये स्थापन को सम्यो कोचल हम है, वही हैए की होगा साहिते।

जन्मी देशों कर पुरस्त विकार सामका है गया और केंद्र कर पुरित्य क्याने हो सम्बाद हुन पेता-'क्युओ । अले को व्यवहारिक हो कारण हमारी सामिका कोई विश्वास नहीं करता, अन्ते क्षण्यक और आसरको है। करनारी प्रतिक्व होती है, जातः मैं भी बाहे बाने करना बहुता है. विकास अपने बंधका पक्त करें। बहें मेर निवास प्रवास-चुरिनों है, को इसके दिनों में को समायत देता है, उसकी क्षे-अक्ष (क्षेत्र) क्याका क्षेत्रा है कार्ने कारण है. देशी बात औं है, कोई भी पुरस्कर्त सरकारों उस्माने हैं होता है। अस्तरको स्वयन हो पनि ओई कीची हरक करे से क्या औ का की लोक ? अकत असलो अलग प्रवास आहे. क्यांने है और कोई मेहल को है कर का कर्त है कारक ? अली पुरूष नहीं होना ? इसलोगोब्डी पीतिका अरोकेको पूर्ण, निकारिय, वर्णको प्रतिके कारण दक्ति एका हार रहेक और पराकेकर अधिक पहल हेनेकारों है, इस्स्थित है को पर्यंद नहीं करता।'

विकारके इस आकार-विकारकी कर्या वार्त और पैसर गर्ने । व्यानक इस काराने सर्व आगत आवा विहेन संबंध विका और उसे कुद क्या वृद्धिकर समझकर अवन्त प्रतिस्थ स्वीवान करनेके दिनो असने प्राचीन की ।

न्यम बंदर-संध्या ! मैं हुन्को सरकारो परिविद हूँ तुम वेरे सम्य कारकार रहे और मनमाने परेग धीनवा। एक बात तुन्हें सुवित कर देते हैं, इसार्व कारका समाव करोर होता है—यह दुनिया बानती है। यह दून बहेगाया-पूर्वक व्यवहर करते हुए मेरे दिल-स्थापने राने खोने हो दुन्परा भी चार होगा।

विकाल कहा--- कुलावा ! आपने मेरे हिंदी को बाद कहा है. यह सर्वक आपके योग है एक आप को वर्ग और अर्थ-स्थाने पुरस्त को बाद स्थानको सहस्य के से है—यह भी जीना है है। यहांचार है इसके रियो स्थानही व्यक्ति कि विकास अवके और समुख्य है, विन्हें नेतिहरू क्षम हो, जो संनि करानेने प्रकार, विकासीकराने, क्षेत्रकारित, सुविकार, दिनेसे क्षा अपूर प्रकारत से-केर्र मनीवनोको सङ्गानक करावार मिला और पुरुद्धे सम्बन्ध प्रस्ता असर करें। अस की देनों को सुनिवारों हे को हैं, जनके सुने इच्या नहीं है। में कुछ, जीन तथा करते शासारका है सर्वाते वर्षी करून । सरकंद कुछ सैकारेंद्रेर साथ वेद सरका औ मही विलेखा। में हुए अवृतिके चीच है, अववारे की विल्हा भागमाना करेंगे । अध्येत जारर जान हुवस है अर्थः उपको मेरे अर्थन होत्रा एक अच्छा की करून होता। इस वेड were of the Person & 4 selector of unbased Bris भी करत । कुलकारी मात सेमार 🐌 के सामा भागों कर की होता। जुल्में करको कहा की उत्तरक है। में कर्त कुरानों है और प्रसंद कर्त सरकारको साथ कर wert fie fierfeit des apreir ib igt fireget per भी है। कामपार्थिय करने विकास सुन्न है। वेरे-वेर्ड mentieber aben annftreibe afr feite der fin एक साथ बेरावर्ड करी जिल्ला हो और कृत्ये कन्द्र पत केंग्रास साहित अस जार केंग्रा के—इन केनेको परि मिक्त करते देशन है से कूछे कई है दूस कर कहा है, मार्थि कोई कर नहीं है। एकादे कहा सहोते कहा पर-ही-कह है। प्रकारकारिके विकार स्थेन कुरलेक सन्तर्थ कुर कुठे कर्मकाके कारण कवाके क्रमते को को के हैं, उसने को अस्तानेक कारण भूति। मृत्याच्या । महि गुप्तते वर्णकाव्या कर्न कि है है से मैं अलो एक को बाल बहुत है. अभिने अपूरार अपनो मेरे साम नार्यंद करना प्रोप्त । 'वेरे असरीय व्यक्तियोगा जान कावत को, कावी क्षेत्रकारिक मते हुनै। मैं सामके कृते महिन्दोंके साम कृती परावर्त में क्रांस ( एक्टर्स हैन्द्र आने अर अरेक है निर्मुगा और अपने दिल्ली को काक करेना। अन की सको नारि-ध्यानीके काचेने सुन्ते विवर्वकार्ध कर व पुरिनेता। युक्तो प्रत्यह कारेके सम परि सम्बंद स्कृतेके मीरवीची का भी सामित हो हो को उन्हें सरकार न वैक्तिक । उस्य क्यो क्षीकों सावद वेरे आसीव क्रवेदर भी जाद न क्षीकोच ('

पेनने 'ऐसा है हैना' महाका निवारका यह अगर किया। निवारने के अलाह गयी होना कीवान कर निवा। किर के अलाह का कान्य-सामार होने हरता। अलेख कार्य अलाह के राजी। यह उस ऐस-पुनका कार्य अलाह और नारी कर-पुर को। सब अलो से साथ है। कार्य राजे। उनके वाले हुएका नहीं थे, हसरियों के हुंड कीवान कांगल निवारके करा आहे और अलाह निवार कार्य हुए अलाह कार्य है। निवारक अलो है स्थान केवी कार्यका कार्यका कार्य है। निवारका अलो हम स्थान कर्य कार्यका कार्यका कर्य है। निवारका कार्य कार्यका करा नहीं कार्यका कर्यका कर्य है। किंदु जान कर्यको कार्य भी श्रीवर्ध कार्य कर्यका कर्य है। किंदु जान कर्यको कार्य की श्रीवर्ध कार्य कर्यका कर्य है। किंदु जान कर्यको कार्य की श्रीवर्ध कार्य कर्य करा करा है। कार्यका करायों हो। हे कार्य है हिल्का की किर कार्य, इस्तरियं कार्य-क्यांकी आहोंने की पुरवर्थ और कार्य-साथ करायों केवा होना है।

वारत निरम्भ वहा कृतिकार था, यह उससे वास्तरेने कृति आवा—जाने केने नहीं सोड़ा : यह यह जीवारोने समझा गांधा करनेको स्वाम सबसी और ताम निरम्धा इसके दिनों को पांसा करने ताने : एक दिन उन्होंने, सेनके सार्थके दिनों को पांसा कैवार करने रका नाम था, जो अनके सार्थके पूरा निरम्भ और निरमान्त्री जोगों के पांचार रका निर्मा । निरमाने सार्थी पांचा उन्हों साम्य सेनके पांचे के सहार निरम्भ था थि 'उन्हा पाँचे हुए पुत्रके निरम्भ कार्य ।'

रिवार ही जांस से क्या का से अल्पे अल्प्से कर करानेकी अरहण से से ।

हेरको पह बार कर अस्त्री पाराची पर्यूप हुई से पह विरामारी प्रकारित को सन्त्रापिक दिन्ने आनी और सकते क्षणी—'बेटा । इसमें कुछ सम्प्रपूर्ण स्थानन हुन्य सन स्थान है। दुनो इसकर विश्वास नहीं करना चाहिने । कारने स्थान-और है जानेरी विश्वके नामों पान होता है से निर्हेणकों ही होनी समाते है। विक्रिक्त अपनेथे केले अपनाने नेपाल अपना कोगोंको ईस्टों हो जन्म करती है, ने उसकी उसते नहीं पह कवारे । कोई विकास ही फाइ क्यों २ हो, असर भी केर राज्य ही होते हैं। स्टेब्ट्रे प्रज व्यवस्थान स्टिन्टेसे और जातनी सर्वाक्योंने हेंग करते हैं। इसी उत्पार क्यांक्षेत्र परिवार्तने, दृष्टि परियोते, क्याँ धर्मान्यओते और कृत्य सम्प्रमाने क्रम एक्से हैं। विद्वानीयें की विकास ही देशे अधिकेशी, कोनी और कार्या होते हैं, यह यूक्तातिक सर्वत गुरंह स्वारंकाते रिस्टेंग व्यक्तियों की बोच रिकारण करते हैं। एक बोर के पत बरमें सुरकार था, का करन तुन्करे संकाध केरी हुई है, कुररी और इस करित हैता है, को केरेनर की बांस कही रेस्क कारता—पर केमी करोपर अच्छी एक विद्युत करे । संस्थाने बात-में कराना प्राची संख्या कर और राज्य कारानाये सरह देशों बारी हैं, इस उच्चार करने अनेको जान बुहिनोचर होते है, जार: प्रस्को परिवा कर रेजी प्रतित है। जानाए क्लिके क्याहिक स्थान और मुख्य अधिक स्थान विकास के हैं। विकृत के अध्यक्ति प्रकृति है और व प्राप्ति असा से है. हरतीओं सामने दिवानी हैते हां कहाती के चीप चार्च पारिये। यो योगने-सारोधे यह दिली कियारे अन्य विभाग अवस् परात है, औ पीते पालाम नहीं केंग । प्राणके हैले दिलीको नत्य कुलक स्टीन स्टंग नहीं है, नगर कुले कानी बद्धां नहीं हेती। एकियलमें पुरस्ते नहें क्या है से befreit meine uit mat fr. mit benner wer bem fin बेदा । सोबो तो, दूसने कर्न ही निकासके सम्बोधि कारणार निकास है और तुमारे सामगोने के प्रस्ती स्वापि का पनी है। देख पुरस क्यी यह पुरिवालो निरस्त है, यह सुप्रस बड़ा दिनेची है; इस्तरियों हुनों इसकी बड़ा करनी पादिये । जो दसरोहे विश्व कर्मक सम्बोध निर्मेशको में अगरावी मानक एक हेता है, यह एक क्षा मीनवेंद्रे कर क्षेत्रे कारण प्रीत है और के पुराने पहला है है

केरबी पास इस प्रधार अनेहर है है को बी कि पा

अले । हेरने अली को सुर्वे और का विक्रम है क्या कि | चतुरस्कृति जीवनों एक वर्णना नहीं। अपने हैरने कर 2040 । यह विकासका कासूत का। उतने, किस प्रकार यह कार्यकेल को नवे थे. अलाह प्रकारोह का विक । इससे केरको विकासकी प्रकृतिकालक पता करा गया और उसने क्योदा सम्बद्ध करके उसके इस अधियोगने गुरू कर दिया क्या अलग नेतरे साथ को सांस्था परेसे राजा । 🙏

क्रिक्ट मेरिक्टक्क प्रकास, असे केली आहा रेक्ट अन्यास करके प्राप्त कान केनेवर विनाद विकास विरोध । वीरने करे इस कार्यके केवा और प्रत्या पारे और असर-सरकर किया । का प्रमुप चेवके प्राप्त कामा किया विकास है की भी। कोनक्रमो का अन्यक देश विकास भी पार पर अस्य और को औ अनाम करके पहला-कामने मेरल---'रामन् 1 चुन्हें को सामने चुने क्रमान केम्प और बैक्के अरम्बनिक कर हिन्द, प्रमुखी-की रिम्मीनो पहेला हिन्द । तथा में अरकोर पार्क कुर्वक कोना नहीं है। को अनने बढ़ते हुएने नने हो, सम्बर्धक स्थानको नोको निरम क्रिके एको हो, विकासक सर्वतंत्र होना विकास स्था। हो, को करंत, सोची, होनी और अपनेच हो, निन्दें केनेने क्षात नंदा है, विशवह कर गृह्य पर्या है तक विन्हें हुन दिना क्या हो — ऐसे सेक्स सहस्रोक्त काल दिया करते हैं। अलबी परीक्षा रेक्स केना सम्बाद्धा यहे मनीके आस्तरर विकास क और फिर काली की भूई अधिकाको केंद्रकार मेरा अस्तावन विकास है । देशी दक्षाने अन्य स्थानका सुक्रामा निकास नहीं चीना और मैं भी आवश्य विकास न होतेने बोलने पहा चीना। जान मुक्ता सीत कोचे और मैं एक अपनी क्रांत रहेन । इसर, कारोद केन देवनेवाले आर्थ्य प्रमानेन केंग्रा है हैं, इनका पालों क्रीना भी केंद्र पढ़ि है क्या हुई संपूर्व रहता भी की हिले नक स्थीन है। जेनक क्या का एक सर क्र करते हैं से जाना पूछन पुरिवार हे बाता है और में बूक हुआ हेता है का को करिकारी बात है। किन्तु को कारण कारा और नुस्ता सुन्त है, जाने सेंद्र नहीं होता । राजाओपत किर पहल हेट है, उसे देने हुनेन महिनो कुळान कह पहिन है। सैक्स्प्रेने कोई एक ही देश जिल्ला है, को एक गरहारे स्वर्का हे और विस्तिपत भी होता न करता हो।'

क्रा प्रकार की, अर्थ, क्षान तथा पुरेश्मेंहे पूछ सामान्यूर्ण क्या पहलूर निरक्तने बेरको प्रसार किया और बिट राज पाने पान पान । भ्यः बह्य नृद्धिकर् छा, प्रतरिने क्षेत्रकी अनुस्थानीकात न स्थापक पृत्युवर्णन निराह्यर सुनेपक्ष ता है का स्थानन की पता और अन्तर्में प्रहेर स्थानकर प्राचित्रकों सा ग्रीस ।

## शक्तिशाली अञ्चले सामने नम्र होने और मूर्खकी बातोंको अनसुनी करनेका उपदेश तथा राजा और राजसेक्कोंके गुणोंका वर्णन

पाकर की बाँद सेना-सम्बन्ध आहे. साधनीते रहित हो हो बह अपनेते बरूपे सर्ववा वर्ष-वर्षे दूर क्यूके सामने केले दिख सम्बद्धाः है 7

भीनाओं क्या-इस विकास समूह और महिनोके संबद्धार प्रचीन प्रीकृतका सञ्जल दिन कर है। एक रूपन्यी यस है, सरिवाओंके साथी समुद्रने सरिवाओंके अपने मनका एक संख्र इस उत्पार पूरा—'वर्रको ! वै देशना है, कर तुपलोगोंने बाद साती है तो को-को दसीको



🖦 पुर और प्रतिकोसील क्याप्यार कृत अपने प्रमाहने बहा लाते हो, जिल्लू इतमें बेलबा कोई के की जिल्ला वेता । बेतवा प्रगीर से महिके बचनर—बहुद परस्य होना है, असमें कुछ का भी नहीं होता और यह तुम्हरे सास विज्ञानिक वधवा है: फिर भी हम उसे न स्थ सब्दों । क्या कारण है ? को कमकोर संपन्नकर उपेक्षा तो नहीं कर देवीं ? उपका इसने हुमलोगीका कुछ उनकर से नहीं किया है ? क्यों केलन देश सुकरा नट कोइकर नहीं आता ? इस विकास में हुम सब खेपीका विचार जनक सहात है।'

का सुनकर पहाजीने वृद्धिन्त, अर्थपूर्व तथा दिस्ते |

पुणितिले पुरा-मारालेख । एका एक पुर्णम एकाको । बैठनेकाली सात काही—'राध । हे इक्ष कामे स्थानवर अञ्चलकर पंछ्ये रहते हैं, इसले अवल अवस्थि सामने सिर नहीं सुन्ताते, इस प्रतिकृत नर्तानके कारण है उन्हें अपना स्थान सोक्ष्य प्रमुख है। सिंगू केंद्र नार्वक वेगाओं वेशायत 🌉 कवा है, व्या सम्बद्धे अनुसार बर्ताच करना बागता है, सब पूजरे अनीन पूजा है, अन्यकृतर पादा नहीं होता; अतः अपने अनुकृत अध्यात्मके कारण भारतो स्वार क्रोक्कर न्हीं नहीं साथ पहला। में पैदे, कुछ मा तथा-गुरूप आदि इन्द्र और क्योंके नेकी हुक बाते तथा के पूरान होनेपर किन व्यक्ते हैं, क्रम्बर कभी विस्ताहर नहीं होता।"

> क्षेत्रको काले हैं—युधिक्रित ! इसी जासार को क्या करने को को पन जिल्हा करने एका सहस वाले केवाने जिन प्रकारत नहीं कह रोगा, वह सीम ही न्या हो पाला है। को सुदिवान अधने एका प्रत्येत सार. करात, का और पराक्रमको कारका आके अनुसार प्रतीव कार है, जानों कभी प्रत्यक भी होते। अंदः यह क्युको कान्ये अपनेते बहुत कहा हुआ समझे हो सिद्धान् पुरुषको केरणी वस्तु पत्र हो कामा पाहिले। पाहि gligenbat femm fic

> कुष्मिले पूज—स्वातः। धीः, कोई युध सूर्व क्यून का बीची इस्कोंने करी समानेंद्र बीच किसी विद्वार पुरुषके निष्य को से विक्रम्यो असके साथ कैसा पर्सव करण कारिये ?

> चनवी वय-केट । से निन्द करनेक्रतेके उत्पर तरेन भी करत, या अस्ट पुरुषको से सेता और असी कर के इस्तत है। इस्तीके क्यू करन केस्टोनारेको आतुर रूपकर रूपनी रहेक का देवे साहिते। स्त्र वहाँ से कर्मा करके अपनी सरीक करते हुए सहा बड़ी कहता है कि 'मैंने अनुक चले आदमीको को सध्यमें ऐसी-ऐसी वर्जे सुनामी कि का सामग्रे शह गया, इसका मेह सुना गया और क्षा का का हमान्सा हो रहा है।' इस प्रकार निवृत्तीय कर्मका अलेखा करके का अपनी जानमा करता है और वनिक भी समाज नहीं है। ऐसे नीच प्रश्नको कान्त्रंच जेक करने वादिने। यूर्त पराय को कह भी का है, विकारको का राज रहा रोजा काहिये। वैसे संगतनी स्टीजा व्यर्थ है कॉन-कॉन किया करता है, उसी तरह पूर्व पन्छ

भी अकारण ही निका करता है और अपने अनुनिक जानरण एवं बेह्नओंसे अपनी अस्तीनकाने स्वीह नैक करता है। संस्तारों किएको रिन्ने कुछ भी कह देना का कर करना असमान नहीं है, हेसे न्यूनारी क्षता है जो करती काहिने। भी सामने गुरू नाता और परोक्षणे किन्छ करता है, का से कुलेके समान है, जरके कुलीक और परानेक केने ना है हुछे हैं; इसरिक्ने नृद्धिकन् गुरूनको काहिने कि हेसे क्योंका तुरंत काम कर है।

वृत्तिहरने बहर—हाहार्थी ! अब मैं व्या वार्यन करता है कि जिससे राज्यका है। है, जो कांग्यन क्या परिचर्ण कारणात और अप्यूचन करनेवारण है क्या किससे स्थापी कार्ति है, वह कराव जुले कार्यने; क्योंकि कार्य क्या पहानृतिहरून् विद्वार्थों है इसमें बंक्के किसी वार्य प्रधान करा राज्यकीय हार्यक्ष हो खते हैं। राज्य अनेका है करें राज्यकी रहा नहीं कर सकता; हार्योंके क्यांके पास करें और किस गुणोगारे सेवार खते कार्यके हैं

क्षेत्रकोरे सहा-केश ! कोई की स्थानकोदे विक अवेदोरे राज्य नहीं काम सकाय: राज्य ही क्या, सहन्याओ है। जा विकास की अर्थकों आहें। नहीं होती र करें। क्रिके हो की भवी से अवकी शहर असल्यन हो जाती है, जातः सेवकोना क्रेमा आवश्यक है। क्रिक्ट मध्ये क्रेक्ट अन-मिजनमे क्रमा, देनेची, कुरमेन तथा हेगी हो, हती राज्यको राज्यका सुख मिलता है। को स्थापित हो, जिल्हें बनवार स्टेम वैकासन सह पोड़ न सकें, जो एजाने साथ यह और हारे अपने बहित होते हो, को अबदे सामानोत हो और चरिन्नका जनक बारनेवाले, सम्बद्धी जननेवाले तथा बीली हाँ करके देन्ने कोश्र व करनेवाले हो---नेते सभी किस समाग्रे काम सुधे हों, बढ़ी राज्यका पास चेपात है। जिस समाने स्वापक इसके मुक्तमें सुक्ती और दुःसमें दुःसी वहां हो, जल्दी आधिक जानियरे विकासे समे स्थानको और सम्बद्धी हो. बढ़ी गुरुवार करू योगता है : विसवत देश दू की न हो, जो कार्य कोटे विचारका न होकर राज्य सन्वर्गायर कलनेकाला हो, भड़ी राजा राज्यका चार्नी होता है। विद्यारमध्य, संस्थेती तथा क्रवाना वक्रनेवार प्रथम करवेवाले क्रवांक्रिकेट क्रव निरादे कोक्फी सरा बद्धि हो जो हो, को एक रूप है। की सोपावस पूट र सम्बनेकले, संबद्धी, सुनाव, विकासनेव एवं निर्देश मनुष्य अवस्थि-पेक्स्सकी श्राम्ये निश्चा हो, तो अस्पति दिलोश काति होती है। जिसके नगरमें कम्बेट कन्सन कार देनेवाले एकुप्निके बनाये हुए न्यायका बालन देखा बाला हो. करी राजा अपने बर्मका करू पाता है। जो अपने वहाँ अपके

रकेनोको सुद्धात है और स्वयस्तकै अनुस्वर राजनितिके संबंद, विवाद, कार, अस्तान, हैवीयान तथा सम्बन्धन सम्बद्ध कः मून्योका करनोत्र कारत है, असेको वर्गमा करन विवाद है।

कृतिकार राज्यते व्यक्ति कि पहले अपने रोजधीकी कर्ता, ब्रह्मत, सरस्का, सध्यम, क्रांबीय प्रान, सदाबार, क्राविक्ट, विलेशिका, इस, कर, क्राह्म, प्रधार, विका क्या क्षणा आहि गुरुवेची जनकारी प्राप्त करे । पित को किस कार्यके क्षेत्रक काम पर्दे, उन्हें उसी कामपर समाने और समाने रक्षाक्ष एर प्रमुख कर दे। किया अधि-सूत्रे किसीको समी व करावे; क्योंकि बीच कारके करवाका सक्रवास के वालेकर रुक्को न सुस्र निरम्भ है, न अस्की असी होती है। यदि एक अवस्था न क्षेत्रेका को विक्रते कुलीन पुरस्का दिशस्त्रार बार है जो बहु जनमें कुरवेशतांक ही बारण रामाना असिह करनेका विकार नहीं करका। मिन् एक गीम कुराका पहुल पान स्थानको अस्यक आसम् कार्य कार्य क्रिके केर्का अधीन करता है, तकारे और एक बार भी समाने अस्ती किन्द्र कर के के कर करका रहा कर जाता है। इस्तिको सनी को पहले से कुलीन, विशिक्त, कुदियान, क्राय-विकासमे रिकृत, पार प्राच्योका तथा आयोगाला, सहस्रतील अपने देशका विकास, करता. कारणन्, श्रामानन्, विशेषित्र, निर्द्धिया, विकास निर्द्ध भाग अल्पेकीये संस्था रहनेवारक, अस्पे कानी क्षा विशोधी उसीर प्राकृतिसम् हैल-कारणा झर रक्षानेकारक, काञ्चलोका संबद्ध कारनेकारक, सद्ध कारको कहाने रकारेकारक, हिर्देशी, असरकारों रहित, संवि और निराहका क्षकर क्रानंबाल, नगर और देखके खेलेका प्रेयधाना. लाई और सूर्पय सुरक्षणे उस्त म्यूर-निर्माणकी कलाये कारण, अपनी सेनावर इसाब कारणे प्रचीण, बेहा और कुळाल हेकावा करूमके करका काव समझानेकाल, आंकार-श्रीत, निर्मेक, कार्यक्र, बलवान, डॉसर कार करनेवास, कृत, राजनेतिये पहुर, पुरस्कान, इक्षेत्रप्रकेश, बहुतारो स्थित, तुरदक्ष विकास, अन्त्रे लचनकारम, मीठे क्यान केल्लेक्स्स, और, प्राचीर तथा देश-स्टानके अनुस्तर काम क्रानेकाच हो ।

के राज ऐसे केन्य पूजाको मनी सनाता और कभी कावार कथाहर नहीं कतता है, उसका राज्य क्यानकी कदिनेकी तथा करों और फैल जाता है। राजको भी उपर्युक्त कुलोसे विपूर्वित होना काविने। सम्ब ही अर्थ्य कावारान, कर्मकराव्यक्त और प्रवासना जादि पूज भी रहने काविने। राज्य और, हम्बकन, परिता, मनुष्य और समयको प्रकारनेकारण, बड़ोकी रोक करनेकारण, प्रकार प्रकार, मृद्धिमान, सरप्रसाविको सम्पन्न, न्यानके अनुसार बार्थकारनेकारण, सिरोनिया, तिय केरणेकारण, प्रमुको पी कामकारनेकारण, सक्क्षणु और दु-विकोको क्रांच्या स्वारत केरेकारण हो। यह अवंकार म करे, वर्णान-नरावण हो, अपने पार्कार तेम रखे, सार्थ मनुष्योका संबद्ध करे, व्याप्ताती काम है, साह प्रसारमुख बना थे, सेक्कोका सर्वाद्ध करवाल रखे, स्वोद न करे, हिन्दू अवदार नावको अनुसार करवेल करे, गुप्तवरकारी नेकोक हारा प्रवासी अवंका सम्बारकार दृष्टि एवं काम को और अवंका विकार सर्वाद कुकार थे। ऐसे सेकड़ो मुकार वर्ण और अवंका विकार सर्वाद कुकार थे। ऐसे सेकड़ो मुकारों मुका राजा हो प्रसार निर्म कामकार्य होता है।

एकन् । एकको रहाने स्थानक म्हेंबनेको सन्ता रेनिक को पूर्व स्थान सको पुनोरो सन्ता होने करोते । इसके रिने अको पुरनोको हो करका करने माहिने और इसका कभी अवका नहीं करना काहिने। विस्तंत केहा पुनने बीचा दिक्तोको, पुनक, कक करनेकी करको सुसर, निर्मन, कर्वकारको हाल करा कर्नुबेंबाने स्थान होते हैं, उसे एकको अनीन इस पुरस्कारका एका होता है।

को राजा संबद्धके पूर्ण और संबद्धकारे करवार उन्हें चीन्य करोने निवक करता है, जो हो राज्यक पहर

किराबा है। कर्तीके पहला भी उन्होंको विद्यास करिये, कियाँ का पर्देश अनुसा कुल और उस कामको सैपारने-को केन्यता हो। को पुरुषेको उनकी केन्यताके अनुकृत कार स्वैपतः है, यह रामा राज्यसे कावाद उठाता है; इसलिये कुर्व, श्रद्ध, वृद्धिक्रिय, अभिनेतिक तका नीम कुरुके क्लांको एकके कारने की लगना पाहिये। जो समान, क्रमेन, पर, ज्ञाने, विक्रीको निन्द्र म क्रानेवाले, ज्ञान, क्रीय क्रम कर्मका हो, में हो लोग रामको पर्माकी (अवी) होनेबोल्य हैं। हेसे स्क्रामकीको पावन प्राप्त प्राप्ती प्राणी जीती का सकती है। को अदल पाते ही कामने हुए तीनके समान पूर्वता पायार कार्यनेक पारपो राग पार्ट 🛊 और सदा काके किया बार रकते हैं, का क्षेत्रकोच्छे बरावर सामका क्षेत्र काहिते । एकाको प्राप्तकी अपने कामनेकी रक्षा करने काहिते; क्लेकि बढ़े एकाडी क्षा है, अरोधे शकाय अव्यक्त होता है। युविहित । यंद्रार-वरोको भी अव्ये-अव्ये अन्यक्षेत्रे वरे एके और अच्छी रक्षाचा पान सरपूर्णके कर केने : इस काम धर और साथ—केनेका संस्क वानो को। अपने पुरुषकार मोहाओंगरे एक अध्यानमें रूपने रहते। व्यक्तियद्वशीकी भी देश-पास वारे। निर्मा और सम्बन्धियोधे कथा सुबार प्राथमिनोधे बार्च विज् क्यों और इस्के कि-सम्बन्धें स्था स्थे।

#### राजवर्ग और टप्डके खरूपका वर्णन

पुण्यित्ते सक्त--विकासक्ष ! अस्य अस्य मुक्ते प्रोक्षेत्रके प्राचीन राजाओंके पर्य कुनक्के ह

भीना वोले—पृथिति । इतियो निर्म सकते थे।

वर्ष है—सक्षे प्रतियोधी रहा करना । विश्व का विका

कैसे जाय ? इसको नया या है, कृते । कनायो

समय-समयपर का-करण आहे अनेथी का वारण काले

वाहिते । किस करवेंथे तिथी को हिल्कर करा यहे, उसने वही

कम प्रसंद करना उतिर है (उद्युक्तको तिथी—सम्पर्कायो क्वा होते समय उत्तरम और कैन्यर अनुबद करते प्रयक्ष

क्वा होते समय उत्तरम और कैन्यर अनुबद करते प्रयक्ष

क्वान एवं द्वालुक्य क्वार थारे । इस क्वार अनेवार क्वार काल क्वार करनेवार काल क्वार करने होते हाल

क्वार करनेवार्थ स्वक्वा कोट काल की नहीं विन्यूने

क्वार की हरत् क्वार त्वार के केटल नहीं, उसी क्वार स्वा की है। कोटल ही होते हो को कील काल केटल क्वार की होते हमार स्व एका सम्बद्ध क्रिय करे, जिंदू करेंगे क्रिया न जाने है। विश्वके स्वयुक्तकारों जनता होकर भूगी अंधा को अवना कर्मने स्वरती है, क्ष्य एका वर्धाकं स्वरूप अवन्त हो करता है। जैसे पूर्व सम्बद्ध स्वरूप प्रत्ये अपनी क्रियों पैस्परता है, उसी उन्हा क्रिया न्यान करते सम्बद्ध विस्तित्व पश्चास न करें। क्रिय और अधिकाले स्वरूप सम्बद्धार केरानंत कर्मां ही एका करें। जो कुरकार्य, अकृतिकार्य और देशकार्यको अपनेकारे उन्हा करेंद्र प्रयूप हो, को विश्व-स्वाक्ष्य कर्म एक्सेकारे, केर्यकार, निर्मेण, विश्वित, जिलेशिय, कर्मिया समा कर्म और अध्येती एका कर्मकारे हो, ऐसे ही पुरस्तेको राज्यके एक क्षरियों स्वरूप क्रिकेट।

इस अवार सहा सरकार सकर राजके प्रतेक कर्तका सारण और उसकी सम्बद्धि करे। परने संबोध रहे और कुरवरोकी स्थानकारो सहावी सारी वार्ट जन्मा हो। विसन्दे होत्र और हाँ निवास नहीं जाते, जिसकी क्या | को अधिकाकालक समावद असम विभागिक स्थान स्थापर विदेश हो, जो कार्या कारणेंसे ही स्था देश हो उस शरमी और अपने देखकी दक्ष करना हो, को सक राजवर्गका जाता है। येथे सूर्व अपनी विकासोसे संस्तरको देखता है, उसी तरह राजा भी सक अपने नेडोड़े राज्या निरीक्षण करे। राज्यमें प्रमण करनेकले करोची को कने और सर्व अपनी मुक्ति भी विकार करें। वैका समय आये, कार्क अस्तार काम करे और सम्मे अर्थ-संस्थाने प्रस्तेश प्रकट न को । कैसे मानका कारन करते वर्ष जीतीन जाने **१**थ का साथ है, इसी प्रचल राज्यकी व्यापूर्वक राज्यको कारो का रेना पादिने । मेरे कहाकी काली क्रमक: वर्ड पूरतेमें श्रीहा-बोह्न रह रेक्ट का क्या करती है, उसी का रामाओं भी सम्बद्धः समक्ष प्रमाने का लेकर प्राप्त-संबद्ध साला पार्वेचे ।

एकाको रक्षा और केल साथि केले के कर करे, करीको कर्तने कर्त को और अपने अपनेपने भी एनाने। शासक राजायों, व्यक्तिक सम्बन्ध हो, सम्बनेका कर नहीं मार्च करना चाहिते । बोद्धा-सा भी कर निरम्मा हो से सरका विसम्बद्धाः म नहे, सहको क्रोक व सम्बद्धे, सुद्धिके अन्तर्व विवासिको सम्बाहतः हो और पुरासित वरणी निवास न धरे । कारकारीत, कारता, संकंत, युद्धि, इरीर, सैनं, कुरू और केल-अक्टबरी परिविधियों स्थानमाह ने शुक्त-के आत क्षत्रको सद्योगेके मुख्य सावन है। एतु सारम्क, स्वयन सरका श्रेष्ठ ही करों न हो, सामकार न प्रतेकारे नगणका पात कर कारता है। का बीका पालर राजाकी का क्याद स्थान है; इस्तीले को समयका ज्ञान रक्ता है, वही राजाओंने केंद्र सन्ता अलं है। हेर रक्तन्यत सन् वर्गन हो क जनकर, रामाओं कोर्ति ना करता है, अलो बनेने राजा पहिलात है तमा अधीरार्थनने गरी ह्यां अल्पी स्थितक वित्तव करती है। इसरियो मनको कहर्ने स्थलेकार राज क्युकी स्रोतसे श्रामसम्बद्ध न रहे । हारि, स्तरम, रहा और संबद्ध आदियो स्वा सम्बद्धान्य वृद्धियम् पूरम् इतुष्टे साम सीव या विवाद करे, इसके रिजे सुद्धिका सहारा है । परिवार्तित सुद्धि कारणान्त्रों । भी पक्षा हेरी है, बड़ते हर बराबों बुद्ध ही पक्ष करनी 🛊 सरको कर्ने को जनुको भी वृद्धिके प्रशासको सरक क संकता है, इसरिये बृद्धिते विकारवेके बाद को बाज विका बाता है, बड़ी जान क्षेता है। विश्वने सम प्रकारके केन्वेका स्थान कर दिखा है, यह और राजा कोडी-सी लेजके बससे भी सप्पूर्ण जोगोंको उस्त कर समस्त 🕯 ।

विरुद्धर अकत प्रथात २ दिखाने । स्वेकी पर्यूच दूसरोके धन, केर-करते, से, का तक स्थित्-स्य कुछ इस्र सेपा · असी सब अवस्थित क्षेत्र क्षाट होते हैं; इसलिये क्षेत्रीको अपने क्यों न रखे । निस्न क्याने कर्गातर साहाजीरी क्रमान क्रम क्रिया है, को मनिनोधे सुरक्षित, प्रमाना विकास का कुर्रात है, या अस्पेयों का देनेकरे स्वयन-ने लोको बच्चे रहा क्रमा है। सम्बन् ! मैंने संक्रेको रीवर राजकरीका वर्णन विकार है, को बढ़ियों विकार करके बारव करें । के जो भारे भारे भारे राज्यकार आवरजरें स्वक 🕽, वर्ष अपने सम्बद्धी पत्न वर अवका है। निसन्ता सुक-चेन हर, सम्बद्ध केले कामुनके बारामा रिवर देखा जाता है, जा एकको परायेकने उस्त और नहीं मिलती और उसका यह क्रम-प्रश्न भी अभिन्द दिनोतन कामन नहीं रहता।

क्षांत्रीरने दक्ष-विकास १ आयो समान्य समान्येक कर्मन विकार, इसके अनुसार क्या हो प्रमाना होता है, क्याके ही अस्पारक कर पूछ दिखा हुआ है। वेक्स, पानि, निकर, व्यक्तिका वार्थ, राक्ष्मा निवास क्षा संवास्त्रे करणा प्रातिकोके रिक्षे एक के कामानक कार्य है। सरीवर करावर सन्बद् अनिवृत्त है; सब्दः मैं कामना पाइना है कि एक कुछ है ? केवर है ? जनकर करका करने है ? और विकर्तन आवारपर अस्तरी रिवरि है ? साथ ही यह भी नरहने कि (reput aregre करा है ? अरुपी इस्पीर केंग्रे क्वें ? करका आकार केरण है और यह दिशा प्रकार सामगान रहकर क्रमूर्व अभिन्योगाः प्रमान करनेके रिज्ये सामा, प्राप्त है ?

र्वकारी सह--कुरम्पन् । एकार में स्वरूप है तथा अस्त करूर किए तथा किया करा है, जा रूप रूपे anna है, कुने : इस संस्तरमें सब कुछ विसने अधीन है, वहीं क्या है। जानी करने फान है, जरीनो अवहार (नाम) भी महते हैं। सोमले किसी तरह कर्र और नामक होत न होने वाचे—हालोह रिप्ते हत्व आयरच्या है। क्याला स्थाने कारत है के स्वयंत्र बहरता है। वर्षकारमें माने का उन्हेंस दिया है कि को तका किय और अधिकारो सक्त सन्तक्तर—पक्तात न करके दणका ठीक-ठीक करवेग करता हुआ प्रयास्त्र परस्य भारत है, आबा का कर्न केवल को है समझ नात है। मैंने के का कारको कर बसावी है, यह प्रक्रामीया स्थान स्थान है और इसे सकते बहुदे व्यवसीने बहुत है, इसरियो इसको 'आवाका' कार्त है ज्या कावारका प्रतिपाद करोके कारण प्र प्रजापर बोह रकते हुए ही अपने का (का) बसूल को, | काव्यूपर भी बद्धा गया है। एकाव्या ठीवा-ठीवा तस्वीम होनेशर् है सदा वर्ग, वर्ण और कामकी सदा काका पाती है: इस्तरिये देश पहान् देशता है। इसका साम्य प्रमास्ति वासिके समान देशती है। काकार, बहुव, गाह, इस्ति, देशहर, मुद्दर, बाग, मुस्तर, फस्ता, बाह, बाह, बाह, प्राहि, होपर हवा दूसरे-दूसरे के प्राहत करनेकेन्य अक-कृष्ण है, दन सबके कामों सर्वास क्या है मूर्तिकान् होकर विचारता है। वही अपरामियोंको चेहता, हेरता, चेहिल करता, कारता, चेरता, फाइता तका वरवाता है। इस प्रकार क्या है संसारमें सम ओर सेहता किया है।

इन्द्र सर्वत जायक हेनेके कारण करवान किन्तु है और मनुष्योका अचन (आधार) होनेहे करायल बहुतका है। यह महान् सनावर सरकाको धारण करना है, इस्तरियो क्षेत्रे पहार्त्त काले हैं। इसी प्रकार राष्ट्रीकी भी अक्षानीकी करणा कही गयी है; संक्ष्मी, वृषि, सरकारी और सन्दर्शनी भी करोके नाम है: इस तथा एकके अनेको अस्त है। अर्थ-अर्थ, सुरा-१:५, धर्म-अवर्थ,कर-अवर, हुप्रोक-सीमान, गुज-रोप, काथ-सकाम, स्था-मास, सा-मिन, श्रंप, प्रमान-स्थापाद, इर्ज-स्रोप, स्थ-स्थ, कैन-पुरुषार्थ, वाक-चोद्धा, अव-स्रायन, द्वीता-स्रोहित, तर, वहा, संपप, पह, प्रमाद, हर्ग, हमा, वैर्थ, जीति-अरवेदी, प्रति-अवस्ति, यन-अयवार, स्था-अवस्य, क्रिया, क्रा 404-1464, 444-1466, 37, 439-1463. अवर्धकाता-अक्षेत्र, साथ-द्वारि, वय-परावर्श, वाक्षेत्रा-कोमलता, पन्, अवन-कव, किरोध-अधिकेष, वर्तक-अवर्तान, असून्य-अवसून्य, सम्बन्ध-अस्त्रक, सन्त्री-बिपति, स्थान, तेव, कर्म, पार्वकार बाक्काफ क्रक तामारोग—मे पन रूपके से अनेकी कर है।

मुधिद्विर ! संसारने यदि क्याची व्यावस्थ न होती तो सब लोग एक-तूसरेको पीस करतो । क्याने ही व्यावे कोई मिलीपर इस्थ नहीं उठता । क्याने सुरक्षित क्यान ही उचा अपने राजाकी दिन-दिन काति करती है, इस्तीको इन्छ ही सबको आवान देनेवाला है। वही इस अन्यत्वो पीता स्थाने व्यापित करता है। सर्वाच हो वर्गको विश्ववि है और वर्ग मिलागोंने क्या है। सर्वाच क्यान वेहोका करवाल करते है, केहोंसे ही यह उचाट हुआ है, क्याने केवल जाना होते हैं, असल हुए केवल इनस्ते प्रतिविध जार्थन करते हैं, इससे इस प्रकारनोंपर अनुवाद करके (स्तावनस काफि क्या कोडी

क्रमान्त) करें अब देश है और समूर्य प्रणियोंके प्राप अजयर ही अवस्थित रहते हैं। इसरियो एक्से ही प्रवासी निक्री कारण है, नहीं अस्ति रक्षके दिनों सदा जागत रहता है। यह सह सामधान खनेकारा और अधिनाती है तथा रक्षणां प्रयोजन दिन्द्र करनेके कारण का शरीय है। ईश्वर, पुरुष, प्राप्त, सम्ब, बिक, प्रधानति, पुरुष्य तथा औरा-चे क्यांके हैं आरु जान है। जान कुछ, अलाक कालान करी, सुद्धि, केव, ओज और राहराज्य यस क्या (आने बताये कनेवाले) अपूर्ण करनी स्थानंत बहनेकोच यो वन, साम और कार्यने आदिका कर है, उस सकता राजाने पास संवत होना पाहिये : हाजी, बोदे, रख, पैसर, फार, बेगार, देखकी त्रमा तथा चेड साहै पशु--यह शाद अङ्गोबाता कर है। रची, हामीसमार, मुक्तस्वार, पैदल, मनवे, पैदा, निव्हाद, क्वील, जोतियो, देवको अनुकूत बनानेके विने पूरा-यह करनेकारे, इत्यादा, किंद्र, बान्य क्रमा अन्य इस क्रमारी—बहु एक प्रकृति क्या अब अहोते पह सेपाया करीर है। यह सेना एकके ही अन्तर्गत है, अतः एक है राज्यक प्रकार अहा है यह इसकी इस्तिका पूजा कारण है।

हिन्दी अवसं करके अपसूची रहाके रिज्ये इतियके इनमें क्ष्मक अधिकार दिया है। सम्बंध और समान प्राथमें (पहानागरित होका) अन्योग करनेयर ही क्ष्मके कार्यकार रहा होती है। संसारका समातन अप्यूप्त क्ष्मके ही अधीन है। क्ष्मके रिज्ये क्ष्मक्षम कर्मने क्ष्मकर और कोई पूज पहिं है। क्ष्मकीने क्ष्मक्षकों क्ष्मकर तथा क्षेत्र-१४और रिज्ये ही क्ष्म-नीरिज्यक कर्मका अस्ति। सिवा है।

नो वन्द है कहे सनातव स्थानहर है, जो स्थानहर है कही केर है, जो केर है कहे वर्ग है और को बार्ग है कही सायुक्तोंका कर्म है। संस्कृत्य हैं रचेनावितास्त्र स्थानती, जो स्थाने प्रकार क्याट हुए है। उन्होंने पहले देवता, उन्हर, स्थान, सनुष्य सवा वर्ग आदिसे कुछ सम्पूर्ण स्थेकोंकी रचना की। दिन कारी-प्रतिकारीके विकारका निर्मय करनातम्य जो स्थानहर (न्यान)है, स्थाना अपदेश किया। प्रशासीने न्याय अपते समय न्याय-कार्यके सम्बद्ध का अन्दार्थ स्था है कि वरि पाता, विका, पाई, जी सक्य पुरोद्देश की अपने क्याने दिवस नहीं सुते जो सम्बद्धीय अहिये कि उन्हें भी कुछ है; स्थाके सिन्ने कोई भी अस्व्यानीय अहिये हैं।

#### ...

## दण्डकी उत्पत्ति तथा उसके श्रत्रियोंके हाथमें आनेकी परम्पराका वर्णन

भीवार्थं बहुते हैं—कृत द्वाबाधी स्वतिको सिनको एक प्राचीन इतिहास है, जिलको में हुनों सुना द्वा है। अनुदेशों असुदेश जानके एक खूल परित्यू राजा है जमें है। ने को धनीको साथ लेकर जिलते, देवताओं तथा खिलको पृथित पुतापुत नामक सावकर जमे। को स्थान विकास वर्णाका एक विदार है। एक दिन वहीं मुझावार्थं कीचे वन्तुरावनीने साकी कार्य खीती थीं, वर्णाने खिलकों सावका जान 'मुझापुत' एक दिखा। का स्थानका चालकान् संकारका निवास है। राजा बसुद्रोगने कहीं खेळर अनेको केवेका मुख्येकों सावकां र केवचे तको प्रधानने देवनिक झूल है गये। सावकों में सावका कहा सम्बाद होने स्था।

ह्या दिन राजा मान्याक्ष करके स्वर्णनो हिन्ते गर्ने । श्रापाण वसुक्रोमको काल प्रस्तानो रूने देख में बड़े विनीत प्रावसे करके पास जीवर जनान करके गर्ने हुए। का रूपने श्रापालो को पास और रूपने कर्पन करके राजा मान्याक्षक श्रापाल-स्थापार विका, दिन ज्याके राज्यका स्थापाल-स्थापार पूछा, इसके बाद प्रसादि क्या विनी गर्ने स्थापा स्थापिका तथा सेक्सनेका साथ पूछा हुए क्या 'स्थापास । साराको में साराकी क्या नेक्स करी ?'

शासाने बड़—राजर् तानने कुल्लीके रिक्रानोका पूर्व सकाम किया है, तान है कुल्लाकि बीति-राजकों भी निक्षेत्र कानकारी जात भी है। अबः वै सामले कु भागता कालत है कि राजकी कामी कैसे कुं है? इसका कारण और कार्य क्या है? ताना इस काम इसका बार कृतियोंपर करों राज नेका है? वै रिज्याकारों कुल का है, कुंदे इन बातोका सार क्रीकिये।

कपुर्वामने काम—राजन् । इच्छा सम्पूर्ण कपन्ती । विकास अंदर देशनास्त्र है, यह कर्मका सम्बद्धा अस्त्रा है, इस्त्रा अद्दर्भ है—प्रमानो अद्यानस्त्र क्ष्यान्त । इस्त्रा कर्मित विस्त सद्ध हुई है, से बता रहा है सुनिने । सुनने जाना है कि विस्ति समय सोकानिताम्य क्ष्यानी यह करना साहते थे, विस्त अपने बोध्य व्यवित्र नहीं विस्तानी पहे । तथ क्ष्मी अपने बोध्य व्यवित्र नहीं विस्तानी पहे । तथ क्ष्मी अपने बस्तानों रहा गर्भ वारण विस्ता । यह नर्भ इत्तर क्ष्मीत्र अन्ते प्रसानों रहा । इत्तरथी वर्ष पूर्ण होनेवर क्ष्मित्रों इति आयी । इतियक्ष स्त्रा वर्ष यह नर्भ भी स्वकारी रहाने बाहा निकासका गिरा । उससे वो करनक प्रसान हमा, वह अवानति श्रुपके क्षमसे असिद्ध हुआ ।

प्रसारति कृत ही अक्षानीके बहाने अस्तिन् बनाने गने। (बहानी दीक्षा मेनेकर अद्यानीको आस्तिने मिनन और जानि जारि पुलेको झरका दिसानी हेने सनी। प्रमाके कार कारान करते समय मे करता वी वह न परि, इसरिन्दे) का असम होते ही अच्छाने कारानमानी अवस्ता होनेके कारान क्षम असून हो गया—अवाको वन्द्र निस्तेनक पर्य

वृत्य सुन होते ही जाराने वर्णातंकरता (व्यक्तिकर) की वृत्र सुने रूपी। कर्तान-अवस्थातं, वश्य-अध्यक्त, वैद-अनेव क्ष्मा क्षम-अध्यक्ता विकार कर गया। सम वृद्ध-कृतिके क्षमा रोते रुपी। अपना और कृतीकर क्षम वृद्ध-का सब्दान वाले स्वया। वैसे कृते जाराके दुक्तकेती अध्यक्ती कीनो और नेवाले-कारोटते हैं, क्षरी तदा बनुष्य भी वृद्ध-कृतिका क्षमा (पुटने रुपी। करावान् निर्वालेको मौतको वृद्ध-कृतिका क्षमा (पुटने रुपी। करावान् निर्वलेको मौतको वृद्ध-कृतिका क्षमा (पुटने रुपी। करावान् निर्वलेको मौतको

का देख विकास सहाजीने समाप्त भगवान् विकास कुछन् करके करकेनी अक्रवेसनीचे बाह्य-'भगवन् । अस अल्य ही क्रांस करके देश प्रथम करें, जिससे प्रधाने कर्ततंत्रकार व बैताने करे । तब सन्वान् कुलगानिने कुक हेरकार कोच-विकास करते अपने-आवनो ही एकके समर्थे अबद विका । उससे वर्णकाल होता देख पीरिदेशी सरकारिने कोळ-विकास स्वापीतिको स्थाप को । नित विद्यालको कारान् इंग्रस्ते कुछ स्रोक्तेके यहान् एक-एक संस्कृता एक-एक एका क्याचा। क्योने इसको देखालीका, क्याची िवरोक्त, कुनेरको कर और राक्सोध्य, नेश्वये पर्वतोका, सम्बद्धी सरिक्षशीका, बक्रमको जरू और अस्पेका, कृत्यो प्राणीका, व्यन्तियो प्राकृत्योका, अधिको क्यूजोब्द, सूर्वको देवका, क्यूनाको सराओं और क्षेत्रकिकेट, कुमार कारिकेकको पूर्वोचा नवा कार्यको सम्बद्धा राज्य करा दिवा । इसके बद्धात् भगवान् सूलवानि। क्षा करेके राजा हुए। ब्रह्माके पुत्र श्रूपको उन्होंने समस प्रकारकेक आविषय प्रकार विकार

क्यूनकर सहाराधिका का का सक विधिकत् समाप्त हो एक से व्यूक्तिश्रीने वर्गरक्षक सम्वान् विक्यूनम संस्थार करके कई का श्रव्य अर्थन विज्ञा । विक्यूने क्रो कांब्रियको विका । अर्थियाने इन्ह और परीक्षिको, वर्गीकिने मृत्यूको, सृत्ये अभिनोको, व्यक्तिमें स्वेक्यास्टेको, स्वेक्यास्टेने श्रूपको, कृत्ये वैक्तका मनुको क्या मनुने सुक्त वर्ग और नर्वकी रक्षको हैंच्ये को अपने पूर्वोको सीच । अतः कवि अनुसार मान-अम्बन्ध विकार करके ही स्थान विकार करक बाहिये, काराची नहीं करती पाहिले । ब्यूनेका कार करत 🕏 रुक्ता मुक्त जोरन है। अवस्तिके से सूकते आहे करार किया सार है, व्या भी बाहरी सोगोंको साराहित करनेके रिभी ही है, परस्कार परनेके रिको नहीं। कोठे-से अवराज्यक प्रसादा अव-पट्ट संस्था, जो पर प्रस्था, असे प्रधेरको साह-साहाकी पालनाई देना तथा जो देवनिकास दे देव क्रीवर नहीं है : वैकास प्रमुख अधनात एक्को सेन्से ही अपने कुरोके इत्याँ त्या सीध था, वही सन्तरः सारोका अविकारियोचे इ.धर्मे आकर प्रकारी रहाने निरम्प करता. चला है।

प्रमाणे पातन और श्रेपका अधिकार प्रक्रानीते repépeului ferm, meit fiebbabait, fleidfalts महिन्द्रोको, महिन्द्रोके होत्यको, होत्यके हत्यक देववान्त्रोको

और देखाओंसे अक्रमोको निरम, का समय प्राप्तम ही लेक्टआके रिमे श्वयंकान रहते थे। दिस साहानीसे यह अधिकार अधिकीको निरम । एको समानक स्थापित ही क्यांस्तार सम्बद्धी रक्षा करते का चो है। एक ही सक्यो नक्षमें रक्षण है। या बारस्कर एक सुन्ति साहि, यथा और अपने को सामस्य गुरू है। यह समूर्ग सेवरेंबा हंबर um swell to be made bedreifen were to वर्णा क्याची पार्वेने कि या नावनी अनुसार क्याचा सम्बंध को ।

नेनने सारे हैं—से एक क्यूब्रेन्टे बताने हर हम विद्वारको कृता और सुनवर इस्के अनुसर रोज-शेक वर्णन करता है, उसकी साहै कामनाई पूर्व होती है। इस प्रचार एकके सम्बन्धने किर्मा को है से सब की क्षेत्र कर हैं। एक है समूर्त कार्यके निकाके पीतर

## प्रिवर्गका विचार और आङ्गरिष्ठ तथा कामन्दकका संवाद

मुक्तिको पुरस-नारत । अस्य में यह सुनवा पर्यास है है। बर्ग, अर्थ और पालका मिर्लय फेले करना फाइने ? वर्ग, अर्थ और पान निया जोएको किने वर्ष है? प्रस्ती अवस्थित कारण क्या है ? वे बढ़ी वृद्ध तथा निने हुन् और करी अलग-अलग करो १७३ है ?

है, और ने क्योन्टेक बिटाने अचेन्ट्रे आहित्या विक्रम कालेट प्रमुत होते हैं, कर समय क्षीत कार, कारण कहा सम्बद्ध कर्मानुहरूक्य वर्ग, अर्थ और बाय तीने एक क्या दिले हर प्रसार होते हैं। इसमें वर्ण को अधीवन चारण है और चार अर्थका कार बद्धालात है। यांतु इस सीओवा कुर कारक है शंकार । संबाध है विश्ववाद और समूर्ग विका प्रतिकारि क्रप्योगमें आनेके रिनो है। च्यी कर्ग, जर्म और कामकर मूल है। इसरे नियम क्षेत्र ही पोख है। पर्शनकार्ध सरावार क्षित्राचित्र केला विका काम हो उत्साह पर्ववस्तान की बोधूने ही होता है। वर्ति मन्त्र्य को जार कर सके तो को हो प्राप्त्यको केस है। अवस्थितिको प्रिये समझ-मुख्या वर्णानुक कारनेवर भी कभी अर्थको सिर्मंड होती है, कभी नहीं होती है. क्रमके रिका, कामी सूरते-तूसरे कामोरो की अर्थकी शिक्षि हे. विजी है और कभी अर्थ नह भी हो जाता है। **बरवारे** स्वा विर्मेका पर है, केवल गाइका रक्षण अन्यत वस है और

सामोत्-प्रमोत्तर 🛊 हुद्दे रक्ता बद्रमध्य मह 🛊 ।

क्रम किराने पालकार सेंग एक अवस्थि और करणका क्रिका संबद्ध सुनाव करते है। क्षेत्र क्रुप under pfegen fin funt metend unt f. menget. पहिच अपने अध्यानी केंद्रे के; अर्थ प्रमान करके एका सावादिको पूज-"पुनिवार ! पदि शांक काम और बोहके मधीया क्रेकर घन धर केंद्र और मिन क्रो पहलाय क्रेने रूने के उसके का कानको हर करनेके हिन्दे कीय-सा meline \$ ?"

राज्यको सह—राज्य । यो वर्ग और अनीको परिवाल करके केवल कानका है सेवन करता है, उसकी पुनि का है जाती है। पुनिवस कहा है को है, का हर्न और अर्थ केमोको यह करता है। इससे मनुष्यवे जातित्यात अवनी है और यह कुरकारने प्रकृत के जाता है। देखी दशायें उस उनका राज की देती, सामु और प्राप्तका में उससे अन्तर हो करते हैं। किन तो उत्तरह जीवन करते में यह करत है और अस्तोपान का प्रमाने सबसे गां। भी पाता है। इस अवस्थाने आवार्य स्तेत्र असके रिप्ते वह कर्तव्य बसस्तते ी—वह अपने पार्वेकी निन्दा, वे<del>टीका</del> निरक्त सावस्थ और प्राक्तन्त्रेका सत्कार करें। क्योंने यन स्थानो और क्रम करूपे किया करे। उत्तर और इप्यासील प्रकारोंकी सेवापें कंगुम्बर्धित-संवानोत्पतिके अहेश्वरी रहित केवल हो। सामें कहा हेका कराविक का करे। साम प्रसान हो।

[ 511 ] सं० म० ( खपड —हो ) ३८

बारे । मीटी बाजी तथा अवन कानी, क्षेत्र सामाने प्रसार रहे । सामाने सम्पानका पात कर बात है। बा अपने और दुसरेके कुलेका करान को। यो समा इस इक्स | कठिन-से-कठिन क्योका भी तथा कर अस्ता है।

पारियोको राज्यके महर निकासका सर्वाकाओका सर्वाच | जनक आजनन कम लेख है, वह प्रीत ही निकार होका

## शील-निख्यण-इन्द्र और प्रह्लादकी कथा

कृषिक्रिये एक-नक्षेष्ट्र । संसारवे करूक क्रांक्र हेंद्र-चून सीरपार्ट ही अधिक उन्होंना करने हैं। अब: वर्ड, अस मुझे सुकोबर अविकारी करते से बड़े बळनेकी कृत को कि का शीलक का सकत है? और का कैने उस होता है 2

पीपपोरे स्था-नवस् । प्रकारको का स्थाप राकपुत का दूशा था, उस सकत हुन्दारी अनुका सनुदेह और समाध्यतको देवागर कृतिको यह प्रेटन हुआ। सहीते औटनेपर अल्पे अपने जिल्लो गरी वाले पह सुनाची । तम कृतरहाने कहा-- केटा ! वर्षे तम कृषिक्षेत्रस्थी ही मालि का जाने भी कहार राज्य-सक्ती वास सकते हे से पीरकान को। क्षेत्रमें तीने संख्य बीचे का सकते हैं। पीरन्यानेके रिन्धे प्रश्न संस्तरने कोई की कहा क्रांच की है। नामानाने एक ही दलने, कान्येक्को क्षेत्र स्थानेने और माधानने त्यस राजेने ही इस पृथ्वीका राज्य तहा विका का। वे सभी राजा घोरन्यान तथा क्वाल थे। अव: कार्या हरा जुलेके मेल करीबे हाँ का पूर्ण कर है उनके पहर शा वर्षी भी हैं

दुव्येकले पूक-पारत । विसक्ते हारा कर राजाओंने रीत है पुरुषातका राज प तिया, का होता केले अह होता है 7

930वर्ग <del>करा—इतके विश्ववर्ग एक पुरुष इतिहास</del> 👢 विसे गान्तवीने प्रीतन्त्रे प्रसङ्घर्म सुराजा 🐠 । प्राचीन कृतन्त्रती मान है, रेमरान प्रक्रारो अधने प्रीतके स्थाने प्रमूख सुरूप है सिया और श्रीनों लोकोको उत्परे कहने कर देखा। उह समय इसने बहरपतिओंके पता जावत उसने वेपार्वकरिता क्याय पुरा । मुक्तवरियोने करें इस विश्ववद्धा विलोध क्रान जात करनेके दिने पुरस्कार्यके पदा बानेकी उत्तक है। इस करोंने प्रसाराज्यक स्थापनक परा सकर किर की उस कुराया। सहस्रार्थ केले—'इसका केलेव प्राप्त स्थापन महत्त्वाचे है ।' व्य सुनकर इस व्यूत स्तर हुए और सहायका क्रम बारम कर प्रक्रकेंद्र पर गर्ने। वहाँ खेनकर उन्होंने

क्या—'राज्य ! ये होक-आहित्या स्थाप कारता सहस्रा 🗞 आर पालेको कृष्य को ( प्रकृति कहा—'विकार ! हैं केर्रे स्टेबर्डिक एनवल प्रत्ये कार्य प्रत्ये कार्य प्रता है. इन्बर्गको मेरे कार सामको उन्होत हेनेका समय नहीं है।" अक्रमने पान-'म्बरका । यह सबन विसे तथी में आयरे ज्ञान अवस्थानक अन्तेत्र तेत्र कहता है।"

अक्रांत्रको असी निक्रा देखका प्रक्राद को प्रस्ता हुए और क्षण सम्बद्ध अलोबर क्ष्मोंने को हात्यक सन्त सम्बद्धाना । क्राक्रमने की अकरी काम मुख्यतिस्था परिवर्ध दिया। काने अहमार्थ इंब्युन्स्य न्याचेचित रेतिसे चरचेशीते उनकी सेवर बोरे । जिल करून परवार करते अनेको बार बढ़ तथा जिला कि 'प्रिथुक्कका करण राज्य आवनो हैस्से निर्मा ? प्रत्याह बहरक mit annet d'

अपूर्ण का-मेरावर । वे 'क्या है' इस अधिकाले अल्या वाणी प्रक्रमांची निन्ध नहीं करन: बरेन्द्र कह है कुते कुलनेतिका कारोब कारो 🕻 का समय संवास्त्रीक क्यारी वाले पुरस्त है और क्यारी आयुक्ती निराम धारत करण है। क्यापार्क पुरस्कारके क्याने कूट नीतिन्तर्गरर करका है, इक्कानोंकी केवा करता है, विज्ञीया क्षेत्र नहीं देशक, वर्गने का राज्यक है, क्रोधको जीतकर-काळो कानुमें रक्तकर इन्द्रिक्केको को सब बढ़में किने रहता है। मेरे हत कर्मको सम्बद्ध है विद्वार सहस गुरो सके-अखे उन्हेज विका करते हैं और मैं उनके क्यानामुहोका पान करता क्का है। इस्तियों की बनुषा नश्रावेश समार करते हैं. उसी प्रकार में भी अपने वातिवालोगर राज्य करता है। पुरानार्थकेक वेशियात हो इस पुरावस्था अपूर है, अहे कार नेत है और नहीं संब-ऋदिनार सम्बंधिय अवस् है।

अहरतो इस अक्टर करोड़ परवार भी यह साहान दरकी रेक्ने एक है का। का उन्हेंने बद्ध-'विकार ! उन्हें चुक्के सम्बन मेरी सेचा को है, दुख्को इस बर्जाको प्रसन्त होमर में तुन्हें कर देन स्वयूक्त हैं, हुन्तुनी को इस्तर हो गाँउ तो, मैं उसे अवस्य पूर्व क्लीमा है

अक्टबर्न क्य-म्यास ? यह आर अस है और येव किन करन पहले हैं, जो नुद्रों कारफा है चीन पहल करनेकी इन्छा है, नहीं का देखिये ।

ऐसा करतन पॉपनेस्ट ऋतको कहा अध्यनं हुन्छ, क्योंने संख्य 'यह कोई सम्बद्ध पहुंच की होता।' किर की 'समार्' कामर अहींने का का है दिया। वर कहर कि:-वेजवारी कर तो को गर्ने, पांत प्रकार करने को विक्ता हों। वे सोको सने--व्या करन व्यक्ति ? करा बितरी निक्रणसर पूर्वि पहुँच समेद । इक्रमेद्रीये उनके प्रारीको सूक्र काम कारिकान् कार्याय केत मुस्थित् होता उत्तर हुआ । मते देशका अञ्चली प्रान्न-'साल चौन है?' करा निहर-'में बीस है, हुन्ने पूढ़ो साथ हिन्द, इस्तीओ का पह 🜓 जन उसी स्वयुक्तंत्र प्रतिको निकार करिना, को हुन्यार विका नगरर एकस्पितके हेकाराका है नहीं के कास का र का कामार कर हैना नहींने अनुसर हो एक और हमाहे श्रारियमें जानेक कर गाना।

जलके अनुसर होने ही जाने उत्त्वावा कुछा केर जनके करीरते जन्म हारा । प्रक्रम्ये साले भी पुर--'अस स्रोत है ? साले स्थ्य — 'अक्रम । पाने वर्ग सरको । ये पी उस सेव उत्कारको हो पार का रहा है, क्योंकि कही होता होता है, बही में भी पहल है।" को स्थानन अने हैं का निक हुआ तो है बीमार्स सेकोचन निरम् अवाद कुरत । उससे भी नहीं अन् पूजा आर भीत है ?' का तेवारीने जार क्रिया—'क्स्प्रेस । वे रता है और करिंद्र पीते के का है।" सामेंद्र करेगा क् सीर महानारी पुरूष प्रकट हुआ। पुरुषेकर जाने कहा-'प्रकृष । पुरो सक्ष्मार सन्तर्भ । अर्थ सन्त थे, वर्ध में भी बारा 📳 अलो करे पानेस अने प्राप्ति को बोलाई सर्वन करता हुआ एक तेनकी पूछा प्रचार हुन्छ। धीनक मुक्तियर बाद बोरमा 'मैं मान है और बाई सहावार नाम है, बही क्षेत्र के का का है।' का कावन कान नवा।

सन्दर्भ प्रकृतके करीमो एक प्रमानक देनी उत्तर 🚁 । पुरनेका उसने कारणा "पै सक्ष्यी हैं, तुकने चुत्रो अला । जाती तुन्हें भी बढ़ी करा आह होता :

दिन है, इस्तीने नहीं नहीं नहीं है क्वेंकि पहाँ वस क्या है, नहीं में भी वाले हैं।' अक्रवने हुन: अर रिक्य-पिन ! हम बाई करों है ? या वेत प्रमान और 🖴 ? मैं इसका पहल करना पहल 🗓 ।' सबसी बोली— 'हुन्ने क्लि क्लेड क्लि है, का महत्त्वरी **आहराके** करमें सम्बद्धान् हमा ने । तीनों स्तेनकोने को गुम्बाछ देखने फैसा हुआ क, का कहीरे पर रिका । करीर । हमने प्रोतको ही हता क्षेत्रे संस्थेक विकार कर्या थी, पर प्रकार उन्हों तुम्हों प्रोतन्त्रः क्ष्मान विका है। वर्ग, साथ, प्रक्रमा, यस और में (स्थान)—ने सन प्रोतको हो सामारपर रहते है—जीत 化电动电流 化

यह स्थापन राज्ये का प्रीत आहे प्राची पुन हमारे क्ष्म को को । इस कमानो सुरक्तर हुवीकारे पुर: अकी नेवारे प्रान्न फलपर । वै प्रेरामा राज फल्य प्राप्ता है, जुड़े राज्यकाने और दिल करा जानी प्राप्ति है हमें, भर रंगम भी सहस्रो ।"

क्षण्याचे क्षाः—केता । श्रीरच्या क्रमण्य और क्रो क्षेत्र करा-ने क्षेत्र को साम आने को है कारणे हैं। में संक्रेपके कीरवादे कारियाद कारणपात पहा राज है, बार देवा कुछे-का, कार्य और प्राधित विश्वी के लागीके रातम होह म करे । प्राचनर क्या करे । अनगी क्रांकिके अनुसार कर हे—बडी यह अन्य श्रीत है, विस्तुदी इस लोग प्रांत्र करे हैं। अपने किस किसी कर्त के प्रान्तिके कुरदेशा केत न होता हो तथा किये करनेने संबर्धकार सामग्र करन को —ब्द कर विजी तद की करन करिने । किह कारके दिया हुन कारेने काल-स्थापने उत्तेत्व के पर प्राप्त जो रहा करना करिने। केंग्रेने को शीरका समय है। केंद्रा । इस बनवादे होन्द्र सरहारे समझा स्त्रे और बाँद पनिश्चित्ते भी अपने सम्बन्धि प्राप्त करण पाने से प्रीतम्बन्द करे ।

क्षेत्रको करते हैं—क्षाचीरच्या । राजा क्यरक्षणे अपने कुरको बढ़ उन्लेश किया था। तुम भी इसका सामस्य करो,

## वस और गौतमका संवाद तथा आपत्तिके समय राजाका वर्ष

क्रेमर और पेनेको इक्स काली करते हैं, उसी तथा सारका । वृक्ष नहीं होती । उपरेक सुननेके केरा यह वहीं सरका, क्षीवा और अधिका

मुचितिरों कहा—स्वरूपी । वैसे अपूर्णको कैनेते हति न ( कार्यको, अस्पोद क्योंकोहरूको अपूर्णको पूर्ण कर्रातेते सही

चेकानेरे का-जब में तुन्हें एक प्राचीन इतिहास सुरतेकी इका बावत् होती है: इसरियो पुरः वर्गकी है को | इतका है। चरित्रक मानद वर्गतवर महर्गि चैतवदा चहन् आमाप है। यहाँ पौरामने साठ इसार क्योंतक क्ष्म किया था। | सुन्ते — सामानेके यह होनेसे ही राज्यके बारावा नाहर होता है। **एक दि**न के अपनायें लगे हर का पहायुनिके कारायार लोकपाल यमराज सार्व आने और उस्ते किन्हे। ऋषिह दर्जनमें धंताह हो चयने उनका विद्रोप स्वकार किया और पान 'करिये, में आयबी बना सेवा बड़ी ?'

नीतमने बारा-कर्णगरक ! आर पुत्रो यह करानेकी कृत्य कौरिको कि कौन-सा काम करनेसे कनुकको कल-निराके अपने पुरस्तान किरना है ? तक परित्र को सूर्वय लेख कैसे प्रका हेने हैं ?

क्यापने बहर-क्यूक तर करे, क्यूर-फीतररे परित स्ते और सदा सल्यानगरन वर्षका करन दिल्या को । हो प्रतिदिर गाता-विशाली क्षेत्रमें संस्था साम कार्डिये प्रका महा-भी रहिया देशर अध्येत महत्ता अनुहार कान माहिये, इससे जाय श्लेक्टेन्से कह होती है।

नुविद्याले पुरा -- विस्तासन् ? यदि एकाके सूचक अधिक हो जाने, निश्न अरब्धा प्रथम होत है तथा कानेर पास सामान और सेना की म का जान, को जानदी कक पति है ? का मन्तिपोधी संस्थात होनेके स्थारन छन्यक गुरू केंद्र सून भानेते, राज्यध्य इत् वृर्वतः राज्यका अत्र धरन्यान् प्रत् वय आर्थे और शायनीतियो संविध्यो कोई सम्बाद्या व स्तु कार हो क्या काम करनेसे उसका करन हो सहस्य है ?

भीकारीने करा-- मुस्तिहर ! यह सो मुक्ते बहे गोवारीक विकास का निवा; पहि तुन्तरे ध्रुरा का व किया गया क्षेत्रा तो मैं मेरो समयके बर्मका उनकेत नहीं कर सकता था। प्रारंका निवय कहा स्थल है, संस्कृत अनुसीयनमें अस्तर कार होता है। पास्त्रसे नर्गका अस्त्र करेंद्र कांद्रा सत्तर करनेवासा और स्वाचारपूर्वक साथ जीवन व्यक्तित कानेवाला मनुष्य कहीं कोई विश्वन हैं। इंग्लंडर संबद्धके समय एकाओंके जीवनकी रहाके विने में हेस रुपाय बताता है, जिसमें बर्गका और अधिक है, और बहुन केतर सूनी पार में क्यांकरणके खेरकसे ऐसे कर्पकी प्रक्रंस बस्य की बाह्य :

आपरिके समय भी वरि जवको दुःस रेकर कर करून किया जाता है, तो पीढ़े का एकके रिजे कैक्के समान मिन्द्र होता है। यह सम्बद्ध पर है। पूर्ण जों-जो शासका स्थापन करता है, स्वे-के-मों उसका इसन ब्याह्म है, मिन को जान प्राप्त बारनेमें उसकी मिलेब समि हो जाती है और उसके हारा व्या शंकादरे क्यानेका उत्थव साथ हो के निवासका है।

अन अपने प्रसन्धे अनुसार अस्तिहरू करे

इस्तीको व्या प्रकारी धन शेवार अपने खोचको वृद्धि करें। बिन कामा समय सानेपर प्रयादे ह्यार धन अपटे देखर अनुस्य करे—भूती संदर्भर कर्न 🛊 प्राचीनकारको सुनाओंने भी अव्यक्ति साम प्रस कराय-पर्मका ही आक्षण दिन्दा वा । सम्बद्धांत्राती पुरुषेका वर्ग दूसस है और विपरित्रता पर्वाचीका कृतत् । इसलिये पहले कोच-संतत् करके किर प्राचित्र काला प्रति ।

राज्य देशन कर्मान करे. जिससे उसका वर्ग भी बना खे

और को प्रमुख्य अभीन भी न होना पर्व भंद्र अपनेच्छे विवर्तिनों न आहे। इर एक उपायके हारा अपने उद्धारके हिन्दे ही उपन करे । सर्ववेश्वाक्षेत्रके कर्वने विद्वाला प्राप्त काली काहिये और इत्तियोको बाह्यसम्बेत औरो प्राप्तान सीविकाको किन बहु करेगर बहुके अनिकारीले भी यह करा लेख है और नहीं कानेकेन्य असको भी का रेला है, हारी प्रकार आर्थिकातीय प्रतिम भी सरको और प्राञ्चनके दिख राजका कर से प्रकरत है। सरकता और सेनारे यह है। क्षानेक अब लोगोक्स अववादित क्षेत्रेयर भी क्षांत्रिक्को य को भीका मोनाने काहिये और म बैट्य तथा सहस्रहें हैं। अभिकासे गुजार करने साहिते। अधिक अपने साहित अनुसार पुत्रों किया पासर हो वर्षकार्तन करे हो प्रतय है। जो जंपने जानिकारोंसे योक मीगकर जीवन-निर्वाह नहीं करण कारिये ।

अवस्थितको राजा और राज्यकी प्रजा----------------एक-एररोकी रक्ता करनी वाहिये। यही संख्या वर्ष है। जैसे ज़क्कार संबद जा कव से राजा राजि-राजि भग सदाबार की आयमिके बचला है, अबे शहर शताके करन संबद पहनेपर जनको की उसकी रहा करनी काहिये। राजा पीरिकाले रिमें अह चनेका भी कवाना, राज्यका, शेना, वित्र तथा क्रम्य सर्वित स्वयन्त्रेको काची राज्यसे दर न करे । यहाधावाची क्रमणसुरका काना है कि मनुष्यको अपने पोजनके अञ्चयेते ची क्यापन बीकको रक्त करनी चाहिये — बही धर्महोन्दी ची राम है। विसम्बेद राज्याची प्रकारको अञ्चल बाह्य हो और महर्कि करक बीकिकाके किये विदेशमें को-को किसी हो, उस राज्यके विकास है ! एकाको का है समाना और सेना, इनवें सेनकी नह है सनान, सेन सब वर्गे (की ध्रा) का पर और को प्रसास पुल है, इसलिये सकते मूलपूर कवानाको बदाने : कानाना ही न हो से सेना कैसे रह सकती है ? असं: अविविकालमें कर-संस्कृते लिये प्रवासने कुछ द्वारा। भी पत्रै वे समाने केंप नहें रूपता। युधिहार ! एकाई रिजे

कुछ केह केट कर रेनेकी कह कहे नहीं है, यह हो । यह जो नहीं रेज कहीते ।

कमानी रक्षाने बदबर बोर्ड को नहीं है; बहै बनावा कुल | रिग्वे आवरिश्वालके रिग्वे हैं, उनके रिग्वे नहीं । अरः को महत्वा नवा है। क्या इस करि विपर्तत से प्रकार को है कोच्छा संबद परे, जाने दिने अपर्यका उत्तरन

## अग्रतिप्रस्त राजाके कर्तव्य सवा मर्यादाका पालन करनेवाले दस्यओंकी संबंदिका वर्णन

रूप वृत्तिरने पुरा—रिकामा । विक राजाको प्रतिह । हो अपने विद्यानके प्राप्ते पीयर-निर्वाह प्रत्या पाहिले और श्रीम है गरी हो, यो हैनेहमें हो, मिलके पण और राहोको सहअोने बाँट रिल्म हो, विकाद वर्गकांने स्वापक म हो, जो पूर्वन हो जन्म हो और परन्यान् स्कूमोंने विसर्क वितानो प्रमान्त्राओं क्रांत हिंगा है को क्या करना पाहिले ?

धीवको जेले—राज्य । बहारते जानेकाल कह करे बर्ग और अर्थने कुसार उस्त परित्र स्टिट हो से आहे स्टब्ट कींत्र के श्रीय कर से और इस क्रकर अपने काम्यानक राज्यके साथे अपने प्राप्ति क्या है। प्राप्तन और रीअसी साम हेरेते हो जिन जानतिकोचे प्रटचना जिल प्रवास हो, अनंद रिये अर्थ और करेबो प्रत्येकार और मनम अपने वरीत्वों भी पैरावेच ?

वृद्धिले प्रत—क्रम्यो । यह विता-हे-केल सचीलोग विग्रह जो, जाहर कार और पान आहेची प्रशूपे रीद करना हो, प्रमाण पाली हो पन्छ हो और नह पहल भी सार गया हो से देती स्वामें प्रमानो क्या सन्त कारिये ?

भीवारी क्षेत्रे—ऐसी रिवरिनी का को प्रांत लेकि कर रोगी कहिने क अकश्याम् अञ्चा प्रमुक्त पराहत्त्व हिरसकर कारको राज्यते बाहर निकास देश काहिने । ऐसा अकेन करते समय गर्द गुरु हो बाद हो थह भी परस्केकने है। करनेवारी होती है। यदि सेनाका काले और अनुसार हे और उसने अवाद भी हो को बोडी होनेस भी उसकी सक्तकारो एका पृथ्वीको बीठ सकता है। बाँद का बढ़ारें मारा काल है से स्टामें करत है और प्रस्को कर करक 🖁 ते पृष्णिका राज्य भोनता ै।

कृषितियो पुरा-विशेष्या ! यस समावा सोया-रक्षाका परमार्थ न निष्य सके और पृथ्वीने आधीरिकाके सारे सामनोपर सुटेरोका अधिकार हो जान को को क्या करन पार्टिने ? उच्च ऐसा आयाकार अमेरर को प्रकार क्षानम् अपने सी-कृषिको न क्षेत्र रुके, यह विराह प्रवास अपनी चीविका चलको ?

क्याची महि जिर अवन क्या प्रतेषी हका हो से प्र किसी प्रकार राज्यों स्वयस्थाता विश्वत न करते हर ज्ञानको अपन्य सम्बाधन ज्ञानको प्रकृषे तिन्ने अस्ते हिने किया भी कालो पान के प्रकारत है परंद (विप्रतिनों पर प्रानेपर की) व्यक्तिक, प्रोहेट, आवार्थ और प्राह्मवाहे अवस्थीन क्वीक्वोको प प्रकार-क्वो का प हो। या मैंने हुनो सब लोकोचे रिन्ने प्रचलका बाब कारणी है। एक बन्नोक्ट्रे कारत है विकास करके क्रांके कारता कार्य करच कार्यने । की, गीर का मगर्येत कहा-से स्वेश केववत शासके यात एक-पूर्णियों खुरी या निष्यु को से कान्ये नार करका है विशोध सकत के निराता की साम च्यक्तिः क्योंकि कुररोकी निन्दा करण हुए पूछ्योका सम्बद्ध है होता है उन्हें सायक स्थीत क्रारोके गुल ही पाना कारी है। के कामानुके कामाने प्रधा सानुस्त्रीहरून एक औरसे सम्बद्धि और अभी अपने भी अस्पेतित है, सुमानो क्रवी वर्गका क्रायान करना चाहिये। प्रायुक्तीने विका विकास वार्गक अनुसरक विकास से करीयर को साथ ही चारण पाहिते; स्वार्थिकोच्या आकरण ऐसा ही हुआ करता है ।

कान् । राजको व्यक्ति कि सपने और प्रमुक्ते राजकी का नेकर कारने फायानेको गर्ने; फायानेको धर्मकी पुरिद् होती है और इसीने सम्बद्धी बद भी पैत्रकों है। ब्रोजनी रख बारना और को पहला कराया प्रक्रमा को है, सिंह गीर एक कार्यान हो जो उसके करा कोन कैसे क सकता है ? जोप-ही गोंद पान सेना कैसे पह समानी है ? विन्य सेनाके प्राप्त कैसे कि प्रमुख है ? और राज्यिको प्रस तकरी हैसे ल सम्बर्ध है ? अतः राज्यको स्था है कोन, रोगा और स्ट्रारोको बढाते कन कविने । दिन प्रकार सनी तकते टर करी है, फिर कर्षा प्रकरी जी, जी प्रकार शब कर भले है है जान, उसे क्यो क्रम नहीं व्यक्ति । समाको ऐसी सोकामर्गाह स्थापित करनी साहित को उसके विकास अगन कानेवाली हो। कोकने सम्बद्ध बाजने के पर्याक्रक है बार हेता है। इंसाएं वीनार्थं केले—कृषिक्षितः । ऐसी स्थितिने प्राह्मणको होने को लोग है को हालेक, शरलेक क्षेत्रोहीको नहीं पानते । ऐसे मारिकोच्य क्यो विश्वास भूते करन काँके। युद्ध र 🛭 कर्नवारेको बारसः, परवीपर बस्साव्यर करते, क्राह्मसः प्रकारका वर रोज, विस्तिया कृतिक औरक, स्रोद्धा अवहरण बरन एक विसी क्यादित सहस्रम करते हते कामा साथी का बैहरा-ने सब को अवस्थेते सी नियनीय क्यो वाही है।

पुनिश्चिर । जो दस्तु (दस्तु) क्लोक्स कला कास 👢 कार्यो मानेवर स्थित नहीं केवी। इस विकास मा आयोग प्रतिकार प्रतिद्ध है। कारण करके एक निकासूको वस् केरेनर की विश्वि प्राप्त कर की की। यह यह बहुकार, ब्रामीर, प्राप्ता, अक्टर, आवन-क्वींक करन क्रतेकत. प्रकारक और पुरस्ता स का अपने हर नियमकारियों परिदे वेटमे समझ हुआ था। यह प्राय-प्रायेटे देवों समय कार्य कारत क्येको सेरिक्केको क्वेनिस पर है। बार को देश और मतत्त्वा अवह प्राप्त वा उठा था प्राप्त मानिका पूर्वत्तर कुल कामा का भी का प्रकारे अभिनोंके समायक हार का, अल्ला नेवाल क्रांड कार्ड महीं बाता वा तथा अलोह क्या नहें स्कूछ में । यह उलोहर ही क्षारों म्युन्तेकी सेनाको प्रीय नेवा था एक उस विकास करने कुका अपने अंधे और बहुरे प्रक्र-रिक्ट क्रक हु।ते महे-पहोची रोज किया कथा था। या मानकेर पूर्णाया कारण करके जो चेपल करता और जाती का जाता है मेना करना 🖝 ।

एक बार मर्गायक स्थीतमा और उक्त-स्थादे क्षांकर्त करनेकारे कई इसल अधुनाने करते कहा, 'हर देश-कार और पूर्वाचे कालेवारे, ब्रॉडकर, कुका और क्वातिक है, इसरियों इस सम्बद्धी सरकारे सुर क्वारे स्थापन कर पाओ। जुल को जैसी-वैसी अंदल केने बैला-बैक्ट ही इन करेंने । हम कता-विकास समान इनारी स्कोरिक वैकिसे राह को ।'

हरत करको सह—को बहुने । इस क्रमी सी. इत्येख, व्यत्य और स्थानित प्रया न स्थान प्रया के बाद र करन प्रकार हो. उसका का २ करना। विक्रीको कृषी कार का कारण, भी-सबसे प्रसंप प्रस्ता तथा. प्रमुख्येके दिवस्य राजेश स्थान रहाता, जनसी प्रमुखे तिने आव्यक्तक हो हो पूजू की करण, सावक क्यी विकास व करन और जिल क्रोंने केवत, विका और अधिक्रिकेस पूर्ण होता हो, उनमें बाबी कि पर सरका । क्रमा भारतीर्थे स्थान है विकेशार्थ पर सरके केन हैं, जातिने अवस्थात हो हो जन्म प्रसंस रनकर में कार्य केन करने पाईने। देखे, स्वामानेन कृतिक क्रेस्टर विरुद्धा सर्विक विरुद्ध करने सन्ते हैं, कार्या क्षेत्रे स्टेक्टेरे कोई को पह जो कर समात। को पहर स्थानोची निष्य करते हैं समझ प्रस्ता पास करने प्रस्ता है. जान्या श्रूपीएन क्षेत्रेनर अन्यव्यत्ते महत्ते सम्बद अवन्य है कर है कर है। के गुरू सर्वाधि हुए के है, कार्यों जाना कर मतीनी आह है। कुना रिकार पुर्वेद प्रकार रिन्टे ही पूरत है, अवन वर स्कृतिह क्षेत्र वर्षः। व्यक्ताति जन्म क्षेत्रः भी भी वर्षश्राक्ते सहार कारण करते हैं, वे लुटे हेनेवर को प्रोत हो निर्देश प्रदान बार होते हैं। (वेचके, वे एक कार्य उन्हें बंबार के भी में कुमान सरका कर सरका है ()

क्षेत्रको स्वयं है-वृतिहा । एवं पर प्रका कारणको अवस्था है अनुसार विकास हरते का संभीकी सामि हाँ और उन्होंने कर करना भी छोड़ हिंगा। हत पुरुवकोर काराओं भी बढ़ी आगे सिद्धि प्राप्त और क्वोंकि हेल करके उसने अनुकर्मको सूक्ष कर स्त्री और रुक्तोंने करने क्या विकास के पूरत विकास का कारणार्थिका करा करता है, जो किसी की प्रकारने अभियोधे पर भी वेस ।

# राजाके लिये बनसंप्रहके स्थान तथा अनागत विपत्तिसे सावधान रहनेमें तीन पत्योका दुष्टाना

चीनार्थं क्षेत्रे—शक्त्। किर क्ष्मणेले सम्बन्धेन | पूजा इतिव्यापके प्रता हेवार, विवार और अतिविध्योक्त अपना स्रोप परते हैं, अनके विवयर्थ व्यानकारेन अक्रमीकी पूजन नहीं करता, अतके बनको वर्धत पूजा विश्वीक स्वार्ध मने हुई कुछ राजाई बड़ा बजे है। उसको पहनुहरू हैं। सार्थित प्रकारों ऐसा का होनकर प्रकार करान करनेवाले दियोका कर नहीं लेना चाहेचे और देखेका करना चाहेने । यो तक देने क्रुप्त पुरुषोसे कर बीनकर को सम्पतिको भी नहीं कुन कहिने। इं. तुरेरोका और को सायुक्तको है। है, वह सब प्रवासके करीको सान्तेकस सोग कर्न-कर्म नहीं करते, उनका कर का से सकता है। जो | है। किस प्रकार कुळेबी कुछ पीसको और भी सहित हो मारी है, नहीं प्रकार विकार करनेने कर्मका सरका उपकेश | साम है से नेरी क्षेत्र पूर्वत विकार मेरे कथी नहीं पुरारी है सभ्य केंद्र नाए है।

 मुसिट्टिर । को पुत्रम सम्पन्ते पहले हैं कार्यकों प्राप्तक कर रोज है जो 'क्रक्यराज्यात' करते हैं और किसे दीय क्रावर है कर वसेको वृद्धि स्ता को 🖢 म कारपार्था प्रमुख्या है। ये हे है हुए क सकते हैं, Odest से सा है सा है। में क्षेत्रकें वार्तिन अवस्थिते विश्ववद्ये तेवा एक पूचा अवस्था कारत है, सामका क्रेका करे। एक सामको, किसने क्षेत्र है पर या, बहा-से मानियाँ युटी थी। उसने पैन कर्मकृता पहा भी है। ने क्षेत्रें एक सब है का कर्म है। इसे १६ देवेदाल (अगन्यविकास), कृत्य अवस्थानी और वैस्त्य देवेदवी का एक विर प्रक महेरीने का राजनको का कोर नामिन्द्र निकारका कारक क्षा अव-नामां नेने चीने निवारण अवन पर हिन्द्र। व्याप्तका का क्या देखका वेपेक्टी अन्तर्भ धानी प्राप्ती अस्ते केने व्यक्तिके पहल 'प्राप्त केन है इस पासकारों क्रोकारे सभी आंग्लिय कार्यंत आरोकारी है, इस्तीरचे काराय इस्ते निकालेक वर्ग ग्रह र हे सरक प्रीय है हो पहिंची को पान पहिले । वह अवनोचेको पी Mi treat che um tal di admi fanti qui ramali करें।' इसमा रीवेस्टॉने कहा, 'हुको बात से डोब्ट है कहे है, सिंह नेया देखा विकास है कि अपने हमें मानो जो कारो taffet if fiet murturit eben, fand i we were

कर केन्द्रेका देशा विकार देशाकर महामाने खैकंदर्जी के करी हिर एक करीने हेकर को कानकार्ने कर गया।

कुछ समय बाद का महेचेंने देशा कि उस मारायाका कुर प्रक: निवास कुला है के अनेने बर्ज कारोपे आपी हत व्यक्तिकोच्छे पेत्रह हिल्ला। सम्बेद एका कैनेश्वर्थ भी सहस्रो बंग गण । यह कोटी यह स्टाम से प्रकृतानी में का प्रातिकोचे पुरस्कर प्राप्त-सा होनार पढ राजा। से बार्ल केले हां हर एक अवस्थितीयों रोवार पूर्तर बढ़ी बराबको करवारत साथे और जो कार्ने धीने तर्ने । असी कार अनुस्थानी कार्नेते निवसका कार्ने कुत कार् विक्र क्यूनुद्धि देवेद्वरी अनेत द्वेत्वर यर पर्या।

इस अध्या को एक बोक्सक अपने मिरनर आने हर कारको नहीं देश पता पह कैर्वपूरी नवको एकर करते हैं। का है कर है। के का सक्ताकर कि मैं कह कार्यक्रकर है पहोंचेने अपने पार्क्य कार पूर्व करता, पूर myseeds were were now speed fields un men bi mitch ung b fin apprecheute afte राज्यकारी - ने के कुलों रहते हैं और कैर्नेसुली रहा है क्या है। क्रिक्टी इसीको नर्गतास और पोक्सासमें Charolist de glough de de de de des Crandist riner है। को पूरव जीवा के। और बारवरे, सोव-समझकर, कार्यको अर्थ एक अरस कर करते हैं, या असार men un un ur de fen fie

# इत्रुओंसे बिरे हुए राजाके कर्तव्यके विषयमें विद्याल और चूहेका आख्यान

fired gos was 1, force more this year सहभोते किए स्टोका भी मोको नहीं सहस । यह अनेको बारबान् सन् विक्री तृर्वत राजाको सन प्रकारके प्रकृत जानेके रिन्में रेपार हो माने हो जह अस्ताप और अनेको एनाओ कार करना वाक्षिते ? यह उनमेरी निकालेंड साथ पात करें और विकास साथ संवि तथा और बाल्यान क्रेनेकर भी बा प्रमुखेंके बीकरे पैस जान के जो कैसा सर्वन करना पार्टिये ? करानेंद्र रिप्ये हो सार कर्तन्त्रोमें पूर्व अक्तर है और अवन-वैशे सत्वतंत्र एवं विशेष्टिक महत्त्वको सिमा और कोई हर किरमको यह भी भी समझ । अर: अस असी एक विकासकर यही कियम सम्बद्धने ।

तमा पुणियोगो पूरा-परकोषु । मैं पर पुणिये | प्रीपत है है। अववितेष सम्म पर प्राप्त पार्विने पर पर्य सम्बद्धे परमून नहीं है। मैं हुनों पह सम करन सुनता है, हुन म्बरुएर्डक सुने । विक-विक कार्योक्त देश प्रथम हेला है, निवाने कारण कभी कुछ मित्र वन सक्ता है से सभी निवाहर भी पन विन्दा करता है। कारणार्थे का कार-विकास परिविधी। े तथा क्या-सी नहीं रहती। जरा जनने वर्शन्य-जनतीन कस to-serve from arts factor from aft finish स्था पढ़ करन पातिने। पति प्राप्त संपारने सा पढें से क्यानोरे की नेत करके उनकी एक करनी काहिये। इस विकासे एक मध्यक्षक कोमाने प्रत्यक और प्रस्तुका वंकासम्बद्धाः प्रदेश प्रतिकार प्रतिकार है।

किमी करने एक बहुत बहुत प्रदास पूछ था। यह संभावी जेले- केट । हुको को 300 पूजा है कहा अहम-जी एवा और परेक्टोरो स्वाच्यादित या और उत्पार

सनेको पश्चिमेने बसेत का एक का का का का का कुरतक केला कुछा, संबो-संबो करिक्योंने कुछ और वेदके समान सभा था। कार्यो कार्याचे नहीं केवळ थी। जा सकता अनेको सर्व और बंगली जीन विश्वास करते थे। अनेको भागे से एकानोका किए बंदबार फील जनका एक स्थित के देश के वा का अपने समान से के किया एक किरमा था। यह यहा प्रमानो प्रतिकारी प्रतिहर को आरुप्दे को जरने दिन निवा का था। एक कर एक कार्याले का वर्ण अत्यत् केर कार दिया। या कुर्वक हेनेक निम ही सरमा बात देशा है। वा और असहे शीली बेरियेको नकारक स्टब्क्ट सेको उस्से होसोटे मा क्षेत्रा था। राज्ये अनेकी बेनकी बोब पर प्राप्त केल मार्थ है, उन्हें का सर्वेद उत्तर पहल होता है। जिल्ला में की पहल सारवात पहल था, से भी एक दिन पर उस बारने केंद्र राज । यह देशका बीवा पूछ विशेष क्रेकर सार्वे अन्य अक्त कोको रूप। प्राप्तिने सान्त्री क्री बोबोबी सुनारेंके रिने वान्याओं को हर बंगसम्बर्धेन पहें। का या कारण कारण करें को करा। का कारेंगे यह कार्यन या और या-ग्री-या अन्ते कुन्तारे यो हुए जहरर हैन पर बा। इस्तेहेने कालो पूर्व एक कुले सहरत को । यह वा इतिन करका कोता, को वही पुन्नीने बिता सम्बन्ध कार मा। प्रोची पार पार्ट का होत है। शको वितको निवास आगः। इतर हो ज्यु गोरस आग महत्व प्रवाहनेके तेन्त्रे चीन रमान्यते हुए पृत्तीनर प्रकृ सा, क्या कोने करन्त्री ओर देशा से को कार्य क्रायाल के हैना सपन एक प्रयु और भी दिवानी दिया। यह साहेट कोकोचे कोकार ज्यार समझ सन् था। इस प्रकार मानु और जीरेनेर मीको पहला का धूरेको यह पर हता और यह विश्वामें कुछ गया।

इसी समय को एक विकार सुता। यह श्रेमने समर, 'जन मोई मीन अवस्थि कामर विकार सम्मान मून काम में जो मैसे को अन्ने आसीमी दक्क करने कामि । इस समय मेंदे कर को अस्थि अर की है जाने सभी असेने अन्य कामी असहार है। की में पृत्योगर अस्थार कामा है तो नौतन सुते का कामण, की काम है से अन्य कर से माना और की नास काट देता है से विस्तान की सेनेका। पांतु देती विकार केंद्र कहा है, किन्दु इस समय का मूने बारिने। किसमा केंद्र कहा है, किन्दु इस समय का मूने बियतिने का नाम है। अका, देती में स्त्री, अपने सम्बन्धि विकार की का नुस्त नेती काल कामा है का मूने। सम्बन्धि विश्वविकास होनेके सारक इस समय या मुहाने मेर क्षत से । व्यवकार्यक ऐसा या है कि विश्ववि का पहनेतर सीकरदहाके रियो कारकार व्यक्तियों अपने समीववार्त सहसे भी केर कर रेज व्यक्ति । युद्धिकर सनु भी काम होता है और पूर्ण दिश भी विशो कारका नहीं होता । अब देरे बीकरवरी रहा हो मेरे यह विशायक ही हात है स्थाती है, कहा में इसे इसके बीकरवर्त स्थाति दिनी सम्बर्त हैता है।'

-Birmir

का का परिवासकों कोने विस्तवको संस्कृति हुए हुस जन्म बहु, 'र्मक विकास ! अभी मीवित है न ? मैं हत कार कुरते हुन निवासी तथा चेल यह है और बाहत है कि इक्ते जीवनकी एक हे कन; क्वेंकि इत्तें इन केरोक्ट है केन है। केना । एवं नात, हुए जारखरी केवित का सकते है। महि हम चुड़े करन न कहे से में हकता सहर कर क्रमा है। की करने जून विकार करने अने और तुम्हों रिन्ने एक जान सेका है, जाने इन क्षेत्रीका एक-मा देता है। क्या है। देखे, में न्येस्व और अन्तु नेरी करने केंद्रे हुए हैं। अन्ये पूर्वाने मुक्तर आसम्बन्ध भूति विका है, प्रतीसे अन्यत्व है क्या हुआ है। कारणवर क्षेत्र कारण वैद्या हुआ हुन्दु श्रह का है और नेर्ड और ही साथ समाये हुए है। हुए पार्यको पहले क्षेत्र कर राज्या है। परपुर्वामें की नक्षेत्र कर साथ सुनेत्रे क्षे निमान के मानी है। पूरा भी वर्ष सुविकाल के, क्रारिकों मेरे निक्र हो । जान मुझे कुराने मोर्च कर भड़ी है और मैं कुले हैंत क्या क्रोका समय को निभावित । एवं हेरी सहस्रातंत्र मिना करने की पूरा कारणको पताद नहीं सम्बोधी । हो, भारे हुन मुद्री न करने को में सुरक्षण करना बाद सकता है। इसीने केरी men å fie um dielit alle mit nic Prentit grant क्रमान हरत वरें । देखें, का बोई पूछ सम्बन्धि सहस्र रेकर मिनी पढ़ी करेको का काल है से का उन रण्यांको विकास सम्ब के हैं और यह समझी औ पार चीक देती है। इसी तथा इस केनोच्या की बेसर के सवाता है। मैं क्यें इस नियमिये का का देश और दूस मुझे आयसित

इस जनार जा चीरा कृते हेगेके हिम्मी क्या क्यूं में को कृष्टिक्य और व्यक्तिया सम्बाध्य का कृदियार् विराजने अन्त्री कामर कृष्टि क्यांका क्यांत कृति सरक्रम की और किर जाकी और देवती हुए इस प्रकार कृति क्यां, 'बीना । हुन कृते जीवित रक्षण व्यक्ति है का देवकर कृते कृति अस्त्रात होती है। इस समय अवस्था में बढ़ी अपनीत्में का पत्रा है और कृत्यों भी क्यांत सुद्धारे कार विश्वति मेंक्स की है। असः हुन कृत्ये आयोगस्त्रोंने दक्षित ही स्थित हो जानी माहिते। मैं सामानुसार जनान हुन्ताय कान करनेका जना करित, का निर्मात का सामने से हुन्ताय जनकर नार्व वहीं हैन्सा। इस समय मेरा मान भंग है जुन्ता है, हुन्तारे की। नेते माहित है भूते हैं। अब से मैं हुन्तारी करनाने हैं और मैसा हुए साहिते मैसा ही कर्मना।

सोनाको इस अवार व्यक्तिक वर्तको अवते है अधिकारपूर्व कार्य करे, 'इस कार्य कुछ न्येनेचे कहा अर सन यह है, मैं हुमारे नीने किय कार्य कहार है। इस नेते यह करता, जार का इसका। इसने जा कर्म अर्थ अर्थ के सन्तेक समझ कर्म हुआ है, इसमें की हुम कुछ क्या हो। इसके कर में हुमारा कार्य कार हैय---व्य कर मैं हुमारे समस्यी कार्य करते कहार है।'

कोची का पुरिवर्क का कुम्मा केवाने जानी और प्रतिकृति हैना और काम्युक सामार करते हैं कार्य पुरुष्ट कहार की, पुरु के की काम्युक काम दिन करते हैं। पुरुष्ट कहार की कुमरी कुमरों से की काम्युक होती। पुरुष्टि की किए, अस्त्रों, प्रस्तुत केने और कर के। किए। पुरुष्ट किए, अस्त्रों, प्रस्तुत केने और कर के। किए। कुम्पानेंक काम कुमरों करते दिन और विकास काम कम्मा क्षेता।

कुत सेरव, 'हरेंगा । इस आयरियों का करेंगर में से हुएती जीवें सम्मान करींगा । यह इस वेंद्र दीन करेंगे के मैं भी सम्मान हुएता दिए करेंगर । कारि सम्मानक पह हुए कहार हेंगर की वह पहली कर सम्मार करवेंग्रांकों सम्मानी बंदानी जी कर सम्माद समेरित बेर्केगरान के सम्मान हेंगेगर ही सम्मान करता है, सिंगू पहले सम्मार मारोकास निर्मा करवारों नेवह पहिंचाना ।'

कृत जानी वर्षों नहीं करते हो । देखी, चान्यतर तथा होना, जाने आनेते न्यारं ही मेरे कथानेतो सार हो ।'

इसका चीनाने उससे कहा, 'सेवा | सून चहे, काराओं जा | मैं स्वानको कुन संस्कृता है, टीक अवसर आनेका जाने कई पृष्टुंगा | को कान अस्तानने किया कहा है इसके करनेन्द्रांगा हिए की होता, कियु करें उसे टीक करनार किया जान को अस्तों नहां स्वान के स्वता है। पति की करना करें के हुए हुए दिया के स्वानेत पुरुष्कों जन है क्या है | इस्तानने हुए करनायी अस्तिक करें), ऐसी करके जानें करते हैं ? किया जाना में देखेंगा कि मानकार प्रतिकार दियों हुए इस्ता का का है, का करना हुनें सरकार-ना मान केवा देखाना है में इस्तान करना कर कर्म्या । उस समा हुनों ही हुनें करनाय क्याने करना है खोगा और मैं साने किया हुन कर्मान ।'

कृति के को कृत्या निरमणे कहा, 'अके अवसे विकंत कर्मको केन्द्रक किया करते हैं, तुन्तरी तहा वहीं। देशों, मैंने में कृते अपनित्त केवान तुन्त के बना निरम का। इसे कहा कृते को कृतिय क्या केत कि करण करिने। तुन देश क्या करें, विकर्त क्या केन्द्रिया कार है। वहें अध्यक्तक करने कर्म की हारा तुन्तर कोई अदित हुना है के को कृत करने का क्या। मैं हुन्ते क्या क्यात है, तुन की अति करका क्योक्तिक कृत कर है।'

वृक्ष सक् वृद्धिकार और नीतिक्ष सा, उसमें विश्वकरों सहा, 'किस निकार सम्बद्धि सम्बद्धित हैं। उसका साम इस सम्बद्धित सम्बद्धित की सम्बद्धित सम्बद्धित हैं। इस सम्बद्धित अपनी श्रामक साम नहीं श्रापत, उसका सब मैंतर सम्बद्धित अपनी श्रापक साम वृद्धित स्वता, उसका सब मैंतर सम्बद्धित सम्बद्धित सम्बद्धित महिला सम्बद्धित के स्वतान से स्वतान सम्बद्धित सम्बद्धित स्वतान सम्बद्धित सम्बद्धित स्वतान स्वतान हम सूत्री नहीं समझ सम्बद्धित स्वतान से स्वतान स्वतान सुत्र सुत्र नहीं समझ सम्बद्धित सम्बद्धित हैं। उसे मैं सही समझ स्वता हैं। सुत्र समझनों स्वतान

इसी कहा बात करते-करते का एत बीत गाती। सोमहाके बजी कहान का महार नका। समेश होते हैं परिश्व नामहा कामहार हाकने हास देखें आता दिसानी पहा । वह साहात् कामुक्ते सम्पन कम पहारा का। उसे देखते ही विस्तान कारो कामुक्त हो नका। उसे कामहीत देखता खोने हुत्त ही नाह कार विका। जात्मी हुत्ते ही विस्तान उसी पेहार कह नका और कुत उस कांग्रन हुन्हों पंचेते हुत्यान अपने विस्ताने हुस गाता। भागानाने अतंद-कृतकार चालको सम ओस्से केला और ।



निम निरास के को कान्यन अपने पर पान्य गया।

का आयोगने कुटका पेड़की जाकारत केंद्रे हुए लोगजने बितार्थ क्रिके हुए क्रीलाने कहा-'बैचा ! इस महत्त्वे कोई मानवीत निर्मे निमा इस अधार स्थान निर्मे क्यों क्रा गमें 7 में से तुन्हारी बच्च ही फ़रहा है, तुनने मेरा बच्च करवार मिरवा है। क्या शुर्वे जेरी ओरसे कोई कहा है? तुनने विपक्ति समय मेर विदास किया और किर मुझे जीवनहार दियां सुन्दारी जैसी कृति भी उसके अनुसार तुमने मेरा एत संस्थार किया है। अब नो मैं तुष्पार किय के पता है और तुष् मेरे साम इस निवराका सुक्त बोक्त वाहिने मेरे को बी मित्र और कक्-सम्बद्ध है, से तक कुक्ती इसी अबार सेना करेंगे जैसे विश्वासीय मुख्यी करते हैं। मैं भी कुन्नारी और कुमारे विता एवं कम्-वानायीका पूरा सावकर संबंध्य । भरता, हिंसा और कुरक होगा जो अपने जीवनहरूतका स्वकार र करना बकेना । तुम मेरे, मेरे ब्रारीस्के और मेरे बरके काजी हो; मेरी को कुछ सम्पति है उसके तुन्हीं कावस्थापक करे। तुम बढ़े पुद्धिमान् हो, आवसे पेत बन्तिन मोलाश कर्व और विवासे समान सुते सहयदेश हो । वै अपने जीवनकी शब्द मत्ते बदल है, अब तुर मुक्ते किसी प्रधानक पन नत मने। वृद्धिने से दुन सक्त कुळकों है हो। सक्ते मनाभारती पीचनदान देवर कुछने युद्धे काले जावीन कर Pour it i'

क्लिकारी ऐसी कियानी-पुत्रको वाले <sup>7</sup> सुनकार क्त्यनीतिक चुंते बद्धा, 'अर्जुसमूच । जिसका बीका चुते हुए पूरण अध्यक प्राप्त प्रमुख देखता है और निसम्बे पर करेने अपने इपि नामता है, बड़ी कामक नित्र कर सकता है और यह रिक्क भी प्रणीतक निमती है, बकाय अपने सक्ती विरोध नहीं अस्त । विरास कोई स्थापी स्वेतकारी क्षेत्र से है जो और प्रमुख भी रख जी की सुनी। कार्यको अनुसूरका और प्रतिकृतकारो है जिस और सन् बन्दे खुड़े हैं। क्वांने-काबी समम्बंद फेरहे नित भी सह का men f aft unge 48 frem fr und fr if wefer नियोक्त सर्वेद निवास करता है और इतुओं से सब सर्वेद्य क्या दाव है, नेकि-प्रवास दक्षि रक्षकर किसीसे देन नहीं बारात, प्राप्ता विजये समय सर्वक मुख्येकोन के बारत है। िया, कार्य पुत्र, कार्या, भागचे तथा और सब सने-सम्बन्धी कार्यक्ष मेले हैं। एक-कुरोले मेंने यूरो है। अनन पहल पुर को बाद करिय है। जाता है के की-साथ हो। जान की है। संकारने क्रम स्थेन कर्यक्ष करनी ही रहा करना बाहते हैं: प्रातिको हुन कार्यको 🗗 सरका सन् सन्दर्भ । सन् परिव स्थानीत के स्थानी है। जीवारने सूत्रों के विस्तीवत की प्रेम अवस्था जो पान पहला। पहले वापी-वाणी जोनवह व्यक्तिये और प्रति-प्रतियोगे को कुद यह बाते हैं, स्थादि मान्यकाः अनी क्रेप प्रांत ही है। कृत्ये स्वेतीके कृत प्रधानकी जीवे नहीं हो रूपानी। कुररोंने हो कुछ मिल्लेसे शक्ता मीरो-मोरो करें मुख्ये हैं के होता है। इसमें बीते भी क्षा विक्रेप स्थानको हो हो हो। अहा प्रथ सह प्रश्न सह है क्या से जीते की नहीं रहे। बलाओ, अब किस बारमध्ये तंत्रा में यह सम्बंधे कि दून सुनते देन असी हो ? निकास और प्रमुखने पांच हो बाह्यलेके समान क्रम-क्रममें मक्रमों को हैं। काम है तुम मेरे प्रमु है समी के और अस्त के निक पन सबसे हो। यहारे भी हमारी जीति राजितक की, कारण जानक कारण करत हुआ का । यह कार पुर होनेका अब इक फिर आकार्य कर हो नवे हैं। तुन्त्रवा बान पूर हो पूजा और नेरी भी नियमि छन भवी । अब से कुछे एक कानेके निरम तुन्तारा मुक्तमे कोई और प्रयोजन सिक्ष न्हों हे राजना । मैं दुखान बहन हैं और तुम सुहे सालेवारे हो. में पुर्वतर है और भूत परस्कान् हो । हमारी प्रतिक समान नहीं है, इस्तरिको जान जानक को जानेगर कुमारी संचि नहीं को सकती । ये अच्छी एक सम्बन्धाः है, तुन्हें भूक लगी हुई है और बा तुमार क्षेत्रन करनेका समय है। इसलिने पुढ़ी कुरस्थात हम अपने म्बल पास बालों हो । इसीसे अपने

की-पुरो के बोचने बैठकर तुम चुक्ते केर करने करें हो । पांतु । चुनिको साथ करना व्यक्ति और यह काम है सुके से उसका मित्र ! इस मेरी को लेखा करना चावते हो, उसे करानेकी पहली चेत्रका नहीं है। उस उन्होंने द्वार एवं और की को उन्होंने कर बैठा देखेंने से वे पड़ों कर करनेरें क्यों कुछने ? इस्मीओं में एको साथ की यु सकता। इसरे सक्तकक से कारण क का से बीत सकता जो अपना कहा है। दूस है, कहने पह हुआ हो. करन हो और फेमनदी सामक्रमें हे आने कम केई-से भी भूदि रहरोगाल स्थीत केले था कामा है ? अधीरने रीया । इत्यास कामान हो; तो, मैं से बारत है, महो से करते भी हुन्तुमा पन राज हुआ है। अन, तुन भी और करते। भी हुने मेरे किने हुए स्थापका जान है से सर्वद्ध स्थापका करते रहत, क्यी अन्तर राज्य कुते क्रोच मा वेदन । यह मानानी जानेनर प्रकारी और नहीं है के बनाओ, में एकार क्या पान करे ? मैं हुई तर कुछ है तरका है गई। क्रपो-सरको नहीं है सम्बद्धा । अन्तरी एक वालेके तैनों क्षे रोतान, राज्य, या और क्यांने प्रचीवा त्यान विका या समान 🛊 । अधिक क्या, सारा सर्वाम सुरस्कर की कीवको अस्त्री एक करवी पादिने; क्लेटिड इस्ते सुन्त है, सीविक दुलेस्सानको ने fire of the said to

भीताने का इस अवार सबी-करी सुमाने के विश्वकर्त स्थित होका कहा, 'बार्ड । दे सामग्रे जीवन कहा है, निवारी होन करना से बढ़ी पूरी बात है। पूर्ण नेते पहलू की-इसे के में तुक्ति वृद्धिकरी है सन्तरक है। इस्ते कहे मेरियुक्त बार बढ़ी है, दुखरा विचार बुक्तो एउ-एव जिल्हा है, सिन्दु इस विकालें तुन्हें नेरी ओरते कोई विकरित पान नहीं सम्बारी वाहिये । हान्ये प्रान्तका देखा मेरे साथ निकास की है और मैं भी पर्नेको जानेकाथ, भूतवार्थ और क्रमा है। मिनेन्सः श्रुपारे प्रति तो नेस चहुत ही तेन है । इस्मीनने हुन्हें औ मेरे साथ देख ही वर्णन करना करिये । एकरे कहनेते हो हैं कारने प्राप्तु-वारणनेंसदित ज्ञान भी ज्ञान संबद्धा है। हम-देशे मनविवनीये हो सभी धुनियनोका निवास हो बाहा है। सह सर्वे मेरे कार कोई सक्त नहीं करनी पार्टिके।"

क्रा क्रकर विश्वको का क्या स्थान की से मनीर-संभव कोने कहा, 'जान सहावने को सार् है। आपके मुक्तरे की यो एक शुर्व है का बात कीय है। जाते मुझे जनस्ता भी है । परंद मैं सामने विकास नहीं कर सम्बद्धा । इस सम्बन्धने सुद्धान्त्रनीनोने के कोई नहीं है, अल क्लार काल दे-(१) का ने क्युकॉक्ट एक-से विगति का को से निर्वतको सक्त प्रत्ये साथ येत करके नही सम्बद्धने और विकास नहीं करना पाहिले १ (२) जो अधिकासका हो उसमें क्ष्मी विकास न करे और को विकासीय के उसमें भी अस्तर विकास न करे कक अपने और से सर्वत करनेका विकास पैक को, सिन् को सार्वेक विकास र करे। नेतिसाकका भी केंग्रेजों को सार है कि विक्रीकर विकास व करना ही अपना है । तकः प्राप्तेः और निकास न स्वानेने ही जीवकः निकेत हैता मान पन है। सोनक्ष्मी । कार-वैद्योंने से बड़े सर्वक अस्ती रक्ष कर्म है स्टीने। को उत्तर शत में अपने क्यार क्रमाओं को हो (

प्राच्यालय का कुले हैं जिलान बहुत हा कब और व्यक्ति सन्तरभार कृत्ये कन्द्र काम क्या उन्तर प्रमु अपने विदर्श

क्षेत्रको बहुई हैं—एक्स् । पूरा प्रधार बुर्वेश और अवेतार हेनेक की बॉल्ड कोंने अली कृतिकारों कई उत्तर प्रदुशीकों war firm i san: sarafrik stein gilleben gereit mehr कार भी भेत कर रेजा कारिये हरेकी. कुरू और मितान-मे केंचे एक-शुर्ववार अध्यय होचार विश्वतिको पूर पर्व थे। प्रश क्षानों में। इने क्षाननंत्र कर्न है विकास है। से पूर्व पर अने के को है को पान का है, को सान का करणा अवस्त की आसा। यह में नि:बह्न हेकर हतरेने विकास कर किस है, जो कई भारी भागक सर्थना करना करना है। के पहल रिपेट रिकास है, का निस्ते प्रकार कुरोकी राज्य के की कुछा, सिंह के अन्तेको अनुनी सुन्तात है, क् कर-कर अञ्चलकोचे कर करा है। अरः स्टब्स्के िर्मिक्स दिवाले पुरू भी इस्ते पुरूष वाहिये और विद्वार स्वतिर्थ क्यों हर में कुर्तक निकार की बाल स्वीते ।

way ! you want tills aft fragile terrous from करके बंगाओं कुर्वनका उत्तम गरे । जब अपने और कहते अस क्रमान्यको अवस्थि अत्यो से क्रमान्य क्रमुके साथ पेट पार है। जाने कार को हर नहीं चुकिने कार को और कार कुछ है। करेगा किए जानक विश्वास में की। यह मीति अर्थ, धर्म और कार-विशेषों दिया बरनेवारी है। इसके असार काराव करके का अध्यान करा करे और अध्यो प्रध्यक पहला करे । महाक्षेत्रं साथ दून सर्वत् संसर्ग स्थानः । उनका साथ द्वारोकः और प्रवर्धक केंगे से बन्द परम्बन्धनकारों है। प्रवर्ष । की हुने के बड़े और विस्तवका सुरूप सुक्रम है, यह संवि और निव्य क्षेत्रोहों के विकास विदेश मुद्रि क्षेत्राता है। स्वारको कृतीक हारूर कार रसते हुए सहजोंके साथ व्यवहर करन **पाई**ने :

#### शत्रुसे सदा सरवधान रहनेके विषयमें राजा ब्रह्मदत्त और पूजनी चिड़ियाका प्रसंग तथा ब्राह्मणसेवाका माहात्व्य

एक्सोंका कथी निश्वस नहीं करना शहीने, से बंदे राज विसीमें भी विकास र को के बढ़ किस अवार करावी कारक करेगा ? आवडी का अधिकास-काम सुनकर के मेरी मुद्धि हाई अस्कारने यह मन्त्रे हैं, कुमका अन्त्र नेत का श्रीतम्ब इर कर वीकिये ।

अपने महत्त्वे सुनेवाली पूजनी नामधी विद्याली संबद हुन्द्र का, जा तुन सुन्ते । सका प्रध्नावका जात कार्यकार नगरने था। जाने अन्य:पुरने च्यून दिलोडो कुमने जनकी एक विदिया रहती थी। वह निर्वकोरिने उत्पन्न होनेवर औ सब जिल्लोको जेली संस्कृ सब्दर्ध और बढ़ी करने एक मका भी पैक् हुआ और उसी हिन छनेन्द्र भी एक कुमारने क्षम रिभ्य । पूजनी निज्ञाती संस्कृतकार अभी और व्यक्ति से पास रसती थी। इसमेक्षे एक यह राजपुरवस्त्रके हे हेवी और कृतिहें अपने सबेका केवल कार्य । कृत्येका राज्य हुआ पार अपूर्ण समान सामित्र और यह एवा देवती वृद्धि करनेकरम होता सा। उस करणाते दक्ष-करणा उपयुक्त कुट इक्क-पुर हो गया। एक दिन स्थान को गोवने विभो सुन को से, इसनेहीमें बारकावी होहे पूजनीके बखेबर पही । उपयुक्ता अपने बारपारधानमे धानधी चेत्रके विकास पना और क्रा क्रिके साथ होताने स्थात वर्षी अधेरतेने बोरते व्योक्सत कारों यह बचा कर इस्ता और फिर कावडी चेवने कार गमा। सब कुल्ली पाल लेकार सीवी से अपने देखा कि राजकृत्वाको उत्ताव्य क्या पार सत्य है। अपने क्येकी हेती हुर्गति देखकर उसकी आंक्रोमें आंखू का अले, बहु कुक्ते मामक्रम हो पनी और इस प्रयूक्त बढ़ने सनी, 'सर्टिगोचा र्मन करना अवना इससे प्रीति का नेत-विस्तान करना ठीक नहीं है। में सम्बद्ध अवकार के साते हैं, इनका कभी विकास नहीं करना कारिये । देखी, यह समयुग्यर कैन्स सुरक्ष, सुर और विकासपानी है; अच्छा, आब में इससे इस केस्का पूर्व-पूर्व बदला लेंगी।' हेश्व सोक्कर उसने करने पंजेशे राजपुरमारके क्षेत्रों नेत्र क्षेत्र शिवे (

मा देसकर राज आहरूको निवार क्रिया कि पूजकी रामकुमारने कान्छे कुमार्गका ही बदान दिन्छ है, इस्कीनो बह कारी कहने रूपा, 'पूजनी ! हमने देश अपराध किया था. सूने उसीका बदला रिज्या है। अल हम क्षेत्रों बराबर हो करे;

रण मुध्यित्ते पुरा—पहण्यो । आयो सङ्ग कि | इस्तरिने वृ अब मही स्, विसी दूररी सन्द्र का सा ।'



पुनर्श कोर्ल-राजन् । कर बिराविते की कीर कार हो जन्मी क्रियमी-मुख्यी कालेने जावर क्रियास नहीं बारण पाकिये। देशन करनेमो पैर को दूर होता नहीं, यह विश्वास करनेकाल ही करा करत है। कर एक बार मैर क्षेत्र करत ों से बेरे-कोरक्य कावा महत्य तिये किया नहीं खोडते। प्रातीने विकार विश्वासका विका हे, कावा क्यो क्रियास न्हीं करना व्यक्ति । जो जनिकसनीय हो उसका निवास न यरे और ने विकासीय है उसका में अलग रिधाय म को । विश्वासके कारण जन्म होनेजरने निपरि पीयका लका का का करनी है। आहे का आपसमें के के क्का को इमार मेल क्षेत्र सम्बद्ध नहीं है। मैं किस विधित्तते न्हाँ रहते से अब यह नह हो पन : मैं बहुत दिनेतक बड़े आदारो आपके व्यक्तमें स्त्री। विज्य अस इमरा देर ३५ नकः; इस्तरिने नुहे कींग ही कारी कना होगा।

व्यापाने का-यो व्यक्ति अपवारके बरलेमे अपकार करण है, यह अपरामी नहीं माना संस्थ । इससे से अपकार : करनेकारन अन्यकुळ हो काल है। इसलिये सु आरक्तो वहीं य, स्त्री का मा।

पूजने मेले—एतन् । किसका अस्वार क्षेत्रा जाता है | और जो अस्वार करता है, उसका पेल नहीं हे सब्दाता । जा करा क्रेनोहीके क्रोमेंने कामती खाती है।

अप्रयम् कर-पुत्रनी । इस्से से वैर क्रान्त हो जाता है और अपकार करनेवारंको प्रयक्त करू को नहीं कोनक पहला। इसमिन्ने अनकार सहनेवारं और अकाशीका केर से किर की हो ही सकार है।

पूर्वने केले—इस जबार वेर सभी कू जो होस और पर सन्तरकर कि कहुने जुड़े सन्तरक से है, सब्बा विश्वक पी जहीं करना जातिये। ऐसे सन्तरकर विश्वक सन्तरेशे प्रान्तेशे भी हाथ बोना पहार है, इसरिम्मे दिन हुँह र दिखाया है सब्बा है।

स्वयुक्ते करा—गर्ध सरकाले की रहानेवाले भी सरक-साथ यों से अनमें केंबू के जाता है, जिस करने की नहीं चिता।

पूजने कोर्य-राजर् । अधिकारोग अवके क्या कार्य है, वर पांच कारकोरे कुम कर्या है—बांके कारक, का और सर्वकोर कारक, करोर क्यांकेंके कारक। जिस प्रधान स्थान-वर्टिके कारक और अध्याको कारक। जिस प्रधान स्थानक किसी भी अधार बारक नहीं होता केर्र है स्थे कार्या के स्थान, सम्बानित का वर्टिन-कारको केर्ड क्या कार्या है केरके कारक ज्यात होनेकारी आप क्षा प्रधान क्या किया है का कर और अस्पान क्या होन्यो। किसने पहले अस्पान क्या हो स्था कर और अस्पान क्या होता। कारकर करें को भी कारका क्या कर और अस्पान क्या अस्पान के न की कारका कोर् अस्पान किया का और न अस्पान हो ने की कोई हार्र की थी, इसरिने में आपके प्यान्त क्या और किया कुछे अस्पान कियान नहीं है स्थाना।

स्वारणने कहा—पूजनी ! संस्थाने तथा-स्वाइकी क्रिका समाने है सारण होती है, सम्मानी हेरलासे है सोग विक्रिय सम्माने जन्म है से हैं। इसमें और स्थानका अवस्था सारण है। जन्म और जूलुका जेरक की सम्मानका करना है है। इस्तिकों में कुछ हुआ है, उसमें मैं तेर कोई अवस्था नहीं सम्बाद्धा। सू वहाँ आनन्तरे या, कुछ कोई कहा नहीं व्यक्तिया। सुस्ते में अवस्था कर कहा है, उसे मैंने क्षण किया, जान मू भी मुके की अवस्था कर कहा है, उसे मैंने क्षण किया, जान मू भी मुके

पूजने केले—वहि जान कारको है सर केलाजीका कारण मानते हैं से किसीका किसीके सक्य के नहीं होन्छ बाहिये। किर अपने सगै-सम्बन्धिकोके मारे खनेवर सोग्र

अन्य काम को होने हैं और प्रोकाहर शेवर हाती इन-इन क्यें कर्त है? कराओं दुसके बारव है सम्बद्धे जोत होता है, युक्त को सचीको तिय है और दः सके अनेको क्य है। कुक्स हुन्स है, बन्धून दुन्स है, असिय कुर्वेक प्राप्त क्या क्या के मेर विकार है। विकार कुका है। यस और कमध्यों भी समयों कुन होता है कम बोचे काम और सामानिकारणे की कुछ होता है है। क्या ! अपने पेर को अस्तान क्षेत्रम है और की जातका में अवराज किया है,जो हम हो अंधे भी नहीं परत प्रस्ते। इन प्रकार अञ्चल कृष-कृष्णेया सच्चार करनेके कारण अन क्रमण नेत भी से समातः। अस वैद्ये-देशे अपने कुरुकी कुर्वित्रको पाद करेंगे बैसे-बैसे की आध्यक्ष केर क्रमा होता खेला। अस इस मनवास बैस्के दन बालेवर अन्य को प्रीति करन चलते हैं, यह इसी प्रकार असम्बद्ध है केरे निर्देश्या यह एक यह पूर पानेपा भिन्न गर्वे पहला । यह विक्री पतने स्थापनी के केव नका है के का काफ नहीं केया। उसे पार विकासकी की हैं को है इसीओ क्याब कुमने एक भी स्ट्रीत क्या पात है समाना का पुरस्त की निर्दर्श । इस्तरिनो विदर्शका का दिला का देशन दिए चनाको स्थान विश्वास नहीं काम स्थापितः

व्यक्त विका-शिक्षण करनेते से म्यूक प्रसारके कुछ को जात की कर स्वकात की मनने एक प्रकारका की कम कम रहे के सरकार जीवन हो निर्दे हो करवा।

क्रमी कोर्च-सम्बद् ! विस्तक क्षेत्रों पैरोपें कोट लगी के और दिन को का बेरीने ही बांच्या को के साथे बैक्सी ही सामकारीओं करे अलेड पैरॉमें बान हो ही सामान । को पूर्ण अपने क्षेत्री वेळीको प्रमाने सामने पहले रक्षात्र है उसके नेत्रोमें जन्मे करण अवस्य है बहुत रोड़ा का जानते । के एउन अपनी प्रविद्या विकार न करते अञ्चलका भवानक आहें। कर बात है,जनक कीवन कर वर्गने के समाप्त के बाता है। को विज्ञान कर्नाके सम्बद्धाः विकार न करके जोत जोतता है. सम्बद्ध परिवाद कर्ता क्षेत्र है और उसे अनुस नहीं जिल्हा । वो पुरू केन्द्रारी चेवन करता है अस्त्रे तिये पह आह अपूर्वका हो जात है। क्षेत्र को परिवासका विकार न करके कुरमा लेका करता है अस्त्रे कीवनका अन्त से उस सम्रके साम ही समझ्ये । हैन और पुरवार्थ—ने क्षेत्रें एक-दूसरेके अक्रमारे को है, सिंह अंदर पूरू सर्वह पूर्वकों दिला करते हैं और न्यूनक हैक्के मरोसे पढ़े खते हैं। को पूरव कर्मको इसेड कैठल है, यह जीवनको चंत्रको पेसकर

सद्य अनर्जेका विकार कहा द्वारा है। उत्तर करूकको सर्वतानी मानी समावार भी अपना है। करना पाहिने। विका, ब्रुस्तीरवा, ब्रह्मक, ब्रह्म और वैर्थ—में याँच म्यूनको कामानिक दिल है। युद्धिकानुकेन सर्वत इनके सहनाराने याने है। पर, सोक, चर्ची, पृत्वी, की और सुक्र्या—ने मध्यम कोटिके मित्र हैं; ये वनुष्यको सभी कथा निरू सकते है। को प्रमुख कुन्नियम् होता है, यह सभी क्या आपको सारा है। इदियानके पास बोज-सा कर है से का की कारत कता है। का दक्षणपूर्णक काम करते हुए संगमके प्राय सर्वत अरिक्षा भाग कर लेता है। जिल्ह सुनिक्षीर कुल पर, कारी, रूपेल और सम्बनेकी विकास तथा सुधार तथा हु की कर कार है। यदि अपने कथानुरियें की केन और दर्शिकारिक बार है से नहीं। सन्तर कार कर, की कर है है सह प्रमानकृषेत्र ही मो ( इस्तीओ अस में सारी स्था करेनी, को का मेरे किने समय की है। कुछ कर्ज, कु कुछ, कृतिल राजा, क्षा जिल, युव्य सम्बद्ध और क्षा देखको से हरते हैं क्षेत्र देख काहिये। कुकूबल नाम कैसे विश्वास हो सकता है, ब्या नार्योंने हेन क्षेत्र केने सन्तर है ? करान्त्रमें Wifte Perrit orderer få å sår gy knoll tå det finds है सकत है? हरियमा के वाचे किए की राज इसरिने कारों नेस पना खान सारित ही है। की से बड़े है को मकुर सारक धरे, पुत्र को है जिससे पुत्र जिले, मैळ बहे है जिसमें निकास है। और देश बड़ी है बड़ी निर्मात है सके क्या एवा को है एम्बला कहिने विलोह कराकों दिली अध्यक्ता करनावार न होता हो, स्तेन निर्मय ही और गरीनीच्या धारण होता हो । जिल देखना राज्य गुल्याम् और कर्नेनरायक केता है वहाँ की, पुर, निश्न, शत्याची और मन्-नामा रामेची अनुस्थान हे जारे है। अवसे रासके अरबचारों से प्रमाध सम्बन्ध हे नाम है। बचाने कर् अर्थ, काम--इन सैनोंका कुछ एका है है; इससेन्त्रे औ सामयान समार सर्वेद अभवी प्रमानक चलत करेंगे । एकको बरहाओ प्रवासी जनस्मीका पूर्व कर केवर को इंदिन करोंने सर्व करन कहेंदे। से एक प्रकार सकी क्ष रक्ष की करता का से बोर्ड अपन है। प्रकारो अपनवान देवार पदि तथा मनके लोचने वैसा बर्ताव स्त्री करता हो सहरी प्रमाण्य कर कटोरकर अन्त्रमें नरहाने करत

है और बाँदे यह अध्य देखर मैसा ही सामस्य पी फ़स्ता है वे प्रमाणक वर्षानुस्तर पारन करनेके कारण वह सकते स्**स** केनेकाल सन्तवा काम है। प्रसायति पतुने गुरुविधी सहिसे वसम्बो माठा, पिता, पुढ, रक्षम, श्रीह, मुनेर और नमस्म कारण है। प्रकार फ्रेन रसनेके कारण का राहका दिसा है। न्य प्रभावत पारल करता है और दीन-दु:क्रियोक्टी भी सुन्धि रोबा बाज है इस्तिये बातके स्थान है। प्रकार सन्ति करनेकरनेको यह आणि समान बसारा द्वारा है और परायको समार क्रोका कर करता है। अपने अतिकारतीको का हेन्के कारण वह कुनेरके समाग है, क्वोंच्येत हेरेके कारण गुरू है और प्रमान्ती एक करनेके कराय रक्षण है। के एका अपने जुलोंकी क्रम समस्तिकोंको अस्य रक्ता है जाके क्ष्मक कर्ण नाव नहीं हेता। केले पुरवाली और देखवानियोची प्रतक रक्षेत्री करत आर्थ है क उस प्रतोध और पत्लेखने एक पता है। निया राज्यकी प्रका सर्वेद्ध करके जाती पीडिस और क्या-क्यांके अवस्थिते द्वाची रहती है, औ सकत नीवा केवल बाज है। इसके विचीत विस्तारी जात सरीवरने कर्मके सका विकास होती रहते हैं, वह सब प्रवासे पुरुवारोक कर्न हेल है और क्रांलेकों से सामन wer for

मेनमें कारे ि-रामन् । सहमाने इस प्रकार सहसर जन्मी जात से यह विद्यास सेकानुसार वाले नवी । इस ज्यान की दुने रामा सहस्त और पूजनीके सम्मानस्त्र जनेन के सुन्न देना, जम तुन और क्या सुनन कारे हे ?

क्या कृषिक्षीरने पूजा—विकासकः । क्या कोई ऐसी कार्यकः भी है कित्रका निरमिको कार्यकृत नहीं करना चाहिते ? जार सभी साधुरुकोने लेख हैं, कृपका असका कर्यन क्रोसिके ?

भीनवी जोने—बनुवाको सर्वदा विद्यावृद्ध, स्वस्ती, जनका और सक्तवारिक जाइन्मोंकी सेवा करनी चार्तिये। यह क्षर ही प्रवित्व करने हैं। तुम जैसा पान देवताओंने श्रस्ते हो केवा ही व्यक्तवोंने भी रखते। व्यक्तन जस्ता हुने हैं तो बनुवाको बाह सुवार निस्ता है और वे अञ्चस्त्र हो जाते हैं तो उसके विश्व बाह संबाद उपनिवद हो जाता है। जाहाज जस्ता में तो अनुवाके सम्बन्द होते हैं और कोप करने लगें तो स्वकृत्व विश्व हो जाते हैं।

#### शरणागतकी रक्षा करनेके विषयमें एक बहेरिज्या और कपोत-कपोतीका प्रसंग

कृष्टिले प्रत—कार्य ! सरकारको रक्षा करनेताले पुरस्का क्या कर्मण है—यह साथ को सन्तहये।

भैक्षा केले—राजर् ! इरवारमधी रहा करक 👟 मारी वर्ग है। देस जब तुन्हें अन्तर्भ पहला पाहिले । तिनी आदि रामाओंने के प्रत्यापतीकी एक काके से उन्हेंक मिन्द्र अस् कर ली थी। ऐसा भी सुन काछ है कि एक कार्याने अपना मंत्र हेका सरकारक प्रमुख विकित्त सम्बद्ध किया था।

अभिक्रेतरे एक-रिजानक ! ककूतरने करणान्य कानुको अपना गांस विक्रा प्रचार विकास का और प्राणे को चौर सक्ति अधा को भी ?

बोकर्स बेले—एकर् ! सुने व्या क्रमा क्रमेक्ट मा करनेवाली है और धरशुस्त्रकाणि रहता पुज्युक्तका सुनावी सी । पूर्वकारांचे राजा कुक्कुन्दने परकुरावानीके बहु मेश पूरी भी। जल्बी सुन्तेकी प्रथम देशवर परप्रशासकी क्षे पह बाधा, किसमें कालाओं एक होनेका क्रांग वर्गित है. भुजानी जी।

भारतस्थाने कार-अस्तान् ! में सूचे असीर मिर्चन और अधीष्ट्र अवेते पुत्र एक क्या सुराया है, कुर सामकर होकर सुने । किसी समय एक सबन करमें एक बढ़ा है उपन्य म्बोरिजन रहता था। अस्टे शरीनका रेग कीएके सम्बन कहान था। जाने का कार्यक कारण को जाने-कार्या करें से स्थाप क्रिया था। पासुक: विस्तवत अध्यक्ष्य करवूर्ण हो, उसे सुद्धिमान् पुरुषोक्षे दुरसे ही त्यान क्षेत्र कार्योने । को बनुबा हार प्रकारक और प्राणिकीयो हुन्या पारनेताले हुंसे हैं, उन्हें सर्वीकी तपु सब प्राप्तियोसे जोल प्राप्त होता है। अर्थका से निरमका मही बान था कि अल लेका करने कुछ और बात से महियाँको मारकन कर्षे बाजारमे केन अन्य अनके विका कोई दूसरे जीवका को अच्छी ही की लकते थे।

एक कर कर कर करने है का, यह ओरबड़े आँकी करने लगी। एक क्यानें ही आकारको पदाई का भरी और विकास कामने लगी। इन्होंको प्रस्तवकार वर्ष काके **२०-की-कार्य सारी पृथ्वीको जलमान का दिया। कर्की** केपने अनेकों पड़ी परकर पृथ्वीपर है।र नवे । इसी समय का कोरिजेकी हुछ एक कमूनरियर पढ़ी जो जीतने डिट्टनकर पृथ्वीपर गिर क्वी जी। इस समय महाने बहु तब बी बहे क्रिया। यह क्ष्यान्य का और पाप ही बाता रहता हर. इस्तिको इस समय भी अस्ते पात है किया। इस्तेहीयें सरे क्लोके कुंजने एक नेपके समान स्वान विशास यह दिलावी किया। अस्तर अनेकों परिवर्गने असेव किया था। बोधी ही हेरने बाहर कर को और आवाद क्रम है कहा। ब्हेरिस्ट नाजेसे महात दिख्य रहा था। उसने इध्य-अवर देशस्वर विकार किया, 'महीने नेरी झोपड़ी के महत हर है, आपन, जान पड़ी क्या बार्ड ।' देख घोषका का पेड़के नीचे ही राम वितानेके निकासे जाने इस बोज़क ज़नाम करते हर कहा, 'इस कुछना को नेकार निवास बारते हों. मैं काब्द्रे साम सेता है।" इस क्यार प्राचीन करके का यह विकास एक दिल्ला दिए रकार से नक।

शक्त ? का प्रकार प्राचायर पहल हैंगोरी एक क्यार क्या क । अल्बी कक्तरे ध्वेरेसे है क्या हैने क्या को और अच्छेलक स्केटकर नहीं जानी थी। इस समय रात र्क्ष रेक्ट्यर का क्यूनरको यहा सेंद्र हुआ। यह स्थाने हरता, 'अने । अस्य से व्यक्ति अधिने-क्यां की और मेरी प्यारी अन्तरे अनीत्व महें अभी। असे अभीतक न सीक्ष्रेका रूप करना हे सकत है ? क्लों न साने का कथलते की होनी मा भी ? उसके किया है जान देश मा होताल उनकारण कर पहला है। सामानने परको धर भारी काने--- गरीकोची ही 'बर' काले हैं। किस बरमें गरीकी व हे का में करके है लकर है। यदि जान मेरी महरकारिकी-किया न स्पेरी के मैं इस जीवनको रहाकर की कक्ष कर्मना ? मा देशी अंतिकता थी कि की सहये किया नहाती वर्षे थे और मेरे फोलन किने किन चोकन नहीं बाली थी। उसी ज़बार मेरे बैठ बानेपर ही बैठती और रहे कावेपर ही संबंधी की। की को अला देखती से उसका कुछ की फिल क्या और स्थान देखती से सार्व भी जिला से पानी। में मार्थि कर करे रहता है करका चेटर कर बात और क्षा क्षेत्र करता हो वह गीठे-मीठे सम्ब सुनाबर सुहो क्रम कर देती। यह नहीं ही परिवास, परिवेद आहित और चीनक क्रिय करनेचे करण स्क्रीबारी थी। यह स्परियमी क्री की का हेन और अनुरान रहती है और केंग्रे बड़ी थड़ा है। पुरुषेंद्र वर्ग, अर्थ और कार्यों भी ही उक्तरहर्या रक्षानक करनेकारी होती है। विशेष्टरों भी बढ़ी विकासीय निकास काम करती है। पुरुषके सर्वोच्च सुन्धति उसकी सहमें था, को भी उसने उसे उठाकर निकोर्ड कद कर । पार्च है बड़ी करों है। को पुरूर हेशने पीईल हे और

बहुत निर्देश निर्दालने पैना हुन्य हो करके दिन्ने भी सीके सम्मन कोई दूसरी जोगींव नहीं है। पुरुषक परिचे सम्मन न सो कोई बन्धु है और न वर्गस्तकनमें कोई मैसा सहम्बद्ध है। निरामें करमें काको और मनुस्मानिकी सार्व नहीं है और सो कमरें काम जाना काहिये। उसके रिन्ने से मैसा का वैसा हो कम।

पीनवी नाते हैं--का कहात इस प्रकार निरात कर क क वे मोरिनेक नियोगे को हा क्यापि जन्म कार-अपन सुरकार कहा, अही । वेरा वहा सोधान है से मेरे क्रिक परिचेत इस प्रकार नेता मुख्यान बार हो है। सीवार इन्होंन से परि है है। विकार की के उसके की पूर्व, क यारी क्यान्तरों रूप हुए हुन और नुक्केंद्र समाप भार है कारों है। अरबू, अब की विकास के अबस कोई किया क करें। मैं आपने एक प्रार्थना करती 👢 आपने है स्रोत से एक क्रान्याच्याची स्था परिवर्ष । देविन्ते, यह क्रोरिन्स अन्तरे रिवासभारक अध्यार सोवा है। व्या केंद्र और पूछते weiger &, are prest mout abbet ; unber ! सर्वना में और प्राप्तका का क्लेक्क्षे से पह स्थात है, यह प्रश्नाताच्या दिल प्रत्येक्तेको चौ एनक है। अनवादो हमारी कानोती वृत्ति कन से है। अपने बारिकार्वेड अनुसार अवन-वेचे भारतीयो ज्ञाना जानाव काल कार्यन के पुरस्त कार्याक अपने आस्त्रकार्यक बारम करत है, बंद नरनेके पहान अक्रमनेक प्राप्त करता है। असः आय अपने बेहन्द्री यकता क्षेत्रकर वर्ग और अर्थकर इति रकते हुए इस क्वेरियोका देख सरकार करें, विकास इसका का प्रस्ता हो कवा। मेरे रिको सार आप कोई विका म करें : जानकी क्ररीरकाराका निर्मात करनेके वैन्से आवको कुररी कियाँ मिल जायेगी।' इस प्रकार विकाम कहे 📷 🚌 सर्वातनी कन्द्रानीने अपने प्रतिसे बद्धा और दिन अध्यक्त बु:सी होका परिके पुरुषी और देखने रूपी।

सीन्द्री यह वर्गानुसार और वृत्तिवृत्ता जा कुरवार सन्द्रारको यही समावता हुई और कार्या आंकोने अन्त्रपुत्तु सर्वे आवे। असे निर्वार विद्यार्थ विद्यार कार्या वर्णावित्र सर्वे वास करते हुए बाह्न, 'बाईले, मैं सामग्री क्या सेवा सर्वे ? अस्य कृती पर क्यारे हैं। यर अन्वेत्रस्त आवित्रस्त सर्वा में से स्वर्णिया सर्वेन्द्र है, बिंद् प्रस्त्रपाके अधिव्यत्ते पृह्मका से या अस्ति वर्ष है। यो पुरुष पृह्मकालने सुने हुए भी मोहबार प्रस्त्रपादक वहीं सरस्त, को वर्णानुस्तर हैहिक और पारत्विक्त्य होगी अस्तरको हुए। वहीं निर्वार ।

बहुत दिनोंसे निमतिने पैना हुता हो जाने दिनों भी सीचे। समान कोई दूसरी मोननि नहीं है। पुरुषका कीचे समान न से कोई कम् है और न वर्गस्त्रकाने कोई नैसा सहस्था है।

> जनकी बाध हुनकर क्षेत्रिक्षेने कहा, 'जुड़े होताहे हहा बाह है वह है, इसरिक्षे कोई देशो नक्षेत्रण जनक वारो (' बाह हुनकर कहारके पृत्तीवर वसे इकट्टे वह दिये और उन्हें कल्पेकी किनकार है किये की की तेरीके उद्धार स्थानी । बाह हुनको करते कहार से उसका और उसके हुन्हें पर्योगें क्षण रूप हैं। कोरिया जान सामने स्थान हिसानेवर आ करियों कर्षों का कार्यके उसके होच-ह्याह दिवसनेवर आ गर्म। किर उसके असका कार्यका होच्यर क्षणकारी अस्ति है, वें बाह्य है हुन मुझे हुक्ष कोर्यक हो ('

> क्षेत्रेरनेको जात कुरुवार कानुहार हुछ विन्ताने यह गया विः जाव पुत्रो क्या कान्य चाहिने । उस सम्बर्ध म्या अपनी जानकोत्रका केन् प्रकार कारने स्टात । वित्तु पुत्र हो नेरचे उसे एक जान चाह आपी और यह व्याने स्टार, अवात, कोड़ी नेर कहारने, में आपी आपको गुलिया काल वित्ते नेता है।' ऐसा व्यानक उसने पूर्ण कर्मने अस्त सुरुवानी और वित्त यह हुनी जानक व्याह, 'व्याने वहने, केन्छ। और व्यानुप्तान वित्तरोंके पुत्रको की हुना है कि अस्तिकालकार बद्धा भागी पुत्रक है। जीवा । अस्त अस्त हुमारे अस्तिति हैं, दुस्तरियों मेरे जानकार सरकार करनेका व्याह विवास कर दिस्ता है। अस्त पुत्रकार



सक्त कुराशृद्धि पर्ये।' ऐस्त काश्यार व्यक्त काली जाता जानते। अजिन्दी तीन परिकारति करके जाने कुद प्रकृत कालाव्यके। आगाने गिन देखावार क्योतिका कर-द्वी-पर क्षेत्रके राज्यः, 'करें! मैंने व्यक्त कर काला ? इन्त ! मैं व्यक्त हुत है, मैं सी अपने कर्नते ही निकारित है। निकारत इससे के पुत्रो व्यक्त भारी प्राप्त राज्येश ।' इस जावार असने क्या विस्ताय क्षित्र और बार-बार अपने कर्माब्दे निका की।

यदापि इस समय महेरिनोचो बड़ी पूज रूपी हुई थी, से भी कक्षारको आगमे का देशकर का काने रूप, 'कर ! में बढ़ा हो कर और मुर्च हैं, पैंने बढ़ क्या कर करत ? नेव में बीवन है दु:बानव है, मुहलों से निज देख है पन होना क्या है। में सर्वत अनिकारित, सुकृदि और सर विचारियास है। उसे पुरस्कारीको प्रोत्तकर की यह पश्चिमोको पीतानेका है क्या प्रोक्तर किया है देखे. क मानार केंद्रा मानव है ? अपने अपनेको अधिने हेनकर मुझे अपना गांस दिन्य । ऐसा करके इसने ही मुझे वर्गका की करोड़ा कर दिया है। अब में भी भी और पुलेखा खेड़ क्रोड़कर जन्मे क्रिय प्रान्तिको ज्ञान द्वीय। ज्ञान्ते मैं क्रम प्रधारके भौनीको सारमार प्रथम्भास और वस्को सार करते हुए सरिवारे कुछा करोग्य और तक-स्त्राते स्थ्यान करके अपन परलेक सुवाक्या । अहे ! अपन करीर क्रीमधार कर ककारने का बता किया कि अतिथिका सावार केले पारता कारिने । प्रतरिन्ते अध में भी कार्यकाल प्रार्थना, मनुष्यका प्रजीतम आक्रम कर्न है है। देख क्रोक्कर कर बहेरियोने ताठी, करकता, बाह और विवर्धको केवाका कर क्रमारीको भी क्षेत्र रिया और महाजनकार निक्रम करके बार्टिने तय करनेके हिन्दे बात दिया।

कोरियों को जानेका कहारी कीरको सरक करके क्या सेकाकुर हे नवी और दुःकर्त विस्तान करती हुं कहने साथ, 'डियाम | मुझे कर नहीं कि कभी हुक्ते केत कोई अधिक करने किया है। तुम दिस्त है केत समान करते मैं और को नामाने सरकार करते थे। मैंने तुम्ताने साथ क्या सुका कोरा है, अन्य मेरे विनो का कुछ भी नहीं का। कीनो किया, माई और पुससे तो बोदा-सा है स्क्रान किसला है, जो कारा सुका केनात्म को पति ही है। अन्य हैसी कीन नारी है, बो अपने पतिका आहा न करेगी। स्वीके दिन्ने पतिके समान कोई नाम नहीं और न पतिके समान कोई सुका ही है। अनके

विने से का और क्रांसको केक्कर की है एकपार गति है। जब ! जब एकरे किय पूत्रे इस केक्से भी का प्रकेश है? ऐसी की पति हों को को पति किया केक्स क्ष्म काक्से ?' इसे प्रकार का काबूरोंने हुःहिस केक्स क्ष्म काक्सकर किया और किर कर करती हुं आको हुन कहे। जाने देशा कि करका पति रंग-विशे पूर्वकी करवा और विकित काक्स्मकोंने सुर्वका हुआ कृत कियाका चैदा है तथा जनेको काबूका करवी सेवाने जातिक है। इस प्रकार कुल्का के पहिला करवी सेवाने कियाकोंने किए हुना कर करवी काक्से सहित कर्ग सिकार और कई अन्त्रकृति क्षित करवे स्थान।

मोर्जिनोने कर का क्षेत्रोको विस्तानसर पहकर आकासमें को देख से अन्तर्भ ऐसी सर्गति देखका को यह अन्तर्भ हरत और यह सोचने रचना, 'में की इसी प्रकार समझा सार्थेत कारणी क्रम करूना।' कार्य हेल विचार करके का नहींसे कर दिया और मन्त्राधीन क्षेत्रार प्रमुखाओं निर्माह बारता कारतीय केवर एक कन्यकारीओं कार्ने क्या । इससे काला करा प्राप्त कांट्रेसे किलावा सोइ-स्वाप हो गया। क्रमेकी कर्मा काम एक स्थाने क्योंने अन सर नवी । साम नवी प्रयास भी । सामग्री कैयी-कैसी म्यारमानीने राज और किरुवारियाँ फैराने शारी और कुछ स्था परिवर्षि भक्ष प्रता को स्वय कर करका प्रता होने हता। यह देशकर का कोरिया की नहीं उपलाताने सरीर होयांके रिके का प्रत्योग्य करियों और यह और सही-सही पहर केवर पारचीओं जार के पता। केवी ही देखें जाने देशा कि या को अस्ताको सामि विराज्यान है तक अनेको का. नकां और रिजेके क्षेत्रमें इसके समान क्षेत्र प्रकारी।

इस अवार वे कर्यन, कर्यामें और बोरीमा तीरों हैं अपने पुण्यके अवारणे रूर्ण विश्वते । यो की इस अवार अपने परिचा अनुसरण करती हैं, यह प्राचेतीके समान हैं अर्थकोकों विश्वता हैं। एक्स् । अरम्पनकारी रहा करना वहा है पुण्यक कार है। ऐसा करनेसे गोवस करनेकारेके कर्यक में अपनित्त है साता है। इस प्रधनस्क परिचा इतिहासको सुननेसे पनुष्यको हुगीत नहीं होती और यह अर्थमुख अस्त करता है।

#### अबुद्धिपूर्वक किये हुए पापकी निवृत्तिके विषयमें राजा जनमेजव और इन्होत मुनिका प्रसंप

तमा कृषिकेररे पूजा—शिलाम्ब ! वर्षः बोई पूजा ! अनन्त्रनमें मिली प्रचारका चनकर्त कर की से बा काले किस जकार मुख से समात है ?

पीनची चेले-पानन् ! इस विकासे प्रत्यक्षेत्र कंडचे अला हुए हुन्तेल यूनिने छवा अन्येक्टको जो बाद कुनावी भी, बढ़ी प्राचीन प्रसंग में हुन्हें सुनक्या है। पूर्वकाराने परिकृतका कुत एका करनेकम<sup>र</sup> कहा ही परकारी का। हो। किन करे है अक्टब्स्क कर एन एक । इस्केने असे पुरोद्धित और सम प्राप्तकारी करका परिवाल कर दिया। हक प्रांचवी आगते वह राज-दिन बलता सुरत वा- इसरियो अपने राज्य क्रोड्यार करने कार नवा वर्ड का बड़े के क्री का करने रामा । अपने जारी पृथ्वीने देख-देखने प्रध्यक्षे हुए अनेको अध्यानीने अध्यानकी निवृत्तिके रीजो कोई प्रविद्या पूरा । एको-एको या प्रकारको पुरुवनेतीन क्षित मुन्ति पार पहिच गया और उनके केंग्री के कहाड़ रियो । राज्यको देखकार जानिये कहा विरस्तार विकास और उसकी बाह्य, और महायायी ! ह नहीं हैओ जा गया ? पहलो हुई करें। कान है ? तु पहाँसे अभी जान या, मुझे तेरा वहाँ काना अधार मही तराता । प्राच्याच्यो नारनेके कारण तेव चित्र असून हो भवा है। तु विरक्त पायका ही विकास करका है, इसकिये देश भीवन व्यर्थ और असम्ब हेकाम्ब है । वेक, तेनी ही कारतार्थ हैरे वितरोबा क्षेत्र राज्ये यह है, उन्होंने कुछो जे-जे उन्होंने बीच रसी थीं, जान ने तल करने हो नहीं। शिरमा कुल बारवेले बनुब्ब कर्ण, बाबू, सुबक्त और संदान प्राप्त करते 🗓 उन प्रक्रमोसे ही वृ किस काम है। कास है। अब अपने पान्ने कारण सु अनेको क्वॉल्क अका तिर किये मरवारें पढ़ा होना । वहाँ स्वेहेंके समस्य बोबोवारे शिद्ध और मोर तुले नीय-नीयकर कुली कोने और सब्बे कर भी हुई किसी पापकोनिमें ही जन्म लेना प्योग्य । बहि तु हेला एन्यास्त हो कि जब इस लोकने है पानका कोई कर की फिल्हा है कालोकार्थे ही क्या एका है, तो इस कालार निकार तुने बनका करा हैंगे ('

मुनिया इन्हेनके इस अकार कहनेवर राजा कननेकको कहा, 'मुने ! मैं अकार विकारके ही केना है। अब: असने मुझे को पास-बुध कहा है का अध्या ही है। मैं अस्त्राधि कुमानक निरसरी है। मैं परिस्ताधिनों अपने सार्थ कार-राजिको कार कर दहा है। अपने कुकर्मीयर हुई जानेसे मेरे करने हरिक भी कैन नहीं है। में सब कहता है काराकारे भी कुई कहा कर राज का है। मेरे इसकों जो का करका करेंग्र कार यह है, जरे निकाले किन में कैसे नीवित का सकता है। जार जान कुई इसके जुक होनेका कोई उपना नाताने। में बाह्य है किसी प्रकार की मंद्रका नाह र है। कह संसारमें बाह्य कम की। अपने कर्मके दिन्ने मुझे अस्तान सेट हैं। असे से कैसे को कैसे मेरी एक क्रिकि दिन्ने मुझे अस्तान सेट हैं। असे बुद्धियर कारा की के और दिना कैसे पुत्रके अपरावकी और कई देखते, उसी प्रकार मेरी बुद्धि और करनीयर कारा न हैकर अस मुझकर प्रकार होइने।'

हमांतने कहा—पूध प्राक्तानीकी श्रीक और केंद्र-सामीयें कारणका हुआ अन्या कहानक से जानते हैं है । इस्तियें प्राक्तानीकी क्रमा की और ऐसा काम करें, जिससे तुन्हें सामित निर्म । माना हुए साह्यानीकी क्रमा कामेंसे हो तुन्हारी परलोकारें एका होगी, अन्या महि हुक असमें कारोबें किसे प्रक्राताय बारते हैं से साह कार्यर ही हुन्हें रखों ।

अन्तेवनने कहा—मैं अन्ते मानके कारण पहुर संसप्त हैं जोड जाने में कभी चर्चका लोड नहीं करोगा। सुने कारणानहीं एका है और अब मैं अन्तवती सेवालें क्यरियत हैं, इसरियो आर मुक्तर जन्म होत्ते।

इन्होंने कह--रावर् में भी बड़ी बहाता है कि तुम रख और बावको क्रोड़का मेंर भी अही जीते रहते, समझ अधिनकोड़े हिल्में कहा को और अपने बर्धरर हुई। रखते । मैं अब क्रेक्ट कर्ष समझका हो तुम्बे मीकार कर का है। इससे नेत जावन जोरब को समझके कि तुम्बे आहारणोके प्रति पूर्ण बादाम रक्टन काहिये । हुन ऐसी प्रतिक्रा करों कि में ब्राह्मणोड़े कार्य केंद्र महिला।

क्रमंत्रक केला—सक्तर् ! मैं आपके परस-स्वर्ध करके अधिक करना है कि जब कची कर, क्यम वा कमेरे प्रकारोंके स्वर्थ होतु न करोगा ।

्तिने क्षेत्र—पानम् । तस्य सुन्तरस्य नित्र सहस्य गाना है इस्तिनों में तुन्ते वर्णका उपलेख करनेगा। तसेग कहते है कि मादे पाना युक्तिया हो तो अवस्था हो बह सारो प्रमुखी संगत कर करवा है। तुन भी पहले हेरो हो से कियू असा सुन्तरी दृष्टि कर्णवर है। सम्मास मनुष्य सहस्,



कृतक या सकती कुछ भी हो सकता है। जिलू की, किस Print fielt eits min fient with & ib wied gen de होता है। अलेक काम शोक-सम्बद्धका करना हो राजा है। थ्या, दान, क्या, नेव् और साम---ने गींडों ही प्रीका है। इनके दिखा अच्छी प्रचारते किया हुआ वन भी परवनक्ति है और सही राजाको पूर्णतका परिवा कारनेकाला है। इसका अवही सरह अनुहार करनेसे तुम परम्यक्रकानंकारी करेगी कारकीय कर राजाने हो। इसी प्रकार परित्र क्षेत्रोची कामरे भी नक पूर्ण होता है। कुरबोत परित कार है, संस्थी अधेहा भरत्वती नही अधिक परित है, मरहवरीये की दूरते कई क्षेत्र ज्यादा परिता है और करने भी पृथ्वक नियंग वर्गक है। क्लो बान करने और जनका जल फैस्टे क्यूब्बक्टे क्यू का ही बच्चे न पर बाब, इसकी बिल्क नहीं सराठी कर्वाट् करका बीवन सफल हे बाता है। बदि तुम बहासरोकर, पुन्हर, प्रभास, क्तर-मन्सरोकर,कारतेल्य तथा कुन्हती और सरकती नदीके संगय परनसरोगर आदि वीधाँचे ककर साम करेंगे से तुन्दे दीवें आयु त्राप्त होती।

इसके रिया दुनों बाह्यजोकी प्रस्तानत की सम्बद्धन

करनी काहिने। ने दुकारा विशवस्य करें और उस्त-तरहसे हुन्हारी अंदेहा करें वो भी दूस हैता निकम कर हो कि 'मैं उन्हें क्षणी बहु जुड़े पहुँकारेंगा।' इस प्रकार अपने इस काम कतरे हुए कुप परमक्रकाल जात कर सकते हो । बाँदै पनुष्पक्षे कोई सरराज कर कार हो उसके दिनों पक्षाचार करनेते यह करते तुक हे जात है। यदि कृतरे कर किर कर का का वे 'अब किर देख कान नहीं करीना' देशी प्रतिक्र करनेहे कारपुर के एक्स है क्या देख निक्षण करे कि 'अब चीनको प्रमंत्र बनेक हो अत्यास करेना' से सेसरे करके करने भी मुक्ति है करी है और नहे परित्रक्तकरे क्रेजेंनि प्रत्य करण हो हो अनेको चर्चारे कुर कर्मा है। क्यानों तमे हुए जुलके से एक यान प्रकार कुट करे 🕻 । किर ज्युनको बर्लक रूप हे या एक वर्षन्य अभिनी अवस्था करनेले अन्ते पुत्र हे सकता है। पर्यक्रमा परनेको पुरुषा पर संग पर्यक्त अधिकी उपारम करनेते अवन्य श्रास्त, पुन्तर, अध्यस और उत्तर-क्यानेक अभी क्षेत्रीने से केम्पाक बाद करोड़ी हुए कर है। किए प्रमुख्ये कियो क्रांतियोगी हिंसा की है यह अर्थ अर्थिक अने ही अधिकांची पृत्तुने पहा को से चंपपूर्व के बात है। पहली बहुते हैं कि बहुते क्रावट समावत होन कर जनवर्गन-कर उपनेते मनुष्य उत्ती प्रकार शामीते हुए कता है जैसे अवलेच बहादे अन्तर्ने अवसूच बान करोड़े : इसमें हुए ही उसके एक कर यह हो करे हैं, हो सम्बद नियम है और एक प्राणी प्रशान क्षेत्रण करके शायने यह एवं मुक्तके करान हो जाते हैं।" कुरुवरिजीवत का है कि 'बदि पनुष्य पहले किया जाने पाप करके जिन सुद्धिपूर्वक कुल्लामं को से इससे अल्बे पूर्व पायक इसी जवार नहा हे जल है, जैसे क्रम रुपानेसे बच्चका पैस कुट बाता है।" सूर्व किस जबार जात:काल क्रीस क्रेबर प्रतिके सारे अन्यकारको न्यू कर केत्र है, उसी प्रकार बूपकर्य करके मनुष्य अपने सभी पायोका अन्त का देता है।

क्षेत्रक कार्य हैं—राजन् । एका जनपंजकाते इस जनार कार्यक केवर सुनियर हमोराने कासे विधिपूर्वक कार्यक का करावा। इससे असका सब का का नह हो एका और का अन्यस्थि अधिके समान वेहीकारण होने सन्ता।

#### मृतककी पुनर्जीवनआप्तिके विषयमें एक ब्राह्मणबालकके जीवित होनेका प्रसंग

मोर्ड ऐसा पुरुष रेका वा पुरुष है जो एक बार मरकर फिर की उस से ?

र्मानको अंते-स्वत् । क्षांद्रस्य विकासको जे मुख और गीरहके संस्थानको एक पान्य हाँ थी, जा हुन कृते । एक श्रेर विस्ती प्रकृतका कई करिनाओं प्राप्त हुना पुन्दर कराव करनावाशाने है अर करा। का उसके कुछ सन्तवी होकसे केने-किल्बाते को सेकर प्रवक्तनवे नवे । वे बारमाओ झारते राजकर अस्ता कार्यक्रमा धरते हते । अधीने और पूर्णावर रख से दिया, जिल्लू व्यक्ति सीटनेवा प्राकृत न कर रहें। उसके कैनेका कृष्ण कुनकर कही वृक्ष कृत आवा और अभी कही राजा, 'जाब राज अपने इस क्याना बारकाओं प्रोड़कर करे काते, नर्ज निरम्ब का करे । के कींग अंको पुरस्क सम्बन्धिको सेवार प्रस्कानी आहे हैं और में नहीं आने कर सम्बंधों अपनी अन्यू संबद्धा होनेवर र्मताको पुन्न करना है पहला है। यह राज्यकार्यन पहले और गीरहोंसे बनो हा है, इसमें बर्चन परक्षकार दिशाओं का सं हैं: इसरियों का राजी अधिरयोक्ते हैंको क्याब्स है. आपलेपोको नहीं अधिक नहीं सहस्य सहिते। प्राधिकोधी गति येसी ही है कि एक बार सम्बद्धे गालने पह जानेवर किर कोई कीय पड़ी (बैटला ) इस पार्वलोकारे जो की करता है, अरे इस दिन अन्यस्य भागा क्षेत्रा। देखो, अस प्रयोगनकार अन्तरकाके अञ्चलने पहेल पुने हैं, इस्तीओ इस पारकका मोड़ क्रोड़कर तुम अपने चर लौट काओ ।"

भूमिद्विर ! का नुस्ताने वादे सुन्यान वे का लोग बालकाओ पृथ्वीयर सिटाकर खानि हेले-बिलाको बहाने हरों। फ्रानेडीयें एक करते रेनका गीवड अवनी कांडके नियतकार वहाँ आवा और उस्ते काले संख्य, 'यहाचे ! मालको धुन बढ़े बोहकून हो । जरे पूर्वों ! जनी के दुर्वाक भी नहीं हमा । इतने दाते क्यों हे ? बुक्र तो बंद निष्यको । सम्बन है, किसी पूच बर्ज़के प्रचलते वह बारक वी है बंदै । तुम कैसे निर्देशी क्षे ? तुमने पुरुषेक्षको निरमकृतिः देखर इस नहें-में कलकाने पुन्नीयर कुछा विकासन सुन्त विका है भीर रहे इस चीवक इसकानमें क्षेत्रकर उपनेको उँकार क्षेत्रक है। एक इस कोने हुनार क्ष्म भी के की है ? देखे. पशु-पश्चिमोका अपने महोका कैसा केंद्र होता है ! यहाँ कावा पारन-पोक्च करनेवर भी हाई इस स्वेच स परानेको उसी कोई फल नहीं मिलता। परंतु बनुकांचे

रुव वृष्टिले पूज-निवास ! क्या आपने कथी | से सेह है कही है, से को लेक हो । यह तुम्हल संस्वार कारक है, इसे क्रोड़कर कम दूस महाँ बाना महतो हो ? अने ! अन्ये देखक अन्यु स्काओं और कारके साथ **जी-पाप्पत इसे देवने । करियमें क्षीण क्षेत्रे कृत, मुकदनेमें कैसे** हर और हरकारकों और को हर बुक्का साथ कही. क्ष्य-सम्बद्ध ही दिखा करते हैं, इसरे लोग नहीं। क्षय ! इस क्षाप्रकार कारकारों क्षेत्रकर आनेके सिमें तुन्हरे की की कार्व है ?" चीटावर्ड ने कार्र सुरक्षत के तता लोग उसी समय करते कर और समे र

> अब का निज्ञ अवने रुगा, "और चुनिवान गणुर्या । हर सरस्य कुछ स्थानि चैतानी वालेने आवार तुन र्रोट की अने ? बीचे कारके समान इस प्रक्रमतीके होते हर बेहबीन सरीरके रिनो हम होना बनो करते हो ? अब कुर बोब करावारें तम बाओ, अस्तो तुन्हरे तथ पर पा है कार्य । देशों, जनानों प्रभावते प्रथ पूछ जिल क्रमा है, वर्ज किया बारेंसे क्या रक्त है ? बन, में, केन, बर्गन, का और पूर समझे कुर स्थ है है, समूचि में तक बीचें जिल सकती है। अपना अपने वृद्धेतन्त्रीह कार्वेद अनुसार ही शुक्त-कृत्वको रेगार जनता है। विसर्क क्रमोंने पुर और कुल्के क्रमोंने निया क्रेसर हुआ भूते हैं। एस अपने-अपने पाय-पुरुवोधे क्षेत्रे हैं और अपने हैंस पुरुष्पानंते ही जाते हैं। असः हुए प्रध्यापूर्वतः सर्वदाः क्रायरण करी अकर्पने कर का से बाओ तक देवता और सक्रमोके साथ सम्बानुस्थर कर्तन करे । श्लोक और देन्सा क्षेत्र के, पूजरी केंद्र-कारको हा हो कहा, हमे वहीं सुरे र्वकरने क्रोक्सर करे जाने । रेको जोई देखा है कारा हो. वर्ध क्षेत्रकर मित कितीके क्षेत्र-कार्यक इस स्थानकर अभिन्त केर नहीं उद्योगे। उन्हें अपने खेवनका सेक्ष्मर आंगोंने और भरे लेटन है होता है। कोई बुद्धिमान हो या वर्त, करवार हो वा निर्मर, उसे अपने सम्बद्धम क्रमेंक्रि लेकर कारणे अचीन होना ही पत्ता है। सका, सोना करके है एक क्या कर लोगे ? अनका जासक हो करता है से सम्बंध एक क्यारो देशना है। यह कराल काल पुर्वा, करन्य, युद्ध और नर्पाय बीचेको धी तील जाता है: इस संस्थालके ऐसी ही गाँध है।"

> शान्त नीटहरे क्या—करे ! दूध के कुतरेक्**ये** काकर व्यक्त विश्वकृत थे, बिन्द इस व्यवक्ति गिजने उत्पाने खेतको विकास कर दिया है। इसीसे त्याकी सरहा, वश्चि-चल और

विक्तार्गय-सी जान पहलेकारी वालोंने आका हुआकेन : बैहुओ रिश्नाहरि रेकर कर गाँडनेके दिनो तैयार हो पने हो । आंकर का दुखरे ही रक और संसारो करा है, हुखरे आने इस्ट्रिके स्थान है और अपने जिस्सोंके बंशाबी वृद्धि बस्तेनास्य है। इसे करने होइकर दूप वर्डी जाओने ? अवार, हान्य है करो कि क्यानक सूर्व अवा न हो क्यानक बढ़ी करते, सरके बाद दूप इसे वा से साथ के बाना वा पड़ी बैठें पहरा।

शिद्धने कार—स्तुत्यों । पुते क्या सिनो आव एक इक्या करते अभिका हो गये, सिद्ध पैने को क्यों क्षित्री की-पुत्त का म्यून्स्ट्राम् के मिलोव और कार्यक स्थान हो गया है। ऐसे प्राथ्य पूर्व के मिलोव और कार्यक स्थान हो गया है। ऐसे प्राथ्य का ग्रेड और परिश्वा के मार्थ हो है, इससे कोई पत्त इस स्थानिकाम नहीं है। मैं कुम्मी अवस्थ कुछ कारोर को का पद है, परंतु में हेनुगरिंग है और कोक्समंत्र सम्याव प्राणिकामी है, इससिनों मेरी बात व्यावक हुए अपने-अपने पर को मानों। मिली मेरे हुए स्थानकीको वेसकर और महामानों स्थानों मेरे कारों से स्थानकीको वेसकर और महामानों स्थानों मेरे कारों से स्थानकी हो स्थान होता

विश्वादी में क्यों सुरक्षार क्या क्षेत्र स्वेदने उस्ते, उसी स्वारं गीवाद तुरंग उसके पास आता और माहने क्या, 'मीवा | देखों तो सही, इस कारणावा रंग मैंका कोनेके सरावर देहीकारण है। यह द्वा दिन आपने निरारोको विश्वादन सरेखा। हुए इस गीवादी वालोगे अस्तार हुने होड़े वाले आहे हो ? इसे कोड़कर कारेले हुन्दारे खेड़, निर्माण-स्थाद और रोने-पोनेसे को सार्थी आसेनी गाहि, ही, तुन्दाच संसाद अस्ताद सार्थ कारणा। द्वारं कोर समार्थ केरावा भी साराव्य पर पास सार, सिद्ध नार्थिय केराने को सिर जीवाद कर स्वारं कार हिल्ला का इसी असार महि तुन्दें भी सोई सिद्ध, चुनि पा देखा किरावा की

गीरहके इस प्रकार बहुनेकर वे सक जोग कि इस्कृतनों सीट असे और जा नारकात हैए केही रक्कर पूर-पूर्वार देने हुए । इंग्ले कानका कह सुरका मूल्ट उनके पार नाकर कहा, 'जरे खेगो । हुए इस साम्बन्धों अस्कृत अस्तिओंसे क्यों फिले हो हे अस इंग्लेड़े साम-संस्कृत को इसकी निष्टे करण कर हो हो ? या से वर्गरावकी अस्तुकों सहसे निष्टे करण कर हो हो ? या से वर्गरावकी अस्तुकों सहसे निष्टे हो ना का है। यो बड़े स्वरी समझ है होता है और असमें उन्हें भी इस समझानपुर्णने ही सरसाव निरास है।

मारः मार-पार लोटकर क्षेत्रका केवा दिल्पर वास्त्र करनेते कोई लाग नहीं है। अग इसके पुरस्तिकार कोई काम नहीं है। को मार्क एक पार केसे नाम सेक्कर पर काम है, यह दिन उसी क्षारियें नहीं अग समाता। जीई केवाओं नीवड़ की इसके लिये अपना कारेर करियान कर है को की अग यह कारक नहीं जी समाता। ही, पदि साहेप, कारिकारियेंकर, जान का निज्यु इसे घर है को या जी समाता है। हुन्यले अदि महारो, संबे-संबे क्षार संबं का बीव कोवकर केनेले इसे पुनर्वीकर नहीं दिल समाता। असः कृतिकार पुनराको अधिन समारक, नहीं नाम कर है। साम होत, सामा और अस्तरका हुन्ये है साम कर है। कार्यके क्षार वर्ग, साम, सामाता, नाम, सर्वपुन्तक, अनुवीतका कोई कुनराव कार्य प्राप्ति पुनरेकर प्रकारकाई कार्यक केनेला हुन्य कार्यको का स्थानित हुन्

विश्वेत हैंगा सक्तेपर में उस परणानी नहीं पृथ्वेतर गा सेवाप कें-निरमाने पर सीक्ष्म करें। इसे अवस गेवह मिर पाने रागा, 'और ! इसे निश्वाद हैं। इस इस गेवन्द्री साथों अवसर मुद्दित्ती-नेप्ती राम पुत्रकेषणी विरमानिक केवन किसे जा को है ? यह गुत्र से पहलादी सोचा गानिकार पान परणार हुए इस प्रमानात् और पुरुवादी सोचा गानिकार भारत्वादों कोवापर गानि गानों ? में सब महाता है, गुत्रे साथों प्रमान के प्रमान कीवित ही साथ पहला है। गानिकार पान गानि हुआ है; इसे कोवापर हुए सुवा भारी का गाने ! देखें, मुखारी सुवादी मही सामीद ही है। विश्वाय पाने, सुवा हुने अवस्था निर्मात ।

निया क्षेत्र—मह क्षण अरेश जेतीने मह हुना है; इसमें अनेको का-एकार दाते हैं। इसरियो का बहुत है दावानक है। हुए इस कारको नहीं क्षेत्रकर सूर्याता होनेने व्यक्त हैं। इसका क्रिक-कर्म कर है। इस अवकार प्रकारों को सीम क्षो है, वे सभी निकारक क्षणेत्रस्वारों और मंस्त्रहारी हैं। इसमें के हुनों तंत्र करेने। यह कार चुनि कही क्षणानी है, वहाँ क्षरनेते तुनों का सम्बन्ध। इस वासकार क्षणें सो कार कारके कारण निकार है। हुए हुनों क्षोड़कर करें कारते।

विदर्भ का—रहरो, रहरो ! जनाना सूर्यका जनाह है राज्या नहीं विदरी जनामका कराव नहीं है। जर सम्बन्धा के हुए केंद्रपूर्ण आ करावाको देशते हुए नहीं जो और वर्णक विद्यान करो। नहीं हुए इस विद्यानी करोर और वास्त्रहरों जननेनाती करोपे आ करोपे से इस वास्त्रहरों इस से बैठोने। भीनजी कहते हैं—राजन् ! ये तृत्व और मीट्य दोनों ही मूले थे : परंतु अभेगेरे तृत्व तो नहीं कहता तह कि जात सूर्व अपन हो पना है और पीदहने नहीं कहा कि जानी कहा नहीं हुआ। वासावारें से होनों ही अपना-अपना काम करानेवर हुने हुए थे। होनों ही झानकी कहें क्यानेत्र कुन्ता थे, झानकों हुने



अन्यों कर कन्कर के क्यों से कर वानेको तैयार होते और क्यों किए क्या जाते। अस्पा काम बनानेमें कुसल गृह और मैदलने उन्ने क्यारमें क्यार हिया और वे संकारक रोडे हूर व्याँ को थे। इसी समय हीयांजीजीको जेरवारो असेट समये क्यारम् कंपार प्रवाद हूर्। उन्होंने उनसे वर मॉननेको कहा। का हानी सोग अस्पा विनोध और दुःरिला होवल कोरे, 'मनवर्ष । इस क्यारक पुत्रके क्यितको इस प्रवाद-से हो से हैं और पुर: बीवन-समय करनेके किये अस्पुर हैं। असः अस्प इस कारकारों वीवनको हैंबर हमें क्योरो क्यार । क्या का स्वेगीन जीवनको हैंबर हमें क्योरो स्वाद अस्पु के अस्पु कर वृक्ष और मीदकारों भी पुत्र किय करेवा कर है दिया। हैस्स कर क्यार कहेंने सम्बद्धि क्यार कर है दिया। हैस्स कर क्यार कहेंने सम्बद्धि क्यार क्यार और ने इस्से कई हमित और कुरस्पुत्र होका

प्रकर् । यदि कोई व्यक्ति कु निश्चके प्राय विश्वे कालो की रण थी, उससे को नहीं से प्रश्नास्त्री कुमाने होता है की क्रमाना नित्त क्रमाते हैं। देखे, गणनार् कुंबरारी कुमाने का कु को म्यूनके कुछ कात कर दिया और काश्याको पुनर्शिक विश्वेत में को है परित्त और सामन्त्रित हुए तथा को सेकर को कालो प्रश्नेत को आगे। यो पूक्त कर्न, अर्थ और बोधका मार्ग अर्थित क्रमोकारे हुए आपकानको सुनता है, वह हुए स्वेस और प्रश्नोकों निर्वार सुन्न काल है।

## प्रवल ऋतुसे क्थनेका उपाय क्तानेके लिये सेम्लवृक्ष और वायुका प्रसंग

रण कृषितियों कार—विवास्त ! यदि कोई कमकोर समृत्य सूर्णतासे अपने पास रहनेकाले किसी कारकार समृत्यों के और से और व्या अध्येष घरकार अभी वो उसे उससे किसा प्रकार अध्या कारक करना करिये !

भीनमी नोरो-परतानेतु । इस विकास सैध्यान्तु और वायुका संस्थानमा को पुरातान प्रतिकास प्रतिक्ष है। बहुत है। पूर विभारताने कपर एक बहुत कहा सेवालका बुध था। हो-भरे पत्तीरे रारों कुई अस्त्री लेकी-लेकी प्राप्तार्थ संस्था और कैस्सी कुई भी। जाके नीचे अनेकों परावारेत प्राप्ती और पुन आहे विशाय बारते थे। उसकी काफ बड़ी हो बनी थी तथा उसका बेटा बार सी हाथ था। अनेको व्यापारी और बनमें बुनेकार प्रत्यानेत्रेय मार्थि करें स्थाय असके मीचे स्वाप्तो थे। एक दिन बीनस्त्री

अवनके क्रेकर निवाले । अपूर्ण अवकी लंबी-लंबी शासाई और करों और कुमली हुँ इस्तियाँ रेस्टवार असके गास नामार महा, 'क्राम्परे ! तुम महे ही रचनीय और मनेहर हो । मुझ्याप । हुकारे कारण इसे निरम ही बद्धा मुख्य निश्चार है। तुमारी हम-क्राम्पने अनेकों पही, पूग और गम सर्वह निवास करते हैं। मैं रेस्टवा है तुमारी नेकी-लंबी सारक और रचन इस्तियोकों क्रम् क्रामी मही क्रेक्टा । से बच्च प्रकारोक्तर सुम्हरे इसर विशेष जैन है सम्बन्ध कर तुमारा निर्म है, जिससे कि इस बनमें बह स्वह हो हुम्मणे पहा करता स्वहा है। असी । क्ष्म क्रम् से प्रम मेग अस्ता है से होटे-बड़े सभी अकारके हुनों और प्रतितिस्तिर्सांकों भी सम्बन्ध क्रमरों दिस्य देश है। समाहर, सीवन होनेसर की, हुससे मन्तुन वा देशी क्रानोके कारण है क्रमुदेश स्त्रीह सामने अरमण विनार होगार कहते होने कि "मैं हो आसीका है 'अपेने का राजरी का करता है।'

रोपरने बार-सार्थ ! बाज ने मेर निवार्ष में माना है और य साह है। का लाग भी नहीं है जो मेरी का करेक. मितु मेरे अंबर को प्रीपन कर और परवान है, उनके अले मानुष्यी पृथ्वि अकाराने अंतर्क मानवर भी गार्न है। विक समय वह कृत, पर्नंत एक कृतरी बस्तुकोच्छे केहळ-कोहळ मेरे पास प्रांचता है जर समय में अपने कराइनारे जानी चाँह der im fi

 करानीरे न्या—काराने । इस विकास कुछारे और निर्मित क्षेत्र नहीं है। संप्रापने कानुके सरकर को ब्योर्ड की कारका, नहीं है। उसकी करवारी को इन्ह, का, कुनेर और भागत को नहीं कर सकते, दिन कुन्तरी के बात हो करते हैं ? क्रांतरने चीक विकास भी बेक्सो करते हैं, उस सकता के मानवाद बानु हो है। जाकामने तुन बढ़े हो सारहोग और क्रोड़िट हो, केमार बहुर-सी करें कारक कारते हो । हारीने ऐसा हुई मोरू यो हो । प्राप्ता, स्थापन, सारा, सरात, हेन्सूब, केंद्र और कारने आहे, को दूसको अधिक सामान्य, पूछ है से भी सामुका देशा निवक नहीं करते । वे अपने और कार्यंट कारको अपने क्रम जानों हैं. क्रांसे में क्रम को सैल क्रमते हैं। कुर के मार्क अन्य कालो भी करते—या कृत्य केंद्र है है। अध्या के जब में भी मानके कर पायर हुन्हरी के को बारका है।

र्मानमें वर्त है—चन्द्र । कारणीयके इस प्रकार क्रमानर प्रकृतेसकोने हेव चन्त्रने सन्त्रोधके पास सामार जानों एक को सुना थें। इससे को नक कोन दृश्य और का का सेवाओं पास कावत काने तथा, 'कावओं । किस समय जनामी हैरे पान होकर निकार थे, इस हकर कहा हुने करते नेदे किन्द्र की वी ? ह जनक नहीं, में स्थापन् सन्तेत है। देख, में अपी द्वारे अपने प्रतिकार परिचय कहते हेळ है। सहारकेरे अवस्था अधीर साथे साथा देशे साथाने विश्वास मिना का इसीसे में अन्यत्व सुरात कृत्य करता कर का वह अपैर यू केरी इस्तरके क्या स्थान कार परंहु ताल के यू क्या क्रांकरंग चीवके समान मेरी अवका काने राजा। अवका, क्रे रे, मैं को काना एक दिखात है, विवले किन कची को मेर विस्तार करनेका सकत र हो।'

्याकुके इस अकार कार्नेगर सेवाओ हैतवार बाहर, 'प्रकारोग । महि तुम श्रुप्तर कृतिक हे तो सम्बद्ध अवस । और सारकुर्व सुनाके, बहाओ, सब और क्या सुनाई ?

हुन्हारी एक करता दाता है। करून होता है हुए कन्हों | का शिकाले । देती, ब्रोज करते हुए केर कहा कर रिते हो । में कुमते बराने कही वह-पहलार है, इसरियो तुमसे करा भी न्हीं कर सकता। अभी । अभिन्य करनार तो से ही होते हैं, निरुद्धे कर पूर्वपुरू होता है। किसी केवल प्रार्थिक कर हेक है, भी करनीक करना औं प्रशासता।"

प्रान्तविकं देश व्यक्तिम कान बोला, 'अध्या, प्रान्त हैं कुछ अनव पराधन दिखानेका (" इस्लेक्ट्रीने एक जा गर्क (" कार्यांने अयोको पायुक्त समान करते व देशका होता. 'कैरे नामकोर्ध को पुरू करत का या श्रीक नहीं का। पहले कपूर्व सम्पर्ध में बहुत करावर्ष है। इसमें संबंध नहीं, में से कुरो वर्ष कुलेने की कुला है। यांतु शुद्धिने की समान कार्यरी कोई नहीं है। जता में सुद्धित जातन सेवल से नामुद्रे कर्म पुट्रेश। भी, करे कर के जो उसल्यो गुरुक सामा रेक्टर काने चूंने के निःसंक् वर्ष चूरित कानूते विक्री अवस्था हो। भी से स्थेति है

केरचे को है-नेकारे देश विकास को है अनमे प्राच्या, प्राप्तिकों और पूजनको साथि निया हिने स्वा भारतकार सामेकारे कार्यों प्रतिक कार्य कार्य । समय क्षेत्रेयर पानु को को सरकारक और भनेकी विकास कुक्केकी क्यानि धरम हमा वहीं सरम । यह असे देशा कि यह अपनी फारता और कुल-मते अर्थिः गिरावीर देत करा प्रता है को अल्पन रंग्स प्रतिम ज्ञार गया और काले मुसकाबार पुरत, 'अने सेवान ! में भी सोधने परवृत्त कुते हेता ही घर देव प्रमुख का । ऐरे कुछ, सम्बन और स्वासाधी पर हो नहे है जब जहुर और को भी हाई चुके हैं। जनमें कुन्दीओं ही व भेरे करा-नरकारका निर्मार करे है है

क्यूकी हेती बात कुरका सेवताओं बार संबोध हुआ और या करानीको कही हुई करी यह बारके यहा कहाने राज्य । क्यान् । इस प्रकार को व्यक्ति हर्वत हेनेयर की अपने कारका, क्यूने क्रिकेट करका है, उस पूर्वको इस सेमसके कार हो संदर्भ होगा पहल है। इस्तीओ बराबान् इतुओसे कभी केर नहीं स्वतना कार्डिके; क्लोकि उद्यन कीरे डिलकोरे कैट नार्थ है जो अपन प्रतिकासी पति साथे नावक कोई ज्ञान निकास रोगी है। कहार: सुद्धि और काले श्रेन्था-पर्यापके पान कोई कुछी पीच नहीं है; इस्तीओ सक्ता पुरसको कारक, पूर्व, अंथे, कारे और अपनेसे विश्लेष कारकार्यक अव्यासको सर्वात स्थाने पान पादिने । यह सात मैं तुन्हारे शेहर का देखा है। अलोह । स्वीवद मेरे दुने कुर कार्का

## स्त्रेभमें पाप, शिष्ट पुरुवोके रुक्षण, अञ्चलके दोष तथा दमकी प्रश्नंसा

were & the worst safegon was & sile fount street अधित सेवी है।

र्मनको केले—स्वयन् ! सुनो, सोना एक पहा नानी पहा है और सोपारे है पापनी अनुनि होती है। होपारे हो पाप, अवर्ष और कुरावा कम होता है कहा जिल्लो केंद्रका करन करी करते हैं, का करवाता जान की और है है । जीवाते हैं कार, क्षेत्र, मेर, मान, सरिवार और सरकारके स्वीर केरी है। क्षेत्रकों ही सहका, निर्मालक, स्टेक्स, सर्वहरू, रिक्त और अवस्थितिक यन क्षेत्र है एक खेनके है कृतनाम, अस्तर तृत्या, विकासी अनुष्ठि, सुरावित्या, पार aft byefer or, some selected pic, men freuer. well all offere all which all figure out-केंग्रीमा मार्च्यान क्षेत्रा है। कुरोबंड काओ कुछ रेक, क्षानेको मह-नेतिनोक्क प्रोत का करण, कार्य और कार्या wome, freel wh give, and our anishmal Martin, Programmed affice steph, goods que करना और दीन फला, नातका और न करने चेन्य बारोंको कर बैठना—इर सब इर्ज़नेक बारन में क्षेत्र है। है। जरून पूरा हे पात है तर की लेको विशेषक जूर अवने । विका प्रकार अनेको प्रीक्षित प्रकारिको अस्ति । विका स्थेन करोड़ भी रुप्याची पूर्वि नहीं होती, करी कहा विकले ही का और भेषा पहले किए को क्षेत्रक के भी प्रकार राज्य । इतने क्यानिक स्थानको के देखा, बन्धी, अपूर, कार तथा प्रांतको अन्य प्रांतकोको को पहेई जूर कार प्रकार । अंदः संस्तरिक पुरुषके किसी प्रवास सेव और रोपको है कार्य करण पाहिले । रहेची बहुको हन्द्र, होत. रिम्हा, पुरासी और माहर-ने सभी होत पहले हैं। महाहा लोग को-ध्ये क्रांकोचो करहात कर हेर्ने है और सब प्रकारकी एक्टबरेका भी संस्थान कर सकते हैं, बिंद प्रक मानेक चंत्राने पैतावर वे उक्त एक क्षेत्रों स्क्रे हैं। उज्जे : तमा संसुक्तीके स्वाधित प्रियो कर्ण और क्योंक कुछ। बनानेक्यों है होते हैं। करनेगर हुने को है। इस स्वेच्छात रहाक सम्बंधित

पुरिवोर्टर पुरा—क्यानेत् । अस्य में यह सुरस्य | सारण सम्यक्ते विकासिक अनुमें विवास अन्त है, यह पी th drawn and more to

ता में हमते किए पुरुषेक पर्यम कर का है, उसते 🕸 हुत अपने पर्नात केंद्र पुरुष । कावा प्रमु बारोजे पर्नुपाने पूर्वाच अवस पर्यक्रमा पर महिन्ता। इर होनोबी महत्त्वभूतमं अवृधि नहीं होतो, ये जिल और अधिकतो प्रतान क्यांने हैं, इसे विकास और इत्यानंत्र क्षेत्र हैं। इस और एको इसके काल हो। हेती है उस उस ही प्रकार परन स्थान होता है। में केंद्र है, केरे नहीं। सरकारी बड़े क्षान् को निक्त, केवल और अधिनिक्तीके केवल होते हैं उन्ह queben the weblic fieb male time we web \$1.0 राजेका उत्पाद करोगारे, यह प्रकारे वर्गेका पास कारेको, पुरुषेके विन्हें सर्वक विकास कर केरकोर और को और होते हैं। इसे कोई भी पूरण अपने निकारों किया नहीं क्षाता क्षा कृते: वाक्स्परे पूर्ववर्ती सामुख्येके सामस्त्री कोई के नहीं साम : के किसीओ उससीए क्रानेकारे, परामाना च हर में को हो। तीर तर्वह हमानेर fine wit fie megabilt me fi poer up wen miligie peit aufgempfenft meren unt f. कार-मोजार स्थान पूजा है तथा प्रयक्त और स्थापार की ची को को। ये सहकानकी और स्थिका पाल करनेकारे होते हैं। हुए इसकी रोक करना और जो पहला हो इसीने पूजान । पान्तु । उनका वर्ण का पा पान बहेरतेह रियो को क्षेत्र । ये क्षरीरको आवश्यक विकाशोधि प्रकृत को भी अन्य अस्मिन व्यक्ति क्रमते हैं। क्रमें पर, क्रोप, क्याचा और प्रोक्ता अन्तर होता है। वे वर्गहर होन की रूको और न वर्गकरनमें उनका कोई हिन्द हुआ कार्य है क्या है। वे लोग और मेहने रहेन क्या तस और सरामाना काम कार्यको होते हैं। हेले पुरुषेने दूस सर्वद्र केन रचन्या । ने एकाँक एरकपुरस्ते दिवस और समझही क्रेते हैं । इन्सी बुद्देने सम्बन्धीर, सुकन्द्रस, प्रिय-स्टीम स्था हैए और कोवन्द्री अधिकार जाते हैं, विद्यालयमं ने कु पह । जीवन और करवने की बोर्ड के नहीं होता । वे वह कालानी, कार्र है, कोरावाराओं को दीड़े किंद्र भीकरने को करोर हो है उसरियोग और इस्तावर करोबर अनुसरक करोबारे होते मार्थ है। अन्तर्थ विक्री कार-कुरारों को पूर् कुन्छे ककर है। हुए अन्तर्थ इतियोदी जीतकर नहीं सावकारीये का होती है। वे को कुर और वर्गीद जागर संस्थानों केश्य अस्तित और विकानुसरस्य सहनुष्यकोची होता सत्या। देनेवाले हो जाते हैं। में अनेवारे वालको वार्ज कारे कार देते हैं। में कार बादे जुलवान् होने हैं। कूलो स्क्रेंप को केवाल बार्ट

्र विकास का का अपने सब अन्तिके

भागारका सोधका तो वर्णन विकास तक में आवतक। चर्चार्व सरका शुक्ता चावत है।

.....

चीनावीरे कहा—मुक्तिहित । जो समूच्य अहारकक् कर करात है और असी होनेवासी अवनी ही प्रतिको नहीं सम्बाता तथा सम्ब पुरुषोसे हेन करता है, असकी संस्थाने क्या होती है। अक्षानसे ही जीव नरवाने पहार है, आक्षान की सरकी वर्तना होती है तथा अप्रवनने ही वह हेक सवक और आयरिये पीतवा है। सन, हेर, बेह, हो, होंस, करकत अभिभाग, काम, ब्रोम, क्र्रे, तथा, कामक, इस्स, र्मनाय, दुसरोक्ष्ये ज्याति देशस्या सारम्य और साथ बारना—व्या तम अक्रानंत असर्गत बावक पदा है। राजप् ! अवस्य और लोग—इन वेनीयो एक प्रस्को: क्लेकि इसरे क्त-सा वरिवास निकरका—एक-सी बुटर्स केंद्र केंद्री है। सोधारे ही अञ्चल प्रवाट होता है और स्पेथांड बहानेकर अञ्चल भी सकता है। कारतब सोध रहता है, अहरत भी बना सुना है और लेक्केट अपने अञ्चलका को अब के कारा है। अञ्चल और भोगके ही बारण जीवको पता प्रधानको केलिकोर भारताना व्यास है। आहनारे सोच और सोचले अहल--प्रश प्रभार हरकी जयति अन्योग्यातिस है। स्वेत्यते ही समुख्य क्षेत्र अकट होते हैं: इस्तरिये सोच्या परिवास कर देश पर्योगे । कार्यर, युवनाय, क्यारीर्व, प्रतेनवित् क्या अन्य अनेवर्वे संताओं में लोश मान देते हैं है किस्तोबं उस्त विश्व का पुणिति । तुम भी मोतमा साग करे, प्राप्ते सुधे झालेक और परलेकार सुक विलेखा ।

मुनिवित्ते पूर्ण-विताया । इंग्याने क्षेत्रका अतिवादाः कार्यवादे अनेको वर्षात (चंग) है, परंतु आप किले केन मन्त्रो हो—को इस लोका और प्रस्केवाओं भी व्यवपाल कार्यवादा हो, उसे ही यूने कार्यको । वर्षाया कार्य व्यवपाल है, इससे क्ष्यून-सी प्राच्यात् (प्राच्यावादी) निकाल हार्यकोन्स कार्य वर्षात है ? तथा क्ष्यून-सी प्राच्यातीने पूक्त इस व्यवप्त वर्षाय वास्त्रविका पूक्त क्या है ?—वे सम्ब वर्षाते अवप कृतिकारो कार्यकृते।

वीकानो कहा—पुनिहिर ! किल कारको हुन्हें सेव (कारकार) असे होना, का कारका है, सुने । जैसे अनुन कीनो पूर्ण दृति हो जाते हैं, जही प्रकार इस असको कारक सुन पूर्व हो जाओने । कार्यक कहुन-से विकार है, किनका सहर्षिकोंने अपने-अपने प्राचक अनुसार कर्का किया है । उस सम्बद्धा आधार है दक-अन और इन्डिकेंका संबंध । कार्यक सिकानको कान्नेकारे कुछ पुरुष दक्षको मुख्यका सकार

कारको है। विशेषकः सहस्रको रिक्ने को इस ही सनातन क्ष्मी है। इससे है अन्तेः जून कर्मोको वक्कन् सिद्धि होती है। क्रं लक्षणके जिले दार, च्या और सल्यानके भी बहुबार है। स्थ केनकी नृद्धि करन है, यह बक्क परित्न सामन है। ध्यारे कराईक हुना हेनाती कुछ कावपाली प्राप्त कर सेला है। संस्तरने एक्के सम्बन् हुसरा कोई कर्व मैंने नहीं सुनः है । समी क्यंक्सनेके कई कार्या प्रकृत भी गती है। इन्हिलेक स्था वनेरियामे वृक्त व्यूक्त इस सोधा और परसंक्रमें भी सुक कार है। औ पहलू वर्षका पार कहा होता है। अल्बा कर मन जनम सुना है। निस्तारी इतिहाँ औं पन बतायें नहीं है. जो क्लंबर दु:स उठान यहन है तथा यह अभी है होगोरी व्यक्तनी क्राने-क्राने अन्तर्भ भी केंद्र कर सेता है। बाते के आक्रमेने कृत्यों अध्य वतावा गया है। किन अनुवाहित अन्य:कारानों कुर (संबंध) का क्या हुआ है, उनके संकृष कारण है, सुने—इन्स, बीरल, अक्रिता, सपता, सब्द, करन्या, क्षेत्रपवित्रां, स्थाना, चोध्यत्रत, स्थान, विश्वता, कारण, मोध्यम कारण, संसंध, मीठे प्रथम बीताना, विक्रांको सङ्घ व देव और कुरोके केंग्र व देवला—वे सब पूर्व विक्री कारका है, का पुक्रीमें संबदका क्षय संबद्धार कार्कि । से पुरुवनिक असर और संस साविकीया क्रम पालके हैं।

संबर्ध पूजा कुगुले, जंबासपालक, कुररोको विचा-स्त्रीत, काल प्रतेश, स्त्रेश, वर्ड, द्वीन द्वीयाला, रोज, ईसर्ड और कुलरोक्त अक्कान्-इत वृर्गलोका कथी सेवन नहीं करता । मेंचन रस्त्रेणकोन्ही कभी निष्यु नहीं होती. काले कर्ने कोई कारण वह होती। 'मैं हेश है, तू वेश, जुल्ले कारण केंद्र है और उन्हें नेए'—इस प्रकारके कारेके सम्बन्धीको क्र कार्ने अमें रक्ताः । औ कुररोधी निन्दा और प्रशंकाचे कुर शुका है, जनमें मुखि हो जाती है। यो सबके प्रति विकासक पास रक्षानेकार और सुक्रीत है, जिल्ला कर नागा अवस्ताती अन्तरिकारेने कुछ है, उसे मृत्यूके प्रक्रम् पहल् भारवकी प्राप्ति हेनी है। सक्कारी, सुतील, प्रस्कानिश और आसाने जन्मको बार्यकास विद्वम् पुरुष इस स्तेकटे समान और वसकेकने सहसी। अहा करता है। इस कराही जो बेटाल कुष (कामानकारी) कर्न हैं, जिल्हा सामुखोने आवरत किया है, में है कारी जुनिये वार्ग हैं र यह सम्मानसे ही कारत क्रकरण करता है, उन्हें स्वागता वहीं : हानसम्बद्ध जिलेन्दिर कुछ वरते विकासकार कुछाना क्रमान आस्त्र है और व्या है। न्यानके सम्बद्धी अभिन्ना करना हुआ निर्मुद विकास क्या है। ऐसा हानी ज्यासम्बद्ध हो जाता है। विस्तारे सर्व

आियोसे यह नहीं है जया किससे दुस्ते अन्य की यह नहीं पाते, जा देशियानसे रहित महत्त्व किसीसे भी नहीं हत्या। मह सभी अभिवर्ध समान जान र तहा और समाधे दिनकी प्रति अभवदान देशा हुआ निवरता है। वैसे अन्यत्ववे पहिल्लीकी और कराने जानकर जीनोकी गाँउ नहीं कीन पहिल्लीकी और कराने जानकर जीनोकी गाँउ नहीं कीन पहिल्ली, उसी प्रवास प्रतिको गाँउ की जानेने नहीं अन्यति। वो जानारको कोइकर प्रोजके दिने जानेन करान है, यह रेशोयन स्वेकोको अस्त होता है।

व्यक्तिस्ति क्रमा हुआ यो नितान्त (व्यक्ति) का क्रमा बान है, जा पन और इन्तियोधे संगयते है जा होता है। जिसका किसी नी जानीसे सिरोग नहीं है, जो इक्त्यनात शासाने हैं राजा रहता है, होते इस्तियो इस सोचाने पुरः क्रमा हेनेक्ट पन हैं नहीं जुड़ा, किर को पश्चेकका

वा केसे हो ? संबंधने एक ही देव हैं, इसत नहीं, वह नह कि इक्तारील होनेके कारण लोग उसे जरमर्थ लबाने लगते हैं। कार इससे नुष्ण बहुत कह है, इस्त वारण करनेसे जनेकें उदार रहेकोकी आहें। होती हैं: वनीकि इस्तासे सन्वर्ण स्थानकृषि अब बाली हैं। संबंधी पुरुषको कार्ने नानेकी स्थानकृषि अब बाली हैं। संबंधी पुरुषको कार्ने नानेकी स्थानकृष्टि के प्रतिकादिक पुरुष नहीं कार करता है, बढ़ी वर है, बढ़ी अस्ता हैं।

वैज्ञानका वार्त हैं—चीकानीकी के बादे सुनकर तक पुनिश्चिर आरकारत हो गये, बावे अपूर पीकर दूस है गये हों। के व्यक्तिकारिये हेंस् गीकानीके किन पालिस उस बारों रहते। तम पीकानीने अस्ता होका का सकार स्वतंत्रत आरक्ष किया।

# हप और सत्यकी महिमा, क्रोध-काम आदि दोवोंका वर्णन तथा नृशंस पुरुवके रूक्षण

वीचार्थं केले—विद्वान् पूरव कहते हैं कि इस समूर्ण समाहका मूल कारण है तथ। जिस कुर्वन्दे कभी कर नहीं विद्या, असे अपने कर्मोर्थं स्वयंत्रात नहीं निरस्ती। प्रमानकों के स्वयं ही समझ संस्थानकों कुछ को है तथा क्रिक्टेंग तथा है। वैद्यात हाल प्राप्त विस्ता है। विकासने निक्रने प्रस्त और मूल् है अस्त्रो दक्त अपन्यो भी संस्ते हैं। स्वयंत्रा विस्ता है। क्रिक्ट स्वयंत्रा पूर्व तीनों स्वेक्टेंग्वे प्रस्ता विस्ता है। सर्वेक्ट सामायो यह सरका है है। संस्ताने में पूर्ण क्या है, यह सी स्वयंत्रा सुलय हो जाती है। प्रस्ता, सोर, नर्वव्यक्ता और गुरु-प्राप्ति स्वयंत्रा करनेव्यक्त करी क्यून्य भी अर्था सस्य स्वयंत्रा करके हैं प्रस्ता बुरक्ता का समझ है।

त्रस्थाके अनेको साम्य है, पर क्यों विश्वास खनेसे बहुद्धार कोई तर नहीं है। राज्यों कहादार कोई तृष्टार वर्ग की है, पाताकी सेवासे बड़ा कोई शासम नहीं है, दीनों केहोंके विद्वानोंसे शेष्ट कोई मनुष्य वर्ग है और संन्यास से प्याप्त उप है। अहि, दिला, रेखता, प्रमुख तथा कुसरे को सरकार जीवा है, से सब तप्तकारों है तमे खाते हैं। तप्तकारों है इसकी सिन्धि अस होती है। देववाशोंको को तप्तकारों है इसकी बड़ी पाहिमा निर्मी है।

वृधिहरने कुल—सहाजी ! अवस्थ, आवि, सिरा और देखता—ये सब सराव्याकातार वर्षकी आंतर करते हैं, आः अब मैं या सुनना प्रशास है कि सार क्या है 7 उसका स्थान

क्या है ?कामधी आहें। कैसे केसी है ? क्या सरकार पास्त्र प्रत्नेत्री कीय-व्य साम्य केमा है ? कीमकी काम—क्विकीर । सायुक्त प्रका ही सरस्यार

वर्तवार कारण करते हैं। सार समायन क्षार्थ है। सरमधे हैं। आहर हैस व्यक्ति, क्योंकि साम है कीवार्यों एस गति है। तरम है करों, तर, क्षेत्र और समायन कहा है। तरम है परम क्षा है। समायन है सम कुछ दिना हुआ है। तरम है परम क्षार्थ, सरमोर आसार, तथान तथा करनी अहँगात क्षार्थ क्षार्थका है; सुने। समूर्य लोकोंने समाये (अविशिक करने) क्षेत्र की गते हैं—समा, समाय, इस, मास्त्रकात अध्याद, हम्म, सम्बद, तिरिक् (स्वारणीयात), हसरोंने केथ म देशना, साथ, ज्यान, अस्त्रेस (क्षेत्र आपरम), बैर्च, अहिंसा और कुछ—में सम सरमोर क्षारण है।

नित्त, अधिनाही और अधिकारी क्षेत्र ही समय। प्रकृत है। वित्तिसे की विशेष नहीं करना का केंग क्ष्म वाता है और इसीसे समयों अहि होनी है। द्यन हेर क्या काम-प्रदेशको निद्यकर कार्यने, अपने दिन निवर्ग एका प्रकृति की सम्बंधकार रहना समया है। किसी दूर्तकों वस्तृति हुना न करना, सदा कार्यस्य और पीरात रक्तन रावा निर्माद हुने (कार्य) सेनोसे रहित रहना—व्या सम दन (यन और पुनिवर्गके संगम) का रक्षण है। इसकी प्रति

क्रान्से होती है। क्रम और क्रमीड समय अपने मजबो **प**रसूते रसम्बन्धारे विद्वार स्वेत 'स्वरक्षाका सम्बन' सहते हैं। सक राजक करन करनेते हैं करन नावसका साथ कर कारता है। स्थाने और न सहने योग्य दिन क्या अहीत प्रयान कुरमार भी को शुरू कर देश है, यह सनुस्त करन पास है। सस्य केलनेकलेने ही इन्त्रका पूज आता है। को कुद्धिकर् क्रमेनार्के क्रातेक सामान करता है और कार्ने कर्प केर मही करता, जिसको का और वाली कहा प्रान्त सुनी है, बहु संस्थान करा करा है। यह समा उत्तर हुन करेंद्र अव्यक्ति वह होता है। वर्गीर हैले यह सहस्र विवेदा (सक्तकीरमा) व्यवस्था है। स्थेनोन्ड प्रापने आहां उपनिवा मार्गिके विश्वे, इरावा अवस्थ काम काम कामे : feftigent sett debt gieb å i auselle sår Dereiter så मार्ग है, नहीं क्रमानिक स्था है। यत-हेम्से पुत्र हुए क्रिक कारको सिद्धि को होती । यो पट्टम अपनेको एक्ट प सामे erriferije fine beregin einbal werfen mei करता राजा है, अलोह जर होड़ अरकरकार कर ही अलोहा है। मुंस का पूर्व प्राप्त होनेका करने विकास न होना सेनी कहातात है। में जनमें करि क्यून हे, जा बुद्धिकरूने कह की क्षारण करना पाक्षिते । तथा क्षात्र करे, तस्य क्षेत्रे क्या क्षे मन और प्रतेषका परिवास कर है । हैसे अस्परकारों सिक्स कुरमधी केर्न जात होता है। यह, कार्य कहा दिल्ला किर्मा के प्रामीके साथ होड़ न करने हैं, समन्त अनुवा रक्तन कार क्ष केल—का क्युकोच्या संस्थान वर्ग है। इस क्यान पुन्तम्-पुन्नम् कारको हुए अर्जुक राजी को सामो है समान है। इसके क्रम करूक सामक के तेवन करते और Read के महारो है। राजन् । सरकंड मुख्येक कर पान असलक है: इसीरियो प्राध्यम, जिस्स और देखार भी सरकारी प्रशंस करते है। सरको सम्बद कोई काँ नहीं और प्रक्रमे सम्बद्ध कोई कर नहीं है। तरन हो धर्मका सामार है, अनः सामका रहेन नहीं करना वार्तिने। स्तरने सन्तर, इतिन्याओरकीर स्टान्ध विक्रिक अधिकोषे प्रकारत और पार्विकोष सहवेताहे वेतीके सम्बादका भी कर निर्म सामा है। और एक और एक हका अध्येष मार्चिक और धूरणे और साम्ब्रह मार इतुमूक्त रक्तान जीता जान को एक इकार अञ्चलक स्कोब्धी अनेहा सनका ही कर अधिक होता ।

वृष्टिले का:—रिसम्प ! स्टोग, साग, घोधा, चेट्र विभिन्न (नवे-वर्व काम सारम्य कार्वची इका), परसूतः, (क्योक्कपूर्व कर्न करवा), खेळ, क्यार्स, हंजाँ, रिन्हा, केम्ब्रोट, कुरका और मन-न्ये केन किससे जनत केते हैं ? यह डीक-डीक कामुने।

क्षेत्रको क<u>म्-कृषिक</u> । तुक्को को पूर् केस केर अभिन्योके अरुपा काल कहा है। से बनुवरीओ रहा कोरसे वेरे को है । को प्रकार की सुन, को ने प्रमुख्ये पेड़ा बहेजी है। ज्यूक्तके नेतके हैं के नेतियोको एक अस्तर कर पूछो है और कारपूर्वक अन्यत पास का देते हैं । इन्होंने समानो कुना विकास है और कुर्वाची प्रेरमाने प्रत्यक्षित स्वृति होती है। ये विकासी उपना होते, विकासन्त पहले और विकास अकृत गुरु होते है ? में क्रम कर्ते जात का है। कारों पहले क्रोकारी अवस्थि कार है क्यानिय क्रेसर कुने । स्रोत संपन्ने प्रदान क्रेस है और कुरोने केन देवानेने पहला है। क्रमाने स्थान पहला क्षा कार है और और और नोंदे कारने पूर के हे कारन है। सहस्रके अपनि संस्थानों होती है, यह संस्था प्राप्तेने पहला है और अवस्थित है। होना रोग्य होने हेरेने सामार मा हो जाता है। कुरारोधे केन देखनेका नाम है आहमा । का प्रतेष तथा को प्रते क्रमा होती है उत्तर तथ क्रमिन्तेश एक, बनने वैशाध क्रम कारणाव्यक कार केरेने पर के पानी है। सेंग्र कारण केला है अक्रमा व्यापाली अध्यक्ती प्रकृत है और प्रकृत gradit perfend plus up i bereit for um begen जानकार विशेषी इत्योगा अवस्थेता करते हैं, से उने (अन्तरियो कामको) को-१७ कर्ग आस्य करनेको हुन्छ। (विशेषका) होती है, कियु सन्तासन होनेवर स्थापी निवृत्ति हो कारी है । विकास केर के कार्य विकास केरा होता है, विक् का महार का लगा है कि होना कर्त है—इससे कोई लाग न्हीं है, से हुन्त अलब्दे क्रान्ति से नाती है।

वरम्या अवर्षि वालेर कर्म करके अवृति होती है को ह, तम जीन और अन्यानके करण तथा कार्य मिन्ति होती है, तम अन्यानकेर क्या करने और कार्य केर्या होती : सरकार त्यान और कुलेका स्थान करने परावर्ष केर्या करति होती है तथा सन्यानकेरी सेवाने कुलेर कार्या निवृत्ति हो बाती है। अबले जन्य कुल, अन्यान कार्याची और देखांका अधिरका होते? स्थानक 'सर' सम्या है जाता है, किंदू हम्बी अस्तित्वत होते और कुलेशी क्षेत्र-सुनी देखांको हंगां की होती है तथा विकासकेर कुन्तिक हार करवा जात होता है। स्थानके सह

<sup>ै</sup> का अहैसा है।

रेक स्वर्धाः

हुए रीज मनुष्योंके हेक्टूर्ग क्या अञ्चलक्षिक क्यानेको | हुआ में ) व्या व्यक्तेको व्यक्ति समझता है। विधे हुए क्षणमा सुनकर भारते पह जानेसे निष्कु कालेकी आवत होती है, फिट् अके होगोंके वर्तनीयर पूर्व करनेते था निष्ट वर्षी है : के होत अपनी बुरई करनेकारे करवान प्रकृतको बदान लेनेने असमर्थ होते हैं, उनके प्रस्कों कही उत्तर असूध (केंप हैसलेकी अवृति। पैदा होती है, बिंतु प्रकार नाम कान्य होनेसे कार्या निर्मात है जाते हैं। हमेसा कृतम चनुन्तेयाँ देखनेसे अपनेने भी कृतमात आ नाती है, पांच का मनुष बार्मि विका क्षेत्रर उसके केवारे सम्बा रेगा है से यह अपने-आप पाना हे जाते है। प्रतिबंध्य योगोंचे हति यो सोप देशर बाता है, जा असन्तर्भ ही कारण है। योगोपी क्षणपंत्रासको हेकने और कानके सबसे निर्मा से काने 🛊 । सारित बारण करनेसे उपर्युक्त सची वेश और रिजी चार्व है। बुतराहके कुतंत्र-ने तेखों क्षेत्र मेक्ट के; और हम सरकारे पहल करने कहते हो, इस्तरिये सेह पुरुषेको सेक कारके दूसने इस शकार जिल्ला का भी है।

पुरिनोत्तरे कार-विकास । सामु पुरुषेके सर्वत और मेपनो में इस बालो पांचा है कि बोबानापूर्व करेंब कैसे किया पास है ? सपर उन्नेस (बार) मनुष्ये और उन्ने क्षारीका कुछ जिलकुल हाल नहीं है। कुछल कुछ क्रोक और परावेक्ष्में की क्षेत्रकारि आवने बावता काम है, उनस्थि क्राय मुझे जुनेश प्रमुख और काले क्रमेका परिचय हैंगिये ।

भीनकी का-राज्य । वृक्षत कर्मके कामे गरी कृतिका इच्छानी रहती है, यह क्षेत्राज्ञाना कालीका अलगा करना पाइता है। कर्न तो कुरनोबंधे निन्छ बारता है और करने कारको निष्य करते हैं। (बाँदे उसके इकानुस्तर काम नहीं है, कारकार बनुस्तको साहिते कि नुसंस्तते सक बनकर हो।

कारकार परकार करता है तथा बेईबारी, नीवका, क्रेसेवाकी और कुटल करवेरें कभी वहीं कुछता। भीना बस्तुका सकेले अपनेत करता है, जो अपने आधितोको नहीं हेता। अधिकानी और विकासका होता है, कर्ज ही चींग हरेका कर्मा है। समेंद्र असे संबेद रसना और कहना किया करता है। अपने वर्णने सुनेकालेकी तारीक करता और देखका अध्यानीयर साम्बान सम्बाग करता है। असमें कर्पसंबदसावका क्षेत्र होता है। नृक्षक कर्म करनेकाल सनुष्य तथा विसक्ते तिथे कृषक किरात है, गुण-अवगुरुको सन्तर समझता है, हांड अभिन्य केरणा है तथा बहुत ही स्थालकी और संसदित होता 🛊 : 👊 वर्णाका और गुलकान् प्रमुख्यको 🛊 पानी समझता 🛊 और अपने बालाओं अनुसार विज्ञीया भी विश्वास नहीं करका। वहाँ कुररोकी कदनकी होती है, वहाँ उनके कुर क्षेत्रीको भी अब्बाद बार केन है और अपने तथा हमोके अपराम करावर क्षेत्रेया थी यह आमीविकाके रिग्वे दूसरेका ही प्रार्थनात कराव है। यो जानक कान्क्रस नारता है, कान्क्रो बहु अपने कारमें फेल दूजा कन्युक्ता है और राजारीको भी वाहे बाजी पन देता है से उसके रिन्धे बहुत दिनोतक पहलाय काला काला है। को सनुष्य दूसरोंके देखते प्रानेशर भी जनम चोजनके स्थलों अधेले घर चर चला है, उसको भी नुसंस ही कहना काहिये। जो पहले हाहामको देखन गीडे अपने क्य-कार्यकोदे स्वयं कार्य भोगान करता है, यह इस स्पेताने सुरवी क्षेत्र है और मरनेके बाद अपनि कारा है। मुनिहिर है क्षणे पुरुषे अनुसार यह नृषंत्र पुरुष्य सक्षण कारमधा

## पाप और उनके प्रायक्षित

भीनवी कारी हिन्सकत्। समूर्व केंद्र और क्रानिक्केका पारंगत विद्वान साहत्व वर्षे यह करनेकाल हो और आबड़ का चोर क्या से को हैं अवक का निर्वन है से राजका करूंचा है कि वह उसे आवर्णकी दक्षिण हैरे, बितारोंका काळ भारते क्या काव्यवन बारनेके वेन्त्रे बन दे । बेहरेना प्राप्तको करिये कि वह रुपके निवट अपने महत्त्वका वर्णन न करे । इस्तुल इस क्याह्य कर्च, इस्त्य, रक्षमा और देवता कहारता है, अब: उसके प्रति शमक्रसम्बद्ध एवं बाद कान नहीं कहन काहिने। श्रीतन अपने बाह्यलसे, बैरव और एह बनके बक्तरे और जाहान

क्या उच्चा ह्वानकी सावित्ते स्वयन्तिके समय अपनी दशा करें। क्रमा, कुरही, कम न जाननेवाल, मुखं और संस्थरप्रीन कुछ — के अधिये इसन करनेके अधिकारी नहीं हैं। ये किसके काने हमा करते हैं, अस्ते ताथ है सार्व भी नरकमें पहते हैं। पहल को कुछ भी पूरण कर्न को को अञ्चल्पीक और इत्याबेको सम्बन्धे रक्तका करे । किस पूर्व इक्षिया दिने यह र को । किना व्यक्तिमाना पह जना और पशुका जार करता है क्ष्म सर्वको प्राप्तिमे भी क्षम करूवा है। यही नहीं, बह इन्हिन, यह, कोर्नि तथा आक्यों भी औज करता है।

को कालम स्वापन कीमें समान्य करते हैं, निन्होंने

बरमें अरीत्की स्वापना नहीं की है उसको उसकिए देखिसे उसन करते हैं, हे राजी क्रवी है। जिस खेबने इक ही करेका करते इस पीते हो. वहाँ बाच्य वर्ग रहनेसे तथा पुर आलियी होते विवाह कर रेजेसे प्रायुक्त की हुए हैं है अला है। अने प्रायुक्त एक राति भी विराधि नीय वर्गके बनाय की रोक को अवका उसके साम एक नन्तु हो मा एक आहम्मर बैठे के प्रस्ते जे पाय समाता है, अल्बों का तीन क्लोंतक प्रमान करने हुए पृथ्वीपर विकारनेसे तुर कर सकता है। वरिक्रपाने, क्रीके पास, विवाहके समसत्तार, मुक्के दिल्के तिले समाग सपने प्राप मनानेके मोरुको हात धोरलोचे होत नहीं है। इन पाँच स्थानेकर अध्यक्ष कोरण्य पान नहीं जाना गर्फ है। जीव धर्मके पास भी काम विका हो तो उसे बहुकुर्वक काल करना कहिये। खेना अपनित स्थानने भी पता हो हो हमें किन किसी विकासिकायुक्तीर कहा होता बाहिये तथा निकाह स्वापनी की रापुत निर्देश को को ये तेना पार्धिये।

में और प्रवाणीया हैत. वर्णलेखनाया विकास क्या आवर्गी रक्षा भारतेके रिक्ते बैदन भी इतिकार तथा स्थापन है। प्रवितासक, अवस्था तथा भूकव्यीक्यक-पूर व्यावसीके रियो कोई प्रांगहिल ही नहीं बताबा गया है । विक्री भी उपायते अपने जानोका अना का देवेवर ही प्रमते बटकार: विकास है। भारी प्राथ्योगार निर्मय है। यसरेकर क्रोप्त साथ रोगा, क्रोरी कारण और प्राप्तानकार कर वर्तन हैन्द्र---वेद पहलू पार है। क्षाम पीनेसे, अलावा सीचे साथ ज्यार कारेसे, प्रीतरेके भागांकी रहते और अव्यक्तिर होका प्रकृतिक रूक क्रमानम् वार्त्रेने पर्त्या बीता ही परित हो काल है। परित्रेड फार्च रहकार करत्या यह कराने, अर्थ प्रदाने क्रमान करते करते पुरा या पुर्वाच्या स्वाहः संद हेनेसे प्रमुख एक कांगे बर्जित होता है।

अगर्गन पार्याको छोड्छर छैन विकाने पार्य 🗓 छन्छ। प्रामहित करावा नवा है। उसके अनुवार अवश्वित करके हैंबर पायको आका कोड हेनी व्यक्ति ( एवर्रेस ( प्रताबी, अवकारका और पुरुबीगामी--इन) तीन पारिकोंके नरनेतर उनकी वारायि किया मिले किया ही स्ट्यियोखो उनके अन्न और सन्तरः अधिकार कर केन वाहिने । इस्में कुछ अन्त्रका विचार करनेकी आवश्यकता आहे हैं। अपने पन्नी और एक ही क्यों र हों. वरि वे परित हो गने हों से वार्तिक स्वाब्दों अपने हनीह अनुसार ही उनका परिलाग का देश शादिने और सर्व अवनी प्रतिके रिप्पे प्राथकित करना काहिने । जनाना ने अपनित करके इन्द्र न हो जाये सकरक उनके साथ कोई बात का विकार करना उपित नहीं है।

न्य कर सम्बद्ध है ; बोरको 'का चोर है' ऐसा का देनेमात्रसे केले करून प्रकार पानी होना पहला है और वो केर नहीं है. कारों केर का देनेरे पनकारों केरके का कर सरहा है। कवारी सन्य का अपने इकारे परिवर्ष होती है, तो उसे मकारणका कीन किया क्षेत्र मोतान पहला है और हरलेड व्यक्तिको विन्यक्रमेकारक प्रकार केन प्राप्तक प्रश्नी होता है। लक्ष्मको नाम्बै हेरे क उसे पटककर बारनेते बळा पारी पाप रक्का है। से क्वेंक्ट से उसे केव्सी मंदि पटवाना पहला है और एक प्रधान क्योंक्स कामने द्वारा प्रधान है। इसलिये (कारको न कार्य है, न बारे ) <u>प्राचनके प्रारं</u>ग्ये कार्य के करेकर बालो निकास हुआ एक कुरको जिलने कालोको विलोक है, चोट च्यूंबरनेवाल प्रमुख अने हैं क्यूंबर शक्तों निकास कराए है।

मधीरी क्रम कानेकात की बुद्धों प्रकोदे आवाती पर काम सकता कामी हुई आपने कुशक्त अवनेको होग है हो का का काले कर काल है। वर्तित पीनेवाला पूरत गरि महिराको कुछ गरन बतके से है और काले कुँ पान कानेके करण जाकी पूज् हो जान हो का आ धारणे पहर हो बाहा है। प्राथमिक स्था समाग्य कानेवाला पार्टी वर्डि स्थित आवटा-की खेड़ेकी जीवन करवाकर को आगरे कहा से और कारका अभीवान कर्ताः क्रम है है से अलग्ने कृति हो बाते है। महत्त्व सर्ववाच पहुंच का मरे हुए प्रश्नानकी प्रोक्ती नेकार अच्या पाय-पार्न सोगोको सुनता यो और पासा कर्वे-तक क्रमण्डेका धालन करते हुए सुनह, साल तका क्षेत्रहर तीनी कारण कारण और उस्ताहा करें । इससे उसकी सुद्धि हो कारी हैं ।

इस्में तरह जो जान-बहुतका गांधिओं सीकी हत्य करता है. असमी है महत्त्वाच्या पान समात है। परित प्रीनेपाल मन्त्र मिलकारी और सहस्वारी होका पृथ्वीयर सरका करे, तीन कई क कारो जरिन्द सम्बन्ध अधिक्षेप का धरे, इसके का एक इन्या बैल के इतनी है गाँधे प्राव्यानीको दान है तो बह उठन है क्या है। केरफारे हास कर क्रालेवर से क्योंतक एवील निकासी हो और (स्थानको एक सी बैल तथा एक ही भीई दान करे : सामी क्रम करनेवाल प्रत्य एक वर्षतक उस विकासिका प्राप्ता करके एक कैस और सी और सहस्रको सुन करे । कुछ, द्वार और न्युक्ति इत्य करनेवास पर्वद सी क्षाची क्रमाने स्थान है प्रमक्षित करें । जिल्ली, नेरहक्या, नेकड, कोशा, साँध और कहा प्राप्तेयर भी पशु-पुरसके हस्यान ही पान समान है।

अब कुम्मे प्राथक्षित काराचे बाते हैं—अनुवासी वर्रहे-थायी मनुष्य कर्मावरण और तय करके ही अपने प्रकारों | मकोड़े आदि कोटे बीखेंका बच हो जानेपर अस्के रिस्टे

प्रधानक करे: साथ क्यानकोनेसे प्रमेकके निर्म एक एक । क्रांसक प्रत्या आवश्य करण पाहिले । बोटीनकी बीसे प्राधिकार करनेवर दीन क्लीकब और अन्य क्लीकबेसे सम्बद्ध होनेवर से क्योंकर सहकर्ष सामा पाल क्यों हुए दिनके कीने पहले एक कर केमन करे। पराची कीने साथ रहते. उठने-बैठने या कुमा कुलेश क्षेत्र केला कर्म वीका क कर । अधिने अवस्थि नक्षणे करामार स्थापी अध्येतन प्रत्येवले प्रमुख्ये क्रिये की वर्ड अध्येत है।

के अवस्था में दिया, तरहा और पंचान परिचार कारत है, जब परित्र के बाता है—को करेक्सकेक दिलंक है। वर्ष प्रतिने माधिकार विकास है और विशेष्यः इस व्यवने कार्य गर्ना से से को सिध्दे अब और वस है क्या परानी श्रीमे व्यक्तिकर करनेवाले पुरुषोः रिजी को प्राप्तक प्राप्तीता मताबा नका है, बढ़ी अपने भी बाराने ( को अपने केंद्र परिची क्रीक्रक कारे किसी करीसे समाचन करते हैं, का कुल्काने बीचे विद्यारों क्यों करके क्या कुलोरी नेपाल करें। इसी तक व्यक्तियारी क्याची लोकेची कवाची क्षेत्र स्थापन कुरावार अंदरते समाग्री रक्षाक आग समा है, किससे बढ़ बाबी जरीने करावार साथ हो पांच । परिची अन्योगन करके परपुर्वन क्योंन्यार कारोबाओं विकोधे दिनों भी को उन्ह है। बहि है। इस प्रवास की बहु इत्यान प्रमाहितका करी विका है।

कर्त कर करनेके बाद स्टारमस्टब्ड अपर्द्धार नहीं करना हो जिल्ला क्रिकेट करने पाहिये । उसके संसर्वने चाँद कोई के कांक्स के बात से जा मनुष्यको दीन करोतक क्ष्मीवर विकास और पुरिचेची भारत करता करते हर विश्वको निर्माह करना माहिने। कर क्योंग्स अस्टे county admiral the militar our frank inst एकोच्छे परिकास करने व्यक्ति ।

यो (यदे पहलि अधिकादेश रहते) अवर्वपूर्वक अपना was we star & my white & schediller region वरिवेदी बार्क है और वह को परिवेद है—वे संबंधे है चील को को है। इस सेनोको पुजरू-पुजरू अपनी सुदिक्ते किने एक जनसङ प्राचनक या कृतकार करना वाहिये। सम्बद्ध परिकेश अन्तरी प्रतिकों को प्यापित पास से पास्तर क्षाक्षेद्र कार्ने को प्रकार की और मोहाबी अञ्चल पर। को ब्रोक्स करे से है होने वहाँ और का को से सर्ना: का-क्याने कुछ हो बते हैं।

करनोहे रेजो हर प्रकार साथ सर्वाहरूका विकास है। अपने को कर करनेने सम्बद्ध हो, अनोह निर्ण कुरावरी की निर्णि है। कारत प्राची तैयों एक गोहरूका है अंग्रित काम गय

## पर्म, अर्थ, काय और पोक्षके विषयमें विदुर तथा पाण्डवोंके पृथक्-पृथक् विचार

मने हो जब पुषिपुरने पर कावर अपने वाले पहलेखीन विद्यानीके एक विका- 'वर्ज, अर्ज और पाय-एन वीनोने क्षीय अस्त, कीन प्रवास और कीन तक है ? इस सेनोको प्राप्त करनेके देवने विश्लेषकः विकासे वन समान व्यक्तिने । यह कर जार स्थानेत अपने-अपने विकासने जनसन क्रावृत्ते।' यह सुनवार समारे पहले विकृत्योगे वर्णकृतकार इस्ता करने सक्त असम दिना।

संदर्भ के<del>टे काल से कालोका अनुसीतन, का</del>, जार, बदा, या, इन्द्र, पान्द्रदि, स्त, सन और संबर-ने सब असमार्थ सन्तरि है। प्रतिहरी हर क्रमीको जाम करो । धर्मने ही जानिकोंने प्रंतनसम्बाधी कर किया है, वर्गीद के आवारपर समूर्ज लोगा दिये हुए हैं. पर्माते ही रेक्ट्राक्रोंकी काति हां है और वर्षने है अर्थकी पी रिवरि है। मरीबी विद्वार करेको जाग, अर्थको पालन और **ब**्रामको तथा सामानो है। उत्तर: समानो बदानें स्वस्थार वर्गको ही अपना प्रयान क्षेत्र कार्य कार्यन और सम्पूर्ण प्रार्थिकोडे

ईप्रत्यकार्थ कारों है—यह सहकर का पीनाडे कुछ है | तथा केला है अर्थन करना काहिने, केला हम अपने हिन्ते 

> विकासीकी काम समाह होनेका अर्जुको अहा---'क्यर । पर कर्नकृति है। यहाँ मीरिकाके सामग्रही कर्मेंको हो प्रसंस्त केवी है। केवी, स्वाचार, योपासन स्था प्रति-प्रतिके विका—ने तक सर्व-प्रतिके ही सामा है। कर्व ही समझ क्रापेकी बनांत है। सर्व (यन) के बिना धर्म और काम भी रेस्स को होते। करकर प्रमुख करके हरा अस्य क्रांबर पासन और स्ट्रांच क्रांचर क्रांचर आहे की बार स्त्रात है। सब प्रकारके संस्कृते प्रीत, इंग्लेक्ड्रोस, प्रत्य रूरं नेदाल कह पहले, साई-पेड़ पहले निहान पुरत की कारी अधिकारण पूरते पाने करते हैं। वह देशे हैं, जो सामित प्रकृष्ट है और बुलपरेपरागत निक्योका पालन करते हुए अपने-अपने वर्ष एका समामके बर्मीका अनुसार कर वो हैं। दिल को उन्हें बरादी कहा बनी हुई है। बरावर को है के अपने पुरुषेको अस्त भीन और प्रमुखीको एक देकर उन्हें कार्ने राज्य है। प्रारूप । नेत से की का है। अब आप

सम्बद्धित है।'

सदरपार, वर्ग और सम्बंध सामा पाडेकुमार महार क्या सार्थन महाने समे-'राजन ! मनवाची बैठते, प्रतेते, कार्य और पाली-चिनने प्रमाद भी होते-बढ़े हर प्रमान अपनीते रक्तापूर्वक वन कमनेका रहोन करना पर्वाचे । वन कृषि और अस्तर केल पहा है, इसकी गाँध से पारेगर गाएन इंसाओं अकरी सन्दर्भ कायनाई वृत्ते कर प्रकार है। वर्णकुरू अर्थ और अर्थन्त्र कर्म—ने अनुत्ये सम्बद्ध सामान्य है प्रसरिको प्रम धर्न और अर्थ—क्षेत्रोच्यो अस्पर क्षेत्रे है । निर्माण मरकारी कारण नहीं को है सकते और कांग्रेस पहुंचकों मन भी देखे जिल समान है ? जार महते करेड़ा आवस्त और दिल वर्गींद्र अनुसार अनुमार रंग्स को । इसके का मानकार्याका रोका करना काहिने । इस अवार किरानिक मंत्रक करनेते अन्य सकाननेक क्षेत्र है।

बहु बहुकर सहस्र और सहोत पूर हो गरे। इन भीवरोचने इस शरह कहाने आरम्भ श्रीवर-'वानंकर ! विकास कोतर बाराना को है, जो न कर बारानेसी हन्हें होती है, य वर्ष करनेको । कारायके किया के परेई साथ (योग) भी नहीं पाहता। इसलिये डिक्टमें करत है राजी मकार है। कोई-य-कोई कारण राज्या है व्यक्तियेन करोर सरकार्य संतर्भ होते हैं, फार, कुत और को कारकर, कर् पीवा पारतानीके पान संबंध करते हैं। व्यानकों के लेन केवेंका प्राथमान वाले, साञ्चनकारि विकासके अन्य होते सभा भूम हेते और प्रतिस्था परिवार प्राप्ते हैं । प्रनिन्दे, विद्राराण, माने, वारीना और विकास को केलानको सर्व

महत्त और स्कोतकी कोई रूने । ये केंद्रे भी कुछ स्कोतको | कारोबारे सोग भी सामग्रत ही अपने-अपने बंबोने रागते है। कर कर्म है कम्पने महा है। अर वर्ग, अर्थ और प्रकृति प्रकारों है परिवास करता है, यह अबस है, होना अक्षा के के कारण कारण है और को जीनोंके रोजकी संस्था है के करने समा है।

को सक्तार क्षेत्रोम का पूर हो उने हो पुनिश्चेर केले-'कार्य क्षेत्र जी कि अवस्थिति कांत्राओके विकारकोच्यो प्रस्तान है और प्रस्तानीचन भी प्रान्त प्राप्त विकार है। बेरे पहलेकर अञ्चले को-को जिल्लार प्रचाट किये, के साथ मैंने सुन हैंको । अस केरी पहल भी स्वतिने-को न पानमें रूपत हो, न कुन्तरो; २ अधीवार्थको प्रकृत हो, य वर्ग या यामके रोकार्गे। निकार्य वृद्धिने निर्द्धाना केल और चोता एक करान हो, मह का अध्यक्त केनोते बीच बहुक दुःस और सुस केनाती fallgebb mark find yas få man å e sterre menne. papeller tipe & fin 'Beate weit erreite &, med क्षणे और भी होते हैं जिस को को, अर्थ और काय-नार क्रिक्रोरे दक्षित है, बढ़ी क्रूनेय पुरवार्थ (पोक्ष) को प्राप्त करता के अंग्रेजिक पुरस्कारक प्राप्त हो संस्थानक दिल पारवेगाता है (\*

केल्प्यूनको धार्त है—एक प्रतिकृतको साहे हो सर ad d ten, gloge alt mit bebreit it, ut क्रमका एक एकाओको बढी अलगत छो, सक्ष्मे इनेन्द्री बढी और को क्रम चेकार अन्य किया। कि थे अनी मक्त्रोची अर्थका करने राने। ब्यापक व्यविद्याने भी भी एकानेकी प्रकेश की और पर: प्रशासक सीमानेके पार

## मित्र बनाने और न बनानेयोग्य पुरुवोके रुक्तण तथा कृतज्ञ गौतपकी कथा

कृष्यिले ५०--विकास ! सीम सम्माने कहन **बै**नो डोले हैं ? किनके साथ जेन बरूब काम क्रेस है ? परिका और कांपानमें भी कौन-से पनुष्य स्वयस करनेने क्रमर्थ हेते है ? यह एक मार्लन्स्य क्रम्ब व्यक्ति :

पंजानी करा-पुनिर्देश ! विज्ञांक स्वय संविद् करनी पारिये और विजये साथ जो ? या पार में हुने दोय-दोय कत रहा है। बाल देवर रहने—में होओ, हर, कर्मकरी, कारी, कर, कर, करी, सकार संबंध कार्यकार, जातारी, **दे**र्वसूत्री, फरिल, निर्मात, मुख्योसे व्यक्तित कारेकाल, इंक्टरेड स्थान साथ हो हका चल देनेकार, हराना, निर्मान,

विकार, बेकेटी विन्यू प्रतिकार, प्राप्त, समेद्र हेरका पात, पुण्यकोर, पायको विकास स्थानेकाल, श्रां, विद्योगी कुछं कुरनेकाल, इसस्थात कर रेजेकी इका रक्तनेकाल, केकेट क्षेत्र करनेवाल, प्रक्राचीक, अकस्मार के बाँव केनेकाल, अन्य कार क्यांने किये है किसेसे मेल रक्तेकारा, करावने निर्मात हेवे, ग्रेडो निकासी करें क्रमों भीत्रको प्रमुखक रक्षनेवाला, देवी नमस्ते देखनेवाला, क्रमार्थ, हेवी, ब्रोची, निर्देषी, इसरोप्यों बाह देनेपारण, दिखोडी, प्राणिकोची हिसा चरनेवारण, बारहा राजा नीय हो, सहके साथ कार्य संवि नहीं करनी पाहिये।

सने —से कुलीन, केलनेने बद्ध, इस-विद्याली कुमल, कारकर, पुरस्तार, स्त्रेश्वीय, काम करनेते कामै प श्रामेक्टे, कृत्य, सर्वत, क्यूर क्रमानकरे, सार्वाक् रेका किरिया हो, उन्हें स्वेन्त्रेको एक अपन किर करने । को अपनी प्रतिकों अनुसार वार्तकात होना-बीमा पापन करते और संबुद्ध को है, रेक्न्ये केन्द्रिक कोच नहीं आहा, जो क्रुप्रतीन को थानेवर भी करते कुरई करूक नहीं स्थाने, अर्थने राजको प्रस्कृति हैं और अवनेको बहुने क्रान्कर की देवीची पुर्वाका कार्य रिव्ह कार्य है। मैसे रेफ हमा क्रमें कार्य अपना रंग नहीं प्रोकृत करी प्रयान को विकोशी कोरते विराध भारी होते. को प्रकार विकास करेंद्र सम्बद्धित है, विकासी कृतिने निर्देशक केला और प्रोप्त एक-से हैं क्या को साह अपने श्रामेक काम करानेने रूने पूर्व है—हैने अन्य पुरानेके भारत को राज्य संदिर (जेल) बहुता है, स्थापन राज्य सबी संद कार है, वेसे प्रमुख्यों औरते । ये एक प्राथमा स्थापन करते हैं, क्रोकको करूने रहते हैं और चुनने अबर को है, वित्तवा जान कुरूरे कथ हुआ है, को बीतवार और उपन गुरुतिने पूर्वा है, के केंद्र पूर्वा ही जिस व्यवनेतेर कोच्या होते हैं।

विन्ते सेरे केन्यूना कारण है, जानेने कई से न्यून है सीय, कुरात और मिन्नवी क्षण कर कार्यनाने केरे हैं। ऐसे बुरावारियोंको क्षण कार्यनों पूर ही प्रकृष कार्यने—न्यूनी संस्थात जा है।

पुष्पिति पुरस-निवास्य । जानो विनो निव्योगी और कृत्या स्था है, अन्यो स्थानन सन्त है ? स्था मुझे स्थानो ।

नंपानी का—हर नियमों में पूर्ण एक पूरण प्रीक्षण सुराता है जा काम जार दिशाने मंगानेते हैं को प्रीक्ष ही भी। प्रकारित्या एक प्रकार का, नियमें केर किराहर नहीं पड़ का। एक दिन जा गोर्ड राज्या और देशकर शर्म भीता जीनमेंद्र तियो गया। का मीजने एक इत्यू प्रता का, जो कहा ही जर्म, हवाज्याक, प्रकारिक सीर कुने का। हवाजाने करिये कर पहुँचकर विवास तियो क्यान की। इत्यूने हवाजानी करिये कर पहुँचकर विवास तियो क्यान की। इत्यूने हवाजानी करिये तियो का पर वेकर क्यान की। इत्यूने हवाजानी करिये किराव्या ज्ञान कर दिया और का कोस्ट्रार क्या केरर करानी सेवाने एक कर्मुकरी क्यी भी है ही, जो का सम्बंध करिये सीव की।

रह्मी ये तारी वीने कावन प्रक्राण कर-ही-का अहुत सूत हुआ और कारीके स्था आनकपूर्वक करे कात। इसका नाम वा गीतक। यह भी राष्ट्रभोग्यों ही क्या प्रतिविन करने विकारनेकाले हेसीका विकार करने स्था। विकार का

अब सीच करनेके केना पुरसेको बात का है | अर्थाय निकरण । एक के जो ह मी नहीं पनी भी शाय —सो कुरतेन, कोरतेने पट्ट, इसर-विद्यारने कुकर, | अधिनतेको कारोको हो सकने शाय का स्वकृतनेके इस, मुस्तकन, कोश्लीय, काम करनेको कामी स | इंकानी कुकर का पूरा काम का गया ।

इस प्रकार सहायोके चौचने सुनापूर्वक स्थार ब्योक्केक विकार करते हुए इसके वर्ष नहींने सीव गर्ने । इक्ट्राट, इस चीको एक कृतक प्रकृत आरा, से क्रास्त्रच-प्रकार, परित्र, विकार, विकार विकार अनुसार धीवर क्षरेकार, प्रक्रमध्य, बेह्ना परिता विकृत् स्था प्राचनो स्था । स्था चीतनोः हो चीनवा स्थाननाम और अस्ता क्षेत्र कि पर । पुरस्क अस नहीं प्रवास कर, प्रातिनों को इन्द्रकोरे को हुए जीको प्रश्नानके करकी सरस्य करना हुओ ब्यू कुछ और विकार पुत्र का। कुछी-कुछी गीतमंत्र परनर का क्षेत्रः, प्राथको नोवन को वहाँ जन्म । केनेको एक-कृतीरो केंद्र वर्ष । प्राकृतको केंद्रा, चीतको संतोवन को पूर् हरावी रक्षा है और क्रांबर्ग क्षाप्त-काम है। क्रांचन राता करीर खुनते रित पहल है, देशकों का बहुत-मा पान पहल है और स्मान्यको चार् हो जुला है । इस अवस्थाने यहे हुए गीतनको विकास कारण्या प्रमुख्य कार्यान्त्रे वर्ध संबोध हुन्छ। जाने को विकास के कुए सक्त — 'शरी । यू खेकरक पद सम कर पह है ? ब्रह्मान क्रेकर कंद्र कैसे का पना ? नय, शर्पर पूर्वकोच्ये के पहरू पार, क्रमारे विरुट्धे प्रशासि की, में बैसी केव्रेके बारवाओं विद्वार से 1 और द उन्होंके केव्रों देख होतार हेता पुरस्कारके निकास । अस को से अपनेको प्रकार । ampriplier एरवा, श्रीतर, प्रत्यक्रमा, प्रेमम समा दशा शरीह क्ष्मुओं के कर्क अब वर्ष सुरेति क्रम केर् है।"

अपने द्वितेनी कुन्नों इस अन्या व्यापेनर सीवनं पा-दी-पा कुन्न निवास पानों जार्त-सा होवस चीता— द्वित्यार ! में निर्मत हैं और नेपाल एक नाइर भी पाँ व्याप्त, इस्तिकों का कन्मोंनी रिक्ते इस्त जावा मां; उसन जानों द्वांत्रों में। जीवन सम्बन्ध है नाम । अब समाम पाँ रिक्ते; वास वाले इस होनों साम ही फरेने ! 'इस्तान समामु पा, मोतानों अनुनेपार्थ करने पाई स्वाप्त पान, मार पाईपति दिस्ती भी पाइपते जाने हामते हुन्यास्त नहीं ! पानित वाद पूरवा या और भोजन पार्थक दिस्ते करने प्रापंत भी पति पत्नी, मांचु विज्ञी स्वयु पाईपत जात पहन करना जाने स्वीतार नहीं विज्ञा !

त्वांच हेनेवर का का होतु साहान का स्थानके काम नाम हो जीवन की काले विकासका राष्ट्राकी और कार दिया। काले-जाते का एक दिवा कार्य पहुँका, जो वहा हो साम्बंद था। जाति सामी कृत पूरवेंसे और हुए थे। अपनी होतासी का नियंत्रको सह कर रह वा। जा करने वह और विवार विवार है थे। वारों और परियोक्त करनत शुंकती कुछ का। वहीं मनुवाकि समान पुरस्कार 'काइक' केले थे थे महीं समुद्र और पर्वतिया होनेकार मुक्ति आहे कहा अध्यक मोधानमान करनको निवार प्रकार गर्द, से करों और मन्द्रालकार फैस्स हुआ का, अन्तर्थ वहा-सी हुका परिवारोंने करना कु एक महान् प्रको सम्बन्ध की। कर कोश प्रकार क्या क्यानितिय सम्बन्ध सीवी क्यों के। कर कोश प्रकार देवकर मोधा बहुत प्रको हुआ और निवार कारत उसकी क्यानो वैदा। कर काल महिला कील क्याने स्वार इस की महिला किया और वह सुक्त की कुछ महा।

वती नगर एक उक्त पढ़ी अवस्थित सेट्या अर्थ विकासनागर आर्थ, जा जा पृक्षण है कोरा दिया करता की। जाना पान का सर्वोत्रहुः। वह काराम अवस्था दिया किंत और कारपरनीका सुन्नी जा। इस पृक्षीण प्राप्तकारिक कर्मा विकास जा। वेक्सानामें अन्ता होनेके कारण करते क्रिक्त वेक्सा केलावि कारण की, जा कह विकास कर और क्रिक्त केली है केलावि कारण की, जा कह विकास कर कर्म कारपर पूक-न्याप करा की की, इस्तियों अर क्रिक्त आर्थ केला करने को कर क्रान्थित विकासों ही कारकी और कृतिका

ाण उनकारी सह—नीतालः । यह देश धर है, अस मही प्रमारे, यह मेरे दिन्ने यह उनैन्यानावरी सहन है। में अवन्या प्रमान करता है। यूर्ण अस्य हो नाग है, प्रश्नीको से साम्योध मेरे कामें उनमा अस्तिनिके कराने अस्ते हैं; इस्तीको से साम्योध विभिन्ने अनुसार अस्य अस्तारी कृता करिया। यहने देश सामिका सीवार करते तरा करते वहने वहने कामि प्रमानिक। में कामि काम्यानका पुत्र हैं। मेरी पाल वहां अक्रयोधको स्थान है। अस्य-मेरी मुख्यान समितिका में स्थान करता है।

व्या वदावर राजवानि जीतवात विशिवर स्थाप विका । प्रारची पुरानिता दिया अस्तर प्रणावर को वैदलेको विका । वही-नहीं वहारित्वी स्थाप रख ही और को प्राटनेके दिने अस्त प्रजातिक कर है । साहाज जा चोवक प्रत्यो हुए ही गण में जा स्थापी पक्षी जान्यी वास्तवह हुए प्राटनेके दिनो अपने पंजीरे हुवा करने राजा । विकायके प्राप्तर का व्या वैदल से राजवानि जानों भोड़ पूछा; विद्यु इसके साहने क्षा और पुंच न कहकर सिन्हें हाला है जोड़ राजवानि इसके दिन्हें है और भेरा जान पौरान है।' सरदक्षार संबंधनानि इसके हिन्हें पर्वेच्य निर्माण रैकर किया, जो दिव्य पुर्वोसे वासित वा।



कारों के प्राप्त में से देश प्राप्त के प्राप्त में को आहंगी क्रम किया। किया कारम क्ष्म का विक्रीनेवर मैदा, एनावाले असी क्ष्म कारम प्राप्त । मैसन केला—'स्वाहता । मै व्येट है और कार्य क्षिम स्पूताचा कार्य वाहता है।' एनावाले असा होकर कहा, 'हिम्मर । अस आह समुद्रात्त कार्यके किया न क्षिमिने, क्ष्मी जानका क्षम है सामान, व्यक्ति का नेकन कर कार्यना । कुरुरातिनीके मार्क अनुसार कार क्षमाने असीकी आहि होती है—मंत्र-मरकारों, हैककी अनुस्तानकों, कार्य करोगों हों। विक्रामी स्कृतकारों । अस है अस्ता कि हो क्षम है, आयोग अति मेरे कुरुराने कुल सीहती है। असः मैं है देख प्रकार करोगा, विक्राने आयाने कार्यकों कार्यकों हे

व्यवस्था, ज्या आहं:सार हुआ से राजावारी प्रमुक्ति प्रशंका ज्यान संस्थान अस्ति क्ष्म — 'र्मेण | जार प्रा कर्णने काले, ज्याच्या कर्म सिद्ध हो सावस्था । शहीरे तीन केळ्या । ये द्यानांकि राजा और पहान् वाले हैं। वेर व्यवस्था । ये द्यानांकि राजा और पहान् वाले हैं। वेर व्यवस्था क्ष्म क्ष्मीके क्षम करे साहते । वि:रविद्व के आवश्य व्यवस्था क्षम क्ष्मीके क्षम करे काले । वि:रविद्व के आवश्य केळ्या विकासकों कारकों और क्षम हिमा अस्त अस्ति क्षमान कृति की । स्तरीने इक्षममुसार अनुस्ते स्वाम की कार क्षमा हुमा का देशीके स्वाम अस्ते कहते स्वाम और देखान जानमा करने जीव करा। जा कारणे करों और वर्ततीका किया और पर्वतीकी ही बहार्यकारी में । सरका इरवाका भी एक पर्वत हो का। कारणी श्रामे किने सम और जिलाकी करी-कही बहाने और महीने की।

स्थानसम्बद्धी का सूचना के नहीं कि जानके विकार कालों एक दिय अतिकियों जानके नार केना है। का समावाद पावन अपने सेकारोंसे कहा—'नोकारों नारकारों कुलकर पीत कहाँ से अध्यों ।' अस्ता को ही जानों केवाद मीतवारों पुन्तरों हुए कावारी नाथ इन्स्टेकर कावानेता का पूर्व और केंद्र—'धाई। जानों करने अपने राज्य कुनते हैंदरना कहते हैं।' कुलका मुनते ही गीतवारी कांध्रका हुए हो गती, का बेंद्र पहा। सक्तारकारी मानवादि देसकर करे बहु विकार हो कुन था। यह जा केवादोंद्र स्थान होंगे ही राज्यकारों सा पहिला।

वर्ष विकासको जाना निर्माल पूजा निरम, साधान सब यह एक जार अस्तार निरामकार हुता से पेक्सराने इसके होता, पाचा और अक्रमांकार की किने हुए साधानके विकास असे किसार जार की कीस (कारि) के दिला और पूजा र कार स्वार । तब राहको पूजा—'गाः ! सुपार विकास वर्ष है ? सुपारी की किस नामियों है ? का सब डीय-डीय कारतों, को गां ।' हैतन कीस—'गेरा सब हो हुता है स्वारोकों, करा में पीसके करने रहा है। होते की नी बहानांकियों है और मुक्त पहले कुलेकों कर के स्वार

क्ष सुनवर राज्यस्य कर-ही-का क्षेत्ररे सना—'सा विता राज्य कार करना वाहिते ? का कनमें स्थान और स्थानस राज्यमंत्रस सुन्द है। उन्होंने हैं हुने मेरे कम केवा है। अतः उनका दिन कार्य अन्तर्य कर्मना। उनम कार्तिकारी पूर्णिक है, अन्तरेत हिन् मेरे कहाँ क्ष्मणे स्थान क्षेत्रम करेंगे। उनके साथ होने भी क्षेत्रम कराकर का केवा वाहिते।'

सर्वार, जोवको सम्ब इतारो विद्वार स्थान स्थान सरके रेसमी वया जारत किने हुए वर्ड का पहुँचे। सक्तरराज्यो अञ्चल संक्वान क्रमर क्रियमका हो गये, से शासर किसा हिये। यह क्रमण क्रमर क्रियमका हो गये, से श्वास विद्या। कार्ने विश्वेतिको, सित्तर्वे स्थान क्रमण विश्वित्वर पूरत्र किसा। कार्ने विश्वेतिको, सित्तर्वे स्थान व्यवित्वर्थी प्यापन सरके कार्ने स्थानो चाया रूपाय और पूरावर्धी प्यापन सहस्रोतिको। क्रस स्थान क्रम्य क्रिके पूर्ण क्रमण होनेवर स्था सहस्रोतिको व्यवित्व होत्र स्थान क्रमण क्रीर पूर्ण

मैसार जनम करने जून कर। या करने को और | जू सेनेची करिनोंने मेरे को हुए मीटे व्यापन प्रवेसकर करनेक किया और कांनेची में सारावित्तर सी ( करना | ३०% अप्ते पत्र सिने )

> वीक्यके कहान अञ्चलको कारण करेगी हैरी सम्मान विकास में कहान दिवसो ! आरानेष अपनी हका और प्रोक्षक स्टूबार हम कोची जा से और किसी आपने चोचन दिवस है, जा कुम्लेग्य कारण की अपने-अपने का की करें। ' क्यारणको ऐसा कारण अपनोरे स्थानुस्थर का कोची के विकाश हम अपने का और स्थानुस्थर कारण कारण करी अन्ति कार्य हुए। कारणक, विकास कार्य करी अन्ति कार्य हुए। कारणके विकास कार्य करी अन्ति कार्य हुए जन अञ्चलको कही कोई का जी है, बीच करते हुए अपने-अपने अन्ति कार्यको को कार्य । विकास मुख्यको ।'

व्या पुरस्तर उत्यानकोच कार्य दिवासीओ और जान को। जीवा की कोच्या चेत्र केवल कार्य-वार्य जावत हुए वरणको दुस्ती कार आया। या वही करियाही का भारती के का था। वहीं दुस्तों के कार्यार के उपन् कुलों की और की प्राप्त के का था। स्वावकांकोंने अपने कारते हुए कार्य अस्ति अस्ति हुए थी। विर कृत्य कार्य अस्ति किसे कोच्यावा अस्ति किया। कोचन और विवास वाल दुस्तीया कहा करते कोचा का विवस है। असी हुए कार्य है और स्त्रोंने कार्योंके किसे के कहा हुए की जी है। की प्राप्त कारत करता है को से कहा हुए की जी है। की प्राप्त कारत कार्याय उपना से हैं और सीमानाहर्षक कार्य कार्य व हरानों कार्याय उपना से हैं और सीमानाहर्षक कार्य कार्य व हरानों कार्याय उपना से हैं और सीमानाहर्षक

वीवार्ध काले हैं—क्या प्रत्यक का कही बीवायर विकास करते काले काल है को का का 1 कार, का पुरास्त्र और कृतक को कर कालेकी कालीं कोच का वा काले समयों है आय कार की थी, कालेंकी एक काली को सुकारी सेवार करते निर्देशन कोले हुए कालकांको कर काला। को अलकर बीवायों की अलकात हुई, का इसकी काला काली की जूडी कर्या । काले को हुए पहलेंके एक और काल केवायर को आपने कालका कीर प्रकार के किया। किर सोनेकी काली विकास कालका कही केवीके साथ करती यह सी । दूसरे कि विकासकों कालों पुतार कहा—'केट ! जान करियोंने केह प्रकारकांका काले कही हुआ। के अतिहिर अलकांका महानीकों अलका करते कि काल करते के और काली सोटनेसा मुक्ती विके किन काली कर वहीं काले के। ३ थर, के हाल मीत गर्ने, मितु में मेरे कर शई प्रकारे; तकः ताल प्रकारे स्वय-रावाके संदेश कर यो है, न काने मेरे निराम्को क्या है क्या है ? हुए जनका पता सम्माओं । नाई ऐसा न हो कि वह अवस्य उत्तरण उन्हें पार समें । तह क्ष्म निर्देश और हुरामारी कान प्रकार का, मुल्ल-राव को जनकी ऐसी प्रकारका थी, कार्य कोई बुद्ध खुरेग हो । नीच गीतम प्रकारी स्वीदकार किन उन्होंके पत्तर गणा था, इस्तिशियों मेरे प्रकार कोश हो वह है । वेटा । हुए प्रकार पता था, इस्तिशियों मेरे प्रकार कार्यों और हुंसा हुए मानका पता स्वयासी कि ये जीवित है पर नहीं ?'

विवासी ऐसी अपना पासर कर का सहस्तानों राज्योंके हमें जर अवस्तानों करा पता से कई राज्यावानका कुर से का कई रहेशाओं किया। यह देशाओं राज्यावानका कुर से का और रहेशाओं काम्योंके हिंगों जरने पूर्व क्रिक स्थानकार पीता हिंगा। मोदी ही पूर जानेकर राज्योंके रहिय प्राण्यानोंकी साथ की साथ ही हिंदी और पंजीने पहित प्राण्यानोंकी साथ की साम गयी। असमी केवल में तुर्व ही नेवाकों का स्कृते। कही सामानी प्राण्यानोंके कुछ हार्वेद और उस भागी को पृथ्वा भीतमानो प्राण्या सामने काली और पुरिश्चिको साथ पुर-पुर्वा कियानका सामने काली और पुरिश्चिको साथ पुर-पुर्वा कियानका सामने काली क्षा पुरु क्षा । सामानक, प्राण्या काला—'नेटा ! इस सामीका क्षा कर काली और सामान सामा हालो संस्था हुक्योंको हुक्यानुसार स्थासन का साथै; क्षांकि की सामानका साह साथ ही किया काला है।'

रायमाराज्ये व्यक्तिर मी रायम्मेको उस वर्गावा वांस सानेकी हथा भी हुं। उन्होंने तिर सुम्बार प्रमान करो हुर कहा—'महाराज आप सम्बोगोको सम्बाद व्यक्ति करोत सानेके दिन्ने व हैंनिको। एउसने व्यक्ति व्यक्ति करा है। अस्ता वर्षे है स्वता सामने तिहत और पहिल लेका हुः को और उस पानिके हुन्दो-हुन्दो करके स्वहानेको है। असे। विद्यु स्वाभी भी अस्ता यांच क्षान क्षेत्रस्य मी विद्या। मंसाहारी जीन की कृतानका गांस भी वर्षा। व्यक्तिको, सानी, कोर और प्रतिहा चंत्र करनेका स्वापको है। क्याने कुरनेका प्राथित क्षान्य क्षा है। क्षार कुरनेक स्वारका कोई भी अस्ता क्षा कहा नक्ष है।

ठरतया, जिक्तामाने कारतको हैओ एक विद्या देखा करावी और बहुत-से स्वी, कन्त्रमें तथा क्यांसे अस्त्री शूच समान्य । वित्र कार्यको जानो अस्ते कार स्थापन जाने अन्य रुनामी और निर्मिष्ट उसका एक्-कर्म समाप्त निर्मा । उसी समय क्रांक-म सूर्यंप देवी को नार्थों और आस्वानने कार स्कृति हो नहीं । उनके पुरासे क्रांमितिया केन निर्माणक राजकार्वकी निरम्पर गिरा और उसके रुन्होंने वह वीचित्र हो उस्त । उन का क्षांकर निरमासको पास पहुँचा और केनो वित्र नार्थ किसे । इनकेशिने केनाम कुन की विकासको नवस्त्रों का पहुँचे और उससे कोले—'यहे सीधानकारि कार है कि कुनते क्षार करणवर्वको जीवन किसा ।' इसके कर करणवर्थ कुनतर कुन्छ हो को केरे किस भीगामको जीवित कर केरिके ।' इन्हों अन्यक्ति अस कार की और अस्त क्षित्रकार का व्यवस्था जीवित कर किया । गीनकोर क्षीतित होनेपर करणवर्थने कही अस्तानको कार की निरमामको गाँध रुप्तान और उस क्षणीको क्षणकीर विद्या करके क्षा अपने

भीवन पुर: भीरतेके हैं गीवने जावर क्यो सन्त । क्यों जाने का पुत्र वाधियों सीचे पेटने अनेको महान् साथ हैंते हुए जान निया । का केक्सअंके चीतराओं सहान् साथ हैते हुए क्या—'क्य जाती कृत्या है और सूत्रत पति सीवार कानेकारों क्योंके पेटने ब्यून सम्बन्धे संश्रम पैदा सहता जा का है, इस कान्ये कारण हानारे और नावारों निराब पहेश !'

क्षेत्रके कार्त है--कारत । जात दिन हुई, इस काराओ क्यानी को सुका कः और स्त्रीको का करके आह की हुने सुनवा है। कृता जुलाको बात, स्थान और सुन्न कैसे जारेन के क्रमता है ? कुराइका के विज्ञीका विकास है नहीं होता । कुरुक्तके उद्धानका कोई ज्यान नहीं है। पर्यक्रको विक्रोप कान केवर विक्रोफो परसरे क्यान स्वक्रिके: क्योंकि जो निवले होड करना है. यह बोर नरकार्य पहला है। हालेक कर्मको करा क्षेत्र कविने, खेलोको दिव क्यानेकी क्राह रसन्त्रे माहिने। कारण कि निकारे प्रथ कुछ जार होता है। विकासी स्थानका पासन गर्ना सामित्रोंने सुरकारा सा नास है, प्रतरियो पुरिकार स्थानको निर्माक सम्बद्ध और प्रतर करत करीये। को कुता, करी, निर्मेश, निर्माही, कुरुकुर क्या फरावारी हो, ऐसे खेलीबर सर्वेख लाग कर केल व्यक्ति । राज्य । इस लक्तर निस्की होड अस्तेवाले कारमञ्जू कृता मनुष्यम पति की तुन्हें सुनाया है; अब और क्या समग्र पाती हो ?

वैज्ञणकार्यं कार्ते है—सामेनव । भारता पीचका या क्या सुनका वृतिहिर अपने कार्ये बहुत प्रसाह हुए।

## श्लोकाकुल जित्तकी शान्तिके लिये राजा सेनजित् और ब्राह्मणके संवादका वर्णन

क्य पुणितिते पुरा-पितामा ! महीतमः आपने | राजको सम्बन्धे हेतु वर्णोद्य क्ष्मेंत्र विन्त । अब अस्य सम सामनियोके क्षेत्र वर्गीका वर्णन क्षीकिये।

पंत्रको केले-मधितिर ! केले इस्तेत सर्वका है विकास है। वर्गके अनेको हार है। संस्करने केनी कोई डिस्क नहीं है, निरमका कोई कम न हो । मनुष्य वैसे-वैसे संस्थाने महाबोंको सार्वान (अवस्थान) सम्बादत है, वैसे-वैसे इन्हें इसका केरान्य द्वीता जाता है। अतः यह प्रश्नक अनेकों केरोके मुर्ग है—ऐसा निवाध करके एडिएयम् प्राथमो अपने मोखके लिये का काम पाविने।

क्षितिरने पूरा-क्षाच्या । धान्ये तथ हो अने तथा सी कुर का निवाली पर कलेवर जिल निकारने क्रोबा हुए हो सरकार है, यह क्या है ? कर्मन कार्नेकी कुछ करे ।

भीनवी गेरी--वेदा । यह का यह है सरका की, कु का विवासी पृत्यु हो कार से 'ओह । इंतरर केरर कु कुमान 🕯 🖎 लेकार कोवारो हा करनेका प्रवा को। इस विकाले अञ्चलकारको पह प्रतान अधिकार औरत् है । पहले प्रेनिम् भागका १६६ राजा था। यह पह-निर्माणको सामग्र भोजन्तर हे रहा था। को कास देखकर एक क्रकानरे यहा, 'राजन् तुम क्या क्याकारी सरह क्यों केंग्रित हो हो हो ? फ्रीकाके चोन्य हो हम कर्ष ही हो, मिन कुरोचे हिंगो करों शोक वाले है ? अभी ! एक देन में, इन और कम तब स्वेत भी वही जायेने, अवस्थि आसे हैं।"

सेन्डियाने पूर्व--क्लोक्स ! आयोह पात देखी पहेन सुद्धि, तय, रूपाधि, ज्ञान वा प्राथमका 🌡 किसे काकर कारको किसी प्रकारका विकास की बेसा ?

महानने सहा-देखे, इस संसारने कान, प्रकार और राजम—सभी प्राची र:समें करा है तक करा-उरके कर्जन पैसे हर हैं। मैं इस फ़रीर का प्रकारको कारणे नहीं सामग्र ( में मैसी मेरी है मेसी ही कुसरोबत की है---माई स्टेक्सर इनके फारन मुझे व्यक्त भड़ी होती और हुए बहिएको पहलर ही में 🎮 - लोकसे पहित सहज है। जिस जनसर समुक्तों के सकदिनाँ मिलती है और मिर जलन-अलन मी हो चली है, इसी प्रकार इस क्लेकने प्राणियोक्त सम्बन्ध क्लेक है एक इसी त्तरह वह पुत्र, पीत्र, जाति, मन्यू और क्रव्यन्थिकी क्रव्यून हो जाती है। अव: उनमें विशेष सेट नहीं करना साहिये: क्योंकि एक दिन बनसे विकोद क्षेत्र निक्षित है। तुन्तर पूर मिली अकृत स्थानसे आवा था और अब अक्रान्द्रेज्यों है |

करन करन है। न से का तुन्हें कानता वा और व शुन्हीं उसे कानों में अतः तुम आने कीन हो, जो आने लिने सोक कर रहे हो। संस्थापे विकासकारों को स्थाप्तराज्ञ होती है. सबैका कर दुःस है और इस दुःसका करा हे कान दी सुस है। का सुरूरे कर-कर क्षेत्र करन होता खता है। इस कार कुलके कर देश और इंड्लंड कर मुख-यह इस-इक्का का इका है एस है। इस समय तुन्हें कुरुवर्ध विश्वविते कुरुवे आन्त यहा है, इसकिये अब प्रय क्या जान करेरे । किसी जानीको सर्वद्य सम्ब का सर्वद्य ुनाको है जाहि जो होती। पतुन्त बेहको अनेक प्रकारको क्रमित्योगे क्षेत्रं हुए हैं और अधने वात्त्रका पुरः अनानेवात्येके जन्मन अपने पालाँने असरकार होनेसे दु:क वर्त रहते हैं। केली कोण तैराके मिन्ने कैसे मिल्लेको कोल्हरो पेश्ते हैं, उसी प्रकार प्रकारने ने अञ्चलकारित कहोंसे किए हो है। बनुका को-का आहे कटकोड निले संसारमें तरह-सांकोड पाप क्टोरमा है, किंतु इस लोकने और परलोकने उसे अकेले हैं। क्षमा हैनावन कार नोजवा कात है। विस्त प्रकार क्या हानी क्षांकार्य केरस्कर प्राप्त को बैठता है,जरी प्रकार प्रक लोग कर, भी और कट्टमची अध्यक्ति केल्पर श्रीक-स्वतूर्य हो रहे हैं। का पूर, अर क क्यू-राजवोनेंसे किसीका नार हे बात है से वे स्थाननके समाव भीवन स्थाने पर कते हैं, पांतु शुक्र-दृश्व और कथ-पुन्दु साथि तय शुक्र केको अनीत है। पहुल द्वितिकारी पूछा है का न है, कह इंकुमोरे किए हे क विशेषे एक क्षियान् हे अक्स कृतिकारिय — केम्प्रती अनुकारका होनेपर ही सका का कारता है। अन्त्रवा न से विलेशी सुन्त देनेमें समर्थ है और न सह दु:स हेनेने । न चुटि बन दे सकती 🕯 और न बन सुक्त प्रदेश समान है। कारवामें संगालको गरिको कोई बुद्धिमान है सन्दर्भ समान्य है, दसरा कोई नहीं।

बिनो चुन्तिकेचका सुक्त जात है, को इन्होंसे अतीत है और जिनमें प्रतास्ताका की आक्रम है, उमें अर्थ का अर्थ कर्षा करा जी पहिल्ले। सिंह मिल्ने वृद्धियोग प्राप्त नहीं हुआ है, से देखी परिविधीर अपनेपर अस्वया इर्प और आजन क्रोकके अधीर हो करें हैं। अतः वृद्धिमान् पुरुषको वाहिये कि सक का द:स, दिन अकना अदिन जो-जो जार होता जान, समझ्या स्टाइके साथ सामध्य करे, क्रमी डिव्यत न हरें । फ्रेंचके हकते कार है और पवके सैकड़ो अवसर है, किंतु ने दिन दिन सुनोंबर हो जनाव इस्तो है, बुद्धिपानीयर

महीं। जो बुद्धियान, विकासील, सार्वाञ्यानी, प्रेमोईन, [ संपनी और निर्तेष्ट्रिय होता है, जर मनुष्यको होन्स सू भी नहीं सम्बद्धाः। सुद्धिमान् पुरस्थते पादिने कि इस निकारन करा क्षकर संच्या विकासे अवकार करे । को पहल क्षपति-विकासके क्रमको जनता है, उसे प्रोच्ह रहाई नहीं का सम्बद्ध । पहुन्त मान निर्मात पदार्थने प्रचल कर बैठक है के बड़े अल्के द:समा कारण का क्या है। यह किन्नोनेते किस-किसकी आसरिक्को जागता पाळा है, इसी-इसीसे सुराखी पृद्धि होती धार्म है। मिलू को पूछन निपर्वोधे पीछे पाड सुका है, यह से क्ट्रीके राज्य यह हो जाता है। सोवाने निकास भी विकासक 🛊 और यो मुख दिल सर्वति अध्यक्ष 🗓 से पान प्रत्यक्षकोत्र कुराको सोराजनी अस्तरोत करावर को नहीं हो हवाने । पहल

मुद्रियन् हे, यूर्व हे अथक स्त्यीत हे—अपने पूर्वपाने काने केल भी सुध का अञ्चल कर्न किया होता है उसका औ बैसा ही करा जोगरा कहा है। इस उत्पर क्रेमेजे क्रके-मार्रिके क्रिय-अक्टिय और सुक्त-१: क्रुब्रे अहिर क्रेक्ट्रे के प्रक्र 1 + tel fement anne deut mercebb perceb मुक्ते पुरु १४० भूम सुकते युवा है। सार सा प्रकारक भोगोर्थ केल-इद्धि बारे और उन्हें संख्याने उत्तर है। प्रकार कारत होनेवाल यह काम झाओं ही यू होवा पृत्यानी

परिवार के बाता है। (का इसकी निर्देशने कोई बाक उनके

है से) विद्वारों प्राप्त को अधिकांके प्राप्तकों चीवर प्रतेकीट

श्रामके प्रकास काल है। सञ्चाल सैचे अपने अपनेको स्त्रीट रेना है, उसी प्रकार नार यह बीच अपनी संब प्राप्यक्रीका बंबोप का देश है से हमें अन्ते विद्यु क्या-कराने हैं सर्वजनक अन्याक स्थानका है कहा है। उस पर विकास का नहीं सानदा और इससे भी कोई वहीं इसक रूप का पर वितरी प्रसूची हुए। या विजीते हेर वहीं करता सो हमें सहस्त्रकों जाति है बाबी है। कव वह स्वय और असम, सोम्ड और अनन्द, त्रम और सार्य क्या क्षेत्र और

व्यक्तिय केनोको साम देवा है, से परम बामानिय के साल है। का पूजा पर-कार और कारी किसी प्राणीके प्रति स्वीत चान नहीं करता, उस समय वह उद्युक्त जात कर रोगा है। कुर्विक पुरुष्टिक रिमी को अस्तरत पुरुष्ट है, समुख्येत पीर्च हो व्यक्तिर की निवालें निर्मालक नहीं अवही एका को प्राथमिक आज कारेकाल देन हैं, का इच्छादों से जान देश हैं, बह

हमी हे बात है। स्वन् । इस विनयने विकृतन्त्री गानी हाँ एक पांचा प्रसिद्ध है किससे प्राप्त होता है कि जाने हेसाएगे रिवर्डिने पहरूर भी इन्लाको उत्तन देनेते प्रद्र सन्तरूर वर्षको w from mile एक बार विकास वेदका बहुत वेरतक संवेद्य-प्रकारत बेटी रहे, का को अल्डे कर अल्ब्र देवी बड़ी आया। इससे

को बढ़ा केर हुआ और उसने बाब क्रेकर ऐसा विवार किया—'मेरे कर्व रिव्यान साथ ही समा प्रत्येकारे हैं। मैं नक रूपनाम रूपे क्या स पूर्वी है, कि मी ऐसी रूपन हो गाँव कि इस्ते विकेश्य पता स्थापन भी उन्हें पहला न प्राची । पार, मेरने का सबे देखरामक परा साथ पायम का विकास पुर्वाच्या केले चरित्राच्या प्रतिकार पहोची । त्यांच में भी नेक्ष्रीयको पान पर्ना है। अपनी की पाव साम्बन्धानेक वित्यक्रारित है । उसर मोनोच्छ तम धारम करके है नरकारती को बहुन हो। बोद्या नहीं है स्रोति । देशका दूर्व पुरस्का क्षक क्षेत्रेयर कर्मा की अर्थकर के मात्र है। इसीसे आक निरायको पात्रे विकेतिक याच विचा है। बालाको विके विकास जनारको आसा को है, को संसको गीर से समाता है, आका न रक्तिने ही भारते यह असन्य है। देखे, आसानो

विकालने व्यक्तिक करके ही उसके विकास आजवारे की रही है।" र्जनके बाते हैं—स्वयु । प्राप्तको सम वे तथा और भी देती हैं पुरिष्युक्त को बड़ी से एक नेपरित्युक्त कोच हर क्षेत्रन किन्न विकासित का पत्ता और वह जनता होकर अन्तरको सीवन बीवने सन्तर।

## कर्म्याणकामीके कर्तव्यके विक्यमें पिता-पुत्रका संवाद

रूप वृत्तिहरू पुरू-शावनी ! समस्य पूजेका | स्वाक्तवाहित हाक्तवाल 'नेकारी' समसे प्रसिद्ध एक संबंध करनेकरन पद करन बरावर बीता जा पत है। देखी अनलामें भगाने, नव करेंने महत्त्वस कावान है समार है ?

योगार्थं केले. जुनिहर । इस विकारों का निया और | यही हैओसे बीटी का भी है—हेला पारवार बुदियान पुरका संवादक्य पुरक्तन इतिकृष प्रतिस्तु है, सुने । विस्ती । बहुव्यको क्या कारण व्यक्ति ? अस्य मुझे क्यार्थ वर्धका

बुद्धिकर कुम का । यह पोख, वर्ग और अर्थने कुत्रस १६६ रवेक्टीकारेको कारोकास छ। यह दिन असे असे कामानकार विकास प्रमा—'विकास ! महत्त्वकी कार क्रम्पेस परिचने, निश्नमे में क्रमणः काम्य सामस्य कर । सर्वे ।'

शितां कहा—चेटा ! ज्यूचको स्थितं कि सहरे स्थापनीया रोगर नेपायका को, किर गूनस्थानने जोड़ सरके जिस्साम स्थापिकं सेरचे पुर जन्म को और साम्यासम्बद्धिक बहादि सरे, इसके नाम स्थापना सामाने स्रो और किर संचारते हो नाम।

ुर केय—रिमाओ ! या सोच्ड से सामय मंदिक और सब ओसो दिए हुआ कान पहल है, इसमें अपनेय पश्चानेका पाम हो रहा है; दिए भी अस्म निश्चित्यने होचर केसे पार्ट कर सो है ?

(रेताने स्था—बोदा ! तून चुत्रे इत्यों क्यों है ? चान, व्या सोवा विद्याने जातित है, चौन इसे वाट जोन्से की हुए है और इसमें चौन-को अरोबा समुक्तांचा चान हो व्या है ?

पुर कोरक—देवितने, पुरुष्ट असे आवन्त साम्रीत कर रही है. चरायकारे हमें सब ओसी के रका है और देश-रस इसमें मिक परिता होते (आते-माने) रात्रो है ? यह यात्र अन्तर्क बारूमें देशे नहीं अभी ? अनेप प्रतिन्हें पिए ही सारी हैं और पानी पानी है। यह भी में अपनी प्रश्न करना है कि संव वेरे सक्तेते क्षणका को नहीं क्षेत्रयों । यह तक सकता की हैं अपने कामानवाकों दिया प्रकार कीन कर राजक 🛊 ? जनकि प्रातेक रातिके बीतनेके पतन अन्यू क्षीण हो स्त्री से सम्बद्धार गुरुवाले को सम्बद्धार करोने कि सम्बद्धार हित सार्थ है गया; ऐसी विश्वति क्रिक्ट कार्य क्रांस्था मक्त्रपेके समान कीन सुन्त कर्ण समान है 7 जन्मकी कालनाई पूर्व क्षेत्रे की नहीं पाती कि मूल और प्रकेश लेखें है; प्रत्योशने को काम करपालकारक हो जो उसम हो कर हत्ये. सम्बद्धी क्रवरों का निकालों हो; वर्गीनि क्रमु से कार की न होनेवर भी प्राप्तिकोको स्थित हो से कारणी। यो काम कार करन है को जान करे और से केवल कर करन है की पहले ही पूरा धार लो; क्लोबिट कीन बार की देखती कि इसका काम अभी पूरा धूआ है का नहीं । यह कौन कामा है केंद्र अपन विकासी पूर्ण के स्थानी । असः मुख्यमधाने के कारको गर्नका जाकान करन करिने; क्लेकि जीवनक कोई रिकास नहीं है। क्वांबरण करनेसे पर्यावक कर केस 🕯 और उसे उक्केक राज्य प्रश्लोकमें सुका मिलात ै। यो मनुष्य मोहरे हम्ब द्यार है, नहीं पुत्र और स्टिके दिले सरकार हमा राजा है और कार्य-अवसर्व कर भी सत्ते कार प्रेम करत है। अन्द्रे पर पर और पहलेपी अधिकता होती है और उन्हेंने आगत निय आगक करा

है। 🖦 निल्बर बोनोंदे हैं संबंधों राग राज है. फिर भी इससे कामझे पूर्वत नहीं होती। विश्व देखी रिमालने ही मौत करे हुए अध्यान करन के बार्ज है बैसे ब्लापी अपने सोते हुए क्रिक्टरबंदे । यह संस्थात है कि यह साथ से पूर है करा, यह क्षणी करका है और यह अवस्त है पता है कियू इस कुर्जे मस्त हर का पहल्के की इस अपने बताने कर लेती है। पहुचा अपने क्षेत्र, कुलन और कर्ला है ब्यूजने पढ़ा खुल है; उनके हैं के क्या-क्यांक कर्न कारत है। बांत कारत कर निराने भी नहीं बाक कि बीच को उठाबार से बाती है। यनुबा कृति हो क करकर, इस्ती है के इस्तेय, अवना नूर्व है क विकार, और सामी काम कान्यानीके पूर्व होतेरे पहले हैं को का से नाते है। रिकारी | का इस प्रतिमें कृत्, करा, क्यांव और अनेकों कारणोते क्षेत्रेकारे बु:बर्विक सीत रूप है साम है से साथ इस प्रधान निश्चित्त-ने हुए क्यों केंद्र है ? केंग्र और पुरुष---ने केंग्री के कीनके कनके साथ रहते हुए हैं हुए क्षेत्रोक्क प्राची प्रकार-स्कृतीले संभाव है । असः साम क भारती कुक्त की-कृति अस्तरिक रक्षण से कीवाई व्यक्तिकारी राजीके ही संभाग है। केवार कुम्बावा कुम्प ही को सामान निवास को है, यानी पान को नहीं करा सब्बते । को प्रमुख पर, पानी और प्रशेरते जीनोवरे क्या नहीं पहेलाओं, से चीच भी उससे मीचन और अमेनी हारि च्याँ करते । सरको किया कोई भी प्रमुख पुरस्की सेनाका सामा को कर समात, इस्तीओ असमानी साम के व्यक्तिः व्यविद्य अनुसार पारणे हो है। सारः प्रमुख्यती सम्बद्धाः स्थानम् करण प्रतिने, सर्वानेत्रने सागः क्रम कारिये और प्रशिक्षेत्रा कृत्य करना कारिये। इस प्रकार सामके क्षाप ही पद मुख्यार विकास आह करे। अपने और क्य-मे केने इस करीनों है विकास है। मेको क्यू हेती है और प्राप्ते अन्यप्त अस्त होता है। असः अन मैं हिससी हर होना, सामग्री कोज करोगा, काम और स्रोधको हरको। िकाल हैया, कुल-कुलाने समान रहेगा, जिलाने कुलानेको हक निते देख जाकरण करीना और पुरुषे जनते पुरु हो कार्यक्ष । वै (निवासिक्यक होका) प्रानिकामा अञ्चान करीना, इन्हिनोच्य क्लन बतीना, जननहील क्रेकर स्थापक्रमें क्रवर खेळ क्रव क्रवल खन्दा, मानवय परोप्त और कु-कुल्पाहिता कर्मकाको आकरण कर्ममा। विस्तरी कार्य और यह सक्त हवाल रहते हैं तथा से तथ, रक्तन और अरुने काल रहता है. यह सम कुछ प्रस्त कर लेता है। र्राह्मको प्रकोर समाप बोर्ड के नहीं है, सरकोर समाप कोई हर नहीं है, एक्के समय कोई शहर नहीं है और लामके समान कोई सुना नहीं है। एकान्यकार, समाप, सावभाषक, है जानी जन्म:कानायें विका जानाकों क्रोकिये । हो किये हो क्रकार, अविता, क्रसमा और क्रम ज्यानो क्रमकारीके निवृत्ति—इनके समान अञ्चलका कोई और वर नहीं बर, समय अवना सी आहेते कह तेन है? सार जी हते।

स्त्री काम कामके निया-विकास महाँ महे गये।

श्रीवारी बार्च है—स्वार ! पुत्रके बाका सुरकार है। बिसारी | बार एक दिए सामको बराव ही है से एक जिसारे को पूछा किया, बड़ी सामकोर्ने एएए खाना हुए

## सुल-दु:लका विवेचन और त्यागकी महिया

राज पृथितिरने पुरा—रिमारक ! करी और निर्धन केमें | है प्रतत्कारों सम्बद्धा करते हैं, बिर भी औ प्रश्न और इ:सब्बी आहि बैसे होती है ?

भीवार्त सेरो-सम्बद् ! कुछ हिन हुए हम विकास प्रकारे क्रमान राज्ये एक साथ, जीवापुर और साथी प्रकारने इस प्रकार बढ़ा था—इस संस्थाने को भी नक्त अरुका क्षेत्रा है. (बहु बनी क्षेत्र का निर्वत) उसे प्राथमें क्षे मुल-कुक वेर तेने हैं। विकास का उसे सुक और कुक हन केनोंग्रेरे किसी एकके मार्गपर है क्या के हुने र के कुछ पाकर जनत होना शादिने और न इ.कने पहला करतन पादिने । पदि तुन अभिन्यर छोने तो प्रशास आवस्त्र सर सकोरो । यो अधिका होता है यह जानको सोख-बान्स है । संसारने अधिकारणे ही सरस्य है, यह दिस्तरस्य, पर्वणानसम् और निरामः है तथा इस मानि किसी प्रधारके कारका भी करका नहीं है। मैं तीनों लोकोपर होंदे कारकर देशना है से पुत्रो अभिनान, सुद्ध और शब्द ओसी फिल्क पुरुष्के समान कोई इसरा दिवाली की देश। हैंने अविध्यनत और राज्यको स्थानुपर रहतका औरव हो पूजीने अभिन्न हेनेके कारण राज्यते भी अधिकारकात ही भार अधिक निकरत । अधिकारता और गुरूकों यह बहा वारी सन्तर है कि बनवन् पूरत सर्वत इस अवस्य प्रवरंक श्वना है माने मौतके पूहरे पहर हो । भी मनूब बनको त्यन कर मुक्तसम्ब हो गण है जो आहि, आहि, मृत्यु च चेर किरोधा भी पन नहीं खुल। यह संख्यारे विकास है, विना विकाले पुर्वाचर स्रोता है, जोहबा तकिया सन्तरत है और सान्तिसे बीवन विवासा है। वेबाससेग भी उसकी सुनि करते

है। क्यान से होन और लेक्के कारव अपने-आवडी को कार है। असकी निरम्भ देनों करी है, है। हुन जात है और और क्यी कर्ता है। को पाय-है-पाद स्वारत है, को बंधे कारण का ओर कारण है और करोर पारण करता है। का वर्षि सारी पृथ्वी की देनेको स्थार हो हो भी उसकी और और देशक कोना 7 मा सर्वाठ सक्तीको है गोरने राजा है और मा का पूर्वको चेवने करनो रहते हैं । कपू वैसे सबर काचे क्रक्रकेको अंत्र हे जाती है, उसी प्रकार लक्ष्मी अलोह विलाओ हर लेकी है। यह अपनेको कहा कारकार और कारकार संस्थात है और ऐसा पास्का है कि मैं बाह्य प्रत्येन और विराह है, बरेही सम्बद्धाः बहुक नहीं है। इस कारणोहे अल्बंह किया परावासह हे जन्म है। चोनताक हे जानेके करण का बाद-क्क्षेके जोते हुए ज्यानकोच्ये कहा हेता है और इस प्रथम क्यांकि हो प्रक्रिय कारोबार अन क्रीन्त्रेका विकास करने समता है। इस बाह अब क्य वर्णकृष्य करकान करता है और वहाँ-तहाँ है कर-संस्थाती चेता करने रूपका है से राजपुरूत उसकी इस अनुसाने बाका अभीवत करते हैं। इस अकर वस पुरुषको संसाहते त्या-प्रयादे हु: सोका सम्बद्ध करना पहला है। अतः अस्तित क्रिकेट स्वयं रूपे हुए पुरिचया आहे रवेकस्परीकी ओर न देखका काने इच्छि आवनकोरी अवस्थ प्राप्त होनेवाले इन न्यान् इन्योकी विकारपूर्वक विकास करनी वाहिये। कोई की करक साथ किने किया न को सुका या सकता है, न वरमानको पा समाज है और न निर्मम होकर से समाजा है: जनः तुम सर्वतः स्वराकर सुन्ती हो जाओ ।'

कुष्पितः । सहके जन्मक मुनिने इतिनागुरमें कुछते हे करें कई थी। अर: स्थ्य ही सबसे बेह सारा गया है।

#### तृष्णात्यागके विषयमें मिन्नुका दूकता तथा विदेहराज जनक और मुनिवर बोध्यकी उत्तियाँ

स्ता-राष्ट्रके अलेन करनेल भी कर र या को से इस व्यक्तानों पक्ष को हुए को क्या करनेते क्षेत्र है। Wester & ?

केवर्ड केरे--एकर् । इसके और संस्थान पान रसना, बनाविके सिने विकेष प्रात्माने न पहला, सारकारण करण, चेटांचे दिल्ला सुन और सर्वेर कारण न हेना--हर पाँच कारोंके होनेके पहुन्य कुछ का काराता है। हा निकार्त एक कर न्यूनि किएक क्षेत्रत को प्रक बक्त बा, बा मुख्यम इतिकास में सुन्दें सुरक्ता है।

महिने क्लेक्केच्छे हिन्दे स्कूट उसक किया, कियु उसे प्रात्मका न निर्मी । एवं क्षेत्रे-में क्ये-क्ये कर्मी कर्म कर साने मोन्य से नार्क पानि । एक देन जो समानेके हिनो सह कुरने बोतका से कार । शबोरें कुछ के बैक का में को बीवने करके एकमा की भी। यह वे सरको गर्नको कर महिने को किनके पान पूरा राज्य और पान प्राप्त होनार उन केरोओ प्रांत्यर रामको को भेरते केंक्ने राम । इस प्राप्तर अर जनम हीऔर प्रता सम्बद्धान निर्म करते हुए संस्कृतिको करते देशकर नद्दे बाले राज, 'स्ट्राम केल है बहुर हो, सेख् रात्री पान्नो पर्दि होता है उस्ता करनेता से को का पर्दे मितः स्थान ।" पहले अनेको क्रान्यकानेक प्राप्त मानेतर भी में क्येंक्सीनकी बेहाने रूप ही था, को देखें, नियाताने इन व्यक्तिक स्थाने ही की साथ प्राच्याने विदर्शन विका दिया । प्रत संस्था परायासस्थित न्यायने क्षी वस्तु केंद्र मेरे कारोंको स्थानने इसर-कार केंद्र का है। मेरे केने कारे माने देखते गर्दनो प्रतिनोधे एका स्थाने पूर् है। यह क्षापाल केवारी हो प्रतिस्थ है। यदि काची कोई पुरुवार्ग समान केता जिलाओं केता है तो एकेकनेवर पह भी देखता है जिला मान बहुत है। अतः विने सुराधी हता हो, को बैरानका है अवन रेज करिने। ये पूज वर्गनर्जन्सी क्रिक क्रीकृतर स्थान है जात है, यह सुकारों की क्रेस है। सहा है क्ष्मकेन्द्रीने क्या है अका कहा है—'से कहन सकी समका परमनाओंको या हेता है और यो उनका सर्वका उत्तर का केत है. सा केनोरी कामनावेको करेगानेको अर्थका कारणेकार में केर है।

"ओ काल्यनोंके क्यां ह का प्रकारी कर्मकारकारों के साथ हो जा, कारित करण कर, जरन कहा करित करण है। हु पातारके समार कुन्तु है। हु

रूप पुण्योतने पुरम-कारणी । जी। योगी महत्ता | Bermellen) होता है। इस सर्वकारणने हते यह-कह क्ष्मण है, के भी हु इससे काल वहाँ होता। हुने सार-कार का कंपन किया और यह सर-सर यह होता परता। औ मुद्र ! पान, इस अर्थनोत्तुनकारो कु कर करना दिखा प्रकृतिक ? अरे ! मेरी केली मूर्याल है, को मैं देव निर्माण क्या हुआ है। देश कौन पूरत होता को इस प्रकार दूसरीका का करना केन । कर | दिवस है हैत कर काना कर पुरुष है। इसकी प्रैयकों सरकोंने ज्यान क्रेनेकर की इसके हुम्मे की होते। में देश बहुमों की पूछ परवार है। ह र्जन्मको जन्म केस है। अस्त, मैं देश संस्था है नहीं करिया, का से व् कुलबीत का है करना। में हो बनसे र्मकारों हे हुए भी है, का दिल कर से वी दिया है बाहरी है और भीई एक बार निरम्बार ग्रह हो बाब रख से और हैं का साथे हैं कर उसीन करनेता को यह निश्चन नहीं हैता कि का विशेष्य की या नहीं। विश्व की मान के प्राप्ते संबंध न्हीं होना, फिर और भी फोन्डी कुन्ड बढ़ते हैं। महत्त्वलाई रीवार की की परवेश को की सुनेवर से प्रकार होती है. करी प्रकार करका क्रांचन की सुन्ताको निवृत्ति न होने हेन में है। में अभी क्षेत्र क्या पता है, ह के सामान universe at & prefer our by fire size & | four अन्ते में इस कुमानीका प्रतिने करंत किया है वह से क्रेक्नो इस्ते से अक्स कर कर । हुन के स्वंकाराहि हो, काम और मोधके ही अनुबार हो। ऐस हुएके बोहें के-मान नहीं है, अरः जब कारणाओं को कार में सारका है अध्या हैना। मैं सब कृतिको अन्त्री हरीर और करने देशके हुए प्रदेशको कोलने, निरामो अन्य-कालाहिने और भारतको स्कूमें समाहित्र । इस प्रधार क्रम प्रधारको अन्तर्भेक क्रोडक्टर स्थानको सर्वत विकारता, विस्तरे कि विस र को दुनोने र कार हते। कम । तुना, होय और परिवार प्रत्या अपरिवार ६ से है। में से प्रयूक्त है करना कर होनेना को दश्य होता है नहीं करने करवार है। करने को क्रोड़-ता पुरस्का अंग देखा करता है, क्रा ची कुरानों ही रिक्ने हैं । जिला पुरस्कों बाल कर होनेका सोहा होता है, को सुटेरे कर करते हैं अवक को नित्यानी वक्त-राजकी चैवारे केवर केन वाको जाते हैं। भा बात को मैं जात हिन्छेंने कारत का कि अर्थ-रहेलुक्ता दुः स्वयम है। कार । हेर केट

मुहे दु:कोने केश्वन कारत है। किंदु तम ह मुहल्स कि । क्या । एक बार कार क्राय किंद्राम कार्या की बाह अभिनार भी का लाग । देवाचा नामा का होते आम को नेरान ग्रह हुत्व है, तहः तम अलग अल हैकर में केनोकी हवा की करूप। अवस्थ की कह क्षेत्र महे हैं, में देश करों का कि पूछ प्रमाण है जो था। इस समय करका यह होनेसे मेरी का बाला कि करी: सम में मौकरे सेमेन। कार । में कार्य करे बेहाओंके कोइन्दर हुते दूर कर ऐसा। अस वृत्ती करा बढ़ी क सकेना।

'को सोग मेरा तिसहात करेंगे कई में कुछ कारेगा, यो को यह योगरेन अस्य सेर्ड जीव वह करेन, ये है। करेना काने अक्षेप नावारका बोर्ड विकार र करेड सकी चेटो-नेदी को करेना। ने पूर और सम्बंध क्रूंप कर मो पुरू अक्टबर है जा; हेना महेने निर्मा कर हैना : वृ मेरा पड़ है, में केरे इस्ता पूर्व को क्षेत्र केन का अपने का सम्बद्ध है, जुड़े कैरान्य, सुन्त, हुईंद्र, सार्थ्य, सार्थ, सूर, कुन्त और संबंधानमा-ने प्राची पुन प्राप्त हो को है। अब-पान, मोन, रूप और करपालके प्राप्ति कि पूर्व क्षेत्रका को कारी है जान में प्रारम्पानने किया है। बात है। बाता पार्टर और सोमते कुम्बार क्या में हुन्हें हैं का है। का सा कार्यानीको प्रमु में प्रोक्तों केन्द्रम कुछ जूरे प्रतिकार ayer fire-free surrout site for & salest which मुख्ये हे साल है, कारणके कही कु होकर हो का सर्वत है क ही पान है। 2:पा, निर्मालक और उसलिय-में पान और mit of the city of the section of th है, क्रीलंक सन्त है और क्रनेक्सलंबे कुछ हो पक है क्रक मुक्ते निवहत् सरस्यका समुख्या हो पहा है। हुछ स्रोक्तों क्रे विकास सुका और विकास स्थाप कुछा है, से इस्प्राह्मको क्रेनेकारे सरके सोक्यों नेकड़े क्यार में भी है।"

कर्मा । इस प्रधारको सुद्धि कहर गद्धि क्रिस्त हो एक र्श्वर प्रमाणके प्राप्ताओं के कार्यर कारे प्रकार जार किया। के सक्तिक करने के उसे अस्ता जात है गय । उसने कामधी का बाद साथे और साराय क्रमी है

— मेश का सम्बन्ध है, सिंह बस्कः की कर कुछ की न्हीं है। बाँदे निर्मालपुरे नात नहें है के प्रकार नेना करा भी जी क्या ('

चारे हैं, दिसी काम जूनका प्रकारित करा विराह और प्राच्यान केना प्रतिके पुरा का, 'महत्वाह । अस पूर्व देशा with which four unfor fails a ball with safe field frequen स्थान रेक्ट अन क्रम और संस्तृ केवर किएसे है।"

केवले का—राज्य । में निर्माणी करोड़ नहीं हेता है, क्षीच क्रांटेंड अवेतके क्यूकर सामस्य प्रका है। ये हुई अन्तेको प्रमु हुए अनोहरू स्थान कारत है। जारत हुए and from and a Paper, gerendt, and, song, was क्यांक्रिकार और क्रमार्थ-में का भेरे पूर्व है। स्वाहत | आक नहीं प्रस्ता है, कुछ के निरुद्धाने ही है। विकृत नावनो निरामी परिना करें। पुराने केवी हो। कुरानको चीरामा प्रमान तैसी पता था, उसे दूरते देखे mel mit e um um guspal braite # mb die fiere e पार्ट कुर्तरोक कराते हुए करने पुरस्का ही सीवती सुंदर है। सातः क करोबो करावों कर 2 सहर है है, इसी कुछ से ger mil ûs han som tergraph fierbit de a web. selfenglick area finds with \$, wit man given Properties when their sevent over their raths कर्षा है। एक बार एक बान क्यांग्लानों देखा, यह अस्त धारणे हेल प्रयोग्य का कि को अपने पानने हेका निकास र्ज कराने सम्बंध से पर की सम । (१४ क्रमी) were mer spe ud all i gent mit ment ment uffeiter क्या केवा का जाने संबोधक और सकतो सेव्या केवे क्रमोर्ने केवल एक-एक पूर्व भूते थे। इससे काव्य क्रम क्षेत्र के के एक । इसमें की विक्रम किया कि) जाता सीत कार-साथ पाने हैं के राजने बाला होता है और हो-हो पह पाने है के की सामग्रीत के होती ही है। तक उस कुमारीकी क्ष-एक प्रतिके सामा में भी उन्हेंगर निमानिया।

## संराजनोंके आचरणके विषयमें प्रहाद और अवधर ब्राह्मणका संवाद

विकासिको व्यवनेवाले हैं। कृतका यह स्थापने कि क्यूकारों | उठका की प्रश्न कर सकता है ? मिस अवस्था अवस्थ करते हुए वि:क्षेत्र क्षेत्रर पुर्वास

रूप प्रश्नित पुर-कार्य । जन स्थानक प्रियम प्रति प्रश्निक को प्राप्त है कि कार्य क

चीनची नेते—स्वत् । इस विकास यह प्रस्तान

इतिहास प्रसिद्ध है। इसमें अनुस्थक प्रदृश्य और अकार | प्रश्न होता है के मैं कामा काम नहीं काम और में बिहरी कुरीन मुन्या रांतर है। एक भुजुनिक और निर्वेक्तर (क्यूनाको पृथ्वीपर विकास देशकर पत्त प्रतिस्थान जानाचीने पास था. 'ब्रह्मत् । आर कार्य, वृद्धियान्, वृद्ध, विलेन्द्रिय, कर्यारक्ती इर क्लेको, दूसरोके केबेबर कृषि र क्रालेको, विक्रुक्तके और सरका होचार भी भारतकोता-स्थ अध्यक्त पारतेकारे हैं। मानको निस्ती राज्यानी प्रका नहीं है और प्राप्त होनेकर साथ बिसी प्रकारको विका नहीं करते । सब ही दल-वे कर पहले है। सार प्रतिकारी विकासियों परचा न करते प्राव्यक्ति स्वयूक पुरानको निक्तो है। जुनिक ! साम्बंद कर देखे कर सुद्धि, परवासन पर परि है ? गरि सार प्रवेश करते से चीय है जुड़े कालेको कुछ करे।"

अञ्चलको इस अवार प्रार्थनर ३६ स्थीनसर् प्रतिक्री इसी महर कारीने बहा, 'बहुद । देखे, इस कार्या अभी, उस, पदि और पहला पारन अपने हैं है, बह-में उनके सहरत न पूर्णित होता है और न स्वर्गित हो होता है। निक्ती अंबोध है को पूर्व निकोची समाह क्षेत्रेयको सन्दर्भ और जिल्ले संगय है जावा पर्यकार विकास है बाबे । यह पत देखका में के बादि अने मानो भी रूपका श्रवूरराज है पुर्वाचर निर्मा प्रकार-प्रमुख प्रान्ते 💃 मुक्ते के करवी पूर्व पान विचार्य देती है। आवाजने के कंदे-कर करें निकर को है, में की सबक आनेकर निर्मा है। इस अवार तम व्यक्तिकोची मृत्युक्ते असीन वेकावर सामी स्थान काम रसावे हुए में सारायाने सोचा है। यदि स्थानकार है जिल बार से कवी-कवे कुछ बेवल कर तेता है, औ से महा दिनेत्व दिया साथे ही क्षा करता है। क्षारी कारणांकी भागी पहलार को पहल है और कारी विश्वकी पहली ही की रेवा है। इस प्रकार महिना-परिच्य सब्दे बच्चात मोबन करता रहता है। मैं सब्बे से इस, देशन और काहि क्या प्रकृतिक एक क्षेत्र है और कभी को सुनकार क्षा बारम कथा है। और कैन्स्य बोर्ड कर्मानुकर कार्य को | कथा है, वह इस लोकने सारको कैनाता है।

नोक्सी कर्ष इक्त की करता। मैं सर्वत इस अंकरा-कृतिहै में कहा है। का इस असन स्वयं, कार्यकार, केंग्रॉन: क्षीक और अनुसर्वेश है। को को विद्वान की इसे सीवार करते हैं। को मूनकी है भई हो बहु अदिन है और वे ही इसके क् बाको है। वेदे की अधिकार है, मैं अपने करेरे बहुत मही हात है, केरी पांच परिवेश है और की क्या, राग-हेव का होन-बेहको साम देख है। मैं सर्वक सुद्ध अन्य:करमहे इस अवस्थ पुरिष्य पारंग कथा है। अधिकारको में पुछ पार क मान-केमारि मिल पास है स्टीले निर्मात कर लेता है तक अनाओं अनुसार हेत-साराओं नामान प्रतान है। पूर्व अक्टर कर्म कुर किएक रेक्ट की करे जा अकर-क्रक क्ष्मान कार कुल है। कुरमानेन अनेतक्ते प्रेले विरक्त को हो अवस्थित केव बनो को 🛊 का देखता कर क्षान्त्रण, स्थानको, अभिन्यतिक और पोयनकार्य विकासके प्राप्ते हैं, ऐसा चलकर की कर, कर, बेद और अभिन्यानको स्थान सिन्ध है, केंग्रे और सुद्विपक्षे अन्यस्था है स्थान अब में कुर्वकार प्रत्या हो पात है। भेरे स्तेने बैक्नेका कोई निवार कार औं है, में क्यानों हो पन, रेसर, बर, कर और क्षेत्रक कार क्या है और दिनों कार्यों को इस्ता की है। हर ज्ञान को अन्तर्भ में इस सम्बंध-प्राप्त सामान करते. है। यह बानी और पुरिवर्त क्षेत्र करते हरते हैंस probabilities and probability from the authorises Serfift-eit Weit ger Seurit-stath inner wire fie न्तर्वकेन इस स्वीत पुजार प्रकार सीधा-प्रीया गाँ प्रवाह प्रवाहे। परंतु में के इसे सर्वक निर्देश और अधिकादी समझक हैं उस का अवलों के और कारकोती के कार्क बन्नोरी विकास करा है।

क्षेत्रके व्यते हि—सकत् ! यो व्यापुत्रक प्रथ, प्रथ, कोष, बोद और कोशको उक्तपका इस अनुपर-अञ्चल पास्त्री

## मनुष्यको सद्बुद्धिका अम्मय लेना चाहिये—इस विषयमें काञ्चप झाडाण और इन्द्रकार संवाद

मनुष्यको बनुकर, कर्म, कर और कुदि इन्मेरे किराबा असल्य रोज पार्विने ?

पोरस्य केले—सार्व ! आविकोच्य प्रचार आधार करनी श्रुद्धि है। युद्धि ही सरका सनने वाह राज्य है और

वृधिकरते पुरस—विकास ! कृतक का सामाने कि | संसारते कृदि है समात सरकार करनेवारते है । राज साँत, महत्व, नपुणि और पश्चिमें भी मुख्यितारों ही अवस-अवस क्षां विद्यु किया था। संस्थानी कुद्धिते कहकर और क्या है ? हर कियाने हुए और कार्यन अक्रमधा संवाहता एक जनीर प्रतिकृत करिन्दु है। कहते हैं, पूर्वकारमें कारका नारका एक बढ़ा संबर्ध और उसकी व्यक्ति था। को कर्मा अपने पूर किसी वैद्यने अपने एक्के कोलो हिए हैंगा। फिलो मह बहुत हु:की हुना और कोच्यक सामें बहुत होकर बढ़ने राम, 'हुन्याने निर्मा पर्युक्तार कोचन कर्म है, इसिमी असा में आवश्यक कर दीना' को इस असर कुंबिया देशका इस सामें परा परिवास पर बारण करने आवा और बढ़ने रामा, 'मुन्यर ! पर्युक्तोंने पानेचे देशने के रामी जानी प्रमुख पत्ने हैं। उसमें भी असरमायकी अनंता से क्योंने भी है। असा को अनुस्त है, असरमा है और वासका भी है। ऐसा कुंबल क्योर कामर अस्मी क्यान्ति हमा दिने हैं, असी को माने सामे प्रमुख है, विद्यु हो गते हैं। इस समय अस्माते नेते क्यानी सामका है,



इसी जनार में तो केनल इस पार्थि रिन्ने हो जनून हैं। मेरी दृष्टिमें इस सिमनेने कामार मंतारमें कोई भी साम नहें हैं। वेरिन्ने, मेरे स्वीरमें कादि सने हुए हैं, कियू इसा न होनेने मैं उने निकास नहीं सकता। कियु कियें मनकान्ते के इसा मिले हैं, के वर्षा, सीत और सामसे अपनी दहा कर सबसे हैं। को दुःस निमा इसके दौन, तुसंस और बेसकार आसी स्थाने हैं, स्वैमानकाल में तो आपको नहीं सबसे कहते। मनकान्त्री नहीं कृता है कि अस्त मीनहें अस्त नहीं हुए। स्वीर, मेरक मा किसी हुस्से केनियें अस्त नहीं हुद्। स्थानक ! आन्यों से इसने ही सामार्थ संतुष्ट क्या काहित ।

कारों आविक और क्या पातिने ? आप से राजी प्राधिनोयें केतु स्थापन है। नेरी ही दक्षा देशिये, युद्धे में कीचे बारर रहे है. विक कथ र केनेक पारण इससे करवाय परेची पेरेने प्रक्रि को है। आवश्य करने का पर है, के सेक्सर है में देख नहीं बत्ता, विवासे में इससे भी जीव बोनिये न निर्मे । इस स्थान में नुमार-केरिये 🗓 मह महत नीम 🦜 पांचु प्रत्यो अनेक को चेनियाँ और को अधिक नीय है। पर्य नवे हे करेगा किर एक पहले समझ है, एक विकारिक केवानकी क्रमा बार्का है और बिट क्रमाद पान प्रकृत है। इस प्रकार काली हुन्य बरावर बहुती रहते हैं। दिन क्यांड किए प्रापेश की हुई। वहीं होती, हम्माब्दी आग करीये जो पहली; परिवा ईकाचे अधिके प्रधान का और भी प्रशासिक के सारी है। क्षेत्र को अवस्थों है है, इसी ज़बार हुए भी हो समझ है। पुरा-दुःस से साथ ही रहा काने हैं, इसरिय्ने इसमें प्रतेष पाननेकी क्या करा है ? यूदिह और प्रतिवर्ध के सरका जानका और बाजेंकी जून है। इन्हें निवर्तने के परियोधी एक अपने कार्ने रहाना करिने ।

किंग्सरे, कार्यका कहा हो ऐसा है कि संग्रे और कारकार की सरकी केरियोंने उसके पूर्व हैं, के भी अपना करीर नहीं क्षेत्रमा नाहते । नहीं नहीं, अबर संगद्ध-स्तर्फ और प्रक्रमानी रोगीने पीक्रि महामोको देशिये, वे भी अपनी केंगिने क्या रहते हैं। बिहर आप से संदर्भ हैं, आपका करिन नीचेन और चुनाँच है क्या लोको अपनको कोई चुरा भी जो सहस्र । भी अन्यो सहित्या क्रान्साम कोई सका करका की लगा हो से भी अन्तरसारका विकार नहीं करण साहिते, आन कांक्सनके रिक्ते रिका हो बाहते। महि जान केरी पात सुनेने और जानर किश्रास करेंगे तो अल्ब्से केलेक कर्मका है कलाविक कर विलेगा। आप कारकारीये व्यापका और अधिकोत क्वीरिक्टे, एस्य मेरिक्टे, इन्डिकेसी कराने रहिले, इस देखिने और विस्ताने भी स्वयां का ब्रांडिक । को अक्रूबर स्वत्याकों समे यहते हैं और वार्यानारिका अनुवान बाले हैं वे किसी प्रवासकी विका क्यों कोने और कोई कुछ का भी क्यों सोवेंने ? अपने क्षेत्रको में क्या गरिका था और कुलके मानेड बेहकी निक किया करता का। जा समय कोची तर्व-विद्वापर के मेरा निर्मेण क्रेम था। मैं सम्बन्धोंने राख-राखके कुराके करता w और को paper केट्रोके विकासों सने खते थे, उन्हें कुर-पान केवार व्य-व्यवस् वाते स्थान करता छ। नेकोचे नेरी आएक नहीं की, कनकी हर एक महत्वे हता करत स और पूर्व होनेक भी अवनेको बहा परिका करता वा। विकास ! वह न्यास-बोनि मेरे उस कुळांका ही गरिकाम है। जब मैं राव-विष कोई हेता सावन करता भेकता है जिसमें निर पट्टाय-बोनि जात का सक्षे। जस मोनिमें में संबुद्ध और सावकान की का, कन और काने नेता जानुसन हो, जाननेतीया कसूको कान सक्षे और सावकाने साम सक्षे।'

क्य कारपन पुनिने काञ्चर्यक्रीका क्षेत्रर कहा, 'शक्के । पुन को को कुकल और कुद्धियान के '' ऐसा क्ष्मकर कानदृष्टिने देशा हो को कर्म्य हुआ कि व्यानो क्रकीयति इन्द्र है। यह क्षमकर उतने उनकी युक्त की और उनकी अञ्चल फिल्म अनने पर लीव आका।

वीनवी चेले—राजन् ! जो अञ्चलका और विकेतित सनावन मुख्य व्यान्धनादि मुख्यार्थ करते हैं, उनी उन्होंनर अधिकादिका वैच्या और सुना प्राप्त होते हैं। यो व्यूचा जैसा कार्य करता है उसे वैस्ता ही एक सिलता है और क्या यह स्रोता है तो उसके साथ कर्मकल की सुन्न हो करता है। वार्यक्री ऐसी

गति है कि यह संके-वैद्यते, कारते-किसी और किया करते क्रमण क्रमण्डे समान क्रमणि सभ समा श्रेण है : किस पहुनको जनने पूर्णकर्णों जैसे-जैसे कर्म क्रियो क्रेसे हैं । कर्म क्रमण्डे अनुसार उनके वैसे ही करा चोमने होते हैं । विस् ज्ञार पूर्ण और कार क्रियोको है स्वाधि किया है । विसे क्रमण्ड शा करते हैं जर्म अक्रम क्रमणे क्रिये हुए कर्म थी अपने विस्थानके स्मानका क्रमणा मही करते । जैसे काष्ट्रा हमारों क्रमणे से अपने क्रायोकोच प्रकार है, वैसे ही पहले क्रिया हुआ कर्म की अपने क्रायोकोच पहला है, वैसे ही पहले क्रिया हुआ कर्म की अपने क्रायोकोच क्रमणे स्वाधि है । क्रिया क्रमणे क्रमणा क्रमण हुआ क्रिया करते हैं, उन्हें करती समझ क्रमणे और ज्ञाय क्रमणे क्रमणा है । क्रिया प्रकार आवासिको क्रमणे अनुसार और क्रमणे क्रमणा करते क्रमणा ( अहा को क्रमणे अनुसार और क्रमणे क्रमणे क्रमणा क्रमणे क्रमणा है । क्रमणा क्रमणे क्रमणा है । क्रमणा क्रमणे क्रमणे क्रमणा क्रमणे क्रमणा है । क्रमणा क्रमणे क्रमणे क्रमणे क्रमणा क्रमणे क्रमणा है । क्रमणा क्रमणे क्रमणे क्रमणे क्रमणे क्रमणा क्रमणे क्रमणा है । क्रमणा क्रमणे क्रमणे क्रमणा क्रमणे क्रमणा । अहा को क्रमणा क्रमणे अनुसार और क्रमणा क्रमणा क्रमणा क्रमणा क्रमणा क्रमणे क्रमणा क्रमणा क्रमणा क्रमणा क्रमणा क्रमणा क्रमणा क्रमणा क्रमणा क्रमणे क्रमणा क्रम

## संसार और ऋरीरोंके पूलतत्त्वोंका वर्णन

पुणितिने पूर्ण-कारांगी । इस स्वाधार-अपूर्ण अवस्तां अपित स्वापेट हुई है और प्रत्य होनेवर का कहाँ काम कारा है ? सपूर, अवस्ता, पर्यंत, तेथ, खुण, आंध और कार्यंत सर्वेत इस लोकावी रक्ता किसने भी है ? अधिनतेशी कार्यंत, कार्यंका विध्यान, सुद्धि-असुदिक्षेत विच्या और कार्यंत्रांकी विशि—इन समब्दी कार्यमा केरो हुई ? जीवित अधिनतेश बीध केरम है ? उनमें जो परते हैं ने कहाँ कार्यं कार्य है —से एक अस्ता इस लोकाने परानेकार्य सामेका काम कार्य है—से एक मार्गे पूर्ण सुनाइने।

विकास मेरे-एकम्। इस विकास मा पुरास इतिहास मसित् है। एक बार पान केनावे मानि पृतु कैलासके विकास की थे। उन्हें रेसावर उनमें प्राह्मण पुनिने महे अब विका। तम पृत्यों केने, 'पूर्व ! मार्टिकोड़े सुननेमें ऐसा आचा है कि सारणाने एक माना हैन था। मा मारि-स्तासे रहित, जनेश और अवक-अवन था। मा 'सम्बद्ध' नामसे प्रसिद्ध तथा प्रकार, अवक और अविनाधी था। स्तासे सम्बद्धीय काली होती है और वालेना प्रकार में सीन होते हैं। अस स्वयम् प्रकार केने पहले एक देखेला दिन कम्याची राजा भी। उससे मेदकामा सामधी अवकि हों। यह 'स्वयंवार' नामसे भी अस्ति है और सम्बद्ध पुर्वेचा साम्य एक उनकी स्वय कारेनात है। है



को पड़ा महत्रपूर हैं, इनका काराविक सक्य भी वह सहार ही है। वर्णट स्थापी समिवनों हैं, पृत्वी स्थापत मेर्ट और मोश है, संस्कृत स्थित है, आकाश जार है, यक्षन खान है, अधि तेस है, निर्मा नामियाँ हैं, जन्मन उत्तेर सूर्य नेम हैं, जन्मम सिर है, मुख्यों पैर है और दिशा शुक्रमों हैं। इस अधिनम पुरानको जानना सिन्होंके सिन्ने भी खांतिन है। यह सम्बद्ध शुक्रेका सिन्हा है और 'जन्म' सम्बद्ध स्थाप मंदिन है से इसे नहीं आपन और असामांगी है। मिनके किस मंदिन है से इसे नहीं मान सम्बद्धि।

सरहायने नूक---करकात् ! आकावा, दिवा, पृथ्वी और बायुका विश्वना-कियम परिवास है—या बावकर नेव संदेह हुर बोधियो ।

मृत्यूनी स्थान—पुनिवर | सह अस्त्राह्म स्ट्रे अन्तर है। इसमें अनेको सिर और वेजालोप निकार करते हैं। इसीने इनके लेका भी है। यह यहा है एक्लीय है तक हरक विद्यार है कि को प्रस्त अस है जो देखने के। प्रस वानेवालोको प्रकारक गाँव कन्नाम और सूर्व गाँ दिशाओ कें। वहाँ अधिके समान तेताको केवल कर्च अपने प्रवासके ही अवस्थित रहते हैं, जिल्ह ने केनली नहारता भी हर। अवस्थान अन्य नहीं या सम्बोत कहेंग्रिय का उपना और हुर्गम है। आवरण हो नहीं, अपि, वस्यु और जलका परिचाल fried if humaite first present it is merp विश्वित प्रास्तोंने तिरनेकी और स्ट्यूडोके परिवालोके विकाल से एक कहा भी है, वरंतु को इदिले वरे है और विशासक इत्तिकोच्ये भी पहुँच नहीं है, उस परमाणकार परिचान कोई बैतरे क्रार्थणा 7 अस्तिहर, इन निरम्न और क्रेक्सक्रेसके चर्क भी हो परिनेत है है; उत: परवासरका 'अन्तर' का अने गुरुके अनुकार ही है।

पदायने दूसां—पृत्तितर । स्वेताने ये पाँच सामू है 'माप्तापूर' स्थानको हैं, निन्ते स्थानने दृष्टिके अवस्थाने तथा स्थानको स्थान और मिनारे ये साथ स्थेक स्थान है। चांतु स्थानकोने यो और ही हुआएँ प्रतिको रकता को है, किर हुन्हिको 'कून' स्थानक सार्थिका पुणिस्तीनत है ?

पृत्य गेरे—को । वे पांची असीन है, इस्तीको इन्हें 'महा' बाहा जाता है और इन्होंसे समस्त सहस चूर्नाको अविध है है। मनुष्यका प्रश्तेर भी इन पांच चूर्नाका है संस्तात है। इसने को पति है जा प्रकार पांच है, स्टेश्स्थपक आवश्यका अंग है, जन्म अधिका अंग है, स्टेश्स्थपक आवश्यका अंग है, जन्म अधिका अंग है, स्टेश्स्थपक व्यवका कार्य मार्गेक अंग है और हुई-चंग आहे संस्त प्रदर्भ पूर्णाके अंग है। इस प्रवार स्वायर-जहान स्वया जन्म, इन पांच पूर्णाके हैं बना है तथा ओग, प्राय, सरना, तथा और नेतसंद्राक इन्हिन्हें of palls of their \$1

नवानमें पूज-जनवन् ! साथ करते हैं कि समाव स्थान-ज्यान इन पाँच व्याध्यांकों है को है, जिल्लु सामांके इसेंग्रेंने के ये पांची साथ देखे नहीं जाते। वृक्षेत्रकों ही स्थानिक-चे न सुनते हैं, न देखते हैं, न गया और रसका है अनुसाव करते हैं और न उन्हें स्वर्तका ही साम है। किन वे व्याध्याविक कैसे कहे का समावते हैं ? उनमें न तो समाव देखा बाता है, न अधिका अंग्र है और न पूज्यों का वायुक्त काम है नेवा कात है साथ अध्यास्त्रका को पोई प्रधान हो नहीं है। इस्तीरचे उन्हें चीनिक नहीं बाहा का समाता। वृक्षा कोरे-नहीं है कहा कारणि कोई कम पहते हैं, तो

भी जरने साम्बद्ध जनकृत है। इसीसे काले निरमाती कार-कार्यांक्री अधीर सम्बद्ध हे सबाते हैं। उनके अंदर के क्या है करिये वर्गड परे, कारा, पास और एक कुमारते है क्या है एक कुरावते और प्राप्त करे हैं, प्रथमें अपने एक्ट्री को क्षेत्र हिन्दु केला है। यह की देशा सामा है कि विकासीकी काक आहे भीवन क्रम होनेना दहाँके कल-दूरत गिर सते te meine mer ib ebilbreit if der fie sen: Rea. होता है कि यह सुन्ते भी है। देखे, क्या देखके पारी ओरले राजेकी काराबी और बाली है; बिना देखे विस्तीकी अपने अनेका पार्ग की नितः सकता । इससे सिख होता है कि कुछ देखी की है। सुकार और दुर्वदाने करा चालि-मानिकारे कुछ होनेसे कुछ नी सेम होने हैं और उनमें कुल का असे हैं। इससे प्रस्का क्षेत्रका भी विन्दू क्षेत्रा है। क्षत्रीने रक्षनेत्रिक की है; क्योंकि के अपनी बढ़ते कर पीते हैं और कोई केन होनेवर कहते कोचीर इस्त्यान अन्ती विकित्सः भी की कारी है। जिस अकार पतुष्य कारणनारके द्वारा श्रीको जल परिको है ज़री जन्मर कुछ कानुकी स्कूकराओं अपने प्रत् (बढ़) हमा बल की है। इसीसे उन्हें 'पाइव' बड़ा बाता है। क्कोर्ने सुरू-दुः रूका भी हान देखा कता है तथा से कारनेपर बिन का आते हैं, इससे सिद्ध होता है वे जीववृत्त हैं, असेता-नहीं है। से अपनी नालेंद्र क्षण को सार प्रतिको है, अने उनके शंदर खनेवाले बाब और अधि प्रवाले हैं। इस प्रवाल माहरका परिकाद होनेसे उनमें कियानहरू जाती है और वे क्को है। बहुमोके प्रराप्ते भी भीत पूर रहते हैं, मिलू उनके क्रकारों नेंद्र कारा है। करीरमें सामा, मोस, अस्ति, मना और काम्-मे यांच कराई प्रभोजन है, तेज, उर्देश, बाह्र, क्रमा और बठएका—ने प्रोप संक्रियन है; क्रोप, प्रापा, पुरा, क्रम और कर-मे पीच आवरतके अंत्र हैं: कप्त, विक, क्रोड, करवी और उक्रिर—ने पाँच करवेब अंस है तका प्राण, अपान, बहुन, सम्मद और स्थान—ने प्रांध कानुके विकार हैं। प्राणके हाल प्रमुख एक स्थानले कृते स्थानकर बता। है, ब्यानले व्याप्त्यंक होनेवाले कार्य करता है, अध्यन इसिएं क्यानले स्थानको और बाला है, स्थान हरूवाने विवार है और अहानो स्थान क्याबाल केंद्रा स्था कव्य-कार्यादि स्थानकेंद्रले क्याबेशास्य करता है। इस अकार से चीच कार्य प्राणक क्रियासिस विधानिक सिम्माई करारे हैं।

हैं । हाम, सेमं, स्कूल, चौन्डोना, गोल, समेद, बाला, स्वतंत्र, बेला, फेला, अस्म, करोर, फिक्रम, श्लाप, विका, गृह और काम-ने सोरम अधर काके हैं। क्रम और सर्व---ने से पुण कर्नने हैं। कर्नन प्रकार कुछ तरहें है और अस्ट्रे अनेको ज्ञाल है। ज्ञा, प्रोत, सुरस, सुरस, विकार निवाद, कुमार, गृह, कमा, इसका, मारी और असिका करी—ने राजेंक बाद के हैं। आक्राक्का कृतका तुन क्रम्थ ही है। यह कई स्थापका है। प्रधानतथा उसके सात के 8—कहा, प्राप्त, मान्यर, मान्यर, माह्य, केवा और निवार । अपने व्यापकारको हो सबद सर्वत है, सिह् निकेनकारके इसकी क्यानीय परवदे आहिने होती है। प्रदक्त. केरी, प्राप्त, केन और रक्तार्थ परकरक्ता आदिने को पुरू प्राप्त कुम काम है तथा और भी यह-नेवन आहेके प्रय निवाने प्रकारका कृष्य होता है, यह इन सात बेटोके ही अचर्रात है। प्रम प्राच्या आव्याप्राच्यांच्य प्राच्यांक अनेवारे चेत्र है और सह कर्षे पुरु सर्वते विस्तार हो सुन पता 🛊 । करा,श्रीत और सन्—वे तीन शक क्रिक्तीयोंने सर्वत जावत् रहते हैं, ने ही क्रार्टनोंट कुछ है और सामीने ओस्त्रोत क्षेत्रण करीएने

## जीवकी नित्यता और सत्ताका वर्णन; चारों वर्णोंकी उत्पत्ति तथा उनके कर्म

निया पास है अस्तर को स्वयं है। मुन्तू पुत्र पा रिया पास है अस्तर को स्वयं है। मुन्तू पुत्र पा रिया पास है। की पालेकार पूर्व का देवे, को प्रश् पासा है। की पा में पालेकार पर पास है, किर पा में किसे गोरंगी ? इसके दिया में और साम्या पान करने और सेनेवास—ने दीनों पाई पा होते देवे पाते हैं। किर इसका सम्पास कैसे होता होगा ? इसके को पास है, को पा से पाने या पाते हैं पा पा पर्वतरे विस्तर पूर-पूर हो कात है आसा जागने परावार पास हो कात है। ऐसी समस्ताने अस्तर पुत्र: पीलिंग होना से सम्मा है पार्ट है ? क्लेकि को पर पाता है पा से सामने किसे ही पास नाम है।

पुरुष चेले—नरहाव ! सीववा क्या अस्के किने हुए कुन का कर्मका कर्मा करता नहीं होता । जीव को क्या कावा कुरि करियों करता नाता है, नाता को केवल उसके इस करियक है होता है।

नाहानने पूरा—चुनियर ! सन वह बाहनेकी कृष्ण भौतिये कि देहवारियोके करोरोमें नहीं केवार अति, कन्, मुख्यी, आबाह और सार-कार ही विकास है, दो उसने

#### : चारो वर्णाकी उत्पत्ति तथा उनके कमें चित्रको जीवल का सक्य है? इरीरको जीर-क

क्रिकेले जीवका क्या करूप है ? प्रारीरको और-काक्सर देशनेको को उसने मोर्च नीय उपलब्ध नहीं होता, ऐसी बुलाने की प्रकृषितिक देवको पीयले रहित यह पान रेल्स पान हे त्रव क्रेक है कि प्रति अवना क्यों क्रेक क्रेनेक अले ्रायक अनुभव क्षेत्र करता है ? और दिलीको कड़ी हो कारोंको कारोंसे समार है. बिज मनमें ब्याला हो तो दोनों कार पहले होरेकर भी कोई कार नहीं सुन्तरी हेती; इस्तरिकी वनके अधिरिक विजयी जीवादी राजा मानना व्यार्थ है। नेताके राज्य करका संबोग होनेका है कोई भी इस दान हरकारी रेक्ट है, मन्द्रे मानुस हेनेया से यह रेक्ट्र भी नहीं देश कता । इसी जकर नीवरे पक्ष हुआ प्राणी समूर्ण इन्द्रिकेके क्ये कर भी न देखता है, य देखता है, न सुनता है और न केरका ही है। राज़ी और सरकार की क्ये अनुस्था नहीं होता । अवः निकास होती है कि इस प्रशेष्ये कीन इर्च और होध बनता है ? मिले क्षेत्र एवं ब्हेंग क्षेत्र है ? इका, बहन, हेव और कारणीत करनेकारम क्रीम है ?

हर्जुकी करू—पूने ! यन यी पश्चपूरीके **है अस्तर्गत** है, सर्वेश्वे उसकी कोई अधिरिक्त तथा की है। स्वस्त्रक

कारतरम्य ही इस बेहुका संस्थातन करता है। बही कर, रस. क्या, रुपर्य और सम्बद्धा क्या कृतने-कृतने मुख्येका की अनुकार कानेवास्य है। यह पाँचाँ इतिस्थेके पुर्नोको बारल करनेवारे मन्त्रा प्रक्र है और नहीं इस प्राह्मनेतिक देखेंड प्रकेट क्रवच्यमें काम क्रेकर सुरत-दुःस्तक अनुसार करता है । क्रम सरकार सरीरके राज राजान नहीं करा से का केकी पुरा-पु:सका पान नहीं होता। (हारते मनके महिरीहा हारहे प्रताही अक्टराबरी सरह प्रवट: दिख्य हो बाली है।) बाब स्वाधिरणें चिता अधिकारण शताब इससे एक्या हो बाता है, जा सकर करिल्को स्था, सर्वा क्रम अक्तको नामिक प्रान को स्वास और इसकी मृत्यु हो बाती है। अस्तर बार प्रकृतिके मुख्येने पुरू होता है से को क्षेत्र काते हैं और कही कुछैने कर का कुछ है बारा है से बरमान बहुतार है। क्षेत्रको हुए अस्त है सम्बों । यह समार्थें कोका को हुए का निकासी करा हुए क्रारियो प्राचार भी क्राले प्राच्छ के हैं। अलोह अलो सामूर्त मनारका कामान होता है। यह सबसे बेहर क्रांक और काम है। देवते पर हो प्रत्येक भी प्रीत्यत पात पाति होता। यो प्रीक्ष्मी पृत्यु कारको है, ये अपूर्ण है और प्रत्या यह स्वयूत मिक्स है। जीव से पन क्रिका जान करके कुले कुछैरने चारर माना है । सरीतका नाम हो नाम है ।

इस प्रकार जान्या राजूनों प्रतिनमेंचे चीनर क्रिया हुआ है। अधिकारों जान्याची क्षेत्रेक चारण यह प्रमाहते गृही करना। तरनावर्धी क्ष्मण है अपनी तीव अंग पुन्न कृतिके करना। तरनावर्धी क्ष्मण है। यो निवाद परिनेश अध्यान करने राज्ये पहले और विवाद कृति क्षाण व्यापनेत्रका अध्यान करना है, जा विश्व कृति होनेशर अपने व्यापनेत्रका कृति के जान्या अस्ताना कृति कर देशा है। अस्तानारण पृद्ध के जान्या अस्ताना कृत्य अस्तान्यकारों विवाद क्षेत्रर व्यापन व्यापनाव अनुसार कारण है।

व्यागांने स्थिते जारणार्थं अपने रेजारे सूर्व और साविके स्थान क्रमानित होनेकाले व्यागां—नार्वित सावन्यून क्रमानिकोंको ही स्थान किया। किर कार्य-प्रतिके सावन्यून स्थान, वर्ण, स्था, सन्यान केंद्र, सावाल और सुर्वेको निका क्षमाने। स्थानपर देवारा, क्षना, क्ष्मार्थं, हैया, असूर, बंदान्यं, सर्ग, व्या, व्यापा, नाग, विस्ताय और स्यूव्योको क्षमा क्षित्र । सन्यानेके चार वर्ण--व्याक्षाय, अस्य, कैर्या स्था क्षमान विस्तान किया स्था हसी प्रवास अभियोकों को और-और वर्ण है, स्थाने भी स्थान की । व्याप्योक्षा क्ष्म क्षमा, व्याप्योक्षा स्थान, वैद्योका पीरम स्था पुर्वेका क्षमा क्ष्माया । क्यानों पूज-मुनियर है इसमेरे काले-मेरे सभी बहुन्योग सम्बन्धाने काल, कोच, पान, खोच, घोच, विका, पूज और क्यान्यटका प्रधान पहला है। समीचे क्रोनों काले-व, बार, यूप, काल, विता और रक निकारते हैं। ऐसी कालों पंचव क्या केले क्यां-विकास विका का सम्बन्ध है? वृक्ष आणि क्यान्यों एक व्यक्त-व्यक्ति आणि स्मूच प्राणियोंने आनेका कालियों है; उनके रंग वी-सना प्रकारके हैं; अतः उनके

*्राकी व्य*—क्ले क्लेंसे कोई अन्तर की था। व्यक्तिके प्राप्त केरिके प्राप्त एका संस्था प्राप्त है था। केंद्रे विक्रिया करोड़ि कारण अली करियेद्र हो गया । यो कारो व्यक्तिक क्रांच्य क्रीव्यम क्रांच्य विकासीयोह हेती वर को, जीयो और सोची प्रत्यकोर हो गये, साहरतहर बहल परांद करने रूने और इन करकोंने किन्छे करिका रेग सक है। क्या, में अनुस्थ 'अभिय' में मानते प्रतिद्ध हरू। विन्होंने नैकोची केवा है जनने पति पना तो, को पंतीने मीरिका पानको पानम गीने पर गये और अपने प्राप्तन-वर्गको छोड केंद्र, जब क्रिकेटों 'नेपार' बाह्य करने सरका को बर्जन और राज्याको प्रश्न क्षेत्रक क्षित्र और अस्तरको केनी हो गये और रोजनक तथ प्रश्नों कान करके बीचिका करको हुए कही का गर्ने, से पार सक्तानो । इस जन्मा से बार वर्ण हुए । जो अक्षण केवारी अवस्थित अनुस्थर भारते और स्वय ही केंद्र, प्रश क्या निकारिको व्यस्त किने सुने हैं, इसकी सराव्य कारी स्था भी होती। यो इस स्टीको पर्यक्रमका नहीं जानो, से दिस कारण केंद्र सार्थिकारी नहीं है। ऐसे लोगोंको गाना प्रधारकी केरिकोचे क्या रेगा काम है। वे प्राप-विद्वालये हीन पूर्व क्षेत्रकारी विकास, राज्या, हेत क्या मोन्स होते हैं। प्रीकेट व्यक्तियोंने सामने कारणके मांगते कुछ ऐसी प्रसा अवन धी, को वैक्षिक संस्थारोसे सम्बन्ध एका अवने धर्व-धर्मने कुलावुर्वक जर्म पानेपाली को । पिछा को आधिक प्रकारों जनस को है, निराम्बी यह—पूरा प्रकारी है है और को अञ्चल, अस्पन हक क्यों कर क्लेक्स है, ध्रः सुद्धे मन्त्री प्रक्राती है।

क्छनको पूज-विकास । तम पुत्री का कालने कि कौन-क कर्न करनेते करून तकान, शरील, वेरून अध्यक्ष पुर होता है ?

नुपूर्ण कार—को कारकार्य आहे संस्थारोसे सम्बद्ध, परित्र क्या केट्रोड कारकार्य संस्था है, (पान-कारन, सम्बद्ध-सम्बद्धन और दान-प्रतिष्य्—का) कः कार्योर्ड विका दावा है, और एवं स्थापनंत्रत पासन तथा प्रतिद्ध सम्बद्धा कोनन करता है, मुख्ये और केन रहता और दिख

शबके प्रति कोपल काम रखना, लागा, क्या और तम आहे: सर्ह्यन देशे नहीं हो, का अक्षान कहा एक है। के पूछ आदि कर्म करता और केंद्रेचे अध्यक्तने समा क्रम है. प्राथमिको कन देश और जारचे यह संयह उपयो शह बारता है, सरको अधिक बाले हैं। इसी प्रकार जो कैंद्रकारको सन्दर्भ होकर कार्कर, यह कारण और संबोधे मान करता है तक कर देश और परित सुता है, का केल क्याला है। बिंह के के और संबद्धालका परिवास करते. सक् ५० भाग और सन उपक्रे कान करता है उस सक सर्वात का करता है, का का कर कर है।

मदि में इन्द्राओबन सत्त्वदि गुल ब्ह्नारे दिवाची है और महाभागे र हो से पर पह पह पति और पर सहाय सहार मही है। हर एक करायों औप और स्रोक्सो क्रम्ब है परिवर हार और आस्तरिक है। होय एक स्पेप पहुनके भागानों तह है राज ग्रेसनेसे साथ रहे हैं, आ: पूर्व स्त्रीय राजाबर कावा कुरर करण काविते । क्रोको 🖟 क्रावरक राज्य है ।

निवर्गोका पारम करता है; जिसमें साथ, बान, बोब न करता, है लीको, पारकांगी सरको, बान-अवसानको जिल्लाको और Stuff Madail Study Replik und und unmadife क्ष्ममें और हेरे हैं एक किसने स्वत्यों आपमें सब कह क्षेत्र रिव्य है, बढ़ी लागे और सुदिल्लप है। विस्ती पी अन्त्रेकी दिला प करे, समझे साथ नैनीएकं वर्ताव करे. को-पुत्र आहियो परात एवं आस्तिको त्यान पर सुद्धिके हर। इन्तियोधी कार्न को और का विक्रीओ हाए करे, थे प्राच्चेक और पराचेकरों भी विभीव राज्य कोक्टरीस है। विक का करे, बननहील होका का और हरिएक्स संबंध करे. आयोजिक क्षात्रपत्ता केन्द्रि व्यक्ति जातक व क्षेत्रर परमालको प्रका करनेको इच्छा एके। जनको प्राप्तने अहर अन्यको प्रकृषे स्थापिक प्रते । वैदानको क्री निर्माण (भीका) प्रदा होना है, को पायर किसी सम्बारमहर्गक विमान नहीं क्षेत्र । प्रकृष संसारते पर्यक्रम होनेक स्वयद्ध प्रकारमध्ये अन्याका है कह का रेक है। सांह कीर और स्कूबार्यन करन करन ३४४ कनूने अधिनोधर क्या रक्ता-न्य

## सत्यकी महिमा, असत्यके दोष, दान आदिके फल और आक्रमधर्मीका वर्णन

राज ही प्रमानने सुन्नि काल है, साओं ही अक्टाएट संस्तर है किया हुआ है और सरकों ही पतुष्य वर्ण प्राप्त करता है। arters attentions um f. up fich Prour fit असन्यन्यकारो विरे हुए ग्यून्य प्रमान प्रथम नहीं हेता पारे । को स्वर है भ्यों वर्ग है, जो वर्ग है जो जवरह (304) है और के जनता है नहीं कुछ है। इस्ते प्रधार को अवस्थ है मही जनमें है, जो असमें है पड़े अल्बार (अपूर्ण) है और को अन्यवसर है को द्वारत है। संस्तरको हुई। क्रारेशिक और माजीतक दुःशोरी परी इहें हैं, इसमें तुःश की वे ही हैं, को परिवासमें दुःस केरेवाले हैं। यह सांस्कार विकार प्रका कवी मेशों जी को । प्रतेक वृद्धितरुक का कर्मन है कि क इ:सोंसे क्टबारा पानेका उद्योग करे।

असरमा सन (अक्रम) की उत्पत्ति क्षाँ है, क्लेक्स प्रमुख अवस्थि ही पीछे चरते हैं, वर्धका अनुसरक पहें करते; अतः यो कोण, त्येण, विवा और अस्वय काहिते आकारित है, में न तो इस स्वेकनें सुनी होते हैं और न भएलोकमें ही सुक्त उठाने हैं। नाना प्रकारके केन, व्यक्ति और क्रमो संत्रा होते खरे हैं, यन और बन्धन आदिहे केंद्र सहते 🕯 तथा भूग-म्या और परिवयके कारण थी कह घोषते ै ।

मुख्ये करते हैं—युके 1 साम है सक्त है, साम है कर है, है हक्त है नहीं, को अंबी, धारी, सहीं और पार्गीरे करता हुए पान काम प्रातीतिक पाइ भी होताने पहले हैं। प्राप्त-कामकोची me, und um afte belleable flegigle meer gibure कारीन्य क्षेत्रका भी कियार क्षेत्र पहल है। इसी प्रवार के नव और कुनुके कारण भी कहा-से कुरी-कृती हेन भोगते with the

> म्हान्ते पुर-मुनेका । सुन, वर्ष, स्थ, साध्यक और अधिकेका कर कर है ?

> कुरुवीने <del>बार्क्स का विद्योगको पान नह होता है, का व्यापको</del> कान पार्टिस निरुक्ती है, सनमें भोगोची और सक्ते सर्गाधी अधि क्षेत्री है।

> उनके अपने-अपने वर्ष क्या है? यह सामनेती क्रमा rather i

> कुर्जने का—कर्मात कार्यक कार्यक्ते प्रशस्त्र ब्युजनीने वर्गकी दक्षके विको पूर्वकारको ही बार जातानीका उन्हेंत्र किया या । उनमेरे प्रक्रमांको पहला जातन करते हैं. विसमें दिन्यको नुसके वहाँ खुक्त बेहोका साध्यक्ष करना पर्वत है। इसमें क्रिकोर सहकारिको बहुत-मीतरको स्थित वैदिक शंकार क्या का और निषमीके पातनसे अपने चनको

कारों रक्षण करिये । सुबद और काम—सेचें काम संस्था, । आसू करनेरे निकर, कारोंके काम, अध्यास और कारमहे सर्वेतरका तक अधिकेचे एक अधिककी उपलब्ध मानी पारिये । एका और सारासको साम पानो प्रतिनित मुख्यो प्रचल परे, पेट्रोच्य अलग्यन प्रचा आहे. अर्थव्य अभ्यास करता हो। इस प्रधानको क्रिक्टबंके अन्ते अन्तः-करकारे परित्र करते। सार्थे, क्रम और क्षेत्रा-कीचे यह कर करे। स्वापनंत्र काल एक और और पानी सेवा बारे, अतिहित निक्का परिवाद रहते और वह सब पूछती अर्थन पर है। अन्ते अनुस्थान से पूर्ण प्राप्ति विकास किये हो। गुरुवी को प्रकारकों, विराधि होनी प्रवेश करें और जिस कार्यने निरिष्य पहल समझ है, अरके विरुद्धित शास्त्रण न करे। इस जकर कुमके स्थय सन्दे स्थयों man anners were further improved sea होना वाहिने । इस विकासे एक सनेक है (विकास कार इस प्रभार है—) 'से हिन पुरसी सारमध्य करते नेक्क प्रम प्राप्त परस्य है, उसे अन्तर्ने सर्वन्त्री प्राप्ति होती है और उसका terribes there fire the first

'नर्क्षक्व' को कृत्या जातक नक्तकक काम है । अब हुन कार्य हरा पाल करने केना आवरलेको जानक करते हैं। या राज्याच्या पारत करोनात प्रकारी विक गुजर Torquel what made of my it als torque पंचारके प्राप्त पायक से कर, का सका की को पार्कि प्राप्त प्राप्त कर्मक शायरण करने क्या कुर्वाहरू कर करेगी हुआ है से साथ दिने पुरस्कारणे अधिक विकास के प्राथमिक प्रकृति कर्ता, अन्त्र्य और प्रकृत क्रीकीकी प्रातीत होती है। इस्तीओं विकान-सामान्यी प्रकारी प्रकारको जन्म कारी हुए सा-संबद्ध करना काहिने और अधिक हुए। अन्यो Michael Profe sprat malphy sprat-stant strik सामनीका पुरू कार्यका है। पुरुष्ठाओं वास कार्यकारे महाचारी, पाने सुमार संकारके अनुसार हात, नियम प्रका क्रमेंक पाल क्रमेको क्रमानी और एक पुरू प्राथक विकारिको संवासीको यो गुरुकारको हो विका स्वर्धको महि। होती है। सार्व्य या कि साथ यह सारावालीक निर्माद गुरुवारामको ही होन्छ है। गुरुवहार विभी स्क्रोपकी अविक-सामार्थ के मांगा कु विभाग के कार नीति। प्रश्न प्रकार है—) 'किस प्रमुखके सरकारेड़े कोई अधिक विकास प्रामेशे कारण निराम क्षेत्रर और जात है, यह उस गुरुवको हो अस्पर पाप है जातता है और सार्व जाना पुरूप रेकर करा करा है।'

काले रिवा, गुहाकारपरे गुवार का कालेरी केवल,

वर्षि क्या रंगान क्या कारेने संवासी प्रशा होते हैं। प्राचने पर्यक्ते विकास से स्टोब्ट और है. (विकास करण हर उच्छा है—) 'काचे ऐसे केराने काहेंचे, विकास करा अभिनामिक अपि पोट पाट हो सभा को सुनके सुनक क्रानेको पीठी राने। क्रातेको पीक्ष केन, मारण पा प्राथम प्राप्त अक्त भी है। विक्रीक अवस्थ परन, आंक्षण रक्षण और केंग दिसाना—पर पातेची बाह्री निष्क को नहीं है। किही में बोक्सो हैसार करता, पान बेसम और पाने होता न होने केया—के वाची अवस्थानकोंके रिनी क्योंने का है। कि एक्सो प्रकारने पर करें, अर्थ और व्यापके पुर्वाची सिद्धि होती सुत्री है, व्या हुए स्वेक्से पुरावा अपूर्ण कर्ता अपने विद्य पुरावेको परिको प्राप्त **THE R. P.** 

केल्प स्थान है कालन। इसमें क्लेक्से महत्त क्षेत्र अनुसरम् और काम अनुसर् करते हुए परित shalft, rabable flood, proble sem-une was que, केंद्र, कुलर, कोले इस्त्री और विक्-मान आहे प्रस्ताति भी हर एकमा कोचे निवासे को है। मुख्योंक कारोनों अने केन सुन्त पत्र, साहित केवन और विनवकेनीका परिवार करों में पंचारे औरत, कर, कुर करा प्रतिवा सकत करते हैं, यह की सब्दा केंग्रे करते और निर्मालकार एक है कर सामार को है। निर्मा समानर ही अस्तर विद्यालय केंद्रों है। कर्मण, पासर, ऐसी, संकारीओं निहर, बाह्य अन्यक क्याना कोते हैं। कात के कुलाबी रहते. परवर्ण अपना वेदोची प्रताने तरान प्रतीर वैपते है। मिरनेट बारा, प्राप्ती-प्रेक्त, पाक और पेल बाहरी पाते हैं। निका प्राथमार पान, चरिन्दैकोन प्रथा अधिकोन आहे. क्वीक अञ्चल कर्ता है। क्वीर इस्त-क्वाचे तिये चरित्रा, कुछ और कुछ आदिया संख्य करके आसमाने क्रम-पार नेनेचे पार विकास करते हैं। सर्ट, नहीं, क्यां और प्रकार केन स्थाने-स्थाने उनके इसीओ कमड़े कर को है। यस प्रधाने निकास सर्वाप को कोसे beit ein alle die gen und f. gebeil ung werb bill of officer shows to then it for the केर्व कारण करके साराज सकारके कारण प्रतिस्को जरावने को है। यो पूर्ण निवको सम स्वयन व्यवस्थिता अकरको साथै हाँ इस योगकांध्य अञ्चान करता है, यह अधिको भीते अपने केचेको एक करके कृति स्वेकोको

(चीमा असरा है—इस) में अनेच करनेकारे प्रस अरियोग, धर, को जादि परिवार क्या करती रहते सामग्रेक साथ करके विकासकिये कराउने केन्द्रार बरसे निकल बाते हैं। केरे, कावर और क्रेनेको प्रकार सन्दर्भ है, वर्ग, अर्थ और सम्बंध रोजनों जनमें बुद्धि नहीं पैशाने । पार्, मिल क्या क्यानेन-सम्बंध प्रति सम्बन्ध प्रति रक्तो है। कावर, अच्चन, विच्चन, केवन और उद्देशक प्राणिकोचे प्रती पर, पान्ये सचक करेंगे को कथी हो। जो करते । युटी मा यह यसकर गृही युद्धे । अने व्यक्ति के पहले और विकास में और शर्म कार्यने हिन्दे करेन्द्री पूछा, मध्या विकास, पहाची यह, देवलीहर, यह अवस्य कर साहि कारोंने को क्या को । करने बीच का और कोसेने कुल राज्यो अभिन्य न रहे । जन्म-कारण बहनेके हैंको चीव बह मन्त्रों अंक करें: असे विक्रंट करोंक पान करोको क्षितारिकोडे करोरर कावन करे हे कार्य : किया और है | वेरेकर करन कर्वाक अस्तुको विज्ञानीरपुर्व होवार क्रावी पानमें किन्मी निकार का जान, जानी ही सोकार करें। कान, ... पूछन विकास

्यम संस्थातिकोचा अञ्चलक प्रमाणक काला है। संस्थात | स्रोध, क्ष्मी, स्रोध, चोत्र, कुरमाता, कुल, किन्नु, अधिकाल क्या देशा आधिने सः स्टेन

> हर विकास का प्रयोग हैं. (विनये पान इस प्रयास 는) 'यो जुनै राज प्राणियोची सम्बद्धार देवार विकास का है, को नहीं किसी भी गीवसे पर नहीं होता। को आविक्रेसको अपने प्राप्तिने आधिना प्रत्ये प्राप्तिका आक्रिके बोरको भूरते विकास प्रतिकार क्षेत्र पासक है, का अधिकेतिकोची जार क्षेत्रेयको स्टेकोरी पहल है। यो परिवर्ध संवयनगीत करके परित होकर सामीत विकिन्ने अनुसार संन्यालेड निक्योपा पालन वाला है, ४६ क्रम प्राप्त कोरियंत प्रकृतिकारी प्राप्त है।" इस प्रकार केवर प्रक्रियोश काल-क्लेक की संक्षेत्रके प्रकेत किया है। यो पहल होनाने वर्ग-स्वर्णनो सारता है, यह

> बीनवी वहते हैं-वहति कुनुसीते हते जनार केलेहर

## आचारकी विश्वि और अध्यासमानका वर्णन

पुर्विते प्रान्तकार्थ । तक वे आक्षेत्र कुलो कार्याची विधि कुरत प्रकृत है क्वेटि अन् एक्ट्रे हैं। बीनाओं प्रश्-न्यनुकाले स्ट्राप्टर, गीओंक्रे बीको और अपने फैलेरे होनों गोलों यह कुछ पड़ी करण करिये । अन्यस्यक श्रीम असीहो निवन क्रेकर कुरवर करनेके प्रकार नकी कर करन कहिये। इसके कह (संब्येयसम्ब और) देखत-निवरंका स्थेत करन आनरमध्य है। प्रतिक कुर्वेन्स्वर करें। कुर्वेन्स्वेड समय क्यों न संबे । सब्दे और प्रतः —वेनी सबब संबद्ध करते गांकीका कर करे। केने कर, केने कर और क्रि-कर पीय सहीयो केवल पूर्वकी ओर कि कर चेवल करने कैंडे । प्रोक्को स्वय की से । प्रीक्षको रीजो प्रकेरी हुए सावकी निया न करें, को स्थित मानकर प्रेमते खेवन करें। मीजनके सार क्रम क्रोबर रहे । रहको नीने के व क्रोबे : देवर्ति करवर्ते इसीयदे आचार सहते हैं। यहस्तान साहै परित रकर, वैस, देखा, भोकाल, चौराह, प्रकार, सार्थिक मनुष्य तथा अधित्रको तथा अपने साहिते करके को । पर्प अविक्रियों, रोक्कों और यहन्येकांके विक्रे के एक-सा है मोबन कामान जान कर कर है। प्रकार मनुष्योंके लिये समेरे और साम-को ही यह भोजन करनेका

क्रिक्ट है। क्रीकों नहीं पहला वाहिये। देख करनेते करण क्रमानी माना भागा है। होत्तरे प्रमान स्रोतिने प्रमान और केवल तक्क-करणे जनम चीके साथ समागन सारी हुए एक स्थानित करण करनेकार क्षेत्रका प्रतास की प्रक्रमारी है क्या कर है। अक्रमंत्र सेवारी वर्ष हुआ (वहारिह) राज राजुर्गके कुन्य है; ऐसे राजको चीवन कारोकारे शाहका menter vermerab mer uft fie ab Reftit übb whom, firete abour afte which war waren weter & क्या को तक बड़े इक्त और बड़े कि का बतता है, असको भूते राज्य को निरम्ती ।

मनुष्य उन्हेंकर्ष हूं का पर्यक्रमें, अपने पहर आहे प्रद अमिनिको पूरा व सुने है। सीनिकाने रिन्ते मिने पूर् कार्यते को का आदि अस हो, को पता-विता आदि पुरुवनीयो निवेदन यन दे। पुरुवनीये अनेपर अर्थे सर्व असरन केवल बैठाने और एक अपनी प्रभाग किया करे। नुकारिक सम्बद्ध करोड़े अन्यु, यह और स्वयोकी प्राप्ति केवी है। सहकोर सभाव भूमीको न हेत्रों, नेनी हुई बराबी स्रोतिह कोर इंदि न करें और सब कर्यनुसर अनुस्तरके फ़ल्स रकान्य स्थानमें प्रतीके साथ सम्बन्ध को । परिवित प्रदूषको का-का मेर हो, अस्ता कुरूल-समामा पहे। अतिदिन मारे—ऐसी पारवादी अक्षा है। देशगनिवरणे, ग्रीअदेशे बीवापे,

महानंदि पहारे कारि, क्यांदे सामान्यस्थे और भीवन करते समय कविने क्रमते काम से। प्रक: और प्रथमके राज्य अञ्चलोचा विकित्तर् पूजर करे। इत्यवको प्राप्त, और आनेतर, कार और चेटनके क्या एक क्ष्मानसभे क्ष्मचे व्यक्ति कि अक्षमोक्ते असन वरे: इससे बालु बच्ची है। सूर्वकी अंद कुँड करके केहार न करें, अपनी विद्वारत होंद्रे न करें, क्षीने काव एक अवस्था क्षेत्र और एक करोने केवन काव क्षेत्र है। अलोई क्ष्मेंक्रे मान रोधर मा 'ह्' महाला न पुराते । अर्थको प्रोटे मा

मध्यक्तक पुरुषेका नाम लेकी क्षेत्र नहीं राजका।

पानिकोका कुछ हो उनके क्यांको का देश है; को होन पाल-मुक्तार किये वृद् पालको न्यूल्यानोते क्रियाने हैं, ये ज्य है को है। ये पूर्व है, वे है जन-पूजा रेको हुए जनहे दिनारे है। कारि गुरू का बन्दों भई देखों, से से केवल से देशने ही हैं र कार्य वर्तावका क्रियान हात कर हो पुष: पायमे ही सराता है और करीकामा करेत: गूह स्कृत हुआ वर्ग को पुन: कांग्रे के प्रश्ना सामा है। पूर्ण समुख पार करके को पूरा करन है, जिल्ला का कार्य सेवे ही सर्व यात है। बिजरी कारणाची पुरिदेश किये को उस संविध करते: रका केवा है, करको अपने अध्योतमें कुई करनेले बहु हैक होता है। कार सम्बन्धानमेंन देने कार्यी प्रशंक नहीं कर्या; क्योंकि मेरा पश्च की देवली (फाक्स पूर्व क्रे का अव्हरी, क्षण्यार कृत् हो ही जाती है) । क्षणेचे क्रम्बेक क्षण है है। सभी प्रातिकोचा वर्ष मानसिक्त है अर्थात करते दिया हु। को है पारतीय को है। उस करते कुछ सेखेल कारणाम सोकार थी। केवल वेदोन्ड विकिश्ता सङ्घर रोका अनेको ही वर्गका जानत्व करून कर्दिने । इसमें कुलेकी सहस्राची आवश्यका नहीं है। वर्ष है जुन्कोदी चेति है, वर्ग हो समेके केन्द्राजीका अपूर्व है। बर्माका महत्व करनेके पक्षाम् वानीः है बलते तथा सक् मोन्से है।

कृषियेले पुरा-विकास । सामाने पुरानो प्रियो से कामानामा क्षेत्रक माला स्था है, वह अस्ताह एक **\$**? ज्लाक भागर केता \$? व्या करण्य जन्म विकार करण हुना है और अलगढ़े समय विसमें सीन क्षेत्र है ?—चे को युरे कालेकी कुछ करे।

क्षेत्रकी का-कुर्वात्का । हुन जुली किल मजारकारके विकास कुछ के हो, सामी व्यवस करत है। व्ह अत्यत्त काम्यत्यकाचे और सुस्तकामा है। आधार्थीन

प्रतानक और संबक्ति सन्त अपनोची जन्म | सुद्धि और प्रतानक व्यवको सम्बद्धि क्षेत्र हो अध्यानकार क्ष्मीर विकास है। यहें बार हेन्से प्रमुख्यां जानसा और सराबी प्रक्रि होती है। यह सन्दर्भ गुलेके रिन्ने हेलकारी है, के को करता है, जाकी समूर्ण कामाई कृते हे करते हैं। १४वे, वाप, अस्थार, पार और अधि—मे प्रीय प्राप्ता क्ष्मणं प्रातिकांको काली और प्रात्मके स्थान है। मैसे स्थारे प्रकार प्रकट होयर बिर अपने औन हे कही है, जरी प्रकार वे और न्यून्य के किया सम्बद्धालय कार्यालयो अस्त हुए है. एक स्थाने और के पाते हैं। पान्य, बोल और संस्कृते हैंहर सामानके कार्य है: स्वर्ध, सामा और केंद्र-में हीन अपने: per, fin afte ufeum-it buit; vo. fiem afte ber मानके क्या नाम, नामिन्या और क्रांति पृथ्वीके गुरू है। इस जनार हम देवने पांच पहाचून क्या हका पन है। हरिसरी और मा—वे प्रीवर्ध क्रियोक अन करते हैं। इस कश्रे समितिक सामनी पृथ्वि और असकी क्षेत्र है। प्रीपूर्व विकासिको प्राप्त करती है, यह संस्थान-विकास करता है और पुनि सामा सेमानीय निक्रम करते है। क्षेत्रह (अल्ला) साम्रोको पानि दिन्स प्रता है। यह सरीको पीतर और स्थान सर्वत काहर है । पुरुषके अपनी हरियोक्ट परिश्वा करके करती पूरी व्यवसारी राजने काहेने; वर्तीक साथ, रतः और सम्-वे जीनो पूज प्रविक्रोच्या हो आसम्ब सेव्यर शुक्ते है। प्रमुख अपनी मुद्दिके करनी चीचोर्क अवसारकाड़ी कारण कारण की-की अध्य किया करो खोड़े पर क्रान्ति या साम है। यह चरावर जगह सुविक्ते काम हेनेपर ही क्या होना और समोद्र समावे साथ ही लीन हो पहला है। हर्माने हरूके स्थापन कहा परा है।

यक्ति ही जिल्लों क्रम देवाती है, को में कहते हैं; विहस्ते कुली है, जब ओप मज़लाता है और विकास सुंचती है, जरे क्रम कर क्रम है। की विद्याने क्रम सामा और समाने रनर्गका अनुभव करती है। कर प्रकार बद्धि में विकारको मन क्रेकर जन क्योंने निक्केची मान करते हैं। यह दिख हरते किसी विकास कार कहते हैं, का स्वीका सामार करण कर केवा है। विकासिक विकासिक प्रकृत करनेके रिनो को परिवाद परिवास है, उन्होंको परिवास होहर्ज काले हैं। युव्यापन् यूक्तकेको चाहिले कि से प्रतिकृतीको सहस्रो रजें। सका, एक और क्या—ने और पूरा सका ही प्राणिकोंने रिका रहते हैं और इसके खाला कार्ने सारिकार्त, राजसी तथा कारती कीन कामधी मुद्दि भी देशरोने अवसे है। पूर्व प्रस्तपुर्वा हुन, स्केपुर्वा दुःव और स्केपुर्वा और अवस nian to

वन सरीर का मनमें बिहरी प्रकारने भी प्रशासनक पता है. हो बदल हे, सुरू और सानिका अनुसब हे रह हे से क्रम्यपुर्वको वृद्धि क्रम्यानी व्यक्तिने । विस्त स्वयंत विस्ती कारकरे व किय कारव है असंबोध, श्रोक, श्रेकर, होफ और सरक्षणातिकार्क जान विकाली है से कई रखेनुको जिल्ल कानने व्यक्ति । इसी प्रकार कारणना, मोड, प्रकार, कार, मिल और असरक हेरी हो से उन्हें तमेनुकों, विकेश कर काही। मुद्धि और असारा—केमों सहय तथा है, तथायि हमों को अपन है, जरावर पूर्वट करते । इनमेरी मुद्दि के मुख्येकी मुख्ये करते हैं और आमा इन तब वालेंग्रे अलग चुना है। जैसे पुरस्का क्रम और असे पीतर खनेवाले कोई-मे देनों एक साथ पाले हुए भी एक-सुरागेने निया है, अभी प्रचार मुख्य और असना मरागर निर्दे हुए करीन होनेपर भी मरसायों आएन-आपन है। राज आदि पूरा राह होनेसे सारण अस्तराको गाँँ जानहे. सिन् आरम केरन है, इसरियो पुर्योको कारक है। की कोने एक इन्स क्षेत्रक पहेले हेरोंने अवन प्रकास केलाहर क्यूजीका प्राप्त करना है, जारे प्रथम परनाता वर्गारके जीतर विका क्रेकर बेहर और जनमें कुछ इतियों तथा का-ब्रॉडिंग हरर सन्दर्भ पदानीका ज्ञान करातः है । बहिद् गुलोको जनस करते है और आरंग केवल देवल है। पुरिद् और अवस्था पह सन्तर्भ सन्तरि है। को संस्तरी सामोर्थ का ब्रह्मक केवल :

न्याकाने ही सन्दर्भ रक्षता और स्थानतकार ही मनन करता है, जा तथ व्यक्तिका आस्या है काल है और इस सावनासे सम्बंध कहे स्थान की सास होती है।

बैसे बलमें विकानेकाल पंडी, उसमें रहकर भी पार्टीसे हैसा नहीं होता, उसी रहा उसी पूरत भी सन्पूर्व जानियोंने निर्विद्य क्षेत्रात विकास है। निर्वेद क्षेत्रा क्षेत्रा क्षेत्रा स्वाप्ता सकत हैं देख अकरी मुक्ति विक्रम करके प्रकृत कुना बहुनेवर स्रोक्तन को और सक निल्नेपर हुनेसे फुल न उठे । सब बीबोके प्रति समान पान रही । पैसे पैसे महत्वाले महत्व करते भई 💕 नहींने नक-बोक्स प्राप्त-संबंधे हो बाते हैं. उसी प्रस्तार इस क्रानकी नहींने क्रमणकुर करके चरित्र पुरुवाले पूरू भी कर का निक्षम् हे को है। यह निवृद्ध सम्बादकान है। यह न्तुन्य बुद्धिये चीवर्षेके आव्ययनस्था हुनै:-हुनै: विचार करहे इस करन अन्यको अस बार लेक हैं, और संस्था सब्ब विरक्ता है । के पर्व, अर्थ और कारको दीक-दीव, सम्बन्धर आक्र परिवार का पूजा है और चेंगपुत किसी जास्मारकी अनुसंस्थानो । एक पर्यक्ष है, अही तत्त्वदर्शी है । उसे कुरती चोड़ी क्य कारोबी सरकार नहीं होती । उस परकाराको सामस्य प्रार्थ एक अध्येको स्थानी कानी है। अग्रानियोको सिव रंगानके पहान कर करा रहता है, अरोधे हाविनोध्ये संविद्ध की

## स्यानयोगका वर्णन और जपकी महिमा बतानेके लिये एक जायक ब्राह्मणकी कथा

मीनवी महते हिं-कुली-स्वर | अस है कुलो सामयोगामा पर्यन सर द्वा है, विशे प्रश्नान पहाँदिनस् इस सोयाने समापन विशिक्षके उत्तर हुए हैं। योगियोग्डे साहित कि से साई-गर्मी आदि हुन्होंको सहन करते हुए देखे सम्बद्धित खोत, संतोष आदि निकर्णका प्रश्ना करते हुए देखे सम्बद्धित खान मारे, नहीं की आदित्य संसर्ग तथा स्थानियोग्डी समूदि व हो, साई करते पूर्णका प्राप्ति कर्नी हो । योगामा सम्बद्धा हुन्दिकोदो विषयोग्डी ओस्से समेट कर सम्बद्धी महित निकास होत्यर कैत साम और प्रश्ना प्रश्ना प्रस्के प्रशासको लग्न है। वह सम्बद्ध साम और प्रश्ना एकार प्रस्के प्रशासको लग्न है। वह सम्बद्ध साम है। समाप्ति कर्ना हो साम कि प्रश्नोर्थ कोई प्रस्कृ न सुनावी है, स्वारत पत्र हो साम कि प्रश्नोर्थ कर्नुकोवा पता न सहे। पत्रियो हम्मुगोग्डी कोहर इस्लोग्डी विषयोग्डी उत्तर

ही न हो । सुविक्रमन् योगी यहते इतिस्थोरचे मनमें दिवर करे, वित्र योगी इतिस्थोरचील मनको व्यानमें एकात करे ।

इस अवस अवस करनेते व्यक्ते से कुछ देखे तियें इन्डिम्मेसबीत कर विश्व के बाता है, बिह्न फिर बादसोने कामकती कुष्टि किस्प्रेची करा वह बारखार विषयोधी और वानेते दिस्तें बाहर के उठवा है। वैसे वर्त्तर पहि कुष्ट प्रनीकी बूँद सब औरहे किस्प्रे वाली है, उसी कहा बारखानों विश्व सावकाया मन की बारखान केता राज है। एकता बारनेवर कुछ देशक से वह बाहरों किर राज है, बिह्न किर बाहियांची अनेता बाले बाहरी किर राज है, बिह्न किर बाहियांची अनेता बाले बाहरी कीते बाहर है बाहर है। ऐसे विशेषके स्वयं बाहरी कीता अस्ता है सावकायों केंद्र या विश्व वहीं बाहरी बाहरी कीता अस्ता और पारस्थित लाग बाले बाहरी इस बाहरी हुट इसका करनेका प्रधा करना बाहरी है।

चेनी जब ब्यानका उद्यास करता है से एक्ट्रे उसके

इस कमकः विकार, विकेत और निरुक्त नामक कान होते हैं। व्यानके समय मनमें विकास के हिए नवों न हो सक्ताकों करराकर ज्ञान नहीं केंद्रात करीले; क्षरिया कामें कम जान कर्माकों दिने तिरोग सर्वकोंकों स्वानकार्ने स्वादित करके केंग्रामका करनेले इस्तिकोंकों कामकार्ने स्वादित करके केंग्रामका करनेले इस्तिकोसित का सम्बेन्सकों हो काम है। इस ज्ञान क्षरीतिस्वपूर्णक स्वान करनेकाले कोग्रीकों में दिन्य पूक्त ज्ञान होता है, वह क्ष्रामकों किसी कोग्रीकों के दिन्य पूक्त ज्ञान होता है, वह क्ष्रामकों किसी कोग्रीकों का दैनकी स्वानकार की नहीं दिन सम्बन्ध क्ष्रामकों कामकों कामकार्थ कामकों कामकार्थना सुक्ता काम है। इस ज्ञान कोनीलोग कामकों काम पुन्त-कोमको स्वीत निर्वाद (कोग्र) को जाल कामकों है।

कृषिवितने कुल-जन कार्यवाले सोनोको विका कार्यको प्राप्ति होती है ? उन्हें विका सोकोषे स्थान विशास है ? कार्यके विका बना है ? जानक विको कहते है ? उन्हेंय कर करने केन्य क्या करा है ?—ये सारी क्यों खुले करकुने; क्योंकि अस्य सर्वत है।

धीशकीर व्या—हार विकाय वाल्यार स्टेम कर, ब्यार सौर प्रायमक संवादानको एक प्रकार श्रीकारका उद्यापन विना वासे है। हिन्साल वर्तको ध्या एक स्वाप्तासकी सर्वाता व्यापन रहता था। यह विकायकार पुत्र का और स्टेडिक्सको जनस हुना का। वेलेने कारे पूर्व विद्वार



ज्ञात की भी और इस्तें अपूर्विका से उसे अस्पतेश हान वा—ने सार अस्पति विद्वारत रहते हैं। एक बार वह संदेशा (ज्याको) का का करते हुए सम्बंध एक इक्तर वर्ष बीत पते। सारकार, जातिको देशीने अस्पत्र इसीन देखा कहा—"अहते । में हुन्यर बहुत अस्पत्र हैं। सारको बच्च सब्दो हो ? हुन्दारी कीन-भी इक्तर पूरी करते ?"

वेशीके देख कार्नेयर का कार्नेश प्राप्त वीरम— कृषे ! इस नकके कार्ने नेरी इस्ता बरावर कार्नी रहे, कार्नी इस्तावको दिलेशिन उसित हो।' या सुनवर देखीने कहा कार्नेने उसर विक—'हुन केंद्रा कार्नी हो, अही होगा। वै देख अवक कार्निनी, विकास हम समय को हुनने पुहस्ते कार्ने होगी। इसके दिल्ला इस समय को हुनने पुष्टमी कार्ने कार्ने वीगा है, यह भी पूर्व होगा। हुन स्वधानिय होगार निकाद कार्ने कीगा है, यह भी पूर्व होगा। हुन स्वधानिय कार्ने, मृत्यू क्या कार्ने भी हुन्हरे निवाद सवारेंगे। यहाँ इस स्वोतीके समय सुन्दार कार्नीक विकाद होगा।'

विभागों कहते हैं—ज्या कहावर साविती देगी आको कारणे कहते गयी। इका यह सरकातिह इस्हाम भी भी दिखा गर्मेंग्य कर करता था। यह उस और इस्हामोंको स्था कहते रेगाम था। इस अवार कर उसका नियम पूरा है गया है कारी जला होकर को अपन्य दर्श दिया और कार—'स्वाम ! मेरी ओर हो देगो, मैं समझाद वार्ट है और रुपाय कर्षय थाओं आप है। इस अववार को कुछ पाल दुन्हैं आत हुआ है, को सुने—चनुन्ती और वेदलाओंको जाह होनेक्को नियमें भी सोका है, वे स्था सुन्ते बील दिलों है। हुस् देनालेको अपने इस कुछ सम्बेद सोकारों पहार्यक करेगों। इसलेको कुछ ! अब दुल सपने जानोंको स्थाप है और दिल सोकारों करेगी इसल हो, वहीं नाओं। इस देहानी साम हेनेन बाद ही उन लोकारों का स्थारे ।'

स्वापने कर-कर्ष ! युक्ते इत लोकोको होका क्या करवा है। अन्य सुरस्पूर्वक अपने सक्तको बाहुवे।

करि कर-मुनियर । तृष्टे इस करीरका लाग से अवस्य है करन करिने, इसके कह करीरें नाओ क जैसी तृष्ट्राने करि है करें।

व्यक्ति का—कर्ते ! वै क्षित्र देवते कर्तते स्वतः वर्षे व्यक्ता अन्य कर्तते, वेर्ते कर्तते क्षतेसी स्वतिक वी कृष्ण नहीं है। वै वर्षे क्षत्रीका क्षत्र करते दूर आस्त्यते स्रोतः। शर्मी करा—विकास । यदि तुम करीर कोइना नहीं वाको से देखों, ने कारन, मृत्यु और नम कार्य तुम्हारे कार का सो है।

स्वतंत्रर कर, काल और पृत्यु तीनों का स्थानके कर भा पहुँचे। समसे प्राप्त करोगा और 'हैं जार! में का है और का कहनेके दिनों जाका है कि तुक्तरे कार सामस्य और करोर तपस्याका करन तुने प्राप्त हुआ है।' कानने कहा 'मैं काल हैं और का स्वता ने प्राप्त है कि तुनों इस करवा बहुत कार पास निर्मा है। यह हुन्तरे कर्नकेक कानेका साम है।' मृत्युने कहा—'कर्युत ! पुछो मृत्यु सन्ताने। वि कारकार प्रेरणारे तुनों क्यांने के कानके विने आवा है।'

स्थापने का—पूर्वपृत्त का, बहुत्व कारा, वृत्त् और सर्वेद्ध में ज्ञापत करता है। स्थापने, में अपलक्षेत्रीय कार सेंध्य करें ?



च्या वदावन प्रवासने वन सकतो पाय-अर्था आहे. निकेदन विभा और प्रशासनपूर्वक पूछा 'जब पुछो क्या आहा. है ?' इसनेहीने सीर्ववस्थके दिन्हें निकारे पूर राजा इसकड़ा, पार्टी ने समस्तेन एकसित हुए थे, व्याँ जा पहुँचे। कर्मानि सम्बद्धा पूजन और प्रमाण बारके, कुरमान-सम्बद्धार पूछा। वस्त्राम् प्रशासने भी राजाको आसन् और पाय-अर्थ है। कृतस्त-प्रभाव क्या पार्टि प्रवासन विभाग स्वास्त्र है। माहिये, मी अपनी व्यक्तिये अनुसार अवस्था क्रीय-सा वार्य सिन्ह कार्य ?' रुवने वया—मैं समा हूँ और आप त्राह्मण; इसकिये अवक्यो मुख का देव व्याह्म हूँ, आपको बितने बनकी अवक्षकाता है, मुझसे थोंगिये।

आवनने कहा—एकप् ! आहम्म को जवतरके होते है—एक अपूर्णनार्गने वारणेकाले और दूसरे निष्टितार्गका स्वारण संनेकाले । मैं जब प्रतिकासे निष्टा हो राजा हूँ । को स्वेन अपूर्णिकार्यका कार्यकाले हो, जबको द्वार देखिये । मैं हो का दान रोका नहीं । हो, जबकी कुछ इच्छा हो को बताहबे, मैं आवको क्या है ? अपने स्थोबतासे आवका चीन-सा कार्य सिद्ध कार्य ?

तकने सहा—की अप पुत्रे कुछ देश है कहते हैं ते पूर्व की क्षेत्रिक कर करके सारने किस कराको प्राप्त विका है, बढ़ी ने कैटियो।

स्त्राप्तने वया--प्रथमश्च, अस्य वेरे वारवा जान पात संवेचार व्यक्तिने ।

क्ष्म केले—सारक्षा चरत हो, मैंने को चरवा पास कंप है, जनके पुत्रे अवस्थातक नहीं है; इस्तरिये कात है, सब्ब हो एक कात दूसरा है, उसे कातुबी; अनके इस परवार कार है क्या ?

कारणे का — इसका बार क्या निरोध ? या मैं वर्ड कारण: पांतु की यो द्वार कर दिला था, यह अध्यो दें विका में वर्ण, कर, पूत्रु और कारण इस वालो सामी है।

हरूने कहा—सहन्। यदि आव अपने शक्तार वाल नहीं बताश संबंधे से बहु अहाता फार मेरे किस बहार अश्वरा ? में स्टिंग्य फार नहीं बहुता; बहु आय्हीबे फार मो।

व्यक्तने वहा—राज्य | अश्व को मैं अपने अपका परंत रै कुछा । अस्य भूतरी कोई बात नहीं सीकार कर्तना । इस केनेको अपनी-अपनी बातपर दृष्ट् पहना करिये । पहले कर कारे समय कर्ता की परंत्रकी करामा नहीं की थी, अहा इस व्यक्त क्या करत होता ?—यह केरी कर पार्डमा । आपने 'टेनिके' क्याकर भीवा और पैने 'हेल हैं सहकार है दिया—ऐसी हवाने अपनी कर सुरी नहीं करेगा । आप वैश्व करका करके सरक्की रहा क्येनिके । इस अध्या प्रश्ना कर्तनंत्र की गरि केरी करा नहीं करेगे तो आपको असरकार व्यक्ति क्या कर केरी कर नहीं कारकार आपने पुरस्ते करके करनकी क्याक की और वह मैंने आपको अर्थन कर दिया; इस्तिको अस्य कर सरकार करे स्वकार मेरे दिये हुए प्रस्तको कीवार कीनिके । हुट बीहर्नकोड प्रमुक्तको न हम होक्से

पुरा भिलता है न परलोकने । यह अपने पूर्वकोको भी जाँ कर सकता; बिर आनेकाको पीडीबर के बहार कर ही बैडो सवता है ? परलेको सामो किए प्रकार बीवक प्रकार होना है, उस राज पार, अन और निकारी पार्टी। लोगॉने अन्तरक विकास काराओं को हैं और स्वीतनकों से विकास करेंचे, कर सकतो अस्त सेव्यूटे और स्वयंत्रिये प्राप्तवे इंदर किया कर, में भी अपन महत्व सामने पहलर नहीं रियु हो सम्बद्ध । एकावा स्थान हो अधिकारो उठा है, सार है अवन पर है, तक है अधिनवी का एक पता है संस्थान के हैं। केटेंने सत्त्वती है बहिना पानी पत्ने हैं। फरनों से जेड़ फरनमें प्राप्ति हेनों है। वर्ग और इंग्रिय-संबदकी रिलीड भी कारको हो होती है। सरकोड ही मानारवर राम पुरा दिवर पूरव है। बार है के, बेहनू, बिका, विभिन्न प्राप्त और प्रोत्यारमध्य है। प्राप्तके ही प्राप्तको प्राणियोका क्या और एडे संस्थानी प्राप्ति होती है। स्थानेत मानो है एक मरली, कुई एको और आप कारते है। कुई भी सारक्त ही विका है। यह, यह, वेद, क्षेत्र, क्षेत्र, क्षेत्र सरक्ती—मे का सकते है सकत है। की सुन है, दिली बारण वर्ग और सामग्रे सामृत्य रक्षात केल एक के विका साम का, जनस्का है बनाइ करी हुआ। वहाँ करें है, बार्ड कर है। सन्तरे ही सन्तरी बुद्धि होती है। प्रतरिन्दे क्षान् ! अस्य भी संस्थार ही का रहिने । अस्तानका क्यांत क सरिवियो । भारि मेरे हिने हुए करनेह प्रकारके उद्भव गाहि स्वीतार करेंगे, से वर्धने क्रह होकर संस्कृतों करवाते विशेषे । क्रे म्बारे केरेकी प्रतिका चरनेत दिए क्रेस नहीं प्रतास करत को पाधना से करता है, जिल्लू निवर्णन को केल जी कारण-में दोनों के विकासकों होने हैं। उस्ता अब मेरी और अपनी भी बात मिल्ला प करिक्ये ।

रुवने कह—अहुन् । इतिषका कर्ष से प्रश्नवी रहा और बुद्ध करना है। इतियोधी कुछ कहा क्या है। ऐसी दक्षमें में उन्हें आपने ही दल कैसे से स्वाम्य हैं ?

 स्वान्तरे क्या—राज्य । स्वा हेन्नेड हैंग्से मैंग आवते प्रार्थन नहीं की भी और न मैं देनेड हैंग्से अवके कर है क्या मा । अवके कर्ष नहीं अवकर नांच है, अब हेनेसे क्यों क्रमान करते हैं।

उसमें अस—विकार ! यहि आयो असने सम्बद्ध करा
 पत देनेका है निक्रण दिन्या है, तो देख प्रतिवर्ध: इस क्षेत्रकें
 भी पुरुवकत हों, उन्हें क्यात करके केने तक ही पोनें।
 इस्तिवर्धिय दान तेनेका अधिकार है और श्राप्ति केवल दान देते हैं, तेने पति । इस कर्मको आरो भी दूस होना, जक:

इसलेन साम-ही-साथ होतीके कर्नकरनेका अध्योग करें। सामक आपको ऐसी इच्छा न हो तो साथ स्थाप कर्नकर चोननेकी आवश्यकत नहीं है। उस अवश्वामें में कहे प्राचेश कर्मना कि अपने मेरे शुक्तकर्मका पूरा-पूरा पराव स्वीकार कर से---का आपका केर कार स्थाप अनुसद होना।

त्रकृष्णने पहा—राजन् ! अवनके व्योषकेतर मैंने को कुछ हैनेको अधिक की है, जो से स्थितिको क्योंकि का मेरे पास अवनको क्योंको कर्मा राज्य है। यदि नहीं हैने से से अवनको क्या है हैका।

क्याने कहा—विससे जार्थका वहाँ ऐसा परिचान निकार, जा जारों वर्नमें विद्यान है! अब से पुति जारों समार कारावानी होनेके रिखे ही वह दान सीकार कारा है। जारावे वहाँ विससेके सामने कुछ केनेके तिने की इस्ते नहीं कियाना जा, बिंजू जाना ऐसा वास्ता पड़ा है। आप विसे नेचे बचेहर वालों है, जा होनाने।

स्वापनी स्वाप—राज्य | वैदे पानतीया सद घटके विकास को पुरुष संबद्ध विकाद है, यह सब अस्त से सीविते |

क्याने क्या-निवास ! में भी आपने क्याने शंकात्त्रका बात के सुवार है। असे अस्य भी नेट क्या प्रकृत परिवर्त ! विवरते क्यानेंग काया-किन्द्रका देवकर शंकात करको बाती हो :

कंपनी वर्त है—स्वान्तर, उस अञ्चलों राजावा अपूर्वत पान क्रिया और वर्त आते हुए सर्व, पान, पान राजा नृत्युक्त पूज्य पानके उन समानो अनाम विका। राजा और उन्युक्त पुज्य पानके क्षाप्तार वेदारक पूत भी पूजा-में नेपालको और संस्थानसभी प्राच कर्त अस्तित्त पूर्। सामा, निर्मेश, पान्युक्त; वर्त, प्राचेत, साकु और रोजीका की पुज्यानका हुआ। सर, वेद, वेदान, सोध, सरकारी, पान, वर्ता, विकासमु, हुआ, भू, परिकारसमित निरातन, पान, निर्मु, पुनि, असानति साम अधिनकारका पानकार, विकास क्षाप्त क्षाप्त । जी सामा आकारकार क्षाप्त विकास क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त । व्याप्त आकारकार

व्यवस्त, कर्मा स्थान और एक प्रमाद्ध—वैशेने एक है तथा सकी क्रमाति स्थानिको ह्या रिक्या । ध्यूने (जूनकार पारते कुमारिनीको उत्पादर) प्रमा, अधन, व्यव, समार और व्यवस्तान्त्र पीची प्रमाद्धकोची द्वूच (अव्यवस्थाः) में स्थानित विवय, विवा चनको प्रमा और क्रमान्त्रे तथा निरम्बार चरित्राके आस्थान्त्र दृष्टि रहते पूर् को नेनी पीडोने जीव अद्यासको विवर विवय । इस

प्रकार मनको जीतकर दृष्टिको एकछ करके अन्तर्गीत | स्वत्यत वित्या है, इससे बान पहल है कर करनेकारोंको मनको पृथमि स्थापित कर दिन और क्षेत्रों ही समाविते रियम को गये। कर समय करके करेर किरके-कुरके नहीं थे। स्थानकी देनेके दिन्ते ही आपने यह स्टाउ उद्योग किया था। केनों है सहस्रो पति चेहचीन हो नवे थे। प्रत्नेहीने का महारता प्राप्ताच्ये प्रकारताच्या चेवन वान्ये कृष जोतीयाँन अध्यास निकास और सीचे क्लांकी और कर क्रिका । किर के चारों ओर बड़े जोरीसे कोरखात गया। सन ओन उस विका अवस्थानी सुरि करने समे। अदेशके बरावर संसे प्रान्का आकार भारत किये कर का तेन स्थानीके कर क्षेत्र से अपूर्णि आने पहुंचर अस्त्रा अवस्त्र विकास और गीटी पार्टीने क्या—'प्रकाशना । चेरियोचो यो पार निरमा है, यह रेपा होता है। अनुत, अस हुसरोग अपने-अपने स्थानको का करनेकरोंको यी निकास है: स्वीत्व पर करनेकरोको मोगिनोरे भी जान करवाई जारे हेनी है आर आ हर मुक्तों निवास करे।' अस्त पायर व्य स्त्राप्तकेश प्रधानिक पुराने प्रतेत का गया। इसी प्रधान सक श्रासक भी भगवान् प्रकारोने तीन हो गये।

महा—'भगवर् ! आरो को कर सहारका अने कहतर | बी, पुरसे बता है । अब और हवा सुकर शक्ते हैं ।'

केशिकोरी भी लेख करा मिरस्ता है। इस बायक प्रकारको इनलोग भी उसीच्यो देखांनोड रिल्मे चर्च अपने थे। अस्ती व्यक्त और एक केनेको एक-स समूर देवर समान परम्बा पानी कराना है। उठन इन होनोरे सरके पहलू पालको अन्तरी अन्ति हेन्द्र हिन्छ।"

अक्रमीने अक्र-(करका कर को ऐसा है ही) को महामुख्य और अनुस्तृतिका कर करता एका चौराने अनुस्ता का है. मा भी जाने जनतर करीर कान बरने जान गरिन्हों Wait 1

या प्रकार प्रकारी गढ़ी संपन्नी है गये और अस्ती अद्या काम देवता भी अपने-अपने भारतो प्रमारे। कृते पहला भी वर्गका सामार करके आरक्षापूर्वक आहे पेड्रे कर दिने । कुरियोग । का करनेकालेको पढ़ी प्रक निरस्ता क्या समाज केवलाओं के अञ्चलको अस्तान करते. हैं 1 इसी असार करती गाँउ होती हैं 1 के सब बारें, सैसी सुरी

## मनु और बृहस्पतिका संवाद—मनुके द्वारा ज्ञानयोग आदिके फल तथा परमात्यतत्त्वका वर्णन

प्रिकेटरे पूर्व-विकास । सम्बोधक एक केहेंचे | सम्बाध और विकेश्यत्वस स्थापेड प्रयु इस विकास नियमपुरार किये वार्तवारे क्यंबोक्स कर कर है ? एक अभिन्येके भीतर क्रमेक्टरे स्टालका क्रम किस प्रकार है सम्बदा 🕯 ?

क्षेत्रमंते का इस विकासे प्रमानी कर और महर्गि कुरप्रतिके संबद्धका प्राचीन प्रविद्यालका कार्यका दिया कार्य है। एक समयबंध बार है, देखां। और ऋषियोगी सम्बाधियें प्रमान महर्मि कुरमानिने प्रधानकि मनुबने प्रधान करते: पूरा-'पानत् । से इस करत्वा करता और वेरिक क्रमेंक समितन है, बिरानम निसे अन्यत कर करते हैं तमा मनके प्रमोद्धार विश्वे तथका सम्बद्ध प्राप्त नहीं हेता, सर प्रश्नुका कमाना वर्णन क्रीनिने। विसर्वे कृत्वी और पार्थिय जन्मा, बाबु और अपसीक्ष, व्यवस्था और जार बना देखा और देखकेवाची जनीत क्रू है, व्यू सन्वयन क्यू मंत्र है ? यह बराइने ? मी बहुद, तथा और प्रकृतिहार तथा कर, जोरिय, निशंत, स्थापन्त, साथ और विद्यास भी अध्यक्ष किया है, से भी पूर्व आवाह अबदे चीवें पूर्वोके उसका कारकता क्रार न हो सब्देश अर्थाले उसर



पूर्णतया वर्णन करनेकी कृष्य कीविके तथा यह वहै कामने | कि जान और करनेका कार क्ष्म है ? कीव किस उन्ह कृष्ट करोरसे असन क्षेत्रन कुरूने जानेक करना है ? '

world aus-fermit ut-ut fleer fier bim f. कारको करी-करीने कुछ स्थल पहला है और में अद्योग होता है. नहीं अनोद हैं को कुरस्तान बातवा पता है। पूछवी आहे। और arParts Princeric first steared making ancres figur कारत है जनत पर-अन्यि होतीने क्यानेट दिनो प्रान्तोत्सार करेश किया गया है। वैद्या वर्णकान्य प्राप्त सकता भागमारे पुरु है; सिंह के बाल्याओं कामने का होता है. मही परवाताची प्राप्ति कर सवाता है। प्रमुख निवास पानते मार्गका अनुस्थ करके पराक्षको उस्त को नाने जोउनके मार्थेका विकास किया गया है। व्यक्ती क्रम होनेकारे कार्यीद पत्तीची जांचा करनेताते क्या से क्यानाओं साराव प्राचीन ही अन्त्र प्रचल क्रांत्रों हैं। अब: इन व्यावकाओं कारण निष्य पुरुष्य भागानाओं ही सह प्रश्य पाहिले ह रेश करेंद्र अनुसन्दे कराई क्षेत्र कु हे करेंद्र करन अन्य: करन चेट के जात है, किर अपने अन्यत अवस्था क बात है और नरम क्वाँड अवेका कानाके सरकारे मान कर रेता है। का और करीरे ही संस्थानी चुटि हुई है। ये केनी क्यानके कारण होते हुए भी तक्कारी प्रार्थित भी कार्न कर भारे हैं, बेरनिकेट कर्न सक्तर करा (बेक्स) की हेलाई और मक्द पालबंदे औं अहिंद करात है। काले क्षय कार्रवाहको कार देश ही जावन चराओं अहिमें धनाव है, कुरद पुक महीं। भारत रोग्र कोल मालों है और अन्यवस्थान अवस्था और भारत है, कर करन सेने कि अने दिवस सरकते पूज होता. रानोरी पैरोने प्रचार क्षरनेचेत्र स्वीर आहे देश असते हैं. उसी अवार गुर्दि भी जेवला परह हा वर्गकर विकेशने पुरू हो मानो चेन्य अपून प्रशेषो सम्ब स्थानी है। विशेषकंक मनोवा स्थारण, पान्या अनुसन, स्थिता, अनुसार कर और क्लारी समाधि—इर वॉच अपूरेरे समझ क्षेत्रेकर ही कर्न कर भीती समाने होता है। पाना, पाना, चरिता पता, पुराना पानी और सका नव-ने ही कार्रेडि कार है, जिलू करून इसी (कर्र कलंबारे) जरीरते इन करोबों प्रत्न करनेकी क्रीड जॉ प्रसार, क्योंकि करावारों के लेक क करेर कर केरे है. क्वीमें करेना इन करांकी प्रति होती है। बांव इक करेला भी-जो चुनासूच धार्न कामा है, सारा सर्वेद कामा काहे हैं माने पारोची चेनात है क्वींक प्रति है कुछ और इ.स. चेगनेका सम्बन्ध है। यह और कार्यके किये हर कुछातुम कर्मेक पान पर-पानीके करा है प्लेक्ट पान है। कराकी हका रहे ने काम प्रमुख सकते करों में की पुरस्का सम्पास करण है, जम पुरस्ते जेरित हो कर बाद कार्यों के स्वरंत को स्वरंत है। मेरे नकरते करों के स्वरंत स्था कह बाती है, उसी प्रकार अपूर्वकों की कार्यके किये हुए क्षेत्रीक जवाहरे सहना प्रकार है। ऐसी निकार की कह पुरस्त करोंका कार कार्यर अस्ता होता और असूध कार्यक कार्यक कार्य हुआ होता है।

अस्, निवारों प्रस्त अनुन्ने जनस्वी सारति हुई है, किसे स्थानक जनसे कार्ने रचलेकारे सहस्त्र हुए संस्ता-स्टूडारे कर है बाते हैं और वेदानमंत्रि यह की विश्वक प्रतिस्तान मूर्ट भार की, उस अन्तिकेक्य वरस्थातकों किस्सी हुए का मारत है, जान केकर हुने । वरसह परमास स्ट्रीट-स्ट्रीडों रातें और नबीते रहेश का प्रस्तु, सर्व क्षे कारते कृत्य हैं । वे कर-बुद्धिक अन्तेकर, अन्ताह उस्त निर्मा है, विश्वक हैं वे कर-बुद्धिक अन्तेकर, अन्ताह उस्त निर्मा है, विश्वक हैं अन्ति है जनके हैं । पुरुष है व क्ष्मा के स्ट्रीट के स्ट्रीट के स्ट्रीट वे व क्ष्मा है । इसके कुछ है अन्ताह स्ट्रीटकों अने अन्तर इसका कार्य क्ष्मा (अन्तर) मूर्ट होता, हार्टिकों अने अन्तर इसका कार्य है।

अवस्थे सामान, आवास्त्ये वस्तु, ससूते आहे, सांत्रेते पान और पानने कृती है। पानित करितेक पानते हम होता है, पानते से आदिने, अधित पानूनें, पानूने आवास्त्रों और अस्तानों पानवालों स्थित होते हैं। परमाणकी अहिं हैं। पानत, म कोवार है म कार्यर, म पहुंच है म पानित कीर पानूह है म विचा। पान, पान और पानते की पा पहिल् है। अस्तान समान पानते विस्तान है। सामा पान्तेक, हिंहा परमाह, पान्तेक पानका, पान पानका और के परमाह है सनुवाद कर्मी है। के प्रतिवर्ध परमामानों अस्ता विकाद महिं कार्य समान कर्मी है। के प्रतिवर्ध परमामानों अस्ता विकाद महिंदा परमाह समान कर्मी है। के प्रतिवर्ध परमामानों के प्रमुखीकों परमाहतालका सनुवाद कर्मी होता।

मान के विद्यान सार, महिनाको स्वाई, कार्यको प्राप्त , मानको सार्थने और नेताको स्वाई क्रांकर अस्तुन्ती क्या तेला है, जो अपने मुख्यका कारक हंगर और सामाद स्वाद है। कृतिके कारकपुरता कारक हंगर और सामाद और—क्षेत्र है किसके सामाद है, को सामुर्ग तेलाने तिला क्षेत्रक—कृत्यक, सामाद कारक और कार्य है साम कुछ कर्तकान है, जो कारकारण है, जाने तिला के कुछ है, सम कर्तकान है। जैसे कोई स्वाद कुश्वादीने कारको चीरकर सामें सामाद कृति करका माने से र सामें अस्त हैसानी देती. न दर्जा। ज्यों ज्यार इस करेरवा के करने वा ! क्षत-पैर कारनेसे कोई क्यून्यंनी कारकता दर्शन नहीं कर प्रका: कोदि का क्रीसो दिश है। विक स्थी कालेका प्रतिपार्वक कथन करनेहें की अधि और कुन केने हैं केसनेमें जाते हैं, जाते कहा चेनचेंद्र प्राय पर और इन्हिनोच्डे आवार्ये संगतित करनेवर सुदिवस्य मुक्त अन्ये स्थानम् अपन्या साधानस वर सम्बद्ध है। की क्रानें क्यून अपने प्रतिस्तो जानको अक्षम और प्रशीपर पन्न देखन है. सरी प्रकार का ब्रीहर, चीव प्राप्त एका पने और मुद्धि—कर सभा समोप्ते को दूर्व विकृत्यरेगके साथ क्रांग्याक जीवाल करीको करेते एक करे। ये देख जी करता, जो क्या मरीरावे कारे करोरावें क्या लेका साम है। असक प्राप्तिको पूर्वाचा विका है, यह हमाने काली, पृत्ति, अने अंतर मृत्यु आहे. ऐन्देले कभी तिवह नहीं होता। नहेंहें भी हर पर्वतक्षकोचे प्रत अवतके सामाने जी देश प्रवस : अवनी असको काका कर्या गर्दी कर करना और व अननी

इत्युक्तेले अस्त्रक कोई कर्ण ही सिद्ध कर समात है। इतिसी को नहीं देखती, पर बहु उन सकते देखता है। जीव अपने क्षत्र करिनका स्थान करके कह कारे अञ्चल करिनमें प्रवेक करण है के व्यक्ति स्वत केव्यो पीनो पूर्वीमें विस्तिके किये क्रोडक्क क्षत्रे क्रवेरका शतान के वर्गको अन्त अपन पर तेल है। करको बरोबा असे प्रतिके प्राथमिक अंक अपने-अपने प्राप्तांने देश नाते हैं. विका कोटा अवसे समझ राज्येका संस्कृतनीर कर्ण-वासन्वर्धे ज्याद हो करने पहल केने अनेत करके पन्ति निकर्णका केवन काम क्रम है। क्षेत्रीयन अवकारके पूज कामान, हार्नेन्द्रिय क्रांकेट पूज प्रकार, रेजर नेनेप्रिय रेजके पूज कार्या, स्टोर्नेयून वाल्के कुन स्टब्स बच्च स्टीनीयून क्षपुर्क पुन्न रक्षांच्य सेवन करती है। प्रतिकृतिक प्रीची विका क्षेत्र भारताचे को है, योगो महत्त्वा हरीगोंने को है, प्रतिको स्थाने अपूर्णानने हैं, यह श्रुविके आणित है और gin annem einer beit feit bi

# आत्माकी दुविज्ञेयता

स्पूर्ण कारे है—कुरबो । ज्यून का जानका केरेरे इसेंद नहीं कर सम्बद्ध, स्टबले रहते नहीं वह सम्बद्ध और क्षेत्रके काम नहीं पर समात । यह पर समाव अनेप-आप है और वे क्षेत्रहि कर्ष है अपने-आवर्ध नहीं देश करते। न्यू रिर्देश स्रोत कर है हिल्ल स्थान रहेर स्रोत प्रमाद सम्बद्धे देखता भी है। सिंह वितर प्रमान महत्त्वीयो हैरसावी व होतर भी द्वितालको हतरे कई और क्यानके कामनके विकास का नहीं बढ़ा का उसका कि ने हैं है नहीं, उसी प्रकार सम्पूर्ण प्रक्रोबंद अन्यवस्थ अवस्थ इतियोक्त किया व होनेयर की 'नहीं है' केल नहीं कहा क स्वका। कारका क्षत्री अवनी अवनिसे पूर्व और ना हो जानेपर करतीन राजी है, इस विकास सेसे स्वीतकारोंक क्रमार्ट असमात्रका निश्चम कर होते हैं क्रमा सुर्वेद काम और असने प्राप्त पेने सामी परिया अनुवान हे बात है, उसे अकार विनेत्री स्पेन मुद्धिका कैनको प्राप्त इस्ता अवनी काश्रास्थार कर रेजे है। किस प्रकार मुख्येने कृष, परिवर्कने पत्नी और प्रक्रियोग्रस ग्रामिओओ स्वास ना समात है, वैसे है जनवाम सारको जनका चन किन के संबंध है। इसने सन्त है कि सर्वेद पैरोको सर्व ही प्राप्तका है। अर्थ अव्या समक करिनेटे विका क्षेत्र आलाको पुरस अस्तार है कर संबंध है। जिस प्रधार अन्यवस्थान क

क्ष्माराजी और अक्षा या को केव्यार जाता विकासी भी हैंदा, मैंने हैं जीवानय क्षित्रों आता का को केव्यार जाता हुआ जान नहीं पहला। मैंने क्ष्मान का कुर्वेका संबोध होगेरर पह क्षेत्रणे समान है मैंसे हैं मैंको संबुक्त होगेरर अस्त्रमधा 'या केव्यारी हैं' ऐसा काम होने समान है। मिनू मैंसे क्ष्मान और कुर्वेके कामन होगेरर पहली कामनिक नहीं होती, मैंसे हैं क्षारंगी कुट कामेरर और दिकासी नहीं होता। मैंसे समामानकी साने क्ष्मान साने अनुस्य होना नामांने मिता काम है, मैंसे ही जीव क्षारेगरे कुटकार अनेने क्षमोंने कामनामा कामें करींगरे कुट नामा है।

विश्व प्रवास वर्षण हुन् और विश्व सर्ग्य नेत्राचा अपना तम देश स्वास है, मेरे ही इत्तिकोंके हुन् और विश्व है स्वोत्तर का प्रश्निके हैमलाका आवारका स्वयुक्तार कर स्वास है तम मान्ये इत्यास के होनेने और पान विश्वामी नहीं केता, केने ही इत्तिकोंक ब्रह्मत हो उत्तरेगर कृतिक हुन् स्वासका अनुभाव नहीं होता। अपनासे अविद्या साती है और स्वित्य होनेने उत्तरे अवीन चलेकाले पोनों हानेनिवर्ग मी दूचित हो कार्य है। अस्त अवान चलेकाले पोनों सानेनिवर्ग मी दूचित हो कार्य है। अस्त अवान चलेकाले मान्यकों सन्न हुन्य स्वास्त्र कार्य हुन्न नहीं होता तथा अपने प्रत्याके अनुसार का्

है। प्रभंदे बारक ही संसारमें पुरस्की कृष्णक अन्त नहीं ! और प्रमुख निक्केंको साथ देता है, यह समुदान प्रदा कर होता: जब फावेंकी समादी हो जाती है हांची करकी हुवार नह केरी है। विकासिंद संस्तरिंद सर्वाद करोंचे रहे-एके स्कोसे रूप कार्य पूरा रिपरीय सामग्रेया सामान्यत प्रत्येके मलकानी प्राप्ति नहीं हेली। क्षा चनकार्वेका कुन हो जात **है तभी पुरुषको इसन जास होता है। वर्षण उपका होनेकर कैसे** प्रतिनित्त केवले राजार है, जाने प्रकार का राज्ये कुछ कारने परमालका साधानका करने राज्या है। सहस्र विवर्केकी कोर इन्हिक्के फैल कारेरे कुन्ती कर हुआ है और प्रमुक्ति संकृतिक क्षेत्रेसे सूची के सन्दर्भ है। अब: वर्ष क्षित्रेड कर प्रतिनीको काके विवयंकी ओरते केवाल काले रक्ता कारिये। इन्हिगोंने पर शेष्ट्र हैं, जल्मे सुद्धि शेष्ट्र हैं, सुद्धिने इसन केंद्र है और इसनो परमाध्य केंद्र है। अवस्था परमासाओ की हान अपना हुआ है तथा हानके मुद्धि और आसे वस प्रकार कृता है। यह पन के लोगारे प्रतिकारों पूर्व कृता, विकासिकों देशना है। को पुरुष क्रमहादे किया, सन्दर्भ काछ पहले प्रकार कारण है।

लेखा है। परंतु क्षकाम कर्न करनेकाल पुरुष कार-कार क्य-स्थाने पार्ट प्रकार प्रकार क्यांकाओं है क्षेत्रक प्रका है। इत्रियोग्नर विक्योग्ने प्रका प सर्वसे पुरुष्के विका से हुए सते हैं, पांतु कार्ने सामग्री सामग्री को सभी है। यह से प्रभी करते हैं का जो परस्करक स्थानकर हो पान है। विक समय मुद्दि कर्मकीत पूजीते क्ष्मर करवानिका प्रतिने रिका हो करों है, उस कारत प्रत नक्षाने स्तेन क्षेत्रक बहुत के बात है। परावह सार्व, अवन, कार, वर्षन, प्राप्त और संस्थान वाची प्रकारके कार्योंसे सीवा है इस्तिने अध्यक्ष केवल विद्युद्ध पुरिवारी क्षेत्र हो होत कारती है। विकासिक कार्य एक होता है, पालक सहिती, पुरिकार प्राप्ते और प्राप्ता पर्यक्राओं एक केल है। जीवर्ष करको नहीं सकती, भर युद्धिको नहीं सरकार और परि अन्य अन्यत्वे प्रो पानी; वित् अन्यत् हर

#### आस्पदर्शनका उपाय

मुख्ये कार्य है—कुरवारियो । वहा क्रारेशिक क सामित्र कुम का गई से असे प्रेंस के स्टूबर्क विकेत नहीं होना साहिते। पुत्रकार किया न करना है अल्बी जोपति है। फिल्म बारोने से यह सामर्ग अना है और अधिकारिक कहार हो है। आहे प्राचीका प्रकार कियारमे और वारिनिय स्थानिको ओविकोने का को र की विकासको सामार्थ है। क्योंके सामार क्रोब्ड मूर्व करना भारिये । चीवम, प्रारं, चीवम, प्रश्लेष्ट, आहेला और जिनकारेका समागम—के ताल अभिन्न क्षी है। किवारकीरके को इन्दर लोग नहीं करना कड़िने। किस दशका करे रावसे सम्बन्ध हो उसके हैंनो एक माहिन्हों होना नहीं करना चारिने । हाँ, नहि उसे उसके प्रतिकारका कोई क्रवा दौरता हो हो होता. न करके पर उपन ही करन पाहिले। इसमें सेंद्र थी. यहकड़े बीवाचे सुखबी अवेदा दश ही अधिक है। जो पूर्व इत्रिक्षेद्र विकारि दन परस है, जो मोहबत चैठके कुएँ काव पहला है; सिंह को पूरत सल-कान केनोची तक केत हैं. या नामको जा कर रेता है, विकासीलोंको आके लिये क्रोक शही करन पहचा । तिक्योंके उदार्थनमें इत्या है, उसकी पहन करनेमें औ सक नहीं है कहा प्रकार है उनकी उनकीय होती है, जह क्रमा नात हो जान हो सिन्हा नहीं करनी कहिने।

निका समय युद्धि अपने वर्गानीमा संस्थानीके सहित निकारी करणाविका पुरित्में विका के पानी है, उसी समय कारकेरकार्थ्य सम्बद्धित स्थापन साम्राज्य है। न्हीं से, केरे करवी कर कांग्रे विकास विकास कारको और सहसे हैं, जैसे हो का गुम्मविकार सुद्धि गुम्मव व्यक्तीको और हो साति है। विकास का वह व्यक्तीको इस निर्मुण करनाव वर्ष्ट्य करी है उसे प्रथम, काईटीके हर की सुक्रांची व्यवस्थ तिया करत है की है, इसे परमाध्य अनुष्या हो काल है। अतः हरिलोके सम् हारोको केवाबार करते विका क्षेत्रा काकिये। इस प्रकार मनवदी क्वरका होनेले कार्यकाराची आधि हो जाती है। विका स्वापा पुर्वेका क्य क्षेत्रेश शक्तकायुक्त मैन्द्र के बाते हैं, करी उत्पान कृति, सनका इंकिनेचे सहित पन (आंबार) में लीन है करों है। यस विद्वारतिका सुद्धि अन्तर्गत होता पत्रों विका होती है हो यह बन:सकत ही हो चाती है। यह अनेहर जनसंख् पुर्वासे पुरू है, कियु का बहु स्थानका पुर्वासे पुरू होता है से राज पुर्योग्डो स्थानकर निर्मृत सहस्रकार हो क्या है। का अन्यक स्थान बोध करानेंद्र रिप्से संस्वरमें कोई पुरस्त की है। कई कवीका सामार ही की है, जर क्युको और करिया विश्व क्या स्थात है ? असीको कतो, अनुकारो, प्रकार पुर्नेते, अञ्चलारी वालिके

सर्वोद्या प्रस्ता करके तथा समान्यको अस्य शिक्यो सुद्ध | सरके पराद्यको जाननेका जान करे। जुलाको पुरूष का असकेतीय पराद्यको महार-मीतर समारकाको अनुका कर समान है।

कृत्यांतिकी | कर्म कारणे लेकको वृद्धि होती है और स्वामंत्री अवस्थान होता है। कर्म पूका प्रमुखित राज्यों स्वाम है और विरक्त जानसम्ब क्षाप्त कर नेका है। किस स्वाम स्वाम सम्बद्धि पाँच विभ्योंके स्वीम क्षेत्रों स्वामित और मनको कार्यों कर नेका है, उस सम्बन कर अवस्थानि ओराओड समोके समाप सर्वेद्ध न्याप पराक्षाम्य साहस्तानर कर नेता है। असे सम्बन्धि क्षेत्रों ने अनुन्ता हो सात है कि विरत क्यार क्या सुव्यक्ति क्षेत्रोंकी राज्य है क्येत्रे, हैगा और मृतिकाके को क्योंने विश्लेण हुआ है, उसी प्रमुख अपने क्योंकि अनुसार आव्या की मी, नाव, क्युन्त, हम्बी, कृत और वरित-सांगानि सात्रा करियों क्यार है। क्या करियों स्वामित क्यार साह कराव है।

पनुष्यको पहले विश्वपदा उस होता है, दिन को परिवर्ध पूछा होती है, उसके पाप स्थान और दिन्ह वर्ग होता है पाप कर्म करोपर उसका पाप दिल्ला है। इस अच्छर परिवर्ध क्षानंत्रकार, करोची ईपायक्ता, ईपायो इस्त्राप्तका और इसको सहस्वकार सम्बद्ध वर्ष्धि। इस अचल इस्त्र, पास, ईपा और कर्म—पुर सम्बद्ध इस्त्र होनेना को पास अव होता है उस परमास्त्रको ही तुम हेप्यम्यो प्रमान क्षानंत्रक इस्त्र संबद्धी। उस परमास्त्रको कोरिन्डम ही देशकी है, विश्वपोने जासका अहाती सन अपने साम्याने दिल्ला का परमान्त्रको नहीं देखते। यहाँ को पुष्ट दिल्लाने केस है, इस्त्रे सारी पृष्टीने काकार प्रकार कर है, कराने वहा देश है, केनाने

है, बनसे बढ़ी बढ़ि है, बढ़िसे बढ़ा करन है और कारमें बढ़े क्यान किया है। अपेरी का साठ करते हुआ है, पर विकास कार्य कोई आदि, अन्य का यक नहीं है। आदि, क्या और अपने सीत हेनेके कारण ने अधिकारी भी है। वे सम्पूर्ण क्ष्मारेके को है। कृषा है सम्ब हुन्स करना है। स्तिकारी किन्तु है प्रमुक्त कई को है। में ही परम्यान और परकाद भी है। उनके पता प्रोधवार तीय वासके अधिकारके निवारकार मोश्र तार कर रेखे हैं। पांतु तुर्धाना, क्राव्यक्रिया और क्रांबरित अचलक्षेत्र सारण मनुशीकी इनके पान पहेंचनेका वार्ग दिलाके नहीं देता है हमेगीकी विकाले कार्यक है, क्यांकि किरावाची सुकांपर भी कार्यी कों रूपी क्यों है और वे परमानमें पित अपेकों रकाओको प्रानेत हैंको असक रहते हैं। इसीमें उन्हें सहस्की अदी नहीं होती। पहुंचा इस संस्थाने विकासित विकासित इंदर्श है, इन्हेंग्से पाना की पाहते हैं । इस अवरंत में विकासित केंद्रे हैं पहलते रहते हैं, निर्मियन परवास्त्रको पानेकी उने क्षा है हुन्य नहीं होती। भारत, यो इस हुन्य नियमीने सेवार हात है, का बहुता शामकाचे की पान समात है? कारको करवाना अस्तव होते है। इन ध्यानहार सुधन हर् कारो आपक्र अनुकार को बार समाने हैं, किया बालीको कर्नन नहीं कर राजाते। वयुक्तको साहिते कि प्रान्तान सुन्दिको निर्मात करे, बहिलो परको १६३ वरे और गरते इंग्रिकेंका क्रीकर करे । एक बढ़ अक्रम परमानको अस् बर सकता है । क्ष कावाक अक्टब है कुलकानेकी भागती है, सम्बंदित है, सब्बर्ध अपने और स्थापन स्थाप है, अधिनाती है, क्रमान है, आहे, काम और अनासे रहित है तथा अधिकार है। इसे कार सेनेपर धीम अनुसार प्राप्त कर लेता है।

## भगवान् किन्तुसे किसकी उत्पत्ति तथा वसह-अक्तारका वर्णन

तम वृष्णिते पूक्त-निवादः । कारत्यन करवात् । प्राणु तमितात्री, समात कीर्योधे क्यांति और तस्मके स्थान् । असेन और व्यापक है। वे जसकत, इक्ष्रेकेट, जेकिए और है:इक-इन नामोर्स भी विकास है। मैं उनके सरम्बन्ध सारिक्त विकेचन सुरक्षा कहाते हैं।

प्रीयार्थी कोर्से—कार्य ! वैने यह प्रसंग कमाजिनका भगवान् परमुख्या, देवनि जादा और कृष्णक्रीयका व्यवसके मुख्यो सुन्त है। स्कृति असिता, देवल, साम्बन्धिः और नार्कालेक्सी भी इस अर्जुन क्रांबक्क वर्णन किया करते हैं। मगरवान् विज्ञा सबके इंका और निकात हैं। वे जुन्न एवं निकट् आदि अनेको क्रांकेन प्रसिद्ध और सर्वकारक हैं। स्टेक्ने अप्रतेता जुन्न को क्रांबन्स करवान्के किर व्यक्तिको बान्ते हैं तथा पुरानकेक कियाब निकाय करते हैं, वह सब मैं तुर्वे सुनका है। वे पुनकेका क्रांबन क्रांबन क्रांबे अलब हैं; अपि अपने संकारकार क्रांबन, क्रांबु, अति, क्रांबन क्रांबन-इस क्रांबन क्रांबन स्वयं को है। वह सर्वकृत्व क्रांबन स्टिब्र्न पृथ्वीकी रचना करके कार्य क्षमा किया क्षम अको सन्तर्थ देनारे सम्बद्ध क्षेत्रर कर्ष्ये करते ही समझ भूतोचे अवत भगवान् संवर्धनको करता क्षित्रा। ये भगवान् संवर्धन ही भगवान् पूर्वोचे आकार है तक भूत-भवित्रम् सन्तर्भ सारित्योको करना करते है।

इसके बाद उनकी वार्तिको एक कुनीक प्रथम हेकोनक कारण प्रकार हुआ। स्वासी सामूर्ण भूतीके विकास प्रमाहन् म्बार मचट हुए। बहारनीके अधूबडी कार्निको सारी विकास मेहीन्कार हो गर्दी । इसी सम्बद्ध अन्यवस्त्रों आवित्र व्यवस्त क्य दूशा । मनवान् पृथ्वेतवने ब्रह्मका है॥ बारवेदे हैं।वे कर क्यान असुरका कर कर काम । कामा का करके कारण के भगवानको समाह केला, हाना और परान 'मध्यक्त' व्यक्ते हैं। इस्के पहाल सहस्योगे परीति, अति, अदिए, पुरस्त, पुरस, अब और क्का-प्रा साथ मान्यत्रकोच्ये अल्ला किया । इस सक्ते बद्दे वर्दिको प्रकृते क्षत्रकाने जनत किया । बहुर्वि क्षत्रका बहे ही केवारी और महावेगाओं केंद्र है। प्रदानीने नरीविकों को को सहको अपने अगुटेरो सरात किया था। यह 'स्थानकि' सहस्र प्रतिकृत हुआ। प्रकारीत दक्षके स्थादे तेल कमाई क्रां ही, इनमें दिनि सान्ये कही थी। स्वताह बार्नेको विद्वेपस्थाने माननेवाले, परमध्यती नरीविक्या करूव हर स्थ कामाओंके पति पूर्व प्रत्ये बाद काले का कामाई और क्रमा की तथा जो वर्गाद साथ विकास विकास करणाओं के करित कर्तु, कहा, विश्लेष्ट, प्रत्यक और कार्युकार्य सन्दर विशवता

अवायति दक्षके इतसे क्रोडी अवार्त्तर क्रमाई और थी है। ज्य समके की जहारका क्रमा हुए। क्रमावार्ताको अन्यान क्रियोसे नक्षतं, अक्ष, वही, यो, क्रियुका, अक्ष, प्रतित्व और करकति अक्षेत्र क्रमा हुए। अधितिसं क्रेमाओरे सेह पहानकी आदिगोका क्रमा हुना। उन्हेंये क्रियुक्त क्रमानकारी क्रमा तिया का। उनके परकारके हेन्सावेकी बीमुद्धि हुई और क्षमा तक्षा हैन्सेका क्रमान हुना। क्रियोकी आदि क्षमा स्टुक्त पुत्र वे तक्षा विविशे क्षमाएकै हिरोका क्षमा हुना।

किर सीचाम्बान्ते दिन, राह, ज्ञानु, पूर्वाह्, सप्ताह आदि चेत्ते कारवरी कावस्था की तथा अपने संवहत्वते हैं केव, स्वावर-ज्ञान एवं सन्पूर्ण पदाकंकि सर्वेत कृत्येको स्वा । इसके पहाल् उन्होंने अपने मुक्तरे ही संवहते स्वाहत क्षणा किये तथा पुजाओं से कैक्को स्वाहत, जंबाओं से सेक्को कैरन और परणोसे सेक्को सुरोधी सृष्टि की । इस प्रकार वार्थे वर्षोध्ये जगा करके उन्होंने सर्ग सहायोध्ये समझ समझ करवा। व्यवस्थानी सहायो वेहीयहाके विश्वता हुए। उत्पक्षत् उन्होंने पूर और महुगायके समझ विश्वताध्य, वर्णायोध्ये तथा देनेकारे विद्यान कर, करवाश्य पुनोर और सामगोधि प्रकार करवाने उत्पक्ष विद्या। हम १८० देनाशोधि अन्या-न्यार अवृति प्रवासे निवृत्त विद्या।

जार समय कनुकोंको परस्यका पर जाति था। ये किस्से विकेचन प्रकृति कर्न सरकारण ही जीवित श्री स्कृति थे। संकार अपन्य करनेनेत रिको भी जन्ने वैश्वा-कर्नने प्रकृत होनेकी संकारकार नहीं थी। ये संकारकारणे अवस्थि स्वर्तन होने कर सकते थे। प्रस्ते कर केस्सूत आनेकर भी वेश्वा-कर्नकार अवस्था भी। कर समय स्वर्त सरवेते ही प्रका स्वरूत हो प्रकृति थी। सरवानुकों वैश्व-स्वरूत अस्त सरवा होने सनी और सर्वित्युकों सब स्वरूत स्वयुक्ति स्वर्त सर्वेत स्वर्ता

यान् । इस जाता यह सारा जात् कावान् कृत्यारे हैं। जाता हुआ है। यह जाता समूर्ण स्वेत्योधा कृतान् जार्थकारे देवति जातावीरे सुनावा था। अनुति प्री संस्थानको निकास कार्यकारो जीवार को है। इस जातार है संस्थानको वास्त्रान्त्रम् कार्यक् कृत्य सामान्य स्वृत्य नहीं है इसके वर्षका अधिका है।

क्या पुण्डियो सहा—दिवासह । सरसाम् हृत्या सर्वेण्याची और सम्बद्धे हृत्या है। शास कृत्ये प्रधान और पूर्वकर्णिक गुरा-युद्ध कर्णय क्षीतिको । स्त्री सुक्तेको युक्ते क्ष्मी कृत्या है। कृत्येने करत्यम् होत्यर की तिर्वकोतिने विद्या विशेषको क्रमा विद्या का, का सम्बद्धो कर्णानको कृत्य करें।

वीकार केले—एकम् । एक बार में विकास केला। वार्टी नर्वत्रकेको सम्मानस्य मा ध्रीता । वार्टी पुत्रे स्थानो मुनि केरे दिसामी दिने । युनियोरी समुचकं सम्मानि करके मेरा वाक् ज्यार निरम और मैंने भी क्रम्या स्थापता-सम्मान स्थीयस्य करके अधिकाक्त निरमा । किर महार्थे सम्मानी पुत्रो वाह करेवर करके सुनावी । तुम इसे स्थानकारतारे सुनो ।

पूर्वकालमें नरकात्वर आदि स्तानों हात्व क्रोध और लोगके कारीमून क्या करके महारे अवसार हो गये। इनके अनेकों और भी लाकी बुद्धके दिनों असूर हो उसे। उन्हें नेक्सलेका क्या-व्या पैका अस्ता हो गया। उसका उसका व्यानक क्या कि उससे तेन अकतार हेटला और देवविंगक व्यानकों कियाने राने। नेक्सलों दे देशल कि व्याकार व्यानकों कियाने राने। नेक्सलों दे देशल कि व्याकार व्यानकों कीयाने राने। नेक्सलों दे काम होकार पृथ्वी बाढ़ी व्यानके हो दी है। असका क्षेत्रम बहुत बढ़ गया है, क्यानि व्यानके की है और का कुनकों वारसे हमी जा हो है। यह हेलहर जो बहा क्षेत्र हरू और उन्हेंने सहस्वीते बहा, [ सबी केलाओंको बही असका हाँ। 'तहान् ! सन्योका क्रम्बा बहा का गया है, हम इस सरकारको केसे सहे ?"

का अक्रमेंने कहा, विकास । मैंने पहले ही इस विवरिको पूर करनेका ज्ञान कर विक है। इस समय क्षानकोग कर कका कर और वन्त्रे पूर के से है। अह श्रामकारकार परावान् विष्णुकाः भी कोर्त कर नहीं है । देखे, इस शतम उन्हेंने कराइकर वारण किया है। इसको काल्ने माना वेपात्रओंके हैनों भी सकीन है। इस भूनिके लेके नहीं कुरव्यक्रेण स्वरूपेकी संस्थाने रहते हैं, करवाद करत औ भारत में संबंध संबंध करेंगे।' सहामीनों मा पत संस्था



का महारोजानी भागमान् विच्यु करक्तमा बारण कर कहे केन्द्रों पुरुष्ठिक्षे कीचे द्वानकेके पादा पने और उन्हें पानपीत करते हुए बहुत परिचल कुछ्य कार्य हुने । उनके गम्बीर नर्जनसे कारे रहेक पूर्व को बना कार्ने क्रूनेवाले इसाहि हेनता भी कराने जने । संबंध संस्थार संस्थिते का गया, स्थापर-प्रमुख राजी बीक्केन्से रह पर्ने । कर चीवन करते शृक्ति होकर अनेको सनव प्राच्छीन है-हेक्टर गिरो रहो। भगवानी कावानों क्षेत्रकर वन केक्स्युओंके कार, केंद्र और ह्यियोची अपने सुरीते चैद शत्य ।

हती संग्य हरू देखा निरम्पर ह्यावनीके पास गये और करते पूछा, 'पानवन् ! यह करत केतर हो पह है ? हरत्या कुल इन्तर क्रमूमी कुल नहीं जा पत है। यह मौत है और विकास पर प्रमा है, जिसमें भारे संस्थानों निवृत्त का दिया § ? इसके केको के सारे देवता और सूचन पोइकुक-से हैं। को है।' क्रोबोने भगवार बरह कर असे। स्रविपन जनके सहित कर को थे। जो देशकर अक्रमीने स्वा, किलाओं । सम्बंधार को, ये से संपूर्ण निर्होंको न्यू करनेवाले बनवान् किन्तु है है। ये सन्तर्ग नृतीके आता, उनके प्रकृत और एकती है, बहुत् बोगी है तथा मान्याओंके उक्का है। देखी, में महामधी और विकासकाय बराहरूपरी राजात हैलाराजीओ जात्कर वहाँ प्रचार को है। इन्होंने की हारहार कार्न विकास है, को से भूध क्षम विस्त्यार भी नहीं कर क्रमते है । हुन्हें बिल्ली प्रकारका संगय, यथ या फोक नहीं करना व्यक्ति । वे ही स्वरे संसारके स्वयंता, पासक और रोक्करवार्थ है। सारे लोकोका प्रदान करते हुए प्रश्रोते ही यह मक्ष्य क्षत्र क्षिम्ब वा। वे क्षमतनकर मगकर ही समूर्ण लेकोडे क्यारि, लिक्सी और समझ कुरेडे आदि more ut freien \$1"

### गुरु-शिष्यके संवादका उल्लेख करते हुए योग तथा सदाचारका निरूपण

जनान कारण खेनका करतकिक जरून सुन्दाने । औ काननेवरी पुत्रो बड़ी इका है।

र्मानको के<del>हे -</del>राक्ष् । इस विश्वको सूर-विश्वका संबद्धन वह पुरातन क्रीकाल प्रतिबद्ध है। क्यां कर कोई प्रधानिक अरबार्व विराज्यान थे। वे बडे ही देवरवी, पहलब, प्राथमिक और विकेनिक से । उनके प्राप्त एक पुरिचन,

एक पुषितिको पुरा-एकाची । अथ अक्ष भूके भोजनेद । व्यानाम्बदानी, सम्बद्धितीयन विका आखा । इसने अभो करण-रक्षां किये और क्रम मोक्सर पता, 'मगमन् । पति क्रम मेरी सेकड़ी जाल है से मेरे मनमे एक बढ़ा भारी संक्रा 🦺 उसे हर करनेकी कृत्य करें । स्वर्तपन् ! मेरा और आपश्च इस संस्तरने बर्ज़ीने माना हुना है ? मैं वेसता है कि समस्त चुलेचे अन्ते अराधन कारण समाम है तो भी कामें किन्हींकी कृदि और किन्द्रीका हास क्यों हेता है तथा बैदिक, सार्त

और लोकों से कर्नालकांत्रकानी काल प्रदेश हैं? क्रमा दिन मान सरका है सका है, मन्तर | ये हव को हो रह करदे समझोदी कर को (

इसने का-नेता ! सुने, शुरूको पुरिवार हो; पुन्ने के पत पूरी है जा केरेका पूर करता है, बढ़ी सम्बाधकर है और मही राज्या निवार और प्राम्बोद्धा पूर्वक है। विश्वास केवल मुल्काल के ओका है का महोत, कर, कर, कर, रिविद्या, एक और सार्वनातरम्य है। पेतुक-सर इतीयो पुरस्, क्रमान और विष्णु भी बढ़ते हैं क्या बढ़ी बनाईड उत्तरि-प्रान्त कर्तनार, अन्यत और क्यान प्राप्त की है। के कृष्णियोक्ता कार्यान् कृष्ण भी वही है। हुए पुत्राने प्रयक्त प्रतिकार कुने । के अधीरत केवली केवल कार्याट केवला representation of the state of र्वरूपेये और कुराने कुछेने कुछा काहिने। कुर सीकुणाव कारकारकार विकास कुलोने अधिकारी हो; हानीको सहस्तात क्रेमर सुने । तीकृत्य है अभी-अन्तरे चीव स्वय-स्वय है । क्वीचे जीवर से डीवें लोख प्रकारे कावर पूर हो है। रीकृत्यको है अवृत् अस्तर, सन्तर, क्रमार पेक्सा के मानो है। ये अधिनाची परमाना हो निवर, वेजा, साहि, पहु, पक्षम, मान, असूर और महत्त्वकिनी समय करते हैं। इसी मिन्दर पारचीर अपनाने अनवी सामाने विका होता से हेत भाग और समाज प्रोक्तानीओं अधिकास साथे हैं। विका जनार ज्ञानिकांको सन्य निकालिक स्थानोहे स्थान अबट होते रहते हैं, केने ही अनेब कुमी सहकूता पालेखी अभिनादित होती रहती है तक सामक्रमणे वर कुमहिने किस सन्त यो-ये त्रम् चनाते हैं, का रूपन स्वेतन्त्रको प्रथ करी-सरी प्रकारका प्राप प्रत्य होता कुछ है। कारणे अकरे मेर और प्रतिकारोंका एकेन हो बादा है, कई कुमीर आकारों मनवान् सम्बद्धी असेक्से महर्मितीन उत्पाद्ध किर प्राप्त कर मेरे है। यर क्रम्य कर क्रम्यम् अकृतीको नेतृत्व, कारतीयीको बेह्हारेका, कारावार्थको बेहिहासका, क्रमानीको प्रकारिकार, सञ्जूषको सुर्विकार, प्रकारो केर्निकेंट परिवार और कुम्मानेकार विशेषात-कुम्बार क्रम केल है। क्सी समय अनेको प्रत्यक मान्य असी विशेष क्योंकी रक्ष्य करते हैं। क्योंने कृति, साथ और आवरकोर हर में एक उनके दिया है, इन्हें बड़ी करन कहिये।

परवड़ा अनाहि और सबसे परे हैं, उटे देखा और खुरि यी जो समो। यो से एक्स क्य-काल गण्डर देवता और अपूर तथा पूराने क्वावियोंने का स्थानों काण है, कैसे है इस कारे संस्थानी अवकासे अपने होती है।

है। यह महत्त्वम स्थान कुरसोबा पर्यापन है। यह अपूरी कुरानो अधिकीत विभिन्न पहल्लीको सको समाने है से उससे कारकादित काम् अस्य होता है। यहाँ कामक प्रकृतिही ध्ये ज्या होती है, जाने अहंबार, सहंबारहे शायात. क्याको कर् कर्म देव, देवते पत और कामे दुवते कारत होती है। में आह शुरू क्यूनीओं है। सहा चर्म्य हन्हींने केवर है। इसीरे क्षेत्रे आवेदार्थ, चांच करिएस, चांच किस् और एक कर--ने प्रोत्स्य निवास होते हैं। स्ट्रेस, सन्द्र, पर्यु, निवार और सामा—ने चौठ प्रावेगीतार्थ है। चार, चारू, कारत, क्षा और पायु--ने पीच समेरिको है, सम्ब, स्पर्ध, स्वर, स्व और प्रथ—ने पॉर रिका है क्या का साले सामाह थे करिया दिया है, यह पर है। यह करिया है। स्वयुक्ति सुरस् क निवासक हो काम है काम कोमांग्रेड करना नहीं बहाद बहा men fie per ment finn-fien pfteitfte wen ferene अन्तरके कार्य का है जा**क हैना है। बार्क कार्युक्त** कर्त का है और संस्को सम्बद्धाः। स्थाः पुरिवर् पुरुषो करिये कि का सामानो प्रमान पूर्वके आहा शामक (पांच अवस्थि) से निवस पाने ।

का जनत ने सन्तर्भ पहले स्वाधित जाति का विकासीको विका क्षेत्रा कर्मने प्रकार प्रमाहत विक्री पह के हैं। का सरकार इस प्राथमित समाव इस की आरोकारे कीया करवारी काहा करके प्राप्त प्राप्त करवा है, प्रत्योको को 'पूजा' कहाँ है। यह पूजा परा-मरनारे स्थित, महावस, क्ष्मेंकारी, पुर्वाचार, सूध्य और संगत का एवं पुर्वाचा राजान है। निया प्रचार अधि बाहारे पहल प्रकेश औ विकासी नहीं हेती, करने अंकार सामाप प्रशिक्तें स्थान को है. तिम् दिस्तानी नहीं केत तथा निस्त तथा नामपूर्वक सकतेता maget field and stells man at most & 442 at केन्द्रभागों हम करेगों विशे जागाया साहास्तर हे कारण है। जिला प्रधान पहलबारकारों पूर्वन प्राथितकोंके सरीता क्षेत्राच्या इस करीच्यो क्षेत्रकार सम्बद्धा पाठ पाठा है, देशे ही प्रमुखे कार भी का साथ करीर स्थान कर होता है। प्रार्थित कर है का देखा कर केन है, करते से कर देखा अनवीत होती है एक अपने दिन्ने पूर् प्रमार करीड दूस है क रूप करेगों से क्या करा है।

कार । बहुन और स्थान से कर उक्तरके जाती है,-में अन्तरको जनत हुए हैं और अन्तरकों ही साथ जाते हैं। निक अवार वीवरके बोको अस्तककारो कहा वारी कह करायम ही बारते हैं। जरायमध्ये ही सहिर, मुख्य-सुरमा जनावा हुआ है, बिह्नू मुक्काओं आनेवर यह बारा हो सहार

जिस तरह होता अचेतर होनेपर भी मुख्याच्या ओर विस्थ बाता है बैसे हैं सरीरके उत्तक होनेपर उसके जानानिक संस्थार तथा करिया, काम, कम्बीदे कुले मुख अस्पी और विशेष आहे हैं। आच्या समन्ते पहले विद्यालय का। यह निवर, सर्वेगत, मनवार भी हेत् और उपलक्षण है। अक्रमान पर्न ही जनस्वी सर्गालका कारण करावा नवा है। इन कारणीते क्ष क्षेत्रर रोग करोंका संबद्ध करता है पना करोंसे करान और वासनाजोंसे पुनः धर्म होते हैं। इस प्रचान न्य आहे-अराक्ष्य पहल संस्तरका कामा कर है। जिल अवहर नेलीकोन देखने कुछ होनेके बहरण सिल्पेको केले है, क्रमी अक्रम का नाग काम कार्यकाल क्रेमिक कारण अञ्चलकारित धोलोहास स्थानसभी नेता वर सह है। बीच क्षकारके अधीन क्रेकर कुमाने चारण वार्ग करता है और का कर्न आपानी कार्न-सारात-संबोधने हेट पर पान्न है: per febel gemit die afe despus aver me des पार्विते । इन केलेके कुरारमध्य-सा अन्यास के करेके और ऐसा हो पता है कि जो अपने प्रत्य सरकता पता है पति राज्या ।

भेगने करे है-राज्य । इस सकर पूर्णने विकासी सञ्जास समायान किया। केले पुने हुए केलेले मिर अपूर की निकाले, जो प्रकार प्रान्तीले दन पूर् arthurit ber fat server und mit un meite क्रमीतह पुरस्थिते मैसे उप्तिकर्त है अच्छा कार पहला है जैसे ही विकासीयोको अन्यन्त्राससे प्रस्ता और बोर्ड नम् नहीं पान पानी। पेक्सो पानरेकारे और वेसेक करोंने सहा रक्षत्रेकारे पूजा विश्ते ही जिल्ले हैं र वैश्वित क्रांत्रीका प्रचेत्रक कर्न क प्रोड है। इस्में अधिक स्वास्त्रम्थं होनेक सारक बुद्धियान् लोग सबसे हता उसंदिता निर्माणक बोह्यपर्यको है बाहरे हैं। सार्कोंने सकते इसी वर्गको बाल सिवा है, शतः यो जीव्य निर्मेत है। या या पदि है निरम्प क्षपुरस्क करनेसे क्युक्त करवनतिको स्तार कर सेवा है। सिद् वेशनियानी पुरूष इस सामेंने नहीं का सम्बद्धाः व्या के क्रोध-सोधारि अनेको एका-राज्य व्यक्ते कुछ क्रेकर श्यानवह बहुत-से बसेबे बीव देखा है।

अर: से पूज के कामार पूछा माहे जो किसी प्रकारका अर्थन आकरण नहीं करना पाहिले। यह अपने तिये निकास करने प्रश प्रोक्ता हुए कोले, लगाँदै पुरूप-कोकोंके असेकार्थे व कीरे । यो पुरुष एक बार कर्मगार्गपर र्वत रहाकार किन स्वेपनात काम-स्रोवक स्वासमें पहला अवर्ग करने रूपका है, यह अपने परिकासकीत पह के साम है। कुल्यानक र एकाई राग्डे अनीन होमर सन्दर्शि विकास रोजा औं करण करिने। विकासि करण ही क्राम्बर्धि गुणोवंद्र प्रांतर्गते हुनं, ब्रोज अहर विकासनी प्रार्थित केमी है। यह हेट चीव पूर्णिक विकार है क्या राख, रज, रज क्षेत्र पुर्वाहर पुरू है। इसमें यह विकासी स्तुति को और विसी कर करे। कक्षि किस्बेर्ड से केवल प्रश्नीकी है असरित केर्ड है। केरे कार्रे स्वतंत्राहे संस्कृती विस्तासीकी हका व करके करीर-निर्वाणके तैयने जास्त्रीय करता-स्था योजन है। का रेजे हैं, इसी जनत संसादी (शृहत) कर्मको की परिकाल सारक क्षेत्रम चेन्सिक श्रीनकरोचनके साराम केवान प्रतिर निर्मालेंद्र केली परिनेता को सारिकांद्र क्षेत्रण प्रत्या कारिये । कारविक कुछ साथ, सीच, कारता, जाग, गेथ, समाह, क्रमा, बेर्स, मुद्दि, का और एक्ट्रे प्रभावने समझ विकास कारोबर की पाने कर सारितारी क्रांसरे इन्द्रिकोच्ये कालूने को । ऐसा य होनेते ही सीय अज्ञानकर साथ, एक और एक्से केंग्रित केंग्रर निरम्प कांग्री साह क्को को है जा: विकासीत पूर्व आत्रप्रवित केवीकी अच्छी तरह परिवा को तक इससे इतक हर दृश्य और क्षांभारते एट पान ।

एकर रे कर में हुई भागति पुर्वांके कार्य करता है, कुषे : प्राराम, क्षेत्रीच प्रीति, अस्तेष्ठ, वैर्थ और स्क्री—वे सरवनुष्येह कार्य है। काय, क्रोम, प्रमाद, स्रोम, बोद, याव, प्रान्ति, विकास, स्रोचा, जालताव्या, भार, वर्षे और कमार्थक-में स्थोपून और संयोगुनके कार्न हैं। इन क्षेत्रोके चौरव-राज्यका विचार करके दिए इस बातकी परिश्रा को कि प्रायेने कुछी औन वेप किरान-विकास क्य कुछ है ? इस तरह विकार करते हुए इन सकी क्षेत्रेते maries with

# सब प्रकारके दोवोंसे सूटनेके लिये ज्ञान, वैरान्य और ब्रह्मचर्यका उपदेश

होचेका परशे लाग करना परिहे, किन्दें पुरिहते किकिन पूरण अपनी बुदिहरे पुरिवर्शक किन वेजेके करनारहका करना वाहिने, और दोव क्रांकर आ जाते हैं और और और जिल्हर करें ?

तक प्रविक्षित पुरा-कार्यो । सनुस्था किन । मोक्स करवीन-से कर पाने हैं ? तक पुनियन्

वीवार्थ सेते—एकप् ! अपने पूरा बहुता अञ्चलके | समित केवीका नाम हो पानेगर पूजा विश्वहरीय होवा-संस्थासी मुख्य हो साथा है। जिस प्रकार केनीकी बार लोहेकी मेंगीरको सारकर रह हो कही है जो प्रकार का संस्था सुद्धि समेगुरायांका शेकेको न्या करके उनके साथ उनके की हाल हे नार्त है। ध्वापि स्थोनुस, स्थोनुस और बाल उक्त मोको रहित कह अस—ने सेनों हो पुत्र देखें पुत्र कारक है समापि आम्बन्धर् पुरुषो हैको सहस्रहेका सामन से कारानुमा ही है। असः संभानतीय पुरुषको स्थोनुक-क्योनुको क्र प्रकार काहिने । इन क्रेनोर्ट क्रूड व्यक्तिर क्रूडि निर्मार क्रे बारी है। बहुबर कर स्थोपुरसंद समीप क्या है से राष्ट्र-मार्ग्य अधर्मनृष्ट धर्म प्रत्या है, जाने हैंग्या आ उससे है तथा वर्ष अर्थनुक भौगीका रोकन कुरता है। क्योंनाओं अभीन होनेना यह सोध और होरेक्टीन प्रशीने पंता सुक है. विसाने जान्या विशेष अनुसार के बात्र है और हा अन्य निवा-स्थाने विता रहता है अब्बा स्वयंपुरुवा अस्तान सेनेवाक gen gig afte selben weben it been bi un au-निर्मात और सामित्रम् होता है हथा साथे बद्धा और विकासी प्रस्तात राजी है।

राजन् । स्तोतृत्व और ल्लोनुनके बोहको सर्वात केले है और अपने बर्धेच, स्टेच, यह एवं वह अच्छा होते हैं। इस समका नाम करवेले ही नमुख कुछ होता है। ऐसा कुछुरिय पुरूष के पर अवन, सरिवारों, सर्वेश्वरेकों, अवन्य परनामान साम्राज्यारं कर समाग है। क्रांची क्रांची मानूत हो प्रलेक म्यूनीके हार और विकेशक कहा है माना है तथा में जारान और मेंकोर अमीन क्रेमर क्रीमके संपुर्तने केन करे हैं। स्टेक्से कार अन्य होता है और हिस सोध, मेह, मान, वर्ष एवं अव्यासका क्रमेर हो मान है क्या अवंकारके करोरे प्रयुक्ति होने सम्बर्ध है । इस प्रवास कर पार्च होने राज्यों है के बाब-मरावदा निविध भी कर ही जाता है। सभा निने क्या हेना है को खुद्ध और स्टेनिक्स संयोग होनेवा मल-पूत्रते को हुए, एकते स्थापक वर्धसालने क्षानेकी जीवन भी जा ही जाती है 1 अस: इंग्साने केरहाहा और कार-कोवादिते नेवे हुए पुरुषको बहै उनले का करेकी Par हो यो यह प्रयास्त्रीय कियोंके संस्तरि कु के; क्योंके कियाँ पर्यक्त कुलाके समान है, वे अक्टरी प्रमुखीको स्रोहरी शक देती है। चीमें ही कानेंद्र एक और अपने चीनंहरू संबद्धा जपति क्षेत्री है। बिंजु जिल जबार ज्युष्य अपने महारी जनत हुए कुलोच्छे तकन के हैं, उसी प्रधार अपने न होका अपने कहललेकले इन पुरस्कित भी स्थान देश

व्यक्ति । इस देहरे हैं सामानाः सेट्वे हुए क्रोकी कार्याः हैनी है और कर्मना नीनेहरा दूर जनक हैने हैं। जनः वृद्धिनम् पुरुष्ये से क्रेनेहियों क्रेक्ट करनी व्यक्ति । यह व्या व्यक्ति एके कि दुन्तकों अपि से एकेन्द्रे व्यक्ति क्रिके विक्रम है, विन् जनकों वृद्धि क्रेनेसे अधिनाय कार्यने हेती है। अधिनायके ज्यापरे दुन्तका अन्य हेता है और विस्तार दुन्त हुन के व्यक्त है, बड़ी जुक्त है।

करण ! जन में तुन्हें सामाहितों में क्षार करण सराता है। को पूरण समझानका अगानक सराता है, यह परमाहित क्षा कर तेवा है। किसने अपनी है करने प्रमुख केंद्र है, व्यूच्योंने द्विय और द्वियोगे केंद्र केंद्र है। केंद्र साझान समझा पूर्णके कराया, सर्वत्र और पर्यादर्शी होते हैं। क्यूं परमार्थनकार पूर्व विकास होता है। केंद्रीय पूर्ण गार्थने कर्माण होतेकर मेरी क्यून-क्षार्थी हुआ पाना है मेरी है। अगानिय पुरस्ता में परमार्थी अनेकी हुआ पाने पहले हैं। इस्तान्ये असने हैं समस्ते क्यून्यर है।

व्यक्ते, प्राप्टेर और क्यांची परिवास, ग्रापा, साथ, वैर्ध और मुक्ते — ने केंद्र गुरू प्रक: सनी वर्नके बनुवांने हेसे पता है: रिक् प्रारम्भेको के प्रश्नोने प्रकृतक है परान परा है। भू क्रम क्योंने केंद्र है, इसके क्रम पूरूप पूरूप गी। उस बार सबसे है। के कुछ इस सरका सकी एक करन करते हैं, को अक्रुलेकाची अही क्रेडी है, क्यूक अक्रुक्तीको स्वर्ग विस्ता है और प्रतिष्ठ विकास सामानात कर कार है। सामाने का करिय का है, प्रत्या क्ष्मा सुने । अक्रुनारी काहिने कि वह रवीपुरस्की वृधि काले राने की की बेका है, विश्वीकी जाते व हमें क्या को क्यानि अवस्थानें न देखे; क्योंकि यहि किसी क्रमार क्रमार कृति पार्श्व पार्श्व है के पूर्वर्गनात स्मूलको कारणा विकास हो जाता है। प्रकृत्वारीको पनि पहल-विकास हे जान के को क्रम्यूबात कारा काहिये और वहि सकते होते रवर्णिक हो हो जारने पेटन सम्बद्धत होन बार शहरार्थन कहा जनम नार्मित विकेशी पुरुषको इस प्रधार संबद्ध और विकास करते अपने अस्त प्रत्ये विकास निवस्त स्थान क्ष कर देश काहिने । हारको एक क्लेक्स राज्यति नाती है, यह संबद्धानके क्षाप्त कारे करोनसे चीर्च क्षीक्षान बाहर निकास देती है। किस ज्ञास कुम्में मिले हुए बीको प्रशासित सकका करान विका करत है, जैसे हो प्रतीनमें करात बीर्व संस्कृतको क्यानिके अस्तर के क्या है। स्वामें बक्ताः सीर्वसर्वका अध्यय क्रेनेपर की चेत्रपर संस्थापने ही क्रेसेच्छा नाही सीर्वको ware former belt & a

क्षे पुरूष व्यः मानते है कि बीचेंकी गति ही वर्णसंकरता

[ 511 ] सं+ म० ( खण्ड--वी ) ४+

करनेवारों है, वे विरक्त और निवेंग हो जाते है तथा करें पूर: | विवार है, जर न्यूक्तकारेका अस्त्रोधकारनारीसूत् पर केवरी आहि अहें होती। वे केवल केनिकोको दिनो कर्न अध्यासकूर्य और निर्मात हो जाता है। जाता पनकी करते हैं। मनके इस निर्विकाय कारावाने रिव्य हो बाते हैं। और अमोधी पुरस्तावारी के सकर असने केंग्र जा मारो है तथा किये हैता मोग हुआ है कि विश्वकारों का है। अध्या है।

कारों करोके हैंने कर्मको निकाय को करने कहिने। इससे वह रखेनुक समोनुकारे बुरुबार क्लेक गाँउ जारे कर

### मुक्तिके लिये प्रयत्न करनेका उपदेश

बीनारी कार्य है—सुनिक्षित है नियम-बीनोने उत्तरक क्षतेकरे जनी रहा रहत योगो को है। के पहला उन्हें आराष्ट्र की होते, से ही बाव गरियों प्रश्न होते हैं। यह बन्या, क्या, पूल् और प्रज्ञानकारे क्ष्मी, क्या प्रकारी केले क्षा कार्तिक विकासोंसे वृत्ते है—देख कार्काकर परिकास quest shade fiel & seat steet talet : up un, बाली और प्रारेश्वे परित प्राप्त स्थानाच्ये तरन है एक Minches, Martin of France about Proposition चीका-विकोष करता द्वारा सुरस्त्योक विको । बीकोच्य दक्त क्रमें पुलेसे भी उनके और पनने अवस्थित मेनू हो पानी 🖫 देशा प्रोक्कार एक और गण्याकी भी स्टेक्ट कर है जन का परस्कार पेलीन कर से दिव करा पंतान अपने-अपने मर्गोकः है कर योगत है। जान पुत्र क राज्य केत के कर्न करता है, सरका पात को उनने केवल पाता है, इंग्लिनो पहि और दैवानों प्रश्न क्या शुध-कार्येका है आवारण करें। किसी भी बीवकी क्रिक न करना, कार बोरान, तब प्राणिनोंके और सरक क्षेत्र, क्षण करना और प्रमाले क्या-इतने पूज किए पूजने सेवह हो, बड़े सुर्वी होता है।

को इस अधिक अधिको सन्दर्भ अधिकोटेः देश्ये सुरक्त और पु:स्को ह्यानेवारत परन वर्ग सन्यास्त है, बड़े सर्वत है और नहीं सुनी होता है। इस्मीन्ने सुनिहें कुछ पत्नारे समाविक करके किसी भी प्रामिक और वापनेत म करे। विजीवा बहित न सेने। क्रांस बक्की करूनाई न को तक नवर प्रकारिक किया और है और प्रचान उपन करते. "मनको हानके सामार (समाम-परामादि) में राज्य है। बेकाफ-कार्यके अला तक सुद्ध प्रमाने तक प्रान्धे प्रदेश होती है। यो सुहद वर्गको देशक और स्वयव्यद क्रेसक पालत हो, आयो ऐसी पात पड़नी पाड़िने को सम होनेदे साथ ही किया, परनिष्य, कमर, कदान, करता और क्याने आर्थि खेबोसे रक्षित है। इस काइकी काली भी बहुत केड़ी मार्क्त और प्रवासन विश्ली ही सेनकी माहिते।

े संस्थापार राज्य व्यवस्था कालोडो ही केवा हुआ है, इसरिजें अपने कानी ही कोने और भीर पेराना हो से पुरिश्वेष प्राप करको पहले करके अपने किने हुए जुने कर्मीको भी लोनीसे का है। (क्वोंकि प्रकारित कर हैंसे सरकी बाद क नारी है।) रजेपुराने प्रत्यांका हाँ प्रीप्रतीकी वेरलारे प्रकृत सर्वान करोंने प्रकृत होता है और इस सोमाने यह मोनका अनुनी मान्यान्यों क्रेंक है; इस्तरिको नम, सानी और प्राप्तिको केल पहल को विकास अपनेको केर्न विकेश

की (पुरिनाके काले भागमा दूशर) चीर गाम चोरीके मारक बेहर कर देखा है से पूर्व को पूर्व वितनेती अन्तर होती है कर विकास अल्डानेके पान पान पान है। अहे अकर पहुंच प्रचल और सामा क्लोंके स्वर्ग केंगर कुमानी आहे कर सम्बद्धा है। को सब प्रमारक संस्कृते रहिता, निर्देश, क्यान्यकारी, कार्यकारी, कार्यी और विवेदिक है, विकास समूर्व हेन जनारियों एक हो गये हैं तक के केन्य-कारका प्रेमी और करको आहेर रकनेकाल है, बा and for finit my firstly wanted my my fee () मुद्रिकर एवं कीर पुरस्को काहिने कि का मृद्रिको अपने कार्य करे। किर कृतिके प्रथ मनको और कार्य प्रश क्रिकारराज्य इन्द्रियोगो पानुने रहे । इस प्रयार यह यह प्रकार कार्य करके प्रतिकोध्ये अपने अधीन कर लेता है. का सन्त्व काली इत्तिनी जाना केवन ईक्यपियक हो बाती है। किर अर्थः साथ मनाई स्थान होनेवर अन्तःकरणवें स्थानक प्रकार का पान है।

आ: बेन्डाबोच निवर्गेके अनुसार आकरण करना व्यक्ति और केम-स्थाप करते समय विद्या कारणे भी विषयुर्वि रिवर हो सबेद, करका परण करने क्रम व्यक्ति । अपने करे, अह, विकास करते, साम, बीबी रूपते, सन् , कुर, कर-के कुछ के विकास मिल कार, सरीसे असन निर्वाद करे । देश, पक्राए और विषयके अनुसार सारिकार अबहर करे । सरकार असम्ब कर देनेका उसे बीकरें न देके । की आल बीरे-बीरे तेव को कारों है, उसी प्रकार जानके

सायनको प्रती:-प्रती: प्रदीप्त करें । ऐसा करनेसे प्रान सूर्वकी भीति प्रवासित क्षेत्रे सनका है तथा प्रानी पुरूप प्रजा, जब और मृश्यूको पीतकर अवस, अधिकारी, सक्त एवं सन्ततन प्रकार प्रतास कर सेवा है।

निकारक व्यापनिकास पार्ट कार्रेको इन्हर रक्तनेवाले पुरस्को स्थाते बेच्वेल होट रसले हर निकास क्षांथा साम कर देना वाहिने; क्योंकि क्याने बीवको प्राप्तः स्थोगुन्द और क्लेपून पेर रेजे 🗓 प्रान्ता जनाव स्था Brown कियार पारनेके सामनेकी शराबा होती के कुछ को कर जार कर रेसर है. यह से सब समय है दूसर है। इन्हिनेके अन्त भानेनर समयो और सार्थ है, जिल्ल का समय न्यानि इतिरोधा एक हे पात है हो। यो पर पात्र का है। इसीरियो प्रयानकारों सकते विकास की है। की मान् अवस्ति वान-कार्य के पूर पहली संकार मनेरान्यको है निभूति है, उसी प्रकार प्रकार पहले पान की करते है सन्दर्भ रक्षते हैं। काल्सकोंने आता पूक्त आवत क्योंकी वासनाओको स्टापे अनुवाद सरात है। अलो करते में-मे पान दिये होते हैं. का अवनी अपनांनी पानक पान है। पुर्वभावों कर्नेक सहस्रत गाँ। सम्र, सा वा वा वोई भी पूरा ताह केवा है से काले करना देने लेकार पाते हैं. कारकोची देखाने स्थाने केने हैं जावार प्रवाह से को है। यह स्थानक वर्तन होते ही सामित्रक, सुनक और सामक मुन को सुक-कु सबा अनुबन बारको रीको आ बहैको है । मान्य-अवस्थाने प्रतिकोधे प्रता प्रकार को को संस्थान करते 1. सहने की का का अले-कही संस्कृतको अस्तराको सहय कृषे क्षेत्रा वेशा करता है। सरकार्य ही प्रकारत अल्डाह आदि सन्पूर्ण कृतिये कावते व्योक होती है, उसे वहीं की कारका नहीं होती। शतः आस्त्राको अस्तरक कारक पाहिले: मनेचि अल्पास अभी राज्ये देखा अल्पाने के विका है। जनसभी नगरे ज्यानस्थातक गांव हो कहा है, कि अले सर्वको प्रति अन्यव प्रकार केल काल है। वेक्नाओंने नरका आक्षत्र किया है और असुकेने वकत्वके वित्र क्रांनेकले श्रांत-को असी कर (सकार) को शकसक है। सिन्दु पद अकृतस्य गुजरायान देखता और अकृतेने पूछ है. को इसका पता नहीं है: क्लॉब्ट एक्कोवा एक इसे प्राप्तकम् काराचे है। स्तापुर, स्केपून प्राप समोजुल—ने ही देखता और कसूरोंके चुल है। इनमें समानक से देक्ताओंका है और सेच केने एक अस्तुनेके हैं। सब हर सची पुण्येसे अलीत, अक्षर, अन्त क्रमंत्रकार और आरम्बरूप है। प्रत असःकारको महत्व है से सा को है। को कालो है, वे बाल जीको आह हो जाते हैं। बारतार्थ बारतार्थ है अपने विकास कुछ पुरित्युक बारे का सकते हैं जावल का और इत्त्रिकोको निकासी ओरही इराकर कुछान होनेते भी जह जावर अहाका झान होता है।

यो प्रमुख परण आहे। परमाप् गरहानाओ असाने अनुस्ता पास और अंतरण परमारों नहीं पारता, असे पंत्रक्रमा प्रमुख है। पास (जूना परमा) प्रमुखे पुत्रपें प्रमुख्या है और सम्बद्ध स्मृत्या है। ज्यापीर प्रमुखें प्रमुख्या पर्वाच अनेत्र स्मृत्या है। ज्यापीर प्रमुखेंन्य पर्वाच अनेत्र प्रमुखेंन्य में पुरस्त्रप्रियम है और निवृति-वर्गते पास पति अस होते है, सर्वाच्ये या पोक्रम्यम है। पुत्रापुत्र प्रमुखेंन्द क्षात्र, निवृत्याच्या एवं अस्त अन्त-विकालों पत्री प्रमुखांत्र पुत्रप्रोचे है अस अस्त भारता अन्ति होते हैं।

इस अक्षर निकारकोर पुरस्को पाहिने कि यह खारे कारण प्रकृति और पुरस (क्षेत्रह) को साने; नित्र इस केरोने ओह को कार पहल्स हैंदर-कार है, अस्कार निर्मय इस आह को। अपूर्ति किपुरस्ताने हैं। यह साथ पुरांगी रहित है। क्षेत्रसार कारण इसके निवारत है। यह साथ पुरांगी रहित और अपूर्तिके कारगेंका हुए है। और और ईवार होगों केर्स है। पुरस्की निवारने कींग होनेके कारण के इन्हिटोके निवार और केरे। केंग्ने ही स्कूत कहानीने सर्वका निवा है। अध्या और पुरस्की संग्येनके कारण कार्य कहानी होगी है। बीच इन्हिटोके कार्य कारगेंके कारण कार्य कहाना। है।

यो विका सम्बद्धि अधीत् सक्त-कार आहा सहसा पाहे, उस पुज्यको अपना पन पुद्धा रकाण व्यक्ति और क्रारित्ते करहोर विकारिता व्यक्ति कर वैतानकार प्रकारतो पुत्त है, उससे वीनो कोच्य प्रकार है। तुर्व और प्रमुख्य की सकते हैं। अपना की प्रकार कर है। तुर्व और प्रमुख्य की सकते हैं। अपना की प्रकार कर है अध्यक्त और हार । स्वोगुन्त और क्षेत्र है। उपन्या कर है अध्यक्त और हार । स्वोगुन्त और क्षेत्र कार्य कर है। अपनी और प्रमुख संगत्न की स्वीरत प्रारंगिक कर है। अपनी और प्रमुख संगत्न कार्योग्य कर बहारता है।

विका प्रितिको कार्य और उसके अनुसार पार्यकारे हैं-करिकेक अस कार्य कार्य आम माना क्या है। ऐसे जारका निकापूर्वक उत्तार कार्यको एकेगुमसे उसक है-क्याक कर अस्ता है कार्य है तथा सामकार्यी इतिहाँ विकासिको औरसे विकास हो कार्य है। इसस्तिके सिक्षार्य अस्ता है जार कार्य कार्यक साहित, जिल्ला सीवय-सहाके रिके काक्नीय है। इस प्रकार केन्युक मनके हता के प्रान प्रश द्रोत है, उसे जीवनके रूप सम्बद्धक पूरी प्रति सम्बद्धत बीरे-सीरे प्राप्त ही कर रोगा पादिये । कैवें नहीं कोना पादिये ।

कुछ योगी जासनकी कुमलो प्राप्तिको करण किये हर मुक्तिक द्वारा पानको निकारीने इटारो है और इन्दिक्तिकारीने शरमा समान जागमार करती अनेका सूत्र होनेके कारण प्राप्त और प्रतिकारोधी अपनेदी अधिव प्रम्याते हैं। परेर्ड्-बर्ड्ड शासने बताये हर समसे स्वयंत्रत सुरूप वच्चका साम प्रदा करो हुए परावरहागक व्यूकान सुदिक्षे हात हाहाब अनुस्त्र करते हैं। योई योगके बरा अन्य:करणको परिव करके अवनी महिमाने रिक्स हुए जर परम पुरसको जार होने है, को सक्ताओं भी लेख है। इसी एक कोई से ब्राप्त-वारणको प्राप्त संपूक्त प्राप्तको अधानक सामी है और कोई का परमोक्का किया करते हैं किसे कियाकि प्रकार THE SHARE SHOWS AND MAKE THE THE RE-स्थेग तरकारी अपने पानीको दन्य पानी अन्यवसनी ब्रह्मानी जाति वाले हैं। इस इस्ते स्कूतकारोको स्थल स्ते

क्या हेती है। किनक यन क्रान्के सावनों तथा हुआ है, वे पार्वत्वेकके ककारी बुदकर स्वोतुक्ती रहित एवं ब्रह्मपूत हो करन परि (पोड़) प्राप्त कर रेखे हैं। बेहको प्यानेकारे विक्रमेंने इस जवार उद्याको जात करानेवाले कर्ववा कर्वन विका है। अपने-अपने प्रान्ते अनुसार अगसन करनेक्से सची सामकोकी स्थान गति होती है। विन्ते प्रश्नादि केवोसे चीक स्वयं कर कहा होता है, करकी सुनिक से कर्मा है। को कन्यूर्ग देखनेते पुत्र, अवन्या, दिना दर्ग अव्यक्त कावले विव्यवकार्यी परिचारो इरव सेटे £ ने जनगणको पूर्व और निष्याम को पाते है क्या अपने अन्य:कारणे औद्यतिको रिका पानकर राज्यकारण हो बाते हैं, कई दिए इस संसारमें नहीं काना कुछ । को अपूर्ण और उसके कार्यको एक स्थापन कुलको रोज-रोज कालो 🗓 ये राजामे सीत होकर कोड प्रदा कर हैने हैं। संसारको प्रतम देनेनाते स्वतिनेतु मनसान् पार्यको बीचेन एक करवेट हैंने है हा अपूर्व production from \$1

#### यहर्षि पश्चितिः सका राजा जनकको उपदेश

glebel ger-freng i nigerieb werberb विकासनीय जनको जनको योगोवा परिवार करके किस अवारके आकरणने चेक जार किया का?

प्रेमको कर--वृतिहर । सुने; यह का कारको बात है, जब निवित्ताने जनवारंती एक कारोबादा करन का। परनेत अंदर प्रकृति अधिनक ही अगर सेव्य परने से । क्रमें इस्वारमें से अध्यान न्यायन का करते हैं, जो उने विक्त-विक्त आध्योके वर्षोक्त कार्यक्त के रहते हे । एक पार करिएको पुर पहापुनि पहासिक सन्पूर्ण पृथ्वीको परिकास करते हुए विकासमें जा जीवे। वे इंज्यान-क्वेंबेंड प्राप्त और संख्यानी थे। जो सब सिद्धानीका प्रान था। उनके मनमें किसी प्रकारका संबेध नहीं का। वे सब्द निर्मय क्रेकर विवास करते थे : ऋषिकोने अधितीय थे । कामज से उन्हें स भी नहीं गयी थी। वे अपने उन्होंको स्कुन्नेके हरकों अस्तर स्टेप सराधन स्वाची प्रतिस्थ करना पानो थे। संस्थाने विद्वान से उन्हें स्वकार प्रधानी कवित मुन्का है स्थान सम्बन्धे हैं। उन्हें देशका देख कर बहुत कर बात संस्थातको प्रवर्णक करवार करिया को प्रकृतिसके कार्य रक्कर सोनोको अध्ययी कार यो है। वे युनिका आसरिके प्रकम जिल्हा और धीर्वकीयों से। उन्होंने एक

क्षार क्षात्रक काल-काळ अनुस्त केळ क । करिल पानको एक प्राप्तानी की, जिसने अपना कुत विस्तावत प्राचित्रको काम के। अल्क का-सर सामेरे कारत है असे का बहुताने : इस्तितिने अस्ता नाम कारितेन हे का और क्लोंने म्हानें निहा रक्तनेवाली सुद्ध वृद्धि भी मार्र को । पश्चिक्तके क्रांगानक क्रांगानक को बतान है।

कर्पन बहुतिकने ज्यान जान जान किया का। वे राजा कर्माची में अवस्थित क्यार पानमें अनुत्क नामार उनके दरवारने नवे। वहाँ नाकर उन्होंने अपने चुकि-चुक कार्यने का तथ अवस्थिति योक्ति कर दिनः। का दूसन ब्रह्मण्या काव्य करियानग्या प्रकृतिसम्बर्धा हान देवाबार उनके प्रति अपन्य हो गये और अपने भी आव्यापेंग्से क्षेत्रकार उन्होंके पीड़े चल दिये। तम मुनियर बहारियाने समायो कर्पमुख्य करलोने पढ़े हेल उन्हें चेन्य अधिकारी संवक्षका संस्थानको अनुसार मेक्क्पंका उपदेश क्षिता। पहले से उन्होंने जनके कहोंका वर्णन किया, किर क्रम्कि डेलोको क्ताना । सरवक्षात् स्थाननेकारकाके भोगोकी कृत्रपक्षाता और कु सम्बद्धाना प्रक्रिकद्दन करके समझी ओरसे जिस्क होनेका उन्हेंच विच्या। उन्होंने कहा -- 'जो एक दिन नह जेनेकारा है, जिल्लो जीवनका क्षा दिकान नहीं है, ऐसे सनित्न प्रशिक्ते



इस बेन्द्र-बारणार्थे एका की-पुतारिको बच्छ एका है? यह सोजवार को स्मुख इस स्वयंको श्रूमानाओ इसलाहर कार हैका है, को पुरसुके बाद जिन्द साथ वहीं हैना दक्षक। पुतारी, सामाना, जार, अति और बान्द्र—मे त्या इस करोनकी एका कारों दक्षे है—इस बारायों अपनी काद सावक नेलेकर इसके इति अवस्थित कैसे हो सामानी है? यो पूछ दिन मेंकते पूजार्थे प्रकृतेकरण है, इस क्रारंग्यों पूछा व्यवहरू प्रसाव निर्देश और जानसम्बद्ध इस बारनेकरण का, सुनवार राज बानवारों कहा विकास हुआ। क्रारंग्ये पुता कारनेकर विवार निर्दार

करकरे पूजा—सरकात् । इस्तीयो पूर्ण्ये कार पित्र संसारको आहि होती है का खाँ ? अधि का कार्य करकी कोई निकेष संज्ञा नहीं खाने के क्राप्त और अध्यानका करकी कोई निकेष संज्ञा नहीं खाने के क्राप्त और अध्यानका

ऐसा जब सुनवार इनके प्यान्ता बहाकिसाओं निक्षण हो गया कि राज बन्धाओं मृद्धिपर अन्यवार का यह है हुएं अन्यवंत नावका प्रथमा हो गया है, इस्टिंग्ने के बहुत काराने हुए हैं। उसकी यह अन्यव्या खनवार के न्यूर्ति इन्हें सम्बाते हुए बहुने लगे—'राजग्। मुख्याक्यानें अस्यव्याः य तो नाव होता है और न यह बिन्ही विश्लेष आवारमें ही परिचल होता है। यह को जन्मा दिस्तानी हेनेक्सन संस्तात है, यह भी हारीर, इन्हिंग और मन्यवा सम्बात्ता है। यहारि से कृत्य-पृथ्य है, से की क्य-पृश्तिक ज्यान सेवार कारी अगृह होते हैं। अभिन्योके करीरों अस्त्यानके कारों आवास, वायू, अर्थार, कार और पृथ्वी—ने पाँच वायू हैं। से अस्त्यानके से पृथ्या होते और जिल्ला है बारे हैं। इसी पाँच श्लोके मेलके काम अवसरके देहोंका निर्माण हुआ है। लॉब, काम, नाव, साला और असा—ने क्षेत्र इंग्ला, वायू, साल, काम काम मूर्ट हमा—ने हा पूछ चीचकी इसूबे क्योनक इंग्लिमान इस्लोक सामान होते हैं। इसके वाय इंग्लिकेट अंकेट होनेका है निर्माणिक विकालेका हान हेना है।

'को रवेन पुरुषेके संवातका इस इसीमको ही आहत लक्ष होते हैं, जो विकासको सारण अनत क्षत्रीकी प्राप्ति केवी है और काव्ये परमार कभी काप नहीं केवी। इसके निक्टेंस निकास धुनियें का कुछ अन्य अन्य स्थान है। के कुछ है, जनके इसके और न कुछ। होती है न कहेगा। बिक्त करें कुन्य बैजी जात हो ? क्वोबिंग अब हो कुन्सेके हैं में कोई अपनर है जो दर पात । अब में हुई पर साथ कुछ पा है, विवारों स्थापको प्रधानत है। स्थाप केवर पूछी। का कुमने केशने कारका होता। को स्तेप पुरित्ते हिनो जन्मकोल हो, जा सबको स्वाहित कि सम्बन्ध कर्त और **बन्ध अभीका प्रथम करें । जो सोन उसन विने निया वार्च** है क्रिके हेरेक क्या करते हैं, उन्हें हेक-पर-हेस कहते च्यो है। कारोने प्रमात क्या करोके दिने का आहे. कर्ग, केरका तथा करनेड रिजे तथ, क्षिया सुराधि ज्यानों देखें का और तथ कह स्थानेके दिये केनके अनुक्रमार्थे अवस से को है। को क्रमार्थ सीख है। सर्वकृत्यकारका पह एक मात्र वार्ग हो कुनोसे कुरुवार क्लेके रिनो काल काल्या गया है। इसका आसाव प सेनेकाचेको स्टीत कोनाव पहाड है।

जीव ज्ञानेत्रियाँ, योध क्रमेरिवर्ग और गान—ये एक विकार न्यान इतियाँ हैं: इस समझे मनतार जानका कृतिके इस्त होत इनका उत्तम कर ऐस क्राहिते। असम करों रूपर सोजानी इतिया, ग्राह्मा विकार स्था कारकार करों—ये और जारिका होते हैं। इसी अक्षार प्रत्येक इतियाचे इस्त विकानुष्या करते एक्स जिल्ला, वृतिक और पर—इस कीनोर्क सम्बाधी असीवति स्वार्त है। इस सम् धीन-कीनोर्क क्षेत्र समुद्धा है, विकार विकारका अपन होता है। ये कार्य, कर्म और कारकारकी कीन अक्षारके क्षार वारी-कारीने करताया होते हैं। इससेसे एक्स-कुक्से एडिकाइ, सारत और तायस—सैन-सैन चेद होते हैं। अनुष्या भी तीय प्रकारके हैं हैं, जिनमें हुएं-सोच आदि सम्बद्ध समाचेद हैं। हुएं, प्रीति, अन्तर, सुना और विश्वती सारित्या होना स्वतिबंध गुणका स्थान है। आस्तिबंध, संस्त्रय, कोच, सोध तथा समर्थ—में किसी कारणते हों वा अवस्त्रय, स्वोगुलके विहा है। अधिकेद, मोह, प्रमाद, स्वा और जासमा—में विस्ती तस्त्र भी क्यों न हों, स्वोगुलके ही क्या इस है।

"हम्पन्न नागर लेकेन्त्र है और लेकेन्त्रिक्क अकार आगात है; अतः यह आगात्त्रका है है। इसी प्रधान सका, नेत, विद्वा और नास्त्रका की सम्बाः रुग्हें, कर, सा और गम्बाध अक्षय तथा अपने आगात्व्रत नारकृति करणा है। इन स्वया अस्तिहल है अन् इसमिन्ने प्रधानो-का मर:स्वया है; क्योंक क्या स्वा इनिनोचा वार्थ एक सका मर:स्वया है; क्योंक क्या स्वा इनिनोचा वार्थ एक सका मरने हेता है, तो उन सबके विक्योंका एक सन्ध अनुवाद करने के लिने नम ही सबके अनुवादकाने प्रपत्तित स्वया है: अलः मनको नाल्जी इनिन वाक्ष नवा है और वृद्धि कर्ज़नी मानी पत्ती है।

'इस अवधी समझ अन्ति अनाहि अनिवासी कारण सम्पन्धः स्थवहरपराचन हो हो है। ऐसी इसाने अन्त्रारा अधिवासी निर्माणमा होनेसे अस्त्राचे सहस्त्रा वच्छ आर्थ है? सनावन आस्त्राच्य नाम हो हो कैसे सकता है? मैसे का और निर्मा सनुत्रों मिलकान अपने कावित्रव (इसा) और मामको लाग ऐसे हैं, उसी असार समस्त्रा अस्त्री अन्त्रों मिलिकाकमं और नामको स्वरुक्तर महस्त्रकानों असिहा होते हैं—यहाँ उनका पोश्च है। उस अवस्त्राचे मृत्युक्ते वाद का स्वाधिका स्वरूप हो कारत है, यो सीकादी कोई विशेष संक्रा हैसे रह सकती है।

'यो इस मोझिक्याको जानका सक्तकानिक स्वक बात्ससम्बद्धा अनुसंबान करता है, यह बर्चसे कामाके मोकी पाति कर्मक अनिष्ट करमेरी कमी लिस वह होना। संसानीके प्रति आसकि और विश्व-चित्र देवकाओंकी प्रसानाके लिये समाप दर्शका अनुसान—मे सम बनुवके लिये जाना प्रकारके सुद्धा कमा है। जब यह इन कमानेरी क्टकर सुल-कुनाची किया क्षेत्र केता है; उस समय रिक्रमारीरके अर्थिमानका लाग करके सर्वतेषु गरि (मुलि) ज्ञा कर रेक है। इतिक महाकावयोग विकार और प्रात्कों काने ह्र यहनका (इस-दशदि) सामनेका अनुहान करनेसे पनुष्य बार तथा प्रमुखे प्रवसे रहेता होकर सुरूसे शोक है। जब पुरुष और पायबा क्षय तथा रुनसे पिलनेवाले तुस-दुःस अपी पानोका अब हो बाता है, उस समय सब बखुओकी आसकिसे रहेत पूका आकरहके समान निर्देश को निर्माण व्यवस्था साम्राध्यात कर लेता है। जैसे मनही कार करका जान कार स्थाती पूर्व है, सितु इन करोका कहा है करेगर एक स्थानवर दिश्त है वार्ती है, उसी प्रकार बीच भी कर्मकारूमें स्कूबर भरताया रहता है और करने कटनेनर कुपाने चील के बाता है। वैसे मीप असमें केन्द्रत स्थानकर जरुको प्रदेश करके कर देता है, जी उक्तर से वरीयें आतकि न रक्तवर आसे प्रति जननका जीवमान जान हेता है, वह दृ:पाने कुट पाता है। जिस प्रकार क्ष्मके प्रति आसीत न रहानेवास पेड़ी जाने निस्ते पूर पृक्षको क्रोहकर वह बाता है, उसी तरह क्रो रिकुलरीरको असरिक्यो क्षेत्र चुका है, व्ह मुख पुरुष सुक्ष और दु:क केनोका साल करके काम गतिको प्राप्त होता है।"

वैनार्थं कारे हैं—आवार्य पश्चतिकारे कराये हुए इस अनुस्तर प्रत्या सम्बद्ध एक निश्चित सिद्धान्त्रमा पहुँच गये उच्चा स्था प्रकारके होकोका सामकार वे कई सुनारे सुने स्था। किर से अनकी विश्वति ही कुछ और हो नवी। एक बार उन्होंने पिकिस्सानगरीको आगसे जालती वेसकार सर्थं वह अनुस्त प्रकार किया कि 'इस नगरके जालनेसे वेस कुछ भी नहीं बासता।'

तमन् । इस अञ्चलने मोश्व-राज्यस्य निर्णय किया एका है; यो सब इसकर माध्यस्य और कियान करता एका है, वह उन्हलेका दिकार नहीं होता, पु:च तो उसके पास कथी कटकने नहीं पाते; तथा निस प्रकार राजा समझ पश्चितिक्तके सम्बन्धमें इस इसनको पाकर पुक्त हो गये थे, उसी प्रकार बह भी मोश्र प्राप्त करता है।

### न्दमकी महिमा तथा क्रत और तपकर वर्णन, प्रह्लादद्वारा इन्द्रको उपदेश

कृषिकेले कुल—भारत ! प्रमुख क्या काल कालेते कृषी होता है ? और क्या कालेते का सिद्धार्थ चाँक संस्थाने निर्मेष होताल क्यित्स है ?

क्षेत्रको सह—पुनिश्चिर ! केइब्रोक विच्या करनेवाले बुद्ध पूरम सम्बन्धाः सभी वर्गीय सेनो और विशेषाः क्रियानके रिन्ये पर और इन्हिलेक संस्थान 'स्व' की है। क्रांसा करो है। विस्तो कृतक कार की किए है, को अपने क्योंने पूर्व स्वातक को निकती; क्योंक क्षेत्रक, का और पंतर-पून सम्बद्ध सामार 'बन' ही है। बनते बेकसी केंद्रि केरी है। कर परम परित कारण नक है। कुम्सकेश पुरुष पार क्या परने सीत होता 'पहर' पानी पाह होता है। 'का' का पारम करनेवारत नकूप प्रकार क्रेक, कुकरे बारता क्या कुरुके संस्तरने विकास है और अपना का की प्रकार पहल है। इससे हैं देखकों करना किया पर्का है, क्रमानित पुरुष ही स्थोपुरस्ता क्रिक्ट पहल है एक बहे भीताचे पान-क्षेत्र असी सहकोको अस्तेने एकक देश समान है, विलोह पर और प्रतिकों बढ़ाने नहीं है, जो विह कार कार्र मंत्रकारी प्रमुक्तिकी एक सम्बद्धान सब प्राची क्तो क्तो होते है। ऐसे क्या क्यानीकी क्याना प्रमुख्य Burbit fieb if murale count qui al fo und कामानीने कार्या है हेत्र माना गया है। सब अवकारित करोंका पारन करनेते के कार निरुद्ध है, कुळा पारनके कारो भी अभिन्य पान निरम्प है। तान में का पुर्वास्त पूर्वास करण है किन्सी सर्वातों का है बारण है, क्रास्त्रक क्तान, जानेस न जान, संतेष, ब्यूड, स्टेबस्स न साथ, सरावा, अधिक कवामा न करत, स्वीकारका स्थान कार, पुरस्क, किरवेदे पुनोर्धे क्षेत्रके न करता, बीकेस केल करन, जिसीकी कुरली र करक क्रम होनोडी रियामा, विशासका, क्रिय और खुलि कु कुछ, कारणी मानांकी प्रका रकता राज परिवर्ण आनेको **दश-६ करो किया न करन--ने तक कुछ दरके कारतो** प्रचार होते हैं। जिलेन्द्रिय पूछा विकाशिक स्वाह के नहीं बहसा, आका राज्ये राज्य अच्छा कर्तन हेरा है। यह रिन्ह और स्तिये समान चान रक्षानेकाल, सहकारी, प्रोतकान, प्रसमित, वेर्वयन तथा केलावा क्रम करवेर्व करवी हेला है। राज्योत पुरु स्थ्या अधिकोशो पूर्वन प्रसूर् केवर--दूसरोको शुक्त पहुँच्यकर प्रापं प्रशास और सुनी क्रेक है। एवं सम्बंध दिवारें सम्ब द्वारा है और किसीने हेव नहीं करता । यह पहल को संस्ताहरूको परित पानीर होता है और जाने क्यों क्यों होन नहीं होता। यह राह हा-करवारे कुर र्ज जाता चुल है। यो प्रवस जमिनोरी निर्मय है तथ निवासे प्रापृत्वं प्राप्ती निर्मात हो गये हैं, यह क्रावसील हमें कुटकार, पूरू राजके करवामके योग्य संस्था नाता है। से व्या को सन्तरी। पायर हांसे कुछ नहीं प्रशा और संबद्ध करेक किरे क्रेक्के कारण कराइट की होती, कर दिव freinfigeren von feitige vogenir fit if ermen इन्छ, बेरिक क्लॉका अनुसार करनेवाला, सहकारी और भीवा है क्या सर्वह करना पारत करना कर है, हो पहले करन्त्री प्राप्त होती है। विकास अन्य:पत्रक सुवित है, में स्तेष केन्द्रीचा अन्तर, क्रम, प्रतित, पंत्रेय, पीटे पना बेरान, सारकारम, कुन क्या कोनशीरका आहे गुलेको नों करनो । एसे से पान, सोध, लोग, ईनो उस हीन होंकर आहे पूर्वन है जो है। इस्तीनो अन्य सरका पासर क्षानेकोर सक्तानको पानिके कि यह निवेदिक क्षेत्रक प्राप और क्रोमको नरावे करे, सहायनंक काल काल हवा केर नगरमें संस्था है बार और मृजुक्तमार्थी प्रतीका पतान god figfig giner street freit :

वृत्तिको पुरस्-स्थापात ! संस्तरके प्रमुख प्रस्तः जनसम्बद्धाः व्यक्ति है । अस्य वास्त्रकरे सहै तर है ? क अस्त्रा और कोई क्ष्मत है ।

भैनानी का ज्युनिश्चर । रीजरातेश को एक गौन का पन्छ नैनेताल अगाल करते औं तह मानते हैं, जाने आवालनों का गुंगते हैं, इस्तिने तेष्ठ पुरुषंकी कारों को एवं भी हैं। उसके बारों से आप और विश्वत हैं। जार का है, इसका काम करनेवाल समुख निश्च करवाली और काम कामार्थि कहा राज है। अपने और विश्वत आहाल है क्षित का नेवाल काम काम है। अपने और विश्व कामा (स्तानका) हो। जाने कामी न सारत। सहा परित्न कामा (स्तानका) हो। जाने कामी न सारत। सहा परित्न क्षेत्र और व्यक्ति कर्ने हुए अनुकार कामा चीवन स्तान केमा और व्यक्तिकांकी पूज करें। को उस्त कामिए असला पोद्या, अस्तिकांकाय क्षात, अक्तानु और नेवाल सका सहाजोवती पूजा करनेवाल होना कामि।।

कृष्णिमं कृष्ण-निवास्त । मनुष्य नित्य कावासी, स्तार स्वाप्तरी, पार्तिक कावाद घोटा क्षण अतिकिनेकावत सरी वैतरे होता है ?

मीनावीने बड़ा-अधिक्षित । यो मैल्फे समेरे और । हामको है भोजन करता है, बीको कुछ नहीं सामा, उसे निता करकार करनेकार हो सन्दान पाहिने। यो हैन बेकर पर-जानके रूपन हो प्रतिके स्तर क्यापन पर्यात, राम चेराव रूप अन्ये विश्व पाट है, पर पर आपार है है है। मिर का परनेकार परित क्या कर है। को हैओ क्षा को होता, हो एक बल्लेकान है सन्तर पहिले । धी क्या परम-जेनम करवेड केम विश्व-माता आहे भारिको तथा महिकियोचे केयन कर सेनेकर हो काल है. मा केवल अनुस केवल करता है। अपने इस विकास हात का अनोरोकार विश्वन नाम है। प्राप्ता पूर्व अरोको विकासी (पारिष्य काला गोका) कार्य है। ऐसे प्रान्तेको साम्प्रानेक प्राप्त होते हैं, ये प्राप्तनीये प्राप्त उनके मानवे निकास करते हैं क्या अन्यादश्रीवर्धीय करता है जा कार्यो परिवास विका पाने हैं। देखा और निर्माण प्राप सावर में पुत्र-मैजेरबील सार्व्य कोची है। वर्षे नहीं साव गति जान बेली है।

वृतिकारों पूजा—विकास । इस संस्तारों को को सूथ का असून कर्न होता है, का पूजाको अस्तो कुछ-पु-स्तार कार बोक्तोने स्थार है देश है। वरंतु पूजा का कर्नका कर्न है का क्यों—इस विकास पुत्रों संदेश है। उसके मैं असको पूजाने इसका क्रीक-क्रीक प्रकारण कुला कारण है।

गोराओं प्रमृ—पृथिक्ति | इस विश्वने सामस्तरातेन per alle unter betreit ber under plageren: कावारण विश्व करते हैं। अक्रमानीके मानी विश्वी विश्ववादी मारुकि नहीं भी। उनके पान बार गये थे। बाह्या और सर्वकरका से कार्र राज की न का। वे कांकी कर्तकक्ष करण करते और इस्त क्रमपुरूपे विका को थे। विकासीयों स्थान सम्बंधे, मान्यविकेश कांच्य रखी और कारक बरमें निकास करते में १ कई बराबर क्रांपिकेंकी कार्यंत्र और पालका प्राप्त का १ अधिक हो कार्यंत्र में हरेन नहीं करते और क्रिक्स क्षति होनेवर क्रिक्स को जो करते थे। स्थितिक केने और स्वार्णने करकी करात क्षेत्र की : वे भागनका करणान करनेकारे क्रमचेत्रमें हैंच्छ और की वे । क्षेत्र परमानवारकार निश्चम हो गमा था। हेले सर्वह, सम्बद्धी क्या क्लिकिन प्रदासनीको स्थानको केले हेक इस रुपयो पुरिवर्त जनमेची इसको रुप्ते कर समार मोहे-- फेररम । यन गुलोको कार कोई वी करन संस्कारों सम्बाभित हो समाता है, वर सम्बद्धे में सुमारे जीवर मिना देखता है। इन्हें जननतत्त्वका ज्ञान है, जनस्त्रे पूज्या है जानके, तुम्हरे मार्ग कामामका सर्वतेषु साधार गया है ? हुए रिक्षामंत्रे स्थि गये, राज्यते श्रह हुए, हार्द्धानेक ग्रहमें यह आनेना की हुए होना क्यों महि होता ? अहार हो गया जान संग्रह देशकार भी हुन निक्षिण केले हो ? तुमाधि यह निवास अवस्थानके कारण है यह वैश्वेत ?' इसके हुए जाता पूजनेक निक्षण विस्तुत्व रहानेकारे सीरहृद्धि शहनकीने अपने जानका वर्णन कारों हुए कहा कारोंने सह ।

अपूर्ण केरं—के प्राधिकांको अवृत्ति और निवृत्तिको वहीं करणा, अस्ति अस्तिवादे करण नेतृ क्षेत्र है, क्रमेको कथी चेह भूते होता। सम उन्होर याच और अधान सन्यानों के असे-नाते को हैं: इस्ते हैंस्ते पुरस्का कोई प्रसा को होता और प्रस्केत अन्तरने पूरत कहाँ नहीं है क्रमा, किन को को कार्यकरका अधिकार हो बाता है। से मानाको पुत्र पा अपूर्व कार्नेका कार्न करना है, साक्षी ब्राह्मिको प्रस्ताक प्राप्त न होनेके ब्राह्मिकी केली अनुस क्यांक है। इस । यह पूरा है वर्ष हैल है का अपने कार्यानों केले के कुछ भी करता, यह एक अन्यान दिख हे जन, जो अन्ते प्रचाने वाची हर नहीं जाने पहती। The first of som & for pair first man extended प्राप: अभिकृती अभि क्षेत्री है और प्राप्ती प्राहिनों से परिता में करे हैं। उन्हें पुरस्का तथा कहाँ का ? मिलने हैं। जारिकांचरे विकास प्रकारक विकास हो हमारोग अधिकारी प्रवीत और प्राप्त निवारण होने देशके हैं। यह बाद स्वापकों है होती है। जिसमें ही कुन्त और मुद्दिन्तर नुस्य भी कुन्छ और नेका नमुन्तीने कर पानेकी आका करते दिवाची के है। यक चन और अचन सभी अन्यत्ये एक संध्यानी है हैराउसे कर होने हैं से विज्ञीकों भी उनक अधिकान करनेका करा बारन है ? मैं से निर्देश्य करते की मानत है कि स्वयाको है। तम पुरा निरम्प है। बेरी सरमन्त्रि पृद्धि की प्रस्के किर्मेश कियार नहीं स्वार्ध । बहुरेश को सूध और असूध करावारी आहे। होती है, करावें स्टेन कर्मको ही कारण करावे 🖫 मा: में कुम्ले कम्बेद विश्ववदा पूर्णत्या वर्णन करता है, सुने । सन्दर्भ कर्न कामानको है स्टब्स्ट कार्ननारे है । के क्योंको से सामा है, बिह्न अपने क्योकारी अवशिक्त न्हीं करता, अर्थको अधिकेको करना मेर होता है। यो हर व्यक्तो सन्द्राता है। उसे मोट नहीं होता। सभी पान क्रमण्डले ही सरका होते हैं. इस बसाब्दे को डीव्य-डीव्य ज्याना है, जाना को या अधिकान करा विषय संख्या है ?

इन्ह । वे ब्यांको वृधे-वृधे विकि तथा सम्पूर्ण पुर्ह्मको

कारितवासी जारत है। इसरिये समयो जात्वार सम्बाधन की सोध है। इसरिये समयो जात्वार, अवंधार अध मानवार से स्थापन के समयो प्राथम अधि है। को सामयोधी प्राथम की सोध है। यो पर और इतियोधी अधीन करों है। यो पर और प्राथम के और उस्क अधिवारी अधानपर है ही रचना है, जो कामी पह माँ हैं। यो पर से पर है, मा है। मा से मैं विस्तीयो अधान है। यही सम्बाध है और न अधानप अधानिय ही मानवा है। यही समय (सर्ववी), मैंथे (मानवारी) सार वीचार्थ होता। सम्बाध है से में से से सामया माँ होती। साम, विवास समया हे गये कि धी में भी में से से सामयाया नहीं परसा।

हन्तने कहा—सहक्ष्म । किस उच्चवसे ऐसी वृद्धि और इस बच्चकी कारित जान क्षेत्री है, को पूछला है, कारको ।

श्रापने का कृष्ण ! सरस्या, साववानी, वृद्धिकी निर्मारक, विश्वाधी निरम्ब क्या कई-मुद्दोकी सेवा करनेसे पुरुवको कार्य पराधी आहें। हेती हैं। इन गुणोंको अधनानेकर सावकारों ही उन्ने आहे हैती हैं। स्वयंत्रकों ही सावित निर्माण है उन्ने को मुख्य भी दूप देश यो हो सब साववासे ही आह होता है।

क्रिया अञ्चलके इस जातको सुनकर इस्तारे सङ्ग निकार हुन्य । ज्योरे स्कृत जाता क्रेसर महायोध नवनोत्तरे ज्यांसा स्त्री । इस्ता क्षेत्र स्त्री, सेन्युवनसी इस्ता देखरसस्य पुरुष की क्रिया और किर क्यारी सहस्र तेसर अपने पान---

## इन्द्रका नमुखि और बलिके साथ सेवाद—कालकी महिमाका वर्णन

वीनवी नार्छ हि—गुव्हिर | इसी निकर्ण एक और पुराने इतिहासका महादान दिया जाता है। एक सनवार्ध कार है, इस पश्चीत सनवार देवके कार सम्बद्ध कारे सर्ग—'समुखे | इस प्रकारकोश वीचे नये, प्रश्लों प्रकृ हुए, समुजीवे जाने को और प्रकारकारित होना हो नये। इस प्रकार सोमाना अवसार अनेपर की सुची कोचा नहीं हैस—यह से कई आहर्यकी बात है।'

न्युक्त वहर-कृत । क्रेक करनेसे करिनको कह होना है और प्रश्न प्रस्ता होने हैं, किर क्षेण क्यों किया जात ? होनाने हुए प्राचनिये कोई सहस्ता की हो व्युक्ति । इसरिन्दे में कारण नारकम् प्रव्युक्ता किया क्ष्मित होने होना की करना । संस्ता करनेसे कर, कार्त्व, सायु और मंग सम्बद्ध नाम है होता है। जाः स्वयुक्तर पुरुवको मैनाको कारण अर्थ हुए दुःसकी किया क्षेत्रका मन-ही-का अर्थ कारणकार अर्थ होच्या कार्युके । इसमें स्वेश की कि पुरुव का करकारणे पर सम्बद्ध है, दार्थ स्वयं सम्बुर्ण अर्थ सिद्ध होते हैं। जनक्या कारण करनेकारण एक हो है, कृतरा नहीं; वह गर्थने क्षेत्रका केती है, उसके अनुस्तर मैं के कार्य करवार है। पुरुवकों के बाह्य किस प्रधार प्रश्न होनेवारण होती है, वह उस प्रधार किस है वार्ता है। किस मस्तुकी केती है, वह उस प्रकार किस है वार्ता है। किस

चीवकी किय-किस नार्वेरे करवार है, नहीं की रहना पहला है। म्ब अवने इक्कोर अनुसार बढ़ी नहीं रह सकता । अन्ने क्रमर को नह अवस्था का नहीं है, ऐसी ही होन्हर की -- इस सरहका च्या र क्यार जो कर परिविधालको स्तार्ग स्रोकार करता है, औ क्षणी केंद्र को होता। जारी-कारीचे प्रमानर कह पहला है, उसके रिक्ते विकासिक क्षेत्र वहीं सम्प्रका का स्वकार । कुन्त पानेका कारण से का है कि पूरून कर्तपान परिकारियों हेन करके अपनेको अस्यत कर्ता कर बैठता है। ऋषि, देवता, महे-बहे असूर, वेरिक इसमें को हर दूजा तक काराफी पुनि-इनकेरे प्रदेश है, विकास आवति गाँ। असी । बिट्ट किये क्त-अस्त्वक प्रान् है, वे पोटमें नहीं पक्ते । विद्यान एका क्रापी कोष नहीं करते, किसी विषयमें आसरक नहीं होते, द:क बनेकर सेंद्र नहीं बतते, सुक्त विरस्तेकर इस्के गारे कुरू नहीं करे एक आधिक करिन्छों क संबद्धके समय भी सोक्सक नहीं होते; ने बिम्बरम्बदी वस्तु सामानसे ही अनिकल होते हैं। निसे उदान अर्थिसींड मेडूमें नहीं इताती, कभी संबंद पहनेपर भी को बैनेको नहीं को बैठता और सुरत, दु:स तक होनोंके केवकी समाजाना भी समानमानसे सेवन करता है. नहीं वनुष्य केंद्र समझ्य बारा है। के बार्कि सामको सम्हाकर उसके अनुसार कर्तन करता है, नहीं शेष्ट्र पुरुष है । से प्रसू नहीं विमनेत्राती होती है, उसको कोई पन्ता, बस्त, परतहार, बहिद्र, पुरुषको, जीता, सद्धानर और बन-सप्पतिसे भी नहीं पा

इंक्सनं, निर म्हानं मिन्ने सोख पत्ते वित्या गान ? सीनके आरमानं निराने पुरा और कुरावाध केन बाद है, आता है वह पाता है, नहीं जानेका प्रस्ता है, नहीं साता है कहा से कुछ को पाना है असिको प्राप्त करता है—जा समझकार से बच्ची मेरिन नहीं होना और एक प्रचारके दुः कोने निर्देशन गाम है, बादि सर्वकेत मुख्य है।

वृध्यितं पूरा—पराशेष्ट् ! यो वर्ष्ण सन्-वाकारे समय राज्या जार हे जारेते की संस्थाने का प्रवा है, समय कार्याच्या का साथ है ? संस्थाने साथते व्यवहर मोई बच्चा भी है; इसीतिने का बार आपने कुछ हा है।

भीकारीने कहा—चुंकहिए । जिसके की कुछ कर को हो, हुना किन नका हो तका कर की रहा हो कबा हो और हम कारणोरी को करिन किन्नीओं कीम नका हो; सरकार को वैस् करका करनेने ही कारणान है। तता रे को मुख्यान सक्त कर्मकार प्रतिकार सहस्य किन्ने कुछ है, वर्गाको देशने और कैनेकी जाति होती है तका कहे कार्य करनेने कुछान होता है। हमके विकास की कुछ इक अन्नीन हरिकासमा उद्यापन हेता है, को करिन और इसके संवादके कार्य है।

विकानुत-संक्रापने देश और कुमलेखा परंपार संक्रार के पूजा था। वारम्यक्रमानी पर्यान् विकान अपने वेलेखे तीनों स्वेयक्रेयते परंपार अधिकारणे कर दिवा था। की प्रतिक्र अनुद्वान करनेवारे इन्हें वेक्कालेके राज्य थे। वारों वर्णिक सोग अपने-अपने कर्नी दिवा थे। वेक्सालेखी पूज पूजा होती थी। विमुक्तस्था अध्युक्त के द्वा का और स्वाच्ये सुन्धी देश सदानों भी जराव थे। इसी सम्बन्धी वारा है, एक दिए इन्द्र अपने ऐतावर पायक गावपास्थर बैठकर होने स्वेवकी प्राच्य कारनेके दिवो निवादे। उनके साम स्व, वहु अस्तित्व, अधिनीकुम्पार, ज्ञानियान, गावर्थ, वारा, विद्यु त्या विकाय साहित्य वे। पूजी-पूजी थे किसी सम्बन्ध प्रमुक्तरात्य करित प्रतिक्रमान थे। क्यार दृष्टि पहले के इन्द्र क्षायों का विक्रो हुए क्यो पास पहला गये।

वेगरान इन्त्रमें वेनलागोंके बीचने ऐरावरकी बीचन मैंटे हुए ऐरावर भी देगोंके सामी वर्तिकं करने प्रतिक्ष भी प्रोप्त मा भागा नहीं हुई। वे निर्मन और निर्मिक्तर होकर प्रदे में। एक इन्त्रने महा—'विरोधनकुम्पर! अपने प्रमुखी समृद्धि देशकर भी तुन्ने स्थान नहीं होती, इसका क्ष्म कारण है? परास्त्रम, कृद्ध पुरस्तेकी सेवा अवस्था त्यसे अन्य-करण पृज्ज हो अनेके कारण से तुन्हें फोना नहीं होता ? कृत्योंके रिन्ने से ऐसा अन्यस्त्र सर्वन्त्र कारण है। हुए प्रमुक्तिके काने को और उस्त कान (कान्य एत्व) से प्रा कु—उस समार सेकारेन स्वाने पहलार के हुई होना को नहीं होता? बाते कार-क्ट्रॉक समार केवार दार्का कारान को हुए थे; अब उस एकान्ये पहलाते? तक्षी तिका—का केवान की हुन कोचा को मूर्ग करते? तक्षी और को सोका की दुन्छ म कान्य बहा करिन है। बात हुन्यते किया कुन्य कीन है जो तिशुक्तका राज्य नहु हो क्रान्यत की जीवित सुनेने समाह १से ?'

में क्या और भी स्थूत-सी करोर करों कुनवार हकी क्षीरका कैरवकर किया। क्षीरने भी बढ़े आरख्तों से ससी वर्ते कुनै और निर्मन क्षेत्रर उत्तर दिया।

क्षेत्रे का-कृष्ट ? का में अधी तथु धारको देखी अर प्रका है, को अब की स्थानी हुए जनान होंग होनानेसे कहा रक्षभ है ? देवाल है, अर्थन कह उठाने सामने कई हो । नहरे कुरने कुरने कार्यात नहीं और अब किसी बाद वृश्चि अर नहीं है के इसमें केवी बचाने हैं। हुन्हों देन्त कुरत कीन ऐसी करोर कर का सकता है? जो प्रवर्ग होकर की अन्ते क्ष्मों को हर और प्रमुख एक करता है, बड़ी बहुब्युक मान क्ष्म है। का से करियोंने युद्ध सेता है से एकसी बीच और कुरोको क्रम निर्देश होती है। इसरियो तुम ऐसा न क्रमहर में कि की अन्ये कर और पराहरको से किया क्यों है। अपने के कुमारी पूर्व अपने और वेरी अपने क्रिपरित है—या प्रचारे का की प्रभावता काम नहीं है। बार: दूस मेरा अक्कान न करे । सम्ब-सम्बद्धर जीवको क्रमी सक् और बाक्षे पुरस्त निरम्भ ही स्थल है। जैसे बारतने इस सबन सुन्हें उनके कार जीवान है, इसे इस सभी का को भी च्येक्कम । का समय सरका अल्ल है से करानो चेतित पर्वाचनो निका, तथ, दान, विक और प्रायु-पानाव भी भूति क्या पर्छ । हैकारों अस्पात करके भी कोई आवेकारे अवर्तको नहीं केक समाता । (नह ) सून को अपनेको इस वरिविधिक कर्य कर्य है—वह अधिकार तुन्हों है ुक्तका कारण होना। यहि पुरुष कर्ण है कर्ता होता से अल्बो कृत्य कोई रूप्य करनेवास न क्रेस; सिन् वह से कुरनेके क्रारा जनमा क्रेसा है, अस्तिको ईक्टरके मिला और क्येड् कर्म की है।

देश्यकः ! पुष्परि मृद्धि गैकारोग्धे-स्व है, इसस्ति एक-न-एक मिन समस्य क्षेत्रेयाने अपने महत्त्वी और तुम्बरी सूद्धे नहीं बाटी । संस्थानी कुछ पूर्व की है, से दुन्ने स्वयं है पराह्मको स्वयं कारतिको स्वाप्त हुए सन्दरकार सङ्घा वहां बानते हैं। सिंजू मेरे-जैसा सनुष्य, से संस्थाको विवस्तिको मानता हो, सम्बन्धे प्रभावते अवस्थिते व्याप्तः भी प्रोप्तः, वोद् अध्यक्षः प्रमाने वैद्ये यह सम्बन्धः है ? मैं, तुम वा कूसरे सोन, जो वेगतासोंके जाती होनेवाले हैं, वृद्ध हिं? उसी वार्गपर वार्थने, मिससर व्यापेके केंद्रजो हुन् वा वृद्धे हैं।

पराणि अस्य पूर्ण पुर्वर्ष के और अस्यय केमसे वैशेष्णण के भी के, सिंगु यह रस्तर, क्रम्य असेन्स क्रम भी मेरी के स्था कारणे किवार का क्रम्यों । अस्यक वैग्याओं क्रमणे कृत कारणे क्रम करे हैं। अस्यक विग्येका क्रम भी कारण। हुए क्रम करेनको सम्बद्ध कर अस्तिनोको क्या वेरेकाने समारा के कारण क्रमण्या क्रमणे भीति असेनको स्मृत क्या कारणे के, सिंगू कृत्यक क्रमण्या क्रमण्या अस्यक विश्वेत क्रिके भी असेन्यक क्रमण्या क्रमण्या क्रमण्या क्रमण्या क्रमण्या क्रमण्या क्रमण्या क्रमणे क्रमण्या अस्ति को । क्रमणा क्रमणे क्रमण क्रमणे क्रमण क्रमणे

केराव । मध्यम् हेरेके कारत यो विकासके केना माँ, भा राज्यर हुन निवास करते हो, को डिक्सकार चर्डी, को रेसर परचे हैं; इसमें बोर्ड अक्टरेकी पर भी La arable march fielt de con it, my me fen it प्राच्याल है। किस सम्मान्त्रकोची चौतुनक अवनी चान्ये हो. बंध म कुन्तर्थ है, म लेते हैं और म कुलेकों के है। बंध वितरिक पास विश्व वहीं वहीं। बहुत-से क्रांस्क्रीके ज्ञानोत्तरे ३० पूर्वी है और उसकी क्रीडकर कर कुछने पाछ अपनी है। प्रत्या समान पहला है, अतः एक प्रतासक कुरूरे पान की कुमर जिस कुरिके कई बार्ट कार्या ! अन्यान्य प्राणे विताने कवाओंका परिवाल वितार है, उनकी परांगा नहीं हो सकती। तुन्हारे कह भी बहुत-हो राजे इसका क्रम्मेग करेंने। पूर्वकारको को विक-सित राज्यकोरे बोच्य है, वे जान कहीं विकालों को होते। कुछ, कुकरणा, कर, चीप, करवासूर, सम्बरसूर, अस्त्रीय, कुचेया, सामांपू Miletonia, Agus, veglie, upr, Resthile, Rebury, प्रीनियेन, सुक्रेप, भूगेका, पुण्यकर, पूप, सावेपु, भाग, राष्, करिनाव, विद्याल, वाल, कार्याट, वर्ते, Regig, felift, studes, wirray, waaper, after-s, Region , pitter, Berry, Brent, 104, Brentsfry और मैटप-ने तथा और भी बहुत-छे देख, प्रत्या और महार आदि पूर्वपारली प्रवादि प्रवादि हो को है। मिय-जिन पूर्ववर्धी नरेहोके अवस इनकोन साथ सुकते हैं, से सनी कारणी घर पहले हुन पुन्तीको क्रोक्कर करे गते; क्योंकि काल ही तकते बहु सरकार है।

केवल कुरने ही सी पहोंचा अञ्चान किया है, यह बार भी जो है। इन सभी राजधोंने से का मैतने हे, सभी क्यांका से और एक-के-सर निरुक्त पताने संस्ता प्रानेवाले वे। इक्तरे से एक ने भी आकारको कियरो से, सैक्सों कार्यों कार्य में और प्रधानस्तर का बारण पर सकते है। करोड की देश और प्राप्त को हुए है । विक्रू प्रकृति प्रकृत भी संबंध कर ही करन। निर्मालन क्यों कर प्रमीको रुप्येग्ये बाद स्थान प्रदेश, सा क्षेत्र सम अपने प्रसार क्षेत्रको र तथा प्रकोषे: प्रतरिकं विकाशकेलारे प्रका और if, wer-neite wied met it | ben mebit un अपने राज्येक पह हो पानेवर भी उसके छोजाने नैनीहर्गक बद्ध सम्बोने। क्रोमके समय क्रोम्ड व सरो और स्रोक अन्यान अन्येक्त हुनेते कुल म प्रकेश हुन्छ है कुल पांडु सारकी देलों क्षण कारण, क्षण हेर नहीं है, सुनवर भी पाताबा स्थानन क्षेत्रीयाल है, तुने भी बाले यह जात केया : हर राज्य हुए अपने केंद्रों प्राथमें भूते केंद्र करते हैं। में कृत्य क्रेका केंद्र हैं, इस्तीओं हुन अलोकों बहुत यह यह के है । किंदु कर रखे, किर कारक जूतर बाक हुआ क, को कुनर भी कहाँ करेग । विकासीके इस इसर को पूर्व होनक है हुने हुई हेन्स करा है।

केंग्य । एक पूर्व कार्य हो और में तुमको कारतः है। रिक्ट मेरे प्राचने पारच क्षेत्रकर प्राची क्षेत्र कर्वा क्षेत्रकों क्षेत्र ? का ने कर क, इस क्या को पुरुषों हैया पूर्वा है, ज़लों हुए क्योरियत जो से। को सबसे प्रतिमें हुए मेर पर्याप देश एके हैं। एक ही साम्य हैंन कार्य हैंगा। पहले का देवातुल-संक्रम हुआ था, का कारकारी कर तुन्हें धारी न होती: की अनेकों हो समझ आहितों, बहे, साओ, क्तुओं क्या क्रक्टालोको क्याता विका का। वैदे केंगरे केन्द्रभावेचे वरणक था नवी थी। तत्कारे सिरपर भी पर्वतीके कियों विकार परेड़ करने थे; मिलू इस समय में क्या कर राजान है, कारणका समाजन करना करिन है। एको अकरो नव क्रांग्स भी में केवल मुक्ति मनका तुन्हें मीतके पार ज्ञार सम्बद्धा है , जिलू बेरे रिपो का परवाहर दिखानेका नहीं, क्रमा करनेका समय है। इसीमिन्ने सुन्तरे सक अध्यान पुरुष्यन को रोख है और गई कहा है कि दम अपनी बढ़ी कार्य किये का के हो। जैसे मनका स्सीसे किसी प्रकार कींव लेका है, उसी जनार करोबार बाहर रहते काले प्रसारी वर्षि पात है। पुरुषो लाध-समि, सस-दश्म, बाय-क्षेत्र, जन-नाम और क्रका-चेश--ने सब कारते हैं प्रश्न होते हैं। जो कारके प्रशासको सन्ता है, तह अस्ते

ि प्रतस्तिपर्य

क्रोकर्स कोई सक्रमक नहीं निरसी, नहीं स्वेचकर में क्रोक गर्रे कात । संध्यास जन्मक संख्य जन्मे निर्माणो ते दारका नहीं, क्यों क्रमणी सुविवयों कीन कर के हैं इस्तेरिये में होना नहीं करता।

अरिन्द्रे पुर अधनको सुरक्तर इन्द्रस्य कोच कर गया। वे साम्य होकर केले—'केलाज ! की हरूको बावसीहर कार वंदे देशकर चारनेकी इच्छारे आणी क्वां प्राप्तक भी बेहर बहुत काल है, फिर इसरा जीन है को व्यक्ति न है; जिह संबारी बहित राजको काओरकारी और विका है, इस्तीओ सनिक की निकारिक को होती। प्रश्ले रवित को कि कैनीह 🛊 कारण तुन्ते कारण्यः नहीं होती । पारतान्ते कारण्या कोई परिवार नहीं है, काले करना नक बोर्ड करन नहीं है। बाल सम प्राणियोके साथ इक्त-का कर्मन करना है। यह कैर, रत, कर, क्ष्म, कक्ष, रत और करनकार देतान बारके प्राणीको पीडा प्रदेशमा सुरक्ष है । सैने महेने अफावड बानी क्षां पान, जन्मे वेनले विन्योधे प्रकृतो योद-क्लाक्टर पढ़ से पार्ट है, उसी जातर 'या करन साम करीया. को क्षेत्र पूरा करना है' ऐसा बढ़ते हुए सहनाओं बारर सहसा आवार क्योग किन है। 'जरे । सर्व्यो से अभी-अभी देशा था, यह यह बैसे एक ?'--इस स्व बारकोर बेगमें बहुते हुए अनुव्यक्ति प्रशास सुरात्ती पहले हैं। बल, देवार्च, चोन और प्राप्त—ने सब धाराने हारा नह है। बाल हो आवा प्राणिनेका सीवन हर से नात है। हैने महतेका अस है तीचे निरम और क्याब्य परिवास है पूछ । को कुछ देवलेने जाता है, तब नावकर है, अनिवर है; को भी निरम्बर इस बातका करक जुना कठिन हो जरूर है। अन्यव

बाहु पाकर भी फोब्ड नहीं करता; क्लोंके दुःस का करनेने 🖰 ही तुकरी कृति क्लाओं काननेकारी एक मितर 🕏 इसरिनो-हरे क्याच्या की होती। काल अलग्त अलग् है, का सम्पूर्ण बनावर अञ्चलक करके समझे अपने मौजने पना का है। कार इस करको नहीं देशका कि कौन बड़ा है और कौन केट: यह समझे अपनी आपने होंग्या करता है, किर भी विकास के की होता। सोन ईमा, अधिका, सोध, कार, कोच, चय, रहुत और घोड़ों चेंगचर अपने सम-पूर्व को क्षेत्र हैं। कियु कुत्र विकार, जानी और राजानी हो, कारणी औरम और सरके राज्यों कानी हो, सन्दर्भ क्रमोदे क्रमो रिएम हे एक राजे विवेदको कुरात और merchant der der

'बेस के देख विकास है कि हुन्में अपनी सुद्धिते सन्दर्भ र्रोक्केक प्रस्त कर विश्व है। हुए समेव विश्वती हुए की करते पुरू है, वहाँ की तुम्हरी आसरित नहीं है। हुस्से अपनी प्रशिक्षकों जीव रिच्या है, इसरियो स्थेपूज और क्ष्में पुन्न क्षमान पर्वा नहीं कर प्रकते । तुन वर्ष और सोवारी रीत बारवारी प्रकार करते हैं। एक अरेग्वेंट और क्षाक्रक प्रोक्षर्य है, किसीके और केर भड़े हैं। क्षाओं किसी तक करित करी कही है। तुन्हें देखकर भेरे पराने दक्तका हेकर हो अस्य है। मैं हुम्हरे-मैंसे हरनेको क्यानो रककर करन नहीं बच्छा । अब नेर्रे ओसी हुन्हें बोई बच्च नहीं व्हेंबंगे; हम सब्बा और सुबी को है

हेला अक्षांत्र प्रवास्थित केंद्रे हुए हेवराम हुए नहींने सारे को और प्रमूर्ण असुरोको बीच रेक्केंड ध्वास, शबके क्**यक्त सम्बद्ध होकर आरम्को स्त्रो स्त्रो**। उठ सन्त्र काम प्रकृतनेने इनको सुनि को और वे स्वर्गने लौठकर सुनायुर्गक दिन स्वाचीत स्वाने अने ।

#### इन्ह्रके पास लक्ष्मीका आना तथा दानव-दैत्योंके उत्थान और पतनका कारण बताना

कृषिकेरने पुरा—शिलावह । विस्त पुरुषका कत्वन क पतन होनेकारम होता है, जानेह वर्ष राज्या की होते हैं ? यह मानेकी क्या कीविवे।

ग्रेमकी कर-वृतिहर ! विस्ता उत्तान क करन होतेको होता है, इसका का ही काले पूर्व सक्तकोठी प्रकट कार देता है। इस किकाने त्याची और प्रमुक्ते संबद्ध शायने एक प्राचीन इतिहासका उद्यक्तक दिना नाम है, उसे सूने । एक सम्बद्धी बात है, देवनि बाहकी समेरे उठकर चरित करने कान करनेके रिप्ते मुक्तकेकके हत्ती तथार हाँ महत्त्वीके तकर नवे और उनके पीतर करे । इस्लेक्टेंने बक्रवारी इक पी इसी स्थ्यर जा पहिले नहीं जसकी साम कर से से 9 पिय केन्द्री एक ही राज्य नोते रूपाये और मणावे एकता करके र्वक्षेपरे क्यां-स्थाद का किया। स्थाता वे कारवीके फिक्टो, कई सुर्व्यक्ती कानुका फैसी क्रूं भी, बैठ गये और अनेको परकारकार्ते, केवर्षियो स्था पश्चिमेके पीरो सनी हां कवाएँ कहने-सूनने राजे । जानी खेनों एकाजवित होकर

मर्तातम् कर भी यो थे, भ्रावेने विरत्नकारोः नीका मनवान् सुर्वेक्शकास्य अप हुना । या वन क्षेत्रेने कड़े हैं।अर सूर्वेक्शका किया ।



इसी सम्बं इन्हें आवादकार क्या किया कोड़ी स्थानकी पहें. यो अन्तर्भः विवाद आही आह कही। यह विवादकार क्या कियान का और अवती आवाले कीचे कोवकार अवतिया करका हुआ अनुका कोच्या का का का। भाग्द और इन्हों जह विवादकों आकात अवविद्याल कृति विवाद, यो कामानोर कोच्या विवादकों कारकार इन्हें आहें सर्वादि स्थानिद्यों कर अववि । इन्हें की कारकारिद्याल इन्हें को सर्वादि स्थानिद्याल अववि । इन्हें की कारकारिद्याल इन्हें अन्तर्भ और देवीचे पास कारका क्योंने क्या कोच्या को अवविद्याल किया। इस्त्याल अववाद क्योंने क्या कोच्या अवविद्याल क्यों अवविद्याल कृत की और कुल देवि । तुम कीच के, अवविद्याल क्यों की

त्ववर्णने जेली—इन्ह । तीनों लेखोंके प्रत्यार प्राणी मेरे स्वरूपको प्राप्त होयान परमानको एका निवनोके मेरने निरमार स्वरोग करते याने हैं। में एक्ट्रूपी प्रत्याकोको केवारी प्रदार करनेके रिप्ते सूर्यको जिल्लाके विक्ते हुए कामानों प्रमार हुई हैं। पुत्रे स्वेग प्रमार, की और प्रकाशिको कहारे हैं। में ही रुक्ती, पूर्ति, जी, सदह, नेका, संगति, विक्रिति, रिपति, पूर्ति, सिन्दि, समुद्धि, सरका, स्वाप्त, निवक्ति कवा स्वृति हैं। वर्णतीक पुरुषोक्त देवारे, नगरमें और कार्य केव

निवास है। में बुद्धारे बीच न दिस्तकर विकास सुनोपित प्रेनेवास प्रत्यीर कवाके प्रशेरमें सब बीवूर रहती है। विस् धर्मकरण करनेवारे, पृद्धिकर, सदानारण, सरावारी, विनयी तथा करवीरा पुरावेशे भी राम निवास करती है। में साम और वर्गर बेमकर प्राते असुरोगे पानी थी, वित्रू कम जहें कवि विनयीर देशकर पुरावे भई प्रतेश विकास विकास कसी है।

ापरे पूर्ण—देनि ! कैलोका आवरण पहले कैसा वा ? निवाने कुन करने पान रहते की और अब का देशा है, को को केव्यर के पान आ चाने हो ?

त्थनीकी का-को जन्मे करील कान करते और केनोर्व करनी विकासिक नहीं होते हैं; ऐसे प्राणिनीके जीतर नेय निवास होता है। बहरे देखरोग हुए, अध्यक्त और व्याने प्रत्या पूर्व से र देशाह, दिला, पूर्व और अतिविधीयो कुछ करते है। अभी एक प्राप्त केंद्रलेकी प्रवृत्ति की। के अन्य वर-प्रद प्राप्त-स्वारकर प्राप्त रक्ती थे। प्रतिदेव अधिकोत्र किया करते के और मुख्येओ, विकेशिक, अक्रमण कर करनाई है। को इस है, होर भई का वे क्रमी थे, किनु किलीओ हैंग्यू नहीं बाले थे। ईसर् क्षेत्रक की, कुछ और कार्त आहे सेवालेका भारत-केवल करते थे। उसने अपने और स्तान्त्रीह को भी, सरकार मानाव अवक्र था, राजी अंकाह थे, प्राणी प्रारम्पत, सुब्रह भवित तथा प्रतिपत्र-संस्थापार गुण का। तथा असमे भूगों और व्यक्तिको संबद्ध रक्तिकारे, कृतक तथा प्रश्नाकरी थे। दे प्राच्या प्रामुक्तिकारो प्राच्या प्राची, वार हेते, राज्या प्राची और 🕮 एवं निकारिक प्राप्त पाती थे । उपलब्ध और सुकी रूने को से। सर्वंद्र विकासका थे। प्रतिदेश सुर्वोद्यक्ते पहले करने क्या कार्य क्या और और तत् भी कार्र के र जन:कार के का कृत्ये-कृति प्रकृतिक क्यूओका दूर्तर कर्म और अक्रुलेकी पूर्ण किया करते है। एक कर्मची क्वानि रूने एते और प्रतिकारी का रहते थे। एतके आवे करने ही होते हैं; देवने से वे कभी सेनेका नाम की नहीं die der

कृत्या, जन्मम, बृद्ध, दुर्गर, रोगी और विश्वोदर तथा कर्म क्या उनके दिने आप और क्या बर्गर में १ जाकुर, विकारका, औद्धा, क्याचीन, रोगी, हुर्गर और पीदिमको क्या जिल्ला सर्वाव सुर क्या हो उस प्रमुख्यो स्था उत्कार क्षेत्रण करते थे। कर्मका ही आक्षण करते थे, एक-पुरार-की क्या नहीं तेरी थे। कार्यक इन्यून प्रस्तर अनुकूत और कुत्याचे जना को-मूनकी सेकार्ने दर्शावा रहते थे। दिन्हों, अर्थन करनेके पक्षात् नवे हुए असको ही प्रतिकृत अस्तराज्यें साथ परंधे थे, क्षणी सामानी और स्थानी थे। में जान चेका कार्यावर को उन्हेंजे हैं की वहीं को है, वहाँ क्रावेंको केवर पैके असे अस्पेको सब्दे के। प्रा अभियोको अपने है सम्बन सम्बन्धर रूपर एक रखते है। कारण, रास्त्रा, काल, आंकारोन्स, कार्यकेसं, स्था, सत्त, कुर, तर, परिवास, कुछ, खोगल कार्य करा निर्देश प्रमाद केंग-में क्षणी संपूर्ण करने एक स्वेतून खाते से । विहर, berrie, derene, drugt, articles, articles, franc और करना आहे के उनके चंकर नहें अंक करने को में । इस प्रचार कार पुरसेकार करावेच्ट पास में प्रक्रियासको रेकर अन्तरक अनेको पुनोचे क्याँ आसी है।

May an error was bed ook gold fortun ar wit to the box, bold of all in our t, it can और क्रोक्के क्लोन्स के पने हैं। यह को-को रहेन सम्बन्ध मैदना कोई कर कार्य है से पुरुष्ठ कर के रूपे के रिकारने इस् क्यारी देनी स्थापन करते है। यह स्थापेट अमेरर मी मन्द्रपद सेन असे आसरम की है के पा है, पालेको भीर अन अन्यत् पाई भी होने और र उन्यत derfielt gift Stellt region ift word file fremit mit ift den मारिका कर बैठता है। एक निवासी एक दिल्ली अपने परिवर्त अंतिक नहीं नामर्थी । मारा, वित्य, यह , सामार्थ, अविकेट और गुरुवोच्या आहर का गणा। संगानीके साराम-कारणपर की were reff fem were bem, feer, selebt mie गुरुक्तोका पाल और उसे अस्तान किये किया है अर स्टेन भोजन कार्न रागे हैं। इनके स्लोहने भी परिवा नहीं खते। देवांके का उनको किया को क्षेत्र विकासका है। बोको अस मैं जूडे इस्मेंसे कूने कर्ण हैं। चतुरतेको कर्ण क्रीन के है. फिल्लु परंतु और पानी केवन करका आवर नहीं करते । होटे बारामा आहर समाने देखते चारे हैं और काना और सालेकी चीती अनेको पार पर एव कर्ष है। सेक्टोको पूर्व होस्कार अपने पर रेते हैं। ये श्रवीवयान्य प्रेते हैं और प्रायान्यों औ राम ही सम्पानी हैं। इनके पर-वर्गों विश-एम पान्य गया पाल है। वे अवस्थानी पालकारों क्या अन्याने के के रकते है।

अब उनके वहाँ क्योरीवार संख्यों क्षेत्रे सन्ते हैं: विश्ववैने के क्रीसार जो सा नके है। केलेक प्रमुख्ये अवक क्रोंका आरह का आवाह करकेने से बोर्ड सराव की रकते । मानी वरियों सरर गाने पालक संस्थिती कियोची

केमाओं और मधिनियोधी विक्रिया एक करते ने एक उन्हें । स्थीत करते, विरूपे, बेहते और सहक्षा करते सर्वा है। minds seen final quality after your familie the seen क्यों है। किस्ते हैं हुन्य पूर्वकारों कार्र पूर्वक्रिक एकेन प्रकृतिको एको एको है हाँ बागीरे गरिकासके करण और रेमे हैं। उसी के काया है, वे सह कसीका का कर केनेका है कियार रकते है। कियोंने से मुख्की रेक्ट का है की का अन से कार पुर तोन है विकासिको होन्स-स्कार सारने ताले है । बहु अपने सारा-स्मारके कारने ही जैकरोरर हुए। कारती है। क्यों ही कीरत प्राप्तन कारी और सम्बद्ध कर से-रेक्ट पुकारती है। जिल्हें हिर्दिकी और विक संस्था करता था, से ही हतेन कर अपने सन्तानीके कानो सान राजने, कोची हो माने अवस्था राजाके हात किय कारे के कुछ देखते हैं के देखता असकी विशेषकों अपने है । संग-वेर-कर ब्रोला, क्योंक्स, करवारी एक पुरुषीयांकी हे को है। में मेन की कार्र महिन, का में कार्र और करेबी पर्यंत्र केव्या परायो सामस्य कर्त है। हसीरिके मध्य प्रत्ये बहुरूत यह पहलेखा-सा तेन पूर्व एक।

केन्द्र । जनमे इन देवोंने वर्गेद्र विपरित सावरण पूर्व un fine fo man 40 up Rayer from \$ for one polit करने भूति मुक्ति र पाने पान्तु है, विकास अने स्वान्ध्यार में पाने इक्तरे कर अपी है, कुन कुई कीवार करें । वहाँ में रहेंथे, च्यां सरका, काम, वर्षे, व्याप्ति, विकित्ते, संगति, वामा तथा पय-ने उस देखि से मेरे साथ नियम कोसे ( क आरोपे पान में बनके अपन है। मेरे साथ में सभी देशकों असुरोको कारका सुद्धारे पात कार्य है। देवताओक का करी तक क्षेत्र है, जारिये कर इन्लोग उनीके की निकार करेकी।

half was after our areal promote first affermen किया । उस समय प्रोतास, कुरूर, और कुरानिक हवा पार्टने राजी । क्षा काम प्रदेशने राज्योताहित हुन्हार दर्जन स्ट्रांने रिको सन्दर्भ देवता कार्रिकत हो गर्ने । सन्दर्भाग हन्द्र गर्दार्थ क्रमा और सम्पर्धनीके साथ प्रार्थने असे और वेस्टाओंने साहत क्षेत्रत सामने विद्यालयन हुए। उस समय नामानीने स्थानिके पुरानकार्य प्रक्रेप की । विकास सामानिक रकेवले अनुस्तरी वर्ण होने सुर्गी । वेकारलोकी कुरुपि विस्तृ क्याने ही कर नहीं। इन्यूनी दिख्यों निर्मात एवं कीतन्त्रत दिवानी के रूपी। संपतिनीके वर्ष का स्वतंत्रर संस्तरने क्रकार वर्ष होने क्रमे । कोई की क्रमेंसर्गरे विकरित नहीं हेक का प्रकार कान की काम प्रकार के गाउँ।

म्मुन्त, रेज्ज, किसर, यह और वहसीबी समृद्धि का | बीर करके प्रमुख हो से उने प्रमुह माराने समाति प्राप्त गर्म । वे सक् जाता पने रूने । मेरे कुर देनेके साम ही | हंती है । कुरबोह । तूमने जो समान और पत्रनके पूर्व कुर्बानी कारणाई विश्व करने तानी। विश्वविक मुंद्रों करोर । स्थानोके विश्ववने उस्त विश्व का, कारक कार की क्याँ जी निकासी थी। यो स्तेन इसमें देवकानेंद्वस की न्यानीकों इस को हुए क्रानोंके उत्पान-सरका कारण 📷 बनायके स्वयंत्रिकी काराव्यको प्रयास स्वयंत्रको इस । यहावार ने विच्या । पूर्व कर्त परिवा करके प्रस्की नवार्यकारका अभ्यानका अञ्चलीको भन्त्रतीने बैठकर पात करते हैं: ये प्रियुक्त पर सकते हैं।

## जैगीवव्यका देवरुको समस्वबृद्धिका उपदेश सथा श्रीकव्यका उपसेनके प्रति नारद्जीके गुणोका वर्णन

स्ताहे अस्वरण, केसी विका और की परावस्ते एक क्षेत्रेक करून अवस्ति पर, स्तिकारी सहस्तको सह mer # 2

चीनवीरे कार-विश्वीत । यो पूरव विश्वासी और विवेदिक होचर में होनकोंनी बन्मेंड पालको संस्था पहल है, को अपूर्तिने पर, अधिनाती प्रक्रमानो प्राप्त केल है। प्रार कियाओं जैतीयांक मुन्ति और अस्तिक-केवाओंड संपालका पाट क्रवीन इतिहासका बहुवान केना काल है। एक वार कर्ना अमंदिरी वारानेवाले महाद्वारी जैतीनक सुनित्रे अस्ति नेवारने इस प्रधान पुता—'गर्देशन । और आरखो खेर्ड प्रधान को से आर आहित करत नहीं होते और विन्यु को से भी जातर कोम नहीं करते-क अरक्षी वर्षेत्र केली है. स्वापेत्र प्रक हा है और प्रत्यक फार करा है ?"

क्षांक इस अवस्य प्रात्नेयर इन न्यूक्तरमधीरे संविद्धांक, परित्र और सार्वक क्यानोमें उत्तर किया।

वीर्यकारे कहा—मुन्तिर । पुरस्कारे कार्यकारे मनुष्योको विकास अभावते ज्ञान गति और प्रत्य प्राप्ति अक होती है, यह सुधि में हमले करा रहा है सुने-महाल पुरुषोक्ती पतेई निन्दा करें, उत्तरानोह तील गाने अववाद उनके सराचार तथा पुरुषकार्थीयर परस्य हतने विद्या से सकते प्रति एक सी ही नहिंद रकते हैं। उनसे कोई क्यू क्कर क्यू रे से में सामे कालेंगे कुछ भी नहीं बढ़ते । कुछने कुरनेकारेकी बी बराई नहीं करते । सबसे बार प्रकार भी पारनेकानेको प्रसन नहीं पानो । परिवर्ण जानेकारी पानको विन्य क्षेत्रकर काँपान कार्योको हो काले हैं। को कार कीर कुठी है उसके रिने क्रेंच की करो। दिनी सबके क्रेंचे क्रीका की करते, रूपका ज्ञान परिच्या होता है । वे व्यामहित्यम, सर्वेशको कीरनेवाले और विलेखिय होते हैं। यन, काबी और प्रारंश

कुरियोरने पुरा-रिकारक । बैस्ते कोरर, विस्त कावी विस्तीच्या कावाय नहीं वस्तो, कावी ईवर्ड नहीं रहती । कुरतेकी निन्ह और जनसके पूर चले है। अपनी निष्क अक्ट प्रकृत पुरुष्टर करते जिल्ले कर्या विकार की केंग्स । के सर्वका प्रकार और सम्पूर्ण प्राणियोगेंड दिवारें संरक्त रहते हैं र क्षानकी अञ्चलको गाँउ फोलबर बारों और आत्मको साथ विकास कारते हैं। ये तो कार्यक कोर्ड कह होने है और ये में ही विश्वविके प्रमु होते हैं। को प्रमुख देशा अस्वत्य करते हैं, के त्राव पुरस्ती जीवन विरक्षी है। को वर्षात होकर समीत अनुसार करते हैं, के सुनते होते हैं सका को अर्थकारीने प्रश्न है। क्यों है, जो तक दृष्ण स्टाम्य यहता है। देने की सर्वभूतांकर है जनसम्बद किया है, अतः अपनी निम्ह सुनकर क्यें विकासि है। बार्क ? क्रांबल क्रांबल सुरुवार भी विकासियों हुई कर्ष ? व विकासे मेरी हाति होती है, व प्रसंसाने स्थाप। राज्येताको वाहिने हिंद अपराज्यको आयुर्वेत हत्वार क्ष्मका काले संख्य हे और सम्बन्धो विश्वकृत स्वत्रका अस्त्रे कृत्या हो । निर्देश स्थानम पुरूष अध्यानिक हेरियर भी क्षा कोच और परावेदाने प्रवास होते हैं, पांतु क्यार अवस्था करनेवाला पर्वा अपने हैं अवस्थित बात साल है। को कविनान उसन नहि प्राप्त करना काहते हैं, के इस अवन्य अवन्यत्र करके सुनी होते हैं और इन्द्रियोंको अपने अचीन करके अधिनाती अक्रमको अस् बार नेते हैं। अहें यो निर्देश के है के का कार्या, मनार्थ, विकास और राजसंके रिक्षे भी सर्वय है।

> पुण्यांको पुण-विकास । संस्थाने भीत समाप सम कोनोब्ध क्षेत्र और समझ गुजेंसे कुछ है ?

> क्षेत्रकी का—प्रविद्या । कुन्नो इस अवके कार्ये में क्षेत्रक और कारोकार संबाद सुनात है से नतस्वीके विकार हुआ का एक दिन कारोनने क्रीकुमारी बाह्य 'जन्मर्टन ! सम्ब स्त्रेण प्रस्तुत्रांके गुण्डेकी प्रसंता करते हैं.

इससे बाध प्रकृत है से बड़े शुलबान है; अब: पून चुक्तों उनके | इतन, विनय, उदान कुछ और उपकारों की ये सबसे यहे हुए गुलोका कर्नन करों।'



अंपूरणारे स्था-राज्य । युनिये, मैं आवारीके अवस् पुत्रीको संक्षेपने बनाना है। में जैसे निवाद हैं की है स्वाध्यः की है, निर्मु अपनी कवरिज्ञाच्या अस्त्रे करने वरित्य की अधियान कहीं है। इसीतिये अस्त्रा अस्त्रे अस्त्र केया है। मारहरीचे असंत्रोक, इतेच, क्ष्मान्त्र और अब आदि पूर्णण महीं है। में वित्रते कालक या स्त्रेचके कारण अस्त्री कार नहीं परस्टो; अतः सम्बंध पूर्ण है। अवकारकाकके निवाद, स्वादानिक, व्यक्तियान, वित्रीका, सरस्य और कालकाई होनेके कारण अस्त्री एक सम्बद्ध पूर्ण होती है। तेन, यह, वृद्धि,

है। अनुसा काश्रम कहा अनुस है, से समझ अन्तर करते, चरित्र करे और अच्छी को करते हैं एक किसीने भी ईन्हीं न्हीं रहते । इसी पुजेने कारण उनका सर्वत समान होता है। से सम्बद्ध भारत बारते हैं, उनके बनमें बार भी मैल नहीं है, जनकी सक्तरकरिक भी बारी हो है अथा के सामाने समान इक्षेत्रे देवले हैं, इस्सेल्वे काव्य न बोई क्षेत्र है प अक्रिय। जरें कोची करवीयां हान है और उनका क्या बढ़नेका हंग को प्रकृत विशेष है। उसी पूर्व पाविकार होनेके साथ ही कार्यक और प्रकारक सम्बन् है। प्रश्नात, प्रोप और होना अली केर के जो हु की नहीं गरे हैं। मुतने उनकी हुए नकि है। रूका इस शुरू है, ये प्राथमित हाल, कालू और केंद्र अवन्ति क्रेकोचे रहित है । करवती कृतिहर्ने स्वेतको रिक्ने स्वान नहीं है, से बड़े अन्ते क्या है। जनक का विकारकेगीकी और न्हीं कात, वे कवी करनी उलंका भूती करते। ईमाने हर को और मेर्ड वार्ज केलो है, इसरेने क्ला सर्वेद आदर होका है। से विकास प्राच्याने के पहिले पानि करते, सरस्यको प्यानी नहीं कोंगे और अपने मनको सक्षमें रकते हैं। जाकी सुदि कीया है, को क्रमानिक सामी होते नहीं केती, मे व्यक्तिकार करने हैं अप कार भूते हैं और कभी प्रधार गृहि क्रमो । स्थेन क्यूँ अस्मी कार्यांके कार्योते सम्र क्रमाचे रक्ती है - के किशोर्क पुर स्कूतको नहीं प्रकट करते - का किरनेते को जनसम्बन्धी केरी और न निरुपेसे बु:सा भड़ी होता। कालो सुद्धि विका और का आस्तिताहित है, इसरिके सक क्याके लेग क्यारी पूज करते हैं। वे सम्पूर्ण पुर्वासे कुळेरीक, कर्म-कुकल, चील, गीरोग, सम्बद्धा पूरुप सम्बद्धनेकारे और परम क्रियं अल्प्यक्तिके क्षता है, धरन असी क्षेत्र देव क्षी करेत्र ।

## व्यासजीका शुकदेवके पूछनेपर उन्हें कालका खरूप तथा सृष्टिकी उत्पत्ति बतलाना

पुणितिते पूक्त-सिताम्ब ! अस मैं यह जानन साहत है कि समूर्ण पुलेखी जाती किससे होती है? उनका रूप कहाँ होता है? मरमार्थकी अधिके दिनों विस्तवत बार और किस पार्थका अनुहान करना व्यक्ति ? बाररावा क्या स्वास्त्र है और निस-निज्ञ पुलेने मनुष्योकी विज्ञानी आयु होती है?

वीनाओं वाल-मुधिशितः इस विकासे प्रशासन्

काराने अपने पुत्र सुकार्यकर्यको यो उन्होत्त दिया का सही आरंग हुन्हें सुन्न यह है। एक हिन सुकार्यको नेद्वारास्थीरो अपने प्रनक्त रहिंद्र इस अकार पूज्य—'निजानी । पाधियोक्को स्वया सानेकाल काँग है? सारान्के हानारे क्या परिकास निकारका है और हम्बालका का सर्वाल है? ये सब नार्ते सामोन्को कृषा महिन्दे।'

न्यस्त्रीने कल-बेटा । सृष्टिके प्रारमके अनाहि,



अनल, अन्तर, हिम्म, साल, साल, समिकारी, अध्या afte specific pay it on a var common it a comb बारा, बाह्य आहे रिक्टे के हैं का अधिक सम्बद्ध है। महर्तिनोते रोष्ट्र नियंत्रको एक कहा, तील प्रकारको एक कारत, तील करने और डीन कांध्रातक एक मुर्त क्या सेल मुर्ह्मान्य एक छत-विन याना है । तीन विन-दशका एक नात और पाछ गारका दक को हेता है। एक कोने से अपन केरे हैं, निन्ते क्षीक्रमाना और क्षाताना स्वाप्ते हैं। मनुकारोकांत दिन-रातका विकास कुई करते हैं। रात क्रीनेके रिल्मे है और दिन सहय करनेके रिल्मे । स्कून्येके एक स्वरूपे पितरीका एक मैल-सत होता है ह पहुरू कह उनका मिन है और कुमा पश्च करकी राष्ट्रि । यतुर्व्याच्या एक वर्ष केवताओं के एक दिन-रातके परावर है। उत्तराका कावा कि है और श्रीरुवाशन शारि । मनुष्योचे सो यत-मिर स्थाने पर्न 🖺 क्रुक्रिके हिरावारी अर्थ में इक्काने दिन-सम्बद्ध पान परानात है, साथ है बादे पुनोब्दे वर्ष-संक्रम की सारव-सारव करा क्षा है। देवताओं के बार कृतार क्योंका एक सरक्त्र केल है। इसमें बार सी दिवा क्वेंकी संबद्ध होती है और साने ही क्वोंका संबर्धक भी होता है। इस उच्चर सरक्ष्मको पूर्व आयु अवस्तानीस सी विच्य कर्षेकी है। सेच कीन पुन्तेने बह रंग्या समझ: इक-एक भौकां कारी जाने है अर्थात् संस्थ और संवाहोसदिव क्रेक्ट्रग इसीच को क्वेंबर, इपर भौतीस से क्योंका और करिन्द्र करह हो क्योंका होता है। ने करों कुर उच्छानको सम क्रोक्ट सेन्ट्रोको सारम करों हैं। भी कुमानक काल अपनेकारोंके सन्तरन काला ही करना है। सरकुरने वर्ग और संस्के करी करन सैक्ट्र क्षे 🏣 का प्रथम वर्ग और सामका प्रा-पृत पाला क्षेत्र है। चोई से अधनी वह प्रकृत होता। सन्य कुरोमें समहः कांका एक-एक करण जुरू होता पाता है और चोचे, अराहा कार इस-कार अधिक इस अवर्गको पृद्धि होती रहती हैं। कारक्रमें करून मेरोन और क्रिकाम होने हैं, उनकी आह कर के क्योंके हेते है। तेको उनको साह एक चैनई बारकार कीन को करीबाँ पह जाती है। इसी जबार हाराओं के को उर्वेश करिन्युकों की बकोंकी पूरी जानू होती है। विवास पुरोपे केहेक स्थापन कर होने रुपत है, पर्युगीओ तामु व्यक्ती करते हैं, पारणकारिको पुरित्ते पारत रहेको कार्या है और वेक्कानके पत्नी की जूला भा करी है। कुरोंके प्राथके अनुसार फारपुर, केस, प्राप्त अर्थर करियुक्ते बहुकोंके वर्ष की विकासिक होते हैं। सरस्कृती कारको कारो यह को कर परा है, नेतरे हारको इक्त बरामा क्या है, क्रांतरे का और करिन्तुओं एक्स क्षा 🛊 केंद्र पक्ष गांव है। इस प्रकार देशवानीके बाच हरून वर्गाच्या एक करूर्नुन होता है। एक हमार पर्युर्नुन चीननेपर सहारता एक किन पूरा होता है। हाले ही पुर्वेची कार्य एक पति भी होती है। परमार तहा अस्ते दिस्से कारान्त्रों केवलाई सुद्धे करों है और राज्ये कर जानका जन्म हेल है से जनमें उनने होन करके नेगरिक्षा अक्षा रेका से को है। कि अल्बा रूप होने कर्नात् का बीवनेवर वे काम करते हैं। इस अकार एक इसार क्यूक्ट्रेस्ट के अञ्चल एक दिन बताय गया है और उतनी ही बड़ी में इसकी एकि बावबंदी बची है, इसकों को खेन र्शक-शिक संदर्भ हुए हैं में 🛊 फलके राजको कालोबाले है। रही समझ होनेना बाधर हुए ह्याची पहले व्हारासको अन्त्र करते हैं, किन अस्त्रे स्कूल कम्प्रकों करण करनेकरे नवको जनके होती है।

मेटा ! तेनोचन सहा ही पानवा बीच है, जाने पह समूर्ण नगर् उत्पन्न हुमा है। उस एक ही मूतने समय और स्मून क्षेत्रोधी अभीर हैसी है। उत्पन क्या अमे है कि सहाची अपने दिनके अस्माने पानकर मुक्ति-रामा आर्थ्य क्यो है। अभी बाले पानके पानकर मुक्ति-रामा आर्थ्य क्या है। अभी बाले पानको पानक अपट होता है, उससे स्मूल मुक्तिका आधारपुर मन जन्म होता है। किर सुक्तिकी स्थान है अस्ते प्रमुख्याने अस्मान्त्रयो उस्ति होती है।

काश्रात् जन अवकारने निकार होता है से उससे अवन्य ( है, कर समझे का कारवारों जात कर रोता है। जनसूधी परित और वल्पान् कानुसम्बद्ध आनिर्वाह होता है। इसका पूर्ण गर्रम पान गया है। बाबुके विद्यान होनेवर साले प्योतिर्मय अधिकात प्रयक्त होता है, जनमा पूर्ण है कार । हिस केलये विकास आनेपर काले सामन कार्यकारी अपने केले है और बंदनो पूर्ण क्या अस्ते, पुत्र प्रमुख अनुर्वन होता है। क्षेत्रे अवट हुए करू आहे पुत्र अपने कुर्ववर्धी चुत्रेके औ युक्त कारण करते हैं।

पक्रकापुर, का इनिवर्ग और रूप-इट सोन्यु बन्धोंने क्रारीपका निर्माण हुमा है। इन सम्बद्ध स्थानन क्रीनेके बहुएस क्री बेक्सी सरीर बढ़ते हैं। सरीओं सबस क्रेनेकर उससे बोक्से भोगामसिष्ट करोडि साथ कुल बहुत्वा उनेह करो है। समय अलो आहे कर्ण होनेड करन प्रक्रांको स्थानी मानो है, में ही पराच्या प्राणिनोन्ही सुद्धि पराने हैं। देखा, मानि, रिका, मनुष्य, पाच प्रचारके शोध, पत्री, सनुर, दिला, कर्तन, करकारि, विकार, प्रकार, वर्ष, पहले, कुर क्या mital of it is now mai fin for sie safter पराचीकी सुद्धि भी अपने हो भी है। युद्धिके अल्पने विक प्राणिकोंके प्राप्त कीने कार्न प्रिक्त की क्षेत्र हैं, कुछी कर कार्य क्षेत्रर भी ने का पूर्वपूर्ण कर्मीकी महानाते प्रशासिक हेटेके. कारण की है को करने राज्ये हैं। इस क्याने स्टूबर विका-अञ्चल, योकारक-कारोपत, वर्ग-स्वर्ण और प्रक-हरू आहे. तिर गुण्डेको जरराता है, कृते अपने ची क्रमें संस्थातेने प्रत्योग्त क्रेक्ट कही मुख्येको परंतु करता और बैसे ही कार्योंने एक चला है।

सक्तपुराने हैंका स्वयूपी पूरण सबसे ही चीवने कारण स्थान पुरुष प्राचन कारणाते हैं। इत्याह पूर्व है हाल और

क्रमी करनेको परमानको प्राप्ति भी अस्ते ही होती है. क्षेत्रको ही पनुष्प समझ अधिकोगः अपन प्रश्नव कारिक करका है। उनके हो प्रचानसे पहार्थियोंने पूर्व अन्यने को हुए केवेका स्वरण किया। तथःप्रतिको सम्बद्ध होचार हो नकामी कार्य-कार्या रहेत के निवास अन आह विका और को परवर्षी अभियोगे फैलाया । अपनी स्थित अन्य क्षेत्रेक अञ्चलीने जिल जानिनोको कन दिया, उनके कर, कर प्रकारके केंद्र तर, वार्तिक करें, यह, क्टीर्स क्या मोश्रोक सम्बनीयो केटोचे अनुस्तर ही उत्तावित किया। यानियोधे साथ, देश्याजीकी संपत्ति, जानियोधेः अनेको एक और अनेट कर्य आदिका विशास की वेक्कानोंक अपूर्ण है हुआ है।

माने वे माना है—एवं समझ्या और दूसर क्ता । इन केनेका अन क्षेत्रा आकारका है। किसे क्रम्बद्धाना पूर्व क्रम हे बाता है व्यू सुनवासी परास्त्रका सामानार का रेस है। संस्कृत्ये लेग प्रापेद, प्रजुर्वेद और सामग्रेको कालावे हुए समास गावेको आसासे पृष्ट वेकार व्यानकेत्रक काळा अञ्चल काले है। काके बाद नेवाने को न्यासारिकारकी पुरान करता हुए, अधीने अन्यूनी कराबार सम्बद्धाने नियमके अंतर गया । जन समय केवानायन, कार्यात और वर्षाध्य-कवित पारस्की सुन्ता स्वतंत्रा वी। वरंषु क्रमानुसर्गे कानुस्ती स्थानके साराम सोगोपे अर्चुक कामेची कवी होने सभी। करियुप आनेपर से नेवेच्या नहीं कांच प्रेशा है और नहीं नहीं होता। उस प्रत्य अवनीरे प्रेमित होमार पह और पेर सूर हो जाते हैं। मेदा । इस अवतर हुन्हारे अध्ये अनुसार मेरे सुद्धे, बाला, कर्न, बेह क्षा । पुरुष आको कामें क्षिक कीय कारकारतीची इसके कारक । और पार्वकार आहिते कियाने पुरु कार्ते कराती है।

# प्रलयका क्रम, ब्राह्मणको दान देनेकी महिमा तथा ब्राह्मणके कर्तव्यका वर्णन

म्बराजी करते हैं--कुछ । अब्ब में कह कहा कहा है कि **व्यानीका** दिन बीक्नोका-अन्त्री स्त्री कारण होनेके कारे वितर अच्चर प्रश्न सुद्धिका राज होता है कथा अहारती कहार क्यान्त्रो आक्षत सुरूप करके इसे बैस्से अपने प्रीतर सीत का की है ? का जानका स्थान साथ है के कारते पूर्व और नीयेसे ऑक्सि सार ज्यालाई संस्थाको धार करने राजा है। जनमें पहले पृथ्वीके करावर प्राची कर जानसकीरे क्या होकर कुरूने मिल करते हैं। इस समय का चुनि तथा और मुझोरी रहित होकर कहुएको पीठ-सी विकासी हैने समझे है ।

क्त्यास् का कृष्टिक सूच काराने प्राप्त कर हैता है, इससे क्यांन कृश्ये अपने पारकपुत करने लॉन हो कारी है। जिस के कर कर्मीर क्रम्य करता हुआ करों और उन्हें कहता है, कार्य कारत करहे कार्य कारती है और या सब्धर्ग विकास अपनेने मिन्दा करके सक्कार क्या है। स्ट्रान्टर, देन क्सके कुल सरको जान कर लेख है और सरक्षेत्र जान रेखनें सीत हे जार है। जा रूपन समूर्व सम्बद्ध आगनी रूपतेसे प्रज्योग्य-सा दिसानी देश है। जिन् वेशके जून कार्या कन् तम जान कर लेख है, इससे आप देवी क्रेकर बायुने

विता जाती है, जब इकाका मेन कहता है और यह यह यो सोरते | इएहारी] हूं उपन-तिये जया इका-अवर करने राज्यों है। इसके बाद आकाद कंपूके जुन स्थानिक मा तेना है, जा इका एतम होगार आवादाने औन हो जाती है और एम-पूजरो पूक्त केनल आवादा यह काता है। इस, उद्दा, नम और स्थानिक यान भी नहीं जाता। कायात्मा दूसन-कायात्मी प्रमूप कारोगाल यान आवादाने जुन कायात्में, मो पानो ही जाट हुआ या, अपनेते सीन यान तेना है। इस वाद वादापोतिया सुद्धिया सहस्रोत सामें एम होना हाई अवन्य कादावात्म है। इस हमांक अनुसार समूर्त पूर्णीय सरकायात्म की सहस्रत है।

इस प्रकार हुने जानका सुनोना अधिकारी नातकः प्रथमका जात हुए चौनिनोते इस जानने नोना वह जानका ननावर कृतान मेरे सुनान है। इस्ते कह एक-एक इस्तर कृतोते बहाने हिन और यह होने यह है क्या हिनके अस्ताने वृद्धि और राजिने श्राहनोते आन्त्रका क्षम जातू एका है।

वृत्यांस । अस मै कुन्नरे अस्ति अनुसार स्थाननाथ वृत्तीय स्थान हो, साथ केन्न सुने—स्थान-स्थानका वृत्तीय क्षेत्र संस्थानी स्थान केंग्ने व्यक्ति । अन्यक्ति वृत्तीय अस्त्रम संस्थानी अस्त्रमंत्री सेन्यने स्थान समूर्य वैश्वीय अस्त्रम सरे । जिल्ला सुने स्थानको प्रथा वृत्त-स्थाने तृत्त होनेने स्थान स्थान स्थान संस्थान क्षेत्र वृत्तीय अस्त्रम्य और संस्थान—इन सन्ते अस्त्रमंत्री वृत्तीया, स्थानमंत्र स्थानस्थ विश्वीत अनुसार जीवनवर्णन वृत्ती तृत्व अस्त्रमंत्र स्थानस्थ विश्वीत अनुसार जीवनवर्णन वृत्ती तृत्व अस्त्रमंत्री स्थानमंत्री अनेन्न स्थान ।

पृक्षल-स्वासन सन् वर्गीका पून है। इसमें खुळा अन्य: वारणके रागादि दोष पक बानेकर विसेत्रिक पुण्यको सर्वत दिन्दि प्राप्त होती है। गृहत्व पुण्य पुण अन्यत करके नियु-वारणों, नेदोका प्राप्ताल करके प्राप्त-वारणे और बारोका अनुद्वान करके देख-आलके पुरुवारों पाया है। इस अन्यापके दिन्दे विद्वित कर्मीका सम्यादन को और अन्योको प्राप्त करके। सर्वकात दुसरे आक्ष्मोंने प्राप्त को । इस पुण्यपर को स्थान पर्वाच एवं स्वयं कान पढ़े पढ़ी नियास करके यह अपनेको क्याप्त और अन्याद पुण्य कर्मनेको प्राप्त करे। प्राप्त द्वाप क्याप्त क्याप्त है। सर्वाच क्याप्त इस करनेसे गृहत्व प्राप्त व्याप्त क्याप्त है। सर्वाच क्याप्त करें। प्राप्त करें। क्रकट यह कुल्यक्रमेंके अक्षय खेकोमें निवास करके दिवा पुरा भोगात रहता है। हमहामाओं स्थापना, अस्थापना, करने, पानन और युन क्या प्रतियक्क-पून कः नागीना आसन् लेना पादिये । सिन्दु को अनुभित्त प्रतिषक्ष और मधर्ग तानारे क्याना कार्यको । केवला, कारि, निका, तुरु, कुछ , रोभी और पूर्व गुरुकोको प्रोचन हेरेके रिको मुक्ता प्राह्मानको प्रतिवाह सीमार करन पाहिने । अपनी प्रतिके अनुसार परमार्थिक व्यक्तिक विको प्रयक्त प्रत्येकाले प्राकृतिको प्रान्ति असिरिया की हाँ सर्व्यकें अब की देख कहिये। केना सहाजीके तिने मोर्ट की कहा अनेन नहीं है। महान प्रतानारी राजा mente amerik probak tyak fini arah pro bur लर्नकेको को थे। अधिके पुर तथा हम्मानने योग प्राचनो कर प्रकार का का करें अक्षा तोय हार विक्रों से । केरायुक्त क्षेत्रेक्ट इस सुर सार्थ्य अपने देखकी प्रकार क्या कर्ननेव प्राप्त किया । अस्तिवर्ध अस्त महत्त्वाची संदर्भ अपने दिलांको निर्मूण प्रकृत प्रमेश हेक्स अन्य क्षेत्रकेको अस् प्रद । एका सन्यतिको अस्त्राजीको न्यस्य सरम्प नीएँ कुन केवल केवन्यतिरकेतनीत सर्गाने निवास विका । सारितीने के दिन्स क्रम्बूट कर दिन्हें के और कहा अनेकाने प्रकारके रिन्हें कार्य प्रतिस्था परिस्था किया या—इससे उन केमंच्ये उत्तम सोमानी आहे। ह्याँ । विवेद्यास निर्मित्रे अक्टा राज्य और क्यारीस्त्रका नरहरूमा तथा रहता काने कार्येलील सन्दर्भ पूर्वी प्रायुक्तको द्वानों है ही ही। क्य कर करी न बारमनेवा कीवाने असे प्रकारतिको धरित क्रमूनो प्रकारो क्रीक्स्मूम विकास । संस्थानके पुत्र क्रमा यहाले व्यक्ति संविद्यको अवनी कावा और पासारकोसके प्रचा महायाने ज्ञान प्राव्यानीयो महानिति वहा वेदार जान स्वेपा प्राप्त किया का। राजनि स्वकृतिस्ति प्रश्लामोह रिस्टे अन्तरे क्रम है दिने । क्रम कामुक्तने महर्ति सुक्रमको सब प्रकारके सक-बोगोरी का प्राप्त सुक्रांकर का द्वार विका और क्रान्यकोड प्रतिकार्क प्राचीक पृथ्विते अवस राज्य अर्थना कर दिका। इन सक एकाओको उत्तय लोकोको आहे। हुई थी। तक्षि लेक्पको प्रकश्च पुनिको प्रत्य राजको अपनी क्या स्था है और शंक महिराहने की हिरस्कृत कृतिको क्रमणे पूर्व कर्नम कर है भी-इससे इन हेनोको सह जन्म स्थान वर्षे तथा अध्य स्थेत प्राप्त हुए । स्था प्रसेनियर व्यक्तें वर्षेत्र एक स्वयंत्र गीर्थ स्त्रन करके उत्तम सोकोने गने । वे क्या और भी महत-से निवेत्रिय महापुरूष कुन और करके हारा क्रमंको प्राप्त हो कुछ है। सक्तरक क्षा पुरुषी रहेगी, सक्तरक इनकी कीर्ति इस संस्थाने कारण खेली।

इक्कान कर, सब, कर्-इन की केई उचा। वैद्यानिक जन्मपन करना पातिले । यो प्रशास वेद्यानकर्त प्रवीत, अध्यतकान्त्रे कुल्ल और स्वयन्त्रका अक्रमान करनेकारे हैं, ये ही पहाचारा क्यांत और अलब्बेट क्यांकी प्राथमको अपि देखते हैं। प्राप्तकारी जीवत है कि काविद अनुकृतः जीवन कराये और बिट पुरुषोक्षी जीते सक्तकारका पारन करे। जिसी की क्षेत्रकों कह न देवर है क्षेत्रिक पारमने। महारम प्रश्नोधी होकर्ने स्वयुद्ध रूपवार प्रश श्री, संस्कृत को और क्रक्की कावल करने कुला हो। अपने सम्बंद अनुद्धार निरम्बन्धेन सम्बन्ध को। कर्तकारायम् सम्बन्धे म्हान्यशोषा स्त्रु को और गुहरवासको दाने हुए अध्ययकात्रकारी छः सुनीति भगा थे। देश अवस्य करनेवस्य है जान बहुत करन काला है।

गुरुष अञ्चलको एक सञ्चलक पहल्काकोङ्कर परमाताच्या पूजन करना चाहिने । वह १४३ केर्न करना करे, प्रभारते क्ये, का और इतिकांची काक्ष्में रहे, कर्ताक करे, कारनारकार जान जार करे और हाँ, यह क्या क्रोको सीह हे बाव। ऐसे हाहभारों कथी क्ष्म भूति चेनना पहला। अव्यवन, यह, द्वान, सब, सम्बद, सरस्थत और इन्द्रिक्यंक्यके मह अपने तेलको बहुने और बरनको नष्ट बारे । इस प्रकार पारतील होकर अपने नेकावर्तिको बाक्त धारे छवा मिताबारी और निर्मेशिक से स्वयं और इक्रेक्को सुनीन करके ज्ञापकको पानेकी इच्छा बारे। जाति, ज्ञापक और वेपताओंको प्रमान करे। अक्रमी बाव न धोले और दिखा न करे : यह प्राप्तानका परम्परान्त करेका है : क्रमेंकि करकते मानका अन्या अनुसान कालेले अवद्धा निर्देश प्राप्त होती है। इस क्षताओं पुराना नहीं काहिये कि प्रानियोको अस्तान मोडमें करनेकरन कार रहा आक्रमण करनेके हैंजो वैकार कहा है। भूदिस्कर और भीर सहस्र अस्तरी चैकारे

वंतारसम्बद्धे पर हो करे हैं, क्वोंकि वे गून और क्वेंका कियार करके पुलिक पहल और होपीका परिवास करते है। बिंदु कामकारोपे आहळ, कहलकिए, मध्युदि , हर्न कारणी पुरुष संदेशने यह जानेचे कारण इस संसारसागरको नहीं कर का समझे । वे क्षिण्या इस्त्वर कैंड जाते हैं, इसरिन्ने अने नहीं वह को। यह वृद्धिवस्को प्रवसायसो पा हेरेका राजान प्रचा करन चाहिने । इसका पर होना चहि है कि यह रागे अधीं प्रमुख वन साथ आर्थात् प्रमुखनको विदे करे। कान पुराने करता हुआ प्रकार अभावन, कारत और प्रतिका-पूर कीन करोंको स्ट्रिकी हरियो देशका अभी अपने में हो और सम्बन्ध, पास अवा क्र--इन क्रेन कर्मेक अवस्य वास्त्र को । व्यू वैसे भी हे कभी उद्धारको प्रचार करें। अनके प्रशा का सकतानरको समस्य पर पर परम । विश्लेष विदेश संस्थार विशित्ता राज्य हुए है, को निवस्तुवंक सुका भर और हरिकोंक रिक्त प पन्न है, जा रिक्र पुरस्को हत होना प कारोकमें कहीं के निर्देश प्राप्त होने देर भई रूपती । भूतरक जाइन्य क्रोन और ईन्सीका काल करके कर्नुक निकासिक कारणे संस्था हो। जिल कामान्यक्रीका अनुसार क्रांक् प्रातिक सरका है फेसर करे। सामुख्येक वर्ष और विदान्याच्या कारत करें, देशी अध्योतिका कांद्र धारे विश्लो कुर जोगोको कह र हो एक किसकी लोकर्स निका र होती हो । अञ्चलको पेक्स निवृत् , प्रश्तानी, सक्सारी और च्या क्रेम काहिने। यो अपने वर्गके अनुसार कार्न करनेवाल, ब्रह्मु और वर्ष-अवनीद्र सबको करनेवाल केंबा है, बढ़ सन्दर्भ कुपलेके यह हो जाता है। येथे, राजनार, इन्द्रियसंक्य और सामग्रहकारो जातु पहला सरह हर्ने, पर और धोषको सामना का प्रधानका प्राचीन वर्गे है। इस्तान होका कर्मेका अनुहान करनेले औ सर्वत fecht um del fin

#### ज्ञानद्वारा मोक्षकी प्राप्ति, ध्यानके सहायक योग और सात प्रकारकी धारणाओंका वर्णन

कारणी करते हिन्दुन । यदि मोज जार करनेकी | कर हैन्केंद्र विस्ते भी कुदिएमन् पुरस्को हानामी नौकाका इंका है से प्रमुक्तको अनकान् हेना काहिने। जैसे संपुत्रकी | स्कृता रेना काहिने। जो अभी है, वह अनवार्ध जैकाहरी क्रमी-नीची त्वरोमें कुम्बर-करावा हुका पहुचा तक जिल | तक्कानको अक्रमिन्येको भी प्रकारगरसे पार कर देश 🛊 🖹 पानेपर उसके पार हो काल है, इसी प्रकार संसार-सामाने | कानवोगाठी सावाद करनेवाले मुनिको पाहिने कि सह इरकोर राजादि क्षेत्रोको हुर कर वालेसे मुख हो जोनने। सहावका पर्वृद्यानेकाले हेडा, कर्म, अनुसार, अर्थ, उक्ष्य, सावाय, विक्रय, क्ष्युष्ट्, साहाद, संहार, पर्य और एउँग—इन साव्य उन्तरोंका आक्षय से "।

निसं कार इतन (चेक्ष) जात करनेकी इका है जो बुद्धिक क्षण कर और कार्याको कीरण कार्योत । क्षण बुद्धिर हे च दुःची, च्य इस जकरकी सरकारों कर और बुद्धिय हुर्गम स्टूबर्क कर है जक्क है। जब्द्रीकरकारों केवने अन्य हुए पुरस्को गरि सहायनको प्रका हो हो यह विक्रित पार्टकरनेको एक्सको भी स्वीत वासा है। अधूर स्वाची अन्न सरनेकी अधिरायनामाने पुरस्को किस अवस्त प्रका स्वाचनक निरू स्वाची है, यह स्वाच में बता दह हैं। विक्री एक विकास विकास स्वाची होती हैं। र साध्याको मेंच होतार वस-निकास प्रसाद करते हुए इनका सन्वास स्वाच वासीने। हुर और समीपने नेको सात ही अनावार

\* ज्यानके स्वाक्यों ऐसे स्वान्त आवन स्वान प्रशिन को कारण और परित्र हो। वहाँ रह, नंतक-पाद और आव आहें न हो, करोने किसी स्वान अवान न आहे हो, दूक्ति स्वान कर न हो तब व्यक्तिय कुओ, सराव, अवहीं के नहिता कर आहे में र हो। के नेतेको जात स्वान्त हो, आई कर सम् को और हक्ता और न हो। कुछ का ऐसा ही कीई स्वान्त्रकान है जानके रित्रे इंग्लीन है। है। है के स्वान्त्रकार स्वान स्वान्त्रकार कोन है। सहायति किन्त्रके अपने सेता और स्वान्त्रकार कोन है। साम्यान स्वान्त्रकार कोन है। सहायति किन्त्रके अपने सेता और सहायतीय किन्त्रके अनुसायकेन करवाता है। साम्यानक कार्यके संस्कृत का अवान्त्रकार है। कारण अनुसायकेन करवाता है। साम्यानकेन करवाता है। साम्यानकेन कार्यकार है। साम्यानकेन कार्यकार है। साम्यानकेन कार्यकार कार्यकार है। साम्यानकेन कार्यकार है। साम्यानकार कार्यकार है। साम्यानकार कार्यकार कार्यक

। फरेरके अंदर करना: पुन्नी, करा, देव, कप्, अन्यात, अन्यक और अवंदर—पुन सार राखेका विरास किया कात है। नहीं सात अवस्थि पारण है। इसको पुस अवार सम्बाग नाहिने—वैसी सेवार पृष्टनेता पुण्येका नवम नामावार उसमें पृष्टीकी करण करने कहिने। बुटनेरी रोध्या मुद्रातम करामा उत्तर करा गाव है। मृद्रादी रोकर इदयरक अधिका स्थान कराराता है। इदयरि क्षेत्रों चौक्षेत्रे बीचलकात कर करूब स्वान है और इसकते लेकर पूर्वतक अववस कर रूप है। कर आदिके स्वानेये उस-सम क्तरावी करना करने जानेने । इसकी विकि को है—१४की करी कैरने पुरनेतकके कराने कामध्यारा अन्यवसीत से बीक और कार् देवतानी स्वापन करके पार मुख्येक्टी सृष्टिकर्ता सहानीका पान को । पाँच कारियन हम अर्थन करका करनेने पृत्रीतरकार विजय प्रत होती है। इसी अबार कराने रूपानों प्राथमधील में बीच और कर देवताओं स्थापित करके प्याप्त देशे कि 'बढ़ी पर स्थाधते मान्यन् नरपम्य विरामका है। उनके पूज् स्वरियके सामा निर्मत औरियापा पैताका श्रीचा च तह है। ये सावकारी ओर देखका मद-सन्द मुख्यत यो हैं. वहीं भुन्दर श्रीची है।" वीच महीराव इस कारण करने कर करातके देन यह हो जाते हैं। आहिर्क स्थानमें जो प्रमान एवं रे कीमानदिव कानु देवताची सकारत करके वहाँ इस प्रचार व्यान करे—'मानकामारतीन सुर्विक समान आवस्त देशको, विनेत्रकरी बरदाया गाम्बन् संबद सामने कहे है। उनके समूर्व अनुतेने विश्ववि प्रोप्त दे रही है, वे कहे प्रस्ता है सहवी देते हैं । यह परण में प्रेंप पहेला सिद्ध है जब से अन्तरे करनेवा कर नहीं रहत । कनके स्वत अर्थत् हट्यते कुमानसके भागमें पूर्ववत् भावतके हैं हर जनवकुर ने बीच और कह देखाका स्थान करके उसमें भी ऑस्ट्रेसको चींत बगावन् इंग्राह्म ही भ्यान करें। यह करण मिद्ध होनेस करूमी उद्ध अवस्कृत विकालके प्रति आ हो कर्ती है। अवस्थातरासके स्थानी की अन्तरपुर हं चैक्के साथ कर देवताची प्रतिक्व करने अभ्ये अन्यातके स्थान विराधार वरणान् सद्वतिकार विरुद्धे कार्यो विराप्त करे। अञ्चलको करकाने नदस्य विका किया करा है। आंकारको करकाने स्वर्तदेशको आसंदिक्त परिस्का करके 'मैं है अर संपूर्व क्यि है ऐसे प्रकार की नहीं है। इसके बाद चेनीको एकका सावास्तर हो जात है।

(गैलक्टोके अधन्त)

करणाई भी होती है। उन्हें उत्तरणा कहते हैं। (कह, कुई, हुक्काइन अमेरानी करणा सर्वाच्या है और जरावा, कुका, सर्वाच्या सामिती करणा सर्वाच्या है।) हम कारणाओं। हस कारण: पृष्टी, कर, तेन, कहु, अस्तरण, सर्वाच्या क्या अस्तरान्त्रे देवर्तनी जाहि होती है। सब चोन्याच्याने ज्ञान हुए मोर्गाने कुळ अनुभव कार्याने करें हैं क्या कारणाह्यें क कार करते स्मान को पृष्टीका सामि निर्देशों ज्ञा होती है, स्नाम भी चर्चन किया कार्या है।

सामक का स्टूब देवीर वर्गिनवासे पुत्र होकर कारने रिक्त होता है तो का सरक सुक्तकृतिये पुत्र होनेके कारक को पान प्रश्न तराके कर (विद्या) विश्वनके पहले हैं। प्राप्तको पुर्भावके वारत्या करते संस्था प्राञ्चन होता है कि पुर्काते केवल कोई स्थान कर्यु समूची अध्यक्षको आसामित सर की है। " मा काम क्या है। का कुछ निवृत से करा है में बतर करना कृति होता है। यह अपने देखे जीवर करत प्रापृत्वे आकाराने कान-हो-का केवल है। का सरका कारतालारी बारचा कारो समय होता है, जिस बारहा हार है क्रोवर का का अधिकारको सरका करता है से सर्वत अस्तरको प्राप्ता है। साथ के प्राप्त के कार्यक भौगीको सामाराजे सर्वत वैत्ते हुए सन्दर्भ हो अनुस्त्र होना है और यह सर्व की करने। बारेबेंड समार असका सबू और क्षान्त्रा क्षेत्रम अपनेको निरावत् अवकानने कन्त्रेर है मान-साथ विश्व करता है। का साथ को काने प्रतिकार क्षानी अन्तर है यह विकास क्षा है। का उन्हर रेक्का संक्रार करके का केची कायुक्त विकास करा है से मार्थ श्रान्तन जानाको होन हे जात है और केवह विकास पीतासकार के पूर्व है। का सरकारे महान्यको अस क्षेत्रिक स्था रक्षत्रेको क्षेत्रक विच अलग कान के जात है। जो अपने स्थान करका स्टिक्ट के प्राप्त नहीं होता।

इन सब करों (विद्यों) के दिखानी हैनेके पहला मौतीको जो-जो पास प्राप्त होते हैं, उन्हें सूचे—प्रार्थित देशनंत्री दिन्दि हो मानेकर कोचीने सुद्धी प्रत्येकों प्रतिह जा वारों हैं। यह जानपीके संपान संपाने एतियों जानके मृद्धि का राज्या है। निरामों पानुसार सिद्ध के नाता है यह किस विस्तीयों सहारायों क्रांग्यान स्थान है। सामादायों दिख्य सर्वेण्यान पूर्ण सामादायों के स्थान होन्दर साम विश्वास है और अपने प्राचेणके अनुस्य कर स्थान है। विस्ताद सामादायों के स्थान है। आंत्रायाओं दिख्य कर सेनेस महामादायों के स्थान है। आंत्रायाओं दिख्य कर सेनेस वह स्थानों क्रांग्य केनाने क्या तेना है कि कोई अस्थी और अस्था स्थानमें क्रांग्य केनाने क्या तेना है कि कोई अस्थी और संभा स्थानमें क्रांग्य क्रांग्य क्रांग्य है। स्थानपाओं पीत सेनेसर मुख्ये क्रांग्यों क्रांग्य क्रांग्य है। स्थानपाओं पीत सेनेसर मुख्ये क्रांग्यों क्रांग्य क्रांग्य है। स्थानपाओं पीत सेनेसर मृद्धी क्रांग्यों क्रांग्य क्रांग्य है। स्थान स्थान विद्युत्त हार अस्थी है। है।

विश्ले काम और अध्यासक प्राप्त कर दिया है, को after, and staff graphed sprop street treet is, finale रंगान पर हो नने हैं, को कार्य होय और देन नहीं कारह. क्षां जो बेरला, रिजांको चर्चा सुरक्षा और परा सामा में काम और मी सेक्स, सबस किया है रक्स \$, 40 per, herd after mich fant wheah and will चौनाव और एक प्रतियोग इत्यान क्रम रकता है। बहे केनी अवस्थानको अस्त होना है। यो विक्री सन्तुकी हन्तर नों कता, सीवर-निर्माह काले दिने को कुछ लिए पास Euriber stebe weur f. ib fariter, fichen, fleitften और पूर्णकान है, तक अधिकोश समान की रकता है. निर्देश केरे, फार और कुम्मेंचे एक का सम्हात है, विवासी ब्रोड़ों देख और अदिकास के नहीं है, को बीर है, निया और सुविधा विलये विकास कोई प्रयास नहीं पहला, के पानकार्वको हुना न प्रत्यत कुछके साथ अञ्चलन क्या करन करने हैं को दिनों से बोकरी हैंसा सह कार - रेल क्रान्सर् केनी है संसारते पुता हैना है। चेत्रेकी विक जानके चुनि क्रेमी है, क्रो बालका है,

<sup>े</sup> का अनुक्त इस प्रकार होता है। जब सावक देखे हेका पुरश्तकके पानमें पृथ्वी-सावको अरख करता है से पारण पित होनेपर तम त्यानका तो रूप है जार की ग्रीर का पृथ्वित सामित पहला है। उस प्रथम पुरनेसे उपरास पान और अवस्था पुरनेसे अपवादित-स्थ कर पहला है। इस विवर्तको पृथ्वित विवर्त प्रथम कि प्राप्त है इसके पाद पा पुरनेसे उपर प्रमुक्तको पानमें अरुक्तको पानमें अरुक्तको पानमें अरुक्तको पानमें अरुक्तको पानमा की सामि है से पाद पुननेस अर्थ अर्थ पुननेस रूप अरुक्तका है। यह अरुक्तको पुननेस रूप होने और अरुक्तकार विवर्ध प्रमुक्त है। इसे अरुक्त उपरास प्रथम की अर्थ है। इसे अरुक्त अरुक्त भारणाओं पुनेस रूप होने अरुक्त करा की अर्थ है।

क्रमार्थ अव्योक्तम सरके पूर्ण किरक हो साथ माहिने । वेस्त | स्त्रमान करके हुन्होरे स्ट्रीट हो बात है, नहें आधानको अह करनेने ही नोक जार होता है। एक उत्तार करनादिकों होता है।

सुने --बोगारे किन देवार्थे अवक विद्युक्तिको प्राप्ति होन्छे हैं, | प्राप्त होनेनारकै प्रतिकार मेरे कर्पन विकार है । यो उपन्तिकारको

#### बुद्धिकी प्रशंसा, प्राणियोंके सारतम्य, ज्ञानका साधन तथा उसकी यहिया

्यूक्टेवकी पुरा-शिक्षकी । शिक्षके प्रथा पर्वाचकी मन और मृतुष्टे अवन्ते कुम्बाद निवन् वात है, का अन्या का काम है? अविकास वृद्धि होती है या निवृत्तिवर्गते ? मुझे कालने ।

न्यराजने सह—केरा । को पुटिहामत् है, से ही प्रेरानेके रिन्दे प्रमान और राजेंचे रिन्दे का बाल सकते हैं, से ही देगोको प्राथमार जनम क्रेस-क्रेक स्थान प्रकेट का स्त्राते हैं। पुनिहरे ही अर्थ आह होता है और प्रतिह हो पहल्का धनी है। नहीं कर कर कुछ-ने है होने है, सिंह करने के सुद्धिने पदान्यदा होता है, यह प्रमाण स्थापन और specier uner wer to mbritte tur-men in gitt-erbet für telleit ift etret mitt fit gilt if merd कार गाँव है। संस्थाने को साम प्रकारके प्राची है, उनके मन्त्रर हो। एको हर जो कान्य, अन्त्रव, सेन्स और क्षीतव्य--- इन कर नागोंने विकास विकास करता है। सामार अभिनोत्रे स्थानेको सेव सन्तरम साहेने; वर्गीद प्रस् पारते जिस्से आहियाँ प्राप्ति होती है । पहुल बीजोरे की पहुल र्वकारों और है रिकारे के हे उन्हों प्रार्थ होते हैं। पूर्व कार पैरामानिकी रावेका के पैरामाने तेवा केले है। के पैरक्तरोंके को के केंद्र है—बहुक और केंकर। एक्टोने मान है के हैं। क्वेंदि को का अही चेचनेकी स्टीका अप है। यक्त भी से अध्यक्ति है--क्ष्म और प्रकार। बनाय महत्रोकी अवेदा निवृद्ध हार प्राप्त करनेके कारण प्रतम प्रमुख केंद्र हैं। प्रशास भी सारिवर्गका प्रकार करते हैं, क्रामीनों में जबन नतुन्तीको संपेक्ष केंद्र है। प्रवाद मनुष्योके भी हे नेत् है—वर्गके प्रध्ता और वर्गके अन्तरिक्ष । इसमें बर्मंत्र ही जेड़े हैं; क्योंकि इसमें कर्मन और अवर्शकाया विकेश क्षेत्र है। वर्गींद्र व्यानेकारे भी से प्रधारके होने 🕯 - नेवारे जनवार और नेवारे न सारोवारे । इस्ते पेटी मानकार काम है, क्योंकि कामें के प्रतिकृत है। केहते कारकार भी हो तराके होते है—एक प्रथमन कानेने कुछल होते हैं और दूसरे नहीं। कार्ने प्रकार बस्तेवाले ही लेड हैं: क्वोंकि जो बेट्ने बरावे हर सन्दर्भ क्वोंका ज्ञान क्या है। क्रम क्रमें इस वैदिय करें, यह और क्रमें करतेया क्रारोको क्रम केस है। उपकर करनेवाले निक्रम की से ज्ञानके है—एक आव्यानको करते है और कृति नहीं। हुनों आरक्ष पूरव ही होतु है, क्वेडिंड के क्वय और पुरस्के कारको सन्दर्भ है। यो प्रकृति और निवृति सब दोनो कार्येको wer t, up min, widen, wet, western, सारकारी, भीका और प्रशिक्तन है। भी नेहतासका उत्तर है और मनका निक्रम करके सकाराने किया है गया है, औ है केमारोप प्रकृष पाने है। केह । के बीच हारकन् हेका बहुर और भीतर काह्य अधिका (परमान) और अधिका (पूरण) का साम्राज्यात कर रेके हैं, में है केवल और में ही दिन है। उन्होंने यह सम्पूर्ण किए प्रतिदेश है। उनके म्बान्स्टर्म कर्त कृत्य औ है। हे गय, युद्ध और प्रतिक्री ग्रेनको ग्रीकार करता प्रतिन्तेके अर्थकर और समाव 验化

चीनम्बं कार्त है-वृतिहरू । इस प्रवार महर्ति स्वारती अन्तेकची सुरक्त सुम्मोकवीने जान्यी सुरि-सुरि प्रसंस्त स्ट्री और प्रोड़कारिक विकासी पुरुषेक तिली साहार होकर हत war up-ford | mary, bein, whee, केन्द्रदिने स्थित तथा सुद्ध बुद्धियात्व पुरत जावह और अनुसारों सहस्य अलेकिन सहस्ये किस उत्तर प्राप्त होता \$ 7 st, marti, witness part, bergefer, steps अक्टा केन-इनकेरे किस सामको प्रश्न सामका सामानात होता है ? बहुन पन और इन्हियेको विद्य अवन्ये द्वार का क्ष्मा है ? वे स्थ वर्ते बतानेकी क्रम MARK C

न्यसर्थने कल-केटा ? विकार एवं, इन्हियनिका और लांकरकार्यः विश्व कोई की निर्देश गृहि के सकता। समूर्य व्याप्त विकासकी व्यापी सुद्धि हैं। वे अभिनाके सरीएने परे हर है। पुजारो केवा रिर्माण हुआ है। विकास और कारीने जाति, जानके जोड़ है और अधिको केंग तथा कायुरी प्रम और अध्यय करवा हुए है। कहा, कुछ आहिके हिद अन्यवदा-सम्बद्धे स्थान है। चरणोर्ने किन्तु, प्राचीने इन्ह्र और

कराने जाति हेमल पोकासमाने विका यहते हैं। बार केने और इतिहर और दिसाई है। विद्वारों पाना इतिहर और प्रशासी केन्द्राच्या निवास है। कार, प्राच्या केंद्र, विका और मारिका-ने याँव क्रमेतियाँ है और वहे विकार्यकार हर काराना गया है। सम्ब, सर्व, सम, स्व और नक-मे इतिहर्केक विकास है। इन्हें इतिहर्केने कृतक कार्यान कार्यान । बैसे सार्थंव बोडोको अन्ते वचने एकपर जो अन्ते \$कार्यार मान्या है, इसी प्रकार पर क्रीडनेंग्डे पासूनें रकार करें लेकारे निकारकों और क्षेत्र करता बात है: बिंद क्रानो क्रोमास सेवाल का मनर थे का करन विकास करता है। कैसे कर संस्कृत प्रतिकारिक राज्य और वर्ष विक्रोधी ओर अपूर करी क्या वेक्टोने कर्या है, उसे प्रचल प्रत्योक्त मौकाय के काम प्राप्त का प्राप्त नियम-अञ्चलके समार्थ है। प्रतिकर्त, प्रतिकर्तिक परन, पर असी, विकार, सामान (प्रीत-काराति कर्त), फेला, पर, प्रात्त, श्याप और पीय-न्ये कुलारियोक्ट प्रशानी प्रक पीया पाने है। इस प्रचार विद्वार पूर्ण कीय इतिहा, चीन विकास और छ: स्वयन आहे गुण-पूर्व सेव्य तलांचे आहत अपने विद्या असम्बद्धा पुरिकृते प्राप्त अस्तात्वारणार्थे प्रवाहनाम् प्राप्ता है। हर नकुन् अल्लाका दर्शन केले अन्यक सन्दर्भ इन्द्रिकोचे पहें है समारा । यह निवह पनवर्ग केवाओं से एडिसे प्रकारित केल है। परवास्त्र कुछ, सन्धं, कह, यह और प्रध्यो हैंग, अधिकारी तथा प्रारंत और प्रतिकारी रहेत है से भी प्रतिके भीतर ही इसका अनुसंबद्ध करना काहेने। को इस विनवसीत सरीती समाध परको विक परवेदाना अन्तर्भ दक्षिते निरस्त साहत्वात काल कुल है, कह मृत्युरे पहुल् प्रकृष्णको सह हे करन है। उन्हेंबर विहा और उद्यम कुरन्ते पुत्र साक्ष्मणे क्या थी, क्रमी, क्रमे और मान्यानमें भी समार कृषि रक्तनेवाले क्षेत्रे हैं। विवाले मह क्रम्पूर्ण सम्बद्ध बाह्य है, यह क्षत्रकार सम्बद्ध प्रकार प्राणिनोधि भीतर निवास करता है। यह जीवाल सन्दर्ग । यह और कुनुके क्यानो प्रत्यात प सता है।

ज्ञानिकोचे अवनेको और अवनेके समूची ज्ञानिकोची विश्वत रेक्ट है, का राज्य मेंद्र संक्रमानको जात हो मारत है। अपने करेंच्ये चीका जैसा जारक है मैसा हो सुरारेंबेर स्वरंतवें की है; निया पुरुषको निरापत हेवा प्रान कथ रहात है, यह अपुस्तर (केंश्र) को उत्तर होता है। को इन्यूनी अधिनकेंका असक क्रेक्ट काले दिलों स्टब्ट हुआ है, विकास अपने कोई जार्न चाँ है क्या के प्रक्राणको जात करक कारत है, उसके मार्गको कोच करनेने केवल भी मेरीत हो बने है। मेरे आवदकरें विद्यानीके और कार्य महाराजीके कार्यके विद्यारिकारी महि यहो, उसी अवल प्रानिनीची गरिका भी विश्वीची पहा नहीं Street, I

कार राजुर्व प्रानिनोको प्रकार (सह करता) है, सिंह को बात से प्राप्त करा है—के बातक से बात है, उह अक्षानको कोई पहुँ सामक । प्रत्यका कृतन, मीते, हुन्त-कृतन लक्क बोको पूर्व है। यह विकी एक कालो हती कालके पाल पूर्व करका । सन्दर्भ स्तेष्य सान्य भीतर ही निवा है । बोई के स्थान आहे. सरकारे स्थान की है । की, कोई बहुतरे हुई हुए पाल अपना करते प्रथम केन्द्रि मिल्बर क्रेक्स रहे, प्रत औ कार्यके कार्यकार्यक का पंत्रीय एक की य सवता। वह ब्रामने भी असन्य ब्राम है तथा जाने बहबर बहुत भी कोई कुरते कहा नहीं है। सम्बंध कुछ और कुछ-देर हैं, कुछ और für f mar fem mir fier, mir afte mer ft; walfte me जंकारों पानके बनाई करके विका है। होएं-वे-केस और को-से-का भी को है। कारि का का प्रतिकेंधे जीता रिका पहला है को की अलको कोई देख कई करता। हुए और अवहर नेवारे के जन्मरके पूजा है। सन्दर्भ पूज से क्रा (निनाको) है और दिन्त क्यूक्तव्यक केला आर्था अक्षर (अधिकारी) है। इंक काले किया अधिकारी प्रीकारताह अरियादन विकास नाम है, को सुरुत्ता काहर हो है। इस अवहरें के विकास कर अवस असमानो कवार्य कारते जार हेना है, यह

#### योगसे परमात्मकी प्राप्तिका वर्णन

म्बराजी करते हैं—केटर र सुन्दारे प्रताके अनुस्वर की नहीं अन्ते विषयक प्रवास वर्णन विषय । अन् योगारी को चल का है , सुने—इन्डिंग, का और कृतिकी प्रतिकेश रोमानर मानव अलगांद साथ उनकी एक्टन स्वाचित कर्णा ही चोनसावके काले उत्तर इस है। इसे क्या करनेके रियो बोरीको सम, दम आदि सामग्रेसे सन्वत होना पाहिले ।

म्ब अन्यान-प्राथम्य नियान करे, जाराजे हे अनुराम रहे, प्राचीका तथा करे और प्राचितिक क्रमीका निकासकारो अन्यान करे, कान, क्रोच, खेम, चन और सह—ने प्रोगके कींव केंद्र हैं। इस बेचींबर उनकेंद्र करके उपनेकों केंद्र जनिकारी करने । साधारत् गुरुके पुरुषो उस जनका उपहेल प्रकार करें।

अब का पीचों केपीको नीवनेका उत्तर पालको है। परको बालो रक्तोते होकको और इंग्डनका सम करोते कारको जीवा जा सकता है। सामानका बाजर हेरेने केर बहुत निकास विकास पा सकता है। मनुष्यको वैर्कका प्रकार। रेकर किनायंत्र और धेननमी रित्या स करने पाति । नेवीकी सहस्रकारों क्षात्र और नैतीकी, मनके क्षात्र नेव और मानोबी तथा मानी हता यह और कार्यकी यह कार्य बाहिये। सामगानीके प्रश्न मनगढ और विद्यानेकी सेनाने क्षात्रक वरिवाल स्थाना पातिले ।

इस अवार चेरफे सामध्यो अलब होत्रकर चेन-सम्बन्धे क्षेत्रोच्ये जीतनेका प्रचल करून कर्माने । यह अपि और प्रक्राणीकी कुछ तथा केवताओंको प्रधान करे। करको कुरानेकारी क्रियाची पानी र येतरे। वेचीयन ह्या प्रकार बीच (बारल) है। या की कुछ दिखानी है कर है, कर सरीवार का (कार्य) है। सन्दर्भ पदानर करन, सा साहके हैं। प्रेक्षण (संस्थार) यह परिचान है। मान, वेहानाक, सार, कृत्या, सरकत्, कृत्य, सीच, सम्बद्धानि, इसे क्रीकृतक्ष्यके केवादी पृद्धि होती और पानका नाय हो जाता है। संस्थापकी प्राप्तवं अधिकारमध् विद्यः होती है उन्या को विद्यान प्राप्त होता है। क्रेनीक्षे प्रतिने कि वह स्थानं प्रतिनोते स्वारत्यन रहे । जो कर निरू कर सकेरे तहा हो, करोको को उसे war breeft, formut aufe fieblige gient ware aufe प्रतिकारी प्राप्ति करने प्राप्तकारी करेगरी हुन्या को ।

योगी का और इन्द्रियोको स्वयम करके राज्ये व्यक्ते और विकास करने कारण केवल समाने असाने स्टामने । की प्राथम एक बन्ध भी के है जनेश करें का जात है, इसी प्रकार की पाँच प्रतिकारियों एक की विकासी और प्रथम को से सामकामा सामीय क्रान सुत हो जान है इस्तिने सेने जानीयर ताल कारोजारी कारोंको को प्रवासकार कीने कारी प्राणीनकोच्छे प्रवासक के उसने करह कारक पाने करने पत्रको स्थाने को । कार्क पत्र करन अधि, विक्र तथा नारिका अभी प्रतिकोचा निवा को । पीची इतिहासिको धार्मी शामित परचे प्रमानकोत समाने स्थित सीन करे; इससे इन्हिक्केकी महिन्तुत दुर हो कारी है और कारों निर्मालक का जाती है। का समय स्थापन सकारतार के सारा है। येथी अपने अन्त:प्रश्नमें प्रमुखेत अधि, रीप्रैस्पन कुर्व क्या जाकाराचे कारकती हाँ विकालके समाप आवालका कार्यन करात है। यह समझो अकारने और समझे अकारको रिक्षा देखात है। जो प्राप्ता सामान प्राप्त, केलेकर , कियार | केवल करवारी प्राप्त करते हैं।

और प्रमूप्त अभिन्योद्धे देखते कार स्ट्रोबाले हैं, में है कर परस्कारका कार्य कर को है । को कोनी एकान्स्में बैठकर बेक्स निक्केस पाल करते प्रदास प्रकार केलानास करता ी. पर बोडे हे समयों अधर सहयो तह से पान है।

केन्स्रकारों अवहर हेनेक चेंद्र, पन और मार्का जरी. रिक्ष आहे होते हैं, दिव्य सुरूप आती है, दिव्य करोबेंद्र क्वॉन होते है, पूरत अवस्थित बहुनुत एक और एउईन्क अनुस्था होता है, प्रमाणका पार्ट और वर्गी पहा होती है, स्थानी तरह आकारांचे werd-ferrindt seller aus meh ft, allerer uit dieft ft. ferer कार्य अपने अन अस्तिक होने सन्तरे है--- प्रम विक्रियोंको कार भी केचे उसके क्षेत्र का है और बचको उसकी ओसी बोटबुर आपने हैं एकत को, नियमों साथ से और पास-को चोटीन, प्राप्त का के क्वीनरों अधका द्वांकि अवस्थात Sport the great (sold you trok that ayate Papit-कारो। केरका सन्तास को। वर वहरेकारे सर्वकारे कैसे मा आंध्ये रिका को को है. जो तह बेरमा समा पी affected street course pre-marrie from several क्षात्र कालो किया वहे । यहके और २ हेरे है, विश स्थानो की बारता करतो केवा का उने उत्तरह सेवन की और जाकरती क्रमी विकासिक न हो । यो नक्स सामक पन, कानी वा विकासी भी कर्ती अस्तरक व हो, सरकते ओस्त्रो अंध्याक पान रहे, नियमित केवन को और उपन-क्रांनिको समाध समझे । योहाँ उदांसा को या निष्या, बाद क्षेत्रोको सम्बन्द क्षीरो देखे । युव्यकी प्रसार्य पा कारेकी क्टब न सोचे । क्रब स्थम क्षेत्रेयर हुनेने फूक न को और व होनेका किया र करें । एक अधिकोचे और समान दृष्टि रहे । क्यांके क्यांन सर्वत विकास हुआ की असक रहे । इस प्रकार कार्याच्या और सम्बद्धी राज्या कः महिनेत्या विस्त चीनान्तरह करनेकारे राज्य करवाते स्थापक सामान्यार हो जाता है।

und fird mitratul frant burnt ment aberb निरम्म हो बाज और निर्देशों केरे, प्रसार क्या होनेको समान करते । कोई केंद्र कर्मका कुछ अध्यक्त की ही वर्गी न हो, कों को वर्ग सम्बद्ध करनेकी क्रमा के से चेपपार्गका रेकर करनेने उसको को पालनरिको प्राप्ति हो जले है। विवारे अपने पनको पक्षमें कर शिवा है, वही अस्पा, पुराकर, अवर, प्रकार, निकास, असूरी भी असू और प्रान्तों भी प्राप्त जाताका दर्जन कर सकता है।

नार्वि कारमीके पर उन्हेंकर विचार करते. में प्रस्के क्सकर क्रांक्सक करते हैं. वे विद्यान मनक प्रधाने समान

#### कर्म और ज्ञानका अन्तर तथा ब्रह्मचर्च आग्रमका वर्णन

हुकदेवजीने पूक्त-जिताओं । केट्रीमें कार्मीको कार्मीका थी विभाग मिलता है और उन्हें त्यान्तेका भी, उत्तर में अन्तर बाहता है कि पनुष्योको कार्म कार्मी क्या कार मिलता है और झानके ह्वारा कार्म जान हेनेका उन्हें किया कार्मी कार्मी होती है ?

पीनार्व करते हैं--क्वारेक्टविक इस उपाल पहलेश स्थापनी होते—'बेटा भी इन क्षेत्रों सार्गीका वर्गन करना **ई**—इनमेंसे एक वर (मिलाड़ी) है और कुरच अक्र (अधिनावी) । अर कार्यन्य है और जावर प्रानंत्र्य ? केर्ने के मार्गीका वर्णन है—एक अवस्थितका मार्ग है और कारा विवृत्तिकांका—प्रणेते विवृत्तिकांका प्रतिकार विकास कुछा है। कर्ष (अभिवा) से बनुक बन्कानें पहल है और क्रमते पुरा हे जाता है। इससेन्ये ह्वासी संन्याधिन्येण कर्म नहीं करते । कर्म बारनेसे बिर सन्य सेना पत्रस है, खेल्क प्रश्नोंने को हुए केवर्त जाहि क्रेमी है; किंदु उनके प्रकारने श्रीय विक. अञ्चल और अधिनावी परावालयो जार केव है। हुए प्रकृष्टि गुरू स्थान क्षांबी प्रकृष करे है. इसरिओं से फोन्डाबार होकर कर्तवार इसीरके क्यानी पहले को है। परंतु को काफि अनको अलीनकी सम्बन्धार क्लोंका आन अल पर परेंच हैं, वे पर्नवर्ध जर्म कर लांक नहीं करते, कैसे प्रतिकेत नकेका करते कैनेक्से करून बारेका अवहर नहीं करते । कर्मका करन है कुक-दश्का और क्य-पुत् वित् प्रको सा स्थानी वर्ता हेती है जा वानेसे सकते किये क्षेत्रसे दिन्द कर नगर है, नहीं नन और पुरुवी पाँच भी होती तथा नहीं पाँचा हशा मीन बित का संसारने लोटकर नहीं कारत ? जान होते ही फिन डेक्केंड प्राप्त होनेवाले और कंपी की विकल व होनेवाले अव्यक्त. अवस वर्ग नित प्रकृता साम्राज्या है। का अवस्थाने सुवा-कृषा आदि हुए तथा वानरिका संवारण कथा नहीं जीवारे । का निर्मानके जार दूर पर्यक्ष सर्वत्र स्टबर दक्ष रसरों है, सबको निक्र संस्कृती है और एक प्राणिकोंके देताने बायर राखे हैं।

तात ! ज्ञानी और कार्यांशक्ष कर्यांने कहा करी अचर होता है। ज्ञानीका हक नहीं होता और कार्यांशक कर्य कार्यांकी करवांके समान कंटल-कहा दाता है। कह कर, इन्तिकाम न्यांस विकारोंने युक्त होकर जन्म कारण विका करता है। कार्यांके परोचा पदी हुई चारीकी मूंटके सम्बन्ध के सम्बंधकास किया हेवला हर्यांकासमें विकासकार है, जो

हुकदेवतीरे पुंत—रिवासी । केट्रेंसे कमीको करनेका | क्षेत्रह (परपानत) सम्बाना व्यक्ति तथा निसरे चेपके प्रप kun famn है और उन्हें सामनेका भी, अर: मैं अध्यक्त | विसर्क वाले किया है, वह जीवकर भी अधिका सम्बंध है।

कुर्यस्थीने सहा—विकासी ! इस संस्तरमें पुन-पुनसे विका सहावारका सरका होता आभा है, को सुनन पहला हैं जार पंताबंध जीता कर्तन सन्तरे हैं बैसा ही मैं भी भारता पहला है। आनंक अन्देशने में परित्र हो गया है। असा मैं पर्याकारको पुन्तिका मोजान करके स्तूत देखका अधिनाम हाला कर अपने अधिनाती भारता प्राचनमान्य हाला कर्तना।

व्यक्तवाने व्यक्त-वेदा ! पूर्वपालने प्रशासीने विदर अपात-स्थापक विकास कर दिया है, व्यानेक सामुक्त और साथ-मार्थि को सरीवार करना करते आये हैं र साविधीने क्राक्टीह कारओं है पुरुष्तिकोत्त अधिकार प्राप्त कियाँ है, क्रानिने अन्य क्रान्यन प्राप्तिको स्थलको स्थलको काल करके जालकार प्राप्त करक पाहिले । विरा पारतस्वके निकारो कारो सुकार कार-पुरुवा भोवन और पुरुव शीवीमें कुरत करते हुए सबस्य करने माहिने। अनिन्तेकी दिसारी को क्या करिये । इसके बहुक संस्थारी होतार विकास जीवन-निर्वाह क्षरते पूर् आस्तारसम्बद्धा विस्तर वारण माहिले । विश्व रेले का काम बाग कविने वंद प्रदर्शक करेंगे रहोर्च-बरले चुर्जी विकास्थ कर है साम और प्रतरको सार कुटोब्री आवाब ने सुनावी पहें। इस अबार बीधन कसीत कानेकार १६६ क्यांनाका हो जाता है। सुकर्त्य ! तुन भी जुनि, नगराम राम पुष्पपुष विकास आप करते में क्क फल-यून मिल बान, जारेंग्रे युक्त मिराने हुए अनों अधेले विकासे पते।

इंग्रहेनको पूर्ण-सिनाओं । कई करन पाहिए और करेको साम देन पाहिन-ने को बेन्स्ट के स्टाने प्रधान हैं, लेकाद्रीको विचार प्रस्तेक प्रस्तार विचार पान पहि हैं। ने प्रसारिक हैं का सामगतिक ? विद्योगके देने हुए इनकी प्रसारिक करन केले पान का समझ है ? तथा होनों ही प्रमारिक करने के समझे हैं ? साम ही पह भी प्रधाने कि क्यांकि विदेश किने विना प्रोक्षकी प्राह्म किस तथा है समझी है ?

न्यस्त्रीने कार—केटा ! कर्म करने और न करनेके असन-असन अधिकारी हैं। ज्यानारी, गुरुस और करमार—में कर्म करनेके अधिकारी हैं और संन्यसी कर्मेका

साम करते हैं। अपने-अपने अक्षयके अनुस्कर इंक्क्रोक | कार पढ़े। इन्हिलोको अपने बक्रमें करके गुरुको और निवर्गोका पासन करनेसे सभी जान नहि प्रकृ करते हैं। औ कोई एक करना भी राग-हेक्का त्यान करके समग्रः प्रा बारों आजपोक्षे बर्पोक्ष निवित्त पहला कर है से को अवस्थ ही परस्कृत्वी असि हो चानी है। वे वारो अवस्थ महार्थे ही प्रतिद्वित है और बहुतक बहुतानेक रिन्ने कर मीवियोके समान माने वर्ष है। इतका सक्रम हैनेके बहुक इक्क्रोकमे प्रत्यकर अस्ति आह करना है। वर्ग और अवीरे क्रमाधा जा। करनेके किये अपने आयुक्ते एक बीवाई पान अर्थात् वर्णातः वर्णातः पुरु स पुरुषुक्यो सेवारे स्वयः अक्षपर्वका चलन करना जाति । प्रकृति विश्वविक्य निष्ट न बारे, गुरुके को सानेक बक्षान् क्ष्मा करे और उनके बार्गनेमें अपने ही वह बाज : गुर्का करने एक किया क क्षरके करनेकेन में कुछ भी कार्य है, जो कर्व दूस करे। बंध रहके परा मैका से। ज रूप पान करके रिने रियार को और कान्यों अच्छी सारकारी रहें ( कान्यों सुद्री किल्लेवर अध्ययन को। एकके की कहा थे, किलेक कारकु म अनामे । सामानीक सुरमनेका पूर्वत कानके सेनाने अर्थिको हो कार । कहा-शीवको परिवा, प्रानेक कानी कुरूल और पुरासल को : यह करते समय बीच-बीचने देशा प्रमंत अभीवत करे को सुक्तेनमंत्रको अनुस्तान और देशा । इसके साथ यह नुहुन्यासको अभीवत अधिकारी होता है।

क्रम्मद्रविसे हेरो । स्थापनं क्ष्मद्रक भोजन और सरायान न कर से समझ्या सार्थ की न करें। उसके बैठनेके पहले न बैठे और समन करनेते पहारे न संदेवे । क्षेत्रों हाक फैरलकर अपने क्वीने इनके पुरुष कविता परण और वाने हानते उनका कार्य करण कुमार प्रकास करे। इस प्रकार अभिनासनके पहल्ला कृत्य को कृतन पुरस्ते कहे 'प्रस्तवन् 'अस पुत्रो पहल्लाने । मेरे अपूर्व काम पूर्व कर लिया है और अपूर्व कार्य अभी करिया । प्राणेद विका और भी विका बंदापीबेद विको अल्प अध्या केंगे और भी शील पूर्ण करोग्य ।" इस सरह राज वातें विकास निर्माण करके परवर्धी सहस्र सेवार दिए तरस प्रत्य करें और काम हो करेंगर कर कामर समाधार एकतीको पालने । विज्ञानिक पानी और स्टोक्ट केवन सहस्वारीके रिकी निर्मिद्ध है अन्तर केंद्र संस्था करें। प्राथमकीय संस्थानके बाद्य है मा उनका उनकेन कर प्रकार है। यह गरीवासका निश्चम Et preis form abr ift marerfrie finele feine ermit. विकारके साथ बालों भने 🗓 उन संबद्धां का पारना बारे तथा रूक नुको प्रमीय थी। इस प्रकार कलातकि क्षेत्रा काके गुरुको परसा करे और प्रश्नानंत्रत प्रस पर हो सानेका अने मुख्यक्रिया हेवल प्रत्योक्त विकित अधुवार प्रवासीय धरे ।

### गृहस्य, वानप्रस्थ और संन्यास-आश्रमका वर्णन

न्यसमी बहरे हैं-केट ! मुक्ता पुरूष अपनी सामुक्त क्षाण भाग गुरुष-अवस्था बलीत करे। कर्तानुसर बीके कियान करके उसके साथ अधिकी कारणा को और निवद नियमके साथ सकर वेजी प्रमय अधिकेत करे। प्रमय प्राचनके देने विद्वारोंने बार अंबरस्थी अवस्थिका बारकरी \$—(सालधरके लिने)एक क्रोठिका कान परकार रक्षान. (महीनेधाके रिम्बे) कंद्रेपर महन्द्रा शंका करता, क्रियरके रिध्ये अस रक्षण अस्त्रेती कृतिने एका। इस्से पहालीको अनेका दूसरी-दूसरी क्षेष्ठ है । प्रकृती क्षेत्रके अनुस्वर बीविका परानेवाले इक्षानको वक्त-सक्त, अक्रक-अध्यापन, दान-प्रतिमञ्जू—में प्रः वर्ग, शूरते केनीव्यतेको अध्यक्त, पत्रम और दान—वे तीन कर्य एक बेसरी बेजीवालेको अध्यक्त और दान-वे हे ही कर्न करने कारिये। भीवाँ शेरोपालेको केना अञ्चल (केन्स्यन) करना अधित है। नुस्रकारिक विभी शास्त्रोमें सहार-से हेड्ड नियम बताने गये हैं तह केवल अपने ही मोकरके लिये स्रोहें व

क्याचे (अधित् देवता, वितर और अतिकियोंन ओक्सरे क्षानी । दिन्ने कभी न सोचे जानेत पहले और विक्राने कारों को और न से 1 समेरे और बाल हो ही बात कोसर करे, बीवने कुछ व साथ। ज्ञानसम्बे अतिरिक्त सम्बन्धे को-स्थानक न करे। सक् इस क्लाकर काल रही कि 'मेरे करना आचा हुआ कोई हाकुल अमिति पूजा ही नहीं हुए. जाके जावा-सावागने कोई कमी के नहीं रह गयी ?' की हरपर अधिकिक कार्य केटके विद्यान, बाराया, श्रीतिय, प्राय (पालपारेप सार)-पाला (साहामा श्रेस) भोतान पारनेपाले. निर्तेतिक, किन्यतिहा और समग्री का बार्च से इनकी विभिन्न पन करके उन्हें इस और क्रम सार्वन करने कविने । यो कर्मिक्सका बॉन डिम्मनेंडे लिये अपने उस और कार-बद्धावन जाना हो, अपने ही मुक्तने अपने किये हुए वर्गका निवयन करता हो, अकारण अधिकेत्रका स्थान कर कुछ है अवस पूर्ण क्या कर कर्नेक्स है—ऐस मनुष्य भी मुहलके वर अप परिषय अधिकारी है। सहस्वारी

और संन्यासीको को सारा ही जान देना चार्याचे । जानमं चार कि पृक्षक पुराव कारण जाहालको लेकार चारणासामाओं चोरणानुस्था क्षात्र जात्र वाले ।

मुक्तमध्ये सह विकास और असुक आवाद भीवन करना पादिने । योच्य कर्नको योक्य कर्तनके कह जो उन्ह क्याह 🕽 को कियर बच्चे 🖁 और पहल्कारो सम्बंधक अस अनुस महारात है। युक्त कुल अपने ही बीते के करे, इन्हिलेको पहले करके विलेनिक को और किलोके केव प होते। यह अभिन्य, पुरोगील, सम्पर्ण, मान्य, सर्वित, फरण्यान, बहु, बारम्ब, बेची, बेब, मार्थ-मार्थ, समानी, बारा, दिला, कुटुवरकी की, बाई, पुत्र, बती, पूर्व करा रोपकोचे राथ कथी विवाह न को। में इर सक्ते राज करूब भी करता. या सम प्रापंते पर समा है। इसके अर्थन प्रतेकात कुल सन्दर्भ संबोध्य विकास पर 🛊 । इसमें लिक्ट भी मोड़ नहीं है। आकर्ष प्रक्रानेकार, स्वारी है और जिल्हा प्रकानशिकांच्याक ईव्यूप है। क्रानिक प्रवासीकारे, spling burduck afe untrout fiebierdente अभिकारी है-इन समग्री सेवाने क्र-क श्लेकोची आहे। होती है। साथा और सरकारों संद्रह करनेले पुर्वालेकान्त अधिकार होता है। यह, बारम, वेनी और हर्कर प्राणियोगी संगत्ते आकारण विश्वय प्रत होती है। यह भाई विलागेर समान है, की और पूर अपने ही प्रशेष है कक मेंबक्टमा अंतरी कुरकके सरका है। केंद्रे के और की ककड़ भीन्य है। इसलिये इनके द्वारा कची अक्टन निराद्वार की है साय हो पूरा म पालबार सह लेगा पार्टिने ।

गृहस्ववर्णका करण करनेवाले विद्यानको निर्दाण होन्छर कर्मका आकाण करने क्षण काहिने और करके स्वेत्रणं किसी कर्मका अनुहान नहीं करण काहिने । शृहस्व क्षणानके दिन्ते कुम्मवान्य (अर्थाह कर्ष कुमेर्गे महीनेवर कानेके विशे काम परकार रक्षणा), उक्कांक्षण (रोज-केव विकारे हुए अर्थाक हाने कुम्मवान्य अध्यक्ष: क्षेत्र कानेकर क्षणों निर्दे हुए अर्थाक हाने कुम्मवान्य अध्यक्ष: क्षेत्र कानेकर क्षणों कृषि (वाक्षणावी स्वयं कुम्मवान क्षणा क्षेत्र अस्त्रों कृषि (वाक्षणावी स्वयं कुम्मवान क्षणानको क्षणानको स्वयं कुम्मवान क्षणानको क्षणानको विद्या कर्मकार क्षणानको क्

सारकपूर्णक जीवन-रिसंह करनेवाला मुद्दात अपनी क्षा पीरांक पूर्वाचेको क्या तम पीर्वाचक आगे होनेकारी संक्षानेको पीरां कर देश है और जो विन्युक्तेकको सुद्दा क्या संवोधोको आहि होता है असमा वह विशेषक प्रकारकोको पिरानेवाली वेह पीर आह करका है। आहर विश्वचारे पुरस्तोको विकारवाहित क्या स्थानिक सर्वाचकी अपीर् होती है। सहार वे स्थानक हम हिलेब आसन —नाईकार्ग असह करके स्थानको होता है। इसके वाद कारकार अस्तावने असह करना वाहिये । वह सुद्रीय असमा है क्या पुरस्क-असमानो की सेह करना करा है। अस

मुक्ता पुरस्कारे कर अपने विश्वीत बाल स्टीबर विद्याली है, प्रतिने प्रतिने पर कर्न और एक्स्पे सी एक्स्पे प्रति हे अप के अपनी आयुक्त जीवरा चान नवरित करनेके देन्ये पानप्रहा सामन्त्रे सुन्य वर्गाने । यह गुरुशासको जिल अहियोको ज्ञान क्या थे, ज्ञान क्यानकारों से हेवा क्या यो । अभिनेत हेक्काओंकी एक करे, निवसके साथ हो, foreigen ware mit, freit at som arate that काने एक का शह प्रकृत को और प्रध्नाते क्या हो। पर्याच्याची की पर्वति अधिकोड, वेची की यो-केक उपर असे ज्यान बहाने रूपूर्ण अङ्गोका पारण कामा कारावधाना धर्म है। वस्त्रामी कृष-विका कोती हुई कुनीमें वैद्य हुआ करा, के कीवार तथा किया (अतिकियोको देशी को हुए) अपूर्ण जीवन-निर्वाद करे । जनसम्बन्धे को पहुन्तहन्त्रहोन्स विश्वान है । कार्न को कर प्रकारको दुरिएको स्थानको पनी है, अपूर्विद अनुस्तर कोई विज्ञानके दिन्हें, कोई एक न्याने दिन्हें, कोई एक वर्ष और कोई काछ क्येंकि क्षेत्रे अधिकिसेक तथा बहुके जोजनते अन्य संबद्ध करके रसाते हैं । बान्यात्वरिको कर्गीह सम्बद सुने वैदानों और हेल्प कार्य प्राप्त प्रश्नेक पीतर पाछ सुना कार्डिये । व्यक्तिः विजोगे प्रकारिते प्राप्तेतको स्थाना एका स्था कार केवर करन सामित्र समाजी भारत सर्वकार खेतो, केनेके वक एडे होते, एक स्थान्यर असर सनावार बैठते क्या सैन्ये काल कान और संस्था करते हैं। कुछ होग क्वे अलको बीठसे कवाका साते हैं, कुछ सोग प्रकारण कुरका चेका करते हैं और कोई-कोई सुरुग्ध क कुम्माधारे एक कर केंग्री समती पीवन या जाते हैं। कितने ही, सरमञ्जूरका जो कुछ जिल गया, मही सामार सीमान-विर्याद करते हैं। कोई केद-कुछो, कोई प्रश्नीने और कोई-कोई कुरोहे है जेविका करको है। इस प्रकार बन्दारक-अप्रकार

निवास करनेकारे पुरुष को करोर निकरोका कारन करते है. उनके किने करकुंक निकरोके निवा और की बहुत-हो निकर कार्योमें बरावे को हैं।

सार है सार संवारणार प्रवास ज्ञान स्वीर, वर्ण सर्गारणायों गए। हुए खुटेरे का एक्सी कृति और कांग्य महाय सरकारण-अभाग संवार कर चुटे हैं। बार्णियाय और तंत्रत भी संरारणी है थे। ये रागी विशेषण प्रवास करने कुछ दुष्पर कर्मीं हरा हैया स्वार करते हुए सहा करेंगे रागे पत्ने थे; इस्तीरण करवा संवार सिंह है ज्या का। ये कांग्योंने विश्व हैयार भी जोतिर्गय सरकारों विश्वकों है। है, बोर्ज की सरकार हैरसार नहीं वर सकार है।

प्रेस जनार जनाजनको सन्तरि पूर्व करनेके कह का शानुका चौथा चान केन रह साथ, कुक्रमालाने करीर हारंग हो प्राप और देश समाने राने के इस अवस्था परिवास सन्दे र्मन्यास-साराम सहस्य कारण कार्यन्ते । संन्यासको स्रोता हेर्न समय एक दिनमें हो। हेनेनाव यह करके समय समूर्व कर प्रतिकारणे हे प्राप्ते । विता स्थानकार ही प्राप्ता, अस्तानी ही जेन और अस्त्राचे है तथ होना गरे। एक प्रकारने कृत्याका है स्वरूप file affeitent seferied around societar state stone र्ममहोत्का परिवास कर है। अवका शुरेत सम्बद्ध किये कारेकारे (भारत आहे) को यह सार्वकेशन असे बीक्वेस स्थानक पारम करना थे जननक अध्यक्तका सम्बद्ध व है कार । आल्प्याची विक्रि में है-अपने करवारे प्रतिवाद. मन्त्रों अन्यक्रमेशका और मुख्यों अञ्चलीय और पानवर बीनी अधियोको अर्थ प्ररोत्ते हो प्रस्तित परि; कि ब्रेड्स क्षेत्रेयक प्राप्तातिकेलको विभिन्ने पद्मा सन्तर स्त्रे । अन्यति अन्तर्गति निष्कु १ वाले क्यूनिके "अन्तर त्रवा" अवीर्" भव्योकः स्थापन करता हुना पहले शहके क्षेत्र अक्षाप्तान करे । (पित आसमन्त्रे पश्चम् भीनवृत्ति हेन अह स्रोजन हते) ।

को जाइन समूर्ण जानियोगो अवय-सुर हेका है आहे हैं जाता है, का मर्गके प्रक्षम् तेकोश्य सोको कथा है और अको पीक्ष जाइ करता है। अवस्थानों पुरुष सुरहेत हमें करतील हेका है, का इस सोक और पत्रवेकको सिनों भी कोई करों करना जाँ काइता। कोश, कोइ, संति और विकास स्वाप करके का सब अने से कासीन-सा सुता है। वो अहिता अहि क्यों और कीय, संतोष आहि नियमोका करना करकेरें क्यों कहुका अनुस्ता नहीं करता तथा संवास-अञ्चलका विकास करकेरें आधी कारोंक अपुरार कानावी जीतों कामे सर्वताकी आहुरे कारोने काम विकास है, को प्रकानका गी (वृद्धि) जा होती है, हेने निक्रिया एवं कांश्राका कार्यक्रमीकी पुरित्ते विकासे क्रीन्त्र भी स्केति किरो सकर नहीं है।

के सामानाव स्थापक करते एकके विकास स्था है, यह सर्वेश्वरक होनेके कारण न से एक क्रिसीका अपन करता है और न कुरों है सरका स्थल करने हैं। संभाती कभी अधिने हमन न करें, पर पा पड़ क्याबत न खे, केवान विका सेनेके हिन्हें चौतीने काम और कुछरे दिल्ली दिल्ले अगा-संबद्ध न करें, यह विकासिकोची केले. प्राप्ता और विकासकृत्य केला परे. कि-कार्य केवल एक कर कहा बहुत को र दानी पीनेके हिन्दे करण्यात को, प्रकृषी पहले निवास को, यो देश देवे दुस्पर न हो हेरत क्या कारण करे, प्रिक्तिको सुरूप प एक्ने और साथ सारिपरोज्यो क्षेत्र को-ने तर संन्याति स्थान है। या विकीते की प बारों केना बार न बांद, कुलेकों की बेलो बाल न हुने तक महत्त्वीके और विभी क्या सहस्रकर न निवास कर, इसके दिन्हें निर्देश प्रारम्भार के । निर्मा अञ्चलीक कि है ऐसा है प्रमूत केरे, अंतर्ने विन्यु कुरका के कुछ सुन्यान — वही पन-व्यक्तिके क्रानेकी क्या है । यो अनने सर्वानाची स्थलको विका हो के बहुएक अनेको है सन्दर्भ अञ्चलने चरिएलेन्स है यह है तथा से नंग-सामें विका स्टि रक्षांके सारण संगोते भी हुए सामग्री वी कुछ सम्बादन है, जो है देशताओर (सहस्ता (सहस्ता)) पानी है। को रिक्त दिन्हों को (क्या, प्रत्यक आहे) प्रश्नुने अन्त्य हार्रात का लेक है, सरकों से कुछ कार-मुखा फिर करा है सी है केवन करता है और नहीं को स्थान मिल साथ की से स्थान है. विकासी होंको जिल्ली पहेंकि संबंध है, जो पान का कारपान प्रदा होनेना क्रेक जी करत एक जिल्हों स्त्यूनी प्रतिकारी अंतर क्षा कर दिवा है, जो ही देववारकेर प्रश्नान प्रत्यक्ती हैं। एंटवार्टीको र स्थितको क्रेम करना चाहिले र मुख्यो । वैसे सेवाह अपने कार्यके अलेककी कर नेवार पास है, भरी संदू को भी प्रस्तानी प्रतिका संस्थी पानिने । यह और वालीने पोर्ट दोन नहीं जाने देख कारीने और सब पानेसे पुरू होकर सर्वक सञ्जीन हो जना कारिये । विको ऐसी निवासि अपन को पानी है, उसी संसारामें करा कर है ? को किसी भी प्रामीसे नहीं करता, विससे फोर्ड भी प्रामी नहीं करते, जर बोक्नुक पुरुषकों किस्पेसे की क्य नहीं होता। को क्रिक न करनेकारक, सम्बद्धाँ, सरकार्य, वैर्वकान, विशेष्ट्रिक और सम्बद्धे करण देनेकाल है, 🖦 अल्पन काम गरी पाता है।

<sup>&</sup>quot; 🕹 अन्तर स्वाह । 😂 अपनय स्वाह । 🗈 स्वाहर स्वाह : 😂 श्रवताय स्वाह । 🕹 उद्भाव स्वाह में पाँच पान हैं । हुनोंने एक-एकने पानर एक-एक पान साम बात पार्टिये ।

रहित है गया है, उसपर मृत्युका और नहीं परव्या: व्या स्वयं ही मताको संबंध बारत है। को सब प्रधारकी अवस्थिकोरी बारवार मुनियुत्तिको राज्या है, आमाजानाई भारति निर्देश और विवार है, ब्रिसी में बहुको अपने जी करता, एककी विकास और शास्त्रामको पूजा है; विकास सीधा समीद रिमे और वर्ग धराकान्त्रेर रिप्ने होता है, बिसको दिन और रात कुन करवेंने ही कर्तार होते हैं, को निकास होनेके बारण करान कर्तीका भारत्व नहीं करता, नगरवार और कुरीके हा कुछ क्या का अवस्थित अन्यनीके एक होता है, यही केमार लेके वाले स्वयूक्त है। सन्दर्भ प्राणी सुरस्में प्रकार होने और १८ वर्ग कारके हैं. aic: रिहो प्राणियोगर यथ काल देखाना चोर होता है. का सञ्चल पुरुषको परस्कारक कर्न नहीं करना प्राधीने । धीनोन्ते अभवती वृद्धिमा हेन एव वृत्येने बहन्तर है। में महांनी है हिराका रक्षण कर देता है. का क्रम अभिनोंके निर्मा क्रमा मेश प्राप्त करता है। यो न यो कर्ण निकार योग्य कोई करत कता और म कुरतेको निका काम है, को उन्हान मरामानामा सुर्वन कर सम्बद्धा है। जिसके खेद और पान हा हो मने हैं, बढ़ पूर्व बोध्द और प्रमुख्यके ओओर असाय गाँ होता। ऐसे संन्यातीयों रोप और बोद नहीं स समार्थ। यह Poplie his aft gibal som some, medicina अधियान कार देश और पॅलिटिया राज पार-अस्पानो रतिय हो जाना है। अलबी बहिनों न बतेई दिन होना है न अदिन । बह अपूर्णनार्थे पति सर्वत विकास करा है।

mode I in, ples afe so and si suffeit मिकार है, में क्षेत्रक (असमा) के ही मानात्मर रिका करे हैं। में यह होतेने परणा केराओं जी करते, वित् केया ज समाधे जान्सा रहता है। जैसे चतुन सार्टींक करने चक्रमें किये हुए बराबान्य और जान के होते अनुही तक बात नेवा है, जारे प्रकार क्षेत्रक की सकते कहाने किये हुए कर करत हन्तिकोट कुछ राज्यनं कार्न रित्य करता है। इतियोकी अवेद्या कर्ना विकास जिक्कोरो पन, पनरो पुरिष्ठ, बुद्धिरो महत्त्रमा, बहुतको अस्त्रक (स्टारकारि) और अञ्चलको अभिनाती परणाल सेत्र है। परमान्त्रमें हो। क्या भी अही है। क्या समझी सीमा और परन गति है। सम्पूर्ण अभिन्योंके चौदर किया हुआ यह परमाना प्रकारको नहीं अस्त । उसे से सुक्ष्यदर्शी प्राप्ते नक्षामा है अपनी सुरूम एवं जाम बुद्धिसे हेक पाते हैं ; संन्यासीको व्यक्ति कि बह मनसमूत इन्हिले और उनके विवयंको कृतिके छस शतासामाने होन करके दाना प्रकारके दुरखेका वित्तन न

इस प्रकार को इस्तानको तुर होका पर और सामकातेसे | को । जानके इस परावो विकासी जोरसे इस्तान की विकेशके प्रस विका करें और चामानाको विका है क्य-देख करने का अनुस्त्रको अन्न हेस है। से प्रोक्रांके कारों रहत है, जा करून विकेत-करियों की देश और कार्यको काम आहे प्रमुखेके प्रामीने सीमार सुरक्षे केन्द्राची कीरा काल है । इस्तरिको एक प्रकारके संवादनीका पाछ क्रमोर विकासी सुरूप कृतिहाँ स्थान करे, प्रतसे यह महत्त्वार भी विकास का पाता है। इसका ही नहीं, किस अपना होनेके कारण क्ष संस्थाते पूथ और अञ्चलका स्थल करके जारानिक होचर लग्द सार्व्य (मेक्स्प्र) का अनुध्य काल का है। अस्त्राच्या स्थान व्य है कि तक सुनीत्वे सका सुनाता अनुसार होना को और कायुरीहर स्थानने निम्हान होग्रीहरू सार्थ भीते का कर्ष करता न है।

के निरमानी और प्रश्नीका क्षेत्रर राज्ये पहले और विकार कारणे अस्तानको परकारको ब्यानने स्टालस है, बढी अपने अन्य:ब्यरंको परमात्रका स्त्रीर स्थान है। केट । केंद्र को उनकेल दिया है यह परस्कारका हतन सरानेपारत सार्क है. प्रमुखे अधीरकोता सुन्ता है। केवल अनुसार का आयमते ही हारक अन्य नहीं होता, अनुस्तानों हो यह डीया-डीय संस्तानों क्षाता है । वर्ग और सामोद्र किस्में अगरपाल है, उन सरकार पह करपूर है। अनेक्से का इच्छा कामनोत्रा गणन करते हैंने हर क्योक्स्पुरको निकास है। की जीने परका निकास और पासको असन प्रचार होगी है, करी प्रचार मैंने बेहरो तुन्हारे fini pa parai france fi i ge meut marrial di pe प्राचका उन्हेंस करन । जिसका पर पाना नहीं है, इतियों करने जो है कर के राजते भी है, जो इस समाय उन्हेंस कों करन करिये । को बेहदे अन्तिक, अपक, केवहर्स, परिता, अंदर्भ न पानीकारक, तार्थ तर्थ-निवार्थ पानीवारक और पुगुलकोर है, यह की इस प्रत्यक अधिकारी की है। आंगलेक, प्राप्त, काली तक सेवायरावन दिखा और जिल पुरुषों हैं इस बुद्ध कर्मका रूप्येश देख चाहिये, दूसरे विसरीओं नहीं । बारे, कोई कोंने करी हुई समूर्य पृथ्वी है से भी तमानेता पुरुष कारबी अनेका इस आनवों है बेड सन्दर्भ है। अब है राक्षेत्र अन्तरम् आसे भी यह आयामजानका उपरेक क्रांग्य के मानकेद प्राचने बाक्षा है, किसे न्यूपि ही सानते है क्या जिल्ला सन्दर्भ अभिक्योंने वर्णन किया गया है। इस सम्बद्ध हो जो कहा मर्ककेष्ठ साथ पहली हो तथा निसर्के विश्वपर्य कुन्हरे करमें स्थित हो रहा हो, को पूर्ण और इसके करायें मैं जो कुछ बड़ी उसे सकत देखर सुन्ते ।

#### अध्यात्मज्ञान और उसके साधनोंका वर्णन

शुक्रदेवकी सह—चनकर् ! अवस्थानका विश्वतारहे |

म्पर्तानी नवा—केटा | वै अववासकी कावण करता है, सुने | पृथ्वी, कर, तेव, कषु और अववाय—के प्रक्रमाधून सम्पूर्ण प्राधिकों के सार्थ्य केवा प्रक्रमाधून के स्वयंत्र कार्यक केवा केवा एक-में सेनेक की स्वयंत्र कार्यक समय कार्यक केवा केवा पित-पित दिवायों के हैं सम्पूर्ण करावर जन्म क्षानुक्रक है है। प्रश्नभूतीने ही सम्बद्ध अर्थक होती है और उन्होंने समय तम नवामा गया है। वृद्धिकार्य कार्यक क्षानुक्षक क्षानिकोंने कनोंद्र कर्म्युक्तर म्हराविकारकों स्वयंत्र कुलेका स्थितिक विका है:

सुन्योकाने पूर्ण-निवासी । सरीतके अक्रकाने के ग्यूनिकारणने पहल्कामुक्तेका स्थितंक हुआ है, साधी प्राचान केले से सम्बर्ध है? सरीत्में इन्द्रियों की है और पूज भी। इन्नेके सीप विशा महामूक्त्रों साम है—हरसा हान कैसे से समझा है?

न्यसंबंधे वय-वेदा ! है इस विकास सम्बद्ध प्रतिपादन करना है, एकामधिक क्षेत्रन सुने । प्रत्य, ओर्वेडिक और सरीरके संयूर्ण किए जनकारों जनक हर है। प्राप्त, बेहा और स्थानिये क्यांत मानूने हुई है। कर, नेत और क्रमाना—ने जीनों अधिके कर्ल है। तस, समय और मेंच-वे करने तुल है। एक, स्त्रीव्या और प्रतेर-शुनिके कार्य है। यह इतियोगकित प्राह्मचेतिक विकार कारमंत्रा गया है। मुख्येंने स्तर्भ सामुख्य, पत सामक्षा, प्रथ केंग्रेस, क्रम्ब अस्तरहारा और एक भूमिका कर्म है। देशे बक्रमा अपने अक्रोच्ये फैल्क्यूर फिर फिल्क्यू रेख है, करी बरा पुनि समूर्ण इमिनोमो नियमोग्री और कैस्ताल किर समेट केरी है। यदि ही गुजीबर सबका बारण करते है और मनलीत सन्तर्भ इतियाँ भी मुद्रियन ही है। भूतिकोर अध्यक्षमें युग का इत्यक्षिका अधितक ही कहा है ? सनुकारेड क्रमेरमे याँच हरिएको है, क्रंटर करन कर है, सारामां हरकाईड और आरम्पी क्षेत्रह है। अस्ति देखनेका क्षेत्रहरू करते है. पन संदेह करता है और चुनि करवार निर्माण करती है; जिल्ह केमा उन सक्ता साथी प्रक्राता है। स्तर, रच और एक--में तीनों गुज करते उत्पन्न हुए हैं और सब आधिकोटे स्थान क्यमे यहरे हैं. काकी पहचान कार्य कार्योक्तर होती है। अब 🎮 , क्रेप, जररू, समय और स्थाविक्ताका विकास हो के सारमुकारी मृद्धि सम्बार्ण पाहिले । अस्मिकार, अस्तरभावना, स्वेण, खेद और असक्षमधीसता—वे स्वोतुकके हिद्ध हैं। चेद, जन्म, नित्र, जारका और अक्षमके संवेषुणका कार्य स्थानन कविते।

कुक्दोन ! कर्म करनेये औन प्रकारते प्रेरणा विश्वती है. कारे हैं अपने राजा प्रकार के कार कार्र हैं, जिस बहित निकास कार्य है, प्राप्ताम क्रम उनको अनुकारणा और प्रतिकारणान्या कियार फरका है। प्रसंद कर करोंने उन्होंने होती है। इत्सियोकी अनेश्वर अनके विकार क्षेत्र हैं, विकारोंसे पन, कारो सुद्धि और कृतिको अन्यक के है जिला-पिक विकासिको महत्त्व कारनेके रिक्ते वर्षित ही निवास होत्यर नाना क्रांच कारण चरती है, बही उस हुन्मी है के लेख कहरानी है और स्पूर्व करते समय उपर्व इन्हिल्के करती कुराई करते है। वह देवले समय दक्षि और राजनावन करने उसना राजना के जाती है तथा जब बहु अन्याची क्षान करते हैं, का सबस प्राप-प्रक्रित क्ष्मानारी है। प्राप प्रकार पुरिश्ते हम विकारीको ही हरिएव पहले हैं। पर्यक्र अब विकार कारावी प्रवास कारता है को जारकी शृद्धि कारके प्रवासे परिचय हो जाती है। के अपने इतिवर्ध सरामा-अराम प्रतीत हेरेका भी बुद्धिने हैं विका है, इन समझे अपने अधीन रक्तन क्योंके; क्योंकि यह मनुष्य अध्ये इन्हिलोको अधी तराक्री कारों कर रेक्ट है से किए कारत क्षेत्रकों। प्रकारते किसी क्याची अन्यत स्था विकासी देश है, उसी प्रधार को क्रान्यानेको अस्तानक सम्बन्ध वर्षन केता है। जैसे अन्यकार क्ष हो करेना सम्बद्धे प्रवास विकासनी हेता है, रावे प्रवास मानवार कर होनेवर प्राथमक मानवार समावार होने सम्बद्ध है। केने कारकर पड़ी कारने विकास हुआ भी अस्त्रे विका औं क्रेक, उसी प्रकार कुछ कोची संसारमें सुकार की नामें गुण-केपीरे क्या रहता है। यो अपने कुर्वकृत कर्नोक् कार करके रहा परकारके किन्छारों हो साम जाता है, जा सम्पूर्ण प्रार्थिकोच्या असन्त हो जाता है और विवसीयें सुधी अवस्था को होया : गुण सारायाते को बाबरे, जिल अवस्थ क्षे तक करना स्था है। क्लेकि वह गुजीका हुए है। पुन और अल्पने की अचर है।

अपूर्ण है पूर्णकों कृषि करते हैं। सामम से सहशीनकी भीत असन सुकर देशा करता है। सेने मकड़ी अपने हारेग्से स्मूलनेकी सुधि करती है, जर्म असार अपूर्ण है असार विपूर्वालय पहालेंकी करती है। किसीका यह है कि सम्बद्धालये का पूर्णका करा कर दिया करता है से ने किस नहीं स्वया होते, उनका सर्वाल करा हो साम है; क्टेंकि स्वया होई बिद्ध नहीं हिसाबी पहला। इस प्रकार ने प्रम का अधिकारे हैं \$मारवाको ही मुक्ति मानवे है। दूसरोके कान्ने Baba इ.स्टेंकी सामन्त्रिय नियति है मेंक है। इन केनी महोपा क्षपती बुद्धिके अनुसार विकार करके सिद्धानका विकार करे और अपने महत्त्वकार्ये विका हो कर्य । आगा आहि-अन्हरी रवित है, बसे बानकर महत्व हुने और क्रमेक्को स्वान है और पाद पादवर्गतील क्षेत्रत निवरे। बारावरे कांग्यानकी प्रनिकारे, को चुरिके विकास करोरे सब्द है जी है. कारकार कोच्य और संदेशने रहित रुचा सुनते हो ज्यान : की हैरनेकी करन न जाननेकाले पर्यूप नहीं भरी 🖼 नहींने कुट पक्षे हैं से चेले काले हुए ए-क बठारे हैं, वहीं प्रकार अवस्थि मनुष्य इस संसार-सन्द्राने कृष्यत यह पोष्यो वर्त है; किन् यो रिना कामत है, यह महाने भी स्थानको ही माति कामा है, जरी तद्य प्रान्तका आवशको जात् हुआ राज्येक पुरू संसार-सागरसे चार के जाता है। यो सन्दर्भ अभिन्योके आपान्यस्थ्ये जानत तथा प्रमुधे नियम अन्यस्थाय नियस

करता है, जो परम फ़ारित अस होती है। अहमाने इस आपको क्रम करनेकी सकत बाहित होती है, पन और इन्त्रियोक्य संपन क्या आकावा कार—ने मोक्टप्रतिके लिने पन्दीर ग्राधन है। इन और अध्यक्षिको पुरुष असन्त सुद्ध-सुद्ध हो नाता है : सुद्ध (आहे) का अलें मिला और क्या सकता है सकता है ? बद्रैक्यन करण इस आस्पराचको नामकर करार्थ हो जाते हैं। क्रमी प्राचीको को सक्कार गाँउ प्राप्त क्रेडी है, उससे बसकर अस्य और श्रीत विश्वीको नहीं मिलती । कुछ लोग मनुष्योंको केची और इत्सी देखका उनमें क्षेत्र देवते हैं और दूसरे स्रोग . उनको मा अकाका देशकर शोक करते हैं। बिह्न विशे निम और अभिनवात विशेष है, ये न प्रोप्त बातो है, न खेब-दहि: हैते ही स्वेन्त्रेको कुछल सन्द्रान खड़िने। बर्मपारका सन्द्र्य विकासकारों जिस कर्मका अनुसार करते हैं, का पहलेके विन्ने हुए सम्बाध क्षानीको नकु कर हेता है; निर्मु जो ज़ानी है, क्राके हुए रूप मा पूर्वज्यके किये हुए वर्ज अस्तर धरत या का का के की कर सकते।

## ब्रह्मज्ञानके उपाय, उसकी महिमा तथा कामसमी वृक्षको काटनेका उपदेश

पूर्ण्यकानि कहा—विकासी ! असे आप जार वर्णका वर्णन सीमिने को प्रम समेरित हैता है तथा विकासे बहुबार कृतात कोई वर्ण नहीं है।

न्यानी का-चेटा । में मुनिनेंक मानले हुए प्राचीन सर्वका, यो एक क्योंके केंद्र है, कर्मन करता है, कुन एकाप्रक्रित होकर तुन्ते । कैसे विता अपने क्षेत्रे वर्षोको काक्रे प्रकार है, अभी अवशर प्रमुख्यते चुनिके व्यक्ते अवसी प्रमाणनशील इत्रियोंका कार्यक संकर करना करीने ( कन और प्रमित्रीको एकाताल ही सबसे बढ़ी अपन्त है, बढ़ी अबसे होंद्र कर्य है। प्रमानक्षित इत्तिकारको कृतिहरी स्थापित सारके अवने-आयमें है संतुष्ट खे, नाना प्रकारके विकास विकास बिकार म करे। जिस समय में प्रतिकों अपने विश्ववेदी प्राचीर इक्रिये रिक्त हे सामेची, उसी समय तुन्हें समापन परपालाका क्षतिन होगा । ध्यरवित जातिके सम्बन्ध देवीध्यक्षत वह परवेच्य ही सबका आह्य और पाप पहुन् है; पहुरूत सहज है उसे . देश यही है। पुरुष बरुते हुए प्राप्तमा प्रदेशके हुए अपने अन्तः करणये हे आरमस्य स्तांन करता है । प्रस्तेत ? तम की पूरी प्रकार आसमान साधानार करके सम्बंद है जाने । काम बुद्धिका आक्रम रोजर सम प्रकारके सांसारिक कम्मनेरे

वृत्त कार्यने और अवस्थित हैका क्रिकाको ग्राप्त होंगे। अस अवस्था हुने कार्या मिनारेंगे स्था एवं सरवारणी मुनियोंने संस्थानको पर होनेके सरवारणो है सर्वनेह वर्ष पता है। केंद्रा। का वैते हुनके सर्वन्यों है सर्वनेह वर्ष पता है। केंद्रा। का वैते हुनके सर्वन्यों परमामके शासका प्राप्त कारवा है, को कोई परम प्रतित, हिनेकी और पता हो, असिको हस्तक सरोह कारव वाहिते। का परम गोपरीय, गुहा हान सरवारण पूर्वन कारवेगाय है। हस्तका सर्व है स्तुपन करवा वाहिते। का परका परमामा हु-स-मुक्ति पर और मूल-अधिकाय कारव है। का न स्त्री है, व पूर्ण है और म् न्यूंतक है है। कोई की हो का पूर्ण, को इस स्वाप्त मान लेगा है, सरवार सरवारण कुलांच की होता। येक्षपि स्तिहते हिन्ये हैं हम अवस्थानकारी वर्षका उपनेह किया नाम है। केंद्रा। इस अवस्थानकारी वर्षका उपनेह किया नाम है। केंद्रा। इसके अन्युप्त है मैंने की कार्यन किया है।

क्या और एस आदि विकामि सग-देवका न होता, पुरस्की आसंक्रिये दूर खना और यन-वड़ाई, यह तथा क्षेत्रिकी इक्सका त्यम करना—वड़ी तथकानी अञ्चलका आकर है। पुरु-सेकारराज्य होकर सहस्करिक सरस्तपूर्वक

कोई सहाय की है करा। से एक्ट्रॉ क्रिकेंक्ट करने सहरकती पाँदि समझकार उत्तर क्या काला और स्थीत करा सन नेहोंका तरका क्षेत्रर कुलुको अपने अलीन कर तेला है. मही प्रका प्राह्मन है। निविद्या परिवास करते करा प्रकारकी प्रशिष्टी और मही-मही वृद्धिकाओको पहेंचा अनुस्त करनेकारों ही किसीको सहकार की प्रश्न है कार । किस समय का कुले अभिन्तेसे नहीं काल और कुले अनी भी जाते काचीत को होते हवा कर का प्रकार और केरक अर्थक परिचार पर देश है, उसे काम को बहुआनको अहि होती है और उसी यह सरकारों सहस सक्तानेका अधिकारी होता है : क्या कर, काकी और करीको फिली भी जल्मीको कुर्जा करनेका कियार र ओ, यह समय म्पुल प्रकारक है जात है। करती करक है एकक कार है, कार की। में कारको कारको कर पास है, मह प्रमुख्यानको आहे हैं। महिला है । को अनेको गरिकोरी प्रक कर सर्वेक भी कभी अपने पर्यापक स्वय को करत. देशे संपूर्ण किस जनार सन्पूर्ण कर सामार सम्ब को है और मेरे विकास की कर पारे, मारे प्रकार कराने केर that fluidate good wild flower were floid flow at क्षेत्र कर करे हैं. जो पर करियों का केंक् हैं. भौगोंको प्राकृतकार भूते । केवाद सार है सार, सामक्र सार है प्रतिक्रीमा संबंध और अंग्रह कर है कर और क्रमा का 🕯 सरका । प्रमानक स्वर कान, सामगढ कर कुछ, कुसका कार कर्ने क्या क्रमीया कर समेरिया है। स्यूत्रको इंडिय्यूनीय श्रेष्टर प्रानियोह काल काल्य प्रान्तपुराको अन्तर्यको हक्त काचै कदिने। सम्बद्धा काची हत्या, क्षेत्र और संभागको कामका गुरू करनेवाल है। पुरूषको क्षेत्रकृष, वयतमे सीत, संग्य, अस्तरीय और पास्पेरीय क्षेत्र वाहिने—इन छः स्वकृतिने कुळ गुण्य झालपको हुन होकर मोश्र अस करत है। को देसरिकाओ युक्त होकर प्रत्याच्या साथ, वर्ग, वर्ग, राग, साथ और कुल—इन क्र पुन्ने तथा अवस, करत, निर्मेश्वासम्बद्धाः वीत स्वयन्तेने प्राप होनेवाले आस्ताको इस हरील्पे सुने हुए ही बान सेने हैं, वे मानवारितको प्राप्त होते हैं। को सन्तरि और विश्वकृते सीहर, संस्थात्त्वृत्त, संध्यानीया तथा प्रशेषेत्र गीवर विका है, जा ब्युक्ते जा हेनेकल गुरू है सहय सारका करे केंग्र है। अपने पानके इसर-कार कारेरे केंग्रहर आवार्ते । इस्केंग्रे कुछ हे बात है।

सन्पूर्ण नेदोन्द्र वक्ते और उनका प्रान कह कर केलेनाओं हैं | जानिव कारोड़े पुरस्को किए कुछ और संयोक्ती जाहि होती है, जारकर और विक्री ज्यानी आह होना जारनाव है। निराम्बो पायर निरम कोमनोह को बहुत है। स्वर्ध है, सिरा कर्म क्षेत्री स्थित भी संख्या पाता है, विश्वास सरकार निवारेको पुर साविका सेवार विको विका की प्रमुख स्वयोगी सरव करक सहका बस्ता 🖢 सा स्थाने के करता 🖢 नार्थ केलेका प्रत्या है। यो अपनी प्रतिपत्ति प्रतियो हता क्षेत्रे केव्यान देश प्रकृत रिका कात तुल है, जो कार कि और साम्बन्ध प्राप्त है। के क्रमान्तः रुपूर्व पूर्व और चेरिया पुर्वेख स्थल का देश है, अस्त्री कुरूबी जाते होती है और साम्बा कुछ जाते प्रधार पह हो कार है की पूर्वेदारों सरकार । मुख्येंद्र देवांद्रे इस क्ष्मीक प्रवेशक करोड विरुद्धात्मको स्ट्रीस हुए उह क्रमेस पुरुषो कर और पुरुष कर की करे। कर क्ष्मूर्ण अवस्थितके कृत्यन स्टूब्स समझते किया है साथ है, बार सम्बर्ध कर करीनों कुकर को इत्यानों और उनके विकास क्षेत्र कर है कर है। इस अवस के कार्यनके अनुवीनकी जीनाको स्थितका बारायका अनुवी निका क्षेत्र है, यह इस्ते परम्पको अनु के पान है। उसे कः का संवासे का भी देव करा।

> प्रकार प्राप्त-पुरियो जोहरूची भीगते प्रस्ता हुआ एह अहार कुछ है, सम्बंध पन है पान । होता और अधिवान उसके कार है, कार करोगी हमा जाना बता है और अपन कार्यों कर है। प्रापकों सामों का चीका करा है। अनुसा कानों को है करन पूर्वकारों किये हुए तहर इसके बहर बहर है । क्रीम जानी करता, चेह और विषय क्रिकी और पर अले अपूर है। कार्ने कुम्मानी स्वार्त तैनकी क्षु है। क्षेत्री स्कृत रोहेची पंची हैंदे समार कार कर करें क्या है। बेशकर उस प्रश्नके क्यों औरने केवल को है और उसके प्रस्ता अवस्था प्रस्ता व्यक्ती है। को कारणके क्यानो पुत्र हेकर जा बाय-१७७को क्षा कारण है, यह सोसारिक पुत्र-ह-सोबो स्वयक्त करहे र्वेशने सक्ता हो पाला है। वर्ष्यु को कृतो कराके खेलाने उस पुक्रार कार है, यह कियारी कोली साले हुए केवीकी उस्त साथ स्वाह है। जा कान-पहल्की को पहल एकार फैसी हो है। बोर्स विहास पूर्व के उनके जनाते जनाता क्रमें कर सहते कार्यक कार्य है। इस प्रधान के बावकार्यके कार्यकार राज्यका जो निवा करोचा जना करता है, का करता

### पञ्चभूतोंके गुणोका वर्णन तथा वर्णका प्रतिपादन

पीनमी सहते है—परिवीर । प्रच्यतिक अधिके सम्बन् हेमको परावान् व्यक्तमाने अपने पुत्र सूचकेवाचे पहले जिल प्रकार प्रतीके गुलोका प्रतिसक्तर किया का, जो मैं किन दुर्वे कारण का है। सूचे-निश्चा, परिचा, करिना, क्रीना, क्रीना अपूर्ति कानेकी प्रतिक्ष, गना, मनको ब्यून करनेकी प्रतिक्र, घोटायन, संबाद, सामाय देख, स्वानश्रीरणा और बारलकृष्टि—ये एक पृथ्वीके पुण है। प्रीतनका, त्या, हेद (गील ग्रेन), प्रमान (विमानन), श्रेष (विमानक), सीवकार, विद्या, कार्यन, की आदिके कार्य का साथ और पार्थिक प्रकृतिको काराज—ने कराके पूज है। कुर्वर होना, जलमा, सरामा, परिशास, प्रकास, क्रोस, राग, चीवनात्त्व, तीवनात् और सम्बोध्य क्रमस्त्री और क्रमा—पे अभिने राज है। सर्व, व्यक्तिकार कार, कालेने करकता, कर, शीवपारिका, स्रीरचे करके कहा प्रियालक, अनोधक आहे वर्ग, वाल-अनुका अहिन्छे क्रिया, जान क्या क्या और मरच--वे करके कुन है। पान, न्यारकता, किंद्र क्षेत्रों, किसी संहार पंतानेका नामान म प्रेम, राजे किसी दाने आधारक म क्रम, सम्मात (का और सर्वते प्रीत हेना), निर्मियरका, उप्रतिकार और पाल-ने अवस्थि एवं है। स्वयान्त्रेके है प्रधान गुज बताये गये हैं। वैसं, सबै-वितायेने स्वयाना, काल, प्राप्ति, कारणा, क्रम, पूज संकार, अपूज संकार और महरूता--ने कनों ने गुल है। हा और सन्दि कृतिकोका पास करण, करता, विश्वके एका करण, संक् और रिक्रम—ये पाँच बुद्धिये पून है।

पुष्टिते पूक्त-विकास । जानः तम मोनोंको कानिः विश्वको संस्थ क्या गुज्ज है, इस्तीनो पूक्ता है वर्णका क्या स्थान है? असकी अपीत कहति हुई है? इस सोको तुस पारेके किये को कर्ण किया कता है, कहा कर्ण है क परसोकों करवान होनेके सिने मो कुछ किया कार्य है, जो कर्ण बहुते हैं? असका सोक-परस्थेक क्षेत्रके सुकारके किये विकास कार्यकार कर्ण ही कर्ण अञ्चलता है?

संग्राचीर वहर—मुधिहिर विद, सृति और सहावार—ने तीन वर्गका क्रानेमाले हैं। कुछ विद्यान् अवैद्ये भी वर्गका परिवारक करते हैं। क्रावर्गि के वर्गनुकूत कार्ग काराने गने हैं, परवर्षी प्रमुख करका अवनी वृद्धिते रिक्षण करके पासन करते हैं। स्वेषा-कार्यक्रमका निर्माह करनेके हिन्दे हैं वर्गकी क्यांक स्वारंग की गने है।

को करनेसे इस लोक और परलोकमें भी सुरत निरक्ता हैं, यो वर्गका सामय नहीं सहस्र करता, यह मार्ग्ये प्रकृत होशार करें १:सक करका माने हेता है। सन बेरान सुद्रं कर्न है, सामारे बक्रकर कुराय कोई कार्य नहीं है, सरवने ही कारको भारत कर रस्त है और भरकरें ही तक कर प्रतिक्रित ै। यर्थका कर्न कानेवाले क्यों की पुनव-पुनव् सावनी क्रम क्रमार अवसर्ग होट और विकार भी करते; असिट सामको अध्यक्ष रेपार हो अवने-अवने प्रामेचे जन्म होते हैं। वे बढ़े अपनाबंध सबी प्रतिपाद्यों बंग का है से निश्नीह कारत रख-विकास का है करों। कररोबा बंद नहीं बंदाना करीने, यह सरासरकर्ष है। कुछ करनार लोग सर्लंड क्षांको प्रात्मकाला सामन नेपार कांको क्रांतीका पानमा हुआ पानों है। सिंह बंध धानकत से वी कुरेत है को है के अपनी प्रकार निर्ण को भी गरीका है स्तुरत रेन्द्र असून बार बहुत है। अस्तरमें कोई की करनी महत्तर कार्यार का प्राची नहीं होता । इस्तीओं तुन्हें कभी भी अपने कारे क्षतिस्थाधाः विकार नहीं ताना चाहिने । यो विकास हुए निष्यु की करक, को बोर, बरुवार अक्ना राजसी क्रमी कर भी केंग्र । संक्रमारी करूप स्ता निर्धय रहता है। कीको अन्ये हुए दिसको लक् चोर सम्बंध करता रहता है, बहु अनेकों कार कुसरेकि काम बैसा अलावार बार कुछ है, पुरुषेकों भी भैता है अस्तावारी स्थाता है: विश्व विकास सम्बद्ध हुन है, जो कहींने कोई कटका च्या केवा, ब्या काव जाता चारा है और मिली दूसरेंसे जपने जन्मिकी जनसङ्घा नहीं करता। जारिकांके हिताने रूने क्रमेक्को ब्यूजाओंने द्याची ज्ञान वर्ग कारपना है परंदु व्यूष-मे करवान् इसे परीकोचा चरवान हुआ वर्ग बानो है। रेजिय किस दिन पान्य किर बाता है और का का से करेंगे में क्यों भी संग—स्त-राखे निकारी से सारे हैं, जब समय उनको भी बढ खन-पार्न जांप जांपे पक्रम है। बनक्षें क्षेत्रं भी सकते बक्कर बन्यान् क क्ष्मी भूगे हेता: इस्तीलो हनका अधियान नहीं करना व्यक्ति ।

समुख कूरहोंके जिस वर्तावको अपने हैरने हीक नहीं सम्बद्धाः, कूरहोंके समय की वैसा नर्ताव न करे; क्योंकि को अपने हिंग्से अधिक है, यह दूसरोंके हिंग्से की अधिक है सकता है। यो कार्य कूरहेकी कीके काथ म्यानिकार करता है, यह और विश्ववैकों नहीं कर्म करता हैना उसके विश्वव क्या कह स्मान है ? जो कुरोको दुरावारी कहानेका कोई अधिकार नहीं है। किंदू जा प्रमुख भी वर्ष अपने खीके एका कुरो पुरानको आसक क जान से उसे नहीं क्याइक कर एकार, बेहा गेरा विकास है। को सर्व अधिका कुछ कहान हो, उसे कुरोके प्राप्त संनेका क्या अधिकार है ? अपून्य अपने हैंको को-को सुक-सुविधा कहान है, क्यो-क्यो कुरोको को विसे—हेंसा विकार कर अपने उपनोचले कियाब कर क्या बाल औ गरिकोको कोड हेना चाहिनो; इस्तिको विकास स्था

सम्बर्गनर करनेते वेज्यानीय वर्तन होते हैं, उत्तीरर एक करना काहिने। की समयी आप अध्यक्ष है से पर-कर आहे पुत्र करोंगे सने करा अध्यक्ष है। समयो एक प्र्यूक्तोंने के पुत्र अस होता है, जो वर्ग पाना गंधा है। इसी अब क्रिकेट दुस्तांने दुस्त केंग अध्यक्ष काह्या है। विकासने प्राप्तांने कर्त और अध्यक्षित स्वाप्त काह्या है। विकासने प्राप्तांने कर्ता और अध्यक्षित स्वाप्त आवश्यक्ष विकास विकास है, यह निवाले कर्त्यानकी पासनाहे पुत्र है और इससे कर्ति पुत्र सरकारक हान होता है।

## युधिहिरका धर्मविषयक प्रश्न और भीभाजीका उसके उत्तरमें जाजित तथा तुरुप्रभार वैदयका सेवाद सुनाना

मुक्तिरो वश-कदानी । अपने तिव वेदारियांक्र कार करेक करेर किया है, आका को में कर-कर प्रत है और मैं को अनुसामने भी यह सरकत है। सिंह अभी चुने कुछ पुरस्त पानी के एस है, सरका के सकता कोतिये। आर्थे कार्यपुरार राष्ट्रकीया सामन्य को है और वी कर्मकान करते हैं, के ही सन्दर्भ है—ऐसी कराने शानीनातम केन वहाँको सारात प्रकृत और स्वानका बीक-रोग विनेता को हो पाल: जिस सहकर करेक स्थान केरे है जनता है ? प्रायमेनाओं वर्तने केर्ना है प्रधान बताबा है; सिंह इसने सुख है कि पुण-पुण्ने केवेका श्वास होता है, अवर्थन् अविद हरकारने की बेद्धेका निक्रम है, मह प्रापेश पुराने कारणा रहता है। सारपुराने को पूछ और है और तेता, क्षारर तथा वारिजुलके कुछ और। क्यूकाई स्रोतिके अनुसार पुरा-कार्वेकी व्यवस्था को पाने है। का हत प्रकार नेविक वर्षीया समय-सम्बन्ध परिवर्तन होता राजा है तो नेवके प्रकारको साम सञ्चन स्तेत्वनकारके विका और एक **\$** 7 केंग्रेले की प्रातिकों निकारी है और क्रमान सर्वात प्रधान र्र । यदि सन्दर्भ नेत प्राथमिका हो, तथी श्रुतियों की प्रयाणिक के सकती है। कियु वर अपनी है अनुकृत कारियोंके साथ नेक्का विशेष ही हो हते प्रशासकत करक केले जाना का सकता है ? वर्गका करना इन कर्ने का न कार्ने, रागोकि करानेपर भी को समझ सके क जी. सिंह कारा रखक्यमें कहा या सबक है कि वर्ष कोबी करने के सुरूप और पर्यंत्रमें भी अधिक पानी है। मौओंके बार्च क्रिकेट किये को हुए फीलानेक तथा केतकी क्वारिकेट कह प्र्यानमें दिने भगे हाँ जातियोगा तत की शीह है सस नाता है, अरी प्रकार वेदिका और रूपर्य प्रमालन कर्य वीरे-वीरे

तील होनार करियों असमें जिल्लुस्त विकासी नहीं देता; क्योंकि का क्रम्य क्यून-ते द्वा की करवातते दूसरोके प्रकृति क्या अन्यान कराजीते की कार्य वर्शकरकता होना विद्या कार्य है। और पूर्वाचीन इसीकों को कार्य है। यह नहीं, वे साह पुरानीक सबे कार्यकों की असमा कार्यत है और उसका कार्यान करवेगांते अनुक्तीको क्यान कार्यक इसकी हैंसी क्यान करवे हैं।

वीनकी क्या—गृथिति ? इस विकार पुरस्तार वैद्यास वानकि समित्र साथ को क्ष्मीक्यास संवाद हुआ का, उसी अचीन इतिहासका स्थादन दिया कार है। क्याति वानके एक अवस्था थे, को साथ साथे यह कारों थे, उन्हें अपने क्ष्मीकाले सामूर्य संवादको देखनेकी स्थाद आह है। गर्मी थी।

पुण्यास्ते पूर्ण-विशासकः । स्वत्यस्ति पूर्णकारणे कोच-सम्बूच्यार सर्व विशास का, विशास को स्थास सिर्देश्व प्रस्त वहाँ की ?

वीकानी नवा—बेटा ! वाजरित्ती प्रदी वाही वाहीर जनकाने अनुव हुए थे। वे अरिटिन आर-अस्त और संव्याने करण कान करने अधिकोत करने तथा वान्यत्वके निवरींका करन करने हुए थे करकि बीजोरें जुने आकारको रीचे सीचे और हेन्यवाह (सर्वे) में करनेके बीचर बैटा करने थे। इसी अध्य कर्नीय खीजोरें काई कुछ और सूचा कह स्वाने थे। विस्तर सोनेचे दूसरीयों काइ बाह हो सबसा है, ऐसे विस्तर सोनेचे दूसरीयों काइ बाह हो सबसा है, ऐसे विस्तर सोनेचे दूसरीयों काइ बाह हो सबसा है, ऐसे विस्तर क्योंने इसरीयों काइ बाह हो सबसा है, ऐसे विस्तर क्योंने कार क्योंकार ही सोचा करने थे। का अन्तरासों मुस्तरावार पृष्टि होती, कर समय अपने प्रकारण करनाई भीने सुनेके कारण सामानार काले काले परिचा हो को से। एक सार में महाराजां सुनि निर्मात सामार केलार काल पक्षण करते हुए कालकी जीत आधिकार कालो सहे हो धीर सामानों अपना हुए। जर सामा को बोर्ड हुँठ सामानार एक मिन्निके कोनेन समग्री सामानोंने अपने सामाना केला करा रिज्य। महाने कहे हमानु थे, हार्सालों सामेंने विक्रोको



विनकोंसे मोसरन बनते देखकर भी को **प्राप्त भी** । प्रश बरा भी ने हिले-बले नहीं, तब बेनों बढ़ी विश्वास पन बालेंड कारण बढ़े सुकते वहाँ रहते हते। वीरे-वीरे काफि फार महोने बीत गर्ध और प्राप् प्रमुख्य आनगर हुआ। उस समय कामने मोहित होका उन मेरियोंने करका सकामा किया और मानव जानेवर महस्थित क्यान्त्रक ही अंग्रे विथे । इस सावको जानकर भी में तेवाजी चुनि हिले-हुने विका है अपने स्थानकर समें हो: क्योंकि इनका वन संख् करोंने हैं रूपा करत का चौरेशोका कोडा भी प्रतिनित चारा चुननेके हैंको इसर-स्वार काता और पिर स्पेटनर केसटके नहीं कुछ था। पुरिके मताकारर निवास पाकर ने केने नहे असा वे । कुछ विकेने बात अंधे परिपुद्ध हुए तो कहें प्रोत्कार क्ये क्यूर निकार, पिर में भी नहीं रहकर अपने तहते, इसनेना भी मूनि सहस पाससे क्ते है है। केरे दिने बाद क्वोंके पर निकल आने। बा पानकर जावरिको बद्धा इर्न हत्स । अन्य ने क्वे इवर-उकर स्कृते की लगे । विक्रमें सुक्तेके रिक्रो सारे सक्ते और खानको पुर: उसी पोसरोमें लॉट आहे थे। यह देखकर भी पनि सामी हिल्ले-इत्ये नहीं थे। अब भी-वास्ते का बढ़ोंबी ऐस-नेव कोड थे. वे अनेके से पहल अने-जाने सने। विन्यते वाते और प्रभावों पर: वर्राय हैनेके किने वहीं परे आते हैं। कमी-कभी हेता होता कि वे विदिन्ने चौन-चौन दिनीतक च्छा कुछर इन्हें दिन अपने चेंसरेजें असे, बिंतू उस समय भी पनि करें निवस्थानसे कई ही दिसानी देते ने। एक बार वे पत्नी करेने नार एक महिलक नहीं सीटे, पर सामान्त्रिय को के जो प्रदे गई। अनुनंत्र, का जनस कुछ थी पता न पता से पुरिच्ये पढ़ अक्षर्य हुआ। ये अपनेची हिंद्ध मानने तमें और इस पातका उन्हें पर्ने भी हो नवा । किर बढ़ेके अल्प कावर अवेदि पार किया और अतिहें प्रेप करनेके च्यान सर्वके जान होनेका उनका जनकान किया। अपने प्रकारकार विक्रीलंकि के होने और काने आदिकी करों याद वालो वे कार्यको महत्त् कर्माका सन्ताने सने और अन्यानको और देखका चीत को 'मैरे कांची जार कर किन्य हैं क्राफेर्न अववयवस्थानों को 'बार्कार है कर करेंदें क्रमकाची क्राम्पे नहीं का सब्बे । काहीपुर्तने हुनावह कारों एक व्यापुरिक्षण देशन रहते हैं, को बहुत को बार्गावर है जिस में भी देती कर नहीं यह सबसे, बैसी श्राम हम **电电流** 

अवकारकारी पुरस्त कार्यांकारे वहा अपने हुआ, से इस्तारको नेकांकी तिये आहिते कार दिने और कहा दिनों का कार्यांने आहे । वहां व्यक्तित उन्होंने शुरस्तारको सीहा केको हेला । व्यक्तित हुस्तारक की सामानिको हैसले ही अवका करे हो करे; जिस आने कहाता कही असामानो सामा कहींने अञ्चलका कार्या-समान किया ।

हुरणकर बोरो--विकास ! अस्य मेरे पान आ हो है, का बात पूर्व अस्तृत हो नवी भी, राज मेरी बात सुनिये । सामने कहुको समार एक करने बावार कही जारी सरकार की है। सामें सिद्ध कान होनेके कहा अस्तिनाति रहा की । सब करने कर निकास आने और वे क्यूबर इक्ट-अबर काने गये का अन्योको कर्मान सम्बाधन सरकारे बाह्य गर्न हो गया । सरी सामन की निकास सामनाता नामको बहु और को सुमार अस्त अन्योम को हुए मेरे बाह्य नामो है। विकास ! साहत होनियो, मैं सामनात कोन-सा तिय बार्च करते ?

कंपनी कार्य है—कुद्भावन् शुरुवकारके इस प्रकार कार्यका वर्ष कारकेपालोंने क्षेत्र कार्यात केरो—'केर्यकर ! दूस को सब प्रकारके रस, गण, कारकी, ओवति, यूक और कार आदि केवा करते हो, तुनों देशा प्राप और कार्य दिवा रक्तेशानी सुद्धि केने आह रहें ? वे सब कर्ने कारको ।'

इसकारे का-पनिक ! में परस्थानीर और समझ केत कर्मगाने प्रमान गर्मध्ये आहे युव क्राव्येत्वीत कारत है। किसी यो प्रामीने होड़ न कार्यंड मेनिया पायन हेड को साथ गया है। मैं उसे करेड अगुरूर बीवन-निर्मात करका है। काट और कार-कुराने कुमार की अपने क्रोनेंद्र तिने जा पर कराया है। असदा, पहल, क्रांस्त्री, क्या आहे एक एवं और में क्षेत्रेन्स्ने क्युक्तेय निवास करता है। भेरे वहाँ एक-क्कूबर सरोबों भी निवारे होती है। जीता नहीं केबी पार्टा। ने सार बोनी है कुलोहे महीरे करिएका बैचक है, कर्न कैयर नहीं करता। मार मेकोरी दिनो स्थापनी उन्हें च का-काओ का ची रेला। यो प्रम गोलेका सुरू होता और यर-वाले क्रम करी राज्य केले एक क्षत है, भी कारणे जांचे पानवा है। मैं व विलोधे मेल-बोल पहला है, व विशेष करत है, मेर व कही कर है, व हेर, सनूने अनिन्तेहे प्रति की अभी कुछ-सा पान है। यह केन हम है। केन प्रताब कार्यक्र कियो प्रदास्त रोजनो है। में पुल्टीके पान्तीकी रिया मा सुरि गार्टी मनात । निर्दुर्गक हेले, स्वतन और होनेने मेर की सरका। मेरे कुछ, केले और कुर्कर कुछन विरय-मोनोकी रखा औं रखते, को उच्चर मेरे करने के को जार करनेको हुका को होता । किए सन्य पुरस्को कुरोंने भग भी होता, दूसरे भी करते यह भी सम्बो; का का किरोने हेर का किसी क्यूमी हवा नहीं करता हवा बिसी की प्राचीनेंद्र प्रति उसके करने हुए विकार बड़ी उसके. का समय का प्रकार आहे होना है। की बीचके पुजरी बहरेरी राज्यों कर होता है, उसी प्रसार निवाने करती कर रचेन बर-कर करेंग्रो है तथा को बहुएकर कोरनेकार और रूप होने करोर है, ऐसे प्रकार पायत प्रकार प्रकार धरना जाता है। को युद्ध है, कुत और बीतके कुता है, शामके महारार सामान्य करते हैं और विक्री की केवाड़ी दिया गाँ करते, वर गामकानेके वर्तको अस्तर में चे करात है। सुदिवार पहला सक्तानक करना करनेसे होता है करि प्रस्ते कर रेस है। स्ट्रेस कर्ण को हर किनके और बाह्य आदिका कार्य-कार्य कार्य-कार्य किनको और क्योंने संबंध है जान करता है, या संबंध क्रियाने ही होता है, पार-सहस्या की विकास सहा। हाई उत्तर र्मकरके प्रातिनोध्य भी परस्य संबोध-वियोग क्षेत्र करा है। विकट कारका कोई में अन्ते बार्ग दिसी अवस

कारण प्राप्त होता है। बैसे नहेंके हीत्वर सावार कोत्वहत करनेवाले बहुवके इस्ते एक कारका और पानेके पीतर किन बाते हैं कथा निया जातार नेविलेको देखका सन्ती कर्त करों है, क्यों ज़बार बिसमों सब स्वेन करों हूं, करबों भी क्रावेचे कार पहल है। इस अवस्थानक कांच्य ज्ञानक कार कार और है। के प्रत्ये अवस्थि क्या है, वह वहन्यार, इक्टान, सेन्यनसारी क्या पालेको कार्याका कर्ता हेव है। शहर को शायकर केले करने केने हैं, जो से विकार पुरूप नेतु कारनी है। उन्हेंदे के कुलकुर रिल्केची इकावते हैं, ये हे चीर्वे और या-न्यूयुक्ति विने अपन्यूयाम्य प्रकार परान् wai & Say air our & 4 paper white her माना माना हेरी है। सा, यह, यून और हानोन्हेलके क्य में के कर का होता है, का तम केवल अवस्थानों है जिल कुरात है। को कुर्यून बोलोको असलको हरिया। के हैं, को बनो सरक ब्लॉब्ड समुद्रत कर तेल है क्या को भी कर कोची अध्यक्त दिन पाता है। अधिकारे प्रमुख्य क्षान्य परेड़े वर्ग नहीं है। की सुन व्यक्तिको स्थान है हरीर सन्तरस है बना सम्बद्ध अनवको देशक है, वह उद्यालक है बाद है, हो विकास विकोध सक्तानारी अस्ति नहीं होती। देखता भी सामग्री भीका पर भी को । विकास । मीनोची राजवरून देख का क्रमेंने क्रम है। मैं आपने का साम बंद दो है, इसार

जोका रूप साराव सुरू है, बोर्ड की वर्ग नियास न्त्री होता। पार्ने या प्रकृति स्थिति हैंगे हो वर्गकी कारण की को है। सुरुवर्ग आस्त्रीये सबके सबके ची का राजात । यो सोन बैस्तेको बनित्य कर्ता, बीक्ते, नावो, मान्नीकार कम कक्षों और उत्पर अधिक बोहर त्यको है, को विकारे ही कीओंको प्रत्यहर का बहुते, प्रत्यह केवर पर्राचेको कर करते और उस्के प्रशासक प्रश तान चेन्त्रों है क्या के एक और प्रधानक कुछ चानते हर 🕫 इल्लेको केले ही कह केरे हैं, देले लोकोंकी आप कर्षे नों रिका करते ? (क्यों में क्यों रिकारिय सम्बन्धे में ? से के अनमें क्षेत्रिकार है कार्य का का है।) चौर इतिकेको सन्त अधिकोरे सूर्व, पत्रव, पत्र, अस, जान, जा और प्रकार आहे देवताओंका विश्वा है। विश की करें कोलंबी बेकार को लोग कीरियार कराते हैं, कहा में निकार का नहीं है ? बकर स्त्रीका, येड सरवाड, विशेष भी पन नहीं मनता, का पुरुषके कथाने पुत्रोते | चेका सर्वका और पुत्रोते विश्वपूर्व का है तथा पाप और बार बन्द्रमाने सरका है। इनको नेबनेसे बल्बाकरी प्राप्ति नहीं होती। में तो तेल, भी, प्रहर और ओपनोची निका करता है, इसमें कल इस्ति है ? अक्रानी प्रमुख के देश और मक्कनोंसे रहित देशमें पैक हुए और सुरक्तरे परे हुए पक्कारोंको क्रमारी पामध्योंके अस्तर बारके ऐसे देखीने से साते हैं, नहीं देश, मकर और बोक्कार्क अधिकार क्षेत्रों है। वहाँ उनवर भारी बोह्न सरकार उन्हें अनुभित उन्होंने बहु पहुँचारे हैं। उस अवस्थाने का बेक्स वसुओंको कह दुःह होता है। है से इसमें पुरस्कारों भी बहुबर पार संस्कृत हैं। इतिनें नीको अल्बा (अवका) कहा नवा है: किर कौन को बारनेका विचार महेगा। को पुरुष कथा और वैश्वेषो स्थला है, का महान् पाय कारत है। इस बचाके अध्यक्तकारी और पर्वकर | फिक्स करते हैं।

मानार इस कम्पूर्वे बहुत-से प्रकरित 🛊 । अपूक्त बात प्राचीन बाराओं पानी जा की है, नहीं सोकबर जाय उसकी बुराहकी-भर काल नहीं हों। वरिव्यापन क्रियर करके ही किसी भी कांको लोकार करना कांको । खेलोकी देखा-देखी करना अवार जो है। जल में अपने महांकोर सम्बन्धने पुरु निवेदन कर का है, जो सनिवे। से पुत्रे पाला है क्या को केरी प्रसंस्त करता है, वे क्षेत्रों ही मेरे सिक्ते करावर है, में उनमेरी फिरमेक्ट्रो क्रिय और अंतिम नहीं मानवा । बुद्धिकर युक्त ऐसे ही धर्मकी प्रशंक करते हैं । यही बुविकांगत है। बाँउ की इसीका सेवन करते हैं तका कर्यातन व्यक्त अवसे क्या विकास साम इसी वर्धक अनुहार

### जाजलिको तलाधार तथा पक्षियोंका उपदेश

रेकर बीच बीजने हुए निक्त अर्थका प्रामेख काने हे. अन्ते हे सर्वका स्थाना है के के कारण एक अन्तिकेकी भीतिका है का अधनी । तुने अल्य होश पाहिते कि अह और पश्चांने ही ब्युक्तिका सीवल-निर्मात होता है। प्रशुक्तोक्षर करण केले हुए अवले ही यह-सरपाद सर्ग शामक होते हैं। तुम्हारी बाते में नावित्यवेशी-तो हो को हैं। महानेके बहुका श्रामण करके गरि कृति आदि वृत्तियोक ही लाग कर दिया जाया. तय से संस्तरका जीवन ही संबद्ध 🛊 पायार ।

नुसाधारी बाह-अञ्चल ! ब्रुस्टेको बाह्य दिने किया किस प्रकार जीवर-निर्वाह करना भाविते, वह स्थान में बार एक हैं, सुनिये । आय युद्धे वातिका क्या के हैं, का में पातिका नहीं है और र बहाकी निष्यु ही करता है । यह उसन कर्न है: किंदु उसके संस्थाध्ये डीव्य-डीवर जाननेवाले स्थेप इतिम है : प्राप्तवरेके हैंजो जिस बतका विवास है, उसको मैं प्रकार करता है तथा उस यहको जाननेवाले प्रकानोके करनोर्ने की प्रीय हाम्प्यत है। योद है कि इस रूक्त हाम्बाक्तवेन अपने यक्षका परितान करके अभिकेषित कारिक अनुकानी प्रकृत हो भूरे हैं। धन कमानेके प्रकारों लगे हुए स्कूत-से लोगी और नारितक पुरुषोंने वैदिक क्वानोंका सामर्थ न सम्बद्धकर ग्रान-में प्रगीत केनेवाले विश्वन क्योंका प्रकार कर दिया है। काम कमके बारा जिस अविकास संख्या विकास स्था है. असीके क्षेत्रसे देवता प्रस्ता होते हैं। प्राथके कवनानस्तर नगरातर, सामान और अक्रम इक्सिके हरा

क्षात्रीले बहा—बन्धिक म्हेक्त ! तुम इक्ष्में स्थाप् | देवकशोधी पूक्त हे समारी है : मो लोग कामाने महीपूर केवर यह करते, सरका भूतवारे या करीचे रणवारे हैं, क्यों क्योंको एक करूप एकोपाली संवाद क्या होती है। क्षेत्रीको संस्था क्षेत्री और कुल्क्सीकी संस्था समाव रहि रक्तनेकामी होती है। यात्रमान और महीकड़ साथे मैसे क्षेत्रे हैं, क्रमार्क क्रमा को बेली के बेली है। निगर क्रमार जानावाने विलोध जरवारे कर्ष होती है, उसी उचार सहकारों जिले हुए काले चेन्य प्रमानी सपति होती है। विकास । अधिने आसे क्षां आधीर सूर्वकरहरूचे पहेंचती है, क्षेत्रे करवारे करि होती है, पृष्टिने जा उपनता है और जानो सन्दर्भ प्रया कन तथा नीवन करन करती है। पहलेके लोग वर्णक-परनाकी शृहिते यह-वरणादिये प्रयूप होते हैं, कार्य कोई कामन नहीं एको है; इसीरियो उसकी सम्पूर्ण कारानारी सात: पूर्ण हो जाती भी । पूर्णासे विश्व ओरे है बहुको अह पैट क्षेत्र हुन। सन्ताको परवाके लिये हुनके कुम संस्थानको ही कहा और स्थानकोचे फल-पुरूर समाते थे। वे का से करते थे, पर अपनेको इसका कोई फरू पिल्ला ी, प्रस्का विकार भी नहीं धरते थे। से महम नहसे कोई कार निर्माण का नहीं ? ऐसा संदेश लेकर बहाने अवस्त होते हैं, वे बन क्यूनेकले लोची, कुर्व और कुए हैं। हेसे लोगोंको जनमें जाराम कामी कारण जानियोंको विस्तानको लोकोपे क्रम पहल है। यो प्रधानपुत नेत्रको सपने पुरानंती अञ्चलिक क्लोका दशस्त्रस करता है, व्य पूर्व और क्रमान है एक को भी पानियोंके लोकोपी ही प्रार्थ होती 🛊 : बितु जो करने केन्द्र कर्मोंको निरादर्ग समझकर करता है और क्षश्मे काका काल न होनेक्ट समसीत हो जात है, जिसकी दृद्धिते (क्षशिक्द, होक्क, कम और अभि अधि) इस कुछ उद्या है है क्षश को क्षश्मे कर्कोने कर्जानका अधिकान कृति करता, नहीं सभा प्रकृत है। अधीन करतांक व्यक्ति सम्बद्धित होनेक्संकरी और काल पुरुवार्वकी अधिको लिये सरहक क्षनेक्सं से। उनकी कर क्षनेकी काल कृत कर्को की। से जाती, ईम्बांसील, क्षेत्र और आकाके तकको कर्नाकर के, क्रम संस्था क्षमार दूसरोको की क्षंत्र होते थे।

प्रकार कार्यालय है, सन्दर्भ देखार आधेरे स्थान है। यह स्कृतिकाके भीवर रिवत होवा है; हातरियों काले क्या हेनेवर सम्पूर्ण देवता हुए हो जाते हैं। बेदो एक अधानके स्ववंदे पूर श्रुक्तमे कुछ भी नहीं कात, उसी प्रकार को प्राचनको परिपूर्ण है, जो सक तुरी करे बाते है, बा विक-सुन्तीको प्राप्त भारत नहीं पाहल । विकास कर्न हो आकर है, को कांके ही पुरा जानो है तथा विश्वोने सन्दर्भ वर्धान और अंधर्मनकार रिक्रम कर रिन्स है, से इस्ती पूर्वा है परकारके सरकारो हीन-बीच कर वर्त है। संस्थानमें पूर करवेड़ी प्रका रक्षांच्याने प्राप्त-विद्यानकारम् बहुतका स्थेन असमा परिता और मुख्यान्यक्षोत्ते हेरिक अध्यत्नेकाचे जात होते हैं, वहाँ जावर निसीओ होना नहीं करण पहल, नहींने निर्माण हा नहीं स्थान तथा वर्षा किसी अवस्थि पीक्ष पर कथा नहीं होती। में प्रतिकार पहल्कान कर्ण नहीं सहते, कह और क्रमी दिनों का भूषी करने तथा रूपपुरुषेके कार्यका कार्यन है । उनके प्राप्त अहिंसक्रमान न्यांच्या अनुक्षम होता है। वे कार्यात, शा और पार-मूच्यों ही हरिया सामे हैं। पास्की हका रक्तेवाले लोची प्रतिवय काव्य परा पर्वी करते । अभी स्थान अवनेको ही बाजा उपकरण मानकर कार्रकक बहुन्छ। शरहार पासे हैं। मिन्होंने कर्मका भाग कर दिवा है, से ची कोच्य-संस्थाके रिक्ते नागरिसक बहारी अनुस रहते है। कोची मानिन् तो ऐसे लोगोचा है था करते हैं, जो जेवाची हवा महीं रकते । साम् पूरम अपने वर्गका आवश्य करते हुए ही प्रमानके सर्गांकी प्रात्तिका अवन कराते हैं । संस्कृतकेंके वर्णाकंड सनुस्तर मेरी वृद्धि की सर्वत समान काल ही रहाती है। वित्तुलंकाम प्राप्त पहाराज्येको प्रका होते ही केल प्रक मार्थिने नुसम्बर उनकी समाने क्षेत्रे समने हैं क्षा 20 देनेकारी भीदै तक प्रधारके मनोरव विन्यु करती क्री तक प्रकार करती है

है। निस्तंत करने कोई कामना नहीं है, को विस्ती परस्की इकाने कर्मेक कारण नहीं करता, नरसकर और शृतिसे जलन क्या है, जिसके कर्मकथन श्रीता है को है, वसी कुलको हेक्करकेप साहक मानते हैं।

कर्माण पूजा-केर्यक्षा । मैंने असलकारी धुनियोधे कर्माण पहचा पर वाली गूर्वि सुन्त, सर्वका: वह सरहानेमें कटिन भी है: क्योंकि पूर्वकरसँग महर्षियोंने उसके उत्तर विहेश किया गूर्वे किया है तथा सर्वाचीन गूर्वि की सरका प्रवाद गूर्वि कर्मा है। ऐसी विश्वित पूर्वेश होनेके करना अधिकेकी प्रमुख से क्योंका प्रवाद बनुहान कर गूर्वे स्वाते, दिन उनकी क्या गूर्वे हुम्बरी क्योंका कर्मके सुन्त क स्वाते हैं ? यहाँ बताओं। गूर्वे हुम्बरी क्योंका गूर्वे अस्त हो की है।

हरकारो वक-सहस् । तिम इसी पूर्णीके दश अस्तक अर्थि क्षेत्रेके कारण का बहाराने केना नहीं हुते, उन्हें र के कर्मान्य कु करनेका अधिकार है न क्रियानम ग्रह । लक्षम् पुरुष को की, कुछ कही और पूर्णकृतिकों ही अपना पह पूर्व करते हैं। ब्रह्मसूक्रोंने को असमर्थ है, क्यार प्रमु गाव अन्त्री प्रेरके पालोंके, जीनके और वैशोकी श्रीको ही एवं बार हेर्न 🛊 " । जो इस अध्यय केवल थी, कुछ साहित्या करचेन क्रमें अञ्चल-प्रकार पाया आत्म करता है, का प्रत्यक व्यक्ति क्षण्याचे नाजीत्वा सावस्थ्यत ही उसकी वसकत कर रेका है अर्थाद् बद्धान्त्रों ही पार्ट बार रेका है और ह्यूनेकामा केवन करके बहरकार परवान् विकृत्ये आहे हे बाता है। विकास । यह जाना ही प्रयांत सी है । जान सी वंशेवनके रीनो हेक-देवाने एक पर्यापने । जो की बताने हुए अहिमाप्रधान कर्मेका आवश्य करता है, उसे काल खेळाँको प्राप्ति होती है। स्क्रान् र की वर्णका को कारण सामने एका है, कारण पारल सरका करते हैं का दुर्धन ? इस बारवारी जीव कर स्पेतिये, सब ज्ञानको प्रत्यक्षे क्यार्थकाका प्रत्य हो सामना । हेरिस्के, ये को बहुत को मही जानवाद में सह रहे हैं, तम जापके मसरवासे उसक हर है। इस समय अपने हाथ-के सबेठकर बोलतीयें उत्तेत करनेके रिक्ते क्षेत्रे करते हैं । सरपने इन्हें पुरस्की पाँकि पारत है और ने भी अवस्था दिवाके सम्बन आहर काले हैं। वि:संकेट अन्य प्रमोद विवासे ही साम है। अतः प्राई मुख्याने (और क्योंके मुक्तरे अधिक-प्रकार कर्यकी महित्य सर्विये ।

क्षेत्रके अन्ते है—कुष्यकारको कड सुरक्तर सामानिके उन विक्रिकेको कुरुक्त, तक है आकर कर्वका उन्तेक करनेके

<sup>\*</sup> गामको पुरुषे विक्रोपा कर्षण और क्राप्ते प्रतिकंत जातमं अधिकंत इंग्ल है तथा उसके परावेकी धूरित पढ़नेसे सब पार्थका निक्र को जाता है

रियो मनुष्यकी महित एक कालीने कोराने राजे--- 'प्रकार । । हिमा और ज़रूबी ध्वयंत्रमें स्ट्रेंट होकर के कई फिने को 🗓 में इस सोख और परलेक्यें भी कल्ककारी होते हैं। हिला अञ्चल राज करती है और उस वर्ष ब्या किला मनुष्यक्ष सर्वनास कर इस्तरी है। जो साथ-इनिये समान मान रक्षणेकाले, अञ्चल, संस्कृत और मानाविक है क्या कर्मन सम्बन्धार नाम्ब अनुसन करते हैं, उन्हेंग्स पह सफल होता है। ब्रह्म समझी रहा करनी है, जनके प्रध्यक्री क्षिपुत् क्या प्राप्त होता है। स्थान और क्यारे भी बाजक महत्त्व अधिक है। यदि कर्गने क्रामीके केवले प्रकार दीक कारण न हो तथे और मनदी पहलताने पाल इक्ट्रेंबराके व्यानमें विश्लेष आ जान तो भी पति सदा से तो बाद अस क्षेत्रको हा बार देती है। जिल्ल अञ्चले न स्वांतन केरल क्योबारण और व्यानने ही कर्वकी पी जो केरी---व्यक्तित कर्न कर्न के जात है। इस विकास शर्मन क्तानोको जाननेवाले लोग बहाजीको कही हाँ परक सुराव्य करते हैं, को इस प्रकार है—को देवन होन **श्रामुक्त परिता और परिवासकोन श्रामुक्ते क्रमको एक-स** ही समझते है । इसी जन्मर में क्यून बेक्नेस और न्यूक्ति प्रदेशोरके अध्यो भी कोई अका नहीं करने थे। एक कर कार्य कर्ष इस काविको देखकर प्रकारी (सहस्थी)ने कार-'देवनाओं । इस्तरा का किया तीन भी है। बालवर्षे उद्ययक अस जल्मी शक्तके कारण परित होता है और पंजासका समाज्ञाने पूर्वत । (स्तर: सञ्ज्ञानेन परिस्कारे

सरेका परिवार्तीय स्वकृत्य है आ प्राप्त करने मेला है। प्राप्त अवसर बेदबंचा और सुद्रस्थेरमेंसे बेदबंदाका ही आह स्थापन को प्राप्त है)। सारोज के कि स्थापक ही अह भोजन करना साहिते, कुमल इसे सुरक्षोरका नहीं। विसाने बारा नहीं का केनकाका सकिता है नहीं है। वर्पनोंने उसके क्रमको क्रमक स्थानक है। अबका सम्रो सहा पाप है और ब्रह्म पारसे पुरू पारनेवाले है। वैसे स्रीप अपनी परानी केवलको क्षेत्रक है, जर्ब जनम अञ्चल पुरुष पायका करियान कर देश है। अञ्च क्षेत्रेके साम-धी-साम करोंसे निवार हो जाना सब परिवाराओं से सहका है। जिसके राजारे केंग हर हो गये हैं, यह अद्धान कुछ हो बाहायाँ परिता है। को का और अस्तर-सरकारो क्या प्रयोजन है ? यह प्रश ब्यापन है, इस्तीओं को नेती श्रद्धानात है, का राज भी केस है है।' को और अर्थने तत्त्वको आरनेपाने सायुक्तीने पूर्व प्रकार कांग्री प्रशासन की है। इसलेगाँवे कांग्रीन कार पुरित्रे पुरुषर का वर्षका हान जात किया है। ferme ! and steet frum utified : weit beenen आवरण करके आवके काकरावी जी। क्षेत्री । अकस पर्या प्राप्तात वर्णका स्थान है। यो संस्कृतिक शारी धरीया रिक्श है, उसे ही सर्वकेंद्र समझमा पाहिये ।

क्षेत्रको सक्ते है---न्युरस्ता, कुलमार और जानति क्षेत्रे हो शमन्त्रे विश्वासेकाओं आह हुए और वहाँ सुस्तर्क्षा रहते रुने । कुलसान्त्रे सनसन् वर्णका उन्हेश किया वा और जो सुन्यार कार्योप मुन्याने कहा क्षान्ति विश्वी मी।

### राजा विचरुनुके द्वारा अहिंसाधर्मकी प्रशंसा तथा चिरकारीका उपाख्यान

धीयार्थं कार्यं है—बुधिहर । राज निकानुमें प्राणियोगर दया करनेके विकाय से कुछ कहा है, वह प्राणीन इतिहास में तुन्दें सुन कहा है। एक राजन किसी वहकाराओं एसाने देखा कि मैराकों गई कहा कहा प्रमुख देखकर एसाने गई कहा गई है। हिसाबों कह कुर अनुस्त देखकर एसाने गई कहा गंधा; वे अनंगा निहित्य विद्यालय हम अवस्य सुनाने समें, ओह ! चेचारी मोई बहा बहा का हो है, इनकी इस्सा न करों। संस्थापी समका मौक्षेत्रक वहन्याल हो। यो धर्मकी पर्सादमें भाई है कुछ है, यूओं है, किमों अवस्थायकों विकामों मारी संदेह है तका को किमो हुए नार्वत्रक है, उन्हों स्थानेनीयर पर्स्तांका वरिकाम करने हैं। वर्मांका पर्मा क्रमों से सम कर्मी अधिसाती है जर्मना की है; इसरिये कि।
पुरुषो वैदिय ज्ञानको वर्गत सुक्ष सहस्तात विशेष आहें
अस्ता करून करना नाहिये। दिसी यो जार्गाकी हैंसा म करना है सन धर्मीने मेंद्र करा गया है। विवाहत होकर करोर नियमेखा करून को, नेवकी करू-शृतियोगे आहरू य होकर असार जान को, असारके जानवर अनाकाये ज्ञान व है। कृत्य क्यून है कराकी हुआ करते है। बाने यह, संस और मैन जादिका अपनेन पूर्वीका करत्या हुआ है। केटेंगे इसकी कही से कर्म नहीं है। होना कर, सेह और संस्थित क्यांचूर हेकर विद्वारी संस्थानको कारण निविद्ध क्युन्नेको करते-योगे हैं। होनेक हाह्या से सम्पूर्ण स्वीपे प्रमानन् विवादक है आविष्यंत करते हैं और पुन्य सवा सीर आहिते जनकी पूजा करते हैं। वेदोने को बहुसावनकी पूछ बहाने गये हैं, जर्मका हमाने जनकेन होका है। पूज वितासको सम्बन्धी पूजा अपनी विष्णुत बाजको होशा आहिते हमा संस्थान करके जिल हमिन्यको वेशन करते हैं, बहु बेस्ताओंको अर्थन करनेने जेन्य होवा है।

पुणिकेते पूर्ण-निवास । आय मेरे स्वयं युक्त है। कृत्या प्रस्तराने, स्वी कार्य गुण्यानेके आवाले कोई सतोत मार्च सत्तेत्वा अस्पत्त आधिक हो साथ, उह स्वयं को प्रीव कर कृत्या साहिते का निवास क्षत्रों का प्रार्थकों परिवा करनी पाहिते ?

योगांकी प्रमुन्तिया। इस विकास एक प्राचीन इतिहास है, यो आदित्यस्थानो करत हुए विश्ववर्तिक पुरासको सम्बद्ध रहाता है। बहुते हैं, बहुति बीवनके पुर विकास राज्यात कु ब, यो बहु बुद्धिक था। यह विरकारकाक पारता और क्षेत्र का । विवत्ती कार्यवर पहुल देशक विकार काल या और विक्रीसम्बद्धि प्राप्त है परान कु करात था, असीलो सब जोन को निरुक्त के बढ़ने रहने । यो इस्तवनी नात को संब सकते, देशे कवादि: कुल को आसमी और परान्ता काले थे। एक देन चैनको अन्तर्भ धीका व्यक्तिकार केवाकर कहा कोच किया और अर्थन हतारे कृतिको अञ्चल देखर विश्वकरीले ब्याइ---'बेटर । व् अनवी प्रक करिनी मताको भार द्वारा ।' किया विकारे ही वह साला हेकर महर्मि गीरम कार्ने को गये और विरावती 'हें' करके के अपने सभावके अनुसार बढ़ा देलाव जनम विचार करण का। जले संच्य--'च्या जान वर्ड, तिको विकास आहात्का पारम भी है करू और पारबंध कर भी न है। क्षमी काने का पहला कहा करी संबंद जा कहा। कार उन्य समानु पुरुषेको भारत में के इसमें प्रारंका प्रमुख कैसे करें ? वितानों जनावा करन वरव को है, जब है मतान्त्री प्रज्ञा करना भी अपन्य प्रचल वर्ण है। कुछ के निक्ष और पाता चेनोंके कचीन होता है। कव: चया हती, विकासे मेरा ही वर्ग पुत्रे बद्धारें न इस्ते। निवा कर्ण अपने इतिह, राह्मार, नोत और करन्यी रक्षाके दिनो सीके वर्गने आकर चुक्तमध्ये करना होता है। जत: नुहो माठा और निवा केनोंने हैं। राज दिना है; बिर मैं अन्तेको क्षेत्रेका ही पूर करों न सन्तहे है मारकार्य तथा उपकर्षके समय जिल्हाने को मुझे प्रकारके र उपकर सुक्त और करहेके करान क्रमुख्यानक क्रेनेका आजीर्बाद दिया तथा अपना जानता यहचार जनवारिय किया

है, का उनके चीवकार निश्चम करोगे करोर उनका है। विका मरण-योगम और सम्बन्धन करनेके कारण पुत्रकी ज्ञान पुर है। यह से कुछ में अवह है, को को समझकर जीवार करण करिने । जो बेहबी भी निर्देश अझा है । पुर विकास स्वेतवा पता है, जिल्ला विका पुरस्का सर्वका है। एकमान निवा ही पुरस्को प्राप्ति असी। एक पुरस् केट हैं, इसरियो कोई क्षेत्र-विकार विके किया ही विकासी सम्राज्या पारण करण पाहिने । यो पर विकासी आहा मानता है, जाने प्रवस पहल का हो करे हैं। धर्माकर और सीमचोज्ञक संस्थाके हता निवा ही पुरुषो सरस करना है। यह स्था-तम देश, पाक-विश्वास और प्रमान रोक-न्याप्रतेका प्रमा कराए है। निवार के बनों है, निवार के बनों के और निवार के अपने पक्ष का है। विकास प्रतान क्षेत्रिय कृत्यूनी कृतक प्रतान को बाते हैं। मिला को पुरूप की संस्थार है, यह पुत्रके विकी आसी स्थी है। यहि विक उत्तर क्षेत्रन पुरस्क अधिनवत को से वह सबक गारों है नक है कार है। का अपने बार और प्रातियों क्षेत्र के हैं। किंद्र रिव्य को से को संस्थाने की सेवाने कारण पुरस्को नहीं होश्रात । क्षाः पुर्णेत रिप्ते निरामक प्रकर पहुर क्षेत्र है । असू, Sands shower at \$5 flower we from my veryle नियम्बे स्टेक्स है।

केरे अरची अधिकी अविकास सहस्या है, असे अवकर को से क कहनेरिय पहुन-प्रदेश निता है, प्रत्यो पन हेरेकारी केंद्र काल है है। संस्तरोह करना दृ:सी सीनीओ कारते है संस्थान निरस्ती है। समस्या कहा चीनित हाते है. काम अन्त्रेको स्टब्स सम्बद्धा है। इसके मरनेसर का अन्य-सा हो जाता है। पुत्र और प्रेमोले पुत्र सी पर्वका सुद्धा **ं क्यों न हो, की, कावी जान कीरित हो से का उसके पाए** हो कवि वारण्याका-सा ही स्वास्थ्य ब्रह्मता है । वेदा समर्थ हो पर असमर्थ, सा-मूह हो मा कृतित, माता हरेता इतकी १५८में कुरी है। नामके समान विकित्त्रीक प्रस्तन-धेकन करनेवास कुरव कोई नहीं है। कह कहाने विकोध हो बाता है, कर समय म्बुल अवनेको सुद्धा सन्दर्भ सन्तर है, बहुत दुःसी हो पाता है और देशा जार पहला है, जाने अल्बे रिप्ने तारा संस्थर सुना हो रका। महत्त्वी प्रान्तकारों को सुरा है, का कही नहीं है। कार्येंड क्रम्य कृत्य प्रकृत नहीं है। पुरुष्टे लिये मंदि सुमान क्षा और किय कोई नहीं है । यह गर्पने दारक करनेके कारल 'नावी' और क्या देंके प्रत्य 'करने' प्रक्राती है। क्य निरमका कुल्के अहाँको कहाती है, इसरिन्धे को 'अन्तर' कहते है तथा वीरमसीवनी होनेके बारण यह 'बीरस्' और सुमूख करनेके 'सुमू' याम बारण करती है। ऐसी माताबा बारक केवेन पुत्र पत्र कारेगा ? 'पुत्रका बच्च मेता है और का विवाले पीनंसे अन्तर हुआ है' इस कारको अक्षा है कारती है। बच्चेका सारान-आर्धन करनेने माताबो विवेच सुका विराण है, यह अस्पर जिससे भी कार्यका बोद स्वाली है।

पुरुष सपनी सीवा परण-वेषण करनेते भारी और पालन करनेके कारण पति कहातात है। इस केवी मुख्येके न क्षानेपर का पार्ट का पति कालाने केना नहीं होता (इस्सीएके मेरे निवा भी अपनी ब्रीबरे गार कारनेवी अक्रा केके बारस अरके भर्ता वा मरिके कर्तव्यके निर को है। । कारकने क्रीका कोई अपराय नहीं होता। व्यक्तिकारकः 'वहन् चन पूरत है करता है, इसरियो सारा अवस्था स्थीयत है। सी। यहीवा समये कह देवता है। यह उसकी संख्ये कार्य के जो मोदनी । इस दिवासीके समान का बाल्य कर केवे कार्यके पता भाषा सा। शतः वाले को अन्य ही पति प्रम्याकर सामग्रामधीन विश्वत है। ऐसे व्यवस्थीय विश्वीवा की पुरनोका ही केन नामना व्यक्तिक वर्गोंक वर्ग अवस्थाकी पह मैं हो होने हैं। बिहर्न से अन्यान होनेके फारफ पुरुवेके असीन होती हैं। किसी भी अवराधने इंक्स अवन्य इक नहीं होता, अतः उनके कार श्रेषकेका नहीं करना नाहिने। पासका मीरक मिलाने भी बहुबार है। एक से बहु नारी होनेके धारतर ही जनका है, कारे मेरी कुल्पीका आंध्र है। अवस्था पह औ को और पाताको अधका जानते हैं: फिर मैं सन्यापार क्रेका भी अस्ता का केरे करे.?

विश्वन करनेका क्रमान होनेके बारण विश्वकरी इस प्रकार नका देशाय क्रमान निवासक हा, इसेने क्रमां विश्व करते लोड़े। इस सम्बद्ध क्ष्म प्रकारक हो का था। वे क्रमान आंधु कार्य हुए प्रश्नी-पर इस क्रमान कर क्रमां वे—'ओड़। तिपुत्तका आंधी इस क्रमानक केर व्यवक्त मेरे आक्रमार आवा था। मेरे पीटी करतेले क्रमां क्रमां क्रमां विरित्रम् पूजर विज्ञा। इस प्रकार क्षम की है को अपने वारों आक्रमां दिया और असे अपनी विश्वन-सोस्प्रकांक क्रमां अस्तान दिया और असे अस्ता केरों केरारी चीवक क्रमां अस्तान दिया और असे अस्ता केरारों केरारों चीवक क्रमां अस्तान है? इस्ता ! ईमांकि क्रमां केरा विश्व क्रमां हो पसा वा, इसीरिकों में प्रवाद समुद्ध क्रमां क्रमां होनेके क्रमां पूजरी धरम-योगन प्रतिकारी भी और सार्य होनेके क्रमां पूजरी धरम-योगन प्रतिकारी अधिकारियों थी; किन्नु मेरे अस्ता हमा करा हारती। अस जीन इस प्रवाद नेता उद्धार करेगा ? मैंने अप्रस्कृति जिल्लारीको अस्तरी महास्ता का सरनेको सराव है थी । यह उसने इस कार्यने विस्त्रत करके जनने नामको सर्वक जिल्ला है से वह सुने की कुछ की-इसके सरकारों क्या सरकार है। वेट जिल्लारीकः! तेरा काक्यत है, की अस्त पूर्व इस कार्यने देश की हो, तसी तेल किस्तारीक कुछ एकरू हो स्वतात है। उसने विस्तान करके सरकारों जिल्लारी कर और अपने क्या एक केरी सरकार कुछ सा कर, साथ है जुले और अपने-आवादे भी संस्ता कुछ है। वेटी क्या जिल्लारको हेरे क्यानी जाता रूपने वेटी की। असने कुछ विस्तान हुने अपने गर्यने वास्त्र किया है। अपन साथ कार्यो पहा करके अपनी विस्तारिकारों इस्ता करता।

इस जाना हु-की क्रेक्स क्रेक्स-विकास हुए कार्य सीतर उस अक्रान्त आर्थ के उन्हें विकास अपना हु-की हुआ और दिसारी क्रिका क्षा दिसारी देसका बहुत हु-की हुआ और विकास केवाना जाई जाना बारोबी क्रिके परानीत हिरा क्या : पुत्रको पैटोसर निया देस और क्यांको आवन्स



स्तिका कारणार महर्षिको यहाँ सरसाध हाँ। उन्होंने यह सोमकार कि मिरकारी धनके यहे सक्त-अन्नको कारणाको किया यह है, अलको जरसार महेको स्त्रण सिथा और हेरसको वे उसका मध्यम सुंको यहे; किर असकी प्रदेशन करके आरोधिक और उन्होंक होते हुए कोसे—' करता। है सक्ष मिरकीको यह, तेस करवान हो, वो ही किरकारस्तक संग्रक- विवास्कर काम किया कर । अपन देवे विवासिकके औ कुराम में बहुत हमकाब दुन्त चोननेते क्या गया। बेटा । अधिक कारणाव शोक-प्रमुख्ये ही विश्वीचे निवास चेवनी वाहिये और मित्रे मित्र बना रिच्छ, जल्हा सहस्र परिवाप भी जी करन वाहिते। यहा हिलेक संब-स्था करके रवाचित की वह देनी है अभिन्य कारकार देखान होती है। राय, वर्ष, अधिनाम, क्षेत्र, पान और विस्तीचा अद्येश चारेले बिराम्य काके यो क्या स्रोध-विकार रेखा है: या प्रसंत्रकेर With Color to Gray, 1999, 1999 affer Rouble Solt हुए अन्यक्षीका निर्मात करनेने को वालीकार्य करना अच्छा mit feit

योगानी कारो हैं-जुनिहित । इस प्रकार पीतम अपने पुत्रके विराम्पपूर्वक कार्य करनेके कारण बहुत प्रसार हुए हे । देशे ही अनेक कार्गने देशान विकार करके किसी निहापक र्जुननेकांको पश्चका नहीं करन पश्च । यो विद्वारों और हिन्नु पुरुषेची रोकने अधिक सम्माक स्वयर साह अपने प्राप्ते कार्ने किये कार्य है, यह विश्वासकार सामानात चानी क्षेत्र है। क्योंक्षेत्र करनेकारे पुरुषो परि बोर्ट एक को से उसे नेताब निका करने है सामा कर देख व्यक्ति । महाराजनी महर्षि गीरण अपने विश्ववरी पुरुषे साथ tige without the annually the trails and favorable अक्कर में कुलाईक कर्न दिल्को ।

# अहिंसापूर्वक राज्यसासन करनेके विषयमें श्रूमत्सेन और सत्यवानुका संवाद

मिना राजाची प्रशा केले कर राज्यत है ?

क्षेत्रकोरे कार-विकास । इस विकास स्थापन और प्रत्यान्त्रे संबद्धा प्रचीत् प्रीकृत्या स्थात है। मना है। कुछ है, एक दिन स्तानकारों देखा कि निवासी काहारो बहुत-के अपराची परीसीयर बहुते के सिने से बहुते मा से के जा तत्त्व उन्हेंगे निर्मात का समा **का**—'रिकारी ! यह सात है कि कभी करती जर्माना दिसानी हेरेनारम कार्य वर्ग हो बाबा है और वर्ग-सा प्रसंद होनेवारण पार्च की अवस्थित कर काल का लेख है। स्थानि विज्ञीको अन्य रोजा हो निज्ञी तथा वर्ग नहीं हो सकता है

इन्स्रोन क्षेत्रे—केटा । यदि अवस्थानिका कर करना की क्रममें हो तो नमें क्या हो सम्बता है ? अपन क्रम्ह मारे न कार्य तो वर्ग-अवर्ग कर विकास एक हो कर्म : स्टीस्ट्रामें हो स्टेन इसरोकी वश्तको सीचे प्रका लेना पताते हैं। 'जा पता नेरी है, करानी नहीं है' ऐसा नाहने सराते हैं । ऐसी एकाने क्रमके निर्मा सोबागतायर निर्दाह केसे हे सम्बद्ध है ? बड़े हम इन्होंड किया भी निर्वाहकर कोई उराय जनते हो से कारती।

सरकारो का-निवासी । वर्तन्त, समा पुरू—इन रीनो मर्जोको इक्कानेक अर्थन पर देव कार्यने। का करों करोंके स्टेन धनके क्यानों वैकार कारका पालन काने वर्णने के बनकी देखा-देखी कारे महत्त्व-सा-मानव अस्ति भी वर्षका अवस्य करेंगे। अन्त कोई स्थानको अस्य न बने से स्थानको स्थाने पार सावर कहन साहिते कि 'अनुवा पर्क नेरी का जी

पुष्टिले कुल—विकास । क्रम विकास दिन क्रिके | क्रमान ।' क्रिके क्रम क्रा करियों क्रम है। क्रम-विकास देख केच पार्टिने, जिसमें प्रत्य पार्टिका पन म हो। की-पायको अस्तेत्रक और अवस्तेत्रे मार्गवर प्रतिभक्ति विकार विक्री क्रिया एक देश अध्या भूति है। एका का अनुस्तेका कर कथा है से उनके साथ बहाओ निरम्पाय बहुमा-सहक्राओके पात-रिया, प्री-पुत आहि भी कार का का के हैं अन कार्य क्ष रोक-विकासक कुळाल निक्रम करना माहिये। क्या पुरुष भी कार्य तानु-मान्ने कुनवार पुत्रीत का बात है तक व्यूत-से पुत्र पुरुषेकी भी संतर्ने अच्छी निकल साठी है। प्रातीको दुरोको प्रात-क्या केवर प्रमाय प्रातेकोच गाउँ करण करेले । जनमें कर स्वतास्य सरातवर्ष गर्मी है। इंट्राफा-एवं प्रारंभिकं इन्छ हेरा क्लिन है, जिससे इनके क्योंका प्रकारित हो कर । अवका सर्वेश हीन नेनेका सब दिवास जर, देर का रिया तथ म तब-बाग आहे. क्ष्मको उन्हें कुरूर करा दिया साथ । जल-कुछ हेका उनके कुटुन्जिको क्षेत्र पर्वकार से करानि जीना नहीं है। इसी तक नारे ने प्रोडित अक्रमधी सरम जा एके हों, से भी क्या अने क्या प है। प्रधारतियों अरश है कि पति दा प्रथा व्यक्तमाने करन काम यह प्रतिक्षा करे कि 'आजरे का कोर्स पान मा अनराज नहीं करेंगे' से उन्हें कोड़ देता साहिते। बिद्ध वर्गकर अवस्थ करनेकर औ पहलेकी श्रांति सुद्ध हिले विना क्षेत्रक होना नहीं है। याथ यहांकर हमा और परवारों करन करनेकरे संन्करों भी बाँद कर कों हो हमें भी हका केम प्राचीने ।

क्यारोजने कक्ष-चेटा ! जिस रखाने हो सके प्रकारों [ 8पैकी वर्धाकोः भीतर रसमा कार्केचे । को राजका वर्ध है । संदेशिक कर न दिवस काम के से सारी प्रकार का पहुंचते 🛊 । पहलेके खेगोको एकपर स्थम सुगम क; वर्षेकि उनका क्रमान ओवल होता था. प्रस्कों क्रमात विशेष क्रींच थी और हेंच तथा कोकारी नाम जनमें बहुत कर भी। उस समय अवराजीको विकार देश हो जारे एक प्रवृक्त कक का। बिन वरि-वरि कोगोंने अस्तवको प्रकृष कहा सन्ध, इसके व्यक्तिकार प्रकार हुना-अन्यक्तिको बहुनकर सुरकार क्रीद विवा वाले रूपता। अस्त्रे बाद कुरवाल बाहुत बारवेला क्ष्म वारी निम्ता करा और राज से क्षमार क्षम को प्रकार है। मिन भी लोगोंको पर्याद्यके फेसर रहाना करिन हो पक है। सुदेरे केवल, मिरार, पायार्थ और बहुव्य-विदर्शके को हैते । वे से परपठने बायर कुटिंड की केनर कार सके है। भाग करतो सीन राहक सा समात है ? करते क्रांस विकास धारनेवारनेको से सूर्य हो सन्तरक पार्कने र

सारकार कार-निवानी । यदि अस्य सुदेशिक का भ सारका को सायुक्त कार्यने अस्तरमा है से और दिस्सी कार्य स्थानों कार्या दानु-वृत्तिका अन्य प्रतिश्वे । तिक्ष्मे है क्या स्थान-कार्याचारे सिन्ने परित्र सारका करते हैं, उन्हें देशकार सर राज्यों राज्यात राज्यों है जाना स्थानी का वाले अस्तरस्थारे सुवास्तर राज्यों है जाना स्थानी का वाले हैं। सहा-सी सार्व केवार भव दिक्क्षेत्रे सन्वार्थन का वाले हैं। सर: सेंड प्रवास अपने स्वकृत्यकार से है प्रवास सर्वत्वक कारकार समान करते हैं। ये अस्तर्वकार्य हमा वहाँ सेंड । वही राज्य काम आवारण करता है से कुलो स्थेन की कार्या अनुकारण करते हैं। क्योंके सामार्थीका अनुकारण करता है।

वन्नविका संस्थात होता है। यो राजा नार्व निवस सोगनेके तिनी इन्हिक्का पुरस्त है का है, जारने मनारो सालूने नहीं रहा पाता, यह भाँद कुरतीको सदाव्यारका करोड़ा होने समे तो सोध जाता है की जाते हैं। जाता कोई मनुष्य हमा का मोहके कारण राजांद पाता कोई जानुनित व्यावहर को तो उत्तरंव उत्तरंव संस्था कार कारण व्यक्ति । हैसर क्रात्वेशे वह अपनी हुएँ जावा कोई केस है। यो पात्रकी अनुनित्यो रेकान व्यक्ति । हुएँ जावा स्थान कारण कार्य कार्य वहाँ व्यवसाय को स्थान कार्य हो अने की कार्य क्या केस की मानु-व्यावक की स्थानकार नीवको कार्य कंपानका सरकार कहीं करण पहार, वहाँ पाय कहार है और कर्मका प्रस्त है।

निवासी ? एक क्यानु उद्यानने मुद्दे का उपनेत की हुए का का कि 'क्या सारकार ! मेरे पूर्वभीने कृता करके मुद्दे ऐसी किया के मी; इस्तीरने प्रकारके सारकुरणे क्या कि वर्षे अपने आरी करकोर्थ केन्द्रा प्रकार है, पूर्वका आदिस्तानक क्यान कु निवास करका कर्योगे ! जेन्द्रा आवेदर कर्याद्रा प्रकार क्यानको क्या जनका इस्तान करना स्वीत है) क्याने कर्योग क्या है जार क्या कर्योग क्यान क्यान है। अने क्या क्या है अप: का स्वयं प्रमुखीनी आयु, क्यान और कारका विवास करके हैं बंधका विवास करना स्वीत और कारका विवास करके हैं बंधका विवास करना स्वीत और कारका विवास करके हैं क्यान करना क्यान क्यान क्यान क्यान मुद्दे क्या !"

### कपिलका स्पूपरहिमसे निवृत्तिप्रयान वर्षकी ब्रेष्ट्रताका प्रतिपादन

कृषिक्षेत्रे पूर्ण-विकास । एक क्रे ओर्ड लेकर कारनेकारे पाईसमार्थ और सोस्वामी बीट सेव है ?

प्रीमानीने सक्षा—मुचिद्धिर ! क्षेत्रों कर्म श्राह्म है, क्षेत्रोंका ही पालन करिन है, होनी जनम पाल क्षेत्रकों हैं और क्षेत्रोंका सरपूर्वाचे जावरण किया है। मैं इस होनों कर्मोंको प्राणाणिकात कारण दहा है, दून इक्ताप्रचित्र होनार सुनी; इस्सी दुन्तरे पनका संदेह दूर हो जावन्य । इस किवापों कारणार प्राणीत करियानक स्थाप करियानक संदर्भ हो के प्राणाण प्राणीत करियानक स्टाहरण दिया करते हैं, सो इस प्राचार है —

और पूर्ण की प्रमुख्यान होते हैं। प्रोक्त करवा सर्वा नहीं कर प्रमुख और एकेपुनवा करने जान की नहीं खुल । को प्रमुख्यान एकेकपी जारि होती हैं। करवी इस करन परिच्छे सहा कर सेमेनर शहीरत-कर्यींद परस्थानी क्या कार्यानका स्व वाली है ?

ल्यादीयने क्या-कार जात करके परवाहरी विका है माना हो पति पुरुषानेको पराय स्टेम्ब है, पति बढ़ी अस्त पति है, तब हो पहल-बर्गाय पहल और भी बढ़ पान है. क्योंकि गुरुवोका स्ताता केले किया कोई नी अवता न के चार समारा है और र प्राप्तके निक्रा है अवने कर करता है। कैसे समझ प्राणी पायाची पोताल स्वाप्त प्राण्य ही चीवन मारम करो है, जरी जनार गुरून-मानानो अकारको 🛊 कुले आराम दिया समारे हैं। पुराना ही पह और पर करन है तथा प्रस्था अपने व्यानामाँह रिम्में को कुछ भी चेवा करना है, जिस बिजी भी बर्धका आसद रेंगा है, का क्रमकी यह गार्थका से है। समय अन्ते संस्थानी अन्ति सन्ते mel gir f: Rig stereur in buriet giben value-amoraic floor after and the wordt \$ 7 februs archit waren meler alut rimben für webenit bir March, after afte feet their milit resistent unit बेह-प्रचीका प्रकोश होता है। पूर्णि बाद प्रकेष संस्थाले हाना अन्यान्य पार्टिने को प्रतानी अन्यान्यकार पार्टि है । से ही केंद्र प्रकार-प्रकारकार कहारे हैं कि अनुनं मितरों, वेजकारों और व्यक्तिकेंक कारी है। ऐसी बतारों गुलकारणने कारत क प्रकारको पुरार्थ किया विकासिका भी स्रोध कैसे के सरकार है ? वेबोची अवहेरणाने नहीं, कार्य अनुसार वार्ग करनेते ही प्रमुक्तको परस्कारके आहि होती है।

सरित्यांने सक्त-मुद्धानार कुम्मको वर्ग, भैनोनात, अतिक्षेत्र तथा चलुमांक आहे मैदिया करनेका सन्द्राल कृत्य प्राणिने; क्योंनि उस्ते सम्बद्धा कर्मको विद्युत है । जिलू को संस्थान कर्म सीवार करते सम्बद्धा क्योंके विद्युत है को है सभा और, परिवा एवं उद्युत्तकारों निवा है; से उद्युव्धानों है क्याओंको दूस करते हैं। को स्पूर्ण क्योंके अस्ता है, समझो सरस्यकारों देशने हैं उस्त्र क्याक्तिक क्या राज्योंके केस्ता की कोहत है बतो है। सरस्यक क्याक्तिकों इन्तिकोका संवस करना अस्त्रकार है। को कुम्म नहीं सेरका, सूरतेका कर नहीं तेता, नीम पुरस्का करना हुमा सम नहीं उद्युव्धा करता तथा कोकों समझा किसीको कर नहीं बैठका, असके इक्य-पैर सुरदिता रहते हैं। किसीको कर नहीं बैठका, न केले. इसरोबरी चगरी का निष्ण न चरे, बोझ और साम मकन कोले क्या स्था सक्यान धी-ऐसा अन्त्रेसी कक्-इन्द्रिकारी पहल होती है। करकार न करे, निश्च सहर अभिन्न को न साथ, पन्न चोचनके रिजे सालायित न खे, क्रक्रमेका रहा को और बीवन-निर्वालके हिन्दे विकास अक्टबर के कार के तात केने करने करने अंतर र्थका होता है। यसकी कीसे संसर्ग न करे, अपनी कीके साथ वी प्राच्याको अतिरिक्त स्थानी स्थानन न को. क्ष्मचारिक व्याप करे; इससे अस्तिविक्यों रहा होती है। किरबंध अवस्थ, अल, प्राय-केर और वाओंके साथ ही सन्पूर्ण प्रतिकृतिके प्रत्य संभवात्राच सुरक्षिण होते हैं; वही वासावते हिन है। विकास क्षेत्रमें पहले नहीं है, काने समय कर्न नियान केरे है। ऐसे क्यूकार्क का और बहुत्ते एक रूप के समाप्त \$ 7 femile mer Arieth vo stieler frem afte miet war र के. के किन किनीकेंद्र संस्था के, पश्चिमी के समित्रा रामान के और एक प्राप्त करें है, को है देखा रोग प्रकार कार्य है। यो कारोंके दिने हर सुक-द∕ सका करन नहीं प्रकार, अपूर्ण और अलोह प्रार्थिको सन्तर है असर विशे जन्म कोची परिचा जन है, जो है देखां होन तरहरू waged & s wit worm unflestelle freife wiete & fareit क्रमें अभी भी पन पार्टि पाने के समूची पीचीका men f. uft benatte und umm untern fit विकास अध्यय केवर किया हुआ हर सेवारके पुरस्ता अक्रमा पह का क्रमा है, का सन् वनेति आमाराध्ये बहुत बढ़ी नहिन्द है। यह अन्तरी प्रातनी पान आता है, प्रमुख्योक को संबंध को है तथा आहे कार्य क्रांचे पाया नहीं आहे। यह सम्पूर्ण बनेंगि ओल-ओर है, आपीर क्या प्रमाणे रहित है। यो त्येन का अत्यारका पावन करनेते असमर्थ क्रेड है, में के परनेवसकी जारी करानेकारे संबंध अन्यक पार क्षेत्रको करपारकारी कर्नोको करपीन पराया करो है। पुन्तिक कार्यपूर्व के बह-जनारे हैं, उनके साम्य और विकिन्तिकारको सरकार प्रतिन है, सरकारेका के क्रमा अनुसर करण पुरिचार है और पीर अनुसर पी दिक्य कर के उसी कहाता, प्राप्त है अहि होती है—इस सारको से इन भी करने हैं है।

है बता को क्षेत्रित है जाते हैं। जानकाम आहम्मारेको इस्तिकोका संबम कारण अवकामक है। जो कृत्वा नहीं सोतका, हुसरेका बन नहीं लेखा, नीव पुत्रकाश कारण हूमा जात नहीं शुद्ध कारण तथा कोवने आधार विकासों कार नहीं बैठका, असमें हुमा-पैर सुरक्षित रहते हैं। विकासों कारण न है, जान असमें हुमा-पैर सुरक्षित रहते हैं। विकासों कारण न है, जान पुरे किया सम्बन्धर हो उन्हेंस मोलिये। मार्च कर्यों और 🛊 पुरुषकोच्य प्राप्यत होता है। को विक कर्य या अध्ययक्र नामनीचे लोग एकमत समये है जोहको अपने-अपने वर्णनका कहा बच्चा है, आहो वहाँ है अपन समयो करोंने अनुत हो हो है. अब- अब का कानोबी क्या करें कि । अहि होती है। वो करना विवेदका अस्तरण करता है. अध्य तुस का है?

करों न हो, जिस करोबा आवस्य कारके अनुस्ता (कारक) कार, यह कथ-आलके बहाने बसकर हवाका क्रांबस हो aft salestes our well) from mon ft, and most the

अन्दे सम्बद्ध क्रेकेस क्रामी परिवर्णन के सात है। क्रामीक करिएकी क्या-वितर्ध भी वर्ण क सकारने अपूर्व । वर्णने प्रद क्योगर वितर्ध भी पृष्टिका आधार क्यों न हैका

# ब्रह्मज्ञलमें सभी आक्रमोंका अधिकार बताते हुए ब्रह्मतत्त्वका निरूपण

करियांचे कहा—का सोमांके रियो के है हा अपन है, | यह, वेहकायर, करवापुतारी वर्ग, सरव-समयदर विका केटेक जन्मन कर्ज की का सकता हुए है का समाने पार्वने-स्थात और प्रवाह से पुरु क्ष्माना में प्रतिना है, यह परवालों के प्रक्र का तेना है। के विकास करते अधिकार क्रमें कर को को को पुरत कभी पानकारी जात भी होते, उनके वानीतव states that is wis I was set from present पराधाना निवार के पान है। ये निवरित होता पढ़ें पाने और य विकास क्षेत्रकेता हो बाते हैं। इस्ते अहंबार और mercit gebennitet seine arme und & preis कार सकत, कर और विविध्यक्ति करती विद्या होती है. क्योर पाय-पार्न और प्राप्त क्यों हैं पात है है करा के प्राप्त प्राणिकोचेर दिवर्ग करत बाते हैं। देशे सर्वेको राज्य स्तेर Bare है को है के सके क्वांक स्था र क्वां गुरुक्तालानों के परे और विभिन्नत् सामन कर्या हो। ये सक अभिनोज राज्युद्धै रहते थे। क्या, संख्ये, प्रान्तीय, क्योंद्रि पारका प्रत्यक्ष अनुभव पारनेवाले और प्राथमित होते वे एक भवाना और पराव बेनोबेटे अब रखते थे। वे क्यांक मनामा, मारान करके पढ़ते किए प्रश्न करते से और मार्टिनराने प्रथा होन १८४३ने यह यहनेत भी वर्णानुहत्ते सरक रहते थे । इसीमें क्यें सुका भी जान पहला था । इस स्था सामार्थका सामान सेनेके कारण के अवन्त केवारी करे जाते में १ में भी विक्योंका प्रकार सम्बद्धानी बुद्धिका परेसा न रक्तका सामका है अनुसरण करते थे। वे को परिस्त नियमित और कारवी होते थे। कारवा और कारवानके मक केवर भी में निकास नहीं का बनकहर करन करते. तमा काम-कोमातिको क्षेत्रकर को कठोर कर्मोका सामस्य मनो वे । अपने उद्धर कर्नेक करना इनकी सर्वत प्रकृत होती थी। सम्बद्धारे भी ने बड़े परिवर्णन, करता, फारिसरायम और समामित होते थे। अर्थाले उनके

पुरत प्राच्याच्या और संस्थान—दे सभी अगल प्राप्ताके क्षेत्रे ने-व्यक्त कार कार्ने कार्को पूरा रक्षी है। ऐसे बीर, बीर air uair mile arom melan malla miles on referent freihrig fich where was un vom \$ 1

प्रार्थित पूरण एक है अक्टनगर्थको कर प्रकारते विश्वक पुरुष प्राप्ते हैं। संस्थान सरका विशेषक पुरुष प्रत्ये परन्तीत तंत्रा कर रोते हैं। बोर्ट क्षेत्र संस्थाती होतार, बोर्ड करने क्षेत्र हुए प्राच्यात्रको, योर्च पुरस् क्या और योर्च प्रकर्क क्षात्रक रोजन करते हुए हो वह अध्यानकर्ताहरू सहस्र करते. THE THE THE R. P. LEWIS CO. P. LEWIS CO., LANSING, MICH. न्यानकारो विकास है है। न्यानेक कार है अनेको सरास्त भी है। इन सबने संस्थेपके हुना ही पत्र अनगरक प्रमूत विकास कार है, पुरावेशने अपर पूजा है, कु विद्वारकार है और underfer & sab 'marr' & and four site also 'जबान' हो सरका है ? बारे को और बावे अन्तर्वेक्षेत्र कर इन्त्यांत, विकासमीह और खेळपराचन पुरसेके दिने कामानि केले अन्यक्तानोके प्राची हरीयका अनुवाह करानेवाल का प्रथम स्थापिक को स्थाप हो है। प्रार्थित और पंचालक प्राप्त का सम्बद्ध परास्त्रको प्राप्त करते हैं। जे stabil afte med & salt person aufwerd & to-केवक्रिकी विका स्थितीका के प्रकार को है। यह प्रतिकर्त अन्य अक्षणोक्षेत्र वर्णेले निरम हमा हो समग्र प्रतास, इसे जो कोई भी कानी प्रतिके अनुसार पासर करता है, आका अवस्य करवाय हो कहा है। देशन प्रतिक्रीत (प्राप्तानी कारण न रक्तोबारे) पुरुषेको हो इस कांका प्रसार बस्तेबहे क्षिण जो होते. चीवाला से इससे इस परमानक समेन्द्री हमा करें रोकारों गुरू हे बात है।

सुनर्गतन्ते पुरत-कावन् । आर से प्रातिष्ठ है

और गुरुवासीय कर्मन्द्र होते हैं। किंदु आप इस समय । विद्वार्थ साथ आधारीकी एकताका अधिकान कर हो है। इस अधार इस्त और धर्मकी एकता और पृष्टका के केंद्रिया इस्त हैनेसे इनका डीक-डीक करता स्टब्राने नहीं काल। काः इसे साथ कवार्य देतिसे समझानेकी कृता करें।

महिराजीरे कह—वार्त प्रचाने सुद्धि करते हैं और प्राप्त
परामाधिका है। जब कर्मेंद्वार सिराजे केन कर बाते हैं के
प्रमुख रहरकार प्राप्ते किन्न केच है। एक अधिन्तिम क्या,
क्षमा, फारित, नदिया, जार, परास्त्र, साकेद, निरिध्यामा,
स्था, सिराज और क्या—वे क्यात्रहिके क्यात है। इसके
हरा कुल परास्त्रको आह कर लेख है। विद्यार कुलको इस
स्थार कर्मकारका स्थित समझना काहिने। विद्यार कुलको इस
स्थार कर्मकारका स्थित समझना काहिने। विद्यार कुलको है
स्थार कर्मकारका स्थित समझना काहिने। विद्यार कुलको है
स्थार कर्मकारका स्थार क्यात्रको है। केवित समझने केवित करते
स्थार करा भारता है। को कुलक समझने केवित समझने
स्थार करा करते समझने केवित समझने है। केवित करते
हैं। को क्यानको स

पुत्रम सन्ती विवयंको जनने हैं; क्योंकि देवने उन सन्तीका स्थानेवा है। यो पुत्रा है और यो नहीं है, उन सन्ती विवयंकी देखीर केलों है। इस्तुर्ल प्राथांकी एकमात्र निर्द्धा वहार पाई है। इस्तुर्ल प्राथांकी एकमात्र नहा ही इस कार्यका जाहि, जन्म और प्राथा है। सन पुत्रा करा। हेन्स्त हो अस्त्री प्राप्ता होता है। सन्दूर्ल केलेमें उसीका प्रतिपादन हुआ है। यह अपने अध्ययकार्यको सम्बंध अनुसार तथा सम्बद्धा (योग) में प्रतिद्धित है। स्वतः यह अस्तु, व्यान् सम्बद्धा (योग) में प्रतिद्धित है। स्वतः यह अस्तु, व्यान् सम्बद्धा अस्ति अधिकार्य है। इस अस्त्राक्ष्म स्थान अस्तु, अधिकार्य और अधिकार्य है। इस अस्त्राक्ष्म स्थान अस्तु, अधिकार्य और स्थानका हम स्थानके प्राप्त स्थान अस्तु, सम्बद्धा और स्थानका स्थानको प्रतिप्ता है। इस प्रत्यकार करते हैं। यो कार्यक्ष प्राप्ता स्थानको है, इस प्रत्यकार हम्ल

# धर्मकी प्रधानता बतलानेके लिये एक ब्राह्मण और कुण्डभार येथकी कथा

रण मुध्यिक पूरा—विकास ! केहेरे वर्ग, अर्थ और ! साम सीमोदीयी स्थाना की है। अर्थ आर मुझे पह स्थानी कि इसमें विकास प्राप्त करना सम्बाध केंद्रा

भीवर्ग क्षेत्रे—राजपु । इस विकास एक प्राचीन इतिहास है। एक बार कुन्यूनार नामके केले अला हेकर अपने एक प्रकार कृष्य की वी । व्या उत्तर में तूचे कुलात है। जिस्सी समय एक निर्वन प्रकारने समाजनकारो का सन्ता चन्ना। तब उत्तने चलनुक्रनके विन्ते का पानेकी इच्छाने कहा कठोर का विस्ता हाति विद्वारको साने परिवर्षक क्षेत्राओं को पूज की, से भी उसे पन प विशा । एक प्रेन करने अपने समीद केम्बाओके केंग्रं कुर्वाचर पेन्सी कहा देशा। उसे देशके है प्राक्रमके मनमें उसके प्रति प्रतिकाल उसका हुआ और का सोको लगा 'क देखा मुझे अन्तर कहा-स्व कर देखा।' मह सोम्बर आने धूर, दीन, करत, पुत्र और उदा-उदाई नैतेकोद्वारा जनकी पूजा की। इससे कोडी ही देखें प्रसात होकर पेयने कहा, 'सरपुर्वाने कहातक, सुरुकर, स्रोते और प्रतमंग करनेकरोंके देखें के अवश्वित बच्चे हैं, बिंहा कराओं दिने कोई प्रवक्षित नहीं है।"

इसके बाद कर जाहाग कुत्रकारीकी प्राचानर स्त्रे पन्छ।

व्य क्षत्र, क्षत्र, वश्च और चर्चिन्यामने प्रत्या तथा सुद्ध प्रत्यमन या । को चल्हीने कृत्यमनो प्रति शक्ती



चित्रता परिचय निर्म क्या । जाने स्थानें स्थानते ने क्या हैसे । जाने मिलाबा पामका एक बेलोड जाय केवानते के समने क्या-क्यांके प्रस्तावकोको प्रसूत कर वह सा । हैक्यांकेन का पास्त्रावकोको सुध करोडि क्यांके कई काम और वह आदी है भी थे । इस्त्रेडिनें कुम्बाक केवानते के साने आवार पृथ्वीयर तैय गया । वस व्याने चीतवाले पुर्वत, 'कुम्बाकार । तुल क्या चाहरे है ?'

पुरुषकर कोल—का प्रकार केट नक है। की कैसारकेर पुरुषर प्रकार है से मैं इसके करर कुछ इस कदना पहला है। सिससे इसे कुछ दूस निया सके।

सम देशवाओं के कार्य में मिनको जाने कार्य कार्य को ! को ! सो, हुन्द्रस कार्य कर क्या ! अब अवस है काओ ! देशों, यदि हुए अक्टानको कार्य हका है से इसे सरमाना कर है है !

मितृ मुक्तारों यह स्वेत्रका कि कार्यक्ष प्रकृत और गासका, है साथे कहा, 'इस अक्रमकी सुद्धि करने रूप कार । मैं अपने प्रकृतों कार्य भरी हुई पून्ती का बोई विकास सारांच भरी देश प्रकृत, गेरी के बही इका है कि यह सार्थित हो साथ ।'

स्वित्याने कहा, 'राज्य और प्रदा-वराके कृते कुछ थी कर्मक कवित ही कार है। इस्तरिये इसे कार ही खेलों से र ? इसमें किसे अक्षरका कारोरिक हुंसा भी भी है।'

भीनाओं नेवारे हैं—कियू इस्तर भी कुम्बानाने स्या-ताहारे नागेंद्र मिन्ने ही आता विकाद । इससे देवकानेंत्र महे असम हुए और अधिनात्तरे महा, 'हुन्पर और इसहामान्यर नागी देवना असम हैं। अतः यह कार्यन्य होना और इसमें कुटि चर्नने ही घोगी।' इस अस्तर अध्यान्यनेत्रम होनार मह मेन महा असम हुआ। असने यह वर पाना को इससेंद्र रिक्ट बहुत हुईना था।

इतनेहीने इद्यालको अपने पास बहुत-से महीन और सहरूम क्या विकास मिने। उन्हें देशकर को कैरान ही हुआ। का सहने रूपा, 'मेरी सरकाका औरच इस कुकामाने ही नहीं सबका से कुश्य कीन सबक्त सकेना ? अपकर, अब मैं बनको ही बरस्स है, वर्णनय जीवन विकास ही सबसे अपका है!'

मंगाने कारे हैं—सकर् ! तम का प्राप्तान करने खाकर कहा कोर कर करने रूपा। का देवता और अधिनियोक्स सरकार करके को हुए करू-मूचादिले निर्माह करता था। पिर फरू-मूचादिकों भी कोंद्रकर परो काने रूपा। उपकार

को भी क्षेत्रकर पानी पैकर को रागा। प्राप्ते बाद का कांत्रक क्युप्रकृष काले है का। इस तक कांगर कहा रकारेंगे और कार्येश करना करने राजेंग्रे करनी रही दिना है नवी। को देख कावून होने रूपा कि पढ़ि मैं जाता होबार विश्वीको कर क कम देव कई है का अवस्य दका है कारण, मेरा काल रिक्सा नहीं होता । हरनेहीमें आके राजेश उत्पन्ते एक प्रक्रियाको हेति क्षेत्रर कुल्या उत्पन्न कृता । प्राकृतको स्थानी विशिष्णा तथा गर्ने । यस प्राकृतको बाह, 'विराग्त । पूर्व बढ़े सब्दी मेंब्व पूर्व जार कई है। कांद्र प्रया का प्रमाशीको गति और निया-निया मोस्रोको कर्ष केना हो :' जानको अपने दिव्य नेपोधे देखा कि प्रकारों क्या सर्वाने को हुए हैं। कुन्कूबर बोला, 'कुनो को भवित्यालके मेरी पूजा की की। प्राचीर भी पदि पूछ का कार पूर्व है चेन्द्रे कुछे के बहाओ, नेक पन उनका हेंसा और एक हुन्हरे करा नेत अनुबद्ध जन्म करा। हेन्से, देखों, एक बार हुन किर इनकी बहानर हुई। अस्ते । पक्ष नहीं, बरुवा बोनोब्दे स्वस्ता को करत है ? इसके अस्ते रिन्धे अनेका कर के अन्य नंद के के मता है।" इस मार क्रामने देखा कि वर योगी पुरुषेको कान, क्रोन, लोप, पार, गार, निका, रूपका और सारान्यांकी केरे हुए पार्व है। कुन्यकरने नक, देखे, सब कनी इन्हें केनोचे निरे हर है। विन्तु केन्द्रकारेची कुमले अन्य तुप से अपने अन्ये प्रपादनो कुररेको भी छन्न और यन देखें सक्यें हो गये हो है

mart ! die als plagen fiet gemant gewannen जाने हेट राज और बढ़ने राज, 'आयने मुहायर बढ़ी क्रया की है। अवनो बीवारी य सामार की पता और लोगांत बारण आपके प्रति में दुर्णकर की है, उसके रिने आप मुक्ते क्षण करें।' क्रम्बुकारने 'में से प्याने ही क्षमा कर सुका ि ऐसा बहुबर प्राप्ताओं पते स्थापा और फिर बढ़ी अन्तर्भाव के पान का अध्या कुम्बनारको क्रामी क्यानाय रिनींद्र कवार व्या मानाय तम लोबोंने विकाने रूप। अवस्थानकी परना, संबरपहरा अधीर प्रस्ता मार कर रेन्स एक वर्ग, प्रतित और घोगके हास को करवनीर किरारी है ने सभी सिवियों को आह से गर्नी ! वेक्स, अकुल, संस्कृत, यहा, मनुष्य और बारण-ने सब भी कार्पकोच्या हो उसकर करते हैं, बनावन का ब्यामी कुर्वेचा वहें। स्वर् । देवस्थीय हुन्हरे अर कह अनुष्य है, इसीनो तुन्तारी बृद्धि कार्नेने तरही हाई है। बनने हो समाना रेक्पक है कहा है, पाप सुन हो बचेंने हैं है।

### पापी, धर्माला, विरक्त और मुक्त होनेके कारण तथा मोक्षके साधनोंका वर्णन

जनार क्षेत्र करता है ? जारी विका जनार जन्म केला है ? जरे बैरान्थ केमे होस है ? और यह नोज फिस कारको प्राप्त करत है ?

मंत्रको मेरे-एकर् । हुई सर ब्लीक पत है, से भी वर्गवर्गकार किसीके देखे पूछते उस पर यों हो। अच्छा, तथ जारामको हो योखा, बेराम्य, बार और कर्तिः विकासे सुन्ते । समुख्य विकासीको स्रोता-स्रीता पार्टानेके रियो कार्ने इकार्यक प्रमुख होता है। इससे निया किससी करका राग केल है, को पानेड रिनो मह महानी स्टान कारत है। यह अपने दिन पन और गन्धविका पर-कार केवन करण प्रकार है। इससे सरका उनमें एन हो कहा है और फिर जागर करना: है।, लेख और बेह्या औ अभिन्यत है जाता है। इस इन्यत लोग, मेंद्र वर्ष एक-देवते पता होचर जानी हाँदे अभि प्रश्न नहीं हेती। यह केवल मानाने ही प्रापंदा जानाता स्थान है और स्थानों ही सन क्षमान कामन है। इस जनार स्ट्रिकी सन्दर्भ जाति है करेते जानी पार्च है की है को है। दिन है की हो कोई मर्ग-सम्बन्धी यन करनेते रोकते है से यह स्थानो प्रधान केला कर्ने चुरित्रका कार केने प्रधान है। कन और मोहके सारण जाका तीन प्रधानक कृतवी कहता है:--का पानका कियान पारत है, पान ही बोलता है और बाद ही कता है। स्वकृत्योको से काके क्षेत्र विकास के है, पांड को मैंने की अनवारतावाने होते हैं, के उसके विकास कर करी हैं। को है हर क्षेत्रमें है तुक नहीं विकास, करकेवारी से पहर क्री बंधा है ?

इस स्थार से पूज्य क्यों करता है, उस क्योंकारी कर सुने । वर्षात्व पुरुष सर्वत कामानकारी कार्वेक सामस्य करता है, इस्तिने काका काका से केस है। का बंदनानाम् संबंधि प्रश्न कान गरी जार काना है। जो पूजा मुल-इ-सची क्यानमें क्यार है, अपने बॉडले करे हैं इन राग-क्रेनारि सेपोधी देश लेता है तथा अनुस्तीकी क्रीस करता है, जनकी पुरिवार सरक्षात्रिकों केना और स्वापनीके अध्याससे विकास क्षेत्रा है तथा को कर्नि ही आनर आक है और वर्ष है अस्के जीवनका सामार का शक्त है। इसका यन केवल करेंने प्राप्त हुए करने ही सक्त है। यह वहाँ पुन वेसाता है, उसीके मुख्या सीवता है । पूर प्रवासके अवस्थान पूरुष पर्मारण करता है और स्ते कान्सि सह अस

तमा वृत्तिको पुरा-निकारक । सनुस्य साथै विका । होते हैं। हेले छात्रे विका और चरिता कर पाकर का इस स्वेकारी सुरवे बाज है और कारकेकों भी सुका पाता है। हेला पुरुष क्रमादी क्षेत्री विकासित प्रयुक्त प्राप्त कर रोका है। विकृ क्र कांच्या देशन चारत कावल की हुनेते दूसर भूगी बाहत । कह हुआते कर व होनेके सारण विकेशहरीको वैदानको ही बकुता है। जारोत पूरा करेते कारण का जो कार, रह और मध्यो इंग्लं की का कहा हुन अस्ता का कहा, रहां और कार्रे के को केवल के का कर कारगाओं तुस है बात है; और वर्गको वह भीवतः। सन्तर्ग संपर्धको सहवार रंग्याच्या यह गरीव पारश्वा सर्गतिकी ह्यालो से स्था वेरेका प्रथा करता है। यहरूत प्रशासकी मेहके हिन्दे व्याप्तीत हो बाता है। इस प्रवास वरि-वीरे क्यूबर्ज वैद्यालकी जानि होती है, इससे यह यात सरका होतुमार कार्रामा कर कार है और दिन नोस भी तरा कर तेला है। परालेश ( क्रमें काले कर, वर्ग, बैकन और मोक्रोड़ विकास क्रम मिना का, को की दुनों अन्या सरका सम्बद्धा दिया। असः पुर पर अवस्था परिवर्धकोने वर्षका है अवस्था करता: क्वोंकि को लोग कार्री को रहते हैं उन्हें क्रम खरीवारी पान Refle um übel fie

> our whilet the-finner I such street केंक्को स्टीर करावी, किया प्रस्केत औं, सो अब में आरके विकास कामा ३०० है सुरस पहल है।

क्षेत्रको केले-बाह्यका । इन स्था-समाके स्थानीके रार्गंड कर प्रधानों दिलका सामनीकी कोच दिका करते है, इस्कीके पुर्णों का सूर्य कार्युओंकी करिया करनेका गुज होना स्थित ही है। देखों, से मार्ग पूर्वसम्बद्धी और बाह्य है, का परिवर्णी और भी का सकता । इसी प्रकार में करता थी एक है बार्ग है, सुने, ये जाका विकासी कर्मन करता है। पुरुष् पुरुषको साहिते कि क्षणाने स्रोधका, संस्थान-स्थानको कारकारोपा, कारकावारावि स्थापक गुणोके सेकारे Person, extensive revent, atmosts formall series जनसम्बद्धाः क्रम्या नेपीते उत्तर्थाः होत् और स्वयस्थ्या नाजः धरे । का, केंद्र और एंक्स्पूर सामानका क्रिक्टे सामासरी तमा त्यांच्यी विस्तृति और विस्तृत उत्त्व विकास प्रश्न कर-इन क्षेत्रें केवेंका अनावासने साम करे। का-विकारिकीम उन्ताम और रोगीका क्रियानी, सुरास और परिचित्र अवस्थी, त्येष और घोडका संसेवले तथा विकासिक क्राव्यक्ति विराधान को। अवस्थि सकते

सर्गको पारतन सर्गके, आसामको प्रतिश्व-विकारका साल् सर्गक और अर्थको अस्तिको एक्पने जीते । स्युक्तिकी अस्तिकाका विकार करों सेक्पन, सेक्पन्यस्थे प्रति अस्ति स् भूभावा, करणाके प्राच अस्तिकाका और संस्थेको एक्पनका स्थान करे। स्थानको स्था प्रेच्यको प्रतिकारको विकारको स्थान करे। स्थानको स्था प्रतिकार कर्णे, साला पुरिते, सुद्धिका अस्तिको, अस्ति पुरु केस्य परमामने निवेश करे। इस अस्ति स्पृत्वको प्रत्य और अरे । अरे । परमामने निवेश करे। इस अस्ति स्पृत्वको प्रत्य और अरे । अरे । परमामने निवेश करे। इस अस्तिका स्थानको प्रत्य करेने प्र

वीकावास करे। व्यान, अवकान, दान, सल, संखा, नाता, क्षण, क्षेत्र, अवकाद्विद्व और इन्हिस्संक्य—कृत सबसे क्षण स्टुक्का तेव वक्षा है और सावा कर रह है। बाता है। असे संबद्धर दिख्य होने स्वाते हैं और प्राचने विकारको आदिवांच हो वाला है। इस अकार क्षण व्या विकारको जीवान क्षण कार-कोबको कार्यो रास्तर करने बुद्धारकाको कार्याको दिखा करनेको संबद्धर को। अवकात अवकात, व्याप-कोबको लागना, होन्छा, वर्ण और खेलको हर व्याप तथा विकासप्याको एन, व्याप्ते और वरित्या संबन करना—व्यक्ते सोक्षणा सुद्ध और निर्मण वर्ण है।

## भूत और इत्यादिके किययमें नारद और देवल मुनिका तथा तृष्णाक्षयके विषयमें माण्डल और जनकका संवाद

चीनार्थने सहा--राजन् । इस विनामने देशवि जान अतेर वैतानका र्यामाना यह सार्थन हतिहास अधित है। एक दिए बृद्धिमार्थोंने ओह सम्बेद्ध देशक अधिनाने कैठे देशकार मानार्थने अस्ते अधिनार्थकी जानीर और प्रान्तको विनामते अस्ति अस्ता हुना है और प्रान्तवाद्यानों यह विवासे तरित है वाला है?"

रेक्टमें का जेली। वृद्धिके समय करनावा विक्रो समल ज्ञानिकेकी रक्षण करते हैं उन्हें चौरिक विकारकार्ड मिलन् 'प्रकारत' बच्चो है। परप्रकारती जेरवाले काल इसीके क्षण जानेग्लोको स्वका है। को इससे विशा विशा मीर मामको पुर्वेका स्थापन बारण स्थात है, का निन्तिह हाओं जान करता है। करता । ये क्षेत्र कुछ और कुछ करता नित्य लांक्यल और अधिनाती है और तेबोक्य पहलाखी स्थानामिकी कलाई है। किसी भी बहिट का प्रसानके हर इ.के अतिरिक्त कोई और एस जो बक्का स सम्बद्ध । \$सरित्ये को सोई इसरी बाट कहना है अस्ता कथन अस्ताद निर्मात है। दूस बढ़ी निक्षण बाते कि ने का क्षेत्र बावा-कार्य रियत है। योग महायूट, स्टाल तथा पान और अधान अर्थात् पूर्वजनके प्रेरकार और अञ्चन—ने आठ एक निरू है तथा से ही सब अधिकारी सर्वात और तमके बारण है। अभियोक भूरीर पुरस्का विकास है, स्टेनेन्स आकारणे असम हा है तथा नेजेन्द्रिय सर्वसे, जान सामसे और

व्या अलको अलग हुए हैं। विद्वारोक्त कर है कि के,
करिनार, वार्ज, तथा और विद्वा—में बीच हानेतियों ही
विकासको साम करवेकारी हैं। इस बीचोंके देखान, हुंदरा,
कुरता, रावां काम और रहा साम करता—में पाँच गुना है
तथा गया, पान, पान, रावां और रहा—में पाँच विवास है;
विद्वार पीनों विकासका प्राप्त इतियोगों नहीं होता, इसे
काम की केवा (जीन) है है। हातर और इतियोगों सम्बंध विचा केह है, विवास का केह है, पानकी अनेता सुद्धि केह है और कुन्तियों भी होता केह है। बीच पहले से अपनी
हन्तियोहारा अनो अस्ता-अस्ता विकास करता है, किर नालों विकास करते मुद्धिया अनका निश्चय करता है। अस्तावस्थानन करनेताले पूरण बीच हिन्दित तथा कित,
वन और मुद्धि—इस अस्तोंको क्रालेत्वा करते हैं।

इता, चार, चारू, कारक और मुख-मे पाँच कर्तेन्द्रभी
है। इसका भी कियरम सुनो—पुन-इन्डिकार अस्थेत
केरले और प्रोचन करनेने हैं, पाद चारनेकी और इस काम
करनेकी इतियाँ हैं क्या चार्चु और अस्था त्यान करनेवारी
इतियाँ हैं। इसमें पायु-इन्डिक पात खान करती है और उपस्थ पेयुनके समान बीले स्वानक है। इसके सिमा कठी इन्डिक कार अर्थात् पान है। इस प्रकार मैंने अपनी वाणीसे तुन्ते समाम इतियाँ और उसके इसन, कर्म एवं गुल कुना विशेष कार अपने-जाने कामसे बातकर इन्डिक जान हो उससे हैं तब मनुष्य सो बाता है। इन्डिकेंकि निवृत्त हो कानेगर की

ची। यन निवत न क्षेत्रर विश्वोद्धा है सेवन करण के से सी | स्थानका सम्बन्धा पाहिने । नामद्-सन्तामने के सार्वनाह, क्रमस और समस पान प्रसिद्ध है, उन्हेंच्य पोन्छ। कर्मको स्कारकारी कामें अनुषय होता है।

यांच कार्येत्रमा, भीव क्रानेत्रियां, प्राय, चर, विमा और हरि-ने केंद्र हरेलों और समादि सेन गुल-ने क्या सका माने पाने हैं । इससे मुक्ता, सरस्तालों सीच है, जो करीसों राता है और निम है। यह बॉल्स्ट क्रिकेट से कार है से करीर और जामें राजेमाले में राज भी नहीं को । विक् प्रमान करमें क्लेक्स पूर्व क्य करके निर्देश क्षारें और क्लेक् निर्देश होताने क्या क्या है, क्षी अकर का केर कारको हैरनमे अधिया, कान और कार्नेट करा एक देखी क्तो केने नगर कर है। ब्यानी का केने सका सकत मान्ते हैं, इस्तिने हेहचा नियोग हेनेका उन्होंको दुन्क होया f. Sig abouries flags agreed appeals front विकास होता है, हारतियों करों हरतों चुक्त भी होत नहीं होता। का और कराजी कभी विशोध्य कर भी भी है। यह थे नित्य और समेन्स हो है, बुधा-कुथाना पारण के के है है। भीन न वाची करता होता है और न परवा है है। यह वाची क्रो करवाल केवा है से यह क्रमेश्वे क्रमान्टे क्रमा पालकी आर कर होता है। के कुल-सामन है। क्लींड श्रुपेके राज्य अल्बार की क्रम क्रेस स्वय है। इस असर प्राप्तिका कर हे जानेवर का बोद प्राप्तको जा हे करा 🛊 । पुण्य-दार्थ्यः क्रमके रित्ये असम्बद्धार 🛊 स्थान है । सरका क्षत्र होत्तर पात सीवको अञ्चलकती आहे। हे कर्ना है वर्गा विकासनेन असकी परमाति काले है।

Der चरित्रिते क्या-सिताम्ब । इस बढ़े है इस और मार्थ है, इस । इसरे केवल अर्थक देनों है अपरे पहरे निवा, पीत, समातीन, सुद्धा और कृतेका संदूष कर कृतक । इनारी पा अर्थतमा विस्त प्रचार वर क्रेमी ?

बीमाओं ओरो--करन् । एक बार बाव्यवासीने करा करकारे देशा है उस दिल्या था। जा सबस विवेदरावने के का नहीं भी यह पुराला प्रविकास में दुनों समात है। एका करकने पक्त या—'केरी कोई भी परा नहीं है, इसरिय्ने में चैकरे केवर कर्तक करता है। यह विकासकीये अल रान्ये हां है के न्ये नेता कुछ नहीं करका। को क्रेक्स्बर् होरे है जहें को सम्बद्धालया किया थी ए-कारत है कर करते हैं, the applicable is you from the shall mee by \$1. रोकों के कारवांक हुए है और परलेखका के दिन कुछ 👢 वे केनो कुम्माकुम्परे होनेनाते प्रकृति होताको असके कार में भी है। कि उसर सरकारों सकेंद्रों अन पहले पार भीन भी पहले पार्ट है, उसी उपार करने साथ इन्कारी की पढ़िए है कारी है । यहि कोडी-सी कहा भी जनमें कर की बार्ज है से का सेनेकर को इ-कास करना कर वर्त के प्रतीनो कानकारोधी पृद्धि की बारने पाहिले। पानकारोको भारतीय कुन्तका हो है। यहि विहर्त प्रकृत का विकास के को कार्न है। से गोबी सामग्री प्रथमि र परे । विक्रम् अन्य पन प्रतिन्त्रीको परे अपने ही प्रभाव देशक है। प्रतिने यह समझान और सहवित्र होसर um muselieb som der å i me som-arme, geligber, क्षेत्र-असीत, पत-अस्त असी सभी प्रश्नेनी सामग्र अस्या कृत्य और निर्मिक्तर के काल है। तुम्माका स्थान र्मान अन्यासारमञ्जाते हैं को कारण प्रार्टन है, यह न्यूनके को के जनेश में विभिन्न को होती तथा उसके जीवनकोच स्टोबाहे रेगके स्थल है। अहः इसका साथ करोते हो कुछ है।

राजाने ने क्यान शुक्कर कल्कान पूर्ण को अस्त हुए और रुके करूनी प्रकृत करके ने मेक्सनी एक हो पूर्व (

### संन्यासीके स्वचाय, आचरण और धर्मीका वर्णन

अविनावी परमवान है जो केले संख्या, केले जायाता, बैसी विका और कैसे कायोंने साम शुलेकार पूछा प्राप्त पुर सम्बद्धाः वै ?

धीराजी जेले- राजन् ! को पूजा प्रदेश-कार्मेंचे हरता, स्वाप्तकार करनेवारक और विशेषिक क्रेस है, यह उस अकृतिसे अनीत अधिनाची पहल्ले प्रशा कर तेला है। सुनिक्ते

तमा वृधिको एक-कदानी । अवस्थित को को पराक्षा । व्यक्ति कि अपने वाले निकासका किन साथ और प्रतिवे सन्बन नाम रहे, यह अपने अपीड़ पार्ट्स वितने तमें हे रुको भी रहेल करन हो। अपने देत, सभी मा भन्नो विक्री बसुरके हरिए व को अर्थाद वस, काल और अस्तार-प्राप्त विकासिक प्रति कुर्याण प्रवाद न करे तथा विकासिक परि स्थाने क पीने जरके क्षेत्र न बारे । किसी जानीको कह न जीवाने, सुर्वित समान रखा निकास के तथा कारी विसीके

साथ केर न राने। अपनी निरुष्धे सक्त करें, वित्रकेंद्रे और अधियान न की, कोई कोच को से असे दिय कार्य खेले और गर-पीट करे से कर्ष असी दिल्ही है को बड़े। गाँवमें सकार खेनोंके साथ अनुकार-जीवकर अध्यार न करे रूप विशासिको क्षेत्रका विश्वकि का कार्यक्र निमर्पित होका न साथ। मूर्व सोध शूर-निही हतरका रेज करें तो भी साथ हो, अपने दीको कोई कठोर कथा न निकाले । सर्वदा मुखाबार कर्ताव करे, बिस्सेके प्रति कटोस्क म बारे, निक्षिण को और महा का-काका को न करते। क्षय प्रवासको वर्धा निवसक के हे सक, काल जनन रहा दिना करा, क्षत्रेची अन्य देवी यह चान, जन होन भीका कर सुने और परोस्ता भी के हो जान, उस सकत परिच्ये विका परिचा पार्विने। को चेत्रक अन्त्री प्राणनामके निर्माणनाका प्रका करना व्यक्ति, भर के भोजन किए बाज-पालकी भी परवा व करे। बहै र किए में ब:बरी न हो और निवर जान तो ज़रतावा न वाने । हन क्रक भौतिका प्राप्तेकी प्रकार में बारे र पार्ट निर्देश सरकार केवा के मार्थ विशा न पारे। प्रत्येत विशा सरकारका परेर्थ और परे काम होता है तो असमें मचना है हो । विकार विके हर अपने के या गुल कामर कामी लिया या खरी न करे : कों में और बैठनेके निन्ने साह एकानावा ही अक्षर की । सनी क्रमी, श्रुप्ते नीचे, क्रमों अवका गुरुको मीतर सहस्रकार्यने क्षार राजानसंकाने है नियत है। राज्यता और प्रतिकारतार्थे अभियान अभिनाती समस्यक प्रक्रमध्ये रिवार को तथा अपने कार्नीते कुछ-प्रस्तान कर्मकार्या ।

भागमा न करें। सर्वंत हुए और पूर्णत्वा संतुष्ट थी, पुना और इन्त्रिकोधी अस्त रहें, जनमी पास न पाठको है, जनम आहिके कभी करण से तथा वैद्यालका आभ्य सेकर चीन में। के और इन्त्रिम आहि मीठिक पहार्थीय अन्यस्कृतिका अन्यस्क एके, चीनोंके जन्म-सरकार विचार करता हो, किसी बहुत्वी हुन्या कम्-नून आहि किस ककाने केसाई विन्ति करें क्या आस्त्रकार्यके विन्ते अन्यस्कित, विताहारी और विवेतिक भी। अन्यस्कित कार्ये रहन्य चाहिने। कहाँ विन्तु कार्या—इनके बेनोको कार्यो रहन्य चाहिने। कहाँ विन्तु कार्याको हे कहाँ केनोने सम्बन्ध कार्यास अस्तर अस्त्रक कुन्न कार्याको हे कहाँ केनोने सम्बन्ध आवरण अस्त्रक

वंग्लासेको उदारविदा, सम जनार विसेन्दि, सम जोरने अस्तु, जोगा, अभिनेत और इमाहितविद्य हैना व्यक्ति । जो अस्त्री पूर्णालको परिवास देशने नहीं सुन व्यक्ति , पूर्णा और व्यक्तासोरी संसर्ग नहीं रसभा माहिते, अस्त्री वर्णाको विचा जनार जिल्ले को बाह्य जिले अस्तिको वर्णा अही हैना काहिते । वह संग्लास्तान हानियोधि विभे को वोक्तासम्बद्ध है, जिल्ल अस्तिकोधि रिप्ते अस्तान ही है। इस्ति पुनिते इस वर्णाको विद्यालको रिप्ते वोक्ता विद्याल है वर्णाक पुनिते इस वर्णाको अस्त्रान्त्रमा वर्णाक प्रश्नी विवास काह है, जो नेवोचन स्वेक्तियोग प्राह्म होती है स्था वर सम्बद्धनान को काह है।

### ब्राह्मी स्थितिका वर्णन करते हुए भीष्मजीका वृत्रासुरकी कथा सुनाना

रक कृतिहर सह—द्यापी । संधी लोग कुते सह शासकार कहते हैं, सित् मेरी दृष्टिये से कुतसे कहतर दु:की कोई काफ नहीं है। कालकों से करीर काल करता है काल हु:स है। न को कह दु:सलकार शंभ्यस हम कम अहन करी ? हम न कने कह का एक-यह क्षेत्रकर करने की सकेंगे ?

गैनवी मेरे—राजन् । अनस कोई क्यू वहीं है, स्थीकी एवा सीमा है। आवानधन भी प्रसिद्ध ही है, इस सोनाने अधिकार कहा कोई की है। दूस जैसा मानते हो का भी ठीक नहीं है; क्योंकि ऐक्वेंसे भी आस्त्रीक होनेस्स ही होन होता है। सुमानेन को बार्चका हो, इस्त्रीको स्थान आनेतर (समाहिके) अध्यासकार केश प्रश्न कर सोने। बीच क्यूक-

मानके कारण ही सुरा-दु-कारा अभिनास नहीं कर पास कहा जा कुरा-दु-कारों जाना हुए संपेश्वादास आवास है। काम है। किंदु किया समय यह हा-रहारा आहानजनित सन्त्रासकों नह कर देता है, जर्ती समय हते प्रमान पराकृत्वा साहानकार हो नामा है। राजन् ? इस सियमने एक प्राचीन कामा है। उसने नह सरामा गाम है कि ऐक्तरी प्रष्ट होकन कुरास्त्रों किस अकारका सामरण किया था। उसे दूस एकाम होकर सुने।

कुम्बस्था केन्द्राओंने पराध्य कर दिना, उत्तव्य राज्य हिन गण उन्त कोई की जनका स्थानक नहीं रहः हो भी केन्द्रा पुत्र राज-डेन्ड्राच कुन्द्रिया काल्य लेन्द्र ही वह अपने क्युओंके जीवनें निर्दित्य क्षेत्रर रहता था। इस देवर्थीन कारकार्ने जासे कुळावार्यक्षेत्रे पूजा, 'कारकाथ ! तुन्हें केरवार्त्योंने पराया कर दिया है, जिस की कारकार कुछारे विताने किसी प्रधानकी काम जूबी कर कुछी । कुरका कम कारका है ?'

मुक्तपुरने काम—सहान् | कैने साल स्वीप सकते प्रधानको विभिन्ने काम-मरणावा कुल दीक-दीक काम विभा है, उनके पूर्ण सिका की संबंध नहीं का गांवा है। इस्तीको जाव सकते विभागों पूर्ण हो का कोक नहीं होता। बीच कामको अर्थान होतार अपने पायकि कामक व्यावपुरतानों निर्णा है और खोई अपने पुल्लीके शांवाको विभागकोंने जावार जावान कर्या है। इस संवार अपने पुक्र पुल्ल-क्यांका काम ओनका कर्त हुए वामित योगके विभाग पुल्ल-क्यांका काम ओनका कर्ता पूर्ण है। कामकों कथानों की हुए अर्थकों कीम मरकां पहले हैं। कामकों कथानों की हुए अर्थकों कीम मरकां पहले हैं। इस प्रधार कि सब्दे की क्या-मरकां काम की है। इस प्रधार की सब्दे की विश्व के विश्व के हैं कि किस कर्म होता है, बीचा की क्या-विश्व है। इस क्या साथ कीसर क्यान्य कामकों विकासपुरत्य काम दी। है।

को ऐसी-ऐसी भागे कहा ने क्या प्राप्त प्राप्त की बार, 'बैंका। पुन को को सुद्धिकर है, दिस ऐसी असुरामान्य तक कार्यकार्थ कार्य को को क्या पी है?'

कृतपुर केल-अक्ट्र । आक्ट्रो क्या कृते व्यानी महत्त्वानीको म्य से फाइन से है कि मारे विकास सोधने की क्षम का विकास था। यह साम अपने देखके कारन में तीनों स्केकोने समसे कर-कह राज का और मैंने कुररे जानियोंने अनेकों भोजकानीकों कीन की बी। वै सर्वेदा निर्मय होकर आवश्यकों कियाचा वा क्या संसारका भोड़ें जानी पुढ़े चीन नहीं समास या। इस प्रधान करते प्रभावती देने को ऐसर्च पाना का न्या की कार्वेंगे हो न्या की है गक्त मितु में कैने करण जाने करने दिन्ने निग्त नहीं करता है। जिस समय में देशको इसके शाम बुद्ध कर का या, उस सक्य उसरी स्थापनाचे तिये आने हुए मनवान् इरिके की सर्वन किये थे। ये प्रयु, नरायक, वैकुन्त, पूजा, अक्त, सुर, विच्यु, सन्तरन, पुँजनेता, इरियनतु और स्थान सुरोके निराम्य है। यनकर् । अवस्य ही उस की मेरी तपरमाना कोई और प्रका हुआ है को मैं आपले कर्नकरुके विकार प्रश्न करनेकी हुन्या रकता है। कृतक मह माताने कि किस काम पराम्हे प्रधार कीय अपूर-अपर हो चला है एका किस कर्न का अपने कर उस

कामारे प्राप्ति हो समाजी है ?

वनकर् कुळवार्थ और कुछतुर्थ के बाते कर ही हो में कि बड़ी कामूनि सम्बद्धधार उनके संस्थानके पूर करनेके तिने वको । कुळवार्थ और सम्बद्धमा पूर्ण उनका पूरत विका और के एक कुनुस्य समस्यार विश्वस्थान हुए। सम



में अध्यानमें बैठ गये हो नहीं सहाने बहा, 'बनाल र हर इन्करकारे जगवार विकास केंद्र महत्व कुलनेकी क्यां क्षेत्रिके (' यह कुम्बार सीवन्यकृत्याची क्षेत्रे, 'देखावर ) प्रत्यक्तम् विकास्य काम व्यक्तम्य सुनिन्ने । देशिन्ने, यह कारा कान् अधीने रिका है। में ही समक्ष पुरोधी रक्षण करते हैं, वे ही जनसम्बद्ध जानेपर रूपका संद्यार वास्ते हैं और वे ही चनकारके जातकार्वे उसकी पुतः सुद्धि करते हैं। समस्र मून उन्होंने त्यान होते हैं और उन्होंने उत्पन्न होते हैं : उन्हें बहेई क्रम्बक्रम्बर अवस्थ रचना च बाके बरा नहीं वा सकता. दे से इन्हिलोके निकासे ही जान हो सकते हैं। को बता और ज्याच्या करोंने प्रकृत क्षेत्रर वृक्षिते (निकासमानकार) रुवते हुत करत है, का अन्त सुरुको प्राप्त हेल है। क्योंके क्षत कीवार्ध पूर्वत सेकार्व क्योंने के वाती है। सिद कोई बीच पहर प्रका करके एक ही स्थापे शुद्ध हो जाता है। भगवान् जरावन जादि-अन्तरे रहित है और ने ही सम्बद्ध करावर आणियोधी शक्त कारो है। वे विकास संक्षर करनेकाते, समझे निवासक और शुद्ध विद्युप है। से ही समस्य भूगोर्थे क्षर और अवस्थानमारे भी खारे हैं। पृथ्वी

क्रमें, बरन है, क्रांतिक महत्व है, दिलाई कुछ है, शासाह कार है, कुई रेज हैं, कहान कर है, सहका परि 🕯 और बार सानेपान है। सन्दर्भ 🚾 सन्दर्भ प्रकृतिकोने रिशा है और न्यूडसमूह नेजेंचे तेनारे प्रचट पूर् हैं। सम्ब का, का जीनों पन पराज्यकार है। सन्तर्ग अञ्चलेके और क्यारि कर्मीक करू की वे ही है उसा वे सम्बद पापालः हो सर्वत्राचनक संन्यातके प्रता है। नेवन्य उनके देश है, प्रकार उनकी बाजी है तथा अनेकों कर्ज और अन्तर-कार्येक आक्षार है। कार्येक अनेपारे पूर्वा है। ये ही प्रधाने आर्थिक वर्ष, बाह्यस्त्रीनसम् भारः वर्षः, तम् और सर्-अपार्-समा हैं: हे ही सुनि, काचा, पहल्का और स्टेस्च अधिन्य, हैं क्या बे है प्रसारति, विष्यु, अद्विपीकृत्यर, इन्न, विस, क्यार, कर और कुमेर हैं। जिस स्वयं प्रमुख्यों प्राच्छी सुर्वार है जरी कृत्यन क्रमका साध्यास्यार क्षेत्रा है। नगमुकी क्रमीतरे नेकर अलावर्णन एक काम क्षेत्र है, ऐसे क्रवेडी साम्बद्ध कीव क्याचर-पहुन कोनियोंने आर्थ-असे एके हैं। वर्ध, एक केवन बोदी, यांच हो बोक्त सन्धे और एक बोक पहरी सहको आगाम सामाजियों हो और अरोगों भारती आन्यानाम एक दिनमें केवल एक हो के कर निवाल बाव से पर सकत कुलोर्ने किल्न समय स्टेन्स, जान है कार उनके क्रपोर-मारक्य एवं कारने रंगमा है। वीथ स्टानके कारण के अवने-अन्ते कार्रीक अनुसार विकारिका गरियोको जात्र होते हैं। इस प्रकार निस्कृति क्षत्र विकार इक्कापुर्धनान जाने हर जा का स्क्रीनकारकारका परमानिको आहा कर रेखा है और उसके हुए। उस अधिनाही पहलो जह होटा है से समयन जह और समय हुमान है। महत्त्वती देशाय ! इस अवस्त मैंने दुन्हें सीनायननवा जन्मन सुन्न दिया !'

वृत्यपुरने कहा—सम्बद् ( मुद्दो सामग्री कर बहुत सैवा का बहुत है। अब मुद्दो किसी मामरका निराद मुद्दी है। सामके काम पुरुष्टर में यह और सोकारे रहित है। एक है। बहुदें ( यह अन्या और मामके हैं। समझ पुरुष्टिकों मुद्दीत होती है। यह करकाय और पुरुषेका है और मानि यह बाध काम निराद है।

क्या पुरिवरिते पूर्ण-कार्यो । सन्सुधारतीने पृत्रपुर्वते क्यो किंग्या रिस्मा क्रिया थ, वे प्राचार् क्रियु वे क्रीप्राणका हो है व ?

वीनार्थं बोरो--यूगने विका को जनवान् वेतानियेत है, है अपने कारणों निवा हुए ही अपनी प्रतिकों अनेकों शक्ष्मके पहलें एको हैं। इन क्रीक्षणकों जनके अञ्चलकों कारण हुए जन्मके; निवा के अपने अञ्चलकों की कीचें कोच्छेकों एक हेंगे हैं। वे अधिनाकों परावान् म्हान् प्रतिकार कार करते हैं। वे सनवाद और अपना परावाना अपनी शामकारिये हैं। वे सनवाद और अपना परावाना अपनी शामकारिये हैं। वे सनवाद और अपना परावाना अपनी शामकारिये हैं। वे सनवाद अपना अपना पूर्ण वार हों। है और सर्वक एकरक होन्सर की इस स्विक्षणकारियों की हुए की है और सर्वकीये विका इस स्वयंक स्वास्ति पंत्रहर्व प्रतिकृति स्वयंक कारों है।

## इन्द्र्यारा चृत्रासुरके वशका प्रसंग

स्या पृषेक्षीरते पूक्त-कवानी । सतुरिया देवस्ती । पूजापुरको कारिया कम है क्या सम्बद्ध अनुस्थित विद्यान और विद्यानकि भी कम्बद्धाले केम्य है। मस्त्रवेद्ध । ऐसे प्रभावद्याली पूजाने इन्हों किस प्रकार मारा व्या और उन केनोका सुद्ध किस प्रकार हुआ व्या—क्या अलेग सुन्तेको नियो मेरे मार्गे बद्धा कोस्ट्राल है, कृत्यक साम्बर्ध विश्वास्ते वर्गन क्रीसिये।

भीनवी बोरो—नावन् ! पुराने सम्बद्धी कर है, हेकराव इन्द्र राज्यर समार हो केनताओंको साम दिन्ये कृतपुरके कुत करनेके दिन्ये करे : अनुनेने अपने स्टब्सने वर्णको समान विज्ञासकाय कृतको साम देखा : व्या परिव से चोचन केवा और तीन सी चोचन मोटा था । कृतपुरका ऐसा विकास विकारित, को वित्तेवनिक तिथे भी कृषि था, देशकार देशकारोग का नवे और स्कृत के स्थापने तथे। यह देशकार इसामी कीचे को हुए यह नवीं। अतिया यह इसे राम है भारत और केने ओरसे स्थापकोंका चीवण नार होने राम है स्थाप इस और प्राापकों कही कही पुराचेड़ हुई राम सारा पुराचार देशका और असुरोधी सेनाओंसे एवं स्थापता; वर्षक, विद्युर, क्रांक, सेमर, बुद्धार, सम्बन्धानी विराट, वर्षक, क्रांक क्रमाओं दिला अस्थापकों देशकोंड रिपरे इसामी देशका, क्रांस, सिद्ध और सम्बन्धान विवानोंका प्राप्त की स्थापता

कर्मका कुन सामान्त्रने पहला हुन्यर पानर करताने

राजा। इससे वेन्छओंको नहां कोब हुआ और स्ट्रॉने सन | देनस्य इतनंदी ओर का हो थै। उन्हें प्रवाहतर सहस्रस कोरते नाम करताबर अल्बी पालरेची वर्ष पर कर के बिद् महत्त्वती का यह मामने से या। उसे मानवूर करके इसको नोहमें करन दिया। इससे इन्द्र मुख्यित हो नहें। स्थ भरिक्काने रक्कर सम्बद्धाः अवे समेत विका । स्वीतानी पाले रूपे, 'पेनराम ! तुम प्रक पेनाकोर्थ केंद्र, फेन और असूरोचा संक्रार कारोपाले और क्रिकेचीके परको सामग्र हो, बिर इस प्रचार विकारों क्यों को हो ? देखों, इन्हरे सकते में सहार, निम्तु, दिल, मन्त्रप, सूर्व और प्रमास महर्षिका क्षेत्र है अर हा काका हेवा बहारेस संहर कारे ।

. प्रेमचे वस्ते है—शर महामा परिवृत्ति हत उत्पार कृतको सर्वभाग विकास से अनो प्राप्ति बहुत बार आ प्राप्त । क्योंने सुन्दिर्दर्शक पहल्केगले सम्बद्ध है। कुम्बरे सब्दे काम नह कर है। यह कुरवरियों कक हाले बहरियोंने कुलहुतक पर्याप देशका मानेक्वीके पात वा आवा पात वालेके हिम्मे अर्थना स्त्री । इतरार क्यानीड क्याकर क्रांकरों डेक्टे भीतम व्या क्रेसर कुलारके करियों अनेक विका और विकास पार पारंपको प्रध्यम् क्रियु प्रकृते प्रकृते विरामान हुए। यस मान्यी कुल्लीमी, परमोक्सी प्रतिकृती तथा अन्य तस न्यूनिनोने हुन्योद कर क क्यांक्रिक प्रेचर कहा, 'देवराज है कुरका कर बोरिको ह' बहुनेकड़ी बोले, 'देवेकर । इस कुम्म्युको काव्यादिके केनो ही साथ इमार वर्ग एवं सिक्स था और तंब इसे अक्राओंने वर दिया स्र । क्युंने इसे चोरीयोन्द्र-एरं प्रतित, अञ्चल व्यवकारण, महत्त् परावाय और विशिष्ठ तेव प्रकृत विश्व है। स्ते, वेहा सेन कुमारे मरीएने प्रनेत करता है। इस समय का (कार्के कारण) ज्ञान जार हो रहा है, देखे अवस्थायें है हम बहारे हमें मार कालों ।' इन्हों कहा, 'क्लान् ? अक्टारी कुन्हों हैं अन्यके सामने ही इस दुर्वन दिवको बार क्षानुन्य ।"

रमर्! का कुलसुरके भ्रतिनमें काले क्रकेड विद्रमा से देशका और ऋषियोगे कही इर्जनकी होने सभी । इसर बीह कारते तमें हुए कार्याल कार्य की कांग्राम केरी हुए कही अमानुवी कांना की । कपूतर्व लेखे समय ही इन्हरे आपर कह क्रीक । यस बारस्त्रीको सम्बन करफोकावी कारने औ उत्पत्तन पृष्णियर गिरा दिया। कर, केन्स्राकेन राग ओसी स्रोता करने समे । इस प्रकार कृतको महा केराकर परावकारकै हुन्हों भिष्युतेषसे जाए कालो हेले हुए काले प्रवेश विका

शुक्तोत ! इसी समय कृतके एव केसे महत्त्ववादनी प्राथमा प्रकट हाँ। यह देवराज प्रश्नको स्रोबने समी।



कर्ण्य क्रारेनचे अनेक का गयी। प्रक्रुकानी करते क्यारावार हार कारान्याची कुछ गये और बहुत क्येंटिक कई हिन् के। इस्ते को वृत् करनेका कृत प्रकार नित्रा, नित्रू का कारो अस्तव विश्व भ हुन समें। संब ने वितायह सहालेर कार को और उन्हें किर जुकाबार प्रकार किया। प्रकारीने अनमे बदा करीते लाकामध्ये कम किया और जिल काओं अब्रु:, "अल्पानि । यह देवराम है, तु इसे क्षेत्र है । येत हतन क्रिय कर और बदा ये देश क्या काम क्रमें, ह क्या mai \$ 2"

व्यक्तकने वक्त-अस्य क्रिक्तेकीके कर्ता और तीनो रचेवनेचे सम्बद्धिक है। यह अप अप अपन है से में अपने सभी कारण पूर्व क्षाँ सम्बाधी है। आयोगे होने खेळीको रहाके रिले वर्तकी नवीव क्षेत्री है। यह निवन अक्का है करवा कुमा है कि जो सक्कापका एक भारे को सक्कारत लगेगी। नियु अन आनमी ऐसी इच्छा है से मैं इच्छा होते ऐसे हैं। अपन मेरे रिक्ते कोई कुरत उचार बता स्ट्रिकिने ।

सक्तानीने स्वाकत्वारी बाह्य, 'ठीक है, मैं हेरे किये स्थान निविद्य करता है।' किर क्योंने उपलब्ध प्रस्कृतको प्रस्ते कु निवा । का सका उनके कारण करते ही वहाँ आधिक क्वीबर हुए और क्वो बोले—'प्रकर ! मुद्रे क्या सहस है ?' अवस्थीने कहा, 'मैं इन्ह्यों परस्था करनेके रिसे आ व्यक्तको नई विकास करता है, कार्येसे एक प्रतृशीत तुप

सक्त करो ।" आहेंने बहा, "प्रयो ! तीक है, यूने सरकती | आहा क्रिएंबार्स के लिए पुत्रने इस पायक्र निवृत्ति केले क्षेपी---शतना में जनक प्रकार है।' स्वापनी मेरे, 'कारे ! महि किसी खानवर प्रव्यक्तित अवस्थाने कुछुरे पाछ आकर मोई पुरू अञ्चलका बीच, ओननि क लांगे हुकुरा पूजन महीं करेगा से तुरंत है दुन्हारी महस्रमा उसमें प्रवेश कर कावनी ।" सहाजीके हेरत कहनेवर सामित रूपकी बात पान को और अध्यक्तको एक चौबाई बागने उनने प्रवेश विकास

इसके पहार विकास के इस, इस और ओवनियोंको सुरभक्त करते भी बढ़ी बार बढ़ी। इसमा ने बढ़ने रागे, 'तिरोक्तीनाम ! अल्पकी आहमते इस अक्षान्तके चतुर्वात्तको च्यान करेने, जिल्हा आग इसले इनले पुरुवस्था क्यान भी से संस्थित।' अक्रमी संस्ते, 'सो पूजा पुरुवविक्रियोग्र पुरुविक्रों स्थापन वह स्थापन की एक चानती।' तम कुकारिके काची कात कीचार कर की और क्रमा प्रसम्बर् कृतनका अयने-अपने क्रमानो को गर्ने :

विश् प्रकारको अन्यास्त्रीको स्टब्स्टर असे वहर भागीने बहर, 'सुन्दरेने । यह सहस्रक इसके पात सामी 🗜 हो के ब्याने प्रत्या कर्यक तुन ब्यान कर स्ते 🖰 अरहराओंने कहा, 'केंब्रुस | अन्त्रकी अव्याने हम इसे बहुत मारोको केवार है: सिंह इससे इसरे सक्यानेके करवार की विकार करनेकी कुछ करें हैं। इहानी केलें, "हम विकास है कुछ दिया है अब हुए और क्या सुरूप काले हैं। ?

हो, मो पूजा रचकाल चीके साथ सन्तराम करेगा, करीके का क बती ककी।' का राम अधार है सहाजीको असा विशेवार्थ कर अन्दे स्थापेट ककर विद्वार करने स्था।

हरके बाद स्वेकनियात हाइसे बरको रिन्ने संबद्धन किया। होता है जलकेका उत्तरिका हुए और अहाजीको जारन करके बाले रहते, 'जन्मे । इन जगरिका है, कर्याने, क्या काहा है ?' महाने कहा, 'देखें, जो महाराध पूर्वते क्रारेको निकासकर इसके पास काली है। स्त्रे मेरी कालामे क्रमा एक बीवर्स भाग हुए जान बड़े हैं साले जाए, 'रनेकेकर । जान केल कको है को जीकर है: सिन्द उससे हमारे निकारका समय को के निकित कर देखिने ।' सदानी बेले, 'बे पहुंच अपने पुरिवरी मचलते वाले शुर्फ-कारत का पार-पूर्व अनेतन पूर्व क्रीकार का अनिया करी कारणे और कारेंद्रे को स्टोनी (

क्षेत्रको सहते हैं—कारत् । इस अवस्त हुन्त्रको होन्द्रकर व्यापन व्यापनीके काले हर विश्व-चित्र स्थानीने क्रांके पत्ने। इतके का बहुतनीको अस्तार्थ इतके अस्तिक का किया। पहारत । इस बाद देवाना काले अपनी सुक्षा युद्धिने काम नेकर कामपूर्वक मुक्ततुरका क्या किया है। को रहेन पुरुवतिनिकोश साहान्त्रेकी समाने इस दिला कारको सुनावेगे उन्हें किसी प्रकारका पाप नहीं सर्गमा । इस लकर भी वर्षे बजसके जोगरे के इच्छर सर्वात भीरें

#### दश्च-यञ्च-विष्यंस

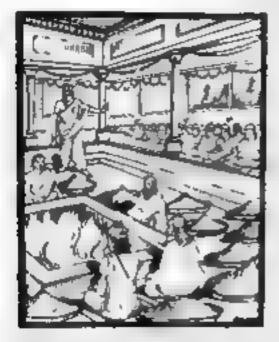
क्रमेनको पुरा--वैदानसकानी । वैकास कर्यकाने उनेहरू का उपापति स्थाप अध्येष का विकार कर क हुआ बा ? सुस है पार्वती देवीको दुनिया जनकर कनकर इंका रक्षपर कृतित हो जो से । किर कई उसल करके रक्षने विद्रार तरह अपना यह पूर्ण विरुष्ट ? मैं हुए उल्लेखके सामग्र बाइता है: साथ ठीवा-ठीवा बनानेकी कृप्त करें।

वैद्यापानी क्य-कर् । पुराने सरक्की कर है, हिमालको पना ग्यूनहरूपे, वर्ड ऋषि और विक्रोका निर्मात का, प्रकारकी कक्षने अपना कहा आरम्प किया । कन प्रकारके पश्च और ततार्थ का त्यानको कोन्य नवा को मी<sub>र</sub> धर्माध्याओं में क्षेत्र दक्ष वर्षा अधिकोकी यव्यक्तीले किरे हर कैठे थे। का समय मुख्ये, अन्तरिक्व और सर्गलोकमें सुनेकारे

पनुष्प क्या देवाल आहि इत्य जोड़कर उत्पत्ने सेवाचे कारिक्षत हुए। कुरुत, विकास, सर्थ, शक्तर, क्रमा, हुई, शुक्रुई, विकास क्या विकास काहि गमर्थ, समूर्ण अपनाहै, आदिता, वसू, रस, सम्बद्ध और परस्पानीके साथ इन्हादि हेनता बहुने क्या तेनेके जिले पकरि हो। होक्या-आक्या आहि भिन्न, **करि** तक **ब्रह्मकोका भी शुनाममन इ**ला का। इन सर्वेद अन्तिरक सरावृत, अव्यक्त, बोदम और डाह्मिक पारी ज्ञानसंद्र औष वहाँ अस्पनित हुए थे। देवतारचेग अपनी विकोचे साथ कियान्यर बैठकर असे समय प्रवासित अधिके प्रकार क्षेत्रक का खे है।

महायनि द्वीरिक भी वर्षी मौजूद के : उन्होंने देखा देवता और दानव अधिका सम्बन्ध से सुब बुट हुआ है, पांतु भरवान् .....

इंबर जॉ दिवानों कें; कर पहल है, उनका जानकर जी फिप्ट गया—या सोवकर ने सोवने पर नने और केंद्रे 'सकते ! विसने मगवान् हिनकों पूज जॉ होती का न



यह है, न धर्म। (इस्तिमें इस यहां भी यह यह यह यह समाता।) इसमें यह पर्ममर मिनाइ हेन्सरस है: मिनु मेंहबस मितामों दिवामी नहीं देश।' का व्यक्तर महायोगी इस्तिमें कार राजावर देशा है उसे वाजान् संघर और मरहानिने समीती देशांचा इसमें हुआ; हरके कार है देखाँ मरहाने भी दिवामी यहे। इससे उनके बहुत संजीन हुआ।

सरकाम् वर्गायने ज्ञा निकार विकार कि ये सक्ष स्थेण इक्ष्मत है नये हैं, अभिने इसीने व्यानेक्कीयों निकान नहीं दिया है—यह साल कारणें आते हैं वे व्यानकाले अवस्त है गये और हर सावार कहारे स्थे— 'से पूजारेव पूजायी पूछा म करके अपूजाया पूजा करता है, जो स्थानकों सावार पाप सामता है। मैंने आजाता कारणे हुद्ध नहीं व्यान है और आने भी नहीं वर्ग्या। इसने केवता सावा व्यानेकोंने केवा के सबी बात बता रहा है, कारवान् संखार सम्पूर्ण कार्यायों सुद्धि करनेवारे, स्थान जीवोंके रहाया तथा सावके कारणें हैं हैं हुए एस स्थान केवान, से इस बहारें आव्योकाने कारणें उपिता होंगे। मैं अस्तार है, स्वानी सरवानों कारवान इंगायने कारवार कोई भी देवता नहीं है। यदि वह सत्य है तो दक्षके इस विद्यास बहाया विकार हो बादाया। टको का—मार्गे । ऐतिये, विविध्येक समारे परिष-की हुई का इकि सुकारित कामें रही है, इसे में पराकत् विक्तुको सर्पन करोगा, विकास कहीं भी समार नहीं है। से ही प्रमु (कामों), विन्यु (कामक) और अक्टमीन (म्यू-काम स्टब्स्स करने कोचा) है।

(कुररी ओर कैस्बासंग) पानंती हेनी स्कृत आहा होना गणकर् कंकरते यह रही वॉ—'आह ! मैं कीन-का रहने, इस का का करों, विस्तों प्रमानों में परिशेषकों काका अस्या या दिवहों कार समस्य प्राप्त हो।'

क्षेत्रको करका इस सकत केरती हुई प्रतिको कर इन्छर करकार इंकरने जरण होकर कहा—'हैंकि! में राजूर्व क्ष्मेखा इंकर हैं। के विकास किस एकार कहें है, के असान पूर्ण है, उन्हें के करकार इस नहीं होता : इस सकत हुए असी केरवाओं कर है तीनी रोख गेड़ारें पहें हुए हैं। कार्य क्षमेखाओं मेरे ही सुन्ने करते हैं। सामगून करकारों क्षमा कारत करको करने केरे ही महिनाका करता करते हैं। केरवेस कुछ कर है। है केरवार । का स्ता के असी क्षमा हुने हैं कार्य कार हो। है। केरवार । का स्ता है असी क्षमा है। का कार्य का है। केरवार । कार्य है। इस हुन्य हुना है, का कार्य मा कार्य है।

प्राण्येको भी अभिन्य चार्च असारो देसी जास स्कूपार प्राच्यान् प्राप्याने असमे पुत्राते एक प्रमेशन पूर्व प्राप्या विकार, विकालो देखते ही रोज्ये एको हो चार्च थे। विराद अनुनि को अस्त्रा है 'क्षाच्या च्या च्या कर है।' का सिहन्दे पुत्रात प्राप्यानी पुत्राने वार्यानीओं क्याच्या विकास का हत्या। अस्त्र प्राप्यानीओं को को प्राप्यानीओं क्याच्या हो अनंबान् अस्त्रात्याली प्राप्यानीओं भी होक्योंनियीत अस्त्रात्य संस्था दिस्स व्या।

अन पुरस्का कर्य को बीरचा । इसका पूर्वर्ग, बाद और कर करवान् केवले ही सन्तर का । उसेवका से जा पूर्विकन् स्वास्त्र ही का । इसके करा, वीर्च और परासम्बर्धी कोई सीमा नहीं थी । का उसे का-निकास करनेकी आहा निक्षा, उसके कर अपने प्रतिके रोध-देवसी 'रीक' नायक का उपन्ट किने, वो कांक समान धर्मकर, व्यक्तिसाली और पराह्मी थे । के व्याक्तिय वीराम रीकाई और इसकोची कई देशियों करवान मही देनीके साथ दश-विधांस करनेके दिखे दूर पहें । अन समय उसकी विकानवर्गियों आसमान गूँवने



लगा। इनके महान् कोलकार सुनकर देवल वर्ष करे। पर्वतिक क्ष्मिन्द्रकड़े हो गये। वस्ती होतने सन्ती और समुद्रीने तुनका जा गया। इतना हो गर्दी, सूर्यं, ग्या, वर्षे, सहस्र तथा समुख्या भी कीके पह गये। कार्य और जैनेना कर गया। देवला, व्यति और पनुष्य क्ष्म हिम्म गये, कोई विकासी नहीं हेता था।

दशरो सनमान परवार कृतिका हुए कृतीने सनमे पहले प्रशासको अस्य समा थी। कुछ माम-बोट करने सन्दे। कुछ सोगीने पूप उस्ताको आस्था किये। क्यूनेर काम्बी सम्मानिको सुद्ध करने और पीको सन्ते। कोई केंद्र सम्माठे, कोई कांच सोदी और कोई-कोई आधुक्तांको सोकान केंद्र को थे। साए समाम इसर-जार विकार मच्छा। का व्या-कृतियो व्यां साई दिला जात, पान और प्रशासको की पर्वकेंद्री भारत विद्यालयो देती थी। कृत्यां करियां कांच्री थी। भी और सार विद्यालयो देती थी। कृत्यां करियां कांच्री थी। भी और सार विद्यालयो देती थी। कृत्यां करियां कांच्री थी। भी और सार विद्यालयो सेती थी। कृत्यां करियां कांच्री थी। भी और सार विद्यालयो सेती थी। इसको सिका क्या था। उन सम्बाधे कर सी।

स्थलानिके समान पर्वकर कारण अपने तस्य-तस्यके पुरत्वेक्कर कार्य, पीते, तुरते और केंबले थे। देवताओंको इसके और जीव करते हुए ये पॉलि-चॉलिके सिरकाद करते थे।

इस जनसर पन्ननक कर्न करनेवाले वीरामाने करा पन्नो इस औरहे न्यू कर करना। संपक्षात् सपसा प्राणिकोको करानेकाले भनेकर गर्मन की। उस सम्ब ह्या जारी हेन्याओं समा जन्मपति देवने हान कोइकर पूर्णा, 'आप कीन है?' कीरका कोरम 'इस केनों तिम और पार्थती औ है। मेरा नाम है भीरपत् ! मैं पर्नावन् सक्ने कोपसे प्रमाद हुआ है। क्या का प्राच्छाती है मरावाती कार्या कोससे इसका अनुमान हुआ है। वेनाविक्त संकरकी अञ्चासे हम केनो इस प्राच्छा गाह करनेके विने पहाँ आपे थे। विश्वतः ! हुत अवस्था प्रमाद किकारी सरम हो; वर्गीक करवा होता भी इसरोके करवानसे अपना है।'

वीरात्स्वी बात पुरुषार वार्तमाओं वेड यूर्त पर्यान् विच्छे औरवारे प्रणान करके उनकी इस प्रधार पूरी की—'वो सन्दर्ग उनक्के प्रशास, वारूब, न्यान् असब, निता, अधिकारी एवं सनावन देवता है, उन पहलेकनीकी साम मैं प्रशा केता है।'

व्यक्ते इतन करते हैं इक्तों स्वीकं समान तेन वार्य किने केन्द्रेनेवर कावान् किन स्वस्त अतिकृत्यां प्रकट हुट् और हैंस्कर केने—'कान् । नकाने, में तुनारा करेन-सा किन कार्य करी?' जर समय देवनुत बृहस्परिने नेद्रक क्लावान क्वार कावान्त्री सुन्ने की। तरकान् कावानि क्षा केने नेत्रेते अद्भिन्नेकी करा कार्य हुट् अन और स्मूसरे व्यने हुट्नो केने—'कावान् । क्षि जान प्रसाद हैं और पुने अपना तिन कहा हो क्वान क्षा प्रमानका कर देन कार्य हो' से किन क्या तिनोरे परितान करके के न्याकी सामग्री वृद्यकी की उत्तरोरे क्या कुछ अन्दर्क कार्यक्र सामग्री वृद्यकी की उत्तरोरे क्या कुछ अन्दर्क कार्यक्र सामग्री व्यक्ति क्षा का क्या है का साम कार्य न कार्य, अन्दर्क व्यक्ति कार्यकी पूर्ण है कार्यक कार्य कार्यक्रिय है

मनकर्ने 'क्थास्' सहकर दक्षकी प्रार्थन सीमार वर सी।

### दक्षप्रजापतिका भगवान् ज्ञिवकी स्तृति करना

वैद्यासम्बद्धाः सहने है—स्वरूपर, स्वाप्तकारीके | भगवान् संकरके सामने केनो युटने बजीनक ठेळ हिने और सनेक बगोंके द्वारा अच्छी सुनि की।

कृष्यिको कुल-सारा ! किन स्थाने कुलने कुलकार रिकार साम किया था, जहें कुरनेकी इंका है भी है: स्थाना स्टलाचे ।

भौकातीने कहा---वृत्तिहित् । अतुनुक परवारण कालेकाले वेगानिके विवक्ते प्रतिद्व और अप्रतिद्व सची प्रकार पान में हुने सन का है, करे।

(रच गेर्र): -केन्ब्रेनेक्ट १ आफारे कारकार है। सार केमोरी क्रमतीकी हेनाके संकरक और केमान प्रकार की परित्यो पानिया करनेनाले हैं। देवता और क्रम्ब कार्य आपनी एक की है। जान सकते देवोंने पक केनेने सारक रेक्काब्र है। सारकी इंकिन सबसे विश्वकृत अवदि प्रदेश विकास के प्राप्त सरवेशारी है, इस्तीनो सामग्री विकास कहों हैं। आप विभेजवारी है, इस बारण प्रश्न बहारते हैं। प्रमाण हुनेरमे भी आप हैना (हुनेन) हैं। अल्ले सन और प्रथा और पैर है, तम और आंग्र, ब्रेड और महत्त्व है क्या पान और पान है। संस्थानों जो पुछ है, सम्बद्धे सार काह करके दिना है। चंत्रुवारी, कान्द्रमी, कुल्क्सी, क्षाचित्रस्य, गरोनकार्ण, नेकार्थ और क्षांसकार्य-के कार पार्वद आरथे ही काल है-इन सर्वद कार्ने आरको कररकार है। आएके पैकाने करा, बैकाने जावर्ग और वैकाने विद्वार होनेके भारत जान करोहर, करावर्ग और क्रानिक मामसे प्रसिद्ध 🔁 आपनो प्रनाम है। नामानिस सम करनेवाले आवनी है पहिमाना नाम करते हैं और क्ष्मीयासक सुर्वके काली आरमाते ही आराज्या करते हैं। सूनि आपको जात पानते है और व्यक्तिक हुन । उसी प्राप्त आपको संसारते परे तथा जानतको समान व्यापक सम्बाते है। समुद्र और आगरको स्थान प्रात्कार करने करनेको महेकर केले पोक्रासमयें और निकास करती है, उसे प्रधान आयको पुनि, कल, बाबु, अति, अध्यात, सुर्व, प्रकार एवं चनमन्त्रम आठ पृतिकोने सन्पूर्ण केलाओका कस है। है आयके शरीवर्षे कहता, अधि, करण, सूर्व, विन्यू, सहर कहा बुहरमतिको भी देश रहा है। अबन ही कारण, कार्य, उसक और करणका है। स्मृ और जसद प्रदर्श आयुक्ति जन्म भेते और जासहीमें सीन हो जाते हैं।

जंबर बारवेंसे बागभ कर्ष, व सर्वात पापको वर करनेसे सह. परकार होनेसे करा तका प्रकृतों (बीबों) के पासक होनेसे कारण पहारति अञ्चलते हैं । आपने अध्यक्तासरका यह किया है, इससे अन्यक्षे अन्यक्ष्मती कहते हैं; आवश्रो शर्माक्ष नवस्थार है। अपन कीन कहा और तीन मकाक बारव करनेकारे है। अध्योत क्रकों क्रिक्ट क्रोमा या रहा है। आप क्रमण्ड--क्रिनेतवारी तथा विपुरविनाक्ष्य हैं; अव्यक्ते प्रकास है। ब्रोक्क प्रकृत का बाल करेगी आका गा। प्रकृत है। जार्रेक करने क्रमूर्ण करता जाति विश्व है जैसे क्रमोने पार, प्रतिनिने आरको क्रम पक्को है। आर विकास करते हैं के प्रत्येक करते हैं के प्रत्येक के प्र 🕯 । सम्बन्धां अर्थात् सम्बद्धाः समाप्तभावते सुनवेवाते 🕏 । युद्ध करण करके पान पुरुषे क्रोनाते संचारी वी आयो है क्ष्मण है, जनको प्रकार है। यहिन्छई को और क्ष्मणी और के हर केन जरन करनेवारे आवने प्रयास है। कार है निवास कहा है और अन्य है चंत्रती अपने विकास है। क्योगुरूको अवक्रोकर क्रिकेश्व सम्ब स्थेगुरूका अन्यन तेनेकर जान का ब्यानको है। आपको बीकार्य जीले रिकार विका है, इस्तरिको सरकारे भीरकोच सहसे हैं। इस अन्यको सन्यन कर्या है। आरके समान दूसरा गरेई नहीं है, अल्प क्या अव्यानो क्या बारण करते हैं और पान पानकारक विकासका है। अस ही सुर्वत्रकार और इसमें अवस्थित हेर्नेकारे सूर्व है। अन्यकी व्यक्त और व्याप्तापर कृषेका विद्व के सारको नगावार है। प्राथमानीके अधीवार कारण किया । अस्पन्ने प्रसान है। सामोद होने प्रकार केनोके सन्तर परे हुए हैं। जान प्रदा विनाम बन्दा धारत किये को है। प्रमुश्रीका क्या करनेकारे और तुक्तकार है। विकारकेरने कियाने समय जान चोजान और बर्ग्यालया करण कमो है। द्वेरण्य (सुकर्ण) को क्याप्र करनेके कारण अन्यको विरम्पानम् साहते हैं। हिरमाके सामक और पृक्त करण करनेसे जान हिरणकार तथा हैरणकार नामसे अस्ति है। विरमने जल अधियति है: आयस्ये सार्थर च्याच्यार है।

निमन्द्री सुरि हो क्यों है, हो रही है और को सानि करने केना है, वे सब आपके ही जाना है। अध्य तर्व, प्रवीसकी और सम पूर्वोके अन्तरक्रय है; करवाते सक्द प्रचान है। क्या है हेन हैं और जान है एन । आपनी सर्था और जार समझे द्वार (क्य) का कारण होनेसे का, विकासका रंग केत है: आपको नगरका है। आपको नामिसे

सम्पूर्ण जनसम्बद्ध आविष्यांत्र होता है। अपन संस्तर-बहाओ मानिकान (केन्द्र) और आवस्थके को अवस्थ है। सम्बद्धे प्रमान प्रमान है। अन्यको चलिया प्रमाने हैं, इस्तीयने अपन कुसनास कहावते हैं। अनके अवका कुछ होनेने अनको क्रमात क्रमा परीर क्रमण क्षेत्रमें क्रमा करते हैं। उसर मानवार्ती, जीत प्रसार करेग्यने को विजन्मिक प्रमाणका है: आपको नगरकार है। अन्य समस्य प्रतिनोधे भीवर कृत्य मार्गमाले अनामांची पुरूष 👢 प्रत्यमारूपी चोनन्दिका आराम रोक्ट सेनेमारे और स्ट्रिके अराम कराने क्ष्मपानतिहारी जागनेवाले हैं। अपन सहस्वाले सर्वेत विका और कारण्यमें एक वैद्यांगाने हैं। येंद्र मुक्ते हर संन्यानी और बटाशारी तपनी भी अवने हैं करना है; अनने प्रतान है। जानका तामकानम बराबर फारता रहता है। अस्य मेहरे नहीं आहे क्ये प्रकारेने लिएस है, क्याल्यकों मेंट सेनेको अनुस्य रहते हैं और नाने-समानेने कहा यह बाले हैं. अल्पने मन्त्रकार है। अपने अन्यत्वामें जनमें कोड़ और गुगरेने की सनते होड़ हैं ( अरुपे ही क्लाविकानी कुछान परन-पर्वट किसी का ) आप कार्योद्ध भी नियम्ब तथा सर्वजनियम्ब है। महासम्ब और अधानार प्रत्ये आको है स्थान है; अध्यो नेय प्रयान है। यात ) अन्यता अनुसार कृत्यिको पनि वर्गका है। अन चीवन प्रतीको कारम कारनेकारे है। इस पुनाओंके सुक्रेरिक होनेकले और का पृतिवारी कारको हकता नकतात है। अस हरवाने बागाल दिन्हें तुने हैं, विकास पहन असमाने बहुत पारंग है। बनवान मीत ! आव नवंदार होते हर भी देनवेद है तथा क्रम आहे जान जानिया पाएन करते रहते हैं: आपको हमार प्रभाग है। जान बीमाने प्रेमी एक एन (प्रदिचर्का), पूज (कांबी वृद्धि करनेकार), नोवन (नकी) और कुन (वर्ग) आदि गामोने प्रसिद्ध है। धंटतुर्थ (मिल परिश्रीत) क्या (प्राप्तक) और नक्यक (प्रार्थन पूर्वोच्चे प्रकारेनाक) थी आरामिके जान के आराबों नगरवार है। अन्य सम्बंधे हेता, करकार और बच्छता है, जान मान्य, नम और मध बारक करते हैं तक परवाड़े उच्छान्तर और वाले में अधिक करहान के हैं: सारको प्रकार है।

रागी और गिरागी केंगे विस्ते करूम है, जे सामपालक, सहस्की माना संदर्भ संदर्भकों, स्थानकारों समयें साम और कार्यकासे पृष्टकु-पृष्ट् दिस्तारी हेनेकारे हैं समा जो सम्पूर्ण बगाहकों सम्या और कृप उत्तर करते हैं, उन सम्यान् संस्तरकों राजसार है। असेर, जोर और चोरसे ची सोस्तर कर सहस्र करनेकारे स्था दिख, क्रान्त हमें सम्यान सामा कारमणें दर्शन केंगाले मगानान् विकास कारम है, एक

पह, कोन्द्र के और एक भक्तवाती अवस्थे प्रमान है। मकोको से वहं कोटी-से-कोटी पशुक्ते निन्ते की त्यानानिक क्रानेकारे और अस्के कहांनी जो असर करतति और वेनेकी क्षी रहानेको अन्य कामान् स्वयं नगरकार है। यो इस from frein webach unter, threst aft top grand wind I first touch reads) भारतीय कर देवी है क्या को सार्व के बंदरनाद और अन्यात व्यक्ति पानी अध्यक्तिक होते हैं, यह गोधरको प्रधान है। किनको एक है केंद्री हकते क्यूबोहरा एक कार कवानी करेवाले बॅटिकेंड बरावा आवाब करते हैं, दिनों बंटाकी कार देन है, किया प्राप है देशके समय नाने परात है, वो पन्न और बोल्ब्युल्ला 🖁 उन भगवान् हिनको उनस्पर है। यो 🏋 बहुबर हरेन और अन्यतिक साचि प्रयाद वाले 2. Promit ferbeit unt mit ft nen unfer pei performit fin spai & white aft split the प्रिकार निवास है और के बाद बारत होनेका है अलेल दिया and the management area for the second क्त्य-कारण कार्यकारे, का, कारकार, हुर (हमर) और प्राप्त (अर्था) कर है, का संस्थानीयो नामसार है। यो नास्थ finden, mergier, went afr me beneb f. mit. नहींके विकास कथा महीबाँड स्टब्स् विकास असमें ही अस्तर है. क प्रचल दिवाने प्रचल है। सामग्र, सार्गी और अपनेकाल कोशाची राजका है। विनोह सालो महायू. त्युको परण, स्थानो पुरू ३०० अनुतो के हैं; को धरस्तुनीकी भीति वेदीनामार और माराय-का बारव सरवेवारे हैं, उन इंक्टरनीको प्रकार है। अपने बात अनुवर्तके रहक. व्यानकोचे प्राप्त कोल करवेकाने, कुछ, सुब्ब, बुख्य और क्षेत्रमें क्षान्त्रेयाने आवको प्रमान है। सारके केस प्रकृती क्यूनेने अहित क्या पुरुषे स्वयन है, अन्य आहमीके क कर्म-अक्टबर, अवक्टबर, करत, करत और इस तक अभिकारे संदूष्ट करे तथा कर्च (सम्बन्ध, प्रकार और क्षात्रक) और कार्वेक अनुसार किया करते हैं: अवस्को मेरा न्याकार है। जान कर्ष और अध्यानेके विक-निया क्योंका विविद्या विकास करनेवाले, कावन करने बोन्स, बोकसका क्षा करावार व्यक्ति है, आवादे महिवार प्रचान है। अवने के केंद्र, केंद्रे, काले और साल एंग्डे हैं, आप प्राणवास्क्री जीवनेकारे, स्थानकारे प्रस्तावे निकारे रक्तनेकारे, अक्रमानी परम्बे फोड़नेकले और कृत करीर बारन करनेकारे हैं: जानको करावार है : कई, अर्थ, कार्य क्या चेता हेरेके विकाले आवती परिस्थान पर्यन करने केना है।

मान सांकरणस्य, संदर्भनोतिनोते अवान क्या संदर्भ कार्यको अनुस करनेकारे हैं: आवानो अनार है। अन रक्यर कैस्तर क्या किया स्वर्क की कुरनेकारे हैं। क्या, आधि, क्या क्या आवत्य—जून कार्य अन्तिकार आवके त्याके तकी है। सान कार्य प्राथकों कुर्युकी कींग्रे ओक्नेकारे और सर्वका क्योपकी करण करवेकारे हैं: आवाने अनाम है।

वैवान । अध्यक्ष वरीर प्रक्रके सर्वन कवेर है। इस्किए । आवनो नगरपर है। व्यवस्थानकारण परवेदर है कार विनेत्रमारी प्रथा अभिनयको उत्तरी है; कारको स्थानक है। सार पारमालय पारमाओको पूर्व प्रत्येको, महानोको जाक, दूर-अनुहत्वा किया बारनेको, सर्वज्ञान, क्रम क्रम हेरेकारे, सम्बंद बंक्स और पंच्याकार्यः स्टब्स् सार्व्यं प्रताने हैं। अन्यके प्रधान है। महान, मेनोन्दी बराबेर समान इक्तांकर्तको बहुत्वहर । आरम्के नगरकर है। अस्था औरंग्यू स्टूर, वीर्थ प्रदूरकी क्या कार्यात और मुख्यानंत्रास कार्येकास है। अन विकासन पूर्व और असिये प्रमान क्येरिनंबी पाछ्ये कुमेरिन हैं । जरकार और कुरवर्ग है अल्बेड कहा है । सार मानो पुरोदि सामा अध्यक्तान और प्राप्त प्रमानो संस्थ क्षांच्या है। जानको प्रसाद है। अस्य क्षांच्या जीवने क्षानीवारी और पहल्ली रीमाई स्वारंको धाना धानीवारे है। सारके करायके बार शह नकुरवाओं चीने को है। कार सम्पन्ते (काराम्ये कांग्रस् क्रूप्यूक्ते स्थाने क्रमनेवारे), इसको (क्रोक परिवार क्रोकारे) और वेकार्क (अनुकार) केलेको कुळांकाले) है सामग्री प्रमाण है। जार है अप, जाल, चेन्छ, जालहर, अवनेत्री, अवन्या, कान्य, पानक्रमेत्री एक पान हर शारिका है। देखेलेकर | जराजुन, अन्तरक, स्रोदक करा स्वीतन्त्र-चे कर जनारके जन्मे अन्य ही है। अस्य ही कराकर धीयोगी सुधि और संसर करनेकारे हैं। प्रश्लावेशाओंने केंद्र है क्रमी पूरण अल्पने ही महास्तियोग्य पह बहुते है। उद्यानको निवान आन्द्रीयो सरका क्या कारण, अन्यात. मानु, तेल, काब्द, साथ तथा प्रथम बाताओं है। सुस्तेत । साम्बन्ध करनेवाले नेवलेक पूज्य 'कृषि कृषि, कुल कृषि, इन्यु इसी जाविका अकरण करते हुए निरस्त अध्यक्तिकी महिनाका गावन करते हैं। क्यूबेंट और प्राचेद अवनेद हैं क्रमार है। जार से इंग्लिं है। के और अरिक्टोंबी सुनिक्षेत्रस अवस्थितं प्रदेशस्य स्थान होता है। स्थान, क्षतिया, मैरन, पहर क्या निता वर्गावेद स्रोम भी अवस्थीके कारण है। नेपोधी बार, विकास, पर्यंत्र और प्रमुख्या औ

ज्ञान ही है। संबद्धार, ज्ञाहुं, शहर, प्रमु, पुन, दिसेन, कहा, प्रकृत, ज्ञा क्या काम की सामके ही का है। कुड़ोने असर क्या-क्यान सामी, कांग्रीने मिलार, कांग्रीने श्रीतारात, कर्यों (अवां) में क्यून, क्योंने असक, स्मुक्तेने श्रीतारात, क्यांत्र (अवां) में क्यून, क्योंने क्या क्या स्माने साम की साम ही है। अस ही हका, हेन, राच, जोड़, क्या, असका, व्यवस्था, कर्न, क्येच, कांग्रा, क्या क्या क्या क्यांत्र है। अस असून, क्या, क्यून, कांग्राम क्या क्या क्यांत्र क्यांत्र अस वारक करनेकाते हैं। अस ही हेवा (केयर करनेवाते), तेता, क्यांत्र (कांग्रा करनेकाते), अर्था (अस्त करनेवाते), तेता, क्यांत्र (कांग्रा करनेकाते) क्या किया है। क्या असकते कर्त, अर्थ और कांग्रा क्यांत्र क्यांत्र है। क्यांत्र सामिन्द्र, स्मुक, क्यांत्र, सामान्त्र क्यांत्र क्यांत्र, हम, ओक्यंत्र, क्यु, मुन, क्यांत्र, सामान्त्र, क्यांत्र क्यांत्र क्यांत्र और क्यांत्र हेनेवाल क्यांत्र की आप ही है।

अन्य वेकारनेके आहे-अव है। क्यारी-क्या और अंकारनाम है। इति, रेडिंक, केल, कुन, इस, अक्षा, यह, व्यक्ति, व्यक्ति (क्युक्ति क्रान्त) तथा केला, (क्यानेके एका) — वे का प्रवासी के जी अवक्रित क्यान है। साथ करेडिंक केले व्यक्त अकर्त और उस्ते कर्मक केले क्यान है। अंकार काले कुन कर्मी (अक्षि) का अवंक क्यान है। अंकार काले कुन कर्मी (अक्षि) का अवंक क्यान है। अंकार काल कुनक्या है तथा आवती कुन्म कि । अस के कुन, क्या, का, कुने, अति, उस्ता (व्यक्त), विकास के कुन, क्या, का, कुने, अति, उस्ता (व्यक्त), विकास क्षेत्र, क्या, क्या (अक्षेत्र का केला) क्यान क्यानेक क्यानेक क्यानकों के ब्यूक्त केलिक त्यन है, के सार अव्यक्ति क्या है।

अस्य विकारित की वर्षिक और स्मूलकेंक की स्मूल है।
आन ही निर्मित (अनेतनकों की केल करनेवाले), हिंदूका
(नक्तनकार करनेवाले), वृद्धा (संस्तर), जीन, पुनात
(के), जान, सर्वा, रूप, का, अस्तवर (वर्षितित— अनेतिक), जान, अन्वय, स्त्वान, उद्धान, जान, उत्तेव-निर्मेश
(अनेतिका कोल-स-नीतका), व्रीक्ता और जीनाई है।।
अन्वयी केलियों हुई। अन्वयी अधिनकों दृष्टि स्तरूर रेपको स्ववा वीवर कियी हुई। अन्वयी अधिनकों दृष्टि स्तरूर रेपको स्ववा वीवर कियी हुई। अन्वयो है। मिरको बाल क्रान्सी और को हुई है। अस्य क्रान्यस्था है। माने-स्वानोंके क्रान्यसे अन्यनाले हैं। याथ क्रान्यस्था अध्याद अधिक क्रिय है। आप करन, जानका और जानकारी प्रतिकार है। विद्य की अस्तुत आर है अवस्त, अतिकाल, कुकाल क्या काल है । पुंजू, जूर (केवर करनेका इन्त), कुल (केवर करनेकेच), पह (दिल) एक अध्यक्षकार (क्षुत्रकार का कर्तकारे) ची कार है है। जान नैक्टे राजन बाते, नहें नहें क्लेक्टे और प्रात्मकारीन नेव हैं। कार (प्राथमका), सराम (शामक प्रकारकारे), वर्षे (वार्यकार्य कृष्ट कार्यकारे), क्रमी (क्रमानरे), कालेरी (मीनीर प्रथा सीव क्रुलेक्क्रे) क्या विक्रीविक्षे (क्युलक्क्क्रे कर्के व्यक्ति) --- वे पूज जानहींके जान है। जान हो पहल, सरीत्योंके प्रचल, क्यों, पूजा कर विकास है। यह पूज और यह के श्राप्ते हे एका है एक यह उत्पन्ते हेन्द्राव्टी अन् है प्रकार है। अप पाने सामनोधे केन कर पाने वालीकी | सुद्धि कारोपारे हैं। अस्य ही अस्तरिया, यूर्व, परमानक और प्रकृतिक शारी क्रांगेरे जीवा है। अस राज कर कर राज पुरतेको पाना पहले हैं, प्रतेतन प्राप्त करने और नेवर् कारते केन एकते हैं। जान के बोदे और को प्रिक्त (बारीनर) प्रथा तर प्रधाननी विकासको प्रकॉक है।

तार पंजीवाची और पोप्नी क्रिके संपूर, पन (आरम्य कोन करनेवारी) और मूचके की यह करनेवारे हैं। स्वयः, स्वयः, स्वयुक्तरः, प्रत्यका और स्वयेशनः अधि यः शानके है यन है। अस गुह सामार्थ, जुह कराव कार्यकारे, प्रत्यानम् और काराजेके भरे हुए आवाक है। बाबा ( कारम कर्णनारे), विकास (वृद्धि क्रानेकरे), संसाध (पोक्रोक्तो), विकास, क्रम और अध्य (अध्यारदीक) भी आरहीके नाम है। जान सहार, चन, प्रमा, सहामार्थ, अवर्थक (सर्वता), मृतवा (प्राणिकोचे सामा), मुलेको मुद्दे करनेवाले, पूरा (निरामीच्या), पूरा, वर्ताच्या और वर्तवायोड क्षातिके कारण, पूर्वक, गुक्तोंक, क्षातेक, क्रूब (flot), क्षमा (स्थानतीता) और पहेचर है। सेविता, (पहाणी सेवा केनेवाले), अहीब्रिल, श्रम्यान, सुर्वेच, स्त्रूच प्रारंक्त्रेया राह्म करनेवाले, क्यान्त्रवी अध्युति सस्तेवाले (करा), कुर्वेकी आवृति करनेकारे (कान), बंबर्व (कान) क्रम इंग्लंड (कुर पृष्टि-संबद्धर करनेकरे) भी कार है है। आर ही कार, निष्कु, असु (सहस) और स्कूलन है। सार क्रोसो पुराची जान अधिक गांव करते है। जार है क्योपुत्त, प्रोतपुत्त (कांकर कुरुकते), सुन्त, सुन्त, अपुरा (पुरारवित), चतुर्पुरा, च्यूपुरा तथा पुरावे समय

(ककारो) परे हैं। कार केरिकारको पुजारका काश्वास है। | करकू), जानर सर्वेक रकत्रे (केनका) और विगद् भी आर है है। सार अवन्ति शहर, महत्वर्ग, सम्बन्ध, स्वाधित, पोर्स, चीत्रोचो सार्वाले सम्बन्धा, उन्हेंची क्ष्मती करोको, वैशोकस्थान, मेरिन्ट् (बीकृत्यका), चेन्यर्ग (प्रशिक्षेत अस्तर), स्त्यर्ग (प्रीक्ष्मेरे अनेपर), हेतू, दिल, कालू, रिन्हरू, स्थार, पुर्वत्य (विकास सारक कार करिन है, हेने) चुकिन (अस्त्र नेनकरे), पुरस्त, क्षतिका, पुर्देश, पुरायक्त, पुरित्त, पूर्वत, पान, पान (केक्क्को), सम्बद्ध (क्क्का) समाध्यम (क्क्का) है। कों, कों, हुया, पृक्षकार कर समीक विकास हु। क्षानेकारे के अन्य है है। साथ है साथि-व्यक्ति प्रकार की हा क्रानेकारे हैं। मेरे ब्यानके कृतके बरिव्य क्रान व्यक्तिके unt alle fembent ift son if fie (generall) ब्रह्मका दिवाल (केलंब) काल कांग्रेड व्यक्त धार क्रिकार्क है। पुरस्केत (कारत) के सकत क्रुपत के हैं केंद्र कार पुरार्क का कार है। अन कार कार कार कार कार क्षानेक्षते, कुछ अस्त कर्णको, अन्य, साहक और agents store it feathair it what, being givering um meineit abr ungerifte far fie हेक्क्षिकेट | प्रान्तक | अन्य अनुस्तान कर्मनार्थ और प्रकारिक प्रकारि है। किसारिक स्थान प्राप्ती प्रकार सारी और पूर्ण पूर्ण होपरास्था कर करते हैं । बार कुकरे 10 क्यू प्रोमोके प्रकार पहला but प्रतिस कारण हेमात्राओं सावेदपुर स्थानीया औ पाल करोको है। अब के क्रिक्नोस (सर्वि), पुल्य (अन्यवर्गनी), प्रति, पुरान और मधुंतक हैं । नारमा, पुना और कुद्ध की अवस है है। मानेक्ट | जान कीर्ज कुद्देशको और हुन्द है। फिक्क्ट् (क्याईड संक्रमा), फिक्रमार्ट (स्थापि), जिल्हार् (म्ह्राची), विद्याचे रचना करनेवाले जनामीओर्ने dg, flower wer upo webselt, flower, band afte का और पुरस्कारे हैं। प्रमुख और पूर्व आओ के संब रियान्त्र प्रमुद्ध प्रस्त है। जान हो सनुद्ध है, सारवारी अवस्थी क्रमी है, अधि और यह बार है क्या सारके नेमेंबा सुरूप और मेर क्षेत्र है कि मौर कौर चर्कि है।

हिंदा ! तारके महान्यको होय-होया चाननेने सहा, क्रिक् स्था प्रचीन स्थी भी संपर्व स्थी है। अस्पेक स्थान स्थ इन्त्येचेको वृद्धिने पूर्व आहे। जनवर् । जैसे विका अपने औरस पूजनी पहल करना है, जारे करा आप नेरी पहल करें। अन्तर ! में बारको हुए। स्थित होनेबेन्य है, असर अन्यस्य मेरी कृत्या संक्रार करनेके कारण जावित्रक (अधिके सम्बन् ) था। यहे; में अवन्यो नगरकर करत 🛊 । अन्य प्रस्तीयर क्या मूलवाते) हैं। हैरक्कर्स (सहा), क्युनि (व्यक्ति समान ; कानेवाते वनवान् है और मैं सक्ति विने असका पता है।

को हमतो महत्त्रोग प्राथमा पाछ सामार सबके हैंने क्रोंग से ये है, अद्वितित है तथा समूक्ते समान कामकारोक्त अन्य क्षेत्रेण अवस्था आहे है से पर्यक्र निम मेरी रहा। करें । यो निहाके क्वांस्ट्रा न होवार प्रकॉवर विकास पा चुके हैं और प्रतिकारियों जीवका कारणुकरें हैंका ्रै—ऐसे योगीलोग कारने सिक्क क्योरिकंक कारका सामान्यर करते हैं. यह केशान परवेक्तको अन्तान है। को सदा और देख बारण किये हुए हैं, विशवह कर विकास है तथा कारकात है जिनके प्रिये सरकारक काम के है: हैते जहार्त्वीके काने निरामका करकार विकास प्राप्त है। निरमें केलोने सक्ता, प्रशेलकी स्वीवनोने न्यीलो और क्यूनरे करें तकु है। ज कामका सरताको काम है। ये अल्प्यान क्योपन होतेन प्रम प्रानिकेक संहर करते एकार्गको पान्ने प्रपर करो है, जा कान्त्रको नगळहरी मैं पारण रोता है। को राजने अपूर्ध मुख्ये और करते करते क्याओं अनुसार पार करते हैं एक पार्च है यह प्रपात क्रमेरर प्रकार स्थाने हैं, के परकाल केरी शक्त करें र अस्त हर कारता विकासीची चर्चि को देखा और विकास कार्य अपने-अपने भाग प्राप्त काले हैं, उन्हें प्रमुख्य है। में 'प्रसुख और संस्था के क्रांत करने जान सहकार प्रसंख हो। यो यह अपूर्वना जीको प्रको कर्ना क्रिक्टीको संक विरायमान है, से साथ केरी पक्षा और मुद्दि करें। को केले कीतर पूर्ण हुए उससे न केवार देहवारियोग्से ही पहली है, उससे इस्ति व क्रेकर जारे ही इस्ति करते हैं, का समयो में प्रकारत करण है। नहीं, राष्ट्रा, करेंद्र, युद्धा, क्यूनिकी पह, केंद्रावा, श्रांत पान, जन, चौराहे, सहका, चीनते, विकासे, इनिकासका, अवदारम, रवसारम, गुराने वार्तिचे, बीच्ने गृह, यक्न पूर, विका, जिमिला, जन्मन, सूर्व गच्छ उनकी विक्यांचे, रसम्मानमें और करने पिछ प्रधानेने की को अधिकात देशाके रूपने पात है, का सब्बों में बर्गका प्रस्कार करता है। विकास संस्था, अन्यक और समग्री इक्या नहीं है, विनक्षेत्र प्राचेकी गिरमी गाँ से समावे, उन करेको में का नपस्त्रार करता है।

अस्य संस्कृति पूर्णिक प्रत्यस्था, सम्बद्धे व्यापक और स्वारक है स्था आर है समस्य प्रतिन्तिक सम्बद्धाता है। नाम जनस्की एक्नियालीयाले क्योक्स स्वयक्ति क्या वित्रता जाता है और अस्य है समक्षेत्र कर्ति है; इस्तिनिये मैंदे सामको अस्त्रत निरम्बन नहीं दिया। क्ष्मण हैन है जन्मकी स्वार व्यापके में मोहने यह नाम कर, इस सास्त्र निरम्बन हैनेमें शुरू हुई है। परावर है में परित्यक्ति साम अस्त्राहि कारणों आका है, इस्तरियों काम गुहारर प्रकार होड़ते। मेब हाल, मेरी मुद्धि और गेरा यह सम आपने कार्यिक है।

प्रत प्रदार प्रक्रोपर्वको स्टी सरके प्रकारी रहा कर हे ग्ये। इस भगवान् देशको बहुत जाता होबार दहाते **ब्या**—'क्रम प्रथम पारन प्रशेषको सह । तुन्को हरा सी र्क का स्कृतिको में स्थान संस्कृत है; अधिक क्या कई, तुम मेरे निकट निकास करेने । प्रमारके । की प्रसाहते सुन्हें कुछ हवार अक्टोब क्या एक स्थान कार्याच कार्या पान विशेषा ।" उद्दरका, स्वेक्टका करवार दिल्ले प्रकारतीयके सामध्य हो हुए रेक्ट प्रकृत प्रकृत है कहा है इस पहले को निका प्रस्ता एका है, इसके रिको तथ प्रोप न करना । पैने पहले सहनमें भी हुन्हरी पहला विकास विकास स्था । यह स्थान को पूर्व स्थाने अनुसार ही हुई है। क्रम । मैं पुरः कृषे परावन हेता है, इसे स्नीवार करे और प्राप्तानक कुने एकामनिय होनार मेरी बात दुखे--- मैरे plantif my in, storen sår tild filler utly देखा और कुरलेके मेरने भी प्रधार राज्या अनुहार निवा का । सम्बद्धाः नाम है पात्रुप्तकातः । यह प्रत्यानायकः प्रदः वेता 🕸 अंबर किया हमा है। साथे अनुस्थाने महत्त् पातानी सहित केरी है। पहाचान । अने प्रायुक्तकारण प्रत्य कुई अंस है। अस्य कुछ अन्तरी परिचारिक विकास स्रोतन हो ।"

थ काम क्योगर्न समी को गांधी तथ अनुकारीके स्थान सहस्रों हुन्हिले अवेतुमात हो सर्व र को अनुका न्युनोर प्राप्त निर्म हुए हत संस्थाना परिनेत का सामा नारेगा कारण सभी अन्युक्त नहीं होना एका उसे ग्रीजीवृत्ती आहे। होती । केहे राज्यूनी केव्याओंनी प्रशासन् कंकर होता है, काहे जनार सम्पूर्ण कोत्रोंने यह काम तेतु है। यह साकृत केले: क्यान है। यो पदा, राज्य, सुक्र, ऐसर्व, काम, अर्थ, का या विकासी हुन्या रकते हो, वर समझे व्यक्तिपूर्णक हम स्रोतका प्रकार पारंचा पार्विते । केची, कुरवी, केन, चोरके प्रथमें पह हुन्छ, नामकीय प्रकार राज्यके स्थार्थको अध्यक्तको प्रमुख भी हुन् क्षेत्रका कर करनेले च्यून् करने कुरवाय या वाता है। व्यू उनी बेहते परस्कर कियके राजोकी समझ प्रक्र कर रोख है और नेजारी, पहाची को निर्मात है पहाड है। बाई कर कोलक कर होता है, जा करने रक्षक, विकास, पंत और विकास कोई बिहा को करते । को को सरकार कंकरमें कींट स्वाचन म्बार्क्स पाल करते हाँ इस स्टेम्बर समय करते हैं, क्र निवा और पति —हे-वेके कामें देखानकी भारत पूजी वाली है। ने पर्वा समावित विकास प्राप्ता कारण का नहिर्दर करता है. अर्थे सभी कर्ष क्या क्यान कृत करते है। इस स्रोतके करते करने रहेको हाँ एक वार्वहरूरा प्रबट की हाँ सपी

इन्हिनोको संबगमें रक्तका श्रीक-संबोध अभी विक्रमेका भाग्य करते पूर् कार्यक्रम, पानंती और परिकोक्त साहि अपूर्वकार्यको पूरा करके उन्हें पति अर्थन करे; बिन प्रकारित हेका सम्बद्ध का नवीक कर करे। का

अवस्था कामनाई पूर्व हो जाते हैं। व्युच्चको कहिने कि | विविधे कर करनेवर वह इक्युवार का, काम और अधीरको समयो प्राप्त करता है तथा परनेके प्रश्नात् समीते कार है। को का-बड़ी साहित्री चेनिये कम की तेना पहला। इस अकार परकार परनार कारावीने इस क्षेत्रका महत्त्व कारता 🛊 ।

# सम्बक्ता नारदजीसे अपनी भोकडीन स्थितिका वर्णन तथा नारदजीका गालव मुनिको श्रेयका उपदेश

मुक्तिने पुत्र-विकास । संस्थाने सीध कृता और मुल्लो सह प्रको खो है; कर: बाव देख करेड करे, विदर्श हमें का देशेका है कर र है।

धेनको बह-नाम । इस निवर्ण नाम और रामको संवादनंत अनीत प्रीकृतना सहात्व दिया नाम 🕯। एक बार पास्त्रवीने सम्बन्धे पुरू—'मूने । 💬 स्व आल्प्यम और फ्रेंसहीय-के दिवाली के हो। हुन्तरे चीता क्षणी नेस्त्रक भी खेल गढ़ी देश गढ़ता। एवं तदा संख कीर अपने-असमें ही मिला पहला कारणांची चर्चित केल किया करते हा, प्रत्यक्ष कर्य बंदर्श है ?"

समाने का -- मान्य । मैं पंत, पर्वतान और भीवनके हाराज तथा बालेंद्र सरकतो सामक है, इसीचे मेरे मानो सामी क्रिका नहीं होता। यहे कार्नेक शास्त्रका क्या करेंद्र करोहरूकारम्बा भी अन है और संख्यों को पानि-पानिके कर्मकर प्राप्त केरे हैं, करको भी में करका है, इसीले कंपी अगुमा नहीं होता । कार्यमें नाबीर विद्वार, पूर्वा, अंधे और बह भी क्षेत्रित रहते हैं तथा एक्स प्रतिस्थाते देखा. काम्यन् और विर्वल—संची अपने सम्बद्धितर चीवन सरण वस्ते हैं, इसी संख्या प्रमा की की की है। इसार क्यांक्रिक्त की बोलिस है और ही कार्यवाले भी; तथा कुछ स्वेग राज सामान है जीवन काल करते हैं, इसी राष्ट्र हों की केलिक सर्वतिये । पहल विकास कारण विक्रीओं उद्धा (सुद्धियान) च्याने हैं, उस उद्धा (बहित) को कह है इंजिलोबरे अस्तरता । किस कुर इंजिलकोरे कुलको इन्द्रियों कोन्य और मोहले पड़ी है, जलने जालने प्राप्ति नहीं होती । यसाँको नर्ग होता है, जनका नह नर्ग मोहका ही है। यूद प्रमुख्ये दिनों न यह रहेक्ष सुरक्ष होता है, व पालोब: । विवर्तिकों को न से तक दूना है ज्यान पक्षत है और न इमेरत सुरू ही निरुद्ध है। संस्थाओं स्वक्रमको परिवर्तित क्रेका देखा प्रथमे-बैसे करूक क्रमी

रंकर की करो, समुक्त केर या पुरू शका अस्त आविकार्य गाँँ वाले वाल प्रतिवृत्त दुःस अह होनेगर भी कार्य विशेषा की होते । विश्वका नित्त निवर हो गया है, का कुरनेका कर नहीं स्थापन, स्थाप-शी सम्बन्धि कारत पूर्वसे कुरू न्हीं कहा और करते जा है कर्मक भी ऐंद नहीं करता। करोडि क्यू-क्रका, का, क्या कुल, साक्षेत्रक्री, यह और बीर्थ-इन्पेसे कोई भी कुमले कुरमारा भूति दिला प्रकृते : क्यूक अर्थे प्रतिस्कृतके कारण ही परलेकने साचित कार है। किराबा किय केनावृक्त नहीं है, उसे समाववृद्धि नहीं कर होती. केक्के किया एक भी नहीं निरस्ता । इस्तों (के जीव जीरकार-मुद्रिक काल और वैर्थ-मे ही केनी समाने पुर है। क्रिय कहा अहर क्रेमेनर इन्हें क्रेसा है, इन्हें अधियान बहुता है और अधिनाम नरवाने से बानेवारत है, इस्तीओं में हर हीनोबर साम करता है। होक, पन और अधियान—मे अभिन्योको सुक-पु:कार्ग झाल्यार मोहित कारनेकारे है; materia marcia maritar des mercar de pre-सम्बद्धे साम्रोकी चाँति नेसका है तका अर्थ, बंध्य, बोस्स, रोकार, कृष्ण और चेत्रका परिवास करके—निर्देश क्रेकर इस प्रश्नीयर विकास है। जैसे अपूर पॅनिक्स्पेक्ट मृत्युसे कव न्हीं होता, शरी प्रधान मुझे की इसलेक का परलोक्यों कुल,अवर्ण, त्येण कवा कुसरे किसीसे मध नहीं है। मान्तजी | पैने च्यान और अक्षय हम करके चड़ी हान पाया है, इसरिन्ये क्षेत्र अलिका क्षेत्रर भी पूत्रे द/पाने नहीं करता।

कृषिको पुर-निकास ! यो सामांके तरवाचे स्त्री करता. विसवत कर संख संख्याने पढा रहता है तथा विसने परकार्यक रिक्ने कोर्ट निर्देश क्षेत्र नहीं बनावा है, कर पुरुषका कारका केले हे सकता है ? यह बतानेकी कृपा की किये ।

वीकार्यने बद्धा-व्यक्तितः ! सद्य गुरुवशीवर्धः गृंधाः, बद प्रत्येकी क्यासन और प्रात्येका समय-न्ये और

भार्ति पारकोर संबद्धान प्राचीन प्रतिकृतस्य प्रकृतन् दिना क्षात है। एक समय प्रस्ता पृथ्वि प्रकृतन-प्रदेशकी प्रकृतने अन्तरपद्धी परिपूर्ण कृषे कालो स्त्रह करूने रक्तनेकाले हेर्जी मामानेके पात्र सामा उस्ते का उत्तर उस किया-'भरवन् ! जान जान गुर्जिते चुक और प्राणी है क्या में असमानको अनिया एवं पुर है, असः अस्त के प्रवेतको पूर करें। इतकों में कहा-ने कर्माल कर्म करने को है; सिंहा के इक मेरे रिज्ये एक-से हैं। प्रच्येंसे विस्तर्थ क्याक्रमाने नेटी प्रच्ये अन्ति हो सकती है, करनार में दिखन नहीं कर पास; को अस ही निवास पार्टी पान है। प्राप्त अलाग निवानीया पार्टीकीयो और होते दिल्लों है एक 'यह तेता है, यह तेता है' देख आहे हर बैक्स मोनोर्ने अन्ते ही विद्यालको बेह्नाव्य प्रतिकार करते है। दूसरे और विकिए प्राथमित प्राय जीते-जीतिक प्रयोग किल क्षेत्र कर अवलोड कुलीय कुलेंगे दिवा है और इसी अपने-जन्मे कालोकी जांगत करते हैं: हमर में में अपने क्षानको के नेतृत्व है। हेती क्याने करवी और अन्तेत्वो प्रभावकाने संदा देशका को कानान-प्रतिके स्थानक क्षीय-बीक निक्रम नहीं हो पत्ता । यह पत्ता कर होता हो केंपार अंतर (भी एक है होनेके करक) उन्हालको सन्हाने क्षा बाल; किंदु बहुत-से प्राव्होंने विरावहर सेक्कानंत्रे अस्तर गृह क्या क्षारत है, विवासे अब का संस्थानक कर काल है. इस्तिको में अन्यकी प्राप्ति अल्या है, प्राप्त पार्टर पूर्व केन्द्रेर धाराविक गार्गका उनकेत महिल्ले ।

करवर्तने का-अवार । जातन कर है और क्रायोने क्ष्मी पुरुष्क-पुरुष्क कारपरा को गयी है। हर पुरुषी हरूप रेक्टर प्रत सकतो प्रवासीकारो आहे । या करो आक्रोडेट स्वकृत और कुल आहें विश्व-विश्व है। इक्क बुद्धेले हिन्तर कारोपर के समीतन अर्थात अर्थाद सेवावर्गका विद्यालया सन नहीं कर पाने । कुछ सुरावार्त विक्रनोने ही सामानेके काम तत्त्वको द्रीय-द्रीय सम्बद्ध है। यो अन्त्री तत्त्व कान्यक मारोकारक और संकार सीत है, को है केंद्र कहा है। मुक्तीयर अनुबद्ध करना, प्रमुख्य रचनेवाले वह मुख्यीको स्टब्स देन क्या वर्ग, अर्थ और क्यानक संबद्ध करण—पुर सक्यो निवार पुरान क्षेत्र काहो है। यहा-स्थाने कुर साथ, पुरावकरों का निरमा अनुहार करक, सन्वज्येके साथ सुकार सहकारका क्रीचा-सीव्य पारांग करणा, राज्यूनी प्रार्थिकोचेंद्र प्रति ब्योचार और व्यवद्वाराने सराव क्षेत्रा, मीडी वाली घोराना, क्षेत्रप्रको, निकरी और अभिविक्तीको उनका पान केव एका परच-केवल करने चैन्य जातिकोच्या त्राल न सरमा—च्या क्रेस्ट्रा निर्देश सम्बन

क्राच्यानके अनोच स्थापन है। इस विनामों की देवोर्नि कहा और । है। साथ ओल्प्य भी क्षेत्रकार है: विक्र सरकारे क्याचीकारो करण करिन है। मैं के को है तक करण है, विससे प्राणिकोच्या सरक्या द्वीरा होता हो । अहंगारकार स्थान, प्रधानको केवान, केवा क्षेत्र, अवेको स्वयन वर्गका पाला. वर्णवरकपूर्वक के और वेदानीका प्रकास तथा करेंद्र विकासको कारोबाँ एका बारवासका समोप सामा है। निने कार्याय-अभिन्दी हका है का मनुष्यको हुना, उन्त, रत, एको और क्या—इन विक्योंका अधिक रोवन औ काम काहिते । राज्ये कुम्मा, दिन्ते स्रोता, आत्मा, कुमारी, करें, अधिक क्षेत्रक करना क्या क्षेत्रकारे विरुद्धार पूर क्य-ने का को हैन क्यूनेवरेने किने स्टब्स है। क्रारोको निम्ह करके अपनी सेक्स निज्ञ कारोका प्रकार न को । कामारक करुबोची समेक्षा को अपनेथे विशेषक है, यह कार पुरुष्क्रिय है जार होते कहिये। पुरुष्क्रिय स्टूब्स है अधिकार अवनी परीचके पुरा बीचा करते हैं। के अवनेने पुणोची वाली हेल कृतरे गुणनाम् पृथ्वीके क्षेत्र वातवार अवहर अक्षेत्र विकार करते हैं। यदि सभी से पूछा का सबसे तह है कारको अकार अक्षेत्रे व्यक्तुओं भी अधिक पूर्वी कार्य राने, तिथु को दूसने विभवेची निष्यु तथा अपने प्रदेश नहीं करका, ऐसा सर्वपृत्रसम्बद्ध निकृत् ही स्कृत् करूका मानी हेक है। क्रारेटी चीका इसे मजेहर पूरावा किया जीते ही महत्त्वाचार अनुस्तरानी अने स्वती है एका पूर्व भी किया कुछ पाई हैं। राज्यको सबोद एका प्रधानित हो बाल है; इसी प्रधान केकाने बहुत-की देती कराई है के बोरली की; किए अकी नाने जनकित होती चार्च है। यून्ते न्यून बेजल अन्तर्थ प्रकृत करनेने ही संस्तरने क्यारि जो स समझ, सिन् निहुन् कुल कुलाने किया को को भी उसकी सर्वत असिटींदू हो सामी है। क्षे का कंप-कंसे कही कर है भी का कर है सही है अर्थन् क्षेत्रमें अन्य अस्त की हेता; विस् असी सर वेरिके स्थानेका भी संस्थारने प्रस्ताविता होती चर्ता है-अवदर तानों कर प्रचार पहल है। कोई श्रुतीयी कई ही व्याप-को अस्तर को अने सुन्ति प्रत्यक है परिचन हेते हैं; इस कारण अर्थ सीन द्वार (३००) की क्रोब करते हैं, सूत्रे हो तम प्रामिनोपंड रिप्ने प्रामाध्ये अधि हो जाको पान पहली है। वृद्धिकर पूका प्राप्तकर होनेगर भी किस पूछे विश्लीको कोई उन्हेंक न चरे, अन्यामध्येक युक्तिक भी किसीके प्रस्तक उत्तर न है, सहस्री भौति स्वयत्त्वय सेहा हो।

> म्युक्तको सङ्घ कर्वने रहने सुनेकाहे सहयु-महास्त्रको स्था क्रथनिकानम् अतः कुल्लेके क्रमीय निकास बारनेका विकास काना कारिने । जार्ने कारों कारोंक करोंका परस्पर समितान

होता हो, पर्य हेक्की इन्हान्यते पुरुषको नहीं करा पाहिने । कियो कर्पका अगर्भ न करनेकरत और के पुरु निर्म कर कारीने संदर्ध पानेकाल पूजा की पुरुवकारकोचे पान रहतेसे क्ष्म और प्रशिक्षेत्रे संसामि कोसे प्रकार करी केस है। की जर और अधिके संस्तिते करण: चीव और उस सर्वतः अनुसर क्षेत्रं 🛦 स्त्री ज्ञार प्रत्यास और पारियोक्ति सक्षरी कृष्य इसे पान-क्षेत्रोक्ता संबोध हो जात है। विकासकी (मूल-वर्ष और असिवि आविको क्षेत्रर करानेके बाद फोजन करनेकरें) पूजा राजकानकी ओर क्षी न रक करके हैं केवन करने हैं जिल्ह को अपनी रसनमञ्जानिक स्थापना कानु-कार्यकृतः विकार रकते हर भोजन करते हैं, उन्हें कर्मकारों की कुए सरक्रमा पार्कित : मही प्रदान अनामपूर्वक प्रत करनेको पुरसेको करक क्रमेश करता है, अवस्थानीको ३६ देवका प्रीवयन का केरा पाकिने। पहलि स्रोप किया किया अध्याने ही विद्यारीयर बेमानेक्स कतो हो, वहाँ औन क्षेत्र ? वहाँ स्वरूपी महर्पाने अनः वर्णको पर्याक केंद्र करते हो, अन देशको स्टेप कर्ष काल केव ?

पंश आणि स्रोप पालर्ग और प्रमुखे तील क्रेपट बर्माका करते हो, कई पुरुवका बहुत्वकोचे कर समान रिवास करना साहित्। विक देखरे पहुच करोड रिने वर्गक अनुस्थ करते ही, वर्ग कभी र के; क्वोंक कार्या नेपाली पानी होते हैं। वहाँ जीवनाहरूके रिन्हे होन भवकारी वीविका कार्य हो, नहीं राजा और उसके सेक्बोंने कोई अक्तर र हो ३४३ कहि कुछ अस्ते है पाव कुछानकी प्राप्त हो पावनी।

कुट्रचीकरोंके काले ही घोषण कर हेते हों, इस राहको आनी पूजा ह्यान है। च्याँ करेंने अन्य एकनेवाले समयनवर्गी श्रेपिय प्रसाम से यह पराने और प्रसनेके कार्यये नियस से क्या कर्षी खेलेको पहले भोजन कराचा करा हो, जा देखाँ रिकार करना जीना है। नहीं कहा (जीवहेर), कना (ब्ब्रह) क्या क्याकर (इन्हरून) का नश्मिती अनुहार हेल हे. व्यक्ति होन दिन पनि है दिहा की हो. वहाँ क्षांको एक दिवा काम और साबु पुरस्ताक सम्बद्ध हैत्या कार है, वह पुल्लार पहल्कानेक बीच निवस करवा वार्किने। को विकेशिय पुरुषोत्ता प्रतेष और साकु-महत्त्वकोचे प्रवि अवस्थार पत्ने हो, उन लोधी और अवस पुरानेको निरा हेवाने आरम्भ बारोर रुष्ट्र दिया बारा हो स्था कार्यक कार्य एक अर्थन्यकार क्षेत्रक कर्यान्त्रार क्षेत्रकार्यक प्रतन करना से और सन्दर्ग कामगाओंका जाने (सन्तीलार्) हेकर मी नियन-घेनले नियुक्त रहता है: वर्ष किन विको है निका करना करिने; क्लेकि एलके कीर-सम्बद्ध केले होते हैं, बैदरी की सामग्री अपन भी बोदी हैं। म्ब अपने प्रत्यालका समय अस्तिक हेनेवर अपनी प्रयास Distance and Dis

का । एको उनके अनुसार का की केवलानिक संबोधको अलीव विकास है। विकासको को आसामाज्यासमाध्य परिचयन से से की कामी। से इस अध्यक्ती श्रीती कुकर नोर्मका करावा और प्राप्तिनोक्षेत्र क्षित्रने प्रम् स्टाइवे कुछ 👢 अर पुरस्का सम्बन्धन हरके अनुहत्को इस लोक्स

### अरिष्ट्रनेमिका राजा सगरको मोक्षका उपदेश

पुर्विकोर्सने कुल --विकास । की-र्वक रूक विकार अध्यत | चेनकुक होकर १५केका परान कर सकता है ? एक दिन पुर्णोते पूर्व होनेपर वह जार्स्सकेंड ककरते हरवाय क सकता है ?

प्रेमपूर्वी सहा-इस विकार्य राज्य समस्के प्रश्न करनेपर अविद्वनेपिये को अपन दिवस का, यह आसीन इतिहास में तुन्हें सुनकीया ।

तगरने पूक-महान् । क्षेत्रकाहित्व सर्वोतन स्वय क्या है? क्या करनेते कन्त्रको का लेकने है परव सुरा (मेश) की जारि हो सकती है? बिस उस होन और सोमर्ग रिष्य पूट सकता है? कुई पढ़ कानोबी ---

क्रिकेट बार्ट हैं—स्त्राचे का क्रवार पुत्रनेतर समझ क्रमानेकाओं केंद्र व्यक्ती (क्रियुनेनि) ने इसमें वैकेल्यांतिके कृत कामान कामो इस जातर काम कादेश किया—'सम्म । संस्थरने प्रोक्षका है सुक्त बकाविक स्वा है, पांतू को कर और खनको उपर्धनमें काल प्रता एक और पञ्चलेने अलब हे का है, जा गूर्न प्रमुखने अलक बचार्न 🗯 भी हेल । किल्ली बाँद मेक्बोमें आरफ है, उसका मन अक्रमा होता है। ऐसे पुरुषकी विकास कामी कठिन है। केंद्र-कथाओं केंद्रे हुए जालगीका मोख नहीं हो सकता। अब मैं हुई सेक्के सम्बन्धेका परिचम देश हैं, कुने। रूपाचन पर्वाची ने करें कान समावत और बाल देवर स्मनी व्यक्ति । तम न्यानपूर्वक इन्हिनोसे विवयोक्त अनुसन



मार्क जारे अल्ल हे चाओ और आरच्ये साथ नियारे को; प्रश्न करन्यी परक र करे कि संतर हो है क जी ? प्रिक्तिक निरुपेक्षेत्र प्रति को कौत्यान है, उसे निर्माण प्रतारों मंत्रि विवये और विवेद्याने के भी औरक पहले आप हों, जामें समान नाम रको---राज-हेर र करो । एक पुरूष सुची होते और संस्तारचे निर्भय होचार निवासे है। निरह विकास किए विकासी अस्तरक होता है, से पीटियों और क्रीहोकी तथा अवस्था संख्या करते-करते हैं जा है असे है। जल- को जासकिसे परित है, के ही इस संस्करने सकी है: असरक मनुष्योका से क्या ही होता है। बारे इन्हरी कृदि मोक्षमें लगी हां है के तुने सम्पनित लिये हेनी विरक्त नहीं कानी साहिये कि 'में मेरे किया कैसे खेले ?' साली सार्व करा हेता है, सर्व बद्धा है और सर्व है युक्त-इ-स जब पुत्रुको प्राप्त होता है। सनुष्य पूर्णकर्मके कर्मीक अनुसार ही केवल, मंत्रा तथा अपने काता-विताके हारा तंत्रह किया हुआ वर प्राप्त करते हैं। संसारने के कुछ विस्तात है, का पूर्वकर कार्योके परनके असिरिया कोई वर्षा नहीं है। पुरुवानके संपन्त बीठ अपने क्योंने सुरक्षित क्षेत्रर अन्तर्ने क्रियते है और विकासने उनके प्रसम्बक्ते अनुसार को कुछ चीन निका कर दिया है, जो जार करते हैं। को सर्व ही CarDeal इहिमों) निहीका लोख, परतना तक अधिन है, क स्वयतेकी रहा और पैचन करनेका अधिका को करत

क्यों हो हो भी कर और सुक्तों सक्यारे को किया नहीं क्रेक्स के तुन्हरी क्या काका है ? इस बातगर क्रमें क्रियार कते। इच्छरे वे सर्व-सम्बन्धी व्यक्तिः भी रहें और इनके करण खेलवाचा कार्य समझ न भी हुआ है तम भी से दूप एक हिर हुन्हें होहबर पर कार्य है । अध्या का बोर्ड सकर निवंत इस रहेकारे बाल कारण, उस राज्य वर्ड यह सुनी होता क द्वारी ? इस कामी हो इस नहीं कर सकोते। जब: इसका कर्ष किया करे। हम या करते वा चौकित को, इन्हरे कुटुक्का जानेद कुछ अपने-अपने कर्मका है। का केरेक—ऐस कारक हुई अन्ये क्रमान-शक्तरे ere mer milje i bruck afer faceur \$7 perus कार्यकारि विकार करके कुत निकारके साथ अपने करको यंश्वने सम्बन्ध से ।

'अब आनेकी बातवर की काम के-विकर्त क्षात्र) विकास, स्रोध, स्रोध और योद असी, पासीवर विकास वा सी 🕽 का रूपराच्या पुरुषो पुरु 🛊 स्वयुक्त पाहिने। यो चेत्रक प्रकार काम पुरुष, मानान, स्रोतंसर्ग तथा कृतक अरोको अनुस नहीं होता, यह भी जुरू ही है। यह शह चेन्युक होना की ने अन्तर्भ है एतत है-की नेन्द्रन्द्रोंको पूर्व देशक, पूर्व प्रस्तु पूर्व है। भी अधिकारिक वाच्या, पहलू और पार्टीके बारवाके डीव्य-डीवा कारण है, का की इस संस्थाने पुरू हो है। की इसारों और बारेड़ों नहीं अवनेते एक अब (सेरवर) को है पेट परनेके रिन्ने पर्यात रूपक्रम है (उससे अधिन्य संग्रह करना नहीं प्रकृत) प्रथा को के को बहुत्यों की और विकृतियाओं नक्को है जन्मे देने आकन्य करता है, के नुत्र है क्या है। को बोर्ड-में साथने हैं संबुद्ध पता है-सियो जानके अञ्चल पान पू जारी सकते, विस्तारे मेंको प्रतंत्र और चुनिको क्रम्य एक-तो है, यो रेक्सी क्रम, कुरावे को कर्या, करी क्या और पायरच्यो समान पायते हेराता है, states upphilite states à mis facile finè gui-्या, साथ-सानि, शय-मरावान, इन्छा-देव और सथ-खेट करकर है, यह राजंक पूरा है है। यो इस देवको रख, मस, मून क्या स्थान-से केन्नेका राजाना सम्बद्धाः 🛊 और इस कामो कथी जी भूगमा कि मूहक अन्तेनर पूर्वियों पह करेची, कार का बार्वने, के कारक-सारक को सीमांकीन हे करण, करर में हुक जारती, पुरुषार्थ जा हे जारत. व्यक्तिके रहत नहीं पहेल, कान बहरे हे कार्यने और प्रकारिक क्षेत्र है जननी; यह पुरूष मोह इस्त करता है। 🛊 ? सुन देखते हैं। और बच्चनेक पारी-से-पारी पार भी । पानि, हेमसा और असूर सम इस लोकते अस्तेवसको बस्टे गर्ने; इवारों प्रमानशार्षी समाजेको पृत्नी कोइका करा पहा है—इस नामको को सब कर रहाता है, यह कुछ है। पहला है।

'संसारमें वन कुर्गन है और हेम सुनन। पुरुषके प्राप्त-पोचनमें की नहीं जून कर उटार जाता है। इसमा है नहीं, सुनहीन संसार 800 किप्टीत मुख्येक्से सहस्रोहे की पाल पहला है। इस प्रकार संसारमें समितांक पहल है दिसानों देश है—जा प्राप्तार की और समुख पोक्रका

अवार जी करेग ? प्राथमि अवारेकको प्रकार होता ये राजूरी करण-काल्यो असार अध्यक्त है, का सम अध्यक्ते कृत है है। मेरे इस क्ष्मको कुन्नेक स्थान् हुन्तरी कृति मुक्तकानो विका है या संन्यासामन्त्रे; जा है सुकार मुक्ति नीति आमान करे।'

रामा सपर गरिष्ट्रनेतिको उपर्युक्त उपरेक्षको सुरक्तर केक्क्रेपकोची मुख्येसे मुख्य क्षेत्र प्रकारत १८०० वसने राजे।

### राजा जनकको पराश्चर मुनिका उपदेश

पुणियोरने कहा—सिवान्यः । क्षेत्रे अनुव प्रोनेनो पर जाँ बन्ता, उस्ते शक्ष अवन्ये कचन सुननेनो मुझे गुद्दे। चाँ होती, इस्तरिन्ये पुरस्ता (—पुण्य करिनन्स कार्य को को उसे इस स्थेका और परानेकाने परम करणाज्यां आहे। हो कच्यां (?) बाही कारनेकी कुमा करें।

पीपानी का—पुनिश्चिर । इस विकास जी में पूर्वकर् पुन्ते एक जानेन जाने सुन्त रहा है। एक कर न्यानकारी



रामा जनकने प्रकारत पराकारवीसे पुता 'मुन्तियर ! स्वीत-तक मार्ग सम्पूर्ण प्राणियोके सिने इस श्रीक और कालोकने भी सारमाणकारी है ?' रामाका यह अस सुनवार तकारी प्रकार मुन्ति उनकर अनुत्रम् करनेकी इसको स्वापः।

रक्ताची केले—स्वत् । वर्णका अस्य(पा ही हरू लोका और करनेकार्थ भारतकार कारनेकार है। करोबी प्रत्य विकास कुछ कर्मनेको सम्बन्धि होता है। सबी आसम्बाते वर्णे अक्ता रक्तार अयो-अयो क्रांकित argure auch fie streck aber-Realpie fieb urr ज्ञानको क्रीन्यक्ता कियान है (आहारको दिन्हें हुए देखा, spillerbe firth une firm, dreute first wiell auffe afre पहले रिन्ने होता) । प्रमुख विद्या कारी करना होते हैं, कारीह अनुकृत जीविका की इकानुकार करा है करते है। विदर्श पूर्वकार्य क्षम कार्यका अनुसार भूति किया है, उसे सुक व्ह जिल्ला । क्षेत्रकानोः प्रताद समुख्यको पुरुषकारोते ही तुकाकी आहे। होती है। कहरे सचाने को कर्म कही हिल्हा नवा है, जानक पाल पार्टि मिलता । स्वेग पत्ना इस बालको का रकते हैं कि (का, कानी, कह और हानोंके हार किये (ए) चार जनतर्थं कर्ष है इसरे क्यां फलकी प्रति। करानेकारे होते हैं। श्लेककारके निर्माद और यनकी ज्यप्रिके रिजे वैशिक कालोको प्रसान मान्य नवा है। सनुवा नेट, पन, साथी और कियाके द्वार पार अकारके कर्न करते ी: उनमें मिलका बैचा बार्य होता है, उन्हें मैसे ही फलकी जनी। होती है। कार्यके प्रत्यक्रमध्ये कार्या केवल शुक्त, कार्या केमल कुन्न और कची केने एक शास जार होते हैं। पुरुष या कर कोई भी कर्म करों र हो, करू मोने विना आका मान नहीं होता। जनतन पहुन्न पापके पास्त्रम शुक्रके भोनते कुटबार नहीं या साथ, तथाना संस्था पूजा अक्षमध्ये पति विका स्थल है। यह पारतनित हुन्तस्य योग समझ हो जाता है, तम दूजा अपने पुरस्कार्यक परम्बा करमेन आरम काळ है। यह पुरस्का भी कुछ हो नाता है, का बिर का परवाड़ कर चोगता है।

इनिल्लंबर, क्षया, कैर्व, तेब, संखेब, सरायाया, राज्य, अवेदर, क्योरकार अध्या क्या प्रकृत्य-ने सा पुत्र क्ष्म केरेकारे हैं। जन्मको जीवनर्गन्त कर का कुनाने ही जासक व होका सपने याच्ये कामानके व्यक्ते सगानेका उत्तव करना चार्डने । बीच ह्यांस्थे किने हुए सुध अध्य अपूर्ध करेको नहीं योगार । यह सर्व केल करता है, बैस्त करा पाता है। मनुष्य कुरोचेंद्र शिख कर्मकी निष्यु करता है. जो इस्ते भी का कर्न की करना साहित्रे; क्लेकि से क्रारेकी से रिच्छ करना है, किंद्र कर्न केरे ही कर्नने रूप कता है, करका बगतने क्यान होता है। इस्पेन्ड हरिन, (प्रशापक्षा विकार र करके) ३० प्रक्र क्रमेकल और कारते शह हुआ प्राप्तम, वेरोजनार वेरच, सारकी पह. शीलाहित निकृत्, क्यूबालक वाला व कानेकाल कुलीन, हुराखारियों जी, विकास के बेरी, के बाद अपने दिन्ने के बाद बनानेकाल पहुन्त, नृत्तं वक्त, राजाने हीन का स्था अभिनेतिक होका उपको और वेद व रक्तकेवार क्या-ने का बोक्टे बेच है।

राजन् । अन्यु कृतेन नहा है, इसे पायर अञ्चलको जीने नहीं गिरस्य करीये; अधिनु, कुल्कानीका अनुसार करते हत् की इस्तेन्य प्रचा करना वाहिने। पुरुवक्रमी ही नक्न काम नर्जमें जन्म पाल है; पायोके दिनों मा असला सुर्वेत है। मह औ न पायर अपने पापके हरा अपना है कह कर लेख है। जनकारों जो पार कर कर, जो तरकांड हरा जा कर है। नगोरिक अरमा विका हुआ यह करावा है कर देश है। अतः पुःक् देनेपाने चनकर्मका काची लेका व बारे । चनका फल कितना कड़ाल है, इसे मैं काम्या है। उसने प्रमाणित पनुष्य अन्यसाये ही आरम्बुद्धि चरने समात है। क्रिक् रेप हुआ कर क्षेत्री सक्त हो जला है, सिन्दु को करहे रंतर्ने रेक हो व्ह नहीं समेद होता ( इसी त्रद्ध प्राथको ही बहले रंगके समान ही समझन सक्षिते। को सन्ते सार-सुक्रका पान **क्ष**रवेके प्रसाद सरका संपक्षित करनेके तेले पुर: कुळ कर्मका अनुकार करता है। यह उस क्षेत्रका १४५-५७६ कल योगा है। अनुसार के दिल केरी है, क अदिशासका पासन करनेसे हर हो जाती है; फिनू संस्कारो किये हुए पायको क्या की नहीं हुए कर सकती-हेस वेद-ऋषांके जननेवाले ज़ब्दानोका कवन है। पांतु में ते ऐसा पानता है कि पुरुष का पान जान-सुरक्तर है क अनवानमें, साम्या कु<del>क्र-१-५क</del> फल होता ही है। देवला और मुनियोंने को कर्म बिजे हैं, कर्मान पुरुषको रूपका अनुकरण भी करन चर्कि रहा सरकर उर क्योंकी निन्ह भी नहें करनी व्यक्ति । यो पनुष्य पनमें जून स्तेष-विवासकर 'यह काम मुक्तरे के क्रकेमा या गरी ?' इस बातका निक्षय करके पुणवर्तका अनुद्धान करता है, यह अवस्य हैं अपनी पासई देखात है।

नाः एकामे व्यक्ति कि नाने सारावरित सहस्रोको नीते। प्रमाण नाकपूर्वक कार्य करे, जार प्रकारके कार्यक अनुसार करके अधिरोकको द्वार करे एका वैदान होनेकर कार्या नावका का अधिक अध्यानों कारों वाकर के। एकर्! प्रसंक पुरस्को इधिकांकची और वर्गाका होका सम्बद्ध अधिकोधी अध्ये ही संबद्ध प्रमाणक व्यक्ति कार को विकार, वर और नाक्याने स्वयंत्रों महे हो सम्बद्ध कार्यक्रि कुछ करके व्यक्ति। गरेन्द्र ! स्वयंत्राक्य तथा अक्टे कार्यको हो सम्बद्धे कुछ निकार है।

केंद्र पुरुषके किया हुआ कर और केंद्र पुरुषके प्रदार हार जीवा,—हम क्षेत्रेका पहला बरवर है, से दी जीवा, स्क्रीयार कानेकी जानेका क्राप्त क्रेकर कुन देना ही आधिक चीन कन रहा है। से वर नाको तह हुआ है और न्यानों ही बहुन्य गया हो, जो वर्गींद जोशको प्रापृत्वेह क्यारे रक्षण प्रतिके-न्या कर्मलया निवस है। वर्ष व्यक्तिकोच्यो कर-कर्वक प्रश्न करका अवर्थन नहीं करका कारिये । अध्ययेने सम्बन्धि अक्षानेका विकार की समर्थे नहीं राज्य व्यक्ति । यो (पीरान्यता विचार कार्येत) अतिनिक्ती केंद्र का परन विकार हुआ कर परिता परवर्त अर्थन करता. को श्वांको केवन हेम्बे समान परन प्राप्त होता है। पहला एक र्यंत्रोको कर-यूर और परोधे स्वीकीका कुमन विकास का और इसीनों उन्हें का विरोध जात करें. किराब्दी राज रचेन अधिराजना करते हैं। महाराज सैन्यने भी कर और वरोंने ही बादर मुनिको संस्कृ विश्व था, जिससे वर्षे क्या रहेक निरम् । अरोगः मनुष्य देवता, अतिथि, कुरवर्ण और नैक्टोका क्या अपना यो ऋषी होका सन्द रेख है आ: जो मा धारते पुरू हेनेका का काव क्यांचे । केट्रेका स्वाच्यात करके क्यांच्यांके, बाजेड अनुक्रमते केम्प्राओके, ब्राह्मी निर्माणे स्था प्राप्त-कारामे अतिविक्षेके जानमें बुरुकार होता है। इसी अवहर वेद्यालीके समान-माना, बहुतीय असके धोजन रण क्षेत्रेकी एक करनेसे पन्न अपने प्राप्ती गुरू होस है। पुर्वाद पुरवानी पाल-पोक्सका आरम्भो 🛊 प्रमान करना चाहिने; इससे उनके प्राच्यों भी मूर्ति हो कारो है।

व्यक्ति-पुनियोके पास या नहीं वा, मिर भी से अपने

प्रकारों है सिख से नवे । उन्होंने विकारवंद अधिकेन करके सिद्धि प्राप्त की थी। अस्ति, देवल, जन्म, पर्वत, कश्चीकन्, समाजिक्या परक्राम, समयाको सन्ता, स्रीहर, बसर्द्रोड, विद्यारिय, स्रवि, संस्कृत, इरिएन्स्, कुम्बावर उन्ह क्षालय आहे व्यक्तिको एकतारिक क्षेत्रर प्रकेशको अवाभीते विश्वक साम किया एक उन्हेंको कुनते तराम करके जाद सिद्धि क्यों। यो एकके बेन्द नहीं है, में भी विकास राजर करके एकरीय तंत होकर लागिये प्राप्त है को। इस सोवार्ग निकारण जानक करके किसोब्हे जी काने अनुस्तरको साहा गुड़े रहती गाउँने । वर्गक करन करते हुए के धन कहा होता है, बढ़ी तक बर है। कारधारते प्राप्त होनेपारच पर यो विकारके घोष्ट है। प्रस्ती हकारे सराहर वर्षक कर की करन गाविते। समेन । से प्रतिदेश आधिके परला है, यह बनाना है और वह कुल करनेवालोर्ने केंद्र है, क्वीकि सम्पूर्ण के (रहित्य, अञ्चलीय तमा नर्जुवल—इन) बीन आरियोंने ही विका है। विकास संक्षांतर कर्ण पूरा नहीं होता, वह प्रकार (अधिहेत प करनेपर भी) जारिकोणी ही है। सरामार सम्पत्नित होनेपर अतिक्षेत्र न के उनके से भी अच्छा है, किंतु सक्कारक उनक कारों केवल अधिकोट कान्य प्रात्नी कर्त्यानकारक जी \$ । अपि, स्ताना, पाना, साथ हेनेवाले निवा एक पुर—इन प्रकारी मधानोत्त्व तेवा कारचे पातिने। से अधिनानका स्थाप करके कह एक्नोकी केन करता. विद्यान क्रे कामनहीन होका सकते तैयकाको देखता, कालकीले रोता हो वर्गका अध्यक्त करता और इसरोबा करन औ करता है, यह इस रवेकने केंद्र है तक सन्दर्भ भी उसका सावर चले है।

पुलंग निन्ने तीनों क्योंकी लेखा है ज्यान वृति है। वर्ण यह प्रेमके साम उसका परन्य करे हो वह को वर्णक प्रमान है। मेरा हो ऐसा निवार है कि कर्नक वाल्यकारे सामुक्तिके संस्तिये दावा हर अन्तर्भ अवक है, निर्मु पुल्योको स्थान निस्सी भी दावाने ज्ञान नहीं है। सामु पुल्योको स्थान प्रमाने निवा कर्मका प्रमुख भी प्रतिभावता हो क्यान है। वैद्य प्रकार पैसे रेनमें रेग करता है, क्या ही अस्त्वन क्या हो क्यान है। इसी प्रकार नैसा सबू निवा करता है, वैद्य ही एवं अपने करता करता है। इसलियो पुल्योको क्यान आस्त्रत करता करता है। को निवान सुका और कृता दोनों अवस्थाओं प्रमान कर्मका है अनुहान करता है, वही सामको जानको कारता है। व्यक्ति नियतीन कर्म वहि स्थेकनों क्यून स्थानकाका हो हो है

भी मुद्रिकन् पुरुषको सरका सेवन नहीं करना पाहिले; क्योंकि अस्ते अपन दिव नहीं होता। से एका दूसरोब्दी इक्तरें मेर्ड क्रीनकर कर करता है और इचान्ध्री रखा नहीं करता, पर करामाओं दिनों ही दानी है, जो उसका कर करन न्हें निरस्त । करूमों से व्ह राज नहीं, स्टेर है । से राज महिनीय प्राप्तानवेका स्थापन भागोर क्वें अपनी कवित्रोह अनुसार जिल्हा है साथ कान कर करता है, उसकी उत्तम कारको अन्ति होती है। कर्न हो हाहारूके पाछ सरकर औ रोखा करते हुए को क्षेत्र विश्व करता है, यह स्त्रीतन सारा पक्ष है। पायम करनेना हिने हुए कुमको विद्वारोंने सम्बन कार है और अवोत्तर एक अध्यक्ति कर के कुछ दिन् नाम है, का कुनके सामगढ़े पूनि सामन महते हैं। प्रयुक्त वंतार-सा-गर्ने कुत कुत है जो नाम जनानो जननेक्षार क्रा हाती पर करनेका प्रथम काम काहिने। विना तथा भी क्यानो प्रकारत विले, केल उद्योग करना जीना है। प्राप्तान इत्रिक्तांच्यां, अधिक पुत्रमें विकास प्रांती, बैक्स करते और an केल-कार्यने क्यूनई रक्तांनी क्रोमा पता है।

क्रमण्डे को प्रतिकार किस हुआ, इतिको पर पुरुते क्षील्या क्या पूजा, बैहको पाल न्यायुर्वेक (योगी आदिसे) क्ष्मक हुन और सुक्ते को रेक्स प्राप्त हुन बोहा भी पर हे के हो उस पान भार है। इस भारत परि वर्ग-कार्यों अचीन किया जान ही यह नहान् पहन हैनेवाना होता है। प्रकार परि मेरियानेः अपायरे क्षतित अथवा पैरूपके करेते प्रोचन-निवर्षंद्र को से परित्र की होता; बिजू का वह स्कूतें क्लेको अध्यक्त है हो सहक्रम परित हो बाता है। जब पह केवायुरियो केविया न पान हके से उसके रियो भी स्थापार, प्रकृतकार कथा किरावास्य उपहिसे बोचन-निर्वाद करनेकी बाता है। रेक्पकुरा जनक वा केल दिवास, स्कृतियेका कार करण, जीता और मोश केंग्रध्म जीविका करवाना सर्वा रोहे और चंदहेवी किसी करना—ने एक काम निव्हरीय हैं, 🚌 भी नहीं पूर्व परस्पाते अस्ते बरमे वे काम न होते आये हो के पार्च प्रभक्त आरम्भ न करें और विश्वके वर्धा व्हारेसे इनके करनेकी ज्या हो यह भी होड़ हे तो महान बर्म होता है। यहि निर्देश जान करनेके प्रशास कोई पूरू प्रपंत्रमें आकर कक्कान करने राने के ज़रूक अनुकरण नहीं करना काहिये। पुरुकोने सुन काल है कि पहले अधिकांक मनुष्य संपनी, वार्षिक और न्यायका अनुसार्य करनेवाले से। अस समय अवराजियोंको विकारमञ्जूषा ही हवा हिया कहा था। संस्काके कर्नुकोंने सहा कर्मकों है प्रश्नेता होती थी। शर्मने को-को लोग समूजीका ही शेवन करते थे, किंतु वर्षका यह

अनार असुरोरे नहीं सह नवा। ये कारणः व्यक्षार सम्पूर्ण अनारे हरीरमें व्याप्त हो गये। यह अवस्थारे वर्णको जून करनेकारे दर्श (कार्यक) कर स्मूर्णक हुआ। हरीर व्यक्त करेग अपन हुआ। कोच्यो कार्यका हरेगर समारे त्याप हुट नवी और विन्यापुक सहावारका हथेग हो नवा। किर मोह अवस्ट हुआ। मोहसे अब असी पहलेकी चाँचि विवारहार्थक व वही और समा लोग अपने-अपने सुवक्त हिंग्से हुस्सेचो व्यक्त पहुँचाने लगे। अब अहे रहमर स्थानेने विवारहार स्वय प्रकार ह हो समार । सभी मनुष्य केच्या और स्थानकोटा सम्बद्धार हरोड कार्यका प्रकार करने हमें।

व्या अवस्था मा वालेक सामूर्ण केवा वालान् इंग्डाकी प्राप्त गते। सा विकालि वेवारओं के सेवा प्राप्त हुए एक ही बावके द्वार तीन नगरेसाहित आकात्रों विकालेकारे प्राप्त असुरोको अस्यार कुमीक निर्मा प्राप्त विकालकार प्राप्त आकारकार क्या चीवक प्राप्त विकालकार मा। वेवारओं असी क्या वार होता था; विद्य अनकार् प्राप्त के को की बीवक वार आग विका को पूर्ववर के बोर प्राप्त का हो करा। अस्वकार स्वापिकी प्राप्त कर वेवार वेवारओंक सम्बद्ध अधिकित किया और वे सर्च प्राप्त के प्राप्त करा को कर। स्वापिक किया और वे सर्च प्रमुखेंक प्राप्त करा को एक स्वाप्त और वे सर्च प्रमुखेंक प्राप्त करा करा होता करा और वे स्वाप्त होता कोरे-चोरे स्वाप्त के अधिक कोरे-चोरे स्वाप्त के अधिकार हुए।

इसरियों में झाळके अनुसार जुल खेल-विकारकर सकत हैं, ज्यूनको हैर्स्यू से समस्य प्रश्न सुरुष्टे स्थाने, सिद्ध क्रिकारक कर्म ज्ञान केल बाहिये। क्षत्रिकन कर्म करनेके विशे म्बानका साम कर पार्श्वतिक वर्गने अन्तर श्रंक न करे. क्योंकि जासे कामान्य नहीं होता । राजप् । तुम की इसी प्रश्न निर्देशिक क्षत्रिक करकर कन्यु-करकारेचे होन रकते हर हता. कृत और पूर्वेका सक्तिक अनुसार काल करें। आ अनिकृषी प्राप्ति, बैर और प्रेमका अनुध्या करो-करो जीवके प्रमार्थे जन्म मीरा जाते हैं । इस्तीनमें कुछ (पदि प्रान्यान पायी हो हो ) सहजोने ही अनुसन कने, होनोने नहीं : बहुदान ! मनुष्योगे जैसी धर्म-अवर्यकी प्रकृषि क्षेत्री है, वैसी करकेल प्रात्मिनोपे नहीं होती । वर्णनरायन विद्वान् सम्बद्धे आनव्यक्रहे बेसरा हुना संसारपे विवास रहे । किसी वी खेळारे दिंहा न करें। का प्रमुखका पर कार्यक और संस्थानेसे सीच स्था मस्त्रको हर हो जाता है, जा क्रम्ब बहु करवालको उदा मेल है।

गृहसामध्ये पनुष्पका चे, केटी-करे, वन-केला,

को-का और क्रवेसे समय हो जात है और इस प्रवार अर्थातवानी सामन का अतिहित इन कहानीको वेसाता है: फिर इसकी अभिनामको नहीं सामात, प्रातिको साथेत मनमें का और है। कार्ने सकी हैं। एम-नेकंड बनीयत जेकर का कार कार्य समाव से सब है, से मेहकी करता ही। क्ष्मर को अपने बचने का रोगी है। रहिन्दी क्षमाना करनेकारे सकी रहेन को दीको है कराई सकते हैं और र्रालं हर से दिनव-पूज जा होग है, सारी बहरत से कुरण बोर्ज करा नहीं जानते । दिन कर्नेड परवर सोधवा व्यक्तिकार के बाता है और में अवस्थितक अपने परिवर्तकी क्षेत्रक काले रूपने है। इसके बाद कारे बादन-बीकाके रिक्ट करवरी इच्छा होती है। कहारि महुक सहस्ता है हैंह अनुहर कार करक पत है, जिस भी तह करके रिक्ते को पर है कारण है करा कार-कार्नेद सेवर्ग क्रूने सारेद बारण, सब उनकेरी कोई पर पाना है हो उनके रिन्ने पह परवेशार संस्कृ होता है। करने का रोकाने सरकार करना है के बढ़ शक्त हैना करना जन्म करण है कि क्यों अपने हेर्स व होने बते । बोग-विकासको सामान्तिको सम्बद्ध हो के हिन्दै को कुछ आवस्त्रक क्यांका है, जो है का करना है और अरोधे कर देन का है क्या है। कामने से युग कर्नक अञ्चल करते हैं और रूपे कुछ क्येनी हका जी रहते, का शंकास्त्रीको कुछ व्याप्ता प्राप्तिको हो स्थापन पहाली आहे। होती है। संस्तरी जीनोची हो जब प्रत्ये सेहके जानागुर की-पुर आहिका कर है करा, का कर करा और रोग तक विकास कर कारण पहला है, राज्ये वैदान्य होता है । वैदानको असन्यतन्त्रकी ीयमा क्रेसी है। विद्यालाओं कार्कोंके मानकार्यों पर प्रमात है. स्थापनार्थ अपने करने पढ़ बात बैठ करते है कि तर ही कारणाच्या सर्वत है। राज्य ! संस्थाने देश विवेची महत्व कृति है, को परिन्ता आहे, केर-पुत्रोची औरहे अहसीन होगार (सेमबर्ग प्राप्तिके रिम्बे) सपने अपूर होनेका ही निक्रम करन है। उसने समग्र अधिकार है, हीन करीड़ रिस्ते की (अपने अधिवक्षालें अनुसार) कावार विचान है। तुप ही विकेशित को नवेरिया सम्बद्ध पुरुषको समोकी प्रकृत स्थानेकाम है। पूर्वकारणे प्रमाणीले क्रायकारण और प्रसार रिवड क्रेकर राज्ये क्रम क्रे प्रस्थानको सुद्धि की वी । आदिता, बहु, बह, आहि, अन्तिनीकुम्बर, क्रिकेट, साम्ब, विसर, कर्मका, बढ़, प्रकार, प्रकार, सिद्ध क्या उसरे सर्वाचारी केवल करने ही निर्वासको प्राप्त हुए है । बहुतनीने पुर्वकालमें किन (मर्टिन मार्गि) महायोगो जना विन्य था, वे तपदे हैं अन्यको पुर्वा और अस्पादको परित्र करते हुए सर्वद विकास

है। मर्त्यक्षेत्रमें से पूक्त सबे-महराने उत्तम कुलोरे उत्तर देले जाते हैं, यह सब उनको उपत्यक्त ही कर है। तिपुक्तने कोई भी ऐसी करा नहीं है, से उपनक्त कुकल है।

अतः पनुष्य सुनामें के का कुलाने; कर और श्र**ि**हरी चारका विचार करके लोगका परिवास कर है। असंक्रेक्ट ब:का होना है। स्वेचको पन और इन्हिनोनें फ्रास्त होती है। प्राप्ति होनेपर अध्याससीत विकासी पाँति प्रमुख्यी पूर्वेह पह है जाती है। युद्धिका नाथ है सानेकर का विलेक को बैठमा है; इसरियो कुन्नाई असरधार्थे बहुनाई का क्ला करनी वाहिये : वो अपनेको क्षेत्र कल पहला है, हरे सक कारों है तथा जो बनके प्रतिकृत होता है, यह दू-प सहरतात 🛊 । तपत्रम करनेसे सुका और न करनेसे कृता क्रेस 🛊 । क्रा प्रमान का करने और न कानेका को कहा है, जाओ हुए धलीमांति प्रमात स्वे । जे चयरदित तथक जनुद्धान करवा 🕽, यह सद्य कारणाच्या जाती होता 🛊 तया विक पुरस्को बर्प, तर और दान करनेकी इच्छा नहीं होती, नह परक्का है आंकारन करता और वस्त्रमें च्यूना है। करून सुवाने है स श्रुपारे, को सरकारों करी विवरित को हेल, को साववर्ती पाना पाता है। क्याको क्यूको प्रदूषर वृश्येका । क्रेक करण करते हैं।

भिरकेरें किया के राज्यों है, काना ही समय प्रातेंजिय, सरवा, नेत, जारिका और कारके निक्योंका सुरू अनुष्य बरनेने राज्या है तथा कर का सक नह है बाता है से उसके दिनों बाजों बड़ी बेटवा होती है। अर्जपर भी अ्दानी परन (बिक्कोंके सुक्तों ही दिना बते हैं; वे) सर्वोत्तर नोक-सकारी प्रशंस की करते । सहा धर्म-प्रसन्य करनेवाले बनुकारो कथी कर और योगोसी कथी नहीं होती; अतः गुरुष पुरुषो किन अन्तर्क अपू हुए विकास है सेवर करन व्यक्ति । मेरे विकासी अन्य से सम्बर्धेनार्यनके देखे 🏥 करण जीवन है । जब करण कुरल्पे करना, सम्पानित संख प्राचने अनंत्रो पाननेवाने पुरुषेका और असमर्थनाने बारक कर्न-वर्गने सीव इने आस्पालको अन्यित सनुवनिका भी स्वेतिक कर्न का है जाता है से उनके रिका क्रांत कोई कर्न औं है, को करें अक्षय करा देनेकाल है। प्रक्रावकी सर्वेक अपने कर्वेकका निक्षण काके क्रमाविक पहला करते. हर क्यानस्थानंत्र का एक श्राह आहे क्योंका अनुहार करना व्यक्ति । कैसे संस्कृत निवर्ध और नद सम्बद्धी कावत निर्म है, उसे ज्यार सरस असमी गुरुवके है सहरे

# राजा जनकके मिन्न-पिन्न प्रश्न और पराहरजीहारा उनके समाधान

(परकार-गीवा)

दास सम्बर्ध वहा—अध्याप् ! जब जान वहारे मुझे करोंकि विशेष वर्ध कामानुष्के; मिन स्वयान्य करोंका भी कर्मन कीविये; क्योंकि आप सार विकासित जीत्याप्त करोने क्रमान है।

पराप्तानि वह-भागत् । क्या क्षेत्र, क्षा कराना और विद्या पहारा—ने प्राह्मणके विशेष वर्ष है। प्रमाणी दक्ष करता श्रीतको सिनो जाना है। पोती, गोरशा और कारता श्रीतको सिनो जाना है। पोती, गोरशा और कारता—ने वैद्यके प्रथम कर्ष है क्या दिशानिकोची रेखा कुरका मुख्य कर्ष है। वे कर्षकि विशेष कर्ष जाने को है; क्या इनके सामान्य कर्षका वर्षन विश्वासके क्षाय सुन्ते। क्या, अदिसा, सामानात, दल, कार्यकां, अतिकि-क्षकार, स्ति, अस्तिन, सामानी, दल, कार्यकां, अतिकि-क्षकार, सिनोंके दोष न देखना, कार्यकांन क्ष्म स्वन्त्रशिक्का—ने सामान्य कर्ष है। अद्यक्त, क्षमित्र क्ष्म क्षेत्र—कृद दीन बणींको दिवानि कर्यने हैं; कर्तुक क्षमेर्य क्ष्म क्षेत्र—कृद दीन बणींको दिवानि कर्यने हैं; कर्तुक क्षमेर्य क्ष्म क्षमेर्यका क्ष्मका असिकार है। इस्त दीनों कर्य विवर्ति कर्मका क्ष्मका करनेना की निन्ते हैं और अपने क्लेसिन कर्मने दिना क्वार साल जार करते हैं। कुर-क्लिके रिन्ने किसी वैदिक संस्थानक विचान नहीं है। इसे मेदोना कर्मीक अपूहानका की अधिकार की है: किंगू पूर्णेंक सावारण क्लेबर इसके रिन्ने की निनेत नहीं किया गया है। हीन कर्मके प्रमुख पहि सम्बद्ध करना नहीं के सदावारका करना करते हुए अस्त्रकों कार क्लोबर्स इवारण म करें—ऐसा क्लोबर के केंग्रक करने नहीं होते। इसस्त्रातीय प्रमुख भी कों-को अस्त्रकारका अपूहान करते हैं, त्यों-ही-को सुख क्वार इस्लेक और परस्केकरों भी आवन्य भोगते हैं।

क्ष्म क्ष्मणे पूक्ष-प्यापुते ! मनुष्य अपने कर्मसे वेषका क्षमी क्षेत्रा है क करिस्ते ? पेरे मनमें का सीह क्षमा कुछ है: जान कृतका समाचन करियो ।

राज्यकोने कहा—स्कारक ! इसमें सीह नहीं कि कर्म और जाति केनों ही क्षेत्रकारक होते हैं; किन्तु इसमें को क्षिक बार है, जो बताता है, सुने—जाते और करनेसे विस्ताना भी अलाव सेकर हो करोंचा संघर भी करना व्यक्ति। बातिसे हुनेट (बान्यार साहि) होनार थी को कर भी बाता, यह पूका सेक्कर पानी नहीं होता। बिंदू जो करिये इतन होनार थी निवास योगा कर्न बाता है, उनका का कर्न सामो हुनेत कर देता है, जतः मीठ वालियी अनेका क्षेत्र बार्म हो सुत है।

काको पूक-दिससेषु १ इस इंकाओं चौर-चौर-ने ऐसे कांतुपुरा कर्न है, किसी कनी दिस्सी के सार्थको विका नहीं होती।

प्रशासी कहा—नहारात | यो वार्ग अहिलाई अनुपूर्ण तथा तथा ज्यूनकी श्रेष्ठ कार्यकारे हैं, उन्हें कार्या है, कुनै—की स्तेन अधियोजको उत्तर संन्यात कारण कर उद्दर्शनगानों जब पुत्र देखों वही है, ने तब स्वारकी विकासोंने स्तित हो सन्तर: व्यान्यकारण का वार्ग है और अला, विका, इतिस्त्रंतम क्या कार्य प्राप्ते कुछ हो कारण वर्तिक परिवार कार्य करा-पृत्तुने बीद अधिनकी पहले अहा होते हैं। स्वार्ग | वार्ग वर्तकों होता वहि विकासका कार्यकों सारावार सर्वका कार्य क्षेत्र सारावारण कार्य कर्त हो है विक्ति कर्त आह कर सन्त्रों है।

वी दिया, निय, पुर क्या कर्पक्रीके प्रति क्यानीन्य प्रेप नहीं पत्ती, का पुराईत क्यूनोको विक साहित कोई कुछ मार्ट निराता परंतु को उनके अन्य परंत, विकासी, Section in the set of the set of the set of the शासिक रोजनका प्राचनीत्व पान अन्यान प्राप्त होना है। विका महामोके रिप्ते सर्वतेषु देशवा है, प्राप्ता प्राप्ति सम्बंधे बहु mer f aus fergirt greet alle soit florebeit alle frem वे के परमानाओं और करते हैं। अधिकार परमाद और स्वाद्याने पाचन होका क्योव्य विकास कर होता है हे मह देवदर्गय सोयोगे जात है और वहाँ आरयपूर्वय प्रापत क्रांपि स्था भोगता है। सबर ! यो पुत्रों क्या इसा हो. मक्नीत हो, जिसने इक्कियर नीचे कल दिया हो, वो केस हो, पीठ दिलाकर कर का हो, निसके कर बहुका कोई की सामान व रह पना हो, यो पहाला आहेन होड एका हो, बेनी हो, सम्बोधी दिया प्राप्त हो तथा प्राप्त स पर हो: कामा का नहीं करन माहिते। हो, निरामें कर राजांका सामान हो, को बाद करनेके रिपो रैक्टर हो और अपने क्रमारक है, का इतियाने जीवनेवा ज्ञान स्वयंत्र कार पादिये। अपने समान का अपनेसे बढ़े कैस्के अपने मान मका पान गया है। अपनेसे हैन, बाहर अपना हैन

पूजारे हम हेनेवाले युगु लिका है वर्गीक धर वानेवाले वर्ग और अवन सेवीके प्रमुख्ये हमारे में क्य हेता है, या प्रकार ही क्या कहा है तक वह नरकने वित्येकाल है—नहीं प्रकार विद्या है। मैतने वसमें भी हुएके कोई क्या की सबस क्या विस्तार सामू होत है, को कोई का भी वृद्ध करते करते पाने की है, को विस्ती परिवा में की पूर्व करते करते पाने की है, को विस्ती परिवा नोके काल प्रकारनीय अनुसार करते हुए जान है।

क्रांतरके काम प्राधिकोचे काले-फिलोकारे बीच के करे को है। इस्ते से कुछ और कुछोने से हैव जान है। हिमोने पुरिचन क्या पुरिचनोते की विकासकार है। क्यां को है। अने के से आंबारतीत है, को प्रतिक्र का का है। पुनी: अस्तान हेनेस का पहा हता वर्तिक पुर्वाने विकासी पृत्यु हो, हते पुरस्ताना वरण्या वाहिये । क विकास के का प केंग्र (अपनिवर्त प्रयू) अपने कानो कु कर कुल्ला और प्रतिको अनुसार प्रकार पार्थ्य जोप्याचे पुरस्को अञ्चीनाम पार्था है। किन पा नेनिये, कोंने करेड़ राजांके, स्वानी कालेड़े, सुरेनिंड समझे तथा कुरको पहुलोदे अपनये यो एवं होता है, यह भी अन्य केक्स कर कर है। कुमार्ट क्येक्ट पहुन क्र रक्षेत्र प्रकारिके प्राप्त नहीं की बच्च देशे ही हारो-दूसरे जानन उपनेते भी जन्मी पूजु भी होती। क्यनु । पुज्यास wellt unt aureral für ihr freiet fie flech क्रमान कर जान है है जारि में पर-कृष देवीने कुछ है, उनके प्राप्त पान पार (पान, पेत आहे) से पान क्षेत्रे हैं क्या विकास के बार के विकास है, उनके प्राप्त अधीयार्थ (row to flow) it freezis it :

पुरस्का एक है क्यू है, उसके समान कृता कोई स्तू वर्त है, का है अवार: फिल्मे अब्दूब और बेरित होकर प्रमुख अस्पन और और करोर कर्न इसने समता है। उस स्तूको प्रतिक करोने कई समते है सकता है, को नेलेक सर्वत करम्पूर्वक दृद्ध पुरस्तेको सेवा करके प्रस् (स्थित्रहृद्धि) प्राप्त कर ने, करोति आस्पन्य प्रमुखे जीतक प्रस्तात्व है, वह प्रस्तात्वी स्वयान्त्र प्रमुखे जीतक प्रस्तात्व्य है, वह प्रस्तात्वी स्वयान्त्र प्रस्तात्व है वह होता है। हैनको कर्त स्वयान्त्र-अस्तात्व क्षूक्त नेक्स्यक्त एवं त्यस्त करवे क्ष्मित्र। किर प्रस्तात्वम्यो प्रदेश करके स्वयत्त्र करवे क्ष्मित्र हिम्बाव्यक्ति है व्यवस्थानको स्वयत्त्र विवक्त करकान-करित हैक्से व्यवस्थानको हकारो वस्त्र प्रस्तात्व करकान-करित हैक्से व्यवस्थानको हकारो

रुकर् । मनुष्यको योगि ही यह अहितीय योगि है, जिसे चनर व्यवसंबि अनुहारते आसम्ब उद्धर विज्य स प्रमान है। 'कौन-स्व हेश अवन करें, फिल्ले क्रॉ कर मरुवनोनिसे नीचे र गिरना पढे' का सोकबर और वैदिक प्रमाणीयर विकास करके राज लोगोको कर्मका अनुहान करक माहिने । अजन कृष्य पर्य-महिन्दो कहा भी को इस्तेने हेन और कांका जनसर करत है तथा कारणकारों आरक हे जाता है, यह महान् स्तापने वर्तका केना है। यो पर्या सकत प्राणिनोको केहको हुनुसे हेन्स्य 🛊 ४४४ स्थ मोगोको सामना और अप देखर सकते भीते करण केलकर संगीके संस-व:समें सन्तर-वाको प्रथ बेटाव है, जा कालोकाने सम्बन्धित स्थान प्राप्त करता है। एका, । इस्तार्थ बढ़ी, वैविधारण्यक्षेत्र, पुन्यत्यक्षेत्र तथा और भी को प्रवासेक पावन तीर्थ है, इसमें पाकर कुन और त्यान करे, प्रत्यानको में तथा सबका और डीवर्वि मान्त्रो अपने प्रतिस्थी पुदि बारे। जन्म अवनी प्रतिनेक अनुसार होते, पुर्व (प्राणिकार्य), कार्य, काळ्य, कुल, कुलकार्येक समुक्रार राज बाद आहे को भी साथ कार्य करता है, या सब यह अपने ही हिन्दे करता है। वर्षश्रम और पहलेखील के greund unburch groß Aprentit & find unbar क्रवेड बले हैं।

प्रेमको कारो हिन्नकाला प्राप्त पुरिन्ने कर विक्रियनोसको इस प्रथम प्रजेब विक्र से अपूर्ण पुरः असं किया।

राज करवाने पूरा-स्थान ? क्षेत्रध्य स्थान कर्ण है ? इसम गी। क्षेत्र-शी है ? क्षेत्र-शर कर्ण जह जह है होता समा कर्या जानेवर जीवको कहाँ किन स्वैदन जह कहा कहा ?

परास्ति वह —राज्य ! आश्राविका अवस्थ तक हात —मे क्षेत्रकी कह है। इससे आह होनेकारी पति है सकते कहा हुआ वह तक हुआ कह तक हुआ कह तक हिए हुआ कह तक हुआ कह तक हुआ कह तक है। इससे कहा हुआ वह तक है अवस्था कार्यक करने अनुस्त हो जात और समूची अधिकार अधिकार अधिकार कहा है। जो एक इससे में तथा हम हो कहा है — इससे अस्तावहन करने कार्यक में तथा हम हमी अस्तावहन करने कार्य में अधि अध्यादम करने कार्य में अधि अध्यादम करने कार्य में अधि अध्यादम करने कार्य में अधिकार पूर्ण कार्य में स्वावहन करने कार्य में अधिकार पूर्ण कार्य में स्वावहन करने कार्य में अधिकार पूर्ण कार्य में स्वावहन करने कार्य में अधिकार में कार्य कार्य में स्वावहन करने में स्वावहन करने माल्य करने में स्वावहन करने स्वावहन स्वावहन करने स्वावहन स्

सरक, को प्रधान अवर्थ जाने पुरुषको नहीं दिए। बर रायक: विज् किए क्या त्या कारने अविक कियर सामी है, केरे 🗎 पाव अक्रमी प्रमुखको निरोक्तकपरे बर्पन्ता है। अधर्म देखन चनवारको अवस्थाने प्रतिश्च काल दात है. का कर्मका त्यान नहीं करता। कर्मको समय आनेपर करता कर अवस्थ चीनमा पहास है। यो प्रध्यक्षक प्रामेनियों और कर्नेनिकोचे क्रय क्रेनेकले क्वेंपर निकार नहीं करात तथा कुष और अकुथने असरक द्वारा है, उसे प्यूपन पदावरे प्राप्ति केरी है। एक को पोतरूप होवर हो बन्दी चीप रेवा और नवानामा परान करना है, यह निकारों करना भी पार्च नहीं कुरता । मैले प्रमानेक सामने सुपुर भीत सीम देनेका बाह काल है, जारे जकर के कांग्री बांध क्रिक्ट पर्शक्ति नीमा सावह क्या है, काका क्रीए-संबय कात है क्या है, को सामें कृषा नहीं उद्यान पहला। निवा प्रधान सुद्ध कुर्ववास्थ्यको भूनीह तेयाचे भाग पर रेग्से है, वसी अधार कारक कार्याको प्राप्त अक्षारे अकारको पहला करता है । कीरे शिल्ला केर विक-विक प्रकारक सुराविक प्रयोगे साहित होबर अध्या क्येरन गया पहला करता है, केले ही शुक्रावित कुर्विका सम्बन्ध कायुक्तीके सक्तके अनुसार अक्ता है: परंतु निरम्बी बुद्धि विकामें सामक है जाते हैं, को किसी संख अभने दिल्ला प्रथम नहीं पहला। कैने महत्त्वी पारिने पूँचे हुए क्षेत्रकर स्वयुक्त क्षेत्री है, अभी जनम बह सब जनमानी कारकारों करिय जिल्हे प्रशासिकांची और आहुत होकर पुत्रक कोलक है। पुरुष्के प्रेक्त वर्ग करनेका कोई कार कार्य जो रिका है: क्वेंकि कुन् किसीकी साट जी केवरी। का प्रमुख इनेका चीतके पुराने ही है, हो संब क्षेत्र अकल करे कर है असे देने सेनाकी बात है। जैसे जंबा प्रतिवित्तके साम्बासके ही सामानानिक साथ ब्यारने अपने करने कर करता है, अभी प्रकार इसनी मनुष्य चोपपुरू विक्रके क्रम का परम महिन्दी जार कर होता है। क्यमें मुख् और मुख्यें क्या निर्देश है। वो बोध-सर्वदें पटि करता, था अवसी संस्थाने जानवा होका कथ-पासके कार्ने कृतक स्थल है। प्रान्थनकी बस्तेकारेको प्रास्तेकारे ची सम जिल्ला है और परलेकमें भी। विकास (अपांत अभिक्रोत और कुक्क-बागादि कर्म) हेरासाम है तक रंकोच (वानी साम कादि सावार) सवापूर्वक क्षेत्रेसके हैं। इसमेरे क्यॉक्स्स से कार्स है—अवस्थान सर्गात संस्थीकी काहि करानेकारे हैं: बिंख त्यान (संदेव) अध्यक्ष स्थानिक प्राप्त गाउँ है।

केरे (पानीसे निकासरे समय) क्रम्लकी बालमें हजी

📷 कीच्या सूर्त क्ल कारी 💃 सबी प्रकार स्वामी पुरानका अक्रम मनके समानो मुख्य हो काल है। यह अन्यताही भोगकी और से काल है और केवी इस प्रकार केवाहरू (आत्यामें लीन) करता है। इस उपकर कर का चेनमें सिद्धेर प्राप्त कर हैता है से उसे पर्वकारण क्रमानक होने हरना है। को पर्त्या सिनो अर्थायु इन बाह्य हन्स्थियी हरिको रिनो विका-मोर्गोर्ने प्रकृत होयर हते अवना पुरुष वार्ण काहात है, यह रूपने पासानिक कर्मनाते पहा हो पता है। यो विका-योगोर्ने आसक है, यह कहति युक्त रही है समस्य । बिन्ह को कोचीको साथ देश है, बढ़ी पुत्र होनेका स्थित करता है। जैसे जनका शंका राजेको नहीं देखता, की है विकोशपरायम एवं अञ्चल जाना जीव प्राचनन कुमारामी आकार होनेचे पारण योक्षके मानेची नहीं सकत पाता । जैसे वेश्य सन्द्रानागेने ज्याबर करने व्यवस अपने मुक्ताके अनुसार क्रम सम्मावर गास है, उसे उत्पर इसार-सागाये ज्यापार करनेकाल क्षेत्र अपने कर्न और विकासी सरकार काम गाँ। पान है। कि और प्रतिका इंसारने कुरानका कर करन करके दूरती हाँ कुछ सनक अधिरवीको उसी जनार करती कही है, बेसे क्षेत्र इस क्षेत्र मारता है। चीन अपरूर्वे अप रेजन कार्य पूर्वपूर कार्यका है पार योगम है। पूर्ववरणी पुरा किये किया वहीं विस्तिको 📧 या अनिकारी जाति नहीं क्षेत्री । अनुस्य क्षेत्रा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र कारत है का विकासियों तथा है, उससे मुख्यून कर्न हा क्रमण, साथ तारे पाते हैं। बीच समुद्धे विश्ले ब्लेक्कर किन

कोई इसमें हैरनेका सक्क्षा नहीं करता, उसी प्रकार संस्कर-सागरते कर हुए जीवका किर उसमें पहना असम्बद्ध दिकानी केन है। जैसे समुद्धी प्रण औरसे ब्यूक-सी नदियाँ असकर निरुक्त है, उसी प्रकार यन चोनके ब्यूक्तिया क्षेत्रत मुख्यमुक्तियों सीन के जाता है।

विकास पर करा प्रकारके केक्टकरोंने कराहा हुआ है, ने अवसाने पहारे को हुए तीन बाहुके प्रकारको अह कार के है को है। के कारते का चरिएको है पर और कार-पोराची परिवारको हो तीर्थ प्रस्तावार अवस्थाती जराज है, को इस खेळ और परलेकमें भी सुक विस्तात है। कोई-ए-मोर्ड संसाद (मचेरम) रेस्टर ही होता विक कार्र है. कदानोत्रोग की विक्री हेतुने ही नाम रहते हैं, और हो करा, बाँ, पुर और सेक्ट भी अपने बनके ही बुक्ते होते हैं। पाय-निवा को विकासिको पुरस्त गाउँ होते । अन्यक्त विकास हुआ कर के परावेकांट वार्गी करेब (सहसर्व) का काम केत है। अनेवा चीन अपने कार्यक ही बाद धोरता है। पूर्वकार्यह विक्रो हुए प्रमूचने शुक्रापुर्ध कर्य जीवनात अनुसार्थ करते हैं। क्ष्मेंबरको स्थीया कालार अंचराता करने चौको व्यक्तार केरण केर है। के पूर्व क्योपक सकत् रोकर प्रश्निकार प्रकारकोचा राज्य करता है, अल्या कोई से कार्य करून औं साम ।

क्षेत्रको स्वकं हि—युक्तिक है जानी सहस्रत नराहर पुनिके पुनारो इस स्थान क्षेत्रको सुरक्तर करोहेने हेन्द्र राज्ये स्थान स्थान जाता हुए।

### साध्यगणीको ईसका उपदेश

कुरितिहरने पूका—चिकाम्ब ! संस्तारमें स्कूत-के निकार सत्ता, रूप, क्षणा और प्रकारणे प्रसंस्त करते हैं: इस विकार आपना केता विकार है ?

वीकानी कहा—पुचिद्वित ! इस विकास सावकानोका ईसके साथ को संख्या हुमा का, नहीं पुराना इतिहास में दुनों सुना या है। एक समय नित्न अवस्था प्रवासीत ईसका समय भारत करके सीनी सोकोंने विकार को के। इसके-कुम्बों के सावकानोंके यास पहिंदे। उस समय स्वासीने कारो व्यक्त—'हंग । इसलेग साम्योगता है और आयरो नेश्वमधि नियमने उस करना बाहो है; वर्गोदि आय नेश्वमधि जात है। बातम्ब ! इसमें दुख है, आय पविद्या और पीर पात है। अवपकी उसमें बानों (अवना बर्गित) यह सर्वत जाता है। इसमिने पूछते हैं, आयरे यहमें सर्वतेष्ठ पातु वस्त है ? बिताने अवस्था पम रमता है ? पहिलान ! समझ बार्गियों निया एक कार्यको आय समझे जान समझते हो तथा नियमों करनेसे जीवको सम अक्तरके बार्गोंसे सीह इस्तान नियमें करनेसे जीवको सम अक्तरके बार्गोंसे सीह



हंतरे वहर-जन्म कैनेको रेकानो । मैं से पूजा ्र्यान्त्रः, प्रतिकारिका, प्रशासकारः और मधीरिका सामे बार्ल हो सबसे काम है। ह्यांच्यी पति कोरबार देख और अधिकारी अपने कहते को (अवदि कार्ड किने हाँ और विकार में बारे) । विकासिक मानि जानका न चर्चकारे, पालोसे रिक्षर करा न कोहे, नीच समुचनो काळका कुछ न सन्हों क्या निर्म पुरस्का औरोको बहेर हो देवी राज्यों कारनेकारी अपहरास्त्री कर भी न को। कारास्त्री कर कर पेले रिकर पहरे हैं से सरकी चोद कार्यन गयुन रात-दिए छोदानें कृता काम है। ने इसरोके प्रमंतर हो जानक गईकारे हैं. इस्तिने निक्रम् पुरुषको जिल्लामा व्यापनका प्रयोग गाउँ करना साहिते । सुरात कोई भी गाँद विद्वालको सहस्रकारको कारोंने पुर कारत करे से भी को कात है पूजा काहैने। क्रारोके क्षेत्र करनेपर भी जो जकोमें जरत है खात है क काके पुरुषको प्राप्त कर रोता है। को जनाएँ निया मार्गनेवारी और आवेशने प्रार्थनाने प्रान्थीस प्रदेशको केस हैता है, विस्तार क्षित्र प्राप्त एवं प्रत्य खब्द है वक्त जे क्रारोके केन नहीं देशरत, यह पुरुष अपनेसे हेन रक्षानेकानोके पुरुष से सेता है। जुड़े कोई करते है से भी पूर पर करता है. कोई को तो भी जो अस करता है। आर्थकर क्रमा, सार. इरस्थान और मुकाने ही केंद्र करते हैं। केंद्राव्यवस्था पहल है राजधानन, असमा परत है, इत्रिवर्शनय और इन्हिपर्सनमञ्ज्ञा करा है केन्द्र । नहीं सन्पूर्ण क्रान्तोका आहेत

। यो कार्गी, का, स्रोच, कुम्ब, कह एक कार्गिनियके जनम्ब केरको रह रेका है, स्त्रीको में सहार और मुन्दि करण है। कोबोले कोच न करोबाल, अस्तुनद्वीरसी merter, wound were one agentit und ibr be यो कुलेको जाने सुरक्तर भी ब्यानि को बाती भी देश:-का क्रमातील प्रमुखका का क्रम प्रोप ही पाली देरेवालेको पान पर कारत है और अले कुमारों भी से सेता है। सुरोके पुरुषे अपने दिले पदानी पात कुरवार भी को उसके. और कारोर का जिस हुए भी नहीं काता तथा किसीकी नार पानकर भी केलींड कारण क्योंनी न से गरे सामा है और र जानो कुटा है पहला है, यह पहलाने निवनेके देखें हेका को तह सामाजिक होते हैं। कर करनेवास अवस्था है, अवस्थाने अन्तेते सह हो स प्राचार, उतके द्वारा अवस्थातिक हेकर, पर काकर और फान्दे कुरकर भी को क्या है कर हेक पार्टिने। हेक पारनेकात पूका परन निर्दिशनो अहर भेगा ।

काती में एक प्रधारने परिवृत्ते हैं (पूर्व पुरू परिवा क पान कार्य नहीं है) के भी सेंद्र पूर्णांकी काराना (साराह) करण है। मुक्तार ने कुन्सका और मरना है, न स्रोक्ता । मैं जेक्स कांक अधिकाम की करत और व विकासि इंग्रामी ही कहीं अवन-पाल है। बोर्ड मुझे पान है है से की र्वे को कर नहीं हेत; मैं इत्तिकांकाओं है मोहका हर करता है। इस समय हराने में को एक बहुत पूरा करा कहा का है क्षाने-अनुवानोधिन कहता मृत्यी कोई राज नोति न्हीं है। किए प्रमार प्रश्नाम साहानेके आवरणते आरच होचार जनस्थान दिवानी देश है, वही हचार चलेते पुरू होचर पुरुषिय हुआ और पुरूष वैर्माहोड कालको प्रतिकृत करणा हो, इससे वह सिन्दिको जान क्रेस है। के काने कानो काने करके सामार-कानकी पीति समके नारस्का पान क्रेस है तथा निसर्फ और सब लोग प्रसादक-पुर पहा करन केल्टे हैं, यह पहुच देशकाओं आह हो सामा है। विकासिये हमा रक्षणेवाले प्रमुख किस साह उसके केवोबर कर्नन करना पहले हैं, उस एक उसके करकानकारी पुर्वेच्य वस्तान करना नहीं स्वाहे । विश्वको करनी और अन कुर्वश्रेष क्षेत्रर सरमायके कर कहा किस्तरमें हमें स्क्रो 🗓 व्य बेक्सवर, एर और स्थर—इन सबके प्रसम्बे प ज्ञान है।

इस्सीरने स्वयापार पूजाको काहिने कि वह सञ्जाका बाहरे और अलाहर कारोवाले अदारियोको उनके द्वेष बाहर सम्बाधनेका प्रकार न को, न तुसरीको बहुआ है और

न अपनी क्रिस करे। विक्रमध्ये वाहिने कि व्या सकार। पानर अपूर केन्द्री पारि संदूष्ट हो; क्योंकि अववारित पूरूप को सुरूरों सोता है: बिंदु सरमान करनेकारेका गांव के बाता है। कोची परमा से पत करता, बन तेता और प्रथम अवन्त पूर्ण करता है, का तक कार्योद्ध बसको कार्यक हर तेते हैं। क्रोब करनेवालेका सारा परिवन कर्य कका है। केन्द्राओं । जो पुरुष अपने उसला, करा, केनी प्राप और वाजी-इन कर बारेंको पान्हे बधाने रहता है, अहे करेंद्र है। को स्तर, इरिहांचन, सरस्या, एक, वैर्व और सुरक्या विश्वेत सेवन करता है, सरकावने तथा छहा है, सरोबंधे क्षत् अहे हेना पाइक एका प्रधानको निकास सरका है, यह परव गतिको जात होता है। जैसे बहुदा सननी बहुन्ये आहें कृतोका पान करता है,ज़ारे प्रकार कर्मुका अर्जुक करता सब्दाननेका रोजन करना काहिने। येथी प्रत्यूको काली महकर परित प्रक भी भूदि है। में भारी और कुम्बर केवल और मनुष्योंने बद्धा बारत है कि बैसे बहुक समुत्ती बार होनेका सावन है, उसी जवार साथ ही जानेने पहुँचनेकी भीकी है।

पूर्व की मोनोंद्र राज पहल है, की पर्व्योध्य स्थ करता है और बैसा क्षेत्र प्रकृत है, क्षेत्र है क्षेत्र है। कैसे सरोब क्यांके के बिता रंगने देन कर बैना है हो बात है. इसी प्रकार मक्त्य भी साथ, असाथ, करावी का चोर निराजी सकृति करता है, करीके कालें के जाता है। केवलकेन सक सर्वकारिका सङ् करते हैं—अव्योधी असे कुन्ते हैं, इस्तेरिको में पनुष्योंके कृष्यकृत प्रोतीकी और देखने भी नहीं करे। से विकास काने परनेकार सकता रॉक-रॉक करत है, अरबी समान्य न प्रमुख बर सबसे हैं,र संदर्श की श्रेचेक परिवार काके क्षानार्वर्ध राज्यके व्यान स्थित दाता है, वह सञ्जूकोंके प्रार्थन कालेकात है। क्रमीके साथ देवता केर करते हैं। को सब केर करने और अस्य-प्रशिक्षके चीग घोगनेमें ही तने खते हैं तक को चोरी करने और कठोर कानी कोलनेकले हैं, वे की (अपश्चिक अभिके प्राप्त) एक कर्मीक केमरे कर में कर्म से भी जान गया है।

हेक्कानेन उन्हें पहलानकर तुरसे ही साल के हैं। सरवनुकारे रहेत और इस कुछ बढ़ान करनेनाते पापातारी बहुन केन्द्रकोच्छे संदर्भ नहीं कर सकते; केन्द्रा से सारवादी, करत और वर्णकायम पुरुषेक ही साथ प्रेम करते हैं। केलोड़ों न केलन ही अपन है। फिट नहें नेतन ही पहें हो राज कोराना कालीकी कुरती किलेका है,कर्नकुक बात बारम केरते और देव केराम चौची विशेषका है।

सम्बंधे कुल-केत ! इस लोकको विसने आकृत कर रका है ? क्यों इसका कावन जनसीता वहीं क्रेस ? बहुब प्रका करणारे विशेषा राज करता है ? और को क करी भी को कर ?

हर्म वह-देखाओं ! इस सेवाबो अज्ञानी जातृत का रहा है। परावर कहते कारण इसका अस्ता प्रकारित न्हीं केया। यहचा स्टेम्क्स विकेश्वर साथ धारता है और कार्यक्रेके करण व्ह करी भी पने पता।

क्रमाने पूर्ण-प्रक्रमाने ऐस सीन है, में एसनात करन सुबंध है ? बह कौन है जो बहुतोंके साथ प्राचन की मौन क्क है ? और हमेर होकर भी करवाद है ? और और flexibit year vil saves self water ?

क्षतं का-प्रकारोते के इसी है, एकनक भड़ी परन कुरते है। इस्पे ही बहुरोके साम प्राप्तर की मैन पाता है। वर्त वर्तन क्रेकर भी व्यवसाद है और बड़ी विश्वतिके प्रवध भी क्षाप भी करता।

क्रमार्थि कुल-अञ्चलोधे केवल क्रम है ? साधूरा क्या है ? क्या कार्ने कारायुक्त और पशुप्तका क्या है ?

हेलने कहा---व्यक्तनोने केट-प्राच्योकः अञ्चयन है देखाव t, judier were wer und eriger t, gertielt निक करन असक्त है और मुख्यों आह होना समें मञ्जूष्मा है।

क्षेत्रको कार्य है—पश्चितित । इस अकार यह यो साम्बोच्य इंतर्फ राज्य संबाद हुआ था, असका मेरी तुमसे कर्मन विकास । यह प्रारंत हो कर्मोंको चोति है और सहरूत ही

# सांस्य और योगका अन्तर बतलाते हुए योगमार्गका वर्णन

🕯 ? इसको बलानेकी कृत्य करें; क्लेकि अवको सर्व अको-अको बक्के समर्थनी अरुध-अरु वृक्ति और प्रथम ब्यानीबार प्राप्त है।

ग्रीकशीने कहा—व्यक्तितः ! सरेकाके विद्यार स्टेकाकी

नुष्तिको पुत्र—सत्त ! स्रोक्य और योगने क्या अधार | और योगके व्यन्तेवको योगकी प्रशंता वारते हैं। दोनों है विका करते हैं। कोमके पनीची विद्यान कपने पताड़ी बेहतामें क कर पठि करिया किया बस्ते हैं कि ईवास्ता

अहिल्य स्वीकार किये किया किसीकी की पुरित कैसे हो समाती है ? (अतः ईवारकारी चोलियोगा ही यत सर्ववेश है ) प्रांतनपुरुके वान्त्रेयाले बहुतका क्षेत्र पुणिनक कारण इस प्रधार काले है—सम प्रचारको गतियोची जनकर के विकासि विराम हो साम है, बड़ी देश-सामके अस्टा पुन होता है, इसरे बिसरी क्याफो प्रोड निराम कारणा है। हक प्रकार में प्रोक्तकों ही पोक्षतकी साले हैं। अपने-अपने पहले मुखित्व बारण प्रकृ होता है तथा विद्यालये अनुकृत हितवारक क्या कानेकोच समझ करा है। हुन्हरे-केर्स सोगोको हिन्दु पुरुषेका है यह महत्व करना व्यक्ति, अवेदिक बिहा पुरूष तुन्हारी प्रशंका करते हैं। बोगके निहार हकारक इत्या प्रकारको है बाननेवाले होते है और सांकारकानुसारी काव-अवस्थार विकास करते हैं, परंतु वै का केनी महीको क्राविक्य मानदा है। होनों हे नहोंका किए परनोंने अवद किया 🕯 । वहि प्राथमेर अनुसार उनका आसरण विकास नाम को केनो है क्ल गरिनों अहै। यह काले है। क्लूर-केरलों परिवात, तर, अतिरवेदर क्या और अवेद्य गाल असे को बोनी स्थाने समान समाने स्थितार को नार्व है। केनार सन्दे क्रांप (क्रांबीय प्रतिका) में अन्तर है।

सुविद्वार ! योगी एका केवल योगानको धन, मेह, बोद, बान और सोय-इर बॉब सेनोका पुरोचीय करके पान पानो जार करता है। नैसे को-को कार कर कराया दिन करने अन्य करे हैं, अहे जब्दर केंग्डे अन्ये कर्कक नाम काले. परनामकाको जात कर्या है। कोनवानो सन्तर कुछ सोपने क्यान होहमार वरण निर्मात करणानना मार्न (घोळ) को प्राप्त होने हैं, मिन्ह सेने धोड़ी-मी अरणन बहे-बहे किए एक हेरेरो वह जानेके करान पूरा करते है. क्यी प्रकार निर्वल केमी पहान केमके सकाले सकार पह है। बाता है। पांतु नहीं आग जब इकाका सहस्य पायर अवस् है क्षाती है के सन्दर्भ पृथ्वीको भी समझ्या नाम कर समझी है। इसी एक चेनीका भी चेनकल वंद अनेते का स्ट महास्त्रीतसम्बद्धा हो जाता है से करवा हेन अवस्थित होने सगता है और जाने जननवालीन प्रमंद्रों चीरे सनद कार्यको सुन्त इसलेको श्रीक ३६ कार्य है। तिस उपार सुमकोर प्रमुख पार्थके केमने बढ़ जाता है, जारे तथा कांत बोगी विकास कियरिका के कता है। किंदा करी महत्त प्रकारको जैसे क्षारी रोग्ड देश है, मैसे ही चोत्रका स्वान कर फाक्ट बोनी भी सबसा दिनयोगों हेना हेता है। चोगाम्बियाम्बद्ध पुरुष स्थानस्थापुर्वक अस्तर्गति, अन्ति, केस्स और पक्ष महामूत्रोमें प्रचेश कर जाने हैं। जनिया देवाची केन्द्रिके अन्य स्रोधने धरे हुए क्यारम, अन्त्रक और धर्मकर महालान दिन्हानेकारी मौराका भी और नहीं मराता। मह मोनवार काहर अपने हवारों का बना स्थाना और उन समझे हुए इस पृथ्वीकर विचार समझा है। दिन नेकाने समेद हेनेकारे कुनेकी धारि यह उन सधी क्योंको अपनेने सीन करके उन अन्योंको अनुस हो बाता है। बसमान पोनी बन्धन सेक्नेको सम्बर्ध होना है। इसने सन्तिक भी स्थान नहीं कि असमें अन्योंको एक करनेकी पूर्ण प्रक्रि होती है।

कार ! में ब्रालकं राजे केंगरे जार हेनेवाले कह क्षान क्रमिक्टेबर पुरः हुन्ते कर्मन कर्मना तथा मान-सम्बक्ति हैने से किन्द्री बारमा की जाती है, अलंद निकार में पूछ सूरत सुरूत कारवर्तना, कृते-दिक प्रकार सह सामध्य क्षत्रेवाला बहुर्वर बीर विकासी क्षात्र करों: अहर क्रावेश राक्ता के हातरा है, क्यां प्रकल को योगी प्रमुखे प्रशासकों बहनमें लगा देता है. का निवारेंद्र पंत्राको त्रात कर तेवा है। की (प्रित्य रहे (ह) देशने को प्राच्यों और भाग रक्ष्मेवाला पूर्ण प्राचभात कुर्व कुळार्जास्य होत्तर सीवियोधा पद बाता है और क्या पी केत नहीं क्रान्यक, उसी बच्च मोनी नी मोगनुस होकर अवस्थाने परम्यानाने विश्वत करता है। का प्रथम करना कारण अस्तरण विशेष क्या पूर्वके समान वेकारी हो बाता है। कें। सरकार करना सकते की हाँ राजके बीह है विकासिक रूपा है। है। उसी प्रवास बोगके अनुसार सरकारे धान्तेकार कुछ समाधिक हार काळो परमानाचे समावार केवा त्यान कानेके अन्तर कृति स्थान (परंग बान) को क्रम क्रेम है। जिस उद्य अस्तर सामवार सार्गंप अच्छे केंद्रोको रक्षणे जोताकर बनुर्वर वीरको हुरेत अलीव स्थानवर चौचा है। है, केने ही बारणाओं वे व्यवस्था हुआ बोगी राज्यको और क्रेडे कुए कारको पाँडि सीह परन पहाले आह करण है। के केनी समाविके प्रता आत्मको परमानामें रिका देश रिक्षणाको वैद्या साता है, यह अपने पायको नह करके परित्र पूरवीको निरानेकाले अधिनाही पदको आह क्षेत्र 🖢 । क्षेत्रके सक्षान् प्रतमें एकार्यका स्वनेकारक जो क्षेत्री नामि, क्रम्क, मरान्य, इतन, मक्षःस्वर, नाम, कान और के अधी भागोंने धारणके प्राप्त आसमध्ये परमायके स्वय क्य करता है, बढ़ करने सुधातुध कर्मीको होता है परन बर अवस्त्र है और इच्छा बरते हैं उत्तर चेगका अन्तर सेव्यर पुरु हो जाता है।

कृष्णितं पूक-विकास . योगी कैसा आशा करे और किन-किन्मां जीवे तो उसे घोषतकि जात होती है ?

प्रेमजी कर-में कामी सुद्धे और विलब्धे करी साता तथा यो-तेशका धीरत्यन करता है, इसीको कोनकाव्यो प्राप्ति होती है। धेर्पनप्रसम्बद्ध प्रतिनित्र एक बार कीवरै कार्या सम्बंद्ध सानेकश्च चोचका प्राचक प्रकृतिन क्षेत्रर चे नगरकी प्राप्ति कर सकता है। को कोनी दशमें करी विकास करन समयतक दिनमें एक कर पीता है, बिर फेक्क किनोने एक कर पीता है, सरबहार एक भारतिये, एक सहये और एक करि एक मार को जान बस्ता है, अल्बो भी चेगार्टीक जान होती है। काम, बरेच, बीत, कल, कर्च, यब, खेच, क्रस, बनुव्येको रिय रूपनेवाले किया, तुर्वीय असंतोष, चोर सुम्बा, स्वर्ज, निक्र तथा असरकारो जीतरेकारे जीतरात बहुआहे बहुका पूरा कामान क्या नात्रका समावा करेंग्रे पूर्वको प्रश कामालको सुध्य स्वयान्या अध्यस (स्वयाल्यार) कर्त्व है। निधान अक्रानामे योजके इस महान् कवाडे वर्गय कारताया है, कोई मिएला है हुए जानेको कुम्स्सानकृतिक सम कर सम्बद्धा है। मह बढ़त सर्वी, बीवे-यकोदो, गालों और बांटिसे पर हुए रिर्माण करवारे भारत हर्गन है, कोई-हो-कोई दिय इक नार्गक कुम्परपूर्वक पहर पास है। क्योंनिक इसके बहुत-रहे कारिनाहकों

हैं। क्रेकी दोसी कारपर बाई कोई सुनगताकृष्य देत है; बिज विनक्त किए प्रज नहीं है ऐसे मनुष्योक्त चोपकी वारणाओं ने विश्व कुल निताल कहिन है। को विविध्वर्यक बोप-बारमाओंमें निवर सुवा है, यह बाप-पूर्व, सस्त और इनके ककारेने कुटकार या बात है। बढ़ की तुन्हें चैनकिक्क राज सामोका विद्वास काराया है। चेपलकामा यो एक कर्न है का दिवसियोंके हैं हिले निर्देश किया गया है अर्थाद अप्रीका अर्थ अधिकार है। केल्लेक्ट अंक्रक एक बाँद को हो होता है एक केवर प्रकार कारण प्राप्त के बाता है, बार अपने चेग-कारो लाग, निरुष्, वित्य, वर्ग, बार्डिनिय सभा अध्यक्त प्रत्यवर्गिकांके विष्युक्ते प्रतेष कर सकता है। इसी प्रवास कारण, विकेश्व, सर्व, विकार, कर, वर्वत, समुद्र, वर्वी, मेख, बन, क्य, क्य, दिल, गम्बर्ग तथा को और प्राचीमेसे क्रकेकक क्रक्त करन कर स्टब्स है। पृथिदिर ह राज्यको सम्बद्ध राज्येकाचे 👊 साम्यानाची हार्या क्रांत्रक इन्हें कुमनी गरी है, बोगरिया पहाला पूरव प्राचन कार्यक्रम संस्था है बाता है।

#### सांस्थका वर्णन

मुध्यित्ते कह-निताम्यः । अस्यवे विश्वं पुरुषेश्वरे मान्यतमे अनुसार चोण्यानीया प्रकारीकारी कर्मन विश्वः, अस्य मैं सोप्यानासी सन्तर्ग विश्वे पुरु तुः है, जो कार्यको कृत्य परिचके, क्योंकि सीनो सोप्योक्य स्थान्ते अस्य आवको विश्वित है।

मीनवर्गने वदा—एकर्! जनस्वाको अस्तेवर्गने स्विक्यासको विद्यानीका व्या सूत्रम ज्ञान सूत्रो, विद्यो विद्यानीका व्या सूत्रम ज्ञान सूत्रो, विद्यो विद्यानीका मानेवर्गने स्वित्या कार्या व्यापितीने प्रधानिका विद्यानी प्रधानिका कार्या वृद्या व्याप्त स्वे अस्ति अस्ति क्ष्या व्याप्त स्वित्या कार्या अस्ति क्ष्या व्याप्त कार्या अस्ति क्ष्या व्याप्त कार्या अस्ति कार्या, विद्यानीका कार्या कार्यानीका कार्या, विद्यानीका कार्या, विद्यानीका कार्या कार्यानीका की सम्पूर्ण विद्यानीका कार्या अस्ति अस्ति कार्या कार्यानीका कार्यानीका कार्या कार्यानीका कार्यानीका कार्या कार्यानीका कार्या कार्यानीका कार्यानी

और कोमकार्गक गुण-कोमको भी प्रथ्या तेते ै तथा साम्पूर्ण का, प्रतेपुर्ण में, संबेपुर्ण आह, बुद्धि राज, बनके क्र और अस्वारको पाँच गुर्गोका प्राप्त आहरूर अल्ब्बदी प्रदेश करानेकाले मार्ग, प्राचन प्रस्ता तथा अल्पनिकारको प्रीय-रहिक पान रहेते हैं: वे जान-विजानसे सन्तर स्था भेड़ोरकोनी सावनीके अनुहानसे सहरिता हर स्केंक्क्जेमी परम मोक्को प्राप्त कर हैते हैं। नेत क्याका जीवक क्याना, क्षेत्र प्रस्तुका, विश्व संस्का और समा राज्येका आजन्य है। इसी प्रवार वायुव्य अस्तर्य आकारत. येक्ट अवन हमेन्द्र और लेपका आध्य अन्तिके विका है। गरिका सामार विका, करका हुए, कारका स्तीर क्या प्रकारिकेका आवार कर है। फलका हेव, हेकका बाबू, कानुका अकारक, अकारकार महत्त्व और महत्त्वका अभिकार पुनि है। बुद्धिका अन्तर त्योगुक, त्रयोगुकका आवन स्थोपूर और स्थोपुराका आक्षप संस्थापुत है। सरवापुर सकृतिके आश्रवमें रहता है, प्रकृति वीवत्रहारें और जीवनका परम केमाओ पगकान् नाराज्यमें रिश्ता है। नराजनका आधन केंद्र है, किंतु मेहकी कोई आधन नहीं है (इस व्यवस्थे को काफो है ने भी पुरत हो जाते हैं) ।

कृष्णियों पूर्ण-विश्वस्था । अस्तर्ये हेक्नोनें सरीय-सरीय-मे ऐसे क्षेत्र हैं की अपने ही क्षतिरहे सब्बा होते हैं ? जान मेरे इस संवेद्यास स्थापन सम्तर्थनी कुम्ब करें।

भीनारी <del>शह-कार्याः । यतिक या प्राप्तकारे</del> क्षपुरवर्गी नेवानी विद्वान इस बेहके चीवर पीच क्षेत्र कारको है, जो मताब है, सुने—बान, होय, नय, विक और कास-ने नीय क्षेत्र समझ प्रनीरवारियोके चौकर केवे कार्र है। सहका क्ष्माने क्षेत्रका, क्षमानके स्थानने प्रान्तक, पुरस्तुतको ऐकारे निक्रमा, प्रमाने प्राप्त काला स्था and accord through throughout the titl to एकर् । पहलुद्धिकर् कांग्लंड केन्द्रर ईक्ट्रो पुर्वेद हार पुर्वाकी, सैक्की क्रेनेंक प्रत क्रेनेंको एक सैक्की विरोध हेतुनोक्षे निर्मात हेतुनोक्षे विकेत्सको स्थानन स्थानन क्रान्के अन्तरको संख्याको वार्गके केनके सन्तर नवा, मिन्तुकी र्रावाई कवाओंसे बात हुआ, ईकारवर को हुए विरामी तथा यह, पान्ये समार विराम, अन्यवास्त्रे को हुए पहोची मंति करेकर, वर्णकालो सत्त्वे कुनुहोची एक क्षणभूष, सुराक्षेत्, पराचीत, सहरात क्षण स्टीमाने चेले हर हाथीको तथा राजेगुन और बस्तेगुन्ने यह सन्दर्भ है। pelieb à term antiquit annehmen qu'unit un afre विशेषको प्रथमे एका, राज्य और स्त्रीव्य क्या करे. विकार तथा क्योंनिकको देशकिय को गीवर्ड अवस्थितको स्टब्स क्षरको है। सर्वनार, में प्रेयद और बु:बारकी करने की हुए क्रम क्लंबर संतार-सामको झालानी चेन्छोड हुए वर को है तथा अस्तर्भ इतार क्य-क्यूके क्यूको क्यूकार प्राप्त परंग निर्मात आवारकारका कामानामें प्रमेख का करे है। नियर महारेते संस्थापने पार्टी स्टीएके । अंकी काम पार्टि के । यहे सबस अक्टारके इन्होंने स्क्रिय, स्वापानी, सरक तथा सम्पूर्ण प्राणिकोपर क्या कार्यकारे हैं, इस महास्क्रातीको ही हेली गति अवस कोली है।

इस प्रकार सांस्कानेती पुरूष और पापले सील क्षेत्रत

प्रकृतिका भी अधिकारण करके निर्मात, व्यवासे परे, अविकास भववान् वारायमध्ये प्राप्त होता है। मे नारायमध्य विभिन्नतः और निर्मेश्व मरमान्य ही है। को आह हो सानेवर केको देश क्षा क्षाओं संदेश नहीं पहला स्वीक् चोरिकोको पह बड़ी कान परि प्राप्त होती है। इस इस्लोह स्थान करत कोई प्राप्त नहीं है । यह सबसे सहसू नाना नवा है । इसमें अक्षा, क्षा को को पूर्व समावन सक्षा है अधिनाक कृता है। यह पक्ष आहे. गण और अन्तरे सीच, प्रचेने असीत, प्रस्तात. करका और निमा है— देला करीयी पुरसोका करून है। स्तीची क्रमानी प्राचीन और प्रतासका निवास होने है। म्यूनिनोर्ने अपने प्राप्ताने अर्थन्ये अर्थन्य गर्दे हैं। समस प्रमुक्त, हैसाइ और प्रान्तिक पुरुष इसी जन्म, अन्त्री भरावी भरावस्था प्राचीन और सुक्री करते हैं। चीगमें कान सिद्धियों प्राप्त हुए केची एका रूपना उपनाको सांप्रकोचा पुरुष भी सरीवार पुरुष्य कर्ष है। क्रमीनका । ऐसी स्रोतिह है कि क कंपनकर है का निराका परवेदाका आवार है।

कार । यहाना पुर्णाने, नेहोंने, योगसामाने क्षण पुरानोंने यो साथ प्रसारमा तथा हार देशा करा है, यह सब सानको ही आया हुआ है। यहै-यहै इतिहालोंने, सर्-पुर्णाहार सिंधा सर्वाक्ताने हमा हुआ है। एन और इतिहालेंगा तथा, तथा यह, सूचा हार बचा परिकारों हुए हैंगेवाले यो सूचा कर सारको को है, जा सम्बद्धा संक्रमसामाने कारकत् वर्णाह करा है। संक्रमसामा हार असाव विद्याल और परद असीव है। यह पहल्कानको स्वाप असाव विद्याल और परद असीव है। यह पहल्कानको स्वाप असाव हमानो मुख्यान सरकार है पूर्णाहरू साथ साथ स्वाप हमाने प्रमाण है पूर्णाहरू साथ साथ है। इस पुरस्त विद्याल साथ साथका साथ साथकार है। इस पुरस्त विद्याल साथ साथका साथ साथकार है। इस पुरस्त विद्याल साथ साथका साथ कारकार है। इस पुरस्त विद्याल साथका साथका

# **क्षर और अक्षरका विषय बतलानेके लिये करालजनक और वसिष्ठका संवाद**

कृषिक्षेत्रे पृक्ष-विकायह ! यह अञ्चल-साथ क्या है, विस्तयको अञ्चल कर लेनेयर जीव पुष्ट इस संस्थारये जहि अञ्चल क्या इत प्रदर्भ क्या है, विस्तयको जान्त्रेयर पर आज्ञानका करा देशा है। इत-अञ्चलके प्रकारकार स्वयुक्तमते सम्बद्धानेके लिये कि यह प्रता किया है। वेटोके विद्वान् साह्यक, महत्त्वान गावि क्या महत्त्वा परिवर्तने सामको हानका सम्बन्ध

व्यवस्था है। जब सूर्यंत्र व्यक्तिमाननमें सुनेत्रे कोई है दिन व्यक्ति हैं, उत्तरावन आते ही आव प्रत्यक्षमको प्रवारेगे; फिर इस्त्येत्र व्यक्तिमानी वर्ता विस्तरे सूर्वेते ? अवको इत अन्तराव व्यक्तिको सुनकर सुने दूपि नहीं होती (अतप्रद आव सूने व्य क्षर-अक्षराक्त विवय कारपाइंदे)।

वीनावीरे वदा-वृधिद्वार । इस विकारों कराराजनक

कौर व्यविद्धां संवाद्या एक जारीन इतिहासका पर्यंत बारत है। एक सम्बन्धी वाल है, दुर्गीक सम्बन्ध केनली पुनिवर वरिष्ठ अपने आकामपर विरायमान है। वहाँ याल बारत्यव्या सबुर वालीमें वाल 'क्यूबर प्रमान विन्ता और विनयपुर्वा सबुर वालीमें वाल 'क्यूबर प्रमान विन्ता और पुरावेका पुनरावर्तन नहीं होता, कर समावन व्यक्ति कर्मनम्बा में वर्तन कुम्मा व्यक्ति है। इसके सिमा जो कर कड़ा पन्न है क्यूबर तथा विस्तें इस प्रमान स्वा होता है का निर्वेकार, आवन्यव्यक्ता और क्यूबर्गान क्यूबर-व्यक्ता जी क्रम जान क्यूबर बाहता है (अतः अस्य इस विकास क्यूबर वर्गे)।'



विश्व विशेष कहा—राज्य । जिस प्रकार इस कार्यकर इस्से (१९४०) होता है अस्ते स्था को साथी भी अस्ति (न्या) नहीं होता उस असरकों भी कार यह है, सुने—केस्सओंक व्यय हुआर करोंका एक कार्युंग होता है और सस इक्स क्यूंग्य एक प्रस् कर कार्य कार्युंग्य एक प्रस् कर कार्य कार्युंग्य है। इसी है वही उसकी राजि भी होती है किसके अन्यों कार्य है। इसी है कार्य में साम कार्य से साम कार्य है। वार्य से कार्य कार्य किस्से के कार्य कार्य के साम कार्य है। वार्य से असिनाती कार्यिक करके हैं। साम के से असिनाती कार्यिक करके हैं। साम कार्य कार्य कार्य के साम कार्य के साम कार्य कार्य के साम कार्य के साम कार्य का

। प्रमुख्य क्रिक्सपर में हैं, क्लीको पुदि कहते हैं। ने ही बोन हरकारे महान, निरम्भि और अवके कामी पुष्परे करे है तथा सांस्क क्रकों के उनके अनेकों नामीका कर्नन आहा है। उनके करा अवस्थेत व्यक्तिनी अरुपुर ज्ञार है : वे विकास आरया और एराव्यक्ति बहुता है। यह मानावाद करने असे स्वयूत है, उन्होंने अपने ही क्रकाओं होनों सोन्योची सुद्दे की है। जहार ने क्रम भाग करतेने कारण को विकास करते हैं। वे महरोताली परमान् आत्म-क्रीको स्वयंत्रको हुएँ करके किर आंधार और अले अभिन्यानी देखात अध्ययतिको अलग करते हैं। इनमें निरामारसे सम्बद्धानको स्थाद क्षेत्रेको अवस्थिको से निवासने बक्ते है और म्हण्या एवं अवंध्याको समिक्य-वर्ण । समिति (हान) और विक्रीं। (कार्ग) की कार्यांत भी का गरनावसरे ही हुई है, सुनि अब प्राच्ये अर्थक विकार क्रिकार विद्वार विद्वार विद्वार अधिका वेकारण है। अवेकारने के सूत्रम पूर्वीकी सहि होती है, को होतार पूर्व प्रस्तुत्व पानिने । प्रथम, सामा और सारित्य-नेको क्रेन प्रकारक उद्धायकोचे एक चीची प्रक्षि सरस होती है. को बैक्स पार्न पहले हैं। आवश्या, बानू, तेया, बार और पृथ्वे---वे क्षेत्र महत्त्वम् प्रच्या हत्या, सर्वा, कर, रहः और राज्य---वे प्रवेश विकार केंग्राम संस्थित अध्याति है, इस वारोधी अधीर एक ही साथ क्षेत्री है। चोचवाँ चौरिक्ट वर्ण है, इसके अन्तर्गर आहि, कार्य, कुछ, क्रका और विद्या-ने यांच क्रमेशियां एक कानी, हाथ, हैंद, पुरू और विद्यु--- ने पाँच क्रमेरियों हैं । मन्तरहित इन समब्दी सुनीर भी कुछ है। क्रम होती है। ये भीनीस कल समूर्ग क्रांक्रिके क्रोरने नेक्ट को है . सरकहीं अक्रम इस्के बनार्य कारको करका क्या क्रोक की बाते. विभूकति वितरे केवारी है, इन सबसे इन्हें अपनेद अनुस्थानों के समझना पार्थिये । केवार, कनुष्य, सामा, बाह, श्रीर, प्रधारी, विकार, सर्पे, करण, विकास, देखीं, विकास, देख, बोट, प्रकार, हुर्गियत बाँडे, को, करे, परकार, है।र, पुरवार (गरेक), इसी, बेडे, नते, विश्व, कुछ और ये आदिके करने के कुछ पूर्विपान परार्थ है, सकते हुन्ही सरकोका करीन होता है। पृथ्वी, करा और अस्कारकों ही क्रांक्कोका निवास है और कही नहीं । यह सम्पूर्ण पालुपीतिक क्या कार कारकार है और प्रतिदेश इसका क्षरण (अप) होता है . इस्तीनमें इसको पुर करते हैं, इसके अतिरिक्त को तरन है औ कार बाद पर्या है। इस इक्स कर कारण शहरने करता हता ना मानसंबद सेक्सक करत इति हेनेके बारल क्षर नम काम कार्ड है। इर-वान्त्रेमें समसे पहले महाराजकी ही सृष्टि हुई है, बढ़ी क्षरका परिचय है। राजन् ! दूसने को पूछा का उसके अस्तार पद मेंने हर-सहरके जिनकार कर्तन किया है।

#### वसिष्ठजीके द्वारा जीवकी अज़ताका वर्णन

र्वसार्थ करते है—एक्यू , सेन्द्र ब्यानका एक देखी । **पूर्त के** के बाल करता हुआ इनाये कर क्या कुल करता है। वह गुलोके इकायते कवी रक्षाते प्रधानकी र्वतांकोरियोपे और क्राप्त हेक्कालेकी बोलिने क्या केल है। पीसे देशनका गाँक अपने क्षे अपन किने क्षा क्याओं अपनेको स्था औरसे क्षेत्र नेक है, उसी प्रकार का निर्मूत बारना भी जनने ही जनक नैयने हर क्षत्रक मुन्तीने केन काल है। या सर्व प्रज-द:वाहि इसेसे र्राट क्रेनेक की विक-पिता बोनियोचे क्या करण करके क्या-द-कार्य घोषता है। को कभी विसमें को केल, कभी और हराती, कानी रांतरे काल होती तक कभी परेजों देश निवास करत है। इसी अध्या का अल्बेहर, हक-देण, बार, नव्ह, स्रवेदर क्षण, बरेब, अर्थनाइ, कृत, क्ष्मित और अवस्था (कृति) आहे. देगोंका रिवार होता साल है। इन्हें रिवा और वी विश्वे प्रधारे प्रकृतिका अञ्चल के ब्रेस्थरियोर्ने प्रत्य केरे हैं, जा सबसे का जानेको अस्तान्य सन्तान्य है। कार्य अपनेको निर्वाणोनिका जीव प्रान्त है और कृषी हैकावा अधियान पारव करता है उन्ह इस अधिकारके है कराय इंग-इन प्रतिरोद्वारा निज्ये हुए कारोंका करन भी भीनता है अञ्चल अस्ता करून क्यी पूर्णक क्रेक 🕽 क्रांक वेदकारे समान द्वारा-के विक्येत्रकार प्रकार करता है, कार्य बीरासको बैठल है, सब्बे क्ले बैठनमें, सब्बे केटर, सब्बे करिया, क्यो राक्ष्ये, क्यो क्योन्सर, क्यो कुन-पूर्विते, क्षपी पानी और क्षेत्रकृते, कभी सीमीयर और कमी पान प्रकारकी संस्थानीयर स्थेता है। काची मैनकी नेकांच चर्चि मोपीन वारण करता है, कभी नेप-कांग कुमा है, कभी दिवारी क्या, सभी कारत मृत्यार्ग, सभी तन क कार्यः को वंश, क्यी एकेकि एक, क्यी केकी एक, क्यी कुन्हो मत्र, बची रेवपके करने और बची मीम्बे पास्त्र है। प्रत्ये अतिरिक्त भी गामा प्रभारको यक और तथा-स्थाने का बारम बारम और विविध-विविध क्षेत्रकोबा साथ होता है। क्रमी एक जाका जन्म देवर मेनन काल है, क्रमी हिन-रातमें एक कर और कभी दिनके कीने, कुट्टे क कहतें कार्ये चेका करक है। कची हः तह विलक्षा, कची आह दिनोपर, कार्य सारा, इस और बाट्ड दिनोके बाद अब साम करता है तक कभी एक प्रतराज कुछ भी भूते साल । कभी सद्य कल-पानका है लोकन कारत, कभी सनी क हवा पेकर क बाल और कपी दिल्ली करने और सोचा है।

अबहर काम है। कभै-कभै भेजर, योगून, साग, पूरत, केवार, एसे को सकत वेक्नों भिने हुए असोकों ही साबार क कारण आवश्यक करके बीवन-निर्वाह करता है। उस ज्ञान निर्देश करेंग्डी ह्याले व्य करा ज्ञानके कठोर विकालेक पारन करता है . सभी विकित अनुसार प्राप्तापन-प्रथम सम्बाग करता और अनेको प्रधारके क्षानिक विश्व काल काक है, काम कार्र आसमोके वर्गपर करना और क्षा कुर्यान्त्र केल क्षात्र है। क्षात्रे उद्य-तर्वेद पास्त्र केरका, क्यो एकको किरमक्कीको स्थाने केरत, सभी हरकेंद्र कर, कमी नीवनेंद्र एकमा विवाहोंने, कभी क्रमान करते, काले बोधा केमबीएटेरे तथा क्रमान स्केन्द्रोके कार और कभी मर्कान्त्री स्थान गुरुकोंने निकार करका है। इस स्थानीये करा प्रकारके प्रोक्तीय कर, हार, किया, पर, पह तथा क्षेत्र क्ष्मीका अनुहार सारत है। क्षा कारत करत, क्यो प्राप्ता और इंडिनेंड क्रॉन्स्क कार करा और करें देश तथा पूर्वेद से कम करा है। de-graft afte abidde was southle are but not स्वात्रका अनेने सम्ब, स्व, उप-अन् विकित पूर्व और कर्ष, अर्थ, व्यापका भी अधिकाम करता है। पूरा करता आसा प्रकृतिके प्राप्त अन्तरे ही स्थानके अनेको विभाग करता है। क्षा करा, क्षा करा, क्षा क्यार और क्षा क्रमानमें प्रकृत होता है, साथी पह सत्ता और सरका, क्रमी नेह कहता और पहला क्रम काची कुछ हैया और हेरल है —हसी क्रमार पूर्ण-पूर्ण कार्य की विका करता है। वार्यी क्रमा रेखा, क्रमी क्रमा प्रमा क्रमी विकास और संस्थाने अपन द्वारा है। विक्रम् पुरुषेका सक्ता है कि यह तक कुम्बर्गन कर्मवार्ग है।

वास्त्राध्ये वृत्ते और जनन ज्ञानीकोन्या हो वार्त है। वैले वृत्तं जीतील स्वर्वकारणे आपनी विक्तानेको स्त्रेद सेता है, वैले है जानावा जरनकारणों इन गुलोका संहर करके अनेत्रे पूर को है। इस जवार व्या वृत्ते और जानका कार्य वास्त्रार व्याव वृत्त्वे कीर जानक (कर्व पुलोहो रहित होनेका की ज्ञानिक व्यावसके) लीतको लिये अपनेने नाम ज्ञानाके व्योक्त पुलोका व्यावकार (जानोप) कर तेता है। यहि और जानक विलोक कर्त है, कर ज्ञानीको निवाद (वार्यकार) करके कीर्ने पुलोका स्वाक्त आत्रा कार्य-पार्टि ज्ञान होकर का (ज्ञानी) के इस्त होनेको प्रत्येक विगुलाकक कर्यको जनक कर तेता है। इस ज्ञान (ज्ञानिको हेता होते स्वाने है, सिंधू जोनावा अझननव या पान मैठता है कि या सम इस पुरूषर ही अतावान करते हैं (इस्टेरिने या दू-पी होता है)। या तिलुक्योरों हीन होनेवर की अवनेको उससे कुछ भारता है तथा कारभार्थ (कृत्यू) से जीत होकर की अवनेको बारतावर्थी (करनावित), सकते कित होकर की समस्या और तस्त्रों सिंध होकर की तथा-असमा स्थापना है। या बहारि होको किरकान है से की अवनेको होत पानना है, पृक्षिते सरका कोई सम्बन्ध नहीं है हो की समूखी कृतिको

अपने हो सम्बाहर है। अह कही नधर नहीं करता से भी अपनेको आने-कानेकाल प्रस्ता है। इसी प्रकार अहानी जीव अपनेको अवचार होका भी क्या लेनेकाल, निर्धय होकर भी प्रकार तथा अहार (अधिनकी) होधर भी हर (अहानी पृथ्वीका स्वयुक्त है। इस तथा अहानको कारण और अहानी पृथ्वीका स्वयुक्त है। इस तथा अहानको कारण और अहानी पृथ्वीका स्वयुक्त है। इस तथा अहानको होता है तथा उसे करोड़ों कार क्या हैने कहते हैं। यह अहा, यही, मनुष्य तथा देखाओंकी केनियोंने हमारों कर सर-कारण क्या शहा हिमा करता है।

# आत्याकी प्रकृतिसे प्रिप्रता तथा योग और सांख्यका मत

तम मन्तर्न नहा—नन्तर ( वैसे पुत्रको विक सी और सीने विना पुत्रव वंकार नहीं अन्य वह सम्बो; केनेने सम्बन्ध है देवनी कर्ना होते हैं, इसे अध्य प्रदूष और पुत्र की तथ एक-कुलेंसे क्यान्त्र (क्षेत्रक हैं वृद्धि प्रत्ये) हैं, देवी विश्वतिने पुत्रका कोड़ समान्यत कर पह्ना है। प्रदि में क्षितिने पुत्रका कोड़ समान्यत कर पहना है। प्रदि में क्षित विकार पहिन्दित्तर है से को क्यान्त्री, क्योंकि अध्यक्षेत्र एक क्षम अवश्व है। मुझे को पुत्र होनेकी हक्ता है—मैं भी सह पहने कर प्रदूष स्थान है से मेहसीय, क्यार्टीय, इतिहासीय और निर्मिक्ट है।

वर्षकार्थने कहा—सम्बद्ध । हमने केंद्र और कार्याने असराव प्रकार केवा को बाद बढ़ी है, यह श्रीक है। दूस मेरत प्रातकारे हो, बैनरी ही बाल है। इसमें संबंध नहीं कि पूरणे केंद्र उर्बंद कारोंके सम्बोध्य अल्ला किया है पह समावे प्रथाने डीक-बीच को समाप है। यो के और प्राचने प्राचीकों से बाद रहता है, सिंदु अलेंड राजको की सन्तरक, जाका क पहर एकार कार्य है। यह से केवल प्राथमिक केवा केवा है। मे प्रकार और मनवर्षिको साथ होनेने बारण निहानोची राजाने कारीय प्रमान कर्मन्य गाँ का समात, वह सा अगले. विकास विकार केले कर समाय है ? इस्तरिये स्थान और चेपके इता पहला पुरुषेके कार्य सेक्सा रेक कारत देक कार है, उसे में हुन्दें कवानीकारों बालका है, हुन्ते—न्त्रेनी किस जलका साम्राज्यार करते हैं, स्वेश्नेकों विक्रम् भी उन्हेंका अपन अपन बारते हैं। जो सांचय और चेननको एक सम्बन्ध है. बढ़ी बर्जियान है। कैसे बीक्से बीक्सी कंपनि केसी है, अह प्रकार समारे समा, अनेत्रको अनेत्र और केले केली अदि होती है। पांठ परमाना हो इतिहर, बीच, अन और बेहरे

रहेता प्रका निर्मुच है, कार: जानों पुश्र कैसे हो प्रकार है ? मैसे अवकार साहि पुन सत्ताहि पुनीते जनत होते और अनुमें सांव हे जाते हैं, उसी प्रवास सरवादि पूज की अपूर्णि से क्रमा क्रेमार अरोजे सीन क्रेसे हैं। अराज के क्रम-मृत्युरी रहित, अंग्रेस, सरका का और विविधा है। या सत्यति पुर्णीने केवा अवस्थिता करनेके करण हो गुरुवका कहानता है। कुर हो कुरकार्य है को है, निर्मुण श्रालाने मून बैसी क कर्मा है ? अतः पुर्नेति सरमाने सार्यको विद्यु एकोक को विद्याप है कि का बीवाल सक्त पुनोपे applicate affects this in the second lightly ज्ञानकृष्टिकाः परिवारः करके अन्ते विश्वाद् परमानवसम्बद्धाः राज्यकार करण है। अनः स्टेक्ट और योगके निवान करते हैं कि को सम्बद्धिं पुरुषेते प्रीत, सम्बद्धा, निवासक, निर्मूल, अन्यानी, रिवर और सम्बद्ध अधिकृता है, यह परमान्य प्रकृति और अलेंद्र पूर्णिले विकासन प्रवेताओं तथा है। विका कार आहे पान का कारफ रामको होना-होना संप्का होते है, जा सका को सहके सामानो प्रती। हो करते हैं । सह एक कार्वे रिवा पुनेवाल कापाल सकत है और राज कार्ये अरोब क्षेत्रेमाल करन् कर बाहरपता 🕻 इस अवार पह हर-अञ्चरका स्थाप सहस्यका पना ।

कारणे हुआ—कृतिकर ! सामने अक्षरको एकतम और क्षरको अनेक इस कारणक; सिन् अस भी पुत्ते इन कृतीके अन्यके विकास सीव कर है जा पता है। यहाँचे आपने कर और अक्षरको कार्यकोंके किसे कई कृतिकों कारणको है, सिन्दु में अस्तिरहाँक क्षेत्रके कारण उन्हें भूत-का गण है। इस्तरियो इस नामक और कृतरका दर्शनको पुत्त- सुनाम कारण है। कर, अक्षर, सीवक, क्षेत्र और केंद्र-अक्षरका विकाद कृतिकारों कारणे।

क्रीतकी का--राज्य । तुव यो-यो क्यों कु: यो हो, इस है सम्बद्धाः स्वर हैना । प्रत स्तरण विशेषकः चेन्त्रीविषकः सर्वतः कर का है, सुने--मोगका प्रथम कर्तन है सकर, को बोगियोका परम कर है। बोगके विद्वान अन्तरी एकावळ और प्राचन—ने बान्ते से घेर बहुओं है। प्राचना से संपूर्ण और निर्मुण चेरही से प्रकारका है। माराधान, प्रकारण और योगा-पा की कारोंको क्षेत्रका कर्या जाता बोगाध्यक करना चाहिने। बोगक सामद वर्ग्य हरा इन्हिलेको निकाले इसका सहकानो निका हे कर और मनीची पुरुवेंने किन्द्रे चीचीय राज्येने को अधिनवरी सहस्वत L मा परभवाक कार को। जो का प्रधानकी आवरिक्तोचा मान परके निवाहरी और विलेशित होपा पादिने क्या राजिक पहले और विकास मान्त्री प्रताहे आवाले एका बारत वाहिते । यह केची सन्ते प्राप्त प्रमान प्रतिकारो और सुद्धिके क्षरा मानके निवर करके प्रकरको भारत अधिकार है जान, बुने कारको चीते निकास और फॉलको उन्ह दिल में, राजी का भीरत्या संस्थानत है। दिसा प्राप्त को सुनो, बीको, बार्स नेते, देवले और सार्व बारोबा प्राप्त की बात, का नामें दिश्ती प्रकारक संस्थान भी जान कर कार्या मंति विका क्षेत्रम का किसी भी प्रमुख्य अधिकार क प्रकारण नहीं रकता, उसी प्रकार को अपने पुरू सक्ताओ प्राप्त को चेनापुर्ध करते हैं। इस अवस्थाने का कार्यक्रिय most the fall-air wortent drawn with विकार नामरे अवस्थित क्षेत्र है। विकार देशे अस्था परेहें सन्तर्थ नहीं रहता। देशे धोननिव्ह प्रकारी साल-सेथे समान भारते कहीं भी गाँउ की होती। व्यवस्थित केसीको अपने क्याने मुनरक्षित स्वीत, विराणकारकोते अधिक क्याँ और विकारीके समान केवाची आस्ताबर प्रदासकार केवा है। क्षेत्रम्, नर्गान्, वेक्केल और न्यावर स्थाप से का अवन्य की अपनासकार प्रकृत्वा क्रीन कर को है। यह क्रम अनुने की राज और पहलों की पहल बढ़ तक है। सन्तर्ग सरिकोंके भीतर पर अस्तानिकारों अकार रिवा कर है हो भी वितरीको दिवाची नहीं देश: पाठ प्रदेशो हो सरका स्वापकार होता है। यह महान् अक्षण-अध्यक्तों को है, प्राचीको वेहते चरनाची सर्वेत पुरुषेने को क्योन्स (क्रांसनस्वक) बात है। या निर्मेश, अञ्चलकीय, विद्युपतिय और अवस्थित्यून परणाल क्या गया है। जो चेरियोक्ट केन है, प्राप्ते रिवा केनक और क्या राज्या हो एकता है ? का तरह सम्बन्ध करनेकरे क्षेत्री सकते का अवर-तवर वरकावक वर्तन करते हैं। मारिक मेंने तके बेगार्कन कारकवा है।

श्रम संस्थात धर्मन करता है, यह विकार प्रमान हाति है। एकर् । अवस्थित विद्वार् पूर अवस्थित अवस्था कर्त है, जारते पुरस्त पान प्रचाट हुआ किसे म्यूनका बाहते हैं, महत्त्वाचे अवस्था समक तीतरे समझी जाति हाँ है, आंकारके सक्य प्रतीको पाँच राजाताई (कुछ, स्वयं, कुछ, स्त और राज) ज़बर हां है। इर आरोधो ज़ब्दी बब्दे हैं, प्रको स्रोतक क्राकेटी अधीर होती है, बिनो विकास का निकृति काले हैं । बीच प्रामेशियाँ, योच कार्विश्वर्यं, न्यासार्यं यन और चीन कार कर-ने है सोरद विकास है। सांस्थातको विकारिक पहला है कि से अध्योत और अलो विकार है क्षेत्रकारको भौतीत गर्भ है। यो एक विवसे अन्य हेत् है, काका करिये तथा की होता है। अक्रति परमानको संविधानते अनुरक्षेत्रकारके अनुरक्ष अन्तिकी एक्या बारती है (अन्तिह अपूर्विको व्यापन्य, पहलाको अपूर्वात्वर, अपूर्वात्वरो प्रथम पूर लाविके कारणे एक्टि होती है), तिलू जनका संवार विवर्ते प्राप्तानो होता है (अवस्ति पुरसीका करूरों, कारकार हेकारे, केंग्रस कार्य कर केंग्र है, इस तद सभी तथ अवने-अवने अन्तरको स्थित होने हैं) अपैने सन्दर्शने करो हां लहरे दिल करीने क्रम हो करते हैं, जारे क्या समूच्ये क्या अनुस्थे प्रकार से अस् केवन विश्वेषकानी सीन होते हैं। इस प्रचार अपूर्तिसे ही पन्याची समापि और सर्वाने समाप्त एक होता है, इतथा ही सुद्दी और प्राप्तका किया है। क्यानेक पुरस्को इसी प्रधार अपनिके कुम्मा और प्रशासक प्राप्त प्राप्त पार्टिके। (अन्यवसाने के यह एक कार्य सुती है और सुद्धिके सुनक कर का धारत करते हैं) । इसे क्या पूर्व की इसकाराओं एक है कार्ने कार्न है, बिद्ध सहित्रे कार्य प्रवासिकों हेरित करनेके कारण कार्यों हैं अनेकारके का सूर्य भी अनेक-पर प्रतिव क्षेत्र है। कामाना ही प्रकृतिको कास क्योंने परिचल क्षमा है । अवसी और अस्तेः सिवारको क्षेत्र व्यक्ते हैं । चीवीस उन्होंने फिर के क्वीलवी तरह—नक्षम् आवन है, यह क्षेत्रने अन्यक्रमानारे निवास करता है। समझ केनेका अन्यिक हेरेके करण है को समित्रक बड़ो है। या अस्पर्यक्रम राजूर्व क्षेत्रोची चारण है, इसरिनी क्षेत्रह महाराता है और अवस क्रोरने असमिकारो अस्ति है, इसरिने पुरू जार करन करता है, करावनें के राज कहा है और क्षेत्रा अन्य ( केर रूपण्य (प्रकृति) है और बेट्स स्तरत राज पर्योक्तरों क्या आरम है। बढ़ी संक्याचंत्र है (संक्याच्ये प्रमुप्तिको है क्ष्याच्या करण करते हैं और इसके खेबीहर सम्बोध्य कर्यार्थ जन करा करते हैं: बिन अपने किए को प्रवीतनों तक जावन है, करना अने केल है। किए समय पूछा कार्यको प्रवृतिके

पित कार सेता है, उस समय का केवल कारकारे विका हो । है, तो भी मैं अवस्थित करा पूर्विमेर्ने विका हता । देहरीत बाता है। इस प्रकार मैंने तुमसे सम्बन्धांन (सांस्थ) का क्षाओं स्थान किया, को इसे इस प्रकार सानते हैं ने समस्याप मारावी क्षात होते हैं। इसके अनुसार प्राप्त प्राप्त प्राप्त करनेकालोकी इस कंतरमें फुरव्यति जो होती, वे परायरमध्या अधि-वधी अक्षर-व्यक्तो अस होते हैं। विश्वकी वृद्धि क्यावका दर्जन करती है, वे सम्बद्ध-प्राप की प्राप्त कर सम्बते, हेने लोगीको बारेकार करीर कारण करना पढ़ाय है । सम्पूर्ण कमारको अन्यक बारों हैं और प्रवीतमाँ तथा सरका करने निया है, जो जो पानो है जो जानानकात कर माँ करा।

सुदिकार पूजा का का का रेगा है कि 'में राज है और का सकति कार्ते निव है," उस प्रकृतिका साल कर देनेके कारण यह अपने युद्ध सरामने नियम होना है। सर इत्या का अपूर्तियों जिला हुआ अधि होनेका भी कारावारे अल्ले फिर देवा फार है। जब का अनुस मुख्यानुस्थान हीति भूकी रकता, का सभय हालों सभये विश्व होनार कारणात्मक स्तर्भेद का कार्या है और निक्ष अस्त्रा स्थान नहीं प्रता । (जिल प्रका प्रीकान्त्रको विकेस क्षेत्र है, इस प्रका धा को प्रकार करने रूपता है--)ओत । की पत कर किया, मेरे पहली अञ्चलका कर्य ही अकर करनी कर बाते है, उसे प्रकार में भी आवश्य का परावास्था है अपूर्णन करता पह । किस नव्य पास पानिको ही अपने भीवनका कुर समझकर एक सामाने हारे सामान्यो कार है, बसी बच्च में भी अक्रान्यक एक देखते दूसरे देखते प्रकारत सह । व्यासन्तर्भे इस कान्त्रों जीता का कानाव्य ही केरा करा है, इसीके साथ लेगे रीवी क्रेसी अधित है। पहले में बैदार ही क्यों न रहा होदी, इस सम्बन को मैं हरतारी सम्बन्ध-अधिकारको अस हो पूजा है, इसीने चुने करने राज्य दिलानों देती है, में राज्यन इसके ही हरू है, यह समान विर्मल है और में भी हेल हो है। में अस्तिकरे स्वेल है जे भी जातन हमें मोहके बसीपूर होनार हटने सम्बद्धा हर आसक्रिमचे का प्रकरिके साथ एका चा। जाने जा रक महाने कर निरम का कि पूर्व अवसायके सम्बद्ध पर है न प्राप्त । पह के उस, प्राप्त क्रम नीय-पान केन्द्रिक मोनोंके क्रम दावी है, भार, इसके क्रम में बेले क सम्बंध वे शिविक्त होचर भी हर विकासको अपनिके हारा रूप गया ! राज्यक मेरे बढ़ा बोरह राज्य: जब इसके इस्थ नहीं होता। किन् इसमें इसका कोई अवस्था नहीं है। सार अवराम पेरा ही है; क्वोंकि में ही वावकारों विकृत क्षेत्रर इसमें असल इवा का। कामि मेरी एक भी पूर्व नहीं

होकर भी प्रवक्तने परस्य होनेके कारण देखारी करा। उस ? इस कार्क विक-पित्र केलिकोचे कराकर मेरा क्या नहीं दिना ? प्रत्ये कर कर प्रधानको चेनियोचे मामानेक कारण नेर्य केता को कवी की। तक प्रत आंक्यरमधी प्रकारिको पोच जोर्ज जान रही है। अस भी बढ़ कहा-हो हरा करना करते. बिर मेरे साथ संबोधकी चेतुर कर रहे हैं, सित् क्षत में प्रांतवी कार कृतक गया है। अवता और क्षांब्राएं जान है पह है। जब से इसके और इसकी पनावने हरानकर निराजन पर्यक्रकाकी सरक होता और अधिकी संपत्ता प्राप्त कर्मन्त । इस यह प्रकृतिको सन्तरना यही करण करेना । वरपालको साथ एकता होनेने ही केन कानान है, क्रम प्रकृतियोद साला प्रातेनी पूर्वी (

हा। प्रचार प्राप्त विभेषामे हता सबने सुद्ध सरकाता हान प्राप्ता (संबंध प्रमोद्दे के) क्वीलमें शत्य हरपाय (निकामीतक) का तान करके निवास अक्षरधानको प्रदेश क्रोबार है। शहरत् । बेहाने बेहर करनेर विकास गया है, जानोड़ क्ष्मुका को क्रा-वक्षाका विकेश कराविकास हार की पूर्व कुर्वाच्या है । यह संवेद्धार देवा स्वापन स्वयं अस्तर सं निर्मार है । अस्य में हर: यो पार पार का है, जो पार केर सुने — मैं सोका और योगका को कर्मन मिला है, जाने इन केनेको पुरुष-क्यक से पान काना है: किंद्र नामानों को सोवनसाय है. बड़ी बोजरानि की है (क्वोदि बेनोबर कर एक है है) । राज्य ! की डेमध्याको हम सुद्ध सनातन एवं सबके आहित्य अनुने कराने करने अनेत किया है। यो एक केरनी कंप्रकोर अनुसार धारनेकार न है, औ हर उस्प प्रान्तार उन्हें भी करन करीने । को अब करनेक नहीं अधिकारी है से विकासकार प्रत्यों साम है। सरस्वादी, पठ, करणे, कारणे, अवनेको परिका कारनेकाने और दूसरेको बहु पहिल्लेकारे बनुष्य भी इस झानके अधिकारी नहीं है। कैसे लेनोको यह प्राप्त केव पाहिने ? इसको भी हम हो---अक्रम, पुरुषा, कारोबी निको हा प्रोचले, विसर्व केंगी, विकास, अरु केंग्रेज धार्म धारनेवाले, समाप्तीता, सबके Bird, percenti, prefetten auer unburt. विकासीय, बहुद, बिहा, बिहारिका अहित व करनेकारे तथा अन-करने सम्बद्ध पुरुष ही इस हरको अधिकारी है। किनमें रुर्गुक पूर्णका अध्यय हे ऐसे पुरुषेको चा विश्वत परम्बाका जान नहीं देश कारिये । विद्यानीका कारण है कि इस कुरोसे हीन कर्माको दिन इस्त उन्हेंस अस्ता प्रस्थान नहीं करत तथा कुमानको उन्हेल हेनेसे बकामा थी परंप नहीं

होता । एकप् । विस्ते त्रव और नियमका प्राप्त न किया है, यह प्राप्त पृथ्वीका राज्य वे हो भी को यह करोड़ यह देख माहिते; सिंहु निरोधित पुरुषको अन्यत्य इतका करोड़ सहस्त प्रार्थिते।

करात । हुनने मुझसे क्याह्मका प्रान प्रान विका है, अब तुम्मरे मनमे प्रतिक भी क्या नहीं होन्य व्यक्ति । या प्रमा परम परिता, प्रोक्तिहित, अस्ति-क्या और अंपनी पून, प्राय-मृत्यूने क्यानेवारव, निकाय, निर्णय क्या क्यान्यान्त्रम् है। यह सामूर्व क्रानेका व्यक्तिय कर्त है। व्यक्ति क्रान व्यक्ति कर्त्य क्यांच्या परिवास कर है। विद्या प्रयास क्या हुनने मुझसे स्थानन क्रान्या क्यान कर विका है, इस्ते प्रधान केरे भी स्थानन हिल्लामार्थ क्यानो क्याह्म हुन्सो क्याह क्या

र्थन्त्र्यं स्वतं है—चुनिहाः । स्वर्ति वरिक्वनेतः स्वतने अनुसार पूर्वालये राज्यस्य प्राध्यक्ताः स्वतः की हुन्दे स्वतान है। यह स्व स्व है, तिने चान सेनेसर हिए हुन संस्थाने नहीं साम पहला । यो जो तीन-तीनः वह स्वतान, वह संस्थाने

करेकर क्या रेखा है। यो यान रेखा है, या वो अवस-आगर हे कार है। यह । यह परद करवायकार हार मैंने देवर्षि पार्विक केले कुल का, बढ़ी अंग हुन्हें के बहाया है। प्राथमिके अस्तिकार्यको और वस्तिकारीसे अस्तिवीको भी जाने जा हुन क। कालीने नित्न हुना जा कालन जाना क्लोड़ा परक्या 🖢 इसे कारकर अब हुए सब प्रकारके क्रीकार स्थान कर हो। एकत् ! को श्रूप-अश्चरको कारक है, को अंध्यान पर भी होत; से जी करता, स्तीको कर प्राप्त केवा है। कुई क्लूब इस सम्बद्धे व कानकेक पारव कांग्रह संसालें कहा है और इक्की केनियोरे क्य-मानके बहुत्वा अनुस्ता करता है। यह हैर, स्मृत और पशु-वर्धी असीली चेनिये परमसा सूता है। व्यक्तनमध्ये संबुद्ध अन्तवस, अन्यक अदेर वर्णकर है, इसमें विकाल की प्रान्ति अविविद्या केने पार्था स्थाने हैं। तुम नेदा अन्तेहरू कका इस करकारले पर है की है, अब स्वीपुत और क्षेत्रक कुछक सर्व की कर सकते, (पुन कुछ सकते

# राजकुमार वसुमान्को एक ऋषिका वर्गविषयक उपदेश

भीनार्व काले हैं—चुनिर्देश । एक सम्मन्तरे सात है । कार्यानंत्रका राजकुत्तर समुद्रान् विकार केलनेत तिले एक निर्वत कार्या गया। वहाँ काले कुनुके केलने ताला हुए एक स्थानिको देशन को कार्य है की हुए थे। क्यूकार्ट्ट दिवार कार्या कार्या कार्योंने दिन राजकर अनान विकास और किए अन्यों कार्या निर्वत हम अव्याद अने विकास— 'स्थान्त् ) इस नामान्त्र करियों कार्यों अन्योग होकार स्थानार्थ के समझ है ?'

मुक्ति वहा—सर्वाद्यार । वर्त है सर्वाद्यांका महत्वार प्रतिकाल हथा धर्म है अन्य अस्ता है। विने संपक्ति परावर प्राणी स्त्री है सर्वा हुए हैं। हुए से एक विक्योका है इस सेना पासी है, जान दुन्तरी कारणांकी हुन्या प्राप्त क्यों नहीं होती, अपनी कृतिता कृतिके प्रत्य अनी हुने कामनाओं विद्यास-है-विद्यास विकास है। है। उनसे हैनेस्वरे प्रत्याची और हुन्दरी हुने नहीं नहीं। वैसे प्राप्ता प्रत्य पाइनेक्योंके दिनो प्रान्ती परिवार हैना अस्त्राच्या है, स्त्री प्रवाद कर्मका पाइनेक्योंकों भी सर्वाद परिवार प्राप्त करना करिये। हुन पुरुष नहीं वर्गको हुन्या करें भी से उससे हुन्स विद्याद कर्मका सुन्यावर क्रेस फांडन क्रेस कात है और सम्बुद्धान की समोद्राहनकी हका करे से अलंद क्रेमरे कहिल-हे-कहिल कर्न की सहय है करे हैं।



कामें खुकर भी के अभीन सुरुक्त कायोग काम पहल है, अस्में प्रामीन ही सम्बन्ध पार्थिने तथा गाँवने सम्बन्ध औ यो करवारी मुनियोधे-से सर्वाध्ये है तुम्म कथा है, सामूर्व निनती सनकारित्योंने ही करनी काहिये। पहले निवृत्ति और अपृतिने को गुल-अवपुत्र है उठका दून अपने बद्ध निवास बार त्ये, दिन इकावधित होका सहाद्वीक का, कवी उक करीरकार वर्गका अनुकार करे। अधिक शिका और परिवताच्या पारान काले हुए अच्छे देख और कारानी सामु पुरुषेको अर्थन और सामारपर्यक स्थितको-सामिक सन करण जातिने। और उसने केन्द्री नहीं रहाने व्यक्ति, क्रुकार्वेष्टर प्राप्त है। यह सामान्ये अनेत कान क्रीहे क्रोड त्यार वर क्रम केन काहिने, वेनेके नार प्रकारन समान श्रानक करान भी करण काहिते । एकस्, क्रीवर, विशेषिक रमध्यानी, सराव, मोनि और कर्नरे कह बेक्नेक कहना है कुरने हैंन्ये उत्तर पता है। उत्तरी 🛊 सामित्रे पता पुराने क्रमा हो प्रोक्कर सम्बन्धि प्रोक्षक को क्रम बोर्ट पनी मनी है। इसी जकर करेद, पहलेंद्र और साम्पेक्स विक्र प्रेकर सक्त कः कार्वे (कारा, पानन, अस्तरन, अस्तरन, का और प्रतिन्द्र) का अनुक्रम क्रमेकाव प्रकृत क्रमेरे क्षत वर्ष कान पात बालां क्या है। इस प्रवास हेट, पास और पास्त्रा विकार पान्हें हिने हुए कुनते नर्न होना है और केर-भारतिका विकार न क्रारेक पात और विकासी

निवेचकरी नहीं कुन कुछने दिन्ने अन्तर्वेद करने परिनत है सामा है। को महूल अपने केंग्रेक कहा करके वर्गक कारत करत है, काको वर्ग परलेको सुक प्रॉनात है, प्रची प्राणियोचे पान्ये अच्छे और मुटे विचार सुते 🕻 करूमको पार्वको कि विकास अनुस विकासिकी ओरसी इक्कर कुथ विकारोगें समावे। अपने वर्ण और आसमके अनुसार समावे क्रम प्रमा पाना किये व्यक्तिके तथ प्रवासिक कर्मेक आहा करे, हम की अपने वर्गके अनुसार विसर कर्मने अनुसन हो कामा प्रकानसार प्रसान करो, संस्को विभर करे, बुद्धिकन् और प्रशंत क्ये तथा तहा पुरुषेक क्रमा सामान करे । को चातुक्तीचा सङ्घ वाता है को क्वीचे अक्वारे हेरे अवक्वी आहे हो स्कार ई के हर रोच और पार्वकों के क्राफ्त करोक्त हो। पृष्टि (कार्यो विकास) ही सम्बन्धान पूर्व है, एवर्नि महासिव धीन्तर व प्रोतिक कारण ही कारीने तीने मिर्र और राख क्यारे कुछ होन हे करेके यह भी वृतिके है करने हत्य रोप्योको प्राप्त हुए। हुए भी करीह एवं स्थापी विद्यानीकी रंख करे, इसमें हुन्तरी बुद्धि कोगी और हुन्दें वरनासकी जी से करने ।

पुनिके इस उन्हेसको कुम्बर सबकुशर बसुधार्थ अन्ते करको बारकाओर (स्टबर कर्नि स्टस दिया)

### याज्ञवल्क्यका राजा जनकको उपदेश—सांस्य-मतके अनुसार सृष्टि, प्रलय और गुणीका वर्णन

े प्रिक्तियों केवर—निसाम्ब । यो वर्ष-अवन्तेते प्रह्मित् । संस्थानकृत्य , राज-कृत्युते पुत्रक, पुत्रक-कारते क्षेत्र, निस्त , निर्माण, कारणाव्याच्य, अवस्थ, अस्त्राच, प्रतिव पूर्व क्षेत्रप्रदेशित प्रस्त है, अस्त्रता अस्त्र हमें अस्त्रेत्व प्रतिवित्ते ।

ः नीयमीरे वर्षः—गारतः । इस विकासे धुन्ते करणः-महामानगाम संग्रहस्य कृषः प्राचीत प्रतिक्रम सुमान है। एक वार नेपरमके पुर महामानगी समा करण्ये प्राचन प्राच—'विकारः । इतिहाँ विकास है? अवस्थित विकास केंद्र है? उससे पो कारण प्राचित क्षा समान है? अससे भी पर निर्मुण समा कर्षः है? वृद्धि और आन्यास कृष्णाम है? में समा वासनेकी कृष्ण वर्धिकों। में समानक कृष्णाम और असानी हैं, इसस्मित प्रथ करणा है। अस्य समाने जन्मार है. असः आन्योस इन सम्बाधिकोंनो स्वस्तेनी प्राचा हो सी है। व्यानकार व्यान्नका । तुम को कुछ पुतरे हो वह योग और लोकका परण दालका प्राप्त हुई कारण है, सुने । कारि हुओ कोई की किया अद्यान नहीं है, जिस की पुत्रको पुत्रते हो हो व्यान ही कहा है: क्योंकि किसीके पुत्रकेस कारकार कुक्यों असके कारका कार देश ही काहिये, वही स्थानन कर्ष है। अवस्थित कारत है और क्योंक कियार सोरख । अस्ताता-क्यांके विद्यानी अस्तात, व्यानका, क्यांका अवस्था, कृती, वाल, अस्तात, कार और तेय—इन कारत सर्वोच्छे अवस्थित कारताया है। अस कियारोंके काम सुने—अस्ति, वाल, नाम, विद्या, क्या, कार्य, क्या, कर, कुछ, विद्यु, सम्ब, स्वर्ध, कार, स्थानीर क्या--इसीसे इस्त-कार्याद क्योंक्य स्थान स्थान स्थानित क्यांका स्थानकार है। क्या कियार कारकार है क्या के क्यार हम्मे साथ सोरकार एक है से से सोरकार क्यार कर्ष है और इसके साथ सोरकार प्रस्ति है

बाली और प्रकृत सुधि बाहरे हैं। न्यूनलंके आंधार प्रकट होता है, यह सुरात पूर्ण है, जिसे बुद्धानका वृद्धी करते हैं। कार्यकारको पुर अध्यक्ष क्षेत्रा है, विन्हें बोलके सार्वाकारिक स्तरि मार्थ है। कार्य पाँच नात्रका स्था हर है, इसे कीवी कार्या पृष्टि सहते हैं। एक, रहते, एक, रह और सम्बन्धे सेव क्रियर पश्चमूरोचे करत होनेचे कारण मीतिक वर्ग समुख्ये E. we what wile \$1 also, your, but flow after प्रामेनिकको एका पर्न स्थाने हैं, यह व्यक्तिकारक (कारत) wie be abn aufeie une wiedenbalt werb mit ft, me प्राथमी पार्न है। यह देनियम पूर्वि है। बोलपार, अल्प्यापुर्विः स्तर्थ है काल, जान और सरमात्र करने जान प्रकार हता, का सरकार्ध कर्त है। सम्बद्धान् अकारकार्ध्व साथ सम्बद्धाः कार और उपलब्ध निश्न भार काल हुआ, हो काल पर्न बाते है। आओ और भी प्रशंका पान अम्बेन्स की है। राज्य । इस अवस्य की में अध्यानको पूर्व और मीनीस marrie greifen gebit begrer unte flore i :

क्षम सम्बंधि संक्षरका क्षमक क्षमे । असी-अन्यने सीव Pers, segregorer marrill from mener webert with safe र्मका करते हैं यह तथा करों करा एक है—स्वापनी पन देखते है कि भेरे विकास अन्य के पान के उनके पानी पानके पानन बारोको प्रका केरी है, इस्तिनो ने अईकाने अधिकारी देखार व्याची संद्वाली सिन्दे अद्भार हैते हैं, यह सर्वन में कारेन और अभी बाद्य कावा कावार व्यक्ति सामा उन्होंना है कारे हैं। सरसाम अपने नेवले बचनक, सन्तर, बोवक और ब्रोह्म - इन पार स्थानो अभिनोते परे इर उन्पूर्ण बंगाओं पान कर काले हैं। बाला वाले-वाले परावर विकास पात के पात है और यह पूर्व तथ औरने प्रकृतिकी पीठकी तदा विकामी हेरे समाति है। जानेंड कह अभिक बर्धनम् सूर् करनेसे वसी ह्यं दृश्योची मरने पहार् प्रमाने 🛍 हेरे हैं। सहस्ता, कारबीमधी समझे बहुबर सार जार समा जाता है। पानीके सकते ही जान जानन भागनक पान बारक करती है और एक ओर को जेस्से प्रस्कृति हो उन्हों है। एक अस्तर सरमान् चापूरेन अपने आहे कालेने प्रकट हैका हा प्रकार केलो काती हाँ आसके नियल को है और क्रार-नीचे एका बीचने एक और प्रकारित होने एक्से है। सहस्रार, वायको सरकाय, स्वकारको कर, परको अर्थकार, अर्थकारको प्राप्तक और मारावको उनागीर करन क्ष्यमा प्राप्त कर तेते हैं। ये कुन्तु अस्थित, सरिव्य और

म्युराज (समहित्तुरि) को कार्य होती है, इसे निवार पूजा । अधि आहे निर्देशको सम्बद्ध, कार्य ईवर, ज्येतिःस्वयन क्या आंत्याची है। ये एक ओर इंध-नेरीको, यह ओर क्षांक, ज्याद्य और पुरुष्यते एक सब और परस्कारे हैं, हे क्यार्ग क्यारको स्थान करके रिका है। ये राज प्राणियोके क्रुवरिका सरका, अस्थ, परम महत् और संवेदर है सक ने के करूर्य निकास अपनेप और करते हैं। इस जन्मर mais armit minorus, organ, armite, finchies, का-भारत कांकाके एक और एक प्रधानके केवीचे रहित परनेवार के केन करे हैं। पानरू । इस जनार की रहते का क्योंके पंजाबक क्रम ब्यानक है।

> कार्य ! अकृति स्वयनसम्बद्धिय चील करनेके विन्ने अवनी है हुए है के बार के प्राप्त पूर्ण के साम करते हैं। जैसे कुल हुए क्षेत्रको हुन्यो क्षेत्रक पात रहे है, वर्ग उपल अवृति पुरुषेत एक एक पुनरी अनेको गुरू अवस कर देती है। serve, with, we add proposite recess, were, with, सारोप्त, कंग्रेस, अञ्च, केवा और कोवक स्थाप, क्या. 48, miles, west, 100, 1000 fre, 1500, 1000, क्यानाम संदर्भ, क्षेत्र, क्याना, स्थाना, आवेत्ता, क्रमी क्रमानक प केंग्र, क्र-मिंग्रके विमेनक प्रकार प करतं, क्रमोर क्रम करतो वक्रमे रक्रम, विक्री क्यूमी इच्छा र करत, क्षेत्रकार केल कर अभिन्तेल क्षा करण-ने क्षा कुल सरक्युमको सरका होते हैं। यान, देवार्थ, विश्वह, स्थानकार क्रमात, विदेशक, समान्याको सेवाने आसरीत, पर-विकारे हीते, कुन्दो चेल लेकेक सभाव, आंधार, माननेव पुरुषेका सामार व करण, विकार, के परिचल, संबाद करण, क्रांत्रेक en ger der, Periose, uttern, daufa, meter. कार, बद, वर्ग और है।—ये स्त्रोपुर्ग्य कार्ग काराये गरे है। चेद्र, राजवाद (अपनि), प्रतिवा (प्रोध), अन्यातिका (जरक), ज्यूत प्रजानी करनेकी चीचोर्ने की रकता, चोजकी संकंध व होना, पीरेनोल महाओसे मन न घरना, सुगना, बना, कुछ, अलग, विक्रा, दिन्ने कुछ, अधिक ब्राव्यत और ज़बाबों कर रूपान, नाम-नाम और बाबेंगे हेन एएक हवा वर्गते हेत करण-मे का क्रमसमूच समझने पार्टिने ।

> एकम् ! सरक, एव और तम--ने तीन प्रकृतिके गुण है। अव्यानसञ्ज्ञा किया कानेक्से विकृत बढ़ी है कि रवरिकक पुरस्को उदान, रकोनुजीको प्रव्यान और तमोनुजीको अपन स्थानको अभि होती है, केवल पूजा बालेने पहुच कर्मानोको कार करन है, कुछ और का क्रेनेक अनुकारो प्रजंबेकरे जब नेता है एक केवल फ्याबर करनेपर क्रो अवोगति (नरव) में निस्ता पत्रता है। सब मैं सरव, स्व

और तथ-इन दीनों गुलोके इन्द्र और सन्विकाला<sup>र</sup> करीर | करत है, सुबे—सम्बद्धको साथ स्बोकुन,स्बोकुको साथ सबोगुओ अवका वयोगुमके साथ समामुख्या केर देखा बात है। केवल प्रवानुसरी पुरू मनुबाबों केवलेकारी अहि होती f. रकोगुल और सरवगुल होनोंसे सुख हेनेका का कन्छ-क्षेत्रिमें कम पता है उस्त स्वोतून और क्षेत्रुको कुछ चौजको हिर्चेच्चेन्सि सम्ब लेख प्रकृत है। किहने सेन्से मुख्येका संयोग खुला है, कारका भी क्युक्तवेदियों ही क्या होता है, सिंह में पुरुष और कमो रहित होते हैं, का महत्त्वकारोंको सहस्य, अभिकारी, अकृतका कृत क्रमान स्थानकी प्राप्ति होती है। यह काम पर क्रानियोंको ही सुरश्य होता है।

रुक काराने प्रान-महत्त्वो ! प्रकृति और पुरू केवे आदि-अन्तरी रहित, सुर्विहीर और अच्छा है। ग्रेनोके के नृत अध्यक्तम है तथा येथी है रिश्व और असता (प्रदेशोत अलेक्ट) है। फिर एक्को वर्ग आको अवेतर प्रधन्त और कृतिको पैतानपुरत केवा पात है? अन्य पूर्वतान मोब-वर्गवा रोवर बारो है; इसरियो अन्योगें पुँसी पूर्व सारा-मार मोक्रवर्ग सुरुवेची हुन्ता है। पुरुषे आहिता, बेक्स और अपूरिये विकास स्थापित प्रतिके बेह्ना आश्रम पहल करनेकारे प्रमुख केवाहरतेले प्रकारकी बार कराइने देवा भागेयको गोवके प्रानीवा वह साहाक क्षेत्रा है, के उसे फिल कारावर जाति केवी है ? कारार की प्रकास करियो । साथ ही पृथक-पृथक संदेश और क्षेत्रके (तमका तथा पालुकार विक्रोपः भी वर्णन स्टेरिके: स्टेरिक भाग जान जानके दिन्ने इक्टब्लान्डक है ?

कारकरो सह—राज्य । विश्वसम्बद्धी प्रवृत्ति और गुमारीत पुरस्का बक्रमें तस मैं कर का है, तुने --- कार्की महत्त्व बाहते हैं, विश्वका गुरुतिक स्ताप सम्बद्ध है यह गुरुतार, 🕯 तथा को गुरुवेके संस्तरीने रहित है, यह निर्मुख व्यक्तरात है। अस्यक अपूर्ण समामते ही मुख्यती है, यह मुख्यत हो गई है।

अधिकारण जी कर समयी। को बिसी महाका इस नहीं होता । हर्ग्य किरतेत पुरुष स्वयंत्रको ही हानी है, यह साह हर कारको कारक स्थल है कि मेरे रिज्य कुरत कोई पेकर पड़र्य नों है। तक का क्षेत्रिक मारण प्रकृति अनेकर (सा) है और निका कथा सन्दर होनेके महत्त्व पूरण चेतन है। सिन्दु कंपलक यह स्वापनक मार्थित पूर्णिक संवर्ण कथा और अपने कारह सरकारों जी करता है, समझ अल्बी मुक्ति की होती है। यह अपनेको प्रकृति (प्रणा) यह यहाँ मानको प्रतरत प्रकृतिकर्ती व्यानस्य है। प्रकार पहालेकि सीचीची जनस बारोजे प्रारम को प्रीकार्य बढ़ो है तथा का पुलोबी कारी। तथा अल्पका कर्म हेरेले पुरस्कार्य कहा बाता है। अञ्चलकारकार क्षानीकारे रिव्ह पति पानी और अधिनिय होनेके पाराम पुरुषके केवल (अवसिक्त प्रमुक्ते पहिल) व्यवसे हैं। ३क्रे कुल-कुलाक अनुसार के अधिकारके कारण केल है, यह कारणान्त्रों निता और अन्यक्ष है तथा कार्नकारों निता और क्या है। क्याने प्रतिकास कर प्रतिकार और वेकस प्राच्या सहारा रेकेको पुरु प्रांत्यके विद्वार प्रकृतिको एक afte spread unber werd & ; were meelfelt fiere affe feine है क्या सरकार (अपूर्ण) पूराको विद्य वर्ष अधिक है। वैसे क्षेत्रको सूच असम्ब होती है, जारे अस्तर अकृति भी पुरूको निवा है। की पूज्य और कार्य बांद्रे एक साथ हेनेवर की उन्हरून-अररण प्राच्यो जाते है तका विशे प्रधान क्रांगर कृत्यी प्राप्त है और करी कुरते, क्योंके अनुने कुमार रिम्नु नहीं होता, तारे ज्ञार पूजा भी अपूरीनो निवा और अराष्ट्र है। पैका रहेन प्रमोद्ध स्वाचना और निकासको सीख-सीख सर्वे राम्या करे । को अवसी और पुरस्को एक-कुरोहे निवा बड़ी चन्ने, से करंकर चेर नरवर्ष करते हैं। इस प्रकार मेंने तुन्हें र्त्तरप्रकारक का प्रकार है, संस्थित है है। अपूर्ण और पुरुषके निराताक विश्वार बीरके केवलको आह

# योग तथा पृत्युसुचक चिह्नोंका वर्णन

कारकार्य करते हैं—राजर् । ये सांकारकार्या हार | वे स्थानी हैं। वे से निवारों हार कृते दिश्व करते हेनोंको में कुई कारत चुना, अन चेनकावास इक हुने । संस्थादे 🛮 एक कार्या है । येथी विश्व सामाना सामाना सामे है, सम्बन कोई हान नहीं है और केनके हत्यन कुछ कोई कर । संस्कृत विद्वान् भी उत्तीवा हान साह करते हैं। की हांस्कृत भार्ति है, होनोबर समूच एक है और होनों है पुरसूक्त कहा और असलों एक सम्बन्ध है वही सम्बन्ध है। करनेवाले हैं। को इन होने क्रश्तेको सर्वक निवा करते हैं, | केप-१००को वह (आवस्ति) को अकरता है, असको

ये मुन्दिक मेलको इन्द्र और तीन मुन्दिक मेलको स्वित्वत कहते हैं।

काने बहारें कर लेनेकर योगी इसी बरीरसे करों निकाशीने । क्रकुन्द विवास कर सम्बद्धे हैं। कारान्द योगीका स्वाध प्रकेत कार है तजाब कर चेनाराओं दक्षण वर्धनके प्रत लोक-सोबागारोंने विकास करता है। स्थान रेडको जान हेरेकर को परम सुसारम मोक्षकी आहे। के बारी है। करेनी पुरुषेका स्थान है कि वेहने प्रमुख और सुद्धा से अध्यक्त संग्येक्ट प्रार्थन है। क्यून मोग अधिका आहें, आह उन्हरकी निर्देश सहर मार्गवास है और युक्त योग (युक्त रिका, अस्ता, आगायान, प्राथका, बारवा, बार और क्राफी-(३) शाद करते (अंतरे) से कुछ है। योकका उत्तर कर्तन्त है आवासन, को संस्था और निर्मुख नेव्हों हो अवस्था होता है। मनको कारवाले है साथ दिला करेकार प्राचकर प्रमुख है और प्राप्ते (प्रिप्ति) के विद्यालीक करते सम्बोधि एका कृत्या निर्मुत्। प्राचानाम सङ्गानक है। सन्तृत प्राच्यान नगर्के रिर्मुक (पुरिस्कृष) करके दिन करनेने सक्तनक क्षेत्र है । इस सद (प्रान्तकाको हारा) करतो करते करते हारा और Saider der gereint webeit somer gebeb प्राचनाम्यः व्यान करना करीने । क्रम, कर्ष, कर, सर और राम-ने द्रीवरोंके पांच केंद्र हैं, इस केंग्रेजों रह परे । वित कुर्मानी इतिहासिको पानते विकास स्वातंत्र तथा और विकोधनो सामा बारे। कालो अवंधारणे, श्रांचारको सुदिने और सुदिको प्रकृतिने कारित को । इस प्रकार समझ एक करने केनार क्रम परमानका काम काम काहिने, जो स्क्रोपुराने रहिन, निर्मेश, निरम, सारमा, प्राप्त, विकासिक, प्राप्तम, अन्यानीचे, अभेद्य, असर, असर, अस्तिकारी, कृतका श्रामन करनेकाव और करातन कर है।

पात्रम् । अस समाधिने विका सून क्षेत्रके संस्था धूनो । सैसे तुत्र हुन्य रन्या सुनारे स्तेता है, साथ ज्यान क्षेत्रमुक्त पुरानके विकार तथा जात्रका सभी वाली है—ज्या सम्माधिने विता होना नहीं व्याना, वहीं शतको ज्यानसभी व्याना है। सैसे तेत्रले पत्र हुआ दीनक व्यानुक्त स्थानों व्याना स्थान स्वात है, आसी विका विकारकारों स्थानकी और उटी वाली है, स्मी वास सम्माधिनियु कोनी की विकार होता है। कैसे व्यानाव्यी सत्त्रात्रकी हुई कैट्रोके आमानाते वर्तन व्याना हुई होता, कैसे ही सनेकों विकार व्यानात वेत्रीको विकारता नहीं कर सम्माधि सत्त्रके पास बहुत-से तक्ष्म और नामाधिकी व्यान हो हो और साह-तत्त्रके कान-कानने विको व्यानी से की असका व्यान व्यान

नहीं हो सकता, जहें उसकी सुद्ध स्थानिकी पहचान है। कैने सावकान पूरत होनी इस्तीयें देशनी परा करोग लेकन सीड़ीयर कई और उस समय बहुत-ने मनुष्य इसने उसकार रेकन को उपने-काकाने समें के भी का उनके इसने एक हैंद्र भी तेल किने नहीं देखा, उसने प्रकार कोनकों देशी रिवरिको प्राप्त हुउन एकाबिका की होता । कोगसिद्ध प्रहासकों कारण सम्मानिकी विक्रिक्त की होता । कोगसिद्ध प्रहासकों ऐसे ही स्थान सम्माने काईने । को अनको प्रकार सम्मानिकी निवर हो सम्माने का अधिकाकी प्रहादकार साथानिक प्रमान (प्रकृतिकों संमानिक होता कुछ का कारणानकों प्रस्ता हो सम्मानी कारोगी स्थान के स्थान के स्थान हो सम्माने कारणा है।

falence ! are if Percitis und se megane विक्रोबर कर्तन ब्रांस्थ है । जिस पुरुषको अक्टबरी क पूर सम्बद्ध करा, दिलो काने काले कभी देखा हो, न दिलाची को तका पूर्व क्ष्मका क्ष्मर और कैक्सरी क्षिक हाति जनने क्रांकि कार को, का बेकार एक कर्मका बीमित के सकता है। को खेग कारोंके केवेंने अपनी प्रकार्त न देख सके, अन्तर्ध अस्तु भी एक å mint fie murt ufet i fered un uf-mit कारित को कोन्द्री कह साथ, सुद्धि गुद्ध के जाय, प्राच्याओं आहे अब्द-केर हो जान, के बाले रंगका होकर भी फीच यहने सरी का वेतारकोत्तर अनुसर और प्रसानोधे साथ विशेष बास है, बहु का बहुरेको क्रांक्ड बड़ी की समाव । यो मनून सूर्व और क्यान्त्रों काहीने काले बार्क समा विवर्त देशता है क्या केवलीरको देवस्य महोची सम्बन्ध कराये भी प्रदे क्रीकी-के हर्गक्तक अनुकार करता है, व्या ताल दिल्ले ही कुन्नो प्रमा हो कार है : विभागी नाम और कार देहे हो करी, बीव और नेक्केक्ट रेज विश्वत पान, मिनो नेक्केक्ट क्षेत्रे सरी, विकास प्रतेत देश यह बाब कर विकास मार्थ आंक्से कारकार् अन्ति व्याने और परम्पानी बुलई व्याने सांगे, उसकी क्रांकर करा है चारी है।

इन कृत्युत्तक विद्वीयो जनसर भग्यो धार्म रक्ष्मेणस्य प्रकार राजनीत कामान्यस्य मान सर्व और कृत्युद्धसम्बद्धी बाद बोह्य रहे। ऐसा करनेते का का समस्य बाह्ये अस् बन्धा है, जो असूद्ध विनामको पुरुनोये दिनो कृति है ब्या को साहन, समस्य, सम्बद्ध, अनिकारी, पूर्ण कृत करणान्यन है।

#### याज्ञकल्क्यग्रारा घोक्षधर्मका वर्णन

सहस्रकार वहते हैं—राज्य ! कुसरे को अस्तर [ मासाचे विकासे जा किया है, या यह गृह है, जान हैका सने--पहलेकी अन्त है, की बढ़ी पाने तकक करते मगवन् सुरोधी जनावता की थी। एक दिन कहीने जना क्षेत्रर महर, 'लहनें ! तुन्तरी जो इन्छा हो, का बांग हो, सर्वेश होनेतर की का हुनों हैंगा; करोंकि हुन्तरी करोत काले में बहुत जाता हुआ है और वेशे जातान जाय कृतिया है।" यह सुरक्तर मेरी यहां अन्तरन् र युक्ते सन्तर्वेदका इस्त नहीं है, अतः नै सीम ही उसमा उस्त अहर करना भारत है।' तम पराधार कृषि कहा 'मेरावर । में हुई मनुर्वेद प्रकृत करण है। हम अन्य कुँ कोलो, वायुक्तक करमती हुन्हारे भीतर प्रवेश मारेनी।' उनकी अध्यक्षे की अपना मुख फैजाना और अस्में क्लानी प्रमेख चार नवी। कारों अनेक करते ही भीर प्रशीरने जाता होने राजी और को क्षान करनेके हैंजो में वारोजे हुए गया। भूते कराओं कह पता देश भगवार सुरी कहा 'तहा । क्षेत्री देखक और बाद स्थान कर तरे, किर का जल्म अपने-कार करना है माननी।' कुछ हो नेरने कह में पूर्ण कुछ हो पहल हो शंगवादी वहा 'हिन्दर । परवरिक प्राप्ताओं और प्रतिकारोंके सकित सम्पूर्ण केंद्र शुक्रारे कीवर प्रतिक्रित क्रेने त्रकं तुम सम्पूर्ण प्रशंपकंडा की जनका (सम्बद्धा) करेंगे। इसके नम कुछारी चुन्दि जोड़ाने निवर होनी और तुन उस अभीष्ट समाधे प्राप्त करेते, जिले संस्थानेत एका केनी सी शांत काला काले हैं (

मान प्रकार सरवार सूर्व करे करे और है उनका मान सुरावर अपने का सीट असा। का अमान नहीं प्रसारतांके काम मेंने कारणांत्रियोच्या क्रात्म किया। मेंने कारण करते ही का और क्यूना अमोने विकार हो गाउँ। तम मेंने कामे तथा परावान् सूर्वीय निर्मात अमो निर्मान विकार और क्यूना क्याच्या सूर्वीय निर्मात अमा क्या साम महे हुन्दे क्या मेंने स्वस्त-संख्या और परिश्व प्रमासका समझ क्रुन्य मेंने स्वस्त निर्मा क्याच्या होता। क्याच्या मेंने सी विकारी मुक्ति क्या (क्याच्या) का अस्त्राचन क्रिया। हार प्रमास सुर्विक हारा उपन्या की हुई मेंग्र क्याच्या क्याच्या क्रिया। हार प्रमास सुर्विक हारा उपन्या की हुई मेंग्र क्याच्या क्याच्या क्याच्या स्वस्त ही।

एक समय नेवण-जाने कुछल विकास करू गर्भा पर एवं सर्वोत्तम अधन करू क्या है?' इस व्यवका विकास करते हुए मेरे पास आमें। अस्तार इस्ट्रॉने चुक्ती नेव्हीनसम्बद्ध कई उन्हा विको। तक मेरे उससे बहार



'नक्वरंता । समक्ष कृत किससे अपन क्षेत्रे और विससे क्षे त्मेर हे असे है, का बेह्यरियात हैंस कामानाओं जो नहीं कारते, हे कार्रकार कथा रेक्टे और बस्ते रहते हैं। साहरेगाह केंद्र कहारत भी तिलो केंद्रकेश प्रत्येश्वरकार ज्ञान नहीं हजा तथा। केलेक होचर भी किसने केंद्र अवेदका तरन नहीं जाना, म्ब पूर्व केवल कार्य-अन्यत्र क्षेत्र क्षेत्रेशस्य है। प्रश्नकी क्ष्मर क्षेत्रर पृथ्विक अंग अपूरी और पुरुषक अस अस करण कार्यके; जिससे कार्यार जो जन-परमके बहारमें न प्यान प्यो । तंताचे सम्बन्धकारी सामरा क्यी नहीं दुर्जी और वेशिय कर्मकामध्ये कराचे हुए सभी कर्म नहर है—पह रोक्टर जारकार करींको सार है और अध्यक्तको हेकामें संरक्ष है जान : के पुरुष तहा परमाहाके सहस्रका निकार करना रहता है, वह प्रमुशियों क्रकारने एक होतार क्रम्मीलचे सम्बद्धार परमेखारको जात धार लेला है। अज्ञानी वनुष्य व्यक्तियो तत्त्वका जीवाका और समावन परमात्वाको विक-भिक्त करते हैं, किस सम्ब पुरुषोक्ती दृष्टिये केनी एक है। परमानको प्रकार स्कानेकारे स्वेतको विक्रम् और घोगी भी जन और मुनुके मनसे जीवाना और परमातामें के-स्ट्री नहीं रकते।

विकासने का—विकास । अस्त्रो सर्वासने का वीसामध्ये परमानसे सचित्र कारान्य है, किन् नीनान क्रमान्त्रे परमान्त्र है क नहीं ? इस निवरने संख् है, अस् आर इस कारण रख्य पूर्वन प्रतिको। वेरै प्रविका वैतीयक, अधिक, केवल, परुष्कर, वार्तनान्त, पुत्र, प्रातिक, करिक, एक, चेटन, आदिनिय, पर्न, कार, आसूरि, पुरुष, सम्बद्धानर तथा अन्ये विका व्यवस्थाने मुक्तो भी पाले इस विकास प्रतिकान सुन्य या। उसके mer un, Reason, seraren hann, finne une heibit perso क्रार प्राप्त विका। ये प्राप विकार प्रेय करवाते पूर्व और निरम मारको है। अंध मैं हुए विकास अल्बेड निकार सुरूत प्राप्त 🛊 क्वोंकि जार विक्रमेर्ने केंद्र, क्रफोन्ट क्या क्या आरम कृष्टिमान है। ऐसा कोर्न किया नहीं है, जिसे अपन म नाओ हों : केरोड़ के अगर परवार ही करें अने के हैं। केरारेक और विद्वारोक्को भी अल्पादी प्रतिर्देश है। स्कूलकेको गर्ने हुए प्रकृत क्या पहिंची के अक्सी महिनाह करने करते हैं। कारत् गण्यार् सूची आरखे के प्राप्त है तम अपने कंपूर्ण सोवर्ग और चेंशवास्त्राय की क्रम करा निर्मा है। कार्य तरिक भी संबंध को कि अन समय परामको बारका पूर्व क्रमी हे कुछ है इसरिये अन्यो है कुशने में क्षा करवालको सुरशा नावात है।

हार भी नदा—नवाकीय 1 दुन को नेकानी हो। इस इसमा पुराने को कुछ कुछ से है, अस्त्रा कार्यान करता है, जिंदू का जीवकराओं नहीं जानते। संस्था और केंग्रेड विद्वान अपनिक्षों 'अस्तर' करते हैं। इसमी पुरान विशेष्यादिने कोर्यासमें परमात्रकारों नेकार है। जिंदू गई जीवकरा का अधिसान करता है कि मुक्तो क्यार कोई गई है, के का विद्वार हुआ की परमात्रकारों की नेका कार्य है कि कार्य है कि मैं विद्वा है और अपनित्र कुछने सर्वाय कि कार्य है कि मैं विद्वा है और अपनित्र कुछने परमात्रकार कर सेका है और कार्य की परमात्रकार परमात्रकार स्थापकार कर सेका है और कार्य की परमात्रकार प्रभी है जाता है, उस स्थाप का सर्वार विद्वार होकार कुछने की स्थापने के स्थापने क्षार है।

स्थानपुरे क्या-न्यास्थानकर्यः । अन्ते स्था देशसाश्रीके असी कारण प्रमुक्ते विकानों को स्थानक्य कर्णन विकास है, व्या स्थान, वित्या, सुन्दर राज्य स्थानक स्थानकर्य सारनेवास्था है। आवक्या का बारा इसी प्रचान प्रान्ते विका

ु को । सरका जानका भाग है (अन मैं भारा है) ।

चे क्यूकर विकासतुर्वे श्रीक्यू**व्य**से मेरी ओर देखा और को प्रांते पेस अधिनकर किया । किर येरी प्रस्तिका करके वे सर्वकारको करे को। एक बन्छ । स्वार्थ देवसभौके होको, पृथ्वेल रूप पालले सुबर के रोन करवाना चेक्रकनेक अस्तर रियो हुए थे, उन समझे विश्ववसूते मेरे काने हर पर प्रथम असेत किया था। सांच्यालने निक्र रक्षतेकारे प्रांतकोत्त, केन्यनंत्र काल करनेकारे केनी क्या अन्य को कोह्यानिकारको समुख्य है, उस समावेद रिप्से यह इसर अवस्था पान केरेनाएन है। अन्तर्भ क्षेत्र केस्स है, असानने की, प्रातीको कवार्ग प्रकार सङ्ग्रीका करन सहिते. किरने प्रथ अंग्ले प्रथम् मृत्यूक क्याने पुरस्का विक को । प्रमुख, इसेन्स, बेहर, यह अवना नीम चोडिने स्ट्राई हुए पुरस्कों भी भी। इसने विकासके से उसने करने समुख्य करना का राज रहे; क्वेंडिंट सहस्त्री सन्त और कृत्या प्रवेश नहीं होता : सहयो प्रत्य होनेके प्रत्यक क्षणी वर्ण प्राध्यक है । सहयो हे पुराने प्रकार, बहुते हरिया, प्रतिके देश तथा पैरेसे प्राच्यों क्रांबी क्षूर्व है; अरह: विक्रों भी पार्टको प्राच्यो निवस नहीं प्रमाण करिने । अनुस्र अक्रमें सारम है सर्मेनुसर केरिकोचे क्या हैते और नसे है। उसका वर्गकर स्टारन ही उने क्षा प्रकारको स्थान चेनियोने निर्मा है। अनः सम् ओरने हार प्राप्त करनेका है उसके करना करिने । यह से मैं तसने का है कुछ है कि सभी वर्गक लोग अपी-अपी अवस्थी को हुए है प्रभा कहा कर समझे हैं। क्राइम्म हो मा हरीय साहि कारत कोर्त कर्ण हो, को इसकी विश्वर होता है, उसके दिनों को छ रिक्त करा है। करना । सुनने को पूजा का, अल्बा पारानी करा की है दिया, उसर हुनों फोकावर चरित्राण कर देना काहिये । पुरुष कार्यान हो, काले, मैसे करे इस प्रापने वर्षका धने । क्रेक्स वर्ग हिन्तुविद्वर परत वृद्धितर,

व्याप्त व्याप्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र व्याप्त विश्वास्तरिक व्याप्त क्षेत्र क्षेत्र

और योगके सिद्धन् सरमे-जन्मे प्राथमें वर्णित रायाणीय अनुसार जार ज्यामो प्रा-अधियां सुन, विका, वरस्तर, निज इसे परित्र करते हैं, सक्त पुर भी तमे स्थलकर परित्र हैं बाजो । 'यो पुर विचा जाता है, जो जात होता है, जो वेचा है और जो पाल करता है, जा सब स्थानका अस्तर है है जाने दिखा और है ही बच्च ?' जहां देशों ही जानका रकते, इसने विचरित विचार करते न स्थाने । किसे अन्यक अपूर्णिया हान मू हो, सम्बार निर्मेण परस्तवस्तरी स्थानन न हो, जा पुरानको प्रतिक्ष अनुहान और द्योगीया होना करना पाडीने । सामान, हम अस्ता चारो परस्तवस्त्री जाति जी होनी, (पे हो स्थान स्थानको व्यानकर क्यानको और अनुवास होने हैं) । इनके हाल सरस्ताको वास्त्रकर प्रमुख भीवानिक होना है। प्रायानको सरस्ताक करनेवाले प्रायानको और अनुवास कर अनुवासके प्रा

वेश कोई स्थान है, किसको आह करना सक्के रिन्धे अध्यानक है। जो कार्यके अनुसार करानेगारों है, वे ही अक्रमिने पर, रिता, क्या-कार्यके पहिले, मुख एवं सदसदानका परमानको आग आह करते हैं। कृतिक्रिर ! यह हमन मुझे तो एका वनको रिता और कनकारों का्राकाकारोंके आह हुआ था। सन क्रमें अपन स्थान है, यह इसकी कार्यका भी कर सकते। कृत्य हान्यों का्राने इस हुर्गन कारसामको कर हो करते हैं। यह क्या के हको पर नहीं का सकते। जार एक अनुसीने यह व्याह, वर्तका, का्राकाय, निर्मेश एका मोक्सकार इसका हान आह करते। हान-का्राकी अस्मान करते हैं। यह का्राक्त करता करते के कार्यको अस्मान करते हैं। यह अस्मानको एका करता करते पहुंच कार्यका, अस्मिताको, यह अस्मानक हता क्या कार्यको पहुंच कार्यका, अस्मिताको, यह अस्मानक हता क्या कार्यको प्रमुख कार्यका, अस्मिताको,

# व्यासजीका अधने पुत्र मुकदेवको उपदेश

त्या वृष्टितरे पूक्त-श्रक्ताते । ज्यानक प्रयोजनी विश्व प्रकार वैराम्य द्वारा या ? इस विकारने पूर्व यहा वर्तपूक्तः है रहा है, अतः वै यह प्रशंत पुरस्य प्रयास है। इसके विधा अस्य पूर्वे अस्तरक और प्रयास प्रयोग्धा स्थान प्रयासकार प्रशासकारी सीतार्थ भी सुधाने ।

क्षेत्रको क्षेत्रे--तावर् । यह कुरक्षेत्रको प्रतीक विर्वत और समान पूर्णका-स अवरण करते हेश अन्यानको करें समूर्व वेदोच्य अस्मान वाराव्य और वित का उन्हेंस Ren-'der | gu geles fieblige ment mitet fiebe करे; गर्वी-कर्षे और भूक-बालको बान बको हुए सम्बेज क्रियम अस् करो; साथ, सम्बद्धा, अधीय, अधीयार्थंप, विकेशियात, तपाय, अधित और असुरक्षा आहे, वर्गीका विक्रिया प्रसार करो; समया को को क्या तम उपलब्धे प्रतिकार क्षेत्रकर समी अनुसर करे। वेका और अधिकारीका सरकार करते से अह को उसीने अन्ये अवोब्द्री रक्षा करे । देशों केट । यह इस्टेर सम्बंद केन्सरें हारा भूजप्रपूर है, इसमें और प्रद्रीको संद्र करा हुआ है और 👊 क्रियानोच्य स्थापास भी सम्ब स्थापास गर्न के वित 🕏 क्षत क्यों स्वेने पढ़े हे ? इन्हारे क्षत् सर्वत सम्बद्धन, करे हर और तुम्हारे किसेंको देशनेने रूने हुए हैं; परंतु कुई क्योंको उन्ह मुख होता ही नहीं है। जिल बीचे बा रहे हैं और दूसकी रूल्यु की प्रतिदित और हो रही है; इस एक क्रीक्न सम्बद्ध हो का है, जिन थी तुम सामका नहीं होने । वरिकारतेन प्रतानकारकारी कुरवेंकी ओरहे हो होने पढ़े रहते हैं, वे इन्हेंक संस और एकाको कार्यनेकाको प्रांतानी संपानि हो राग्ने पहले हैं। यो पुनिकीर व्यान्तेक्षरे क्षेत्रे कुर पुत्रम धर्मते हेन करते हैं और तक कुमकरें ही करते हैं, उनके अनुव्यक्तिकों भी दुःक भोगना पहला है। इस्तीको को कांकाको सन्दर्भ प्रकृतक संदुष्ट और बुलियसका कुळा प्रात्तेक वर्गरकाम ही आरुक् रहते हैं, तुन से उन्होंकी हेवा करे और अहींने अकन कर्मक पूछे । उन कर्महार्गी विकारीका पर पाल्य करते हुए अपनी सेव बुद्धिये अपने कुरबन्धनी मनको काकूने करो। विश्वनी केवल कर्नमान क्षाकर ही दृष्टि साती है, उसका पानी परिचाम निर्मात सिने बहुत कु है और किने फिलो प्रकारका पाय नहीं है, वे सर्वभारी पुरिक्रीय पुरुष कार्यन्यक्रीनाको नहीं हेवा करे । तुम कर्यन्त सीक्षेक पास प्रकृतकार चीर-बीने उत्तरर पहले जाओ । जीरे तुप विकास प्रतिकृती तरह अपनेको बातरमधीले रापेको ग्रोपे हो क्षणी केत नहीं सम्बोधे । को पारितक और वर्धमानीतका पह क्रमेकल हे, उस पुरुषके दूप नितास होका स्थाने हर व्यक्ति क्या स्थान है। साथ, क्रोप, युक्तु और विसर्ट पीव अन्यक्रम कर पर इस्त है, ऐसी निकासक्रम न्हीको तुम व्यक्तिको वृद्धिका जैकावर क्षकार पार कर स्त्रे और इस अबहर क्ष्मान्य कृति पन्नो पार हो पाओ । सारा संस्थर मृत्युर्स कार और क्षाव्यक्तमें परियोगिक है, इसे उप वर्णमधी नेकार बहुकर कर कर सो । मनुष्य बैठा हो अवका से स्कृ हो, मृत्यु को प्रकेश ही लेखे हैं। इस प्रकार का मृत्यु कावनकर् क्ष्मार राज अलेकारी है से एक पैनसे फैसे के है है ? क्लूक भोगसामिक्कें संबद्धे तथा है क्या है, असे इसके हुने होने भी नहीं पानी कि मेरिया जैसे नेपूर्व क्लेको कर से प्राप्त. क्यी प्रकार कीर को जार से सार्थ है। बढ़े उन्हें का क्रान्सक अन्यवसारे स्थेत करण है से प्रचले वर्त-बुद्धारण प्रचलेता बीचका से पर्त । जीवको अनेको क्रिक्टिने जाते-वाले जैसे-कैसे मानक्षेत्रिके अध्यक्त यह उद्याप-प्रदेश विकास है। प्रार्थिके हैदा ! को सबस करना सहिते । क्राइनका प्राप्ति नोनानेके रियं जी होता। जो पढ़ी सरकाता हेवा स्वानेके दिये और मरनेपर अन्य सम भोजनेते हिन्दे रहा नमा है। अञ्चल-प्रचेत महार सम्बद्धान प्रकृत प्रात्नेक विकास है। यह विकास के से विश्वान्त्राची पीतकर जो वर्णाट जी करन वाहिने; क्लैक पूर्वता सामान, सन्तर और इतिस्थितको साम स्थार कुला कारोंने ताने द्वारा पादिले । महालेखा आयुरान केना कैना पान to the fire price to be about \$1 min-regular price क्रीत है, प्राप्ता कराम असना कुला है, क्रम, होट, निनेत समी कुरती के हैं, कुछ और कुरमान्य के हैं और कार अह है। की मुक्ती प्राम्भी अंधोदे प्रमान कृतीका अनुसाम करनेकारी नहीं है से इसे निरम्तर को बेगने बेजन देखकर प्रचल कर करों है सरका करेने। ये लेग को करेकांके केवल कोख आवरण करते हैं और कुलोको कुछ-पान करते हुँए रिरमार कुमानि हो साले हैं, उन्हें मानेत पहला मानानेह पुरवार अनेक प्रवासकी चरवारिय कारानाई चोनानी पहली है। मो क्षमा सर्वेद वर्गमानम कुमा क्षम और अन्य प्रकार क्षाचेत्र प्राप्त कार है, यह कुलावारी होगीये प्राप्त क्षेत्र है और अनेक ज्ञानका कर्मपुरस संस्थेक कारण औ कृतिक इसे निर्मेण पुत्त आह होता है. सिंह को पुरानीकी अध्यक्तिक अल्प्यून स्थाने हैं, से अल्प्यू पूजा हैने स्वेच्डोने करते हैं मही बहुआंच्ये पीतित विस्ता मात्रा है और उन्हें पर्णकर इतिराम्हे कुते, लोईची बीचोमले और और पहलारी निया शाहि रहारान मानेवाले और निगर-कुरवार मेक्बे हैं। के मन्त्र परवारी पारको परवार सारान्त्र परुची पाँची हाँ क्षेत्री इत् प्रकारकी कर्मकृत्ये क्षेत्रत है, व्हे क्यान विद्वारोपाने अस्तिक कार्ने कावर जानत हुना चेन्ना है। वो पूर्ण आरम सोधी, अस्तानो के प्रश्नेताल और सर्वत कपटकी करों करनेवाल होता है तथा जो तथा-तथाके कर प्राथमें हे कुरोबो कुए के हैं, यह प्रश्नम के नामने प्राथ असम्ब कृषा चेत्रक है। यह असम्ब क्रम महत्रहें वैतरमीने चेता राज्य प्रकार है, अरियम प्राप्त आके यह किया थिए होते ों और परंद करने और प्रयम करना पहला है। इस प्रयम मह कारको पहल सार्च ग्राहा है संग्रा है हुए स्वासीक अर्थं, को-को स्थानेकी पात से करते हो, परंतु परमचनर क्यारी और है भी है। अधिकों से मृत्यूकी वरिवर्ताका द्रकुरात आनेवाले हैं, साम्या के तुने पता है नहीं है। इस ज़कर प्रथम-पर-स्थव को कर्ने की है ? देखें, इन्हों करर नहीं अवर्गांत आनेकार्य है: इस्तीन्ते हुन प्रशासक-आहिके रिज्ये अवस को अने मानेवर पवरावको अञ्चलो प्रचीत सामने असीवत क्रिक कार्य: इस्तिये कृष्णि का करके हुन वर्गेकर्यन्त्रीय िटरिक्ट पुत्र क्षेत्रा कान का नो । किन संस्थ हुन्हों सामी क्रांक्स अन्य कर क्रांग, सा समय क्र स्टेले पुरीक्षे प्रकंड पहले के पहला; कां: इन नंतर्कवर्त क्षण हैनेक्से क्षांक आकार को । कृतिकारे हुको सामी में सामग्रहक कर का क दा जा क बड़े हैं ? आ में का कारण महत्त्वन अस्तिक होना से तुने तक विकारी क्ली विकारी देती । केंद्र | का इन के शरीर होइकर काले स्टोने से व्यापुरानाके कार एकरे समार्थित से यह है कारने । सारिते सुध सह क्यांक क्या का को। हेन्से इन्हर्ने हेन्से-हेन्स्ते प्रक्रानाम क्ष्मारे क्रारेनको अर्थन कर क्रारेन्डी, जिल् केन विभागा आर्थि है, क्ष कारण्याम् अका क्ष्मरे क्षारको ग्रह कर देख; अस्तिके हुए जीवनों कु होने बारे हो हुए कुछ सरका कर सो (ईस मुख्योंको सुनेकारे काम-सरेकाहि व्यवसा नेहिले कारी ओसी हरता अक्षान्य क्षारेने, इस्तीन्त्रे हत पुरूपतंत्रपता प्रमा का हो । बरनेदे एकंक हुने पहले से बोन अध्यक्त निवस्ती हैया, किर वर्षको विकास पुत्रको पुत्र प्रेमीने; स्ताः तुस सम्बद्धान्यकारोः तिनो पृतित ही अधार करो । ये हम्पिनी, सो तुन्हे विकोर सम्बन कर पहले हैं, कारावारे एकरी कर है, से अपने क्षीत्रकाने पुरवर्ग कृतिको विनाद देनी। प्रतरिन्ने तुन परन पुरस्कारित हिन्दे प्रस्का करते । विभा धनाको न एक्कावा भाग है और न कोरका एक को मानेवर की साथ नहीं होवता, उसीको उस्त करनेका कुन क्योग करे। अपने कर्योक्स अस हर कर कुरमान बनको परकोदाने विस्तीको बॉटकर नहीं देन पहला। क्यों से के किस्सी क्षेत्र है, वह स्त्रीको जिल सही है। उस

ह, समुतीने कविंद्र देश चेट वे स्टब्ने है—

पृक्तिः सम्ब एक्टेडलेन जीपनिहर्यन्ताः वीर्विता सम्बद्धतेने दशके पर्यात्मकत् पृक्तिः सम्ब मनेनिताः, असेन परिवादः स्टिन्स्टर्यन् सुदिः, विताः सन्य और सामेन—ने समीत दश स्वयंत्र है

सहै वनको उक्टूब करें।

भेट । बीच असे बीकादलमें के कर प्रकार कर्म करता है, व्यक्ति क्लेक्ट कई समय कर पूर्व है। मात, हा, क्यु-सामन मा तिमक्त्रोनेने कोई भी जल्दे सरक को सका । जिल सुकर्ण और सक्किको व्या करे-पूरे कर्न करके इकटो करता है, वे करेर कुलेना उनके विज्ञी कार नहीं आहे. इस स्रोकने आहे, कानू और भूपें —ये कीर केरता बीचके प्रतेत्वक आतम पान्टे पाने हैं. में हैं अपने प्रार्थकराज्यों देखनेकार्थ है और वे ही परायेक्ष्में अर्थ्य पार्की करते हैं। हिन एक पहलीको अवस्थित करता है और स्टेर क्षों किया होती है। में कर्यन पहल है और सभी प्रमुखेंकों पर्या करते हैं। असः कुर कर्मक अपने कर्मक है करत करें। परावेकने निर्माण के कर्मक बैद्यान की हैंगा। बहुर को अपने मिटने हुए क्योंका ही बात बोलान होना है। बहुँ पुरस्कृत होग किक्कोश बहुआ क्लेक निवार करने है। इस प्रवार पुत्रिक पूर्व इस संबंधी केल केल पूर कर्त करते हैं। परानेकर्त जावर केल-केल के परर प्रा बारों है। के नाईका-वर्गका पारत करते हैं, के प्रकारी, कुरुकी जन्म हम्मे संपन्ने को 🖟

'कुर | कुमरी अल्बेस सीमीय को बीच को, अल क्यारी समस्य प्रदेश मालवी है। इसी प्रवार साथै सन्तु केती पर की है, कुद करिलेका पूर हते । ऐसी, पास स्वापि इतिकांकी प्रतिको तिर्वाचन कर पुत्र के उसके वह प्रेर्वके प्राहे है हुए क्योंकर्नको रिले प्रीतात करे : दिल साल क्षम प्रतीर क्रोक्सर पाओंने, या समय कुन्हों जाने-वैसे की क्षारे मेला और बोर्ड की क्षेत्र। का तुन्हें का जनग अवेहरे है जन है से अन्ते च राजे प्रारंको हुन्छर ना प्रयोगन है ?

'बेटा । मेरे अपने प्राच्याता और अनुस्थाने हात हुने इस समय जो उन्हेंब दिया है, इस स्ट्रीके अनुस्य अन्यस्त करो । को पूरत अपने कर्तेक्षण केवल करिनक ही केवल करता है और विवर्ध-4-विवर्ध कानके अववादे कर देता है, या से असर और मेहननिव नुमोने है देखा है; मिनू से श्चा करोंका अनुहार कारा है, का पर पुरुवर्धना केश प्रदार कर रोता है। इस प्रकार कृत्या पुरुषकों को भी उन्हेंज किया जारा है, को सबस होता है। मनुष्य को गाँको खबार व्यक्ति प्रत्योंके देन करने समार है वह उसे व्यक्तिवाली स्वर्ध ही है। पुरुषात्कालेन इसे कारणार स्थान खेळांची प्राप्त होते है. बिल प्रतिबोधे पर नहीं बर पाती। बेठ । यह तुने परन

रम देसा कर हे जो अक्षण और अधिनाती हो और सार्च की | हो है जो इस कर, कब्रु और कुमरिसे तुरू कब्र ओर ? अतः हुन बुद्धिकार पुरुषे हिन्दे हुए कामानस्था अनुसंबान करो । क्षेत्रों हैं। कहें, अपन कुमूरे इसे पूर्वत कहीं मारे गये ? मो कार कर करने हैं जो आप कर रेज स्थिते और से केवार कर करन है उसे सभी है का करना वाहिने; क्योंकि पीत का भी देशके कि अभी इसका करन पूर्व हुआ है का नहीं। कर पहुंच पर काल है से तम समें-सम्बनी और करियारे प्राथमान्य साथ कवार इसे साथि इतिकार सीट आहे हैं। अहः इन प्रान्तकारी अहिनो इस्तम को प्रकार प्रकार और संख्याची स्थानकर स्वरित्य, निर्म और पानक्रियों रिक्स पुरानेको वर्षि रहते; क्रामी पूरवार भी क्रमा प्राप्त को है। इस अवार का साथ सेवल कार्यों अबोन है और काले बेबेने बहुयर हुआ चीन पह है, से दुन अक्रम केंद्रे करनाको उस्त प्रयोग क्रमेश आगरण पर्ने ।

के पूरा कामाने स्थानको हा कामने अपने क्षत्र कारण है, यह इस सोवारों संपर्कता कृतिका कारकार परसंख्या हात योगा है। यो परीवर्गका र्वेक रोज करतान करते हैं, को बाने हमें नहीं होते। को कर्मकी कृतिह सारक है। बढ़ी प्रतिकृत है और को करेरे पह केश है, यह पोहामा है। यो पूजा सामनेश शानरण पासा है, क्रंद्र अने करीड अनुकर पान पान है। इस अवार से कांक करवारी है, यह वार्ग यह है और में कांगरका है नाम है को रूपाने विश्व पहला है। यो महिर मोनोको मानका का परेको लगाव करता है, जो कुछ भी आस्त्र को प्राप्त । के विकास के भी सकते करन पार है। इस रंग्याने कुन्तरे कुन्तरे मां-मार और सैक्स्में सी-पुराणे से कोर है और आने की डीने । पांच कारावाने विश्लक में और विकारों प्राप्त ? में को अधेरक की है, मेरा मोर्ड मही है और म में के बिहरी कुलेका है। हैंका के जुले कोई की दिशानी नहीं के किराबा में होते. अकल को नेप हो। पूर्व अपने का अर्थन प्राप्त-रिकारियों अन्य पढ़ेर्स उन्हें प्रकृतिया नहीं है और न उन्हें ही क्रमते कोई अनेका है। है अवने-अपने कर्मानुसार जनक हुए थे, कुए भी अपने कार्नेकि अनुसार ही जनक हुए हो और अब जैतर कर्न करोरे केंद्री ही पति तह करोरे । इस स्पेकने क्षी कुलोके समान के समान बारे करे हैं, जिल हरितियोंके क्रम से उने क्रीयर क्रीयर के सेट सेरे है। पराव की-पुर्वादेके विको ही पान बदोधता है और उनके कारण ही इस स्त्रेक और परस्तेकमें दुःस मीनक है।

'सार केट ! मेरे तुन्हें को कुछ करोड़ा किया है अधिके अनुस्तर क्रम अन्यस्य करो । यह त्येक कर्मपृति 🕯 —हेस्स सम्बन्धार विभारतेकीकी हुन्या कानेकारे पुरुषको सुध कर्म 🛊 करने पार्श्वने । यह कारकार स्रवेड्स सरसर् राम कीनोंको कार रहा है। पास और बहु इसका क्रीका है, सूर्व अति है और क्रमेंसरके श्रामी रात-दिन क्रेम हैं। यो का का क भोगके बाम न आहे अस्ते क्ष्म साथ ? विस प्राव्यात्मको । उन्हेंस कलेको राज बनको परा कर दिने :

क्यांकरक न क्षेत्र करते कक्ष राजभ ? और को जिलेकिन एवं संबर्ध व है जर जेन्सकारे क्या रूप ?"

चेक्सी बारो है—सबन् ! च्यासबीके वे क्रिक्सरी क्यन सुरका पूर्वकारी काने विलाबी क्रोहकर मेशलाका

# दान, यत्र और तय आदि सुमकर्मोंकी उपयोगिताका वर्णन तथा सुकदेकजीके जन्मको वृत्ताल

रका विश्वीतरे प्रक—विकास । सर, पक्ष, वन और गुरुवलेको तेवा करनेते को प्रक नितव है, पर पूर्व सनावे ।

बोदावी बोरो--राजन् । यो सोम केवल और अधिनियोधे हैन बाते हैं अनव कर, सब्दोनी व्य कोने क्रिक केरिकारे हैं, के आवदावनियोगेंड पाल्यानावर पालीको अन्त होते है। केने राष्ट्राचीन प्राासी कृते कर्ण हे जाते है केरे है कर्मको प्रोप्त वेनेकारे समृत्य कर्मा है। धर-नृत्य प्रमुख्या राष्ट्र कथी नहीं होड़ों। यह सब्ब होना है से सब्दे को हैं. बीवता है तो दीवने १९१से हैं और काम करता है से में में मन्न करने राग्ये हैं। इस अधार में अन्यके माना जाना अनुसारक काली रहते हैं। बहारे जिला-विसाने जैले-केरे बार्ग बिर्ज होते हैं, यह अन्तर अल्प्स प्रधारने अन्तर पहर बोनात है। समुख अपने शुध्यक्षण करोंकि क्षय है अपने मुक-कुक्ता विवास करता है। यह अवने अभी अन्त है क्षणीते अपने पूर्वकराके क्षणीका बाल केन्त्रे सनात है। विका प्रकार नकता इत्यते गीओओ भी अपनी मात्रको पहाला नेता है, जहीं प्रकार कृषेत्रपाने किया हुआ कर्ष असी मतिक पास गाँव पास है। सेने मैसर पास करोते मेरेनर क्षत हो जाता है, उसी जनवर उनकारको क्षता तमे कु मनुष्यात किए एक हो काल है और को बैचेकरके अन्त सुक प्राप्त होता है। जो स्तेन धेर्नकारमध्य तन करते हैं, उनके पाय हर हो जाते हैं और उनकी सब कामनाई विद्या हो जाती है। किस प्रकार आधारतमें विश्वमेंके और बरवमें मकरिक्केंके करणांतह रिकामी नहीं हो, की ही पूज्य करनेकालेकी गरिन्हा यहा नहीं एकता । दूसरोके उपस्थान क कहारेले स्टेड बार्ग करना होक नहीं, को अपने सिमे दिया, अनुसान और क्रिका हो नहीं कर्म करना पानिने।

महाराज्यों और वार्तावा मुख्येवचीया पण वैसे हुआ और क्योंने परकीरिक किस प्रयास जारू की भी-न्यह प्रशंग शुहे तुनकुरे । कुर्वकर्णको कार्यक्रमाने हे सुध्य प्राप्त प्राप्त करनेकी कुद्रि कैसे क्षे ? संस्तारी उनके विस्त किसी दूसरे पुरस्का से ऐसी पुद्ध की देशी करते। साथ सुने क्रुकोनकीचा प्रकृतक, अनुरुक्ति और विकास प्रशानी रेरिको सम्बद्धः सम्बद्धे ।

क्षेत्रको क्षेत्रे—स्वयू । में सुने सुनक्षेत्रकेता क्षान्त्राच्या, केप्राच्या और अवस्थिती क्षानुसी ह अपनेकारी प्रथमी अपूर्ण पति सुनात है। एक धार नेकार्याओ जिल्लाका चनकाई क्षेत्रार वर्गकार पुरावनीके साथ निकार की हों है। वहाँ पर्वत्यक्रमी क्षी देखे क्या की कार्ने साथ है भी । जड़ी दियों जनकर् कृष्ण्यीसकर इस पर्यंत्रक स्वकृत कर को थे। क्योंने इस संस्थानों कि मुत्रे शति, पुनि, परंग, कर अवक आवतको समान वैर्वश्रामी कु प्राप्त है, तमाब कारण की भी। ये की वर्षतक केवल बाय प्रकृत करते हुए क्याकी औन्यक्रोक्टीकी आरामनावें रहने ये ! ऐसा करोर हम करनेवर भी न हो इसके जान यह हुए और न सम्बे सम्बन्ध है जो । इससे दीनों लोकोको कहा है जाहार्य हुआ । पुढ़े के का कुरत्य सम्बाद कर्वकोनसीने सुनाय सा। वे सदा से को देवताओंके बरित समान्य करते थे।

वरकोश । व्यास्थाको देशी सम्बद्धा और महित्र देशका क्योंको को जात हा और म्योंने मन्द्री-मा महे अर्थात् कर देनेका विकार किया । वे क्रमोर यक्त आणे और डेंग्से इन करने रूपे, 'स्थानवी । रूपें अपि, मानु, पूपि, कर और आकासके समान न्यान हुई प्रकार पुत्र जाए हेना। व्या व्यवस्थानमें रेना होता, मनवानमें ही करकी कृदि होगी, जनकर ही अस्के अस्ता होंगे और एकमान इस कृष्टिस्ते पूक्त-राज्ये । स्वास्थिके वह विकास अवस्था सम्बद्धेगा । संस्थे तेससे

रीनें लेख बाह्य हे सबेने और वह बहुन् नह प्रदा हनके क्याबारमें है पानंतीयोक सहैत कामान् इंकाने



भरीमा श

का अन्य का पानेके प्रकार, एक दिन आवकारियान affected afte your archit floit arcellman us ut बै । इसी समय क्यारी इहि मानकावारी मृताबी क्रायरावर यही । इसकी कारसम्पतिने इनका पन आकर्षित कर शिन्छ । प्रारंते अरक्षकान् अनवार भीवाँ अरकीने विराह अनीने महाराजी पुरस्कानीका क्ष्म हुआ। वे कृतीन अर्थके समान केवाली थे। उसी समय नवियोगे सेह सीन्युमकी मूर्तिपती द्वीबार केक्प्रचंतपर अस्ती और उनका अपने करने अधिनेक किया। आवाक्यने क्यो विने क्या और कृत्रमान्त्रकर्म निते : विकासन्, इन्युत, सारा, स्वा, स्व आहे, मधर्म इनके कथकी सुन्ति करे लगे । उस सका बाई इन्हारे क्षेत्रमाल, देवान, देवनि और प्रदापि भी आहे । पापुने दिवा मुनोकी क्यों की, कर-अकर रहता संस्था कृषित हो उठा। । आजनोवें की उनका पन जरह नहीं रहता था।



अववार जनका विभिन्नम् पहोत्त्वीतः होन्याः वारामा । देशशा इन्हों हुए देवपूर्वक सुन्त करकात और विमा वस

इक प्रकार नक्षणी कुळोडडी उद्धावनी क्षेत्रर वहीं क्षाने जले । क्याने ही उन्हें काल और संस्कृत सहित सब वेद हती ज्वार जारिका हो गरे कैसे उन्हें स्वयूक्ती कारते थे। क्योंने काम्मीरनीको अन्तर पुरु क्याना और अधीने सन्दर्भ केर, इतिहास और राजनीतिकी किया प्राप्तकर, उन्हें सुक्षिया देवार में वन और आवे । यहाँ ब्रह्मक्वीमाना करना वाले हुए म्बार् उत्तरमा करने रूपे। वे बारचावरमाने ही अपने प्राप्त और प्रयासके प्रयास देवता और अभिनेके प्राथमित एवं संभाग-केवल कार्यकाले का गये थे। उनकी हुष्टि क्षेत्र-अर्थवर थी। प्रतिने पर्वाप्यस्य अवस्थित स्थेपको सीनो

# पिताकी आज्ञासे सुकदेकजीका मिश्रिलामें जाना और जनकके राजमहरूमें उनका सकार होना

[ 511 ] सं• म• ( **सण्ड**—सो ) ४३

भीनाने कारो है—पुनिश्चित | सुक्रोबार्ध पोक्रक विकार | साम क्षेत्र 'प्राचे | आप गोक्रवर्धी निपुत्र है; अत: सुहे करते हुए जानवे जातिको इन्हासे जनने निक स्वासनीके | ऐसा उन्होट होनिने, जिससे मेरे विकासे परम बालि मिटे।' पास पने और अनो करनोर्ने प्रचान करने कही विकासे | पुत्रकी कहा सुरुक्तर म्यूनि स्वासने कहा, 'बेहा | दूस प्रोड तथा सम्बन्ध वर्गोदा अव्यवन करे ।' विकासी अक्तरे कुक्देकर्गने समूर्ण केन और संस्थानका अध्यक्त किया। एवं कासवीने वह समझ दिन्हा कि वेस पुत्र सहार्थको सम्बन्ध और मोक्षकांने कुक्त हो नवा है राजा सनता हाओंने इसकी बहुको सका नहे है को 🐧 🛍 क्योंने बढ़ा 'बेटा । अस तुम विशित्ताके एका बनाको पहल कानो, में तुन्दें राजूनी मोश-राजका प्राप्त करा हेरे । वहाँ वाले समय इन बालेक्ट ब्यान रहाता, विका बानेसे सम्बाहक मनुष्य पान्ते हो, जाँही हुन भी पान्य; जनमें चेन्छारिक्य अस्य नेवार आवरक्षणांने करानि क्या र करवा। राजेने प्रश्न और सुविकारी सरावार्ते व कार, विकेश-विकेश व्यक्तियों या ज्यानोची क्षेत्र न बस्य; वर्शनिक क्रूको उनके प्रति अवस्थित हो जाती है। शत्रा करक हमरे करकार है. इसरिन्ने उनके पास विजये बारच्या अवंचार न प्रचट करना ३ में के अद्या है, काका प्रकारतपूर्वक करने करना हों में इस्तामक विशेष अन्त है, से सुमारी तंत्र संस्थानीका समाजान कर देते ।"

fried ber unber mies all graben विभिन्तको और धरः देवे । चहनि वे जनवन्त-नर्गके सार्थ पुन्ती स्टीट जानेने समर्थ थे, तो थी पैयून ही पर्छ । पर्छों उन्हें अनेको वर्णत, वर्धा, तीर्थ और क्रांचर पार कार्य प्रो सर्वो और वनअनुत्रवेसे भी हुए बहुत-से जंगलोने होवल बाला पहर । वे जारक: पेकार्च (इस्तवूत), इरिवर्च और हैमान (फियुरन) वर्णको पर करते हुए धारतवर्णी अले र चीन और हुए असी देखींको स्टीपका उन्होंने आयांकांचे अनेता निरम् । निरामी आजाने अनुसार ने पेत्रस ही परांत रास्त्र तम कर ग्रे मे । मार्गमें बढ़े सुन्दर-सुन्दर प्रकार और करने हिसापी पड़े, विकित-विकित कंगके का इंडिग्डेयर (व) किंतु सुक्रदेवनी काली ओर देवाबार भी नहीं देवाने थे। इस प्रकार करने-करने वे वर्णाना राजा करवाके हुए पारिता विदेश-प्राचनो वर्षके; उन्हें वर्षा वर्षकरेने अपूर अभिन्न समय नहीं लगा। निवित्ताके बहुत-से गाँव उनकी इहिने आने, नहीं आहे, करी अब कब प्रकारकी कारा-सामनी प्रमुख्यकार्थे मौजूद थी। गाँव-मॉक्सें क्षन-शामके क्ष्मक गोलासम् औ, ज्यां पहुत-को भीव् क्कांतित स्वती भी। उस प्रान्तमे सब और कानकी होती सक्तक की भी।

इस अकार निया-सम्बद्धे स्रोक्ते हुए बुक्तेनाते जनसम्बद्धि सम्बद्धानी निर्मालके सुराम अवस्त्रोह निवाद व्यूति । व्यूति अवृति नगरवे प्रमेश किया और समामानकी व्यूति



क्षांत्रीका व्यक्तिकार के वेकारों जाते. सीवर कुसने एने । उस स्थान क्षांत्रात्वेने उन्हें क्षीकार सीवर कारोते केस दिया । सिंहु कुम्मंत्रात्वेको इससे किसी जन्मात्वा होते हा उन्हेंन नहीं कुम । वे कुम्मंत्र कहीं कहे हो गये । स्थानंत्री क्षांत्राह और कुमंत्री कुम्में उन्हें संसाद नहीं कुम्म था । धूक और माह भी उन्हें कहा नहीं है सबते की असी कार्य वरिका भी दिशासी कुम था। वे कुम्में उन्हों के नहीं कहें थे, बहारी मायंग्री और

प्रकारिक कार्र है क्यान बारपुराई वीहतत कुरुदेशकीयों सेवार्थ असीवत हुई। वे सब-कूई-एस सही सुन्दरी और समयुक्ती थीं। जनकी केन-मूक्त कही ही समोहारिकी थीं। उनके सुन्दर अहोर्टर त्यान रंगकी पहीन स्विका होच्या का रही थीं। वे स्वरणीत करने, जनने तका भानेने कही ज्योरत थीं और अन्द मुक्तकनके काथ करी करती थीं। अन्दर्भ तो के वापस्त्रकांकों भी श्रीव चार शृहें थीं। उन्होंने बाहा-अर्था आदि विकेदन करके विविद्यांक सुन्दरंग्यांका मूक्त किया और उन्हें समयानुकृत्य करीक् अन्य केवल महाकर पूर्व हुए विकास केवलने कीट व्यानिक कुंच-मूक्त सहाकर पूर्व हुए विकास केवलने और व्यानिक एक-मूक्त बाह्यको दिवाने सार्गी। यह समय के हिल्ली, जाते तथा उनके महाकी बाह्यके करती थीं। इस प्रकार सार्वा दिवाने उनकी

वित्तु जरणीये जरण पूर् मुक्तोनयोका जयात्वरण संस्था सुद्ध था, ये इतियो और प्रोध्या विश्वय या कुछ थे। असे माने किसी अवस्था सीव भी का और वे स्था सम्बंधि आंतरण काम्य किसा करते थे। इस्तीनो का विश्वयेथी रियासे उन्ने य इसे होता था, य क्रोया। स्थानकर, उन कुछी रणीनपीये वेश्वराओंके वैश्वयेथी पृक्ष देश्वर करता, जिल्ली या नदे पूर् थे असा निर्माद करता व्यूक्ता विश्वरेत किसे हुए थे, सुक्तोनपीयो सोनेके रियो जिला; जिल्ला कुछाने व्यूक्ती हाम-वेर सोनार संभ्योगास्था किया, जनता क्राय परिवा आसम्बर्ध वैद्यार में जोड़ा-संभ्या ही विश्वार करते हुए व्यानमा हो गये। पानिया जनम क्या सम्बर्ध की य प्रमा,

कारक ने कारने ही रूगे छो। पिर जेगावकके



विकारपुर्व स्थिते क्यान काली बीट् हेंगे हरी। युवः युव आकृत्यूर्व हुआ के वे उस बैटे और सीकादि विक निवर्धोर्दे विक्य क्रेक्ट किसीने जिटे क्रेक्टर की स्थानका के गये। इस अकार कारकारपुर्व दिवका केंग जान और समूबी रात उस स्थानकार्य स्थान क्यांत करी।

#### राजा जनकके द्वारा शुक्देकजीका पूजन तथा उनके प्रशस्त्र समाधान करना

ं भीनाकी कहते हैं—असरत ! तहरतान, राजा कार्यक भारत:पुरावी साध्य पुरुषेत्रावीचे कार आसे ! आसे-असे भारतन और माना ज्ञासको का दिनो पुरेषिताकी कार के में और राजा ज्ञानो मताकार अर्थाका दिनो पीछे आ से में ! पुरुष्पाके निकट पर्युक्तार कार्यन पुरुषेत्राके प्रावसे का सर्वतीच्या अर्थक सामादित आसन, निस्तान स्मृत्यूक विकास विका पूजा का, से विका और अर्थ प्रावसे पुरुषेत्रावीको बैटनेको दिनो दिना ! तक कार्यकार्य प्रावसे विके पुरु आसनस विकासका हो नवे तो कार्यन अर्थक अनुसार अन्यत पूजा कार्यक

असी विलेश करके राजाने उन्हें एक गी दान की। इस्कोमजीने से विकित्तंक की हुई वह पूजा खीवार करके राजाक कुमलामजान पूजा, किर अनुवारीस्त्रीय उनके उनकार प्रजा करका अपने सेवकोचि साथ असीनार देत गये और इस्म केव्यार कुमला कुमल-प्रश्ना पूजते हुए बोले 'पुने। किस विकित्तं आवता कई सुमागमन हुआ है?'

हुव्यतंत्रकीने कहा—राजन् ! आधका कारवाण हो । वेर् रिकामीने सुप्रस्ते कहा है कि 'गदि तुम्हें प्रश्नृति या निवृत्ति-कार्वि किकार्य कोई स्टिट हो को हुता ही मेरे कारवान विद्यालय कारवाले कार करने आओ । वे मोहावर्यके प्रस्ता हैं,



अतः तुष्त्रणे तम सङ्घान्त्रोधाः समाधान का हेने ।' समाधे इस आदानी ही मैं अन्तरे पता पुरू पूर्ण समाध है। आप धर्मात्वाकोणे बेह्र हैं; जातः मेरे प्रातेषा पतार्थ आप होणिये। स्थानका पता कर्मण है ? मेश्वमा पता स्थान है ? क्या समाधी प्राहि—तपने होती है या जानते ?

कारने का-नार ! suprait क्ष्मां रेका केन्द्रे कर्म करने वादिने, उनको सुनिये-प्रकोपनीय संस्कर के क्रांचे कर प्रकृत-कारकार्य नेवाकार करण प्राप्ति । अक्रयन-वालमें पुरुषी तेल, तत्वा अनुक्रम और माराज्येका पारत—ने तीन असके परम कर्तना है। स्थानक और तर्पणके हारा का जितरोक्षेत्र प्रकारी पुत्र होनेका का करे. विस्तिको निका व को और प्रीप्रकांककार्यक हो। सह केंद्राच्यक समाप्त हो जान तो गुरुको हरिएका है, उनकी अनुस केवार समावर्गन संस्थारके च्यान का और। वर उपनेवर विवास करके पार्टला-सर्वका करना करे और अपनी ही स्रोके साथ सम्बन्ध रहो। विकास होता व रक्तवर माध्यमुक्त वर्णन करे तथा आधि सक्तम करके विक अभिनेत करता हो। उत्पाद्ध सब पा-बीड करना हो जाएँ ते बन्ने क्या बन्धाल-सर्वतः कल बरे । जा सम्ब वी कास-विविक्त अनुस्तर अभिनेत को और अधिविक्तेंसे हैन रहें। इसके बाद वर्गत पुरूष प्रारक्तमुखर अधिक्रोधारी आरियोंका जपनेमें ही सारोप करके निर्देश है कम और वीतरात होका सहविकासो सन्त्रक रक्षत्रेक्षते होन्यस्थ्याने

उनेक करे।

पुरारेगको पूर्ण-नाहै किसीको सहस्वकासमें हैं स्वरूप हान-विद्यालको प्राप्ति हो जान और स्वरूपके रूप-केस्टी इन्हें हुए हो सार्च हो यो यो प्रधा संस्के दिन्दे होने होन सामानों पूर्ण आवासका है?

करने बड़-बेड़े प्रश्ननिकारके किया गोड़ रहीं है रमात, अने अवल संस्कृतने संस्था हुए विश्व सर्वानी ज्ञारी नहीं हे सकती। यह इस संसारसागरसे पहर कारनेको है और रूपा दिय हुआ क्रम चैकारे क्रमा कारण क्या है। कहन का क्रान्से प्रचार कारणको का और कुलकृत हो जात है। पहले विद्युप्त सोकार्यक स्था वर्ण-कामराची रक्षा करनेके दिने वार्षे अक्षावेके क्यींका कारत करते थे । इस स्टब्स कम्बतः मन्त्र अवस्थित क्योंका अनुक्रम कर्क हर कुमाकुप कर्मोको सामाजिका परिवास करनेने केवानी प्रमीत होती है। अनेनों क्यांने बार्न करो-करों का सन्तर्न हरिएवं चरेता है बाती है से सुद् राष:कारकार पहुंच यही है आकरों बेहरत सर जार कर हैना है। जो कका का महत्वक्रीकरों है सरका सन्तराज्ञ हो धान के परमानाची महानेवाले चीनपुर विकास केले केंद्र तीन कारणोंने प्रतिकों क्या राज्यकार है? विकृत्यों सहिते कि सा प्राप्त और मानव केचेंचा परिवास बार के और सामिक्स सार्गका जारान रेग्यर कृतिको हारा जाराज्या वर्धन करे । यो साराजी मुतिये अन्येको और अपनेने सन्दर्भ पूर्वोको देखता है, का संस्थले कई भी अस्तक नहीं होता। यह से प्रोस्तरिको क्षेत्रकर वह व्यत्रेवाले पहाँको प्रति इस देवते प्रकट है निर्देश को प्राप्त प्रेचन नालेकों अप्रकार (ग्रेष) मो जान के बाब है।

ता है इस विकार राजा क्यारेग्यी कही हुई गाला सुनिये, निर्म केव्यासके विद्यान द्वित एक कर रहते हैं। उसमें भीता है आवनमेतिया प्रकार है, जन्म नहीं। यह मोरि समूर्य प्रक्रियोंक भीतर समून करने दिया है। सम्मिने जन्मे विकार स्टॉम्पॉर्ट सुरात करनेवाल पुरार सम्मि कर्म हैं। प्रकार है। निर्मा सुरार कीई प्रेम नहीं क्या, नो कर्म दूसरे किसी प्रजीते भागीत नहीं होता तथा ने इसम और देशने दीत है जब है, यह सम्मान स्वाप्तकारों क्या है क्या है। यह समुख सन, मानी तथा किसमें हुख विकारियों पुराई नहीं करना व्याप्त, तस सम्मा वह आहम्म हो क्या है। यह सेव्ये सम्मोन्समी हैन्स, काम और मोहका क्या है। यह सेव्ये सम्मोन्समी हैन्स, काम और मोहका ----

कारण करें सहारणका सनुष्ण होता है। यह दुस्ते और देवाने चोण निकाली क्या स्थान आपिकोंट कार मनुष्णका स्थान थाए हो जान और हुश-कुशादी हुए स्थाने नियास स्थान थाए साँचे, जा स्थान का स्थानक हाए हो चाता है। जिस समय निया-कुर्वि, सोझ-केचा, तुक-कुछ, होता-क्या, अर्थ-अन्तर्थ, दिख-अद्याप क्या चीवा-क्याने कारण कृषि हो चाती है, कर समय स्थानको स्थानकार्थी स्थान होते हो चाती है, कर समय स्थानको स्थानकार्थी स्थान होते हैं। मेरे स्थानस अप्याप अंग्लेको वैस्तावत विया स्थान सेसा है, क्यो प्रवास अप्यापिको चाले हारा इन्तिकोश वियामा स्थान चाहिये। विया स्थान अप्यापको स्थान होता व्यापकार होतान करिय हो संबाद से स्थानको आपना है, उसी प्रया हारान्य करिय हो संबाद है।

वृद्धियानोर्ने होत सुकारेकको । उपर्युक्त साथी जाते कुछे व्यापको हो। हुएको अविशिष्ट को यो कुछ व्याप और मैं सामनेकोक किया है, जारे आप डीक-डीक्ट कान्यो है। सामनेकोक किया है, जारे आप डीक-डीक्ट कान्यो है। सामनेको कुछा और सिक्ताले सिक्काले को हो कुछे है। स्थापित कुछा हो। वी किया हमा कहा हुआ है, किरानो में व्यापके हो ?

अवस्थि विकास प्रकारत है। अवस्थ विकार, आवसी नी और मारका ऐक्वं—ने सब मनिक है, किंद्र मारको का व्यवस्था का नहीं है। करकायमध्ये कारण, संस्थाने अक्ट प्रोड़ न जिल्लोंडे कारपनिक प्रयत्ने प्रमुख्यों विकास क्रम है सब्देश की केहनी करी। जी होती। कर स्तरंगके क्रंश किन्नम् निकारको जात क्षेत्रेशे संदेह हर क्षेत्रां है, तब क्रांक्टी नीत सहस्र करोबर कर बोध प्रदा बर लेखा है। अवनको प्राप्त हो पहला है और अवनको पटिए को विका के परंत निवास निवारके किए किसीओं भी परवाहकी आहे। यह होती : अस्य साम-२: समें मोई अन्तर नहीं सम्बादे । आयोह करने प्रतिक को सोच नहीं है। आपको र नाम हैक्तेकी क्रमान होते हैं, व पीत सुरतेयों 1 अगवा कहीं की एव है ही नहीं। न प्रमुखेनेंद्र और सामक्ति है, प्र प्रमहत्त्वद पहलेंके पर । महामान । आवनी होंके निर्देश्या देखा, पाल और कुरले कर एक-के हैं। मैं तथा दूसरे परीची विद्वार में अवनो अक्ष्य को अन्यस्य पर-(नोक्रमार्ग) पर विका कारों है। प्रकृत ? प्रकृत होनेका को पात है और केशका th years & softh amount therby &, any after one open

### शुकदेवजीका पिताके पास लौट आना तथा व्यासजीका अपने ज्ञिष्योको स्वाध्यायकी विधि और शुकदेवको अनस्यायका कारण बनाना

भीनाओं सहते हैं—सुनिहित ! एवा सम्बद्धी वह कहा | सुनार पुद्ध अन्तः वरणवाले कुवनेवनी एक वह निक्रमार परिव गये और युद्धिके द्वारा आसम्बद्धा सामेद क्सीमें मैंसब क्रेकर कुराओं के चने । उस संस्था कर्ये बक्क सहस मिला, बढ़ी वारितका अनुभव हता। इसके का वे क्रैकसब पर्यक्रको सदस करके सामुद्धे समान केनले पुरस्का उस विहासी और यह दिये। वह व्यक्तियार क्लीने अने निवा मारायोधा पर्य काम समावि सामाव देशा, वहाँ वे किलोमे विरे इस विराजमान से और कुल्लू, बैक्क्क्कर, बेमिनि उच्च पैराको के पहा रहे थे। उहाँ समय स्वतासीकी भी दृष्टि सुम्मोकनीयर पड़ी, यो अन्यतिस नहीं। और सुनी संगंत नेक्सी दिवासी देते ने तथा बनुको कूटे कुर कामधी क्रम बनो और फोरोपे अलंड किया है को सा के थे। विकट आ करोवर अरबी-वर्गते अरबा कु खानुनि कुको विलक्षे चएजोंने जनार किया और उनके विकासे थी बोन्यतन्त्रार मेरबार निर्मा निवसम्ब कर क्याक

च्या सुरामा । व्यक्ति समा कम्माने साम को संबाद दूसा था, व्या तम बढ़ी अस्ताराने अक्टी निवेदन नित्य । इसके बाद मुन्दिर स्थानकी कुंद और जिल्लोको प्रदाने हुए हिन्सस्वके क्रिकारक की कर्न कमे ।

क्य सम्बन्धी करा है म्यासमीचे दिल्या, को चेदा-बावन्दी सन्त्रमा, क्रम्प, निर्मेशिया, क्रमुम्बेदने पारंगर और क्रमुसी थे, उन्हें मार्टे ओस्टो बेस्कर केंद्र पूर्व और क्रम्प बोक्चर कहरे रूपे 'मुख्या | असम्बद्धी कृत्याचे क्रमुसेन अस्त्रमा वैकासी हो पूर्व है और कृत्याच कहा भी कारों और कह गया है। अस्त्र पूक्त करा और कृत्या करके हुने कुछ उन्होंस क्योनिये, यहाँ हुमार्टी क्रमुस है।'

व्यक्तमें का-द्वार विश्वमान | यो प्रदारनेकका सक्य निवास व्यक्त है, उसका कर्तन है कि महोबो इकारो आने हुए प्रक्रमाओं स्वा है के पहले। हुम्स्बेद व्यक्तने हेकर बेटोक्ट किसार करे। यो प्रक्रकर्पसाया प्रकार व करवा है, विस्तास मन क्यों न हे उक्त वो सिक्त-

भारते पदने न आप हो, जो चेक्सपन नहीं कराता। साहिते। सिर्धे देश पहाना हो, असमें दिल्लोंड से सामी पूछा मीक्ष है कि भई-पुरा सतको अची तथा बार रोग फारिये। विराणे सक्तानन्त्री जॉन नहीं की नजी है, को क्यारि विद्यालन नहीं देना पार्टिने । वैसे आपने उन्हों, क्षीराने और कारौटीयर कारनेसे अब्बे सेनेको परक होती है, क्षी अक्षर करने कुछ और पुरू आहिके हुए दिल्लीकी when with which producted finded field शतुभित या भवक्षपण मानमें न राजान । तुन्हरे पहलेकर भी विस्तारी बैसी सुद्धि होगी और कानेने को बैसा करिएक करेगा, उसीके अनुसार अस्को स्थानक विलेगी। अन्य बोहर हो नहीं होना चाहिने कि एक करून द्वारांने पर है। कर्ष, सम्बद्ध कार्यान है। उत्त्वानके बाने रक्तार करो क्योंको करोड़ देश पाहिले । केहकारण यहा पहल्कारो सार्थ इसको अन्यन करण पाहिने । यो मोहन्स नेहके करना प्रकृतको निष् करा है, यह असे अन्य-निर्माण कारण निक्षीक्ष पराध्यको प्राप्त क्षेत्र है। को कर्मिक विधियार अलंबन करके प्रश्न करता है और को वर्गक अनुसार जार नहीं देता, जा दोनोनंदी एकावी पूर्व हो सार्थ ी असमा एक देवका बात होता है। यह तक मेरे हुआनेकोड़े क्षाध्यानको निर्मा कारणनी है, हालके कह स्वत्येले क्रिक्टोका भारत करकार हो सकता है।

योगार्थ करते हैं—अवने गुण व्यासनीय इस उनकेश्वा कृत्यार उनके रेजानी रिव्य बहुत जाता हुए और शासकी कृत-कृत्येका उत्तरिकृत अरके व्यासनीये केले 'जाका | अरमे अविकाय इसरे कृत्या विकार अरके के कर्ते जाता है, से इसरे मनमें बैठ जाते हैं, इस उनका करका कारण करेंगे। महापूर्व | यदि अरव परंत्र करें के कृत्यांग केलेका विकार करनेये रिजे इस परंत्रते पृथ्वीपर काल बढ़ते हैं।' क्रिकीयी बात सुरुकर जासकीये कर्ते तुक्ती इक्क क्रिकीयी कर दिया 'पृथ्वीपर क्रिकेशमें कर्त तुक्ती इक्क क्रिकीयी कर दिया 'पृथ्वीपर क्रिकेशमें कर्त तुक्ती इक्क क्रिकीयी इसर दिया 'पृथ्वीपर क्रिकेशमें कर्त तुक्ती इक्क क्रिकीयी हो, जिल्ला मान्या क्रिकीयों है।'

सारवादी गुल्को वह अदार वक्तर सभी क्रिकोर उनके वर्गायर रित रसकर प्रमान किया और उनकी प्राह्मिका करके वहाँने प्रस्कान किया ( पृत्कीम उत्तरकर उन्होंने वासुद्धीय (अस्तिकेस सेकर सोमनानकको कर्मो) का प्रसार किया और गुल्वाकामों प्रत्येत करके प्रमान, हार्किक स्था रीवनेके का करती हुए वे को अवन्यारे एने एने। हिनाविनोने उनका विशेष सम्मान का। यह कराना और

केटोब्टे रिव्हा हेना ही जनके चौतिकता को और हुन्हीं सम्बेदिः कारण जन्मेंने संस्तरूपे कई प्रकार आहं की वी ।

विक्तिक को जानेन क्यास्त्रीके साम-काके पूर पुत्रकेको सिक कोई नहीं पर नका का वे सुरक्षण किसी कोच-निकारने को एकाको कीठ के। जाने समय प्रकारको जन्मको जा आधानस आवार व्यासकोरी किने और मीडी प्राचीनें कोने 'प्रवाहीं ! आब इस आवान्यर केइ-नामेंका प्रश को पूर्वी पुन्तनी केव ? जाव अकेटो पुरक्षण किस



विकारणे को हैं ? वर्णों विकास-ने क्रेक्स मैंछे हैं ? विकासि व क्रेनेने कारण अब इस क्लेस्सी क्राने-नेजी सोधा गृहि को : क्रेस्सिन सेम्ब्रिंग कार क्राने क्रिक्स क्रानेक्स क्रिया वीत्रेस करकी सक्त असीन कार क्राने हैं ! नाक्ष क्रिया क्रिक्स और क्रान्यकी गर्मा की वेदकारी सिमुक्त क्रेक्स अब क्रानेक्स कारा केस्सिन क्रानेक्स केस मान्यकी क्रानेक्स कार्यका सेसे 'हैं को हैं हैं साम क्रानेक्स कार्य हैं। अब कर्मा, क्रान्यक देसनेक्स और सर्वक्सी जाते क्रानेक्स किने क्रानेक्स क्रानेक्स और सर्वक्सी जाते क्रानेक्स किने क्रानेक्स क्रानेक्स हैं। तीनों क्रोक्सें क्रानेक्स केस है, क्रान्यक जानको क्रान्य क्रांति हैं इसरिक्स क्रांत क्रांत क्रींक्स है क्रानेक्स क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांत क्रांतिक हैं। क्रांत क्र

कटकी का—कस्त्री ! के प्रकार अध्यक्ष अन्यस (अस्पति) न करना केव्ययनसम्बद्ध पत्त (क्षेत्र) है, सरका पालन म करवा प्रावृत्तका पत है, पालक देशके लोग पृथ्वीके मरू है और नवे-नवे दुस्य देखने या नवी-नवी कार कारोकी अवस्था रक्तन सीके तिये केवची बात है: आह. आर अपने पुरिचार पुग्ने सन एक वेलेका सम्बन्ध करते थे।

बोकाओं बहुते हैं—ना सहसीको कहा सुरक्तर करन कर्माना खासबीने 'बहुद अवार' वाहबर काकी आहा क्रोन्डर की और अपने पर क्रम्बेनके साथ विश्ववनको मुख्याना करते | हा-से केने करते केर-मकोचा जारण करने सने।

क्रानेक्षीने क्रमुद्री क्रमसे लेखि क्षेत्रण बड़े चोत्रकी अधि रखी। का सकतानीने अन्यवन-बाहर काला अपने पुत्रको रस स्वय के पहले हैं हैं कि । इनके मन बारेगर बुक्केन के क्यों प्राप्ता करूप सामेके दिने प्राप्त सकन्ता 🛒। 🕶 हेराबर सामग्रीने कहा 'केट । का बहुतवी हुंगा प्रमान केवो पह औ हो, का सका बेहागोबा होक-टीक सरार अक्टबर नहीं हो पहल । अर दहारों बगहरहों का करते पहन् कानो प्राप्ति होती है। हासिको ह्यानेतालोग अधिके सन्त बेटकार की करों !' का बक्तर का कर करा है गयी है व्यापनी पान्यो अञ्चलको सँको आहा देवन आकारमञ्जूको

#### शक्देवजीको नारद्जीका उपदेश

बीकर्स करते हैं—मुस्तिहर ( काक्स्प्रोके करे कारेके | कारेके हिल्दे काल रहते हैं। अनुस्थाने बार्किन कि कारके कृत इस अक्षाना कृतान क्रांत्मी क्रीतार व्यावस्था स्था हर पुरस्कारीके यह देवर्ष समझी कारे। वह स्थानक हेवा प्रकार केरोकानिनियों अर्था आहे निर्माण करते प्रच्या प्रकार किया । क्षा माध्यांने प्रमान क्षेत्रर पूजा 'क्षा ! मे क्षारा और-सा संबंध हो देश वर्ष करे ?" व्ह कुमार क्ष्मकेन्द्रीने सहा, 'इस स्टेक्टों को बरन कान्यकार सन्तर श्री करीका उपरेश देनेकी कुछ करें।"

कर्माने कड़-एक समय परिवा अन्य:करणवाले क्रमियोंने तथाता क्रांत कानेकी इसको जब किया, काने कारवे भगवान समस्यासने वह उनके विक-निकार्य प्रधान बोर्ध के भी है, सबके सकत कोई का वर्ध है, रामके समान कोई एना और जानके समान कोई सुन्त नहीं 🕯 । पायक्रमंति हर सुन्द्र, (स्त्र पुन्यक्रमंत्रः अनुक्रम करन्द्र, साध-पुरुषोके-से कर्मन और संश्रुष्णाच्या करान करना, क रातीतम् होय-(कारकन) या राज्यन् है। अर्थ प्रकारा नाय भी नहीं है—ऐसे इस पानव-इरीएको ककर के विकासि मासक होता है कह पोहायों जार होता है। विक्योदर संबोध क्ष्मका है है, यह दुःबोसे बुटकरा जी क्षित्र स्थला। विषयासक पुरुष्यी युद्धि सक्ता होती है, न्य मोहन्तरका बिरवार करती है और योहातराने बैका दुशा पुरुष दूश रहेक क्या परलोक्ष्में भी दुःस ही भोगतः है। जिसे काम्यन-प्रतिकी राज्य हो, उसे प्रत्येक जगनते काम और कोमको द्वाना पाहिले; क्योंकि वे क्षेत्रों क्षेत्र कारकारक नाव



क्रोक्से, स्वयंत्रिको इक्से, विकासी मान-अपमानसे और अपनेको प्रस्कृते कळाचे । श्वर अध्ययका परिज्ञाग समसे वक्त को है, क्रम सबसे बहु बहु है, आतंपका हान सबसे बहु अन है और सतारे बढ़कर से चुक है है नहीं । सन बेलन सकते केर है: फिट बिटकरस्क कर कहना संस्के भी महकर है। विकास अधिकारिया जानक दिन होता हो, करीको मैं सत्व मानल है। यो नवे-नवे काम आरम्प करनेका संकार कोई मुखा है, जिसके पन्यें कोई सामन नहीं है, जो किसी प्रसूचा संबद्ध नहीं करता तथा किसने तथा पूछा तथन देशा है, बडी विद्यान है और बढ़ी परिवार है। को अपने बढ़ने की वई इन्हिकेट हारा अनुसाद क्रम्यो विक्योंका अनुस्थ करता है, जिसका निव शास निर्मिकार और स्थान है तथा को अल्बीन प्रशासनेकारे के और प्रतिकांके साथ सकत भी उनने एकायार न होगान बिलान-सर ही द्वारा है, बहु पूरत है और को बहुत कींब करन मारुवारको आहे। होती है। विकासी विक्री प्रकारियों और हुई। नहीं पानी, को विश्लेषक करने तथा विश्लेक करनेक नहीं करता, बहु परन कुल्यालको उद्या होना है । विश्ववेत्तरे किया न बारे, सब्बे नाथ निम्ताना कर रहे और वह क्यून-क्य पंतार क्रिसेंक साथ पैर न करें। को अस्तानस्था प्राप्त क्या कार्य कार्ने रक्षेत्राम है, को कार्ने कि किसी कहार होता न को, बंदोन १वें और कामन तथा पहारक्ता तथन कर है; इससे कर कानानकी सिद्धि होगी। का कुल्लेस ? हम संस्कृत प्राप्त प्राप्ति विवेतिक हो पाओ एक सा पान्छे प्रदा नहीं की पुरस्केत और परसेकरों की निर्मन हवा सर्वक क्षेत्ररहित है। किन्तुने चोनोका चनिकन सर दिन है, वे क्षानी क्रोकार्थ वहीं बहुत इस्तरियों प्रार्थन स्थानकों भीगामधिका शाम धारण शामिने । सीमा । यो पोनामधिकार कार कर देता है, के इस्क और संस्थाने कर नाम है। को अभिन्न (परमाना) को जीवनेकी उत्तर रहन्छ हो, को proof, fiebfige, grontler, ebenfum auft ftraciti अवस्था (हर) कविने । में उत्तर स्थानकार विकरित मारक न हेकर कह एककारक करत है, वह बहुत और सम्बंधन कुछ (जेड़) को प्रश्न कर रेसा है। को की वैद्वारों सुक प्रानेशको अधिकोदे शीवने प्रकर पी अवेती प्रमेषे ही सामद मानव है, जो इम्मानकी श्री सम्बन्ध सामिने; को सामान्यते दस केना है. का कभी कोकों नहीं पहल । चीन सब कमेंकि समीन पहल ी. यह सुप करोंकि अनुहारते देखा क्षेत्र है, सुप-असूप क्षेत्रीके आवरमहे प्रमुख्योधिने क्या करा है और केमा अञ्चय कर्मेंसे पञ्च-पत्नी आहे नीव केल्पिने कथ कान करता है। अन्यन केरियोचे गीयको सक्त परा, पुरा प्रका मान प्रकारके क्ष्मोंक दिल्ला होना नकत है। इस प्रकार संस्तरमें कर हेर्नेकार अवेद अपने संस्थानी अन्यो प्रकार मात है—इस करावी और हुए को नहीं बार की ? वहीं विधित बस्तानोंके संस्थानी कोई बन्याकार भी है। क्योंकि संश्राप्ते पहान् क्षेत्र अवट होता है। देवनका जुला है, अनक नाम पुरुष है। यो पुरुष वर्ग, अर्थ, काम,

ब्रीक् अपने संस्कृत कारण है अवस्थे पहला है। सी, पुत्र और क्ष्माने आराह स्टोमाने बीच जो उपल यह पते हैं, जैसे कंपाओं को प्रार्थ सामाने एत्यानों फैल्बर दु:क कार्त हैं। किए प्रकार चहुन् जारमें केंग्स्यर पानेके सहर आने हुए पाल बहुनी है, अर्थ प्रपत्त बेहुमारलें पैरावल माराज बहु करते हर इन अनिकॉकी ओर होंदे करते । संसारने कटक, को, पुत्र, करोर और संस्था—सन्द मुख परामा है, सन महत्त्वान् ि कारे अवस का है—सियं पाप और पुरुष । नहीं हहरोके हैनो कोई कार जीं, कोई स्वारा केनाला जीं, राहकर्ष जीं का अपने देखावर कोई साथी नहीं है, को अन्यवारते व्याप और हुर्नन है, का मार्नन हुए अनेको बैसो बाद स्वाधेंगे ? का का प्रत्येकाची का स्तेते, का समय कोई तुन्हारे कैके नहीं कारण, केवल प्रकृत किया हुआ कुम क बार ही महीनक क्रम देखा । अर्थ (परमामा) की प्राहिते दिन्ने ही निवा, कर्य, चीरता और अस्ति विद्या प्राप्त कार्य है। का कर्मकी विक्री (परकारको गरीर) है बाते हैं से स्ट्रम कुछ हो काल है। जीवने सुनेवाले जनुज्याकी विकासिक जीन को अवस्थित होती है, यह जो बरियरेश्वरणे राजनित समान है, पुरुवास पुरुव इस प्रतिको स्थानार आगे — सरवार्थक प्रवतन का जाने हैं: जिल में पानी है वे को नहीं कर पते । ना मंतार कार महिले समान है, कर करनार विज्ञास, भी सोल, संस्थे हींप और सेर के अंग्रह है। एक का महेकी मीचड़, क्रम्ब असे और व्यानंत्रके कृति कर है। प्रशिष्टनी जैनाकी स्थानको को पुर विका का सकता है। हांगा इसकी भूगियानी सामी और वर्ग प्राच्ये रिवर करनेवाली पत्नी (संगर) है। यदि कारकारी प्रकार सहारा किले से इस महिको होता पन किला क सकता है। या देह पहाधुनेका का है, इसमें इंट्रिकेंक संसे लने हैं, यह यह-व्यक्तियोंने बेचा हुआ, एक-पांसरों दिन्दा हुआ और पानके नक हमा है। हमाँ मध-पूर परा है, निसर्फ कारण हरिय कार्या रहती है। यह जरा और होकसे स्वाह, देनोका कावन, आहर, रचोगुनकारी सुरुक्ते प्रका द्वारा और अभिक्र है, जल एचे इस्की जलकिया लाग कर देना पादिने । यह सम्पूर्ण करावन करात् पद्धानकृत्योते करात हुआ है, इस्रोतने उसरे फिल नहीं है। प्रश्नायहणूत, पाँच झानेनिसीं, चीव प्राप्त, सदि और सम्बद्धि कुल-कुन सम्बद्ध तम्बीके सम्बद्धकारे अल्ला काहे हैं। इनके साथ है (जन, रस, नन, एको, पुरुष प्रका सुद्धि और अवेकारके आवश्यका) सामूर्य विकासको निर्मानने को कौबीस सर्वोक्ता समृद्ध होता है, उसे व्यक्तकार समुद्राण करते हैं। को इन एक त्रकारी

पुन-पु:क और सेवन-मराभंद्र तकातो ठीव-ठीव काराज है, यह स्टान और अलब्बे स्टब्बो में बच्चवंत्रको कास है। अनके सन्त्रकों किएने को है, उसे सन्त्रको सन्त्र व्यक्तिये। यो पदार्थ इत्रियोक्कत सामे आहे हैं, हे ब्यक्क बाहरू है और को प्रतिकृतिक अलोकर होनेके बाहरू अनुमानसे साननेमें अको है, उनको अध्यक्त बको है । विन्याहे इन्हिली अपने कार्ये है के उसी उत्तर संबद्ध को है, केरे कर्मकी बारासे जासे हुए गाँव । जाने पुष्प स्टेक्ने अपनेक्ट और अपनेने लोकको विद्युप देखते हैं, अई पूर्व और परिचया भी ज्ञार होता है तथा अभी का प्रमानीय क्रांके म्ब महि होती। असेके प्रथमको ने क्रम अन्तरकातीने सन्तर्भ | ग्रिडीट् (मुच्टि) को प्रकृत है ।

पुर्वेक्ट कर्नन करते हैं। यो इसके करने मेहलन्त करन जनको हेनाेचे पर हो क्या है, या स्थान अधिकांक सामार्थ अपार के कर्ण अपन करेंगे हैवा की होता है मिन अपने पर्या कालीको सीते करोते वेजल और मीता होना सुन्त है। यह प्रत्यास्थानि सून होनेवर साम अकरके कह केवल हुआ संसार्थे काठके शक्ति क्रमा क्या है। प्रारंति हम क्योरे निक्षा, क्या प्रकारके क्यानेते पुरत, सर्वह, सर्वोक्तक हैरह और ध्यत-असामारे रहेत है कारो । बहुर-मे इस्मै कुल संपन और स्पन्नके कारो नकी बन्दरिक अबेद करके सरस्य द्वार शेवारी असब

# नारदर्शीका शुक्रदेवको उपदेश और शुक्रदेवका सूर्यलोकमे जानेका निश्चय

करानी वर्ग रि—क्यांक ( क्रांस क्रोकको स करोजात है, यह सारितांत और व्यापालकार है। यो अपने बोकारा कह करनेके हैंजो प्रत्यका समय कता है. मह सन्त्र पूर्णि कावर सुनी होता है। क्षेत्रके हकते और भारते सैनको साल है, वे प्रतिक्षित कु कुल्लेल ही सरक प्रचल करते हैं: इकिस्स स्ट्योग स्था के औ भारता । इस्तिने तुन्हारे अन्तिका यह सानेके हिन्हें में बहुः अनेत करता है, सूने —की बुद्धि अन्ने बढ़ते से से संबंध सबके रेजे कु हो बता है। हुव्हिंग क्यून हो अर्थन कर्मानी प्रतीत और दिन कर्माना क्रिकेट होतेना पर-वी-कर हु की होते हैं। यो यह भूज्यालके नर्तने हैन कर्ते (स्तु हो मनी), अस्ति गुलोका इसस नहीं करन साहिते; समेकि से आरल्प्यंक इसके मुख्येका विकास करता है, इसकी कारतीह नहीं करती । नहीं विस्तारी आसाधि कहते हती इस प्रमुखी अन्यिकारी समझका कार्ने केवाड़ि कर केरी व्यक्ति । केवा करनेका काले सीच ही केराना हो सामा है। जो बीची सहस्रे रिले सोच करता है, उसे अर्थ, वर्ष और बसबी प्रति वहीं हेती: क माने मनावदा र स्थान आहा है, अले सन्तर क्ष नहीं होता । सभी आधियोच्ये उद्यक्ष प्रदानीते संबोध और वियोग प्राप्त होते वहाँ हैं; किसी एकम है या क्षेत्रका अवसर नहीं अवता । को प्रमुख पुरस्कारणें को इस विकास माधि अथवा पर्व हुई वस्तुके रिप्पे निरमर होना करता सुक ी. न्य एक दु:ससे दूसरे दु:सब्बो अन होता है: इस अवसर को से अनर्थ पोपने पहले हैं। यह अपनी बहिलो विकासकर संसारमें स्वा होनेवाले जन्म-मरनके अव्यानर रहि रखते है. वे कार्य उसके लिये अहिं। नहीं बहुते । यो सक्को सम्बद्ध

प्रक्रिके नेपाल है, यह इस्त्रिको कभी अनुसार होता ही पहिं। महि कोई कार्रेटिक का मानीत्वा दुःचा सारिका हे साथ और जो हा कारेने बोर्ड काल काल प है तथे है अर्था हैने किया नहीं काणी कहिये। दुःस हुः करनेकी सामी अन्ती का को है कि उल्लेड रिक्ट रिल्टा में को पान । दिन्हा कारोपे का काम भी जीन्द्र और पहल प्राप्त है। पुराहिनो कारीमा प्राथमो पुरिक्रो और प्रतिनिध स्तुन्त्रो जीवन-नेकाले एक पर काम साहित। सामहाताने जन्मको ही ऐसा होना इनका है। दृ:सा पहलेश बालकोसी क्या केन जोना भूति। प्रमूप स्टेक्स, संस्था, स्टब्स्स, अन्तेत्व और क्षेत्रकारेका स्थापन-मे एक अधिक है. विकार पुरुषको प्राप्ते असरका नहीं होना धारीके । सारे देसपर अन्ते हुए अंकारोड रिन्ने किसी हुए व्यक्तियों होना कारा जीना नहीं है। भी का संस्थानों दलनेका कोई साथ विकासने हे के क्रोबा क्रोक्सर को है करण वाहिते। हार्ये र्मीक पूर्व कि जीवनमें सुकारी अधेक दुःश है अधिक होता है. बिज् को सक और द:स केमेको हो किया छोड रेता है. का नक्षण प्राचने प्राप्त के पाता है। बनके कार्यन्ते का यह होता है, सामने पहले को पूज नहीं है तथा को सूर्य करवेरे की केन की चेना है, अतः करको प्रत्येक अवस्थाने इनकार सकार आहे ना हेनेस किया की कसी कारिये । समुख्य कारण होत्या कारो-कारो पहलेकी अधेका रीको रिकरियमें प्राप्त होकर की काफी दार नहीं होते. से और अभिनानो अन्य देशो हुए ही गर गाउँ हैं इस्त्रीओ विद्वार पुरूष स्था संबद्ध को 📳 संबद्धात अन्त 🛊 विन्यात, वैजे कानेका अन्त है नीचे गिरना, संयोगका अन्त है जियोग और

चीवनक अस है परम । एकाका सभी अन्य भई होता, संबोध हो पाप सुक्त है, जल: विकेटी पुरूप संबोधको ही पर्प का मानते हैं। आह राजाता बाँव की है, का क्रमाना की विश्वय नहीं तेती। जब अधन करेर हैं जनिक है से करते बिस कहनो निस्त संबद्धा बाब ? यो पट्टम सब प्रानिकोधे बीका मनमे परे परमाताका विकास करते हैं, में अपनी प्रेस्ताबामा समाप्त काले काव बाद्या क्रिक्सांत करी हुए को काले. पार को जाते हैं। बेदो बंग्याओं कवी-कवी ब्यास्की कोजने जन्ते हुए पसुन्ते सहस्र जन्त अस्तर कोज रेज 🐛 क्षी उदार कामनशोबी कोमने एने हुए अनुस पर्यापके भीव का है बारी 🖢 प्रामित्रे सम्बंधे हु एसे बुटनेबा स्थान सोक्य वाहिते। यो क्रोक क्रोक्या कार्य अलाभ कारक है और विक्री करान्दे जासस नहीं होता, अनकी सुन्ति हैं वाती है। भगे से या नियंग, समयो उनयोगसमाने हो उन्ह. कार्य, कार, रहा और राजा आहे निवनोने विज्ञीन कुराना अनुपार होता है, अनोट बाद अनी कुछ की पूर्व पहला। प्राणिकोची एक-सुरोधे संबंध क्रेमेंब क्क्री कोई ८ वर वर्ड क्षात: जब संयोगके जब वियोग होता है, सभी समयो दःवा कुत करता है: इस्तीओ विकेशी पुरुषको अन्ये कामनी विभाग क्षेत्रका साधी भी कृतेक नहीं करना नाकृते । वैश्वेत क्षत्र Regi afte percell, bade ger gen afte breit, meit ger अपित और प्रान्ति तथा संदेशकों प्राप्त का और कालीको स्ता करनी पासिने। को पूजनेंग क्या करन स्मृत्योंने भारतीयको इटाका इत्यानाको कियाक करू है तक जे अलामिकाने परायम, निकास और स्वेपक्रेन कार इकाकी विकास सुना है, कई सुनी और विद्वान है।

कर प्रमुख स्वरूप्ते कृता और कृताओं सुद्धा सन्त्राधे सगता है, इस समस्याने पृद्धि, नीति अचना पुरुषार्थने भी अन्तरी रक्षा नहीं होती। सारः करूकानी प्रार-आरोके विके बाह्य प्रचल करते रहता पाहिने; क्योंकि का करनेवारक पूरा कापी कुलाने शही पहला । अस्तर सरको सहका केन है, को करा, पूर्व और हेग्से बंबाब कड़िने। क्रारीरेक और मानसिक येग सुब्द बहुत बारक करनेकारे और कुलके क्रेबे पूर् तीको बालोकी तरह करीनको पीदिल करते है। कुलाले कार्थित, बु:पी एवं विकास क्षेत्रम की सीनेकी क्रमा रहानेकारे मन्त्रका प्रतिर विभावनी और ही विश्वत क्या क्या है। की जीवोबा प्रथम सारोधी और ही पहल पता है, पीड़ेको ओर नहीं स्पैठल, उसी प्रकार यह और देन भी मनुष्योंकी आयुक्त अवकाम करते हुए मौको करे जा से हैं।

क्य-बीर्ज का का है, का एक क्षणके दिनों भी निवास नहीं रेका। धूर्व एक्ट अवर है, फिलू प्रतिदेश प्रतृत और साल क्रेकर अभिन्येके सुना और दुःसम्बर्ध भारत साले रहते हैं। मे रहेको विकास है अपूर्व प्रथा असम्बद्धील क्रिय-सर्दिय कार है है के अपने और कार्य कार्य है। बाँद बीकरे किये हर क्योंका कर कार्यन न होता हो का को कहता, उसकी वर्ती स्टब्पन पूर्व हो काती। यहे-यहे संस्थी, प्रतुत और र्क्ट्राच्या करून भी अपने क्रमंदि कराने महिल होते हेते करे है का पुल्हीर, पूर्व और नीव पूका की वितरिक्ष कार्यार्थको किया है समझ कुल्लाकोचे समझ दिवाची के हैं। कोई-कोई करूक के एक स्तित्वोची हिसारे हैं सना कुछ और संस्थारको कोचा दिया करता है, जिन भी यह सुक है केन्स है। फिक्रों है है। के कोई साथ न सार्थ कुरमान की रहते हैं, फिर भी उनके पास सबसी अपने-आप ब्यूंन कार्य है और कुछ जोन कान करके भी मनवाड़ी करहे नहीं बत्ते । बहु तक पुरस्के प्रत्यक्ता क्षेत्र है । हैसी, बीर्ज शास्त्र केंद्र केंद्र है और शास्त्र पायर प्रतार राजा करने है। क्राफी को पढ़ चोरिने चहैक्चर मर्थकारम करानेने समर्थ केल है और कार्य नहीं केल । कार्य-कार्य अल्पनी चीर्यह क्रमान व्यापी के प्राप्त कावा है। विकास के लोग पुत-पीत्रपति क्रमा रक्तकर करवी निर्देशके रिक्टे का करते रहते हैं से भी प्रयोग प्रेमान नहीं होती और सहन से महत्त्व संसानको हरेयाँ भी हुए भी। सन्त्राच्या कहा अन्त्रे हती पूर्व है से भी उन्हें पार्ट क्रिकेटी पूर्व प्रत्या हो जाता है। विश्ववे ही सर्व ऐसे हैं, में पुर्श्वास्त्रकों के की-पुरुषेत्रस देवताओंकी कुछ और कारत करके का वहीनेतक सुरक्षित क्रमेंसे बाद भी पैक्ष क्रेरेक कुल्लाक विकास अलो है तथा बहुत-से ऐसे हैं के अपनेद-प्रकेशों 🛊 पान पाना फार्फ निरामें संचित निर्मे हुए हर्पाए पार-पारम और मियूर पोरनेके अधिकारी होते हैं। कुछ नर्ज मालके बेठले किर जाते हैं, कुछ जन्म लेले हैं और विक्रमें ही कम रेक्स भी पर मार्ने हैं।

केने प्रकार कोटे प्रश्नेको साह पर्वेशको है, उसी प्रयास सर्व पनुष्योंको जन्म अकारके ऐन पीईक बारो है से उन्हें इंटरे-बैटरेकी की प्रसिद्ध नहीं का सारी। स्वाधिके स्वासे हुए क्टूब बैक्केक्ट ब्यूक-सर कर क्षेत्र है और बैक्केन रोग तुर करनेकी बढ़ा चेल करते हैं से भी ने उनकी पीड़ा नहीं सीच को । कुल-पी ओनविकोचा संबद्ध कार्यवाले कहर-काराय केंद्र को कार्योक्ष की हुए क्योंकी पंत्रि रेगोंके विकार है बाते हैं। में बरा-कराके बाने और एक पीते राते हैं से भी बुह्न और कृष्ण दोनों पक्षोंका का परिवर्तन देवकरी केवोको । जैसे इसी बिस्सी बेहको क्षका देश है, बैसे ही प्रकारका

किकारी जन्तु और राँठ, मनुन्योंको क्य रोग सरका है हो | और सन्तरनसम्परी रिका स्ट्रेंग; सिंसु यह परमनीत केनका महैन उनकी विकित्सा करने करने हैं ? प्रापः उन्हें रोग होता। होतान किये किया नहीं उन्हा हो सकती। फार्निक प्रारा ही नहीं। सिंतु बने-बने पशु बैसे कोटे पहुजोचा साहामार । केला-बनसे हुटकारा निरस्त असमान है, इसरियों कार में माने को पत के हैं, की जबर प्रकृत केवाले हुई। रामाओको भी महान्ती केन मेरे सुते हैं। इस प्रमात राज कोच नवसागरके प्रयस प्रथमि बहे हर सेक-केक्ट्रों हर ये हैं। देशनी मनुष्य वन, क्रम तथा क्रमेर क्रमको प्रभावने प्रकृतिका जारपुर नहीं कर सकते । की प्रमाणा मान शरने प्रकरें होता के चोई की प्रमुख न सूह होता, न मता । समझी का पानवर्ष पूर्व हो पानी और विद्यालको अक्रिय नहीं देशस्य प्याप्त । सार स्वेच कंतराचे सर्वोची क्रेस मार्थ है और प्रानंत हैंनो क्याप्तरिक गार को साते हैं: हिंदू अल्पे संस्थाना नहीं जार होती। जनक-बीहर, पुरुषेत हर्व कार्या पूरा को देशने तथा गरियके बाह्रे प्रकार कार्यकें रोक्क करते है। विराण ही जोगीय क्रिक बहुत हिने क्रिक ही निवृत्त हो पारे है तथा दूसरोची अच्छा हो वस प्रान्थार जो निवास । कार्रीके कारते कई को किरमात देखांचे आहे है। कुछ ओग पालकी होते हैं और कुल्टे ओग उन्हें बालकोने

मैठका करने हैं। मितने ही गयुना स्रोधे पर प्रानेश क्याकी

मीमन मतीत करते हैं और स्कूतिके कर अनेकी देवनों सुकी

है। बची करते सुरत-दुःकारी हुन्हेंने रच को है, ज्यूना अन्तेते

एक-एकका अनुभव करते हैं अर्थाद वैदर्शको सुरक्ता अनुष्यम् होता है और विन्तीको प्रश्नात । कुन पुर कारको

देखें, मित्रु क्षेत्रने व पहें। स्वन्तिह । यह वीरे हस्ते पुत्र

मान समामधी है। वासर्गाची कर कुरवार परत बुद्धिपाए और बोरविय मुक्तेनजीने मान्त्री-का बहुत विकार विकास विकास के मिन्ही निक्रमार न चौच सके। बोद्धी हेर चल उन्हें अपने Hर्गवी कल्यानवर्थ गरिका निकृष हो गया, बिर वे सेक्रे सने—'मैं राम प्रकारकी उन्निक्वेरी मुख क्षेत्रर विका प्रकार क्षा काम गरिको प्राप्त करी, पहाँसे दिन इस संस्था-स्थानसे सोठमा न पढ़े । वहाँ कानेपर सोवको कुरसकति नहीं होती, वै वर्ष परम भावको जात्र कान्य प्रमुख है। सन प्रधानको आसरिकोक्स परिवार करके की करके हुए जान की पानेका निक्रम किया है। अस में मही सकीया नहीं , सेवित कैमारके जिल्लार महे गये।

रुपकी कमर देवी कर देती है। इस पृथ्वीपर मुन, कही, | वेरे कारमध्ये इतरित निरोती उच्छ वहाँ में कश्च, अविद्यारी केनमा सामय केमर इस है। नेहाम परिवार कर हैना कीर क्यूकारों हेन्द्रेग्य आदिवसकारों प्रवेश का कर्मण। देववालेन पश्चमध्य अस्त पेका क्रिय प्रवार को और का के हैं, का प्रकार सुर्वतिकार क्षम नहीं केता। कुरूपारं प्रमुख्यानी एक हुआ बीच क्रांधीन संस्ता क्रेकेस सम्बाधका क्षेत्रर किर इस पुर्श्वास गिर पहले हैं, इसी अवार गुरू कर्मका क्षेत्रमेवे तिथे का पुरः क्यानेको क्या है। सार्थक वह कि क्यानेको क्षेत्रकोची अध्यक्ति प्रधात गाँ निरमा। प्रत्ये तिना परान रहा पाल-स्था पात है, सर्वा हाल-पृद्धिक विकासिता कर्या गाँ हुआ। शहः हा सर क्रमेक विकार सत्ते कुटे क्याकेको सरेकी हका की होती। परंतु कुमीन सरावी प्रकार विदर्शनोंने समझ क्याची संभार है। है। वे सबके केवाके करने अवस करते है (अनेद केल्ला कमी द्वारा गाँ होता), इसीको काला भगवार पान आकृष करा कुल है। असः प्रदेश रेसकारे अधिकारकारे काल है को अबल कर पहला है. वर्ष में निर्भाव क्रेका जीव, कोई मेरा मराध्य नहीं कर तकेना । इस करिन्द्रों कुर्वस्थेकने क्रान्यार में स्कृतिनीते तान सुर्वीको अल्पा कृत्य तेवने प्रवेश कर सार्वण, इतके दिनों में पर, पार, पर्वत, पन्नी, दिला, आसाव. के. काम, मचर्च, विकास, सर्व और बक्रातेंहे प्रकार जनमें जावा केन पहला है। अला में बनाईड समूर्त कृतिने अनेक कार्यमा, समाना केवता और कार्य रेती चेनक्रीक्या अस्य देवे :"

> हेता विश्वाप करके सुख्योगकोरे विश्वविकास हेतारी जनकारी अवस वर्षि । का उनकी अनुवादि विक गर्ध से वे अपने विका पहासूनि अविकासीयकानेक प्रशा आने और क्योंने काके करणोने जावन करके करवी अधिका की। स्थान्य उस्ते स्थानेकको कारेके लिये आप योगी और केवल्य क्लिर करते हुए वे दिलको नहीं होता सिन्धाओंसे

# जकदेवकी कर्जगरिका वर्णन तथा व्यासको महादेवजीका आचासन देना

बैत्यक-विकास पहुँचका एकान्त्रों स्थान पुरिता के गुने और प्राच्नेक विविक्ते समूर्ण वरीले जनवारी धारण बहुने हुनो । बोदी ही देनों यह क्वोंक हुना में ने हुन-कैर सरोदकर विशेष-भागते पूर्व दिसावी और पुँड करके बैठे और योगरें प्रयुव हो गये : वहाँ पढ़ी भी ये और विस्तीया कोलाक्त नहीं सराबों पहला था। उस उनन है सब उच्छाने स्थिते चीत आवाद स्वयापार करते पूर हैने जिल क्षेत्रकारोजी असलीको देखे केच्या सामान से न्यून चेनेका होका कहेंने कामानी करेका निका किया। स्वयंत्रा, देवर्ष राज्ये चल बलार प्रमाट प्रमीत्रा को और असे असे चेतांद्र सम्बन्धे का प्रवार निवेदर विका क्रिका । अर भूते संक्षणांक हर्तन हो गया, सारक कुरवान हो, जन में नहीं बारेको किए है, जनकी कुछते अधीव नहें जार करोना है

मुख्याची अद्धा पावर व्यास्टब्स पुर्वानके हो असार बंदके पूर: योगने निवा हुए और फैरम्स-कियारी क्रमान्तर जानावारे या पहुँछे । वेतन क्षणुव्य प्रमा करण कर अन्तरिक्षये विकासे समे । उस राज्य सुरक्षेत्रप्रीयक वेता सूर्य और अधिके समान जोता के रात था। में निवासनक महिले इस समूर्ण दिलोक्टीको असम्बन्धानो देखने इर बहुद दुस्तक आने का जो। ३वें निर्मय होकर करक और एकामीनकी कार को देश राज्यों बरावर ज्ञानियोंने अनमें प्रांच और देशिके अनुसार प्रत्या कृतन विरुद्ध । केव्याओंने कृतार केव्य श्वतीको कर्न की : रीनो होकोने प्रसिद्ध कार कर्नक क्ष्मकेची पूर्विताली और क्षेत्र करने कुनने देखने हुए मीनकारको आगे कह रहे थे। कोडी ही देखें से काल जर्बकर का पहिले, नहीं करेगी और पूर्वीभीत—ने में अध्यापी पता निवास करती है। इक्कार्य काराजीके कुर सूचनेकारे इस प्रकार बारी हेन का केनी अन्यादाओंको नक साधार्ग हरता। वे जायरमें कहने समी—'क्को ! इस बेक्ट्यारी सक्कारी श्रीको विवासी अञ्चल कुलावात है को कोई ही सरकारों निकारी सेवाने उत्तव गुद्धि प्रदेशका कामान्ये स्थान सामान्त्रें निवर का है। यह कह ही सन्त्री और विद्याल मा । इसके दिया भी इसको बहुत बार करते थे, बिर भी क्यूंटी इसे सानेकी उसका बैसी वे थी?' वर्णकीकी करा मुख्या मुक्तकेवरीने अन्तरिक्ष, पृथ्ये, पर्वत, कर, सर्वका क्या संविक्रमोपर प्रति क्रली। जा क्या इन सम्बद्धी

प्रीराजी वर्ततो है—पुनिश्चित । अध्यक्षक पुरुषेत्रको । अधिकारी देविको एक केंद्रकर को आहरोड साथ अस्ती कोर देखा, एक पुरस्केवनीये का समझे बाहा-- देखियों ! की, की विकासी सेन पान रेकार कुछाओं हुए हमर अर निकारे के अवस्थेत सामकारिक साम कर देव। पुरस आवर्षकोषा के हैं, इस्तीओं मेरी इतनैनी कर कर हेना । उत्पन्न कथा कुनका सन्तर, नवी, नवीर और करातीय समूर्व दिवासोची अधिदारी देवियोंने सब कोस्ते कर क्षेत्र-'यहर सकर, जान के अपन के हैं, बैसा के der i

न्य कावर पावनके पुर्वालके रिवीद पार्टिक क्षेत्रको अने वह पर्ने । उन्हेंने कर उक्तको केलेका, साव प्रकारके क्योगमध्य प्रमा और अंक्राओं स्थोग्यका गरितका कर्ता प्रस्तुकर्ता की साल केला। व्या एक अञ्चल कर nit neum & fee, fefer på flegeligt supreft किए हो गर्ने । का क्षमा काल केन क्यांन सामिती व्यक्ति वेक्केक्टर के का भार हुन्हों साम और सुनीका क्रांच्यों क्यों की और हैवा एक फैल्सी क्रूं परन परित पानु पानो सबी। अने प्रातेश क्षीतुम्बोलकी पर्वतके से किया विकास केले. कियों एक क्रियानका और कुरत dunium m i Sympass Reige renter gible meer के देखाने के या और सुरेत्या सर्वन्य गुरू the gran see or philad standard abid. केंक्स्पर्क की। इसर विकासी और करी समय में केंने किया का कारोक्तीको स्त्रीने पहें से हे निर्मीय होका उनके करा क्य को । यह महत्व कोट राज्यी गरिको देक न सका, जाने से इसके हो को और कुम्मोनकी अपने कह गये। यह देश का प्रकार क्रोको स्थान देशको, प्रकार और spleift ut utel pint flott; well plate क्रमान्त्रे क्यारे और पूर्व करी एक वर्ष एव और कुर्बाक्रमेके और स्थापको प्रत्य सुपाने पहने समे । सर क्रम केम्ब, नकर्न, बढ़, बढ़स और विद्वार्थिने जनक पूजन विकास अनेक प्रमुखे हुए दिला पुर्योगी पर्योगे सहीता एक अध्यक्ष का गया। कारणा, क्रमंतीयाने जाते कु क्षात्रेणकेने सामान्यकार पर्वन किया।

का प्रकार को निर्दिक्त दिनों सारामा करते बान करते निवार के**ल्यानको भी सेक्स्स उ**त्तन गरिन्छ। अस्तान हे उनके केंद्रे-केंद्रे अने तने । पतक वाले-वाले वे अर स्वान्यर ना पहिले, नहाँसे पर्यालको निरामार प्राथमेनकी आगे करे थे।

को उन्होंने पर्यंतके हो दुकते देखे । उह साल बही स्होताते व्यक्तिमें सावर व्यक्तिसे साथ पूजा वह अलीविक कर्म कह सुराख । तब व्यासभीने शुक्केक्का कर सेकर कहे कोरसे क्रम्पन विभा । कावदी अवकावसे सीवी कोचा पूँच उसे । निवासी पुरास पुरास सामें स्थानमा पुराक्षेत्रकीने सर्वेच्यानक अस्तरको 'चेः' इस एकावर क्रम्बूबा उद्यापक करके जार केंच। इस समय समय परावर कराने जा धानिका ज्यारम किया । त्रापीसे आकाद कांग्रेके विकास अवना पुरायोधे का पर-वर अवना है करो है. राग-राम महरिते मुख्योगनीचे प्रमाणे ही अतिकारि विकासी है। इस जनस जनम जनम दिसाबर सुन्धेनके अन्तर्भन हो पने और एक्ट आदि मुख्या अन्य करके परत पहले अस हर।

अपने अधित तेवाचे पुत्रवी वह स्वीत्व देशका व्यवस्था करिया विकास करते हुए पर्वत्ये विकास वैक मर्चे । प्रानेमें देवता और गणवाँके किने हुए एका पहिन्तिके चुन्ति विकासमारी मनवान् प्रांचर वर्ता आ वर्ते और पुरानेको राग्य नेत्रवासनीको स्थानक की हर कहने सरो—'तहर्षे । हुन्ने पहरे अपि, पुनि, जल, कनु और । यह प्रानिकरणमा होका परमन्ति (मोहा) यो आह होता ।

राज्यको समान प्रतिकासी पुत्र होनेका पुत्राने बसान क्षेत्र क, अतः हुक्ती त्यालके बचाव तक मेरी क्यासे हुनों केवा है कुर अस हुआ। यह सहसेवसे सम्बद्ध और परम क्रीक का। इस समय जाने ऐसी उदान गति प्रवट की है, को आविकेमित पूर्वों एक वेबसाओंके रिक्वे भी सूर्वय है। सिर भी पुन जाके रिन्ने क्यें क्षेत्र का ये हे ? क्याब्द का नंताली कर्वत और समुद्रोको सन्त रोगी तकक पुनारी और कुम्पी कुम्बी अक्षय प्रतिति पहुँ वनी खेनी तथा केरी कुणको हार कराएटे स्थीप हुनों सालो प्राची हरका

क्यान् इंक्स्टे हा अवार सामाना देशेन युनिया न्यानी हर्षे अभै पुत्रवी क्रम देशते हुए नहीं उत्तरकाई राज्य अन्ते कामान्तर स्वैद काले । जुलिहिर ! कुन्हरे काले अपूर्ण की पुरानेकार्थिक जन और परनाम-आहियी करन िकारों पुरानों है। प्रको खुले देशी प्रकारों को क कुरू पूर्व वा। व्यवेगी स्थानी के भागीको जांनने वर-व्यव हुए कथाओं क्षाराच करते हैं। यो पुत्रव केश्वनकी कुछ इस परन परित्र प्रीकारको बारन करेगा.

### बदरिकाश्रमधे धगवान् नारायणके द्वारा नारदजीकी शुक्राका समाधान

कृष्टियो पूर्ण-विवासक् । गुहस्य, महत्त्वारी, संस्थासंस अवक संवासी को वी सिद्धि कर बहुत है को किस हेक्ताबर पूजा करना चाहिने ? हेक्स्स अस्ता विज्ञानकी क्या निर्मि है ? तुम्ब पूर्ण विक परिच्ये प्राप्त केश है ? मोक्सा कर करूर है? देखाओंका से देखा और विवर्तेकर भी दिता कौर है 7 अकट करते भी होत हुआ कहा 🕯 ? इन सब सलीको पढ़ो करावुने (

वीकार्वाने बहा-विविद्यत । तुमने बहा वहा अब विविद्य है, इसका अंतर सम्बानेने कठिन है जिन भी तुन्हें को सक्तान ही है। इस विकार कारकार होग देवर उन्हें और कारकार अभिने संधानसम् अनीन इतिहासका सहस्ता क्रिस करते 🕯 मेरे निवासीने पुढ़े बताबा 🖝 🕼 भगवान् नाराया सम्पूर्ण बगर्क आरम, जानुंति और सम्बन्ध केला है, वे ही क्ष्मि पुरस्कारे प्रकट हुए है। इसकायुक कामानाके सरम्बुनमें उनके बार सम्बन्ध बनातर हुए थे, जिनके बार है—यर, नातवण, हरि और कुम्ल । उनमेरे अधि-कही क कौर नगरून कहरिकालयमें जातार और स्वयंत्र करने स्थे। तम करते-करते ये देखें बहुत तुर्वत हे गये, उनके अगेरवर्ध

नते दिसाची देने राजीं । अवस्थाने इनका तेन इतना बद गवा कि केन्द्रश्रीको भी अन्तरी और देवना वार्टन हो गया। विकास अस्त्री कुछ होती थी, बही उन्हें देश समाता था। एक तक प्रीतको कवन एकेन्ट्रके सर्वकाने स पहिले । पहिला कर और अग्रयको निरम्हर्भका हथन हजा वे क्यानीहे करने उन्हें हेलांके लिये वह सीयुक्त हुआ। वे लोको सने⊸'असे । यह क्याँ धनवानुसा स्थान है. विनके चीतर देवता, असूर, यच्चां, वित्वर और नागीसहैत सन्दर्भ रहेक निवास करते हैं। यहते में एक ही साले विकासन से, फिर कांक्रि बंहाने कर कावन बारण करके. प्रकट हुए। इस्टिंग अपने कर्मकरमध्ये वर्धको बहुत्वा और अनुसूक्षीत निरुक्त है । यहाँ किसी कारणवाह हरि और कुरूर को सकर समझ करते थे, अब धर्मकराओं बहे-बहे हुए हे क्त और जरावक रूपने अनुव हुए है, वे ही दोनों परम बाय है. वे राज्यां प्राण्यांके विका, बेवता और परम बदासी है। कर ने केने कई फिल कुते देवता का निवस्की एक कर

इस प्रकार का ही-पन चरित्रपूर्वक स्वेच-विचारकर

नालको स्वास्त कर दोनों देवकालोके क्या करतेका हुए। धगवान् रह और नाराक्त कर देवता और विश्वेषी कृता समाप्त कर कुछे से क्योंने नाराकीको देवर और काली प्राचीय विविधो पूर्वा को। कावत वह आक्रकंत्रक कर्तांक देखका नाराकोने कहें क्याकर किया और इस क्यार कहा—'सरावन्। अप्त-कराष्ट्रोसिक क्रमूर्ण केरों और



पुरायोंने आपनी है महिमाना नांत किया अता है। आप सामध्य समाग माता-दिना और सर्वोचन अनुवानन है। आपहींने भूग, महिना और सर्वानकार्तीन समूर्य उनक् प्रतिक्षित है। चारों आसर्वोचे कोन अपदींची पूना करते है, आप ही जगत्के पाता, दिसा और समागन पुरु है, किर की आप किस देवता वा निमानी पूर्वा करते हैं, वह कीन है—वह हमारी सम्हानें नहीं आता (अत: चा देवन करानेकी कृता बारें)।

श्रीमगरान् ज्ञानको बहा—देवने ! हुमने निसम्के निकामे प्रकृतिया है, ज्ञा अपने रिज़्ये गोपनीय निकाम है। कार्यि इस सनातन सहस्वको प्रकट करना उचित नहीं है तो भी सुन्तारी महिक देशकार तुमसे इस विकासन बकार्य कर्मन कर्मन्य । बो कुर, जोन, जनक, जनत और धुन है, यो इतियों, किन्दी और समूर्ण यूरोंसे मरे है तथा निहानोंने निर्दे एक्षं अन्तिक अन्तरमा, क्रेम, विमुनसीव क्या अपनांची कालामा है, तम परमाधारों ही निगुक्तमा अव्यक्ति सर्वार वर्ष है, किसे अकृति बढ़ते हैं। सह सर्-असन्तरम् परमाता है हम ब्रेनेकी इत्तरिका कारण है। इस केने अधेको एक बतते और अभिको केवत एका ज़िला मानते हैं। असने व्यापन दूसरा कोई देनला वा निका, न्हीं है। नहीं इसलेन्द्रेश्वर आहर है, इस्टेरिको इस उसकी कृष्ण करते हैं। इक्कर् । जरीने शोकको अधीरके प्रथम हे, व्यानेकाले वर्णनर्वात स्वाधित की है। देशक और विसरीकी पूजा करनी जाहिये, जह उसीकी आदा है . हहा, कर, सन्. का, पुन, वर्ग, का, का, कार्राच, आहेरा, आहे, पुरस्ता, पुरुष, 🔤 वरिख, बरवेडी, सूर्व, बन्द्रमा, बर्द्ध, स्टोध कोर विकास -- वे प्रचानकी जाते परमानाको जनम हुए हैं और अरोब्दी करानी हुई समारत मर्पादाना परान बरते हैं। केंद्र स्थान असेके क्षेत्रकों किने बानेवाले देनदा सम विक्-सम्बन्धे कर्मेको होन्द-होन्द जनका अपनी अभीत् क्कानोंको प्राप्त करते है। कर्नने युनेवाले प्राणियोगेसे को कोई इस परमानको जनाम करते हैं, वे असकी कृपासे अब की का करे है।

को प्रीव अलेलिक, योक कर्मिक्क, स्रीव जान तथा सर और पुरिक्षण साम गुलोसे, सन कर्मोसे स्था पेखा करकारोसे अपनेको पुषक प्रकारते हैं, वे हैं मुक्त हैं; वह करकार निरक्षण है। यह प्रकारते गति परमात्व है, निसे करकारों केला कहा है। यह परमात्वा सर्वगुलसम्बद्ध तथा निर्मुण भी करकारतः है जानकोगके द्वारा उसका साक्षात्वार होता है। इब केलोका अनुवर्गय असीसे हुआ है, ऐसा जानकार इस उस स्वतान परमात्वाको पूजा करते हैं। वासो तेर, वासे जानक एका जान अवस्थे प्रत्यो करते हैं। वासे तेर, वासे जानक स्वारत है। को स्वय उसका स्माप्त करते तथा अनुवर्ग आवसे अस्यो करना होते हैं, उन्हें स्वयसे बद्दा त्याव वह केला है कि वे असके अवस्था प्रत्येत कर जाने हैं। जान ! तुम्हरी चरित और अंगके करका हमने तुम्हरे सामने इस वस्त लेकनीय विकासका कर्मन निरम्ब है।

# - नारदजीका श्रेतद्वीपमें जाना तजा भीव्यका युधिष्ठिरसे उपस्विरके सरित्रवर्णनके

#### प्रसंगमें कुल्लासकी उत्पक्ति बतलाना

" वीमची काते हैं—युव्योक्त करावाले का कार्यांते । इस ज़बार बढ़ा हो से उससे क्षेत्रे—'बनवर् ! इस उसस अपने अवायर-वारतको स्टेशकारी पृष्टि परिवित्ते, अस वै (केलोको रिका) आयो आहे विकास सूर्व परने परन है। सोवानार ! की वेदोवा सामान्य और एवं दिन्हा है. क्रमी असम भागत नहीं किया है, में सक् मुक्तावेचा अवह

करता है, जिस्सीको पुरा पाछ स्थानेपर प्रयद्ध भई करता. पार और मितने नेता सम्बन्धाः है क्या सामित परमानानी क्राम रेकर १५६ जनगणको उत्तर काल करा है। हर

स्म बतराजीने नेता अन्य:बारण स्टूड क्षेत्र राज है, ऐसी राजने मैं का कारण परनेक्टके शहेंको कैसे परिवर क सरका है ?'

नामकीकी बाव सुरक्षा समाप्त करीड रहाड कराहरू माराज्यको अन्तर्भ निर्मित्वत् पूजा भी और उर्जु स्वयंक्षी अञ्चल है थे। जाता सकर मामश्री भी का पुरसंग महिन्हीं पूछ करके जीवनुत्र हो जान्यानको और में और उन्हार

निवयंत्रपर पहुंच्यार असूत्व हो गर्ने। नेको निवयंत्रप मंत्राचा साराणे क्षणपर विकास कालेह स्वाह यह उन्हेरे कार-पश्चिमको और होंद्र कारों से उन्हें एक अनुमूत्र कुन विश्वामी विद्या। जीवनागर्यक कर अन्त्रों को बेक्कानो प्रसिद्ध निकास द्वीप है, बंद अंग्ले सामने प्रस्तर हो पता । उस Bal we south with the headach gas from अपने हैं। में प्राकृतिक इतियोशे कृत होनेने कारक प्राकृ आदि नियमोक्य काणोग नहीं करते, करके प्रतीको किसी प्रधारको चेक्क नहीं केंद्री और सक्त सुरुष निकारको स्कृति है। कारों और देखनेसे क्याँ क्यूनोब्दे आहें ब्रेटिक कही है. क्रमके क्रमीर तथा इंद्रियों कहके सराम क्रम होती है, से स्थान

और अनगरनको सनान काकारो है, काळा कर किया होता है, ने जनानतः चेपक्रकिने सन्दर्भ होते हैं, उनके नक्काना आसर क्राफे राज्य और कर नेवले समान पार्टीर होता है। उनके मुक्तें साठ समेख दाँव और आह दावें क्रेडों हैं। दिनसे सम्पूर्ण विकासी अस्तरि वह है और विन्होंने सेट, करें,

कारकारिको स्वतेषाले यूनि गया सन्दर्ग केवारकोची सुद्धि की है, ज्य परवेशस्त्रों केत-क्षेत्रके निवासी भवित्रकृष्ट कार्य-क्रवमें जरू करते 🗓।

कृष्टियरे पुरा—वितायह ! क्षेत्रहेवमें स्कृष्टिते पुरा इन्तिए, आंधार तथा चेदासे रहित वर्षों होते हैं ? अब्के करीसी सुन्तर गन्य क्यों निकलती है ? बन्धी क्योंत विस्त प्रवास कां है क्या ने फिल क्या नरियो आह होते हैं ? इस सोवारे पुक हेरेन्सरे पुरुषेक क्रांक्टेंने के स्थान बहाबा नवा है. बैहा है अपने केव्हेरके निर्मातनीका को बताब है, इन केवेबे पढ़ समानक गयों है ? इसे सामधेके रिक्ते मेरे प्रमाने साथे market for

चीनकीने कार-राजर् । यह कथा **यहा विश्वत है, इसे** 

की अपने विकासके मुंबो सुना था; सिंहा इस समय में तुने प्रत्या सर्वकृष्ण काल का है। कुर्वकालों इस क्योंक एक स्थापन करक एक एक करते थे, वे इसके दिन और क्रमान् कारकाचे प्रतिद्ध नाव थे। अस वर्शवरण प्रती और अपने निकाने पाकि एकाने थे, स्वातना को उन्हें का भी नहीं नवं कः। नारकाके वाले हे हन्देरे इस कुरकारका लावन क्षेत्र विक स । कृतिः इत क्राहित वैकानकारोपा किरियो बहुदे से चन्यान् नरायनका पूज्य कारो, जिल करवी पुजाने कर्ता हाँ सक्तानेड हारा विकर्त और साहानोन्डी एक करते थे। अपने आवाची स्त्रीवारी सोगीको अस बोक्स राजी की में पूर्व केवर बन्ते हैं, प्रश्न तार बेल्डे और जारिकांको क्रिकां हा क्षेत्र से । देवनेन कराईको से कारण किया गाँउ पाने थे, काले काल क्रेसर देशक क्रू औं जन्मे जन एक क्रमा और एक विश्वसम्बद्ध विद्याल कर्म है। क्या क्रांकि अभी प्राप्त, वन, की और पहल असी का कामरोपी प्रत्यान्ती कृतसे प्रत्य स्थापन तान कड़ीको सामनेन विक्रो पहले के तथा एको संस्थान स्वापार

सवस्य और पैथितिक पहोंची सन्दर्भ क्रियारी

केन्यकारोक विकित्ते सन्तर विकास करते हैं। इर

काम रामके को बहुता सामके पुरा-पुरा

विक्रम् स्था केव्युर यहते से । कारतानुको अर्थन सिक्षा हुआ

ज्ञान सकते पाले क्यें है जेवन करावा पाला का।

क्याने वर्णकृषेत्र है। क्याका क्रांतन क्रिया, क्रांची क्रारासका

अस्तर की रिच्या, उनके मन्त्रों कभी सुरा विकार की का

और अपने प्रारंति उन्होंने कभी होते-से-होटा पार भी नहीं Ber mi (अब मैं निक प्रकार राजकासकी प्रत्येत 🛍 🐍 हरो

काता है, सुने —) परिचे, अदी, अद्वित, पुरस्त, पुरस्त, त्रम् और पहलेकारी प्रतिश्व-ने एका प्रतिश्व प्रति निवर्णकरूको स्थापको है। इन्होंने पेपनिरिवर क्राउन्त होश्वर

एक अन्य प्राथमा निर्माण किया, को करों केटीके

इत साहत्वे अस्य लोकसर्वकी मान्या की नवी है। उन्हेंक मूरि इक्टमिय, विवेशित, संस्थातामा, पूर, परिना और वर्तमानके क्रांत एक सामकांने करूर क्रानेकारे हैं। क्योंने प्रश्नी-पर या संख्या के अपूर समाने संसारका काचान होता. हेता करनेते वाकावधी आहे होती तथा अपूर्व करायों करायूबा कारण हैंस होता, कह प्रतासी रचना को। जाने वर्ग, अर्थ, कान और मोक्रक बर्गन है क्या करा प्रचारको प्रचेदको और सर्व हर्व मानंत्रेकारे विश्वतिका भी कर्नन किया नवा है। कर्नुक sphelit an out the wine over well were नारायकारी आराम्य की बी, जाले जान क्रेका पानकारी क्रांक्रिकेको उन्हें क्या केल। क्यांक्रिके स्थाने कार्य सेकोका है। कार्यके देखे सर्वकीयोने का प्रतिकोची पीता प्रवेश विका, कर का समावी सक्रानेते पवार्थ काले क्या, अर्थ और हेतुन्य कालेका अवेन मिला । जनके पद जनन रचना है अंध्यर करत जनते विश्वतिक राज्यकात है। प्रतिनंति सालो पाने स्थानाता परावर्त्तो है क कब सुन्धा, हो सुन्दर परावर् पह असा हुए और जलो सहाम सुख्या ही मोरो—"मुन्यित । periodit que prop estadour un son una unua l इससे सन्दर्भ सोवायमंत्रा प्रवार होता । अवस्थि और निव्यक्ति दिलको का सदद, राज, कर्यु और अवलेकिके सराज जनान माना जावना । सहार, न्यूजेकवी, शूर्व, कलक, कपू, पृथ्वी, पाल, आहे, पहल एक सम्बन्ध पूर मानवारी प्यार्थ और काराद्य प्रतिपास वेचे अपने-अपने अधिकारके अस्तार पाने परे।

रिखानके अनुकृत था। सात व्यक्तिके पुराने निक्तने हुए | कार्यन कार्यन हुए अवस्थान करें को है, जहीं असर कुलोबीका करूना हुना यह जान साम में जाननिक कर करन, का पेरी सका है। सामनून पन्न इसीके अनुसार वर्गका करोड़ा चरेंगे। तथ कुळामार्थ और कार्याच्या जन होना हो ने हेनों भी हनारी स्थाने उस्क हर इस प्राथमा प्रथम करेंगे । स्वयंत्रम सन्, स्वास्थार्थ और कारपीलेंड प्राथमिक तथा सोमानें अपनी राख प्रमार हो नामन से प्रमाणक यह (शक स्मरियर) बुहरपरियोसे हर प्राथम अञ्चय परेष । संस्कृतिहर संस्कृति पह एक नेत्र का यक क्षेत्र और उसे प्राथके अनुसार सम्पूर्ण कार्येक राज्यस् करेन । पुत्रस बनाम पूरत पर शास का क्रामोंने के क्या प्राप्त , इसमें वर्ग, अर्थ और कार करोबी करून को नहीं है। इसके उचारों हुन्हरें प्रमाणी पृद्धि होती क्या एका क्यरिक्ट भी रामान्त्रदेशे सन्तर को महत्त्वम होना; मिन्नु आसी पुत्रुके बाद पर कुछ बंताको सुन है अलगा। इस अध्या इस कार्यके इन्करने रहते को की इस्तरेनोको यह है है

> क्रमा क्रमान भगवान् अभिनोध्ये क्रोक्सा एवं निस्त्री अक्रम दिवाको को करे। सरकार, सब स्टेन्स्स क्रि व्यक्तिकारे का व्यक्तिकी वर्षक मुख्यत का स्थातन एक्सक क्यांचे प्रकार किया, बेटि आहे, क्यांचे प्रारंभक सुर्गने का बहुत्वरिका अनुवांग हुआ के उन्होंने सहरेवाह केद और उन्हरिक्कोर्ग्येत का सामा रहें प्रकृति । सहस्तर सर्वेता समार और मोन्होंको कर्न-सर्वाहरेड सीतर प्रवर्तित करनेवाले से श्रीराम प्राप्तक विकास करें। अभी अभी कारण

#### राजा उपरिचरके ध्वामें एकत आदि मुनियोका बृहस्पतिसे खेनडीप एवं भगवानकी महिमाका वर्णन

होनों कर एक अपीत समझ है। बारशीओं हर होने क्रांच्येक पुरूर भीचार थे, इस्टिनियों से स्कूरताट स्थानतारें से । राजा कारिकर क्यूंबिक क्षित्र हुए और क्यूंबेंग क्यूंबे विवादिक्षिकोचे करावे हुए समझ्यादा विविवाद सम्बन्ध बिल्के। पुरुषे बाद से पृथ्वीका पालन करने लगे। कृत कर राज्यने महान् अवसेष-पहला अनुहान सहन्य किया । सहने मुहरवरियों होता हुए और प्रव्यवस्थि तीन पुर महर्ति एकर, हैस और देश क्या बनुव, रेप्प, अर्थावर,

चीनार्थं कार्ये हैं—वृत्तिहर । कार, क्या और कार्य—में । परावत्त्व, नेकारियं, सामान, पारिय, पेरविया, पारियोक्ये विका कारिका, असीर करा, वैदान्यानगरे नहे वर्षा देखिए, कुम्ब और केम्ब्रोय-ने सोरम कवि सरक की। का महत्त्वाने इस प्रधारको स्थाने एका को गर्ने थे। सम उम्बद्धित परित्र, कहर एका निष्यामध्यको समित्रे प्रकृत हर वे । जंगरूपे अन्त्र हुए पदानीते है का पत्ने देवताओंके चान करिया दिने को से। उस समय पुरानपुरत कालान् करायको अस्त क्षेत्रा राजको अस्त दर्शन दिया; सिंह क्रात कोई क्षे देख न सका। जनकानो सार्व कारकित

क्षार असे रिने वर्षित पुरेशकांचे जान विश्व और को देखार असे शबीन कर रिना, इस्ते कुल्मीनो का कोध हुआ। वे एका उम्मेंकरके केले—'क्रम् ! वेरे को जन समर्थन किया है, को नेकाको मेरे सन्ते जाब उच्य हेन्स अस्त करन करोने (इस कह क्रियन कर रेना अन्य महि)।'

पुणिहरते पूरा-निवास्त्य । यह सभी वेस्ताओंने प्रापक्ष इसेन वेस्तर अपने-अपने यान यहन विश्वे से यानसन् विन्तुने वेस्त वर्षो नहीं विरुक्त ?

केराची स्वारो है—केस ! जब पहल्लीरची सोधार्ने पर पने तो एका कारिका और करोड समूर्ण प्रकृत को प्रकृत करनेकी बेक करने जर्म । वे प्राप्त-करने केले--- 'प्राप्त । अपनके कोच को कारा करिये। अपने विकास का बार अर्थन दिया है, से करवान कभी होता की करते. को कालेन क आप क्षेत्रको नहीं देश सम्बद्धे । विश्वास ने क्षम साथे हैं, स्क्षी क्रमका कर्मन या प्रकारत है। ' प्रकार कर स्थान, है। है। किस विश्वविद्याची राज्याने व्यक्तिने व्यक्त- व्यक्ती व्यक्तिन प्रशासीके माना का कारतते हैं। इस बार अपने कारकार्य इन्हरते इन काले उत्तर विकासी पाल बरे, वहीं नेपके जन और औरसागरके विकार कर कींक नाम है, कई उन्लोनोंने इक्टर क्योंना काक्सी भीते एक केले साहे हेन्सर एकार-विको पहोर गरका की थी। इसरे करने कुछन्क की इंबराय क कि 'हमें समागर देखक बनावन् नरावनाक हार्बन मिल्ली तथा प्रदेश हो बाल ।' बात हंगारा हार सम्बद्ध पुरस और क्रासीन अवयुव-कार कर कुछे, जा समय को नकीर कार्ने आवास्त्राची पूर्ण-'विकासे । सुस्तेन्त्री अस्त्राचित्र भागिपति तम किया है, तुन करवान्त्रे कर हो और क बारता बाह्रों है कि इन सर्वजायक कार्याज्यक रहीन कैसे हे ? इसका काल सुने— क्षेत्रमुक्ते कर चल्ले आरक प्रधानकाम बेराहेन है। वहाँ करवन संस्कानका नवन करनेवाले पुरुष रहते हैं, जो पञ्चलके समान कानियान क्षेत्रे \$ . It was affected edge, from our fact fraing side \$, ands शरीरसे मनोहर गन्य निवासकी खरी है तथा वे जनवासके अनम पक्त होते हैं। इसलेन का बेल्डीकों है करे करते. क्षत्री चमतान् अस्त्रकारको सर्वन के है ।

'इस सावादावाजीको सुनका इस्लोग सन्दे वक्को हुर पार्गित केर जानक खाडीयमे व्यूचे। स्व सन्दर इक्का विद्य प्रमानम्मे ही सन्दा था, इन सन्दे प्रश्नित इक्को स्थानित है। सावादित हो हो थे। केन्द्रीयमें प्रशेष करते हैं इक्की आंक्रोन सन्दा है दिया। सहित निकासिनोके सुन्दर्भ इक्की

को कर को को थे, इसेने इन को बिसी प्रमच्छे औ देश करे । करनका, वैजनोत्तरों करते करनों यह बार स्तावित र्ध के 'काक किने किया इसलेन नहीं जनसङ्खे कुरवाज्यकेक नहीं देशर समयों , यह विश्वास आते ही हमने दित को क्लोंक्स पाने पाने उनामा पी । आके पूर्ण हेनेपर हते पाई क्रमेकारे पुरुषेके कार्य हुए, की क्रमानके समान गीर और हानी पूज राज्योंने कार्य थे। वे अनिहर ईस्टाओंनानी कोर है। कार्येट कुछ कोड़े प्रकृत्या मानस कर करते थे। करवी का इक्सकाने सरकारको को असाव होती हो। अल्ब्ब्ब्यानों कृतिकों केली जन्म होती है, केली ही वस होयने क्षेत्रको क्रमेक पुरस्का की । उस समय हमें से ऐसा साम पहा कि पह होने देखाइ है किस्तालक है। यह बोर्ड किसोचे कारत को बा, सरका देन करता था। बोडी देती हरते काने एक है कर उससे क्रांक्ट काल उस उसर हो, क्रमणे ब्रोह स्थान कर और विशेष नहीं। क्षमें देशा नहींक तनी पूजा अस्तारको साथ हान मोहे 'तने नक' नाही हुए चीवन्यपूर्वक का देखती और की हो है। प्रार्थ कर का के स्त्रीर करने राने के रूपनी दुस्ता करी। इससे धारोंने पत्नी। सार स्तेत्र का रेकाने पूजाको पूजाकी सामग्री अर्थन कर के से । कर केवले कारने प्रसारी नेपालीय और प्रतिक्री स्थान पढ़ी है कर्त की, इसलिये इस स्वकृतको कुछ देख न सके। परेट्र क्रीक्री के देखें स्थित है की है, का हमें एक सुनर्गी पड़ें। स्व स्वेत वह से वे-'पुन्तियन । अस्वी वन है। विकास । अवने उनम है। महरूनेंद्र में एतंत प्रतिकेता है सामग्री सम्बद्धार है।"

'प्राचीने परित और पुलिस राष्ट्र सहा-से दिन पूर्व और ओपियों से आती, विन्ते प्राचित अस्य भरतीये प्राव परित्ये साथ उस रोजनी पुल्ली पूर्व परे। उस्की प्राचीतों हो विद्यार हो गया कि असाय हो वहां पर्याप्त साथ हुए हैं: किंदु इन रूपी सर्वाप्त क्षार — 'युनियरे। क्षार्य हमारे किंद्री प्रारंगीय केंद्रीयक्षा इन्तियों प्राचीन प्राचीन प्राचीन है। उस हमारेगीने केंद्रीयक्षारी इन्तियक्षीर पुरुष्ट्रीय रहीन किंद्रा है, इनका सर्वाप पर्याप्त हों से सर्वाप्त परित हुए किया क्षार्यक्षा आहें अस्ते हो गाँ सीट स्वाप्त है। ही स्वाप्त सम्बद्धा उसका स्वाप्त हमान केंद्रा अस्त्राप्त है। ही स्वाप्त सम्बद्धा उसका स्वाप्त हमाने क्षार वहंग कर स्वप्त है। हम स्वाप्त क्षार सम्बद्धा हुने अस्त्री स्वाप्त कांद्र कांद्र कर स्वप्त है। इस स्वाप्त क्षार बीक्षेत्र क्षा केंद्राचा अस्त्राप्त होता करना है। इस स्वाप्त होता, इस समय देशकाओं की कार्य-मिर्राहर्क जिल्ले तुम उनकी स्थानका करोरो ।' यह अमृतके सम्बन मकुर तको असून कवन सुनकर इन्होन पनसन्त्री कृतारे करने अपीत स्थानन क पहुँचे । जुड़राते ! इस अवकर इसने नहीं व्यरी क्याना नी, इक्त-सब्बोंके इस परकर्क पूजा भी किया से भी हरे क्रमध्य कृतंत न निता सन्तर; किर तुन कैसे अध्योको इनके क्षांच्या अधिकारी कानो है ? परावान् जरावान सवते | उन्हेंचर भी पूर्वन्य अवनी प्रवास करन करने रहाे ।

पहल् हेल्ड है, एकपार ने ही इम्ब-कमारे मोता और संस्थानको रचन्य करनेकारे हैं, उनका आदि और अन्य नहीं है, **30 Served परवेक्सको केवल और कुनव भी पूजा करते हैं** हैं इस जन्मर एकर, क्रिन तक किर आदि स्त्योंक सन्दाननेका अवस्तुन्द्रिकारे पुरूष्योगीने का याच्ये समाप्त करके क्याक्टर्स पूजन किया। यह समाप्त क्रेनेयर राजा

#### नारद्जीका अनेको नामोंके छुरा घगवान्की स्तुति करना

भीवार्त्ती व्यक्ते हिन्सुविद्वीर । की केर्स्नुवर्गन्यार्थ पुर्वाकी विक्तिक कर्न किया, अब केली जनकी विक प्रवास केल्क्ष्रियमें गर्न का प्रशासको सुन्य पता है, स्थान नेकर सुने । इस पहल् प्रेयने प्र्यूचका देखने नावानेने का व्यक्ति क्षत्राचे समान काशियम् यूक्केची हेवा के मानक क्षात्रका प्रमान विका और यन-है-वर रूपने पूज को। सरकारः केत्रीयवासी पृत्योपै भी परवारीयर सरकर किया । हिल् में करवान्ते हारिक्टी हुनाये करते करका कर करने कृते और बढ़ोर निवानेका भारत करते हुए वहाँ शुने क्ले । मारहारिके वहाँ अवनी केन्द्रे पन्नि साल स्टान्यत म्यान्यक्रिय 🖟 निर्मुत-समुख्यम विद्याला, मनवाम् मध्यमध्यी इस प्रधान सुति परि—पेत्रोकेश ( अल्डब्से कल्बार है। अस Polisia, प्रिपृत्व और प्रमध्य जनस्थि स्वाही है। ग्रेज्य, पुरुवेत्तरं (शुर-असूर पुरुषे ३०४), अरख, पुरू, महायुक्त, पुरुवेतल (परपाला), क्रिगुल, अवल, अल्हा, अपृत्तक, अरपाक, जोम, समार, संक्रक्तकारक, बहाबाया, आवितेष, बसुका, प्रकारते, सुप्रकारते, बनस्यते, महाजागीत, सर्वराति, कावस्थी, जनस्रति, अभागी, शिवरपति, महत्वदि, सरिवनपति, पुर्वापति, विकरी, कृतिकार (महरामाओः समय बन्त्ये आवारका), पुर, महापुरोहित, महावादिक, भागतिक, कार्यक्रातिक. बासूर (प्रकाशकार), नेवारकसूर, साम्यक्रमान, कान्य, प्रकृताम, संदार्शक, तुनित, सहायुनिक, प्रमर्थन (मृत्युक्तन), परिनिर्मित, अपरिविधित, प्रकृषकी, अपरिविध्य, अपरिविध (अन्त), नहमती, जनरूकी, च्या, 🚃 🚾 मानेनि, कारणे, मामान, मानाति, मानाना, भागा, भक्षप्रिकरणसूर्वति (अक्षेत्रत, कर्त, 🚃 सक्न और प्रेयससम्ब कारचे सामी), व्यक्तराक्ष्य, बेकुमा, अपराजित, मानीरक, रामकरिक (समूर्ण सम्बेधे कर्या), 

क्रकादीक, संक्ष्मचेत्र, संक्ष्मधूर्ति, अमृतेसय, दिव्योक्स, केनेकर, कुर्वेकर, उद्योकर, प्रकेशर, विश्वेश्वर और नियुक्तिन असी, आयोके कम है। आप ही मनवम्बन (मनत्वे ओस-होत) हथा क्यानुको अपूर्ण है। श्राप्ति सरक्या पुरत है, जान ही व्यापनार, असूति, कार्यक, क्ष्यकृद्धार, अभ्यार, स्थ, मन, चन्द्रात, केंद्र, अस्त्य (कृत), सूर्व, विश्वत, विश्वत्यु (विकासोको प्रकारिक करनेकारे), विविध्यानु (क्येगोकी प्रवासीक्य कार्यकारे) शक्ष प्रवर्गन है। अस्य प्रवस क्रिकेम्बंक्य, प्रक्रुपर्यादे क्योंको करन प्रत्येको स्था प्रकृतिकार है। व्यक्तिक पानने प्रतिरह विकिय गाँव भी गाँव ही है। ताल विद्यार, काला कावारक, क्रम, निरुद्ध और क्षेत्रिय प्राप्ता कः अपूर्वित प्राप्ता है। अपनीतिय, क्षेत्रस्थानम्, स्थानिक-प्रत्यानी, अन्यवीतिया, पश्चामक्रमान्य, केन्यकार्य, सल्लेक्स्य, वैकारण, जनज्ञेग (पूर्वचेग), अवात्रवरितंत्रकान (कृतिकार), बुगादि, बुगयधा, बुगाना, अस्त्रकार (इस), प्राचीनगर्थ, मोविक, पुरसूत, पुरसूत, क्रिकुट् (क्रिकार्य), क्रिक्ट, सन्तगति, अन्तामेन, अन्य, अन्तर्वे, जनमा, अक्टब्राटम, अन्यतनियरं, प्रकार (प्रत्ये असम्ब), समुद्रवारी, वरोव्यर (पर्रापे निवास), तबोधार (शबोद्ध अनिद्धान), समायास (सेवनके अस्थार), सक्षेत्रिकास, विक्रमास, बोत्यांतास, श्रीमास, सर्वोच्छा (सम्बंद निवास-स्थान), वासुरेव, सर्वेच्ययक (राज्यकी प्रथा पूर्ण करनेवारे) इतिहर, इरिपेन (यहा), महत्त्वकृत्रकृत, सरम, सुरुवर, बरझर, इरियेच (जनवज्ञक), स्व, निकर, यहानिका, कृष्ण्, अविकृष्ण्, महत्त्वाच्या, सर्ववृत्या, निकासन, निकासन (प्रानरहित), (क्यास्थाय-पराचन), पृक्षितर्थ-प्रवृत, प्रमुख्येत्रीक्ष्य (वेशिष्य सम्मेक्षि प्रकार्यक्ष), अस्त, सर्वगति, श्रवंदर्शी, अञ्चा, अवल, म्हानिपृति, महत्त्वप्रतीर, पवित्रं, महाराज्या, विरम्भावन, सुद्ध, अञ्चलको, अन्तिकेन, सहाराज्यः,

प्रदानों सुद्दे कारेक्टो, अवस्था अन्य कारेक्टो, | प्रतानका उन्य व्यानकोत साथै नामेरी पुनारे करे-महत्त्वनावारी, विवक्तिकारी, वर्थ, पुरेशक जान को परवेश । आवसी नगावार है। मैं आवस का बारनेकाहे, बारावर (सम्बद्धान्य), विश्वयुक्त (कुमार्थिय), 🏻 है और सामके पूर्वपक्षी प्रकारी पत्नी अंशीचा हुआ है। property property, fought, registered, recent to

शर्वतंत्रुत (शर्वन्त्रपक), निवृत्रका, वृद्यक्तो हान्द होन्यके काव परकाराची चरचार

# श्वेतद्वीपमें नारक्ष्मीको भगवानुका दर्शन होना और भगवानुका अपने भविष्य-अक्तारोंके कार्योंकी सुचना देना

भीगर्थ करते हैं—पृथिदेश ) इस जनत गुहा क्या कर नारोंचे का अकरीने शरकारको साथ को से उन्होंने



विकास भारत करके को कार दिया। उनके सेवियाका प्रक पान प्रमुक्तों भी अभिन्य निर्मत और पुरू पन कारमारे किरकार या । योगं तक अधिके समार वेबेकासर और कोई नक्षत्रोके समान जन्मानमान का ! प्रशंसका कोई कान होतेकी पहिल्हे रेगका, कोई स्वरिक्रमनिके समान, कोई कमल्यातिके समान, कोई स्थान सेनेके रेनका, बोर्ड मैंगेके समान और कोई बेटावर्गका था। कुछ चान केट बैहर्मेंद्र समार, प्रश्न केल बैहर्मेंद्र समार, प्रश्न इस्तिकारिको सुन्ध, कुछ भोरके बालको रेपका तथा कुछ मोतीकी गारकके समान था। इस प्रकार के समावन फरकार

इक्टों के, इक्टों काफ, इक्टों के, इक्टों का और इसके इस से एक कई-कई उनके आयुक्ते एक की बाद पहले हो । वे एक पुराने अध्यासाहित पाणीका घर तथा अन्यान पुरावेके वार्ती केंग्रे और अवस्थानीका पूर्व कर रहे है। वे अपने प्रयोगे नेहे, कारका, अन्यतमानि, कुछ, कुरवर्ग, एक और करवारी हुई जान तेले हुए थे। इस्के करावेचे करण-समुख्यों क्षेत्रक क रही हों । मनकन्या सुद्ध प्रकार दिवानी हेळ था। जनका वृद्धि पायार नारवणीया क्रवर अध्यक्षको विका प्रधा और वे पुरस्का उनके करावेचे पह पने । उस केम्ब्राओपेड आविकारण का अधिनाची परवास्त्रके करवारीते पात्र-पेक्षी । पद्मी एक्स, हैत और दिस पी कें वर्जन्मी प्रमाने नहीं अपने कुए थे, जिल्ह को केंच जर्जन न के प्रचर । व्यवस्था मेरे अन्यत्र प्रक्रके त्रिया और कोई को की देश समान। इस से मेरे असल करोने देश है, क्रांतिको चेत्र वर्तन कर सके हो । विकास । सनीह सर्गो विक्रोंने अवका विका है, वे वर-पात्रका आदि की ही हाजा है, हुए सह उनक परन किया करे । आय में तुररत सहर ज़ला है। यह ज़ुक्ते कोई का परिना कहे से मौत लो।'

अस्त्रीने बहा—करवान् । यस आवस्त्रा दहाँन हे गया से मुक्को रूप, यन और नियम सम्बद्धा पता मिल गया। सामगढ क्षांद ही की रिप्ते साली बक्त कराइन है।

क्कारो का - कावी । युवे कोई केरिसे की देश सकता । तुम को मुझे देश रहे हो, यह मेरी रखी हाँ मानावार प्रचल है। में सर्वत न्यायद और समूर्ण प्राणिमीका व्यक्तमा है। प्रानिकोंके क्रगैरोका गांव हो क्रानेपर भी मै नहीं नह होता। युनियर । यो लोग मेरे एकाना पक्त हो कुछ है, से बड़े सी-क्षान्यतारमें और रिज्यू हैं। क्योंकि स्वीतृत और स्थेनुकरो युक्त क्षेत्रर ने युक्तमें ही प्रकेक करेंने। कृतिका ! देखों, मेरे द्वापित व्यापमें व्यापक का और काम अपने विकारों जारा प्रकारके रेट चारण किने दूर है। उनके | कारणे चारह साहित विराजकार है। मेरे अवस्थागरे जाट

बस् और प्राधानमें दोनों अधिनीप्राधार विका है। यह देखे शन्पूर्ण प्रवासति, सार वालि, केंद्र, का, समय, ओपॉन प्रका नाना प्रकारके कर-निका को मेंने करोरने कृषिकर विकास देते हैं। आर प्रधानके देखने को कई सकारणाने अबद है। भी, सक्षी, भीति, पृथ्वी एका केवलता रास्त्राविकी भी मेरे भीतर विरायनात्र हैं, उत्तक क्यून करें । देखें, ये उक्कोंने केंद्र हुए विकास दे रहे हैं। सामा, समुद्र, क्ररेपर और नवियोको की पुरिवान देखा रहे । वे कार प्रकारके विद्याल क्रिके बारण करके प्रवाद हुए हैं। इनके बाल क्रे की अंदर क्रोनाले सत्ताहि जुलोका को अवस्थेकन करे। मैं 🕸 Bertraff aufe Reitfett fint f sem genfleger unem करके समुद्धे भीतर क्षणक कोन्से चुका है। सांस्केड कावार्य सुत्रे निवासिको समय एवं क्वेन्याओ है। मारिक बढ़ते हैं। बेहते विश्वते हती को अबे हैं, बह हिरम्पार्थ में है है उस मेजेकेन सिहरों रकर करे है, यह भीगालकारीया तह भी में है है। इस समय में न्यासन बारण करके आवादकी दिश्य है। दिश प्रवाद पूर बीक्टेस्ट इस कामूबर संबार करीना और समूची कार्यन समित्योंको अपनेते सीन वार्येः में अधेरान हो अपनी निवाहनीकोः स्थय विद्वार वर्षणा । सहस्तर, सुदेशा समय अंकेन विद्र का विवासिको हो हारा शंसारको सुद्धै करीना तथा पहा पास-पहांत् तेता और प्रारक्ते संव्यक्ति प्राप्त में प्रश्रास-स्थार 'राज' के कर्मने अस्तार होना । यह १००४ क्रमण केलाके firt munte gewegeinen uperen bereit शरके अनुवारिकोरकीय गांव कारिया । किन प्राप्त अवैन करियारी संविधे केराको भारती हिन्दे अनुसारे अस्तरा बारण करोता और वेक्सकीके प्रियो पार्ट्स योज्याने पहुल-से क्षित्रवीका कर करके प्रत्यकारीने विकास करिया। वहाँ सके समय क्रेममता अधिका अधिक करनेकारे प्रतिकार मस्थानुर, मुर तथा गीठ पानक क्षानकका संक्षर कर्मका और क्रके क्रांच्येतियम् प्रमान क्याचा वर-वाण क्रांच्या कारता है। जार्रेगा ( स्वान्तार, कामानुस्था कीन काम हैता। अतः विशेषक कृतन कामे का सरकार परवेतुसक कृतन करें।

व्यानेको नेपानीक हैना कारेन और व्यक्तिको दुवरे काल करिय और इका बीवेंगले परिच्या कारकारको बीठकर सीम विश्वपने खनेवाले बारकारि भी देवने केलके कट कार्मन्य । इक्टन हो नहीं, कार्मि नहींह केंबचे इस्टिक्स को हुए साराज्यका भी मेरे है हुए बाह क्रेम । जा अन्य निरिक्त (एक्फ्री) में कारण क्रमा एक शहर करकार असूर एका होता, को इसरे एकाओंसे की चेल रेसा किरेना । अस्ता भी नेरी है सुदिक्ते अन्तरते नाह हेन्य । इस्ते प्रधार धर्मकु पुनिश्चितके पहार्थे मेर रेन्कर आने हर राज्या कामान् राजा-व्यारामधीचे बीच विद्यालया नक्षक कार्ट्रेस । स्कूत्रसत्त्वे प्रत्यो पराहा सतीः व्यक्तित्वीय पुनिश्चित्वो प्रस्ते राज्यस् विकर्णना । सा क्षानंत बोकानोः सोना बढी बढीने हिंद 'श्रीकृत्या और अर्थुनोड कारों में पर और परायम प्रति समाहक सहयान करनेके रिले अधिकारका संक्रम कर के हैं हैं इस प्रकार पृथ्वीका भार सम्मापन में प्रशासने समाप्त नावसेका की पर्यक्र र्वक्र करेन्छ। कार्य्य । कुक्री भरित्ये कार्य का यूर और परिवास साथ पुरू की हुआ स्थानक है।

केवर कर है-पूर्वित । विकास के अधिवासी परावार परावार प्राप्ती का कहार असलीर है भने। सेर व्यक्तिकारी कार्या की सरकारक स्वोधानिक सर्वा कार क-कारकार काँग सामेंसे विने स्वतिकारकारी और कर दिये । यह कार्यका संस्थानिक ही स्कूर हुआ है, मिन् पूर्व करकाने का हता है। पूजने मेरे दिलानीने के पार था, भी भी हुने समया है।

र्रोरे नक्ते हैं—क्षेत्रक ! क्षेत्रकायकाके कुलते सुन हता क सक-का-ताब अध्यान की हुने कुछ होता। एका कनेकारे हो कुन्दर विविद्वीत करवान्त्र पत्त विकार हुमारेन की उसकी और प्रकार काल करनेकारे हैं. विकास की विकास करवेवारे प्राप्त सभी सूचि वेहकेसाओं हैं जनन है। से स्थानक कुछ सभी इस पहल्कों एक केता हुए है,

# श्रीकृष्णका अर्जुनको अपने नामोंकी व्याख्या सुनाना

परिनिये, निन्दें सुनकर में मनित हो जाते।

सन्येक्को कार-प्रकृत् ! ये प्रवासीकोके पति कार्यकात् । जाता क्षेत्रत करते जुल और कार्यक अनुसार कार्य अवस् मीहरिके जान समाम करना प्रमाण है। आर अन्द्रा कर्णन | कर्णाची जैसी प्रमाण की है, कई हुई हुक क्का है पुने-एक समा अर्थुको भगवान श्रीकृत्याने पुता वैक्रमानाची का—राजर् ! चनकर् सीहरेने अर्थुकरः । 'भनकर् ! आव पूर और परिवर्क प्राप्ती, समूर्व पूर्विकी सुद्धि करनेवारे, अधिनार्थ, यनार्थ ज्याप, इंबर और अध्यय देनेवारे हैं। देखेर | चेद और पुरायोगे व्यक्तिने अपने कर्मानुसार को-को युद्ध जम सरसार्थ है, उनकी अस्तिके पुरारे स्थापक हुनना व्यक्ति है, कृतक कुनार्थ।

करवार जेले—वर्तुत ! पानेद, काुनेद, सामोद, रामांबेद, अभिन्त, पुराय, जीतिन, स्रोपन, चेन्याना क्या आयुर्वेदारे व्यक्तियोंने मेरे ब्यूय-चे ताल कारायते हैं, उन्मेले कुछ नाम के पुलोके अनुसार है और कुछ करोंके अनुसार । अब में का नार्राची मानव करता है, सामान क्षेत्रर pol-Book second man afte missel on some or & इत विर्नुत-समुख्यात विश्वास्य भगवत् जनसम्बद्धे सम्बद्धाः है। ये है समूर्ण परावर परवाली जनकिक कारण है। उनके ही हुई।, प्रस्ता अहीं, सन्दर्भ निवालीको सन्ती। होनी है। वे है हर, यह और परवार है। पुरस्तुतर और निर्दा-पुरस की अमेरिक साथ है। यह अस्तावनी एक बोबों को, उस समय क्षा अभित तेलाते जरावनाचे कृताने कृत काल उत्तर हुन्छ the safety design at arrespt before an age हाता । प्रशासन दिए मीतनेका क्रोक्के सानेकने उनने हर चन्नान्दे सामानो संक्रमाती व्य क्रमा कृत्। इस अवान वे केनों केन्द्रा-स्था और या जनसमूद्धे प्रसाद और प्रतेसके प्रभाव हुए है तथा उन्होंने प्रथमे हुए मानंते पूर्व और संक्रापक्ष कार्य कृति कार्त है। समक्ष क्रापिन्येको पर ऐनेकारे में केनों के सुद्धे और अलबोर निर्माणक है। साराजी से का राज कर परामानी प्रकार से केन है। उन्हेरे संक्रमारी साथे कार्यों (कारपुरवरी), कीरन, पुन्त, प्रवासन्त्रका सेवन करनेकारे, करोर प्राच्य कान्य क्रमेको, स. बेची, पर क्रम, क्रम्य-निर्मा प्रात्तेकारे एक धर केवलको अनेन कोक्नेकारे अनी वर्ष मार है। प्राप्तानक ! ये प्रश्नान सह के मारानक है। स्तरण है। इस केलेन महेबाकी एक करते प्रत्यान नारक्कारी भी एवा हो जाती है। मैं रुक्त क्वाइस जाता है, इस्तिमें में पहले अपने अवकाम कार्य है एक कार्य है। बोर् में नकास कारण कियारे कुछ न करे से हरत सोई भी का आगरण इंद्याचा पूजा नहीं सरेफ; क्योंक मेरे कार्यको ही अनुसर्व परमका एक रुकेन सरकार अनुसरका बारते हैं। जो रहको जनता है, का नही जनता है। जो उनका पान करता है, का रेश की पान करता है। का और नारक्करी एक ही सता है, जो हो सबस करन करने बेसारमें निकर रही है। क्षेत्रे सार्क निका कारा मोर्ट कर देनेने

सामान प्रकार साथे अरावन को थे। जार, स. १३, साहि केवा और पूर्व भी मरावन कारणाठी पूरा वाले है। यूर, चरित्र और सांचर सीने बारवेरें को पानी सूत्रो है, का सबके नेवा और सेवा चलवान विन्तु ही है, में सब कारको पुरस्के पोन्य हैं। अर्थुन । दूस हम्म-कामको स्रीयार कर्त क्या कार्य काल केवारे का जनसङ्ख्ये सक क्लाकर किया करें। धार अध्यक्ते क्लूम मेरे बात होते 🧞 क का हुए हुए हुई है। इस्टेंग के में अस्य यह है—के दिया किसी हारे देवनामा भवत नहीं करो, ये ही नेह है: मैं है काची फालनीर है। में बार्न करते हुए भी कारको प्रका को रकते । क्षेत्र क्षेत्र प्रकारक को राज है, उसे में चारको कामकारात हो चरका है और परसको महमय-कारीओं क्षेत्रे निरम्भ स्थान है। निरम् को कामराबार स्थान क्रमेक्से अने कर है को स्थानिक क्रमाई अहि होती है। क्रमी पुरुष पहल, किय तथा दूसरे केम्पांनीकी रोगा करते हुए के अन्तर्भ को से प्रकार होते हैं। अर्थन है का की प्रकार प्रकारक अन्यत कारान्य है। इस और मै—केनी परपारान्य बहुरि है और पूर्ववेक कर कारानेके प्रेरते हुनने अनुसनpitel phy fine \$ : 4 perceival were \$ our भी स्त्रीत है और सहते से अरख हैं इस स्वरूप भी सूत्री इस्त है। सीविव्य अन्युक्तका कावक अनुस्थित और विजेक्ट प्रकृत करनेवाला निवृत्ति वर्ष पुत्रको अञ्चल नहीं है। एकन्यव दे ही सन्तरी अञ्चलका अध्ययपुर सरावर परवाल है। कर (कुछन) के प्राप्ता क्षेत्रिक स्वारंग परच्या गर बच्चते हैं,

का पर (पर) माने तेर जन्म (निवासकार) का इस्तिने में 'जरूनन' कहाना है। (में सरकारित करे अवना के विज्ञीना निकारकार हो उसकी पास बहते हैं।) मैं है क्षर्यका करन करके अपने किरणोंने सामूर्य बाहाओ कंप्युमीत करते हैं उस मुक्ते हैं एक्ट्र अर्थ निका करते हैं, इस्त्रीको मेरा जान 'कासुनेक' है। जै सम्पूर्ण प्राणित्योकी गरिः और क्रमीयका एकान है। मैंने आमारक और एक्कीको आहा कर रका है, येरी बालेंग सकते बढ़कर है, सकत प्राची अनामें पुत्रो है करेबी इका करते है एक मैं समझे आक्राफ करता 🦺 हुनी तक कारणोरे सोन जुड़े 'निज्" कहते है। बहुन हुन (इन्हिकांकर) के इस्त रिनींट्र क्लेकी इक्क करते हर यही करा बाहरे हैं, इस्तीओं में 'क्योरर' बाहरवता है। अस. बेट. कर और अनवको पनि करते हैं, वे सब मेरे गयंगे रहते हैं, अतः चेतः नाम 'वशिलाचे' है। जनताते समनेवाले सर्व और अरिवर्धी कार प्राथमध्ये को विरुपे प्रधारिक होती है, ये वेश समर्थ नहीं है, का सोकार ही की पा-महोनेंद्र रिने अपने , बेटा बाइनती है का बेटाने एक होनेंद्र बारत सर्द्रा विद्वार

मुझे 'केएव' कही हैं। पूर्व और कहन मेरे के हैं और इसकी विकास केला प्रकारती है। ये क्षेत्री जन्मको प्रार्थित और राय केवर इसिंग करते हैं: इस्तरियों 'पूर्व' बड़े गये हैं कथा के ही मेरे केन्द्र हैं; इस सम्बन में 'इसेकेड' सहायका है। महाने 'इस्तेपात सर दिया' आहि कालो आवाहन करनेना में अवन पान इस्त (सीवार) करत है छवा के प्रतेस्का रेन भी इरित (एक्स) है, इस्तीन्ते को 'वर्ड' कार्व है। प्राणियोके यार का कान्या क्या है क्या और प्राप्ता अर्थ है सम । नेस बान पक्ष ई—हेक विकार का प्रकृतिने पूर्व 'स्वतंत्रता' यहा है। (गोरियका सर्व है क्योंको उहा बरनेवाल) एवंपराने का १४वें करीने प्राचन प्रकारने करी गर्ध थी, हो की (मारक-अवका करन करोड़) हो अप किया का असीओं केनाअंति 'केनिक' बाह्यत केन कारण किया है। मेरे हिरिक्षित कारणी स्थाएक इस अवार \$-- trade meloù fiefe unit \$---- fermenn क्रमाना है क्या निवास अर्थ है न्याना । मेरे निवास-कारों समार बगताने पाना का पान है, जानेनो पूर्व 'दिन्निकेष्ट' कहते हैं। मैं सन्दर्भ ज्ञानिकोद्ध करीरमें स्वरेकाय काही —आरम है। की य के बढ़ते करने कर देखा है, य अस प्राप्त तेशा है और व जाने कभी जन्म सैन्य; प्रतिक्रिके मेरा नाम 'सम्' है। मैंने कभी समानु—अोवी क अवसीत an igh of frank & receive parall street नेर्ध वाली है तथा पट् और सराह (सह और सह) मेरे ही भीतर विका है: इस कारण की वाधिकारकार अध्योकने राज्याने अभिनान मुझे 'लान' करते हैं। में बहुते करहे सन्तरो पुत नहीं हुआ है, जन्म बुहरों 🛊 जन्म हुआ है, प्राथके बारण में काले कीत है कर सम्बद्धान (महाराजारि कैनाव जन) से मेरे महाराजा क्षेत्र होता है: इन सम कारणेंसे पुढ़े 'सारण' कहते हैं। अर्थन । वर्ग क्रे प्रवर्ग कहा है, को क्रिक्त प्रवृक्ष है, इस वर्ग क उन्नो मैं कभी बत नहीं होता; इस्तीओ 'अब्बूड' बहुस्तार है। (अप: मा अर्थ है पुण्ये, अध्यक्त अर्थ है अववक्त और 'क' भा अर्थ है इनको जीवने या वारत बारनेवारम) एक्के और बाकान-चेनीको करण करनेके करण पूर्व 'अव्येक्षव' महो है। क्वितंत्र असंक्ष्य प्रकृतं अस्त-अस्त केन पटोच्य सन्ता पानते हैं—'ज' का जर्म सम्बद्धन, 'केज' का मर्च परन्तवान और 'ज' का सर्व अमीरकार है। अचीर, स्थिति और सम्बंध स्थान इन्हम्बर नरसम्ब है है: अह: उनके

रिव्य पुरस्त कोई 'सम्बोधन' नहीं बहुत्ता सम्बद्धा । प्राणिकीये जनोची पूर्व करनेवास का मेरे स्थानपूर अधिनेकार्य अभिन् अर्थान् व्यापनाके कारानेकारम है; इसरियने केट्रारीने सुद्धे 'प्राची' प्राप्त है। जीन प्राप्त, रिच और प्राप्त—इस वीर क्यानोरे क्रीका करन करते हैं और उनी सीनोंके क्रीक हेनेवर पर हो बाते हैं, इसीरिको सामृतिको विद्यार पुढ़ो "तिकार्" बाहरे है। मेरे सरकानुत कारकार् को इंस्कारी पूर्व भागते विक्रमत है का विकार कार्यान में नहीं पहेंची मारण की गरी है नहीं चे क्लेक्स को है का चक्र गय है हमें अवस करियालक अर्थ केंद्र है, इस्तीओ प्रकारी क्रान्यों जुहे 'क्कारी' मारक्य है। मैं बनाइक साहो और सर्वजारक हेकर हैं, देखक कथा असूर भी मेरे आहे, जरक और अन्यका क्रमी ब्या भड़ी को, इस्तीनों में 'सन्तरि', 'सनवा' और जनम् व्यक्तका है। काहर । यो सुनि—सीका हर्ने समय कर्त केन्द्र है, जहीं पर्कारों में कान्य करता है, इस्तेरिके केन् मान 'पुरिवारक' है। पूर्वकारको की एक जीनवाले कारावाल का करन करके पूर्व प्रमोको करोते विकास वा, अतः केर-का 'एक-क्ष' हुआ । काक-अध्यानक क्षेत्र काव पेरे करीराने बीर कहा, (देने प्राप्त) थे, प्राप्तिने में 'प्रिकार' काले-विकास कुल । संस्था-कुल्बा विकास कार्यकारे विकासी निनो निर्देश प्रकृत है, यह जनानी 'निर्देश' में ही है। सरकार har urian virapule soudh gà salarwant feet, frag-offeit were, water best वर्गना पक्ष है। नेवेने रिनावी सुनि की नहीं है तक केनीका साव विकासी पूर्वत करते हैं, यह देखाओं 'क्षेत्रकारां' में के हैं।-वेको विकार गुर्के ही इस्तीय कुमर ग्रामकोरी गुरू 'ग्रामेश' और एक प्राप्त करवाओंकात 'कार्येट' करते हैं। अवस्थानोंने प्रधानकोत्त नेता ही तक करते हैं। वे केरे प्रसा नक कृतन है। जिसमें एक की एक प्राचनों मौच्या है, जर बर्गेको ची नेठ ही जल किया गरा है। अधर्वकेको विह्ना भूते ही अवस्थितिया प्रचेत्रोते कृत कहकारतावद 'सर्ववेद' करते हैं। केवेने के नियमिक कावारी है, का सावस्त्रीने निवारे और है क्या का मीतोने कर और भारते कारता करनेको मिलको रेतिको है, उन सरकते नेरी हो बनावी हो राज्यो । मैं 🛊 नरहारा इस्तीय 🛊 । प्राचीनकारमें मैं वस्तिः कुरामाने अवसीयो ३३० सर, इस्तरियो 'कर्नव' प्राहरमता है। विन्त्रीये प्रधानका वर्णकर अवस्था सरका अनुसार विका है, वे पर और प्राप्तक मेरे हैं करना है।

#### े देवर्षि नारद और नर-नारायणकी बातचीत तथा सौतिके द्वारा भगवान्की महिमाका वर्णन

कर्मानको कहा—सहस् ! जैसे खाँसे मनकान, मरमको । करूर, बेडोसे जारक्या एक ओवरियोसे अन्त निकास गया है, उसी प्रचार आपने पह पाराचनकी बाजानक अनुसक्ते प्रकट किया है। वे परमान् नारायन सम प्राणिकेको सका मानेवाले और सर्वेद ईवर है। अवे ! करावनाव केन अक्ष्म है, कामा साम्राक्त क्षेत्र वंदिन है। काम्बे अपने मही सहा आदि केरता, महीर, नामर्थ और सनवा महायह आयी सीन होते हैं, का प्रशासकोको काहत और पानन हारत कोई नहीं है। बारायराजी बाजा सुरूपेशे जो पत्र मिरवार है, बह क्रम्पूर्ण अस्तानों में माने और क्रम्पूर्ण बीचोंने काम करनेते ची will form: most feets und aligned une un मानेका गाव कानेकारी है, जो आराम्यो ही सुरक्षार में सर्वक परिता के पता है। मेरे एक विशास अर्थको सम्बद्ध श्रीकृत्यको सहस्रकाले में पहासन्तर किया हात की, यह कोई आक्रमंत्री मान नहीं है; क्योंक्ट विक्रमेनीन्यन विन्युक्त महरवता निरम्भेयर को मैं संस्करमें कुछ भी कुर्वव नहीं सम्बद्धात : मेरे क्राफी पूर्वन क्रम थे, निरुक्त द्वेत और क्रम्बान करवेद क्रिके सरक्षानः बनार्कन रैकार रहते के 1 पास्त संस्थान कियाती पूजा बारता है, का बनावान नाराज्याका कार्नन सम्बन्धी है हो सम्बन्ध के मिल मेरे निवासकोंने श्रीकारको विकास विवासित कर बनावान्त्रा साक्षात् कृति अन्तरकार हो क देख्या का । इनके की बाबार क्यांस्कृत पात देवनि काराओं है, में उनके सामारक देवको नहीं मनता; क्योंकि उन्होंने बेनब्रेको कवार सक्षतः कामान्या रही किया। कामान्यो क्याने उने उनके बीजिनकार प्रकार कर्षण जिल्ला । स्था में यह मानना मारका है कि बेनडियमे लीटकर नास्त्रजी नर-करायकास दर्जन करनेके हैं में पुन: महरिकाशन गये उत्तक बना करण क. वहाँ कावर के दिलने सरकाव्य का केनी खरिकोची लेकाई रहे. अवोर्ष असे वर्धन-वर्धन-के प्रथा विको स्था पर स्थिते अस्त ब्यानम नर-नाराज्यमे क्या कहा था ? वे तल समें क्लानेकी कृत्या गरिविये ।

The state of

वैत्रम्यकार्यने कहा-नामन् ! मैं पहले सन्तर्म है सहस्त परकान् मारको नामका करता है, विनकी कृतको कृते कह नागकार्यी कथा कहनेका सीधान्य आह हुआ है। वेत्रहीको वीहरिका हुईन करके कथ नास्त्रमें लेटे से कहे केत्रमें मेठ पर्वतपर आ पहुँचे। करवान्त्रों को सहस्त्र की भी करे उन्होंने इहको सीकार किया था। पेक्से क्रायान

वे क्यान्त्रभ वर्गतंद्र यहा योगे और वहाँ अवस्त्रहरे क्टीकशक्ते को । कि निवट बावर क्यूंने पुरस्य ऋषि पर-करायकाल कृति किया, यो महत्य प्रत्या पारत करते हुए क्यानाने संस्था ने । का समय ने सन लोकोनो प्रकाशिक क्रानेकारे कुर्वने की अधिक हेकारी दिवसकी पक्के में। इनके क्य: करने ओक्सका क्यि सुवोधित से यह या। येथे अपने प्रकार कर करन किये हुए थे, उनके हाजोंने इंसका और परकोचे प्रक्रमा किंद्र था। विकास प्रश्नासन, प्रश्ने-प्रश्ने कुमारी, केवले प्राचन कामीर प्रार, सुन्दर मुख्य, बीटे स्तासद, कोची चोंहे, सुच्या होन्हें और क्लेड्स मानिकासी उनकी अपूर्व क्षेत्रक के को को कार उनके नतान उनके सनान सुरोतिक होते से १ हर जुल रूक्तानों हे सामझ हम दोनों महापुरनोंका वर्तन क्रमें क्यानीको नहीं सरसार हाँ। क्यान पर और पाठकाने भी पाक्षानेका कारण-सरकार प्रश्ले क्रमती कुरात पूर्व । साराम, प्रमानि का क्षेत्रेको और देवका un-di-un um-th desiral forum sein floor un राजिक सर्वात हम केची महत्त्वाचीकी भी हरीकी है।" बह क्षेत्रकर ने उनकी प्रदक्षिणा करके एक सुन्दर कुसामानवर बैठ गर्व । का कार्यान करायको सामार्थिने स्थान—'हेर्यो । क्या क्रमी केंग्सीको मान्या इस केंगोके ब्रायस्थ्य समान्य \_\_\_

कराजेने कह--काव्य । की विश्ववस्थारी उन अधिकाती पर्वेदारका दर्शन कर रिच्या । देवला और महरियोंके कार सम्पूर्ण स्रोकः प्रमुख्यि भीतर विराजनात है। असर केंग्री क्रमान पुरुषेको देशका हो मैं इस समय भी बेसईक्सारी कार्यान्त्री है ज़र्बनी कर एक है। वहाँ इसने बॉहरिने को-के लक्षण देने थे, अन्य बोनों की उन्हों लक्षणीरी सम्पन्न हैं। नहीं नहीं, कान क्षेत्रोंको की नहीं की अंश्वरीके चार अधिका देखा था और कहिके भेकरेने में दिल गाई आगा है। इस संशास्त्र अल क्षेत्रकें, अतिरिक्त करत स्त्रीन है के तेन, यस और और अनोड सर्वान हो । अनोने पहले वर्णवा अनोहर दिया और व्यक्तिको होनेवाले अपने अकतार-वारवीका की करीन किया है। क्षेत्रक्षिपमें को चीच इन्हिलोंने रहित हैत सर्गकरे पुरूप है, है सक-के-सक प्राप्ती और बच्च है दस्त सक्य बन्यानको एकाने तमे खठे है। प्रत्यान भी उनके साथ सक्त प्रसंग खठे हैं। उनको अपने पर्यः और अक्टम ब्यूस दिय है । वे विश्ववस पासन कारेकारे, सर्वकायक और प्रकारतार है। कर्न, कारण और बार्न की ने हैं हैं। उनका कर और करीं। अन्य है। में हेतू, अरहा, निधि और तलका तथा महत्त्वकर्त है। इन क्षमञ्जू परमास्त्राने जीनो स्वेचकेमें प्राण्यका विस्तार विकास है। विनयो सुद्धि अरम्य भारते एकमात स्वीमें राजी हां है, जा पर्रोहर गर्नन की हाँ जानेन दिनाको के परवाद कर तिरोक्क करते हैं। संस्थाने उन्हें अपने अन्य करते करक कोर कोई दिन नहीं है।

स-राज्यको सङ्ग--मान् १ कृत्ये केन्द्रीको सन्तरह गरावरका सांच विका है, जार इस कर हो। प्रकारने कामभूते तुल्या गर्वे कृत्य भी। ये उन्नु अन्यक उन्नतिके भी सूत करण है; विसीके रिये के उनका सूर्वन दिवाक निर्दारण करिय है। देवरें । इस सब कह के हैं, करफान्कों इस कामूने नकते कावत दूसक बोर्ड केन नहीं है, इस्टेरिक क्योंने तुमारे सामने अपना प्रश्ना प्रवट विका है। एक प्रवट क्रोंके एका हेनेस निवर्त करिंग है करते हैं, उन्हें है का स्थानको भी कारित है, कई साहाद समावद विराध हो है। विजयर । विद्यविकास प्रदानोके की पति इस कार्यकारी ही समानी जनते हो है, विकार पुजीवर संबंध होना है। वे समूर्ण प्रतिकोध्य हैन करनेवारे हैं, अवेथे सा प्रवाह हुआ है, को कारका भूग है और विस्ताह कारण कर सुक्रेश्वर केता है। जारेंने प्रम्मुनारिनीय केवता प्रमुखंब हुआ है, विसरों अंतुक होनेके कारण सुनीए इस कराएँ अवस्थित हो से हैं। कही पुरुषेत्रको सर्वाची कारी। हुई है, जिससे संस्कृत क्षेत्रम क्षाव सन्दर्ग कन्त्रमें जनकित क्षेत्री पूर्वी है। वे क्षे क्षेत्रंभार कृत्युकी भी जानीत्रके हेतु है, विवासे उपयासका नित्व संबोग है और विसम्बे है बहरत यह निरुवर कहा है ह संपूर्ण जानियोंके जीवर विश्व स्थानको प्रस्ती संपत्ति जी रुपीमें क्षां है : इस पनसे संयुक्त क्षेत्रर की पन्तमा प्रकार पता बारन करता है। वे कामान निवा-व्यक्ति क्रम क्ष्मे सरम्बापने निरानकार है। एक्केन । क्रेक्किने हन्हें इन्सोगोंने भी देशा था। परावन्त्रो समापत होनेके पहाल रुपाने पनमें को संस्थाप क्षत्र का सब भी प्रमानेकोची निर्मात है। इस कराका कान्द्रों जो कुछ का अकुव करा हो कुटी है, हो की है व होनेवारी है, वह सब का सबक देखेन मण्यानो तन्त्रे वतसानी औ।

हर करवान् का और कारकारको व्ह बात सुरका नासकोर्य न्दें प्रथ चेक्का प्रयाम किया और नशकाके मनोका विकास कर करो हुए ने एक हवार दिन्य क्योंका अधिक अध्ययन से । महाँ अतिकि मनवानुका ब्रान और पुरार सही रुवने कंपन-पर्य से। इस प्रवाद सरावास्त्री कथा सुन्हे और प्रतिकार करका दर्जन करते हुए कहरिकालयमें एक हमार को कुछ क्षेत्रेक जानाकी क्षेत्रात्व कर्मावर रिकट अपने कारणों को पने और ने विकास कारी ना-नारायन पुनः प्रकार करवाओं संस्था हो गये । कारोकार ! तुन प्रसानते ही का क्या कुरूर कीय है को है। से कुल अविश्वही कार्य्य राज्याको साथ कर, वाची च क्रियाके क्राउ देवनाव रसाव है. जान्य प का सोवाने दिव्याचा है व परस्थेकाने; इसके विदर सदा नरवाने हुने पहले हैं। जनवान् किया सबके आहर है, धार क्यों कीन है। कोमा ? सकत् । मेरे गुरू मन्नव्योगक्त क्यांग्योंने इस तेष्ट प्राप्तानक करोड़ विकास था, क्योंके पुँचते की इसको जुल है और को तुने की सुनावा है। सब दूध अपने र्वकारके अपूर्ण का पहल पहले को बर्द ।

और कर है-केन्स । क्रिक्स माने सू पहल स्वयंक्त प्रकार प्रकार स्थापनी असे पहले पर्न कारेका कर्ण जनमा किया। इसमें विकासकार्ती spherite service from from the say the कारणीय कारणा की हुने सुख दिया। यस श्री करायम समूर्ण प्रमुखे और स्पेम्प्रेके भागी है। इस विद्याल पुर्वाको अनेने वी कार्य कर एका है। वे वैतिक वर्ष और विरुक्त कार करोको, इन और उनके निर्देश, का-रिकामी परावस, हेक्काओका हैत सामा करनेवाले. अनुरक्षितकर, काके स्थार, मुक्त प्रतके पाकर, नकु कैरणका जब करनेकारे, क्योंग्रेको स्त्रुगति हवं अनव प्रकृत करनेवारे एक कार्ने कर कार करनेवारे है-देरी करकार्यी हुए प्रत्य हो। से समूर्ण बगर्के साही, जवन्य, अन्तर्वाचे, पुरामपुरम, सुर्वीद कारन देवाचे, इंसर और सम्बंधी पति है, का पामेकाको तुम तात लोक हरामीना होकर जनान करे। ये इस कार्युक्त आहिकारण, केंग्रके कारण, पुरुष-समाग, संबंधे प्रत्य हेनेकारे, अभिकार और सरावन पूछा है। अपने मनको स्थापे र्वतन्त्रकारके कारो हैं—कारोकर । कडोर करावारे अन्य । एकोकारे सांक्रकोगी कडीको कुद्धिके सुरा त्राप्त करते हैं।

#### इयब्रीव-अवतार, नारायणकी महिमा तथा भक्तिवर्मकी परम्पराका वर्णन

क्रीनको पुरस—सम्बद्ध ! इसमें प्रश्लेखनके महासम्बद्धे | सुना क्या अनुरेते समेके परमें को पर-करणवास्थाले अवसार बारम किया था, यह मेरा भी बारून हो। अन हम बह बातना चार्च है कि बनाइको करन करनेकारे जनकारी अनुभूत प्रतः और प्रधानमे युक्त प्रात्तीय-अनवार कर्षे करण किया था? और जा कार्ने भगकत्वा हाने करके इक्कानीने कौत-हा कार्य सम्बद्ध किया ?

भौतिने प्रशास्त्रीत्वा ! पर्यान्ते प्रयोग-अध्यासी कर्म सरकर रामा मानेकाको भी एकरी है एक 🕮 हशा का तर उन्होंने इस उन्हार उन्ह निवन-निवार ! प्रशासीने भागवानुके किए इस्तीनसम्बद्ध रहीन किया था, बह किसरिजे प्रकट दूसा, बह नवारेकी कुछ करें।'

वैक्रम्यकार्यने बहा—नासन् । इस बनाएने विक्रमे प्राची 👢 वे सम इंबर्क संसारको अन्त हुए प्रक्रमानुकोर्न पुरस हैं। विराद्-सम्बद्ध कामान् गारमक हुक कामुद्ध ईवर और क्या है, से ही तथ जीनोंके जनसम्बद्ध सम्बद्धा, सनुगर और निर्मुकारक है। अस हम पहाच्योंके असरिवाद प्राप्यकी यात gri-quient be pr poles gerünk und, कारक केली, रेजन काड़ी, काड़क सरकारी, कारकारकार मन्त्रे, भगवा कार्क्स, परवास अन्तर अपृतिमें, अन्यक्रक पूजा (अक्रा) में और पुरुषा प्रार्थकारको परमानामें रूप हो एक, का समय वारों और अन्यवार-ही-अन्यवार का नवा । करके निम्म और कुछ नहीं भाग प्रमुख था। अस अवकारी विद्या-प्रतिको सम्बद्ध बीहरिके बोगन्तिकार आक्रम नेवार कारणका कार्ये कार किया सवा नामा गुजीसे अवस होनेकारी अनुका सुविके सम्बन्धने विचार करते-करते उन्हें अपने महत्त् गुलका सनक हुआ, कारो कांग्रस्ट प्रकट हुन्य । यह कांग्रस्ट ही कर पुरुष्टेकारे प्रधानी है, से तब लोकोंद्र निवास और सम्बाद हिराजार्गको नामसे विकास है। इस समय जनसन् नगायनको नामिसे क्यान उत्तर हुआ क, निसमें क्यान-स्थेपन अध्यानीका अभिर्मात हुएत । अस्तर्य तेवस्थी संस्थान के अपनीने सकारत कमारास विकासन क्षेत्रर का इक्त-कार पूर्व अर्थ से को समझ बच्च बारून दिसाओ पक्ष । तम ज्यानी सत्तनुकारे निवत होवार जनिकारी सुद्धिये प्रचल हुए। वे किस कम्परकार बैटे हुए थे, कारका कहा सुर्वक समान देवीजनान का। उस परोपर पहलेसे ही कनकान् वेदकारी देत प्रदान किने है, बिंतु उन्हें दानवाने होन हिन्ता। नारायजनी देशवाले बहाबी हो की पड़ी थीं, जो स्कोचून | उनके किया में अंबा-ना हो रहा है; अर: आर कृत्य करके

और तमेनुसब्दे प्रतिक थी। जादि-अक्तो रहित भगवान् अपन्ताने जा केवें कैटीकों और देखा। जनमेरे एक कु करकारको होई बजा है तमीमन यह मानव देखते आकारों कीवार है गर्व । इस क्रिका रंग प्रकृत समान वा और जलेंद्र प्रारीत्वर्ध कारित नहीं सुन्दर थी। करवड़ी हारहें वेद, से कुछ कड़ी थी, नारायमधी आसारी रचीयुक्ती स्थान केटम सम्बद्ध केन्द्रे सभी प्रचट हो। बगोगुण और स्थोपुर्वाने पुत्रः से होन्ते क्षित्र वसु और वैदान बढ़े बरन्यान् से । कुमारके आजनवर विश्वकान क्षेत्रर सुद्धि-रचनाने प्रकृत हुन ख्याची ओर हरि को से से केनी सम्मन्दराजी और दीहे। बहुर्ग बहेनबार उन्होंने सरकारकारों प्रवाद हुए बारी बेटोको इब्बुक्तिके हेक्के नेपूर्व स्थाप पूर दिल्या । उन सनावन केहेको रेक्टर के तथा सन्तरके जीवन ईस्तनकोलाई निका संस्तानमें अंग्रेस कर वर्षे ।

वेबीचा जन्मरण हो मानेपर जहारजीको बहा चेर पूआ, वे का-क्र-का प्राचनको स्कूपे रहते 'प्राचन । केद हैं की कार के हैं, के ही की बार है, के ही भी जातन और के ही मेरे उसला देश है। की उन्हों बेटोको के राजनीने सरसार बीन रिका है। इनके किना नको सब मोर सन्वकार दिसावी केता है। वेदोनेट किया में बंदरारकों कुट्टि किसे कर प्रकार है ? ओद ! प्राप्त का कह करी संबद जा गया। इसे बीह क्रोकरे नेत हुन करा क यह है।' इस प्रकार विराज करो-करो उनके करने का विचार का कि में भगवान बोहरियों करि करि, यह बार मानमें आहे ही में हम नेकर का अवन समानाकी सुनि कारे तमे-'बनकर । आन हमारे एक्ट्रेंग है, बेट आपका प्रदर्भ है, आप जन्मके अब्दे कारण, राजरे होता, लॉन्कवेगकी निवि और सर्वकृष्टिकान् 🗓 आवको स्थानका है। स्वस्त वरात् और जनक इक्तरेको उपन करनेकले परकार । आपका इक्क अधिक है। अस धन्यकार वर्ष (योध) में विका 🖁 : विक्रमालकः । अस्य सम्पूर्ण प्राणियोके अन्तराहरा, विस्तरे बोनिये क्रमा न क्रेनेकले, बंगर्क सामार और सम्बन् ै। मैं आपके जाएको जाना हुआ है। आपके के क्रान्तके क्रमा है, क्रमान सेवियह विश्वय स्टब्स्य है, सार ही हंगर और सम्बन हैं, आयोंने मुझे क्या दिना है और आयोकी कुरकरे पुरुषर करूरका और नहीं करूरत । जायने मुझे

पुरः उन्हें कारण सा दीतिये; क्लेंकि में आका दिन कर है| और आप मेरे जिल्हाम सामी है।'

अक्रमानेक हुई प्रश्वास सुनि करनेवर सर्वनकार्यः भगवान् ग्रासका योगनिकायः स्थान कर वेदोका उत्तर करनेको तैयार हो गये। उन्होंने समने ऐक्कि क्रम कुसर



प्ररीर धारत किया, जो सम्प्रताके सम्बंध कारिकाम् सा इसका परतक क्षेत्रेके बसायके स्थान केवनमें तथा केवेंका आश्रम पर । उनकी नारिका भी कही शुक्र भी । नका और सराओं पुश्च वर्ग उनका मिर वा। सुर्वकी विश्वकें समान चपक्रीते की-को बात है। अक्टाब और फर्कन इनके बहुर से और हम्पन पूर्वेको धारण करनेकाने दुव्यो श्राप्तक थी। इसी प्रकार यहा और सरकारी करेका निराम, महार समझ उनकी चीहे, हमें और सन्तरा नेत, संस्था नासिका, अंध्यार संस्थार, विकास औष, खेलका बारनेवारं पितर होत, गोरचेक और ब्रह्मलेक ओठ और कालगुरि करकी प्रीका थी। इस प्रकार अनेक पूर्विकार आकृत हरावीकार कम कारण करके के बगारीकर कारेंसे अन्तर्थन हो गये और स्तायसमें प्रयेककर परण योगक आरम से किसके नियमनुसार ब्यूलादि करोने कुछ सामनेहकः नान करने लगे। नद और अस्ते निर्देश सामानको जा बच्च कति सानतमे सब और फैस भवी, को एक प्राणियोका विकासकर करनेकारी की : रोजों असुरोने कार कर प्रस्त सुना को बेदोको ककारों कोणकर

सरकारणे एक और पेज्य दिया और सर्व विश्वासे का व्यक्ति शा रही की उसी ओर दोड़े। इसी बीचमें मनवान् इमर्तिको इस स्थानका पहुँचकार स्थातल्यों को हुए सम्पूर्ण केंद्रोको अधने श्रासिकारणे का रिका और उन्हें संस्कर पुनः सद्यानीको सीम दिया। इसके कह ने अपने पूर्व कानको कारण कारके किर और को के स्थों हो रहे।

हिलाकी न वहा को के पूरः जहें नेगरे का स्थानपर सुखें दिलाकी न वहा को ने पूरः जहें नेगरे का स्थानपर का पहुँचे, जहां नेहोंको केळ आने ने: किंद्रु वहाँ भी कुछ क्षण न अस्या, जहां कारों के कारों में किंद्रु वहाँ भी कुछ क्षण न अस्या, जोरचे काराकी और जहें और सीम ही रसामानसे माहर किंद्रिक आने। कार कार्यार क्यूंगि देशा कि वानीके कार नेपानकारी क्रम्यपर एक क्यूंगि देशा कि वानीके कार के जह है। में विद्युद्ध सामने समान वार्यामान् ही ने, को चीन्तिकारों कीई हुए से। क्यूं देशकर क्रम्यपण पह और किंद्रुव क्रम्या परावार बोच-नोरों हैसने क्यों कीर समोप्त क्षण क्रम्याक क्रम्यान कार्य-नोरों हैसने क्यों कीर समोप्त क्षण क्रम्याक क्रम्याक क्रम्य कार्य कारार व्यक्त समोप्त



स्वक्रमणे केट्रोकी चुन तमना है। यह किसका पुर है, कीन है और क्यों वहाँ सर्विके उत्तीरवर से यह है? इस प्रकार सातबीत करके उन क्षेत्रोंने औदिनको कनाना। उन्हें युद्धके विक्रों असूक देश सरकार पुरुषेत्रम स्टब्स स्ट्रों के गये और इस क्षेत्रोंकी और दृष्टि अस्तकार उन्होंने मन-दी-पन युद्धका निश्चम क्रिया । सिर से मुद्द प्रारम्प से क्या और क्याबर् | क्याबर् क्रियु से हैं । में अपने ऐसमेंबेयने रिका रहते हैं । मधुसुरत्ने ब्रह्मानीका चार रक्षानेके दिन्ने रखेतून तक हमीनुनसे जमानित कुर का कैथेयों यह सरव १ इस समझ केदोको कामस सरकार और मधु-फैटकको कारकर उन्होंने विद्वार्थीका क्रीक हर किया । सरकार्य केसी १८४८मा और मगळान्हों सुरक्षित क्षेत्रन सहाजीने सनस परवन प्रश्नाती **पृष्टि को ।** मनवान् कई संस्थरकतानी सुद्धि देखर सन्तर्भन हे रहे--व्हरि असे वे व्हें वर्त को । इस प्रवास ओहरिने प्रवृतिकार्वका प्रवास करनेके हिन्से प्रवर्तकार करण विका मा । उनका का प्रस्तुत्वक उस परन प्राचीन और विकास है । को प्राप्तक प्रतिदित इस सकारको कथाको सुरक्ष का प्रतान करता है, उसके शत्कावका कभी तक नहीं होता। स्वस्तु ! हुएवे जिल्लो क्रिये पूजा का, यह इन्सीवाध्यालको प्राचीन कता मि तुने सुना है। या आकान नेक्के क्रय अनुने कि है। कामाना कार्य-अला वारोके मेंन्वे निया-निया करीनकी बारम पाला पाली है, को समें उस्ता कर हैने है। में के और सरकारके निर्देश हैं कहा संकर, क्षेत्र, कहा वर्ष भूतिकाहर है। वेदीना करियान सरकारों है है, 🖘 पारक्यके है सक्त है, का मराव्यकी है सक्त करावेकने है और महाकारको प्रतीत के उत्तर नहीं (फेक्स) है। प्रतान के मही, बहुत और साम भी नारायरणेंद हो स्थान है एक विस्ती अनुसारते पुरसीय भूति विकासका, यह निवारिकारण वर्ण की संरायकारों से राज्य सरवेकारा है। अवृत्यिकों की मराज्ञाका है सक्त है। प्रतिका संभ पूर्व पन, कारक गुल ११, रेसका पूज प्रम, बायुक्त पूज रूपी और शास्त्राक्ता पूर्व कर्या की बरायको क्रिय नहीं है। यर, पास, महाव-सम्बद्धाः, प्रतिति, हर्दैः, राह्यमै, सम्बर्गः हेवल करा शोका और चैकाला—ने सन नराजको है काल है। पुरुष, प्रधान, प्रथान, बार्न तथा हैन-में दिन कार्यनोंके करण है, वे भी जरावनामा है है। अनेक्कर, कर्ज, विकारीता प्रकारके करण, अना अधारकी कारण-जारण बेहार्षे तथा देव---इन प्रांत कारणेंके कारने सर्वत प्रीवृति हो विराज्यात है। यो सोन सर्वन्यका हेतुओर अन्तर्थ भागोधी उच्चा रकते हैं, उनके तिये महायेगी सरक्या है प्रकार कारण कर है। समूचे सोच, बाहरे देखा. महत्त्व जुपि, सांस्पके विद्वार, योगी और आव्यक्रमी वरि—इन सबसे परवर्ष को परवार करते हैं: किए उनके क्याने क्या है 7 का विश्वीको क्या नहीं है। सरका कियाने के क्षेत्र केवलकांके रिलो पड़ और विसरीके सिने बाजू करते हैं. क्षत के है और पहल का करते हैं, का सकत कारण

कृत्यं अभियोदे अवास-स्थल होनेसे जो बसुरेन करते है। ये कार श्राणि करावण निता, महान् देखकी पूर्ण और कुरोंने रहें। है से भी जैसे कुर्बान कार बहुके गुजेंसे पुष्ट होता है, जहीं जबान से भी स्थाप-सम्बन्ध पुनीकों श्रीकार करते हैं। इन महातानी कारानानको कोई नहीं पहला। को इसने पहले हैं, ने हो कर फिल असनांनी प्राच्याच्या स्थापाल करे है।

क्रमेक्से का-अक्ट । काक्ट अन्ययाको प्रमा क्रानेकारे अवने सची चर्कानो सरात करते और उनकी विशेषक् की क्षेत्र पुराको क्षेत्रका करते है—यह विशेष क्रान्यको साथ है । संस्थाने जिल सोनोको पासत्ताई श्रम्थ हो नवी है और के मुख्य-अधने रहित हो गये हैं, कई परमराने को गाँउ प्राप्त होगी है, स्वाच्या भी आपने वर्णन विश्व है; किया मेरी प्रमालने को प्राप्तन उपनिक्तोसकीत सम्पूर्ण केरोका विकास प्राप्तान करते हैं एक को संन्यास-वर्गका करने करते हैं, इस समारे करना गाँउ कार्टिकों जाए होती है, सी कारानोह अन्य पद्म है। प्रत्यत् । इस परिकास वर्गया विवाले कार्यक्ष विकार है? इसका आहे अर्थकार कोई केवा है का अभि ? एकाच मार्थाओं मिलनार्थ नना है ? और यह सामने प्रचलित हो है? भी इस स्वेतन्त्रे कु क्रिकेट, क्योंकि पूर्व इन सब बारोको क्यानेकी वर्डी जनस्या ै ।

र्वजन्मकारोते सहस्य राजपु । विस्त समय स्वीरम और क्षकांची रंगरी पुर्वा रेग्ने (पुर्वानो वैदानी) एडी **जो की और अर्थन पुराते अल्लने हो को है, उस समय स्था** क्राकारों क्षेत्र कीवारों क्षा बनेका क्ष्मेश विका तथा स्विके अधिने का कामान नराकारो प्रक्रातीका पानसिक सन्द हता. का राज्य उन्होंने की अधित रेक्सी सहायीको हर कर्मका उन्होंक ने कर्मक बाह्य-'हम क्लेके कर्म तथा निकास कर्मक विकास करो।' का आहेब केवर मे अञ्चलकारको परे अपने परम्यानको बस्ते गर्ने । सर्पक्रम् राज्यों का देनेकारे सोकरियान्य सहामीने सावर-व्याप्तान सम्पूर्ण बनाएको स्थान को । सृष्टिके प्रारम्भकारमे का सामग्र काम प्रमानुष्यक्ष आरम्भ द्वारा था। यह समग क्षाकोने स्वापकारमिको उस पर्नक कनोड विकास स्थाने अन्ते जेष्ट र्वित आदिवयों, यो समिता (विकास) से को थे, का वर्ष काराया । उनमे विकलान्ते प्राप्त किया, किर केलबुनके अल्लामें विश्ववानी मनुष्ये और मनुरे लोक कामानके तिने जाने कु अध्यक्तके का सर्वका क्रिक्रकारी प्रकार हो गया। जब संस्तरका जनम होना से फिर पढ वर्ग परवार् अरावको हो स्वेन हे सारक। पारकोने स्वयास् वरणीकर करावकरे स्वया और संव्यक्तीय इस वर्गको असु किया या १ इस प्रथम यह पहान् वर्ग सकते प्रथम तथा सम्बद्ध है, इसके राजको सम्बद्धान और इसका डोक-ठोक परान करना कठिन है से भी मनकाहरे परा को सह दारण विस्ते रहते हैं। इस कांग्री स्कारण विस्त्राप शकी तथ कार वरने का अधिक करी दिया करेने धनवान सीहरी अस्ता होते हैं। राजन् । की मुख्ये अस्ताहे अवन्य अस्तिके वर्गका कर्मन विस्ता है। विस्ता अन्यत्वास

करोता किया। तस्तरतर, इस्टब्रुके करोकरो इतला। युद्ध नहीं है, करके दिन्ने इस वर्षको सीव-सीक सम्बान करित है। यनकारों इकास भीत रहानेकरे महत्त अनः कृति है। बहै जा संसार कार्यक्ते अस्य यस, तरिसक, आव्यानी और समूर्व अभियोध जिल्लारी मनुष्टीसे है पर के के करेर समयून है का कर, नहीं भी संबंध कर्मक अस्तान व हो १ इस प्रकार की गुरु भवनान् आराने व्यक्तिके विकार औरकार और जीवाके सुनके हुए वर्धरान पुणिक्षियने इस कांच्य करोड़ किया का और प्यास्त्रीको असीन काराने मुक्ताराचे कार्योधे का वर्ग क्या हात वा। नाराव्याधे सारकार्त सरे हर सरम गाउ बाहरके समान गीर क्षांकारे पराक्षकार परावत् अवस्थाने अने हेरे

# अतिथिके कहनेसे धर्मारञ्जका नागराजके यहाँ जाना और सूर्यमण्डलसे उनके लौटनेपर उनसे उञ्चयतिकी महिया सुनना

gfaffeit steit- fremen | servit mentet fie | प्रान्तायक प्रोक्षयमेंका की ध्रमण निमा, तथ जन आसम्बद्धीको पहल क्षानेकारे प्रमुखीके हिन्दे को सबसे उत्तर वर्त हो, उसका प्रयोग क्रीनिये ।

प्रेमको वस-गक्त । इस कैनको वै इन्हें एक प्राचीन क्रमा शुरू का है, को सुने । अचीन कारने देवर्ग मारको इनको पह कथा सुनाने हो । यह उन्हेंन इस उन्हार 1-एक सर पासनी देशाय इसके वर्ष करते। इसने को अपने संधीय ही विद्यालय करता बढ़ा बरवार विद्या । बोड़ी है। बैठकर पर पायाओं जिल्ला से पूर्व के उसरे क्षाने पुरा 'ऐसी । इसर अपने बोर्ड अव्यक्तिक परम हेली है बना ? आप सिद्ध हैं और बीचों शोबांने विकास को है, जनकार कोई ऐसी बात नहीं है को अपने दिन्दी है. धरि आपने कुछ सन हो, देखा हो अवका अनुपन किया है के उसे करिये।'

हरते हर प्रकार स्थानेस समाजी स्था<del>न शाक्त</del> क्षीता किनारेस बाल्यासम्बद्ध ज्ञान नगर है। वहाँ एक प्रस्कृत स्थान व्य । व्य स्थानका क्रम क्रम व्यक्त स्थान का। आका जन्म अधिनोत्तमे हुना का। केल्ने सल्बी अवसे गति भी तथा उसके कार्ने किसी ज्यानका संबद्ध नहीं का। का स्त्र क्रवेरराज्य, क्रोपरहेत, नित्र संत्रु, विदेशिय, सर और सामापने संतर, सरकाई और सल्काने सम्बन्ध

क्षा और प्राप्ते प्रयोग्याचीयचीची श्रीवास अधिका भी । स्थ क्राक्षेत्रिक प्रीरको समाप्त प्रया उत्तर आसीरिकासे बीक्क-रिकोट व्यानेकाल था। एक बार जाने केहेता धर्म, क्रमोत्र को और क्रियुक्त —क्षा क्रिया वर्षेत्र क्य-बी-कर क्रिकार क्रम्बी क्षेत्रक कि 'क्या बारनेले नेस बारनाल केच, मुद्रे किसका सामन लेख काहिये ?" इसी लगार बा अधिन निवार कथा, सिंह किसी विश्वासन नहीं पहुँच पास । एक हैन कर क्यू इसी स्रोध-निकारों पढ़ा हुआ करू पा 👑 था, उसके पाई एक परन बनोबर क्या एकामीका उपास अधिकोर प्रतये जा पहुँचा। प्रकृतको जस अधिकिया विभिन्न सामा क्रिक और सम या सुराष्ट्रक बैठकर अपन करने रूप हो उसने पूर्व 'विद्यवर ! अवनी पीडी वारे सुनवार मेरे जरने आयके प्रति बढ़ी आरका है सी है। सन अपने मेरे जिल हो गर्न हैं, इस्तीओ आपरे कुछ करना पाइस है: नेंद्र कर सुनिये । में मुक्तन-वर्गको अस अपने पुरुषे आसीत करके होता कर्मका आकरण करना पाइक है, अराहणे मेरे सिन्ने कोल-सर पार्च होत्सका होता ? मेरी एका है कि अधेनक है से और अवस्था असाम रेक्ट प्रतिये रिका हो जाते। जान-क्याची साम् पुरुषके कर पानेदे रिक्टे विकार-योगीमें ही बीड क्षी । आ वस्त्रेक्ष्मे सामर्थका काम देनेवाले आव्यक्तिक कार्य संबद्ध करन पाइन है। दुई इस संस्थर-सागरसे पर कोची पूजा से हुई है, बिजु आके तिले कर्मण सेवा कैसे प्रस् पटा का। उसके परने नक्षमते केन फिने हुए करकर संबद्ध हो, यह नहीं कर व्यूचा। उस में सुनता और देखता है कि विषयें के स्वयं के इस स्वांक पूजा की तक्त कराते हैं। यह पाते हैं तक्त समय कराते अन्त क्षाक्रमधी काम करात यह है से योग कहा होनेन्द भी मेरे कामे कई कोमोबी हो। वह होती, इस्तिको काम है कामें बुद्धिकानो करोड़ केयर सूत्रों कामें समीने समार्थ !

स्रतिने <del>यह - प्रदानके</del> । इस विकास नेती भी सुदि कान नहीं देती, असः में इस प्रतायः निर्मय नहीं कर सकता । सुक रोग मान्यको प्रांचा पाल करो है और विक्रो है म्परिक-वर्गका जातव विशे हुए है। कोई कुकर्ज, बोर्ड भारतान, जोई पुरुवपूर्व और कोई बीच-सबसे हैं क्रपनाचे मेंडे हैं। युक्त लोग गाल-विकासी क्रेमको, युक्त स्रोप अविसते, कुछ स्तेष सारकारको और कुछ स्तेष पुछते प्रमुखा प्रायना करते हुए जन स्थाननेते सर्वको छन्। हुए है। कितने ही मनुष्य अवस्थिति प्रत निर्देश करते वालो सर्गनानी हुए हैं। विक्रों ही सुदिवाल पुरूप संसुर्वना और विकेषिक के बेबेक संस्था काम क्या कारका करते हुए कार्यन्तेको अस्त सह कर कुछ है। इस अधार संस्ताने कार्येत अनेको सरकारे पूर्ण हुए हैं। को देसका नेवे ब्रह्म भी प्यारते का नहीं है हो को में हुई सन्तरते उन्हेंह पार्टन्स । मेरे गुरूने इस विकास गुड़ों को बाल सरकारों है, यह कार पा है। हमें --पूर्वकाओं पाई कांकाको सकता औ गती थी, इस वैशिवारकारे चेत्राविके काल कार्युक्तावक क्या नगर है। जाने पक्षाचान नानवा कुछ बर्मान्य कर निवास करते हैं। लोगोर्ने अपने पन करते अस्तिह है। वे पर, भागी और विकास हात समूची प्रतिकारिको प्रतास रहते हैं और कर्ष, इस एक उपलय-इस सेवें क्योंक स्वाप करोर पते हैं। विश्वपद्धा कर्नर करनेको पुरुषो वे सार, कर, रूप और चेर-नेरिके प्रश स्थान रहते 👢 सम्बद्धीको एका करने हैं और नेत अकी इन्हिलोको विचारके क्रम कुमानि सामि ऐको है। इन उन्हेंद्र क्रम क्रम विक्रिकेट (दिल्यानारों) जनन अर्थक् १५ उनके रहको रको । वे तुन्हें परम सर्वक अनेव करेंने । नारका सरका अतिकि-सम्बद्ध करते हैं, प्रत्यके विद्वार हैं क्या करवी कुदि नहीं जीत है। वे अनुस्य तथा चलक्षीय स्वयुक्तीने क्रमा हैं। स्त्रमान को उनका धारीके सम्बन है। ने यह साम्बन्धने समें वाते हैं। तर, इन्जिसंबय और सक्कार करती क्षेत्र भारते हैं। ये काचा अञ्चल करनेकरे, क्रान्तिके विरोपित, सुपार्शन, स्थापिक काल करनेवारे, सरकारी, केन्द्रदिसे स्थित, बीलकान, किलेनिक, ब्याचेन

वेश व वार्यकारे, अन्या अस्तियोके क्षित्रों समे युरेवाले और श्रीवर पान जान कुराने जाना है। जानारे यह—सिकारे | युरावर पान गार्र पेक-स मान दूस्ता था, अर्थ जान जानारे जार दिया | अरवारि पा पान प्राच्या गुले गार्थ कारान्य किसी है। यह पार्यको स्रोचा पूर पार्यको पान्ता, पार्यको पाने और पूर्वको स्रोचा विकास विकास संस्था होता है तथा वेशीरे पार्यको किसा गार्थ विकास है, जाना है अन्या समा जानारी पार्यको पुले विकास है। पान्तार / जानारे युक्ते सेती पान्ता है है विता है पार्यक्ता । अस पूर्व अस्तावारको पान्ते हैं, जानारी यह असा मेरे पान्ता गार्थ पान्ता और सुवाहके विकास कारों पार्यक्तीर जानारे पान्तार हुए प्रोतिको, विता प्राप्ते पारं पार्यक्ता

जनकर, या जीति जा प्रमुख्या आविको प्रमुख्या कर्मा प्राचन करने या या । हैनोने प्रीयु-वर्गा प्रियमी वर्गा प्राच पहे सुराते वर्गा या प्राच प्

अक्रमणे पक्र-न्येकि । कुलो प्रमुद कालीसे येख जासक और पूज्य किया, इससी येथी प्रकारत हुए हो गयी। अस सै स्कृत्य प्रमुख्या दर्शन करना बाह्या है, सही मेरा सबसी कहा पार्च और मनोरात है और इसीके सिमें आबा मैं असी इस अक्रमण सामा है।

सहै तीन है। वे अनुस्य क्या कारणीय समुज्यों कारण हैं। स्वयान से उनका पानीके समान है। वे यह सावकारों समें वहीं हैं। तप, इनिवर्धका और सावकार उनकी होत्या कारों हैं। वे व्यावक अनुहान करनेकारे, क्षात्रिकेंद्रे हिस्सेच्छि, इन्याकीर, स्वात्रिक्ट कारण करनेकारे, सरकारी, सेपदुरिसे रहित, वीरकार, क्षित्रिक, व्यावेग सावके कोच्य, कार्यक-कार्याकारे कार्यकारे, किरमैसे की स्तितालं जानांची नहां हुना हुना। का नानांचारं सन्तु-वानांव, की सौर पूर्ण स्था निरम्भार नाहांचारे चार गर्ने और वास्त्राह संस्था पूर्ण करके कहा सने—'क्वेचर ! सामको नहाँ सन्ते कान कः दिन के गर्ने; विश्व अन्तेत्रक साम मोजन सन्तेत्र दिनों हुने साम गर्ने हैं से हैं। आन हुनां कर अतिकिक कराने अन्ते हैं और हम सामकी सेनांने स्थितित हुए हैं। आनवार सामित्रक हम सम्बद्धी सेनांने स्थितित हुए हैं। आनवार सामित्रक हमार वानां सुनांनी स्थापा अव सामका सीवार व्यक्तिक हमार वानां प्रकार सामक अस सामका सीवार क्यांकि हमार वानां क्यांकि क्यां सामका करा है। सामका सुनां करने कर्ने क्यांकि इस सामका करा है। सामके स्थार क्यांकि कर्ने क्यांकि हम

सहाराने नहा—नागास | अवस्थानेनिक्क स्थाने हैं। मैं सुप्त हो गांवा । अस सागासके कानेने सिकं साठ दिन संस्थी है। सीट काठ का बीत सामेदर भी में नहीं असे हो मैं अगरानेगोंके सदानेते सोका का दिया। उससे आगामके सिनं है मैं इस हराबा सागा कर का है, सागानेग इंगर्ने सिहा म हाते। मेरे सिनं संसाध कामा स्थित नहीं है, अस्य स्थान सीम अपने सहस्या सीट सावते।

इस्तानके इस अवार कानेनर वे नानक अनी अवारों असराम होनार का सौद नने। सारानार, जब सनव पूर्व हो गया और जंगराजकी कही स्थान हो ननों के सुर्वितकी आहा सेवार में वर और आने। वह जनके बारे पर केनेने दिनों का सेवार मेनाने अनीना हूं। नागरामने अस्से पूज—'कान्यानों! मेरे हारा नानके कूई विभिन्ने अनुसार सुन नेका और अनिकिने पूजाने सनद से रही हो न? मेरे विकोनने कान्या कार्य वर्णने विस्ता से नहीं हों?'

स्पान नेत--सगराम | साधि विने परिवर्ध सामान परान करना समये कहा वर्ग करणान पता है। जब आप सहा पर्ममें विका रहते हैं से मैं मैंनी सप्तानंका कान बारके हुए सतोपर पर रहेनी। नहामान | केवाननेकी सारकार्य कोई कभी नहीं आपी है। अतिक-सरकारके सिये भी मैं सहा सामान सहते हैं, सामानकों कभी पता गहीं परानने हेती; किंदु साम पेस विसेशे एक सहामकेवा मार्ग पराने हर है से मारके अथना काम कहा नहीं बनाने.

सुनेताहे जारेंको बहा हुना हुना। सा जानकार्क सन्पुन्तानार, को और पुर श्रम निश्चार सद्यानके कर गर्ने और सश्चार सत्यो पूछा करके कहा समे—'क्लेकर ! सामको वहाँ साने काम क: दिन हो गर्ने; विश्व अर्थातक साम मोजन सानेके दिनो हुने सहसा नहीं दे रहे हैं। अन्य हुन्यों साम मोजन सानेके दिनो हुने सहसा नहीं दे रहे हैं। अन्य हुन्यों

करते पूक्त-प्रिये । प्रश्लाकसमये पुत्रते मिलका यहीन मिला है ? ये कोई केवल हैं या समुख ? यस्त समूखोने जीन पूर्व देवलेकी हका यह सम्बद्ध है और यदि व्यक्तिको हका को भी को इस पद्ध हुकर देवहर बड़ैन पूरण सम्बद्धा है ? इन्यार्क कोरो-स्था । अनकी सरस्ता देशकर से मही

व्यान व्यान है कि ये मोई देवता नहीं हैं। यूने ही कमी एक व्यान नहीं विशेषता जा बार पहीं है कि ये आपने वहें पता है। वैसे परीहा वालोके हिन्दे रवालान वालोकी बाट देवता वृद्धा है, जाने जवार ये आपने परीलकी जांचा परिवाल काले हैं। इसलेने जान काले वालानिक जांचाता परिवाल काले हैं। इसलेने जान काले वालानिक जांचाता परिवाल काले अपनेको वाल न परिवाल । यो अवदा राजावार प्रशानों आपनेको वाल न परिवाल । यो अवदा राजावार प्रशानों आपने इसलेने इसले को वेदी हैं। या देशी वाल काला है, साथ कोलानी काली होती है, वाल देशी वाल काला है, साथ कोलानी काली क्षाव आप अवदान कालोकों जांचा पत्र विश्वाल है। उपनो इसलोक अनुवृद्ध कालों भी कहि दूसलेक संवाली परिवाल काल सामाना कालावार करनेकारण हो से उसलो परिवाल काले परिवाल है।

काने कहा--धिने । जारीनोक्के कारण ही मुझे कानी-कानी अधिकार और रोजका विकास हे काम पहला है। विद्यु अस्ता पूनने अक्ते क्रमीहरूम अधिके द्वारा मेरे इंकारकारित क्रोनको महन कर इस्ता। मेरी दृष्टिनें क्रोनको काम केली इस्तानेकारा कोई होग नहीं है और क्रोनको दिने सर्वकारि अधिक महनाम है। इस्तिको आग दुन्हारी काम पुनकार सम्मानेक सन् और कामचानारो प्रष्टु करनेकारे इस अधिकारो मेरे कामूने कर दिन्छा। दुन-नैसी गुनावारी इसको काम में अपने सीकानको नियंग सरहाना करता है। अका, अन्य में चोमानोके स्टबर, वहाँ के साहाम-देवता विकायमार है, काम है। अन्यति को इक्का होगी और पूर्ण करोग्य, से सर्वका कुलाई होकर अपने वर स्टिने।

क्ष बहुकर नगरान मन-ही-मन उस हक्ष्मणके कार्यका विकार करते हुए उसके पास को और क्ष्मों पहुँक्कर सदुर कार्यों केले—'किस्तर ! मेरे अवस्थाने अपा कीजिये.



मुहानर क्रोब न व्यक्तिनेन्य । मैं क्षेत्रका कालो प्राप्त आवार पुल्ता है, नारको किसके रिलो, मिस इक्षेत्रको पाई आवे हैं और गोमलेके इस प्राप्त काला आव विकासी उपस्था भार यह हैं।

अकर चोरा—पेश पान वर्णातन है, में पानसम् पंतानका इसेन कानेके तिने वहाँ अन्या है, उन्होंने पूड़ी कुछ काम है। उनके कानोते की सुन है कि ने व्यक्ति हर गये हुए हैं। अलः नैसे किसान वर्णाको राह देशका है, उनके राख में में उनको बाद चोड़ कह है और उनके आव्यक्ति हिनो नेदका काराकन कर रहा है।

मनने कहा—बहुन्यन | आवश्या आवश्या खड़ ही मानवानमध्य है। जान कहे ही सन्तृत्व और स्थानिक इस करनेवाले हैं; क्योंकि कुर्त्यान सेव्हाहि रहती है। मैं ही यह नान है, जिससे आव विश्वन प्रकृति एक इसस्तृत्तर आहा दीनिने, मैं आवश्या परेन-सा दिय पार्ट माने ? अवनी बीते आवश्या आवन्याय सम्मान सुनवा मैं सर्व ही आरसे जिसमे आवा है। अवनी हम सब कोनोंको अपने गुजोंने बोत सरीह दिया है, क्योंकि आव अपने हितनी बात कुरून्टर मेरे ही प्रक्रामान्य विश्वन कर में है।

अवृत्य केल—जनराव ! मैं आवृत्ति दर्शकारे इकारो कहाँ आवा हूं और आवशे कुछ पुरूत व्याप्त हूं। इस स्टब्स मेरे मनमें एक नया प्रथ उठा है, पहले इसका उत्तर हे स्वितिको, उसके बाद अवना पार्ण निवेदन कार्निकः। अवन सूर्यक्ष द्वा व्यक्तिकाले राजको स्थितको तिथे जाना करते हैं, वरि बाई बोर्ड सम्बर्धकरण जान आपने देखी हो हो स्टानेकी कृता करें।

करने कहा—सहस् । कारान् सूर्व अनेव्हे अध्यानीह कार है, निकार रेकरें कार्य परमात्वाका निकास है, किसरे क्या प्रकारके कीय अच्छा होते हैं, विनक्षेत्र हो सहारे बराबर क्याहों साथ राज्या पृथ्वी दियों कुँ है शब्द विकोर प्रयासने अभी-अक्टीत समाज पुरुकेत्व नारावन विरावासन है; रुपो करवार साक्ष्मंकी बका और क्या हो समती है ? सिंह हर कर मध्यपंति की सहस्र एक आध्यकी बाद में सह क है, को पुनिये --सामीनकारकी बात है, खेळाके समय परमान् कावत सामूर्व लेकोको क्या हो छै। उसी सका कृति कृति समान एक नेपाली पुरूष विद्यार्थ पद्म । यह करने देवले कपूर्व क्षेत्रोको प्रकारिक कथा पुरस वाचे जानकार्ये भीतका कुर्वेची ओर बदा आ रहा था। यात अनेपर पणवान् सुपरि को बेटनेके हिन्दे अनवी केंग्री पुनाई रेक्स है। उसने की प्राथमध्य तिमे अन्यत ग्राहित क्रम क्षेत्री और वहां दिया। प्राप्तान् आवास्त्रों नेहदा वह क्षेत्री विकासीय प्रमूपी प्राप्त गया और एक है असी क्षेत्रातिके प्रथ कुळकर हेवर कुर्वभक्त है गया। यह समय हमलोनोर्फ करने का सीत हुआ कि इन क्षेत्रोंने अल्लारी पूर्व कोन थे, को इस रक्षण केंद्र कुए से के अध्यक्ष को अभी किया रेपने प्रथमित पुरुष मिर्ग के किया कुल—'क्लान् । वे जो दिलेय सुर्वत समान जानवासको स्वीतकर प्रकृतिक अपने हैं, पूर्वन के ?"

वृति कह—ने सक्ष्मिका काल कार्यवाहे इक हिन्दू जून थे, को किया संकारके जात कुए हैं। काल, पूरं, सूची को, कार्य और क्या—कही इसके कोक्यादी सामग्री थी। इस्क्रीने संविकाके क्यांके कार्यान् संकारका सामग्र किया था। वे कार्य अपने कार्या कार्यो रक्तों थे, किसीका साम नहीं कार्य थे और कहे निःस्कृद थे। केरा साहित्रे गिरे हुए अनावकंत कृत अस्या कार्य कीनकर एको और स्तारे वैश्विका कार्यते के, स्था ही सम्बद्ध आध्याकि क्षित्रमें सापर रहते थे। ऐसे कोन्योंको को उसक पति कार्य होती है, उसे केरा, गन्यमं, असूर और नार्य कोई नहीं या समझे।

विकार ! सूर्वप्रकारमें बड़ी आक्षर्व मैंने देला था। रिव्यको प्रका हुए पुरुष इसी दया इच्छानुस्तर काम निर्द पक्षे हैं।

म्बापने का-पानराज ! इसमें संदेह नहीं कि पह

एक महार्थनंक प्रतास है, इसे सुनकर मुझे कही प्रसास हुएँ है। मेरे मनमें किस करकी अधिकाल की, अलो अनुकूत करन कहकर सबसे मुझे तरहा दिखा है था। भारका करवान हो, अब मैं कहीं कारेना। अब समय-सम्बद्ध मेरा महत्व करते हों।

नगरे नक — हैं कार | अपने अपने अपने कार्यों कार है कार्यों है जूर्ड, जिर करे कहाँ का रहे हैं ? किए कार्यों रिष्ये कहाँ जाये थे, जरे कहाइये हो एक । क्या का कार्य जिल्ला है जाय हो गेरी अपूर्णी सेवार मान्येक । अवन्या मुक्तार मान्यि केर है, इस्तियों कुलांद गीये की कुद कार्यों क्या रिष्यें मुझे देखका ही कार हेक कार्यों हिंगों क्या कार्यों है। मेरी आपने करित है और अवकार मुक्तारे, ऐसी विश्वीपों मेरा का सारा करियार अवकार है, जिर की कार्यों क्यांगें अवकार का सारा करियार अवकार है, जिर की कार्यों कार्यों अवकार

महत्त्वने यहा—महासहा | अववादा व्याप्त कीया है। यो असर है सो में हैं, इस क्षेत्रोंने कोई केंद्र पढ़ि है। ये, अबर तथा कारता साथी पर्यापानों और हैनेवर पढ़ा द्वारावकाओं है। साह होते हैं। पर्यापान | पुण्य-संस्कृत विकास कुछे पूक संदेश के पाना था, सिंहु अबर बहु हुई पूका है। अब मैं

उन्हाजानां पासने कानों कानों वाचीतु वाचेता इसका कानेन, नहीं मेरा निक्षण है। अनको हता पेरा कार्य बड़ी उक्तवानों सन्दार है कना; मैं कुतार्थ हो गया। जानका कान्यान हो, अब पुड़ो कानेकी अदल होतिने।

विकास कारावाची अनुसति लेकर वह आह्रण अवक्रमानी देखा लेके दिनो पृतुवंशी व्यापन व्यक्ति पास राजा 1 अभीने को दिवा ने ही और वह जा वर्षानुकुर जाका व्यापन करने लाता । जाने कारावृत्तिको स्वीपासे स्वापन राजा कारावित इस कारावो व्यापन्तिको स्त व्यापना स्वापन राजा कारावित इस कारावित व्यापनार्थिको इस व्यापना समान राजा कारावित इसामे प्राप्तिको साम वाच नेता प्रचंतर कारावित इसाम व्यापनार्थिको साम वाच नेता प्रचंतर कुट हुन्य वा, जा समान व्यापनार्थिक साम वाच नेता प्रचंतर कुट हुन्य वा, जा समान व्यापनार्थिक साम वाच नेता प्रचंतर कुट हुन्य वा, जा समान व्यापनार्थिक साम वाच कर्ता हुन्य वाच विवास है से अधिक कारावित क्षेत्र वाच वाच वाच वाच और वाच कारावित (क्षेत्रको हुन्य अवकाम क्षेत्रक वाचना हुन्य वाच-विवासका व्यापनार्थिक अवकाम क्षेत्रक वाचना हुन्य वाच-विवासका व्यापना कारी लगा ।

साचिपर्वं समाह

# संक्षिप्त महाभारत

# अनुशासनपर्व

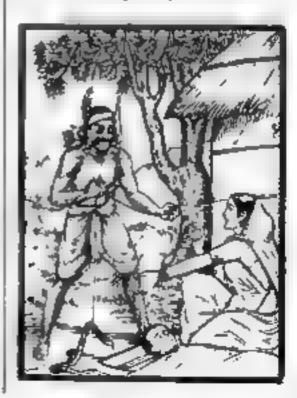
युधिष्ठिरको समझानेके लिये भीकजीके द्वारा गौतमी ब्राह्मणी, व्याय, सर्प, मृत्यु और कालके संवादका वर्णन

नारश्यं नमसूज्य नां वैच नरेस्त्रम्।
देशे सरस्तर्शे स्प्रांते तते जनमूद्येरचेत्॥
अस्यवीये नाराव्यास्थ्यस्य व्यव्यान् अस्योत् अस्योः
नित्यसम्य नरस्या अस्ति, अस्यो स्थान प्रवादे
कानेवास्य भगवती सरस्तती और अस्यो क्या व्यवि वेद्यासम्यो क्याच्या करके आसूरी स्थानिकोयर विजयमारिकृतिक स्थान्यसम्बद्धे सुन् करकेसस्य व्यवकारम्

वृध्यितं वस-निताम्यः । अपने साथि त्रप्तं करनेकं लिये अनेको सूहन ज्ञान करानचे, विद्यु अनी नेस प्रान पाल नहीं हुआ। बाजोंसे परे हुए आवर्क बर्टर क्या अन्ते गहरे बायको देशकर सुत्रो यदा भी बैन नहीं निरुची। बार-बार अपने क्योंकी ही बाब आही है। क्योंको निरनेकारे इरनेको तरह आपके प्रारंशने राजकी बारा वह भी है—आप क्षुतरे राज्यव हे से हैं और अपनी आंखें आपनी क पूर्वता देशकर में क्योबारको बन्यक्ती क्या क्या क्या है। मेरे ही कारण इसरे-कुले एका भी अपने पुर और बन्ध-बान्धनोस्त्रीत योरे गने हैं, इससे बद्धान द्वाराची कर और क्या हो सकती है? ओह ! मैंने ही अपनोड मोमाना अन्य किया है और मेरे ही हारा अन्य खुट्टोका भी वस हुआ 🖟। आपको इस बु:सम्बंध अवस्थापे स्वीतपर यहे देश पुत्रो हिन्दिः भी प्राप्ति नहीं मिलती। बहि अपने मेर दिन करन चारते 🕯 तो कुळ ऐसा उपदेश दिविषे, किससे मैं परायेकने इस पापसे कुटकारा पा सबै।

धंकारी वह—स्वामान | तुम तो स्वा क्सका है (कार, अपूत्र और ईवस्के समीर है), किर सफ्तेको सुमासूम कर्मीका कारण क्यों मानते हैं ? सस्तवनें अस्तकका कर्म्स्यीन सरमा अस्त्या सूहम और इतिकोकी म्यूकिके बाहर है। इस विषयों सनकार स्थेन मौतकी व्याननी, न्यान, सर्ग, पृत्यु और कालके संवाहस्था प्राचीत् इतिकालका ज्याहरू दिया करते हैं। पूर्वकालमें गौतकी अनकाली एक पूर्व व्याननी थीं, को शालिके स्वाध्यमें हानी इति की । एक दिन जाने देखा, आके इकालीते केंद्रेको साँको हैत दिया और व्यावधी पृत्यु है गानी । इत्तरेद्वीचे अर्थुनका सामके एक कोलिकेने जह स्वीवको जालने व्याव दिवस और अनक्ष्यह जो जीवकीके कार स्वाच्छा कालने व्यावकों, वै किस वाह इसका का कार्न ? इसे जालने हुई आलमें हतेका है या इसके हारीएके हम्मो-पूक्के कर अर्थु । जालकाकी हत्या करनेवाला कर वाणी सर्ग आप अधिक कारकाक व्यावकों हत्या करनेवाला कर वाणी

गीरवीरे वया—अवृंग्य । तू अभी प्रदान है, इसे



[ 511 ] सं० म० ( खण्ड—दो ) ४४

कीय है। का पारनेने कोना नहीं है। होन्यासको कोई टाल नहीं सकता, इस गामको नानकर की इसकी जोशा करके कीन मनुष्य अपने कार कारका कोड़ा हकोचा ? इसको नार कारनेने पेरा पुत्र कीना नहीं हो सकता और इसको नीनिक कोड़ देनेने की कोई हाने नहीं होगी; किर इस कीना प्राणीकी इसक करके कीन अगान नकाने को ?

म्बापने कहा—देशि | मैं कामता है, को-मुद्दे रवेन मिनी भी जानीको कहने दहा देख इसी तदा दुःवर्ध हो को है। में अनेह को काम पूजारे किने हैं। मेरा का नित्ता हो का है, अरः मैं इस नीय सर्वको अवस्था कर कार्नुन्छ। हुए भी हसके पारे वालेवर अरले पूजारा कोम्ब साम हेना:

पॉरपॉने कहा—पूजा जैसे लोगोको पुत-कोकको खेक नहीं स्ताली। स्थान पूजा सदा करोगे हैं। इस खो है। इस बारमध्यी पूजा इसी लग्द होनेवाली की, इस्तीको में इस सर्वको नारवेंने अस्ताकत हैं। तू भी कोजासामक कर्यात कर और इस करोंने अस्ताकतो क्षण बालो इसे क्षेत्र है।

व्यापने का — व्यापनि ? प्राह्मको वारतेने ही त्याप है। मीठनी मेरने—अर्थुत्या । प्राहमके बेद करके को का कारनेने मचा साथ होता है ? अरब्बे क्षुटकारा न देनेसे किस कायनाओं दियों, हो जाती है ? क्या कारता है कि में साथि अपरामको हमा न करों ? जना किस्सीरने मोज्ञादिको प्रधानो प्राह्मत गई ?

म्माधने का—नीतनी | इस एक सरियो क्यूनेरे प्रमुक्तेके बीकनमी रक्त करना है (क्योंकि यह क्यू डीकिट क्यू के महूरोको कारेगा) । अनेक्येची कार लेकर एक बीकारी एक करना कवानि जीवत नहीं है। वर्गको व्यवनेकारे कुछ स्वताबीका स्वान कर होंगे हैं: इस्तरियो कुछ भी इस कार्य सर्वकार्थ कर स्वता ।

मीनवी काते हैं—वृतिहित | ब्यायके कर-कर क्यामानेवर की महायाना गीतको क्या अर्थको भारतेका विचार नहीं किया के कथाओ वैदित होकर कीर-और क्षेत्र कैया हुआ व्या स्वेप कही कठिनकीर अपनेको शिवारकर मनुष्यानी बालीमें कोरव—'ओ नाहान अर्थुन्छ ! हालो वेटा क्या होता है ? मैं हो प्रशासित हैं। मृत्यूचे मुझे बेरित विचार है, स्रोतिक कहनेने मैंने हुए नारावाको क्षेत्र है, कोण करके का मधनी हकानो नहीं। और हुलो कुछ अन्ताब है हो वह वेटा नहीं, मृत्यूचा है।'

म्बाधने कहा—जो सर्व ! जबवि चूने दूसनेके अधीन होकर जह मार जिला है नवादि चू भी इसमें करण वो है ही, इसलिये हैरा भी अपराय है। असः शुद्धे भी शह करण काहिने। स्तरिने बहा—बैसे एका और यहा जादि निर्देशका याति राजनेने कारण होते हुए भी कुम्हारके सर्थान है, इस्सीरचे कारण नहीं माने काते, इसी उत्पार में भी मृत्युके अधीन है। साथ हुने मुहार को अध्यक्ता सम्बन्ध है, यह सीमा नहीं है।

न्याननं का—्यू जनराजका काल या कर्ता न भी हो हो भी कारणायी मृत्यू को हुन्यते ही कारण हुई है, इस्तरिये में हुए क्या सम्बद्धा है। सेवा | दू कारकारात और कुर है। इसके क्षेत्र होका भी अल्लेको केकपुर सामित करवेके विनो कर्ता बहुत कर्ता कर का है ?

विने क्यां—न्यान ! वैने क्यानके का अल्ब्स् होन अपिने असूरि कार्य है, किंदु कार्या पर को गई निरमा ! इसी कवार इस कारावका क्या मुझे गई निरमा पाहिने; क्योंक कारावने कृत् हो अवसमी है।

वीवार्क करके हैं—राजन् । पुरमुक्त जेरवासे वारक्वाको कैरनेकारक सर्वेष काम इस तरह जाको सराहाँ है एए था, जहीं करका पुराष्ट्रि आकार इस जाकर काल्या आराव्य किया—'शर्व ' कारकारी सेवासों की सुद्धे हैंकि किया का, इस्तिनों इस वारकारी किराहारों मार्स में बारका है और मं हु है है। मेरे इस वारकारों कालने हैं। सारिकार, राजस और करका किरने की काल है, के सब वारकारी है हेरवासे जाकर-अनुष्य काल है, कार्य आराव्यो है। यह सार करका है कारकार अनुसरक करनेकारक है। संसारने किराने की कारकार है बारकार अनुसरक करनेकारक है। संसारने किराने कारकार है बारकार केंद्र किराने कारकार की तु पुत्री रोख कारकार है कार है? कार संसारको जानकार की तु पुत्री रोख कारकार है की ह की विश्लित कर्ती है।'

स्परि कहा—कृत्ये । मैं से न तुन्ने तोची मानता हूँ न निर्देश । मेरा कहाना इसका ही है कि तुने कुछे सारकारणे कारनेके विको हैरिय किया का । इस विकाल कारकार भी होता है जा नहीं ? इसकी स्वीच मुझे नहीं करनी है और निर्मा करनेका मुझे सोई सम्बद्धा भी नहीं है । परंतु मेरे उत्पर को होन सराव्या संका है, सम्बद्धा निम्मारण को मुझे देसे भी हो करना ही साहिते । पेट स्थानक का नहीं है कि मेरे कहते मुस्ता होन साहित हो जान ।

कारणा, सार्थे अनुंशको क्या—अब वे तूरे पृत्युकी कार सुर सी। में सर्वक निर्देश हैं, असः मुझे कवनवे बीकार कार्य कह न है।

व्यक्ते बार-सर्व ! की तेरी और मृत्युकी भी शास सुन्।, इससे तेरी निर्देशका नहीं सिन्ह होती : इस बारायाने

बिनायमें दून केनों ही करना हो, सक: मैं केनोकों ही अपराधी पानता है, किसीको भी निरंपराण नहीं जनता। सम्बन्धेको कुन्तमे कलनेकले इस कुन कुन इसक पुरुको Plant & I

मुक्ते वहा—स्थल । पून क्षेत्रे कालके कालेन हैं, फिल्ह है और अध्या पूजन कव्यनेवाले हैं। और यू जब्दी कहा निवार करेगा से इन संबंध नहीं प्रतीय होने। चलक्ने के कोई कान हो दह है का सब कारकार हो प्रेरकारों होता है।

का प्रकार करने बाते के ही रही भी समाना भाई करन आ पहेला और सर्प, पुस्तु कवा महेरियोगो समूच वारचे पहले क्रमा--'जान । मै, पुस्तु तक का को बोई को अवसकी नहीं है। प्रार्थिकोची पुरस्के इसकेन प्रेरण नहीं है। इस बारकाने के कर्न विका था, अरोधे प्रस्की कृत्यु हुई है, प्रस्के Rentell press and it serve to this grape feithe क्षेत्रिये को-को वर्तन कराना प्रकार है करा रेक्ट है, सर्वे प्रधार गरुमा अपने निर्म पूर्व पानिक अनुसार हो पान प्रकारके पार भोगा। है। विशे प्रवार क्षा और क्रमा केरी पाठ एक पुरारेके मेरने पाने हैं, उसने तरह पाने और पाने पी देख-कुरोसे सम्बद्ध होते हैं ( इस सम्बद विश्वार करनेसे हैं, हू.

। युगु, प्रम् अवन्य न्य पूर्व उद्यान्त्री कोई नी कारकारी पृत्यो कारण नहीं है। यह विष्कु सके ही अनवी मृत्यूने भारत है।"

कारके का प्रकार कालेनर कैवनी प्रकारीको क निक्रम हो गया कि समुख्यको सपने कर्मके अनुसार ही करा निरम्प है, स्वरः सारे अर्थुन्यमे चक्र—'मान । समयुव क्रा करको सक्ते कर, सां क पृत् करन हो है, क् अभी ही कर्नने नदा है। जु करियते कोड दे और बारन तथा कृत की अपने-अपने प्रकारों को जाते।

बेन्द्र्य करे हैं—बर्क्स बाल, मृत्यु तक सर्व की अपने के की ही पारे पने और अर्थका उन्हें पीता। प्रकारिक की क्षेत्र का के गया। प्रतिकृत । प्रत अवस्थानको सुनका हुन श्राप्ति धारण करो; सोकर्ते न च्यो । एक यनुष्य अवने अवने कार्नीय अनुसार विकलेकाले लोकोने ही जाते हैं। कुन्ने का कुनेंकरने कुक् नहीं दिला है। कारको है भा साथै काला है, जाने समझ स्वास्त्रोका riger florer & c

रेजन्यराज्ये कार्रे हैं--धीमणीकी व्याचन सुनकर व्यक्तिकारी वर्षक राज्य पुरिविषयी विश्वत पूर्व हो पानी तथा वे कुर: वर्गीकावाद प्रश्न करने समे ।

#### अतिबि-सत्कारके विषयमें सुदर्शनका उपारचान

काराय रेजार पुरसुपर विकास कार्यः है ?

मेंगरबेरे कहा—कुछ गुरुश्रमे किए प्रकार वर्णका सामान रेकर क्यूकर कियम जारू की है, उसके जिनकों एक प्राचीन इतिहररका कहरण दिवा जात है। प्रधानी कहते हता कु कुरता, नैसरका नाम का इक्ष्माकु । कका इक्ष्माकु सुर्वके राज्यन र्वेकानी थे, उन्होंने ही युक्तेको प्रत्य विच्या उन्होंने वृक्ते पुरका नाम ब्रह्मक का, जो महीकारी नजरीने काम करता था। यह यह है वर्गाव और सावन्याओं 🙃 । इत्या पूर भी बढ़ा बर्मान्य सा, म्य इस पूजपहरूर रूपा गरिएको नामसे प्रसिद्ध हुआ। यदिगको कृतिनाम्का नाम हुन्छ, क्षे महान् तेयसी बाद अस्ते विश्वविकास सुर्वपालक पूर्व हुम्ल । सुवीरसे पूर्वव और बुनीवसे कुर्वेक्स्सा क्य हुमा, जो स्वितीकुमारके समान कारियम् सा। यह समझ रामविंगीये हेट समझा कहा था। बहाबा प्रसुद्धार उनके समान का। वह संस्थानों कची पीड़े पैर नहीं हराया का। सरके राज्यमें इन्ह परनेपादि वर्ण करते हैं। अहक अध

मुन्तिको पुरा--निवास । क्या विक्री पुराधने धनेका । क्रांच और क्या क्या प्रकारके सा, प्रमु और क्य-बालक्षे वरिपूर्ण का। कालेंड राह्नों कोई केन, बु:सी, रोगी या कृतिह पहुंच नहीं का। एक पूर्वियर अध्यक्त अक्षर, मूहनाई, विश्वविदे क्षेत्र व वेक्क्वेकाच, विश्वविद्या, क्रांच्या, क्येक्स कंपनकार और परकारी का। यह कारी अपनी प्रश्ने अहेश न्हीं करक का ( काल-कालकर स्ट्रोडिंग अनुहान करत), प्रत्य केरक, इन देश और विशोधन की सरकर नहीं सरका का । 🕮 बेर-केराज़ीका पर्यापन विद्वार का १ एक बार देवनहीं नर्वक का पुरुषरिक्रम असमा क्षेत्रन अस्त्री पदी धन गरी। क्रोंकरने आने गाँके एक क्रम्प्स्टेक्क क्रम जात की, विकास का क पुरसंग । यह मानके अनुसार हो साववे थी कुरार्थन भी : उसके पहले संसाराधे केवी सुन्दरी की नहीं जपत्र र्ख भी : राजपुरमधे सर्वाजनर सद्भाद अधिके आसक से नमें : उन्होंने अञ्चलका कर करण करके राजसे अर बस्ताओ मीच। तसने श्रमको सुन्यकारों परमान् आहेरो यह करकर मौज — 'अधिकेष ! अस्पन्यते इस कररकी रहाके दिस्से सक इसके समीप कन होगा।' अक्रिने 'एवपका' काकर पुष्पक्षी आर्थेश शीवान कर सी । वाले आवाक स्वर्धनारी । नगरीके समेव अधिनेकती क्वीकी सुनी है । अधिन दिशाबी विस्तव करते समय स्वर्धनों में उसका कृति विस्ता था ।

प्राप्ता, एक झॉनने कन्यने नक्यपानेते विक्रिक कर को अधिकेको समित कर दिया और अधिने वैदिक विविधे अनुसार सुवर्धनाओं सरको पत्नी करका । क्षाका कर, क्षापात, अस्य कुल, क्षाप्रेसकी पान और क्षेत्रक देखार अधिक पहा प्रस्त हर और क्वोंने काने नशीकर क्रारोकः विकार विकार पूछा कारा पहुल् आने नर्परे एक पर प्रथा, विकास कर प्रदर्शन रहा गया। यह प्रयोग पूर्व काराने साम कोई था और को बकानों है करान पर्यक्रमा प्राप हो गया था। उन देनो प्राप्त गुर्फ रिक्नम भोजान हुए पृथ्वेत एक क्यों थे। उसे सोवकी गानवारी एक कथा थी, के देवकानके समान कुमूर्व थी। इन्हेंने राजे आवार अपनी कान्य कुरवेगको नार्वपानी अवन बार है। पुरुषि ओपनानि क्रम कुरुवेग्ने कुछ गुरूप-कांका पाल करने रहते। ये को क्षेत्रकर और केवाओं से । अनेदें का अधिक कर भी कि में साम करना भी मृत्यूको चीत हैंगा। एक दिन प्रकारने अनने पार्ट अंकानीने बहु—'कारानी । पुर बानी विनी सरिनेन्द्री purch physics to treat a flore-flow weigh artificial इंडोप हो, पहन्या कर को देती क्या। अन्य प्रदीर कर क्षरवेद्धा भी अवतर आ प्राप्त हो जाने वाची राजक निवार य पहला: क्योंकि मुहक्कोंके देखे करिक-लेक्को क्यान कारत कोई को भी है। और हाई केंद्र पान पान है से हर सद्य इस बारको यद रहन्य।

व्या कृतवार कोणवारिने होनों हुना कोड़ जनकरों संगाबर पान — 'सामानाथ ! काणवार कामने कोई भी ऐसा सार्थ नहीं है, को मैं र बार राज्हें हैं सम्बाद्ध एक दिन कार्यकृत सुराईन पहारी सारिया सार्थके दिनों पान को हुए थे, वर्ध सामा कार्य करार एक सब्दान कार्यिकों सार्थों आपा और कोणवारित पाने सम्बा— 'कृत्यों ! वर्ध पुन पुस्तकोंकिय बर्गकर आपा कार्यों हो के मेव सामान्य पाने !' सामान्यों हैसा पानेगर कर पानिकों समान्या करें।' सामान्यों सामा पूर्वन किया और सामान सम्बाद केंग्रेस विकेश सामान्यकार है ? सामान्य ! अन्यकों किया पानुकों सामान्यकार है ? सामान्य ! अन्यकों कार्य केंग्रेस कार्यकों पुस्तक कर्यकों पान्य सामान्यकों हे यो अन्यक्ष करिए कार्यकों मेरा दिना बार्य करते !' राजकान्यकों सुरारी कोई अन्यक्ष पानु

प्रतिनों: पित्या और मोर्ड पन्न नहीं पनि । सन जी अपने कार्यको अञ्चलक स्थल हो अस्य और जाने समाने नामाने 'जे कारत का प्रकारक केवर सीवार कर सिवा। कारपर, प्राप्तवे पात्रप्रकार ओक्सीचे साथ परी भीता अनेप किया। बोडी है। यह शांत्रिक सुरुतेन समित्र रेक्ट तीव और स्वानके प्रान्त प्रोध्धा अवसे प्रांको पुरान्ते तका का करवार कुछ, 'देने ! पूर वर्ष करने गर्ना ?' विकास राज्यामा अन्ति साम्येको कोई जार नहीं केते की । अविभिन्नको साथे हुए स्वकृतने केनी इत्योधे सम्बद्ध राजी विकास, प्राणे का अलेको कुँक तत की हो। असः क्रा केंद्रे स्त्रीता होता का पूर के पत्री, पूर्व की बोल प क्रमी । एक प्रदर्भन विका पुरस्तन-पुरस्तानक स्थाने समय--- 'नेरी कारों को कहा है ? का कहा करने करने ? येथे सेवारी कहाता कीन का पुरात कार्य अपन्य आ यह ? यह सामा पानके की और ताल क्षेत्रकार्य केंद्र परिवास करते आहा पहलेको उत्त पुरस्कारों को अपने कावल पेरा प्राप्ता करों नहीं करती ?"

का प्राच्या शासको भीता की हुए प्राप्तको सरका क्रिक-'अधिकृत्यत् । हुने कातून क्षेत्र कार्यने कि मै men & ale gut urer attifelt und ann fi कुछ कोने अभिन-सामान्त्रे क्रूप नेचे क्रूम पूर्व करनेका mur fin f. un 40 på på men firm å i pelike अनुसार पद प्रमुखी नेरी होकने क्रारिक्त हाँ है, अन्य अप हुई के बीक प्रतित हो यह करे हैं जोतु सुन्तीन कर, कारी, केंद्र और दिल्लाने भी होनां और क्रोधका स्थल कर पूर्व से । वे डेक्टे-डेक्टे केले-"मिल्बर ! अल अपनी इंदल पूर्व बोर्डिको, प्रताने पुत्रो बढ़ी प्रसारता है। क्योंकि पर्याप जाने पूर् अधिका पूर्व काम पुरस्के दिने सकी का को है। विका पुरस्कोंक करका उसका हुआ आदिनिक पुनिता होकार काला है, अनके रिन्ने अनने बहुबार कुना कोई वर्ष नहीं बातक क्या है। मेरे प्राप्त, येरी को प्राप्त की पाल को पुरु कर-कैरना A. m. von arfoliebe Rock Propert S--- feien 42 um fe रका है। कुर्जी, बाबू, जान्यका, कर, केंद्र, कुट्टी, असरा, नर, पाल और विवार —ने पर केन्द्रा जानियोध प्रारीती कार राज में उनके का-पुन्तार होड़े राजी है।"

कुरहं नके इक्ता कार्य है कार्य दिसामीसे मानाव सार्थ— 'हुक्ता कार्य कार्य है, इसमें हुक्ता तेव की नहीं है (' कार्याम् का मानाव कार्यमों कार निकाद और दिश्वके अनुकृत करते की लेक्योची प्रतिकारित कार्या होत वर्णस्य कुर्यान्त्री इन्योगित करते केरल—'अतिकृतार । दुक्ता



कारणाय हो, मैं को है और सुक्तो साराओं परीक्षा नेतेके हैंको जाई साथा था। एवंचे साथ है, या पारावार पुत्ते पाई अस्तार हुई है। एउसे इस प्रमुखो, यो साथ हुन्याय हैंकों प्रश्नीत होचार पृत्तु हुन्यारे अस्तीय हो पत्ते हैं। बस्तेह ! सुक्ती की जहीं परिकास और सामाई है। होंनों स्तेकोके पीसार किसी भी पुरुष्यों हुन्यों हुन्या यह क्यों है हैंद यह हुन्या और अस्ति सामाय हेंस् में स्तेत । यह क्यों प्रतिकारण हुए। तथा सुन्यारे गुलोसे साम सुरक्ति है। बोई भी हुन्यान प्रमुख नहीं बार स्त्यान । यह सो में बार कामने हुन्से नियासोगी, यह स्त्या है होती, नियास नहीं हो प्रावति। असने सर्वानस्त्री पुत्र यह झुन्यानित की संस्थानों

परिका प्रतिके दिन्ने अपने अपने प्रारंगित अनेपानी परिका क्षेत्र नहीं होगी और अन्ते प्रशित्ते हुन्हारी सेना करती प्रोती। हुन भी इसके साथ अपनी सरकारों जाते हुए उन सरकार सोकोंने नवन परिने, महरित किर इस संस्तारों बीटना नहीं पहला। हुनने मृत्युको जीत तिरुव है, इस्तियों हुन इसी पेड़ारे का स्वतान सोकोंने पानोंगे। अपने परिकार के प्रश्न पुरस्कानिक हैं अन्यादस्त हुनने परिन और को है। इस पुरस्कानिक हैं अन्यादस्त हुनने परिन और कोचन विकाद पा सी है हमा इस सम्बद्धारोंने भी हुन्हारी केमाने असर्तिक, राज, असरका, सेन्नु और होड़ काहि कोचनों जीत दिन्हा है।

नेक्से कर्त है-अधित । स्थान्त, देवतम ३५ भी उन्तर रच रेन्कर कुर्ज़नके निवले आये । इस प्रकार करने (अमेरी-कामरो) पृत् सामा, सेप, पहणूर, सुद् कार, पर, अकार, कार और क्रोक्को की बीत रिका। इस्तीनो पूर्व अपने कार्ने का निश्चन सकते कि गुरुश पुरुषके रिक्टे अभिनिक्ते ब्यूबार कुरता करेड़े देखता नहीं है। वर्षि अधिक चुँका क्षेत्रर कर-हो-कर पुरावके करवाजका निकर को से काले के कर निरुद्ध है, अरबी की कांध्रे भी कुरूब को हे एकती, देख करिये विद्वारोक्य करण है। के पुरुष क्षाता और सुवील अतिरिक्त आनेपर सरका रवकान नहीं करता, चंद्र अशिक्षि कर गृहरकतो अधने। पाप दे जाका पुरूष लेकर कता जाता है। केव । तुक्ती तसके अनुसार कृतेकाली कृत नुस्ताने विकासकार मृत्यूवर विकास चर्ची थी, व्या जन्म प्रवासनाथ मेरी तुम्मी कहा। भी निहार, अविदिन सुरक्षंनके इस बरिजको कड़कर सुराता 🕏 या पुरुक्तकेकोको प्राप्त होता है। (वे सराजारण पुरुषोके चरित है, सामास्य पर्याचेको इनका अनुकाल नहीं करना

### विश्वापित्रके जन्मकी कथा और उनके पुत्रोंके नाम

वृधिहित्ते पूर्णा--विकास ! और तीनो वर्णोद स्तृत्योधे | हिन्दे प्रमुख्यान प्राप्त सत्तान कीन है तो स्वाप्त किन्न्रविक श्रीत्व क्षेत्रत की प्रमुख्य कैसे के नके ? मैं इस स्वाप्त विवार्णकारों सुन्तर स्वाप्त हैं। त्याप काले की कृष्य करें। सीन्त्रवीरे क्या---वृधिहित ! पूर्वकारने विकासित्यों

क्षेत्रको का—पुनिद्धिर ! पूर्वकारते विकारितको कृतिन क्षेत्रर की विस प्रकार क्ष्मान तथा कार्मि हुए, उस प्रतिको हुन क्षाविकाने सुने । क्षात्रको कृत कार्मीह

जनक राजा हुए थे, उनके पुत न्यारश्च कहु थे, विश्वीते श्रीतकेको जन्मी पूर्व कराक था। बहुका पुत सिन्दुईच और सिन्दुईचका पुर कराकता था, जासे करावका साथ हुआ, को स्थानक दिल्ला नामिक स्थान था। जाने इसके स्थान कारिकान् एक पुर हुआ, विश्वास पान कुरिया था। कुरियाके पुत न्याराज करि हुए। उनके कोई पुत नहीं था, इस्तिको वे संस्थानकी हुकारों करने स्थान पहानुहान करने रुगे। वहाँ कारो उन्हें एक कन्या जार हुई, जो इस क्यांवर अनुवय सुन्दर्श थी। अस समय कामके दुन विकास समाधी जानीकमृतिने समाने उस अन्याके तिने कामन की। इस राजा गाविने कहा--'मृतुनकर! असर मुझे जुल्काकरने एक इन्सर हैने कोई ता दीनिये, जो कामको इन्सर कामिताम् भीर अनुके समान केमबान् हो अस किनके एक काम काम रंगके हो।'

मा कुम्बर अवन्तुत मार्गक पुरिते वराने स्थाने शिक्षितम्बर माराने पास मारार मारा— केलेह । वै असरी एकार्यगर्ध एक माराना, माराना केलेह समार मार्गितम्बर समा मार्गक सम्बर केलाम एक समार केलेकी किए समार है।' क्याने कहा—'महा समार केलेको किले हैं। मार्ग समार है।' किला माराना केलेह समार हो काले ।' मेरवात समार केला करते हैं क्यानक समार सामेग्रा स्थान सामितार एक समार नेका केले महाके माराने समार हो गर्थ। माराना



वेद रूपम पर क्रांजिके पास है है। वद स्वाप उच्च की स्वेगोंने अवसीकेंद्र नामके अभिन्तु है। सहस्वर, व्यांकिने असन होकर के केंद्रे राजा गाविको बन्नाके सुरुक्तकोंने अर्थन कर दिने। वह देखकर राजाको क्या अध्यानं हुन्य और अर्थन कर देशे अपनी बन्नाको क्या और आपूक्तकोंने अर्थन्त करके उसका व्यांकिन्द्रिको स्वयं क्या कर दिया। अद्यांकि अस बन्नाका विकित्य पाणिकाम विकास क्या कर देश क्षा भी को परिवासे साहर बहुत प्रश्न हुई। क्षारवर्तिक कार्यको व्यक्तिकपुरिको वहा संस्थेत हुआ और उन्हेंने अने क्यान देनेकी प्रका जार की। एसकाथने पर सारा क्रकार अपने कालो कहा। के सुरकर करकी माता केली-पेटी। हुम्हरे परिची कुछार भी कुछ करती व्यक्ति । उसी क्यों, से मुझे भी पुत प्रदान करें; क्योंकि क्रमणी संबंधी ब्यून बढ़ी है : वे सम बुद्ध बारनेने समर्थ हैं।" कारणी जाहर कवार पारकती होत प्रतिके पाह रहते और राज्यों कई हुई बात उसने उसने निवेदन कर है। उसकी कारक अधिका कनको सुर्वाको सावकारी क्क-'दिने । वेरी कुलसे तुन्हरी सत्ताको यो सीव है ५क कुल्यान् पुराची प्राप्ति होती, हुन्हात प्रेमपूर्ण अनुरोध निकास ची करण, हुन्हों राजेरे भी हंड गुल्कर पुर करत होता, विकाले हमारी पंक-परमाय करेग्ड्रे । तुन्हारी माता प्रदुक्तानके काम केरलके कृतक अस्तिक को और तुम कुरस्के क्ष्मण, इससे कुन केनोको पुस्की आहि क्षेत्री । सुनकोनोकै fint fit it if warge um bure fint & pritt que it हुन का रोजा और कुला अपनी चौको किस्स देता। देवत करनेते हुए क्षेत्रीय कुछ होते हे यह सुरक्षर साववर्तको अहा हाँ हुन्य । जन्मे स्वामिकपुरिनारे बाह्रो ह्यां प्रतारे बाह्रे अस्पते मानको कुछ में और मा क्षेत्री भएओंको सी कर्या की । सब अन्यद्वे पाताने सक्-'केटी ! हुन्हरे कानीने जन्मते अधिवारिक करके के का पुजारे रेजने दिया है, यह से पूर्व है के और मैस पुर्व के हो । इसी प्रकार प्रश्लोग प्रकृति की समान्यक का ले। में सुक्षा में है, की मेरी मार व्यवस्थि केल संबंधी से ऐसा ही बती (

इस अवार कार्यांव कार्यं का केंग्रे वॉ-केटीचे ऐसा है विका और कर केंग्रेंके गर्य रह गया। यहिं क्योंकर क्यें वहा गर्मव्यों सामकर्मियी क्षेत्र कुछ्पा किया से क्यें पर्यों वहा मेर हुआ और ये कार्य कहने करे—'युने ! बात पहला है कुल्लेग्रेंने कर और क्योंकर्स कार्यकर काश्तर अपवेंग्र किया था और हुन्तरी फालके कर्मो समझा क्षांत्रिकोतिल स्तितकी कार्यक की थी। मैंने का सोमा वा कि हुन्तर पर्यों कियुक्त में विकास पुल्लेग्रास अक्तान हुन करात्र होगां और हुन्तरी में एक नितित् क्रिक्त हुन्तरी असके होगां और हुन्तरी में एक नितित् क्रिक्त हुन्तरी असके मन्तरे कें अस्त अक्तान कार्यक्रें कार्य हुन्तरी असके मन्तरे कें अस्त अक्तान कार्य होगां और सुप्र करोर कर्म करनेवाले क्षांत्रको क्या होगी। सामके केंग्रे क्यांत्र सुप्तने वह अक्ता कार्य नहीं किया।' परिश्ली कार्य सुनकर सरवाती होशांत्र संस्त् हेका पृथ्वित कि वह । ब्रोड़ देखें उक को के हुआ से वह समर्थित करवोंने सिर रसकर केसी—'आहें ! मैं 'कावकी पार्ट हैं और आवको जास करना काती हैं, जुलार कृता कीविते ! मेरा कुन क्षतिय न हो ! मेरे पुरुषा कुन को 'ही बटोर कर्म करनेवाल हो कान, परंतु केरा कुन हैता न हो, सुते बड़ी कर देखिने !' उस उन पहलाकोंने अवनी कार्यों कार-''काका, ऐसा ही हो !'

' तक्त्यार, एतकातीने कार्यात कार्या कृत कार्या किया और राज्य गाविकी कार्याक्ष्मी पार्थने कार्याकपृथिकी कृतासे ब्रह्ममादी विदार्थनाओं क्या दिया : इसीले क्यानकर्ती विद्यापित प्राप्तानकर्ति प्राप्ता हुए और अधिन होकार की उन्होंने प्राप्तानकर्त्वा कार्यात क्यानी : उन्होंने कृत को कार्यात केंद्रालेख, प्राप्तानकंक्ष्मी क्यानेकांने और गोवकी प्रमुख केंद्रालेख, प्राप्तानकंक्ष्मी क्यानेकांने आहें गोवकी प्रमुख्या व्यान्त्राच्या, त्यूच, व्याप्त, व्याप्त्य, संव्याच्या, व्याप्त्युच, व्याप्त्य, व्या, व्याप्त्युचन, त्यांत्युच, व्याप्त्यं, व्

# स्वामिभक्त एवं दयालु पुरुवकी बेहता बतलाते हुए इन्द्र और तोनेके संवादका उल्लेख

पुण्डिको का-जिलामा । सन् में क्यानु और क्या । पुण्डिक पुण्डेकर कांग सुरुष क्यान है, कृत करते : क्यानुष्टे ।

। भीषाकी वहा—पुणिहर । इस विकास भी केलेके स्था क्षेत्रका को संबद्धा हुक्त था, व्या अपनेन प्रतिकार करान रहा 🌓 सुनो—कारियाको प्रत्यको कर 🐧 एक काक किन्ते शुक्राचा हुता साम रेक्टर गरेको निकास और हका-कार मुगोंको हैदने राजा र एक यने जंजराजे जारेका जो खेड़ी 🛊 हैरभर शुक्र पून विभागी को । उसने उन पुन्तेको स्थान करके बाग परवान; बिद्ध निसान कुछ बानेसे बह बाग एक बहुन् क्यों की नवा और जाका तीहक किए तते पृक्ष केल गमा, इससे अस्ते कल और को इन्हें को और कह कुछ बीर-बीरे सुक्तने सम्ब । उसके कोक्स्टेमी ब्यून बिनोसे एक स्रोक निवास करता था। जल्का इस कुक्के साथ कहा हेव बा, इसरियों का उसके मुकारेका की उसे क्रोड़कर कहीं करत नहीं पहला था। उसने सबूर निकलन बंद कर दिना और बाए कुन्य की ब्रोड क्रिया; अतः अब कारो क्रेस्टरक नहीं भागा कः। इस प्रकार कः वर्गातक कृष्य कृतकारमकः उस कुछके साथ अपने प्ररापको भी सुकाने सन्य। अस्ती उदारता, वैचे, अलेन्डिक चेष्ठा और कुक्-सुकने समान पृष्टि देशका इन्हरो सह अधार्य हुआ। वित्र उन्हेंने का खेळकर मनको सम्बाध्य कि 'इसमें आक्रवेंकी कोई कह नहीं है,

क्योंक इस कन्न रक जनिकोचे शब शक्की वाले देखनेने

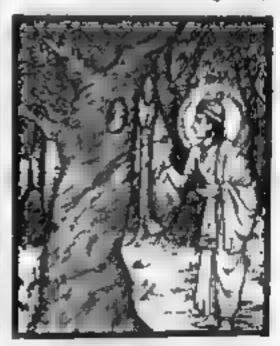


आती है।' करनकर, इन्ह पृथ्वीपर उत्तरे और सङ्गणका कम बारण करके उस प्रश्नीने चीले—'पश्चिमोर्थे हेड्ड शुक्त। मैं एक बात पृक्रक है, हम इस प्रक्रको बोद क्यों नहीं हेते ?' इसके इस प्रकार पुरानेपर संतेने मस्तक हुन्दा कर प्रधान किया और बाह—'देवतम । आपका सामा है। मैंने करने । उन्होंने जरकी कारतुकारे संब्रुह होकर बाहा—'तून मुहसरे सरोवरको आपको पहल्क निरम है।' उसको बाद सुनका इस्से पर-ही-पर बाह--बाह, बाह असूह विद्यान है । विस क्योंने प्रकार असे असे अस्ता कारण पूछा हुए मार्क - 'स्ट्रक । इस महारा न परे हैं, न मार और न आ इसके कार कोई पक्षी ही रहता है। यह उत्तर कह बंदार पक्ष हरन है, से हम हम जूनी प्रकार निवर्तरने को हे ? मार्थ और भी हो ज्यूजनो कुछ है, जिनके कोक्ट क्योरे को हर है, को देवारेने सुन्या-हरे-को है कक विकास करन कारेके रिले काची कार-कुल केंग्नूर है। इस प्रकार सार् सम्बार है नवी है, जब इसमें काले-कुरलेकी कृष्टि नहीं को बंधा यह निःसार और सीक्षेत्र क्षेत्र पास है। आहः अन्तर्थ मुक्ति सेम-निकारकर इस हुते हेंद्रको हुए उत्तर है।"

मेरको सहते हैं—कर्ताना कुछने इसकी बाद कुरका राजी स्वीत क्षेत्रने पूर् क्षेत्र पार्लाने प्रक्र—पेतराम । क्षेत्र हती बुक्तर क्या दिला और वहीं सुबार अव्हे-अव्हे जुल शीने है। इसने अध्ये कारको समान नेरी बात को उत्तर क्युओंके आध्यानों क्याचा है, इस्तिनों इस कृतका नेर्ड मही परित है। मैं इसे होहाता और साई साथ जो पहला. इपालन वर्णका पालन कर रहा है। ऐसी कालों काल कुछ करके का रूप सामा करों है हो है ? जाए पुरस्के हैं है कृतरोगर दमा करना 🛊 सम्बो न्यून्त् वर्ण कारकवा गांव 🛊 -स्थानक । यह देवनाओं क्येंद्र किन्कों संख् हेना है हे के जानक गुजाबार अल्पने के पूछले हैं, प्रतिनिध्ने अल्पनो केन्त्रजोसर एमा करावा एक है, अब: अस भूते कर मुक्तको स्थापनेके मेरने न काहिने; बस्तेकि कर कह पूर स्वकृते क्रमर्थ था, जर कुल्प को मैंने क्रमिक स्क्राने जीवन बारण विकास और अस्य का का प्रतिकृति हो एक के हुने होईका भार है, यह कैसे हे सम्बद्ध है ?"

केरेकी कोवल कथी सुरकर इनको कहे जलाता हुई।

कोई कर जीने हैं उस कुछने कहा—'यह वह पहलेबीकी क्या हर-वर्ष है कर ।' जरबी परित और होत-समान देशकार प्रमान्ते और भी अस्तान वहूं। क्यूनि तरंत ही अनुकारी कर्ष करके कर कुछको सीच दिन । दिन हो करमें को-को परे, यस और परेश्वर प्राप्तारे नियम आयी। केरेको सुद्ध परिन्दे कारण यह दक्ष पूर्ववर् होसावा हो एक एक व्य पूर्व भी आद समझ हेनेतर अपने द्वादर्ज कार्यके कारण इसलेकाने कह हुना। करण् है की पुरुषा स्थाप करत कुल्ले अपने क्षेत्रे हाँ स्थेत अप हे क्ये, जो अवल अपनेने गाँक रक्षनेवाले प्रकार स्वास



क्या प्रकेट पहुन क्षाची समूचं बालाई हिन्दू का

#### भाग्यकी अपेक्षा पुरुवार्षकी बेहुता

कुविकेन पुरा—निरम्पा । देन (पराप) और पुराधनि | सहस्त्रीते पुरा—'परावन् ३ प्राप्ता और महण्ये प्रस्ताने करेन सेष्ट है ?

मीनवीरे कहा—सुविद्यार ! इस विकासे करिया और | महारमीके संकारका एक अधीन इतिहासका सहारण दिया | वीताने ही बीच पैटा होता और वीताने ही पाल सपता होता है : भारत है। पूर्वकारको न्यूकों करियुओंने सोकविकामा विस्तार सेको मानार कैस बीच को आता है, अरीके अनुसार

Permit Rem \$ 7"

सरायोगे कह--विका बीकोई कोई बीज पैछ नहीं होती।

क्साबों पत्र विस्तात 🛊 । इसी प्रवास पुरूष का कर केंग्स कर्न बिला जाता है बैसा ही पाल प्रकु होता है । वैसे बीच बोतने केने दिन कर नहीं है स्थात करे ज्यार जरवा भी पुरवासीड विक काम नहीं देता। कार्य कारनेकारत पनुष्य अवने कार्य करें कर्मका कर कर्प है चेनक है, यह तक संकरने प्राथक दिसाची हेती है। सुन कर्न करनेसे सुन और कर कानेसे रूक मैसरा है। पुरवार्थी यनुष्य सर्वत सम्बन्ध पर्वत है, बैंदर् के निवारमा है, यह पायवर नगड हैक्कानेट सर्वार करता हुए ह भोगता है। पर्का सम्प्रती सन, सीम्बन्ध और क्रम प्रकारके रेस मानु कर रेजा है। इस प्रकार कर्नने सब कुछ निरंत सकता है, परंतु मानके मरोसे की ब्योक्स निकालके उससे बार मही मिलता हुस जगत्वे कृत्वाचं करनेके वर्ग, चीन, प्रतिक्र अर्थेर विकास-पूर सम्बन्धी अस्तरीक क्षेत्री है। प्रकृत, पान, पहर, प्रमुख्य, कुर्व और प्रमु आहे देखक पुरुषको प्रस्ते ही मनुष्यानेकारे वेकारेकाचे नवे है। यो लोग उद्योग वहीं कारे को का, नितः हेवले अथना क्रांच सक्तीको थी हाहै। को क्रे क्रमाति । कंप्यूत, वर्ष्ट्रस्य, क्रांत्र्योग, क्रम्यो के पूर्णाकारे राज सीर्थ एवं प्रशासने हीन पुरुषको पर नहीं निरादा । यो पुरुष न वाले केवल केवल परेले केवा पुरु है, यह गर्नुसमानो पति बनानेनासी बीमरि तथा कर्ज है 🛠 हा आता है। पुरुषार्थ करनेवर अनुअवहे देखोः अनुसार करा निस्त कास है: जिल्हे कुरमान कैंडे रहनेका हैन जिल्होंको कोई कर की है : प्रकार । देवता भी अवनी कारावाधी आह्यानो प्रक: | वे सार्व कर्त करावी है।

प्युच्चके करपाधिक कार्यमें क्वंबर विक्र करप करते 🕏 बिह्न पुरुवाका पुरुवाक के क्या विराह्य सकते हैं ? पूर्वकारकों क्या क्याने केवल सर्वते पत्र हो को हो भी उनके नहियोंने अवने कुण्यक्ष्मीते हुन: उन्हें सर्गाने पहेला दिया। इसी सरह प्रकार पुर राजार्थ पुरस्का की प्रमुखीके प्रकार कर्मको प्राप्त 🙀 । चैके कागकी एक किननारी भी इकके सहरेसे सम्परित बेकर जान कर करन करने हैं, उसे उसार के भी पुरुवार्यको सहारकारो बद्धा हो बादा है। बिस प्रकार तेल प्रमाण हो जानेका कृषक बुद्ध जाता है, उसी प्रचार कर्मके नाह हेनेसे हैर की पह है करते हैं। विकास मनुष्य बहुत को अनुष् क्यार, वस-वस्त्रोद भीन और विश्वीको प्रमार भी जन्मा उन्धेन नहीं कर सरकत । को कुन करनेके बारक निर्मेप हो नमा है, हैले मानुकाने कार काने कारानी कारण देखा। भी च्येको 🖫 अतः ज्ञाच्या पर प्रमुक्तकेवाची अगेशा केष्ठ केरलेक-सर कर करते हैं। जिल्ला कर्त कर भूति केरा, के वर पति क्रमण समुद्रिते को हो हो की वेदकारतीयाँ हाहिने स्थलाको क्रम है। पन्त्रों क्रोन्क्रीन पहुल क्रमान-सामा स्ट्री हिमानों देख । देवने प्रतनी सरका नहीं है कि का क्रमाने पर्द हर पुरुषके सम्बन्धित पहिल्ल है। येते किया पुरुष्के आहे करके बरावा है, उसी कहा है। पुरुषार्थका है अनुसरक करता है। प्रतिक निरम हास पुरुषाई ही देखके यहाँ पाहता है, से कार है। क्षीतार्थ । भी सह पुरतार्थी प्रत्यो हेन्स्स है

### कर्मोंके फलका वर्णन तथा ब्रेड ब्राह्मणोंकी प्रशंसा

पुरिवरिते पुरु—विकास । अस कर्म्य द्वार कालीक । पालीका कर्णन व्यक्तिके :

प्रीमानी वह-भारत । हम को कुछ पूर्व हो हो, पह प्राप्तियोके निजे भी रहस्तका विक्य है; बिज तुनों बराज रहा है, सुने । मरनेके बाद जिस पुरुषको जैसी पति विश्वती है, उसका भी क्लैन करता है। क्लूक वितर अवस्थाने को सुध क असूब कर्म करता है कुरत क्या शतक क्रमेशर जाने अकरकारें कर कर्मकर पारू को जात है। वॉकों इकिकोर्स किये अनेकारे कर्मका कभी जारा नहीं होता, इससम्बे बनुवाबों अधित है कि पदि कोई असिनि परपर आ जान से अलावे प्रकार हर्द्दारे हेके. उसकी भेगायें यन लगाये, बीडी कोली कोलकर उसे संस्था करे. सम न्या सामें एको तो इसके पीछे-पीछे कुछ दुस्तक नाम और क्ष्माच्या व्या हो, उसके कागत-सत्तारमें तथा हो --व्या चीव काम करन गहरूके रिने पहरशिक का बहररात है। से अंके-वर्षे, अवशिवेत प्रतिकारों अल्लातापूर्वक क्रम सून स्तात है, को पहल पुरूष-पुरुषको आहे। होती है। यह अतिक्रिकी पुरुषे हिन्दे अस्तर, पेर योगेको सल, क्षेत्रक, अस और कारीयो एका देल है, जाका भी कह अतिथि-सारवार पहार्थका पत्र कालता है।

को रखेन कोई तर करक करके क्यूतरेपर सोते हैं, उन्हें क्रमें क्यूने क्यून कर और क्यून आदिकी क्रांप होती है। निवसपूर्वक और और सन्यास धारत कानेवालोको वस तथा अवंश्वरण क्या होते हैं। चीम और तपासामें प्रवत क्रमेक्टबेको उत्प-लाग बाइनोकी प्राप्ति होती है। अप्रिकी उत्तरन फरनेको राजको प्रक्रि नको है। से अनन हिए नीचे करके सटकता है, जानीचे सक्त स्थात है सका सदा अनेत्रते क्या करक है. उसे मध्येकनिकत पनि आह होती है। जो लायुर्विने कावर कीर-कावा (पान) को प्राप्त हो सर्गयानी होता है, औ अक्षय लोकोबी-पानि होती है । कुछो कर निवस्त | कुछेड करणकार वार्थिक कर्मका बार मैकरने है और उसके। है. बैनातका अवसम्बन कानेते सराके इस अस्त कान करानेको प्रवीद (कायुरिसीट्र) प्राप्त होती है। तनाको धीप-माराजी निकारी है और महावर्षके पालनसे आयु बक्की है। अहिता-धर्मके आयरणसे छन, चेतुर्ग और असेन्य छन्न होते 🕯 । करा, जार कालेकलेको राज्य और परे ककार कलेकाचे-को वर्गको प्राप्ति होती है। करवास करवेवाले बहुवाको प्राप्त सुद्धा निरुद्धा है। सामाज्यारीओ नोचन और तुमा न्यान्य करने-मारोबारे कर्राच्ये क्याचील होती है। यो प्राह्मण स्था चार चीकर पुला, अधिकेश करता और यक-सावनाने संस्था द्वारा है, जो प्रका विकास है। विकास का कार्यकार सक्वेकेको जान है। को पूरत बारह क्लेंसिकके रिक्ट कार्यों केंद्रा लेकर अवस्था कान बारत और वीचेंनि कान करना सहय है, जो रलपुरिजें प्राप्त ज्ञाननेवाले नीरके की क्यापर ज्ञान सोकावी प्राप्ति केवी 🛊 । को राज्यने वेद्रीका अध्यक्त कर्मा 🖢 का स्थानन क्रुको हर पाता है तथा जो कार्यक्रड कर्मका आवरण करना है, को क्षानिकेकारी प्राप्ति होती है। वैसे कहक इकते केरोके क्रीको भी अपनी पाताबंधे केंद्र नेता है, इसी गरह पहलेका फिला हजा कार्ग कर्ताको प्रकारकार जनका अनुसरक धारतः है। विकर प्रकार पूरत और पूरू किसीकी हेरका न होनेक भी उपने समयक पुराने- काले राजा है, की है पूर्वपालक विका हुआ कर्म भी सम्बद्धार काम केल ही है। क्यूनको जीवी (परातका) क्षेत्रेयर अस्त्रे केंद्र, होत, आँच और कार यो बीजें हे जाने हैं, केवार तुवन नहीं बीजें होती। बनुवा किस भारती विकास जन्म बारत है, अन्त उपलान की उन्हां है बारे हैं। जिस करेंने माताको संबुद्ध करता है, उनसे पृथ्यीकी भी पुरु हो जाते हैं उच्च विस्तों का उपलब्धकों का पहला है. इसके हुना प्रदानी पूजा सम्बद्ध हो जाते हैं। वैस्तर इन सैन्वेक आहा किया उसके द्वारा चाने सन्दर्भ कर्मेका आहर हो पता और जिसमें प्रस्का जनवर किया जनकी समूर्य प्रक्रिक क्रिमाई निकारः हो बाती है। इस प्रकार सुम्बद्धार करू-प्रदेश-के सम्बद्धने मुनिवर स्वस्त्वीने के कुछ बन्नस्य 🗷, 🕦 🕬 मैंने तुन्हें सुना दिया। अब और क्या सुनना काले हो ?

कृषिक्षेत्रे पूक-शिवास्त ! क्याले कृष्णीय स्क्रेन है ? अपन विरुक्ति कालकार भूतते हैं ? विरुक्ति सुद्धा (बाहू) स्वक्रे 🖣 ? **वही-से-वही आ**पतिये पहलेकर आम विकासी स्वरण करते है ? तथा इस क्षेत्र और पालोकों दिलकारक कार्न कक्ष है ? में सारी करों नहीं करानेकी कृषा कीविये ।

चीनावीर सक्र-विशिष्ट ! विश्वेद कुलमें कोसे सेकर

लिने करने करने इन्छ जी पत्नो, ऐने है खेगोकी में स्कू कता है। के निर्वेशपानो निवासका बजो, इक्लिका संकर रको और मेही-मेही को करते हैं; को प्राप्तके निहान, प्राथमार्थ, अक्षर-मण्योद्ध प्राप्त और सरकृत्य है, उनके द्वारो नेक्के कवन सम्बंध और कामानवर्ध मनेक वाणी समयो केरी है। बाद कर स्थानकारोची कर्त हुने से से अरे हारतेक र्कत करकेको भी सुद्ध पहिन्दिकारी होती है। से प्रतिदित इनके प्रकारिको स्थान पानो है, से विद्यालकुरको सम्बद्ध होते है ( हैंसे सब्द कुरूरे करा उनके ओलाओको पुत्रो सब्द करा करी रहती है । यह जोन परिवा कारते प्रधाननेकी एडिस्के दिनो उन्हें आहे बंग्यो कराने हुए सुद्ध और स्वसिष्ट अस पर्यक्तो है, वे भी मेरे बड़े किए हैं। फेट ? कुलीब, धर्माना, सरकी और निवृत्त् प्रायूना हेर्नको कर कोन कहे, की मैं सामान्य प्रकार भी होता है। कारोबों कर प्रमुख्य । पूर्व संस्तरने कुरते बकुतर केय दिए कोई नहीं है, किंगू सकाम चुने कुमते भी अधिक किए हैं। और के करा, अपने विच्या, विकास, वर्तन सुरक्षेत्रके भी की सामी क्रमानंतरे अधिक दिन नहीं नन्तुम । केरे प्राप्त प्रवासनेकेंट कारी, विक्रीपत् भी अपन्यार नहीं होता । की पन, पानी और पानी प्रमुक्तिका को क्षेत्र-कहा अस्तर विका है, अधिक प्रधानित अप कार्यकार के करेगर भी पूर्व भीड़ भी केती। स्रोग को माहानीका नाम बहुते हैं, इससे नुहे बहु प्रेसेन होता है। प्रवास्थित केन हैं सबसे बहुत परित कर्न है। प्रवासकी हेकाने रहतेकारे एकाओं किय निर्माण और पवित्र लोकीकी प्राहित हेकी है, क्यों में महीने देश का है। तम ब्रॉल हो खो भी अन्यक्रमणकोः स्थि अन्ति स्थेपोधे पाना है।

बुविधीर ! केरे विक्वोंके देखे परिवर्ध सेवा ही संस्तरमें कानो कहा धर्म है, चीर ही उनका देवता कहा नहीं परकारित कान गांव है, उसी प्रकार अधिकोर रिको काहरूकी रोगा ही काम कर्न तक प्रांताम ही देवता और मरपानी है । हरिन हो वर्गको अवस्थाका और साम्राम कर वर्गको साम्राद हो से पी 🙉 क्रेमेको जात्वर कुर और विशासे समान सम्हाना नाहिने 🥫 उनमें प्राप्तन किया है और अधिय पत्र । जन: प्राप्तनोची पूर्णके समानक, पुरानी पाँकि उक्तान तथा अधिकी पाँदि क्षेत्रको करने कहेने। सरह, स्तनगढी और समक्ष जानकोड देलचे राने युनेवाले हेतु आद्वानीची सख ही सेवा करनी कविने । चुकिहिर ! सुद्धे हमेला इस कारको और हुद्धि रक्ती व्यक्ति कि प्रकारके वर्ग बीवनन्त्रिके हिन्दे अपरायद् सामारे प्रेयत है या जो ?

#### गीरह और वानरकी कथा—ब्राह्मणको प्रतिज्ञा करके न देने और उसका यन लेनेसे दोव

केंग्सी प्रतिका करके किए मोहमक नहीं देते, उनकी करा नहीं केरी है ?

बीक्जीने कार-बेटा ! यो देनेकी प्रतिहा करते की स्त्री हैता, यह चौजनवर के कुछ होता, यन क्या कर अती कुछ कर्म करता है, यह सम यह हो बाता है। वर्गक्रकके विद्वारोंका करना है कि एक इसल एकपानमें केहीका कर कानेवर प्रतिक्राच्युके पापने कुटकारा विकास है। इस विकास सिमार और मानत्वे संवादका एक प्राचीन इतिहासमा बुहाना दिया जाता है। पूर्वकारको साम है, क्या कियार और मानर एक सालवर निर्मेश के केवी एकंक्यके मनुष्य और परस्यर निर्मा में । कृतरी मेरिके इस्ते निरमार और मानरकी मेरिनों क्या रेन्स बद्धा का। कियारको मरकाने बुद्धे कात हैक नागरी पूर्वजनका करण करके चूक--'वैचा !



कुँक्षित्रे पुरा—निवास्त ! को स्थेन प्राह्मलोको कृत | हुको पूर्वनको स्थीत-सा पर्वका पाप किया का, विसर्क कारण हुन्हें बरकाने कुलाके केना सक्त हुआ मूर्व सामा पत्रक है ?" रिज्यारे कराव रिज-'वैने प्रशासको दान क्षेत्रके प्रतिक करके नहीं दिया; इसी पानके कारक पूछे इस कारकेरिकें साथ होना पड़ा है। अल्हा, अस तुम बंदाओ, हमने ऐसा एक कर किया, वितासे काम है गए ?' अन्ध केल - में का अक्नोक कर पुरावर का पास करता का, प्राप्ते करारे कारर हुआ। अतः विद्य पुरुषके कथी (बहुरराक्त कर नहीं तेला साहित्रे, इस्तेर प्राच वाणी विवास ची काम करेने और यह जो पर देखी प्रतिश की गरी के के अवस्था है जाना कड़िये।"

ebreit mit 8-gleifer! perfeit Renteit प्रकृतको प्रवास अध्यान गाँ जनम साहिते । यहि साहराहे कोई अवराध भी हो साथ से और हत्य का देश पाहिने। कारण, श्रीष अंच्या क्षेत्र केरेयर की विस्ती आकृतासः अवस्थान अर्थ कारण काहिने । प्यारंत को उन्हें निवारी पासकी आक्षा नहीं केरी साहित्री और सहि है ही हो पूरी बाली साहित्री; क्योंकि कार्यको से हाँ आक्राके एक सेनेवर प्राह्मण सीमार्ग नरकर फिल्ली ओर देखता है को उसी प्रकार नाम कर क्रमां है, केरे पाल-क्रमार्थ कान । सिंह बड़े प्राव्हान कर काका-पूर्विते संद्र्य क्रेकर कार्याचीर केता है तो का कराके रिन्ने औपन्ये समान हे पाता है तथा सबसे पुर-पीत, सन्द्र, क्ष्मक, पत्र, मन्द्री, नगर और देशका कान्यान करके जो प्रतिकारके करून है। इस पुक्रीयर सहस्रो विसर्गानार कुर्विकके अवन्य रेजनी चौति सन्त्राधका रेज की देवानेते अन्या है। इस्टीको जो उत्तम केन्सि कथ लेक कहता हो, उसे प्रकारको देनेको प्रतिका की हाँ वस्तु अवस्थ है इस्तानी व्यक्ति । इस रकेवली साक्ष्मको कम देशेने देवता और विश्वर दार क्रेरो है: इस्लेंको किन्नन् पुरूष प्राह्मकोको अवस्य दान है। लक्षण नक्षम् तीर्थ कार्न जाते हैं। ये निवती की सथव करवर का जार्च से किया सरकार किये उन्हें नहीं जाने देवा चाहिये ।

# शुक्को विशेष उपदेश देनेसे अनर्शकी प्राप्ति—एक शुद्ध और मुनिकी कथा

कुषितिसे पुत्र-कुद्रामी ! यदि यदेई मनुष्य सीवर्तनक ! मिली नीच जातिके पुरुषको उन्हेल दे के बसे क्षेत्र समेना क नहीं ? मैं इस कराओं पनार्कात्रकों सुरूब पहला है, क्वेरिक बर्मको यहि बढी सहय है।

धीनकी कर-बेटा ! विसी नीय व्यक्ति प्रत्यको अन्देश नहीं केन काहिये; क्योंकि इससे उपरेस देनेवालेको म्बर्ग केनको प्राप्ति कलकवी जाती है। इस विवयमे यह द्धान्य सुचे, को दुःसमें पढ़े हर एक नीव अभिके पुरुषके pring biel traper trees it : Bonrook Cont. Die um | सुद्ध और परिव कारण या, वर्ड रिज्यू और व्याप्त रिक्स करते है। उसके अध्ययसम्बद्ध का सब करते है कर कहा था। उस आधारने इस और निकारक पारन कारोबारे बाह-में हरकी और देखकी जाइन निकार करने थे। वहाँ रख ओर बेहमचोंके कारणको माने नेवर्ग करी थी। अनेको प्राथमिक प्रति कात संस्थाने वस अवस्थाने क्षेत्र बदा में ने। एक दिन वहीं एक पूर को अध्यक्ते अन्य। शासमञ्जाने मुनियोंने आया यहा आहर विका: करायर. को हम करनेकी हुन्या हो, अतः जाने कुलाबीको केनी बरमेंक पर्य करने करने का—'क्रिकर । वे अन्यरी करने मनिका उन्हेल कुरण पहला है। इसके दिनो असर हते Mont transit das de it will der un f. क्रम अपन्यं प्रत्यमें अस्य है। अन्य पुरुष प्रस्त होत्रने (' कुरुपतिने कहा—'नेव | कहते संन्यात करन with different on one of the resolute their कों भी व सको। को दूसर को क्रांस दिया हे से को, बिह का क्योंको केन किया करे। बेनाने कुई आरम कार संबोधी प्रति हेची, इसने बनेवा के स्रोक कर्ती है।"

क्राव्यक्रिक हैता बहुनेकर बहु हो भी राज 'बाव बहुने क्या करना करीचे ? कार्य मेले क्रमान हेमा है निवास हो से भी में को बार्ड कर्मना को मेंने करको दिन कर पहल \$*े* पर विकास करने का अवस्त्रों कु सकर एक फर्नावरी करायी और वहां करते हैंग्ले बेडी, करेडे डिग्रे प्रधान और देवारान करवार यह निवस्तुनीय पूर्व राज्य । यह stille françois per avec see buttel mor केरताओं एका, बर्टिर और होने किया करता था। परस्कार करके इन्हिलेको करूने प्रस्ता और उसके चल यो उस शीर कर आदि प्रदात को, उन्हों उन्हें हुए अधिनिकेट सम्बद्ध करक स्त । इस निकास्य काला करते हुए उस स्व मुनिको बहुत प्रथम की। गया। एक बेर एक मुने सर्वागकी दक्षिणे का कालगरर प्रकारे। पुत्रने विकित्ता कारत-प्रत्यार करके उन्हें संख्या किया। उनसे में परत नेकारी क्यांका व्यक्ति वह स्थाने निरामेंक निर्म वर्ष अनेकी मार साथे । एक बार छाने का तसकी पनिसे कक-'वने ! मैं मितरिया बाद्य करन प्रकृत है, अन कृत करके हर कार्यको सम्पन्न कछ दीवियो ।' पुनिने 'ब्ब्ब्य अव्यव' कहाना इसकी प्रार्थन जीवार कर ही, इन कुट करियों पान विवेदन विज्ञा और संभारते कुछ, अस्तन, पदाई और उसा

अभीर बाद्योपकोची सामान एकतिय विकास किर का समर्था पुरिनोर अर्थकानुसार पुद्मालन् पुरते पुरत, साम्रो और पुम्म-पाम्म साम्री प्रानंत्र प्रत्येको सम्पूर्ण विकास पामन-विकास इस प्राचार का बाद्याका कार्य सम्प्रा हो गया हो। वे पुनि कार्य विका सेवार करें को और पुरू वर्धकारी विकास के गया।

कारक, ईनंबलका काल बन्धे का चुले बन्धे है जल-राज किया और अपने चुनको प्रधानने यह एक प्रकारको सहार नेकाले सारकोड करने सरक हुआ। इसी प्रकार का कराबी कुरिये भी सरकानुसार कृतुओं जाहा then all models girftels und um einen finm : हर प्रदा का का और ने ज़ीन एक है स्थापन जन्म हुए. कार-ई-समा को और अनेको निकालीने उनीन हुए। भारते के, कान और न्योरिक्सको पूर्व परिवास प्राप्त किया क्या क्षेत्रकारको भी क्षेत्रक क्षेत्र क्षेत्रको क्षेत्र का दियों कर को समाक केल्पाल है गया। तय तयाने का राजकुनारको स्थापितका है विभा। समा क्रेनेस कार्ने पुरेशिकोड कार्ने अन्यत हुए व्यक्तिको ही अन्यत पुरेशिक क्या । जो हा कामो आने एककर नह कर्नक्रेंक प्रमान पाल करन क्रम को सकते धूने स्था। पुरेशियाँ प्रतिकृत राजाने प्राप्ति वाल्या पुरुषाह्मात्री राजा कोई क्षांबर करने करने के राज को देशका मुस्तारका के क्रमान के पान का प्रोक्रिक एक एक व्यक्ताओं अनेको का राज्य किया। यह को मानद अपना अकसे क्रमा क्रमा के उनके कार्ने यह रोग हुआ। एक हिन उन्हेंने क्कान्यों समाते निरम्बर कक्क-'राज्य । यदि आर्थ कुल्प अस्ता हो से में एक यर मौनत जातत है। सिद् पहले जान प्रतिक की कि मैं को कुछ पहुँचा, जाला स्क्री-स्क्री कार देने।' राजाने कहा--'हॉ-इॉ. करि कारता वेकेन से अवस्य जा देता।

का पुरेशियों कहा—'प्रतिशिय हैएका है का इन्याक्तवार का और कोई मानिक कृत्य सरका साथि। हेन साथि कावेंने में प्रकृत होता है, तब आप मेरी और देशका हैता करते हैं, इसका क्या कारण है? आप वो है। वह हैता, इसका सकर कोई-ए-कोई कारण होगा, जो टीक-टीक कारकारों। में सुननेके रिजे बहुत सर्वक है।' कवाने कहा—'विस्तार! में कृतिकारों हुए का और साथ व्यान करती प्रकृत से। उस समय आपने मुहत्यर कृता करके को जेनते नुते साकृतिकाक उन्देश किया था। असान, कुना और हमा-कारकारी विकि बदावी सी। उसी

कर्मदेवके करण कार इस करने पुरोधेत हर है और मुझे क्या होनेका सीधान्य प्रदा हजा है। मेरे स्वयंके प्रेक्षे उन्हेंब वारनेका करा आक्को इस कवर्षे विका ! यह सोकार युहे केरी जाती है। कापका अध्यक्त कारोके हिन्ने में उत्तकत नहीं बारता) वर्षोचि अस्य मेरे तुरु है। आवस्त्रे को अस्त्री रपमाने निर्मात करा धेकन का, अल्बो का करके मुहे केंद्र और संबंध हुआ करता है। जुले सारके पूर्वजनकी शारि क्षेत्री वर्ष है, इसीसे आरची ओर देखका है।वर बा शासकी जानी कही हरका केवल कुछे कार्यक्र हेनेके बालक गृह हो गयी, हरारियो अस पूर्वदिक्ता क्ष्म क्षीकार हेला प्रकार मोरिक्ने, विहासे अन्तरे बान्यों आवतो प्रतने भी नीय मोनिये न काल को।"

भीनमें करते हैं—इस प्रकार समाने कर पुरेश्वासके क्योपी अपन से से उन्होंने साथ का और क्यीन-कारहर प्रकृतिको कर कर है जा विकृत प्रकृतिक पहले अनुसार करोर अध्यय काल करते हुए अनेको सेवॉब कार किया और उत्तरनीको भी तथा सन्य प्रधानके पर केवर शर्म अनःवरमध्ये चरित्र कर विश्व । सन्वत्यः वन्त्रहे |

पहले करके हे अपने पूर्वअधके हैं आक्रमार गये और सही करोर तकाव करने सने । वयके प्रथमको उन्होंने परप्रसिक्षि क्रम कर की और देश सामानके क्रमेक्से समाम व्यक्तिके भी वे राज्यानकाम का नवे । बुधिहिर ! कावि वे पूर्वकारों पहल गानि से से भी सहस्ते अरोह हैनेहें कारण नदे कहारे का गये, अतः अक्टमको मिसी नीज कर्मक मनुष्यक्षेत्र और क्ष्मेश्व नहीं करण कार्युचे। साहाय, इतिया और केश्य-में और वर्ष क्षेत्र बद्धाराते हैं, इसके मैक्ने क्लेड करोड़े काल केवल करों की हैता। तकः वर्ग-मारानावी प्रकार रहानेकारे विद्वान् प्रकारो सूच क्षेत्र-क्षत्रका अनेह करन क्षत्रिके । चेत्रगास्त्री सहिते रुप्तेम वेरेकरण पर्यूच करने ही कांची हार्न करता है। यह कोई तक को से सबसे कहा सेफ-फिलाएकर एक हैंदबार विकार करनेक जनका जार देश साहित्रे तथा करनेसा ऐसा करन करिये, विवासे करियों पूर्वि हो । राज्य । कार्यसमें सम्बन्धे ने उन्हें करें मेरे हुन्हें बतानी। नीमको उन्हेंस वेचे नाम देवाचा पानच करना चारा है, इसरिये औ क्ष्मेंस देश और भी है।

### युचिहिरके विविध प्रश्नोका उत्तर तथा दानके लिये उत्तम पात्रका लक्षण

कुष्मिते पुरस्-वितासक् ! स्वेत्यसम्बद्धाः स्वर्धेन्यस्थि निर्मात वारोची इक्त शरनेवारो महत्वको एक वारत कार्यने ? केरन क्षणान बनावर सोवाने बोवक-कार्य कार्य भाषिये ?

भीनवीरे कह-नेदा ! इरोस्ते डीन, कारीके बाद और ममो तीन-इस तत्त्व कुल इस प्रधानके करीका स्था करण वादिने । दिस्स, चोरी और परव्योगम्य-ने हीन क्षाँएके क्षेत्रेकाले पान है, इसका सर्वक व्यक्तिक करना भीता है। कार्य कारक, करक, निहुद कार्य कहारा, कुराती कारा और प्रत केलग्र—वे चार कर्मक्रक डेनेकारे का हैं। इसें न सभी कवारपर स्वाह काहेने और ४ करने हैं सोकता व्यक्ति । तुरस्रोका वन इक्कोब्डी इच्छा न करना, सम प्राणिनीयर देश रहता और कार्रीका करा अकार मिरन्त्र है—इस कारणर विकास करवा—ने और कसी कामान कार्नेकेम कार्न है। इसे प्रश्न करना काहने और इसके मिपरित दूसरोके बनका साराव करना, सन्दर्भ प्राणियोसे के रकता और क्योंके करूपा किवास न करना—चे तीर सम्परिक पार हैं, इससे सद्ध को सूना । कार्यकोधसूरि—इन कर देवस्थियोका यह सुने ।

कार्किने । इस्तरिपते अनुस्कात कार्यका 🛊 कि बहु यस, बास्ती क प्रतिको कनी अञ्चय कर्न न को; क्वांकि क्षा कुन क राष्ट्रम केल कर्न करता है, अलब्द करा औ चेकड़ THE R.

विकास प्रथ—रिवास । विकासित सहस्र है कि हेक्कारी प्रकारको परिका न को, किंदु संदर्भे सक्त्य उत्तबी गरीका करे। प्रथम क्या कारण है ?

र्वकारी का केत । का बेमारे केवानेकी रिक्षि अवस्था अधीर नहीं, देशराचे अधीर है। इसमें कोई संदेह न्हीं कि करफान त्येन देखकां को कुमारे ही बहा करते हैं। भिन्न साज-मार्थाते हिन्दीह प्राथमको 🗷 असीन है। असः अस्ये एक केवनेक प्रक्रमांको ही नियम्बर करना करिये. च्य मुद्रिकर् पार्वकारकोने कहा पहलेसे ही बता रहत है।

वृधिक्रेररे पुक्र-विकास ! को अपरिवित विकास सम्बन्धे, काली जनक यह करनेवारे हों, अहींको क्यों तनक का करन करेंगे ?

क्षेत्रकोरे कह-इस विश्वमें पृथ्वी, कादवय, आहे और

बैटन हरेंग गराबर नह है बाता है, अमें प्रकार करना, अञ्चलक और प्रतिवद--कृत तीन पुरिवर्धने अधिकाः करननेवाले प्राक्तकर्गे सारे नुकार्गीका तक 🛊 नाता 🛊 ।

बराज्य करते हैं—को प्रत्यंत्र कीरको चील है, को को अहोतको के, अंक और पुरस्का हम का काम सुराने सम्य-ने प्रश्न विकास को प्रश्न की की प्रकार कर सकते।

श्री कर्ष रे—चे प्रक्रम सम्बन्ध सर्वेश सर्वेश च्या व्यापित काला और अवने व्यापन को पाने राज्या है तथा को अवनी विकाद बावले कुरतेके बाहरू बाह करत है, यह अपेर अब होतार स्थापन बाल नहीं करता. शतः को पालवाद क्षेत्रोकी जारे हेती है।

कांन्येक्ट कार्त हिन्दीर सरकृत एक कार्यून एक कृता अक्षेत्र-व्यामी और कुलेने सामग्रे राज्यार ग्रीत बाब से भी र बारे में सारे अपनेय-बार सामंद्र अपनेत बराबर भी होंगे का नहीं ?

वीकार्य कार्त हैं--बुनिहर 1 क्रा कारत अवल नेकार्य पुश्री, बरायन, अपि और व्यवेकोननी प्राप्तानोके विकास अपन्य-अपना मंत्र प्रकार करते. कर्त गर्ने ।

कृषिकेने कुल-कुक्यों । यह अक्रवादे (Mark wigh बीवन करते हैं तो (क्लाब कर यह हो जानेसे) को दिस हुमा कुन बैतो सकत हो सबला है ?

प्रेमकी का-राज्य । विम्ने पुरते विका वर्गेला इक्सप्रे-जन पालन करनेका अर्थक है रखा है, से आहेती क्यालाने हैं। ऐसे केवले प्रारंगत आदिही हाहान गाँव ब्याहने भीजर करते हैं से उनका अचल हो इस बहु होना है (इससे क्षतायस कम नहीं दुनित होता) \* (

पुर्वती नार्वती है—जिसा प्रकार महासम्बदने देखता हुआ। १ वर्गक समान और कार अनेक प्रकारक हैं; इसमें क्या कराना है, यह बारोब्डे कब बरे।

> क्षेत्रकोरे कहा-केटा । अधिला, सल, असमेव/ योगस्या, प्रविकारिक और सरस्या—ने वर्गके निश्चित लक्ष्म है। को लोग इस क्ष्मीका कुर-क्ष्मार वर्वकी प्रसंकाः वे कर्ष है, विकृतने इतक आवश्य पड़ी करते, वे क्षक्की है। ऐसे स्वेनोको को छोना, यह, नौ और अक जारे कहुई इन करता है, वह जाको पहुंचर हुए क्वेंतिक निका काम है। क्रमा से पाँ, या पान-पैतना पांच क्रमेश्वर क्रमानी, करते, इतार्थ और एन एवं योक्स कुरोबे पुर कुराको उत्तर कार्यको परियोको विक्रका मोद्या होता है। को पूर्व व्यक्तिक्षेत्रके समय आये हुए इक्टमर्ग इक्टमर्ग अस भी हेते. वे प्राथमय लोगोर्थ **100** (100

gfeifert ger-freiers ; mer segrad um \$? वर्गका सकते केंद्र सक्तान करते हैं ? जबत सर्वोचन परिवास किने कर्म है ? यह क्यांको क्रम मोचिने ।

चेन्त्रमें क्या-बात । मांस और महिरामा हान प्रात्मकोते की होतु है (अरबोद नही काम प्रात्मकों है) । मैदोका नव्यक्ति निवास स्थान सम्बद्धे केंद्र वर्ध है तथा वय और pfysikal ferminal sitth und rung if malien offere by

पुरिवोर्त पूरा-काइमी । जनुस्तको विका स्थल कार्यक कृत्य करण पार्विते ? यक अधीवार्यनक व्यक्त केना कारिये ? क्या विश्व संबंध सक्त-योगीमें प्रयुत्त होना व्यक्ति ?

वीकार्याने कहा--- राजान् । पूर्वाह्मये आधीषाधीवदेश व्यान हेक करिये, अध्यक्त वर्षका रोचन करना कार्यने और कुरिकेस्ने पुर्क-कितामकः। विद्वारोज्य स्थान है कि अनके अनको सुक-भोगमें प्रवृत्त होना पाहिये। विदरी

<sup>&</sup>quot;बाद्रमें यंत्रन करनेवाच ब्रह्मकोई निकार सुनिकोंने इस प्रकार उत्तरेक मिलत है—'क्सेन्स्रितकोनिहाः पक्राविकारचारियाः विज्ञानुस्तर्वेत सहस्यः साहरस्यः । तथा—"स्तरस्थानि टीन्डिं साहे कोट पोक्रेस्' । सहसर्व यह वि कियान्ति, तस्त्री, प्रतायक सेका करनेकले, बहुकर्य तथा विश्व-व्यक्तके पर्य—ने पाँच प्रवारके बहुक बहुकी सन्त्री है—हन्हें चोवन करानेसे बाहरकांका पूर्वतय सम्बद्धन होता है। तथा अपनी कन्यका केंद्र बाहरकारी हो तो भी वाल्प्येक उसे बाहरी भोजन करना चाहिये । ऐसा करनेसे कदकर्ता कुम्बार कार्न होता है । केवल कदारें ही ऐसी कुट दी गर्ना है । कदके अविरेक्त और किसी कामि आपकरिको स्वेच आदि दिसामा में उसके अरुको पहु करना है, उसे दोसका मार्ग होना पहुता है और अपने किये हुए दानका भी पूर-पूर परा नहीं मिलता। इसीलिये भारतमें किया है कि 'मनस प्रामृतिक बलमधी कले विशेत्। दाता तप्रतम्पत्रोति प्रतिवाही न दोषपाक् ॥' अर्थात् 'यदि किसी सुच्छ (बहुन्तरी स्वदि) को दल देन हो ने उसका मनमें बहन को और उसे दल देनके उद्देशको हाथमें संबद्धका वस लेकर उसके करने हैं केंद्र है। इसके दावको दानक परत मिल करा है और दान हैनेकलेको दोवका पानी नहीं होन्य पहला। यह बारा सरकारण अध्या कार्यके किये बारायाँ गयाँ है —क्षेत्रकार्यः अस्त्राच

एकमें ही असमा नहीं होना चाहिने। सहामां और गुरुवानेका अस्त-संस्थार करे, सम प्रतिकारिक अनुबार हो, नासका अस्ति स्थान करें। नासका करें। करिया करें करें। नासका प्रतिकार करें। करिया करें करें। करिया करें। करिया करिया है। करिया करिया है। करिया करिया है। करिया करिया करिया है। करिया करिया है। करिया करिया है। करिया करिया करिया है। करिया करिया है। करिया करिया करिया है। करिया है। करिया है। करिया है। करिया हिम्मी करिया है। करिया हिम्मी हिम्

त्रिक्षिरने पूर्ण-केने स्थानको अनुसन सम्बन्ध व्यक्ति ? और मिनको कर हेनेने न्यून्य करवारी प्रदेश केली है ?

विष्णानि नाम-को अधेनतिए, सर्वन्यान्य, सामित्र अदिर इतिहारतेकाने एको यहाँ है देशे अञ्चलकोधी अस्तु युक्त सामाना नाहिने और स्वतिको एक देशेले नाहन् प्रकारी जाति। होती है। निर्मा अधिनात्का नाम नहीं है, को सम्ब प्रकार का ऐसी है। निर्मा अधिनात्का नाम नहीं है, को सम्ब प्रकार का ऐसी है। निर्मा अधिनात्का नाम नहीं है, को निर्माणन, समानं सामित्रिके विस्तारी क्या समाने साम विस्तारमा अस्त स्वानेकारी है, अन्तरे दीना हुआ दान नाहन् का देशेनाका पूजा और समान वास्त्र का हिस्सारमा

है। को विखेंप, परिवा, किन्नन, संबोधी, सत्रवाही और अपने कर्तन्त्वस पालर करनेवाले हैं, उनको दान देनेहे थी-न्यान् परन्यी प्रक्षि होती है। यो हाहान अहरेस्तील पर्से वेद्रोबर अन्यका बरण और अनुसरोबित का बार्से (जन्मन-अन्यान, वनन-वासन और यून-प्रतिव्यु) में अपूर्व करा है, उसे अस्तिनेत द्वतका साम पात करते हैं। क्षम काले हर पुरुषेने पुरु महानोको हिरा हुआ का नक्षम् कल देनेकाल क्षेत्रा है। गुजबान् पुरुषको कुन देनेसे क्याओं इमारकुर कर बिलको है। बाँदे अर्थ्य सुद्धि, प्रत्याकी विकार, सक्कार और सुर्वतिका आदि जान गुजोसे सामा एक प्राप्त भी कर सीवार कर हे से वह कराबे सरावें कुरम्बा दक्षर कर केन है। बना: ऐसे गुजनान् पुरस्को के, मोदा, अश्व, कर तक कुले-दूसरे पहार्थ का कावे साहिये : हेल करनेते पर्यक्रको करनेक कह पश्चासाय नहीं करना पहला । एक भी काम प्राकृत्य सार्व कुरुवको तार सरकता है, की का कर्मुक पुर्वको पुरू हो का हो सहना हो कहा है ? अतः सुकार्यः क्षेत्र काले वाहिते । सामुख्येष्ठाः समाधित पुरुष्प सम्बन परि वर्ष कु भी सुनवी गई से सरको व्यक्ति अपने वर्त कुम्बन पाहिने तक अनका अपनी तरह

#### त्याज्य अञ्च, आञ्चमें निमन्त्रण देनेयोच्य ब्राह्मण, दानपात्र तथा नरक एवं स्वर्ग देनेवाले कर्मोंका विवेचन

मुधितिते का-मिनायह केला और व्यक्तिने सम्बद्धे राज्य, देवपहर्मे तथा विक्त्याने किन-विस सर्वाद्ध विकार किया है, वह में आपके मुंहते सुरस्य काहता है।

पंचानने कहा—केटा । पनुष्यको पाहिके कि काल आहिते परित्र होकर स्ववृत्तिक कार्य क्षणक करके को पानके साथ पूर्वाहों केवसकाको कार्य, अपराह्मों विक्रवार्थ और स्ववाहों पनुष्योंके कार्य (अहिति-सावार आहि) करे । असमयक इस राहरतेका काल साथ कवा है । विक्रव पोज्यपदार्थकों किस्तेने तर्वय दिवा हो, बार लिखा हो, को राहर्म-हाल्या करके तैवार विका लख हो अवका जिससा राहरूम कीकी दृष्टि पड़ी हो, का भी सहस्रोका ही काल है । विस्तेन दिवा लोगोंने विकोश पीटा कवा हो, जिसे कालीन मनुष्यने पोजन किया हो, किस अवको कुलेने हा दिवा हो अववा जिसपर असकी दृष्टि पड़ी हो, जिसमें केवा वा कीने निर स्थे हो, को हरिया का उसंदूरों दृषित हो गया हो अवका जो विरस्तारदूर्वक दिया गया हो, का अब भी राह्मसोंका ही प्रस्त है। करदावसी रहित, सकावारी सभा दुरावारी पुरस्तेका साम्य हुआ, कुसरोका पूटा किया हुआ और केवल, निरुद, जासिक हुआ जो अस है, अने भी पहासीकोजन हो स्थ्यान व्यक्ति। स्थान हुआ जो अस है, अने भी पहासीकोजन हो स्थ्यान व्यक्ति। स्थान हुआ जो अस है, अने भी पहासीकोजन हा स्थान काहिले। स्थान हुआ जोर विकिस होने सामने उस्क हुआ अस स्थान किलमेंने पहासे हुसकारी स्थानकोज विका हिया क्या हो यह स्थान भी सहस्तेका ही व्यक्त स्थान हुआ केवा काम स्थान किया क्या हो यह स्थान भी सहस्तेका ही व्यक्त स्थान क्या है। इस

मनुष्यने प्रोचन किया हो, किस अवको कुतेने वृ तिक हो अब क्षानके चेप्प त्याप्रकारी परीक्षा करनेके विकार्य अवका विसपर अस्की दृष्टि पड़ी हो, जिसमें केव चा कीई। कुछ कहता है, उसे सुने। जो सद्यान परिता, कह पा क्रमत हो गये हो, ये क्रेम्बर्ट का जिल्हार्यने निरम्बर फरेके । जिल्हे पहले कहोर कर्न करके क्रमा लेख किया है, निर् शरिकारी भूति है। विकास करूने समेर कुन हो, को कांग्रे, नपुंतक, राजकान (क्येरिक) और पृत्तीका केनी एक जंबा हो, को भी अपने की कारत करिने हैं कि, पूजरे, पासची, सेथ-पर सेक्नेकले, माने-कक्को और मानकेकले. चीरा-कार्या संस्था दिवानेको, कार्या, प्राच्या, क्रोक क कानेकरे, क्रोको कर्न क्या हैन बनानेकारे प्रदान साहरे निर्माण देखेला भी है। वेजन केवार केंद्र पहानेकारे और पृत्ति नेकर केंद्र पहानको ब्रह्मण भी सरकोर चोच्य नहीं है; क्योंकि के केवले केवलेवारे हैं। के पुर्वत क्रमान्यक अनुस्ता रहा हो और मेंके साले पह प्रार्थिको क्षेत्रे मानु कर रिया हे, यह उन्हान समूर्व विकासीका इस्त होनेस भी संदर्भ कुल्मे केन्द्र जो है। अधिके न कारोपारी, पूर्व केरेकारे, चेरी पार्टकारे, चील, क्षपरिका, गाँउके पुरिवक कक्ष प्रतिकारणीय अनुसर मानके पाने प्रतिकारे प्राञ्चन को शाउने कोवन करने अधिकारी भी है। के सकत क्षत्र के पान तेवार कर प्रातिकोची केवार प्रतिका पाला है, के बीचे अर्थन पाता हो, नेरकावा की हो और संस्कृतका न संस्कृ हो, औ भी बाजने नियमण को देख करिये।

राजा । क्षेत्रका और सामारे परित सामानको अनेका हो पहरत । अन्य क्षण होने और नेनेन्स्तरे हेले पुरस्केता कर्नन करता है को अद्भारी निविद्ध होनेपर भी विनवी निकेष गुरुके कारण अनुसार्वक प्राप्त नामें गर्थ है, इनके विकास सुने । के प्रकृत पेतीने पेरिका करने हुए के प्रकृत फारर मार्गेवारे, स्वपुरसम्बद्ध, क्रियान्य और स्थानिकांक हाता हो, जरें बहुने निकास दिया का सवता है। यो पहले कुल-वर्गका पालन करना हुन्छ भी कुलीन हो, अधिहोता जिल्ही प्रकारणे बहुनेसे हो आञ्चका निम्मान है एका हो से कारत है, एक गोक्का क्रोक्स है, केरी न करता है क्या | निगरिता बहुनको दूसरी मन्त्र आवर केयन नहीं करता को रीजों सन्दर्भ गुरुशीच्या कर करता है, निवासे केरिया | जो सबू-विकास कर सरका है। इसी प्रकार नहें जो करवात है, किमान्ति है, यो समेरे बनी और कारको गरीम । किसी अधिव या कैस्बने पहलेसे निजनत है रसा है और तथा समाने क्यों और रहीर परीच है बात है, किसी | बह बड़ी अपन बाद बोबर का से से होट समझा बीलकी हिंदा नहीं करता तक जिसमें होनोकी कभी है, उसे रे जानेके साथ ही वह पश्-दिसके आने परस्का भागी होता सर्व-विक्रके न करनेकाला और केन्य स्थानमें विक्रक अध्यक्त ब्रह्मों कान विन्ने विना है केवन करता है सकता होनेवाला है, यह साहते नियमक होने केना है। ये लोकाब जान-बहुत्वार सबने वामें सजीव को हर भी

के अधिकेक्स का कान का रिया है, जा सहसे प्रतिक्रीक करनेकेन के बता है। के दन देश केवल पा ब्रोकी कमाने प्रश्न हुआ है अवन के लेगेने लगने केवर केवरपर चीन राज्य पत्र हो, पर शहरों प्रश्नामधी विकेश की है।

के प्रसाम बाद राजा होनेश 'अह कथा' आहे होना कार्यका अंग भी करत, को चैची पूरी करन सामेका का रूपा है। सामने को सद समूत होनेसे 'सद कर्मा का भारतका अकृतन करनेवर विश्वतीको प्रकारत होती है, क्रिक्टे को काको कातीये 'नितर प्रीवन्तार' (दिशर इस हो करी) इस कारणा उद्यान करना करिने और र्करण्डे पर 'अञ्चलपद्' (स्वतुष्टा दन अवन हे) पदन पार्विने । पूर्वी अन्य पन अञ्चलके पार्वी देशवार्ग होता हो से क्राने अध्यानक्रिय पुरस्कृतकारका विवास है (सर्वात् 'क्री पुरुष्पार्व को कारण करें। । अधिको की ओमरररहेर proportion field & (and a form "group" or क्षात्म गरे । एक पैरवरे पर देवकार्थ 'देवका प्रेमार (केक अन्य हो) इस कारणा अनेन को । अन कारण: होनो पानेकि पानीपुहलको किथि सुनी । लहाल, इतिथ तथा केल —हर सेनो क्लेकि कर-क्वारि संस्कर वेदिक मनोके अध्यक्तांच करने काहेने । उन्तरनके सन्तर प्राधनको देवती, इंडिन्सी सम्बद्धारी और बेहनको बर्गाव (एस प्रकारके हुन्। को नेपाल काल करने वाहिने ।

का बात और कर केरेकारेके वर्ग-अवनेक करीन कृषे । प्रकृतको पुर केरलेक वितास पान रचना है, जासे क्षेत्रक क्षांत्रको और कारुपूर्व बेशको स्थान है। परि अतिथि-सम्बारमें प्रमीय हो, को भी नियमान केंग काहिने । । वाहिने । नहि करता है यो कराने होटा समझा नाता है और भी सार्को प्रोचन कराना जा सराज है। जो कांगरित, सार्व ( है। कांग् ) को प्रकार कीनी कांग्रि नहीं हैन-पर्स

६ जब कोई अपने कन्याको इस प्रार्थित स्थापन है कि 'इससे को प्रारंत पुत्र होगा, हते मैं गोद से सैना और अपन कु महैन' से उसे 'पुलिस-करिक अनुसर किया,' करते हैं। इस निकारे पार हेनेकरन कुत साद-पोक्ताम अधिकारी नहीं है।

हारेके वह सामुक्त कर काल करता है, जाको चीकी हुती ( पुत्रको राज्य पहुँकाने अवका मैकरीको प्रवरी पुत्र करनेके कृतक सानेका पाप समात है। को किसी कामक बहुन करके दूसरोसे बन योग्डे हैं. को ब्रुड बोलनेका कर होक है। को प्रकृत, अर्थन अवन्त नेतन के अरम्ब पान न married and mark waterwater अस परेसता है, को भी पामको प्रदो करन कानेका कर सम्बद्धा है।

कृष्योग्ने पुरा—विशास । केन्या अवस्य साहास्त्री यो दान क्षेत्रा काल 🗓 व्या केले मूक्त्रीको हेरेले स्थान् कालको आहेर करानेकारत केवा है ?

भीकाने बहा-वृत्तिहा ! येते विकास वर्णकी पह कोहरत रहता है, उसी उच्चल निरुद्ध परोची विदर्श अपने कारोप्डी बेहन परेचे रिने अधित कार्य जारे हैं, जाते हुत अवस्थ केवर कराता। के सकतारे हैं, केवर न विकारिक प्रारंक कृति के की हो तक विकास जीविका होना है गरी है, देने लेग नह चक्क हंकर असे है से उने दिया इसा दल पहल परस्की स्तरी कर्मन्यस्य द्वेज है। के स्थानाओं प्रक है, जिनके कार्ने स्थानातक है जाना केव 🖫 को अग्रवारको 🛊 कर और प्रकृतारको 🗗 परलेकने कुछार हैनेवाला मानते हैं तथा विश्लेष आवश्यकांत पहलेल है पानन करते हैं, उनके इन देनेने पहल पता होना है। कोर और इत्रओंके क्यारे पेंडिल क्रेक्ट के केवल केव्यक्ती town with fire and \$, first and find doper कार्यर नहीं है तथा जाराना रहित होनेके बारान किनके हराना शत शते हैं उनके पूर्व हर वर्ष 'को थे, को थे' बड़ी हुए जीननेको क्षेत्रते हैं, ऐसे लोननेको क्षण केन्द्रे जात्रम् कार होता है। देखरे सिद्धा होनेनेट समय किमोट वाद और दिल्वी किम नवी हो, हेसे प्राव्यक्ष करि करवाँ काकरके दिन्ने अपने क्षे अने देनेसे महत्त्व कुल्य होता है। को उस और निकामी राजे हर प्रभाव प्रत्ये कारणके रेजे का प्रभावे ही तब से पाक्रिकेंद्र करिरे का स्थान अन्त न विकालेंद्र कारक करिन एवं निर्मन के गये हो ऐसे प्राह्मकोंको की यन हेनेसे पहा करी मुख्य होता है। विहेंच होनेवर भी बरवान् मनुष्येहरा विनका सर्वक हट किया पना हो, किर भी को कानेके दिने असमान मार्क हो तथा यो तपनी, सपेन्स और हजीवकोदे निर्म चीक गरिनेवाले हो, हेरी व्यवस्थिते को यह दिख्य साथ, श्रमका महान, फरन होता है।

वस्तिहर ! विन्तको सन् सेनेसे पहल् करूको प्राप्त क्षेत्री है, यह विवय की तुने सून दिया। अब विका कार्यन

अविविक्त और किसी अंहमने क्रुद्ध बोलने हैं, में उसकी यको है। क्रारोको को यूक्तेकारे, प्रतयो क्रीका स्थीत क् कार्रवाहे, क बनका परकीको कारोसे निराववेदाहे, कुरोंके करके इक्तों मा जा करनेवाले और हमरोबी पुनारे प्रानेकारे ज्यून्वोको धी नावाने निरम धवार है। यां पीतलों, वर्गवास्थाओं, पूर्वों और कूररोंके क्रोंको ना करते हैं, को समय, कृते, प्रताने, कारिका, कामीत और क्रानिकी विक्रवेको बोकोचे प्राप्ते है तथा के क्रारीकी चीनिका जा कर्ता, पर कान्यों, चीन्प्योंने विक्रीप शर्राते, विकेषे विरोध केन करते और विक्रीकी महस्त कर करते है, वे के अक्टबर्क होते हैं। चुनारी सारोबारी, सुरत क क्रांक्षे कर्मक का कार्रकां, क्रारंको क्रेनिकार एकत् क्रोकाने, निर्मात्म किने गर्ने उनकाको पुरस हेरेकारे, प्राथमके, रिम्बर, बार्टिक रिक्टोर्फ विरोधी राज क्य कर संस्थार रेकर किर मुक्त-आक्रमें और अलेकारे पूरूप भी अपूर्ण बढ़ते हैं। विनास प्रस्ताहर एक्ट्रेस विद्या पाला है, को रचन और नहिये दिनन ब्रीह रचते हैं, को कुरूबा बाल बारों और बिजरे ब्यूक्तको परक करनेने असमर्थ होते हैं, जिल्ली एक बीनविवाने अपूर्ति होती है क्रम को केत्रकार गर्क हुए क्रीसकी केंद्रकारी कुछ देखिए आहा देखन और देनेका प्राप्त नियम बारोद आहे. यहाँ ही नेवर्गरिके क्रम को पारित्यके बहुति निवारक होते हैं, जह नरकरें कम पहला है। से मितरें और हैकाओंकी एकाक प्राप्त करते अधिने असूनि विने विना से असिति, घेष्णपर्न रुवा की-वर्गाने पहले हो चेपान कर होते हैं, सो पेद नेपारे, वेदोको निवा करते, सामान्यविको कहा रहते, वेदनिवस् कर्म करो, अवसी जीविका कराते, केस, विव और इंडब्डे किसी करते, सहस्य, में एक सम्पानीके कार्यने मित्र करते, इंक्सिर केस्ते, स्पृष-दाण पनारे तथा के कार प्रकार करेंट निकारत और नहरे फोवकर कात वेकते हैं, वे भी नरकनाओं होते हैं। जो सुद्ध हरकवाले लक्कारे, फूर्व और फावेबर कर के हैं, बे क्षेत्रेको कुटलाने (क्षेत्रक करते), जन्मते और पशुलोको वतपांचे के करते हैं, को कक क्षेत्रर की प्रसन्ती रक्षा नहीं क्यों और अस्त्री क्यापनीके को भागको सम्बन्ध सम्बन्ध हरते को है जब के समर्थ डेनेपर भी कर नहीं करते. में भी परवर्षे करे है। के इवासील, विशेष्ट्रिय, विद्वान अब बाब दिनोहे अपने एक स्वतंत्रको प्रकारोको बहुन मनुष्यको २०७ वा एक्टी साथ होता है, जो सुन्हे । जो प्रमुख निवास कानेपर साथ होते हैं एका को कहाँ, वहाँ और

कीमारोंको दिने किया है प्यारे रूपने कोजन कार रेथी है, उन्हें । पी तथा करते हैं, विश्वका समाना प्रमुख होता है सता को भी समाने क्या पहला है।

हेल अकर पहले गरकसभी स्मूकोच्या वर्णन किया गमा। सम सामि जानेकारोका कर्पन करण है। यो कर, क्षात्व और सरको क्षत्र कर्मका अनुसरक करते हैं. गुरुवाक और कालाग्लंब विकासका बार्क जीवाले धग नहीं रसले, जिनके प्रवासे न्यूना कर, कर, करा, र्चोक्त क्या रेजने इस्कन् या को है, से अवस्थान, बेर. क्ष्मित्रकोचे अस्तव रचनेकाने और बहुनिस्क अध्यानो सन्तव 🕯 तका जो पत्रु, गांस, जीता और परकोंने कू को और आधन, कुरुवर्ग, देश क्या कार्यको दक्ष कार्य है, वे प्रकर शर्मी को है। ये कह, आकृत, केवर, को उस आकार वाले हैं, इसरेका बाल कर की है, का प्रकारकों दिनमें आग चारे हैं, तम कुछ बहुन बाने और कुछा श्वास्त्र हेते हैं, को विनेतीय होवल पाया-विकासी सेवह बहुने और भक्रमोपर केंद्र रकते हैं, को करी करकार और कैंककर क्रेंबर भी इन्हियोको सक्ये स्था है, को अपन्तीकोल

कुछ साध्यक्तले व्यक्तियोग्त प्रेम रकते है. किन्द्रे कुररोकी सरक्षात्र (सेका) में हो सुका मिरका है और को इक्टी म्नूब्लोको क्षेत्रन प्रतेसते. इक्टरॉको सन क्षेत्रे and क्ष्मारोकी एक करते हैं. उन्हें स्थानकी अस्ति हेवी है। को सकते, भी, परस्की, सकती, बैवासिक क्यान, का-कर्त क्या क्या का का करते हैं, को दूसरेके रिने अन्तर, जुर, कार, कुओ, बगीवा, धरीवाल, चेत्रम एक कार्यकर भगको है, जे क्यारोको पर, केंग्र और चीव प्रदान करते हैं, को करने ही पैदा कालेंह रार, कीय और अब क्षम करते हैं एक को किसी भी करते जन्म है बहुत-में क्यों और की कांची आवसे क्या है कर कुरनेमा वार्ग काले और मोधयो कालूने रकते हैं, के कर्नने बाते हैं। बारत ! बा देने दूपको पहलोकाने कारपास medanit hanne alle formeine webr form mer प्राचीनकारणे व्यक्तिकार कारान्त्रे हुए सुन-वर्ष और and their differential to

#### ब्रह्महत्याके समान पापों तथा विविध नीर्योका वर्णन

कुमिनिन पुरत—बन्दानी । प्रावृत्त्वको विका च धारकेन । कार सम्बार है । यो काररकार पूर्व प्रमुख प्रावृत्तको वार्थ भी प्रमुख्यमं अञ्चलकार का बैंको शास्त्र है ? इस सहस्त्रो टीय-टीय सरान्यां क्रम क्रिके।

मीनवीरे क्या-नावन् । पूर्ववाराणे की एक कर भागराजीको कुरसकर उससे को अब किया वा (तका उन्होंने को से असर जल देव या) का उस हमा के का है। क्यान केवल सुनो । मेरे पूजा का-- 'क्ने ! सामानको क्रिया म करनेपर भी जिल्ल कार्योंक कारोसे सहस्रकात कर सन्तर र्व ?<sup>4</sup> इस ज्यार खानेसर क्रांतिसूच काराबोंने कुछे का प्रवेदार्शीय उत्तर दिना 'पीला | विसनेद पास सोर्थ आयोगिका नहीं है ऐसे आहम्मको को सार्व विकास हेनेके रिन्ते सुरक्तार पीछे देनेले इन्बार कर देश है. उसकी अवस्थार सम्बो। से कु बुद्धिमार करूप सहस स्तिकारे विक्रम् साहामको स्वितिका क्रीन सेवा है और काससे बढ़ वर्ता हाँ ग्रीओंक्रे क्यी ग्रीओं विहा कुरस्त है. इसको भी व्यवस्थात है समझन वाहिने। यो उत्तय कर्तका विकास करनेवाली सुविको और व्यक्तिकोत ग्राकोश किन संबंधे-को चेनायेका करते हैं, से अपने करवरी कन्यकी गरी रह हो सनेवर भी इतका चेना

ही जर्मनेकी प्रोत्यक्ता विकास करता है, जो अंधे, सूते और नेने अनुस्तिका स्रोत हरण कर रोवा है तथा को पोहरूक असान, का, गाँध असका नवाने साम सना देता है, हो। भी स्कूपार्थ से सम्बद्ध प्राप्तिये।"

उपिक्त पुरा—भारतीय । तीचीया वर्तन करना, अपे कार करन और उसका सकारण कुरण क्रेप्सकर परास्त पत्त है, अन: मैं सैचीक कर्नन सुरता पहला है। हार पुर्व्यक्तर कियो व्यक्ति सीर्थ है, उन्हें कारणनेकी क्राय -

केरको कह-राज्य । पूर्वकारको अक्रियने सीवं शक्तका वर्णन किया का, जो ही सुने। इससे तुन्हें जान वर्मको जारी होनी। एक सम्बद्धी नात है, बहायुनि अहिरा अपने वेलोकाने विराज्ञकार है। का समय काम कामा सामान करनेकरे चीतपने उनके पास शासर पुल-'प्कृपुने ! वीबॉमि सान करनेसे पुलके बात विसा करूकी अहिं। होती है ? इसका चकावत कर्णन क्रीतिके।'

अप्रेरने का पहल उत्पात करके बन्द्रपाण और किरकार्य साथ विकास जान करे से बहा (साथ पाणीधे क्षणे साथ विश्वह नहीं करते, उन्हें की उद्युक्तकार कुटकर) मुनिके समान निर्मात हो जाता है। कार्यनेर

प्राप्तको केन्ये नरियो पहन्तु रिक्यो देशको है, प्रश्नक | बोल्का प्रक्रकोक प्रत्य करते हुए तेन रातत्व वही नहिमेंने उस्त हैं जुने कर साथे क्षेत्रक, कुल करते हैं निवास करते हैं, यह क्षण-परवादे कमाने कर बात है। कार करोरी पाना है। पूजार, जनाव, मेरियाराग्य, धागरीएक (राजुक्तर), देविका, इन्हर्म और व्यक्तिकोची अस्त कवा है, व्य पायनुक होवार सर्वतिष्-पून केवाँचे पान प्रात्मे पहुन विकास प्रात्मेको पान है। स्वारतीवी पान प्रत्ये बैठकर सर्वको साम करना है और अन्यार्थ सुन्नि करती। चीनकायुर्वक क्रेन एउटक करवार करतेने करवार क्रांतिनो हाँ और परार्थी है। दिल्लीन्यु सेनी कार करके पहले. जब अनुनोते का जो सुन। से देखक करते सार करके उत्पन देखा प्रत्यान कुरोवामको परिवा पामके उत्पन्न अर्थन केवल है और परिवासको पास प्रत्यान पार्ट निवास मारोगर महत्त्वक साथ धार हर हो पाता है। पानावार । काल है, जाके पान पुत पाने हैं और पूर्व्य पहलू पह पर्वति रिवट प्रशास करती गठी और करियोग्डे भीतर करतोत्व गरीने कर करके केन पर करका क्योगात पहल अस्तेत-स्त्रात पर पत्र है एक एक परित को कह से बात है नावार (प्रतिका), स्वापनी विरुद्ध, नीराम्बीत प्राप्त पारस्यत सीवीरे प्राप्त पारोते मान परचेत होना सभी मात है। यह बोर्ड कोचाँन, Die affer aft affere der persone und beer हुत्व सरित्यक्षा दीनोंने हुन्यके सम्प्रते के और अवकेनकारक का निराम है। जिस स्थापन वार्गाओं पहर अर formel air unt & up wrang genera (gel. मार्थकोच्या और पातास्थान) विशेष्य प्राप्त है, उस विकास संबंधि कर करते से एक कारण करता माता है, को देवलक्षित क्षेत्र क्षेत्र हैं। यहका, विकार afte purchi feether over mobius were with प्रत्येत्व तेवा है तो को काम बोचन विकास है (कामीद पह केवल हो बाल है) । पहलाब्योकी पान प्रकार हरितेल परिक मानने आधिकेत करते हुए को एक नहीनेतक स्थापन करता है, यह दिन्ह है करता है। यो लोगवा कार करते पंगासकोत्रके नारस्यात्मक संबंधे कान काम और संब राताना निरम्पर क्या है, ना महानाके करते हर का है। सन्यानुगर्मे कल करोड़ सरकार तीवीर तर्वत करनेकारे पुरस्की केम्प्रकोने कीर्त केम्प्रके के और सह अको बाधे सुलेगित होता है। हेरिकाइन्य, सुन्तिका-कृत्य और समिनीकृत्यर क्षेत्रमें सार सर्वेतर कृत्ये शहर, कुरारे जन्मने कम और तेकची अहि। क्रेसी है। महानकर और करिकाश्यक तीचीने जान करते एक पहलक निराहत क्षित्रको परस्य निकार क्षेत्रर सार्थने साम है। यो कैपानिका , विक्रोचार वर्गन करता और वहाँ एक सारतक निरक्षर और विस्तृत्वीकारण प्रेथंने कल करता है, यह यहता है, को प्रश्नांकाओं प्राप्त होती है। अध्यक्त से वेरे असराओंके दिल लोकों कवर सम्बन्धि होता और आन और अञ्चलक होली तर्रांत करोड़ बाद्ध हिस्सक प्रकारकार विकास करना है। से कारिस्कारकार कार करके। निराहर कोनो कारका कर निराह है। प्रवासे अस्पता विभाग नहींने दिनरोका तर्गन करता है और प्रोपको (फेल्किस) की क्या करनेसे पहले, निरमिन्ट प्रतिपद

ने कृतिकालने कर करते विशोध स्रांत और केनकेकके प्रत केव है। के काइन्य, प्रकृतन और हेलाक्रांक केवीर प्रत्येने प्रत्य कार्या है, सबकी शंकावरे केश कारी है। कारणाई (नेक्क्फेर कार्ने) और formed weekelds und um unte proje unburn gur wurschit feller fin fie bereitershall come tall are. Freel one you repose server करोड़े (क्यारेकेसके) सकर्षात साहि क्षेत्र प्राप्त केरे हैं। ये क्षेत्रिको स्त्रेने साथ स्त्रोत विकास स्त्राचे प्रतीत कारक कर बीधर के कार है, का क्लोबी प्राप्त केया है। के मानुवारी संबंधे कर करता है, जो एक राज्ये सिद्धि कर केरी है। के अन्यान्य, अन्याद और सन्तान वीचीरें प्राच्या सरका प्राप्त विश्वासम्बद्ध कर्ण होतीने क्रान्त क्रान्ते क्रीतार्थक पुर्व प्रतासक रिक्टोको कारावरित केल है. को बाला पर उस होता है। गुरुक्त और संस्थापर विभी कर करते एक मुल्किक रियु-वर्गन करनेते and again the form to approprie their क्या कार्यक्रारोगी सीवीरे कर मात्राव्य-कर और सर्वत करोते का अक्रोब-प्रक्रिक कर का क्रेस है। परिवासे का करेंगे काइयों में अधिक पता विस्ता है। कामी कार्यकारको प्रकारताओं और करोड का इसर वैजीवा समान्य होता है। के रिवयकृति जान हाता काम करो पर करके महिने उच्चारे कर बता है, क तक करेंगे उक क्रेकर करांको प्राप्त क्रेस है। यो परित चन्यों सम्बन्ध दोनें, विद्यानीके साम दक्ष पैनाक तीनोंने कर करता है, कह रूप दीवंगरा है करता है। स्था के ब्रह्मार (एकर) और चानिरकी (प्रक्रा) में बान करके

र्वोसरी सहस्रकासे बुटकारा किरावा है । बहरविकु संबंधे सार बारपेसे अमेको तीवाँमें पोते सम्बन्धन फरू होता है। असिस्स वीर्थने क्रमको लगानेसे अजिक्रमान्त्रका निकल प्राप्त क्रेस 🕯। कार्यास्त्रसमे साथ, विकासमें तर्गन और हेरहाले समार करनेसे पनुष्य महत्त्वय हो पात्र है। वो सब प्रधानकी विराम्य जान कर्न्द्र विलेगियामध्ये अस्तर्गस्य और महानक हीर्थका हेक्स कला है, यह नक्काने अकारओं है सेवित क्षेत्र है। यो कार्तिकको पूर्विताको कृतिकाका केव होनेपर, एकावधित क्षेत्रर कांग्री और संविद्यानियों विभिन्निक सार करता है को पुन्तविक बारता कर विस्क है। सम्बद्धर (परक्षरामकक्ष) में कार और विकास नकेरे सर्गन करके बाद्य दिनोतक क्रमान करनेकान पूक्त हर-पानोंसे कुर बाता है। बदै बनुष्ण व्यक्ताने साम करोड सर्वाचलो एक भवेनेताव निराम रहे हो हो बाबाजिके समान सत्पति अप होती है। यो हैंसाबा अपन करते सर-अधिक होधार विच्याचराने सहस और अपने सरीरको मह बेका विनामुर्वेद तमान करता है, समाहे एवं पहेंचे रिन्दि प्राप्त हो जाती है। कर्मक बढ़े और कुलंखक्रेकडे करने कान बार्क एक प्रकास निपक्त सुनेकास करूक हाते क्याने राजकृत्यर होता है। से हरिया-संच्यानुर्वेश स्थानिक हे तेन महीनेतक कम्पानंको साथ करता है, जो एक दिन-रातमें है सिन्दि प्रया हे बादी है। यो ध्येष्टरपण सीवी क्षान करके आसुरिकासन तीर्थने करून सामग्रा चेवन कारत हुआ चीरकस कारण करते हुछ कालांध निकास बाला है, जो सा कर कन्याकुम्हरी होर्थक सेवनका कर आह होता है तथा उसे कथी चनवनके पर नहीं कथा पहला। में कमाइव (कमाकुमारी तीर्थ) वे निवास करता है. मा पृत्युके म्हाल् केल्केकने कातः है। जो क्वालीक होका अवकारकको इक्सातीर्थक सेवन करता 🗓 स्रो एक है राजने सिद्धि किए बार्स है तथा प्ररीप-सामके मान नह असर (देवना) के बाता है। उजानक सेवी, आर्थिक क्या निकृति आध्यन्ते कान करनेसे इस कार्यसे कुरुवार। जिल जाता है। जो कुरुवा नदीने कान करके। होकर सर्गरवेकको नाता है।

कानेसे कुरचे तथा क्रीक्रफ्के नामक बीर्वकी काम करनेकर | अक्रफर्वक करवार कर करना तथा दीन सरसक वर्ड़ जन्मार करके चारा है, जो अध्योध-चार्च्य पार मिसता है। यो निकारक संबंधि सान करके एक रात कई निवास बाला है, यह समेरा होने ही परित्र हो जाता है और उसे अधिकोण बाज्य करा भिरमा है। बगोरणसे सकोपित इक्सले कार करनेवाच जनुष्य परित क्षेत्रर पुष्परीक कामा कर जार करता है। केंग्रंथ कर्तना एक महिनाक कार और संस्थेककर करनेते पट्टन कामको जीतकर ल्यक क्लेक कर तह करत है। ही चेतनकी बात करके कमकेरक, जीवकृष्य तथा जारधनार तीर्थये साथ क्रमेकाव पहुंच पुरस्काके पारते पुरः हे कहा है। क्क्षेत्रस्थी जुर्तेका कृति करकेते एक धार बूट करे हैं और राज्यानं काल तीर्वते कार करकेते पराजीको स्वारकेलकी प्रदेश केले है। प्रयासन् संस्थानका स्वार क्षेत्रकान पर्वत कार कोटा और संसारमें विकास है, के एक स्टॉकी सानि क्या विकास और पारणोंसे सेवित है। को केवलाया जाता हैव इस बीचनको नारायान् सन्धान्तर ३४४ वर्गतपर रहता और वेज्याओंका पूजन तथा युनियोको प्रणान करके विक्रियंक अन्यक्षेत्र क्ष्मा जन साम देता है वह सिद्ध हेका समाप अपनोकाको जातु होता है। यो सनुस्य साथ, लोग और सोमको बीलकर क्षेत्रोंने निवास करता है, जो का जैनेनाओं पुरुषों कोई कहा हुएंग नहीं रहते। को राज्या अभोके कान्यते इच्छा रकता हो, वह सांघ और अन्त्य हेनेके कारण किन तीर्वेषे प्रतिस्ते न जा सके वर्षा क्वील्ड कार करे। व्य तीर्वलेक्स्स वर्श परंग परित्र, कुम्बलाह, प्रत्योक्त ज्ञास प्राचन और बेड्रोबा गुप्त स्थाप है। उनेक रीवें परित्र और सामके केना होता है।

रीवोक्ट का काकन दिवासिनोके, अपने द्विती साध् कुरोंके, खुरोंके और अनुसर सिक्के है कार्य झरून व्यक्ति। इसे म्यानमधी अभिराने गीतमको सनत्व और अभिक्रा क म्यान्य कारणको प्रश्न हता था। या सक व्यक्तिकोके पहलेकोच्य और परम चित्र है। जो सावधान केंबर एक इसका यह बरवा है, व्यासब पापीसे एक

#### गङ्गाजीके माहात्म्यका वर्णन

मैतन्त्रकार्य कार्रे है—सर्वाचन । स्ट्रीरे स्थानी, क्षणाने प्रकृति, पर्यापनी प्रमु और रेकने सुनीह रूकन महरूपर पीवर्ष का गैर-कृतका के हर पाल्की का बोद रहे में और एक चुनिहर रूसी रख-रखके रहा कर रहे थे, वसी समय सहा-ने दिला पहली चीनाबीको देखनेके रिन्दे आये । अन्तेत मान ये हैं—स्त्री, मरिद्ध, पृत्, मुल्यार, पुत्रक, कर्तु, अदिया, चैतान, अन्तवन, सुनति, विकारित, क्यूनर्वरत, संबर्ध, प्रमीत, का, बुक्तर्यंत, बुक्कर्यंत, ब्याह, मानन, पार्यपर, हुन, कुलैस, परवर्षि, पर्यापीन, पार्यप, मरहार, रेपा, परावीत, वीता, महरतह, कुमारह, प्राप्त, बेक्सोरिक, इन्छ, कार्य, कांड, सुकाब, क्यार, निकास, कुमा, बीमा, कुरानम् अकृत्यान, परकुषम् और क्रम । मे सभी पहला कर कहा करते हो पहलेखीन एक मुविद्विरने अन्तरी विकित्स् पूजा की । सन्त्रास्त् में सुसापूर्वक बैधकर भीनाबीसे सन्यन रक्षणेतानी बच्च एवं वर्णक कार्य क्यो को। प्रमुक्तिको स्र स्ट्रिकेसे स्रो श्चनका भीनाओं पहल संस्था हुए। बहुरातर, में स्थानिका भीवानी और पाणानंत्री अनुसति रंगात सामंत्र देशके-देशके महीते अनुस्य हो गये। सत्यंत यह सर्वकृत सुनिहित्यं चीनानोके परनोमें तिर रखना प्रचल विका और पूर-क्तो वर्गनिकास प्रथ पुल-निवास । स्रोध-ने देश, बोलनो प्राप्त, योगन्योप साराम, योगनी पर्यट और मीत-बीत-सी समित्री पुरुषको श्रीको स्थिते प्रमाने-भोगा है ?

स्रीतानी वान-वृधिहर | इस विकास विकोधानुनितं विविधा पारतेनाले एक पुरस्का विको तिन्तु पुरस्के ताल को संस्ता हुना का, यह सर्वान इतिहास पुन्ते—कोई विद्वा पुन्ते स्तार्थ को पुन्ते को साथ विवधा करनेते वाल विकास करनेते वाल विकास करनेते वाल विकास करनेते वाल विकास करनेता को पुन्ते के वर प्राप्त के वर वर्ष प्राप्त के वर वर्ष वर्ष का प्राप्त के वर्ष का प्राप्त का प्राप्त के वर्ष का प्राप्त का प्राप्त के वर्ष का प्राप्त का प्राप्त का प्राप्त के वर्ष का प्राप्त का



सर्वेका सम्बद्धियोग है ?"

तिहारे क्या-स्थान । ये से नेता, प्रतया, आध्या और wir gewat gibe with ft, freit that fert व्यक्तिये के प्रमुख्ये काले हैं। महत्त्वीका सेवन काले बीच किए उसने जीतको आह करता है, यह सरावा. क्कार्य, का और सामने भी जो मेरर स्वाती। विन केक्सिकें प्रतेत न्यूनबीके करूरे चीनते हैं जनक करोकर विकास स्मूचने प्रमुखीये इतनी बाती है, से बाधी करते नेने नहीं मिले। किन क्यूक्तीय सन्तर्ध करते पहुल्लाको ही सुरुष होते हैं, वे भरतेके बाब पुरुष्टिका विकास क्रोडकर करोंने क्रियानका क्रेरे हैं। के जीवनकी भागी अवस्थाने भागवार्ग करके रीक्षे भी गाउनीया रोवन करते हैं, में भी कार चरिको प्राप्त करते हैं। गहाके चौक कारो कार करके विशवत अवश्वास पुत्र हे गया है, का पुरुषेके पुरुषकों जैसी वृद्धि होती है, बेसी सैकड़ी का करनेते की नहीं हो समाति। अनुस्तारी हुएँ विकने करिया स्थानकार्ने पहें साथे है, अपने इवार क्योनक यह कर्मलेकने अनिक्रित क्रेक है। वैशे सूर्व अवस्थातमें करे क्रम्बक्यरको विकीनी करके प्रकाशित होते हैं, उसी प्रकार न्यूनकारों कान कानेकाल पुरस अपने प्राप्तेको न्यू करके शुक्रोपित क्रेक है। को देश और दिसाएँ गहाजीके क्यक्कान करने कीका है, वे बिना बॉइनीकी रात और

मुम्बोन दक्की भारि कोभा नहीं करी। केंद्रे सुर्वेद केंद्र । सुर्वेद सरकर निर्मात करना करना है। पहादी बाकारको द्वीपा नहीं होती, उसे प्रकार नक्तमें स्टिप्त देख और दिसाएँ भी श्रीद्वीन कार पहली है। ठीनों खोखने को बोहें प्राथम है, वे राजी पहलो जान जानो तर्गक करनेकर अस्तव हर होते हैं। को मनुष्य सुर्वकी बिरम्पोने को पूर स्थानकार भाग करता है, यह भागके भोधरते निकारे हुए जीवी सम्बो कार्यवारी एक्को अधिक परित मान पान है । यह प्रतान श्रीरका होत्य करोताले एक हुकर बालूक्यकाता आवश्य करे और दूसरा केवल नावजीचे कारक कर को ही रूप क्षेत्रोंने सामन है समानता है। एक इसार क्लोलक एक पैरते कहा होकर सपना कानेकात पुरूष एक नहींनाक गङ्गाकान करनेवाले पुरुषको बरावरी कर सकता है का नहीं, इसमें सींद्र है। एक पहुंच का इकर पूर्वतक की हैल बारके प्रकृते स्थाप को और सुन्ता क्रमानुका नामगीके राजार निवास करे के पहलेको अनेका कुरू हो के है । वैके शानमें प्राप्त हा वर्ष-तृत्त प्रत्यार नम है सभी है, स्त्री तक पहले रोता स्थानेकारे ल्यूको सारे कर का है को है। इस संसारमें से लोग इ:चोंचे सामग्रह क्षेत्रर अन्ये रिसे कोई आवाद के हैं, इन सरके हैंनी न्यूको सामन करन कोई स्तारा नहीं है। जैसे राज्यको देखते ही कनून समेरिक मिन हार बाते हैं, करे कराए जुल्लाके सुरंगक ने पहल का स्थाने क्रमाय में साथ है। बनाने निवास का सामार नहीं है तथा विन्तेने सर्वकी करना नहीं हो है, उनक आबार और जर्दे करन देनेकाली जीनकार्य के है। है के कारक करवान करवेगाती तक वे के कारको पति को सरविता रसनेवाली है। यो नीय अनेवर्ध वर्ध-वर्ध अनुवा पानेने कर होका रस्कारे पहलेकारे हैं, वे की की स्कूपको करकरें भा नाते हैं हो ने महनेके बाद उनका उद्धार कर केडी है। को कर पहाने कार कारे कर करते हैं, के दिवस के मनियाँ तथा इस आहि केवताओंके समाप करने करने हैं। निगम और सहस्राप्ते हीन, अम्बालकारी तथा मीच मनुक भी गहाकी सरफर्ने जानेक शिक्तकरू हे जाते है। की रेक्सओको अपा, जिलोको सबा और गानेको सुन्त हुए कारी है, उसी प्रकार मनुष्योंके दिन्ने गतानकर हो एवं रहिमा सामन है। मैसे मुखे हर सब्दे मामके बार को 🗓 अरी अवार सम्बन्ध च्यानेकरे जानी नामबीको उत्तरस्य बारों है। बैसे बहारोब्ड प्रक्र सोब्रोसे के बहाब बाहा है, रीते ही बाल करनेवाले प्रत्येक लिये नहा ही रख नहियोंने केंद्र करी गयी हैं। को मनक गड़कों संस्कर दिया अपने मस्त्रको स्थाना है, या अञ्चानास्थ्यास्था नात करनेके दिने

प्रश्नानकारेक कुन्यन क्षत्रके स्कृतेवाली बाय कर मनुष्यके प्रतिकार कर्ज करती है, उसी समय का उसके उसरे प्रत्येको व्या कर देवी है। कुनोंने बोला क्रेकर प्रस्ताने परिवर्त रिलोक्स प्रमुख को की पहल्किक हर्तर करे के को इनमें क्रमाना होती है कि करनों सारी पीड़ा सरकार न्त है को है। नाने तक दिना कोने से एक-ये अन्य किया है, या अभी क्रमा प्रमुख चेनोचा अनुष्य करोते ये की दिए समार । एए, पार्टी और विश्वास्त्र क्षेत्रेकारे पानीसे जन मनुष्य की गरि पहर्माना कांग को के का परम-वर्षना के बात है. हर रिक्को पुरे क्येन्ट वो स्थेत पूरी है। यहानीका क्षांत, क्रमेर परस्या क्षांत्रं स्था क्रमेर चीतर क्रमार प्रतासंह पहुंचा पात पीर्त्तिका आने हेनेकारी शंतानीको और um dat om met de meck fenten auer me **300** (4)

को पुत्रम म्युरकोका संक्षेत्रक सुरका, उनके सक्तर-क्लेकी शरीवराज्य काच, उत्तव उर्जन काम, पता बेहा, नर्ग करता करता उनके बीचन बेटे समानत है, उनके केने क्रमेशा भगवारी गाम प्राप्तर कर हैती है। गामको अपने कृति, राजी, जारबार बाज कामधीर्वाच्याको सैकाई और क्रमाचे करियांको तस देती है। को पूछर अध्या क्रम, बीकर क्या अपने विकास करता पाला हो को बहुर्गक समार कामन क्रेमाओं और विकासिक सर्वेत सराव प्रतिने । कान नारकार करते किए सक्का करता प्राप्त करता है न्द्र कुत, का बच्च किसी क्षित्रकों हता नहीं किस प्रकरता। के क्रीय को हुए भी प्रीत बलवाले करवालाती प्याच्या कांग नहीं करते, ने बच्चके अंगे, सुने और मुंकि समान है। पूर, कांच्यर और अविन्नके हाता नार्थि एक इन्यू आहे देखता भी विनादी उपासना करते हैं और विकास स्वाचार्य, जुल्ला, परवास्त्र तथा संभातीः भी विकासी प्राप्त क्षेत्रे हैं, हेली प्रमुखीयत क्षेत्र प्रमुख अवस्था न लेखा ? जो सरका प्रात्त निकारको समय सन-दी-का नहरमीका जरून करता है, उसे करकारीकी प्रतिन वेर्त है। यो कैक्कर्यन नक्की उपरांग करता है, को यन देनेकारे पायेसे समिक भी भग नहीं होता। आस्त्राज्ञते निक्षी क्षं क्षित् वस्मयक्षित्र महत्त्वेको प्रगक्षत् संकाने क्रमें सिरपर करन किन क्रम विमोने तीन निर्मेठ पागीसे प्रमाण केवर प्रेमें केवरेकी क्षेत्र कराये हैं. उनके करका होटर करवेकाल पर्व कुलर्व हो जाता है।

भी कर ।

(महस्त्रीने परित्र रक्तेजाले पुरुषक्ते) गाता, विका, पुरु, स्त्री ( और पनका विधेन होनेसे भी जाना रूप नहीं होता विकास गहाके विशेषके केता है। जहानीके दर्शनके विश्वनी प्रतासक होर्स 207A 1944 100 अमीत निवयोको धोलने छना पुत्र और वर पानेसे की जी होती । यो गहरवीने सद्धा रक्ता, उन्होंने सद रंगाता, क्यूंबि यस बता, अहीवा अवाय रेवा क्या मिक्टिपूर्वक व्यक्ति अनुसर्भ काला है, जा प्रपादक मानियोक्त दिए होता है। मुखी, सामाय तथा सर्वने रानेकले क्षेत्रे-वहं सची प्राणिकेको छक् च्यूनकी सार कारत कार्यने। को सामुक्तीका कार्यो कार्य कार्य है। अरावरक, सार्ग, पृथ्वी, विका और विविद्याओं में विकाह क्यारि केली हुई है, सरिवाओंने शेष्ट्र कर चलवाडी धानीर क्रेसे मारका सेवन करके सभी करून कुछाई हो उन्हें हैं। यो कुले मन्त्रोको 'मे गहानी हैं' हेला सहकर उसला वर्षन करात है, उसके रिन्ने परावती चारोराची है siber (अक्षण क प्रकृत सरकेताली) है। ये स्थानिक और कुल्यंको अन्ते गर्भने बारण करनेवाली, परित्र सच्ची वाच सहनेवाली कौर पाप पूर करनेपाली है। से अल्ब्यानने पृथ्वीपर अली जो है। इसका जान सम्पूर्ण जनवादे रिक्ते देव है। इसमें प्राप्त-बारस काल कार्यको वर्ग, अर्थ, मान्य गीन्थे क्योंकी किये। क्रेसी है : महातो निरंताड हैमलकारे कथा, पनकर बंधावी पक्षे मध्य कर्ण और क्वांबर्ध स्रोक्त है। में कुल्क्कुलर विकास करनेवाले ज्ञानियोका काम्याक कालेकानी, धार सीपान्यको अस तीचे लोकोको पूज्य प्रकार करनेकाले 🛊 । श्रीभागीरची मक्त्रम होत एवं परित्र जलको बारा बहारी है । भागो हुए पीवरी न्याराचे स्थान काळा प्रधान है। वे अपने चीतर कल-नंबर्ध आहे. बारनेवरके प्राप्ताची और सामा सर्गिके क्या सकोचति होती है। वे क्रमते वाले सम्बन्धिकी नीवेकी ओर वार्ती, का समय भगवान इंकाने जो अपने मिरपा बारण किया। पिर क्षेत्रकाव प्रवेतपर अवदर पार्कि में इस पृथ्वीयर इस्ती है। सीयक्रमके प्रमांबद्ध करते है। सक्का कारण, सबसे बेंब, रक्षेत्रको सीत, उत्तक सहस, मी हर क्रमेन्डेके सेन्ने सुरख क्रमा, बन्ता करना क्रोत **ध**हानेवाली, यह देनेवाली, सम्पन्नी रहेड करनेवाली, सामान्या तथा सिद्धानांको अर्थन् हेरी परवर्त पहर अपने चीतर क्षात करनेकालोके दिनो क्षानंका कर्न कर करी 🛊 । क्षम्य, रहा तथा बारण करनेचे प्रथमिक सम्बन और रोजने मति तक सुर्वेद समान होना क्लेकाची बहुत्वी कार्य कार्तिकेक्की बालबीचा माता है और प्रकारकारिका अनुस्क

कानेके कारण प्रकार भी काका राज सम्बन काहे है। व्यक्तिके प्रथा निरम्धी सुनि होती है, को भवतन् विकास करणेले स्था. जनना प्राचीन तथा परंप पावन कराते पाठे 🚅 🦺 इन मनवादी पानीरबीबड़ी मनसे भी शरण सेनेवाहे पनुष्य प्रकारमध्ये प्रक्रा होते हैं। बैसे पाता अपने प्रतीकां केंद्रचरी इंटिने देखती है, बैसे ही चहुरती सर्वाध्यसकते अपने कारणे अने हर जानियोको क्याद्योगो देखकर औ कर्मकुमरसम्बद्ध स्टेस्ट अञ्चन करती है। अस्तियों जो व्यानोकको अञ्च करनेको प्रकारको है, उन्हें शको प्रत्यो कर्ण करके एक मानुसाबसे महासंबद्धी ज्यासना करनी वाहिये । यो अनुसारची, यस देनेकाली गाँचेंद्र सामान समायो कु सरवेकारी, एक कुछ देशलेकार्थ, सायुर्व कार्याद क्रमोनने आक्रेमारी, अब देनेवारी ३६१ वर्धतीको धारण करवेकारों है, केंद्र कुल फिलक्ष जानक हेने हैं और किये कार्य में बाद करना पहले हैं, उन करनते स्मृत्योका नोकारिकारी प्रकोको अवस्य आध्य देशा बाहिते । राज्य भागित अस्ति का कामाने सामान् संवास्तित सन्तर्भ केल्लाओको प्रथम काचेर पहायोको इस क्योपर से आये । क्रमार्थ प्रत्य करेने बर्जानो क्रा त्येक और परावेकरे क्रा

म्हान् । सैने अवनी बृद्धियो कोनवार वहाँ प्रमुखीके पूर्णिया इस अंग वास्तवार है जुहारो हानी वरित वहीं है कि मैं उनके सम्पूर्ण गुलीवार वर्णन वार साहै । वाहाधित पूरा वाह कर्णने पेतरितिके को और समुख्ये धारीको नाम बतायी जा स्थानी है, सिन्दु प्रमुख्यको मुखीवार वर्णन वारणा अस्तवार है। उस्तर मैंने बढ़ी अद्धार्थ साम को में श्रूपतीको गुल बनायो है, कर्णन विश्वास संग्रेक स्था, वाची, क्रिया, पार्थि और अद्धार्थ साम पूप क्यारी आत्रवारणा करों। इससे पूप बहुत बीच कृषित सिद्धि सहावार और सीनों सोकोंने अपने बनाया निवासका पहल्लीकी सेवासे साम हुए अपीष्ट स्थानी कृष्यम्हास विवासी ने बहुत्वको स्था स्थानमहित्स प्रमुखी कुष्य करें। सीनकृतिको स्था स्थानमहित्स प्रमुखी कुष्य करें। सीनकृतिको सही स्थानस्थास है, ये संस्थाने अपने प्रमुखी सुनी करती हैं।

चीनवी वनते हैं—शुवितित ! का उत्तम चुन्हिकसा काम केशवी विन्तु विस्त्रेक्षण्यिके हार वीविका सरस्तेवारे कर उत्तक्षण विश्वास महानीके कथार्थ पुर्णाका नाम जनारसे कर्मन करके अवकासचे अवकाद हो पना और वह व्यक्तण जनके उन्होंन्स महानीके महाराजको जनकर उनकी विविद्यम् उत्तरसन करके पात कुर्वम विन्नुको प्राप्त हुआ। कुर्जानका ! इसी प्रकार हुए को नराव्यक्रिके श्रवत | हुए औच्युक्तीओ सुरियो जुला इस इतिहासको सुनका सदा गढ़ाबांबद्धे क्यासना करो; इससे कुद्धे काम सिद्धि अप केंगी।

रीहरप्रशासी बहते हैं—अभ्येतन । भीनाओंके प्रश्न कहे | क्रोपा, क्या कर कारोहे मुख है। कारण ।

पदानोराहित राजा पुनिविक्तो बढी अल्बना हो। स्थाने राजको कुछ इस परित इतिहासका को सकत का पाठ

#### राजा जीतहरूको ब्राह्मणस्य प्राप्त होनेकी कथा

सक्तार, शील और तम प्रवासी गुन्तेने सन्तर हैं। बीवानके पुरोबा परावय सुना के इनकी सामारे आवनी अवस्था भी सबसे बड़ी है। संस्थाने आयोह हिन्छ इसस कोर्ड देश नहीं है, निवाने तथ उत्पानके उस पूर्व का शके। अतः यह पतानेको क्रान्त कोशिये हैंड कृतिया, बैरन असना पह जिल करानो प्रधानक गाह कर कारता है ? वर्धेन-को तरका, विका कार्यक अनुसार अन्यत किया प्राथमें अध्यक्तों अध्यक्ति है कामारी है ?

बोकाने वह-नेदा । इतिय आहे दीन क्लेकि हैले प्राथम्बर प्राप्त बारण वारित्र है।

प्रभिन्ने पुरा-कद्यी। तल से पद्मे हैं कि प्राकृतकारों अहि सरित है, सिंधु मेरे (अपयोगे) एक है कि पूर्वकारणे विद्यापित इंडिको उन्होंने हुए से तथा नंद नी क्या बाता है कि एक बेस्कूकों भी ब्रह्मकर अहा विका alle aim: ann meigh, fleit trape arent tressift राज्यको जस्त्रकरूपकी जाएँ। व्हाँ ?

पीलकोने सहर--वृधिद्वितः । यहायकार्यः स्थापि बीतकार्यः किस अकार कुर्लम बाह्यकान प्राप्त किया था, करका कुळाना सुनो । पूर्वकालमें वर्मपूर्वक प्रकारत पालन करनेवाले महात्व प्रमुक्ते एक क्यांत्व कुत हुआ, विस्तवा कर क क्षापति । प्रत्यक्तिके बंक्षपे एका करा हुआ, उसके क्रैक और सारमञ्ज्ञानमञ्ज के पुत्र हुए। ये केनों ही एका थे। हिमा (का है कुरत तम बोतक्षम था, उस) के वह कियाँ थीं, उनके वर्षने सी पुत्र करता हुए, जो बुद्धते बीखे न हटनेजाने उत्तर श्वरवीर वे । उन देनों कालीमें इनंड करने प्रसिद्ध एक राजा पुरुष करते थे, जो दिखेदराओं निजयम् से । क्रीस्कृषकों पूर्वीने इम्बंडके राज्यस्य कहाई की और उन्हें महर-क्युसके क्षेत्र (प्रयानके निकट) चुड़में कर इस्ता : तस्त्रक इर्वक्रके का सुदेवका, को वेक्सको सम्बन तेकाबी और दूसरे कर्मी, सम्बन वर्षात्म का, कार्याके राजका अधिकेक किया करा: किर पीतहरूके पुरोने आकर को भी संस्थाने चौतके बाद करन दिश्व । इसके बाद सुदेशका पुत्र विकोशस कारशिक राजा .

पुण्डिलो बाह—नैकारका । जान कृदि, विका, है करावा नका, कर बाहतेकारीने क्रम बनावे कारने रक्षतेवाहे अन्तर्भवनिभाषको जनते काल्यो : प्रत्यक्ष चेता न्यूनवीके कार बदारे रोक्टर गोलाको दक्षिण किमारेक्स पैरम हुन। था। कृतके चीवर कर्ते को चारकारी नगरी हकती अमराकारिक क़बर क्रोधा क क्षी की। जाने निवास करते हुए रासा विकेशकार की वैक्रमधी राजाओंने भागा किया। एक नक्रमध्ये और केनची कना विनेक्सने पुरीने नाहर निकारकार प्रमुक्तिक साथ स्तेष्ठ रिरमा। केनी ओरकी बेनाओंचे एक इसल दिल (के वर्ग में महीने कर दिल) तक हेक्सूर-संक्रमंद्र समार वर्गकर युद्ध होता रहा। इसमें समा विकेदारके बात-में बाहर और रिप्यार्ट करने आये. उसका क्रमान जाती है क्या और ने बड़ी द्वरीय स्वाचारे पर नवे । अन्तर्भे अध्ये राजकार्य क्रेडकर के बाग करे और (प्रवासने) परक्रम पुनिके सामान्यर प्रदेशका सेने प्रथ सेने क्यां प्रत्याचा है को । बृहस्परित्यक परहानमी बंदे क्रीतन्त्रम् और विकेशनके पुरेषेत थे। राजाको क्रातिका देखका क्यूंने पुत्र-'व्यागम ! तुन्दे वर्ध आनेकी क्या क्रमण्डल प्रदे ? अन्य सार्व स्थापन कालाओ : हुन्त्रस्य को भी क्षेत्र करने होगा, उसे मैं निःस्तेष्ठ पूर्व करिया ।"

> क्ष्माने अप्रस्मानात्वम् । बील्युन्तवे युगोने और बेल्याः राज कर करता. में अवेदना ही भागकर आपकी करवाने arm 🕻 i

> च्या सुरकार स्थापना परक्षाय मुनिने कहा--'सुरेकनदा । कुन को यह । मैं एक यह कर्नगर, उससे तुन्हें ऐसे एककी आहि क्रेपी, किसकी सहस्थानो उप हवारी क्षेत्रक्रको पुत्रेको पार क्षरवेगे।' यह कहका शरहाव मुनिने धनकों किये पुलेक्षितामक यह विभाग अनेहे हाधानी विकेशमके वहाँ एक पुत्र उरका हुआ, यो संसारने प्रगर्दनके क्यमें असिद्ध का । यह पैक होते ही इतना यह गया कि तांत वेद्य वर्षको अवस्थाका-स्य दिस्तानी हेने रूपत्र । इसी समय काने अपने मुक्तसे सम्पूर्ण बेद और पनुषेतका गान किया।

भगक्रम मुनिने उसे खेनककिसे सम्पन्न कर दिना और उसके। इससमें सम्पूर्ण कनत्का तेन भर दिना।

करनचर, कबकुमार अर्जनने अपने करीरका कवन और बनुष बारव किया, जा समय देवलिया अस्ता पह करे रूने । व्या करु और प्रत्यार प्रोबंधर अवन शहर देवता कृता आने बढ़ा। को देशकर तथा दिखेशाओं नहीं जनस्या 🌿 और उन्होंने प्रस्तेनको कुमराब करकार अवनेको कृतकृत्व समझ्य । इसके कह विकेदस्ते समूक्त प्रकृतको वीताहरूको पुर्वेका का करनेके दिन्हें केना । विद्याबी असूह प्रकर वह समुक्तिको और है।करगरीको और पान और रक्तर बैठे-डी-बैठे नहाके पर होकर होत है कई ब्लूंट गया । असके एककी कोर करकात्रक सुरुक्तर किनेका कंग्से कुछ करनेवाले हैकराअकृतार करकते सुर्वाका क्षेत्रर रूपटकार विकास रकोवर की हुए पूर्वने बादर विकास और वास्त्रोकी भर्ग करते हुए प्रत्येतन चढ़ आने। का का केतनी राजकुम्बरने अपने असोको क्यांसे स्त्रुओंके असोको केस मिल और यह एवं आहिये समय प्राथमिक मानो उन्ह मारावेसे उनके बरावा कार हाते। हैंहकतीर क्यूको संबद्ध क्षेत्रम केमाने और इकारोची संस्थाने बरावाची हो गये । उस समय वे बढ़ते करे हुए पुण्या पत्तानके पृक्षके साधन शिकामी से को हो।

पुलेके मारे कानेगर राजा बीताका नगर क्रोडकर कान गर्न और पुन्तीके आसानगर कावर उन्होंने कार्कियों करता भी। पुनुजीने राजाकों अन्याकान के दिया। क्रान्तिके उनके भीके संगा दृश्य राजाकुमार जार्जन की वहाँ का प्रतिया क्रीन अस्तामने जातार बोटा—'इस आसानका प्रतास क्रीन क्रान्त के आगानकी सूचना है, में उनका क्रांतिक करना व्यावस दिया के आगानकी सूचना है, में उनका क्रीन करना व्यावस क्रिया और पूजन—'क्रोन्स क्रान्तिक क्रान्तिक क्रान्तिक क्रान्ति हैं क्रान्तिक उनके आपने आनेका क्रान्ति क्रान्तिकों, इसके पुलेने मेरे समझ क्रान्तिकों क्रान्तिकों क्रान्तिकों पुलेने मेरे समझ क्रान्तिकों क्रिया क्रीनिकों, इनके पुलेने मेरे समझ क्रानका विवास क्रिया है, बाजाका कर जन्म उन्हाद इसमा है और वहाँकी सन-शारित भी सूट ही है। इन्हें जनने परकारमका बढ़ा बनंद बा; जिंतू इसके भी यूजेको की प्रस्के कर जान दिया। अब इसका भी बड़ा करके में विस्तके ज्ञानने उन्हान हो कार्यमा।' यह सुनकर



वर्णानकोने केइ कार्ष पृत्ते कार्य प्रकार होका हेकर कार—'वहाँ से कोई की इतिय भूति है, ने सब-के-सब सकत है है।' सरकारी पृत्ता का कार्य क्षत्र सुनकर अर्थको उनके कार्योचे असाम किया और असाम प्रकार केवर वीतेसे कहा—'कार्यन्त्र। बाद हेसी बात है तो बी में कृत्यां हो कवा; क्योंकि मेरे परास्त्रामरे इस राजाको असमी कार्य असी असा हेने पही। अस असा पूर्ण कार्नकी आहा है और मेरे कार्यानका विकार करें।'

भूनुनीने प्रकारको भानेको साझा है ही और का पैने सम्बद्ध का पैसे ही हमेंट एक। इस प्रकार भूगुनीके क्षणकारको एका कीलामा स्थापि हो रचे। इसिय होकर थी भूगुकी कुरकते उन्हें सक्षणकारको प्राप्ति हो सनी।

### नारदजीका भगवान् श्रीकृष्णको पूज्य पुरुवके रुक्षण शताना और क्शीनरद्वारा ऋरणागत कपोतकी रक्षा

पुण्डिले कुल—रिकाम् । इस क्रिपुणमें भीर-कीन-से | समझे में प्रत्यक करता है। को सुदार अस्तर कारन मनुष्य पुरुष क्षेत्रे हैं ? इसका विकासी कर्मन प्रतिकिते। सारको करें सुन्ते-सुन्ते पुने होंते की हेती।

पोपापी का-सुविद्धित ! इस विकास देवनि कार् और भागान् वीकृत्यका संवाहता प्रतिकृत कृते। एक प्रत्यक्ती बात है, देवर्गि राज्यकी हाम बोहाबर जान प्राप्तकोची पूर्वा कर के थे। उन्हें देख करते देखकर करवान् है अविकासने पहल-'भागमन् । आधा विकासी प्रमाणान पार जो है, आर्थ्य इंडब्ने कियों और बहुर बड़ा आदर है तथा आर ची बिन्के सामने नतान प्रकारते हैं, देते होनोब्स वरियन वदि मेरे सुक्षेत्रेच्य हो तो काल्ये।'

क्लकी बद्ध-वेदिन । के लेव कल, कन्, शाहिल, पर्यम, जीव, यह, सामी वर्तीकेच, स्वाके, freg, sept, spreift, were, we, god aft क्राव्यक्तिको स्था प्रचान करते है, वे की प्रचान है। र्मनका ही जिल्ला कर है, को बेहोंके प्रकार और सक्त बेहेक कार्यका अनुक्रान चारनेव्याने हैं, इन परम्युकारीय पुरुषेक्षी 🕸 में सर्वत पूर्व करना पूर्व है। को प्रेमनो पूर्व किलाओंकी पूरा करते, अरुनी सूडी बच्चों जो करते. संबंध यूने और क्षानकील क्षेत्रे हैं, करको में क्षान्य करक 🛊 । को समानान, विनेतिक और करका कानू रक्तनेकारे ै, को विक्रियोग काल्युम और स्वर, वर्ग, एको स्वर गीओबी एस बस्ते हैं, वे मेरे नवसक्ते केना है। वो कर्ते यत-यूनका योजन करते हुए उसकारें सबे कुछे हैं, विशी प्रचारका संस्कृ नहीं स्वती और फ़िकारिय होते हैं. क्लो सामने में सहा मरान्य प्रकारत है। को कार-निक साहि योजनांका परण-योजन करनेने समर्थ है, हिन्तेने सदा अतिथि-लेवाच्य प्रत से रक्त है तथा को वेक्न्यको को हर असका है प्रेयन करते हैं, उनको में उपका करता है को बेक्सा सम्बद्धन करके कहुँगे और बोरटनेने कुक्स होते है, महाकांका पासन करते है और यह करने क्या केंद्र महानेमें सने दहते हैं, अबकी में रख्य पूजा किया करता है। को निरमकः सन्दर्भ प्राधिनवीयर प्रसार रहते और समेरेसे चेप्पालक केवल जानाव करते हैं, वे की पून्त हैं। के मुख्यो प्रसा रक्ते और स्थानक करके रिके स्था मार्गीत पते हैं, विकास इस क्यी यंग नहीं होने पाल, जो गुरुवनोंकी सेवा करते और किसीके भी क्षेत्र नहीं देखते. । इन्हिन्दोंको कहने कर होते हैं, उनको भी बहुत कही

क्रमेक्टे, क्रम्बील, क्रम्सीक्र और इक्र-क्रमक्रे प्रकृत करोबारे हैं, वे के समझके बेज हैं। से मुख्याओं Tour Papels about only special former क्रुप्त क्रम के नज़ है, जो क्रमी का और ससकी क्रिया को करते, उनके आने में अनव बातक कुरुआ है।

करनक ! कियों कार्य कारत नहीं है, को इन्होंने की हे को है, कियोंने सर्वाको साथ स्वानक की परिवास कर दिया है, जिल्हें इस संस्थारने कोई प्रयोजन नहीं है, को बेहादी क्रींड कार दुईर्र, जनक करोगे कुक्त और प्रध्नाई है, विन्त्रीये अधिका और पानका हुए के एका है तथा औ प्रीकृतांका और कोर्नेकाके सरकारे संस्ता रहते हैं, से और प्रकारके केन्य है। के पूराव प्रकार करोत-वृतिके रहते हुए me from afte unbellechtel geseit steen sich ft, welp करवंदे में बरावा कुळाल है। विरुद्धे कार्योर्ट वर्ग, जार्य और पान बेनोबा निर्मा होता है, बिस्सी एकबी भी हारि न्हीं होने करी क्या को एक विद्वारतनों संतव को है, इनको मैं अन्यान करता है। यो प्रकृत प्रत्यक्षानो सन्या, किर्णका केवर करनेवाले. सोच्छीन और पुरुपतित होते हैं, वे की क्याकेर है। यो पान प्रधारके प्रतेषद्व पातन वाले हर केवल करी के इस केवर या को है तक के रहा चारोव सरावा ही चेनन वाले हैं, उनके चरनोपे में प्रमाय करण है। को की-परिवासे रहेत है, रिप्तेने अधिकेतक अंकार रिन्ड है, के ही किएक संबंधे बड़ा स्वास है तथा के राज प्रारंभवीको उससम् क्षेत्र है, उन्हें में सम्बन्धिय प्राप्ता है। को रोकक कारण क्रमेको, प्रेकाने साहै केंद्र, कुराने कार, अप्रांतका पान करवेवाहे उका सुर्वीत संस्तर बन्द्बो (जनकेक सक्रम करनेवाहे हैं, इनके सायने भी में सद पदान सुरक्ता 📳

इतरियो गयान् क्षेत्रक ! अस भी सह अहसीवी कृत्य क्षतिको । जो सक्का क्षतिकि-सरकार कारो है, की, लाहरू और समयर जेन रकते हैं, ने बड़े-से-बड़े संकटते कर हो आहे हैं। को सदा मनको बहामें रकतो, किसीके होनपर हों। को करने और अविदेश स्वास्त्रकों संस्कृ रहते हैं, रूपान पहल संपादने रुद्धार हो जाता है। को सब तेपादओं को प्रयास करते. एकमारा नेएका अक्षान हेते. अन्य साथे और

विश्वतिको बुरुवास विस्त नावा है। यो प्रस्तवा सामन कर्या है। और मेह अक्रमोची नवस्थार करके उने कर के हैं, वे हुन्सरे मुख हो कते हैं। तससी, आसल प्राप्तारी, तससाले हुद अभःकरणकरे, देवता, अतिथि, केववर्गं तथा वितरेका पूरण करनेकरे और ध्यारेन सकते चेका पुरूष भी हुनेन नियतियोधे हुए वाले हैं। यो अधिकार प्रकार करते विविद्यंत मारवार करते हुए उन्हें और क्रमानिक रखते हैं क्रमा को सोप-व्यक्ते विविद्यम् अवृति करते हैं, वे संबद्धके कर हो व्यक्ते हैं तथा को अल्प्यांकी शांति व्यक्त व्यक्त, विका और गुरुवनोध्य असर करते हैं, उनका भी कुन कुद कार है।

मह महाका शतको एव हो गये । कुमाँभवा । तुम भी सत्ता देवता वितर, प्रदान को अतिविक्तीओ पूज करने हो, : इसलिये नुष्टें भी मनोवस्थित यनि अस क्रेमी ह

कृषिक्षेत्रने तृत्वा—विभावत् । जान समूची प्राच्छेते प्राच्छे निवृत्त हैं, अतः आन्त्रीयो क्वीक्क्का क्षारे सुरकेकी हवार केती है। अस यह बतानेको कृषा मोजिने हिः जो हनेन प्रहरूने आहे इंद अन्यान, विकास, स्टेबस और प्रतिका—इस धीर प्रकारके जानिकोची रक्षा करते हैं, क्यांके क्या कार जिल्हा है 7

बीकाबीने कहा--वार्यकाता । कामान्यकाती पहल बार्यको भी प्यान, करा होता है, उत्तरे किवानों हुए इस अधीन इतिकास सुनो । एक सम्बन्धी बात है, इन्हें बाल किसी हुन्छ सकारको नार पह ना । यह सकार कंत्रके प्राप्त भागकर महाधान एका कुकार्थ (श्रामित-लोक्) की कुरलमें कुछ। राजाच्या अन्यःश्वरंश ज्ञान सुद्ध या र अभूति अस अंग प्रमुखी चनमीत होका अपनी नोहने आवा देखा है को बीरक हैते हर कहा—'सरोत ! अब हुई किसी के कहीका इर जई है। फिटु वह से अस, दुने का कान्य कर कहाँ और फिल्हो मार्र हुआ ? तुने बना अवराच किया है ? विसर्व प्रवास पुना-सर वहाँ आवा है। मैं हुते जवन देत हैं, मेरे कर उस जानेवर अब कोई तुझे पकत्नेका विचार भी करने वहीं रक सम्बद्धा । चंद्र सरबीचर राज्य और अपन चीवनक्य हेरी रक्षाके रिज्ये निकासर कर दूँचा। तु विश्वास कर, अन तुहो स्तिक भी यह नहीं है।"

कृतनेमें बाज भी सही जावल कोरण—"राजन् ! वह बाबुनर मेरा फोजन है। इसके मांस, काल, रस्त और बेटेले मेरा दिन हेन्सात्थ है। यह मेरी धूल विद्याद्यर घेरी वर्ष दक्षि महर संस्थान है। अस्य भीरे और इसके अध्यक्षेत्र व प्रक्रिये। पहे श्रुरुवर्ष ज्यात्व अस्य रही है, जाय इस क्रमूतरको होड़ वीतियो, में बड़ी कुले इसके पीछे बड़क जा रहा है। मेरे

कुक-वी-कुक साँग करते हैं। साथ इसे बकानेकी बेद्धा न क्षतिको । अपने देखने क्षत्रेकारे प्रनृष्णेको ही रहा करनेके तिने कार एक करने नवे हैं। भूस-कारमी उहकी हुए पेक्रीको केवलेका आपको कोई अधिकार नहीं है। बहि अवनी प्रतिक है से वैशियों, रोक्सों, उपस्थी और प्रतिहरीके विक्रवीयर ही करवाल हिर्माले । अध्यक्तकारियोयर अस्पन केवन न प्रकट क्वीकिने । भीद कार्नेड सेल्ने आप कासूलकी श्रा करते हो से पुत्र पूछे पक्षीपर भी आपको हुई छातनी कार्यने । केवलाओंने सनातन सारको स्वयुक्तको बाजका केवल क्या रहत है। प्राचीन कारणो रहेन इस बातको कान्छे है कि अन अपूर्ण वाले हैं। स्वाराय वहींबर ? वहि आपको कक्रमार कहा केंद्र है से आप मुझे कब्रमरके बराबर अकस है क्या नाम्युक सैलबर है हैकिवे (

क्यां सक् --क्या । कुले ऐसी बात शहकर गुरुवर बड़ा अनुव्य किया । यहा अयहा, में हेला ही प्रसंदा ।

पर पहला राज जारिए जाने जेन कर-बाटका नक्ष्म केले हमें। यह समस्यार सुनकर अनापुरकी रान्धि क्या कृतिस क्षेत्र और इसकार करते क्षेत्र सहर विकास आसी। सेकार, कसी और सानिकीई रोनेसे पहाँ केवची अभीर गर्मको समान पहल् बोल्स्स पत गरा : क्ते जनका क्या था, किंतु जा तका वहाँ क्षत्रतेत्री कार किए अस्त्री । शंकाबार कह साहारपूर्ण कार्य देशकार पृत्रके कांव करें। ये करनी प्रतरिपति, पुक्रकों और सोबोसे योश ध्यत-सम्बद्धाः सामी-सामी साम् वर्गः समे समापि स्थ मंत्रपति अर कक्तरके मरामर म 📸 । अर राजाने प्रतिस्का बांस कुळ नवर और स्टाब्टी बाद्य बहुता हुआ देखान इंक्रिकेस अध्ययक सु एक, तम ने मंत्र साहनेका काम संद करके कर्ज है तरुक्तर का गर्ने।

च्य नेमावर इत्तानीत तीचे लोको नेवल राजा व्यक्तिक पास का पहुँचे और आकारतों को क्षेत्र मेरी तथा कुटुची मनाने स्तोत केवताओंने राखा सम्बद्धी (अमीनर) को अनुससे नक्षणना, उसके द्वार असमा सुकारका विक पुर्वाची मारवार वर्ग की। इत्वेहीये एक विकास इसरेकर इसा : विकासे शुक्रांके स्कृत को इस के, लेने और प्रविपर्धकी क्युन्सरे लगी की और बैहुर्वस्थिके सम्मे क्रोम्ब या खे है। एउटी उसीमा उस विधानमें बैठकर सकार क्षेत्रको अप्त हुए। सुविद्धिः । तुन्दै यी प्रत्यागत क्रमिनकोच्छी इसी क्रकार रक्षा करनी क्राहिये । जो प्रमुख अपने चक. डेकी और उरमागत पुरसोकी रक्षत करता है तथा सब भारतून और पर्नेसे यह कारदे सकत हं कुका है, जब इसमें , अलिस्सेवर दक्ष रखता है, वह परलेक्स्में सुन्त पाना है। औ

अपने कारित विका बसुको नहीं प्राप्त कर तेवा ? करेका के यह की उसी महिको प्राप्त करेका। राजर्वि कुन्युनीह सरक-करातानी, बीर और सुद्ध इक्टकाने कार्यानरेख इस वरित्रक से एक वर्णन और अवस्थ करता है, यह राजाँने क्यांगर अपने अन्तरे तीन्त्रे स्वेकांने क्रिक्ता है । कुल्यान हेना है।

एका सरकारी क्रेकर सकते सभ सर्कांत करता है, यह | गर्ने : वह तुसर कोई पुत्रन भी इसी प्रकार करनायरकी श्रा

### बाह्यजोंके पहत्त्वका वर्णन

विस्तवा काल अधिक है ? यह विस्त कर्मका अनुहार करवें जा लोक और परावेक्तों सुब्धे होता है ?

चेकाने सह—देश । एक शिक्तरमार आहेर होचर असना प्रका बाहरेकारे एकांट देखे सकां प्रकार कर्मन है Married रोग । उत्तेक एकाओं केवर अवस्थे और पूर्व पुरुषोक्त हता आहर करना वाहिने। कर और अन्तर क्षत्रेयको सहस्र प्रकारोधी पहर क्याँ केरका, स्था भीन अपन कर तथा सक्त नगरका करते कृत करते पारिये । राज्य जिला प्रधार अवसी गारा अपने पुर्वेची था। करता है, उसी स्वस्त हास्त्रजीकी भी को, नहीं उसका सम्बं उदान कर्तन है। प्रकानों तक उनके एक पुरनेकों के सुरिवर जिल्लो एक करे; क्वेडिंड उनके क्वा स्टेंग्न है सारा राष्ट्र काल एवं सुनी के सकता है। राजांद्र सैन्से सामान है सिहाको धाँति प्रकारिक, सन्दर्भय और कारकीय है। वैसे प्राणिनोक्त जीवन कर्या वार्राज्यको प्रथल दिन्तर है, जर्व प्रधार जगरको जीवनकता प्रधानकेक है अवस्थित है। ये किए सम्ब ब्रोधरे पर को है, का सम्ब क्यानाओ रूपटोके समान बक्का वृद्धिने वेक्से हैं। इससे बढ़े-बढ़े सकती भी अब बानों है; क्वोंकि इन्हें फील जुल ही अधिक होने 🕯 इन ब्रह्मणोर्थे कह तो बास-कासी को इस कुमार्थ हरा अपने रेजको केवने को है और इस रिमेन अध्यासनी म्बंति वेदियामान होते हैं। यह हुई होते हैं और युक्त महिनी कुछ क्येयल । कोई-कोई सञ्चाम केटी और गोरकारी जीवन काराते हैं और कोई विकास जीवन-निर्माह करते हैं क्या किरने हैं सार प्रकारके कार्य करनेने समर्थ होते हैं। इस स्था नाना प्रकारके प्रकार देखें को है। का वर्गक को सम्बद्ध इक्क्षणेका सद्य पूज क्या काहिये। अचीन कालमे हैं प्राथमानीय देवता, वितर, प्रमुख, जल और राहालेके प्रजनीय है। इसमेरे कोई भी अधनोंको जीव नहीं समस्त । ब्रह्मण सहो तो जो देवता जो है को देवता कर है और

कृषिक्षीरने पूर्ण-काराजी । काराजे सम्पूर्ण कार्योते | केराजाको भी केराजाने आह कर है। वे विको कारा काराज कार्ये को राज्य क स्थान है। किन्ने समाने काने न देशक को क्रमा परभा है क्या है। सम्बर्ध में तुम्मे क समी कर का का है, से पूर्व पहुंच सहकोची रिन्ह करते हैं, उनक विश्वादेश जान के बाहर है। उन्हें का विश्वादी अरोगर करते हैं. का पुरस्का अध्यक्त होता है और विलामी से पान की है, THE THE STATE STATE & THE B. LANS, STR. साम्बंध आहे वार्राण पहले हारिए ही थीं; चितु प्रायुग्नेकी उपन कुरियो प्रतिक हैं जेते कारण उन्हें प्रोच्छ होंगा प्रदा होता, परिष्यु, पुरिन्द, ज्योगर, बोरिनार्च और अदिनक अर्थ क्रीप क्रांजों से सक्नोधी है कुई क्रोते क हे नहीं। इस्तानीने हार पन रेनेने ही सरवान है, अन्ती पुरुष अका नहीं। अक्टानोकी किया किसी वस्त नहीं सनके व्यक्ति । वर्षा अस्ति निष्यु क्रेके के वर्षा की वेद करते कुरवार केंद्रे रहता के अंतरार कर केंद्र माहिये। इस प्रकीयर कोई को देख करून न पैछ दूका और न पैछ होना, को pagent out from unit growth after minu सहस्र को । क्रांत्रों नुद्धाने कडक्त, कडकानो हक्ते कुछ और कृष्णीको कहा रोजा जैसे अस्तर करिन काम है, उसी क्य प्रत प्रतीन प्रक्रमोची मीतन हमार है।

प्राचीको एकालोको पाछिने कि साथ योग, आकृतन और कुल्दे क्योकान्तिय पहार्थ केवल करनातर आधिके क्या एक इस्कृत्येकी पूर्व करें और विशवें समान करके भारत-बेक्सका बार रहें, उसे खारे स्टिन य समती है। का रुपने रुपने परित और सहोको समय प्रकार अवस्य रहत कार्किने। क्रतीय, वर्षक्र और जान प्रत करनेकारे प्रक्रमध्ये अपने करमें उत्तर देख कविने, स्वीकि अक्रमोरी सेंद्र कोई नहीं है। अक्रमोर्क से दिने पर इतिकासे देवालकेन स्वीकान करते हैं। सूर्व, कहात, करा. करं, पुरुषे, आवादा और दिया—इन सक्के अधिकृत्य हेबार राह्य स्थानको प्रतिस्थे प्रवेश करके अन चोकन करते

महीं स्वीकार करते । उन्हारको हेर करनेको करी प्रकार सम्बद्धिका भी गाँ। काम करते । भीदे सक्ताम संदर्भ हो नार्ष से वेचन और जिल्हा की साथ प्रसाद रहते हैं। सामानोकों संस्था रक्षानेकाले पुरुष भरतेके कह जाना भारतको प्रश्न केले हैं. क्या पर माँ हेने पता। परण विक्रांतर प्रतिकार मध्यानीको सुर करता है, जारे-कार्डके देवता और विकरेकी भी स्त्री। केरी है । विकासे समाज प्रस्ता करता केरी है, जा पह भारि कर्न सक्तानेते ही सनक होता है।

चीन नार्टने सरक होता है और नरनेंद्र पहाल पहाँ कार है जा परमानाचे, वर्ग और स्थाने पार्गके कार का और प्रतिकासे सक्रम है बाजे हैं। ये राजे वर्गके पारत है, को स्था अवन है। से लेन आयोग अनुसार वाले हैं, उसके बाबे परावय वह होते कह पुरुषे पंजार राज्य निराम गाँ केल । प्रकारके पैको निवारे हुए क्याची से साहा स्टेब्स करते हैं, से मुख्य क्रमी वराज्यको नहीं प्रदा केर्र । अन्ये केर्र और ध्वाने क्रमी क्षर व्यक्तिके देश और यह प्रायुक्ति प्राप्त आहे से प्राप्त के वर्ष है। कुनुबंधी प्राप्तनीने प्राप्तकृतिके, अविश्वासी संक्रमंत्री पीर्माची राज्यमंत्री क्षेत्र पंचारती केली और इनके कृतिको परावा किया वा । वृत्तिकोह पाप अनेको प्रधाने आहर के से के कुल्लाकर्त करत करोसते प्रकारोंने को हो। दिया। संसारने जो कर बाह, समा या पह पता है पर पर पराने देनों हो अननी १५। marchit in from £ :

इस विकास सरकार औदावा और क्योंके संख्यात क्या प्राचीन प्रतिकारका स्वयूपन विकासका है। किसी सन्तर मानाम् अध्यानमे पृथ्वीचे पुत्र-- 'व्यापानी ( पून सम्पूर्त प्रामिन्वेंकी पाता हो, प्रवरित्वे में हुनते एक संबंध पूछ रहा है। गुरुता पर्या दिस करिंद्र अनुक्रमते अन्ते भागक कह हत **West 8 2\*** 

पुनर्शने कहा—इसके दिन्ने क्यूनको प्रकृतकोडी ही होना करने करिये, की सबसे परित्र और उतन कर्न है। (Married) रोका कानेवाले एकको सन्दर्भ केव न्या के अबे है। ऐसर्न, बोर्सि और अप बाँद की स्थानकों से प्राप्त केसी देश करन करिये कार्य, करिए, साथ प्राचन कार्य बंदरेवाले और परित सहाजबी निम सेवा बार्नी कविने ।

है। अक्रम विराय अब नहीं करें, उसके अवके दिया थीं | अब्रिक्त अध्यक्ते से भए देखें, उसमें परिवार से हरें; क्रिके कारण हुन, 'स्कुलाब्र' कहरको है । हुनलेन्ने को परिर्ति, ऐकर्प और तथा सोबोची प्रत परन पाल हो, जो हक्कांकी आक्ष्में विशेष कृत करिये।

मेनमें रको है-एकोडे ने कार पुरस्त करता, बहुकुरने जानो जांस बनो क् बहु-'बहु । कुने का अवर्थ का कार्यत वृत्तिह । इस्तुर्वेदा मा व्यक्ति प्रभवन क्षेत्र स्था परिवासको अस्त्री एक कसी वर्षिते, इससे पुरुष कार्यान क्षेत्र । व्याचनकारी mare werk if your schedit woder, arbite afer ज्ञान कोवल करेके अधिकारी है। वे का अधीको विका करनेकारे, करके स्वाह और देवकाओंके पुरु है तक पृथ्वित होनेका के पहारक्षके कर्माने अस्त्रीओई हेक्ट पहुंच्छे सामानक विकास करो है। पूर्वकारों प्रकारिने प्राकृत, क्षील और वैत्योची कृतिक उत्तर बारोड उनकी लगात्वा. produkt fire starbarer afte populati frank fire: और कोई कर्मन नहीं है। प्रश्लानको स्थार करोगर यह स्वयं their familia is one is seen to be ⊈क्तरेन्द्रेश करूका होता । विद्वार प्रकारको सुद्रेनित कर्व न्हीं करन नाहेने । कुने को करेने आका को रह हैता है। कार्यक कार्य कार्यों स्थाने, पुनि, हेन और ज्ञानक देवनेंद्रों जोंद्र होते हैं एक स्वाप्तक antice report serves that \$1 pages Augustic अभिने विका वेकारपारेची व्यापी द्वार पार्ट्ड स्वापन वीपाप्पालने होते हैं। क्षेत्रपण ! यदि तुमलेग निर्मी पी अनीके काम होत् व कारोड़े अन् क्षु बाव अञ्चले हार हरिकांकर और कामाओं तमें खोगे से हफारी साथै कामनाई पूर्व होनी । क्यूनारोकारे क्या देसारोकारे को कुछ चोन्न कराई है, से एक अन्य, नियम और स्थानामे आह direct fire

पुनिक्षेत्र । इस प्रकार प्रकानीयर क्रमा करनेके रीजे विकास अवस्थित को उन्हेंस दिश था, यह अपनीय की तुन्हें सुन्त हो । पेकल, हारिक, स्वट, चैच्छ, बहन्यविश्व, siften, eu. od. ut. sur, telt, ficon alt कार-ने राज पाले सकिए थे; बिद्ध प्रशासीके जागरी केव हो गये। प्राप्तकोचे किरम्बरसे असरोको समुद्धी जनमे कुछ पढ़ और अक्रवेदी है कुमते देवाल्वेन सनीत पानन । देशिने अञ्चलेका प्रचल, उन्होंने कालाने काला | निकारी हुए। कैसे उत्तराहको कुन, हिन्दानको निकारत सम्बा दिया, संस्कृतक पानी पान्य क्रम्ब दिया प्रमा प्रमादे | कारत और येड बॉनकर पहान्ये प्रमान्यों रोख देश आस्था करीरमें एक इमार पराधे किंद्र जरात कर दिने और बिता है, जाते उपाल इस प्रश्नीपर इस्तुमध्येको जीतना असमान

सकतः क्वोंकि प्रकृष पहला और केव्यक्षेत्रे की देवक्ष है। चुनिहिर । यहि हुए समुक्तांच कृत्येका कथा चेत्रक व्यवस्था व्यक्ति में अपने वातिवालोगर प्रातन करता है। बाहते हो से दान और रोगके इस तक उद्यानीकी पूरा फ़िका करे । इस रेनेसे कहाओवा नेप करन है कार है, प्रसारिकों को दान नहीं होना पहले, उन अञ्चलोंसे हुन्हें अपने कुराची रहा करने सबिने।

हर दिवसों इस और सम्बन्धनों संबद्धन एक प्राचीन प्रतिकृतसम्बद्ध सहस्रतान दिनां नाता है, जो सुने । एक प्रात्मको जात है, देवनाच इन्ह्र रखेनुस्वरस्था सरावारी करावे मनकर एक बेर्क्स एकर सकर के अपनिया व्यक्तिक प्रताने सम्बद्धानुत्रके काल गर्ने । वहाँ ग्रोक्शन अपूर्वे इस प्रकार प्रस विकास-"मृत्यसमूर र तुन विका सर्वाको अन्तरी क्रांतिकारकेवर प्रात्मन काले हो ? वे विका कारण मुन्दे प्रार्थिक मानते हैं ? यह दीया-दीया कारकारे हैं

erappyet बहा—में प्रकारोंने कर्या केंद्र की देखार. अनोर प्राप्तां ही अपना पर सम्बन्धाः है और प्राप्तांकी पन कार्यवाले विशेषा रहा सम्बन्ध करत है—वहे सुरू हेरेची वैश्व करता है। कुरबा करते बच्चेकी अर्थका पा करता, कवी कावा अध्यत्य भी कथा, कावी कृत करके कुरूर पुरस है और रुपेर केने फरमेंने प्रमान करना है। प्रकृत भी अलग निकल होता है। तक सलबीर करते और मेरी कुकार पूछते हैं । प्राध्यानीके कारानकार खानेश औ है प्रश्न प्राथमान पहला है। इनके फोर्ट क्लेक्ट की है कारण सारा है। वे को पालीय पार्टर कार्यकार, आक्रमक तथा चेन्त्रवेते पीत कावत अन्ये प्रकृतिको अनुतरी प्रीक्ते रहते हैं। संस्था होका से मुहलों को कुछ स्कूने हैं, उसे मैं अवसी सुदिक्षेत्र प्राप्त महत्त्व है। वेस सर सह सामुओंचे भगा पहल है और मैं नवा रुखे अनुपूर्ण विकार

है। प्रकारोंसे निरोध करके पुरुषात्का संभ भी किया का । रकता है। उनकी कारीसे को उन्हेंडका कपुर सर प्रकर्कत हेला है, अरखा अस्ताहन करता सुतर है। इसीटिये उद्यागिय प्रक्रमके मुख्ये क्रमान करोड़ सुनकर करके अनुसार कार्यन करना हो पृथ्वीयर स्थापित अपूर्व और सर्वेतम दृष्टि है। 30 ब्राइको ब्यानकर मेरे दिया ब्याद अस्ता हुए से। उन्होंने मुक्तक प्राप्तनीको स्वीत्र देशस्य समागरे पुल-'हर married from some field mit of?"

> क्यूनो का-स्वार हात्रा स्वारको है सिद्ध हुए है। हरक बल इनकी कालीने क्रेसा है। बहुते पूर्वक करने प्रदूष्णवेदा कारण करते हुए हेदाराहरपूर्णक निकास आहे. प्रमाणकीय केवल अल्पन करना स्त्रीने । वित्र अनारे कोच रक्षा कर क्रान्यको क्रेक्स व्याप करण सहिते। इंन्यानीको सर्वत समानुद्धी राजनी माहिने। को सन्दर्श वेक्केको अन्तरे निर्मात काचे प्राप्त पहला है, यह हान्सान्यत और उसंस्कृति क्रेनेपर की विक्रमोधे क्रय क्रमील (नैकर) 🛊 श्रम्बा साल 🕯 (बाह्यको गुरुके पर प्रकार केन् क्योक्स के के हैं। कि बी प्रीव मिलने क्योक्स की बोबोबो रेंग्सर बात है, जरी प्रधान पुद्ध न बारोनारी क्षांत्र और प्रवास व करनेवाले प्राप्तानको यह पृथ्वी निवस कर्त है। क्यूप्टेंड कुम्बंद बीतर को अधिनतन होता है, यह कार्यो स्थानिक केथ भारत है। यह बारण करनेते कार्य और कहा वर्ग्य पहलेसे प्रकृत पुलित संबद्धे बाते है।

तेरे रिक्रमे क्रमानों यह बाद सुरकार लाइन्टेका पूजन किया था, उन्हेंबर्ड परित में भी साम का साम कानेवारे कालंबी एक क्या है।

केवर्क करते हैं-पानसाय प्राथरके पुरुषे पह प्राथन कुम्बार कुमूरे प्रश्नासीका पूराय किया, प्रश्नो कर्षे महेन्यस्वरी

# हानपात्र पुरुदोंकी परीक्षा और जी-रक्षाके विषयमें देवकमां तथा विपुलकी कथा

**बुधि**रने पूज-सिताम्ब ! क्रमका पक्त कीन होता है ? [ अपरिक्षित पुरुष का बहुत दिनोतक उत्तरने सत्तव रहा हुआ। अवका पुर देखरे अवक हुआ ? इन्लेंचे विको पात सम्बाद कारिये ?

धीनावीरे बहर-व्यक्तिहर ! कुलोरी बहेई-बहेई अपनी सिरमको बारण दनका परा होता है और बुक्र सोन जनने केंग्राके कारत । के बहुब (यह करने में गुलाविका अवदि हेनेके कोएकरें) उस कुछ बान कर देनेके रिप्से विसरी बहुको कक्क करता है, यह भी करवा पार है। कुटुकोर नम्ब्योको बाह्य थ देका है दान करना चाहिये। विनको वरण-प्रेपकार, पात अपने क्षम है, अनको बाह हेकर कर करनेवाला मनुष्य करनेको गीचे निराम है। इस प्रकार जो च्यानेसे परिचित्र अहे है ना को चहन विनोत्तक राज्य के चुका है अवना के पूर देशने जाना हुआ है—इर पीनोधी है विद्वान् यूक्त द्वानपात सम्बक्ते हैं।

कृषिक्षेशने एक-स्थापक ! विकास प्राणीको पीका न पहिले और क्वेंने भी कथा न आने कवे, इस उच्चर कुन केव जीवर है: बिह्न पानकी क्याची कामाने कैसे हो 7 हिस्सी उन्हों कार कारोके बाद बरावें प्रशासक भ से ।

प्रेमचीने बाह—केटा ! प्रातिका, पुरोदीन, सरवार्ग, हिस्स, सम्बन्धी, अन्यव, विद्वान् और केम्ब्रुक्ति रहेत कुल्ह—मे अनी कुम्मील और प्रकर्मन है। इसके विकरित बार्वन प्रज्ञानको पूर्वन फलारके बोन्य नहीं है। अतः सूच संदेश-विकासकर खेना कुर्णेकी परम् करने काहिते । अस्तोत्व, प्रमानाव्य, स्वीत्व, इक्तिकांचन, सरस्या, होत्र और ऑक्सिक्स अन्यान, सम्बद्ध, स्वारतिया और प्लेटिया—ये पुत्र विको प्रथाक: विकासी है और कोई बुराई न बान बई, वे दान और सम्बाधंद अन्य पान है। यो पूरत पहल विशेतक अपने तक पान हो, यह भी वानका नाम है राजा को हुन्ता आका हो, कह करिनेता हो का सपरिचिता, यून और समाने भागेते चीना है। वेद्येको अञ्चलक्षिक करना, कारको स्थापक करकुर करना और प्राचीत अन्तरकार्था केन्स्रान्य सामने ही विभावताला प्राप्तान है। को मिक्रम अपने पाविकास अधिकान समोद समीद स्थीत अंतरण रेगार पेट्रीकी रिग्हा सर्रात है, सामृत्योधी सर्वाने को है मनेकी को काका किया करें, कार्यकृतक पुरियोक प्रतिपादन भूगी करता, चोर-चोरते प्राप्ता प्रतास और बाक अधिक बोराता है, जो राजार मोद्र करना, बाराओं और भूगोंकी-एवं कामहार कारत नक्षा वालीर प्रकार केरावा है, हैते मुलाको अस्तुरूप प्रस्तुरूप साहिते। विद्वारोधी पृत्तिने सह भनुकोंने कुरोबे समान है। जैसे कुमा बैसने और साहरेके रिन्ने रीक्ता है, इसी जन्मर यह बहुत करने और श्रांकीका कृत्यान करनेके विको हमार-कार क्षेत्रात विरास है। ऐसे स्टेम कुर्ग्य यह गाँ हैं) । सनुष्यके भगत्वे स्ववकृत्य कृष्टि क्रार्ग्य कार्षिये, वर्ग और अपने कान्यानके उसलोवर विचार करन भाविये, ऐसा वालेकाल पूरक कहा ही स्वालिकील होता है। से (मह-मागारि करके) हेकामांकि, (केहेका स्थवका करके) अभिनेत्रि, (सर्वुकारी क्योर तथा आह् बार्फ) विक्तेंबेट, (राम केवर) प्राप्तमधेक और (आजिक्क-स्वयस सम्बेद) अमिकियोंके ज्ञारी कुछ होता और सम्बद्ध निष्ट्य (निकार) एवं विरस्तुक स्थले इस्क्रेड क्रमेडा अनुसर करत है, का गुरुष कभी करेंगे प्रश्न की हैस ।

विक्वेची रक्षा विस्त प्रचल कर सकता है? को सम्बद्धे असम और असमाध्ये ताम बना देती है, को संस्थार करने और न करनेवर भी कनमें विकास बैध कर देती हैं, ऐसी विक्रोपी एक सीन कर सबका है ? और अब्बे एक किसी प्रचल सम्बन्ध हो अध्यक्ष बिलीने पहले कभी उनकी रहा की हे से का विकास एक वर्णन प्रतिकेत

क्षेत्रकी का—महत्त्वको । तुन विक्रोंके विकार केल च्या जो हो व्या जीवा है है, इसमें निश्रक करा भी नहीं है। इस किनको में तुन्हें एक पूराना इतिहास सून पता है, किससे कारक विकास किया प्रकार पुरुष्योगी रहा की वी, करिया वर्गन है। यानाओं इनकी दिलों प्रकारित अधिके कारण है। में कारणावारी कारणी को सामा है। श्रोधी कर, किंग, वर्ग और अधि एक और और विवर्ग एक और । प्राचीन स्थानको पात है, केन्द्रपर्व सालो अन्ति हेव सहस् सीमानकार्य कृति थे। जाने और सामग्री एक भी भी, से इस पुर्श्वेपर अधिनेत सुपर्छ थी। अस्ता प्रत देखकर केरण, सम्ब और नवर्ष भी पत्रवाले हे बाते है। इस से कारत विकास के अस्ता है। पहल्की केन्द्रमाँ विकास वरिक्रो क्रमीवर्गित वरिविद्ध हें और यह भी प्रत्यों में कि प्रद नक के नामीतनक है, प्रतरियों के अपने सीची नामुक्ति पान करने थे। एक धार उनके करने बंध करनेका निवार कुरत र प्राप्त करना के भोजने रूपने 'काई में चुराने राज सार्थ से नेरी फीकी एक फैसे क्षेत्री 7' तिल पर-क्षेत्रण कार्या च्याच्या रूपात निर्देश कर का च्यानवर्गाने अपने देख दिखा निकृतको. यो कुनुनेत्रमे अस्तर हुआ धाः स्थापन और उससे इस अवार पाछ — वेटा १ में पह संतरे साईगा, एवं केरी सी परिवर्ती करमूर्वेक दक्षा करमा; क्योंकि केराता हुए ह्या हो। क्या करनेकी काली रूपा सुन्त है। सामग्री ओसी तुन्हें सह मकावार कर व्यक्तिः अमेति का नाम प्रवासे का करण करता 🕯 🖰

विकास करे ही विलेखिया और तथ गुलावी है, अहि और कृति समान क्रमार्थ कार्रिक भी तथा थे कर्नके जाता और भारताची थे। पुरानी आहा सुरक्षत कहाँने करा केंग्स-- 'बहुत अवहर, में ऐसर ही अजीवत र' दिन कर गुरुवी कार्यको साम हर से विकृतने पूछा—'पूरे । हम् अस शारा है में कीश-भीश-ने कर बारण चरता है ? उसका सरीर और केंच केरस है ? यह पत्री महानेकी सुना प्रतिकित्ते ते

टेरराजनी कार-केटा ? इन्ह बाह मानाती है, बह बारेगार ब्यूट-से कर बद्धाला खुटा है। धन्त्री है महाकारर मुख्य पुणिकित पुण-विकास ! पुरूष इस संसारण करती | यहने, हावमें यह और अपूर देखे उस कानोर्टे कुमाहर

बारल दिने अता है और कार्य एक 🛢 क्लों चन्कान्ते । समान क्रम करा होता है। कामी क्रम-प्रा और बड़ा करेर बारन करता है एक कंची विश्वहें करे रोप-कृति देवी दिसानी देश है। अपने प्रतिस्था रेन भी कभी नोता वाली प्रतिकार और कारी पाता कर रोगर है। एक ही क्षानों कुरून है जात है और एक है कामें सम्बद्ध करी कहा की माता है कानी अवान : यह सेते, जीने, तंत्र, कोनार, सिंह, माता, प्राची, केवता और केव संभोके का करण करण है। मक्ती और मक्कानका कर करन करने जी कुछता। कोई भी जो पहल की उपना । औरोपी से पान है क्या, विन्तुरि हुए संस्थाको पराना है, से विकास की उसे सरने कार्ने को कर सकते। अवनंत हुन १९ केवर Mendick शिकानी केल है। इस अवार नद सहा-के पन बारन किथ करत है; इस्तीले हुए अन्तर्क नेते के इतिको रहा करण, विस्तो कार्ने रहे हुए इतिकारो पालोको प्रथमको प्रकेश गाँध प्रथम हो। प्रथम स्था र - कालो पाने ।

यह बहुबर बहुबर हेरवार्थ क्रुप्त करवेड हैरने को को । किनुसे पुरुषी कर कुरवर को किन्सों का को और मुख्यते हमारे का बीची सूत्र बीचवी वाले तते। क्यूंने बार-के-पर जोवा 'में पुरुवक्ति पहले केले एक क्रमा करें ? इस मामती होनेक क्रमा है कह पूर्वी और क्रमानी है। संस्था स सुर्देश स्थानोधी से सा क्षेत्रको काम राज्य भी केवा का सकतः वर्गीय क को स्थाने का बाल बाक है। संबंध है अपूर्ण का सारत करके कुठीने कुत करा और नुकारीको दुनित कर करते । जा: में प्रतिकंत करीरने प्रतेश करते सीचा, प्रत्यानी क्राकी राज नहीं को का शब्दकी; क्योंकि इन्ह स्थानीका है। चेपकरके प्राप्त है में बोनके उससे पह करिया। अपने सुरूप राजपानीये में इतनेह उतनेहर अन्यन्तीने प्रकेश वार्तना । वृद्धि हेशा कर सम्बर्ध के यह मेरे क्षण एक आधुर्णनगढ कार्य होगा। निस प्रकार कम्मकं क्षेत्र पहे हाँ कम्मी है; कापर विशेष पायरे दिया सुनी है, इसे प्रकार में स्के अन्यस्था पान्से गुरुवादि पीतर निवास करीना। वै स्बोनुकारे पुरत 🐌 पेरेक्टर कोई अन्तरम नहीं हो समझा। की रह कानेताल ब्रहेश क्यों किसी सुने कर्यवसाने हरूर बाता है, इसी जबार में भी संस्थान होवार युक्ताके क्रवेरने निकास कार्नेन्य र' इस सन्द्र वर्णना दृष्टि कार. बेद-बाखोबर विकार कर और अपनी क्या गुरुवी जन्म सुरकारों कालो स्वाप्तर विद्वाले कुरवर्ताची शास्त्र | स्थाप किया और विवादहिते जब उत्सवी और देशा के

इस्तुंबा करून ही निर्देश किया । इसके बाद स्थिके पास बैठकर उन्हेंने क्यु-रुखकी करोने को रूप दिया। फिर अपने केनों नेकोंको उसके नेतोंको और समान्य और अपने नेक्की किरकोची उसके नेककी किरकोचे साथ ओड रिया क्या करे वर्णने अध्यासमें प्रतिष्ठ होनेवाली अनुसी माति जीको प्रतिसे प्रकेश किया । सम्बद्धम् मे प्राणानी मंति अवर्तित क्षेत्रर किसी प्रधारकी चेत्रा न करी हुए गुरुवाधिक करिएको नैकोश करके निवस के गये और मानाम करके गुरु का समाप्त करके पर न सा गये, समाप्त इसी माति सामाप्ते का क्ये थे।

कारका, इसी बीको एक देश दिन कामाने हन, न्यू क्षेत्रका कि को बॉक्से प्रम करनेका ठीक अवसर है, का कार और आरम्ब सुन्तर सुन्तराथ इस बारण कर आहममें पुत्र क्या । वहाँ ब्यूनका असे देखा कि निपुत्रका प्रदेश Anathriferend with featur war & affer serie for fierr & हवा कुरते और क्येक कारकारणे करानुसी क्ये केटी हुई है। स्थिते भी बात इसको स्थानिक देखा से सहस्र कानेका किया किया। अन्यत पूचा पर देवनार को यह नाहर्य BAG ( काने तरा का प्राप्त है कारते वी कि 'तुन कीन है ?' विकृतने जान्यी प्रकृति हुन्तु। देश योगारको जान्यो सेकार् कर दिया, विकासे को दिल-कार म सकी। तम देवरायने नहीं क्षा क्रमीने काले पाछ—'सुन्ती ! में देशवाओंका राज हम, है और कुमते ही रिक्ते नहींक्य आता है। प्रेमारी एका कारोने बालोग को यह यह ने का है, इसीने तुकारे निकट क्रानिका है। क्रम के प करे, सारव कैया का का है।' इसकी कः कर पुरुवतिकं सरीरने की हर निपुरने भी सुनी और अर्थने क्याने हेल की रिच्या कियु करते प्रधा सन्तित होनेके कारण क्षीं। इन्हारो कोई उत्तर व दे संबंधि । मुख्यानीया जाकार देशकर कियुत्र अध्यक्ष क्योकार साह को के, इसमिने क्योंने चेन्द्रस सम्पूर्णक को निकासने रहा और चेनसन्त्रनी क्कानेरे अस्ट क्या होयांको बीच रिया।

चोपमानसे पोद्धित प्रविषयो निर्मिकार देशकर प्राथमी कते राज्य क्षां अन्तेने किर क्या—'सुन्ते ! अतते, अवस्थे हैं का सम्बन कर नदें कुछ अनुसूत कार देना है। पहाली भी कि विद्यारने असभी पाणीने शास-पेत कर दिया। उतके पैक्से स्वाप निकास पक्ष 'अरे ! तुमाने पढ़ी मानेका क्य अनेका है ?' परमक होनेके बारण का उदासी-सावर्ण कवर बहुबर की। बहुद रहिंगत क्रूं और नहीं सबे हर प्रमुख्य प्रम को उद्धार हो कहा । कहीने क्रीक्ट कार्क्सरेक्ट का

क्सके सरीरके भीतर सैठे हुए मिलूक सुनि विकाली पहे। क्रांजमें विवड अतिविश्यको धाँकि बीचके केले सुधार कोर क्यातार्थे संस्था हर सुनिको देशकर इन्द्र करेंच उठे । कुलके करते काव्य सारा व्यान वर्ष क्या । सब व्याक्तनमे विद्युत औ गुरुवारीका करीर लाग कर अपने करोगों जा को और भवधीत इन्हों केले-पानी कुन्दर ! हेरी बुद्धि कहे केटी है, तु प्रस्ता इन्द्रियोक्ते अधीन सुमा है। अन देखा और मनुमा अधिक कारणक तेरी चूना नहीं करेंगे। इन्हें | क्का वृ का दिनकी बाद पूरू क्या, क्या गीनको होरे क्रवार्ण करोरने धनका विद्व करकार तुझे जीविन क्षेत्रा का ? क्या हैरे सन्हें इस प्रदर्भकी बाद अब नहीं की ? में बानवा है वू पूर्व है, हैर। मन बढ़में नहीं है और हु बहुबबुक्त है। बब्दे । हुए है पहाँसे; जैसे आप है कैसे ही लीट गर, में इस स्टेब्टी शहर कर या है। मुझे वेरे समर एक आती है, इसीविन्ने अपने केन्स्रे तारे यस करना की कहात; किंदू की बुद्धिकर कुछ को भवंबत हैं, व्यक्ति के तुझे देख करोगे तो क्रोबकी कर्रात हर मैत्रोद्वरा अन्ये पर्य कर इस्तेने । आवसे क्यो देख कार न काल । अन्यवा अर्थी ऐसा न हो कि तुही ह्यान्यको सीमृत होकर कुर और विक्योशिक रह होता यह । यदि सु अपनेको अपर पानकर हैते काओंचें हाथ कारण है से (मैं को सामगान विन्ते देशा है) यो विश्वविद्या अववान न विन्ता

कर। क्यालाने कोई भी कार्य असामा नहीं है (हपसी करतेको भी यह सकता है) ।

क्षेत्रको बहुते है—स्कूलक विद्युलको से बार्ट सुरक्षर हुन् नका सर्वता हुए और कुछ करा व वेकर कुरवार करायाँन हें गये। अर्थ उनके गये एक ही मुद्रा सीतने क्या का मित व्यक्तमा केवल इकाइसार का पूर्व करके अपने कारणपर हमेंट काचे। मुख्येर कानेपर करवा दिन कार्य कानेकारे विकृतने बच्छे कानोंचे प्रमान किया और अपनेक्षण कृतिक करूरी स्ती-सामी पार्च क्रिको क्र्ने the firm a magnity specified flagge flot applied sh नीति कि प्रश्नुन्थमके पुरस्की केना चाले हती। यस पुरस्की विकास रेप्पर अवनी पार्टिंड साथ मैठे, कर समय विद्रुपरे इन्हरू साथै करनूत कई बाद सुनायी। यह सुनवार वे प्रतायी चुनै कियुर्वन बहुत प्रत्या हुए और करने होता, प्रदासार, क्य, निकार, गुज्योच्या, अच्छी प्रति प्रतिक्र और वार्गेने विका देशका अनुने अन्ते दिल्लाके व्यक्ति सामुकाद दिवा : सम्बद्धार का भारतिक भूतिने अपने वर्गनाहरूक हिन्स किनुस्त्रों का चौननेक हिन्दे साहा। पुरुष्टि आहा प्रधान विद्वारने क्या-'रूप करेंगे वेटी दिवति क्यी रहे।' सब गुरुने बह बकान है किया के विकृत करकी अनुस्ति केवार काम विकास में अपन हो उसे ह

#### देवशर्याका विपुलको उसके दुरावकी याद दिलाना तथा उसको साथ ले पत्नीसहित सर्वामें बाजा

भीकर्त करते हैं--वृत्तिवृत्त । गुरुवातिकी रक्षा और प्रकृत । स्पन्त करके विपूत्र प्रम्काने प्रणे---'वीने केनी शोख बीव रियो ।' सरकार, कुछ समय बीत व्यवेश एक दिन एक विम्न सोमानी सुन्दी जनव नावेद कर काले आकारश्मानी कही जा रही की। इसके क्रांग्से कुछ सुन्दर पुष्प, विरामेशे विका सुरुध भा स्त्री थी, देखानबंधि अववानोह पास ही जमीनपर निरे । स्वीतने का पुर्व्यको क्यूकर एक रिन्त । उसकी एक गई गईए थे, विस्तार कर क प्रभावती । यह अकृतन विवरणको प्याही वर्गी ही । एंड कर असी पहाँका निरम्पान प्राचन सुन्दरी स्थि अपने वेकोने का हिन्द कुलोको गुँककर अकुराजके घर नहीं । वहाँ अकुराजकी समीने क्या का कुरनेको देखा हो अपनी बहिनसे हैसे हो कुछ मैंगना देनेका अनुवेश किया र सावयमें स्वैद्येका स्विते व्यक्तिको कही हाँ सारी बार्ट अपने कामीसे कह सकती। होने रूपता एकने बद्धा—'तुम इतिह कासी हो।' इसले

सुरकार व्यक्ति सरकी सामेन सोवहर वह सी और विश्वरको क्षांच्या कुल राजेका समोत की हुए बाह्य-'कुल प्रीत ही -

व्यक्तकारी विकास प्राची जाहायर कोई शायक निकार न करके 'कहा अच्छा' कहका इसे विरोजार्थ किया और जिस रकारकर अवकारातों में कुछ गिरे में बढ़ों गये : बढ़ों और भी नई एक यहे हैं से अभी कुन्दिकरों न से। इस सुन्दर पुरुषेको पान्यर नियुक्तको नहीं अस्तातन हाँ और उन्हें रेकर के हुएंत ही कामाफे पुश्चीने विशे हुई कमा नामक नवर्धिकी ओर कार दिये। एक निर्मन बनमें आनेकर उन्होंने की-पुरुष्के एक कोईको देखा, जो एक-द्रुप्तीका प्राप क्यक्या चेतावार कृप रहे थे। उनमेरे क्यने अपनी चार तेन कर दी और दसरेकी चल मंद बी। इसका खेनोपे सगह

व्यक्त—'नहीं ।' इस प्रवार केवी ही इन्वार करने समें। हैते इसको हुए दोनोंने नियुत्तानो स्थान करने प्रमान साते हुए व्यक्त—'इस दोनोंने जो हुए चोरच्या हो, उसको वसनेवाले बड़ी दुर्गीत विशे यो इस नियुत्तानो नियम्बर्गा है।' वसनाय, विश्वरूपों कर पुरस्त विश्वरूपों को, यो संगो-कोर्डके करने रोकर दूर सेन यो ने और सोम क्या हमेंने को हुए ने। वे



भी सही संबंध कर जो थे, जो पहले की-पुरस्के जोड़ेर्र की थी । क्योंने विकृतको स्थान करके बद्धा- 'क्रमकेनोनेने यो सोपनक नेईमानी करेगा, करको बढ़ी नहीं निकेशी जो परतोको इस विकृतको विक्नेकरी है।' इसके को सुरकार विकास जनमें रेक्टर करियर सरकारकों, सबने समल करोंका उरला किया, जिल्लू कवी कोई कर हुआ है देख नहीं तान पह । उत्तर का होनोब्दी प्रमान हरका उनके इक्तमें अग-को राजी हां की; इक्तीको के अनने कार्मीन सूच विकार करने सने । विकास-विकास का कई दिन बीट करे. सब उनके पनने बंद करा कावी कि 'वैने बरीवारी रहा करते समय अपनी त्वक्रपेलितकुत जलकी स्वक्रपेलिको और मुस्तक्षरा काने मुसमें प्रवेश किन्छ क और का सबी का भी गुरसे किया की भी।' चुनिहित है मिनुतने अपने मनने इसेको पान पान और कालने का भी देती है थे। कम्पन्तर्गरी बाक्टर उन्होंने अन्ते हत्ये हुए कुल पुरस्को अर्थन का दिने और अलावे निर्माणक पूजा नहीं। दिल्लाको आमा देश देवलयांचे पुत्रा—'विपुत्रः ! जल महत्य कर्यो कुन्ते |

**am ton § ?**'

ं विप्तान का — कार्य । येने कार्य की-पुरस्का एक जोड़ा और कुक पुरस्त ऐसे के; बिजू के कीन के को पुढ़ी अवही तरह जनके थे ?

टेक्टबर्ग क्या-विदुष ! हुम्मे को बी-पुरस्का बोद्धा देका था, जो दिन और राति सम्बर्ध । ये दोनों च्यानन् कुन्ते को है, जो एको बन्धा का है तथ से अरुप होंदे बरकर कुर केरने हुए हः पुरूष प्रैशासी पढ़े थे, उने हः बहु करें । वे वी तुन्हरें करहे परिवत हैं। मनुष्य विजने है एक्क्पनो क्रियार पर को न करे, अपूर्व और पर-दिन को काकर वेसले राजे हैं। तुपने इन् और अधिपानमें परवर पुत्रो अवन चर-वर्ग जी बताय या, इसीली अलबी बाद बिलारे हुए उस लोगोंने नेती वारो बाही है जैती कि कुले कुले हैं। दिल-सार और स्कूर्य पुरुषो कर-मुख्यको सहा कारणी कही है। हुमने को मार्ग किया नह कुरे को बारतक, प्रतरेन्द्रे कुद्रे पारवार्थ कर्तकारोदे लेक किए सकते थे। किसी एएकी सीको करकारीहे क्याच हुन्हारे बहानी बात नहीं है, जिर नो हुन्हें अपनी ओरसे बोर्ड ध्या भई मिला, इस्तिनो में तुपना प्रशास है। की में हुनाय प्राचन देवान से नि:संदेह स्रोक्ट मारवार क्रम हे केंग्र; मिंदू हुम्मे मचावर्तक मेरी सीमग्रे रहा हो सी है हुए बंदरश में कुन्हरे कर निर्देश करत है। अब तुम स्कारकेक कानि का सम्बोने।

निपुरको ऐसा व्यवस्था वहाँ देशसार्थको बढ़ी प्रसारता हाँ और से अन्यस् को एक दिल्लाहित सर्गने बानार अन्तरपूर्वक सुने रुने । युविहर ! बहुत दिन पहरेगरी कर है, ब्यापुनि व्यक्तेन्वेक्जीने प्रमुखे सराव व्यक्तीतके स्थापने कुरे का उपलब्धन कुरुवा था। इस्तियों में बहुत है कि तुन्दें भी तक मान्युर्वक किनोबी रहा करनी नाहिने; क्लेंग्ड उस्ते वाले और पूर्व क्लेंग तत्क्वी नार्ते हिवाकी देवी हैं। की दीवर्ष सामी दर्भ करियात हो से बड़ी सेन्यन्यवर्गाली होती है। संस्तरने क्या नाहर होता है और वे राजुर्व करहाते नात समझी करते हैं। इतना ही वृद्धि, से अपने पार्टिकालके प्रचानमें कर और कारनोहादित रामूर्व पृथ्वीको कारण विरवे कही है। किंदु बुराकरिकी क्रिके कुलका नक करनेकरी होती है, उनके मन्त्रे सक का है काम है। ऐसे कियोंको उनके प्रशित्के स्वय है जन्म हर् स्थान्ते (इन्ट-कैसी रेकानों) से पहचान क समझ है। पनुष्पको कियोंके प्रति न हो विहेच सारक

क्षेत्र साविते और न असे इंग्लं है भारते। वर्णन करनेवाल करना यस बात है। आसन्तिके करिने । क्यूसीनमानते प्राचन कर्मनर हुई। रखते वन्त्रस्थे सर्वता असन सूत्र है इस बन्द्र शतन सूत्र कृत ही करवा करनेग करन नाहिने। इसके विस्तेश पना है।

#### कन्याके विवाहके सम्बन्धमें विचार

कुविक्रीरने कुल—विकाश्य । यो सन्दर्भ क्योंकर, । **कुट्रांग्या, परका तथा देवता, निवर और अधिनियोक्त पूर** है, का बन्धादानके विकास पुरू करोड़ सीविने। का बर्गेसे बहुबर विश्वाबर विश्व बड़ी बाद कर है कि कैसे पालको करना हैनी कार्किने ?

मीनवी करते हैं—वेदा । सरपुरावेच्ये प्राप्तिने कि वे महोरे बरके क्यान, जानरण, जैन्स, कुल-क्यांस और मार्थियो साँव करें। जिर गरे क अभी दक्षिकेंसे कुळेना प्रतित हो से भी कन्म कहन करें। इस प्रकल चेन्य बरखे कुर्वन्तर क्षेत्रके साथ कार्यका महा करन जान कार्यका का-अध्यानिकार है। को ब्रोम अविके प्राप्त करकी अनुसूत्र करोड सम्बद्धन निम्म करत है, या हेत श्रीयोक्त स्थान वर्ग-ब्राह्मिक कार्यक है। अके (माना-वितानेः) परांद् विक्रे हुद् करको होहकर करका विके पर्नाद करती हो तथा को कानान्यों कहात हो ऐसे उनके साथ क्षाच्या विश्वक्ष करना चेवनेतालोके प्रश्न प्राचनीयक क्या गया है। कामके क्यु-कामकोच्छे लोकरे प्रक. महात-सा कर देवर को क्रमाओं करीद रिश्व करत है, हते मनीनी पुरम अनुरोक्त कर्न (जानूर विवाद) वाहो हैं। हारी प्रधार कनाने अधिनायकोको याचा उनके प्रधान भारकार रोते हाँ कनावो परमेरे सर्वासी प्रवाह स्वाह राश्तीका काम (एक्स-किन्ना) है। इन मीन (क्ना, **भा**त, गामार्थ, असूर और राज्यत) विकाहोत्रेको कृति सेव विकास कर्मानुकार है और सेन के पायका है। अस्तुत और राजस-विवाह करानि नहीं करने काहेने "।

निवाद नहीं करन पाहिने; क्योंकि वह पुरिवाद कर्पनाओं करी कर्म है। (बहै दिया-प्राप्त अर्थर बहुवर्स होनेहे पहले बन्याक किया र वह है हो } अरावती होनेके पहला केर वर्गलक करना अपने विश्वकृती कर हेत्रों, चौथा वर्ग रायकेकर पह साथे ही बिक्सीओं अनुवा पनि बना है, हेस्स ब्दरनेके अल्बी कंतन निक्रम नहीं नारी पानी। को इसके विकास अध्यास करती है, जराबी निष्यु केरी है। को बहुना नामको सन्दिद्ध और विकास योगको न हो, उसके साथ निवाद कार्या कर्ताने वर्णानुकृत कार्या है।।

वृध्येश सम्-विकास । यह एवं बहुवारे विवाह पात करके कन्मका पूरूब (कुन) है दिना हो, इसरेंदे क्रमा क्रेस्ट पान करके माद पान किया है, रीतरा अर्थ क्रमाओं कालूबंध है क्रमेची जात कर का है, सीवा अने भई-क्यूओंने निर्मेश क्यूबा सीम विवादार कार करनेको देवल हो और बोमबो सरका पालिकास धार पूजा हे से बनंद: व्या कन्य किराबी करी वानी कारणी ?

भीनानी संस-अविदेश । सन्तर्भः वर्श-सन्तः विश क्षणाची वर्णपूर्वक पारिताकृतको निविशे छन कर हेते हैं राज्य किने कृत्य केवा है इसने हैं, इस स्वापने करिएक क्रिक्त करियात अवना सुरुष केवर परीयनेकाल की सक्ते का से बाव से उनमें विश्वी प्रचारकः क्षेत्र वर्षी होता। श्रामको सहस्रीयनीको अनुनी रिल्टोल वैक्क्षिक पत्र और क्रेमका प्रयोग करण कार्रेके, बच्चे वे क्या सराता होते हैं। विश्वका दिला-माराचे हुए कुन महीं बिका गया, इसके रियो किये गये विस कराके दिया और पर्या न हों, उसके प्राय करते । प्राय-प्रकेश दिवा नहीं होते । पति और प्रतीने से परसार

<sup>&</sup>quot; लुलियोरी निर्माणिका जाट विचार बालको को है—१ बाहर २ देन, ३ आई, ४ प्राचनका ५ कार्यों, ६ आसूर, ४ राधार और ८ पैरवय । वितु वर्ष १ तका, २ कम, ३ वामाँ, ४ तका, और ५ तक<del>त - एपी पाँच विवाहोका उल्लेख किया का</del>, है। मतः वहाँ में म्यानिका है, उनीने लुक्तिनिय देव और मार्च-विकालिय के अन्तर्भन क्रमान करिने ( इसी प्रवार का प्रकार है। रकस्थिकामें उपर्युक्त वैकाय विकास समावेत कर तेना चरित्रे तथा व्यक्ति सार्वाच्या से स्तृतिवेदा प्रकारत किया है।

रं साविकार-विकृतिके सम्बन्धने कृतिका करत है— कथा करत स सहः कृत्यकार् और सहकः। प्राची चेत्रकोर्यत सामितको निकति । अर्चाद् 'बदि वर अवध कन्यन्य निक पूरा पूराको सामाँ पेर्यूने स्टब्स हुआ है तक पास प्रीवर्ध पेर्यूने पेट्र हुई है से भा और करके दिने सर्वपावय निवृत्ति हो कर्षी है।' विवादी ओरवा स्ववित्तात सात पोद्धेतक वरूता है और प्रतासन सर्वित्यात पनि पीरीतक। सत पीरीने एक ते किया देनेवला होता है, तेन विवादकों होते हैं और तेन रेक्पानी होते हैं।

मनोक्तरमूर्वक प्रतिक होती है, जो देह करी करी है और | एर्टिको क कार्य हा सावेशो है क्यांसक करण मानी है, महि ताने रिने वन्त-कारवेका समर्थन प्रश्न हो, का के और काम है।

पुष्टिने पूर्व-विकास । यदि एक बस्ते सम्बद्धना बाद करके क्षान्य है दिना पना है और बैके हानों भी है। बर्ग, बर्ज और कारते समझ आरच केन्द्र पर विस्त कर से पाले जिससे सत्य किया पता है, जाको करना हैकी इन्यर पर देश प्राप्ति पा जी ?

बीमाओं बड़ा-वरिवीत ! इतक विन्यानी ही कोई करण किसीकी कोर नहीं के नाती। करण केरेकरण की का मारको उपस्था से साम के हैं। इसके दिना से करावा एक की है, है कवाने कवा का ची (विकार) करों है। क्रमणेंड नहीं क्या कर परवों दिसी विवरीत पूर्व (बद्धान आहे) से युक्त देखने हैं, बच्चे सुरक्त मीनो है। की बरबो कुलका कह कर कि हर नेर्र कन्याची गाने पहलबार किया बर हो और ऐसा बहुनेगर मा करवाओं सायुर्ग देखर निराह को से पत में सर्वेद्रकृत है है। इस उच्चर क्रमाने दिनो अर्थुपन रेकर भी कमारत किया कात है, यह र हो प्रत्य है और र विकास हो। कामांच्य तिये कोई कहा जीकर करते जा (क्या) क इस करन सराज को है। के लेन कि-New Arthropis wash & fix "A service your species विवास करिया, साराची सामने काचा न देश और साराची अवस्य हैता अन्ती में सभी बड़े बच्छ हेरेड़े बड़े बड़े with it were it i suffeiter up it its arrive und बाना को देने काहिने, क्योंक इस्तेन्द करको बन्यकर करता है कार-सम्बद्ध हुए एक कुकेंग संस्थाते अपनिवार कारण है। क्रमाई का-विकाल बहुत प्रकृति ध्रेन है, इस बारको हुन अधिक बजराव्य स्टेक्ने-विकारनेके बाद समझ सबसे हो। केवल बोला की या नेनेते ही कोई सन्तर विक्रीको को नहीं है प्रकर्त । ऐसे कर कहे के क्षांदे नहीं हो भी। नहीं कहें, 'क्राप्यते हे प्रतिकार निहत होता है, केवर परिवालने की वे का कान केंद्र की के क्योंकि इसके विराद स्वतिका क्या के—'विकार प्रकार में रिया हो वह विक भी दूसरा पुखेल कर निल्लेक उन्हेंबर सामा हे-सीके साथ काव आहे।' के लेग कावसे हैं प्रतिकार निवास क्षेत्र क्षेत्रम करते हैं, प्रतिकारके क्षेत्र, इनके स्थानको शर्यक एका प्रथम नहीं सन्ते । सन्त्रामा सुन है रहेकरें प्रस्ति है, सरीकार का बीवकर साथ औं। कामारान के विवास प्रकारक है। यो सोन कीवा देवर । अविवास है। अब विवास कोई पूर वहीं है, इसके प्रकार

ने बर्गको नहीं करते। सरीवनेकरनेको करत नहीं देनी पार्टिने कर के बेची पर भी थे, ऐसी प्रत्याने विकार की कार करीते; क्वीद की स्टेश-नेक्वी क्यू जी है। को व्यक्तिकोर्ध प्राप्ति-वैद्यारे प्राप्ति है, है वह रहेगी और क्षाकार है. देशे हैं स्थेन करीको भी सरीवने-नेकनेका विकार क्यो है। इस विकासे क्षेत्रालें सोगॉने सरस्थानुसे प्रश् विक-'मुख्या । महे क्याका कुछ होने पश्चम् क्रम केमानेको पह हो पान हो उसका बतरेके साथ विकास के प्रकार है का नहीं ?" उनका का उस सम्बद काराने का-'को जन का नित्त है की क्या देवी वार्याने । पूर्णके विरुप्तित कोई विचार परने नहीं स्थान पार्कने । पान्य केनेवान मीनिक हो से भी क्लेन नार्क निवारीका प्रकार पूर्वन अभिने बाज कर्याच्या महत्र वारो है। विक अंदर्शन पर अलेकर अल्पन करें, पूरवरें को क्षेत्र की करा है ? क्षात्रक वर्गन्यक होनेने प्रतेषक वैपादिक स्वरूपका हो करेरर की की हुन्ते हुन्तेण राख्ये करता है है बात से manifestation from several transfer and the Carlingtonia को करना निकारित नहीं नहीं नहीं हैं। ( सारकोर्ड साहते पाने केन्द्रीय प्रचानी समाहि होती है अन्ति पहरावेची विक्रीय पूर्व क्षेत्रेयर के सम्पर्ध व्यक्तिकार विक्री केरी है। किस कारको जातो प्रकार करो। करू है जाते हैं, वही सामा परिवर्तक की केन है और मोनो का की कारती है। per print flags-bit surcepted: flaffe second fi i'

प्रतिकृति पुरा-विकास । विकास सम्बद्धा प्रत्य से विका गया हो और साम्यो पहला देनेकाता पति क्रिया र हो (प्रयोग कार गया है। के जाके रिकारों कर करक शाहिते ?

र्वकारी का-र्वाहित । यह संस्कृति वर्वते क्राफ रिका पर्या है को विकास कर्मना है कि यह उसके सौद्रवेतक क्याची हा प्रदेशे था। को 1 कोंग्रे ही क्याचा सुरक्ष कारत होता को दिन कहा, उसका का कार्य कार्य क्षेत्रकोच्छी ही सामी बाली है।

कृष्णेले प्रारम्भकारी । विश्लेष पुर पार्ट, कृष्ण है, जाने किने बढ़ी पुरुषे सम्बन है। बिहर कुमान्हे सहते हुए दूसरे क्षेत्र क्रम्बेट बन्बेट अधिकारी बैसी हो सकते हैं 7

केनकी पर्य-केट ! युर अपने आवर्षक स्थान 🛊 और कामा क्या पूराने कोई अपार नहीं है। फिर सारास्क्रम पुर्विके रहते हुए इसमा कोई उसका बन कैसे के सकता है ? कारको में कोमने कर विश्व होता है, जारत बारवाद हो

परनेकर अधिकारी आका नार्म (देवेल) है है, क्लॉकि कह | अरका सम्बन करें । वह बीकी संब पूर्व न की काव से कह कारने विका और नामको को विका है। वर्गको हुईसे पत और वैकिनों कोई मेद नहीं है। यदि पहले कम्बा करता हाँ और यह पुरस्करों सोकार का ती नवी हवा आके यह भूत भी पेड़ पूजा के बढ़ कुत का कन्मके कर है सिकड़े करका अधिकारी केल हैं। (बिंगू औरस कुछो कर करका श्राविक और निराक्त है है और सुरश्चा कुछ गोद तिया कर हो हो का रतन पुरुषी अध्यक्त सरको सभी केटी ही सेह सभी पार्टी है। (अरा: पह पेक्ट मन्दे अधिक अंक्टी अधिकारियों है। को करवाई चुनक रेकर केव से गयी हो, कार्य जनक क्षेत्रेमाने पूर्व वेकार जनने निर्माध क्षे काराविकारी होते हैं। उन्हें क्षेत्रियों, कार्ने अपने काराव करियारी प्रमुख स्वीतरंग्य की यात प्रमुख क्योंके अस्तुर-विकासने वित्त पुर्वाची अधीत क्षेत्री है, ये कुरतेये क्षेत्र देशनेकारे, पारावाचे, परावा धन धुवरोकारे, वाट स्था क्रानीत क्रिपरीत वर्तान करनेकारी होते हैं। इस विन्याने प्राचीन कारेके कर्मको गाँउ दूस गाँउ गाँउ हाँ प्रथम क्रारं प्रचार करीर कारों है— 'जो समूच अंतरे कुम्बो बैकारर का बात प्रमुख है सबका प्रोतिकारेंड दिये पुरुष सेवार क्रमाओं के के है, क अस्ति काल करना काल मरवार्थ पहलार अपने हो पर्ताने और परा-पुरस्क पहला बारत है।" के बिजी कुमरी कमाने कामूर्वक अर्थ बाले करके करका उरकेर करके हैं, वे वाले उरकवररपूर्व मन्त्रमें पहले है। असनी संतानको पाछ को कृ पहे, विसर्व क्रोर समुख्यारे भी नहीं केवन समीचे । सम्बद्धि पहोती मो-जो पन साला है, जासे फोर्ड पर्न नहीं केता।

(विश्वके सम्ब क्याची महास्थलोडी बन्धके) कुम्मी-पूर्वन-(क्रम्बके प्रवाद) के कार्ने के कह और अर्थपुरूष असी प्राप्त होते हैं, उन्हें सीवाल व्हल्वेने कोई क्षेत्र नहीं है: विका में राज-के-पान कलाओं के कारने कड़िये। श्रापत विशेष कार्याण प्रक्रोतको निक्त, गाई, सहर और देशीयो वादिने कि ये क्यांको कहा, सामुक्त साहि केहर कुरमध्ये प्रस्ता नहीं का सम्बन्धे और उस अमस्तामें पुरस्की संस्था-परित्र गाँ से समारी, प्रतरिक्ते विक्तीपत साह समारा और प्यार करना पादिने । पार्ट विक्रीका जानर होता है, पार्ट वेक्सकेन अस्त्रकानुबंध जिल्हा करते हैं। विस परने विकास अन्यार होता है, ब्यांकी सारी डिल्कर निकास हो वाले हैं। विक पुरस्के व्यू-वेरियोको हुन्त निरानेके पारम क्रोज होजा है, का कुरुवार कक्ष है जाता है। में शक्षम होनार बिर परेची साम है देती है, में कृत्यक्कार यह हरूदे क्रमा उसार हो साते हैं उनकी क्रोमा, समृद्धि और प्रत्योगका राज हो पाल है। महराम महरे विक्रीको पुरुषेके अधीन परनेत पहा का—'मनुष्ये । विक्री अपन्त, ईच्यंतु, पार व्यक्तेकारी, पुर्वता क्षेत्रेकारी, परिवार दित untimet abe feinemfind fin pel f, muft i menter der f. un: genite un peut ment men. क्लेकि सीमार्थ हो वर्वकी आहिता मारण है। तुक्ती afterei airt vereur furitik ib ander fin einereit क्रमी, सरका राजन-पारण और रचेकावाका सरकारmin freig if mibre fiele fie unt geein विकास समान करेने से सकते कार्य कार्य कर्त रिख्य के

(मैन्सेके कर्मको सम्बन्धे) एश वनकरी प्रति एक प्रतेत्रका पर दिया है, जिसका सार्वत्र इस प्रकार है—'बोर्क क्रिके का असी कर्न, काह और कामस करने कार्यक्य नहीं है: कार्या कर्ष है बेबार करने परिवर्ध केल कार । की की-बेक्से है अर्थन निकर का करते हैं।" क्यारकाने सेकी पत्र आका निता करता है, जकनेये चीर जानक शहर है और यह होनेनर कुलर जानहीं सहायह कर क्रम है, सक जीको कभी करून नहीं खना बाहिये। क्रिकेट । कियाँ क्षेत्र करवी सक्ष्यी है, यहकारे उत्तर वालेपाँडि वाकार करना पाछिने। तसने जबाने रक्तकर कार करेंग्रे की स्वयंक्त काम का करी है।

### वर्णसंकरोंकी उत्पत्ति तथा कृतक पुत्रका वर्णन

कृष्यितं पुत्र-विकासः । वर्षः समुख्य सन्तरे श्रोपते । अवना कामक जन वर्गकी चीके साथ सकान करता है। से वर्णसंबर संवान करक होते हैं। इस प्रधान करका हुए क्वेरंका क्लाका का का है ? और उनके चीन कीनते unit?

चीनको कह-केटा । पूर्वकारको प्रकारको सह (क्यों) के रिक्षे केवल कर करों और उसके पुरुष्क पुरुष कारोंकी है रकत को की; किंदू तक क्योंने अकर पुरू परि अपनेते केंद्र क्योंकी विक्रिके स्वर्थ सम्मावद करता है से कर्ना करत हेनेकाच का चारों करोंसे असन और अस्टर

निकृतित (पान्याल शाहि) प्रत्युक्त बाता है। श्रूष्टीय प्रति । प्रमुख-मारिकी क्षेत्रेंद साथ संसर्ग करता है के सासे वर्णकार शुरुवारिको उत्पत्ति होती है, विशवक पान है सही। अबहि करन । केरन नारिका कुल स्थानको सीचे स्थानक क्रांके जिस कुरको सन्य हेस है, यह इस बन्वेंसे पुरुष्क बेरेहाब स्टेर मेंद्रकर बद्धाला है (जाने अन्य:पुरबी रहा अविद्धा पान रिन्य कर्ता है) । सहस्रव स्थानीके पर्नते अन्य हेनेस्थाः पुर अस्तर पर्नेवर कर्ने करनेकार क्षाप्तार केल है। यह गीओ कह काल है और उस्ते क्या क्लोके प्रकार आदि देवेचा काम सैन्स काल है। वे सभी कुलाइल करूक मीन नर्नोक्षण स्थानोके प्रश्नो क्या स्थल कर्ना और meleter manet it i denk per gelerentent with मधीर करत केनेवारन कुछ नेते और कुछन बहुराक है। यह को गोवरी प्रसंका करके अवनी परिवाद कारकः है। इसी प्रकार मी पा अधिक-कारियों क्षेत्रे काल कार्यान कार्या है से कारी प्रकारी पारनेवादे निराक्तातिको कार्यक होती है और with my few united which store it will आयोगा-वातिनाः पूर जनतः होता है, यो वसूनित काम कामे भौतिका भरतता है। मनीतंकर भी का अवनी कारियो क्रीके कार समापन वाले है के अपने ही हमान कर्मकोर पुरोक्ते क्षा है है और कर अन्तरे के कारियों कियों के अंतर अर्थ है से पीन संसर्गेकी सर्वार क्षेत्री है । ये पंताने अनके प्राप्तकी करियाने कन्द्री कर्त है। पुर प्रकार करिनंदर करून के यदि परस्यर विशिष्ण अधीरको निकामेरी संसर्ग अस्ते है को सर्गा रिकारिक संस्कृति हो जाति होती है। वैसे युद्ध प्राह्मानीह गर्भने सम्बन्ध करूप सहस्रातिको पुरस्के उत्तर करा है, क्रमे प्रकार प्रकारतिका समूच्य की प्रकार आहे करों कर्मां है रिक्नोंके साथ संसर्ग करके अवसे अध्यक्ष भी मीच व्यक्तिसाय पुर पैद्ध करता है, जा जातान करावात है। इस उत्पन करा कौर प्रकार जारेगोरे क्रमकः ऐस प्रकारके अलग निवास क्षा केते हैं। अगन्य प्रोते सम्बन्ध करकेत वर्गतंत्रस अपना होते हैं। विभा चारिके पूरण चलाओंके स्थास अस्तिका बार्न करते और कर न क्रेकर की क्रम्प्रतिक बीनिका कार्यो है, में बेरफ है: अन्ध्री फिल्ट सेन्ब्री बजावते हैं। बजाव मानिकी सैरानी जीसे की बाह्य जारीय अध्येतक पूक समागन को से जाने अक्टेन्स समिता हैला पुन जनत होता है, अही (अलबी सैन्सी) यह यह बीद केंद्र आहे हैं प्रेसमें हो जो महिल करनेवाले प्रिकट कारिके पुरुवको उत्पत्ति होती है। निरामके जीने और जनसम्बद्धित संस्कृति कर्तते महार अधिका पहल करना केवा है. जिसे करा भी नाती

है। या कामे अपने मेरिया करावा है। वाकार और कार्य र्गानकोड संबोधने कुलक संबर्ध अस्ति अकर वान्यांच्यो अवदि केती है, यह पर्वेकी रक्तवारीका यहर करका है। कर प्रकार नगर चारिको संस्थी को आयोगक अर्थ पर प्रतिकेत समान प्रति सकते प्रतिका कारनेकारे कर प्रकारके कर नंत्रकोची करता करती है। अनोक्य करियो पारिके यो विद्य पारिके प्राक्तो स्वयंत्र करके सारक कुर कार्कानी कुर करत करती है, विश्वको रायेग्यो प्राप्तम अन्यत व्यक्तियो प्राप्त केरी है और प्राप्तालके इंग्लिके कुल्यार क्रिकेट क्रम्या करती है। महत्त्वय क्रिकेट क्यूक प्रयोगी समाचे करते हैं और कुम्बार स्वतिकारे पृत्तीन को हर करते (कारण) सेकर पहली और पूर्व हर करियों केवन करते हैं। इस प्रभार में प्रीम क्षेत्र स्वतिके समुख अन्येक्टवर्ध कंपन है। विकासकीयो प्रोप्त की, विह्ना व्यक्तिक पुराको संसार्थ हो को खुद, राज्य और प्रतरावर पायक क्रमारोकी सर्वाप क्रेकी है, में गाँची मातिको गाँको बच्चार क्राती Es wenne von alle fremunftelt sich stehne क्यानेका स्रोतक कर हेला है, या बाहे बोलाई हरिया कार्य, क्यान्य, प्रीतिका प्रत्याची है। वैदेश प्रातिकी प्रतिके प्रतिक विकास कार्य क्षेत्रम आदिवार और पार्श्वास्त्र संसर् क्षेत्रेय सीवासकी क्रमीर केमी है। सीवास और पारक्रातीकी एक है और है : रिकान्सरिको चीने चान्यतः (सीधावा) के क्षेत्री अनेक्स्पर्य प्राप्त प्रतिक कर केल है, का प्रतिके केन रख प्रमानने हैं को है। निवह आहे प्रकारिके होता भी जो अपना प्रकारों है।

ने ग्रं और प्रकारोपी सहाया करे, कडोरप्रपूर्व कर्न स्था है, स्क्राप्त दक्ष करें, साथ बोलें, कुतरोंके कारतब क्रफ करें और अपने प्रतीसको पहले आत्मार को कुल्लेकी कार करें से हुए अर्थनंत्रार प्रमुखोंको भी पारमाधिक सामि हो सबाते हैं।

कुषितिरो पूरा-विकास ! यो वारो वर्णीते स्वीत्वात, वर्गरंकर मनवारे करत और अपने क्रेकर के (कार्य) बेस्टनेमें) आर्थ-सा प्रतिव हो सा हो, जानही पहलान हमस्तेन बैको पार समझे हैं ?

चीनकी वह-भूतिहर । यो (सक्तवेके किसीप) कर जवानकी नेहाओं ने पुरू है, यह बार्डिट नेहिने क्रमा प्रमुख्यो असे क्योंने है क्यान है सम्बर्ध है। सुन प्रकार सक्रमेरिक आयरणेले नेनिकी पुरस्कार निवा अन्य क्षेत्रीये । इस कंप्यूने अन्यर्थन, अन्यत्या, कुरस्य और अवर्यका आहे के म्युकारे क्युका केले उस (मनीरोकर) सिन्धु करते हैं। वर्गशंकर पुरुष अपने विकास माता सम्बन्ध दोनोके ही सम्बन्धता सनुसरम करता है। यह बिसी तरह अपनी अवस्थितकारों क्रिक को सकता। वैसे बाग अपनी जिल-विधिक प्राप्त अर्थर प्रमुखे हुन्छ प्राप्ता-विकाले स्वयत् ही होता है, वर्षा प्रमाप करूक भी अवसी चेतिका है अनुसरम्ब करता है। 'अनुसर कारीद विद्रा कुल्ले और विकास बीजी कारत हुन्छ हैं। यह बार कारना जुड़ होनेश्र भी विस्तवा क्ष्म संबद-बोनिसे ह्या है, या क्यूबा भोध-पहर अपने विताने साम्यक्को प्रमा ही है। यह कृतिय मार्थका जातन नेका केत्र पुरुषेके अनुसार कारान कारा र्वे यह साराज्ये सुद्ध वर्णका है या संद्वारणनेवा, हरना निक्षण करते समय उसका जन्मान 🕏 सन कुछ नात केत 🕯 : संसारके प्राची नाना प्रकारके अल्बार-व्यवहारवें राजे हुए हैं। सामापनेक रित्या कारी कोई यह ऐसी पूर्व है से उन्हों रहरूको साथ हीध्यर प्रकार का शक्ते । धर्मनेकाको प्रकार । तुने बचानी, राज और नवा सुनन पास्ते से ?

कृदि कर है जब से भी का उससे सरीको नेपार्यासी नहीं इस सम्बद्धी। अस्य, याच्या का निवृद्ध निवह प्रकारके अध्यानके आने प्रतिस्था निर्माण हुआ है, वैदा ही सम्बन्ध को आन्यस्थान सार पहल है। केवी करियद प्रमुख भी प्रोतको स्त्रीत हो से अस्या संस्थार नहीं करना पाछिने और का भी और संबंध और स्थापारी हो को जानदा विशेष आहर करन चाहिने । स्तुत्व अपने चुन्तवुत्त कर्त, सीरः सामस्त और पुरुषे क्रय जन्म परिवय देता है। वहि सामा क्रम का की के एक हो हो अपने कार्योद्ध हारा कर निरू को चीत ही उन्होंनेक कर हैता है। उन्हा किसी संबोधें सेनियाँ कारकरी गयी है, का सकते एका श्रम्य मीम पासिकोर्ने निहान् पुरुष्यो राज्योत्तरि स्त्री कारी कार्यने, उत्त्वा प्रयोध चीवका परम हो जीवर है।

कृषियों ने पूर्व -- मिलाब्द्र । पूर्वचा पूर्व बैंदल होता है ? dudt up-plate | um-find fich untet कार दिया है। और पात सम्बन्धिर भी विश्ली माता-विस्ताह क्षान न हो सर्था, जस कारावादा को प्रशंतन करता है, जरीका मा पुरुष कुर कुरका बारा है। श्रीनाम सम्बन्धे को उस क्ष्म क्षेत्र करित क्षमा प्रेम्प का का है, का राज्यात कर्ण है का कार्यका कर्ण होता है।

विकास प्राप्त-कारणी । ऐसे सक्ताका संस्थार केले परम माहिते ? from series and the

र्वानकी कहा-केट । विस्तको कट-विहाने ज्ञान दिया है, यह अपने काची—पालक विवादे क्रमंको आह होता है। (अभिने असे पाल करनेकारेको कहिने कि का अपने ही कांके अनुकार अल्ब्य संस्थान करे तथा अधनी ही पालिकी क्यानो जनका कहा भी कर है। इस प्रकार से सारी करों मैंने

# गौओंके महात्व्य-वर्णनके प्रसंगमें महर्षि कवन और नहक्के संवादकी कथा

कृषिप्रेरने पूज-विकास । किसीको देखने और असे राज पुलेस किए प्रकारका केंद्र होता है क्या चैक्तांबर महरूप क्या है ?

चीनाकी नवा-राज्य । इस विकास में इससे मार्थि चारण और नहको संबाहतम प्रचीन इतिहासका कर्णन कारिया। पूर्वकारच्या चया है, पृत्यंक्रमे कावा कू कारि

किया : वे अभिन्यत, स्रोध, इर्व और प्रोक्तक परितान करके क्षात्रकृषिक प्राच्या करून करते हुए बारद वर्गीतक लाके भीवर के। अपूर्ण समूर्ण स्रवित्वी तथा विशेषतः अल्बारोंकर पूर्व कियास कवा रिच्या। एक बार ने केव्यानीको जन्मम करके करपन परित्र क्रेकर गक्त और क्युनको बल (संगय) में क्रीवर इस और वहाँ बसाबी सीति कारको महान् अतका आसम् से कारके चीवर कृत आरक्ष | विकासको बैठ गये । गहा-बसुराके पर्यक्त केरको, विसर्थ भीका कांन हो साँ हो, हे अपने कालाय सहने रूने:1 विंद्य पहुर-पर्युच्य आदि महियाँ और सरोवर स्वविक्यी केवल परिकास करते थे, अने सब आँ कीओ है। के कथी पानीके मीतर काठकी नहीं सो कते और कभी करके करा करे हे बारे ने। जानों क्षत्रकों की वें के को किए हे गर्न है। इस उद्यु उन्हें करीने दक्ते बहुत हैन की उन्हें। बहुनवुद्, दृश्च समय महरित्योरी मीनिका पालनेकरी पहर-में बहुतक पहली प्रकारिक विकास करते पाल प्रकार रिम्मे पूर, वहाँ से पुनि से, क्रांते सक्तरण आने। क्योंने बहुत बेहा करके नहां और स्कुशके करने करा विद्या विया । स्थान मान कुलक फैला और को सुल्या कर ५३६ था, जाको चौडाई भी बहुत जनिक भी क्या व्या अवस् सरको बरावा हुआ और मजबूर का। बोड़ी देर बाद के सभी माराव्य निवर क्रेक्ट वार्गाने कार गणे और एवं निरामार माराब्दे प्रतिको समे । अर पारची प्रचुरि प्राथिकोच्छे साम ही दूसरे कार-कशुक्रीओं की कींच तिरक वट : कर कार वर्तमा गया तो प्रकृते न्यानीते विते हुए मृतुक्ता सम्बन्ध सुनि भी जिल्ला आने। अनवार सारा सरीर मधीत सेम्बाली करा हुआ था, करवी पूँक, क्यों और करने को रंगकी से रंगकी बी प्रका अन्ते अन्तेषे एक साथि व्यवसायि एक राज्येके किन्स का गय था।

इस वेदोंके प्रशासनी कार्तिको चाराने। एक्स विशेष अस्ते हैवा सभी महत्त्वम् इस्य जोड़े पुच्चीयर यह गये और चरानेने



हिर रहावार प्रकार करने रहने । इधर कारको आवार्यकरो अस्ति केर, पास और स्वस्था राई हेरेके सार्थ बहा-से बास कर गये। मुनिने का मारबीका की संदर्भ देश्य के उन्हें कई उन्हें उन्हों और ने चरेगर रोगी साँस सीको रुपे। या देशका करावीने कहा-'महासूरे | इन्ने क्यान्त्रे के का किया है, उसके इस करके बार क्रमार प्रस्ता केल्पे और क्रमाने इन आकार कीन-सा क्रिय कार्य करें ?' उनके इस प्रकार प्रानेपर नहरित्योंके बीधने केंद्र कुर कारण कुरिने काए—'स्वरताई' । इस स्टब्स की केंद्र करते बढ़ा कर है, को न्यन देवर सुने। वहि ये पता बोरिक होने हमी में मीमा-बारम करिया, राजक हरके कुछ हो में भी प्राप्त स्थान हैया। ये मेरे प्रकृतकों यो है, में हर्षे जान नहीं सरका है जुनिनी पर बात सुरक्त निवासेकी कहा पान हुआ, वे बार-वर स्थिते स्थी और उनके कुला रंग चरिका का गया। सभी सम्मानाने मान्यर स्ट्रोने का साध सम्बद्धाः एक स्पृत्ये निर्मातः निर्मातः

व्या सम्मान सुमान और मुनिकी देती अन्यन क्रमान राम जून अपने माने और पुरेष्टितको साथ से पूर्वा गार्च का पहिले। उन्होंने प्रतिक भारतो द्वारा केतृकर महत्त्वा क्यान पुरेशको अन्यन परिचन दिया और उनकी विशेषकर पूर्वा करके साहा—"विश्वार 1 महत्त्वने, वै अरकता कोल-सा दिन कर्मा कार्य ?"

कारने का—रावश् । महत्तीके मीनिका मामनेताले इन मानकोने काव कहा भारी परिवन किया है, आर. आप इन्हें पेरी और इन मामनिकोक्ति बरिना हीतिये।

न्युको (पुरोक्तिको) कहा—पुरोक्तिको । पृतुक्त्या स्थानको सेको अस्ता है से हैं, जनके सनुसार इनके स्थान स्थानकोच्यो क्षा इसार सम्बद्धा है सीनके।

न्यानने ब्यान्स्यासम् । एक इसार स्वर्णमूत नेता अधित नुष्य नहीं है: साथ इन्हें अधित भूतव सेविये ।

नुष्णे का—पुरेशियाँ । जान निवाहेंको एक स्वस् कर्णकुत दे सरिले। (पित ज्यान कुनिको स्वस करके का—) अनकर् ! यह सामके केल कुन्य होगा वा साम कुछ और काले हैं ?

कारों सक—राज्य ! मेरा मूल एक साथा पुत्र न राज्यको । वन्त्रिकोटें साथ विकार करके मेरे बोला कीमस

न्तृपने कहा—पुरेष्टितनी ! से फिर इन मतलहोंको एक करेड़ कुछ देनिये और फोरे का की बेला फुरा न हो तो और अधिक देश पाहिने ह

म्मानं वडा—श्वार् । एक करेड़ का इससे समिक मुद्र की मेरे केना नहीं है। असर प्रकृतकेंड़ कार विकार करके स्थार कुछ दिन्दि ।

मुक्ते बार—रिज्ञार । बाँद् हेल्डे बात है से बेल आस या संपूर्ण सम्ब ही निवारोची हे बारियो । येथी सम्बानी बा सामके बोजा सुन्य होन्य । अवस्थ अन्यस्य क्या निवार है ?

णराने सक्-कारका आया या समूचा एवा थी में कारने सिने जीता पूजा नहीं सम्बन्धा : आव व्यक्तियेत प्राप्त विकार प्रोतिये और किर को मेरे केना प्रतित हो, वहीं कोन्स सुरित्ते :

संगर्ध गर्म है—पुनिदेश । व्यक्तिय गर्म पुन्तर राज म्यूनसे यह पोर हुआ । वे गर्म और पुनेहिंग्डे सार इस क्रियम विचार करने समे । इस्तेष्टेने कर-पुरुष्ट मोलर करनेतारे एक जानारी पुनि, विचार क्या मान्डे पेटरी हुआ का, राज स्मृत्ये करीर आने और कई कर्माध्या करके करने समे—'महराम | वे श्रीत क्या करने संस्था हैंगे, यह जाना पुने करून है। वे इसे ब्यून क्या संस्था कर हुए।'

जुरने बार—कार्ने ( प्रश्नाक कारत प्रतिक्षा, को इसके केन्य पूर्वत हो, का कारवाको और इसके राज्य कार्य प्रतास बाहर क्षीकिने । वे अपने कार्य और पुनेविक्ते प्रता अवकार कुछने समुद्रते जुले कां है। अस्य नीव्य कारकर हते कर सन्ताहते—इसके कोन्य कारवाद विरोध कर क्षीको ।

प्रेणको करते हैं—कुथिहर । एका ज्यूनको कर कुनका है जहाजनको पुनि एका और उनके मरिवाकोको अल्लीका करते हुए कोले—'जहाजन । हक्कन कर कन्मीर करता है, करवा और मीओका कोई भूग्य कई शतका का शतका, इस्तिको जार इनकी चीनको कृत के दिन्दिन ।' जहाँको बात सुनकर पन्नी और पूर्वितासकी एकाको कई जलाका हुई। वे जान जानका करना करनेकाले पृत्यका करता पुनिके पास बावार जई अवसी कर्मकार दूस करते हुए-वे कोले—'जहानें । पैने एक मी देकर आवको सर्वात प्राप्त अतः आप जानेकी कृता करें । पै कही जानका जर्मता पुन्त समझता है।'

, ज्यानी बडा—नहरतन ! जन मैं स्टात है, जन जानो पुढ़ो जीका पूरूप देकर करीता है। मैं इस संस्थान मैं ओके संपान कुरत कोई बन की संस्थात । बीरकर ! मैं जोके जन और गुजीका कोरीन करना, सुनना, गीओका दान देख और काका दुर्शन करना—इसकी प्राव्योंने कही प्रशंसा की नकी है। वे एक कार्य क्रमूर्ण प्राचेको क्रू करके एक क्रमान हेरेको है। चेहे सक्तेची का है, उनमें बनका रेक की जी है। चौदे ही अनुष्योको अस और देवताओको उत्तर हरिन्य केन्यानी है। काब्रु और काव्युक्तर एक चौजोंने ही जीतीहर क्षेत्रे हैं। नीवे के पाला संपालन वालेवाली और कावा एक है। वे विकारक्षेत्र किन अपूर बारण करती और कुनेका अनुस ही केरी हैं। में अनुसमा आधार होती हैं और कार क्रमान करके प्रापने नगरक प्राप्तक है। इस प्राप्तिया की अपने केन और प्राधिकों अधिको स्थान है। में महत्त् नेकार्थ होता और एक्स अधिकोची कुछ देवेगार्थ है। र्कनोका सञ्चल कई बैठकर निर्शेक्सकृतिक स्रीत सेता है, कर राजनाते होत्या का बाती है और बहुनेका हारह कर सह है साम है। केंद्रे अनेको सीहो है, ने अनेने की जूनी पाती है। येर् काल कान्यकोंके पूर्व क्रानेकार केर्ना है अनो बहुकर दूसरा कोई नहीं है। राज्य नहर 1 नह देने नेक्षेत्र प्रकृति कारण है, इस्ते क्रके पुत्रीके एक नेक्स दिन्द्रीन करूब पना है। चैनोकि समूर्ग पुर्वका कार्य से कोई का है की सबस्य ।

निकारों कहा—सुधे ! सक्तरिक साथ से सात पर कार्यकारों निकार हो करते हैं। इनके से आपका कृति किया और इनके साथ अस्तरी इसकी देशका कार्यात की हुई, तथा कार कार्य इन्स्तेन्वेस्ट कृता कीतिके। निहार ! इस कार्यको अस्ता कारक काही है और आपको कार्योंने पहें हुए है। इसका कृता कार्यके तिनो इससी ही हुई का की अस्त

न्यानं का-न्याको । वे त्याने वे ह्यं से संवार क्या है, इस केक्स अध्यक्त हुवारे घट घर हूर हे को, उस हुमलेन करने के हुई इन व्यक्तिके साथ है

क्षेत्रको कार्य है—सहस्त्रका, युद्ध अन्तः करणवाले इव वार्ति कार्यके अन्यको ने सार्यक वार्तिनोधी साथ है वर्तको कर्त गर्ने। उन साराको और वार्तिनोधी सार्यको जोर कार्य कार्ति और पृत्यका वार्यको हुना। उरकात्रक वर्षके अस्त्रा वार्ति और पृत्यका वार्यको हुना। उरकात्रका इव्यानुसार कर वर्तिनेको वार्य। एवं राजाने अस्त्रा होत्यर व्यान—'क्ष्य, अन्यकी सुन्ता है बहुत है।' किर दोनोके साराको का इनके सम्बन्ध केरको नरेसने वर्धने विकास स्रोतको वार्यका वर्षक और अस्त्री 'क्ष्यत्रा' वार्तिन कार्यको वार्यको स्थान का विकास पूजन किर्या । उसी हिर कार्यन आविके साराक्षी देवा सम्बन्ध हो और वे अपने अस्त्रकारो कर्ता करे वर्षे । इसके वार्

अन्तर्भे राजा न्यून भी वर कदार अपनी राजवानीको नाते | विकास बारा है—ने सारी करें इस इसंगर्स स्पष्ट हो बाती हैं। नाने । पुनिश्चित । कुमारे अवके अनुसार की न्या अब में तुन्दें कीन-सी बाद करती, तुन्दारे माने क्या सम्मोनही अर्थन सुराया है। इर्जन और स्कूनाकारे केला के होटा | उन्हर है ?

महारोजनी पहर्णि केवार भी अपने अवाधको एकरे । सबके | है, कीकोवा क्या पहरूव है उच्च करीनुकूत निवास केतें

# राजा कुशिक और च्यवनमुनिका ज्याल्यान—भूनिद्वारा राजाके वैर्यकी परीक्षा

इतिन का, अलो प्रकार-सामिती सर्वात केले हाँ ? सहस्रक मरश्राम और विकासिका महान् उत्तान अनुपूर्व का उत्ता प्रतिया और नार्षि प्रतीय-ने ही अन्ते-काने बंक्के प्रवर्णन से । इनके पूर कामहीर और पार्विपक्के सर्विपक्कर क्रमेंड चैत्र परमुक्ता और निकासिकों हो यह निकासिकारक होन वर्षे आय ? इसका कुल काराओं :

धंनको का-भारत । इस विकास राज्य प्रश्निक और महर्ति भागनोः संपादाना प्राचीन प्रतिकारका अञ्चल केल मार है। पूर्वकाले पृत्तको सूर्वि करनको जा का मानुस हा कि इसरे पंताने प्रतिपद पंतानी प्रापक्त सन्तर्भ अभिवासक पहल होत्र आनेकार है, यह स्वयस उन्हेंने कृतिकांद्र राज्या कुलद्रों भाग कर क्रालेक विवार किया और राज धुरिकके पात जावर बळ- 'राजर् । वे मही दुन्हों राज कुछ कारकार कुछ स्वकृत है ।' यह कुछहर रामाने म्यूनियो वैद्यमेके विन्ते आश्रम दिया और कार्य महास रेक्टर जो केर बेनेके सैको चार निर्मान विकास प्राथित कर अर्थ आहे हेरेकी सन्दर्भ क्रिकरे पूर्व की। कारपट, उन्हेंने क्रान्यमाने महर्पिको विकित् प्रमुख्ये ग्रेजन समाग्र और इन केइका कहा-'भागार । इन होती पीर-मधी आयोह भावीन हैं। जाताने इस आपकी क्या होता करें ? फार, बर, भी और नामें निमा का—को कुछ जार हेना कहें, यह इस इस देनेको तैयार है। मेरा यह सहस्त, यह राज्य और यह शानारिकारण राज आरक्ता है। अन्य के राजा है, क्रार क्योका पारत कॅलिने । मैं से एक सरको अवस्थे क्रोकार Programme (1)

राजाके इस प्रधान व्यक्तिय व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति हेका बड़ा—'राज्य । यूने राजा, बर, जी, रेड और महाब्दी भी उच्छा नहीं है, पेरी क्या सुनिये : बढी कार क्षेत्रों परंद को से मैं इक नियम आरम्प कर्मना, का सरक आप रोगोको सम्बाधनेके साथ निर्पकार्यक मेरी सेवा करते कोगी।'

मुनिको बात सुनका काल्यकीको कहा हाँ इस्त ।

पुषिदिरने पुरा—विकास । तत्त्व सुरित्यक्त केंद्र के | अपूर्ण कार विका—'बहुत कारत, इन सारकी हेवा करेंपे (' करका, एक पुर्वक्षः व्यप्ति भवनको यह आन्त्रके साथ अपने महत्त्वके चीतर से को और एक सुन्दर करना विकासर केरे—'एकेका । या क्रमा विक्री क्रुं है, आग इक्स्पुसार नहीं अस्तान स्टेमिने । इन्स्तेन क्यासांक आपको प्रसार रकनेच्या मेक्स करेने ।" इस प्रचार बार्च होते-होते सूर्याता हो नवा, का पहुंची राजाको तथा और करा सानेको असूह है । 'यो आहा' पहाचर काम कालि गर्ने और यो गोजन केवार या को रक्का उन्होंने चुनिके सामने साहुत पार दिया। मुनिके कोवार करके कथा और एमोड़े कहा—'अस मुझे बीद सता की है, में सोध प्रकृत है। हुन्तकेव दुई कोते काव न बनाता और तक फलकर मेंने केनों के कुछ कुछ।' बर्गातह व्यक्तिको निर्मात क्षेत्रकर प्रकार—'अरका, क्षर ऐस्स क्षेत्रकोरी ।'

> हर अवार राज्यके नेपांचा अनेहत देवार पहार्थ कावन इंडरेन क्रिनेक्स एक हो कारकते क्षेत्र यो और राजा कृतिहरू अनमें स्टेस्सेंस विषय प्रार्थ-केने निरम्तर करकी रोजायें समे



बाईस्वे केर व्यानस्थी कामगुनि अस्ते-कार को और रामाने कुछ को निमा है ज्यानते न्यूर को गर्ने। केने राज्यको पुत्र और पीत्रको दुनंत हे को वे हे से पुनियों को देश में अने की-की परे: बिह अ पुनिनेक्षरे जनके और जीन कामार देखावा जाति हर बोचोर्ड देवके-देवके पहले अपन्यति के पर्व और प्रवासिक gine gelier fie eite eigt be me it find um भागेको बैन्यान्यर को और प्रतिको साथ हे पुरः प्रतिको केलोबर प्रथम करने जले । यह कहीं को नहीं दिखानी न को से एक अन्ति बोलहित बंधका और सारे । यह समा भी का संबंध है का या। मलने ब्यूंबार से विकीत per with red, drawn the word relief softers मानी मा विका करे हते। अंदी को क्रांचे माने अनेप निर्मा निम्न वर्ष को है कुएक्ट सामनो हुई जो पर्यन्तर संग्रे विकासी दिने । स्वीतनो देखाल से सेनी को अवश्वनीरे पहे, कामी जारी प्रश्नावर पूर हो पाने और नित पहलेकी जीते में नकावाल बैकार गुरिये के कुछने अने । अवन्त्री कर है कामूनि कुली करवाओं हो हो है। कर स्थान ही (क्रिकेट क्रिकेट) फाउन और पान कर से कार्य हो कार्र । राज्य और उसी करते चयते प्रदेश थे, अतः क्यूंनि अपने भागों तरिया भी तियार नहीं अभी विभा । धानों ही प्राप्ति महा—'अस में कार करीना, कुल्लेन मेरे क्रांजि केराकी



ये । मार्थिकी जनसम्ब करोमें जो को पाए प्रस्तान होती थी । | अतिक करे |' नाती से केने पूछ और सकावारी हुईत हो को से के की 'कहा अवता' व्यवका अवकारे की हुए व्यक्ति करियों कुम्बार देश कामें रुगे; बिद्ध ब्यायसके जनन्त्री तन्त्रे पुत्रो एक कर ये या या व्या का कि कर करें, का महिल पूर्व हो गये ।' पूर्णवर भी बन एक और करिंद्र करों क्योंने कोई विकार की देशा हो स्वस्त अध्या वे कारणकारों करें को । कई कारके देखें एकोवित प्रतानी कारेंचे हैं देवर करते रही गरी थे। विश्व में कारत flating til proder i mele grande benbehant mil राज्यकोर के गये। जिस को इस केवी क्यारित प्रत्येत हैंन्से कोई कुछ नहीं पर्या । स्थानकर, स्वर्धने काल करते पुरू एका और परिच्ये पर्वन दिया। यह आहे देख का वेगीया पुरा served for an air à per thair tit-'जन्मत् । भोगम केवर है।' भूतिने सक्य-'ते साम्ये त अस्य पायर केरी चीर-कांध्रे मुख्यों और सम्मातिके चेवन कर्न केव परि-महिन्दी सामग्री सामग्र सुनिह कारणे पर्यो । पुरिने यह साथ सेवार समाह और विक्रीनीतर्यास एक प्रकारत एक और को उसन बचीते का दिया। क्रम्याम् केवन-सम्पर्धनीत ३१ अन क्रांडे उन्हेंने जात रूप के और एक-एमेंके देवते-देवते के बिर अन्तर्धन है को; सिंखु इस्तेवन की का होती सुद्धिवान् स्वाधीने स्रोध नहीं किया। कार्मि प्रक्रिक सारी का क्लीके साथ करवाप के

> का प्रापं प्रमालके कहा की कार्ति कारण समावा कोई किय न देश रुके में फिर इससे बोले—'तुम स्वीपनित रहते कु काने और जाने चुने विकास में वर्ष कई नहीं है नाने र' चलाने निरमञ्जू क्रेकर कहा—'बहुत सरका र' और वे एक ब्यून बड़ा रच रियार करके से आहे । उसमें कार्यों ओर बोहर क्षेत्रिक रिलो प्रशिक्त स्थापकर फाई स्वकृति ओर सुट को। जा रक्तर अनेने इस ऐसा पायुक्त भी रहा दिख विकार आनेकी और क्षेत्र प्राप्ताई की और विकास असमान खाँको नेकके समाप शिला का। यह साम केवारी करके ज्योरे भूतिने पुल-'ननवर्! बलाने रव दिल और करे ? बार्ट मानेके रेजने साथ अरख देने वहीं आपका रच

क्यके इस ज्वार पुरुषेत व्यवनो सङ्ग-'हम स्वीते कृत की-की एक-एक कहा कावर वाले। यह बाद रको 🏝 सुने बड़ा व होने करो, इर उसारी आराम बहिते। का है किसी सामीतको प्रयोगस्त हटाम भूरि काहिने । सेरी हमा है कि सम सोय तुन्हें रथ जीवते देवों और मैं उने

और सा आदि सभी यहेकांकित पदारें कर करेंग, सहः इन एक बालेका प्रकार का रोजा।' मुनिबर्ट बार सुरकार एकाने अपने सेवकोरे कहा—'मुनि किस-विधा पशुक्ते सेकं अर्थन है, बढ़ कर विश्वक होनार देश है राज्यकी इस अवस्थित अनुस्तर पाना प्रचारके का, बिली, कहा, बचरे, नेहें, सुवर्ग और पर्यक्रमध्य नवसम्बन्धने सब पुनिष्ठे पीछे पीछे करे । प्राथमें क्लाके सभी नहीं भी थे। उस समय साव मन्द्र अर्थ क्रेक्ट क्रक्कार कर का बार क्रान्केने क्रीने महारा पास्त्र काला और सरकी होती चेंकने क्रम और रानीको पोट सका कमलो अहर किया: निम भी के निर्विद्धार पानों का राज्ये कींको छै। एका कार्य सम्बद मानोके मारण में अन्यक पूर्वक हो गये के; उनका सार पूर्वर मारि पह या, तमारि में मीर क्यारी किसी क्या सक्क करने का रक्ता नेहा से रहे ने । उनके सरीरन कानुकरी काले अनेको पास हो गये है और उससे सुरखों बार का की हो है । पुरते सभाव हैनेदे प्राप्त वे दिले पूर् पालको दशीयो



चौति दिशानी देते थे। उनकी या दशा देशकर पुरव्यत्तिकीयो बाह्य दु:स: है वह का; सिंहू कुनिके प्राचने करकीय होकर बोर्ड् कुछ थोल न सके। ये परस्वर बाह्ये समे—'बाहके ! बाह्य सन्तरक्त्यत्ति हर पहिंची स्वतंत्रक कर से देखें, इनकी सांक सञ्जा है तथा सवा और समीवा कैर्य भी कैस अनोसा है! ये इसने बके होनेयर मी बाह्य उठाकर हम स्वची

का नहीं। मान्ति को साहाल पुत्रको कुछ पनिने, उन्हें का | सीव को हैं और पृत्तका पानन अमीतक हमी कर की और सा आहि सबी यनेकांकित कराई का करूंगा, तार: | किया नहीं का सके हैं।'

> केनके वाले हैं—वृत्तिहर है मुनिवर व्यवस्थी कर्म किसी क्या राया-वालेके माने मेंच न वेस सके से में कृतिकार क्या काम काम कर मुख्यों ताले; किसू इस कार्यने भी क्या कृतिका वाले अस्तात्मके प्रथा प्रतिभाग आर्थन कहाँ केसा हुए और का काम रायते कारका का केने सम्मान्ति कार्यने वाले कार्यने कोरो—में हुम क्षेत्रोंको अस्य पर क्या व्यवस्था है, वालकार्य क्या है।' का कार्यने हुए का केनेका कार्या स्कुत्यार कर्यनेता केसा है।' का कार्यने हुए का केनेका कार्या स्कुत्यार कर्यनेता केसा है।' का कार्यने हुए का केनेका कार्या कर्यने कार्य है। का कार्यने अस्ताराह्मक समाव कार्य-मेंका है कारका का सुनार का कार्य के स्थान कार्य



हुए अपने जनाने काओ और अपनी क्षातार हुए करके करा जमेरे अपनी चौके साम चित्र वहीं आग । मैं यहीं सिट्टेगा, अब हुम्हारे कार्यानका साम्य आया है। हुम्हारे मनने यो-यो हुम्हा होगी, यह सम पूर्व हो कारते।'

मुनिके ऐसा सक्षेत्रर एका सुरीतको सन-ग्री-सर जानका प्रस्ता होचार कहा—"महत्त्वान । आतो हमसोगोको परित्र कर हिंसा, इस होनोकी तराल सनस्या हो गयी तथा

इंपरा करोर सुन्त और सम्बन्ध हो पना । आको इन हेनेंकि प्रतिरमर बावक मारकर जो-को चान कर दिने के, वे भी सक मही दिवसको देते । मैं दो अन्य निरस्कृतर करना हो नवा और शक्ती इस वर्गाको की अकारको सकत सुक्ती हेवा का है। म्ब सार आरम्पी कुलका कार है। अन्य-केरे एकावेर्ने हेर्स श्रामिक्ता होग्य आहार्यकी करा नहीं है।' ऐसा कहकर पुरिच्छी काम से राजर्वि कविक को उत्तान करके पराध्ये और कते । जा समय क्रमेंद्र करते और पुरेशित की क्रमेंद्र करता और समुद्रिशाली करता हिया ।

वे। स्थापे प्रवेश करके उन्हेंने एवंडकारच्या समूर्य क्रिको सम्बद्ध की और बोस्तीय पोजन करके रहिये कांग्यर क्रमर क्रिया । जा क्रम्य के युनिके हिने हुए क्रम कृतिर और नवी प्रोध्यते कुछ होनेके प्रश्रम बहुत प्रत्या थे। क्रम पुरुक्तानकी चीतीं स्थानेवाले, सरकाके बनी महर्षि व्यवसे व्यानार्के क्येक्स्को अस्ने संबद्धका नाम प्रकारके कोसे सुक्षेपिक करके प्रस्तुवंदे की बहुकर सुक्त

#### च्यवनका कुज़िकको सर्गीय दुश्य दिसाना, उनके चरमें सनेका प्रयोजन चतराना और उनके बंशको ब्राह्मणस्य-प्राप्तिका वरदान देना

केरके करते हैं—पुनिर्देश 1 कारकर, महत्त्वव करत कृतिक का राष्ट्रि स्थापन होनेकर वाले और पूर्वाह्मकाले मैतिका निवारिक निवृत्त क्षेत्रार अवनी राजिक साम कर प्रयोजनकी और कर दिने। वहाँ पहिनका उन्होंने एक कुन्त महार देशा को कैनेने जनस्य बोनेक कर हुआ है. काने प्रतिनोधे इच्छी क्रमे लगे हुए वे और का अवधे को भारते पर्यापने स्थाप कर का बार का का वाली बार्ड और भी महानो दिन कहने देतो, नहीं करिये विकासि शुक्तेरिक कर्नत, कहीं कम्माने को हुए सकेवर, कहीं मीति-परिवर्ध किल्हासर्थ और बन्धानों क्रेम क ची थीं। जुरियर क्यों सोनेवर क्यों और व्यक्ते वर्ध-वर्ध भारत्वी न्यार की। जनकानोंने और राने वह से। केवक, Micros, seeing, gre, selliges, was, flores, करहार, तेर और कोर कारे आहिके कुछ दिल्ले हुए थे। कही विकारको अल्यारने कर्वनोके स्टब्स बीचे और भी अनेकी माल दिवाची दिने, जो बड़े ही स्वर्णन और वह दुने क्रमा व्यक्तिक कमलेसे सुक्रेपिक थे। वहाँ इनक प्रकृतीमें दिल्लोको कुल क्षेत्र है के के।

मह अञ्चा साथ देशका एक गर-सी-पर सोको स्थे. पिया पर बात है पर मेरे किएने प्राप हो पता है अवका पर सब कुरू सल हो है। अहो ! इसी प्रतियो कुछे बरवाबीओ प्राप्ति हो नहीं का मैं उपस्कृत अवका अन्यवसीने अह प्रोण : यह पहल अञ्चलेको पहल यो यह दिखानी है प्री है. क्या है ?' सका इस प्रकार सोच 🛊 स्त्रे में कि उनकी र्सी प्रकृतक काल पुनिय पत्नी, को प्रक्रिक सामोते पुत्र एक सुर्वास विभागो पीता बहुत्व को हैना पारंचम से से थे। उने देशकर कम क्रिकामे की

प्राथम हो और ने अन्ते शरीके साथ उनके निवार न्त्रे । क्रानेहीने कावन कवि का पर्तनासील सरावति हो को। किर एक है इसमें का हुन्। का और क्लीओ करी सकता मैलीन हो गर्थ। तब एका उन्हें हैस्ते-केले इसरे करने करे, कहें करना अलेने महास्त्रातारी कारण्यांच्या कृताची चारहोता वैरुवार अंच वाली देशा। हत क्यार करने चेन्यरने क्यूंने राजको चेहने इस दिया, यह राज्य पुर्वतिक यह असमा अञ्चल करण देशकर subsider tolt secondly talt and polit street areal कोरे करने रूपे—'क्यूकर्ता । इस्ते पुरुक्तर्गतस्य क्वराष्ट्रीयो कृष्णे की विशेष और पर्य कृष्य सक्ते देशे हैं। मान, उन्हेजारो क्वार और चौन-स कर है 7 किस कारची सन्ते हार कारकरात की बारी है, बढ़ जनकरो सम्बन्ध सरम्य हो पाती है। विस्तेपनिक राजकी अनेका भी कर ही होता है। अन्तरी करत स्वयक्त करनेपर नामी प्रतिको मोधुन्य निर्म समात है। इन अपूर्णि 'कारक कारकार अध्यक कार्युट है। ये इच्छा करते ही कृती अंक्ष्मेंकी सुद्धि कर सकते हैं। इस पृथ्मेंकर प्रस्कृत ही वीक कह, चील चुटि और वीता कर्नकरे होते हैं। मार्गि प्रकार किया सरव और है से प्रान्त पान पान का संकेत

कवा इस अवस्य सावे-सावे विकार कर रहे थे, इसनेने रुका साथ मही प्रकारो महार हे गया। उन्हेंने प्रकार देशकर पर्यः—'रामन् । प्रोत पूर्व आसे (' अस्त कार महत्व कृतिक क्षेत्रीह मुन्के का को और अ क्यांक प्रात्मको प्रश्लेष प्रश्लेष प्रकार प्रयास किया। पूरिने साधीर्वाद और सरकाम केरे हर उन्हें बैठनेको आहा है। अब चुनि चाना-अवकारे आ गरे थे, क्ट्रोने राजाको कर्तुर धानीते ह्या करते दूर कहा—"एकर् । हुको पांच अनेपानो, पांच करेनिको और नक्को अन्तरी राद्ध और रिज्या है; इसीनिजे दुम महत्त्व धंकाओ पूका हुए हो । कुले पत्तीपाठि नेर्र सर्वापय की है, कुछरे हम कोई होते-से-होना समराम भी नहीं हुआ है। अन्तर, अन मुझे



mittell armir di, få dift anm ur dit d von mebre : इत्यारे कार में बहुत जाता है, अतः तुन भूतने कोई कान बर मौने ।'

पुरिकरे क्य्र-अक्टर् । जान सुरुक्त जाता है, वई के रिन्ने सन्तरे प्रकृत्य है तथा पढ़े मेरे चीवन और राजका पार है। प्रमुक्ता ! और शास्त्र पुरुष के है से की पर्नर एक रहे। है, उसे दर करनेको कुछ करियो ।

भागाने क्या-अस्तेष्ट । द्वार पुत्रको वर भी भीन हो और हुनारे पानों को संबंध हो करे भी कहो; मैं हुन्छय तक कर्न पूर्व करीना ।

अभिक्ते क्या-व्यक्ति । वर्षः आव प्रतय हो से पूर्व का बताइचे कि आपने मेरे करपर काने क्रिकेट कर्वे किया। किया का ? में इसका फारन कुरन कहात है। इसके विशेशक एक करवाड़ी प्रथम करना, बिश अप्रेगर विश्व कुछ बोले बाहर कर हैया, सहसा अध्यान हो साथा, बिट स्तर्पन वैश्वर प्रक्रीस दिनेकक कुसरी करकारो सोचे खना, बडनेकर मार्ग्न अवार महिन्मिकं सेम्पके एकोरा वरण . और उसमें अपन समावद काम देश, किर सहस्र राज्या. तका है कहा पालके क्या करत, जा तुसक हो करते. जनेको सुनर्वका महारो उस प्रांप और पृतेकि प्रवेकारे पालेक दिवसक और अपने करने अपने अद्भाव कर .. देश-आयो हर कार्येक में नकार करण प्रत्य 

कारने का—कार ! किए कारनों की वे एक कार तिने थे, को अव्योधक पूर्व-पूर्वकरको सात्र है, एक दिन देवनार्गाची सन्तर्ने सहाची बढ़ रहे थे कि 'सहान और व्यक्तिमें विकेश क्रेमेंक मारण केनी कुरवेरी संस्थात जा व्यवस्था।' अनेत पुँको की व्या को एक का कि (तुक्को चंत्रको कन्यते के चंत्रके अभिन-वेजक संचार होना और) हराय एक पीत सामन-देखते सन्तर तथा परावानी होता (\* क पुरुष्ट में हुम्हरे बेहामा उन्हेंन का प्रतानिक प्रकृति वर्ष अव । का सबस की हमारे को कहा का कि 'में एक प्राच्या कारण करीचा, शुरू नेवी केवा करो ।' (प्राप्ती स्थानको में इच्छार केंग के का क:) जिल्ला हको करने सकत भी की सरकार क्षेत्रों कोई केंग नहीं परच । इस्तेन विकास प्रेस क, क हमी क हकरी बीने को कालेका सकत की विकास । विकासी अन्यान्त्रीय पूछा अधीर पूछा प्रमुक्ती परची स्थानार केरका अवस्य के प्रार्थन दिलाएक होत्य । की होता क कुलकेम चुक्र और ब्याज्यको स्थानकर मेरी निक् स्थेते?, इसी जोहरूमें की सुमानेनीओं भूते श्वरूपर द्वेप प्रदेशका । इक्टेंबर की कुछारे और कुछारी कीचे अन्ते सरिका की और नहीं हरत । इसमें में इसलोनोंके अपर नक्क प्रेड्ड इसा । इतके कर के की जेवन कैनकर सरस्य, उतके जीतर की को बहेल क्रिया का कि हम उनके कारण मुख्या और पारेचे; सिंह मेरे इस कर्जाच्यों की कुल्मे एक रिजा । व्यानकार, केंद्रे १७४१ केंद्रकार कहा 'हुन स्क्रीसक्रित आसार मेस रव सीचो', इस संस्थिते भी तुन्ने निर्मय क्षेत्रर पूर्व विकास मिन क्या में कुमार बन सुदाने क्या तो भी दून स्रोक्के वर्तीकृत की हर। इर सब कारोसे को दूको अवर को जनक हो, तक भी पूर्व रहे करोके तिको 🏚 हार पान्ने प्रार्थका दर्शन कराका है। राजन् l हार कर्मे हुमरे के दिन्न कुल देखा है, यह सर्गकी एक प्रक्रि वी : हुन्में कारचे राजेंस स्थ्य इसी प्रशेसने हुन्स देखात प्राचीय सुरक्षात अनुष्यक विकास है। यह प्राप्त मेंने हुन्हें प्रथ और वर्गका प्रमान दिस्तवनेके रिन्ते ही किया है। वे करों देखने-हैरांची पारिक कराया, जिर करार्का होकर कर देवा, युन: 🖟 पर दुव्हारे करमें को इक्का 🖬 है, 👊 भी मुझे फराम हो करी ।

होन सम्बद् और इनके पहली की दुक्का कामार (अञ्चलक पान कामों हो और राजकी अधिकाय करते हो। यह और प्रकृत्यकों सम्बद्धों अभी हुए की विकार प्रसंद कर को थे, मा किराकुर शीक है। पानकों सहाव होना हुएंग है, प्रकृति होने की पान है। हुन्दरी का इक्क पूर्व होने । पुन्ति की कीर की दुक्का है। हुन्दरी का इक्क पूर्व होने । पुन्ति की अपिने स्वार केश अक्कालकों अप होना, पुन्ति की अपिने स्वार केशकों और काकी हक्का होना, का तीनों संस्केती अपने अन्यकों और काकी हक्का होना, का तीनों संस्केती अपने अन्यकों अधि कार्यका कार्यका। यह वै पुरस्ते सकी करा कार का है। राजवें । अस तुम सुक्तो अक्का असे की।

पुरिकार कार—महान्ते | जान मुहाना कारण है, वह की सैन्से कहा कह कर है। जान केंग्स कह के हैं, वह कार हैं—नेरा पीत कारण है जान। अन मैं निकारके कार का मान सुना जाहता है कि नेता पंच किया अवस्थ कारण हैन्स ? वेटा का पीत कींग हैंगा ? (वो सर्वात्रक कारण हैन्सरा है।)

कारणे सहर—नानेष्ठ ! यह जान तुन्ते सावस्य कारणेके मोत्य है, सुने—वानिकरोग सहाते ही मृत्यंकी महरूकोंके कारणा है: विज्ञु अरक्षकक आने कारणा कार्ने कुद है कारणी, इसरियों से देवकी जेरकारे कार्यक कुनुस्तिकरेखा स्वार कर करोगे, गर्यक क्षेत्रकाको जीविक वहीं होदेथे। सर्व्यत्य, मेरे बंकों स्वार महिंद अविक कुछ स्वार्थक कारक पुत्र होगा, अस्ति वास अरकारक क्ष्मक स्वीरकोक्ष कार्य व्यक्ति विश्वे सामूर्ण वसूर्वेद सूर्तियान् होका उपविश्व होगा।
जर बनुर्वेदायो प्रकृत करके प्रयोग्धानि अपने पृत काम्युजियो
साम्यु विश्वा देने। साम्युजि अपनी संप्रवादे पृत्व अपने काम्युजियो काम्युजियो काम्युजियो काम्युजियो अपने कुंग्यो काम्युजियो काम्युजियो काम्युजियो किस्युजियो काम्युजियो साम्युजियो क्रिये क्रिये होत् होत् । के क्ष्मिय क्ष्मिय प्रवाद प्रवाद कार्यिक प्रवाद करने क्ष्मिय कार्यक अपने होत्यो काम्युजिय काम्युजिय कार्यक कार्यक प्रवाद कार्यक कार्यक्षित क्षम्युजिय कार्यक क्ष्मिय कार्यक प्रवाद कार्यक कार्यक्षित क्ष्मिय होत्यद की साम्युजिय कार्यक कार्यक प्रवाद कार्यक कार्यक कार्यक क्ष्मिय होत्यद की साम्युजिय कार्यक कार्यक कार्यक क्ष्मिय होत्य । क्ष्मिय क्ष्मिय कार्यक कार्यक होत्यक कार्यक कार्यक होत्यक क्ष्मिय कार्यक कार्यक होत्यक होत्यक कार्यक होत्यक होत्यक कार्यक होत्यक होत्यक होत्यक होत्यक होत्यक होत्यक होत्यक होत्यक कार्यक होत्यक होत्यक

क्षेत्रको काट हि—बहुत्रका कावन पुतिका काव हुन्छ। एक पुतिका बहुत असा हुट्। एक्पार, भारतेकाती कावने उन्हें का जीनके दिन्ने पुतः प्रीति किया। तब रामाने काव—'मानुने। मेरा पुत्त प्राप्तन क्षेत्रका कावने काव और प्राप्त व्य कावी काव रहे।' उनके का प्रधार कावने काव और प्राप्त काव—'असा, हेना ही होना।' किर से रामानी अनुनित्ते कावने कार की क्षेत्रका कार करे। रामा पुतिक्षित्र। इस प्रमान की कृतके की पुतिकार्वका कर रास्त्र कावन का कार का कावना है। जानन प्राप्ति केसा बहा का, उसी प्रकार करवान की विकासिकार्वका काव हाता;

### नाना प्रकारके शुभ कमोंका और जलाशय बनाने तथा बगीबे लगानेका फल

जुनिहेले करा-निराजकः । इस पृथ्वीको क्या है सम्मतिसाली राजाशीरी होन नेपाल है तो मुझे कही विका और स्थानकः होती है। पदानि मैंने सेवाको वेपोके स्थानकः अधिकार पांचा है और समूखी पृथ्वीकः विकाश क्षा की है, स्थानि इसके लियो को करोड़ों मनुष्योको शिक्षण क्ष्म को है, उसके कारक मेरे पत्नो बड़ा संसाय है कुछ है। इस्त । उस सेवारी विकाशिय क्या कहा होगी, जो साम सकते की शीन क्षमुशीरी हीन हो कुछी हैं। यह सम सोकार पेरी तो ऐसी इच्छा होगी है कि पर्यकर समझा करके अपने हसीरको सुप्ता काई; किन्नु इस कियाने आवाद क्या क्रिका है। यह बार्यक्रमध्ये सुरूत क्षमा है।

चैनकी कर-नक्। वे हुई एक असूत स्था

कारणा है। स्टूबाको सरकेश विश्व करों। वीन-सी शरी विश्वी है, इस विश्वको सुने । त्यस्तारे अर्थ मिलता है, उनकारे सुनक्की आहे हेती है तथा उक्तारे हैं। इस, विद्यान, आरोग, क्या, सम्बंध और सीधाम भी उक्ताको है करा है। तय करनेले स्टूबा कर पता है, सीन अर्थ अस्तारको समझ हूम्म करवा है, इसमें अपरेश और स्टूबाकि कारणा देखेंगू आह करवा है। इसकी कैस सेनेले उत्तम पुरुष क्या होता है, क्या-पूरु फोलन करनेकारोंको राज्य और पता क्याकर स्टूबारोंको सामंत्री अर्थ होती है। दूस पीकर स्टूबार्सन स्टूबा सर्गको नाता है और दूस होते अधिक कर निरुद्धा है। पुरुषी होताहै केमर प्रमाण करते हात है, को नेकारी और हेरी है। रिक्ते सानेकरे अन्ति को है और इस बीवा क्लेकरे कारत पता पते हैं। यो हैत दिन कर करते हेने उतन र्वकोकाल करते हैं, वे बार उन्तरकोंनेंद्र करता होते हैं। सार और प्रमुख साल करोमाने सामि को है उसा जाने पैछन वैद्येक स्थान करनेकरतेको पुर और कृष्णकी उन्हें। होती है । चीच्ये और वरवार युक्तेवर्त्वेचो अवन्त्रक वसु और शायक किसे हैं, कारों केंद्रकर का करनेकार क्या केंद्र है तथा सरकार्थ पूरा अनी देखाओं प्राप्त आगर योगात है। कुन्ते पढ़, अहैंस्को आरोप एक सहयोगी केवारो राज्य और प्राप्तानकार्या प्राप्ती क्षेत्रों है । स्वेत्रोंको पार्ची रिकारेड कर क्लेनाचे कीडे मेलबी है एक सक्कान्डे रामा बारपाओं और उस्केनोनी प्रति केरी है। के उसक अनियोको सारकार हेळा है, यह एक उच्चानेड क्रोकोचे हुए पाला है। देववाओवी रोजके राज्य और दिवन कर निरुके हैं। मन्दिरमें कैपाएन करनेते पहुल्ला के बेरोन क्या है। क्रोनीय (क्रपर) मध्यानीक करते क्रीड और जररवाकि प्राप्त होती है। बारह क्योंक्ट प्रस्तात, सेक्ट और विकास फानका निका पाला करते हो होते की देव की पाए होती है। यह और उपराक्तों कर्ने निवस्त है। यह और पुरा क्रु क्रिकेन्स्य पर्यक्ष केन्द्रकार जन जन करता है।

यो सोनेचे नहीं हां सीनोबाको स्राप्तिय नावका स्रोतके की हुए हुन्य-पान और पान्हेलके कुन करता है, का पुरस्के पाल का भी जाड़ी मुख्येंसे पूका बालकेंट्र क्रेसर जाती है। इस गीचे प्रदेशों किसने देवें होते हैं, उसने पर्यक्रक बनुव्य सन्ति कुछ केवता है। प्रत्या है जी, कर में उसके करनेत उसके सार पीरियोगयामा अञ्चल कर देती है। की स्थापनको क्षेत्रमें यही क्षु राज कथुका सहारा कावर कर वहैना हैते हैं, करी प्रमान अपने कार्नेति वैकाल केर अवकारणा राजने पाने इस परस्थाने गोवन हो कर करता है। यो गराव अपनी क्षणका प्रकृतिको विका करा, प्रकृतको सुन्दिर हैंसा और निर्मित्तर करा कर बनात है, जो कुळचेकारी प्रदेश freigen fragen pla enterweren in it fele सर्वगुलसम्पत्त गृह द्वान करता है, उसका उत्तर कुरकेक्ट्रों सन्व होता है। भार क्रेनेने समर्थ केर और पालका कर करनेते क्तुरचेककी प्राप्ति होती है। सुवर्णका कुन कर्न हेरेकाल है क्रम प्रोत सोनेका दल अलो भी उत्तम पान हेता है। उत्तम देनेते ज्ञान घर, करान्द्र (कुछ) द्वार करनेते क्यार्थ, क्या है

विका और नित्य साह करनेते संसामध्ये पृद्धि होती है। मो | अहि होती है। मो सहामध्ये पत्र और पूर्वित धरे हर कुरू का करा है, जा अकरत है जब प्रकार कोंग्रे पूर्व कर्मानकारी पर तहा करता है। तहा, यह और सा वन करनेकार पुरूष हकानुस्तर सहेको प्रश्न काल है उन्छ से क्रोनेट रिक्ने पर और ओक्रोनेट रिक्ने पक्ष देता है, पद प्रची क्याओं क्यांक कथा है, इसमें समिद भी सेंस नहीं है। ये गुरू कार्योचे पूर्णको सत्ता, सूर, प्रयूप, स्थान, न्यानेके देवने यक और पूज युन करता है, व्या नेकेंग और कुछ सम्बद्धक केंद्र 🜓 यो पुरूष आहो भी हुए सरको क्रमातील कर करण है, को अलब परित, प्रचेक और कर अकरों कोंग्रे का इस उस प्राप्त अने है। राज्य-पूर्णि कैरकवार प्रथम क्लेक्स गुरू स्थाके करण हो कहा है।

> प्रोक्षेत्रे का-रिक्रम् । कृति स्थाने और प्रकारक कारकोच्या को पान होता है, जानके में आपके हैंको पूरण प्रकार है।

क्षेत्रकोरे का--व्यक्तित । व्यक्तित कृत्य सुक्त हो, वहाँ राजनी क्या समित्र होती है, नो पान प्रकारके नहशोंहे finglier gei Referr Sparson bet ib non und een जनमं अने रिका करों है, को पूर्व कर करें रही है। क्रमें बारार को सर प्रधानी परवक्त (क्रम अली) क्यान कर के (रीवें) के समूर है। अब है सामक क पेक्ट प्राथमिक प्रमाण कर्ना करता है। सर्माण क्राच्योच्याक क्यूबर क्षेत्री सोव्योगे सकी पूर्व पान करा है। मानक निरुद्धे करावी नकी कावारी, वर्ष केनामधे प्रसार करनेकार क्या केन्स्रशेषी पृष्टि करनेकार है। येक्स कार्याचा अपनी ब्रीमि कैरवनेका सर्वोत्तर अस्य के प्रास्त्रे कर्न, अर्थ और धामपूर्ण प्रत्यक्षे आहि होती है। वेहाने करना करकोचा पुरत एक कान् होतके सन्तत है, का कर्ने उपलब्धे अभिन्योंके रिलो बहुत यह आकर हो पात है। केवल, बहुब, क्यार्व, विकर, जान, एकस तथा समस्त कार प्रार्थ कारकार्या सामा होते हैं: सात प्रतिकारी कराव करकरें किए करवारे अहि करवारी है, का में हवे का का है, सम्बे—किसके कारवाने कर यो बारेने करसाराकर करी कुछ है, अल्बो अधिकेश्वर करा जार केवा है। विस्ती करवार्थे प्रशासनक पाने उत्तर है, यह वरते हैं पहल क्ष हमा चेवनमा यह सह सक्षा है। किस्के जनसक्षे जेनच (अन्यत-चैन) एक पाने स्थात है, पह हेरी पत्रका कार कार करता है, निरामें भूकरोबी सहा-वी कीएल से केरेसे सन्दर कम और कथ का सरवेले सुवन्तित करीरकी | वाली है। विलवे घोरारेचे यान-फारण्यासक वस राजा है, उसे

राविकोग पान्या करा निराता है। निरात्के बनवाने हर सामका पाने के-नेवरकात स्थल को हेता. पा सरिका फाया कर जार करता है उसे विश्वीत सामाना बार बेठ-आकर्षे भी भीगुर गुळ 🗓 उसे अवनेन गान्य क्त रिस्ता है। किस्से क्यूको हर कारको कैई उस प्राप्त पुरुष पानी गीरो है, बढ़ करने प्राप्ता सुरूको बार के है। मिलने चेक्रेमें ब्यान हां चेदे क्या पूर, यही और मनुष्य कर पीते हैं, यह अध्योध-पहादा परा पता है। यह विसीके चेकरेरे लोग कान करेर, पानी पीते और विकास करते हैं हो इस सम्बद्ध पुरूष का पुरुषको बरनेके बाद अञ्चल सुव प्रदान करता है। बारी कृतिय बढ़ार्ज है, बारवेकने से काका मिल्ला और भी पारित है, यो माल्या कर करते हैं, में है कई प्रम पूर पूर्व है। क्यांक का का क्यांने कर भी। प्रम बनोधे हेत्र के अहा अल्ला का अल्ला करन पार्विचे ।

इस प्रकार पढ़ की प्रभाव करकार्य कर प्रकार कार्ग किया, राज पुर राज्योंके कार्याची पुरू करो प्रवास है। सामार पूर्वोची कु: व्यक्ति कार्य गर्म है—यह (व्य-पीवर आहे),कुम (कुब आहे), स्तव (प्रकर फैल्लिकारी केल), सारचे (कारिका केल्लेकारी केल), कारतार (परित आहे) और पूज (प्राप्त आहे) । अंध इनको स्थानेने को पूज 🖫 अनको सुन्ते । युक्त स्थानेनको 🖟 अञ्चान को और एक एक बोकें ।

क्यूक्ट्री हुए लेकने कीर्टी करी दाती है और मरनेके कर को उदान पराच्यी अहि क्षेत्री है। एंस्तरमें सरका नाम होता है. पर्योक्तने निवर सामा समान करते हैं तथा केरलेक्नों को कोल के को सका का रह की हैय। रह सन्तर्भक्तक पुरूष अपने को हुए जिसमें और परिवर्ण केरेकारी इंटर-वेका की स्थान कर देता है, इसरियों दक्ष राजाय राजाने व्यक्तिये । यो यहा राजारे हैं, उनके रिप्ते में कुछ कुके कुछन होते हैं. उन्होंके कराय का परानेकरों सर्गा तक कारण क्षेत्रपेको अस्त कारण है। यक्षणा अपने पुरुषेके क्षेत्रकारोची, पालोचे निकारेची और प्रत्याचे असिवियोची कुल करते हैं। विभार, पान, राज्ञात, वेश्वा, गानारं, पहुन्त और प्राप्त-ने जनी प्रश्नोका समान्य मेरे हैं। पुनी-पाने 98 का कराई स्थानोध्ये का कर्य है। यो 9840 कर करका है, जानके में कुछ पुरुषी महित परलेकने तार केते हैं। प्रतिके अन्य प्रात्मन कर्मनारे स्ट्रूपको अस्ति है कि क केवर कुलावर असे कियों अके-अके वृध भी सन्तर्भ और उन पृद्धीको पुरुषे करान रहा को; बनोकि से क्षा करेकी हरिये पुर हो पने पत्ते हैं। यो जातव करवात, का सम्बद्ध, पार्टिक सम्बद्धन क्या एक प्राप्त बेतात है. क्ष स्टब्रें सम्बद्धित क्षेत्र है। इस्तिको महत्त्वको पाहिने हि का मारक बनकरे, अपेशे स्टार्व, असि-मंत्रिके क्रांका

## भीष्यद्वारा उत्तम दान और उत्तम ब्राह्मणोंकी प्रशंस्त करते हुए उनकी आरामनाका उपदेश

वाते हैं, उनमें जान विस्ताची सर्वतेष्ठ बन्ते हैं ? विस बन्ता पुरुष कृताबा अनुसाम क्षता हो, बड़ी मुझे कालेकी कुछ बड़ीरियो ।

पीनकी वह--वृतिहा । इत्यू वे प्रतिकेशो अपन **ए**न है, संबदके संभव ज़रूर एक करे, उनकी वाले को कहा क्यें वे और जासेको जाने सिलाने। सूचने, को और पृथ्वी—इन तीन पातुआंका दक्ष कह परिवा करा पक्ष है. कामी पार्वका भी कहार है जात है। कान् । हम सानु पुरुषोको इनेवा है इन बस्तुओचा दान किना करे। अस्में प्रतिक भी संदेश नहीं कि वे दान मनुष्यको स्वयंने एक कर की है। संसारने के के पहले अलग दिय पान नाम है तक अपने कार्य जो भी दिन कहा पीक्ष हो, बह सब कुलकर पुरुषको दान देना पादिये, इससे बढ़ दान अक्षय केवा है। को सब इसरोबा दीन कार्य करता और उन्हें दीन क्या दान

मुनिवेररे पुरा—रिकास्य । केवेचे बका को कर सकता है हैता है, यह प्रात्तेव और परकेवारे समग्र प्रतिपादा देख हेक है क्या को एक किए क्युओबी कृति है। धी कारकिरदेश और अधिका पुरुष्टे भी कारत करनेपर महंबारक रूपने प्रक्रिके अनुसार जाना प्रकार गाँ कार, बढ़ हार है। एक भी नहें दौर होकर एरज परोबी क्रमाने परवर श्रा कान से संकारके समय को जाया क्रम करण है, जो नरपोने केंद्र है। विकार क्षेत्रेयर भी विस्तारी सामीनिका क्षेत्र के राजे हैं, जो क्षेत्र-क्षांत और द:शी है, हेते बनुष्पाची भूक विद्यवेदाहे पुरुष्के स्थान पुरवासा कोई नहीं है। के की-कुरोंके फलनमें असमर्थ होनेके कारण विशेष कह उद्योगर भी किसीसे प्राथम की करते और सह स्वक्रमेंने हे रूने रहते हैं. उनको हर एक उनायते अपने पात कुराकर सक्त्यक देनी काहिने । पुनिश्चित ! को बेक्हाओं और क्लूकोरे किसी बसाबी कामम औं बस्ते. सदा संस्त राते और के कुछ मिल काब उसीबर निर्माह करते हैं, ऐसे पूजा

पुरुषोक्त पता सरकार उन्हें नियमित करे और अञ्चलक । स्वयंत्रीसे एक तथा सब अध्यंत्री स्वयंत्र का निवेश करके काका पूर्व स्तकार करें। यह दुखर दान अञ्चले भीवा और वर्तव्यको रहिसे हो विका हशा होना से प्राय-क्रमेंका अनक्षत्र करनेवाले वे वार्तिक पूजा को उक्क प्रत्यार क्रीकार कर लेंगे। यो निवार, प्रकार काल कालेक्से, Parties anne fint fine & abou-finis unbunk. क्षपने जान्यान और प्रचयो नुत स्वानेवाले, बखोर निवयोगे tiere, was fiebfen alle seret if sibil weren रक्षनेवाले हैं, का अपन साहानोंके सैन्ये हुए को कुछ हार करोने जासे दुन्हारा करणान होता । दिसके द्वार कर्ण और प्राप्त:काल विकित्तांक विका हुआ अधिक्रोक को पान प्राप्त करता है, नहीं कर संकरी तालकोची कर देनेने निरस्ता है। एको इस विका कोनामा विकास का वक्त-कालो कीता । एवं एकिनाने एक है: या तथ नातेने व्यवन है, जाको तथ भाग रखें।

में प्रमुख कर्य होता भी करो, किसे करों रिक्केका भी लेश जॉ होता और वो सह मेरे क्या बेसके है, के ही भी परवर्षण है। उनसेंड प्रकार विश्वास होनेंड पालम कर्ना हैन्से कोई कर्न नहीं करों, करवी पूर्व केवान रक्षा करनी नाहिये। इसे वर्गकर नगरका है: उनकी अंदेरों इंग्लोनोको कोई बंध ५ हो । प्रतिका, प्रवेशिक और शायार्थ—ने प्रायः कोमान प्रायायको और वेहोंको सन्तः पार्शनार्थ होते है। प्रतिन्ता हैव प्राह्मनोह पात करे हैं क्रांच हो कारत है, इसरियों दूस अपनेकों करी, कारकन् और Den regret appried steinen und und d अस-क्वाच्या इरफोन न करना । तुन्हारे फल जो कर है उसके इस अपने वर्गका अञ्चल करते हर एन्ट्रे अञ्चलोकी एक करने पादिने । वर्तक वृतिने क्लेक्से संस्कृतको हुन स्वर प्रमाम किया करे और वे वी इक्तरे सामार्थ समा और ज्ञानको साम में ( कुरुबेद्ध ? विनादी कुछ अकुर है, मे सम्बद्ध कि बननेवारे और बोवेने ही संदूष्ट स्क्रीयाने हैं, उन प्रमाणीको तुन्हरे सिमा इसमा बौन मीविका है समात है ? विका अधार क्रम संस्कृती विक्तीचा कृत्यानको पहिन्दी कैयाक ही जनसमिता है, उसी प्रकार हमारी गाँउ सहावांके समीन है। एक 1 की इस इक्क्सेकी एक न करें और इतियमें एक क्लेक्स दिल कर्मको देशका सक्रम की इसरा परिचान कर है से इस केंद्र, का, साथ लोक और सार्विकारों भी पत्र हे सकें; इस देसकें प्रकरे जैकित समेका क्या प्रकेशन केया ?

क्षम् । अस् मै पूर्वे समात्म कारका स्वर्विक व्यवहर का का है, एने-क्षेत्ररूपे श्रीक प्राप्तकोची, बैस्स इंग्लिकी और कुद्र वैश्वोकी सेवा करते थे। प्रकास आहिते क्रमान केमली है, अरा: बहुमाने कुरते ही जनकी लेखा करणी milet, für jeber abr deren urft-verleite स्थानको सेवा करने जीवा है। स्थान जनवतः कोयल. कारणको और सारायांका पासन करनेकारे होते हैं, बिहु जब वे प्रोक्षणे अको है हो विवेशे सचितें समान वर्णकर हो बाते हैं. तार पर पर प्राथमिको तेना करते को । देन और कार्य क्रमेकारं क्रिकेट एक और क्रिक्सिक प्रकृति है। कार । पूछे प्रस्तान कियने देश हैं बतने केंद्र निवार, विवारक, बाद क्रारेत अंकेर मोजन भी दिना नहीं है - इस पृथ्येका तुमके क्रावार नेत किन बोर्ड की है, जिल्ह प्रकार यूने तुमरे भी जानिक केन है। प्राप्तानकर । पात्र में साथे बात बात पात्र है और इसी कानो करण कई मेरे किए महत्त्व प्रतान विश्ववास है. का रहेको में करोना और सरपुरतीको विस्तरेवारे सहस्तेक अभी प्रथम रहेकोच्या दर्शन करिया। अस पहे पहल होता afte forementelt fieb pe thuild met fi :

पुण्डिपरे पूज-निवासक्त । जान आवरण, निवा और कुलमें एक समय प्रतित क्षेत्रेकारे के अक्टनोनेने पति द्वार कार्यक के और कुल्य मांगानक के निवसके कम देनी कार्य कार निवस है ?

क्षेत्रकोरे कह—चोचीत । फार्यन करनेवारेकी उपेशा कारण न करनेवारीओ दिया हुआ कुन विक्रेष बारणान कारी-कार होता है करा अचीर इस्त्याले क्राप्त पर्यक्री संदेश केर्र करण करनेकाल ही जिलेन प्राथनका पान है। स्तानेड कार्यने वेर्थ करण करनेवारत श्रीत और प्रकार र कार्यने क्रम रक्ष्मेन्यम अञ्चल के है। यो अञ्चल बीर, संतोधी और विकास क्षेत्रे हैं, ये केवदाओंको प्रवास करते हैं। इतिहासी काम अने की विशेषका बारत मार्ग की है: आंक्रि कार्यक सुटेरोकी सर्वित सब प्राप्तियों को प्राप्त करते रहते हैं। करण का कार है जिल्ला करने भी पत्ता र करकारी के कर दिन करते हैं का कारण साथ कर्न है; सिन्न के स्तेत तेन जानर भी चनन भी करते. का प्रकारोधी प्रतेष ज्याको अपने च्या कुलकर द्वन देना चाहिने। वदि तुन्हारे क्यांड पीतर एकमें क्रिये हां आगको तत्त्व केरे काम प्रकृत बारे हों के तुन्हें नामक्रीय उनकी प्रतिक करनी पाहिले; क्योंक्रि प्रशासने केटीनामान सानेकाले के प्रशासन प्रतिश्च न क्षेत्रेयर करि बढ़ें से सार्व पृथ्वीको परम कर सकते हैं, अतः उनकी सह कुम करने स्थिते। से अक्रम प्रान-विकास और तपस्त्रसे

मेरे विकास करोबी कर केंद्रव पहले हैं, उसी प्रधान निर्माट | बहुको कहा करी पहला।

पुक्त एवं पूर्वनीय है, काकी कुई कहा है पूजा करने पाईले । | परवर्ध कियाँ कावती प्रतिकारों केंद्री हो, ऐसे प्राहलीको श्वर को बाजका नहीं करते. उस्ते। क्या कुछ कर्व कावर करता है जो बहार पूरूप होता है । निकार्कक बहुक्कीतावा प्रतान प्रकारके पहार्थ कर करने पादिने । सार्थ और प्रकारका ; कानेकारे प्रकार पदि प्रकारक परने पोक्रन करते हैं से विविद्यांच आहितेन वालेते के कार निर्मात है, वही केलेंट | तीनी आहित्योंची दूस घर के हैं, केवलेंड समय उन्हें मी. विद्वार और प्रत्यारी प्राधानको कुर देनेके की विद्यार है। को पूछार्ग और काम देनेले इस्कोलक प्रतान होते है राज्य सीतरे विका और बेद्यानों निकार है, को बिक्सेके उन्होंना होन्यत । पहलें को हुए हेन्याओं, दिवरों और प्रमुक्तेके जोरको सन मीरिका गाँ परको, विरुक्त काम्यान और मनका गुर है। याची हो, यह विशेष्ट्रीको संबद्ध करनेकाल होता है। सब हक को जान प्रकार करन करनेकरे हैं. ऐसे कार अभिनेत की अधिकार कर रकत, सन्त्री स्वापेश प्रभावनेको हुए अपने पार्ट निवरिक को और जो केवल । यह अनेव करण, प्रतिकारिक, साथ, वेर्ड और सार—के एका अवस्थान प्राणानिक प्राण पहिलो हैंगो जान पर हो । एक पूर्ण हुई पहाच्यों अवस्था-पालक पार हैंगे और हुई में करेंद्र तथा स्थानकों स्थान पूर्वारे सञ्चलके करेंची । उत्पार के पूर्वारे सञ्चल वर्ष बहित्यकुर पाला निवार है कर्मनाहरूको जिल्ला क्षता जनका अन्तर प्रवेकन करेते। । यह है, यह इसी कोने कहका है। यह पुनिर्देश । एवं पुर

### राजाके लिये यज्ञ, यान और ब्राह्मण आदि प्रजाकी रक्षाका उपदेश

प्रतिकृति पुरा—रिवास्त । एक और स्थ्र—ने ऐनी | स्थानोक साल-नेवन सरक है, स्था का सुरकारिक किरादी प्राप्त सोवाने पान के हैं वे पानके को समा पान पान प्राप्त क्षेत्र के ? कर केन्द्रेनेने निवासक पान केंद्र के ? हिंदो जोगोंको कर केर प्राप्तिने 2 क्या किए प्राप्ता और साल पहला अनुक्रम करना पादिने ३ इत पानको ने पाकर्यकारी बारत बाह्य है, बार बार कुछ कर-संबद करेर mit Red a

प्रीमाओं का-नेवा । व्यक्तिको सब करोर कर्न करो पाने हैं, शरा: पार और पार ही को परित्र करनेवाले कर्न हैं। साम् पुरुष पाप करनेवाले एकावा कुन वहीं तेते. इस्तीको राज्यभोच्ये पर्याप्त स्थित्व केवर क्योक्य अन्यान करण बार्रिये ( साथ पुरूष परि कुन स्थेकार करें से राजको बड़ी mark um på nitte me der milde mille अक्टर्पंट किया हता का अलाइद्रिक्ट क्रांपेट राजन है। कुर निवनकृषेक पहाची देख केवर सुर्वात, सहकारे, रूपकी, बेक्नेना, सकते नेती रक्नेकाटे प्रका सम्बद्धार प्रमाणको अञ्चलनोको कर हेकर संबद्धा करे । बाँद से क्षार कर जीवार जो करेंने से क्षेत्र कर जी हेना. इस्टीको स्थिमानुक ग्रांका अञ्चल करे और सफ्जावंदो लोग सा येगर पहले। यक्ति पुरुषेको सुन करके ही तुन अस्तेको पह और सन्ते पुरुषक करी सन्ता ले। या करोगले आपनेता का रामान करें, ३०० हुन्हें भी पाला अधिक पर आहे हैं कारता को महारेका उपकार करनेवाले, करा-बर्केकरे

प्रभावते प्रकारतिके प्रमान बोलान्यान् होता है। परीनवासी र्वत पूर्वन पान अपन वर्गीका असर और अपन करो रहते हैं. कार करेंच करोड़ करोड़ की की होगीबा करन-बैक्स

चुनिहर है पूर समूद हो, इस्तीरने अञ्चलीयों गाए, केता, अन्य, कारण, पान और अवद्युप पानी को । को प्राकृत का करते हो, उन्हें की, तरह, कोई को हुए रह आहे की समानित, काम भर और क्रम्ब आहे क्रम करे। ये क्रम राज्यको होनेको और समृद्धिके पहलेको है। पिर स्थानोका सामान निर्मात न हो, ये पहि प्रतिकाके विना बाद के हैं है जे उनका पता समावत पूरा के उनकालों वीतिकाका प्राप्त करते तक उनका प्राप्त करते करा व्यक्ति । श्रामिकोके विको पद पार्च राजपुर और अक्षमेश पार्स 🍽 आविक कामानकारी है। ऐसा करनेते एव सब क्योदे नक और चील डेकर कर्नरें करतेंगे। स्थे करने सेकरों और प्रधान की पुत्रकों कीते करना करना साहिते। व्यापनींके पास को परह न हो उसे देना और को हो उसकी रहा करक में एकरा कर्मन है। अपने सार क्षेत्र है हो (कार्यकोधी लेक्चमें समाज कार्यको, उनकी रक्षासे कार्य के नहीं चोक्कर पार्क्षिये । उत्तक्षणोंके पास पदि पहल कर उपारक्ष हो जान को नह उनके दिने अनर्थका है कारण होता है; क्योंकि स्वानीका निरुक्त स्वानात को को और मोहले करा केता है। प्राप्त का पोलास होते हैं से निकार है वर्षका करा है ।

और क्षेत्रा गांव क्षेत्रेस प्राणियोका की कार हो कारा। या का हो तो हुने पुन्यक्रमा का एक सकत है। एका है---स्तरे तरिया भी संक्रमी कर जो है। यो तथा प्रकारे करते कार्ने प्राप्त पूर बनको सामेनियोचे सूर्या करके क्रमानेचे रक्तमा लेखा है और अपने व्यर्गवारिकोची क्रमोट रिन्ने राज्यते कृत्य कर बहुत करनेके रिन्ने अवक केवर प्रमानो स्टार है एवा जानी स्टार्म सन्तर रहेन्छेक् इत-बन्धाकर रिक्ट्राक्ष्मधीय को कर राज्या काल है उसीहे भारत अनुहार करता है, का राजके देशे खाली राज्य पुरस प्रतांतर गाँँ करो । प्रतारेणे को स्थेप बहुत करी हो और फिक चीका दिने की अनुस्तानामुख्या पन है जाके अनुनिक दिने कर मनको करवोगमें साथ पार्दिने । देते ही उपन्यो कंग्रा विके पूर् वर्ग्ड हरा था करना जीता है, कावद रवने हुए करते | मही। यह राजक विविद्यांक राज्यविकेत के बाद के राज्यसन्तर बैरनेके अन्यार राज्यके मान्य भागा अनुक्रण हिल्लोनोका काळ हैं किर करकी रहा भई करता, यह भारते. कार्य महान्त्री हरियम देवी पाहिले । एक पुद्र , प्राप्त कुरेबरे हाह बार क्रान्त्रेड बोल है । एक्स्नो आहित सारामा, दीन और अंगे मनुष्योद धनावी रक्षा करे। कामे प**्रोधर प्रधा को कुछ पार करती है, राजावी उत्त**र्फ करारोध्य कर तथा कुर्जा कोक्स दियों एक विकार करें। कहनीकर कार्य क्रेस कहन है। इसी उत्पार सकते कुछ जन पैद करे से राजाने जाने कर जो रंग काहित। जानेगाँठ कुर्दिन होकर प्रथा के भी सुन कर्न करते हैं, रूप को को दिल्ली हैकारें प्रकार से को के उससे की कर रेना जीवा नहीं है। कार मारे वृद्धिक का क्षेत्रक है के पह भार अन्तेर राज्य और स्वयंत्रिया जान कर देशा है। निरमोत 👯 केरो बढ़ी बढ़ान को प्रतास अध्या हैनार पूरी है स्वरं कारीब्रा पोजनको और नाराज करावी जांकोले देखते हैं। फिन प्रधार प्रकृत कुनेरके और देखत पुत्रके जातिल क्षेत्रर और मा भी भारेको भी निकार, का पुरुषे क्रया चीवर करन करते हैं, को उसल तुन्हों बीते-के सारी उसल इससे महन्यर कर और क्या है सम्बद्ध है ? कर्ज्यू | की | हुको है अपने आवीरिका करने, हुन्दरे सुद्ध और हुन्ती करने भोड़े विकार अंकार प्रस्तों का कां-का कार में अवस्थित क्षेत्रा बीका-विकार करें।

विक्रीको प्राप्त है कि 'विक्रावेद प्रत्यको सम्बाग पर और महेर्ड पर्य क्यारे पेकि हे या है, का स्थारे पीरन्ती विकास है।' विकास राज्यों सारका प्राह्मण कुरावा हैसा रहा का हो, जन्हें रूपमधी सही भी हेरी, सन्द ही का प्रत राजाओंके कार्य कार्य के विश्वके राज्यमें रेवी-विकास विकास मान्यांच समान्य से पान से और उनके की-दूर केरे-बेटरे सु बारे ही, अन एकावी कीरिक नहीं प्रत्यक्ता व्यक्तिने, यह मुर्दिक सरकत है। यो प्रयासी प्रकृत जी करा, रिन्हे काचे परावे सुदय-सरोका क्या है क्रमा विकास पान कोई सुनोत्त करने नहीं है, वह निर्देशी पान क्रीन्युन्ते कवन है। उक्को कहिने कि हेरे एकाई भोक्स कर हाते। यो प्राती का सहका कि भी कारे पुरस्ता केवा कर राजने जा है। पुरिवीर ! की तब जानी नेजके स्क्रूने बीवन बारम करते

#### भूमिदानका महत्त्व

करिने करका सुनै को जाराके राज करका निका करते है एका सामांने एकाओंड देनों क्रोकों उन्हारके कार्या साम है: बिहा का राम करोगे कीन-क कर सकते काम है ?

ग्रीकाओरे प्रश्ना—बेटा । साम सामीचे पृथ्वीकृत सम्बन् सहयर यना गया है। पृथ्वी अध्या और सहय है, यह भूष्योची संबद्ध काम व्यानकाच्ये पूर्व करनेकारी है। बस, या, पशु और कार-मी अभी नाम प्रकारके राज पुर्वादे है रूपा हेते हैं। सात पूर्वीका क्रम करनेकार मनुष्य बहुत कारतक समुद्रिक्तारी स्वयन सुद्ध केला। है। कारण पूर्वी अरवन वारी है तकाब चनिवार करनेवाल

हुनियों पुरा—निवास: । 'बा देश करीने, बा देश । बहुक उपवेदर आहे करता है कहा है। इस समझी चुन्याको स्थान और कोई क्षत्र की है। इसने सुना है, जिन लेक्ने केरी-की भी पन्नी कर की है, के क्षेत्रत्वक पूर्व बार कार अल्बा अपनेत करते हैं। वो इस साहब प्रकीका कर करता है, यह इससे समाने कहना क्रेकर प्रतीका पानी होता है। वर्गामधीक विद्याल है कि बैता कर किया जात है केल कोन बिलात है। संस्थाने क्रारिका त्यान करे अक्ट एक प्रथमिक कुछ है—में क्षेत्रों ही करने स्त्रीनतेन्द्रों कान नक्षीको प्राप्ति करानेवाले हैं। कृतमें से हुई पृथ्वी क्रमाने परित कर होते हैं। बिलान ही बड़ा कर्जे, स्वास्त्रास्त् और असलबाड़ी क्यों न हो, दानों है हाँ पूजी दातके करको को-काकर जो सर्वक निरूप कर हैती है। साथ पुरूत वाली इंग्राह्मों की मुश्लीका कुन के होते हैं. पिंदू और | बाह्यादानों मुश्लीको इस केब्रुएन पायबार कर करता है, बा विसी बहुका दल भी क्षेत्रस करें। उन्हें व प्रत्ये प्रतिकार सेनेका अधिकार नहीं है। किया प्रतिको करते हैं हिल कर, असे को कम जो केर कहिने। बेरिया र है नेके कारण पहला हैकों पहकर के कुछ कर कर करका ्रे, का सारा पार चेकांकि करवार भी चूर्ववार कारेंचे कर कार है। के एक करोर कई भारतिको और कारकार है. क्षे कामूक क्षेत्रेक हैंनो इस परन काम पूर्णकार कामूक कारत करीने : प्राचीन कारते, संग ऐक कारते से कि सं शक्तिक पात पात्र है अवस्त को प्राप्त कुछनी कुछी कुछ कारत है, इस केरोने पहल पान अपन है। यो पुन्नीका पुन कारत है, उसे पर, पा, विका, सुर्वातक, स्वेतनक अध्या, सामानित, पुर-पूर्ण और देनदरनात के का नित बार्स है। यो अन्ते सार्वाक्त बाव कर्तने दिनो सम्बन्धि मारे कावार प्राप्ति त्यान के है और के विन्यू क्रेकर अध्यक्तिकी चौन को है, में भी चुनिका करोबको पुरस्के उस्ते की कहो । केहे काम अनने कहेको हाए कुर निरामक कारती है, क्यी जन्मर पूर्णी सब जनमके का देवर चरित्रालंक सन्द अनुष्य करते है। कृत्, कार, कृत, क्लेपुर, कृतन असे और वर्गकर पश्च—ने श्रीकार क्रानेकोक्ट पह जी प्रकार परे। पृथ्वीयां क्रम क्लेक्स क्लाकिन क्लूब केला और रिक्टोको भी हुए कर केल है। पूर्वण, मीर्विक्तकोर किन क्षेत्री और पूर्णके बहुई नहीं हुए हाहुनको उपलब्ध पुरिवास करनेवारम पर्यूच प्रकार करा करा है। वैसे व्यक्ति प्रक्री पारतानपालो पर्य हो में अपने बनोहे दुव पहली हो क्ट्रे निरम्भेके रिक्ते खेकरी है, जारी प्रधान पद पूर्वी पुनिवान मारोबारेको सुक्त पहुँचारी है। यो प्रमुख केवी, योची और करवी हुई संसीते भरी भूनिकार करता है अनक विकास सकर क्षणावर देश है, जाको काक स्वापको पूर्व हेवो है। के former with fest see the frights from पुरिचार सरक है, को कभी क्रिक्टिक्स नहीं होना पहला। चैसे पन्द्रमान्त्री करन अतिहित कहती है, जर्म अक्टन कुन की क्षां प्रथमि विकास चार प्रसार पैदा होती है, जनन ही जाने कुरमा कर कहा नात है। इस विकास प्राचीन करोड़े साम्बल होना पृथ्वीको भागी हाँ हुए माना कह करो है. वित्रो सुनकर परस्रामधीने समुखी पूजी कावनकोची कर बर के भी। यह पत्त्व इस प्रकार है—(पूर्वते काही 🖫) 'खो कमें ये और खो है दलके कमें खब करें। मूर्व केवर नहीं ही फरतेने; क्लॉक पर्यूच इस लोकरें से मुख्य द्वार करता है, बढ़ी को कालेकरें निरम्भ है।' जो करूब

प्रमुख्याओं प्रश्न होता है। अत्यन प्रथम कृत्य (काम-कांक) के प्रचेशने को गय प्रक्रा बेला है, साको क्रम करनेका काले महत्र समय पृत्तीका कुन 🛊 🛊। चीर-कर करके रहत्व अपने आने-बीक्रेसी एवं पीर्किनीक्रे क्षीत कर के है। के केले समय समरीय इस चीन्यवाचे कार्य है, या भी अपने इस विदियंका स्कूर कर देख है। यह मुख्ये कन्यूनं अधिनकेकी कार्यानक स्थान है और अर्थि प्रकार अधिकृता देखा है। राज्यको क्रमीक्रकार अधिक सर्वेद का में एक्सी कार्य र्क्ष कर कुन देनी पाहिले, जिससे का चुलिक कुन करे और प्रमुख्येके क्रमते अहे के वह पृथ्व प्रीप प है।

विकास राज्य कर्मको न प्रान्तेकाल और गामिक केटा 🗓 ये और य कुमते क्षेत्रे 🕏 और य कुमते करते 🧸 अधित् का प्रकार प्रत्याको एक स्थित रहते हैं। ऐसे राजके राजने चेन-केन नहीं प्रता केवा । मिलू मिल देवन्या एका वृद्धिमान् और व्यक्ति होना है व्यक्ति स्तेत पुरस्ते सेने और सुस्ते कानो देश में अपने समाने सहामानून और सुदा क्य-क्याको अस्त संख्या को है। या क्या समया वर्ष होती एक पहिलो एक योग-होन्से सन्तर एवं अपने कुरुकारों के उन्हों कुछी होती है। यो पूर्णी कुछ करता है, भी करोर, भी पन्, भी पुरसंख, भी कुछ और भी पराक्रमी है। यो पहुल नेपनेसा प्राह्ममध्यो यन-बारपके संस्था पुरितार करते हैं, के इस पुत्रकेश कुर्नेड समाप केंद्रेणनाम होते हैं। कैसे कार्यक्रों कोने हुए बीज अधिक राज पैदा करते हैं, जो उक्त चीका करेंगे वर उक्तको कामाई सक्त होती हैं र सामित्र, काल, विल्यु, सहर, कहार, शरीर और क्तान् इंदर-ने तथे चुनिका करनेकरेका आहर करते हैं । एक्का कीय कुर्वाले हैं कारत और पृथ्वीने ही हरीन होते हैं । लक्ष्य, रिकार, चेदन और उदित्य-इन पार प्रकारोह ज्ञानिकोच्या पार्टर पुरसीवा ही कार्य है । पुरसे ही हुए प्रवाहती नामा और निया है, पुरस्के समान सुराय कोई पूर नहीं है।

नुविद्यार । इस विकास सामग्रहर स्टेन प्रकारि और हाले संबद्धान प्रचीन प्रतिकासका महात्रच दिना करते हैं ( प्राचीन प्रात्ममें का इसने पहल-सी एक्टिक देवार को-को सी पार्टिका अनुसार पूर्ण कर रिच्या के विश्वानीने केंद्र कुल्लीरकीरे पुत्र-'चनवन् । किस प्रशुक्त कुन करनेहे कर्मका सुरू जार होता है ? विस्तार पत्न कहन और सबसे व्यक्तिक प्रकारकार्य हो, बढ़ी कर यहाँ बातनेकी कुरा बहेरीको ।' कर्मानी कर-इत् । से ध्रद्भाग सर्वा, में

और पृथ्वीका कर करता है, यह एक करोड़े कुछ हो साल है। मैं से पुरिशालों सहसर और विक्री कुल्को नहीं माना। अन्य विद्वारीको को को सन्तर्भ है। को अको कार्यका जात करनेके तिले कुट्टरे करे कावर करेर स्थान के हैं और के केन्द्रक होका प्रक्रिकेट बाते हैं, में के धनिका करनेवारोधे अले नहीं बढ़ते । चुनिका करनेकार मनुष्य अस्ती चीच गीवीतको पूर्वकेका और प्रः Affeiten geber gebend derring-en un um मान्य पॅरिनोक्त स्थल क्या है। के कोच्छे ब्रोडको एक प्रमोध्य कर कारत है, यह इस प्रमोते पूछ होका melebult ufeiter der fie geine mebatisch परमेक्षर तथु, भी, कुर और स्त्रीची चार स्क्रोनाती । स्क्रात्म है। से पूरत पृत्यीक कुर कुछ है, स्त्रु अपने महिनों हुए करती हैं। एक कुरेश्वर करेशे एक करेशे । इस करेश कर करते किन्नुह और प्रश्नुकारित अवस्था पुरस्कार का बाता है। सुनिवारों कावार और कोई कुछ नहीं <sup>है</sup> कहा है। सन्तर है। सन्तरों समय पूर्ण कहा है। सन्तर है। को समुक्तानंत्र पुर्वान्त्रों अनोति जीतकर सक्कान्त्रों कुर - कावार करते हैं। बैठी कर्यने कहे हुई तेतकी बूँद एक और है देश है, उसकी पीती संस्थानेत सोना प्रमाण कथा बाबों किए। बाबों है, उसी अबात कुर की इई बुदिनों है कराया पर पूर्व करना को है। के बार बोध और जिल्लानिका कर केर केर है, जानकी कर असे समृद्धिकारी पानी गाँ। हो पुंजीबार क्षण करण है, जानके । क्षणक प्रमुख करणा करणा है। पुंजी-कुछ कार्यवाहे का कुर्ना प्रचानों कहन सोवोची अहि होते हैं। यो ' स्पूचकों अनुर प्रचा क्रमंतारी पूर्व आह होती है। कता देवने और कुछ ब्यूक्त है, को तक कुका अञ्चलकों । चूनि-कुन्ते कवार कुन, वार्यके समार पुर, वार्यके समार पुनिवार करत पारिने । सहाव क्यों-कार्य क्या से प्रमुद्ध है को और क्योंट प्रमुख कोई प्रमुख की है । गर्छ, कर्मन, बल, साराज्य, कुरुर्वे, कुरुर्व्य, सरोवर, बोद्ध (कुर anth) aft we marely with mount of the year करता है। कहा-ती श्रीवना केवर अधिकेप साथि पह करनेवर की उस कारणी आहे को होती, को कुनियुक urfer firm te ufene un unbater mich mir पीकिनीका प्रदार करता है और हैवार औन रेलेकास करूक कारनी एस पीड़िनोंको परकार्ग प्रदेशका है क्या एक व्ह गरको काल है। यो देनेकी प्रतिक करके की देन हैं। क्या को देवर किर से किए हैं, का पुत्रुकों स्थानने कारणतारों केवार प्राप्त-कार्य पान कार है। विकास की पान कार्य में पूर्व पूर्व कार्य के पान प्राप्त है।

क्रीन्याक कोई साधा गई है ऐसे अञ्चलको कुरातेसे निर्म को पूर्व बागी नहीं क्रीनमें बाहिने। प्रोद क्राइक अपन क्षेत्र क्षेत्र करेका एक्ष्र क्षेत्रर को अन्त्र कार्त है. un gledenbat die dieben unt mt fer fie fa करते पर हर करायो कि क्योतिहरतार किया देता है, बहु कुछ सामि कार है। किए कुनिया गाए, में अध्यक्त क्षेत्र केरे काल के हैं, को ने और नेहें आहे व्यक्तिकी परकर हो, निर्माध भीतर परकार पहर हुआ हो and the second many seconds; spings \$, \$18 कुरियों अभी स्थानको सीवका को प्राप्त कुछ कर हैता है, जो अक्रमोप निर्म है जान या का पुनिवा

क्षेत्रको स्वारं है—स्कारतिकोश नेको स्वीत-स्वारक सह महान्य पुरस्क इसने कर और स्त्रीने को हुई का पूर्वी कई का का है। से पूर्व कर्युर प्रत्य पूर्व-क्रांड इस represent grown & week stagestell fleethalt steller किने हुए चल रहास और सन्तर नहीं हेने पते। दिल्लीक निर्मित काला दिया हुआ साथ क्रम अक्रम होता है--क्रमी स्त्रीत्व भी लोक नहीं है। इस्त्रीओ विद्वार पुरस्कों काहिते कि लाइने फोजन करते हुए सहक्रोको चा पुनिवहनका स्थानक अन्तर क्ष्मणे । जुनिक्षिर । इस प्रधार क्षुप्रदे प्रसंध अनुसार

# अत्र, सुवर्ण और जल आदि दान करनेका पाहातव

पुरिक्षेत्रे पूर्ण-विकास । तिल सम्बन्धे क्या स्वयंक्ती | इका हो, यह इस स्टेबर्न पुरस्क प्रकारोती दिल-दिन बक्तमांका कुन करे ? किस बक्तमां हेनेसे प्रकार होत प्रसार हो जाते हैं ? कॉन-सर हार इस लॉक और फालोकने भी चार केरेक्स केस है ? इस विकास अब विकास करेर

र्थभावेरे वक-पुविद्येत् । पूर्वकारको वात है, एक कर र्शन केवर्ति करवाचीले इस विकास प्रमाणका का काले और उनके उनमें को पूछ बक्द, की तुने का एक है, सुने ।

कर्त्याने कहा—हेकला और पानि अपनारी ही प्रतिसा करते है। सामों ही क्षेत्रकारका निर्मात होता है और असेरे चन्त्रिके रहनें जार हेते हैं। यह है सम्बद्ध आकर है।

अवने समान न मोर्ड कर वा और न होना; इस्तरियो करून | प्रायदाना और प्रार्थस देनेकाला अकुलाता है। अतिथि अभिकार आका है इन करने साहे हैं। अब हरीके बराबो बहानेकरम है, अपने ही सरवारकर प्राप्त दिने हुए हैं और सम्पूर्ण जनस्को सक्तने ही जनम कर रका है। संस्कृत्ये गुरुव, बारास्त्र और संन्यासे भी अवसे हैं बीचे हैं । अन्यते ही समके प्राचीकी रक्षा होती है, यह सात किहीनों किन्हें नहीं है। अतः को अन्य कान्यन प्राह्मा हो, यह सहके दिले दु पूर्व, क्षण-वर्षांचारे पहला प्रकृतको और संप्यतीको अस्तरूर करे । को बाक्त करनेवाले सुरात अञ्चलको अस्तरूप केत है. मह परायेक्टो अपने रीजे एक अच्छा क्रमान संबद्ध करता है। राजेका कवा-पाँच कुछ रहतीर की करकर का छात्र हो अनेक कार्याच प्राप्तिको पुरस्को का अवस्तीन अतिनिका सम्बार करना कविने। यो पुरूष करने को हर क्रोतको एकाका और उस्स् क्रोक्कर स्वयुक्तांबर्कक अस्त्रक भारता है, जो कर सोचा और पराकेश्वरों भी सुक्ष निकास है। अपने पराम पीय-में-नीय करूम की आ कर में आक्रा अपनार महि करन प्रतिने । मान्यार और पुरोको दिन हात अस की क्षेत्री कर्ण की कात । को कहन कहने को हर कारोपित राहिको प्रसारतपूर्वक अस्त केन है, उसे पहल मर्गवरे जारि होती है। यो वेक्कानी, मैक्नी, म्हरियो, प्रक्रायों और अमिरियोको भी राज देखर संद्या परका है, यह विशेष पुरुवकरन्त्रम् सार्गी होता है । यो पहुन् बस्त्रस् सारोः यो पहन्त्रः मन्त्राची और सामें भी विशेषक सामाना जा के हैं। बह अपने भागोः कारण केतुने नहीं कहता । अस्तरा सुर असूनाओ और स्क्राको भी देनेसे महान् मारा होता है । बढी प्राह्ममा असावी मानना मारे को कारों भोतं, करका, मेहान्यवन और **शिवसम्बद्ध आहिके विश्वमें उस न करों तमे, होत हो** भाषी रोजर्ग जस कारीया यहे । मेले विश्वान अन्त्री वर्षेट मंत्रमा करते हैं, उसे उच्चर फिर भी पह सोवा करते हैं कि 'मक कमी इभरा भी पुर वा पीत्र सरस्रात करेक ?' स्वाहक एक पहलू प्राणी है, यह बड़ी पाने अवस्थी सावना करता है हो मोर्ट समाग गर्नुमा हो या निम्हान, बहु हते कुर करके अस्तर पुरुष प्राप्त करें । प्राप्तान सम न्यून्वीका स्वीतीन और ककी क्षेत्रं क्षेत्रकार अधिकारी है। विश्वास प्रकृत किए संस्तर कते हैं, कारिते नहें सत्कारपूर्वक विकास कहार लोटे तो उस मानी सन्तरी कार्य है। यो प्रमुख इस लोकने सक् अस, पृत और विक्रमान कर करता है, या केन्स्रजों ने सम्बन्धि केन्द्र सर्गरवेकमें निकास करता है। अब ही मनुष्येके काल हैं, जह कार्यान करनेकरा पर्वत वह, पुर. का, घोर. कर और क्य मीत्राह करत है। से पुरूष कारहर करत है, वह संस्थारों

व्यक्तिको विकित्तेक अञ्चल देवार प्रमुख परस्थेको सुद्धा क्या है और देवता भी सामा साहर मनते हैं।

चर्निहर । अञ्चल सर्वतेष्ट्र अन्ये और शतन होत है. व्या के बीच केवा करते हैं, व्या भएग् पुरुवाल हैनेवाल क्रेंब है। अस्ता का है एक ऐसा दूस है, के दूसा और केवर केवेको अवस्थानको संक्षेत्र केव्यान केव है। प्रतिह रित्या और नियाने कर है, उनका चाल के परेख है। उसकी है कंकन्यों कारी। हेनी है, असने ही बर्ग, अर्थ और कारणी निर्देश होती है और साथ हो चैनोंके जाएका ब्राइस te gefenreit merellet semak seine Arrenn fie अपन्य असून व विलयेगर प्रदेश्ये सुनेस्को गोवो तथा यह में को है। भी का समेन्द्रे र निर्दे से स्नेन्द्रे कारकरोका पार भी और है पार है। असरे दिश सरकार, विकास और यह भी नहीं हो सकते । सबोद विका नेवार प्राप्त की बुद्ध कात है। यह सन्तर्भ बरावर कात् असके ही अस्पारक किया हुआ है। असः विद्वारीको प्रतिके कि वर्गी रिने अस्ता हुए असून करें। अस देनेसरे क्यूको कर, ओव, कह और बीमीका मीनी सोबोबे विकार होना है। को कारत साले हुए कारकाओं अस है। क्य प्रात प्रातिकोची प्राप्त और रेक्स्प्र क्या वाला है।

केल्प्से करने हैं—करूर । जनवर्गने कर इस उक्ता सुक्रे अञ्चलका माहायक कारावाद, प्राप्ते में साह अवस्था विराध करना या । हम भी होमाँ और परना शामकर राज शत के कुरा । स्थानकेट पुर करनार, जीवार करन है कि 'से कुर्वका का करते हैं, से काने कामकार समूर्य कामनाई कृत कर के हैं।" राज्य प्रश्चिकों कक्ष है कि "सुकर्त प्रस्त परिता, अन्यु व्यक्तिकारक और विकासिको अञ्चलको उद्यक्त करनेकर है।' बहुकी बहुते हैं—'सरका कर एक क्षत्रेते क्कार है।' इसरिये कुओ, बाधके और फेसरे सुरकारे चारिये । विवादी स्थापनी कुर कुऐसे शाबी उस्त पानी िकारकर एक ओगोंके काम आता है, कर कनुस्तका आक का ग्रह हो जाता है। जिसके सुरुक्षणे हर सरलक्षणों सक ची, स्थापन और स्टाबु पुरूष कभी पीते हैं, असके समया क्रमक रकर हे पात है। निरुद्ध क्रममे हुर क्रमभूमें क्लोके दिनोने भी करी चौजूर सुख है, यह कसी सर्ववार क्रिकेट माँ पहला से एक करोड़े प्रमुक्त मुख्यी, पूच, चन, अधिनोद्धान्तर और अभिनेत्र प्रसार होते हैं। का राजने अल्प जीवन और पहली समिति प्रमु है। यह सकेंने कान रस है और प्रस्तवनक स्मुकोर्ने स्थानेब प्रक

हैरेकार है। क्लि कर, का और चुट कर करनेकी हका। है। किल कैटिक कार्य है, यह पुन्त कर केनेकार और हे, बहे पूर्व प्रमुखे रहने करते प्रीक कालो प्रतिहर इक्टबॉको का-का को । यो अधिनके व्यक्ति उद्यानिक का-का करत है, जो अधिकेवन जान केवर कुछ की में है। से के निरस्त पूजा पति प्रकृतियों योगन परास है, अर्थः प्रत्य सभी दक्षणेका अवस्था पूर्व होता। यो पार्वे पर प्रम सम्बद्ध का कार है, वह कर्ष पार्क महिन्दा । असे पत तब प्रवत्नी अन्तरक समादे बेक्ट करों है और यह संसाधे की सहस । ये सारक बद्धारे पुर केवर प्रकार प्राप्त किरानुस सम्बद कारत है, यह कुम्बेर को अंक्रमा कुम जार कारत है। यो management married where send after service first समाहितों केत है, जाकी सभी चलकाई और समा प्रधानों कर्त तित्र होते हैं एक वह बहुनोंके तरर करने अनी bereit unbeit bilbereit aber ibt mer ib mit, web. कर राज शक्तिक प्रसार पढ़े हैं, जाने पह धेनी हुए जी केरी और का संक्राओं कियाने केंग्र है। के पूर्ण क्रांस क्रा बारता है, जो पुत्र और स्थानियों आहे होती है। अलोर नेतने बोर्ड रेग गाँ हेता और मो यह पहला पर निरम्प है। को गराने और बारायके नहींनोने प्राप्त कर करता है, उसके कारों क्षाची केवल को केवा । करिए-से-कारिए पंचानों की पर बील से प्राप्तानों भा करते हैं। प्राप्तान प्राप्तान करता A fix for or develop on arise on with परावर है।'

gfallet ger-fleren t wellte Reith freit fie का हो है हैने हक्ताओं के कुछ कुछत है, उसके कर चल विलय है ?

बोरपारे का-पुनिश्चर । यो कामानिक क्रेकर इक्टनोंके रिले को कर कथा है, या अन्ते कर कथावे (सहाओं) को माना सामक है और कड़िन निर्माणों के पर हो करत है।

कुमिहरने कहा---वितासक् ! किल, कुमि, भी और समाका क्रम करोगे के कल मिलता है, उसका किसी करीmbfiel :

क्षेत्रको सङ्ग-क्षाकेरका । त्रिक-क्षाक्षा सङ् सुने-न्यानीने के तिल करत किया है. का निरातिक सर्वरेड चेचन है: इसीन्वे हिल-बन करनेते निवरेको नही प्रसक्ता होती है। यो पाप पासमें अञ्चलोची जिल्लार कारत है, अने करक नहीं देखान पहला 1 को डिलाने निकरेगा चक्का है। इसीन्ने विस्तार कर एक क्लोरो क्वार है। स्थापन पानि अवस्थाप, पञ्ज, विशेषक और पैतान-न्ये विश्वीक पुर करोड दिन सोकको प्रस्त पूर् है। वे सची mary all-more to some more finding part form करो थे। यन क्रमेंने दिल्ला का अवन प्रकार है। कृतिकारों राजीं कृतिकारे प्रतिक सराहर है करेनर किसेके है हुए। पाने क्षेत्रे अधिकोचे का वित्य का प्राप्ते को क्रम पति प्रक्त हुई। यो योग नीओयो प्रीप और वर्गाये कारोदे किने का कारती है, उनकी दान पीरियोक्स स्वार हो काल है। को कोनोह रोजों केर कर करते हैं, करी करत स्थानिक प्रति केनी है। कारणी वृत्तीका कर करतेने ment mig fint fie ib mit mer, und mi abr इन्हरा है किया है करा बड़ी करी पूरत निवास बाते हैं, को क्यानको सन भूति हैया प्रात्तिके । यो सुरातिकी प्रात्तिको बाद करता है अपना इसरोची चुनि वन्तों देश है, उसके क्षत्र और कुरूब कार निवर्तने कुछ पह पर दिया करा है। प्रभावने प्रदेशका कुछको अधिक पूर्व से केवेनके पूर्वि सामान पार्टकार कुन करने प्राप्ति । अस्ति क्रांति विद पूर्व दिन्द्र स्वयुक्त क्रेक्ट है। कर, पर्वद, नक्के और संबंधिय कोई साली भी होता, बातः मही बादा मारोपंड हैंकी पति while appropriate the fire

while I are some the self-spirates were कारका, इससे साने नोकारका पान कारत का है। मीदें सन्तर्भ क्वांक्रमंत्रे बहुबत है, इस्तीओ परावाद होकसे चैश्लेक ताल कारत कर विका का । विकासक्रिकों विक क्वार्ति को क्वांक्ट क्वार करते हैं, वहीं के रोट क्वानके साव निकास करती है। वे अपने हम, बड़ी, थी, फेसर, क्याइ, हई, चीन और बारोंने के जनकर करतर करते रहते हैं। इन्हें सर्वे-वर्षे और क्लोबा पर नियमित की करता। वे की रक्ष हो अन्य कर किया वाली है, प्रतरिने ने प्राधनीके कार प्रक्रानेकने कावर निकास करती है। इसीरे मी और क्कानको जिल्ला पुरस् एक बातो है। जो पहुन्त उत्तर कार्यों के नेकर करता है, का संबदनें पदा हो हो भी उस पारित विश्ववितो पुरु हो साथ है। देवराज प्रश्नवा करता है कि 'चौक्रोका एक करत है।' इस्तरिये के इस देशकारी कर दूस कार है, बह माने अमृतका है का कारा है। नेतरेता पूरत बहारे है कि नोहमाने प्रक्रियका गरि अधिने प्रथम किया जान के का अभिनाती कर देनेकाल केंद्रा है. अर: को बेन कर कुर करता है, यह करते संपूर्ण नहींका अनुहार कर रोख , करता है, यह इतिकास हो कर करता है। केर कर्मका मुर्विकर् सक्त है। यो गुलकर् प्रकारको के। यस करत है, अन्तर क्रांत्वेकने सम्बन क्रेक है। थेई प्रतिको (क्रो कुष निरमकर पामनेके कारण ३१) के जान कहानाई है. इसरियों को तुम देनेवारनी की द्वार देख है, यह मानो प्राय-दार करता है। नेवारे निवार बज़ों है कि नीई समग्र प्राणिकोची करण देनेनारों हैं; इस्तरियों को केनू दान करण है, यह सबको शरक देनेवारत है। को जनून क्या करनेके दियों में बाँच कर हे उसको और वर्तकता, बारतो हका कैसे केरिका व्यवस्थानको भी भी भूति देश प्राप्तितः हेरो प्राप्तिको भी क्षेत्रका पुरूष अञ्चय सरको पहल है, ऐक पहलिकेक मानन है। को कुलने हो, जिलाका प्राप्तक पर पंथा हो तक को ठाँठ, रोगिको, मिनरी अधुको द्वीर अधैर क्यूबी हो, हेन्द्री को -

इस प्रकार का गोवान, वेश्यक्षन और पुरिवारका बहुक माराजा गया, अन पुनः अध्यक्ताची महिना पूछे । अध-सुन शक दानोंने प्रकार है। राजा रनिकेटने अपना कुन करके हैं। कर्गलेक जार किया। यो एक को-वर्ष, पूर्व क्यूक्ती भार-दान करता है, का सहायोंके परमकाओं प्राप्त केला है।

अध-यन करनेकारे पुरुष विस्त प्रकार कार्याओं धानी होते है, केन कारान होता, यस या और विनी प्रकुता तुन कर्मने नहीं जात होता। अस असम तथा है, यह उत्तम रूपनेवर कारण बाज नवा है। आओ ही प्राप्त, तेब, बीवें और मानदी पृष्टि होती है। कारतर पुनिवार कवन है कि 'यो नकुन सक क्यानीया हेच्या आजवा कर करता है, जायर कर्षा कुछ नहीं पहल है प्रमुख्यों प्रतिहित क्राओक विविद्ये केराजानेको एक करके उन्हें जन निर्माण करना पाहिले । यो पुरत निया आपना भीवन करता है, उसके केवता की सबे ता पान करे हैं के कर्तिको सुरक्षमें आवा क्र करण है, का तथ प्रकारके संबद्धते का क्षेत्रर कराके व्यक्ति असून सुरात्म करकोन काता है । को पुरुष आहे सुरात क्षा प्राथमिको सरिविको अध-क्षा करते है, क्ष व्यक्तिकोधेः सोक्ष्में पास है। अस्तुता स्टूब क्रमिन-से-कार्यन कार्याको पहलेक भी अस्ति पार हे पाता है और कारोंने कुछ होका सही कुरहारोंको लाग हैता है। कर क्राइट की जात, हिला, चुनि और पीओंके क्रान्तक

## नाना प्रकारके दानोंका वर्णन तथा ब्राह्मणका यन हेनेसे होनेवाले अनिष्ठके सम्बन्धमें राजा नृगकी कथा

अवीचा सुनी; अस प्रत्यान करनेले कैसे-कैसे महत्य प्रत्याकी प्राप्ति केली है, इस विकास्त्रों में विस्तानों क्रांस सुरक्ष पाइना 🎚 ।

धीरपनि का-राजन् ! पर्न्य अध्यान और जानार बाली जिस व्यान् पालको पाल है, अल्बर कर्नन करता है सुने । कोई भी सुन सरास्त्रको स्कूबर भई है । सनस सुनी अवसे ही जीवन वास्त्र वास्त्रे हैं, इस्सीओ संस्तरने अवको है रेजीतन कारतका गया है। असमें ही आधिकोंके केंद्र और मरुवी वृद्धि हेले हैं, उस्तः प्रमागीने आहें कुमाने हैं सर्वतेषु वस्तानमः है। पूर्ववारसमें पहराज विलेश काहरसही रकाके निन्दे अपने प्राप्त देवार निस्त गरिको जार निर्मा था. अक्टनको जनकान करनेसे की कई गति विस्ती है। सिह आसमी उत्पत्ति जलते ही होती है। पानीके किए कुछ भी भूति ही शकता। अहंके कामी कावान सोम भी जातो ही प्रका हर हैं: अपूर, सुख, साथ, अस, ओपनि, दूस और साली भी जरूरों हैं उत्पन्न होती हैं, जिस्से बेह्नजरियोंके अपरोक्ती

पुष्पिको पुरा—विकास । अरे अस्तानको विकेश | पुष्टि होतो है। हेस्साओका अस्त अपूर, पर्योका अस सुका, निर्माणक अंश राज्य और प्रमुखीका अन्य गुज-स्था अभी है। अभेने पुरुषेरे असको ही पहुन्तेका प्राप कारता है, किंदू कर प्रधानक जान बाल्टे ही जनक हेन है, तक जनकरों काम पुरू में भूर्त है। मे न्तृत्व राज्या कार्याच प्रावृत्त हो, ३रो प्रतिदेश प्रताहा हार काम कहिये। या का, नव और अनुस्ते बहुनेवाल है। जनका पुरुष्के समझ कामाई पूर्व हेती है और कर्मा अस्ति क्रमान प्रतिकृत विस्तर होता है। आ क्षणेते पुरः होका गरनेके पहात् अञ्चन आगन्तका अन्तक week to

> कृष्णिको का-विकास । तिलका, प्रेरहान और जनकाम महात्व सुते किसी कार्यको ।

> क्या वर्ष प्रकृतिकान करोबाल अनुव अपने मिलरोका उद्धार कर केल है, इसरियो केला और भिवरोंके कोइनके क्रम कैन्छन करते राजा पाछिने: इससे क्रमों नेबेक देव काम है। सारामध्य की बहुत क्षेत्र पुरुष

स्त्राच्या गया है। जो स्थाप कारों का नेवार को केवार का करता है, महत्वे दिनों का अरिया पंचापक नहीं होता। पनि सहात्व किसी कारते का कानों तेवार उने स्थापकों की ब्रीट हेता है के उस कानों हैने और देनेकारे केनोंकों हैं सहाय पूर्व्य होता है। को पूर्व्य उनने वर्णवर्णकों निव्य होता क्षापे हैं समान विवित्याने स्थापकों कानों निवर्ष हो ब्राट्स कारता है, उन दोनोंको सहाय करेबी अर्थि होती है—यह कारी ब्राट्स कारता है। को प्रमुख पंचापक करता है, वह सुन्दर क्षा और सुन्दर केन सार्थ्य कारोकाय होता है। पुनिश्चित ! गी, सुन्दर केन सार्थ्य कारोकाय होता है। पुनिश्चित ! गी, सुन्दर्य और विव्यो क्षाप्या व्यापकाय होता है।

कृषिक्षेत्रने नक्ष—कहानी । जान कुमानी उत्तन निर्मिता विज्ञाने कर्मन क्षितियों । किन्न कुमानी सभी मोग कर सकते हो तथा केन्नेने विज्ञास कर्मन किन्न गम हो, जनकी स्वापन

प्रेन्त्रोरे क्यू-पृथितः । यस, पूर्वः और सरम्बो--इस क्रीनेक्स एक हो क्या है थी। एक अन्यवर्ध हम क्रीने क्रिक्रोका एन करक पाहिने । इन सैनोके क्रमक प्रमान ही पहर है। वे सेनों है सहस्वते समूर्व सामाई पूर्व करनेवाले हैं। ये अक्रम असे दिल्लों के साथ (शरकारी) पर उन्हेंच करता है, यह युन्यान और नोकन्के क्रमान परस्का भागी होता है। इसी अधार सेवानको से स्तांसः को नवी है। गोवानो क्यूकर कोई दल भी है, क्षाका कार कहा सीहा निराद है। पीएँ क्रमूर्व ज्वरियोकी माना प्रकारती है, वे कान्यों सुन्त केन्यानी है। अन्य अञ्चल सहनेवाले स्टुक्को सह कैतीको प्राधिक कर्क करणा पादिने। पीओची स्था न वारे, नीउनेक स्थानी होबार म निकारे । वे सहस्तकी सरकारपुर देशियाँ है, जनबी सब्ब हैं एक करने कहिये। बुद्धिकर पुरुषके जीक है कि का मेर्र सक्यानपूर्वन कर को हो, अन्यत विजी हो स्थानमें बैदी हो से करें तंत्र न करे। कीई व्यासी केहित होबार पान रूपने जागीची अंदेर देवानी हैं (और बढ़ रूपें पाने नहीं निरमता) से समझ कर्-कक्योतके कर है बाह्य है। किओ नोबरसे स्वीयनेवर बेक्काओंके सन्दिर और विकारिक अध्यक्षेत्र स्थान परिता होते हैं, उससे व्यवका प्रकार और पना है समाज है ? के एक कांत्रक प्रतिवेश केवनके पहले इसरेकी गांकको एक मुद्रात करा विलयक 👢 अल्हा बा प्रव समझ कामनाओंको पूर्व करनेवाला होता है। को पुत्र, कर, कर और सम्परिको प्राप्ति होती है तथा अलो सम्पर्ण बाह्यप और दशका नह हो उसरे है।

दुश्यादे, सबी, लोगी, अनुस्तानी तथा देग्या और अञ्चल व कर्मणारे अञ्चलको मिन्सी स्त्यू में वही देनी प्राणि । मिन्सो बहुन्ती संस्तो हो ऐसे बावक, लोगिय प्राण अपन सोन्दोची प्राणि होता है। यो क्या देस है, यो प्राणी प्राण्या है क्या को सीनिया हेला है—ये दोलों ही विक्रों हुन्य है। इस्तिन्ते सेक्यानिह, स्तूल, प्राणी, क्यों ही विक्रों हुन्य है। इस्तिन्ते सेक्यानिह, स्तूल, प्राणी, क्यों होन्स स्त्रुपीय कर्ण व कर्मणाले, स्त्रुपत, साथ, अभिकानेते, स्त्रुपत कर्ण व कर्मणाले और की-पुत अपने सुद्धाले पूजा स्वान्त्रको सेक्या कर्मणे विद्या पूज्य होता है, स्त्रुपत वया हो सेन्सिन क्या ही एक स्त्रुपत होता है, स्त्रुपत वया हो सेन्सिन क्या ही एक स्त्रुपत होता है, स्त्रुपत क्या हो सेन्सिन क्या ही एक स्त्रुपत होता है, स्त्रुपत क्या हो सेन्सिन क्या ही एक स्त्रुपत म करें सेक्ष क्रमणे

क्रमीनक । इस किस्सी साथ पूर्ण एक उपन क्राव्यान पुरस्क करते हैं। किसी संबंध प्रकृतका धर हे हेनेके कारण क्या कृतको बहुत् बहु उत्तर यह सा व्यानेको कर है, इस्टब्स्ट्रीने सुनेक्से व्यानेकी बाराव करोबी इक्सरें इसर-कर कुर के है। इस्पेरीने को एक महान् कुन विकासी पहर, निराद्या कारी पान पान और समाओरे कार हुआ का है के बारवारि बहुत परिवास क्षके का कुएंके कारणा वाल-पूरा कावा से कई संस्थे भीतर बैठा हुआ एक बहुत बड़ा निर्माण विहासी दिया। क्रमा प्रकारीको संस्थाने हे, एक निरमार वस निरम्पिको व्यक्ति निकारनेके कार्ने सन नवे । सिन्दु निर्माणका प्ररीर ज्यूनके रूपान वा, संक्ष्मीन हो रवितनी और पान्त्रेकी वर्षुकोरी प्रविकार क्रीक्लेक रिन्ने बहुद कोर स्थानक, पर क्षा जा-ने-पर्ध व हुआ। बार बाराव्ह उसे निकारनेने संबन्ध न हो सके हो परवाद औदन्यके पार पास्त सेरो--'इसलेगोने कुछ बहुत बहु निरम्धि देखा है, को कुऐका mer much bem bie f: of wie frumeimen 相信化

च्या सुनका स्वेदान का कृति पास यथे और उन्होंने को च्या विकासकर काले पूर्वसम्बद्ध पृथाप पुत्र । का काले च्या 'नगवन् ! पूर्वसम्बद्ध में क्या तुम था, सिक्षी इसारे क्योंका अनुहार किया है।' असकी बात सुनकर बीकृत्य केले—'शब्द ! आदने से स्वयु पुत्रको ही काल किये हैं, कालो इस कभी भी धार भी दूसा; किर आयको ऐसी दुर्गीत कभी निर्मी ? इसने सुना है कि कारने महत्ते कहें कर विस्तानक इनकारी स्थल में से नीई प्रकारोंनो कर की | अनकार्या है। इसका कुर कहा गीठा होता है। कन भार, जो है; उस गोधनका करा कहाँ करा?'

तम तमा नृगने धनावर् अधून्यतं प्रक्र—"त्राचे ।
एक अभिनेते अधून परदेश जान गया था। आके पात
एक नाम थी, जो एक विशे अपने स्वास्ते चनावर नेते
गौअभिन होतमें सा नित्ती। मेरे आशोरे इसके विशे विश्वते
हों एक इसके गौअभि इसकी थी नित्तवे करा है और की
लो एक साह्याको दन कर विथा। कुछ दिने चार वस वह
आहमा पर्यक्रते स्वेद सो अवनी साथ हिंगो स्वास वह
हैतने-देशों वह नाथ कर को दूसते पर विस्ती थे आभे अस
होती-देशों वह नाथ कर को दूसते पर विस्ती थे आभे अस
हात्राको कहा—"वह केरी भी है (अस में हो से का
सावार में यह आने । इसके वहा—"वहरावा है वह वी



आपने सुते यान्ये से हैं (और व्या आहम हसे अपनी करा का है) !' मुस्तेने कहा—'पहाराज ! करावाने का नेते कहा है, सुसने इसे कुछ दिन्या है।' तम मैंने कुछ लेतेकारे क्रमानते कहा—'प्रपानन् ! मैं इस नामके कहारे आपको इस इकार गीएँ देश हूँ (आप इन्हें इसकी ताम कारण दे रहिन्दे) !' अपने समाग दिया—'पहाराज! का भी देश, कारको अनुकर, पूछ दून देनेवाली, सीची-सादी और असम्ब एकल्

🕶 की कर साथी । 🖦 अपने धूबसे प्रतिश्चन मेरे व्यवहान पूर्वन बकेका कारण करती है: ये इसे कदाय औं दे सकता ।" व्य ब्यूकर व्य व्यक्ति कर दिया। एव मैंने कुले हक्कानी अर्जन की 'जन्मर् ! आप अरके बहरेगें एक तास भी हे संबंधिये (" यह जोरब—"महाराज । मैं राजाओंका कुर रही लेका, मुझे के नेरी नहीं भी शील ता है जिने।' मैंने उसे लोगा. चौदी, राम और बोड़े सम पुष्ट देना सक्षा, धर का कुछ न होसार कुरकार करन शंक । इसी बीकरें काराकों केरणको मुझे इसीर म्बन्दर का और विवृत्तिको प्रीवका में प्रमानते पिता। क्वोंने नेता व्यूत आहर-सम्बार किया और बाह्य- 'ग्रवार् । तुमाने पुरस्कानीकी से गिनती ही नहीं हैं; सिल् अनशानमें कुरने कुछ कार भी हो गया है। इस शायको पहले योग हो हा केंद्रे, केंद्री कुकार्य क्रमा के करे।' तम की वर्गरायके मान-'प्रथो ! माने में पान ही चोच मूंना, असी बाद पुरुषक अपनेत करीना (" प्रत्य कामा का कि में पृथ्वीपर नियः। सर समय क्षेत्रं कारहे घोरते हुन् कारावची यह नात करोने को 'उन्ह । एक इसर वर्ग एनं हेनेश शक्त कार्यका केन प्रशत होता, का प्रथम मनवान श्रीकृता जाना कुछन बक्का करेंगे और धून जनने पूजा करेंके जन्मको जात हुन् जासन सोकोने काओने।' कुरीने निर्मातर की देखा 'मुक्ने रिप्यंग्योनि फिली है और मेरा सिर मोनेबरी ओर है।' इस फोरिन्टे की मेरी स्नरमातिने नेय जाब नहीं होड़ा 🖚 । जीकृत्वा 🕽 जान जानने केरा उद्धार भार दिया । अन्य सुक्ते अवस केरियो, में कर्नको सक्ता (

कारणार् स्वेष्ट्रकाने अर्थे आहा है है और वे अनको प्रसाद करके विका कर्नते सर्गालेकको धर्म भने । उसके बारे सानेवर अनुस्ताने इस स्वेचका स्वयन विका— 'स्वयुक्तार प्रमुख्यको कारणां करका अव्यस्ता नहीं करना वार्किने । बुद्धना हुना साम्याको जीने राजा नृत्यका सर्ववद्य विकास का ।' कुन्यीनका । वहीं स्थान पुरुष सावु-प्रकारमाओका सङ्ग करे वे अनका का सङ्ग कार्य जी करता । ऐसी, सावुक्त्यापको अन्या का सङ्ग कार्य जी करता । ऐसी, सावुक्त्यापको अन्या का सङ्ग कार्य जी करता । ऐसी, सावुक्त्यापको अन्या कार्य नृत्यका नरकारी अग्राद हो गोओं हो करते क उने स्वयन्त्रिय कहा कहा कुन्यस्त की गांता पहला है; इसकिये कैसीको कभी कहा नहीं व्यक्तिया कहिने।'

## ब्रह्माजीका इन्द्रसे गोलोक, गोदान और स्वर्ण दक्षिणाकी महिमाका तका गो-घोरीके पापका वर्णन

कुक्र रहित है। गोदान वारतेवाले बहुना निवा लोकर्ने निवास बारो है, जरका में प्रवास कर्मन सुरूप भारत है।

बेजबोरे बहा-मुसिद्धेर : हरः विश्वये कारकार स्थेप एक प्राचीन प्रतिकृतका स्वाहरण दिना करते है—एक का कुरते सहामीरो क्रम अकार अने विकास—"क्यानन् ! में देशका है, गोरतेकन्तिवासी पुरूप अपने नेवले कर्पकारियोची पार्टीक परिवर्ध करते हुए अने लोककर अने करे करे हैं, इस्तीओं के मनमें का रहेत केता है कि गोरकेस केता है ? वहाँ कर कार मिलना है ? सहीका विशेष पूज करा है ? गोवान करनेकारे पूजा तम विकासोसे पुत्र क्षेत्रर वहाँ किए प्रवार पहुँको है ? मोक्स र फरनेश भी सामा कर बेसे मिला है ? क्षा कर करनेवास पर्वा क्षेत्र कर करनेवाले स्थान तथा बोहा क्षत्र कारेकाल कुछ अधिक का कारेकांची सुन्य मिला प्रचार के पान है? में एक पाने की प्रवासीयको सारास्थ्रे ।

सहराति कहा-पूर्व ! ग्रीओके हरेक अनेक प्रधानके है। में अन्य स्थानके देखान है और परितास दिल्ली की उस पान लोबोको देश सकती है। जनम प्रत्या पतन करनेकोर स्वयोग प्रकृति से अपने चून क्योंकि प्रचानों का लोकीने क्रमारीर पहुँच आहे हैं। हेड्र आहेड आवरणने रहने हुए चेन्डी पुरुष समावि-अवस्थाने अध्या कृतुने कृतव जन कृतियो सम्बन्ध जान के हैं से अपने सहविकतंत्र हता सामग्री नहीं। बीक्रमेवाले इन कोक्रोका बहुदि की हर्मन करते हैं। अब हुए का लोकोके पुणोका वर्णन सुने-वर्ण करन, कुरूप अवन्य अभिन्या चोर चर्डी धनता। विश्वीचा विशेषा ची अध्यक्त नहीं क्षेत्रा। वहाँपर न येग है, न क्षेत्रा। इन्ह ! कार्या और अपने कार्य किल-विका कर्यात हुना करते हैं, का राज अने प्राप्त के जाता है—का मेरी प्रत्यक देशी वह जात है। वे जार्र करन काली है, करते हैं, कैसे करना काली हैं, करती है और संबद्धकालने है समूर्व कारकार्वेक कामोग करते है। बाबके, स्थापन, स्वीर्थ, क्यू-रायके का, पा, कांद्र आहे सभी कराये को उसका है, वो सम्पूर्व प्राणियोच्ये समेरम जान प्राणी है। बहुविये बहुव्योक्त सम्बद्धाः सम्बद्धाः अधिकारः देखा जाता है । इतन्त्र विकासः दास्य मोर्ड स्वेक नहीं है। यो पुरुष सब पुष्ट स्वानेकारे, क्षावारीत, क्षाल, गुरुवनोको अञ्चार्थे सुनेकारे और आंकारधीत 🛍

वृत्तिको पुरार-शिक्षण्य ! सुत्रो चेक्केकके विकास | उन्होंच्या चेक्केकरे अनेव होता है । यो निर्धाणा संस नहीं पान, विकास हुए। बॉक क्योरे पर हुना है, के कर्नवा, क्य-विकास पर्क, सामग्री, स्थानोची सेवारे संस्त्र, विकास सोवा, भी और साहाजीवर स्रोप **१ करनेका**ल, mineral, gutten, duret prem un feberen, रानी, अवश्योको भी सम्ब केनेनाता, पुरूत, वितेतिका, क्षेत्रका, प्रमुख सारित्य-सम्बद्ध करनेवास दश इवाकर् **्रे**—हेशे है जुलेकार क्**रूब का समान एवं श**क्तिनाही चेत्वेचने कवा है। क्राचीनाचे, गुव्हमारा, असमनाचे, Burnd, प्रमुख्येसे के रक्तेकाल, विक्रोदी, सन, कुराई, प्राप्त, कृतिक, क्योंची और अवस्थान — इस एक क्षेत्रीये कुछ पुरास कुछ भारते भी साथै गोलोबास हर्षण मूर्व प क्रमा: क्येंद्रि को क्रमान्यनीया निवास है।

> का । या तम की विशेषकाचे नेत्रोपका प्रकृत्य काराया है, अब चेवान कानेकालेको को कर आह केरा है, जो कुने । को पूरण अनन्त्रे पैतृस्य सन्तर्गतने प्रदा हुन् सन्द्राप की परीवार कर करता है, यह उस करते कोन्द्रक अवसित fieb pe auge ebelieb um der B: Reek feebit के-के चेड् पानकृष्य जात हो हो, रूपमा दान करनेरे क्षाताको अञ्चल प्रकेश निरामो है। को पुरूष स्थानो भी लेकार जिल कारक ब्रह्म क्राप्यों कुर कर देता है, उसे भी अकुप सोम्होंकी क्रमि क्रेक्ट है। के बच्चों क्री सब सार क्रेस्का, निर्देशिय कृता, पुर क्या प्रकृत्यके समयमको सह लेता और कृतकन् केम है, यह पोलोकने जान है। उत्तहताओं कभी प्रधाना नहीं केरक व्यक्ति और माने की ग्रेशोकी हरई जो कसी कारिये। यो प्रकार मौजीवे समार पुरित्ते कारा है, चैक्केचो पास अबदि विस्ताम है और इस एवं हमेंचे पराचय का है, का बड़ी एक में भी दन को से जो एक हमार चेक्काके सम्बन्ध कार निरुत्ता है। को पूजा तक कार कार कार क्ष्मंक विकिसे वर्ताव करता है तथा को सत्ववादी, गुरसेक्क, का, क्रमारील, केम्पल, क्षामध्या, परित्र, प्रान्तान, क्ष्मंत्र और अवंदरस्य होता है, यह गीर पूर्वीक विभिन्ने उद्यानको इत देनेवाली चाव दान करे तो इसे पहान् करन्त्री प्रमीत होती है। को साह एक बन्त परेवन करके निरम नेवान करता है, सामने रिवत होता है, मुख्यी सेवा और वेरोका प्रकारण करता है, विरुद्धे मनने गौजीके और पहि है, यो फैसोबर कर देवत प्रस्ता क्षेत्र है तथा जपसे हैं।

सुने । रामकृष स्टब्स अनुहार करनेते जिस कारकी प्रकी हैती है क्या बहुत-से सुवर्णको ब्रोह्मक हेकर यह करनेते को चल निरस्त है, उन्हेंक बहुन भी काने एतान ही प्रस्तात धानो होता है—यह विद्यु रोत-स्थापन एवं स्वतिकोच्या प्रधान है। में मे-नेक्स का रेकर प्रतिहर केवनी पहले गोओंको 'से-करा' अर्थक करना है तथा करन हमें निस्तित क्षेत्रर का राज्य पाल कार कार है, यह प्रतिन्हें हुई हिंदर मेहन करकेंद्र पुरस्का करते होता है। के एक पक घोषण करके हतो कालो क्ष्मणे हर बोकाने कर कारिकार कुछ काला है, यह का गाँचेंद्र विकार केई होते हैं जाने भीओंके करका अञ्चल कर कहा करता है। भीओंके केवन्त्रेली अध्यक्षकेत्रीया जिल्हा गुल गुल है। के र्मकामने गाँभीको जीतकर उन्हें कुत है केता है, उठ प्रकार मा कर सरनेको नेकार कर करनेके एका पान पान है। में प्राप्तानन एक मैजीके अन्तरने क्रिकार में क्राक्टर कर देश है. अल्बों का में को नार्ष संबक्ते कर का देते है तथा का कुल्पी महिने बहुका समा होना है। केनार भी को बार कर कर केन की उनके साली पात नहीं है, कुछ करते संस्थ पान, बारल, मोनियोग, पोयानको निर्मेश, इत्यय-स्था, माराज और पानोंद्र अपारंश भी विकास पूर केंग्र पाहिले क्या का भी बाल रकत करिने कि का में कई का की है मार्थ हो। यह और सामने बाहु के मूर्व महिन्तु ?

यो सामान्यकाः, स्वाकेरि (प्राप्ति), महत्त्वका, जन्मे हरनेवाल, बहुत, ग्रेशीयर श्रूबाल पहर रंशनेवाल, कुलकाच्या, इत्राक्तकात्रक और वीरिवाकीर हो. यह प्रदास केवल्या कार पत है। यो प्रतिकारे किया महा बाह का का हो उसा विश्वको होती का बहु-होत करने, जन्मा बीचो एवं निस्तने क्या पुर-रोग अवस कारकार राजन-पाल करनेते हैंनो चेंची अवस्थात हो. उसको प्राच्याम हेल-काराने की दूध देनेकारी ग्रेका कर मारम महिने। इस वेरेकारी, करीहरे अवक निकासे प्राप **हाँ, युक्ते अनोको संबद्धने सरकार पराह्मको उत्तर वर्ड** वर्ड. क्षेत्रों रिसर्ट हुई, इंड्यारे कुम्बर राज्ये हुई पर करान-केरणके मेरने अपने पास सामी हुई में केंद्र सामी भागो है। ह्यान्यूर, सीची-सारी, जन्मन और उस्क शन्मकारी गान ज्वांसनीय वानी गानी है। बेले पहल तथा गाँउवारी हेत है को अधार करिया की राज कीओंने उद्यूप है। (केंद्रामधी भिने इस जनत है—) क्या की समाद अवाह करते

चैजीको प्रमास करता है, आको निरानेकारे करावा कर्मर | चैक्षोको करा-पूरत निरातकर पूर्व द्वार करे । सरकार माइन्मेंको फेनन आहिते संस्था करके अर्थ में ग्री कर करे. कर चौक्षीके स्थान कृत चीनेवाले हुए-पुर चारहे भी होने साहित क्या और् भी ऐसी हो को अच्छी कहा परस-दिस हती। केंग्रनी प्रकार केन विस्ताद केवल गोरस वीवर पहल कार्कि । को की प्रोची-सूची हो, पुत्रों समय तंत्र र कारती हो, विकास काम पूर्ण हो, यो समन दोहका पानते र हो—ऐसी में कर करनेते उसके क्यारने किली केई होते हैं. अने क्वीत्र इस क्लेक्ट्रे एक चेन्द्रा है। से महत्र व्यक्तिको केन स्टानेने सर्वा करूप, परिद्य, स्टेश-स्टार, क्षा परिकरियाल और प्रतिकारण कैश कुन प्रतान है, यह प्रत में केरेकारंके सोवडीको करा होता है। को कृति करने केरे क कारणे और मैजीना प्रकृत करता है, जा एक है क्षणों तरक पार्वें एक है कहा है हु। को पूज प्रकारक विकारिकोको अभि होती है। हरून हो नहीं, यह ग्रीओहे अनुसूचि क्षेत्रस कर्मन पूर्वित क्षेत्र है। क्षेत्र मृत्यु कर्नुक विक्रिके क्यों स्वाप्त केंडवेचा अनुसारत (वेक्स) करता है क्या विराह्य, प्रोक्षी और प्रीक्ष क्षेत्रर पान, गरे और रोधर रेका हुन बीक क्योर क्या है, व्यू में। होकी हेरकारोदे पान आरम्पूर्वक रिवास करता है जाता गाउँ क्षांच्या जानारी प्रवास होती है, उन्हीं कोन्होंने राजन बहुता है।

> रको पुरस-असम्बर् । **यदि यदि यान-बुक्तवर कृतीय**ी र्पेक अञ्चल को अन्यत करों। सोपने को के प्राप्त से कार्या कहा गाँध होती है 7

स्कारी का—धे क्यूक्तालक 🕶 🕶 💌 केंद्री देश करने या केंद्रांत करते हैं तक को सार्वपत कर्माको पान बारोबरी साम्यु क्षेत्रे हैं, वे हार अक्रूप प्राप्ते वानी होते हैं। कीओ कारोकारे, सरसा कार सारोकारे एका काली क्रमाना अनुवीदन कार्नेकारे पुरूष गीवे करीरमें निकारे केंद्र क्षेत्रे हैं, जाने व्यक्तिक सामाने पत्रे क्यों है। व्यक्तमा का गुरू करनेकारे पुरूषके की तथा किया कर राज्ये हैं, इसरोबर्ड में पूछने और बेसबेने भी से ही सेन काने को है। यो सुरोधी कर कुलार साहजीको हुन करण है, यह मैंके क्रमका एका क्षेत्रनेके तिमें विकास क्रमक कारोने महाया नक है जाने ही सम्बद्ध नरक चीनता है।

चेकर करनेते अनुस अपनी तक पीठी प्रारंके निवर्तिका और एक पीर्क कानेकारी प्रकानिका उद्धार करता है जिल् कोर अलंक साथ सोनेकी सहित्या भी ही काल हो उस करका इस कर विरास है। सुक्रांका क्रम सबसे उक्रम कुन केवल करीके आकारत हो, पृथ्वील क्रम करें और है, कुर्मानी क्रीक्रक करते हेतू है एक परित्र करनेवली

बरुको परित बरनेकाल काला नक है। इस प्रधार की हमसे संक्षेपमें रक्षिणाची बात बातनी है।

इन्हर्स दिया, इन्हरे तथा द्वारावाने, शास दहराने अपने दुव । प्रतिहर इस करोहाको पुरस्ता है और यह तथा गोरहराके वीरामक्ष्मकोको, श्रीकृष्ण-स्थाने दिन प्राय स्थानको और । जनम भी इसकी प्रायं करता है, जनमे प्राय स्थानकोक सकारने क्रम्बारके समय अधियोधी हिन्द था। इस अधार अस होते हैं।

वस्तुओं में भूतने हैं सबसे अधिक कान है। सुबर्ग सन्तूर्ण | बरनायों कहा हुए इस अनेसको अपन जाना बारना करनेकारे कृषि और वार्टिक संस्थापेण करण करते जा रहे है। कुछने मेंने क्यान्यक (परस्तुरामनी) ने इस विश्वकर चैकते कारे है—बुविहर । उनके उनके प्राथमें । वर्षन किया था। के प्राप्तम अपने क्यालें केरकर

---

#### इत, नियम और दम आदिकी प्रशंसा तथा गोदानकी विधि

पुरिक्रीरो पूर्व-कुछनी । इस्ते और विक्रमेक क्या और बैसर पार महाया गया है 7 सामान करते, यह देते. वेदीकर कारण एकने और केंद्र प्रकृतिका गया कार केंगा है ? को उनमें पहचार कुरारेची पहला है, और विभर पहलाई उनहे केरी है ? अपने कार्रालक पासन कार्यकार प्रत्येतीयों पास war form \$ 7 afer, sepretur were our war-free और अवस्थित सेना परनेचे की पालनी प्रति होती है ? का प्रत्य वालोंको में क्यानेकाले स्थाप प्रत्या है।

वेक्को सह—सुविधित । यो पुरत सरकेल विकित किसी प्राची अंशन करते अंग्ली अक्टानानों निमा के दें. उने सरकार कोचोंकी उत्तीर होती है। संस्थाने निकारी भारतक पर अब्द देश कर है, हुने से क्यू का और विकासिक ही पान हात्र किया है : केवेंके सम्बद्ध परमानकार पाल भी का प्रोच और वस्तोचने ब्रांट्नोकर केल है। वैक्रमान करनेवाल पुरू प्राचेकरें भी सुनी होता है और परामेको यो आक्का अनुषय करत है। सन्। । सन एवं विकासी पांच का (प्रीत्यांका) के काला करेर सुन्ते । विकेशिया पुरान सर्वत सुन्ती और सर्वत संसूह सुन्ते हैं । में वर्षा बारते हैं को क्यों है और दिन बस्तुको इस्त करते है, बढ़ी उन्हें जार है जाते हैं---वारने प्रतिक भी संबद की है। प्रतिकृतिक करनेवाले परुजेकी संगत कारणी प्रति पूर्ण होती है। हे अपने तपन्य, परवाम, दान राज नाम प्रवासके क्योंसे सर्वकेटमें अन्यव योगते है। स्वत्यीत पुरू क्रममान होने हैं। करते काका कैमा वर्ण है। करी पूरन हारायको प्रकृत्य करते समय क्षापी कोश भी कर समझ है. कि राज्य पारन करोकार परण कर्य होन जी अस्ताः अस्तिने दम कारो केर है। का कारो समय क्रोम का बार से का बनके फान्यों का बन देता है. जिस के क्षेत्रकोट होकर कर करत है. को सन्तान खेकीकी प्रकी होती है, इसके की काफी बेहता निर्देश है।

कियोची के प्रश्नोकात सम्बद्धक स्थाप परि विह कार है। अधिने विकास इका कार्यवास पुरूष कार्यवास प्रतिकृत होता है करा को सामानीई करने केंद्र प्रकार मेरिनाए दिक्तीको पहला है, सामो भी सर्गुक प्राचनो हो उत्तीर केरी है। पूर्ण कार्रिय प्रशंक करोबात कर करी कार्यर पान है। वेक्क्क, यह और क्रम्यानि सार्थ क्षांकार एक का कर्ष कार्यन का वस्तेतार अपन भी क्रमी पूर्व करा है। साने क्रमी तथा दूसा मैरन क्रम देनेते बार-कानो जात होता है तथा सम्बन्धानुहानमें साम हात श्रह का कार्रेसी सेवाले कार्नी बाता है। ब्रुप्तीरेक्टि अनेको नेट करावने को है, अनेट क्रायाक तथा पूर और पुरविक्रिकेची विकरियारे पार्तिक वर्गन पूर्व । को पूर्व इतने आएके एक को को है वे कहा कालों है और कुल्यपूर्वक इंडिक्नेसा कुल करोबलोको सुरसूर कही। \$1 sell year flort & weer, water, wron. क्षंत्रकार, चेनवर, कम्पासकर, गुरुवसक्द, सिगावर, सार्वेश्वरं, क्लेक्सिक्ट्, शिक्तव्ह, बेहान्यनक्ट, अञ्चलकार, पुरुक्तरूपकार, विद्योगान्त, अव्योधान्त, निव्यानहर और अधिकपुरसम्बद्ध होते है—ने सची अपने-अपने कार्गेरे ऋह इस काम खेकॉमें पाने हैं।

क्रमूर्ण बेटेको करण करने और समस्य सेमॉर्ने इसकी रायांच्या पूर्ण भी राम साथ क्षेत्रनेताले पूर्णके पुरूषके बरावर आपर हो हो सकता है। वहि स्टान्से एक प्रत्येक क्य प्रमार अक्रमेन पालेका पाल और दूसरे प्रत्येकर केवल रात रात कर से इकर अवसेन फार्टी अनेवा सलक है. कारत कार्य होता है। सरकोर अभागती सूर्य सर्वत है, स्त्रपारे अक्ति प्रस्कृतिया होती है और सामने ही प्राप्तान सर्वन संस्का क्षेत्र है। एक कुछ स्टब्कर ही दिवस इक्षा है : देवता, विका

और प्राप्तान राज्यों ही जरता होते हैं। सन्य क्रम्बों कहा कर्न बताया जना 🖟 जनः सरस्या कर्षा जनसून 🐗 करन कारिये। व्यक्तिनुति सरावस्ताला, साववस्ताली और समाप्रतिक केरे हैं. इससिये साथ समाने केंद्र है। साथ चेरनेवरं पर्व सर्ववयां अन्य येथे हैं। पर प्रक मैंने का और सत्यते मिल्लेकाने प्रमुख्य प्रम प्रकारते वर्णन ficm : Repair yes freezier & up factig sollt सम्मन्ति होता है। तम हुन प्रक्रमन्ति पुनोधा कर्तन हुने। को बन्दारे लेकर मृत्युकारमध्य काम्बरी क्षत्र सुन्त है, उसके रिको संसारने पुरा भी सुरंग नहीं है । ह्यान्तेकने ऐसे करेड़ो मर्टन निकास करते हैं, को इस ओकर्न एक सरकाई, विलेखिन और सम्बद्धित (विक्रिय प्रक्रमार्थ) है। स्वयन् । भी, व्यापनिक करने दिना बाद के पह प्रमूर्ण करेको पर का इसमा है। उत्पालको से निकेन्सको उद्यानका मान करन पाहिले; क्लेकि प्रकृत अधिक काल काल माना है। तपनी साहायोगे या साह सामा देशो कही है। विकासिक कृतित क्षेत्रेयर हाई भी क्यो है। सारकांका का कार वर्ष व्यक्तिमें एजेंकारे दक्षिकेस केस है। अह स्थ मता-रिवा और मुख्यनीक पूजर प्रारंत को को हैक है, अरके विकास सुने । जो विता, मात्र, क्षेत्र काल, कुर और अध्यानीकी रोगा करता है, वाची उनके क्षेत्र को देखाए. क्रांच्यो क्रांन्वेक्वने सम्पूर्णना स्थान क्राइ क्षेत्र है । क्रांट क्रान्ते मरकार स्थान को साथ प्रकार

पुण्डियों साम—विकास । ताम में सेक्स्पर्ध इंटर विविध्या पंथानीकारों तामा पारण प्राप्त है, विस्तों स्थापन स्थेमोनी जाहि होती है।

वीनकी वहर—वेदा | गोवानो वाकर कृत थे वह है। वही नामपूर्वक आह कु गोवा का विका क्षम से वह सनका कृतका सम्बाद कहा का केते है। इस्तीनो हुन आविकारको अपरित्त कु गोवानको विकास सम्बाद को प्राथिकारको अपरित्त कु गोवानको विकास सम्बाद का महा-के गोई सुन्दे दिन्दे साथी नवी से क्षित वैका का करों का सोहारे पहकर कृतकी नदी से क्षारे केता के का विका। स्व कृतकी किये का अव्याद कार दिवा—"गोवान करोगाते प्रमुखको कविते कि का स्वयाद कार्य को करोगाते प्रमुखको कविते कि का स्वयाद कार्य को क्षारामको कृतका अस्ताद अवति स्वयाद कार्या है कि 'मैं कर अस्ताद अस्ताद से वैका क्षारे है करकी कार्य का क्षारामके किये स्वयाद कार्या (वेकाको से क्षारे कार्य है। किय क्षारे क्षार कार्य क्षार कीरोको सम्बोधित करिन करवाद कार्यो क्षार कार्य क्षार कीरोको सम्बोधित करिन करवाद

नार्व क्रिया नामा है। जनसम्ब क्रो—'मी मेरी पाल और प्रतिका है. बैस केर दिया है, ये केनी यूडी इक्टबेकने एक कर्नलेकरे तुम है ।' इस प्रमार स्थापन गीओबी करण से और उन्होंक क्षा का विकास कोरे खेळा-बातमें है फिर भैर भेर बरे । इस प्रकार मेंओंके साथ एक एठ सक्तर उनके सारान प्रकार कारत करते हुए उन्होंके काम एकामानावाके प्राप्त हेनेसे बनुष्य कार्यक क्रमूर्व क्रमेले कुल्कात च बाता है। केवन करनेके प्रक्रम् इस प्रकार प्रार्थना करे—'गीई कार्यालया, भार और पृथ्विते पुत्र, अगरात प्रकृत कानेकारे का सम्बन्धे प्रतिकारी क्षेत्रभूता, बगर्स्टी प्रतिक्रा, पृथ्वेको प्रकृत करवेवातो, संस्थाने अन्तरि प्रवाहको प्रकृत करनेकाचे और प्रकारिकों को है। सूर्व और प्रकारके नेक्से उत्पर हा से सेई इसरे सर्वेक राज करें, हमें उत्प लेक्सी प्राप्ति सहस्या है, यातावी प्रति हरण प्रकृत करें और मिन प्रमुक्तानिके पूर्ण उत्तरी होतो गाँ उत्तर निरम है, वे भी रूपनी कुमाने पूर्व के मारी। मीओ ! यो लोग (तुमाने व्यक्त आदिक रेवन करते हुए। पुन्तवी आध्वनार्थे सने को है, उनके करोति अस्त होकर कुर उन्हें कुर कारी छेनोड़े कुरमार देशको के और (सरस्यो आहे। सरस्यर) के क्याओं भी मुख कर देती है । के बहुक हुन्हारी होशा दिन्हा कर्त है, उनके मान्यानके तेले हुन प्रशासी नदीको गाँति त्त्व ज्ञानकोल सुबी हो : चैनांकाको ) हमारे क्यार प्रसात हो काओं और इसे कारण पुरुषोक्षेत्र प्रधा जात क्षेत्रेकारी आर्थक नीं प्रकृष करें।' इसके बाद क्या निवादित असे प्रशेकका कारण करे⊸'या वै कुर्व लोजन्दिक कर्य कुरान करता व्यवसम्बद्धाः —मीओ । सुप्तात् जो सक्य है, को नेत् भी है—सुमने और इसमें कोई अपना नहीं है; अतः आस तुन्हें दूसमें केवर हमने अपने आवनों ही कर किया है।' क्रतांक देश नार्मक श्रम सेनेकाल प्रकार केव आने एरोकाका श्रापत करे—'मनरच्या का एकेररकः संयुक्तकं श्रीनकवंत्रककः। —भीओ ! इन प्रत्य और प्रयासका सरम स्टरेगाली से । कर दुष्पने रूपन कुलाब प्रचल (अधिकार) नहीं रह: अब तुन मेरे आनिकारने जा नहीं हो, बात: अधीह फोन उद्युद करके हम पूर्व और कामचे भी प्रस्त करे हैं

"को चौके निकासकारों आका सूच्या, यस अध्या पूजां दान करता है, उसको भी गोहरता ही सहस्य जातिने। इस समारे ही कार्यकारी मौशोका तक हान्या; 'राजांस्य, जातिकचा और वैकारों' है। संस्थानके समय इसके इसी कार्यका सहस्य चारिये। इसके हान्या करत भी सम्पताः इस समार सम्बाधन चारिये—मौता प्रत्य केनेवाला इसीस इसार क्योंतक, मौकी कहा कहा देन करनेवाल जाठ इसन सर्वेटच उचा छैचे स्थानी सुवर्त केरेबारक चीरा हवार क्योरफ विकालेकरों सुरा केरक है। का तरा प्रेजोके निकियकनका समग्र: का काक गर्थ, क्रो बहुबर्गे रकता शाहिते । साधार, प्रैका क्रम सेकर कर प्राचन करने परवर्ध और साने समझ है, का समय अन्ते भारत पण वाले-कारे ही इसकते अपने खनका पन्न विस वाता है। सामान् भीको दान करनेवाता चीनवान् और कारका गूरूप देनेवाल रिपीय होता है क्या मौती पाना इक्समुसार सुवर्ण कुन करनेकाल करून कर्या कुकरे नहीं पाता । यो प्रतासका कामा नेतिया निवसेया कामान करनेवास्त और स्कृत्यस्थानं विद्वान् है, यह क्या कर समाने हुए मोद्यात पुरुष कन्नमध्ये सम्बन्ध प्रकारकार केवान सोन्द्रोने राज्य करते हैं।

"में द्वार करनेके पहाल समुख्या और राजक गोप्रकार परना करना नाहिने और एक पत्र में ओड़े साव क्षान करिये । माध्यक्रमेशे रोजर तीन राज्यक गोधर, गोधुक क्षांच्या चेरहायात्रका अवदार करण काहिते । की पुरुष वृक्त बैस पुरु करता है, यह देशकरी (सूर्यक्यालया नेवन करके कानेकाल (ब्रह्मकारी) क्षेत्रा है। यो एक नाम और एक कैन क्षा करता है, और केटोबर्ड आहे। केटी है तथा को निर्मादर्गक भी जोच्या काम बारता है, जो स्थाप सोध्य निरामी है; मिलू मो विभिन्ने नहीं बानता, का कान काली महिल सुन्त है। में मन्त्र तरन दिन भी है, से प्रत्य कार भी करत, विसमें ब्रह्मका जनाव है तक किलको बुद्धि कृतिन है, को इस नोराज्यों विकिता क्योग न के क्योंकि का स्वारं गोकांज वर्ग है। प्रत्या कान्या सर्वत प्रधान की बरण | प्रधानकाली बात करते थे।

साहिते। संसारते व्यूत-से अवस्थातु, राज्या-मध्यको करूव है और कितने है यशिकासम अक्षा क्रिके इस है: इनको चारे इस कार्यक्र कार्यक्र दिया जान के अभिन्न केना है।"

रवन् । कुल्लीजीके इस कारेशको सुनकर जिन कुलाईस राज्यभेने पोद्धार किया और अस्के प्रधानसे ने राज संबंधियों कहा हुए, रूपका साम में तुनों करा रहा है, कुले-अहोतर, क्रिक्सक, मृत, धनीरक, मीमताब (काराता), भूकुम्ब, प्रतिक्वा, नैपन, सोपक, पुरस्का, पाकार्थी पत्ना और राज क्रिकेन—इन सबने गोकन करके कर्मकेट जा किया है। असः कुलीनका । दून भी व्यान्यतिकोचे अवदेशको कारण वाचे और चौरव-राज्यस अधिकार कार कान प्रकृतिको अस्तासकृतिक परित्र गीएँ कर करे।

र्वज्ञानकार्य कार्र है—सन्तेशन । श्रीमधीने कर पूरा प्रकार विशिव्य मेहार करनेची आहा है से परित्य व्यक्तिको केला ही विकास और कार्यानियोने व्यक्ताको सिन्हें किस वर्गेच्य क्रमेस किया या, कारते भी भारीभाँति सारम रका। वे भोवरों। ताम भीवे कारका अकृत करते हुए इतिहर्माननंत्रांक कृष्यांक कृष्य करने एने । उनके महाकार कार्य का भवी। इस दिनों राजाओं में होड चुनिर्देश सरकता, वर्गेंद्र सम्बन वेडीन्यमान हो यो थे। में अपने पानती स्वाप रकाहर केवाकानेकी भारत मीत्र फेलीकी सुनि करते और केन्द्रिके हे एक उनके प्रत्या किया करते है। सनो क्योंने अपने रक्ते पैरनेको कनी नहीं कोश-पैरनाहीकी सकते ही केव ही। केवेसे जुटे हुए रकती स्थानिसे ही है

## गोदानके फल, कपिला गौकी उत्पत्ति और गोबाहात्यके विक्यमें वसिष्ठ-सौदास-संवाटका वर्णन

\_\_\_

मुच्छिरने कहा—बारत । शाय गोहानके काथ गुलोका ( फिरमें कर्मन सीमिले, आयोह पूँको हुए अनुस्थान उन्हेंक्सी सनवे-सनवे पुत्रो दक्ति नहीं होती।

भीनवीने नक-केट । बारायन मुन्तरे नुख एवं उपन स्थानोबाली क्यान पर्यको कहा ओक्टबर ह्यालको छन करनेते मनुष्य सम्पूर्ण पायेशे मुक्त हो जाना है और उसे असूर्य नगर अनकारम्य खेको (नर्खो) में जी क्रम क्रम । विसका पास काना और कनी पीना समझ हो चुका हो,

विराद्या तुव नह हो क्या हो, विराद्यी इतिको काम न दे समारी हो, समार्थ को पूरी और ऐंगिशी होनेके कारण बॉर्ज-डॉर्ज प्रतिकारों से गयी हो, ऐसी गीका दार श्वरनेवारक बनुव्य प्राञ्चलको व्यर्थ बसूचे शतका है और स्वर्थ भी बोर नरवामें पहल है। स्टोम बारोमाली, मरकही, रुग्या, इस्ती-बतावे क्या विस्तवा क्या न चुकाना गया हो, ऐसी केट का बस्त बक्ती और की है। इह-यूट, होनी-सुराक्षण, सथान क्षां ज्ञान गणनारी मौकी सभी कोन ज्यांसा करने हैं। मैसे नहिलाँने गहुर हेता है, मैसे ही : भौजोंने करिएक भी जनम नानी नहीं है।

कुषितिरने पूक्त-पिराम्स । विस्ती भी रेकडी कैंडर दान किया जान, जोदान तो एक-सा है होना। किर सामुक्ति कपित्स मौकी है अधिक क्रांसर करों की है ? मैं स्थिताके पहन्द प्रभावको विशेषकार्य सुक्त कहात है।

मीनवीने का-बेस । की यहे नहीके क्रिके रेकिके (स्थितिक) गाँची क्यांतिक को जानेन क्यान क्या है, का सन हुन्दे बता का है। सुविके अध्यने स्वापने का अस्तरिको अस्त से कि 'हुन असको सका करे।' सिह् का प्रमाणीये प्रमाशीयी कामुद्धि रेको सकी कार्र profit and firegus part fruffer firer i unit un अधेने असको अन्य किया। अन्य होने ही सन्या गीन क्षों विकास किये को स्थान करने रहते । वेशे पूर्व-करने बाराबा अपने गी-मानके पार क्षेत्रे को है, उसी प्रधान प्रमुख प्रमु जीविकासका कर्माद करा गाँध । अस्मानीकी इस विक्रीयर कर-हो-कर विकास करके प्रभावति अस्त्री रक्षके रिन्ने अपूर्णका चल किया। असूर चेकर पर के पूर्व दार हो गये से अन्ते पुरुषे सुरम्ब (समेहर) सुनव निवासने संगी। इस सुर्गंप कवाने सुर्गंप (औ) प्रवाद हाँ, मिने प्रसारतिये अपने मुक्तो अन्या होनेकाचे प्रतिके काले देशा । सुर्रापनं भी स्कूलनी करिया नीई जन्म थी, जे असमार्थ माराचे समान की और विकास रेए क्रेक्सबी चाँदि क्ष्मक पुर का। से एक गाँध प्रकार आयोगिया थी। वैसे महिनोची रक्तोंने केन जन्म क्षेत्र है, करी प्रकर करो अंतर कुमनी चाछ बहाती हा अनुरादे सम्बन वर्गवाली उन गीओंके दूपने पेल उसने स्टान । एक दिनकी बात है, मनवान् इंकर पृथ्वीपर कई थे, अप्रै समय प्राणिके एक कारोके पीरते पेन रिकामार असे मध्यानर निरं पहार इसमें वे कृषित हो को और सपनी सरपटारिको जाताली मन्त्रे पेतिजी चीको चल कर क्रातेने, इस उठा उठकी ओर देखने सने। सकता का प्रमेशन तेन जिल्लीवर करियाओपर पदा उनके रेग नाम अधारके हो करे, जिल्ह को कारी जागकर पाकास्त्री हरवाने कही सबी, कावा रंग नहीं कराय। ये नेती जरण वह भी, केले के सः वर्षे ।

तम प्रमापतिने महादेशमध्यो कृतित देशसार सहस्ता 'त्रभी ! आपके समर अमृतका कीटा पहा है। मैन्सेका कृत महादेशि कीनेते मूँहा नहीं होता। कीटे मामान अमृतका [511] सं० म० ( खाण्ड—सो ) ४६ रंग्य कर्षा किर को करता है। है, जरी प्रकार ने ऐतिनी कीई भी अनुकार करता हुए हैती हैं। कैसे कर्यु, जारि, सुकार, समुद्र कथा देग्याश्मित दीना हुआ अपूर--इतर्गे अध्यक्ष्मा केंग नहीं होता, मैसे ही साम्बंग्यो किसारी हुई भी भी दृष्टित नहीं मानी गाती। (आशर्म मह कि दूस मीरे कारण मान्नेके मुंद्रारे निरा हुआ हारू असून्य नहीं कारण नामा।) में मीर्ग् अपने दूस और पीएं सामूर्ण कारण मानन कोनी। तम सोग हान्ये अनुवासन दूसकी मीरा मान्नो है।"

हेल पहला जनामी काने महलेकारेको बहुत-सी मीई और एक कैल मेर मिले एक इसी इनाको उन्हें निवासी पान्य किया। महोकारीने भी प्रथम सेवार जा इन्टबर्ग स्थान पहल करावा और अस्ति विश्वते अस्ति। क्या पुरोर्देश की। इससे उसका नाम 'पुरासका' प्रतिद्ध पुरत । व्यानकर, वेक्कानीने व्यानेक्कीको पश्चनीका क्या (प्रकृति) तम हैक और फैलेक बीचरें क्यूक कन 'क्रान्स्ट्र' रहा दिया। इस प्रकार करिया मेर्ड अस्ट्रम वेजनिक्ती और प्राप्त कर्गकार्थ है। प्रतिके अनके प्राप्त क्र केंग्रोमे प्रथम क्यान निका गांध है। कीई संस्तरको सर्वश्रेष्ट क्यू है। वे कालूबो क्रिक्ट केव्यूबी है। जनवाद होकर तक करने पान पूर्व है। ये ब्यूनारे विकार पूर् अपूर्ण क्रम 🚅 है बचा क्रमा, चीता, समझ सामगाई पूर्व करवेवाली और कन्युओ कामकुर देनेवाली हैं: अत: ग्रेसून वरनेकाल क्षुच संपूर्ण कावनाओंका एवा पाना कता है। अवस्ति पहुल की की वीवर्तकी प्रवस्ति प्रकार रक्षेत्रको हुए उनन कमाना गाउँ करता है से करिन्तुरके केनोने कुछ है काल है और हो पूर, स्वारी, वन तक पत आवियाँ पक्ष अहि होती है। रावन् । गोदान कानेकानेको हम, कम, सांच और सानि-सार्वधा फल तथा प्रकार. क्या को कारकों और बडोका संतीन जात होता है। इस अवार ने एक पोक्रमों गुल है।

वैशायकार्थं कार्त है—सब्येक्य | सीवार्याक्री कार्रे कृतकार कक्ष कृतिहित और उनके प्रकृति जान सहाजीक्री क्षेत्रक सामान रंगवाले वैशा सक्षा जीए क्षा करें।

र्मनार्थं कार्यः हि—वर्यस्य । इश्वाकुनंदाने स्वा क्षेत्रक कार्यः स्वा थे। एव वार उन्होंने ब्राह्मणीके पुर व्यक्तिं विश्वको अस्यय कार्यः पुत्रा—'शर्मास्' ! हीनो सोन्योने हेती विश्व वस्तु ब्रीन है, विश्वका नाम सेनेमानां मनुष्यको सदा जाग पुरूषको प्राप्ति हो एके ?' वय व्यक्ति | मस्यिने गौओको जनस्थार करके इस जन्मर व्यक्त आस्त्र

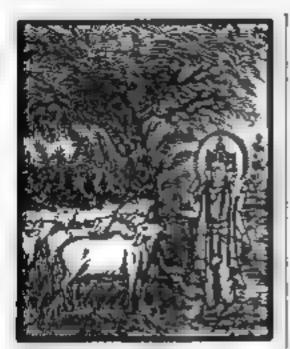


किया-'रावर् । चौजीके प्रारंति समेकी प्रधानकी क्रमेरम सुगम निकाली क्रमें है। ब्यूनेट की कुनुब्दे समान पाणवाली होती है। औई इंजिस्टीका अल्पात एक भारतालको निवित्त है। पुत्र और परित्य प्रौरहेको हो हार्की है। वे ही सक क्लेक्सरे पुरिच्य करण उन्त स्थानेकी पार है। गौशोबी सेनाने को क्या दिन करा है, साका पाल अवस्थ क्षेत्र है। जल जीओरे क्रमा क्षेत्र है केलाओंको काम प्रविक्त (का) मेरी केरी है कक साहाकार (देवच्छा) और क्याद्यार (इपायन) भी सह गौओपर ही अन्तरभिक्ष है। भीई ही पहला पान हेनेवादी E अपनि पानेकी प्रतिक्र है। स्वर्किको स्वरूपक और प्राचकाराये होग्यो काल चौई है हक्को खेल कृत आदि कहार्थ देती है। यो सोच कुत देनेकरचै नी छन करते हैं, से अपने समक संबादों और प्रावेद्धे कर हो साते 🕯। जिसके पास प्रत जीई हो, बढ़ एक भी द्वन करे, को मी नाने रसता है, यह इस क्यों इस करें और जिसके मन इसर चीर मौजूद हो, यह ती और दल बले से इस सकते बरावर ही करू विस्ता है। यो से चैजीक कार्य होकर भी जाउँखेल नहीं करता, के इसार मीदे रहाकर भी मान्य करन क्या को बनी होकर भी संस्था नहीं कोइता—वे तीनो मनुष्य अर्थ्य (सम्बन) कनेके

अविश्वारी भी है। यो उत्तम त्यानीसे युक्त करिता सैको नव ओक्टर नामेंसीय का बता है क्या अस्टे क्रक का क्षानेंद्र विनो एक क्षानिका पात भी वेशा है, पह ह्माचेक-पराचेक क्षेत्रोको जीव रेखा है। प्रात:का**र औ**र सर्वकार्य प्रतिकि चैनोको प्रकार करना कविते, इससे महत्त्वके प्रारंत और करावी पुष्टि होती है। पोयून और चेका देशका कथी कुछ २ को । चीओके नुजोका कीर्तन करे । कभी रूपका रूपका न करे । यदि कुरे कहा दिखाओ है के चेन्यक्रक क्रम से। प्रतिदित प्रधाने चेन्यर सरक्रक कान करे । सूच्ये कुरु गोबाश्वर की । सरवार ब्यूक म वेंग्के, कर-कु व स्थाने। नौअभिक्र तिरस्कारले बच्चता छो। अभिने पानके प्रमाण प्रमा करे, करिने व्यक्तियाकन कराने, यो-कृतका कुन और उनमें की उसका अक्षम करें हो भी जीभी पृद्धि होती है। जो प्रमुख एक प्रकारके स्त्रोंसे पूर्व किल्मी केनुको 'गोन्व असे किमी असी' आसी चेवके क्याने ऑक्टिका करके को अध्यक्तके क्रम करता है, जो अपने पान-प्रकार किये प्रोप्त नहीं परामा प्रकार । राज 🛊 🕶 मैन, जनक सरव हो या पूरा, विश्वना ही बहु कर करों न उपनिक्त हुआ हो, गोर मनुष्य निहारित क्रिकार्थिक क्षेत्रिक कार्या है से या इस प्रकारके प्रकार कुळ हे काल है— 'केले जर्मची समुतके पास बाती है, उसी नक स्रोतेन को हुए सीनोबाती हुकारी सुरशी और मोरकेके नीएँ की मिलाट अल्वेन में एक गीजीका पूर्वन करी और भीचे मुक्ता करवादि करें। मीदे घेरी है और में नेलेक है जा नेरे से, जो ने के सूर

अर्थानकारणे ग्रीक्षेत्रे क्षेत्रता आहा कार्नेके हिल्ले इत्य त्याव कर्णान्य करोर तरस्य की भी । अपनी इत्या की कि 'इत्य क्यांची कितने दक्षिण हैंग्वेषण असूरी हैं, उन्न सक्ये इत्य अरम कन्त्री कर्णे । इत्याचे कोई क्षेत्र ने तारी । स्मृत्य इत्यो ग्रीवारो 'कार कर्मन्यर राख ही गरिता ही । केत्या और क्यांचा गरिवारों हिल्ले इत्यांचा इत्यार ग्रीवारका अर्थे और इत्यार क्षांच कर्मन्यती स्मृत्योंको इतारा ही जाय क्षेत्र (गोर्थिक) असू हो ।' इत्य अव्यारका गंग्यान्य निवार क्या गीर्थिक अपनी क्षांचा पूर्व की से क्यांचे असूनी व्यारका क्षांचाने क्यां जनका हिला 'गीर्थिक । हुन्यानी क्षांचाने कर्षे जनका हिला 'गीर्थके । हुन्यानी क्षांचा क्षांचाने हुन्ये ही और हुन्य क्षांचांक क्षींचा क्षार करनी हो ।'

इस काल जनमें करफाएँ सिद्ध हे बानेपर गाँँ एं स्वस्था निवृत हुई और उसके चाल करहार चारका चाने



प्राणी। प्राणिति हे स्थान सीधान्यतारिको सेहे कार स्थित भागी बाती है। ये प्राच्छा प्राप्तिकोरी हेता एवं बच्छीय है। यो महत्व कुर हेरेनाओं सुरक्षाना वर्गमान चेन्छे पन्न अंक्राबर करित रेग्डे वर्णानीत का बच्च है, व्य इक्सेकी श्रमणिय होता है। सह योद्यम्में अनुसन रक्षनेकाल पुरू सुर्वेश प्रमान केरियमान विभागों बैहाबर वेश-सम्बाधी बैक्स कुशा क्रांपि कावार शुक्रीचिक क्रेस्स है । जीवेर क्रांपैसी विकरे रीएँ होने हैं, जाने क्लीएक व्यू जर्म-लोकार्ड सरकारपुर्वक द्वारा है। जिस पुरुष क्षील क्षेत्रेयर कर सामित मीचे कारता है के इस महत्त्वकोधने अधार संस्कृत करने क्षा लेवा है।

मन्त्रको कार्कि कि समेरे और सार्वकार अक्टान जी। प्रति

करके इस अवहर कर भए-"मी और दूस देखारते, पीकी अवस्थित अस्पार, मीची प्रचार करनेवाली, बीची नहीं तथा क्रीको नेक्प्सन क्षेत्र की क्षेत्र क्रम निकास करें। मेरे जाने-बोड़े और पार्टे और भीई कैश्वर रहें, में मौओंसे बीचने है रिकार करें।' इस प्रकार प्रतिकृत कर करनेसे मनुष्यी दिश्यको पर जा है को है। ग्रेहर करनेकर पहल अपने पाता और निवासी पूरा पीड़िमोको परिवा करके उन्हें पुरुषक सोकोर्ने केवल है। यो मार्क्स बसवर सिराजी गांच क्या आहा का करता है उस से पतान का बता है, जो क्यानेकर कोई काम जो बोधने पहले। में सकते अधिक बोका, करावते प्रविद्ध और केम्साओकी पासा है, जानक त्यां और जानके अधीतका को एक जान समय रेक्कर कुम्म अञ्चलको अल्पा कर करे। को बहे-बहे वीनोकारी व्यक्तित केनुको कार्य, व्यक्तिकी क्षेत्रकी तथा कार्यात कर करता है, यह गहुन करतावादी हुनेर संस्थाें निर्मय क्रेसर प्रमेश करण है। मोद्यूनरे क्यूसर मोई स्थित कर नहीं है और नेक्सने पारते हेडू राज कोई बार नहीं है। अंतरणे जेले काका कृता कोई कहतू जन्मे जुड़े है। ियाने प्रत्यक करावर कार्यको काहा कर एको 🐍 तक पूर्व और परिचारी पास मेंची में पराच हुनावर प्रधान करण है। राज्या व्या की तुनने मीजीके गुजीका दिन्दर्शनका करून है। चैत्रीके कुनने बक्तर इस संसार्थ कृतक कोई क्षण नहीं है जना अनोद कृतक सुरात कोई स्तुत्त की नहीं है।

dend und f-raff uftrale & trust कृतका चुनिवार कार्यकारे स्कूतन राजा सीवार्य आवा िकार किया और को सर्वमा काल मानवार प्राह्मणीको बाहर को की कर की जाते को काम सोबोबरे

# व्यासमीका भक्तदेवसे गोदानकी महिमाका वर्णन तथा भीवाजीका गौ और ल्यसिका संवाद सुनाना

mbliet :

कुमिनित सहा-निवासक । संस्कारने को करता | सरकारीका और समुख्योंको अल्पेकारी है। ये अपने की और परिकारि भी परिवा, काम तथा कामगावन हो, उसका कर्पन | कुछले अकले भीकरूपी संग्र करती है। भीकांसे अधिक परित कोई कहा नहीं है। ये हीनों लोकोंने परिता, पुरुषस्वरूप वीमार्थने बहर-केट । चार्चे पहल् वर्णका सामान, रिता प्रार्थित है । चीड़े देखकारोंने की कारके रहेकोंने निवास

करते हैं। यो इसका कर करते हैं वे कर्ताचे कुरूर आके कुरू करते करने करने करने हैं। कर्ताचा, काली और जून उस्त रहेकोची असी हुई को क्रेक्सकेंक तिले को कुर्त हैं। हैं। इस निकारों में इन्हें एक पुरान कृताच कुछ का हैं। एक समयकी क्या है, वरस्तुद्धिकर कुळतेकोने निकार निकारों कर्ताच्या करके क्या एक पुरानिक क्रेक्ट विकार पुरा और व्यक्तिको क्या एक पुरानिक क्रेक्ट विकार पुरा और वर्तिक क्या करके क्या प्राप्त आप बारों हैं? वर्तिनोंने की परित्त क्या क्या है ? इन्हें क्यानेको कुरू क्यानिके!

मानावीरे कहा—चेदा । गाँचे सम्पूर्ण मुख्येची प्रतिहार और परम आसन है। ये पुरस्तकार, बरेसा और परस्त है. इस और कम प्रकृत करनेवाड़ी है और पूर, पुन्द, परिवा, सीधानकारी काल दिला देखाओं सन्तव है। सीई बीमा एवं न्यून्ट् रेंक है, उनके कुनको कुनकोरे उनके को गरी है। यो सर्पुरूप कार्यका तथा करके पीओका कर भारते हैं, में परित्र चेतरेको को है। कई कुम्बास पूरत ही कुर्वापूर्वक निर्मात करते हैं। चेरचेकाराती होन्स और मोधने प्रतिन क्या पूर्णकाम होते हैं । वे विशेषा हवं एक्पीक विकारों मैठकर कोड़ विद्वार करते हुए आववाड़ अनुवार करते हैं। को पुरूष करा अध्यार कैजोच्या समुहारक और सेवा बाता 🗓 जाना जाता होका गीर् सामग्र कृति प्रस्तुत देती हैं। मीओंके साथ मनते भी होड़ न करें, उन्हें साड़ सक महिलके तथा क्योपित सामार और प्रमानके प्राप्त प्रमान पूजन कारत रहे। मीओपेट चेजनचे विकास हुए औद्यो श्योक एक प्रतक्ष काम क्रानेकम मुख्य प्रकार-मैसे पायोंके की शुरुवारों का जाना है। कर कैसोने हैमताओंको ज्यानित कर दिन से उन्होंने इसी प्राप्तिकका अभूतम् निष्य, इससे उन्हें पुरः केलबारे आहे। वहं उक्त के महम्मान्यान्, और महानित्यः क्षेत्र गर्ने । चीच् परम्पानन, चर्नेतर भीर पुरुवसम्बद है, जो अञ्चलीको का काने अनुव क्राचित सुक्त चोलात है। चरित्र कालो आवाल करते परित्र होका गीओंके बीवने नोपरीयन (गेम ३३) किई अर्थी) का कर करनेसे कहूक आरम्ब कह हुई दिखेल (पापपुरू) हे जान है। विका और वेद्यापने निवास पुरसाम अधानीको पार्थके कि ये आहे. से और सक्रमोदे पांच अन्ये विन्योको प्राप्तक नोमकेनकको विश्व हैं। के तीन एताना समान करके केन्द्रीयकार

कर करना है, उसे मौओंका करहन जार होता है। पुन्की इकामानेको पुन, का महनेकारेको का और परिची इका स्कारकारी बीको पनि विस्ता है। इस प्रकार पीई क्यूकारी समूज कामानी पूर्व करती है। वे पहाला जान अबु है, उसी कामार हुएस मुख मही है।

ज्ञान अपूर् है, जनमे बनकर सुरस कुछ गार्र है। अपने गामक निरमके इस ज़बार सामेगर महारोजाती गुम्बोकनी जरितीन गोम्बी पूजा करने हरने; इसरिती गुम्बोकने हुए की गोश्लोकी पूजा करे।

पृथ्वितने का—रिकायः । येने सुवा है कि मौके केमाने सक्षीया कान है को इस विकास स्थान स्थान प्रयोग कोमाने ।

कैनकी का—राज्य | इस विकास प्रात्तार स्थेत में और राज्योंने संस्थान प्रात्तीन हिमानस्था कर्तन करते हैं। एक सम्बन्धी का है, स्वारीने मन्त्रेष्ट पान वारण करते में ओंके हुंड़ने अंक विकार, सन्तर सुन्तर सम्बन्धे देखाल में ओंके विकास होनार पुल—'देशि | युव कीन हो ? और कारी अरमी हे ? पून पुण्योंकी अनुमन सुन्दर काम पहली हो । इस्टोनन सुन्तर काम-बीधन देशावर अरमण जातानी पह मन्त्रे हैं, इस्टोनने पुण्या काम-बीधन देशावर अरमण जातानी है । सुन्तर है स्था-स्था कामनो, सुन्द सौन हो और साई साओरी ?'

रनमें का-मेथे। पुत्रक कावन है, मैं प्रा



क्लाएंने राज्यनिके जानको प्रसिद्ध है। स्थार क्लाए मेरी कामजां कल्का है। मेरे देखोंको क्लाइ मिल, इससे में स्टापेड सिन्ने बहु

हो नने हैं और मेरे ही सकावने खनेके कारण हुए, सूर्य, कार्य, किन्तु, काम तथा अधि आहे केवा एक अवस्य चीन को है। रेक्स्पनी और व्यक्तिकोची मेरी ही प्रश्लमें अपनेते विश्वीद क्षेत्रसम्मे है। विश्वोद परीकों में प्रवेश नहीं करते, वे सर्वक न्या हो नाते हैं। वर्ग, अर्थ और नाम पेठ नायेन होनेकर की साम के संबक्त है। सुन्ववहरूपी चौतके ! वेहता ही मेर प्रमाण है। अब मैं रुपने करिने तब निवार करना महारी हैं और इसके रेजने करने ही तुन्हारे पार काफर प्रार्थक करती है। तुमलोग मेरा आश्रम क्रमार ऑस्ट्रमा है साओ ।

र्गाजीने कार-देशि । तुन बढी प्रकार हो, कही भी रिवा क्षेत्रर नहीं सारी। इसके देखा प्रदान महारेके साम एक-स सम्बन्ध है, इसलिये इनको हन्करी इनक नहीं है। मुख्या अन्तान है, क्यार करेर के थे है छ-यह और सुन्दर है, जो क्यो क्या करन ? इन्करी कई इन्कर के जाने कारो । दूसने इसरे कार्याद की, इसनेहरे इस अपनेको काराची कारती है।

) हानोरे का-मीजे | इस का कर करते हैं, मैं कृतिय और वर्ती है जिल की दूस हुई। स्वीकार नहीं करती, इसका क्या कारण है ? आक जुड़े कारून हुआ कि 'किया much finifelt um unter berteff, im begent अक्रपा: स्टब्स है। काम जानक मास्त्र प्रत्येकारी केंद्रको । देवता, समय, गमर्थ, विकास, मान, एक्स और महत्त्व बड़ी का तरहर करने पेरी हेकका सीवान कह करते है। केंद्र बह प्रथम सुनारे कान के बोल है, करा जुड़े जीवक करें। देशों, इस परावर देशनेक्टिने कोई की नेव अवसर न्हीं बस्ता (

र्वेक्षेरे क्या-देवि ! इस इत्याद अपनाम का सम्बदर भी कथी, केवल इन्हर त्यन कर हो है और मह भी कारीको कि एकार किरा प्रकार है, तम पार्ट भी समस्य नहीं क्ष्मी। तम बहुत बातमीको बोई त्वप नहीं है, हुन धर्म क्या बाहे करी करते। इन सब स्वेगोका प्रधिर के है क्क-ब्रह को अनुप्रीक क्षेत्रको कुछ है, बिर इस तुने लेकर का करेके ?

ल्यांने कह-योगो । हम इसरोको कादर क्षेत्रको हे, की का पूर्व कान केनी से सारे सगदमें मेरा सनावर क्षेत्रे राजेना, प्राचीको सुप्रदार क्षारा करो। इस स्थान बीचान्यक्रांत्रिये और समझे प्रत्य देनेकारी हो, सदः मैं हुकरी करको अस्त्री है, जुलो मोहं केर नहीं है, मैं पुरुक्ते केली लेकिया है, यह सामार मेरी रहा सरी—पूछे अवस्था । में हुन्ही सन्दान कहती है, हुन्होग सद्ध अवसी कार्याण करनेकारी, पुरुषसकी, चर्चना और सीमान्यवरी हो । कुते अद्या है, मैं लुकारे करियके किए भागमें निकास करते ?

र्वजने का-प्रतिवर्ध । प्रते स्थारा सभाव सम्बद्ध करन करिये । अच्छा, एवं इसरे पोपन और कार्ने निवास करे; क्लेंबिक इक्कों के केनी कराई जान परिता है।

त्रांकी व्यान्याम धार ! यो प्रातोगीने पाला समुख्य किया। में ऐसा ही मार्कनी । सुरायक्ति कैस्ते । क्रमें नेत का रक् रिमा, अर: प्रकृत क्रमान है।

प्रिकेट । इस अच्छर भौजोंके साम प्रतिहा करके नक्षी उनके देवले-देवले व्यक्ति अन्तवीन के नवीं। इस जनार की क्रमों चेवाके स्थानका क्यूंट किया है, अब रिय पीरवेक है स्थानक सुने ।

## ब्रह्माजीका इन्द्रसे गोलोक और गौओंका उत्कर्ष बनाना तथा सुवर्णकी उत्पत्ति और उसके दानकी महियाके सम्बन्धमें वसिष्ठ और परशुरामका संवाद

सप्तका भोजन और गोखन करते हैं, उनों प्रतिहेत अध-सन और यह करनेका पता किरात है। यह और क्षेत्रे किया यह नहीं हे सम्बद्ध । अधीरो यह सम्बद्धि होता है, इसरियो गौनोंको बाला पून कहते हैं। एक प्रकारके क्रुकेंने चेतुन ही उत्तम माना नवा है। चौदी होत, प्रतित क्रका परन प्रतान बताबी गयी है। जनुबब्बो अपने सरीरकी पूर्व तका राज अकारके निर्होची जातिके रिन्ते की मौश्लेखा सेवन बारवा वाहिने। इनका रूप. रही और वी पन प्रयोगे नक करनेकसा है। गीएँ इस लोक और करलेकरें की कहन

मीनार्ज अन्ते हैं—पुनिर्देश । जो प्रमुख तक कार्रोहर । हैजेक्क करी नहीं है, उस्तो कहतर परित्र कुछ भी कों है। so fired sand of train throat tede प्रतिकारका कावरण विभा जाता है। पूर्वकारचे देखेंके क्यत हेनेमा का इन होने सोकॉंड असीवर हा से समझ ज्ञा कहे अस्ताक स्था होता और क्वी क्राए सुने साहै। कारकर एक वित्र कवि, कवर्ग, विकार, कर, कारस, देवता, असर. स्टबर्ग (पक्षी) और प्रमानीयम प्रकृतीयी होतामें कारिया थे। इसी काम देशरा इसने स्थानकी संस्था करके पूर्ण-'पराज्य । पेरतेक समस्य देखाओं और क्षेत्रकारोके कार वर्षे है ? केओंने ऐस्ट ब्रीन-स प्रप



विका है, निराधे में उन्तेतृत्वते रहेत होच्या देखकातीय भी कार आक्यूनिय विकास घरती है, में इस कारको पानव बाह्य है।"

महायोगे कहा-न्यून् । तुन प्रकृ चौओवडे अव्योगक करते हे, इसेने हुए इसका अवस्था की करते; जस में हुने मीजोवर काल प्रचल और गावान्य पता पता है, पुणे — गौशीको पहल्य अङ्ग और हात्मान् पहल्ला स्थानक मना है। इसके किया पड़ा किसी तथा नहीं के प्रवास । के अपने दूस और भीते जनाव्य करण-केरण करते हैं उस इस्ते पुर (मैल) पोतीके बाल असे और स्था-स्थाते अस क्षे बीच वैद्य करते हैं, किस्तों कह बनक होते और इन्य-क्रम्पना भी काम करना है। इन्होंने कुर, को और बी अरह क्रेरे हैं। ने पीई बढ़ी बरिवा क्रेरी है और केर पूर-कारका कह स्थाप अनेको प्रकारके जेहर केरी क्रुवे है। इस अवार चे-वार्ति काले काले काल्ये काल्ये का अवासीका वालन कसी रहती है। बलके स्वकारने करता म जना नहीं होती, यह तहा चीक कानें तनी कही है। इसीसे वे नीई इम सन स्तेनोंके कर जिल्हा करती है। इन्द्र है तुम्हारे अवनेद अनुसार की यह बात बातनी कि नीई क्षेत्रसभीके की अनर करों निकास करती है। इसके सिव्य कैंदें बस्यान भी प्राप्त कर कुकी है तथा प्रस्ता होनेका से कुलतेको भी मस्त्रान हेती हैं। सुराधी गीएँ पुरूष कर्ण करनेकारी, स्रीक और सुरक्षमा होती है। ये किस स्टेडबरो पृत्वीपर गर्ने हैं. जनको भी में बात कु हूँ सुन्ते । पहले सरकपुनने कह हेना कीने स्केनिय राज्य करते थे, जर समय वर्गयराज्य कुम्बन्य सुरची को जन्मको राज्य केर स्वयस्थ जन्म हुई। कैरायराके स्थापित विकारवर, जाई देवता और राज्य हुआ विरायके राजे हैं, का जन्म कैनावर जातान से प्यास हुआ कर्मका एक पैरते काई रही। उन मैंने जर क्यांचिती हैनीके का जावार पहल-"कान्याची । हुन किस्तरिये कह और करवा कर रही है, सुन्नाने इस स्थापित में बहुत अस्तर हैं, पुन्न करेंद्र वर चीने, मैं देवेको सेवार हैं।"

पुरुषी क्या—स्थानन् । पुत्रो कर होनेकी कोई आन्याकाता की है, में मैको हो सकते कहा पर कही है कि कार काम कुछना काम हो पत्रे।

मान्त्री नक्ष्ये हैं-इस् । यस सुरमीने इस प्रकार



वक्ष से मैंने को को जार विक— देवि ! सुनने लोजका वरिवान करके निकास कारते तम किया है, इससे मुझे बढ़ी जानका कुई है, जार: मैं तुन्दे जानर होनेका वस्तुन देता हैं। जान पेरी कृतको तीनों लोकोचे उत्तर दुन्हारा निकास होता। दुन वहाँ कार करोची, उसकी गोरवेकके नामसे क्यारि होती। दुन्हारी सभी कृप सन्ताने मनुवालेकमें आविचोके विकास कार्य करती हुई बड़ी निवास करेगी। तूम अपने मनसे विन विकास सम्बन्ध सन्तानेक घोगोंका विकास करोगी, में सब तुन्हें जास होने तका सम प्रकारका सुन्त तुन्हारे रिज्ये सदा सन्तान कोना।' पूर्ण होती है। वहाँ मृत्यू, बुक्तम और महिल्का चोर नहीं भारत । पूर्वेन क्रमा अञ्चलको भी वर्षा ग्रांस नहीं है। क्रम रकेको दिना का, दिना पदा ३४३ पर पुरुष हो प्रकानुस्तर विवारनेवाले विकास जीवा है। व्यवस्थ, साथ, प्रतिकारीयम्, नामा प्रकारके सार, पूज्य, सीवीरेकर, सही भारी सरका एका ककान पून करोंके अञ्चानों है मैलेक्की गार्थ से सकती है। इस काल इक्ते फानेस शकुरत मेरे ये सारी बार्ने क्यानी है। जब दुव्हें कैओका भाषी तिरस्तार नहीं करना कारिये ।

चीनवी स्वयं है—सुविद्यार । यह यहता पुरनेके स्वयूप् हुन सक मौओबी पूचा करने करे। मौओबे और उसे मनमें निर्देश अपहरता पात पराव्यु हो परा । केंद्र । चैक्रोका या पार पान, पान चौक और आरम् अन प्रेंग्राम की शब-का-का क्ष्में चुना किया। प्रत्या परिनेत कुल्ला व्यवेरी पूर्वकार विकारिकाल है। यो सब परिवर्तिक हैका का और सकते हम और कम उनंत करते तक **क्ष**क्रमोंको यह प्रसंप कुलकेन, अल्बा कुन करना कारणाओको पूर्व मार्गेनास्य और अक्षण क्षेत्रर निर्दाओ आह क्षेत्र । योगक पूजा मिल-मिल कश्रुवी अक कारता है, यह एक को अब क्षेत्रों है। योकोंने प्रतिह प्रतिकारी किथी भी पर्वकारिक कारणाई जाए web fir

पुण्यित्ते पूर्व-निराम्हः। अस्त्रे सम वयुग्वेतिः हिनो, विक्रोपा: पार्नेस हुद्धि रहानेकाने स्टेप्कोड हिन्दे पान क्षान गोवानका वर्णन विकास है। बेद और अधीरकोंने की इसेंच करेरे क्षित्रका रिकार किया है। उनी क्योंने मुपि, भी और सुवनेबी बहिला बारावरी गरी है। इन्हें सुवर्त सकते जान स्थिता है---ऐसा सुरिवत बचन है। अब: इस विकास में बसर्वकारों सुरुष बस्ता है। सुरुष का है ? जान और विश्व तथा प्रत्यक्षे सम्बद्धि हाँ ? सुक्तांका कराकृत क्या है ? इसका देखा और है ? क्या क्राके कृतका कर रूप है? पूर्ण को जान कहाता है? मनेनी विद्वान् इसने दानदा कर्ते विद्वेत अवह करते हैं ? क्या काकांने क्यांको से क्षेत्रक वर्षे प्रवंतनीय क्यांसे welt it?

चीपचीरे स्थान-प्रवाद । स्थान हेवार स्थाने, स्थानियाँ राजिका कारण कहा निक्य है। मैं अपने अनुसन्दे कनुस्तर दल करें गुर्च करा का हूँ। मेरे स्कूलेक्सी विद्य महाराज प्राप्तकुष्का तक वेह्नाव्यक्त हो जब, से में प्राप्त

इद ! सुरमीके निवासकुत चेरवेकमें स्थात कारकार | बाह्य करनेके तिये पहुन्तर सीर्व (इत्युप) में गया। वहाँ च्येक्टर मेंने विकास बाह् कारण विका; इस कार्यने पाता महत्त्वीने भी नेरी सहत्त्वता की। अपने सामने बहुत-से सिद्ध मानिकेको विकास की कारहातो हेकर एक कार्न पूर्व flott i quartes give water fefeit fragely spirit and and are much an five th follows. विकास केल जारून विकास प्रापेशी विकास विके को क्रम निकार्य को थे, उन्हें मेहका एक बड़ी सुन्दर बॉड कहर निकारी । का विकास गुजरों मानुबंद आदि करेको आयका



केंगा या वो थे। उसे उत्तर उठी देश मुझे बढ़ा आक्षर्य हुआ। जावाद मेरे दिया ही विकास दान नेलेके रिन्दे कारिका थे। फिल् पान कि प्राथमिक विशिवत विकास किया से के कार्य सहस्त का बात स्थान है आवी कि प्रतुक्तके किने क्रमण निष्य देनेका नेदारें विचान नहीं है। स्थित रूपान प्रचट होका कभी मनुष्यके हानके विष्य तेने भी न्त्री है। क्राम्बनी सरका से नहीं है कि 'क्रुसोयर विकारन को ।" जा सोकबर की निर्माण प्रमाध विकासी हेरेवाले कृष्णक आहा जो किया और हातरिय हमान मानवार उसकी कृति विकित्त जान रसले हुए कुलोपर ही सम विकोधा कुल किया । इस प्रकार का बायाकी बद्धितरे कियातन क्षत्र दिया तो मेरे विकासी यह बाँह अकुस हो गयी। बहराचर, बितारिंग पुत्रो कार्य कांन दिया और यहे अतह होकर क्रेसे---'नेट ! इन एको प्राथीन अन्यो कहा आस है.

मनीवि अले अतन तुर मोतन्त्र करी वह की हर हो ।। कीन-का कर है? की, कारलेन सुहरर कुछ करन कुरने प्रमाणा प्राचन कामार आहर, कर्न, प्राच, बेट, निवास, व्यक्तिम, पुत, प्रवासी और प्रकृती—इर कारका मान बदाना है कका को कार्ने निवार है, उसे की हुको करना अवदर्श दिखाना विकासित गाउँ होने विका है । यह कार मार्ग से हुन्ने बहुर उनन किया है; बिजू अस (इनसे कारेरी) पुरिचार और नेवाओ विधानकारो कुछ सुमानक भी करे। ऐसा काफी हम और इसरे प्राथ विकास परित हो कार्रने, क्योंकि सुनर्ग उससे सरिवड पानन कहा है। यो सुराने कुछ करते हैं, वे अपने खाते और पीकेची का-का चीविनीका प्रकार चर के है।" इस अवल कर निवारोंने कहा को पेरी और कार पाने। उस कारत कर कारण करने करने पुत्रे यह विकास (स्तार किए की कुरुर्विक करनेका विकास

राग्य् । अन्य (सुरावेशी सनी। और साथे सनी माहानको जिनको) एव प्रकीर इतिहास पुन्ने, को सन्दर्भनका राष्ट्रकारीके सन्दर्भ रक्ष्मेश्वस है। जा अराह्माम और संबंध कानु सहारेग्याम है। पूर्वकारको पान 🖟 मानुस्त्रकोते स्रोको कामा प्रतीत का इस कुल्याको श्रुविकोच्या संक्रम विकास प्राप्तके काह क्रमानी कृतके बोह्यका क्योंने समस्य सामाध्योधी पूर्व सर्ववारी अस्त्रीय स्त्राप्त मनुद्राम विकार अंश पहली प्राची प्रावृत्ती और प्रवित्तीर कहर उन्हेंस की है। कहरें अनुनेत का उन आजिनोही प्रिक्त करनेकाल एक हैता और साम्विको बहानेकाल है के भी तेवाची परवृत्तवर्थी आके चलको अन्तेको पानकुत व मार समे । इसमें अपेने अपनेको बहुत हुन्छ कन्छ। और अपूर विकास सम्बद्ध का सहस् व्याच्या अनुहार पूर्व करहे. artial ways safed air females are unar क्षा-'कार्याचे ! वर्धर कर्न करोवले प्रत्येको परित्र बरनेते हैले को क्योंका सका हो, का जुड़े करानेकी कृपा करियते।' करपूरावर्जने का क्याने हरिय क्षेत्रर इस अधर तब जिला से के कालो कारोबारे व्यक्तिको सहा—'राज । तुम केवेके प्रचानकर विचान सामी प्राप्तिका स्थार करे और उन प्रकृतिकोर है अन्त्रेको मिन करनेवाल कावन पूजे। ये यो कुछ बच्चो स्टीका प्रसारतानुनंद करून करो।'

का अपनेकारी परपूरावर्धने करिया, पास, अनवन और कावरबीके का कका कुल—'विलयो । में कीवा हैं में कहता है, काहते, फिल अकरो परित हो समझ है ? काने रेले में किस कर्नवा अञ्चल करे ? अवस

को हो को काराव्यूने, पुढ़ो परित्र करनेकास १८५२



अभिने का—पुरुषा । इस्ते सूत है कि यह करनेकार पहुंच कुनी, कब और यह कर करेंसे दक्षित हे क्या है। इसके रिन्स, एवा और क्या शुबे, की शबसे व्यापन पानन है। यह है सुनर्गक कुन्। सुनर्गका सावार च्या विका और अञ्चल क्षेत्रा है। अलबी कारीत अगितो हुई है। कुछ नाम है, कृषिकाओं अधिने सन्तुर्ग सोकोको पहर करके अन्ते क्रीवंते सुक्योको जनत विका था । अधिका सुन करके पुरुष करेग्य शिद्ध होता। स्त्री कंपल्या गायन कर्त्वा को रेजकी स्तरि जन्म हुई है, जह सुवर्त है; अस: च्या कार कोने काम है। इस्केरिके देखता, सम्बर्ध, धारा, रक्त, गुण और वैत्रव—ने सर प्रश्नवृत्ति सुकर्त करण करते हैं। करहते जिल्ली परिक्र करहरें हैं, सुवर्ण कर कारो सर्वेग्य परित काल यक्त है। यह पूरि, में तथा क्रमूर्ण क्रमेरे की काम है। पृथ्वी, भी सक्त और को कुछ भी कर मिला साता है, कर सकते नक्कर सुराजेका क्षत्र है। सुमार्थ अक्षम क्रम प्रापन क्रम है, हुन क्रम प्राप्तानीको कुर्वका है कर करे; वह परिवालन ज्ञान सामन है। सब अक्टाबर्ट एक्विकाओं कुवर्ज केवार किवार है। यो सुकर्तका क्षण करते 🗜 में सम कुक का करनेकारे वाने जाते हैं। सुवर्ण केनेवाले पानी केनावार कुन करते हैं, क्योंकि आर्थि

सम्पूर्ण देवताओंके करूप है और सुवर्ण अधिका है। आ: मिससे सुकर्णका कुन विकास अपने सम्पूर्ण देखानकोगा हो सुन कर विकार इसीरिको विकास पुरुष सुवर्णकार्या बहुबार और भीई घर नहीं यानते । स्वर्णकृता तक परंप गरियों प्रज केता है, जब समय जो कोतियंत संबद्ध निस्तो है एक कर्मानेकर्ग जनक कुनेत्वे पहल अभिनेक विका पाल है। को सुर्वोद्यको समय विभिन्नोत यस सहका सुरक्षित सम करता है, जा अपने पान और श्रूपताओं नह पर करता है। की प्रथाह कराने जेना का करता है, उसके महिनके धनेका पात है जात है। ये उसका काल करते हुए सर्गनकारों सुवर्ग एन देश है, यह ह्यार, वरण, असि और कापुरस्केर रचेन्द्राने पासन है तथा हुन, आदिन्देर रचेन्द्रोने भी उसे बालान तरह होता है। साथ ही यह इस सोवाने पहारते हते राजर्गहर होचर आराज्या ज्यानेन सरसा है। कुनुके पहला का का परानेकने कात है से कई सहस्य पुन्याक सकत . यह । इससे हुन्हें करोते कुरवारा निर्म करना ।

कारा है, बढ़ी भी सरको महिना प्रतिरोध नहीं होता और बढ़ इक्क्पुसार नहीं पाइत है, विकास खुदा है। सुवर्ण अक्षप इस 🗓 उत्तर का करोगाते महत्त्वके कुम्मकेकोरे गीवे की आप पहल, संस्थाने आहे. पहल पहला विकार केल है क्या पह सरोकों समृद्धिकारी सोकोन्छे प्राप्त करक है। को बरुमा सुर्वोद्यको प्राप्त आग काराकर विस्त्री प्राप्ते अहेरको पुरस्कार करन के समझे समूच सामानो एनं हेती है। करहरायों ! इस अधार हुन्दें सुवर्गक्रमी क्षेत्रेयले साथ काराने पने; अतः अस हम प्रक्रमीको सुनर्ग-कृत करो । बेक्के कर्ष ई-कारी परवस्त्रकोरे स्टेक्ट आहे. जीनोंके इस उत्पर सहीतर सहागीको पुतर्गातर पूरा दिया; इसमें में इस वायोगे कुठवारा या गये। कृतिहिर [ कुर्मानो अपने और अने प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये कुल विकार तक इस की अञ्चलीको महान्या सीवा कर

## भिन्न-भिन्न तिथियों और नक्षत्रोमें आद्ध करनेका तथा उसमें तिल आदि देनेका फल

भुविदेशों का—कर्मान्य । अन्य अन्य पूर्व कातुनी । वृद्धि होती देशों काते हैं । क्रोतहीओं आह् क्रानेआस युवा पूर्व-पूर्व सिवि सामाने ।

चीनवीरे कहा—राज्यु । हुन साह्यकांकी साम मिनिको साल देवर सुने; निकृष्ण (बार्स) धन, पर्ध तका पुरुको प्राप्ति करानेवासम् है। देवता, असर, जनुवा, जन्मत्, मान, राक्स, निकास एक विकारीको को सब विनरोको पूर्व मारकी चाहिने । सभी विनोमें शास बारकेते वितरीको प्रस्तकत होती है। सब में तुन्हें तिकियोंके गुल-सक्तुक करात का है। (कुम्ब्यक्रमी) प्रतिका विभिन्नो निवरीची एवा सरनेवर बहुत-की सुबर और मुखेश्व शंकानेको बाब देनेकारी क्ष्मकरी कियाँ जात होती हैं। हिलियाको साजू करनेसे करवें मानाएँ पैछ होती हैं। कृतियानो आहु धारनेले पोर्ट्स निलते हैं। क्युश्रीको काम कानेले कानेरे क्रेटे-क्रेट पह कार्ने उसले हैं। पेशनीको बाद करनेवाले पुरुषोके वहाँ व्यक्त-से पुर सराप होते हैं। बहुत्को साजु करनेले स्टेंब्क्केटी सुद्धि होती है। सराविको साज करनेकारे पर्यक्की केवी अच्छी हेनी है। अस्मीको सात करनेने व्यापत्त्वे साथ क्षेत्र है। उनकी कारते एक सरकारे पत्र (पेंद्रे-सक्त आहे) की क्ष्री होती है। दहनीको सन्द्र करनेकले पुरुषको और काली है। एकन्यतीको अब्द करनेसे कांन और कन्नद्रे मिनते है क्या बार्ने अक्रोजरी सम्बद्ध फ्रांका जन्म केल है। इस्क्रीको स्वय

मतनेवारे मनुष्यके मार्ग राज रहेने-वाँदी और अविव्य करवी

अपने वार्ति-क्यूप्रवेति सम्बद्धित क्रेस है। जिस् क्रे क्यूबेर्डिको बद्धा करना है, इसके बराजने प्रमुख कथानीये ही कर करे हैं और साज्यकारिकों भी चीन है। स्वाहीरें चाल पर्वा है। अन्यवस्थाने बाद करोड़े म्युकारी साहे कारण को हैते हैं। क्रमकार अलोहीके रिमा, कामीने लेकर अन्यवास्थलकार्यो सभी विकिन्न कार्ये किमे कार पाने पनी है, अन्य विकिन्ने क्रमें समान नहीं है। कारों हैंने केरे कारकारी अरोक काराया होते होता है, जो उत्पार पूर्वक्रमी अनेवर अगरक्रमान के पान प्रकारी है।

अभिनेते पूर्ण-एकमी । वितर्गेको दान की हाँ कीन-की पान अक्षम केती है ? कीन-स इतिया उने अधिक पामका क्षा रक्षा है और कौन-स अनन्द पासका ?

चैनको का-विक्रित । बाह्यके त्रावको वाननेवाले विकासी प्राप्तकारों किन-विक वस्तुओं के क्रिक्के कृत्ये पाक और साम्भावतिक स्थाप मान है, करें बता पत है, तान ही उनके उपनेताका जो फार है उसका भी गर्मन करता है, सुने—रितर, कावल, बी, बहुद, कर और करर-पूर हेनेहे निवर्तको एक मानवक रही क्यी सही है। मनुबोका कान है कि 'जिस साहते हिल्लेका अधिक उपनेग किया जात है, यह अक्षम होता है।" अतः ब्राह्मके समय देवे

सानेवाले पोजनके परार्थीने विलोको ही प्रकार के नहीं है । | प्रतिमितिक गीत देनेसे एक वर्षक्रक विवार क्षा नही है। विवार कको है-- 'क्या हमारे करायें कोई देशा परण उत्तर होत्या, को विकासनम् प्रयोक्ती विकि और मान-२४८मा सेन हेरेकर हते कृतकुता जीरका निरम्बन्त करे ? बहुत-के कुत करका हे नेब्द्री अभिस्ताना करनी कहिने; क्वेडिंक उन्होंने क्वा की हो मनार्थको, वर्ष शासूके प्रमुखे अञ्चल स्थानका अञ्चलक मानक लोकविक्यार यह विकासन है, याका इसरे दिन्ने साह् करेग्द्र।' विशासी पुरुष्टिनियों सह, युक्त, सह और अक शामि को सुख मिल पाला है, यह सब पाल निरामकर देनेके वितरीको अनन्त कारताक दुवि स्वारी है।

क्रम, परायमे क्रम क्रमीनके और निक्रनिक राक्षांने विने सानेकारे किन सम्बाद बारहोच्या वर्णन विकार है, क्रमा का का है सुने--'च्चे नक्ता रखा क्रान्या स्वाक चेत्रपे अद करा है, या कारण क्षेत्रर अस्तिकारमध्ये विराजका करनेने समर्थ होता है तथा साले. होन्य-संसाप रह हो बाते हैं। पुरुषी कालकारों स्पूजनों वेदियी स्कूपने और देशको प्रका रहानेकारोको गुगरिसाने अस्य कारण कार्कि । अस्तरीये बार्च्य पार्टम्याने प्रमुख्याची श्वार सम्बेचे अवृत्ति होती है : कुलीसुमें बाद करनेते क्लाडे इच्छा कड़ी है। यह अपने शरीनकी पृथ्वि प्राथम हो, उसे एक प्राथमें कहा बाला पादिने । आरोपाने अन्य वालेने की सम्बन्धने प्रतेक क्य होता है। अगर्ने कहा धरनेकारोको पर्य-क्यानेने समान बार केता है। एक्केस्ट्रानी नक्टमें सरकार कर करनेते स्वेधनका काँद्र और कार्यकानुनीने करनेसे रंजनकी अही। केरी है। को इस प्रकार बाद्यका अनुहार करत है का अर्थात करका मानी होता है। विवाद साव: करनेकरेको इसकार पुरोको प्राप्त होती है। काली नक्कारे विक्रोची पूज करनेते स्थापनी साथि होती है। सुरुधी इक्काल पहल की निकासने साह को हो उसे अनेकों पुर अहा होते हैं। अपुराधार्म अब्द कार्नवाहक पुरान कवाओं पर क्रमान करका है। यदि समुद्धिसाली एकर इन्द्रियरोपकपूर्वक नोक्रमें क्षाप्त क्षाप्त है से को आदिनाम (देशमें) प्राप्त होता है। पहले साह करके साहेना और पूर्वकारों पर जिल्हा है। अपन्य बहुत्वे बाद करनेते महत्व सोकाहित होका प्राचीपर विचारण करता है, अधिरीचन प्राचनों साह कार्यकारक के केरकार के सकता प्रश्न करता है। सकता अस्त करनेके सहावी जिल्ली है। वनिकारी बार्क करनेकारक प्रकार पानी होता है। यह बेद प्रवर्धिया प्रकारी शहर को में को अपने कार्यने राजारता का बेली है। कांध्यक्तक नकाने कहा करनेकारेको सहा-ते कहरे और नेदे निर्दर्श हैं। अन्यव्यानकारे बाद्र करवेले अवन्ते गीर्ड जात केले है। mark bud report store therefor the swinter बाहुओंका राज्य होता है। अधिनी पक्षाये सात् करनेसे सेहे निरुक्ते हैं और चरनोने कुछ करनेरे काम आप आप केरी ो । यस क्वानिको सामग्री का निर्म सरका प्रतिक अपना क्या किया। अलो प्रभावते से समूर्व एक्किके अक्रमा है बैठका साथा सारा करने रूने ।

# हाद्ध्ये ब्राह्मणोकी परीक्षा—पंकिट्चक और पंकिपावन ब्राह्मणोका वर्णन

समायोको देन पारिये ? अस्य सम्बद्ध स्वयु बर्णन क्षीरियो ।

प्रेमानी सह—प्रविद्वित् । यून-क्लीः प्राप्त प्रतिकारे क्रेस्ट्रामची कर्म (प्या-क्रमाण) में प्रक्रमंकी परिश्व नहीं बारनी चाहिने, लिंक निकु-बार्न (साञ्च) में जनके परीक्षा म्बायसंग्त पानी गर्वी है। विक्रम् युवन ब्राह्मके समय युक्त, जीत, अध्यक्ष, कर, विद्या और पूर्वकोंके विकासकार आर्थिक क्रम प्राव्यानको अन्यत्य परीवा को । क्रवानोधे क्रव तो पंतित्त्वक होते हैं और कुछ पंतित्वकर । यहाँ पंतित्वक प्रक्रमंद्रा कान करता है, सुने। कुमरी, नर्पक्रमण, रामकाराज्य रेगी, कारोबा कार करनेकार, अस्त, गीवधस्त्रा हरकारा, खटलोर, गरीवा, राव रखकी चीवे बेबनेवास, इसरेंका पर प्रैकनेवास, क्रिय देनेवास, करव

मुक्तियों पुरा—विद्यारम् ! साञ्चारा क्षान कैसे । महत्त्वके कावत क्रम क्रमोवास्त्र, सीवरश्यक विवास करनेकार, समुद्रिक निका (इस्ट-रेक्स) से मीनिका कारकेवारक, एकावक क्षेत्रक, तेल केवलेकारक, प्रती गावती केनेकरत, विकासे प्रयक्त करनेकरत, जिसके वार्षे कर youth site it up, writer, we, forwird, कार्यक, कुरतकोर, विकोई, परबी-तन्त्र, सुद्रेका अवस्था, इंक्सिर क्याहर स्टेक्स स्थानेस्टरा, सुने कृत-नेकर क्यानेकला, विशे करोने काठ हो यह, जिसके होटे वर्तक रिका हो गया हो ऐसा अधिनाहित पुरुष, करेरोगी, पुरुक्तीनानी, नत्त्वा काल करनेवारव, परिस्की पुनासे क्षेत्रक प्रतासका, अहारेक पत सामा मीनेपस (कोवियी)—में सची प्राप्तम पेतियों बहुद रशने मोन्य हैं। व्यापारी पुरसोका बक्रम है कि उपर्युक्त प्रकारके सोग्येको

राजों से जर जेवर करना कर है, वह स्थानेने प्रहु ( होता है। यो प्रमुक्त बद्धावा क्षा भोजन करते हैंना सर कि के पान है जा से बार बीचे काला बार है. कानेड निकर जा दिनों सेकर कुछ न्यूनिकड ज्यांन्यी विद्वार्थ को पूर्व है। प्रोक्त वेक्क्किको दिन हुआ अहात अह निकृति प्रत्या और वेदस्ती निकास दूस्त संस्कृत रहा को पीर्क राजन सन्दार पान है। स्वीपतंत्र पुजारीको दिख हुउस शार ग्रह हो गाता है। सुरक्षेत्रको दिस दूधा दान दिसा नहीं कृत और न्यापर करनेनारे प्रमुख्यों के कुछ देख कर है का न से इस संकार बाल है न कालेकरें। यो हाती कर काड़ी हाँ चीके पेटने फैड़ हुआ है ऐसे सहायको दिया हुआ इस और पान पहले हुआ करने कार विकास होता है। यो योग करेहीन और शुरुवाने साहानीओ इस-कम अर्थन करों है, उसके था कर करवेकरे बोर्ड कार को केर । ये पूर्व पाल-सारक केरे गोलोको स्थानक कृत हैते हैं उनके वितर परलेकने विक्रमा चंत्रम करते हैं। कर करते हुए हम अगर प्रमुखीयो अन्तर्कत (व्यक्तिकार) क्षत्रका प्राप्ति । यो क्षत्रक्षि स्वकृत प्राप्ति क्रमेता केरे हैं. अलाहे की प्रार्थ को हिने सम्बद्धान करहेते । महि आजनेनी प्रकानोची परिवर्ग कोई साम्य केंद्र हो हो का का भीतके साथ काल्योंको हरित करण है। हार्य एक स्थानक भी प्राथमानिक और प्रोधी विकार और नेप पूर्व प्राप्त है, पर कारणे अरुपेश कर केल है। सिरपर प्राची रक्तकर, ब्रोजनियस क्षेत्र तथा को प्राप्त क्षांको प्राप्त बाइक किए। का चेका करे हैं, पर का अपनेक भाग राज्यान पार्विने । यो ईमाँ और सारद्वालीय साहात क्षा करा है का एवं अवस्थित अवस्थित जीवन पहल विश्वित कर दिया। पुत्रो और पेरिक्ट्य उत्पाद विज्ञी रख शब्दार की र कारने पार्च, कार्य कीने पार्च ओसी कि क कारों बाद-करते प्याप्त करने करेने और सब और runts object fire plat sulpt a facility fire after मोनके वाले होका को उन्हा दिना करत है, उत्ते इतिनको पहुंचन और विकास का पर साले है। पंतिकारक अञ्चल पंतिनो बैठका चोवन कर्या हुए विद्यो क्ष्मानको देश रेखा है जाने हाइनकोडे प्रोक्सको निर्मानकारे कारो का कराओं परिवर कर देख है।

गणानेष्ठ । जार मैं तुन्हें श्रीत्रकार स्वापनेका परिवर हेता है। को स्वापन शिक्षा और केत्रकार शिक्षा होन्द्रा स्वापनारम्गण को है, हे सबके कीक क्रातेनारे हैं। मैं स्वापने कीकर शिक्षा केवा स्वाप्त है। स्व स्वाप्ते

पंतिकारण प्रमानक प्रार्थित को विकालिक प्रमान सम्बद्ध करोवारे, मार्चाम आहे चौच अहिलेट उपस्ता, क्षा, सम्बोधी क्षा, भी क्षमा गुन कर्मगारे और नाम-निकासी जाताने प्रानेकाने हैं, बिननेंद्र वर्ष कर पीरियोधे वेक्स्पनाकी पालक करी आहे है तक के प्रमुख्याओं करने से परिष्ठ कर कराना परते हैं, ऐसे केटीबार और प्राप्त प्राप्त क्ष्मिक क्षित्र क्ष्मिक क्ष्मिक क्ष्मिक क्ष्मिक क्ष्मिक क्ष्मिक क्षान्त्रीको इत्या, स्थानाचे, रेपानपूर्वक अस्या काल कार्यकारे, सामानी, वर्णान क्या क्षाने वर्णनाने सारा क्षांकारे कुल को कीरावार है। विन्हेरी कुलाई वेटि क्षेत्र country flow after flow & improfile supposed to अर्थको पहोच्य अञ्चल करोड अववय-कार विका है। यो क्षेत्रकीर, कार्यर, इत्याचीता, मानको बद्धाने रक्षानेकारे, Subflux afte requi submitte figel set spinyis fi, sell सक्रमेको बद्धारे निर्मात परण पाहिने, क्रोनिंड मे विकारण है और को दिया हात पर अक्षय होता है। हार्यद्र flow of viscosial workers will afte area much कार कार कार्रको केर्र है, के कहरिय होता जार इन्द्रानीको इतिहास पुत्रको है, यो सहस्रात्म और माध्यरमध्ये Page 2 was ab your afterested reproduc अन्यको काहे अन्यो अद्यादे काहार विविध्य आवरण क्रमेको है, विज्ञीने निवनित सक्ताक पुरस्कारों निवास कर्मा नेकालम किया है, यो गरेकांट स्कृती अवसरीतर कारण के किए हुए है कहा की बार्ग केट्रोड़ अने नहारेने server & to puper allows from an hard & soul क्षे के इस सक्तानेको परित्र कर को है। पंक्तिको परित करनेके करण हो रहे वेकियान कह कहा है। हहाबाई mair & fin death floor bituelt out reports geritig नेवाने जनस हुआ अञ्चल सनेवल ही पाई हीन बोसलकार कार परित्र कर सकता है, इस्तरियों दान अकारकी पेक्सओंसे स्वानोधी परेका सम्बंद के उसे कहते विभीक पास पार्थित । विलय्ते प्राप्त प्रित्ते पुर सम्बन्धे प्रोपानी विश्लेखी अवस्था करी है, करने कर अवसे रिक्टरेको होंगे नहीं होती क्या के कहूक अध्यो केवन देखर दूसरोड़े विकास केवल है. पर मुनके बार केरफान्याकी भी जाने पाता । जैसे पीपलबा पान केलाचे पान्या केथे जिल पाना है कैसे ही बादवाई िकारका सामन महानेकारा पूरूर प्रार्थानेकारे प्रश्न है जाता है क्सीओ सद्भावनंत्रे प्रतिने कि वह बादने विशेषो Ferrer a bi feitel der unich fint un bur

र्जना है। सब और कार्ने केवन के को है करान करिये मो एकु वा निक्र न होका कमारा हो । जैसे कहारने केना gan भीन न से सपस है और न केनेक्सोको जाका कोई पत ही मिसरा है, उसी जबार अधेन्य प्रकृतीको चोजन बराय: देशा साञ्चान शत ने इस स्वेकने स्वय पहिल्ला है, व परावेकमें कोई कर देता है। की करा-कराबी जाए बीव ही पारत हो पार्ती है, उसी स्वार प्राप्तानहीर सहाम देखीर होता है, जतः को अञ्चल कर नहीं देश पाहिले; क्योंकि राजने कोई भी कार नहीं करता। यो सोन एक करेने का बादमें क्षेत्रन करके कारक श्रीतक की और तेने हैं, उनकी ng ap-riljen francisen unent bi us o bressieb Doell & a Redick : Reserve warm str गरा है ऐसे प्रमानित भी वेसे द्वारी क्रेक्ट फेक्कानों है मकर रूपती खरी है, को उनार अल्लाने से और सी हो र्द्धाना इसी लेकरें हा वाटी है, यह निर्देशन की बोकरे पार्त । मेर्स आन पुत्र परिवा को पुत्रक हुन्य किया कक है जो न देखा को है न निक्: जो प्रधार कालेकार, नर्दर of the first design more designs for the रिकार होता है। सरका पुरस्कों से हाँ बहिन्स न स्वान्ते हार करती है न कर वेलेकारको; अकुर केलेका है पर । अञ्चलको केलन कराब करन है) ।

कर्ती है। को नहें, का विनक्कारियों निर्मात कीला कार्ये विरुपेको केरकन-मानी की निरा देती है। मुक्तित । को एक मुस्तिके बताने हुए वर्गनार्गनर कारी है, विकास मुद्देश एक विश्वासन यहंती भूई है तथा को सम्पूर्ण क्लेंड हरता है, क्लेंबो केनारवेग प्राप्तन फारी है। क्री-व्यक्तिमें कोई सम्बादिए, कोई प्रपरित, कोई क्केटिक और फोर्ड कर्मन्द्र केरे हैं। कार्ने क्रानीक व्यक्तिको है बाइक सह विकास पार्टिने। में स्तेत क्रामंत्रों क्षेत्र की करें, में है के मूल है। के बार-बीवने प्रमुखेको निष्यु बारो है, उसे अधूनी क्षेत्रम नहीं कराना काहिये। मैंने करातान महिन्सेका नह कार क्या है कि 'अक्टनोकी निका होनेवर से निका क्रानेक्यांच्ये कीन वीविचीका पास कर अल्लो है।' वेववेला व्यक्तिको हाते ही परीक्षा चारती पाहिने । नेद्या पुरूष अपन देन हे या अदेन हरता निवार न वर्ग्य औ बाइमें भेका करन करीने। के वह सक् अवस अध्यक्ति केल करण है, जादे को अ साथ कहा एक ही राज शिक्ष प्रतिकारत केवा प्रकार प्रीकर पारतेका लांकारों है (अपोट सरकों पूर्वोंकी अपेक एक शासन

#### श्राद्धके विषयमें महर्षि निर्मिको अधिका उपदेश तथा अन्य आतव्य बाते

मुच्छिरने पुरा—रिकान्स् । स्टब्स् कार प्रचारिक ह्या ? ( सबने करे किए नहींने इसका प्रकार किया ? गाँउ पन और अद्वित्तके सकार्ये प्रस्का अरुक हुआ हो से विका कृति प्राची प्रया विकार ? साहते योग-योग-वे यही, योग-योग मान-पूरा और परित-परित-से अध स्थल हेरे परेना है ?

thereit age-group I subject finn mein afte fant प्रकार प्रकार हुए।, में इसका करना है क्या सबसे बहरे निराने इसका प्रचार किया, व्य तम दुनों बात वह है, हुने । प्राचीनकालमें सहायोगे महर्षि अधिकी उत्तरी हाँ। में को प्रतानी स्त्रिप से । उनके बंदाने बनावन् इक्टोबनीका प्रमुखंब इक्त । इस्तिकोर पुर निनि हुए, जी को सन्ती थे । निनिके थी क्ष्म पुत्र हुआ विश्ववद्य ज्ञान था जीन्त्रन् ! यह यह सुन्दर या । क्सने एक इसर क्वेंटिक नहीं क्टोर कराव करके अन्तर्ने कार-कार्यः अधीर क्षेत्रर प्राप्त आर दिया । प्राप्ति निर्मिको पुरस्तोकके कारण कहा संसार हुआ हो भी उन्होंने हरखनिर्देशके अनुसार अर्थाप-विकासको सारी कियारे की। विक कर्तवीके दिन अपन्यें केने चेन्य प्रता कराई क्यारीय करके का बीकोमा (अन्यवस्थानो साञ्च करनेके रिप्ते) से सहे कारी को । जात:काल काननेवर करवार तन कानोबारी कारिए होवा का, मित् रूपकी सुद्धि मही मित्रुत भी, करके प्राप्त राईमें कालो प्रोक्का ओसी प्रदान और प्रधानिक प्रोक्क व्यक्तिरिका विकार विकार विकार विकास व्यक्ति विकी प्राथ्वीये की कार-कार और अन्य अतीर कीन्यव्यक्त कारने गरे हैं सक इलोरी जो-जो पहले इसके पूराची किया चे-जा संस्था कियार करके उन्होंने संबद्ध किया। करायर, उन सक्रियर चुनिने अन्यन्तरको दिन सात सञ्चानोको सूरसकर उनकी पूर्वा को और प्रतिकृषा करके उन्हें कुछके आमानक मिठाका। बिन क कारोको एक है तक फेक्स्के दिन अलोग सार्व परेला । प्रत्ये कह चोका करनेकले सकलोके पैरोके मीवे जासनोक्त उन्होंने दक्षिण्यान कुस विका दिने और अपने सामने चै क्षित्रका कुछ रककर चरित्र हुई सामकार है अपने पुत अवन्ते नम और नेत्रका उत्तरम करते हर कुर्ताम Proper Part I

इस इक्सर कार करनेके बहुद युनिनेह निर्मिको बहु

प्रकारित होने राजा (केवरें दिख-निजन्म अविके ब्हें:जो किए क्रमुका क्रिका है, उनको मैंने क्रेकाने मुख्के भिन्त किया है-यह सेयवर) अपेर अपेने वर्ग-संबारतामा क्षेत्र माना । अतः मन-ही-मन बहुत संदन्न होन्दर से क्षेको लगे— अहे । जुनैसीन से कर्ण यहरू कर्ण जी **विका**, उसे की ही क्यों कर शतक ? मेरे कर करवाने कर्ताकको देशका प्राथमानेत पूर्व अपने बार्क अवस्य पाद बार क्रोंने ।' पर बार मानमें अने ही रहीने अपने पंत-प्रकार महर्मि अभिन्दा स्वरम्प विरम्द । विक्रिके श्राम सम्बे हे स्रकेशन अति वहाँ अ वर्षि । अभिन्त एक उन्होंने निर्मानो प्रकारकार्थ इ.ची देशा हो तहा कार्यके हुए हो सारका है। हुए महा-- 'नेता ! हरते थे या विद-वह (बाह्र) विका है. इसमें हरे गर । कारी पहले कर ब्रह्मांकी पर करेबा उत्त MAR Plates & safer til gib greite medice till å i mellike grey विक्रीय क्षार्थिक सुर्वात समुद्राल विक्रम है । प्राप्तानीके विक्रा प्रत्य भीन साञ्च-विकिता काहेब का सकता है ? अब मैं कुछे क्ष्मकृती पाली हो अञ्चली तथा विशेषक कर्तन करता है . प्रते सुन्ते और पुल्का क्रमें विशेषों अनुस्तर कार्युका समुद्रात करे। यहरे वेद-समादे उत्तरकार्यक आर्थकारकी विका क्षी करने किर अति, योग, यक्त और वितरीके प्रका क्षांत्राते विशेषांच्ये ज्ञाता क्या अर्थत क्षते। इत्यूक्त् ब्रह्मानीने इनके पानीकी कारक की है। कारक, सदस्की अस्तरपूरा पृथ्वीची कैनावी, कार्याची और असूच्या असी मानोंके सूचि करनी पार्विये । साञ्चेद विश्वे बार राजी सम्बद भगनार परम्पात राजा सरके आहे और सेनाओं भी उस करण जारिने । उद्यानीके जनत जिले पूर पुरू केवल से वितरोंके करने प्रतिद्ध है; उने 'उनल' भी काले हैं। सरकाले बार्को क्रिया पान निर्मा क्रिय है। ब्राइट इस अवसे पूर्व करोते काञ्चलकि निजनीतमञ्जू उसी निजनेका मरको बहुर हो क्या है। हहाओंने क्वेब्राओं किर अधिकार असी निरामिक्रे आक्रमा अधिकारी प्रशंक है, कराती परिचया राज्य है। विश्वेषिकोच्छी पार्का को मैंने पहले ही बड़ी है, का सबका पुरू अधि है। वे सभी खेन करने कुन प्राप्त करनेके अधिकारी है, उनके जान के हैं--कार, गृहि, विकासक, पुरुष्ता, पावर, वार्विभोषा, समूह, दिवसानु, विकासन्, बोर्चवान, द्वीयान, क्वेलियान, कृत, विकास, पुनिर्दार्ग, द्यारोमा, वर्गका, अनुकर्ण, उत्तेत, उत्तर, अंकुमन, प्रीताच, परमाधेची, बीरोच्ची, सुरति, सन, नहीं, वर्षे, विकार्य, सोयवर्षा, स्थंती, घोषव, क्ष्री, कवित, क्राव्य, प्रवर्शका, उर्जाताच, राजेश, किसान, सेरी, सम्बर,

कृतिक, म्हेन्यारे, कंकर, नाग, ईंक, कार्ता, कृति, कहा, कुकर, रिव्यक्तमेहार, नामित, कंकर्याने, आदित्व, रहिस्कान, स्टाल्यन, विक्रकृत, कार्या, अनुनोहर, सुनोहर, नाह और ईकर। इस क्वार क्रमान किहेबियों ज्ञान कारवाने गरे।

'जा क्यांने निर्मात प्रमुखीया वर्णन परता है। अन्त्रजरें प्रोपो और पुरस्त (पाण परा), प्रदूषण (प्रीप्तनेंद्र प्राप्त अनेकार पालों) में हीर, रक्षांच और पाण; प्राप्तेंने प्रीप्तन, सम्बद्ध, प्राप्त्य, जीवन और सेवर साहि, पाल पराय, पास्त्र और, विशित्तपण्या, प्रीप्तावती (पाण), पील-पाण आसित है। पात अध्याने सम्बद्ध, क्षांचुको पाप पाला पील का अनेतुने पुरस्त पूर् पार्था में साहिते साम है। पाला पाला है। साहित का अनेतुने पुरस्त पाला पाला निर्माण पाला पाला है। साहित पाला पाला और विश्वर पाला अस्त्र होंगा। साह्य आस्त्र पालेंद्र पाला पाला का स्वाप्ता पाला पाला है। पालेंद्रे, पाले कहा केत्रजा पाला पाला प्राप्त का पालेंद्रा पाला पाला की पाला पाला है। पाला भी पत्र ब्राह्मणण, पालावार पाला है से भी भी होत है।

केरके करे हैं—इस अवस असे बंदाव कहीं निविद्ये ताह्या कोट देवा प्रात्माचे और कुर अपने हैं। राजाने करे गर्न । कांत्रक र इस प्रधार धाले निर्मिते सुरक्षका आरम किया, अलोह बाह पानी महर्ति करती हैवा-देवते क्रमानिकोर अनुसार विश्व-प्राच्या अरुद्धार करने असे। निकारोड का बाल कारेको अधिताका प्रति निकार करवेके पहला सीवीक करने दिल्लीका सर्वन भी करने हैं। बीर-की करों क्लोंके लोग लड़ानें केलाओं और जिलेको अब केने रूपे । रूपायार साजाने फोजन करते-वासे देवता और निवर पूर्ण दश हो पत्ते। अस वे जह प्रवानेके प्रवहर्ते हमें। शाबीकोर क्यें विक्रेष कर होने एका । तम से ओल देवलांड कर कार केले-'सम्बद् । इस निरम्प सामुख्य अन्त भोजन करनेके बारण अर्थनोत्रे पीड़िन हो रहे हैं। तथ जार इसलेगी-क कारण करियों ।' तम सोयमें उससे कहा— 'हेरहाओं ! बंदि संकारकेन करफान पहले हैं से स्कूतनीकी समाने सहके, े ही अन्याने नोच्छा पहा हर करेंचे *र*' खेलाडी भार सुरक्षार देखाउ और विवार केंग्नेंद्र किसारवार विकासका सामग्रीके पास गर्ने और इस प्रकार बढ़ने सने—'सनवर ! सहब्दा तथा साई-साई हमें अधीर्त हो एका है, इससे इस बहुत बड़ा या हो है, अल कुछ। काके प्रमावेकीका साम्यास प्रतिको ।"

केंग्साओंको साथ सुरुवार प्रमुक्तको कोरो- 'ब्रेक्ट्रामा ! मेरे

नियद ने अधिकेन निरामका है। ने ही इन्हरे कान्यनकी बात बतायेंगे ।' अपि केले--'पेककओ और निरादे ! अवले शासमें हमलेग परंच है पोयर किया करेंने। मेरे साथ स्वाने आयरवेगांका अधीर्थ हर है कामता।' यह सुन्धार काबी विका कि गयी; प्रतिस्थे आहमें खले अधिका कर हित्य स्थात है। अधिमें पूर्णन महर्गके बाद को निल्होंके विशेष विकास दिया पास है को सहस्रकार की ब्रॉप्ट करों। क्षात्रमें अधिनेत्रको अभिका देशका राज्या बहुने पान करे 🕯 । समझे पहले जिलाको, उनके बाद बिलान्सको और उनके बाद प्रतिवासमध्ये विषय देश व्यक्ति—व्यक्ते श्रद्धको विक्री 🛊 । प्रत्येक निष्य की समय एकामधित क्षेत्रार नामधी-नामका सार तथा 'सोन्डन पिट्नते स्तव' या उत्तरम करना वाहिने । रकारण और कारवारी चीचो साहादुर्विनी व उत्तीवन होने है। सुने कुलको चीको बाह्यक भोचन ईपल करनेने व रामाने । सर्वेण करते करण निक-निकास अधीके सम्बद्ध क्वारम करे। विसी क्योंक कियों क्योंकोरर विस्तेता रिकाइन और तरीन संसदय करना काहेने । यहने साले । सार्वाच्या जांग प्राथमा है।

कुरको फिरोको काची हा। बरके बहुत मिले और multerink untgeft ich unfeit femant deite नुत्री कुं पाईचे बैठकर नही-कर करते समय बैलोकी पूँछरे विवरीका क्रांस करण करण कारेके; क्योंकि विवर केरे क्यंत्रकी अधिकारक रखने हैं। इसी क्या नाम्यो नही-बार करनेक्स्प्रेको की किएरेका सर्वत कावन वाकिने। को सर्वत्रके बहरककी बानो है से नावने बैठनेकर एकालीका हो अवस्य है निवारीको करवान करते हैं। कुम्मपक्षमें का महीनेका आधाः क्रमण बीच काम, कर दिन अर्थाद अन्यवासा शिविको अवस्य लागु करना व्यक्ति । वितरोकी परितरे पर्यक्ति चीर, करनु, चोर्च और राज्योची प्राप्ति होती है। प्रकारी, कुलार, धरीबा, फुख, अदीला, सह और वहर्ति कांचय-के ताल पार्टि सहार मोनेकर और विवर माने गरे हैं। इस प्रसार का प्रांतकारी काल विक्ति करानी पाने । मेरे पूर् प्रमुख अपने नेवानोक्षण निवासन कावर जेतानके बदारे प्रस्कार या वाते है। क्या प्रतिकृत है जा की प्रत्यके अनुसार एने शासकी

## क्यवास और ब्रह्मचर्य आदिके लक्षण तथा प्रतिप्रहके क्षेत्र बतानेके रिज्ये राजा वृपादिमें और सप्तर्वियोक्ती कथा

कुषितिये पूजा—विवासक् . यदि आसादी विवा विकास इंग्लामची कुंबर पूर्ण फरनेके दिनो असके पर सम्बुध्य अप चोजन कर से तो इसे आप कैसा मानते हैं ? (अपने आस्वा इसेप करना अध्या है वर इस्कूलनाई अनोक सुकराना ?)

भीनवीरे बहा—बृधिद्विर । जो नेवेच्ह जाका बातन महीं बतो, वे प्रदानकी इस्त-पृथित देनों (अपने सम्बन्ध नियमका ज्यान बतके) शादमें क्षेत्रन कर सकते हैं: विश्व जो नैदिक जाका पानन कर की हो, वे बहे विनयेक अनुरोधको माद्याला करा बहुक बतते हैं को उन्हें अपना कर महा बतनेके केवचा मानी होना पहला है।

पुष्पितरे पूक्त—पितास्य ! साधारण स्थेन जो करवासको है तम कहा करते हैं, तस्ये सम्बद्धने आस्त्रती क्षण बारण है ? मैं च्या करना चलता है कि मध्यको करवास है तम है या अस्त्रता और कोई सक्त्रत है ?

भंगानी क्षा — चुचित्रित ! जो लोग चेळ दिन वा एक महीनेत्रक उपनास करके उसे उनस्था करने हैं, वे कार्य है अपने करित्रको कड़ होते हैं। कारावारे केवल उपनास करनेवाले न उपली है, न वर्षता। उपनास उपनास है सकते काम समावा है। साहामाओं कहा उपनारते (जन-पराचार), बहुमारी, जुनि और केलेक्ट सम्मानती होगा काहिने। वर्णनारमधी प्रकारते ही उसको की आहे बुदुम्बक्ट संख्या बहुम काहिने (विश्वक-भोगके दिन्ये कहें)। प्रकारको उपना है कि या तक समाव्य हो, जोन काले न साब, प्रमान कालो केला काह करें, अब एक भागम को उसेर इतियोको संस्थाने रुखे। उसको रुख अनुसारते, जिनसारते और अधिनित्तीय होना वालिने।

कृषिकीरने पूज-विकासकः! प्राक्षात्र स्वयः अन्यत्रकी, अक्षणादी, विकासादी और सविविद्यान केले क्षे स्वयक्त है ?

वंगानी का—केट | यो मनुष्य केवार प्रशःकास और सर्वकारणे है योजन करता है, बीजने हुए नहीं काता जो सह अकारी करवान करीये | यो केवार बहुबारणी वर्गानीके साथ स्वापास करता है, यह बहुबारी है कात क्या है | एक इन केवारण पुरुष सरकारी है समझने योच है | यो दिन में नहीं स्वेतन, यह सहा बाधव् क्षतेकाश कारता है | यो नहीं स्वेतन, यह सहा बाधव् क्षतेकाश कारता है | यो नहीं क्षता, यह सहा बाधव् क्षतेकाश रेनेचे च्या है साथे बोनार कामा है, यह केवार अपून सहाय कटनेवारा (अपूक्तांदी) है। कामक इंब्यूमं न केवान वह में समझक को अस उद्याप नहीं कामा, वह अपून अपने उस मान्ये हुन्य सर्गालेकार निराध काम है। यो देखाओं, मिलो और असीसोको केवार कटनेके बाद को हुए अवको है साथे सोका करवा है, जो विकासको अन्तरे हैं। अर अपूज्योको सामानाने असून स्वेकोची आहे होते है।

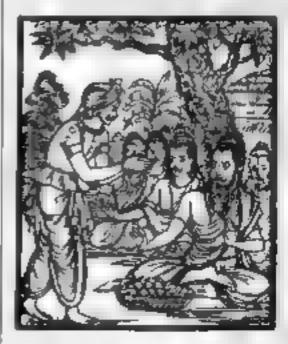
कुष्णितरे पूर्व स्थानक । महूना प्रकृतिको स्था मनगरकी कहाई एन हो है, सिद्ध क्या और कुर संस्थानि क्या विकेचन होती है ?

र्थनको सह—पुनिश्चेर । सहस्य सम्बद्ध प्रकार के का रेते हैं और हुईओ की सिंह गुजवान् (सावन) गुजवों क्षा रेजेरर अर्दे कर केर राजार है और पुल्कीय (पूर्वर) से क्षाद सेनेपर के अनाम नरकरों हुए बाते हैं। इस विकास राज्य मुक्ताचि और सहिविकेत संस्कृतन एक प्रचीन प्रतिकृतक महाराज दिना स्थान है, इस सरकारी बात है, पारवर, आहे. wing, want, show, freedom, wregte abs whose हेरी अकारी—में एवं सीध सम्बन्धि हुए समान क्षानोक्यों जार करनेथी इंदानी करना करने हुए इस पुर्शापर विका थे थे। इस स्थापी सेख कारेवाओं एक क्याँ ही, विकास कर के पंजा ! भी पहला काम एक पुत्री बाद काहे भर्त से (पहलस से क्रूबे स्कृतिकेंद्र कर क्षांतर सामग्री सेवा निवार कार्या वर्ग ) । एक पार पृथ्वीपा महा कारणक कर्व नहीं हुई। संस्थाने क्षेत्र सम्बद्धा का गवा। सभी सोच पूजी बच्चे सने। इसी सन्त्व विक्रिके पूज राम क्यांकी कुल-किसे जर्म मानेहे जा निवारे, वहाँ वे सप्तर्मि सेव्यू थे। को अवने सेनो क्यू पते देश प्रवाने महा-'त्रयेषणे । यदि आक्रोन क्ष्म सेना जीवार करें हो मह मानको पुराचे प्रश्नो क्या स्थान है। उससे आपरतेगोंका पर कृतेन वर्षर 🐲 🐞 कारण । सन् अंतिका स्थितार परिचित्ते और मेरे कल किएल कर है, उल्लेले इक्कानुसार मानिये। युक्ते अञ्चल कहा ही केन है। सारकोचीके चरिनेता में अनेकाले एक-एक इसार सक्तियाँ, नारी बोझ क्षेत्रेन्स्तरे झकेद श्रेन्टे मोर्ड-सार्थ का इका केल, संबंद रेड्निकड़ कर्य बाली को उद् पुर एवं सीची-साथै कारी है चीई, आहे-अब्हे चीव, बार, क्षा, जो, का उसा और की अनेकी कृषि कराई उक्त मार राज्या है। जार माराजे आयो प्रमेणी पुरिने रिने में सभा से ?!

क्षिकेरे का-प्रकारत । समाच्या विकास क्षा

कारते गणुके सका केंद्रा कर गांध है, वितृ परिणाकों का निगके समान हो जाता है। इस मानको कानो हुए की कार गयी इमाने नेको प्रत्नेकारों कार यो हैं ? क्र्यूमीका करेर केवामनेका निकारकार है। उसमें सभी केवा निकारत को है। यह समूर्य केवामशोको प्रस्ता करता है। उस्कृत है से का समूर्य केवामशोको प्रस्ता करता है। उस्कृत विरामाने निकार एवं संबद्ध करता है, उसको क्रयूका अधिका करको हम करनेकारों क्रयूक्ति साथ ही एक कुल्ले का कर करवा है। इसरिजो इस क्रयूके साथ ही अपन कुल्लाने की कर करवा है। इसरिजो इस क्रयूके साथ ही अपन कुल्लाने की क्रयूके सिजो साथको क्रयूक्ति क्रयूक्तिको क्रयूक्तिको।

मा मान्यर से पूर्ण मार्गने मान्यसी क्षेत्र मारो पूर् सार्ग मारे गर्ने । अस्पार, राजाबी मेरावारे सार्थ मार्ग मार्ग अस्प और अपूर्ण पूर्ण पार सेन्द्रार गर्ने देनेका विवार विका । परिवर्धने का कार्यक जीवार (क्षेत्रेड हुक्के पर हिंदे और सार्वा पुर्वित हुक्के किया । पूर्णाय का पार्विके देनेक विशे मान्यिक केर्य केंद्र गर्ने; विद्यु स्वार्थ अधिने का सार्व कार्यको सम्बद्धा देवका सक्त-- 'ते पूर्ण हुन्ती केर्य केला नहीं है। इन्तरी मुद्दि पार्च नहीं हुई है, इस सो नहीं से हैं, सार्वा है, इर्थ मानून है कि इन्तर मीतार



कुर्ज कर कुरा है। यदि साम इस इन्हें स्वेकार कर रेसे हैं से वस्तोकने इसका करु परिचाय केवन पहेना। से इस सोक और परावेकने की सुख क्या कार्य हैं, उन्हें प्रतिकारों । सूचर्गपुक करवेका परिवार करके के स्वयत प्राधानी मार्थि को राजा कार्यके ।'

वरित्र मेठे—एक निन्म (कार्यपुत) का दान हेनेसे इमार निन्मोंक कुन रोनेका क्षेत्र रात्रक है। ऐसी कुलने के बहुत-है निन्म प्रकृत करका है अलको के केर कन्मन्ये न्योंने निरम प्रकृत है।

करवाने कह—इस क्वांबर विको बान, की, कुमर्थ, यह और कियाँ है से एस विश्ती क्या कुम्बस्ने निर्मा कार्य से भी को संस्थेप ने होगा। यह सोमास्य निर्माद कुमर अपने मान्यी कुम्बर्ग्य कार्य करे।

क्छन केले—न्युक्को एका प्रश्न कार्य है। सरको केल् गोना नहीं है।

र्नितने बक्र-संस्थाने ऐसा कोई क्या की है के सङ्ग्याने आक्रमा के पर परंत । कुम्बर्ग आक्र सन्ताके समार है, यह बानी करती है नहीं।

विकरियों का —ियांचे क्यूब्वी कामक कार्यकारे महामानी एक इक्त का पूरी होती है से सुराई पाने समात है बाती है। इस अकर पूजा कीरकों क्या महामांचे कामर केर कार्यों हैं। इसी है।

कर्माने का—जीव्या न रेनेने ही प्रकार अन्ते राज्याओं सुरक्षित पर स्थात है। क्यात ही प्रकार कर है। के सीविक कर्मेंद्र सिने सोच क्या है, अस्ता क्यानी कर नह हो कारा है।

अस्मात केले—संसारने इक व्यक्ते स्वेप्नेकी एक है कि क्षमीत रिन्ने क्षमात प्रोच्य करना प्राहिते; किंदू वेटे राजने क्षम-संस्थात अनेक्षा अस्थात संबद्ध ही बेंद्र है।

नवारं का—मेरे ने मारिक स्तेन सामक प्रतिकासी होते हुए भी का इस कर्मका प्रतिकाक करने हुएन उस्ते हैं से मेरी कहा विशव है ? सुझे से हुर्बल प्रतिकांकी जांकि इससे कहा कहा कर कर का है।

प्रमुक्तमने कहा—कर्मका पालन करनेनर निता करकी आहि होती है, उसमें महकर कोई कर नहीं है, उस करको प्राह्मण ही जानते हैं; उसके में भी कही वर्णका करकी प्राह्मिक क्यान सीसलेके हिन्ने निहान् स्वाहनोकी केवाने समा है।

क्षिकों बहा—किसमी जात ने कारापुत्त पास हेनेके रिलो से साथी है तथा जो इस जावर पासके काराने हो सुवर्णातन कर रहा है, जा कवाबा जाके कार्क संबंध ही पास हो।

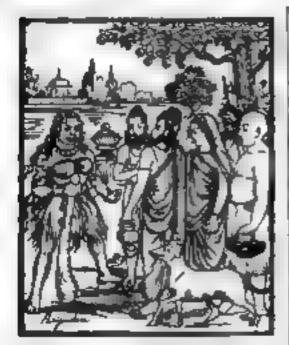
पीनमी करते हैं—कुविद्यार । यह स्वकार उस विद्या करना करती है ?"

पुनर्शनुक करनेका परिवास करके में करका सरकारी वार्ष करित सम्प्रा को नये। इस वार्षको केरके हैं अधिनोधी पत्त कीर हुआ कि इसमें साथ कर किया का बार है, इसियो के करनेका कीरकार करके हुओ करेते कोर हुआ और में उसमें ऐसा कार्यका कार्य होनेका कियार करके पानवासीको कीर वर्ष। वहाँ कार्यर अस्ता करोर निक्योंका पासन करते हुए में स्वास्त्रीय स्वीति साधिनारिक कर्म कार्यर एक करते असूनि करने तथे। साधि क्यार होनेकर कर साथित एक कर्मका कुछ। कार्या हुई। कार्य क्यार्योंके कार्यर पान कर्मका कुछ। कार्यपानिक क्यार विकास कर्म वार्य कर्मका कुछ। कार्यपानिक क्यार विकास कर्म कर्मका क्यांकाचे का पूजा हुए केरका क्यांके पास करिता क्यांकाचे के पूजा हुए केरका क्यांके पास करिता क्यांकाचे की पूजा हुए केरका क्यांका क्यांका क्यांकाच्या

रुवने का—व्यक्तियाँ । पूर कार्ते कार्ने काओ और वहाँ सम्बन्धीतकेत कार्ने क्रिक्नेका, अवते क्रिक्न और का क्रिक्ने कीट्या की कार क्रिक्न साम्या सामर्थ अपने कार्ने कार्न कर्ते । पूर्व स्थान का सबसे मानीका कार्ने साम्यावा कर्ते कर क्रिक्ने; साम्रो का क्रिक्न के कार्ने कार्न

प्रस्तानी यह आहा प्रस्ता प्रश्नानीने 'एआह्र' स्थानी इसे स्वीकार किया और वहाँ के स्वारी किया जाते से इस करों क्या गयी। यह अधि आहे स्वारी प्रस्-मूर्ण्या अहार करों से का करने विकास हुए कार-मूर्ण्या संबद कर हो है। मूर्ण-निर्मी किसी स्तरत करों इस सुन्दर सरक्षा दिवानी यह निरम्या कर कहा है कीया और स्वार्थ का। स्वारी वार्ष्ट विकार कुन्दर कामा दिवाने देश क्षेत्र अनेको प्रस्तानी प्रश्नी असे कामा की करों की । इसमें कोना क्षार स्वारी हो। यो सर्वे मी स्वार्थ का । असके कर और संविधी कहा सुन्दर समी वी स्थान को करों और क्षेत्रकार नाम की नहीं था। एका प्रस्तानकी रहा कर स्वी थी।

तालाम केरणार ने महर्ति मुनास सेनेके हिन्ने पशुस्तकारे साम महाँ आने और सरोगरांक प्रदान का विकास प्रकृतिको कही देशकार कोरो—'पूरा कौन हो और विकारिको वहाँ अधेराने सही हो। वहाँ दुन्हरे आनेका क्या अभेगन है ? इस सरोगरांक स्टान स्टान्ट हुन कोन-स्थ कार्य



क्युकारीने सहा---सर्वाकते ! मैं को कोई की होती, हुन्हें पैशा परिचय पुत्रनेकी अवसरकारण नहीं है। कुन हराय ही मान हो। कि मैं कुल सरसावकी प्रस्तावकी करनेकरते हूं।

क्रमें के का — भी ? इन संब स्तेश मुक्ते स्वकुत है यो हैं। इसरे पास कानेके मैंनो कुछ की नहीं है। उस्तः की पुर आहा से से इन सब नियमार इस समामने कुछ मुक्ता क्याइ से।

सनुष्य वेल्न-स्वित्ते । एक क्रांतर हुन इस सारकारो इकानुसार प्रकार से सकते हैं। एक-एक अवस्थ सारकर अपना नाम बसाओं और कम्मानी नाम के से। देर करनेकी सारकारकारा नहीं है।

संपाद कहरे हैं—साबा कर सुरका कार्क सांव का समझ करे कि का राजनी कार है और इस सब कार्किका का करने के उसरा कर्कि इस अध्या अस्त कर हैए—'करकार्यों! कार कार्कि इस अध्या अस्त कर करने के प्राप्त असी कार्कि हैं और अस्त (क्यू) के कार्किका असि का्मार है। इस अध्यार है है अस्ति होने कारण नहीं है। कारक अध्या क्रमार परमासाका हान नहीं केवा कारकार्यों अध्यान की सहस्ता है। उस अझानकारकार्य सीव होने कारकार्यों में असार स्वाप्त होने के कारकार्यों के स्वाप्त के असार स्वाप्त होने असार की सीव क्रमार है। सम्पूर्ण अस्तिकार हिल्ले असार स्वाप्त होने असार को सीव क्रमार है इस परकारकारकार के

मैं क्या मानव् पास है। तक मा मेरे रिन्ने अवस्थि समान है। इस म्युन्तिको सनुसार हो मैं सरामि और असि (इस्पी) मान सारव करता है। मही मेरे मानवा सारवर्ग समझे।'

क्यूकर्य केले—केक्सी क्यूमें | आयो किस प्रकार अपने कावत कार्य महत्त्व है कावत मेरी सम्बाने आया कार्यन है। अक्स, अब अस कारावानें आर्थि ।

वर्गालों क्या—नेता ताम व्योख है, सबसे वेब होनेके व्यापन सोग पूर्व परिद्व भी पद्मी है। मैं गृहाक-आधार्म व्याप काळा है जाता मरिद्वाल (देवनीसम्बद्धि) और मासके वारण दूस पूर्व परिद्वाल कावते।

च्युक्त केले—शुरे | आवने को अपने नामकी च्युक्त की है आके के सक्तीमा भी उत्तरभ करण करूँन है। ने इस क्यको नहीं चार एक सकती। आर्थ माहने,

\_\_\_

कारण का—नातुमानी ! काम पान है सरीस्ता, के स्वाद्ध काम काम है को कामय काते हैं। मैं समेद हुता (स्वित) में अवश्योक्ताओं स्वेद्ध करके सम्बद्ध पान करता है इस्तीओं कामय है। है अश्योद क्वांचर का करते कर्त क्वांच्यास पूर्व की मैदा ही कामत है, इस्तीयों मुझे 'हुक्य' की काहे हैं। में बेह्या कि कामके चुरस्की मंति संस्थात है, काद में कामय कालों की स्विद्ध है। नहीं नेद्य गान है, इसे हुट सारम करते।

क्यूकर्ग सेली—कार्ने । सामके मानका तालर्ग सम्बद्धाः के तिले क्यूब कठिन है। साम वी कमालेंसे मधे ह्यां कक्यूने क्यूबे।

व्यक्तव केले—कावानी । यो केरे पुत्र और दिखा वह है काक भी में बतान बतात है तथा देखा, प्रदान, काकी वर्णको १४६ हमा (कालेका) मनुष्योका भी परग-योका काळा है, हमनिये भएका बधारे प्रदिद्ध है।

क्टुकर्ष केर्री—पुनिकर | आओा नामश्राका उद्यास करनेवे थी पुने हेवा कार पहल है, इसरिजे में इसे धारत वहाँ कर सकती। काले, उसन भी इस सर्वकर्म कारिये।

नेतमं बद्ध-कृते । वैने इन्त्रसंगमके इस ये (पृथ्वी और कर्म) का भी कृत किया है, इसरिने 'गेर्म' जून करूव करका है। ये कृतकि अधिके समान देवली है। सबने सम्बन कृष्टि रक्तेके कारण सुक्ते का और किन्निके इस येख दमन नहीं हो सब्बन । मेरे क्रीस्की कार्य (गी) अन्यव्यक्तो हर क्यानेकारी (असन) है, जतः हुन सुने नेतुकर्त केली—स्कानुते ! अपनेत कामध्य स्थापक थी मैं नहीं समझ समजी। साहते, पोजनेते अनेत करियते ।

विकारिको कहा—स्वयुक्तानी ! विक्रेशेन पेरे विकारी राज्य मैं भौजों और सम्पूर्ण विकास विद्या है, इस्तरिको इंद्याओं विकारिकों जामने असिद्ध है।

क्युक्त केर्य-अहाँ । सामके मानके कारकार भी मुक्तो स्कारण होना कठिन है। वे हरे नहीं का रहा समार्थ, साथ करनाओं माहते ।

नगरिने का—अस्थानी । में करण् अर्थाष्ट्र वैकारओं के नावजीय शांतने करण दुशा है, इस्मीको धून मुझे बनदीन नावले निकास सम्बोत ।

क्युकर्त बंदर्ग—धूने ! आश्रने किस प्रकार अपने मामका कार्य्य कारावा है, अरबो सम्बाध के रिप्ते क्यूक कार्यन है। अन अरब सर्ववस्त्रे प्रकेश कारियो ।

अवन्यानि काम-चातुवासी | मै अब अवांत् वर्षाः, पुत्रमी और कुलोकको जनको वर्षान्ते वरण करतो है। अववं स्वामीसे काथी पूर कार्रि यहते और उनके करके अनुस्तर करवी है, इसरिन्ये नेता नाम अञ्चलते हैं।

नगुम्मी धोली—देनि । आपने यो अपने माधकी माधमा की है जल्बे एक अक्षरका की उद्धारक की हैन्से करिश है, अबः इसे की मैं जहीं कह रहा सकती। अबर पालाको प्रकेश की निर्मे ।

नवाने वदा—धनुवानी ! परिवाद्तो प्रश्निकावधी तिथि होती है, व्या पुराने एक देश--वानोरव्या वासक है। नेय करोल (गव्य) तील है, इस्तिने कोन मुझे वसक काले हैं।

क्युश्वनी सोर्टी—युवारे जनकी कारकाका भी उद्यास करण मेरे रिजे कविन है। आ: इसकी क्यू एक्ट्र जनका है। जाओ दूप भी कार्याने करते।

रहारको नदा—सामसे पैदः हुई कुले । मै सहज्येको प्राप्त रक्ता है और समय जिन कुछ है; इस मुख्ये सहस्रा मेरा नाम पञ्चसका है।

क्युक्तनी बोर्स--सुमने जो अपने कावको व्यादका हो है असके अक्षरोक्त ज्यारण करका भी मेरे विनो क्युक्त है अस: इसको बाद जॉ रस सकती; अब दुस भी केवलेने काजो ।

इन अभियोके साथ जुनःसमा कामानी एक संमाती भी था, अपने अपना परिकार इस प्रकार श्रेषा—मानुवानी । इन अभियोगे किस प्रकार अपना नाम कामा है, उस उन्हें में नहीं बता समता। दूस मेत नाम जुनःशनकास (अन्वेद मित्रभूत मुनियोक्त मित्र) सम्माते । क्युकर्त केली विकास 1 आपने हरित्या कार्नीये अस्य नाम कार्या है आतः आग वित्र स्वयुक्तारो अस्ते अस्यो कार्या करियो ।

हु-तनको सक्त—पैने एक बार अपना नाम बता दिया, दिन भी हुनने बसे ब्यानसे नहीं सुन्त है इसरिन्ने स्ते, मेरे इस दिवस्त्राधी कर सम्बार अभी जरू हो बाजो ।

का कामन का संकारीने प्राप्तको समान अपने निकासने हेता क्षण कार्यक कि यह मानुधानी पृथ्वीपत गिर को और पूर्ण भार हो नहीं। इस प्रकार प्रशासको उस न्यान्याच्यां राज्यांच्या वय करके विक्रमाध्ये प्रकारत रहा किया और उसने भी नहीं पासकर बैठ करा। तदलकर, से अधी कर्षि इक्क्ष्मकर कुल और मुकल लेकर कई सरकाले क्रम अल्लाको पहल निवासे और पहल परिवार करके उन्होंने पुन्तरकेंद्र अस्ता-अस्ता केंद्रो बांधे। इसके बाद कर्ड विकारिक ही रक्षाका के सामाहिक जानके सर्वेद बहले स्त्री । क्षेत्री के बाद का धार्मने पहल कार्य से उन्हें अपने एके हुए इनात को दिवानी को। तब तभी एक बारी केहर को-'अने । इन सब स्थेन पुराती प्रवाहत से और अस आक्षर पद्धव करना पहिले थे, हेर्स समयमे बिस्स निर्देशीये जानत हमारे मुख्यान कुछ दिल्ले ?' कह कुछ भी पहा ने नहस के काले अलगे लदाई हेनेद हैने प्रदार प्रात्मक विश्वय विन्या । जस राज्या राज-वेद-राज पूजारी विकास और अहल्या को-मी, है; आ: क्लोने प्रया पाना जाराम बार दिखा। क्रमो पहले अधि मेले—'क्रिको हुन मुख्यस्थेको पोरी बी हे. को नामके त्या मार्च, सुनंबी ओर पुरू बरके वेहास करने और अध्यक्षको समय अध्यक्षन करनेका प्राप्त हार्गे ।"

अर्थक केलं—जिसमें मुख्यात बुराये हों जो निष्टित्त स्वयंकों केंद्र पहले, कुले लेकन विस्तान केलकें, संन्यानी होकर स्वयंक्य कार्यक करने, सरकायराको मारले, अपनी कार्या सेककर जीविका करनने हत्य किरकाके का होता होनेका कार समें।

कारको का—जिसने प्रशासीको कोरी की है आको तब क्या तब कराको करे कहते, दूसरोको करेड्र इस्त तेने, क्षारी कवाड़ी हैने, अपराचको दान देने और दिसमें की-सम्बद्ध करनेका केद सने।

गरहाज केरं—विसने कुनार कुशने हो जा निर्देशीओ की, ककु-कामक और गोजोंके साथ अवर्थ करने, इक्कानों निकारों परास करने, रामधान (गुरु) को नीचे बैटाकर उससे क्षानेद और ककुनिएक आकरन करने और करा-कुसकी आपने अकृति करानेका पाप रहते।

कार्यं केले-विको स्थालेक अकृत्य किया है को पानीमें सरकार, फेब्री क्रम, फेब्रे क्रम केर, किन प्रकारके रेवर और सक्ते सन है। करे, सेवर क्रमार्थनर वीविका कार्यने, वर्ण-सम्प्रश्रेते हेन रक्षने, प्रमये बैर प्रॉपने और एक इसरेके पर अधिक होनेका क्षेत्र करे ।

गोरामो प्रक्र-विसर्ग कुमारवेची कोरी की है जा बेदोको पहाचर जो पूल साथे, तीचो आणिका परिवाल करने और सोजरत बेकनेके पानक करने हो एक एक हैं कुम्बारी प्रोपमें निकार करनेकारे और स्कूपरी करेंगे संपर्ध रक्तरेकारे हामुख्यां यो स्तेत्व निस्ता है बड़ी उसे की जिसे ।

विकारिको सक्र-को इन पुरवानिको सुरा से पर्य है इसे बड़ी पान रहने को पुत्रके सीचे-भी उठके नाल-निका अभी। क्षेत्र क्ष्मेंक क्षारोके हारा प्रत्यन होनेवर समात है। समात बार्ड दिवारत व तरो, अलो कर बहा-ते का है, जा speller, depth from markets, areas with बार्यकान, विकास, कुरारेने इक स्थानकार, क्यांकारने प्रकेशको पास करनेपास, केल लेकर काम कानेकास, एकामा पुरोक्ति और पहले अनिकारोने पह करनेवाल केंग्रे ।

अध्याने धीरमें--विवासे मुख्यक्तेची फोरी की हे का भी एक अन्ति साहको अववर्तित चले, स्वतिक किन कुराने, क्येने स्वर्थित मोक्स करने, साथे कुटर क्य-वाक्योक अञ्चल करो, समयो स्त् करो, असी कोर्ति कार्रिका करने और (अक्रमी क्रेक्ट कृतिकारमाञ्चलके) चीर पूछनी करूरी क्रेनेक व्यवस्थ मारिकी हो ।

नका मोर्स-निवा बीने मुन्तराबी बोधे की हो को हुट बोलमें, अनुसर्वेक स्वय विशेष करने, कन्या केवने, रावेर्ड बनावर अवेले योजन बन्ने और व्यक्तिकी ह्येक्स पाप लये ।

प्रतास कंग्र - विसने प्रतास्थेकी कोरी की हो बह क्ष्मीके गर्थमे जन्म हें, संकान्द्रीन और हाँदा वो तन्म को | चरित्रान करे, नही राजसे बदा वर्ष है।

केर्याकोको धनसार न सम्तेषा केर सर्ग।

क्रम्पने का निर्मा का क्रमानेको स्थाप हे व्य क्यूनिके इत्तर महिन्द् समय सम्बोदके इत्तर व्याप्तारीको कंप्याप्तान देनेका करू प्राप्त करे और अवस्थितक अञ्चल सन्तम् करके विकित्त् सान करनेके पुरस्का पार्च हो।

क्ष-असोके के कहनेना प्रतिकेती क्या--व्यासका ! कुरने को कुरूप की है जा से प्राह्मणीको अधीष्ट है है। अतः कान पहला है इस्तरे पुन्यतनेकी कोरी तुसने m mb fin

क्षर करने करा-नारिकते ! आगस्य बहुना दीवा है। क्षाको कृष्णकेक कंद्र की है को है। यह जायलेन जांव कर से वे जारे कृतव आगवी रही बचावर मेंने जारे अन्या रक्षार क्रिय दिव मा । देशिये, आयके मुनास में हैं, की अन्यत्येन्त्रेकी परीक्षक मिन्ने ही देशा विकास सार अस्प को संन्यानी नहीं, इन्ह सन्दर्ध । अध्यत्येपीकी दक्ष वारतेके कोशको है मैं वहाँ आप था। एका बनार्टार्थकी फेबी क्र कारण करवार्ग करवेकाचे प्रमुखानी कावा आगर्यगोका का कारेको इकाने को साथै थे। अधिने हरका अविश्यांक हुआ वर । यह पारियो नहीं तुर साम्यानार्य थी । का आपको सम्बन्ध कर अल्पने, इसीने नहीं आदिक होता? के इस प्रकारिका कर कर करन है। सर्वकर्त । अध्यक्तियों लोक्सर परिवार करकेड सारण अक्षय लोकोपर अधिकार प्राप्त विका है। ये एकेक एनक कान्यतानों को कुर्व कार्यकारे है। अब आप मार्टि उठवार मही मरिन्दे।

चैनकी बार्ग है—पुनिद्वेर । प्रमुखी नात सुनकर महर्मिनोको बड़ी जलतक हुई। रुपूर्वि 'त्रपासु' सन्तरर केरराज्यो असा शोकार को और सब-के-सब करके साथ क्रमेको बहेर पर्छ । इस प्रकार का व्यक्तमधीनै अस्पन्त पूर्व क्षेत्रेयर भी लोग नहीं किया, इसीसे उन्हें स्वर्गकी प्राप्ति हाई। अंद वन्त्रको स्थिते कि प्रतेष स्वत्रको सेपका

---

## ब्रह्मसर तीर्घमें अगस्पजीके कमलकी बोरी होनेपर ब्रह्मवियों और राजर्षियोंकी धर्मोपदेशपूर्ण ज्ञपश

रोकर आपरानें को कृपन साथी थी, यह पुरावन इतिहास में | होकर आपरानें करना की में 'हम समसा पुरावर के

भीकार्य काले है--वृधिहिर । प्राचीन कालमें सर्वार्ये । तुन्हें सुन्न का है, सून्ने--पश्चिम विकाले प्रसिद्ध रीर्य और महर्मियोंने ही बेंगाना करते समय गुन्यसम्बद्ध के रिप्ते हैं। प्राथमकंत्रमें युक्त व्यक्ति और प्रमाओंने एकतित

मुख्यतीयोंकी क्या करें। इस्पेक्षे अभी खेलोंके कार्य का कारकी हका है, जा: सब साथ ही करें।' देख निहाय करके कुछ, अग्रिया, कांग्रे, अन्तरन, कांग्र, कांग्र, कर, परिष्ठ, करकर, गोसक, विश्वादित, कामही, कारण, अञ्चल, करहान, अरुआते देवी, बाराविसम्ब प्राप्ति क्या दिवी. बिरोप, जून, अभारीय, क्यारि, कुमुक्तर और कुछ आहे. राजा केतरण इन्हों जाने करके सब क्षेत्रीयें प्रथम करने सरी । युवले-युवले पालको पुलिसाको से परिक कारकारी मीरित्यी नरीचे ठठन या यहें और उसने वहाँ सार विकार १ इस प्रकार अनेको सोवंबि बाल करके निवाल क्षेत्रस में राज सोग अस्तान चरित बहुतर (५००२) करक क्रेजेंरे मने, वहाँ ब्रह्मजीके सरोवश्ये क्रम करके इन अधिके प्रकार रेवको सहस्थिते और एकस्थिते अन्तर्यक्ष पुरसेका क्षेत्रक विका । सर्वश्रम् कुछ प्रकार कुरवर कोर्क् रहो और पुरु मानानेका संबंध करने रंगो । सनका क्यांने भी कुछ सामान अभावकर किनारेवर रक दिये थे, जिल्ह प्रेक्टरेसे निकासीका क्षेत्रने देखा कि अगववजीके कामलेकी चोडी हो नवी है। हर कार अनुस्तानी समूर्ग स्वर्थिते पुरा—'नेत समान मिताने सुरा रिजा ?' तम सभी महर्गि करत को और सक्ते सरी-'युनिवर ! इयलोपीने आयके कामा गाँ पूराने हैं। इस बारवी स्वार्थि रेले इन क्योर क्रम इस सकी ि—ऐस्र निक्रण करके का कार्मिकों और राजकोंने अपने धून-पौत्रोंके साथ बसेकी और श्री रक्षते हुए संस्कृत सरक कारा आगन्य विकार

हुत नोरो—मूने । तिसमें जानके कामानकी कोई को है को माली सुनकर कड़ोनें पानी हैने और कर फाका मारनेका बाद लगे।

वरित जेले—किसने आपके कवार कुराने हो का स्थापनायमें विमुख हो जान, कुला काम लेकर किकार केले और गाँव-गाँव मौका सोगता किने।

करनर सेरो—को आपका समार कुछ हे नका है का सम जन्म सब उद्युक्ती अञ्चलकी स्तीत-विक्री करें। किसीको मरोहर हुआ हेनेका होना करें और कुड़ी गक्ती है।

गोराम केरी—किसमे आएके काराव्यी केरी की हो वह आविकारी, वेहेंगान और अधीनका साथ कारोबाला, सेरिहर और इंग्लियुक्त होवार जीवन कारीत करें।

अनुष्य कोले—को आपका कामा के भवा है जा अपरित्र, केरको विश्वा स्थानेकला, कुछै लेकर विश्वार केरकोवासा, अञ्चलका और अपने पानोका अवश्रिक न करनेकाल हो।

कुकुक केले—किसमें आएके कमरवेंकी कोरी की है। को निर्मेख क्रमार व करते, कुरवारिकी कीरी संतान अपक कार्र और अकेरी है। स्वसिद्ध क्षेत्रक कार्यका पाप सुने।

पुर केरो—को सारका कारत पूरा से राज हो का विकासका स्वयस्त्र (मैंस का सायस्यका केंद्रा) करे, सीकी कारती काम क्या ससुरातको कारत मुख्या करे।

शिरोप केरो—एक कुर्युक्तने गाँवने स्वयार स्वास्तानिकी क्षेत्री सम्बन्ध रखनेकारी अध्यानको प्रस्तुके प्रकृत जिल पु:कार्युकी सोकोने साथ ब्यूक्त है वे है स्वेक अस समुक्तको की वित्रों को आकोर कम्मा सुरावार से गुला है।

हुक केंग्रे—किएने आपके कारावेकी कोरी की हो उहै विन्ने केंग्रुव और राजावी कारावी करनेका कर राजे।

क्यांने जोते—विसर्व आयोः प्रभाव हिन्ते ही वह विवेद्य कारणे अवकार को, निरादों ही ब्राह्मी किसरे एक कर्म की सुरोद अद्वाने क्षेत्रक क्षरे।

जिने मेरे-मो अलगा करत पूरा है पता है या अधिके निमे किया है पर पता, पताने निहा हारे और

ज्यारे कोरे—विवारे आवनंत कारानेकी कोरी की है व्या जनकरी होतार की प्रशुक्तालके आंतिरिक संस्थाने की-सरकार और केरोबा कारान करे।

नुष केरे—किस्से आपके कारानेका अपहरण किसा है वह संभाती होकर की घरमें हो, बहाबी होड़ा रेकर की सम्बन्ध कर्तात को और केरन रेकर विद्या पहले।

अन्तर्भर जेलें—को आरका समाह है कहा है कह नृतंत है; किये, कन्-सम्बद्ध और गीओंके और अपने वर्तका कारण न करे तथा प्रकृतकांके कारका सानी है।

नत्त्वी केले—सिवाने आवके कम्पलेका अपहरण किया हो का कार्या गुरुको ही आगम समझे, पर्यादाका करमून करके हाथा को, अप्ले-सीचे कार्य केह्यमध्या स्थारण करें और मुक्कानेका अपनान करनेवारण हो।

रूपण केले—जिसमें आवशे कामक चुनावे हों यह तक कुठ केले, संतर्के साथ विशेष को और वरिवा हेवल कुछ केले।

कर्ति जेले—सिलाने आरक्ता कमल रिका हे वह गीको त्या करने, सूर्वकी ओर पुढ़ करके पेहाल करने और करवानकार्य स्थान देवेके कावता पानी हो।

निवारित कोरो—को आजवार कारण उठा है गया है था। उक्का पुरोदित और अन्तिकारीका का करनेवाल हो तता करिरे हुए कुरामको अपने मारिकामी क्रेडिने हाने पहुँकनेसे को होन रूपना है नहीं उसे भी रूपने।

एवंट बोरे—निसने आपका कारत पुरुषा हो का गीवका मुस्तिया हो, रावेची सचारीयर करे और पेट घरतेने रिपी कुलोको साथ रोका जिकार सेले :

मराज्य मेरे—जिसने आपके कारलेकी कोटे की है कर पार्यको निर्देश और अक्टकादी मनुष्येमें खनेकाव सरा-का-सार पाण सर्गे।

गाण गेले—सिसने आगका कथा पुरास है का एना मन्तुदि, लेकानाहै और करे होन्द्र अवर्गपूर्वक पुजीका एन गरे।

मारण मेरो—को आकार कारण पुरा है क्या है का महापानीकारों भी काकर निकार, सकी कामुख्या अवकार कार्नेवारण तथा क्षत्र हैकर अपने ही मुक्ते कारण बकाम कर्तनामा है।

राज्याती मोर्सि—किस श्रीने आपका अध्यक्त किया हो यह अध्यक्त साराची किया करे, आसीले कडी यो और अमेरनी सामिष्ट फोजर करे।

मरप्रियण जेते—की आवका कुमार है एक ही का शयनी मीरियाओं निन्दे गरियो इत्यानिक इस वैत्ते कहा है और मर्नेको सानो हुए भी आवक परित्यण कर है।

हुत्तरस्य कोरो—को द्विस होका की हमीरे और प्राणको स्वतिहोक्की अकोराय काली हुक्तपूर्वक लेखा है उस संस्थाली होकर की मनमान काला करता है हैने बनुवाको को पाप रामता है नहीं सामका करता कुरानेकारेको हमें।

हुतथी कोर्स—किस गीने आवके कामसेव्ये कोरी को हे असका पैर कारनेकी रसीसे कीवा जाब और उसे हुसरा काक दिकाकर कोरके कोर्सने कुछ काब।

नीवार्यं वत्तर्वं हैं—बुधिहित ! इस प्रवास का साथ लोग निता प्रकारकी कार्यों का खुके से देशसां इन्द्र बहुए प्रसाद होकर पुनियर अन्यक्तवीके स्वयमें प्रवाद हुए। उन्होंने पुनियों सोर कृषिपात करके कहा—'अकृष् ! यो अन्यक्त कारक है गया है यह वस्त्रेंकि इत्ता प्रत्येक्तवे अन्यक्त सामकेके विद्यम् आवारीको कन्य देनेका पत्त प्राप्त करे कथा वह अध्ययिक्ता सम्बद्धार स्वाप्त करके कारक हो । यह नहीं, यह सम्पूर्ण वेद्येका साम्याची, पुनवहोत्त और व्यक्तिक होकर सहार्योंके लोकमें समय करें हैं अन्तरण केले—इन्द्र ! आपने भी शायब की है यह के आइकेक्ट्र कर है, अतः आयहीने मेरे कानल दिन्ते हैं, कृपना उन्हें कामा कोलिने, नहीं सन्तरण कर्ने हैं।

हन्दर्भ करा—जन्मत् । वैने शिशके कारण नहीं, धर्म सुरनेकी हकारों है वे कारण करा दिन्ने के, अतः आपके पूरावर कोण नहीं करना काहिने । जाना मैंने आपकोगोंके पुराने का जाने सरातन कर्मका जना किया है जो दिख, जानिकारी, जनानमं और संस्तर-स्वानस्ते पार जाररनेके दिन्ने पूरावे कामन है। इससे व्यक्तिय सुनिनोका कावने दिन्न होता है। अवका, अन्य अस्य वह कावन स्वीतिने और मेस जानाम क्षण क्रिनेके।



इनके ऐसा करनेवा अगस्य सुनिने प्रसारतापूर्वक का कारत है विच्या। व्यवस्थार, ३० सब स्तेगोंने करके पागीसे होते हुए पुनः वीर्वकात स्वास्त्य की और पुरुवतीबोंने व्य-कारत गोते समाने। को प्रस्तेक प्रविक्त स्वास्त्यत इस विक्रा स्वास्त्यत्यत पाठ करता है उसके कार कोई आपन्ति नहीं साठी तथा का विक्रा और पापसे रहित होकर काम्यानक पानी होता है। को व्यक्तिवादी स्वास्तानको इस इस्कारत सम्बन्धन करता है वह अधिकादी स्वास्तानको व्यक्त होता है।

## स्त्र और उपानह वान करनेके विषयमें सूर्य और जमदिश मुनिका संवाद

वृतिकीरों पूर्ण—दावानी ! कामा और पूर्ण कर बारनेकी प्रणा विसने कामने हैं ? मैं देखता है अनेकी पूर्ण-अवसरोपर इनका कर विका काम है, आ: इस विकास बक्का करोगी इस्ता के दो है।

पीनकी का-राजर । क्रमा और स्थाप (क्रो) की क्रवीर राज उनके प्रचारकी पार्च में विकारके क्राय पार क्र है, सुने—एन केने क्युओवा का किए ज्यार अध्य हैंक है तथा ने किए प्रधार पुरस्कों सहि क्**र**मेकार्य क्रमे क्र् है ? इतकी भी पर्या करोगा। इस विकास प्राथकि और मनवान् कृतेवा संवाद् असित् है । कृतेवारव्यी वात है, एक हिर पुगुरुपर समाहित्यों अन्य कार्यान्यों क्षेत्र कर के हैं। के भारतार अनुवरर कार रहातार जो केवले और कारते जाते रिक्का का रेकारी वाजीयो स्थ-सम्बद दिया करती में। इस प्रकार चीतने-चेतने केवार हो तथा। कुनिये पुरः अवने क्षणीयो हर पेत्रकर रेजुक्तो अळ-'तिने । काली नेरे अनुकरी कुटे हुए जान्येको हाराबर उठा स्थानो, में फिर हुने मेनुकार रक्तकर कामक्रीय ।' अञ्चल कावर रेजुन्या कर 🛊 । पूर्वको कही कुरते आका मकब परम हो कर, ५वी हाँ चुनियर अस्ते पैर करने शने; जल: वह एक वृक्का प्राचने बाबर कड़ी हो नभी जिल्लाको सामीक सम्बद्ध का राज हुआ जा, इसरियरे वहाँ वहीयराते अधिक न कहा हाती. कृत बाल हेनेके मिले आगे वह नवी। यह व्यक्त लेकर लेकी से बहुत फिल हो रहि थी। पैरोफे जलनेसे जो पुरस होता का कारको विपती तथा सहावी और सकते वर-वर वर्गको 🛒 👊 मनिके पान जानो । उस प्रान्त प्राृति कृतिस क्रेक्ट नारंकः पुरुषे रागे—रेगुके । सुपारे आरंथे प्राप्त के क्ये पूर्व ?"

रेनुका कोर्य-संबोधन ! वेश शिर तब कहा, पैरोने कारन होने राजी, सुर्वित तबका नेकारे आने कानेका स्वाप्त न हुआ, इसरिक्ये बोड़ी देरतका वृक्षकी इन्याने स्वयं होकार विकास रोजे रूपी थी। बड़ी कारक है कि आपकी सर्वाका महत्त्व करनेले विस्त्या हुआ, शहर आग मुहत्त्वर हुसेव न करें।

कारणिने कार—शिवे ! जिसमे तुझे कहा बहुंबाया है जा जनक सुर्वको आज में अपने बाब्बोले कार विराधीन ।

भीमार्थ कार्त हैं—वृधिद्वित ! ऐस्ट कहाकर कहाँ कार्यामि अपने वित्त कहाकी संवाद कैरान्यों और बहुत-वे काल हामार्थ लेकर ने सूर्यकी और मुंह करके एक्ष्ट हो गर्म । उन्हें पुरुष्के दिन्ने रीकार देशा सूर्यका कार्यकार उनके यहा आने और कोरो—'क्षान् !



कृति सारका क्या स्वयंत्र विश्व है ? है अवदानने दिन्त क्षेत्रण अवने विश्वविद्याद अनुसार दह श्रीको है और बाधको पूट को काम है। इस ही स्वृत्योद सम है—यह क्ष्य केने को कामी को है। अवने विश्वविद्यालयो प्रतिकृत कामर पूर्व कामे क्षेत्रण हुआंको कामे कामो अद्वातित काम-का अवी काम प्रकार काम, कर, पूर्व और काम-का अवी काम होते हैं। बाधको, सा, स्वयंत्रम, विव्या, मो-क्ष्य, प्राचीय द्या, संबोध और वस-संबंध आहे वारे कामें अवां है संबाध होते हैं, इस काममें सार की वानो है। बाध, स्वेन्त्रम, प्राचीय द्या, संबोध और वस-संबंध आहे हैं। बाध, स्वेन्त्रमें काम वांचे साम काम होता है। (क्ष्यमा स्वांचे मह कारनेक्ष संवांचे क्षाध करना कामा है (क्ष्यमा स्वांचो मह कारनेक्ष संवांचे क्षाध की की की है)।

कृषिको वो अर्थन करनेका की मानिक समान हेमाबी कन्यति नृत्यिक कोन कारा नहीं हुन्य । वे सहने सबै—'मैं अन्यूर्विसे व्यक्तन करा है, कृषी दुर्ग है, अतः समय रूप रेकर कृषे अवस्त्य ही विनय विकासीना । हसमें सबिक की संदेश नहीं कि अपने कार्योगे तुम्बरे करिस्क दुक्तो-दुक्तो का इस्तृत्य ।'

रूपरे कार—आहें ! आप बनुववारियोंने केंद्र हैं,

अवस्य हो मेरे करीरके दुवके कर सकते हैं। प्रसाद र आपमा अपराची है तो भी इस समय आपन्ती इरको अस्य **\$—ऐसा सम्बाध्य मेरी रक्षा वर्धियो** ।

यह सुनकर पहलें समझी। हैर पढ़े और सहने लगे—'सुब्दिन । अस तुन्ने पन नहीं चनक पाहिने; क्योंकि मेरी प्रत्यमें अह गये हो । यो सम्बन्धे अले हुन्यो सहस्र है को पुरुविभाग, अञ्चलक और परिस्थानका कर राज्य 🖟 । तारा । इस समय सुन्दारे हारा भी अन्तराय हुन्छ 🕏 समया समामान सोची (अर्थात् कृषाधी विकासीचे सामने महत्त्वाची रक्षा केने हो, सरका कोई जनत बालकर्ता) ।' यह सहका भगवीत पुनि पूर्व को गये। इस सुर्वने कई का और क्यान क्षेत्र हुन क्या-- 'मार्ग । मा का नेर्न विक्रमोका विश्वास करके नगरकारे शह करेगा और चन्क्री की हुए वे एक बोदे दुई अन्तरे रेतेया जन्मेरे प्रदानेने। साम इन् क्रीकार वॉक्निने । आयर्रे कंसाओं प्रकेश कुलके अवकृत्यर क्रमा और पूर्वपर क्रम प्रकारिक है अन्तर्य क्या प्रस्ता पर्य भी अध्य होता (

चारे परमान् भूति है करा स्थाने और जो पहलेसी प्रस क्यों की है। इन कलुओंका कुन कीने लोकोंने कीका | करका है। करकोड़ ! सुन्धाने अबके अनुनार की का इस और भाग गमा है। मिरावे के सार में हो हेरे कावद हाइनको । इकाद का कानेका परा-परा कर कारका। है।



क्षेत्रको असूर्व है—पुनिद्रेत । इस अक्षर सम्बंदे को कृते कुन करता है यह वर्गीरामान्ये पहाद क्षेत्रकीया क्षेत्रोपे बात है और यहे जरकाचे साथ योलोकर्ने निवास

#### गृहस्य-धर्मके विषयमें पृथ्वी और श्रीकृष्णका संवाद तथा पुष्प, भूप और दीपके दान एवं देवता आदिको बलि देनेका माहाल्य बतानेके लिये बलि-शुक्र-संवादका उल्लेख

नुषिक्तिने कार-समाप्ती । अस्य अस्य प्राप्त-अस्तानके सम्पूर्ण सर्वोच्या वर्तन श्रीरित्ते ।

बंधकोरे का-बंदा । इस विकासे वे पूर्व करवान् श्रीकृत्य और पृष्णेका संस्कृतन प्राचीन इतिहास भूतवा है।

क्ष्म्यने कुल-क्ष्म्यरे । जुलको च करे-मेरे विस्ती कृति व्यूत्वको गर्भक-वर्गका सक्तव तेका विस कर्मका समुद्रान अवरण करना पाद्विते ? क्या करनेते पहलाही सम्बद्धाः विकासे है ?

वृत्यति स्था-साम्य । पृष्ठस्य पुरुषक्षते केवता, विका, मानि और मनुष्योद्धा सदा ही कुमर को शिक्षर करने चारीने । अब्द में इसकी विशेष कहा की है, सुनिये—अधिरा का-हेमके प्रश्न देवताओंका, (बाक्-तर्वव काके

कार्यात करके पुरानीय क्रांत-व्यक्तियोगा पूरान करना कार्रिके : स्थानकार्य अभिनोधी कही अस्ताह होती है। निवक्तीः पोक्रमे व्यक्ते ही अधिक्रोत को वरिक्रीकरेन कर्य करना अध्यक्षक है। ऐसा करनेसे देवता की संतुष्ट होते हैं। वितरोक्षी प्रवासको हैंग्ये प्रतिवित्र अंत, कल, कृत अववा क्या-कृतके हारा सम्ब काना स्थित है। सिद्ध राज (तैयार र्ख परोई) मेरे अस सेवन उसके हुए विक्तिक्रीक वरिर्मकोर करना साहिते । इसके सद प्राप्तकारे पिता है । महिला व निरू सके ये अक्रमेंसे केश-सा समयस निकारकर करका अधिने क्षेप कर दे। विस दिन वितरीका बाज, करनेकर हका हो, उस दिन पहले आज़को ही किया पूरी करे। उसके कह विकारण और व्यक्तिकृतेन करके विकरीका), अतिवि-सरकारके क्षत अनुव्योका और केरका | अञ्चलको सरकारपूर्वक भोजन करावे । किर विदेश असके



प्रशा अतिकिनीको भी प्रश्नेष्ठ करे, मिद्र भोजन हेन्के पहले क्रमार्थ विकित्तर पूर्वा कर होती व्यक्ति । हेरह करवेले पुरुष पुरुष मनुष्योची संस्कृत करता है। यो निका करने परने विका mit wer, we arithe wanter \$1 answer, that, Registrer fire aft aufefleit von un feiner unt für 'अपूर्व कह मेरे पाने फेक्स है, जो जान जीवल करें।' Part is first serge it, then all said a good serious server होता है। पुरुष पुरुषों एक प्राप्तित अस्तर है पोजर करन जारिये । राज्य, व्यक्तिय, काराव्य, पुरु और व्यक्त--वे भी एक मर्थक नाह आने के क्यूनोर्स इसकी पूछ करनी माहिने। कुरते, साम्प्राली और महिन्तेनेक रिन्ते भूतिना अब रस देश कहिने। यह मैक्केन जरूब कर्न है। प्रानः काल और पार्चकारलें इसका अनुद्वान विकास काल है। को पत्न होन्द्रहेका कीत्वल करके इन मुहत्वोतिक क्षप्रीका पालन करना है, उसे इस खेळने सूचि नहर्गियोग्रा करतान प्राप्त होना है और पुरस्के प्राप्त का पुरस्कोनकोने सम्बद्धि हेत् है।

पीयाची बहरो है—मुस्तिहिए ) पृथ्वतिहरीके से कान सुरक्ता प्रकारी व्यवस्त्र सीकृत्यते उन्हर्णेक अनुसार मूहरकार्योका विधिवाद कान्य विश्वता हुन्हें भी तक इनका अनुसार कारण काहिये।

कृषिप्रेरने पूरा-पितामा ! सेपाइन विका तरह विका

श्वक है ? क्लबी संपत्ति कैसे हुई है ? और इसका परन तथा है। ?

कंपनी सह—पुनिष्टित । इस विकारी पुन्न और प्रतिके संपर्धिक एक अर्थन होन्द्रसम्बद्ध स्वयुक्त दिवा सम्बद्धिः

वर्तनं पूर्ण-निकासर १ कुछ, यूप और प्रेय-कम कार्यका राज कार है 7 यह स्वारंकी कृष्ण क्रीसिने (

क्षमी सक-पानर् । पहले सरकार्या संगीत क्षां है, कानेंद्र पाए मनेवी । इसी प्रीयमें तथा और सोपीरमाँ अपस हो। अनेको प्रकारको स्टेन्स्सर, अनुत, वित्र प्रका gub-girk gritten ungede gart stept up f. fieb देवले है का जान है जान है—सब्बार होते है बाती है और जिल बढ़ है को जरूरी पहलो दिवसे पहली है। बारत है। अनुक स्कूल करनेकार है और दिन अस्तुतर । अस मैं हेका, राष्ट्र, फाल, फार, पड़, रीतर और संपुर्वको क्षेत्र राज्येकारे एक कावित्येको कार्य सामेकारे पुरसेका के कर्पन करता है। पुरस्के बहुत-से कुछ गरेशने होते हैं और ब्यूब-में जेनाकेंगे; ब्यूबेरे कुछ क्वारिकेंगें अनाके जारे है और बहुत-से पर्वत आदिवर अपने-अपन वैद्य होते हैं। पून क्रुप्रेरी कुछ व्यक्तिए क्षेत्रे हैं और कुछ दिला व्यक्तिया। इस कर्न कर, रह और पंथ निकास रहे हैं। एक है प्रकारकी होनी है—अच्छी और पूर्वे । अच्छी प्रकारके पूरत हैंका मेंड कि और मिन्स करते हैं। कि क्यों करते नहीं होते करते रुकेट रेन्सको कर ही देवनकोग अधिक परोद करते हैं। अवनंत्रेको कारका गया है कि सहओवा अधिक वार्तकी रियो क्रिके करियारे अभिका कर्मि एतर क्रुलेकारी व्यक्ती और कारकारकीयों अनेपीयकेका इसकेन कारना कारिये । जिन करवेले कारी अधिका हो, जिल्हा सावसे परर्श काम करिन कर थे, दिनक रंग अधिकार सन्त प्र कार है उस किया करत तीया है हैने पूरू का नेतीके पाल असे हैं। क्यूकोचों से में ही पूरत देख होते हैं सिरका का कुन्त और का पहल है तथा को देखीयर प्रत्यको अवस्थानको साम गाँ। एनसाम अस्या प्रीमं-सीर्प केवनको के इन् कृत्येका वीहिक करे, विवाह करा क्षान्य विद्वारों अलोग भूति वात्म काहिये। वर्तलेके विकास करत हुए सुबर और सुगन्ता पुर्वाको सेमार क्राक्षेत्र विभिन्ने अनुसार क्ष्में क्षेत्राओक प्रधान पाहिले । केला कुलोबी सुराधके, बढ़ा और एक्स अने दर्शको, जनमा उत्ता महीधीरे उत्तेष करते और पन्न उनके कर, दर्भन को उपयोग-सीमेरे ही संख्य होते हैं।

प्राचे वह क्ष-क्ष्मा का क्षे-भूग की शकें और हरे कई सर्वांक होते हैं। मुख्यतः असी मीन नेद है—निर्मात, सारी और क्रांतिन। इस क्लांको पान भी सन्तर्भ और कृते के प्रधानको होती है। है का बारे निवालों करन क्ये-वर्धके रह (गीर) को निर्मय बढ़ा है, सरस्मी बाबाद मुक्को सिंख साथ प्रकृति प्रयाद हुए विश्वीतनाव पूर वेकारकोन्द्रे अभिन्य द्वार होते हैं। क्यों भी कुनुत सम्मे केंद्र है। दिन क्षत्रोंको आन्त्रे कार्यन्त सुरूप प्रकार हेन्द्रे है उन्हें 'सारी' जून कहते हैं । इसमें अनुकारी प्रभागता है । 'सारी' जून विकोचन: पास, पासक और अन्तेको क्रिन होते है। देवनोन्य कारको तथा को राजांद अन्य पहोची गोरका क्या हुआ कृत पर्वत करते हैं। सर्वता (का) सबी, पार्वित पर (प्रोक्षात असी) क्या पुर्वाच्या व्यक्तिपरियोको निरामकः कार और पेटरे संस्था करके के (अक्टूम्प असी) पूर हैचार निवस चारत है, बढ़ी कुकीन है । अनुस्य अंतरक ही निर्देश क्रमोग बस्ते हैं। कारो केवर-क्रमा नमी भी प्रीव संद्रा होते हैं। प्रकंड रिवार चोन-विकालके दिन्से कानोनी और ची अनेको अवस्थि कुर है को केवल बहुआँके अवद्यानी उसके है। पुरुषेको स्थानेका को सार स्थान गया है को सर Policy serving of \$1 up of four-shall street क्यानेकारे हैं।

अस हैए-गुल्का उचन पत्र पत्राल का है। यात्र, किस प्रमान और कैसे केथ के आहेते, इस सब बावोच्या वर्णन पूर्व — लेक्स कार्यकारों केस है, वह क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक

तार: हेक्साओंके जिल्हित संग-सन दिया गात है। सेप-सर करों बहुतके केरेक केर बहुत है और यह सर्व के देखाई होता है। यह कारोड़े पहला वर दीवकोंको र से कुल्लो, र स्टाबर सन्तर से बाद और ने यह ही करे। कैंग्य पुरुषेकार प्रमुख अंचा और रोडीन होता है जना जरनेके कें पराने पात है। जिस से बेर-बर सत्ता है ज क्रांकेको क्रिक्काको अपि प्रकारित क्रेस है। शैका des mest un une sen deben de-un bi ओपरिकोधे रस सम्बद्धि हिला, सम्बद्धे अधीरके केमने पालपार विकार पुरस्त कीय-कार कुल्टी लेकीचा है। को अपने पारितारी uft men if all will, bie alle pffeite frank pe केरके प्रत् काहीर भई केरक कारक साहिते। सारी कार्यकारी हुन्य रहनेकारे स्थूनको प्रतिक्रि पर्वतीय क्रकेट करा, करते, क्रेक्टीकर्त और बीरक्षेत्र हैंप-कर काम प्रति । वेश-वन क्रानेकार पन असे क्राने क्षेत्र क्रानेकाच, प्रश्नीक क्या बीवान्स क्षेत्र है और अपने का अवस्थान स्टेबर्टन बाल है।

शब में देखा, यह, इन्हें, करूब, यूट और एक्क्रोकों ब्रॉंड श्रमकं प्रापंते के साम केल है, उसका कर्मन स्थान है। को जोग अपने प्रोक्त कर्मको पहले केला, प्राक्रम, अभिनेत और व्यान्यदेको नोक्य की बावते अने अव्यानकारी प्रकृत है प्रमान करेंदे । अनः गुरुष क्यूकरी के अर्थन है कि **१५ देखाओडी एक करके उर्वे नागर प्रकार अगर को** और प्रातिकार अनुविधी अग्राव्या पान्य अर्थन पारे, ज्योंकि हेम्बाहोन एक न्यूनीको है हुई बरियते सीवार करते और करें आयोगोर के हैं। व्यानके सबसे पूर् अतिकि और देवला, किया, प्रश्न, सक्षय कथा वर्ग आहे गुहरूके हिये हुए असरी ही मीरिका परको है और प्राप्त होका का गुहरवाओं कायू, पह क्या करते. क्या संबंध करते हैं । देशकाओंको को गाँस के नाम क्ष को नुवादी करी क्षेत्र परंग परिता, सुराविता, सर्विता और कुरवेशे सुलोचित होनी कहिये । जनोंको पद्म और संशंतका करिर क्रिय क्रेरी है, पूरोको पुर मिले हुए शिलको करिर देनी पार्थको । यो प्रकृष देवता अरहियो अनुपान हेवत प्रोचन करता है कह उसम को मते सम्बद्धा, करकान् और वीर्नवान् होसा 🕒 प्रातीको केमराओव्यी कुछ करके उन्हें अध्यक्षण अकार्य अर्थन करक कांग्रेने : गुजरूके करकी अधिकारी देखियाँ अले करके पार अवस्थित किये राजी है: अत: मान्याक-कुर्ती मुख्यको पाछिने कि मोयक्ता आस्थान देखा का से बहु जर्मन असुराज नरिस्को सुनाम और बहुने सुनर्ग में। बेज ! इस विकिसी बानकर दुस भी इसीके अनुसार मुनियो प्राप्ता प्रयोश दिवा । स्वयान् सुन्ति क्यानीयो । उस कार करे ।

क्षेत्रको स्वाहे हें--युविदेह ! इस प्रकार कुळावारी: | और सामाजिने मुझे ने कुर-वीप आहें, करके पुत्र कारायने

#### अन्ञन-व्रतका पाहात्व्य

प्राप्ति, ताल और अविता स्थापिक वर्णन विका, ताल पर कराइमें कि त्योगाओं पहुंचन स्टेन-स्ट पंत है ? उपायकों की पहि चोई समझ सामर हो से समझै स्थापन परिणे ।

प्रेराको सह--वृतिहर । पहुच विकास सर सम्बर्ध है, कार्यक्र अनुसार को जान स्थेप जात होते हैं, अन्य वन्ते मकूबर कोई सरका नहीं है, जिल्हु नेती करने कर अध्यानी क्रमानीचे अभ्यत्नाम है तेतु है। सरकारे व्यवस्त कृत्य कोई सा नहीं है। इस विकास वर्गाता और सहस्त्रीके संबद्धाल एक प्राचीन प्रीकारक स्थानन दिया पाता है। क्षाने पूजा है जिस एका क्षानेत्व केव्याओं के क्षेत्रका क्षानुकर बार्क स्वरिकेको प्राप्त क्षेत्रिको प्रक्राकेको स्व स्कृते । वर्षे हेशकर प्रक्रातीने पुता-पर्याता । इस रहेकने अस्य से कारत ही क्षतिक है, तुम बैसी का पहिले 7 प्रमुख, वेसका और मकार्र को किया सरकार किये कई की उस सकते; मिन स्वार अन्य किस अवस्था सम्बद्ध हैं।

रुक्षेत्रमें क्यू-अन्तर्भ है में ब्यूनर्ज सामा पारन करों प्रतिक एक राज्य कर्णकों अक्रमेंको कर निरम करता था: जिल्ह अस्ते पत्रको नेत पत्री क्षण नहीं समान \$10 है। मेरे एक राज्ये और पॉन राज्ये क्रमात क्रेनेकारे पार क्त-क्षा कर किये हैं। ज्याचा प्रतिकोते पूर्व क्षेत्रेकारे ज्यादा मानु कर अनुसर विका है तक की कर को निहोन करने देखारतीका काम किया है। किंदु इन कार्निक कारण भी में इस स्वेकने जो अन्य है। स्वे क्वेंस्य निरमर महस्त्रीके करार कुकर हैंने को करोर करणां की और वहाँ कराते सक्तियों तथा सम्बातीका कर किया, का प्राथ्ये अध्यक्ती भी में वहीं नहीं साथ है। पुन्तकों में एक साम पर के क्रमणीयों एक साथ बोर्ड, वे साथ पीर्ष रूप सेनेके कारत और धाकारके कारेंसे विक्रित हाँ साठ हकर सुन्दी कामाई कर की थी, यह कुमा भी सुन्ने इस स्रोकने से आनेका कारण नहीं है। मेराव कारक कारक अनुहार करके माने का देनेकार्य का सक्त चीक्नेका कर किया है: सा प्रथम एक-एक प्रकारको स्थ-प्रथ कर्न निर्म की, प्रकेट माओंड साथ उसीके समान राजाने बढ़ाई और सुवर्णका

पुरिक्षीर्तरे शहर—रिकाम् । आको अनेक प्रकारके कृत, । गुण्यका को हिने को के, क्षेत्र का काने की पूर्व कारिक की मुक्का है। अनेको कर मोनवराजी केवा रेका असे प्रक्रेक प्रकारको की पहले पराची जानी हुई पूर बेरेनाती मान्या केर्द और केंद्रिको मानिको स्ते-तो केर्द्र राज की है एक इनके अधिनेक भी का-का कर राज्यों कुमर पाने अधिन को है, जिल्ला पर पूरवर्ग की में इस स्टेकने की सरका है। बहुद देवने साम पूर् के राज्य एक साम बंदनियो क्षेत्रको कारवरोचे समावा प्रक्रानीको क्षत्र विका; विक् पह पूर्व के कुई क्यांका र स्थापका । एक-एक क्यां अस्तरक-जारेया करेड कर्पकृति परि, या साथै कृत्यों की पार्ट र ता कार । किर कार्यक्रमो निवासिक को रंगकारे समा करेड़ा प्रकारको केहे, प्रतिसदे सामा क्रीतेयके प्रकारकारिका को विकास प्राधेनको सन्ध्र हकार प्राची एक सोनेके को पूर् किया अस्पूरणोचे निष्कृतिस, सार्थनय क्रम्यरणोचे पुष्ट और अने-सामाने कोई को इस प्राप्त प्रकार पर द्वार जिस्से । प्राप्ति maken al about out able about aspend प्राचनी करते हैं, इस प्राचकों की युग प्राचनेत्र प्राचीका अनुहार क्रके का क्रिया का व्या और प्राप्तकों से इसके संस्थ प्रकारकारी है, किसी कन्द्रने सुनर्गंद कर क्षेत्र न से थे, हेरे प्रवादे स्थापनेको पुरूषे बीलका की स्थापनेको allowed & first (words, septekke march fielden क्रांतिके क्यारे एक का दिला। संस्कृत प्राप्त कारतीको प्रशास कर अधिक का कर्च करके जाउ कर क्रमपुर प्रकृत अञ्चल क्रिक: मिन्ह में बोर्ड मी यह पारे अक्रारेक्ट प्रदेशको सन्त र हे स्थे। येथे के हां क्षीत्रको पहालेका समूच्ये कोत अनकारित हो पना वा. परंतु असके कारण भी में इस स्वेकमें न जा सकत । उस नकने की बार्केट प्रमुख्याने सीन-सीन बार सोनेके सार्वकारोठे विश्ववित के हमार केंद्रे और एक-एक सी अधी-अधी पनि क्षि थे। विकास , जीव और प्राणकारों सुकार मैंने क्षेत्रस्थ करेन्स्र सूत्र कारण्य क्ला**र को थे,** विस्त्रो जाता क्षेत्रर चलका संकारे ग्रामीकी कृत्य बतायो अवने परायक्त करण किया; कियु व्य तपसी भी पुढ़ी वर्ष सनेवे करण नहीं है। मैरे अनेकों कर सन्ताहेर कार्ग किये, इस प्रवार सक्ताव कारोका अनुद्वान किया, बाई बार तेया और कांच्र दिनोंने समाप्त होनेवाले कल और पुष्पतिक पासका पात पूर्ण क्रिके; पांतु उसके पास्त्रेले प्री महरिक्द आनेमें सरका न हो समझ । इतना ही नहीं, मैंने सनेक रंग्डे बाठ इसर केंद्र भी स्थानोची पन दिने, विन्हे एक-एक सीमार्ने सोन्य भए हुआ का तका अनेनारे को-को क्योक्ट अनुहान करके उन्हें जोने और कोची केरे, कारण पर्वत, वर-वान्यते सम्बद्ध क्ष्मारो गाँव और एव जारवी कानी को सकतो नीई सक्तानेको कम की; बिंह उनके पुरुषको में बढ़ों नहीं अपना है। मेरे हता एक बार एकमानक और से बार स्वासाद पातेका अनुसार हुआ है। की सोन्य बार आवर्तका तथा सनेवाँ कर अवनेथ का किने हैं; परंह हर पहोंचे पारचे भी हर सेवले भूटे अन्य है। पार कोराका रांका-कोड़ा एक कर, विकाद प्रकेष पृथ्वी रहेने और का बाई हुए थे, मैंने कर दिला है; बिंगू जनका कर बंध मुक्ते व्यक्तिया राजेने सामने नहीं दूसत है। मैं बीच वर्गीन्या होत्राक्षित होनार 'पुराजन' कान्य कृत्या हात्या कान्य करात पहुर, विकास प्रतिविक्त भी औं कार्ये हम्बुप्लीओ क्या केट शा ( कृत्ये असिरिक रोड्रेकी (करिन्य) कारिकी कहा-सी कुक्तर भी में तथा नकृति मेरा भी दान मिला कामा का; पर सर शब प्रामेश्वेर पालने पुरा रहेकाने नहीं उसका है। मैंने कैस बार कृतिकार्यन्, अस्य प्रश्न सार्थेयं और एक भी अपूर्णन कर विक्रांतिस् प्रकृतिको है; जिल्लू एको प्रतानो भी पर्वा नहीं का संबद्ध है। फ़रह, सब्दा, पहुर और देनियारका बोलीने अध्यानको सामानाई रेस्स होती है।

कार की का ताल गोवन दिने हैं, परंतु उनके पात भी न्हों क्हीरक न सा राजे । (केवल अनकन-वसके प्रधानरे को इस हुर्गन सोकारी आहे हुई है।) पाले इसने सर्ग अवक्र-अध्या अनुद्वार करके हुए पूर रक्त था, अस्ते बार पुरुषक्षि काराके इस कारत हरू जोई किया; बिर मुर्विक रेको का प्रत्या स्थापन सम्पर्द अवट हुआ । मैरे में अपने को अंतर साम सारम किया; यह असी पूर्वि हा, तंत कृत्या मेरे कार क्याचे लाहण और आणि मकरे । वे सन्दे जुल्ला बहुत संदुष्ट है। क्यूंनि जलालापूर्वक अद्या वे 'दान्यू । हुन प्रकारकानो कानो ।' इस अवस (मेरे अवक्रम-प्रको संक्ष्म हर कर) इसारी प्रावणीके बालीचीकी चुते हत कृषेण खेळारे अववेदा सीधान्य प्रदा हरत है। इसमें me mid mem ftert unte fie ned purch argunt fellegelte artige-menn unter firm å i 190 सका आको पूर्व है, इस्तरियों के पार बाते पार्वाकारों पालको है। नेरी संस्थाने अन्यान-सामरे बक्रकर कृतना नोर्ड का नहीं है। हैकेवर है अल्बारे सन्दर गलावार है, अन अल पुरस्य प्रस्ता केलो ।

केलवें कार्त है—शुविद्या। एका पर्यतकी का इस प्रकार पाछ हो उद्यानीने प्रत्या निर्मित्त अविश्व - सम्बद्ध विकास । इस्तरिको शुक्त भी पाछ आगान-कारक पान्य पाने हुए इन्क्रुगोधी पूरा करें। क्लेकि व्यक्तिक आतीर्वाकी प्रकृतिक और परलेकी एक

#### आयको बढाने और घटानेवाले श्रमाश्रम कर्माका वर्णन

वृद्धिको पुरा-विकास । कार्योने सह परा है कि 'महूबाको आहु को मरीबर क्रेसे है, बढ़ सैक्को अकारकी प्रतित रेक्ट क्या करन करन है। फिट देशका है किस्तों ही बहुना बावकारों ही बातको पारानों करे करे 🔓 इसका बना कारण है ? जिस क्यानो पुरूष अपने पूरी आकृत्य मीचित क्या है ? क्या क्या है कि क्यारी कर काम के जाती है ? क्या करनेसे क्या निरुक्त है और निरूप कार्यक अनुद्वारको सक्ष्मीको प्राप्ति केवी है? जन्म मन, क्रमी अधक प्रतिके द्वार का, ब्रह्मकाँ, का, हेन प्रका जीवन आदि संस्थानोनेसे विस्तवा आवन हे, जिससे कामा परम हो ?

क्षेत्रजोरे का-ज़ीवदित । हम को सुख पूर्ण हो उसका कर है का है, हमें —स्कूकररे हैं ज्यूकर्क अनु, लक्ष्मी क्षा का रहेक और परस्केकमें कीर्तिकी जाहि केरी है। कुरवारी पुरुष, जिससे समस्य अन्ये क्षेत्रे और तिस्त्रात क्षेत्रे है, इस संसारवें बढ़ी आबु जो परता; अंशः भीदे प्रमुख अपन्य काश्यम काम महात है से हो सहस्रास्त्र पाला करन करीने विकास है कहा पानी करों न हो, संश्रवात आसी वर्ष अवस्थिको वया देश है। स्टब्सर वर्णका और राजनिका पुरस्तेका स्थाप है। साथु पुरस्त वैसा कार्य करते 👢 📹 सरावारका स्वत्रम 🛊। जे मनुष्य कांका आकरण करता और खेक-करपालके कार्यने संगा

ह बहुकर्ज पूरत 'सम्ब' नमक एक कार्यक संद्रा जुल ओर संगानत देखता है, वह कियने दूरतर कारत गिरात है, उठने दूरने प्राची केरी कहती कही है; उस केरीज़ से का किया करते हैं, उसे "राज्यके" मानव "राज्यकर्ग का करते हैं।

स्ता है, जाना दर्जन न हुआ हो हो भी प्रमुख सेवार कर सुरवार उससे जेम करने समाते हैं। जिस्ता, क्रिक्कीन, पुर और सरकारी अञ्चल करन्तुन करनेको क्या वर्णको न पाननेको हरावारी प्रमुखोको जानु करनेको क्या हाले कर्मकी क्रिकोन, वर्णको नर्वकारो पहु करनेको क्या हाले कर्मकी क्रिकोन सम्बद्ध स्वानेकारे हैं, वे हर सोकने अञ्चल होते और नरनेके बाद प्रस्तानें क्यो हैं। सब ज्यानको सुख स्थानोते होन है पद सो क्योक्स स्थानक हुए हो। सो सोक्सीन, सावनाई, अभिक्येकी हैंसा न करनेकान, सेक्ट्रीनो सीत और क्यान्य है, सा प्रकार स्था है। सो वर्णकी होती है। को प्रमुख हेले क्यान स्था है, सो क्यांन्य स्थान स्था स्था है असूत एवं क्यान स्था है, सो क्यांन्य सी कार होती।

प्रतिकृत प्रमानकृति (अन्त्रीत कृतीकृती एक पेरा पहले) पालका धर्म और अधिक विकास विकास परे। निव कुमाने उठकर क्रीय-सामके महत्त्व अञ्चलकार्यक केले प्रथा कोडे हर जल-करणको संबंध करे। हको जकत प्राचेकारने को की केवर संकोगायक करने पाहिले। शहर, असा, प्रमुख और चन्यद्वादे प्रचय कुर्वनी और कार्य क्षी म इसे । कामें भी अस्ती पक्षाई न देशे । व्यक्तिन प्रतिदिन संब्योकसन करनेते हो दोवंतीको हर है। जब: क्रिक-मक्त्रों के प्रथम प्रमाणका और सर्वकारको संख्य अवस्य घरनी चाहिये। यो हिम देनों सम्बद्धी संबद्ध यहि बातो, उनमे वार्तिक राजा क्रांग्रेक कम्म कराने ( किसी भी , क्ष्मी प्राची काची बीते संसर्ग की करन करिये। परवर्गिनेकाले क्युक्तार्थ जान आहे है राज्या है असे है। इसके समाय आप रह कारनेकारत संस्तात्वे कृतन कोई कार्य मही है। क्रियोक्ट प्रशिप्त क्रियो केम्ब्यूप क्रेसे हैं, अने ही इवार क्वोंतक व्यक्तिकरी प्रक्रोको नत्क्रते क्वान प्रकृत है।

केलोको सैकारकं, आंकोने अंकन सम्बन्ध, बीत-बुंह कोना और देवतालांको पूजा करना—ने तब कार्य किन्छे पहले प्रश्ने ही कार्य साधित। जल-कुम्बरी ओर व देखे, कारपर कार्य मेर व रखे। आरमण समेरे, केप्युरको और स्वयंत्रालमें कहीं बहार न कार। न से अपरिधित पुरुकोके स्वयं भाग करे, व पुरुके साथ और न अनेत्ये ही। प्रकार, गाम, पान, वृद्ध, गर्थिकी की, पूर्वत्व और क्षेत्र किन्छे हुए सनुष्य वहि सामन्ते आसे ही से अपने किन्सरे हरकर कई पानेका मार्ग देना कार्योने। पानेने करने समाप परिधान कृती ; और सभी भौराहोको साहिनी और होतृना कार्याने।

अक्टब्स्टर, क्रावंकार, क्या<u>ब</u>, रात और विशेषक कार्य करके करन कभी कोरहोंगर न खे । सारोके खोने हर नक और जो न कारे। सक्त अक्रमचंद्रा प्रतन्त करे। पैरपर पैर न । हो । होनी ही बहुरेकी अमानावा, चैकारती, कहाँकी और अपूर्ण क्रिकेस सी-सम्बद्ध न प्रतेत स्वरोधी किया, पहलारी और पुणली न बारे । किसीके पर्यंतर आसात न करे । कुरमान्दी कुछ न केले । औरतेको नीमा न दिवाने । विस्तिक न्यानेसे कूरनेको जोन केम के, यह रूपमंद्रे भरी हो नात कारकेको से कोकारी होती है; जो कभी मुंहो र रिकारो । प्रकारको क्रम नेको निकारों है, किन्छी चोट सरका सहस का-दिन कोको पह पूर्वा है। यह: किनो दूररे ज्युनके कर्मन अस्ता रूपा है, विद्वार पुरुषो हेरे क्योपा प्रयोग को बारण कारिये । बार्गामे विचा हुआ और फराँगी बार कुल का पुर: अपूर्णि हो बारा है; लिख् पूर्ववरतनी काले किया हुआ भर्तवर क्षत्र साथे वहीं बरात । साथि, करीबा और कराय-न्ये पहि प्रगीरमें रूप वर्ष से निकारे क्ष राज्यों है. विश्व प्रकारको प्रतिका निकास साम असम्बद है। यह तथ अपनी परम्पता पान है। क्रीयह (अंके-सार्व आहे), अधिकास (स्रोप्त आहे), अच्छ, निर्मित, कुरूर, क्यांक और अल्लाकाई महत्योवी दिल्ली नई अपने कार्यको । पार्विकासम्, केरोब्सी विकार, केरासाओंके प्रति अस्तिकार अवोद, हेर, स्टून्स्स और स्कोरस—क्ष्म हुर्गुलीका जार कर केन कार्रिये । सोको सामर का मा विल्क्ये दिला और विकास के बारवा अवना नवीनार गिराना जीवा नहीं है । हों, विकास किसे पूर और दिल्लाके संभाग देश प्राथमाना है। ब्रह्मणब्दी निकार्त हर हो। बर-वर क्यबर नका और विकेत म प्रकार को । इस तक निवसीका पारत परनेसे वनुष्यकी अस्य नहीं हरिया होती ।

वार-भूग श्वामने और राज्य कानेके यह एका सामाय और कोजाके काले पैर को लेने काहिने । विस्तर किसीकी कृषा कृषि र वही हो, जो जानसे कोचा गया हो तक किसाकी काह्या जानेक करते हो—ने ही तीन वस्तु है कहाउसीने आहाकोके जाकेको लाने कोचा और प्रतित काह्यो हैं मुहत्व पूजा विशेष अधिकोठ करे; संन्यासिकोको विश्वा है और जैन काहर निस्त ही राज्याकर करे । सकी सोकर उठनेके वाद पहले काह-निक्त है राज्याकर करे । सकी सोकर उठनेके वाद पहले काह-निक्त है सामाय करे । सुवीदन होनाक कामी न संबेद, वही किसी हिन हैसा हो जान हो सम्बद्धित करे । सम्बद्धित करे । सम्बद्धित करहाका होता निर्मा काम करे । इस्त्यानिक करहाका ही स्थानकार करे, किंदु पत्रित हिन करे भी है प्रान्त्रका स्थल को। एककार किने किन केरकारेकी एका न करे और केवरका निजे किया पूर, दुद्ध, व्यक्ति क्रांड विद्यान् पुरुषको कोक्सन सुरते किसीचे पास न पान ।

श्रीकार प्रमुख प्रतिस स्रोधने पुरू र देखे । चर्चिनी प्रतिह कार सम्बन्ध न वहें क्या जार और पहिल्ली और रिकान करने न सोने; केनार पूर्व अवना प्रीकृत विद्वारी और ही किर करने सोना स्थान है। हो और सेले सारक भी केन करेंगे। तेरेगे को हो एकम के क्या एक करन क्षीत नहीं है (कारण करके को अन्तर्भ क्या देश हैन कारिये । इसी क्या कांग्यर कार्य की विकार केवल करें, कार र्जीये ही सोना पाहिले । पाहिल्ला कर्मानेके साथ साथ पहिल्ल भी र पान: सन्दे पान कोई प्रीका भी र मरे। अस्तरको पैरते प्रतिकार न पैते । याची भी तथा क्षेत्रम् अस्ता सामे र महान । प्रान्ते प्राप्त सन्दे अहोते (का अवीत्रो) नवीत्र म कराने । बाल विके किया करान न राजाने । यह रेलेकर चीते बार म पारको और भीने सबसे सभी र पार्ट । मोनी पर्दे स मालको न कीरे, जो करोड़े कर न फरे कर रक्तात बोधे साथ क्यी मारचीर र करे। मोधे पूर् गोर्गी, मीजी अवस्थात राज परीचे पानी मार-प्राच्या साथ पति परस पादिने। योगा सरोकात स्थूप पूर्व की का कार्य शासका गरे, दिन गोसको पहल्य भी तीन आकान करते हो बार है। मोने । यह पूर्वकी और है। करके मैंन होकर परेवन करना पाहिले । वरोते हुए असावी निष्या नहीं करनी पाहिले । भोजनो पहल मन्त्री ना अधिया पाल काम प्रार्थने । यो परण को विकासी और के बारोड केवर करना है को सेवरिय. मो इंदिलकी और हुँद्र करने तरा प्राप्त करता है को पत्र. ये परिवारी और मूल अनेंद्र जेला कथा है को पन और प्रे मार्गिक्त केवर पंचा कथा है को सकते और केवी है । अतिका रचनं करके काले राजूनं इतिकोका, सार अपूर्णका, वारिका और केरी क्षेत्रिकोचा कर्ता करे । पूर्वा, पान, पान और मुर्नेकी परेच्यी आहेता सभी न देते । क्रानेक पहले हर कारका इस्ते है परिवास कर है। क्रांचि, होन और कार्योक रिय का करें। बैठकर ही पोकर करे: कान्ये-फिस्से कार्य जी योगान करना पातिये । पाता होका वेकाल व करे । पाताने और गोजात्वमें भी मूल-स्थल न को १ भीने के बोधन के करे. वर्ष प्रकार न को । पीने पैर खेवन करनेकाल करक सौ क्वीक्स सीवन करन करत है। योगन करके हक देह कोने निक यान अंध्रा (अयोग) शुरू है, ऐसे अवस्था को अहि, में सब अक्रम-इन क्षेत्र देवक्रिकेक उन्हें की परण

सान है। सह प्रमाणन सुबार (हिन्में) जातारी और बुंह करते । कहिने (इस अवार कारण सरनेहे आयुक्त जार की होता । जीवार पुरानको पूर्व, प्रयास और नवान-पुर विधिय हेवोंकी और कभी भी। जी भारती पाहिले । यह पुरुषोर्क मानेसर कुछ। पुरुषो अन्य अन्यस्त्री और अने सम्बो है, देखें कार्य का का ताल होता कहा परनोद्धा सामा और जो जनन करार है से ने अब पुन: पूर्वकरवाने का पत्ते हैं। इसरियो कर कोई यह पूजा अपने पात आने हो जो प्रचान पानों बैठनेको अधार है और कर्न क्रम जेवार जानी केंग्रने अस्तित हो। किर कर बहु करे हमें से साथे बैठे-बैठे कुछ कुराव कर ।

करे हुए उपक्रमार न मेरे । कुटी व्हें करियोकी कार्यको कारों न है। इस है यह (केवर केंद्रे) पहल्क केवर र क्षी, क्षाप्ती प्रमुक्त भी तिले हो । मेरे प्रधा प्राप्त और होप कारी क्षेत्र को है। जीवह सरकारों भी प्रका शतक निर्देश है। की प्रकार नामका नाई न करें; क्योंकि प्रकार me milit menter fem fie fleit mit verper भीकर और स्थापन क्रम करने भीते हैं। केरे क्रम कारण असे अपने हिए व कुमानों ( महिना प्रसासन क्ये र क्रो । प्रा क्योर फारसे स्ट्रामी सन् क्षेत्र स्ट्री and a flower has remarks may such greats work analysis रवर्ष नहीं करना काहिये और किरके को हुए कहने नहीं करने कारेने-हेक करते अनुका तक की होता। की क्रि प्राप्त-पहला संस्थित स्थित गाँ है और पनि हरीचित हमा पने का के कार्ने की सामानका विकार नहीं करना कहिने ह प्राचीन प्रतिकारों का स्थान होने पूर विकास प्रस्तवारी गांची हु। कर कुरू कर है। (करक को है—) 'से मूल केंद्र मेंद्र प्राप्तर केंद्रम और प्रमुखन क्रम्म है, में अन्तर्थ आहे. पर कर केर है और समग्री संजनीकों को जाने और ऐसा है। को द्वीर मोक्राय अल्लाको समय की अल्लान करता है. प्राचीत विकास प्राच्या और व्यापुर्वन पहले हैं। पान है। 'अपन क्षानका पुरुषके निर्देश समाने काली समावत नहीं करना maint a

के वर्व, जीत, में का अध्यानिक और मूंह माने-वेक्स करते हैं और बीच एकोर्ने का-साथ करते हैं, वे सब नक्षण के बारे हैं। यह और काव्य जान दिनों जाराधितक और तथी क्रील्वरियुक्त होवा करोते आवळ यक गाँ केवा । वित्ते क्षेत्रेकाराज्य प्रतिक राजेकी प्रथम हो, यह क्रकाय, क्रमिय और सर्थ--इन सीमोको क्रमेंस होनेवर की न केंद्रे: क्लींड ने सभी नहें न्यारेंत्रे होते हैं। स्रोपने परा pas refer regions artisted than was it, majorer over क्रमें: कारण है। इसिय की कृतित होनेवर अपनी एकियर

प्रमुखे पर करवें केंद्र करते हैं: वितृ काम कर हुन् होता है तो यह अन्ती होंद्र और प्रध्यानो कारण करनेको पुरुषे सन्तर्ग पुरुषो क्या यह कराज है। उसीनो क्रमहरूर बनुवादी कार्युर्वेड इसकी सेवा करने व्यक्ति ( गुर्के कर कर्ष हर को सरक करेने । यह यह अज़र हों हो उन्हें का प्रदाने पान केवर प्रकार अंतर करनेकी बेहा करनी पार्विने । गुरु प्रतिकार कर्मन करने ही हो भी उनके प्रति अच्छा से पानि करन प्रीका है। प्राप्ते प्रनिद्ध के लेक भारी कि मानकी किया प्रत्यांची करण पर पर देती है।

क्रमण हित महत्रेनसम्ब समुख करते कु पादन केरल बारे, पूर क्षेत्र के बोचे और पूर्वत क्षेत्र के के विकास पुरुषके एका पुन्तेको पहि, क्षेत्र पुन्तेको स्थात कारण कार्य माहिते; जिल्ह सामान और कुम्बान्य रचना हो से भी उनी मारण करनेमें कोई को नहीं है। साल रेपके पुरु कक रूप प्रकार मतकार कारा काथ कांग्रेने । क्रेनेको मात कनो नो नार्यमे अञ्चल की होती। कार्यक ब्यान् क्यूकार्य अस्ते प्रतास रीत पन रूप प्रति। पन्नेरे वर्ष अस्त-नेत स्त्री काथ कांग्रेने । कुलेक स्त्रों कु कर्या व चारे । विकासी कोर कह गरी है, काली भी न करना को । बोले सम्मन्त्रे रिम्ने दुरस्य, स्वक्तीनर मूम्लेके रिम्ने पुरस्य और विमारतीकी पुरानेद तियों भी पूरता ही पक रहता कर्कने : Brag, wer, flow, trit mir finit mil graften महार्ट स्थीरने राजाने पाहिले । यहर पान्ये परिता के पात एवं अनुवर्णाने विश्ववित होबर क्रमान करे। सभी जांकि Mire agreeder west their success & : Realth was इंब पार्ने चेवन करन निर्देश है। निरायो सरकार प्रोपे क दिया है जहां विकासि सार विकास दिया पर हो, ऐसे अवस्थे करावि प्रकृत न सर्वे । को रुएकी सुई दुविने अस्त्री और देख रहा हो, जो दिने दिना चेकन करना जीवा नहीं है। कृतिकार पुरुषको चाहिने कि बिजरी अधिक संपूर्क के विकास शक्य सारकोंके सामने बैठकर केवन न को । वर्गकाकों मिनका निर्मेग किया गांव है, ऐसे अवको क्रिकाल को व कार । अपना करपान पार्टनारों केंद्र प्राप्त केंद्र, बहु और पूरशके परस्का क्या सम्बंध सम्बद्ध सेवन नहीं करना व्यक्ति । विद्वार् प्रमुख प्रकृति स्थल शेवल २ वर्धे । १८०३ 📗 शामको ही जोजन करे, जीवने कुछ भी साल जीवर नहीं है। बारकाके साथ एक बारवेंने केवन करना निर्देश है। प्रकृति बादमें क्यों शत जान न करे। बोकन्द्रे सन्न और खन

कार, सक्र क्या, यहर कार्य वर्षेत्रस रहका सात और केलो कुछ निरिद्ध कर कर है। यहरे अतिरिक्षे तात और बाद देवर पीछे कर्न एकाविकारे घोषण बारव व्यक्ति । एक प्रोट्टमें बैठनेस्र समग्रे सम्बर फेक्ट करत प्रोक्ष है। के अन्ये कुल्क्केको महेकर अकेला ही केवन mage & Terrer and prompts Rooks Treats &: 1844-बारने (का रूप क्षेत्र का चौ ? इस प्रकारकी) स्तूत वर्ष करने करेने उस केनले अपने की नहीं (म्हा) ther maled a release merbile same merene mede fig all the और एक प्राप्त करिने वैनके कैनकेन पानी क्षेत्र से । विस करने और, का कार्ड प्रोक्तों और फरिका रखीं करने केरी प्राथित क्षेत्रियको को आहे। क्षेत्रिय पहला मेरी क्रम नेकर क्रे र बैद कार (स्त्रों कारहोती पोक्रकर सुरक्त है) : र्राप्तेका पुरस्कार बहातीयं बहारका है, अङ्गरियोका जनकर देवतीयों है असे अपूर्व और अमेरीके राजकर सार विकारित पाना पाना है साञ्चार्यन साहि वैतास कार्र कार-विकिद्ध अनुसार राज विकासियों हो कार्य कार्रिये ।

कारी पार्च प्रात्मिको एकको इस्तोको निन्द्र सभा अर्थन करन पुर्छ पूर्व निकारने पाहिले, विस्तियो स्रोप चूर्व विकास कार्युचे एक चीक स्मृत्योधे तथ कार्यासकार्य प्रकार नहीं रक्तांचे प्राथित । प्रतिक्षेत्र को वर्धन और क्रानिक थी क्षेत्रका कर देख जीका है। देख करनेने बहुकावी जानु कार्य है। प्रामित काम और कुम्बर का केश्वाने संसर्ग प करे। अपने पानिक रूपन भी दिनमें प्रया प्रमुखानी अभिनेक सरकारे प्रकारत र पारे र प्रात्ते आयुक्ते पृद्धि होती है। अन्तर-अन्तरे प्रीचीरे आकार करके कर्ण आरम को और काले पूर्व क्रेनेके पहाल पूरा और बार कावान काले. वे का कुँ के ने-इस्ते क्यूब चुढ़ हे सात है। क्ये के-जीवक अभीर प्रशिक्षक एक पार पार्श भारते और भार अपने कुछ कर विकास: इसके कह बेलेक विकास अनुसार देशका और निवृत्ता करण काहिये।

अन, प्राक्तको प्रियो भोधको आहि और असमें यो चीक एवं विकास प्रश्निक निवार है, को बात रहा है, क्षते—अञ्चलको क्षतेल सुद्धिके कार्गने सामानिकी व्यापन करना चाहिते । कुछने और छीवानेके बाद सामधन बही और तत् न स्थल । सम्बन्धनीके साथ केवल एकेरे और । यहनेके प्रधान परित्र क्रेस है। पूछे कुटुकी और प्रश्चि विकास अपने करण असल केन पानिने; इससे कर और कानुसी मृद्धि होती है। गरेख, सेक और केव आदि पहिलोका करने क्षान अञ्चलकारी को स्थानक है। से तैलवाकिय और मासरपर बैठना जीवा है; उस सरप एक क्या करण ्यांश्रवेची चीति अगहरू करवेगले जा हेते। अहेका,

भूत, करोत (पंपाने कक्षार) उसा कर करक पड़ी पहिचार्य कार्य मा पाने से पानित कराने पानिक कर्नीक के मानास्था है। होते हैं। पहला अंग्रेस निवासे की परवादा समझ्यान होता है। मानव पुरसेंचे गुर का क्यो किसीवर की काद जी करे कारिये। पराची स्थित इंग्रामंत्री एवं कर्त स्था प्राहिते; इसके केर्नपुर्व अप्ति हैती है। अपने अर्थ प्रकृतिको पुर्देशका prod the \$ for surely per engagement more करने और सके व्यक्तिकंड हुए एको क्ले निकट हो। (सार्वकाओं केवृतिके प्रमात) और तेना, पाना और केवन बार्स निविद्ध करा पर्या है। इर का कार्रेस काल कार्रेस महान क्षेत्रीची होता है। अस्त मानाम प्रत्नेकारेके हैंको कर्म बाद करन, कुछ और प्रदू काल कर है। चेकाके मान् वेद्योको सेवारम सरका गाँ है। निर्देश स्वाबीद हिसा और किरमी पाने-पोनंबों कहाई है, उसका अंध्रेश महतने हेकर भेरे । पराच्याने एका दृश्य परा चेते । प्रतिके समय परा सामा भोगम म को । भीइनोसी हैसारी कु थे । उसन पुराने कहा और भेग अवस्थानों कहा हुई सुरक्षण सम्बर्ध साथ दिया। भीते । जानीः पानीते प्रांतान आरात बार्गाः संकारतानकाती पात करे aft per das gererful finge with their gains flage. पूर्ण सारानी केन है। काम काम क्रेमेल कुर्फर कुर श्रीकृतम् वर्णः साथ अन्त्रा साहात्वाचे । कृत्या विका सी ताल कुराओं अन्यके प्राप करें और पूछ भी अन्ते कुलो कुलोचे प्री भारते । महाकारते पान वार्यः देशकार्य क्रम्य निकार्य को । निया पहले अस्य कर हुआ हे जाने तातु कार करिए है। पूर्व और अंगर नात्रका तथा प्रतिका सहको थी कार्यका है। है। है। (सारोप, कर्ज, मेक्स और पूर साहि) कर्ज़र्न क्रमा भवाने और असीरे अस्तात भी परिवार कर देव करीते। कर्रक का कि जीतिन करको बीवर विश्ननीत स्वकोर्वे साञ्चार निर्मेण विका गण है, उन राजने देववार्ग और विकास भी करन समित हो या सामग्री और के बन्धे (कार करवारी भारिने—हाले सामृत्री पृद्धि हैत हैत हैत परंच अवर्ग पताना गया है, इस्तीरचे पुरसेको और अवन्ते को निवा माँ पानी पाति ।

के रूप विसी अपने देन हे अवस के अधिक उत्तर-कारी हो, विराधि नोत और अबर अबने ही सरका ही कहा से भागों पुराने तथा हुई है, जाने तान निव्यु वह वाल

हो. विवादे प्रवेतक है। बीना हो एक के पुरुषेत्रकारे हो, कार्क कर के विवाह करन निरंद है। विवाह करने क्रिकेंग्रे विरुपे, प्रचेद क्षेत्र क्या क्याक्य (स्वेतिक) को बीजरों हो, मा सम्ब में स्थाने केन भी गरी नहीं है। में सुरक्षण, क्या आवरणवारी और देखांने क्यारी हो, क्योंके क्या प्रकार करन जीवा है। जनके के या काम कुरते दिखा पराव व्यक्ति। जन्मे कावानी एक स्तर्वको कुन्छे वेर व्यक्ति हो चीन क्याचा चौरक्त कही। भी संस् करिये । स्वीतको स्थापना चारके प्रमानकेक्षण अक्रमी को समूची नेप्रिकेट विकासिक व्यक्ति अञ्चल करण परिचेत रिकारे हेर्न एक जीवाची है। इसेट स्थाने असे बीची यह करने करेंगे । हंगां करके अन्य क्षेत्र केरी हैं, इस्तीओ भी कार केंग्र के जीवर है। जारे, क्वीकर्त प्रत्य और हिस्से मोनेने अनुसा का होना है। उन्हें तीन राजी अवस्थि होन्छ भी को। परावेशे व्यक्तियार करण और कुलाल प्रत्याकर किए सकते पहल की अनुस्ति हाने बारीबार है। अनीवास्त्रको वेदान्यसम्ब प्राकृति प्राप्त प्रते। र्वन्यवस्थाने पान, चेन्स्य और अध्यक्त स्वीति है। उस स्वय स्वापित केवा त्यार सार्वेद किया और बोर्ड कार र प्रदेश मानुष्येको पूर्वा, हेन्याचीको प्रत्यक्त और प्रवासीको अन्तर क्ष्मके बाद ही करने पाहिले । विकास करने बाही की पहल औरत will be they was brooks their they become in such with हमें नहीं है। नहीं सरका सरहा न होता हो नहीं करेती सरकार न्य होना है। अपेको पर्वात पान और पानो पान पाना प्राप है। बाँदे किसी कारणे दिनों सहार कार हो संबंध होनेके कार्र हो क और सामा पाहिले । पास- विका और पुरावचेंची अहामहा जीवन्य कार कार कांग्रे । इसमें जात है के महिन्दा, इसके कियर औं करन पहिने ।

। प्रतिकारे केंद्र और स्कृतिको अन्यासका प्रत करन व्यक्ति एक इन्से-बोईसी संबर्ध और सर इक्सेन्स्रे कार्य रिकृत्य का कर्त महिने । प्रत्यू । कुर एक स्त्रेती को जो: क्योंकि क्योंकी पहला है। सुबंध और अधिकील होता है। च्या, पूरा और समय भी समय भएनम की कर समये। से का का अवसी पाने केना कर है, को करी होरे औ मानी पाने । इन प्रवेतास और प्रमानंत्र (स्वाहरू) स्व सम्बद्ध करे । संबंध और स्थान कावलेक कर कर करे । कार्युने । विश्तके कुरम्बर एक न हो, को चीव कुलने बैक हुई | कुई प्रतिक्षित पुरान, इतिहास, उत्पासकार कक्ष बहुसकारोंके

<sup>्.</sup> मानो क्या-प्रकारो वर्तका दिनके सकारक मिने, निर्माण मिकने संकल हो उसमें कैंक पान है, और पॉप देन दो से उस दिनके 'नक्त्रचे 'प्रस्की तम' अस्ते ।

करण-जेरक करें। कोटे प्रकृषेका की कर्कार है कि से कहे वर्ताको जनान करें, उनकी असकों को और अनुंको किया सरकार उनके सारकों जीकर कर्ताक करें। कार-क्षित्र केवल करीरको उरसा करते हैं. किंदु अवकारिक अर्थकारे के सम्बद्ध करीन कीवन जात होता है, कह सार, अकर और अन्तर है। वहीं वर्तानकों जाताके क्यान समझक कर्ताकों हरने तरह को प्रसंबंधी की क्या मनकारों हुए विस्तानकार्त कार भी सारकों ही समान है।

नुष्यिको पूर्ण-निवास । सभी वर्णीय और मोखा स्थानिक स्थान में उपवासमें पर सम्बर्ध है सिंदू हराया स्थान स्थानों नहीं जाता । यूना पान है कि सहाम और स्थानोंनी निवासिक प्रमान स्थान साहिते, पांचू उपवास साम प्रमान कार कृता पार्थ हों समूर्य निवास और उपवासी विधि साहिते । उपवास सार्थकारे प्रमुख्यों क्या मीर निवासी है, इसका भी पार्थ स्थानिके । सहते है उपवास स्थान पांचू पूर्ण है और उपवास सालों प्रमुख्यों क्या साला प्रमुख्य है कि उपवास साले प्रमुख्यों क्या

भेगभेरे सह—चीनीत । कारण कारेने से उत्तर पूर्व है, जो बारनेके देखे विकार का साथ पूर्व पूर्व पूर्व का First \$ price store 40 vil unformed you would achiev मुनिके जब किया था। मेरा प्रक पुरुष्ठर असेरण्युर असेरणी क्र अवस कर देन-'क्रक्त्य । साहब और अरिकी रियो तीन रहा करवान करवेगा विकास है। वही-वहीं क का और एक पाने जनकार को सर्वक जिल्हा है। वर्गकार्यक प्राप्तानंत्री केला और कांग्रेड विन्हे राज्यार कर Will staffe ib Redier wenne mener & e male find alle राज्ये कामाना विश्वास नहीं है। यदि महत्व पहली, सही air gliteit for arch un air plusied ungi रसका जनात अवन कर कर चेका को है हर क्षणाल्या, सम्बद्धाः और विद्यान क्षेत्रा क्षेत्र क्षणे क्षणानीत और रहित होनेका अवस्त नहीं सारत । को पूरत शहके क्या कृत्य पक्षाची प्रमुक्तियों जनवार करता है, यह अंकेर और मारकन् होता है। यो प्रतिकृत समेरे और प्रारकों ही योकर बारार है, बोधने बारावक नहीं कीत रूपा राज अधिरातकार । क्रेकर निरम अधिकोत करका है, जरे कु: क्योंने स्टिट्स कर हे बारी है तक व्या अधिक्षेत्र प्राप्ता परत प्राप्त प्रस्त है—इसमें तरिक की संक्षित्री कर जो है। को जो, कहा हिए संबंधेने जह हुए है। कुनीनवह । जहीं अद्वितकी

निकास मेठका स्थानेको काल और वहाँ एक हमार वर्गीयक सम्बारकृषेक निवास करता है। फिर पुरुष क्रील हेरेकर इस सोचार्ग अस्मार भारतपूर्ण काल जाह करता है और से पुरूष को एक करेगड़ अतिकृत एक कर प्रोपन करता है जा अंदिया जाने कराओं जर केता है उन्ह पर क्यार वर्षकड वर्गने रहता है किर बड़ीरे खेंडरेकर महस्त्रकर्त कार प्राप्त करना है। यो एक कांग्रस के-के विरुग्त भोकर क्लोर पान है एक साथ है अहिल, इस और हिम्मिक्त पान क्या है, को सर्वन पहल पा िलमा है और यह पत हमार नवींगढ एनोरोक्टर हम्मान त्रवा करण है। को एक साराव्य क्षेत्र-क्षेत्र विशेष्य क्ष्म भाग करना है, यह समानेत पहले परस्का बारी होता है और विकास कार्य से समेरे बास्त सार्थत हुआ क्वींक्स करना चेन्या है। यो बहुत बार हिरोज बोबर कार इस एक क्रिक बीवन बाल बाला है, को प्रकार कार कर केरण है एक जा कार हमा क्येंटर स्टॉर कुछ भोजा है। यो एक-एक पहला उनका करके क्रोप क्ता क्रम है, अनो क प्रमाद अपन प्रतेष का निराम है और यह साथ प्रमान करिया करने निराम प्रमान है। को एक जर्मका अधिकार एक कर करा केवर द्वारा है, all Popling worm wer forms & ally my man poor क्षीत्र प्राप्ति सम्बद्धा समुक्त कार है। एक व्हरिके अधिकार अन्यत विश्वीचे भी काल प्रतिते। यो विश्व वेक स्थापिक सरकार ता कारा है, को पर-सारा पहला कार विकास है—इसमें सरिवर की ओड़ नहीं है। ऐसा पुकर दिल विकास बैठकर कार्नि क्या और वहाँ एक साम् क्वींक करन केवा है। इसी सबस देवी गुरू थे भी रूपन करन है से यह एक साथ पर्वतिक पुरस्तानक क्षानी रिकार क्षान है। वेको पहकर कोई प्राप्त नहीं है, मानो प्रमान कोई पुर नहीं है, वर्गने महन्तर कोई स्वय क्या करवालो सम्बद्ध सोई का नहीं है। इस लोक और रमनेको की प्रक्रमारे कहार कोई राज्य की है करी ज्ञार रूपमान्द्रे साम कोई वर भी है। देवस्कोरे विभिन्न रूपात करेंद्र है को उस्तु किया है स्त्रु व्यक्तिको भी रुपमालो हो रुपम सिद्धि आह हाँ है। परम वृद्धिकर विक्रानिको एक इसर दिन करोत्स प्रतिक्रित एक का चेवन करते पुरासा यह बारे हुए करों हते हो, इसमें ज्ये अक्रमानको आहे। हुई । व्यवन, क्रांकृति, करियु, बीवन और पुतु—ने सभी क्षमानन् व्यक्ति अस्तान करते हैं।

कारायों हुई इस राज्यस्थानमें विकित्ते को प्रतिदेश समाहः | उसके कारण कार्य केवेंच्या प्रयान नहीं पहल । इसका है पाल और सुवार है, यह पुरुष्क कर का है कार है। जों, यह यह व्यक्तियों केरी प्रकार राज्य है और मा राज प्रकारके संबंधिन पानोरो कुम्बारक मा पाना है क्या | संरक्षणे काम्बी माजून मोर्सि फैरा मानी है।

#### दरियोंके लिये यज्ञतुस्य फल देनेवाले उपवास-अतका उपदेश और मानस तथा पार्चिव तीर्चकी महता

कृष्णिसरे <del>गाउँ - विकास</del> । एका और कालुकारेचे पास करनी पाने नहीं होती। ये एकावी और सरकृत की नहीं हुँचे, अतः उनके हुन्य को को-को नहोंका अनुहार होना सम्बद्ध है। जिल्ला संबर्धन, निर्देश, मुख्यानी और अस्ताहन महत्व की का की का सकते। इसीले जिस कर्मक शाहरण प्रतिकृति सिन्ते भी कृतम कथा यहे-यहे पहलेक हत्या पार केरेकार हो, जानेक करेर क्रीडिने ।

र्मनकी का-प्रोमीत । अहिए पुरिको कारको हाँ को उन्तासकी मैनि है, का कांक्रे सकत है कर bienet f. men er: mir mar f. geb-ab ger अविभागतामा है जिस अधिकेतार सम्बाग करते हर अतिहर अञ्चलका और वार्यकारणे ही केवल कारत है. क्षेत्रमें प्रारम्भावत वहीं कारत, अरे कु: क्योंने क्षेत्री प्रार्थ है बार्ट है और वह अधिक रूपन रेजारी प्रकानीकोवारे एक पर पर्नेटक नियास करता है। के एकपाई-उपका पालन कर्या हुए मिरन्त कीर क्वीडक अधिक एक स्तर भोगन भागो जात है, जो अधिक्रेन जानक जान तहा होता 🕯 । को निरम जातिने क्षेत्र करका दूसर एक कर्मतक और दूसरे मिन एक बार चोवन करता है कहा तक सभी रहक और आधिको कर्वने एक एक है, या भी अधिकेन कर्व है भागका भागी होया है। यो बाब्द बहुँगोलक होरे सेवले हैं। एक राया योगन करता, निता समेरे कहा और अधिकोत मित्रं करक है, को अधिराम पाणका जान कर जार केय ी हमा का पान दीन पर क्योंक्ट सर्वतंत्रको निवास करता है। को आधिकपूर्वक करद व्यक्तिक और की की दिए एक बार शाम प्रकृत करता है, यह सामनेत पहाडे उत्तन करनाइ मानी होता है तथा का इन्हरेसने सक्ता प्रक केन्द्रकारे क्रीहरतेको देशा करता है। सन्द्र बहेबेटक और पीर्व हिर एक कृत्य घोषण करके निक्र अधिकोत करनेताल, में प्रांत, सरकारे, सहायक्ता, अहिराह, ईवर्वकीर और पानकारी हर जानेकरा प्रका बदाबर नक्या कर प्रता

करत है इस यह इस्तापन पत्र पर्वोत्तव प्रमानेको सुक्र चेनक है। के और इसे दिन एक पढ़ चेवन करके कहा पहिलाह केरणको अधिकार अनुस् करत, होते काम पहल, सहायनंत्रा पाल काम और वितरिय केबोबर को भी कारत है, यह पहल है पराच्या (महत्त्वह), अहरत का, एक प्रकार क्षेत्र को कारोड़ और प्रकार अनुस परीत्रक क्या की रीक्षेत्रेत करवाँनी किया केर्र क्षेत्र है जाने क्वीतक प्रात्तेको क्रमानिक क्षेत्र है। यो एक क्षेत्रक और सार्थ हिए एक समय कोवन करता, विस्थ अधिकोत्र करता, वालीको िकारो रकाम और प्रकृतिका पहला करता है, यह उस्तेवक क्वीका देवकाने और प्रमुख गोलारे निकार करता है एक the said said world when it said it, said पालक का करी होना है। यो और साठवें देन एस कह नेवर कर्म मन्द्र व्हरिनेत्व इक्ट्रॉल, देवकर्पराच्या और अधिकोधी क्षेत्रक कीवन सातीत करता है, उसे पुरवसीक न्याच्या प्रानीवेद करण प्राप्त होता है। यो प्राप्त नवे दिन एवा सकत तात प्राप्त करके वर्गकर निवा साधिकारक अनुसूत्र करता है, को पूर्व कुरू अकृतिक स्थान स्थान कहा होता है संबंध कर पुन्तिको राज्यन केलकोडे विकासर आस्त्र के स्वर्तको जनर पूर्व एक कार, ताल करेड़ और अहारह झार करिया सुरू केला है। से प्रति देशों कि एक सुरूद केवल कर्मा कह प्रत्योगक निक्त अतिने इतर करता है का स्क्रानेकाम निवासी क्षेत्र है, को एक इक्टर अधूरीक-दावक ज्ञान पान निराता है जात यह नीहे और एका प्रत्यको सम्बन् अनेको १कोरे सुक्षेपित नवस्थातर पूर्णनकर, सागाची सक्येके समान कार-विने हेनेन्यान, विशेक पनि-न्यासकीरी आरंख्या और प्रश्न-शामिके परिपूर्ण कियान प्राप्त करता है। जो कुल करा न्यांनोहरू तह न्यांको हैन योगन करते हुए अभिने प्राप्त करता है, यह और सामीने की परशीकी अधिकार को करत है। कार-निरादे हैंने भी क्रमी हर नों केवन है, वह विकास क्रिकान प्रस प्रतिकार चीवनवरिक्ता सक्त करना चाहिते। की अपनी चाहै । हुए करने विकास करना चाहिते। बुविहीस । इस प्रकार मैंने रक्तामा हो तो उसके पास न काम तथा हो। भी अपने निवार म सरको । चौचे हिर पन पह सार पर हे हो स्टीमें असे यस कव कहिने। पीनमें (सहस्रात्में दूसरे) दिन करिके क्स जानेरे कना के होती है और को (कारणांक) मिनरे) दिन वी-रक्षणत करकेरे पुरुष्क क्या होता है। विक्रम् पुरुषको इसी विभिन्ने पानिक स्था प्राप्तम् स्थान महिने । सम्बर्धन कम्, सम्बन्धे और निजेका रहा अहर Min जीना है। करनी प्रतिको अनुसार पढ़ फरके जाने नागा जनारको प्रवेशना हेन्द्रे नाहिने । सारकर, नाईकानी अवदि समार हे क्षेत्रर करावादे निववेक काम करे । यान काकाव अध्या है।

क्यों कारकी पाँड करनेकरे निकारक संक्षेपरे पर्कर किया है। को निका काफी के को है, को तम केके निकार स्थाननेते पुरस्तर कर तेना । सहस्तर ही सरक्रकडा करक और प्रतिस्थे कारनेकाल है, जारेरे आयुक्ती वृद्धि होती और जो क्रे स्थानोक जात करता है। सन्तर्ग जानातेने स्वाचन है के प्रमानक नक है। स्वाचको वर्ष क्या होता और वर्गीद प्रधानने आयुक्त मुद्दि होती है। पूर्वकारणे अक्रमीने कर कार्या क्रोचीत क्या करके पर क्रमेश क्रिय का का का, तार और वर्गकी प्राप्ति करानेकात उक्त

#### भाइयोंके पारस्परिक बर्ताव और उपवासके फलका वर्णन

पुण्डिले पुरा-निराम्ह । यहे नाईमा अस्ते होते । भारतीय राज और क्षेत्रे ज्यानीक को नहींद्र राज्य देखा कार्य होना चाहिये ? यह कार्यच्यी कुछ प्रदेशिये :

र्मनानी सह—केंद्र ! हर अपने पहलेंगे करते को हैं, अतः कोंग्रे अनुका ही कार्य करें । पुरुष्ट अपने दिक्को अंति मेंता नर्राय होता है मैता हो हुन्हें को अपने पहलोहेंह राम करना साहित्। गाँद एक अवका को उन्होंकर विकार प्राप्त न हो हो रिस्प पर होते नहीं जानी अहाते असीर भी सा सकते। बहेर क्षेत्रमी हेरेना होरे नहीं सी रीनेवर्ती होते है। यह पर्यको पर्याचे हैंद यह सरकारोह अनुसार अन्य, यह और निक्रम को अवदि पदि होते भारतीये कोई अपराय हो कर तो हते देखकर की न देखे. बारधर भी अञ्चल क्या थे और उन्हें ऐसी बात करें निससे उनकी अपराव चलेकी उन्हींत कू हो जान। महि क्या नर्त अवक्रकारो सम्प्रकार क्या है। है से असे रेक्षणंत्रो देशका जलनेकारे और पुर प्रश्लेकी प्रका रक्षनेवाले मिलले ही एक इनमें भरतीय पैक्ष करा की है। जेका मर्द है अभी राजी नीतिते चलको कारियोग कर्या और वही क्रमेरिका आक्षम सेका जो क्रिक्कोड कोने जार केत है। यह बंध पर्यक्ष निकर कोटा इसर, कई क अपने राजार कुराओं भीवर कर देश है। को बढ़ा केवर कोटे भारतीय राज कृतिनतावृत्तं कर्त्वं करता है, जा न से बहा क्यानने भोग्य है और न प्येतांस प्रनेता है अविकारी है. मेरे से एकारोबेट इस रूप मिलन पर्याने। कुछ करोबास बन्न दिसीके प्रस्पत खेळी (नरक) वे साह है। अस्ता क्य नेतरे कुरको परि निरर्वक है कम कहा। यह अपने छोटे प्रकृषोधी जीविकाको प्रकृष करते उसक

है। किए कुलों करी पूजा क्या हैना है आहे हिने का प्रमूची अपनीया पारम का बात है। शरी मूच्य प्राहती काक मन्द्रा और उसके स्वताना यह करता है। यह और पर्य की पानकार्थ रहते पूर्व हो से पेशक अन्यह का करेंद्र अधिकारी की है। और बहुबाँको उनका नानेन्द्र पान देने किया यह नाईको देशक सम्पतिका पान कोलने नहीं हेना पातिले । भीत पात नहीं देशक सन्तरी प्रकृतक हैंनों किया के उपने परिवारने वस फेट करें से का का करना सामा समिना है। इन्हें व हेनेतर पह सार्वेडे प्यान्त्रेको नहीं है स्वकार है। यदि प्यान्त्रेके हैसोका बैटनाव न इसा हो और साले साम-हो-साम स्थापत आहिते हात करवी अभी की हो, जर अवस्थाने की विलादे जीते-के तन करन क्षेत्र करें से रिताको क्षेत्र है कि यह प्रश कुलेको करावर-करावर केला है। बाह्य पाई सकत करन कानेकाव हो क कुछ, कोरेको समया अवधान नहीं शतक चाहैने । इसी एक सी अक्स होटे पर्छ परि को धारोपर कर में हैं में के पुरुष्के दिन रखते भी उनकी पराई हो, ज्हों काम करन काहिये। मध्य पुरस्तीका कहना है कि 'वर्ग ही कारणाच्या केंद्र स्वयंत्र है है औरवर्ग कर करणानेति कारत रूपालाचा, का रूपालाचीने स्थापन दिया और बार विकासोसे बहुबर पास है। बहुबंद बील्व समुखे पूर्णासे को बढ़ा है। अनके सम्बन्ध सारा बढ़ेई कुछ नहीं है। प्रताबह र्चरण समस्रे आंग्रह क्षेत्रेके पारण ही और। अनुसर विकेश जार करते हैं। विशासी यह से क्षेत्रर बडे पहुंच्ये ही निवाके राज्या एक्समा काहिते। यह वाईको अतिह है हि

रेकोर महोतनीके पात गान गामा और हमार अक्रोप [ महोका पार पारा है। उसके पार ह्यानीका केना हता विकार का: करिया विकासी केट है। जारिक बैटकर का मानेकरें बात है और वहाँ उत्तरक क्योंक्ट निवास करता प्रमा प्रतिदित देश-कृतकारीका कारणान् इंग्रामको प्रत्यान करता है। वे मनमन् जो निकामि एतंन की को है। वो बाद्य महिनेत्व प्रति बादाने दिन केवल के केवर बात है. को प्रार्थनेन पहला पार निरात है और पढ़ कुनीर सामा प्रधानका विकास केंद्रपर स्थानेको प्रतिक केन है। वर्ष को न्यी-वर्ध अहारिन्याओं पूज न्यून प्रत्न होते 🗓 में सामी रेम पर्रमाने इसमें नर-वरियोरी पर पहल है। इस प्रकार न्याप्यर सम्बद्ध गुरेने करवारक स्कृत कर mercent it i

पुनिक्षित । इन जनका-इन्हेंबर अनुक्रम करते हुन्दि म्मुमोने प्राच्य पान महा किया है। यो प्रमुख उपलब्धकीय वेक्स और प्राक्रणोको कुमले जेलम पहल है, उसे परन पहली प्राप्ति होती है। निकासीय, इस्त्यान, परित्र, पहुल्ला, क्ष्मकेश्रीके, विद्यासूचि, स्वान और वित स्वानकारे म्युनीके रेले के वह उपन्याची विके बहराओं है, इसने सुनै किसी प्रधारका संबेद्ध नहीं करना कार्युने ह

क्षितियों कह---रियान्य । जो सब सीवाँने सेबु हो सबा मही नामेरो परत सुद्धि हो नाती हो। जान्या कार्यन नार्धिको ।

चीनको सहा-चित्रहित ! इस प्रचलित जिल्ले होर्च है, है का मजीवी पुरानोह रिको मुख्यारों होते हैं; बीलू ३० सबसे को परश परित और प्रचार तीर्थ है जाना करेर वाला है. ware fien giert geb-flegel ficher grug aft. सरमान कर पर हुआ है तथा को समान, रेजीस पूर्व अस्तर सुन् है, का पानकारिकी सन् सामगुरूको अस्तर केवन कार करने कहिने। वास्पराचा क्रामान, काराना, सत्त, मुखा, अविसा, क्षरतावर जन्मव, इतिकांका और क्षतिक्यु—ने ही इस कामानीविक सेवाले प्राप्त होनेवाली परिवारके सक्षण है। जे काला, व्यांकार, इस और परिवाक सर्वेक स्थान करके विकास स्वेक्ट-निर्वाह करते है, में निवृद्ध अप:करणवाते पहला पुरूष संबंदरका है। विसर्को पुरिस्ने आंधारका तत्त्व भी नहीं है, यह राजहानी मेर कीर्य ब्याप्यात है। किन्दे पन्ते तथेगन, स्थोगन और सरक्तुम क् हो को है, को बाहरी परिवता-सपरिवताकर कार न हेवर अपने कार्यक (क्कानिकार) में पराचन खाते हैं, किये क्वांस्टें अन्ते हैं अलका होती है, को सर्वत, इन्यानी क्या चौचावारका वारान करनेकारे हैं, से संस पुरस है क्या परित्र क्षेत्रंकार है। अर्थन्त्रे केन्द्र पानीचे किये रेन्ड है राज नहें कहातन; सक बात से अंति किया है, को इन्द्रिकांकानों निकास है। निरोनेक पुरुष ही बहुद और चैक्के बुद्ध कर कर है। के जु हर किलोकी करना नहीं क्रमी, ब्यून हर व्यापीने क्यान नहीं रकते एक सिनके बनमें नोर्ज प्रथम केन के नाई होती, से हो नरम परिश्न है। इस कार्य प्राप्त है क्रांशक्षिक विकेत सामन है। इसी प्रवास अधिकारक और करावी सरावाद की प्रतित्यों सुद्ध कार्यकारी है। स्टीट कर प्रकारको ई—अध्यास्त्री, संश्लीह, संबंधिक और अन्यक्षीक करने अपने अस क्षेत्रेयानी सर्वित के राज्ये केंद्र वाली राजी है। जारावालिये प्रकृत करते व्यवस्थान परचे हुए से प्रति किया परा है, बड़े क्ष्मानियोक्त कार है : यो सह सौकायारसे समार, विश्वत कानो पुरा और प्रायुक्तिये विश्ववित है, यह व्यानको संक्ष पद है सम्बद्धाः पाहिते ।

का की प्राप्ति निवस सीचेवर मार्चन निवस, अहर पुर्वाके पुरूष क्षेत्रीका स्थान सुने-की शरीरके विशित्त मान प्रतिक कारताचे नवे है उसी प्रवास प्रकारित दिया-दिया क्षत्र भी परित्र होते हैं और बहुन्स कर पुल्काद कान गर्ने। ै। के लोग होगीका जान रेकर, होबंदि कान करके हका उनमें निकरोक्त कर्मन करके अपने पाप को उत्तरों हैं, से बडे तुकते करि जो है। कुमीद कुछ बार साह पुरुषेद्र निकासने एका पानं पूनवी और करनेत केवसे आवना प्रविद्य करे करे हैं। इस प्रकार पृथ्वीचर और करने भी अनेक्ट्रे पुरुष्य की है। यो इन केमें प्रकारके रोवॉमि साम बरास है, को चीन है निर्देश कर केरी है।

#### बृहस्पतिका युचिष्ठिरसे प्राणियोके जन्मका प्रकार और पापोंके कारण तिर्यक् योनियोंमें जन्म लेनेका क्रम बतलाना

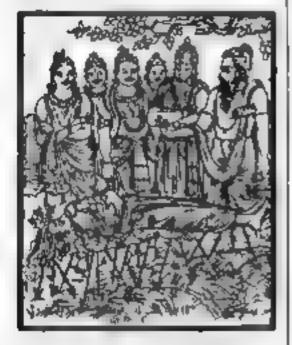
मिना नारिको सर्वि जाने हैं ? और बैस्से बर्खाओं अस्ताने । उनके बेळे ब्रीन बाल है ? पक्षों हैं ? ने अपने मुसक प्रधारको काठ और स्ट्रिके केके.

कुविकेरों पूर्व - निवास्त ! कुव्योगर स्वतेषाते सपूर्व । सर्वार स्वी क्षेत्रकर सम परलेखकी १६ तेथे हैं, उस समय

र्मायामे का-बेट ! वे स्टास्तुदि स्टारतियो पर्ही

पनार खे 🗓 इन्होंसे इस सरावन नुद्ध व्यवको पुत्रो ।

इन दोनोंने इस प्रकार बात हो हो वह वह कि बुहर्गायों बार्ट का पहुँचे। वर्षराय कुनिहेंद्रने क्रथायदेशक्ता क्रवार पूजा की कीर करने बात सरकर इस प्रकार क्रव किया—'प्रगणन् : काम प्रमूर्ण करेंद्रि क्रवा और सम प्राथित विद्वार है, का: स्वास्त्रमें क्रिया, क्रवा, कुन, कुन, क्रशाबित, प्रकारी और दिश क्रावित्रों स्वृत्यक्ता काम स्वाधिक कीन है? का अप और मेर् हुए क्रियाने बाद और केल्के स्थान क्रव बार बाद है है का क्रवा बीचके साथ प्रस्तेकों स्थान क्रवा बार बाद है। है का क्रवा बीचके साथ प्रस्तेकों स्थान क्रवा क्रव क्रव हो। है का क्रवा बीचके साथ



कृतन्तिकी कहा—राजर् । जानी अनेता है कन तेना, अनेतन है परता, अनेता है दुःसने कर होता है तक अनेता है दुगींग कोतात है, विता, करा, कहें, दुर, पूर, समानित, सम्बन्धे और दिलोगेंगे कोई जाना सहकार की होता। लोग असके को हुए क्रिया के हैं और वित्र आपके केरेकी तत्त्व केनावर कोई देखाद के हैं और वित्र आपके ओरसे पुँद केरावर कर हों। हैं। उस समय केनार को हैं पीनके पेके-मीचे जान है; अतः को है तक समय केनार को हैं। इसलिये सनुष्योको सहा वर्गका है लेगा करना कहियो वर्मकुक प्राणी लगीने जाता है और अक्कियानका और सम्बन्धे पहला है। अतः विद्वान पुरस्को कहिये कि जानने पहलोको सनुष्योक स्वास्त्र संत्र है। अनिकेको कनुष्य है क्षेत्र, पोढ़ अच्चा प्रकारे दूसरोके क्षेत्रों पाप करता है।

वृत्वितिने कृत-कावन् ! जानके मुँतो की वर्षपुत्र एवं अलग वित्यास्य वाते सुनी, किंदु प्रमुख्यमा व्यूतकारित को कावा वही वहा क काव है और जाका सुक्ष्यकीर जनका-नेत्रोची व्यूतको परे हो कात है, ऐसी श्रवणी वर्ष किस जवान जानका जनुसारन करना है ?

कृत्यक्षिणे वद्या-वर्षराव ! पृथ्वी, जरा, अहि, वापु, अस्ताक, यर, यथ, वृद्धि और अस्ता-ने तक एक है साम वद्या जपुष्पोर कर्षण पृष्टि रचनो है। हैन और रात की क्रमूर्ण अस्तिकोदे कर्षोदि राजी है। हम सम्बोद साम वर्ष कैयाब अनुसरम्ब कर्मा है। जराशकार, वर्षावर्गरे पृथ्व अस्ति (परस्थेको अस्ति कर्माका थेम समझ करते) हुस्सा करीर कारण करता है। यह समय उस सरीसर्पे निवस वद्यापुर्वाचे अस्तिकार केरता पुरः आके सुकाबुध कर्मोको देवने रचनो है।

प्रिकेटने पूर्ण---क्यूबन् । अस मैं यह जानना पाहता हूँ कि इस क्रोनके जीनकी अपनि कैसे क्रेसी है ?

वृह्मप्रतियोगे कहा—राज्य । इस हार्यायो विका पृथ्वी; कार, जाति, फायू, आवारक जीव मनके अधिहास देवता की अब महामा करके पूर्ण दूस होते हैं इसीसे स्मूल पीर्चको अवकि होती है। किर की-पूर्णका संबंध होनेवर कहें बीर्च सर्वका कुछ करका करता है।

वृष्णिले पूल—सम्बन्। जीव लया, अतिव और संस्थान प्राप्तिका त्यान करते यक पाँची भूतीचे एकावती पृत्यक् के काता है के कही प्रश्नार शुसन्यु: स्थान अनुस्था करता है ?

कृत्यानियों कार---वाला । जीव अपने क्योंने हैंकि कृतार इति है वीर्वक अकार सेता है और वरिके राजों हरिया कृतार इत्यावपुरस क्या कारण करता है। (गर्मी आनेक कृति वह सुन्न कृति में तिना कृतार अपने दुक्त्योंकि कारण) कार्योंके जात खाला, हैया इट्या और हु-कृत्या संकारकार्यों दुनींत केरला है। वहि हाजी इस लोकार्म व्यास है पुण्यकर्गर्वे राजा कृता है के का अपनि पासका आका सेवार आके अनुन्या हुना क्रेयला है। जो अपनी हालिके अनुस्तर क्याकसारकों ही वर्गका सेवन करता है, वह प्रमुख क्रेयल साथ सुरस्का अनुमान करता है। वित् धर्मके बीरायें वहि साथ-क्षा कर दुन्स क्ये क्याना पहला है। अवर्यकारका प्रमुख क्याक्षेत्राचे कार है और वहीं पहला कहा भेगकर पहला प्रावक्षेत्राचे क्यान है और वहीं पहला कहा भेगकर पहला

निया-निया व्यवेद्या अनुसन करनेले वैदी-वैदी क्षेत्रिने क्ष्य बारम करता है, को मैं कर का है, समे -- करा, श्रीकार और मेठों की पह बाब बताबी नहीं है कि करूब पूर लोकते चार करनेवर मुसुके पक्षात् कमाध्यके प्रशंकर स्वेकने साव है। यो दिन भागे केटेका अध्ययन करनेके कह की बोहाका पतित कर्माने दान रेखा है, जो पक्षेत्री चोनिने जन्म-रेखा पक्का है। पंक्र क्लेक्स नक्षेत्रे क्रपैरमें क्रकर का गुलुको अब होता है किर साथ वर्षोत्रक बैस्साई चोड़ियों सामार करीर-स्थाने प्रसार की पानिएक सारकार सेना है, उसके पर मा पुन: अक्रमान क्या पान है। मीन पानक पा क्रियनेकान प्रदान गरनेके नार क्या को बीक, क्या का चन्ना, यांच वर्ग कुशर, यांच वर्ग भूजी, प्रांच वर्ग क्रिक्त और इक वर्ग कुलेको सेनिने शुक्तर अन्तरी प्रमुखका क्या कार 🕯 । को विका मुन्तिकास अपने अध्यापकार अध्यक्त सामा है, यह पाने पुरस, दिए राजना, दिए नाम और किर हेना भोगनेकान के क्षेत्रर जनारे प्रकार केन्द्र है। के स्थानकी किया गुरुको स्रोपे साथ सम्बन्धका विकार को करने साल है. इस अपने मन्त्रीयकं संपन्नेत स्थान करोड़त से विकोधे प्राप रेक्ट है। पाने कहा होका होन क्वेडक बीका बारत हाना है, जिस बरनेके बाद एक सबस बर्धिकों बोर्डनो स्वय है। प्रकृति कार्य (अञ्चल-मोरियों सम्बद्ध होता है। महि पूर्व अन्तरे पाने स्थान केंद्र विकास विकास करता है संस्था सेट्स है से व्या अपनी संवारकारिताके कारण क्रिक्स प्रमुखी चेतिले क्षा रेजा है। जो पूर अपने पाता-निवास्त अन्यार काला है. का मानेक का पालेकी सेविने जन तेला है और जाने का क्षेत्रक धीनिय रहकर हरीर जाननेके बक्षण के स्थानक भवितालको चोन्नि कात है। तिल कुन्हे कार कात कीर विया क्षेत्रों के बढ़ होते हैं, यह मुख्यतीके अधिकृष्टिकाके कारण मुख्ये बाद कर गढ़ीने गढ़ा, चौद्धा गढ़ीने कुछा और रका पहीने कियम होकर अधने काकडी बोटिने क्या सहस करता है। यहा-वितासी जानी हेनेसाल समुख्य कैस होता है रेश जो मरनेवाल का का वर्ग ब्रह्मा, क्षेत्र को सकी और **छ: न्यानि सरिवार्ध केन्सि अन्य हेक्स वित्र सन्त्र्य होता है । यो** पुरूष राजाके दुवन्ते जानार पान्या हुआ भी भोतना जाने क्रमांकी रोक करता है, जा मरनेके कर इस को करर, बांब वर्ष बहुत और हः महिने कुछा होका किर प्रमुख-मोरिने उसक है। दूसरोकी वरोहर इक्स लेनेकाल करून क्याचेकरो कार है और सम्पन्नः सौ योगियोगें प्रथम कान्ते जनाने बाँख होक है। महिन्दी मेरिनी पंतर वर्गीतक जीवित करेके कर कर असके पार्वोक्तर क्षय हो जाता है से पद पर्वपत्ता क्षय पहला है ।

क्षारोके क्षेत्र क्षारेकाल भट्टम इत्तिमधी चोनिने जन्म लेता है। के अपनी पुर्वित्येत कारण विश्वतिक साथ विश्वतिकार कार्य है. या अब्द वर्ग महती, यह महेन इतिह, एक साल सहस्य और स्टब्टे कर बडेब्र होकर करातें पर्यक्रवेतिने क्या सेता है। में पूर्व रूपाया परिवार करते अग्रार और मेजेंड कारियुत होकर बार, सी, विल, कहा, सुराकी, सरसी, क्या, मान, मेंग, मेर्ड और सीची तथा कारे-कारे अन्तरोकी कोडे कारण है, यह परनेके कह खाले पूछा होता है, दिन कुछ दिनों कर करावे कर होका कुलाबी चेतिने क्या तेता है। का कुनार केंद्र क्षेत्रे क्षेत्र केंग्स्ने पर काल है। जिस पाँच कांत्रक कुरेची चेनिने कुका अन्तर्ने बहुक क्षेत्र है। परश्रीनकावा का करें, बर्ज अन्यः नेतिया, क्रम, सिवार, प्रश्न, सीव, नक और प्रमुख होता है। यह प्रमुख्य मेहनक अहोती होते व्यक्तिकार परावत है, यह एक अनेताब बोक्ताबर्ट बोनियें एक क्षा है। के कारकारकारी पूर्विक रिप्ते किए, युद्ध और क्रमानी परिषे प्राप्त कारणावार क्रमान है, क्रम महरेके पीछे परिष को पुरुष, पार को नेपिया, चीव को विस्तार, का को पार्ट, के नहींने बीटी और एक नहीन बोहेबी बीटिने प्रमान करके पर: बोब्रा मार्टिशक और-बोरिने पह रहता है। इसके का क्रमेक इस होनेवर को समुख्योंने निवती है। यो कार, पर समान समान अवस्था आनेका बोह्यात आने हिन्न कारक है, का पेक ज्लेक्ट बोरेकी बेटिने काल परवार केन स्थान होनेके बहुत्त सहस्य होता है। यो पहले एक व्यक्तिको क्षणका करके किए क्षानेको उसी क्षणका द्वार कान काम है, यह मानेके कर तेया क्योंका प्रदेशकी केरिने काल का और क्षेत्रेक अन्यत पुरः पहला होता है। को वेक्साओं अध्यक्ष निरुष्याओं न पहलेह महिन्दीकृतेक विको किया है जब बाज बनन है, यह गरनेके बाद हो बर्गीतक कोएकी केरियों पात करता है। इसके बाद प्रत्यक्त पूर्ण और सीव केका अन्तर्भे पर्याच्या जन्म पात है। यह नहीं वितर्फ समान आकृत्यीय है; को अल्बा अन्यव्ह पारत है, को पुरुष्ट का क्रीक्राकीची चेतिये क्या हेना पहला है। आसे इस को सकर का चीनक नारिका कही होता है और किर मरनेके कर महरू-भेरिने कम पात है। यह-नारिका पुरू व्यान्त करियो प्रोके राज सरकार करके देशकारके प्राप्त पहले परिवर्धी कोरियों कम लेखा है, बिहर परवेलेंड कहा करार केम है, कमरबंध मोरियों पैस क्षेत्रे हो यह ऐनका कियार क्षेत्रर का नाम है; जाने बह कुछ होतार अपने प्रकारोंकर चेन समझ करके अन्य-केटिने क्या करण करण है। महामान्त्रेतिमें भी यह एक हो प्रतान के बार्क प्रतान

बारत है। बारत पर्वे महोके बार कारको सोवने करा है। को नगर सोधने परवर आहे कर की निर्वतको साथ प्रकार करते हैं। उसे कहा, पहला और कुलकी केंद्र बाबर क्रम अधिकम (क्रमीनव), अधिमान, सर्व हाँ बालु , कांटोरे परे हाँ इसकार तथा अन्यन्य नाव्योधी प्रसंदर पानवर्ष पोनवी पानी है। इस जनस नैसंबं यमकोते गीवित क्षेत्रम कृतक पुरू पुरू संसारपकार्ने सामा और मोदेवी चेनिये सन्य तेता है। चंद्रा क्योंका चीटचेनिये रहरेके बाद पर कता है, फिर करकर करने आकर अवेने मा केना पाता है। इस स्टब्स सेवाडों मन पर्वकी कराना चौरकर कहा का क्या सेनेके प्रकार का तिर्वत-वेदिने क्रमा क्रेम है। इस केमिने प्रकृत कर्मीनार कृता चीनकर अनामें स्कूपेकी चेतिने जन तेता है। ह्या पुरनेकार प्रमुख और प्राप्ति क्येंग करनेकाम क्रीन क्रेस है। पान, मूह सकत पूरवी चोरी धर्मकारेको बोटीको चौरीने क्या रेज बात है। से निवाद पत्रब अब कुरता है, बा प्रकारिक मानवाल क्षेत्र केंग्र है। फीरवी क्षेत्र कारोबारक जीतर, जरा कुछा पूजा पुरानेकारच करतु, त्येक मूरानेवाल बीआ, क्रीबीका कांत क्रानेवाल क्रीव करक rich, uffeit inford utif mebren miger, jubiur कार्थ प्रानेकाल क्षेत्र, उसी कहा प्रानेकाल कुमान, रेक्सी बळाडा अञ्चल कलेकल करका, महेन कका ब्रुरानेवास्य सेवा, यह-धवा ब्रुटान्यस्य हेस, सूबी कवादा क्षापुरम करनेवारम प्रतिष्ठ, उसी प्राय, क्षीपपाय प्राय पाटकाची कोरी कारोबाल कारोब, अब उचारके रेप मुरानेकार और और स्थान कार्याची कोरी कार्यकार प्रमुख बबोर पहाँका कब पात है। वो मनूब खेनके बनीका होतार अपूर्णना और कथा अधीना अध्यान कथा है, यह इन्हेराको योगिने कम रोज है और अभी कह कारिक पीरित राजर पर और होनेसे यह जिन परवास कर पता है। इस पुरुषेने परस्थानी बोले निरामी है। को मोत्रक केर क्यत है, का मरनेके कर केर मेनेकाव कीता होता है। यह कोई नीय पहुल सनके लोगको असक प्रकृतके नारव इतियार तथार विको पुरुषो पर क्रास्त है से बा अपनी पुरस्के कह पहलेकी चेनिमें क्या हैना है। के वर्ग गर्द्धके सम्बं क्रका केल्काके बक्रात का अन्तरिक घनसे जीत युनेवाल इतिन होता है। बिर इस वर्ग पूछ

कियार के बात है और बाद केवर केन बनोबर करनेन । केने-केने वह बनावरा नाम सकर स्थल्पेया क्ष्य पास है और चौचे च्योनेने जाराने कैराकर मृत्युको प्राप्त है। अने कर को का गर्न कर और चीर गर्न चीरा क्रेकर क्या कार्य है। कारान, पानवा इस हैनेपा कारानी क्रेरकरी कुनुको प्राप्त क्रेकर का मनुक्त-बोनिने क्या होता है। यो हुए पुद्धिताला पूका स्वीकी हाथ कार है, वह कारकोर क्षेत्रमें कारर गया जवासी हैक योग्या है। किन मीर यह बु:सब मोनियोंने प्रमण सहसे अपने बहिता पण पता है और बीत प्रतिबंध पहिल वेतिने कुछर दिए प्रमुख होता है। पोबस्की बोरी करनेते पहल काली होता है और गई क्रोनेतक सरिकारोंके अनुने कुटा कर हुए हैंगेड कर पुर: प्रमुक्तवेतिये कार है। कर पुरनेकर बच्चार देशों पूरी करते बहुत से हेरे होने हैं। को बहुबा तिलके बुलेसे विशेश चेकानी क्षेत्र प्रतार है, या देवतिह अवन आवश्याल प्राप्त का हेल है का यह नहीं तब महत्त्वेको काछ करत है। के कृष्टि कहन में पूरत है, या मामानूत (सीनकाव करवाड़ी) होता है। नगत प्रानेकाव विशेषक केल है। के पहल विकासकों रही हो arted whereir gar fee & on write me worther the fire despet one year the \$ mer new क्यून-वेरिक्टे क्या रेसा है। क्यून क्रेनेस्ट की अस्ती अस् पहर क्षेत्री केले है।

कार रे प्रश्न प्रकार मनुष्य यह साथि विश्वेत योजियों क्या होते हैं। व्यक्तें करें अपने कहार चारनेवाले सर्ववार सितीवर में इस की करा। से कमानदे एक लोग और मेले क्योप्ता है कर करके को तर आदिके हारा हर करनेका ज़ब्ब बन्ते हैं, वे प्रक समन्द्रण भोगते हर मध्या चते हैं. जों कही क्रोपो हीर की जिल्हा तक वे मोना होकर हमेला को-को किस्ते हैं। जो प्रमुख कपसे है शपका परिवार करते हैं, के गीरोण, प्रध्यान और वर्ष केते हैं। विकार कोई करनेक कर्न करती हैं से करें भी पाप लगात है और में उन फरफोनी समित्रोंकों है जानों होती है। महराम । कृतिकाली सहावी देशनियोक्ते प्रीय प्या प्रदेश सन के थे। को न्वींक कैसे की वे सारी करें सनी वी और एक्टरे क्वनेपर उन्हें करोकर बवावत् वर्धन किया है। च्या रुवेत सुनकर तुन्हें कपने मनको स्था पर्नारे छनावे रक्तम चार्विने ।

#### बृहस्पतिका युधिष्ठिरको अन्न-दान और अहिंसा-धर्मकी महिमा बताना

सुक्ते जाता है। चौकनो कर्न करनेवर पर्यक्को साथ ची। अस होती है ?

कुरप्रीचीरे कहा—स्वयू ! यो बहुत सब वर्ज करा है, यह अवस्थित वर्गने हो यहता है और क्षतक पर प्रानीत विवरीत कार्गी कार्न सरात है; इस्तरिके को नरहने नियन पहल है। को मोहब्स अवर्ग धन धनेतर नीकेने पहलार करता है, को पर्वाचे कि करवो काले रहावर किर वाची परिवा केवन ५ को । सहस्रक वर को-को सरकारीकी रैन्यु करता है, रूपे-जो सरका क्रीर का अवस्थि कथनो मुक्त होता पाना है। यदि कर्षी एक बन्देंत हक्कानेने सरक पार कारत है से बहु इस अवन्ति कारत हेनेकरी निक्ते चीन है हरकार य नता है। यहम सको करको हैना करके केने-केने अपना कर प्रकट करता है केने-के-केने का कारो मुक्त होता पाला है। अब मैं क्वेंब्ल पर्मन काला है। सब जनगढ़े दशीये अलब्द कर बेट बंक्स पद है. जह वर्षको हुन्। रहलेकाले क्यूनको हुन्तर कारने बहुते आहना ही श्रेष सत्त्वा व्यक्ति । जन्न सङ्ग्रीका प्राण है। जन्मी ही समाध्य प्राणिनवेच्ये प्राचीन होती है और अन्तरे ही अन्तराना मारा संसार किया हुआ है; इस्तिओ अब सबसे उपन करन गया है। देवता, बहुवे, जिला और क्यूबर अवस्थी ही विस्तेत प्रशंसा करते हैं। एका राजिए अवने ही कुनते सर्जनकेवाओं आहे हुए थे। अल: काम्यानकात्वक अंक्रुक्तेको अस्तानिकारे न्याचेपानित जाववा क्य करना काहेने । को पर्वन क्र ह्मार प्राक्रणोची योजन करावा और सह योज-स्थापनी मेला पूर्ता है, यह राज्ये स्थानने क्षा कथा है क्या औ तिर्यंत-चेतिये नहीं जाना पहला। चेदत क्राह्मण विद्याले जना मानर परि अन्यपपत्रील विद्याची द्वार केल है के पर स्वेपको संबंध सुन्ती होता है। यो इतिय प्रकारके बनका अकृत्य र करके जावपूर्वक प्रकास करना करते हुए अपने वस्तु-सर्गा अपूर् विकार हुआ अन्य चेक्नेचा अञ्चलकेको ५५५ वर्ग सम्बर्धित विकासे क्षान करता है, यह कर काल-सुनके प्रधानको अपने पूर्वकृत वार्योक्त जान कर करना है। यदि केव संस्तिते जात पैदा करके जाना बढ़ा भाग सक्तानीओ बार कर देश है से मह सब करोड़े पुरू हो बाता है। युद्ध भी गहि जानोंकी परवा न करके कठोर परिवारों कवाच हुआ अन हाराज्येको सन करता है से पानसे हरकार पा करता है। से बिसी प्राणीको दिस न परके अपने प्रसाके करते के

पुष्पितने पुष्प-स्थान् ! असः मै वर्णका चरित्रका | मित्रक हुन्य जन विश्वेषो क्षत्र करता है, यह कामी हुन्तके हिन नहीं देशका। न्यानके अनुसार अन्न जार करके औ वेदनेक प्रक्राचीको प्रचेत्रांक द्वार देनेकाल प्रमुख कारने क्येंचे क्याने एक हे जाता है। अस है क्याने एदि करनेकार है. का: इस संस्थाने करावा कर करनेवाल करूक सरकार होना है और सर्वकोदे कर्नका आवन रेकर करक करोते कुर कार है। कुछ पुरुषेने जिस पानंको अनुस विक्रम है, अरोहे विद्यार पूरत की पहले हैं। राज-कृत करनेको पहुल काराजे अल-कृत करनेवारे हैं। अर्थी रवेगोने सनावन पर्यंत्री पृति होती है। पर्युपायो अर्थेक अन्यक्रमें न्यापकः स्थापिक विकास इतत श्रास साम्यक्रको स्था काम साहिते; क्वोंकि अह है सब क्रांजिनोसा पाप आधार है। अपन्या करेंने पहलबे क्ये परवर्ध करेंक करन जो केन्द्री पत्नी, उत्तः नाजेपनित अस्त्रा स्व हे कर करण पाहिले । उसके मुख्यको जीवा है कि बह चारी उद्यालको चोलन चाराचा स्रोडे प्रारं चोलन कारीका per uit bar der-weit mit mit freih meer क्समे । यो प्रमुख केंद्र, वर्ग, काम और इतिहासके क्षान्त्रेयाने एक इकर (ब्रह्मणोको चोजन क्रमात है, यह नत्त्री और संसार-कार्य नहीं पहला; इस लोक्स्पे कार्या सारी कारकारे पूर्व होती है और भारतेंद्र यह यह असी कुछ बेनक है। एक ! अप-दन पर प्रकार वर्ग और क्षांका कर है। इस उत्पन की तुने का आक्रमका पहल कार कारतान है।

> वृष्णिते प्रम-कारण् । सहस्य, वेदोस सर्ग, बंदर, प्रमित्रकंत्रन, क्षेत्रकं और पुरस्कृत्या-इनमेरी कीन-सा कर्न मनुष्यक विकेष कार्याण कर सकता है ?

करकीयोरे का-कारत ! वे सभी कर्म वर्गानकरू क्षेत्रिक कारण कारणायके साध्या है। अब में प्रमुख्येक रिली करवानके सर्वाद्ध उसकार करीन करता है। को प्रतृत्व अक्रिक्युक कर्मक काल काल है, जा कार, लोग और लेक्स क्षेत्रे केलेक साथ करके विद्वार प्राप्त के कार है। के रूपने सुरावी इकारो वहिसक प्रतिकारोंको कंदोने बेटल है, वह कालेकने सुधी नहीं होता। को प्रमुख सब क्षेत्रेको अपने समान समझका किसीपर प्रकर नहीं करता और स्रोक्को अपने कम्पूर्वे रक्ता है, या प्रत्ये चक्कप् सनी होता है। यो सम्पूर्ण यूनोंका असन है अर्थाप् क्रमें स्थान्य सम्बंधी अनन्त्र ही स्थान्य स्थान है तथा को सब भूगोप्रो अवनेने लिंक देशका है. कर परवापसम्हों । सब्दों । जैसे एक प्रमुख कुरतेयर अध्यक्ष करता है से रहित अनीकी परिषक पता सनाते सनक केवल भी खेळने बा बाते हैं। को बात करनेको सकी न सने, बढ़ इसरोके और ची नहीं करने चाहिने; नहीं वर्षका संक्षिप्त अक्षण है। प्रकृत मामनासे प्रेरित केवल है इसके विकास कर्वन करना है। मॉरानेपर देने और इन्बार करनेते, सुक्त और कुक ब्हैंबर्नेसे क्या किन और अवित्य करनेके पुरस्कों कर्न सेके इने-सोकाम समुचन क्षेता है, सब उच्चत इस्तोंके रिमे थी ।

अन्यस अनेपर इसरे भी अनके कार काक्यम करते हैं: लियो हुन जरने रिले वर्ग-जवादि सम्बद्धी सहस्र सम्बद्धे अवर्षेद्र वर्षेते सुक्त और अवर्षेते द्वः क्रम्बी प्रतीत होती ी—रेक निक्रम करे।

वैज्ञानको परते हैं—सन्देशक । अर्थराज कृषिक्रिको हर अवस्य बहुत्यर परण बुद्धियान् केरणुक बहुत्यतियो जा क्रमण क्रमणेनोके देशके-देशके क्रमण्डी करे गर्ने ।

## हिसा और मांस-पक्षणकी निन्दा तथा मांस न खानेकी प्रशंसा

वैक्रमान्त्रको कारो है—कारोकन ! स्वानकर, | महारेवारी एक पुरिश्वेले कल-क्ष्मार को हुए विल्ला भीवारे एक उस विका

क्रिकेटरे क्रान्-प्रकारो । केराव, प्राप्त और सामग क्षिक अवस्थित अनुसार एक अञ्चल-कर्मको उन्हेंका विका मतो है। स्था: में पूजरा है कि वर, कानी और केश्वरे भी विभागत हो आयरण बारकेताचा पहला विभा अवस्था उत्तरेह **पु: कर्त पूर्ण्यारा या अक्टा 🕯 ?** 

भीवन्त्रीते वदा-वृत्तिहर ! सहवादी पुरुषेते (पान), माणीये तथा कर्मने हैना न करना और बांच न करना हर। कार ज्यानोते अञ्चल-कर्नक काल कारण्या है। इन्लेके एक अंतरको भी कभी हाँ हो अधिक-वर्गका काल की होता । जैसे चार पैरोबाले पन्न होन पैरोधे नहीं करहे का सब्बते. क्सी जन्मर अहिला भी बेदमा दीन ही स्वरत्योंने नहीं देख सकती। केले प्रधानिक देशोद विद्वारों सामी अनिवालेक प्रमुख्य क्या करे हैं, उसी प्रवास सहिता-वर्तने क्या क्यांक समानेत से कहा है। इस एक अधिराधा वर्गाः काला माराचा गम है। जीव का, बाबी और क्रिकारें हरू विसाने केको दिस होता है, सिन् जो करना: पहले करते, मिर वाणीसे और किर कियाबरा बिस्तक त्वान करके कथी मांस नहीं काता. वह तीनो प्रवासकी हैकाके दोवते कुछ हो कता है। महानारी कारणाओंने किस-केनके तीन कारण मतलाये हैं—का (पांस सानेकी हका), कानी (जांस कानेका अनेक) और काम (प्रशासनार्थे कंपाध्य कार रेना) । ये वीनों से शिसके आवार है।

राज में पांस-पश्चाकों क्षेत्र पता का है। को अधिकेकी यनुष्य प्रोत्रका गाँस-भक्तन करता है, यह सराव्य केंद्र प्रात् क्या है। जैसे क्या और मानके संबोधसे पुरुषों संबोध होती 1. उसी अकार हिंसा चरनेसे पापी पुरुषको अनेको ।

कानोनिकें क्य हेना पहला है। वैसे बीचये जब रसका जन क्रेस है के सम्बंद और यह आहार क्रेसे समझे है, उसी प्रमाण मांगवा आववात्म करवेले आहे. प्रति आस्त्रिक काली है। प्राथमि के बढ़ा है कि विक्लोफे बारसदारों उसके प्रति का क्या होना है, यो वित्तको राज्ये नवारे कर होता है। जिल्ला किए पांत्रका रहा रेलेचे दिले स्टेशन होता है, हे बंक्की देशी प्रदेश करते है किसकी पूर, करती और विकोर प्रय प्रकृष्य भी नहीं हो सकती। मांसकी प्रवंतर कारोते भी असोर कारोका पान रूपका है और कारक प्रकृत भी भोगम महार है। विवासे ही साथ पूर्ण करतेयी रहाते रिन्ते अपने प्राप्त केवल, अन्त्री भारतो कारोके गोराकी प्राप्त करोड प्रानेकेको को है। पुरिन्तिर हिस जबस बार जनकोरी विकास पारत होता है, जह अहिरकार्वका प्रक्रियाहर किया गया। यह समूर्त बर्वोर्ड ओलाहेर है।

कृष्णियों प्रस—विकास ! जारने अनेकों बार कारकार कि अविस्त रकते वक्त वर्ग है । अतः ये व्या पानतः प्रमुख है कि जांस कानेसे क्या हाति होती है ? और व महानेसे क्या साथ पहुँचका है ? को साथ प्रमुख्य क्या करते. इसका कंप पान है से कुलेके को हुए पशुका गांस प्रकृत करता है, अंकन जो कारेके कारेके रिक्ने प्रकृता यह करात ई क क्रिक्टर मंस काठा है, अरबंदे क्या फल मिलाई है ?

क्षेत्रजीने कहा—राध्य ! यास न स्वानेसे जो सहय होता है, अलब्द कबर्च कर्मन सुने —जो सुन्हर क्रम, सुद्रील इसीह, पूर्व कार्य, काम पुर्विद्ध साम, बात और स्थानसम्बद्ध आह करन कहते थे, का महत्त्वक्षांने विस्तृत्व सर्वेद्ध परिवाद का किन का : इस विकास होनार स्विकोर्ध अनेनारे सार क्य-किया है कुछ है। अपने अहेरे को दिवान विकास किया है, उसे बात रहा है, सुनो—को पुरुद हातका कान करत हुआ प्रतिकास अपनेत काला अनुहान

करता है तक से केनक क्यू और मंत्रका क्षेत्रक करता है, | को क्यून पांस सूर्व करता, का संवदक्री स्वान, पांचार कुरी का केनोको एक-४० के पान निराम है। सर्वर्त, वार्त्यकार है और मोति बादि मर्वते महर्ति गंध न सामेद्री है जांस करो है। सारक्ष्य महाद्या करने है कि 'से कहन न कर कार्या, न पहुंची द्विता करता और न क्रारेले हैं हिंसा करता £ यह सम्पूर्ण जानिकोचा निता है।' से पूछन मांद्रावा स्थान का देता है, कामा कोई की प्राप्त निरम्पार की काम। धुर सम्बद्ध विश्वासम्बद्ध हो जाता है कहा तहन पूरत करा हो सम्बद्ध अंतर करते हैं। कर्नाल सरकार करते हैं—'से क्रांतें मोसने अपना मोत पहला पहला है, को श्राहर है करन मध्या पहल है।' पुरानीकोचा कार है-- 'के कह और ! कोन को पहल होत है से बहुआंको हमा पहल है के है मीन करन देता है, को कन, पत और क्यानक पता कहा होता | कामते । हैका कर्मकारोजी जान क्षेत्र होती है, प्रातीनो है।' केर के देख निवार है कि द्वा करूक की से क्वेंक्स । सरक करवान कार्यकार करूकको परिवार गरिवार कर अतिमास अध्योग पहाच्या अनुहान करता है और सुराह कीत प श्रातेका नियम पारन करता है से उन केनोबा बार्ग करता है है। यह और मोलक प्रका कर देखे गहुन कर क weburn, me an bhane alle um me weburn सराम कर्म है। ये प्यांनी यंग काल का है और बैठे कारता कर्मना परिचान कर है के उसकी निकास कुछ होता है. कार समूर्य केरोड़ अवस्था और समूच पहेले अन्यानो भी नहीं हो सरकात । भी विद्याल प्रत्य चीनोंच्छे अन्यत प्रत्य प्रत है। है, का इस संसारने नि:संदेश प्रकारता करा साह है। संस प्रधार विद्वार पृथ्व अधिरामा पान कोची प्रधार करते है : केरे प्यानको सबने अन्य क्रिय होने हैं, क्राई प्रचार सबक अभियोंको अन्ते-अन्ते अन्य क्षेत्र कर क्ष्मे है उत्तः से प्रतिकार और पुरसाक है, उन्हें पानिये कि सम्बर्ध आविन्योंको अपने ही समान सन्तरी। यह अपने प्राच्याच्या प्रक्र रक्षनेवाले विद्वारोंको की मृत्यूका का क्रम क्रम है से सीविक् mital pursuit this six freeze selected, fire मोतरार बीविका अरबनेकारे करी पूछा कारहरेड कर कारहे 🗓 क्यों न पान होता होता ? इस्तरिको हम बांक शाल हेनेको हो मर्ग, वर्ग और सुराका क्योंकर अवकर सम्बद्धे : अहिना परा को है. अधिया परन एवं है और स्वीत्त परन प्रता है। कविसासे ही वर्णकी कामीर होती है। बॉल कार, एकड़ी का पामको नहीं केंद्र होता, बढ़ जीवनी हत्या करनेका है जिसका र्दे: अतः अस्तेः स्तनेने ब्यूत प्रश्न केन है। यो स्टेन प्रश्ना (देशका) और समा (मिल्या) का अनुसार करते पर्जास अपूर्ण चेना बलोको उक्त सह और समकादे हेटी है. वे बेचना है. बिस् को कुटिएका और असरवायकाने अवस क्रेकर

और चार बनोचे दार, हिन और संख्याके समय, चौराहो और एकानेने क्या प्रतिकार काले हर पर्वाने, सर्वी और विवाह प्रकृतिके बीवने पर वानेना भी विश्तीसे समझे नहीं प्राप्त हेता। प्राप्त है नहीं, पर करक अनिनोको करन हेरेनाक और सम्बद्ध विकासका होना है। संस्करने न हो यह कार्रको कोरने करना है और न कर्न के बीज केवा है। जनकी पहि चंत्र प्रात्मालेका अचार हो चार से पहालेकी हैना कारेकार के बोर्ट र हो। दिएक स्थान महाको होने हैं। व्यक्तिक का कुछ है। की संसक्ते अवस्था प्रत्यक्त स्थ केल प्रार्थके । केले पहले दिलका प्रमुख्येच्या स्टेन दिल्हार पहिल्हे है, क्यों अवन बीनोची किया कर्मवारे करेवर करवीयों कृते करने प्राप्त अन्ते हेव क्षेत्रते हैं। वह स्वयं को बोई बंबाओं क्यानेकार को निरमा । क्रेश्नरे, पुरिक्रेड नेक्से, tions thresh pickets were not their stocks and क्यूनार्थी अन्तर्वेदें परित्र हो पाती है। यो प्रतर्वेद बांक प्रतर्क सरक केंग्र करूप करता है, का बार्ड कर्ड के पान तेता है, वैको भी को पता। निका काल करोको क्रिकेटी क्रिक पहले काले है का, यह, तह इस सांध्री प्रतिक प्राप्त प्राप्त और पार श्रीन्यालय स्थान कारका है।

क्रुप्रेन्यर ! पूर्वकारमें की वार्वकारमेंक पुसर्व नांत सानेके को केन हुने हैं, उन्हें बात पूत्र है, हुन्हें-को केरिक करेवी प्रकारके सरित्योंको करवार अवना उनके कर्न कर करेका काव्य मांत्र सामा है, वह का प्रतिन्तेका क्रमार है सम्बद्ध साथ है। यो गंड श्रीकृत है का श्रमी, यो कार है का अन्योगने कहा को मार्गमान है का समाधार काने व बनेरी समावत प्रदर्शकों हैंसा करता है। इस प्रकार कीर कराने प्राधिकोच्या कर होता है। यो मांसबडे सक्त वो नहीं पत्था, पर धननेवालेका अनुसोवन करता है, मा पी कालोको कारक गोल-कालो क्याब कारी होता है। करी अध्यर को पारनेपालेको क्रीलक्षण केल है, उसे पी हिल्ला पन रचना है। यो मनुष्य मांस न सामार सम मीयो-क क्या करना है, उसका कोई की अभी विस्त्यार नहीं करना, बाद क्रीनंत्रीको अति साहा नीरोप क्रेसा है। क्रमने साम है हिट कुर्व्यक्त, चे-कुन और पृथि-कुन करनेसे के कई प्राप्त केल है, जंगका महाम न कानेसे उससे की विशेष क्षांकी प्राप्ति सार जोत-पारण किया करते हैं, उन्हें राहान सम्बाहन व्यक्ति । होती है । यो संस्थानेतीह विस्ने प्रमुखीकी हता करता है,

समा है, संस पानेकरेको नहीं । को सहस्ये करून कैरिक का-मानाविक समया चंत्रके लोगसे लाकियोकी हिसा करता है, को गरकनाओं होता है। से बाते जोन सानेके बाद फिर अपने निका से जाता है, करको भी पहल्द करेबी अदिर होती है: क्वोबिट का पानसे बीचे करता है। को करून अवके हिन्दे पह सारत है, को को करनेकी अनुस्ती केल है, को कारका क्या पारता है क्या को सारीकार, केयात, स्थानक और बाता है, में सब-के-राम सानेवाले ही सब्दों बार्व है। के पहल पर प्रान्तित्व सीका माध्य बरण पाइत है, को कृतरे जानिकांकि बांद्राक्य सर्वका काम कर देख काहिए। बांक म मानेसे सब प्रकारका सुक्त निर्माह है। को सी वर्गीनक करोर करका करक है एक के केवल संसद्ध परिचय कर केता है, के केनी जेरी एक्टिये एक सम्बन है। इस प्रमान अविस्त ही राज्यों काम करें है। को नहत्वा प्राप्त काम करते है, à mile frank dit 2 si un mier armer und हुए साम्प्रकारको ही पन्न, जान और चरिएका उपन कर के है, वे पुरे पहलते हैं। के पूरा बंदर-अञ्चलके स्थानक प्रत अविता-सर्वका कर्ष अस्त्रस्य करता और कुरतेको उन्हेज का है, यह पहलेका महत्त्व रहकारी होनेता भी कहति परवर्ते भूते प्रकार के बाल-अध्यक्षेत्र समाच्या प्रत कार बर्गित को अधियोद्धार प्रतिकेत विकित्त रुद्धा कर वा कार्य करता है, यह राज पानीने पूक्त है पाता है एक अपनी सन्तर महत्त्वाई पूर्व है करते है। इसक ही नहीं,इसके कर और क्रमण करनेवर जानीओं पक्ष हुआ पूजा जानीओ, केंग्रों बड़ा हुआ फैरले, रोगी रोगले और इन्स्रीकृत्रले ब्रुट्सर क कार है। इसके प्रभावने महत्त्व विरोध नोतिने नहीं पहल तक उसे सुन्दर कर, सन्दर्शन और नक्कन् कक्की करी। होती है। इस प्रकार मैंने प्रानियोगी बतायी हाँ यह गोल-स्थानही विकि कामारी है।

पुरिक्षेत्र का निकास । यह केवले यह है कि संसारके ने निर्देशी करूबा पहान राह्यसंख्यी एन्ड अन्छे-अन्छे समझ प्रदर्शीका परिवास करते. संस्था प्राप्त रेगा प्राप्ते हैं : मे मारापूर, क्रम-माराचे राज्य और स्तीरी विद्यानीको भी कारी क्षेत्रमें नहीं जाना प्रायते, निवानी संध प्रांताचे हैंको रक्ते हैं। अतः मैं मंत्र न क्वांसे होनेक्को साथ और ओ स्त्रनेते होनेवाली प्रतियोको पुतः सुरुव स्वकृत है।

बीनकी का-बेटा ! बांस न सामेर्ने बहा-से स्वय पै उन्हें बता रहा है, सन्हे—को दूसरेका जंस कावत अपन पास सहार सहस्र है, अपने प्रस्ता नेव और निरंधे

मा पुरुषेचे अपने हैं। विकास अधिक केन सरकारों हैं। यहना मोई जो है, करहों अपने अलोने अधिक देन हमते कोई कहा नहीं है. इसलिये मनुष्य बिस एक सबने संगर देशी पहला है, जो तथ भी क्रांग्य की का करने करिये। संस-पाल सरके नहरू यह हैसाई और उसे न सरके बहुत बहुत कुन्य कुन्य है। समस्य बीवॉनर क्या करनेने समान gerba: और परानेको कोई कर्ण नहीं है। एकस् न्यूनको क्षे क्षम क्रम की करन कर। रसह और क्याक्षेत्र विको पर रहेपा और परस्थेया केनी ही प्रपन्त होते है। को मनुष्य कुक्रमानम्य क्रेक्टर सामुर्ग प्राप्तिनीको अवक-दान करता है,को तथ आगी अवनदान के हैं। यह कारत हो, राज्यकारक हो, जिस यह हो, सामेने सहस्रो जीवका का कहा है, जान है का है अपने फिरी भी क्र-विका अवस्थाने का थे, जब जानी जानी रक्षा करते है। क्रिक्ट कर, विकास और प्रकार की अलेट प्राप्त नहीं तेते । यो प्रमुख कृतरे जीनोची जनसे बनाता है, यह राज्ये थी पानक अकार अपनेत काले कुठवारा क काल है। प्राप्त-कालोर करवान कृतक चोट्टी क्षण में दूशन है, म क्षेत्रण ) मृत्यू विकास की प्राथमिको अपनीत गाउँ है। क्योंकि प्रश्नासकी सामी क्षेत्र को को है। इस संसार-समुद्री समय जाने सब वर्गकर, जब और कुछब आधि श्रमते श्रमी होकर करों और पहल्के को हैं। इसके रिव्य पुत्रका भरे भी अहै केवेर विको स्थान है। पानी आने हुए सानी चल-जुली shall was see, som sår ug sellt mitt, forme रार्च करान्य करोर और श्रेपकारी होता है, कह भरी पूरी है। बालवेशन बीच बाब तेनेवर की परवाद क्षेत्रे हैं। के का-कार क्रमोरी करते और प्रकार करते हैं । अस्सी क्रू हर्गीत प्रात्तक देशी जाती है। में अपने पानीके प्रमान कुम्मीकक ermit mit mit allt fien-fem ubfeitit um bent क्रम बोट-बोटकर करें करें हैं। इस प्रकार नहें करकर पंजारकाओं चटनन्य पहल है।

हर भूगम्बारक अपने आवतो महन्तर बोर्ड दिन पासु नहीं है, इस्तिको सब प्रामिन्योगर कहा करे और शक्तको अस्मापानसै हेते । से क्यूब जीवनकर किसी की जीवका गांस नहीं काता, को नि:संबेद्ध एक्टिलेक्टमें सेंबु स्थान निरमता है। यो मीनिक क्षांको प्रकारको प्रतिन्त्रोके योग स्तर्त 💃 वे भी हार्र सन्दर्भ उन अभिन्येक्टर महत्व किने मार्र है। इस विश्ववने मुझे हरिक भी तरेह को है। पश्चित ? (विश्वका कर विज्ञा नाता है, यह जानी बद्धात है-) 'मं सं प्रकारते बस्बर प्रश्नविने सम्बद्धा' अर्थात 'जान पहे पर काता है से कभी में भी उसे काईगा ।" को पंतरम संसर्ध है—हो है पंत सरस्य तरमें स्पन्ने ।

इस जनमें निस जीवची हिंगा होगी है, यह दूसरे जनमें खारे चरायको मारठा है, फिर पांस इसनेवाल क्षमें इस्की चन्न स्था है। में शूररोची निन्दा कता। है, यह सर्व भी कुररोचेंट कोच और हेज्या पात्र होता है। महिला परम वर्ग, महिला चरम संवाद, शहिता परम दान, शहिता पान कर, शहिता वरण यह, शहिता परम चरन, शहिता क्षम कि और सहिता परम सुस है। श्रमपूर्ण क्षोंने हान किया काम, सम क्षेत्रीर हुमारी

शंकानी काम और साम प्रधानके कृतका परंग प्रश्न हो हो की की अधिताके साम कृतकी गुरून नहीं हो समारी। यो हिंसा नहीं परका उसकी करका अध्या होती है, उने सह पड़ करनेका का मिला है, हिंसा न करनेकाल स्तृत्व स्वकृत प्रतिकारित पाल-विकास कामर है। पुनिहिर! यह अधिताका पाल पालका गया। अभी कृतने की अधिक आका पाल होता है। अधिकारे होनेकारे वाचका हो क्योंने भी कर्मन नहीं हो सकता।

#### व्यासमीकी एक कोईपर कृपा

जुनितिने पूर्ण-निर्दास्य । यो मोद्धाः स्थान् संस्थाने प्राप्तर पूर्णा मा अनिवासो प्राप्त-स्थान कर हो। है, उनकी बार स्थान है। योई जातियो समस्याने हो या समस्यानी, पूर्ण स्थान है। योई जातियो समस्याने हो या समस्यानी, पूर्ण स्थानमें हो या असून सम्याने, सिंगू प्राप्त नहीं स्थाना । इसमा बाब कारण है ? आप सर्वत है, वासोची कृष्ण भौतिने।

नीनार्तने कह—नुविद्यार । इस संवारके आधी आहीतों हो या अकातिये, सुध्ये हो अध्या असुपारे दिस कियो के अध्याक्यों हो, अतिये पूक्त जानों है, जाना नहीं काहते, इसका कारण कारण एहं है, सुधी—इस विकास अधित काहत और पूक्त की है। वहतेयी कहा है, जानावाल और मही सुधी कालवी कहीं का भी थे। असेने एक महिको गाड़ी कालवी कहीं का भी हो। असेने एक महिको गाड़ी कालवें प्रदेशों कही तैनीके साम पानक ऐसा। कारणी समूर्ण अधिनांकी नीतों इस प्रदेश प्रात्म गाड़ी है। असेने कहा की है कारणों विकास की हो, करो, यहाँ तैने या हो है। वहते हुई कम आह

, स्वीपेर क्या--धारावर । कोई स्थान क्यो कैलाको आ यो है, इसीकी कावरका शुरुका मुझे कर के रूप है। इसकी मानाव कही कावनी है, जा कर कारोजें काती है से ऐसा स्वीप होता है कि कहीं राज़ी असका मुझे कुछान न करो, इसीरिको तेलीनों पान पहा है। जा देखिलों, जैस्बेयर कायुकारी बार पह पति है, के पारी बोझा दिनों झेंकरों हुए इसर आ के है। पुत्रों करकी असकाव कहा निकट सुनावी पहाड़ी है। गाड़ीपर बैठे हुए मनुवार्तके की नाम प्रकारके प्रवाद कार्योंने पह से हैं। इसरे-मैसे कीड्रोके किने इस सावायको कैनेपूर्वक कुन सकता करिन है, सार: इस कुमा तको जनमें एक बरनेट नियं में बहुदे बाग एक हैं। दौरा आकेक अमोन्द्र नियं कु:कहानियों होती है। अंथन बीचन कामके कुमा बान बहुता है। कहीं देश न हो कि मैं सुकते कुमाने यह मार्क्ट, इसी बनको बरसायर कर एक है।

ज्यानोने नक—बोट । युद्धे बाई शुरू है ? शुरू से तिर्वपृत्योगिने ध्ये हुए है । नेरी समझने पर काम है तुमारे तिने हुकानी बात है। हुन सन्त, राई, रह, पन्न बना कोटे-बड़े मोनोबा अनुनव नहीं बार समते। अतः तुमारा तो नरम है अन्तर है।

नोहेरे नक-न्यवस्य । बीच सभी चेत्रियोचे शुरुवार अनुकार कार्या है। भूके भी इस भोतिने जुना निरमार है और को सेकार में जीवन कर बहुता है। को ये इस करेगडे अनुसार कर सकारेंड किया काराया क्षेत्रे हैं। करूको और स्थापन प्राधिकोधे भोग असम-अस्टा है। सहसे सन्तर्भ में एक बहुद क्षके बहुद का 1 स्वाहरूनोर्क और बेरे मनमें प्रतिक भी साहरका भाग न का। मैं पाने विरोक्ता केन्द्रार और स्थापकोर का । स्थाने तीको प्रकार बोहरूम, ब्राह्मिन्स्नीके साथ सोम्पेको उनमा और पंतासमस्ये हेन रक्षमा-च्या नेप सम्बन्ध हो गया या । हाठ बोरम्बर लोगोंको बोक्त देश और कुरबेका कर कार लेक—को येव कम का। में इतथा निर्मेची वा कि भारतनीवात बरपर आने हुए अतिविधी और जारिक पर्नेको पोक्त करने क्रिय है केवल पहर हैनेकी इन्यारी सन्देश्य 🛢 चोजन चार लेखा 🛍 । धनके समय अध्य कनेकी उक्कारे किया है बरमानी मेरे पास आहे; विश्व में उन्हें करण होने योज्य सुरक्षित स्वानों भीकार को अवस्था कारी निकास हैता, उनकी रहा जी करता था। दूसरे मनुष्येके करा कर-शन्द, सुन्हरी की, अच्छी-अच्छी प्रत्यनिर्ध, अर्थुन देख और उद्यम स्वयंग्रे

वेसकर में अकरण ही उनमें जाता क्या का। हुसरेका
सुस देसकर पूछे हंगां होती थी। किरवेका देखें भूको की
देसा जाता का। ये अवनी इकाओक भूको का। दूसरेके
का, अर्थ और कारकार किनाह करनेके सह ही उक्क दाला
का। पूर्वकाओं मेरे हारा जाने कुरतापूर्ण कर्न दुए है। उनकी
का जानेरे पूछे कहा कालान होता है। उस समय पूछे हुए
कानेरें करनाह जान न का। कीकाने कि केवल अन्तर खूछे
मताकी सेना की भी तथा एक दिन अपने करवर आने हुए
का जाइन अतिकार, को अपने कालेन भूको। सन्तर के
हाराल-सरकार किना का। जाते कुरवां जावानो पूछे
अस्तर करके परिचार हो। जाते कुरवां जावानो हुई
का करके परिचार का उस का काला है। जार विस्तर केरा
कारका है का कराव जार ही कारको। आकोर बूंड़ने के
को सुरूव काहत है।

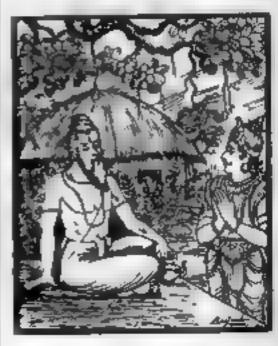
न्यायों पर्य—बॉट । हुन विस पूथ करींद्र प्रथानी | ह्यानिकास करोड़ फरेना, प्र रिवेषयेतिये क्या लेका की चेदिक की हुए हो यह और | प्रयोग, वहीं हुने से कारेया।

कुछ नहीं, मेरा वर्तन ही है। मैं उनकी सर्वेक्ससे केवल इतंत्रका केवल तुमारा उत्तर कर हैंगा। सर्वेक्ससे कहकर इत्तर कोई लेख कर नहीं है। मैं कावल है, अपने पृत्युक्त कर्मक पृत्युक्त कर्मक और किनेक्समें मेरी अन्य पहा है। नहीं इस क्रमक पृत्युक्त कर्मक और किनेक्समें मेरी पूर्व कर्म अवस्था प्राप्त क्रमक कर्म की कारमनाको सेक्स ही होता है सकत है। कारमक कर्म की कारमनाको सेक्स ही होता है सकत है। कारमक कर्म की कारमनाको सेक्स ही होता है सकत है। कारमक एक केइ क्रक्स कहते हैं। से कीनको प्राप्त करताई कुनके को है। उन्होंक कई इस स्वेन्डिक प्राप्त करताई कुनके को है। उन्होंक कई इस स्वेन्डिक प्राप्त करताई क्रमक क्रमक करते हैं। का समय मैं सुन्होर पास जावल क्रमक करनेन करते हैं। का समय मैं सुन्होर पास जावल क्रमक करनेन करते हैं। का समय मैं सुन्होर पास जावल क्रमक करनेन करते हैं। का समय मैं सुन्होर पास जावल क्रमक करनेन करते हैं। का समय मैं सुन्होर पास जावल क्रमक करनेन करते हैं। का समय मैं सुन्होर पास जावल

#### कीड़ेका क्रमण: ब्राह्मण-योनियें जन्म लेकर ब्रह्मलेक प्राप्त करना

प्रीकार्थ करते हैं--पुक्तित है कालाक्षेत्र इस प्रमार ब्राक्टेंगर इस वर्धदेने 'ब्यून सम्बा' ब्यूनार उनकी सद्धा क्षीनवर कर स्वै और भीच करोने उसकर का छार नवा। इन्नेमें वह विशास प्रवास वहाँ का चूंचा और साहे. पहिनेते कावर का नोहेरे जन जान देखा। शतकात क क्रमकः साही, गोष्य, सुशर, पृत्र, कही, क्रम्बल, क्रा और मैदनको केल्लिये कना रोता हुना वरीन-वर्गाले जनक कुश्य । का राज्य था व्यक्ति काराजीका दर्शन करनेके रिस्टे क्ष्मने नेवा और उन्हें बहुब्बनकर उनके बरवहेंने फिर बहु । इसके का इस्त जेड़का केला--'क्कान् । अब्द भूते क्य स्थान मिला है, जिलाबी कहीं गुलान भूति है। इसे मैं बूल क्लोसे पान पहला का । भा आव्योगी कुना है कि मैं जबने केको कीक होकर भी अन्य गुजकुमार हो नवा। अन सोनेकी करणाओरो सुरोधित कारक करकान् नकराव वेसे सवारीमें राध्ये हैं। मैं सुन्दर न्यानमेंक चीतन सुनाद कन्याओकर को सम्मानके साथ सक्तर करता है। आप ध्वान् तेवाबी और परस्कातिक है। जारके है जासको अन्य में बढिको शुक्रकुत हो मना है। महरवार । आरमधे नमस्यार है। अपने उन्हेंबरके प्रकारों मुझे यह कराया प्रधा करता है; जार अपना दिस्के

ने अपनी पन केल करे ?"



न्यसर्वने करू—सरम् ! अत्य कुले अपनी प्राथीसे

नेश-धारीपति साम्य किया है। अपीतम तुर्वे सपनी। प्रयाद्या कांकुंब्द पातन करने तत्त्व। प्रसा-पातनसम बौद-बोरिकी बसुरिद सुदि करी हाँ है। हुन्ने पूर्वकार्थ अवंशायन, ज़रंग और आकार्य कुर होयर यो कर संविता विकास सा, करवार सर्वेक राष्ट्र वहीं हुआ है। मीटबेरिने क्या रेकर भी के इस्ते नेत कृति किया, उसी पुरुषका परल है कि तुन इतिय हुए और जान को हुएने पेटी पूजा की इससे तुने प्रकालनकी प्रति होनी। उनकार ( हम नामा प्रकारके सुका भोजकर अपने मी और प्रकारकेंकी रक्षाचे विन्ने संख्यापृत्ति अपने प्राचीकी उसकी क्षेत्रे । स्वरूप, उद्यानकार्थे प्रश्न क्षीनकाले क्षेत्रों क्षीक अनुहार प्रत्ये अवित्याची प्रकारण क्षेत्रा सहार मानवार सनुभव करेगे।

क्षेत्रके बढ़ते हैं--इस प्रधार करने पूर्वकारक इसल कर्मनाथ का बोर अर अप्रैल-क्षेत्रों करत है शास्त्राचीका पहला करने सन्तर । सम्बन्धा करने बच्चे १००० संपक्ता कारण की । वर्ष और सम्बंध प्राप्तको परणेकारे का प्रमद्भारको स्थ प्रकार देशका विकार अकुन्यक्रियक कारती असे कर अने और कारे हो—'बीट ! प्राप्तिकीकी एक्षा करना है क्ष्मीनीका वर्ग है। कुन कुन और अस्था अने जार करों एक करने कर और प्रश्निकोंको क्ताने करके अध्येतनीत प्रकारत करना करे । उसन चेन्सेका क्षत करते हुए अपने अञ्चय केचेका कर्तन करे, उत्तर क्षे और आवरणा प्राप प्राप्त करें। अवस्थित संस्कृति प्राप्त करते रहे। स्वरूपर, इतिक-कर्तरका उक्क करते **अवस्थानको जाम करोगे (**'

वर्षका अवस्था करते हुए उसने खेडे ही दिलाने (रामधुरियों) करोर प्रथम दिला और कुले कर्न्यों का प्रशासके कर करना हुआ। यह चालका महत्त्वकरी ज्यारची एक इसके पास नाने और चेरो-"विकार । अब एन्डे विजी प्रकारका पन जी हेन करेंगे। उस को करोबार अस वार्ति और कर करनेकार कर-बेरियोर्ट कम तेव 🛊 । महत्त्व केल चान करता है, उसके अनुसार ही उसे पात भोगना पहला है। अवः अवः प्रथ पान्ने भारते न उत्ते । हाँ, तार्वे कावि सोपवाः पन रूपान क्षेत्र पाक्षिके: क्रातिने काम वर्षका आवश्य करते को र

बोटने बहर-कारत्। आवश्री कृतने पुहे अभिकारिका पुरस्की अनवता प्राप्त होती पनी है। आव क्षेत्रक सम्बंध करा वेद सरा का ग्रह से ग्या।

र्वन्त्री कर्त है-का उत्तर कार्यन सामके करकारक का बोको पूर्वन अक्रमानको पाहर पूर्वाको केंग्रों कार्योंने अदेश का दिन (अर्थात अर्थ केंग्रों पा किने)। सरका, उसलेसाओर तेत्र क्रेयर उसले व्यानीका प्रात्तिक प्रात् विका : व्यानीके क्रवरात्त्वर जाने कारणंका पातन विकास, अहीवार का पात हुआ है। व्या प्रकारिको कारा स्थान अक्री भीर है एक। चीचीत ! (व्यक्ति-मोनिर्धे का सीको यह करके सरकारत मेरफ क, इसरेले को कार परिच्ये अहेर हो।) इसी जन्मर को जनम-असर असेन अपनी प्रतिकार परिवार के हर इस रमाजुरिये को रावे हैं, वे भी पुरुवाधी गरियों जात मुनिहेर । व्यक्ति व्यक्तावी कर मुख्यर वह प्रस्कृतकः | हुए हैं आरः रुखे हैंनो हुन्हें क्रोक नहीं करना पार्टिने ।

#### व्यास-मैत्रेष-संवादमें हान, तप आदिकी प्रशंसा

कुषितिसे पुरा—विस्तवत् । विद्या, तम् और कुष्— इनमेरे जीव-पर कर्न के है ?

प्रेमची का चीतीर ! जीवन्त्रकेतवन जास और वैशेषके संवादक्य कर प्राचीन इतिहासका उद्यापन दिना साथ है। एक एन्ट्रांडी कहा है, पनवान् श्रीकृष्णकृष्यकः वेदान्यस्थी कृतकारे विकारे हर मान्त्रीये सा पहेंचे । कहीं पुणियोची पन्त्राधेने पुणियर विवेचनी की हुए थे। जब जासबी उनके पता गर्ने के कीवजेंने उन्हें महत्राम रिन्स कि में मोर्स प्रमुख हैं, जिर कामा विकित्त पूर्व करके उसे उत्तर शत चेका कराया। का साल.

लामानक और समग्री क्षेत्रके अञ्चल शह पोपन करके महत्तव प्रमानी 🚃 संदर्ध हुए। दिल पन व्यक्ति काले तले से कुछ कुरुवारने । जो पुरस्कारते देश कियो का—'वर्णाम् । मैं सामग्रे प्रमान करके पूछल है, असके इस प्रकार पुरावस्त्रीका क्या कारण है ?"

करकी का-देशको । की अल्पेड कई बरिकेड और अधिकारक वर्षन किया है। अर्थाद सामग्री से स्मिट है 🕮 अस्तावारण करके किया प्राप्त क्षेत्रेवारमें जाते हैं; मिद्र कारको का साम है प्राप्त केलाने देती है। यह

मानवार पूर्व कैमानवाक होती स्थानी है। प्राथमिनिके अनुसार दिया दृश्य कोड़ा की दृश पहलू कर देनेकाव होता है। अपने इंन्स्टिक क्रम्बे पूर्व-कार अधिन्येके क्रम रिना है। मैं पूजा और माना था, ऐसी रिजीनों मुझे अस केवर आको दल किया। इस पुरुषके प्रधानने आको सहस् क्षोद्धर प्रम हेनेवाले को-को संबद्धर निवल कर्ना है। अस्त में अवनोद वर्षात काले बहुत अस्त हुआ है। अन्यान बार परकार है कर है और अस्तात करेन के परकार है क्रांन है। इस क्रमान पुरुष्ठ प्रकारों के सामके क्रमेश चील पन रिकार को है। कह ! कर करन केनेकर और मेरिक प्रत्यो परिचे भी प्राप्त है। किस्ते प्राप्त कर्न है, उन प्राची एए हैं सको कावर परिव और कान्यानकरों है। भाग रिल-पिल वेकेस जान करोंकी कांका करो है, उन सकते कर है के हैं: करने क्षेत्र से संक्रमें कर की है। कारोंने के जान कर्न कर दिया है, जाते करेने कुछ कारों है। कर करनेवारे प्रानक्क राज्ये करे है। अहीने को अभिकेत है। केहे केहेबर प्रमानक, प्रतिक्रीवर संस्थ और सर्वेक्स कर कर है, को अबर पर पी क रोताओं अस्तर कार कर कर है। कार्य ! आको का क्रमोद्र करण जान कुलके उन्हें होती। प्रतिकार गर्मन का बर्क अनेल के दुन जा बना है—ज का प्रभावे नेविद्र जानने प्राच्या है। अगर-वैते और पर पाते हैं जे करते कर और पह करके इस्ते होते है। जिल्ह से मियम-सुनोपे आलक है, वे सुनको कुनमें बढ़ो है और के करता अभिने प्रण द्वार करते हैं, उने द्वारते हैं सुराती अपी होती देशी करते है। इस कन्यूने विद्वार्थने सर्वकार्थ मानाम तीन प्रकारके कारको है—विकाले कुछ होता है, मिलीमें पान केवा है और फिलोने केवोबा अध्यक्त पाना है। ब्रह्मनिष्ट पुरस्का आकरण व प्राप्तका क्रमा क्रमा है, प पायनन । अनके करने सेनोका ही अन्यन करा है । को का. क्षण और सम्बानी प्रयुक्त खुदे हैं, में पुरुषकों करनेकारे हैं। में प्राणियोंसे केंद्र करते हैं, वे प्राणकार सम्बो करे हैं । कें मनुष्य क्राएंके का पूर्ण है, ये प्रश्नानों जान होने और भरकमें यहते हैं।

मैंगरे का—पूरे | जारते कुरके सम्माने के करे बतानी है, वे क्षेत्रक्षित और निर्मेख हैं। इसने सिम्ब भी श्रेष्ठ नहीं कि अपने निर्मा और प्रमानने करने अपन्यासमध्ये परम चीता करा दिना है। अप युद्धिता है, इस्तीन्ने अपन अरनके समानमसे गेरे तिने न्यान्त् स्तम महैना है। जन मैं बारका युद्धिने निमात करके देशता है से अस्य अन्यव

कार रूपने कर पत्ने हैं। सबके स्वांतरे केंग्र अव्याप हेना । अवने नहीरक आनेका यह फिन्म, इसे में आनही क्य क्यान है रूप करने स्वयंतिक करेंग्रे सी प्राप्ते कारण पानका है। अञ्चलको क्षेत्र कारण करे सबे है---कराव, कार्यापर और विद्युत प्रकृतकुराने जन्य । से हर कीन पुर्वोंने पुर्व है, नहीं तक हाहान है। ऐसे हाहानके क्षर क्रेनेनर केवल और मिल्ट की पूर के बाते हैं। विक्रमोंके हैं के क्राइक्से क्यूबर करन चोई यान नहीं है। प्राह्मन न हे के पर कर पाए सहस्त्रपालों सकत है पाए विश्वीयों पूछ रहा र को एक यह क्योंकी विश्वीत को-कर्का और का-अस्ता पूछ की र पू पान। केहे भक्त अन्य केली क्रेश केलेल अल्बा कार पाल है, जह रकार नेव्हान् अव्यानको कर देवत करा पुरस् कार कारका क्राचीन करता है। की विका और सहस्राप्ते सनाव सकता का न परिवार करें के प्रत्यानीका का है जाने के बात है पूर्व प्रदेश और विकासिक अन्य प्रदेश है है पर प्रदेश अवस्थे क करत है (सर्वाद करावे करता कर पर पाँ रियम् । को उस्त क श्रेष्ठ में क वर्षके क क क्रांस्थ है। के कुरक क्रेमेंट स्वरंग का शह (और कुरह) भी पह कथा है, जानी भी भू तह पह करता है। मे नुर्व कुर्मा प्राप्त कुरू कुरू है, यह कई भी पूरा प्राप्त है। विकार प्रकार और तम कार करता है से यह सा अक्टा कार्य केंद्र है अर्थात् अस्त्रों प्रकारित प्रति रक्ता \$ 340 Mr Safe (Sared) (\$400 marks first arrive क्रमें अनुसार काम पान जाना करता है। नहि हता समुख किसीका राज पहल करते हैं से के कराओं संरात प्रस्के जाते है। बार: सर्वेण प्यक्तिको कुन क्षेत्रो इस प्रकृत क्षेत्रको अदी होती है, इसरिन्हें को मिल्लिक क्षर नहीं रोज काहिये। का देनेकरकेको को पूरव होता है, नहीं पूरव कर हेनेकारी केन अभिकारीको की निरम्ता है; क्वोबिट होनी एक-कुरोके प्रस्कारक होते है। इस स्थिते गाउँ भई भारती-अरिक्रीको विश्व कुलबा धर भूते स्थापन हो क्यम-देश क्रिकेस करन है। वह स्थित और प्रदान में सकता को है, की दिने हर कुन्या कर हारनेक और परलेकों को निराम है। को उन्हाम निराह सुराने हरत, उपायों को खोको, क्षेत्र हम अववन-समा है. ने ही एक कुछ जाने को है। देशे ससुकारि जिस मार्थका निर्माण विका है, उससे चारनेवारेको कभी सेह नहीं होता।

क्षणा वर्ष है—मुनिहर । देवेको इस प्रधार स्थानिक भगवान् नेपालक कोले—'अस को सीमान्यहरूको

भी सीमान्यसे ही जात हुई है। संस्तरके सोन काम मुख्याने पुर्वाची है जनिक उद्यंत करते हैं। यह स्करकृषी का है कि कर; अवस्था और सम्परिका अधिकान अवके करनः स्तिक भी अध्यक्ष नहीं इससे। इसे अब्द अपने काल वैभागवीका अनुबद्ध प्रमानिये । अन्तु, अन्य मै सुमारे भी जन्म वर्गका वर्णन करता है। इस वनको निक्रने करवा और पो-के जन्मित्रों हैं, वे सब बेक्ट ही आवारतर समझः प्रवरित्त क्रु है। वैने सुन्त है कि वनुष्य कर और विकासे है महान् पहलो अप होता है तथा श्रमो ही जनाको कर कानी मर्गाक गांव काल है। पूजा विक्र-विक स्वीकानकरी रिर्मिको रिन्ने तरावामें अवत होता है, यह प्रम हते हर और निवासे अपू के जारी है। विस्तारे संबंध क्षेत्र, विस्तारे पराणिक बारता, निलो पाना और निलो बालना समीहन है, कह पूर्व संपंतिको साम्य है पान है पानेक सरकारत कर भागते बदा है। सरावी, चोर, पर्यक्रकार और पुरावी बीसे व्यक्तिकार कालेकारक पानी भी क्याबारे कर बावा है, अपने पापोले कुटबार क साल है। से एक प्रधानके विकालोंने |

🖁 भो देशी करोंका प्रत्य रहाते हैं। अध्यक्ते इस संस्थाने चुन्दि 🕆 प्रतीन है जही नेत्रकार है और प्रयस्ती करो निस प्रकारका हो क्य के नेत्रकार ही समझानेकोच्या है। इन क्षेत्रोंको सक नमस्तर करक स्वर्धित । यो निवाने बारी और उपनी है, ये राज पून्य है क्या कुन हेनेकारे भी इस रकेकरों कर और मस्त्वेकरों सुक्त करे 🛊 : पंतरत्येः पुरस्तान पुरस् कन्न-यून वेकर इस स्तेकरे पी तुन्ती क्षेत्रे 🖁 और मृत्युके कह उद्यालेख तथा अन्य प्रक्तिहाली लेकोको अञ्च करो है। सुनी पुरूष सूर्व पुन्स और सम्मानित होते हुए कुल्लेका पूर्वन और सम्बन्ध करते हैं । में कहाँ करते हैं व्यक्ति स्रोत रहेल अर्थाः सामने जन्मक सुन्धाने हैं। पैकेरवी । अर्थ क्रम और प्रकारी है, यह क्रांसरकों रहे रहेने और पुरुषोधे प्रेरो के सबसे जान को पुरुष कर्मना है, को श्वान केवर सुनिये । किस कुराने पति अवनी प्रार्थित और पाने अपने व्यक्ति मेहरू व्यक्ति क्षे वर्ष एक व्यक्ताल क्षेत्रा है। विक अध्यक क्रकेरे क्रेसेक्स्ने केल कुरू काली है और अधिकी प्रकार कन्यका कु हो पात है, उसे प्रचल का और क्यानारे मनुष्यक्षा सारा कर कह हो कार है । आरका कार्याल हो, अब में अन्ये आध्यापर करता है। मैंने को कुछ कराया है औ पाद रिक्केक, इससे आवका कान्यम होता ।'

## शाध्यक्षि और सुमनाका संवाद---पतिवत-धर्मका वर्णन

 पुणिक्षेत्रे प्रमृ—निकान्यः । प्रथम सम्पूर्ण व्यक्तिकारोने बेह्न हैं, अतः अब में जानके मुक्तने तत्वी क्रिकेट प्रदेशकारका किया सुरस प्रकृत है। अस्य अस्ता प्रचीत वर्धितिको ।

योगानी पहा—एक स्थापके कर है, एक प्रकारके सरलेको बायनेवाली, सर्वत एवं स्थापिकी क्रान्तिकी केल्लेक्स्ने नवी । वहाँ केक्स्मी सूचमा पहलेसे चीवूद की । काने साविक्रयेको देखका आसे पुत्रा-- 'कन्यानी ! तुन्ही विकार आस्थार और क्रमीनका प्रमुख विकार था, विकास प्रमुख क्योंका नाम करके हुए इस वेबलेकर्ने अली हो ? इस भाग्य अपने तेवसे दूस आजियी जानको स्थान देखीयायाः हे की है। दुने देवका अनुका हेस है कि केई-से सपाना, सामारण हान वा होटे-फोटे नियमोका फारन करके तुम इस लोकमें नहीं जानी हो; जक जमनी सामानके सम्बन्धने तुम सची-सची कर कराओं।'

्यव सुम्माने इस प्रकार मनुर वाजीने पुत्र तो पनेहर मुसकानवाली साध्वितीने वीरेसे उत्तर दिवा—'देरे ! वे गेरका बळ पहुन्ने, बरफल काल काले, ग्रेड पहुन्ने क



बड़ी-बड़ी कटाएँ रक्तनेसे इस खेळाने वहीं आर्थ है। की स्था समयान स्वका अपने परिदेशके प्रति प्रैतले पाणी अधिकार और वाठोर कान नहीं निवाले हैं। मैं बहु सार-प्रमुखी जाराने चुटी और देखा, विटर क्या प्रक्रमंत्री पुराने प्रमान नहीं करती थी। विशोधी स्थापी नहीं कार्या थी। कुल्लेको सबस युक्ते विरायुक्त करंत् व भी । मैं परवार दरवाया क्षेत्रकर अन्यत नहीं साहे होती और देखक किसोसे बात नहीं करती थी। की सभी दिवसर क सामने विकास अवस्थित परिवाद की विकाद करा में। प्राप किर्माण अद्देश भी भूगे हुआ है। यदि मेरे काले जिल्हे भारती बाहर बाबर किर बच्चो सीको है से मैं सामा औ बैटनेचे रिणे असल हेती और एक्सप्रीताले करती कृत मार्थी थे। यो अब मेरे सामी नहीं पूजा पहले, विक पर्य, भेषा स तेवा (कारी) जारियों ने व्हीं कांट् करों, का समझे में भी जान देती थी। वारे प्रकृतको तैसरे भी कुछ कार्य जा बहुत, न्यू एक में एक्ट्रे ही अपका | कर्मन कार्य अन्तर्मन हो पत्री ।

कर-करा रेकी थी। यदि विजी सामस्थक कार्यका मेरे कारी पर्वत करे से मैं नियमों सुबर उनके बहुबानी निये जन प्रकारके मानुसिक्त कार्य किया कारी की। र**ाजिके स्था**र पारं सानेपर में अञ्चल, गोरोबल, पारक और सक्यान साविके क्रय नक्कार नहीं करती की। कर के सुबक्ते क्षेत्रे रहते का समय आवश्यक कार्य आ जानेवर भी में औ नहीं समाधी की और देश करके भी मनको निर्माण प्रेरोक क्षेत्र वा। परिवारके पालन-पोकाके बार्लक रिक्रे की मैं में क्यों के वह बता है। परवी कु बताके सह क्रिको सुन्ने और वा-क्राच्ये सह प्रस्क-स्थारकर साम रक्षणी भी । जो की कांध्र सामन्यान द्वाबार द्वार कर्न-प्रार्थका-काम करते हैं, जा कियोगे अक्टालीके समान आहातीय क्षेत्री है और वर्णलेखने की कार्यों निकेत प्रतिद्वा केंद्री है। क्षेत्रको सहते हिन्दुविद्या। इस समार पह क्षेत्रकार्याको हेर्च प्राध्यक्षे पुरुतके परितय-कर्षक

## साम-गुणकी प्रश्नंसा--राक्षस और ब्राह्मणका संवाद

पुर्वितरे पुरा-पराभेष्व । अस्य तस्य और प्रान्ते । प्रेयस पर्यक्रमे बेनाने सोनोक्षे साथ पुरार अनुस्त्रीय विसम्बर्ध होता मानते हैं ?

मोपानीने सहा—केंद्र 1 कोई सहस्र सामने प्रसान क्रीता है और परेई कुमते। तक पुरस्का प्रकारत सम्बन्धर केनोमेरे एकका प्रयोग कला शाक्षिते। क्रम हुन क्रमके पुजीबरे सुने। सामने प्रथ वयानक से-मध्यान प्राणी नक्षमें किले जा समारे हैं। इस किसमें एक प्राचीर इतिहास सुराता है। कोई बुद्धियर प्रकार निर्मत बनमें कृप एक था। जार्च प्रमान एक राक्षकने आस्था को जानेकी इन्हाने क्वाइ विन्ता। अञ्चलकी सुद्धि से मचर्न भी हो, यह निवान भी या, इस्तीओ का राजस्त्री मीचन आकृति देखकर की न को काराका और व दुःशी 🐞 हुआ। विक्ति उसके प्रति स्तयनीतिका प्रकेश करने समा। राक्षाने अञ्चलके वार्तिनव वक्तोकी अनंतर की और मता—'मेरे प्रसम्बा बता दे के को मैं तुनों करें। हैगा। क्लाओ, में इतना क्षांत और क्यार क्यों हे या है?"

या सुनका अञ्चलने कुछ है। विकार किया। फिर को वैपंके शास उसने असके उन्होंका उत्तर देन आरम मित्रा 'राह्मस ! जान पहला है तुम सुहट् अनेसे अस्तर ्र प्रतिपति सम्मानित हेनेपर सी अपने सम्मान-दोसके कारण

निकास अपनेत कर हो हो। इन्होरे दिन सकते हाए



हुमते विश्वक बाते हैं। मुन्तेमें को हुन्दार्थ करेका कहन ही ? नक होना और हुन को बिताई तहा सन्दात-सुक्रवार हाना निवृद्ध हैं, में बढ़ प्रमुख भी बन और हेक्सी अधिक होनेके कारन तहा तुन्हारी अन्दोरना किया करते हैं। इसी कारन हुन कुर्वल और साम हो को हो। हुन कुलबान, विकास और विनीत होनेपर भी सम्बन नहीं पर्छ और मुख्यीन हवा पूर कारियोधी सम्मानित होते देवले हो । बीवार-निर्वाहका कोई क्रमान म होनेही हुए हेला कालो होने, सिंह अपने चीनकोड कारण जीविकको प्रतिवाह आहे बरावोको निन्ध करते हुए कों जीवार की करते होने; सन्तर है, को कुक्ते कार्त और पुर्वताला करण हो। हुए सकाराओ कारण अपने सबैरको कह केरर भी कर विश्वविक इसकर करते होने हो या तुन्हें अपनी पतिनो प्रतनित प्रत्याता क्षेत्र । विकास मित कम और प्रोपने सम्बन्ध है, सरक्ष के कुकाने भरतकर बाह योग हो है, सम्बद्धाः हैसे हो सोगोर्क हैंस्से हर सक निरित्त यसे होने । कार्यर हम को मुख्यिक हो हो की अक्षानी पुरूष कुक्ती हैती अपने होने और कुरकारी न्यूक पुत्रम विकास कर्त होने—बान्य की बन्तर सालाना और कुरिसाम्बर कारण हो । अध्या यह भी हो सम्बन्ध है कि कोई बाबू स्थारते मेड् पुरुषके सम्बन्ध सार्वन सहस्र पुरुष अपन है और देशों विज्ञानकी करों करके तुन्हें क्षेत्रा केवर चान मना हो। हम अर्थहाको प्रसिद्ध, श्रामको को सन्दर्भने कुरता और विक्षम् के से भी गुंच्या पूजा प्राच्या गुज्जा काराज अही करते, इसीयो तुम कहातीय और कुर्वत कुछे हो । कुम संदेशकित क्रेकर जान बातोबार क्रमेक करने हो हो हो नीय पुरुषेके समुद्रापने इन्हरे नुलोकी प्रतिक्र नहीं होती ह अथवा व्य हो सवात है कि दूप कर, बुद्धि और विकासे होन होकर भी केवल प्रार्थिक प्रक्रिके अध्यास्त्र कावन पहले यों हो और इसमें सफलका न निस्ती हो। कुछे हो ऐसा अनुनान होता है कुनाय कर प्रथमने प्रत्य प्रश्न है और इसके रिन्ने दूस बंगलमें कहा बाह्ने हो: जिल् हुन्हरे भाई-वन्तु पर बात नहीं पांच वाले । यह भी काला है है। रूपारी की बड़ी सुपति हो और रूपारे पहेलने ही कोई बहुत सुन्त, वर्ग और परबोलन्यर नैक्यन सुन्न हो। एक कुली सम्बाधना भी है, इस बनवानोंके बीच उद्धार और कार्यांका बार बढ़ों हेने, जिन्ह वह उसे कांद न जाती होनी जनक कुषारा कोई दिन व्यक्ति सूर्वताचे कारण हमारा काँका है। होड हैना ।

न कर को होते। सम्मक्तः हुन्हीं तम कारणोसे दूस कुर्वत और उद्यापि हो हो हो। यान पहला है कोई पहला हुने करने इकले कहारा किसे कामने निमुख करते सह तान कान काम है अवस हम अपने सामग्रीके बातन क्षेत्रोंने सम्मानिश होते हो हो भी तुन्हारे सहद (बन्ध-सन्दर) बन्दाने हैं कि का इससे हैं प्रकारने आदर का रहा है और तुस लक्को विक्रित केनेके कारन अवन आसरिक अधितन क्रियोग्द प्रथा करच जी पत्रहे । संख्याने पान्। प्रधारकी कृति और विक-विका प्रतिकारि लोग कोटे 🗓 उन प्रवक्ती हुन जन्मे पुनोपे काने करन बच्चो है। अथक का भी है wom & fie ge fage, a giar al frant flerbunk कार्य कर बच्चे हैं, उत्तेव हेरेन में काहरवांक नोजियो जीवारक एको हो और अन्ते पात बोदा-का का क्षेत्र के क्षेत्रके क्ष्मेंचा क्षम प्रमु करना प्रमुखे हे—यो कुएटे अल्पेन्स और हुस्तिका काल पार नाम है। एक पार पार में सामने अर्थ है कि हुई अराह कोई केंग नहीं मैकानी हेता हो भी होंग करवारण ही सुने बोलो को है। हर सब पुरुषेको पुरुष, हर्गरोको करवारी और संस्थातियोंको यह-मूचिए आहेरी स्थानक रेको हो, पनि विकास सहसीन और क्लेस हेरे का रहे हो। हुएते केई पश्च-कार्य कहते पहला होताका हुन चेन्त्रों है और कुछ उन्हें सकते मुख्य नहीं बार पाते, इसरिक्षे जनमें क्रमीन प्रीयमको कार्य सम्प्रती है । हुन्हरी करें करें, वर्ग और पालके अनुपाल को सामनिक होती है से भी पूर्तर सोन जनन निकास नहीं करते । करीकी होनेवर नी पीक्षमही इक्से हुई कार्य पुरुषे की हुए परस्य पुरुष करन पान है। इन्हों साह-रत्याची इस-दूसरेसे विदेश रहते हैं और कुर उनका क्षित्र करना चलते हो। केंद्रा प्राह्मणीयो वेद-विरुद्ध कर्न कथे और विद्वारोको इत्तिकोके पहाने प्रदे देशका हुन निरक्त विभिन्न को है। सम्बद्धः उन्हें सब कारनोते हुन्यस करेर उद्धय और दुर्बत हो गया है।

देश बहुबर का उद प्रायमने एअसका समान किया के काराने की सामकात विशेष सामार विजा। उसने उसी क्या स्थानको सन्दर्भ नित्र कर्ना क्रिया और उसे वन देखर

# आञ्चके विषयमें देवदूत और पितरोंका तथा धर्मके विषयमें इन्द्र और बृहस्पतिका संवाद

बैहमासने पुढ़े वर्गके को पूत्र पुत्रम कारपने है, इनका कार्ण करता है, सुन्ते — विसन्ते करनेसे देवता, वितर, ऋषि, प्रथम, लक्ष्मी, किन्नुस और हिमान जराब होते हैं, जिसमें महान् पास देनेवाले ऋषि-अभीका स्वास्त्रीत समावेज द्वारा है तक विसके अनुहानसे बहे-बहे दलों और सन्दर्भ खोका कर मिलता है, इस वर्षकों को कारण और कारकर इसके अनुसार जानरण करता है, यह क्यों रह हो हो हो पर करना होबार प्रयागासम्बद्ध हो बाता है। दल कारकार्वके सम्बद्ध एक केरी, का वेरिन्योंके संस्था एक करणार, का अल्बारीके इस्पन एक बेरदा और दल बेरकाओंके लगान एक तथा है : अतः रामका युन हेन्द्र मिनिज् यान एक है। विक्रमे कर्न, अर्थ और बरायवर वर्णन है, को परिता और पूज्यक परिवाद करनेनाता है, विवासे वर्ग और अन्ते सुरक्षेत्री स्वापना है तका को काम परिता, सर्वपुत्त और साहान् केन्क्रानेंक्वर निर्मित है, जा प्राथम्य काम काम काहेने। फिल्में निर्माण बाजुके विश्वमें गूह को काली नवी है, वहाँ सम्पूर्ण केलाओंके श्रासका प्रान्तुत कर्मन है क्या विकर्त क्षमानित महान् शतकानी अभि-वर्गका हुने को-को को और सम्पूर्ण राजेंके करनेता प्रतिकार विकास नवा है, जा प्रतासको जो लोग पाछ पड़ते हैं, कियें करका बार हरपहरू होता है तक से सहकर सुरशेके सामने अलब्दे सारका करते 🗜 के सामान् जनसन् नारकाओं क्रका है। जो क्रुक अतिवियोकी पूजा कला है, जो के-दान, रोबॉ-सान और महानुद्वानका पास निराता है। यो अञ्चले साथ कर्न-अल्बोक्ट प्रकार करते हैं एक जिल्हा हुन्द कुछ हो नह है, वे अकाब ही कुक्त-त्येक्टेंबर जिल्ला प्राप्त करते हैं। अञ्चल्पंक साम-समय करनेकाल प्रमुख अपने पूर्वकार्यने कुटकारा पा करता है। पश्चिमकों को स्वय नहीं सरहा है। निस्कारी वर्षका अनुक्रम करता रहता है और वरकेंद्र कर को ज्ञान लोकको प्राप्ति होती है।

एक सम्मनकी बात है, एक वेक्क्रूने मितरों और वैकाओंसे उस विका-'क्या कारण है कि सक्के दिन श्रामुकर्ता और अञ्चये फेका करनेवाले पुरुषेत्र केले मैक्नका निषेत्र किया गया है ? ब्राह्में अलग-करून कीन निष्य को दिने जाने हैं ? पहला निष्य कीने केंश काहिये ?

क्षेत्रको करते हैं—सुविद्या । कुकेसलारे कामका | अधिकारो कीन है ? वे सक करते में कामल काइना है "



िन्द्रीने क्या---वेक्क्स ! तुन्द्राचा सक्याना हो, इस सम हुन्तर साम्य करते हैं। तुन्ने क्यूत गुरु प्रव कुर है हो भी (4) अन्यत्र कार के हैं, सुने—के पुरुष अञ्चल क्षत्र देखर जनक साजुने क्षेत्रम बनके सीके साथ समागम करता है. जनके निवर का विनले लेकर एक महिनेतक क्रीके बीची निकास करते हैं : अब इस सम्बद्ध विकास कार कारत हो 🕯। सम्बन्धे को तीन किय्योक्त विवास 🖣, इसमें पहला दिखा जरमें इस्त देश सहिते । असम विकास सहस्रतांकी प्रतीको दिल्ला हेल वाकिये और मीरले विश्वको आहिने क्रोड हेना कारिये — नहीं बाह्यपरी विशिष्ट है। को इसका पासन करता है, अन्ते अनेका कभी लोग नहीं होता, इसके विवर स्था जलकारिय एवं संतुष्ट रहते हैं और उसका दिया हुआ हुन अञ्चल होना है।

रेक्ट्रको पूक्त-विद्याल ! जायलोगीने विश्लोका करकः विष्यान करास दिवा; किन्तु पहारे विकासो जो असमें कर देनेकी कर बरावी है, अलो अनुसार गरि का करने बार दिया नाम से नीचे कारत का विषय किसे पिलता है ? किस केवलको जनस करना है ? तथा किस प्रकार उससे कुसरा विषय किसे मिलान है ? तथा क्षेत्ररे विश्वकात विसरोका उत्तान क्षेत्र है ? इसी प्रकार वरि मकाम विषय पात्ती ही रहा बाती है तो उसके नितर किस जकार वस निवाका | करपोग करते हैं तका असिन दिवा का अतिमें जल दिवा बाता है तो उसकी कहा गति होती है ? व्या किस देखाओं पिरता है ? व्या सब बातें मैं सुनवा बहुता है।

रिश्तेन कहा—देखहर पहला विश्व को संतर्ध भीता सहस आता है, वह अनुसाको तृत करता है और सम्प्रक सर्थ हैला तथा निर्दाणों संतुष्ट करते हैं। इसी प्रकार करते हैं। तस्त्र प्रेस्तर निर्माण पुरुषों कामनामाने पुरुषकों कुत प्रदान करते हैं तथा अग्निये को विश्व हात्य करता है, उससे एंड हैं-कर दितर कनुष्पकी प्रत्यूपों कामनामें पूर्ण करते हैं। इस प्रकार तीनों विश्वतिकों गति कारताथी गयी। साह्युप्पकों कान आदिसे पवित्र होतार ब्राह्मों कोचन करना काह्युपे। ब्राह्मों पोजन करनेकारम प्राह्मण उस हिन कामनाम्का विश्व माना करते हैं। इसस्थि उस्त हिन उससे दिनों वह पराची कीके सस्त्र प्रोत्ति है। को पूरण इस विधियों अनुसार साह्युक्त कुत्र है। है, अस्त्री संत्राच्या गृह्म होती है।

वितारोके इस ज्यान कहनेके वाद विद्यास कामाले एक तपानी महर्षित इससे पूजा 'तैयान ! मनुष्य मोहनक मीट, विवीरित्या (पीटी), साँग, भेड़, पूण और पानी अली तियोग्योनिके ज्ञाणियोगी दिसा करके ये ज्ञान क्या कटोसी है, जासे बुटकारा धानेके विन्ते कई बौन-सा ज्ञाणीहरू करना चाहिने ?' उसका बढ़ ज्ञान सुनकर सभी तेया, ज्ञानि और विसरोने करनी पुरि-पूरि ज्ञांसा की।

्यूने जार तिया—मनुष्यको स्वतिने कि कुरकोत, गया, गहा, जमास और पुष्पर केवक यन-ही-यन स्वान सरके आएमें झान को—देख करनेसे का पापसे पुष्प हो जाता है। सो मनुष्य गायकी पीठका सर्वा करके जसकी पुष्टको जन्मम करता है, जो उपर्युक्त सीमोंने तीन विनास जनकारमूर्वक सने और साम करनेका पास जाहा होता है।

तरस्त्राम् इन्हें केशालोके शक्ते अपने पुर कृत्यतियीसे समूर वाणीये कहा—'श्यावन्! सनुष्येको सुस देनेवाले वर्णका पुरु काला कालकृते, साथ है

क्रावर्धनीने वहा-इन्द्र ! साधान् सङ्गानीने सूर्य, कर, आंध्र और संख्यात ग्रेशोको सहिनो है। वे न्युक्तोनके हेन्स है तथा सन्दर्भ कात्वा उद्धार करनेकी इक्टि रहते हैं। को की और एक दुर्वकी और के करके वेकाम करते हैं, वे क्रियरती वर्षतक दरावारी और कुलकलक होकर बीचन मार्थत करते हैं। हो पचन देवताके साथ हैव करते हैं, उनकी संकार पानि आकर रह से करते हैं। जो कारी हो आपने हिन नहीं आयो, रूपका होनेक अधिकोत्रके रूपक अधिक नहीं पहल करते। विनके पाने अनी बहुत होटे ही ऐसी मीओंका सारा दूव सुमार को लोग वी बाते हैं, उनके बाते हम कीनेवाले बाते नहीं केंद्र होते। अन्यों संतन और कुरल्या थी राष्ट्र हो बाता है । आप करने क्षा विक्रम् अञ्चलोने पूर्वकालमें इसी अकार कर पार्योका कार क्रीमा केवा है। इस्तरियों क्राइमों दिन कर्मीका निवेश किया नवा है, इनका परिवास करना साविते और किये कर्मन करानक पना है रूपका सदा अन्यान करते राजा पारिये १

राजनार, सन्दूर्ण देशता, वास्त्रमा और अभियोगे वितारेश युक्त-- 'मनुष्योग्यो युद्धि थोड़ी होती है अतः से सीन-सा वर्ण को जिससे आपस्त्रोग उनके अपर संतुष्ट होगे ? बाजूने दिया दुव्य कुन किस जकार अञ्चय हो सबसा है ? बनुष्य किस करके अनुहानसे वितारेशे स्वयसे पुरुषाता या सबसे है ? इन बाजीको सुननेके वित्रो हमें बड़ी असुकता है।'

तिरांने कहा—केवनन ! जाम कर्म करनेवाले मनुष्यके जिस कम्पले इस संदुष्ट होते हैं, आको सुनिये। जीले रंगके साँह कोवने, अध्यायकाओं तिराधितात कस्पले तर्मन करने और वर्षाकामध्ये दीय-कन करनेने मनुष्यकः विवादिके क्याचे कहार होता है। इस प्रकार निष्यम्द्र मायले विच्या दूआ दान अवन और महान् प्रकारों देनेवाला है और इससे इसकोगोंको की साद्य संस्थेप खाता है। को पुरुष पितरोंने अद्धा रसकर संसान अपन करेंगे, में अपने अधितापहोंको दुर्गंध नरकरें उद्धार कर हेंगे। इस प्रकार आदाके काल, अप, विचि, यहा और करनका क्याच्या कर्मन विच्या गया।

---

# विष्णु, प्रह्मा, अग्नि, लक्ष्मी तथा अङ्गित आदि ऋषियोंके क्षरा बर्मके रहस्यका वर्णन

पीनानी करते हैं—बुधिहिर ! प्राचीन कररानी कात है एक कर देवरान इसने घनकन् विस्तृते कुल—



'भगवन् । जान विका करीते जाना क्षेत्रे है ? विका जातर आन्याने संबुद्ध निका का समाता है ?'

मैंन्युने करा—हन्द ! अत्यानोकी निया करना की कथा महान् हैय करनेके समान है। अव्यानोकी पूना करनेके वेरी भी पूना है जाती है—इसमें तनिया भी संदेशकी जात नहीं है। से मनुष्य अभिदेन कोजनके बक्षात् अस्तानोको अन्याम करात है, मैं अस्ता बहुत असने होता है। से अपने माराग करात है, मैं असन बहुत असने होता है। से अपने माराग अध्यानी अञ्चानको असनिया देशकर असने बहुते को भीजन कराता और बीके असने चोजन करता है, अस्तान मह बोजन अस्तानके समान करता एका है को अस्तानकी संबंध करके सुर्वित समुक्त करता होता है, उसे असना सीकीन करनका करता निर्माण है और यह स्तान करता है।

निर विश्वविद्यात वरिष्ठ आहे सहविद्योंने व्याचीन ज्यानीको अधिना को और स्थ-के-सब क्रम खेड्यार इनके स्वयने कई हो गये। इनमेंसे अध्येकशोने के किस्स मुनिने इस प्रकार जब किया—'समबन्! में समूर्ण अभिनेति क्या विशेषाः प्रदान और इतिय-आसिके विश्वी दृष्टिने क्या अव अवन्यो सेव्यमे अस्तिक करता हूँ। इस संस्थाने सहस्वारी मनुष्य प्रायः निर्मन है। वे किस प्रकार और किस कर्मके अनुसामने बसका करत य सबसे हैं?"

अप्राचीने कहा—बहुद् वास्त्रशासी महर्षियों ! सनुवाकों नित्त प्रकार काम्या पास प्राप्त होता है, वह बता का है, सूचे—जीव पासको कुछ पक्षमें निप्त हैन रोहेगी नहरकत कोव है जा दिनकी कामों पहुंचा काम आदिसे कुछ हो एक वस कारण कामो शूखे वैद्यानों काम को और अस्त एवं व्याप्तवाकों काम काहणाओं किरणोंको पाम को (निरह्मार यो) । ऐसा करनेने जाको कहान् बहुका पास पिलता है। वह मैंने दुनकोगोंने कहा हुए बात काहणी है।

व्यक्ति का—जे स्टूब पूर्णिय विविधी वर्त्रात्तिः स्टब्स व्यक्तिया और प्रेष्ट करते स्टूब वरत्यी एक अञ्चलि (सर्वा), वी और अञ्चल अर्थय करता है, उसके समित्रोवाय वर्ष पूर्ण हो काम है। को गर्व्यक्त आदि तीनो अधिकोणे इंग्ल वर्त्रात्त्व काम प्राप्त होता है। वो पूर्ण अध्यवासाओं दिन किसी पृक्षित एक पत्रा की तोन नेका है, स्ते अध्यक्तियां का सम्बद्ध है। अगर्यकारकार्य कीन वस्तिनार्य प्रमुख कामकार्य हिंसा करता है क्या सस्ते वितर की स्टूब होने की। इंग्ल ही नहीं, कर्मी दिन इंग्ले दिने हुए होनेकार्य क्रिक्तियोग नहीं क्रिक्त करते और वितरीका भी सस्ते स्तर क्रिक्तियोग ही क्रिक्त करते बंदाना स्टूब हों साता है।

तक्षी केर्य-किस कारें जर्तन पूरे, आसन करे और यह इक्त-क्का किसरें एसे हैं तक जहाँ किया गांधे-धेरी करी हैं, जा कर सबसे कारण हुमा होता है। कारेंसे कारम और करिंद कासरोपर देवता निराम और कारे हैं; इस पराधी पूजा की भीकार करते।

कर्णने कहा—सम्म असिनियोंका सरकार करे, बारहारमंगे हींप करनते, दिनों न सेहेंहे, भांस न हारव, ती और स्वाप्तकती हरण न करे क्या प्रतिदेश पुन्कर सिवंका नाम दिन्का करें। यह खानमान वर्ष सर्वतेष्ठ और पहान् परस् देनेकार है। सैनाओं कर किये हुए बहुका परस् पी श्रीण है बाता है, नित्तु अञ्चल्योंक कर्मुक वर्षोंका परस्य करनेसे जाता होनेकारे बारमा कर्मी हमां महिं होता। स्वत्यों, बहुमें, सीनों और प्रमेकि दिन देवताओंक दिनों को इतिया तैयार किया कथा है, उसे की स्तरकरा, कोई अवदा बच्चा की देश से से देवक को नहें इकेवन करते तथा तिवृत्ता तेरह सर्वत्व असंदृष्ट वही हैं। बाद और कार्क दिन समूच कान जानिले परित्र होकर क्षेत्र क्या करण को और आह्नकों से सरित्राचन तथा न्यान्करत (नील कार्द) का पाठ कराने—देश करनेहे हान्के हैंने हुए हम्म और कामका पास अक्षा होता है।

वीनने बहा—बरमें कुटे काँग, दूरी काट, कुर्वा, कुळा जीर कुरका होना सरका नहीं पाना नवा है। पूरे कांन्से इस्त्रिम् कार कार पाना है (आसंद कुटे कांन रक्तेसे कारों स्वर्त-कारक साम दाना है)। दूरी कार रक्तेसे कार्या इस्त्रि होती है। कुला और मुर्च कारोंसे केस्त्राकेन कार्ये इस्त्रि होती है। कुला और मुर्च कारोंसे केस्त्राकेन कार्ये

हाँन्य नहीं जान करते एक क्यान्य और कोई व्या दश हेन्स कारती सबसे अंदर साँध, निष्णु मादि प्रकृतीका व्या मनिवार्य हो व्यास है, इस्टीको प्रस्के अंदर पेड़ नहीं समाज व्यक्ति।

अवस्थितं कहा—कोई अवस्थित वा सैकाई वावर्षण यह को, जैसे वस्थात करके वृक्षणे स्टब्स अवस्था व्यूच संही अग्रान्त्रण कोल है; किंतु नहि अस्था इस्य पुद्ध नहीं है से उसे अस्थात परकारे काल पहला है, क्योंकि यह, उस्स और इस्यात पुद्ध—में कीनों करावर हैं। (आतीन सम्बन्धे इस अक्षात) कुद्ध इस्याते सेरणर सन् दान करके ही अहर्त्यक्रमें आह हुआ का। इस्टब्स पुद्धातका पहला मारणांचे दिनों पह एक ही इस्टब्स करनी होगा।

# अरम्बती, सूर्यं, प्रमच, महेचर, स्कन्द और विच्युके बताये हुए विशेष धर्मका वर्णन

भीवार्त कार्य है—सहनकर, तथी आध्यों, निर्मा और हैस्ताओंने कारताये कहि-वही हुई सक्तार्थितरे, यो कीस और कृतियों सहरक वरिवार्थित है क्षेत्रर थीं, इस अध्यार कहा—'हैसि । इस आपने हुंद्री वर्णका स्त्रम सुरम्य पहले हैं। उत्तर अस्थ कर्णका गुरू तथा कार्यक्रीकी कृत्य करें।'

अस्थानि क<del>ा नेवान</del> । अस्योगीने को सरक Ratt, breit 45 ment gilt mi fie aus ft arre ft स्त्रेनीकी क्यासे सनातन वर्गीका क्लेन करती है। हार्थानिक, अधिकारी, प्रभावती और प्रध्येत्वनी—क भार प्रकारके सन्योधे वात भी नहीं करनी भावेचे। इनके क्षापने कर्पका तथा कारामा कक्षारे प्रवेश नहीं है। यो पहुन्त बारा क्योंका उतिकि एक कविता में कर करते. हर महीनेमें यह करता और पुष्पातीओं माका लागी केंद्रे धानमें केता है, अरके धार्मका कार भार मनुष्यके महाया नहीं हो समाना जो अतिनिको अपनी सेवाले लेखा करता है। अत:करा को तथा क्या और यस केवर चौकींद्र सीकी जाम । वहाँ गौओंके सींगमर जरु क्रिक्के और सीमसे मिने हुए प्रतानो अपने पराचार द्वारत करके उस दिन उत्पास को । इससे को पुरुष होता है। उसका कर्मन सुनिये। सीनों स्थेकोने रित्य, जारण और प्यापियोशे सेवित को-भी तीर्थ क्षेत्रे करे हैं. रुप प्रवर्षे कान करनेसे जो कर निरुद्ध है. च्या नार्योके सीमके समझे अपने पराच्याने सीक्ष्येगर प्राप्त भोग है।

न्य सुनकर केवता, विवर और समस्य प्राणी चहुर प्रस्ता | वृक्षणी नक्ष्में खेते, विस्तर मंतरका चेता खेते, विहीनीयर पैर हुए तथा उन्होंने एक सन्तो साथुनार केवर असन्ताविकीयो । रहनेकी बन्हा विस्तर समित सन्ता प्रतीने परस्-वृक्ष पूर्व

भूति-भूति अनेता करें। जिस स्वक्राणि कहा—'सहायाने ! हुन कम हो, हुनने प्राथमाहित सन्द्रात वर्गका करोन किया है। मैं क्ष्में कहान हेंसा है ; सुमारी असना सह कहती हो।'

व्यारकर, व्यार् देवको चनका सून्ने देवताओं और वितरों व्यान—'प्रध्यानार, गोहरा व्यानेकाल, क्वांस्ट्या, प्रद्यांन और वीसे वीविका क्रानेकाल—के वीर प्रधानके दुरभागी करावा सर्वता काल वार देने योग है। इससे जात की वहीं करती वादिके। इसके धारोका मोई प्राथित वहीं है। के वादी प्रेश्नोच्छ (क्यापुरी) में वावार व्यक्ति स्ववाने काल्येकी वाद्य काल्ये काले हैं तथा इन्हें वीय और स्वाच्या केंग्न विराद्या है। केंग्रा, निर्मार, काल्य, प्राव्या और स्ववादी मुन्तिकोडी दृष्टियें अन्तुंत प्रविक्रोके प्रथा व्यक्ति कराव की सन्तुनित है।'

मैनवी वार्ष हैं—इसके बाद समाव देखा, वितर और बार क्षानकार अधियोंने अवसीते पुरा—'अवसीत अव्यानको निकार हैं। स्वाने, अवसित, असून और हुए बनुव्योकी को हिल करते हैं? वे कौन-ते उपल है निकार आवार केने अब अवसी हवा की सतते। रहते। बीन-कौन-ते हैं किनवा क्यारण करतेते जाय-वैसे निकार कर क्षेत्रकर बाद करते हैं?—वे हवा को इससोग आयो हुसे सुनग बाहते हैं।'

प्रश्नि का—को प्रमुख एक सी-श्रम्वासको कारण कृषित कते, बहोका सम्मान करते, मोहण्या माँस साते, वृक्षको नामें संते, सिरपर मांसका बोहा केते, सिहीनीयर पैर रक्षनेको करता सिर स्टब्कर सोचे सका प्राचीने सर-पुत्र पूर्व क्ष्म सादि केवारे हैं, वे साव क्ष्मण संख्या (अवस्थित) और अनेको विद्योगारे होते हैं। ऐसे क्ष्मणोंको है इक अवन्य काल और काल स्व्याने हैं। जब यह उसके सुनिने, किसने इक सन्वयोगी हिंसा करनेने असमर्थ हो जाते हैं। जो आको इस्तिने वोशेकन सरकात क्षमण काल काल होते सुनी, (ब्यानी की और अञ्चल करका करका तथा काल काल होते हैं। ३० सिन्नों करने हिल्लाको नहीं कर स्वाने ।

मोपले का निरम्धे मुद्धि सह कवि है सम्बन्ध है और यो परम अक्षा है, क्वींको न्यूट, पार देनेको कर्मका स्कूमसर्वित असंदेश केन कार्यके। यो मनुष्य अतिहित कैर्नक प्रथा एक जाराज्य केन्द्रों करा देख है और पार्न एक क्क प्रोपन बहुके राजा है, उसको मिलनेवाले कारका उन्हें सुने । येऐ बहुद् जेशान्यसम्बद्धीको 🖫 वे वस्त्र बहुद्ध सामे क्यी है। देवल, असूर और म्यूक्वेसदिव सेनी स्वेक्वेंक्टे मीओंने भारत दिया है। इनकी होता कार्नेने बहुत बहुत पुरस् भीर नक्षर पर अस क्षेत्र है। अंतिक नौओको पर हेरेनास ज्ञान जार बनेक अवने कार है। यहाँ सरवपुराने मैंने पीओबडे अपने पात प्रानेकी सब्दा है थी। मक्योंने प्रकारोंने मी इसके निर्म मुक्ती पहर अनुस्य-विकास की भी। प्रावेशियों सेवी भीओंके खुंडानें स्रोपास पूर्ण गुरसे अन्य—वेरे रक्षती स्वयंत्रे विश्वकार पहला है, अनः गीजोब्दी एक ही पूज्य करनी करीने । उपक्र प्रचान बहुत बहु है, वे क्यूडियों है, प्राप्तिये प्रधानक क्षरनेवर अपीक्ष क्रव्यून देती हैं। जो एक दिन भी मानको चारा फिल्ला है, उसे चैओकी अनुसार क्रमूच हुन कारोंकि पालका कीवाई प्रान्त प्राप्त होता है।

सामने कार—नेवासको । तम मेरी मानवाली अनुवाल भी मनेवी हुए वाले शुन्ते । यह मनूना मीले रंगाले स्वीकोट सीरापि कारी हुई रिद्धी तेवार कारते तीन विनयक अधिकेक सरता है, यह अपने इसरे पारांच्यों को अध्या है और प्रश्लेकारों आधिकाल जाह करता है, तिन हुवार जान रेनेवर यह महान् पुरचीर होता है। अस्त अधिक हुएसे गृह यहन सुनो—पूर्णियारी विशिष्कों कार्येक्ट सामन संविके कार्यन्ते मानु निरामक हुआ प्रकारत सेवार को सामाना विशेष स्वीक अधिन प्रश्लि है, उसे सामा, यह आधित्य, विनोधेत, अधिनीकुन्तर, प्रस्तुत्वन संवक्त स्वात्व कार्यन्त्र है। इस प्रकार मिन वह सुनाव्यक वर्णका स्वात्व कार्यन्त्र है।



नगरम् अन्यु केले—को प्रमुख केलाविका परिवास करके अञ्च और एकामान्द्रे साथ देखाओं और महर्गिकींह कार्य हुए करिंद्र हुन गुरू कुरुरेका प्रतिकृत पाठ करता है, जाके कई कर्ष कोई दिए की दूस करा जाते. पद्धा के अध्यक्त है काल है। वहाँ किन-किन वर्गीका सहस्रोतिक कर्नन किया करा है, ये अभी सुन कुई करा बरित है। यो हरिकारिकायुर्वेक इनके व्यक्तिक प्रत्येक प्रशासन करता 🚉 जन्मे कर क्यो प्रकार प्रकार नहीं पहल : या तह क्यो निर्मित्र पहल है। को उसे पहल, क्रारोको सुमान सामग्र कर्न कुरक है, को भी कर कर्नीय आवरणका पतर विशव है। क्ला दिन हुआ इन्द-कन अपूर्व होता है और उसे केवल क्या निकर कही प्रस्ताताओं जीवतर करते हैं। जो पुरुष क्षात्रिक होचा कांद्र हैन क्षेत्र साहलांको सर्वत्र हम क्राज्येका सम्बद्ध करावा है, यह सक्त क्रेम्बा, बार्टि और निवारिक असरमात्र पात होता है करा असकी सर्वत क्षेत्री जाति कर्ता पाने हैं।

चीनमें कार्य है—चुचिहिर ! केनाओं कार्य हुए सर्वक यह कार पुरसे कार्योंने कार्यक मा, उसीको मैंने इससे कहा। एक और कोर कोरों गरी हुए समूर्ण पृथ्वी मिलती है और सुनरी और यह उक्त अन आहे होता है से को उस पृथ्वीको केन्निय हम अन्यत्व है अन्यत्व करना साहिये। कार्याके, जविन्द, अर्थकारी, विदेशी, पुरिस्ताका सहस्य नेवार पुरस्त कार्यकारों, पुरकोड़ी समा अनार्यीय व्यक्तिको हम कार्यका उपदेश की देश कार्यिये।

#### प्राष्ट्राप्त और त्याज्यात्र मनुष्योंका वर्णन तथा अयोग्य दान और अन्न प्रतृष्य करनेका प्रायक्षित

शास्त्रो किल-किन मनुष्योका अन्त अन्त करन व्यक्ति ? क्रीयांचीने कहा-नोटा | हाहात्राको सहाता, व्यक्ति एका वैक्यके वर्ष अस काम करना पाविने । सुराधा अस उनके रिक्षे निविद्ध है। इसी प्रकार श्राप्तिकारे प्रकार, श्राप्तिन समा क्रैश्वके का क्षेत्रन करना पाहिले; किंद्र म्यूब्यक्तका विकार न करके तम कुछ प्रानंत्राते और प्रात्नके निरुद्ध सामान क्षानेवाले क्षातेका अब उनके रिन्ने की स्वान्त है। वैद्यांने की को नित्य अधिकोण करनेकारे, व्यवस्थाने क्यांनको अर्थर बादवांस काव्य करन करनेकरे हैं, उद्देश नहें स्कून और प्रतिकृतिक प्राप्त करने केन्य है। से दिन प्राप्तिक अस कारा है, यह समझ पृथ्वी और सन्पूर्ण समुख्येक नालक है क्षत्र और भोजन करता है। क्षत्रको सेवाने क्रोनातन सक्तन, श्रीम अनव केव की रूपको साम चेन्छ है। सक्ष्मको बेहोंद्र कालाम और म्यूनोंद्र कारकमानी वार्गने संस्थ कार पार्टिन अमेरको समग्री का कामे काँगे और बैरकको प्रकार क्रारिको पृष्टिक रिल्ने कृति और चेरका गाउँ बार्ग वाले व्यक्ति—वही इसके रीओ वर्ग बाराव गांव है। कृति, भोरका और स्थापार—मे मैक्सोट अपने कर्त है, इस्के प्रति को एक नहीं करने कदिने। यो अन्ने क्रमीद रिले विद्याल कर्मका परिमाण क्षत्रके प्रतुत्वा काम अन्यक है, यह प्रा है माने बेन्द है। कावा का कर्ण जी जान करन व्यक्ति। यो अञ्चल विकास कालेकले. एक केवकर बीविका क्यानेवाले, प्राप्तकात, पुरोक्त, क्रवेकल बनानेवाले (क्वोलियी) और वेद-प्राथके अविशेष कार्यकी पुरुषे क्लेक्से है, हे इस सुक्ते है सकत है। में सम्बद्धा परितान करके प्रत्ये समाम कर्न करनेवाले हा ह्यानीका अहा भारत है, का अध्यानपञ्चनका क्या करके केर विवर्धनो पहला है । उसका कुछ, जीवें और देश न्यू हो जाता है उन्हां का

क्य-क्योंने हीन होकर कुरोब्दी प्राप्ति विश्वेन्त्रेरिको अस्त होता 🕯 । विकित्सा करनेवालेका राज विका, नेज्याका राज ቱ

और कारीनरका अब रकते राजन कर कर है। निका

बेक्कर जीविका परप्रवेशको पुरस्का सत्त भी प्रारक्ते हैं।

समान है, अब: सामू पुरुषको आका परिचान कर देन

काहिये। यो करपीय प्रत्यका जन काम बस्त है, जो

रक्तका सरोवर बढ़ते है। चुनुत्वकोरका बात फेक्न करन

पुणितिरने पूरा-निरासकः । प्राह्मान, श्रातीन, चैतन प्रमा।

निहो हुए अध्यक्ते करानि नहीं जान करना चारिये । की उद्यक्त हेरी जानको पहेला करता है, यह बेगी होता है और उसके करकार की संबाद हो जाता है। नगरपालका जन्म सानेकान कुरकार होता है। जेहना करनेकरें, इहामती, करानी और पुरुवक्षिकाचे क्यून्योचे वहाँ प्रोचन करनेवारक शासक क्षाय-पुरानों प्रत्य लेका है। अधेहर हहानेवाले, कृतह तथा क्रांसक्ता अस कारेने प्रतिकेत परमें क्या हेना पहला है। पुरिवर्तितः ! जिल्ला कार नहीं पाने चीना और विसमात जाने केन्द्र है, अल्बा की विविद्धांक परिचन है दिया, उस्त और क्य सुरुष च्यारे हे ?

वृध्यितने सहर-निवानक अन्यः अञ्चलनेको है एक और कुम्मक अतिका रोग्य पहला है और उन्हें ही पाना प्रधानके आह मुक्त करनेका अवसर अवस है। ऐसी क्लाने जो जो पत रुको है, जन्म क्या जनकेत है—या सननेकी क्रम 

बेनको वक--कान् । महत्त्व सक्रमीको प्रतिकः हेर्न और कोवल करनेके फानो दिल प्रधार कुछतरा निरस्त है, यह क्रमहित है का का है, कुने—सहात की क्रेस का है से मुक्ती-एक प्रकृत अधिने समिककी असूनि करें। विस्तार क्रम रेलेका भी मही प्राथमिक करना भाषिने। सहस्र और राज्यात कर हेर्नेका क्षेत्र स्टब्क्स हैका क्रूबेंट्याय को क्ष्मेले प्रश्राम पुरु हो माता है। सुवर्गाका कुन लेका नाव्यक्रिया का करने और कुछे नीरवर करूब लेखा बारल करनेते जाते केको प्रकारत किरात है। यन, यस, रूप, जीर और हैकके स्त्राच्य कर ब्युक्त करनेवर भी सुकर्वत्यनके समान ही प्राथित को। पता, केल और क्योंका क्रीव्य सीवार करनेपर क्रिकार कार करक पाहिले ( कार, पूजर, परस, कर), पूजा, जेकी रूपी और ब्री-कृष्ण दल मेनेवर तथा अञ्चे सुरा और कृष्ण पहल करनेतर से कर गायदीयनका कर करन माजिने। जानो जात पशुजोके जीतकामा मान न्या हो कार है। अनुबंध समय अवस्थ किसे करनातीय स्था है, इसके दिने हुए स्टेक्स क्षा सर्वेच्यर करनेयर सीन रात उनकार करनेने अनके क्षेत्रसे कुटकारः निरम्ता है। यो अस्तान कृत्याकारे किये हुए किनु-बद्दाका अब चोजन करता है, वह क्या किर और एक यह मार्गत केनेपर सुद्ध केता है। माहान किस क्षेत्र काञ्च-कोकन करे उस दिन संख्या, गामकी-का और क्यात क्षेत्रम स्थम है। इससे उसकी रहिंद होती है। इसीरिजी प्रकारको समान पाना गमा है। अखोरका और अनाहरकुर्वक

असराह्मकारमें निवरंकि साहादा विकार विकार गाउ है। (जिससे समेरेकी संब्येक्सम्य हो जन और कायको पर: भोजनार्व अध्यक्तात ही न पटे) । ह्यान्त्रेको एक हिर पहले साञ्चा निमालन देश पाहिले, जिससे ने साञ्ची पतीपति योगन का सकें। क्रिके का क्रिकेटी पून् औ है. अने को परनालेको सेतरे हैं। उस जून मारनेवारत प्राचन काच मैनीतक क्षेत्रक कान करनेते प्राट होता है। बारह दिन बालका विकार पूरा करके तेरहवे दिन बह वितेष करते बात कार्रिके बाद चौता हे उद्यानीको हरिया कोजन कराने तक अस्ति काओं भूख है सकता है। के क्यून किरोंके वर्ष मरवाजीयने कर विकास राज कार्य है, को मानारिक्स, रेका साथ, कुम्बन्ध, अनुसाध और अवन्त्रेनका का करना पार्टिने । में ही इक काले अस्टीत 🕯। इसी जवार को करकावीकवाले बरने सन्वयार क्षेत्र एक योगन बाता है, यह प्रकृत तत वैशोधक विद्याल करन बारनेते हुद्ध होता है। यह प्राथमिक करनेक करन कहिने।

व्यक्त है को स्थित विस्ता और सिरम कानेवासी गारी
विश्वी देवते हैं। वो व्यक्त पुत्रके स्था एक पानों केसर
वार तेना है, जाके रिल्टे कोई अपक्षित है नहीं है। वहि
व्यक्त वेदको साथ एक पानों पोसन वार से तो वह तीन
राजाक को करनेवर अपके साथी मुख होता है। हरियके
साथ एक वार्थ पोयन करनेवास प्रहाण ववस्तित जान
करनेते पुत्र होता है। त्राहणका के जाके साथ पोयम
वारोगको स्थानिक नात वार अस्ता है। इसके रिल्टे
अपक्रिय और कार्यक नात वार अस्ता वाहिये। गायारि,
विश्व वाल, व्यक्तिह, हुन्याक, अनुवाद और अवस्ता
कर्मा कर की अस्तारको है। इसके प्रश्नी निवृत्ति
हेनी है। विस्तीका पूछ अस्ता अस्ता प्राप्त स्थानिको स्थानिको है। विस्तीका पूछ अस्ता कार्यक साथे साथ प्राप्त वीर्तिक प्रमुख कर्म की अस्तारको है। इसके प्रश्नी निवृत्ति
हेनी है। विस्तीका पूछ अस्ता अस्ता क्रमों अस्तारको प्राप्त कर्मों क्रमार व्यक्ति है। विस्तीका पूछ अस्ता क्रमों स्थानिक व्यक्ति अस्तारको प्राप्त कर्मों

## दृष्टान्तपूर्वक दानकी श्रेष्ठता और पाँच प्रकारके दानोंका वर्णन

पुणियेरने पूजा—वितासकः। आय सक्को है क्या और कर बेगोरी की सर्गानी स्वाहि होती है, सिंहू इस पुण्योगा इस बेगोरी तोह सरीय-सा है ?

योगानी व्या-राविद्येत । तस्त्रको स्ट अन्तःकारणकाने किन कर्यात्र स्थानोने कुनवन्ति कुनवंति जनावसे बहुत से जान तरेख प्राप्त किये हैं, उनका कर कह या है, सुने—सोवाधन नहीं अलेन असे हिम्बोच्डे निर्मुण सहस्या उनलेख केवर उत्तम सोखाने गर्न हैं। बद्धावीके राज आर्थने अपने च्यारे पुरस्को अञ्चलकी सेवाने अर्थन कर विका, विस्तेक कारण उन्हें इस सोकने अनुवन कोर्ति मिली और परसोक्यों भी ने अक्षण अल्लाका ज्वानीन कर यो है। संकृतिनका एका रनियोक्त पहाला वरिता कृतियो विशिक्त अर्थ-सन किया, जिससे उने केंद्र लोग्डोब्डी आहि। 🖬 । देवानूम नामक एका पहाने होनेकी ही कविकोसारे दिन्न क्रमा दान करके क्रांत्वेचको असु हर है। कृतेवृत कर्म अन्य दिल कुमार केन क्या महत्त्व अन्येक प्राप्तानको समारी और भी-दार करके अस्य स्केकोमें एवं है। रामविं क्यारिकि हिमोको सन्य प्रकारके का और रामकेट गृह प्रदान करके वर्णलोकने स्थान प्राप्त विकार है। विकरित कु रामा निर्माने अन्तरः मुनिको अस्मी कृत्य और राजकः का करके पूर, पत् और कामकोसहैंस कामि निकास

किया है। यहनवाली परवृत्तमधीने ब्राह्मानको धृति-दान कर्मक का अकृत रहेकोची प्राप्त दिला है, दिनों करेकी करने करकर भी नहीं से सकती। एक बार संसारने बच्चे न होनेकर पुनिवार परिद्वालीने समझा हानियोची प्रीयम-दान क्षेत्र क, किसरे जो सक्ष्य रहेकोसी प्राप्त हो। प्रवर्ति कक्षारेर पहला बरिहाको अपना सर्वत अपेश करके कार्ने को है। करकार्क की और अविद्यालक कुर सक कारने अधिय गुनिको अधनी काम केवर कार्यने स्थान क्या है। ब्यूक्त देख्ये धर्मान्य एक अध्याने निर्देश करक प्रश्नुका कर करके परम यह प्राप्त की है। प्रश्नुके पूर्व रामा सुरक्षाने प्रकार विभिन्नको धर्मानुसार एक देवर जाम सोप्टेमें स्थान करत किया है। महान प्रतासी स्वार्थ सहस्रक्रिय प्राप्तको निमे अपने मार्च प्रकोधी शरित देखर मेह संबर्ध को है। व्यास्थ्य प्रस्काने मीरफान सम्बर् व्यक्तको समझ कामगाओं वीपूर्व सुरुपंपन पहल सन देकर सर्ग कर विका है। एक सम्पन्ने स्वय-प्रोज पद्मानिक प्रवेदोंके सावन हेरी समावत को प्रात्तिकारको दन दिन न, इससे उन्हें सर्वकी क्रिक्त हाँ। अस्तन रेकसी कार्यन्तेक इतियान्ते वालेक मुनिको राज्य देखर अपन रकेक कथा है। समार्थ गरिशन अवनी समार्थ सन्ता हिरम्बाधानो देवर देवरकेकके रिवासी हुए। सुवार्ति

संबद्धने प्रकार पुरिन्दे अपने प्रान्त सम्बद्धि कथ क्षेत्र की वी, इससे उनकी समज कामजर्द पूर्व हुई । उनकी मगीरम अपनी महरिक्ती कन्य इंडीको कोर्स प्रशिक्त रोबामे देखर अक्षय सोबोधे गर्ने हैं। एक वर्षश्वने बोहर मानक जहारको एक त्यक गीएँ कुन की, इससे उन्हें उतन लोक प्राप्त हर । चुनिद्धिर ! ये तत्त्व और भी बहुब-से राजा कृत और तपस्पके प्रथमको कार्यक सम्बद्धे को और प्रश बहरी का लेकने और अने हैं। कि गुहरांने का और क्षणाने कामे काम लेकोम निवन वाचे है उनके कीर्ति, क्वारक मा पूर्वी कामन है, स्थारक करी रहेती। यह विक्र पुरुषेका चरित महस्तक एक है। वे सब नरेक कर, च्या और संतानोत्साम चरके मर्गने प्रतिकृत हुए है। तुम क क्रम करते रहे । प्रकारी सुद्धि क्रम और पहली क्रिकारें पंतरत के बर्मको काले बरलो रहे। अन संस्था के नहीं है, इस समय पाँच हुन्हों पाने कह संदेश करते सा पने हो है इनका राजधार करू सके कर्मना ।

(क्र्मरे दिन जल:कार) वृषिक्षित्ते पूका-निवासक्ष । अक मैं का सुनना कार्या है कि शुध निवासके केम कार्या ? विवार कार्यांने देना वाहिये ? और क्षात्रके निवार जनतः है ? स्वेत्स्वरेंट क्या-क्षात्रकार । सुन्ये कार्येट होन्सेको क्या बिया अवता करना चाहिले, यह बारान रहा है, सूनो---रानके पीय हेतु है—वर्ग, अर्थ, चय, च्यामस और हवा। इन्होंसे व्य चीव प्रकारका करू कर्म है। इस करनेवास मनुष्य इक्केंकने क्षीरि और परस्थेकने तथन श्रुप्त पास है। इस्तिओ ईम्बंदीत होकर प्रक्राचेको रूपान कर देश माहिते, मह वर्षकृतक कर बद्धारात है। 'अवूक बर्ज़न पूर्वे कर देता है अवस्था हैना का अनुकर्त मुझे द्वार दिना है' काक्योंके प्रीरों ने बार्वे सुरक्त कीर्तिकी प्रकारों को कुछ द्वार किया बाहा है, का तथा अर्थानुकार कार है। 'न मैं इसका हैं न यह नेता है, के भी भी कर कान्ये कुछ न है से यह अन्तर्गतित होना गेरा शरीक कर क्रारेग्य' का संख्यार विद्यार पूरत विदर्श गुर्जाको को क्षत्र हैता है, यह अवनिधितक द्वार है। "यह मेरा देश है। और वे इसका क्षेत्र 🐧 👊 विचारकर मुद्रिमान् मनुष्य अपने निराम्के को पूछ देश है, का फारव-मुख्य कर है। 'स् वेकारा बक्र गरीव है और स्टाले मुँद कोरब्बर माँग रहा है , बोद्ध हेरेके की बहुत संसुष्ट होगा" वह विकासका रहिए प्रमुखके रित्ये की कुछ दिना करता है से का प्रतानिनित्तन क्रून कारका है। इस राष्ट्र पुरूष और बोलिको बहुनेवारस परि प्रकारका कुर कारतक रहा है। प्रकारका कुर है कि 'क्रकारे अपनी प्रतिके अनस्तर क्रम अवस्य करना पाडिये ('

### तपस्या करते पूर् श्रीकृष्णके पास ऋषियोंका आना, उनका प्रयाव देखना और भारदजीका शिव-पार्वतीके धर्मविषयक संवादका वर्णन करना

मुनिहिरने कहा—विहास्य । अस्य इनाने कृतने इत्य इत्यानेक सामकार और अस्यान युक्तिसन् है; सार में उसनेक मुनाने अस्य ऐसे विकासका कर्मन सुनान कहाता है, को वर्ग और अस्ति कुछ, परिवामों सुना केनेकाल और संस्थानेक विन्ने अस्पुत हो : इनाने कन्यु-साम्यानेको कहा कुर्मय अस्तित आस हुआ है, आपके सिच्च दूसरा कोई तथा अनीका अस्तित करनेकाला पहासूत्रम इन्ने नहीं नित्त संस्थात; जार इन सम्बान् सीन्त्रका और सम्पूर्ण राजाओंके सामने केरा और मेरे पहासीका किय करनेके दिन्ने आध पूछे हुए विकासका कर्मन

प्रीयकी कहा—केटा | अस मैं तुन्हें एक बाहे प्रवेहर कता सुना रहा है। पूर्वकराने इस सम्बद्ध सरकार और व्यानेक्सीया को प्रसाद मैंने सुन स्था है, असको स्था कर्मतीयोक संदेह करनेपर दिन और क्यांतिने को संदर्भ हुंगां वा, राजाने भी बात यह हूं, सुने—पहलेकी बात है, बार्गावर वागवान् सीकृष्ण बादक करेंगे समझ होनेवाले प्राची देशा लेकर (एक पर्याची करने करोर वाराव कर के थे। उस समय उनका दर्शन करनेके सिन्ने नाया, पर्याद, सीकृष्णी वान्य जाता, श्रीषा, केवर, कार्याद, इतिस्वाचन क्या दूसने-पूस्ते केवर और एमसे समझ व्यक्ति-सार्थि अपने क्षित्रों, सिन्हों क्या देखेया अवस्थित्रों साथ वहाँ असे। केवर्योगन्तर सीकृष्णने वही असमात्रों साथ वहाँ असे। केवर्योगन्तर सीकृष्णने वही असमात्रों साथ वहाँ असे। केवर्योगन्तर सीकृष्णने वही असमात्रों साथ क्या देशोंकर क्रिये हुए हरे और सुनारे स्वाधी कुरोंकर वर्याय असमात्रीर विद्यासम्बद्धां में वहाँ युनेवाले कुरोंकर वर्याय असमात्रीर क्रिये हुए हरे और सुनारे स्वाधी कुरोंकर वर्याय कार्या करने क्या असमात्रापूर्वक महार कार्योग क्यांकरकर प्रवास सीकृष्णके पुरुष्णे उनकी स्व-क्यांसे असट हुआ देख बहुर निकरकर मुक्ष, सता, क्राफ़्री, पक्षी, सुनसमुक्रम, विकारी पञ्च और | और अन्य ही पुन: करवा संहर करते हैं। सर्वें, गर्मी और सर्वोत्तीत का वर्वतको द्वा करने सना । वर समय कव प्रकारके जीव-जन्मकोचा प्रकारत चर्चा और पैक का था। कोडी ही देरमें उस पर्यक्रक जिल्हा जलकर साम्ब के गया। बहाँ चेतन जीवोंका कर की काबी न का 1 जाकी विश्वी कड़ी श्वनीय दिवासी देती की ( इस प्रकार सेवी प्रमाणकोर) पुरा का केव:सकत अधिने वर्ताओं समस्य विकासके पान बारके भगवान् श्रीकृष्णके यात सावार विश्ववर्धे पनि इनके हेर्ने बरवोर्ने प्रमान किया। या बनकार्ने का वर्णाको पारंग इत्या देशायार अस्त्रे काल अस्त्री काल दृष्टि काली । इससे वह पुरः अवने बहुते अवस्थाने का पत्र । वहाँ



क्रेंबिटी ही क्षति प्रकृतिका सराओं और हो-को क्लोकी होना का गर्ने । पश्चिमीकर सत्तरम होने रूपा उसा सभी बीव-वन्द्र जैनित होबर विकले तमे। व्य अनुप्त और अधिका घटना देखका सुनियोको स्ता विकास हजा। इनके प्रतिसे वेक्क से आवा और नेजेंने सारको अस्ति या आने।

क्रिक्टोच्चे इस अब्दर विशेषक होते देश नावपालका भगवान बीयानको बिनय और बोबसे परी 💥 नवूर अन्योने पूर्ण-'महर्षिये ! सामक समुख्य से एक अलग्रेड और मनवारे सीत है, सम्बो साबोबर सन है, बिर भी आयापेनोको आधर्म क्यों से का है ?"

क्वं-ने अवक्रिक स्वक्रम है। इस पृत्वीपर विसने की कारत प्राप्ते हैं, उन समझे विद्या, माना, इंकर और समीतेंड कारण भी अबन ही है। अबनोर मुँहरे अधिना उन्हर्मन देशकर प्रमारेन्वेको पहल् अञ्चर्त हो एवं है; अतः अस काव्य कारण कार्यको कृता करें । वसे सुरवार इतारा धव हर हे जन्म ।

क्षेत्रको क्षा-नृत्रिको । मेरे गुँहते अध्यक्षसम्बद्धी वर्तान्द्रे प्रकार को देश अबार कुंबर पर्यक्तो कुन बर रहा का, बढ़ नेया है बैकान हेन का। मैं इस पर्यवस अपने हैं कारत वीर्वकार पुत्र करेकी इन्हरने इस (स्थान) कारेके रिक्षे अल्बा हूं। केरे प्रारीतने निकत जन्म ही अधिनकाने mer framest south or thusbands महानीका कृति करनेके हिनो उनके रहेकने गया का। म्हान्त्रोते औं यह संबंध देवल चेना है कि 'करनाए कंकरका आर्थ हैन है मेरे फुलाने करन हैनेकरत है।" का हैकोरफ क्रम कांग्रे लोटरेस मेंने पता जाना है और निवाद च्यांचनेवर विकासी साहि परिवर्ण करनेके रियो असे में बरकोर्ने प्राप्ता किया है। इसके बाद बाना क्रेकर क अपने पूर्वाच्याको अञ्च हो गया है। यहे सेरे पूँको इस आधिक प्रवाद क्षेत्रेया रहता है, जिस्सको सैने बोहेने अस्त्राचेनोको कम दिया है; अतः आय व्यवस्ति म हो। अक्रमोन क्षेत्रमाँ है, अरुको गी। कहाँ की कार्य, प्रवर्तिकारोके कोच्या प्रकार अस्त्राच्या सारोपी आवता पारीत केंद्रे-करण हो पह है तथा इस्त और विद्वार आपनी योगा कहा हो है: इसकिने नेरी आर्थना है कि नहि आयरनेगोने इस क्रमीक क स्वर्के कोई कहर अञ्चर्कते यह देशी के सुरी हो हो अल्बो पुरस्ते कारकाने । अस्य क्रवेकनोः निकासे हैं, अतः अवन्ते अनुत्ये प्रवार कपुर क्यान सुन्नेकी मुझे सक इन्द्रा को सूची है। क्वेंकि सायुक्तीक कहा और सुना कुछ असन विकासके केला होता है तथा यह परकापर जिल्ही हाँ राजीनकी चाँके हर पृथ्वीयर बहुत दिनोतक कावम

बह सुरक्षा क्यान्ते सरीव कें हुए सभी ऋषियोची बाह्य विकास कुछ । ये कामस्यक्षणेक समान सिले हुए नेत्रोंसे करकी और देखने समें। कोई उनका अध्युख्य यनाने हाना, कोई प्रदेश करने रूप और पोई प्राचेवकी वर्णपुक्त क्ष्मकारेरे क्ष्मी सूचि करने लगा। वदनकर, सबने करणीय करनेने पहुर देवाँचे जाराको मगरामुखी कारावा क्रुवियोंने कहा--मानक् है उत्तर ही संस्तरको कहाते | इतर देवेके दिन्ने अंतित विज्ञा । सन नारायकके सुहत् प्रेरवान् नाल कुनिने व्यक्तिसीचा व्यक्तिकेतीचे साथ यो प्रेरवा दुशा वा, उसे इस प्रवार कहना आरम्प निज्य।

न्तरंती केले—कावन् ! ज्याँ तिन्द् और पारण विवारों जो है, जो जान प्रकारको जोगवियों और कुछों आवारित होनेके कारण जनगर राज्यीय दिसानी केल है तथा वहाँ हुंद्र-जो-सुंद्र अवसाई और कुछोंची दोरिजों विवास करती है, जर गरम पायन हैनारण कोलार करा बगाँसा हेमिकेस अनकार संबार सरका कर से थे। वर्ध काम पार्थी देखेंने उनके पास कावर कुछ—'गणकर्! आम समूर्त पूर्वीके साको और सरका करिकाओंने केस है, असः मै अवको पायने असे मनदा कुछ सीई जानिया बारत पार्थी है। यह मुनिजेका समुद्राय को वर्ध केस्ट्र है, यो स्वकारों प्रकार पार्था है। जान इस व्यक्तिकों और केस को किस प्रकार स्वार है। जान इस व्यक्तिकों और केस को किस प्रकार पार्थ है। जान इस व्यक्तिकों की मनुवा अस्तर किस प्रकार अस्तर अस्तर असे क्रांची नहीं वालों है। मनुवा अस्तर किस प्रकार अस्तर असंतर का सम्तर्भ है।'

सारिती है होने का का उस उपरिचार किया के क्रमण सारितीय अनेवारी अर्थानुध अर्थानीय सुदि कर्या हुए उपनी सारी अर्थास की। उपलब्ध, जनकार प्रोक्टने कहा—"हिंग र हिल्ली भी जीवारी क्रिक व जानस्, तथा चीरान्य, तथा आर्थी सारिती अनुसार अने हेया-चा मुस्ता-सारान्यक अर्था सार्थ है। उस मुस्ता-सार्थका प्रश्नित कर्या मुस्ता-सारान्यका क्रमण कर्म है। उस मुस्ता-सार्थका प्रश्नित कर्या, व्यापी सरित संस्तानी हर क्ष्मा, वर्षाम और चीराती तक्षा चरना, किस विधे क्रिसीमी बागू न हेना तथा नांस और नविश्वको स्थान हेया— में क्ष्मी पांच चेद हैं, सिन्सी सुक्ताती जारी होती है। इन्मोर्थ एक्ट-एक सर्वकी अनेवार सामान्य करना करना वार्थित।"

प्रजानि पूक्त—बरावर् । कारी कार्नेका जो-जो कर्व अपने-अपने कार्वत रिके विशेष संघ्यकारी है, या पुत्रे सरकोडी कृता क्षीतिये । इस्तृष्य, क्षीत्व, वैश्य क्ष्या पुत्रके वर्गका पृत्रकृत्यकक् सरका क्या है ?

स्रोबरने बहा—देवि । तुमने व्यापके सन्दानर प्रश्न करके सब कुछ पूछ दरण। अच्छा, अस्य अपने प्रवोच्य उत्तर सुनो—संसारचे अद्याप इस पृथ्विक वेचता कने नने हैं। उपनास करना उनका परम धर्म है। अर्थकीरम्बर अद्यापक अद्यापकानो प्राप्त होता है। जो बर्मका अनुहान और विशिष्ण, अद्यापकानो प्राप्त करना चाहिने। जाने कारनपूर्वक अपनयन-संस्थारका होना जाने विश्वे परम जानारका है क्वेंबिंड इस्केरी का देख होता है। पुरु और देवताओंकी पूका, प्रकार और अन्यासम्ब वर्गका करन प्रकारको अनहर क्षा करिये। वर्षका स्थान क्षाप्त, वेरोक प्रवक्त पारण, होय और मुक्तेमा काना, विकास सीयन-निर्माह करना, सहा ब्रांक्रवीय करण किये कुछ, प्रतिक्षित वेद्यार क्राव्याच करना और स्वापनी-सामानोह निकारिका पारत करना प्राप्तानका प्रकार करों है। प्रकारकंकी समाधि संगार क्रेनेका देख आपने पुरुषो अद्या रेका सम्बद्धांत करे और यर आकर असी अनुस्य कोई विक्रियोग्ड विकाइ करे। प्रकारको सहस्य अब भी साथ स्थिते । सहस्रात्मा पाल आवा पात को है। अन्यक, व्यापनी-पहल, अधिकेत, कारणाय, इसर, इन्द्रिक्टोकर, अमेरीक और पुरावेको कोचन करानेके मार् राज-महत्त, स्वाहर-क्षेत्रम, क्षत्र-क्षम, परित्र महत्त, अतिक-सम्बद्ध परचा, पर्याचन साहि विकित अतिकीकी चरिवार्च करण, प्राच्याच्या, विश्ली भी चीवारी द्वीरा न करन और करने कहाँ कोवल व करके कुटुवर्क स्वेगीको स्रोधन करानेके बाद ही पोता करण—व्य गुरुत प्रकृतका विक्रेपा: क्षेत्रिकार पान वर्ग है। यह और सीर समिक सम्बद क्यान्य होना व्यक्ति तथी व्यवस्थित श्रीवानीय पाल केटा है। अस्के केवलओकी प्रतिक्षित पुन्य काहिले पूर्वा कर्मा, को अनुबंध बन्नि अर्थन करना, क्षेत्र-देन पर सीवन और अतिका का रक्ता की मुक्ताका कर्न है। क्राय-मुक्ता, क्षीत-केवकर साम विशे हुए बाने कुल्कुक अञ्चलि कार्फ प्राच्या देशा केरणन माहिते । यह प्रकृतनेका वर्णना-वर्ण प्रमुख्या नेवा, को संस्थानको दक्त करनेवारत है। अन्ते **ब्राह्म कर है का क्वीदा पारन संतो है।** 

अन में इतिकार को काल का है। इतिकार समर्थे कुल को है प्रमुख पहला करना। अवाकी आगोर को कारका प्राची कार्यकार एक कर्मण पर पता है। में कारका क्या अने प्राची क्याको अस्त सोक आह होने हैं। राजका क्या माँ है—शिक्सोका, स्वाक्त, अधिक्रेस, कर, अध्यक, स्वोक्ति-वारण, कार्युक्त, करिक कर्म कारक, केरकार करना, अध्यक्ति कर्मा, आपका किने हुए कर्मको स्वास करना, अध्यक्ति अनुसार स्वीक हम्ब हैन, केरक क्षाना अनुक्रम करना, स्वकारों जानकी एक करना और सरकारकारों केर रस्ता। में राज कुली कुलोको हम्बन्ध स्वास केर के है, यह इस सोक और वस्तोकों के सम्बन्धित होता है। को भी और क्षान्यकी रहाने विसे संकारों परकार विद्यागर अन्य करता है, जा परकोक्षर्थं अनुवेशकारो जार होनेक्को जान स्थेकोचर | कुट विश्वताने मूहाबोको महत्त् करीवी जारि होती है। युवस्थ अधिकार कार करता है।

पश्चभोका पासन, कोती, जारबर, जिल्लीम, हार, अध्यक्त, स्वाचारका पासन, अतिथि-सम्बार, इन, इर, ब्राह्मणीका पासर और स्वाच—व्य वैक्लीका प्राच्यम वर्ष है : व्यापार वारनेवाले प्रस्तावादी वैक्लाको लिल, क्यार और सम्बद्ध विक्री नहीं वारनी व्यक्ति श्वा अध्यक्त, श्वाचित और वैक्य—हर प्रस्ता स्वाचीना आसिका-सम्बद्ध करना व्यक्ति ।

कुरका परंग धर्म है और क्योंकी रोगा। से कुर सरकारों, निर्माल और परंपर साथे हुए समिनियों सेक क्योंनास है, यह नक्षम् स्टब्स संबद्ध करण है। उसे स्थान करनी सरकार पाहिने। निरंग सरकारका करण और नेवल मध्य प्रकारनियों पूर्वा करनेवाले कुट्रिक्ट कुरको कर्मक क्योंगानिक कर प्राप्त होता है। करकार में कुट्रे प्या-द्वा करने क्यों क्योंका कर्म कारान क्ये हुएँ प्या-द्वा करने क्यों क्योंका कर्म कारान, अन और क्या सुन्या पाहती हो।

क्रमंत्री कहा—जनमन् । अक्रमे क्यों क्योंक है। शर्मका पृथ्य-पृथ्य कर्मन वित्या, अस या वर्ग कार्यक्री को क्या क्योंकि तिसे सम्बान कार्य क्रमोनी हो ।

spart ger-ift | gebet pf renbuch aft बगरके सारका अक्रवीने सन्दर्भ सोकोको करनेके विन्ते क्रमुक्तेओ सुद्दे। यो है। क्रमुक इस क्रमुक्ते देवत है, का: पक्के अपीके एक और क्लेंबर करेर करता है। (पिट क्राने रिने अन्तेनी वर्गीया अनेत करिय () स्वान्तेने सम्पर्ण बारावरी राजवे किये वैक्सिंग, जर्मा और विकाससम्बद्धम् । सेन अवस्थेः क्योवः विकास विकास । बर्मके ये तीनों ही भेद समाजन है। को तीनों केटोबर हाला और मित्रम् हे, पही-पहलेका काम करके जीविका न बसाना हो, सून, अवस्था और यह—इर डीन क्यांका सह अनुकार करता हो, कार, होय और लोफ-इर केनेको रवान कुम्ब हो हथा सब अभियोगर क्या रक्तव हो, बही चलको प्रदान करा एक है। संसूचे लेकोके कार्य अक्रमीने प्रकारीकी जीविकांद्र रिले का करण, का कराना, कन देना, कन सेन्स, के पक्षन और के प्रधान-ने कः कर्म काराने हैं। ये क्राइन्केंडे अन्तरन कर्न है। इस्तें के सदा कामानदील होता, यह करना और अपनी प्रतिके अनुसार विविद्धीय कुर हेरा—ने कीर कर्म क्राइनोके रिकी करवना उत्तम माने को हैं।

सम प्रकारके विकास कराय क्षेत्र क्रम बहारका है. यह समुख्योंने सह दृष्टियोकर क्षेत्र हैं। इसका करान करनेसे

पुरुषको पहुन्द्वान्योका अनुहान करके अपने परको सुन् करून करीने । यो पूर्वा क्या करा बोरता, विरक्षि के न्हीं देशका, कर देखा, स्वकृष्योंका समारत करता, अपने करको प्रमानकारकार साथ रहात, अधिनकारक स्थान करता, रहा रुस्त कार्या रहता, केन्द्रक कार्य केरवा, असिवि और अभ्यानोधी रोक्टो का सरका, कादित अन केवन करता और जीविनको कावानी जाताने जनुसार पार्च, अनी, अकार, प्राप्त, क्षेत्रक एका रहत्येके दिलो पह प्रदान करता है, को पार्टिक क्षानुका पार्टिने । यो प्रतःकार कावर प्रैत-क्षत बेनेक बहुत प्रमुख्यों केंक्के रिये निक्का हेता और मो तीय सन्तरन अध्यात्त्रीय थोवर करानेके बाद कुछ कुराब अनोद कीने कीने कारा है, अनोद प्राप्त प्रत्यान करोबा पार्थ होता है : पह पुरस्कों अवसे प्रविदे अनुसार स्व सरका अधिक-सरकार करना पाहिले । सञ्चान, व्यक्ति और केल-पुर क्षेत्र कार्रेक्ट परिवर्णने कुछ साथे दिन्ने इन्दर को कारावा कर है। अवस्थित कोवर विवास प्राथमिक रिक्ते दिवस पर्या है, यह एक अधिकोच्या दिवसकी और उत्तर है। जन में ज्योका कर्नन करता है। जनम मान्यक महलेund growin sup artest tallent argent spr., up the चीवन्द्र कर्न करो कर पार्टिश क्रमेक्स सामर रेक्ट क्या कार्क प्रत्ये प्रत्य प्रतिने और अस्य तीन विधान कानोर एक अंक्रमें वर्ष और अर्थवरी सिटीट करवी धारिने, सूररे अंक्ष्मो व्यक्तियाँ क्ष्मान कार्ति और ग्रीस्से अंक्ष्मो व्यक्त व्यक्ति । (यह प्रवृद्धि वर्णका वर्णन विका पना है ।)

इसले किया निवृत्तिकता वर्ष है। यह प्रोक्षका सावन है। इस मैं सावका बचार्य कारण प्रत्य पूर्व है। तुम ध्यान है। इसे—मेक्क्स अधिनात्त्व स्वानेवाले पुत्रमंत्रों समूर्य व्यक्ति वर्षित अपने आवारण्या सम्पानित हो गोवमें वर्षि वर्ष्य व्यक्ति । मृत्युके दिनों वर्षी अवेतावर्धी वर्षा है। वर्षे वर्ष्य वर्ष्य के स्वानेत्र सावन, तिरुप, कृष्य, अधि और वर्ष्य कारण्या का स्वानित वर्षी एक्कि व्यक्ति । मृत्युक्ते सम्पानका है विचन और पनन वरना वर्षिते हथा एक्क अधिने विक्र क्षा व्यक्ति । निरुपुर वोगाव्यासमें प्रवृत्त हेक्स वर्ष्या विकार करते क्षा वर्षाचे । संभागी व्यक्तवानों पूर्ण हेक्स सर्वत्व कृष्य अधिने अवशिवती और वेक्कवानों एक हेक्स सर्वत्व कृष्य अधने अवश्वास्त्रपर्य वरण्यानावा कार वर्षे । वो कुरुवित होकर संन्यस मान करता है और मेडोनकोची कर्म—सन्त, परंग, निर्देशकरान साहिके द्वाप एतान नामेंच कथा हुआ हुते कराको मीति रिवर स्था है, अध्यो एताना कर्मता केवाल पार माने होता है। संस्थानी पुरूष विश्ती एक सक्यान साराधि म रखे, एक है स्थाने न स्ते प्रका एक ही नामेंच विश्वारेगर राजंब कथा न करे। उसे एक अवस्था अस्ताधिकोचे पुष्क केवार कथान्य विश्वार पाईके। या मेड्ड-नामेंच क्या कर्माने कथार है, उसके विश्वे कोई सीविध साम महि क्या (यह पुष्क क्ये सांस्थायक है कथा है)। संस्थानी पार क्यानके होने है—सुर्दाकाम, स्कूब्ब, है। और सर्वार । इस्में क्यानेसर क्या है। इस प्रकार क्येंच हमा उसके होनेकाने अस्तास्थान स्थार हमार क्या भी क्या है।

प्रणानिके सहा-न्यावाद् । अन्यो कापुर्व्याद्वार स्वारामके सार्थ हुए प्रमुख-वर्ग और ग्रेश-वर्गका प्रमुख स्वारामके हैं। इसे दूर केरोक कर अब में स्वरित्येक कर्न सुरुत कार्यों हैं। को दूर केरोक कर अब में स्वरित्येक कर्न सार्थ कर केर हैं। में कर अधिने प्रश्तिक स्वाराध्या सार्थ करा है। में कर अधिने प्रश्तिक स्वाराध्या सार्थ सरोपन कर कार्य करते हुन्ते अस हुई सुरुको सार्थ सरोपन कर कार्य है। को देशकर केर किर एक सार्थ करा है, इसरित्ये की पुरुकोंने क्वांति स्वाराध्या सिर्माण अस्तर करें है। देशके । साथ सामुर्व सर्वीक क्यां

पनवन् वर्षभने का—वनवानी । तुवारा का वृक्ता कृते की अस्तात हु है। अब मैं पुनियंग्रेड काम क्रमेद्ध कर्तन करता है, विस्तात अस्ता सेवार से अवनी क्रमांके क्रम क्रम रित्तिको आह होते हैं। काले व्याने कर्तन क्रमांके केन्त्र क्रमों क्रमां क्रमां क्रमांक वर्ष पूने—पूर्वभारते खानमें क्रमां क्रमां क्रमां क्रियंग्रेड पन क्रियं वा क्रमां से क्रमों क्रमां क्रमां है। आ अपून (महानांके पनियं क्रमां में स्वा क्रमां है। आहे केनको बोदा-क्षेत्र संबद्ध करते में स्वा क्रमां है। और असिंग्रे अस्तारम्य वीका-निवांद्र करते हुए क्रमांने क्रमे क्रमें है), वे पेन्स क्रमांने हैं। यह वर्षाक्रमां क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें

केन बारकारेक है भर्त है। जब बारकार पार्टिकेंट वर्षका स्थान करे । कार्यकारकार स्थानिक प्राप्ता 🗗 । वे तम करेंकि प्राप्त है और सर्वप्रमाल्ये निकार करते है तक ज्ञानका अध्य हेकर चीत्रकेको भौति एक-एक सुन ची-मार अधेने चीवन-रिवर्ड करते हैं। मुख्याल, चीर और क्रम्या-में के उनके पक्ष है। वे प्रीत-क्रम अवहें इन्हेंसे कीर, सहायाच्या पारान कार्नेकारे और प्रमानके क्षती है। उनमें प्रानेक्स परित शिक्षेत्र विशेष भारता है। वे अपने-अपने कार्यको विका हो तथा स्थानार्थे संस्ता रहते हैं। क्रमें क्रमेश महान् कर 🛊 । वे प्रयासके प्रापृत्व क्रमेश्वे क्य करके अपने देखते सन्दर्भ दिवाशोध्ये अध्यक्ति करते है और देखाओस करने विद्यू करनेदे विन्ते अनेद सावन क्रम क्रमा क्रमो है। इन्हें महिल्क और बहुत-ने प्रस्कृतिक ३०-वर्गरकात एवं पुरस्तात **पहुँ हैं। विको कुछ प्रकार** (प्रक्रोंड क्यान विवरतेगाते), कुछ क्षेत्रकेको क्रोक्ती war gur fegrebalt freit fram unbant fie it que प्रत्योग विक्रिके अनुसार प्रस्त्यातियो प्रतिका परासे है। कोई की समाधार?, कोई अरुकार और कोई quiryelleu" | 1 & ries uber (urgenal fareiten का कारेको) और उत्तर (पूर्वची विश्लोक का writerit beweite four spar and fardpiles स्थापुरियो सीवार-विकास साथे और इतिहासेको पहलूने एकके है। अधिकेर, विश्ववेद्धा साह और पहुन्तुन्द्रांका अञ्चल-पद करका पुरुष को है। प्रकारी शरू कियानेund alle hundere freue medante geller segreife क्रम अभिनानिक्य पान क्री अनुसान क्रिया है। इसके असिरिक्त की को कारियोक्त कर्न है, उसे पूर्व । मेरे विकास समी तार्थ करेंगे इत्यांकापूर्वक साम्बास प्राप्त करना उपन्तरमञ्जू है। जिर पान और होमधों को गीवन पाहिने। प्रापेक व्यक्तिक अस्ति कृत्या होय, वर्ग-स्थाय अनुहत्, सेन्याकुर करत, यह-विशेषक अस और यहाँ दक्किया देव—मे प्रेय कर्ण अवस्थ करने पाहिने। निस्न पहास अञ्चल और वर्णक पारम करना साहिते हथा केवरता और व्यक्ती अनुसार रकाम चाहिले । उत्तक्तानिको क्रमांचित क्रिके हर जाके हरा प्रथम आदिया-सामार कृत्य प्रतिक्रीका पान कर्तन है। वे विकामोगोरो निवस से, मो-सरका

१—फेन पैकर प्रत्यको । २ —ये पोजके कात् काले के पेक्कर रक देते हैं, दूसरे दिनके हिले कुछ के नहीं काले, जारें सम्प्रशास कार्य हैं 3—प्यारते पोक्कर कार्यको । ४—यो दक्षित ही ओकरपैका कम तेते हैं आर्थन् आवसे ओकरपैक्षे न कुटकर दनिसे ही कार्यकर कार्य है वे दस्तेत्वकीयक कार्यको है।

अकार करें, समझे सामनों क्षेत्र रहें, सुने बैद्धम संस्कृतिक सेचे, चेनका अध्यास करें, साथ-पात, कल-पात, वाक्-बार और नेवारका अकार करके से—ये स्वरियोक्ट निवय 🖢 । अनुबर पासन करनेसे के अधित (प्रार्थिक) व्यक्ति 🖘 क्सो है। यह मुक्तोंके क्से स्तेष्टं-बस्का कुर्वा विकारक बंद से पाय. महातमे बात बटलेकी सामान न सामे-प्रकार हो, प्रक्रिको असन सुद्धा साथ, यसके एक स्केन कोसन

का कोंद्र अधिका अग-अग है जना का कन और पिक्क चीज रेकर और गर्ने हो ऐसे सम्बन्ध ऋषियो अविविधी यह योगी महिले और आने मोजारी को-भूने आको जन जान करन पाहिने। यो गर्न और अधिकार की करता, बातरत और विशित्त भी होता, सह और निकासे समान स्टब्स्स क्या सम्बो प्रति नैपीयर सम्ब रक्षा है, बड़ी वर्गनेकारोंने केंद्र बही है।

#### वानप्रसा-धर्मका वर्णन

मान्याको प्राप्तम नविकोचे सक्तारी राजनीय कालोने, प्रारमिक अस्त-व्यक्ति कुक्रोते, वर्वतीयर, वर्तते और फल्प्यूको सम्बद्ध परिवा कालोगे निकास प्रध्ये है। के अलो प्रारीरको ही यह प्रीयाकर जीवन-निर्माह करते हैं, तक: मैं क्रके पहल कारेकेल परित निवर्कको क्रमा करव unpf fie

नोपर्ग श्वा-क्षेत्र ! का प्राच्यान क्षेत्रन कनानकी महाराजशोधे वर्ष सुन्ते । कहे दिनमें तीन बार एकर, देवताओं और विसरिका पूजन, अधिकोत और विशिव्ह का करने table treasles alteres for that als पया-पुरस्का रोवण सका होन असी, व्यवनेके रिन्ने प्रसूधी और दिक्षेत्र देशका अस्त्रेण करक प्रतिव है। में केनक अन्याव और काम-क्रोकक साम करें, बीएएम्से वैहें और बीएक्स (बर्बा भीड़ करकोंको रहनेको विकास र को देशे को बंगारा) में निवास करे। समेरे शुद्धि एक्नेक्सी कारकरी मुनियोको deber eber, melle abereit werte über anform बारताब बेठना, वर्षांबारली जुले बैदानी खेन और प्रीयक्ष्माचे प्रकारिका सेवन करना काहिने । वे नायु अकार क्रम पीकर गाँ. सेकरका भोगम करें, धकरते अंत पा फरांको कुँककर साथै सरका बीतेंसे प्रकार है पहल को । समाधारको निषयो से अर्थाद दूसरे दिन्हे रिले अध्या क्षेत्र करके न स्थीत बीच क्षांकर और मुखाला—ने ही इनके बाह होने बाहिने। उन्हें समाने सनुसार पर्गंक जोलारो विकित्त्वेद सीर्थ आहे राजनेचे बदक करनी चाहेने। बान्यस्थीको सह काने है सुन्त, कर्म है विकास, बनमें ही ठहरू, बनके ही मार्गनर करना और कार्ने ही जीवन-निर्वाह करना जातिये। होन, पहाच्याका सेका, पहालामें को हुए अलब्द अहर, बेरोक कर्मेंबर अनुहुन, अकुका शासु, सार्व्यस सह, रहां, पेपीयार आहे.

पुर्वतिने सञ्जन्नारकान् । प्रत्यात्र पारत्य प्रत्येकाने । यात्र और नितर प्रत्यात्र अनुप्रत्य प्रत्या करता करता वर्ष है। प्राचनको पुनि प्रतिनामाना, प्रति अध्यक्ती पीनाई स्था सन्दर्भ करोते हर स्वक्टर कार्ने निवस्ते रहते हैं। सुक्त ही steat was \$1 is very superfruit fieler seffertell वरिकार्याचे ही राजे रहते हैं और निहा भरवारीयर करते हैं। इस ज्ञार कुनेवरिको ब्लोबाके वे बन्दरानी संत कर गरीको आह होते हैं । ये एक्ट-काँका अध्यय सेनेकांत्र और विद्या होते है, जब पहल पुरुषक अपनोध कार प्रमान सीमानेकर्त Server In

> क्षेत्र । अध्यक्षका निवन पालन कार्नेकारे इन क्ष्मीरकोने कुछ से संस्कृती हरेला स्वयत शहा स्वयत्त्व विकारिकारे होते हैं और कहा अपनी-सपनी सीके साथ रहते है। क्रम्बन्द मिनार्ग्यको पुनि तिर मुद्राबर गेरस् पक्ष पहली है। उनका कोई एक स्थान नहीं होता; सिंखु को क्रीके साथ को है, ने नरियों अपने सामानों से ठाउरों है। केनों से अक्षतके अपि सेनों समय बारमें बान करते, अनिरेत अधिये क्यांके अतरे, अनिवेदे प्रकारे हुए पहल् वर्गका पास्त करते. राजांक रूपाले, सम्प्रामंतर करको और शास्त्रोध क्रमीका अन्यान करते है। चाले को करवानित्योंके कर्न करा आने हैं, इस १९००वा चाँदे में पासन करते हैं से उन्हें अपनी क्यालका पूर्व फल निरम्त है। यो पनि सौबये साथ रिस्वे रको है, से उसके साम हो इतिहर-संकारपूर्वन बेहिनहित क्ष्मेंबर आवरण करते है। यह बर्यानाओंको ऋषियोदे कालो हुए कान्द्रि पारान करनेका पारा जिल्ला है। धर्मधा हुई रक्तनेकारे मुन्तियो कामसम्बद्ध नित्ती योगका रोका नहीं करन करिने । से विस्तवेको एक क्षेत्रन सम्पूर्ण ज्ञाणगोन्हे अचन क्षम कर देव है, करियो वर्णका फल ताह होता है। वो सम्पूर्ण प्राणिकोपर क्या करता. समझे साथ सरस्यावस कर्जन रकता और समस प्राणिकोची आजनावसे देखा। है, बहे वर्गका कर फल है। करों देहेंने निकार होना और

सक बीजेंके और सरस्ताका बर्धाव करना—ने केनें एक | बाह्य हो, और सरस्वापूर्व वर्धानमें पुरू होना व्यक्तिने । प्रकार समझे जाते हैं; बरिया सरस्ताना नर्यान है नियंग कर देनेवरव है। सरस्या वर्ग है और कुटिएक अवर्ग । इस्तानको पुर मुख्यो है कांग्र करानिक का िकार है। को सरस्य प्रतानमें देन स्वादा है, का केन्क्रमोंके समीप निवास करता है। इसीओ वो अन्ने वर्णक वाल करा

क्रमणीत, विदेशिक, ग्रोक्को पीर्लेक्स, व्यक्तिकामसे कृत, विकासित और वर्धने पन समानेवाले प्रमुखको ही क्षांका कार्याक्रिक प्रश्न क्षात्र केरा है। यो पूरण आस्प्रसारीत, कर्ताता, प्रत्यार्थकाची, सामिता और अन्त्री होता है, यह सक्तरमध्य हो साम है।

## केंब और नीच वर्णकी प्राप्ति करानेवाले तथा बन्धन, मुक्ति एवं स्वर्ग देनेवाले शुभाशुभ कम्राँका वर्णन

क्यों कि पूर्व -- भगवन् । मेरे करने एक संस्था । है : होने । क्यानीने एक बाद और बदानी है, अनेनी हका है,महाबीने क्वेब्बकों कि बार क्वेबिसहिकी है, अनेके केन, अर्थन अर्थन प्रक्रम केन को करेने करन कुरनेरिको अस् से पत्ते है कम बहु, बेरूव और स्थान जिल अन्तर ब्रह्मकानको अस्त केने हैं ? नाम नेते का सङ्ख्या समायाम वर्षे ।

मोक्से का-देवि । अक्रम क्रेस बहुत करिन है। हाहाय, अहेल, बेरव और यह—ने क्यों कर्न के निकाले प्राथमिक (सम्पर्धिक) है। प्राप्त अध्यक्ष है कि हैव क्यार्थ करोते असे कार्य-असी खाली सेवे कि बार है, आ: देशको जान वर्षने कन कका अन्ते कारी रक्षा करनी पाक्षिके। यदि क्षतिन अस्तरक वैदार प्रावृत्तकर्णका काल करते हर हकारणका स्वाब तेवा है से क क्रिक्रमानको जात है । जाता है। जो उन्हास क्रान्टेक स्वान काचे व्याप-वर्षका रोवन करता है, का उद्यानको पह क्षेत्रर क्षतिन-वेतिये कन्य रेखा है। इस्ते प्रकार को कृति प्राथमानको प्राप्त सपनी मन्तुनीहरूके प्राप्त सोध-मेहना सामा से सह बैस्पोंचे वर्ग करता है, क बैहर-मोनिये जन्म होता है अवका की बैहर साथे कर्न अन्त्रमा है से पर भी प्राप्तकों अन्तर केल है। प्रधान-स्थातिक क्ष्म की शुक्ते को अकार है से कीसी प्राचनकरो प्रश्न होना है और मृत्युक्ते पहल्य वह स्थान्येककी प्राप्तिसे बहिता क्षेत्रन नरवाने पहला है। उसके बाद बह कार्य चेरिये क्या कार्य कार्य है। वहि सकार, क्रीय अवन नैतन कोई भी अपने कर्यको क्रोडकन स्टाब्स कान करने रागे हो का अपनी पातिने प्रमु होवा कर्नतंत्रर है कता है और उसरे कमने काकी चेनियें कम रेख है। जो पुरत अपने मर्थ-वर्धका चलन करते हुए चेम क्रम् करता है और ज्ञान-विज्ञानके सम्बद्ध, पवित्र तक बन्देत केवर करि है

रक्षानेको इत्युक्तिको आध्यान्यानमा सन्तर्गर करण पाईचे । का क्रमानके अनुकार असे निवत अन्य नवा है। विश्वे प्रमुक्ताम, कार्युक, कार्याक्षेत्रका, पुर पुरस्का और पुरस्का अंध भी निर्मित्र है, को कभी नहीं कार कांक्रे-मा विकास विकास कर है। अतः कारत अवन्य अवन्य पार्टन वर्षने । वर्षे देशों बहुता अब पढ़ है और की सम्बन्धी पुत्र है बाद से बह **ब्रह्म अधिकेते अन्य का कलेनात हे तमें र फ** के.को पहली चेरिने धन्त रेन्स पहल है। को साम और वर्गन प्रक्रामानको पायर जानी जनकेरना पासा 🛊 और नहीं कारेकेन अंक पतार है, यह विकार के प्रकारतारों पक्ष हो साम है। सराची, महाम्बार, इस धर्म क्रमेकात, केर, प्रयोग क्रमेकात, क्रामानीर, पाने, लेची, कराडी, कड, जराबा गराम व कानेबारस, क्कु-कारिको क्रोक्स एकपी, कुम्काती (विधा वर्तनमें चोमन क्यारे क्रांनि कानेकार), स्तेत-एस वेक्नेकारम और नीच नार्कि क्रमानी रोग करनेकरा प्रक्रम असी करिए प्राप्त के बारत है : को पुरुष्टी सम्बादन केर पहला, गुरुसे होड़ करका और पुरुषी निष्युमें ही रहना रहता है, यह अक्षरेस होनेका की हाइएकाको किर काला है। इसी प्रकार स्टूक क्नोंचे जाकराओं कह भी सक्ताराकों आह होता है। स्वक्रम स्वानीका क्या है कि सह भी गीर निरोक्ति हेकर पाँच करोंके अञ्चानमें सको अधानसमयो हुन् क्या लेखा है, जो पढ़ दिवस्ती ही परित सेमा होता है। पेरा ने देश किन्तु है कि बड़े सुनंद सभय और वर्ण केतें है ज्या है से वह हिन्होंने की नक्तर मन्तेयेन है। केमल मेरि, संस्थार, काम्यान और संतरि—ने ही स्थानसम्बद्धी अधिके कारण वर्ती है,सहनसम्बद्धा रागा पान है, नहीं कांने काराविक फराबा कायोग करता । उनकर हेत से सरावार ही है। सरावार में दिन सुनेवारा

मुद्र भी अञ्चलकारे अस् हो प्रवास है। अञ्चल | किये पूर् असको ही मोजन करते हैं, विश्वास कुररोबर्ट कियोंके करना साथ समान है। विसाधि चीठर कह निर्मुण और जिल्हे प्राप्त महिन और बेटीके समान चान चारा है; यो साह निर्मात प्रदान क्रम है, जो कराओं क्रमण है। है। अनी ही बनो संख्य दावर केरी-क्रमणेरे आरंग रहे हैं, भो भारों कार्कि स्थान और विभाग विस्तावने रहे 👢 इर समयो असी जनते हैं जनत है जनत पहिले ! यह पह उपाची सहि करो स्थान कराया अक्रमेने अने ही बाहे हैं। अपना करवान वालोकाने प्रधानको जीवा है कि वा सम्बन्धि गार्थका अवस्थान करके एक अविधि और योजनाचित्रे भोजन करानेके सन्द अस पहल करें। केंद्रेक पक्का सामन रेकर राज कांच करे। गुरुत प्रकृत करने सामा प्रतिका संविक्ता पा और प्राचीक सामान को । अव्यक्ता वीरियामा प्राप्त र कार्य । ये प्राप्त कृत्यानित हैन्स है अधिकेंद्र और एक्टबर्स्ट्रेस कीवर कर्तात करण है, का सहस्त्रकारों उस्ता होना है। हैकि है का धर्मान्यम बरनेसे निवस अकार प्राव्यानाओं प्राप्त केला है कहा प्राप्तन संश्वनिक स्थानो पातिताह क्षेत्रन तैना जनत पुत्र हो मारा है—या यह सामग्री पता की हुने पतान है।

क्यंति एक-कारण् । अरु भूते कान्वीके वर्ग और अवर्णम् विचय कारकाले । समुख्य केले कार्यरे केलो, पूछ होते अनवा कावि को है ?

गरेवले वय-देवि ! हुन वर्ग और सम्बंध राजको बारनेवारी क्या निरम्प कार्ने संस्था मुनेवारी है; publich grei un sen sellendig fied figuret afre कृत्याने कानेकाल प्रश्न विका है। अका, अब हात्या कार पुने—ये गून कोई अल्पी केने पूर करते नेन्त्रे और सारक्षांने पराचन सुते हैं, वे कार्ने आहे हैं। विनवे प्रम अकारके संबंध हुए हो गये हैं, को अस्य और सम्बन्धिक क्रमणी वार्गनेवाले, सर्वत् और सर्वव्या है, विरस्ती अस्तरीह पूर हो गयी है तथा को पत, कामी और कामी विकर्त बीवारी हिंसा नहीं करते, वे ही एक कर्न-ककरोरी एक होने हैं। उन्हें य वर्ग क्रीका है न अवर्ग। में नहीं अवस्था की हेते. विज्ञीके प्राणीको सुनको हा यहते हैं तथा को सुनक्त और क्यान है, ने भी कर्मीय क्यानों नहीं पहले । जो प्रश्न और विकास समान सम्बानिकारे हैं, से विकेट्स पूर्ण कर्नकारते मुख हो बाते हैं। यो तान मानियोग्द एवा प्रतनेवादे, तानेव विकासका उचा विस्तावन आकरवीको उपन क्षेत्रको है, वे मनुष्य सर्गाचनी होते हैं। यो कुसरीके बनकर करता नहीं रसते, पराची बीसे सदा हर रहते और वर्गके हरा हहा निर्मे सह करने चानका है न्योक चुता है, यो करनी है क्षेत्रे पंता करे, बहुदारों है वी-स्थाप करे और अर्थन सुक्र-भोगोर्ने देख गई होते हैं, को अपनी सक्तिआयो कारण पर्राक्षणोची जो। जॉन उठावर पेस्तोतक गाँ। किनको इन्द्रियो सामुने रहति है तथा यो प्रतिनको हो हेव सन्तरमार कार्ने विका को है, वे पतुन्त कार्नि वही है। यह देखालोका कराक दृश्य मार्ग है। एन और हेक्को हर बारनेके first per werfelt melte mit å i fleger, speitelt und å क्रमक सेवर करन करिये । यह यहां कृत, वर्ग और उपलासे क्षा है। होता, होता और क्षा प्रत्या स्थान है। यनुवासी केरिका, वर्ष को सामोद्धालेंद्र हैंग्से कह है कर पार्शक easer the wigh (with freezework than flow हुआ वर्ग कार साम्यानकृतक क्रेता है) र

कांडीने पूर्ण-पहल्ला । केली वाजी बोलनेके बन्न क्ष्मिको प्राप्तका पाछा है ? पह पालोको क्षम परिवर्ष । 🕟

कोकरो कार-को अपूर्ण अर्थ का कृतिके हिंके हैं-वि-विकास के हुए वह बोलो, अमेरिका, वर्ग अवाह दिली कामको हैंने अवस्थान की वसी, किसी करी परको क्रिक रूपनेकारो, विश्वविद्यो कृषा व पहेक्योकारो, कर्म विकारोंने सीत तथा काम्या-सम्बादेश मानसे एस रहती है जब को सभी इसके, प्रकृती और विद्वासन्तर्ग कर पुरसे नहीं निकारकों, में प्रवास पुरस करोरे जाते हैं। को पहल क्लोने क्रेकी कर केल्प और के कल्प केंद्र के है, सब प्राचन क्षित्र क्षेत्र क्षेत्र के होता है जाने क्षाने देखाने कार्य है, जिनके पुँको कभी प्रकार्त्य कर नहीं निकारों, के क्रिकेक्ट्रक कार्यका वरिवान करते हैं तथा स्रोक्ष्में सानेवर क्रै निनके केने करवाने निर्देश करनेवाली वात पूर्व विकासी —को जा राज्य भी प्रास्तानपूर्ण कवन ही घोरको है, वे कर्मको प्रक्ष होते है : वेकि ! यह मानीका वर्ष मानाका २० है। स्थापोधी एक हात्या होता करते परिचेत विक्रानेको सर्वेद प्राप और साथ बचन केरना राज निकासक स्थान करना जीवा है। \*

क्लंडी कुल-नगवन्। सनुष्य कौन-स्त कर्म करनेसे केलांचु केला है ? और फिस कर्मने अल्बी जानू क्रील हें कर्त है? संस्करने कियने ही पतुन्य करवेन होते

<sup>े</sup> उपर्युक्त कार्येक निकामकाको अकान करनेवान प्रमानो प्राप्तामस्टको प्रति है। बार्ट है।

हैं और फिलने ही जानुस्तिन, किलने ही चर्चका कार पहले हैं और फिलने ही तुर्वृद्धि। इसी जानर व्यूक्ते कार-विशानको सम्पन्न एवं महान् गुद्धिकान् देशों जाते हैं। फिलमे ही सोन्तेयन कोटी-मोटी वाजाएँ जाती हैं और किलने ही नाई-वाई आधारिकोंके सिकार हुए यहते हैं, इसका बाव कारक है ? यह साथ जातनेकी कुना वर्जियों।

महेकार कहा—हैति | कार्यक्ष पत्त विक जावार जाव होता है और मार्यक्षिको राजी ज्यून किए जावार कार्यी-कार्यी कार्योक्त कार घोणते हैं, का तब कार का है, सुने—जो स्मूल हुमरोंका जान केरेके किये कार्य केरे किये राह्य गर्यकर जार कार्यक किये कार्य है, को जीवित हरिकार रोकार प्रतिकाशिक क्या किया कार्यक है, किराके बीता कार्य की होती, को शतक जान्यकोंको सर्वक जीवित कार्या स्मूल हैं, किराको निर्वका प्रत्यक्षकों क्यूंके क्यूं होती है स्मूल को पीटी और बदेवोको की चरण की केर्य का केर कार्यो स्मूल हैं। विस्ताव कार्यक हाले विकरित है, यह कुल कार्यका और कार्यक होता है। विश्वकी ज्यूक अर्थ कार्यक्षी कार्यक हुस्सीका कार्य, स्म्याकीका अर्थन अर्थन

🍴 बच्चा अस्प्रान् होता 🖁 । विस्तात बिन्त हिसामें रूमा होता है, न्य वस्त्रामें निरस्त है और जो बिस्त नहीं करता, यह सार्थने बाहा है। रस्कों को हुए बीचको कहे कठोर और प्रकारक बारना भोजनी बढ़ती है। बाँदे काफी कोई नरकमी कुरकारा पाता है तो बनुष्य-बोनिये जन्म रेखा है; बिह्न इसकी जानु कोड़ी ही होती के क्योंकि विस्तादी विस्ताने करित होती है, यह अपने पाय-नार्यते बाह्य होनेके फारण सब प्रातिकोचन अधिय और अस्थान होता है। इसके विकरित को सुद्ध कुरूने अन्य और चीवदिसारी आरम् क्रांग्याम् है, विदाने क्या और इन्कार परित्यम कर हिना है, जिसके प्राप्त कामी विक्रीकी दिला नहीं होती, को प माना, व मानेकी अञ्चल हेल और न मारनेकरेका कनुष्टेकी करता है, निवादे करते एवं अधिकोंके और केंद्र करा संस्थ है क्या को अपने ही प्रत्यन करनीयर की क्यावरि प्रवास है, देशी पूरत देखानको आह होता है अनवा परि क्याबित अनुव्यका क्या किए कर से का समित और सुबी होता है। का प्राथमिक अनुसार कार्यकारी प्राथमिक एक्ट्रांसी को सीर्वाची क्यूब्रेस्ट कर्न है। क्रेन्स्स्रिक्तक बरियान करनेते इसकी कारणीक्ष होती है । कार्य कहारणीये कृत मार्गका कार्यक विकास है ।

## खर्ग और नरककी प्राप्ति करानेवाले कर्मीका वर्णन

सर्वति पूरा—शनवर् । किस स्वतन्ते चीन, । आवारम, वर्ग और कृत्ये क्षण प्रमुख सर्वते काल है ?

मंगारने बहर—वेदि हैं को सनुष्य स्वाह्मनीका सम्बद्धन और हान करता है: हीन, हु-भी और बरिद्र बनुवनेको स्वाहन पोण्य, अस-पान और बचा सहान करता है: उद्दरनेके स्वाहन, सर्वेहारम, पुत्रमी, काळ और सावाही साहि सन्वतात है; सेने-साहे सोनोकी प्रवाह पुत्र-पुत्रकर नित्य केनेकोमा कराई कर काला है; असल, एका, समारी, गृह, का, वर-वाहन, थी, पोल और सरकाओका प्रशासक्तिका क्षण करता है, वह दिल्लोकार निवाह करता है और पुरुवकारोका चीन समार हैनेपा कारि प्रमुक्तरोकार असकार सुवा-सम्बद्धिकों सामाय साम पुत्रमी साथ संस्कृत है। आसे काल कर-वाहकी काले नहीं हैता। कर देनेकार प्राची है। देनो काल कर-वाहकी काले हैं। हैता साथ हिम होते हैं। इनके दिश्य बहुत से स्वाहन है। देने हुआ स्वाहित कुछ देनेने कालूत करते हैं। के अवहादि पुरुव हुआ संस्कृत हुआ है। से काल करते हैं। के अवहादि पुरुव हुआ स्वाहन हुआ है। क्षेत्रं, अंबो, व्रतिहें, निक्तंत्रंतं और अशिवियोको हेकते है हर क्षेत्रं हैं। इनके क्षकता कार्यवर भी विद्वार्थी संस्तृत्वाचे कारण बात नहीं हैते। क्षाणी भी धर, कक्ष, भोग, सुकर्ण, मी और सरकार करी हूँ क्षमा अक्षारको कार्य क्ष्मुलंका धर्म भूदि करते। इस अक्षारके अवार्थी, लोगी, व्यक्तिक एवं उत्तरहें भी पुरानेकारे मूर्य न्यूका वस्तार्थे क्ष्मो हैं। व्यक्ति वस्तारकारके केरहे थे पुरा स्टुका-चोटिले जन्म सेने हैं से विर्धन कुरस्में ही अस्ता होते हैं। ये हार्यक चूका-कारकार कक्ष्म सकते हैं, सब स्वेग कर्षे वसने सकारके कहार कर होते हैं क्ष्मा थे सब अक्षारके मोगोरे विराक्ष होत्यन कारकारसे जीविकार कारण है अक्षा थे बोदे-से वैश्वकारके कुरस्में अस्ता होते और कोदेशे ही मोग मोगरो हैं।

इनके वित्या, कुररे की बेसे क्यूक है जो सहा गर्व और अधिकानमें कुने और कारने करावक खते हैं। जो पूर्व गार्ग बेनेकेक पुश्लीको कानेके दिन्ये पार्ग नहीं देते, पाक अर्थक करनेकेक पूक्तिक कारिकेको पाक (पैर सोनेके दिन्ये कार) नहीं बेरे, जार्क बेनेकेक पुष्लीका वित्यात संस्थार और कुमन नहीं कारो अक्षक उन्हें अर्थ और आक्रकतीय नहीं

केते, युक्तंत आनेवर प्रेमकृषेक उनकी कुछ नहीं करते अब अभिनान और त्येपके क्योपन होकर सम्प्रान्तीय पुरस्केता अपनान एवं प्रज्ञाननेका विस्ताहर करते हैं, इस प्रवासके अन्वरम क्रम्बेदाले सभी रचेन नतानानी होते हैं और बात वे मस्वसे बुटवारा पर्त है से बहुत क्वेंकि बह असन्य विका कुराने क्या होते है। युद्ध और को-कुरोध्य अनुसार बारोवको म्यूनोका पूर्व एवं कृतिक व्यव्यक्तेचे कुल्ले क्रम होता है। जिसमें वर्ष और अधिकारका राम की होता, को केवल और अध्यानीको पूजा करता है, संस्थानी स्थेप विश्ले पुरुष पानते हैं, जो बढ़ोंको प्रयास करनेवाला, किरवी, बीते क्षान बोलनेवाल, इस क्लॉका क्रिय और उन्हर्न प्राणिकीका जिल करनेवारत है, विशासन विकरिक साथ के नहीं है, विस्तरक बुक्त प्रसार और प्रस्तरक स्रोतर है, से भाग्यापुर्वेश सेहमरी मानी बोरवार है, किसी ची प्राणीबी हिला नहीं करता तक सनका सरकार और कुछन करता है. को चार्च हेनेकोच्य युवसको सार्थ हेक, मुख्या बच्चेतिक स्थानक करण और अमेरिक्केको जार्गाका करके उनकी पूर्व करक है--देश बहुक सर्पको अनु होता है। विश् बहुका चेप प्रमात होनेपर करूब-बोरिजें जावत का जाय कराने जन्म हैता है : वहाँ एक अन्ये अस्तर शादा करते हैं और उस रहेग । दिना भवनमें देशकारोबी भौति आस्तरपूर्वक निवास करता इसके सामने भारत प्रकार है। इस प्रकार गुरूब अपने कर्मोका कर रहा सर्व है चेंगता है। वर्गाना स्कूल सर्वह काम क्षार, अप जाति और काम स्वापने क्षार काम काम है। यह सामान् अक्रमें के बताने पूर वर्गका की कर्मत | कर्मात कामा है। क्रिक्त | यह समान पुरुषोक्त नार्ग है, क्रूप्रे रिस्प है।

की का मानकींको सका है से अनेको प्रकारकी विक्र-कार्यको सङ्घ अस्ते स्थान स्थान स्थान सेना है। हेला क्यूच अपने सिन्ने हर करोंकि अनुसार क्याहरे जीव करात करता है और एक खेन अपने हेर उसने है। प्राची विक्टीय को पहुल का आविकोचे और प्रवाही रहाता है, समाने कित क्रमाना है, समाने कार विताने समान के रक्षक है, जिल्लीके कार के नहीं करता और प्रशिक्तीको कारी किये कुछ है, को प्राय-के साविको अपने असीन रकार विको को बोक्को न जोको प्रकार और न कारह है है, एक अपने जिल्ला निवास करते हैं, को एकी, देते, बेले और अधिकारों की विवर्ध प्रत्योंको द:क को परिवर्ता. निरामा कर्ष पुर होता है तथा को रख ही क्यापानने प्राप्त कुछ है, हेरो सम्बद्ध और अध्यास्थ्याता एक सर्गलोक्ष्मे : है। फिर पुरस्कारोंकि श्रील क्षेत्रेकर बाँद यह पुरस्कोकारे क्या रेखा है से अस्के करा कवाओंका आक्रमत क्रम द्वीत है। क निर्मय, बसी एक सामान और खेरते रहेत सीमन किन्छे प्रकारको किल-सामा नहीं आने पाती।

किस म्युक्तक कायरण हुएताने कर हुआ है,-यो

रायक जीवोके रिक्ने कर्मकर है, जो हुन, पैर, रहते, केरे

और हेरेनी करकर, पंजिये क्षीपक्षर तथा करक बस्तीका

क्रार करके बीच-वचलोची समाज और प्रवास का

काम करके उनका अञ्चलक करता है, ऐसे क्रमालक्षके

करकारों उरवारें निरम पाना है और वासकारों पाकर

#### पार्वतीओके द्वारा स्ती-वर्मका वर्णन

करानी करते हैं--प्रशासन, बच्चान्, संबदको भी पार्वतीनीके पुँको कुछ शुल्केको इन्छा छाँ, इस्सीनो उन्होंने पास हो बैठी हाँ अपनी ठीव एवं अनुस्ता कर्या कांगीले स्या-देश । तुम पूर्व और परिचलके पालनेकारी, पर्नेड प्रत्यका ज्ञान रक्षानेवाली और जर्म कर्मका अध्यास करनेकारी हो, अरह में हुको मुंतो की-कर्नक कर्नन कुन्छ पाक्रम है। शुन मेरी सक्रमर्थियी हो, कुनार चीता, कुनाय उठ क्या क्याने बस और पराक्रम की मेंने 🗷 सकत है। उनने रीत तपस्य की है। यदि तुम की-वर्गकर कर्मन करोगी तो यह विशेष समयुक्त होया और कराहो प्राथमिक कर सामय । सिर्ध इसका विशेष आहा करेगी; क्योंकि

े स्थाने ही विक्रीत है। यूने ! विक्रोधे प्रकार पासको जनरेक सन्दर्भ वर्धोका तुन्हें शन्द्री तथा इसर है, are: are most (wh-sel) are fluoroit were कांत करे।'

कांद्रीने कहा—कार्यन् । आग समूर्ण पूर्वोके स्वामी है, अपने प्रथमने नेरी सम्बन्तिने यह प्रतिया जा कार्य (निससे में आपके प्रकार कर हे सकें) । यह देखिने; वे नीमाँ समूनं डीनॉब्स का रेकर आयो बारदेक रार्व करनेके रिप्ते जानकी सेकारे उन्हेंबत हो रहे हैं। इन समये क्रम प्राप्त करें, ये क्रिमेंट क्षम क्रिन करेंगे। श्री क्षीकर हो जनसरण करती है, जल: मैं इन जनम सरिताओंका क्रीकर्मकी पराव पति भौतीनें ही प्रतिक्षेत्र है। संस्करनें यह बहुत । सन्बाद करोजी । वे पराव प्रतिक सरसाती नहीं है, जो सक



महियोंने साम है। परिताओंने सबसे बाटे इसीया अदुर्थन हुआ है। वे अमूले नित्ती हुई है। इसके दिला के विकास, बितासा, क्याचना, इसकते, क्या, देविया, तियु, महिलारे और नीतनी (गोयावरी) के वहाँ विरामकात है। समझ सरिताओंने शेंद्र और सब्दर्भ तीनोंक सबसे सन्तत के हैंवियों ज्ञांची हैं, को सामावाने सुविक्ट सार सबसे हैं।

महावेगपीते में पहला समेरीजीने की-कांके अपने कुंबार गढ़ा आहे हेंद्र मोर्नोरे विशेष् कुरुकारे हर का-'सरिताओं । सम्बन् इंकाने मुक्ते छी-कांक्रे विकार का विका है, उस: वे आकारेगोरे सरस्य रेक्टर करके अध्यक्त कार केन प्राथमि है।" क्रम अध्यक्त क्रम पार्वतीओंने इन परम परिता और प्रान्यानको सरिताओंके जब विका से सको विलयन देवनही बहुनती हैं सम्बद्धि करने क्षेत्र केरा देनेके रिन्ने निवृद्ध विकार का कर प्रकारको सुद्धियोगे सम्बद्ध, भी-वर्षको क्राक्टेबरचे, सम्बद्ध वन का करनेवाली, परम परित्र, राज वर्षेपी कुसल और विकासीता पहाली पुरुवशिका निरित्तकपुरवरी कहारे कोर्सी—देवि ! हम वर्गमें तरस खनेवाले और सन्दर्भ बगर्की एक्नीया हो । तुम को यह 90) करके मुक्त-वैशी एक सामारण नदीको आहर है भी हो, जससे में जमनेको कन और अनुनृतिन सन्दारों हैं। यो एक कुछ करते हुए की क्सरोंसे जब करता है और द्वार क्रूबसे उन्हें सकर केता है. नहीं वास्तवमें परिवत बारायता है। में क्रान-विकासी समाव

और अवन्येकों कुक्त प्रयासीर असी अधीव विश्ववर्धे कु नेवा है, या कभी संस्थाने नहीं पहला। मुख्यित म्यून्य का स्थाने कुछ केतात है से आको को सामारत मनुमाने नित्तकम् — प्रेवतारे भरी हुई होती हैं, सिंह कुन्दिर्धन कंकाने न्यून्यवर्धि कार और ही देनवी निकाली है, आमे कुछ का नहीं कुछा। जात हैनि । दून दिन्स झानसे सम्बन्ध है, इस्तरिन्ते कुन्दी इन्यन्नेन्सेनों की-कन्निया अन्तेश करने-मोना है।'

हा अवहर पहाचीने का बहुत-से पुन्तेका बर्गान

करके कर्वनीजीकी प्रवंता को से उन्होंने कहा-'हेरि । mit Rundle under den ger f beife argeite beratt विकास करने करते हैं, हम काम देवत हमो—विवाहके साम कामके मार्क-कन्यू पहले ही हो की-कर्मका उन्हेंस कर के है का कि का आहिके सर्वाप अराने परिची स्क्रामिकी करती है। किरके सरकार, बारकीर और अवयान अब्द हो; नियाको देशनेको भी परिचारे सुका नियाता हें; के अपने चीके केवा कृति किसी पुरुषों का नहीं क्षेत्र क्षेत्र स्थानेक स्थान क्षा अन्य प्रतिकार गाँउ क्षात्र स्थान व्य की वर्णनरम करनेवाले वानी नहीं है। को सामी की अपने राजनीयो राज देशकुण सन्दाती है, वही धर्मनराजन और बड़ी करोड़ करन्त्री नारिनी होती है। को परिनी देशकोर सम्बन्ध सेवा-कृत्युक और वरिकाई करती, प्रतिदे किया और विकास प्रसिद्ध केन पूर्व बारती, बानी रेच पूर्व हेती तक प्रथम प्राच्या कारण करती 🐌 को कुनके मुस्तकी नारि कानोबंध पुरस्तानी और उस्ता निवासी खारी है और ियोग्य साहायात रोजन करती 🗓 यह साम्बी सी वर्गकारियों है। 'पति और प्रतीको एक साथ रहका सर्वक क्राचरण करना पाहिलें इस महत्त्वान सम्पन्न-वर्गको कुरका को की वर्गभावन हो कही है, यह परिने सन्तर क्रमा करन करनेकार्य (परिवास) है। साम्ब्री की स्वय अन्यने चरिनको केम्प्रकोड स्थापन हेलाती है। पति और पेशीयक न्य स्कूमने (राज्य-साथ कुकर वर्षाचरम करना), इस, धर्म कार म्यूनकार्थ है। यो अपने इंडब्के सनुरागके कारक कामीके अभीन रहती है, अपने विस्तको प्रसार रहती है, कहन 🕬क चलन करती है और देसनेने सुरस्तानक—सुन्दर केर जारन मिले खती है, जिसका बिल अपने परिषेड रिखा और किसीका कियार की करता, का प्रस्ताकरन सुनेवार्थ सी वर्गकरिकी मानी पनी है। सो स्वामीके कठोर क्यार कहने क कृत दुविसे देखनेकर भी अध्यक्तासे पुरस्कारती खर्ती है, बाह्रे को जीवनका है। पठिके सिका इसरे किसी प्रश्नकी ओर

देखना के हर रहा, को पुरुषी समान कम करण करनेवाले क्षत्रज, सूर्व और किसी कुशब्दी ओर भी वृद्धि नहीं अलबी, क्की प्रतिकत-वर्गका पत्तन करनेवलते हैं। यो नार्ने सक्ने क्षीत. रोगी, क्षेत्र अवका रुकेकी क्षात्रको दिला हर परिन्दी प्रत्ये समान रेम्ब करती है, उद्योग्ये वर्णका पूरा-पूरा पाल मिलता है। यो की अपने प्रत्यको छुट रहाती, पुरवार्य बारनेमें कुएल होती, परिसे केर बारती और परिवर्ध है अपने जान सम्बाती है, बढ़ी वर्तवा पान वर्तवी अधिकारिकी होती है। को प्रतान विकास परिवर्ध संका-सुक्षाओं राजी सुनी है, पशिषे क्या पूर्ण जिल्लास रकती है और काले साथ विरवास्ता वर्ताव करती है, यह गरी-क्लीक करा करी है। जिसके इटकरें प्रतिके रिन्ने जैसी पात होती है जैसी बाल, मोग, ऐक्वें और सुसके रिये के नहीं हेकी, को प्रतिहत अतः वातम ३७नेमें स्वीत रक्तती, मुक्ते काम-काममें सोम देती और बंदको हाक्-बुहारकर को गावक गोकरचे और चेसकर मान बनावे रसती है, जो परिनेत सन साजर मिल अधियोत बारती, वेपलाओंको एक और पाँत अर्थन करती पना केवळ, अतिथि और साम-समूर आहे पंज्य-वर्गको भोजन हैकर न्याय और विकित अनुसार क्षेत्र अवस्था कर्न केवल कराई है तथा बरके लेलांको इह-युह इसे लेखा उकती है, बड़ी को भारी-कर्मका पारान करनेकारी है। को उत्तर पुर्वाने एक होपर सह साम-असके परकोची सेवाने संवत वाली और मता-वितार्थ प्रति पनि रसरी है, यह की क्वरिकी करी मनी है। यो अध्यक्तो, धरेली, कनाओ, धेनी, अंधो और केमालोको अस देवार कावा पारक-केवम करती है. को

क्षारिक-कर्मका परम जार होता है। को प्रतिदिन काम आसा पापन करती, परिषे ही यन रागाती और विस्तर परिषे कि-काधनों सभी खारी है, उसे परिवास सम्बन्ध साहिये । वे वर्ष प्रतिक्रत-धर्मका प्रतान करते क्रं कारीकी सेशाई क्रम क्रुने हैं, जन्म या कर्न महत् पूर्ण, नहीं मार्च क्या और अक्रम कर्मका साधन है। यहि ही जियोंका हेक्स, पति ही रूपका कपू-सत्थान और पति ही उनकी निर् है। अधेके दिन्ने पठिकें सम्बन न करता मोर्ड सकता है, न कारत कोई देखा । एक ओर परिची असवता और दसरी ओर कर्न: मे केनो नारीकी चुड़िये समान हो सकते है या नहीं, हरूने क्षेत्र है। मेरे जनन्त्रन भोतर । मैं से असमी जनस्त्र रक्कर सर्वको भी भई सब्दी १ पति दरिए हो साम, किसी केको कि साथ, आयरिने सेहा साथ, इस्तुओंके सीको यह कर अनुबा प्रकारके कार्य यह या का है और हत अवस्थाने वह र करवेचीना कार्य, अधर्म अवस्था हात हात केन्द्री भी काल ने से को कार्गीत्वालया वर्ग सम्बद्धार विश्वपुर पानके हुने। पूरा पानक पानिके । भारतपुर ( attend अक्रमे के पर पी-पर्वत पर्वत किया है। यो भी कर कारों अनुसार अपन् बीचन कराती है. या पारिकार-कार्येट पराच्यी कारियों होती है।"

कर्वतीकोचे प्रया इस प्रकार वारी-वर्गका वर्गन पुत्रकार वेजनिकेस व्यक्तिकाने अवकी वाही अर्थना की तथा कहीं अनुकरीके साम काले हुए तम त्येगीको जानेकी अञ्चा है। का समझ पुराचन, सरिवाई, गर्काव और अवकार्य प्रशासन् चंकरको अन्यम काले अपने-सामने स्वानको काले गर्नी।

#### चगवान् श्रीकृष्णके बाह्यत्यका वर्णन

मार्थेची कहा—विक्रमन्ति प्रशासन् कंगर । अस इस् मार्थेच (श्रीकृष्ण) का प्रदान्त्र सम्बन्ध करना पाहते हैं। प्रोक्षणे कहा—स्कृतियरें । प्रशासन् स्विकृष्ण प्राह्मपति पी शेष्ट हैं। ये स्थानन पुरुष सीहरि पहल्कों है। उनके सरीरकी कार्या पाल्या नायक सुकली सम्बन्ध केनेक्यान है। ये मिना कार्यकों आकाराने उदिए सुबिक समान देवनके हैं। उनकी पुजार्द दश हैं, उनका तेव नहान् हैं। ये केन्यानोंके सामुख्य कैनोबा नाया करनेकले हैं। उनके यहान्सानों सीमसम्बन्ध विद्या कोचा पाल है। ये क्ष्मीक अर्थात् इतिवालेंक सामी होनेके कारण हार्यकेस कहानते हैं। समूर्य केनक कस्मी पुता करते हैं। अहानते करते अर्थ्य और हैं करते

व्यास्ताने प्रवाद पूजा है। उनके तिरके बारकेने नेवान उत्तर करायोका अपूर्णन हुआ है। देवका और असुर उनके सरीरकी केवन्त्रीरकोने प्रवाद हुए हैं। सन्तरा व्यक्ति और सन्तरान रहेक उनके सीवित्राको उत्तरा हुए हैं। ये अध्वति सर्च ही सन्दूर्ण केवन्त्रों और प्रवादनिके भी बाम हैं। सन्दूर्ण पूजीके ब्रह्मा और बीची स्वेक्टोके स्वादी की है। ये ही सम्बद्ध करावत प्रविक्तिका संवाद करते हैं। ये हे स्वादओं में हेह, देवरवाओं के स्वाद, प्रदूर्णको संवाद देवरारों, सर्वाह, सब्दें ओस्तातेत, सर्वाह्मा केवर और सर्वाह्मा प्रवेश हैं। ये ही प्रधासक, इन्ह्यांके प्रेरक और सर्वाह्मा प्रवेश हैं। वीजों स्वेक्टोंने उनसे व्यक्ता सुस्तर कोट नहीं है। ये ही सनातन, समुस्तान और नोक्टिय



अति वालोंने अस्टि हैं। इसलोको अस्ट केनेको के भगवान् कीकार पहण्यान-पूजा स्मूर्ण कावलेका संस् भगवान् गरित सारम काके प्रवाद हुए हैं। काकी वाकि और स्वाप्ताको किन्द समूर्ण केवल को कोई कार्य की कर सरावत् । संसारणे नेताके विका केवल कोई की कार्य करोते अस्तवर्थ है और का प्राच्छा अकुमार का अधिकोंके केव हैं, इस्तियों संस्का केवल करके करकोंने प्रवाद जुवानों हैं। केवलानोंकी रहा और उनके करकोंने प्रवाद जुवानों हैं। केवलान कार्युक्त अध्यापकं हैं। वे ही इस्विचेको अब सारम के हैं। बहानों और मै—केवो है कार्य करिके सीताकों समूर्ण केवल को सुकाके साथ को है। अस्ति

मध्ये मधि प्रमाने समार सुपा है। उनके नर्ग (बद्दा:सार) में स्पर्नेक्षण पात है। में स्पा स्थानिक प्रथ निवास करते हैं। सर्जुक्षण, सुरस्तिक और क्षेत्रक काल सद्द उनके अनुध है। सम्बंध स्वयम् प्रमाण विद्व है। में साल सील, सन, इस, परावस, कीले, सुपर प्रतिर, जान सर्वन, सुप्रैस अपकृति, कैले, अस्तुला, कोल्स्स्य, सन और करा आदि सम्पुर्णोसे सम्बंध हैं। सब प्रवासके दिवा और सम्पुर्ण साथ-साथ उनके पास साथ चैन्हा को है। में योगसायारे सम्बंध और इनारों नेतोक्स है। उनका कच्छे थी विनास नहीं होता। में अहर इस्टब्सरे, धीर, निवासनोंक प्रशंसक, प्राप्ते एवं सन्यु-सन्यनोके द्वित, सम्बद्धील, व्यांकारचीत, प्रकृतनात, वेद्रीका अञ्चल करनेवाले, चनाहर पुरुषेका पाव हर व्यास्त्री और विकास बढ़नेवारे है एक सन्दर्ग - इस्त देवेवारे, क्षेत्रेकी श्रामे करार, प्राम्नोके इतल, अर्थसम्बद्ध, समूर्ण कराएंड कदर्बन, इरलने कर्न हुए इसुओको भी क देरेकारे, क्यांत, नेरिया, बीतियान, क्यांत और निरोतिक है। इन कालेश्वरको युक्त करनेसे करण वर्गकी निर्देश क्रेमी है। में न्यून्य रेक्पनी मेरवा है। ज्यूनि प्रकार कि कारेकी क्रमारे करिंद रिन्दे कृषि को है। उस्के अस्त किने इस ने सम्बद्धकर अभी प्राप्त अन्य की प्रथमका पर्यक्षण सुक्त संपन्नि रूने हुए हैं, इस्तीओ कर्मको बालनेवाले ज्ञान बच्चा करवान् क्यांकेक्सो साम प्रयास करना काहिये । वे भगवान नारायण केरनोधार्थ संबद्धे केंद्र है। यो अन्यो बन्दर करता है, क्रानी वे भी क्यान करते हैं। यो उनका आवर करता है, उसका वे को जान करते है। इसी इक्सर अभित होरेकर अर्थना क्रमे, क्रीम हेनेपर पूजते, वृत्तीर कालेकारीपर शत कुन्यक्षी रकने और करकान्योको सरम प्रकृत करते है। पद का शामिक पंपालन् विष्युच्या काम का है। स्थान पूर्वत एक ही करते इस प्राचन सरकार काली है। वे सरावन केवल है। उसन केवलन भी सद्ध है उनकी पूजा करों है। यो का परकार्य अगन पात हो, से अनी wordt prom it fiebe im mit mit fil findigh कारिये कि में कर, बाली और कार्यते छात्र का करवानुको प्रयास करें और स्थापूर्वक करनाथ करके हुए क्षेत्रको स्थान कर्ष । मुन्यते । यह पैने आयलोगोको कार कर्न कहा दिया है। केवल करवान बाह्यकार हार्नन करनेने तुन्ते एक केव्यानीका वर्तन के व्यवसार में भी व्यापरकार करने करनेवाले इन सर्वत्येक्टीकारक क्लाकेकरको निर्मा प्रमान करता है। इस सब देवता करके **अंशिया**में विकास करते हैं, अतः क्रमात दर्शन करनेसे तीनों केव्याओं (प्रकार किया और शिव) का वर्तन हो जावना, प्रतये जन्मक भी संदेह नहीं है। तयोगनो ! आमरोगीयर अनुष्य करके के भगवानुष्य परित स्थानव इसरिय्ये बतावर है कि जान प्रकार्शक का बहुदेश औकुन्यकी पूजा करें।

करवर्ष करते हैं—सगवन् ! हिमासको हिस्सावर भगवान् इंकरने इन्तरोगोको कियके प्रकारकार उन्हेस किया था, ने प्रहापुत सनावन पुरुष अस्य हो हैं। सीकृत्य ! असको प्रधानसे हुसरी अस्तर्वरों खता यह हुई है कि हम



आवर्ष देशका विदेश हुए और हमें कृष्टिमध्ये कर म्परम के आगी। प्रची ! वेकस्थित चनवार कंपाने इस प्रकार आयोः जहरूका वर्णन क्रिक कः।

स्त्रेक्तिकारी अधिकेट इस अवस व्यक्तिक वैकारीन्त्रम् अविकासने का सम्बद्धा निर्देश सामान विकास सहरतर, में पहले कुछ होने जरकर केले--'जनकार ह आय होने करेवार वर्तन की स्वतंत्री कृता करें। आवका के 👣 अवतार अववा मानव-सरीरमें जन्म कुछ 🛊 और प्रस्का को नुह कारण है, का राज हामधेन राजनी करावाओं कारक हिमानेमें अरावर्ध हैं। इसीरियरे अवयोद पूर्व पूर्व भी पूर्व कोटे पुरेश व्यक्ती क्षात व्यक्ता रहे 📲 । पुरुषीयर अस्तवक क्षार्गने कोई औ हेती साञ्चर्यकी बात नहीं है, जो अल्ल्को प्राप्त न हो। अल इस कुछ जानो है। अच्छा, अब हमें जानेको अद्भा देंशिने।'

भीनाओं सहते हैं—पुचिद्धित | वे म्यूनि इन वेकारिक्षेत पुरुषोत्तमको प्रजाम और उनकी प्रदक्षिणा करके परे ग्ये । क्रान्तर, परन कारियो क्रीमच्या चनवान् वाराध्यः अस्ते 95को विविक्त् समाप्त करके सामकपुरिने अपने । इसके कह दारवी महीना पूर्व होनेपर स्थिमनीके नर्वसे इन्ह बहा सुन्हर पुत्र करण कृता। अलग्री कर्मन सही कर्मुन भी। यह भगवानुसा वेदा करमनेकारक और कुरबीर है। सन्दर्भ प्राणियोके मानसिक संकल्पमें कहा खनेकार और वैक्ताओं उधा असुरोके भी अन्तःधारणमें निवास कालेकात कारतेय हैं बीकुमाके कुरकारों अवसीनों हुआ है। ये ही | कांबिओके साथ जो वर्गीवरका संबाद हुआ वा, उसे हुन

ने पुरस्कोत्व औक्तूम्ब हैं, को नेकके सम्बन्ध स्थान कर्ज और चार पुरानवारी है। इन्ह आहि तिरीश देखता इच्हेंके राज्यप है। वे हो समानं अधिनोध्ये सामय हेनेवाले आसितेय म्बलेव है। इन्या न सादि है न शता। वे अव्यक्तवका महाकेमको नारमाम केमराओका कार्य सिद्ध कार्निक हैक्बे पहुलाने अन्यनि हुए है। में पुर्वीक सरकोर काल और का है। क्रमीनका । क्रमी समूर्व विकार, सञ्चलीय कीर्व और अधिक पुरुषत्वात राज-स्व परावन् कारणकार सामार केरेले ही हुन्हें जात हुए हैं। वे अधिकारकार आध्याम ही तुम्ब्रोंने दक्का और मरण गाँग है। कुरने साथ होता धनकर जारकातारीय जातिके सुन्तर हेकाती क्षेत्रकाले कुल करावा है और उनके प्रशा करतातिकी व्यालाने सामूर्ण राजाओंको आहोते है इस्ती है। आह कृतिक अन्ते कुत, चाई और सम्मनिक्तेस्तित स्तेकतेः बीन्य हो पना है; क्लेटिंक इस पूर्वीं। प्रतेशको अलोकने आका श्रीकृष्ण और अर्थन्त्रो युद्ध प्रत्य पर। वितर्ने ही विकास प्रतिकारे महानदी देख और दानव राजनाओं हुन्ह give friend through the foliage sharing क्षे पूर्व है। सन्त (बैर्न) स्त्रीय और यह आदिने कारान्ता: हेर पहुंच पुरुषे सोकृत्यक पुरस्तात की का सकते। अर्थेत को केमलीको सम्बद्ध और व्यवस्थानकी अधिके सम्बन्ध केवली है। ये धार्म सबसे भी मार्च करनक करने हैं और रमकृतिने करने आगे रहते हैं। इन्होंने अपने तेवले इन्हेंबनकी जाते सेनावर संदूर कर करण है, उसके सुन्धें अपने संगे-सम्बद्धियोंके रिच्ने होका नहीं कारत कार्रिके ।

बेहर । 🏶 इन मनवान् बीकुन्सवर प्रकृतन सैशा सुन का का राज दुनों कह सुन्तका। करवी पहिंचाओं संस्कृतिके रिक्ते प्राप्त ही पर्यात है। सरकारिक रिक्ते विश्ववृत्तिकार अवेदिक होता है। मैंने स्थापनी और सुद्धिपार, शासकीके क्यान सुरकार परन पूजा श्रीकृतन और महर्वियोक्त पहान् प्रचान कारराज्य है, साम ही ज़िल-फार्वती-संवादका भी कर्णर किया है र को अक्रयूक्त बीधुक्तको हुन प्रधानको सुनेना और बाद रखेना, कारको काम कारकारको प्राप्ति होगी। अतः निये कामानकी इका हो, का पुरुषके सन्तर्शकी इशन रेजी काहिये। प्राप्तन भी पृत्ती ज्ञास परमानकती सुरि करते हैं। राजन् ! दूस सक्त वर्गपूर्वक प्रकारत पहला करते खो । इन्हरू थ्याके लिये से ट्याका जीता उपयोग किया ो कर है, 🖎 धर्म है बहुत्तर है। परवार प्रकारन

सर्व्यक्षीके निकट की तुन्हें सुन्न किया। अवना कार्यका व्यक्तियाले पुरुषको यह संबाद सुरकार वा सुरकेकी हवा रकार विराह पान्हे परावन् श्रीकरको पुरा करने पहिले । इनको एकाका संदेश देवनि पालकीका है किया हुन्य है, क्रातिको तथ की देखा हो करते। मनावाद सीवान्य और महानेवर्गाका गढ अस्पुत वृत्तान पूर्वकारमे विकास पर्वतार संबंधित प्रभा का। कुमलनका (वेक्स्म और अर्थुन—के सरस्या आदि तीनों सुनोगे सरस होनेके कारण डिपूर क्रम्पराते 🕯 : देवलि नास्ट् तक व्यासनीने पूर्व इन क्षेत्रके क्रक्रम्बर परिवय दिश्व 🕮 । महत्त्वम् श्रीकृष्णने से सम्बदनो हैं अपने कनु-वाक्योंकी रहाके रिन्ते केनकर कीर संहर क्रिया था। ये सनासन पुरामपुरूप है, इनके सीरम-करियोची कोर्ड सीम्ह का संस्था नहीं कारणनी का सकती। नसोहा ! कुरात हो अवस्य ही बारकार होगा; क्योंकि ने कराईर हुमारे सत्ता है। पुरुष्टि कुर्वेकर करावि करावेकरें साथ तथा है से । व्यानुद्धिकर् राजा कृतिहिर पुरः प्रस करने रागे ।

**प्रे** पूर्व से अर्थिक रियो अधिक होक से प्रा है, क्योंकि क्रांके कात्म इसी-कोई आदि महनोसदिन सारी पृथ्विका नव हुना है। कुर्वेक्त, कुलासन, कर्ण और समुनि—इसी कारोके अपरायसे समक्त कोत्य को नने हैं।

वैक्रायकार्थ कार्र है—प्यारकार पीनके इस प्रकार क्क्रकेल म्हलक पुरस्केंद्र बीचने बैठे हर पुनिद्वित सुन हो गये । चीनाबीकी करे जुनका बुराय आदि समाओको बड़ा विकास हुआ और में मन-ही-यन औक्तामधी पूजा करके उन्हें हात कोको हाने। नाम, असी पहली भी मीनामीके समन एक्स क्यार्ट ज्यंक कर्या हर बहुत जात हरू। इस जनार प्राच्याच्या पुनिर्दिशने काले श्रम शहरोके साम गढ भीकारोचा प्रम अनुसारत सुन, को अलगा आधुर्वजनक और क्या क्षेत्र है। स्वरूपर, बढ़ी-बढ़ी इक्तिमाओंका दन करनेवाले पहुल्लाम् भीतन्त्री का विशास से पुने से

#### विकासहस्रवाध

र्वज्ञानकार्य कार्य है—एक्ट्र १ वर्गकुर राज्य चुनिक्कियो सम्पूर्ण विकित्तम कर्ण तथा क्यांच्या क्या करवेगाने वर्षाकृतीको सम प्रकार सुन्तार प्रत्यकृतुः चीवको für get i

विभाग केले-समान बागाएंगे एक ही के कीन है ? हाता इस स्पेयाने एक हो पात सामाय-एकान स्वीत है ? विशासक क्षांभारकार कर केमेवर जीवनी स्वतिकासन क्षांस्थाने हो। बाती है, तब संसव पह हो असे हैं तक समूर्ण कर्न होना हो बारे हैं। बिहर देवकी सुनि—मून-बीर्तन बारनेने क्या बिहर देशका जान प्रकार से बाह्य और अल्पारिक पूजन करनेसे प्रमुख कारकारकी आहि कर सकते हैं ? साथ समस्य क्योंने क्योंक संक्रमोंने एक किस कांक्रो परन क्षेत्र कान्त्रे हैं ? क्या विकास का करनेसे करनवर्ग कीय क्यानामान संसार-कथनसे पुरु हे साल है।

मीनार्वने का-शाक्त-कामाम संसारके प्राची, **प्रका**रि देवोंके देव, देव, बातर और कार्ट्स कर्वरिकट, क्षर-अक्षरहे केंद्र कुम्बेतवया सहस्र करोबे हत निरुक्त प्राप्त रहकार पूज-संबर्धित करनेहे पुण्य क्या कुल्सेसे पान है बाता है तथा उसी विनावसीत पुरुषका सब समय चकिने पुळ होतर पूर्व करनेसे, उसीबा बान करनेसे उचा पूर्वेक प्रकारते सहजनकोके हाए समय एवं नवस्तर करनेले एक कारनेकाम सब हु: लोसे हुट स्था है । उस सब-पुत्रु आहे हः

पार्वाच्यारेले सीव, वर्तव्याच्या, समृतं स्वेक्टेंबे मोधा, होन्याच्या देखारी विरुवार शृति करनेसे बहुव्य क्रम दू:बाँसे पार है जार है। जानूबी स्थल कानेकले खुरके तथा प्राह्मण, तथ क्षेत्र सुनिक्षं केनकारी, सार वार्तीको सारवेकाने, प्रतिक्येकी प्रतिक्रिके (कर्ण अपने प्रतिक्षे प्रतिक्र क्षेत्रर) बद्धानेवाले, सन्दर्भ लोक्सिक प्राप्ती, सम्बद्धा पूर्विके क्षार्थित-स्थान एवं प्रेसारके क्षारकाम प्राचेत्रस्या स्थान करनेसे मनुष्य सब दुःशोसे सूर नाता 🛊 । विशेषका सम्पूर्ण क्रवेशि में इसी मार्गको सकते बद्धा मानता 🗓 हि बहुक हार्य क्राव्यक्तारों विश्तक्षात्र क्रायलका प्रकार् व्यक्तिकार व्यक्तिपूर्वक सरकारसीय गुल-संबर्धनेकार सुरियोधे रख्य अर्थन करें । क्षे देन बरम देन, काम तथ, काम सक्र और परम वरुप्य है, बढ़ी सम्बद्ध क्रांस्थ्येकी काम माँउ है। युम्मीको ! यो कीत करनेवारे सेवांक्रियोंने परन प्रवित है, प्यून्तेका प्रमुक्त है, हेवोका हेव है क्या को पूर-जानिकोका अधिकारी दिया है, व्यक्तके आदिने जिल्ली सम्पूर्ण पूरा उत्पन्न होते हैं और फिर मुगमा क्ष्य क्षेत्रेस महत्त्वको किस्त्रों के किसीन क्षेत्र करे हैं. का रवेक्क्रकार, संस्कादे स्वाची, भारतान् विस्तुके पान और संस्कानकको पूर करनेकले इकल कार्यको सुप्ताने सुन १ जो नाम मुखके बारण प्रमुख हुए हैं, इसमेरी को जो अधिन है और मनसहा व्यक्तिकार के नहीं-वहाँ सर्वत प्रशासकार को में गर्व पर्व है, जा अभिन्यप्रकार महत्त्वके का समझ नामेचो पुरुषार्थ-निर्देशे हिन्दे कर्षन करता है।

की सकितनदरसम्म, १ विषय — समझ नम्मूचे सरकार, १ विष्यु: — सर्वस्था, १ व्याद्धान्त: — विनके स्ट्रेस्ट्रे मूझे ४ मूलकार — यून, प्रविक्त् और सर्वक्षको स्थान, ५ मूलकार — स्थेनुक्ता स्थान सेवर स्थानको स्थान स्थान, ५ भूतकार — स्थेनुक्ता स्थान सेवर स्थानको स्थान मूलेको स्थान करोगाले, ६ मूलकुत — स्थानकार स्थान सेवर समूर्व पूर्वका प्रधान करोगाले, ७ प्रवादक्त — सिरकारम होते हुए भी साथ स्थान क्षेत्रको, ७ प्रवादक — स्थान मूलेक स्थान सर्वाद स्थानकी, ९ कुत्रकार — पूर्वकी स्थान और सुन्दि करोगाले ।

१० पूर्वाच्या— व्यवस्थाः, ११ वर्षाव्याः— कार्याः निरंग-सूत-गुळ-गुळ-पान, १२ मुक्तारां करणा महिः— पूर्व पुरुवेणी सर्वतेष्ठ गरिकारम्, १३ अस्मारः— कार्यः विवासको स्था न प्रेतेन्यते, १४ पुरुवः— पूर्व सर्वात् सर्वत्ये प्राण्य वर्षान्यते, १५ स्वादाः— क्षेत्र अस्पत् सम्बद्धाः स्थानिकाः पूर्व देशनेन्यते, १६ क्षेत्रकः— क्षेत्र अस्पत् सम्बद्धाः स्थानिकाः परित्यो पूर्वतान सर्वाच्यते १७ स्वाद्धाः— कार्यः वीचा प्र प्रेतेन्यते।

१८ चोण: — सम्बद्धि समूर्ण अमेरिकोर निर्देशका चोमले आ होनेवार्ड, १९ चोमलियाँ मेरा— चेमले सम्बद्धि महोते चेगलेक्टिका निर्वाह चारेले अवच्या प्रानेवार्ड, १० अवालपुरुनेवार:— स्मृति और पुरुष्के प्रान्ते, ११ चार्रसिक्षणु: — स्मृत्य और विद्य चेन्डेके-मेरा प्रार्टि भारत चार्रस्वार्ड, नारिकार, १२ धीमल् — च्याक्यराने सद्य चीची भारत चार्रस्वारं, २० चेसाया — (क) सहा, (अ), विल्यु और (चि) प्यारेक—इस प्रचार निवृतिकारम्, १४ पुरुषोत्तवः — इस और अवद्याह्म दोनोर्ने प्रारंग प्रस्ता ॥

१५ प्रार्थ: — सम्म् और सम् — कामी उत्पर्ध, विक्री और प्रत्यके स्था, १६ प्रार्थ: — समी प्रकार प्रत्यकारणां, १८ प्रत्यक्ते, १५ विक्रा: — सेने पुणेके प्रत्यकारणां, १८ प्रत्यक्तः — प्रत्यकारणे स्था प्रत्यक्ते सीन होनेके स्वत्यक्ते स्थानमां, १९ प्रत्यकाः — सम्म् क्ष्यको प्रत्येको स्थान प्रत्येकते, १२ प्रत्ये — सम्म्य प्रत्यक्ते प्रत्येको स्थान स्वतंत्रकते, १३ प्रत्ये — सम्म्य प्रत्यक्ते हम प्रयादः — स्वतंत्रकते, १३ प्रत्ये — सम्मय प्रत्यक्ते हम प्रयादः — स्वतंत्रकते, १३ प्रत्ये — सम्मय प्रत्यक्ते हम प्रवादः — स्वतंत्रकते, १३ प्रत्ये — सम्मय प्रत्यक्ते हम प्रवादः अस्ति १६ इंकर: — सम्बन्धिति ऐस्पर्यक्ते ॥

१७ सम्बद्ध:—सर्व स्तार क्षेत्रेयसे, १८ **सन्तुः**— पर्स्तवे रित्रे सुन स्तार करोचले, १९ साहितः— इत्या स्वीटलेने विक्तुसामा कार्दरम्, ४० पुष्पास्ताः — कम्हले समान नेत्रवाहे, ४१ म्यास्तरः — वेदनम् अस्तरः महन् केवलहे, ४२ अम्बद्धिकारः — कम-मृत्युते हीतः, ४६ धारा — विकासे धारा करनेवाहे, ४४ विवासः — कर्मकारणस्य समूर्व प्रशासने बारा करनेवाहे, ४५ वासूनकारः — कर्मकारणस्य समूर्व प्रशासने बारा करनेवाहे एवं क्रमितः ॥

प्रश्ने आक्रमेंचः — क्रमान्यदेशे सार्वाने न आ सार्वानाते. प्रश्न क्षमेंच्यः — विश्वमेंचे स्वयों, ४८ व्यवसायः — समार्वान कारणाय क्षमान्यों अस्त्री सीक्षों स्वार देवेवाले, ४९ कारणायः — देव्यामोंचे सार्वा, ५० विश्वमार्गं — सो कार्यां स्वया करवेवाले, ५१ प्रमुः — प्रवासी प्रमुक्त, ५२ व्याप्तः — कारणा कार्यं स्वयाचेयों क्षीय करवेवाले, ५० व्याप्तः — कारणा कार्यं, ५४ स्वासियों क्षारं — मति प्रयोग, एवं

५५ आखा:—जन्मे जान न निने वा एक्टोनारं, ६६ संप्रात:—जन करने निना दानेकरं, ५६ कृता:—एक्ट रिएको सम्पू अपने और आधारित करनेक्टो प्रात्ताहरू संप्रात्ताहरूक काम्यू अपूर्ण, ६८ स्वेदिताहर:—रनार संप्रात्ताहरूक काम्यू अपूर्ण, ६८ स्वेदिताहर:—रनार संप्रात्ताहरूक काम्यु देशने आहे गुलेके सन्तर, ६१ किस्युक्ताहरूक काम्यु नेक्ट स्वात्ताहरूको होते दिखाओंड सम्बद्धाल्य ६२ स्विक्तम्—स्वात्ते प्रति स्वत्वेवते, ६१ स्वृतंत्रे सम्बद्धालयाहरूक काम्यु ।

१४ विकाः — सर्वपृतिके निकात, १५ आवादः — सकते अन् केन्स्रके, ६६ आवः — सकते व्यक्ति रक्षत्रेवके अन्यवका, १७ व्यक्ति — अन्ये पारच होत्रेते अन्ये वहं, १८ विष्टः — सकते अन्य होत्ये पारच वेद, १९ अनामतिः — व्यक्तियति सार्वे स्वकारित व्यक्ति, ५० विरायनार्थः — स्वकारण विरायनार्थः सम्बद्धित स्वकारणे नाम होत्याते, ५१ युगार्थः — पृत्याते वर्णि रक्षत्रेवते, ५२ अन्यवः — स्वकार्थः पति, ५६ व्यक्तिः स्वतः अन्यव्यक्तिः स्वतः स्वकार्यः स्वकारम् स्ववः

वाद ईवार: — इर्गनिकाम् ईवा, वा, विकासी — सूर्यातासे कुत, वा, वाची — कर्मुबनुत रक्षोत्रारं, व्य वेकासी — अरिवाय कृतिकार, वट विकास: — काढ़ प्रवेदारा काल करनेवारे, वर् क्षार: — काम विकास कारण, ८० अनुसार: — सर्वेद्वर, ८१ कुरावर्ष: — विकास व्योद्धार में कानेवारे, ८१ कुरावर्ष: — व्याने विकास केदा-ता वी स्थान विके क्षारेपर रहे व्यान करनेवारोको वी सोव दे देनेवारे, ८३ कृति: — Aug II

<del>देन-इतिकोद्र वहा आवर, ८० वर्ग— परकारताल,</del> ८८ विक्रोता:— विक्रंड काल, ८९ अवस्थः— को सम्बद्धे क्रमा करेको, १० आहः— जनकार, ११ वेकार:— बारमान्यरं रेश्य, १२ जासः — वन्त्रे समून बान करोने न भा राजनेकारे, १३ जनकः— तका बुद्धिने करोने क्योकारे, १४ सर्वदर्वयः —सम्बं ग्रहः ।

९५ असः — बच्चीय, १६ स्वीकृतः — स्वयः विकेष of for, to Res--for fire to follow unit परान्य, १९ सर्वीक्- का पूर्वक स्वर्थ करा, १०० सम्बद्धाः— सन्तरे प्राप्त-विक्रीये कर्षे विकाली में पूर्व द क्रेरेयरो, १०१ क्**या**शिः— वर्ग और महत्त्वा १०२ सर्वेत्रास्यः — नार्वेत्रसम्बद्धः, १०३ प्रार्वेत्रप्रेत्रीक्ष्टिःकृष्टः — यस

१४४ व्या:-- सा पूर्विक स्थानका तथा प्रता पूर्विक महोत्रको, १४६ वसुमना — स्वतः नगराने, १४६ वसः — सारमध्य, १४७ हमाध्यः— प्रमूर्ण स्रोतको एक आकारको Residuals, १४८ अस्तिमहा--- क्या प्राचीने महे न स स्तरीयारे, १४९ सन:— यह कार कार्य केवारें कीर. ६१० अधीय:— महादे हुए एक, सका सका साल दिने भारेज उन्हें मुख न करके पूर्वज्याने उनका पता बहुत करनेकते. १११ पुर्वाकाक:- कार्लं क्या नेवेक्टे ११३ इक्कार्य — कांगर वर्ष करोकते, ११६ क्याक्रीत — कांग्री स्थापन करोचे किने निवस करन करनेकरे ॥

१९४ सह— कुन व कुनके बारमध्ये वर गया रेनेबर्क, ११५ महरिका:— बहुत-वे सिरोक्टर, ११६ वक्क-लोबोब्र मान करनेकते, १९७ विक्रवेकि-- विकास करनेकते. ११८ वृष्टिमानः — प्रोत करियते, ११९ अवृतः — कर्म २ मरनेकरे, १२+ प्राथमध्यम्:—निल-सद्य एकान स्रोतको एवं स्थित, १२९ करातीहः — अक्टब क्रेनेके रिलो परम उत्तम मपुराव्यक्तिकारम्य, १२२ महास्यकः— अस्य (अस्यर) सम **महान् तस्याते ॥** 

१२३ सर्थगः — कारकारको सर्वत क्या क्रोबारे, १२४ प्रतिकादः — सम् कुळ कानेकले तथा कारकार, ११५ विकासनः — युक्के रिले को हाँ रैक्सीयको है रैस्स्पेयको रीतर-विदर कर करनेवाले, १२६ वन्त्रान्तिः — वद्योधे द्वार सम्बुद्ध-निजेबतस्य पान पुरुषांची सामाद विजे सामेश्रहे

पुरुष-प्रश्नाके अध्यक्षण, ८४ आवायाम्—अस्त्री ही गरिपाने । १२० केट्र--- केटरम, १२८ केट्रीयर्--केट्र एक केट्रेट अर्थको क्यान् करोवते, १२९ अल्युः— क्वादेरे परेपूर्व अर्थत् विनी कार अनुरे न स्त्रोवके सर्वप्रपूर्ण, १३० वेदाकः— वेदान सहीवारे, १६९ बेर्ड्डब्स्—बेर्डब्से विचलेवारे, १६२ ude- wir i

> est aparenti:- man apage napage est कुरुम्बदः — देवतामेंके जन्मव, १६५ वर्गामाहः — अनुसर पक्र देशेंड रिन्ने को और सम्बंध निर्मय करनेकड़े, १३६ पुरुष्याः — कर्मनाचे कृत और करणान्यो अकृत, १३७ पहुच्चा — ब्रांटिकी अपनेत अपनेत किये पार पूजन पूर्विचेत्रको, us कार्का:--अवीर, विभी, क्या और शहरूर पर व्यक्ति, १३९ कादी:-वर धर्मको भरीकान, १४० कार्युक:--- कर पुरानोको वैक्रुकार्य गरका किन् ॥

> १४१ प्रातिन्तुः— एकात, प्रवासन्तरू, चेक्क् अध्यक्ति चेन्नेके अपूर्वकर ११६ धेका— पुरुवन्त्रो केल, १४४ स्त्रीकृ:— स्वत्रक्रेल, १४५ प्राथमित:— प्राप्ते स्वदिते द्विरणार्थकाई वर्ष क्रम gland, est som: - weller, ere franc- un. केरण और ऐसर्व कार पुन्तेने सकते बहुबर, १४८ सेवा— सन्तर्भ है करता मुखेनो नेतरेको, १४५ विक्रुनेतिः---निवर्ष सत्त्र, १५० पुरुषेतुः— पुतःन्तः स्टोरेने व्यापस्त्राते कार्यकारे ।

१५१ जोग्ह — हमाबे अनुस्तरको तक क्षेत्रिको, १५३ क्षां — धन्यान्यो स्थल हेरेक्टे, १५३ प्रांकः — क्षेत्रे रोकोची प्रवेकोट रिन्हे विश्वास्थ्याची क्रेने होनेवारे, १५०४ सम्बेच:— सम्बन्धं पेहामानेः १५५ सुन्धिः— स्टब्स्, सुन्धे और पूजा वालेक्सोची पृथ्वि कर देनेक्से, १५६ क्रवित:— अस्पन् काकार्य, १५० कार्येन्ट— कार्यसङ् क्रा-देशवीरेके सरण हमार्थ के को-को हुए, १५८ संबद्ध:— जलको समय समयो क्येट केमेक्टो, १६९ सर्ग:—सुरिके कालका, १६० क्रमण— बन्दरिय कीए स्थार केवाने साम करन करोकते, १६१ विचयः— प्रकार समोन्समे अधिकारीमे रिचरित करनेकरे, १६२ क्या:— अफायतको रिवत होकर

१६३ केट- करकाची इच्छावर्टके हुए जाने-केन, १९४ केंद्र:— यन विद्यालीके नामोनाते, १६५ इन्छ-केची— उदा केच्ये विश्व स्त्रोवको, १६६ बीरहा— वर्गसी एको किने अनुर चोद्धानीचो पुर क्रुटनेयाते, १६७ वासन:— विकास सामी, १६८ वयु:— अमुतकी ठाउ समझे प्राप्ता करनेवाहे, १६९ अविशिक्तः— इत्तिवेदे प्रार्थय अवेद, १५० महापायः—अव्यक्तिकः वी क्षण करनेवाहे पहन् पायाची, १७९ महोसादाः— कम्बूबी क्षण्ये, रिवरी और प्रहानके रिवरे कार प्रतेवाहे परम कार्या, १५२ महाव्याः—म्बान् महासाही ॥

१६६ महायुद्धि— मार् पृत्युन्, १६४ महायेर्ड— मार् प्राप्ति, १६६ महायक्तिः— मार् कार्यव्यु , १६६ महायुक्तिः— मार् कार्यव्यु , १६६ अतिहेश्युः— शरिदेश विभावते, १४८ जीतान्— हेवर्वव्यु १६६ शरिदाव्य— विभाव समुद्रार म विकास सके हेवे सावव्यके, १८६ महायिक्यु— अन्तराध्या और गीरक्षको कार्य व्यव्यक्त और नोवर्थन मार्थ्य प्राप्तु वर्षको कार्य कार्यक्ते।

ए८१ म्येक्सरः—मान् क्यूकाले, १८२ माहिकाले— पूर्णांको सारा करनेकाले, १८५ मोहिकालाः— अस्ते कार्याकाले सीची निवास देनेकाले, १८४ मार्चा महिः— कार्याक्षेत्र अञ्चलका, १८५ महिन्दाः— कार्याक्षेत्र किस्ति के कार्याक्ष्य कार्याकले, १८५ महिन्दाः— केट्याक्ष्ये क्षत्र अस्ति क्षत्र कार्याक्ष्ये कार्याकले, १८५ महिन्दाः— केट्याक्ष्ये क्षत्र अस्ति क्षत्र कार्याक्ष्ये कार्याकले, १८८ महिन्दाः केट्याक्ष्ये क्षत्र अस्ति क्षत्र कार्याकाले कार्याक्षः

१८९ महीनिः—नेवनियोधे भी गता नेवकर १९० इसर:— प्राप्त सरोवारी प्राप्तो का आदिके काले द्वार करोवारे, १९१ हेस:— निवास आपने केवल हार भगते कि इसका काल करोवारे, १९२ कुकां:— कुरा स्वार्ति गरवासकर, १९६ कुकांग्रेडक:— करोंगे केव केवनगरम्, १९४ हिरावाराय:— किवली और कार्यन स्वीर्यार का करोवारे, १९६ कवाराय:— कार्यन कार्य सुपर का करोवारे, १९६ कवाराय:— कार्यन कार्यने सुपर जांग्यारे, १९७ प्राप्तायी:— कार्यून कार्यने स्वारी॥

१९८ अमृत्युः — मृत्युने रहेत, १९९ सर्वदृष्ट् — का कुळ देशनेकारे, २०० सिंदः — दृष्टेका किया करनेकारे, २०१ संकार — कुळोडो अन्तरे करोते करोते संयुक्त करनेकारे, २०२ संकितार् — समूर्ण यह और करोतो योगनेकारे, २०३ सिकाः — सदा एकाम, २०४ अस्यः — नार्वोदे इत्योगे क्योकारे तथा दृश्यिको दूर इस देनेकारे, २०५ दुर्ववेदः — विस्तरेने को सहन मही किये का कन्त्रेकारे, २०६ क्रार्का — सकर क्रार्क्त करनेकारे, २०७ विद्यालका — वेद-स्वारोगे विश्वेयकारे अस्तरेक सरनेकारे, २०८ स्वारिक्त — देवसारोके श्रुप्तांको करनेकारे ह २०१ पुरः— या विद्यानीय कार्यंत्र करनेवारे, २१० पुरुष्यः—म्बा अवस्थि से अवस्था प्रदान करने-वारे, २११ वाय— कपूर्व प्रतिन्तीय कारणातीय अस्ता, २१२ सारः—कारणात्, २१६ सावनस्थानः—असीव प्रतानकारे, २१४ निविषः— केपन्यति पुरे पूर्व नेतेवारं, २१५ अभिनेताः—सरम्बन्ति अस्तार स्थितते, ११६ सम्बन्धिकारणीः—सरे प्रदानीने प्रतान कारोवार्थ पुरिशे पुत्र कारण विद्यानीय सी १

१९८ सम्बद्धाः — मृत्युक्तिको स्वाप प्रदार के ग्रानेवारं, ११९ सम्बद्धाः — पृत्रामुद्धानके नेता, २२० स्वेदान् —स्वारं वर्त्व-वर्त्व वर्त्वाच्यारं, १२६ व्यापाः — स्वारंगेक स्थापनपूर्व सर्वात पृत्रि, १२२ नेता — वर्णायन करायो प्रशासनं, ११६ सर्वात्याः — स्वाप्त स्थापनेते वैद्य स्थापनारं, ११४ स्थापनपूर्ण — स्वाप स्थापनारं, ११७ स्थापनारं —स्वाप ११६ स्थापनारं — स्वाप स्थापनारं, ११७ स्थापनारं —स्वाप

११८ सामानः —संगरपात्रको परवर्षके प्राथमको १९९ निवृत्त्रकः — संगरपात्रको पुत्र स्थानकार, १६० संपृतः — स्थाने पंत्रकार्य को पुर, १६९ सामान्त्रेयः —स्थाने स्थानितः — सूर्वकारो प्राथमक वित्रके प्रायंत्र, १६६ स्थानितः — स्थाने प्रायं कानेको स्थानितः १९४ स्थानितः — स्थानको प्रायंत्रकार, १९५ स्थानितः — प्रायं और सेन्स्यारे पृत्यंको स्थान स्थानको ॥

२३६ सुम्बादः—विश्वयद्धः अस्तिविष्णः वी कृतः करोकतेः २३८ विश्वयद्धः— वस्त्रा सम्बन्धते अर्थत् करमः करोकतेः २३८ विश्वयद्धः— वस्त्राते वस्य करोकतेः, २३९ विश्वयद्धः— विश्वयः केमोवते अर्थत् विश्वयः पराम करोकतेः, २४० विश्वः— वर्धायम्बः, २४१ सम्बन्धः— वर्धायः स्वत्राः— करोकतेः, २४२ सम्बन्धः— वृत्रवेते वी वृत्रितः, २४६ स्वत्रुः— परादे वर्धः सामोकतेः २४४ बद्धः—स्थाये समा करोकतेः, २४६ वरः—स्थाये परा क्याये ते कोमाते ॥

२४० असंबंधिकः— यान और भूगोधी संस्थाने सून्त, २४८ अस्त्रेष्टामा मिनोरी थी वर्ष म सा सर्वत्रेष्ठाते, २४५ विक्रिक्तः— स्थाने अन्त्र्य, २५० विक्रुक्त्,— इत्यान कानेव्यते, २५१ सूचिः— परम सुद्ध, २५२ विद्यार्थः—इत्यान अनेव्ये सर्वत्र विद्या कर पुतन्त्रिकते, २५३ विद्यार्थकान्यः— सत्त्र वंकररवारे, १९४४ विशिक्षः—कां करोक्कोनो करो अधिकारके अनुसार कक देनेको, १५५ विशिक्षाक्यरः—

२५६ वृष्ण्यी— हारतस्त्री स्वीची जनमें रिका रक्षण्यां, २५० वृष्ण्यः— महाँद स्थि इर्ष्ण्य सहस्त्रीयं वर्ष कर्मचारं, २५० विष्णुः— हृद सम्बद्धः, २५९ वृष्ण्यां— महा सम्बं जनम् स्रोती पृष्ण्यांनीं रिन्ते पर्याण परिवर्षेत्रां, २६० वृष्णेयः— जन्मे स्टार्ग कर्मचे व्याण परिवर्षे, २६१ वर्षाः— महोत्रो स्थानेत्रां, २६१ वृष्णेयांकः— वेद्यायमधे स्थानेत्रां, २६१ विश्वायाः— वेद्यानं पृथ्य हम्मेवरं, २६४ व्याणानकः— वेद्यानं सम्बंधः स्थार व

१६६ हुनुव:— कार्य दव करेको श्री हुन्। नुतंत्रकेतो, १६६ हुन्:— हुन्यो कार र कि व कर्मको है। उन रिती कार र कि व कर्मको में कर करोको है। उन क्योंने दास कर्मको, १६८ क्येस:—ईक्ये में कि १६६ क्यांने दास कर्मको, १६८ क्येस:—ईक्ये में कि १६६ क्यांन:— क्येस क्यांने, १०० क्यां:— क्यांन १०६ क्यांन:— अंक क्यांने, १०० क्यांन:— क्यांने १०६ क्यांना:— अंक क्यांने, १०६ क्यांना:— क्यांनको, १०४

रश्य क्षेत्रकोचोद्वीस्थः— यस और स्थ, पूर्णस्थः सारि तुस तथा प्रस्ति वीतियो स्थल करनेकते, १७६ प्रशासाराः— स्थानका विश्वकते, १७६ प्रकारः— पूर्व शारि अपने विश्वविदेवे विकासे हा कर्मकते, १७६ प्रदेशः— वर्त, इस और वैद्यावदिवे क्ष्याः, २०१ स्वाकतः— क्षेत्रकार साह स्थारकते, २८० क्याः— प्रमु, साम और प्रमुख्य प्रवेशे वर्तने केया, २८१ क्यांकः— वंशस्त्रकारी वंशतिय पुरुषेको क्यानकी विश्वके क्ष्याः अवद्यादित करनेकते, २८१ क्याक्याहीरः— कृति क्यान अवद्यादान्य प्र

२८२ अपूर्वासूत्रकः — समूत्रस्था कर्त क्या क्याको स्ता बरनेकरे समुद्राम्य २८४ अनुः — क्यानेकरे, २८६ स्रामितुः — सर्वत्रके सम्प्रा व्याको क्यान्यो उद्य कपूर्व स्थान पोत्त करोवते, २८६ सुनेकरः — रेक्कानेक इंग्रद २८० औक्सम् — संसारकाको पर करानेक दिने केनुकर, २८८ क्याः संसुः — संसारकाको पर करानेक दिने केनुकर, २८९ स्थानकीयसम्बद्धः — सर्वत्रका वर्ष और प्रकारको ॥

२९० पूरासम्बद्धान्यः — पूर, परित्य और कांग्यर सर्थः प्रतिकृष्टि सार्थः, २९१ समारः — समुख्यः, २९२ समारः — पृष्टिपारते नगर्यो परित्र कर्तन्यते, २९३ समारः — गर्नेसरम्, १९४ **काम्यः— असे स्वकारि स्वा**रम्पने स्ट्र कामेक्टो, २१५ काम्यस्— कामेक्टान्, १९७ कारः— (क) काः, (श) मिन्यु, (श) न्यानेक—इत कार विदेशक, २९८ काः, (श) मिन्यु, (श) न्यानेक—इत कार विदेशक, २९८ काम्यक्टं— कामेक्ट कार्य कार्य से सूर्व मसूर्य कार्य कारेक्टो, १९६ सङ्घः— क्रमेन्ट सर्वकार्यका

१०० पूर्वास्त्रम् — तुम्बरण श्रास्य वर्तवारं, १०१ पूर्ववरं — को मुनेने व्याने क्या पुत्रवेशस्, १०१ वैद्यावरः — संग्ये स्वयनंत्रो व्यान वर्तवारं, १०१ व्यानकः — काम क्षत्रिकंत स्वरूप १०५ व्यानकः — स्वरूपकः चाम सम्बद्धते, १०५ व्यानकिः — पुत्र और स्वरूप रेणव्यानंत्रे वंदनेवर्तं, १०० सम्बद्धिः — पुत्र और स्वरूप स्वरूपे वर्तव क्या मुकेने वंदनेवरं ।

३०८ व्रष्ट — कार्यास्तान होते सर्वत्रम्, १०९ व्यक्तिवृद्ध — कार्या तिर्वत्रमेत स्त्रीत व्यक्ति १९० व्यक्ति १९० व्यक्ति १९० व्यक्ति १९९ व्यक्ति — मंत्रीत्रकार्य अस्त्र विक्रियंत्र कार्या तिर्मात्र — मंत्रीत्रकार्य अस्त्र विक्रियंत्र कार्या तिर्मात्र व्यक्ति १९९ व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति १९९ व्यक्तिव्यक्ति १९९ व्यक्तिव्यक्ति व्यक्ति व्यक्तिव्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्तिव्यक्ति व्यक्ति व्यक

३(८ सम्बाहः — क नामिकारोते सीत, ११९ प्रमितः — कार्ति सार्थः नामि कार्यः १२० प्रापः — क्रिक्कर्गकाने प्राप्तः नीमा स्थानको, १२१ प्राप्तः — कार्यः प्राप्तः १२१ प्राप्तानुगः — कार्यकारो कार्यकीयः नामिकः १४६ स्थानको स्थानको, १२६ सामिकः — कार्यः स्थान स्थानको स्थानक, १२५ सामिकः — स्थानको स्थान स्थानको स्थानक, १२५ सामकः — स्थानकोत्वाने स्था प्राप्तः प्राप्तः १२५ सामकः — स्थानकोत्, १९६ प्रतिकृतः — सप्तः प्राप्तः स्थानको स्थान

३२० प्रापः — वर्षान्यक्तियान् ३१८ प्राप्ताः — वर्षान्यके प्रत्य करोवाते, ३२९ पूर्वः — समात पूर्वेते कन्यदितम पुराने काम करोवाते, ३३० व्यवः — इंकिट वर देनेकते, ३३१ व्यक्तवारः — स्तरे व्यक्तियोगे वायनेकते, ३१२ व्यक्तिः — समात प्राप्तांको स्वयंत्रे प्रस्तोवते तथ सम मुद्रोंने प्रयोगक्तमा बढानेक्टे, हिल्लामा, १२३ | मुक्कानुः — महान् किरचेशे नुक एवं सम्पूर्ण नगरको स्वाहीत मार्नेक्टरे, ३३४ अमेरिकेट:— प्रमाद अमेरे स्थाप देव, ३३५ मुरुब्र:-- अनुर्वेके नावेका ब्लंब करनेकते ।

१६६ अधीय:— इस स्वरते शेवने श्रीद, ६३० करण:— संसरकारचे करनेवले, ३३८ कर:— कप-वर मुख्यान भवते कार्नेवाले, ३३९ शहर:— प्रकारी, ३४० क्षीरिः— सुर्वार अंत्रसुदेशकोचे पुत्र, इतर वर्गकाः— समय जेवेंद्र पाने, १४३ असुद्धाः— अन्यान होते सम्बंध अनुकूत, इत्या सम्बन्धी:— व्यक्तिको क्रिके केन्द्री मतकर क्षेत्रके, १४४ वर्धी—नाने क्रको काठ करन करोकते, १४५ कानियेश्वयः — करान्ये कान क्रेपक हरियाते ॥

१४६ प्रकास:— कारको अपने स्थिने विकारकोन्छे, १९९० अस्तिकारक:— प्रमानके प्राप्त स्वितेषके, १९८८ पदानर्थः — इरकामस्ये व्यव करनेवेन्द्र, १४५ वर्धरकृत्— अनुस्पत्ते प्राप्ते प्रश्नेत्व परम् करनेक्के, ३५० **मार्ट** — महान् विश्वविद्यारे, ३५१ व्यक्क- वर्ण को-को, ३५२ **प्रकार**— पुरान अवस्था, (५) महा:--विकास नेप्रेयरी, १५४ नवास्त्राच्या — नामके विकास पुरु व्यवस्था ।

१५५ अपूरः — पुरुषकीय, १५६ प्रत्यः — प्रतिके प्रत्यक्रपान्यों प्रवासित पर्यक्रमें, १५० भीत:— विकार पारियोको पर हो ऐसे मकान्य, १५८ सकान्य:— सम्पन्नम पहले जा होनेवाले, १५९ हमिन्नीर:— व्यक्ति हमिन्नीयां और करन्य स्थाप धारोपालीके पाणेको कुरण मारीपाने, ३६० सर्वत्रक्रमात्रक्रमाः — समात त्रकानेने सर्वत्र होतेकते, १६१ मध्येत्रम् असे व्यासको स्थापिके व्या व्यक्तिके. १६२ समितिसम्बः— संस्कृतिकर्ण ह

३५६ विकार: — नामहित, ३५४ रोहित: — नामहित्रेरूक क्रमा कान कर्य अवका सेनेकरे, ३६६ करो:--- परकाद-प्रतिके सामन्त्रक्य, ३६६ हेनू:— संसारे विभिन्न और उपदान कारण, ३६७ हामोबर: — क्लोक्सीहार सामिने केने इस कारकते. ३६८ सहः— भक्तमांके अपन्योधी सहत करोकते, ३६९ महीबा:-- पर्यवकारचे पुण्येको काल कानेकते, १७० महाभागः — महान् प्रश्नासरी, १७६ केमकान् — क्रेस्टिकरे, १८२ अधिकासनः — सरे विश्वयो प्रथम करोकरे ॥

हु । इन्हरू: - नगर्म अनिष्ठे अन्यानकान, ३०४ होपायः — कार्त्वी उत्पक्ति समय अनुधि और पुराने प्रीवह | सुदर्जनः — वटनेको सुभावती ही दर्शन है ऐनेवाले, ४१८

होकर करों कुछ करनेकरें, ३०% हेक:-- प्रकारतकरम, ४०% **बोलाई.— बन्दर्ग १४५६) अपने उद्धानमंत्रे स्वनेवार्ड, १००** परमेश्वर:— वर्गमेश्व प्राचन करनेवर्ड, १०८ व्यरमञ्— **ंधार्त्य अपीके सम्त्रों को सामन, ३०९ कारवाम्— बगाहके** क्याद्रा और विनिवस्तर, १८० कर्ता— इस प्रकार सहन्त, १८१ **विकार्त-विका मृत्योची राजा करोगरी, १८**२ म्हार:— करने विरुक्त सर्वार, स्वयमं और सीरवरिके पहरण च्छिको न व प्रकोबके, ३८३ मा: — मुनग्रे असे सरस्को an signific and

LOV MARKET: -- SPERSON, BALL MARKET: --रोजकर्वारकेके, साथ केकेचे, को कांग्रामें से उसे क्वेंचे व्यवस्थातुर्वेक रचनेक्वेत ३८६ संस्थान:---प्रत्यके क्या स्थार, ६८० स्थानकः— शुर्वादे अस्त्रोनो स्थान देनेवाले, acc क्या:- अधिकारी, act कार्डि:- केंद्र नियुनिकारे, ht= परवास्ता:— प्रतासन होते। पर सहस्य, अवकार-विकास काले काली पातक तथार होनेकारे, ६९६ **क:— एक्स प्रकारकार, १९२ ध्रः--अर्थः प्री**पूर्वः ३९३ **स्टोक्स:— एवंज्याको क्टब्ल करोगारे** ४

hty we:— योगीयांधि राज वर्तके विने निवारकारम् ३९६ विद्याः— प्रतन्ते व्याप प्रतिनेते सार्वेने विका देनेको, ३९६ किस:- स्त्रीपुन तथ क्षेत्रको कांच प्रम् ३१० वर्गः — पुरस्कोके कार होनेके सामानामान् ३५८ मेथ:— ३४० इतथे सहार करनेकोच् ६९९ वक:-- सबको निकामी रक्तनेकारे, ४०० क्षपण:-- प्रकृष, ४०१ चीर:-- प्रकृतसार्थ, ४०३ प्रतिकारो बेह:— प्रतिकारोने यो अधिका प्रतिकार, ४०३ वर्षः — <del>हो। लोग</del>न को, ४०४ वर्गीक्तमः — सन्त

४०५ वैक्का:-- परस्थान सरस्य, ४०६ पुरसः--विकास प्रदेशों प्रमा करनेकते. You **प्रा**तः— क्लाक्क्यमें केल करोकले, ४०८ जानक: — सन्ति कारिये जन करन करनेकरे, ४०९ जनक:— ॐबरस्सरम्, ४५० क्या:- विकार समाने विकास क्षेत्रेणको, ४११ क्रिरणकर्मा:-बहुक्यमें क्यर हैनेक्से. ४१२ सहात:— स्कुओमो फलेक्से, ४१३ व्याह:— ब्यह्मानसे एक कार्यको व्याह कारोबाहे ४१४ वाय: — प्रयासम्, ४१५ सम्बोद्धाय: — अपने समस्यो कीय प वेतेयके ॥

४२६ 🕦:— बाहकपरे रुवित होनेवाहे, ४१७

प्रवह महिमाने रिका सुनेके संभावकरे, ४२० परिवह--इल्लिविकेंद्र हुए सब ओसी जान किने वानेकरे. ४२१ ms---सर्वतिके भी भवके कारण, ४२२ संबद्धारः — समूर्ण कृतिक क्रात्वर, ४२३ वह:— सब कार्वेजे की कुछराओ करनेवारे, ४२४ विकाय:— विकासी इच्छानने पूर्वानेको पेश देनेकरे, ४२५ विकासिक:— वरिके कार्ने कारा विकास प्रविकासमें उस क्लेक्ट्रे ह

४२६ क्रिकार:— समस्य लोगोर्क विस्तरके कारण, ४२० सामास्त्राप:— इसे विनीत्रोत सुन्द्र पूर्ण स्वी विनीत्रोत पदार्वेके अपने लित एकोवारे, ४२८ जनवयू-- जनगण होनेके बारण प्रापं क्यानका, ४२९ क्षीक्षणकाम्— संसार्क अधिवारी करन, ४३० अर्थ: — सुसारकर हेनेके करन करने प्रश प्रार्थित, प्रश्त अवर्थ:— पूर्वव्य हेंग्से कार्य प्रशेवनहीत, ४३२ महत्व्येष:— को सक्तोको, ४३३ मार्थितः — स्वतन्त्र मान् नेतन्त्रते, ४३४ महन्त्रः — प्रथमें और अतिका प्रत्यक्त ॥

YEN अतिर्विका: -- कारायरका विकास पीत, YEN साविक:-- विकासमारे विका, ४३७ संपूर्:--- असमा, ४३८ कांका:— क्रीड समाग, ४३९ व्यावक:— अर्थेत हैंके क्ष बहोबो निर्वाणमा पहल परस्यक यह देनेको, ४४० महारूपेनिः — समात न्यूनोचे केन्द्रश्रम्म, ४४१ महारी-क्षांका, ४४१ क्षाः — तमस कार्ये सर्ग, ४४१ क्षाः — प्रमाद विकारिक चील हो जारेज, सर्ववारकारो विका, ४४४ समीवन:--वर्षः कार्रिकं रित्रे पर्याचीत चेता करनेवर्तः ।

४४५ व्याः — सर्ववास्तर, ४४६ व्याः — प्रतीत् भाग मोजा:— सम्मे अधिक जनसमेन, भार कार:-कुरसंबक्त प्रकारकप्, ४४९ सम्बद्- सन्त्रकोची एक करनेकते, ४५० सतो वति:— सन्तर्वेक सम जन्मीय स्वार, ४५१ सर्वदर्शी— समस्य प्रतियोको और हनके बार्योको देखनेकारे, ४५२ विमुख्यामा— संसाधित कथाने ग्रीत अकामान, ४५३ सर्वतः — सब्बो बनोबले, ४५४ सन्तरमञ्*न* स्टेन्स SERVICE II

४५६ सुमा:- जनवपरानी के ब्रह्मेक्टे, ४५६ सम्बद्धः — स्टब्स् और जनन नुकारकोः ४५० स्थानः — जन्मे स अन्, ४५८ सुखेय:— सुन्दर और गंधर कर्म केल्लेकने, ४५९ सक्क:-- असे क्लोबो वन अवस्थे एक देनेक्टे, ४६० सुद्धत्— आंत्रपात्रपर अहेत्यां दया करनेवाले पाल निव्ह, ४६१ मनेहर:— अपने कपलायका और यक्ष चावकारेसे समादे समादे

कार:- सबसे गमन करोपाते, ४९९ पर्याति— अन्ते | इरोबारे, ४६२ विकारेब:- सोकर निका करोबारे कर्वत असे साथ असना अनुपत न्यवहर करनेवारेगर पी होत्र न करोबारे, ४९३ बीरबाइ:— अवन्त परक्रमधीठ चुकानोडे चुळ, ४६४ **विका**रणः— समर्थियोको तह

> ४६६ सार्वक:— प्रत्यवस्त्रों समस्य प्रतिकोधी अक्टबर्नेक्टने कार कार्नेक्टरे, ४६६ कार्यक:— १९४म, ४६७ कार्य- अवस्थाने पति सर्ववार्थः, ४६८ नेवस्था- सर्वव क्तों सेक्ट्रेड्सके रिने अनेक का कल करनेकरे, ४६९ नैकार्यनेकृत्— कार्यो उत्पात, विश्वति और परस्परण तथ विक्रानिक अवक्रकेरे व्यक्तिर स्वेत्यसम्म अनेक कर्म करनेकारेऽ४७० कार:-- सर्वे विकास-स्थान, ४७१ कार्यान:-- शतीक परन केरी, ४४२ कारी — मृद्यामने कार्याक परान करोकते. ४४३ कामधी:-- कोको अस्मे गर्पने काम करनेकते समुद्रका, ४४४ क्षेत्ररः— का प्रकृति वर्गित कर्म ।

> ४०५ वर्णम् — वर्णते रक्ष ४८२४ते. ४४६ वर्णम् — क्षेत्री स्वयुक्ते हिले सर्व वर्तमा अवस्त करोक्ते. ४०० क्वी-अपूर्व क्वीर आका, ४४८ जा- अवस्थान, ४४९ ann - स्कृत कार्यकार्थ, ४८० क्षाम् - सर्वभूतमा, ४८१ अवस्य- अध्यक्षे, ४८३ अधिकाता- येवव जीवनकी form and it, and former strong form, 1/44 स्वातंत्र:-- कार्य किलोपके स्पंतवन, ४८४ विवाता--क्ष्मचे अच्छी प्रसार करण कारेकारे, ४८५ कुमारक्षणः--dang spit finden men serimit a

> ४८६ वामध्यिकेत:-- मिरलेंके बीचने सुर्वकारी नेपा ४८७ सम्बद्धः — अन्तर्ववीकाने धनस्य प्रतिनेतिः अमान्यरणी विका समेक्के, ४८८ विक:-- पर अहारके विने नृतिहरून क्रम करनेकरे, ४८९ कामकेकर:— समूर्ग अनिवेत महान् ईक्ट, ४९० आस्त्रिक:— काके आहे काल और हैरनसकर, ४९१ व्यक्तिः— क्रमयेग और देवर्ग आदे परिवासीये पुछ, प्रश्न केलेक:— काक देवंकि साथी, प्रश्न केलकुराहर:— **ेवेक विशेषकरके पाल-चेका करनेवारे उनके पाप गुरु ४**

> ४९४ कार:— एंग्स-महाते उद्धाः कानेवाते और स्रविद्ये ४९५ चेपतिः— योक्स्यक्यो प्रचेत्री रक्ष बरनेबरे, ४९६ योहा—इन्स्र अभिनेब पटन और रक्क करनेकले, ४९७ **ज्ञानकवः— ज्ञाने** द्वारा जाननेमें क्लेकरे, ४९८ पुरातमः— १९८ एवरस स्लेकरे समेके कार्ट क्रान्यका, ४९९ इसीरमूतभद्र--- अंग्रेस्ट उरस्टर पक्-पुरोक्त प्राप्तकारों पुरान कानेकरे, ५०० क्षेत्रा—िर-

रित्रय आन्त्युक्तमे योगनेवाते, ५०१ कावेयः — वंटरेके सार्थ । ब्रोदर, ५०१ पूरिएक्सिकः — संशवदि आवार्तेने या वार्ध । सनद स्कृतन्त्री एक्सिक प्रदार करोवाते ॥

५०३ सीकाः— नहींने देवसमा और कामानामां कीमरामा का कार्रमाले, ५०४ अनुमाः— कनुस्तानामे निवास हुआ अनुस देवोची विस्तार क्रमे कीमाने, ५०५ सीनः— क्षेत्रिक्तेम केमा कर्मकाले कामानाम, ५०६ पुर्वित् — सुनीय विकार क्षम कर्मकाले, ६०७ कुम्मानः— विकास और अस्तार केम ५०८ किमाः— पुरोको इन्य देनको, ६०९ क्षमः— क्षमार किमा का कर्मकाले, ६०० कामानाः— कर्मा अस्ता कर्मकाले, ६९९ कृषाईः— क्षमानुस्ता क्षमा क्षेत्रेकले, ६९२ कामानां वर्षाः— क्ष्मानीं और अस्ते कामीः कृत्यों कर्म क्षमानां क्षमानां ।

५१६ वीत: — हेद्रावाती अलेको काल करोकते, ६१४ विश्वितासकी — असी कालका गाउँके विस्तानको स्वारत स्थान अनुका करोकते, ६१६ पुरुष: — मुस्तिक्य, ६१६ अभितानिकार: — असर कालके ६१६ अभ्वेतिकि: — सरके विश्वार कानुस्तान, ६६८ स्थानकारक महान् सनुको क्रमा करोकते, ६२० अन्यक: — महिनोका संवर करोकते मुख्यानक ॥

५२१ अवः — वन्योकसरक्षेत्र, ५२२ व्यक्तेः — पूज्येव, ५२१ व्यक्तिकः — तिल विद्य होतेक व्यक्त वर्णकः वी न तरक होतेकते, ५२६ विक्राण्यः — व्यक्तित्वस्याः व्यक्तिकते, ५२५ व्यक्तियः — व्यक्तित्वस्याः — व्यक्तिकते, ५२५ व्यक्तियः — व्यक्तिकते, ५२६ व्यक्तियः — व्यक्तिकते, ५२६ व्यक्तियः — व्यक्तिकते, ५२८ व्यक्ति व्यक्तिकते, ५२८ व्यक्तिकते, ५२८ व्यक्तिकते, ५२८ व्यक्तिकते व्यक्तिकते व्यक्तिकते व्यक्तिकते व्यक्तिकते व्यक्तिकते व्यक्तिकते ।

६३६ व्यक्ति व्यक्तिस्थार्थः— संस्थायस्ये अनेव भागवप् सरितायार्थं, ६३६ कृत्याः— वित्रे कृत्ये कार्यक्रे कर्ते सस्ते पर्योग्री सेवाको बहुत मानका अन्येको उनका अन्ये सम्प्रानेवारो, ६३३ विकितियतिः— पृथ्वेके स्थानी, ६३५ विका:— रितायतिम स्रीत विवेको विकास, ६३६ विकास्थाः— रेवाकोके स्थानी, ६३६ व्यक्तिक्याः— मारकारकार्ये स्थान् सीत वारक कार्यका अन्य कार्यकारे ॥

५३८ महासरक:— हैरनकच्छा कर करने हैं हैं

महामानाम काम करोकरे, ६६९ घोषण:— वेस्कारेट करोगे आनेकरे, ६४० हुनेक:— वर्करेड समुद्रावरम पुष्टर केसने कुलीबर, ६४१ कमामानुष्टी— पुण्यंक कपून्च करण करोकरें, ६४२ मुक्त:— हरकवारों किरे कोकरें, ६४६ वर्कर:— अर्थराव कर्यर कामामाने, ६४४ वहार:— विरोध कामाने बांक्य क्षेत्र करवार करिन के—देते, ६४५ मुहा:— कर्य और माने कानेने न सानेकरें, ६४६ सक्कारक्षात्ता.— कर्यकों सक्के दिने कह और यह आदि दिन्य अनुवोंको सहय करवेकरें ह

प्रश्न केवा:— वन प्रश्न निवार मारोवाहे, ५४८ व्याप्त:— वर्ण वर्षोरे वर्ण है व्याप्त:, ५४९ अधिव:— विवार प्रश्न के वर्षो वर्षोरे प्रश्न है व्याप्त:— क्याप्त्य के व्याप्त:— क्याप्त्य के व्याप्त:— क्याप्त्य के व्याप्त:— वर्षो केवा:— वर्षो क्याप्त:— वर्षो क्याप्त:— वर्षो क्याप्त: प्रश्न व्याप्त:— वर्षो क्याप्त: वर्षो क्याप्त:— वर्षो क्याप्त: प्रश्न व्याप्त:— वर्षोः क्याप्त:— वर्षो क्याप्त:— वर्याप्त:— वर्षो क्याप्त:— वर्षो क्याप्त:— वर्षो क्याप्त:— वर्याप्त:— वर

५५८ वनवान्— अवंद और प्रान्त, अस्य और कम तथा विद्या और अधिकारों कार्यकारे इसे व्योवपीट असे पानंदी पूछ, ५५९ वन्या— अस्ते पालंका केन कार्यके दिनों असे देवतंत्र इस्त कार्यकों— परम्युक्तकाम्, ५६१ कार्यकों— कैन्सर्थ वस्त्र कार्यकों— परम्युक्तकाम्, ५६१ कार्यकों— कैन्सर्थ करण कार्यकों वस्त्रकारकाम्, ५६१ कार्यक्रिक — अदिविद्य कार्यकारकाम्, ५६४ कोर्यक्रिके — सूर्यक्रिके स्वयं कार्यके कर्य ५६६ कोर्यक्रिकाः— स्वयंक्तकामें स्वयं कार्यके कर्य ५६६ कोर्यक्रकाः— स्वयंक्तका स्वरंत करें कर्य ५६६ कोर्यक्रकाः— स्वयंक्तके स्वरंत करें कर्य ५६६ कोर्यक्रकाः— स्वयंक्तके स्वरंत करें

्रश्-मृत्यास्य -- अविद्यात सुद्धा स्वर्णमृत्य स्वरण स्वरोत्याते, ५६८ सम्बद्धान्त्य -- स्वृत्योत्य सम्बद्धाः -- सम्बद्धाः प्रत्येत्ये स्वरण स्वरण्यास्य ५६० स्वरण्याः -- सम्बद्धाः प्रत्येत्ये स्वरण्याः स्वर्णे स्वरण्याः स्वरण्याः स्वरण्याः स्वर्यः स्वरण्याः स्वरण्याः स्वर्यः स्वरण्याः स्वरण्याः स्वरण्याः स्वरण्याः स्वरण्याः स्वरण्या भूगार जिस्सी— देवार गरि क्षेत्र सम्मृतिकेश जिस्सी सुदि को करो है—ऐसे प्रस्तेत्र, ५०५ क्ष्मानः— समवेदका पर करोवारे, ५७६ क्षम— क्षमोदकान, ५७८ निर्माण्— परंग प्रतिके जिला प्रकारप्रसाम, ५०८ वेक्साए— संस्तिताओं औरण, ५०९ विक्स्—संस्ति-वेक्सा कर्त करोके क्षित्रे गीरकार करोबान्त्रका कर करोबारे— परंगीय, ५८० संभारतहरू— नेवके जिले कंप्याताल और कंप्या-चेक्सा निर्माण करोबारे, ५८१ क्षाः— क्षमानामा करोहर देवेवारे, ५८२ क्षाणः— प्रमाणान्त्री, ६८१ विक्स— सम्बर्ध रिवरिके स्थाप अधिकारसम्बर्ध ५८४ क्षाणः— परंग क्षाणानम् ।

५८६ सुध्यम् — अस् सर्वेका क्या कृता स्वृत्तिको, ५८७ स्वातिकः — क्या स्वीत देनेकोः ५८८ सङ्घा— स्वति आदेरे स्वयति त्या कारेकोः, ६८६ सुध्यः — वृत्तिको स्वयत् सर्वेकतेः ५६० सुस्रोकतः — क्याने सेकानको स्वयत्व स्वयत्व सर्वेकतेः, ५६९ मोहितः — गोवत्वकत्वो स्वयंका और स्वयत्व सर्वे कर्षे कर स्वयत्वार पृत्वीका सेट कार्येकते, ५९६ मोतिः — पृत्वीके और गान्तिक स्वयं, ५९६ मोहितः — स्वयत्व सर्वे कर्षे स्वयं स्वयंक्ति स्वयं होते स्वयं अवने स्वयं अवने सर्वे कर्षे स्वयं सर्वेकते, ५९८ स्वयंक्तः — स्वयं सर्वे क्या सर्वेकते ।

५१६ अनिवर्ती — राज्युंगरे और वर्गकार के न इंटरेनारे, ६९७ निवृत्तावा — स्थानों में विश्ववादावादीत नित्त सुद्ध संस्थाते, ६९८ संबोद्ध — विद्युद्ध वर्गकारे व्यापारी संवित कर्ष सुरस्तापर्थ करोनाते, ६९९ क्षेत्रहात — क्षातावादी स्थापनात्त्रम्, ६०० विवासम्बद्धाः — स्थापनात्त्रम् विद्युद्ध वर्गकारे स्थापनात्त्रम् वरण करोनाते, ६०२ क्षेत्रवादः — व्यापार्थकोते स्थापने सरस्यात् ६०३ स्थापीः — स्थापनात्त्रम् वर्गकारेकोते स्थापने, ६०४ सीमाने वरः —स्थापनात्त्री स्थापने और ऐक्सी पुष्ट स्थापी समान सोक्यानोते होता।

६०५ असि:— महोको श्री प्रदान करनेकरे, ६०६ श्रीह:— रूपमेके तथ, ६०० श्रीनिकास:— सेर्ड्यानीके रुप्ताकरणमें नित्न निकल करनेकरे; ६०८ श्रीनिकि:— सनस्र दिल्लीके स्वाप्तर, ६०९ श्रीविकास्तर:— प्रत प्रमुखीके दिने उनके मर्मानुसर तान प्रकारके देवने प्रदान करनेकरे; ६१० श्रीकर:— सम्मानो श्रीको स्था:स्थाओं सहस्र करनेकरे; ६१० श्रीकर:— न्तरम्, कारा और अर्थन आहे वस्तेषाठे नराके छिने औदा विराह वस्तेषाठे, ६१२ औदाः— करणानस्वरम्, ६१६ क्रीकार्- सब प्रकारने तिलेसे हुछ, ६१४ सोकावासमाः—

हर्ष काह:— मनेवर कृतकटाकरो पुछ परम सुद्दर अधिकटो, ६१६ काह:— अधिक क्षेत्रक परम सुद्दर मनेवर अहाँको, ६१७ काहम्य:— सीरवचेदरो सैकही विचारीने विचार अक्षरप्रकार, ६१८ वर्षी— परमान्यविक्य, ६१९ कोडिनिनेहर:— नवास्त्रपुर्व्यके हंक, ६२० विकासका— मीडे हुए काव्यके, ६२१ अधिकोचका— विची असाती विचारका विची जनार की वर्षन वहीं विचा का स्के—देशे अभिनेकवेदरसम्बद्ध, ६२३ काबतिर्ति:— सभी विशिव्यके, ६२६ क्षित्रकेववेदरसम्बद्ध, ६२३ काबतिर्ति:— सभी विशिव्यके, ६२६ क्षित्रकेववेदरसम्बद्ध कोनेवे एक प्रकारके संस्कृति विद्यक्ष

६२४ व्यक्तिः — एव ज्ञाननेते तेत् , ६२५ सर्वस्तातृः — स्नार व्यक्तिने तत्त दिखानेते त्रध-सर्वद देखांनी ज्ञातातो, ६२६ व्यक्तिः — विन्ता दूस्त वर्त शरूर स्त्रोताते त्रितिकर, ६२८ वृत्ताः — स्त्रुत्तानाते तिने वर्ताती व्यक्त वर्तो स्तर स्वरूत्तात्ती वृत्तित क्राण व्यक्तिते, ६२५ वृत्ताः — सेव्यते व्यक्तात्ताति स्वरूत्तात्ताति वृत्तित्ती सेव्य व्यक्तित्ते, ६३० वृत्तिः — व्यक्तात्ता और सन्त्रा विन्तिनेते स्वयत्त्वात्त्व, ६३१ विक्रीयः — स्त्र ज्ञाताति वोक्तित्ते स्वयत्त्वात्त्व, ६३१ विक्रीयः — स्त्र ज्ञाताति वोक्तित्ते स्वयत्त्वात्त्व, वर्तात्वातः — स्वतिवात्ते वर्तति श्रीवन्ता वस्त्रीत्तात्त्वात्तिः

१३ अधिकार - पत्र-वृत् अवद शत्या ध्वेतियोतं देरीणका अधिकार अधिका अध्यात्मा अन्य विराणेतं पुत्र, १३४ अधिकः - स्वत्य स्वेतितं पूत्र अधिदेतं में पूर्व वर्णेकतं, ६३५ हुम्मः - बद्यां बदि सबके विद्यासका, १३६ विद्यासका - पत्र पूत्र विर्वतं अधिक अध्यात्मात् १३६ विद्यासका - पत्रपत्रकतं समस्य क्षत्रेया यह क्षत्रे मध्येतं अध्यात्मातं सम्य कृत्य का देनेकतं, १३८ अधिकार्यकात् १३९ स्वातित्यः -- बद्यास्त्रतं वीदा, ६४० अधुतः - पद्यातं समस्य भन्ते पुत्र पद्यात्मेन अध्यातम्य, १४६ अधिकारिकामः --समस्य पद्यात्मे ॥

६४२ अञ्चलितिकः— कार्यन् नगढ अपुत्यो कार्यको, १४१ और:-- गरम सूर्यंद, ६४४ और:--मृत्यूको अन्य होनेको अपुन्यासम्ब, १४५ बृहकोक्काः--- इस्तरि क्लिपेंड में अतिका क्लिकंड मारा हा, १४६ विलेकस्थ —अवर्वनीरमधे तेने लेकेंड स्वका, १४७ विलेकसः — तेने लेकेंड स्वको, १४८ केक्स- क्लि विलाय केकारे, १४१ केकिस — केबे मार्च अपूर्ण परनेवारे, १५० व्यक्ति सरकावारो समा क्लेक स्वर क्लू

१५१ कार्यकः — वर्षं, वर्षं कर और नेक-प्रा कर्ष पुरावर्षेणे कर्मको स्मृत्वेष्ठव अधिराधित करण कर्मकोडे अधिराध परमोग, १५१ कार्यो — सम्बन्धे स्मृतंका और असे विकासेको कर्मको, १५४ कार्यो — कर्म स्थान क्यानुका है। करण कर्मको विकासकार १५५ क्रियानः — करण कर्मको रक्षको, १५६ क्रियानः — करण कर्मको रक्षको, १५६ अधिर्मुक्तानुः — क्रिये विकासकार क्रियान्। वर्षे क्रिया मा सम्बन्धि अधिर्यक्षेत क्रियान्। १५६ विकास मा सम्बन्धि क्रियाक्षेत्र क्रियां — क्रियां क्रियं परमा करो स्थार स्थान क्रियां क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं, स्थान क्रियं क्रिय

१६१ अञ्चाकाः — तयं केट्र अञ्चल और अन्यो एका कारोवाते, ६६१ अञ्चलक्त - पूर्वेच का आदेवी रक्तवाते, ६६१ अञ्चा — अञ्चलको कार्युची अञ्चल कारोवाते, ६६४ अञ्चल संविद्यानकारम्य, ६६५ अञ्चलिक्षकेः — पूर्वेच स्थानकार्यो एवं आदेवी पृति कारोवाते, ६६६ अञ्चलकः — कार्या कत्तुव्येको स्थानकार देवानेवाते, ६६८ अञ्चल — अञ्चलकार्या सञ्जलकार स्थानकारमध्ये अञ्चल, ६६८ अञ्चल — अञ्चलकार्या सञ्जलकार स्थानकारमध्ये केट्यो पूर्वेच्य वर्षात्रं कारोवाते, १७० सञ्चलकारम्य स्थानकारमध्ये केट्यो पूर्वेच्य वर्षात्रं कारोवाते, १७० सञ्चलकारम्य स्थानकारमध्ये क्षेत्रको पूर्वेच्य वर्षात्रं कारोवाते, १७० सञ्चलकारम्यः — स्थानकेट कार क्षेत्र और अञ्चलको अर्थेच्या

६७१ महास्थाः — वहे वेगरी कटनेक्टोः १७१ महास्थाः — पित-पित जनकरों में जुन कराने पहान् वर्ण करोकरों, ६७६ महादेखाः — निराके देवते समग्र देवती देरीक्यान होते हैं —ऐसे महान् देवती, ६७४ महोरकः — वहे करी वर्ण कर्न वर्ष्णिकरूपः, ६७५ महास्युः — महान् करान्या, ६७६ महास्थान — वहे कराया कर्ने देवती क्रिक्टोक्टे दिने क्री-वहे यहोगा अनुहान करनेक्टो, ६७७ महास्युः — समग्र अपीर भगवनकरिते प्राक्ताम्य समग्र क्या विनकी विजुरियों है—ऐसे महान् यहकारम, ६०८ महाहरिश— सहस्रम अर्थको हमन विजे कोलोग प्रयहास हवि विजय सहस्र है—ऐसे नेवान् विकासन्त ह

६०१ साम:— सम्बंध प्रत सूति विने करेग्रेम, ६८० सम्बंधिः— सूतिते तथा हेरेग्यां, ६८९ स्रोतम्— विस्तं तथ गण्यम्के पुण-गण्यम् वर्ति विन्य कर्त्त है. यह स्तेत, ६८१ सूतिः— सम्बंधियः— युक्ती केन करेग्यां, ६८६ पूर्वः— सम्बंध कर, तथा, देवनं और मुग्वेते प्रतिपूर्व, ६८६ पूर्वः— सम्बंधिः स्वतंत्रां क्षा प्रतिपति पुण्यां सरोगाते, ६८० पुण्यः— सम्बंधिः स्वतंत्रां वर्षाः स्वतंत्रां पुण्यां सरोगाते, ६८० पुण्याः— सम्बंधाः प्रतिपति स्वतंत्रां पुण्यां स्वतंत्रां (६८६

६९० वर्गेश्वयः— वन्त्री प्रति वेगवारं, ६९१ वीर्णकरः— करक विकासी रचीरत और उन्हें करतं, ६९२ वर्गेखः— वैरण्यान पुरा (१४म पुण-पृष्टिका पीत) विश्वतः की है—हैंते पुण्येक्तं, ६९६ वर्षुक्तः—प्रमु वर प्रदान वर्गेश्वरं, ६९४ वर्षुक्तः अस्त्री वर्णाको सेवान्य वहत् वर वेग्वतं, ६९५ वर्षुक्तः— अपूरेपपुर की्रम्म, ६९६ वर्षुः— वर्णा अभिवेतं वरस्यान और सर्वतं अस्त्रान्तरमें निवास वर्गेश्वरं, ६९५ वर्षुक्ताः— वर्णारभागो अस्त्री निवास वर्गेश्वरं अभिवेतं पुरा वर्णातं, ६९८ इतिः— वर्णा इत्तर विश्व अनिवेत्रः वर्णानं पुरा वर्णातं, ६९८ इतिः— वर्णा इत्तर विश्व अनिवेत्रः

६९९ सम्बद्धिः— अनुवन्धित् अस् विने सनेनीया गरिनकर, ४०० सम्बद्धिः— नयस्ति स्व अस् सम्बद्धिः सन्देशकरेः ४०१ सम्बद्धाः— सद्य-सन्देश विक्रणन समानकर्त् ४०१ सस्वाधिः— स्वृत समान्ये प्रकृत स्वेते प्रतित होनेतारेः ४०३ सस्वाधिः— स्वृत्यक्षिः सम साम्बद्धिः स्वतः ४०४ स्वर्तेतः— स्वृत्यक्षिः सम साम्बद्धिः सर्वतः सेन्यकरेः, ४०५ स्वृत्येषः स्वतः ५०० सुकापुरः — विनके प्रतित स्वृत्यक्ष्यते गोयसम्बद्धः आहे अति सुन्दरः हैं, १३ सेन्यमः ॥

७०८ मृत्याकाः— समय अभिनेते पुत्र निवासस्यन, ७०९ सम्बोधः— असर्व प्राथसे कात्वते आवादित करनेवाले पत्र देव ७१० सर्वाश्चनित्रकः— समय अभिनेते आवाद ७११ सम्बद्धः— असर अधि और सम्बोधने कुछ, ७१२ एर्वसः— वर्गीयन्द्र पानि वस्त्रोवालेक समयाने न्यू करनेवाले, ७१३ स्टब्स्- असने वालेको विद्युद्ध गीरव देनेवाले, ७१४ कुछ— निवासद्याम, ७१५ तुर्वरः— वही करिनातने इत्यों वरित हैनेवले, ४१६ सम्पर्धिक:— देशों अध्य में | श्रृहेक्के, ४५६ स्टब्स:— अस्य मनवर्त्ते स्थ्ये पृथ्वेके बोतनेमें न आनेवार्छ ।

अर्थ विश्वयुक्ति:— समझ निवा हो विस्तरी यूर्व है-पेरे विराहणसम्, ७१८ महामृतिः— को सम्बन्धेः, utt बीह्यति:— क्रेकारे कल किने कर रेडेन्सन रसन्तरे पुरा ४२० अनुर्विकर्— विनवी कोई मूर्व न्हीं— हेरी निरुवार, ७२१ वर्गवासुर्वी:-- वाच अध्यावेते केन्याचे संबंध कावर करेंग्रे रिने बहुत मूर्तिनेश्रे क्ला करेंग्यते, **४१२ सम्बद्ध:— अनेव मृति होते हुए के विनास सराम निर्मा** प्रसार मन्त्र प किया या चीर-मेरी अस्प्रद्रासन्त, ४२६ प्राथ[कि- सेवड्रे पृत्तिकेको, अन्य प्राथमः— केव्हे spilled to

प्रदेश पुर्वतः— तम प्रवासंत नेत्यानेते पीत अधिर्यन, भरत वैद्या- प्रयोगियो अस्ति, ४२७ सन्त- विक्रो होनावार्त ओर्चन्य स्त निवास पात रे—के प्रकार पश्च कः — ह्रवाधान, ७३५ विक्यु-- विकासीय स्वापनाय, ७६० **पट्— एक्टरिय, ४३१ सर्— विश्वार वालेकारे, ७**६२ प्राथमुसम्बद्धः सुरुष् पुरुषेत्रस्य व्या विने क्लेकेन समुक्त परस्का, पान्य क्षेत्रकार्यक्ट— समस्य स्थितवर्धेक दिन कर्तन्यके पूर्व दिया, ७३४ हरीयामानाः — ३०% प्रत चानव विके व्यक्तिक होतानको, ७६५ मध्यकः-- सङ्ग्रहले हरण होनेकरे, ७६६ प्रमुख्यास्त्रकः — प्रस्तेते केन वार्यन्तरे ॥

भरूप सुवर्णवर्णः — होन्से वृत्या चैवनर्गवर्णः, ४६८ देवाह:-- सेनेक क्रम सर्वत चन्नोले अहोबले, ४१९ कराक:-- परम केंद्र अल-संस्कृतिकरें, ७४० क्रम्बरावार्थ---चनके हेर और कन्यरते सुलेपित, ध्यार बीन्स— कांची रक्षके क्रिये असूरवंदेको सरोवाले, ४४२ विकास- विकास समान दक्षर कोई नहीं—ऐसे अनुका, ७४३ सून्य:— समस् विक्रोक्कोंसे रहित, घटन कुलाबी: — अपने अधील क्लोंके दिनों क्यारे स्ते हर इतिह संबद्ध करोबाले, ४४५ सम्बद्ध — क्रिके अवर भी निभारत न होनेकडे अधिकड, करा, क्ला:--बायरपारे प्रार्थन गमन कलेकले ह

७४७ अध्यो — सर्व यन व क्योक्ट अध्यानीय, काट कारक:— दूसरोको पन देनेकले, आए पान्य:— सकते पुरुरेयोच्य पानरीय, ७५० श्रोकनक्षणी— चीवा पुरुरेके सार्थ, ७५१ तिलोकपुर्य — हीनी संबंधियो करण करनेकते, ७५२ सुरेक:--- अति कान सुरु: बुद्धिकते, कर्: नेकव:--- काने इच्छ होनेवले, ७५४ कन:— सिल कुरकुल होनेके कारण सर्वत क्याप्टके पर, ४५५ सम्बद्धः— अर्थ और आ

अम् केलेक्ट — स्वदितकारो देवनी वर्ग करोकते और महोक सारो अनुस्तान देवकी वर्ष महोत्वले, ७५८ ब्रोक्ट:— यस व्यक्ति कल करेको, ४५९ सर्वकानुमा क्ट:— क्रमा प्रकारिको सेंह, ४६० प्राव:— पर्वति प्रार अति का-कुर्वादेको काम करोकते, ४५१ विका:--- प्रमान रित्य करनेवारे, ४६२ व्यक्:-- अपने नतीयो अपीष्ट पता देनेने क्षेत्र हो, १५६ वैकाक:-- का, कार्या, कार्या और विकास कर क्षेत्रिके काम करेगाते कार्यक्रमाना, VCV काराय:-- पाने को रूप केरेको ।

कां कार्याः — कर् कारण, पार, सक्रायः पार glidet, wit again - at gardet, wie कार्यो: — कार्रेस, केवर्सन, अञ्चा और अमिन्द्र—हर कर व्यक्ति एवं, बाट कर्ताकि— सरोग्य, संबंध, सराम् क्ष्मान्य भार पान गरियाच्या, ५६९ स्तुराम्य-मा, सुँद, सर्वतार और विकास पार सन्तर्भारणको, ४४० प्रतृष्टीय:---बर्द अर्थ, यात और येथ-एन को पुरवासिक समीताल, कर प्रमुक्तिक्- यह वेहंक अनंबो आवेची। प्रानेकरे, use क्वाकर— एक प्रत्याने वाले एक पर (श्रेष) ये समस \_\_\_

५०६ श्रम्यको:— अस्तरकाची गरीगरि पुत्रनेवते. ५४४ विकास - जनमे है दिन-माराधीय मेन्सरे, ४४५ क्षतीक: — विकास भी चीरनेमें न क्षत्रेचारे, प्रकार प्रातिकारक: — विकारी अवस्था कोई अल्लाहर की भर सके ऐसे, ४०० कुर्राण:---क्रिय वरिष्ठे का न हेनेक्से, ४५८ कृति:— वरिनक्से सननेने क्रमेक्टो, करू हुनी:— व्यक्तिक्टो प्रक्र क्रेमेक्टो, ४८० ब्राज्यासः — बाई व्यक्तिसाधे योगीवनोद्वार प्रदर्भ वसाथे आनेवाले. ७८१ इसरिक्क — यह प्राप्ति बरुनेवारे देखेंदा यब करनेकरे ॥

७८२ **मृत्या**:— सूचर समु-प्रत्या<del>वेकते</del>, ७८३ त्येकसाम्:- होनोर्क सत्ये प्रत्य कानेकते, ४८४ **कुन्य:—** सुदर विकास समाहरूप विश्वकरे, ७८५ क्यूक्टबंध:— पूर्वेद कम्यू-क्यूको कालेकले, ७८६ इन्द्रकार्य — इसके कान कर्मकले, ७८७ महत्कर्मा — को-को कर्म करोकरो, ७८८ कृतकर्या— को समार वर्तकर्या कर कुके हैं, विकास कोई कर्ताम क्षेत्र न यह हो—ऐसे कुरक्तन, ४८९ **कुळ्**नव: — ज्यानकम् वेद्रेको कन्नेकते ॥

 क्ष्मक:— संस्कृत के तथ कार करनेवाले. ७५१ सुन्दाः—समो सर्वक पानस्त्रती होनेके कारन परम सुन्दर, ७९२ सुन्दः — परम कामाजीत, ७९३ सामानः — सान्ते १४वन सुन्दर जीवनते, ७९४ सुन्तेकनः — सुन्दर नेतेनते, ७९५ सर्वः — स्वादी पूम्म पुनर्नेक वी पून्तवेन ७९६ बामानः — बामाजी अस सदम करनेवते, ७९७ सूर्वि— सामान्यत्वते सीम्पृत मार्गाद्येकना कम काम करनेवते, ७९८ कामाः — स्वयुक्तियो पूर्ण्या बीठनेवते, ७९९ स्मिनियाची — स्वयं कर्त क्षत्र प्राप्तेकते और सम्बन्धे बीठनेवाते ॥

८०० सुक्रमीकियु:— युग्र सावा और विन्दुने पुक्र श्रीकांस्तरण गम गाइ, ८०६ अञ्चीपत:— विक्रिक प्रश् भी सुनिय प विन्ते पा स्वयंग्यक्ते, ८०२ सर्वकानीकोस्ट्राट— समझ वार्यपतिनेक साथै सहस्रके भी साथी, ८०३ महादुक्तः— गाम करनेक्के विस्तो गीत स्थान्त्र स्वयंग्ये पा और है, ऐसे पापनायक महान् क्रोमा, ८०४ सहस्रके — पापनाय महान् गामिको, ८०५ महाद्याहः— विकालने कर्क व यह सैनेको पहाप्तरस्थान, ८०६ महाविक्षीतः— कर्का महान् विव्यव-स्थान।

८०५ प्रमुद्धः — मु अर्थात् पृत्यांको काला वार आवार प्रका करोवाते, ८०८ कुन्दः — विश्वावातो करोते किने पृत्यांको विदोनं करोवाते, ८०९ कुन्दः — वाश्यमकोतो पृत्यो कहा करोवाते, ८१० वर्णायः — करावाताले वर्णाय क्षा कहानेको वर्ण करोवाते, ८११ धावारः — करावाताले वर्णाय करोवाते, ८९९ अधिकः — त्राच प्रमुद्ध क्षानेकाले, ८९१ अञ्चलकाः — विश्वावी आस्त्र कर्णा विभागः न क्षे—हेते अर्थावाताल, ८९४ कानुस्त्रकट्टः — विश्वावी देव कर्णा व्या मुक्त करोवातो, ८९६ क्षानेक्ष्यः — स्व श्रोर पुर्वावाले कर्णा वर्णा वर्णा करोत वर्णा वर्णामुक्त प्रमृत्याती क्षा वर्णा वर्णा वर्णा करोताका

८१७ सुलगः — निवन्तिस्थः विका कार्नेकारेको और एकति समानु पातको तिन वे परिवाने सुन्ताराने यह वेरेकाले, ८१८ सुन्ताः — सुन्दा पोचन कार्नेकारे कर्न अको वालेहार वेरपूर्णन अर्थन विने पूर् कान्युकारे कर्मा पोचनको वो प्रश तेष पानकर कार्नेकारे, ८१९ सिक्कः — सामको वी कार्या विदिश्मेने कुछ, ८२० कर्मुकार् — सेन्या और कर्मुकारेक त्रपुर्वाको अस्तो प्रमु वानकर कीर्नेकारे, ८२९ कर्मुकार ८२३ स्मुकार — कार्यामार्थे, ८२२ कार्योकः — स्टब्लकार ८२३ स्मुकार — कार्यामार्थे अस्ताराको भी कार्य हार्नेकारे, ८२४ सम्बन्धः — केर्यामार्थे अस्ताराको भी कार्य हार्नेकारे, ८२४ ८२६ स्वावनीतिः— सन्तर विरुगेकाते, ८२६ व्यानिक्कः— अती, कराती, यानेका, मुलेकेस, वृद्धकर्त, स्वतिकृते और विकाधि—इन सार विद्यावके व्यक्तिक्य, ८२८ व्यक्तिः— कर विकास अधिकार, ८२९ स्थानक्याः— स्वत केनेकारे पूर्वत्य, ८३० अपृतिः— मूर्तिरहेत निराद्या, ८११ अन्याः— कर प्रकास निवाद, ८६२ स्वतिकाः— विश्ली महार

वी विकार कारोने न सानेवाते, ८६३ वाक्यूम् — दुक्तेनो पार्त्वत कारेवारो, ८१४ वाक्यम्परः — सारव कारोवारवेते और कार्युवरेत कावा नाह सानेवार्ते ।

देश केष्ट्र- जनक पून्य देश बुद्द- प्रमंते को, देश बुद्दा- जनक पाने और प्रमंत, देश सुद्धाः- जनक पाने और प्रमंत, देश सुद्धाः- जनक पोर्ट और पाने देश पुन्ति पान प्रमंति प्रमंति देश प्रमंति प्रम

त्रश्य व्याप्तृत्—वीववार आरोके कार्ने पृथ्वेश्वः चार् व्याप्त्रां और अवने वार्ति वीगकेत्राय वार्त्वो वाल वार्त्वात्ते, त्राट वार्तियाः — वेट-वाक और अवनुत्रवेद्वाय विश्वेष गुण, कार्त्व इत्यं और अवन्यत्व वार्त्वार कार्त्वा विश्वेष गुण, त्र्व्य वार्त्वे इत्यं वर्तियां, त्रार, वीगी — विश्व अवविश्वातः — समस्य वार्तिवाः — कार्त्व वेगींक कार्त्व, त्र्व्य सर्ववात्त्वाः — समस्य वार्त्वावां पूर्व वार्तिवातं, त्र्व्य सामस्यः — समस्य विश्वातः वेगेकतं, त्र्व्य अवन्याः — दृष्टेको संख्य कार्तिवातं, त्र्व्य समस्यः — सामस्यातं सम् प्रथम्यः वार्व वार्तिवातं, त्र्व्य समस्यः — सुन्य प्रथमकं अवस्थानान्त्व, त्र्व्य वाष्ट्रवाद्याः — वार्त्वाः — स्वयं प्रथमकं अवस्थानान्त्व, त्र्व्य वाष्ट्रवाद्याः — वार्याः स्वयं वार्त्वेष्ठ विश्वे व्यक्ति देनेवातं ॥

०५० वर्षाः — व्यावशे औद्य, ८५८ वर्षाः — वर्षांवाचे कर्मावते औद्य, ८५१ हवाः — द्या वर्षावतेष्ठे रुपावते, ८६० वर्षांता— का और एवा आदेते क्यां द्या कर्मावते, ८६१ हवः — रवावा वर्षा वर्षा विकासे एवा दिवा वर्षा है उनका सुवार, ८६२ अपराधितः — स्वृत्येद्वरा पर्वावत न हेन्याते, ८६३ सर्वावाः — स्व पुत्र स्वन वर्षायी सम्पर्वते पुत्र, अधिका विधित्, ८६५ अभिवातः — स्वावे अपरे-अपरे वर्षांवाचे विभुक्त वर्षावते, ८६५ अभिवातः — निवासे न वेथे हूर किस्स कोई नी निकाल करोबात जो ऐसे परमायन, ' ८६६ कामाः— विनास कोई जातक की सम्बंध मृत्युक्ति ह

८६० सम्बान्— यह, वीर्व, सामने आहे समझ समोधे समझ, ८६८ सारिकाः — सम्बुग्यानकीया, ८६९ साथः — सारकार, ८०० सामनोत्ताकाः — नेपानं पान्त और समीध पान्न साथः, ८०९ साथितायः — नेपानं विभावे पान्ते हैं — है। पान्न सा, ८०९ साथिता — सामने पान्न पूज्य, ८०४ सिम्बान्— पानेकारोग् सिन् सरोगाने, ८०५ सीर्वानंतः — सामे सेरिकीं दिन्नो पानोकारे ।

टान् विद्वारमानीः — सामानी नाम मानेवारं, टाक मोहि: — सर्वत्रमानाम्म, टाट कुर्वीः — पुण्य स्थि और मानिवारं, टाट कुर्वुक् — माने कार मो हां सम्बद्ध क्रिको भौतिवारं माना परनेवारं, टटा कियुः — क्रांग्यारं, टटा हि: —समझ स्थित प्रोचन करनेवारं पूर्व, टटा विरोक्ताः — विशेष समाने समझ निर्माचनं, टटा कुर्वः — क्रेंग्यारं समा करनेवारं, टटा स्थिता — क्रांग्या कार्या कर स्था मानेवारं, टटा स्थिताः — क्रुंग्या नेवेवारं ॥

८८५ सामका — का सकत्वे सम्बद्धि, ८८० पुरम्ब — का मी पूर्व सम्बद्धि प्राप्ति, ८८८ प्रोप्ता — मृतिको नेगांग्यके, ८८५ पुरस्य — म्यांको प्राप्तिका पर्छ कृत्य केन्स्यके, ८९० विकास — स्वत्यके सम्बद्धाः साथि पर्छ विद्वार कृत्यके नेग्स्यकृति स्वत्य का प्राप्त स्वत्यके, ८९१ सामकः — स्वत्ये पाने मन्यक्ति मानिहार ८९६ साव्यक्ति — प्रमुक्तिय साथ प्रत्येकते, ८९४ सोकाविद्यानम् — समझ सोवति सावत् ८९५ सञ्जूष्ट — सावत्य साव्यक्तियः ॥

८१६ समाप्- जनस्वातासम् ८१७ स्वस्ताताः-स्रणी साल होनेते सहाद पुण्येचे अरंधा ची का मुख्युत्तः, ८९८ स्थितः- मार्गी व्योत्तः, ८९१ स्थीतः-कृतित् १०० सम्बद्धाः- समूर्ग स्थले स्थलातः, १०१ स्थीताः-स्थानस्थलः प्रमुक्तं देशको, १०३ स्थीतः-स्थलानस्य, १०४ स्थितपुक्- शर्दातं का स्थलान्ये स्था स्थलेको, १०५ स्थितपुक्- शर्दातं का स्थलान्ये स्था स्थलेको, १०५ स्थितपुक्तः- नरमान क्योगे स्थलं और सीम स्थलान्य स्थलेको ४

१०६ अर्थेड:— सन जवाने सा (कृर) पानेटे बीव सारामुर्थे, १०७ कुम्बारी—सूनी समा जवसमा प्रवासी कुमारोको काल कार्यकारे, १०८ माधी— सुरानिकारको काल कार्यकारे, १०९ मिळापी-- सबसे मिलवान प्राापनार्थक, ११० क्रियंकारायः— मिलवा सुरि-ल्याका कार्यक श्रेष्ठ ई—ऐसे जारे तेम कारण कार्यकारे, १११ कुमारियाः— कारण का्यका विवर्ध गरियक कारण करते हैं, ऐसे, ११६ क्रियंकाः— मिलवी होते क्रियंका प्राप्त केंद्र श्राप्तिकार एसे क्रियंकाः— मिलवी मेंद्र क्रियंका प्राप्तिकार एसे

११६ समूरः— या जारके हरवारेते पीत, ११६ वेकारः—मा कर्ष और कर्म—सर्थ हरिको पूचर क्षेत्रे साथ या पूचर, ११७ सहः— या जारको सहस्र, परावर्गकारो और ध्रम्थाने सह-दो-सह सर्थ या देनेको सहस् कर्षपुत्रक, ११८ व्यक्तिकः— पंतरकारे, ११९ क्ष्मिका स्थः— वस सर्वकारेते सर्वते, १३० विकासः— विकासि सर्वते परा विकाद १२९ वीतांकाः— या प्राप्त क्षेत्र और संस्थानं साथ और पीति परा पूच्य कर्षे परावरक है होते ह

११६ क्रमाणः — पंतार-सन्तरं पर सहिन्छं, ११४ पृष्टिकः — पर्वत और पनिनेता यह करनेवरं, ११५ पृष्टः — स्वत्य और क्रमेक्टं समझ पृष्टिकं प्रीत पर पेनेक्टं, ११६ कुम्बान्यकाः — मान, सरमानितंत्र और पृष्टा करनेवं कुं स्वतंत्र और पंतारमा दुःस्ताना नाम करनेवरं, ११७ विद्या — सरमानितं मिना परिनेता माने पंतारकाता नाम सरोवरं, ११८ प्राप्टः — सन प्रमारतं स्वा परनेवां, ११९ स्वाः — विद्या और विश्वता अवद करनेवं दिने सरकात्रं स्वाट क्रेनेकंटं, १३० प्रीवादः — स्वतंत्रं विवादों नाम परने दिन्छं स्वतंत्रतं ।

१३२ अवस्थाः— अन्य-अधिकस्थाते, १३६ अन्याधः— अन्याधे सन् अवधिक एउन्हें होते मुद्दः, १३४ अवस्थाः— अन्याधः स्थानिक प्रेट केन्स्यते, १३६ व्याधः— या वेद्याः स्थानिक व्याधः— या वेद्याः स्थानिक व्याधः— व्याधः स्थानिक व्याधः— व्याधः स्थानिक व्याधः स्थानि

पश्च कराहिः— विस्ता आहे कोई न है हैते कर्णा कारणसम् १४२ भूषिः—गृष्णिः भी जावा, १४३ स्थानीः— समझ जीवनमा बहुनीची होता, १४४ सुनीः—अमेत कर्में अन्तःकरणे सुन्त कर्णाकर्म विशेष सुनीः—अमेत कर्में अन्तःकरणे सुन्त कर्णाकर्म विशेष सुन्ता कर्मेंचले, १४५ जीवस्तुतः— स्थानकर कर्णाकर्म बार्नेको वरण कर्मेंचले, १४६ जानः— स्थानकर्मे स्थान कर्मेंचले, १४४ क्यानकाहिः—वन्न तेमेंचलेके न्याके मृत्यारम्, १४८ क्यानकाहिः—वन्न तेमेंचलेके न्याकः मृत्यारम्, १४८ क्यानकाहिः—वन्न तेमेंचलेके न्याकः

१५० सामापीरायः — सामापायम पृथ्वे साई समा पृथ्वे स्था, १५१ समापा — विस्ता को वी कानेकात ए के ऐसे सर्व विस्त, १५१ कुम्बासः — कुम्बी चीर विश्वीत इतियाते, १५१ समापाः — वर्त स्था कोवले, १५५ विस्ताह, १५४ सम्बद्धः — काने साम कोवले, १५५ बारवामारः — सर्वाति वर्णा सामापा कानेकले मर्वात्वास्थाः १५६ सम्बद्धः — प्रतिकृत् साई के कुमेनो वी वीवन ऐनेकले, १५० समादः — निवास्तालम्, १५६ वरः — बारवेन समापा कानेकले ।

१६० जनसम्बर् स्वतित् होतो सर्व जनसम्बर् १६० जनसम्बर्धः जनके अस्यापूर, १६१ अस्यक्ष्-सन्तः अनेका केका करोकते, १६२ जनकेकाः—अस-सन्ते सकारो अभिकेशे सेवित रकोकां, १६६ तमक्—् स्वार्त राजान, १६४ सम्बर्धित्—असर्व समको पूर्वत्व सम्बर्धः, १६६ स्वतावा— अस्तिकसम्बर, १६६ सम्बर्धानसम्बर्धानः— सन्द मृतु और मुस्तव असरे प्रदेशेः स्वीरो सर्वता असीत्॥

१६७ पूर्ण्यासम्बद्धः— पृ पृष्ट प्रदेशव क्षेत्रे क्षेत्रेके मात्र अभ्येतते और संसारपुक्तसम्, १६८ क्षारः— संसार-सागरो पर उक्तरेकके, १६९ प्रतिका—क्ष्मके व्यक्त करोकके पितास, १०० प्रतिकासकः— विकास क्षाके में विद्यः १७१ स्वाः— स्वास्त्रसम्, १७२ स्वास्तिः— क्षाक्ष क्ष्मेंक अविद्याः, १०१ सम्बद्धः— क्ष्मानको स्व अरोकके, १०० क्षान्तुः— समग्र सहस्य स्वोकके, १०० क्षान्तकः— स्वोको करानेकारे ।

१७६ व्हापूर् महोना करण-पोना करनेकरे, १०० कहकुर् महोने रचीना, १०८ कहि— सन्धा का निको समा होते हैं—ऐसे कार्नेब, १७९ वहापूर्य समझ कहें मेंच्य, १८० वहासकार:— बहन्य, कार्य सादै कुठ-से यह निमानी प्रतिके साथा है ऐसे, १८१ वहारासुन्य,—महोना सन्द करोबारे को उनसा पर देंगबारे, १८२ बारपुर्ह्स् कोने पुर इनसम्ब और निवास कालान, १८२ कारम् मानव जीवनेंद्रे का को जानी ची। उनसे सा उनस्से हुट-पुट बरोबारे तथ १८४ सामा: —समा अनेंद्रे केल थे।

९८५ आवस्योदिः — विन्ताः कारण दूसरा कोई नहीं—हैसे वार्त चेनिकाल, १८६ वार्यकाटः — वार्त अपने-अस केवाप्तृतिक प्रवट होनेकाते, १८० वेंकानः — प्रत्याकाती विश्वपाता वार्य वार्त्ते दिन्ते पृत्यीको बोटनेकाते, १८८ सामगावानः — सामोद्रास वार्त वार्तेकाते, १८९ वेंकारीकावानः — रेकानेद्रा, १९० वार्का — स्वता सोनोकि स्वतिता, १९१ वित्रीकः — पृत्योदिः, १९२ वार्यकावानः — सारण, वीर्तन, पूचन और व्यान असी कारोसे वारास वाराम्हरकार वार्ष कारोकाते ॥

पुरादित का अनेकार प्रतिकार है का सकते काल कार्यकार ।

पुरादित का अनेकार हो का स्टूब्स काल कार्यकार ।

पुरादित का अनेकार हो का स्टूब्स कार्यकार ।

पुरादित कार्यकार का स्टूब्स कार्यकार ।

पुरादित कार्यकार कार्यकार ।

पुरादित कार्यकार ।

पुराद कार्यकार ।

पुरादित कार्यकार ।

पुरादित कार्यकार ।

पुरादित कार्

वर्ष इंबर क्लोबी समाहै हैक्सकें हैंसे असित करके कृतर तिया करा है, व्यूक्तकी होते। डीकास्थ करके किया करा है, अपने करकार करके प्राथानुकी कृत की करी है।

इस कार का वीर्तन वारोवीच महासा वेदवयो है। इस इका मानेवा पूर्वकारो कार्त का दिया। वो मुख्य इस विद्युक्तकारकार सह अवस करता है और को प्रतिदिन इसका परित्न का कर करता है, अस्त्रा इस सोवाद रखा वारोवीं नहीं को दुक अधूक मही हैता। इस विद्युक्तकारकार कर करनेरे अस्त्रा परित्न करनेरे अधूक वेदाकारकार्य है। कार्य है कार्त अधिका परा। है, वैद्युक्त वारावते का कार है। विद्युक्त कुल परा। है। वर्वकी इक्टब्लिक क्वांका कार है। अर्थ है कुल परा। है। वर्वकी इक्टब्लिक क्वांका कार है। वर्वकी इक्टब्लिक अर्थ परा। है, वोरोको इक्टब्लिक को परा। है। वर्वकी इक्टब्लिक अर्थ परा। है। कार्यका करके परित्न है मनने विद्युक्त कार अरा करता है। इस कार्यके स्वीत हो मनने विद्युक्त कार करता है, वह स्वार् पर पात है, पारिने पाल पात है, अवस समारि पाट है और भति ज्ञान पहलान पाठा है एक साम्यो नहीं पन जो केता का की और केवले कहा है जह अने करन. कार्रियान्, बरम्बन्, क्यबन् और सर्वपुनसम्बद्ध हे 📟 है। क्षेत्रकार पूर्वन देनको कुट साठा है, कन्यतमें पहा कुछ पुरूप क्यानो कर कहा है, फार्नेस करते कर कार है और आयोति यह हुआ आयोति कुट पाल है। में पुरूष भरितासक क्षेत्रक इस निव्युतकारकारे पुरुषेत्रक-प्रत्यालको अधिकित पानि प्रत्या है, यह प्रति हो प्रत्या प्रेयटोसे पर हो जात है। यो पर्या वासोवके सामित और क्रके परावत है, या समझ करोड़े कुछन निवृद्ध अन्तःकरणकारः हो सन्तरन पद्मक्रको नाम है। काहरेको मार्थेक को कर्ष में अपून को हेवा है उस उनके क्य-पात, बरा और काकिया को पन की सक है। के पूर्व बद्धार्थिक परिचारको इस विन्युत्त्वसम्बद्धाः पर with \$, or someth, and, mad, def, tylk adv क्रोसिको कार है। पुरुषेत्रको पुरुषान पर्वाको विकी है। संब की अब, ईमां सबा की हेते, संब की हेत और राज्यों पृद्धि कभी राह्यद औं होनी। सभी, धूर्म, प्राप्त सक्य नकुल्लाहर अध्यक्त, कर्ने दिवारे, पूज्ये और ज्ञान करते है, वे कवी पराचन नहीं पते हैं।

महाराज्य-ने सार महारा माहोलके पीनीने बारण किये को है। केवल, केव, कवर्य, यह, सर्व और एक्सस्टीत का व्यापर-पद्ममान सन्दर्भ पनद् श्रीकृत्यके सनीन श्रापर भक्तकेम्ब स्था से है । इन्द्रियों, पन, चुटि, सम, रेप, पत, बीरव, बेब (क्रार्टर) और केका (अस्ता)-ने सब क्षेत्रप्रदेशके पर है, देश के पत्नी है। एवं सामीने महाराज्ये प्रथम पान बाहर है, आधारते है बर्गकी प्रचीत होती है और वर्गके काली करवाद संबद्धा है। बहरि, निर्दा, हेला, ब्रह्मकाश्वर, बाहरे और सामा-माध्यसका, समूर्व क्क्-मे का माजवाती है अवस हा है। मेग, जन, प्रांत्य, निवारी, दिल्ल काहि पार्ने, चेद, प्रांता और विकार-ने इस विजाते जनत हुए है। ये समझ विश्वेत चेका और अधिनादी विष्यु ही एक ऐसे हैं, को अधिक कार्वे विकास क्षेत्रर विकासिक प्रत्निकोची अनेपति करोबो करण कर से हैं एक किसेकोर्ने न्यात क्रेकर सकते केन हो है। हो पूर्ण परम केन और सुद्ध पत्म पाइत हो. वह मन्त्राम् राज्यानीके पहे हुए हर विम्युरक्तनामकोत्रका कड करें। को निकार क्रिक्ट क्यार क्यार क्यार क्यार क्यार क्रिक्ट क्रांकारे क्याक्षित क्यालेक क्यान् विक्रक

### व्यपनेयोग्य पन्त्र और सबेरे-खाय कीर्तन करनेयोग्य देवता आदिके महरूमय नामांका वर्णन और गायत्री-वपका फल

पुणिक्षरने पुरार—विकासक ! अवन सम्पूर्ण प्रशासिक है रिकार है, जार: में पाला है कि अधिक किस कोण पा मताबा पर करनेसे सर्वेद महान् करायी प्रदेश हो सकती है ? पाला, गृह-प्रवेश का किसी क्रमंद्रा अस्टम पास्ते समय अवना केरकारे या आउके सबन विस्तवा कर करके। क्रमंबरे पूर्वि के बाती है ? सारित, पहि, रक्षा, प्रश्नवक क्रम मधनिकारक कारनेकाल कीन-सा ऐसा कर है, जो केके इकार पहल रहाता है ? आप को नकरेकी कुछ करें।

वेकारे सह-एक्ष् । सूनि केल्प्स्य काल बारा मन में रहें करना का है, एकस्पीय होकर सनो-भाषिती केवीने इस जनकी संधि की है उनके बा काबाल ही पापने बटबाब हिलानेबाल है। जो इस पन्त्रको सुनता है, का कैपेनोमी होता है, उसमारे परचे प्रकारों कुछ हो पाती है. और यह प्रक्रिक एक परस्थेकों भी कारण भोगत है। प्राचीनकाराने अक्रेय-वर्गका पासन करनेकारे

और सह सरकार्य सरकारणों संसत्त सुनेवाले स्वाधिनन क्रा क्याचा राज है को किया करने थे। को राजा इत्रिकेको बक्को करके प्रान्तिपूर्वक प्रतिक्षित इस स्थवत बार करते हैं, अने सर्वोचन सम्प्रीत क्षार केरी है।

(ब्रह्म कम इस प्रकार 🖫) महान् ऋत्वारी परित्र, केट्रीकी, परावर, विवास, वर्षकाखारी अन्तर (शेवनाग), माह्न नेरहरू, क्रान्यून तक प्रतार, देवकिक, प्रतार हर्ग प्रकार महाकवारे कियाने और सहस्रों नाम बारव क्रानेको पर्याप्य सर्गात्मको स्थापना है।

अनेक्यक, अधिर्वयन, विनाकी, अवस्थित, प्रत् विज्ञान, प्रत्याह, फोहर, कुंबदारि, प्रत्यु, प्रध्न और इंडर — वे न्यास का विरुवात है. यो तीनों खेकोंके सामी है। नेवके करपरिय-अकरणने सक्ते संस्कृते नाम महाने गर्न है। जंद, भव, देश क्लेक्ट बरम, बाम, अर्थम, क्ला, पासर, स्ट्रा, एवं, इन्द्र तम किन्तु-ने बाव आदिस स्कारते हैं। ये सक-के-सब स्वयंत्रके पुत्र हैं। यह, ह्या, स्रोग, सामित, अन्तर, अनित, अनूव और प्रच्या—ये अवट बच्च को गये हैं। जातम और सब—ये केनों अधि-केनुन्यरके सामते असित् हैं। इनकी अवदि प्रच्यान् सुर्वित वीनेते हुई है। ये अवस्थानवारियी संस्कृतिकी सामते अबट हुए थे (ये सब निवादन वैशीन देखा है)।

क्षत में भगवृत्ते कर्नन्द की रक्षनेवारे तथा का, कर और सुक्रमको चाननेवाहे हेक्सओवा परिचन हेव हैं। हे हैरान को जुला कुला करत अरिलेंक बुनाइन कार्रियो देशने को है। इस्ते कर ने है-कुट, कार, विकेश और मुर्जिनम् विकास । इन्के किया सरकी पूर्ण क्ष्य कर एवं मेक्ष्में संस्था हैया नहीं भी समूने क्याहर the test for it was seen me-able metalle महत्त्वेचो एक पात हो है। उपानी प्रात्नेन विक कोध्योधी राज्या की है, इस सरकों से अपने दिला केवले निवास करते हैं तक बहुकाओं साथे कर्मीक निर्देशन बारों है। वे सबके प्राप्ति काली है। के समूच बहुद अपने अन्यत कीर्नर कारत है, को उत्तर कार्यों कर्न, अर्थ और बारको प्राप्ति होती है तथा यह सोकावन प्रक्राकोद स्ते हुए महत्त्वाच परित्र क्षेत्रदेने कता है। सार काले हर विकेत बेनता सन्दर्भ प्रतीचे कामी है। इसे उनार पर्यापर, महत्त्वान, हानती, कृत्याका, क्रमूनी क्रोकीके क्रमी गरोपा, विकास, सीनकाम, कारम, बोनाम, पुरस्क, मक्षा, महिन्दी, अस्मात्त्व, पहिलाक गर्मा, पृथ्वीय करते हिन्दू हेर महत्त्व, काया, बहुय, देशालय, समझ पर्यंद, करो समूह, करवान् संबानके क्षाप प्रात्नानको प्रके श्युवराज, विन्तु, विन्तु, कान् और अधिका-पर साके प्रयोक्त पुत्र काले क्रीके क्रानेकले क्यूक्त सा पान कर हो जाते हैं।

अस अंध्र महर्षिनोके नाम सता का ह्—स्वादीत, रेगा, अर्थान्तु, परावस्, जीतमके पुत्र कार्यावाद, अर्थुपानका करा और केरातिनिके पुत्र सम्मादी —ने तथा शार्थि अर्थावादे सम्माद और लेक्स्यहा सम्मादी को है। इसका देश करके अस समीचे हैस्सादीके साथ आन्यपूर्वक को और पुत्र परावस अपनेन करते हैं। ये साथी व्यक्ति मोनके पुत्र (मानिक) है और पूर्व विस्ताद निकास करते हैं। यो पुत्रव सूत्र विस्ता इसका का नेता है, या इसकोवाद अर्थाव्य होता है। उत्पृत्र, अनुन्, सरकानेता, सुत्रवा, कार्याव्य, कृत्व होता है। उत्पृत्र, अनुन्, सरकानेता, सुत्रवा, कार्याव्य, कृत्व होता है। उत्पृत्र, अनुन्, सरकानेता, सुत्रवा, कार्याव्य, कृत्व

ने तक करिएक (का) के करिएक हैं और स्थित दिसमें रिकार करो है। कुंचु, खोचु, बरिकान, एकर, हिंद, हैर क्या अभिने पुत्र सारता पुरिन्तनो स्था पानके प्रतिस्थ 🕻 और परिवर्ग दिवारों हरका निवास है। स्त्रीर, फरवरण्यनिह, पार्वि कारण, चेंका, परवाय, नेपार्वित और प्रतीकारक क्यांची—में सार सार विकार क्षेत्रकों और कुनेके नुस (पारिक) है। इनके रिला सात पार्टी और है को सन्दर्भ दिलाओं निकार करते हैं । वे क्यानुको स्थार करनेकारे हैं । रुपंड करियेक भी पर रिमा कर के ने महारोगी बोर्टी कहते और उनक कार्यन करते हैं। वर्ट, कार्य, कार, पहु, कहाँद, अरच और करिया—ने प्रात पृत्तीको करन करनेकारे है। ये स्कूतक इस कराईने प्राप्ति और mount from which als femalik way पालको है। ने विक-दिन दिवाने विकास को उसी दिवानी और फ्रेंड काके प्राथमें करना रेजी वार्किने । के समूर्ण आहेते प्रकार और क्रोक्स्पाल काले परे हैं। संबं, वेक्सावर्ग, maining, salper, sire, som sår sight geleg-til som aft anna ared, Selfan als Begent Braum &: हर कर व्यक्तिके अधिनिक बहुतने न्यूनि पहले सन्तर genomen alle murbuit freit fie grau uble करोते बहुबादे को, उन्हें और बहुबादे सिद्धि होते हैं।

पूर्वकारों का एक्ट रिजारे पूर्व हाँ थी, उन पेपन्यून पहरण पुरुष कर और पुरुषक कोर्तन करना करिये। किन्तुरि कुर्ववक्रमें कम वेक्त क्राहेद समान परकार विकासकी था. जो इसको पर्यने करता और मुख्ये दीन पुत्र थे, उन वैत्रकेक्षीरप्रकार राज्य पुरस्कारक को कार रोक्स काहिये । इसी ज्ञान जिल्लाको जारिए और करकार और विन्होंने साववुगर्ये विश्वविक् बार्ग्य असुप्तन विका था, वन तपानी एवा र्वकोक्स ची कर-कोर्टन करना चारिने । यस्य कारितमान कार्मी केर और बहरवाओं क्षेत्र समस्त्राचेका शक्षा कार्मिकारे बाराम गरीरक्या जन की लाख करनेकेम है। वे साथै कता अधिको प्रकार केवली, महाम् और और अपनी प्रतिनिक्ती सहानेकारे से । इन समाचा कीर्तन करण काहिने । सुरियोंके अवसरपुर परस्का परकारमध्य कीरोन समूर्य प्रतिनवीके निर्मे महत्त्वम है। जन्मको प्रतिकित सभी और प्रापके समय पन्यक्रीतेनके साथ है उन्तुंक देशको, ऋषियों और क्ष्मानोध्या भी कम हैन्स प्राहिते । में देखार ही प्रमाहती रहा करो, पाने बरसते, अवतर और हवा देते तथा प्रमानी सके करते है। ये है विहोके एक विकास, श्रेष्ट, दक्ष, क्ष्याहील और क्रिकेटिया है। ये प्रक्रमा सम्बोध पाप और प्रवर्धीय सामी

ै इनका जब सेनेवर ये बहुआंके अवस्थात कह करते है। को समेरे उठकर इनके नाम और मुख्येक उद्यान करता है सामने मुख करोंकि भीन जार होते हैं। अधिक स्थ वैकारमंदिर जीतंत करनेते महत्त्वोके कुल्या जा है वाते हैं और ने प्रम कवेंगे पुरुषाय क वाते हैं। वो हैंस अलेक स्थाने समय निकार्तन स्वार हर भीता कर्नना कर करत है, का मानवार, मारावेद, क्रांचीन, मिनेनिया और योग्युटिनो रहित क्रेसा है। क्रेम-स्कारिके प्रश पर्याण हराया पाठ करनेना कानुवा हरे जैनेन हे पाल है। यो अपने पर्यंत्र बीतर पुर कर्नाका पाल करता है. काफे कुरमा कामान होता है। दूररे भीनवी पास कारे स्तर ये इस क्यायरीका यह कका है, उसका कर्न सम्बन्धा प्रमान केला है। यो केनक और ब्याइके प्रमान कर्मुक क्योचा यह करत है, अल्डे इन्लो देवल और कारको नितर सहर्ग जीवार करते हैं। को सहक बहुको म निम्मी प्रवासिने मैठनेपर विदेशने सम्बद्ध राज्यस्थाने कर्मक राम के का पासी-पासक कर करता है, को अन्त विक्रि आर केरी है। पालकेस पर पालेके पाल. विद्याल, राक्ष्म, आप, पानी, इस और सौर साहिते कर मही होता। पाक्री-पाक्रम का करवेकार पूछा करें

कर्ते और भारो काक्योंने क्रान्ति स्वाचित करता है। विस वर्तने अधिकि नामकीका कर होता है वहाँ साग नहीं समसी, काल्योची पुत्र नहीं होते और स्टेंग नहीं ठहरते। से पराकृतकार क्यांकि कुळेला बोर्टर हुओ है, उनके एक् हर के बाते हैं और में बरम पतिकों जात होते हैं। यह विभिन्नो जार कर पहले नेरामासम्बद्ध पद्धा हुआ प्राचीन प्रविकास है। प्राप्ते परावर पुनिष्ठ विका माला करेर है। पूर्वकारों हुनको हरका उन्हेड़ किया गया था, भई पैरे हुनों सुन्यक्त है। अभीवती-क्ष्म स्तर सन्यतन प्रक्रकर है। यह क्रमूर्ण पूर्वेच्या प्रत्य और सम्मानी सुति है। पान, सूर्ण, रहु और पूर्ण नेक्ष्में करना कुर सभी राजा परिता भारती अधिक कार्य-कार्य का कर्त थे। मानी संसाधे क्रमिन्त्रोच्ये पर्व भीते हैं हे बारवाव, भीतव, पूर्व, अहिया, सकि, बार, सरका और बारपति सक्ति पत्र बार्डियोने पान है पान्ती-पानक रोका किया है। पुरुक्त पान रोजेरी क्रमेंब्री पृद्धि होती है। क्रमेंब्रु कुमित्रों नगरवार बारनेसे मीर्व कार है। एक रहतो प्रमान करोगे संसावने निवास प्राप्त होती है और अधिनीकृष्णरेके बाब सेनेहे क्षणी केर नहीं कारण । कार ! इस कारण संभावन इंद्रालय कारणीया महत्त्व की हुने करना है।

# आहाणोंकी महिमाका वर्णन तथा कार्तवीर्य और वायुदेवताका संवाद

मुचिरिते हुल--विद्यास ? संसारवे स्त्रेण स्कृष्ट दृश्य है ? फिल्को नक्कार कत्य कार्युने ? विश्लोह स्त्रम केरस कार्युन करना स्वित है ? तथा केरो स्वेगोंके स्वया विका प्रधानका अस्वतान करनेसे कोई हानि नहीं होती ?

वीनकीरे करा—वृतिहित्त | इक्ष्यानीकी जानकार वैन्याशीको को दुःवाने सार सम्बद्धात्ते, सार: राजाको काहिते हिंद का प्रदारनेको पूजा और उनको नगरकार करे एक प्रदार्थको विकर पुत्रको महित किरान्यका साथि को; काहित हिंद प्रवास है। वे बनका स्वास करके प्रस्ता होते और वालीका संवस रहतो है। वे बनका स्वास करके प्रस्ता होते और वालीका संवस रहतो है। वे बनका स्वास करके प्रस्ता होते और वालीका करका कर और वालके निर्माण और करम काहित है। स्वास उनका कर और वालके उनका काहित कर है। वे बन्धिक वालल, करीड, सुक्रवार्थ, करित प्रवास रहतोगाले, कुल-कार्यक्रस कारी विकार स्वोक्से और वालि सेतृ है। उन्होंका कावत सेवार वाल प्रवासकी प्रवा वीवन वाला करती है। स्वास्त्र ही प्रवास काहित केरेंका, निर्मा स्वास कर यहन करनेकारे और सन्दान है। वे बेक्स, निर्मा

और अधिकारिक कुछ उन्ह इन्य-सम्बद्धे अक्ष्य चीवनके सर्विकारी है। स्थापन सम्बद्धी अनोहर हेरेक्टरे हैं। बेट ही उनका का है। वे क्रम्यक्रमें करता, मेक्कांके प्रशास का बीवांकी न्यीको कार्यकारे और सम्बद्धानसम्बद्धाः विकास कार्यकारे 📳 तमें आहे, कार और अवस्थानक इंग्ल होता है। इसके संस्था हर हें को होते हैं। ये क्रेंब-क्रेंब का चूल-व्यक्तिकों, हाता और प्रस्त भारिको कार्यकाले हैं। एक प्रकारके बन्धनेसे एक और विधान हैं। उनके विकास हम्होना प्रथम नहीं संदर्श । में एक प्रकारके वरिकास स्थान धानोवाले और सम्प्रत पानेके केना है। जाती चाला जो एक है जाए के छाते है। वे चन्त्र और महस्त्री बीबाने, फोजन और उपकरने दक्ष रेहती बच्च और प्रय-क्रमानों समाप पूरि रहते हैं। वे बाई तो बहुत दिनोतक विना भोजन किने क समाने हैं, अपनी इतिहासिको काचे रक्तकर रक्षणान करते हुए प्रार्थनको सुन्ता सम्बन्धे हैं और जो देखता नहीं है सम्बंद्रे देखा। एक इंक्ट्रे हैं। वहि वे ब्हेप्से पर साथे हैं। हेम्बाओको भी हेकाको पह कर समझे हैं; दूसरे-ट्रमरे होस्ड और क्षेत्रकानेकी रचन कर सकते हैं। उन्हें बहुत्वाओंके दायसे

सम्बद्धाः पानी पीने क्षेत्रा वहीं पूर्व । जनकी स्रोत्याक्षित विकास प्राप्त पार्टि पूर्व । ये देवसारकोत्ते की देवसार की प्राप्त पार्टि प्राप्त की प्राप्त है। ये देवसारकोत्ते की स्वाप्त है। पार्टि ।

पुनिवित्ते पूरा—स्कारते । आर प्रीय-सा पार ऐसका और विस्त कर्मक स्था सेक्सर स्थाननेत्री कृत करते हैं ?

कंगनी का—एकर् । इस कियमी कार्यनी अर्थन सीर कर्मन सेवाय प्राणि है प्राणित कर्मन सिवाय प्राणित है प्राणित कर्मने सिवाय प्राणित है प्राणित कर्मने स्थान कर्मने स्थान कर्मने स्थान कर्मने स्थान क्ष्मित कर्मने स्थान क्ष्मित कर्मने स्थान क्ष्मित क्ष्मित



'जनवर् । में युक्तों के इक्तर मुक्तओं है जुल श्री-तिक करन नेते के है नहें यों । स्वयूपिने सभी सैनिकोकों नेते एक इक्तर की पृष्टिकोक्त हो और में उपने परकारकों अनुस्तर क्ष्मा का में असलारदीत होका हान्तर प्रश्निकों कर्नेत अनुस्तर क्ष्मा का में असलारदीत होका हान्तर प्रश्निकों कर्नेत इन्तर करने जान हों भी पूर्व करें। यह क्षमी स्वयूपिक महिलान करके असल-नार्नका असला है तो सन् युक्त मुझे स्वयूप्त सार्वके विको हिन्दा है।'

माने हा जान सर्वत सरवेश वालेशकोने 'त्यास' कार्य प्रति के विषेत्र । या सम्बद्धार विश्व प्रति स्थान कार्य प्रति कार्य के विषेत्र । या सम्बद्धार विश्व प्रति स्थान कार्य प्रति है ?' कार्या या नाम पूर्व होते ही आवास्त्राची हैं – 'तूर्य ! होते कार पार्ट हैं कि स्थान स्थितके भी केंद्र हैं । साम्बद्धार सम्बद्धार है कि स्थान स्थानके भी केंद्र हैं । साम्बद्धार कार्य कार्य हैं ?'

कर्तनीकी सक्त--ये तरात होनेवर क्रांगियोकी सुद्धि सर् क्रमान है और कृतिन होनेक क्रमान कर का सकता है। कर, कार्य अध्या विकास हार भी लहक मुत्रसे हेड नहीं है संबंधे : प्रकृत हरिनोंके आहित सुक्त नीविका सहस्रे है किंदू और कमी अक्रमके आसपी मूर्व पूरा। प्रमान्यास्थ्यम् सर्वे स्थान्योगर् हे अस्तर्यमात है, स्रतियसे ही अक्टनको बीनिका जात होती है, जिए जाइक अधियोंसे केट केने के राजना है ? सामने में तक चीपर मॉगकर पीक्ष-िम्बीह पारनेपाले और अस्मेको सकते केह पारनेपाले **ावान्त्रेको अपने अधीय रशुक्तः। आवश्यामे निवय नावानि** के स्कारनेको व्हरिकोरी होई बदानका है, यह विराम्हर हाई है। कुम्बारम पहलेगारे सभी ब्रह्मण विकास होते हैं, मैं इन समयो और सुन्य । सेनी लोकोने कोई भी देवता या पनुस्त रेख चर्ची है, को चुने रुगरते छन्न कर सके; अतः वै स्वकृत्येने केन्न 🛊 संस्थापे सम्बद्ध अनुस्य 🛊 सम्बद्धे केन्न को को है, बिजू अक्ते में श्रीकीकी प्रकारत साचित कर्मना। संस्थाने कोई भी मेरे बरकारे नहीं सह स्वासा।

च्या सुरुवान अपारिकार्गे निवार हुए वायुरेवताने कार्य — 'कार्यवर्षि ! तु इस कृषित प्रायनाओं स्वाप ने और सक्कार्यों के अध्यय कर । च्या तु इसकी बुराई करेगा तो मेरे रूजार्थ जिल्ला पर स्थापता । स्थापन प्याप्त् अस्तिसार्थी होते हैं, च्या हु उनके करवार्थे व्याप आरोपा से वे तुझे नह बार होने

अध्यक्ष राज्यते बाह्य निकास हेने।' व्या बात सुनका कर्तवीकी पूज-'प्रकृतका ! जल कीन है ?' तकर मिल-'मैं देवताओवा का बाद है और तुन्हें देवकी बाद मना का 🗓।'

सर्वर्वनी वह—राजुंत । हेसे वक क्श्रका आयरे प्रमुख्येके और भीक और अनुस्त्रका परिचय दिया है। अच्चर, आपनी चानवारीने चीर कोई पृच्छे, सापू, कर, माप्ति, पूर्व अवना अल्बासके रुवान के ब्रह्मण है है क्से कालने।

क्यूने का—पूर्व । वै काल्य क्राज्येक करिन मुक्तीका काले करता है, सूल-पूरे पूर्वी, बार और अति शर्मी किन लेगीका जम किना है, जन समग्री अनेका प्रकार होता है। एस बार राजा अनुको साथ स्वर्ण (साम-बाँद) होनेने कारण पृथ्वीकी अधिकारी हेवी शोकसारणका अवरे को (क्लोक) का धीनका कर्ना अभ्यत्र पानी गानी। उंग कार्य विकास पानवाने ही अपनी इतिसी इस स्कूट पृथ्वीको काम एक वर । इसलिये स्कूटन मार्वलीय और सानि को शरोब है। बहुनेको कर है, महामना आदेश गुनि सर्व्या दुववर्ग धर्मि वी वी है। उस क्रमण अर्थ परिने सुरि के नहीं क्रेसे की, कार मीरे-मीरे के पुष्पीया सारा कर यी गये । सत्यक्षात् मित क्यूंनि कारका महान् इतेन बदानार सन्यूनं पृश्विको धर विचा । वे ही अहिता मुनि एक बार मेरे ज्ञार कृतित हो नमें के; उस समय उनके अने इस काम्प्रे आगवार पुत्रे बहुत विमेनक अधिकेवकी अधिमें निवास करता पहा था। व्यक्ति चैकको हुन्छो । अपूर्वकाने पुनः वक्तव असमा विस्ता।

महत्त्वाचा असरक होनेके कारण क्राप दे दिया का केवल वर्गको रक्तके रिज्ये उनके प्राप्त नहीं रिज्ये। समुद्र क्यूने केंद्रे करने पर कुल का, बिंदु सकुलेंके सामरे अस्या करी कार्य है कथा। अधिका रंग काले होनेके सन्दर्भ का, करनेसे कुनी नहीं करता का और उसकी रूट सक्त करत्यों और है कारी भी; बिंदू क्रोपमें परे हुए अंक्रिय प्राप्ति को क्रम है हिन्स, इसलिने अब उसने पूर्वीक पूर्व वहीं पूर्व गर्ने। ऐसी, स्थानि करिस्टी क्रमी रूप हुए कास्तुनेकी, वो प्रात्तवकी अध्यो कीय करते हुए पहले प्रमुखनक साथे थे, पढ़ राजाकी हेरी यहं हां है। इससिये स्थर । तु सहस्येकी समागत कहरी की बर सकत, उसने अपने कायानका उपन कारोबा का बर । एक से गर्भी देश हुए प्राप्तनीको औ अन्यन करते 🖁 । क्षाक्रास्त्रकार विकास प्राप्ताच्य प्राप्ताचीने 🛊 जुरू कर दिया । सरम्बद्ध पानकारे पहुन्द श्रुतिय-नेदावर अनेको महाराज और्पने संदार चार हारण : हुन्हें भी को पर्पन कृति विकास राज्य कर, वर्ग तक अञ्चलकारी प्राप्ति औ है, का विकास सामोजनीयों कुराबत है करा है। शेह प्रकृष्य प्राचेक जीवको सुद्ध करनेकाल और बीक-सामुकी वृद्धी करनेवारम है, इस बसाबो सम्बद्धा भी मू वर्षी मीहरी बंक हुआ है ? कियोंने इस सम्पूर्ण बंदाबर जान्त्वी सुद्धे की है, वे अव्यक्तका अधिनाती प्रकारी बहुतवी की प्रकार

मा सुनवार राज्य स्थातिकोची सूच ही राज्य। तथ

# वायुदेवताके द्वारा कञ्चप, अगस्य, वसिष्ठ, अति और व्यवन पुनिकी महिपाका वर्णन

कर्नुने का---रावर् । पूर्वकारको का है, अप मानवारों एक एकाने इस पृथ्वीको संक्रान्थेके रिजे दान कर देनेका निवार विका, यह कानकर पुर्वाको कहे विका हुई। मा संबर्ध सर्वे—'में सब्दर्ध ज्ञानिकोको करन करनेवाली भीर ज्यानीकी पुत्री हैं। पुत्रे कवन वह बेह क्या वर्ष प्राचनमंत्रों देना पाइत है ? यदि इस्तात ऐसा विकार है से में भी भूभित्तका (श्लेक-धारमका क्याने वर्गका) काम करके इक्कालेकको कर्ष कठेंगी: यहे ही मेरे कारेसे का एक अपने राज्यसदित न्यू हो जान (\* हेस्ट निश्चन करके १३०) बार्ल नवी। महर्षि कहमको का पुन्नीको काले देखा से मेरेनका आसन से तुरंत करना हरीर सान दिया और पुरुषिके इस स्कूट विश्वहर्ग के प्रक्रिक को करे। उनके प्रकेत करनेने पूर्णी पहलेकी अधेका भी समृद्ध के नहीं। सार्गे और कर-कर और अग्रको उनन अधिक करायें होने रुपी। अधिकर वर्ग करने राज्य और करवा भाग हो गया। इस प्रकार विज्ञान BOM भागन श्रामेकाले न्यूर्णि कारका शीस हजार दिया वर्गोतक सम्बद्धाः एक्क्रीके कार्ये विका रहे । सत्यक्षात् पृथ्वी इक्क्रीकारे लैटकर जानी और उन्हें प्रमाय करके उतने अवनेको प्रमात पूरी कर । उन्हेंने पृथ्वीका कर कारण है के पहार सकत् । वे करकारी प्रक्रामधी के, जिल्ला देशर प्रमान देखा गया है। तु करकारों भी सेंद्र किसी इतिकारों जानता हो तो पूछे करा।

इस उच्चर पुरनेका भी राज्य कार्रवीकी कोई प्रवास महीं दिया । यह वायुरेकता वित्र स्थाने हमी—'स्वयन् । अस तु स्थानि अनवस्था स्थानम् सम्म कर। प्राचीन समावने असूर्तेन हेपारोंको परस्य करके उनका काल नह कर शिक । उन्होंने । अपने देखते अन्यवाद ही बका कर दराए । फिर ने बाहापानी हेरतओस प्या, विकोध्य साह क्या मृत्योध्य प्रमान्त्रन संहर कर दिया । एक अपने देखानी पह हुए देखाएकेन पुर्वापर मारे-बारे फिरने हमें । कुसी-कुसी एक दिन क्यें पहार प्रकार पासन पारनेपासे असन्य देवाची अनकार्याचा एवंत हरता। हेम्साओने उन्हें प्रच्यान करके कहा— "बुनिकेंड्र ! कुनकेंने हने पुरुषे प्रकार क्षारा देखाँ कीन क्षेत्र है। जार इस पहलू कानो क्रमारी एका वर्धनिको ।' क्रेस्ताओंने क्रम प्रकार महानेवर केरावी पार्टि अन्यवस्थे क्रिकेट और यह कोन हात । वे असम्बद्धानीन आणि प्रमान अन्तरिक में को । अन्तर प्रतीर्ता रिकरणी हुई सहैत किरानेकी न्यारको कालो करन परत हे-हेकर मानाकरे पुर्वास मिले रहते। वह देवपण हेनी मोब्रोबर परिवार करेंद्र बीवन विकासी और कर गरे । उस प्राप्त राजा वरित प्रश्नीवर आका आयुनेकाल कर यो थे, जाह को देख अनोह राज्य प्राथमित से और जो प्राथमाने पर गये है, से 🕏 क्या होनेसे क्ये । इस अवस अन्यक्ये केवले सर्वकारी faritie and all enters immultion was go good after it spe-अपने-अपने कोवाने यहं। यहं वर्ष । व्यक्तिने । हेरे प्रत्यावानके शासन प्रतिको कथा हैने को प्रताब है, व अनो भी हैव किरारे अविकासे जानात से से बसा (

पा समाप्त भी कहा कर्तनीय केंद्र है पर 1 कर करते पुरः कहन जारन किया—'प्रकृत । तक ह कार कहनी मीता गरिके एक मारा करेबी क्या अपन का । एक तन्त्र केमातकोर्ने पामप्रदेशको सामर मा असमा विकास अस मरोवाचे का जांन्डे एका कावस्त्राहे का ने कुछ को थे. जो 'कारी' नामसे प्रसिद्ध से । उन्होंने देखातारोची का यह करते देखा से उन सकते कर दासनेका कियार किया । किर ते वेचे क्लेपे पश्च किय नवा : बालाबेका व्यक्ति निवाद का और सहायोंने उसके विकास देखीको प्रस्तान हे एका का प्रि इसमें इसकी रजानेसे दुनों नवीन जीवन विशेष्य । अब: उस करण करणोर्धने के काका क्षेत्र के, को कुले करण महत्त्वरोक्तने केंद्र केंद्र केंद्र के अर्थर कार्न कार्य कार्य के भी करते थे: जिर सम्बन्धि जात्वों सी केवन देने जात्वों प्रथा प्रथमे पर्नवर फाँड, परित्र और पृक्ष किने हुए वे केम्प्राओपर व्ह वक्ते हैं। का क्रम्बोची संवक्त का कृत्यांची भी। यह क्योंने देवताओंको सब्बी तथा पेवित विरूप से से मारका उन्हारी प्रस्कार को। इन्हारो भी का फैलेसे विकास हेव बटान पहा, अठ: वे वरित्तुवीकी प्रस्कों नवे । भगवान मनिक्ष बड़े रणाल से १ ट्रेस्ट्राइक्सेस्ट्रे क्ष्मी सामग्रह उन्होंने उसे अध्य-दान है किया और उन सार्थ-सम्बद्धि समझ समझेको

क्री केरणा-कर्नने व्यक्ते हाँ पहुल्कोको करणाहेवाले हे नाने । पहाचीने नहीं जाते हैं। कर करोजरका जीव सेव उत्तर । असी में कोए पायर निकास की साथ नहींने नामते प्रसिद्ध पुरुष । विकासकारका पारते सम्बद्धे सुरुष भारे गये, उसे आक वी 'स्वील' के काले प्रकार करा है। धर सकर महाम्ब चरिक्को प्रकारिक सन्दर्भ देखकाओची रक्ता की और प्रकारकी क्यान करे हर देखेंको की वह कर दिया। यह परिवासीके कार्यक कर्पन किया परा है। कार्यनीये ! यदि प्रात्ते भी का कोर्त करिए से से पाए र

प्राप्तिकाचे का प्रचल च्यानेक की व्यक्तियों असूर्य कुर ही रहा, जब कहते किन बहुर—'राजन् ! अस ह बहुतन अधिके आरोपिक करोबी कथा हुए। एक वार देखा और क्रमोने पुर हमा, जाने राहो पूर्व और पंचारको क्रमोरी करका करना का दिया, इससे करना देश द्वारा का गय और पार्ट पोर अन्यापन का पता। हैतर हो जैकेरेरे पता व white some bounder sportly great spit spit spit ; क प्रकार सहिते जातो सहा हेरेके प्राप्त केव्यानीको प्रमानीत और हो पती और हे प्रमान करवाने संस्था हर विकास नहीं मुख्यि पास पहें। बहु कार अपेरे प्रविद्योग किया प्रत्य करोकरे का प्रवृत्ति का- 'प्रयो । असुरेरे काला और पूर्वको अस्ते स्थानेत कींच कारत है और अन्य चीर सम्बद्धार कुर करेनेहे सहरत कुर भी प्राथमोंके प्राप्ते भी का को है। जो प्रत्य को प्राप्ति को निल्ली, जान कुछ करते इस काले इसरी पता बोरियों है अपने पाल-'में दिया एक आयरोगीको स्था कर्म ?' केवल केले—'जान अनकारको उन्न कानेकाले प्रकृत और पूर्वन्य काम बारव क्रीनिने और उसी प्रकृतिक पात का करिये हैं करते हैंगा बालेश अधिने अक्टर के कार्रकों अनुकार कर करन किया और केन्द्रामाँची और कायावामों देखा। जा समय कावत और पर्वको प्रका पर देवका अस्ति अस्पे स्वकारे प्रकार कारण और प्रमुखे प्रश्तको जनकारकृष एवं जातोतिहा कर विकार क्योंने अपने देवते ही देवताओंके प्रमुखीको परास कर दिया। उन यहन् अपूर्वेश्वी अस्ति वेश्वी क्षा केंद्रे देख केवळाओंने की पर्साटन करते. उन्हें पार करना 1 हवा जन्मर अधिने कुर्वको केमावी प्रशास, केमावर्वेका उद्धार किया और अस्टोको यह कर विका अधिपूर्ति पायतीका का करनेकारे, कुम्बारम पहलेकारे और प्रत्यक्षर करके क्रोफारे केवाचे अक्रम थे। अपूर्व को स्वार्थ मिसरमञ्, जैसा म्हान् कर्म किया, सरसर तू तूदि करा और । आदुनि करकार इसके रिन्ने एक सरका वर्गका सुद्ध सरस बता, उनसे भी शेष्ट कोई बनिय है ?"

यह सुरवार भी कार्राजेची कोई कार नहीं हिया, का कपुरेकत पुरः कहने सने — 'राजन् । अन बहुतक ब्यवनके बिने हर पहार कर्मका शयन कर । कृतिकालो कारन सुनिने अभिनोक्तमारीको स्तेय-यान करानेको प्रतिक करके हुन्हो क्या-'देवरक । आर केंग्रे अधिकेक्यरेको देवस्थाके साथ सोम-वार्ग स्वीयतिक कर लेकिने।'

हत्र केले-विकार । अधिनीयासर क्रमनेगोर्वे विका मानै गये हैं, फिर के होम-वानके अधिकारों की हो सबके 🕯 ? में केवलाओंके सम्बानका नहीं है, अत: उनके विन्ने पत सर्वाची पार न परिवर्ष । इसलेल अधिनीकृत्यरोके स्थाप सोम-बार करना नहीं चलते । इसके दिल्ला और विका प्रान्तेह रियो अल्ला हेरे, उसे में वर्ण करीना।

मान्ये का-देवता । अधिनेतृता वी कृति कु होनेके कारण केवता है हैं। अब: वे आव तक लोगोंके सक कोम-नामके अन्यस्य अधिकारो है। एक देवता नेरी कक पान 🕸, देख करनेने 🗗 अन्यक्षेत्रीकी च्याची 🏂 अन्यक्ष प्राप्त परिजाम अस्तर म होता।

PR मेरे—देखोड़ | में से अधिनेकुमरेड कर सीय-पान नहीं सहीता ।

कारणे का -- हम् । जोई हुए जोकी प्रयु केरी बार की बारोगे से बढ़ने तुम्बय अधिकार पूर्व करके में बर्बासी क्रमेंद्र साथ पूर्वे सोय-पान कार्यान्य।

अवन्तर, काम गृजि अधिनीक्षणांकि प्रेरके प्रेरके क्रिकेट बार्का आरम्प किया। यह देखका हुन क्रोपके मुर्चित हो रहे और हामने एक निवास कांत हथा वह रेस्के इत् पुनियों ओर केंद्रे । कर समय अध्यो आहे स्केपले स्वाप है की थीं। व्यक्तकरी कराने हताई सके उस आहरण करों देश अने अस प्रतीका एक बीठ करन और यह सका वर्गतसम्बद्धाः क्या विद्याः विद्याः अधिने

बिल्य, निरम्बर नाम पर्य था। यह पुँह फैरमधे स्वयू है गया। जनकी क्रेड्रोब्स बान कर्मको संद्र हुआ था और संगरकरण होता अध्यक्षक कु जान की 1 अलके हैंहुको जीवर एक इकार और ते, को सी-मी फेक्स केवे विकासी केने से एका असकी क्लंबर को हो-हो सी कोवल संबंधी थीं। उस समय इन्ह्रसहित क्रमण केवल करवी निकामी महते का गर्ने: फिर से माने पुराने को हुए केम्प्राओर आयरको प्रत्यह करके हुन्हते पक्र-चेवरात । अन्य विकास प्रकारको प्रधान कृतिनो (इसरे विनोध करक अध्या नहीं है) । इन्होंन् वि:संबोध क्रेकर अधिकेकुमारिक साथ स्रोत-यान सर्रेगे।' यह सुरक्तर इसने पहलूने कामनोर करनोते प्रणान विद्या और इनकी नका क्षेत्रक कर की। किर क्ष्यको अविनीक्षयरोको वेक्काओंके साथ जेल-सरका चारी कराया और अपना बढ़ा समाप्त कर किया। प्रत्येत साथ अनुत्रेत सूचा, विकास, पक्ष-पान और निज्योंने प्यापी और दिया । इन दोनोंने आसरह हर क्युन्मेक अवस्य है यात है बात है, अर. हरका दूरने है कर कर देश कहिने। स्टब्स्ट व्या की सुक्षी प्यानकृतिके पहुन्त् कर्मका कर्मन विका है। करा, इससे औ separately when \$ 7

केंग्स करे हैं-विदेश ! अने अलो इस प्रकार अञ्चलकेका कारत कारतका से सर्वाचीने अर्जुनने सन्दे रक्नोची उर्जन करने इस उच्चर कर दिया—'प्रधे । वै ताव अकारने और ताव प्रावृत्योंके के रिन्ते पीचन बारन कार है, इस्लेक यह है और इतिहर इस्लोको अन्यान करका है। विकास इसकेवजीकी कुमारी पूर्व पह बहर, रका प्रवेशी और सक्द वर्गको आहि हो है। बायुरेश । जापने पूराने प्रमानोधे अञ्चल क्षमीक प्रयोग किया है और All som but at made more flow \$1"

क्यो क्य-राज्य ! इ अधिव-वर्गव सनुसार (महत्त्वेकी रहा और इत्रिक्षेक्र निषद कर )

#### भीषजीके द्वारा भगवान् श्रीकृष्णकी महिमाका वर्णन

कुषिकेरने पूर्वन-विकासक ! जान स्थीन-स्था कराय | अक्रमेंने । आत्म येदा करू, मेरे कुछन, मेरी काली, बेदा पन और देसका जाम जाना जामान करनेकरे उद्यानीकी स्था एक करते हैं ?

बीकुमा अञ्चलको पूजले हेनेवाहे स्थपका अवह अनुपत कर चुके है। अब: ये हो हुनते इस विकासी सारी करें

की केवों के किकिए-से हो रहे हैं तथा मेरा जान भी किन्नह हो एक है। जान बहुत है अब बेच बारेन कुटनेने असिक्ट मोनकी कर-पुनिहिर ! ने व्यक्तकारी भगवान् | विकास नहीं है। पुरुकोरे को प्रकार, शरील, सैर्फ और क्रुप्रेंके वर्ण बरुताने यमे है तथा सब वर्णके श्लेष क्रिक-विद्य वर्षकी उपलब्ध करते हैं, कह तक की तुनों सुन दिया बीकामसे सीकान । इस सीकानाता को कामर है और के इसका परायन करा है, उसे डोव्ह-डीवा में जनका है। जनका, श्रीकृत्या अक्षावेग है, असः तुम्हारे बनमें संबंध होनेवर वे ही तुम्हें बर्मका उन्हेल करेंने । बीक्रमाने क्षेत्रक कुनते, अस्ताव और कार्गबंधे रहि औ है। ये ही परंबर बरावको स्थापक राजने प्रकट पूर् के तथा पूर्वी पूराव्यक्तने वर्गको और विकासीको अलब विका है। अन्तरिश्व,वर्ण, वर्ण विकार और वर्ण कोम-ने का सरकार बीक्रमणे नेते हैं। इसीने इस सहित्री परमण प्रवरिक हा है एक उन्होंने है इस अधीन विकास निर्माण किया है। सुद्धिक आरम्पने प्रमाने सर्विको क्रमा अन्य क्षत्र और अभिक्र नीतर अभिन्न नेपानी ब्रह्मानी प्रसार प्रकार पूर् । प्राप्ति ही प्राप्तीन स्थानने हैंन्सेन्स संप्राप्त विका और ये हैं कि नाम परिने काने अबट हो। सनक प्राणिकोची अचीर प्रयोगे हुई है। युद्ध और चरित्र प्रयान है कार्य है और वे है सन्दर्भ कार्य है। का बार्गका प्राप्त केने राजात है, का प्रत्य में क्रीकान केव्याओं सका महत्वोंके नंताने अवसार रेग्बर कर्न कर्नका सम्बन्ध कर्म क्ष्म अल्पा और पर-अल्प-मार सेप्टेंग्से रक्षा करते हैं। कुशीनका । ये साम्य क्याबा साथ समोद क्रमुरीका कर कार्नके देन्ने इन्हें कारण करते हैं। कार्न और कारण प्रवृक्ति कारण है। विकासमं, विकास, विकासका, Regferier auf: freefreiter ift it dit i it di mu mob क्रिकुर और दूसरे क्राफ्ने रकते पद क्राफ्ट रेजो हर निकास का बारण वाले हैं। अपने नाम प्रवासी परियोगे बन्धार्थ रिएमा हर हर संकृत्यको है पर रोग हुने करते है। र्रेक्ट्रो गर्म्बर,अन्तर्ग एक देवत स्व इनकी रेकने कारियत रहते हैं। राह्मस भी हमसे सम्पर्ध दिन्स करते हैं। क्ष्मपत ने हैं। बन्धे रहण और निवनिवर्ध है। कार्ये क्षेत्रालोग इस्टीकी स्त्री करते है। सामान करनेवाने विक्रम् रेक्यर सम्बद्धे ह्रारा हुनीया मूल-पर साथे है। बेदनेता ब्रह्मण बेदके क्योंने इच्हेंबर क्यन करते हैं और अध्यक्तिम पहले ह्याँको इतिस्था पान की है। दश्के, काकाइ और सर्गलेख १३६ इन इंगासन कुल कीवानके बारने पारे हैं. ये ही सर्वत विवादनेवाले बाद है, सर्ववारक है और प्रमुख किरणोंने सुसोचित आदित पूर्व है। इस्टेने है सबस अस्टेन विकास वाले है तथा प्रयोगे ही अन्ते वीन क्नोंसे होनों ह्वेच्डोंको सन्द क्रिक्त पर । वे अध्यक्त सन्दर्ग रेक्सओ, रिलरी और यसकोंद्रे जावर है। इसीयो सहित्य पुरुषेका यह कहा करा है। वे हो हैन और उत्तक

है। जब को पुरू कर्या के गया है जाको मनकर् | नियान करते हर क्लंबनने जीव होते हैं। अध्ययक और ही, कार प्रस्के के वर्ग है। ये प्रक्रेय चारने यह करते हैं और केटर स्थान इसकि एक पते हैं। ये पहलेकार्य और तमंत्र कहा क्रोको सेक्टब अंधेरी है शक्त क्रमको क्षरण करते हैं । सुनिक्षर ! इस इसीको अञ्चलकारक सुने इन्यो । वे पहन्यपूर्णके केन हैं। इन्हेंने हे आवतन, कर्ती, कर्न, अच्चीक, यह और वर्गतेकी पृष्टि की है। मे प्रतिकृति विकास और अस्तर प्रतिकी स्थित स्थान क्षेत्रक है। यह यह बहार विशेष्ट्र प्रत्येकी स्वारी पुरुष अक्राओं से स्वयंत्र हार्योगी सुनि की बारी है। हर अंक्रमादे किया पूरण कोई ऐसा नहीं है, को महत्तेमानी कांकाको अपने पानी राहुए करेता क्रमाने ही अहिनीय प्रकार क्रांत कार्य है। ये निवर्ण स्थापना है और असी कारको है अनेको पहलेको सरक करते छो है। ये hampilik ham gest ell debut meter aft mele विकास कार करे हैं। स्टेनिक और वेरिक करीब के कार है, यह कर अंकृत्य है है र ने है सन्दर्ग रहेकोची पत क्षेत्रि है कहा की होन्द्र, की होन्याल, विकेश अधि, क्षेत्रे मार्काण और समार्थ केवर भी ने केवर्यन्तर क्षेत्रमा है है। संस्थार, बहु, यह, हैल-पार, परण, परहा, का, भूते, एक और अन-प्रम प्राची केंद्राणक है काम प्राप्ते । काम, सूर्व, बहु, बहुव, करा, अन्तराह्मी, क्षेत्रेया, प्रश्नात, पोण अंदि प्रश्ना-प्रण प्रत्येची प्राप्ति alarmit & al \$1 to, anthre, up, arferferen, कार्या, विशेषेत्र, कार्युचन, प्रयानीत, हेम्पाया सरिति और कार्ति को ओकुम्मको हो समाद हुए है। के विकास औकुम्म है कर्पण बस्त करते संस्ताची देश प्रत्य करते. अभिका क्रेका सकते पर कार्य, करका का करणहर क्याची हमते और उद्धा हेका संपूर्ण निवासी हुए पासे है। वे सर्व वेक्साएर क्षेत्रा की वेक्स राजके बल्लीक प्रका करते हैं : विशेषका होका भी विदेश क्रमीका अवस्थ होने हैं । ये ही वर्ष, बेद और महत्त्वो विकास करनेवारे हैं । हुन कार करक कार्य मेक्स है समा प्रमुखे। वे कान म्बोडिनेन सुर्वका कुछ काल करके पूर्व दिवाने प्रथ2 होते हैं, जिल्ला प्रत्यको सन्दर्भ किए आस्पेतिक हो उठता है। वे सबस प्रतिन्त्रोची स्वतिनेत स्थल हैं। इन्होंने कृतिस्त्राने चाने करवारे सुद्धि करके फिर सम्पूर्ण कारहको स्थान विस्त थ । यह, नाम प्रकारके जनात, जनेको अरुपुत परार्थ, केंग, विकास, देखका और सम्बूर्ण पराचर सम्बद्धी इन्होंसे अवति हो है। इन्हेंको समझ क्याहर अस्ता—रिम्बु सम्बंधे । ये विकास सम्बद्धस्थान और निर्मुल है । इस्तीको मासुरेल, संकर्मण, अध्या और अधिकता कहारे हैं। ये अस्मायोन परमास्ता समग्री असमी अञ्चाद अधीन स्वती हैं। इन्होंने हैं इस विकास अस्मा किन्स है और ये ही आस्मायिको समग्री जीवन अद्भान करते हैं। येवता, असूर, अनुन्ध, लोक, आदि, निर्माद, जना और सम्बूर्ण प्रतीको सुद्धि क्या करान करते निरमा है। ये ही एक समूर्ण प्रतीको सुद्धि क्या करान करते हैं। सुन्ध-अनुन्य और कामर-अनुन्धन यह आन्य कमार जीवानको ही अपना हुआ है। चून, प्रतिका और सर्वकार कमा

स्वकृत क्रीकृत्य है जुल्लूस वर उसे हैं। वे क्ष्मीत स्तास रक्षक हैं। जो का जीव कुटी है तक क्रिक्स सभी पता नहीं है, वर उसके क्ष्मित सीकृत्य है हैं। तीनों सोक्षियें को कुट है का रक्ष सीकृत्यका है कारण है। सीकृत्यत परिसद देश है। अववाद सीकृत्यकों ऐसी है प्रतिया है, वरिक के इससे वी अविक अध्यानकारी है। वे काय पूरत परस्क और विकासकी है। वे है स्वाबर-बहुमका बगाएंड आहे, सक जोर अब है। संस्ताने क्या सेन्साने अधिकांड कारण वी वे ही है। इसकि अधिकांडी प्रसासन कहते हैं।

## श्रीकृष्णके द्वारा अव्हाणोंकी महिमा तथा भगवान् संकरके माहात्यका वर्णन

वृध्यितं पूरा—मधुत्ताः । स्थानस्यो पूर्ण कानेतं स्था पता निराम है ? प्रत्या शता है वर्ततः क्षेत्रिते; स्वीति जार प्रत निरमको अपने स्था काने हैं और जिल्ला को अल्लो प्रत निरमका प्रता काने हैं।

क्षेत्रको क्य-राज्य । मैं साहरतेके पूर्णका वकार्यकाने कांग काता 🖔 जान ब्यान केवर शुनिने । एक दिलको नाम है, जाहालॉने मेरे पुत प्रश्लाको सुनिक सर दिखा मा । जर नक नै प्रत्याने ही या । प्रदाने गुरुते २०६१ पुल--'जिलकी ! इस्कृतीकी पूजा सरकेरे कथा पहल होता है ? में इस सोव्य और परसंख्यों भी वची ईक्ट पाने पाने है ? इस विकार यूने बड़ा संनेत है। अर: अन्य इसका स्थानको वर्णन करियो।' अञ्चलके देख सक्रोवर की काको जो जार दिया, को जार क्यानवित क्षेत्रर सुनिते ( भी स्था—'जीवलीक्स । इस्कोर्ड एक क्सा है, इसमिने वे इक्सेक और मस्त्रेक्से की सुक्त-दुःस देने समर्थ हेने है। जानजॉर्ने काम कामती जानका होती है. जामें तरिक थी अन्यक्ष विचार करनेकी आवश्यकक नहीं है। उन्हान्त्रेकी पुजरो राज्य, कोर्सि, यह और कारकी करि होती है। सम्पूर्ण लोखा और लोकेवर प्राधानोकी कुछ सकते हैं। वर्ण, अर्थ और पारस्की सिर्देशके तिले, जोक्की आहेले रिन्दे और पछ, सक्ती तथा आहेत्यकी उनक्तिकोड रिन्दे क्रां देवता और निवरंकी मूचके समय सामग्रेको संसूह करना इम्मदेशोंके दिन्ने बहुत आन्तरका है, ऐसी बहुत्ये में उनका भारत क्यों न करें ? अक्टूब इस लोक तथा पलकेकरें के महान् यमे को है। वे सब कुछ अच्छा हेसले हैं। यह क्रोकी पर करने से वे इस करवाओं परत कर सकते हैं. साले-कारे सोक और सोक्यालोकी स्त्रीह कर सकते हैं; क्रार देवाती

पुरूष अञ्चलको अञ्चल छन्। एक सामग्रह भी उनके पुरुष स्थानिक को व कोचे ?"

क्या । इस अवार अञ्चले पुल्लेस की को जान व्याप्तक व्याप्तक प्राप्तक था, अतः अस्य भी द्वारा गीर्ट कार भेरकर और क्या अकरके क्ष्म केवर स्थान र्वाच्यानको अञ्चलीको एक करते हो। भीकातीने तेरे freed at the same t, we see that the same th प्रकार प्रेकरक महत्त्व काल का है, जार जान हैशर क्षांचे । विकार पूजा स्कारेनकोची अति, स्थापु, स्केबर, क्लाक, जन्मक, विकास और किय आहे अनेको समोके कुराओं है। बेहरे उनके से सरका सकते गरे हैं, दिनों नेक्नेस प्रकृत करते हैं। उनका पूरा करना से केंद्र हैं और कुरूप किया है। इस क्षेत्रकेंद्र भी अनेकों केंद्र है। इसकी को क्षेत्र नहीं है. यह तथ उपसानेकारों है। आके अहि, विकृत और वर्ग आहे अनेको कर हैं। इससे विक्र को हिना भूगवासी कृषि है. का काम कान्य को स्थानकारों है। उसके वर्ग, सहर और पहल आदि कई का है। महत्तेवनीके अन्ते सरीतको अपि और आयेको स्रोप (कारण) कालो हैं। काको विज्यों अक्टबंक पास्त्र करते हैं और से अस्पत्र घेर की है, का बनाइक संक्रा करते है। उसमें सामा और विकास क्षेत्रेके कारण से महेकर सहस्रतो हैं। के समस्ये हमा करनेकरे, अवस्त रीवक, उस और प्रताये हैं, इसीसे उने सा करते हैं में देवकाओं के कहतू हैं और इस पहान् किहकी रहा क्यो है, इस्तिने महत्त्व बहुतने हैं। सब प्रकारके कर्मेक्ट सब सब खेबोको काठि करते और सबक करकार काले हैं, इस कारण उनका नाथ दिला है। वे सर्व्या-व्यानने विका क्षेत्रर रेक्टमरिनोके क्राजीका बाह्य करते हैं और

सदा विवर खते हैं, इस कारण उन्हें स्वयन बच्चे के पन है। पूछ, । परित्य और वर्तमान काराने स्वाचन और बहायोंके साकारने करके अनेकों कर प्रकट केते हैं, इस्टीओं ने ब्यूक्त बहराती है। कार्ने सन्दर्भ केवताओंका निकास है, इससे उनकी रिकार पक्षों है। उसके देशने देश प्रमाट क्षेत्र है और उसके मेर्बोक्त राज नहीं है, इस्तीको के स्कूताधा, स्वयंत्रका और सर्वतेऽक्षिपन बक्तारे है। वे स्व प्रवास्ते नवजीक करन करते हैं और अन्ते साथ स्त्रोंने एक चन्ते हैं तथा पहलोचे स्रोतिकोर्त है, इस्रोतिके प्रशंका प्रशंक प्रमुखी है। प्रमुख पार्ट इक्कार्यकर परस्य करते हुए प्रतिवेश निवर दिलाविकाओं पूका करता है से इससे पहला इंकरको को उसका होते है और ये संद्र्य क्रेकर अपने महानेको सूत्रा के है। प्रमानन् इंबर है ऑफिन्स् इनके रूप करते हुए स्वकारपूर्णने रिकार करने हैं। जो सोच कई अन्यो एक करने हैं, उने बीरोको प्राप्त क्षेत्रेकाले स्थल क्षेत्र मिलके हैं। के प्राप्तिकेट इस्तिमें युनेवाले और अन्त्री मृत्यूच्य है तथा ने है जन्म, स्थान जाहि वायुक्ते क्रांको है। बीतर निवास करते हैं। क्रमंद्र अनेको प्रकंतर एवं जोत्र कर है, किनकी जनस्वे पूजा

हेती है। निक्रम् प्रकृत हो रन सब करोंके बानते है। उनकी कार, व्यवस्था क्या दिन कर्मीक सनुसार देखाओंने उनके बहुत-के कवार्य कर अवस्थित है। केवके कारकीय-अक्टरपाने उनके संबद्धों काम जान है, जिन्हें केंग्रेश: अक्टर करों है। कहीं सकते की उत्तर साम विक है। वे प्रकर्ष सोबोंको सबीह कहा प्रक्रा करते हैं। या पहार निव जीवा साम प्राप्त गया है। तहान और सरि औ पाली जोड़ बढ़ते हैं। वे बेन्सकोंने प्रधान है। उन्होंने उत्पन कुराते जातिको जनस किया है। वे नान्त प्रकारकी **या-काराओं प्रथा अधिकोची दुरवारी प्रध्यमा दिल्ली है।** पुरुवास्य और करणअञ्चलका से से इसने है कि करणने अने पूर्व विक्रों भी अनीवा काय नहीं करते। में ही प्रकृतीको आह. आदेख, ऐक्वं, यह और समूर्य कावनाई प्रदान करने और में से पूरः को बीन रेते हैं। इस आदि हेक्काओंट पास अहींका दिया हुआ हैकर्न है। सैनों स्वेचीकें कुम्बद्धनका अन्त्री सक् हो हो। यहाँ है। समझ व्यानकारोंक कार्याचन होनेके कारण कर्षे ईवर पहले हैं और नक्षण सोव्योके होतर क्षेत्रेके करना पान महेवर हुना है।

#### धर्मके विषयमें आगम-प्रमाणकी श्रेष्ठता, धर्म-अधर्मके फल, सजन-तुर्वनोंके लक्षण और विज्ञानारका वर्णन

दैशन्यकार्य आहे हैं—कानेका | देक्यांच्याः वनवान् सीकृत्यका करोग्र समाप्त हेनेस पुनिवित्ते देशसमुक्याः मीकारं पुन-का विका—'निकास्त | कार्निक विकासः निर्वतं करनेके सिन्ते प्रत्यक्त प्रभावतं अवका लेखाः वाहिते वा आरक्ताः ? इन हेनोते विकासे वाकारिक निर्वतं हो सकता है ?'

वीनावीने वहर-नेटर ! हुम्मे हीवा जब विक्ता है, इसमा जार हैता है, सुनो-नार्थिक विकास सेवेड होना सहज है, जिलू उसका निर्माय करना कहा करिश होता है। प्रत्यक्ष और आगम क्षेत्रोदीका जोई अन्य नहीं है। क्षेत्रोपे हैं एक्टि सन्ने होते हैं। अवनेको मुख्यितन् सम्बानेकाले हेतुकाई रार्थिक प्रत्यक्ष कारणकी ओर ही दृष्टि रक्तकर करेड़ कर्युका अध्यक प्रान्ते हैं, साथ होनेपर की असके अस्तिकाने संदित्त करते हैं। किनु से कारका है, अध्यक्षका अपनेको क्षेत्रक सन्ते हैं। अतः उसका पूर्णोक निक्षण क्यांचि कुकिसंका नहीं है। (आराज्यों नीरिंगा प्रत्यक्ष दिसानी देनेपर भी मह

निवस है है, उसा केवल प्रत्यक्रके करने संस्था निर्मय जी किया का सम्बद्ध । कर्न, हंगर और परानंक आदिके किया के सम्बद्ध हो क्षेत्र के प्रत्यक्ष आदिके क्षेत्र के सम्बद्ध के क्षेत्र है। क्षेत्रिक अन्य क्ष्यक्षिक क्ष्यक्ष व्यक्ति है। व्यक्ति अन्य क्ष्यक्ष क्ष्य क्ष्यक्ष क्ष्य है ? तो इसका कार यह है— 'तुन आस्त्र क्षेत्रका क्षेत्रकार ही क्ष्यक्ष कार यह है— 'तुन आस्त्रका क्षेत्रका स्वक्ष्यकार करनेके दिन्ते निर्मार अवस्थित क्ष्ये और क्ष्यक्षा स्वक्ष्यकार करनेके दिन्ते निर्मार अवस्थित क्ष्ये क्ष्यक जी है। वस सारे तमे सम्बद्ध है। वस्त्र क्ष्यक है। इसके विश्व क्ष्यक क्ष्यक क्ष्यक क्ष्यक क्ष्यक है। वस सारे तमे सम्बद्ध है सम्बद्ध करनेके क्ष्यक क्ष्यक क्ष्यक क्ष्यक क्ष्यक क्ष्यक है। वस सारे तमे क्ष्यक हो सम्बद्ध क्ष्यक क्ष्यक क्ष्यक क्ष्यक है। वस सारे तमे क्ष्यक क

कृषिक्षिते पूळ-विकास ! प्रतक्ष, अनुसान, जानम और पॉलि-पॉलिके जिल्लाहर—में सहार-में प्रधान कारणा होते हैं। इनमें कीयन्त्र प्रथम है? यह स्वानेकी कुछ [ mitalist s

मेंगवी का-नेट ! का संस्थात् पुरू बुरुवार्षे हैकर करेंच्ये हाने पहुँचले रूपते हैं से सामान्य प्रमुखेंदे इस अल्बी स्थान का हेनेस में इनकहार कार्रे मिकति का ही साथी है। किन के कार-कुछते करे हर कुएँको प्रदा अवर्ग है कांक केल जुलक करने अक है। इसमें रूपान्यका द्वारा होने स्थात है और अस्थानीय क्ष्मेर्क तथा चेतु-प्राचीका तथन क्ष्मेरको प्रमुद्धी पुरस करेबी मर्गात के करने राज्ये है। इस स्वत्याने करेंद्र marie flowed may till the first fluther the संस्कृतको दिन्ने दिल सम्बन्धि युक्ते हो, विन्त्री युद्धि राज्य-स्थानको है शेष्ट्र कार्यों हो, को सह संद्वा को स्था र्शेष-चेत्रस अन्तरम कर्तको क्रां और कामध्ये जेवा संबंध करेंग्रे है उसन सन्याने हो, देशे बहरू पुरस्केंग्र पास मानद पूर्वे उस करन काहिने। १० अंग्रेके सहस्तद, यह और माध्यान आहे पून वार्वींड अञ्चलने वान्ते कोई अन्तर भी महा। उसी अन्तर, सामो कालेको बेह्नाहर सभा वर्ग-पुर संगोधी कुमत होती है।

प्रविदेशों पुरू-विकास । येथे पुरित पुरू संस्कृत अन्तर सम्बन्धे का पाँ है। में प्रत्येत का काम कहता है, विक वैक्टेपर की मोर्च कुछ-विकास भूति विकासी देता र पार्ट अलग, अलग और विद्यापार-पे तीचे है अपन है से इसकी के प्रकार-प्रकार उसकीय के रही है और कई एक है. रिक्ट में जीनी कैसे वर्ण हो प्रधाने है ?

क्यांने का— एकर् । वर्षे कृत प्रकार-नेक्रो क्वोंको त्रीन प्रकारका कानो हो के कुछार विकार कीय नहीं है। यह निवास प्रस्कृत कि अने एक हो है। कीने उपलब्धेत हार एक है क्ष्मेंक कार होता है। में पर की करना कि में तीनों प्रथम फिल-पित करेबर प्रतिमाल करते हैं। उस तीनों प्रमाणीके क्षत्र को क्षतंत्रक पूर्ण कुलाव्य प्रकार है. क्रांचर पारचे रहे । संबंधन स्थाप रोक्स वर्गको विकास कान कार्यंत स्थित नहीं है। मेरी कार्यं स्थित की सीह न करे। संगों और गुंधोबी एक विश्वत होकर, में सेक को काने अनुसर अध्यस्य करें। सम्बद्धको । अधिक, साथ क्रोक्स अन्तर और कर—ने चर क्रका को है, इसक पक्त ही सेवन करे । सुक्षते नियत-विकास साहिते प्रसान्त्रेके साथ पैरम साथि किया है, उत्तेवत कुम वी अनुसरम करे; क्योंकि प्रकृत करित करोड़क है। से करून प्रकृतकों से

नों करन करेंगे; क्लेंबि का केवल विवाद करनेताल है। कुर अञ्चलीका है किलेप अस्त-सम्बद्ध करके करके केवलें रहते को और का कर से कि में समूत्री सेक ज्ञाननेके ही आवारकर क्रिके हर है।

वृष्टिक्ते कृष्ट-विकास । से प्रमुख वर्षकी निक् क्यों है और यो वर्गका सम्बन्ध करते है, से किए लोकोंने को है ? जान इस निरम्बाह सर्वन प्रदेशिये :

नोन्हरीने सहा-भूतिहार है को समुख्य एकोनुबा और क्येनुकारे किय गरील होनेके बारण कांते हेड बारो है, के नकने पढ़ा है तक के यह सरस्त्र और सरकारकों तक होकर कर्पक करन करते हैं, से पहल हर्पातेकक कुछ केम्बे हैं। अध्यानी केम करोड़े किहे एकमा वर्धक है मानव पान है क्या को प्राप्त करेंगे विश्वत पूर्व है, से ईसावेदाने करें है। जाना हो क देखा, को सरीतके बहु देखा की वर्णकरको समे पूर्व है कहा होता और देशका प्रस्त कर हैते. है. जो प्रकार करें। हेते हैं। बरोबो पुष्ट बरोबो हे महानीना जेव कु सहरे हैं। येते क्रानेवालेक का कर हर चानके अधिक पर्धा करता है, जोई प्रधार करिया पूजा वर्षको हो उपलब्ध करते है।

रुपियों पूछ—रिकामा ! साथ पूरूप स्टीप-डे सहस करते हैं ? क्या करना और कृति करून की होते हैं ?

क्रेमपीरे सक्त-क्रियोर । धूर्वन पुरुष पुरुषारी, युवेर (काम) और पूर्वप (बहु क्यान केलनेवाले) होते हैं तथा कारण करून पुत्रीक पूजा करते हैं। अब विद्यासकी पार्ट कुने । वर्णाना पुरूष सङ्ग्रामन, भीजीके बीचने एका अन्तवादी वेरीकर कर-पुरस्का स्थान नहीं सालो । सामुख्य देखता, विका, कु (कर्म), स्त्रीति और कुट्टमी—इन मीडोक्ट्रो स्रोतन वेकर क्षेत्र असला कर्ष आक्षा करते हैं, चोकर करते क्षत कारणीय नहीं करते तथा जीने क्रम हैंको क्रमण नहीं करते हैं। वो स्वेप अति, कृषण, केम्बा, चोसारत, स्वापन, क्वरिंक और कड़ पुरुषेकी स्वीकृष्य करते हैं, को को-क्वों, बोहारों कह वारो कृत कनुवारी अर्थन विकारिको कथा अनेवडी नांगोळ अर्थकारी, **व्यक्ति, जो और राजाको स्वयनेने असे देशकार वानेके रिजे** कर्ष के हैं, का कारणे कहा कुछ सम्बद्धान वाहिये । प्रस्तुतन को पादिन कि का एक अधिकियों, सेक्कों, कारने तथा प्रतान व्यक्तिको मनुष्योकी प्राप्तानुबंध रहा को। वेक्सानोने वक्तोंके दिनों साने और एक्काल हो है प्रयुव धीवर करोबर विकार किया है, बीकों क्षेत्रर करवेबी रिक्षे की हेर्न्ड सार्थ । इस विकासक पासन चरनेके इरकासका ही कार अञ्चल कराता है, वह अवस्थि है । सम्बर्ध करावों अवस्थित | होता है । यो पुरूष बहुदशरकों अधिरित सम्बर्धे सीचे स्वय

स्थानम् वर्षे कर्ता, असे इत स्थानका है पाल हेण | है। जपूर, सहाम और में—में कीने एक समान है, अर: भी और अञ्चलीका राह्य विकित्तीक पूजन करना व्यक्ति । मन्त्र कोछरे हे य पर्वक्रमें, बी, उसके पास कोई अधिक भा पान से को पूजा न रहते है। कुने विक स्वयंक्र तिले अक्षा है है, जो एत करके को स्थित कर देश कहिने : कुरके जानेपर जो अभाग को और उसकी विकास कुछ बारों बैटनेके रिन्ने सारान है। मुख्यी मूळ बननेसे आहु, क्या और एक्टी—इन सम्बद्ध गृहित होती है। यह पुरुषेका कृषी सकात न करे, उन्हें कोई काम करनेंडे हिंगे र पेने क्षक्र की कुछ पूर्वन करें हो से कर्न की केन न के, देख बारनेसे जनुष्यको अल् श्रीम नहीं होती। क्षेत्री सी और की पुरुषेके कार हुष्टि न करें। नेवृत और चेका—ने केने कार्य साथ स्थानक स्थानमें के बारे । सेमंत्रि पूर्व के सानते मेह होर्च है, परित क्युओर इस ही शरिक क्षेत्र है, प्राचेत कार्यक्रमा हात हानते थेड् है और संतीत सामी राजा सुक है। सार्वकार और प्रशःसामने कुद्र पुरुवेको को सुन्ते प्राप्तिये। को प्रत्य को-क्योंकी केवले रूप श्राप्त है की बार्कीय जान करा होता है। कारणा और मोनानो साम क्षांना प्राप्त सहस्य पाहेले एक पर, क्षांनी और इन्हिलेको क्रम अंको अर्थन प्रकार पातिने। अर्थ कंत्री कर्तने हुए और, हुएगा, रिल्मडी और प्रीत्न अलेके हुए bontet von fertige appearing were until t नवाकोची एक करने वाहेने। के और क्या करना कृतन स्कूत-कृतक कृतका स्थापन करता, वीक्रोक्योको (भर्त और आहे स्थान) अवस्थित हेल एक केनला पुरुषेका प्राप्त क्षेत्रीय क्षेत्री कृत करून कर्य हरू सेन्द्र करे।

अधिकारम करन व्यक्ति ।

चरिक्तित ! हम ब्लो-से-बर्द संबदमें पहलेका की किसी केंद्र पुरुषेद्र प्रति 'कृत'का प्रयोग न करना । निक्रमोंके रिजे कुल प्रकारत प्रकारत अवका करवा यह क्षरत स्थानमा है कार पता है। को अधने कामनों हो, अपनेते होटे हो अवक दिन्य हो, काको 'तुम' कहनेने कोई हर्व नहीं है। पान करनेवाले पुरुषक हुए। ही काले करको अबह कर देश है। कुरावारी पहुंचा वाल-बुरावार किये हुए बारको भी सुरारेशे क्रिक्टिक प्रमा करे हैं, सिंह क्यूनुकोंके सन्तरे अपने किये हुए पानको पुर रहानेके स्वरण ने न्या हो जाते हैं। सारी बहुम का क्षेत्रकर साले करना का दूसरा करते हैं कि को कर करो करन व स्कूल देख को है न देखा, सिन्ह का अनको पार के पर्वोधि बायके प्राप्त विकास दूधर पार को-को करवारे हैं पृद्धि करता है। कैंगे करवारी सर्व काले आलेले पार करते हैं, इस्ते उत्तर अपद्रित करतेले क्षांतर प्रकार पात्र है जात है। इस्तीने पान्ये दियान न्हीं कारिने; क्लेंबिंड केंक्केंसे यह यहता है। और मानी पान का कर के को साथ पुरस्तित प्रस्त कर देश करिये। से का करको करने का है। है। विक्रम पुरुषेका करना है कि को सन्दर्भ प्राणिकोच्या प्रत्य है, इसरेको सम्बद्धी प्रति ही रंग्यक प्रातिने र अनुस्थाने जीवत है कि यह अनेतान ही पार्टका आक्तम करे; सिंह कर्मकारी नं वर्ष । वो कर्मको अञ्चेतका रकार अन्तरे है—स्वारंड सरकार प्रतिकाद परको है, वे क्लीड कारताची है। कुलका परिवास पानके वेकारशीकी पूर्व को । क्रम-क्रम्य क्रोक्स्य नुस्त्रमोन्द्री रोज करे और क्रम कारे पालेकारी पालेंद्र रेजे क्रांकर्त कावा पाला

## भीषका शुभाशुभ कर्मोंको सुल-दुःलकी प्राप्तिका कारण बतलाते हुए धर्मके अनुष्टानपर जोर देना

है से भी को का नहीं विरस्त और से कारकार है, यह मालक एवं कृति होनेसर भी बहुत-सा कर प्राप्त कर रेक है। क्ष्मानं काची प्रशिक्त समय नहीं आक स्वतन्त्र विदेश का करनेपर भी कुछ क्रम नहीं समाप्तः सिंह स्वच्या समय आनेका किन काले. ही सहूह कही सम्बंधि जिल करते हैं। चरि प्रचा करनेरर सन्तरका निरूपी अभिनाने होती से मनुष्य सम बुक्त या तेला। सिंह जो यह प्रस्थानक पनुष्यके हिल्ले अस्तर्भ है, यह जारेग करनेपर भी नहीं निरम समाती।

मुक्तिरो बहा--विकास । भागतीन पहुल कामार् | जहा-से पहुल का कामे भी विकास होते देशे जाते हैं। विदर्भ ही स्केप बनके प्रैंग्वे उन्तेकों कर कुकर्न करके भी क्योग है के को है। जिसमें है अपने कार्युक्त कांकक कान करके भी हो जहें और कां निर्वन है। दिसार्थ हो है। योई जनुष्य वीविश्वासका अस्परन सस्ते वी निरिद्ध नहीं देखा कहा और बोर्ड नीतिनी समस्या होनेपर भी नामिक्र पहल पहेल बाते हैं,इसका क्या कारण है ? वापी-वापी विद्यार और मूर्स क्षेत्रोंकी एक-सी निर्वति होती है। कोटी मुद्रियको मनुष्य बनवन् हे जाते हैं

(और अपने पुनि रक्तेमारे निक्रम्मो पूरी पाँची भी पूर्व नार्तिन होती) । नीर निवा पहला मनुष्य अवस्थ ही सुरंत क रेंडा से विद्वारको सीविकाने तिने किसी पूर्व करिया समार नहीं होना पहल । मिरा रहा कानी चीनेहें बहुमारी पाल अंकार बुद्ध कार्ड है, उसे ज़बल गरे निवाले अन्त्रेड कार्न्ड निर्देड अनिवार्ग होती के बोर्ड में पड़क निवार्ग क्रोधा की काता। विरामी पालक समय नहीं अपन है, यह देवाओं पालेंसे किर कारेपर भी नहीं परता; बिह्द विसमेंद्र जीवनाती अन्तरि पूर्व हो सुनी है, यह एक दिनकेसे हु मानेकर की प्राप्त उसन देखा है।

क्षेत्रकी का-केत ! यह एक प्रधानने केत कर अनेको स्थोप करपेनर भी गुरूवाओ कर न किर सके से को क्ष बनका करने काहैने; क्लेंकि क्षेत्र केंग्रे क्रिक त्यून की विक होता। वर्णनी पुरुषेका प्रकृत है कि पहल कुर देखे क्राप्तेत्वरी सम्बर्ध करत है। यहे-क्रुवेदी केन्द्र करते कान्त्रे कार सुद्धि का होते हैं और अहिल-क्लीड सारको क क्षेत्रीको क्षेत्र है। इस्तीने सर्व करते, कुलोवे सामय गयो, क्रमित्र कुलोब्दी कुछ करे, बीते पाल क्रोते, पालक पाल करे, प्राचनाराने को और दिनके की अम्बीकी दिना ए करें। पुनिश्चित । जीव, परिदे और सीरी अभी सीनोको उत्तरह चेतियोगे सामा सामे हुए-कुलाई मुद्दी कार्यने सामा अन्यत निरम्भ पुरत पाने ही स्थापन है, यह जोनवार अन्यति बुद्धियो किर क्ये (और इंड्यमेंने कर कार्य) । पर्वत के कृष और अकृष कर्न करन कर कुरोंने करका है, उन केने प्रकारके बार्डिको कुलकार्यक अञ्चल करके के को प्रका होता करिये और असूच कर्न हो क्लोज करते कियो करते पालको जाना नहीं राजने साहिते । यह धर्मका पूर्व हेराका मनुष्यको सुदियो बर्गाची बेह्नाच्या निकार हो प्राप्त है उनके कारका करीद और विकास कहता है और क्रांचे सकता कर करीते हैं

। सम्बद्धा है। जनसङ्घ वर्गनी चुनि एक नहीं होती स्वतंत्र्य कोई उसके कारत विकास नहीं काल। अधिकोको बुद्धिकाची नहीं च्याचन है कि ने वर्गके परको विश्वास करके आके आगरणने राज जाने । विस्ते कर्यका और स्वकृतक खेलीका प्रान है, उस पुरुषो प्रकारित हेका काँका आवश्य कारत पाति । से व्यक्त देवांके कारी है, वे का सेवकर कि कई स्वोतुको क्रेका प्रमुक्त क्या-क्राके बहारों नचह वार्षे, वर्षका अनुहार कर्त है और इस अवन अपने ही प्रचानों जारताओं साह पहली अक्षेत्र करणे हैं। कार किसी एक वर्गको अवर्ग की कर सकत अवदि को करोबरोको दुःस भी हेत; इसलि सर्वास पुरुष्ये विद्यु आण है एन्हरू पहिले। वर्गमा सार्ग प्राच्यांतर अधिके स्थान केनाचे हैं । धारत कानके सार औरसे प्रमुख्या है। अरः अधानि कृति गति गति के का करिये ए को को। विश्वदि और कार्य सर्वाक अन्यक—ने केर्ने कार्थि कार्य है। को विकासी जारे कार्यकार और होते रोप्योपे अध्यक् पैतारोप्यान है। योहे विकास है सुद्धिपूर्ण को न हो, यह विकास प्रक प्रकार को सार्व्यक करी जो राज राज्या । अस में को कार्रीड राज्याने कुछ प्रकृत हैं। प्रमुख, क्षारेण, केरण और कुर-पुर प्रथ प्रजीवेंद्र सरीर margalité gir mit que d'autre proces access que-qui de flor sià जनके गोरिका, वर्ष और विशेष वर्षने विशेषका रची गती है। हराया जोतन भारे है कि पार लोग अन्तर्भ-अन्तरे वर्णका प्रतान कर्ष हुए कु: एकारको अंत्र हो । चनि बढ़ी कर्ष हो निज पाना प्या है, विका सारते पानों असीर अभिना प्रतेपनेपूरी पार्टीह कैसे होती. है 7 के इसका उसर पह है कि पार अनेक लेकर किए केस्त है। सर्वाद सन्तिम प्राप्तवासीका स्थल प्रत्येह निर्वादयांकाहो कर्मका अञ्चल किया काल है, जह संभूत दिनों पूर वर्गते समान रोग्ड (नित परमान) भी से अहै। केले हैं।

भीव्यजीका देवता, ऋषि, पर्वंत और नदी आदिके नाम बतलाकर उनके त्यरणसे धर्मकी प्राप्ति बतलाना तथा धीव्यजीकी आज्ञासे युधिष्ठिरका परिवारसहित इस्तिनापुरमें जाना

वृतिहरूने पूरार—विकास । सनुस्ताके कारणासका कारण क्या है ? क्या करनेसे व्या सुनी होता है ? फिल कर्नीड अनुक्रमो सम्बद्ध कर हा होता है ? और कीन-सा कर्न क करनेकला है ?

येगार्थने बद्ध-केट । यदि सीनों संस्थाओंके समा

[ 511 ] र्सं० म० ( साम्य — स्रो ) ४९

स्थ, रामेरे-बाग अवसी इन्हिलेके इस बारकर का अनवासी नो-मे का करत है, का इससे कुल्यान पा करत है एका स्थ यक परित करने है। देवरि-वेक्का बर्टिन करनेवाला पुरूष कर्ण अंचा और बहुत न होकर शह कान्यानका गानी होता है। यह विर्णायोगि और नरकरें स्त्री पत्रता, संबदयोगियोगे केन-केन और अधि-केनक कर किया जान से पनुष्य हिन- | जन नहीं तेता, सभी कुनसे व्यवसीत नहीं होता और सुसुनेत

समय व्यक्तस नहीं होता। (देवका और सहि। आहिके बंहाकी क्रम्पर्यं इत प्रचार 🖟 ) सर्वपूरकात्रव वेतापुरपुर सरम् परकर् बहारो, उसमें को हमें समिते हेते, केहोने अपरिष्धान धन्यकाई मनवान् पार्यका, वीन नेहोनारे अगनी महतेत, केलेकारी काव, निवास, आहे, पापू, मकत, सुर्व, सर्वारात इस, काराय, कार्या वर्ता क्लेकां, क्षणी को मेरीके पान गरम, प्रतिकृतित कुले, खेल सरावनाओं सुरवी थें, व्हर्नि विक्रम, इंड्रम, इत्या, व्हर कार्य प्रदेश, प्रकृत्य, कार्यस्य वालीका सुने, Algoritates date, was, with frame, say, ag., हुन्तुर, विकारेर, हेराहुर, सीमान्यकारिको हेराहरूको, इसंबुर, three, two, Switch, storages, Sravel, queel, परायुक्त और रिल्मेशन आहे हिल अन्यतर्थ, याद्य आहित, कार गतु, न्यन्त्र पर, अधिन्तेषुत्रमा, विका, वर्ग, कार्याल, series, their, researce, femous, was, they will be well-मार्थन, पुत्रा, पुरस्ती, महुरू, सुर, सह, प्रमेश्वर, शहर, सह, मार, पत्र, संस्थान, विश्वकोर कुर पत्था, समूह, बाह्रोड पुत्र सर्वत्तव, प्रत्यु, विचाया, क्याच्याच, कारवारी विच्यु देशिका, प्रभाग, पुण्या, स्कूप, स्कूपकी, बेगा, बालेरी, पर्वहा, कृतम्पूर्ण, विकास, कार्यास, अस्तुम्बद्धिये, परंत्र, पर्वार्था, महत्त्व कोमान्य, कारा, शरान्य, बेटावरी, पन्नीपा, पीउपी, चेक्नो, केना, कुलकेन, अर्थन, कुक्री, च्यू, मध्यिको, प्रचल, विकारका, विकेशनका प्रकार (सान्ती), विकास सरोवर, सावक सरिवाकी पुरत पुरवानियाँ, पुरवाहेब, साव संपुर, राज्या, क्षत्, कामूचार्च, हैरानकी, मिलवा, प्रकारी, केरापृति, केर्यती, मारावा, काववती, वर्गिक पृथ्वण, स्थुप्तार (प्रीक्रा), जरिकुम्ब, क्रमुकारियो परित्र परित्रों, क्षरंग्यते, संशिक्षते, जपुता, स्रीवरची, वसूत्र, स्थ्रोनुस्थरते, विविधा, नीरिस्था, रूपा, अवरस्था, सोधीपुर महत्त् हुए, पास, पान्तियं, वेकाओरे युक्त वर्णरूप, परित केनाई, क्रीवे क्षेकोर्ने निक्कात, परित कृतं चारककृतः प्रकृतिर्वेतं सर्वेतर (पुष्पातीर्व), विम्न औरवियोने युक्त क्षित्रका पर्वत, जन अकारके कहारों, तीवों और उड़ैक्कोंने सुनोधित किनाविहें, केव, उद्देश, कराय, प्रशिक्ती सामोदी पुरत क्रेवरिवर, शहरूपन्, क्या, जीता, विश्वा, सुरे, विश्वाद, सम्बद्धा, प्रवासान, भोगगिरि तथा अन्यान्य पर्वत, दिला, विवेद्धा, जुनि, कुछ, निवेदेन, अन्यत्या, पद्धान और पहुराय---ने प्रदा इसारी रहा करें तक किरके नाम रिजे को है और किरके वहीं रिजे को है, वे सम्पूर्ण देवता इक्लेक्स्म रहा करते 🖟 जो पर्युक्त उत्स्वृत्त वेच्या आदिका पंजिन, पायन और अधिनस्यन करता है, सह

का अक्षानोः कामे कुछ हो स्थान है। वेदनाओंकी सुनि और अक्षितका करवेताल पुरूष प्रमाणकों संग्रीचे कामेहे हुए कुछ है।

वेक्सओरे अन्यर क्रमा क्रमेरे मुझ क्रमेरले का किन्द्र अक्रमिनोधेः गाम भवानका है । पन्यक्रित, रेज्य, स्वर्तानकर् मीरिक, पुर, अध्वय, पान्य, नेव्यतिक और प्रवेतुक-क्रमा वर्षे—ने कृषे दिलने को है। अनुबु, अनुबु, सुसुबु, लक्ष्मोन, विकासको कु स्थानको अनुस्र और प्रस प्रतिद स्थिते पूर्ण का कार्यम्—वे प्रतिन दिलावे निवास करते हैं। जब पहिला हिलाने वहनेवाले वहनेवाले का पूर्व-सार्व गांवा व्यवस्थित सङ्ग्रह प्रतिकास चीनकर, वेचंकर, नेकर, काश्मर, एश्मर, हैंस, वेस, प्रश्नी कुर्वक और कारका: १वी प्रकार गति, म्हिसू, सुनिः; न्यक्रमञ्जून व्यक्त, निकारिक, व्यक्तव, क्रमहीर, पेरबुंतर्थ; मानवाक केलेब, कोइल, विकृत, देवल, देवलवी, बीन्स; हरिक्यास्त्रक, स्टेब्स, परिचेत, प्रोत्यूर्वस, आहरू और कुनुस्तान न्यास—ने प्राप्त विश्वले निवास करते हैं । यह विश्वल और व्यक्तिको पुर्वत संयुक्त अन्ते परकार बोर्तन वार्यवर् बहुकारों पार करोते युद्ध करता है।

अब सम्बंधिक ताल सुत्रे—एका नृप, प्रवासि, स्मृप, or, whench ye, grant, field, south first, Part, Solve, Rose, scorp, part, नक्रमानी नक्षानी क्या करा, कार, कार, कुर्स, कारोबु क्यू, ब्रह्मत्व, क्यूनांबुक्त बीरवर राज, प्रात्नीक्यू, क्ष्मेरन, इतिहास, भागा, पुरस्त, महेवारे, अलाई, हेल (पुकरण), करका, काकेर, इक्ष, अवसीर, कुतुर, कारकारी केल, कुन, संगरण, सरमातकारी सन्धार, कार्न मुकुल, न्यून्योहे हेरिल एक यह आदिएका केरणका पृथ्, कारका हैना करनेवाले विशासानु, जनसङ्, राजमिनेह हेर, जोरत् एका महाविद, निर्देर, त्युष्य, सामु, राजार्थ श्रूप, प्राच्या करोषु, आर्थन, विभोदान, कोरराज्येक सुकर, राजर्षि नत, प्रकारी यनु, हरिश, पृथ्ल, जोन, कन्द्रर, जब, जनेन्यर्दि, प्रत्यक्रमी ह्वासूर, राज अवस्थ्, क्ष्मुक्षु, एवर्षि कक्ष्मेन तक इनके अतिहरू पुरानोरी जिल्ला अनेको बार कर्षन हुआ है, से सब पुरस्ताता तवा करव करनेवेच है। यो मनुब अतिहन सर्वेर क्रकर कार माहिते सुद्ध हो प्राप्तः स्थार और श्रम्बेस्टरमें इन गामीका कठ करता है, जब वर्गके धालका व्यक्ती होता है।

कानेक्ष्मे कृत-युन्तितः । मेरे पूर्व वितास्त राजा कृतिहित्ते कानकाव्यस्य स्त्रे हुए कीस्थ-सूत्र्यर श्रीकातीके मुँहरे जब बर्गसम्बद्धी प्राचीय धरो और कृष्णी भिनि सुर सी, एव प्रमुख्योंका संशानार प्राप्त वर दिवा और वर्ष क्या अवीके विकास स्टोनाले प्रमूर्ण संक्रमोच्छे किया कृष्ण, सा समय किर चौन-सा चार्च क्रिका ? यह ब्यानेक्डे कृष्ण

वैज्ञानकानी कार—एकर्! कांचल पुणिक्षिको हा अवल जनोत केर का विज्ञान कीर कुछ हे को, का समय सारा राज्यकार कुछ केरका काम हेकर विज्ञानिकान्स हे नका। आक्रम, सामकीत्वक पहले कारावीने कोड़ी हैर जार प्रको ज्ञानकार कीरको कार—'नानेड़! अन्य राज्य पुणिक्ष करत है कोर है कार्य कार्यों, अनुवास राज्यमी तका वानकार सीवानके कार्य आयों, अनुवास राज्यमी तका वानकार सीवानके कार्य आयोग करीर केर्ड हुए हैं।' उस्त आव हुने हरिकाल्य करेकी साल केरिको।'

प्रशासक्त प्रस्त अवदेश कार्यक्र प्रस्तु क्षेत्र विकास विकास क्षेत्र क्ष्म क्

वाह्य और एवं पूजारे स्थात होका श्रीश-धर्मका प्रस्था वाह्य हुए रेडाकारोका पूजा और निर्देशन रोवर करा प्रकारके व्याप्त अनुहार करों रहें। ऐसा करनेसे हुन्दरा करावाल होता, उस हुन्दें अपने कार्याक विकार स्थान हेने कहिने। वाह्य ! अवाने असम प्रस्था, जाते, सेनापि कहिने। वाह्य ! अवाने असम प्रस्था, जाते, सेनापि कहिने। असमिनोको सामाना हो। एवा और सुक्रमेका वाह्येशिक सामान कराव। और परिस्ते असावालके वाले हुए पुन्तर व्याप्त ने पक्षी असमा कांचा रेसे हैं, उसी अवसर सुनारे पित और दिन्ती हुन्दरें सामानों पूजा क्रीना-पित्त को। केट ! यह पूर्वपराचन व्याप्त कराव सिन्ता होता होता?

व्य कुन्तर कुन्तिन्त्य कुनिहेले 'स्कृत अव्या' कावल रिकानको अद्या क्षेत्रण को और उन्हें अव्या करके वीत्रणस्त्रीय इतिकानुष्यों और वर्षे । उन्हें आने-आने क्ष्मा कृष्य और पीत्रको गान्यती देती वी और सम्बर्ध अभिन्या, जाने वर्ष्ट्र, सन्त्राम् लीकुन्या, नगर और अन्तर्भे सोग क्ष्मा कृष्ट्र कार्य कार दे थे। इन सम्बर्ध कृष्ट कर्माको इतिकानुष्य अनेत विक्या।

\_\_\_

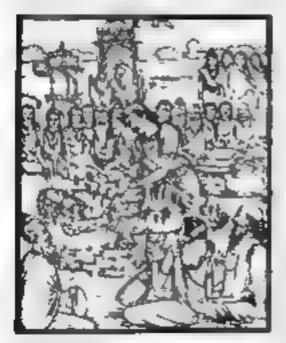
## भीष्यके अस्पेष्टि-संस्कारकी सामग्री लेकर युधिष्टिर आदिका उनके पास आना और भीष्यका श्रीकृष्ण आदिसे देहत्यागकी अनुपति लेना

वीक्षणकार्थं अवते हैं—राज्यः। इतिकानुत्वे क्रावेक्षे बाद कुर्वात्तक कृषिक्षेत्रं कर और अच्छे होतीक क्योंकित संस्था किया क्या उन्हें अपने-अपने का व्योक्ती अवहा थे । इसके बाद जिल किलोके चीर और कुर पुत्रमें को गरे के, इन सम्बद्धी सहा-ता का देखा कैने बैकास ह सर्वता, कृतिहरूका राज्यविकारको कार अधिकेक विका गया और ज्योरे क्वी करि समा अवस्थिके अपने-अपने पहार सावित करते वेशनेत एवं मुस्ताहर हाक्रकोरे काम आसीर्वाद प्रकृत किथा। संस्थात क्रम युविहिरने प्रकार हिन्देश्य प्रतिस्थानुसरे क्षानेके कह जब सुवीतको स्थिताकारो निवृत्त क्षेत्रत आक्रमको अस्ते देवस से क्यें कुमलेतु भीवरमेची पृत्युका कारण हो अल्ला और वे यह मार्गनेवाले अञ्चलके स्थाप प्रतिकारमध्ये पहलेको अञ्चल हर्। बानेके पहले कहींने प्रीवार्ताका अपनेती-संस्था सरनेके रिप्ते एवं, मारम, सुपन्तित प्रमा, रेक्क्षे स्था, कन्दर, बारम रायुर, शबो-शबो चुरा ३वा कर ५वाएके पर साहि सामने भेन है। किर शृतका और परवारीको आने करके

कार कृती, राज कर्त, करवाद श्रीकृत्व, सुद्धिराज् विद् और सामाधिको साथ सेवार थे पणरने बहुर विकास । उसके साम रण, प्रामी, चोडे आणि राजेच्या क्रमारण और वैन्यकार महत्त् राष्ट्र-साट या । मंद्रीयन क्रमकी सुनी करते हत काको थे। व्यानेकाने कृषिति वीधानीके स्वादित क्रिके हर रितिया अधिनकेको अस्ति प्रस्तात स्वयं पीके-पीके पास रहे थे। क्षात्रक ने करकेको सामान्यत ग्रीवानीके पात का प्योगे । का कारण नहीं परावारणपान कारण, हेवार्षि जास्य और केवल बावि उनके यहां बैठे से उक्षा महाभारत-बाहरों सरनेसे को हुए और अन्यान देखोंने साथे हुए सहत-में राख कर पहलाकी सब ओसी रहा कर के थे : कर्मराव क्रिकीर स्टारी है कैरकण्याम सेवे हुए मीन्यसीका वर्शन करके. व्यक्तिस्थित रकते कर यहे और निवट सकत अहेंने विकास चीवा तथा बास आहे वहविंगोको प्रकार किया । इसके बाद उन व्यक्तियोंने भी उनके अधिकाल क्रिया। दिन वे व्यक्तिके विरे इन् विकासके पास बायर केले-'कारणी ! में चुनिश्चर अलगते रोकाने आर्थित है और

असपोर करणोर्ने प्रमास करता है। वही आपको नेही कर सुनार्ग देती है। तो आक्र दीनिये, मैं अपनार्थ कर देख सही? आपके कराये हुए सम्माद अधिकोचो हैकार मैं अस्पीयत हुता है। अस्पोर्थ म्हानेकारी पुत्र क्या कुट्यू मी अस्पी प्रतिपंति प्राय महाँ प्यारे हुए हैं। सम्माद सीकृत्य, मरनेसे क्ये हुए समझा राजा और कुम्माद्वाद केराके त्येन भी असपो हुए हैं। आप आंचे कोराकार इन समझी और देखिये। असपोर्थ कामानुसार इस समझके लिये जो कुछ करण असपायक का, का साथ कर विकार सका है। सभी अपनेसी मरहारोगार प्राथ है कुछा है।

परण सुनियान् चुनिहित्ते इस प्रधान व्यानेस स्थाननार भीनातीने जांची कोत्यास जाने वारों जोर को हुए प्रशास भारतनार राजाओकी और केवत । किन चुनिहित्सक इन्य प्रधानकर नेवके सारान जानोर सामीने व्या स्थानेतिक व्यान सहा—'केटा चुनिहित्' हुन अर्थने व्यक्तिकोट साथ व्याने



मा गये, यह बड़ी उनकी बात हुई। सगकान् सूर्व अस इक्षिणावनसे जारावरावार और जा नवे हैं। इन डीको माणोकी सम्बाधर समन करते हुए आब मुझे अपुरावन दिन हो बचे; सितु वे दिन मेरे दिनों सी बचेंक स्वाप्त कीने हैं। इस संस्थ बायस्थातके अनुसार सामका स्वीप्त जास हुआ है। इसका बढ़ गुलुस्क कर यह है, विस्ताध एक बाग बीट बुक्त है और रीन मान बाजी है।

वर्गपुत्र पुषिक्षिरने ऐसा बहस्तर चीवन्त्रने स्टम्बुको ।

सम्बोधित करके बद्धा-"राजन् । तुर वर्गको शर्का करा कारो हो। हुएने अर्थ-सम्बद्ध की क्लीकृति निर्मय कर रिन्म है। अरु दुस्ती करने किसी प्रकारका संक्षेत्र नहीं है। क्षें पूर्व क्षेत्र प्राथित हुन रहारेकारे व्याप-से विद्वार प्रवासनीयी सेवा की है। संपूर्ण केहें, काओं और क्योंका सुन्हें पूर्व-पूर्व हान है; असर्व तुमको क्षेत्र नहीं करन काहिने। यो कुछ हुआ है, वैसी ही होनहार थे। इस्ते कुर्व्यक्षमा व्यास्त्रीये क्षेत्रक्षेत्रा सुरू थे का रिका है (अभिने अनुवा व्यापाल-पुरुषी सारी कार्क्स हो है) । में कार्का केरे एक प्राकृत हुए है कीरे हो वर्गको दक्षिके सुन्तरे भी है। ये कहा पुरवनोधी रोकरी रने रहते हैं। हम करेंने रिका स्थान करने दुसंके समार है पुरुष्टि का करन । कांग्रस पुनिक्षेत्रक प्रस्त कहा है चुन है। वे बाद कुछार्य जाताने जानेन खेने। मैं बानार है कुरुक्त प्रत्यक कहा है स्केपल है और वे गुजरारोके प्रति व्यक्ति परिवार रहते हैं। शुक्रोर कुछ बाई बुशला, ब्रांच्ये, ह्योभी, ईन्द्रों रक्तनेकर्त और कुरुक्तरी थे, जल: उनके दिन्ने काची क्षेत्र न करना ।"

कृत्याके हेल बहुत्तर पीयको यगवन् सीह्याको केले—'भगवन् । अस्य केल्याओके की केला है। केला और अनुस् प्रची अपनोर्ट परनोर्ट पृष्टि प्रूपारे हैं। अपने तीन पर्गोदो क्रिक्टेक्टीको जापनेवाहे पराकान् बानन । जापको प्रकार है। अन्य पहुर, यह क्या यह बरण करनेवाले हैं. वार्त्येत, द्विरण्यामा, पुरुष, स्रविता, विराद, अपूर्ण स्रीव और सम्बद्धन परमान्य भी जान ही है। सम्बन्धे समान नेप्रोक्तरे पुरुषेत्व । अस्य मेरा बहुत करें । बीकृत्य । अस नेपानक विकास काल मोद्र विविधि महान विकास ज्ञीत काल क्रोक्स इन प्राप्तु-पुलेको पहा करते रहिने। मैंने बुर्वृद्धि ्रवेकाको का कावल सन्तालक का कि 'कई सेवृत्यन है वर्ज वर्ज है जाने वर्ज है जाने पहाची जीत होगी निहित्त है, इस्तरेने केट क्वेंकर । काकर् औक्रमकी सहस्वारे हुव जन्मकोचे प्राप संवि का स्ते, यह संवित्ते तिले बहा अन्तर अकार क्रम अस्य है।' इस प्रकार कर-बार क्रम्नेका भी कर कुलने नेते कर नहीं करों और सारी पृष्टीके बीरोका जात करकर अपने क अने के बारके गरूने करा गया। करवन् र वे आपको जनता है। जाय वे हो पुरातन ऋषि कराना है, को पाने क्या विश्वासमय क्रिकामपर्ने निवास करते से है। देवर्षि कर्ष्य और महास्वरती स्वास्त्रपति भी पुराने बाह्य का कि 'ये क्षीकृष्ण और अर्थुन साहात् करवान् करवान्य और नर है, यो मानव-सरीरमें अवसीमी हुए चरित्राम वर्गान्य । जानकी अक्षा वित्रनेवर मुझे परवचीनकी प्राप्ति होगी।'

अंगुल्यने न्या---वीन्यजी ! में अववको सार्थ आहा हेल 🕯। आप पमुख्येकाको महाने, इस स्थेकाने आरक्षे हारा अञ्चलक भी पान नहीं हता है। कवारों ! ततन दूसरे मार्थकोयके समान विज्ञास है; इसरियो जुलु विज्ञीह क्सीकी पाति आपके कसमें है।

धगवानुके देता बहुनेवर महानका खेळाने कन्कती क्या बुक्तम् असी सभी सुम्हेले कक्-'अन में प्राच्येक | आवार्य क्या सुनिक्षेत्र्ये सह हो पूज करते सुन्। (

🖁 🖰 सीकृत्य 🗓 साथ आप आहार केवियो, मैं इस करित्या 🖡 साथ करना प्रकृत 🗐, तुम साथ लोग मुझे इसके लिये अनुस हे । तुन्हें सद्य स्वापनमें प्राप्तनका प्रचा करते रहना वाहिये: क्वेंब्रिट सरव 🛊 सकते व्यक्त बता 🕻 । तुन त्येनोक्ट्रो सक्वेंड राज कोमान्याका वर्तन करना, सक् अवनी प्रनिर्ह्मोको बक्रमें रक्तव, प्रक्रालोके प्रति भक्ति करना तथा भवीता हते प्रकारी होता पार्टिने हैं

> व्या व्याप्ता भीभागीने अपने सब मुह्तेको व्योपी सरका और वृधिकेत्ते हुन: इस प्रधान बहा--- 'राकर् ! हुन सामानाः सभी प्राप्तन्तेन्त्री, विशेष्ताः विद्वालेन्त्री और

## भीक्षजीका प्राण-त्याग और धृतराष्ट्र आदिके हारा उनका दाह-संस्कार, कौरवॉका गङ्गाके जलसे भीवाको जलाञ्चलि देना, गङ्गाजीका प्रकट होकर पुत्रके लिये शेक करना और शीकृष्णका उन्हें समझाना

प्रत प्रचार प्रकृतन प्रत्यकृतका भीवाले पुरू हेराना मुख्याय जो रहे । स्थानसर, से मन्त्रहीत आमानपुरके अन्त्रहः विभा-विक धारणकरोपे स्वाधित कार्य समे । इस प्रयु भौतिक क्रियाके द्वारा रोके हुए बहुबार स्थेन्सकेंट प्रान संस्थाः कार कारे तमे । इस क्रम्य कई क्याँक हुए तमी संग-महत्त्वातोके बीच एक को स्टब्रावंकी काम करें। भाग जारी सब महर्षिनीने हेका कि प्रत्याहरूका बीवका प्राप्त काले निया-चित्र अञ्चलो स्थानकर कार कारत था, उस-उस अञ्चेक पान अपने-आप निवास याने और उनका काम भर बाला बा। अर प्रधार सकते देशले-देशले चीवानीका सरीर क्षणपाने सामने रहेता हो पता। था देशका परमान् शीकृत्य और मारा आदि पहर्विकेको पहर बिएन्य हुआ। पीव्यतीने अपने केल्के संधी प्रारोक्ते केल कारके अनावधे तथा अधेरते केवा हिन्दा का, इतनिको का असा मसक (इद्यारक) गोक्कर सम्बन्धने परव गया। उस समय केवतओंने कुचुनी कवानी और कुलोब्धे क्यों की। हिन्हीं तक अपूर्णियोक्ते कहा हुई कुला। में जीवाजीको साक्ष्मत् देने सने। जीवाजीका प्राप उनके प्रधानमध्ये निकरण्या सन्दान्त्री पानि आवतान्त्री ओर उदा और इक्कारमें मिलीन हो नवा। इस प्रवाह मसर्वस्था चर बहुन करनेवाले झाउनुसन्ध भीवाओ काराके अधीन हर्।

तदननार, बहुत-से बज्रु और यना प्रधारके सुन्धिका इन्य लेकर महत्वा पाणाव, किट्रा और बुबुक्तुने किया

वैतान्यकार्थं कारो है—सालोकक र अवका करियोते | विकार की और काकी होना अहन कार्य होकर देखते हो। क्रम्बान् पुनिवीत और निवृत्तीने चीनानीको विशापन कुम्बदर को रेक्स बाले और कुरनेकी मानकोंने कह विका । का करन पुरुष्ट्रों करने क्या का समाना, श्रीमतेन क्या अर्थुन केत केवर और व्यवन क्षूत्रने रहते। व्यक्तिकार नकुरा और सहोको काफी प्रथमें रेजर भीवानीके नवाकार रही । कुक्कुलबी कियाँ सक्के वंदरे केवर आहे



अरेरते अहे इन्हे आरंगे एवर्ग । विस्त प्राथकोने विकित्तंक सम्योजित विद्यमंत्रं किया और पीलको सम्या संस्था करते हुए समिने बहुत-सी आवृतियाँ करते । उस समय सामनेदके विद्यम् सहाय सामनाम करते रागे और वृत्तरहुने करूनकी रामही तथा सुगन्धित सस्दुओंसे भीकको इग्रेसको आवृत्तित सरके रुखी विद्यामें आग लगा है । विरू वृत्तरहु आदि सम वौर्योगी क्रा करती हुई विद्यामी अर्थिका परी । इस प्रमार पीलवीको साम सेकर करके समया करिय अपने कृतको विश्वोको साम सेकर व्यक्ति-सुनियोगी सेवित परम प्रवित्त माना, असित, हेकस, भागान् अकृतका क्या करन-विकास मनुष्य भी थे । वहाँ पहुँकार स्था स्थेगोने अविद्यूष्टक बहुत्वा सीव्यको सामकारित है।

इस समय अपने पुत्र भीनाको अन्तवासि हेनेका कार्य मूरा है जानेकर जनवती भागीरबी अलके कार उन्तर हुई और सोवासे विकास हो चौरवीले से लेकर कहने समी—



'डिय पुत्रे ! पेरी कत सुन्ये—चीन्य राजेक्टि सदाकारी सम्पन्न के, उनकी युद्धि कही परित्र की और उनका अन्य की

महा उत्तर कुरकों हमा था। ये कुरकुरको वृद्ध पुरसीका सावार करनेवारे और अपने विताक को पक थे। उन्होंने जनने जीवनमें स्कृत प्रत्यक्ष पासन किया वह । वसहीत-कुमार करकुरामधी भी अपने विका अवलेके क्षारा उन्हें पराक्षा न्हीं कर सके के सिन्दु हे ही न्हायरकामी भीभा विश्वासीके इक्ष्मं करे गये, यह बिजाने दुःसको बात है ! अवश्य ही मेरा इस्य पालका कर हमा है, तभी से अपने कारे कुछने जीवित न वेस्तवर भी यह कट मूर्ग जाता। काफीपुरीके क्रमंत्रमें समझ इतिन राजा क्या हुए थे; बिहु मीन्सने अवेले है का प्रकार नीतकर काशिएतकी कृष्याओंका अक्टूल किया था। इस । सामे विनयी समाना करो-करन इस प्रधीयर कुरत कोई और शहें है, उन्होंको विज्ञानीके हान्यी यह गये सुरक्तर साम मेरी वाली क्यों नहीं **पट करते ? ओह ! जिन्होंने कुरफोलके पैदानमें युद्ध करके** ररपुरमको में अरामक है कहने हरू देया छ, उन्हेंकी पूज् विकामीके प्रथमे हाँ "

है से बारे बाहका कर ग्युरवी स्था किरांच सारवे रूगी
से बाहक करें, पोक स्था से ( हुएसे पूर क्यान-"सामानी ।
से बाहक करें, पोक स्था से ( हुएसे पूर कीकार्य मानवार
मान केवलें को हैं, इसमें तरिक भी संख्र म करें। से
बाहनेकारी बाह से । वरिक्ष कृषिके बावसे को प्रमुक्त-केविने
मान केव बाह सा । करके रिक्षे तुने सोक वहाँ सहस्र
बाहित । क्योंने समस्यानकों ब्राविक्शनेंके अपूरतर पूज किया
सा । से अर्जुनके बार मारे गये हैं, विकायिक झामने करकी
मूल नहीं हुई है । सेवि । तुन्तरे पूत बुन्तरेंह पोक सब झामों बहुत-बाल रिक्षे खारे, जर सामा सामाह हुए भी उन्हें बहुत-बाल रिक्षे खारे, जर सामा सामाह हुए भी उन्हें बहुत-बाल रिक्षे खारे हैं । समूर्ण देशना निस्तार मूल-बाल रिक्षे खारे हैं । समूर्ण देशना निस्तार भी बुन्तरें करें नारनेकी बाह्य नहीं स्वारं से, इसरिज्ये हुए बुक्तनका भीकार्यके रिक्षे खोल ना सरो । से बाहुओंके सामावार महा हुए हैं, करकी विकार करेंद्र से ।

वैद्राणकार्थं कहते हैं—अनमेक्ट ! यनकान् श्रीकृष्णं और व्यापने का इस प्रकार समझाना से नहियों में होड़ पहुरती क्रेक्ट क्रोड़कर करीये उत्तर नहीं और श्रीकृष्ण आदि सब लोग पहुरवीका समकार करके उनकी अदल से बहारी लौट आहे।

# संक्षिप्त महाभारत

# आश्वमेधिकपर्व

युधिष्ठिरका श्लोक करना, श्लीकृष्णका उन्हें सान्त्वना देना और व्यासजीका युधिष्ठिरको समझाते हुए राजा मस्त्रकी कथा सुनाना

सरायमं नगाकृतः श्रे चैव नरोताम्। देशें सरामार्थे स्वासं तत्ते सम्बद्धीरचेत् ॥

अवसायी जरावकारकाय परावान् श्रीकृत्या, उनके विकासका गरावकाय नरता अर्थुन उनकी हरीता प्रकार कारनेवाली वर्षकारी सरकारी और असके बंधन व्यक्ति वेद्यासको नयस्कार करके आसूरी सम्पर्तिकोयर विअप-प्राप्तिपूर्वक अवश्वासकारको सुद्ध करनेवाले व्यक्तिकार करका पाठ करना वाल्लिये।

वैश्वन्यकार्यं काते हैं—जनकेतव ! श्रीव्यको अस्प्रहारित है लेनेके पहाल् महाराज्ञ पुतराञ्चको आगे करके महत्वात् पुतिद्वित पानेको प्रताद निकले । जह समय करको सम्पूर्ण इतिहर्ग कोकको मानुस्त हो हो थी । प्रताद आनेदर वे होने



नेतीले औसूकी बाग बदाने हुए गङ्गाजीके तटकर गिर पहे ।

राजको इतन के और इतेसाइ देसकर पाणक किर क्रोकने कुछ गये और उन्होंके पास बैट हो। एक भगवान् श्रीकृष्णने पद्धा — 'राजन् ! नदि मन्त्य को हुए प्राथिके शिर्ध अपने बनने अधिक लोक करता है तो उसके परलोकनासी विका-विकारण आहि व्यक्त संदार क्रेसे 🛊 । इसरिय्ये आह अर्थ-वर्ध रविकासके जन्म प्रकारके फॉक्स अनुसन करके कंप-रक्ते वेक्काओओं और कथा (बाह्) के प्रश विनरीको सुप्त कोर्रिको । आंतकियोको अस और यह हेकर २५६ अधिकर क्युकोंको उनकी इकाई पूर्व करके संतुष्ट वर्दिक्षे । आयने से जाननेवीन्य सत्त्वका प्रत्न प्राप्त विद्या है, करनेकेण कार्योको पूर्व कर रिमा 🛊 तथा धीथा, मास, सक् और विवृत्त्वीके पुरुषे एकाके वर्त्वीका सकत दिला है। अतः आरको मूह पुरुषोके सम्बन कोक नहीं करना साहिते। बठिये और अपने विद्या-विद्यानकोके कर्ताबका अनुसरक काले 🎉 तन्त्रका चार सैपालिने । व्यागत ! जैसी होनहर बी बैसा हो सब कुछ हुना है, अतः क्षोफ चाल ग्रीनिये। इस बजरें के लेंग करें गरे हैं. उन्हें अब जाय फिर नहीं देश समझे।'

व्यक्तिक व्यक्ति व्यक्तिक व्यक्ति है। स्व विक्रिक्ति व्यक्तिक व्यक्ति । अपन्य पेरे अपने की प्रेम हैं, उसे मैं अपने वद्ध बानता है। अपने केंद्र और औद्धर्यका स्वय है कुछपर कृषा करते यहते हैं। महाबर । वहि अस्त्रक्तपूर्वक बाग पुत्रो तस्येवनमें बानेकी आजा है होते तो मेरा स्वयसे बड़ा दिन भारते हैं बाता। मैं पितामह चीनाकों और पुत्रसे कभी पीठ न दिलानेवाले नरखेंद्र बर्णकों मन्त्रकार कभी वालि नहीं या सम्बद्धा। अब निस्त क्यायसे यूने अपने कुनवापूर्ण पाससे बुटकारा पिले, जिस कायके करनेसे मेरा किस सुद्ध हो, यही कीजिये।"

कुन्तीनकर वृधिहिरको ऐसी बाते करते देल धर्मके तत्त्वको जननेवाले पहलेबाली ब्यासजीने कुछ—'तात !



सुधारी पुदि अभी पुन नहीं हो। तुन पुर- सारकोची पाँध मोहर्ने यह क्ये । इन्त्येगीका का-बार सम्बद्धक कार्यका mere fiel i un t, son pe fiere reven ut vit ? भूत्रों है विकार वीविका करनी है, का श्रीकोंके का सुदे मार्गभर्ति विदेश है। पैश्व कावि करनेले एकको करनिक विभागे कर जो होन पहल, यह में दूरते दिया यह है। कुले समूर्ण योश-वर्गीया वश्ववीत्वारे स्वयंत्र विकार है। वैदे भी अनेको कर तुन्हरे संबोध्य निकास क्रिया है। इसके रित्या, तुम सन्पूर्ण राज-वर्ण और सुन-वर्णको भी सुन सुके हो । इस अकर राज बर्गीक हाना और सन्दर्ग प्राच्छेके विद्यान् क्रेकर भी जातनकर कारकर चेवने क्ये व्या के है ? मुनिविर । मुझे से ऐसा साम पहला है कि सुन्हरी बुद्धि होन्ह भी है (तभी तुन साल क्षेत्र सन्तों ही कार कहाँ हो)। राष्ट्रा, परि रायलोगस्य हुए अध्येको ही पुत्र-सर पाय-कार्यको बाह पान्यो हो यो यह उत्तान की हुन्ते, विकासे का परका नक हे कवल है। से कूज धन करते हैं, से स्पत्त, का और कुम्बे हुन है अपना उद्धर करते हैं। इसी कर्मोरे परियोक्त पुद्धि हेती है। यहाँचे ही हेव्याओका महास्थ अभिन हुआ है और क्षित्रपन्ति केवलांनी सहके हैं। बरमो द्वरवीको परास्त विक्य है। सहरक्ष्यक भवकन रामने तथा दुव्यक्त और इक्क्यूलको पुत्र तुन्हारे पूर्विकारह एका परतने किस प्रकार अवनेक्याच्या अनुहार किया था, बसी प्रकार तुम भी नाम प्रभारकी दक्षिण केवर तथा

म्बूप-में पनेपानिक पहर्च, अब और का आदि सर्च करके अक्नेक्टर करे।'

वृष्टिले स्वा-शिवर । इसमें संदेह नहीं कि asphore transf the section & fing pick राज्याने में राज्या एक प्रस्ति अधिराज आयो, सामने अबट करना बद्धात है, को सुनिये। अपने वाल-माहबोका न्द्र माल् संबार करानेके बाद अब मेरे बास व्यक्तिकार्य देनेके तिने का को कु कर है, जरू का कुरत में केइन्स भी क्षम करनेने असमर्थ है। यहाँ को एकपुरगर स्मरिक्त है, वे तानी संवादमें पढ़े हुए है। हमके प्रशेषका बाब की अधी क्लने नहीं काम है। इस बुद्धके कारण ने भी दीन इसे द: सी है को है। सार इस्ते की मैं करनी करना नहीं कर क्यान । साथे पुलियोक्त नाह कराकर को है में हो को जाने जात हुआ है। अब इन बेकारोने मिना तरह कर कहन कर्त ? पुर्वेशको सन्दर्भने यह पूर्ण और प्राप्त सुनेशको अधिकारिक रूपा बहु को गये सबा कुमलोगोर्क बाबे जनन्यता दीवा रूपा। हुनीयको सम्बंद सोधले समक्र कुरमारक संबंध करान: मिन्नू का निरम्त से इर का, अल्बा अल्या क्रमान भी काली हो गया। अवस्थितकारी ल्लुची एकोची इक्षिमा हेने वाहिने, वही विद्वारोंने पूरव कार कार है। इसके दिला को कुछ दिला करत है, बह निर्मित निर्मान है। युक्त स्वयुक्त अध्यक्ष्म को कृतरे कोई क्यू के बार्क है, या प्रतिनिधि रक्षिणा प्रकुलती है; विज् अभिनिक्त प्रदेशका क्षेत्रकों नेती प्रकार गाउँ क्षेत्री, अस्त प्रक निकारी अस्य मुझे स्थित स्टब्स् हेरेक्ट्री कृत्य स्ट्री ह

वृत्तिवृत्ति इस जनस्य स्थानेन्य सीकृत्विहाना सहस्ति सोडी देखन सीकार स्थान—'सर्गास ! स्थानि दुन्तरा क्रमान इस सम्बं काली हो नया है समापि वह स्थान होता वह नावक । जनीर सम्बंधि स्थानो एक श्रमाने सह पहिं की कार्य कार्ने स्थानोंको स्थानोंको हो सा न विश्व सा । वह इन्छ अधिक सा कि इस्लानकोंन हो सा न सके, स्था सेन्द्रास स्थान श्रमा का सामा की हैसाएक प्रमान का दुन्त है। हुए को नित्ता हो, स्था हुन्हरे स्थाके विशे कार्यह होन्ह।'

पुण्डिके प्राप्त-व्यार्थे । व्याप्ताय व्याप्त विकास स्थाप ह्या पृष्टिके क्या हुए थे ? क्या क्यांच व्याप्ते ह्याने वन्त्रता संबद्ध विकास स्थापन विकास व्याप्त ?

व्यास्त्रप्ति स्थान्य । सम्बद्धार्थे प्रस्तव्य स्थान करनेकारे वैकास स्तु एक प्रसिद्ध राज्य थे। उसके पुर स्थानक् प्राथिके कालो विकास थे। प्रसंक्षिके पुर

श्चर और श्वर्ण का प्रकार क्षत्रक हुए। क्षत्रकृते सी कु हर, में को है कर्मिक थे। उन्होंने उन कर्थ पुर्वको प्रस कृतीका राज्य कराया । उसमें कुमले कोई कुमल कर क विक, को क्यूर्टर गीरोका कार्या का विकोध पुरस्त कर feffen er, mit der ge ge i i meitem angeb प्राप्त पराक्षम विद्यानेकारे, प्रश्लेमपद, सामग्री, क्षर-वर्ववरायक, सारा और वर्वक प्रमुख-स्थान वर्गन्यके में। इन सब्जें को कहा था, उपन्या कर वा प्रकेश, वह अपने और पहलेको पहल गढ़ दिन करता था। परावर्ष में बढ़ का है, प्रकार जीतवर अक्टबंड क्रम करने एक: मिन् यह राज्यकी रक्षाका प्राप्त पार्टाने असावर्त का र प्राप्त काने संदुष्ट नहीं भी, इस्तीरचे क्रमने निरुद्धार कान्यो क्रमिक्समा कर देन की साथी पात साथे पा कुमर्गावर राज्यपिनेय दिवत । सुनर्गाको स्था समावर अन्त महा प्रत्य हो। सुराये असे विकास का श्रीका-का क्रमणे प्राप्त काम देकार अक्षेत्र को थे। प्राप्तिने वे अवन्तर दिन वालेकी प्रकार को सम्बद्ध और सरकादि काम राज्य-संचारतन करने उन्ते : के प्रावृत्तकोंके और चर्कि रकते, साम बोराने, परिवासने रहते और उन प्राप्त हरियानेको अपने पहले एको थे हत्तव अभि हमें कुनेको का पत्तवी रामान्य प्रमाननीतः सोनीताः विशेषः अपूर्णन गाः विद् केवल बार्टर ही जात सहनेते कारण कुछ दिनोरी राजका प्राचना भारते हैं गया और उनके बहुन आहे भी पह है मने । अनकी यह कृतियह सामना राजाओं है जिसे न जी । हे चारों ओरसे मध्य धारोह कहें हेवर पहुँचाने सने र पूराने अपने रोक्को और पुरवारिकोस्सित में कई कहते का को। कहते क्रमंत्री सेनावर संबार हो गया का क्रमंत्री आंक्रमणकारी रामालीय उन्हें पार न सके; क्लेकि से तहा कर्मका पारक मिया करते थे (जरा का उसकी पक्ष कर रहा का)। जा प्रमु अधिका पीड़ा हेरे समें के सुक्तानि अपने प्रापको पीड़ते

सम्बद्धाः प्रश्नुन्ती नहिः कंपाना । इतसे बहुद वही सेन प्रबद्धः हे ननी । असेन्द्री बहुन्यस्तो उन्होंने अन्ते सन्त्रहरे हीयास् निकार करनेन्द्रते स्ट्राओन्द्रो कर कन्न्या । इत्य कन्नानेद्रे क्षात्रक ही कथा बुक्तांका नाम सरकार हो गया ।

करकाने जेताकुके सारवारे अविदेश काना एक कुर हुआ। अस्के करोनको क्रोध्य कुन्नो स्टिक्ट भी पान जाँ de ment dien hemmitt fieb if mire mit पुरुवान्ते सभी पुरात जाने असीर है। या अदरे क्रमान और माने प्रकारो क्रमा समूद हो पन्त । सीनेने क इसकी परावर्ष करता था। जन्मा का कांद्रे तथा करा या । यह प्राप्त यह यहनेकाल, गर्मनकाल, व्यक्तियन् और विनेतिक स्थान स्था पूर्णिक प्रस्तान केवली, पृथ्वीके प्रतान grade, grades was gigge air francis राया दिना प्रदेशका था। अस्ते एक, प्रार्थ, कर्त, planter sår målen selle per up me अवस्थानेका विकासका रकता का। काले विकिन्ने अनुसार को पार अपनेप-पारम सम्बाद किया था और संस्था अहित कुरिने प्रस्ते पह चारचे थे। असे प्रश्न अविद्याल्ये कु बहरण गया हु। ये पुनीने सको निराते को को से ह भेदे जनीर प्रकार प्राप्त था। वे स्थान स्थानो एवं स्थानती क्या है। कार्ने का प्राप्त प्रतिन्तीका कर वह है से सामान क्षाने किल्लों क्षणन पाने बाते थे। उन्होंने यह कार्यकी प्रकार क्षेत्रेक इसारी गर्मन करवाने से । क्षेत्रसम्बद्ध करती कानो के प्रवेशके पाए एक मान्यू सुकारिय पर्वत है। मानि नियम अपेरि प्राथमा यानाची और सह पह-वालेख आरम्प किया। उन्होंने अनेतरें सुनार पुरवका महा-में पुरुवंतर कृत्य, जोनेते पर्टर, साले और आसर (भीवी आहे) केवर करने, वर एक प्रोमोदी रिपर्ट माना सराव्या है। एक सामग्रे केवर के स्ववंतर सर्वात क्या पराणे अन्य एकालेके साथ विविद्योद्ध का दिया।

इन्द्रकी प्रेरणासे बृहस्पतिका पनुष्यके यह न करानेकी प्रतिहा करना, भरतका नारदंशीकी आज्ञासे संकर्तके पास जाना और उन्हें बङ्गके रिज्ये राजी करना

कुष्मिले पूज-नायेका । एका मनवका करणात कैसा का ? उन्ने इसने शुक्रांकी आहि किस करा कूं ? इस समय का थन किस सामगर पड़ा दुखा है ? और इसकेश उन्ने कैसे आह कर समसे हैं ?

न्याची का-चम्। व्यवित्रोधि हे क्र

है—एक म्हान् केनावी प्रश्नाति और पूसरे तमाहको कही कार्य पुनि । ये केनो अस्तात कार्य कार्यने एक समझ-सामाई ने, मिलू अस्तानो कहे समा-बाँट रहाते थे । यूक्ताकी असने कोटे व्याई संबद्धि कार्यका समझ कार्यो थे । यहे व्यक्ति अनुसित कार्यको केन अस्तात संवद्धी कर-बौहताका मोड़ क्रीड़ परसे निकल को और दिककर क्रेकर करने करे क्ष्मे । प्रत्यो अपेक्ष करवास्त्रे हो उन्होंने सुद्ध नाम । इसी सार इसने समझ कर्त्रोंको बीटकर विमुख्यक स्थानक आह किया और अहिनके क्षेत्र पुत्र कुल्कियों अवस पुरेशित कर रिच्य । इसके पहले महिन्दके क्यान राजा क्तथम थे। उनके समय मानवन्, सक्नमरे और परक्रमी कोई नहीं था। है को सर्वात्त्व के और देखते हुनुकों की कह करों थे। उन्होंने अपने गुलोंके प्रश्वको समूर्य उन्हालेको बहारे कर रिच्य का। बहारे हैं, ये इस कारव-करीओं साथ ही सर्गरोकाको परे गये थे। सरकात् उनके पुर अधिकृत इस पुज्येके राज्य हुए, जो जनारिके काला कर्या से । से क्राह्मम और मुखेर्ने अध्ये निकास है सम्बन्ध है। उन्हेंके पुत राजा करता थे, जिल्ला कालाव प्रत्येत सम्बद्ध था। सम्बद्ध कृतकारको प्रया कामें अनुराम रसकी की। बहुराज करन और वेजराज इन्द्र—ने क्षेत्रों एक-कुरोक्षे इनेक्ट रूप-कीर रक्ते थे। एका को परिवा और गुजरान् में। इस अनेक अतर्ग कार्त कार्यका अवस् कार्त के सित् कार्य की को संस्थाना न निवर्त । जन किसी तथा ने का न नके से महरपरियो सुरमका केमामांकि सामने काले का समान क्को हरो-- 'कुश्चीओ ! यदि साथ केत देख करना प्रकृते ी में क्रमा व्यक्तक का अलग साह न करावेगा। एकसा मैं ही गीओं खेकरेका स्थानी और केंग्राजनीयर प्रश्न है। जनक हो केवल पुरुष्के राज्य है। जानक कान्यान हो। जान बसाबो मानवर पूर्व करण करणा कराने स पूर्व होतान राज्य नवान्यो ("

इसके इस जवार व्यानेश वृद्धानिने क्षेत्री के लेककर अस दिवा—'वृद्धान ! हुन स्टब्र्स वीनोंने अन्ते हैं। दुव्हरे ही जानारार समक लेक दिके हुए हैं। हुन्ने न्यूनि, विश्वस्थ और कह नामक देवका मंत्रूर किया है। हुन् वृद्धानोंने अद्वित्तीय और हो और हुन्ने स्वोत्तम सम्बन्धित अधिकार प्राप्त किया है। पृथ्वी और कर्मका हुन्हें सब पारन करते हैं। हुन्दरत पुरोवित होकर में नामकार्थ नवनका वहा किसे कट समस्य हैं। हुन्द केंचे स्वते । मैं अस विश्ले भी स्युन्यके यहने कभी भी सुना क्यों कार कर्मका।' अस्य करना होड़ हैं; किंदु मेरी क्या सबी प्रतिक्ष की दल सकती !'

वृहर्गतिको कर धुनकर इसमें उनकी उन्नेसा की और अपने भरभने करें को नवें। राजा मरसने नार का सुन कि अक्ट्रियके पुत्र कुरस्परिजीने प्रकृतके बार व करानेको अधिक कर सी है तो उन्होंने एक कान काका आकेवन किया। पन-ही-पन कर पहला संकार करों से सुहारतियों के पह पने और मिनीत पान्यों मोरो--'अपवन् | की पहले एक बार अवका में अपने पान्ये जिनमें सरमा की भी और अपने विश्वके किने हुई अदल से भी, जा पहलों कर मैं अंग्ये काना पाइक है। अपने पान्यनहार मिं सब सामने एवरिंग कर की है। इसके दिखा, मैं आपका पुरस्त पानका में हैं, इसकिने पानकर मेरा पहले की सेंग्र सैंगिने र'

A BANK N

वृहत्वरिक्षेते कहा—स्त्रमम् । साथ मैं दुष्पारा यह करानाः वृह्मि कहातः । केवकः इन्हरे पुत्रे अक्या पुरोक्षित कर निष्य है और मेर्ड को अनेत सामने प्रतिहा कर तो है कि क्युक्तोके कह नहीं करातिया ।

न्त्रको कहा—विहास । मैं जानके विहासे सम्पन्ने ही अन्यक्त क्यांका है तथा अवस्था विहेत सम्पन्न करता है, अन्यक्त करनोमें नेरी कहा भक्ति है; अतः कार कुटे जीवता

वृत्यक्षेत्री क्षा—नकर ! यो कथी कृत्ये कार्य ज्ञा होते, जा देवसभोका का करानेक ताव जब में मरणवार्य कृत्येका का केरे करावेगा ? दूस कुरो किसीको अवस पुरेशित कर की, यो दुखान का करा विक करेगा । आससै मैं क्षाने कार्य करा नहीं करोगा ।

कुरवरियोधे हेला जार बाकर स्ट्रासन काराको पहा संबोध हुआ। वे बहुत फिल होकर स्वेदे या यो थे, उसी सन्बर्ग सरोगें उन्हें कार्यकी दिशानी यहे। जानेर यस



बाकर करता बराव न्यायानुस्तर क्रम खेड़कर काई है नये। का नारहरूपि करते कहा—'कार्यों | दूस शामिक प्रसाद श्री विकारिय होते। बाह्यों, प्रमारे वहाँ मुख्यत हो है न ? इश्वर कहाँ क्ष्में में ? और किस कारक क्षमें का सेव्हाम अववाद प्रहा कृत ? यदि की सुननेकेन्य हो हो बाह्यतों, मैं कुन्तर कुन्य कृत करनेके दिन्नों कृत का कार्यता।'

देशमें जनके इस जकर पुलेगर क्या गवाने स्थानाथ (पुरेषित) से विक्षेत्र हैनेका उत्तर उत्तरकार अहें स्था सुन्या। ये मोर्ग-'नामको ! वे अधिको पुत देशपुर पुरस्तिकोचे करा गया कः। येव विकास का वित्र अहें अर्थ वर्ष का मार्गके तिले अधिका कार्य, वित्र अर्थने सेर्थ सार्थक गई कोचार की। अन्तर्थे स्थानको प्रकार कर के हैं। ये मेरे गुरु के; किंदू अर्थ अन्तर्थे पुत्रचे वरणकार्य वर्षक हेलेका क्षेत्र कारकर तिल सर्वक प्रतिकार कर दिवा है, इस्तरिये अस्त में जीवार क्षा वहीं कहात !'

रामा नकाते। ऐसा मालेका हेवरि माले आपने समुकारी कार्यके इस्त जो बोका जान करते हुए है माल—'राज्य ! अदिवासे क्रिकेच कुत संबर्ध को कार्यक है। मैं मिगावर होका सम्बर्ध विकासोने प्रत्या कर से है। बाँद स्वस्थित सुद्धे अस्ता स्थानात करता नहीं साहते से कुत अस्तित साह करते माले। संवर्ध महे बेसकी है। वे अस्तानापूर्णक सुद्धार का सका होते।'

नवाने पूज-वेशनें । आको का का कारकर पूछे निरम दिवा : अन का भी कारनेकी कुना क्रांतिके कि वै संबर्ध पुनिका दर्शन कहाँ कर कहीना ? और कुछे कार्य साथ विका कार्यक करक होना ?

् जराजीरे कार—स्वाराय ! से इस एकथ कारहीपुरीने विद्यालयोंके इसंत्रवी इकाल काराव्य-एट केर करण वित्रे अपनी सीवसे कुछ को है। इस विद्यालयपुरीके अनेस-इरकर प्रकृतका कई कारिते एक कुई सम्बद्ध एक ऐसा। प्राय:कारत विद्यालयों कार्यकों हैंकों करों सम्बद्ध को का मुस्त्रिकों बेस्क्यर पीके स्तरेत पढ़े जरे संस्था स्वयूक्त और से का साम वहीं अनके बीके-बीके करों कारह । सब वे विकर्त क्वान । स्वाराण व्यूक्त से इस बोदकर अनके क्वान्यता है जाना। विद्यालयों व्यूक्त से इस बोदकर अनके क्वान्यता है जाना। विद्यालयों वहस्त्रका है। अनव व्यूक्त संस्था है।

च्छ पुनवार शंकविं प्रस्तने 'जाहा अवाग' कहातर चरत्वीको आहा लोकार को और उनकी पूछा करके उनसे चर्मको आहा से वे जाएनसीपुरीको और चक्क दिने। वहीं पाकर नाल्योंके कामनात स्थरण करते हुए उन्होंने विकार संवर्ध की वहाँ साथ, हिंदी साथ रखा। इसी साथ विकार संवर्ध की वहाँ साथ, कियू उस पूर्वियो देखकर स्वस्त की सीट को। का देखकर अविशित्सक्त साथ करत संवर्ध कुमिन जिला रेनेक मिले हात कोई उनके की नेक संवर्ध कुमिन कुमिनेकर राजको अपने पीके-बीके असे देश संवर्ध कुमि कुमिनेकर राजको अपने पीके-बीके असे देश संवर्ध कुमि कुमिनों कि को और काले समे--'रावर् । हुम्मे कुमे कैसे काला है? किसने कुमे मेरा परिचय दिया है? वहि साथ-साथ काल होने से हुम्मरे कालाको संवर्ध दूर्ण होने और वहि साथ-साथ करता होने से हुम्मरे कालाको संवर्धी हुम्मदे हैं



कारने कार—पूर्त ! सामानीने पूर्व कर्ताये आपका कार और परिचय दिया है। अपन मेरे कुठ अहिलाके पूर्व है, का अस्पार कुछे कहि अस्ताता हुई है।

संबद्धी कहा—राज्य । तुन दीक कहारे हो । नारद्वारे वह कानून है कि मैं वह कराना मानता है। किंदू केर कार्यक से अपनी जीवाने काम करनेका है—में किरतेके अधीन नहीं काम, कार पून सुक्रमें क्यों का कराना कहारे हो ? मेरे पाई कुरवरी इस कार्यने पूर्ण सकते हैं। अवकार इसके साथ करान कहा पैसा-जोता है। में अस्ति कहा आदि कार्य करावा करते हैं, इसरियों अस्ति अस्ता कहा कहारों। यर-पूहरणीका साथ स्वासन, कार्यक कहा गृह-देवताओं के पूरण आदि

मन्दिरापे कर शिक्ष है। मेरे यस से केक्स के का उसीर ही कोड रका है।

माराने सह-मान् । वै पहले सुहरानिकीय है कह गया था। भागिका सम्पन्तर सम्पन्त है, सुनिने। में इन्हरते प्रता रक्षांच्ये इक्षारे कर यूने करन करना करना जी मार्क । क्वोने एक यह दिवा है कि 'जनन (वेसक) नवकार पायर अब में प्रमुख्या यह जो करातेया, राज है हमारे मन भी किया है कि साथ मक्कार पर न कराउनेया।" प्रमुखी हुए स्थानके अन्तर्क प्राती प्रकेशन का केन्द्र है। शयः शय मेरी इच्छा ग्रह है कि मैं सर्वक देवन भी साम्ले है का बाजें और अपने हुए सम्बन्धि पूर्वेच हराओ इन्हर्को भी मात कर है। अब बहुत्यनिके पान करेका वैक विचार नहीं है; बनोबेंद्र किया अवस्था है उन्होंने नेसे अर्थन हक्ता से है।

संप्रति वक्-राजन् । चीर मेरी इंखाने अनुसार काल बारी हो हम जो हक पाड़ोने का सब निश्चय 🛢 पूर्ण होता। बात में हुमार का करकेन से इस और बुद्धानी केने | हुई इसके बदारोने विकारित ।

कर्म---इन सम्बन्धे इस सम्बन्धे की बन्धे बन्धी अन्तर्भ है कृतिय क्रेकर मेरे साम क्रेन करेंने। इस समय हुन्हें केरे बहुन्या समर्थन करना होना; बिहु इस बसका पुत्रे विकास केले हो कि हम नेत साथ होंगे। अता के भी हो मेरे करवा यह संस्थ का करे, भारी हो आधी होको परकर में अनु-क्रमकोत्रीय हुई भार कर क्रांत्रिक ।

> नक्को कहा—बहुन् ? चाँदै मैं सामका साम कोड़ दैं हो कारक पूर्व करते हो और कारक पर्वतीकी मैनति करी हो, क्का को उसन कोच्छेची आहे न हो तथा में कभी भी अपने सदि। में जार पर सके।

> कंपनी का कम्पू । कुमरी ज्यम सुद्धि सद्य सुन करोंने राजी हो : क्या केंग्रे कर सके—मेरे करने भी तकारा का करनेको एका है। उस: प्रत्ये तिये तुन्। अक्षय बनावी अदिला क्या पालसंख । का बन्ते हुन नवर्गतिहरू क्षेत्रकारों और 19को भी नेका दिखा सर्वाने । मैं तक बहुता है, मुक्तके अपने रीजो पर अपना कामानीचे संस्कृत स्वेत न्हों है। में से इन्हरूत देश करका कहता है, उता: निक्रम ही

#### संवर्तका मस्तको सुवर्णकी प्राप्तिके रिज्ये महादेवजीकी नामपयी सुविका उपदेश करना, मरुतकी सम्पत्तिसे बहस्पतिका चिन्तित होना और उनकी प्रेरणासे इन्द्रका मरुतके पास अग्निको भेजना

गामक एक जांत 🗓 जार्र भगवान् संबद तक राजक विका करते हैं। इस पर्यंतपर खलक, सरकारक, विशेषक, कसूरका, मगराय, काल, अनुकरोराद्वीत कुमेर, कु, विकास, अविनीकुमार, क्यार्थ, अध्यत, पश्च, केवर्ष, आक्रिय, क्या और महाभागाम एक ओएके बेरफर इन्फरीर महानेक्कीकी क्षारमा करते रहते हैं। उनका वीविष्य केवले पानककान्य स्वार है। संसारका कोई भी जानी काने वर्ग-काहाओंसे क्रमें क्रम्पको नहीं हेल सकता। नहीं न हो अधिक नहीं पक्षी है, न विशेष ठवका। न बालुबर प्रयोग होता है क सूर्वके अवन्य सनका। इस वर्वको क्रम्ट क्रिसीको जुक और प्यस नहीं सतावी, कुछना और पुरस्का प्रवेश नहीं होने पाल तथा दूसरा कोई पन भी नहीं खुल। उस फाँठके करों ओर सुर्वकी बिल्लोके सरान फरकरे हुए सुवर्गक अनेको हिक्स है। अस-प्रसारी मुस्तवित कुलेस्ट अनुबर अपने कार्यका दिन करनेके दिने का संवर्त-दिवसरोकी तथा रहा

रोवर्त वालो है—शक्त् ! क्रियलंक्के पुरुष्येतमें पुरुष्यत् । करते हैं । वहाँ क्रावेके क्षत्र हुए पहले कान्-विधास प्रत्यात् कंप्यतको नक्तका करके दिन इस प्रकार संक्रि करण-'ननकर्। जाम वह (शुःसके कारमको हर क्रमेक्को), विविध्यम्, (गरोपे जैस विद्व सारम व्यरपेकारे), पुरूष (अन्तर्गानी), पुरूषाँ (अस्तर रेकानी), कार्वी (कामकारो), कारक (परेवर कारको), इर्वह (हरे नेजेक्करे), कहा (पर्योको अपीष्ट का अक्रम करनेवाले), लक्ष (विनेत्रवाती), पूराके दौर क्लाक्नेवाले, चया. दिव, चाव (वकामके नकावस्य), अञ्चलका; स्ट्रांच (स्ट्रांबरी) इंबर, क्षेत्र (करवानकारी), हरिकेस (गूरे केलोकरें), स्वाम् (विवर), पूर्ण, हरिनेव, कुन, इ.स. कारण (संसार-सामासे पार क्यारनेवाले); चारकर, (सूर्वकर), सुरीयो, (पवित्र रीर्वकर), देवदेव, केश (केनकर), उन्कीर्य (मिरकर प्राप्ती वारण करनेकरे), सुब्बा (सुन्ह गुक्कारे), स्वकाक्ष (स्वरी रेडोकरे), जैव्हार् (फल्यूक अध्या नरिकेश्वर कृष्य),

गिरित (पर्यतपर क्रमा करनेक्टरे), उक्रमा स्थी (संबंधी), चीरवास (चीरवच करन करनेकरे), क्रिक्क्यून (केरव्य इंग्रा बारण करनेवाले), विद्यु, क्रवीवकार (राजको स्वा बेरेकारे), पुरस्कार (आई महत्त्वार), महार, कर्मा (विनद नगर कृत काल क्लेक्ट्रो), का (संस्थाती कर्ता करवेगारे), वर (सेंग्र), खेवनका (क्यूको कथर मुस्तवारे), रिज्ञान (शिन्होंने हभी कर रिद्ध कर हैओ है, हेरो), सञ्जूर (जेरका:), क्षेत्रकान्य (सुकार्कः सामा सुन्तर पुरावर्तेकारे), सा (क्लंबर), विकासके चीर, वेरिकार, (महिकारो सक्ती विद्वारोधि इस इतिकास श्रासकः फलेक्तो), चेष्ट्र (मी अच्चा पानेके शिवासका), मित्राच्या, पृथ्य (कारणकारिकी पृथ्वि कार्यकार्य), प्रसूची, क्ष (बर्गालन), कालक, केलरी (कार्निक्षण), गवान, सुन्तान (सुन्ती सुन्न सुन क्रिकेटो अस्टिक्टर), यो। (सम्बद्ध काल क्रिकेटो), क्षणी, पार्टन, शक (जन्मद्वीर), कृष्णके, वैक्तवह, बीवन्त्रेष्ट्र, सीवृत्त, वैदानसमूचा (व्यक्तिका गुक्ताको, month, and (Printer), and, Supredit (make काले), विलोधित (रकारची), ग्रेस (प्रेकारी), वेस्ता (वेरीन्यानार वेजीवारे), सहैवर (गाउसरे), क्युरेक (विकासीर्व अधिका), सुनपुर् (कृत्र स्थीनको) पृष् (स्तुत), प्रतिकास (कृतको सम्बद्ध केवक करव क्रांतेक्रो), क्षांत्रकार्य (पुर्वकाल काम क्रांतेक्रो), क्षुकर्तपुर्वतः, व्यानेतः, सुर्वतः (श्रीव्यान्यस्थाः), प्रत्यास (पिनेक्सरी), अरम (पिनान), क्रोकर (पूर्वन क्रोक मार्गनाते), अनुसंद (क्षेत्र्य सन्तवकारे), सूर् क्रमुकार्ती, क्रमी, सहस्रक (स्थारी), अक्रमध्ये (क्रहोर कृति कु क्षेत्रके), स्वत्रक्षित (इसके व्याक्ताते), स्थानकाम, राज्यकाम, स्थान और क्षेत्रे कार सहस्र कारनेवाले है। जानाओं नेत अन्यान है। इस प्रवास का विनवसरी व्यानेत, व्यानोती, स्वीत्सकी, प्रको विद्यार बारनं करनेवाले, बस्तुकक, जन्मक, कुक्तेश्वर, क्रिनुरासुकको मारनेवाले, विनेतवारी, त्रियुक्तके स्थाने, महान् वरम्बान्, संग जीवोंको उत्पत्तिके सारान, समझो कारण करनेकारे, पृथ्वीचा चार हैंग्यानेवाले, बनाईड वाराव, बान्यावदारी, सर्वका, व्यानामसम्बद्धः, विकेशः, क्षात्रको अस्य क्रानेकारे, क्षांतीके पति, पद्मश्रोके कारक, विकास, म्हेसर्, विकास, का पुरस्कारे, अरबी कार्कों क्रिय कुरवाड़ हैया मान करनेतरे, जा, सानु, क्रेस, सा, पूर्व, चेरीस, \$67, Reference, service, 1866, 195, 1968, 107, 1

विकारण, विकारण, ज्यूनण, कारणी, जार्ग्यको सहस् करनेकारे, इर, ज्यूनुंख इवं इरव्यानसम्बद्धाः व्यक्षित्वीको विरसे प्रचान करके करके इरव्यानस हे कारा । राजन् ! के व्यान् केवा, व्यानेककान् और व्यानका है। अनके वर्श्योने व्याक्त हुकारेले हुने सुवर्णकी प्राह्त होती। सुवर्ण सामेके विने हुक्तरे सेकारोको भी वहाँ जाना वालिने।

संबर्धका का नवन पुरुषार राज्य करवाने मेरत है किया।
इसीन ने बहुका साथ सम्बद्ध आर्थिकिक इसमें करने हरने।
इसके कर्मापारिने वहाँ बहुका के क्रिके बहुत-ने पान हैया।
किये। उसन बहुनपिने यह सुना कि साथ पर्यापायो नेपारशोही
की बहुका सम्बद्धि पाह पूर्व है के उन्हें बहुत हुन्छ हुन्छ। ने
विकास पार केने वह पाने और बहु स्तेयकार कि 'मेरा सह कार्य वहाँ करने के कार्या अन्य सामित सम्बद्ध कुनेर है क्या। केराव इसने का सुना कि बहुनपित्रों अस्वत्य संस्था है वह है के के कार्यायोग साथ संख्या उनके वह गर्मायव सम्बद्ध सामित्र हुन्छ केने आह हुन्य है ? आप का्य और पोर्ट कर्या कार्याया हुन्य केने क्या क्या कर कर्याया है ? आप का्य और पोर्ट कर्या है को है ? कार्यायो कृता क्यांपाने, में आपको हुन्य हैनेक्सकेस का कर कर्युना ?'

कृत्यतिकोरे कहा—हुन्यू । एकेन कहारे हैं कि उद्यासक नकर काम प्रतिकारकोरी पूजा एक प्यान् कामति सेवारी कर को है कहा का भी सुनवेरों उसका है कि संवर्ध है आवार्थ क्रेकर आ नक्षा कराकेरे । किंगू केरी हवार है कि संवर्धके अनुवार्थकारे इस नक्षा अनुवार र केरे कहे ।

एको वक-पूर्णमा । आप यो पेनमओंचे पुरेशित है। आपने चया और मृत्यु केन्येको जीत रिल्मा है, किर संवर्त सम्बद्धा पना निमाद समारे हैं ?

प्रस्थिति व्या-वेशराम | समुजीकी समृद्धि कुम्मक कारण होती है। येत कह संबर्ध समृद्धिकारी होना कारण है, वही सुन्यात में उद्यास हो का है। हुए क्येई-ए-कोई उत्यास कारके संबर्ध उत्यास स्थानको वैद्या बाद हो।

म्ब कृत्यर इसने अधिनेशवासे कहा—'शासित । महाँ सकते, में तुन्ते एका नकतके कस सेनता हैं। कस्की श्रमति रेखर कृत्यतिकीको करके पास पहुँचा है। महाँ कासर राजसे महत्त कि कृत्यतिकी ही आश्रमा कहा करायेथे उत्ता है सम्बद्धों अगर भी कर हैने।'

अतिरंगने का—प्रवासन् । ये गुरुगतियोको प्रशासे प्रश्ने व्यूचा क्रानेके मेलो अवस्था कृत करका कार्डमा और हेला कार्क क्षानकी बद्धानका प्रशास कार्य वृक्षणतिकीका सम्पान कार्यना । व्यूच्याका कृत्यन क्षाकारके महत्त्वस आस्तित व्यूक्ति



चार हिने। एन्ट्रे आते हेंचा नवाने संस्तांते व्यक्त-'कृते। बढ़े मध्यपंत्री नाम है कि मान महिनेन पूर्तिकर होपार वहीं चयरि है। आग हमें हमार प्रत्यान हमेंच निरम। आग हम्बे इस्तारांच रिप्ते आगार, चाह, आग्रं और से प्रश्नुत

श्रीने नवा—राजन् । मैं आवके मिने दून जबा, अर्था और आरम आदियों का कुछा । इसके मिने अस्त्यों कन्यका देशा है। इस स्थान में इसकी अनुवारे दूस कन्यार आपके पास आवा है।

गणाने वहा—अस्तिव १ औवान् वेयरास सुवरे के है म ? वे मुझसे प्रश्ना से हैं ? समूर्य वेवता सम्बद्ध सम्बद्ध अपीय क्यों है म ? वे सब बसो मुझे दीवा-दीवा काव्यों।

मानियेको कहा--राज्य । हेम्साम इन्ह कहे सुन्तर्थ है और आपके सम्बंध अनुह की जोड़क कहते हैं। समूर्त केम्स भी उनके मचीन ही है। सन्द, उन्होंने निस कार्यक रिप्ते मुझे जायके पास पडाया है, जो सुनिये : से केंद्र हारा कुल्यनियोको आपके पास केम्सा कहते हैं। उन्होंने कहा है कि 'कुल्यनियी कार्यके मुख है, जा: ये ही जायका कहा करायेंगे। साथ मरणवर्षा मनुष्य है, वे आपको अगल कना देते।'

मन्तर्ने सहर—भागवन् ! येटा यह सरानेके पैको वे विकायर संपर्धानी वहीं उसस्थित हैं । ब्यूस्टब्सिनीके सिन्ने दो वै साम जोड़ता हैं। ये देवराज इनके पुरेशित हैं। मेरे-जैले पर्वचक का कठन उने होक भी देगा।

अधिरेशने स्वाः—एकत् ! सदि वृक्तातिको आयक्ता स्वां करावेणे से केवरण इस अस्ता होंगे और उनके अस्ता होनेकर केवरणेकके चीवर विसर्व क्ये-को लोक हैं, में सब आयके विश्वे सुवाण हो कार्यने । इक्तों स्वीकः भी संदेह नहीं कि आय प्रसारी होनेके साथ हो कार्यन को विकास आह करेंगे । विकासेक, अवार्यास्थिक और देवराओंके राज्यस्य की अववार क्या अधिवार हो कार्यना ।

कंपनि का—जाते ! मैं मुखें सामधान वित्ये हेता है, कुल्पनिको कराओं काम ब्यूंजनिके तिथे किन वाणी का आया। जो से क्रोंबने धावार में अपनी कृषण दृष्टिने तुन्हें भाग कर क्रमुंख।

संवर्धनी नात मुख्यार असीत्रोग भाग होनेके जनसे पंजाने परंची कह चारणे तमे और हुता सर्वकार इंड्यानोके पान चार गर्थ। इन्हें स्ट्री देश इंड्यो पुरावर्धनोके पान चार गर्थ। इन्हें स्ट्री देश इंड्यो अहात को थे। बहातो, वे अक कही हैं? उन्हें मेरी बार सर्वकार है का नहीं?"

श्रीने कहा—देवराम । रामा कलाको आवको बाम कार वहीं आवी । कुल्यतिकीको से उन्होंने प्रथा योज्यार उन्हान कहानक है । मेरे जार्कार अनुगोन करनेवर की उन्होंने वहीं कार किया है कि 'संवर्धनो हो केरा यह श्रुरतोंने र'

ह्यां व्या—अभिकेश ! एक बार किर ककर राज्य सकता नेरी कर बढ़ी। यदि तथ यी में व्या करेने से में उनके ज्ञार कड़का ज्ञार करेना।

अतिने व्यान—देशराम । ये प्रवासीक राजा पूर्व परेजूर है। इस्तिको का व्यवस्था नेतिको । युक्ते हो वहाँ जहाँ कर राजक है: क्योंकि व्यान्यति संवर्तने वहे क्रोशने आश्रम सुहत्ते प्रका का कि आहे । यदि कित क्रान्यतिको स्वान्यते पास पहुँचानेके निक्ते आहोगे को मैं हतिबासरी दास्त्य दुविसे तुम्हे पास कर व्यानुन्हा ।'

हनने का -- अरिनेश ! हुन्हारी बातपर विश्वास नहीं होना; क्लेकि हुन्हीं पुसरोको प्रस्त करते हो । तुन्हें करूप करनेकास दूसरा कोई नहीं है । तुन्हारे स्वर्ताधे सभी स्रोत करते हैं ।

अस्ति कार-पहेन्द्र ! जरा सम्ब सर्पारिके बहुता से स्वरण करियों, जहीं ज्यान सुनि का करानेवाले से र-आय कोशमें अस्तर हनों क्या करते ही खु गये और उन्होंने असे के अपने ही अध्यक्तों अस्तिनोकुमानोक साथ मोम-सम्बद्ध साथ कार प्रदार करना जातो थे; किंदू उन्होंने कुनिया व्यवस्थाने क्यूकर दूसरा कोई भी वार नहीं है। मैं प्रदारेजको होकर अपने तर्वकरमा आपकी बहुद्धों कारपीत बहुद्ध अबहै कहा कारत है, अहरूव मुझे संबर्धको बीटनेका सहस हिया। तम प्रमणेत होयर जायमो कि। अही म्यूनिंदरे | मूर्व होता।

किया । भर प्रथम भाग असमा सर्ववार का रोकर चुनिके | करको साथ बढ़ा था । अतः क्राव्यको स्थापक ही होह है ।

## इनका गन्धर्वराजको भेजकर भरतको भव दिखाना और संवर्तका मन्त्रबरूसे सब देवताओंको बुलाकर मस्तका यह पूर्ण करना

श्चिन नवा—च्या ठीमा है कि प्रक्रमात समसे कामा है : क्रमानमं क्षेत्र कृतरा कोई औं है। किंतू में एका क्रमाने मरामां नहीं स्था स्थान । उनके स्वतः अवस्य अपने चीर मानक प्रकार कार्रेगा । पन्पर्यक्रम कृतक्र ! अस तुन केरे क्यूनेरो वर्ष वान्ये और संवर्धि सत्य विसे हुए प्रया वयको बहो-'पन्त्। जान पुरस्तीओ अस्ते पर्व्य अस्तर्भ समापने । अन्यक्ष केमराम हुन्द्र अवनदे प्रथ्य चेत्र कामाह प्रकृत क्योंके हैं।

इन्तर्प अन्ता पासर कृत्य एक क्यांट का गर्ने और जन्मे जन्मत संदेश का क्यार बाने रहने-"महरता ! में मूलाबु मानक नावर्ष है और कारके वैपराम इन्यास स्थेत सुनाने आब है। तन्तुने तनेकोत मानी इस्ते बढ़ा है कि भार फुलानियों अपने पहला पुरेषित सम्बन्धे । यदि नेरी बात नहीं वानेने को वी स्वयूक्त मनंबार बंधमे उत्तर करीना (

weit aus-purfen ! me, pg, fribe, यम् और अधिनीकृत्यर आदि अभी बेदल का बालते जानो The Rook was the mother temperals trans महत्त् पाप समाता है। कारते कुटकान क्लेका संसारते कोई क्रमान नहीं है। जन: मेरा यह से अब संबर्धनी है बराजेंने। ब्रहररतियो देवताओं और सहस्राधिकों केंद्र इसका पर कराने । इसके विरुद्ध व सो मैं जायबर बार कड़ेना और न इनकी है।

कार-महाराज । इस अस्वयस्यो गमर्थकरो मर्जन का यो है। उनका प्रवंका हिंदुशह सुनिते। जान महता है जन में उपयोग करत कह क्षेत्रण ही पहले हैं: क्ता: आप अपनी रक्षाका कवन क्षेत्रिके; इसके वैको वही समय है।

गन्वर्वराज श्रुप्ताहके देख कड़नेया राजा कालने वेच-पराचन संबर्त मुनिसे बद्धा—'विकार ! ये कालकी | वेट हुट्य काँध काळ है। बाब पर्को सन्दिक की सुर्वित नहीं है।



क्राप्पने हैं और अलके इस रूपनी रहा बहुता है। अतः जान कृत्य करके युक्ते अध्यय-क्रम है। दिश्लो, बे काम्बरी इस कर्ने विद्याशीको प्रस्तितित करते हुए बले आ के है। इनके प्लंबर विकासको इससी बालाएकके स्पी सरका क्रे के हैं।'

अंकरि सक्त-राजन् । इन्हरे यह न सहे । ये क्रान्यनी विकास प्रयोग करके बहुत कार शुक्रो कार आनेवारे इस पर्वतर संबद्धको कुर किये केत है। किवास रही और इन्हरं पराध्या हेनेका एव क्षेत्र हो। मैं अभी उने स्तरिक्त करता है तेना समूर्ण देववाओं के अस-समा थी की जीव कर किये हैं।

काले का-विद्यास ! अधिके साथ ही और-ओसी होने-अस्मारक्षि विकास करते हुए इसकी अस्मार कुनकर काली बक्रकी कर्वकर महत्रहाइट सुरावी हे हो है। इससे खन्युकर करानि पन जी करन करिने । ऐ अधी करूब सा करन करके इस बहुको निकास किये देश है। इस सबको स्रोते कौर मुक्तमे दूसरा कोई वर माँगो । बखाओ, कुकरी कौन-वाँ भागरिक इस्ता पूर्व सार्वः ?

मन्त्रने कहा—महार्थे ! अन्य ऐसर प्रचल मीजिये, विस्तरो सावात इस मेरे पहले शीवतात्त्रीय प्रवर्ध और अपन मन क्रम करे। क्रम है अन देखा भी अवस अभी-अभी जानरर बैठ कर्ष तथा तथा लोग एक प्राप मोल-सामा सार करें।

करनपर, संबाधि अपने कक्ष-बारहे समझ देशकाने-का आवास किया। मिन से इन्ह सको रको क्यो-क्यो मोडे जोतवार केलाओको साथ से खेल-काली प्रकारी अनुवन परावानी एका मकानो काल्यको अर पहेले। केन्द्रको साथ इसको जाते देख कवा बन्तर्ग अन्त्रे पुरेशित संपर्ध कुरियेह साथ आने प्रकृत काली अन्यवर्ध uft afte nift weigende gent werden fielleft wert-श्रीप्रपृत्तेन विद्या ।

र्शनम् नवः—वेतराम । अवन्या प्रवास है। आयो। क्ष्यानकारे का कार्य सेवा का क्यो। में कर केवा किया हात का कोय-तर तरहा है। जान हात्या का

भारतने करा-भारेतः । सामग्री केन प्रमान है। आव मुहिप्पर कारफानमधी कृष्टि राजिये । आरब्धे कारकोरे भेरा बहु और मौका स्थान हो नवा : वे संस्तिती येत पर परत से हैं।

श्याने कहा—मोत्रः । आयके युक्त संवर्धनीयके में सामक 🖣 । में मुक्तारिजीके होटे पाई और राज्यांट क्यो है । हुन्सूर केंग पुरस्क है। इसकि जानकारों सूत्रों वहाँ जाना कहा है। काम मेरा सारा क्रोम दूर हो नगा है और मैं आपण किहेर अस्ता 🗓।

रोक्टी बढ़ा—देवराज ! वहि जान प्रस्ता है से बढ़ते |

रंगरी कर-पन्तु ! तुन्हें इनके पीरण पन्नते से । यो-यो कार्य अवस्था है, जाका कर्य है उनके संबंध देखिये क्या सर्व हो एक वेकाओं प्राप्त निविद्य कीरियो ।

रांगर्वेद में महरेगर हुआरे देगावरोंको जाहर ही कि हुए हम स्थेन अलग्द समृद्ध को वित-विविध ईनके अचे-अचे वाच-पान वयाने, जिसमे व्य पहलात सर्वेद क्रमा मनेहर का को। का सुरकर समझ केरकारोने प्रोत हो हुन्हरी अञ्चलक करून दिल्य । सर्वश्राम् क्रमें जन्म केवन क्रम बन्तवी जनेता करते हर क्या-- 'रावन् । वहाँ मेरे साथ तुन्हारे पूर्वन और सायुन् वेक्स भी जनकार्यक एक्सिन हुए है। वे एक क्षेत्र हुन्हार मेल हेमा हरिना मूल करेंने।'

करूपार, विक्रीय अधीरके समान केवानी महागरा संकानि क सरते का यहाँ हा देखाओं के तम है-नेकर अजिने इतिकास कुल किया। इसके बाद इन्द्र साथ प्रोपकानेह अभिवारी अन्य देववाओंने अन्य सेमलनार पन वित्या। क्राओ सम्बद्धे हमें: और असलता क्र्ये । फिर सम पेमांत राजा मानवी अनुसी रेका अयो-अस्ते कारको यह गये। सर कारों को इस्ति साथ की पर-पारर सुनर्गारी हैरी सन्तवने और प्राकृतियो पहान्या वर दल किया। उस समय वास्तिवासि कुनेत्वे प्रमान अन्तर्म क्रोधा के जी की। कार्याम्य क्षेत्रामध्येक के कार्यने को यह यह गया, कार्या नंत्रको एक प्रमानक कम कर दिया। दिल अपने पुत riedell som from it presented plus sort afte संस्थानकेन प्रचीका राज्य करने समे । प्रविद्वित । सन्त नाम हेते प्राथनकारी है। उनके यूक्ते बहुत-सा शुक्ती क्षातिक विकास करें। पूर्व उसी करेंग्री विकास स्वार्थ इस देवलाओको दल करे।

वैज्ञानको वर्त है—क्लोका | स्ववस्थितक न्यानीके क्या कुमार क्या पुनिद्धेर बहुत प्राप्त हुए कीर नहींने का बनके क्रय यह कार्यका विश्वार

## भगवान् श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको समझाना, ऋषियोका अन्तर्भान होना और भीषा आदिका श्राद्ध करके चुविहिर आदिका हस्तिनपुरमें जाना

वैतरक्षकानी करते हैं—राजन् ! अरुपुत कर्म कानेकाहे | विश्वन—'कर्मग्रज ! कुरिलका मृत्युका स्थान है और प्रात्तका केल्यासकी कर एक कुमिहित्यों राज्यात है चुके से भी अपनी अहि कठनेवाले हैं, इस करावों ठीय-ठीय सन्हा तमें कमु-वास्त्रोंके वरनेते अस्त्रत कुनी नामार सेनाई क्रान है क्राके विश्वीत से कुछ है यह कोरी नामान्द महानेजली परचान् जीवृत्याने इस प्रकार सम्बुधना आरमः 📳 भरण, उससे मिलीको वचा सरण क्षेत्रा ? इस समय

शास्त्रों अंदेले अन्ते कांद्र ग्राव बुद्ध कांत्र है, या बुद्ध सुमारे कार्रिका के जार साल्दे किये अध्यक्षे केवल के स्वार प्रतिये। अने कांग्यक पाल करों का चेनके हत मनको नहीं पूर्व करके अन्य हुए सरकार करको कर-प्रतासको अन्य धरिनने। कान्य कृत कृतिको प्रता सुक्रो महत्त्वा, तेवद १५ वर्ष-वर्षाव वर्ष है, हार्रे सारको अवेतो राज्या है। यह इस संसामी अन्य प्रस्को पराया न कर राके से का नहीं, आरकी का का केनी ? क्रा बारको अस्त्री वस स्थान केरेन्ट स्था क्रमणी हो शांकी । कुमका प्राणी को ही अलो-करो (प्राणो-करो) पहले \$1 ten flag unt art art madit mien पारम करने हर जीवर जिल्हे राजका प्राप्त करिये। चारत । केवार (एक्स साहि) वेला कार्योक स्थार कार्यके ही रिक्टिट को प्राप्त होती । यहा पहलाति अल्ल होपल भी को प्रारंतिक जुल-विकाली अवस्था है, जाको विक को और स्वरंकी आहे। होती है, जब सुन्धरे कहतीयों ही कहा है। 'लब' (मेरा) ने से जाना ही मुख्यों अही वार्तनाते हैं और 'न मार' (मेरा नहीं है) यह तीन कहारीकां यह स्थानन कार्यो जीवार करण है। क्या कर है और कार्य कर अपूर्वतः । परापर प्राण्यमेत्रीय प्रमुखे पृष्टीको प्राप्तर वी विकासी जाने कता जो होती, यह नुकारों का कर हती कर सकती है ? फिर कमें एकर बेनावे कर-मानेते मीवन-निर्माह वाली हुए की विश्ताबी प्रकार करना करी हुई है, का तो पुरुषे पुराने ही पहा हुआ है। आर पहती और भीतरी प्रमुक्तीके प्राच्यावर इतियान प्रतियोग ( अवर्तन् में अस क्रकारम् होनेके कारण निका है हेला निकार बडिविके) । यो मानिक प्रत्योंको नगरको स्टिले नही देशक, नह नहन्। बनमें पूरवाक के बात है। विस्ता का कारवाओं आरम्प है, अल्पी संस्थाने अभिक्र को लेके। कोई की प्रवृत्ति किम कामकोर नहीं होती और समक्ष कानकी नागी है प्रकट होती है। किहुन् पूका कानकार्यको कुकार कारक बानकर उनका चरितकर कर की है। केनी एक अनेक क्योंके अन्यापने चेत्रकों से चेत्रका वर्ग विशेष करते. कारनाओधा पान कर क्षाता है। को इस कारने करना Emper, Separat, 29, bafer-tarf, 50, für Reit और व्यान्योग आदिका कामनार्थिक अनुसार नहीं करता और जिस करोरे का कुछ कामन पराया है, का वर्ग की है। माराजाने मानवारतेका निव्या है को है और को खेळका after file

"इस विकास प्राचीन कारोबे कारवार विद्वार्

'कार-नेवा'के कुरते अहिन्दू एक प्रचीर स्थापन वर्णर विका बच्चे हैं, को मैं आरको दुस्ता है, सुनिने। सामक कार्य है—'कोई से डामी पारानिक उपान (निर्माता और केवानक) का अध्य किये किए केव नव नहीं कर प्रकार से सूच कार्ने अक्ष-सामी अधिकारण अनुका करके को का करोबा प्रका करता है, अनेद सा अप-वाले में अधिकारों साले प्रवट होती हैं। को कहा प्रकार की जाता हो है है है है है है है, काले दिन्हों से केले के काला होती है केले काल चौरिन्होंने क्यांका । को केंद्र और नेप्रायके कारकारकार साथानिक प्राप मुद्रे क्यांको बोधिय कथा है, असे परने में स्थाप प्राणिकोचे सीमानकारे माति अव्यक्तकारे निमास करती है। के स्वान्त्रकारी पूर्ण केली करते हुई विद्योचा का क्षात्र है, इसके प्रामीता कार्योंके साथ में इसके पूर्व-निवर बार्व है कि का कुछे पहला भी पत्र । यो जन जनक काराम कानेकार पूरा स्थानके इस मेरे अधितानकी िर्दर्भका प्रथम काम है, कामी तरकारें से में प्रयूप से कर्त है। के बोधकों अधिरतक रककर मेरे विनासका कर क्रमा है, क्रमारी चेक्रके और अंतरिकार विकास वार्थ्य पूर्व हैंसी आभी है सब्स में सुप्रस्थित मारे मामाने रूपानी हैं। मैं miteable first arom un un mitereit fie' gefteb रंशर । अन्य की साथ प्रधारको औरनावाले कार्कि प्रध क्रमणी कुरुरावको व्यक्ति प्रमान द्वीतियो । ऐसा प्राम्पेसे आस्पर्धा लबीह सिद्ध होनां। विकिक्ते अनुवारे प्रयोग प्रविक्ता वेकर कार अक्षेत्रेय एक अन्यान प्रतिका सन्दर्भ परिवित्रे । प्रति कारको हुए कोकर्ने आम प्रतिति और परलेकने केंद्र गरि कार के के ("

वैशासकार कार्ट है—रावन् । इस प्रवार समावन् वीहान, वेशासक, देशासक, जात, चीम, अन्ते, उन्हर, स्क्रोब, हिंग्डी क्या अन्यान केंद्र पुरसे और द्वासकार प्रवारोंके सम्बाद नुस्तेश्वर क्षित्रका सेव्यवन्ति हुन्छ दूर हमा और उन्हेंने कार्ताक किया क्षेत्रकर देशासमें क्या प्रवारोंका पूर्वन किया । सरावार, परे हुए कन्द्र-नामकोस्त सन्द्र कार्यने ने समुद्रार्थना पृथ्वीका सम्बाद हुआ से से अवस्थ राज्ये सम्बादित कार्य कार्य, कार्य क्या अन्यान पृथ्विकोंने होड़ हैं। अपन्यों मानोरे पूनी क्या समावन क्या है। सब मेरे पानी वीन्ता भी दुन्दा नहीं हैं। इसर कार्या कर भी किए क्या, विसारे हैं मानोपादि वेशासकोस्त कार्य कर साहुन्य। अस्य अन्यादोंनीरे

है स्तरने या अस्य करेन । वितय (स्वासी) ! इमरकेन आवको हो रक्षाचे सकर क्षेत्रकार कांत्रकर करेंगे । सुना बादा 🛊 व्यक्तित प्रदेश अनेव्यो अध्ययंक्रमा दुल्योसे पर हेमा है। मापने, देवलि मापने प्रथा मुक्तिर देवस्थान्ये बक्त-ही अर्जुत वर्ते बदावी है, को वेद अल्बाव करवेवामी है। म्यान् जीधानकारके पुरुषको कोङ्गकर कुले विस्तिको संबद्धके साम्य कार-वैसे राज्यु-सम्बद्धीय क्षेत्रिके गुरुवनोका वर्तन सुराध नहीं होता है

राजा पुरिष्टिरके इस प्रकार कृतका प्रकार करनेतर

क्षे मानि सहा जाता हुए और पुनिदेश, अंध्रेज तथ वर्षकारे अनुसार केवल वे सबके देशते-देशते वहाँगे अपनांन है को र इस प्रवास सभी वाचार पीकारी पुस्तके बार प्रीयकार्य सामा करते हुए पुरू कारणक नहीं हो। उन्होंने क्षेत्र और कर्ज आहे कुरुनेशियोंके विक्रिय जीवरिक्ष क्रिया (बाद) में प्रयानीको बहे-बहे छर विने । सरकार, प्रामी इतिस्त्रपुर्ण प्रमेश किया और अर्पाता पुर्वित सम्बद्ध तक कृतकृत्वे सारवात हैका प्राचीनके प्रतिकृत पूर्ण कर्त सने ह

#### श्रीकृष्णका अर्जुनसे द्वारका जानेका प्रस्ताव करना

और राज्यों रूप और सामित क्रार्थिक हो नहीं, अलो सह श्रीकृत्य और अर्जुन्ने पन्न ब्रह्म श्रीत्या है

र्वज्ञानकार्यने स्थान-राज्य : सामानि प्राणको विकास पासर पास कामने क्रम और कार्य केरत है के श्रीकृष्णः और अर्जुनको गाँँ प्रस्तका हुई । ये केनी आर्जिका क्षेत्रर विभिन्न-विशेष करोते और वर्तकोड सुरस्य विश्वकीर विकार स्था । पूप-विकास के पुत्रः इन्द्रानको और असरे और भई आरम्पूर्वक व्यो को है से वेटी ब्यूक्ट पुराल स्वीर मर और गरामध्य में और आस्तुओं बहुत क्षेत्र रकते से। कुछ किर मारावीरके क्रांगने के केन्द्रे केन्द्राओं और क्रांक्रिके र्धकारी कर्या करने रूपे। यनका ब्रीक्रम्य का प्रवासके निवासीको कामोनाने है। उन्होंने अर्थुको जिल्ला अर्थ और फोसे कुछ नहीं निसंदेश को नकुर कराई सुकर्त । क्षा समाप्त होनेवर बीकुन्सरे जनमें कुरिन्युक्त और कोनार मार्गिके हरा अर्थुनको सम्बन्धा हो। हुन्नो बहा---'वार्थ ! कारीराज पुनिविद्यन्ते हुन्यारे वाकुलानक सहन्य लेका और भीकोन तथा न्यूक-प्रकृतिक प्रकारको समूखे वृश्येक क्रिका पार्टी है। जान ने क्यूफिन क्रूप्यानका राज्य क्षेत्र के है। यह अकारक सामन्द्र करें करीर ही बारते कहा हता है। कुरवाको पुत्र अकांने स्था रक्तनेवाके, क्षेत्री, क्युकाई और दुस्ता है, इस्तिये दे काने कन्-कारकोस्ति। पूरे गर्मे : अर्थुन ! दुन्हारे साथ खनेतर क्षे पक्षे निर्मन बन्धे औ सम गिरमा है। फिर नहीं हाने सोट और पेरी कुछ सुची हों, नहाँकी तो बाद ही क्या है ? नहीं बर्गका कम व्यक्तित. महामारी गीमसेन और पर्श्वनका नकुत-स्कृत को 🕹

करनेशनों पुत्र--विकार । का सन्तर विकार हो को | को विकोर कोने नुहों निर्देश आवस् विकार है। इस राज-वरको स्थाप और परित्र साथ सर्वको भी या। का में है। कई हुकरे सब पूर्व हुए जून देन संब को । इसने विनोधक विकासी, सेवा बारपाली तथा अन्याप वृत्रिकारिकांको की वहाँ हैवा है। प्रतरिको अस क्रमान्त्रीयो साथ प्रमुक्त है। आहा है इस भी हो हत निकासी सकता होने । महत्त्वहों । वहि हुए जीवा कुरहों वो म्हारण श्रुविदेशके पात परवार करते मेरे हरका क्रमेचा प्रचान सत्ते । मेरे प्रांतीयर संबद्ध का नाम छ। भी वे कार्राच्या अधीन नहीं का समझ, दिए हरका नानेके fied some tim greich, me ib ib if fan mann i ? वर्त । मैं तबी बात का या है, की में कुछ दिया या um f. un ein gegeb menneb find aufr gruft di किन्मी इक्ति मिला है। अस नहीं मेरे प्रत्येका प्रयोजन पूरा हे कुछ है। कृतकृता पुर कुर्वेश अपने केन और सक्त्रकारेस्क्रीय काड यक स्था स्थान स्थाने किरी हाँ साठै पश्ची. कार, का और पारणोसीक कांगको अधीन हो गयी। इस्तीको जन कुर की साथ प्रकार महाराजारे मुझे प्रकार कारेकी अंदर्भ क्रिक हो। की करने को कुछ कर-सम्बद्धि है मा और नेट मह प्रतेन वर्षतकती सेवार्ने सर्वार्थेत है। है के कर देश और करवेच है। अब दुवारे साथ पर व्यापनेके रिका कई मेरे प्रतेका और कोई प्रयोगन की क कर है।'

> क्यान् अक्रिके हेल बहुनेस अधिवयसाधी जर्मुको रुपयो बारबा आहर करते हुए बडे हुन्छो सहय रुके कोचा उत्तक श्रीकर किया।

#### अर्जुनका श्रीकृष्णसे मीताका विषय पूछना और श्रीकृष्णका अर्जुनसे सिद्ध महर्षि और काञ्चरका संवाद

करनेकारे क्या-स्थान् । प्रश्नानेका राज हो कानेके बाद | कहाजोटी बोह बहारेकाली कावान् श्रीकृष्यने उन्हें गरेको या महरूम औदरण और अर्थुन समाने बैठकर कार्यस्थन कर के थे, का समय अभे क्या-क्या चलवीत हां ?

वैहान्यकार्यने सहा-नुसन्। श्रीकृष्यके प्रवीत अर्जुको जब अपने राज्यपर पूरा अधिकार जार कर शिवा है में दिन्य संधा-ध्यानमें आक्यूबे साथ चार्च होने । एक दिन कारानोर्ध किरे हुए वे क्षेत्रों किन क्षेत्रकारे कुन्ये-कुन्ये इत्यापकाने हेरे चार्च वहने में इस्के इका हुए 👁 🛭 पानुस्था अर्थन बीक्नाके साथ दानर चून प्रसा है। बच्चेने एक बार का राज्योंन संशासी और होई क्रांस्था भगवान्ते व्य क्या कह-देखीरका ! का पुहुक अकार क्वीका था, का उनमें मुझे कारके महाकारण



ज्ञान और ईसरीय लक्त्यका दहाँन **हत्य था**; जिल्लू केइसा ! आपने जेवनस सहते पुत्रे से प्रान्यः उन्हेज किया या, यह क्षण इस समय युद्धिके रोपने पूरा गरा है। ३० विकासेको सुननेके लिये वारंकार पेरे करने कहान्यत होती है । हकर, सहय मल्बी है द्वापक समेवाले हैं, जब पुरः यह सब विका पूर्व सम्ब दीविये ।'

लग्यकर इस्ट प्रकार जन दिन्छ।

अंकृत्य केरे -अर्जून ! का कृत्य मेंने तुन्हें अत्यन चेन्नेव विकास समय करणा था, अस्ते कार्यपूर्त को—इस्तान पुरस्कानसम्बद्ध परिचय हिंगा या और (क्कु-कृष्ण परिवार निरमण करते हुए) निरम रहेरहेरहः धी कर्नर किया यह बिजू कुम्बे को अगरी नास्पन्नकि कारण क अनेहरू के बढ़े रहा के करका पूरे कर सेर हुआ ै। ज्या व्यक्तीया अस्य पूरा-पूर्व प्रतास क्षेत्री प्रान्तर नहीं शहर पहल । परपुरत्वर , रिक्रम हो तुन बढ़े अक्रदीर हो, तुन्हरी कृति अवके नहीं कान पहली। अब मेरे तिन्ने कर प्रजोताको को-का-को पूरत हैन करिए हैं; क्योंकि क्षा शंका बोगायुक्त क्षेत्रत की कार्यसम्बद्धका वर्णन विकास का अब क्र विकास इस करावेद्रे हिन्ते में एक जारीन इतिहासका कर्मन बारक है। इससे हुन्हें बेड्र वृत्ते विश्व वृद्धि जात होती, क्रिके हरा हुए बस्य काम महिन्हों का बाओंगे। एक विनयी पान है, एक दुर्ज़ने क्यान क्यालेको आधार मेर महा आने । मेरे प्रस्ता विकास पूजा की और प्रोक्तवर्धक विकास प्रथम । मेरे प्रथमा उन्होंने बढ़े अन्त्री बंगरी उत्तर विकार को में हुने कारन यह है, कोई अनक विवाद द काके (में कान केवा कुछे।

अक्रमने का-मानुस्ता । तुस्ये एक अधियोगः सम कर्म कर्म मेहक राह क्रमेंड दिने से वह प्रेडकारी रूपान रहानेकार जा मिला है, उसका में क्यानह जार है क है। सम्बद्धन होका नेरी बाद सकत करे—प्राचीन क्रमाने कारण करके एक बनोध और समझे प्राप्त वितरी विन्यू महास्थित कार गये; जो कांके विकास सामग्रे लक्ष्म सालोको जानोबाले, का और परिवाके क्रा-विकासे क्रांस, सोक-सरके जानों कुसर, सुस-६:शके खामको सामुनेकले, इन्य-पृत्के शलह, क-कुरुके अना और डेंग-नीम अभियोको कर्मानुसार जार केनेकाली गरिके अध्यक्त कहा थे। ये मुख्याई शांति विकारनेकाले, सिद्ध, कान्यविका, विलेन्सिक, उद्यानेकारे देवैन्यका, पर्वत वा समानेकारे और अनावीर होतेकी विकासी जानोबारे है। अदृश्य सुनेक्रले सहस्वरी सिद्धीके वैक्रपायनको करते हैं—अर्जुनके ऐसा व्यक्तियर स्था विकासे, व्यक्तित करते और उन्होंके साथ स्थानकों बैठते थे। बैसे चयु कहाँ आसक न होका सबीर अवस्थित है होती है, उसी प्रस्कर से सम्बन्धकानुमेंक अन्यस्थक प्रकार सर्वत विकास करते थे । महर्षि काएकर इनकी इनकुंक पहिला सुनकर ही उनके थल गये हैं। विकास समार उन पेकारी, स्वतंत्रे, अनीपरवर्षे और स्वाप्तवंत् व्यक्ति नामानुका क्ष विद्यु प्यान्ताके चरजॉर्ने प्रकार किया । वे sepaità क्षेत्र मीर को अस्पत संत थे। उनमें तम प्रकारकी केनात की। मैं मामके प्रता और स्वांति है। उनक्ष दर्शन करहे मारक्ष्मो यह निराम हुआ। ये उन् एक क्लाक उनकी हेकार्ये तल क्ये और अवनी विशेष पुत्रका, गुरुवाँक क्या **अञ्चलको प्रथ करोने का सिद्ध प्रात्मको संदश धर** रिश्व । स्थानीय ! अरुपे दिल्या प्रत्यायकोड उत्तर प्रत्या होन्दर ¥म सिन्द्र महाचिन परास्तिकोड सम्बन्धने निकार करके जो क्लोब किया, को बातर है, सुने ।

विज्ञाने कहा - तास कार्यप्य । प्रमुख कथा प्रकारके सुन करोंका अनुप्रम करके केवल कुनके संबोधने प्रस क्षेत्रमें अन्य पाल और केलवेकारों काल प्राप्त करते हैं। बीकाने करों की असमा सुक को मिला । मिली की स्थेयमे यह लहा नहीं रहने पाता ( उन्होंस आहिते हमा विहाने ही बाह सहनार अहे-से-सहे स्वारको क्यों न प्रदा किया पान. महीने भी बार-का भीचे ज्यान ही पहला है। की काम-क्रोधने कुळ और तुम्लासे केविल क्रेक्ट अनेक्ट्रों धार मान मिर्च है और उन्हें पालनका और बंध देवेवारी अनुस मनियोको चोगा है। बार-श्रंत अन्य और बार-बार मृत्युका केन कराना है। रायु-रायुक्ते व्यक्तां चोचन किये और अनेवहें क्रानोंका कुर रिया है। कहा-से दिला और माहि-महिन्दी बाताई देशी है। विविध-विविध सुक्त-द्वाबीया अनुवार किया है जिल्ली ही बार मुक्तने क्रियनलेखा क्रियोण और अधिय नमुख्योका संयोग हुआ है। जिस अल्बी की बहुत कह सहकर कमावा का, व्या मेरे रेज़ले-देखले जह हो पका है। व्यक्तिका हो।

एक और सम्मोदी ओसी को का का को को कह और अवयन उठमें यहे हैं। अजन्त क्ष्मा ऋगीरिक और कारीला केवनी सानी को है। की अनेकों कर बोर अवकार, प्राच्यान क्ष्म और कड़ी बैज़की प्रजाई मोरी है। न्त्वाने पहुंचर कन्त्रोकाकी पालगई प्रत्नी है। इस सोमाने कन नेकर करकर कुरूप, रोन और राम-हेब आदि इन्हेंके हु-स्रोत्का अनुस्त्र विक्रम है। इस प्रधार शांका हैक उठानेको एक दिन की जनने बढ़ा संताम हुआ और सैंने कु कोंने कररावर परकारको सरम हो तथा समझ लोक-क्यानक परिवार कर दिया। इस तरह अनुभागेंड पालक की प्रत पार्वका असरक रिस्स है और अस कारकारकी कुरको मुझे यह जान रिर्मा क्रा हो है। अब है पुर प्राप्त संस्थानी नहीं अरहेन्य । सम्बन्ध प्रमु सुद्धि पहाराज केमी और समस्य देते मुक्ति को क्रेमची, समस्य है अवने और कृति अतिन्त्रोधी चूच गतिका अवस्त्रेकर करिय । दिक्कोड़ । इस प्रधार मुझे पड़ प्रदान निर्देश निर्देश है। प्राप्ते बाद में अपन-से-अपन सामानेकार्ने आईग्रा और करण अञ्चल बहुन्य (चीवा) को त्राहा कर ऐसा । इससे हुएँ प्रस्ति को संके को करन करेंगे। अस उसे मर्जन्तेको नहीं आज पहेला । पहालो । ये तुन्त्राचे असर स्थूत अनंत्र है । कोलो, प्रशास कील-पत दीव बर्जा कार्र ? हुन िक प्राथमंत्रे और काम अर्थनं हो अनके पूर्ण होनेका यह प्राप्त आ गम है। प्रचारे आगेका जोतन बंधा है 7 इसे मैं पासता ी और प्रीत ही पहिले कर्नेकारन 🗓 इस्पेरिको पार्च तुन्ते अब बारकेंग्रे रिक्ने जेरिय कर यह है। बिहन्। सुकारे अलग अन्यतन्त्री जुड़े यह संतेष है। तुम असी चल्पानदी बात पुले, में हुम्लो अधीव प्रथम अस होता। कारवर र से कुमारी चुन्तियों सरक्षांत करता और उसे बहुत आहर देता 🛊 । हुनों मुझे पहला दिला है, इसोरों कह रहा है कि श्रूप करे

#### जीवकी मृत्यु और उसकी त्रिविध गतिका वर्णन

\_\_\_

बाता है ? फिर इसर्थ सरीर कैसे प्राप्त होता है ? संसादी बीच मिल तेया इस दु:समय संस्थानी मुक्त क्षेत्रा है ? ब्ह्य यूक अभिन्त और उससे उपक्र हेनेवाले प्रतिस्का की त्याप काल है ? और एक सरीरसे कुटकर इसरेंगें का किस प्रकार प्रयोग करता है ? समुख्य अपने किये हर प्रध्यप्रण करतेंका

क्ले है 7

काल करते हैं—कुम्म ! कारपाके उस प्रकार पुरुषेस सिद्ध व्यक्ति उसी क्योंका समा: उस देना अस्तिक विकास

श्री को कार्या । मनुष्य इस श्रीकर्य आसू

इस्ति-आदिने कारण होते हैं। इस्ति-व्यालके अञ्चल का ने सभी कर्म अपना फरू हेवत औष है जाते हैं, का समय मीक्सी आयुका भी क्या है जला है। उस अवस्थाने का बिपरीत कर्मोच्य सेवन करने समझ है और विवाहकाल निबट आरेपर साबद्दे बढिट जारी है। यह अपने सत्त्र (क्री), यत और अनुकृत प्रकारों कारकर थी मनगर आधिकार न होनेके कारण करम्पाने तथा करनी प्रकृतिके विक्ञ् मोजन करता है : सावना हानि पहुँचानेवसकी बितनी कर्ता है, जा सक्का रोका करता है। क्रांचे कार अभिक्र पर तेल है और क्षणे विलक्षण है योका जी बाता। वाचे इति आ-कान्ये की सून बर हैन है। क्रमी एक-द्रारंते विक्यू मुख्याने बहुबीको एक साथ एव रेंगा है। मिली दिन गाँख जल और यह भी बाल अधिक मार्थने कर कर बाता है। कभी-कभी एक करका बाजा हुआ अन्न पनने भी नहीं पता हैं, कुछत् भोजन कर हेना है , अधिक जाराने सामान और धी-सम्बंध करवा है। साम कारोके स्वेधको सद्य पार और पुत्रके बेरावधे रोके खाल है रतीत्व शत योजन बाला और दिन्हें होता है उस कारी-कारी कार्य हुए अच्छे राज्येक स्कृति अकारको स्केतन करके रूप है अपने सरीरमें विश्व बाद-दिलाहे खेखेंच्ये कृतित कर देता है। इन क्षेत्रोंके कृतित होनेपर का अपने प्रैस्वे प्राणनकार रोगोको सुरत तेना है और इन्हें कर बारकोई \$सका सरीर नह हो जाता है । इस प्रकार संस्थरके सभी और बेदनाओंने प्रता और बन्द-नरकोड भवने उन्हा जीज राते हैं।

देशपारी जीम किन इन्डिपोनेड इस्त प्रमा, सह असी विक्योंका अनुषय करता है, उनके इस का कोकाले करिएड हैनेशले जनोब्दे नहीं सन सबसार इस प्रतिस्के चीतर क्षकर के एक करने करता है, क्षा समागर जीव है। अन्यकार कारिका होनेपर तथ (अधिका) के हारा क्रीकार्ट अन्तर्राक्त एस हो जाती है। उसके वर्षत्वान अवस्त्र हो कही है। इस समय जीवके दिनों कोई आबार वहीं रह बाला और कद उसे अपने सामसे विवरित कर देती है। तब क भीवारमा करेवार लेवी रहेत क्षेत्रका बहुत निकारते समय सहसा इस बढ़ शरीरको कन्पित कर देख है। शरीरहे आहर

और व्यक्तिको सक्नोबाले किन कर्मोक्ट होका करका है, ने ] होनेका का अपने किने हुए पूर्वन अवना पाय-कर्मोंसे विश कत है। विन्होंने के सामके शिक्षणोंका प्रकार आसका विकार है, वे जनसम्बद्ध संख्यान स्थानोके प्रश्न का बार होते है कि अपूर्व जीव प्राथमान कु है और अपूर्व जीव पार्च . किस उद्या आहित्याले वर्तुन श्रीक्षेत्रे इवर-उवर उन्हे-सुप्रते हर स्थानेक्यों देखते हैं, जरी जनार सिद्ध पुरूष अपनी हान्यन्त्री विच्य इदिसे सच्यो-मरो तक गर्चमें प्रवेश करते हुए केवको एक देवने रहते हैं। प्रावको अनुसार बीचके तीन स्कार देनों को है (पार्शकोख, सर्गकोख और नरख)। बह मार्थकेकवी भूमि, वहाँ बहुत-ने जानी रहते हैं, बार्यभूमि जारको है। की चुन और अचुन कर्र करके सब प्रमुख अस्य राजनेत्व कर जार बारे हैं की एक कर्य करनेकारे कीच (काणि काकर) अधने कार्यपुरास जाम केंग 🖭 करते 🕯 और की पाप-कर्य करनेवाले पन्छ कर्मानुसार कावले पक्षो है। यह बीवबरे अधोगति है, के चेर कह केरेकारी है। इसमें पहचर वार्यी प्रमुख बरकातिये कारने करे हैं। अल्ब्री बाधनारे कुटबंदर विस्ता बहुत व्यक्तित है। इसकिये यात्र कर्मने अलग रहका अपनेको नरकरे क्यानेक विशेष बंदन प्राप्ता पाहिये :

तम वर्ग आहे कर्म लेक्ट्रेने पर्व हुए प्राणी किन न्यानोने विकास करते हैं, इसका कर्मन करता है, सुने । प्रभवे स्टानेने तुन्हें कर्मीकी गतिका निक्रम हे बावना और विकास पुरिद्र प्राप्त क्षेत्री। वहाँ वे समझ साराई हैं, वहाँ क्षान्यक प्रकारित होता है तथा विस खेकारे सुर्वस्थल अनवी फिरकोरे वेटीयाधान विकासी देता है, उन सबको तुम कुन्य कर्म करनेवाहे सनुवाके स्वान प्रमाने। (प्राथाता न्तुमा रही लोकोर्वे जावन अपने वृत्तका पाल योगते हैं।) का बीजेके एक-क्योंका भेग समात्र हो बाता है, तब वै महिने नेचे निर्फ है। मह अस्थानपनकी परव्यर बरावर लगी रहती है। अवस्के स्थेकोचे भी द्वेब, जीव और प्रधानका सेट क्या है, इसमिने कई निवास करनेवल्येको भी इसरोका तेन और देखने अपनेसे अधिक देखकर बनवे संसोध नहीं हेल । इस इक्टर कीवार्ध इन सभी गतिबोका पैने पृथक-पृथक कर्मन किया। अस वह बताडेमा कि बीच किस ज्ञान गर्पने आका क्या शास्त्र करता है। तम एक्टरविक होका हा विकास सुने।

#### जीवके गर्च-प्रवेश, आधार-धर्म, कर्म-फलकी अनिवार्यता तका संसारसे तरनेके उपायका वर्णन

सिद्धने कर-कारका ! इस लोकने किये हर हुए | और महाप क्योंका परन योगे किया गया नहीं होता। वे कर्म एकके कर एक इसेर करन करनार अन्त कर के सूते हैं। मैसे कर बेरेवाल कुछ कालेका समय आनेक महा-से कर प्रदान करता है, वहीं प्रकार कर करने किसे हर पुरस्का पक अधिक होता है तथा बागुरिय विको किये हर पर्यंत प्रस्तों को पृति होती है; क्योंकि जीवाक करती आने करके हैं। जनेक कार्यने अनुस होता है। काल-होताई बिय हुआ करना बिया प्रवार कर्न-मार्ग्न करना होका मधीने अनेक करता है, अल्ब्हा कर्नन कर्ने । बीच पहले मुक्तके बोर्नी प्रतिव होता है। किर बोर्फ नार्वकार्य जन्मर कालें कारो जिल करते हैं। संस्थात हो कर्तनुसार द्वेण क श्रापुण करीरकी गरी। केनी है। कहन और अन्यक हेनेके कारण पाक्रमने मा संस्थान प्रशेषको कार नो कार्क बेगोरे क्यी रिम की होता। यह समूर्य क्रांका क्रीय है। अरोबेट प्राप्त पान अपने नीतिक पत्नी हैं। ऐसा होनेवर भी पत्न अञ्चलक पीयनाच्ये विकास होका गाँके प्रारेक अवकारे जाए हे बाता है और प्रतिकोधे सबसे (जेलको) में निवार क्षेत्रार विश्लेष क्षेत्रा सकतो कारण करना है। जीवके प्रवेश करनेते नर्ग केल्प हो क्या है और उसके प्रक हत अध्योगे चेत्रा होने सम्मा है। जैसे महरूने हुए स्पेडेकर रहा जिए। क्षाके संकिन करन करा है जह सरकार अवसर करन करता है, वर्षी प्रचार स्टेक्स गर्वने क्रोड क्रेस है असीत बीच भी मिल तरहके बरोरमें उनेच बनता है जरी आकारका विकामी देता है। मैसे आग संस्कृत गोरंगों अधिह होन्दर को क्षित रामकर अधिपन कम देती है, अने प्रकार राम केवाड मर्ग-प्रवेश भी समझे अर्थात नीयके प्रवेश होनेते सारा श्वरीर केल्य वर्ष जीवम्ब याम पहल है। विस्त प्रकार जाता हुआ दीवन समूचे परमें जनाड़ फैलाक है, अर्थ जनार सीवको पीतन्त्रतिक करीरके एक अवक्रानिके प्रकारिक बाली है। केवारी जीव जो-को दूस का अञ्चय कर्ग करता 🗓 जानो सुरो कथाँ भोगता है। पूर्वजनके सरीरते किये हर समा क्योंका कर को दिल्ल है चेनन बहुत है। चोननेसे प्राचीन कर्म के और क्षेत्र है और स्थे-को क्षत्रीक इंक्य कहा बात है। बीवको समाद पोश-वर्गका प्राप भी हेता तनतक का कर्मोंकी करनार करा रहते है।

इस प्रकार विश्व-विश्व केलिकोर्ने प्रवास करनेकाल क्रीक

निर्मे अनुक्रमते सुकी होता है, उन क्रमीबर कर्मन सुद्धे। कर, का, प्रक्रवर्ग, कार्योक देशिये वेक्सवर, क्रीकारिया, करिया, प्रमाण प्राणिकोच्या क्या, विराणका संवय, कोच्याता, कुरतिके पर केरेकी (स्थापक स्थाप, प्रेरताके प्राणियोग्य क्लो भी जीव र परम, माम-विद्यार्थ सेवा, केला. अविनेत और पुरुष्टे पूर्ण, एक, वरित्रक, प्रीप्रवीको स्ता कर्न रक्षक क्या हम कर्मका प्रवार करव-नद्ध का तेष्ट पुरुषेका वर्णन कारणका है। इनके अनुसानते कर्त होता है, को स्वय है अंगानकीयों पहल करता है। सालुक्योंने साह है हर प्रकारक वर्षिय अवस्य देश करा है। अदेवें अनेदे अवन निकी केरी है। प्रकृषात्में के व्यक्ति संस्कृता परिचय निरम्भ है : इत्यापित महत्त्व पूरत सहस्रतमें है हैशन रहे है। अधीरे क्योप कर असे क्योची विक्री है। वे से क्यो क्रमान करेंद्र चर्चा प्रसिद्ध है। यो उस क्रमान करेंद्र अक्टर रेक्ट है, को कभी कृति भी चीएरी प्रवर्त। miller adarth us given einber freuer fies पाला है । योगी और मुख पूजा केवल अस्तार-वर्तवा पाला क्रमेनको बहुत्त्वोद्धी अधेक्षा तेष्ट्र क्षेत्रे हैं। को वर्षके अक्सर कर्मक करता है, असको अपने कर्मानुसार उत्तर करताई आहे. केंद्र है और पा वीरे-वीरे सामित्र पाला प्रीतनेकर केतर-अनुको कर बाता है। इस अध्या बीच एक अपने कृतिकारी किये हुए कर्नोका करा बोगता है। का आहर feffent um giber ift ihrend fien gan gur कार्यों के कम कारम करता है, उसमें कर्य है कारम है। कारको प्रचीर-कारक कारोबो अब्द स्वासे प्रकृत विकास प्रचलिक को है ? इस सकारका कीट्र जान: स्वेगीने प्रकार क्य पर्मा है, जा: जब उसीबा कर है का है। समूर्ज क्यानुके विकास सहानीने सबसे स्थले कर्त है करीर बारण firm : seit un ment-ngrent were Beitelich रकत की। उन्होंने उत्तर समझ उत्तरकी अवदि की, को किवारी नीचोची अपनी कहाराती है, विसने समूर्ण नारहको कार कर रका है का अकृत मनत् क्षर बक्ताका है। अस्ते विका क्षीनाव्यको अञ्चल काले है विकासको जीवके विके निवा सरकार प्रदेश करन किने की, विक्र-विक चेनियोचे प्रमण करने और परसंख्या सीरकर किर प्रस रोकरे का क्षत करने अधियों में कारक की है। विसने एवंक्कों अपने आवक्ता साधान्तार कर विका है

हैसा कोई नेकारी पुरुष संसारकी अधिकारके जिल्लों ! कहा और कृतुको कार्यक चल इन्तुका है जात भैती कर कह राजता है मेरी ही में की बहात है। मेरी कही | तुक्की कानों अति होनेकाल कह राज कुछ हु स-ही-दुःस हाँ सारी करें क्या में और संस्था होगी। को कहना कुछ। है ऐसा पाला है, जा कोर एवं कुछर संसारसकरारे पार हो भीर द्वार केरोको अधिन, प्रतिनको कपरिक प्रकृतकेका । साह है।

## मोश्च-प्राप्तिके ज्यायका वर्णन

सिद्ध बहारने कह--कारकर ! यो कट्टब (सहस, सुद्धार और व्यापन-पारीरोपेसे अस्तर-) पूर्व-पूर्वका आधिका लागात हुए भी विकास की करना और मीनपामने श्वास सम्बंध श्वासमा समित्रमा—पराव्य पंतपालाने स्वेत रहता है, बहु संसार-कवाओ कुछ होता है। मो प्राथमा निय, सम प्राप्त सहनेपाल, करेलिको स्थार. विशेषिक, या और क्षेत्रके रहेत कहा मानते हैं: क्षे विकास कोर परिवा सुकार कर आदिकोची जी। arch-the units seen \$, florits store some units. इंदर को है कर से अधिकारों के बात है, का सर्वक क्षेत्र ही है। जीवन-वरण, स्टान-द्राप, स्टान-दर्शन करत क्षेत्र-अक्षिको निरात्वी स्थान पृष्टि है, यो विश्वविद प्रत्यक्ष शोष नहीं रकता, विश्लीको अन्योकन नहीं करता; विल्लेड मनश् इन्हेंबर प्रचल की कहा, विनन्ते विनन्ती सामाहित हर है नवी है; को विज्ञानी करना विता, कहा का संस्था महीं पांच्या; विकार वर्ग, अर्थ और स्थानक श्रीकाम का हिमा है, को तक अध्यानकी आकानुकारिके पहिल् हो करता है; विकासी म सर्वने आस्तरित है, य अवस्थि; को पूर्वीद संवित धर्मीको उत्तर क्या है जारमजीका उप हो सानेके विकास किया अस्तर पाना को एक है पता की पत अकारके इन्होंने रहित है, यह भूग हो करत है। यो कान्य क्रमेंका अव्यान की करता, क्रिकेट करने कोई कावक महीं है, निरामी एडिने का चन्ना समामोद समान साम है कर की सनेवाल है, जो रख को रूप, यह और क्या-अवस्थारी पुरत अधिक देशका है: जिल्ली पुरित बैरानमें रागी चर्ती है; को सब अपने ब्रेजेंबर ब्रॉड रक्तक है, जब सीच है अपने कलानार कहा कर देता है। जो अनगर्यो पण, सा. सर्ग, सम. परिष्य और सम्बं स्ट्रीक क्ष्मा नारेप पारता है: विस्तारी रहिये आत्म प्रकृतिका मुजीसे हीन, निराबार, बारणरहेल, निर्मुण क्या मुजीबर भोता है, का बुध है जात है। को बर्दिको निवार करके सारोरिक और माननिक एक संक्राचेका साम कर केल है. यह किन किनको आपके समान वीरे-वीरे फ्रान्सको प्राप्त

हे काथ है। जो अब प्रकारकी कारानाओंने कुटकर हुन् और परिवासे पीछ हो एक है कहा को क्यानके हात हरियानकालो अपने काले करके अनामक पाकरे विकास है, जो पुत्र है एन्यून कहिने; क्लेकि बंदानाओंके क्यानो हर क्योगर प्रमुख प्राप्त, अपात, नित्त, अधिनाती हर्व करणा प्रकृत पर्यापनी प्राप्त कर रेना है।

मान में का परन काम चेनकाव्यक मर्गन करता है. निवादे अनुसर चेन-साधा कार्यक्रमे केनी पुरूत अनी कारक संक्षाता का रेते हैं। यहाँ कुर का अन्तिको कार करे, किये हुए दिल्हों प्रतिका को अवस्थि कर्मा केची अपने जिल अगरामा वर्षन करता है। इतिहरीको विकालकी ओरडे प्रकार करने और मान्यो आसाने स्थापित को । इस प्रकार कार्ग तीव प्रवास करते. वित मोओपओपी ज्ञानक अवस्था करण सक्ति। वर्गनी प्रकारो पाहिते कि यह नह बनावने प्रत्य पूर्व बहाबील होवार बीनपालीतः क्रमंत्रक समुद्रान को । इससे का कार्यर प्रधा अपने अना:-करनारे जानामा प्राथमका प्राथम है। एकरनारे स्थ्रिकार सामक पूरत की अपने कार्य अल्पने सामने रहते। क्रमान है क्रमा है से क्षा अवस्थ है अन्तरकार्य सामाना कृति करण है। यो साध्य प्रमु संकारकार, योगपूर, करको काम्ये करनेकाल और वितिनिक है, क्की अलावी वेरिक क्षेत्रक सुद्रिको प्राप्त कालक संस्कृतकार कर सकता है। रीचे जनून सन्दर्भे किसी अधीरिका श्रूपको हेककर का 🞨 को सम्बद्ध-संकारकों देखता 🕯 से ततंत प्राचान तेता 🕏 कि 'या को है।' की प्रकार सामान्यकार क्षेत्री प्रकारि-अन्यको आक्रमो विश्व कार्ये हेशा है, क्रमी कार्ये कार्ये कर भी देशक करा है। वैसे कोई प्रमुख गुँजसे सीकाओ अरुप करके किए है, की ही कोची पुरुष आवसको का देखते प्रकट करके देखता है। यहाँ प्रतिरक्षों मून बहु पना है और मानायो सीय। योगलेकामीने के और आसमें पार्वकाओं सम्बानके रिम्बे का बहुत जान सहस्य दिया है। देशकरी जीन क्षत्र चोनके हता जाताका बकार्यकारी दर्शन कर रेका है, कर समय इसके उत्तर दिख्याके अधीवस्था भी

साविका नहीं युवा । यह समनी हमाने सनुसार विभिन्न प्रकारके प्ररीर करण कर समाज है। बुक्का और पून करके पात नहीं पाठकने पाठे, फोप्ट और हमें और नहीं स् समाते । कपनी इन्हियोको कहार्थे रक्षनेकाल खेली पुरुष देखाः खेला भी देखा हो सकता है। यह इस वर्गना करिया करन करके असिनाही इक्को जा। हेवा है। सन्दर्भ जारियोका विशास देशकर भी जो मन नहीं होता। सम्बंद हेवा उदानेका भी आको किरोमो हेस नहीं ब्लेक्स । सम्प्रतिक एवं निःस्ह योगी आराधि और येववे प्राप्त हेरेकारे करेकर रूक, क्षेत्र तथा परशे कपी विकास नहीं होता। को एक नहीं बार रायते, मृत् असेर धार की चौच करी, इंस्टरने असे कावार सुक्ती कही कोई भी नहीं दिखाओं देता। यह करको शामाने तीन वरावे अक्षयोग्द है कहा है एक कुरुकोर कुरोरे इटक्स राज्य कुछरे सेला—अक्षय आरमक अनुभव बारता है। अधी कह चेनक क्षापात करके पत मोदी अवनेने है अन्तरका साधानात करने तरक है, का समय का सकता हुनके कालों भी करेनी हुन्ह सर्वे करता।

रूपालने जान पार्तकारे पूजाको विक प्रधार चेलावी महि हेती है, यह सुखे—यो अन्देश यहते हुटिने देखा नया है. कामा विकास करते करीको जिला पहली बोकका निवास पाना गया है, अर्थने नावके भी कार्यक्र और उसके बाहर करायि न जाने है। बिट निर्माट करने, वहाँ किसी प्रकारका क्रम न सरावी देश है, इतिकारकारको काले करके एकजनिक्को अस्ते अन्तःकान्यो परकारतास्त्र विकार करे। प्रयासको सर्वका तथा है। इस प्रयास सक मानके रिने प्रयक्त करनेकारे पुरुषक किए कीव के प्रस्क हो जाता और पराह्य करप्यानको प्राप्त कर लेला है । करपाल इन कर्न-ब्रह्मकोसे नहीं देका का क्रमान । समून्ते इतिहर्ष के सामो भारत विका की क्य क्याती। केमा कारावी कैनकारी सकायतारे ही जर महान् आवश्यक सर्वन केसा है। मा सब और प्रथ-वैत्याला, क्षम और नेष्ट, तिर और पुरस्कारम कहा राज और कारणात है: कोलिंड वह संस्कारों सबको जाए। करके निकंद है। यो इस प्रकार करफारकार क्षांन करक है, का असेका असन सेकर पुरु से बात है।

विकार । यह स्वतः यहाः मैंने तुन्हें बताय हिया। असः मैं यानेकी अनुनदी प्रयास है। पून भी आनव्यूर्वकः अपने स्वानको और सामो ।

स्रीकृत्य । (ये हे व्य सिद्ध प्रकार है।) वैने कार्य जनका आवारत करनेवाले पहलायको दिन्य आर्थपको प्रव इस प्रकार अर्थदा दिया हो व्य इकानुसार अपने अस्पीत इकानको प्राय प्रया।

अंभ्रम्म कर्त है—सर्जुत । योष्ट-वर्गनर सहस्य लेक्सने के उत्पालके**र पिया गुनि कुमरे पर प्रतिन स**न्तार नहीं अन्तर्नार है नने । कर्न ! क्या कुरने मेरे कराने हर हत अनेकानो एकअधिनारो क्रम है ? मेच तो देशा विश्वास है कि विराम्बर विक स्था है जना विशे प्राप्तक करोड़ नहीं प्राप्त है. यह मनुष्य हर किरमको ज्यों सन्द्रा समातः । विसरका अगाः-करण पान है, बार्ड को बार सवाता है। या देने वेजावर्ताका क्या केवर्तन कुछ कारामा है। इस क्याने क्या विस्त भी मनुष्ये हम चुक्का समय नहीं किया है। तुम्हरे हैंगा कृत्य कोई क्यून इतको कुलेका अभिकारी की भूति है। निरामां तिथा वृत्तिकेते पहा पूछत है, यह इसे अवकी तथा नहीं सम्बद्ध सम्बद्धाः । सम्बद्धान प्रका वी बीजवी परंच गरीः है । आसी क्तूम केलो सरकार का सहये है अनुस्तरको प्राप्त होता और स्थापेट रिक्टे पूर्वार के पाता है। यह, फैल, पूर, प्राप्त क्लोरि-क्लाल अहै थे हा वर्गत आहर हेन्द्र करमण्डीको प्राप्त हो बाते हैं। विश को अपने धर्मने हेव रहाडे और यह कालंककी अधिके सकत्यें रूने रहते हैं, इन माला महानों और व्रतिनोधी तो यह ही क्या है ? हर ज्ञान मेरे हुई मोड़-कांक पहिन्दक अरोड किया है. अरके सम्बन्धे अवध बतायचे हैं और रिस्कि, बारा, प्रोडा क्या द:क्ये करमाना भी निर्मन किया है। इससे बहुबर कृत्य कोई सुरक्षकय धर्म जी है। प्रायुक्ता । जो कोई बुद्धिकर, बद्धानु और परमानी पर्वत सीविक संस्थ्ये लावीन रुव्याचर जाना परिवान कर देता है, वह इसी उनको हम कहा प्रीत परन भविनो अन्न है। इतन ही पुड़े स्थान साथ इसमें स्थान हुक नहीं है। को सः न्हीनेतक मिरना केवक अध्या क्षता है, को अस्तर ज्समें सिन्दि उस्त होती है।

#### ब्राह्मणका अपनी स्रोसे इन्द्रिय-यह तका मन-इन्द्रिय-संवादका वर्णन

श्रीकृत्यने प्रश्न-अर्थुन ! इसी विकास प्रति-स्वतिके सेनाहरूत एक प्राचीन इतिहासका श्राहरूव दिवा जाता है। एक प्राहरूत, जो इतत-विकासके परमानी विद्वार् से, एकान स्थानमें बैठे हुए से, वह देशकर समग्री करी साहत्यों सके



पास व्यवस्त को है — 'प्रायक्ता | की सुष्य है कि विवर्ध पतिके कार्यपुत्तर प्राप्त हुए को कोटे जाती है, किंदू अन्य के कार्य कारत को इसर पुरस्तान कीटे जाते हैं, और की कीट कारो स्थापन व्यक्ति कारते हैं, जिस अपन-तैने कीटको प्राप्तर में किस निर्मा प्राप्त को है है जिस अपन-तैने कीटको प्राप्तर में

 वान, करते, विज्ञा, की, मूक-स्थान और महर-स्थान—ने इस स्थित है। दिशा, काडु, सूर्य, काइम, पृथ्ये, अर्था, विच्यु, इन्द्र, प्रश्लामी और निया—ने इस देवता अर्था है। सारोग यह कि इस इन्द्रिक्तकर्थी होता इस केवतावर्णी आंतर्ने इस विकासकर्य इतिका इस सरिवासनेका इस्तर करते हैं। (इस प्रश्लार मेरे सम्बार्ण निरामन का है यह है, विश्व में सावस्त्रिक केसे हैं?) जा साथ होताओं काइमा जैसा विकास है, सामने सूर्यो—कविका, केत, विद्युत, त्यारा, काम, मन और मून्य, वार्या होता अस्तर्य-अस्तर एसे हैं। यहापि वे सभी कुन्य वार्या में के विकास करते हैं, से की इस-यूर्यकों नहीं देवसे—नहीं पहचानते। कायानी ! इस साथीं होताओं की इस सामानों ही पहचानों।

म्बान्धने पूर्ण-कार्यन् । यह सभी सूक्ष्य सरीरये ही स्तर्ग है से क्य-कृतिको देख कर्य नहीं यह ? और उनके सामक केले है ? यह समनेकी सुन्य नहीं।

कारणे का-किने ! का वेकनेका कर्ज है जानत ! पुलोबों करण है पुलकारको बाला है और पुरवेशों प कारते हैं। पुरुवानुको न भारता सहस्रता है। वे गरिस्य नकी कार केंब्र एक-कृतिके गुलको सभी नहीं बाप गाउँ (इस्टेरिने ब्यूह पदा है कि ये एक-मुत्तीको नहीं देवती) ( बोच, आंस, कान, राखा, पर और चुट्टि—ने कारको नहीं तका को, वित् वरिका अस्ता अनुका करती है। करिया, कार, के, अब, का और वृद्धि—के रसका अरमान नहीं कर सकते, केवल निद्धा ही अन्या राज्य है कार्य है। जरीनका, चीम, कार, सरका, चन और सुदि—ये करकर प्राप्त नहीं प्राप्त बार सकते; विद्यु के इसका अनुपन क्षा है। महिन्दा, चीम, अहि, साम, बुद्धि और मन-ने क्रांका अनुका की कर सकते; किन् लकते अस्ता हान हेबा है। बर्वास्थ्य, बीच, जोस, जना, या और मुद्रि---हमें क्रमाबा कर नहीं होता, बियु कारको होता है। वर्षेक्ट, जीव, जीव, जन्म, कार और बुद्धि—ये संसय (संबाध-विवास) जी बर सकते। वह बाम मंगवा है। हती जनम जारिका, बीच, ऑफ, अच्च, कार और पर—थे किसी बारका निश्चम नहीं कर सकते । निश्चमानक आन से केवल बुद्धियों केवा है। इस विकास इतियों और मनके संबद्धान एक प्राचीन इतिहासका उत्हारण दिया जाया है। एक कर मनने इन्हिकोरी बद्धा—'मेरी स्क्रामकाके किया

नारिका क्षेत्र नहीं समाती, जीन सतका पान नहीं से समाती, आँस कर नहीं देश सकती, तत्व रार्ज़का अनुषय नहीं कर सकती और कानोको क्रम्य नहीं सनावी है सकता। मैं सब भूतोंमें बेसु और समातन हैं। मेरे बिना समझ इन्डियों सुने परकी चर्ति बीडीन कर पडती है। सेसारके सभी नीम इन्द्रियोके यह करते खनेपर की मेरे किया विक्कीका अनुवास नहीं कर सकते ।'

यह सम्बद्ध इन्द्रियोंने स्क्रा—"महोदन ! यह अब बी इमरी स्कावता किये किया है कियाबेका अनुषय कर कवाते तो इस आपनी इस बातको सन पान तेली । इसरा तन हो बानेपर भी आप तुम क सके, जीवन करण का उन्हें और सम प्रमाणि धोग धोग समें से आप वैश्व करते और पानी है, बहु सब सहय है हरकता है । अध्यक्त हम तक इतियों होत हो जार्प का निकरोंने निका हो, बाद अपने र्वेक्क्वयाओं विश्वीका क्यार्थ अनुस्त्र कार्यको स्रक्ति रकते हैं और जायको पेस्त करनेये अब ही सफल्या जात होती है हो यस नामके प्राप्त करका से अनुसन कॉर्नेस्टे.

। अधिको साम्य से अब्द स्थिति और मानके करा गणको से जान क्षेत्रिके। इसी जनम अवनी प्रतिसे निवाके क्रम राजंका, क्रमांके प्रश्न क्रमाना और युक्ति प्रश्न सर्वाका से क्रमणक क्षेत्रिये । आप-वैसे बरुवान स्थेन नियमोके ककारों नहीं रहते, निकार को हुर्बलमेंड दिल्ले होते हैं। अपन नवे क्षेत्रों कर्मन केलेका अनुसब कीर्मिन (स्क्रीरके क्याँग क्वें क्वे हैं ?) । इससे मेंबर्ड कुल बाल आपको बोक नहीं देतर । जैसे दिवस सुविके सामेको सामोके रिप्से उपदेश व्यक्तिको पुरुष्टि पास कारा है और उनसे सुनिके सर्वेक्ट क्षत प्रक्र करेंद्र मेर सर्व अस्ता निवार करता है, की ही अप कोंग्रे और मानोर समय इन्योर ही विकास हुए पूरा और परिन्य क्रिक्टेस अधीष करते हैं। यह से इस्तोगीकी अपने अपने पुरानेके प्रति आधारिक के और धाने की क्षा कारत एक-दूरतेके पूर्णको न वान सके; सिद्ध वह बाह सार है कि जान इसाएँ सहावालों किया किसी भी विश्वनका अनुका नहीं कर समाने । सामके किया से हमें केवल क्षेत्रे है क्षील केन प्राप्त है।'

#### प्राण-अपान आदिका संवाद और ब्रह्माजीका सबकी श्रेष्टता बतलाना

महामने एक - दियों | जान पात क्षेत्र क्षेत्रा क्षेत्रे प्रकार | वार्त है वाल के संपत्तित क्षेत्रेयर सम्पन्ति-एक संपार करने वैशा विकास है कान्त्रे निकारी एक प्राचीन स्ट्राल कारणक बाता है। प्राप्ता, अवार, अक्षत, अवार और संबय—मे पीधी प्राप्त परिव होता है । किहान पुरुष हुन्हें सम्बन्धे होता नानते हैं ।

होता है; जिल्ह रूप आयके श्रीतरे पाँच होनाओंकी चार मानुस कों। असः मे पोनी होता जिल प्रमार है ? जान प्रनारी बेक्साका पर्यंत्र वर्धिको ।

क्रमाने करा-क्री । वानु प्रत्यके क्रम पूर् क्रेकन अधानका, अधानके क्षत पह क्षेत्रर जारता, जारते पह बेकर बहुनकर और बहुनसे परिष्ठ क्रेकर सम्बन्धन क्रेस है। एक बार इन पांची कनुओंने निरामक ब्रह्मानीसे उस किया—'भगवर् । इसमें को बेट हैं। जलक तम करा क्षेतिके, बढी इमलोगोर्वे ज्ञ्चान द्रोगा।"

अपनीरे का-'काकुरक ! अन्यारिकेक प्रधारे रिशत इए तुमलोगोमेरी विस्तवत रूप हो क्रानेपर रापी प्रान सीन हो जाने और विश्वके संचारत होनेपा सम-के-सम संबार करने हमें, बढ़ी केंद्र है। तब कुछारी बढ़ी इच्छा है बाओ ।" का सुनकर जनवापुने अध्यन जाहिले कड़ — 'नेरे सीव द्वेनेपर प्राणियोके जरीरमें विका सभी प्राण तीन हे. रूपने हैं। इस्तरियों में ही सबसे क्षेत्र है। देशों, कर में सीन हे का है (दिन तुकार की रूप है कावता) (

मा सहकर प्राप्तान मोड़ी हेरके रिन्ते सीन ही गया और फिर इस्के कह करने स्था। एवं समान और उद्यन कारने अंतरे कहा—'अन्य । कुर इसाई वरह इस शरीपरें काल होकर नहीं यहते, इस्तीरने तुन इसलोगोपे लेख नहीं से 1 केवल अवान बुवारे नवार्गे हैं (अत: सुवारे रूप होनेसे इसारी कोई इसि भई हो सकती)।' उन खेनोंके क्यन सुनवार प्राप्त कोई उत्तर व दे सका, बढ़ विश् वालेकीकी प्रसित्त क्लमें लगा। तम अधारने कहा—'मेरे तीन ही जानेगर अभिनामें स्थाप में प्राथमिक क्या है साल है हमा की सरनेकर पूरा सकते-सक बारने हमते हैं; इसरिकों में की सकती बोड़ है। देखों, अब में लीन हों 事化

का भार और ब्हारी जार दिया—'अपार ! केवल जन हुन्हारे जनीन है, इसलिये तुम हमसे मेह नहीं हो स्थाते हे 🕶 सुनका अपान ची चुरवाय अपना काम करने राजा । एक स्थापने कहा—"मैं सकते शेव हैं ! मेरी शेवतायत बहरण सुनिये। मेरे सीन क्षेत्रेयर प्राणियोके देवने स्थित समारा आजोबा रूप हो जाता और वेरे जरनेवर किर सम-चे-नाव चरने रूपते हैं, जरूपत में सामें हेंह है। देखे, जाव में सुद्ध हो जा है।' त्यानकर, ज्यान केही केरावा सीन होकर किर चरने रूपता। तथ आज, अकान, जान और समाराने कहा—'जान । केवल सामान चर्च हुएते जानिकार में है, इसरिंग्ने हुए हम सामें हेंह नहीं हो सामने ।'

मा सुन्यर मान पुरः मानेको स्वीत माने तथा। स्व समान केला—'मैं सबये जेता है, इसके मिले मुक्तिमुक मारण की है, जाको सुन्ते। मेरे एक होनेकर प्रावकारिकोच मारोगे विसा सब प्रावोच्य एक हो सकत है और मेरे सार्थकर मिर सम-ने-राज काले राजते हैं, जाट मैं ही जेता है। वेको, जार मैं सीन होता है।' यह मानकर सम्बन्धानु कोड़ी देखक इसक होनेके पक्षात् विश् सार्थ समा।

अस अपूर्ण चीरम—'में पूजने तेषु हैं । मेरी जेक्कान्य की | किसे पूर्व ('

#### अन्तर्यांमीकी प्रधानता और ब्रह्मारूपी वनका वर्णन

अक्रमें बढ़-किरे | प्रान्तक प्रत्यक पूर्व है है, कृतक नहीं। को अनुकोर भीतर विश्वकार है, उस पर्याप्तकारों के में सम्बद्ध कुलावा कारण पूर है। कैसे पाने कुर्म स्थानने मेंबेकी और प्रवासन क्रेम है, कैसे क्रे कर परमान्त्रको प्रेरकारो में फिल सन्त्रोह कार्की निवृद्ध क्रेक है, क्रेरीका परसर करता जात है। एक हो पुत्र है कुरव नहीं। को इरको रिका है, उस परमानको है में पुर कारत क है। एक है क्यू है, जाने क्या एक्य कोई क्यू की है। को इसकों निकर है, का परमान्यको हो वै क्या बहुता है। कारीके कार्युत्तके साम्यानम्म धन्युनाम् क्षेत्रे हैं और महानि सोग कावाराने प्रकारित होते हैं। एक ही बोल है दूराय नहीं । को प्रापने नियर परसाय है, असेको में कोश सहस 🜓 इस्ते स्थानो एक धननार गुरुक्तरसाहार नियम पुरा मिला अर्थात कियाध्यको चे अर राज्यांनीको ही प्रताने गर्ने । इससे उने सन्दर्भ शेकोका प्राप्तान और अन्दर्भ आह कुमा । जसी भूकारी जेरणाने संस्कृत उत्तरे हार्ग सक केको पान पाने गये है।

पूर्वकरणे सर्थे, वेकाओं और व्यक्तियोधी प्रवासीके साथ से कारचीत हुई थी, उस प्राचीन प्रसंख्यों सुन्य रहा है। एड कर वेका, व्यक्ति, जम और असुनेने प्रवासीके पास वैठकर पूल—'सरकर् । इससे कारकाव्य क्या उन्हर्भ है?' वह वादाने । उनका प्रस सुनकर प्रवासी स्थानीने एकाइर प्रया—अन्यस्था उकास्य विका । उनका जनकार सुरक्ता क्रम स्थेप अवर्ग-अपनी विका (जन्मे-कर्म करा) को कर दिने। दिन क्योंने का उन्हेंसके अर्थन का निका किया से सकते पहले सर्वेदि कारी कुरदेवों केलोका काम वैद्य इका, असुरोने स्थानीयाः कृत्याः अनिर्मातं हुआ तथा केताओं सुन्तां tife muffeilt werd ift services flage floor i per अव्याद कर्ष, देखता, व्यापि और क्षत्रया-न्ये एक पूर्व क्षे अन्तेलक पुरुषे भारत गरी के और एक ही प्रश्लेष अन्तेलते उनकी परिवास संस्थान हुआ से भी इनके मनमें फिल-फिल ज्ञालो का क्या है गो। क्षेत्र पुरुषे को हर क्रमेकको सुनक है और असको कैसे-सेसे (पित-पित करनें) पहल करता है। जार: उस पुरुनेवारे दिखाने दिले अपने अन्यर्कांग्रेसे बहबार दूसरा कोई गुरू नहीं है। पहले बह कर्मका अनुमेक्त करता है, उसके बाद जीवारी उस कार्यि ज्यांचे केले हैं। इस उच्चम क्रायमें प्रयद क्षेत्रेयाला परकारा में नव, जन्में, बोला और केत है।

संस्करमें के पाप करते हुए कियाओं है, यह पाणकारी और के कुछ कर्मका आकरण करता है, यह सुम्बचारी कारणका है। इसी रुद्ध काम्याओंके क्रूप इतिस्पस्ताओं परम्बच मनूब्ब कामचारी और इतिस्पर्शवपमें प्रमुख प्रानेकाल पूका कामचारी कारणका है। को प्राप्त और कामीका जान करके क्रिकों विका है और सहस्वकार होनार संस्करमें विकास कुछ है, यह पुरुष सहस्वारी है। सह है उसकी स्मिता है, तक ही अधि है, तक्कों है का राज्य हुआ है, तक ६ क्यान और मेराव्यक्त करन कारा के कुरते और कर्लोकी है उसका बरु और क्या है यह है। उसकी निवन्तिनों सक महाने की गीन करते हैं। विकासी अर्थको स्थान स्थापन बक्ताय है। अल्यानी पूर्ण हार स्थापनी सामानी सानका एक अस्ता नामन वास्ते वाते है।

वर्ध संस्कृतकरी और और स्वकृतिको अधिकार होती है, क्षेत्र और क्षेत्रने स्टॉ-नर्गना यह कर यह है. घोड़ाओं अञ्चल पैक्स हुआ है, स्वेच का प्रात्मिकी सर्व मिया करते हैं, जहाँ विक्योका ही वार्ग है, जिसे अकेले ही क्रम करना प्रकार है तक वर्ज करन और सरेक्कन कर देत करने पूर्व है, का संसारकारी दुर्वक प्रथान जनका सामें श्रम में प्रधानमाँ महान् बनने उनेस कर पूजा है।

महायोगे पार-पारका ! या वन वर्षा है ? असे सीन-कांत-से वक्ष, वर्णन और नीवर्ष है तथा यह विजनी हरीपर है ?

अकृत्यने बद्धा—दिर्दे । अस्र अनुने म केर् है न अधेर-व्याप्त प्रत प्रेजोसे अलीत है। यहाँ स्वेतिक सुक्त और द्राम—क्षेत्रीका सचाव है। काले जनिवा क्षेटी, काले अधिक बड़ी और उससे अधिक बड़क भी क्यों बोर्च करा नहीं है। अरके समाप सुवस्तान की कोई नहीं है। उस करने प्रतिष्ट हो जानेपर दिवानियोको न हर्ष होता है, न क्रोबा । न से के कर्य कियाँ प्रान्तिकों इस्ते हैं और न अपूर्ण एको कोई प्राणी क्य मानो है। वहाँ (म्यूनाय, आंबार और पीप अन्यासारम्य) बार्ड-बार्ड कुछ है. (क्या, सर नामा, अब्द, अर्था, प्रेक्स और मिश्रम—में) साथ कर क्योंके पान है क्या [प्रान्-महेक्स अपी पूर्वेक शबोके अधिकृत हेकारूक) कार ही का पालोंके चीतार असिति है। (यन, सुदि, और पाँच प्रानेनियाँ-- में) उन अविधियोक्षे साथ सामग्र है, नहीं कार प्रकारकी सम्मवियाँ हैं और स्वयं प्रकारकी है कैंकर्ष है। बढ़ी का पन्या लगा है। वह बनाने का पन्छी विक्योंके अनुवासम्य पाँच प्रकारके विका पूर्वों और उनसे रूपा प्रीति आदित्य पांच प्रकारके चलांकी सुद्धे करहे हुए सम् ओर काम हे ये हैं। बहुतम बुक्र कर बन्में केंद्र-बीवादि वर्णस्य क्या और अने देखनेने प्राप्त होनेकले मुल-रू सक्यी पाल उरका करते हुए सम ओर पैटर हो है। बहादिकारी वक्ष पुरस-कारकारी पूरा और कार्न-तरक आदिस्य पान प्रकृत करते है। स्वान्यदेख्या कुछ केवल मलक्य फल और फल देते हैं। यन और व्यक्तिकों से कह

सुद्धि करते हुए एक ओर फैले हैं। उस मनने आला ही लाहि है, बीच प्रकृत है, यह और पुरंद सुद्ध एवं सुद्ध है और पीच प्रतिकार्व सर्वत्वार्व है। धन-प्रतिकारित पाँची प्रतिकारिक अववर्तिओं पृथक-मृदक् क्रमा करनेपर को मोख पास क्रेस है, जा अन्यवान-नेको सात कारतका है। इस महान्ये केवलक करा अवस्था होता है। बिरह का बाल गीम माना क्थ है। इनिहर्गायकुता देवता है का करकारै आका करते है (प्राथको पूरु नहीं, उत्तरों के मुक्ति हो पार्टी है)। व्यक्तिका (प्रत्याकोडे अधिकेषका) प्रस शासकारों आतिका प्रकार करते है और पूजा क्रीयान करते ही उनका रूप हो कार है। करवार्थ के लोकार विस्तवान का प्रकारित होता है। अपने प्रकारणों कुछ होता बते हैं, योक्कारी परत तनते है और क्रानिकारी क्रांसा फैस्से पहली है। जन क्यांसा अंध्यानस्थान और तुर्गित कर है। उस बनके चौतर अस्ताकनी कुर्वका प्रकार करना कहा है। में साह पूरत का स्थाप आकर हैने हैं, उन्हें फिर कची भग नहीं होता। यह यन क्या-बेचे क्या क्या-क्या पर और न्याप है। सामा पत्नी भी अन्य नहीं है। वहाँ प्रत्याने प्रतिकार सात कियाँ निवास क्राची है, जो चीवन्तुक कुम्बची अपने बक्तमे र का सक्तेनेड व्याप्य राजानेक वारे अस्पन्न ग्रेष्ट नीनेजी और जिस्ने चारी हैं। के विकास कोईतरे प्रस्ताहित होती है और इस समये स्क्रोबाली हरायो सुर हराते हैं उत्तर रह-सहस्र अन्यन प्रस्ती है। केने बाप और असमये पहल अपन होता है, उसी प्रकार बज् और बुक्के जानको भी क्षेत्र है। वक, प्रथा, पर्ग (केइच), विकास, सिटिह, (अवेग) और देश-में सात जोतियाँ राज्यंक साम्याकारी सूर्वका ही राजुसरण बाली है। का क्याने के थिरी, वर्णत, नहीं और प्राप्ते आणि रिका है। चीरचेका क्षेत्रम की अरोके अरकत पुर प्रस्कारको होता है । यही साक्ष्मह विवासकता सरका है । शास्त्रकारके तुह पुरुष सर्वको आप केले है। किनकी अल्हा क्षीण हो गर्वा है, थी ज्ञान करके पारानकी हुन्या रक्ते हैं, क्यानाने विनके स्वी कर रूप हे को है, वे है पुरुष रूपने बुद्धिको साहानिह करके परम्बाकी अवस्था करते हैं। विका (अल) के ब्री प्रयासी क्षात्रको समाज समाज स्थापने अस्त है—इस माराबों काननेवाले पनुष्य इस बनवें प्रवेश बारनेके ब्रोहकों क्य (मनोनिक्स) की ही क्रांसत करते हैं, विससी पश्चि Rug wich fan

### आत्माकी निर्कितता, परशुरामधीके द्वारा कृतिय-कुरुका संद्वार और पितामहोंके समझानेसे परशुरामधीका तपस्थाके लिवे जाना

म्बानने बद्ध-देशि । मैं सर्थ न से नया देशा है, न सर्वेका साम सेता है, न क्या देशका है, न क्या करता है, न नाना प्रकारके स्वसंको सुन्ता हैं और न बिन्नी प्रकारका संस्कृप है करता है। मेरे सन्ते न से ब्यानकां के प्रति राग है और न सेवोके असे हैंग। जैसे ब्यानका क्या कर्नाकों हैं, पश्चेपर असने सिम्न कहीं होता, जाने प्रकार मुक्तर भी राग-हैसका प्रकार नहीं ब्यान। मेरे साम्याक्त बार्म को सोव नहीं होता। जैसे साम्याको सुर्वको बिन्नो को सिन्न होती, सार्ग प्रकार विद्वान पुत्रा करने अपूत्र रहे से की साम्या करने, इस क्षा-वापनों सोनोबा कुछ असर नहीं होता।

मानिन । यहाँ कालेबोर्च और समुक्ते संबद्धान एक प्राचीन इतिहासका काहरण दिना काला है। पूर्वकारणे कालेबोर्च अपूर्वके राजसे प्रतिद्ध एक राजा का, विस्तको एक इस्ता भूताई वी जरने केवान करूर-कालकी स्वाचकारे समुक्तवीय पूर्णांको अपने अधिकारणे कर विका का। हुन बात है, एक दिन राजा कालेबीर्च समुक्ते कियारे किया का था। वहाँ उसने अपने सर्वके कावन विचा । वहां समुक्ते वसने अपूर्वके अस्तकारित कर दिना । वहां समुक्ते उत्तर होकर सरके आगे वस्तक सुकारण और हाम जोड़का



महान्तरे कहा—देवि | मैं कर्ष व दो क्या देवा है, न हा साम सेता है, व क्या देवा है, न सर्वा करता है, ना प्रकारके स्वदेको सुन्ता हैं और व किसी प्रकारका ना प्रकारके स्वदेको सुन्ता हैं और व किसी प्रकारका नि है करता है। मेरे मनमें न दो करकारओंके प्रति स्व

> कर्मवर्ष अर्थन केल—समूद्र । वदि कर्दी मेरे समान वनुकी कीर केन्द्र हो, यो कुट्टमें मेरा कुटावरच कर सके तो जनका करा का हो (जिन मैं तुन्दें कोइवर करन करतेना) ।

> रुपुरने कार—राजन् । यदि हुम्मे कार्षि संपर्धातका जन सुन्त हो से अहिंदि आसम्पर्ध करे वास्त्रो । स्तरेत पूर परकृतकारी सुन्तरा सम्बर्ध सद्ध साम्बर कर स्थाते हैं।

कारकर, राजा कार्नकोर्न कई स्रोतमें चरकर महार्थे क्यांक्रिके सामान्य कानुस्तर्गके यस वा श्रीक और अपने व्या-क्याओं साथ उनके प्रतिकृत कार्य करने राज्य । काले अपने अन्यक्तांचे महत्त्व परस्कानकीको स्वीत कर केंच्य । किर के क्या-नेपाको जान करनेपाला अधित केवली परकुराज्या केव प्रमाणिक के कार क्रांति सर्वया करका प्रकार और हुआ। धुनाओवाहे का राजाको अपेकी कारकारोचे कुछ क्क्षणी भारत कार आने। को मरबार समीनवा चक्र देक साथे सभी सन्द्र-मानाव एका है गर्ध तक क्रमोने अलगत और क्रकिमी लेकर परकुरामबीका कार्री ओरने हु: को । इकर परसुद्धमधी भी करन रेक्स तुरेश रक्षक सकर हो नवे और बालोको क्यों करते हुन् राजाको सेनाका वंद्वार करने को : इस समय कहत-से अतिन परश्रुसम्बद्धीके क्याले केरिएत हो स्थिएके शताबे हुए पूर्वोगती परित पहाहोबडी नुकारकोचे पुरा वर्ष : उन्होंने उनके इस्से अधने अभियोधित क्वेंका भी जान कर विकार स्कूत दिनोतक हानुस्रोका कार्य व कर सम्बनेके कारण दे धीरे-धीरे अपने कर्य पुरस्कार का है को । इस अवसर हमित, जाभीर, पुष्ट और सक्रोंके ल्यामार्गे स्टब्स ने अधिन होते हुए भी वर्गलायके सारम पुरुषी अवस्थाने चौच न्ये।

क्ष्याम् क्षियमीते यह जानेवर महाजीने सन्दर्धे विकास निकेत्वी क्षित्रे सन्दर्भ पूर्व स्पन्न क्षित्रे, किंदु वर्षे भी बहे होनेकर परमूराध्योते मौतके घाट जात दिया। इस ज्यार एक-एक करके का झाँग्र बार इक्टियोक्स संदर्ध हे एक से परमूराध्योधी का बाकास्वरणी सुनायों है 'केटा परमूराव । इस इसके कामसे निवृत्त हो जाओ। परस कारेकर इन केवारे श्रामिकीके अन्य रेक्टेनें कुनें कीय-सा सामा दिलाओं देता है ?" इसी जनान समके निकास सामिक अमेरिके



भी संस्कृतने हुए कहा—'केट ! या काण होता थे, हरियोंको र नाते ! इस व्यापन है हुएते हुकते राजानेका बार होता स्थार नहीं है ! इस विश्वपने हुए हुई एक सम्बंध हरियान सूना थे हैं, उसे हुनकर सानुकृत कर्मन करे ! पहलेकी बात है, अलके नातके अस्ति एक एकाई है, के बारे हैं समसी, कर्मत, सरकारी, खालक और हुइजीया थे ! उन्होंने अपने पनुकार सरकारों सामुकार्यन पुर्वाचेका औरकार सरकार सुकार करताल कर हिस्तवा का ! इसके बाहे-बाहे कार्यका आरम्ब स्थानकर एक इसके नीचे जा हैंदे और सूक्ष्म सरकारी एकेको दिनो इस अकार विश्वप कार्य करें। !

मर्ट्स करने समें —सूझे मनसे ही बार प्राप्त हुना है, अतः वही समसे प्रमान है। बनको जीन सेनेपर ही सूझे स्वामी विकास प्राप्त हो समझी है। में इतिसकती प्रमुखोंने दिया हुआ है, इसरियो काइको सहजोंकर हमस्य ने करके हुन भीतरी सहआंको ही अपने कार्योका निकास बनाईना। यह मन काइस्ताको कारण सभी प्रमुखोंने तस्य-गराको कर्न कराया हमा है, अतः अस मैं प्रमार ही तीनो कार्योका प्राप्त समीगा।

नर बोरत-सर्व्य ! इन्हरे ये कम पुत्रे किसी उत्तः निक्रे की बार सब्दोने ।

नहीं चींन सकते। यहि इन्हें सहकारेने से वे हुन्हाने हैं कांत्वानोको चीर कारोने और का अकलाने हुन्हारी है यूख् क्षेत्री; कहा और किसी कानका निवार करें, निससे हुम यूक्ते कर सकतेने।

मा सुनका अर्थने कोई देशक निका किया, इसके कर् के नारिकाको स्वाप करके कोले—'मेरी का नारिका अनेको प्रकारको सुनविकोका अनुनक करके भी किर अनेको प्रकारको सुनविकोका अनुनक करके भी किर अप्रैको इका करते हैं, इस्तिको इसको रीको वाजोसे गए अर्थुना।

अभिका कोर्य—अलको । ने बाज केरा बुक्क नहीं कियाड़ सन्तर्भ । इन्सी को सुन्दारे ही भई किरीली होने और तुन्दी सरोपे, अत: मुझे नारनेके निन्दे और तरहके कामोंकी संस्थित करों ।

श्राप्त असमां पूक्त हैर विचार करनेके पश्चात् विद्वालये राज्य करने काने एके — 'श्रा औच स्वास्ति रहतेका प्रमाणेय करके किर उन्हें ही पाना चाहती है। इसरिक्ये अस इसीमें स्वार अपने पीड़ो स्वायकोच्या प्रकृत करोगा।'

त्रिक्ष केली—अन्तर्थः । ये बाग पुत्ते गाँ वेद समारे; ये यो कृत्यते ही गर्मन्यानेको बीचकार शुर्वे ही मौतके बाद कारेले; अतः कृत्ये प्रकारके वालोका प्रकार क्षेत्रके, नितकी स्थानकारे कृत पुत्ते की बार सन्तर्भे ।

यह मुख्यार असमी युक्त देखाय कोमो-निकारी यो, दिन सम्बद्ध युक्तिय क्रेमा कोसे—'या स्था याच प्रधारके स्थानिक अनुस्त्र यहांचे दिन प्रमुख्ये अधिकाचा कियो यहांचे हैं, श्राहः कथा प्रधारके बालोसे बारकर इसे निर्दार्श यह क्राहित र्

ताचा केर्य-अलके । वे काम पुत्रे अपना निवास जी कह रावते । वे तो सुनाध ही वर्ग विद्यार्थ करेने और वर्ग विद्यार्थ होनेक्ट सुन्ही जीतके पुत्रार्थ पहेंगे । युह्ने वारनेके लिये के कुरते कहाके कामोकी कामता सोनो ।

स्थापकी पास सुनकर अस्तर्कने थोड़ी हेरतक विश्वार किया; किर रेक्को सुनते हुए पास—'या आंच की अनेकों पार सुन्दर-सुन्दर करनेका दर्शन करके पुनः अधिको देखन पास्त्री है, असः इसे भी अपने सीचे सीसीका निवारन करकेश ।'

अर्थन कोर्स—अल्ब्स । ये साम पुन्ने नहीं हेद समर्थी, पुन्नो ही कांत्रसानोको सीच करोने और पर्य किर्दार्ग है स्वानेतर तुन्हें ही सीचनसे हाम कोना पहेगा; अनाः दूसरे अक्टान्ये सामकोका प्रकार सोको, किनकी सहामतासे तुम स्को की बार सकोने। सा असर्थने पुरः सोचकर कहा—'का चृदि अवके प्रजा-सरियो अनेको प्रकारका निवास करती है, जकः इस्केट क्रम अपने तीक्षण सामकोका प्रहार करोना ।'

कुदिले बदा—अस्तर्क ! वे बाज मेरा स्वर्ध भी वहीं कर सब्बों । इनसे तुन्दारा ही गर्म विद्योगी केमा और दुन्हीं बचेने । विन्यारी सहावताओं पूढ़ों बार प्रकॉने, ने बाज को बोर्ड और कुँ हैं। उनके विकार विवार करें :

स्वतन्तर, अस्तर्गतं उसी चेव्रंड नीचे बैदायर योर सम्बद्ध की; विंतु असरे मन-वृद्धिस्त्रीत वृत्तिमंत्रों स्वरंग्येन्य वितरी उस्तर सामका पता न समा । उस के क्ष्यानिक क्षेत्रर निवार कारे स्त्रेग । ज्यूब विशेषक निवार सोको-विवारोगी सन् वर्षे सोमले ज्यूबर कुला कोई साम्बन्धानी सामक नहीं क्ष्येत हुआ। अस से मनको क्ष्या कार्ये दिन आकारो केंद्र क्ष्ये और ज्यूबनोग्या सामक करी हुने। वृत्त क्ष्य ही सामके सारका क्यूंने समका वृत्तिमोंको स्वृत्य प्रकार कर विन्द--वे व्यानके क्षेत्र काश्वर्ष प्रमेश करके पर सिद्धि (मेश) को अश्व है नवे। इस सकतातरो एनर्नि अस्तर्कार का सकते हुना और क्ष्मेंने इस नावाचा कर किया— 'श्रवो । को प्रमुखी करा है कि अवत्य में वाहरी सन्तर्भे है सम्बद्धा करवा हो। 'श्रान्थेनसे व्यान्य सुन्तर एन्याने है सम्बद्धा सामा नहीं है' व्याक्ष्म से मुझे सहा पैसे वाहर हो है।'

विकासी का वेदा पासूनमा है है। इस बालेको साथी साह प्रमाणन हुन व्यक्तिक नेता व करे। को स्थानको सन काओ, स्थीते तुम्हरा कारका होता।

अन्ते विकासीचे इत जनार सहनेपर पहान् संभागकारी समाधितका परपुरतसीने केर सपता की और इसके उन्हें काम कुर्वन सिद्धि कार हुई।

---

# राजा अम्बरीवकी गायी हुई गाबा और ब्राह्मण-जनक-संवादका वर्णन

**ब्या**रणे ब्या-देवि । संस्थापे क्रम, स्व और क्रम--- में तीन मेरे प्रस्तु हैं। से मुख्येन्द्र प्रेसरे जी क्रमानके माने मने हैं। इसं, प्रीति और सरम्य-ने की साम्राज्य गुरू है. एक्स, स्टोप और अभिनियेश---वे तीन एक्स पूर्व है और क्षम, राज्य तथा पोय्—चे तीन कावत पूज है। काव्यनित, विशेष्ट्रिय, आरम्बर्गान और वैशेष्ट्रम् पुष्य प्रश्न-वर्ग आहे. बायसम्बोधेः द्वार इन कृतिक गुलोकः कोन् कर्मः कृतीको भीतनेका अस्तात् आसे हैं। इस विकाल कृतिकालकी कारोके कारकार लोग एक गावा सुवाब करते हैं। बाले कार्य इतिस्थापक महाएक अन्यदेनो हुए मामान पान किया **थाः । स्थाने है—जन मेचीया यह यहा और अन्ते पूर्व का**ने हरो, इस सम्ब पहल्काची म्हाराज जन्मीको जन्मुकंड राज्यकी बायक्षेत अपने प्राथमें स्थे । अधीने अपने केंग्रेको क्षाचा और उत्तम पूजीबा आहर किया । इससे क्ष्में बहुत क्यों सिद्धि जार को और उन्होंने का कथा कथी — भी बहुत-से दोबॉपर विजय पापी और समस्त प्रमुखीया जन कर प्रत्य: किंतु एक समसे पढ़ा देव रह गण है। पहलि पह नष्ट कर देने बोच्य है तो भी अवतन्त्र में अस्त्रा नक्ष का न सका । उसीको प्रेरकासे प्राणीको बैरान्य नहीं होता । अलोह बसमें पड़ा हुआ मनुष्य नीय कमेंकी और देखत है और जो

कारणी कारणावाद पान नहीं होता । उससे हेरित होकर यह नहीं सरनेनोध्य कान भी बार हारणा है। उस होकार नाम है सोधा । जो इसनामी सरनासी कार सामे, कार सरने । सोधा एका और क्यारों विका देश होती है। सोधी मनुबा वहने राज्या पुणांको कारा है और उनकी प्राप्ति हो जानेपर उसमें सामित्या पूणा भी अधिका बरावों का जाते हैं। उन पूर्वोंके हारा है। जान्यामार्थ कार्यामार पान संख्या और सन्ध-वायको कार्य कार्या प्राप्ता है। जिस जीवनाय अस्य सम्बाद कार्या उसमें हेर्डों कार्य किस्सा-विकास होतार विकास कार्य-पुरुक्त कार्यामें प्राप्ता है। इससे कार्य किस जान-पुरुक्त कार्याने प्रमुख है। इससिये हमा स्वीयकों सामगणावाद अधिकार प्राप्ता है। इससिये हमा स्वीयकों स्वाप्ता कारणावाद अधिकार प्राप्ता हमा कार्या मही है। अस्याव्य कार्या कार्य है। कार्य हमार कार्य है।

इस प्रकार नहस्यों राज्य अव्यक्तिने आस्पराज्यको आगे रसकार स्थापत प्रकार इस्तु लोजात अनेद करते हुए अर्जुक नाजका थान विकास ।

स्थानने सहा—देवि । इसी प्रसंगये एक सहान और राजा सनकों संस्थासन प्राचीन प्रतिहासका स्थापन दिया बाता है। एक समय सवा कनको किसी अवस्थाने करहे हुए इस्त्रांगको एक होते हुए अवस—"प्रकृत । आप मेरे सन्त्रारे साहर को करहते।" या सुनकर प्रकृतने उस लेह स्थानको



इसर दिया—'प्रदास्था । वस्ताइये, अध्यक्षे अधिकारये किसमा राज्य है ? इस बस्तायो जानकर में शासको अनुस्तर आपक्षी आजा पासन करनेकी—दूसरे एकको एक्यमें विवास करनेकी सेहा करनेका।'

हर यहाजी जाहामको ऐसा कानेपर राज करका बार-बार गरव काहामा लेने लगे, कुंक बंकाय न है सके। बोड़ी हेर चुन यानेक कर ये काहामारे जेले—'क्यून्! प्रधाप बान-सहोके सम्बन्धे हैं विकास-हामाके राज्यपर मेरा अधिकार है स्थापि का में विकास-होहसे देवता है से समी पृज्यीने कोजनेपर भी बढ़ी युक्ते अपना राज्य नहीं दिकायी देता। जब पृज्यीपर अपने सम्बद्धा पता न पा सकत तो मैंने विकासमें सोज की। क्या बहारी भी विसादा हुई से अपनी प्रधापर अपने अधिकारका भाग समाया; सिन्दु करमा भी अपने अधिकारका निक्रम न हुआ। जनकोगरका में इस महोतेपर पहुँचा है कि कहीं भी मेरा राज्य नहीं है स्थाप स्थाप मेरा हो साजा है। इस हाहिसे का करीर भी मेरा नहीं है स्थाप कृती दृष्टिसे सारी पृथ्वी ही येसे हैं। यह मिस तरह मेरी है उसी उन्ह कृतरोबी भी है; इस्मेंडने अन आयकी नहीं हमा हो, चीने !'

व्यक्ति व्यक्ति एकपर अध्यक्ष अधिकार है से कार्य, विकास-अध्यक्ष एकपर अध्यक्ष अधिकार है से कार्य, विका विकास अध्ये इसके अभि अपनी स्पताको स्वत दिवा है ? विका कृष्टिया अध्यक्ष सेकर आप सर्वत्र अपना ही राज्य वानों है और विकासक्ष कहीं भी अपना राज्य नहीं सम्वाते ?

काकने कहा-जाहार ! इस संसारमें कमेंकि अनुसार अक्ष क्षेत्रकारी राजी अवस्थाओंका एक-न-एक दिन अन्त है। कत है, व्ह बात मुझे अकी तक नश्रृप है। केंद्र भी कहता **्रेम्म विश्वको वाह है ? यह विश्वका पर है ?** (अर्थात् प्रेराकेका नहीं है) ' इसलिये क्या में अपनी चुन्हिसे विभार करता है को फोर्ड़ को करत हैकी नहीं बान पड़ती, जिसे अधनी बाद सके। इसे विकास की विकास राज्यते अपना कारत हुए विका 🛊 : अब विका सुद्धिका स्थापन लेकार में कर्मन अपना हो राज्य सम्बाध्या है, ज्याको सुन्ते । मैं अपनी व्यक्तिकार्थे वर्षणी हाँ शुरुभको भी अपने सुसक्ते निर्ण नहीं काम करना महता। इसरियो मैंने पृथ्वीको जीत रिया है और बढ़ राज वेरे बचने खती है। बुक्तने को हुए स्तीका की नै अकरी सुद्रिके रिक्ने नहीं जानाक्ष्य करना काहता, इसरिक्टे बार-राज्यमा औ मैं विजय का मुख्य हैं और यह साह मेरे अबोग पाल है। इसी जबार नेशके किन्मभूत क्या और क्षेत्रिक, कद्भ-इन्हिको सह ह्यू कार्यक, अक्लवेका इंड्रोडि और बनवें आदे हुए जनावा निवयोंकी भी में अपने स्तरके रिजे अनुषय करना नहीं बहुता। इस्तीको मैंने तेश, कर, कार्यका और भगते भी चीत रिच्य है जना में सभी क्या की अक्षमें शहरे हैं। मेरे प्रक्रिक कार्यका जारामा केता, रिक्ट, यह और अधिकियोंके निरिम्त होता है।

वनकारी वे वाते सुनवार व्य प्रदान टक्का पाएवर हैस वह और कहने लगा—'महाएवा ! आपको मालूब होना काहेटे कि मैं वर्ग हूँ और आपको मरीक्षा सेनेके दिन्दे अञ्चलका कम बसण करके वहाँ आवा हूँ। अब मुझे निरुप हो नवा कि संस्थानों सरवगुलकार नेमिसे विरे हुए और कपी प्रदेशी और न लौटनेवारे कहा-आहिकार धुनिवार-कारका सहारका करनेवारे एककार आप ही हैं।

### ब्राह्मणका अपने ज्ञाननिष्ठ स्वरूपका परिचय देना तथा श्रीकृष्णका अर्जुनसे मोक्ष-धर्मके विषयमे गुरु और शिधका संवाद सुनाना

अक्रांनी कहा - चीप ! तुम अपनी सुदिशी पूछी नैसर सम्बाद्धर प्रकार हो हो, ये केल को है, में इस लोकने देवपियनियोकी तद अवस्य को करण। हुने पुने पार-पुजाने अलक देशती है; किंदु सरकारे में देख जी 🜓 में सकत, पीकपुट बहुत्व, करात्व, कुरू और बहुत्वारी सब कुछ है। इस भूतलात जो कुछ दिवाली देश है. का सब मेरे करा काम है। क्रम है केर कर है. क्रो प्रश्निताओका एकपान पार्च है। स्थापनी पुरूप स्थापनी, माईश्रम, मानक्रम और संग्यास—क्रम कर अक्रमोनेसे किसीयें भी खें, में इलवाली हुए स्कूमी प्रश्न होने हैं। विज-विक अध्याने यहे दूर यी किन्सी सुन्दि सानिने बायनी राजी हाँ है, ये अन्तर्ने एकावत सरकार अवन्त्रे प्राप्त होते हैं। यह जार्ग बुद्धिगाम है, इसेलोर हुए। इसे जी प्राप्त विकास का सकता । इस्तीओ देवि ! मुखे वस्तोवको सैओ प्रतिका और प्रच नहीं करना चाहिने। हुए की साथ जनने प्रदानमध्य विकास करती हुई जनानें मेरे ही सरकारों प्राप्त क्षे काओगी ।

व्यक्षि मोर्च-नाम ! मेरी मृद्धि कोड़ी अगैर अन्तः कार्य अब्दुद्ध है, अतः जामने पंजेपने जिल म्हण् इस्ताहा अभेदा किया है जाको समझान मेरे निन्ने कारिन है। मैं तो उसे सुनकार भी सारण न कर ककी । असः अन्य कोई हैसा उसका कार्याने, निकार मुझे भी यह युद्धि प्राप्त हो। मेरा विकास है कि यह उसका आवासि इस्त हो समझा है।

अवस्थाने कार—हेति ! त्या पुर्दिशको कीनेकी आस्था और मुख्यते अस्पत्ती अस्पत्ती प्रम्यको । क्षण्या अस्प केर-नेक्षणको अस्था-सन्त्रद्वारा कन्यन कार्यकर अस् अरुक्तिकोले प्राण्याम्य अस्ति प्रकाट होती है ।

अवस्थि पूक-नाथ । क्षेत्रक्ष नामते अस्य क्षिप्त कर्मा अस्य क्षिप्त कर्मा नाम है, वह बात क्षेत्रसे सम्बद्ध है? अंगोलि वीमाना प्रकृष्ट नियमानो रहता है और यो किसके नियमानो रहता है क्षेत्र को क्षिप्तके नियमानो रहता है क्षेत्र को क्षिप्तके नियमानो रहता है क्ष

स्वासन्ते कहा--हेशि । क्षेत्रक्त काकावाने के-एन्क्यको रहित और निर्मुण है; क्योंकि उसके समूज और स्वयस्त होनेका कोई कारण नहीं दिखानी देशा (ऐसी हकाने का काको निर्मा कैसे के स्वयस्त है ?)। नगर्भन् अंकृत्य करते हैं—अर्जुन । प्रश्नानके इस अवार करते होन्या का अवान्योंको पुन्तिने पहले क्षेत्रका अन हुआ, किर करते थिया क्षेत्रको अन्यत्य का परम्या कारकारको अरह हो नग्छै।

अर्थुर केले—सम्बन् । इस समय आपकी कृताओ कृत किरको अस्माने केल कर रूप स्त है, अरः स्वयनेकेल स्तुकृति स्वयंक्ती सहस्ता स्वीतिने ।

शरकर् अंकृत्यने कहा—अर्जुन | इस विश्वयक्को सेवार पुर और विष्याने को केश्वित्यका संस्तर हुआ हा, यह आरोग हरिक्का करात्यका का दहा है। एक दिन करन सर्वाने खारन करनेकाले एक आरोगा आवार्ग अपने आराज्यन विद्यालयान है। इस सर्वा किसी वृद्धियान् दिस्ताने करने पास खारा निर्वाद विद्या—'नाम्बन् ) में कार्याक्यमानि अपूर



होकर आजादी प्रस्काने आवा है और सामके परमोगे मनका हारतका कावार करता है कि मैं को हुए पूर्व, सरका उत्तर होतियों। मैं प्रान्तक संख्या है कि क्षेत्र क्या है? जगर्मके परावर कीय संबंधि अपना हुए है? किसमें जीवन प्राप्त प्रस्कों है? इनकी अधिक-से-अधिक जानु किसमी है? सस्य और तम क्या है? सस्युक्तोंने किन शुगोकी प्रदेशा की है?

[ 511 ] री० म० ( सपड--दो ) ५०

भीश-कोश-से जार्ग काव्यान कालेकारे हैं ? सर्वेतन सुका क्या है ? और पान किसे जाते हैं ? यह एक कालेके दिन्धे मेरे मानो कई अव्याद्ध है, अव: आप इन अविका उत्तर देनेकी कृता करें। अवने सिंगा दूस्त कोई हैना नहीं है, वो स्था अध्यक्षी स्कूलनोका निवारण कर सके।"

अर्जुर । या विष्य स्था अवस्त्ये गुज्यो क्रालमें आवा या। क्योंका रीतिने तस कता या। पुनवस्त् और क्राल या। क्रालमी मंति साथ खकर पुनवी सेवाने रूपा क्राल या तक निर्देशित, संबंधी और खायारी वा। काले क्रानेक केयारी इस क्राली गुजने पूर्वीक संबंध अर्थेका रीक-रीक कार किया।

गुरने कहा—केंद्र | अक्राजीने केंद्र-विकास अस्तर रैकार दुखारे को इर इन सभी प्रयोक्त कर व्यक्ति है वे रका है तथा ज्ञान-ज्ञान क्वीकोने ज्ञाबा तक है सेका किया है। का अधेने कारने परवाजीवरक विकास किया गया है। में प्रान्तों ही परावह और प्रेमानको उपन का मन्ता है। के अवधित प्राप्त समयो विक्रमपूर्वक कार्या कारनेको राज प्राणिनोंके बीवन रिवर देवाल है, यह सर्वनी। (सर्वत असमा सर्वज्यातक) मान बन्ता है। यो वैहरी समुन्दी कायन नहीं कारत तथा किराने: नामें किराने जानका अधिकार भी होता, व्या इस स्वेकने कुछ इस है। ब्रह्ममानको प्राप्त है नाता है। से क्या और सम्बद्धी पुन्तेके सलको जानता है, जिसे सब कुरेके बारकांश क्रान है और मो काता तथा अर्थकारके प्रीत 🛊 २५६ 🐧 जाकी जुकिने सन्ति भी रहेड जी है। यह के एक कुछके सामन है, अहार इसका पूर शहर (कहा है, कृदि काम (करा) है, आंधार पाला है, इसियों पोलाने हैं, ब्याप्यान्त्र आसे विकेत अवस्य 🛊 और उर भूरोंने निर्देश चेद जलाई स्ट्रॉन्स 🛊 । इसमें सब है संबादकरी परे उस्ते और कर्पक्री कुर दिल्ली यूर्व है। पुषायुक्त करोंसे प्रश्न क्षेत्रेकारे सुस-इ:साहि ही उत्तर्थे तहा तरी क्षत्रेकारे कार है। का प्रकार सहस्त्राणी मीनाने प्रकार होतान प्रवाहनानो रखा मीनूह स्नेवाल श्रेपनी वृक्त समझ जनियोंके जीवन्यत आयार 🕯 । को इसके राजको परवैपारि कारकर प्रान्तको सरावको इसे कार बारवा है, यह जमस्त्रको प्रश्न होका कन-मान्हे क्याने पुरस्तात वा सक्ष है।

महावास । विसमें पूर, क्रांप्यन और पविष्य आहिके तथा धर्म, अर्थ और कामके स्वस्थात निश्चम विद्या पता है, विसम्बर्ध निर्द्धोंके समुद्रायने घटनेवादि काल है, विसम्बर्ध पूर्वकारण्ये निर्णय किया गया का और करीबी पूरत किसे व्यवस्य सिद्ध हो बाते हैं. इस परण उत्तम समापन सम्बद्धा अब मै दूसने कर्नन करता है। व्यवस्था बात है, प्रमापति क्षा, परक्षानं, गीतनं, पृष्टुक्तानं कृतं, सिर्श्य, स्थानकं, विश्वविद्या और अधि अपने प्रमुचि अपने कर्मिद्धार स्थानकं वर्णोरें परकाने-परकाने कर बहुत कर गर्ने से एकतिल हो अवसमें विद्यास करते हुए साथ वृद्ध अधिया गुनिको आये करके व्यवस्थानमें पने और यहाँ सुरस्पूर्वक मैठे हुए व्यवस्थान दुर्गार करके उन्होंने विश्ववपूर्वक कर्ने प्रमाप विक्या। किर हुन्मती हो अद्य अपने परम व्यवस्थानकं विकासी

(तम) अवस्थि कहा—काम प्रतयक पासन करनेवाले



न्तर्वियो । वरावा जीव साथ (परमारका) से जाता हुए हैं और तकावा (कर्म) से जीवन बारण करते हैं। जह साथ है, जम साथ है और जनामींत भी साथ है। साथसे ही सम्पूर्ण कृतिका जन हुमा है। यह पीतिका जगत् साथका ही है। इस्तरियो साह योगमें रामे खुनेवारों, क्रोध और संस्थानी हुए खुनेकारे और निक्मीका पारान करनेवारों समेरेवी ब्राह्म सरकार कावन होते हैं। यो घरसार इक-बूरमेको निवासों और रक्केकारे, सर्म-मर्वाहारे प्रवर्णन और विद्वान् हैं, तब कावनियों प्रति में स्वेककारणायकारी सनामन वर्धोंका करेत कर्मेगा। प्रत्येक कर्म सीर आवासो दियो पृत्रवन् पृथ्य कर विद्यासीका वर्णन कर्मगा। सनीची विद्वान् वर्धा

पूर्वकारणे वर्धनी पुरूष विसन्ता स्वारत से कुछ है और को महाध्यक्रकी प्राक्तिका सुनिक्षित स्तावन 🐧 🛍 करव प्रक्रमारी करकारम्य प्रतिक त्रमेश करत है, को अपूर देकर सुने। व्या साठ-वा-साथ उन्हेज परम पहला साव-है। आसमोदे अप्रवर्णको अस्य जातान स्टालका एक है। गर्वाच्या द्वारत और काराव्या तीवाव आक्रम है, प्राचेंद्र का संस्थान-सामा है। प्रतरे आस्टानको प्रकारत होते है. अतः इसे परम प्रदासम्य क्रम्बान प्राप्तिने। क्रमान अध्यानकारको प्राप्ति नहीं होती वर्धकार कोडि, सावत्या, बार्यु, सूर्यं, इन्ह और प्रयासी आदिने प्रवाद-प्रवाद सहीर होते हैं। आध्याम होनेन्द हत्या नामा की दक्षिकर होता, अतः पाने जानदानमा स्थान नातवा है हम स्थेन सुने । अक्रम, वृत्रिय और बैस्य-इन सेन क्रिक्सिकोड रिक्ते वारात्रक-सारक्ष्या विश्वा है। वर्के प्रकार मुनिवृत्तिका सेवन करते हुए कार-कुट और सावृद्ध अक्रारत भीवन-निर्माह कारोनो सन्तात्रक-वर्गका कारण होता है। हिल्लानेकोचे सुरक्ता अनुनव सहस्र है।

मुक्त-आकारका निकार सभी क्लोंके रिको है। विकार पुरुषेने अञ्चल्ये हैं। धर्मका युवन स्थान कारणना है। केनेकर् एक-प्रकास अपने कारोरे को सर्वक्रमा काल करते हैं। को वनुष करन प्रत्या आपन सेका अर्थुस ार्वेचिते विक्रीमा को कृत्यापूर्वक पालन करते हैं, के क्रम्बाको समूर्व जनिकोह स्था और भरतको प्रावह केवारे हैं। अन में मध्यानं मुरिक्तोः प्राप्त किएकोर्ने विश्वत सम्बन्धे क्योपर विभागपूर्वक कर्यन पारत है। सम्बद्ध प्रकृति, महाना, अवेदार, मारा इंपियों, यह महापूर और उनके क्या नहीं, विशेष पूर्व क्या गीवाला—इस अवस्थ समीकी रंगमा गर्नास मालाची गर्ना है। यो इन सब सत्योकी अपनि और राजको सीध-सीख कारता है, यह सन्दर्भ प्रतियोधे बीर है और कभी मेड़ने नहीं पहला। यो सन्दर्भ सरहे, नुस्तें क्षा समझ हैक्कानोंको प्रकार काले बारता है, अस्ते पाप क्षत करे हैं और यह क्षत्रमें पूछ क्षेत्रर सन्दर्ग

# ब्रह्मजीके हारा तथोगुण, स्बोगुण और सन्धगुणके कार्योंका वर्णन

मार्गी का-मूर्ति । यह ग्रेरे पूर्वक साम्बायस्य केर्डा है, उस समय उनका गाव अन्याद Sudh होता है। अन्यक समझ प्रकृत सामीने भ्याना, अधिनाती और रिका होता है। कार्युक्त बीत पूर्णोंने कर किरमात सावी 🕯 से ने पहाच्चका का सारक करते 🖁 और उससे नी प्रत्यक्ती मनर (प्ररीत) 🗯 विजीत होता है। इस पूर्व क्रीकारको विकासी और वेशित सारोगाली न्यास प्रतिपर्ध है। प्रत्यारी अधिकारिक भागोत प्रधा वर्ष है । यदिक इस प्रमानी प्रधानिक है । प्रस्में को तीन कोता (शितकारी क**ं**के प्रकार) है, वे प्राप्त को याते हैं। इन्हें परनेके रिन्ने हीन मुख्याची नाहियाँ है। हरता, स्य और तम—वे तीन कुल प्रजासके हैं। वे परस्वर एक-पुरारेके आसित और एक-पुरारेके अक्रमे विकानकार है। न्या तमेनुसको देवा जाता है वहाँ स्क्रोनुस कहता है और नहीं स्थेपुरुको काम करत है वहीं सरस्पुरुको पृद्धि हैनी है। सम्बद्धे अन्यव्यासम्बद्धान्त्र सम्बद्धान पाहिले । उसका दूसरा सम्ब मोड है। यह अवसंबंधे सर्वता कवनेवाल और कर करनेकारे सोपोर्ने विशिवसारते विश्वपान क्रमेकास है। रामोजुनका का सरका दूसरे कुछेले निर्मात की विकासी हैता 🛊 । स्थेपुरुव्यो प्रकृतिका बतरक्ष्या गया 🐍 👊 सृक्षिकी करपरित्या कारण है। कृष्युर्व मुखेंने इसकी प्रमृति केसी कारी 🕯। इसीसे इस दूनय-कान्यूकी सन्ति 🥳 🛊। सन पूजीने

कारण, राजुल (कांग्रीकार) और अञ्चलका सामग्राहरू कर है। पर्वतिकासी सन्द्र पुरुषेते अनेता की है। अस मै कुरिक्तुर्वक अंक्रेप और विस्तारोह साथ इक सीवी गुलीबेह कार्नोक्त कवार्न करेन करका है, इन्हें ब्हान देकर सुने । मेह, नाम, सामग्रा समाप, कार्येका निर्मात न का सकता, निकार पूर्व, पान, सोधा, क्रोबार, क्रांच क्रांबीरे क्रेस हेकारा, करण-प्रक्रिका अच्चत्, परिवास न क्षेत्रमा, वारितकता, द्वारिका, निर्विकेचा (अफे-क्रोके विकेसका अपाय), क्रीमानेको वित्रीकरमा, क्रिका अवदि विन्तृतीय क्रेपोरी अपूर्व हेना, सम्बत्तमेको कार्ग और अञ्चलको ज्ञान सम्बत्तना, प्रत्यान कारणे कर व रूपका, सारका, पूर्वतावूर्ण विकास, कुरिलक, कर्माकी, पाप करना, अपूचन, आहमा आहिके कारण देवका पार्ट होता, पांध-परित्या न होता, अभिनेतिकका और नीच कर्योंमें अनुराग—वे सची हुर्युक क्येंगुक्के कर्म कार्य में है। इन्हें दिया और मी के के करें इस सेकरें निरंह करी शर्व है, वे सब क्येक्ट है है। देखा, अक्टूब और बेव्टी निया करता, क्षत व केवा, अधिकार, चेवा, स्रोच, अस्त्रामहीराज और करार्थ-के राज सामग्र कर्ताव है। (मिनि और बसाने चीर) वर्ष क्षांबेस जारम करन, हैत-कार-प्रकार विकार न करते. अवस्था और अवसेत्रतर्वाच दान देना तथा

देगा। और अधिनिको हिन्दे किया गोवन बाहना भी सम्बद्धिक कार्य है। अंतियाद, अक्रमा, परास्ता, आविवार और मक्काको स्पोत्तका यस क्या क्या है। संस्कर्त केरे वर्षाच्याले और वर्गची सर्वाद पढ़ करनेवाले के भी कर्न मनुष्य है, में राज सर्वोजुर्जी करने को है। हेड़े करने जनुष्योंके प्रेम्पे इसरे मनामें जिन मोनियोंने क्रमा अनिवार्य होता है. क्रमा परिचय है रह है। उनकी मुख से बीचे मरवरेने ब्रोडोर मते हैं और कुछ निर्वालीयोंने क्या पाल क्यो है। स्वाप (१६)-वर्गत आहे() चीच, चयु, चयुर, स्थार, कर्न, क्रीहे-क्कोहे. एडी. क्यान प्राणी, चौचने, चना, खुरे, पूर्व राम अन्य निराने परस्य देगाओं (कोड़ी sub) मनुष्य है, ये सब तबोनुष्यों हो हुए हैं। अबने कवीद मपुरार स्थानीयारे ने बुरायारी चीच श्राह कुराने निवा यही है। उसकी विश्वपृत्तिकोच्य प्रकार निव्य विद्याली और होता है, इस्तीओं जो अर्थाद चोता वको है। ये पर-वे-पर समेगुनी हैं। एवं (जरिवा), मेद (अरिवार), महानेद (धन), क्रोम सनकता अधिक और प्राप्तक क्षणनाधिक-न्या पाँच प्रवासको राजवी प्रकृति प्रवासकी गर्ना है। विकास । सर्ग, पूज, चेनि और क्यांड क्यूसर 👫 तमेतुराचा पूर-पूर कर्मन क्रिया। यो अन्तर्भ सम्बद्धी पर्यवस्ता है हेल कौर-स पहुल इस विकास अपनी सरह रेपन और सम्बद्ध समाता है ? यह जिन्हींह और ही स्थेपुरुको पहणल है। इस अवन क्येपुरुके स्थल और इसके कार्यपुत राजा प्रकारके पुजीब्द बकावर् कर्मन विका गया। यो बहुम इन मुनोको क्रीय-दीक सारका है, यह राम्मीक नुवरेशे बंधे पुळ क्रम है।

वहारियो ! अस मै हुमलोगोंगे एगोनुस्तो सरामा और सारों कार्यपूर्ण गुणोका कवार्य मर्थन खानेगा । स्थान हैकर सुने—संस्था, स्था, सामासा, सुक-कुना, सर्वे-कर्या, हेकरें, विवाद, संचि, हेतुकान, प्रश्राक अध्या मे पहण, सार, हुस्ता, पत्त, रोप, व्यानाम, कराव, ईन्यां, इक्या, पुनाने काना, युक्त सरना, प्रमात, कुनुस्ताक प्रशान, क्या, कवान, हेकरें, सान-निसान, केवर, नेवर और निवारकात प्रवाद, हुस्तोंक सामायों केवर सामनेकी मेहर, समान, निद्वास, विवारकात, पहारोंके किया बयाना, सीविक्ता सारोधी विवार कराव, पहारामा, असरनायाक, विवास कुन, संस्थापूर्ण विवार, सिरम्बारकुर्वक कोरामा, निवार, सुनि, प्रवंत्ता, प्रवाद, सरसम्बार, सामित सिनो होता, सुनात, हुसरोक अधीवत सान, स्थापन-कुरस्तान, नीति, प्रसाद (अस्ताव), वरिवाद और परिवाद—ये सामी स्थोगुनाके कार्य हैं। संस्थाने को बी,

पुरूष, भूत, प्रमा और मून कार्यके पुरुष-पुष्पक संस्थार होते है. वे भी रक्षेत्रसमी ही प्रेरमाने घटन हैं। संताय, असिश्वास, क्रमानको प्रत-निकारका काल, कानकर्ग, कान जनसंके पूर्व (कारी, कुल-स्कूल आदि पुण्य) कर्य, ग्राह्मकर, नगरकर, सम्बद्धार, क्राह्म, क्राह्म, अव्यक्ता, कार, अध्यक्त, क्षान, जीतव, जारक्रिय और व्यासमञ्ज्ञ कर्न भी राजा नहीं गरी हैं। 'सूते का कर्ता मिल कार, जा मिल कार्य इस अवदर को विकासिको परिचेत सिर्व अनिक्युरक कारण होती है, अस्ता कारण कोतुक ही है। क्रेम, पाया, पराया, यान, मोरी, हिला, पुण्य, परिसाद, कारण, कर, वर्ष, कर, विश्वक्षेत्र, प्रथेर, बुलाविस, लेनोर्फ साम विकार करना, विकास क्रिका क्रिका स्थाप का-काक और पानी आहम हैथ—में इस समस पुन है। को इस पुरुषेका चूरा, करियन और परिच्या बहाओंकी विकास सम्बंद, वर्ण, अर्थ और सारकार विकास सेवानों क्षेत्र को, करवान कर्मन करते और सब प्रकारके धोनीकी कादिको आरम्य कार्यो है, ये महम्ब रक्षेत्रको आर्थ्य है, उन्हें अर्थनकोचा बढ़ते हैं। हेने लोग हुए लोकर्ने बार-कार कव रेकर विनवस्था अल्पूची गा पूर्व है और प्रत्येक तथा वसकेवने सुक्त करेका का किया करते हैं। बुन्तिको । अस ज्ञान की कुल्लेको राज ज्ञानक रासस एको और मानुका वर्णनीया कारण्यु प्रमंत क्रिका से प्रमुख हेर प्रमेको कारण है, यह ग्रह इनके बक्कोने हर रहता है।

व्यक्तिके । अस मैं सैसरे इतन पूज (सम्बन्ध) का क्षांत करिया, यो कन्यूने सम्पूर्ण प्रतिकोच्या दिशकारी और साथ पूजनीया प्रवेशकीय वर्ग है। आगन्त, प्रसासा, कार्ति, क्रमान, सुन, कुरम्याचा सम्बद, विश्वेषत, संबोध, सहा, कृत्य, बेर्च, अधिक, सर्वात, सरव, सरस्या, प्रतेतवा, अन्तर, फिरांचे केम म देशक, परिवार, चतुरता और क्ष्मान-वे सम्बद्धको कार्य 🗗 जो इन बागेका आवश्य कर्मा है, ब्यू परानेकरें सदाव तुसका बारी होता है। क्यार, अवंकार और सम्बाधन परिस्तान करके संबंध स्थान की रक्षण और सर्वक निष्यान हो बाध ही साथ प्रकोचा सन्तवन वर्ष है। विश्वास, स्वया, शिविद्धा, स्वाग, प्रविद्धात, कारकारीक होना, कोन्याता, मोहमें न पहला, प्रतिकोधा क्य करना, कुरूबै न सामा, ह्याँ, संसोध, विकास, विकास, व्यक्तिक सामिकानी सुद्धानो अन्ति, जान वृद्धि, अल्पकिसे इटन, बनक्षे घोन्हेंसे उक्कीनल, ब्रह्मकर्व, सब जनसम्बद्धाः त्यानः, निर्वाणाः, प्रत्यको स्थानमः न प्रतन्त तथा पर्य-का निरंपर पासन करते सुरच-चे सब सरवग्राके कार्य है।

आतम हेते हैं और केरबी क्यपिके प्रधानकूत करवा प्रशासकों निक्र रहते हैं, वे के बीर और उनेर प्रश्नाहर्ती सूचे रहे हैं। में बीर पूरा का पालेख साम करके क्षेत्रको रहित हो नाते हैं और अनंत्रेकों कावर अनेको कृतिरोक्ती सुक्ति करते हैं। सर्वश्रीकारणा स्कूलक कार्यकारी देवताओंको पासि हैंकिन, गर्नाका और समित्र है एक वह गुल्वेचा तेवन करता हुआ की उनके कान्यर आदि निर्देशनेको प्रदा करते हैं। ये कर्जनेका और नहीं पहल।

को उपर्युक्त कर्यांकको पालन करते हुए इस कम्पूने सम्बद्धा | कैकारिक केवल मही नवे हैं। (बोजनास्ते) सर्वाको आत होनेका करका किया चेरामनित संस्कारते विकृत होता है। यह समय में यो-के प्रकृते हैं, जा-का क्का को और कांद्रों है। इस अकार मैंने सुक्लोगोंसे क्रारमुको सार्वेक करेर दिखा। यो इस विकासी असी क्या करका है, को एक्स्प्रीका बस्तुकी अहि होती

## सत्त्व आदि गुण, प्रकृतिके नाम तथा परमात्मतत्त्वके ज्ञानकी महिमा

महार्थने कह—कृतिके ! सक्त, एवं और व्या-का | पूर्णका राजेबा पृथक सालो वर्णन करना असमान है: क्योंकि में रीजों गुल अमेरिक्स (स्क्रेंस्ट्र) देखे स्क्रो है। वे सभी कारत से हुए, क्य-कृतिके अनुसर्वता, कानोन्तारिक तथा एक-पुरत्येक अनुसारक वालेकारे है। पूर्ण स्टेंग्स की संबंध को कि प्रत कराने कराय हर्नेपुण और कारपुर है जनक स्वेपुनवर्ध की सक स्वत है है। है पूर्व प्रमु कर दुई, सक्त है-कर दिवसे, समझ बनावर नामा करते और संख्या (करीर) में जैन्द्र को है। ऐसा होनेस भी नहीं हत्त्रेसे विकासी ज्यान देशी जाती है और वहीं अधियान । इस विकास समाना unfe fiem unm fie ferbeiteit mit unbyreit शक्तिकार होती है, वहाँ रखेतून और कार्युक्तको कार्य सरहारी वाहिने। मनायेता सर्वाद समुख-केरिने, वर्ष रबोगुराको कार अधिक होती है, वह सरोगुर और सारकुरको पास बहुत कर हे जाते है। इसे प्रकार कर्मकोश करी देव-केरियोधे कई सरस्पुलको वृद्धि केरी है कही उपोत्तान और रक्षेत्रांनकी बानी हैंसी नाती है। सरकपुर इतिहारेकी अगरिका कारण है, जो बैकारिक हेर ment fil un uffeit aft unt fereint murten करनेकरम है। सम्बन्धन क्यान क्रमा कोई वर्ग नहीं है। कृतगुजर्मे विका पुरुष क्राचीद का लोकोको क्यो है, प्रवेशुक्रमें दिशा पुरस सकते कर्मात् महत्त्वलेकारे हे क्ये है और त्योत्पादे कर्णका निया, प्रचार को जाराना आदिने विक हुए कारत सनुत्व क्योनकियो जात केते-के चेटियो अवस वस्त्रोते पत्ने हैं। कुले रुपोपुरुप्ती, इतियमें स्टोपुरुप्ती और प्रमुक्ती एक्स्पुक्तकी प्रधानता होती है। इस प्रधान इन क्षेत्र कर्मिन मुख्याने में तीन पुण यहे हैं। हमोतुम, सम्बद्धा और

रक्षेत्र—ने सर्वत्र प्रवद्ध-पृथक् हो, देश कभी नहीं सुन कता। कुर्वका अस्ताह सरस्युक्त है, करका सार स्थोपुत्त है और अन्यक्रमाने हैं। से उन्दर पहल श्रमक है जा उसेनुकार कार्य है। इस अक्टर सभी कोडीकोंने सीनों पूज सम्बद्धः अवस केंग्रे और मिलीन होते रहते हैं। मुख्येंक मेवले हिल्लो मी सीम प्रकारको सम्बद्धाना पर्वाचे । एक भी सीन प्रकारकी सेती है क्या पाना, पान, पाने, पानु और संस्थानेंड भी सीन-सीन सेट होते है। बीच प्रकारते का दिने पाते हैं। बीच अधारका प्रकारका होता है ) होतह, हेता, किया और महि को तीय-तीय प्रधानकी होती है। पूर, वर्तका, चरित्रम, वर्ग, अर्थ, वारम, साम, अवार और अवर-ने इस क्रियुक्तरूथ ही है। इस मन्त्री यो कोई भी कहा विक्र-विका स्वानीमें विक्र-विका अकारते क्यानक होती है, का एक प्रेरपुरस्थन है। एकंट तीनों जुनोबंदी हो कहा है। वे केने जातक स्थान है। सन्त, एवं और सन प्रकारी करी। प्रकार है। अवशिक्तों कर, अव्यक्त, दित्य, बांग, स्त, चेटी, सन्तरम, अपूरी, विचार, अस्त, प्रचल, प्रचल, अवस्था, अन्तेष्ट, कन्युन, अवस्था, सम्बन, सूच, राग, अस्ति, और वेल्युव्यासम्ब काले हैं। अध्यासमायकाः विकास कालेकारे क्षेत्रोंको हर गुर्वोका क्रम प्राप्त करण करिये। यो प्रमुख प्रकृतिके का बावों, सन्तादि पून्तें और सन्तूर्व गरिनोंको रोक-रोक करना है, का पुरत-विकाले सरकार इसा है। उसके कार संस्कृतिक कुन्सेका प्रमाण नहीं प्याप्ता। स्थ क्षेत्र-स्थाने बहुद्य सन्दर्भ कुलेक कवाले कुरुकार य eren kri

मार्थिके । परमानामको कार्यकान निवृत् प्रकृत क्रकी मोहरे औं पहल । समावत सब ओर हान-वैश्वास, हरू और देव, फिर और मुख्याका तथा सब और काम्याक 🖢 क्योंकि व्य संस्करमें सकती नक्षत करने निवत है। सकते कार्ज किरास्थान पर्का (कायान्य) का प्रथान नहर नहर है। अधिका, सरित्य और अहि जाहि शिद्धियों काले | जान गति विश्वती है। पन पहुन्द्वानुसंदि विशासों स्थानं करण है। या शबका कारत करनेवारा, जोतिने और अधिपाती है। संसारमें को मनुष्य स्थित्वर, स्थानकारण, बार्ग, चेनी, सम्प्रांति, क्रिकेट्स, प्राप्तान, सेन्स्रीन, क्रोमको जीतनेवारे, उस्ता किए, बीट एक काळ और अञ्चलको रहित है. ये तम मूक क्षेत्रर करवात्रको प्राप्त क्षेत्रे है। में महत् जारावरी महिनाको कारत है जो कुम्बानक । चौताल, बुद्धियो प्रोक्षके का चौर कहा है।

जरुकाल करिका होता है, जा सक्य कुन्छ अधिकोसी पहल करना सामन करना बहुत है; विश्व अलकानी बीरं एक का करन में मेरीत भी हेता। में पर अधार प्रदेशको पूर्ण विका, विकास, पुरास-पुरास, विरायम के और अभिनोधी पान परित्रम पान प्रयुक्ते सामग्र है, सा

## अहंकारसे पश्चमहापूर्तो और इन्डियोंकी सृष्टि, अध्यात्म, अधिभूत और अधिदैक्तका वर्णन तथा निवृत्तिमार्गका उपदेश

आकरत, कर और रेक—ये काल्याका समय पूर् है। इसी प्रक्रमानी अर्थाद क्रमें करा, कर्ब, कर, सा और गय नाम्य निम्त्रोंने प्रमान अली मेरीत को है। महत्त्वारेका नाम हैनेके सन्तर पंच प्रत्यक्ता समाप्त अवस 🛊 और समय समझ प्रानिकोची पहलू बनका सामग्र श्रम् भारत है। भी पत रिवारे करना होता है अल्बा आणि कर है बात है। वे पूर अपूर्णन्यानो एको बाद कर उन्ह होते हैं और विकोध्यानको प्रत्या अपने-अपने प्रत्यानो हता क्षेत्र है। इस समान सन्दर्भ चरपार मुख्या सब हो क्रमेनर भी करण-सामित्र समात्र बीयान्य जेती पुरत नहीं सीत होते । प्रमा, राजी, कर, रत और राज प्रमा प्रमाने प्रमान क्षानेची कियाँ—वे कामानके (अर्थात् कृतः मध्यान क्रेनेके कारण), रिल है, अस्त इतका भी प्रत्यकारों स्थ महीं केता । एका महार्थ अभिन्त है और इसको मोहके कालो कुरवर्ष काल है। सरीरवेंड कहा शहर रख-मोलवेंड संस्था उन्हीं प्रकार पूर्व जानिता है। इसोरियने में दीन और कुमल जाने नहें है। जन्म, अपन, अपन, समान और काल-ने चौर करा नियासकारे करीरके जीतर नियास करते हैं: आह: वे स्थान है। भग, वाची, और मुखिके कार निकारों प्रकार संस्था नार होती है। ये आह इस वनाईंड आहन वहता है। ाक्षा, परिचा, धार, श्रीव, सरव और क्य-ने प्रतिर्ध कामें हो, पर बाद से और बंदि बंद विकास रिवर स्थितारी हो: विवाद समाहे अर्थाहर इन्द्रिकारिकम् आठ अप्रिक्त संदर्भ न करती हो, वह पुरस कान्यन्तर अन्यो जार होता है। उत्तरे बहुबर हराए बोर्ड नहीं होता।

श्चिमको । ज्यांबारसे जनक <u>र्वा</u> को न्यान्य क्रीतवी कारमधी जाती हैं, उनका क्रम निश्चेचलको कर्मर करीया,

अक्रकी का—व्यक्तिता । अर्थकार्यः एवर्षः, वायु. । युत्ते—सार, साव्यः, अत्रिः, रतना, पायः, प्रायः, पीरः, गृहः, क्या और कार-ने का इतियों है। यह न्यासूबी इतिह है। जनुरूको जाते पर प्रतिपतिक विश्वत साह करती जातिने। erragen, wit stage the beautifum firm fir per gefreift wire अभिना है और चीव करेंगियर । कम अर्थीर चीव एविक्सेको प्रानेतीय पाने हैं और पेप पांच हरियों क्षत्रीका सकतात है। परका सम्बद्ध अमेरिक और क्योंकिक केनीले है और स्ति कार्यो प्रीप्त है। इस उत्पार सम्बद्धः न्याक हरियोका कर्तन किया कथा। इसके बालको साम्री एक बाननेवाले निवार अलोवो कार्य कर्म है।

अब प्रभव प्रावेशियोंक युव, अधियुव आहे विशिष विकास करें। दिन्स करा है। सामान करा कुर है। कार कारक कारकार (प्रतिका), प्राप्त आरक्ष अधिपूर्व (विका) और दिवरों अस्ती अधिका (अधिका देवत) है। यह साथ पूर है, त्या सामा समान, रहा सामा स्त्रीत्रक और निवाद सरका स्त्रीकीका है। डीसरे प्रत्यक्ष जन है वेग; के अलग अवस्था, का कावर महिन्द्र और हर्ग जनक अधिकेश है। जनको चौचा पुर सन्ताना व्यक्तिः सम्ब अस्या अवस्थाः, सा अस्या अविश्वः और क्यान सरका सर्विका है। पूर्वी पीवर्षी कुत है; गुरिसा जनका अन्यान, क्या जनका अधिकृत और पानु जनका अधिका है। इन चीव पूर्वोंने को अस्तान, असिधा और arfather & arrest under flower were a seen malification रत्यन रक्षनेकारे विभिन्न विक्रमेश्वर निकास किया जात है। व्यक्तार्व अध्यक्त क्षेत्रों पैरोको सम्बाह्य कक्षाें है और क्रमा स्थानको उनके अविष्य तथा विकासी अस्ते क्रिकेट करको है। पर अध्यक्ष है और प्रत्यक्ष अस्त समित्रुक राजा विस्त साथे अधियेत्वता है । सम्पूर्ण प्रातिक्षेत्रके करत करनेकरा उपन्ध अकाल है और वीर्ष अस्त्र

कवित्रहा प्रथा प्रधानी आहे. महिल्ला देखा है। केने क्षा समाप्त बालाने गर्ने हैं कर्ने उनके अनिवृत्त और इस क्रमेंड सर्वितेतात है। साथी अन्यतन है और प्राचन जनक geliege war aufe gene aufeben fie mergiben Bucht Schule be Made bis the & State माना अतिहास है और पहला साथे अधिकार देशक परे को है। सक्षे संसारको क्या केलाल आकार अवसार है और सरिवान समा अभिन्ता एक वह समेद अभिन्ना हेला है। विचार करोबानो पुरित सम्बाद करने को है. क्षान काना सरिक्त और ह्या कोड सरिकेट है। mitrable mitte die d mer b.-ern, ern afre क्षात्रक । केंद्र एक प्रत्य की है । क्षेत्रकी केंद्र un province der B-reser, allers, diese abs unger tent alt genein anger ub Person unfer \$1 melle arbeit de \$1 art un afr. me-i sen fr qu gebie mer file feite gold new go goods find daller scores never spent and be to open per freund fellegter पाला है, जा केरी होता है कहा को का पानेने हमापा fine unt \$ 1 per train \$5 gerbrich arreire felben: Stated and them; but desires in grown track per fier fit pfielt, wie freid alle meingebil क्षाताका कियार पार्टी को काले अस्त्री क्षा करन का केल पार्टिने । कार्येर क्षील क्षेत्रियेर तथा क्षी तथा प्रयूपनिवा का से फरेनर करवाने करते हता (स्टेरिक इस-चेर आहे) की पूछा को होती। किराबा समान्यास प्राप्ते person aber f., an Regulate aufeit genem vergen. भोगा है।

व्यक्ति । तम में मानी पूर्ण कामनो पास् ब्रानेशारी निर्माणे निर्माणे उन्हेंस देन हैं। वर्ष पुर होने हुए भी पासि कामा है, यो अधिकानो सीव और एकान्यकारी पुर्ण है जब निर्माणे के मुख्या सर्वता अध्यक्त है, वही अञ्चल सार्वत प्रसादन प्रकृति स्वी कामन

कुरवेका कुरुवार स्थापन है। जैसे स्थापन सक्ते अहोंच्ये सम केनो स्टेट रेसा है, सने जनर से महत्र असी संपूर्ण कुल्क्स्प्रेको संपूर्णक करते रक्षेत्रको रहित हे जात है, जा का अवस्ति कथाते पुरु को पूर्व केन है। यो कारकारेको साने बीता तीर करते काली रहिए. manter air med arbeiter um ibn t. W mundher um fi um to ferebul affenen रक्षेत्राचे राज्य क्षित्रोचो रोजवार बनायुक्तको स्थानम where with give assumption to after प्रवासिक क्रेका है। चैसे ईंधन क्राल्टेसे काल प्रत्यानिक क्रेक्ट अवन्य स्टेड विकास केरे हैं: उसे अवन स्थितीया निवेश करोड़े परमारको प्रकारका विकेत अनुस्ता क्षेत्रे समात है। हैता करन केने अस्तरिक होता सन्तर्ग अस्तिकेट असे present for but over \$, or over \$2 tot कोरी:स्वरत होन्स सुरती के शुरू रस्कारको उस होत fit find pe ebad de gebalt madite imm अधिकार केल केल है को अने अस्तरकार परावास स्था पहले उसलीय होती है—यह पेक्स के उसने हैं। विकास को इतिहरूकों को सकते हैं, को करिनेनाओं सहस् मान्यक्रीओ भरी क्षाँ है और विवादि चीवर मेहन्य कुन्ध है, उस केवारी महीको स्रोतकार के बाग और होना केरोको प्रीत केवा है जो का केरोंने एक केंग्रर पंजार परमानक पासनकर कृता है। यो पत्रके प्रत्यक्रमाने स्वर्धन करके अपने पीतर है जानो हुए आस्त्रानिक प्रका करता है, का सन्तर्भ क्रोंचे पूर्वत होता है और की अन्य:बरायो परवास्त्रात्त्रको अनुसार होने राज्या है। जैसे एक केनरे सैकाई की काम सिसी को है जरी जात एक है परवास का-ता सरेको सर्वेने क्याच्या केवा है। ऐसा विकास करके इसी पुरूप राज स्थीको कारों ही जाना देखात है। काराओं को निन्तु, नित, नरम, all, south, we, france, by, mirest, popi-प्राणिकोच्या प्राप्त कथा पहलू स्थानन है । साहत्व्यास्थ्रापन, केवल, असर, पात, विकास, विकार, पाति, राहास, पात और सम्पूर्ण नार्वि के तथ का कार्यकों को करे हैं।

बराबर प्राणियोंके अभिपतियों, धर्म आदिके लक्षणों और विषयोंकी अनुभूतिके सामनोंका वर्णन तथा क्षेत्रज्ञकी विलक्षणता

आहारी कहा—बहरिये ! वरवा, जापुर, वीका, | इस कोकने वृत्तीके तथा है। दिनकान, परिवास, स्वास सेनात, प्रीक्षण, केलहु (केव्यक्षिण) और फेले कॉस—थे | किया, कियुर, केम, जीत, कार, कोहमान् मुख्यका,

मोत्, मानकर्—ने वर्वतिह अधिनी है। हर्व क्रोंद्र काल पहलेके, नगरक विकोध, समूह सरिवाओंके, मान भागो और हुए मानुस्तिति सामी है। समाप्रकृति अभिनेत पूर्व है, कराओंके साथी भवाब है और पूर्वके समीवर स्थानिक है। स्थानोंके प्राची सामग्री, ओपनियोंके होन, साम्यानेके निम्नु, क्योंके स्था क्या प्रकृतिके अधिकी प्रश्नात क्षेत्र है। बेबर प्रश्ना कानेवालोके यह और वेग्याओं इस अधिकी है। विकाशीको कारियो जार विका है, प्राकृतीके प्रारंगी राज्य सोन है, तम अवसर्थ कोचे सामी कोर और उच्छाती सानी प्रभावति है। में सामूर्ण प्रतिकोद्धा पहुन् अर्थाका और महाराज है। मुक्ते अवका विश्वते बहका इतत कोई भी है। प्राप्त महरिक्तु हो सबसे प्रस्तित्व है, उन्हेंसे हैक सम्बाग करिये । ये डीवरि सम्बेद कर्ता है; सिंह् अस्त्रा मोर्च कर्त की है। वे क्यूब, किस, ब्यू, कर्मा, हरी, राज्या, देव, बान्य और यान सक्ते असीवर है।

प्रमा वर्ग-सरमध्ये प्रमुख होते हैं और हाइस्त करीं। ऐतु हैं, अर: एकाची कर्मि कि यह सम स्थानमंत्री प्राथ्ता अर्था करें। मिल क्याओंके राज्यों अन्यु-पुत्रमंत्री बाहु होता है, में अर्था अन्युक्त समोधित पुत्रोंने हीन हो कर्म और परनेके क्या करवाने बहुते हैं। विनके क्याओं सामु-अस्त्रमंत्रीय तम अव्यारते रहा की करते हैं, से इस स्वेक्टो अस्त्रमंत्री करते हैं। ही प्रस्तानकों की सुक्त बोकों है।

अन में सम्मेर निया वर्ष और समुख्येक कर्ष करण है। अवीस समसे केंद्र वर्ष है और दिस अध्येक समूख (साम) है। अवास वेक्क्योक, व्या आदे कर्ष समुख्येक, क्या अव्याक्ता, बादु सर्वक, क्या केंद्रक, सा वार्ष्य और गय समूखं अध्येक्केंद्र वार्ष्य कर्षकार पृथ्विक सम्भा है। कर-व्याक्ति कृति कृत कर्षका स्थान क्या है। सीम-विवार कर्मा और विवास पृत्यक स्थान है। क्योंकि प्रमुख इस कर्मा क्या है। साथ-पृत्यक स्थान वार्ष्य व्यक्ति है स्थान कर्म है। साथ-पृत्यक स्थान वार्ष्य व्यक्ति है स्थान कर्म है। साथ-पृत्यक स्थान है। क्यांका सुद्धि है स्थान कर्म है। साथ-पृत्यक क्यांक्ति है। क्यांका स्थान अपूर्व और संभारतक स्थान क्या है। क्यांका सुद्धि है। साथ-पृत्यको क्यांकी कि व्याक्तिका स्थान स्थार संन्यार क्यांक करें। क्यांक्ति है। साथ-प्रमुख संभावी क्यांत्र स्थानको स्थानक स्थान क्यांक्ति हम्में क्यांक्ति क्यांत्र

अञ्चलकारके कर चौकार परन परिची प्राप्त होता है। कारिये ! व्या मैंने हुमस्येगीले सबके वर्ग हर्ग स्थानीक विकित्त् वर्णन दिया, अब यह कह यह है कि विता गुणको कित इन्तिको पहल किया नाता है। पृजीका में क्या करता कुन है जाना महिन्द्राते हुए पहल होता है और जीतको विका कर्यु का प्रमान सनुपन करानेये व्यापक होती है। बराबर पूरा रहा है सिराबो निवासे बरा जान किया काम है और विद्वारों विका चन्नम उस रहते। कारकार कारक होता है। देशका पूर्व पर्या है और यह नेको विभा भूगीकामधी स्थानको नेतके प्रस् देश। पास है। क्यूबर कुर सर्व है, विस्तात समावे प्रशा हार होता है और सम्बन्धे निवा चानुरेन जल एकांचा अनुसन परादेशे कारक होते है। सामानो पुत्र कारका प्रतिके प्रय व्यान क्षेत्र है और कारने प्रियंत प्रानूची विकाद प्रान्ती करने सक्तर करने को है। साक पूर्व किया है िलामा पुरिप्ते प्रया भाग निरम मोदा है और प्राप्ते दिशा केवन (आरम) पर्नात विश्वय-कार्नने सहस्यत केत है। विश्वमके क्षत मुद्रिका और मिसुद्ध सुद्रिके क्षत प्रश्नासका व्यान क्रेंबर है। इनके कार्नोर्र के इनकी सराव्या निक्रम क्रेस है और इसेले इन्हें बनक बना बात है; किंदु बनावर्गे हो अमेरिक क्षेत्रिक पारम के कृदि आहे. अनक के हैं, इसमें वरिष्य भी परिव नहीं है। बेंग्बर स्थानामा पोर्ट प्रापक दिखा जों के क्लेकि का (क्लेक्स्स और) निर्मूल है। सार केटर करिया (विकास विकास स्थापको स्थार) है; केवरर अप है जाका स्थान (जाका) मान क्या है। पुनीकी क्यति और सम्बंद बारमाना समाय अवस्थित केर करते हैं। men mit weren f. geffeb big deur negener fie केक मार्ड, कर और अचले कुछ लगता सरोवन प्रयोक्ते करण है। किए ने को पाँ कर करें। होरहको कोई पाँ करण, क्षेत्र का सकते सामा है। इतियोध श्रीकी अनोकारे को पूज है, उस्से को विश्वकार परावत ररणाल्यो क्षेत्राचे रिका योगे नहीं चाला। क्षाः इसे लेक्ट्रों निर्मे केलेक्ट इस है अब है, यह पुनारीत पूरव सम्ब (कृदि) और गुलीका परिवान करके क्षेत्रकंड क्ष्युल्लाम क्लालाने अनेब कर करा है। क्षेत्र स्क-द्रशामी इन्हेंने खेंद्र, सकत और अनिकेत है। बढ़ी reference weren \$1

### सब पटाष्ट्रेकि आदि-अन्त, ज्ञानकी नित्यता: टेइसमी कालबक्र तथा गृहस्थके प्रपंका कर्णन

बहर्गने कह-वहर्गिता ! जब मैं बहर्गीक आहे, ! मध्य और असम्बर्ध पर्याप पर्याप करता है। पहले मैन है मिन एकि (अस: बिन राविका साहै है। हुती अवसर) । सहस्था महिनेकर, सकल महारोक्त और विकिट प्रमुखीका आदि है। गर्नोका आहे बारण चूरि, स्तोबा कर, क्योबा न्वेडियेन आदित, राष्ट्रीका कन् और क्रम्बा जाने करना आकरा है। ये एक बादि पहाच्योंने क्या पूर्व है। अब में चूलेके साविका कर्गन करका है। पूर्व समया पहेंचा और प्रकारकर सम्पूर्व प्राणियोका आहे कारणया करा है। सामिने सम Separated afte murch benneht auft &: steue सम्पूर्ण नेवीका और प्राप्त वान्तीका आहे है . इस संस्थलों के किया अपूर्ण है, यह एवं पायती पहलात है। क्योंक आहे गामते और प्रतास आहे सुदेखा करणकार है। भीएँ चौदानोची, साहाम अनुसरिंह, बार्ट विदिन्तेके, बार्ट आहीर पहोत्री, तींप रेपसर पहारेखाई सीखेया और प्रस्तुत सन्दर्भ कृतीका आहे है। कोने कुलने, अलेने के और प्रधा-योज्य पहलीर्थ अन्न सेंद्र है । सहनेवाले और पीने मोच्य क्याबॉर्ने सार तराव है। सन्तर स्थान क्रोमें क्रमानकः अक्रानीका केन-न्यकः क्रमानक वक्ष के वर्ष परित साना गरा है। शुन्तुओं प्रधानतिनोच्या असी में है और सि आदि अधिकारक कारान् विन्तु है। उन्हेंको सकत् क्यूने है। कारोपे कारो कारे नेवरियो क्यार हाँ है। हिला और विविद्यालोंने पूर्वतिहा अवन्य वानी नवी है। सम नहियोंने क्रिकाम पहुर खेड़ है । सहेवरोंने सर्वत्रका समुद्राह अध्यक्ति हुआ है। हेव, दान्य, यूत, विकाय, सर्व, राज्यत, प्रमुख, बिवार और समया बढ़ोने सबने करवान् प्रांचन है। क्रमूर्व कार्यके आहे कारण ब्रह्मसम्बद म्हर्यन्यु 🕯 । सीने सोकॉर्ने इनसे जकार कृत्या कोई नहीं है। तथ अक्राकेने गुरुव-अप्रवचने प्रधानत से गर्गे है। कार्यक आहे, और अन्य अध्यक्त प्रकृति हो है। विस्तार अन्य है सूर्योग और राजिका अन्त है पुनोदन। मुखका जन्त सब दुःस है और कुक्का अन्त सब पुरू है। संस्कृता अन्त है किन्छ, देवे सहनेका जप्त है जैसे गिरमा, संस्थेत्यक अन्त है नियोग और बीकाका अन्त है युद्ध । किर-किर बकुओका निर्माण हका है उनका नात अवन्यन्याची है। वो जन्म के कुछा है अल्बी मृत् विश्वेत है। इस अध्यो श्वास क उद्दर कोई की कलेकात है। का राय-देवरि इन्होंने कुछ का केवारी

तक क्रमेकाव औं है। का, संग, तन, अध्ययन, तत और रिका--पूर समझ राज होता है, केशन झाला राज भी होता। क्रार्टाओ क्रिक्ट अन्तरे क्या विसमा निय सन्त हो ना है, जिल्ली इन्हिन बचने हो पूर्वी है तथा को करता और अवंकारने स्वेत है क्या है, यह सब क्योंने मुख है काम है।

कार्मिके । कार्क समान बेगायला (क्रिकरी) प्रकेश कारकार निराम कर का है। या प्राप्तको सेवर स्तुत पुलेक्य चौचीत क्योते चना हुआ है। इसकी गति कही ची को प्राची । का संरक्ष-कथनका अन्यानं कारण है। पुरुष और फ्रेंक क्षे भेरे हुए हैं। यह रोग और हुन्येक्नोकी अवक्रिका प्राप्त है। देश और मारको अनुसार क्रिकाल क्षा कुछ है। कुँद कु बसल्याभा सार, का कृष्य और प्रोक्रमें करूर है। यह प्रक्रमा पूर्विक समूक्ते करा दूसा है। तान केना प्रमाणक झाले कुछ, है । एक और दिन इस प्राप्तका प्रकारक बहुते हैं। सभी और गर्नी प्रत्यह चेरा है : सुके और कृषा प्रस्ता संस्थित (ओड) है। पूर्व और मान प्रस्ते बोलक क्या कुछ और क्रमा अन्तरी रेका है। अधिकेर क्षेत्रने और पीयनेके इसकी काञ्चनता (क्षाप्ता) जनत केरी है। केर केइन्सी कर (क्षेत्राह) से वह ब्लाह करा है। यह एक ही परिवर्धन और अभेवन है। परश और पक्ष अवदिक्षेत्र प्रस्त प्रस्तवी कानुस्ती गुरुता की बाती है। यह सन्ती थी एक-मी समस्याने नहीं साथ : हमर, नीचे और प्रधानी रहेकोंने एक पहल स्थापन क्षत्र है। स्थेपुणके कार्य होनेकर हालकी पान-पहुनी प्रकृति होती है और स्थोगुरस्का बेग को विक-विक कर्मोंचे समान्य करता है। यह पहान, हरीने बहेत यहा है। सेने पुन्तेके अनुसार इसकी अपूर्ति हैसी कर्त है। मानसिक विका हो हा। बहाओ क्यान्यहेका है। व्य तथा कोच्ह और कृत्ये बजीपुत सुनेवाल तथा किया और कराओ पूर्व 🏗 आसींत 🛊 जाना दीर्गनितार (सम्बद्ध-बीहर्ष) है। लोच और क्या है इस ब्यान्धे **क्षेत्र-नेवे रक्ष-वेथे निरानेके हेट हैं। अर्जुट स्तान (भाष)** इसकी अवस्थित कारण है। यथ और योद इसे सब ओसी केंद्रे हुए है। यह प्राध्यक्षेत्रके योद्योगे इक्तनेवाला, आनन्द्र और अतिके दिने विकलेकारा तथा काम और खोक्या संस्

कारणकाः ही वेजवानोस्तित सम्पूर्ण कन्यूकी सृष्टि और संबारका कारण है। राज्यसम्बद्धी प्राहित्या की नहीं स्थान है। को प्रमुख इस देहमन कारणकानी प्रमुख और निवृत्तिको अवसी तदा कारता है, व्या कभी बोहरों नहीं पहला क्या सम्पूर्ण कारणाओं, सब प्रकारके हुनों और समझा क्योंसे सुन्न होकन परम परिन्नो प्राह होना है।

मार्च्य, कांत्र्य, कराव्य और संस्था—ने पार आसार प्राचीने काले भने हैं। गुड़ल-स्थान है इन प्राच्छा मूल है। इस शेखारों को कोई की विकि-निकेशका कृत्या है, करने परंगत विद्वार होना गुरुत है कोचे हिन्ने अपन बाह है । इसीये सन्तरन परस्की अहि होती है। पहले एवं उपलब्ध संस्थापेसे सम्बद्ध होचन बेदोन्ड विधिये अन्यादन करते हुए महत्वर्ष-मान्या पारम करना वाहिये। सन्धानः समानांत्र संस्थार करके काम गुओले कुछ कुलने किया। मरना बाहिने । अन्तरी ही बीचर डेम रकता, तक सरकारेंके आसारका पालन करना और विलेखित होन्ह गुहरूको सैन्हे पान आवरणक है। को सङ्घलक प्रकृतकोट हरा केवल आदिका प्रमुख करना पाहियों। न्यूकाको अधिक है कि या केवा और अधिकियों योजन वारानेके बाद को पूर अध्या सर्व जवार गरे। येथेल क्योंके अनुवारने संस्त हो। अपनी प्रतिनेद अनुसार असल्यादनीय का करे और क्षम है। इस, पैर, के, कार्नी तक प्राधिकों इस क्षेत्रेकार्थ | लेक है।

क्याराज्या परिवास करे अर्थात् इसके इस कोई अनुविद कर्ण न होने है। बढ़ी सत्त्रकोश्य वर्तन (शिक्षकार) है। का प्रतिकृति करण किने हो, क्रम्ब क्रम् प्रति, जान प्राच्या पारन करे. कीच-संतोच आदि विचयों और सक-अद्वेश साहि क्येंकि प्रसार्विक क्यावरिक द्वार करण हो क्या विद्या पुरुषेके स्वधा निवास करे। विकास कार्य करते हुए विका और प्रशासको कार्युने रवे : सक्के साम निरम्पाका कर्ताव करे । बॉसकी क्के और बसने बर हुआ कमकर सक सब रहे । हाध्यमधी अध्यय-अध्ययन, प्रथम-प्रथम और हान तथा प्रतिका-इर कः परिन्येका सामन रेन्स काविने । इनमेश्रे तीन कर्न-कार (यह कराना), अव्यक्त (यहाना) और केंद्र पुरुषोर्न कर होता—ने प्रधानको परिवरको पायत है और केन तीन कर्म-कर, सम्बन्ध तथा बहासूहार करण-ने वर्गकरंग्दे क्षेत्रे हैं। वर्षक प्रकारको इत्हे कारणे क्षा प्रकट वहीं कारत काहिले। हिंदाहरकी, निजन्मको पूज, क्रमाना, सब अभियोधे प्रति समाप पान रक्षानेकारम, परमानीत, क्राम क्राम्य प्राप्त करनेकार और परिवासने क्रांत्यान गृहत हिकाने ताह सम्बद्धा क्षेत्रण क्षणी प्रतिके अनुसार पदि उपर्यक्त निक्नोका करन करना है से यह सर्गलेकको सीत

#### —≠— ब्रह्मजारी, वानप्रस्थी और संन्थासीके धर्मका वर्णन

महत्वी वह--व्यक्ति । सहवर्ष-सावा वारण ।

करनेवारे पुरस्को वाहिने कि वह अपने वर्धन करते ,

किन्नु वर्ग, सामूर्ण इत्तिकोको अपने अवीन एके,

कृतिसाका पारण करे, मुख्या तिय और हैत करनेने साम करे,

कृतिसाका पारण करे, मुख्या तिय और हैत करनेने साम करे।

काल रेकर पोजन करे। पोजनके साम अध्यति किन्नु व करे। किन्नु के अस्ति किन्नु व करे। विश्वके आस्त्रो इकिन्नु कान्या प्रमुख करे। एक साम्यको इकिन्नु कान्या प्रमुख करे। एक साम्यको इकिन्नु कान्या क्षेत्र के कर्मु करे। विश्वके आस्त्रो इकिन्नु कारण करे। विश्वके अस्त्रो इकिन्नु के क्षेत्र के क्ष्या करे। व्यक्ति की क्ष्या करे। व्यक्ति कार्य कर्मु किन्नु के क्ष्या कर्मु कर्मु कर्मु कर्मु कर्मु क्ष्या करे। व्यक्ति क्ष्या करे, व्यक्ति सारा कर्मु के क्ष्या करे, व्यक्ति कार्य करे, व्यक्ति कर्मु करे, क्ष्या कर्मु क्ष्या करे, क्ष्या कर्मु क्ष्या करे, व्यक्ति क्ष्या करे, क्ष्या क्ष्या करें क्ष्या क्ष्या करें क्ष्या क्ष्या करें क्ष्या क्ष्या करें क्ष्या करें क्ष्या करें क्ष्या क्ष्या करें क्ष्या करें क्ष्या क्ष्या करें क्ष्या क्ष्या करें क्ष्या करें क्ष्या करें क्ष्या करें क्ष्या क्ष्या करें क्ष्या करें क्ष्या करें क्ष्या क्ष्या क्ष्या करें क्ष्या क्ष्या क्ष्या करें क्ष्या क्ष्या क्ष्या करें क्ष्या क्ष्या करें क्ष्या क्ष्या करें क्ष्या क

अक्षानी क्या—स्वर्तिये । अञ्चलनिकास कारण | अञ्चलिका-मरावय क्षेत्रर ब्राइन्टे साथ सुन् कारणे सद्य भारते पुरसको काहिने कि का अपने काली करण हो, | देवकाओका तर्गन कारण है, उसकी सर्वत प्रसंसा होती है।

इती प्रवास काने काराओं कानेवारे उत्तव पुंजीने पुंच विशेषक वान्याको पूका की उत्तव (वेकोस विश्वय कहा है। वह उत्तव (कारावो कुम की उत्तर संसारते जन बारत की करवा। कारावो कुमिको करकी करता कारिये। वह कुरवर्ण अवस्थ करवार-कुम पहने। प्राट: और सार्वकालके समय कान करे। यह करवे हैं हो। जीवये कभी उत्तेश न करे। अधिविको अक्राय है और संवय्वय अवसा सरकार करे। वेकान करा, पुर, पदा अक्रम सार्व काकर वीवन-विश्वय करे। कर्क विश्व अन्यवकी कर-वायुक्तको सेवन न करे। अपने अवसे अनुसार सदा सरकार क्रकर क्राय्ता उत्तर्वक क्राुअवेका अक्षार करे। वहि कोई अधिक आ कर हो क्रा-कुम्बर विश्व केन्द्र उसका सम्बार करे। वाकी आरम्भ न वारे । यो कुळ कोमन अपने कह जानिका हो, आनिमें आरिकियो विश्वा है । योग होशार कही है कहा और अरिकियोको कोमन हे, हालो कह कर्म अप पहल करें । विद्वित हाथ स्थान-होट म रहो, हालक कोमन हो, हेल्लाओक कहारा है, हरिक्योका केमन हो, कर्मा क्रम विश्वानक कर्मा करें, हरिक्योका को और हाई-वृद्ध क्रम विश्वानक कर्मा करें, हर्मानील को और हाई-वृद्ध क्रम विश्वान और हास-कर्मका कामन को । हरिक्यों हाई क्रम क्रम्माय और हास-कर्मका कामन को । हरिक्यों हाई क्रम क्रमें एकार विश्वे हैं । हाई स्थान क्रमें क्रमें करां क्रमें क्रमा विश्वान कामना क्रमें क्रमें हिंगा करां है । क्रमारी, गृहत अक्रक कामना क्रमें क्रमें क्रमें म है, क्रों क्रमारी, गृहत अक्रक क्रमान क्रमें क्रमें क्रमें म है, क्रों

(पारामची अपनि पूर्व करें) अपने क्लेके श्रापन-क्षम केवर वर्ग-स्थानक क्षेत्रक करीक पहल करे। सार आनियोके सुराते सुरा आते। सार्वेद साथ विकास एवं । कारत इमेररीया संगत और पुनि-पुनिव्य पासर करे । प्रिय पालन किने, जिला प्रेमानको केला; को अन्त प्रमा है पान, ber fregrit di whos-breig sate speciale and रतोई-नार्य का दूधी विकास के है कर, बन्हे सा सीन कानी क्षेत्र और कांग के-बीकार रक क्षेत्रे को हो. का रूपन चेव-वर्गीर प्रत्य संभागीको विका हेर्नको प्रवा weiß unfer frege fine unber gef alle in Regiber कियम् न गरे । (सोक्यक) बहुत अधिक विद्यालय प्रोत्स न करें। जिसले अन्य-महामा विश्वी के कार्य के विद्वार केंद्र भारिये । संभारते प्रीयम-निर्दाको हो हैओ निर्दा प्राप्त होते । क्षीतर सम्पन्नक इसके निरम्भेकी बाद हेते । विकास स्वतार मिने से । सामारन स्थानको भी प्रकान को । को अधिका सम्भात होता है, यह योगर र वर्ष । यश-व्यक्तिके स्वयक्ते पंत्रासीको कृत्य करनी पाछिने । यह केहे, हिन्छ, करोहे क्या माने अक्का कार व है। क्या समा भी सामान व करे। केवल जीवल-विकास क्षेत्रको प्राय-करकारको रिने क्रामेनी अधना माहर करे। कुले क्रानिकेशी बीनिकार्य कथा ग्रांकने दिना है नहीं विद्या दिना करते हैं. राधी और स्वीकार करे। विकास क्षेत्री समय हिसे अलेकारे मानो मिया दूसरा अब हेलेकी क्वाफी हका न करे। स्रो अपने वर्गक अर्थन जी करत वालि। स्थेतुको सीह होकर निर्मन स्थानमें विकासे सुन्य वाहिले। स्वाब्ये स्टेनेके रिने हुने पर, पंतरह, काची का, नरीके विकार असक पर्यक्रियो मुख्यका अस्तर हैना साहिते। चीवने एक स्वासं

अभिन्य नहीं क्षात्र पाहिने; मितू वर्णने पार महिने विहार एक है ज्यान्तर क्षात्र पाहिन करने वादिने। ज्यानक कृष्ण अभाव को वर्णना संन्यानके हैं ऐसे राहत पाला अभा है। या करेंग्रेण क्षा और-बीरे क्षानूनी पुर्वारर विकास को और पासके क्षान पीनोरर क्षा करने पुर्वारके अपने क्षा देश-नात्मार अने चीन रहे। विहारी प्रधारका संबद्ध न करें और विहारिक क्षेत्र-काराओं वैक्सर काही विकास न करें।

केंग्र-करिंद्र इस्ता संन्यानीओं जीवन है कि साथ परिवा करने कर है। इस रिकार हर काने बार को (का च्योंके को क्यों च्यों) । स्रविता, क्यानो, सार, प्रशास, बोक्का सराव, केन-प्रदेश प्राप्त, इतिसर्वात और कुरानी न पारक—पूर शांक प्रातेषा प्रकारतीके पूर्व पहला करे । प्रतिकृतिको स्थाने स्थ्री । जनका स्थ्रीन प्राप्त साथ, स्थान और पुर्वतिकारी चीवा होता धार्तिने । यो उत्तर अपने-अस 💴 🛊 चन्द्र, सामी मूल करना पाहिने; सिंह सामे हैंस्वे के करने करन को राजने करेते : 300-00000 Role करने हैं कि विकास अस्य आकरणा है सामा ही सहस्र करें। वर्गक जार हुए अञ्चल ही अध्यान वर्गे । अन्यान्य क्रीका व mit : mebbs find atte afte mite muchte find mucht किया और विश्वी प्रक्रमा संग्रह म करे। विश्वा मी, विश्वी एक करन चेकाने देले आवश्यक हो हानी है जान को-जाते अधिक नहीं । कुरतिक क्रिके विकास मंत्रि । क्रुके क्रि Santon v t i form mobule Spothalt skip way whose व को । विनों अपने प्रमुख उपयोग करते हिए उसके रिमी स्थानकीय म ग्री । निही, पास, साथ, पार, पुन्य और क्य-ने कहाई की विश्वतिः अधिकारो न हो से अन्यक्तक प्रकृतिक संस्थानी हुन्हें प्रत्यनों का संस्थान है। **स्थ** विकास करते संविध्य न साम्रो, पूर्वाको ह्या व करे। य विज्ञाने के करे और य विज्ञानों करेत है। स्वय विभिन्नर यो । सञ्चले जात पूर् परित अस्तर असूर पारे । करने कोई निर्माण न रही । सकते स्था अनुसन्ते सम्बन् सन्तर वर्तान करें, कहीं भी असरका न है। और दिस्सी भी प्रानीके कार परिचय न कहाते । सामाना और विसासे पूर्व पार्टका न रूप अक्रूपन को और न कारोंगे करके। सब उच्चरके व्यानीकी जातरिका जल्लान करके कोईने संयुष्ट के सब ओर निकास हो। स्थापन और स्थाप सकी प्रतियोक्ते प्रति क्यान पाम रहे, मिजी हारी अभीको खेलमे न झारे और कर्म की विकासि अहित म हो। यो पात अस्तियोख्य जिल्लाका का बाता है, का समये तेव और बोज-वर्गका

अन्य पंतरता है। रोपारीयो जीवा है कि परिष्योह हैओ विकार न करे, कीरी सलकी किया क्षेत्र है और कांग्सरकी भी जोड़ा कर है। केवल कारको प्रतिक काल हुन, विता-वृत्तिकोको रोकनेका अच्छा करे। नेताले, काले अहर समीते किसी प्रमुख्ये कृषित न सरे। इसके राज्ये क इसरोंकी जॉन बक्कर कोई वर्ध्य र बरे। कैसे बक्क करने नहाँको एक कोरहे समेद रेखा है, उसी उत्पार इतिस्थेको विश्वकेची ओस्त्रो इन्हा है। इतिहर, यन और सुद्धिको हर्गल करके विश्वेष हो कर । सन्दर्भ सर्वोक्त हार प्राप्त करे । इन्होरी प्रश्नाविक व हो, विकारिक स्वाप्ते काल व क्रिक स्वापनार (अधिकेत साहि) का परिवास करे। करता और अवंकारसे रहित है कर, चेनकेवकी किया न करें। मनक किया प्राप्त को । यो निवास, निर्मुण, प्राप्त, क्षाच्याक, निरामण, अस्त्राराच्यात और क्षाप्रक कृता होता है, व्या नितर्मक मुख्य हो स्थान है। को प्रमुख कृष्य, बैर, बीड, मतान और गर आदि सहोते छीव, पुत्र-कारोंने क्रेप, book, folie, flore, sur-res-res-sent after small पीता, हेप, अपराया, पायते होत, विदेश्य, अधिनाती, विका और संस्थाने प्राणियोंने वैक्ता जानकारों हेलते हैं, उनकी है हुई करवालको प्राप्त से बाहत है।

कमी पुरु को बेले । का आकारकाक पुरि, इंडिन और देवकारोकी भी पहुँच नहीं होती : मेर, महा, सोमा, रूप और क्रमा के को अंध को केंद्र। को केरत प्रकार न्यानक वितर्भ प्रधानक प्रकृतिक करण किमे विशा हो क काने है। इस्तरियों बहु विद्वारेते स्त्रीत वर्णको परपार क्रमक चनार्वकारी पारन करना महिने । विद्वार पुरुषके जीवा है कि का विकासी जनका जानरण बारे। का म हेकर की कुछ समान नहींने को; सिंह अपने किसी कामानो प्रमेशो सल्बीत न परे। विस प्रत्येक परोती क्रमाने को सेन क्रमार करें, देश है कम सक करत के बिंदु सामुक्तिके कांची निका न को । यो इस प्रकारका कार करे हर कांचा कार कार है, या के पूर्व बाहरता है। को बहुक इतिहर, उनके विकाद, बाहुब्बहुक्तुर, कर, पुनि, अर्थव्यर, अपनी और पुंचर-नाम समस्या निवार करें इस्ते करना प्रकार दिवन कर रेता है तक रकामो केवार परकासक भाग वस्ता है, का आवरवर्ष विकारिकारे कामूबी असि एक प्रकारकी अरब्धिओंसे क्षाता प्रकारकोने सीत, मिर्नन तथा निरासन क्षेत्रर एक

#### परमात्माकी प्राप्तिके उपायोका वर्णन

सहरूपेरे कहा—बहुपिये । विश्वित कर सहरेकारे पृत् | प्रधान राज्यसभी कर कहते हैं और इतनहों ही पराहरूक प्रकार करते हैं । यह तह सहारियोंने सरका हर, निहेन, रिग्रेंग, रिसा, जरिया और श्रेष्ट है। बीर पूछा क्रथ और क्रमाने प्राप्त जान्य साधानात करते है। क्रिक्ट्रे करवी मैस कुर नवी है, को काम परिवा है, विन्होंने स्वोत्त्वको साम दिया है, विरुद्धा संग्रह्मका विर्णत है, हो र्राज्यसम्बद्धाः इत्य अपूर्वे अस्त 🗓 वे क्याब्रेट अस करपालम्य प्रथम अस्तर होते है—प्रयोगको प्राप्त होते है। 🕬 पुरुषेक कान है कि काम (कामकावाक) अवस्थित वारनेवारम) केंग्स है, सम्बार वर्गान्य सम्बन्ध है, अन परावस्था सरम्भ है और संन्यात है अन का है। के राजका पूर्व निश्चन करके समूर्व अभिन्योंक भीतर क्रुनेकारे श्वानाम्हे सार जेता है, यह सर्वत विवयनेवाल हुने सर्वत हो पाता है। यो फिसी बर्ज़्या ब्यापन क्या विस्तियाँ सर्वारत जी करत, व्याप्त सेकरे करा थे प्रकारकारको जात् हो नाता है। यो सथ पुर्वाने

कन्कर क्या और महंकारते रहित हो बाता है, उसके एक केनेने परित्य भी सीह नहीं है। यून और अयून प्रश्ना निरुक्तानक क्रमीका १४० एउन और अस्तानका भी स्वाप कारोरी जीवनो जन्मन नोस जार होता है। यह के एक मुससे रन्यन है। जारन इसका कुछ अञ्चल (बड़) है, कुँदि करण (क्य), अवस्थार पाएव है, इन्द्रियों क्रोक्सो है और म्बान्या पूर इंटरेंड विकास अवका है, जो बुक्तारी हो मा बहारी है। इसमें एक ही संस्थापकरी को उनते और कर्मकरी करा िक्तके सूर्व है। पुरस्काय कर्वोंसे प्राप्त क्षेत्रेवाले सूत्त-२/कृति है कारों सह तमें क्रोबर्ट कर है। इस प्रकार बहुकरी बीको उच्छ होता उपकृत्यने एक मीवर प्रनेताल का क्षेत्रको कुछ सम्पन्न प्राणिकोके जीवनका सामार है। मुद्धियान पूर्ण कार्यक्रमान्त्री सहसे इस बक्षको कारका सब कथ-पूर्ण और मरामरकांद्र पाराने कालोकाले आवश्चित्रम कालोको केंद्र क्रमान है अब क्या और महंबारसे रहित हो माता है. का राज्य को काराय महित जार होती है।

के मनक अन्तकारमें अस्तकार कार करके, स्रोत प्रवान—प्रकृतिको तथा अन्ते पुन एवं तन्त्रको पार्वपाति । हेनेने विद्यार हेर लगते है जाने हेर थी, सम्पन्नये विद्य कार है। यो एक निर्मेश भी अपने मनको आजाने एकता कर केल हैं, यह अन्तःकाणको जानकालो पावन विद्वारको प्रक्र हेनेवाली सहार गरिकों च सता है। प्रान्तकरके हत पुर:-पुर: प्रामोका संपन करनेकाल पुरा भी परकारको जारा होता है। इस प्रकार को पहले अपने अन्य:बरनाको ऋड बार हेन्स है, वर्ष सो-में पहला है जहै-अहे प्रसूचों या जात है। सत्त्व (विकास्ति) के मानको कार्यकारे विकास होती है)।

केता है, व्यः अपृत्रम (पोज) जार करनेका अधिकारी है | इस वश्यमें समारे बहबर और किसी पर्युची जारेस अहि करो । क्रिकारी । इस समुख्य-प्रकारके द्वारा इस पारको अवसे एक कानों है कि अन्तर्वांगी परमात सरवये ही लिया है। सम्बद्ध सिम्ब कृति विस्ती मार्गसे करके पास पहुँचना अस्तान है। स्था, कैंचे, अक्रिस, समात, सार, सरस्ता, इत्तर, स्थान (कुन) कक्ष कंन्यस—ने सारिक्क कालिके क्रुक्ती करे को हैं (इस्ते में मामकाची अधि

## सत्त्व और पुरुवकी पिश्रता, बुद्धिमान्की प्रशंसा, पश्चमुतोंके गुण और आत्माकी क्षेत्रताका वर्णन

करों हैं, आहित्य-मुलिया असल्य होते हैं और खेल क्या मोको की कुर है, को राजाने मिला पहला है। को निवास आराम क्षेत्रकर स्थाने साथ नेतृष्ट कार्नेका अनुहार कर्ते है और क्लंड पालों सालक भी होते, में भीर और सम श्रीकारे को को है।

अब में बढ़ बता रहा है कि तता और क्षेत्रका करता प्रोचीन और विच्येत की होता है 7 इस विकासी स्थान केवर कृते —इन होनोर्ने क्रियन-विवरिष्याय सम्बन्ध कर्म है। इसमें पूजा के निक्ती है और क्षम निकार करीने पूजा proces program would it after drop Polys. Prentt, fiem afte firfer fit die mennie wiere mit हाँ पहली पहल के को दिनों भी पती, को ककर विकास मुख्य प्रथम गुजोसे सम्बन्ध रहते हुए भी विकास हिन्स नहीं केया । कराः केवत पुराव अस्तव है, कराने स्त्रीन्य भी । संक्र नहीं है।

निसकी बुद्धि अच्छी नहीं है को इसार क्यान फरनेनर भी क्रम नहीं होता और से पश्चिम्बन् है का फीवर्ड प्रचारी भी क्रान पाका सुकार अनुभव करत है। ऐस विकास विक्री क्यांको शांके सामान्य जान जार करण प्रातिने; क्वेरिक उपापको सामोगारा केवामी पुरूष सामग्र सुराना भागों होता है। जैसे कोई पहुच्च चरि राहकार्यका प्रधान किये हिन है बक्त बस्ता है से हो पार्वने बात हैया साम पहल है और यह गीनहोंने पर भी कहा है। भी कर कर्मक सम्बद्धी सामते कार्युचे (अर्थात् सूच कर्युच्ये क्यांच्ये किस पराजेककर कर्न स्टब्स्केक नहीं ने किसा का स्थाता । वैसे किया देशे हुए हुएके अक्षेपर पैक्क परन्नेपाल ज्लूक

अक्रमीने सक्र--कार्मिने । को होन क्रांगिनोको क्रिक ( अप्राप्त स्वापन कार्य जी क्षेत्र क्रांग, को राज तत्वानके चील अक्षमी एकको होती है। किंदु अही वर्णन केंद्रे युर्वे वर्ष क्रीक्रमानी रक्षी प्रश्न काल करनेवाल पुरूत निर्म प्रकार क्षेत्र हो अने त्यून स्थापन चौन मात है, भी प्रधा हानी पुरस्तेको गाँउ होती है। सुदिशान जनून न्यानिक १४ क्रानेक्ट वर्ग है व्यक्तिक रक्ती कक्र है और क्या रक्ता राजा समाह हो बाता है का यह को होइकर वैक्ट बात बाता है। क्री क्रवार क्रम और चेप-निकियों कार्यकाल हुविकार एवं पुरस्क पुरस् अन्त्री प्रस्तु सम्बद्ध-स्कुत्यन कारोत्तर आगे and was है। वैसे कोई पूरू वहि बोधवर किया नामके ही गर्भकर प्रमुखे प्रमेश करता है और केले पुनाओसे ही रिकार इसके धार क्षेत्रेका गरीसा रकता है से निक्रण ही यह लको भीत बारामा स्थान है (इसी प्रमाद हान-नीमाना स्क्राप रेजो किय भक्त चनतानसो पर नहीं हो सकता) । किल क्षा बहित्सन् एकं कार्यों स्थानतारे असमात है क्रमीने अभिक्र हो जाता और चीता हो वैश्वार मिन उससे चाहर निकार अवसा है तथा चार हो जानेगर परवादी पराता छोडमार क्षक केल हैं (जबी प्रकार संसार-सागरते पार है सानेपर वर्षाकार प्रकार पहलेके सम्बन्धियाँ मनता क्रोड देता है); कों। बेंक्स मेंड जार इस्त पहुंच बगतारे आवड़ होका कारण तक की रालेकाले कारणावी गाँग नहीं पातर करण संस्थे है।

> को कथा, सर, सब, राखां और सम्बन्ने रहित है शब्द वृत्रिकोत् वृद्धिके प्राप्त विश्वका कान करते हैं, यह प्रकार बहुमाठा है: इसका कुरत कर अव्यक्त है। अव्यक्तमा कार्य पालक और पालकार कर्ज सांकार है। आंकारों पक-पहल्कोंको अबट करनेकरे मुजकी उत्पत्ति वर्ष है। पश्च-

यहायुरोके कार्य हैं कर, रस साहि किया। वे क्याइ-क्राइ गुजोंके कारो प्रसिद्ध है: सम्बद्ध प्रकृति बारमान्य भी है और कार्यक्रम भी । इसी प्रकार प्रकृतको भी कारण और मार्च होतो है स्थान सुने नमें हैं। अहंब्दर भी हारसाहत हो है है, कर्मकारें के ब्रांबर क्रीका बेज क्या है। क्य-महापुरोमें भी करणाल और कार्यक्ष केने को है। उन क्रुनेके विशेष कार्य क्रम्य आहे नियम को बोजवार्ड (कारण) कारणते हैं, साथ हो ने कार्यकार्य भी उपरिचा हेते हैं। पहन्कानुत्रोनेसे साम्यापने एक 🖟 पुन मान पना है। मार्थ्य से पूज प्रकारने बाते हैं। हेस हीन प्रकार पूछ मान गया है। सालेंद्र मार पूछ है और पूर्ववेद और पूछ प्रमाने वादिये। या प्रशास-बहुक प्रतिकारी करे हाँ, रूपा पीनोची क्या हैनेतारी तथा पूप और अञ्चलक निर्देश करनेवानी है। स्था, सर्वा, सन, सर और प्रथ—में ही पुंजीके पाँच पुन्न हैं । इसमें की पान कारण पाना पुन्न है । गय आंखों स्थारको होती है, मैं अलंड गुर्चेका विकाली काम कर्नन कर्मना । इह (सुराम), अधिक (सुर्वेश), पहरू, arer, eg, Paffi (gerer freibunt), feller, ftree, पदा और विक्र्-में स्थित करते जात के प्राचाने मानिने । क्रम, एर्स्स, क्रम और सर-ने करने पार पुन माने गर्ने हैं (इसने का हो बारका कुछ पुत्र है) । अब मैं | रात-विद्यालका कर्नन करवा है। सबके कहा-के केंद्र है—

। क्षेत्रः, क्ष्मः, क्ष्मुत्रमः, क्षेत्रः, क्ष्मीत्व और पनवरितः। इस ज्ञान कः चेक्टेने करणना सरका विकार नातना गना है। कर्या, उसमें और कर-जे देखके क्षेत्र गुल हैं। इसमें कर है केवका पुरुष पुरु है। इसके भी बर्ज के है—१८६, कुका, रह, बीर, बीर, रूपम, होट, यह, मेट, हाता, प्रीक्टेप और चेल। इस कहा देगाई इसका बाह्य प्रकारों विशास वेद्या स्थान है। इस्त और एक्ट्रे—मे कहते से पूर्व है। इस्ते भी पन्नों है समुख्य अधन गुल है। एस्ट्रों की बढ़ों प्रकारका क्षा क्षा है—क्रमा, हैस, भाग, दिल्ल, दिल्ल, सहित, विकास, परम्पा (प्राप्ता), विविधान, पाठोर और कोमस । क बाद क्यांटेडे बाहुके पूज सर्वाद्य विकास बाहुसहा नवा है। अञ्चलका एक हो गुरू एका है। संबंध पहले है ger fie weren fremein war wein weren f-unge, क्षाप, पायार, माना, पहल, तेला, केंबर, क्षा (तिय), अन्ति (अक्रि) और पेक (दिन्स) --ने सम्बद्धानीय क्रमांक पता केंद्र है। साम्बाक पता पूर्वाने केंद्र है। सारों केंद्र नर्कारात सर्वकारों केंद्र पुरिष्ठ, पुरिक्रों केंद्र अस्त्रह (महाराम), सालों केंद्र अस्तरण अधीर और अधीरते केंद्र पूर्व है। यो पहल प्रमुखे कृतिक पूर, स्वीत्यका प्राप्त, person within fathern wavenr with the sufferior कारणकारी देवलेकांक है, यह अधिकारी परकारको अस

#### तपस्मका प्रभाव, आत्मका स्वक्य और उसके ज्ञानकी महिमा तथा अनुगीताका उपसंहर

अपनी कार्यों रचना है, जरी जातर पर सम्बंधी असे सेहोंको सामन कार्यों रचना है, जरी जातर पर सम्बंधी हिंगकोंका सामन करता है। इतिहर, का और सुद्धि—में राज सेकार्यों राज संयुक्त कर्ते हैं। विसर्ध इतिहरूकों में सुद्धि —में राज सेहार सुद्धिकारों असे क्रमण क्रमण क्रमण है का है, जा सेहारणी राज्या कार्यों कार्यों का पुरास (केसा) कार्यें और सेह स्थाना कार्य है। सामन्य पर साम क्रमण्यात और मान्य है, इतिहर्स उसके कोड़े, का सार्यों और पुद्धि का्यूक है। के विस्तु इस सामन्य राज्यों राज्य कार्यायों रहता है, जा सार्या प्रतिकार करीं केही सामन्य सामन्य दिवा । विकास सुद्धि कार्या कार्या है। क्रमण क्

है वेकानके ज्ञान हुए हैं। काल-गुरुवार जोकर करनेवारों सिख् नामक जरकाके राज्यकों है जिसको एकाम करके दोनों सोनोंकी को ज्ञान देवते हैं। आकेनको सावक्ष्म सोनोंकों कोर क्या ज्ञानको विवाद स्थान है सिद्ध होती है। उन्हें सावकेनी कर जनका है है। किराको पाना, विस्तात अन्याद करका, किरे क्या और किराको संगति समान विकाद करिन है, का सब समानके हुन स्थाद हो जाता है; क्योंक समान प्रमान कुनेव्या है। कराकी, ज्ञानकार, कोर, वर्ग का करनेवारत और मुक्तांकी सम्याद सोनेवारत कुन्यार का क्या है। कुन्य, विश्व, केसा, कह, पुन, पानी क्या अन्य निर्देश कराकर क्या है, वे सब सन्त सरकारों सेसा हेन्यर है निर्देश क्या करते हैं। स्थानकों कराने ही सहस्मानों केसा करतें निर्देश कराकर करते हैं।

कर्मका अनुसान करते हैं, वे प्रकारिके स्वेकने करे हैं। वो मानवीगका जातान लेकर स्त्रा प्रशासिक क्रो 🖁 ने आसम्बन्धाने के पुरूष सुरावी राविष्य अन्यस परमालको प्रयोक करते हैं, जिलू को व्यक्तकेगरो पीछे लौतकर अर्थात् कारमें असम्बद्ध क्षेत्रर करता और आंकारते सीव चीवन नतीत करता है, यह अन्यक प्रकृतिने और केला है। किर सर्व भी सन्तव-राजाओं प्राप्त क्षेत्रर अन्तवको है प्रकट होता है और फेमल स्थापका सामाप लेकर क्योगून क्ये स्वोगुरुके कथारो इटकार या करा है। से इक क्रांकेर मुता राज्य सम्बर्ध सहि करत है, को असन्य का स्रो क्षेत्रक सम्दर्भना चाहिये । यो पनुष्य क्रमका प्रान्त प्राप्त कर सेक है, बढ़ी बेरबेश है। युनियो अधिक है कि विश्वकोड प्रश बेतना (सन्पद्मन) पावत पर और इंक्रिकेको एकम करके परमानको बाजो रिक्त हे बाद क्योंकि विस्तार कि विसरों रूपा केता है, या निकार से अल्बा स्टब्स से पान ि—का समान नेपनीय क्रम है :

वे सक्तवा पर् 'मा' (व्य नेत है--ऐस वान) प्रमु-प्रश है और तीन अकृतका पर 'न का' (का नेव की है—ऐसा भाग) समान ब्याची प्रक्रि करानेकार है। ब्या मध्यक्रि मनुष्य (अगस्ति चंत अपन करनेवारे) काल कर्नेची प्रशंत करे हैं, जिल् कुद कालाका औं आर औ कारको; वर्षोक समाव कर्मक अनुक्रमो क्रीनको सोरक विकारोसे निर्मित सहरू हरीर बारण करके बन्न रेजा पहल है और मा सब अधिकाना मात कर बात है। प्राप्त 🛊 नहीं, कर्मठ परन केलाओंके भी उपयोगका विका होता है। इसकिने प्रसारी निवान करोने आरख जी हेते; क्योंके मह पुरुष (आरबा) ज्ञानकप है, कर्मकप नहीं ( से इस प्रकार शालाको अपुरुवक्का, नित्त, इक्किसीट, सम्बद्धन, अक्टर, किताला एवं अलाह समझता है, यह क्यी पुल्के ककार्ये नहीं पड़ता। किराबडी श्रीवें आत्रक अधूर्व (अवहि), अधूर (अनचा), निता, कुटाव, अत्रक्षा और अगुलाई है, वह इन पुर्गोका किनार करनेसे सर्व भी अवस्थ (इन्हिक्सीत) एवं अपूर्वत्काम हो बादा है। यो विकास स्त्रह कानेवाले

यो सोन वारम्य स्वनका व्यक्तरसे कुछ हो स्कान | (वैधी-करणा व्यक्ति) समूर्व संख्यरोका सम्बाद करके वनको जानको जानमें एना देश है, को उस करपानमय प्रकृति प्राप्त करता है, विसारे पक्त कोई नहीं है। जाननिष्ट केरपुर पहारकोची भी पत गरी है, भी निरह पुरुवेची नहीं है, नहीं सम्बद्धन वर्ग है और नहीं हानियोचा ज्ञान स्थान है। के सन्दर्भ पूर्वोमें सपान भाव रखता है, लेच और कल्पनो सीत है छवा निसकी समी समान हुई खरों है, ब्यू जानी पुरुष भी इस परिचले जात कर सकता है। महर्मियो ! यह एक विका मैंने विद्यालो एउस तुमस्योगीयो का दिया, इस्टेंडे अनस्का आवान करे, इससे तुनें औह से विकीय प्राप्त कोची ।

> कृत क्या-नेदा ! प्रक्रामीचे इस प्रकार प्रमोश देनेपर क ब्यूक्ट बुनियोंने इसीके क्यूसार कायरण किया : इससे को अन्य सोकादी आहि हो। पहाचान । सुवारा कित बहर 🗓 प्रत्येको हुन ची वेरे बहाने हुए सहायोगे ज्ञान उन्हेलका चलन करे। इससे तुर्वे की सिद्धि जार होती।

क्षेत्रकरे का-अर्थुन । गुर्खाकरे ऐसा सहनेपर देश कियाने सामा कान बार्नेका काल किया। इससे का संस्थर-कब्बनो पूर्व एवं कुमार्च हे बचा । उसने बह पद प्राप्त किया वर्षा करत होया नहीं करना प्रकात

अर्थनो प्रमानकार्यन ! वे क्यान्ति एक और सिम्ब कीन से 7 जी भी सक्ते कोचा हो से ठीक-ठीक करानेकी क्या क्षीतिये ।

अंकृत्यने क्या—प्रमुख्यके । मैं क्षे गुरु है और मेरे बनको ही किया सन्ताने । कुन्तरे केंद्रमाह मेरी इस गोपनीय कुरम्बा वर्णन किया है। बाँद युक्तम तुम्हारा प्रेम हो हो हस सम्बन्धानको सुनकार इसका प्रकार पासन करो । अच्छा, अब में विकासीका दर्शन करना काता है। उन्हें देशे कहा दिन हो नवे । बाँद तुन्हारी राज हो से मैं इनके इसंनके दिन्हे अस्य सब्दे ।

र्वज्ञानको काले हैं--राज्य । धरावान् अक्रियाको का सुनकर अर्थनो कह-'अब इमलोग व्यक्ति इंकिनमुख्ये करें। व्यां धर्मस्य एवा वृधिक्षेत्रसे विरुक्त और उनकी उसका लेकर आप अपनी पुरीको पनारे।"

### श्रीकृष्णका अर्जुनके साथ इस्तिनापुर जाना और वहाँ सबसे मिलकार युधिष्ठिरकी आज्ञा ले सुम्हाके साथ हारकाको प्रस्तान करना

वैराणकार्य कार्य है—एकप्! ज्यूनसर, कार्याप् हीकुमाने दानवार्या रच जोतनेकों नाइत है। इस्तानिक देशी ही देशों सीटकर सुमान है कि रच जोतकार तैयार है। इसी प्रकार अर्जुनने भी अपने अनुकारको जानेक विका, 'उन होग तैयार हो जाओ, इस्तिनापुरको काल करने है।' जाका कों है सम्पूर्ण रिनिक ईवार हो गये और बहुन् केनकी अर्जुनके पास जाकर बोले—'कार्यका सारा प्रकार हो क्या है (अस कार्या कार्याने)।'

सरकार कार्यन् वीकृष्य और अर्थन रकर सकत हुन् और जानानी क्रम क्या-श्वाची को क्या पूर प्रतिकारपुरावी और यान दिने । जा समय अर्थुनने १६४म विदे हर जीवन्त्रते पुरः हत ज्यार पहल अस्त किया—'मनुकूत ! महाराज मुनिव्हेले आयोगी क्रमते विश्वन पानी, कहानोचा यह किया और जनलब्द करा प्राप्त किया है। इस सभी प्राप्ता आरको सम्बन है। सामग्री 🐞 नैकाकनो कवर इनसेन कौरय-केन्सनो अनुसंद कर महिते हैं। विकास में हैं। अपना ही हम मन्यहरें असला और मोकारों प्राप्ते केंद्र है। मैं आपनी करी तद प्राप्त है जिल सद्ध आप पुत्रो कन्त्रो है। यगान्त्र । अवन्त्रे ही रेन्स्से सह स्त्यूनी पूर्वाची प्रत्योप होती है। क्या प्रधानको सीलाई आवर्धी परि (पनोविकोद) है। आधारक और पूर्वी अवस्थी भाषा है। आयोगे का रूपार करवर करव जीवीय है। (क्षण्यम्, विष्यम्, क्षेत्रम् सीर ब्रीडम्स—इन) चार प्रकरनेः प्राणियो तथा पूर्णा और सम्बद्धाको अन्य है सम्बद्ध कर्या है। निर्मात प्रविक्ताने आयके हो हाराची कटावर सर्वन होता है। जारों अक्की प्रतिन्धी और एक उन्होंक केरेकारी कर आर्थेंद्र प्राप्त है। आपका होना है सन्तान कराके करते प्रकार है। आरम्बी प्रसारताने प्रणाती संबंधी निवास करती है। म्यूननो । अल्पी रहि, हुद्दि, युद्दि, आणि, माहि और क्षानित आहे पुर्णेका क्षा शतका अभिनोका नित्त निकार मध्य गंदा है। मरणकारने श्राप ही प्रश्लोह करते पृथ्ली बाते हैं। मैं सुद्धेने कारणक आरके मुख्येक कर्नन करण औ हो भी करता पर नहीं या समझा। कन्यक्रम ! कन ही कारत और परमानत है। उसकारे मेच नामानर है। समेच परनेवर ! मैंने बेक्सि करा, बेकर, क्रीकुमा-क्रीवरण करा विकास भीमके प्राप्त समये प्राप्तकार जा जा किया है। सारा जगह सामने हैं। लोकांच है। लाग है पहलोंके

कुरुमा असीहर हैं। क्शाईर । आपने मुहनर कुछ काले को पढ़ उन्हेंक देख है, अपना में बनाया पतान करेगा। इन्तर्वनोद्या क्रिय करनेके रिजे आर्थ यह बद्धा अनुस करने विका कि कुमार्क पुर पहल्की कुर्वेकरको सुद्धी गार कार । कोरवोची सेनको कारने है अपने देको पान कर हिना का, बनो में पुत्रूने कियम जार कर सका है। मान्यूनि देते-देते उक्क किये हैं, कियते भेरे दिन्ये किया सुरूप हो करी है। कुर्वेकाके साथ बाद संद्यान किया था, उस समय अवस्थित पृथ्वि और जारहीके दिने पूर पराजनसे इंग्लेन्सेची बीट हुई थी। यार्ग, पानी क्याप और पुरिश्रमके कारण दीन-दीन काल अपनीने नालान क आ: क्षेत्रकी स्थार । आको प्रेमका मुझे थो औ कोहर दिया है, यह तक में अवस्थाने लाईगर। प्रतने जुड़े पुरू निमार कारेको आवर्षका गाँ है। अस प्रत्या साथ पानो है हो महाने, इसमें नेरी भी सम्मति है। धर्मान्य राख प्रिविद्योर का पाला में में उस्ते सरको कोची नहा दिखनेक जन्म करेना । जन बीत है जन नामजीका क्रीन करेंगे और अनेन चेर करनाओं हमा राज वृष्णियंत्री बीरोसे

हुए प्रकार कार्यान करते हुए औपूरण और अर्थुन केरी इक्टिक्यूरने का बहुने । इनके मानमें समेव करते ही नहींके या-वर्ष जिल्ला है गर्न । किर इन्हरूपक्षेत्र प्रमान क्षेत्रकारी क्षान्कारने बाक्त है केने मित्र क्षानकः न्यारक कराह, कारूप सुद्धिकर किएती, एक सुविद्धिर, दुवेर्न और चीपसेन, न्याप्तिकार कहार-स्थाप, श्वारकाची सेवामें सने क्रमेकारे अवराज्यि वीर क्याब, ब्रह्मिकी गामारी, क्रमी, क्रेंबर्ड एक प्रथा अब्दै न्यूकांसको सपी क्रियोसे मिले । काको बहुने राज्य कृतराहचे कात पहुँचकर महाना औक्तम और अबूंबरे अबने नाम बताते हुए उनके खेनी चारनोका कर्त किया। असे कर कारारी, पुत्री, पुनिद्विर और भीवारेनोर्क पेर कुछ । बिरा किस्स्वीरे विस्तार कुसल-सहस कुर । किर के सबसे क्षेत्र कुछ देशक से कुछ राजे करणाची सेवाने के थे। करनतर, रातके समय मुद्रिमान् एक प्रस्कृते कोरको और भगवान् औद्यानको अपने-अपने स्थानक व्यानेकी अपने हैं। स्थानी आहा पायर सब ज्याने-काने नकार्ये और कार्ये। यक्तराकारी भागान श्रीकृष्ण अर्थनके साथ उन्होंके न्यूपने गये। वहाँ उनका

आहें। निवृत्त होन्यर अर्जुनके साथ हो जो । नाम तहा की गर्व से प्रशःसाम पूर्वकृत्ये केन्य—संस्थानक साहि करके ने क्षेत्रों करिएक पुनिश्चितके न्यूमने नमें, नहाँ ने अपने मुजाबोर्क रहता रहते है । इस सुन्दर नामाने प्रवेश करके उन धेनो प्रकारकोने सर्वराच्या स्त्रंत किया। उनके अञ्चनको महत्त्व परिवेरको यहे जलका हो। फैर क्ले नह बेनेवर वे केने नितः अत्य आहानेवर विरास्त्रकर पूर् । क्या महिनीत्स्यी गाँव पाने पान भी। उन्होंने नेवारे ही पान रिस्पा कि वे केरी पुराने पुरा महत्व पहले हैं। सार वे इस प्रधार क्षेत्रे—'बीरको । काहर क्षेत्र है कुरत्येत पुत्रने क्रम कारत पहले हो । जो भी कहन हो बहो । मैं यह कर की है को करेना । इस माने हुए अन्तर निवार न करे (

मा क्रमार का बंध बरोने नाम प्रमु अर्थने करिकोर एक कारत को विशेषकाने कहा—'कार्' ! महासारी सरावाद सीवानाओं नहीं हते गए। देश है की र अब में अनुसी अबब रेक्ट सुन्ते विकासिक सूर्यन करन पक्षते हैं। यदि आप प्रतिकार को और प्रनेतर्वक अवस है है. क्यों में सरकापूर्वको सामित्र स्थाः नेते सामित्र है कि अस हमें बानेवर्ध अक्षा है है।"

पुण्डियो कहा--'पहुनुहर | ३३०वा वारणाय हो। आंध्र प्रात्मक बाह्येक्टीका कांध्र करवेके रीजे आप है क्रायाओं पार्ट । नक्रमधे । सामग्री क्रा पार्टी नेर्ट पूर्ट प्रमाणि है। जारने मेरे प्राचनी और केमती केमीची बहुत दिनोंके नहीं देखा है; सरक पहले बावार का समये निर्देशने कहा मेरी ओर्स्ट कमानीको प्रत्यन बहुकर केंग्र करवालक के बवाचेन्य संस्कार स्टीनिये। नार्वेच्ये त्या वेत्रेच्यो

विभिन्न आहर-सामार कृता और ये क्वानुसार खेवन | अकृत्य ! क्वान क्रमेरर आप खेवतेर, शर्मुन, नकुस और स्कृतिको स्थ्य मेटी भी पाद स्था करूने स्कृतिया। न्यानको । अभ्योजनी प्रया, अपने माल-दिना स्था प्रतिनवेती क्य-क्रमाओं जिल्हा पुरः मेरे अध्येष-स्कृते क्यारिकेचा। वे क्या-क्याके घर, वन और कुररी-कुररी पहारी, जो अपन्यो पहांद ही, हेम्बर नाम नौरिनने । केदान ! अञ्चलिक प्राचनो प्रचारे पात् चारे गये और समूर्ण पृथ्लेका क्षा इसकेनेके इसमें साथ है (शक मा राम प्रक and the first

> करेरण पुरिस्तिको से सहनेतर पुरुष्टेश भगवान् क्षेत्रकाने प्राप्त — 'पहल्कों । ये प्राप्त का और समूची पृथ्वी केवल आरबी है। को जी, से करें की के कुछ क्र-बेच्या है, अस्त्ये को साथ सकत हो सम्बन्धि ।' उनसे रेख कानेनर प्रविद्याने 'के आक्र' कानत प्रनो कवनीका अवद विकट । करकात, बीधामाने अननी मुखा क्रानीके पांध कार कर-बीच की और उनके मध्येणित सावार पानार को प्रत्येने प्रयास किया तथा उनकी प्रार्थिका सन्दे विकासी अभी का सोनोर्ने सामान्त्रीय विद्य क्रेसर चौचीर और क्रमेची अवको सुरक्षको को साथ से रिन्स और आजे हिमा राजन समार हो से हरितालुको माहर विकारे । का प्रमान पनाके निकारी पनुष्य करें एक ओरसे क्षेत्र हुए हो । व्हरिकाल अर्जुन, स्वरतीय, अपूर्ण, स्वर्तेय, अन्यय सुद्धिकारे विकासी और पालानके सामन परमध्ये बीवर्रेय -- में प्राप्त कीय मनावाद अध्यानके पीछे-पीछे को च्येक्षकेंद्र विस्थे सुक्र सुरवाद गर्व । स्वयन्तर, बीकुम्बरी समझ क्षेत्रों और विद्वार्थियों स्वैत्यान कृत्य तथा सामित्री पाह—'सम प्रोक्तेको तेतीक साथ संबो ।'

# मार्गमें बीकृष्णसे कौरवोंके विनासकी बात सुनकर उत्तक्क पुनिका कृपित होना और श्रीकृष्णका उन्हें ज्ञान्त करके अपने अध्यात्म्वानका वर्णन करना

हुर् श्रीकृष्णको पाने समापार राज पानका अपने सेमफोरावीय क्री शीरे। अर्थने बार-बार करें क्राफी रूक्त और वक्तक ने अन्तिने अंग्रात जी हर तनक अनिनी और हर्षि समाने रहते हो । श्रीकृत्यका भी गाँ। प्रस्त क । सम श्रा हर पास का से अईसे को बाले सेवृत्यकों और सबी हाँ हो। पोक्रेको स्पैरापी। इसी अधार सीमुख्यने भी नही कहिलाने अर्थुनकी ओस्से एवं कुल्मी । अनकत्वी कार्यः

वैज्ञानकार्यं कार्ये हैं—राज्य् ! इस प्रवार कृतक क्यां | समय अनेकों अञ्चल कंपून क्षेत्रे समे । इस कई वेगसे आसी और उनके राजके आनेते सूच, केवाई और करि उद्यापत अलग कर देवी थी। इन्ह परित को सुर्गनिक कर तथा दिवा कुरोकी कर्ष करते थे। इस अवस्य समास्य पुनिन्य कार कर्य हुए पहलाहु क्षेत्रूच्य चरवड़ केस्पे ज पहिले। सही अपोने अधिकतेयकी काष्ट्र पुनिष्य दर्शन एवं पूजन किया। सरकार् पुनि भी उनका सामा-सत्कार विकास किर हे-वेंने होनोब्री कुछूर पूर्व । इसके बार विशवर अब्ह युनिने



परावादों अर्थ जिल्ला—'लीकुन्स | क्या हुए चौरखें और साम्बर्जिक पर जावर कार्ने नेट करा कार्ने ? का कार कार्ने अधिकार प्रान्-मान कार्नित के मान है ? वे हुन्तरे सम्बन्धे और परंग तिन हैं का नीरोमें संख्य कारकार है तो नोट में हैं न ? क्या कार पान्यु और क्रात्यूके कुर हुन्तमें कार्य संस्थानें कुन्तपूर्वका निकार कार्योने ? वर्धन्तकेंद्र कार्या है सामेंने तुन्तरें हारा पुर्नित का्यानेकों क्या कार्या कार्या सुमा निरोधन न ?' तार्य | में त्या क्या कार्या कार्या कार्या सामा | मेरी का आहा आवास्त के नहीं हुई ?'

सीकृत्यको वात सुनका आहु सुनि को कोकर्ने पास्ता कोले—'पबुस्ता ! कीला तुन्तारे सक्तको और प्रेमी के, तन्त्रनि प्रति यहे हुए भी सुक्षे काको एक नहीं की है; अत: अन्य में तुमें अन्यत्य प्राप हैया। हुम को कार्यत्ती एककृत्य वेचा कान्यों से, पर ऐसा नहीं किया; प्रतिको में कोशमें बावार हुनों कान दिये किया नहीं यह सकता। ओहा। कुम्मांक्रों की बीर नह हो पर्य और तुम्बे सक्का प्रति हुए भी अन्यत्र क्षेत्रा की।

श्रीवर्ण का -- वृद्धाना । यहाँ मेरी कर से इन्ति । जान करती हैं, इस्तीको मेरी एक प्रार्थन सीवार मेरिको । वे अवको अवकारतालयों कर सुना पुर हैं। उसे इस्तों प्राप्त करवी हवा है से पुत्र कोई-सी स्वकार इस्ता कर सीवने कि कोई को पुत्र कोई-सी स्वकार्थ केश करवा नेस विस्ताल की कर समझ । अब क्वतिकोर्ध केश हैं, अवकी करवाया केन बहुत कह हुआ है, अपने कुल्लेकों की अवकी सेवको संपूर्ण किया है उस्ता कार्यकोर्थ में अवकी साथ क्राइस्ता प्राप्त करते हैं-- इस स्व कार्यको में अवकी साथ क्राइस्ता है इस्तीको अस्तान क्या

अपूर्ण का-नेताव ! हुन अवने कथनपुरार आप सम्बद्धानका वर्णन करें। को सुनवर में हुन्ती कामानके रिने आफीर्बर हैन सबस सार से है हैंगा।

अंभूभने सह—नार्वे ) सारको मातून होना काहेने कि क्योगुल, स्कोगुल और सरक्युल—में सभी भाष मेरे ही करिया है। यह और यह भी मुक्ते हैं करता हर है। इस व्यानके निर्देश प्रत्योगने कि संस्तृत पूर्व ज्वाने हैं और मैं राष्ट्रमें पूर्वोपे विश्वत है। संस्कृत देख, बाह, मामर्थ, राक्षर, का और अन्यान्त्रेका सुक्तो है अनुस्रीय हुआ है। विक्रमुचेन किमे स्थ-मस्त्र, व्यक्त-अव्यक्त और इन-अवस व्यक्ते हैं, का रूप मेरा है जरूप है। हुने । बार्रे आवागीके के कर को मीरह है जब केवेब किने कर है, वे कोई मुक्ति निवा नहीं है। अलाव, स्वयंत्र तथा उससे को से अव्यक्त करत् है, वह भी पुत्र समापन हेवांचित्रको पृथक्त नहीं है। अन्यारों असम क्षेत्रेयते पार्च तेव पूर्व ही सम्बद्धिये। व्याने कुर, स्तेम, वह, देशकार्थको दूर्स करनेकाल क्षेत्र, क्षेत्र और कुक-रक्ष्मा भी में ही है। अवर्षु, कारक और शेकार किया हुआ इतिया—में सब में ही समान करना है। को-को बज़ोर्ने उन्नात का लासे साथ-पाय करके मेरी ही सुरित करते हैं। प्रामिश्वन-कारी कारि-यह कर यहत-यह करोबारे प्रक्रम का विश्वकर्मका ही साथ सामार करते हैं । सब अतिकॉयर कुछ

करनारम को वर्ग है उसको मेरा कोई पुर सम्बद्धिये, यह मेरे मनसे प्रकट हुआ है। मैं कांको यह रूक स्वापनके निले जनेको प्रेनियोगे अवतार बारण करता 🛭 और पिया-पिया क्रम तथा केन बनाबार तीनों खेळांने विकास आहा है। मैं ही विकार प्राप्ता, इन्हें कार कारके उत्पन्ति और प्राप्तका फारक हैं। सन्पूर्ण जानियोकी सुद्दि और संक्रुर गुरूनों ही क्रेने हैं। मान्यम परमा परिवर्तन होता है तकता में प्राप्ति मरप्रकृति दिन्ने रिक-पिक मेरिनोर्ने प्रक्रि क्रेकर क्षां-पर्याक्रको स्थानक कारत है। यह देव-पोर्टिने अनकर तेता है, जा सन्य विकासीओं हो भीते हारे आसार-विकासका पातम करता है। क्याने-मेरिने करवार क्रिकेट मेरा बाल अध्यार-प्रवाहत स्थापीत ही करता हुना है।

होता है। इसी प्रकार नाग्योनियें नागेंबी तथा और पत-रक्षाको सेनियोगे उन्हेंको पति क्यांकर जायरण करता है। इस करन मेरे प्रमुख-अवस्थ आश्र किया है, इस्तीनके बर्जरकोवर अपनी वाकित्वा प्रयोग न करके पहले र्देनाल्यंस है इस्ते अवंत को बी; मिनू जेड़बत क्षेत्रके स्वारण कर्जेने नेरी था। नहीं भारी। इसके स्वर क्रोबर्वे बस्कर मेरे बहे-बहे पर दिसाये और औ बहुत हराया-काम्बाक, परंह से अवगरी मुख एवं कारणका हेमेंचे कारण पेरी पात मान्त्रेको एची न हुए। अतः मुक्की an देवर इस काम कामी बहुने हुए हैं। विकार l कारने को कुछ पूजा है जाके अनुसार मेंने बढ़ सारा जारंग

#### भीकृष्णका उत्तङ्क मुनिको किन्नरूपका दर्शन कराना और मरु-देशमें जल प्राप्त होनेका करदान देना

अञ्चले का—कार्यत ! में बारता है अन्य अन्तरी | हे देशक कारत है र मन्त्रके बर्ज है। अपने के वह प्रत्यक उनके निवा, हो निक्रम ही में जायकी कृत्य प्रत्यक्ता है। अंध नेत किय जात होबार आवारी वर्गाओं परिपूर्ण हो गया है, जब: बाल वेरेकर विश्वार म रहा । समानंत । यदि मैं अन्यको कोई-को भी सुरक्ष जार करनेका अधिकारी केंद्र में अब कुटे सरम्ब ईवरीय प्रकल दिएवं वीजिये, युक्ते को वेक्सेच्यी नहीं प्रका है :

descript and f-range while per state प्राचीना करनेवर प्रशासन् सीकृत्यनी प्रतास क्रेमान क्रूनी सरको क्षो स्थान बैनार स्थानक स्थेप करण, निर्म पुरुष प्राप्ताने सर्वाने देशा था। स्तर्भ मुन्ने सा निपद विकासका हर्तन विस्ता, विसानी नही-नही सुनाई भी । यह ह्मारों क्वेंकि एकल हेईक्कान, अधिके समान नेकारी और सन्पर्ण आक्षामको बेरकर स्था वर । सन्धे स्था और 🛳 हिलायी के। वे। का व्यापक परमामाने कहा बैनाव कारको देखकर उत्तह पुनिको कहा विकास हुआ और ने हुए प्रकार सुनि करने तने—'विक्रकर्मर् । उपन्थी नगरकार 🖣 । विचारमन् ! आपहीसे सम्पूर्ण बनाइकी उत्पर्धि होती है । पश्ची अपने दोनो बालोसे और अन्यान आपने मराचसे क्याद्र है। पुनरी और मान्यस्थेत बीक्याद पाप अपनेत हारसे बिरा हुआ है। सम्पूर्ण दिवादे अस्पत्ती पुजाओंने समानी हों है। अभूत । यह साथ दूसन-प्रमाह आयहीयह सामा है। देवेबर ! अब जाम अपने इस अतम स्थ अधिनाती सक्यको समेट सीवियं । मैं फिर आवको अपने पूर्व कपने

रेजन्यकार्थ कार्य है—जन्मेक्य 1 सुनिवर्ध स्वत कुरका एक जनकरिय क्रोपको औक्रमणे बक्र--'महर्चे । तार कुलो कोई का मिलो।' तब कार्युने कड़--'पुरुषेक्षा । आसी का सरकारों हेता पर 1, औ मेरे रिको अंक्ष स्थाने बद्धा प्रत्यूक ई 5° वह सुरुवार श्रीकृष्यूके क्या—'न्हें । जार इसमें पुरा सनका विकार न कीतियें । नेरा क्रांच अनोच होता है: अस: आपको मुतारे पर माँगना de make if

उद्धाने का —जनो । वदि वर तेना मेरे रिक्टे अवस्थान प्रम्युको है से नहीं पर है जिसे कि मुझे पहीं परेड़ कर जार हो सके: क्योंकि इस पर-श्रविष् कर बहा कृतिया है।

क्कान्तर, जनकान्ते अपने तेतको सबेटकर उत्तक्त सुनिसे क्य — 'क्वें ! का करावी आवश्यका हो तो येव सारत क्रीनिकेस (" व्या कार्यार के प्रस्काको करे गये। सामग्राम क्य किन क्लाई चुनिको बाढे जास सनी। वे पानीके रिजे पक-व्यापने बारों और कुम्मे हार्ग। कुम्के-बुम्के क्यूरेने परवान् औकृष्णका स्थान किया । इतनेहीमें उन्हें एक ंत-ब्रांग कन्युरत दिसाची यहा जिसके प्रतियों केल और क्रीकड़ जमी को की। यह कुलोके क्रेडमें विरा हजा या। कारने उलका वर्षि और इस्तोपे क्यून-काम दिने का अरबन्त धर्वकर बान पहला का । असकी मुतेन्द्रियसे जलकी करा मिली दिकाची देती की। महर्निको म्यास जनकर मान्याले हैतो हर बह-'बहू । असे, जुले कर्ड सेकर यी हो । तुनों प्रकारने कहा पत्ने केना पत्ने कही हम का भी है।

चाच्यारके इस प्रधान कालेकर काल कृतिने कर सामाधे रेन्ड स्वीचार नहीं किया उत्ता पर देनेवाले औदन्याओं कहोर मक्तारित संबद की । उन्होंने फोकरों परकर उस स्वापनी सहस नहीं किया और अपने निक्रमार अस्त प्रमार जा भाग्यसम्बर्धे भी बाँद बतानी । उनके प्रमान करनेन्द्र कावास क्षातीके साथ की अग्राधीन हो करा । यह देश करा की मान्यी-मन पहल शरीका हुए और गोतर-वी-पीवर हेक्स प्रमाने समें कि जीवानों में तथा ब्रोवर किया है। हानेहीये भरी नार्पने सङ्गानक और पढ़ काम किने हुए



न्यानुदिक्तर् करवार् सीकृत्य प्रवट क्रेका नहीं असे । ५६ स्थाने कारे बाह-- 'पुरुषेतम । प्रमाणके रिजे बावहाओं रेकारका चल देव आरको औरत भी बार' रुपको सार सुरकर करवान् कर्मान अबहु मुनियो प्रकृत क्यानेसे कारण के हर केरो-- 'महर्ग । यह बेरत का बारण करके बहु बार अक्टो देश बीचा था, उसी करते हिमा गया, मिलू ज्ञान को सम्बा न सर्थ । मैंने आपके मेरने महावारी इससे कारत कहा का कि 'हुए जाहु मुनियों परकों, कार्य अनुह मान करे।' मेरी का सुनका हुए कांकर का कहा रूपे—'पहुल क्रमर वहीं है एकार । इस्तीओ जार क्रों अनुस म केवर और मोर्च कर दीविन्दे ।' जिल्हा मेरे फोर देखर का कि 'कह मुक्ति से महा है देश है।' इस देशक हर को जान करके थेले—'स्कारते । यह प्रशासन न्यक्ष पुरिनारे अपूर्ण हेना आस्तुत्त्वता है से मैं परिवारतात सार करण करके उन्हें अनुक प्रकृत करूंगा। यहि इस प्रकृत से रेजा जीवार करेने के उन्हें हेनेके रीजे अधी था छा है और परि में अपनेपार पर हैंने से मैं दिली कह कई अबूह केरेकों क्की व होकेम हैं इस प्रकृती पूर्व महर्फ प्रमुख्य हुए व्यवकारों: सम्में कारिया हुए से और आवसी अनुत से मो के कियू अपने और पराचर जो कियुक्त का दिया, यह अनमे हर कह चार्च अवस्था १३४ । अध्या, यह बता से जीत गरी । अस में अध्यक्षी तीत विश्वस्ताको सामा करते और जारबी प्रकार पूर्व करनेके हैंको पूरण बस्तून देश है। महत् । का-धाः सामग्रे पाने क्षेत्री हता हेनी तथ-ता अ-जीने अवस्थि वाले के हुए मेर्सेकी वहा है। अन्तेची । वे नेव जानको सरक नाम अर्थन करेंगे और 'काह्र नेव" के कारते इस पृथ्वीका अधिक होते हैं

क्लोका । अवसन् सीकुमाने हेल प्रतृतेन विस्तार क्या मुने को जान हुए। इस समय को का-चुरिये 26g कारको केर कर्ज बच्चे रही है।

### क्तकुकी गुरु-भक्तिका वर्णन—गुरुपसीकी आज्ञासे क्तकुका सौदासके पास जाकर व्नकी रानीके कप्डल माँगना

क्लोकर्ने पुल-मान् ! पहल्ला कहा गुनिने हेर्स | कियुक्तकारे प्राप्त केरेको हैकार हो उसे थे ?

र्वजन्मकार्वने स्वान्य-अन्यस्य ! अञ्चल प्रवि बाहे पारी कौन-शी कारक की भी, जिसके कारकर ने कारकात् जनकी, देनको और गुरू-पक्त से । (से का गुरूके कई सुते में, का समय उने देशका) समस्य अपि-कुमारोंके पान्ने का

अभिरतम्य होती को कि हमें भी उसह़के राजन मुख्यकि प्राप्त हो । महर्गि चौतनके बहुत-से दिल्य थे; बिजु उनका सबसे श्राविक केंद्र सरहायर ही था। करका इत्तिकरांचय, श्रीच, कुरवर्णका कार्य एका आप सेवायरप्रयास देशकर जीवन क्रमें क्रमा सहय प्रशास सहये से । नीवनके पान इसारों हिल्ल काने और (पुरुष्करन्यसम्बो सम्बोध पूरी करके) अन्तरी आता लेकर अपने-कपने पर पत्ने पत्ने; सिंह कानुपर अधिक प्रेम क्षेत्रेक कारण महर्गि मीरानो उन्हें अपने वर रहेटोबरी आहर नहीं हो। पीरे-बीरे का न्यून्यूने कार्युक्ते स्क्रापनि आ केतः सिंगु गुरू-अधिने गत्र स्वतेके कारण औ पुरस्का पता ही न रूपा । एक दिल्ली कर है, के बंगानकी रक्की मानेक प्रेरवे गये और महीते राज्यीकोच्छा बहुद बहु मोहा हिरपर लाहकर से आने । बोहा करी होनेके बारक में स्कृत कहा गर्ने । का अध्यक्त अध्यक्त से इस केंद्राओ क्यीनक रेपाने हत्ते, जा स्थान कंदिके सरकी नांके स्लेक रंगकी राज्यों कह समाहितें निवास गरी की; उस: उन रामाजियोचे साथ हो यह भी पानीधार निर्दे । अध्य सूनि सून से का भारी बोहारे दिश को थे, बुलों कई कुल सक स्क्री थी। ज्ञाी अवकारों कर समेद बदाओ देश अपने बुदायाका विश्वास पार्ट्स से पान-प्रत्यात केने तनो । तस प्रदर्शि सेताओ वर्ष आवर कुल-'देव । अन्य प्रश्ना का क्रेक्से मानुस्त क्यों हो पह है ? में इसका कवार्थ कारण सुरस्त भावता है। तुस निःशंबरेण क्षेत्रार सम वाहे मनाओं ।"

उत्पूर्ण कार—गुल्लेस । मेरा वन आयानि सन्ता दाश सा। आयोगा दिन करनेथी इसको में रूप अन्तार्थ रेकने पंत्रत सता, अव्यापि त्राह्य रक्ता और अव्यापि निक् किया करता था। इस्तरिये अव्याप मुझे पता है न करता कि सम में पूरा है गवा। मैरे कभी बोई सुक नहीं उत्तरक, मुझे अर्थ को सी वर्ग बीच गये हो भी अवने मुझे पर स्टेटनेवी अदल नहीं है। मेरे कम सैकड़ों और इसस्टें किया वहाँ साथे और आवती अरहा लेकर करे गये (केवल में है कहें पहा हमा है)।

भौताने बड़ा—भूगुनका ! तुक्ति गूर-कुटूब देशकर पुम्पर मेरा बहुद प्रेम हो गण था; इसीरिको इस्ता अधिक समय बीट गण से भी मेरे ब्यानमें बढ़ कर नहीं आहे। साका, अपने बारे तुम काना बड़ों से मैं तुमें एको अदम देश हैं। शीर्थ अपने बरको कानो, विसम्ब न करों।

उत्पूर्ण का—चनवन् ! में आवको गुरु-दक्षिणामे कवा है ? यह कालोकी कृत्य कॉलिये । उसे आवको सेवामें अर्थन करनेके कार असूत सेवान काको जाउंगा । र्गंतमने बड़ा—बेट्ड ! सत्पृत्तनेका चतमें गुहाननेका संद्रुष्ट करना है उनके निन्ने सबसे बड़ी दक्षिण है। दूपने को देखा को है उससे मैं बहुत संदुष्ट हूं इसमें तनिक भी संदेश म बाने।

जारकर, अञ्चले कुळवरकाको आह होकर गुरुको जारको कुळालेक वास वाकर पुत्रन—'मारावी ! सुहो अञ्चल केनियो । कुल-पहित्याने जारको क्या हूँ ? मैं वर



और प्राप्त देखन भी अवस्था दिन और दिव करना वाहता है। इस संभानों जो असमन कुर्नम, सञ्जूत और स्कूडून्य सर होना, उसे भी में समगी उपस्थाते हम समया है इसमें सन्धा भी संस्था नहीं है।

अवस्था कोली—केटा ! मैं सुनारी मकिसे बहुत संसुर्ह हैं। और बढ़ी मेरे दिन्ने पनीस विद्याल है। सुनारा करणान हो। अब तुन बढ़ी बान बढ़ों का सकते हो।

क्ष सुरकर असूने किर क्या—'यशायी ) मुहे सम्बद्ध कोई-न-कोई क्षित्र कार्य करना है है; इसरियो आहा क्षेत्रियों में क्या करी ?'

अवरण केर्य—केटा । एका खेदमाकी सनीने अपने कार्योमें व्यक्तिके को हुए से दिल कुण्यार पहन रहे हैं। उन्हें केरे दिल्ले रहा से। उनसे कुर-दक्षिणा पूरी हो जायगी। जाओ, कुफार करणान हो।

जनमेनन । 'स्कृत अस्तर' ब्यूबर आहुने गुरु-धारिही अस्त श्रीकार कर सी और उनका किय करनेकी इस्ताने उन कुम्बरनेको स्वयंके रिक्ने एकिस्सपूर्वक स्वरं दिये । सारे-माते । ऐसा प्रारंकी पुरुषेका काल है । पतुष-पद्मी एवा सीयसके यस योग को।

इनर काङ्क पुनिबारे आसमने न देखावन चौतपने अवस्थ पार्टिने पूछा- काम काल क्यों नहीं है समर्थ के ?" अगुरुष बोली—'ने मेरे हिन्ने धुन्यत लाने को है।' का सुरका न्यूनि क्या—'न्य दूसरे अन्या न्यूनिका। एका सीवास माहानोचे हायसे प्रत्य-पाड़ी चहार हो गये 💺 इसलिये से का प्राकृतनको सन्तर्भ का क्रारेने।'

श्याला केली-पानक् । में इस कारको नहीं बाजाी बी; इसीरियरे उन्हें ऐसा साम सीम दिन्छ । मुझे विश्वास है हैह आवन्ये कृतारी कारत कोई आंध्र वहीं साथे पानेची।

पार्थिक ऐसा सक्ष्मेश्य पार्थि गीतम क्षेत्रे—'अखा: देख है है।' कर कहने निर्देश करने करना एक बीवालको देखा—बड़ी अमध्या आयुक्ती हो। संबो-संबो क्रमी और पूर्ण । सारा करीर महत्त्वोद स्वाले रेना हुआ । क्रो देशका कार्युको समित्र को स्थाएका नहीं को। उन्हें देशके ही कारायके क्षान करेकर राजा जीवन कावर को है को और पन जायर बोले—'विकास | अहे बाल | यो हिन्हें क्रवे जागर्वे आन कर्ष ही मेरे बाल करे आने। में हुए क्रवा अवस्था से कोजर्व का



अञ्चने व्यान-राजन् । वै गुरु-सम्बद्धे केले कृपवा-किरवा आयके पान कावा है। जो एक-स्थितन देनेके रिप्ये उन्होंग कर का हो, उसकी दिस्य नहीं करनी पहाँको-

उनने बड़ा-विकास ! मैंने दिनके पुढ़े भारतें साहार करनेका निका के एक है और भा भारे समय है, अब वै पुरुरों पीड़िक हो रहा 🐍 इस्तरिये आपको होड़ नहीं सकता ।

अञ्चलं क्या---व्याचान । नहीं सही; बिह्नु मेरी एक सर्व चार सोविये । मैं पुरु-इक्रिया देवर किर आयोह अधीर हो कारिया । मैंने अपने युक्कों को चत्रु हेनेकी प्रतिका की है, का कारके है अधीन है; अस: कारते सान्द्री विश्वा मीपता है। अस्य अतिवित्त केषु प्रमान्येको कहून-ये तस द्वार करते हैं। इस पृथ्वीका अस्य एक श्रेष्ट दानीके इसमें औरहा है और जुड़े की इस रेनेका जान पार सम्पीत्ते। हैं पुरुषों नो नवा देन बादन है, जाना निरुत्त आहों, है हाभारे हैं, अंतः नेते असीह कह सुते है दीनिये । पहलात । मैं अपने समी अधिक करता है कि वह बाह्य मुख्यों हैहत मिल अन्तरी की व्हाँ क्रांके अनुसार अन्तरीह पास अह कारेगा। वेटे पर कार निवार को है कारते। में साबे क्षेत्र-केरले भी ह्या भई केरत हैं, जिर ऐसे आसरका से ubre di find semme file

बॉटको का-सहरू । की आवको पुर-विश्वत मेरे अचीन है को उसे निर्मा हुई हो सन्वीतने । अन्तर आप मेरी कोई मानू रेनेके केन प्रत्यूको है से पारिके, इस समय से 100mit 000 \$ 7

ज्ञाने का पुरस्केद्र । जानका हैया क्रा का में रख है जान करनेंद्र कीन भारता है। इस संदर कारकी प्रतिके केचे भौतक कुमार जीवनेके रेस्पे पूर्व apper (in

र्शंकरने क्य-अपूर्व ! वे व्यक्तित्व कुक्क हो हेरी करिके है जेना है। जान और बोई बक्त मॉरिने, जो मै समस्य हे हैंगा।

अञ्चने का-राजन् । यदि अध्यक्ष गुरुवर विद्यास है। और साम कुछे उसम क्षेत्र समाजो हो से कहना न सीतिने: वे केने कुम्बर पूर्व देकर सर्थका पारत करिको।

ज्युके ऐसा कारोल एउटी कहा—'डिश्वर | जार व्यक्ति कर करने और उनते भेरी साहा सुनका है कुम्बरू याँग रहेकिये। ये कृतम अतस्य कारण करनेवासी है। आपके इस पेर संदेश सुनकर वि:संदेश होनों कावार दे हेती ।'

क्यूने श्रेष्ट—स्कारान । ये श्रेष्ट्री आपकी पार्टिको कुला निकार्त ? युक्ते मध्येक्टर अन्तव इर्हार के सकता है ? मान सर्व है उनके पास वर्षे नहीं बले बारते ?

सीटको का-सहन् ! वे कारको कंतरमें किसी इस्सेके विनारे निरू सकती हैं। यह विस्ता करा नाम है (मैं सामान्त्री सोकों हैं) । इस समय मैं उनसे नहीं निरू सकता।

स्वाची वस सुनवर उस्तू पुनि उनकी रानी कालगीने सहा गये और उससे अपने आनेका प्रयोजन वालगया। इसका रहिता सुनवर विकासकोचना रानीने वाल्युद्धिकर् अर्थु पुनिको इस अवार अर्थ विका—'अक्ट्रा । वालग्यने को आध्यो सुनवार देशेशी जात वसी है, तो दीवा है। आर अर्थाय गई वालो हो भी अर्थ्या मेरे विकासके दिनो अर्थाय कोई विका है अर्थ्या व्यक्ति। मेरे ये कोचे सरिवन्य सुवक्ता विका है। केरात, यहां और व्यक्तिनेय पर्या अवारके अस्पतिस हमें पूछ से सानेकी स्थानो सब किर हैंसो को है। यदि इसे पूछोरार एक दिवा बाल को चान हाल होने, अपनिता असरकारों सारण कारोगर पक्ष वाल के सानेने अर्थेन

इन्हें प्यानकर नहिं नहिं नीर होने १०० साथ से हेन्सा स्तेष वर्मानी नीर सेने । इन विनोर्न सदा में इन कुनवारोंने को वानेका पन दास है। वेनक, पहल और मारोंसे सामान्य कुनेकाल जूना है इनको काल कर सकता है। इनके का-दिन सेन्स सम्बद्ध काक होती है। इनको कान सेनेका किनो, अभिने कवा अन्य अन्यक्षक क्ष्मुकोरे भी काक का भी होता, फिर भूक-नासका भग से हो है किने सबसा है? कोरे काला उन्तुल इन कुनवारोंको पहले से से कोरे हो काने हैं और कही कील-कीलवाले स्मुकोरे पहले से से कोरे हो काने हैं और कही कील-कीलवाले स्मुकोरे एक होनेका काला से केरे होने कुन्यार सकती अनंतक पत्त है। इनकी कीनो स्केथोर्थ अनिरोह है। असर आप की कालान स्मुकारों।

## कुष्डल लेकर उत्तङ्कका लीटना, मार्गमें उन कुष्डलोंका अपहरण होना और अग्निदेवकी कृपासे फिर उन्हें पाकर गुरुवतीको देना

वैद्यानसभी वहते हैं—वालंगाव । एती जावानीकी बात सुम्बर साह्य पुनिने बहाशक वित्तक (क्षेत्रक) के बात आधार असी कोई पहचार मीती । तथ इत्यानुक्रीत्योंने केंद्र बात बरेको पहचारके कार्य एतीको सुम्बनेक विने निवाहित सीवा दिया।

सैंटस बेले—(को ! मैं किस कुर्मिने पहा है, का मैरे रिनो करपान करनेवरनी नहीं है तथा इसके किया उस दूसरी कोई भी गति नहीं है। मेरे इस विकारको जानकर हुए अको केंगे गरियान कुरकार इन क्रकुल-नेककारों है इसके।

च्या सुरकार नहीं असू प्रतिके प्राप्त नवे और उन्होंने प्रवासी नहीं हूं बात वहां नवे-नवे-नवे कुछ के र न्यारकी महानतीने कार्याका नवन सुनकर असे समय अपने व्यक्तियं मुख्यात उसकु पुनिको है सिने । सुनकार च्यान उसकु पुनि पुनः प्रशासे अस्य आवार कोरो—'न्यारका ! जारके नुस्न प्रशासे अस्य आवार केरो—'न्यारका ! जारके नुस्न

सींदरने कह-जहान् ! विकासिय स्थिते प्रास्त्व करानो है प्रकारोधी पूजा करते को का से है द्वार्ति कभी-कभी सहरतीयी सोरसे मी हरियोंके निये बहुत-से सेंग प्रकट हो जाना करते हैं। मैं सह हो सहरकोटो



प्रकार किया करता कः सिद्ध एक स्थानको है कान्यो पुत्रे या दोग—या दुर्गीत प्राप्त हुई है। ये स्थानकोठ साथ यहाँ दाल है। पुत्रे इस दुर्गीतसे कुटबारा प्राप्तित कोई उसन नहीं दिलानी हेता। जन इस लोकने खुका सून को अवका परलोकने कार्नि सून केशनेके तिले कुसी कोई गाँउ जी बीच पश्ची। कोई भी राजा प्रदाननेके साम निरोध करके न को इसी एकेवाने केनारे यह सकता है और न परलोकने है बूक पर सकता है (बाई मेरे जूड़ क्रीएक्स पाएकों है)। अवका, अब आक्षती हजाके अनुसार के प्रतासन कुम्बार केरे सारकों है किने। जब असरने को प्रतास को है, अन्तो

ज्ञानुरे का—सम्प् । मैं सनने प्रदेशका कार सर्वत्त, पुरः नारके सर्वत् हे कर्वतः, सिंहु इस सम्ब एव ज्ञा पुरुषे तिले आको कस स्वेतार अन्य है।

र्मेदारने का—दिकार | अस्त प्रकानुस्त उत्त प्रोतिने, में आवशी काला कार हैना : कालों करने के के प्रीकृतिया, काला निकारण करनेवा | इसमें कुठे कुछ विकार करनेकी आवश्यकत नहीं पहेंगी |

म्मूने क्य-राजर् | वर्गीनुम मियुनीरे स्त्रीओं मियुनी कहा है जो अपनी मानीचा संक्य संस्था है—सावकार्य हैं। को निर्धाय स्वयं विक्यानका सर्वतं कारत है, जो कीर माना नका है। साथ सावके स्वयं तेरी मिलता हो गयी है, इस्त्रीओं आप कुछे अपनी सरका क्षीओं ह सराहते, साथ-कीरे पुक्तां कार कुछे किन स्वैद्यान स्वयंत्र कारिने का नहीं ?

सैंदारने कार—विस्ताद ? वहि आव मुस्ते सीका बात कारतना कार्त है से नेत कारत कार्त है कि साथ किसी कार् मेरे पास व आवें, इसीने सावका कारताब दिसावी के≳ है। यहि सावेंगे से निःसन्देह आवकी कुछ हो कारती।

मैतन्यकार्य सहरे हैं—कार्यका ! इस प्रकार वृद्धिकर् एका प्रवेद्धसके पुरासे अभित और दिल्की वात हुनकर कार्यी माता से उस्तु पुनि अवस्थाने प्रश्न कर विदे । गुरावरिका प्रिय कार्यके सिने केले किल कुकार इसावा करके ने को मैगसे मैतनके अन्यवकी और का दो थे। राजे वहरूतीके कुमानुसार कर्ने का कुकारोकी रक्षका भी कार्य था, इसस्मि ने अन्यो कार्य प्रवास्थित वीवकर से जा थे थे सम्प्राप्त के अन्यो कार्य प्रवास्थित वीवकर से जा थे थे सम्प्राप्त के अन्यो कार्य प्रवास्थित कुमा सम्प्री । वहाँ पास ही फल्पेक भारते हुका हुका एक केल्या ज्या दिसायी दिया। पहिले का्यु का कुमान क्रिया किल मुग्यस्थित क्रिया। पहिले का्यु का कुमाने क्रिया किल मुग्यस्थित क्रिया। पहिले का्यु का कुमाने क्रिया किल मुग्यस्थित क्रिया। क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया हुई भी (ने कर्म निरसे हैं इसकी और क्राब्ध क्यान वहीं बा)। अन्यो क्रिये हुए प्रवास सभी केल पुग्यस्थानक हो, निसमें होनों कुम्बार केने हुए हो, निरं : उनकी मोटरो प्रकार कुस गया और यह पृत्यक्तमा स्वास्त कुम्बरस्त्रकी। कुम्बेर केने का निस्त : व्यक्त ऐरावय-कुरामें अन्तर एक ग्रम्प प्रकारित मीनूर था । पृत्यक्तमाने अंतर रही हुए उन प्रतिप्रम कुम्बरमेगर कर उसकी हुए यहि हो अन्तरे कुम्बरस्त करों मुझे इस विश्व और एक कार्यकार्ने कुम्बर कुम्बरस्त्रकी। ग्रम्बर हो पश्च ।

् अस्थानिका<del>र्</del>ज

गरियों प्राप्त मुख्यानीयी योगी होती है। उन्दूर कृत जोता हो जो और अस्तर्थ होतामें परवार वृक्तों कृत यो। जैसे जायार एक स्वयंत्रीय से कार्यायके अस्त्यों किए एकेसे रूपे। उनके कार्य गरिया से किए होत्योंके वार्यों हो। उनके अस्त्रा बेगाओं पृत्यों भी व स्त्रा वार्यों हो थे। उनके अस्त्रा बेगाओं पृत्यों भी व स्त्रा वार्यों। या उनके स्वयंत्री केसी प्राप्त क्रम्य क्रम्य क्रम्य वार्यों क्रम्य इन्त्यायों क्रम्यों क्रम्य क्रम्य क्रम्य क्रम्य वार्यों के क्रम्य इन्त्यायों क्रम्य क्रम्य क्रम्य क्रम्य क्रम्य इन्या के के, या देशका व्यक्तियां इस क्रम्य क्रम्य क्रम्य विश्वार क्रम्यूमी क्रिये। इस क्रम्यूमी क्रम्य क्रम्य इन्त्री के, असः प्राप्तायम्य क्रम्य क्रम्य क्रम्य क्रम्य क्रम्ये



'नदान् ! यह काम कुछारे प्रक्रमा नहीं है। नागरवेक पहींसे इन्यरों केवन दूर है। इस माठके इंडेसे महोका ग्रांसा नहीं कम्मन जा सकता। गेरी सन्ताने यह काम कुछारे लिये कसामा है।'

कुम्बारोको प्रदा काना नेरे निने असम्बद्ध है से मैं आयो, सामने ही आणी अपने हाल त्याने देख है।

वक्रवारी इन्हें जब विश्ती तत्त्व असूनको अपने निकासो इस म समी तो उनके पंडेचे अगन्तनमें अपने महास्वयदे गाँउ हिया। कर बक्के आरहे पूर्ण निरीन हे पदी और कपलेका एका का नवा। अस्ये इस कमानेको प्रदेश करके उन्होंने हेका कि का लोक पूजाने केवन किया है। अन्दे करी और विका पनि-युवाओंसे अल्पूता अनेको प्राचार है। 🔤 स्करिया गरिनको पनी व्हर्ण जीविकोचे सुखोरिक व्यवस्थित, विशंत पारकारी अनेको सीवो और विकृत-कृषके क्रोप्यकार क्योरे सुन्त-सुन्त क्य है। जनकेकक कार्य स्टब्स से मोजन केवा और पांच मोजन बीहा है। जुल्लकेवारी का विकासना वेकामा उत्तह पुनि क्षेत्र (इसेत्सक) है रहे । सम अहे जिल कुर्याल परिचार आहत न हो । इसी समय उनके पास एक मोड़ा जाना, निराची पूँठचे कर समेद और बाले एक अधिक और पैंद्र स्थान के । यह अपने हेक्को अध्यक्ति हो यह ब्रह् कारे अपूर्व कहा—'केर । वेरे अपन-वर्ग (५४) वे फेर मारो । इसमें कुर्वे कुरवार निस्त वार्वने । वेदानावार कुर कुरूरे मुन्दान सुराकर से अलगा है। मेरी गुदानें कुंक बारनेते हुन कुक न करो; क्योंकि जीवसके आसमने हुने सकत हुक्ते अनेको बार ऐसा किया है ('

अपूर्ण पूर्ण-पृथ्वेकके अध्यान्यर मेंने कारी आपका शानि किया है, इस बालका अन मुझे केने हो ? और अनन्छे क्रथनभूरार बढ़ी रहते समय पहले मैं जो बाल अनेको कर कर पूजा 🛊 का क्या 🕯 🤊 का सुरक्ष बाहता 🫊 ।

कोरेने करा—स्थान् ! मैं तुम्हारे गुरुता भी गुरू असलेका आर्थि हैं । हुमने अपने पुरुषे निर्मे प्रस्त परित खुकर निर्मिष्ण मेरी पूजा को है, इस्तरियों में तुन्हारा कान्यम कर्मन्य । जब तुन मेरे अलबे अनुसार कार्य करें। जिलक न करें।

अभिनेत्रके हेरा सहनेतर अनुने अवधी अक्षाया पाला मिला। इससे प्रस्ता होका वे जनस्केकको कार करनेके हैरवे क्रम्मरित हो रहे । विश्व सागर अञ्चलने पुँच्य प्रती, उसी समय का सम्बन्धमारी अभिने रोध-रोधके बोर-बोरले बुऑ काने स्मा, जो नामसोकको प्रवर्धीत कानेवास्त्र छ। वह बुर्जा इतन का कि वहाँ कुछ सुत्र की पहल सा। रेतकारे कार्ये इक्कार क्या क्या वासुधि आहे पुरूष-पुरूष उन्हेंदे

का को थे, को बुक्ताओं को हुए की और का है।



देशा लगनेके नागेको आहे। तस्त हो गयाँ और वे आहिके ंधने संदर्भ होने रूपे, कर. अहमूनि क्राह्मका विचार बालनेके रिने सभी इक्टीन होका उनके पास आहे । इस समय इंड अस्त्र केरली व्यक्तिया कु विश्वय प्रकार असी असि क्को बरतर हे क्वी तक सको प्रकार विकिश्य पूजर किया । अन्तर्भे सभी जन बढ़े और कामकोंको जाने करके हाम जोड क्ताब **सुकायत प्रमाम काते हुए केले—'क्क्बर् ।** हुम्सा जना हो सहने (इस अपने कुम्बल लीटने हेरे हैं) र् प्रश ज्ञार ब्रह्म केरलको जन्म करके गागेने अर्थे पाछ और अर्क निवेदन विकास और वे किया चुन्यास की बादस कर दिये । व्यक्ता नागेसे सन्मानित होबत करह पुनि अस्तितकी ज्यानिक करके मुख्के जातमधी और कर हिये। वहाँ व्यक्तिकार अवृति पुरुवाधिको के दिला कुरवाल है दिये और कर्मी अब्दे मनोके वहाँ के करन करी थी, व्या सारा संस्थापत अपने पुरु महर्षि भीतमसे कह सुनवा। जनवेदव । इस प्रकार क्षेत्रों संबंधिये सूचकर व्यक्तमा अस्तुने हे मिलपन किन कुम्बार प्रश्न किने से । वे ऐसे ही प्रश्नकसारधी और प्रधन

#### . . .

## भगवान् श्रीकृष्णका द्वारकामें जाकर सबसे मिलना और वसुदेवजीके पूछनेपर महाभारत-युद्धका वृत्ताना सुनाना

कार्यवर्ग कार-विकार ! काञ्चुको कवान केर महाम् पातनी मगावन् बीकुम्मने कव किया ?

वैदान्यकाओं क<del>ड़ - ठका</del> ! उन्ह्रको क्यान केवर अपने चौतायमी चेडोचे हात वे स्तावकिये साथ किर अपने पुरीकी और ही चरू दिने और नर्तने अनेको हरोनर, नहियाँ, का स्था पर्यंत लोककर परम रूप प्रस्का कारीने पाँच गये। का समय वहाँ रेकान्ड पर्यक्तर कोई नहा भारी काल प्राप्त वा रह का कार्यक्रमें क्रम रिले प्राप्ता श्रीकृष्ण भी जर पहोसावने प्रवाने । कर समय रेकाक पर्यंत माना प्रकारके अञ्चल करें, बनकी विकेशे, सुन्तर सुनर्गकी मार्क्जो, शक्ति-विक्षे पुष्पे, वच्चे और मान्यक्क्षेत्रे अलंका विका करा था। कुछने आवारमें समाने हुए सोनेके दीय जर स्थानको सोस्थको और भी उद्देश कर यो थे। बहाँकी नकाओं और झरनोने सक्तोने दिनक-स्ट प्रधान हे का वा ( को ऐसी, अंबी और अन्ययोको निरमा कर दिया कार्य का । प्राप्ते का पर्यक्तक यह परन कार्यक्रमण स्थाप बारी होता पा शह था। अस वर्गतन्तर कृत्यानुहारको सैन्दे शनेको पर पने हुए थे, जिसमें पुरुषान्य पुरूष रिवास करते. है। अन पूजा जुहोंके कारण रेकाक निरिक्त केल्लेकके समान होता हो रही थी। परमान् लेक्टनके का कनेते के बा इन्द्रमञ्जूषी भी यह करने राजा।

स्वान्त्रम् साथि विकास और सम्बंध हार सम्बर्धन है स्वान्त्रम् सीकृष्ण और सास्त्रीक स्वाने-स्वाने प्रकास एने । स्वान्त्रम् सहा विनोत्त्रस्य पर्यक्षणे सुनेके स्वा का सीट थे, हर्मालने स्वान्त्र विना पहुत स्वान्त साथ साथ स्वान्त्र करने प्रका क्षेत्र, वृद्धि और सन्वक्षणेत्री और निलनेके रिक्षे पर्ये । स्वान्ति सम्बन्धः सान्त्र-स्वान्त्रर् करके रुपत्री कृष्णा पृत्ती और प्रसारतापूर्वक अपने विना-सत्ताके करणोपे स्वाप्त्र विकास । सान्त्रान्त्र सी । इसके बाद सभी कृष्णावंत्री रुपक्षे केरकर केर करें । सहलेक्षणे अध्यान स्वान्त्र हमानेत्र केरक विकास ने कृषे से विनाके पूर्णापर स्वानेत्र व्याप्तान्त्रकी सारी पटना सन्ते वह सनायी।

वसुदेवनीने पूक्त-बोदा ! वै अतिविन व्यव-वीठके प्रसंगने जोगोंके मुक्ते सुनवा दा है कि न्यान्यस्त-पुत्र कहा अस्तुत हुआ या; परंतु हुन दो उसे करनी अवेगों देख



ताने हे और उसके शतकारों भी मस्त्रीयति परिन्ता है, इस्त्रीनो भूतने उसका कवार्थ वर्णन करे। म्हारक कन्यकोचा भीना, वर्ण, कृतकार्ण, हेन्समार्थ और काम अधिके काम विस्त अकार कृत कृता का ? सभा दूसरे-दूसरे केलेके स्वरोकते को अकारिकार्ण विद्युत क्रिनियोर थे, उन्होंरे विक्त कहा पुत्र किया का ?

विकारे इस जवार युक्तियर मगवान् वीकृष्ण कार्यः सामाने सामने है कौरक-बीरोकी मृत्युरे समान्य रक्तिवार्यः काम सुन्ते रहते।

अनुनाने कहा—दिसानी ? स्वापारत-पुरूपे कार आनेकारे कृतिय पहारपाओं का को अनुन है। वह विकारके राज्य कर्तन किया क्षण हो से नांधि की उनकी समापि नहीं है सकती : इसरिपरे में बोहेरों मुक्त-पुरूप नाते क्षण हा है, उन्हें सुनिये। वैसे इन्ह देख्याओं की सेनावी अधिनाकक हैं उनी प्रकार कीवानी कीरव-नीरोके सेनावीं क्षण को थे। उनके अधीन न्यान्य अहीदिकी सेना थी। क्षणक-पश्चार्थ सात असीदिकी सेनाके अधिनाकक विकारती थे। सामाराजी अर्जुन क्षणी रहाने स्व करते थे। कीरत और क्षणकोंने इस हिनोतक बहुत सेनावकारी पुन्न हुआ । इसमें दिन हिन्सम्बद्धि अर्थुनकी सहाजातो चीनस्मीको अपने बहुत-से बहुतीका निकास कराया। उसने बहुतत हेका चैकवे साव-सम्बद्धा पढ़ को। स्थानक रहिन्यका क्षा है, से मुनि-सामा पतान करते हुए कर-क्रमान्त मोते को है। अल्पना आनेनर ही उन्होंने पृत्यु कीवार 

बीक्योंके क्यार से कोने का अक्टेकर्डन के आसर्व होण कौरव-वक्तके सेनावीं करावे गये । अन क्रम मरोपो क्यों हाँ में अधीकियाँ रोग उन्हें तम ओरले बेरकर माही भी । वे सर्व तो पुजार होराला रकते ही है. कुरावार्य और कर्ण भी करकी एक्से दिन्ने सामग्राम को से। इंग्ल महान् असरेका पहुन्ता पान्यक-सेनाके अधिनातक हुए और भीनतेन काली पहा करने तने। प्रमान-नेतारे निरे हर महायाची और बृह्युको होन्से हता अपने विकास अवस्थान गरम प्रत्ये जो या प्रत्येक रेले पुत्रों यह भारी पराक्रम दिवाना। बहुबहुई और होन्से का चीनम संस्थाने पाना विद्यालीने जाने हुए और एक अधिक हें क्लामें भारे गये । वर दोनोक्त यह कृतन युद्ध की है जेनक पार्चन रहा । अन्तर्भ होभारतर्भ सहा कहा पर्ने और सहस्राके हायके करवी मृत्यु हो गयी।

होनके को सर्वत पूर्वीकाकी रेजान नेवा कार्कि प्राचने जाना । भ्रष्ट नरनेते क्यो ह्रां चीन स्टार्वे देखी सेनाओर्स विरक्त पुत्रके वैकाने पुत्र कृता। वह साम प्राम्पनिक बाह्य सीन अर्थादिनों केना केन भी, निमनार्थ पात उनके कर थे है। क्षमें हे जिलक युद्ध करना का और कुले केन बापमें करून करनेकर यांगोबी राष्ट्र अर्थनो विकास मान पना । कार्रकी कृतुने कीरकेका करना ना हे पना । वे कारने सर्वत को बेटे और तीन अवधिकों रोजवाने कि हरू पहला प्राथको सेनाकी सरावद विद्वारों उसने ह पायाओंक की बहुत-के नैतिया और सहर वह हो को थे। इन्हें भी तम करता नहीं सु नवा का से भी से हेन सभी हां क्या अक्षेत्रियों केवसे कि इस बुनिहिल्कों काले बार्ले क्रायका सामा कलेके रिग्रे को। कुरराय कृतिहरूने

| केव्हर क्रेते-होते अध्यक्त कुम्बन परवाम दिवामर महराम क्राच्यो का निरम्ब ।

कार्यों को करेका अधिकारकारी महायग सहितने कार्या के अलोको सुद्धीको कार्यक्या अधिक क्यान । स्थाने पूर्व हो स्वतंत्रर ग्रमा क्वाँका पहा दु:सी हो पना। उसके बहुत-से सैनिक बुद्धने काम आ सके थे; इस्तीओं पह सर्वेदल है सामी यह तेयर शतभूपिये धान निकास । प्रका स्थापनाची चीपसेन क्रोममें सरकर करका बीहर कर को थे। इन्होंने हैकापन करका हाले पानिके गीतर क्रिके हुए कुर्वेक्सका पता राज्य हैंच्या और वरतेसे क्यी हाँ केंच्के हरी अस्य करों ओसी बेस कर दिया। बिर पीवी कुन्यूक कई अलाखांक राज करनानों की हुए हुनोजनके का क पूँचे। का प्रत्य श्रीयोजने को अपने मानानोके क्षत पूज बीवित किया। उनके कह बच्चोंने काकित होबार क्ष करीड़े कहा निवास आफ और प्रसर्वे गया से प्रस्ते हैं भे किए है जार । इस महामधी भी भो की एक राज्य ओं के क्रिक्रे-केंग्रे परकाम करते को मार काम । मारनार, क्रम क्ष्मकोची केन अरबी प्रकारिये निवित्त को को बी. जारी प्रकार क्षेत्रका अञ्चलको अस्त्रे निर्माद क्ष्मको न सह स्वारंके करण अक्षारण किया और सम्बद्धे स्टेरेने ही गर क्षात । पूरा प्रचलकारे प्राथमोधे पूरा, विराद और नेप सम कारको पान कर भने। मेरे और सामाधिके साथ केवार चीक प्राच्या करे हुए हैं। परिचाकि पहले कुरावार्थ, कुरावार्थ और अन्यक्रमान मीनिस है। परणानीकर जानक रेटोके प्रारम कृत्यकु-पुरं पुनुकृत्यों की कान क्रम कर्ती है। क्ष्य-कामकोशक्षित कोस्तरक इंग्रेसनके को बानेपर विका और प्रमुख करिया पुरिश्विपके आक्षयमें भा गर्ने है। इस प्रथम का पुत्र अकरत दिलेक जारी का है। कर्ण के करू करे गर्भ है, जो सर्गका निवास जाए gan to

रीजन्यकार्थ करते हैं—स्कारक । रोगरे एके धार देनेवार्थं का कवाची सुरका वृष्टितंत्रीतोग कुन्न कोनारी व्यक्तर हो पर्वे।

श्रीकृष्णका वसुदेवजीको अभिमन्यु-वधका हाल सुनाना और व्यासजीका उत्तरा तथा अर्जुनको समझाकर युचिष्ठिरको असमेययञ्च करनेकी आहा देना

महामारत-पुरुष्टा क्याना सुबने सन्त्र महापुरिकार अवहारतम्ब स्वाच्या सुनवर वर्त दुःस-क्षेत्रमें हुत १ श्रीकृष्णने अधिमन् काले जाराच्ये <del>कार कुल्</del>कर कोड़ | कार्ड, इंग्लब कन्स्टिन हे कार, इसीसे व्य प्रसंग स्वी

वैतन्त्रकार्यं कार्रे ई—कारोक्त । शिक्षोः कार्यः । दिलः। उन्हेंने स्टेच्यः, विवासी कार्यः वर्तानी पूर्वायः पहर्

पुरावा; सिंदु शुंच्याने सार देखा कि मेरे पुरुषे विकास समान होते की काम से जाने कर किया है। क्षा - 'पैस ! मेरे अधिकानों कार्यों कर में से मा हो ।' हरना च्याबर यह मुर्वित हो जनीकर किर चही । अपने नार्त अधिकाको परनेका सम्बद्धाः कारका प्रमुक्तियो सी 🗲 हा और फोबररे व्यवस्थान हो औ। अहीने श्रीकृत्यको प्राप्त — चेटा । इस मेरे रोडियके सामेका इस बनो नहीं नातते ? करको अन्ति तुन्त्रारेक्षी-वैसी सुन्दर भी । हान ! सुन्दरे नको हुन् का सकते के प्रकार के में कार प्रकार के साम कृत होनेके व्यक्ति वनुष्यके विन्ते नतम व्यक्त है करिन होगा है। तमी से न्यू कृतन समाचन कुम्बर भी दुःकर्व भी हरूके र्मकारों हरते नहीं हो जले । कहीं बुदले पेट विशासन से सह मही बारा गया ? मस्ते समय स्थाप मुख्य वनके निवास के महीं के गया था ? कुमा ! यह महत्त् नेकारी सारक अपने बाल-सामानी अनुसार की सामी विनीतपानने अन्तरी चीरताची प्रशंसा किया करना के । होन, चीन और नहनावे कार्योद्धे साथ रहेक् रेलेका क्षेत्रक रक्ता व्या व्यक्ती हेरा से मही हुआ कि होगा, बार्ग और सुरक्षानों नहींने विकास का बारकाओं कारकार्यक गार करता है ?"

produce t per ment meren geftelt giere wa क्युरेक्टी काम प्रधारने विस्तार करने रूपे से इन्सी अवस्था देशका औद्यालको कहा दुःग्र हुआ। ये सारकार क्षेत्र हुए सक्ने सर्ग--- 'विस्तावी । अधिकानुने संस्थानी अस्पे रहका लोहा जिला और बाबी भी रूपन पुरा निवृत्त भी किया। जा कृतर चुक्तों असे साथे ग्रेड चूर्व हिपानी। सामी राजाओंके सम्बन्धी कैसके पत आस्पार का केन और कर्मका प्रापक करने सन्त । उन क्षेत्रेने स्कोनको क्ष बहुत कह भया, का श्वासकों दूसरे उसके सक विकास पार्थ । यह अनेतान की प्रमुखे पार पर पा । पार्थ रिरमा को स्थ-स्थ मेरने हैं साथ रनेत रेज पहल से कारारी हुए भी जानों कर की सकते थे, जिद्र को से बार है दूसरी है गयी। अर्जून श्रेक्शकोंके स्था युद्ध करी हुए राजधुरियों बहुत हुए हुए को है। इस अवस्थाने साथ काका का कोशने परे हुए मारकाको क्षेत्रकार्ग सबी वर्ष बोरोने निरम्बार पार्चे ओस्त्रे केर किया। प्रमाणि यह प्रदर्शका यह चरी संहर करके द्वारासक्त्रकके हकते मारा गया । यहाओ ! अधिकानुको निश्चम ही कर्पलेखकी प्राप्ति हुई है, सतः जान इसके लिने फ्रोक न कॉनिने। परित बुद्धिकारे सायुर्व संबद्धे पहलेस की क्रेकरे अबीर की होते। जिसने इनुके समान परहानी होण, कर्ण वर्णा,

चीरोचा पुरुषे अवार पुरस्कारत नैक्षण, जो सर्गकी आहे कर्ने र्जी केचे ? प्रावीरने जान क्रोफ स्वान केन्द्रिने । प्रमुखीके अन्तेक क्रिकं भनेकार केवर अधिकान प्रकारको परित क्षां उद्याप पर्वतिको साहा कुमा है। उसके मन्तेपन यह मेरी महिप बुन्हरं का द्वारते कावुल होकर पुरसेको पाँठ मिलार करने राजी को कुनाने करे:-करे: इसे सम्प्राको हुए व्यक्त--'पूर्ण्ये ! क्षेत्रामा, प्रात्मीय और सर्ग्यूनका स्वकृत्व मध्यान् कारको जेरको है कुझ्ने भार गय है। कुछुनेकने कम क्षेत्रको प्रमुख्येक को है ऐसा है—को एक-प्रमुख दिन कुलुके करने होना है। बहुता है, इस्तीओ सोक न करें। क्युक्रीकृति । कुन्नारा पूर्वन पुत्र करण उत्तव परिन्दो उत्तर पुरस है। केरी ! कुर पहला क्रांग्लेक जान पुराने जाना हुई है, हरू: क्रेस स्थान के । प्राप्ति पुरस्त्य कारा गर्मकर्ते हैं । इसकी और देखावर विकास कोड है। यह बीध है अधिनामुके पुरुषो क्षा क्षेत्रकारी है है इस कारण इसे क्षान्त्रा-स्कूतकार कुरतीने अधिकालों बाजारी क्यारी करायी। अन्तेने क्याराय श्रीवर्तिक बीवर्गन और महान-स्क्रीनमी अहम देखर परण प्रधानी का करवाने, सरकात् अक्रमोको स्थानी गीरी कुन केवर विरायक्तवरी स्थानो सक—'बेडी । सम दून अपने मोनेड हैको अधिक प्रोक्त न धारो है अपने गाउँक कारणान्ही रहागर बार है ।' में सहस्य क्रमीरेसे एवं है गर्मे । इस समय क्रमार्ट अञ्चले हैं में पुरस्तको अपने साथ में आया है। विकासी । पूर्व प्रस्तार स्वाप्तेत करीची पृष्ट हुई है। अस आर कर्ताः हैओ कर्ता क्रेस-संस्तर न बरिनिये (

अपने कु बोक्काको कर कुम्बर वर्गान स्तृतेवनीरे कोक प्रोक्कर काम विकित अनुसर अस्या साह विका । इसी अकर काम्बर् सीक्काने भी साने भागवेची साह-किया पूरी थी। अक्षेत्रे साह राज्य तेवली साहानीको विविद्यांक साम अस्य केवल बरावा और उन्ने क्या पहच्चन इसा कर दिया, विरासे क्यारी क्रिक्का हुन्य कु है वर्गी। इस काम आधार्योची इस्ते वेवसा है सामा। में सुमर्थ, भी, क्या और क्यारा क्या भाग अभ्यान हैनेका आधीर्याद हैरे राजे। सीक्काके राज्य है करावा, स्वाविद और स्वावको की अधियनकुका साह किया।

कार, इतिकानुस्ने विकायुक्तारी स्वायने परि-विकासि ्रास्ते प्रीति होका बहुत दिनोतक साना-पीना क्षेत्र विचा, प्रस्ते प्रता प्रोत्योको बहुत कार्यु हुआ। अस्ति गर्यका कार्यक स्वरूपे प्रता-प्रता होता होने कारा। अस्ति हार अस्त्वायने विक-पृत्तिके व्यायका पहलि कास बहुत साने और कुमी स्था अस्ताने विस्तान केसे—'मेटी सारा! वह प्रतेक कोड़ो, कुदारा पुत्र पहान् देवस्ती होगा। शनकान् अधिकाके प्रधान तथा मेरे आसीर्वासने व्या परवालोके बाद समूर्य



पुण्णिका व्याप्त करेगा।' सप्तान् ! व्याप्तांने वर्गराव वृतिहित्यो सुनवे हुए अर्जुनवी और ऐसावर व्याप्त-'क्यापा | शुप्ती वीच है चैच हेनेकाल है, या वस्न वैष्याच्यापति और व्याप्तान्ति होगा। स्पुतार्गण सप्ती वृत्याच्या क्रेश्व होद हो। इस विषयने कुछ विचार करनेकी सामक्ष्याच्या क्रेश्व होद हो। इस विषयने कुछ विचार करनेकी सामक्ष्याच्या वहीं है। वेस व्याप्तान साम होगा। वृत्याच्याको कैस हुछ व्याप्तान् सीकृत्याने पहले जो कुछ वहा है, वह सम वैषय है होगा। अधिकानु अपने प्रशासको स्वाप्तित क्रिये हुए वेसारानोके सामक क्षेत्रोंने पत्ता है। तुन्हें पर अपन कुम्बाहित्योंनो सर नीनके सिने होना नहीं करना चाहिने।'

अवने निवास व्यवस्थाति ह्नार इस प्रकार स्थापने वानेना वर्णाम अर्थुनने हमेना साथ विचा । कार्यका । उस अन्य तुम्हारे निवा वरीक्षित् अतराके गर्नने सुद्धारहाने क्यानकी भारत वृद्धि याने समे । वदनगर, व्यवस्थाने कार्यक वृद्धिसम्बद्धित अवस्थानका कर्णमा आहा ही और अर्थ नहींने अन्यकार हो गर्ने । व्यवस्थानको भारत सुरुकार परम वृद्धियान् राजा पुणिहित्ये भी हिमासभावे भार से आनेना

# भाइयोंके साथ युधिष्ठिरका द्विमालयपर जाना और वहाँसे सुवर्णराशि लेकर लौटना

कारोजको पूळा—स्मान् | स्वातन काराजीकी कही हुई बात सुरक्षार राज्य मुसिद्विरने अस्त्रेयन्याके सम्बन्धने कथ विराय ? राजा स्थानने को सुवर्णका का-प्रांत पृथ्वी-सरकार कोड़ रही भी, उसे उन्होंने सिता प्रकार प्राप्त विराय ?

वैद्यानकारों कहा—गारण् ! यहाँ व्यावनीय करें सुन्तर कार्यन पुकितियों हीयहोंन, सर्वुन, स्कुल और स्वदेव—हा सभी पाइनोको कुलकर कहा—'क्युको ! पहाया नामसी, अनुहा पराक्रणी कीन तक वस वृद्धिकर् हीयुक्त से से का पुज्योगोंने सुन ही ही है। उस मैं उसके अनुसर कार्य आत्म करक व्यवसा है। ऐसा करनेने वर्तका और व्यवस्थानकों भी एक स्वत्र होता है। ऐसा करनेने वर्तका और व्यवस्थान करका है। इस स्वत्र होता होता होता। आस्त्र हाह्यकी स्वत्र है। इस स्वत्र कार्य करने होता होता है। इस स्वत्र कार्य करने होता है। इस स्वत्र कार्य करने होता है। इस स्वत्र कार्य कार्य करने है। इस स्वत्र कार्य कार्य कार्य है। अस कार्य कार्य

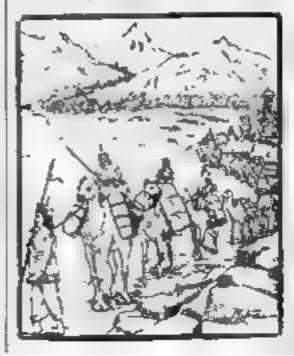
कारामीकी आहा कारकर गर्नत: को आह करनेका का को अवक कीमॉन | हुन कोमो, हुन्दारा इस सम्बन्धने का विकास है ?"

क्रमांक हैता बहुनेवर चीनरोन द्वाच बीद्रमार मोले-'बहुनाहों ! अन्यों व्यापनीक सामने हुए समझे सामेक विकाल को कुछ बात है, यह पुत्रों बहुन पर्रात् हैं। पदाराज ! और हुने व्यापका कर प्रदा हो काम तो हमारा साथ बात हो बाव अन्य । इन्तरोग ध्यापन् इंग्रांगको प्रवास सामे त्या बारकों से आनेने । देशांगिरोग स्वासेन यका करके अनुवारिकी कुछ बारके बाव, कामी और क्रियांके हारा अने प्रदास करेंने । बारक बारनेवाले को बिकार तसकी प्रदानों नियुक्त हैं, वे भी बारका बारनेवाले को बिकार तसकी प्रदानों नियुक्त हैं, वे भी बारकाय इंग्रांकों प्रयास होनेवर हमारे अन्योत हो सामेने।'

भीनका कर्मन सुनकर कर्नतुत्र राजा मुधिहिरको सही जलाका हुई। जर्नुन, नकुल और स्कृतेको भी उनकी करका समर्थन किया। उदसन्तर, सभी प्रमानीन सा लानेका निश्चय करके सुन्य किन एवं शुरुसंस्था अक्षाने सेनाको प्राप्तके दिनो नेपार क्षेत्रेको आक्रा थी। किर स्वाहकोरी कवित्रकारक कराकर देखांस कोकरको एक करके ने कर्प भी प्रत्यक्षके साम कालेको साम हुए। इसकी बदाको समय नगरनिकारी हेत्र प्राप्ताचीने प्रसार्वाचको पहल-यह किया । इसके बाद पान्यक्षीने अधिनाहेल प्रायुक्तियो प्रत्यान वालो उनकी प्रदक्षिणा की, मान्यारीक्ष्मीक राज्य कृतवा और कुन्योको अका को तथा पारम-पा पुरातानो प्रमानिकी प्रारं हिन्दे ब्रोहकर एको बाहर प्रकार निरुष । पानी बहुत-ब्रे मनुष्य प्रस्ता होत्या राजा युविधित्यो निकायुक्ता अस्तिर्थाः क्षेत्रे और ने क्ये क्योंक्टक्को सीकर क्यों है। एक्ये पीक्षे-पीक्षे बहुत-हे हैंनिया करा को थे। उनके कोरपहराते सारा आवास गुँव काल व्य । अनेवर्ते सरोवरो, स्वीतो, वर्ते और कामनीको लोकमन महाराज पुनिव्हित का परीवके स्थार क्षा पहिले, अही हरण नकारक रहत हुआ करन क्ष्म संस्थित का । वहाँ समाप्तर एवं सुवस्य काल देवनकर राजाने हम, विका और प्रस्थित-संकारो एक सद्धानो एवं के नेदाको करनानी विद्युप् राजपुरेकित कीना मुनियो आने रक्तार सैनियोचे प्राथ पहल काम । सन्दर्भन् स्थानी और पुरेष्टिनकीत क्रमक श्रीकोने निर्मालक प्राप्तिक विका और एक क्या काके परिवर्तकों बीचने रसतार कर्न करी ओरसे क्ये बेरका निकास विका । प्राकृतिने पुर वर्गा और में कीवनाओं क्ष्मादी करवाची की तथा अनुदेने (क्रावर्गीसे अस्तर) कावाने मन्त्राज्ञोंके सुनके रिक्ते की स्थानकर विकास अस्त विकास का। यह तम समाच्या कर हैनेके बाद राजा पुनिक्केते प्रश्नानीके शहा-'विकेत्राच्या । प्रश्न वार्गीय विके कोई सुक दिन और क्षय नक्षम देखका सामानेन नेता जीवा सन्दर्भ बैसा करें।' राजाको कह कुनका उनका देख करनेकी क्रमानाले सुरोबील और प्रशास कोले—'फाल्ट् I अवस ही परव परित्र नक्षत्र और कुल जिन है; उस्तः उसको है हमें कुल कार्यको विक्रिया प्रयक्त करना पादिने । इनलेन को आन बेहदार बार पीचर होने और अवस्थों को अपने प्यान्तेत्रीक आन काराम कान्य चाहिये।' प्रकारोपा नका सन्तान प्रभी पान्कोने रातमें उनकार किया और कुलके अवस्तीवर बैठकर अक्रके साथ अक्रमाँकी जाते सुनदे हुए राजि कार्यन की । सरकार, जब निमंत्र प्रचलका जब हुआ के का लेह इक्षाचीने वर्धनका राजा कृषिक्षियों कहा—'राजन् । अस कार मान्यम् इंग्डरको पुरा पहल्ले, त्यो नेनेस सर्गन करके इसे अपने कार्यक तिये उद्योग करक पाहिले (

प्रमाननेकी अक्षा पावन क्रमा कुनिहरूने पाले क्रमांन विभिन्ने अनुसार करवान् शिवको नेनेव अर्थन विभा। वास्त्राम् अने पूर्वित विकास करोहेची, सहराम कुनेरकी, प्रतिपाली स्था अञ्चल कही एवं पूर्वित अनिवरित्रीको विनाही, वेटलेनीस्य कर और भरा धार्वि वरकार मेर किने। सारकार, स्थाने सम्बन्धि ह्वारों चेट्ट एन की। केट पूर्वित सर्व्यात होकर कहा ही प्रयोग्य काम पहली की। हा सारक कामान् दिन और उनके प्रावदीकी पूजा करके पूर्वि कामाने आने वैतने राज पुनिद्दिर कर ज्ञानको पत्ने, जाई कह पुनर्वाति संवित्य की। वहाँ उन्हेंने अति-वर्तिको पूजा, करकार को साम विनाही साहित हार वर्णि कामिनोर्ट पूजा करके की साहित्यों और प्रमास विनाहित्यों के पूजा करके की साहित्यों और प्रमास विनाहित्यों के पूजा करके की साहित्यों और प्रमास विनाहित्यों के पूजा करके की साहित्यों और प्रमास

व्यापनिके पुरस्क-सेक्से कहन् रेसको जात होकां उस पुनिक्षित को अस्त हुए और उन्होंने का सम्बद्धी सुन्ताना अस्तम क्रिया । कोड़ी ही देनों कोनेके वने हुए अनेकों अस्तम क्षित्र । कोड़ी ही देनों कोनेके वने हुए अनेकों अस्तम, कारों क्या और की विशेष्ट-विशेष्ट्र एंग्लें इस्तों कार्य निकास आने । क्या प्रकार प्रदेश केले कही-नहीं संपूर्ण कार्य करी थी । क्या-एक संपूर्णने के किने हुए क्रिनेका कोड़ अस्ता-अस्त कर होता था। अन संपत्नी कोनेके विने प्रकार कार्य व्यापनी समास्थि की आनी थीं । साठ हमार



देंद्र, एक करोड़ कींग्र लाग क्रेड्रे, एक रकत क्रुपी, एक स्थल रथ, एक साल कवड़े और कार्य के इचिनार्व की। भवों और बनुवोंको से दिनते हैं नहीं थी। बुविहेरने वहीं विकास का सहस्वका का, जानक अनुसार हुए अकर संकास या समाप्त है। उन्होंने प्रानेक कैयर आहे प्रमाद आहेक क्रमानेसर स्तेत्व क्षमार और आतेष्क क्षमीवर चौचीय क्षमार कुल्लेका भार समझ था। (इसी प्रधान केही, पहले और | इने बहती हुई मही मही महिन्सूरी नगरकी और कह रही सी।

। यहनीया वकारमध्य का स्टब्स्स था।) हा एक बाहरीस का राज्याकर प्राच्याका पुनिक्षित्ते पुनः सङ्ग्रेककीका पूचन किना और व्यास्त्रीकी समूच रेन्बर पुरेशित कैन पुनिको माने करके व्यक्तिसम्बद्धे अस्तर विकास के (सक्तीपर बोहर स्थित होनेहे कारण) से-से मोलार पुस्ता है। मार्ट वे । कृतके काले का पाने हुई वह विकास रोग पानकोंका

### मीकृष्णका हस्तिनापुरमें आना और उत्तराके मृत बालकको जिलानेके लिये कृत्ती आदिकी उनसे प्रार्थना

र्वतन्त्रकार्य वर्षे हिन्द्रकार्य । इसे बीची मानात् श्रीकृत्यः भी वृत्तिकविक्तीको साथ रेक्टर प्रतित्तका अर पर्ने । अन्तेः प्रस्ता मात्रे समय वर्गपुत पुनिर्देशने वेत्रो बार गाउँ थे, असे अनुसर अवनेक नामक करत निवार मानकर में पहले हैं उसीका है गरे। पानक्ते कर प्रतिनामीताच्या अगुरू, सामानीत, प्रत्योच्य, प्रत्या, पर् geraul, mon, frus, argu, uniped our fireir पति चुट्टों को गये थे, का अलाव श्रामीनकेने कहा मैपानेके रिप्टे आसे से । इसके अलोका अंग्राचार पायर पाय कृताह तथा अञ्चल विकासी साले प्रकृत विकास term frem mer bertt geber dipet steb कपु-वानगंतरीत को पुरुष और विद्वारीके साथ को सर्थे । कार्यमान । कृष्टिकारिकार्वेक प्रतिकारपुर्वे स्त्रो सारत 🕸 कुछरे किस राधा परीक्रिक्स क्या हुआ। वे सहस्रको पीक्रिक क्षेत्रके कारण बेहाकी पूर्वित कार्य अन्य हरू हो। पहले से पुरुवाके समावादी सवको अवह हो हता. सिंह अत्ये जीवनका चोर्च किह न देखकर कावान कोवाक काव क्या पारः

श्रीकृत्यने ज्ञा का इस कुछ से से प्रस्तविको साव रिन्ने दुरंत अन्त:पुरने ना वहेचे : वही उन्होंने सन्दर्भ कुरव कृत्यांको स्थे देनते जाती देनत, जो व्यक्तर उन्होंका कर रिकर 'चेंचे, केंचे' की एकर पता को वी। अने कें केंग्से, सुरक्ष क्या जन क्या-कश्चेत्री कियों के बी. के महे करण सरहे जिल्हा-जिल्हाकर हे जी वी । बीकुमांड निकर पहिलों ही पुरतीको स्रोतकोरी स्वयंत्रकोषी प्रात्नी सन मधी। वे गर्मर कमीने बेसी-'काहोत । इसके कहर की पुनारी नाम देखती जान कुम्मारी नाई बाती है। कुई

इस पुरानको पहल्ला पार पूर्णने ही अन्त्र है । देखों, पह पुराने कार्य अधिकानुका कारक है, को अक्रमानके प्रकारों गर क्ष्म है जना हमा है। केरल ( प्रत्यो पीवर-कर है। नकारको का सीवदे बक्का प्रयोग किया था, ३६ करन पूर्ण का अधिक की की कि में अध्यक्ते परे हर कारकारों भी बंधित का है।। येत । वही वह कारक है, में का हमा है कि हम है; इसके करा हुई इसके। इसे नीरिक करके काथ, सुनक अर्थर सैन्द्रीसर्वेश सेरी रहा कते : पुनिर्देश, मोन्सेर, महत्त्व और स्क्रूंकोर भी उत्तव काको । मेरे और पायानीके प्रान इस मारावांत हो असीन है। मेरे नहीं क्या कहती रिकास की बड़े पहल है। इसे केल देखा क्योक्कारी अधिकपुत्रा भी दिन वर्ते। बीक्रम । मेरी ब्यूनमी कार्य अधिकायुकी प्रक्रोची पढी स्र्री क्षा का, जारूप दीन होन्द्रे बारण, बार-बार कुराया करते है। अधिकारों साथे उत्तरने बोकार क्या या-'कानानी ! हातान कुत मेरे कामके का-ज़िल हर्न अन्यक्षेत्रे कुरूने कदन बनुषेद्र, मान प्रवास्थ्ये अन्य-क्ष्य क्या करूने वेरिकामध्ये देशक प्रश्न करेगा। हुन्कापुर्वाको को हो या का विश्ववि पात होने पादिने । नव्यक्ता । इस कारावी मारावित रिप्ते इस सम क्ष्मरे केरे प्रकार चीका कोचारे हैं: इस स्वास्थ्यके विकासक कार्यक्या कार्याच करे (\*

चे कहर, कुरोहेने दु:सर्व मानुस हे प्रतीनस सिर व्यति। पर अंकुलने उन्हें सहस्य केवर विद्यापा और सारकार्यं कानोते वैनं वैकाने राते । कुनांके वेद कानेक् सुन्या अपने पाई ऑक्ट्रमाध्य और वेंस प्रद्य-फुटकर हेने क्रमी और क्ष्मां कार्य होतार बोली—'नैवा ! कार्य समा इको अवस्थान और तुनी इक्लोनोंक आवार हो। इको | वार्की इस बैठावी दक्ष से देखे। अधिरायुक्त केंद्र कथ

हैनेके साथ ही पर पता—इस फारको सुनवर वर्णान प्राप पुनिश्चिर क्या कोंने ? चीवरोन, अर्जुन और नकुरू-स्कृत धी एक प्रोडोने ? आम होन्युको परक्रमेवर सर्वक सुद रिन्त । बीकुम्म । इसमें सनिव्य भी सीक्ष नहीं कि क्रांपियन पीनो कालोका करा सा। आके कुल्की का इतक कुल्का अक्रमानं अक्षे प्राप्त हर क्ष्मा का जाने ? अभिन्तुका कुर पर हमा सका है, इससे कहतर दुःसकी बात और बज हे सकते है? येवा। वे हकरे बल्बेने पहला हुन्हें जान करन काले हैं। कुनी और हैन्द्रे भी सुकारे पैरोकर पड़ी को है। इन सककी और देखें। पन क्षेत्रपुर अकामान पर्यक्रोके पर्यको क्षावार प्रकार पर का बा, जा ज़ान तुम्ने क्षोपने परका जाने कहा फ— 'प्रायाण्याच्या । जेरी प्रयार पूर्ण जहीं होने पानेची । मैं अर्जुन्हे मैक्सो अपने प्रचानको नीवित कर ऐस'—मा बात मै कुर कृती है और हुन्हों काओं की में अन्हों कह काओ है। इसरेले प्राथमी है कि दूल जाना हो पालो, विस्तरो

अधिक मुक्ते पुरस्के सीवन विशेष नहीं प्रतिक्र करके भी तुम अपन्य काल कुरा नहीं करोने हो निक्रम काले में प्राप्त हे हैंगी। चरि हुन्हरे सेदे-में अधिमनुदे मतमानो मीमन-दान न निवस को कुछ मेरे किया बाह्य आओपे ? सेही बाह्य पानी करवाता कुरी केरीको भी वरी-भरी घर केर है, अर्थ प्रकार हुए अभिनामुके मरे हुए माल्याची चीवित का है। केतृब 1 कृत कर्माना, सरकारी और सरकारकारी हो, अबः क्यों जनमें क्यों हो का का जनम पूरी करनी काहिने। तीकृत्य है कुर बाके के मृत्युक्त गुकरों को हुए तीनों स्वेकतेको जिल्ल रूपको हो। जिल अपने व्यानकोड इस बारे पुरस्को बोबिक करना तुन्तरे दिन्ते चौत बाई बात है ? मैं तुन्हरे जन्मको कानी है। इसीरेके अर्थन करती है कि क्रमानेश अनुबद्ध करे । पैका १ प्रकृति नहीं की है । हुए न्य अन्याद्धार कि व्या नेते वहते हैं अन्यत्म किराबा केरा नारा नमा है का पुरश्चिम को है का प्रत्यकों आही हुई एक अस्तुत्व जनमा 👢 मेरे कर एक करे 🗈

# क्तराकी विलापपूर्ण प्रार्थना और श्रीकृष्णका परिश्लित्को जीवित कर देना

रीरन्त्रभावी नवते है—राजप् ? सुन्याके देख ब्यानेसर मन्त्राप्ते को जात करते हुए कह—'अबह, ऐस 🛊 करिया ।" वैसे भूतने जो हुए समुख्यको जानो यह सेनेकर कारिय मिता जाती है जाते प्रधान पानवाद कुलावा पह अनुसमय नवान सुनवार अन्तःपुरस्यी निर्माणी वर्षी प्रसादता **भ**। स्थान क्षेत्रम प्रांत से कुलो विकास मानाम-सुनिवानास्यं गर्ने । यहाँ सावार अनुने देखा कि मह पर सरेन पुरतेको मारको है विक्युर्वक स्थान स्था है। अरके करों और करनों को हुए करना उसे को है। रिकृत पारक प्रदानों साथ बार की है, रिसर्ट केन्री अब्दि की गयी है। अल्बास सरसें किसेरे हुए हैं। यानकी पूर् तेय इनियार रचे पूर् हैं और सम ओर आने प्रमालिक की गर्नी है। सेमाफे रिल्ने कुड़ी और कुछरे कियाँ केंकूर है एका राजे-शको काची कुका कहा विकासकात थी विश्वयम् है। इन सम्बंद अतिरिक्त प्रकृतिके प्रकार निकरण करनेवारे हलोका भी भूते रहेना किया गया था। इस अक्षार सुनिकानुबन्धे कायरम्बद साम्बद्धियोरे सम्बद्ध देख भगवान् औकृष्य बहुत जात हुए और सामुख्य के हुए उस ज्ञानको ज्ञांसा करने सने ।

इसी सनम क्षेत्रहें नहीं देवीने स्तव काराने का कांधर मोरी---'करवाची । वह देवने, कुदारे कहुरहान

आंक्रिकारक, अवशासिक वृत्ते कृतका बढ़ीर चलवान् प्रमूचन इक्तरे कार का के हैं।" का सुरकार काराने कारने कॉस्ट्रऑकी केवाबर कार्य प्रारंत कार्यने एक रिन्छ । श्रीकृत्यनीह प्रति सामी पानव्य-पृद्धि थी, इस्तरियो उन्हें आते हैवा सह रमीको कार जान्य क्रमो काम विराप करते हु गरुगर कमाने केसी-"कराईन ! देविको, अस्त में और मेरे भी केने है संस्थानित है को। सर्वियम् से पहलेरे है एक्को मान से पूर्व है, जन मुझे भी पुल्लेकने नहीं हो है। सम्बद्धियो । अधुसुस्य । आयो परामोर्ने समान्य स्थायन में मार्थक करते हैं कि जुल्पर प्रकार हो साहते और अकृत्यानके अक्रमाने क्या हुए भी बेटेको जिला हैकिके। इस । इस जनके बारकाचे सक्ताको पर इस्तेका कुरतापूर्ण वर्ण करके न जाने कृतिह अक्रमाधाने कहा हाल काम है ? परवर् । मैं अपके देशे प्रकार जा मताबके ज्ञानोची चीक मांनदी हैं। बाँद का सीवित नहीं हुआ हो मैं की जाने जान त्यान हैती। इसको सेवार मेरे बडी-बडी अल्टारी चीच रसी ची; चित्र क्षेणपुत अक्टासको का सहस्र करी केर दिया। तक की बीनेबंद क्या प्रयोक्त है ? केरी नहीं रक्क की कि अपने क्लेकी गोवने रेकर आपके बरजोंने प्रवास करें, किंदू तक का कार्य है नके। अवस्था, कारत नेपोचले अधिकन्तर अधिका बड़ा होन का, उन्हेंबर मेत जान जातावादी पारसे गए गां है; इसे गर जॉन देश प्रीतिये। मेरे जाने परिके सामने गां अधिक की की कि 'बीरकर | संजानकृतिने गीं। जान मारे कालेने के में भी बीत ही कारीर सामकार जातावाद अनुसामा कालेनी।' मांतू में हाली कारोरक्त्या और वीवानका मोत्र कालेकाकी निकासी कि -कारती की हुई प्रतिक्षा पूर्ण में कार सामी। इस काला का में 'हैं। सामकार जाके कार कारीनी के के मुझे क्या काले ?'

इस जवार सर्वार्थी जात यून-केवले स्वार्थि-के हैंगर काम इसने विकार करते हुं बुनियर विर वह गरे केवल है भरों। केही हैर कर कर हेन्सर अपने के उस गरे हूर वास्त्रामी केही केवर कही जाते—'नेवा! हूं के बन्दा विकास दूर है, दिर वृत्तिकंतर की की की काम ? स्वार्य कहा है का और कामके काम केवियर करते थे। काम ? स्वार्य कहा है का और कामके काम केवियर करते थे। 'इस से कहार किसर करते हुं कामकानुसार करते थे। 'इस

विकार प्रकार सीवृत्यको जनम विका । अवद पहुन् विकार पुरुष्टर सीवृत्यको आका विका और अवदानको प्रकार पुरुष्टर सीवृत्य कर विवा । सारकृत करवाने विकार पुरुष्ट कर वेदार करवा पुरुष करवा पुरुष पुरुष पुरुष पुरुष करवा कर होती, देखे, में सार्व्य देखते देखते अभी इस कामा की विका है और पुत्रने केंग्र की पानी विकार प्रकार अधिक है और पुत्रने केंग्र की विकार है । इस पाने को और सावा पुत्र विकेश देख हो से अधिक पुत्र का पुत्र के केंग्र को है का क्या क, पुत्र की करवा को । वह पुत्रने करा और कांग्र विकार किया है से की को है से सावान्त्रक का कर हुआ करका की को । की क्रेस और केंग्रिक की कांग्र अपुत्रत का विका है से इस सावके प्रकार है। कांग्र करवा करवा के साव है से इस सावके

करवान् ऑक्टबर्क देशा व्यक्तियर का मारावानें केला का नवी और वह मीरे-वीरे कींग रेन्द्रे कला।

### श्रीकृष्णद्वारा परीक्षित्का नामकरण, पाण्डवीका इस्तिनापुरमें पहुँचना सभा ज्यास और श्रीकृष्णका युधिहिरको एक आरम्य करनेकी आज्ञा देन

demonstrate from the property of या व्यक्तिको नीहे स्टेश दिन, इस संस्थ पुरिन्य-पूर सुपारे निरामें रेवती वेदैन्यमान क्षेत्र राजा। निरा को निरा करणेयारे प्रकृत का परको क्रोक्सर गाया है भने । इसी प्रतय आव्यक्ताची हो-'केवन | तुन क्या हो |' ताब है 👊 प्रभावित अन्न प्रक्रानेकको परम क्या । इस प्रकार सुन्तरे निवासी पुरस्तीयन निवार । अस्त्राच्या चेत्र स्थानक व्यक्ते काब और करके जनुसर इक्किंग क्रिको एना। यह देशकर परवर्गकर्मा सभी कियोगो नही प्रशासन हुई। उन्होंने शीकुन्मधी अवादी प्रक्रानीको पुरस्का स्थीतकार साराधा । विशे में पंचा जानगरना होनार सीकृत्यको पूर्ण-पान करने राजी । पैसे पहिले पार वालेकरने प्रमुख्येंको जाव पायर क्या सहते होती है, उसी जबार कुन्ती, डीन्सी, सुन्दार, उसर तथा करवरची अन्य विक्रोंको करनको जीकि होनेते मन-ही-पन अपूर हाँ हुआ। जानपर, कुर और पानकीर 'मनदान, बीकुन्तरको स्टेबर्न विका । और संयोग करना सहर जुल्ला की। अपने पुल्ले स्वयं अवस्त् अविकालको जनका

वित्या और श्रीकृतनरे भी जाता हैनार का वास्त्याकी भाषून में का क्यानमें देशे । वित्र क्रम्य स्पृतितामें भी नांश जानाओं बखुदे मेंद्र भी । इसके क्या सारातीय श्रीकृताने सुमारे विकास इस जातार मेनवारण क्रिया—"कुरुकुतको भीतान है कारेशर का करियानपुरस बारक जाता हुता है, इसकिने इसका नाग "गरीविद्य" हेना स्वाधित ।

वन्नेका ! इस जवन नानकार्य हो वानेके का हुन्हों हैतार परीविद् करकार्यने कहे होने तार्ग ! को ही उनकी और नेकार, उसका कर जरता हो जाता था ! हुन्हारे विकासी आयु जा एक महिनेकी हो नहीं, उस समय कामान्योग बहुत-सी का-रावि सेका हमिलापुरकों स्वेटे ! बहुविवर्णने का सुना कि कामा नगरके समीप जा मने हैं तो वे उनकी आपनानीके किने कहर निवासे ! पुरव्यस्थिते कुर्गोकी कामान्यों, वित्यस्थाने कामानों और विविद्य निवास कामान्यों। इतिकानुसको सम्बाध । जर्मने कामे करोकी की समानका की ! विद्यस्थीने देकमिट्टोनें क्रियेक जानस्से पूर्वा करनेकी काम हो। राजमार्ग काम जानस्के कुरुवेसे असंबुद्ध किने भरे । ३३ समा काले काले क्रांतर क्रांतरमुखे करें और | आक्र के हैं। अब क्रांट का से के आवश्य करों है, पताबारी प्रकार की वीं ।

अविकृत्य अपने विश्वे और परिवर्षेट स्वाट उन्हें मिलनेके हैंको बारे । इर कुछ होन्की अपने कहकर अन्यक्तरी मी और सब एक-क्लेके साथ क्योग्सर निले ( सरकार) पाला और पहांची मेरीने एक राज केवर क्षीतावरूने प्रमेश किया। यह समय कावट कावट कावेट समी-आने was we are wrong and that after salestation बार जार है। है इस्तीय होकर करने पाने पान बारक्रके पात को एक सको अन्तर-अन्तर कार बारकार कानेंड परणोर्ने प्रणान विकास प्राप्ताहरे विवरनेने पात ने परनारी, पुनर्क और निवृत्त्वीया क्रमान करते हुए पुत्रहते fielt seit me mit gut finit un meine करान्य अस्तुत एवं सामार्थनामा करान्या कृत और मनाम् बीकुमके का अलीकिक करेवी यह कुरवर क्रमणी पाने उत्तंत्र पते ।

polt sit fer un upbent menten कारानी इतिकारतमें प्रवारे । कार्याने कार्या क्योंका कुमन निरुक्त और पुलिन एवं अन्यक्रमंत्री वीरोके साथ वे अन्तरी भेजाने केंद्र गये । वित्र पाना प्रकारकी कार्यालंड कर कर्मनका युविहिस्ते महर्ति व्यवस्ते यहा ---' व्यवस्त् । ३०००ी । क्रमाने जो या या रचना गया है, जान्या अपनेक-काने कानोग करना पाइक है। इसके मिन्ने सामग्री अवस्था sellige \$1 per une mire aum afte reverse absende कारीय है।'

काराजी का-प्रान्त् । ते कुदै व्यक्ते हैंनो वार निरोध ।

को साराम करो । विभिन्नके पहिला देवर अधनेत-सहसा पाक्रमेंचे स्थाप अनेको का सुमार करून अञ्चल करे। अक्टेन-का सन करेरे कुमार द्वीराजेक्का है। बहुबा अनुहार कर्मा हुन निःसंदे पापरे liger if water

क्रामिक का प्रकृत प्रकृत क्राप्त का अधिकार अक्रेय-या साम्य पारंपा विचार विचार गाउँ पाराची नका रेका वर्षी प्रकार श्रीकृतके यह पाका mp-grown i pr mak if armit and अभिकारों किये हुए कार मोनोका प्राप्तेन यह से है। जानों है जाने पताल और प्रतिके भागों है। राजारी पुन्तिको चीचा है, साथ साथ ही चारती दीहा रेगार हात्या अवस्था बोर्टिंग्ये; क्योंकि अस्य पूर्वारे करण पूर्व है। नार्व अस्य पाला अञ्चल कोने हो निश्चन है हमते हम पर पर है mild : me & etc. topt, triber, qri, starth aft क्यूनों पूर्वाची गाँउ है--ऐसी नेसे निर्देश बारण है।

अंक्रमारे कार-मानुष्य । यह प्राप्त अन्तर्य हो पोन्स है। बेट के देख कियार है कि आप है समूर्व प्राणियोग प्रकृत केरेकारे हैं, क्वेडिंड अल करेरे प्रकृतिक हैं। प्रकृतिक मार्ग्य सह जनम सहन्य है तथा आरम्पे अपना समा एवं पुर कानों हैं। इस्तीनों आर इसरी अपूर्णाको कर्य है क्षत प्रकार अनुसार परिचित्रं प्रका प्रमानेकोतेले विकासी विका कारण रूपाय पद्धते हो, इसे इस स्टब्नें स्थानेकी अद्वत कृतिको । मैं कारकोर प्राप्तके प्राप्ती प्रतिदान प्राप्ता है कि कार्य को कुछ करेंगे, जा कर करिया। आर्थ्य कर जा हेगेका धीरतेत, अर्थुन, स्मृत्य और स्क्रोनको धी प्यानुप्रस्था

#### व्यासजीकी आज्ञासे अश्वमेष-पज़के लिये छोड़े हुए अश्वकी रक्षाके लिये अर्जुनकी नियक्ति और घोडेके पीछे उनका सेनासहित जाना :63

ऐहा सहरेक अर्थक सुविधीको न्यानबीको सन्त्रोतिक कर्या बद्धा-'मगदन ! यह अनको का बारण करनेका ठीक समय बान पर्ध तमी आकर को समग्री दीका है, क्वेरिंड मेरा यह आयके ही अबीन है।"

कारको सह—स्वरू ! जब सहस्य सम्बद्ध कारोब, । कृत्य विदेश का समा थे, पेर और प्रक्रमण—ने सर अपन

कैराप्यकार्थ करते हैं—कारोक्त । धनकन् क्षेत्रकारेः ितन्ते कार्यों केंद्रा के पालके, समाव्य दूस कार्यः रिप्ये क्षानारे एकरित करे । अवशिकांदे इता सूर और उन्हरून पहले रिजे परित्र अधुनी परीक्षा धारे । यो अनु रिक्षिण हो, उसे कासीय विविधे अनुस्वर कोड़ा बाप और यह सुद्धारे केंद्रेयका वसको बेस्सा हुआ समुद्रार्थक समझ प्रभीवर

का कुम्बर एक मुनिश्तिर 'स्का अवा' कावत विभिन्नांक तुन्तरम् का सम्बत्त करेने । कैनकी पुलिनाको । काराजीके कामस्तात सारा कार्न किया । उन्होंने कार्मे विय-जिन सामानोको एकानित करनेका शंकाण विका मा, उन सम्बद्धे पूछा लेनेके बाद महार्थे प्रमासको सूनाम छै। तम व्यासनीने कहा—'कान्त् ! इसकेन प्रमासका कार केन आनेका पूर्व देशा केनेके किया है। पूछा कीवारों पूछ सोनेके 'स्वय' और 'कूर्यों प्रमाद को कथा और भी भी सुवर्णनय सामान सामावका हो, उन्हें क्यार कारा कारों। आक सम्बद्धि विकेश अनुवार प्रमासनाको अवको सम्बद्धाः पूर्णनर पूर्णके विकेश कोइका पाहित्ये एका देशी प्रमासका करनी पाहित्ये, विकासे का सुर्द्धारकालो सुवर अतर विकार सर्वतः।'

प्रभितिते नक-पूर्व ! यह केंद्र ज्यांका है, इसके किस तरह केंद्रा जान विस्तों यह सद्वी कुळेले इक्कानुकर यून आहे । इसकी जन्मका अल ही प्रतिने क्या यह कें बताइने कि पृज्यीयर जेन्द्रानुसार विजयनेताने इस प्रोड़ेकी उद्याने विस्तानों नियुक्त विकास जान ?

प्राणंताम | मुनिव्देशके को मुक्तियर महिषे गान कोई--'राम्प | अर्थुर पत्र म्यून्यारेनीने के हैं। के विकास स्वाह रचनेनारे, स्वावतीन और वैनेका है। अर्थ से ही कुछ कोईकी रक्ष पर स्वोति। अर्थित विकासकार्यका पान विकाह, मैं समूर्त पुरस्कारों जीर्यकों प्रति रक्षों है स्वाह अर्थेत पान हिम्म स्वाह, किस पान्य, विका प्रमुख हिम्म प्राणंता है, अर्थ: अर्थे ही कुछ कोईक कोई-कोई-प्रत्य प्रति । के वर्ग और अपनि प्राणंता कोईकों स्वाह प्रति अर्थेता है, कुण्योति प्राणंता विकास स्वाह प्रति क्षेत्र संस्थान प्रति । अर्थ्य केवल कोई और स्वाह प्रति क्षेत्र स्वाह है, अर्थ: में प्राण-पान है और और प्रत्य प्रति क्षान प्रति स्वाह हुन्य-स्वाह नामकों है और प्रत्य प्रति केवल-पान करें।

े जास्त्राचीके इस प्रकार कारपनेगर कृतिक्षीतने कर कान मैंसा ही विका और अर्जुनाटे कृतका कोईके विकास के सिंसा दिया—'पीर अर्जुन | व्या कार्जे | कृतका निर्माण करन इस कोईकी स्वाच्या कर विका कार्ज है | कृतका निर्माण करन कर्ते | तृत्र्य इस्त्राी रहा करनेने सम्बर्ण है | कृतरे विजय प्रमुखके द्वारा का कार्ज होता कारण्या है | कृतका के रहक व्याप्त कारण स्वाना | अव्यक्त स्वाच्या क्याप्त क्षेत्र म करना क्षेत्र स्वाचन करने अर्थे, उनके सम्बर्ण क्ष्माण क्ष्माण स्वाच्या प्रकार कारण्या करने अर्थे, उनके सम्बर्ण क्ष्माण क्ष्माण स्वाच्या कार्ये अपने चाई सम्बद्धानी अर्थुनको इस प्रधार सम्बद्धा-बुराकर बार्नस्य एक पुनिश्चिरने पीमसेन और सुद्धानो जनस्य स्वास्त्र पर सीच दिवा और स्वास्त्र प्रशास क्ष्मा । स्वास्त्रस्य, वय सेवा हेनेका समय दूस से व्याप असी न्याद स्वीपनोर्ने सम्बद्धे विनिष्टांक स्वासी क्ष्मा है और क्षमें क्षित्री निवाद किसे हुए अवसी सर्व स्वासको व्यासनीने क्षाचीन विभिन्ने अनुसार कोड़ा । पिर वर्षकानी अवसी अर्थुनने यह चोड़ेका अनुसार विभा । विर वर्षकानी अस्त्राने अर्थुनने यह चोड़ेका अनुसार विभा । सामा हैन कुन्नसार पुत्रके स्वाप स्वाप का अर्थने नीचे वर्षके क्षमा अर्थुन सामीन-सनुसको देखाओं सार्थ से हैं।



अपूर्ण अपूर्ण वृष्णियं जीवाके कार्यक्षेत्र अने हुए दलाने पहर वर्ष के एक के बढ़ी अंशाउरकार साम अवका अनुसरण कर को के। अर्थुनकी बाताके समय कहेते रोकार मुझेरक साए इतिस्वपुर उनके दर्शनके दिनो अपद आया। बहाके पोढ़े और अनके बीके बानेकारे कार्युक्तको देखनेकी इकारते स्वेगोसी इसने बीह इकड़ी हुई कि आयरकार महत्वकोंके कोरपहरूकों अवकार और दिसाई दून कही। अदारपुद्ध अर्थुनने सुन, कहान्ये स्वेम कह को के—'बारस । तुम्हारा कश्याक है, हुए सुनासे आयो और पुन: कुसरपहर्णक वहाँ स्वेट आओ। ।' दूसरे कहा में के किसी अवस्थात पक्ष म है। में निश्चय है मुक्तरपूर्वक लैटेने और उस समय किर इन इनका दुर्वन है । यहका चेव्ह पूर्णाची अव्यक्ति करता दूजा सकते करेंगे (' इस अवहर पुरुषों और विक्रोपकी बढ़ी वह गोठी-पोठी मार्थे वर्शनार अर्थनांद्र कानोने पहले थी। पहलायन व्यन्ति एक विद्वार रित्य, को बंध-कार्गि बहुर क्या केट्री बरंखा थे, बिल-स्तरित्वे रिन्ने सर्वत्वे स्वय-साथ पर्ने। उनके रिका और भी महा-से नेवलेख प्रमुख्ये क्या व्यक्तिये सर्वतनको अञ्चल कर्वन अनुसार विकास का अनु मान्यानेक प्रश्न अक्ष-अल्ले कीले हां पृथ्वीके इस देखेंने इक्कानुसार विकासे सम्बन्ध का देखोर्थ कार्युसको सहस्रोतेक प्राप को बड़े-बड़े अर्पुत बुद करने को, इसकी कक तुन है उसओचे हार अर्पुतको बई बार बुद करना पहा :

पहले उत्तर दिखान्त्री ओर नन्त्र । जिस अनेको राज्योमें बुमसा-कारण कुर्व विकासी और पुरू करान स्वारणी अर्जुर की मीर-बोरे अपने की-की करे का रहे हैं। अन समय किसी कर् क्षान्य वारे को से हेर्स किन-किन राजाओंके साथ अर्जुकारे बुद्ध करन पह, कार्य नवन असम्बद्ध है। सामार और करूव बारण अरवेवाले बहुत-ही बिराता, पारत और महेन्द्र, जो क्यो महाकाल-पुराने कन्यानेकृत परासा किये गये थे, अर्थ्यका कारण बारनेके रिक्ते अर्था । पूरा करह निर्धिता देखींके

### अर्जुनके द्वारा जियलेंकी पराजय

र्वजन्त्रकार्यः सहये हैं—कार्यसम् । पुरुष्टेकोक पुरुषे की जिनमें और नारे नने थे, उनके न्यूपनों कुने और चैजेने अर्थन्ते साथ वेर यांच विन्या था। विन्या देशने वार्थना अनुंत्रक अनेर प्राप मेर संस्था हुन। 'सम्बन्धिक का-सम्मन्ति अस् इत्तरे कानकी स्थेकते का जीवा है का कार्यात विगर्त कीर कारण आहिते सुरातिक हो पीएका क्राचन वर्षि अर्थ चेदोरी को हुए रचना बैदाका निकर्त और यह अधनो वार्ग कोरहे देखार प्राकृतक कुरेन करने करों। अर्थन क्रमोर पत्था पत्थ सत्था पत्रे और क्यें क्रानिपूर्वक प्रमुक्त-कुलका केको सने, सिंहु क्रिनारि इनके क्यानिये अस्त्रेतमा करके अन्ते अंतर कान करकेन अल्ला कर दिया। अर्थनी वर्गमार प्राप्त विका और क्रैसने-क्रेसने कहा—'क्रांग्ले 1 और अपने 1 क्रीक्स्बर्ध प्रमाने हैं। तुन्हारा करनाना है।' कहाँने देख इसरीओ कहा है। करने समय धर्मनक श्रीविदाने का कदनार पना कर दिना क कि 'किन राजाओंके क्यूं-क्यू कुरुक्रेसकी स्कृती को गमे हैं, उनका का नहीं करता काहिये।' धर्मराकारी इस अवस्था कर करके हैं अर्थनों केन्द्रोंके और नारंकी माहा थै, तथापि वे स्पेटनेको तैका न हुन्। वह विश्वतिक सूर्ववर्गको बाजसम्बद्धोरे बीकका अर्थुन क्षेत्रने सन्ते। बह देखकर विपार्वदेशीय कीर स्थादी करणसाट और प्रतिकेदी कारायमे सारी विकासीको पुरायकार कको हुए काहरूका हर पहे। सूर्ववर्गने अपन हारालका दिखते हर अर्थको एक से बालोका निवान बनाया एक उसके अनुवारिकोर्क को म्हरू बहुर्वर बीर थे, थे भी अर्थुनको घर क्रालेखी इकसे उसर बामोको वर्ग करने एने; बिह्न प्रम्यून्यून कर्युस्ने अपनी अल्ब्राको होन्हे हर कन्मेंके द्वार क्युओके

प्रमाण सन्तरेको साथ प्रमाप : वे पाटे प्रमू काल पुरस्के-द्वारके केवर मधीरम कि परे।

(सुनेकार्वेड कवार हेनेका) सामा सेट पाई केतुमार्थ, को एक केवली कामुकार था, अपने पालीर हैली पाली सर्वन्ते साथ पुरू वाले रूपा । केतृपार्वको पाच कार केर जीवार अर्थुको को बीचे बीचेते कर कारा। अर्थें को क्रोपा कार्यों कुश्में क्यार सवस है बीह है का मनका और सर्वत्वर पान्येको प्राप्त समाने सना । कारण अर्थ कारण का थे भी कार्य देशे कृती देश न्यानेकारी अर्थकारे नहीं जाताता हाँ । यह नाम बाल हालाँ रेका है और यान को बनुस्कर पहला है-नुसब्दो कर्तृत भी नहीं देश को थे। केवल जान्यी बान्सकों ही जान्दी पृत्तिने पहले थी। अनेने एकप-प्रतिने बोडी हेरावर वर-डी-पर कुरवर्णको प्रकंत को और पुरुषे अल्क हैराला-पहाने तने। प्रथमि पुरुषक्षं लोग्ने समान स्रोधने पदा हता स स्वापि वर्डन्थ-बीर अर्जुन प्रेमके साथ ईसकार क्या जाते से । क्योंने करके क्रम नहीं दिखे। इस प्रकार अधित देवताहै अर्थनके हात का-सहस्रा क्रेड क्षेत्रे वानेवर काकानि इनके कार एक कारण प्रत्योग्ध जन्म प्रत्या : 200 अर्थन्त्रे समने वर्ध चोट आयी, अस्में गहत करा हो पदा ह अनुंख्यो बहुत का चया और कावा पार्चीय पहुर हायरी कुम्बर ज्योगक ज पड़ा। यह देशका कुमार्थ रहाका चारकर हैसने रागा । अर्थनरे अपने प्रकार रख पोड़ प्रता और कोचमें भरवार पुर: कर चनुरको क्रममें लेकर नामोपने कर्व करण की। एवं तिमरदिशीय बोट्यओंने वार्वे कोरले आच्या अर्जुनको केर विच्छा। का देशका कर्जुनने कार्क समान सोहम्प बालीकी कर्व करके उनके अञ्चल केन्द्राजीको भीतके कार जान हिन्द हैन से दिन्दी केन्द्राजीने प्रकार पर गरी। इक्षर अर्थुन केर-केरी इसकर उन्हें सर्वकार वालोगे नात्व जातक विका। उनके कालोगे पीड़िन होका डिगर्स प्राथिकोच्छे केन्द्रा पूर गरी और में वार्ते दिसाओंको धान करे। विज्ञानिक प्रकार होता अर्थुनो कहा—'कर्ष । इन का हुक्तरे अञ्चाकती

केवता है और पान हुन्तरे अभीन मोने। ब्रीस्कादन ! इस विनोध करानी माँदि हुन्तरे सामने मादे हैं। अपन है, ब्रीव-का मार्च करें? इस हुन्तरे समझ दिन मार्च करनेको तैनार है।' इनकी ने ब्रावे सुनका असून्ते नहा--'क्रमाने ! मादि जीनारको रहा माहते हो सो इनकी सामन्त क्रीकार करें।'

### प्राग्ज्योतिषपुरमें कन्नदत्तके साथ अर्जुनका युद्ध और कन्नदत्तकी पराजय

प्रोड अपनेतिकाले का अका नेका रूप। का प्राचलका पर कारण करने करने कर है। जाने का सुन्द कि कारकोच्या चेवा मेरे राज्यकी सीवाने का गण है से उनली बहुत विकासकर कहा चोहेको कहात हिल्ला और को साल रेकार करावी और स्वैदने रूपा । या देश शालका अधीरने मान्योग-बन्द्रमधी कंगर की हुए सहस्र कारर कर्म किया ह क्रांक्रीयने कुटे हुए मानोके आपने मानुसा क्षेत्रर क्रांक विकासने कोईको हो क्षेत्र विकार् और सार्थ सन्तर्भ प्रवेश वालो कार्य आसिने क्रातीयत् हो विकास परायक्तर समार होकी का पुरुषे रेले वाहर निकास । महरती अर्थुलेंड पास कारत काले पारस्थानम् और पूर्वताने स्थान को पुरुषे रीको सरकारण। परस्कारका प्राची पर्यक्रोड सम्पन्न केया पर । क्रमा क्रमान क्रमा क विकित अनुसर पुरुषि दिया है गये थे। यह सम्बोधे शबीन कुमन भी पुत्रने नतनान हे राजा था। नतनाने कृतित हेकर का हजीको अर्थको और पहाच । कराके अंक्ष्मिक केर प्राप्त का भूकानी नार्य का अस्ति। कोर प्रस्त्य से देशा जार पदा, सबो का आवताने का जान प्राह्मता है। परास्त्रको इस उत्पार सम्बद्धनय करना देश अर्थन बहोबार्व कर क्ये और फैल्प ब्रेनेका की प्रधीकर केंद्र हुए बक्रतमे बढ बस्ने समे। बक्राओं रेको सरका अर्थको क्रम शामिक समान रेजाबी क्षेत्रर प्रसाने । ने क्षेत्रर केंग्से क्रानेवारे प्रांतीको वस्त्र अर्थन्यः और यहे: बिन् अर्थ पास भी नहीं अने पाने वे कि अर्थनने गानीन करवाय बात-वे बान क्षेत्रकर अन्यसमें के एक-कर क्षेत्रके क्षेत्रके, प्रीत-तीन दुवाई कर क्षके । जा देश सामग्र अर्थनके कमा समाहार कालोकी वर्ष करने समा। यह अर्थनने भी कृतित क्षेत्रर सही पुरस्कि साथ वन्यक्रके पुरस्के सीने क्षेत्रके क्षेत्रेस निवृत्त करूर। स क्षेत्रेस क्षेत्र काकर जह पहान् रोजली राजा बहुत काला हो गया और

हम प्रकार सर्वृत्यक राज्य बनावाओं साथ होने विनोत्तक निरका पुरु होना पह । चीने हिर महत्त्वती नामहरे अनुसार कर्मा कहा—'अर्जुन | कुछ को या। अर्थ में शुरे केलिए न्त्री प्रोदेश । यहे परवार रापने जिल्ला विभिन्न राजेन कर्मक मेरी विकास प्रमाण की विलावेद विकास से को पी हुई क्रमारी कुला गर्दे । ये बहे थे, इस्तरिको हु इस्ते प्राप्तेने सम्बद्ध हो सब्दा है। साथ उनका बारका में हेरे सामने उपरिचा है। भी तक पुर कर ।' में स्कूबर क्रोमने को हुए पहल्ली पुरः कर्मुनारे और अवदः इसी पहला । सामीका इसाय कार का प्रवास इस-सा करता हुना हुने। महार्थी अर्थन्त्रे कर का मोजा। यह देशका की ने कार्यत की हुए क्षीक प्राप्तेके वैदका उनरम करके अस्त्रम प्रदेवमें पर गये । किन क्योंकी वर्ण करके उन्होंने पहरतके हानीको हम तक केट मिया, केरी मिनकरेकी चुनि राजुको बेनको केट देती है। काने इत्योच्यो काल हाल देश भगवतपुरूप सर्वेक्से मुर्चित हो का और जाने अर्जुन्यर **सेन्द्रे क्यांग्या वर्ष** आरम्ब कर है। क्रम है अने कांत्रका कारको करपूर्वक असे नक्ष्य । यह देश अर्थुको का क्रमीके उत्तर अधिके समान देवली नवच्या जार किया। जासे प्राचीके मर्गाचानों बड़ी क्यों केर क्षेत्रे और वह साथे भरे हुए कांक्टी कीह सक्त वर्णनार का प्रता । काले साथ की बाराय भी नीचे

आ नवार को भूतिक पक्ष हैक प्रायुक्त कर्नुको | है ।' व्यक्ति व्य साम सीवार वरके में हुन्तर कर नहीं क्कि—'राज्य । तथ को मार साथे साथ प्रकारे महारोकार्य राज्य पुनिविक्ते कह दिया का कि 'बस्हार । इस किसी भी राजाबर कर प करना और यह समझा में क्राओंके करा न रोजा। मानी जो सका निर्देश करें विकास में हर पहल-'सारतोप सकी हर-विकेट कर चरित्रोत अवनेकालो कारकर स्थापि सामने का | कारको सहा—'बहुत सका, ऐस ही प्रतिक ।'

करेना । तम पूर्व कोई का नहीं है। उसे और सुक्राम्प्रीक क्षणे परको साओ । अन्यामी सैककी पुरिश्वको कर्मसक्का सक्तेत-का अस्य हेना। जा समय हम जावें अवस्य

अर्थु को देश सहीका करते हुन परान्त हुए कार्याल्या

### अर्जुनका सैन्यव वीरोंके साथ यह और द:प्रकाके प्रयवसे उसकी समाप्रि

**पैराम्यकार्थ व्यक्ते हैं—स्वयू (** Market. महाभारत-पुरुषे करोते को हुए विश्वविक्रीय कोरोड साथ मर्गुरका पुद्र हुना। यहाँद मोहेको सन्ने कन्नको सीलाहे भीतर पायर निष्पुरेतके निर्मते इतिय अर्जुनो पनिया की कार्यात गर्री हुए। ये पहले संस्थानी अर्थुनते पराध्य हे पूर्वः में और तम जो जीवन चाहरे थे, इस्तीओं का पहलाताओं बीरोंने कर्मको करों ओरने नेर तिल्क और करें अको बालोब्दी करोहे अध्यानित का दिया। वे एक इक्ता पर और क्षा क्यार योद्योके वारक्षणको नेरावर पर-क्रे-पर बहुत प्रसाद हे से थे। कुरकेरोर बैक्सरे अर्थनोर हरा को प्रकारक पर पूजा था, जानो पर अने कभी सालो भी हो। जा में नेक्के स्टान कारोंकी क्यों करने रूपे। उनके कारोते शास्त्रकारित होबार प्रातीनका अन्तेन स्वापीने क्रिये हर करेती जीरे क्षेत्र साथी है। को सम्मदेशे वेदीन हैन रीनी कोचोने इक्टबार भक्ष गया। का क्या कारकांड बारण कर्तुन्थे इससे पहुत और एकार्प मेर च्ये र क्रां समेत अगरवारे पासर क्षेत्रक बोद्ध बड़े केरोड़े पूरत क्षण-वर्ष करने करो। अर्थुन्त्री संस्थाना विश्वीत्रा कारण करके केलाओंके करने जब तथा गया और के इनके निर्म प्राणिक अपन कर्म तथे। संस्था देगताओंके प्रचानों अर्थुनका केव पूरः प्रदेश है। कहा और क्षेत्र अवस्थिते पार्नमारे पाप प्रतिकर क्यान संवाय-पृथ्वि पर्वत्वे समान अध्ययकाले बाहे हे गर्व । बिर अधेने अपने विम्य समूचन अधार है। इंट राजन करते प्रशासकी तथा को कोर-बोरने सरकाय होने राजी। प्रताके बार की प्रद्र करीकी कई करते हैं उसे एक अईके क्षत्रमोके कार मानीकी हुनी राजा है। जिस के कार्का बानोरे आकृति है केवा केवा रेकिनेरे को इर पश्चीची पन्नि करने राजस्तित समूच हो यने। विक्रो ही नामांक्यो जावान सुरक्त को हो, बहुते करहे साहुक

हेका भाग भी और जीवों चेखा सोवारे साहर हेका साह बाले क्या संदय होने रहते। यह सबस अर्थन माराज्याची पनि पुरूष्ट्राच्या सामानेको वर्ग पत्र से वे। क्योंने प्रमूप्त विकालीने प्रकारको अन्यन मानीका कार-का केवल दिया। कारपार, रिल्क्ट्रोडीय और सिरही रंग्यीय क्रेक्ट को के को और क्रेक्ट करका क्रमीओ पृक्षे काले करे। यह कांद्र आईओ रखेला प्रेस्ववीते का-'बेक्से ! मैं हमी कारान्ये का का का है। पुरुषेते के कोई अन्यो परायव स्थितर करते हुए का कोन्स for "A service & servicings mark with from &" my कारों कहा हो हो भी में उसका कर नहीं करोगा। मेरी का का क्रमा हुने निर्मा अन्य के दिवाने के, क्र करें । ऐसा काकर कुर्बाह्य अर्थन अरूप कृतित हो हरेकरें को क्य केवल क्षेत्रके क्या करने रहते। इस क्षेत्रकेति अनेकर अन्ते कार्यक प्राप्त विकाद सिंह कर्मी अन्ते क्षेत्रे सम्बद्धीने इन सन्धे कार्यको बीकते ही कार क्षेत्र और जनेक पोद्धाची तेन किने हुए डीरोबे जीन दिया। यह देश प्रवास-प्रवास प्रतास करते हैं कारी अर्थकों करते हैं रिको पुर: अनोट प्रान्त प्रतिक और प्रान्त प्रतानो, परीह केनोट केवान कर्य है की । पहली कारको रूपने प्रति और ज़लोंको केको हो कारकर को जेसो प्रजंत की और fermine for super what fails रक्तकारों के स्वरूपेने कार-कार्यात गिराने सने ।

राज्य केंग्योची यह को तान प्रताहकी पूर्व ुकार अन्ते की क्षाप्रके सामग्राके सुन्द से रूपार समार है स्माधुरिनों जारिया हों । असके सामेवा अहेरर पह वा कि का केन्द्र पुद्र क्षेत्रका काय हे जाने। सर्वनके प्रस कावर का उपलब्धी केरेकारी। को सबने देख काकूबरे भी अपूर र्वेषे प्राप्त दिया । वित्र वर्विश्वा विशित्तवू स्वावत् करते हुट् मेरो-'मापानी ! पानमें, में इपाय चीन-स कार्य



करी ?' इ:इसमें बड़ा—'बसकेंद्र ! यह तुम्हरे भारतेवा क्षत क्षत्री जनाम करता है। इसकी ओर देखें।' वह कुरकर -कर्जुन्ने पुत्र-'नव्हेन ! इस काराव्यके निक कर्जु है ?' 4 करन केली—'कैश | के कुद कुरको स्क्रोनो कुन रका मा कि अर्थुनके क्रमरी ही मेरे विकासी मृत्यू हुई है। इसके नाम पार प्राप्ते प्राप्तेने या इन्हरून पह 🕯 कि अर्थन क्षेत्रेक राजे-राजे पहारक उद पहिले 🖁 तो का पानके को संवापने पीवृत होचर पृथ्वेपर विर च्या है और असे क काने जल-पर्यक्त का गर्ने हैं। को इस अवस्थाने देख उसके पुनको साथ नेपार परण कोनको हुई तथा मैं हुन्हरे पहर कार्य हैं।' व्यू प्रकृतर व्यू अक्टर अर्थ होतर जिल्ला करने मनी। मानदे दीन-क्या देख कर्युप्ते औ क्षेत्र प्रावसे क्रवत सेर जेवा कर रिष्ण। करन्या दुनस्य किन कहते रूपी— 'पैया । तुप कुरकुरूपी सेंद्र और धर्मको करनेवारे है। कु दुःदिक कीन और सपने पानवेके कुम्बी और देखें। मन्तुदिह कुर्गेशन और सन्त्रक्षको कुर कर्म : केरे अधिकक्षे महिद्दार क्य हमा है, करी जनार कुरवाने मेरे इस फेक्की कार्यक हा है। क्रमें मेर्ने रेक्ट कार में हुक्ते करने करी है। रे जानी है जब केटा करन के नामें और दूस इस निर्देश क्रियुक्त कुन्छ करे। यह तुम्को कालोका महत्वक रक्षण क्रान्तिकी चीवर मौत्रता है। जाः प्राप्त हो पहले । व्य निय समोग है--कुछ नहीं बराता, इसके पाई-कप् न्य के पूर्व है, अब: अन इसके करर दक्त करो । इसेव साम से ।

इ.समाहे ने कामानुक सका मुख्या अर्थुनके दुःस और क्रोक्स पेनेस एक क्याह और गामाध हेरीका करण हो सामा और में कृतिय-कर्नका मैरास्कर करते हुए केले---'एकके होची और आधिकारके पुत्रहे इस दीव कृतिकार्क विकास है, विकास कारण इसने अपने साथे क्यू-क्रम्पर्वेको प्रकारिक केन दिवा । यो बहुधर अर्थुनी कु प्राथमको बहुद १६५०मा हो और प्रशासन्त्रिक निरम्पर औ पाची और निक विका। इन्हरूपे की वह महान प्रक्री अपने चेन्द्राओं के लेक्स और अर्जुनकी प्रशंस करती **व्हां अस्त्रम्थान होकर यह करको सीट गयी । इस प्रकार सेन्क्य** वीरोचो पराक काचे बन्दान हेगीके दाव आगे वहनेवाले और बोकापुरसर विकानेकारे इस पोड़ेन्द्र पीछे-पीछे सीत नरिसे चरने रूपे। केंद्र समझः एकके बाद इसी देखने भाग और अर्थुको स्थानको बद्धार हुना इकानुसार क्रिकरने रूपा । पुरस्त-कारका यह अर्थुनस्रक्षित मणिपुरस्रेतको रुवने स योगः

# अर्जुन और अञ्चवाहनका युद्ध तका अर्जुनकी मृत्यु

बधुतकारको का अपने विकासमूनके आनेका कराकार नित्त तो व्य अञ्चलको आने करके बहुत-सूर वन सहको रोपार वही जिल्लाके साथ वर्षानके लिये नगरसे बाहर निकास । मजिपुरनोकको इस कार्ये अस्ते देख कार बुद्धिया प्रमुख्ये इतिव-क्षांका शतक करके उतक शादा नहीं किया । वरिक क्षत्रित क्षेत्रर कक्ष—'चेट ! रेव भर देन ठीक नहीं है। ये महाराज मुख्यितके बहरायाओ

वैतन्त्रकार्य कार्य है--तकर् । अधिकृतके एका | कोईकी एका करका हुन्य होरे प्रान्तके पीतर अपना है जिए भी इ सुक्रमे पुरू क्यां भी करता। पुनी ! ए क्षांक-पानी र्मान्यम से मुख्य है, इसलिये हुई विकार है। संस्तरमें केरिय क्षाका क्षेत्र कोई पुरुषको नहीं किया। तथी तो पूर्व कुर्दे रिप्ते आये हुए जानकर भी हु कान्त्रिपूर्वक साथ हे जनेको अन्य है। नहि मै इंडियार रककर काली इस हैरे पास अवस को मेरा हुए ईन्स्ते निरूप सीवा को समस्य था ।

सर्वृत का क्यून्यासी अर्थुक को क्षत से थे, सरी

सारव बढ़ इस जारका कारकाचा उत्तवी करती बीरकर बढ़ी आ प्रदेशो । उसे अपने क्यानियों करोर कर नहीं सही नहीं । इतिको असे अध्यक्षिक करिया करता वहा—'केट ! में सुकारी निमाना कारकाच्या करूपी है। नेरी बाब कार्य, कार्य हुने पार कांद्री प्रहि होती। हुन्हरे विक कुर्वकार के पूरूप और पुरुष्के पहले रूपके सुनेवाले और है, अनः इनके सब अवस्य पुद्ध करे (बड़ी पुनके रिन्ने अपूर्विक सरकार होगा) और देशा करनेते हो ये तुम्हरे कार निवेच प्रसा होंने। माराची पढ़ मार सुरका पढ़रेगानी बहुव्यानी मा-हे-पर पह सरोबा निश्च दिया। जाने हर्मान was spring surpris book forces were fire रक रेकड़े सरकारेने के हुए, का प्रकारके बुद्ध-साम्बीके कुल्लिक, करके अच्छा केंग्यान केंग्रेके कुछ, बाह और आवर्षक वसुनोसे पूर्व, धोनीर धानोधे विश्वविद, विश्वोद विद्वाराते नामाने सुरशेषिक और गोर्नके करे हुए परन प्रका रेकार राज्य हो अर्जुनार श्रम्भ किया । विकार अर्जना जा बोर्स वार्थंड संस्कृतमें क्रिक्टोबारे क्यूक्टक्की बोर्क्ट्रो अ५-दिश्वाने प्रयोग पुरस्तिक प्रयास विकास केरेको पराद्य गांव देश कावायात किय बहुत अतंत हुआ और वे रकार की पूर् अपने पुल्को पुत्रके बैक्सने असे पक्षके बैयाने प्रात्ते। राजा कन्नाव्यको बीच्यर अर्जुनको विस्ति करिरेंके कारण व्यक्तिके और तेन किसे पूर् सेनको बाजोके afteret gebalt unt Offen finer : fiem abr um fint प्रसार क्रेकर तथा थे में १ करके का पुख्रानी नहीं तुरुत नहीं भी । यह संसाध देशक और असुरेकि संसाधको भी गाउ कर भा था। बाह्यस्थाने हैलो-हैलो साईन्के गरेकी हैलाले इक बान पार । वैसे प्रति अपने विसमी पुत्र पारत है, अर्थ प्रवाहर बाद बाला कर्युंच्ये प्रतीहर्षे पश्चानकी प्रवेश कर पता और जो बेक्सर पृष्टीमें राज गया। सरवी पोक्से अर्थ गये बादी बेदन हो । में अपने क्यून्या स्वाप तेवार मुर्वित सम्बन । वार्य अभी ।

निकोश के पाने । बोदी के बाद बात करें केल हुआ तो अपने कु बच्चमहरूको प्रकृति करते हुए क्षेत्रे—'बेटा । तुन क्ष्म हे ! विकासकारका । अस्य हुनने अस्ते सेन्य परास्त्र दिस्तरका है। इसे देशका पूछे की जरका हाँ है। अंका, जन में कम करता है। दून सम्बद्धार क्ष्में दिवर हो काओ ("

हेल क्ष्मार अवृत्ते करकेंद्री कर्ष आरम्प कर है। चन्द्रीय-बनुको हुटे हुए वे पाराय इसके पत्रके समाव पान को के प्राप्त क्या बहुबबुकर काल करकर का सभी पारकोके केन्द्रे, कीन-तीन हुक्के कर दिले। एक अर्जुनने पुरुषकार बरावार दिल कालोके उद्याने पञ्चनकारे १८४वी सुरक्षां कार्यक्राके समार केली पुरर्गायके समा पाट निरामी और काफे बेक्कन् केंद्रोको भी भार दश्य । बोद्रोके कार्यकर प्रभूतकार रकते उत्तर पद्ध और क्रोनमें परवार वैद्या 🛊 अपने निकारे पुत्रु करने रागा। पुत्रका परकार बेककर अर्थन को अला हुए और उन्होंने को अधिक पीड़ा नहीं क्षेत्रको । इस स्थापना निर्माणी पुराते निर्माण होते कारकर पुरः सर्वेद सामा व्यक्ति वालोने को पीवा की आरम् को । जाने पारत्याचानके कारण परिवासकर विकार हिन्दे किया ही निकासी क्षातीने एक सीवी सानवार कोसहर अपूर विकास का बाज कर्जुन्ये वर्गानास्त्रो वेजनर पूर नक और अन्य प्रकृति राज्य । जानी चौरते जानन कार्यात हो कारेके बाराय युव्हित होकर क्यीनवर पिर पहे। प्रभूतक में अर्थनों क्रमीक्रा महोते हैं यहा प्रान्त है कुरत का, इसरियों का भी बेहोना होकर पूर्णीया जातिकृत कार्य राजा। वसुवाकरको बाता विवादको का देवा कि भी। और पूर्व केने बराधनी हो गरे हैं से उसने प्राहित इसको रमाञ्चीको प्रमेश किया। नहीं मानेवर को चीत्रेय अर्थुन को हुए विश्वामी विथे; प्राथ्मी अकाम देशका च्या कर्मन कर्मा और क्रोमाने संग्रह क्रेमन अस्तर विस्तर

### जित्रपुर्वाका विरुप्त, बच्चवाइनका शोक, उल्प्रीके प्रथवसे अर्जुनका पुनः जीवित होना तथा उन सबकी बातजीत

वति-विच्येत्रके कुन्त्रके संबद्ध क्रेक्ट बकुत विस्तर करती क्ष्री व्याच्या सम्बन्धियानी अर्जुनकी क्रमा की है। रामधुनिमें सरकार मुर्कित हो नवी और पृथ्वीपर पिर पहीं । कुछ देर कहा का । पहे हुए अपने सामीको आधारूप मी बी-परवार ऐस्त सी । को होता हुआ के कारे देखा, जनवन्त्र करूपी दिवा कर । हुन हो केंद्र वर्गको जननेवारी और वही परिवास हो न ?

वैतन्त्रकार्यः करते हैं---वारतेका ! विकासक | समी---'क्रमूरी ! देखी, तुम्बरी ही कहनेसे मेरे पुतने बाल भारत किये राजने स्थ्री है। जो देशकर बिलाइन कहते | प्रतीने सुन्तरे मधिक आस सुन्तरे ही प्रकार मार्ग सामर रमध्यित से से है। महिन ! मैं हुआ अनुनेत सामोगी मीम समिती है। हुए इन्हें नीता कर है। सामागी ! हुन्हें इस क्वेंबर अन्त है और डीमों सोमोंने हुन्हों सामी कैसी हुई है (अतः हुए स्वाधितों जिया समाती हो)। सामें ! में अपने केरेक निम्ने सामा सोम्ह मही सरती। युद्धे से इन परिनेत्नों ही हिन्दे सामा सोम्ह हो सह है, विश्वास मेरे महीं इस अगार स्वतिन-सामार विनार मेरा।!'

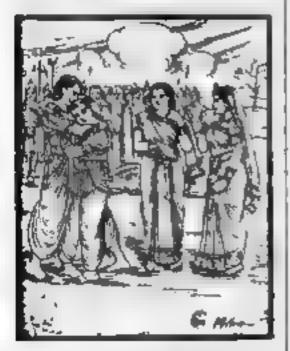


निरायक्ता स्ट्रांसि इस अवार संद्रांस पंता वालियों रिकाइया अपने साली अर्थुन्ते सात जाकर योगी— 'तिकाम । अते, की दुन्तर प्रोड़ कृतक निरा है। हुने से प्राप्त पृथितियों का-सम्बन्धी अवार्ध पीड़े-मीड़े साथ है; फिर पड़ी कैसे सो रहे से ? समझ बीगांधि अप दुन्तरे ही सभीन है। हुन से कुरांधि अवस्था है, हुन्ते कर्न कैसे प्राप्त अप दिसा ?' (श्रांसी कर यह अपूर्वरों किर कहते सभी—) 'अपूरी ! प्रतिवेद पृथ्वितर मेरे पहें हैं, इन्हें सब्दी तरह देश जो : तुम्मे बेटेको अवस्थापर सामीब्दी क्षण करावी है, क्या इसके किने तुन्दें सोचा नहीं होता। पृत्युक्त प्राप्त प्राप्त है, क्या इसके किने तुन्दें सोचा नहीं होता। पृत्युक्त प्राप्त प्राप्त है, क्या इसके किने तुन्दें सोचा नहीं होता। पृत्युक्त प्राप्त प्राप्त है, क्या इसके किने तुन्दें सोचा नहीं होता। पृत्युक्त प्राप्त प्राप्त है। किन्दा विकासने पति और प्राप्ति किन्दा स्था प्रतिवासी एवं असूट क्याची है। हुन्तरस्थ में इनके साथ बाहे सामा है। इस सम्बन्धानके प्राप्तवादे समझो और हैता अवन करे, निरासे हुन्हरी इनके साम की कूँ मेरी सार एवं सार्वक हो। हुन्हींने बेटेको साहकार में। चीकी कार ही है। बीर आम पुन: हुन्हें बीकित करके नहीं दिखा होगी से में मी आम आम हुन्हें। मेरे पित और पुत्र सेनों नह हो गये; उनके किया में अन्यान फोक्टमें हुए की है और हुन्हरे सामने पहाँ ही आमोनकेहन (आमरण अस्तान) के हिन्हें मैठती है।

धनुर्वेशे देश प्रकार विवाहक संपाल-सा बारण करके पुरस्ता केंद्र राज्ये । अवस्थार राज्य वाध्यावस्थाने होता हुआ। यह अपनी पालको एकपृथिने वैदी देख दुःसी होयह बक्ने रूप — हुन्य ! वो सम्बद्ध सुम्लोने पाने की, बड़ी मेरी नाव निवाहक साथ मुख्ये अधीर होवार पृथ्वीयर यहे हुए कारने और प्रक्रिके एक्स भरतेका निवाद कारके केंद्री वर्ष है । हमारे जन्मर कुमानी बाह और पन हो सनते है? हंकाओं किएता का करण कुरोपे हैंस्ने विकास सहित है, ज्यों मेरे विका अर्थकारे आक यह मेरे ही हत्यों मीतनेह मुखारें को नेतर को है। कार पहला है सरावारत आने दिना दिसके भी भीतना मान्य पह सारित है। हमी के इस इंक्टबंड समय भी भेरे और नेते पालके प्रका नहीं निकारी। हार । सुते निकास है। प्राकृतके । में विकासी कुछ कार्यवारस, कुरसावी एवं न्यान्यपी है। यसाये, मेरे प्रियं अस स्टीप-सा आयक्तिस है ? जनवनको पुन्ने अपूर्ण । देखो, अस्य पुत्रुपे मेरे हुन्हारे क्रमीचा कर किया है, कावद हातो गुकरा देख हुआ होगा: मिन् भी । में से सामग्री सीमान प्रमान सहस्र है, जब इस करिस्को नहीं करण करिन्छ। जहीं मेरे विका गये हैं जहीं में में क्षांत्र है हैल बकार एक बहुबक्को हुआ-होवहें मेरिक के सरकार निरम और को प्रेसिंड प्रश्न कर प्रकार वक्---'संसारके चरावर प्राधिनके तथा नाम उत्तरी । आध तम स्वेन शुने, में तबी कब बता रहा है। यह वेरे दिया नरतेष्ठ अर्जून अस्य प्रतिक क्षेत्रर भूति रहे से मैं इस रमामुचिने हो उनकार करके अपने करीरको सुका अर्दना । विकासी हान करके राज केंद्र रिप्ते कुरता कोई प्राथकित नहीं है। वे पान्कुक बनक्का नक्का रेक्सवी, कर्वासा तथा मेरे दिशा वे । इनका का काके मैंने नकुन कर किया है । उस पेरा कहर केले हो समाज है?' में बहुबर अमृत्युपार वक्तानो पुरः सामान किया और सेम्परंग स्वयास्था का तेकर कुरवाय केंद्र पदा।

क्य अनुमैने संसीवन-परिवाध करत किया। वर्गोके जीवनकी आवस्त्रक का चीत असके करत करते हैं कहाँ का नकी। को कुमने सेकर वागरावकुमारीने कहा—'मेट ! उटो, कोक न करो। अर्थन कुमरे करा देवता भी हुने नहीं जीव सकते। यह के मैंने श्रुप्तरे नकती विकास क्षेत्र करनेके दिन्ने मोहिन्दे चल्क हिस्स्वारी है। तुन सको हारा कोई पाप होनेकी स्थीधन की कहन न करे। ने महत्त्व नर पुरसन व्हरि, समात को अधिकारी है। स्टार्ने कर भी अन्तर्भ नहीं का सन्तर्भ । सो, में यह दिना चर्चन से आनो है। यह अपने सर्वते सन्त को हुए करीनो सीनित विकास करती है। इसे अपनी विकासी सारीनर एस हो। क्रमान्य रचन् होते ही ने तुन्ते जीविन विद्यार्थ हेते :"

कर्मोके ऐसा बढ़नेकर करित तेवाली बहुव्यक्ती की प्रेमके साथ निरामी जारीयर का मॉन रहा है। आने रखते ही सीरवर अर्थुन देखक प्रोतेके कह को हर अनुकारी असी मीमिता हो को। अनमें मनती निवामों समेद और जनन हेकार प्रमुखानने उनके चलनेथे प्राचन विकार । यह समय कृति अर्थन्ते कार दिन कुलेबी वर्ग की। देनवालेकी कुटुरियाँ किया क्याने क्षेत्र नेव-नर्वायके समान प्रमात कृतने कर करी। आकारने "सायुक्ता" की बनी पूँजने शाहि। महाबाद् अर्जुन कारीवाति काल होका को और



बच्चवक्रमध्ये इसीसे रूपकर अस्ता मतना सैयने समे। इतनेहीने संपूर्णके स्वयं कुछ शुरूर स्वते हाँ प्रश्नुकारणी मालपर करकी दृष्टि पड़ी, से लोकमे दुर्गल हो दही की। उसे देशकर अर्जुनने अनुसीते पुत्र-- 'कान्यन्ये । इस स्वप्नानिने हुन्तरे और बपुराक्रमध्ये कालो अनेका क्या कारण है ?

कारता नहीं हुए हैं। ये अनुकारकोड विको अनेन हैं। इन्ह आहें | युक्तरे का बहुबबहरती कारकारों कृष्णरा कोई अनिह से नहीं-है एक अरुक उनकुमार्थ निवासको से हुन्दात कुछ। अवराज नहीं किया !" क्या प्रश्न सुरक्तर अनुनी हैन पड़ी और! बेली-"प्राथनार ! अपने क अञ्चलको केरा कोई-क्रम्य की विका है एक जनुमक्ताओं कार भी मेरा सुक्रं न्हीं विश्वास है। यह से तर श्रामंत्री मंति मेरी अवस्थित अर्थान रहती है। यहाँ आवार मैंने विस्त प्रवास यो-को सनकः किया है का बाद सारकार्ध है, कुनिये । यहले आरके परजीवर कार प्रकार में प्रारंप करते हैं के बेरेड़त से पूछ, अवदास हुआ है, व्या प्राप आवनी चारानि जोरको हुआ है/ क्रांको सार पुरस्त होथ र परिकेश प्राथमाने बुद्धारे विकासीको अस्य रोकर को सामने पीनप्रीका वध विका का जब कामडे सारिको दिनो बसुओंने एक काम कारतन्त्र । कारोबरी बात है, मैं अपूर्णीके तराग गयी थी । वर्ष चीनकोची कुमुद्दे कर देवल और यह एकतित होकर-कार करने कार्य : इन सामे पहार्थको जिल्लाम गा। पर्यकार का को-'वेर ! प्रायम्बर केन कृति सर्व कुछ कर को से के भी जानावधी आईओ उसका पन जिला है। हार अवदायके कारण हुए उन्हें संदर देश कहते हैं (इस्सेर रिको जान अद्या (हरिको) । यह सुरकार महाजीने कार-'श्रे, हेवर ही होना करीने ।' अनवी करें सुरकार कुरें कहा कुन हुआ और पारामने हमेड़ करके मेंने अपने मिलसे म्ब सारा प्रकार का सुराता । यह सुराता विकासिको स्री का के इक और वे बसुओंके पत बाबर जायके कियें क्षा-मान्य करने सने । इस्के ब्रांचार प्राचेन करनेवां कार्जें कार हेवर का - 'सहवान । सीनारका कार क्या बहुत्स्मा अनुंच्या पुर है। या संस्थाने कहा हेका-तक अपने कामोले उन्हें पार निरामेक, उस समय अपने इस-क्रमो प्रत्यक मिल क्रांच्य । अब हुए अस्ते स्थानको साओं।' पहालोधे पेता महनेपर मेरे निवारे पर आकर-पुरुद्धे का का कार्या । इसे सुरकार की इसके अपूर्णात बेक्स की है और अल्पनो कर करने कुटबारा दिसाय है।-बुद्धारे से देवतन इन्द्र भी सरकते नहीं भीत सकते । पुन सै -क्रमण काला है है, इस्टिंग्ने इसके समारे नहीं जायबी। कारक औं है।"

इन्होंको का कुमार अर्थुनक कि प्राप्त हो गया। ने ब्रह्में सने—'हेर्डि ! हरते को कुछ किया है, जाने मेर-अस्तर क्षेत्र कार्य हुआ है।' अनुमेशे ऐसा कार्यार विकासको सुन्ते हुए वे बहुनकारे केले-'वेडाने अस्ताने चेताने पूर्विपानो महत्त्व पुनिहेत्ता अध्येत-मह

क्रेकेकल है। इस अवनी क्षेत्री माताओंको काम लेकर म्बिक्टेस्ट्रिक वस यहचे सामा ।' विक्रके खेलुको करन सुरक्तर क्यूब्यकृतकी अधिकोधे प्रेमके आँगु सामक वाले । व्य क्षेत्रा—'वर्गत । आरको आक्ष्मे में अवस्य अक्ष्मेन-पक्षे समितिल हेर्केण और उसमें ब्रह्मणीको चोक्न परेसनेका ब्रह्म कर्मना ) इस समय आपसे एक प्रार्थन है। उनमें मुक्ता कृष्ट करके रिने जन्मे केने क्रांकीकेंद्र सक इस कारते प्रवेश क्रीतिये। यह भी सम्बद्धा कर है। इससे पूक्त रात सुरसूर्वीय रिकास करके बाक करेरे कोलेंड कीले वीक्षे आर्थना ।' ज्या सुरक्तर अर्थन्ते विकायुक्तपुर्वनाते । हे अन्य केरी नार्वाक्रोकी अनुवर्तत लेकर वहाँने पता दिवे ।

का-कार्या । का से इस कार्य से से के कि मैं रीका पान करके विकेष निकारिक प्रसारकृष्टि निवार का है। इस्तीनो सम्बद्ध का केस पूर्व की है करी कार्य में हुन्हों करमें वह प्रवेश कर समारा। क्य काला केल अंपने इकाने अनुसार काला है (इसे-कहीं भी केवलेका नियम नहीं है), अर: हुमारा फल्याब हो, वी अब कार्रिया। मेरे ठहानेके किये कोर्य स्थान-**38 16** (

सारपार, प्रभूतवानं अर्थुण्यी विशेषम् पूरा की और

# ' अर्जुनका मगद्म, चेदि, काशी, कोसल आदि देशोंके राजाओंको परास्त करते हुए गान्धार देशमें पहुँचना

हर्मुस्तरंत अनुनी पृथ्वीची वरिष्ठान वाल्ड पंडेची और सीटा । अर्थुन भी असके पीछे-नीछे स्पेद पहे । सर्वाने अप्रे THE PROPERTY AND PROPERTY AND ADDRESS OF THE PARTY. पाना था। काले जब सुना कि अर्जुन मेरे जनस्के निवाद अस्ते है तो श्रीक-कारी रिका क्रेका को पुत्रके रिन्ते आपरिका किया । सारकार्य कर्ष औं बहुत सारको सुरविक्य है पराव मैठकर नगरसे बक्त निकास । असे पैक्स असे कुर अर्थुन्तर बारा करके कहा-- नासा । क्यों का क्षेत्रके पीर्क-पीर्क हिट प्रो के ? में औ अभी प्रमानक लिये कार है। हिन्स हो से इसे कुक्तनेका कर करों । महि केर पूर्व करेर काची कुक्ते कुमारा सागत न सिका हो से मैं का करने पूरी करीना—मेरे हरा जान तुन्हाद सरकर हेना। चाले हुन मुक्तर स्वान करो, निरा में भी तुमका प्रकार करीना।

प्रेयमंत्रिके ऐसा ब्यूनेस प्राचुनका अर्थून हैसका बोले—'एकर् । येना इस सो चढ़ है कि को वेरे कार्यने विक कारे अरोको में देखें, अतः दून अपनी पूरी प्रकार सम्बद्धाः केरे क्रमर प्रकार करते ।" यह स्तरकार पहले अन्तरकार केमार्थिको ही प्रकार किया। जाने अर्थुनार हजारों वायोगी वर्ष की: बिंद मार्थ्यक्यारी क्यानने तथ सभी सन्तेयो तनने सरकारों कारका वार्च का दिया। ताब ही नेवारिकेंट बाब, पराकारकी, १थ, कर, बोद्रे क्या रहके अन स्कृतिर क्योंने बहुत-से प्रमासित काम होते; बिजू सबके प्रस्ति और सार्यकार एकं भी काम नहीं प्रायः। कामका नेपांकि इसको अपना परमाप्य सम्बामे लन्द और अर्जुन्सर समाजर बालोको कर्च करता रहा। ठराके सकस्ये ज्या अर्जुर

ं जैतानार्थनी काते हैं—राजर् ! इसके कह की केंद्र | केंद्रा क्यार के गर्न ते इस्टेर कोवने मरकर अपने अनुकरा कोरते अवार से और वेकांत्रिके कोड़ीको सारवर अलो क्रानिका के दिए का दिना। जिस श्रूराकार जानसे उसके नकृत् अनुस्ताते बाद करत और इस्तानन का करते जाती क्या और पंजनकों में कह नेराया। इस प्रथम रेक्स्प्रेरिको को पीक्ष हो और का नक सेवर अर्थुनर कु वहा, प्रश्ने सकते आहे ही सम्बाधने अनेको अन्य नारकर अल्बो क्यांवरिका पक्षके कुम्बो-कुम्बो कर करे । इस प्रकार का नेकांकि रह, बनुर और नक्तों विक्रम के क्या से अर्थुको को सम्बन्धी हुए कहा—'तेया : दुस्में सुविध-सर्वके समुख्य पृथ पराक्षम श्रीकरचा, अब अचने वर सक्ष्मी । तुम जानी बाराया हो । इस बहुती हुनने जो प्रीपे जनार किया है को रूपने देने बहुत है। यहराव कृतिहरका यह मादेश है कि पदाने एकालोका क्या न करना; इसीरिको मेरा अवराध कार्यका की तुम जानीतक बीचित हो।"

सर्वनकी कर पुरुष्ठा केन्स्रेनिको यह विद्यान हो गया कि अब इन्होंने मेरी जान कोड़ हो है। तम बढ़ अर्जुनके पास एक और ३४४ केइका रूपन साहा करते हुए स्थाने सम्बद्ध-- 'चीरवर ! मैं काला है एक । अववद्ध करवाम है । प्रकारे को-को शेवा रोगी हो, उसे बाताओं ( मैं को असान क्वं बहाँच्या ।' एक अर्थनी को देवें देते हुए नदा--'सनप् । हर आपने के पूर्णनको सहराव पुरिवरिके अवगेष-बहारे बकारचा' रुक्ते देख बढ़नेपर सहोबकुने 'बहुद अन्तर बहुद्धर रूपनी साहत स्थितन की और अर्जुनका विक्रिक्त कुल्प किया। ठर्मचर, वह बोझ प्रनः अपनी प्रकार अनुसार सम्बद्धि किया होता हुआ बहु, पुरुष और फोसल आदि देहोंने क्या तथा अर्थुनो भी उन-उन | आतेन पहुदेवजीके साथ पुरीसे खड़ा निवाले । उन्होंने प्रात्में कार कार्यक क्यूनके स्वापको पोन्होंकी अनेको सेनाजीको परस्य किया।

सम्बद्ध अर्जुन चेड्रेका अनुसरण करते हुए इंड्रिक विशासी और पर्ने। पूछ दिनों कई उनको औरफर क क्षेत्रकारी अन् वेशितकी सम्बन्धि प्रौण। वर्ष क्रियुरालको पुत्र प्रतम सम्ब करना था। असे पहले से सर्वत्ये साथ पुत्र किया और अस्में पराम हेनेवर प्राचीन विभिन्ने अनुसार काची पूजा की। वेदिएककी पूजा कोचार Meit us ner any megh, dest, mbore, flater afte सक्य साथि देखोगे प्रका का सबी राज्योगे अर्थानकी विभिन्नत् पूरम पूर्व । नहींने स्वीतका से स्वारणे देवाने वर्षेत्रे : का सरम नहीं नहरूको विवाहत्त्वत राज्य वा । साथे साथ अर्चुनका कहा पर्वका पुत्र हुआ और अन्तर्व को कठना मान्द्रे में निकारण प्रकारणको प्राप्त गरे। वहाँ एकान्यके पूजने बुद्धके हारा क्यें गेका र किर से निकार्यके क्रम क्योंने बड़ा रोपालकारी युद्ध विका और अधने निवादराज्यस विकार पानी । करके द्वारा पुनित क्षेत्रस ने पुनः ब्रिक्ट संस्कृती और पहे। अन्य भी प्रतिष्, जांब, चैत् माहित्य और बोरमकानी प्राचीने रहनेकर जैनेके सब अर्थुनक पुत्र पृथा। वर करन्त्रे स्थानमें से मीतका के क्षेत्रेक्ष साध-साथ सुराष्ट्र, गोधार्ग और प्रधारहेल्ये क्ये। महीने का काला प्रोडा वृष्णिकीरोधे हता सुरक्षित करन एक्कीय हारक मनतीयें का पहेला । कहीं करते ही कहतेही बारका उस घोडेको बॉफकर से चले। इसी समय कवा

कारकोच्ये क्षेत्र के को देश जो कर कर दिया। स्ट्रान्सर वे क्षेत्रों को प्रेमके साथ अर्थुकी नित्रे और प्राथ्केक विधिकें अनुस्का उनका कृतन विज्ञा । सरकार्य का केनोकी अस्त



नेकर वे केकेंद्र साथ-साथ पश्चिम समुद्रके सरवर्गी देशोंचें होते पूर्व प्रकृत्य देवाने गये । नहीं उनका योका इकानुसार विकास कुल कामार देवने काम गया। वही गामारता कक्रिके पुत्रते अर्थुनका कहा गर्थका युद्ध हुआ।

# गान्यारराजको परास्त करके अर्जुनका लौटना, यश्चमूमिकी तैयारी और नाना देशींसे आवे हुए राजाओंका यहकी सजावट देखना

वैद्यापारको कारो है—कारोजन ! इन्द्रनिका का गामारोंने सबसे बढ़ा और और नहरकी थर। यह बहुत बड़ी सेना साथ लेकर अर्थुनका सत्ताना करनेके पत्ने कहा। अरके सैनिक एक्किक बक्का शरक करके अवसी को पूर थे। सबने बनुष-बाज हायमें रेज्यर वार्थपर अस्तामन विज्ञा। परम बर्मारम और किसीसे भी परावित म हेनेक्से धीरवर कर्नुको जहें पालिकुर्वक सम्बन्धार स्थानेसे चेका एका चुमिहिरका क्रिकारी क्यान भी सुनामा; बिंह ने अमर्परी करे क्षेत्रेके बारण कनकी बाव नाननेको जैवार न हुए। अनेको केल केहेको करों ओरहे केवल को काज़नेके रिप्पे आने को । जा देश क्यान्यन अर्थुन भाष्यीय अनुसर्वे शूर्ट हुए देव ब्यान्याते श्रूपेसे बिना परिवानके ही उनके पराक कारने राजे । इस अधार यह व्यानेक बाजोसे पीड़ित होनेकें कारण वे सम सैनिक बोडा कोइकर वडे बेगसे अर्जुनकी ओर हर्वेट को । अने कभी मान्यारोके हात रोके सर्वेपर की तेसकी बीर कार्युन पान ले-रेक्सर उनके सिर काउने और निमाने हने। का करें ओर मन्त्ररॉक संहर आत्म हे नवा ते प्रकृतिके पृत्रते आगे सहस्तर पाध्युतस्त्र अर्थुनको होका । तार सर्वृत्ते विस प्रधान कार्यकात विर अवन था, जारे प्रसार स्कृति-दुनके हिरकानको अर्थकात्रकार सामले कार विस्ता । यह देशका भागारोको चात्र विस्तार हुन्य और वे साम-के-सा चा स्वाप पर्ने कि अर्थुन्ते कार-सुक्रकर गाम्बरसम्बद्धे व्यक्ति क्षेत्र विद्या है। अर स्थान व्यक्तस्था क्ष्मुनिका पुत अपने व्यक्ते हुए वैक्तिकोके स्था अर्थर को चार साम हुआ। सम्पूर्ण सेमाके प्रमुख, सब्बे और कोई इसर-अरा व्यक्ति स्था। सारी कींग विस्ता-व्यक्ति कार्यर इसरी, अर्था स्वविकांक विस्ता पुत्रमें को को और बहु कार्यका पुत्रभूतिन है कार कार्यने स्था।

कारण, मानारकार्य मान आपना मानोह होना पूरे मनिकोधो अले करके नगरने निकास और काल अर्थ मैकार रजपूर्विने कारिका ह्याँ । अस्ते ही इसमे अनुने रखेनका पुरुको पुद्र करनेते रोक्त और अर्थन्त्री एक फलेंट उने प्रथम निर्म्य । अपूर्विने भी प्रशास समझर प्राप्तेत सम्बंद सम्बंद अनुष्य विका और समृतिके पुरुष्टे सारक की हर महा-'नवामहे ! हाने के मुत्तो पुटु भागेका रिकार बिरम, यह मुझे कांद्र कर्डी अन्यतः क्योंन्हि इस हो की कर्ड ही हो। की नाता मध्याने और निमा कुराकुओ कर कार्यः मुद्दारे तुन्दारे क्षेत्रक को है, प्रतीते अवत्रक क्षेत्रिक है। केंग्स सुकते अपूराओं हैरिक्ट ही को को है। उस कुरकोगोर्थे देशी सात क्याँ ग्रेंची कांग्रेचे । जानसका केर प्रत्य बार देख जीवा है। अब तून क्यी इस प्रधान कुमनेगींद Peter wa proben from a men i stead doub पुर्विकामे पहाराज पुणिकृतक अनुमेश-सह क्षेत्रेसाल है। असमें तुस अन्यक्त प्रशास ।'

पान्यस्थानमें में क्यूबर अर्जुन इक्क्यूबर विकार करें।
वीर्जेंद्र पीके कर दिने । अन का खेळ इतित्वपुरती एक
क्यूबर गाँउ का । इसे समय स्कूराय कृतिकृतकों
क्यूबर आ रहे हैं और मान्यर उस्क कुर देवीने अर्जुन
अर्जुन परमान दिकारा है' इसकी करें सुनकर उसकी
क्यूबर अर्था है और मान्यर उसके कुर देवीने अर्जुन
अर्जुन परमान दिकारा है' इसकी करें सुनकर उसकी
क्यूबर परमान दिकारा है' इसकी का क्यूबर के का क्यूबर क्यूबर आतंत्रमा न का । इस दिन मान क्यूबर कुर क्यूबर क्यूबर माने माने क्यूबर क्यूबर क्यूबर क्यूबर क्यूबर मीर स्थानकों कुर का अर्थ क्यूबर क्यूबर क्यूबर क्यूबर मीर स्थानकों कुर का अर्थ क्यूबर अर्थ क्यूबर क्यूबर क्यूबर माने स्थान है। इसर का अर्थ क्यूबर अर्थ क्यूबर क्यूबर क्यूबर परमा है। परमाची पूर्णिक आ है नहीं । उसर बेट्डे क्यूबर क्यूबर परमा है। परमाची पूर्णिक आ है। उसर बेट्डे क्यूबर

निवार स्थानोको नेपान स्थानेने वित्र से अवलेक-प्राची तिरद्विके रिजे जन्दक प्रकार वेलें।" यह सुनवार शीवनोत्तरे कार्यक राज्यक्रक पारम विकास अर्थुनके सीटनेका क्रमाना पुरस्का करका निय स्था प्रसाह हुआ था। संस्कृत क्षेत्रारेन एक-कार्नी कुशार प्रकृतनेको जाने करके हेर्निकर कार्यक्टोके प्रथम क्याने कहर को और कारावृक्षके करे हुए कुपर कार पर्यंद करके को पारी औरमें क्या रिजा। क्याक्रम् वर्षे उत्तर कार्येले सुक्रेधित कार्यान नेवार कर्मा । जा पृथ्वे सेवज़े जून काराचे गरे, प्रेरके कार्ने अने-क्नो का नहे हुए है। यहहार होने और समेरी समानी गाँव थी। यहाँ सुमानेवन विशेष्ट पाने और को को बोरक रूपे हुए थे। अर्थाना धीरने व्यानकाने तानी प्रकारित सुद्ध कुम्मीका सम्मोग विकास । अनुदि अन्य:पुरुषी निज्यों और फिस-पिस देशोंसे आने हुए राजाओं क्षा प्राक्तनीय स्क्रिके मिले अनेको अस्त प्राप्त प्राप्त । पर पालका विकास पालकीय विकास अनुसार हुआ का र

वह सब धान है क्रांपर पीनारेग्ये सहराय पुनिहित्सी अदानो निर्मा एनारोग्ये पिनाया हेग्रेट हिन्छे हुए सेथे । निर्माय क्रांपर में सभी एका अनेथी अवस्थे का, क्रिमी, क्षेत्रे और क्या भीतिये अस-पात रेग्यर वह असिका हुए। हम ज्याना अधिनिर्माया सामार परनेथे हिन्छे हान्ये इंग्यिको अस, क्या और अस्तिका सामार्थीका अस्या विम्या । व्यापत क्यार और सी-रास्त्रे भी हुए महिन-महिन्छे व्याप और अनेथी समारियों ही। वर्गरायों अस पहल् वहने व्याप क्षेत्र अनेथी समारियों ही। वर्गरायों अस पहल् पहले विम्यायों काम सेवार आहे। व्यापनेकाले मुनिहिट हम्म क्षेत्रका असे है जेन समाया विभिन्न समारिया समारिका साहत हम्म इन्स्तिका क्षेत्र हम्म है कि वहनकात्रका साहत कार्य पूरा है निर्मायों की स्थान है कि वहनकात्रका साहत कार्य हुनि

महत्त्वर, बार्ग समितित होनेके सिर्व आवे हुए बनारोप क्ष-क्ष्मर गीनसेनके हुए तैया बार्ग हुए बार्ग्यक्ष्मी जान समावट देवने तमे । अहेने सुवारीक को हुए जेरल, बन्धा, जासर, बिहार, समेके हेर, बहे, बर्गा, बन्धों, काम्य और बहुत-से कटोरे देवे । वहाँ कोई भी ऐसा बन्धां, काम्य और बहुत-से कटोरे देवे । वहाँ कोई भी ऐसा बन्धां अन्य और बहुत-से कटोरे देवे । वहाँ कोई भी ऐसा बन्धां की विश्वके समुख्या से लक्ष्मीके क्यू बने हुए है, असे भी कोम नक्ष हुआ था। इस बक्षार बह बहाबारण पह , यो, बन और बन्ध सभी दृष्टिकोरी सम्बन्ध हुने असन्द बहानेदारी थी। विकारों के के ब्रोकों जारे को हां की और गोवे अनेकों। उन्होंना केवन दिन पान कर

को देशभार एकाओंको कहा निराम हुआ। कहानो और| करान को हुए थे। वह पहरू कामें अनेको देशके स्केप हुई: वैद्योंके रिजे वहीं परत साहित सरावर परवार पर दूवते हुए है । पास समूचित है वही प्रतीत दिसानी देश बाक बार प्रतिदेश एक तरह अवन्येक चेचन वर रेनेका हालों प्रकार करियों बहु-ने यह रेका वह गारिका कर-कर केवा मीत बात था। वर्गतकार का केव-केव होते थी। केवहों और कार्त पूजर सक्तांको पत्त-कार्य-इसी कारों पास् का। अवने बहुत-से कांग्रेड सामा हैर। काने-बीनेड पहली परेसरी रहते थे। वहीं साहाजीको-

# श्रीकृष्णका युधिष्ठिरसे अर्जुनका संदेश कहना, अर्जुनका इस्तिनापुरमें आना तथा बरूपी और विष्णकृत्यके साथ बधुवाहनका आगमन

बहुत-हे बेह्रा राजाओंको स्थापिक हेकला भीगतेओ क्षा--'शर्ब । वर्ष के-के क्षक कार्र हुए है, सब्दे साराव मेंद्र को पूराने चेना है, तक हुए जनत करोडिक हमान करे ।" राजनी अबहा कार कारेनारे मेनार पहल और अहोकारे राज्य होकर कार्य आने कुट कवानीके आसीत्वा-साम्राप्ति स्टब्स् को । इसके मान् करवान् कीवृत्ता mobathab and well speeds, sage, ou, from, प्राप्त क्या कुल्पार्थ साथै कुल्पार्थकोहे स्था कुलिके पूर्व अने । प्रेमिने का क्षेत्रिक की विकिन् सनक बिन्या। दिन में जानेते भी हुए बर्टने बन्या पाने हने। श्रीकृष्ण पुरिविक्ती पान वैद्यान बोदी देखक बाव करते क्षे । अन्तर्मे केले—'काल् । वेरे याव प्रत्याका कृतेवाल कुछ विदासन्तर पर्या अस्य या : असे अर्थुको अस्य अविते देवत था। ये जनेको ज्ञानोजर बुद्ध जननेके बातक बहुत हुनेत है गरे है। जाने यह भी सताय कि पहला कर्नुन कर निवाद का पहिले हैं, प्रतरिन्ते का कार अवयेष-पहाची प्रकारतांड हैंग्वे क्यापण्ड कर्ण जरून धार क्षेत्रिके ।"

यह स्थापन वर्गतम व्यक्तिक स्थापे तथे-'कार । को सीधानको यस है कि अहैर कुसारकृष्य और से हैं। क्योंने को कुछ संदेश विश्व हो, को मैं आपके ब्रैशने कुमने सकत है।' बगबर सैक्सो बह-'बहरव ! मेरे कर थे पहल आहा हा, जाने अर्थन्त्री बार पद करके पुत्रते इस अवार क्या-'जीवक ! साथ समय देशका मेरा क कथन बहुत्तव पुनिवेदको भी सूच वैक्लिया। असनेय-पार्ने प्रय: सची राज आवेथे । यो खेन आ सार्ने, का सबका पूर्व सत्वार होना पाहिले, जो इनारे बोला कान

वीरामानार्थं करते है—राज्य् । मुख्यिको अन्यो नहीं | बेटी इस बार नहीं होती नदीने । एका भुविदेश और अवस केरेको प्राच्या करके हेवा उत्तर करण पाहिले, निर्मात क्षाओंके अस्तरीक हेरका पुर: हर प्रकाशिक स्वार प हे ।' करन् । का बहुको सर्वृत्ती नहीं हो एक भार और-कार्य थे, हो से कु स्थिति—'हर करें परिवृत्ता क्रमा अञ्चलका भी सामेन्स्रात है को सहस्य केवानी और नेता किए पूर है। की बार सामग्रे कई मान और अपूर्ति है, कार्यंत्र कार्यका अन्य मेरी अधेवत कार्या विशेष कार्यार करे ह

> अर्थका बोहा कुमार सर्वतम पुनिवित्ते अल्बा इसको जीकावा करते हुए सहा-'कावन् । आको से क दिन सम्बन्धार कुलना है जो की सन्तरी कर दुस केन्द्र क आवता अवस्थान काम भेरे कामो आरचका विने हेता है 6 मेरे सुन्देने सामा है कि नियानीया देशोने महर्कि राज्यक्रीके कार अर्थनको वर्ज कर युद्ध करने पढ़े हैं। इसका करन प्रारम है ? में कुळानाने बेहाबर आईचोड बारेचे विकार बाराए 🛊 को बढ़ी जान पहला है कि ने समग्रे अधिक हुःसके धारी है। इसका प्रवेत के प्रार्थ पूर्ण सक्रमोदी प्रारक है, जिल्ह अने अपूर्व त्यान क्षेत्र-स्त है, विश्वीत कारण अधिक प्रक कारत पहल है।'

कृषिक्षेत्रके पूर्व अव्यार कुलेगर कावान् श्रीकृत्यने सहाः mount are from born! ordent ferfrent जीतानो कुछ अभिक कोटी है। इसके रिस्ट और कोई सबूक राज्या करते प्रतिस्थे यूने भी नहीं दिखानी देश : विश्वीताओं के होने हैं क्यें सदा याता बरूमा पहार है। और कोई कारण की कारण होता, जिससे को दुःवा कोनतः यहे।' अर्थुको सम्बन्धी विकित वर्ती सुन-पूज्यार धीमरोक आहे क्या का का कारोवाले ब्रह्मण विशेष प्रसात है. के थे। इन खेलोरी अभी अर्जुन्जिनका बातकी हो ही ही 🕯। स्टब्स्ट-व्हाने अर्थ देनेदे समय के दर्शना हो नकी के 🖟 की कि अर्थुनका नेवा चूना कु वहीं का चूँचा। यह वहा मुक्रियान् सं। असे चुनिहित्के चार चाकर जो अवार । विका और अर्जुनके जानेका समाचार सुनावा । असकी पक्ष सुर्वका राजा ज्वितिसकी अधिकोंने अवनतके **आहे स**रक माने और पर द्वीप कुलात निवेदन बारनेके प्रारम का कृतको पुरस्कारकामे उन्होंने च्यून-स्त कर दिया। हरते देल सबेरे ही अर्जुन आबे : पार्चे और इसकी बार्ज होनेसे उनस्ते कोरमहरू-सा मच गया। यहस्यभागी कोहेकी दारकी पहर उस्ते तसी और उसके कीवर्गे काला हुना का सब र्जा:अपने रंपन होता परे रूप ! का साथ खेलेके मुक्तके विकास क्रूर्ट जारुकार्यक्षी कार्च अर्थुरको सुनार्थ हेरे श्रमी । स्तेन बाद यो थे—'सार्च । को सीवानको बाद है कि तुम पोकेर्नात कुरसम्पूर्णक सीट आने । तुन्ते कका प्रका सुनिहर बन्द है। हुन्हरे रिवर कुरा गर्दन है के असी वृज्यीवर सोहेको कुराबार कुरुकुरको १०५१र उच्छाओवर विकास का नाम और कुकान्त्रीय और जाने । सामेंस कुन्ते | अन्तर्य कुन्ने कुन्तिय कुन्त कुन्ति का कुन्न ।

को जनर अर्थि पहाला राजा हो चुके हैं, उन्होंने भी कभी हेता पुरुवर्ग किया था, यह इससे सुरक्तें यही आवा है।"

कोनोकी के कार्र सुनदे कुए करोबा अर्जुन प्रकारशब्दी और परे । का समय प्रत्यिक्तिसीत राज्य प्रविद्यार और जुलका जनकर् ओक्स्परे बुबरक्को आगे करके करावी अनवारी थी। विकट आनेवा अर्जुरो पहले जिल्लाम कृतका और भर्नतक भृतिहिल्के करलोने प्रमान किया । विस चीनसेन आविका विशेष स्वकार करके के हीकुलाको गरेको स्थापर निर्म । स्थ सबने क्यांना होवार अर्थुनका सम्बार किना और अर्थुनी भी कर समझ विशेषम् पूरव किया। जनकार, वे निवास करने रागे । इसे समय अपनी देशों पाताओं का राज वसुवाहर की आ पहिला। पह पुरस्कृती इद पूर्ण क्या अन्य राज्यशोची विशिष्ट् प्रत्यत करते: करके प्रता सरकार पाकर बहुत अस्तर कुमा । इसके बाह्

#### मञ्जाहन आदिका संस्कार तथा अध्योध-वज्ञका आरम्ध

् वैक्षणकार्थ कार्त हैं—स्वयंत्रक । स्वार्थ प्रवेश स्थानको भीते क्या बोलाहा अपने द्यक्ति



बरमोंने प्रमान किया। इसके बाद देवी विश्वपुदा और अपूर्वाने भी विनीत मानसे कुनी और क्रेशकेंड धरण धूने । | चुनिक्किके पास सामार केले—'कुन्तीनका ] हुन आकरे

कि सुभा का कुक्ताना जन किसेंगे में से बनायेन निवर्ति । जन सम्बन्ध कुन्बीने अन क्षेत्रोको नामा प्रकारको सह मेह निर्मे । होन्सी, सुनक्क रूपा रूपा क्रियोरे भी अरुपी ओसी जन नकारके रूपार देने । सन्दास् वे केने देविनों बहुकुन क्रमाओवर विश्वकार हो । क्रमीने क्रम क्रेमीक क्रम क्रमा नित्य । न्याकेनाची बाहुमधान की शुनीको काधार प्रकार महाराम कृतकारे कर जानिक हुन। और विकिन्ने अनुसार जनने जनका करकारको विकास । इसके बाद राजा बुविधीहर और जीकोन जाहि सबी कवाजेंके पास कवार मधुनकुको विकास के का अधिकार के बाद के से के स जेनका उसे कारीसे रूपना दिएका और स्टूबका पश्चीवित इसकार निमान इसी प्रकार यह प्रद्वाची भक्ति क्रिमेलपायसे वञ्च-वञ्च-वर्णको कारकम् क्षेत्रकाती सेवामे उसस्यत इस । संकृष्णने जो एक बहुतुन्य रच प्रदान किया, के तुन्त्रवे स्वापेते समान हुता, समके स्वय उद्योशित और करना करन था। उसमें दिया पोड़े मुते हुए थे। क्त्यात् वर्णस्य कृतिहा, चीयसेन, अर्थुन, प्रकृत और स्कोको जारम-असम बधुम्बद्धम्या स्टब्स्ट करके वरो व्यक्त-स्था पर शेवा :

अलो वीसरे दिन सरकारी-एन बहुवें बासकी

या आरम् यर है। साम्बर समय आ गया है। यान्य पृथ् पृष्ट्री अस्तिवस है। सामकल्या हुन्हें कुछ यो है। हुन्हरे इक महार्गे किसी बातवी करी जो खेन्द्र, या निर्द्धी भी स्कूले हैन नहीं होगा, इस्तरिन्दे 'अहीन' (सर्वाहुन्दें) नाहरानेण। हुन्हों सुक्तनेश्वया हानवी अधियात है, अहा यह 'यहुन्हर्माय' मान्यो विकास होगा। महारान ! मान्ये प्रमान करण मान्या है है, इस्तरिन्दे हुन्द करें तिनुन्धे स्वित्य हैना; ऐसा करनेसे हुन्दे सेन अवस्थित-मान्या यह निर्देश और हुन्द हासिनायक पान्यों भी मुक्त हो सामोगे। इस मान्ये समार्गे भी हुन्दे सामगुन-साम करनेसा अवसर विकेता, यह सरक परिता और सामग्र कार्यान्या है।'

न्याची केने क्यांको निपूत्त न्यानकात्त्व प्रतिहेत स्थानेक विनिक्ते अनुसार प्रश्न कार्य स्थान किन्न करते थे, उस पहले न्यानकी नोई की ऐसा नहीं ना, को नहीं नाहोंगा निपूत्त, न्यानकी नामा कारत करतेनाता, अन्याकनकारी कुएस अब कार-निव्यानों प्रतीत न हो।

क्यांक् का कृत्यी कारकार समय आहे हैं क्याचीने सा-स्थिते बेरको छ। चीरके छः, परसको छ। केनकार्ये के और सरकेवेका कुछ-इस प्रधार हाति। कुर यहे किने। इन्हें विका कांत्रकारी आजारी पीन्होंनी बाबी क्रेसके रिले और श्री बहुर-से सुरालेख पूर कड़े कराने । पान्ती नेती करानेते प्रेले प्रोनेक्ट की केवर कराने कर्न भी। उनके प्रधा तम नेते करना bur of it is su-reputed unbit tree क्षेत्र को को। सा कारकारों अधिकारके दिने का साम को है। जा प्रथमी संस्तृ अञ्जू-अञ्जू प्रथमी थी। जनमा आच्या गव्यके समय था, सिस्में क्षेत्रिक बंदा राजे हत् थे। इस विदिशीयर विद्योग कुन्य को हवं थे। अधेने अधिरायकात सार्थ हता। विञ्यूका और विकास स्वकृतसम्बद्धी स्थेत्वा बहुत स्थे से । अस्ति करी और Regil afer pagestiate Process on a varietable Person, of क्यूनी क्राव्योंके जनेता और यहकारीने क्रारात में, उस बहरी unge ibn beiff ung, grap, Degreg, famite, एक जनकिएमें प्रयोग कुररे-कुररे भवर्ष की वहीं केवूर से ह नको और नारेथे कारत गळाईकोग प्रतिक्रित कार्यार्थ क्रमा हेर्ने कर अपने करको हुए सहयोग्य प्रतीसकर

# युधिष्ठिरका ब्राह्मणोंको दक्षिणा देना और राजाओंको भेट देकर विदा करना

मैतन्त्रकार्त कंदरे हि—एकप् ! इस अवतर हमके समान तेकावी राजा वृत्तिहितका यह पूर्ण दुश्य । तत्कावत् मिल्पोसिता भगवान् समाने कश्ये अन्तुवन होनेका आसीर्वाद दिया । पितः वृत्तिहित्ये प्रकानोको विविद्यंत एक हजार करोड़ (एक करन) सार्वपूर्ध्य दक्षिणार्थे देवतः साराजीको समूर्ण पृथ्वी दान कर है । सरावाधितका स्वाकते कर दानको स्वीकार करके वर्णाया वृत्तिहित्से कथ्— 'राजन्! दुन्हारी यी वृह्ण इस पृथ्वीको पुनः दुन्हाने क्रै अधिकारमें क्रोकता है, दूस सुत्रे इसकी क्षीस्तर है हो; वर्णाक साराजा सनके क्रिक्ता है हम सुत्रे इसकी क्षीस्तर है हो; वर्णाक सहस्रका सनके क्रिक्ता है हम सुत्रे इसकी क्षीस्तर है हो; वर्णाक

पैतन्त्रकारों कारों है—राज्य ! इस ज्ञासर इसके र तेकारी राजा जुनिश्चिरका यह पूर्ण दृश्य । सल्बाह्य हैं का सारी पूर्णी की व्यक्तिकों है ही है, अब मैं कारों पाल कारोज । आसरोज व्यक्तिकों विकित्र अनुसार हुने विदि दिया । किर पुणिश्चिरने प्रकारणों से विद्यूर्णक एक र करोड़ (एक क्रार्ण) सर्वनुकार्य विकास में देखा । क्रांत्रकों कारा की देखा है जाता है।'

> करते देश कार्नेयर चीकांत आदि प्रकृषों और ग्रेप्सीनें इक जरते कहा—'हाँ, पहादावका कहा। किरकुत ठीका है।' इस पहान् कानकी जत सुनकर सबसे तेनटे कई है को। इसी समय काकारावाणी हुई—'पाचाने । तुन कन् है।' कनका काकार करके सरावासकी प्रवंश करने करे। वस सनका, जासने सहायोंके नीवर्गे चुनिहिस्की

प्रतिस्त करते हर कहा—'सक्द । हुमने हो यह पृथ्वी मुत्रो । है हैं। है । अब मैं अपनी ओस्ते इसे समस करता है। इसके क्यूनेम्दे इत्यूननीको सुनवर्ग है हो और कुम्मीको अपने से फरा क्षाने हो ।" हराके बाद भगवान औक्षान केले— सर्गदान । मानान् जास के कहा है हो है अपेटे जहार करने कार्य करन नार्मिन।' यह सम्बद कुमने पुनिनीत प्रकृतिस्त्रीत बहुद अस्त हुए और प्रकृति प्रकृतिक रहीने इक्ट-एक करोड़की तिगुरी रहिला है। जानक करके मार्थका अनुसरका करनेकाले राजा चुनिर्वहरूचे उस प्राप्त केल महत्य जाग किया था, केल इस संस्तरमें इसर कोई नहीं कर शकार । महर्गि काराने का क्षावीतीक रेकर सकानोको है थे और उन्होंने बार पान करके जो अवसाने और विश्वा: III प्रधार क्ष्मीके स्थानके जाने सुमार्ग केवल प्रधानिक अपने चाहनोहरीस बहुत प्रस्ता हुए । उनके सारे चार कुछ पने और क्योंने क्रानेश साविवास अब बार देखा : अविवयोंने अवनेको निस्से हुई अनन्त्र सूक्तको बेटीको को अन्त्य और अस्ताके राज्य क्राने-क्राने अक्रमांच्ये चौट जिला । बहावानको भी जो कुछ सुमर्ग का सोनेके अवस्थान, ओरस, कुर, महे, बारित और हीरे की, उसको भी व्यक्तिकारी सदाव रेग्बर प्रमुख्योंने ब्राँड रिच्छ । स्वयुक्तीके केनेके बाद को कर वर्ड भट्ट रह जना, हरे इतिन, देश, यह कहा मोन्स नातिके क्षेत्र उठा हे को । अनेकर पुरिक्षियों अक्रमोंको असरे पूर्व हुए कर किया था। वे बहुत प्रश्नत होयत अपने-अपने पर गर्व । इस महरी सुर्वाद्यविकेशे अवस्था न्यासको को असम चार मिला था, को क्योंने को अध्यक्ते तथा क्रांत्रिको

बेट बर दिया। कहरके इस बोइनुबंध निले हुए उस सनको कका कुन्तीहेवी बहुत असत हुई और उन्होंने उससे को-को कुलकार्य किये। सहके असमें अवस्थ-सान करके क्रमाद्रित हुए राजा चुनिर्दित जनने आह्माँके साथ इस प्रकार क्षेत्र करे तरे, जैसे बेक्काओंके काम इस सुलेपित हेरें है। तक्तर, प्राचनी चार्च आने हर राजाओंको पी क्या-रायाचे का, प्राची, बीबे, आधुनम, विकार, क्या और तुवर्क बेट किने । किर राका महामहत्रको कर कुलका और को बहुत-सा कर देखर जिल्हा किया। इसके बाद अपनी वर्त्तन इ-सर्वाची अलावको किने अनुनि अलो पीतेको रित्युरेकके एउनक अधिकिक विकास हर। इस प्रकार कुरुसक मुभिद्धारने सम रामाओंको अर्चन सम् वन विया और अन्यर विक्रेष स्थाप करने निवा कर दिया । प्रस्ते कर उन्होंने प्रमुख्य क्षीकृत्य, पश्चमारी बारुशय तथा प्रमुख आहि हुमाई व्यानवारीची विशेषक पूजा बारके जो प्रतका वार्तके रिले कोकरी है। अनेतर पुनिवित्ता यह यह इस उत्पार पूर्व हुआ । अली अस, धन और फोनरे देरी राजी हुई थी । पहुँ हैंसे कारावर करे थे, किन्में बीची है परिचंद अभी हाँ भी । अवर्थंड के पहरू हो एवं से और स्टोन्डी नहिनों पहली मीं। निवासी केरी प्रकार हो, जानो बड़ी बन्ह से बाप और समयो प्रकारतार योजन कराज कार-क केरण दिए-क्ष अभी कही की। वर्गग्रमने का बार्ग बनको धारीके सम्बद्ध बहुत्यां । श्रेट अव्यालये कानगर्भो, यारे और स्टॉब्स कर्ष की बच्च इस प्रकार पानसीत एवं करवर्ष होका उन्होंने and well plu form.

### युधिष्ठिरके यज्ञमें एक नेवलेका उज्जवनियारी आग्राणके सेरभर सन्-दानकी यहिया कतलारा

युविद्विरके कामें नदि कोई मध्यवंत्रस्य काम 💰 🛊 के अवय करे करानेकी करत करें ?

रैक्स्प्रकारो का—सन्। कृषिक्षामा मा महर् सामोक-पत पर पूरा हुआ, अने समा एक बड़ी अना सिन् महान् आञ्चर्यरे कारानेवाली बहना वरित हाँ, वसे बनावात £. क्षते—उस दाये के प्रकृतों, सरिवारों, सम्बन्धि, क्रम-क्रमध्ये, अंबो तथा रीन-दरिक्षेत्र हुए हे सानेपर बुविद्वितके पहान् कुनका कार्ये और और हो एक। उनके क्रमर फुलोकी कर्य होने रुग्धे । उसी समय नहीं एक नेकाय

अनुनेकारी पुरा-सहार । येरे प्रशिक्षामा वर्णयम् । अस्या । अस्या । अस्या अस्या नीली भी और अस्ये प्रशिक्ष एक तरकार पान सेनेका था। उसने आहे हैं एक बार कहके प्रमुख वर्षकर अञ्चल देवर समक श्रुपे और पश्चिमोन्डे मनमीत कर विका और किर प्रमुखकी धावारें कहा-'एकाओ । हुन्हर जा का कुरुक्तेजन्त्रिती एक मान्यविकारी कार प्रकारके सेत्या सन्दर्भ करनेके करकर भी नहीं कुछ है।'

नेवलेकी बाद सुरक्त समस्य प्रदानीको कहा कार्क्स gas और वे उसे कार्रे ओसी बेस्कर पूक्त लने--- 'नकुर ! इस बक्रमें हो साबू कुल्लेका है समागम हुआ है, तुम बहारि



अर गरे ? मुख्ये बीय-सर वार और विकास प्रत्यक्रम है ? हर निरमके स्वारे एके हो ? हमें निरम क्या श्रृपाय चरित्रक प्राप्त क्रेपत ? तुम सिव्य आव्यापन इसरे इस बाहब्दी निव्या करने हो ? हमने क्या अध्यक्षी क्षत्र-सम्बद्धी स्वर्गीन करके कार्यान निविधी अन्योतना न कार्य हुए कुछ सहस्रो पूर्व मित्रक है। सर्वक और न्याकीर अनुसार अनेक कार्यक कार्यक भारत किया गया है। कुलीय पुरुवेची विकित्स पूजा की गयी है, अधियें क्या पहला सामृति ही गयी है और केरेकेन्ड मसुशीया ईमारित होका कुन वित्या नवा है। वहाँ कहा प्रधारके सुनीसे सामनोच्छे, जान मुख्ये प्रशा स्टिक्नेकी, सामाने हरा निरामकोची, रहाने हरा मैक्नोची, सन्पूर्ण कापनाओची पुर्ति करके कान विकोचो, काले कुछेचो, क्षानो बची क्षु बज़ारे देवर राज्य बनुवरेको छवा सम्बद्ध कृष कार्यम ज़ारि एवं क्रमाधिकोस्त्रो संतुष्ट किमा गया है। इसी प्रकार परित्र हरिन्मके हारा देखारलोच्छे और प्रकास मार लेकर करकारकोको प्रस्ता किया एक है। बंद स्था क्रेनियर की तुमने करा देखा का सुन है, विश्वके क्रार बहायर अधीय करते हो। इन इन्हरूनोचे निकट दून सर्व-स्थ बताओं; बनोकि सुदारी बातें विकासके केना कर बाली है। पुन कर्व भी बुद्धिकर दिवानी क्षेत्र और दिवाला बारव मिने हुए हो। इस समय तुम्हरा **प्रा**क्तानेके साथ सम्बन्ध कृता है, इसलिये दुनों क्ष्मारे ज्ञाबत ज्ञार अवस्थ बेना चारिये ।"

अक्रमेंक इस अवस कुनेस नेवलेने हैंसकर क्या—'विकास ! मैंने आयलेकोले विश्वत अक्या वर्षको सामा मोर्ड मार की बारे है। की में बार है कि 'अवस्तेनोधा क् का ध्यान्तिसरे प्रदानके प्रशासिके हर केरणर तत्तु-दानके करावर भी नहीं हैं। इसका कारण कारण कार स्वेत्रोको प्रतानेकोच्य है। अस मैं श्री श्रश्न प्रवास ्रै को अस्मोन कामधित क्रेका भूषे। कुरक्षेत्रनिवासी रूपपुरिवारी क्षेत्री अञ्चलके सम्बद्धने पीरे को बुद्ध देशा और अञ्चल किन्छ है, यह बहुत है जान एवं जानुत है। जा म्बानके प्रच नामाः प्राप्त हुए बेवे-में आक्रा दन मी असम्ब काम कामक स्थापन क्षेत्रा। यही हसीन अन्यक्षेत्रेको यह दह है। कुछ दिने पहरेकी बात है, वर्तके कुलोजी को बहुत से बर्दा जाला रह करते हैं, कोई प्रकृत को ने । ये उन्क्ष्मिति ही अध्य सीधन-दिवाँद कर्म थे। कक्तके समय शतक क्रम कुन्तर रही और जारेले कुट्रकार कारन करते हैं। वे कारने की, पुत्र और क्र-वर्षेत्र कर कुक करवार्थ संस्ता थे। प्रमुख देशह कृद जानार-विकारने रहनेवारे, बर्मामा और विनेतिहर से ( ने प्रतिक्ति विको को भागने भी-दार अधिके साथ कोकर किया करते थे। यह बिटमें कि का समय क्षेत्रम र विका तो पूर्ण दीन बिर करी देखाने कहा बहुन बारते हैं। एक बार वर्ष कर करेकर समास बद्धा । उस शब्द अनुसारि प्राप्त जनका संख्या के का भूती और चैतीका तथा की बूका पना क: अत: उनके कर प्रकार विरुद्धार प्रधान हो एका। अभिने केरब का पर सकर पीर करा; हिन्दु औ क्रमण्या क्षेत्रम नहीं विशवत का। बेधारे स्था-के-सब चूनो ही य करे है। एक दिन क्षेत्रके सुद्धवस्त्रने क्षेत्रपूर्वके सकत है भारती प्राप्तान पूरा और गामिस स्ता स्थाने हुई असकी कोजने निकार । कृत्ये-कृत्ये कृत और परिवासी व्याकृत है को से की उन्हें असमा एक कुछ भी नहींब नहीं हुआ। और विकेशी मंदि जा दिए भी उन्होंने अपने कुटुकके पाप जनकर करके ही दिन कादा । पनि-वीरे अवकी प्रता-करित क्षेत्र होने लगी । इसी धीकने एक दिन दिनके कटे पाएसे उन्हें भेरकर सी किल नवा। इस प्रकास-परिवारके सक लोक जनकी थे। उन्होंने जीवत रात् तैयार कर रिल्क और नैरिक्क ियम हर्ग क्यका अनुहान करके अधिने विकित्त्र्यक आहति नेनेके पश्चार ने बोदा-बोदा प्रमु वटियत प्रोजनके रिमे 🍪 । इवन्द्रीने कोई असिक प्रमुक्त वहाँ आ व्यूच्य । असिक्या दर्शन करके कर समझा हतन हमेरी फ़िल कहा। वसे जनाम करके उन्होंने कुछल-समाचार पूजा। ब्रह्मणपरिकाके सम

सोदः जिल्ह्याच्याः, निवेतिहरः, शक्करः, केन्द्रवित्रेः कीतः, वित्रं अन्यते स्वरी अधिकवन परिनेत है अमीन है। मानस्त क्षोपको जीवनेकारे, समान, ईम्बंबाको सीव और वर्गा है, उन्होंने अधिकार, यह और स्टोबको सर्वक जान दिन का। बुक्तरे क्या पाने हुए अधिक प्रकारको अपने सहावर्ग और गोलका परिवाद केवर वे कुछी है करे। वहाँ क्ष्मावरिकाले स्वातानी सहा—'पानान ! आयोह रिले पह अर्था, पात और असार चेन्द्र है तक नाक्यूर्वक स्थापित दिने हुए में पूर्व चरित राष्ट्र आवादे रोवाने उन्होंना है। मेरे जातकार्षक हुने सारको सर्गन केन्छ है, आह श्रीकार करें।

बनके इस प्रकार सहारेज अधिनिये एक स्था सह रेकर का रिमा, सिंह करेंचे अपनी पूर्व क्रमा न हाँ। प्राप्तको देखा कि अमेरिन देखा अर भी पूर्व है क को है हो के जब सोमते पूर कि 'पूनको किया उत्पाद संद्र्धा किया पान ?" काने दिनो अनुसारी विनय काने हाने ह प्राक्षकारे पानि पान-'यात । साथ अविनियो नेश क्षा है देखिये, को सामार पूर्व देश होनेके बाद हमाने गाई हमा होती, को सामें।' अपने बॉलक फोली पर पर कुरका अञ्चलके सरको अवस्थान जिल्हा किया । वे नर्ज को पुरस्का करू जा से थे, उनके इन्य का सहकर करते देर न सभी कि 'का नेकारी को जुल ही सुनाने कुछ का नहीं है।' इसके दिला, यह क्योंक्ये कूई, बच्चे हुई और सामा कृतित भी थी। उतने प्रशित्में कन्योंने कभी क्रूड दक्षिणेक श्रीतामात स्व स्था का और यह कहा क्षेत्रके सूत्री की:-स्य को अधिक कुथशुर पानवार प्रवासको उसके वैकोचा राष् हेना असत नहीं बान पहर, हस्तीको उन्होंने अपनी कार्यके का:- 'कारायां । अपने क्रोबंट श्रह और कारा-योगन करना बीट, फांग और पसूजोब्द की कर्मन है। पुरूष होतार भी को स्थित हारा अवना पराम-योगमा और नंतरूम करता है, यह समुख क्याबा पान है। यह उन्तरक बरेशिये 📆 है कार है और उसे जान लोकोबी आहे जो होती । नर्प, कान सीर अर्थातकारी कार्य, रोज-सुनूक, क्य-मरम्बरकी २३३, रिकु-कार्ग और हमार्गका अनुहार—ने सम स्रोके ही अर्थान है। जो पत्र बीबी रहा करनेयें जरायर्ग है, व्ह संसारने महान् अववद्यास भागी होता है और परावेषाने सानेपर को नरकमें गिरक बक्का है।

परिके ऐसा बहुनेकर प्रक्राणी केली—'प्राणका । हम होनोंके वर्ष और जर्ब एक है है, जन: जरूर मुहनर अला हो और मेरे हिस्सेका का पालकर सब् लेकर अधिकिको है है। विक्रोंका सता, धर्म, रहि, अपने पुन्तेले विका हुआ वर्ग

क्षा और विकास कीर्य-इन केनोने निरुपेर ही बंध-मरमार करावे है। बोबे देनों परि हो सबसे यह देवता है। ब्रोको को सी। और पुल्ला करायों प्राप्त होती है, यह प्रीक्षा है उत्तर है। सार पतन करनेके कारन की पति, पाय-चेवन करोते वर्ष और पुत्र प्रकार करनेके कारक क्रमा है, इस्तीले मेरे दिखेगा गए मधिन्येकाची अर्थन क्षेत्रिये । आर भी से सरा-मोर्ग पुत्र, सुवाहर, साराय इतंत, कावरको बन्धे हुए और औनकान हो यो हैं (पिट नाम किया पर्या भूगावा हैया राहन करते हैं जारे प्रचार में भी व्या हैची) (

चर्कके ऐसा सम्बंधा सम्बंध उन् रोकर अतिकिसे कार- 'हैनकर । यह साह भी काल अधिको ।' अधिके सह सह भी रेक्ट का करा; जिल्लाको संबोध न हुआ। मह देखका अवस्थिताने अवस्थाने बड़ी निरात हो। उस उनके कुले व्यक्त—'निवाली । नेय तत् लेकर जान व्यक्तको है क्रांको । मे इसीने पूज्य सन्तुत्ता है, इसरिको देशा बार सह



है। को सब कार्यक अपना पाल्ट काम कविने; क्योंकि साम् पूर्ण कृते विकासे पालन-पोनजकी सद्ध है। अधिकाम विका करते हैं। कुछ होनेका नहीं परंग है कि का पुरुषम् अर्थे विकास स्थान करे । सुरिक्त का समारम आहा होनो स्केकोने असिद्ध है (बाह: बाप बढ़ सर्ह हैनेमें कुछ अन्यक्ष विकार न करें) है

रियमें कहा—केटा । क्षत ककर करिंद के काओ से भी । अक्रेकी सेवाके सिने ही है । अक्रकी प्रस्कार से हुई कहा मेरि रिल्मे काराव्य ही हो । निवा पुरस्को सन्त हेस्स ही उससे अपनेको कृतकाम सम्बाह्य है। मैं सम्बाह है, क्योंकी पूर्व अवल होती है; मैं से कुछ है, पूजे खबत भी प्राप्त बारण कर सकता है। जीवी सकता है जानेके बारण तहे करता अभिन बह नहीं होता। इसके दिखा, में दीने कारतक क्रमता कर सुध्य है, अराः असं मुझे परनेका कर नहीं है। तुम अभी बारूब हो, इस्तियों केंद्र ? तुन्हीं का सब कावन अपने प्राणेकी रक्षा करे।

ए। <del>पोरा- निवा</del>नी | मैं सारका कुन है। कुलका कन बार्ट्सके सारण ही संगानको 'कुर' बाह्य नना है। इसके सिन्ध का विराम्या अपना है आहम करा गया है, आ: आर अवने आवश्या पाने प्रश अश्ये एक क्षेत्रिने ।

रियारे क्या-केंद्र 1 इस इस, सक्कर और इतिहासिकाने के हैं एका है। एका इस पुर्वारी की अनेको का परिवा का सी है। तक मैं सुवार तब नेवा आतिकिको केता है।

या जागर जागने जानपूर्वत यह एए हे केन और केंग्रे-केंग्रे अतिकियो परेस दिया। को बार सेनेकर ची अभिनि देवारका पेट न वया। या देवाका अक्कारिकारी क्यांच्या प्राप्तान को संबोधने या भने। अनवी या-का वी Mई सुरोत्त को । यह सको प्रमुख्यो नियमिको प्रायह कर्य और उनका देश करनेके लिये तत् लेकर उनके पास का वही अस्तानों क्या केसी-'दिलकी । अन्य मेरे विकोधा का सह रोकर जातिक केवलको हे केविको।"

क्यूपरे कहा—नेदी । तुन परिवास हो और साह देते हैं शरीर सुरा एक है। हुन्हारी कारित कीसी यह नहीं है। जान क्रम और आकारका करना करने करते द्वार असन्य कृति है। गमी हो । पूराचे बहरो गुकार विश समझार है, शूर्व देखे अवस्थाने देशका भी तुन्हारे क्रिसेका सन् बैसी से है 7 देख अरुनेसे मेरे बर्मने काक आयेगी। तुम प्रतिकृत औत्। सरक्षार और तमस्यों संस्था सुसार क्रिकेट करे पहली आहर करते हैं। असे असे न निरनेके बारक हुने सकता कारी केमे देश सकेना ? दूस प्रसंधे व्यक्त का करिया एवं अवस्य हो, अवसार्था फारन बहुत बन्द नवी हो और रेगा-शत्त्रके प्रशं कम-सम्बोधी सम बोसरी है इस्मीन्ने दुनारी से पूर्व सक्त ही रक्त करनी काहिने ।

पुर- कबू जोरपें— धनकन् । अस्य मेरे गुरुके भी जून और देवताके भी केला है, बना पेस दिया हुआ सर् अवस्थ स्वीकार क्वीकिने । मेरा यह प्रारीर, जान और क्षाने क्रम कुळ

रोकोधी करिए के स्थारी है, अब: जार पूर्व अपनी एव नक, रहाजीय अकल कुन्नवान सन्दात्वर अविभिन्नो देशेबे रिन्ने केव पह सबू स्वीवतर व्यक्तिके।

बहाने कह-बेटी । हुन परिवार ही और नवा हैने हैं कार और पूर्व प्रकारका कार कारोने तुन्हरी होतर है। हुए वर्ग क्या काके सामस्मये संस्ता क्षेत्रर क्षेत्रा गुज्यकेको होकार हो। साली है, इस्तीनो हुन्हें पुरुष्ते क्वील र होने हैना और क्षेत्र क्यांनाओंने तुन्हारी निस्ती कर्ने इन्हरू दिन इस्त तत् अन्तर स्टेकर करेना ।

मा बढ़ामा प्रभावने अलो फ्रिकेस की शह रेजा अमेरीको हे दिन । अस्तिकारी पहला प्रदानका पह अर्जुक रचन देखका अतिथि च्यूत जनम दुआ। बामावर्षे कुछ प्रदेश करना काचे साम्रात् कर्न के अतिकिक्त करने रूपीया पूर् थे, रूपीने साहरूपी बाह्य-- विस्तार । सूनी अन्तर्के कृतिकों अनुसार वर्णनर कृति रहती हुए न्याकेयानित अक्टा पुर क्राफो कर विका है, प्रस्ते में शुक्रो अल कार अलग है। अने । अनीर खनेकारे देवता की तुकारे बारवती केरण करने पूर्व है। पह देशों, आकारते पूर्णाओं कर्त हो को है। देखा, वही, मनमें और देखार की हुन्हरें देखते विका क्षेत्रर सम्बद्धने को-सदै तुक्ती सुति करते हैं। merical feurierit muff fauter dout guit वर्तनकी प्रतिकृत कर गाँ है। जब तुम हिन्तलेकको बाउने। निवृत्त्रेकने कुक्तरे निवते निवत थे, का सकको तुर्वते तार किया प्रसा अनेको प्रशासिक प्रतिपत्नी क्रेनेकाची को संसाने हैं. वे भी पूछते सहकाँ, कुन, बनला और सुद्ध बसीड अनुहारको वर कार्यनी । सुनने बढ़ी अञ्चल्दे सुरक्ष एव विका है, अंग्ले अंग्लामी और खुम्मी संग्र देखन सुन्दारे करर जरता हुए है। संबदके समय भी तुमने बुद्ध इक्करे वह सारा-का-सारा सन् कर विका है। पूरू मनुवाकी बुद्धिको औरट कर हेती है. कानेंद्र व्यक्तिक विकालेका रचेप के बाता है; जिलू ऐसे राज्यमें भी निरामी कामें क्षेत्र होती है, जानेंद्र धर्मका क्षार नहीं केवा । हुनने भी और पुत्रके केवारी करेवा करके वर्गको है के पन है और उसके सामने पुरत-मासको भी पुरु नहीं मिना है। महत्त्वके रिक्षे क्षाके पहले आक्रपुर्वक बनावी अभिन्दा करन करन ही सहय किया है। उस बनको सरकाडी रोकों कर्पन करन उससे भी क्षेत्र है। साधारन प्रथम का देनेको अवेदा उत्तम सम्बद्ध सुन केन और भी अच्छा है, जिल्ल ब्याच्या माना काराने भी स्थानर है। बाइपूर्वक कर देनेवाले मनुष्योधे यदि एक इसर देनेवाँ सकि से से का प्रीका दल करें, सी देरेकी प्रक्रिकाय करका कर करे तथा किरावे पार बुध न हो, या की सबसे प्रतिकोड कामार केंग्र-भ्य जा है कर कर है से इर समझ पार बराबर ही माना नवा है। कहते हैं, ठवा उन्हिंको बार का कुछ नहीं पर गया था से उन्होंने कुछ इसकी केनक कारका कर किया था। अन्तरकार्यक प्रमा हर काले करा पहार कर हेनेकरे को को का करने वर्गको प्रशास नहीं होती। धर्म देवता हो न्यानोपार्थित कोई-में न्याका भी सक्यपंत्र पर कारेते हैं संबंध होते हैं। एक उन्हों अध्यानोंको करारों और दान की थी; जिल्ह एक है में उन्होंने इसोबी दल कर थे. किसो अन्यायक प्रत हलक कर क्षानेके कारण करें गरवारों काम यह । अधिनके कु राख विक्रि सञ्जूनीक अपने करीरका जांत केवर के पुरुवास्थाओं के लोकों अलग्द कोच्छे 🛊 । म्यान्यूर्वेक क्यारिक बैहरे हुए क्यार क्या प्रतिसे को लाग होता है, यह यहा-औ र्वाप्तानको अनेको राजपुर-पानिक अनुस्थ करनेके से नहीं होता। शुर्थ लेगान समुख्य क्रम करके अक्रम महत्त्रेकारः जिल्ला करी है, बहुत-ने अक्ष्मेय-यह भी तुन्हरे इस शुनके कराको समाना नहीं कर संबंधे। अर्थः हैक-मेद्र । इस स्थेपुराने चीन प्रक्रमान्यो सुरापूर्वक प्रयो । ger son einebte find fiem forme mellem fit gent सवार हो पाओ । नेरी और इसे करते, में सवाब, करें है। इको अपने वर्गस्का बक्कर कर विवाध संस्थाने इन्हरूप 🕬 सदा ही करपन चीना ।"

नेपारीने पहर--वार्ग्य हेस्स अहनेवर से इस्तुरूपेक्स समयी पति, पुत्र और पुत्र-नपूष्ट साथ विकारने वैद्यान सहस्तेपानो पारे गये। इनके पारेके क्षत्र में अपने विकारके सहस्तेपाना और नहीं अस्तियने गोनन विकार पत्र कर श्रामक स्टेटने सन्तर। यह समय सन्त्री गया सूचने, न्याँ मिरे हुए बालकी क्षीयको सम्पर्क होने, शिक्ष पुर्योको रीको और का महान्य प्रकारके क्षेत्र फारे ज्ञान सिरे हुए आके क्रमोते के स्थानित एक प्रकृतको स्थानके प्रधानी नेत कारक और सामा प्रतित सोनेका हो गया । उनके राजका यह कार प्रथम सम्मान राजनी सांची देश सीमिये। ब्याच्ये ! यह नेत अस्थ इसेर सेनेका हो एक तो मैं इस विकार का कि 'बाबी करीर भी किए जानों ऐसा है है प्रकार है ?' इसी औरवारे में बर्धवार अनेकों प्रयोगनों और काकानेने अस्तात्वर्गक प्रमान करता करता है। महस्त्रम कृतिहैं के इस बाला करें और सुरकर में बड़ी जाता राज्यमे वर्षा अस्य यह विज्य नेश सरीर स्वेतेका न हो समा । प्रार्थकों की देखार स्थान कर कि 'स्था स्था प्रार्थकों किये हुए क्षेत्रकर अकुके करावर भी भड़ी हुआ है।' क्योंकि का समय त्रेरचा अपूर्वते हैंनी पूर पुरू वालोकी अध्यक्ती नेता आप प्रदेश सुवर्तभा है गया था। वर्षेट्र वह महन् यह भी मुझे देख न क्या सम्बद्ध तथा काने साथ इतकी मोर्ड कारण नहीं है।

वीत्रणकार्य कार्य है—जनसंख्य | शक्षणोरं यह व्यक्तर नेपाल कांद्रेर कार्या हो क्या और शाहण की अओ-असमें कर सार्व नमें । यह सारा इसंग की दुन्हें सुमा विवा । उस कार्य क्षित्रमाने देशी कार्य दुन्धार हुन्हें किसी उसरा विकास कहें कार्या कांद्रिये । इसरों क्षित्र कार्य न कर्या केरात कार्याचे ही कार्य कांद्रिये । इसरों क्षित्र कार्य न कर्यों केरात कार्याचे ही कार्य किंगानेकार्य जात हो सुने हैं । किसी की अंगोरी केंद्र न कर्या, संसोप, शीरा, सरस्याद, स्व कृतिकार्यक, सारा और क्या—इस्पेस एक-एक गुण सहे-सह कृतिकी सामानक कर्यवास है।

#### महर्षि अगस्यके यज्ञकी कथा

कार्यकर्ष पूज-सहार्। क्लाकृषि आरण कार्यकारे सहायको न्यावतः आग्न हुए सब्दाक क्रम कार्यसे नित पहल् प्रात्मको प्राप्ति हुई, उसका कार्यने कर्णद किला। निःसंके म्य साथ स्टेक्ट है; परंतु हर एक म्याप्ते इस काम निकायको नित्स प्रसार कार्यमें स्वया जा स्वकार है ? (क्योंकि न्यावतः आग्न सन तो सहुत कोग्न होता है, उससे महेन्यहे महोक्त अनुहान कैसे हो स्वकार है ?) वैज्ञानकारी वया—स्वार्! (अधिक क्षमा संग्रा विन्ने किया ही व्यान् क्षिया अनुहान हो समाता है) इस विकास प्रते अन्यान पृतिके महान् कार्य को पठन पटित हुई भी, पर आधीन शिक्षासका बदावरण दिया नाता है। सन्दर्भ अभिकासि हिल्में संस्था प्रतेशतो पहान् तेयारी पहाने अन्याको वृक्ष समय कारह मन्ति समाहा होनेवाले पहानी विकास की थी। उन महानाको बहुने अधिके समान देवाली होता थे, किस्से फार-मुख्या अञ्चल करनेवाले अदम्बुद्ध, र मरीचित्, <sup>३</sup> परिपृक्षिक<sup>3</sup>, बैजीस्क<sup>2</sup> और आंक्जन<sup>4</sup> सर्वेद अनेको प्रकारके जो। एवं निवष्ट् से १ के राजी प्रावस्त्र करेका unes underen, nieum abedent, feitfer, मनेनिव्यानायण, द्वील और बंगले पूर और सब सुद्ध आवारी तिया क्षेत्रके थे। ऐसे ऐसे गार्थि का पहले pellen go it i prit free afe at up-it uft-भूगिरोरि अर नक्षर् यहान अञ्चल पुत्र विका या। न्यूपि संपत्त पर इस प्रचार पढ़ पर पूरे थे, वह करन हमी बंदराओं दानो बरदाना बन्द कर दिखा। का न्यू-कार्विक बोध-बोधने पुरित्रोग अन्यानकोड इन्युक्तरे पर्याप हार प्रधार पर्धा वाले प्रणे---'प्रकृत्ये ! ये क्रायक्रको प्रकृति अपूर्व क्षेत्रक अधिवेत देवसून्य क्षापके शता-कृत पानो है । पूर्ण कारत करने नहीं बरहते; ऐसी दहतों अलब्धे कार हैने केंग्री ? यह नकुत् पढ़ संबंध कर्मीत्व परावा ग्रेगर और कार्ने सरकारक हुन्य वर्ष नहीं कोने । इस नातक नार्कwife from well sensite pe week upwell my अनुष्य करें।'

पर्दन्तिको पद कर भूतका नाम्यको सन्तक पुनिने तिर शुक्रावर जो जनाव वाले हुए बहा— की हुए बहु करोत्य को की बांध के है किया का कांक संबंध संबद्धकारों है में। याचा अनुमा कर्त् केंग्र स्वय क्रमीचें कंपीया—संविध्यक्तकार काम विके क्रिया है उसके राजीनामरे देवताओंको हुए कर्मन्त्र । यह की व्हान्द्रो ५० क्यान विके है अवस की सन्त क्योज इस कर्त जी क्षरपार्थने भी मै इस-निकर्णका पासन करता हुआ कानकुछ भीवकारों रिका होयर हा क्योंका अञ्चल करेना । क सीनका मेरे प्रच कहा क्योंतह करनू कु मध्या है। क्रीकेरे है अन्य का पूर्व कर हैना। उसने कोई स्थानकार नहीं आ सकती। इन्द्र कर्त करें का न करें; जिलू केंद्र का कह कभी मेंद्र नहीं हो सम्बद्धा । मैं कर्त हो हुए होबार क्रमक जन्मधी मीवनरक्षा सर्वन्य । सिस् प्रत्येका को अञ्चल है जसके को मिनेन अवना में आवश्यकतानुसार विकेष अवस्था प्रकार भी प्रमुख्यामंग्रे कर प्रकार है। इस प्रकार सेवी (केवोने मिलना सोन्य और अन् है, ज्या रहने व्यक्ति कारियत हो जाय। दिन्यं अप्यानी, पन्यर्ग, विकार, विकासम् कथा दूसरे विशेषका पूजा बारके उन्होंने सकतो किन्न कर दिना।

। वर्णकरो ची चाँ अध्यर मेरे चाची उत्तरमा करें। उत्तर कुरोहरे जिला कर हो, यह सम वहाँ शा कर। सर्ग,



करी कोको देखा और को यो हम है हम क्री कार अधिक है करें।'

कर्षि अन्तरके प्रत्य बको है उनके बको हकाते तान पुरु केता है हो पान । उस रेक्सी महस्थित स्वाहताहर च्या च्यान् कर देखकर मुक्तिको बक्त हर्ने हुआ। ये विशित्त क्षेत्रर करूने रागे—'कार्ने । असन्त्री करोते हमें बड़ी जनका हाँ है। इस असके फोने हैं संख्य है। नायसे जबर्नित क्रिक्ट हुआ अंत ही हुमार भोजन है। हुम स्वयु अपने करोंने राने रहते हैं : अब इस बहती समाहि हेनेतक इस बही उन्हरिका होने और अन्तर्ने आवन्त्री अञ्चा लेक्स बहुते बहुते : वे इस अवार कार कर को थे, क्रान्द्रीमें महर्षिका त्योकत देशका केन्द्राय इसने कार्य करताना आहम क्रिया। समाग्र उनका पार सम्बद्ध नहीं ६३व तकावा का कुकानुसार कृष्टि होती ची । देशराजने कुल्परियोको जाने करके राज ही सुनिके पास क्वरियत होबार क्वें जाता किया। तत्त्वसर, यह पूर्व हेनेपर सन्दर्भ को जात हुए और वहाँ आने हुए अहरियोकी

१ जाव पदार्थको भन्तरपर कोक्सर सानेकले । २, सूर्वको फिल्मोका यन करनेकले । ३ पुरुवर दिये हुए कामको ही लेनेकले । 环 नारित अनको ही पोक्स करनेकले । ५, एक समर्के दिन्दे ही अंत हान करनेकले अकदा तालक विकार करनेकले ।

### पुषिष्ठिरका वैकाव-धर्मविक्यक प्रश्न और भगवान् श्रीकृष्णके द्वारा धर्म तथा अपनी महिमाका वर्णन

कार्यकरने पूक्त—प्रकृत् । पूर्वकारको साथ और प्रतिवासक प्रकृति पुरिक्ति स्वापने प्रतिकृति कार्यको प्रविक्ति विकास प्रतिकृति क्षेत्रिक स्वापने प्रतिकृति क्षेत्रिक स्वापने प्रतिकृति क्षेत्रिक स्वापने प्रतिकृति क्षेत्रिक स्वापने क्

र्वजन्त्रकारो सह—स्वत् । अवस्थि-सुन्दे सह सर बर्गास्य पुनिहित्ने अवभूव-सान का सेन्स से भगवार बीक्स्प्रको उत्पन करके इस प्रकार काल उद्दरन किया — 'प्राचन् । वेजाव-कांग्रि अञ्चानने विका परावर्ध आहे हेन्द्रे \$7 आक्रमणा, नो-कार्ग, माळावी क्रम करनेकाल, मुक्ताविक होतार क्षेत्रेयाल, बोवन प्रदेशको बहुवि-बेह करनेवाल, कुराह, करावी, केर-विकास, निकार विकासकार मरोक्त, विसे बेरको सम्बद्धांत मरोकार, मार्थकारा, तर और छन्छ पत्र केक्ट्रेकाव, असे प्रतिस्त निवास करनेकारा, वृत्तं, कार-कारों) जीविका करानेकारा, क्षा, कर, कारी, क्षां, क्षारंपर केंबरोवन प्रत्येकार, धारा आहे रसोको सारोकाल, प्रकारक का सारोकाल, कार्या रोवाने क्रांगाल, केर और क्रोडिये करनेकार Frant, कुल्लेकी करोड़ा कुल्लेकाल, कीकी सन्त मारनेवारक, परवर्ध-सम्बद्ध कथा और भी मिलने कथी है, वे अब कित क्वीदा तक्त करते अन्ते काले कुरावार क आहे हैं. \$140 कर्नन क्रिके : सहस्रतातः । मैं को क्रिकाको आरमे परणोची सम्बन्धे अस्य है। यदि अस मुद्रे अस्य केने या पान सन्दर्भ हैं और घोट में संस्थेत सन्दर्भका समिताती हेंद्रै से मुक्ते कैन्य-वर्गेक वर्ग व्हेरिक्टे । मैं क्रके स्पूर्ण कुल्लेक बळाबेकाने कान्य प्रकृत है। मेरे बहु मरिया, मानवर, चीराय, परावर, कीय, उसा, ब्लेश्वर, उसा, बारिकेम, धर्मन, बाह्यसम्बद, कर्मकोन, मरहात, सुरुकी, विवारित, वैभिने, पुरस्त, पुरस्, अहि, सनस्त, पुरस्त, द्वाच्याच, द्वाराच, बाराविक्षणाच, बाहर्षि स्वरकाय, द्वार विरित्त, प्रमानी, का, प्रोप, कास, विपाय, कव, क्योत, निवृद, पृतु, अद्वित, सूर्व, अरीव, अक्रव्या, श्विकाणार्व, बैरान्याचन तथा हारो-क्रारे न्यानकारोके नवाचे कुर वार्गीया शावन विरुद्ध है; परंशु बुझे विद्याल है कि उपन्ते। मुहरों को वर्ष प्रकर होंगे; वे असमा परित्र होनेके कारण कर्मुक सभी वर्गीसे लेख होंगे। इसलिये केवल र अपनार्ध करणये अपने हुए पुत्र परको कार करने परित्र कर्नोद्धा कर्णन क्षीतिको ।'

कर्मका चुनिवीरके इस अकार जान करनेपर सम्पूर्ण करेंचे करनेको परवार बीक्स अलग प्राप्त हेका उनके कार्कि कृतन विकासिक कार्कि कर्तने एने । वे क्षेत्रे---'क्रुचीनक्र' हम मन्द्रि हेले हान्य उद्योग करते हे, 🚃 🖼 संस्करमें कोई कहा कृष्य और रोगी। वर्ष है केरक रिक-करा, रहक, सुरू, करा, क्या और कारी है। अर्थ, काम, योग, पुन्न, अरम ऐश्वर्ष और स्थोतम पर्नाची प्राप्ति भी प्राप्ति ही होती है। यदि निरहत वर्गका रोकर किया कर के मा कार पत्रते हा। करत है। कारे है Bayrell और देशाओं अहें। केरी है। वर्ग से मनुष्यको पानन कराता है। कृषिद्वित ! यन कारकारको प्रमुखका पान क् हे कर है को जानी हुदि बर्वकराने अन्तर्ध है। क्यारी बोरिन्सेने करमानेके बाद की मनुष्य-केरिका मिलना व्यक्ति होता है। ऐसे हुर्रम मनुष्य-सम्बद्धी नासर भी से धर्मको अनुस्था नहीं करता, यह नक्षण् त्यापरे प्रतिस्थ हो जाता है। अल्ल को क्षेत्र निर्मित्र, क्षेत्र, कुरूर, रोपी, कुलोक्षे हेकार और पूर्व देशे को है, अहंगे वर्त-कार्ने वर्तका सनुक्रान नहीं किया है। जिलू के दोवेगोबी, क्रावीर, परिकार, चेल-सम्बद्धि संस्था, बीधेश और क्रम्बद है, उनके प्रश पूर्वजन्मों निक्रम ही वर्वका सम्बद्धन दूधा है : इस प्रकार सुद्ध च्याको निक्का हुआ वर्णका अनुभूत ज्ञान गरिन्सी आहे। कराता है, कोड़ को अवलेका सेवल करते हैं, उने पशु-पाड़ी आहे क्रिकेटियोरे निरम पहर है।

"क्षण्यान्यतः । अस्य मैं सुन्ने एक रहानकी कार नतारा है, हाने —कुमो परम कर्मका नर्मन अवस्थ कर्मना । तुम भेरे मध्य हो, अस्यांप क्षण्य हो और सहा नेरी करानमें दिवस खो हो। तुम्हरे पुरानेतर मैं परम केर्मिक आवस्तानका भी क्षण्य का अस्या है, दिन कर्मिकिको दिने हो कहाना है। क्षण है हिए समय कर्मकी स्वापना और हुहोका किनाव करनेते क्षिण है। जो स्वेग मुझे केर्मात मनुन्न-क्षणियों आवसार क्षण्य केर्मिक क्षण्य करते हैं, वे मुन्ने हैं और संसारके क्षण्य कार्यका क्षण्य क्षण्य क्षण्य क्षण्य क्षण्य क्षण्य है। वे स्वयं क्षण्य है। वे स्वयं क्षण्य क्षण्य

को भी बात है। इसके बन्देक्ट समान करनेने कर [ मनुष्योका राष्ट्रकारम सुद्ध हो जाता है जब उतने परिचय अस्य होता है। देश को अस्यन चोवनीय, कुटला, अक्क और असिनाची परावश्य है अस्ता मेरे परावेश्ये केल अन्यत होता है बैसा बेबताओंको भी नहीं होता और वो पेट अवस्तानम है वह अनतार हैनेवर हुदैशोका होता है। संस्थाके समझ जीव को प्रकारके पश्चामि मेरे प्रकारको एका करते हैं। यो मनुष्य मुझे जनक्की अवस्थि, रिक्की और संक्रमका कारण सम्बन्धार मेरी बंदश रेखा है, सन्ते सन्त कृत्य करके में को संसार-कक्तो पूक्त कर केत हैं। में हे केलाओका आहि हैं। प्रकृत आहि केलाओकी की ही सुक्रै uft fie it it arest meffent anme feut sogel प्रस्तरकी सृष्टि करता है। अहालो लेकर कोई-के कीवेकड सबर्थ में ब्याप्त हो रहा हैं। कुलेबाको नेत बकाब सब्दाने ( सूर्य और प्रकृता नेरी अभि है। भी, अपि और उसका नेरे मुक्त है और बाचु मेरी साँस है। साठ दिसाई नेरी महि, बक्का मेरे आधूरण और समूची पूर्वोची अस्तारक हैरेकार श्रान्तिक नेता व्यक्तःस्वरंत है । काहती और हवाने पहलेका की मार्ग है, जो नेता अभिनाची कर सनको । हिन, चन्छ और प्राप्तांके पर हुआ पर भूमध्यान की क्षेत्रों पैरोके स्वापने है। मेरे इवाचे पहला, इनारी गुजा, इकारी देश, इकारी गुजारे, इजारों कर, बचारों उस और बचारों के हैं। में क्यांको उस क्षेत्री बारण करके सम्बंध प्रकारकारी वस अंग्रंड की अवसेत्

क्यते को विकासन है। सन्दर्भ प्रतिबंद्ध साहत है, इस्क्रीको सर्वव्यक्ती प्रमुख्या है : मैं अधिका, अनन्त, असर, कारण, कार्यो, कारण, जानेन, कारण, निर्मुण, पुरस्कार, निर्देश, निर्देश, निर्माल, निर्मिकार और मोक्सका आहे कारन है। एक, सना और स्वकृ की में है है। मैं करों अध्यानेका वर्ष, कर प्रकार क्रेस्टांसे स्थात क्षेत्रेकाल का, क्यूबई, क्यूब्ई और वार्षे असमीको प्रकट करनेवार है। प्रस्कवनामें समझ बनाहर हंदार करते को करने वाले स्वापित पर दिना चेत्रका जातन से मैं इन्द्रमंगके कामें क्रमा काता है। एक इमार पुर्गतिक क्षतिकारी क्षतिका रात पूर्व क्षेत्रेला ब्यूक्तिको क्षत्र कारीके च्यान् स्थापन-संदान क्रांतिनीकी सुद्धि करता है। असेवा कारणे मेरे प्राप्त वीयोगी सुद्दी और संद्रापक कार्य होता है; वित्य नेरी पायले मोदिल होनेके कारण से और मुझे नहीं कर करे। एकर् ! कहीं कोई भी देशी बच्च कहें है. निवाने केत निवास न हो तथा बोई हेवा मीन बड़ी है, यो मानी निवार न हो। अधिक बाहरेनी कहा सराव, में तुपने तमी पात कर पूर्व है, पूर्व और परिच्य के पूर्व है, पह ता में है है। सर्वे का मुत्रों है स्वा होते हैं और की क्रे क्राइन्ट हैं। मैंदर की मेरी क्राइन्ट मोहित रहते हैं, इंग्लेंच्ये पूर्व पूर्व पार पारे । इस उपसर केवता, असर और मन्त्रोतकेत सम्बद्ध संस्तरका मुक्तने ही अन्त और पूक्रमें ही रूप होना है।"

# चारों वर्णोकि कर्म और उनके फलोका वर्णन तथा धर्मकी वृद्धि और पत्पके क्षय होनेका उपाय

वैक्राप्यवरणे कार्य है—अनकेक्य । इस प्रधान कार्यान् । श्रीकृष्णने सन्दर्भ काल्यों अध्येशे अपन काल्यात वर्षन्त्रम् वृधिक्षेत्रसे परित्र क्योंका क्रम प्रकार करीन आराज क्रिया—'पायुक्तकः । से क्यूब परित और स्थानिक क्षेत्रर कंपलाये संस्था क्षेत्रमा, क्या और साम अक्षा करनेवाले जाननेकोच्य पर्गका श्रमण करना है, उस स्टाइन पुरुषांह-विक्रोपतः भी भवतो पूर्वनिका विक्रमे वार होते हैं. में सम करकाल नह हो जाते हैं।'

श्रीकृष्णका वह परम परित और साथ क्या हुनकर का-डी-का प्रसन्न हो काकि अद्भूत गुरुवा किया करते इस सम्पूर्ण देवति, प्रश्नाति, कमाने, अध्यस्यो, प्रय, कश्च, पर, मुक्तक, सर्व, बहुतक साराविक्रक, उत्तरहाँ केंद्री क्या भगवताम पुरुष जाम बैनाल-कर्मका उन्होंत्र पुरुषे राजा

क्रमित्र क्षेत्र क्ष्में असे । आसेक्षेत्र कर् क्रम सकी महाक् ह्याच्या करकारको जनाम किया । कामारकी दिन्स रहि पहले ने प्रथा निवास के पूर्व । को कारिका देखावर महाज्ञानी वर्णक वृतिहित्ते महाव्यक्तो प्रकाम करके हत प्रकार प्रकारिका—'जनकोबार । प्रकारण, आरोप, बैरम और जुलाने पुरुष-पुरुष केली पति होती है ? इन सर्वाद सम्बद्धिः पारका कर्मन क्षेत्रिके।'

कार्यने कर-वर्धरम ! सहस्वदि क्योंके समग्रे बर्गका कर्मन सुन्ते । को प्रकार दिन्हां। और पासेपबीत कारक करते, संब्योपसम्ब करते, पुणांद्रति देते, विक्रियत् असिक्केत कर्षा, व्यक्तिकोष और अतिकियोचा पुरान करते, निहर एकश्यापने रूपे एके तथा क्य-बहुबा अनुहार जिला करते के जो सार्वकार और प्रातःकार बेम करनेके बाद है अन करवास्त्री बाद इदकों बादन करनेके दिन्ने असन्त । कुन करते, इतका अब वह एको, इन और विका

मानवसे दूर रहते, अपनी ही सीसे क्रेन रसले तथा पहाच्या | और अधिके करते रही हैं, वे सक्तन करतीय क्रेकर **प्रा**क्तिकाची जात होते है।

ब्रांतिकोरी भी को राज्यसिक्तासका आसीन होनेके पह अपने कांका पारम और प्रथमी भागेभीत था। असा है, समानके कामें प्रकारी आन्वतीका क्या पान नेका एक कानेंसे ही संबोध करता है, जा और कर करता जात है, कैवें प्रसार है, अपनी बॉले संतुष्ट कुछ है, कार्क्ड अनुसार फलता, सामग्री पालता और अधारी परास्त्रीय प्राणी संसक्त कता है तथा जन्मभीकी प्रका पूर्व करता, केन्क्रमीक कारको तरार कता, प्रतिप्राची तक करते वैत्ताल, स्था चरित रहत हमें लोग और क्याने साम देता है, की भी केवताओं प्रश्न सेनिय कार्य गरियों उसीर प्रेसी है।

को बैदन क्रांप और यो-बहानमें राजा पहल है, पर्वका सन्तर्भक्त किया करता है। जंग, को और प्रकृतिकी रेकने प्रेसम राजा है तथा स्वयानिक, नेवर परित्र, स्वेत्र और क्रमणे प्रोत, सरस, अवसे ही बीचे तेन स्वरंगाल और विसामेको सा प्राप्तिकार है, यो बाकी वी केवववर्गका उपन भूषी भारता और देवता तथा सञ्जन्नेकी कुलने राज पहल है. यह अध्यापनांचे सम्तर्भन होन्स समिनेको भूतर कारता 🖟 ।

क्योंनेने को उन्हा तीनो सन्तीकी रोजा करना और विरोक्तः प्रकारोधी रोक्नो करूबी पनि सह रहा है: ये किया और के दान देता, ताथ और श्रीकार प्राप्त करता, पूर पाता, बूतरीको बद्ध न पहुँचका अपने कुटुनका पात्रक- है, इस्तीको होता पानको प्रकट करना और वर्गको गुप्त चेक्स करता और एक बीकोको अवक-कर कर केन है. राज्य काहेने।

सरको भी कर्मकी प्रति होती है।

इस जबार वर्गसे बक्बर सुसरा कोई साध्य नहीं है। को निकासको अवस्य करोग संसर-कथरो परि विरस्ता है । काँसे जाकर पान-जाकार और कोई ज्यान नहीं है: इस्तरने इस सांच चनुष्य-सेवनको पायर सह वर्गका पहला करते रहन कहिने । अर्थनुतानी पुरुषोक्ष सिन्ने संसारमें कोई कहा कुर्नल भूति है। इक्स्पारिन इस समाही जिल कर्मीड Roft des unfeur ftrate fant ft, tag bei if miter वार्तन्त्री। अवस्य करके करने पानेको नह कर सकतः है। वर्षका से करिया कर्ष है. जाना विसीनो जार गरी करन करीने । यहे अस्ते हैं को वर्ग होता है और असिक निकारकाले आरस्य करवेश मनुष्यके सिद्धि (पुर्कि) जार से कार्ट है। सरमा को मुलाईत हेमेरर की पापको न्य करक है। इसी प्रकार नहें क्यूनके पासकी नृद्धि होती है के का अलेंद्र वर्गकों और का आरत है।

क्षेत्रीको प्रधा-सम्बद्ध । याच और अञ्चलको परिद्र और हाम किस प्रकार होने हैं, इसे सुरनेकी नेते कहे

राज्यां का—सुने में कुछ द्वार 🕽, ३रे सुने। चलको कुलरोहे प्रात्ने और वलके निर्म प्रकृतान करनेरे अंक: क्रान्स नक के कहा है। इसी उच्चर वर्ष की अपने नेको क्लोक प्रवाद करनेक ग्रह केल है। क्रियानेक के बोजी ही करते हैं। इस्तरियो सन्द्रास्त्र मनुन्यको नाहिये कि सर्वका क्षेत्र करके अन्ते पानको प्रवाद कर है। को हिनानेकी और देवलाओको कुमाने हेन रकता, परबन्धि संसर्भने कुर । कोविन्छ न को । कानक कोर्सन काले सरस्य कारण होता

# निरर्धक जन्म, दान और जीवनका वर्णन, सास्विक आदि दानोंका रूकण, दानका योग्य पात्र और ब्राह्मणकी महिमा

मुचिहिले पगवान्हों पुनः सबीद विकासे उस किया—'पुरुषेत्वर । बितने क्या वर्ष सम्बर्ध सके हैं ? बितने प्रधानके क्षा निम्बल होते हैं ? और बिज-बिल बनुबोक्त जीवन विश्वेष यात्र गया है ? स्त्रीयक, राजस कौर सामस खन फैसे होते हैं ? उनमें फिसस्की हाति होती है ? अरम क्रमका करना क्या है ? और आसे किस परावरी प्राप्त होती है ? यह बतानेकी कृता अधिको । मै इस निकारो |

कैल्लाकार्य कार्र हैं—करनेकर ! कार्यक, करेरक | सामग्र काहत है और इसे सुनोके रिप्ने केरे करने बड़ी सम्बद्धाः है ।'

> कारको का पन्ता में तुने कारके अनुसार क्कार्य इसे अपन करोड़ा सुराज 👢 प्यान केवन सुरो। यह क्रिक्स परम परिता और सम्पूर्ण पानीओं सङ्ग कारोबासा है। केंद्रा कर कर्ज सब्दों करे है। प्रकार क्रांति दन निकास होते हैं और किन-किर पर्व्योक्त परिवर निर्माण केस है, उनकी संस्था का महत्त्रमी गर्म है। इन समका मैं

सारवाः कर्णन करोगा । वर्षका नक्ष करनेकारे, सोसी, करी, सरितंकांक किये किया पोक्षा करनेकारे, मरबीनकी, कोक्सरों के करनेकारे, अस्तावकी, कष्टु-काकांको क्षेत्र केवर कोरों के निराई अस्तेकारे, पाक-विता, अस्वावक-मूह और पाक-कारोंको करने पा पानी केव्यारे, अस्ताव केवर मी संस्था न करनेकारे, अस्तिकेव्या काम करनेकारे, बाह्य-क्ष्मारे कृत क्ष्मेकारे, अस्तावका काम करनेकारे, बाह्य-क्ष्मेरों कृत क्ष्मेकारे, अस्ताव क्षेत्रम क्षमा आ स्वावकारे स्था मेरी, क्षांत्रस्थित, स्वावकारी सम्बद्ध स्वावकारी स्था करनेकारे—मे ब्रोक्स अस्तावका कर्मन

को श्रेप अब्दान का अवकारके साथ दिया पास है, जिसे दिवालेके देखें दिया पातर है, यो प्रश्नाकीको प्रदा ६०० है, है। है कुछे एका आराजको पुरुषे का विकार् 🗓 विते केवर अपने ही ज़ैरते वर्तना बरूबर विकार पत्र है, विके Traples from wer & may flowed door which made field मोच्ह अब्दा विद्या नवा है; से कुमो क्वांना सकता, हुइ बोराका राजे इत् सरावा, आक्रमके करता, बोबी करते करने हुए प्रान्तक तथा वार्तको कुमको करने साथे हुए करना ure flore was the all office adaptivals flore was the flore क्षान्ती करूची नेप्रीयोग पुरानेते, सन्ते पर्व करण कारोकराति, संस्कारकेन परित्तेने क्या एक वार कंपका रेकार किर गुप्तम-सामानी प्रवेश कालेवारी पुरुषेने बहुल किया है; को ६४ वेरकाशीको और सहसारे क्या पुजार कर्मनारे प्राप्तकारे किए एक के स्थाने चीवते कावय करनेवारे, कुल्ह, उपकार्क, नेत्र बेलनेकरे, राजनेकड, फोलिनी, सार्विक्य, यह वार्विकी सीचे स्थव सम्बन्ध रक्षनेवाले, अख-कक्षां जीविका क्यानेकारे, केंबारी करनेवाले, प्राप्त प्रवाहनेवाले, प्रतिक्रिये करनेवाले, क्रेस, मन्त्रिका काम करनेवाले, क्षा क्या करका जीविका करानेकारे, जाके पह पुकार कानेकारे, केल रेका मन्दिरमें पूजा करनेवाले, केवेलर सत्यतिको का कनेवाले. प्रसीर करानेका काम करनेकाले, १०-व्यापि जन्म-कुरका चीरिया प्रापनेकारे, पांत क्षेत्रका बीवन-निर्माह कार्यकारे, मेवाका काम करनेवाले. प्रायमोधिक आवारके हीन होकर भी अपनेको सहाम क्यानेकाने, उन्हेज देनेकी प्रतिको सीत. म्यानकोर, अन्तकारी, अधिकोत न करनेकारे, संग्लेकसन्तरी कारण पहलेवाले. हामदे गाँवनें निवास बहलेकारे. बादे ब्री महामाओंके-से केव कारत करनेकरें, समये साथ और सम मुक्त सारेपाले, जरितक, कारिकेटा, पीच परिवाले, क्षेत्री यवाडी देनेवाले तथा कटनीविका उपलय लेकर चौबके लोगोंचे

स्मृत् क्रिक् करनेवारे व्यक्तको में इन दिन नात है, यह उस निकार क्षेत्र है। उनकृष्ट अक्षणोधो दिने हुए इन नाइ हैं के भी राजने इस्ते हुई बीची अक्षणिको चौति वर्ष है जरे है। उन्हें दिने को उनका को हुक कर क्षेत्रतात क्षेत्र है, उसे प्रश्नक और निकास अस्तातको साथ सुद्ध के करे हैं।

जुनिहेर | अस विश्वनीत प्रमुखीया चीवर वार्ष है, सम्बा वरियम है का है, कुने | यो होन मेरी, समावन् इंकापी अध्या कृत्यानके नेवल साहानीती एरन की तेते, प्रमुख बीवर वार्ष है। विनादी कीरे तर्माक्याने हैं अपने हैं, यो वरियम-नवका समावन्य कारे हैं, विन्ति सम्बा करते हैं, विन्ति सम्बा करते हैं, विन्ति सम्बा करते हैं, विन्ति समाव कारोप के कार्य कृत्या कीवन की मार्ग है है। यो प्रमुख कारियमोंके सामा कृत्या कीवन की मार्ग है है। यो प्रमुख कार्यक्रिय, वानू, आहि, कार, कुने, कार्य-निवर, कुन, इस प्रमुख कार्यकारी निव्य कार्य और सामावक कार्यन की करते, में की विराव की विन्ति कार्य कार इसरोधों में के कर होनेवर भी कुन और वर्ष मार्ग करता कार्यक कार्यक करते की विराव की विराव है है। इस प्रमुख कार्य की विराव है, सुख कार्यक मार्ग में विराव है है। इस प्रमुख कार्य की की कार्यक है, सुख कार्यक मार्ग ।

शय कृतका समय कारतात है। यो प्रमुख साथ करते परित्र हो पर और इतिहासिको प्रमुख एकामा स्टब्राके साथ दान कता है, अने कारको का चैक्सकराने चेपल है। को क्षा हेरेकेच कहा है क्षाक परिवर्तक साववादी क्षा कारा अन्यो करकार्यक प्रत्य कर सुरक्त कर प्रकृति है। कर और आहर कर स्टॉक्ट, करन और राजा-भेटरे क्षेत्र-सेन अध्यसका क्षेत्रा है क्ष्मा असकी गरी। यो सेन अध्यसकी होती है। इस विकास करोग करता है, सुन्ते—हम देव कर्मन है-देश राज्याका अपन्य प्रकार न करनेकारे कार्यको को कर दिया करता है, पर सरीवाद है। विकास कुट्रम स्कूब सक्त हो एका को तरिक्त और बेराका निहार हो. हेरो महत्त्वको प्रशासकपूर्वक को कुछ दिया करता है, यह की सारिक्य कुरुके ही अपार्थत है। परंतु को बेहका एक अक्टर की न्हीं सामा, विसमें, परने पानी समाति मेंनर है तथा को चाने क्यी अपन कावार कर चना है, हेरे साक्षणको विधा हुत्व द्वान राज्या बाना क्या है। अबने सम्बन्धी और प्रवादीको विक हुआ, करूको एका रक्षनेताले सर्वोके प्रश्न दिवा हुआ क्या अञ्चलको दिवा हुआ द्वान की समझ ही है। यो उन्हरून क्रिकेक्षेत्र नहीं करता, बेहका जान नहीं स्थाता हवा चोरी किन्द बन्छ है, आयो दिस इस्त कर तामा है। होब,

**विरस्तर, हेल और अमोरम्बर्गक राज रोजवायों दिया हुआ** का भी करता है कारक पता है। साविक करते हैता, मितर, पूर्ण और महि सहय करते हैं हमा अरहे इसे पहा संबोध केस है। राजा का कुछ, केद, सह, यह और पक्षातेंद्र स्थिते जात है एक क्या पर कर्य और जीतर कर्त करते-भारते होता कर्त विकालनेको हान्य होता है। अन्य विशेषा परिवार कर्तन दुनो । सारितक कुनारा पात गान, तथा कुनार कथान और सामा करका फार अच्छा केस है। इनके साम पार सर्विकोरी स्थाननेको नो पुन दिना साथ है, यह अपून प्रकार नवा है। अतः में वेदके विकार होते हुए हरिए हो, उनके मरम-प्रेयमध्य हुए सर्व प्रथ्य करे और क्रमीरकार्य हिनोकी रक्षा वाले रहे । क्योन हरेड सहकोची दल केटर रूपर्य पर्यपति पूरा करे । समस्य कर सम्बे साथ **सं** सप मेनेवालेके पास काम काम 🛊 और क्राम्या पूरूप कुलाको प्राप्त 🛊 कता है, जब: परकेकरें अन्य के पहलेकरे एकको सह क्षत्र वाले पान वर्गाने । से के-निवा पहला शास्त्र प्राप्त शाकर-विकास को हो और क्रुप्रेश आ पानी भी कार माने हों. देने विद्यानेको प्रकारकोच पढे-बडे छानेका प्रकार प्रमाण गाविने ।

पायक्रमकः । विश्वति स्थानी अस्ति प्रतिके भोजन्ते क्यो हत् अन्त्रको प्रतारिकृत ज्ञाल सन्त्रुकार क्राके निक्किकी प्रतिक्र किया भारते हैं, हेने अधूनानियों तुन परेकानों, प्रेन्ते नियमिक करना जीत करने उद्धानीको नियमित करके उने निराह र शीराना, अन्यका क्रमकी जाका करी कामने । से वेरे असा ही, केरी क्रारवर्ध हो, येना पुजन करते ही और विध्यापूर्वन्द्र जुहने 🛊 शने को हो, कारत सामुर्वेद कुमर करना साहिते । स्वितीत | रूपने रूप प्रयोगो परित करवेड़े रिन्डे में प्रतिक्रेप केर्ड शंभवती शंभाने बाल जुल है। वेस वह विका क्रवी प्रतिक्र गर्वी क्रेस, असीलो मेरे विकास पर्यास्थिको पाहिले हैंद्र से शामकृतिको निर्म संस्थाने समय निरम्भ स्थानक प्रमा ( हो-मेले करमचन) यह यह कारी हो। संबंध और अस्तर कारण मन करनेते एके प्रमुक्तीके भी पान पर से करे हैं. अक वित-पृथ्विके विन्ने प्रकेट स्थानको क्षेत्रो स्थानको संस्क करके कविने । को साहान इस प्रकार संबोधकार और कर करता हो, को देशकार्ग और स्ट्राने निवृत्त करूप पाहिले । सम्बंधिक सहस्थि नहीं स्टब्से स्वीते क्योंकि किया स्टब्स् मानव कर सामाने और प्रवार का का केन है, की कार किन्छो परा असमे है। असि कार्नको कार्क कार् प्रकारोची परेशा नहीं करने चाहिने; वर्गीत देश करनेते क्यानको नही निन्दा होती है। प्रमुक्तोको निन्दा करनेकास

व्यूचा कृषेकी क्षेत्रिये क्या रोता है, जागर क्षेत्रहेशक अरमेश व्यूचा क्षेत्र है और काम्य किरमात क्ष्मा क्षमें साथ है। करमेश व्यूचा क्षेत्र कीर मैंगान साम्य कीर मानकेर है से भी कार्य अस्ता अन्यान व करें; क्ष्मीक से सीने सामसीय होगेश अन्यानी करा कर कार्य है। जाइन कार्यों है वर्गके मारसा वृधि है। या कार्यि है रिस्ते अस्ता हुआ है और मुनिवर अस्ता वास्तिय सामित्रत है। आहम अस्ता है क्षा और अस्त है वास्ति है। क्षरे क्यूचा कार्यामी क्ष्मी है क्षेत्र को है, अस् वास्तिय क्ष्मी अस्तान की करन कार्यों, क्ष्मीक से साम है वास्ति क्षा रक्ष्मीकार है।

के प्रकृत सुरक्षात्रक अभिन्त्ये वर्षित मेरे गृह और निर्मात स्थानको (तर्भ रहते 🗓 स्थान कार्यके पूजा क्रान्त । करण को या विदेशने, की जब प्रकारोकी निरमा प्रकार क्रिय पूर्व करने क्रम, प्रमुक्तके प्रमूप कोई केवा, प्राप्तकें क्रमा पुर, प्रकारो क्रमा क्या और प्रकारो क्रमा कोई निर्देश करी है। कोई सेर्ज और कुछ भी अञ्चलको केंद्र करें हैं ल्यानको प्रकार परिता और पायर मोर्च नहीं है। अस्तानको केह को और सहायमें प्राप्त कोई मी। बड़ी है। संघ-समीद सहाय परवाने निर्मा पुर पर्यक्रात एक सुवात होतान भी उद्धार पर कारण है। को बाल्यकारों ही अधिकेन सानेवारे, प्रान्त, कुल्क आह तरान हेरेकारी और मेरे चक्क है तथा तक मेरी पूजा किया करते हैं, प्रश्ने दिन्न पूजा कर अधून होता है। मेरे भरत प्रांतरणको कर केवर अस्त्री क्या करने, चीक क्रकारे, अस्त्रर करने, सामग्रीन काले अनवार हाति चारनेते का अनुवस्तारे हिन्छ-कोकने पहिला है। को सोग की गुरू और सीरक्रातीका पह क्या केंद्र नकावार और बाल करते हैं, अवदा क्रांप और सर्वा वारोबाल बहुब पर क्योंसे कुछ हो जात है। को मेरे बाह है, निरुक्ते प्राप्त पुरुषे ही समे हुए हैं, जो नेरी परितासक पान सकते और मेरी क्रालाने को रहते हैं, किनकी क्रमति क्रम रख और thick of \$, so had floor, finifer nor spreak on क्रिकार है, वे वर्धन्यको बरिक कर के है—हेरे ह्वेन्डेके प्रकार कर्य क्यांच्या क्षेत्रार व्यक्तिकृतिक विशेष्यकारे क्षा केल नारिये । यह सामान्य प्राथमी अनेका क्रिकेन्ट्रम प्राप्त हैनेसास क्य नम है। क्यारे अवस्था होने सकर, करोहारे का वर रहते कार जिल अकुराते क्षांने आसी पहिल्लाको कारत है कर्ष क् जो हेक, यह कुल, साँच, रखाँ आरक सम्बद्ध करनेनाले जनवारो प्रतित कर तेता है। इस प्रतार तत अध्यक्तकोरे मेरे महर्तेको हिने हर राग प्रधानके क्षत्र कार्यकर्त अपन कार्यकारे होते हैं।

# बीज और योनिकी सुद्धि तथा गायत्री-जप और ब्राह्मणोंकी महिमाका वर्णन

मैहन्यकार्थं कहते हैं—राजन् | इस प्रकार सार्वका, राजम और जनम कर, जनकी विक्र-तिमा प्रके और पृथ्वन्-पृथ्वं प्रस्का कर्णर सुरक्तर कर्णरावक कृतिहित्का विहा कहर प्रस्का हुआ। इस कावर्णांट कर्णरावी अनुस्का पान करनेसे उन्हें तृहि नहीं हुई, जातः वे कृतः कर्णान् मीकृत्वसे कोले—'काव्येक्षर ! युक्ते क्षेत्र और केलि (वीर्च और रज्ञ) से सुद्ध पुल्वेक स्वकृत क्षातृत्वी : वीज-केल्फ केले मनुष्य उत्तव होते हैं ? इसे क्षात्रिके हान्य ही व्यक्तिके जन्म मानद आहि विहोत्त केंद्र और उनके पुल-केलेक्स की विकेक्स क्षात्रिके। वे जारका स्वता है, इस्तिको केरी कृति हुई सारी करने क्षात्रकारकारी कृत्व क्षात्रिके। ('

गण्यान्ते क्या—राजर्! जीव और चेनिकी हाँच-अनुरक्षिका कामन् काँच सुने । रूपनी सर्विते ही का बंधार दिवारा है और असुद्धिने करवा नाम है । जो man sapudus feffent unn unt f. feren m कारी जरिवा की बेल, अन्यों प्रज बीच सम्बन्ध पर्याने. क्रमेका कीय क्रम होता है। इसी प्रकार को क्रमा निवा और बताबी दक्षिते राज्य कराने राज्य है, किराबी धोने इतिह म क्रूड के इच्छा साझ आहे ज्यान किन्युरेकी निर्माले व्याही गर्नी हो, का जान मानी गर्नी है। जरीबंदे चेलि होत है। जो भी नह, बाजी और क्रियाने परपूर्णके क्रम सम्बन्ध कर्मी है. अरबी बोटी गर्माकरके बोना नहीं केवी। को पासाब पुरु संस्थानी ह्याने स्थितारेके बीचे सीवार क्या L वह अपनी कृत केरी कारोके कृतिकों और कृत के**री करको** संस्थानीको जनको सरका है। को पूर्व बोहकर सुनेत सेनिने बीर्वकी प्राप्ता करता है, उसके बीर्वने रूपता क्षा प्राप्ता क्षे अहोका विद्वार हो क्षे र हे कर, राज् पुरुवेको जीवत है कि जान्य पान्यक्तके संगत परिचाल करें । यो को पर, वाले और क्रियाने व्यक्तिकर बनते हैं, जाको कुरुवारिनी संस्कृतक पाहिले । उसके बेटने पैदा इसर स्वरूप काकारके समान होता है। द्वीता मेरियो उत्तव हुए मनून ब्राप्त, द्वार, श्रीकान, कर्तारकन, क्रमा तथा सम्बन्ध अवदिने समितिक जरने केन्द्र की होते । सिन्द नाही कन्यते जन्म, कार्यके समय पर्यक्री क्रम्यको जनस, परिवर्ध बीक्तिवत्वाचे व्यक्तिवासी अन्त्र, प्रीके वर क्राकेट परपुरुवसे इत्यत्र, संन्यासीके बीर्वसे करना वका व्यक्ति मनक्सो इस्ता—ने प्रः जन्मत्वे जन्मन कत्वान धेरे है।

इसके कावानोहे में जेट समझन प्रतिने। ये कॉन्सर्ट किस किसी क्षेत्रे अध्यक्त पुत्र कार्रिको क्षेत्रे भी समान्य कर केंद्रा है, क्षा करावा केंद्राचारे बहरवात है। उत्तार मीन जहर हेज है। जन्मा सहय चीर्च किसी हुद चेनिकारी बोके क्षेत्र भी केल। अने सम्बद्धी करेके करे हर हरिकारो बाह्य सह स्वेति भी हरिल है जाती है। प्रश्लासका सीर्व का प्रका सीचे: मेनियें प्रकार है से इक्स्प्यत कर बठना है और र परे होका बद्धा है—'हाब ! मैं निक्रके प्राहेमें यह गया । महो इस प्रकार अधीगतेलों अस्तरेवास्य यह कान-वोदित करान कर्न भी और है अनेपतिको जार है ।' इस राज जान हेक्टर का बीर्ज निरस्त है : मैनिक्ट आरम बताया गया है ) का कानी केंद्र देखा है, इस्तीको सम प्रधारका प्रथम करते. अपने क्रेनेकी एक करने शाकि । बद्धा सहायनि पारको आप्, हेक, कर, क्षेत्रं, बुद्धि, सब्बे, महान् क्रम, पुरूष और वेरे क्रेकको प्राप्त पारक है। यो गुज़ब-आकार्य विका होन्यर आहत्य **ब्राइकोका फल्ट करते हर रक्षणाति अनुसार्थ शहर छते हैं.** हे कुम्बोलास्यर कर्पकी स्थापना करते हैं । यो अतिहिन समेरे और प्राथको विकित्त संकोपका करते है, वे बेहरची कैवरवार पहला रेकर का संस्था-स्थानों को की का बाते हैं और कुरतेको भी कर हेटे 🖟 से स्थापन सम्बद्धे परित्र करानेवाली केन्द्राम क्षेत्रकेता का कहा है, वह प्रमुक्तित पृत्तीका क्र हेरेकर भी अतिकारि क्षेत्रों हुन्दी नहीं होना तथा पूर्व आदि च्योपेके के उसके दिन्ने अपन्य स्थानमें सुमान अनिवृत्यास्य होते है ने भी पानती-अपके प्रचारते प्राप्त, पूर्व और सामानकारी हो जाते हैं। जाते कहीं कर कर्म करनेवाले असेवार विकास रहें। है कई सारेशर की में उस उत्तरकार समिश्र की बार कृत्यो । वैदिन्न इत्येषा अस्तरण करनेवारे पुरूष पृत्योगर क्रारेको पर्वता करनेकारे होते हैं : प्रमाधीत कनुका कहना है कि 'बीट, सामान, इन, ब्रोब, कोमाना और समाय-ने सामुख प्राप्तकों दिनों केही की बहुबर है।' को प्राप्तक 'पूर्वक रह' इन बाह्यक्रिकेंद्र प्राप्त प्राप्तकेक कर करता, वेत्रके राज्याको संस्था करा और अपने हो चीसे प्रेम करता है, की विकेरित, बढ़ी विक्रम् और बढ़ी इस पुरुवानका देशस है।

यो केंद्र अकृष्य अभिन्तित संस्थेतस्य पारते हैं, ये विश्वविद्व अकृष्येक्ष्यो अन्त होते हैं। केवल सामानिका साम्येक्ष्य (स्कूष्य भी पार्ट नियम्मे सूक्ष हो से पा केंद्र हैं; विश्व को पार्ट केविका विद्युप होनेका भी समस्य अन्य स्वतान, इस कुछ बेक्स और निक्रोंका चरार नहीं करता, यह उसन भूति मान्य काता । पूर्वकारको देवसा अतैन प्राप्तिकोने प्राप्तकोके इंदरने चांबर्विका, और करों बेहोको बराकुरर स्कृतर जीता मा । का समय पायकीया परका है करने केंद्रेले पारी सामित goo । मेरो प्राप्त निर्मे हुए पुल्लेके रूपके सारकुर पहुंच्ये प्रकृत करते हैं, उसी प्रकार सम्पूर्ण नेहोंसे उसके करपूर मार्थाका प्राप्त विमा पक्ष है। इसोको प्राप्ती प्रमुखे मैहोपर अस सहस्थारे हैं। परमार्थक विकास करते के दिस्तीय है। निवार और सहावारने प्रकृतसम्बद्धाः वाले वेद्येक विद्यान हे में भी का निकास है कर है; जिल्लू चील और सक्तानको कुछ प्राप्त और केवल करावित्र का करात है से के का है। महत्त्व करता है। इतिहास सुध्य प्रकार करती-नकार कर करता कार है, को प्रकार कर कार्य प्रकार और कुर 1980 कर काना करियु परंच राज है। कुन्दीराक्त । परंची का पर्नोक्ते म्बु क्रेंग्लाने हैं, इसीने हुए सह आहा का बावे को ।

man up-brieden i are over with बाराम है। काराने, फिल करेंग्रे कार संक्षा होते हैं ?

राजरो सह—पान । योई इस इसर पर एक्ट आहे. प्राथित प्राथिते साम्या को दर है, निरंपर wenter arbeiter eine eine aus mehr, werbt और सामनेकार क्रिकिंगोंने तक नेना काम काम रहे. मिन् महि का अञ्चलको संदुष्ट न कर कोड को में उत्तरन उत्तर नहीं केल : प्रान्ते कोड्र बड़ी के अध्यानकी पुत्रको सब केरी के क्या हो बाजी है और प्रकृतको सहस्ता सुन्ताने में ही का अञ्चलकार स्थान करना है। को स्थानको कुछ करने हैं, करकी परंप गीर मुक्ते हैं होती है। क्लेंकि क्लीक प्रमुखीके कार्य में है जिसस करता है। के पुरिकार सुक्री मेंच स्थापन प्रमुखीची पूर्ण प्रत्या है, जानों में अध्य कारण ही सन्दारत है। प्रदान की कुनके, बारो, बीरे, वरित और रोगी भी हो से मिहन पुरानेको कभी उनका समाना कों करन वार्तिने; क्लेकि से तक की में करना है। क्ष्मार्क्ट प्रतिके हार विको भी होतु प्रमुख है, ये इस मेरे राजन है। उसके पुजन करनेसे नेव नी पुजन के जाना है। | जोई करका नहीं कर पास ।

बहुत-ने उन्हरने पुरूष इस बहुतने बढ़े बहुत कि मैं इस पुर्वोत्तर प्रकृतोके काने निकार करता है। ये प्रकृतोका अवकर करो, उन्हें समर्थते पह कर देते, हर बनावर बेनते और करते अन्यते होता बारते हैं, का व्यक्तियों प्रस्तानके मानाने का प्रकारतार करते हैं। यो प्रकारीयो मानी केवर और अच्छी विषय परने आरत होते हैं, में पन कालेको करे है से साल-साल आंत्रोक्ट कुर काका उन्हें क्रावीवर पालबार प्राचीवर प्राचर हो बाते हैं और आवरें कारों हुए बैक्कोंने कारों कीन कार्या होने हैं। की पानी व्यानकेको और करपूर्व पृथित देखते हैं, अधूरतेके और चौर को करे, बैदिन क्लेक्स सरकृत करे और राह म्बार्टिक हेर्स करे चुटे हैं, से कर करतेको क्लिसे हैं से वर्ग करकारी अवन्ते केरे घोषको दो-दो कालार चही जावर कुलकरों का पारियोको अधि निकास हैने हैं। के गहुन कहनको बेक्स, साथे प्रतिने पूर विकास हेता, अलबो होते केंद्र प्राण्या अन्यता प्रापंद अन्य से सेना है, का सम्बद्धाः प्रातीतः मान्योजे अन्तरे कार्याः पास केरातः है। पहले का प्राचन पहला पत्ता है। दिन बसाय नीने करके को अपनी पालक किया पाल है और यह कार्य स्थीतह mei eine mit bie bei im Gefcheine des mit meit कारको समाज प्राच्यात गाँ करा, कारक कि उसके करण केन सरदा नहीं हे नाता। इस्तीने प्राह्मनीके और क्रमी अन्यारायका क्रम व क्ये, उस्ते क्रमी और महोर बार न केने क्या कभी कार्यों आक्रमा अलाहन न बारे । से इंद्रालकों के कार्याली और नवीचर्ग क्षेत्रों हैं, से पूर्व क्षे पार्टी की और पूर्व ही बाँद पार्टी हैं। में प्रपार, पर और केंग असीके प्राप्त मेरी प्राध्यानमें प्रतिनाका कुमन करता है, माने प्राप्त नेवे पार्वपाति एक को होते. विस् प्रमुक्ति प्यन्ते केरे कारका कुछ हो जाते हैं। साहजोडी कुपाने हैं में इस पुर्व्याको पारण करता है। अञ्चलके अनुस्कृते 🕸 अनुरोक्त विकास पात है। स्वापनोर्थंड सामाने ही पुत्राने क्षांत्रमा अभी पुरा नेपह है एक प्रकृतनेकी स्थाने हैं पूर्व

### यमल्लेकके मार्गका कष्ट और उससे बचनेके उपाय

बहार्क, मनुबार्कक और कारकेवक बोकडी हुए विकास है ? कालोक केला है ? विकास कहा है ? और कहाँ है ?

मुच्छिले पुरस्-केशन । जल सर्वह हैं, इस्तीके | जल जीव कहानीरीक क्रोस्से अलग होवर सका, हुई और कंस्को सीव हे बात्र है, उस सम्ब उसे समा-द सबा अनुकार विकार प्रधार होता है ? देवता और प्रधाननेकी पूरा भूगों किस अवनी मार्श्वेचके दुन्होंने पुरुष्टान को 🖁 ? 🖟 कार्वेचले. वर्गनरावस प्रमुख कर्मकी बद्धा किस अवस

करते हैं ? शब्द करी पूक्त जेतरकेकों किसे जाते हैं ? कामकेकों जाते स्थान कीवक कर-19 केवा होता है ? और असक्त करीर किसना जात होता है ? में शब क्यों कान्त्रों। सरकारों कह----समर् ! कुम मेंने त्रक हो, हस्त्रीको की

कुछ करते हैं का पूर्ण पात नवार्त करते जात का है। मनुष्यकोग्रा और कमावेश्वामें देशकारी कृतक चोष्यकार सम्बद है । हर बीचके पर्ति न कुछकी सम्बद्धि, न स्थापन है, न चेपरा है, म मानाई है और पर्देशन होते । कोई प्रमान, बैनल, प्रमान, कर, कृति, नहीं, मुख्य, गाँध, साराय, वर्गीया, पर सामग्र एक्टरेस्ट हरता कोई काल को को है। यह बोक्स कुल्यान स्थापन होता है और यह वेदारते प्रकाशने समात है, का समय कारण-कार करिएक कान बार के हैं, फार कानक आ को है और क्षाकृत कहते को हुए चीनको कारण हता प्रतिको निकार करन ध्यान है। का बोबोबाने सरीको विकास्तर सम्बन्धकारी बीव इक्-कुरो अक्टूब प्रशित्में प्रदेश कार्या है। उस प्रावेशके प्रमा, रेप और पान भी पहले क्रिकेट ही करना होते हैं। जाने अस्ति क्षेत्रेयर को जीवनके कोई देख की गान । केव्यनिकेट श्राचनात्र प्रोप श्राच अपूर्णि पूर्व क्षेत्रन प्रात्तेवच्या प्राप्त कारत है। यह बार्को, हुक्को-कुर्क बार्क, सार्को अवस मार्ग्यो पर माँ केल : प्रमाणको जनको स्था प्रकार वर्षका का बारण कर सामग्र कोची और दुवेर्ग कच्छा प्रकट पुरिनार रिमो आते हैं और सीमाने मार्गाची मारावार से मार्ग है। इस समय बीच की-पुजरिके केइ-कामने अकड़ होना विकास-मा हो पाला है, कर यह कारे सन्तर है से उसके फिले हुए मार-पूज्य उसके पीछे-पीछे को है और उसके प्रश्न-स्वयंत्र कृत्यके नेतिक क्षेत्रक काम्याकान्य प्रत्ये विवतन करने राजके है। इस समय जीव सवादी ओरहे निर्मात हो समात क्षण-सम्बन्धेको क्षेत्रका करा है। । यक्ष-निक्त, नाई-कार्य, ब्री-कुर और मित्र ऐसे ब्रु करों है, कावत साथ कुर जाता है, क्रमते के और मूक्त अधिकोधे भीने होते हैं, क्रमते दक्त कही इंडरिंग हो जाती है, जिस भी बहु जीन क्यें दियांची भी पहला । मा अपना प्राप्ति क्रोडकार पायकान्त्रे का गर्नाक्ट ओर पान केड है. जो अन्यकारने करा बेता है और विस्तवन कर्ती कर जी हिस्तानी हेता । यह पन पहल पर्नवर होता है । उत्तरक प्रत्येनको यविकेसे अन्यतः दुःस-ग्रे-दुःस स्टब्स प्रका है। प्रवासारियोचे हिन्ने का कहा ही कुलर और कृति करने है। यह किसी स्कृतकार विकास का करिए केस है, जिसका क्रिया का बात है, यह जनुजाने क्रमु-बार्का, भोज-कार्या और संग-वैत्रात एक पुरू प्रोकृतन अवदर्ग है जा नार्गित कान महार है। स्वापन और बहाय राज्ये प्राची एक दिन क्यानेकारे पुरिषक होते हैं। यसकारों अभीन सुनेवाले सेवार, अबार और पहल अबी को की बीब है, में बी-पुरू अक्षा न्हेंतर हो, बार, बुद, बुना क काल हो, होतरे के कु हो अवक पर्वर्ध निका हो, का राजको एक दिए जा महान प्रकार पटन पटनो से पड़ते हैं। एस्ट्रेड हे पा परह: बंबाबा करन है के स्टिका, आवी रह है का समेद, व्यक्ति कर कर साथे है रहते है। क्षेत्र परोक्ते हे. बनायों हो जा पर्वतपर को हो, परा, परा, नगरपर के करों, ब्रोक्ट केन्द्र हों, कार्र का पानी पीते हो, मेरे हो, पाई हे का विकासित को ही, बारतों ही सरकार को पने हों. हर क्या और पूर सम्बद्धार्थ कर यहन्तर्थकों और प्रस्तान करन हे बहुत है। कारवेकके कारत कही अध्यय, वहीं कारत हेकर, क्यी केंग्रर कायर और यही नेराओ नहीं हेयर केने-विकास पूर्व कारण पहार है। कामुलेको और प्राचन नोप महिल के बाते हैं और पानते निवास के बर-बर सर्विते काले हैं। कुलेकी चार पात्रकर सार्थनों बेताबु पीड़ा होती है से थे अभी बाबार कुले हुए जाने बहुत बाल है। जिल करवाँने कर नहीं निरंध है को सबी निवस्ते पूर्व और सरी हा बाल प्रका सुरक्षे को हुए जानेन बालो क्रीको बारना पहले हैं। कांग्रेस पूर्णाको पहले, परस्य, दिलाई केंग्रे, परसी राज्यों, प्राप्त और अंक्ष्मणी का कार्र प्रत्यानगरीको साथ प्रशास है। के कार्र जीवीकी क्रमा मारते हैं; क्येंक्ट्रांकी क्रमा के बार्व है कि वे प्रकारने, करवारे तथा जोर-कोर्स्स Reproductive & safe with fleshoù was firete-regit versen पहला है। उनके किसीके प्राप्त-के और की केन्न हिने पार्क है. विकासिक पाना परोड़ दिया पाना है और विकासि विकास क्या और ओड़ कर दिनों करें हैं। उनके कर पूरीर, निर्वेपकर, पहु, केंबर, क्रम और विद्वारको मार पहले करी है। करें, करा, नेदीने और कीने करें धारी ओसी चेवके पाते हैं। बांस पार्टनेवारे साइस भी उन्हें मीड्रा पहुँचते ैं। को खेल कांत कार्त हैं, उन्हें का व्यापि पैते, कर, यूका और विश्वकारी प्रतिक चोट प्रतिकारी और प्रतिक पांची स्थापकार क्या करते हैं। के करी करवारेकी इसा करते हैं, उन्हें सुद्धि समान सेसे अंक्याली चरिताची चारों ओरसे कारती राजी है। को रहेग करने क्यर किसास करनेवारी सामी, मित्र अक्रम क्रीकी इस्स करते हैं, उन्हें कम्पूनके मार्गपर वसका इक्किएरेसे बेक्टे को है। ये उसरे बीबोक्टे प्रकल करने क जरें कुना बहेकते हैं, उनके पूर्व और राज्या बाद नाते हैं। के दूसरोके करते, भरूप और विकार ब्याने हैं, उन्हें पासूत निकालोकी करा नंदे करके सम्बद्धे हुए ले जाते 🛊 को द्वारता

सीर ध्वयारी युक्त कार्यकंड कृत्येकी थी, सनाव, कोण, [ ्योत और पूर्व अस्तिको हुन्य हेते हैं, वे बनावेकने बारे साम नामारोंके प्राप्ती बातर, मानदी वर्ष कार्यों, की, बाद और करियार क्योंकी पार एको है। यक गांध काला अहोने प्राप है जाते है। में स्कूप कराया का न सरकार समुक्तीका था कीन रेते, उन्हें नारिकों सुनके और कह कर र्मेक्ट है, में का कानुमंत्र जानि को है, सर कार कानून कृत तरह करकृता भीको है कि उससे बात कुल बात है। went wire, as'es are now use to wait it went प्रतिराद कृतिका पीच और रक्त काल पाल के पीदा उनके कांग्र केंग्र-केंग्रक करते हैं और स्रोकने को हुए क्यापक सामात को पाने ओसी रोड़ महिलो स्त्रो है। कार्यकर्ष ब्युंडरेल के पर पारियोको बोकेन्स्री निवासे व्यक्ति पार हैं के साम है और नहीं ने कोई क्येंटर बैक को ए नाम भीनो रहते हैं। स्थापन, सम्बद्धान नामनामाने spense when à per rèuré pà unique maires fiquis mit uit fie fer ebrit ebe, son abr armeb करीकु हेवर का को हुए में लेकेर अक्टोके का की हैना है, उन्हें जांने कर जानम करना को केले हैं और है पुत्र-सार क्या परिवासी केरिक होतार प्रवर्तनी संस करते हैं। कर प करनेकारे चीकोड़े करता, है। और कह कुल-कार्ता करे कुने को है तक ने क्यानेने करेगर क्रम और कार सीम करते हैं। वे स्कूते हैं—'स्क्रीन्क ! इस पूर्व और पास्त्रों बहुत बहु का के हैं, अब काल नहीं पहल; कुछ त्यानंद्र सहीका तथा और क्षेत्र-का करी है वैरिको । इस समार कारण जाने हो का बाते हैं, जिल्ह कुछ भी नहीं निराता । प्रमात को जारे अध्यक्षको प्रकारको पर गर्नम के हैं।

् वैत्रम्यकार्थं वहरं है—स्वानंत्र्यः । स्वरूद् स्वयूक्तः सुस्ति सर्वेद्धर का-स्वयूक्तः क्रम्य कृत्युक्तः व्यूक्तः सुद्धिर क्यां वर्तं उठे और नेहंच होकर पृत्युक्तः क्रम्यः स्वरूद्धि अध्यः पूर्व अधिवार क्या विकार क्रम्यान् क्या वे और-वीर होत्रमें अपने से क्यांक्तः। स्वयूक्तः क्यांकाः इसके बाद में क्यांके अध्ये के क्यांकाः क्ष्यांकाः क्ष्याः इसके व्यूक्तः । क्यांकाके मार्थका विवार क्यांकाः क्ष्याः व्यूक्तिक पूर्वे क्या क्ष्यः है एका है। अस क्यांकानेकी कृत्यः व्यक्तिके विकार क्यांकाः है ?

नरकर्त का—प्रकृतकर । इस संस्थाने के लोग व्यक्ति कीकर व्यक्ति कार्त है, नीववित्रको असन कुक्त मुक्तानेकी रोकने सने कुते हैं, देखा क्या व्यक्तिकी

एक करते हैं और सक्तानेको जना प्रचारची बसाई कर के हैं, वे क्याबेक्टो समापूर्वक करे हैं। को होन सक्रमीको, करों को विकेच्या कोटिकोच्ये साराम अस्तानके साथ सामी प्रधानते कर्का हुन् अस्य असम्बद्ध चोचन करते हैं, वे महत्त्वा पूर्व विक्रित विकासिक केंद्रबार कारकेकारी कार करते हैं। को अधिकि रिव्यक्टमानो सार्व्यक करते है एक को प्राप्तकोच्ये और अभी भी निर्देशक क्षेत्रियोको पर्यापक आहे. के अंक्रिक परिवार कर होते पहले हैं, के निर्माण पर निरामकों के का पूर्व क विकास के केवल प्राप्त करते हैं। यो उपलब्धी कार, कृत, प्रमान, अवस्त, जन्म और आयुर्वन कृत करते हैं, ने क्रोनेके कुछ स्थाने स्थान पहलेले प्राय-सम्बद्ध केहे, बीत अक्ट प्रामीको प्रकारीये कांत्रको सुक्त नगरों प्रकेत क्याँ है। के बार आहि पह केल स्कूलेक उपलब्ध पुर कर, बढ़ी, बी, गुरू और प्रकृतक अञ्चले एक वृत्र करते हैं, वे व्यास्थाने के कृ कुर्यांक विकास वेटक गारतेकरी बार करते हैं। यह करन क्यांका करने साथ करन व्यक्ति-व्यक्तिके पाने कालो हुए उनका भगे पान पानो है। यो कुर्याक्त पूर्व और कार्या कर पासे हैं, ये ईरापुर्व किसारी क्षा कांग्रहे करने को है। के प्रारमिक की विका किये हुए पाकि-मालिंड पाल्यन क्षा प्राप्त है, के प्राप्ति क्षापुर केवाको सकेद विकासिया बेटमार सन्दर्शनी स्वांत करी है । को कुन्यु अधिनकेको चीवन हेरेसको बारका कुर कुन्ते हैं. à annu en deux de seb qui ferrebate specific वर्गकारे करने को है। को स्तेत स्वतानाओं पूर्व होना होतीय प्राप्तकारों जिल अवका विस्ताती में का पूजनी मीवा क्षत्र करते हैं, से कुर्वजनकरों समान तेवाली विभागोहारा कार्योदि और पुन्ते हुए काराको कार्य को है । विम्हेरे हुए केक्नो ककी, की, करान, बेज़रे, बेज़रियाँ और करने को हुए जानका करको है, वे कहातों समान उपलब्ध और विका चन्यानाको निकारित विकालीका वैकास वास्तरिकार साहि 🛦 आ प्रथम में महत्त्व निरम्पूर और न्यून्य कालियान् विकासी के है एक विकासिक पूर्ण को सकते पेने और dur grum und Er fargbi unt annen feften, विकास, मनोहर, सुन्दर और दर्शनीय केम्प्रीदर कारवर्ष रे वे स्टेबर कावनोंके समान काणियान एवं **इसके** समान केन्याने विकासका कार्यकारी पान करते हैं और पार्ट क्षानेका में काराकारों सभी को जाता देखते हैं छवा अनके श्रव सम्बद्धिक क्षेत्रस केंग्सीकांद्र निकासी क्षेत्रे हैं। यो सोप केवलाओंके क्षेत्रको पाठ करवाकर वहाँ गहरके हारा पासे बनुवांको ठेडे कर जिल्ला करते हैं, वे तर महत्व पर्कर

करान्य तुप्र क्षेत्रार सुराने राज बाव करते हैं । स्वाप्ट और ( बार-कुर बारनेवाले पर्मानोको का मन्त्री कुरा विराध 🗓 है क्राय राज्या बैठकर सोनेके सैवेजर के एवं कुर पाल करते है। यो लोन बर्श-बर्द करीचे करवले और अलें कुर्वेके कैंचे रोको है तक क्रानिक्ष्यंक करने सीवकर गई कर-क्राकेर प्रतोतीका पर्राप्त कराय करते हैं, ये दिव्य व्यक्तीय सम्बद्ध है अर्थुनकोरे राज-सम्बद्ध प्रदोशी साराम सामीय एवं place proof their the greiges were no go फार्लाको को है। के स्थानको केंद्र केर सन्त हार्थको समार्थ सन् वाले है राज यो लोग उन्हें सेना, पाँचे, पैना और मोती प्रकृत करते हैं, वे क्रोनेट विन्यक्तिर क्रिक्ट कर्रशास्त्रे नगरमें वाले हैं। चूरिकार स्थानेकारे औन संस्था कारपाओं का हेकर के जो हर स्ट्रीड संक्रा देखती फिलानोंद्र प्रचा का कोवाओं पाल करते हैं। यो वेह प्रकृतिको अस्तर परिवृतिक पुत्रीतक पहर्न एक पृत प्रकृत करते हैं, हे कुल्कपूर्ण कुन्त के बाल कर कर कारियों देवीनावर हो हुन्स हर नहीं हुए निर्मात निर्माणन बैठकर वर्गरावके प्रमाने करते हैं। क्रीन-क्रूप क्रामेशके पूक कृतिक समान रेकाकी विभागोंके उसी विभागीको विवेकाता करों हर सक्षय अधिके साल कारियान सामाने पान बातो है। यो पर हमें स्वापन-पालका कर कर्मकार है, से क्षेत्रेक क्यूनोसे पूज और प्रतःकारीन पूर्वक सन्तर करियाने भूति कर जीवने कार्र और को है। की प्राथमधीको नेतीने अन्तर्गते विको स्थान, विराण पार्टनेते Bod fer, be which field upo afte dibbe field water its है. ये बोडेकर सम्बद होकर सम्बद्धिकारी पाना करते हैं। यो क्रवंकि कोइ-मीर कृति अञ्चलीको अस्तिको सन्त्र केल्ट स्ट्री अल्यान प्रदेशको है, से प्रकारकारे पूर्व हुए विकास्तर वैकास बाल बार्स है। यो काम अने हुए प्रत्युग्धेनो सम्पन्नतीय apper durt weak follows was und f. it are review महे अन्तर्यक्ष प्राप्त कर्त है। में प्रमुख केत वर्तन करते | 'नवे कान्यवेकर' काकर को उत्तान करते हैं। और एक | एक करते हैं।

ब्राह्मण्डे प्रकारे सम्बन काने पर और प्रीपृत्तीया संपन रहते है, वे प्रकार साथ वर्गकार्थ कारको करे है। यो अधिक 'नरः सर्वस्थानक' हेवा बहुवार नेवो नगरवार करत 🛊, बंद क्षानुन्दे व्यापेक सुकार्वेक पान पानत है। निवन प्राप्त पान विक्रोपेके कावार को 'जनेत्रम् विकरण' बाले पूर पृथ्वीकर पैर रक्ता है, बहु प्रथ पाननाओंने सुर और राज प्रकारके अनुकारे क्रिकेट क्रेक्ट दिन विकास प्राप्त सुरापूर्वक प्रात्मेक्सो पान है। के देवा और अधिकांको योगर क्रुप्रेके पार कर्न कर काम करते हैं (अध्यक्ष के समेरे और प्राचनों केवन क्योंने रिव्य बीकों पुरू नहीं पूर्वते) स्था क्षा और असामा को यह है, वे की सरस्वता विकास हाथ कुरायकंड काम काते हैं । को दिन-एकों केवल एक बार बोबन करने और कुन करन अस्तानों पूर पूर्व है, में ईसपूर्य विकार के कि भी अध्यक्ति कार कार्यकर्त करे हैं। के विक्रीहरू केवल केवल की का अह सहा कार करते हैं असीह क्य दिन जनकर करके दूसरे दिन प्रानको नोपन चारते हैं, से क्तृत्वक विकासिक क्रम्य कर्मरामक कारमें बाते हैं। की मेरे नार क्रेकर क्रीजनेको पहले पहले. मेचोरी प्रमान पहले हैं, मे मानक को को आवनों पान निवारोंक प्रश का वार्रकों pe god fie de die fin selve allevenië witer सम्बद्धान कार्य है, के इंस अर्थन सरस्तीने चुक विभागीके प्राप् का वर्णन को है। ये कुलीके यह प्रकृतने दिना है असे कुटुमार काम करते हैं, से सुवर्गका विकारिक प्रत संस क्रको है। को समूची अधिनवेशर सम्बन्ध होई रखते, बीजीको क्रमण्डाम होते. अनेक और मोत्यते रहित होते एक इन्द्रियोगी क्रमी काली किसे चारे हैं, से पहल बर्गानकर तथा देखत और प्रकारिक केरिया क्रीया पूर्व अनुसारिक प्रकार क्रमान विकारीकृष कारायके रहेकारे जाते हैं। को अतिरित कार्यकृती कृत्य, सुनि और कार्यात करते हैं, वे सुनीत सम्बन्ध केवाको विकासिक प्रत्य वर्णसम्बद्ध सराव्ये साथै है। वर्ष करिया कर्ष कुछ प्राचेची नामाई प्राच्चार असी

### यल-दान, अन्न-दान और अतिषि-सत्कारका माहात्य

वर्णन तथा नहीं जीवोके (सुराष्ट्रवेक) वानेका उपन्य सुरावत | होरान्यत और इकारों सुर्वेक समान देवानी है। आव्यक्ति क्रमा चुनिहर सर-हो-पन बहुत जरत हुए और परस्कर् प्रस्कार क्रमीत हुई है। जान क्रमीत हाल और सब्दर्ग क्रमीत श्रीकामारे निरः कोले—'केमोनेकर । साथ सम्पूर्ण केमोका । प्रयांक है । कामानामार सम्पूर ! मुद्रो सब प्रकारके सुनीका क्य करनेवाले हैं, स्कृतिकेंक राष्ट्रक्षण राक्ष आवादी है रहति । कर कारकाने । कर विता प्रवास और बैसी प्राध्यकते देन

कैरायागर्थी कारे हैं—कारोकर ! कायुग्के कार्यका | कार्य है । तान क्षेत्रकी पुरत, शब-कार्यारे पुरित हेरेकरे,

कारक कर येथ कर है ?"

अंक्ष्मा का-कार् । कार देवर सुरे-सा प्रकारके क्षतिक पता परत परिवा, तका और पार्वका नक करोजारा है। परि का दिन की पानकी पान पुत्रनेपाना बार, को सार्थ है सार्थन सुवसायर के विकार पान है, कर विकास के उससे पास वैद्यालको पूर्वकेचा अञ्चल है कार है। संसारने पानने प्रतिनोधा बीवन कव नव है, उसके बानमें बोबोबी बृहि ब्रेसी है। बालेंड कुल हिमा है और मे मरावेकने भी साम महिलांगारे है। यसरोकने पुरवेककी बारमाची पान चरित्र गर्दे है । यह बारहार सरवेसारे कुरनेस्ट क्रमूर्ण कार्यार्थ पूर्ण करते है । उत्तरत बार देश होता है और का के प्राप्त का प्राप्तिकों सोनोको तातु कुल प्रोप्तक है । चारो जुलाको जास असमे नहीं सुराते, हार्गान्ने सन्हात्तर महत्त्वको वाहेने कि यह व्यानको प्रकृतको विस्ताय यहे । कार आगर्ध ब्याची पैक क्षेत्रे और ब्याची ही बीवन बारण करते. है, इस्तरिको प्रान्तान पार क्योंने स्कृतर पान पान है। पार अध्यक्ते क्षा, पर और ब्यूमे के अभ बार अनु केर है, क que inter unit quit fire une \$--put afre d क्षेत्रको कर भूते है। यो स्रोप स्थानको कुन्छ न्यून-कुन total & & real servents and & day use, use, use, क्षेत्रं, कृति, कृति, प्राप्त, केक और अस्त् —इन सरका अस्तर den ift & e prov., prosts, etter, pager afte songe- - the ethill अन्य अवने ही अस्थारम पहल क्षेत्रवरिक्तेचे करण कर्त 🛊 । एक्स विकास और पीवा कालेको राज्यों का सकते ही पहले हैं । इस्तिको अस स्थाने केंद्र पहल परवा है । यह साहि सन्दर्भ देखता. रिवार और जारि जाको ही संबुह्न होते हैं। प्रधानमिने प्रक्रिय करूपने कालों हो सारी प्रधानी पृष्टि की है; क्रारिको अनुसरे बक्कर न बरेई कन कुमा है और न क्रेना । बार्ट, अर्थ और मारम्बा निर्मात सरकते ही होता है। सक् प्रत खेळा पा कारकेकने अवसे काकर कोई कर नहीं है । कहा, राहरू, बहु, नाग, पूरा और सामा भी अवने से संख्या होने हैं, इस्सीनरे शास्त्रा गहल राजो कहार है। हारेका शह कारेकात महाया को भी पूर्व कर्न करता है, उसका एक कर के क्षानेवारेको विकास है और क्षेत्र कर अवस्थान के पास है, इसीओ प्राह्मणेयां विशेषणां अस हैक माहिते । यो प्रमुख ह्मा और असारका परिचार करते पहले पाय परित रहावन स्त्रोति चेद न करते हुए दृष्टि क्षे लेकिन अञ्चलको एक गर्नाव्य अल-कर बरका है, यह एक स्वरू पर्वत्रक को समानके साथ केलोको निवास करता है करत

भारिये ? क्या किस स्वयंके करका अञ्चान करके कहाँ । वहिंद्रकानुसार रूप करने करेंद्र विकास स्वरा है किर कामानुसर पूर्ण क्षेत्र हो जानेनर का गई सर्गरी नीचे उत्तरह है के पर्वारतेकों स्थान होता है। के क सहने या पार्टिक ब्रह्मकंत्र प्रतिकारी काले किए और प्रात्मको केर है. जो कर क्या चे-काक चन्यका प्रता केता है। यो कर कांक्र प्रतिक्रिको श्रामीनक्ष्मको प्रकार कान्यर कान्यर प करोबारे प्रकृतके को उसे चीच उसा है। का इससे क्षात केलेंद्र करते विक्रोताते प्रकारको करा प्रकारको अभिनेत केल है। कार्यकार 1 केन-मार्ग्य अनुसार प्राप्त एवं एका पानका क्षेत्र-माँदै साथे हुए पूर्वर और शह बाजेवारे प्रक्रमचे आसर करन पार्टिने । यो रचनी अन्य होते हुए भी पानकाची शत नहीं देहा, पह सोमी मनुष बोद्धेने भरे हुए बालकुर करका परवार्थ निरक्ष है। सोक और बेब्रेड करन निर्मकको को नैप्रोमाला का करी पूरूर उस केर नकाने का कथा क्लेंडिक केराओ क्याका हुआ हेक चेत्रक स्था है। जिन क्षेत्रेकारके प्रकृत का परवाने सुरुवाय nine or minimal would set on the six अवस्था परिवासीका है।

को हरका राजा पर कार्रके कारण हरी। तथा कुछwas all wheel our-ele it, forth it tall कारियांको आने वहारे ही प्रका को पहल में हिन हो रहा है, है। अपूर्ण अवकृताक पता पूर्ण है। व कुराने वेरोले पहि क्षेत्र अवस्थ अवस्थि कार्य को हो कार्युर्वक क्षेत्री पूर्व करने काहिने, क्लोटि का अतिथि कालिए सोवार क्रेस है : अन्तर प्रदेश क्षेत्रेयर रूपूर्ण देख्या प्रदेश के बार्य है। अधिनिक्यों एक करनेते अधिनेक्यों निकरी प्रसानत होती है. जारी प्रतिनाको होना वालो और प्रत्य क्या पान्य प्रयानेको भी न्हाँ होती । होह पुन्करवीचीने विशेषपूर्वक करिया भीता सुन बरनेते में का मनामी जाते नहीं हेती, से क्राह्ममध्ये केवन करनेते जिल्ला है। प्रक्रमध्ये करनेताले जीती हाँ पा कर्म कराव काम क्रो है, कराव आकृतके जिल क्षणान्त्रे कोने कर केते हैं। देवताने कर कही हो क-पूर्य श्राहे एक-रक्ष्मीयो प्राप्त का स्वत्यो प्राप्त करत. स्क्रामके मुद्रे किये हुए कांत्र और एकामके मॉक-के ऐसा, श्रदे हुए अञ्चलक के कृतक, अन्ते करन केव, औ with field us, nichte fielt gener affr fiebier fielt काल केच-इन्लेने एक-एक कार्यका गास्त्र में-कार्य कारका है र को जनूज इक्क्सरकेंको पैर बोटेके रिजी जात, पैरमें remitte fint at, done, men afte mitter fint me tit f. वे क्षाचे क्यावेकने नहीं को । एकन् ! प्राव्यक्ता आदिका- a glassica

स्रकार तथा परिष्मुर्गेष काली रोण करनेते वैतीतो इंग्रामधीयो रोण है साती है। प्रारंका परिण्य पट्टम महि मत्त्वर साने हो करे कालागत महाते हैं और अम्परिणा पूजा स्रतिथि महत्त्वता है। हिनोको इन केलेकी है पूजा करने महिले। यह प्राप्त केए—पुकारणी सृति है। यो अधिको महातेते तेल परावत, को मोचन काला और पाने विश्वास में है, असी हारा मेरी की पूजा है जाती है—इसमें प्रतिमा भी सीहा नहीं है। यह स्तुष्ण कुंस हम पानेते हुटकारण मा माता है और मेरी कुंसते महासाने समान अस्पत्त कियान पर आहम होतार मेरे पराव महासाने प्रमानता है। यहा पूजा



शंकामत कर करपर अला है तो उसके कि-पीड़े स्वक्त हैवता, किर और उसी भी प्रक्रमंग करते हैं। यह उस अकारत हिसकी हुता हुई तो उसके स्वक्र उन देवता असीवड़ी भी पूजा हो जाती है और उसके विराध कोठनेकर ने देवता, विरार आहि को इताहा होकर लौट जाते हैं। जिसके करते असिकड़ों निराह होका संक्रम बाता है, उसके विवर बंध करीतक फोजन नहीं करते। यह कोणी प्रमुख देवताओं, विरारों और असिकोंसे परित्यक होका बंध करीका केन मंस्क्रमें पहा करता है और कारी कुळोकर संस्करमें कम सेक्स उक्तिक्रमोंनी होता है। यो मांक्रिकोंस क्रमी सम्बद्ध प्रस्ता क्रमें हुए अधिकिकी पूजा नहीं करता, जा हुनेत कान्युक्त हो नाता है। जो देश-कारणे अनुसार बरसर जाने हुए प्रश्रामधी महित बहर कर देख है, यह उत्पाल परित हो जाता है और मरनेके बाद एक करोड़ क्योंका केर रीश्व नरवाने प्रकार। कार है, जिन सम्पर्कत्तार जन स्ताने कटकारा पता है तो उस केलते बाद सम्बेदक पुत्र-मालक यह योगीयात पुता होता है। यदि हेत-बारको अनुसार अध्यक्ति प्रकारो पालकार थी अधिनिके कालों जा चान हो गुरुत पुरुषको सक करना क्रमा कान पर्दिने । यो लोग और मेहनत निवास्त्रन केवन करका स्ताहर किये किया ही भोजन कर रेका है, यह क्त पन्तेक प्रत्यात होता है। यो अतिनियो निराध र्गाहरू कर केवन वाले स्था आहर होता अहरत करण है, जो इस कारका पत नहीं दाना कि में विद्यार्थ कुनेरें व्यक्तिकार है। यह अतिविका काकार नहीं करता, काका करी क्षा ओक्न, क्षवर रेजे सोई बन्यान और चेनर करण—सम्बद्ध वर्ष है। यो अभिन सहोपाह मेहेका कार्यात कार्या है सिंह अतिकियों कुछ नहीं कारत, उस हैक्का क्षेत्रन कर्ज है। को होन नक-बार, प्रक्रमध्यक तथा क्षेत्रकार आहेले हार कार करते हैं परंतु परकर आने हर अधिविक्य पंत्रवार भूषि भागों, से बारब्धी प्रकारों की कुछ हान क का करों है का का करों से बात है। अतिकिसी मारी नवी आक्षा मनुष्यके समझ सुरायमीका नाम पर देती है। क्रमीको ब्याइस्ट क्रेमार देश, चत्रक, यश और अधनी समित्रक विकार करके केन्द्र-स्कृत अतिकि-स्त्यार अन्दर्भ करने च्यांके । का अतिक अन्ते प्रत्यर आहे से वृद्धिमन् प्रकारो कांक्रेने कि बढ़ प्रसम्बन्धि क्रेक्स ईसने हुए पुजरे अतिक्रिका मानवा करे एक कैंद्रनेको आसन और धरण धोनेके रिन्धे पास हेकर सफ-चान आदिके क्षा कामडे पूजा करे । अधना दिलेके, नेपकार, हेवी, कुई कामचा परिवार-को कोई पी व्यक्तिकोको बाद का साथ, यह सर्वतार प्रश्निकारमा अभिने है। जो पान्या कर पान बाहर हो, वह मूक-व्यक्त और परिश्रमां कृती क्या देश-कारके अनुसार प्राप्त हुए अधिकियो सम्बन्धकेक राज ज्ञान करे। यह और ब्राह्मि अपनेसे लेह पुरवच्ये विकित्तव् घोजन कराना साहिये : अस मनुष्योद्या प्राप्त है, अन्य देनेव्यास प्राप्ताका होता है। इसलिये करकारकी हुन्या रक्तरेगाले पुरुषको क्षत्र-दानकी विदेश केंद्र रक्ती कहिने। के बहुब क्षित्रीत काठा उसके करके प्रोक्रममें पेद न रसते हुए एक वर्षतक सवका अतिकि-मानार करता है, उसके समात पाप का से उसे हैं।

## भूमि-कन, तिल-दान और उत्तम ब्राह्मणकी महिमा

गायाने वह-अब में हको इतम पुरि-कृतकः मर्गन करक है। यूपि-कनसे बक्कर इसरा कोई रूप नहीं है भीर मूर्मि कीन हेनेसे बक्कर कोई पाप नहीं है। कुरो कुनोके पुरुष समय पाधा क्रील हो बाते हैं. सिंह पुरि-सक्ते पुरुषका कभी भी अब नहीं होता। यह लोग प्रपुर व्हीहरकरे पुक्त अभिन्नेय आदि वजीके प्रश केवनाओका पक्ष करते हैं. है भी भूमि-सम्बद्ध समान जाम पासको नहीं यह । जो मन्त्र श्रीवित प्रश्नामको भूति द्वान काल्द्र वित् को अपने अधिकारने नहीं हेता, करके दानको चारों और कर्षा होती है भीर जननक इस संसारको रिक्षी भगे रहते हैं, बालक का सर्गलोकार्ये सुध्या अपने पुरस्कात प्रत्य चोगता है। जो अनुवा ओविय प्रायुक्तको ऐसीचे भरी हुई चुनि दान करना है, उसके बितार महाजानकारकार दहा रहते हैं। काहानको भूति-दूर मतनेते तम देखा, पूर्व, संबार और मै—वे साथै प्रकार केते है। यूनि-रामके कुम्बरी परिवर्णिय हुआ रामा निःशीश की परनवानमें निवास करता है। स्मृत्य चीनिकाने अध्यानी हो कुछ पान करता है, जाते नोकर्गका चुनि का करवेता थी कुर्वश्राप के कार्य है। एक महिनेक्द्र अन्तर्य, कुछ और क्षान्यम्-अन्यः अनुस्रम् सम्ब सन्दर्गं सेवर्षेते साम सन्तेते भी पुरूष होता है, यह साथ पूर्ण नोवालंका पूर्ण कर करनेसे प्राप्त हो बाला है।

तुनिविश्ये वदा— देवेक्षर ( आवको श्रव्यातः है। सुद्धे गोवानेक्या धूनिका डीवा-डीवा मान सामानेकी कृता सीवित्ये।

प्राचन केरे—एकंप्! पुरातो ब्रोड्स एक अलं प्रीचक वारों जोन तीस-जीस क्या काले केल पूर्ण होते हैं। इसको गोवकांस्ता धूर्ण काले हैं। वितर्त पूर्ण पूर्ण हों से मेर्ट् केले और वाद्योंने साथ मुक्कूबंद स्त सके, कारी पूर्णको केवलों बदले हैं। पूर्णका कर करनेकले पूर्णके पास कररावको हा स्त्री करवार करे, मुक्के पास, काला सुन्तिकत, प्रसानक व्यवस्था, वैद्या आहे, साथ स्थान स्वाचन काला सुन्तिकत स्थानक, प्रसानक व्यवस्था, वैद्या आहे साथ हो स्थान काले पूर्णको पूर्ण करते हैं। का, स्थानह व्यवस्था का भी पूर्णकान कालेकालेकी पूर्ण करते हैं। का, स्थानहीं, इन, केला, मूल और स्था है। का, स्थानहीं, इन, केला, मूल और स्था है। विसर्क सुन्तको एकंप मीनकाले प्रमान काले हैं। विसर्क सुन्तको एकंप मीनकाले स्थान काले हैं। विसर्क सुन्तको प्रोप स्थान मीनकाले स्थान काले हैं। विसर्क सुन्तको प्रोप स्थान मीनकाले सुन्तको होता हो स्थान सो एक

अमिकि-सम्बद्ध कामेकाल हो, ऐसे प्राप्तानको पूर्वि-द्वान केम माजि: क्योंकि का परालेकके लिये समाना है। विसर्के कुट्चीकर कह या यो हो—ऐसे बोविय, आहिती, ज्ञाच्यरी हमें प्रीप्त प्रायुक्तको पूनि देनी व्यक्ति । वैसे बाब अपन क्षा विकास पुरुष परल-पोका काती है, इसी ज्ञान सम्में है हाँ चुनि सतापर अनुभा अन्ती है। बैसे की अपन कुन विस्ताबन कार्यका करना करती है, जैसे ही सर्वेनुकारका पुनि अपने दलाका कानाम कार्ता है। विद्या जनमर बलको प्रतिचे हुए बीज अहुरित होते हैं, कैसे ही कृष-कार्यक समोरक प्रतिक्षित पूर्ण होते दक्ते हैं। फैसे सुर्वकर केन क्रमण अन्यव्यारको हा कर केम है, उसी प्रमार भूमि-सन क्यूक्को सन्दर्भ करोका नाम कर कारत है। यो नत्त्व परिच्या क्षण करता है, यह एत मेड़ी पहरोताओं कृतिकार और श्रार पीड़ी कावाब्द हो नेवाली संस्कृतिका इतार कर केल है: मिलू को जिल्लोको चुनि क्रीन रेला है, क्यू वहा कृति और वह बेक्सरोंनी की क्लारें क्रूबे देश है। यो चीर-कारणे प्रदेश काले की देश अवका देखा है। हिर हीव रेख है, को करनके कहते बीववर बीव और रहते भी कर नगर-कुमाने काल करत है। को अपने का दूरतेकी 🛊 हां पुल्ला अञ्चल करता है, काले दिन्ने नरवाते प्रदूष करेगा कोई स्थान नहीं है। से प्राप्तरश्वाद चीत कीन रेजा। है, का काम पीवीनकोर पूर्वजीको नरको उसर देता है और कर्ण क्रीहेको चोरिने कम हेक्ट है कहा साले क्राफी सुरकारा च्यां 🚥 । यो अञ्चलको चुनि-कन देवर दिन स्तीको अंक्षिप करना है, हो एक साथ में-कृताब कर विकास है। यह जनावा क्षेत्रे सिर कार्यक्र कुरुवीकार अस्त्राते न्याचार विका जाता है और एक इस्तर दिया क्योंतक इससे क्या था। है। संस्थात का नवाने बुस्तेन को सी क्ष्मिक इस सोको कुछ क्षेत्र पहल है। सिस्से कुछ जोतकर बीच भी मिने पने हो तथा नहीं हरी-पारी सेती ल्क्य सी हो, देवी धूनि परित त्रहालको देनी साहिते। अवस्था वर्षा करना सुनीता हो, यह धूनि क्षानों हेरी कविने । राजन् ! इस अवस्थ सहस्रवित होकर पहुल नही पुण्डेका कर को हो का समूर्य महेकारिक क्रमनाओंको मार करता है। बहुत-से एकओंने इस पूर्वाको करने दिश है और स्कूपनों जाती है हो है। यह भूति कह जिसके अधिकारों सुनी है, जा समय को उसे सुनमें देश और समेंद्र करावा पार्च होता है।

विस्तार वीविका क्षेण और मेट् वृत्ता हे करी है, हैं।
इति ब्रह्माणकों से पदि हम बस्ता है, व्यू अपने क्ष्मानुस्तर कर्गसोकों सम्मान्त होता है। किर कुल्ला क्ष्म होनेपर क्यों अस्तर का लेकों व्यापतकारी तक होता है। के ओकि ब्रह्माणकों—विदेशकः इतिको विस्तार वर्ण हान करता है, व्यू इस इसर क्षेत्रकारिक कुल्ला प्रश्न करते सरसर निध्यत है जाता है। विस्तार दान करनेकाल कर्मा प्रस्त का और इक्सनुस्तर का करना करनेकी द्वारित कथा इस इन्यर क्योंस्य विद्यानकों हस और अल्ला केना है। के दिस क्षेत्र कीविय ब्रह्माणको विस्तार है। को विक्री हम की दिस अस्तार करने क्याची हो विस्तार है। को विक्री हम कीवें तिर अस्तार करने क्याची हो विस्तार केन्द्र क्यांस्य करता है। का साने ही करोड़ क्योंस्य क्ष्मांस्यों—हमने पहले

वर्ष स्थानको हिने साथ से ये स्तास्त स्था कर हैते हैं। स्टानकारकों, जिसके क्या अर्थन्त प्रस्ताकों साम देवेगाल कुमा करने कर्मके, क्योंकि स्थ कारोकों साम देवेगाल कुमा है। से स्थान केर्या विद्यत्, अधिकोत्रपाध्यत्, किनेत्रतः, सुन्ते असमे हुए प्रनेताल और दृष्टि हे, जाको कार्यक पूजा करने वाहिये। से प्रतिदिन् क्या करनेकात, सह क्योंक्यांत शास्त्र वित्ते स्थानका, वित्ताकों स्थानकारकात्, प्रसादा अस न सानेकात्त्र, व्यानकार्य है असमी क्यांत समाग्य करनेवाला और वित्ताकों सम्बद्ध है। से मेरा क्या, मुझ्मे अनुगार रहानेकाल, से कारमें कारका और मुझे है क्यांत्रस्त्रोंकों वर्णन करनेकाल है, व्यानका अवस्त्र संसार-समुझते वार

#### विविध प्रकारके क्षनोंकी महिमा

पुणितिने स्था-नाराम । आरको मुंधने इस धर्मना अनुसारत कामा काते हुए मुझे पृद्धि मही होती । सम हुतरे अकारके सुनीवन, निन्दें अमेराक आरके मही कालाध्य है, मर्गान सोविको और व्यवहा: सम्बद्ध काम भी अध्ययेकी कुछ मरिकिके ।

मानाहरे कह--राज्यू । गाड़ी श्रीकोकास ५५ केर भी रहा गौशोंके सन्तन है। को क्यूना ब्रोसिन, स्वाप्तारी एवं परित लक्षणको जारी बोझ केनेने सकर्ष एक बोझ बेल एक करता है, जारको हक इस्तर गीजोंके शुरुका कहा निरुक्त है। माम्बर्गन्त । एतिको ही एन देन पाहिने, बनवानको नहीं : वर्गाका पास तारावार्ग हो देवत वाता है, कशुओं की। को पुरूष वेदांड जाननेकाले अन्तरित प्राधानको क्षेत्रको प्रधानको भूत, क्या और साराजेंसे विक्षित, चाहि-व्यक्तिक वर्तनी कौर अन्य सामानियोंसे कुछ, कर-बाल्यसे अलंकन कुछी, ची अपैर मुनिसे सम्बद्ध तथा सब प्रवासके सावनीते परिएमें कु अदान करता है, उसको देवता, नितर, अति और धारिनार प्रसात होका सुर्वीत समान नेकावी विमान देते हैं। सबा कारेवें बैठकर का अनुसम सोन्करों सम्बन्ध हो परम अपन कालोकरों पदार्थन करता है और वह पहास्त्वकर्यन वहे सानदारे समय करीत करता है। जो पनुष्य प्रक्रिके साथ क्या, प्रक्रा मीर करूर कहाका ब्रह्माना कुछ करन एक हो।

विक्री-वेलदेव प्रत्ये कुछ करता है, यह वेदकारोंके बलाई कानेको कुन विकास बाल है सार्विनेट सेकी कार और वहाँ प्रक्रमारी कार्नियोर्ट परित्र होता है। का होक्षे केस प्रपूर्वकेरम देवतालोको पति स्रोक् सरके स्र क्युक्तरोक्कने केव्हेंक्ट क्राइटर क्षेत्रर है। यो शहेर्कर क्षेत्र-महि कृति प्राकृतको निवास देता है, जनका एक वर्गका निरुद्ध हुआ कर कार्यात का है जाता है। अवन्तर का बहु व्यक्तिकृतिक अन् अमिनिके क्षेत्री धरकीको प्रकारता है, उस क्रमा अस्ति क्रा कांके क्रिये हुए यात था है करो है सक्ष चीर का अलो क्षेत्री नैरोंने की का तेल मतकार उसकी पूजा करता है से उसके बाद्य करेंकि पान तुन्त ग्या हो बाते हैं। को करका आहे हुए ह्याहरणका स्थापन करके, उसे अवसर और अञ्चलक देखर पूजन करात है, यह देखराजरेका हिन क्षेत्र है। अधिकिक जागतमे अपि, जो आराम क्षेत्रे इन्ह और अञ्चलका हेने (अनकारी कार्न) से अतिक्रियोगर होय रक्तनेवाले निवन प्रसन्त होते हैं। इस प्रकार आहे, इन्ह्र और निवरिके प्रथम क्षेत्रेशन चनुष्यका एक वर्षका पाप समास्य न्यू हे क्या है। में मनुष्य प्रक्रमध्ये समर्थे दन बस्ता है, तह कोरे विरोत विकास बैठकर सर्गलेकको जाता है। जे पुरुष पर्ते, कुल और फरवेसे भरे हुए बुद्धको बखों और व्यापुरुकोसे विद्यालित करके बन्दन और दश्लीसे करूदी पूजा

<sup>🐮</sup> लेडे व लब्दीक वन दूरन सब क्योंका एक पुरान पान, वो 🖦 अंगुल कीड़ और उठन ही गहरा होता था. —हिन्दी तब्दसागर

करण तथा वेदनेना महानाची घोषार करावर रहिएको रहता ( यह कुछ दान कर देता है, यह स्वर्णनरित सुद्धा निकारक बैद्यार सम-सम्बद्धारके साथ कुरता हुआ इन्हरेकने स्था है और देहीं अलो कामें यो-यो प्रकार होती है, वर समयो मानवास एवं करता है। यो एका व्यक्तियांक स्रोप्त कार्यावर करने मेरे प्रतिपानी स्थापन करता और कुरोने अल्बी कृता **ब**रेकारी के कर्च भरितके साम पूजा करता है, का इस कार स्वयंत-पत्रका कर कका की परस्कारको प्रकास एक महरि क्यों सीटकर इस संक्रमें नहीं आता। के पर्वा के अधिराये, साहायके करने, जोकारणां और जीतकेवा क्षेत्रक परनता है, यह सुवर्णसब विकासक बैहरूर सन्दर्भ हिन्छ। सेवो क्षेत्रिकार करता हुआ तुर्वलेकाको काल है; यह स्थान के देवता अस्तरी सेवार्ने अस्तिक सुत्रे हैं। यह स्कूकारी पुरस करोड़ों क्योंनक पूर्वत्येकमें वर्षत्र विद्वार करनेके स्थाप मार्गरोपानी आकर पेर्-नेक्स्मोने पर्रापत प्रकृत्य है । क्षे प्रमुख इंग्रहरूको करका (कारकान्), क्रांकेक (निकास) अवना नहान जल्मान हान करता है, जा तक तुत करता है; अंगे प्रेम प्रकारके सुगरिका पहले मुख्य होते हैं तथा अलकी पुरिपूर्ण और का एक जनत को है। जन्म हो की, वह ईस और कारानेसे जुने कुछ प्राप्त विभागकर बैद्यापर विका कार्याने fellen wurerbeit wer fit ut nelle ibr udibb वीशोके श्रीकरपूर जलका दान करना है, जो एक करेड़ कारिया-कुरवा पुरुवाम आह होता है अबा बढ़ पूर्ण क्रमुकते. स्थान प्रकारपान निमानक आक्रम क्रेसन क्रम्यकारी सहा बारता है। वह देवल और प्रकारित सेवल होवल हीन करोड़ पुगोरक कोड़ हुए चौजनेके पहला हम स्वेकने आक्षर चारी केंग्रेका प्राप्त प्रत्यूक क्षेत्र है। विस्ते क्रमानेके रिज्ये नेता द्वान व्यत्येको बनुष्य क्रेसकी, दर्शनीक, सुन्दर, करनार, चूरवीर और परिवार क्षेत्र है। कंब्र-कर क्रानेवाला पंजा भी तेकावी, वर्तनीय, समार, बीरान्यस और मनोरम होता है। जो कुछ कुछ और काल कर करता है, का महान् तेक्से सम्पन्न हो स्वेतेके क्ले हुए सुन्दर रक्पर बैठकर इपलोकने करा है। को कराकी कहाते कर करते हैं, वे कामनिर्मित विमानीयर अस्तव क्षेत्रत होत्र देवलाओं ने लेक क्षे वर्षसम्बद्धे स्पर्णीय समागे प्रशेष्ठ करते हैं। क्षेत्रस्क्र क्षत कारोमे प्रमुख प्रवृत्त्वाची क्षेत्रा है, उसके केले सुरुक निकारणी रहती है तथा यह शक्तीबान् इसं बुद्धि और सीमान्यमें सन्तर होता है। जो पूरू वैज्ञासके नहींनेने विशासा महाने हैं। असन परिवर्णक सर्वकरणकारी

ज्ञातकके जोहनारे ज्ञातकोची विकित्त पूरा करके उन्हें तिह और मुक्ते वसू दान करते हैं, जहें विकित्त में-दान करनेवा कर निकार है क्या वे मेरे स्वेकने प्रतिक्षित होते हैं।

यो प्रमुख अतिथि और बुदुव्योक्तोको चोतन करा fichte warm und abere spress, beit spresse weben spress, रवन कोरका, सर्वको हर खन रूपा कर आदिके हारा सर्वहा चीता कुछ है, जा हिमा निमानों प्रश्न प्रमानकरी पाछ करता है। के एवं प्रतिक प्रतिक्षित एक क्षेत्र केवन करता, महत्त्वाची काम, क्षेत्रको काम्प्री रक्ता राज्य सस्य और क्षेत्रक करन करने हैं, का भी दिन विधानों केंद्रकर हार्क्षको प्रकृति काल है। यो इस क्लेक्ट क्षेत्रे क्ल क्यांत् और कारे दिन चोचन करता. त्रक्रमचंद्रा पारन करता और इन्द्रियोको कार्यो रकता है, यह विधित वेदायांने मेरोसे को हर अर्थक अधारी होपायमध्ये देख विपायन बाहर है जोन्सनेकर्व रूपन करता है और बहुई बाद्य करेड क्योंतक आरम्बाद अनुभार करता है। से मुख्ये विश्व स्थानत एक नहीं के का प्रतिकार के का मिला है कि का माने कर है जिला, क्रीय और प्रदेशको कराने रकता है, इस प्रकार निकल समाज क्षेत्रक केंद्र अध्यक्षेत्रके केंग्य करावार अने अस्तरिकारे क्रिका है। है, व्यानकृत तेजकी होका सर्वतेषु प्रकृत्वेकने कार है और को दिन व्यक्तिके नेवित होकर में बरोड़ क्वीच्या प्रकृतिकार अवस्थित अस्त्रीम करता है।

में करण परित्र और वेरी बंबायें स्टावय क्षेत्रर की स्मिनकारों का राज्यात (मेरा श्वास करता) तथा कहरेतीके हिए का अध्यक्त प्रशिक्तानुर्तिने किस एकता क्षरता है, यह पहाने क्लाबे कुल रिप्यों, अप्रांतियों और वेचनाओंसे पुणित होकर क्याओं और कृतिका गांव सुवता हुआ युक्तों का क्षेत्रतमें इसेश कंत करता है तथा क्रान्य इस संस्करमें किए क्या नहीं होता। जे क्टूक भी, सी. पूर और प्राह्मकडी रक्षाके रिन्ने प्राप्त ने हालते है, वे इन्हरनेकने करते और वहाँ इकानुसार विचारनेवाले सुवर्गीक को कुए विकासका सुवाद एक प्रत्यकारका दिवा जनस्या अनुषय करते हैं। हेनेकी प्रतिका की श्वर्ष बस्तुको प केन्द्रे अक्टल है हुई कसूच्छे क्षीत लेक्द्रेन अन्तरम्बद्धा वित्त्रा हुआ रक्त का-दूरम जा है जाता है। जो तम होतिय प्रशासकी न्हें देख कर, जाका कर कर की नित्ना तथा कई श्रोदिन प्रकार परेजर जी करते. वहाँ देवता यो आहर जी म्बान करते । वेदलेख प्राव्यक्तीने महक्तर शुरूत कोई देवता नहीं है तथा उन्हें प्रोतान करानेले बक्कार परलोकके दिन्हें हसरी कोई feft at ti

## पश्चमहायह, विधिवत् सान और उसके अङ्गपूत कर्म, चनवान्के प्रिय पुच तथा मनवद्भक्तीका वर्णन

कृषितिरने पूर्ण-पन्तरः! द्विकारियोधी प्रमुख्याच्यांका अनुहान विका अध्यक्ष करना व्यक्ति ? उप स्तानेक याग भी मतत्त्रेणी कृत्य सीनियो ।

शरकारो का-युविहित । विनक्ते अञ्चलके गुरुक पुरुषेको सहस्येकाची प्राप्ति होती है, वर पहानहत्त्वकेका कर्पन करता 🖟 सुने । अपूर्ण, अपूर्ण, कुरूप, अरूपक और निक्या—ने पहल्क स्थानने हैं। इनने 'सहस्क' क्षेत्रको सको है, 'जानक' साध्यतका कर है, क्रांस teffereibte first arreit ufte bet 'meur' it : असिसियोची पुरस्को 'समुख्यमा' सक्तो 🛊 और निसर्गेक्ष स्टेरको जे बाद साथ का किये वसे है, उनकी 'विक्या' rige &: gr., sage, sege, sefen alle utbese-d पानवह बाहरको है। वैद्यांत आहि कार्नी को हेरावानेके विभिन्न प्रका विकास स्वाह है, उसे विद्वार पुरुष 'क्ट' स्कूते है। क्षत्र में हाँ करूची 'जार' नहीं है। सहन्येकी चेवन कारोका एवं 'अपूर' है। अस्तीकोजबरे विकिन्ने के Seelful ufe mer arter fied mit E. aveil 'seller' पंता है क्या की आदि प्रतिकारियों उठिये दिनों को जन्मधी मित है जाते हैं, उत्तीका कर जीवहर है। इर बॉब क्वेंको पाएक वर्त है। जिसे है जिल्हा हर पाएकोची है पश्चमानक स्थाने हैं: बिंदू कारे होता, के सहस्तान प्राच्याको सार्वाकाते हैं, प्रदेशक आहेको है स्वान्यानक मानो है। ये तथी तब प्रकारने पहल्का सम्बन्धे को है। मत्त्र अपने हर पूर्व हम्प्रतीको वस्त्रपति निरुक्त जी शीतना वामिये। यो सनुष्य प्रतिनित इन पाँच पहोचा अन्यान विक्रे किया ही चौचन कर तेते हैं, से सेव्यंत जान भोजन करते हैं। इस्तरिये निकृत् कुलको करीने कि का प्रतिरीत प्राप्त करके इस महोका अनुस्थ पूरे । इसे विक्रो विका कोचन करनेकारत हिन प्रविद्यास्त्र कार्य होता है।

कुषिक्षित्ते सहा—केक्केक्ट्र । अन्यते ह्याः शक्तको सहत्त करनेको विभि करावृत्ते ।

करमान कराइन अस्ताः हे हे थेहे-ने अस्ते वार्ध कर र को । मान्द्रे निकट मान्द्र कुट और साम अध्यार निर्ध और पोपर आहे सामग्री रहा है और पन्तेने बाहर है अपने केंग्रे के केवर के बार अववाद करे। किर बारासकी प्राक्षित्व कर्मा आहे. साम्बो समावत को । सामाव्यो कारत अर्थ कर-पेर व पत्थे: क्योंकि कर सामूर्व हेमाराओपा क्या पेरा परे प्राप्ता है; आ: सापर प्रपुर अही करन पार्थने । मध्यक्षके करने असे विज्ञानि सुरियो बोकर राज्य करे, जिस करीने उनेक करके एक कर शैरके हानकी राजको, अनुवेदकी बैद्धान सुद्धाने करने । इसके बहुत पुरः अक्ट को--क्टब्स अक्ट क्ले क्रान्ट रह क्य-का अन्ते और बार बार कीरे। किर अन्ते पैरॉवर बार क्षित्रकार के का नुसारे कारक राज करे। कारका गरेके क्रमी भागते हिन्त साँच, क्रम और गण आहे समझ इन्द्रिकेट इक्ट-इक्ट कर करते सर्व करे। हेन्स् पुक्रमधिक राज्यं करमेडे प्रकार क्रम और गरियक मी नवं को । इस प्रधान प्रतिक अञ्चले कारका नार्ने करावार नित करावास कर विक्री । इसके कर्य अन्य पुरस्तु क्या पहला किर आवका को अवक आकारों, साथ ओहर, और व्याद्वीनोत्तीय 'वटकरतीन्' इस चुक्तका पाठ को। अन्यानको बाद निर्म नेपार आके पीन भाग पारे और 'हरे निया: इस मध्यको पहला हो सम्बद्धः हररावेद, मध्यानामके क्या रीचेके अहोंने समावे। अवस्था पारम सुस्तोही क्ला रूपाय कार्य कर करे। की भी है से सिय कोराने जारको बारा अवसे हो, जारी और पुंह प्रार्थित सक कुले कलकांने कुर्वकी और के करके बान करना कर्मने । अंद्रातका उपारम करते दूर श्रीरेमे चेता समावे, कार्ने क्राच्या न पैक करे। इसके बाद गोजरको हाकरे जानो जीता करके आने तीन चन करे और ओ की वर्षक् अपने प्रशेषके इस्तोपाद, नवापान तथा असोपापने लगमे । उस समय प्रयाप और व्यक्तियोसकृत भारतीयकाडी पुरराष्ट्रि करका थे। किन पुराने विश लगान अक्रम करोबे पहाल अये हिंदा पर्वे प्रशास क्षेत्र प्राथमानेते, 'अपयानदीविः प्राथति पार प्राथमोते और चेत्रक, अवस्था, केव्यवस्था, बावनसूख,

मार्गन करे। पिर साल्के चीता विधा होका अवनर्गन-मुख्या का घरे अवन्य जन्म पूर्व वेस्तुरिन्येत्वीत मन्त्रीयम को वा वासका होंग कार्य ये उस्ताव नेत साल मारो हुए केमर जनवाद हो का कार्या थे।

प्रस प्रकार कान कान्द्र सारकारके विज्ञाने आवार केने हर सुद्धान्य-क्षेत्री और कहर करन को। पहल्के स्थीतारी स्थापियाँ स्थीति उल्लेखका स्थीत स्थीत स्थे प्रस्ताते श्रीसमें कांग्री कींग्रे स्वेट करके बेविय क्योंक अनुहार कारत है जानेंद्र कार्यको कहता, कुछत और हैवा को हुईने करकर पह कर हारते हैं। इस्तीओ क्रांक्से कहते बोक्स भूति साहिते और इस संस्थान साह साल प्रसान स्वाहिते । क्या-मरनके प्रकार मेरि-मेरि एक और वैशेको निर्देश मताबार को उत्तरे, जिस कार्यो-नव प्रकार (कार्यन को और वर्ष या जारबी और के बनोट स्वामितको वेतीका काश्यद गरे। जाने कहा हुआ हैन वाले है आवार भारते पुद्ध हो पाला है और सालने सेवा पूछा स्थानों ही कारणांके प्राप्त पहलू होता है, अन्य पान और पानकीरे पाई of flow platers from mornelight find annum संस्था करिये । प्रार्थेत कह प्रांकीनकार स्थानेत विशे क्रानीते क्षेत्र रेकर पूर्वविष्युक्त के कुक्कारकर केंद्र और भूतने का terner verrieret breuen ut i for pumber क्षेत्रम एक इसरे के एक ही पानकी-कारका कर करे। करेड़ पांच्या राज्योचा पात वालेके बोह्यते काळे काळा अभिनेतिक पार रेग्यर कृतेको अर्था प्रकृत को । अर्थ्य प्रकृ आकार काले 'स्ट्रारेजी' हार क्याचे प्राथितको विने सार होन्द्रे । जिस साहारिको सुनारिका पुरू और पान सेवार पूर्वको कार्य है और आकारामुख्या प्रकृति करे। प्रकृतक, कुर्वह क्षाधार करावा बार्य संग संग को और उनके प्रदान उसी क्योंकी क बार पुरावर्षि करे। आकारकाओ ब्रोके कोरसे चुपाकर अपने कुक्ष विश्तीत को र क्रके कह केने मुकारे कार कारका एकमानियाचे तुर्वकी ओर देवले हुए काचे राज्यानी रिका पुत्र कर पुरस्करी वेक्केपूर्व वरायकात एकामधिकारे मान करे। अह समाह 'बहराव' पित्रं देखकर् 'तककः —३४ अधीवतः कृतको सम्बद्धाः सुख मुक्तो सम्बन्ध रक्तनेवारे सुक्तेचा का करके की कानानों और पुरुष्युक्तका भी पाठ करे । अन्यक्तम् 'ईस्ट पुण्यित्'हरू मक्को पहला सुर्वेदी और हैने और सर्वात्रसहर्वेद को नमस्या को ।

पूरा प्रधान संबोधितस्य समाप्त होनेवर समाप्तः ह्यावसीवर, मेरा, जंबनकीवर, जवकारिया, वृंशकार्वे और वृंतविवेदा,

अक्रोतिक केरी, क्रीकार्थ, पत्री और समझ पुरानीका, अवस्थानेता. यह-बाल-बद्धाला संबद्धार एक पूर-प्रमाणकेला, पर्वेच्या, परिची और प्रच्योच्या राजा पर्वेची, उरका कुरेकारे देवकारों, औनियों और कारवीलोक क्यां स्टीस करे। अर्थनके प्रमुख क्योतको कार्रे कंप्रोपर रह्ने तक क्यों और क्ये प्रकार स्थानिके यह क्षेत्र प्रत्येक केलाओको क्रोक्स का रेका 'इन्सर' क्या उत्तरन करे (बाँ) से क after bounded on the ter for the cit fiers: हिक्का और सहकार — 'एनेकर' और 'एककर' इन पहेंका उक्तान करक पाहिले) । निक्का कुलको बाहिने कि मनाहरू मर्वित आहे कहा साथ आहे व्यक्तिकों वितरित होवार अस्त्रेत उनेकारे कांग्रे कारावी भीति यहा कार्या एकावीयाते तर्वन करे। पूर्णके बाद बनेसको सहिते संस्थेतर करके अस्ते बाहते क्योजारे विकासको देखाओं को विकास स्टीत हो। पारका, अति, श्रेष, पेकाल, अलेप, अतिहार और aber-4 fepresch bem fo pem firmige und कुकाओंक कांच को और 'कुकार' कांक अकार करे। कारका विक्रोपक प्रचेत आहम वर्ष: अन्यत प्राप्त प्राप्त प्राप्त है—रिक, रिकास और प्रतिकास क्या पाल, रिवासी और प्रतिकारको । इनके विका पुत्र, शासानी, विश्वपूर्व (सुश्रात), Topic (this), thirds, patent, for, my, first, व्यक्तिय और क्रांत-पार्ट आविनेते भी को पर गये हो, उत्पर का करों होयों-हेर स्थापन समक्ष भी स्थान करना व्यक्ति ।

प्रतिको पहल् अवस्था करते प्रतिके साथ पूर्व हुए कारो निकेद करें। का महत्वा कर की कुरते के हुए रोक्स्पुरित पुरानीका पान है। यह उनके काल करने और पीरेक्टे पान अंध्य है। जार का पानो कावा क्रोप काल पाहिले. ben Rugeben sente fie seiter bemeit mer fineben पर्वत किने किन सामग्रा नया गाँ क्षेत्र साहिते । यो ग्रेस्ट्रा प्रतिकों पहरे ही कीए प्रकारों को होता है, यह प्रतिकों और केव्यानीको बाह्य पहुँचाता है। जा अवस्थाने आसे वितर को कर केवर रिका सोट को है, इसीओ इनेकड़े पहाद क्रमान करके हैं काल-केल निकेदन पाहिले। सर्वनकी किया वर्ग होनेवर होनी वैशेमें मिही समावत को को करने और किन आवान करके परित्र है कुलातला बैठ क्या और क्रमोने क्षा रेका कामार काम को । यहरे केवा का क्षाके किर अल्पे राज्य अप्रोक्त अञ्चल को । अधनी सहित्रोह अनुसार अविदेश को अध्यापन विकास करता है, उसको साराज्य बारे है। प्रापेत, प्रमुद्धि और सामनेतार स्थापन और। इतिहास और पुरानोंके सम्बन्धकों भी सक्षत्रकी न होते।

व्यवस्था पूर्ण करके राज्ञ होका विद्यालों, उसके हेकाओं स्थानकी, पूर्णां, लोगांव, कार्यों, स्थानकी और स्थानकोंकों स्थान पूर्ण भी जनाम करें। किर कहा होकार जनसमूक 'नमोज्यात' यह मना का्यार पूर्णांच्या कार-देवालको स्थानकर सरें। इसके कार्य पृथ्णि, सूर्ण तथा सामित्र सामि स्थानकों स्थानक करके सामे सरावाच्या केनों ह्या कोंकार पूर्णिककों जनाम करें और जनकात नाम करते हुए प्राथ्णिकों स्थान स्थान करें। सामें कार्य सुत्री किय स्थानकों मुख्येने विद्यालों केंग्री पूर्ण करें।

तुष्यिक्षे व्य⊢नावय । यो पूर्व अवको अस्त्रक वैत्र हो तथा वित्रमें अवका निकार है, ३० सकत पुत्रके

कार हो बह-राज्य । यो पूर्ण पूर्व पहल देश 👢 क्रमें नाम बातर है ; सम्बन्धन होबार सुन्ते । कुनुंद, क्रम्मेंद, कारत, पान, कारते, स्वीत-कुन, कारतो, स्रोहत, चारायो पूरा और यो, शूर्व, पूजक और वपकार — वे कुल मुझे निर्देश दिन है। यस प्रकारक पुरानेने प्रकारक अवस केरनां माना गया है। अवस्थी बहुबार का, कार्य प्रस्तात. कारान्ते स्वान्ता, स्वान्तानी प्रवास्त्र और प्रका कुमारीकाले सक्ष्मार सुरमानेकार गुरू साम्य ग्रम्म है । सुरमानिके केंद्र है करपुरू और अस्ते की प्राप्त है सीवार्ग; सीवार्गीह कुलते क्षेत्रकर कृतक कोई भी कुछ को दिन की है। कुछ न निवर्तकर कुरुरीके परोचे, परोचे व निवर्णक सम्बद्ध प्राप्ताकोचे और कारताओंके न निरम्भेदर सुरमान्त्री कर्यक कुरमोत्रे केंद्री पूजा सने । परि व्या भी न निस्त सके से गाई शुरुतीका वृक्त पह हो, महीकी निर्दार्श ही मध्यपूर्वक मेरा पुरान करे। उस मागरेकोच्य कुरतेके कम कहा रहा है, जान केवर कुने र किञ्चिली, सुनि पुन्य, सुन्देर, बास्ता, अधिनुस्तांस, सुन्तान, मक्कारिक, चेंकिक, श्रीरिकार्क, रिर्मुको, साहरी, कव, असोच, रोपालक कुल, ककुल, कोनिकट, प्रेचीलक, पुरस्का, करनक, कारक, अंब्रोस, निरिक्का, कीरे रेक्ट्रे कुर गया एक पंजाक्षेत्राले कुल-इन सकका स्थान कर हैन भाषिने । अस्य (महार) के कुछ एका असकोड पहेचर रही हुए पुरु मी नवित है। मैनके कुलोका भी वरितान कर केव करिये। उनके अभिरिक्त जिनका विशेष वहीं किया एक है. देशे समेद पंजादियोगाले जुलनिक पुत्र कितने विस्त करेंद्र राने हत पर पुरस्कों मेरी एस करने पाईने।

वृधिक्षेत्रं पूर्ण-भगवन् । जानके प्रश्न कैसे हैते है. तथा उनके नियम कौन-चौन-से है—वह व्यक्तेशी कृष्ण कौनिने; क्योंकि मैं भी आपके क्षत्योंने प्रति एक्सा है।

क्लाकर्ते क्ला-समार् ! यो इसने बैदारी हेम्सको पास न क्षेत्रर केवल नेते हैं करन से जुके हो तथा मेरे परतवनोंके साथ हेन रकते हो, में ही मेरे क्या बढ़े की है। क्रमें और कर देनेवाले होनेनेंड स्थान ही को जुड़े विशेष दिए हो, ऐसे इस्तेंबर ही मेरे शब्द भारत करते हैं। यह पुरुषको मारते हैंसी समय एक बक्षके किया पुरस्त नहीं करना करना काहिये । सन्ध हुई हुए हिन्हों कमी नहीं सोन्य क्योंने । क्यू और धीरको साल देन क्योंने क्या व्यक्ति व्यक्ता, थी, केवल और अधिके निरमेशर उनकी प्राथीतम् सार्थः साथ भाविते । यानी करात्रे समय होहात नहीं करिते, पाली पर्यक्र को पाल प्राप्ति तथा हो प्रमुख और प्रकारक पहल जो करन करेंगे। गीवो प्रतिक प्रक अनंत्र को और अध्ये कुळा मिलका न काव; इसकेंद्र काहे अवनार सामी हुई रहोई, बाती कह तथा बराबान्हों थीन र कराने हर पहलेख को उपसन्तिक उपन हरे। कोई और क्याची क्रमाने कु खे, बढ़ने ध्योक्त भी प्रधानी और हेक्काओको निष्कु न पारे : पारो केवेके निक्कन्, विकाससम्बद्ध और मुद्रियान् प्रकारके प्रतियों की प्र: कुश्रा निकास करते हैं। क्रांग्लिक प्रतिनी साथ, बैक्सीके बेहरी जात और स्टोबे प्रतीस क्रमधेक विकास कार भार है। कार, होय, सेय, बर, बेह और न्यून्येयू—ये प्रः कुरूर प्रयूप्यये प्रशिष्टी विका सामने गर्न है। नर्ग, काम (महात), श्लोकत, ईम्बं, होत, फरन्त (महोर केरक) और कुछा—ये संत क्षीय-प्रशित्ते क्रमेवारे कुछ। To the test, were, were, were, spin, were not arrest, कुरानी और अस्तरमानमा—में अब्द वेहर-प्रातिके कुरात है। gran, warbeit gran, Das, mirele, Palent, ment, within first, from your, makes, we write. men, wer, when, some, some, severes, Prigrate, अनीतास और गीलमा—ये इंडीस कुमर सुन्दे स्टीरने कुनेवाले सामने को है। वे सभी कुन्छ विसक्ते चौरा न हिंदााची है, बड़ी करावने प्रवास बहुताल है। असः प्राह्मस वहि मेर्च रिय होना पाई से सारिकार, परिवा और कोमार्थन सेवार सब केरी पूर्व करता हो। विस्तारी विका पहल नहीं है, को हैवें करण किने क्या है और कर क्रम आनेतक हुई रसते हुई कारत है, जिसमें अपने कहार का और वासीओ बचारें करके करते बरमान था रिका है, यह मेरा शक कहरतता है। हैसे अध्यानकारो कुछ किल्लिक प्रकृत विनद्धे कई सद्यो इतिपूर्णक क्षेत्रन करते हैं, उनके विका कर मोजनसे पूर्ण तह होने है। वर्णको जब होती है, अध्योधी नहीं; सरकारी विकास होती है, असम्बद्ध वर्ष कल कुमाने जीत होती है, ब्रोधकी नहीं। इस्तिने अकुलको समावीत होना पाछिने ।

## कपिला गौका माहतव्य और उसके दस भेद

वैज्ञानामा नारे हैं—राजन् ! क्य और प्रमानके पुण्य-सरमेंको सुनकर चुनिहित स्कृत जरता हुए और उन्होंने पानान् सीकृत्यको पुण्य-'धनान् ! विसे अकृतीने सरीकोचनी रितिको हिन्दे पूर्वपारणो जरण किया का प्रमा को स्वय ही परित्र पानी गर्थ है, उस करिया कीवा प्रमुखीको विस्त प्रमान क्या करते हैं ? यह करिया प्रमुखीको की किस हिन और वैस्ते अकृत्यको देने पाहिने ? स्वानीने करिया नीचे विसने के प्रमानने हैं ? इन सम करतेको में प्रमानकारो सुनक प्रमान है।

शाकर अंकुमने वह-वायुक्ता ! का रिवर वह ही परित और क्यार है, इसका सकत करनेले सबी पुरूप की पापने कुछ हो बाला है; सक: बान केवर हमो--क्रीबारमें क्षान्य प्रक्रियोगे अधिक्षेत्र तथा प्रक्रानोके विने समूर्व रेगोका संबद्ध करके करिया भीको करता किया पर कृतिसा में परिता बस्टुओंने सबसे बहबर बरिता, represent thread that the street of the प्रकारित परावपात्रकारमा है। यह तकस्थानीने सेह कारणा, क्रारेमें स्त्रम प्रत, क्रमेंचे के का और समक्त अक्रम कारण है। प्रजीवर विश्वने प्रतिक सीचे और मन्दिर है अब जेव्यरने को पूर्ण परित्र और राज्यीय कराई है, का सबका केव निवारकार विवयिकास अञ्चलको प्रकारो अल्पेस विके करिया भीवते सुद्धि को है। करिया सम्पूर्ण तेलीका पूर्व है: का अपूर्वकार, नेका, सुद्ध, वरित करवेकारी और उत्तर है। क्रिकारियोंको पाविचे कि ये स्वयंत्रका और प्रशःस्कानो करिता गीचे हुए, बड़ी अवका गीने आधिके करें। बी प्राप्तास करिएस गीवेंट थी, बढ़ी अरबाद पूर्वा विकित्स क्रांतिक्षेत्र करते, व्यक्तिपूर्वक क्रांतिकवेकी कृता करते, पुरुके अपने हर यहे तथा हम और अगरभक्ष तथ अग करते हैं, वे सुर्वके प्रयान तेमली विभागेक्कर सुर्वनव्यक्ति वीको होका पाप काम क्राएकेक्से जाते हैं। वहाँ कालके क्रियानको प्रकानकार का धारत कर कोड स्थानेक विकासे हुए एक कान्यतक आन्यतक उपयोग करते हैं और क्रवानीसे सदा राजानित क्षेते राते हैं। इस उच्चर फरिया में परावर्षित और अमृतयन कुळको ४०४ बारनेकारी जराते 🖣 । पूर्ववयत्त्रमें ऋषाजीने उसे अधिके पीतर अपन्न विका पा 🗈

चुनिक्षित ! सहारतीयी अवसनो कनिरानी सीरनी अञ्चलको सञ्च सन्पूर्ण सीर्व निकास करते हैं। को मनुष्य समेरे क्रमा क्रांत्य चेन्द्र सीन और मरावसे गिसी हाँ करा-करको अन्ते किरार करन करता है, वह उस पुरस्के उच्चनके स्वास्त पारतीय के न्यूया है। जैसे आन विसर्वेको कर कारते हैं, जो अवस यह कर मनुष्ये होन संयोध पानेको पहर कर करना है। यो करिनाका गुरू रेका अपनी के साहि प्रोपकोर्ने समाता एका सरहे कान बारता है, का क्या कारके पुरस्ते निवास हे जाता है; उतके तीत बच्चेके कर मा हे को है। के प्रतःकत कावर परिनंद ताब करित चेको कारकी चुड़ी अर्थन करता है, अर्थन एक प्रातिनेक क्रमेक राष्ट्र हो नक है। यो समेरे क्रमाने स्टब्सर महिन्दुर्गक क्षांका केंद्री परिवास करता है, उसके प्रश्न करूंची कृतीकी चीक्रमा हे सभी है तथा इक-एक परिक्रमारे इल-एक प्राची कर का होते हैं। को पूजा माजिल गाँकी पहालको पहाला क्षत्र होता है, यह काने गाए आहे समझ सीवंधि साथ सर हेवा है। अञ्चल पुरुषो का फानो को राजी कर राजार च्या हो नाते हैं। चरित्रपूर्णन करित्ता गीवा हार्गर करके तथा क्रके रेजनेको अध्यक्ष सुरका पर्य एक विश्वासी पानको पह बार अन्यत है। को जान जातिले परित्र होकार क्रमेल पेटे मिनी में अपूजा नर्ज करता है, अरका एक क्षांका कर हर है कक्षा है। एक करूब एक इसर सैजीका क्ष करे और क्षत एक है क्षतिल गीको क्षत्रों है से क्षेत्रनिकाल्य प्रकारीने का बेनोका पता बरावर काराव्य है। हारी प्रस्तार परेर्ट नवन्य प्रमानका भीर कुछ ही प्रतिका मीकी क्रमा कर करे से जो इस हमार मीजोंके बसका पर Transit in

व्यवसीये क्रमिता गाँचे इस मेर क्रमानचे हैं; इस्तार क्रमेंय करता है, सूचे । पहली सर्वकरीयां, दूसरी गौरांपहरतां, डीसरी आरक्तिपहरतां, क्रीची गस्तिपहरां, प्रांचती बाह्यकर्तातां, क्रांटी केलियुस्तां, स्तानची स्वपिद्वादां?, जातमी सुरांपहरतां, नवीं फटलां, और दससी कुक्तिपुरसां!—चे इस प्रकारकी क्षतिक गोंंग् क्रमानची गांची है के स्वा मनुष्योगत उत्तार करती हैं। यो स्वास्त्यने, प्रवेश और स्व क्षांचेचे न्यू करनेकरते हैं। यादी इतिमोनाले कैलोके

१ सुवर्गक सम्बन पैसे रंगवरने । २. वीर ठवा पैसे रंगवरने । ३. कुछ स्वरित्य रिल्मे हुए पीसे नेहोकारी ) ४ विसके गरदानो बारु कुछ पीरे हों । ५. विसका साथ प्रारंत पैसे रंगवर हो । ६. कुछ सपेटी रिल्मे हुए पीरे देशवरने । ७. सुर्वा और पैसी ऑक्ट्रोक्सी । ८. विसके बुद पैसे रंगके हो । ९. विसका इसका स्वरंत रंग हो । ६० विसकी पूँकके बारू पैसे रंगके हो

भी ऐसे हैं दस चेद कराने गने हैं। अर कैन्डेको हांकुल है अन्तरी स्वातीयें कोते । दूसरे वर्णका मनुष्य प्रनये सम्बर्धका प्राप्त न है । गर्माने जुते रहनेपर का बैस्तेनके धूलारकी आधार हैकर अस्ता परिवाली रहनीचे होके। केंग्रेसे, कांग्रेसे और स्वांग्रेसे कारकर र इति । यस वैतः पूज-स्था और परितनके और पूर् हो उस उनके इन्द्रियों कारायी हो हो हो हो गई ग्राहिये व खेरे । काराय मैलोको विस्ताबर हुए न का से अवक्र को भी केवन न करे। उन्हें पानी निरम्पार हो कर्ष जार-पान करे। रोक कारोबारे पुरावधे कृतिल सेर्ड बात और केर विक है । है से महते पानते ही पार होनेकारे बैस्केको सकारीने कंकन हरिए माना गया है। मध्य भागमें —केव्हरीके समय उन्हें विकास हैना करिये, मिन्न दिन्हें अधिन काले अपने प्रांत्रेड अनुसार मर्ताच करना साहिते अवस्ति अंतरकारमध्य हो हो उनके पहल है। और ने हे हो न से . जहाँ कारीयर करन हो अवस्थ जहाँ कारी Part warms on animal &, and famous more th बाँद कैलोची सम्बाधि योगे में पान नहीं हरनात । कांचु में विश्वेत अवस्थाना व क्षेत्रेस भी हो। इंग्लब्से बैहरीको गाउँने कोन्स है, असे कुल-कुलाके सन्तर चार क्रमात है और का रोग्ड कार्कों पहला है। को मोनुबार बैलोके करीनके एक निवाल केट है, बहु फाराया का पान्के प्रभावने विश्वादे स्थान है और सभी मध्योंने हो-हो वर्ग सुकर हुए समुख्यकेयने केरवह प्रक पार है। अरः जो संसारते कुछ होना पाइक हे, जो पानित भीवा राम काथ करिने : के का मनूबा लेको केवित केवत करिता गाँचो समादेने जोतक है, यह करे केरीन हेक्कानो और वितरीयर भी समाधे करना है। उस का पुद्धिकारे पुरस्को देवता और निगर सब समान्य करते हैं और बढ बढ़ाजानक एक नामाने क्षाप्तन कुले कीर करवाने महत्ता सुरू है।

निया प्राचन वाधित सामित्रे केल श्रावाय लेकी स्वीत होते.

() यह सामान ने अपनेको बाह्य हैरेसाले सनुष्यक कृतवाय संकार वास्त्र है। वर्गत प्राचित कर्ष सामानि केला करें होते हैं, जाने सी सामानि केला क्रियां कर्माने दक्षिण्य हैनेको विको वाधिता मेंकी स्वीत वास्त्र क्रियां होता है। सामानि । सो प्रमुख अधिकांको सहाने हमाने हीताया अवस्त्र केला है। सामे वाधित सो प्रमुख अधिकांको होता है। सामित्र क्रियां सामानि । सो प्रमुख अधिकांको होता है क्रियां वाधित सामानि । सो प्रमुख अधिकांको होता है। सामानि । सो प्रमुख अधिकांको होता है। सामानि । सो प्रमुख क्रियां सामानि होता है। सो प्रमुख क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां होता है। सो प्रमुख क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां होता है। सो प्रमुख क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां होता है। सो प्रमुख क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां होता है। सो प्रमुख क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां होता है। सो प्रमुख क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां होता है। सो प्रमुख क्रियां क्रियां होता होता होता होता है।

कारण रहिनामके आस्त्रों हा रहत है, को अधीध-प्राच्या कर जिल्ला है छन। इस प्राच्ये प्राप्तानों का मेरे हरेकारे कार है। किराने सीमोने सोना और मुरोपे चर्च कही हो, से क्योंने क्रांतिक, क्रांतिक क्रमा क्रमा क्रमा क्रमा-मानाओंने क्षेत्रकार हो—देशी मौको व्यक्तिक को हर इत्यक्त अह व्यक्तिक प्रमो देश व्यक्ति । मेरे विकासी प्रवित्त सङ्क्रोजें कुरूने प्राप्ते अधिक परिवा है, प्राप्तीको प्रीपते प्रोपेक्ट आध्यमध्ये स्थानम स्था करने व्यक्ति । इस प्रवास स्था करोंने कुछ अपनी कर पीरियोक्सके क्रांकेको और कुछ वेदों आने होनेकारों इंडरनीको निक्रम हो तार देता है। एक हारत अस्तिकोचने सम्बन्ध कुछ प्राचनिक पक्ष क्षेत्र 🛊 । कुछ हारत व्यक्तिको अन्यन एक अनुस्थित होता है और एक हमार अवनेत्रके प्रचल एक प्रचलनक होता है। के महत्त् पुरुषोच्या विरोधने पुरुष पुरुष कारिया भौत्रोपुर पुरु पहरता है, यह प्रमाण-पाना पात पाना के प्राथमने प्रतिक होता है. को हर: इस लोकने नहीं सीटमा पहला । यो पूरत कारिएस गीवें क्रुपे और सीन्त्रेने क्षेत्र प्रकृत्यत् को एक क्रवालंड आरंकातीके कुलोरिक कहाँ वहीरेकी केहती और मानेसहित कुन करता है, mit em er if men geltt gu meigh und उन्में का होती है। बानों से हां के अपने वालीते सेवबार क्षेत अन्यव्यान्त्रं राज्यमे निश्ते ह्यू कर्मकार वही प्रवास स्कूत् कर केर्ड है, केरे क्यूके स्थापित सामग्री वह पान समुख्याओ कुरवाराने कुनेने बनावे है। कु, की अभी सार विकिनोत्सके रूपमा कुरमारे यह भी तर हेरी है। प्रमाण दूधने न्युन्तिको सार्थ्य कामी है, जनको कुर्ज है हुई में प्रत्येकते कुलको करू दिने कुछ है। वैसे कुलो साम हो हाँ औपहि प्रचेत्र बारों ही प्रमुखके चैत्रीका पक्ष बार केरी है, उसी प्रवार, सुकारको से हुई करियत भी करूमके तथ क्योंको तालाम नह का करनी है। कैने और केन्द्रम होत्यार को प्रकारको बहरन परण है, की है एक परिता मैंके करने पर-मुख होया अन्तरमा प्रीप्ताको अस्त होता है । जैसे प्रत्यतिक क्षेत्रम् करने फैसे हर अनकारको दर कर केन है, उसी प्रकार महत्व करिया फेंबर क्षा करके अपने चीवर क्षिये हुए प्रारकों भी निकास केव्यक है। स्वापेतरीय कवित्य और वरीरमें दिवने देश होते हैं. काने करोड़ प्रचेतक क्षा काम अपूर्णकारे आरम्बार अनुसार कारत है। के अधिक अधिकेत कालेकारत, अधिकेता हेवी, कुछ काले पूर क्रमेकाव, क्रिवेदिल, सरकारी तथा काम्यानराज्य हो, जो वै ह्यं चै परलेक्ष्में द्वराद्धा अवश्र

## कपिला गौका माहातव, अयोग्य ब्राह्मण तचा नरक और खर्गमें ले जानेवाले पाप और पुण्योंका वर्णन

वैशानकार्य कार्य है—क्योक्य | एक प्रकार कार्य कृतकार करिया कीर उसके कुम्म और उन्होंने कार्यक् बृतिद्वित्त्वा का कुम्म स्टब्स और कार्योंने कार्यक् अध्यान की सकार्यकों कुम्में हैं कार्य है के संस्थे कार्यक अपूर्ण ने सकार्यकों कुम्में हैं कार्य है के संस्थे कार्यक अपूर्ण ने सकार्यकों हैं, उन्होंने किस्से क्रियंक्य कुम्म्यक क्रियंक्य कीर्य कार्यकों और विकास क्रियंक्य कर किस क्रियं अपूर्ण किस्स है 7 और उस क्रियंक्य कर किस क्रियं अपूर्ण किस्स है 7 और उस क्रियंक्य कर किस क्रियं है 2—के क्रियं कर्य क्रियंक्य क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं

यगक्ती कह-राज्य ! यस्य परिता, गोकरीय क्रां काम वर्गका वर्गन करना है, हुने । किस समय में उत्तर up ut it sår autir å år firmilie ablid une दिसानी है से ही, मुनियोद्धारा बड़ी उसके सम्बद्धा उनन समय कारतमा गया है। कारक काड़ा आकारने हैं। सबक का है, पुन्निया नहीं रियमे पाना हो, स्वरत्य नह भी पुन्नीका क्रका पानी पाती है, उसलिये उसी अवस्थाने सेवा प्रत करण साहित्रे । युनिहित् ) अल्य-कारले व्यक्तिकीय गेर्केट करीरमें मिलने रोपें होते हैं एका करने। नालेंड जारने क्वीनोड निर्मा क्षेत्र की पाने हैं, जाने हमार क्ष्मीनक करा सारितोक्यों अतिहित होता है। व्यवेसकित करितत सेवते सोनेके आयुवानी तथा तथा प्रकारके करेते अल्यून करके मिलोके साथ दानमें देख चादिने । जो इस प्रकार दान करता है, उसके प्राप्त नहीं, समूत, पर्वत, वन और व्यानकेसील बारों ओरफी पृथ्वीका दल है जाता है। इस अध्यक्त सन पुन्नीशुनके समान ही जन्म जाता है। आके हरा बन्ना संसार-सागरते पार क्षेत्रर प्रवासीको क्षेत्रमें काल है। इक्कान, भूगकृता, मेक्का तथा गुरुकोत्तर आहे पहलू पालकोसे कुछ मनुष्य भी उपर्कृत इस प्रधारके क्रांत्रिय संस्थ कृत करतेही कहा है। जान है। जो पत्त्व समेरे सरका सुहले भक्ति रसते हुए इस परम पुरुवस्य अन्य कविता-धुनके महारक्ता यह करता है, जरके कुलका कर सने। इस अक्टावका यह करनेकाय सनुष्य रहिने कर-कथी अकट क्रियाक्टरा किने इस् सम्ब क्योरी कुछ हो काल है। जो श्राद्धकाराये इस बच्चावका पाठ करते इए सहायोजने पोजन आसिसे गुप्त बहता है, उसके जिल्ह अन्यत प्रमान

क्रेकर राज्य केवन करते हैं। को पुराने किस समावार इस अवेकको क्षीकपूर्वक पुरात है, अर्थक एक राजके सारे पाप समावार का है करे हैं।

अब में करिया मेंके सम्मन्त्रे निर्देश को बातन छ। ि पहले जो की दुनों का प्रकारको करिएय गीर्थ कारवाये है, जाने पार करियाई अस्तर हेतू, पुरूष अस्त करनेवासी क्षा का क कर्मकारी है। सुक्रांकरिशा, राज्यदिशा, विकासको और विकासीयुक्त-- वे पार प्रधारको प्रविकादे केंद्र, चर्चक और चन क्र करनेनाओं है। इनके क्रॉन और क्लाक्रमों की क्लाक्षेत्र कर यह है जाते हैं। वे कल्लाक्रिये कारिका कीई विकास करने कीवह दाती हैं, बढ़ों की, विकास और व्यक्तिक निरंत निवास केया है। इनके दूकरे पनवाद इंग्यर, खोले सन्पूर्ण केवल और बीले आस्त्रिय हुए होने हैं। निया, नियम्ब और प्रवितालक के एक बार भी करिएस गीके कुर आहे देनेक करेड़ी क्लीक दह रहते हैं। बहिला चौके थी, कुछ, बड़ी अध्यक्त फीम्बर कुछ गार भी लोकिन अक्रमेको सन करके पहुन का पार्थको सुरुवारा या पार्ट है। यो निर्देशिय क्रमर एक विग-एक उनकार करके करिएक चैका पहल्का पन करता है, जो पालकारो सकार जान पालको पाठी। होती है। यो ब्रोध और आंत्रकार लाग करके मुक्तमें किए एक्कार पूज मुक्तमें करिएत नीचे प्रकारकार आक्यन करता है, जानदा अन्य:बरान प्रदृ हो करता है। यो विकृष्णेको भूकत्-मूकत् क्या प्रकार व्यक्तिको प्रश्नानको नेरी मा संकरको अतिकाको साल सरासा है, इसे अध्येष-स्थान कर निरुद्ध है। यह निराम को सुद्धारिक हेकर सावनाची होता वहनेवले विवास हार के अवस्था साथे रहेको प्रका करता है। पूर्वकारणे सहाजीने रूप वेक्पनोने हर अधिकृष्णों सुवर्गके सुवर्ग कारियको करिया नोको अस्त क्रिया। इस होय-बेहुकी जन्म दुस्तक कैनके क्रूर्व की : उसके उसका क्षेत्रे क्री बह आदिक hour, first, staff, de, dang, use, uses. नदियाँ, पर्वट, नेया, राजार्य, अध्याराई, तक और साथ क्याँ ज्यारेका हुए। उसे देशलार संस्थाते कहा विस्तव हुआ और सची अनेको प्रकारके पार पहला करवार अस्ति शुक्री करने समे । जा खेके हरिए क्यूब को बढ़ी है, जाकी हीन आंचे भी, उरस्का सकता उसके साम हो मा उत्तर यह दुखारात सम्बद्धी प्रचट चरनेके सिने आसीके बचान थी। समझ वैकार कार्नि क्षम मोज़बर का चैचो प्रमान मिला और प्रपृष्टिक प्रकृतिके महा—'धरकर् । स्थापने का सामग्री किया अक्षामा किस प्रमार प्रमान करें ?'

वेगाउनीके इस जाता अन्न कार्यकर ब्रह्मानीके कहा—'आयानेण भी इस हम हैरे-बारी भीगर अनुवाद क्रांतिके। यह इंगावती विराह्मिक विको जाता हुई है और अपने इतिकाल बीनो आर्थिको हुए करेगी। यह अर्थिक वर्यके बुहा है क्यांति के साम्याकेणोको भी गुरू करेगे। इसके ब्रूपानी अनुवादी आपनोपोके क्या और परावतनकी पृत्ति होगी और अन्य कृत्यक कर्या है

क्षानांचर विकार का व्यापेत | अञ्चलको हैला व्यापेतर क्षेत्राश्मीके मुक्तर प्रत्याता का नवी और वे कांक्स केंक्से का प्रवास करवान के राने — किंव | प्रकारणी अञ्चल प्रवास है। कार्यकी दिनों हुने करवा किया है: इस्तीरणे हुन करव परित्य, कुट और कावका कांक्ष कार्यकारणे होंको । को प्रमुख हुने वेक्सका कार्यकार करेंचे अवकार को अपने क्षाप्तील कुंकर करवेका किया कार्यक करेंचे अवकार को अपने क्षाप्तील क्षाप्त करवेका किया हुआ कांच स्वकृत जा है कांच्या । को प्रवास कर्यक हुने कांच्या करेंचे, उनके अध्याकारी किये हुन, अस्त्याको किये हुने क्षाप्त हुने च प्रकृति कारक करता है कांच्यान करवा उसी प्रवास जह है कांची जीने क्षाप्तिक क्षेत्रिय अस्त्यात किर कांच्या है।

हत अध्या करिएक क्षेत्रों करवान देखर देखक अबदि कैसे अल्पे के, केरो लीट एके और यह की लोगनेका अञ्चल करनेके केले कार्य लोकोचे विकास सभी । इसके प्रतिस्त्रे से क्रांसिकी और कारण रहें । के शाम-बरी-एक जगाएत कामूबर करनेके मिले प्रक पुर्णाना विकास सूरी है, इस्तरिये परावेकने हैं। कालेकने पुरस्को करिता गेंका क्षुत अवस्य करन करिने । निव साम आधियोगी प्रकारको धारिएम में सुनने से जाते हैं, उस उत्पन अस्ते होंगेंके कारी भारते विक्तु और इस विकास करते हैं। प्रीकोची जाने कहारा और काचारी हुन पूर्व है। सीकोंक सीवने महार तक स्टबरमें कामान् क्रेकरका निकार होता है। केने महत्तेचे अधिनीकृत्यतः, वेडोचे ककृत्यः और सूर्वः, क्रीतेचे कक्तृत्यः, विक्षाने सरकार्य, प्रेमकृतीये सुनि, कार्याने प्रकारि, कार्याने पत्रक, यह और क्रांसदित कार्त केंद्र, जरिला क्रियोंने पान और सुनन्तिक पुण, गीवेके सोठने क्यूनक, पुन्नो अति, क्यूनो सम्बद्ध-केळात, नरहरूपे पार्वती, पीठवर २६७८, कंप्सरके स्वाप्त्ये भागात, अवन्ते तम धेर्व, कृत्वे स्थान व्याची, चेवरवे



का, क्षेत्रे कारीकोचे विदेश, कारीने क्षतिकारे कार्तिका, पुरुषे, केवे और सहकोचे चीव सार्, सुरोध प्रशास कराई और कुरोबे आकारणे वर्ग विकास करते हैं। करों करा अले करों कर 🕯 । पी, केल, इन्स, कक, सद्ध, स्राप्ति, सृति, जृति, ubff, fift, firm, mifu, gib, qib, ainh, fben afr प्रतिका आहे. भूरियाँ सक् ब्राहित्स मीवार मेवार निर्मा कुरती है। केवा. विक, कार्य, अवस्ति, लोक, क्षेत्र, सपूर, पहुर आहे. बीर्थ का अहाँ और पहिल्ला समूर्य के, राज प्रकारके क्योंने क्ष्मिक केंद्री प्रत्याकृष्य सुनि विका करते हैं। वै व्यापे है— 'सन्तुन्यं हेवलाओं स्वीतन पुरुवनके वारिताहेकी । हुने जनकर है। सहस्तीने हुने अधिकृतको अन्त किया है। कुकारी जन्म निरम्भ और क्रांकि महत्त् है। संस्था तीर्थ तुम्हारे ही कारण है और कुछ सामात कुछ करनेकारी हो । सुनका हेकार अन्यानी को हेका बराबर का करो है— अहे ! बर क्रिका केंग्रामे का विज्ञान परिवा और विज्ञान करण है । यह हवा ु गरिको हर करनेकारत है। असू र व्या करीने उपार्टिक, प्राप्त, श्रेष्ट और भाग कर है ।" करिएय में बाद बाहे हो भूगोसकारी समूर्य क्यूकोको महत्त्वेकाने हे का सकती है। पूर्वी, क्षेत्रा, सोना, बी, वर्षिः, वित्र और सी—वे च्यानं प्रतिदिन प्राधानको कुन करनेहे क्रांच्ये महत्त् स्थानक्ष्ये प्राप्ति होती है।

वृध्यिको पूर्ण-पेक्टेबेक्ट ? हमा (थड़) और सम्ब (सन्तु) कर जान समय क्रीश-सा है? इसमें बिह्न क्राम्पोची पूर्ण करने काहिने और वित्तवह परितान ?

परमूर, पर और क्रमसीत कारों के, जरिनकारिकोंने कम और सुननिक पूच, रीकेके जोठने कर्तुक्य, पुस्तों अति, क्रमने सन्धा-केळा, नरदस्ये पर्वती, पंत्रकर २६६६, क्रमुन्के स्थानों सामान्त, जन्मनों तम बीचे, कृत्ये स्थान्य ज्ञानकी, चेकरने सामान्त, जन्मनों तम बीचे, कृत्ये स्थान्य ज्ञानकी, चेकरने सम्बानिक, नारिकार्य जोड़केते, निल्लोने विदर, कृत्ये बन्नकति । सामान्त, जन्मनों कोड्रकेते, निल्लोने विदर, कृत्ये बन्नकति ।

राम जो कुनेसे ह नव हो, का अवस्थे राह्मकेंक कर इन्युक्त कविने। परित, बंद और प्रेसर प्राक्रण किले औ बिरें, क्रमा के-मा और विर-माने समार माँ घरन काहिने। जोतर, अनुबीन, प्रोची और राज्याना करा सर्गाच्या रोगी भी आदमें साहको केना नहीं करा गया है। बैंड, पुकरी, सुटे निका करण बारोकारे (काराव्ये) एक बीधमा बेक्टेब्बरे प्राप्तम सामूने सम्बार पानेके अधिकारी मही है। गर्वने, राजने-ब्रह्मेनाने, क्रमा मनानेनाते, क्रमानी, पहल्लान, अधिक्रोड न करनेवारी, नहीं क्रेनेवारी, बीरी करनेकरे, प्राथमिक्ट करीं बंदक करेकरे और कारिनित प्रकार की श्राप्तने सामार करेकेन जी करे माने ! भी विक्रती प्रमुक्तमंत्र भूत ही सम्बोद विक्रांत विकास विश्वेत पत्र व हो उन्हां को पुरित्य-कवि अनुसार करके बार्टी रहते ही, में अध्यान को संस्कृत अधिकारी नहीं है। पुरुषे अपूर्वकार, रोक्यर क्लेकार क्रम क्यु-बहुत्वेची Bullit officer configure paper of mark these क्रांग्य अधिनाती गरी है।

परंतु को स्वयुक्त सारका आवश्य सार्वकार, पुरस्कार, साम प्रमाणकारिक, असकी-मध्यके प्राप्त संद क्षिणकारित हैं, में शंदारों सारकारके योग्य माने गये हैं। साह्युक्त सारके साम कारत है सुरसा प्रमुख्याद मिल्टा। मिल साम की साई, असे स्वयूक्त साम सारका कर देश कार्यके । को प्रमुख सामकार, कोई-सी आंशीकिसाका गुजारा कार्यकारे, कुर्वक, सिर्मी और विश्वास मिलीई कार्यकारे हैं, में नहीं कार्यक हैंगार कुछ मानि आने से उन्हें किये हुए क्षानका मानद मान हैंगा है। मुनिहिए। इन साम मानेको मुन्तकारी कारका साईत और प्रमुख मानेका साहका मानका मान्यका मान्यका हैंगा है। में की सी क्षान हुई दिन एक्टल है एक मिली केंग्नेस प्रमुख मानेक कारते हैं मही कुछ माने।

युविहिर । अन नरकार क्रमेनार पुरानेका कर्मन हुने । मी अवाल गुलार रक्षा अवान सन्तेनडे पानरे क्यानेके अवसरोको कोइका अन्य सम्बन्धे भी हुइ कोलते हैं, वे नरवार्थे माते हैं। को पराधी परिवार अवहाल करते, परवार्थे स्तंत्र क्रमियान करते और दूसरोकी विक्रोणो हुन्ते पुरानेके विस्तान करते हैं, वे भी नरकार्य पाने हैं। युगुलकोर, वार्से स्थि परिवार क्रमोग्री, वार्यकार वर्ष कोलोकार), पराधे करते विविद्या क्रायनेकारे, वर्ष और अध्यानो विद्यु केटेकी विश्व कार्यकारे, केटेक विश्वनेकारे एथा एवं, विश् और कृतकी विश्वी कार्यकारे प्रमुख की नरकारामी होते हैं। वो नरकार करके खेंचड़े अक्का अवस्थितक काम्यानीके भी कृत हैं। हैं पहालेका कृत करते, उन्हें पालते और कर्मा क्षेत्रके कृत की करते, कैसे और अंबोरत कृतकृष्टि भी रकते क्या विश्वासम्बद्ध करने साथ को हुए स्कृतक्षित, विश्वीदार, कृतंद कृतं कृतिकार, अनुवादित की करने विश्वा कर्मक कार्य हैं। है के परकारामी होते हैं। को कर्म, जूने क्या कर्म हुए कुर्यक्रों कृता र क्या अक्मोर है किस्तु अन्ति है उन्हें की नरकार विश्वा क्या है। प्रतिकार क्या है।

अंध प्रतिने क्रिकेट्रकेश कर्तन सुने । के सून, प्रतिना, सारायाच्या और प्रोद्धा-संस्थादे प्रश्न निरमार वर्धावरमध्ये तमें बढ़े हैं, को उपलब्धकों केन करके उनके के पढ़े एक अरियानी अस्तरीय नहीं रचते, ये मनुष्य सर्गनाथी होते हैं। यो क्यू, बोल, महिराने विकृष क्षेत्रर करन प्रत्या पारम करते, करवीचेंद्र कंतरकेंद्रे क्या रहते, कारा-विवासी रोका करते, पहलोंके और केंद्र रकते, चेनाओं समय प्रशते बहुत विवारमधार आतिकि-तेवा चारते, आतिकिकोते हेम रचके और उनके रिन्ने कची अन्य सम्बन्ध के बड़ी करते, में सर्गनानी होते हैं। को कृष्टि अपूर्णाकी कामानोका करियोंने कहा करा के राज्या कर्न की हैने कर की हरियमी कराने स्वय करते हैं क्या को अञ्चलके रहा, बीच और ओलंबिबोबर कर करने हैं, से क्रानंकर्त क्षेत्र हैं। को सानि विकास कर्मको परिकास अपने-हरे, सुरवारक और इंप्रकृषक कर्मक क्रीक-डीक परिवय है की है, तथा की समायक, पुरिया, प्यूर्वेशी, स्यूपी—इन विश्विते, क्षेत्री संस्थानोंके संस्था, अनुसं बहुकते, अन्य-बहुकरें, विकृतकोत्तरी और समय पहली की-समानाओं को हुते हैं, से पहला भी काणि करे हैं। एक्प् ! इस अवस्र इस्त-कार्के विकासके रूप करना पन और सर्व रूप स्टब्सें से क्रानेकरे को-अध्योक को किया गर्म । अब और का सुरस mark in 7

वृत्रिक्षेत्रे पूरा—सम्बन् ! यतुम्ब अञ्चलको हिसा विन्ते किया ही सहस्रकांड पास्ते वैसी विता हो जाता है, इस विकासो डीय-बीच सरानेची कृषा स्टेक्सि ।

नग्रक्त्ते स्वा—राकर्! जो जीविकार्ग्यंत प्राह्मणयो कर्त है विका देनेके विन्ते कुरवका ग्रीडे इनकार का कास है. जो इक्कान्यक कारी है। को दुष्ट कुन्दिवारक पुनर वैश्वेत सहायको वैक्षिय और तेस है, वह वे सावको है है। यो सोमने परवार मिनो आएन, कर, वीव अवना नवाने आग रुपा है, व्यारमो सुन्तरी हुई वैश्वोचो क्रानेट निवट पहुँचोने साथ सरका है तस वैद्या शुर्विको और सुन्दिकोस प्राथित किए सम्बो-युरे सेकोक्य करता है, वह वो स्वा को सावका क्यार पर्या करते होता है। यो अंदे, वह और है। प्राथमा सर्वत हाम का तेस है, वो प्रवेतका प्राप्त कर है। प्राप्त सर्वत हाम का तेस है, वो प्रवेतका करता कर प्राप्त अस्ता अस्तुन करते क्यारम सर्वत करता है, यो प्राप्त स्वाच्या के प्राप्त है। यो प्राप्त स्वाच्या स्वाच्या है। यो प्राप्त स्वाच्या के प्राप्त है। यो प्राप्त स्वाच्या कोच केस है, या वो प्राप्त स्वाच तथा के प्रोप्त स्वाच्या करता है। या वो प्राप्त स्वाच्या के प्राप्त स्वाच्या कोच केस होता है, या वो प्राप्त स्वाच्या स्वाच्या है। यान नक है।

पुणितिते सहा-न्यासम् ६ यो स्टब्स हार्याचे सेह सामा गया हो, जानसे सामासूने क्या सिन् प्राह्मयोग्स ३०० मार्गाचीन्य न हो, जानस परिचन होन्यि ।

राज्यते का-एकः। सार करि सर्व देखा शक्तमें हैं इसेक करने हैं, जब सबसे क्रमन कर र कोई हाता है न होगा। क्योंकि अस हो हर क्यूने कर हेरेकात है तथा अरुके ही आजारण प्रत्य विके पूर्व है। उस मैं सर मोगोक परिवन दे का है, निरुक्त शह बहुत करने केन भी जल गंग है। सार देशर कुछे । कार्ने बेरिका, बज़रे, क्रोबी, क्रम, कारमक, महंतक, खेळारे के कार्यकार, र्राप्त, सुन, अधिक्षाचेची, वर्णनंत्रार एका असीवने यह हुए महामान करा, पहली पूरत तक प्रमुख अर पूरी प्रमूख कारीये। इसी अस्तर परिता, कुन्तरकोर, काला कर केमनेवारे, पर, काक्ष क्रमेक्के--कृत्वो, क्रम्म, अन्तर, निकार, रहाधुमियें बळक सेललेकारे, सुनार, बीना कमाकर धीनेवाले, इकियार जेवनेवाले, पूछ, करात केकोन्छारे, बोपी, सीवे बसर्प रावेदाने, क्षर और पीत बर्फानानेका क्रम भी जनाम स्थल पत्रा है। जिनके वर्ष जनवासीओर सा दिन य मोते हो, काव्य संबंध केरणानीका तथा नहीं काना माहिते। केंग्रे, जुलाचे, स्तुतीच्या सामनेवाले, परिविध (निवाहित होटे पानि अधिवाहित बढे पर्या) और वरिवेक (अविवासित को प्रामीत विकासित होटे पड़ाँ) का अब भी काने केम्ब नहीं है। विस्तकों को कीम अधिकारित हो, उस कपाने साथ विश्व करोगाने सहाय एक पहिन्द क मानेसर आसी सीवा अधीन करनेवाते कुछ और एकके अञ्चल भी जान कर देना मार्डिने। उत्पादा अस देनका, मुहना अस प्राह्मकान्या, युन्तरसा अस अनुस्थ और 🕽

कारणा आ तुरस्था यह स्था है। दिसी श्रेट्सा और केरणा रह के निर्मा सरा कर है। वैद्या रह केर सा व्यक्तिकों परिवा आ केरी स्थान गुन गुन गुन है, इस्किन अला करे, होई और सुवित है केरण करत है। की अन्यान इस्का कर पान कर दिला गुन हो से के ति विस्ता उनका करन कहेंगे, सिंह पान-मुख्य एक सर में इन्बर अला कर केरण है कर मान्य सामा सामा

पाणुक्तकः । अस्य में क्रमीका कर्मार्थ पान कारण पहा है; पूर्व : मार-कुर करनेवारंको वृद्धि क्रेक्ट है, अब देरेकारंको अक्षय पुरु विकास है, विकास का सार्वेग्यान गहान अर्थक अनुस्था संसार और प्रेय-पूज कारोगाता पुरूष कार नेत्र प्रका Er afe blemfent aft, gent an webenbab der सापु, रेड देरेमारेको सुन्द करन और क्रोडे सा unbertrab une word uch pick bi um biereit warded of the section artification रोको नाम है। नाहे बेरेको बैराक का क्लेका राज्येको पर्या है और चेन्यून व्यक्तियान पूरत चेन्त्रीयके हराया अहमा कथा है। सामहे और क्रमाहर क्रोक्ट पुरुषो सीची एक सप्त-का हैनेसलेको हेक्की उन्हें होती है। साम-कुछ सामेग्यास महत्व प्राथम सुन्य पाना है और केंद्र अंदर्भ करनेवारण पूरार परास्त्राचार सम्बद्ध हो परास्त्र है । यो क्षेत्र, पुन्ने, नी, अन्त्र, क्ष्मार, क्ष्मा, क्षमा और आहम आहि व्यक्तिको अन्तरमूर्वेद स्थान सरका उसा को स्था न्यानपुरता अवस्थित का बारत है, वे क्षेत्रों ही सर्वनें कहे है: क्यू को इसके विकास अनुविधानको हो और मेरे हैं, जर केनेको सरको निरम पहल है। निहन् तुका करी हुट र बीते, क्यान करने सम्बद्ध कर्ष न को, बहुते वह बारेवर बी प्राचनीक अनार न को एक का देवन आपर पहाल न करे । प्रदुष्ट क्षेत्रकोरी पहल्का, वर्ग करनेसे राज्यसम्बद्ध, स्वाहकोर जनकरते जनका और अपने देखने बसून करनेवा द्वाराह ना है कर्या है।

जीन अपेटो जन हेया, अपेटो पता हवा अपेटो हैं पूर्ण और परवार पार लेगा है। वायु-सामा स्ट्रापों को हुए प्रारेशको पात और स्ट्रिके केलेड स्थान पूर्णांतर प्रारंभर मुंद्र फेरबार पार हो। हैं। का समय फेसल पर्न है जीवडे पीडे-मोंडे नाम है। स्ट्रापका पर परिचाने क्योंका है। सा समाम परवा है। सिन् बाला क्राफे नाक्ष्माद्र प्रशेषके स्ट्राप करने पुरस्कारत स्था है। इस्तिये प्रारंको है क्योंकि वर्गको सहस्वतारे पहुंच हुतर रज्यके वर हे क्या अस्त्रा दश करते और बीटी वर्ग केली है, उत्तर है। विन्होंने अधिक करने को हुए अनेकों सरोकर, कन्यकार को गृही पाला।

सहरका पापकर पान्न करोचे संस्कृते रूपे कुछ व्यक्तिः । वर्गकारको, पूर्व और सुप्त पीरको बनकारे है उसा से सहर

बर्म और शौचके रुक्षण, संन्वासी और अतिबिके सत्कारका उपदेश, शिष्टाचार, दानपात्र ब्राह्मण तथा अन्न-शनकी प्रशंसा

प्रकारका और कहर-के हारकाल करावते हैं। कारकारें काका राक्षण कर है, जा कालेकी कुछ करें।

। कार्यको बहर-सम्बद्धः ह्या वर्ग और स्रोपको विशेषक कर रोक्को सुने। अधिक, प्रोच, क्रोकक अस्तिक, श्रांताका अध्यक्त, क्यू, प्राप्त और क्यूनक—के क्षतीर निविध्य स्थान है। प्राप्तानी, जनका, बाना, यमु-सोरावा आर. अर्थकांक्षेत्र भीता सुरू और वरको महाने रहाय-ने इस प्रीय (प्रतिका) के सक्रम है। महत्त्वी प्राप्ति कि या क्यानी विकास को, मुक्तमाना होनेवर क्रीके जान क्रिकट क्यो और सुक्तिने मुनियुनिया सामान के, विज् बर्नवर सामान्य सक् है पन सन्त्रकारोने करता हो। स्थानका अध्यक्त व को, मुक्तानीची निन्हां ने करे और संन्यानी-न्यूस्तावकोंके सम्बद्धार 20 वि भारे — यह समयनकार्य है। संन्यानी सम्बाग्येका पूर्व है, प्रक्रम करें। क्लेंबर पुरु है, बॉड रूक्ते खोवर पुरु है और राज्य सम्बद्धा गुरु है। यदि संन्याची गुरुश्यके पर कुछ राज भी कर कर से व्यानको पूर्व का-कुला क अन्तरने मिले हुए संस्था पार्योको सहय बार आस्था है। अंत्यासी स्था क्ष्य बारम करनेवाल हे क मीन एक, नही-नहीं नहाई रक्ता हो या गांस पुरुषे पूजा हो अवका पेरवंद पंज व्यानीकारत हो, काल्दी एक ही बरंगी कहिने । की मुहस्त पुरुष एक्पारी और अधिकियी पूजा नहीं करते अनना उनक शयमन वाले हैं से वे वर मुहलोको नरकर बालो है। इसलिये को परलोकार्वे असना कारणान बाह्ये हो, उन पुरुषेको जीवा है कि से भूको कुन्छ क्रवीको जर्गन करनेवाले के श्ररणागत भारतेकी बाल्योक कृत करें। अक्रमंपर अन न होते. प्रथमो क्यों न घरे: में इन क्षेत्रीयर प्रकार करता है, उसे पुरस्कारक समान कय राजात है। आंत्रिको सुँहरे न पुँगेंद्र, पैरोको आनवर न क्याने और अवनको बैरहे न कुक्त तथा पीठको ओस्हे अधिका होवन न करें। से सम्ब अपन जलती हो से अस्ते बीचसे न निकरें।

कृषिक्षेरने पुत्रा—समार्थन । करेको पुरुष करियो अनेको | अधिने कोई अधीका करत न सहरे । प्रीकृत अवस्थाने स्वया काकने को कभी सामित्य स्पर्ध न को । साथि सर्ववेगकारम है, अर. पुत्र हेकर जाका रहते करना बाहिने। यह य the her meths deep questy sold and will करण काहिये; क्योंकि काह्य का सार-मूख्य केन करण क्या है क्याच सब्दर क्या है। केंगर क्यानेट सिने क्षानेक करते काली आग नहीं साली काहिने; क्लेटिक अह ment that pe make yet open in our 48 would कार्क है, अन्ते पुरस्का काना नाम क्षा साम क्षेत्रातिकों ही निरम्भ है । इस्तियों अपने परची असर बादी पहले गई हैनी कार्ष्ये । यदे अञ्चलकार्येने अक्टा अनकार्ये कार्यो आप क्रम हे कर के एक अरमी बहुआ मध्य करके और जन्म करनी कारिने । अकार विक्रती ओरिन अञ्चलके करते भीत राजने प्राचीने ।

> वृध्यिको प्रान-कार्यक । विश्वते स्ता केरेले प्रान् कारको अभी होती है, के एक्ट्र प्रकृत केरी होते हैं ?

राजारो का-राज्य । यो और म कर्मकारे, राजनार्ध, राज वर्णने राजे खोजाने और विशेषिक हो, ये ही प्राप् प्राप्तम है क्या क्योंको दल देखे महान प्राप्ती आहि होती है। को अधिन्यवसूत्र्य, एक कुछ स्कृतेक्को, स्वातीय अविद प्राप्त, प्रशिवकरी, समूर्व प्रविश्ववेद दिलासी, रक्को राज्य विशेषा पाच रक्कोपाले, निर्लोच, प्रतिहर, विद्वान, प्रेक्टेची, कामानदी और समर्थनरायम हो, उन्हों दिना हु। व कुन नकुन् कालारे आहे. क्रानेकाल क्षेत्र है । क्षे अनिवित अपनेसर्वित करों केलेका स्वच्यान करता है और निरुद्धे करने प्रक्रमा का न प्रद्ध हो, उसको प्रदिन्ति करका राज्य परा पाना है। चुनिहिर ! पदि सुद्ध बुद्धि, अल्बीन जन, स्वाचार और जान बीरारी पुत्र एक प्रक्रम भी दन स्थान कर है से वह इसके तंत्रक कुरका उद्धार कर केन है। ऐसे माहलको कव, केब, मात्र और कर देश काहिते । सर्वत्रवेषुस्य सम्पर्धेतः विस्ती पुरुवान् प्रक्रायका का सुनकर को दूरते भी कुमन और प्रकार्यक आका

सरकार तथा पूजन करना काहिये।

कृषितिरने स्वर्क-देशेक्षर । वर्ष और अवसंबर्ध इस विधिका पीकार्यने विश्वारके याथ वर्णन किया गाः। आप इनके बचनोमेरे सारका वर्ग व्रतिकर कारकाने ।

नप्रमूपे क्य-राजप् । समझ करकर काल् अवके ही आभारपर दिया हुआ है। अन्नारे प्राथमी अपनि होती है, म्ब बात प्रत्यक्ष 🖟 अतः अधना महत्त्वाम स्मृतेनाले पुरुवक्षे देश और करनम विचार करने विश्वचनो अध्यय जन-कृत करना सदिये । आहुता करना हो अथवा कुछ, चर्ची का गुरोका क्या-मीद्य करण आ आप से गुरास पुराको पड़ी प्रशासको साथ गुजबी भारत काली पुता करनी वाहिने । मालेकमें कामानको अहिके हैनो अन्ते अबट हुए प्रोतको भी क्षेत्रकर, महारक्षक क्षान करके सुर्गातक और प्रसम्बद्धांक अतिकियी पूरा करनी काहेने। गुरुव पुरू कथी अतिकास असरा र करे, अस्ते बूडी कर न को तथा अनो नेत्र, करता और सम्बन्धे निर्दर्श की कर्मा प्रश्न न धने । योजनके सनकर बनकार का कुछक (महाचानकर) भी पर आ चान को परानेकरें हैव विक्रोगारी पृष्टकार्थ असके द्वारा असका सरकार करन षातिये । यो (विज्ञी निव्युक्तके चक्ते) अपने परवा इस्काम बंद करके सुन्नी-सुन्नी जोवन करता है, उसने पाने अपने किये कार्यका दरवाना वेद बार दिया है। यो देखकारों, विक्रों, सुनियों, प्राह्मणों, अतिथियों और निराधय यनुयोंको अजरे तुर करता 🕯 करको च्हान् कुञ्चलको प्रदि। हेती है । विसने अपने जीवनमें बहुत-से राज किये हो, बह भी बहि मानक प्राप्तानको निर्देशकारो अञ्चनका करका है से सब क्योंसे कुटकार व जाता है। संस्थाने अब देनेकार पुरुष प्रागदता गानः वाता है और यो जनदास है, बढ़ी सब युक्त देनेवाल है। अतः करपान चाहनेवाले पुरनको जलका द्वय मिनेम्ब्यसे करना चाहिने । असको अनुस बहुते है और अस है प्रभावो क्या देनेकाम माना गया है। असके नात हेनेका श्रारिके पौर्वे अनुभोका नाम हो जाता है। कारवार् पुरूष | अञ्चलन करते क्षाप कर्वाचे ।



के और अवस्था साम का है से काया कर गए है पात है। प्रातिको सञ्चलो हो या अस्ताहारो, अधिक बोहा धार्यक अस-हान देख चाहिने । कुर्व अपनी बिश्योमे पृथ्वेका सार: रस नीको है और हक्त करे लेकन बाधनोमें स्वाधित कर देती है। सहस्वेंधे पहे हुए जा सरको हुन पुनः इस पृत्रकैपर बस्साने हैं, उससे आध्यकित होकर पूजा तुम्र होती है और इसमेरी अलके बीचे उनते हैं, बिनारे हम्पूर्ण प्रकारक स्रोधन-निर्मात होता है। इस प्रकार सूर्य, बायू, वेद और हन्—वे एक है समुदानके अन्तर्गत है, विनरे समूर्य पुलेका प्रमुर्जन पुरा है। आकाराने इन पहाचाओंके अनेकी दिव्य क्या है, में निज-निज ज्यारते को हुए और पृथ्क-पुणक् पुणिस स्थित है। उनवेसे किसीका बञ्चनकरके समान केंद्र रेग है और वैद्यारीका व्यवकारधेन सुर्वित समान स्थल । उस खेकोंने स्थापन और समुख सच्ची वसके प्राणी निकास करते हैं १ अन-कराओंको ने ही स्वेच प्रश्न होते हैं, इसरिप्ये सहा

#### मोजनकी विधि, गौओंको पास कलनेका विधान और माझल्य तथा ब्राह्मणके लिये तिल और गन्ना पेरनेका निवेध

पुण्योति स्था—समुद्धार । आत्यास्या पान पुण्यार पुणे गर्न प्रस्तात पूर्व है, अब आप क्षेत्रस्थी निर्देश वास्त्रेकी पुणा परिवर्त ।

काराने सह—राष्ट्रास्त्र । हिस्सीओर केस्त्रस की विकास है, उसे खरों । तेष्ट्र दिलाओं प्रतिस है कि बच्च पारत करके परित है कह और एकाव एकाने केवल अधिने होन भरे। देन सहार हो से चैन्सेन, इतिन हो से चेतावार और केल हे से अर्थक्याच्या प्रश्ना करते। प्रति का के लेका को कवाने कि पूर् पुत्र कारके करर क्वापिन्स क्रेसर केंद्र साथ और केंग्रे केंग्रेस अवस्थ कृत पैरने क्रय पृथ्वीका स्वयं किने हो। कृत क्या व्यानकर क्या पूर्वे करीनको कन्यके स्थानन की कोजन न करे । उसी प्रकार पूर्व पूर्व करिये तथा अस्ति प्रकारों की बोचन करवा निव्या है। योका वालेको पुरुषो प्रताबिक होका पहले अंक्ष्णे प्रसादार करना कहिने । अपने वित्रा इंतरी और ही। नहीं कारणी पार्टिये तथा चोचन करते समय अवेटी हर कारको निया पढ़ि करनी पानिते। स्रोक्त आराम करनेते पाले बचने पल रेकर उसके प्रता शकती प्राहित्स को, बिर मन कक्षर प्रश्न-पुरुष भीवी प्रानीको सम्बद्धी अस्ती में । अस, असम् और पीधे प्रामंत्रे सम्बद्धे अस्तुर यो जन्मविक्षेत्र कारत है, उसके इस बहुमानुस्थित कार हो जान है। जानोची अबूटि हेरेने चहन्त् करने पूर्ण पहिलाको एक-एक जान जन कान्यर नोजा करे। स्त्री इस समया आहे पुरुषे क्षत्रीत वह वस दो से यह समय बुठा बक्त्यता है। सामने क्ये हुए एक बुँहते निकारे हर अपने असता राजो और औं का मेरेना क्रांच्या सामा नामान करे। यो अंग्रेम गुंडा प्रतान है प्रका एक कर सामार ओडे हुए पोमान्यों मिन अक्षा करता है जान्यों कार्यका, कृष्ट्रे अववा अववास-अवा आवास प्रत्य भाषिये। को सन्दि पोषण सिवे हुए पानने पोषण करका है, बीका कुर पाला है तथा बीके साथ एक करियें खेळा करता है, यह माने महित पार करता है। उत्तरहर्षी सुविश्वीन अर पानने कुटनेका कोई प्राथक्षित ही और देखा है। बहि पाने की की मानी के मैको निवसकर बोकरों कि को के म्ब सानेबेन की स काल। ये औ स्ट केंट्र 🕻 जर

अवार कीओ वक्त पूजा कर्या भी पुरः कीओ बोजा क्याँ कुछ । की कोई प्रकृत केंद्रान्य सान्यों के से से सो पाक्रमण्याका स्थापन करने पाक्रिये । प्राध्नानको स्रीता 🕏 कि व्या कीर होकर पृथ्वी का विकाशीकों और र देखते हुए विकास केवल करे, विजीको जनक पूछ र है, क्यों की यहा अभिक अनवः यहा कर चैयन न गरे। उतिहित कार है अब पार, विवाहे अन्तेओं बहु न है। भीधर करो स्था की राजसार की, पालका, कुछ समय स्थार केंग्र कर से अवसे कर देव करेंगे। से सेक्स कर तका का मूर्व क्या, मु देव क्यून्स-स्त्राह अविकास है। किए भोजनों बाद या बोर्ड बीस यह है, रिको पुँको कृष्णका होता विका पन्छ हो, असकी असाव प्राच्या पाहिने; हेने असाबो चोतान कर रेनेपर बालुक्का-क्रमा भागाम अभागा है पता है। चेपाने जाती का चारेके का रिके किर हा हैका गया हो, को पैस्ते हा गया क रूपि दिया गया हो, का राह्माके काने बोका अब ी---वेरण राज्याच्या स्थाना भाग पार देश भाविते । राखसम्बेट जीवन चारको साम कार्यकाल स्थान अवधी तात पीड़ी क्यांके निवरी और कार्र वैद्यालय आनेवाली संस्तातिको चोर् बेला करवारे लिएका है। फोकर समाह होनेपर, बिसरी केवर किया है का चाले आक्रम करना वाहिते। यहि अवकार किये किया है प्रोपन कारोपाल क्रिय प्रोप्रकोर जारानी का बान के औं हरेंने पंतन पतन पाडिने, जनका न्य सर्वांक है कर है।

वृष्णिसरे पूक-जनसन् ! वीओके आगे वासकी सुद्दी करनेका विकास और मध्यास्त्र कवा है तथा समेरी वासभावी अपने किस जनस हा है—यह करानेकी कुछ स्रोतिके ।

कारण कोई दूर चोजनको जिल काल करना है जानो कारणण, कुन्य अवन जानका-जानक आकरण करना कारोग । यो कांक चोना जिले कुन् पार्टी चोना करना है कींना कुर्ट पार्टी है। उनकारों पोना कारत है, यह पार्टी पार्टी काल है। उनकारों पुनियों का पार्टी काली हैं जाने निवास है। उनकारों पुनियों का पार्टी काली हैं जाने निवास है। उनकारों पुनियों का पार्टी काली हैं जीने निवास के कालों किए यो के का मानेकेन की है जाना । यो उसे हम हेंका है जार पुरुषकों कालानका काला। यो उसे हम हेंका है जार पुरुषकों कालानका नामा आकरण करना कालिने। इसी कारनेका निकान इस प्रकार है—) जेमाराके सामने कार रेसको इस प्रकार कहन जाहिये—'संसारकी समझा जोई मेरी पाधाई और सन्दर्भ द्वारा मेरे किया है। जेमाराको । की दुक्तरी नेवाने का करनकी मुद्दी अर्थन को है, इसे कोकार करो ।' " का पना स्थापन अपना नाववीका कारक करके एकार्याकारों कारको अधिवाधित करके नीको विस्ता है ऐसा करनेसे किस पुरुवकारको शरीर होती है, जरे कुने । कर पुरुवने कार-बुहाकर क अनुवासों को को बार किये होते हैं, का राव गए हो करो है तक करको कभी हो का भूति दिसाकी हो । किस को कथा और प्रकारक होते हैं, करवाद सारकार्य क्यों कार्यों को सिलाका इस अर्थक करन कर कारक क्यों कार्यों है। किस क्या करें, किस क्यान को और सबैरे जिल्का काल संगायर कान को समा सहा है।
अपने गुँवरे 'जिल-किर' का क्यारण किया करे; वर्गोंक तिरः
का व्ययंको जा करनेवारो होते हैं। हिमातियोंको तिरः
कर्मकर व्यवस्थ रेकर नेवान नहीं व्यक्ति। जो जिल्लेका
वोक्त करने, ज्ञान रक्याने और कुछ देखे अतिरिक्त करेर
किसी कारणे ज्ञानेत करता है, व्या कीए होकर अपने
किरनेको स्वान कुछेची विद्वाने कुछा है। क्यान्तको रक्ते तिरः
केरनेको व्यक्ति किरा केवल है, व्या केवल नरकाने व्यक्ता है।
वाजक इन्हें (नर्क) के कंतने करका हुआ है और प्राह्मक क्यानके नेवाने ज्ञान हुए हैं, इन्होंने इन्हानको कोरहरों
क्या जहीं केवल क्यान हुए हैं, इन्होंने इन्हानको कोरहरों
क्या जहीं केवल कार्यक्ति । नहि साहान क्या केस्त है से को
इन्हान्य क्याने क्यान क्या क्यान है।

## आपद्धर्म, श्रेष्ठ और निन्धं ब्राह्मण, ब्राद्धका उत्तम काल और मानव-धर्म-सारका वर्णन'

कुष्णियों सहर--ध्यावन्। आवशी सुमाने हैंने सम समीका संगद सुन रिच्या तथा यह भी सातुम हो जान कि सीम-एड अस प्रोजनारे योग्य है और धरीन भी है। अस कृष्ण सर्गाद आवदानंत्रत समीन स्टेसिने।

गावले का—राज्य । यह देखरे अवस्था पर हो, राष्ट्रके क्रमर कोई आयोह अवधी हो, सम्ब क पृत्युक्त कुल्क हो रेजा करी पूरने राजा बरन्य का हो और इन राज करन्योंने नियमका निर्मात न हो सके उसा दूरका वर्ण है करके। कारण विकेश संकारत का गयी थे, का अवस्थाने स्थान, वरीन और वैश्वके न विस्तेया बहुते भी जीवन-विश्वके विशे बोडा-सर कथा शत्र (सीवा) रिप्य का सवस्त्र है। बेची, कृती, पीवेद और पूजा उद्यान की केवर-राजकी नियमकः पासन न का सके हो भी उसे अवशित नहीं समझ । करा, पुरु, भी, स्था, इसि, अस्तुनाची प्रकार पूर्व करता, मुख्यी आक्रमा पासन और ओपनि—इन सारोजे सेवन्से सम्बद्ध पंग नहीं होता। यो यनुष्य विशेषकोड प्राथक्षित स्वतंत्री असमर्थ हो, बढ़ विद्वानोंके क्यानों तथा करके इन्त भी कुद हो समारा है। परदेक्षमे रहनेकारत पुरान और कुछ स्थानके रिको कर कार्य तो बढ़ प्रमुख्यालये उच्च आहो चित्र क्रम्यमें भी, रहत्यें तम्ब दिनमें भी अपने सीने साथ समाना करनेतर प्राथिताचा भागी नहीं होता ।

पृथ्वितने पूजा-क्षेत्रकः । वैत्ते प्रकृतः आहाने क्षेत्रः होते हैं और वैत्ते निवानेः योग्य क्षण श्राह्म-वाञ्चक क्षेत्र-सा क्षण है---या पूजी सरहाते ।

क्ष्मपूर्व क्षा-क्षमपु । साम स्थापे स्थाप, साम्रोक क्रमेंसा अनुसा करोवाते, विद्वार, क्यानु, सीसन्त्रा, सरस और संस्थानी---वे सची प्राव्या प्रच्या (प्रक्रेसमें: केन्य) माने सके हैं। ये अपनेके सामानंतर बैठकर समझे पहले प्रेमन बारनेके अभिकारी है एका का परिवर्ग विकार तरेन कैंडे होते हैं. का सामग्रे वे अपने क्रांन्यको प्रीक्ष वह क्षेत्र है। यो ब्रेड प्राक्षण मेरे प्रत्याच्या पाठ हो, जो प्रतिकारण सकते । वे विशेषकारो कृता करनेके केला है। अब रिन्हके चेला स्वहानीका पर्कर कृते । यो प्रकृत संकारी कार्यपूर्ण वर्णन करते हैं, वे केहीहे कारानी विद्वार होनेक की कारावरी ही को बाते हैं। को अधिकेत और सारावर व बद्धा हो, पात कर सेरेको हो परि रक्ता है और नहीं कहीं भी भोतन कर रेका है, असते आहम नारिका करोक सम्बाध पार्वेने । किरमा प्रति कामार्शकार जब सम्बद बंदा इस्त हो, सो प्रत्या श्रम बोजन करता हो और कुन्दे ही अवन्दे सार्थ पूर हुआ हो, यह प्रकृत अतिहित कार्यक, वर और डेम करनेपर भी जान नरिको नहीं प्राप्त होता । को प्राह्मक जनिन्दिन सरीकोज मारकेरर की सुहर्फ असको क्या न राज्य हो. अस्त्रे अस्त्रात, नेत्राच्यावन और दीनों आहि—हर

<sup>\*</sup> प्रयो में मतरः सर्वाः भितसीय सेवृष्टः । सरमृष्टि मक दर्श प्रतिमुद्धीत पातरः ॥

प्रतिका कह है का है। पूर्ण के प्रतिकार प्रतिकार कारण है। प्राप्त के के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के के प्राप्त के के प्राप्त के के प्राप्त के प्राप्त

ं रुक्त । वर्षे सक्तम चीव और सक्तमको चीव हो क्रम से वर्षे अपूर्णिय क्रमूर्ण के, अरुद, पूज्य और सार क्रांच्या करू-न्ये का निरम्पर में को सहस्री माँ है समार्थ । सहस्रोह समय, नियुध योगाने, अपन समार्थ होरेक्ट, किन्सर्ग (बाद आहे) थे, क्य-महाने, सके भई पुरुष कर होनेस एक नकी निवास करे करा भी क्षेत्र-मा भी राज विश्व करत है, बढ़ पढ़ राज्य मार्गन्त्रको पन हेरेके समाप क्षेत्र है। वैकास स्थानी प्रका हतीया, कार्तिक बहुत्वकृती नानी, नाह्या कार्या हत्या प्रवेदती, यक्टी सकारता, कहन और पूर्वत अल क्षा स्वयंक्त और व्यक्तिकाले अधीवक कि-ने श्राक्षेत्र काम पास है। इन दिलेने महत्व परिवर्धना होकर THE PARTOR STOP SECURISM THESE OF SECURISM काके हुए एक एकर कांग्रक कांद्र कार्यको आवश्यक कुर्व हो जाती है। यह जान कर्न किसोबर बस्तान्य हुआ है। में बहुन केंद्र का काले कारण अध्या कर करेवी हवासे एक पहरित्में केंद्रे इस लोगोंको जोजन-परेसोनों नेए करवा I art fegen gen ger, greut, aufwere afr अध्यानकार मालाओं है। विश्लेष्ट पालु बनवाद पीक्षा पान प्रमा है और धे परावेकके विकास कह हो न जानेके बहुत क्रम कोम-विकासमें ही रम रहे हैं, ये केवार केंद्रिय क्षूताने ही अवस्था है। उनके मिन्दे हरा स्वेताला ही प्रस्त द्वारण है। मारतीकिया सुना को उन्हें काफी नरीन नहीं होता। यो कियारोकी असरवित्तरे यक क्षेत्रस कारावारे संस्ता आहे. जिल साम्यान करते. इन्द्रियोग्ये कहते एसके और करता

अभिनेति हिए-अवस्थे सने बाते हो, उसके सिने इस कोकस्था की हुक सुराम है और मरावेकस्था की। परंदु को मूर्व में निका मुखे हैं, गास्त करते हैं, गास्त को और गास्त्र पुजानोनोक्का है। सनुमान का परते हैं, अनके सिने में इस कोकमें करते हैं न प्रश्लोकतें।

पुष्पितरे गहः—काम्य् । सार शासात् गरावनः, पुराकः हंका और कामूर्ण कामूके निकासकाः है। शासको गरावार है। शा है समूर्ण कामूक सार सामा सहस पाइन है।

गान्त्रों का-नक्ता । अविते में अविद क्षानकार कर्नन विकास है, यह पुरानोधे अनुसूक्त और वेस्क्रे क्रम क्यांकि है। ज्यांका में कर्का क्रमा है, करे। अधिकेंग्रे हैत, करिएन, भी, यह करनेकाल पूरण, एउट, अंग्लाही और कारार-ने क्रांग्याने मुख्यो क्रांस कर के दे इंडरिको संस् इनका स्तरित संस्था काहिने । एक मी स्थानो ही कृत्ये देनी व्यक्ति, व्यक्तिको नहीं (व्यक्तिको देनेतर वे अर चीचो केवार अवस्था अस्ति स्थाप श्री होते हैं। प्रति का ची केंच के करों के पा, बताओं तक केंद्रियों के कर कर देती है। कर भी, कर करा, कर कथा और उस सीचो सभी अनेत प्राथमेंद्र अधिकाले की देश करीने; अनेदिर केल करनेता का कुरका पार कुलको पूर्व विस्तात । पनि ब्रह्मण और पी अवर्ष कार्योद्ध कर्म सर्व काल अवस्था कार को से स अवस्थिते राज्याच्याचे भी महत्तर कुछ होता है। से जारकारे और कैसे जारूर की प्रका किसीसे 'सा से' बहुका कर करता है, यह से कर पशु-पश्चिमीकों केविने कर केवार अपने कारकार केवा है। प्रांक्रणमां, केवतमां, हरिक्रका और गुरुक्त का नहीं कुछ रिया कर के का सर्गनारियों के को क्षेत्रे निष्ट हेता है। को सर्वका क्षार प्रत्यन प्रमुते हैं, उनके त्रेको के। कुल्प अन्यान है, बर्मधाना कृतव अन्यान है और लेकाकर दीवन प्रकार है। कृतिस्ताते लेकर प्रकार क्षाताल और विभाग हथा विभागको बीचवा को देश है. को अन्तर्भवर्त पहले है। प्रस्तको और क्यूको-इन केनी क्रेमनीको बीवक के क्रेस्टानेक्टर एक हुआ देत हैं, उसे immed करते हैं। किस देवारें कार्चे कर्नो क्या उनके समाचार नेबॉब्ड में अच्छा कांपरमध्ये पास आता है, जो उसे निमें करका कारण है। कुरबंद, गता, प्रकार और क्रांपेर—ने म्हार्निनोंके देश है और महामानिक समीप है। इस नेवाने जनक पूर्व व्यक्तिके यहां साधा प्रथमानके संस्कृत प्रमुख्येको अन्ते-कारी आकारको विका सेनी पाहिने। किन्यान और विकासकों बीचमें कुमकेसरे एवं और जनमो महिनका में देश है, यह मनदेश सहरात है।

निस देशमें कुम्मस्तर नामक सुन कामानकः निकार करता है, | काहिने । पुरुषो एक कुमसे कृषी प्रधान नहीं करता बारी बडाबेर लिये उपयोगी देख है: उससे बिया मोमहोबार देख है। इन देखेंच्या परिचक जहां करके दिव्यतिकोको इन्हेंनि निकास करना कारिने: किंत सह व्यक्तिक न निकानेकर निर्माणे रिने बिसी की देखने निर्मा पर कार्य है। सदाबार, अहिता, कता, प्रतिकोई अन्तरंतर क्रम एका का और निवनीका पारल-वे पुरुष कर्न है। सक्का, करिय और बैक्वोंका नर्वाक्रको लेकर अन्वेदिक्केन एक संस्थार केहेक विकिनो और क्योंके अनुस्तर करूना करिने; क्योंकि बीनवार प्राप्तेक और परानेकार्व भी वर्षक करनेकार है। मर्चायन-संस्थारने किये करेकते इच्छे प्राप्त और बालकर्त, मानकरण, प्रक्रावरण, प्रतेपनीय, वेहानकर, बेबेच प्रांपेट पाल, बारफोर फलनेकेच पा, किया, महानक्ष्यांके अनुहार तथा अन्यान काले कर उस श्ररीच्यो परावाची आहिने चेन्य बनाव पाता है । विहासे व वर्गका साथ होता हो न सर्वका तक निका-प्राहिते अनुसार को रोख को नहीं सकता हो, उस विल्कानो किया नहीं पहली बरीये, दीन जो रख की कर चेतरे जब बाद सी मोचा माता। तिथा पुरानो सीमिक्स, वेरीका क्रम आस्वानिक हान कहा बूजा है, का पुरुषों पहले समाव भाग करिने। अने इसिने इससे पुरस्क इसेश करत और वार्षे प्राप्ते प्राप्ता कार्य काल प्रध्यक्षर प्राप्ता करक | क्रोक्क-प्राप्ता कीवान कर देव कार्यदे ।

कार्यने : के पार्थकार आहे एक प्रेरकर विविध्य करातं और के कामा है, का प्राप्तन पुरु बहुत्वात है। यो जनवन-संस्थार करोड काम और स्वामेशवित वेदीका निरा अवस्था करूत है, को कानाव बढ़ो है। यो पहलूक केलेको पालकर केलिक प्रतीकी विकार केल और मनावर्षिकी मानव करता है, का भारता कारता है। नेताने कर क्रमान्त्रेते कार एवं मानार्थ, से सामार्थीते कार्य निवा और मी निवासे की कहकर करता है, सिंह को हार केंग्राने कुछ है, के इस सामग्री अनेवह कारक जेड़ है। पुराने पहलर न कोई इस्त, न हेन्द्र, इसरिये प्रमुख्ये कर्मक प्रकारके अधीर कुक्त अधी सेक-स्तानमें हमे कुल कर्मने । इसमें समित्र की सीव्र क्यों कि कुल्योंके अनवाको परवाने निरम्ब पहल है। यो खेल किसी अपूरी क्षेत्र हो, निरुष्ण कोई अप अधिक हो, को निर्माने हीए. अन्तरको बहे, कर और करने सीत तक बातिने की गीव हो. करत साक्षेत्र को काम काहिन क्योंकि आहेर Biftelt bereit bit, feiter unte fein um f. कार्य का का का है और अध्य कर अधेर mebaliste um um sam fil ufferent, be afer वेक्कानोची निन्ध, हेन, चन्न, अधिनान, स्रोध तथा

## अप्रिके स्वरूप, अप्रिक्षेत्रकी विधि तथा उसके माहात्यका वर्णन

मुन्दिरते एक-वेन्द्रेनेकर । अञ्चल, श्रातिक और । प्रत्यकर करता है। बैरनोको वित्त प्रकार प्रका काथ थाविने ? अधिके विजने भेर है? उनके पुरुष-पुरुष काला करा है? जिल मारिका कही स्थान है ? आधिकोरी पूच्य विका अधिने इवन बार्ग विता क्रीकारी अस क्रेस है? पूर्वकारी अधिकोषका निर्मित क्या था। देवताओंके विन्ने विका प्रकार क्या किया पास है और फैसे क्यारे पूर्व केसे है? अधिकोतीको विश्व जिल्ली प्राप्ति क्रेली है ? चहि सीचे अधियोके कार्यको न सामार क्षाप्ते अधिविक्षक ह्यान मिना बान अवका कार्य कारताने हरे छ जन से दे विविध स्त्रीत स्त्रीओलीच्य क्या अन्ति करते हैं ? एका विसने अप्रिका परितान कर दिया है, यह पायरण किस चेनिये रूप हेला है ? वे सारी वार्त संबंधने पुत्रे सुरक्षके: क्ष्मोंकि में प्रक्रि-पायसे अस्पत्नी प्रत्याने अस्पत्र हैं। धनवन् । जार सत्ये हैं, सबसे महान् हैं, जार आरब्धे हैं

ननकरो वक्-रावर् । इस नकर् कुन्यक्षका और कार क्रमंत्रकी अनुकार करीर सुने—वह कर्पनावन ल्लीकोची प्रकारनेको चयरसम्पत्ते याः कर हैत है । वैने स्वित्ते प्रत्यको प्रकृतकाले सन्दर्भ रहेकोची सृद्धिको और सोगोची चायकि नियं अपने पुराने सर्वेडक्य अतिको उत्तर विश्वा । इस अध्या अधिकाम केरे हारा संख पुत्रोंके साने करना हुआ है, अभीको पुराकोके जाता करीको विद्वार् उसे उनके कहते हैं। राज्य कार्योरे प्राप्ते आने अभरिता आगर्ने ही साहति ही कारी है, इसरिन्ने इसका नाम आंध्र है । यह करी मंत्रि क्रीवर हेनेपर महानीको सम्बागीत (परमक्त) की प्राप्ति कराता है. इस्सीरमे की देखकाओं में अरिक्ट जामसे किर्मात है । घारे इसमें विभिन्न सरसूप करके क्षान बिजा नाम हो या दूस कुन्नों है करकारको का जारेको स्टेंड रक्षता है, इसरिये अधिको करण्य कर पता है। यह अहि समूर्ण क्लोका सरका और केम्बाओंका मुख है। अब क्यानेक कारण इसे क्यार कहते । बत्या है, यह मुखीवर विकार कार है। विकासीओं हरन है। इसकी काराना होती है, इस्तीओ यह जोनसान कहा कर है। 'बाबुरि' कुन्तुरे सरका क्षेत्र क्षेत्र है; का क्रांस्कर anglieb arthur sympto-front & set; report पुरुषेने को 'अल्पान' सारकता है। विस प्राह्मको पहर् कार्येक अनुसार प्रकारकारोच्या अनुसार होता है, का मकान्यरके मनने क्षेत्रर क्रांबिको अन् क्षेत्र है। इतिहारी और मान-पृथ्वितर प्रीयान एक्टोबारो प्रीवह स्टार्टीयान अभिन्दी अन्तरकाले काल क्रमेंद्र बारण हो देवकालेके कारणको जार हुए है। दूसरे विद्वार आवश्यक अधिको हो मकारि कार्र है। क्वेरिय क्वेरि पहल्क्याकोची विक्री है। कारोबाय क्या मुक्तारो पर क्रांचे प्रतिकृत है। मुक्तमानिका अरावार क्षेत्रिके ब्यापन पूरो गुरुवी; भी काले हैं। क्रम प्रकारिक मेर्ड जीवराय, सामान्य, राज्य और प्रमान परनवा अर्थन की नहीं है। देखा ही देख की का है।

ung t ber gemilen duct befreibung murt सुने। पुर्वत अपुत्तर पार करण कर्मकारे के प्रतिक शक्ति है, कर्म, कामानों जा पूछ को कामो करते है। पुर्वेच्या सावित्रात ही पुरस्ता कार पात है। यह पुरस्ता केरा सारिये प्रतिकृत है, वही नाईका आहेत पानने प्रतिकृत है। में अपि करवारको प्रदेश कारीर स्वर्थी से कार है, औ माहानारोप पहिनादि बढ़ों है। 'अब्रुक्ते' कुछ प्रसंक White & of c first war & province was proposed princip क्रीकार करनेवाल गद्ध अवस्थान जात बक्रमक है। फिल शास्त्राच्या पारच्या पूरा शरीको प्राप्तान विवेशकोदा प्राप्त मारात है, स्त्रीओ पराचारि को अपने हैं। इन अतिओओ संभागे रिवार स्वतेताता एक और गाँव है, को साथ ब्यूजात है। जानराम जानवास को अवन अहि है, का प्रवासीका were fie refere alle marer were fe mille अक्रमीरी ही करका अनुर्यात हुआ है और यह ब्रह्मिकारि ब्रह्मान्य है। क्रेकोर आस्थारे सेवार अध्यक्त विकास कृतारे महर्ति क्रांते कार्र है, वह अक्रूबरीय स्तरि कर्न में है, साम करना को पढ़ा जाति है, का कार्य कार्तिकारा स्टब्स है। कुमी पर्यास्तारिक अपरिष्ट प्रदेशकीर और प्रार्थ अवकृतनीवर्गत है। इस अवस्थे स्तरिके कीर केंद्र पूर्व पूर्व है। नार्वस्त साहि नोसायार है क्योंकि सामी प्रमानपूर पृथ्वी योग है। अस्तिकार अस्तर सर्वकारे समार है. इसरिये दक्षिणानि भी बैता ही पान नवा है। पानंतिक विर्मेश, विराज्य और चौन्होंना है, क्राहिले अक्टूबरीट अहि भी भौन्योग हो महस्तमा एक है। को महोदान-अहिने ह्वार ।

क्रानेकाव पूरू क्यांकियों बीत तेल है, बितू को प्रदुक चरित्रपुर विकार अधिवेत अञ्चलके अधिये ह्वान सारत है यह गुण्ये, अन्तरिक्र और प्रतियोगक्षित सर्वत्रोक्षयर भी advant see un ten fri

क्योंने एक ओरसे कांत्रके पुरुषे हमर विका करा है. इस्तरिके यह अस्तर व्यक्तिकान् असि 'अस्तर्कार' संस्थानी ज्ञा होता है। अधिकोध क्रमान अध्यक्त पहोंचे होतके अस्त्यते ही जातिके पीतर असूनि कारी पानी है, हरतिके भी जो अञ्चलीय पहले हैं। यो दिय स्थापास पंचार पार जीने विकास प्राप्त करते हैं, भू जरने पार्टि साम अर्थिकोची कावर साराज चेत्रक है तथा वह सबक्ष नारिकोच्या क्रिया के पाया है। अस्तरकार अधिने की होन निकार पर्याप है, प्रांतवी करियोग पहले हैं। यह 'है' अर्थाद क्ष्मी प्राचनक प्राच करता है, इस्तीओ स्वितेष करा von & samelor Pagrilli atronficet, anfahllen aft अविश्वविद्यालयो होता प्रकारके हत्या बारायां है। विशेषका केंद्र कार्यका आहि इन कीरो प्रकारक कुर्याने कहाराजात प्राप करता है, इस्तीओं अर करोबों बेहरे सरीहरेड गार विका पना है। विकासिकार उद्यानीने हो उससे पहले अधिकेरको प्रकार विकास । येथ् अर्थेर अधिकोत दश्यः प्रत्या पूर्व I-put to the sail of to bearing un-अनिक्रीत है (जन्मीर के पहलार निकार अधिक्रीत नहीं किया, क्षात्र का अन्यवन निकास है) । क्षात्रक्रमध्य पंत्र सीत और महायान है, जीवार फार की और कुर है क्या मनावे सम्बद्धाः क्षत्र और अवकेल करनेते हैं । तीनों केहीद क्रातिह र्वकेको सरिकोकको अवस्थि क्रेसी है। क्रंब्स, कर: और क्रमानी क्षेत्र भवी तथा सीवास-स्त्रीके क्रम Minimarius album Bour unt \$1

करण पहालो प्रकृतका सरका संस्कृत पाहिले तथा का केवली केवियल है, प्राणीको प्रस्तुत्रको परस्य प्रदाने अधिनदै एकामा सन्दी पाहिते । यो माना प्रदूपे अस्तातान क्या है, का प्रध्नावारी क्षेत्रदेह होती है तथा कावह वैतिहा क्रम भी कहा है। अधिकों देनों पीन बहुने अन्याका करन होता काम कथा है। यो क्रकिन प्रीया प्रकृते अपि-स्वापना करता है, जाकी सम्बद्धि, जब्द, चंद, चंद, रोज, बल और प्रकारी अधिकृषि होती है। प्रकारताओं एति सामार वैत्रकार क्ष्मान है, इस्तरिको मैहमको साह प्रहारी अतिकार आधान करण पाढिने । यो नैसन सन्द आहर्षे अस्तिस्वरम्य करण है कारणे सम्बन्धि, स्था, अल्ब, यह और बनाई बढि होती है। हम प्रवासके रहा, भी जाहि विकास पहली, कुरनिवा हमा, बहा, धरित, सुवर्ग और स्थेश-का समग्री समीत अधिकेनके हे हिलो पूर्व है। अधिकोताको की प्याननेक दिलो कानूनेक, सन्तेक, बीगांता, विकार परस्कार और क्रांबरका विभाग विका पन है। इन्द्र, विका, कार्य, मानान, मोरिनाक और विकास की आविद्योजने की विको को को है। प्रतिकार, पुरस्त, कारत, स्वतीक्त्यू और सक्यांकेलोड करों की आविद्योजने ही विको है। क्रिकि, पश्चिम, चेल, सुन्नी और कारणान कमाना हार my units for primary references from my है। बार्कर, प्रमुक्ति और प्राप्तकेशके प्रमुक्ति कृत्यक प्राप्त प्राप्त सारकेकि विको क्या प्रोप्त और विकासके विकास स्पृतिक was called and analysis first pro-county core of माने हैं। माने, अध्युक्त और फारेचेट सर्वतात, सर्वता और विद्यास क्या पन और समुख्य निर्मात होनेके रिन्ने पूर्वजानी marten freien gereit gem filt gir, fich abr regen क्रमा कारोबे रेजे, प्रोक्षण और कार (का प्रकार) antical phenistrated wouldn field that the after केवाके प्रमाणक प्रमा अनु करोके जैने विका पर्यक केवलको रचना हाँ है। बालेंड पालेको प्रदेश, प्रात्तकानो terfinité du su aux milé énfor femiles हान जार करनेते हिन्दे अल्पांत निर्मान कुल है। सन्तुर्व बेदोरी प्रमुख नाम, मानू और विकामीके प्राप्तिक क्रमंक निश्चान करनेके तिनो सहिन्तीन निरुक्तको संस्था को है। स्थानके केंद्री करते क्या राज्य सामान्त्रिको करता करते हैंतरे प्रकारित प्रश्नीको स्त्री। वी है। स्त्रीत्व और पर प्रश्नोदे हिन्दे बनल्हिनोची राज्य को है। को सहस्य प्रयोक्त Palledes, when regular short, we work, and after पीर्वनातके अञ्चल अनुस्ता और प्रचल, पार्युक्ताक prov. wedge spread and, afternoon and, क्षीत्रात, राजकातान, विकासकृता, बीधा स्थापन bemaited felter artin meer, diabeliber terreier, विक्रमें और इंकिंग कैयर बारी आदि कार्मेको जी कार्मे, हे अन्यकारके परे क्षा केर केरव परकने पढ़ते हैं।

सुवर्ग और वरि—नो काने का और काना कराने का कार रेनेके दिन्ने के कु हुई है। कुनोबी जाकी इस्त्राहुनको वारों और फैराने और कानोबे कानोब किने करनेके दिने कु है। का कम पूजाबा कार्य करनेके दिने अक्षानोका अनुनर्गन कुना है। सामग्री कार्य केरे अध्यानोका अनुनर्गन कुना है। सामग्री कार्य केरे अध्यानोका सामग्री करें की दै। कार्य, जो-कार और केर्यानोका सामग्री कार्य कार्य करने हैं।

। व्यक्तिम साथै केविकास सामन स्टानेके तिने नैरनोकी कर्मां क्रं है और क्षेत्रें क्योंक्रे संबक्त रिम्ने क्यूक्रोंने खुटेक्रे जना दिना है। इस अवार क्रमूनों प्राप्त व्यक्तिको है दिनो त्व पर है। से सून अवन्यताले अवस्थि हेंसे कारन पूर कारको पूर्व पार्था, ने केल पार्था प्रतिद्व पार्थक कारणे पहले हैं कार कारने पूर्णना कारण कृति (पनि) औ third are that \$1 to the following religious there करों है जर्मद कर कर, होता, यह और अवस्थान-के प्रत्य को पूर्व है को है। इसे उत्तर उद्यानोंने इस में पर परी, क्रमें राजने और क्रूपे सुरक्षा अमेरे कार्य होते हैं, का सम्बो पुरुषके रेपार में पूर्वपालने कार्यक पर देश है। मेरे प्रय कारिक विके पूर्व संस्कृति पूरण और अधिक्रीकारिक प्रकारको कृतिक पर्यक्त किने को है। अधिकेती प्राप्त सानी सामा अधिकेको पूर्ण-प्रकास सम्बेग करो है और समूर्व पुरोधे जान होनेका में क्रिकारिक सकत कर बाल करने कर्त निकार करते हैं । क्राम्यकृष्ट केरोबरे क्राप्त क्रारोकांने ब्राप्तारे जान और, अवर्थन और देनी होचर पहन्ते कि पन होते हैं (पार्ट पार्ट आधिकेक साथ प्रत्येकारेको से होती है।) क्रांतिने को क्रिय पर्वकार्य न एको को और अर्थनारिको प्राप्त men man it, wit stille fellegite artigie wen पार्वा । जीवोक्तां असे सम्बद्धां प्राप्त सम्बद्धाः पार्वे से कारत अरुवार का इस क्षेत्रके हैं तो के कहा नहीं करत पारिते । के पारकारके से अधिकेता रोजर करते और क्षांद्र अवने का दर को है, जिल्ला क्षेत्र और स्टेनका प्रसंत महिना को प्रतिकृत प्रारं काल करने विदेशिय करने विक्रिया अधिकेत्रक अञ्चल करते, अधिकिकी सेवारे सर्व को प्रकार प्राथमको प्रकार केनी सम्म नेता प्राप्त करते हैं. वे क्षानिकारको नेपास की पान पानको लाह होते हैं, पहुरीने पुरू का संकारों जो सैठव पहला। वे व्यवकारीन कृतिह करान व्यक्तिक विकास केंद्रावर अपनी जीताहित मेरे लोकमें बाले है और पास्कृतिक कथार केवानी होका प्रमानुसार का बाहर करे हम को बाते. को निवसे को है। कर है की, र्राजीन पूर्वाचे कृत्या क्षेत्रण में वहाँ अपनी प्रीकार अस्तार स्रोक्षरे करने को है। क्षानुस्तर है जीक्षेत्रियोची देती है मिन्द्रि होती है। इस संस्थाने कुछ पूर्व नकुन सुनित्र सेवासेका करो हर उसकी निष्य बनते हैं तथा जो उपस्पत्त नहीं पार्यक्ष हेरे स्टेंग्वेची को एकी होती है। कहा को दिए सारित्यकारियों का केवर केवे और प्रीक्षाकेले प्राथमिक करते हैं, वे

#### चानप्रवच-अत्तवरी विभिन्न उसके करनेके नियत तथा यहियाका वर्णन

वृध्यित्ते कहः—स्वकृत्यः । जन अन्य पुत्रने साम्यक्षयो पर्य काम विकिता कर्मन् वृध्यिते ।

अन्तरी का-कामका । समझ करेवा नव क्लोबाले बालावय-प्राच्या कवार्य कर्नन हुने। प्रत्ये आवरमसे क्यी पनुष हुद्ध हो को है। उत्तर प्राच्य कारन करनेवाले प्राञ्चल, अभिन अन्यत्र कैल-को बोर्स के वानायम-प्रत्या विकिया प्रत्यान करना वर्ता है। उसे first upon une up f für ib Freind aber unde प्रमुख्यके द्वारा समाप्त प्रतिस्था भ्रोकन भ्रो । विक कुम्बारकोर अन्तरे वशकातील कहे-देश करिया पुरस्त कार्ने । संस्थात् कार्ने कार्ने क्षत्र हो केर कहा कारन हरे. कारते देशको कर्ना हाँ नेपाल क्षेत्रे और कारताक एक क्रमणे नेभार इक्रांकरीके त्राच्या पराण करते हो। द्वितको भाविते कि यह पाले कि उत्तरत वाले हुए पहली प्रतिकारको परियोगे संगयनर, विको परिवा स्थानमे अस्यत कापर ही उस आरम्ब को । कारे निल-निवको निवह होका क्या केईपर अरीवरी सरावय यह और अने अन्तर अन्तर कार्यार, आव्याचार, प्रवास, म्हान्यद्वति और महाव्यास होन wirds wer, from moffent, mar, fleibe war प्रमापति—इन कः केल्प्रजांके निर्मात हुवन करे । अन्तर्य अन्यक्षितकोत्र करोड एकस्या कार्य समझ को । वित साहित और पेंडिय कर्मका असूहन करके शक्ति तथा क्रेक्क्साको प्रभाव को और विविध्यक्त सरीको जान समावा पहेंचे। संस्था का निर्मुकुषित होका सोत, करन तथा आहिएको इसाम करके इकारफारते बसमें साम की। इसके 🚥 महा निवलका आवाम करनेते बहुत् पूर्वाचित्र हेकर बैंटे और प्राथमधान भागे कुलकी परिलोसे अपने प्रारंखा मार्जन करे । किर आकार करके केने प्रवाह उका उठाकर क्ष्मिका रहीन करे और इस जोड़कर कहा है दुसंबर्ध अर्थिको सरे । अर समय सरका, स. सहा क क्रम्यक्रको सुक्रका पाठ को अक्रम बीटा, प्राप्त अध्यानीय, परवर्ष का कुछते प्राचन रक्तनेवाले केवाब भगनां जन बहे । यह उस सौ बहर या एक भी आहे कर अवना एक हमार कर करना साहिते। तहनतर, कीवा एवं

एक्जिय हेकर बन्धाइकारणे कायूर्वक होर का सैथी एक्सी बनावर देवार करे अवना सेने, संदी, तथि, विद्वी का पूज्यकी सम्बद्धिक पात अथवा पहले दिन्ने अवोधी कृतीके हरे प्रश्नेका हेना बनावर हाथमें है से और अववी कारणे का है। किर सम्बन्धानसभूविक सात प्रदानांकी कर्पर प्राव्धार विद्यी वर्षि, कारणे अधिक क्षांतर में काम। भी कुनेने किन्सी हैर स्थानी है अने ही स्थानकार एक हापर कहा हैका विद्याल किने असिक करे, सेन के और हथियोगर कामू रहे। विद्या चौननेकारक पूज्य र हो हैसे, व हमर्थ-अस पूछ कार्य और व विज्ञा कील करनेकारक पूज्य र हो हैसे, व हमर्थ-अस पूछ कार्य और व विज्ञा कील करनेकारक पूज्य र हो हैसे, व हमर्थ-अस पूछ कार्य और व विज्ञा कील करनेकारक स्थान करे। वहि भस्त, पूछ, कार्यकार, स्थानकार की, परित्त बनुव्य संध्या कुनेवर हुई पहले कार की वर्षका कार्यन करे।

ब्युन्यर, अपने वर आवार विद्यानामध्ये वयीनपर रक्त है और विरोधी पुरशीलक संख्य प्राथीको होगी परेप्रनियोगक को करने। इसके कद अपनी सावका करके शांति और व्यक्तनोध्ये पूजा को । मैदन तक विकास स्रोप का ताल कार कारी करते ही विचय करता है। करतेको कुछ-कुछ विचय क्रमकः सूर्व, सहार, अर्थार, कोया, यक्तम क्रथा विकोशनोध्ये रियोक्त करे और अन्तर्थ को एक विषय क्षम पान अलाहे देखा wer it, frent up gerenngeles figit an reite fier वर्षिक कारणे पूर्विधिवयं क्षेत्रत का विकास स्वीते हाससी अञ्चलिकोचे अवस्थानमा रेक्टर गामकी-प्रकार अधिकारिका को और क्षेत्र अपूर्णिकोले हो हो। पुरूषे हत्त्वहर का बाब। केरे क्याच प्रक्रमान्त्रे अनेत्रित क्याच और कृत्यपक्षी जीतीन करन रहता है, उसी प्रकार विकासी बाहा भी कारको कार्रा और कुम्मप्रश्ने कार्री क्रों है। " व्यापालका कार्यवालके तिलो प्रतिवित तीन समय के राज्य अन्यक्ष एक समय भी साम करनेका विकास विस्ता 🕯 । अने राज स्कूप्तारी स्था पादिने । दिन्ने एक प्राप्त प्राप्त न में, कालो बीरासको केहे अच्चा बेहीपर मा बक्षकी बक्न से है। बन्दर, देवप, सर अवना क्रयासका वस करन को । इस प्रकार एक महीने बाद बान्ध्रमनका पूर्व होनेपर उद्योग करके परिवर्षक उद्यागीओ भोजन करके और उन्हें रुक्तिया है। कान्यश्राध्यक्ते आवश्रामी पराध्यके

अर्थत् शुक्रमाधी अधिनदाधो एक विन्य और दिर्शनाओ हो विन्य गोलन करना माहिते । इसी तहर पूर्विकालो चेहर प्रास होतान करके कृष्णनक्षणी अधिनदाधी कर्युर्दशीलक प्रतिदेश एक एक प्रास करना काहिते । अध्यासकालो उत्त्यास करनेतर इस प्रतासी समाहित होती है । व्या एक प्रमारक्षा चारावाल है । स्कृतिकोंने इसके और भी अनेताने अध्या उत्तरका होते हैं।

है। महाराय, गो-इस, सुक्रांचरे चोरी, पूज-इस्स, महिराया और कुर-वी-कम आहे किने ये कर क पालक होते हैं, में मान्यसम्बातारे अन्य अकार जा हे जाते है कैसे इसके बेचने शुरू वह बारी है। विका चौको नाले हर इस दिन भी न हुए हों, उसका दूस रुख डीटरी एवं नेवृत्ता हुए थी क्रमेश्र और मरवालीय तथा सन्त्रक्षीयका सह, अववासको तथा परितया शता और प्राप्ता बुझ अन्त स्थ हैनेकर पान्यकारात्रात्रा अध्यक्त करून वार्तिने । आकार्यने हरकते हर पत्र आदिने करनेको, हाकर १वी हर, जैने गिरे हुए हमा दूसरेके ख़कर गई हुए अवको पर लेनेकर के कानायवास्त्रका आवश्य आवश्यक हो जाता है। यह पार्टिक अधिकारित को विश्व करनेको होरे न्यांक और अधिकाहित को प्रार्थिक तथा, पुजर्शना तथा देना प्रोक्तिक अत योक्त का केन्द्र में कन्त्रकाल करन माहिये । भरिता, असरव, निय, वी, सरवा, नगवा और | कार्यन्तेवाको प्राप्त होना है ।

स्पन्न पान सुने कारानी पॉर्ड हुन्त जानकर साथ हो नहीं | हेल्ली मैक्सी करनेवाने उद्यानको पी वान्यवनात करव कारका है। यो देश शरिक मुखीबी चीहरे पोजर करण तथा करे कांगोर्ने संस्ता है, को उपनवन-संस्थारसे रहित करन, कन्य और बीके साथ (एक फार्ने) फोर्बन करता है क्या को क्षेत्रक अपने बहुत इसके क्षेत्रकों निर्मा देख अध्य कृतेको हेन है, वस अकुलको भी कलावनातकी क्रावरण करना पातिने। यदि दिव पात्र, राजर, इसाय (कुक्राएर), सक्कर, कारी अस, कारेके कारी कार्कार अवनी वर्ष रहेर्द, पांच बच्च रक्तरवन की, कुने अधना प्राच्यानके प्राप्त देखा द्वारा अस पर से को जनके रिप्ते कान्यकारक सामान समितनं हे बात है। पूर्वकारमें प्रानिकोने अस्तरप्रदिक्षेद्र विक्षे प्रस प्रतयक आकारण विक्रम या, या तम प्राधिनोची परित्र कानेवाल और पुरुवका है। जो है। इस परन नेपरीय, परित्र एवं प्रत्यमहास प्रतया अनुहार कता है का चौरतका तथा निर्मल कुर्वित समान देवाची होकर

## सर्वहितकारी धर्मका वर्णन, हादशी-जनका मरहात्य तथा युधिष्टिरके हारा भगवानकी साति

कृष्टितरे बहा-चनकर् । अब अस्य मुक्तरे सम्बद्धाः अधिकोषे देशो जिल्लाचे वर्गका वर्गन व्यक्तिये ।

प्राचनने बद्ध--वृत्रिद्धित । को वर्ग इतिह बनुव्योको ची कार्ग और सुका प्रधान करनेकारण एका समका धार्यका आहा करनेवारम है, जान्य धर्मन कस्ता है; सुन्दे । से मनुष्य एक क्रांतक प्रतिदेश एक समय केवल करता, तक्रकरी क्रांत. स्रोधको कन्युपे रहाता, जेचे स्रोतः और इत्रिकोच्छे नहाने रक्ता है; से कान करके परित क्ता, जब नहें हेता, साव बोरका, किसीके दोष नहीं देखना और मुख्यें किए सन्तवस सदा बेरी पुजाये ही संस्था खुता है; यो खेनी संस्थाओंके समय प्रवासित होकर महाने समान रसनेवाली क्रमारीका का करता, 'को अपन्यदेकर' कहका तक पूर्व प्रचान किया कता, पहे प्रकारको चेनको असरमा विकास योजन करानेके प्राप्त सर्व भीत होतर जीवी समी अवक पिश्रासका योजन करता एक 'नवंत्रम् कर्म्टवर' करका प्राथमके बर्गार्थ प्रमाप करता है; यो उत्तेक कर समझ हेनेवा परित्र हाहाजीको चीतन करना और एक साराज्य इस निकारत करून करके अञ्चलको इसकी दक्षिणको सकते मान्य अवना रितन्द्री में दान करता है एक सहाराचे हानसे समर्थपक यह लेकर रूपने प्राधीत्वर विकास 🗓 अर्थेट साव- कुलार क अध्यानने किने हुए का क्योंतकके कर सकार मा हे को है-इसमें तरिया भी सम्बद्ध विभाग बार्यकी अवस्थानक नहीं है।

कृष्णिले कहा—कामन् । सब प्रकारके उपवासीये जी सकते हेतू. म्हान् पास देनेकास और कामानका सर्वेतप राज्या हो, सामक कर्णन करनेकी कथा की निषे (

कारकारों कार-पाजन, जो इस पूछे भी अस्तरत क्रिय है, क्षाका धर्मन करता है। सुने : को पूछा कार आदिसे पनित क्रेका वेरी पक्रवीके हिन परित्यवंत्र उपनास करता तका होनी समय नेरी एकने संस्था कुछ है, यह समूर्य नार्वेका पास कका केर करण कवार्थ अतिहास होता है। अनावाल और पूर्वित्य-वे क्षेत्रों वर्ष, खेत्रों प्रकृती प्रवती और व्यवस्थानमुक इस्सी—ने पाँच तिनियाँ मेरी पश्चमी बहुरमती 🛊 चे मुझे जिसेच प्रिय 🖟 सतः लेख प्राह्मणीको उचित है कि से पेश किरोप क्रिय करनेके दिन्ने मुक्तने रिक्त समामार इन दिक्षिकोर्थे उपकार करें। को सकते उपकार न कर सके, कह केनल इन्हरीको है उपलब्ध करे; उससे पूत्रे बड़ी जलावा होती है : को मानंतरियंकी हारहरिको दिन-सत उपकार करके 'केम्बर' नामसे मेरी पूजा करता है, जो अ**ध्ययन-पत्रका प**त्र निरुक्त है। से केंच मारबंधे हारबी विविध्ये उपकार करके

'नारायज' समसे पेरा एका करता है, वह व्यक्तियेक-व्यक्तः पाल पाता है। के मानकी इस्तीको उनकार करके 'साका' नामसे मेरी एक करता है, उसे एकसूच-दास्त्र पन आह हैत है। पालुनके पहिन्दें इस्त्रीको समाप्त करके वो 'गोबिय' के नामरे मेर अर्थन करता है, को अहिएक पानक पान मिलता है। की महीनेकी हराती विकिक्त हर बारम बरके के 'किम्' जनते मेरे एक करता है, क पुष्परियानकाने पालका बाली केवा है। वैवाकानो कुरातीको उपकास करके 'मधसूबन' सामने मेरी पूजा करनेवालेको अधिकोग-प्रत्यक पास विस्ता है। यो पनुष क्षेत्र प्रस्का प्रदर्श तिकियो स्थाप प्रस्ते 'विकास' नामरे मेरी एवा करता है, यह गोलेक्के करण्या पानी होता 🕯 । आयात गाराची प्रदर्शको जा शुक्रर 'माया' नामो वेरी पुन्त करनेवाले पुरुषको वर्तन-व्यवका करा प्रकृ क्रेस है। क्रायमके महिनेने प्रवृत्ती दिनिको अध्यान करके के 'जीवर' मानते मेरा पूरण करात है, यह यह-बहलेया पान पात है। पाइन्द मारावी प्रकारी विकियो अन्यात करोड 'इसेनेडव' मानते वैश अर्थन करनेकरेको सोकन्यन-काका का मिलना है। अस्तिराकी क्रमानिको सरकार करके के 'परानाम' नामने नेत अर्थन कता है, जो एक इनार भो-क्रमक परत आह होता है। वालींक महोनेकी हारही विभिन्नो इस राजर जो 'कमोदर' पानने नेरी एक करता है. असको सम्पूर्ण बहाँच्या पार विराता है। यो प्रावसिको केवान इरवास है करता है, उसे पूर्वोक फरका आज कर है जह होता है। इसी प्रकार सम्माने भी बाद बहुना परिन्दुक भित्रमें मेरी पूजा करता है से ब्यू मेरी स्वयंक्य पूर्विकटे प्राप्त होता है, इसमें वर्तिक भी सम्बद्ध विकार करनेकी आवरणकार नहीं है। अर्थक काले अधिकत अल्पक क्रीड़कर नेरी एक करते-करते क्या एक सक्ता एठ हो राज्य हो पुनः तुसरे स्वरू भी मासिक पुरून जनमा कर दे। का ज़कार मेरी आरायपाने तरार होका को पाठ करन करंगड निज मिली बिय-बायाके मेरी एक करता खड़ा है, बह की क्रकाची प्रश्न हे पात है। ये प्रमुख ह्नाहरी विकियो जेमपूर्वक मेरी और वेदसंक्षितको एक करता है. को निःसंदेह पूर्वोत्तर करवेकी जाही होती है। को सहसी

विभिन्दों मेरे रिज्ये क्यूपर, पूच, कार, कार, का अवस्था मूल अर्थन करता है उसके समान मेरा विश्व चट्ट कोई नहीं है। चुनिद्दित है इन्द्र आदि संस्कृषे हैक्स उन्तर्गृक विभिन्ने मेरा कान करनेके कारण ही आब सर्गीय मुख्या उपयोग का सो है।

र्वजन्मकार्थं कार्त 🖟 अन्तेत्रम् । धनवान् श्रीकृत्यके कर अवार क्योड़ कीयर क्या यूनिहिर हाथ चौक्रकर र्वाक्ष्मकंक उनकी इस जकर सुवि करने तमे—'इपीकेस । कार प्रमूची सोकोंके प्राची और वेच्याओंके पी ईवर है. आवारे नकामा है। इसमें के बारण कार्नेवाले पार्ववार । नामके मार्ग्य महाम है,सम्बद्धे पेट प्रमान है। बेटापी आरम्भ सम्बद्ध है, सेन्द्रे वेद्येष्ट जार अतीवर हैं, वेद्यानीके हुन सामग्री है सुद्धि की गर्म 🖢 आवारे कांग्रार नमस्तर है। आर कर पुजानारी, विश्वकर, कशहेर अमीहर स्था क्ष्यूर्ण रहेकोने सम्बद्धान्यन 👢 सम्बद्धे नेत प्रधास 🛊 । गरनिक् । आग ही इस बन्नत्वी युद्धि और संद्रार कार्नवासे है. आपको पणस्का है। मध्येके रिमान श्रीकृष्ण । आपको कांबार प्रकार है। प्रकारता । जार सन्तुने सोको और केरिकोट क्षेत्र है, केरिकोट कार्य है। आर्थ ही अवसीय जन्मर करन किया का प्रक्रमणे । जानके शांचार क्यांकार है।'

वर्गरम पृथितिर का चौकनएन वार्गते हा प्रकार प्रश्नास्त्री स्त्री करने सने से उस्ते असमापूर्वक वर्गरकात हम प्रकार जो रोका और इस प्रधार का—'रुवन् । यह क्या ? हम मेरी सूचि वर्णे काले रूने ? इसे बंद काले प्रारंकों ही समान प्रश्न करो।'

पुष्पितं कृत—गामत्। कृत्यवहारे हत्त्वीको आवको कृत विक प्रकार करने पाकि ? इस वर्गकुक

नगणम् स्थान्-सम् । व पूर्वस्य तृष्यि समी समोका नगर केता है, सुन्ते । कृत्यन्त्रक्षणी इससीको सेती पूरत करनेका स्थान स्था करण है। क्षाद्यक्षिको अस्वास करके इससीको नेता पूजन करणा माहिते । तस वित्र भक्तिपूर्वा वित्रते प्रकृत्यकेका भी पूजन करणा प्रक्रित है। ऐसा करनेसे सनुष्य दक्षिणारपूर्विको अस्था पुत्रो प्राप्त होता है।

## विषुव योग और अहण आदिमें दानकी महिमा, पीपलका महत्त्व, तीर्थमृत गुणोंकी प्रशंसा और उत्तम प्रावश्चित

पैराणाकाची करते हैं—प्यकान् औक्ताको इस ज्यान अपेड़ा हेनेपर राजा चुकितिरने पुष्ट स्वके समय और अस्ती विशेष विभिन्ने विश्वयमें अस्त किया—'प्यकान् । विश्वय भोगों तथा सूर्वपाल और प्याकानके समय क्या हेनेसे किस प्रस्ताने आहि क्याची गयी है, ज्या क्याकोच्यो कृता करें।'

ः तरकारने वदा—राजन् ! विश्वत कोचने, शुर्वकार और पायक्रमके स्थान एक प्रतासक केमने के इस दिया पाय है, अह अक्षय कार वेरेकाय होता है; इस विश्वका कर्नन करता है, सुने । कारकाम और वृद्धिमानको प्रशासको चय कि रहा और दिन कायर होते हैं, यह करना 'नियुध खेन' के नामले पुराना जाता है। उस केर संस्थाते समय में, उन्हों और महादेवजी किया, करवा और बारवेंकी एककार निवार कारनेक रीजी एक बार एकमित क्रेरो है। निज पुर्वार्त इन्स्त्रेगोस्य सम्बन्ध होता है, यह बरू परिश्व और विकुल्पनकी नामारे प्रसिद्ध है। जो संस्कृतका और परवाद भी कारों है। इस शुरूति सार स्रोप परण प्राध्य कियार करते है। केवता, सर्, स्त्र, रिसर, अधिनीयुमार, प्रश्यनमा, विशेषेक, मन्तर्ग, रेस्ट, ज्ञार्थि, सोन कार्ड ग्रह, नरेवी, रुग्ह, पर्ग्ह, शायात, पान, पाक, राजार और गुरुवा—ये तथा करते केवल भी विद्यालयोरे इतिहासकापूर्वक कार्यात कार्य और प्रकार्कित परमानको बाज्ये संस्था होते हैं। इस्तीन्त्रे मुनिविद्य । तुम अस, मी, तिस, चुनि, चन्या, वर, विज्ञासस्थान, बन, पहल, इच्छा तक और के बक्दरे इनके बोल्य कार्याची गरी है, देन प्रकार विज्ञानकी कर करे। का समय निर्मेणाः क्षेत्रिय प्रदानोच्छे दिने हुए समया सन्ध पाक पत्नी होता. यह प्रतिकृत कहते करते करते करते हुए हो पाला है।

जानतक्षमें कर कन्यक्षण अक्षण पूर्वञ्चल रूपा है, इस समय को मेरी अक्षण पर्यक्षण कंपरकी कार्यक्षण कर करता रूपा व्यक्ति प्राच प्रदूर, पूर्व, हाईड और कच्छा कारता है, उसके पुरुषस्थाल कर्यन सुन्ते । मेरे स्वयने बीव गाने, होय और उप करने रूपा मेरे अप क्षण्येका बीर्यन करनेसे राष्ट्र दुर्वस और कन्यमा कार्यन् होते हैं । पूर्व और कन्यमके ज्ञान-करताने लेकिन प्रदानोकों को द्वान दिखा गाता है, यह इसरयुन्त होकर द्वारको निकास है। पहल्ह

कार्यों प्रमुख भी उस इससे स्टब्ब्स क्याहित है जाता है और सुन्त विश्वास्त्र कैरब्द क्याहोकों नगर करता है तथा कार्यक अवस्ताने क्याबकों साथ को मैजूद हाते हैं, कार्यक क्याबेकों का प्रमुक्त साथ विवास करता है। किर सम्बद्धार कारी सीटनेटर इस संवासों का नेत-नेवाहोच्या किएन प्रमुख होता है।

कृष्णिको पृक्ष-सम्बद् । सामग्री गायतीया पर विका स्था विका पास है जात सामग्री क्या पास होता है—बह बातनेको सुन्य प्रोतिने ।

वनकार का—कार् : इस्ती तिथियो; विद्यानकी, वाद्यान और वृत्यानको सका, सारावा का रहित्याको अस्ताक विद्या केए सूर्व देवार वेटी वाद्यान केले केलाका क्या केए सूर्व हेनेस् वेटी वाद्यान समाव स्थापन क्या (के को वाद्यानक) का का करवा कार्यो है। ऐसा कालेरी स्ट्रांको पूर्वोदार्थित वाद्यान विद्या क्या है।

पुण्यिको पूर्ण-केत । जन यह सारकाले कि पीयरका सारि अध्योग स्थानके सम्बन्ध वर्षा अभा याता है। इसे सुननेके तिने मेरे काले बड़ी कावन्ता है।

कार्यन्ते व्यक्त-शब्द । ये हे पीतत्त्वे वृहके कार्ये कुकर राजे रहेकोधा काल कथा है। वहाँ गीराव्या देख नहीं है, बार्ड नेप बात नहीं है। बार्ड में खारा है, बार्ड पीपक में कुछ है। को महत्व परित्रणवंदी पीयद बहाबी पूर्वा करता है, कार्य प्रथ नेते ही दूस होती है और को हारेक करके पीजन्यर जार करता है, वह बारतको सुप्रको ही अन्ते प्रात्मक संक्ष्य करता है: इसीओ प्रेमान्सी संब अविकास करनी पार्थिने, उसको बाहरत नहीं पार्थिने । इसकी करण, संस्थात, रेक्सओंकी रोजा, पुरुशास्त्र, पिठा-मारामी सेमा, अपनी सीमो संद्या एकता, मुक्ता-कर्वकी चलन चनन, अधिकि-देखये तने कुछ, वेद्या अध्यय, अक्रवर्धक करून, अव्यवनीयादि सीन प्रकारकी शांतियाँ-ने सब परन पायन सनावन हीथें भने बाते हैं। इन शायका पूल वर्ग है—ऐसा जानकर इनमें यन सनाओ तका तीवॉमें कारते; क्योंकि वर्ग करनेसे कांबी वृद्धि होती है। हो ज्ञातके तीर्व हेते है—स्वावर और बहुय । स्वावर तीर्वते ज्ञाम तीर्थ बेड है. क्वॉकि उससे जानकी आहि होती है।

इस लोकमें पुरवकारिक अनुहत्त्वते विश्वय दूर पुरवके इसकों सब तीर्थ काम करते हैं, इसलिये वह रीर्थायका व्यवकार है। गुरवकी रीर्थाते परमाजनका इतन प्राप्त क्षेत्रा है, इसलिये असमें बद्दार कोई तीर्थ नहीं है। इक्टनीर्थ प्रत्येश्वर दीर्थ है और इस्तार्थिक सन्तर्भ है।

पाण्डनक्त ! समस्य तीवॉमें भी हमा सबसे बद्ध तीवं 🛊 क्षमासील पनुष्योको इस स्वेक और परस्येकमें भी सुक् पिलता है। कोई मान करे वा अपन्यन, पुत्रा करे क तैसरकर अवक जारी है वा और काले। इन सभी परिविश्वीकोंने के अमाशील कर रहता है, यह तीर्व कहरवल है। हमा है कह. कृत, यह और धनोनिवा है ।अदिना, वर्ग, इन्हियेका संबंध और रवा भी हमाने है लक्ष्य है। क्ष्मले है लग जन्म रिका हुआ है; अतः के प्राप्तान अन्यकान है का देखता सहरवात है, यह प्रकार बेट है। श्रमाशील मनुष्यको हर्ग, पश्च और जेड़को ज़ारि होती है; इसल्बे अनकन् कुल सायु अक्रमता है। राजन् | आध्यक्त भी नगर कान होये 🕽 यह सब तीवॉर्ने उपान 🛊 । आवनको सब्द कार्यन कह गमा है। सर्ग, मोश्रा—सब आसम्बे ही अवीर है। से संस्थारके पातनसे जानन निर्मत हो नवा है तथा पान और क्षमाके क्षरा निसर्वे अनुस्तीत जीतराज शा नवी 🖫 देसे क्रानकरी बलमे निरमार जान करनेवाले पुरुवको केवल मानीसे परे इर तीर्वंबर क्या आवश्यकता है।

पृथितितं सक्-भगवन्। अत्र सुत्रे कोई हैसा प्राथित स्थाहने, को करनेने सुगम और समझ प्रयोक्त महा करनेनाला हो।

मगलार्ग करा—राजर्। वै शुर्ण अन्यत्व कंपनीय आपक्षित बता या है। व्य अवर्गमें स्थि रहानेवाले प्राथवारी मनुष्योंको सुनाने केपा नहीं है। किसी परित अवस्थाको सामने देखनेयर सहसा येग कारण करे और 'गर्ग जसके हम प्राय गृह हो महण्यरेकार' कहकर व्यावस्-मृद्धिते उन्हें प्रणाम करे। इसके बाद अहाश्वर-अन्यका का कसी हुए (व्यावकोकानको जसने निर्दिश स्थेनको परिक्रमा करे, ऐसा करनेसे अनुष्य संदुष्ट होते हैं और प्रमाने दिया नहीं होता।

नै जस प्रच्यम करनेवाले मनुष्यके सम्पूर्ण प्रापीका नाम कर केत 🔃 वो पर्च प्रविद्यालके समय प्रविद्यानिये नदीके कार सकर मेरे जीवाके निकट इतियाकों सङ्घके उससे जनक करिएत पानके सीमका सर्व कराने हुए बहाते एक कर भी कान कर हेमा है, जाके समझ संदेश पर एक 🛊 क्षण्ये हा हे जते हैं। जो पूर्णनाको उत्पास करके पहुल्लाका का करता है, जनके भी प्रतिनेतित पाप ना हे बारे हैं। इसी प्रकार को प्रतिपाद अरून-अरूप पन पहला राज्य किने हर व्याकृतिक का करता है, सन्तेर रूप पर पर हे जते हैं। उस में स्टब्सर्व और उसके व्याध्या वर्णन करता है, सुने । क्रमान का कमरको परेपे जनक तमि का खेनेके को हुए वर्तनमें आहरू दे रहावर मैन महिने। ने हैं उनके उन्हुल पता है। (सहसूत्रोकी किनि इस जनार है—) चावची-सन वहनार गीना हा. 'कमार्थन' प्राथमि, कमसे चौचा गोवस, 'अध्यायक' इस क्यारे पावका हुए, 'द्रीकारण'- इस क्यारे हुई, 'हेगेड़ीर कुन्तुः इस कब्बों थी, देवन का आहे सबके हार कुलका बल तथा जाने है हा पने- इस प्रकार हारा बीका साथ लेकर समयो एकमें मिरक है और प्रश्नातित अफिने व्यक्तके औरपारे विधिपूर्वक ह्यान चरके प्रयासका बकान करहे हुए इन्लुंक बस्तुओका आरबेका और प्रत्यन को । किर प्राणका अक्षरण करके उसे प्रकारोंने निकारण्यार इन्बर्गे से और प्रशनका यह बस्ते हुए ही ओ पी कार । इस जनार महत्त्वाच्या पन करनेसे मनुष्य बहे-हे-बहे कारों भी उसी जानर ब्रह्मारा या बाला है, पैसे साँच जनने केन्द्रको पुरुष्क हो बाता है। यो पनुष्य करके मीतर बैठकर अवना सुर्वेद सामने हुई स्तकर पूर्व के इस जनके एक करवका स अक्तंत्रियका यह करता है, जरके हम कर नह हो करे हैं। वो मुझमें कित लगकर अतिविन मेरे सुन्त (पुननसुन्त) का पाठ करता है, वह बतमें निर्दिश खनेवाले कमलके परेकी वहा कभी भी

## क्तम और अधम ब्राह्मणोंके कक्षण, भक्त, गी, ब्राह्मण और पीयलकी महिमा तवा ब्राह्मणत्वसे गिरानेवाले कर्म

पुरुषात्मा साञ्चल केसे हेते हैं तथा प्रश्नाचको अपने कालि सकारता न विस्तेनक क्या कारण है—या कालेकी क्या

गान्त्रने वह-नाव्यत्रकः । स्वानीकः वर्ण को श्रमात होता है और क्यों निकार-पूर सारोध्ये में सामग्रः कारत हैं, सुने । बाँद हायका बाब कुन न हो से विदया बार्क करन, भैन कन, नद रक्तन, कव केंद्रन, कार्यक या गुगवार्थ प्यानना, का और अधिवेश करवा, अधिमें आहीर देश, गुरुष-वर्गका शासन करता. कार्याको रोलप स्थान और अधनी सीमा स्थानन सामा — के करे कर्य कर्ष हो जाने हैं। को हम्मारीतर, राज्या पानन करनेवाला, प्रतेमरहित तथा पर और प्रतिक्षेत्रों जीतनेवाला हो। आईको मैं होट अक्टम मानता है। काके अतिरिक्त को प्रकृत माजननेवाले लोन है, वे सब पुत्र वर्ल पने हैं। यो अधिकंप क्षा और प्राथमको स्थी क्षत्रेयारे, प्रीय, अन्यत मारनेवाले और विकेशिक्ष है अही कुलोको हेक्सलीय प्रकार मानते 🕯 । केव्युर कारिये विकासियों एका नहीं होती, अन्य पुन ही कामान कर्मनाले हेते हैं। मन-इदेद किमाइदेद. मुत्तवृद्धि सरीरमृद्धि और माम-सुद्धि-सा स्टब्स् स्टेस प्रकारको सुद्धि भारती गरी है। इन पाँची सुद्धियोने प्रकारी मृत्यि संबंधे कामार है। कामार्थे हो स्वीको महत्व कामें सबे हैं। यो प्राप्तान अधियोजका अल्य करके करीय-विवर्धने रूप र्गवा है, वह वर्णनेकारराका प्रवाद करनेकाल और काले कृत्यान भागा गांचा है। जिल्लो वेहिक सुनियोंको कुल हिन्स है रक जो सेतमें इस बोतता है, अपने धनीडे निकड़ कार कारनेवास्त व्यक्त संस्थान क्या नाम नाम है। का प्रस्ताव शर्म है बर्ग: करवा से २४० करता है, करवो हेक्काचेन क्यार भागों है। का पान्यालयों भी रीम होता है। को पारमध्य करून ब्रह्मनीता असीको हत्य नेरी सहीर न करके भिन्नी जाका राज्यन करता है, का कान्करके राज्यन है। कैरे कुरोबरी सामने रसा १३० एवं और कुरोबर बाटा इशा इतिमा समुद्र होता है, उसी प्रकार कृतन करूनको सुद्धार मिनत नेद भी दुनित हो कारा है। चार चेद, घ: अहर, बीसांस्ट, नाय, वर्गताचा और पुराय-ने चौद्ध निवार् है। केने सीकोचे कामान्ये हिम्ने इनका सामित्रांत इसा है, सक क्षरमें इसका सर्वा नहीं करना कहिने। क्षारें और वेट एक नहीं है जब शुक्रों की क्रू पुत्रकों में

वृत्तिरने पुल-केनेवर ! सिनके भाग पुन् हों, ते | सम्माने कानेवाली सभी बहुएँ सप्तील हो जाते हैं। इस पंचारने पीट अधीरा और मेश अनेका है। प्रता, प्रत और क्यक (क्यकर)—ने दीन अपनित होते हैं तक अस्तील चनक, पूर्व किसमें का करनेके रीजो प्राप्तनेको बॉक कर का संख्या, रकताल को और कुकर कारिकी बीसे व्या करनेवाल हैव—ने वॉव अनेक याने को है, **इनका** क्षा भी सर्व नहीं करना आहिये। यहि प्राप्तान हर आयोगेरे विज्ञानक रूपों का से हो चन्नावित करने उनेत करके कान करे। यो बनुष्य मेरे बत्तमेका क्रा-साहित्रे सच केनेके कारण अवनान करते हैं. वे करोड़ों क्लेस्क गरकोंने निकार करते हैं: अतः करकार भी पति केंद्र पता हो हो इतिकार पुरानको समाध्य अध्यान अहि काल पाहिये। करका करनेते बनुकाते देख नाकरें नितन प्रकृत है। को प्रमुख की अध्योक्ते अब्द होते हैं, अध्या नेता विहोत हेन होना है। इस्तिनों पेरे महाने महारेख निहेन सामा काम करिने मुक्ते किय समानेवर कवि, वक्षी और पह की अर्जननिकों है कह होते हैं, जिर अर्जन रहानोब्दी के बात है करा है। नेत कर बढ़ भी पहि का, एक, कर अवना जर है अर्थन को से में को सिरपा क्षान करण है। यो अकृत सन्दर्भ कृतिके स्टबर्ग विरायका मुख वावेदारका केंद्रेस रैतिले पूका करते 👢 वे मेरे क्रमून्यको साह क्षेत्रे हैं। युधिहर । वे अपने पालेका क्षित करनेके मिन्ने ही अध्यक्त करान करता है, अतः मेरे अनेक अकता-विकास एकर करना वाहिले. से अनुका मेरे अवस्था-निकारियो किसी एककी भी परित-मानसे अगरमान करता है, अगरे कार में मिलाब्रेड प्रश्ना होता है। निहरे, क्रीता, क्रांडि, कर्ण सकता स्त्रीण पूर्व स्त्रोंको वेरी प्रतिका बन्नाकर सामी पुना सत्त्री सामिने । प्रत्ये सामेता वृतिकेकी पुजाने कायुना अधिक पुण्य समझना साहिते। की सहस्त्रको विकासी, श्रीत्रको पुरुषे विकासी, केरको करती, सुरको सुरक्तम पराची छहा क्रिकेको सब ज्ञानको स्थानक हो से से एक नेरी जाराव्यको ज्ञाने सामी ननेराजेको जार कर सकते है।

> कृष्णिस्रे कुल-वेकेवर । सार विश्व प्रस्तुके **कार्यक** एक जी स्टेबर करते ?

> क्लाक्तरे बडा--एकन् ! यो प्रतया करन करनेकसा

भी, प्राप्तम और पीपलब्द कुछ-ने रहिये देवतर है, इने मेश और भगवान संस्थानस समाम सन्दानस साहिते । वेरे पर परस्को स्थित है कि यह इन सैनोक्स कर्या अववाद न करे; क्योंकि अपयान्ति होनेवर वे बनुवादी तक केरियोक्ट परंप कर अलने हैं। पुनिक्षित | मेरे क्यान क्रेमेंक कारण के प्यापका कहार करनेवाले हैं, इसलिये हम पारहनेव इसके पुषर विकासने ।

कृष्णिले कुल-भवत्। अनुव स्वकृत्यकेले हे का कैसे हे बात है, जाका महाबात दिस हकत का है व्यक्त है---व्य वक्तनेको स्था करे।

कुल प्रधानेवाले प्रान्यालयी प्री हां सम्बाधित त्यान देख हैं। | कुल्कि काली प्रधान करता है कहा औ करने ही प्रसंहित क्षाके क्षाक्रमें सुकर जीवना सामग्र 💃 ऐसा अञ्चल नेक्का करना निक्रम् क्षेत्रेकर की उसी करीरते सुरक्षकाने प्राप्त हो पहला है। को विक्ती को काले अवका नगरवे समातार कद क्वीवर सु बार है, यह सहाम भी विश्वविद कर है नाम है। यो प्रकृत कारते में कि होकर सूरवरिकी सीसे बंधार अन्य बन्धा है, काबे इकेरबा स्थानक तुरंत रह है कार है। मुस्तिर । यो होन मुस्ति प्रश्नातरको संस्तर सी कर नामे हुए को वर्गीरे नामार सामा नव कर करते हैं, रुके दिने कुरे का क्षेत्र होता है; इस्तरिने को प्रकृत सुप्तरे र्केन रक्ता हो, वहे इस प्रकारके अन्यवहरू देशा कोई कर्न नहीं भागानी नवा—राजन् ! मो बादा वर्गीयक केवार जाराव वर्धने मो को क्रमानको कर बस्तेवारत हो ।

## भगवानुके उपदेशका उपसंहार और उनका प्रस्कागमन

गय है और की कारको जेनको साम्य कोर का स्थ से काची केर-सिव्य (अपनेतृ-संस्थार) विका प्रसार word & 2

ध्रान्त्रकारी केवर--नामम् । बाह्रि विद्याचे वर्गीयांत्रके प्राकृतको इस प्रकार पृथ् हो बार के केन्स्स्पर्ध काले अनुसर अस्ति काकृत्वी प्रतिम काकृती पाईले । यह काकृ पानकार ही होना जीवत है। क्युक्तके प्राप्तके हीन को बाद इतियाँ कार्यो पनी है। उन सामग्री क्रान्तेश विक्रिके क्रान्तक कारके उस अभिकास का करना कारेने ह

3<sup>4</sup>मीले पुरा—नगरम् ३ यो पता सेर्च-सक्त स्वतंत्रे जारान्यों हो, उन पालको सारनेके क्रिके काला किसी क्रिकेट भीनोक्त कार्यकृतार कर्नार व्यक्तिके ।

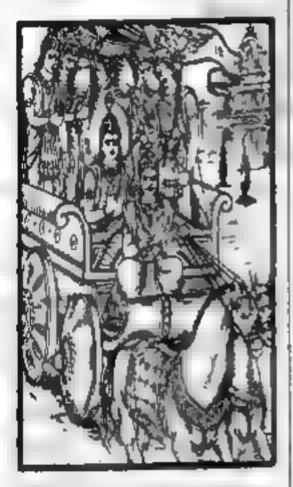
शरकाने बार-स्थान् ! सामग्रेट्या पानन करनेवाले निक्रम करते हैं कि सत्त एक क्षेत्रीको पुलिए करनेकाल है। पत्न बोरम्भ और विक्री जीवकी दिस न वारच—ने वोर्च श्राहणते हैं। तर, तथा, श्रीतः, बोडेमें संतोष करण-हे स्मृत्य की रोबेशन ही है। क्षेत्रक गावे, संबोधी उद्याप और प्राप्ता भी तीर्थ करते हैं। मेरे और कुंबरके पाड, संस्थात, विद्वान् और इसरोको इत्ता हेनेकले पूछा भी तीवो 🕯 । जीकोच्ये आध्य-कुर केय भी सीर्थ की ब्यालका 🛊 । ये रीनों स्वेकोंने क्षेत्रसम्ब है। दिन क्षेत्र का तक, युक्ते कथी

पुनिहरते पुनि—भवनम् । जोदं कोर्द्र अव्यान भवेता । वै नहीं करता । वर्षत् पुत्रके मुक्ती को बेदना उत्तरण होता है, जाते पुढ़े जाए है भग बना पुछा है। इस्तीओ पहल्हे मेरे क्षा भी अनुबंध क्षेत्र जी कारण करत करिने: क्वेंदिर नेक्वेच विद्वार इस संस्थारी प्रकारों क्वेंदिवस के कारों हैं। यह मुक्तें भीड़ रकते हुए सक्ता, ब्रावेज और र्वत्योकी रोज करें-नहीं उनका परव वर्ष है। दिशोकी केवारे हो से पान कार्याची पानी होते हैं। इसके हैंता अन्ते अञ्चलका कृत्य कोई ज्यान नहीं है। एक, हेन, मोह, मंद्रोत्स, क्रमा, प्रदेश, श्रामिक मामानक के राज्या, अभिना अभिनार, राजनाम्या अभार, इत चोरांग, निया करन, कुलने कान, जानन लोग काना, केंद्र, केरी, हार-पुर अगन्तर प्रमान, बोधन केर, क्रोप, साराह, वृत्रोता, नारित्रकात, यम, आराम, अवधिकात, सुराहात, क्या. क्या. क्या और स्वार-ने समझ सूर्य पूर्व पैक होने ही जरने हमेह बार सकते हैं। हक्तन्त्रीने छुद्देखी क्या कर्ने अन्ते तिने दिनोकी रोकास्य वर्गका उपरेक किया। दिलोकी परिवरी सहके राज्या कर जा है करे हैं। का भी और महिन्द्रांक पूर्व का, प्रथा, प्रथा सकता उस अनंत करण है से मैं करके परिवर्षक दिये क्रू उत्पादको सारा क्रीक कारण है। सम्पूर्ण धानोंसे मुक्त होनेपर पी बर्दि बोर्ड स्थान कर नेत कान करता रहता है, से का अपने राज्यनं कवोरे कुत्यारा व कास है। तिहा और विस्तिते भी भव नहीं हेता। देवक, देव और राह्यकोरो भी , विस्तारे समझ क्या बेहोके वरंगत दिखाए होनेपर भी जो क्रमण पुराने चाँक नहीं करते, वे क्रम्बातके समान हैं ! के दिन गेरा मक नहीं है जनके दान, कर, चार, होन और अतिकि-प्रकार—ने इस कार्थ हैं !

पंजानको । यह पहुल प्रमान कार्यर-सहस प्राणिकोचे क्षे विता सकता प्रशुप्ते सकता प्रश्ने कर रेता है, का समय का नेत तका पक होना है। प्रत्याका अपन्य, अधिता, सार, सरस्या क्या विस्ते थी प्राचीते केंद्र म करना—का मेरे क्योंका का है। को प्रकृत में प्राची अञ्चलीय स्थापन वार्ता है का प्राचान ही क्यों न हो, जो अक्षण सोम्होंची कहि होती है। बिर को साधान की नक है, बिनके करन नक्षणे ही हरने पूरी है एका को राख मेरे ही जान और पुलोब्स कीर्यन साथे राते हैं, से बारे स्थानिकार नेते विक्रिया पूजा करते हैं से रूपी सहातिके विकार पंच पाल है। अरेको उत्तर वर्गेत्व प्रदान करोगात कुल में उस पहले नहीं कह होता, यो मेरे भागोची अभवता है जिल पता है। हालीको राजेल ! तुन सब सक्त खुक्त नैरसर केंग्र ही ब्रबल कारी रहे: इससे तुन्दें निर्देश अब क्रेफी और देन परन परंका सामानार कर सकीने। यो कर्मकी को करते को है में भी पात नहीं, कहा है। जिस को सरकारों भी पात है। में बन्धरे पूर् हेरेका भी सारकों का नहीं है। बनावक प्राह्मणीत ही सामान करने गर्न है। हो प्राह्मणा अवस्थि grown and afte firms square thurleften मानोबाल है, या लाग पदा है। यो होता करवर प्रानेक्ट प्राप्त, अवन्त्रं क्षेत्रक वायुक्तिके प्राप्त, अनुवास कार्यात पर्वा मस्ति सम्मोद्दे हुत तथा स्थानिहेव द्वारेके कार्य से अन्यनेवेको प्रश्त प्रदेश मेरी सुनि विकास करते हैं, के भगवास्य माने पने हैं। यह बेटीने सामित है और देखा मार तथा प्राथमिक असीन क्षेत्रे हैं, क्ष्मीको प्राथम butt Er

विस्तीया स्वारा दिने किन कोई की जी का सथान, अतः समयो विस्ती अवाध अञ्चलका स्वारा केन वाहिने । रैक्सारनेन परम्बान् सके अस्तानमें सुने हैं, वा व्यानाके सामित हैं और व्याना मेरे अस्तानमें सुने हैं, बिलू मैं विस्तीय आसन वहाँ हैं। मेरा जातान कोई जी हैं। में है समया आसन हैं। समन् हैं का प्रवार ने अस्त प्रमुख्यी बाते मैंने तुन्ते कारानी हैं। कोसित हुन कवित प्रेमी है। अस हुन हुन करोहाने हैं। अनुसार आवश्य करें। यह प्रविद्य अस्तान पुरुष्याचन हुने मेरून समार प्रान्त है। यो मेरे मताने हुए इस बैकान-अनेका प्रतिवित्त पाठ करेना, असके वर्णको मृद्धि होन्छे और सुद्धि विनोत । साथ ही साथे दशाय प्राचेत्र नाम होनार नाम जानानामा निराद होना आ उत्तंत नाम परित्र, पुरस्कारक, प्रत्यासक और अस्त्रम् अपूर्व है। साथी ज्ञून्योंकों, विकेश्यः सोवित्र विद्वारोंको स्क्रिके साथ प्रत्या संस्था करना परित्रे । को स्तुन्य परित्रमंत्र को सुनात और परित्राच्या होनार सुनात है, यह विकार हो मेरे सानुन्यको आहा होता है। मेरी परित्रों साथ प्रत्यास को क्रिक पुत्र साहते पूरा परित्रम साथ सुना करें को है।

विकासका, कार्याद अनुवाद अनुवादी पुरारो पानक-वर्गीका प्रापंध करते हुए अञ्चल अलेकर विकार कर्क हुए पानि और प्रान्तकार्यन बहुत प्रश्ना हुए और संबर्ग भग्नाम्को प्रमान विका । वर्शन्यम पुनिश्चिते से बांधार different spec flows base, papil, flog, speci, अकार, धरी, माला, भूतव, सर्व, महत्व कार्यक्रम, रामधी केनी एक पहलान उत्तात्व करनेको परावद्वक पूरण, को जानक कालीवल क्षेत्रण कार्यक सुपरिक रिली कारों है, प्रत कार परित केन्या-करेवा करेड़ सुरक्त कारण विकास कुई परित्र हो गरे। अपने करपांत्रीय कार आयो । मेरर पर राजी भागान्ति भागोरी महाया सुवासा प्रमाण किया और कार्य कार्यक्रमी प्रशंस सामे सहा---'अन्तर । अन्य क्रम प्रान्तरमें पूरः साथ अन्तरपुरस्य पूर्वन करेंगे हैं भी महाबार तथा स्थाप प्रतासिक से बेस्टाओंका राज्य अन्तरे-अपने प्रधानको स्तरे पते। अन्तरे स्तरे प्रतिका परवार श्रीकृषाने सार्वाक्तिकेत करवाके गार विका कर्मक कुरू पार के केंद्र था, उनने निवेदन विज्ञा-'जनका, ! रच हैका है, प्रकारिये ।' यह सुरक्तर ध्रायक्रीका के काम है गया। वे हाथ बोधवार अधिको वेतीरो पुरुवोत्तम प्रोकुनसम्बो जोत एकाइक देखने एको, सिंहा अहरूस ्यों हेनेके करण कुछ केल व हते । प्रवास कुक की उनकी दक्ष देखना देखी-से हो नवे तथा उन्होंने खबी, कृत्या, कामरी, सेवर, प्रेयते, म्यूनि मान और अन्यान जारियों क्षे परित्योंने किए संबाद सुध्या क्या पुनस्तित करायाँ पीठपर फाय केन और कालीबांद से से कर रुवयकाले बहुर निकल आवे। शिर होन्स, सुद्रीय, नेवक्त और क्रमान क्रमाने कर केन्नेरे की कुर करने रक्षण सकत हो पने। जा समय कुरु देसके राज्य मुनिहित भी जेनका मनकानो पीठे-पीठे सर्व भी रकत वा बैठे और बारकको सार्वभके स्थानसे इटकर उन्होंने खेड़ोकी बागहोर अपने हावयें ले ही। फिर अर्जुन भी रक्कर जासद हो सर्गदण्यपुक्त विसाह बैंकर हाथमें हेकर दक्षिनी ओस्से



भगवान्के महत्वयर हवा करने लगे । इसी प्रकार पहन्तनी विष्णुके परम बामको ज भीमसेन भी स्थपर वा सदे और भगवान्के उपर इस सम्पर्ध | सुमग्र कोई उपाय नहीं है ।

बारे हे नवे। व्य इस सौ क्यानियोंसे युक्त तक दिवा काराओंसे सुत्रोपित था। अन्या इंडा कैर्वपणिका बना हुआ का तथा सोनेको झारने असकी शोधा बद्दा ग्री थी। जबूक और सहदेव भी अपने इक्षोंने सफेद सैवर किये रजपर स्थान हो को और परमान्के कार कुलने लने। इस प्रकार बुधिहिर, भीग, अर्जुन, नकुरू और सहदेवने ब्रीकृष्णकार अनुसरक किया। तीन चोजन (अर्थात् चौबीस पीत) तक बले आनेके बाद पगवान् औड़काने अपने करणोमें पड़े हुए पत्रकारोवने कारेसे लगावन बिद्ध किया और सर्व प्राप्ताको क्ते को । इस प्रकार भगवानुको प्रकाम करके का पाण्यन का लोटे हो सह कांने तथा सकत कविता आदि रीओंका इन करने लगे। धंगवान् ब्रीकृष्णके क्वनोको नारमार यह करके वे का-धी-का उनकी सरक्षत करते थे। वर्णांका बुविद्वीर ब्यान्सुए भगवान्स्ये अपने इसमें विराजमान करके अधिक भवानों लग गये, अहीका त्यरण करने अंगे और थेगबुक हेकर मनवान्छ। कान करते हुए उन्हेंके परायम हो गये। अनमेक्य ! इस प्रकार प्राचीन केन्नवर्षाक का उन्हेंस मैंने तुन्हें सुना दिया। यह पराप प्रवेश और प्रशेष्क रहा बरनेवाल है। पगवान् विज्युके वत्स्वये हुए इस वर्मका निरनार क्रवण करते रहे । इसीसे तुस क्षिकुके परम बामको जा सकते हो। उनकी प्राप्तिके लिये

# संक्षिप्त महाभारत

## आश्रमवासिकपर्व

## कुन्ती आदि स्थियोंका तथा भाइयोंसहित राज्य युधिष्ठिरका शृतराष्ट्र और गान्यारीके अनुकूल बर्ताव

नरामणं कास्कृतः तः चैत कोतः।() देशी सरामश्री म्यानं तश्री कम्पूर्वेरवेद् ॥

श्रमधाँनी वरायज्ञकाम सम्बाद् श्रीकृत्य, उनके निरमस्त्री नरसकाद दरशा अर्थुद, उनके स्टेस्क प्रकट कारनेवास्त्री पर्यक्ती सरकाती और उसके काम व्यक्ति वैद्यासको नमस्त्रार काले आसूरी सम्बन्धियोगर विजय-प्राहित्युक्त अस्तः कारको सुन् करनेवासे प्राप्तास प्रमुख्य पाठ कारना वाहिये।

करमंत्रको पूळ-सहात् ! वैदे प्रधितासह वहान्य पाण्या अपने राज्यदर अधिकार जार कर रेनेके कद प्रदाराय कृतराहुके साथ कैस्स वर्णाय करते थे ? राज्य कृतराह अपने पन्नी और पुत्रोंके परनेसे निरासक हो गये थे, अस्था ऐश्वर्ष किए गया था; ऐसी अवस्थाने थे और व्यक्तिकी गामारी ऐसी किस प्रधार जीवन करति करते थे ? राज्य मेरे प्रविद्यापाईने किसने सम्बद्धक राज्यका उनकोन किया था ? थे राज्य वारों करतनेकी कृता की किये।

वैत्रायकार्यने कहा—नावन् । शक्षाण प्रकार पृथ्विका प्रानेके अवन्तर राज्य कृतराष्ट्रको है आने रक्षात पृथ्विका प्रात्त करने रूने । तितृर, सहस्य रूपा पृष्ठ्यु—मे लोग रूप कृतराष्ट्रकी सेवामें कारिका कृते से और पाण्यून भी क्रमेक कार्यने कारकी स्वरूप कृत करते से । अपूर्णि नेवा कर्योक्ष पाया वृतराष्ट्रकी आज्ञाले है अनुस्तर रूपा करने करणेले प्राप्त प्रतिकृत सना कृतराष्ट्रके पास का करते करणेले प्राप्त करते और कृत करताक करती सेवामें कैठे कृते से । कृतरकृति भी सेवास प्राप्तकोंका महाका द्वाकर कर कर्षे

कारेकी आहा होते, तम वे आकत और सब काम देखा काते दे। कुनो भी सद्य कवारीको संकर्षे रूगी सती वी। बेको, पुरस्क क्या परकारेको अन्य सिर्फ कुसी और क्वारी-केने समझेकी समान कवारे सेका किया करती थीं। राज्य मुक्तिंत संस्कृत्य प्रच्या, वर्षा, आयुक्त स्था इकादे अप्योक्तों आनेकोच सब प्रकारके जाम पशुर्व और अनेको प्रकारके व्यवस्थान वृत्तरपुर्यो अर्थन विका करते ने । क्रमें जन्मर कुन्दों देवी अपनी कासकी शांति मान्यारीकी वरिकार्य करकी थी। पहुन्तु कर्नुबेर कुरसमार्थ इस समय रासा कारक के के पास रहते हैं। यहकार पास भी प्रतिदेश अनके पाल सम्बाद बैठतें और उन्हें जानीन ऋषि, देवर्षि, निर्दाप और क्रकारेकी कामाएँ पुरस्का करते थे । भूतवाहकी आहाने वर्ग और व्यवकारके क्षापा कर्ण विकृत्यों ही देवले से । उनकी अवही नीतिके प्रभावते राजके बहुते क्रिय धार्य धोड़े कर्पने ही सामन्त्री (सीमको एकाओं) से सिद्ध हो बाला बारते थे । वे केरिकोची केरहरे कुरुवाए है हैने और नमके योग्य प्रमुख्येंकी भी अल्ल-क्षम केवर क्षेत्र की वे; मिलू एका बुधिद्वीर इसके रिन्ये असरे काची कुछ नहीं कहते थे। राजा नृतराहकी सेवानें व्यक्तेकी श्रीति ही समेहीद कामने नियुक्त आसरिका<sup>र</sup>, कुपकार' और एनकान्यनिक' चैन्द्र करे थे। पाण्डन स्ट्रें बहुमुख बस्त और ऋष अवसके इस धेंट करते से । पीनेके रिको क्रीहे-बीडे पूर्वात और स्थानेक रिपो प्रति-पारिके योजन देते से निता-निता देहोंसे जो-जो राजा वहाँ एकतिन हेरे है, हे सब पहलेकी है चौठि राजा एउराहकी सेकारें उपस्थित होते थे : मुन्दी, हैपदी, सुम्बा, नागकन्था उत्पी, देवी विकास्ट, ब्यूबेन्स्ट बर्डन हवा बरासम्बद्धे फ्री—ने

र, 'करा' कमक 'इससे काटकर करने कोन्से काटन प्रान-भागी आदियो 'अगरतु' बार्ड हैं, उसको सुन्दर र्वितसे तैयार करनेकले रसोतुमे 'आग्रालक' कहलाते हैं। २, दाल आदि कननेकले सामान्य: वाचे रसोदकेको 'सुन्यार' कलते हैं। ३. पैपल, सोट और इसस मिलाबर मूंगवर सब तैयार करनेवाले रसोदने 'रामकाम्बर्धिक' कहलाते हैं।

प्रण तथा कृत्ये जहून-को विश्व जन्मधीयो सेवाने स्वानित । पति हसी पति थी। एका पुरिस्तुर अस्तित अपने पाइयोको विश्व को पति थे कि 'कृत्यमुक्त अपने पुणेले विश्वेत हुआ है। तुमलोग अभी देश सर्वाथ न करका, किस्सो इनके मनने तनिक भी दुःश हो।' वर्षतकके ने अन्तिक क्वान सुनकर भीयतेनको कोड़ अन्य सभी पत्रका उनकी भागाया निर्वायकपरो पत्रन करते थे। मीरकर पीकानेको इन्द्रको करने भी यह बात हर नहीं होती की कि युर्के तनम को पुण भी अन्तर्य हुन्स था, यह कृत्यमुक्ती हो कोडी युद्धिका धरिमाम था।

इस अकार पान्कोंसे नर्राचीत सन्तर्भक्ष होका अभिन्नारका राजा कृताह पूर्वमा व्यक्तिक साथ नेही क्षारते हुए शुक्रपूर्वक इत्यम न्याविक कार्य एक । वे प्राव्यक्षीको हैरेवीन्य सेष्ठ बागुरतीका श्रम काले और कुन्यीनका कृतिहरू इस्कें: सब कार्जीने सक्ष्येश हेते थे । जुनिक्कियों कुरवाका जन भी नहीं था। ये सक्त प्रस्ता नहीं बना अनने पक्षाचें और मध्यक्रोरो बद्धा पान्ने में कि 'राजा कुलातु की और आयरकेगोके मानवेग है। को प्रस्ती शकार्थे छेगा, का वेस सुद्धा है और यो इसके विकास आवस्य प्रतेषा, यह के कुम्बन मानी होता । विता-वितासक अवस्थित पान-विति आनेवर संबा पूर्ण और वैतिष्योक्ष ब्राह्मकर्तने पहुल्या राज् भूतराष्ट्र जिल्ला जन कार्य करना कार्य थे, इतना ही कारी थे : में पुरुषित प्राह्मशोध्ये जनवी चोन्पक्तके जनुसार बहुत-प्र का की में और क्षितिए, जीन, अर्थन तथा नकत-स्थान करका तिल करनेकी इन्हरते तल कार्योने करका साथ है। में। जो रूक इस परत्यों किया करी करी की के पुत्र-वैत्रोके वक्तों विद्यात हुए कुई एका कृतवा हुमती ओरहे कोई शोकका कारण पासर कहीं अपने प्राप्त न आर्थ है। अपने पुरोको जीवियानस्थाने हुने विकार सुन्न और धील प्राप्त थे, से अब भी रुद्दे भिरतो रहे—इक स्थापन प्राप्तकोंने पूरा अनन्य निका या। इस अवसम्बे हॉल और कर्नाको जुळ होकर सुधिहर जादि याँची नाई कुराकृती अञ्चल्ड असीन पाने थे। क्लाइ भी उन्हें परम विनीय, अवनी अहाओ अनुसार करनेवाले और विकासकारी सेवार्थे संग्रह देखान

विकासी ही पार्टित उनके कोड़ रसाते थे। पार्थार्ट देवीने पर्व अपने पुर्वेक निर्मात नाम अकारके साञ्चाननीया अनुहान करके अक्कान्त्रेको अपनी इन्हाने अनुसार पण क्षान किया और देखा करके से पुत्रोके आपने मुक्त हो गर्नी।

कर्पनाओं सेंद्र कृषिक्षिर इस प्रकार अवने व्यक्तिस्थित एक क्यान्त्रे अस्त-सम्बद्धे स्थे हो । श्रास्त्रीने पाण्डनस्य क्षितीत्त्वा कोर्ड भी ऐसा फार्नन नहीं देखा, को उनके पनकी अधिक रूप्यत्रेशस्य हो। पाणायोश्या सञ्चर्माय हेर्स्थर अन्विकारमञ्जून कृतराष्ट्र उनके कार बहुत प्रतास रहते से क्षत एक पुलस्की की परवारी देवी की उत्तर अपने सने कुने-केस केंद्र करते थीं। राजा कुरायु अथवा तपिश्नी नान्करी देखें क्रोदा-बड़ा जो भी करन करनेके लिये कक्ष्मी, क्लाबी आक्रामको विक्रोबार्य करके मुकिश्चित बह स्राप्त बहर्य पूर्व करते से । इसमें कहा कृत्यक इनके क्या बहुत प्रस्तु रहते और अपने क्यानुद्धि पुत्र कुर्वेक्यम्बो कह कार्यः प्रकृतम् कारो थे । अभिनेत राजेने उक्रमार साथ, संस्था एवं गायती-अन्तरं नियस होता में क्वानांको इका-विकास होनेका आहीर्वाद विका कर्म में। प्रक्रमाने सारिकाल करावर अधिने प्रक क्षानेके पहला एक वह पूज कावना करते से कि 'वाजुके पुत क्षेत्रके हो।' एक कुरसूच्ये कन्युके कर्मको जिल्हे प्रशास होते थे. अभी कई सभी काने कुतेने भी नहीं प्रश र्क्ष के । युविद्विर अपने प्रमूलकिक कारण प्रवास, शारिय, बेरन और खा--समीके हीन हो भने थे। बतायुक्ते पुत्रोंने उनके राज्य को पुरु पूर्ण की थी, असको पुरस्कार से असकी रोक्यों संस्था को है। कुरियुगोंट पाओं कोई भी जुल्ह क्राफी क्या कृतरह और दुर्वकरके अनुवित कार्योकी कर्क नहीं करण व्य । राजा कृतका, गान्यारी और विश्वती अन्यातका कुर्विक्षां के और कुछ सम्बद्धारने विक्रेष प्रसम् में: बिल चीनलेनके क्रार्थको उन्हें संयोग नहीं था। क्रार्थी औपलेन धी कृषिक्षीरको अञ्चलके सन्तरका है काली के, तकावि काराहको देशका रूको कामें सक के दुर्भावक के बाक काली थी। एक पुरिविष्टिको कुछाहके अनुसूर बर्तान बाते हेश ने पूर्व ची कारने इनके कमुद्रात ही चारते थे, तथारी उनका हाए प्रस्कृते कियुक्त ही सहस्र या।

## गान्धारीसहित भृतराष्ट्रकी वनमें जानेके लिये तैयारी और युधिष्ठिरका ज्ञोक

वैद्यानकार्यं कार्त है—करवेचन । एक वृतिहर और । इतराहरे से पारवरिक डेम क, असे एकके सेगोने कर्प मोई अच्छा आता नहीं देखा: परंतु भीपसेन नुसर्वतिके भारतहरूके अधिव स्थानेकारे काम किया करते थे। ये अपने हारा निवृक्त किये हर बुक्तोरों इनकी अब्हा भी पड़ करा दिया करते से । एक दिनकी बात है, बीमसेन अपनी बाकर माराष्ट्र और गान्यरीको सुनाते हुए अपने निजेके कीवारे हस प्रकार करोर क्यान कहते समें-'बाइके ! मेरी पुजारे परिवर्तर प्रमान सुरुष है। मैरे ही जा अंधे राजको समक पुरोको कालोकाका सरिति काला है। देखों, ये हैं की होनी भुशकात, को परिवकों भी मान करनेकारे और कही है। प्रचित्रं बीचने प्रकार कृतसूचे प्रतेषा संक्रम प्रक 🛊 🖰 भीमतेनकी यह काँटोके समान कराय केंद्र करनेवाली कर पुन्तार क्या कृत्यकृतो कहा केंद्र हुन्छ। क्रमके प्रत्य-केरको सम्बन्धे और प्रवत्न बर्गोको प्रान्तेकानी कृतिमती गानाची देवीने भी इन करोर करानेको सुख का। का सम्पत्तक को एक वृधिद्वेतके समापने को पेक्ट को करतेल हो पूर्व थे। यह दिन पीन्लेकोइ स्थानकर्य सन्तेले कार्यन होकर कुरराहको यहा दुःस हुन्छ; सित् पुनिवित्तको इस वासकी वारकारी न हो सनी ! अर्जुन, कुमी, क्लानिनी प्रैपरी और वर्गको पहलेकाले अकल-सर्वय —ये संकर्षण कृतराहोद मनोअपूरण ही कार्यन करते थे, कार्य कोई अरोक मान नहीं करते है।

स्वतार वृत्तान्ते अपने सुक्रोको कृत्वका अस्का पूर्ण संभाव किया और अधिनेने अस्तु सरका नमू कार्यने कहा—'वित्ते | आकर्तनीको कह कार्यन है है कि स्वताकत नाम किया प्रकार हुआ है। यह अस्म की है सपराकत पार है कुर्वेकनकी युद्धिने कृत्या पाठे थी, यह अपने साल-पाननीका का कहानेकला था; से भी में हाला पूर्ण है कि की को कौरवोके स्वतान्त आधिनका का दिया। सगवान् सीकृत्यको सर्वकरी वार्ते अन्तुनी कर है। पुत्रके सेको मेरी वृद्धि नारी गयी थी। सार स्वतान्त्रमें कार्यने हुस्तोने पुत्रे का किस्तानक कर सुक्रान्ते थी कि दुस्तुनी सुक्रों देश को किस्तानक कर सुक्रान्ते थी कि दुस्तुनीह कर्य दुर्वोकनको अस्ते कनिक्तानीक कर स्वतान कार्यने; सिद्ध नैने हेस्स नहीं किया। बिद्ध, सीना, होना, कृत्यकर्त और स्वतान्त्र कार्यने सी पुत्रो पर-प्रकार नेक साम्या है। स्वतान्त्र और प्रस्करीने भी कृत सम्बद्धका । परंतु की विस्तीकी करवार साल नहीं दिया। इस्सो पुत्रो नहा प्रकृत्यक

हे का है। ज्यान कवार पुरस्का है, स्वापि उनके कन-क्रकेची क्रमांत भी उन्हें लोटकर न दे सका। इस तथ केरी को वह हमारों पूले मेरे इसकों संख्या है, जो इस समय क्षरिके सामा कराक रही है। विकेश: आम पेत्र वर्गीक बार् केरी आहें सुरखे हैं। मैं अपने किने हुए परवादी सुदिहते रियो रियमपूर्वक कावर वाची चीत्रे और कारी आठवें समय केवल पूज निरानेकी इकाले आह खाल करता है, इस कानो केवल कामरी है कामी है। अन्य सब सोगोंको को करून है कि नै अतिहर युध क्षेत्रर करता है। क्रिकेट करने हैं। सेन से करा आक करते हैं। मैं from-words and grants then become अवस्थि हो करने राज्य कुछ हैं और कृतिक कुछन बाता है। प्रक्रमिन्दै प्राप्तारी देवीचा भी बढ़ी हरू है। इस दोनोंके सी का मारे को है, फिद्ध इनके रिक्ट पूर्व कुछ नहीं है। क्योंकि वे अमेप-वर्णके कानों वे और अले अनुसार ही अहींने पुर्वे अभ-नवन विका है।"

अपने सार्थने देख काकर करता रामा सुधिहरसे केले—'कुकेन्या । कुछत् कामान हे, मेरी पर बात कुछे। कुछो क्रय पारित्य क्षेत्रर की पढ़ों को सुकारे कि मिकाने हैं, बाई-बाई बार किने हैं और अरोबों बार स्वयु-कर्मका अनुसार किया है। हैफरीके साथ जानाबार कारे हुमाँ देवनेको होन हेलेवारे मेरे हुरवार्थी कु क्षांक-क्षांक अनुसार कुड़ने भारे गरे हैं। अब उनके रिजी कुछ करनेकी अवस्थानक नहीं विकासी देती; बनोकि में क्रमानिकोको मिलनेकाहे काम हवेकोको प्राप्त हुए हैं। सम th sail afte remerbalt merb fleche first geneuchter अनुसार करण है, अत: इसके दिन्ने तुन इमें अनुपति है। हुन्करी अनुस्ती किए जानेगर में बनमें बाल कार्रात और नहीं क्रमारीके काम भीर हुने क्रमात क्रमा बारण करके हुन्हें अवक्रीकोर केंद्र हुआ निवास कार्यन्त्र । कार्ये कन् पीका अवन अवन्य करके चूँगा उच्च अपनी पार्टिक साथ कठोर श्रमको कारिया। वेटा ! श्रूप परी असे स्थानको उत्तर करके करने करेने; क्लेकि हम हवा है और हवा अपरे क्यांके चीवर होनेकारे कारे-बूरे सभी क्यांकि कारपाती 前面

कृषितिनो स्थाः—ध्यारामः ! साथ पर्शः स्थान इस प्रसार दुःशः त्याः यो वे—न्यः सामकर अग इस राज्यसे पुत्ते सनिकः यो अस्ताता नहीं होती । युक्त कुर्वृत्तियो विकास है : मैं इतना

प्राच्यों और राज्यों अलक है कि अक्टब्ड को और मेरे भक्तनोच्ये पद पता है न राजा कि उत्तर प्रश्नाने चैतित और क्रमान करनेके कारण कारण कुर्तन होका पुर्वान्त करन कर ये है। श्रेष ! अपने अन्ते विकारेको विकास पूछ मूर्वको समान्य कोनोने है जार पाछ क; क्वेडिंट पहले हुई। मा निवास विकास कि मैं सुरहे हैं, अन अध्यक्त मा कुत्र कोच्ये के । इस शब्दरे, इन कोचोरे, कार प्रकारके कारोते अवन्य इस सुक-सारवर्धने मुझे क्या साथ इस्त, सर र्वेद की हो पात स्वापन आपनो हमने कुन्न आभी को । जान 🛊 मेरे विक, बाक और पान पुर है। जानते विकास होनार ¥1 वर्ष देने। वे पुत्रद् सक्ते स्रोक पुत्र है। इस्से क और विश्वीचों, जिसे आप प्रतित सम्बन्धे हो, राहा कर मैनिने अवस प्रानं इस प्रान्तवा प्राप्ता परिनो, में 🛊 मानो पान पार्टिय । निरामी । वै पहले है अल्पाकी अपने पर पूरा है अब एक अब में मूर्व र पाएके। रामा में नहीं, आने हैं। में से अन्तरी अवलंध असीर प्रानेताला होनवा है। फिर में क्या अनुवती है हरका है। क्षांत्रको अवस्थित साला इन्त्रोनीक कुल्ले संस्क्र की मोप नहीं है। यो पुरू हुआ है, बैदी है हेन्सूर की। बैदे कृतीयन आहे. आरथे कुछ थे, जाने प्रयास कुछ भी है। वेरे विकासी व्यक्तरी और कुमीनें बोर्ड अच्छा नहीं है। महि अस मुझे क्रोक्स पाने पार्थने तो मैं जनके क्रीपन्य कावर कर। महारा है--में को अवबंध वीहे-केहे कर हैन र सकते; म सुनेका का वध-कावले परिपूर्ण संस्कृतकीय पृथ्वीका क्रम भी कुने मतत नहीं रक समाता। महत्त्व । यह तक कुन आरम्भ ही है। मैं आयो परचीश महाव पहला प्राचीत करता है, आप प्रस्ता हो बहुने; हम सब होन आयो अभीत है। यह सैपालका यूहे अवस्था हेळाड अवहर मिला का से नेरी क्यरिका किया कु से आकर्त ।

शृंद्धपु जोरो—चेदा । तम नेदा पर वसकारे हैं हम का है तमा पीयनकी अस्तिम अस्तिकों सम्बद्धि काथ इस्ते कुराने दिने तीना भी है। मैं कैनेबलकाट कुक्तरे पता क कुता और दूसने भी जादा दिलेक्स नेदी संख-कुत्तक की। अस नेते दूसनकार भा जाते। जाद को जुड़ो कारों कारेकी अनुवास केते ही काहिते।

मृत्यां के का सुनार वर्षक पृथ्वित वर्ष के और इस केई पुरावत वेड सु को। इस अधिकारका एक पुराकृत स्वाप्त स्वाप और स्वाप्त कृषकार्थि का—'ये अपनोगीके इस सम मृतिहरको सम्बन्ध कास है। एक वे मेरी अधिक अवस्था और सारे केरेनेका

चीतान, इन कारजेंसे केव की कार का है और हैं। कुछा कार है।"

हरूप जाने करते ने बहुता प्राच्यांका स्वाप तेका



विश्वीवारी वर्षित को वर्ष । यह देशकार राज्य यूनिहिंगको वहा दुन्त हुआ । ये व्यापे लगे—'अंद्र ! विश्वयं द्वारों इतियोधे राज्या कार का, से ही राधा क्रम्यू अलग अन्योग-ने हेचार कीच्या स्थाना दिनों से रहे हैं। विश्वीन वहार कीच्यांच्या स्थानको प्रतिनाको पूर्ण वार कारत का, ते ही व्याप्याचे राज्य अग्राप्य क्ष्मारे यहे हैं। यूक्त पर्याप्य विवास है। येरी कृद्धि और विवासों की विवास है। विश्वये कारण से व्याप्या हुए राज्य कारों किसे अग्राप्य अग्राप्याचे को से हैं। यदि कार्य कुरायू और प्रश्नीको कारण से की कोचन नहीं करते से में से हम्मीको वर्षित अग्राप्य सर्वाप्य !

रिक्ये कोरतो समय मुद्रो सक्त परिवाध करना पहा है, उस्तः पै अपेत-सा हो गथा था। तुम्हरे हासके स्टब्टी मानो मुहत्तर अमृत-स्त विकृष विका है, इससे मुहते नवा बीचन-सा आ गया है।'

दे से ।' उन्हें इस अवस्थ बाद करते देश वहाँ उन्हेंश्या हुए स्थान केंद्रा अर्थन्यको सहस्था करने स्था । युद्धा हुई अर्थन करने करने करना सके हुए और पुर्वत देशका कुमित्र उन्हें करने स्था दिवस उन्हें अर्थन क्षेत्रका कुमित्र उन्हें करने स्था दिवस उन्हें इस राज्य क्षेत्रका कुमित्र उन्हें हैं जिस साह को अर्थन कुमित्र के किए क्षेत्र का प्रत्ये कुमित्र की किए वह साह कुमित्र के किए अर्थन कुमित्र का कुमित्र के कि अर्थन कुमित्र का अर्थन कुमित्र का कुमित्र का कुमित्र का कुमित्र का कुमित्र का कुमित्र कुमित्र का कुमित्र का कुमित्र का कुमित्र का कुमित्र कुमित्र का कुमित्र कुमित्र का कुमित्र कुमित्र का कुमित्र कुमि

# व्यासजीका युधिष्ठिरको समझराना और पृतराष्ट्रका उन्हें राजनीतिकी शिक्षा देना

ग्यारकी कार-जुलिश ! म्यारेसकी कृत्या से कुछ भार हो है, केरा ही मार्च हरतो हिन्दे कुछ विकार व



कती । अन्य में मुद्रे के शबे हैं । क्रिकेन्स: इनके सभी पूर नह के सुन्दें हैं । नेत ऐसा विकास है कि साथ ने इस बहुको अभिन्य कारणक वहाँ हम् क्ष्मेने । हीपानवाती गुन्हारी परण निवृत्ते हैं, इस्टीरने या बहुन् पूर-कार्यको मैस्पूर्वक कार्य कार्य का बहे हैं। इस स्थान में में कुने यहि हात्सक हैसा है। मेंद्र वक्क कार्य और कार्य कुमायुक्ते कार्य प्राप्त अनुसार में से, नहीं के बहुर्ग हात्सी कार्य पुरुषु होती। इस इन्हें मीला है, जिससे ने अवस्था प्रश्नविद्योश कार्यका अनुसारण कर करें। सामूर्ण क्ष्मितिका बीचनके अधिक वान्नो अस्ता है अस्तान होने सहते हैं।

अञ्चलको नक्षण्यी स्थानके हेना व्यक्तित स्थानकर्त ।

प्राण पुरिविद्यों वर्ष इस प्रवास कार विदान—'अन्तर्त ।

अन्य के इसमें प्रान्तित और आग के इससेगोंके गुरु हैं।

इस राज्य और कुराने कार आपार भी कार के हैं। के अन्य के हैं। के अन्य में दिला हैं। इसी अन्यर राज्य कृत्यक की में कुछ हैं (में इसे की विकास कार्यर राज्य कृत्यक के स्थानकर की ।' पुनिविद्यक देशा व्यक्तिय सहसोजनके अन्यराध्य क्षणा की ।' पुनिविद्यक देशा व्यक्तिय सहसोजनके अन्यराध्य के इस अन्यराध्य के इसी अन्यराध्य के इसी अन्यराध्य के इसी अन्यराध्य स्थानकर विद्या कराय के इसी अन्यराध्य स्थानकर विद्या कराय स्थानकर स्

व्यवस्थित एस अर्थ जो है कि पूर्य काल करने करती विशेषकी कृत है । हुएसे कि क्या कालों जो कुल्युको कुति सामा कारती हुस्तेचा और अपूर्ण देशकों काला करेगों को-मो का दिये, दूरवेचा अर्थ केन, असवा मानेन्सी करने दिया और क्या अध्यक्ति काला हुए किस है। अर्थ रोजकोत्तिक पूर्ण में पुरस्त कुल्यों क्या कालेका काल है, उस्त हुए अर्थ निवादी काले कार्यों अपूर्णी है है। हुएसे कार हुन्हें करने परिवादी की क्रोस कहें है।

भी स्थापन नार्षि स्थापने एक कुर्विद्वालके एको इस रिमा और 'स्कृत अन्तर' स्थापन का चुर्विद्वाले उन्तर्थे स्थाप प्रवेश्वाद का तो हो हे पहले उन्तरे उत्तरकात को पूर्व दिया कुर्व्याले स्थापनुर्वेश और-और स्थाप— 'रिमार्थे | पूर्वि स्थापने के स्थाप है है और अन्तरे के पूछ कुर्वेश्वा रिश्वाद दिया पहले के स्थाप है है और अन्तर्थ के पूछ कुर्वेश्वा रिश्वाद दिया पहले कहा, तिर्देश है के का है स्थापन प्रवाद हम स्थाप स्थापने पहलोंने स्थापन हम्बद्धार अन्तर्थ काला है सि स्थापन सेम्पन कह स्थापने । सिर अन्तर्थने स्थापन '

बर्गमा, राम पुनिकेश्वी अनुन्ती कार कारह गान्यारीचे राज्य सर्पर गार्क्स काले अवले । अवले प्रात्नेको प्रात्नेक क्षीत हो नहीं भी। ये नहीं व्यक्तियोंने कहा करते से 1 हर क्षा अने के के कि विद्युत स्थाप और कृष्णार्थ के के व महत्त्वी प्रोक्ता उन्हेंदे पृत्योग्रहत्त्वो स्थापित विका पूर्व ब्री । विर तेषु प्राकृत्वेको अस-यन असीको सुर सन्दे स्वरं ची चीवल विकात प्रती प्रचल प्रतीपनी चान्तरिवेदी ची कुमी कर पुरस्कारों हुए पूर्वन होना कर बात विकात करके कोरान करनेते पहुल हिए। अवदे क्या पान्योंने के केल दिन्य और दिन पर रोग क्लाकी रोक्नो स्थापित हुए। सा राज्य कुर्वानका कुर्वानका म्काराचे मेरे केल कुल्याने प्रमादी पीठवर प्राप्त केलो हर का—'कुरुका । इस तरह ब्यूनेको करने हुन सह मानेको हो अपने प्रपूरण और पक्षे एकामानीके करन प्रपूर्ण संवातन करन । राज्यकी रहा बार्गते हैं हो समाने हैं--हार बारको तुम प्रत्मे करने हो, प्रवादि बुक्ते भी पुन्ने । सह निवारों को को विद्वारोक्त कहा किया करे । ये यो ५५० करें, उसे व्यानपूर्वक सुन्ते और विना विनाते आहा प्राप्त करे। समेरे बठकर का निकासिक क्योंकित सम्बन्ध करे



और स्थान्त्रकारों साथ असे असे खोल पूर्व । अस्त है। यसेको इससे हुई अन्तर काल समार प्रत्य माहिते। सम्बर्धिक होनेना के सर्वक कुछते हैंकाई कर कारोंने : केरे साथीं केरोको कार्यो स्थात है, सारी प्रकार कुर सम्पूर्ण प्रतिपत्तिको अन्तरे अर्थान प्रकृत्य प्रस्तुते एक स्वर्थे, देख करनेते हैं स्थित करवी चौति चरिनानें कुछते हैं।ये दिलात होनी । से नांधे-धूरे हुए और विकास-सामने प्राप करोगारे हो, यो विक-विकासीके सरको कार देखते आ के हो तथा को स्थान-बीतको सुद्ध, संबंधी, प्रकार्य क्रमें कर पर प्राप्त हो, का परियोको एक स्ट्राई क्रमोंने निकृत करता। किनकी स्वातस्थर परीक्षा से सी करी हो, को अपने हो सम्बद्ध औरत निकास ब्यानेकारे हो तुका किये म्बु प्राप्यको न हो, ऐसे अनेको कार्यकोतो सेकहर उनके इन प्रमुखेक पुर भेद तेने सूच । हुन्हरे करावी पहला पूर्व प्राप्त कर व्यक्ति—अस्ते कर्ते ओस्त्री दीवरे और राज्य करवाना पूरा भववूत हो । बोक्टी एक ओर केक्टी-केक्ट व्यक्तिकार्षे हो । काल्के सभी क्रावाने विद्याल हो उन्हा उन्हार चौची-चारेका पूर्व प्रथम थे । इसेका विकास केवा स्थापन क्षेत्र वादिने तथा वार्ते ओस्तो अन्त्री रक्षांके दिने वात (न्यानि अवस्य क्षेत्र) राजे याने व्यक्ति । विरामनुष्येखा गुला और चीर- सच्छी राष्ट्र जाहुन हो, रुपीरी बाग रेज चाहिले । नकर और निक्रत करने, जान कारने, सम्बन्ध सोने क्रम अवस्था बैडांग्डे समय तात प्राप्तकारीके साथ अपने १३६ को कह परनोदे हुए रोज्याची थुलक को सामा करन पारिने ।

'विविद्या । तुम क्यू प्रकारोची सभी वसना, यो विकारों अर्थान, विश्वपतील, कुर्राट, वर्ग और अर्थने कुन्नार क्या सरक जन्मनको हो; उन्होंके क्षत हुन गृह विकास परान्त्रं करना। विद्या स्थित स्थेनोको साथ केवर केवर मध्यमा गर्नी काली काहिये । सन्दर्भ व्यक्तिको अस्तव प्रत्येक् चे-एकमो विकार कामोर पहले पाने ओस्ट्रो कुर्वाहर केर क्रमोचे क सुते नैक्समें हे कावर उनके साथ प्रकृत करना है कियाँ अधिक पास-पास पा प्राप्त-प्रत्याह न हो, ऐसे संन्याने भी प्रचला को का सकती है, जिलू स्त्रीके स्टब्स से इस क्षानोंने किसी तथा कुछ साम्बद नहीं कुन्सी मार्किने। संबद पत्ती, महलांके रीते कालेकले प्राची, वर्ण क्या कर महान-पूर समेची पराम-पूर्ण वह धारे हेद व्यक्ति; क्योंकि पूर क्यानके स्थापित प्रकार है कारेने क्यानोको for the bit were were than \$1,000 fact was रिकार को किया का सरक-नेता के विकास है। मर्गाल पुरा करेते के केंद्र केंद्र हैं, उनके पुर अपने मनिवनकारे राज्य सब कालो कर । एक और प्राप्ते क्रोनारे रोपोज प्रस्ति कर हको औ शहर है से अहते. हरा पासको सामानेको पूरी चेद्वा १९३० । नकर पारनेके स्थापन् हर का देते हैं पुरुषेक्षे निपुक्त करना, में निप्तानका, संकोधी और दिल्ली हो कक पुरुष्टिक हुन्य क्रोक्ट क्रके कार्योग्र हो। १६४६ । इन्हें देख कियान करान आहेते, विकास क्षारे नियुक्त किये हुए न्यानानिकारी पूछन राज्यानिकीक क्षण्यानेको पार्तपाति सम्बद्धान को प्रमाधित हो, अने ही बन्ति कुछ है। मिलावी सुरुतेले निका मेनेकी अस्ता हो, जो पराची विक्रोंक सम्बन्ध करों हो, विक्रों करोर कर केसी अपनि हो, जो साम फैसाल केरिकाने, स्कूताबी, रहेजी, griber on private, grouped and arrivale, सभावक और विवासकारेको यह कारेकारे और मन्तिक केले प्रकार हो, उन महत्त्वेची हेरू-कारक कान रहते हर अधिकान्द्र अध्या अन्यत्न केन प्राप्ति । आव-पास कावार (मिल-सिक्यमे निवृत्त होनेचे पाद) पहले एवं का सोगोरो निकास साहिते. के इन्हरे दिनो सर्व-कर्वाद कारण निवृद्ध हो; इसके बाद आधूरण और गोकरण बाद देश भारते । सन्तार, सैनिकोचा इर्ग और समाप् कार्य हर क्लो जिल्ला पाछिते। क्लो और जास्तोने जिल्लेका काल

काली, व्यक्ति । पुरत्येत, प्रीतवाल, विकास, विकासका | विकास प्रतिवादक विकास काले पार होता प्राह्मि । उपनी राज और केन्द्राचे प्रथम पूर्व सर्व कुल-विराद्धाः प्रथमधे अवस्थानाः निरोक्तम करक जीवा है। एकं नंबन्धक जनुसार करते हुए हैं। इन कर्मन कानेवा का करना। नामके विपरेत आवाद जनान्यत न करना। पूर्ण कान देशका किर विश्वीको र्वेक्टी देख। मो अपने सामानों करे हो, से विक्री कार्या कारण निर्म हो थे १ हो, रुखे क्रम बरावर हेते रहत व्यक्ति। नेकारी साथो काल कार्य से कडारित. gente, fin me uneberen, fifth, gonell ofte राजिनक हो। इसके क्रमके और श्रमेकारे क्रीनर की हरूक कर को से हुई उनके करन-बेन्सक अन्य करन च्योने । जन्मे और प्रदुतीयो प्रमानेशेयर राज्य पृष्टि रहाती व्यक्ति । अन्यने देशको सामा क्षेत्रेच्यकि पुरुषोत्रीको भी स्टीम अन्ति meilt fiche mare aft fibbt if, wil web der नार्विका केन सरका पनि । परिवर पनाने जीवा है कि का पुरवर्ग पहुनोंने पुर बार्गका प्रका करत है। 'बारा । कुर अन्ते प्रकृतिके, प्रकृतिन एकालेके स्वर

नकार पूर्णिक समुख्यान हुई रखे। यह उपलब्ध प्रकारकार, कः प्रकारके स्वयंक्षाने, अर्थने विक एक प्रमुक्ते विक—क साथ प्रकार प्रकारी कृषे तथ प्रत्यार्थ रक्ती करेते। क्यी, हेव, वर्ग और रेस-क्यीक मानोवा त्यार क्या है: उत्त: उनकी द्वारी सरकार केव पाईने । उन्हेंस साथ असानी पहल प्रसारोधि से गरंप किया है। सम्बोधे अभीन खनेवाले प्रति आहि पाट पुरा और क्षीत क्षा गुरू -- प्रत्य कालो क्षीत आक्षाती 'मृत्यूर' ना दिया है। पंचाची प्राची कारवारी होती सामानक है: क्वेंद्रिय कार-एक्ट्रिय के अव्योग और अवेद स्वीद अभीन है। क्याची पाहिने कि पर अस्ती पृद्धि, तुम तक विकास प्रमेश प्राप्त की और कर करना का सरकार और कारत का निर्मात कर को, का समय सहके साथ स्वार्त केक्टर को चीठनेका क्योग को; सिंह निवा समय क्रयु-पक्ष जनर और अन्य हो पक्ष कृतित हो, जा समय समुध्येके साथ र्वित कर से । क्रमानो हुनेक हुन्वेक नकुन् संबद्ध रक्षम मार्थिने : मान मह पहला चीवा ही महाई महनेने समर्थ न हो मने से का कुछ से जाना प्रतिक स्थान है, आहा क्षांची विका कर है। स्तुको का राजकारी करीर, बोबा-पर खेना और समिन्द पाताने पाता-नीतार आहे बाहरे क्या कर्मन दिल केवल आहे. स्थाप संदित करें: बिंग्ड क्या-पश्चित मेरो का संविध प्रधान किया कर से संविध्यान समा संस्थापत है। पहाचन का बाधी को है जावन अधी । एंकाबो कारो विपरित बहाई—काबाई पूर्वर, सोना-बाँई

आहे. महाहे क्या करवार निर्मानो हेनार संबंध करने माहित । उन्हें का हो। और संस्थाने उन्हें केरियोची वह करवेगा की अवस अविक्री राजके काकुकाओं है साने कई कतानके जेरन रक्षेत्री केंद्र कार्य कार्य, इस्ते विन्तीत वर्तान करना सरका नहीं है। भी। मोर्स अपने अन चान के जीना जान और प्रतासके प्राप्त करानी करते कुलेका उन्हेल करण व्यक्ति। प्रकारतेके बीवर के बैन-बॉब पर्या है, जनम कुल्ली १६वी वर्तने । सकी कृदि व्यक्तिको राज्यो अध्य है है। यह अस्ते प्रतीप असे पुर सामन कामक कर २ वर्ग । यो सन्ती पृत्योगर विका कर कहा है, या में काले सरवी हैंसा र परे। असे पुरुवेंदे नेल-केल बहुते, हुईको के करते वर्षे कर है। मानार् पुरस्के पुरेशके रिमानके केल कर्व की कार्व पार्विते। पुनिर्वितः। पूर्वे केन्स्वी-स्त्रे कृषिः (न्हासः) पार भागन रेना पाहिने। यह विको हुनेत प्रधान प्रत्यान् क्या अव्यक्त वरे से अपने प्रकृत प्रदेश व देशकर मिलकेके साथ असके करूनों कार और कोच, सरकारे महत्त्व, स्थानीक तथा अन्य तिन पहले सर्वत प्रत्ये ताल अवदि ज्ञानोके प्राप्त प्रतिकृतिको स्वैतानको नेपा परे । परि विकास की प्रकार से सीम माने सके हो बहुएंड विकास बड़े र प्रक स्वतंत्रे पृथ्यु भी हो साम हो भीत पुरस्कारे पुरीक हो करते हैं।

'affeite i geb uffe aufe flemen ift gife rerit माहिते । यह प्रमान हो से सानंद्र क्रमा संविध क्रमान और क्रांत है से उसके तरब पुरू केंद्रक—के स्वीर और विकास है स्थान है। इस्ते उच्चेन्से क्या कार है का इस्ते उत्तर of the Brains May seem-record and **प्रथ** विकार करने कहते कुद या तेल करना क्रीक है। जी प्रमु ज्यानी है और साथे केरिक क्र-क्र पूर्व तेवा है के कान्य स्थान क्रमा न कर्तन हो। यहने क्रमोना कृतन कोई काम क्षेत्रे । अकाम करन से वर्ग और है का प्रा विराशिक अन्यरकारों के अपार्थन अपोड़ सेटिया दियांना अपेर कर्राष्ट्र हो । यदि कहते अच्या यक-मांत होनेकी सम्बद्धान हे से कारेरे कामार किसी हैंस क्याची करन होने कहिने और वेक करनी पाकिने कि प्रमुखेंने परवार पूट हो पान । विश्वका है।"

का कर्त क्रम करेंद्रे । इतुन्त काई क्रमेको एकको अपनी और किन्सुवेदी विकित सर्वित्वीत परवेद्वीत किसर कर केना जीका है। प्रमुखी सरोक्षा महत्त्व-पृत्ति, प्रयु-पृत्तिक और रूप-प्रमाने सह-यहा रामा है उत्तर श्राह्मम्य सर क्यात है। यदि प्रत्ये किसीन विश्वति हो हो के अवस्थानक from our by with a work and our brown. cone, feren, account, grant aft febreig क्षेत्र करण व्यक्ति । इस्ते विकास और क्षात्र समय नकार है। के कार्यक्ष अनुस्था सेवेज सैनिकार एक क्योंकि पूर्वें पूर एक वर्षों केन सब तेवर विकर्ष निर्म पान करे। वर्ष अपनेने सरावर्गत प हो हो पहाड़े अनुसार केंग्स प होनेना की सहार कार्य करे। इसके क्रम पुरे करें केवल क्रम, का अध्य श्राम्य का the manufic work has it from from his पुरुषके हम क्यूनी क्या नाजी केनानी सौध-स्थातर क्षके अने व प्रयुक्त समित्रत स्रोहते पुद्ध असम करे। word with its us withing solids are shown नेवा रहे और कार्ने परमान् गुरुकेको नहीं हो । असे जनवानो अपी एवं प्रकार सन् आहे उपलेट का सीर क पुत्रके देशों जारेश करें। को एक इस कर करोबा निका करते इस्ते अपूर्ण क्रेस-बॉक सामान और प्रकार क्षेत्रीय पाल करत है, या पाली पहल क्रमेन्ट्रेक्सो क्या है। केंद्र 1 क्री प्रकार क्रूडे के प्रकार और प्रकारित प्राप्त करेंग्रे तिले एक त्रकारित हैन-सामाने पंत्रम पूजा करोते। बीजारी, सर्वात र्वकृष्ण क्या विकृति पूर्व सन्त्रे करवेका इन्हेल कर दिया है। केंच भी पुत्रकों अन्य केन हैं, इस्तरियों की की कुछ बसलाय धारतम्ब स्थान है। या सर सामेश क्योंकि प्रतान करक । इसमें कुछ प्रमाणे क्षेत्र कर्तने और क्षानी भी सुन क्रमोने। एक एक एका अवस्थित-क्रोक अन्यान को राज्य कांत्रीय प्रश्नाम करनाः क्षेत्रीया राज्य हो पात

#### मृतराष्ट्रका प्रजावर्गसे वन जानेकी अनुपति लेते हुए क्षमा माँगना और युधिष्ठिरको उनके हाथी सौपना

ही करोगा। अधी कुछ और प्रमोध सैनिये। चीमार्थ कर्म । क्रमोध देख ? मेरे दिवसा विचार करके इस समय आप भी

पुष्टिको सह—स्वरूपक । अन्य केल काले हैं, केल | अन्यदे साथ का है है। अब कुरत और यह काल है, से पुत्रे रिकार, श्रीकृष्ण क्रम्या करे गये और विदुर तथा स्थान की । कुछ उन्हेंस क्षेत्र हैं। है, अधिक अनुसार में इस काद क्षतिया।

सर्वकार्य हेल कार्नेन इस्तान्ते कार—'सेन ! तम कृते हैं, जुड़े केलने का जीवन कार्य है। उस से मैं करेबी अनुसी कार्य है। या कार्य से प्रान्तिक कार्य को नो । अहें का मैं असरकर की से कांग्यका कार्य अस्ता पर करेबी आंध है है और कुर्विकार के अनुसी जिस नहीं। उस उस किए हैं। की कुर्विकार को अनुसी जिस नहीं। उस उस किए हैं। कार्य कार्य कोने ?'

पृथ्याने स्था—सम्बर्ध । तम पर पारोने अधिक वितरण पूर्व है। में पास्त है असको सुम्बर अस्ते के हुए पुरुष्ठि पोर्टको हुक कर पार पर है।

में काम प्राप्त नांक मुख्या का अस विकार स्थापन नेता । पुनिन्दीको प्रकार स्थापने स्थापन प्रक कार्य पुर है। कि (काम सिंह करा) prosperioris tearre, astro, dere ale un sul प्रतीत हुए। सरका, पाका प्राच्या सन्दर्भ बहर रिको और पार्ट पर उस्त अन्यती अवस्थे स्थित वैकास केरे—'राज्ये । तार और चीना विकास के पा राज्य पूर्व अन्ते है। योग्यों स्था अन्ते परान परिद्र के unfer fi von be mer delt mit gesegeleb find महत्त्व को है। इह स्टब्ट में आयोगी कुछ निवेद पारक पाइता है। उसन को दिना निको प्रतिका कार्रको कृत्य करें : की पान्सकेंद्र साथ करने वालेखा निवास विका है। इसके दिनों पहले प्राप्त और इस्टोन्स्ट प्राप्त पुरिवेद्द्राच्या को अनुस्थित हैं। का संभावित की को पाने जांको उद्धा है, इसमें कुछ अनक विकार र कों। इस्ते एक अन्तरेनोक के का रेल-क्रका सकते भाग का पा है, ऐसा प्रान्य नेरे सम्बंधे इस्ते हेक्के क्रमानेक क्रम स्कृति असमा करत है है । उस कुले पुत्रे और चन्यांच्ये पह क्या दिन है, इस स्थान करनेंद्र काल भी इन केने अनिक क्रांत के को है। चुनिहित्ये राजने पुत्रे वक्त कुल नित्य है। ये सन्त्रका है हुनेंक्से एकरे थे भने इस्त एक की गर्डर इस र एक से मैं क्याबा अंचा है, कृतरे कुल्पेने कुल्पा अधिकार क्या किया के प्रतार भी भी के को को है (उस्ता क्रोक कर्म पूर पूर्व होता) । ऐसी कालों करने करने दिस्ता की करकार्य और गत अवन हो सबसा है ? इस्तिये जब सारकेन पूर्व सामेची सक्त है।"

प्रत्याची थे भारे पुरस्त वर्ष उत्तरित पूर् कुरुव्यानस्थानके सभी बहुन्योची अस्तिने अध्योची वितरे भोर् अस्ति है।

कर का करी और ने कुट-कुरबर देने सने। उन्हें क्रोबका हेका पुरु में उस है। र देश क्रम्य मिर महर्थ (ले---'न्याची । प्राप्तन प्रत्यपुरे इस पृष्टीका प्रत्यन्त् वराम क्रिया an a said any any advanta and applications from the foundation स्विकालों कार्ये । कहेंने लिस प्रकार इस राज्यती युव की, का सम्पत्ते होते हैं का नहीं है। सहन्तर, की भाई प्रस्कृते प्रत्या निविच्या पारण किया था, इसे की आवारीन पानते हैं। अपने प्रयानकारको सुरक्षेत्र प्रतान हो ये आयानेनीक प्राथतिन हो को थे। पासूके पार की सामानेकोई पारी या पूरी सेसी पर राजी, रोक्ट को है। जिल्ला प्रकार पहली को अन्तरक हो को हें, को सामान्य कुछ चौरिकेस ! कुरोक्को पर अक्टबाट क्या सर्वेत किया था, जा क्या क्यों भी अल्लोनीक कुछ भूते विराद्धा था (वेजार पर्याप्तीके प्राप्त सम्पान विका ur) i fing un miligis arrow afre enfourait une th बिक्ते हुए अन्यानके बारण सर्वारण राजाओंका प्रकृत सेवत है पर है। का अवसरत पूर्ण पार प कुर के कुछ हुआ है, को अन्तर्भेत पुर करी, इस सार्थ्य मेंने में क्रम प्रोक्रम अर्थन करता है। यूने वृद्ध, प्रची और अर्थन अर्थन कारकोद्धा चंद्राच चन्द्राच्या क्षण करें। यह बेकारी सर्वाकरी क्यानी भी भी पान सामानेको हान-सामा सामी है । इस केनो पुरा है और अपने पुजेंके को कारेके कारण दुःसाने हो। हुए है—ऐसर प्रान्तान असन हमें बुम्बदान केंद्र पूर परनी पानेची नाम है। सामानेनीका प्रान्ताम है। इस केने शामकी प्रान्ती ी। ये कुरमुक्तपूर्वन कुरमेनका सुविक्तिः अन्तरोनेकी राज्य है ताने और हो—ताने कारणे तार का तोन हमार कुमाई रते । स्वेत्वावारेक काल पहल केवले क्या वर्ग और अवित पाके भीनांत कही कर यह किया करों है, हैने तक पुरिवोद्ध कर्या कंकाने की का सम्बद्ध दिए की अस्तरकेतीओ इनका कामान रक्तम व्यक्तिन समूची चीव-पान्त्रोह सामी क्ताकर व्यक्ति नहीं ने स्थान हेकाई कुंब्बीत शानकेनीओ क्यान्य पारम करेंने । मैं इन्हें अवेदनके करने सामानेनोंके इस्क क्षेत्रक है जब अवलेक्को हम्बेर इसमें हे पूर है। अल्लोन कारण पुरानक है, तरह में सामग्रे क्रम मोहकर प्रमान करवा है। की पुर्वको पूर्वित प्रकृत की। वे स्थेनी और संवक्तकरी थे, अंके जन्मचंदि किये में और प्रस्तार केने आयो प्रस्तार चेक क्षेत्रे हैं।

कृतकृति इस प्रकार बढ़नेवर नगर और प्रमाधे क्रानेकारे जन खेन देखेरे आहि बढ़के हुए एक-कुलेका कुँ देखने करे, विवर्धने बोर्ड जार वहीं किया।

## साम्ब नामक ब्राह्मणका प्रजाकी ओरसे धृतराष्ट्रको उत्तर देना

कार्याची को उनका को सुर्वात हुए रूप रोग हुन्हों alt gelit aren-men få ment tit mit i aren. depair for each more for alle more from the हैत है, क्या है हैव कुम्मानीयारी भूगोंको हुन। वे क्रोक्ट केला के करें और अन्ये की क्राओं करवाने parent grant unn und erbeit & pie für कीं-और कार्य क्रिकेश्वरित हेक्को का कार्य का साले शासने का कार्य जानी-जानी का कार्य की। कारण, स्वास हेना हुने कारण काम का हैना का कर प्राप्तकर रका। वे प्रश्नान्तेका सक्तारे, वर्का कार्यक और अर्थ-अर्थ निवन है। अरब कर का संन्य। & grant feger, freie gegt überburb allt gilgere. है। क्योंने श्रापन महत्त्वको अवह हो और करे वानको कार करे हुए हर उत्तर कहन अल्प किया—'कर्ट् मार्ट करोबंद हो एक सोनोंने सरका विकार उसके करोबंद सार पार पहला एक है, अभीकों में से अपने पारे अपने केवारी विकेश करीना । स्थान पुरानेकी कुना करें । नक्तना ै कार को कुछ बढ़ते हैं, यह तक और है जाने सरातान that the self the Resting part after mort weren unter केंद्र कारिय हो कुछ है। इस अवसंख्ये क्या कोई की ऐस भक्त गाँ हुआ, के प्रयास पाल करने तरन करना हैन र पर हो । अस्तरेप विशे और भी पहिन्न समय प्रमान कारत करते हैं। एक इचेंकाने भी इचने तथा कोई अनुनिव कर्तात क्षेत्री किया है। एस प्रयोग स्त्रूपी करानी कराने बैसी सामा के हैं, बेसा है परिचले; क्लेकि से इन सर होतींके कर पूर है। अपने निवह सरोवर हर पह हिलेक पूजा और क्षेत्रों को चौरे। बाल्के प्रेस्क्री पुरुषेत्री पाद हो। पुरु नहीं समझै । नहाराय प्राप्त, जाने विकास और चीनकृष कुर्राक्ष अर्थ्य कि निर्माणकेंग्रे fire ment per gedem men firm i um spreit.

र्वजन्मार्थः व्यापे हैं—कारोवार । पुरस्कारी | कुछ और पंतान साहित क्या क्या कारोव वर्णका अनुसारक पानों हैं। पूरणे फोर्ड डोके-से-कोटा क्षेत्र की नहीं विकास हेता । इसके प्रमाने सारके हात प्रमीत होतार इस का पूर्वा है को था थे है। सरका पा सामें पूर्ण कोई कुल-वे-कुल सरका के हको देवनेने की साम । कारक दूरों से सार-कार्यस रहर दूश है और कारे दिवानों को जानो पूर्वीकारे अन्तकारी पार्च की है, इतके प्रकार में में स्थाने पुर निर्मा करन कहा है। क्षेत्रोंद्र ग्रेर करेरे न पूर्वकाता प्रच है, न सरका: कर्न और क्रमुनिने की पूछा नहीं किया है। इसकी सम्बाधी के पह bour freit er, find und um uf went in : कुरुको देवके केन्द्र स्थानक है। सा पूर्ण समय त्वांकिनो केनदे एकोल हो थे: वित् केन, हेनावर्ष, कार्र और क्रमानी साथ चील-नार्थ ज्ञान बेट्सानेने क्या प्राथमी, प्राथम, प्रोथमेन, अर्थन, प्राप्त और स्थित and want-main shift made field if were duri कर करता । हेका विकास संदार देवी प्रतिकोत किया पाहरी गाउँ it was up on to posite out and up क्वीका, अल, अवके केन्द्र, पहलीर कर्न तक प्रश्नुनी की कारण नहीं है। इस कुनन को इसको एक बोलो कर उसके न्ते, बढ़ का देवती है काहा काहेने । इस विकासे पुरस् कोई पन पह सबसा है। साथ इस समूर्ग समाहे सामी E. maffeit per ausmit werd der alle medient werd fi क्या साथ और अस्को पुर्णात साथ असमी प्राणित सामाप्राणी उत्तर करते हैं। परमान्य करे, श्रीकार पूर्वेचन प्रमुखेर्फ makeled and represents thereby me it's अब भी कार्रे केवी विक्ती और पूरण प्रमा करें। अस कार्य कार्यको सीव-सीव व्यक्ते हैं, प्रातीओ साथ साविके श्राक्षणे तर व्यक्ते। क्षाप्तरूप क्षा प्रतिकृत व्यक्ति प्रकाशिक स्थाप किये हुए स्थापोर्क स्थाप (प्राप्ती हैने हुए प्राप) क्या परिवर्ड (कुरकारने दिने हुए प्राप) ची हेक्-देशने कुछा एक कब्दुने किए वस पूर कब्दने कहा। यह कमें हैं है। वे कैनंतर्दे, बोक्त कार्यवस्तों और af & sell mur annie ge gellent ift geglieber Belden fit prie mit en femili f, prer ger me क्याबर् पारत किया है। उन्होंने स्थीयन की हमाते कुम्हें नहीं 🔞 विकास है। वे प्रमुखीयर की वाद करनेवारे और परत को है। इसकेन निरादे कथा उत्तर निराद करों से और । चीम है। पुद्धितर होनेके साम है से समझे राज्य समझे इनके कारतें को सुरक्षों कोवर मार्थात करते थे, जा कर - देवलेकते हैं और इसकेकेक कह पुरस्त करन करते हैं : अकरों किये को है। वही-वही पहिल्ल प्रथम कारेकारे में बोधे वहां यह प्रशासि, व्याप्त का पुरस्तरियोधे क्यांका क्षम कृतिकृत से अन्येक्साओं पुरस्तात कर्ती | दिव-सक्यां तमे क्रांकारे हैं। कुटी, सैनई, स्कृति और सुष्या भी वाकी प्रवादे प्रतिकृत कावार की करेंगी। आपका प्रवादे सात को बेह का, उसे पुनिश्चित और भी कहा दिया है। उत्तर और प्राप्तक स्वेत कावी उत्तरी अबोलना नहीं कर सकते। इस्तीनो प्रकारण ! जार पुनिश्चितक विकासी विकास से होता क्षित्रों और उत्तरी वार्तिक वार्तिक अञ्चादती तन वार्ति। आपको इत्तरक प्रवादात नकावर है।" सम्बद्धे क्ष्मीनृतृत्व और मुख्युत्व वक्षम सुनवर समझ त्रवा जर्षे सम्बुत्वत् के रूपी तथा समये क्ष्मी वातवार अनुवेदन विक्षा । वृत्ताकृते भी वातवार सम्बद्धे वचरोंकी सर्वाका की और तथा कोनोते सम्बद्धित क्षेत्रत वरि-वरि व्यक्ती विद्या कर विचा । वस्तावर तथा केश्वर अर व्यक्ति-वेदवार क्रांचार विज्या और नामाधिके साथ के वितर समये व्यक्ति को को ।

#### भूतराष्ट्रका युधिष्ठिरसे घन लेकर उससे भीक आदिका शाद करना

रैतन्त्रकारी आहे हैं—राजन् ( कारणार, एक क्षेत्रकार कार स्मेरा हुआ तो अन्तिकारकार एक बृद्धकुरे निवृत्तीको पुषिद्वितके जाराने केळा। एकाव्यी आहाने व्यानेकको विदृत्ती पुषिद्वितके पास कावार केले—'एकर् ( व्यानक



कृत्यकृ बन्नासकी दीवा से चुके हैं, जानकी कार्तिकी पृत्तिकारों से कार्या कार्य करेंगे। इस समय कृतसे कृत्य बन प्रेटन कार्य हैं। कार्या कियार है कि कार्या कीए, होण, सोनाक, बाहीक और जाने चुनें तक परे कृद सुबनेका कार्य करें और कार्य मिला कन हैं। कृत्यों कार्यों के से क कार्यकार की कार्य करना कार्य हैं। कित्रवीकों का कार्य सुनाहर मुनिहिर और अर्थन कार्य करना हुए और कार्यों

प्रस्कृत करने सने । जांचु भीमसेनके इत्याने असिंद हरोग क्षक हुआ था। अने कुर्वेकनके किने हुए आसलातेका कृतन हो उसका । उसक: उन्होंने किनुस्तीकी बात नहीं सीधार करें। अर्थन करका मानेश्वल कह गये, इस्तिमें से कुछ निर्मात क्रेकर केले-- 'मैक ! एका क्ष्मण इसरे कर और क्य पूर्व है ज्या हुए सबन बनवारको दिया है पूर्व है। बालेके पहले में जीन आहे हाना मुख्या आह पर रेज पाहरे है सह पूर्ण सामग्रे कार्यन देश प्राप्तिने । सीम्यनावी का है कि एक क्षांत्र आप इसलेको बनको क्रकत करते हैं। सारकार अन्य-केर हो देशिने । यहते हानतेन विको करन करो है, जान में है हजो सामरे इस फैलते है। के उन्तर्भ कुरकारके एक थे, वे अस उनने काय पालों है। तर: तरप उन्हें पन देनेदे दिला और बोई विचार कारों न रकते । अन्तरी कावक तुक्का देनेले सक्का इसारे सिने और कोई कांकवी कर न होती। उने का द देनेसे हमें बहुद् अवसंदर कर्ष होता योगा। ताप रामा पुरिद्धियो वर्ताको विका बाल करें। क्वोबि बाह बाई ईवरके स्थान

अर्थुनारी जा बात सुनवार वर्गगायने उनकी गृहि-मृहि अर्थात वर्ष । यह चीन्योको कोध्यो वरकार काइ—'अर्थुन ! इसकोग अर्थ ही जातार चीना, कर्म सोन्यात, शृहितका, कर्मी व्यक्तिया, जातार कोच्याको स्था अर्थ सम्बद्धाः इन्ते-सम्बद्धान्येका अर्थ्य करेते । इसकी पाना कुन्ती कर्मको विवाहत कर रोगी । उन्ता वृत्तरकुर्यो इसके विके वर देनेकी अर्थानकार नहीं है । ये उन्तुक्ष च्यानुपारकेका अर्थ्य न करें, व्यक्ति चेस विवाह है । क्या पूर्ण कर्मा कराही पूर्ण गर्थी ? ये है इसके कुन्तमे अर्थ सम्बद्धाः है । कन्त्री वृद्धि इसकी स्केटी है कि कम्बन-बूल अरम्भ करावतः ये निद्धानीसे बार-बार पूछो से कि इस क्याने इसके केने विकास सीवा है ?' बीजको ऐसी करों करते देश पुन्तिकर राज पुनिवीको इंटिकर बाक—'कृप को ।'

अपूर्णने कहा—जैना । आज मेरे जो, और पुरावर है, इस्तीओ में सामने पुरा विश्वन प्रात्नका नाइन नहीं जर इस्तान । इस्ता ही निजेदन प्रमत्ता है कि राजनि कुम्पद इस्तो इस्त पूर्वना सम्बाद प्रात्नेक जेम्ब है। सन् इन्यायकाने नेह पुराव इस्तोचे सामराजीका उपरांत नहीं प्रस्तो । ने प्राप्ते अस्तारोको है नाइ राजने हैं।

महत्ता अर्थनो ये नका कुम्बर वर्गाम पुरिक्षेत्रके विद्रालीको स्थान-'सरसावे ! अस्य मेरी ओरले राजा क्राव्यक्ते पावन क्या देनिये कि वे अन्ते पुर्वेका उद्ध कानेके रियो मिलन भी बन रेमा पार्ट, में के को रेमा है। का कर में काने अन्यारमेते हैंगा : प्रार्थ्य सैन्ये चीन्योगको क्ष्म होनेको आवस्यका भी है । विकृतिके ऐसा स्थापन क्षांत्रको अनुनदी यही स्त्रोत हो। वह सीमोद पुरा र्मकृतिक क्रेक्स अर्थनको और क्यानिकोले देवले राजे । म्य देश राजा गुनिहित पुनः विद्यानीते सहने सने—'सान पना करराष्ट्री का भी अधिकेत कि भीकोच्या करवाली क्षेत्रोंक क्रिके प्रचल कहा है। इस्तीओं में प्रचली की पूर्व बाओं का बारते हैं. अलब्द से बानका म बारें । मेरे और अम्बेन्डे कारते विकास सम्बद्धि है, सर्वेद कारिया बहारक ही है। मे अवनी प्रश्नाचे अनुसार को पार्च करें और सक्कानेको क्षा है। मान के काने कुते और प्राप्तिक कानो कुछ हो जाते । केव का सरीर और कर-एक उन्होंने अधीर है। इसमें सरिक भी परिक स्थापि है।

राजा पृथितिको इस जवार कार्नेन पृथिकोने से विद्राने प्रारक्ति क्या कार्य कार—"वार्यन ! की पृथितिको कार्ने सामान सरम्बार स्थेत का पृथ्य । से स्वयंत कर्नेन आवारी नहीं प्रसंस्य की । महानेनाची सम्बंध कर्नेन के सरमेश पर, समानि और प्रान्यका अववारी केवाने सम्बंध सरमेश है । वे अपना राज्य, जान, यन तथा और से कुछ स्थेत पास है, सब अववारों है है । वांतु प्राप्तान्त्र क्षेत्रकोने प्राप्ते समझा हैलोंका सरस्य करके क्या करिन्यांने अववारी अववार संस्थार की है । वार्यका पृथिति क्या अर्थने स्थे प्राप्ति स्थानका अर्थ क्याने की आयो और स्थान अर्थने स्थान कर है का सामान करके कार्य क्यान की स्थान स्थान अर्थने स्थान सर बैठते हैं, उसके लिये आप स्थान क्यान मान्य मान्यका ।

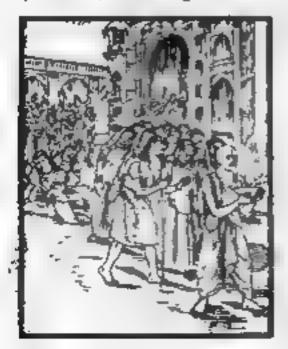
वीतरीको बहु बर्लको हिन्ने में और कर्नुर ग्रेमें वास्त्रार इक्ष-व्यान करते हैं। जान जाता हो। मेरे कर के कुछ है, जाते हाओ कार हो है। जान किया कर कुछ करना पानी हो, करें। मेरे हाका और जानोके के कार ही जानेकर हैं। कृतिका काह बर्टिको और जानोको कारण गरीन हैंगिये।' कृतिकार का की कहा है कि 'सहरात क्रायू मेरे व्यास्तितान जातको का, की हु हार और क्रिको कैनवाकर स्थाननेको इस करें।' अले कुछले कहा है— 'विवृत्ति । जान हैनी, अले और संस्थानेक हिन्दे किया-किया कारोने प्रकृत कर, पर और कैनेकोच कहानीते करें को कियानिका कियानों प्रकृत कर, पर आप के कींकि-सीको अला कुणकारोंका की सनुद्राल कार के कींकि-सीको अला कुणकारोंका की सनुद्राल कींकिये।' इस क्यान राजा कुणिहर और अल्केन कुलने क्याने के कुछ कहा है, का साम हैन कुण हिया । अल कुलके कार के कार का कुणका है।

विकृत्ये हेला व्यक्तिक एका कृतवाले वाक्यांकी वही क्षतान को और कारिको चुर्किनार बंदर कहा का कार्यका विकास विकास से पुरिसीप करा अर्थुनके बारको बहुत जनत के । उन्होंने चीवर असीके स्वयूक्त रिप्ते चीवन प्रायुक्ती तथा हेता व्यक्तिको प्रकारिको संक्राप्ति निर्माणा विकास समित स्था क्षा, पहर, शक्तरी, ओडमेंचे एक, सुनर्ग, मॉन, सा, कन्मार, पाल, क्रोड, कर, सामुक्तानुमित प्रश्नी और क्रोड़े आदि केरेकी व्यवस्था स्टाप्टे । साध्यान् जो हुं। एक-एक साधिताः नार के-केवर काले जोरको उन्हेंच बस्तानेक का विन्ता। होता, चीवा, होताहर, बहुरेबा, राजा कृतिका वर्षा अन्त क्षांका और क्यान साहै सने सम्बन्धिकोच्छ पन अवस्त क्रमें का समेरे विभिन्न पुरुष्क-पुरुष्क कर किया गया। क्रीक्ट्रिस्की सम्माने कर कार्य-नामें महानो कर सम अनेक प्रकारके करेकी श्रीका से गयी। करिएककी अपनी क्षितक सम्बन्धे और विश्वक्षेत्राले बहुते वार्यकर्ता वहाँ निरमार कारिया स्थार प्रस्कृते पूर्ण रही से कि 'कार्यने, इन पावकोंको क्या दिया जान ? व्या त्राव सामग्री प्रयुक्त है।" अबो नेवले निवासने वी स्टब्स कर है दिया जाता था। परिवास वृधिक्षेत्रके अवेद्यानुस्तर स्टेकी सन्द्र इसर और इसरी नगड़ का क्रमारका कर दिया गया। जिल प्रकार येथ पानीकी बास कार पंतिको हरी-को बर देव है, स्ती प्रकार सक प्रात्क्षाने कावरी कावि सम्पन्न प्रकारकेको हुए कर दिखा। करूर, प्रयो पर्यंद्र लोगोची चीति-मौतिके मोचन और विनेकेन्य रस प्रकार करके संद्रक्ष किया। इस प्रकार कर्नेने कों, केने और विशोध तथ अपन और गान्यरीया की

हार्यु विकार अनेको प्रकारके कार केर-केर कार ने कार करे, | पहल्लाक प्रकार कार पूर्ण कुलार कारों कारावर का क्षत्र अपूर्णि का स्वत्यक्राओं की विकात स्वतं कृतरकृता कह विकास स्वतं देवर से पुत्र और कैसेने स्वाप्ते पुत्र हो उसे ।

#### सृतराष्ट्र और गान्यारीका कुन्ती आदिके साथ वन-नमन और कुन्तीका युधिहिर आदिको सम्बद्धाकर स्त्रेटाना

प्राय:पाल पर्वाचीतरीय कृत्याने का क्रमेश्नी कैंपने काले पानकोच्ये पुरस्क और काम समान्य अभिन्युत किया। का है। व्यक्तिकार पुनिया थी। उन्होंने नेतृके परिवा Resid toward for ply country server after पुरार्त बारव विका और अधिकेटके अले करके वे gregori aux fruit, für mer alt alle-allek कृतिहै हर पान्ने पूर्व कर्ता क्यूंने का देखा प्रकार कारकार निरुप्त । प्रत्यकृत्य, प्रत्यको निरूप व्यानोह कार विहे । प्रक क्रमा प्रसा पुनिक्षेत समा कोई हुए स्त्रीको राग्वे, राग्विकोके Profe Tell 192 aure alle it sits-sitely floren-Perris-बार देने रूपे। पीनलेन, व्यर्तुन, अपूरा, स्थांत, सिहर, सहाय, पुरुष्, कृत्यान्त्रं, स्टेन्ट क्रम्प और भी सहा-क्रे प्रकृत अर्थ करते हुए सहस्तानक होना करते की बीठे वारे । आने-काने कुन्ती पान्यानेका क्रम नार्व्य व्या ग्री बी. उनके पाने जानेकी बाते की पानकी



मैहन्त्रपार्थं कहे हैं—कार् अवस्था प्राप्ता किए। वी। प्राप्तांका क्रम कुमीके केमेन का और क्रम कृत्या कारों कंतर इस रहे विद्वारकार्य को का से दे। क्रेंबरे, क्रुबर, विकास, क्यू-क बाला विने कार क्या पुरस्कारको जन्म कियो जनके स्कूजीको साथ हिन्हे का क्राक्ष का व को थे। का कम दुवके सार्वको से पुरश्चिम पानि सामानो निवास घर पहे थी। राजेंद्र केरेच्ये सामान पुरस्ता कर्ती ओरचे प्रमुख, क्ष्मिय, बेहर और पहोची मिन्दे भी पर प्रोहमर पहर निवार करी। कि स्थितीर क्षेत्र यह उससे की प्रकारको भी देश या, वे हे मीनका प्रकृति करों उसका बारे करत चेनते नाइक डेनर बारे स्थापन का पने थी।

> कारक, का कृत्यु कर्मका काम प्राप्त होते हुए क्रीक्रमण पराने पहर रिक्टे । वह पहेन्दर क्लेने कार्यन अन्य कार्ड अन्ये एक अन्ये हा प्रत्यक्रको निक्र किया। निर्देश और स्कूपने कवादे साथ करने सार्वेक निकार कर रिच्छ का, इस्तरियों में केनी नहीं सीते; सिंह कृष्यान्त्रं और प्यान्त्री पुरुष्युको पुनिक्षेत्रके क्रांत्री सीवकर spill the first predictle the wire the philips attenued firebalt than start sprayed अक्रमें रहेकोच्या विराय विराय और परश्री और जाती हुई अन्ते पद्ध प्राप्ते प्रमू-'पालवे । ततः अन्ते व्यूकोंड पान कराने की बढ़ते। में बढ़तारे की बीचे बार्रिय । में बर्जाल गरेव करताका निक्रम का कृष्ट है, इस्तीओं इन्हें करने जाने केलियों हैं कर्नतमध्ये इस प्रधार पहलेला पुर्वाची अन्तिने जीतु पर अने। से भी से क्रमानेका क्रम करते करती हो नहीं। क्रांत-करी ही उन्होंने चुनिहरते बहा—'बहारत ! एवं सहोतानी कभी जेवा र करना । में भी और कुन्नरे परमध्य हैं । संस्थाने कभी बीट र दिसानेकारे अपने पाई कार्यको भी का भद स्थापः रुवेदिः नेते ही सुर्दिक्षेत्र कारण व्याचीर पुत्रूने पार करा। केंद्र । भूत अन्तरिक्षिक प्राप्त विश्वान ही स्वेत्रीया पान प्राप्त है। क्यों के काम कर्मकों न देशकर क्रामे सैक्कों द्वाके

कुर-पूजा करते स्वतः। येते स्व प्रेयरीमा भी राज विश करन । भीगरेन, अर्थन और नकुरुका हरेका करना रहात) आको मुख्युरस्था का हुन्हरे है बार है। अब है कार्मे पानारीके साथ खबर समझ करेनी और अपने इर सारा-सराके भारतीयी सेवाये राजी सीयी।'

पुनीचे हेल सहोरर पहलेग्रीत पृतिक्षेत्रके वह दुःस हुन्छ । वे कोई नेताब जैन स्वयन कुछ स्टेक्ने हे इतके वर्ष क्रोककृत क्रेका करते केले—'वॉ । कारी अपने पत्तमें का बचा छात्र तिका ? कारको ऐता कई करना पाहिले । मैं इसके रीवरे अनुवारि नहीं है समझा । इसके फेक कृत्य सत्ये त्येर सरिये । यहारे अपने ही विकृतये कानोधे को अधिक-वर्गक करानके दिनो स्टामीन किया पान प्राचेत्रम करवान् श्रीकृतन्ते पुरस्ते आवना विकार कृत्याः ही मैंने कुमारोक्त संहार वाल्के इस सम्माने इसका जिल्हा । कई अपनी का चुटि और वहाँ आवता का निवार । भूगे श्रीपन-वर्गनर रिचा ध्रमेका उन्हेंब केवन ताल कर्न इस्से निरंप पहले हैं। परन, इन्छो, अपने इस स्कूले और इस राज्यको क्षेत्रकर जान का कुर्गन करने कैसे यू सकेती ? अतः इत्यरे कार कृष्ट कीविये (

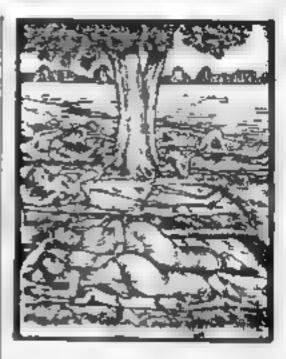
अपने पुत्रके वे अञ्चल्हा कार सुरक्त पुर्वाके नेतीने धी अधि रूपड रहते; से भी वे रूप न सबी, रहने कारी है नहीं। तब पीमरोनो सह—'स्वापी ! यब पुत्रेके सी हुए इस कमको चेतनेका सपार साथ और कावजीं भारताती सुनिक जा हूं से आपनी पुद्ध केने जान मुद्दी ? एक करने हैं कि आर हमें क्षेत्रकर करको कर कारी है ? का बार्ने है कर वा है कारक-सरकारे (अस्त्रेगोको और दुःस-स्रोको को हुए हर महीकुमारोको क्षाय प्रमुखें क्यों से काली ? मीं । अन्योगीय प्रसुत होत्रये और करपूर्वक प्रकृ की क्षूष्ट सक कुंबिहरको सकरपूरीका

वहीं हो उसते। पूर्ण अपने प्रकृतिके शतक उसके दिन्ते | उसकेन क्रीतिके।' यह मुनकर की कुरती वसवासके निहाससे विकारित र हुई। उनके कुम जना प्रकारते विरुद्धप करते यें<sub>।</sub> किंदु क्योंने काची बात नहीं पानी। समस्यो इस जनार करवालके रिज्ये काठी ऐसा प्रीयतीका भी पुर स्थान हो गया और यह समझ्ये पाय देती हाँ कुनीये पेडे-पेडे जाने ल्यो। क्रुपोची चृदि वही है देनी थी। ये कलासका विश्वम का कुछी थीं, इसरियों अपने तेने हुए कुरेंकी ओर करका देशकर की वे दश-से-पत न हो---आने बहुती है क्रमें क्यों। क्रम्बर की अपने सेक्स्नों और अना:पुरसी क्रियोंक साथ करके पीक्रे-पीक्रे साने समे । यह देख कुनादियी जोड् चेज्या असे पुगेले चेली—'महनावे । तुपार व्याप डोक है। कृष्यालों हुन राज प्रकारक कह का पी ते. क्रमीको देने हुन्हें बहुके क्रिये क्रमब्रित किया था। प्रश्ने ुकार एक और रिम्ब गया था, तुम सुससे प्रह है पूर्क के; और हुमारे ही वसू-कामक हुमारा विश्ववार करते थे; क्रांति की तुर्वे पुरुष्टे तिने क्रांत्य प्रदान किया था। शासुबंदे संदान विवर्ध तथा जा होनेसे कह बाग और तुन संध व्यक्तिक हुप्ताच्या नाम न होने पाने—इस जोरूपसे ही मैंने हुने नुसुद्धे रिको उकसाना वा (असमें मेरा कोई नारित्या स्वर्ध रही था) । मैं अपने स्वामी महातम पाम्कुके विद्याल क्रमका सुन्न चोप कृषी है। को-को का और विधिक्त श्रेम-बार भी कर कुछी है। मैंने अपने लामके दिने क्षेत्रमध्ये हेरि जुई किया था। विद्याले समर सुनकर के उनके हुए। कुक्ते पास स्वीत नेवा वा, व्य सब हुना है काने शेल्परे ही किया गया था। नेटा सुविधिर । सम मै हरतकोड हुए अपने पतिके परित्र सोवाने बाल काही है, Me: बनवादी स्वस-समुख्यी सेक करके ताकें हारा इस इसेस्को सुसा अर्जुनी । तुम भीमरोन आदिके साथ सीट काओ । मैं उसकीओंट देवी है—सुमारी मुद्धि धर्मने लगी से और कुछार प्रथम समय उदार है।"

#### गान्यारी और धृतराष्ट्र आदिका गङ्गा-तटपर विज्ञाम करते हुए कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर घोर तपस्या करना

वैद्यानकार्य करते हैं—कारोका । कुटीकी कार सुरकर चच्छा व्यक्त सर्वेतन हुए और उन्हें सीडनेंने सहस्र न क्रेकर राजा कृतरकृषी प्रातिका को प्रणान करके विवर्तनानेत नगरको और बहे। स्थान्यर कृतकुने नामको मीर निपुरका स्वारा रेकर क्या—'नावादे ! कृतिहेल्यी मारा कुलीको जीदा हो । युविहीर वैदर बाद हो है, जह सब क्षेत्र है है। या राजपे क्षका थी को-को राज और हत कर समार्थ है। यह पुर्याच्ये लेक-बुहुक्को में बहुत संदुह है, पुराविको अस तुम होते कर सर्वेट व्यानेको अञ्चल हो ।" शुक्रकेट हैसा सक्तेमर रामकाविधीने कुर्तासे उसका संक्षेत्र कुछ दिला और अरबी जोरते की उन्ने स्वीठनेंद्र हैंको हिन्तेन चोर हिन्त: बिह्न वर्षपत्त्वका सर्वे पुरुषिको बरवायके सेके कु विद्वार कर पूर्वी थीं, अतः गानारी को किसी प्रकार (केंद्र) व इन्हें। कुरुक्ताओं किये कुर्तान्त यह कु निक्रम पानक भाषानीको निराम सीटो हेश कुट-पुरस्तर सेने रूपी। सन बहुओंके राज्य सन्तर प्राचन और गर्ने, से प्राच प्राच्या सरको और बांच हैने । इस समय चन्नुक अलक क्षेत्र और और कुण-मोक्यों पत्र हो यो थे। अहेरे बहुनेक बहुनेक विवर्गेसम्बद्धाः नगरमे प्रवेशः विवरः । जल क्षेत्र स्वालक-बद्धाः और विकास के जार प्रतिकार कार हो और अल्प्से चीत. क्षांत्रकृत-स्वाप-सा हो गया था। विस्कृति कार्ने साहतु मही व्ह नना का। कुलीके क्षेत्र केवले प्रत्यकोच्छे कुछ के बिना नायके सहयोगी-सी हो क्यी थी।

कर, एक क्रम्यूने का दिन स्कृ कृष्ण पाय करनेके प्राप्त प्रमुक्त करार निकास क्रिया। स्वृति सरोकारों नेलेक क्रियाओं से विशेषक क्रम्य क्रम्यूने की आणि क्रम्य अवस्थित के की थी। यूद राखा क्रम्यूने की आणि क्रम्य अवस्था और सरवार विशिषक आराव्य करके कर्म असूनी करका अस्थान क्रिया। इसके क्रम्य विश्व और सर्वायने एकाके क्रियो कृष्यों के क्रम्य क्रम्य विश्व । करके क्रम्य ही गुल्यानिक क्रियो की एक पृथ्वक अस्था करवा विश्व । करवा क्रमांका पारता करनेकारी कुन्ती की क्रम्या विश्व । क्रम्य क्रमांका पारता करनेकारी कुन्ती की क्रम्या क्रम्य । क्रिया क्रमांका करवा के की है कुपर संखे, न्यूनी क्रम्य क्रम्य क्रम्य क्रमांका करवे हुए अन्य क्रिया बळाकोच्य स्वान्यर सोने । ज्ञ्न



व्यंत्रको पुरस-पुरस प्राप्तक प्रश्नाक दातो से होता वर्ण-वर्ण महिनोक्तो अस्य प्रश्नीत हो हो से । हराते वर्ष एक का खेलोको प्रदे महत्त्वपुर्णको साथ प्रदे । या प्राप्त प्रत्येको प्रदे महत्त्वपुरस्क स्वोत्तेत प्रत्येक प्रश्नाको सिम्बा पूर्ण परि और विकित्त्वेत स्वोत्तेत प्रश्नो सम्बद्ध-पर्म स्वयोद्दालको और सम्बद्धः साथे प्रदे । विकाल क्षेत्र से से ।

ज्ञानकर, (किन ज्यांक क्षेत्रेसर) विद्रावीके कहांसी रूपा प्राराम्ने पुरस्कार पुरस्केंक प्रानेकेच कार्यारशीके परित अस्त्र निकास किया। वहाँ परावसी प्रकृतित क्षेत्रर प्रारास विद्या और यहा ज्ञान कही संस्थाने प्रकृतित क्षेत्रर प्रारास निवनेको अस्त्रे । अस्त्रे किरे हुए रूपा प्रशाहने ताल प्रधानको कार्यका करके सम्बद्धी प्रशाहनी ज्ञानको किया। व्या अस्त्रे किर्योका विशिव्यत् पूजर करके अने विद्या किया। व्यावकात् सार्यकारणे राजा अस्त्री व्यवस्थित गान्यसिनीने व्यानको कर्यो असेत कार्यके विश्वास्त्र कार्य क्षित्र प्रारास क्ष्मा अस्त्र विद्या असी अन्य स्था स्थेपने भी स्थानके पिता-विद्या प्रारोप वृत्यकी सम्बद्धार संस्थितसम्बद्धार कार्य स्थान क्षमा क्षमा क्षित्रार्थ पूर्ण वर्ष । कार आदि कार सेनेके प्रकृत व्यक्ते वही बसुर क्षमाह

और नान्धरिकेतीको सुन्तरिकी महत्तके विज्ञारे से उपनी । वहाँ यह करानेकले अक्रमोंने समावे हिन्ने एक केई तैया की, मिस्त्यर अधिको स्थापना करके उन्होंने विशिवक समित्रेय किया । इस प्रकार निरम्काने निर्मा होकर समा कृतम् इतिकारकपूर्वय निकारक काल कर्य हुए अस्ते अनुवाधिकोस्त्रीत प्रमुख्यसे करावत कुरक्षेत्रको सा पहेचे और नहीं एक अध्ययन कावर राजीं प्रात्मूको निहे । वे स्वार्थ पाने केवाबोहाके राजा थे। अपने पुरस्के कार्निकृतका मिदाबर सर्व करने को आने थे। श्रीतांह को साथ रेक्टर महर्षि काराचे आसरसर गये और गाउँ उन्होंने काराबीकी विशेषक पूजा की। सरकात् करते करणात्वी केंद्रा रेका में प्रतापुरके सरकारार है साकर को रागे। महारही कहा प्रतकृत्वे व्यवस्थितं अवस्थे कृत्युको कार्त व्यवेकी सम्पूर्ण विभि मतास है। जल महाराज मृतदाह सर्थ भी का करने सने और अपने अनुवर्तकों की सनवाने राज्य हैंका। चन्यारी हेनी को कुर्यान्द्रे साथ कावक और कुर्यालय काव कर कुराक्षके सन्तर हो जाका चारत करने रहते। केन्द्रे क्रिकी इत्यानीको सकते अस्ति काले कर, साम्रे, कर्न करा केलेंद्र प्राप्त की करोर काला करने राजी । क्या कुरदाके श्रीरका मोस एक गया। वे श्रीक-क्वोनीक क्रेक्ट महात्राम का और प्रतिन्द गुन्ताम तथा नावार वास्त मिले पहरियोगी पति। तीव प्रमुख्ये प्रमुख प्रे गने । अन्तेः



विकास सम्पूर्ण कोई कुर हो पान था। वर्ण और अवधिर हाता गाम गाम पुटिक्षणो विकासी को स्थानस्थित अस्तान और कीर केस कारण किने पानकरी और ब्यासहाकी सेकार्य समें गाम काम करनो कहाने अस्तोर कुर्वत प्रारोशों कोर सकता विकास कामों थे।

#### नारङ्गीका धृतराष्ट्रसे वपस्याका महत्त्व बतलाना और पाण्यवीका धृतराष्ट्रके पास जानेकी तैयारी करना

वैद्यानकार्त कार्य हिन्यानका । तहान्तर, जन्म पुरस्कृत निर्देनके विन्ने जन्म, नवेद, न्यून्यको केत्रर, रिज्योक्तिय नविं नार्यको क्या अन्यान विद्या प्रार्थि वर्ष कार्य । परम नार्थिय राज्यो वित्यम् नार्यक-राज्या विक्य की । सुन्दिकीय का प्रमास विक्यम् नार्यक-राज्या विक्य कीर ने न्यूनि पत्र क्षार्यको सेन्य और प्रमानके व्यून संस्था व्यून कार्यो सुन्दार्थि । सन नुक्य कार्यक देवलेकाले केटि माराने विश्वी कार्यके प्रसानने के बहुन कार्यक विक्य-प्रमान ! राज्यों कार्युक्त विद्यास मान्यक व्यूक्तियों के भाग्यों राज्यों के । वे क्ये जीवन्यक वे और विद्यांस की भाग्यों राज्यों के । वे क्ये जीवन्यक वे और विद्यांस की तक वेका करका करके हिन्ने कार्ने प्रवेश विज्ञा और नहीं और वस्तका अनुद्धान करके हुन्तकेवाओं प्राप्त किया । उनकारे कर्ने को पार पान है परे थे। मैंने इस्तकेवाओं अस्ते-आते का पान प्रस्ता कर्नाविकों अनेकों बार देखा है। इसी प्रधान पन्तकों निकास एका ऐस्तका की तपसाके कारते हैं इन्तकेवाकों गये हैं। सभा पृत्तक इन्तके समाव पत्तका थे, अवाँने भी कारता करके वर्गतकेवाकों अस्त विकास स । कन्यकाके पुत्र राज्य पुरुकुत्सने भी इसी कार्य क्रमा करके ज्ञान कही निर्दित अस्त की है। कार वार्तिक एका क्रमाचेनाने भी इसी त्रकेवानों स्वस्ता करके हम्मी अस्त क्रमा का । तुम पी इस त्रकेवानों स्वस्त करका कर रहे हो, जातः पहर्ति कारतकेवाने कृतको तुन्हें भी पराव दुर्लग एतं जाय गति जात होनी। त्रवस्त्र पूर्व होनेका हुए अञ्चल केको सम्बद्ध होनार चन्या कि स्वय कार्युत्त सहकारकोधी है महिन्दों जात सरोगे। याता पान्यु कार्योर हमादे क्या सम्बद्ध कार्याथ करेगे। हुमारी और चन्याचेको होना करके हुमारी स्वयंत्राचे कह हुमारी की कार्य परिचेद रहेको पूर्व चन्याचे। यह मुन्दी की कार्य परिचेद रहेको पूर्व चन्याचे। यह मुन्दीको चन्द्री है और पुरिचीर सम्बद्ध करिन्द्र यह है)। यह स्वय इन दिल्लुद्धियों केचा थे हैं। विकृत्यों चन्याच मुनिद्धियों क्रारंग्ये अनेक करिने और स्वयंत्र क्रारंग्य क्यान्य मुनिद्धियों क्रारंग्ये अनेक करिने और स्वयंत्र क्रारंग्य क्यान्य स्वारंग्य क्रारंग्य स्वरंग्य स्वरंग्य क्रारंग्य क्यान्य क्यान्य

वह सुन्दार न्यान्य क्या कृत्यु अवनी वाली प्रश्न वहा जात हूं। जाने क्यान्यर, सम्बद्ध प्रश्नि सार्थ्य असे हेन्द्र प्रश्निया जून है अस-सम्बद्ध स्थान इस्ते का कार्य प्रमूची क्यान्ती व्या-प्रश्न क्रिक् कृत्यो का कार्य प्रमूची क्यान्ती व्या-प्रश्नित, कृत्या कृत्यो का नेते में क्यान्तिक्या व्या कृत का क्या कृत्यो का नेते में क्यान्तिक्या व्या कृत का क्या कृत्यो का नेते में क्यान्तिक्या व्या कृत का क्या क्यान है। जान क्याने क्यान्ती क्या हेन्द्र है। असे असे क्या असो क्यान्तिक कृत्योव-असिक क्या क्या है। असो असे क्या क्यान्य कि ने स्था कृत्या क्या क्या क्या असे । इने क्या और क्या संस्था जात क्यान्यी क्या क्या क्या क्या क्या

मानवार्थ हम अवार अव वारतेल हैं वा इंडिएनव मानवार्थ देवाँ मानते जा सकते प्रवाह करता मुक्तेनारी का पाहि—'कार्य ! में एक बार एका मिना इस्तोनारी का पाहि—'कार्य ! में एक बार एका मिना किया ! माँ क्या प्रावहार्य झा बातेर करावर्थ हैं का पाह पाह की थी ! मा कार्य माना कुछ कुछ पुराते की बाद एक का कि अपी कार्य प्रावहार्य आपू बीन को बाती है, कार्य समा होतेल से प्रावहींके स्था कुछे हैं (केपाने मानते और कार्य स्थापन कुछे हो समानित होवा मिना के मान के, कर्या का क्यानित होवाने संबद्धान्त किया है मान के, कर्या का क्यानित हो स्था कर करा हो प्रावह । यह केरावानित पूर्व विवाद है पांतु जान संबंधित केन्द्र के होतेल बारत कि इसे अवार कर क्या है। आवारीत केन्द्र करा है और क्यानी किया है ही कुरमधी प्रचार करोने कोई इस्ते क्यूरी है। ह

नेवाणि में पहुर काल सुरकार वे तान सोन बहुत प्रतास हुए और काल मुख्यांकों भी हालों बात हुने हुआ। इस प्रवास में अमेरी बार्मिका असमें बावानोरी कृतसूची मेंहूर काले मेंहर परिच्या सामान तेवार हमानुसार विशेषक सामोची बारे मेरे।

हर, क्यानि क्याने क्याने को को को ब्रा क्ष्मी है भी ने ! जो माले विलेक्ष की बहु हता है थ। पूरवारी स्पृत्य की कृतकृति तिले विश्वत क्रीवाका को थे। ज्यानकोन एक एक प्रत्यको कनको हत कार कर्न कर्न से-'इन । इस्ते को बहुएक निर्देश पत्ती केने को होने ? महत्त्वाच मामार्थ अब करते जी for my fire floorif girdt ?" myspellig spiraget spirale केंग है भी थे। जो सको पूर्व महाने कि प्रार्थ किया हाँ कि में अधिक पालका नामों नहीं के स्वेद । प्रश्न किए। कृत्य, पान्यथ पान्यविते क्या पान वृद्धिका Reported date was sorbly some were a superport रामा या, य विकोध, वेकारकारों को उनको उसके मही होती की । विकास विकासी होने क्योची कारण के प्रतिक की रुपि पाँ को थे। सेको को उन्हें सको का का तिका का । विकास की काहतारे पायर में जाता नहीं होते हैं । कोर्ड जनवर पार्कावर प्रकार के भी ने जनके विको अध्यक्त जान को है। है, करें अपने कर-का को भई है। एक ति अन्ते नकारी का कार्य से सामा के कारे लो---'क्रम ! नेरे में कुमी अलग क्रांत हो पने हैं। ये का हैने कांची की रिवादी होती ? किवारी चलुओरी भी हर वंत्राणे अध्यक्षीत एक कृतक करते प्रतिके प्राप्त अवेती र्वको पाने होने 7 विनये परच्या गर्ना पने हैं, से सहस्रवान क्यांतिके का निर्देश करने जाने जोने और पूर्व परिच्यो रेक किस जनार कसी होनी ?" इस जनार कर करो-करों उनके करने बढ़ी कारणा है करी और उन्हेंने प्रस्कृत क्रांपती प्रकार करने व्याच्या विकास किया। जा प्रत्य क्योगो क्या मुनिहरको प्रयत्न करते: बद्धा-'बेक ! जार बहार है आजार पर एकेकरों करेको करूक है का है—या को स्तानेको कर है। येथे से कार दिनोंने कई कारोबी हुए। बी, वर आयो प्रेमोक्स में त्युरुपो का वर्षे का था। वीपाओ का समार अनो-अन अनीता हो नवा। यहा कुनी सरकारे सबी होती, उनके विश्लेष पात सहादे काले परिचार हो को होते. और उसका बुद्ध प्रवेश कुछ और सामके आसकेस सकर

करनेके करना इत-विका है जब हैन्द्र; उनक दुर्वन ककर । मैं अपना सक्षेत्रमा सम्बोद्धा (

स्वकेत्वने बात सुनवर वैन्यतेनी जनाय सम्बर्ध बात्रे उन्हें असा बारते हुई जेती—'नाम ! कुते अन्ती स्वरूपे शृति का होते ? यम के अन्तिका जेतिन हैं ? बोते-की उनके मानतिस करिन काले कुते बात्रे अस्ता होती। अनाःपुराधी सम्बर्ध कुति काले आनेक प्रताने के साले बहाने शृति हैं; सबके माने कुत्ती, नामानी और सहस्त्रीके स्वतिको सम्बर्धा है।'

त्रीनकोट ऐसा व्यक्तित प्रथा कृतिकृति प्रथा प्रेस्तानिकोट पुरस्कार व्यक्ति—'पुरस्का व्यक्ति के प्रथा करें। व प्रथा क्षेत्रिके पुरस्कार व्यक्ति पुरस्कार प्रथम व्यक्ति क्षेत्रिक व्यक्ति को । व प्रशास व्यक्ति व्यक्ति विकास व्यक्ति क्षेत्रिक व्यक्ति को । व प्रशास व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति क्षेत्रिक व्यक्ति व्यक्ति

संस्थाने विचार करो । (अवस्थान सरकारीसे सरे पूर) कराई, सरकार, कृतने, सरकार, कारीना और सेनांश्वाह—में सब कृतकेलो अस्थान और स्वाद के करों। नगरवासियोंनेसे सी जो कोई स्वाइतकार दर्शन करना कावा के, उसे वेकेक-रोक सुविकायुक्त और स्वादितकारों कराने दिवा साथ । कावादानकों अस्वका और स्वादेश कोवन करानेके सब साथ है करों। नगरमें केना करा दिया क्या कि 'करा साथ की कावती, इसरिये कावादानीय सिरामा की 'करा साथ की कावती, इसरिये कावोवनोंके साथ की काव की साथ को के वैवाद कर दिये कावें। 'इस प्रकार कारो केंकर साथ क्रेंक के किया कर दिये कावें। 'इस प्रकार कारो केंकर साथ क्रेंक कावें कावादी क्या प्रविद्याल का क्षा क्या प्रकार अनुवाल के की कावादी कावें पूर्व की की किया का की साथ प्रकार

#### पाण्डलोका परिवारसंक्षित कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर धृतराष्ट्र आदिका दर्शन करना तथा सञ्जयका ऋषियोंसे उनका परिचय देना

र्वज्ञायकानी व्याचे हिन्तुका । अन्तर, स्था पुनिद्वित्ते सोक्कानोंड सामा पंजानी अनेत साहै प्रितेक्का सुरक्षित सेकाले कुछ धारतेको अस्तर हो। अस्त याते ही प्रम सोन कर दिने : कुछ सोन समारिपीने का हो के और पूछ रोग पैका। मोई पहल वेलकारी चेडीना, पोई प्राथमित श्रीको समान समाने पूर् सुवर्गना स्वीक् मोर्न नवराजीयर और मोर्न क्रिकेन समार क्रेमर पान माने भे र परारं और प्राप्तके प्राप्तको प्रमुख भी कृत्यक्रक सर्वन कानेके रिम्ने कार प्रधानको सम्बद्धियो क्या कृतिहरके पीके-पीके गये । एकके कामजूतार होनाकी कुरवार्थ भी क्षेत्रको साथ लेकर आसमधी और चल दिये। कुरुदार सुविद्वीत अनेको प्राह्मकोरो किने हुए कका कर हो थे। का स्तान कोच्ये सूत, पाला और बंद्रेका उनकी सूठि कर्य मार्ग्स से। इंग्लेट नेपालकर होते कर गाँउ हुआ को उत्तर रविकेकी पहर गड़ी रोज उनके साथ पता रहें के। परंकर कर्त करवेताले भीववेत प्रतिक्रकर मक्त्रपाँची केनके कर का खे थे। का मनराजेंकी पीठपर जनेको कब और जनक सुरुविक किये करे थे। व्यक्तिकार उनुस्त और उन्होंस क्षेत्रीयर एकार थे । अपनेश्वये किलेन्द्रिय अर्थन स्टेस्ट क्षेत्रीरी मुद्रे हुए देवा रसपर, जो सुर्वक समान देवीनमान हे दा जा.

सभा क्षेत्रर शक्त प्रविद्यालय अनुसरम् करते थे। प्रेपरी mile famil of the formalist depart retailed antique क बोबो कूं या हो वी। रनिवालो अन्यव पर ओसी उनकी पक्षा कर के थे। प्राथकोधी का रोजरे त्या, इंकी और केंद्रोपी अभिवास थी। जानें यहीं वेनु पर पह गा और कहीं केवा । इस कहोंकी पुरत्ता सारिएं एक होनेके करन राज्ये को प्रोप्त से की ही। करनेती केर जीवाँके रूपनीय पार्ट काम अनेवाँ सरोवनीयर प्रश्नाव प्रतारी हर कराह: आने कहते को बहुलेकारी कुछुत्तु और पुरेषित aber 30 glodjeit autent plenngeit \$ 1900 नगरकी रहा करते थे। उत्तर, स्त्रम मुनिहिर क्रमहः चलते-काने क्रम कीन कहन भईको पर बरके प्रस्केत स क्षेत्रे और को इस्से है उन्हेंने सर्वार्वे प्रतक्त तथा कुरवंती कृत्यकृति अञ्चलको देशक इस्तरी एक स्वेत्रीको अञ्ची जलाक हाँ । समझ पत्रक अपनी-अपनी समारियोंसे स्टार को और दूरते ही बैहत करकार कही विजनके ताथ राजके जानकर अने। साथ अने हर समझ सैनिक, राज्येड निवासे पहुंच क्षत कुरुनेक्षते प्रयान पुरस्तेकी कियाँ ची बेहर ही अध्यानक नहीं : शुरुतको का परित्र आधायम सम और नुपाँके बंद दिसाबी है से वे और केलेका सन्दर ब्राहर जार्रिकी फोरात पड़ा का जा। प्रमाणकोप नहें हैं अक्षापने पहिंद, जो है स्कूप-ते ब्राह्मण करने पर्यं कुर्विक्त वर्षे देखनेके लिये पार्ट एसलित हो पर्ये। एका पुनिविद्यें अधियों अधि परस्पर का व्यक्तियों पूछा—'पुनिवर्ये! हार्या प्रोह्म सिता इस साम्य पड़ी पर्ये हैं?' क्लोपे कार हिया—'क्लार्ट् में ब्राह्म करने, पूछा सामे ब्राह्म कार्याने ब्राह्म प्रदेशेंद्र सित्ती कनुसके ब्राह्म पत्रे हैं।'

बहु पुनवार अपूर्वित बद्धाने हुए बार्नाते ने साम-बे-साम वैद्धार ही प्रमुख-सम्बद्धी और बार दिने । बुद्धा कु स्वर्तेनर उन्हें बारका आहे राज सोण करते कार्च दिवाली देले । वित्र से प्रथम प्रमान विकास कांग्यी प्रमाने नहीं तेनांने प्राप बारने रहते। सहकेत हो कई केन्स्ने क्रीकार कुरविके पान स महिते और महाने परपोर्ने पहचर पुत-पुरुषर के रहे । अपने बारे पूजा देशका प्रथके पूराण के अंगुओको बारा बढ़ पानी और उन्होंने प्रकारको होनी हानीचे उत्पाद प्रमाणे रुपा रिया । प्रकृतक रामा पृथिहर, चीमारेन, कर्तुन और नकुरुको देखका ने बढ़ी साम्बर्धने काम उनकी और पत्ती। गामको आहे देख कामानि पुर्शानर पत्ता केवाबर को प्रमान वित्य । प्रत्यक्षम्, अस्ते नेकोदे अन्त् बेंक्सर क्यूंने नामारोसक्रिक रामा कृत्या और मारा सुनीके परनोबर निवित्तर सर्व किया क्या का सन्दे हारते साले को हुए काला धर्म के रिने। उस प्रमा रिकालकी कियों एक कर और प्रत्यके क्लेकरे कर कोनीने कुरराकुरा कृति विकास और क्रमा पुनिकृति कर सोगोबर गान और गेम सामकार परिचय किया। परिचय पावर कारको भी का समझ समझ किया और का समझे विरक्त में जानको जींचु बहुने रूपे। उस रूपय को ऐसा बार पहा, सन्ते पै बहुतेयाँ भीति ही हरितनपुर्यक्त एमध्याने केन है। कारण होयाँ सबी बहाने प्रकार और प्रशीसकेत राजा प्रत्यक्षेत्रे प्रयान किया और उन्होंने भी जनको आसीचीर देखा । इसके बाद से समझे साथ रिट्यू और पारणोंने सेनित अपने आसम्बन्ध अले। उस समय क्रमा अक्राय सारोपे भरे हुए अन्याकृती भारि दर्शकोरी मय जा।

राजा कृतराष्ट्र जात जुनिर्वहर आहे चर्चा व्यापनिक स्वतं सारामाने विराज्यसम्बद्धाः, उस समय वर्षाः सन्तेको देहतेन आहे हुए प्यान् प्राप्तवस्ताने समयो प्राप्तवस्तो देहत्तेको निन्दे प्राप्ते हुए थे। उन्होंने पुत्रन—'वर्षः साथे हुए स्वेतनेने प्याप्तवस्त्र पुत्रिविद्दार गरीन हैं? पीमसेन, अर्थून, प्याप्तक, प्राप्ति अर्थेन प्राथमिन होपदी देशी प्राप्तेन हैं? हम्मस्टेन हुन सम्बद्धा परिचय क्षा कर्म हैं।

उनके इस प्रकार पहलेगा सहको समझ प्रापको स्था हैको असे कुरकुरको सिकेस परिवय हैते हर प्राप्त∽ में को कुमानि समान और और **देशी सन्हार्त्त** है, book क्रांच्य कुर्यानी और के महे-को एनं कुछ स्थानिक हैं के हुए हैं, से विद्यार क्यान की हुए कुरवार कुषिक्षिर है। यो बहाबारे क्यारायके समान व्यानेकारे, समावे हुए मोनेके प्रमान कैरवारी कथा और और और केरे केरावारे हैं, विकास पुरार्थ पंतार और विकास है--कृत्या पार बीकोन है। इस्के पात से वे पहल बन्धर और स्थान रंगके प्रकार हिल्लाको होते हैं, निरुग्तेत पंत्री निरूपेत प्रकार कीने अहैर के समामाने क्या विकास है, में बीरवर अर्थार है। कुर्जानेंद्र करा को हो जेड़ पूरण केंद्र दिसानी देते 👢 वे एक है पान जन्म हुए नकुर और महोन है। सन, नत और बोरको इन क्षेत्रोको सन्तरका सर्वकाल संस्थरने सुरूत कोई न्हीं है : वे बेल कमलो सका इसम रंगमती सुन्हें, से पुरिन्दी राज्यी पान देखाजीको देखेन्सी पान पहली है, बहुत्व हैया है। इसे पता से वे सुवर्गने में उत्तर पार्मनकर्त्व देवी प्रमुक्ताओं मूर्तिनकी प्रभा-सी विश्वकरण है को है, वे अनुसर प्रधानकारों प्रधानकी प्रभावन औक्तुमानी महैन सुन्ता है। सन्द, की निवास क्षेत्रेस राजवारी सुन्दरी केंद्रे केंद्रे हैं, के पान-पराधाना बहुती है तथा तिरावे प्रतिस्था रेप कृत प्रमुक-पुन्तेची क्रोपको पात कर का है—के उपकृति विकास है, के क्षेत्र की अर्थन्त्री ही भीरवर्ष है। यह को इन्हेंबरके सरकर एकन कर्मनारी क्याबीता रिकारका है, यह ओक्साफे साथ कर रेनेका केलन रक्तेच्यो क्यानेन्त्रनीची बहैन और धीमरोधवी को है। एक है का के प्रकृष्ट स्थान के प्रवेशकी कुरते केरी हो है, यह नगमध्य परास्थ्यमें क्षेत्रा हो। पार्टिकार सहावादी पार्च है। इस्तेर पार से सेल कार्यार राया राज्य रंगामधे महिला है, यह महरेशे प्रदेश पुर न्युक्तको साति है और यह यो उससे हुए कुमानो इससा मेरे रंगाली काची गोवों बारक रिने बैठी है, या प्रका भिरतको क्रमा एवं अभिन्यमुक्ते वर्षको उत्तर है। इस्के रिका, के विकास दिवसी स्टेबर पहला आहे विकासकेकों केही uf f. farik storn firergro fennet ist f-it no क्वेंबन अबी से प्रकृतियों प्रीरची और इन को नहारासकी कुर-मनुर्व है। इनके पति और कुर राजने करे का कुछे है। क्वर्तिके । कारके अबके अनुसार की क्रामेंडे मुख्य-पूर्व व्यक्तिकोच्या परिवास है किया है

क्रमी स्टब्सी बारे गये। प्रमानोंके सैनियोंने बाइनेको जिल्ला सेने समा। उस सम्बंध राज्य क्रमण प्रमान क्रमण फोरकर अञ्चलकी सीमाने महार पहला करन दिया समा | मिरनार कुक्त-समामार पूछने रागे ।

इस प्रकार स्थानके मुस्तरे सामात वरिवन बाधन में ! सी, युद्ध और व्यानकोक्ट संपुर्वन काननेने सुकार्यन

- Completions

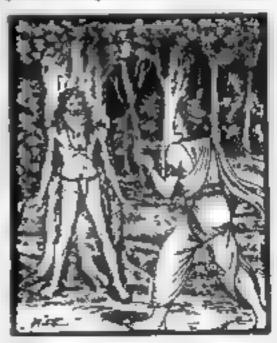
## शृतराष्ट्र और युधिष्ठिरकी बातचीत तथा विदुरजीका युधिष्ठिरके ऋरीरमें प्रवेश

समका प्रकारों एकं श्वकृतिवद्धित कुक्तकों से हे न ? कुकरे क्रातामी पुरार पीयन-निर्मा करनेको वन्त्री, नेकर-कावर और पुरस्त गीरेन हैं न ? क्या में हुको कराने केशकोर रहते हैं ? जन्म तुन प्राचीन चनारियोगे नेतीया कुछते रीति-वेतिका यसम् बार्क हे ? अन्याको हे अन्य प्रधान बही बसो रे पह. कि और बहारित पुरुषेके साम कारकोच्य कर्ताव करते हो २२ क्या हुन्हरे सरकार और कार्यको प्राप्तान संद्राह रहते हैं ? पुरुवारी, सेन्या और क्रान्तेको से कह है एक, स्ट्रानेको से हुए अपने क्रमुक्तकारके संद्र्य रक्ते है व ? का कुर अञ्चल्येक निर्णा और देवलागोंकी पूजा कथा अस और काल्के हाच अधिनिक्षांका सरकार करते हो ? एक शुक्रारे समाने साहना, gibe, der, og som gegebet reserve श्वास्थ्य क्रो हुए असे क्वीनक करने केने 🛊 ? क्री-मारक और कुछ पुरस्केने कुछ से की उसक करता ? है व्यक्तिकाके दिन्हें चीका से बढ़ी मांच्ये ? हुन्हों करने **ब्यू-वेटियोचा साहा तो होता है न** ?

र्वभावकार्थ वहते हैं--वालेका । कृतकृषे क्रा REAL PROPERTY SPORT WHILE WANT THE म्बाब्देस एक चुविदेले इस प्रकार कहा—'वनन् १ के महाँ इस प्रकार है। उसकी रूप, इतिस्तरिक और कोरिया अली कार्युगोची पृद्धि से हे दो है न ? नेरी पाल कुर्याको कारको सेवा-सुक्त करोने पुरा हेन से जी हेन ? का इनका बरवार सर्वंत होना ? वेरी नहीं पान नानारीवेडी, से बोर करवामें संस्था हो की है, चटने को को उसने पहारतकरी क्रोके रिने क्यों क्रेस से वह कर्ती ? विकारी ! वे इक्षण से कुमान्त्रवेश समान कर के हैं न ? इस समय किट्रामी वर्डा है ? में अन्याय नहीं सैन्समी किने ('

चुनिद्विरके इस अकार 30 कार्नेवर क्लाक्ने क्का-चेदा ! किट्रामी कुक्तमूर्वेक है। वे वर्ग करोर क्षतान्त्री समें 📳 निरक्त कामारा करने और कपू केंद्रर स्कोडे कारण अञ्चल दर्शन हे पने हैं। उनके इतीरकी

कुरहरूने कुल—पुनिर्देश । कुल करत और अपभादी | ज्या-का विकाली हेती है। इस निर्धन करने काली-काली (Magnifel) उनके कृति हो पाना करते हैं 1' राजा कृतरह इस प्रकार क्या है के वे कि पुताने प्रकारक दूधका निर्म महावारी विकृत्यी कृति आमे दिखायी यहे । जनका मंग-कहन कृतिर अस्तरप्र कृतिर और सन्तर्भ श्रुष्ट-विदेश्योधे गरा विकासी हेता पा । वे सारावाकी और वेकावर स्थाना सीट पहे । यह har was sphiller solein ift weie elds-elds dift, Regret क्रमी दिखानी हो। और बाफी सहारत हो जाते में । इस प्रकार वे चोर बेन्युकारी जोर सकते करे गये और सुनिवीर नाई कहते हुए च्यापूर्वक केंद्रों जा को से कि 'विश्ववर्त । में जानका कर क्रिय कथा चुनिक्र है (आयोह क्रुटिक्रे रिस्टे अस्स है) ।' इस अधार असरक निर्मन और मुख्यम अपने प्रहेशकर कृतिकारोरी केंद्र विकृत्यी एक पेड़के स्वारे पर्न हो गर्न ।



वे इसने पूर्वत्व हो पूर्वेद से कि उनके सरीरका सौकारक पा क्या था, बिर भी परंग विकास मुख्यित को परवान रित्या और 'मैं कृषिक्षिर हैं' —ऐसा स्थाने हुए वे उनके सामने क्यान रहे हे परेश क्या है उन्हेंने विद्यालया सामार में क्रिका

स्वतंत्रम् प्रकार विद्या एकार्यं हेन्द्र प्रका पृथितियों और प्रस्ता देशने प्रणे। वे सामी कृतियों समारे दृष्टिरें, प्रणेत्यों प्रणेतरें, प्राणेश्वे प्रणोते और पृथितीयों प्रणेतीं विश्वास समो प्रका प्रस्तात् है परे। इस प्रकार अपने देशने प्रणाति होते पूर् विद्यानें सर्वतंत्री कृतियों प्रशेत विद्या। प्रका पृथितियों केवा विद्यानीयों सोनें पृथित विद्या प्रका है जिए अस प्रणेत के प्राणेशी है पानि पृथित प्रमोद विश्वास क्रोंने व्यापेने विद्यान संस्ता क्षी स्व नार्थ है। प्रशोत विश्वीत क्ष्मी व्यापेने विद्यान सार और स्ववित्य प्रणेता स्वपूर्ण विद्या। अस प्रणेत क्षमी विद्यानेंद्रें प्रणेता स्व-संस्था प्रकार क्षमी क्षमा हो। प्रापेते साराव्यानी हो—"सम्बद्धा प्रकार क्षमी क्षमा स्वाप्त

क्यों थे, अवस्थ उनके प्रवेशक यह न करे; शहै प्रकार वर्ष है। उन्हें प्रवेशका जनक स्वेथकेटी प्रतिह हैची, अस उनके दिनों कोच नहीं करन पार्कित !'

वा सुनवर करंगन वृत्तिहर सहिते और तमे और उहीं व हमा कृत्यों कर सामर उनके सारी जाते बातती। विवृत्तिये के नामना अञ्चा सामना सुनवर देवाने राम कृत्यों क्या गोमधेन अभी पता सोगोधों क्या विश्वन हुआ। इसके बाद कृत्यों कृतियों क्या—चेटा ! मेरे हिने हुए व्या, कृत और मानको स्थान करे। म्युनवेद पता अपने उनके मेरे क्यांनारी के मानू हो, उनके आको अधिका क्षे क्यांना कर्मा क्यांने के स्था हा इसके अधिका क्षेत्रिते क्षेत्र क्यांना क्यांना क्यांना क्यांना क्षेत्र क्यांना क्षेत्र आहे। क्षेत्र क्यांना क्यांना क्यांना क्यांना क्षेत्र क्यांना क्षेत्र । स्थाना क्यांना सोगोर कृतिये क्यांने क्यांना क्यांना क्यांना क्षेत्र क्यांना क्षेत्र

#### युधिष्ठिर आदिका ऋषियोंके आसम देखना और महर्षि व्यासका वृतराष्ट्रको सान्त्वना देना

र्वतम्बर्कानं करो हैं--क्लोका । क्लाका, का बोहा | मार्गेचर राजा मुनिर्दार कुर्बाहरकार्थन नेतियह निर्माणे निर्मा क्रेंबर क्याक्षी अन्त से पुरिचोंके बाला केलोके प्रेसे मारे। क्लंड साथ चीनकेन अभी पार्ट गाई, अन्यनुनाई निवर्ण, सैका-सम्बद्ध और मुरेहित की थे। उन्होंने सुरस्त्रांक विकासिक स्थापेस पूरवार दे<del>वा वेडियेन</del> स्थाप्त प्रकारित हैं और कार करके के पूर क्रीन-पूर्व आहे है हो I war auf-auf faber menne berbeit fange अन्त्री पर्वेदर व्यक्ति सामग्रेकी क्षेत्रा पढ़ में है। सर साम प्राप्त पुनिश्चितने प्राप्तीतनोदे सिन्ने साथे पूर् स्वेने और ब्रोंके कार्य, गुरुष, कार्य, कुद, कुद, कार्यपु, बारते, अभी तथा प्रोहेट को हुए सीर-पहिन्हें कार महि। जिसने जिसने और खे-ये महिन महि, उससे अने और में ही सर्गन दिने गमें । इस अवल क्यांका कुछ चुनिहित अवस्थिते प्रम-प्रमाण पन परिनेके प्रमाण प्रत्यक्रके सामगर और साथे। यहाँ सामग्र उन्हेंने देखा कि प्रका कृत्यह निरम्बर्ग करके कामानिक स्था प्राप्त करने केरे हर है और उनमें कोई इत्तर विक्रामाना पातन कानेवारी मान करते विकासी चाँचे विनोध करते एको है। चुनिक्किले अपना नाम समावत कृतकार्यो अस्तान विकास और बैतनेकी आस निरमेश के कुळारास्त्र केंद्र को । चीपछेर मादि भी वर्षे अवास करके काची सामसे केंद्र परे । इस

प्रमान की व्यक्ति प्रमानिकारी प्रमूप साथि व्यक्ति और व्यक्तिको कामान् व्यक्ति वर्ष के विश्व प्रमान प्रमान प्रमानक प्रतिकृत और की लोग साथि प्रमान का प्रमान प्रमानक प्रतिकृत और की लोग साथि प्रमान का प्रमान स्थान किया : व्यक्तिने प्रमानक की को प्रमानिक काम के और वर्ष प्रमानक प्रमानक का यह विद्यालक पूर्व किया व्यक्तिकों स्थान क्ष्म प्रतिन्द्राओं की पाने और प्रमान व्यक्तिका की प्रतिन्द्राओं की पाने और प्रमान

व्यानका, कार्याक्षिक्य व्यानको प्रश्नाकृते कुल—'स्वान् ! कुकार्य कार्या क्षेत्र-शिव्य कार्या है न ? कार्याको कुकार्य कर्या के स्वाप्त के नहीं होता ? कुकार्य सम्बद्ध क्ष्म व्याप्त कर्याको व्याप्त के नहीं होता ? कुकार्य कृतिको कु व्याप्त कर्याको व्याप्त क्षित्र क्ष्म कर्या क्ष्म श्री है ? निर्म व्याप्त व्याप्त व्याप्त क्ष्म क्ष्म कर्या क्ष्म कर्या है इसे को क्ष्मी क्षेत्र नहीं होता ? स्वाप्त व्याप्त व्याप्त क्ष्म क्ष् इनकी ओस्ते कुकस का सक्ष है न ? कह कुको सक्षेत्र | कोको जन्म है। काँको सर्वत की है तक का समूर्य चान सद्ध हो पने ? पहाराज ! विश्वविते की कैर न स्वान्त, कारध्यान करन और कोमधी सर्वत जान देव-ने कैर गुल पुरु प्राणिकोंके सिमें सेव बारे गये हैं। प्रकृतक निपृत्के करनेककारका समाजर से इन्हें तर्न हैं होना। स्थाप क्षा है सम्बद्धान प्रतिके काओं निवृत्के काले समग्रीने कृत में। में पूरत सुविकार, महान् केची, महात्व और महानासमें के। केन्द्रकारोंने पहरसीर और अस्टोने प्रधानकों को केर्र कृतिकार को है, की कुरांद्र किए थे। इसमें को किए केल्पानोंके के केपा और कावार करिंद्र सावाद रहता है। को साथ, प्रतिकारिक, क्लेटिक, स्वीका और कुर अविके इत्ते हैं। इस कारण कार है, जा देवती कारण को विद्वारों किए नहीं है। विकार चेन्कानों कुरतार पुनिवृत्त्यों क्य दिया था, यह वर्ग मानव देनात की नेतृत्वा है मानव है। केरे अहि, कह, बार, पूजरे और सम्बद्धानी पान पूर कोच्य और परकेकों भी है, उसी प्रकार वर्ग भी अवस् हो से बाहे; में को अवस्य पूर्व करिया।

करावर कराइको प्राप्त करके विका है। विशेष समझ प्राप्त बार को 🗓 के विद्या पूजा एक केवलाओंके केवल ही कर्नका सम्बद्धान्तर करते हैं। किये को करते हैं, से है निवृत के। उदैर को विका थे, थे ही ने वास्तुतन्त्रत सुनिक्षीर है—को इस संतर्भ हुन्हरे सान्ने प्रश्नात पति एवं हुए हैं। महत् चेन्यराने कावा और पश्चिमानेने केंद्र इन्दरे भाई विद्रु क्रानीनका मुख्यिरको सामने देशकार प्रमुक्ति करीरमें मनिष्ट हो गये हैं। का को से बीत है कामानक करने बनाईमा। वेड रे हर करन में इन्हरे संस्थानिक विकास बारोबेंट दियों अस्य है। पूर्वप्रताने विको भी महर्ति अन्यान मो करावारपूर्व पार्च नहीं किया है, यह भी जान में जानह कर दिशादिया। आर में हुने अपने प्रमानक अञ्चलेकार प्रयास विकास है है। कारको, इन भूमी विश्व अभीत कहाने कर कही है। परि किसीओ ऐसारे, सुन्ते का सार्थ कारोबी एकारी हास

#### गान्यारी और कुत्तीका व्यासजीसे मरे हुए पुत्रोंके दर्शन करानेका अनुरोध

statute for that | design senses | क्षान्यनोके रहते परम रोजानी नहीं बारहाजीने को सक्कार्यकरक पराय दिलानेकी अधिक की की, का विका अध्या हां--का क्यानेकी क्या क्रीकिके। राज चुनिक्रिशे कुमार्किके सर्वत विक्रमे दिनोतक करने निकास किया ? सका में अपने Affect all proposal facility that was propo-करते के 7

पीत्रपारतको कह--कार् । कार्य कार्यको अवारो प्रति-प्रतिके शेवन करते हुए को सुनते उनके सामन्तर को गर्ने। उन्हेंने एक क्लाक का उन्हेंनाने निवास विकास स्थापि स्थापनी राजा स्थापनी स्थापनी कते बहु खे थे, करी राज्य वहाँ और यो बहुत-से ब्राह्मिकको । कार्ये नारह, पर्यंत, देवार, विद्यालयु, हुन्युक और विद्यारेन भी थे । पुरस्का पृथिविशने कृतसम्बर्धी अञ्चालने उन सहस्रकार्धीका भी निर्मित्त सामा-सरकार किया । राष्ट्राव्य से उत्तर क्रासम्बेक विकासन हुए। पिर प्राच्यानेत्रीय राज पूर्णह भी बैठ गये । जन्मदी, कुनी, बैनकी, सुन्छा तक सून्दी कियाँ भी अपने-सको जारसोयर सामीन औ। बार प्रमुख कई उर सोगोरी जापीन जापियों, बेलवाओं और असुरोहे सम्बद्ध रस्कोळाती वर्गरिक्चक कर्या होने समी। व्यवकारे अन्तरे

वेत्रेकारे और एकानेने हेतु महोत्त्वरे महर्ति मारानीने लास क्रेकर एका क्रायानो कक्र-"महराब । सुन और कवारी अन्ते को इस् पुनोची होत्कारियो निरम्तर बार रहे हो । हरने सारक पून केन्द्रेड हरने शर्मक को दुःश करा शाम है, को में नारक है। कुली और बैच्चेके ब्रह्ममें भी नहीं हु:सा है: क्षा क्षेत्रकारो प्रदेश अस्ति कुर अस्तिकपूर्व सह स्ववंद्य प्रो नीत कुछ रखन कर भी है, कह भी मुक्तते किया नहीं है। क्षानों हुए एक रोप्टेंब एकाम कुरका है में हुन्हरे भागीता रहितेया निकास करनेते हिन्ने पहाँ जाना है। वे देखा. पचर्च और मार्गि आप मेरी विस्तंतित स्वयाना जन्मव देशों । लहाराम 1 कोलो, मैं स्टूबरी वर्षन-सी कामने कृषे कही ? जान में तुन्हें करोनानिक कर हैनेको हैकार है। हुए निर्वे सम्बद्धाः कार देखे ।'

कुरुको सह—बनका । जान मुझे आय-कैसे सार्च पुरुषेक सकान जा हात—मा अनक कुतर पहल् अनुका है। इसमें मैं जननेको कथ मानत हैं श्रांत मेरा जीवन सकत हो नवा । इसमें स्टिक हर्मनकारों ही परिता हो कथा। यांतु मेरे भवमें एक संसाध ी—स्वाप्तास:-पुजाने को मेरे कुछ और पीत मारे मने हैं, उनकी क्या गाँउ को क्षेत्री ? उसकी बाद करके बेरा बित्त राह्य संस्ता च्या है। मेरे चर्च पुत्तो पृथ्वीका क्रम आनेट होत्यते क्रमापुरका मेंग और कृत ह्यान क्रेमामान्द्र क्रम है बहुद वर्ष केनमो गरमान्द्र क्रमा क्रमा बहुद क्रम क्रमा—इन क्रम मालेख निरम्द क्रमा क्रमो में हिए-क्रम अनुकारों सामों क्रमा क्रमा है। दु-क्र-क्रमाने स्वाताने क्रम क्रमोद निर्म की क्रमे क्रमी क्रमोत ।

समित्री कृत्यक्रमा परित्यक्रिके विकास क्षाप्त पान्तरीका चोच्य किर गयन्या हो गया। से कुर-चोच्छी साम्रात क्षेत्रम कावे के गयी और अपने कावती क्षाप प्रोक्तार बेली—'प्रोक्त । इर पहलाबो सको हो हर पुर्वतः रिने प्रोप करे जार संस्कृत को बंद को; हैंदे अस्तर हेरों करिए न निर्मा । पुत्र-क्रेक्से संबद्ध क्षेत्रम के कर उसक मने को है, राज्या इस्को सेंट की साथै (शहर एक का भाग इसे इनके पूर्वाचे जिला केरिके, इसके इनका शहर प्रत्य क्षेत्र) । सार साथे स्थेत्याने प्रमूर्ण क्षेत्रीको पर्य पूर्व कर सकते हैं, जिस सकतते हनके प्रमूपेक्ववर्ध करेंचे मिता हेन अपने रिने चौन नहें पर है। हुनहुन्दर्ध कृत्या पुत्रे अपनी सरका पुर-वस्त्रातेने सकते कहतर हैन है। इस नेपार्टके पाई-क्यू और पूछ सकी पारे परे हैं, निवारी प्रमुख क्रिकार का करते है। इस सामाना क्ष्म केल्पेकार्य अञ्चलको प्रदेश पुरुष्ठ को अधितन्त्रके भारती संदार केवार दिए-वार कोवाने के वार्क करते हैं। और it if otherwise article and of any country and क्षांत्र का इस है। इन कारकों से से पुर सामुकते मारे गरे हैं, कार्या ने के निकार केर्ड़ है। से नेई निकास स्कृति प्रथ और योग्यो आधा तहर करते हो के और महत्त्वको भी कोकको गढ़ को है। मेरे बढ़का कहा भीनको तथा न्यारको स्रोतका आहे हिन्स नर्वन्यो तथा हुए होंने, का कार सींक से की होता। करना, । तार हैती कृत्य करें जिसमें इंट नावचनार, वेश क्या अवस्थि कर भूतीका भी क्षेत्र स हो कर /

मानावे कर क्र अंतर कर की थी, जो कर कुथीरे मुस्तानो माना कृत सुर्वित कर रेकावे अपने कु कर्मक स्टान किया। करकात कालो अपी दुःची देकावर क्यू-'नेटी। की तुन्ते के कियी कालो प्रेरो कुछ काल के से कई।' का कुन्तार कुन्तीदेवी काला कुन्तान करो कुन्ते करनोने अच्या किया और कुछ क्रांक-की होकर सामीर कालो अगद करते हुए कह-'क्यान् । अगर में कहर है, में देकाको भी देका है, जात में। हिस्से देकावतीहे की कहर है। में कालो कालो (अपने क्रांक्टा कुछ कुल

जब कर्म है। सर्वे का का से हैं, स्टेने। का कारको का है—एक सोची पहरी दर्जात मेरे विक्रके पहरी निवारी है भी अपने से । मैंने कई कारचे की हुई सेवाओंक हत संसुद्ध कर रिल्म । मेच करांक क्षील और हत्त्व कुछू वा । में हर उसर नोई अंस्टब भी दूस । होन हरनेह अनेको अस्तर साथे: किंदू एक बार को की प्रमार स्रोध नहीं किया। इसके संख्या क्षेत्रक के म्यान्ति उन्हों करहान हैने तने । उन्होंने पहा—'नेव विश्व हुआ अवहान हुनों अन्तरन प्रवेच्यत करण प्रवेश ।' अस्त्री का सुरक्त में प्राप्ते हरते केरी—'सामार्थ के अवस है, यूने क्रीकर है।' कर के पुरः योगे—'यो । पुर विकशित हैव्यानीक सामान करेचे, वे इस्ते कुएरे असेर हे करेंगे।' में कुछर है अन्तर्भाव हो गर्ने । यह यूनकर में को अञ्चली यह गर्ने । रिको के समापने प्राप्त का पूर्व कुलो भी के। एक हिर में अपने पहारको हरना पाते थे। एक काम क्रिका का कार पुरतः पानि पूर्वताचे प्रश्लेख प्रतान करते हैं प्यान्ती प्रतिने जनमी और देवले इस्ती । इत्त्रेवीने प्राप्तान क्षा मेरे पाट आका को हो गये। ये हे करेर करन करके क्षेत्र क्षेत्र होते हिंद तेलक सामितार क्षेत्रको नेतृत्व क्षेत्रक पंज का को थे। जो देखकर में बर्क करे। कार्ने करों है man - We I made and my while they did not करवेरे अवस् संबंध कहा—'कारत । यह यह सह व्यक्ति । साम कुल कर्मा को काले ।' से केले—'हेर्डर ( नेव सामान वर्ग की है स्थान । पून कोई-स-बोई क अन्य की हो, संस्था में हुई और हुन्हों प्रश्नात स्थानको भी पात का क्रमुंक*ं* का की कहा— 'जनकर् । युद्धे क्षानके सम्बन्ध युद्ध वैच हो ।' हरून बाह्ये ही कृतिक पूर्व नेवील करके करने केवले प्राप्त की करीरने भीवा हो गर्न । कामान्य केले— देनि । पूर्व एक पुर कामा होता (" व्ये सहका से अवकारने को पने । सनो में इस क्षात्रको निकारीचे पुर रक्षानेद निर्म स्थानेद सीहर हो को लगे और का पुरस्कों कुर बना हम से को की करीने बाद दिया। यहाँ बेट कर्त या। उत्तरे कराडे बाद है हर कारण क्षेत्री करते कारणवाले का है **पर्य** । केर पर कार्य पान हो पर सरका, मेरे आग्रोर राजने प्रकार कर विचा। की का की हो से अपने को कू कर सकते हैं। हम करन में अपने जारे पुर पालेको देखना प्रकारी है। एका कुराध्यक्षेत्र प्रभावती कार भी सामग्री प्राप्त है हो सुन्ही है, जार। हरती हरता भी सभी पूर्व होने स्वहेश ह

कुरवेन्द्र इस प्रकार स्थानेश केलोसाओर्ने केल स्थाने

है। ऐसी ही होन्सूर भी; इसमें श्वनूता नोई समान नहीं है: क्षेत्रि का स्वय हुए अभी कुमरी स्वतिका थी। केम्ब्राकोन अभिन्य आहे. देवाचीरी सन्तम होते हैं, अस-

माराने कहा—'केटे । हुम्मे को कुछ पढ़ा है, यह सक सत्तर । हुम्मेंके प्रतिरते प्रविद्ध हो माने हैं । के संबदन, पत्तन, यूकें, रुर्ज और इक्रेंस्क्नाम्यासे भी पुत्र सरम कर कक्तो है। देशकरी इस समुख्यार्थ इतित को होता—देश भागार हुत सकते चानतिक विकास हाता कर से ।'

#### शृतराष्ट्र आदिके पूर्वजन्मका परिचय तथा व्यासजीका मरे हुए वीरोंको प्रकट करके क्टें क्के सम्बन्धियोसे मिलाना

अब महर्षि कालने गम्धारीले ब्यान—'बेटी मान्यारी । आम रात्ये तुम अपने पूर्वे और श्रद्धवेश्व अर्थन करेग्री। कृती कर्णके, सुरक्ष अधिनकृतो क्या प्रैयटे अको निवा, पूर्व और प्रकृतिको देवल्यी । तुल तक स्वेत्योको उन प्रकृतक करियोर्ड रीजे कोच भूरी करता काहिने; क्योंकि ने श्रीवकारी करा कार है कुतुओं का हर है। व्य केवरहरूनिका कार्य वर और इस्ते कार्य होनेकारर कः इस्तीर्य सामून्तं केवतः अपने-अपने अनुनो पृथ्वीपर अन्योर्ज हुए थे । गुर्वाकी राज कृत्यु है इस जुल्लोको अवसर्व हेक्ट क्रुपोरे और हुए हैं। महाराज पान्यु वेजारतीने केंद्र अन्यान् विष्णुके अंक्ष्मे अवसीनं पूर् थे । विद्युर और युविहित वर्गके अंबाक्तर है, क्रॉक्क्स व्योग्हर और प्रकृतिको स्वर संदुत्ते । कुवारम् अस्ति सभी भाई काल से । महन्तरी भीकोन प्रकृतनीचे अस्या हुत् है। अर्जुनको पुरावन स्वति क और प्रमान् होनुस्ताने कराया करे, सुहरू और सानेन श्राविनीकुमारोके अध्यास है। युक्ती विशे कः स्वार्णनकेने विकास कर क, व्य प्रकारक कुर अभिन्यू कार्या, क्रमुक्ता अंग क, और क्रमेंट मार्ग गर्म कृतिन अवकेर्ग कृत हो । होन्हरेके रहत जनक हुत्त बुह्मकुर स्थानक संस् या और दिसाओं राहार था। हेन्सओं बुहानीकें अंस से और असमाब्द परावार् पंचानो अंगले करण हुन्। 🕮 । क्षारमञ्ज्ञ भीना कर्मुकारमध्ये प्राप्त हुए एक क्या है। इस प्रकार के तान केवल कार्यका व्यापकोटिन अवसर्थ हुए के और अब अपने सामानात्र जोत्रद पूर्व कर्ता पुन: गर्नको करं गर्न है। हुन पन सोनोंके इन्हर्ने करानेकिक जनके कारत से किरवासो दुःस यह हुता है, को अन सू कर हैय। इस समय सब कोच जानबीट काल करे। जा समाचे अपने यरे हुए पुत्रोंके कान होने ह

र्वतन्त्रकार्थं कार्त है—एकर् । महर्ति स्थानके क्या मुख्यार नाम रहेन सिव्हें समान नामेंच करते हुए प्रशासन पूर्वक पहालकारी ओर क्ल दिने । राजा कृतवा अवने मनी, 🖟

प्राच्या, पुरिचन और प्रव्यवेशकुरुको प्राप्त स्थानीके राजीय गर्ने । और-और बढ़ स्वारा काररानुह राष्ट्रातस्थर मा बोब्द और सब लोग अपने-अपनी प्रति तथा सुनिवासे अनुसार मार्ड-का प्राप्त गर्ने। मूत एकओको वेकनेकी प्रकारों प्राची होंग वहाँ एस हेनेकी प्रतीक्षा बाले लगे । बा है। इन्हें से कॉके काल का का। जाता का पूर्व-नरावक असा से को और एंट सेनेको आही, से एक होन क्रकंडलके बीज्य निवरोधे निवस होका प्रश्नाम् कालों क्रमेन गर्ने। क्रमेन क्रम नक्स्य प्रीत एवं एकाबीना क्षेत्रर पानाची और स्त्रिनोधेः क्षत्र मामानीके रिक्ट का केंद्र । कुक्कारको कियाँ परमाधिक साथ केंद्र नहीं और पनर अब अन्योद निवासी भी अन्यत्योद अनुसार परायक्ता कैयानका है अपे (

क्षांचर महावेजको सुनिवर महराजीने भागीरधीने



परित काने जोड़ किया और कुका-धीरा-कांद्र प्रवस्त । मेजुलो तथ विकाधिक देखेले निकास समाधिक कार्यक्रम विकास का प्राप्त पानिक भीतर वैती है पुरुषको सुक्के पहे, केरी स्थापने कील-स्थाप सेनाओंके एकरिया क्षेत्रेण सुनी नहीं थी। बोडी ही हेरते चीन और हेन्समार्थ साहै हमारों भीर सपने सैनियाँ साहित पारतो पाहर निवास आने। पूर्वे और सेन्वओसील एका बिया, इस, ब्रेसकेंड क्यें दर, स्थानका अधिका, राज्य प्रक्रेम्बस, कर्म, कुर्वेचन, समुद्री और प्रशासन आहे। कारकुके दुव, कारकानकृत्या सक्तेत, करवा, कारका कृरिकास, काल, काला, कालाओरखेंच कृष्योन, काल्युआर सन्दर्भ, पहुच्या और विकासीके पूर, अधने होटे भाईसीहर बहुकेत्, अपान, कृष्ण, राज्ञा आराज्य, बाह्रीय, होत्यार, बेलियर तथा और भी बहुत-है बीर, को संस्थाने अधिक क्षेत्रिक सारम जन रोकर नहीं करने एवं है, बेर्डक्कन क्ररीर कारण करके जाती प्रवाट हुए। जिला बीरच्या केला केव. जिला वेरहमी बाबा और बैसा बहुत का बहु आहेरे एक वेरहमी पदा । सबने दिव्य पदा व्याप कर रहे हैं, इनके क्रापेने हिम्म क्रम्बार कारणा हो है। अर संस्था के हैंद, अहंबाद, ब्रोप और कार्ल ब्रोप कुछे है। संपर्ध उत्तव कह को और पंछेपर ज्यारी स्त्री करते थे।

संस्थानीयम् वहाँ बाराने प्रतात होवार अवने ताले प्रयासने राजा कारकृषो किया के प्रकार किये। व्यानिकी व्यानारी की किया अन्यो सन्तक हो कुळी की। जर होनोरी कुछने भी हुए कुने तथा अन्य कम्मिकांची केवा। यह वहा ही अञ्चार, अधिका और अस्तात होवालकारी कृत्य का। प्रधाननीर तथा सोग अस्तानिका होवाल क्ष्यांचा हुनिने अस् बंदनाको देवाने सर्गे। स्था कृत्यह व्यानकीयी कृत्यसे किया हुने पास्तर अवने स्था कृत्योंचे देवाने हुन् सरक्यांचा हो सने।

संख्यान् कोच और कारांती स्थित एवं व्यवपूर्ण पूर् वे संधी नमोड वीर व्यवस्थितेयी मनावी हुई अन्य अवस्थिते अनुसार एक-पूर्वारी केम्यूबंक विले ( का सम्बर स्थाने मनो सम्बर्ध का या था। कु विक-नारांत्रे स्थान, की परिके सम्बर्ध का या था। कु विक-नारांत्रे स्थान विको सम्बर्ध कोचे पुरोको सम्बर्धने सुन्धान्यका अधिकायु और क्रेस्ट्रोके कोचे पुरोको कई कृषि स्थान कारीसे स्थानका। किर क्यूबेटे कही सराजानके साथ कारीसे विस्ताद कार्ये क्रम स्वैक्ट्रीकं वर्षा क्रिया। इसी अकार से साथ स्थेत पुरानों, क्यांत्रों वर्षा पुरोके स्थान विले । साथी यह एक-पूर्वारों कार्य पूर्व-किरनेके कारांत्र कार्ये पाने वहां आन्या हुआ। यहां विश्वविके क्रमणे क्षेत्र, याव, याव, योग और अपवादको सार पूर्वि विश्ववाद व्याप आसी हुई क्षिणों अपने विश्वत, वर्त्व और पूर्वित विश्ववाद व्याप आसी हुई। वर अववाद प्रश्नीत्व कुछ हुए हैं पाया। ये और अन्तर्णे क्ष्य-पूर्त्वती अपूर्णि से परमार पारे विश्ववाद वैसे आसे हो, वर्ती प्रवाद पारे सार्ववाद साम हुए। या पुलिस व्याप्तविने कर समाध्य विश्ववीद वहर दिया और ये क्ष्या ही क्षयाने समाध वेशले नेत्रणों पहुर्खीते हुम्मी सम्बन्धन अपूर्ण ही गर्ने; स्थ्वी और व्यापानोत्तरित अपने-अपने प्रोप्तवित होंगे प्रवाद हैं हिस्स्वेचारों गये और प्रोप्ति प्रवाद समाध है प्रवाद और विश्ववादों में और प्रोप्त प्रयोद प्रवाद समाधी विश्ववाद क्षित्र महिल्लों प्रविद्ध हुई थी और पारित है क्ष्यवादों क्ष्या समाध समाध-कारणे प्रवाद समाध अपनामीतिक समाध है।

का सकते कहार हो कानेपर बहुआरि बालसीने कार्यों को को क विकास कियोगे बहु- 'हेरिको । तुपलोगीयेरे के के अपने-अपने चरिके संबंधने क्षत्र प्रकृति हो, हे आरुक मानका पूर्व पहल्योके कार्य गोता सनावे (\* अवदी बात कुरकार अभी कञ्च रक्षानेकारी स्वति विकार रक्षानी पूर्व पर्दी और क्यूक्क स्टिंग से सम्बद्धार कायर अपने-अपने प्रतिके शास कर्ष कर्ष । इस प्रवास काम प्रीत और प्रीतक्रमा प्रतार क्षेत्र विकारित क्षित्र-कार्य क्षेत्र क्षेत्र परियोगी ही नहीं। प्रमीर प्रारंत देश है गरे, करोर प्रस आंश्वरण और फालमें भी दिना ही भी । इसका सारा होना ५९ ही नवा और वे समझ सहनकोंचे समझ होका विश्वनका आस्त्र हो अपने-सामी केना प्रकारको सामे गयी। अस समाप विस्तिः निरामे करने हो हो कारण हो, क्रमेस्सार परावार कारणे था का की भी। प्रथमने के हर राजकोंक प्रशासक pura grant fine-fine binde upplich up & atterd की जारद हुआ। यो सूच्य स्टेस्ट-अक्ट्रॉवेट दिवसर-राजनका क कृतक कर्ताची अवस करेना, को हालेक और परावेक्तरें की किए क्यूपरी उन्हें। होती, सरावाल ही क्र-क्युक्तेने निवन क्षेत्र एवा को कोई दुःस-क्षेत्र की रकानेण । यो विद्वार कृतने सम्बद्धार व्यक्तियोको पह प्रतंत्र स्कारेत, व्या इस सोकार्य क्या और परलेकार्य सहबाह प्राप्त कोना । सामाध्यक्तका, काली, सहावादी, जिल्लाहर, दाली इन कर्नात, सार, युद्ध, इन्य, अवेता, सामार्थ, मार्थिक, सञ्चल और की काम करनेको मान्य प्रा अक्रुपंत्रात कांको सुरक्तर उठन गाँ। अस करेंने।

#### जनमेजयको परीक्षित्के दर्जन और युधिष्ठिर आदिका इस्तिनापुरको स्पेटना

मर्गनेवरी का न्यान् ! वर्षः वस्ताः वस्ताः । स्वारती में रितावा भी गरी का, केव और कामको वृद्धं । केत में में मानवी मार्ग्यं क्षुं सार्थं कामेवर मुझे रिवाट है। साराय और उस अवस्थाने में कृतार्थं क्षेत्रर आवीवन कृत्यः का सूर्य । तस्य महस्तिती कृत्यमें मेरी कृता की कूलं होनी कारिये ।

रामाने इस जनार प्रकृतिय काम अपनी महाने महाने काम कृत की और उनके विका परितिक्ति जा पह-पृथ्वे कुत दिया। एकारे देख—विकास असे काम पहिल्ले के और अपना कृत पहिल्ले कार असे। उसके काम परितृत्वे के नकी और उसके कुत बहुरे लाग की है। यहा परितृत्वे के नकी है, से के महानिक्ता दिने। व्याप्त पहिल्ले कारे विकासी सामन जाता होका पहास्त्रकारों रामा पहिल्ले कारो विकास सामन हाता होका पहास्त्रकार रामाने प्रकृत को कार्य-कार्यका-पृथ्वे कार्य प्रकृतिक कार्यकार अस्तिक कार्यकार कार्यकार कार्यका-पृथ्वे कार्यकार प्रकृतिक के कार्यकार के स्वाप्त कार्यकार कार्यकार कार्यकार कार्यकार कार्यकार की कार्यकार क

अवस्थित वहा—कार् । विस्तंत वहारी कार्यात विशेष पुरस्तुत्व वहारी कार्यात विश्वास है, सभी हेने लेकोरे विश्वस है। हुन्ये या विश्वास अवस्थात हुन्य, हुन्यते यह इन्त्रेंगा पान होनार हुन्यते विश्वसी है वहार्यात हुन्यते अस्य कार्यात है। हुन्ये प्रस्ता सर्वसीची पूर्ण की, वहार्या कार्यात हुन्यत पहल्च की अहा किया और इस व्यवस्थात कार्यात हुन्यत पहल्च की अहा किया। कार हार्यात कार्यात हुन्यत पहल्च की अहा कार्यात व्यवस्थात कार्यात हो। कार्यात होने हुन्यत स्वास्त्रक व्यवसीच वहार्यात है। कार्यात होने कुन्यत स्वास्त्रक व्यवसीच की वहार्यात है।

विते कारे हैं—विकार आधीषाधी का बात पुत्रकार रामा पत्रकेवको पार्टि व्याप्ता क्षेत्रक पूजा और स्वकार किया। सरकार्य कृतिक वैक्राव्याकाको पूजा—'स्वाप् ! रामा कृत्यकू और कृतिहिले पुत्रों, केवों और सामाज्यको क्षित्रके बाद किए क्या किया !'

वैत्राचकावी वह—तक्त् । एक्से कृत्यू सक्ते पुर्वेक कृतिका महत् वस्तात देशका क्रेकरे क्षेत्र हे पुरः सावने आवानका करं आने । आन एक होगा वहां पहिंचल मी असे किए नेवार आने-अभी आनीए कार्नारर करं गये । मानक कार्ना किंगती और किंगोची साम सेवार कुराइके की-बीठे की । आवानकर कुँकार सेवानुनित कहीं नारसे कुंगतीय आव कार्ने केंग्र व करेंद्र करेंद्रिय कार्नारत मानेव कुंगतीय आव कार्ने केंग्र व करेंद्र करेंद्रिय कार्नारत कुंगत अंतर्का किंगानी पुरक्ष नहीं कार्ने । क्या कुँकारत एका कुँतिया का कार्न अस्ते असूर्व कार्ने । क्या कुँकारत एका कुँतिया कार्न कार्ने केंग्र का को है । अस कुँतिका करते हो थे कार्य कार्ने कुंगती अस्ति के माना !

व्यानकी का उचार आनेत एक वृद्धि है है है है। वे निक्क कुमार का—'अध्याको | कुमार काम्य है, कुम अपने व्याकतिक की अध कुमे; कुमार कहिया के क्या केद कु है का । अप कुम राज्यानिक और क्या कि क्या में कर्म है। अप के अधिक दिल्ला की क्या अपी कुमार्थ | काम्य कार्यक कोवक और हुमार्थ क्या के क्या अपने कार्यक्रमा की अध्याक हुए है जाता । अप में कार्य कार्य कार्यक, इसके देनों कुम कुमे अपूर्ण है है के । अपने कि कि निक्का, एक्के देनों कुम कुमे अपूर्ण है है । अपने की कार्य है इसमें के क्या कार्य के स्थान के उसके कार्य कार्य कार्य अपने कार्य कार्य कार्य है हम्में की निर्म क्या कुम हमा है।'

प्रमान प्रमान है। इस महिन्द पुनिक्ष केरे— 'कार्य ! जान करीं हाता है। वेद परिवास न प्रतिके; कार्य में सर्वत निरम्दान है। वेद साथ मह और हैं कह को है को करें; मिलू में संकार और हातम प्रमान अला हुआ अल्पन क्या हर केरों माताओं की कार्य में को पहली है, को सुने; हुएने विकास किया है, की महत है। हुएने हुए इसलेन्याक स्थान-संस्थाद कारी-मिलू हो मुख्य है। इस समय प्रमान के अला है के हैं, की सने; क्योंकि विकास कार माता हुएना कर्मन है।'

मन्त्राधि हर अकर आहेब हेनेरर राजा मुख्यिको अन्य अनुन्ते नेजेको चेककर तेली हुई कुन्तीने कहा—

[ \$11 ] संव मव ( खपड--वो ) ५५

'माँ । एक और कारीको कवाउँ देखे को को को कर सीट। सानेकी स्वाहा देती हैं; सिंह केंश कर अरवने रूप हजा है। कानेका नाम भी सुरक्तर मुझे कहा हु-क होता है; किर कैसे का सर्वेगा ? में अन्यको कारताचे विद्या क्रास्त्र नहीं प्राप्ताः क्रमेंकि स्थाने क्यूबर कुछ नहीं है। प्रधालमधी भी जाति हो जाती है। तक मेरा बिक प्रातेन्द्री कदः राज-काराने नहीं सगता । हर स्त्यूले संख्या करनेको 🛊 भी काहता है। यह सारी पृथ्वी मेरे रिप्ने सूची हो नारी है; अर केवल वर्षका पारन करनेके तिले में वहाँ कुछ पहला है। हम तम लोगोको असनी साम्याननकी पृष्टिनी सनुग्रांक

न्द्र सुनका प्रयोगको आहेतीने अहेतू उच्छ आहे । ३००० राजा सुविद्वारने कहा—"मैक ! जुल्में सकाजीको क्रोक्कर क्षानेका सहका को है। जान बीज हो और कहने। में इनके काम रहका स्वयंक क्रिका और इस प्रतिनको सुरस अर्थुना : मैरा इस्य न्याराम तथा इन केरी नामओकी सेवाने संस्ता क्षान प्राप्ता है।' यह सुनवर कथीने स्वकेशको क्राफेरे राज्य रिश्म और श्रह्म--'मेरा । देश न बड़ो, नेपी कर कारकर बरको और पाओ । हुक्तोनोंके कुरेले मेरी करकारे किह यहेचा, कुक्ती कालाने बैककर में उक्त कारताते जिल भारीकी; प्रतरिको केस ! पाने पानते, तथा प्रकारेकोची अन्य बोर्ड से सु करी है।"

इस प्रकार कुलीने तथा-स्थापी वर्ण स्थापर उनके मनको चौरस सैवाना । सिर्द पाता ३६४ महाराज कृतरहाओ अवहा केवार पाण्यांने कावे परलॉर्वे प्रणाय विका और हार अवार कहा—'राज्य । शायके आयोगीयी हालकेन कुमलपूर्वक राजकारिको स्वेत व्यानेक विन्ने वैचार है।" अर्थराजके ऐसा कालोवर राजार्थ कृतराहरे ज्यूं आहोताह बेकर करेकी अञ्चल हो। जिस महत्वाची चीकरेक्को केर्र विधाया । भीवने भी उनकी बातोंको प्राथमे स्वीवार विध्या । जनको स्वीट प्राप्ते ।



सन्दान् पुरस्तापे अर्थन और मध्य-सहोतनो क्रतीने राज्यकर को जातीयाँद देखर बिद्धा किया। प्रत्येत यह से कर पायाचिक प्राणीने यहे और इनकी भी आहा लेकर र्जाने कुचीको प्रकार किया । यादा कुचीने समयो ह्याको रुपायर प्रथम परस्य हैया। स्ट्रांस क्रुंपेने स्टब्सी विकास की। हैकी आहे कियेंने भी करने समुख्ये न्याक्ष्मंत्र प्रकार विका । किर क्षेत्रे सामुजीने क्ष्में प्रतेशे राज्यार आयोजीं, हे जानेकी सरक्ष हो और उने उनके वर्धनकार उन्देश की दिला। सरदक्षत् वे अपने परियोधि साम करते नहीं। क्षेत्री ही हैरमें सारकियोंने 'रव खेलो, रव कोलें' की कुमार नकारी। इसके बाद अपने बरकी सिकी, च्याची और सैनिकारेंक स्थाप राज्य प्रतिक्रित व्यक्तिसम्बर

#### नारदजीसे शृतराष्ट्र आदिकी मृत्युका हाल जानकर थुविष्टिर आदिका स्रोक और टन तीनोंके अन्त्येष्टि-कर्म

वैतन्त्रकार्थ करते हैं—क्रमोजन । क्रमानीको | दिनोते आको दर्शन भी दूर के, कुरुत्त से है न ? इस समय सबेकमा लेकार जाने जन के वर्ग करांत है को से एक दिन देवांचे नास्य राजा गुनिविष्टें प्रस्त आहे। जुनिविष्टें करकी विभिन्नत् पूर्ण की और उस वे उससम्बर बैठकर केडी देर विज्ञान कर चुके को उन्होंने बद्धा—'धनकन् । ३४१ बहुत

जान किन-किन देशोंने प्रथम करते हुए आ मे हैं? मतलक्ष्मे, में अवस्थी क्या सेवा करें? आप ही इक्लोबॉबर्ड क्य गति है।'

करवीने कह-- राजन् ! तुन्हात कहना सार है। इसर

महर दिनों पाद पुरस्ते जिलना हुआ है । इस समार में उन्हेंसको जा रहा है। सरोपों मनवाते पहुन कहा अनेकी सेनोंका की सुर्वत करना अस्ता है।

वृत्तिर गेरे—सरवर् । जाने विश्वर क्रेसरे पहुंच मैं पार जाकर बाह करते हैं कि बहुवन क्ष्म्य हुए सब नेहें करोर सरकार समें हुए है; बाह आको की उन्ने देख है ? के कुम्मानुकेंड है र ? बाजारी, कुमी, प्रदूष करा मेरे सह बहुवर कृत्या हुए सम्बद्धित हो है ? के इस बारे में कुमा बहुतर है। यह जाने उन्हें देख है के बाजारेजी कुछ जीकिये।

अरबी का-बारक । में का स्वेकने से कु हैका और सुन है, यह साथ मुख्या केल-केल कारत हुए हैं। कृत विकारिक क्षेत्रक कुछे—यह कुछकेन करते और उसने से कुछरे निवासी सम्बद्धी और यह कुमीके कार पहुंचर (इंग्डर) को भी भी । सहय और यह प्रात्नेताने पूर्वेदीह के कारियोजनी राजनी रेखर प्रान्ध स्वय हो गर्ने । यह प्रहेशकः कृतने निवाने तोव प्रत्यक अवस्था को । ये पूँउने ब्यानक प्रत्यक प्रसाद करूबा अबार करते और की बाते थे। उस करते रिकारे प्राप्ति थे, से तथा एकेन कार्या क्रिकेट प्राप्तान वाली पाने र कारे प्रतिने कारेर क्रांत हो होतीक बोकार यू गय । क्षा अन्तर क्योंने का नहींने नातीय किये । प्राच्याचे केवार नाह मीचा रहते राजी। कुत्ती हेती एक महिनेकक अध्यक्त कार्यक एक हिए केवल करते भी और पहल को प्रस्त सर्वाद से दिए करकर करके बीरते हैंन संस्थानों अकुर स्थान करते हैं । यह कार्यको अञ्चल क्याँ एक प्राथित स्वीती विकिन्तु हुन्त माने पाते है। पान प्राच्या करते विद्यानों की और वाली मानुरत हो पाने थे । अन्य अन्यतः सीत् निरम्य कारत नहीं पह पान का। में कार्य कार्य और किससे कुछ थे। प्राथमी और कुरते—ने केने देनियों साम-साम स्वास कुराकुके बीके बीके फिरमी भी । सहाय भी क्यूनिक अनुसरक करते थे । केथे-केथे बुनि मानेन सहय है कुम्बुओ नियों से और पुन्धेकी गान्यारीके रिज्ये के सबी वह औ।

्या विश्वी कर है, एक कृष्णु गुरुके सकाले कृष के है। अपूर्ण गुरुके अल्ला क्रिक करके कृष्ण अल्ला और क्रिक् क्ष्मि पुरः में अल्लाकों और कर दिने । इसी एक्स को केन्स्री इस करी, जिससे का कर्णे कांधर कृष्णी अल्लाक हो की । साथ कंगार कर और है करी-धार्थ करके कार्य कर्ण, कृष्णी हैंड सुरुक्त रहे और करेड़े सुकर कार-कार्या कार्यकों हैंड सुरुक्त रहे और करेड़े सुकर कार-कार्यक कार्यकों हैंका करें। समझ कर अल्ला किर क्या क्षा के स्वेश करकेड़े क्या करी संबद का क्या, से भी राज्य कृष्णु अल्लाह करकेड़े क्या-शर्मित और हो कार्यक कारक क्या का न सके । सुक्राई केने नामर्र को नामक पूर्वत के करी थीं, उस्ता के की प्रकारियें सरकर्त भी । इस समय स्थापके निवाद सकी देख राजा वृद्ध-ज्यूने अपने प्रारमिको ज्यून—'प्रमुख ! कुन विक्रते हेवे अध्ययन चान सारते, न्याँ न्या सम्बद्धीः हुन्हें चाल न सके । इनलेन से जांद नहीं अध्येको अधिने होनको काम गाँउ त्राह करेने ।' कनकी सह कुरकर स्थान करूर को और केरो—'स्थानन । इस सीविक जीको अल्बो पूर्व क्षेत्र रॉप्ट मूर्व है (अक्षेत्र प्रतिकार कु-नेरका से अक्रमीय अधि क्षेत्र व्यक्ति ); विज्ञु इस स्टब्स हर कुरान्त्रको पुरस्कार परिवा कोई अक्षर पूर्व विकासी देश । क्षा प्रापंत कर कर करन काहे हैं—यह बालेकी कुछ की हैं स्कृतके इस प्रकार पूर्णना कृतको किर सक्-स्कृत । पुरानेत केवाचे पुरानात्रक बीवान बर्ला भी भूते हैं काः प्रको वेश्ये पुरः प्रकृति पृत्यु वर्गन्यकारक स्त्री हो सकति । का, अंदि के कहाँ इंग्लेची अपना रूपात करेंद्र प्राप रक्ता क्योक्सेंड डेब्टे क्यंक्सिय प्राप्त पात है; इस्सीके हुए तम नहींने प्रीक्ष करे कारते, मिलन व करे ।' का नक्षका तक कृतकारे अपने नवाते एकता विका और प्राप्तारी एक कुनीके कार में कृतिकृत होना के भरे। को यह अवसारे देश स्कारी कंपनी परिवास की और कहा- 'सहरास । अन्य अस्ते-को चौनपुर कोरियो / समाने उनके सामानुसार साथकि साह तो । के प्रतिकृतिको केवाचार प्रात्तुवने स्वति विकोश के स्वते । पूर्वा के का देवी परिवर्ष, पुरानी पान सुन्ती करा पुराने विकास प्राप्त कुम्ब्यू—ने केने है क्रांशीने प्राप्ता वात है गरे, प्रियू स्वपुर्वके प्राप्त क्या को है। की को स्वपुरके सकत स्वर्गकारी किर्



पूर्व देखा था। उन्होंने का समीतनोनो सुम्बन्त यह साम समामार निर्मान किया और साथ महिते दिनारण पर्नारण मारे गये। इस अक्षर पहालक कृतक और पून्नी केने साराओगी पृत्य हुई है। कार्ने कृत्ये साम अक्षरमार का बीतीय पृत्यक्तर नेते हुईलों भी पत्ने थे। सम्बद्धार क्याची इस स्टान्स हुए, सिन् वितरोने असी किये सोच्य की क्याच्य समीत असे करने का बीनोची सम्बन्धित विकास की कार्य की सीत की था। मुनिद्धित है वहाँ धार्मण की क्या और उन्होंने वितरोचे साम क्षेत्रोचा सम्बन्ध कुछ है। इसके किये हुने क्यांच बहु सहस्य कार्यने; समीत क्यांच हुन है। इसके क्यांच और क्यांने सीवानों है समानित समीत क्यांच क्यांच अस्तान के है।

वैद्यानकार्य वाले हैं—हातत्। साम कृतकृति परावेष-नामका या पृत्या कृतका कारण कारण कार्य हात्यात क्षेत्र हुत्य और उस्ते अवश्चकार केरे हरते। केही देशों का प्रेरेशी अस्त्राम कार्य हुई, के कांद्राम कृतिहर अस्ते अहि पीएका कारणीते हुत असार कहते हरते— "सहत्। इस्त्रामी कीहे कीहे की कार्य हुई, यह विद्यान कृतकृति कार्य है। इस्त्रामी कीहे कार्यों के स्वार्थ कार्यों कारण कार्यों कार्यों के स्वार्थ कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्य कार्यों कार्य कार्यों कार्यों कार्य कार्य कार्य कार्यों कार्य का

मारवी का--राजर् । कुराकृता वह संवित्ता मारिते को दूशा है। मेरे कुत्र है कि सानु पीकर सर्वकारे में राजर्म कहाँने कामान्त्र स्वेकारों अंक कारों साने, से का साथ कहाँने कामान्त्र होंदू कराने के साथकारण का सारितांकों को साथ साथ कामान्त्र कामो-कारों सामानों को साथ । उपनिकाल कामान्त्र कामो-कारों सामानों को साथ । उपनिकाल कामान्त्र कि अर्थ अर्थित का सामेरे का मार्थ काम कारों की और सेवा कि की पार्थ सामान्त्र है ने प्रमुख्य सामने कार्य कार्य कार्य क्या कुर है। इस अव्या राज्य है मेर में परम परिचार कार्य हैंदि साथ कार्य के स्वाप्त कार्य सामिर्त हैं पर हम्म है और में परम परिचार कार्य हुई है।

इस्मीर्ग्न हुए उसके निर्म कोन्द्र व करे। मुक्कानेची खेळा करनेसे तुम्हारी काराने की बहुत नहीं निर्मेश उस्त की है—इसमें क्रांत्रद्र की सीह नहीं है। आप हुए अपने सभी शहनेकी प्रत्य कारार उस कीनोन्द्रों काराह्मीर हो।

कारकर, क्रम पुरिसीत अपने प्रकृती और विक्रीय प्रकृत न्तरते बहुत निवस्त्वन नहरकार गर्ने । नगर और प्राचकी जब भी रामकीको जेति होबर एक एक बाल दिने पहलोंके सर्वत करें; किर करने वालें कर किया और पुरुष्टियों जाने करके उन्होंने स्कारत कृतरह, सम्बाह्य और कृत्योवेषीयो करोट पुरुष्क्-पुरुष्क् यहन और गोक्सा क्यारम क्रमे क्रम्बुलि है। सक्ते कर् सहीय-निवृतिके सनुद्वार कर्म करते हुए क्यानकोच नगर्छ कहा है दहा को। पुरिवेदने वर्षे क्या कृत्या एवं हुए थे, जा कारता वी full-flouris waters from reprint the air ची-एक्से अने सकार्य करेके उठा देश औ क्षाने हेरेकेच कर प्रकारत बहुई अर्थन हो। स्रोकtransfer field using such and are bible using प्रकृतक पुनिर्देश बावने दिए कृतक आहे हैं होता विकास कार विके करा प्रमुखीको पर्यात प्रक्रिकार्य से र कुरक्षांद्र निर्मित करोने क्षेत्रक, स्विद्र, भी क्षत स्वयूक्त कुरुतारे अंक्ष्म की । इसी अंक्ष्म प्रत्यापी और स्वयंक्षि पृत्यस्य-पृत्यस का रेकर अने दिने के अध-कार कहाँ का की। अप क्षा के किए क्याने किया नामी हुन्त करता, उससे क् प्या करते हैं पाराने प्रदा होती हो। यह पुनिवृत्ते अपने केची पारकारोंके प्रोड्सको प्रस्ता, मोजन, शासरी, स्त्रीन, सार पर, पहल और एक उसी पहले करने थे। इस उसल क्षांची कर कार्यक कुम हैकर भूतिहरूने इतिनात्रहरूने उनेक किया। यो रोग प्रधानों केने को है, उन्होंने की करावी लाको अनुसर बाजू विका और स्थ सेनोको प्रीक्षिको एकोर परके पनि-पनिके कार्य और क्यानेंसे सार्था एक की और मैन को नहार्थ प्रकाश कर दिया। प्रार्थ कर इतिकार्त स्थान कार्ने का तत समावत राजको का हरूवा । देवरि काइके के वर्णक क्रम सुविद्वेरको केर्र वैकापर अपने अपीत प्रमानके पाने गये । इस प्रचार (यह सम्बद्ध होनेके कहा। एक बरुवाने अपने वाहि-धार्ट. क्रमणी, मिंग, बाबु और संस्थानिक निर्मित क्रम होते हुए फेक्क को ब्रोक्स न्याचे व्यक्ति दिने थे और होन को स्को

## संक्षिप्त महाभारत मौसलपर्व

#### . युधिष्ठिरका अपशकुन देखना तथा द्वारकामें उत्पन्त देख झीकृष्णका यादवीको तीर्थयात्राके लिये अझा देना

नायको सम्बद्धाः तरं चैव नयेक्सर्।
रेवी सरावती व्यक्तं ततो सम्बुद्धरेग्द्धः
अन्तर्वामी नारावकासक्त्य चनवान् अस्तुव्धः अन्तर्वः
नित्तस्ता नरावकास नरसा अर्जुन, उनकी स्थित्व प्रकट करनेकाली भगवती सरस्कती और अस्त्रे व्यक्त व्यक्ति वैद्यासम्बद्धे अन्तर्वाक अन्तरं आसुरी सम्बद्धिकार विजय-प्राप्तिपूर्वक अन्तरं करवको सुन् करनेकाले व्यक्तिकास्त्र प्रकारन पाट करना वालिने।

वैशायकार्यं कार्त है—सारोधव । महाधारा कुल्के बाद का क्रमीसवी कर्न शारक इशा तो राजा गुविद्विरको कई तरको अपश्चक्रन दिलापी केने लगे । चारी कुळार प्रेक्ट प्रमाण जांची करने रानो । असमे केम्ब्य और कमारेकी वर्ष होने लगी। पश्ची सहिनी ओर कवाल बनावर सही दिलायी के है। बढ़ी-बढ़ी नदियोका कर कालुके चीटर क्रिय गया और समझ दिलाई कुत्रोसे आकारित हो नवी। आकान्त्रसे पृथ्वीपर अंगार बरसाती हाँ हल्कार्य गिरने लगी । सूर्वप्रकार भूतमे आच्छा हे गता। ज्ञानके समय कृती हैय नहीं पूर्वा का और उसके प्रयूक्तमें कारण (किया सिरके बढ़) दिशाबी हो से। हर्ष और सन्द्रमके बारों और भवानक घेरे दृष्टिगोकर होते थे। उनके किनारोंने तस्त, माला और बूसर—ये तीन रंग हैं त्यानी देते थे। ये तथा और यी बहुत-से प्रयमुक्क उत्तल ग्रीसने लगे। इसके क्षेत्रे ही दिनों बाद युधिहिसको न्या समार मिरपै कि 'मुस्सनके कारण समझ पृष्टिनिक्षिका होता हो एक, केनल बीकृत्य और बलाह है उसके आयाओं को है।' क सुरकर रुप्तेने अपने ध्वक्षोको बुराना और पुत्र-'अब इमें क्या करना चाहिये?' स्टारक्ये उपायरी वृत्तिविद्याचेता जिल्हा सुनवर पान्यविको बढ़ी वेदन 🛒।

ने कुक-कोकमें हम को और इसका है मन मरकार वैठ को।

अन्येक्को पूजा विकास । शृतिन, अन्यक और क्रेंक-क्रको मीरोको किसने प्रत्य है दिया का, विहसी उनका संक्रार के क्या ? इस प्रसंगको आग विस्तारके साम कालोकी कृत्य करें।

वैश्वन्यकानीने कहा—राजन् ! एक हामपकी वात है—व्हर्णि विवारित, काम और संपेधन नात्वती हास्वपे को हुए थे। अने देशकार देखके मारे हुए स्वराम आदि वीर सामध्यो क्रीके नेक्यें विश्ववित कामे उनके पास है नके और क्रोके—'क्युनिये ! यह महानेक्सनी बश्च्यी की है। बहु कुक्ते रिक्ते को सामधीश है। आपलोग अच्छी सह



सम्बद्धार यह काराने कि इस कीके नर्पने क्या जन्म ! मान्य और पीला का। यह पुरू गुरूने इस पुरुषे कार्प क्षेणा।' हेला बहकर सहस्रके प्रत कर उन्होंने प्रतिकेका तिरस्कार किया हो में पूनि कोवर्ज करकर क्या-कारेकी और | अहान हो जाता था। को देखनेकर को-को कहार्यर और देखते हर बोले—'क्वों ! यह अक्टाबाद का साथ श्रीमा । उसके कार वाको बालोको वर्षा करते, किंतु उसे बीच नहीं और अञ्चलक्षी पुरानेका जात करनेके लिये लोकेका एक शर्वकर पुरस्क क्रपन करेगा, किसके हुना तुल-केने दुनकारी, कर और कोबी लोग अपने सनका करनका संकार कर इतिने, केवल क्लाम और डीक्ट्यर क्ला यह नहीं करेगा। बरस्यमधी से सर्व है अपने क्रियान करियान करके रस्पुर्मे प्रवेश कर कार्यने और ब्हुब्ल क्रीकृष्ण का परिवार क्रमा करते होते. इस समय पदा नामक स्थाप उन्हें अपने बालोसे बीच बालेन्ड।' हैस्स बाह्यन में गृनि करवान शीकवारे जावर विते । यह सम्बन्धर सम्बन्धर वेपास्थाने मुन्ति।देशियोधी भी बता दिखा। वे सबका राख जानो थे, इस्तरिको बाह्योसे का कावार कि 'क्रांकान्त्री का का अवस्य सत्य होगी' कारों को गर्व। नवरि अनवान् शीकृत्य सन्दर्भ वण्युके हंदन है, समाधि अहीने ब्यूनिक्केंट का अक्तबारको करून र कहा।

दूसरे कि सामाने मुस्का उत्पन्न विश्वा : व्यवकेने प्रस्ता सुवन एक क्रारेनको दे थे । यह सुनकर सकके काने क्रा विवास १३४ और उन्होंने उस पुस्तको कुन करकर समूहरे फेंकना दिया । इसके बाद क्लोन, बीकुम्ब, करुम्ब और क्यूनी अवस्थे अनुसार नगरने सेवन्द्र कर से गर्न कि 'कारते कोई भी सारनिकारी समिनेती और शायक्रमंत्रियोंके का काम और महिए व तैयार करे। के कोई मनुष्य कहीं फिरकर इस तरहका देव तैयार करेना, का कीते-वी अपने धर्त-कप्रजोतकि स्तीवर वक्त विक पापन ।' या योगना सुनकर समझ कुरकाराती पर्वालेने रायाके प्रयोग महिल नहीं करानेका निक्रण कर विरुद्ध ।

*वैप्राचनार्थं वहते हैं—एक*र् ! इस प्रकार सूच्या और अन्यक्रवंत्रके होग अपने कार अने इए संबद्धक निवास कानेके रिन्ने नान प्रकारके उसन कर रहे थे: तमानि काल प्रतिदिन इन सकके बरोपे च्यार तमाना करता चा। सरका क्रमा धर्मकर और केर किस्ट सा। अस्के प्रतिस्का रेन

पुन-पुरस्त पुन्निकोडे करोको देशता और कथी-कथी को के क्योंक का समूर्व क्योंसे स्त्रीत वार अब, प्रक्रिक्त बढ़ी क्लंबर जीवी उठने शर्मी । बढ़े इतने बढ़ गये वे कि अपनोंकर भी अधिक संस्थामें क्ये जारे से। वे जाने रहेवे हुए क्यूनोंके केवा और रूस कुतत्कर का बाज करहे के। यहनेकियोके प्रशेषे सारिकाई निरमार वे-वे किया करती थीं। हैन हे च कर, एक क्षणके तिने पी उनकी आवान कंद्र नहीं होती थी। स्वत्स सन्दर्भोधी और कारे नीटहोकी-सी बोली बोलने रूने । करूनही जेन्द्राही पृष्टि और अन्यव्योक्ते करोने सर्वात पंचा और सारा पैरोकारे कावार कुरने हुन्ने। कैजरेके पेटरी मध्ये, कावरियोसे हाथी, कुरिएकोड़े किएका और वेचरिएकोड़े गर्नले कुट्टे केंग्र होने रहते । जर रत्या कर्पनियोको पार करते रूका नहीं आही थी। वे देखता, रितरो, प्रवासी और पुरुष-देश्वर की अरायान करते थे। केवल बलगुम और श्रीकृष्ण उनके निरशायसे वसे थे। या क्रीकृतके सक्षयम प्रदुष्ये सनि होती, अह सम्ब क्ष्मिनिकोचे परोचे पार्च औरसे नवीके रेकनेकी प्रचंकर अस्त्रम होती की। इस प्रकार कारणके विपरीत गाँउ देशकर और प्रकार नेराने किन समानामान्य संयोग आन्यार क्लान् औक्रमने क्यंतियोहे सह — बीते । यहायास दक्के समय केल केन समा का इन दिनों भी इमरोनोका र्वका करनेके रिने को योग जार हुआ है।' यो सरकार क्षीकृष्य कारको अवस्थान विकार करने सने। सोवसे-सेच्हे अन्दे अन्ते व्ह बह आयी—'कन पाठा है क्य-क्रक्कोके भारे कार्यम क्रमलेकसे संदार पान्यारीने कार्राच्यको क्टबंडिम्बॉके रिन्ते को साथ दिया था, अनके पूर्व हेरेका का समय-इसीसर्व को उस गया।' यह सोसकी क्ष्मकर् अक्रुक्ते गामारीका हार सत्त करनेके खेदकरे क्लांकिकोची सीर्वकाय करनेकी आसा है। करवानकी अद्राप्त राजपरमाँने सारे नगरमें यह योगया कर दी कि 'एव कोन समझ्ये बद्धार प्रमासतीर्वये बतनेकी तैयारी करें।'

#### यदुवंत्रियोकः संहार

वैहरणकार्य कहते है—सन्वेतन । प्रत्यानी विज्यो रितारों सरकेरे देवाती भी कि समेद एडिवारी एक काले रंगवरे को हैली हो आने है और उस्ता होन्यन्त्रीय सुदाने क्वां सारे नगरमें बैंक सम्ब की है। पुरुषेको ऐसा स्टा हिर्मानी हेता था कि पर्नका कुछ जाकर पूर्वित और जनक-'बेहके बहुवांको अधिकाराचे एक निकारपूर्वि कार् पंकाबका का भी है। जानना जनानक राजन उनके आयुक्त, इस, तरक और करक कुछकर करने देखे जाते हे। स्ट्राप्त पृथ्वि और अध्यक बहुरवियोंने क्रियोसिक बीर्वयक्त करनेका विचार विचार किर अस्तव केनावे शिकारेका समुद्राय रख, मोड्रे और झारिन्सेंगर सम्बर हो 'कराते सहर निकास । इसके बाद समया कहन कियोरकीय प्रधानकोत्रमे प्रवेशकर अपने-अपने अनुस्तर परीचे दान गरे । योगनेता उद्यानीने का बढ़ पूरा कि क्यांकी की 'अध्यक्तकेमी समुद्धेय जीवार निवास करते हैं के मैं उसके पिरानेके रिले वहाँ जाने और वह सबसे विद्या रेका करे मेर्न । यहे स्थय परवाद अंकुलने का पहलाओ हुन बोइका प्रमान क्रिक । प्रशासको बहुर्गक्रिकेट विभावकी बार महान थी, इसीरिये क्योंने साथे इस स्थानवेको पहरी शेकन जीवा ने समात।

इसके बाद पाइयोकी नोड्रॉमें कैंडे इन् सामाधिने पहले आवेक्ष्में अक्षा कृतकांका उत्कार और अक्षर करते हुन् अञ्चल-'हर्षिक । अयोको हरिक मानोकार कीन ऐस भीर होता, को राजने पूरेंकी-सी क्याने सेने हर करूकोकी मेरी तब इत्य करेगा ? हुने को अन्यत्य फिला है, उसे अपूर्वाची कार्य वर्षा इस्त कर उसके।" स्वामीको ऐसा व्यक्तेयर प्रकृति की कृतकर्यका अवका करते हुए उनकी बारका अनुवेदन किया। यह सुरका कुरवर्षको यह स्रोध इस और जाने कर्षा क्रम उठाका मात्रक्रिया विस्तान भारते हुए बहु-'अरे । मुस्तिमान्धी ग्रीट कर गर्थ की और ने मरणान काकसका निवास करके बुद्ध-युमिने केंद्र करे के का अवस्थाने हुने और बक्ताबर भी काबी नुबंसकार्य इस्य कैसे की ?' अलबी कार पुनवर सार्वाधके क्रोकार विकास न स्ता ने सबे हेकर केले—'मैं समझी इसक काबर बढ़ता है कि साम इस परवेची मास्वर प्रैपरीके बीबों कुते, बुद्धका और विकासीके कर पहेला हैया।' में बहुबार सामाबि बीकुम्मके पाससे इंग्स्टबार आने को और



क्रम्बर प्रामी रेवर अपेरे फुरमार्थका फाला बहरे जलन का दिया। इसके कर वे अन्य कीरोको भी प्रीतके कर उक्तरने समें। यह देख भगवान् जीवृत्य देखें बेक्तनेके तिले की। इसनेने करलकी प्रेरणारे चीन और अन्यक्रमंत्रके वीरोंने एकमा क्षेत्रर सामनिको साने ओसी के रिका। उने कोक्ये परकर सामक्रिके उत्पर शका करते देश बॉक्क्जिन्यूर प्रदूष क्रोकों कर गये और स्तावधिको क्यानेके रिन्ते में कीवार्ने कुरुवार योजनंत्री मीरोंसे स्रोहा सेने लगे। उत्तर सामग्रीह सम्पन्ननीरियोके साम पिछ भवे। करनी कुम्बलोंके मलने होपित होनेमाले में होनों मीर महे क्रम् और परितयके साथ विपक्षियोग्य मुख्यमा कर यो के; किन् करकी संस्था अधिक होनेके कारण उन्हें परास्त न का सके और अन्तर्थे श्रीकृष्णके देखते देखते होती है इक्ट्रजॉके हामों को ग्ये। अपने कुत और सामक्रिको यात गण देश करकार औदानाने क्रोमने स्वयत एक मुद्री एतक उत्पद्ध औ। उनके हाक्यें उत्तरे ही व्या वास प्रक्रके एका वर्गका लोहेका मुस्तर का नवी। वित को को-को सामने पढ़े, का समझो ने क्सी मुसरासे मौतने घट बतारने लने । इस समय बालसे प्रेरित क्षेत्रर अन्यक, बोस, विनि और कुन्निकंडके कीर का इंकापेने एक-वृत्तरेको

मुसलीकी मारसे बरकाची करने सने । उननेते की कोई की 1 कोवर्गे असर एत्या राजक कर लेख, अधिक प्रको स्थ मनके स्थान दिलाची चाली थी। बस्तेयन है जा हरा प्रक्राणोंके प्राप्ता प्रयान का कि केनक की कुलके करने परिवद है जब वा। विक किसी कुल्या पहर किया बात, मा अभेद बंबाबर भी भेदन कर कारक था। उसको लेकर -कुर निवासे और निवा कुल्के अन्य से हो है। सामाने 🖰 महर्पाती आवसमें हैं। स्थापन अवस्थारी होने हरने । कुमूर और अञ्चलकारे चेटा जाकी विलेखके कांचेकी पद प्राप्त और विका पहल्कारे को है।"

स्तान को थे, किर भी कोई स्तानन नहीं बाहत का। सीहामादे देवते नेवते साम, मारहेमा, अहा, अस्तिह और भरबी कुछ हो करो । दिन के अन्तर्ध स्रोकति चकुक रही और सुद्ध, चार एवं नदा करन करनेकरे का प्रकृते करके को हुए समझ केरोका चंद्रार कर प्राप्त । यह देवा व्यक्तिकारी वशु और सुरक्त उनके पार कारा केहें— 'अन्तर् ! जब समझ विनास से नका इसमें सर्विकांक स्थापके क्षाची पारे पने हैं। अब कार्यक्रमंत्राच्या पद्म सर्वाच्या पद्मिये । प्रतिके, हुन होन्ये ३५१ ही

#### बलरामजी और भगवान् श्रीकृष्णकः परमधाम-गयन

वैक्रमानम् वहते हैं—राज्यु । स्थानक, कुरुस, स्था और धनवार जीवना—ने प्रीची ही वारतावरीके करण-निद्ध देशते हुए बहुति बात दिने । बोदी हुए बानेका उन्होंने अनक पराक्रमी मानगरनीको एक कृतके मेचे विश्वमान देखा, जो इकामों केवा कुछ सेच-सिवा का ये थे। उन्हें का speak speak denny see \$ 40 As the speak क्रुप्रेक्ट्र राज्याचे इतिकानुको साम्रा अर्थुक्यो साम्रोदि हत महारोहारकी सूचन है । अञ्चलकेंद्र स्थाने बहुनेदियोगी कुल्या सम्बन्धर काम अर्थुन बीच ही हुन्छ। को आते।' बीक्रमको इस प्रवास स्थान केरेन बाल्य स्थान क्रे कुरोहरू पार गय। अने को कोई का डीक्नर समुख्ये अपने नात पाढ़े देशका नात—'अपन विकास रक्रके रीको परित्र ही हारकाको करे कहते। कही देखा न हो कि कुछ सरके सारायमें पहला इसके हाथ कर करते हैं यह अपने पर्य-क्युमोधे काले बहुत दृश्मी थे; कालार् श्रीकृत्यको अस्तारो ने को है हस्तापुरोके रेज्ये प्रदेशक हरू. कों है इस्तानीय प्रत्येक जन्मको जन्म कृत पूरत एक म्बाबेके रचेक्चन पुरुवरमें जुड़ा हुआ उनके कार गिया, विवासी चोटसे स्वस्त करकी मृत्यु हो नहीं । अञ्चलो को देश करवा वेक्सी अक्रिक्स जरने को पहुँछ क्क्र-'बेक बलकार्यो ! साथ पत्नी सम्बद मेरी प्रदेश करे; सम्बद्ध में विक्रोंको कुटुर्वाकरोते संस्कृतने सीप जाता है।' यह बहुदार श्रीकृष्ण सरकापुरीमें गये और अपने विशा बसुदेवकीले चोले → 'ठाउ । जाय अर्जुनके अपनेकी **का** देशले हर समूर्ण विक्रिक्षे रहा करें। इस समय बाज्यमधी करके चौदर बैठकर मेरी अलीवा कर रहे हैं, में उससे विवस्ने कार्डमा। बैंदे पद्मंदियोग्य विनाद अपने अस्ति देशा है, इन क्रीऐसे सूची र्क्ष करकारचे अब प्राप्ते को देशी वाले ।'



पह बाह्यत ने अपने विवादे करवीने प्रवास करते हुई। नहीं है जरू हैंसे । इसमें ही का नगरवी कियों और पासकी है, हेने-विकासनेका पहुन् आतंत्रह सुन्तरी पहुः । क्रिकेर कारते हुँ कुळीचेंके करण सन्दर सुरक्तर सीकृष्ण पुरः सीट आने और जो सन्तम के हर केरे—'देरियो | पर्ताद अर्थुन कीम है इस कराने आवेशाते हैं। वे तुन्हें संबदसे क्यानें ने ।' यह बहुबार ने यह गये । वहाँ क्यार क्योंने कुछुक काने कारावर्धका दुर्वत किया। कारावानी केंगपुर हो स्थानि राज्यने बेटे थे। प्रीकृत्यके देखते-देखते उनके मुखाने समेद रंगका एक बहुत यह साँप निकास और समुख्ये और कता कथा। असके इसारी कारक से और प्रताकी क्रमा रक



कर्मकी भी। संपूर्ण कर्म ज्ञान हैनार जन जनकर अन्यान क्यार किया। इस्त है दिना कर्म और क्षेत्र प्रविद्य प्रविद्यालं भी उनका सरकार किया। क्ष्मोंका, क्ष्मुंग, कुन्ना, कुन्नांग, कुरस्य, हुन्न, ज्ञान, विस्तित्रका, कर्मान, स्वान्त्र, असिनका, पुर्वृत्त और अन्यांग असी कार के अन्यो देखलं क्यांका के। कर्म संस्ता संस्ताने की कार्य प्रविद्य क्षा का। कृत सक्ते आरो क्षमार अन्या क्षमान्त्र काम्या, अस्मिनकार, इस्ते अन्यांनका आदिके हारा कुन्य क्षित्र। कार्य क्षाराजके कारकार प्रवानिके क्षाय कुन्य क्षित्र। कार्य क्षाराजके कारकार प्रवानिके क्षाय कुन्य क्ष्मों क्षमाने क्षाराजके क्षाराकार प्रवानिक क्षमा कुन्य क्ष्मों क्षमाने क्षाराजके क्ष्मानार्थी कारकार क्ष्मिक क्षम कुन्य की और कुक् क्षेत्रने रूपे । पूर्वकारचे नाकार्यक्षीने को प्राप दिका का, जानो कर करो। उन्होंने अपने अन्तर्गत क्षेत्रेका उत्पूक्त क्रमा प्रकृत कृत्या सम्बद्धाः । जीवृत्यम् सम्बूर्ण अवस्थि सम्बन्धाः और क्राविनाची देवाव थे; से भी क्यूनि दीवों क्षेत्रीची रक्षकी रियो परकवान प्रकारनेके उद्देशको यन, वाली और इत्युक्तिका क्रेमन विका और पहलेल (संसाधि) का अनसमान करके ने क्ष्मीक होट को । उसे समय दूस बदा करवाला स्वय भूगोची पार से करेकी इच्छाने का स्थापक आया और चेनाने निवा होकर सोटे हुए अंक्रिकार्क पैरवें काम मारवार साथ कर हिला । अस्ता किया मुख्ये अस्तरक का, इस्तरिको सीमुज्यान्ते भी जाने पूर है हम्बा का बाल प्रतिके बाद का का अगरा रिकार अध्योगेंद्र रिक्ट आने यहां के बोधने रिवर पार पुष्पको संस्थानको पुरा कार्यम् सेक्स्पर अस्ति हो। वहाँ । अन्य को पार अन्योको अन्यतनी व्यवका सम्बद्धी-वन बहुत प्रदेश प्रभा और साने नामानुके केने बाल प्रधा रिन्हे । 'स्कूबल ओक्नान्टे का सन्त्र की आवासन दिया और अरबी कारियों आव्याच एवं पृष्टीको ज्याह करते हुए वे क्रमंत्रेकरे (अपने पान बामको) को गर्ने । अपारिक्षने uğuber pu, selbeligent, tü, selbitt, titi, febbit, कृति, रिव्य और अकारओस्प्रित मुख्य-मुख्य गण्योपि आगे क्यार परकार्क सार्व्य क्रिया । सन्धान्, असन्य केन्स्री, कर्मा क्रम क्रमेनारे, अविवाही एवं चेनदाक्ते कार्यन भागमा प्रशास अन्य तेको पूर्ण और सरकारको जनगणना ससी हुए ससी परंप बाल--- सप्रमेच बहुत है की। उन्हें कर करकी बात करते संबंध देखा, शहर, काल, कालं, अवारं, संदर्भ, हिन्दू और क्राव्याओंने विनीत पानते प्रस्ता पूजर किया। केन्यामॉने अधिनपूज, बुनियोंने व्यवेदारी व्यवकोंसे पूजन, क्यांकी सावन तथा इन्हों भी देनकह उनका सागत-सरकार विकास

## द्वारकार्ये आकर अर्जुनका वसुदेवसे संवाद तथा वसुदेवजीका निधन

वैज्ञानस्य करते हैं—तकर्। क्रमान कुश्तेस्य प्रृत्यार व्यारमी पंच्यानेते व्या सम्प्रात्य का सुक्ता कि समस्य पहुंची कारतमें प्रात्मवेची पारते व्या हो गये। पृथ्यि, पोण, अञ्चल और कुकुर-नंकों मेरोचा विज्ञा सुक्तार प्राच्याची कहा होता हुआ। अस्या हान आस्तित्य हो उद्या। बीकुन्तने जिन स्त्या अर्थुनकों हो स्वस्त इस स्तरूपर विकास ही नहीं हुआ। ये हुन्त करने करन व्यक्तिकारी विकास किया स्थाप क्षिया प्रकार साथ प्रविकारी विकास कारण व्यक्ति स्थाप स्थाप विकास कार्य नाम विकास कारण व्यक्ति स्थाप में दुर्ग है। प्रवासन् स्थित कारण होते कार्य। उनका कार्यका क्ष्म का कार्य। उनका प्रविक्ति कार्य कार्यका के कार्य कार्य मार्थ कार्य कार न्हीं गया। प्रत्या कारी और सोकृष्णकी परियोधी यह | सीकृष्णके केंद्रपावन अनुहर और स्थरतीय ही इस समय दुरकाश देश अर्जुन कुट-फुकार रोने समे और अर्थपुओकी बारा बहारे इस प्रकारित निर गई। सम्मिन्त्री पूर्वी सरक्षामा और कविनको आदि पटयनिकों भी अर्थुको निकर भा करीनवर गिर वहीं और उन्हें बेरबार बोध-बोरबे केरे रूनी । सरकार क्योंने अर्थुनको ब्रह्मका क्रोनेक विकासना विद्याल और सुरवार उनके कार्ड और की गर्नी। उस सकर प्रभूतिक अर्थको भाषान् स्टेक्टलो पुर्वाची प्रमूक करके उनके विश्ववदी अनेकों उन्हें कुन्नवी और उन्हार-कुलकर का दुःचिनी कियोची कारणव से । इसके कह मे कार्य काम प्रमुक्तिकोते निक्तिके देखे उनके महत्त्वे पर्य : बहाँ पहिलार उन्होंने देशा कि पहाला बहुनेकरी पुर-क्रेमके संग्रह क्रेकर पृथ्वीवर को हुए है। क्यानक का वहा देखकर अपि बहुते हुए अर्जुलो उनके केवी पैर बहुत किये। बसुरेकाने अपनी केचे पुजाओं सर्वृत्यों सीव्यत क्रांति रुप्त रिप्त और अपने सम्बद्ध पूर्वे, अकृते, पैपी, दीवियों और निर्वाची कर कर-करके थे रेके-विरम्बने सने । वस्तेवन नेले-अर्थन । किन वीर्थन बेक्स्से क्रिके और प्रधानीया विकास करते हो, उन्हें जाना भई देश बात

हैं इतनेपर भी मेरे जान नहीं निकल्पे । को हुन्हारे क्रिया तिन्त्र से जीर किनका दूप बहुत सम्मान किया करते थे, पृष्णियंत्रके प्रमुख बीरोमें किन होको ही अस्तिकी पान करता था तथा हुन भी जिलकी प्रदेशको जीत जाना करते से से

कृष्णिक्षिकोके विभावका प्रकार कारण पूर् है। अवधार राजनीर, क्रांत्राची, असूत या प्रश्लाकी की निवा करों। करें ? कामणे क्षितीका श्राप है हर सर्वताका प्रसान कारण है। जिन कार्यकरने केवी, कंस, केरियक, विक्रमात, निकारमा एकामा, कार्मिन, मानव, कार्मार/ काविता क्या महत्त्वीको सामानीको भी कार्नेकार आधिक करावा; विन्होंने पूर्व, इतिहम स्था पर्वतीय-अपनोत नेपानेक संप्रत किया, अपी कथ्युत्ताने व्यत्यक्षेत्रो अनेतिये कारण प्राप्त हर इस संबदकी क्षेत्रक कर है। तुन, देवर्षि कृत्य क्रांत अन्य कार्नि को बोक्स्माओ क्रांते स्वयंत्री रहेत प्राच्यान कानेवार व्याप्ते हैं. वे ही घरवासी अपने कुटुव्यक्ते कारके पुरस्का देखते हो और सक् इसकी ओरसे कहारीन को हो। कम पहला है, मेरे पुरस्काने अवलोर्ज हुए समाहेश्वरके पानारी एक मुस्लिके प्रकारों मानवा करना भी बाह्र ( अर्थन । तुम्बारा चीव गरिवित् अस्तानामके हामसे सारा कावन भी सीकृत्यके प्रभावने चीतिल हो गया—यह से तुप सोनोब्दी आंको देखी काथ है। इसने इतिकासी हेरी हुए की क्ष्मिरे स्थाने अपने पुरुष्टिकोशी यहा जो भी । यह पुर<sub>ि</sub> केर, वर्ष और विक-सभी एक-कुरोबे क्रमी सरका बरकारी है को हो उसे का अनकारों देखका सीवार्का मेरे पाल सम्बन बाह्य — 'निवासी | आहे इस बुरावार संहर्ष हे पन । अर्थुन प्रशासन्तरीय जानेवाले हैं; आनेवर कारी वृत्रिक्तविक्तवेके व्यानास्थ्या कृतका शुर्वकरेगा । अर्थुन व्यान् रेक्सी है। में ब्यूनिक्विया निवन सुरवार चील के नहीं अलोने-अलो प्रतिक को सीक्ष पढ़ि है। को मै है से क्र नक् है। के कर्तृत हैं, को में है। कर्तृत के भी को, की क्षेत्रिकेच । किन विक्रोंका प्रकारकार प्रार्थेय हो, उनके पालकोब्दी दक्षांपर कर्जुन विज्ञेनकारणे ब्याम हेंगे और वे ही अल्या औष्परिक्षा संस्थार भी करेंगे । अर्जुनके बहारी करे है व्यक्तिवरी और अपूर्णिकाओंप्रवित प्रश्न प्राप्ता न्नरीको रुख्य क्रमे देखा। मैं किसी परिक स्थानमें सुकार क्रम और निकास कारत करता हुआ परंग सुद्धियान् पारत्यकोके साथ कारावारे अधिका कारिया।' अधिका परकारी औक्रमा देख पहचा पालकोके साथ पूछे नहीं क्षेत्र साथ विश्वी अञ्चल विश्वासी यहे अने हैं। हमसे में हुन्हरे केने नई पहला संस्थान और परसामको उन्ह इस पर्वकर कुट्रम-मनको कर करके क्रोको गराव का क्र है। सुसरे योजन नहीं किया पर्या। जब मैं न से मोजन करीना और न इस जीवनको है रहेगा । प्रायुक्तत ! सीमानको करः है को हुए भार्त भा को । अब औद्यापने के कुछ बहा है, यह प्राम करो । यह राज्य, में कियाँ और में का—का रुपारे असीन है। साम में निवित्य होता अपने प्रातीका चीतान करिए ह

 अपने प्राथमी ने भने स्थान अर्थन करे के से का प्राथ कुर्यों हुए। उसमा पुरा स्थीत हो स्था। ये सहोत्सीचे केले—'सामानी । मूर्गिकांक्राके तेतु पूरण क्रीकृत्य करा अस्ते मानोरे पूर्व हुई पर पृथ्वे अस पुरूषे पढ़ि ऐसी सामग्रे : क्या पुरिनीत, कार्न फैलकेट, पहल, सहोत क्या केर्ब र्मनकेरे भी अस इस एक्सेक्ट की का कारण र इस प्रत्येक for on \$ \$1 we glidely it wideweren wer at you \$1 our \$ wheelers find. नात्वी और क्वेचे अन्ते क्वा इक्का के कांग्र ? यह were artist week mp-'d please with मुक्तिकोसे प्रोत निरम्भ पाइन है है हैता बहुबर कहींने बहुब न्यादीकोर्वेत क्रिने प्रोप्य कर्ता हुए कुरुवं-क्रमणे प्रवेक विका aft out it was Hapmert Streeter age up grow कारको अञ्चली कारक राज्यानी (गांधी संत्री) क्या केर्याच बारान क्षेत्र का ओरसे वेच्यार वैद्यानने । वेच्यानी क्षेत्र, चेद्यावा कीर अमेल-में हो को में । अर्जुकारी अस्तरकार को और की कुरकेर हे की हो। जारे प्रकारोंने का-में कीए और अन्यक-नंबर्धः रहेनोच्छे अन्ये साथ प्रयूक्ता के पार्टकः, क्षेत्रिक प्रमुद्ध अस्य प्रमाणको नामको पुर्वा केन्द्र । अस्य: पुरायोग THE PURPLY HAVE NOT TO THAT BOTH IN COME I WHEN IN with the bid the standard was not use from मानवा । सामके मानवे दिन पूर्वोदन होते ही हमें हम पनाई मानुर हो पाना है। इस्तिने पान क्षेत्र प्रीत ही बैजरी पाने ह

 अर्थन्ते क्षा प्रकार साम केंग्र प्रकार वर्षकारि कार्य मानीह-सिविके मैंनो साराय सहय होता प्रीत है किसी साराम पर है। अर्थनो परावार स्वेत्रमध्ये प्राप्तने है पर रात व्यक्ति वर्ष । प्रकेश होनेका अञ्चलकारी क्यूक्रिकारी अपने विश्वको सम्बद्धित करके चेनके प्रश्न काम पूरी प्राप्त की। विश से उनके पहान्ते यह जारे कुछान गढा । केले-फिल्क्सी <u>व</u> मारियोच्यो आव्याच प्रकेशन पान पहली थी । नामोद सहर पहले पूर्व में । जापूर्ण और पातारें कु-कुकर निवादें पूर्व की और वे कार्य पोटर्स क्रूड करना साने विकास कर की वी : करनाह, अर्थुको एक प्रमुख्य विकास सम्बद्धाः स्टब्स् प्रमुक्तिनोतेः प्रत्यको सुरचना और कर्मनोठे संस्थेतर उद्यानकर ने उसे नगरके कार से परे । का समय समय प्रकार क्रमानाओं रूप आक्रमाने अन्तरे क्षेत्र इ.स.क्षेत्ररे नगर व्यक्तिकी प्रकार पीने-पीने को । अन्यों अल्बीके साने-साने अक्षोप- अनेतो अनुंत्रों इंद्यूका क्यों को क्ष्मूका सो देश का

। पहले काचेन विका इत्यापन प्रथा क्वीरहेमधी प्रभावित श्रीत रियो पानक प्रमुख पार को थे। और बीवे-बीवे कहुनेकर्तकी परियों कह और साम्प्रकोंने एक अवस्त अपने इसके पानकारि पाननाम या वो वो। नहरेनदेवो सको क्षेत्रक कारणे के प्राप्त विक्रेश केंद्र का, वहीं के कारण कारण निर्देश (व्यानीकार) किया पंच । यस विवारी सार प्रमा दे पने से अपने पार पोर्ट्स-केवले, पार, बेहेको और जीत में उत्पर क देवें और अहिंद कर पत हैका चीक्षेत्रको प्राप्त हो । क्ष्मुक्त्या अर्थुले क्ष्मु और पान असले पुलीन पहलीं प्रथ पत्री विलोधीय व्यक्तिकारीके प्रकार प्रमुख्याल विकास कार्यान पह आहे. the air amounts and our field tour व्यक्तिकारियों बारवातीर है। प्रापंत का आहेर का प्राप्तका न्ते, नहीं पुरिवर्णका संदुत्त हुन्य का उन्हें परवार करवेगर को हेता अर्थनको पात पुत्रम पुत्रम और अपूर्ण प्रकारको पात्रम क्ष्मार्थ अन्तर कुर सुरावेक्षात परे भवे कारत बाह्य सीरीके सारोहिको विन्ते । या कावा विशेषक देवको कावे साहेर कारों है। कार गाम हो हुन हाराओं कर हैने । इसी mes sich, der, mur afre dabb gib ger reiber durat प्रोचके पूर्वत पूर्वनार्वके केरोको राज्यों को केसे व्हाँ करी। arginal aspect around after plimable there, populars, को क्या गर और प्राची और को और ब्रान्सीने पूर्व क्षेत्रीकी व विकास करते को को के कार करते करे । असक और मुक्तिकोकोड काराया, प्रमुख्य, हारित्य, बेहन और पुर, क्या बीक्रमंत्री संस्था क्ष्मर दिली इन्हें की पहली साने करते पार भी भी। चेन्द्र, चर्चन और सन्त्रक-नंद्राची सामी और and from find or two artists we us of all s plantifedur im rapt proper, fiel pleift als जर्बर करने साथ के वह के थे, बहुतके समय दिसावी पाक था। उर प्रकोर नियान प्रानेतर मन्त और प्रकॉर्स निकारक रूपने समेरे भरी महं सरकायों अपने पहले क्यों दिया।

क्र अनुस् क्षारको देशका प्रत्यासनी गरून वर्ड नेवीने पतने तर्ने । जा प्रमान अनोट मुसारी बार-बार मही विकास क— फैसरी स्थेल अस्तुत है।' अर्जून स्थलेव कारने, कांचे और नीरवेंचे प्रकार निकास करते हुए पहुंचकी विक्रिके में या है थे। पहले पहले में उत्तरफ रुप्रियम्भी प्राप्त केरने का चौने और का प्राप्त गी. पश ज्या वर-क्यारे क्या था. शर्मने व्या प्राप्त करता

स्क्रोको सुदेरोके नाने केन केन्द्र हरा। वे तक साधीर नातिये । ताने; कोन्नु एक ही होनी काके बारे पान समाह हो नावे। पहुंचा थे। का समने एकतिय होचार अवस्थाने हुए प्रधार सम्बद्ध को---' व्यक्ते । या देखे, व्यक्ते वर्तन इन स्वेनोडी पुरा प प्राथमिक प्रश्नामान्त्रीके हत सम्बद्ध कांग्रस्थ है अवेदस है रिनो पर पार है। इसके में सभी सैनिक सम्बद्धीन विश्वानी होते. हैं (सा: इस्स का परव करेंगे) (' ऐस विका करें, सुरक् मान क्षेत्रको ने स्थानने सुधि सुनिर्मात्रकोंट स्थानक इक्तोची संस्थाने हा यह और कारणे उस्त-केसी प्रेस्तान कार अने कहा विकास कर संबंध के हमें हर भी कर इसरेको साम है गर्ने। जो बेहेको क्रेस्ट सहस्य एके his problem and and has breiterbeite som man til स्तेर को और हैतो पूर-से केले—'करिके ! की कीक कुछ कारों हो के और कारो, अम्पन मेरे पालीने विकेश होन्छर हत कृत्य भूग को सोवाने यह कार्योंने ।"

ं भीतन अनुंत्रों ऐसा व्याप्ति की अनुंति अन्त्री व्यक्ति कार नहीं दिया और से पूर्व करवार अनेत अन्य करोजर के उह समाने कर का करे। या अर्जुने अर्ज देन कर पार्थको पहल साम दिना और पार्थक को परिकार 40-50 and up 4 to, by or 6 set शक्त करते हैं करते की की जाती किल्कुल कर जी शानी । यह देशकर में को सामित हुए । कुनी-सरका और रही मोद्धा भी रूप अञ्चलीक हान्यों को हुए अस्ते महत्त्वीको सीवा र सके। का समुक्तानी हिल्लोकी संस्था बढ़ार थी, इस्तीनो प्रात् बर्द ओलो जनर बाबा बस्ते को और कर्नन जनमें बहुता प्रवासम्बद्धाः करते हो । यह केन्द्राओंट देशके-देशके से लॉर्ड विकास ही सुनारी विकासिको सन्तिक-सन्तिकहर पहले उहेर हो उहने सने। अन्यो पा कृति देश व्यूनेत विन्तं सकृतीयी इक्तके अनुसार कुरवान जाने: एका कार्ड गर्नी । का अर्थन कारण महित हो को और हकार्र पुनिवर्धकों पोक्कारोंको पान रेकार गांचीक बहुत्तरे कोई हर वालोक्क का कक्कारिक क्रम होने

क्रमोबी करोते अर्जुनको यह कुछ हुन और वे फ्रेंक-बंद्या होकर बहुकाई खेळारे 🕏 स्टेबेक्ट का करने सने 🛭 क्रमेचन । वर सामान्यकी ईसके देशने ही वे क्रीक क्रम कृष्ण और जनक-क्रिकी सुन्ही क्रिकेटी सुरक्तर करों ओर पान गरे। अर्जुन्ने इसे देखक विवास संस्कृत और क्षा-क्षेत्रमें प्रकार के समी-सभी कीए सेने सकेन अवसेवा प्राप्त कुत के पान, पुराधारेंने अंध पहले नेती प्रतिप न्हें हो, पहुंचर कर्नु को पान्स का और उत्तर कानेका को क्रम हो पर्य । इसका कार्नको देवको सीमा सम्बन्धर है बहुत काम हो पने और इन्द्रशोध्य पीड़ न दरके और ant i for acquirit wit of first air quantities को हुए कोको साथ नेका कुरुकेचो पुर्व । इस उत्तक पुरिकारिकोट केर परिकारके से अवस्था अर्थनो जानके व्यक्तिको पात देखा । अनुनि प्रधाननीर पुरस्के सार्विकारक रूपका राज दे दिया और कोमराओं परिवरकों गयी हाँ विकास कार कर के विकास कार पूर्व, कार्य तमा तमा विकास का लेकर से इन्हरूप वाले और कर party under Percit was from a with marrials flow पुरुषे परस्कोद्ध कार्या (परस्का) हेक्क अधिकाहे कारण और कारणे इन्होलकार करने है है जा। मार्ग्य पहल duction of improduct family with several mobile flots with with wheels, would, these, front war commend that the section of the sect क्षेत्र सारायात पान काम देवियों संस्थाना निवास काहेड क्षे को की। केन्द्रे हत्वकारी जून करी। सब क्षाने हे, वर समझ्य प्रकारित विनास करते अर्थनो हार्रे वाली होन देवा पूर्व प्रकार सरकेरिया व्यवस्था पानेत अर्थुन नेवोचे अर्थ्य पहाडे हुए स्कृषि स्थाननीचे आसमान पर्न aft sall fit pe sallen seilt mir fom t

#### अर्जुन और व्यासपीकी बातचीत

वैक्रमानार्थं कार्रे हैं--कार्य ! महत् प्रकारी क्या | गह, कहा 1600 अनेक्सपी मोर पह मारेले समुद्र हुए कारी हाना काराव्यक्ति कार कारत 'में अर्थून हैं' ऐसा कहते। जोका करा को नहीं का नका है ? अरबार हुको स्तरकार हुए वर्गकर्ण उनके परवॉर्न प्रवास विकार रहे उसने देश। योगे इस्यान का प्रवास के वहीं को है ? वहीं हुन्हों महत्त्वी माराची प्राप्त होचर बेले—'पेठ ! हुनुस सम्बन्ध । एका के नहीं हो गर्थ ? वर्ध सीहैन-से हिलाकी हेते हो ? 🖢 अवन्ते, केंद्रे (' अवहेश्वर किन अवन्य का, ने करेवार | पारे कुमान क्वान्य मेरे करोबोन्य हो से बीच काराने हैं सम्बर्ध स्वीत सेवे पूर अन्यन्त मिला के रहे थे। प्राची ऐसी एका वेकावर व्यवस्थीने पुक--'पार्च ! द्वाधारे काम । क्रमार क्ष्मा और के क्षमात्मको समूक विवास थे, के

वर्तने का-न्याम । मिनक क्या निव्ह नेकी



करवान् औकृत्य वहस्यानकीके साथ करन सकतो को करे। प्रकारिक प्राप्ते पुरस-पुरूषे कृष्णितेस्य विकास है मक्त । प्रथमकोत्तमे काव्य केलाकुवार्थ संस्था कृत या, विक्रों क्रमें केरोबा एकमा के पता। महानारे प्रेम, कृष्णि और अन्यव्य-नेही और स्वान्यने है सक्का पर जिल्हे 🛊 । प्रमुख्या सुन्ध-नेत से ध्रीतने, निजनी चुनाई चरिको कार्यन भी तथा जो नहां, परिष्ठ और प्रशिक्तीको चोद सह हैरोबारे है, में ही क्या करनी फाले और की ? अ अक्त देवली पीरोके विराहत्का दुःस गुल्ले किनी तथ सहा नहीं जाता । क्युनिक्जेंके संदर्भकों कार कोकार से चुने ऐसा जान पहल है माने रुपुद्र सुन्त कर्या, करि देशने रुपे, आवास का पढ़ा और अधिने प्रोतानक का नवी । यह कान विकासके योग्य नहीं है, बिर भी सात है। इसके विका जो कुरती घटना बरित हाँ है, यह इससे भी अधिक व्यक्तिपक 🛊 । प्रक्रमर् देशके निकास आगीरोंने मुक्तने कुद् संस्थान की देशते-देशते पुनिवदंत्रकी प्रात्ते विश्लेक अञ्चल कर रिजा। वर्ष मेरे पास बनुष था, जो भी में उसका संधान न कर सका। मेरी चुकाओं में पहले जो कर का, बढ़ सब जी रहा ६ मेरा पूजा प्रकारके अस्त्रीका जान विराह्म के कना । मेरे कृत्वे बाल कुलारमें जु हो नवे ! किरका कुलन आलेव है, जो इक्षा, बाह और नहां करन करनेकरे, कर्युंब,

विकास करें, इकाम्युका क्षेत्र कार्यक्र स्थान विकास इक्त करें। हुए मेरे इंक्ट अग्ने-अग्ने करेंगे अग्ने प्रमुक्तियों क्षा करेंगे हुए मेरे इंक्ट अग्ने-अग्ने करेंगे अग्ने करेंगे वहां किने क्षाने थे, में अब मुद्दे मूर्ग दिकारों की। उनका करेंग व विकास मुद्दे कहा दुन्ता हो हु। है, महिलाओं कार अग्ने हैं, विकास अग्ने हैं। करेंग है एक क्षाने किने भी क्षानि मूर्ग विकास अग्ने के हुनकर हुने विकास के में मिला मूर्ग है। मेरे भी कुटुक्त का को है है कुछ का, केर प्रसुक्त भी गृह है एक। अग्न कुक्त हो होना हुन्त-अर काल का है। स्था अग्ने कुछ करेंग का कुक्त हो है कि केर क्षाने की होगा।

न्यवर्धने वह-पुत्रकेष्ठ । पृत्रित और अञ्चलकार्थ बहुरको प्राह्मकोचे प्राप्तो एक हेकर यह पूर् है । पूरा रूपने रिप्ते होता न वर्षे । कार्यो ऐसी ही परिधानका की । बहारि जनवान् क्षेत्रका अने पूर संख्याचे दान सकते है, संबंधि अपूर्ति इसकी क्षेत्रस कर है। बीकुम्म से सैनी लोकोंके समझ मसकर व्यक्तिको परियो पाट संस्थे हैं; बिर कार्यमा यो हर् कारको अन्तरक करना उनके हिन्दे चीन करी बात की ? को चेत्रका रूको रकोर अने धारों के (सार्यका कार करों ने) वे कार्त्वेश कोई सम्बन्ध पूरू भी, संस्थाद कार-नक्तारी क्षात्र प्रति भारत्या है। से विद्याल नेतेयारे तीकृत्य क्षीक्ष का उत्पादन सब सको संश्वासको को गये। बहुनाहो । हुनने की बीजनेय और पहुल-सहरेककी सहस्काने हेक्काने-का महत्त्व कार्य विश्व विकास है। मेरी सल्हाने अस तुमलोगीने अक्ष कर्मन कृषे का रिन्म है। भूने एक स्थारने स्थानक अंत हो बुध्ये है। अब हुम्हरे प्रत्येककारका समय आगा है और पूर्व हुन्तकेनोंके देखें केवरकर है। यह उद्याग्या संसर्व अक्रम है के इसी अक्रम प्यूच्चकी चुनि, तेव और जनस विकारत होता है और सब विकास समय कमीवन होता है से इस सम्बद्धा नवा है। कारा है। कारा ही इन सम्बद्धी नवा है। संस्थारकी अवस्थित पीन पी कार है है । तुन्हारे अवस्थानीक प्रशेषन पी पूरा 🟚 कुछा है: इस्सरियों में जैसे निर्देश में, बैसे ही बारे गये । अस कुमनेनोंके काल परि प्रश्न सर्वका समय कारिया है। मुझे अर्थने कुमारा काम सरकाण ज्यन काम है।

केल्पकार्थः कार्यः है—स्वामेश्यः । अधिकोकार्धः स्वासकोदे इस स्वयंक्यः क्षाः स्वयंक्यः अर्थुन कार्यः आक्रासे इत्याक्त्यो पाते त्रवे और पातं पुष्पिद्वरने निलव्हः अपूर्वे कृतिः और अञ्चलकारकः सारा समाचार पद सुनागा।

# सक्षिप्त महाभारत

## महाप्रास्थानिकपर्व

#### द्रीपदीसहित पाण्डवीका महाप्रस्थान

नाधको समस्त्रात ना के वर्ष वर्षकार् देशों सरकरों व्यापं को कानुद्रीरनेत्। अपानी नारमकारका क्रमान् श्रीकृत्य, असे निरमान्त नसम्बद्ध करात अर्थुन, अन्त्री सीत्य प्रया कानेवारी परावती करावती और अनेके बच्चा व्यक्ति बैह्म्यतस्यो मनस्यार वास्टे आसूर्व क्रायतियोग विवय-प्राहेत्वर्वेच अन्तः करणको चन्न करनेको साम्बन सम्बद्ध पाठ करना वाक्रिये ।

कानेक्के पुरा--अक्ट । इस प्रकार कृष्ण और अध्यक-र्वत्रके बीतेने पुरस्त-पुर क्षेत्रेक सम्बद्धाः कृत्याः प्रत्याः श्रीकृष्णके परमक्षण कारतेके पहार प्रकारते क्या है। ३

र्वेजन्यकारी का-स्थार् । प्रकास सुविधियो स्थ इत प्रकार मुन्तिवीक्षणोके स्क्रम् अंक्रस्का सम्बन्धर क्रम क्रे महारक्षणया विश्वम करो अर्जुलो सह—'सहन्ते । कार है समूर्ण प्राणिकोची पत्ना रहा है, विश्वकर्ती और हे भा रहा है। अस मैं कलके ककन्यों सीवार करता 🗓 हर भी इसके सम्बन्धें अपने जिस्सा प्रकार कर सकते हैं।" मानि इस अधार सक्नेयर अर्थुनने भी कारणी अन्यानंतः कारमधार प्राचे कावाच्या अनुवोद्या विकास अर्थनात विवार कारका चीमरेन और स्कूल-स्क्रोबने की उनकी भागमा समर्थन विकात सम्बद्धात् पुनिवितने क्यून्यको कुलका उसे समूर्ण राजकी देख-पराच्या पर सीर हैवा और अपने कमानिकसम्बद्ध परिकृत्य अधिकेक विज्ञा। इसके बाद वे अतन्त द:वी हेकर सुव्यक्तो केले—'बेटी । पद तुन्तात क्षेत्र क्षीतिक क्षीरकोका राजा क्षेत्र और महर्वतियोगेसे जे लेग का गरे हैं, उनक एक श्रीकृष्णकी काको जनाव्य गवा है। परीक्षित्या राज्य इतिहरूपुरने होता और काका इद्रासको। तुन्हें तमा काकी भी श्राह करनी चारिये।' हेस करूपर प्रदानोंसबित करेराय कुविहित्ये श्रीकृष्णका, अपने कुं समा क्युकेरबेका क्ष्मा कारका । कोई की पनुष्य क्षमा वृधितिसको सीटनेके किने नहीं कह

कविता ची तर्वन विका और बढ़ी साववानीसे सबके ग्राम हे-लेकर उनके रिको विशिवस् बाजू दिल्का। दिल हैपायन कार, नार, कार्यके, भारत्य और बहुस्तकार्य कार्कंड कुरवार को जनवारीयथे साहित आसा मोदन करावा कथा चनवान्त्रा पान-वॉर्टन वरते हुन् अक्षेत्रे कार्य अक्रुप्तेची करा प्रकारके का, क्या, बान, बोदे और एक अवन निर्म । इसके बाद मुख्यर कृत्यकार्वकी पूजा करके कार्यकारिकोसीहः भवेतिहरूके विकासको उनकी सेवाने की देवा। व्यवस्था समझ प्रवासे सुरवार स्वार्ट वृतिहोत्ते अने अस्य प्रात्तवानीयका विकार कार्यका । रूपके पता पुराते ही पनर और अलावे होण बरिज से को और धोले—'महराम । अबर देशा मु क्षरे (हरें क्रोक्कर व्या न कर्न)। परं, वर्तान क्या संबोधने जो रंग्यम-पुरस्कर राजी किया और ध्यानोसदित करे मानेका निर्देश कियार कर रिग्या। किस को खुरिसीरने अपने आपूरण सारका कावशंतको क्षांत कर देखा : बीध. अर्थुन, न्युक्त, स्थांन तथा प्रशासिक प्रीवरी देवीने की ऐसा है किया। स्वयं बर्जानक पूर देने। इसके बाद लक्षणेते विक्रिपुर्वक ज्ञारांकालीय ह्या कराका करेते आरियोच्या करने विसर्वन कर दिया और रूप्ट में महायहकों निम्ने प्रतिकत हो पने । पहले बहने परास होकर बाबहररोग मिस अध्यय करने को थे, उसी प्रचार का दिन हैपदीसहित क्ट्रें परते वाले देख करावाँ सम्पूर्ण शिवाँ केने लगीं; बिन्तु हर वोचे प्रकृतिको हर भक्तमे बढ़ी प्रसन्तत हाँ की। वृतिहित्या अभिक्रम कानकर और वृध्यिमेहियोका संहार देसकर समय प्रथम, जैपर्ध और एक कुछ-नी सब सक-स्था करे। का इस्तेची साथ केवार साववें सक वृत्रिक्षीर का इतिकार्यको बहार निकारे हो नगरनिकासी प्रका और अन्य:पुरुषी क्रियों उन्हें बहुत शुरुष्क पहुँचाने नवी; सिन्ह्

प्रकार। धीरे-धीर समझा पुरवासी और कृतावर्ण साहि पुरुत्तुओं साम रिने स्त्रैट आने। नागकमा अनुवी न्यूनों प्रमेश कर गनी, विस्तृत्व प्रमिद्ध नगरों करते नवी सका क्रैम प्रकार प्रविद्वाल्यों केरे हुए चैके स्त्रैट आनों।

करायर महत्त्व पत्था और वहस्ति है है से देखे काकार करते हुए पूर्व विद्वारते और कार देशे। वे सक्तके-सब चेपपुरु, महत्त्व तथा उपन-वर्गका करन बारनेवाले थे । उन्होंने अनेकों देखें, त्रवियों और समुद्रोकों माल की। आगे-जागे मुक्तिए, उनके बीक्रे मीकांग, भीनरेको पेथे अर्जुन और उत्ते भी पेथे क्रमकः स्कूत और स्वयंत्र काले से । विकास तेवू प्रीकरियों अवके की कर रहे भी । इस प्रकार काले हुए क्रूप्लैर कावार क्रमक: सालागरके प्राप्त गाँवे। अर्थुनने विभा का काम्राकर स्वेपनक अधीरक अध्ये गायदिक कुल क्रक क्षेत्रों अञ्चल सूजीरोका परिवास नहीं किया का । नहीं चूंकरेका बन्होंने मार्ग केवाकर काई हुए पुरुषकावादी मानुका अधिनेत्रको सामने अधिका देशा । तार प्रकारकी स्थारकाम विद्यानीके युरोधित क्षेत्रेयाने का आधिको बाव्यकोरे इस अध्य **वदा--'यहम्बद् गुविदीर ! जीमलेन ! अर्थन | महाम और** सहोते । तुर्वे पारकुर होता काहिते कि मै अर्थि है। अब हुए मेरी क्रतीयर साल हो। की नगरकार कर्नुन और माराधन-संस्था भनवान् श्रीकृष्णके प्रचानके हे कृतक्त करको सरस्य सा। तुन्हारे अर्जु अर्जुनको काहिने हिर से इस काम अन्य पान्तीय अनुनको नहीं होतुकार करने जाते; क्योंकि अब इन्हें इसकी कोई आवश्यक नहीं है। यह मार्थीत कहा एक अकारके कहतेने केंद्र है। इसे पहले में भर्तनके हैंनो है परवारे पॉनकर के आया था, अब पुरः इसे वक्ताको है बायस कर देख कड़ीने।"



व्य हुन्कर कर प्रकृषेने अर्थ्य कर वपुर जान हैन्से मिन्ने व्या । अर्थुन्ने अर्थ्य कर वानकर श्रम् और कृषे करकर करीने देख दिने । इसके बाद सामित्र पहिने अर्था दिने । कर्थ-वार्थ में स्थानसमूद्धि अर्थ त्रिम्य होनार कर दिने । कर्थ-वार्थ में स्थानसमूद्धि अर्थ त्रिम्य होने इस विकार और पश्चिम विकासी और युद्ध गये और कर्माण्य केवार पश्चिम विकासी और युद्ध गये और वार्म क्वार कर्मने समुद्धी हुनी हुने हारकापुर्वको देखा । किन चोम, कर्मने विकार वार्म्यमें व्याप्ति पुरुक्त पृथ्वीची वरिकास पूरी करनेकी इन्करने करा विकासी और

#### मार्गमें ग्रैपदी तथा सहदेव आदि चार पाण्डवोंका गिरना

वैत्रायकार्थं कर्ते हैं—राजन् । विश्ववेद्धाः कारण करनेतारं कोगतुमा क्षणकांने विद्या । अस्त्रो सर्वादार क्षण है महानिति द्वित्रास्त्रका दर्शन विद्या । अस्त्रो सर्वादार क्षण है असे क्षेत्र तो उन्हें कार्युक्त क्षण, दिसानी व्या । तत्त्वात्त् कर्ताने कर्ततोंने लेख न्यातिति सुनेक्त्य क्षीन विद्या । सन्या पायक एकाप्रवित्त होन्यत क्षण केनीके क्षण कर हो हो । असे पीछे आधी हुई होन्सी स्कृतक्षणक कृत्वीवर निर नहीं । असे पीछे कार्य हुई होन्सी स्कृतक्षण कृत्वीवर निर नहीं । पुत्र—'सैया ! राजकुमारी जीवरीने काची कोई पाय नहीं किया था; किर संस्कृति, क्या कारण है कि यह नीचे किर नवी ?'

कृष्णियों कहा—नश्रेष्ठ । शुरुष्टे मनमें अर्थुनके प्रति विशेष पहालत या, साम ज्या क्रांचित पाठ घोग जी है।

च्छ ब्यास्तर सर्थारक सुधिहिर प्रैयद्विदी और देशे किया ही अपने क्रियको एकाम बारके आगे चड़ गर्ने । बोही देर मात्र प्रमुख्य भी निर्देश कोई निर्देश केल भी पर्देश है रामासे पहल-'मैका । यह नवीनका स्वयंत्र, जो स्वय इन्स्तेगोकी नेवाने संस्था सूदा और अवंकारको साथ अपने पास प्रकाने नहीं हेता था, आब बच्चे क्यातानी ger \$ 2"

कृषिकेले करा-एकपुर्वात अर्थन विज्ञानिको अन्तरे-



मैसा विद्वार की सम्बन्ध था, इसी केलो बारण इसे अक गिला यह है।

श्रीपक्षे और सक्षेत्रको मिर्ने देश कश्रुप्तेची स्टब्सेर उन्हरू बोक्से ब्याकुल क्रेका गिर पढ़े। यह देश औरलोको कुल रामासे तम विका-'बैचा । संसारते विकांद्र कार्या समाना मालेकाल कोई जी का किसने क्रमी करने कांग्रे प्रदेश भी होने हैं तथा यो सह हमलेगोंकी अञ्चल पासन

कारण बा, बार इसका क्षेत्र कालू सकुत्त बनो गिर पद्धा ?" धीननेको हत प्रकार पुर्णन्य पुणिक्षिको नकुरको सम्बन्धी भी सक्त विका—'भीयरोग ! स्कूतर हमेहर बढ़ी सम्बद्धात था कि प्रमाने के सम्बन सुरसा कोई नहीं है। इसके पहले नहीं कार केंद्री रहती थी कि मैं ही सबसे बहुबर इसकार है। क्रुवेरिको प्रारक्षी निरमा पाछ है।" जब सीनीको निरे केस अर्थुनको यह फोवा हता और में मी अनुसारके मूरे गिर यहे । कुर्वेर मीर अर्थुक्यों किरे और मध्यासार हुए देश जीतने पुर: उस निरम-'चेवा ! न्यूनता अर्थन कसी चरित्रसर्वे में हुए केरे हें, ऐस पूरे का भी करा; किर का फिर कर्मक पत्न है, विवासे उन्हें भी पुर्वापर निरंत पहा।

पुष्पीर केंग्रे—अर्थुनको अन्तर्भ शुरत्वका अधिवान वा। इन्होंने कहा का निक्र 'में एक ही दिलों सहस्रोक्डे करा का कर्नुना' सिंह हैता किया नहीं। इसीचे आस इन्हें नवार्त्य हेना पह है। इस्ता से नहीं, इन्होंने इस्तूनों बनुर्वारोका सरकार की किया का (विश्वका कर और प्रोक्त पद पत्र है), अतः अपन सामान स्थानेकारे पुरुषके देखा ची परम सामि।

को बक्रमार राजा चुनिन्दिर आगे यह राजे। हार्कने ही चीनांत्र भी किर च्ये । निर्तांत्र स्था ही क्योंने धर्महत्व जुम्मित्यो कुमारका बहा—'राज्य । यह मेरी और हो विभागे । में अस्पता क्रिय जीवलेन है और पाई शिव हुआ के की कारों हो से पताले, मेरे निर्माण करा ween \$ 2"

कृष्णियों कर-नीत ! पूर पहल सारों से और कृतीको पुरु भी ५ सन्दाकर राज्ये सामग्री ग्रीत क्रीका कको के इसीने तुन्हें चुनियर गिरण बहा है।

च्य महत्तर महत्त्वह मुनिश्चित अन्तर्ध और देखे जिन्ह हैं जाने बल विषे । केवल एक कुछा बस्तवर प्रनक्त अनुसरक

## युधिष्ठिरका इन्द्र और धर्मके साथ वार्तास्त्रप तथा सदेह स्वर्गगमन

अंद दृष्टि करण्यन वर्गतम वृत्तिहर जोकसे संदार है को १वन करनेकी अनुसरि दौरिये।"

वैजन्मकार्थं कार्र है—कार्यक्रम् । तहरका आध्यकः | और क्रुको कहने समे—क्रिकेश । मेरे कहाँ मार्गमें मिरे यहे मीर पृथ्वीको प्रतिभवनित करने हुए देनकन इन्द्र १४ सिने 📳 वे भी मेरे साथ करने हालकी व्यवस्था प्रतिकृते; अन्यका महर्षि आ पट्टिके और मुखिशिस्ते औरो—"मुखीनपर ! तूम में अपने प्रकृतकेंद्र किया समेंने पी नहीं साथ प्रकृता। इस रक्ष्यर समार हो काओ र' अर अपने किरे हुए पाइकोची । राजकुमारी हैपाई अस्तरत सुकुमारी है, उसे भी हमलोगोंके हमारे परा—गरानेह | हुमारे सभी वर्ण हमारे पहरे है मानि पहेंच होते हैं। उनके प्रमा संभाव को है। वर्ण परानेक्ट में प्रमाह हैं निर्मेंगे, शाह अन्ते किये होता मानो । है महान-प्रतिकता परिवाल परके उनकी को है जिल्ला हम हाते प्रतिको पहिल्ला पान प्रमाह हो।

पुर्वित केरे—कारत्। यह कुळ केर कह पर्छ है. इसने कुछ ही केर एक दिन है, करा हवे की की साथ पर्याची अहा क्षेत्रिके।

 इसमें कार—कर्त् । कृते अगरात, मेरे सामा देखाँ, कृते काली और कहा कही निर्माद आर हुई है। काल है कृते क्रानित सुक्त की कुरूब हुए हैं। कांट ऐस कुलेको कोइका मेरे सामा करते। इसमें कोई कारोच्या नहीं है।

पुष्पिते वह—नगर्। वर्ग पुरुषे प्रय निर्मानिक वान हेना प्रक्रित हैं। यूर्व ऐसे व्यक्ति प्राप्ति कर्ष न हैं, निर्मातिने वस पुरुष्ण वान करव थहें।

हता क्या—वर्गाय । क्या प्रत्येकार्थक हैयाँ प्रत्येक्ती प्रध्य वह है। क्यांट वह कर्ग और हैजा, स्वयंत्री क्यां क्यांचेका को पुरूष होता है, जो सोकाव प्रथ्ये प्रकृत का तेते हैं। प्रध्येकों क्षेत्र-निकारक स्वयं पर्ये । इस सुनेको कोड़ के—ऐसा क्यांचे कोड़ निर्माण पर्ये हैं।

पुण्यक्ति कार-न्येष्ट | जान्या साथ कारेशे के पार होता है, जान्या वाचे राज गाँ होता, जीतानी का प्राथमाने साथ पान पान है। जार में राजो पुण्ये दिने वाचे दिनो राज में इस पुण्या साथ गाँ कर साथता | में उद्दा हुआ हो, जान हो, तरा पुण्य कोई स्थान गाँ है—ऐसा बातो हुए उर्जाचको प्राप्त कारा हो, सामी राजो सासार्थ—पुण्या हो और राजो प्राप्त कारा साहता हो, ऐसे पुण्यको प्राप्त कारोपर भी में जी कोए सावता—मह मेरा साहका प्राप्त है।

हमूरे सहा—गीरवर ! पहुंच को पूछ हर, सामान अध्या हमा आहे पुनवार्य परात है, साम वही पुनेको पूर्व भी पह पान हो सामे परायो सम्मान पराये एका हर है जाते हैं: इस्तियो इस कुनेका पान पर थे। इस्ते हुई केस्सेकारी आहें। होती। इस्ते पहलो क्या दिन पत्ते संपर्धका गरितान करके सार्व पुन्यक्रमींट परायक्षण केस्सेकारों आहे दिना है, जिन इस कुनेको वर्ष नहीं और हैते ? सम पूछ कोइकर अन कुनेके केहने हैते पह गरे ? पुरिवित्ते कार-जन्म । संस्कृते का निर्देश का है कि को हुए अपूर्णित कार व विश्तीयत केन होता है, व विश्वीय । हैंक्सी क्या कारने प्रकृतिको मौतित कारन की व्यापी क्या नहीं है, कार- कर कार्यकर अन्यत की कार क्षित है, विश्वित्यकार्य महिं। कार्यों कार्य हुएको कार हैया, कीवा कर कारत, त्राहुल्ला का मुख्य और विश्वीत कार होए कारव-के कार अपने क्या और और पासका कार कुरी और हो, के केर्र संस्कृति का अनेता है कर कार्यक कुरी और हो, के केर्र संस्कृति का अनेता है कर कार्यक कुरी और हो, के केर्र संस्कृति का अनेता है कर

वैक्रफलचे वहते हैं--कावेक्य । (क्रोका प्रतिः कार कार्य अने हुए) वर्गतानी परावस् गरीवर कुरेन्द्रीरची बाद पुरास बहुर अस्त हुए और रूपने सुने क्रमी प्रद करूर कम्मोर्थ क्रेसे—'शर्क्य । हुन अपरे व्यक्तार, सुद्धि और राज्यों स्वरित्योंक सी। हेर्नेकारी इस क्यों करन राजे विकास पर रचना का से है। केत । एक कर कार्रे मेंने क्रियरने की तुमाने परिवा की थी. कार्यक हुआरे क्यों कही कर्य आगेर्ड मिले पासन मारे को थे। का सबस हुन्ने क्षणी और नहीं केनी माराओंने कारकार्य हुन्य रक्त्या अने वर्ग भई मीन और कांको केर केरल पहलको चीनित परण पास छ। (a) करन भी, 'बद करन नेय पता है' देता सेपचर हमते breit beite teen di ultern me fert Et am: कर्पक्रिको पुरुषे सन्ता क्लोकाम क्षेत्रं क्ये है। प्रतिनी हते सको इसी प्रतिको सहाव कोकोची आहे। हाँ है, इस परन करन हैंगा नहींच्छे पर पने हो।"

वी व्यक्ति वर्ग, इन्ह, नक्गान, अक्तिकृता, हेन्स और हेन्सिनी वर्ग्यन्त्र पृथिक्षिको राजे विद्यान और साने-साने विवानित अस्त्र क्षेत्र के वर्ग्यन्त्रो कर हिर्दे । वे सान-के-सात सामी क्ष्याचे स्पृत्य कि वर्ग्यन्त्रे स्वीपुत्रपुत्र, पुण्याम, परित्र वर्ग्य, वृद्धि एवं वर्ग्याके क्ष्या विद्य थे। इनके राज्ये केंद्र हुए राज्य पृथिहिर साने केंद्रीय क्ष्याच कार्यकार्थ, वेद्रान्त्रे व्यक्त राज्य साम् कार्यक स्वाप्य कार्यकार्थ, वेद्राने कुरसा राज्य साम् कार्यक स्वाप्य कार्यकार्थ, वेद्राने कुरसा राज्य साम् कार्यक स्वाप्य कार्यकार्थ कार्य केंद्रा क्ष्या राज्य सामने कार्यक्ति क्ष्याच कार्यकार्यक क्ष्योक्ष कार्यक व्यक्ति कार्यकार्थ का सामने व्यक्ति कार्यकार्यक क्ष्योक्ष क्ष्ये सीयान परवृत्त्वर पृथ्वितके प्रेथा और विजी सकते | भी जार हुना हो—ऐसा की कबी भी सुन है। मुस्कित ! पुर्वाक्त एके हुए तुम्मे काकाइमें महात और साताओंके med fant bu bis \$, 4 th 4 preside part rive. के अन्तर्भ और देखों है

मार्काची कर कृतका सर्वत्व क्या पुणिक्ते वेकारको ज्ञा अन्ये दक्षके रामाओको अनुस्ति सेका क्क - 'में। प्रकृतिको जास का कुछ को की सकर प्राप्त हु। हो, स्र्वेच्ये में के पास प्रमुख है। स्तर्क विका, कुले लोकने करेको मेरे हका नहीं है।' उनके देख कारेकर देखका | अबका नहीं होता। मैं को नहीं करन पहला है, नहीं मेरे इको बोबा करोंने कह—'बहरन ! इन सरने हुन । वह नने हैं और नहीं सनवुनसन्तर जैनी हैती क्योद्वार प्राप्त हर हर वर्गालेको निकर-करे। विश्वपाल है।"

क्युन्यहर्वेककं संक्ष्यक्रको क्याँ अपीतक स्थिती आहे हो ? हुने बहु जान विक्री आह हूं है से दूसरे पहुंचके दिने दुर्वण 🛊 । कुन्तरे व्यक्तवेको ऐसा स्थान नहीं प्रदा है । क्या अपीतक बर्जालेकको कारण पुरुष निवा नहीं क्षेत्रती ? यह क्रमंत्रेक है। यह क्रमंत्रको क्रमंत्रियों और विद्वार्थी और से और करते हैं।

हेरेन्स्सी हेरी क्यों सुरक्त सुविद्यारी किर कु-- रेनक ! असे कारोपे क्षेत्र को को कोक

HARRIST STATE OF

---

# 😘 संक्षिप्त महाभारत

## स्वर्गारोहणपर्व

## स्वर्गमें नारद और युधिष्ठिरकी बातचीत तथा युधिष्ठिरको नरकका दर्शन

. मारायने नगरमुखः सं, बेदः स्वेतनम्। ्र देवी सरकारी व्यक्त वर्षे वक्तुद्रीरचेत् ध

निवासका गरकार गरका अर्थुन, जनके सीता प्रचार विश्वविकास कीर और सावकार के वह की प्रकृतिको मारनेवाली परावती सरकारी और उसके पक्क पहले बेह्मासको मनकार बान्हे अनुसँ सन्वर्धन्तेन विकास है पूर्व का अपने का का का का का का अपने क प्रभवा यह साम करीवे ।

कारोकको पूछ-पुने । वेरै प्रतिसन्त्य कावार कर क्रांने क्रीय पने हो उन्हें और क्रास्क्रों क्रांच्ये विक-दिव कारको गाँउ छ ?

नैतन्त्रकारी का—रावर् । तुन्तरे प्रतिकास धर्मका मुविद्वितने कार्नने व्यानेके प्रकार देखा कि कुर्वेचन कार्नान कोशाले सन्तर हो देवता और सम्बन्धकोई स्वयं हुई हैना रिकारमध्य बैठवर कृष्टि समा वेदैन्यका हे का है। अरुवा देश देशने देशकर चुनिक्षर स्वास्त पीवेको स्वेद को और ज्या सरसे व्यक्ते सने---पेक्काओ । किस्से कारण इन्ने अपने संपन्न सुन्दें और बन्द्रशोध्य बुद्धनें संपन कर करन क्ष्या किसकी प्रेरणाते निरसर वर्गका अकरन करनेवाली इमारी पती बाह्यसम्बद्धामध्ये हैंपहेंच्ये अर्थ सम्बन्धे गुरुवनोके सामने करीता नवा, ऐसे कुर्वेचनके साथ मैं इस सर्पलेको नहीं कुछ सब्दार (' वह सुरक्त कहाने क्षेत्र को और केले—'कारको ! सर्वने अलोवर मृत्युक्तेकक कैर-विदेश वर्षी क्या, बतः हुने व्यापन ह्योंभरके विकार्त ऐसी कह कदानि नहीं कहती काहिते। कर्गलेकमें मिठने बेह सब्ब रहते हैं, वे और समक वेलक पी भई चरा क्रॉनक्क निरोप सम्मन करते हैं। या साम है कि इन्होंने सक् ही कुमसोगोको बहा गईकाना है, तनादि बुद्धने अपने प्रतीरकी अवृति वेका ने वीरखेनाको प्राप्त 🙉 ै। अतः वैपरीको इनके ब्रग्त के ब्रेफ ज्या हुआ है, जो भूत काओ और इनके साथ नायपूर्वक मिलो। 🕦

वर्गलेक है, वहाँ स्वयंत्र पहल्या के वहां सुरा 🖰

क्यानेक हेला बहरेगर राज पुनिश्चित्ते पुन-अनार्वाचे नारावनसम्बद्ध नगवान् श्रीपृष्य, कन्ते 'स्कृत् ! यो स्कृत् स्त्रधारे, म्यून्य, सत्प्रदिह, गर्मेन के लोक प्राप्त हुए हैं ? उन्हें में देखन बहाता है । इस्तरह हा क्षेत्रके प्रचीकृत पहला धर्मको, बृह्युहर्को, क्षानीको एव पुरस्को पुरोको नी पूर्व देशोची हका है। इनके रिवा को-के राज इतिकाली अनुसार पुत्रते क्रमोहरू करे को है, वे इस समय बाई है ? सम्बा से बहु कृति हो नहीं हो रहा है। उसा किया, हुआ, बहुतेतु, व्यक्तरराज्यकार नेश्वरणी, प्रीयक्षेत्र प्रोची पुत्र तथा हुईसी की अधिकार्थ की मैं विकास महाता है।"

अस कुनिश्चित्रके हैक्साओंने कहा—देवगान ! यहाँ पूज्यम् और राज्येक-ने केने धई को की दिलाती के ? विन-विन च्याची राजाओं और राजपुरारेने समराजिने अपने करीरोकी आकृति हो है, को मेरे सिये पुत्रमें मारे गये हैं, से विक्रोद सम्बाग परमान्ये और अर्थों हैं ? यक उन न्युपुरुपेंदे भी इस स्तेत्वार अधिवार प्राप्त किया है ? परि ने तम बहुरकी की इस स्तेकने आने हों, उस के में उन व्यानकारोंके साथ वहीं भीगा; प्रांतु वदि इतको का सूथ और अवन लेक भी जा हुआ है, से नै अपने रूप जाई-क्युक्टेंके किन वहीं सुरूसे नहीं क सकता। युद्धके बाद सब में अपने कृत सम्बन्धियोंको स्त्यक्रीर है रहा वा, उस समय मेरी बात कुनीने बाह्य का—'बेटा ! कर्मको भी बताहाति देन (" माराको वह बार हुनकर वस मुझे मारान इक्षा कि महत्त्वा कर्ण मेरे ही गाई थे, तमारे मुझे उनके रिप्से बहुत कुल होता है। यह सोकार से मैं और भी प्रशासन करता क्या है कि महस्त्र कर्मके देनी करनोंको मता कुसीके परकंडे समान देखका भी मैं क्यों नहीं उनका अनुसाधी है। क्या। यदि कर्म इमारे साथ होते हो इमें इन्ह की बुद्धनें परास्त न्हीं कर सकते थे। वे सूर्वनका कर्न इस समय **नहीं-क**हीं भी हो, में उसका सर्वन करना व्याप्ता है। जनने जनमेंने भी द्वित्व भीतरेन, अर्जुन, स्कृत, स्कृत क्या कर्नन्तनक इंक्ट्रेको भी देशना व्याप्ता है। वहाँ क्येन्सी मेरी अन्य भी कृता नहीं है। वह में आपसेन्मेंने सभी वस बात का है। भाग, प्राप्तीने अरुन क्यार कुने सन्ती क्या रेन्स है। वहाँ मेरे बहुई है, वहाँ मेरे तिन्ने अर्ज है। में इस सोब्बर्क कर्न नहीं क्यान हैं

रेक्क अंगे क्या—राजन् । यदि ज्याँ कोनोर्ने हुन्यारी इस्तु है से सारो, जिल्ह्य न सारो । इनकोप देवराजनी अस्त्रामें इर प्रस्तुते हुन्यार जिन सरन प्रस्तुते हैं।

यो सहकार देवाहारोंने देवपूरणों स्थान थै—'हुन पुनिविद्या एको सुक्षेत्र स्थान सम्मान !' कावाब्य क्या पुनिविद्य और देवपूर दोनों स्थाननाथ जर स्थानकों और सारे, वर्ष पुन्नोद्ध सोरांग आहे हैं। सारे-आने केवपूर के पुनि सा और पीते-पीते पास पुनिविद्य । देनों एक देशे कार्यन पूनि, यो पहा ही साराव पा; आभा पास्त पास्त की के पा सा। पासावारी पूरूप ही सार प्राचेने आले-कार्य थे। महा सम मोर सोर अवस्थार सा पह पा। पारे औरनो कार्य का पी पी, इसर-कार महे हुए पूर्व दिवाकों की है। पाई-कां मार और स्वित्य पाने हुई भी। सोनेकी प्रोक्तान



सीए और रीम पेंडर से ने र सुन्ति तनान चुन्ते हुए मुस्तोक्तर चनावार जेन सथ ओर चून रहे थे। उन

तेलेको प्रिमांके करेमो मेद और प्रकर करे थे। वर्गात एक क्ष्म कर, के और क्षम-पैर कर को थे। वर्गात एक कृषिक क्ष्म विक्रित क्षेपर महि प्राप्ति वीको क्षेपर क्षिते। उन्होंने देखा—व्यक्त क्षेप्तो हुए पानेसे परी क्ष्में एक की की की है, विस्को पर काम क्षम है करिन है। कृषी और पीसे क्ष्मेंके-में मानेसे परिपूर्ण अस्तिक काम्यों की क्ष्में काम कर है। क्ष्में काम-पान कार्य विक्री है से कहा कोर खोड़ोंने काम्योंने के क्ष्मेंका का का है। कर और खोड़ोंने काम्योंने के क्ष्मेंका का का है। कर और खोड़ोंने काम्योंने के क्ष्मेंका का का है। कर और खोड़ोंने काम्योंने के काम को है किन्तों क्षमों कुष्म की क्ष्मित है। क्ष्में का आका कहाँ दें किन्तों हा और काम है। स्था की काम कहाँ हैं?"

कांत्रमधी पता कुनवर केमाबुर स्टेट पदा और बोल- 'का, च्हीनक सामग्रे अन्य का ज्ञालय है केराहर मेरे पहले कहा है कि 'यह कुमिन्निर करा अमें से उन्हें कारत और राज्य । अर्थ: अन्य में अन्यकों सीवा के चरन्ता है। बढ़ि आद क्या को हो से पेरे शाब असके ।' जुनिहिर की व्यक्तो विकास हो थो थे, इसरियो प्रयक्तार उन्होंने सौटनेका के पेक्सप विश्वा । के को हो इस कारणे लोटने लगे, भी ही उनके कार्योंने कार्ते औरतो इत्यति जीवीकी का प्रकारित पुनर्मा त्व वर्ष---'वर्षप्रदर । अस्य क्रमानेतीया कृता वर्शन केही ोर वर्जी तहर सरहते; जानके काते ही घरण परिता और सुगरिका हमा पहले राजी है, इससे हमें पढ़ा शुक्र निश्म है। सुन्ती-क्ष्म । आज बहुत दिनोके बाद आवका वृत्तेन प्रकार हुन्। होन्डेको पन्न आग्य मिल दहा है, अतः कृतवा और दहा अक्रमे । अस्प्रेट स्कृति वहाँको कारण हुने कह नहीं पहुँचती । हर प्रकार वर्ड कह करेवाले इ.सी सीवोके मंति-मंतिके क्षेत्र करण सुनका चुनिहित्यों कही देश आही। उनके पुँहते सहरत निवास पहा—'अरेड ? इन केकरोको बढ़ा कर्न् है ।' मी स्त्रकार के बढ़ी तहर गर्ने । मिर पूर्वमन् दु:पी पीचीका तार्वनार सुरक्षी हेरे राजा; सिंह्य में पहलान म रावे कि मे विकार करन हैं। कर किसी तक रूपमा परिचय सम्बद्धी नहीं अन्य से मुनिहरने का दू-वर्ष बीगोको सम्बोधित करके का-'अन्तरंग कीन है और वहाँ किस्सिने यहे हैं?' उनके इस प्रकार पुरुषेश करों ओसी संस्थान करने लगी—'में कर्ज है, में जीवलेज है, में अर्जून है, में स्कूल है. में स्क्रोंक है, में बहुद्धा है, में क्रेयर्ड है और कुमलोग हैं रहें हैं पूर्व है।' इस प्रधान अपने-सरके जार साधार राज [ है (समादि इनकी ऐसी लूपी। वर्ष हुई ?) । मैं केस हैं मा क्षेत्र केलाव करने रूने । यह सुरक्ता राज्य पुलिक्ति पर्यो शिकार करने रागे—फिका का फैला निवास है ? मेरे महत्त्व वर्त जीमतेन अहे, कर्न, हैन्द्रेके कु उस सर्व ब्रैपटीवें को पेस्त कौन-क कम किया ता, निरान्ते कारण इसें इस क्षेत्रकुर्ण जनस्य स्थानमें स्वय यह स्वा है। ये सनी पुरंपकार है। सहस्रिक में कारण है इस्केंने मोर्ड कर नहीं कारण—'पुनिवीर नहीं मोर्ग ।' और अपेर्श नहीं मेरे किया था; जिस किस कर्मका वह कार है जो ने उसकों कहे | वर्ज-कन्द्रजोंको सुक विस्ता है।' वृत्रिक्षितके देशा कड़नेवर पूर्व है ? और पार्ट प्रापूर्ण करिक प्राप्त, कुरबीर, सरकार्ड वेसका केमध्य प्रश्ने कार करन गया और सुधिहिस्ते क्षता सामके अनुसूत्र पार्टकारे हैं। इस्तेर कृतिक करिरे | यो पुछ पड़ा या करता करते थे, यह तत उत्तर देशराक्ती प्राप्त स्वाप्त को-को पह विके और बहुत-की बीहरूमों से विकेश विराम ।

जनका ? को चेत है का भी ? कहीं वह मेरे विश्ववत विकास अवक पन से की है ?"

क्रा क्या नाम प्रकारों सेच-निवार करते हुए राजा वृतिक्षेत्रमें देवपूर्णने कक्य-'युन विनये कु हे, उनके पास होट करते; ये वहाँ नहीं चतुंत्र । अधने व्यक्तिमेरे पाकर

#### 📭 और धर्मका युधिष्ठिरको सानवना देना तथा युधिष्ठिरका शरीर त्यागकर रिव्य लोकको जाना

र्वजन्यकार्थं करते हैं—करवेक्य । कर्तत्रव पृथिक्षेत्रको । का स्वानक सब्दे हुए एक पूर्व को की बीचने करन का कि इन्द्र आहे. सन्दर्भ देवता वहाँ आ पहेंचे । स्वकृत्य वर्ग पी प्राप्ति भारत पारके एकाने विवानके दिनो जाने । उन केवानी बेरेवाओंके असे ही पहल्चा साथ सम्बन्धार पर हो गया। पारियोको चानसमा यह १२० वही वही दिवस्ती देश छ। हिर सीता, कर, सुराव कर्य काले साथै। इसार्थन मक्त्रमा, वस्, अविनीकुमार, साम्ब, सा, अधिन संब सन्तर्भ प्रतिवर्धी देखा दिखें और व्यक्तिके साथ महारोपाली पुरिविक्ते पार क्ष्मीत हुए। व्या समय हुन्दी मुनिक्षित्वो सारवस के इर का—'न्कृतको । अन्तरक को हुआ को कुछ, अन कुछते अधिक कह उन्होंची आस्त्रकार भूति है। आओ, हमते साथ वर्ष । कुछै बहुत बारी निर्माद निरमी है, स्ताप हो अध्याननेपारियों प्राप्ति की हा है। तुनों को नामा देखान पहा है, इसके दिन्ने प्रतेण न करना । स्तुष्य अपने सोवको एक और स्तूपन—ये प्रकारके क्योंकी एकि संस्थित करता है। यो पाले क्षण क्योंका करा मोगता है, जो पीकेले करण भोगन बाला है और नो पाले है उरक्का कह धोर हेता है, यह पैक्ने स्टॉन स्टान्ड

अनुसार कारण है। विसरोड चान-मार्ग अधिका और पुरुष कोई होते 🕽 आ चाले पर्याच्या सुरू चीचना 🛊 (तथा जो पुरूष जीवड और पार कम किने युद्ध है, यह पाले मरक केन्द्रार केंद्रे करोंने आरख केनश है)। इसी निकार्कर अनुसार प्रकृति कराई स्टेक्टर पहले मेंने दुनों नरकता क्षांत्र करावा है। तुनने अधानाधाने वरनेकी कार कहनार कानो क्षेत्रकार्यको उनके पुरुषी पृत्युक्त विकास विकास क, इस्टिके दुई थी प्रकार है जरक दिसलका गया है। क्याने स्थाप क्रिके राज्य पुत्रमें मारे करे हैं, वे सभी कर्मानेकने पहेंचे हुए हैं र महत्व क्ष्मुबंद तथा इत्यावस्थिते बेहु कर्म भी, जिनके रेको दन सक दानी एके हैं, काप हिन्दिको कहा हुए हैं। इन्हरे सुतरे नाई तक पाकव-पहने क्षा राजा भी अपने-अपने मोन्य रखनको प्रस्त हुए हैं। उन काको प्राप्ता देखे और अपनी मानीस्थ विनास्थ लाग का भी क्रम करोने विकार करें। अपने किये कुर पुरस्कार्य, का और काले कर योगे। एउसूक-बाक्स बीते हर समुद्रिकारों रहेक्ट्रेक्ट स्वेक्ट्र कहे और अपनी प्रयस्ताक महान् कर कोयो । कुमिक्टिर । दुर्ग प्राप्त हर सम्पूर्ण सोक रुवा प्रशिक्षके खेळांची चीरे सब स्वामीके खेळांचे कार है, क्योंने दूस क्रियरण करेचे ! वहाँ क्यांने क्याताः, 🏿 हुन्हें सरकता नित्ये । यह हुन्हरी वर्धकृत्य सीहरा अवहार क्षेत्र विद्य प्राप्ति ।'

माने हर साधान करने कहा—'केट ! इन्हों कर्नीकरका । नालकेक करने को ।' अपूराण, सारधारक, क्षांत्र और इतिहासंबय काहि पुर्वेके मारान में हरनर जार जाता है। यह की हार बीनरी बार ने प्रतिकेश को हवा काला प्रार्थकार देखाओं काथ प्रधार पुराये परेका हाँ है। बिसी की सुवित्ते कोई हुने अन्ते | पुरावकारिक करन करन केन्स्ने सुवतीने साथ विकास कार्यको निर्माण नहीं कर समान । क्रैनको अन्तर्थ- जान कर्य है उन्होंने वार्यक्रीत्वर आग करोड़ हैना है: कार्यका अन्तर्रात भारतेके प्रात्तर् का प्रकृति काले की | काला कर किया । उनके कृतका क्रीक-रोकार और कैर-पान हुरते कई जब किये थे, यह हुनाये जानी बर्धका थी; जाना का र सम्बाद वे केवार की विराहर कार्निनीरे सूति क्रमी हुन वर्ताचीत वर्ताचे हो यह । विन क्रेंच्हेत्सीत जुन्हे हुन् वर्गीत साथ-साथ इस स्थानको गई, जहाँ उन्हें चारों पुन्तरे जब व्यक्तिको मृत्यु हो सामेशर कृतेका कर करका । वहाँ साथक और शृत्रकृते पुत्र प्रतेष स्वानकर आरम्पूर्वक कार्क की दूसरी बार कुकरी परीका से बी, कार्य की जिल्हा करते थे।

रामा मगीरम और कुम्मानुस्पर करन को है, कही संबोधें 🛮 यह सिद्ध इस बार थी हुन अपने सुकारी करना व सरके निवास करते हुए भी दिल कुराबा उनकेन करेने । व्यानोधे देखते दिले कराने पुत्र वाही है, आर कुर हर महाराज ! यह देशी, विकुक्तकी परिवा कालेकारी देशकी । कहारे पुरुष प्रकारक हुए । कुली कारका राज की नहीं है, मचित्री साले है दिवारी रे को है उनके पीक्ष इसीले हलेबा हुए प्रेमे। दुखरे पह उसके खेख मराने कार करके हुए क्षेत्र संबद्धने का सर्वाचे। वहाँ वहाँ है। हुएने को उन्हें उसक ओको देशा है, बढ़ देवराय चेता समाने के हुन्दर नाम्य-सम्बद हुए के प्यापन, हुन्द्रान जान की हुई मान की। अहीर, भीत, सहुत, कुदारे करने क्षेत्र-संस्था, प्रसान और के उन्हों, इसी अहंद और अन्याती ब्रुस्टीर कर्य क्या संस्कृतारी केंची-अलेंसे कोई भी सरकरें माने केंग की है। देशपानकी बात राज्या होनेकर पूरीर करण जानेत जानोत ! आहते, तक मेरे राज्य बारकर विश्वेषकानिकी

कर्मकः । वर्गतः यो क्यांतर हन्द्रारे पूर्वविकास्य राजनि

## युधिहिरका दिव्यलोकमें श्रीकृष्ण आदिके दर्शन करना, भीष्य आदिका अपने मूलस्वरूपमें मिलना और यहाभारतका उपसंहार तथा माहाध्य

वैतन्त्रकारणे काले हैं--राजन् । तकारण केव्याओं, ! रोजाने अगरिया है। जावना केवानी चीरवर आर्थन करियों और सस्ट्रकोचे कुससे अन्ये अंत्रेस सूत्रों कू । करवान्त्री सरावाओं को पूर् हैं। क्षेत्रुवित करवान् राजा चुनिर्दित समसः तस स्थानार का पहुँचे, नहीं कुरबंद्व । श्रीकृतः और अर्थुनने भी चुनिहित्यो कारिका देश क्रथा पीमांत आदि विराक्तार के (बह परम्बद्धा करन करा | प्रमाण करना विष्य । इसके बाद दूसरी ओर दुवे माँ नागर महोने देख कि पन्धार तीकृत्व तरक क्रानंतर मुविद्वित्वे अक्रवारिकोर्ने तेतृ कर्मको साह्य अवाधित्य वारण वित्ये विरामकार है। उसका कारण अपने | अधीरवेंदेर समार ऐसेदार प्रस्ता कारण किये विरामकार पूर्व विश्वके की समान है: उसा: पालेकी देशी क्यूं देशा। वृत्ते उक्करे बीकांत विश्वकी को के पालेके के कररकारोंके बारण ने अनावास है जाकों का हो है। सवान प्रारंत करन किने मूर्तियान बाबु देवताके पास कैंद्रे रुपके प्रीतिम्बरी दिन्य न्वोरि विशव की है। यक स्वति | वे। उनके करों जोर मरक्पन दिवानों दे से वे और उनका मर्गकर विश्वास केलाओंके से प्रारंत करन करके विश्व विषय उत्तव कार्यात देशकाल हो का वा र उन्हें औ मही भारी सिन्दि अस क्षूर्व और स्तुक्त और स्तुक्त और स्तुक्ति महित्रीकुमारोके साम गैठे थे। ये क्षेत्रों पाई अपने दिला रेम्पो अहित दिवानी पढ़ते थे।

करभाग् देशका इसने काम-'मुनिवेश । वे को रोक्समीन दिवसे का प्रीत कावारी के दिवसे दे की है, प्राव्यत् पराच्छी स्वपी है। ये वे ब्राह्म सेन्ये महत्त्रकोचारे पाचर क्योरिसायुग क्रीन्द्रके काले सक्योर्ज क्षां भी। सर्व करवान् इंच्याने इसकेलेकी उपवालके दिले pë suz fon in aft pëlë d park pirë ne बारन कर इपलोगोंकी केना की भी। इसर में सर्वितंत समान तेवाची पाँच गावार्व विकासी है हो है, को समाने मेंबेट भौनीने जनक हुए जैन्सीके प्रीय पुत्र थे : इन नाम बुद्धिकार गामांतम कारक्षक वर्षन करो, वे ई इन्हरे निरम्के को पाई से : पर देखें, हुन्तरे को पाई कर्न कुनी साम पा रहे हैं। कर और परिष्, सम्बद्ध और चेन-बंधके स्थानीत आदि पहार्थियों गया महायाने गोरोको हेको; वे प्राप्तां, विश्वेदेनों तथा मन्त्राप्तोचे विश्वयान् है किसे पुरुषे कोई भी पराक्ष भूति कर सम्बद्धा था, अन पहलू बहुतेर सुधवस्त्रमार अधिकस्त्रमा और बी करने । यह कस्त्रमे साथ अधीय राज्या कारीत करण किये बैठा है। प्रमा देखें, कृती और महीने राज हुन्हों नित एक कन्द्र निरमाना 🕏। में मिमानरर मैठकर सह मेरे चल अस्य प्रत्यो 🗓। कार्यनुरुवन भीन बसुआंके राज्य और कुमले पुर होशायार्थ कुरुमिन्हे यस के है--इन हेन्सेका स्तीन करो। वे हत्वारे प्रकृते युद्ध करनेवाले कारे-कारे राजा गन्यकों, वहाँ और कुल्पकारोंक साथ का हो है। विक्री-विक्रियों पुरूष्योधी स्थेप ताह हुना 🜓 में रूप मुक्तमें सरीर स्थानकर क्रमनी परिवर कार्यों. **पृक्षि और क्योंके क्या कर्गल्येकरा अधिकार प्राप्त कर** क्के हैं।

कानेकारे पूक्त-अक्षर् । कीवा, होण, राजा क्रायह, विराट, हुस, सङ्ग, अरू, क्रायेश्व और क्ष्म्यने आहे राजा तैकारी भरीर शारण कानेवाले आवाला क्ष्म कार्नालेको विकाने सम्बद्धक एक साथ के ? अने वहाँ सन्तार स्थानको अति क्षाँ अव्यक्त के और विकास निर्मा अस्ता हुए ? वै आपने कुँतरे इस कुलनाको सुनना व्यक्ता है।

र्वजन्तर्वाने सक्र-जनर् । यह केवाओका गृह क्रम है, एको क्रमेनर इसे बता का है। मिनकी बुद्धि अन्यन है, को सन प्रामीकी नरिको नाज्येकते और सर्वत 💄 कर महान् अरुवारे पुरस्तन मृति पराक्षरणमूह भागस्त्रीने नुक्रमें को कहा है कि में सभी और अन्तरोगरक अपने मुक्तकारों है जिल को थे। महालेकारी कीम बसुसीके क्रमाने अस्ति से परं, वसी साठ है वस कारण होते हैं (राजक केलबीको रेक्ट के बसु हो जाने)। आसार्व क्षेत्रके बहुरवरिये अनेक विकाद कुळावार्थ मानुक्योंने जिल पक, अपूर्व मेरे आने हैं, उसे अध्यर सनक्रमारके सरीएं प्रतिक के करे। पुरस्तको कुनेन्छ कुर्नन स्वेकोन्छ प्राहित हाँ, नेक्रीकरी कामारी देवी भी अब्बेद साथ ही गयी। राजा क्या अपनी क्षेत्री मीत्रवेकि साम इक्स्प्रवर्णी बस्ते गये। निया, हुन, सुलेब, नियार, स्थार, साम, पानु, साम, Sugra, aftern, wer, aft, der, meier, weite, met और प्राप्त-ने निर्देशनीयें निरम गर्ने । प्रमुपानेंद्र महारोधनाती कु कर्म है असेह अर्थकों का होतार अधिपान गामहे विश्वास हुए से। अनुने स्तित्यानीह सनुसार ऐसा बुद्ध किया था, निरामी कही कुल्य नहीं थी। मे नर्गारत महारची जीवनपु अर्था अध्यास्थ्यः कर्म वृद्य करके प्रकारों क्रीया है गरे। क्रमोड़ करी सर्दरे, क्रब्रीरे greet air appeal artist tower the first s कृत्रकृति हैन पुर नकृत्रकों क्यूकानों (राक्सों) में विक न्त्रे। क्रिए और एक व्यक्तिने अनेक सावन अस किया : यो प्रकारीके अस्रोको अपनी योगवासिका अस्तव रेच्यर इस वृथ्येच्ये खाला विशे रहते हैं, ये भगवार शनक (कारकार्य) स्थातनमें को गये। यो सन्तरन विकासिकोच पार्यकाले सामने प्रतिद्ध हैं, उन्होंने अंसाने क्लाक्ट् औक्ष्रान्त्राध्य क्रमानं द्वारा या । स्वयत्त्राच्या प्रयोजन पूर्व कर सेनेवर के की करने पूरा सकतने विश्व हो गये। बीकुम्लकी सोरख इकार कियाँ अवसर पायर सरकारी नांचे कर को और अवस मंतिब प्रतेर सामग्र समाराओं के कार्य पारकारकी सेवाये अस्तित हो गयी। इस अक्रम महत्त्वारत-युक्तों यो हुए बीर सहरकी अपनी-अन्य केन्यतमे अनुस्का देवताओं और वक्षोंमें मिल गर्व । कोई इसके कारणे क्षेत्र और बोई कुमेरके। बितने ही म्बन्द्रमा करणानेकाको उत्तात हुए । कार्यकार । आर अस्तर कोला और पाणकोबा साठ चाँठा की तुन्हें विकारके साथ-समा विकास

क्षीर करते हैं—क्षित्रको ) महत्त्वम अपनेकर अपने

कार्रे वेशकार्यके इस्ते हा उत्तर प्राप्त होन्छ स्तकर बडे विकित हर । स्वतकर यह करनेकरे सहकी देश बार्च एट बार्क का पानो समात किया। सर्वेके र्रमाओ प्रकार कार्याच प्रतिको भी नही प्रकार हो। एको का-कार्रे कोन्स्रोस हर काल सक्रमेको वर्ताः there has the few our & more of week वभेषित समान प्रचार अपने-अपने वर पर्ने। उन्हें तिव करके राज्य को बक्राविताओं इतिम्प्युराओं को नर्ने । इस अवार पर्यापको प्रतिकृति व्यापनीको अञ्चली प्रतिकर बैसन्यान्त्रकोने को प्रोक्तर प्रकार था, जाका की सारकोरोकि प्रथम पर्गन किया। यह प्रमान प्रीकृत का है पांच और का है। कार्यों, क्यूंट, felt-frank per, wis, my physical, ug. क्षेत्रे प्रचानो परित्र अप:कारासी, प्रांत्य को केनीह विद्युत्त क्या अनेको प्राथित प्राथित प्राथित प्राथित प्राथित किया प्रोती देशका पहला पालाई क्या अन्य केलाई प्रतानीची क्षीतिक असर करनेके दिन्ने इस इतिहासकी राज्य की है। के विकार अनेक करेनर को सार्टको सुरक्त है. जाने पर्य-पर का पाते है। का प्रानीत अधिकार क्या स्वाधनको सात्र होनेको चेन्यत प्रतित कर तेवा है। बीक्स्प्रेसक्या उद्धा होते काल का जानक 'अंदर्ज नेह'के नामसे प्रसिद्ध है। यह एकस्परित होकर हम राष्ट्रने प्रकार साथ कार्य है, उसके प्रकार साथे बरोबों पार्वेका गता के बाता है। के ब्या-कार्नि स्थानोंको सामानामा केवन्स अंच को कर के fa. सामा विचा हुआ सामन्या अक्षण होच्या निरातेको उत्तर होता है। महत्व असी इतिहाँ अवदा करते हिरासकें को पान करता है, यह सर्वकारको संस्कृते स्थान महाभारतका पर बरनेसे बर जात है और व्हिक्टे करन अन्ते के प्रम है करे हैं. उसे प्रशःसमध्ये संस्केट साथ बाजसम्बद्धा पद बस्तेय ब्रह्मात कि बात है। अर अवने मराविक्षेत्रेक महत्र क्य-कर्मक वर्गन है. इस्तीरने इसे 'कायाता' वाले हैं। यहन और करी होनेक कारण भी प्रस्का नाम 'स्वाप्तास' प्रस्त है। जो

्रिक है जात है। वेजनिकार पहलाल एवं अराज् पुरुष्टिक विकास मानि वेदानासकी विद्यालीय पूर्व । वे कारे हैं—'शाराव पूरव, सन्दर्ग क्रांसाध और को अमेरकीय कार्ये के एक और एक केवल नकपाल कार्य और यह अनेतर हो कर सब्देश महानद है।"

क्रीकर परवाद क्रीक्रमकेलको होन क्रोंने समझ कुरमानो पूर्व किया था। से 'सर' परमा का न्यान्यतः अवेद्यान्ये तथा नीतपूर्वतः कृताः युता है, जो बी. मोर्टि क्या विकासी प्राप्ति होती है। वर्ग, अर्च, महार और मोक्रोर किरवर्ग को कुछ महत्त्वारतों कहा गया है. को उनका है। यो उनमें को है, का बर्जा को है। यो उन्हें क्या रक्तेको साम और धीनको स्था परिनी प्रोक्ते में का 'ज' पत्र क्षेत्रका क्या करा प्रति। नामाना अस्य से पा भारतात सूच्य परि सर्वाची इस्ता को से को को पार्न निरम्भ है और बहुने निरम पान माने के विकास विकास है। इसी जनार परिवर्त करियों व्यक्तां स्थाने क्षेत्र क्ष व सेवानसीली क्याची जो। हेरी है। विश्वपुरस्तात स्टाइट क्रीकार्यक्रमध्ये कर्तती क्राम्मध्ये इस प्राप्त-संदर्भवे राज्य को है। बाले उन्होंने तक तरण उन्होंबीबी मान्यवर्गित करने थे; कारेंद्रे ग्रेट तक स्टेब्वेब्वे संक्रिया केन्स्रेको अवस् क्रमा, पंत स्थानकी सारी संदेश विकासि असील हो, चीवा साथ सर्वेदरेवी बीलरी संविध्यक्त पद्ध-रतेयाने आहर हुआ तथा एक साम् in after factory with the beloise केम्बानीको केली नारहो, रिसरीको अस्ति-केसले, यक्ष और राज्यतीको सुवक्षेत्रकीने और पशुलोको वैशासकानीने है को-का काकसमित समर्थ है। सैश्वर्य । से नकुष प्रकारको अने करके कर्नार असीर परिवृत्तं और केव्यो प्राथमा बस्तेवाले प्राप्त मानासालीत परिता क्रीकरमा अस्य करत है, या इस कार्यों सहे क्वेच्यक्रिक क्षेत्रों और अपन बोर्सिको प्रानेके साथ ही परव विश्वीतारों जात कर लेखा है—इस विकासे को स्थित भी की। माँ है। मो अवस्य ब्रह्म और प्रतिके साम मान्यसंख्यी मुच्छिको स्टब्स तेल है, व्य सन करेते । मान्यसंख्ये एक संख्यों भी सुनत च दूसरेको सुनता है, उसे सम्पूर्ण महाभारतके अध्ययनका पुरुष प्रश्न होता है और | अवका प्राण क्यानेके दिन्ने भी वर्षका तरन ने करे । वर्ष निरम **बर पुन्यके प्रधानमें बराको उत्तय सिद्धि मिलती है। बिद** पनवान् व्यासने इस परित्र संविताको प्रकट करके अपने पत मुक्तदेववीको पहाचा था, वे महापासको सारपूर उन्हेहका इस प्रकार वर्णन करते हैं—'मनुष्य इस जनांचे इक्षारें मता-पिताओं तथा सैकड़ों डी-फुरेंबे संबोध-विकेषका अनुभव कर चुके हैं, करते हैं और करते खेंगे "। अक्रमी पुरुषको जतिदिन इनके हमारों और कनके सैकड़ों अवसर मार्ग होते हैं: सिंह बिहन् पुरस्के कारर इसका कोई जपान नहीं पहता 🕆। मैं दोनों हाथ अपर कारकर पुष्पार-पुष्पारकर सन रहा है, पर मेरी बात कोई नहीं कुनता । करीने मोज़ से सिद्ध होता है है, अर्थ और काम भी सिद्ध होते हैं तो भी लोग असका सेवन क्यों नहीं करते! कामनासे, भवते, खेचसे

🕯 और सुस-दुःस अभित्न । इसी प्रकार जीवारवा नित्य है और उसके वक्तका हेत् अस्ति ई।' व्ह सहपालका सारकृत उपदेश पास्त-सर्ववर्तके नामसे प्रसिद्ध है। यो प्रतिदिन सबेरे क्टबर इसका पाठ करता है, व्य समूर्ण म्याभारतके अध्यक्तका करु प्रकार परवाड़ परमतमाको प्राप्त कर तेना है × । वैसे सम्बर्ध और हिम्मलन वर्षत छेनों ही रहोंकी निधि पाने क्ये हैं, जहीं प्रकार महाभारत भी राजा प्रकारके उपदेशमध कोचा पंतर बक्तरत है। यो विद्वन् जीकृष्णहैपायनके द्वारा अस्टिह किने गर्ने इस महामारतस्य महान नेत्रको सुनाता है उसे अर्थकी जाएँ। होती है। के एकाप्रक्रित होकर इस पास्त-उपस्थानका पाठ करता है, वह पोक्षकर परम सिक्सिको प्राप्त कर लेका है। इस विकास मेरे मनमें तलिका भी संबंध नहीं है।

॥ सर्गारोङ्ग्यर्थ सम्बद्ध ॥

<sup>&</sup>lt;sup>®</sup> मतापितृसहस्राणि पुत्रद्वराहतानि य। संसरेषुनुपतानि वर्षि कार्याच क्रमे ॥

<sup>🕇</sup> हर्मस्थानसङ्ख्याणि मक्त्यानस्थानि य । दिवसे दिवसे मूहमाविश्वति न पण्डित् ॥

<sup>🌣</sup> कर्म्बन्तुर्विरोप्येव न च सक्षित्कृषोठि में । वर्गदर्वत करमा स किमर्व न सेव्वरे ॥

<sup>🕯</sup> न वातु कामान पक्ता लोभादमै सक्वेचीवितस्तापि हेतोः। निरमें पर्यः सुराहः से जनित्ने बीचो निरमे हेतुरस्य वर्गन्तः ॥

<sup>×</sup> इमें परतस्त्रिकी प्रतस्त्राम के परेत्। स कारफरं प्राप परे स्वाधिगकति ।

## महाभारत-श्रवण-विधि

## माहातय, कथा सुननेकी विधि और उसका फल

मानेक्नो पूल-पन्तर् । विद्वालेको विद्या विवित्ते भागभारतका अवन करना चाहिने ? इसके सुन्तेसी क्या कर होता है ? प्रत्येक पर्वकी समाहितर क्या कर देना पाडिये ? और इस क्यांका कार्यक केल होना पाहिले ?

र्वजन्मकार्थने का-राज्य ! महाधारा सुनोब्दी से विकि है और असे अनवारे के पार होता है, का सब सार दा 🖫 पुने । मनुष्यको चाहिने कि अपने यन और इन्सिकेस रांचन बरके, परित्र क्षेत्रर पर्याच विकिक्त अनुसार इक प्रतिकारको पूर्व और सम्पन्न: प्रकारी समाहि करे। के बाहर-मीताले परिता, प्रीतामान, स्वाधारी, सञ्ज वस पारन महत्त्रेशास, विदेशिय, संस्थारसम्बद्ध, समूर्व प्रस्केता सरक, बक्रमु, ग्रेप-पृष्टिने रहेत, सीनानकारी, नाके महामें रक्षानेवारण और सरकार्य हो, जरको हान और कालो अनुसूर्वत करके पालक कारण पाहिले । कथानाकारणे न ते पहा का-राज्या क्या सीको प्यक्ति और र पहा करते हैं। आरामके साथ और भीतरे क्लीका एक उपलब करते हर उच्चारते कथा क्रीवर्ध कड़िये। बीटे करते पानार्थं सन्तात्वर कथा को। तिरस्य अक्टोबा रुखे आहो स्थानेते रोज-रोज उद्यान करे। क्या कुरते राज्य पायको रिन्दे जस्य और एसामधित होया अवस्था है; उसके रिप्टे आराम देशा होता चारिने जिसका का सुकार्यक बैठ सके। अनुवादी नारकात्रकार करवार केंद्रान, रुके निरमस्या नरसस्य नरका अर्जुन, रुक्ती सीरव प्रका क्लेक्स करकी सरकते और अस्के क्या नहीं बेक्स्प्रसाधे नगरपार बार्चा आसूर्य सन्तरिकीया विकास हिन्दुर्वेक अन्य करणको सुनु करनेको स्थापक प्रमाद्य पाठ करना पाक्षिये।

एकर् । महापारतकी कृषा जात्वा हो समेवर प्रशेष करि इंडिकोको बारि, सरका, उनके देश, नाहरूप तका कांको जनकर प्रकुलोको जे-को कराएँ देनी व्यक्ति. काका वर्गन करता है. सुने : चार्न अञ्चलोंने त्यरियायन कराबार कथा-बावाच्या कार्य प्राप्त कराये, बिर वर्ष समाप्त क्षेत्रेयर अपनी चरित्रके अनुसार का व्यक्तवेकी पूर्व प्यानकर पन्यर आहिते उत्तरको पूजा करे और विविद्धींक को चेटी कीर घोषण करावे। तत्कार जातीकार्यकी क्या होते सक्य प्रकृतको पत्रु और मैसे चुक सीर, मीठा का और मूर-कर विकर्ष । सम्पर्ध प्राप्य होनेपर पूर्वो, क्रवेदियों और निराहचेंके साथ कीर फेका करावे। क्रमानी का और मुत्तिते प्रकृतको संपुत्र करे। अरबैक्की चौकोवर करने घरे हुए क्लेका कुन करे तक विकास कारेने हुद्दि हो सबे, हेर्न जान-जान बंगानी मुक्त-बार और कर्वपुरसम्बद्ध श्रेष्ट प्रकृत को । विराह्यकी बॉर्ड-बॉर्डर का इन को एक कोनवर्ग अक्रमेंबो कता और पूर्वाची परको विकृति करके भी गान जब चेका करते । चैकार्यने ज्या कार्या और सर्वपुरसान्त्र जीव्य प्रधान का करें। क्षेत्रकर्ति ह्याचीको जान चेता कारे। कर्मकी से अक्रमेदी सनूर्य कारमाई पूर्व करोके साथ है जो अब्हा चेवन देन कहिने। प्राचनार्नि अपने पत्रको कुळा करके बीठे चत्र, पूर, रहि करनेवाले कर और विद्यालेंके राज तर प्रधारक जा दल करने चाहिले । पाइनानि केन निरातने हुए असमा क्रम करना सीवा है। बोवर्ग अने-अने व्यानीयो रच-रक्षे स्रोते रांक्ष करे । देवीकार्याचे पहले की विशास दूआ पात विपादे, किर तम जानके पुनोते पुछ एवं साविद्व अब योगन करने । व्यक्तिवर्णि में उत्तर्णकों इंक्लिक है थेयर देश वाहिते । अनुवेधिकारांचे पहेलोगर समग्री प्रक्रिये अनुसूरत चेतर है तथा आक्षमकारिकार्यमें इतिया चेतर करावे। चैतारको सर्वपुरसम्बद्ध जा, प्रकृत, चला और अक्रोपन क्षत्र करे । प्यातास्थानिकार्यने भी ऐसा ही करे । किर प्रत्योग्रामकार्थे प्रक्रमानेको स्रीर कोका करावे।

का प्रकार तथ वर्गीकी संविद्यालीको समाप्त करके प्राप्तेस पुरुषो पानि कि का उने रेडाने क्योंने क्लेंडबर किसी जान कान्ये रसे और सर्व बान आदिसे चौंदा हो हेद कहा, कुराबी माल तथा आधूरण बारण कादे कहा, जान साहै उत्तारोंने उनकी एकक्-एकक् विकेश पूरा करे। इसके तथन विकास स्टब्स स्टॉ इस हरे। अदिपांकी क्यांके समय क्याकको पूरा कक रहता पाईके और वीति-वीतिके उत्तम पान, पोना, पेन तथा पूर्व आदि सामग्री अर्थन करके सुवर्णनके दक्षिण देने कार्षिके । अलेक कुरुकारस स्टूब बिलाई बीम-बीम पास स्रोपा पहान पाहिने। इतन न हे सके से समय के के क सोन पहले और यह भी संभव न हे तो मैन-मैन पत पहारा साहिये; सिंहू वर यूने हुए कंत्रूमी नहीं करने महिते। यो-यो पत्तु अपनेको शिव लगते हो, व्यक्तिकी प्राप्तको सनमें देनी वाहिये। काव्यक्तक अन्ते पुर्वक समान होते हैं, जा: परिज्यूनेक वर्षे तर्मक संगुर करना वाहिने । वर समय सम्पूर्ण देनात्राओं तथा बननान् स-गारायणका बीर्तन करण साहिते। किर उत्तर आहानीको सुराकर चन्द्रा और माला आहिते निमृत्ति करके उन्हें माना प्रकारको पर्वकान्त्रिय बसुई दल करे और वीति-वीतिके क्रोटे-बड़े आवरण्या नहर्ष देखा उन्हें संह्या करें। हेला करनेसे जनुराको अस्तितः कृष्ण कर निरास है स्था प्रतिक वर्षकी समितिया प्राप्तनार्थी पूर्व करनेले और पहला पाल प्राप्त होता है। कथानाकाओं विद्वार होता व्यक्ति और प्रातेशः अक्षरः, या क्षतः वास्ता अक्षरण काले हुए महमाराजी क्या सुरात करिये। समूर्व क्या राजा हेरेगा अन्ये-अन्ये महागीयो नोबा बरावर को प्रतास श्चन केंच जारिये । पिर कावकार्ये औं क्या और अलंकरोंके विश्वविद्य करके जान जात भोगन कराना चाहिने। कत्रावाकको संद्र्य हेनेनर है ज्यान आरम्बर्ध आहे होती है। प्रकारोंके संतुष्ट हेनेवर बोताके कर समझ देवता जला हे जाते हैं; इसरिय्ये सायुक्तपायके बोलाओंको काहिये कि वे नावपूर्वक प्रदानोची समस प्रकार पूर्व करते हर उनक वजेक्ति पूजन करें।

राजप् ! सुमारे पुल्येक अनुसार जा की महत्त्वासकी सूनने तथा उसका परायण करवेकी विधि करावजी है। इसकर ब्रह्म करो और जो, अवन करवे कायान कर्यों के साथ पाल्योंक इसका पासन करते को । मनुष्यको साथ ही महाभारता अवन और वोर्तन करना पालिये। तिसको करने महाभारता अवन जीन्द्र है, अरके हाज्यों ही विकास है। पास करने परिता अन्य मैजूर है, अरके हाज्यों ही विकास है। पास ची चारतान्त्रका रोजन करते हैं। चारत परमञ्जलका है। च्य समूर्व क्षाओंने कान है। इससे मोक्स्पी आहे। हेती है, यह मै क्की कर का का है। महत्त्वस-प्रकार, पूजी, ती, हरसती, प्राप्तक और काकन् वास्त्रेतका कीर्यन करनेनास नमुख कभी विवरिजें नहीं पहला। यनमेतव ! सेह, राजयव और व्याधारको आहे, यथ एवं अन्तमें सर्वत परवार अस्तरानो है परावा गावन किया बात है। महाधाराने जराजनको हिन्स कबाओं तथा सरातर श्रुतियोका संपत्नेक है। को क्यूक करन पहले आह धरना बाह्म है, या सरा काका शाम करे । महायाना परा चीता, वर्गके आवयान रताक्षणका करानेकाल एका सब प्रकारके गुजोसे सन्धन है। करवान व्यक्तिको पुरुष्ये अवस्य प्राच्या समय करण व्यक्ति । पहाचलके क्यानो पर, वाली और वरीखार संबंधा निवने हुए जान वसी उन्हान नहां के बाते हैं जैसे दुनोंदन हेर्नेक्ट अश्वकार । अक्रमा पुरानोके सुरुवेते को फल होता है, बा सार कर बनावार पुरस्को अधेरे नाभागके बारानों नितः वाता है। भी के या पुरुष, सन्ते प्रशंके अवसरो वैनाम-कामो जार हो जाते हैं। प्राचीक करानो जार करोची इकामारे पुरुष्यो जाति कि व्य महाभारत-अन्यको च्यान् व्यक्तको सेनेके पणि रिक्के दक्षिणाके स्थाने क्षण करे क्या अपनी प्रतिके अनुसार करिया गीके सींगरें सोचा विकास को बच्चो आवारीत वाले व्यवेतीत व्यवकारो का को; इससे मोलका कानाम होता है। इसके रिल्य कथानामको रिल्वे होनो हाथोके बाहे, वालोके कुम्बर और विशेषः भा ज्ञान को । राज्यू । वायकको पुनि-तान से अवस्य है काम पाड़िये; क्योंकि पुनि-श्रानके समान कुरण कोई कर न हुआ है, न होना । को पुरूप सह बहुबाराज्ये सुनत-सुनाता कता है, वह सब पापीसे पुरू क्रेकर केव्यल-पहले जार होता है। इतना ही नहीं, यह अपनी न्यान् चेड़ीके पूर्वजीवा, अपना तथा अपनी जो और पुरस्त भी ब्रह्मर कर देता है। यहामासा सुननेके पक्षात् असके रिल्वे दर्शन होन भी करना अञ्चलक है। इस प्रकार की दुखरे समाह हुन तम बार्जेचा विस्तारके साथ वर्णन कर दिया।